नालन्दा

विशाल शब्द सागर

शब्द संख्या
१,५०,०००

श्री नवल जी

आदीश बुक डिपो

नालन्दा विशाल शब्द सागर

R
1:1
नवल-ना

R.
1.1
नवल-ना

129202

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

नालन्दा

विशाल शब्द सागर

[शब्द संख्या १५००००]

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, ग्रामीण, बृजभाषा आदि में आने वाले भिन्न विषयों के नवीन
शब्द साहित्य, अलङ्कार, आयुर्वेद, इतिहास, भूगोल, पुराण, दर्शन, विज्ञान,
ज्योतिष, संसद, व्यवस्थापिका-सभाओं, सचिवालयों, शासन-
कार्यालयों, न्यायालयों आदि शब्दों तथा वाक-
व्यवहारों का विशाल शब्द-संग्रह ।

—:o:—

सम्पादक—

श्री नवलजी

पुस्तकालय
129802
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

1.1,NAV-N
129802

Phone 44836
Rama Book Depot
Book Market, Aminabad
LUCKNOW

आदीश बुक डिपो
७ए/२६अ डब्लू० इ० ए०, करोल बाग, नई देहली-११०००५

प्रकाशक :
आदीश कुमार जैन
सुपुत्र ला० फूलचन्द जैन
आदीश बुक डिपो,
दिल्ली-110005
फोन नं० 5724103

R
1.1
नवल - ना

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 1986

मूल्य 135/- रुपये केवल मात्र
विदेश में U. K. £ 15-00
U. S. $ 20-00

बिक्री कार्यालय
4123, नई सड़क
दिल्ली-110006
फोन : 2915325

मुद्रक : शान्ति प्रिन्टर्स 3428, गली बजरंग बली,
बाजार सीता राम दिल्ली-6 फोन नं० 269703

भूमिका

हिन्दी में १८९२ में पहला कोश बांकीपुर से श्री बाबा बैजूदास का 'विवेक कोश' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसके उपरान्त *गौरी नागरी कोश*, *हिन्दी कोश*, *मङ्गल कोश*, *श्रीधर कोश*, आदि छोटे-छोटे इने-गिने कोश हिन्दी में थे जो उस समय को देखते हुए पर्याप्त समझे जाते थे। काशी के नागरी प्रचारिणी-सभा के सद् प्रयत्नों से १९०९ में व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से *हिन्दी शब्द सागर* का कार्य आरम्भ हुआ जो निरन्तर बीस वर्ष तक कई विद्वान् सम्पादकों के परिश्रम से छपकर तैयार हुआ। यह कोश हिन्दी वालों के लिए तो सर्वश्रेष्ठ है ही पर भारतीय भाषाओं में भी आदर्श समझा जाता है। होना तो यह चाहिए था कि ऐसे शब्द कोश के नये संशोधित, परिवर्तित एवं परिवर्द्धित-संस्करण प्रकाशित करने चाहिये थे पर खेद है कि किन कारणों से ऐसे व्यवस्थित तथा कलात्मक कोश का आज तक दूसरा संस्करण भी देखने में नहीं आया। इसके पश्चात् जो शब्दकोश निकले वह छोटे और प्रायः इसी के अनुकरण पर तैयार किये हुए हैं। इनमें बराबर बढ़ने वाले शब्दों की ओर ध्यान नहीं दिया गया। इन सब विचारों को देखकर ही प्रस्तुत शब्दकोश के संपादन को हाथ में लिया और दैनिक-पत्रों एवं वर्तमान समय के विद्वान् लेखकों की पुस्तकों, तथा नवीन परिभाषा कोशों से शब्दचयन का कार्य आरम्भ किया और लगभग अठारह हज़ार नवीन शब्दों का समावेश इस में किया गया।

जीवन में कभी-कभी साधारण-सी घटना भी किसी बड़े काम की प्रेरणा देने वाली होती है यह कौन जान सकता है—वही इस विशाल शब्द सागर के संबंध में घटित होती है। तिथि तो आज ठीक तरह से याद नहीं पर पांच वर्ष पूर्व मुझे एक कार्य से पटना मित्रमंडली सहित जाना पड़ा। वहाँ जाकर मन में विचार उत्पन्न हुआ कि क्यों न नालन्दा विश्वविद्यालय को (जो अब अवशेष मात्र है) देखा जाय और भारत के उस गौरव-स्थल के दर्शन किये जायें जहाँ किसी समय में देश और विदेश से ज्ञान-विज्ञान तथा कलाकौशल की विद्या ग्रहण करने के निमित्त शिक्षार्थी आते थे।

हम पटना से एक बस द्वारा नालन्दा की ओर चल पड़े सारे मार्ग में पढ़े-पढ़ाये आधार पर नालन्दा तथा तत्कालीन सामाजिक विषय पर चर्चा करते रहे। अन्ततः हम नालन्दा विश्वविद्यालय पहुँच गये। एक बारगी स्तब्ध विस्मित और भाव से उस भूमि में से खुदे हुए विद्यालय को देखने रहे। यही वह विद्यालय है जिसमें हज़ारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे, यही वह शिक्षाकेन्द्र है जहाँ एक स्नातक एक-एक देश को बौद्ध-धर्म के तत्वों, जीवन के रहस्यों के गूढ़ तत्वों को समझाने की क्षमता रखता था। यही वह महान् संस्था है जहाँ फाहियान और ह्युङ्गसान नामक प्रसिद्ध चीनी यात्री इसकी गौरव गरिमा देखने आये थे तथा अपने का धन्य समझा था। यही सब विचार मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे।

नालन्दा विश्वविद्यालय की एक-एक श्रेणी के विशाल भवनों की भव्यता को देखकर स्तब्ध हुए बिना नहीं रहा जाता। एक भवन में एक ही श्रेणी के हजारों विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था आज भी संसार के बड़े से बड़े विश्वविद्यालयों के लिए एक महान चुनौती है। बड़े-बड़े छात्रावास, विद्वान्, आचार्य, सुयोग्य उपाध्याय वह सब कैसे होंगे? उनका ज्ञान अपरिमित होगा। फिर तत्कालीन भाषा और साहित्य की ओर ध्यान गया। सहसा एक मित्र बोल उठा 'कितना महान् और गौरवशाली रहा होगा यह विश्वविद्यालय'

इस बहुमुखी महानता या विशालता को देखकर आज मेरे हृदय में उस प्राचीन विश्वविद्यालय के नाम पर ही इस शब्दकोश के नामकरण की भावना उत्पन्न हुई। और इसी से प्रेरित होकर यह वृहद् शब्दसंग्रह संपादित किया गया। और सर्घ साधारण के लाभ के विचार से ही यह अभिनव अभिधान हिन्दी जगत् के सम्मुख प्रस्तुत करते परम प्रसन्नता हो रही है।

हिन्दी जगत में यह प्रथम शब्दकोश जिसमें बहुत बड़ी संख्या में संसद्, विधान-सभाओं, सचिवालयों, शासन कार्यालयों, न्यायालयों, युद्धसंबंधी नवीन उपकरणों, गैसों, नाना प्रकार के बमों, वायुयानों-संबंधी सभी प्रकार के शब्दों का भी इसमें समावेश किया गया है और साथ ही उनके अंग्रेजी पर्याय भी अंत में दे दिये गए हैं। इसके अतिरिक्त व्याकरण, छंद, रस, अलंकार, नायक-नायिकाओं के भेद-प्रभेद तथा सर्व प्रकार के साहित्यिक शब्द आपको मिलेंगे।

इस शब्दकोश में अबतक के हिन्दी में प्रचलित सभी अरबी, फारसी, अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द भी इसमें देखने को मिलेंगे।

अन्य बड़े से बड़े कोशों में भी न मिलने वाली कुछ विशेषताएं भी इसमें दे दी हैं। संस्कृत के सभी अनुनासिक वर्णों के लिखे जाने वाले दोनों रूप एक साथ दिये गये हैं। जैसे-अंक-अङ्क, अंजन-अञ्जन, अंडाकार-अण्डाकार, अंतक-अन्तक, भूकम्प आदि। इसके अतिरिक्त दो प्रकार से लिखे जाने वाले शब्दों की भी दोनों अक्षरी दी गई हैं। जैसे-अर्ध-अर्द्ध, आर्य-आर्य्य आदि।

शब्दकोश का काम अन्य साहित्यिक कार्यों की अपेक्षा इसलिए बहुत अधिक कठिन और विकट होता है क्योंकि इसमें सभी विषयों तथा सभी शास्त्रों के शब्द आते हैं और किसी एक व्यक्ति के लिए सभी विषयों तथा शास्त्रों का ज्ञाता होना असंभव-सी बात है। इसलिए प्रस्तुत नालन्दा विशाल शब्दसागर में हो सकता है कि किसी प्रकार की कोई त्रुटि देख पड़े तो कृपापूर्वक सूचित करें। मैं अगले संस्करण में उन सब दोष या त्रुटियों को सुधार करने की चेष्टा करूँगा। जितनी मुझमें क्षमता थी उसके अनुसार जितने शब्द मुझे उपलब्ध हो सके दे दिये हैं फिर भी हो सकता है कोई उपयोगी शब्द छूट गया हो तो उसके सम्बन्ध में भी मुझे सूचित करने की कृपा करें। उचित और उपयुक्त शब्दों को मैं बिना किसी संकोच के उसमें सम्मिलित कर लूंगा। वैसे तो हिन्दी अब एक स्वतंत्र देश की राष्ट्रभाषा है और उसमें शब्दों की वृद्धि स्वाभाविक है और प्रत्येक संस्करण शब्दों का परिवर्द्धित रूप लेकर हिन्दी भाषा-भाषियों के सम्मुख आता रहेगा ऐसा मेरी कामना है।

अंत में मैं अपने मित्र श्री फूलचन्द जैन का और आचार्य चन्द्रपालजी का कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता क्योंकि कोश को आदि से अंत तक उसको मुद्रणकला द्वारा सजाना और तत्संबंधी देखभाल करने का कार्य उन्हीं का रहा है

महावीर-जयन्ती,
सम्वत् २००७ वि.

—सम्पादक

हिन्दी भाषा का विकास

संस्कृत के 'स' अक्षर की ध्वनि फारसी में 'ह' के रूप में पाई जाती है इसलिए संस्कृत के 'सिन्धु तथा सिंधी शब्दों का फारसी रूप 'हिन्दी' एवं 'हिन्द' शब्द फारसी भाषा का ही है। फारसी में 'हिन्दी' का शब्दार्थ 'हिन्द-सम्बन्धी' है, किन्तु इसका प्रयोग 'हिन्द के निवासी' अथवा 'हिन्द की भाषा' के अर्थ में होता रहा है। 'हिन्दी' शब्द के साथ-साथ ही 'हिन्दू' शब्द भी फारसी से ही आया है। फारसी में हिन्दू शब्द का प्रयोग 'इस्लाम धर्म पर विश्वास न करने वाले हिन्दवासी' के अर्थ में प्रायः मिलता है। इसी अर्थ के साथ यह शब्द अपने देश में प्रचलित हो गया है।

शब्दार्थ के विचार से 'हिन्दी' शब्द का व्यवहार हिन्द अथवा भारत में बोली जाने वाली किसी भी आर्य, द्राविड़ या अन्य भाषा के लिए हो सकता है किन्तु वस्तुतः इसका व्यवहार उत्तर-भारत के मध्य-भाग के हिन्दुओं की आधुनिक साहित्यिक भाषा के अर्थ में विशेषतया, और इसी भू-भाग की बोलियों एवं उनसे सम्बन्धित प्राचीन साहित्यिक रूपों के अर्थ में सामान्यतया होता है। पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी सिरे तक के पहाड़ी प्रदेश का दक्षिणी भाग, पूरब में भागलपुर दक्षिण-पूर्व में रायपुर और दक्षिण पश्चिम में खंडवा तक इसकी सीमायें पहुँचती हैं। इस भू-भाग में हिन्दुओं के साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं, शिष्ट बोल चाल एवं पाठशालाओं में पढ़ाई जाने वाली एक मात्र भाषा हिन्दी ही है। सामान्यतः 'हिन्दी' शब्द का व्यवहार लोगों में इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है किन्तु साथ ही इन स्थानों के ग्रामीण क्षेत्रों की मारवाड़ी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, मैथली आदि को और प्राचीन ब्रज, अवधी आदि साहित्यिक भाषाओं को भी हिन्दी भाषा में ही समझा जाता है। हिन्दी भाषा का यही अर्थ भारत स्वतन्त्र होने से पहले प्रचलित था।

शब्द-समूह के विचार से प्रत्येक भाषा एक प्रकार से खिचड़ी होती है। किसी भी भाषा के विषय में यह नहीं कह सकते कि वह अपने प्रारम्भिक विशुद्ध रूप में अब तक चली आई है। दो व्यक्ति अथवा समुदाय भाषा के माध्यम की सहायता से अपने विचार परस्पर प्रकट करते हैं तब भाषा का मिश्रित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। भाषा के सम्बन्ध में 'विशुद्ध' शब्द का व्यवहार करने से केवल इतना ही समझा जा सकता है कि किसी विशेष काल या देश में उसका वह विशेष रूप प्रचलित था या है। जो भाषा आज 'विशुद्ध' कहलाती है वह पांच-सौ वर्ष पश्चात् दूसरे रूप में कहलायेगी।

सामान्यतः हिन्दी शब्द-समूह तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है—

१—भारतीय आर्य भाषाओं का शब्द-समूह।

२—भारतीय अनार्य भाषाओं से आये शब्द।

३—विदेशी भाषाओं के शब्द।

भारतीय आर्य भाषाओं का शब्द-समूह

हिन्दी शब्द-समूह में सबसे अधिक संख्या उन शब्दों की है जो प्राचीन आर्य भाषाओं से मध्य कालीन भाषाओं में होते हुए चले आ रहे हैं। व्याकरणों की परिभाषा में ऐसे शब्दों को 'तद्भव' कहते हैं, क्योंकि यह संस्कृत से उत्पन्न माने जाते थे। इनमें से अधिकतर का सम्बन्ध संस्कृत शब्दों से जोड़ा जा

सकता है किन्तु जिन शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत से नही जुड़ता उनमें ऐसे शब्द भी हो सकते हों जिन की व्युत्पत्ति प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के ऐसे शब्दों से हुई हो जिनका व्यवहार प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के साहित्यिक रूप (संस्कृत) में न होता हो । इसलिए तद्भव शब्द का संस्कृत शब्द से सम्बन्ध निकल आना आवश्यक नहीं है। इस कोटि के शब्द प्रायः मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओं में होकर हिन्दी में आये हैं इसलिये इनमें से अधिकतर के रूपों में बहुत परिवर्तन हो जाना स्वभाविक है। सर्व-साधारण की बोली में तद्भव शब्द अत्याधिक संख्या में मिलते हैं। साहित्यिक हिन्दी में गँवारू समझे जाने के कारण इनकी संख्या कम होती जाती है। वस्तुतः ये असली हिन्दी शब्द हैं तथा इनके प्रति हमारी विशेष ममता होनी चाहिये। 'कृष्ण' शब्द की अपेक्षा 'कन्हैया' अथवा 'कान्हा' शब्द हिन्दी का अधिक सच्चा शब्द है।

साहित्यिक हिन्दी में संस्कृत के विशुद्ध शब्दों की संख्या का सदा से आधिक्य रहा है और आधुनिक साहित्यिक भाषा में तो यह संख्या उत्तरोतर बढ़ती जा रही है। इसके मूल में दो बातें रहती हैं एक नवीन आवश्यकताएँ दूसरे विद्वत्ता प्रकट करने की प्रबल आकांक्षा और इसी कारण अधिकांश तत्सम (विशुद्ध संस्कृत) शब्दों का आधुनिक काल में समावेश हुआ। आधुनिक समय में जो संस्कृत के 'कृष्ण' शब्द तत्सम है तथा 'कान्हा' उसका तद्भव रूप है किन्तु आजकल बिगड़कर 'किशन' हो गया है यह उसका अर्द्ध-तत्सम रूप है।

बँगला, मराठी, पंजाबी आदि भारतीय आर्य भाषाओं का हिन्दी पर प्रभाव अपवाद मात्र है क्योंकि हिन्दी बोलने वाले लोगों ने सम्पर्क में आने पर भी इन भाषाओं के बोलने का कभी प्रयत्न नहीं किया प्रत्युत इन भाषाओं के शब्दों पर हिन्दी की छाप अधिक गहरी है।

भारतीय अनार्य भाषाओं से आये हुए शब्द

हिन्दी के तत्सम तथा तद्भव शब्दों में अधिकांश शब्द ऐसे हैं जो प्राचीनकाल में अनार्य भाषाओं से तत्कालीन आर्य भाषाओं में आ मिले थे जो हिन्दी के लिए वस्तुतः आर्यभाषा के शब्दों के सदृश्य हैं। प्राकृत वैयाकरण जिन प्राकृत शब्दों को संस्कृत शब्दों में नहीं पाते थे उन्हें अनार्य भाषाओं में आये हुए समझ लेते थे। इन्होंने बहुत से बिगड़े हुए तद्भव शब्दों को भी देशी समझ रखा था। तेलगू, तामिल, द्राविड़, कोल आदि अन्य अनार्य भाषाओं से आधुनिक काल में आये हुए शब्द हिन्दी में अपवाद-मात्र हैं।

द्राविड़ शब्दों का प्रयोग हिन्दी में प्रायः बुरे अर्थों में होता है। द्राविड़ 'पिल्ले' शब्द का अर्थ पुत्र होता है, यही शब्द हिन्दी में 'पिल्ला' होकर कुत्ते के बच्चे के अर्थ में व्यवहृत होता है। मूर्द्धन्य वर्णों वाले शब्द यदि सीधे द्राविड़ भाषाओं से नहीं आये हैं तो कम से कम यह तो मानना ही पड़ेगा कि उन पर द्राविड़ भाषाओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। हिन्दी पर कोल भाषाओं का प्रभाव उतना स्पष्ट नहीं है पर ऐसा जान पड़ता है कि 'कोडी' जो बीस की संख्या का द्योतक है कदाचित कोल भाषा से ही आया है।

विदेशी भाषाओं के शब्द

एक लम्बे समय तक भारत विदेशी शासन में रहा, इस कारण यह स्वाभाविक है कि विदेशी भाषा का प्रभाव हिन्दी पर पड़े। इसे दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है— पहला इस्लामी और दूसरा यूरोपीय प्रभाव जो प्रायः सैद्धांतिक रूप में बहुत कुछ समान हैं। एक प्रकार के वे शब्द जो कचहरी,

आभार-प्रदर्शन

संसार में बिना साधन के कोई बड़ा काम हाथ में लेना बहुत दुष्कर **होता है, यही हाल** मेरा भी था। मेरी कठिनाइयां क्या क्या थीं और किन-किन मित्रों द्वारा हल हुई उनके नाम परिचयार्थ यहां देते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है— श्री ओ३म्प्रकाशजी होरा और श्री रामदास जी ने चित्रणकला का पूरा एक वर्ष तक साथ दिया यहां तक कि उन्हें कई बार देश-पर्यटन के लिए भी जाना पड़ा। निताईचन्द्रदत्त व उनके अन्य साथियों ने मुद्रणकला का सामान जुटाया और हमारे परम मित्र श्री विन्ध्येश्वरदयालुजी ने रात-दिन घूम कर जर्मन कलाकारों की मदद दिलाई तथा सहायक पुस्तकों की सामग्री परम पूज्य गुरु नानकचन्दजी नेसंग्रह की। अन्त में हम श्री चन्द्रपालजी के सदा आभारी रहेंगे क्योंकि प्रूफ आदि का सम्पूर्ण कार्य इन्होंने ही किया।

—प्रकाशक

सेना, स्कूल आदि विदेशी संस्थाओं में प्रयुक्त होते थे दूसरे वे शब्द जो विदेशी प्रभाव के कारण आई हुई नवीन वस्तुओं तथा- नये ढङ्ग के पहनावे, खाने, खेल, यन्त्रों के नाम आदि होते थे।

फारसी, अरबी, तुर्की और पश्तो के शब्दों का प्रभाव १००० ई० के लगभग से होने लगा। प्रायः ६००वर्ष तक हिन्दी-भाषी जनता पर तबतक रहा जबतक हिन्दी-भाषी जनता पर तुर्क, अफगान और मुगलों का शासन रहा जिनके कारण बहुत से शब्द ग्रामीण भाषा तक में समाविष्ट हो गये। सूर, तुलसी आदि वैष्णव महाकवि भी विदेशी शब्दों के प्रभाव से न बच सके। मुसलमानों के राजत्वकाल में हिंदी में प्रचलित विदेशी शब्द अधिकतर फारसी से ही आये क्योंकि तत्कालीन मुसलमान शासकों ने राजकीय भाषा फारसी को ही मान रखा था। अरबी और तुर्की आदि के जो शब्द हिन्दी में मिलते हैं वे भी फारसी में से ही होकर आये, यथा—कैंची, काबू, गलीचा, तोप, बीबी, दारोगा आदि।

१५०० ई० के लगभग यूरोपीय लोगों का भारत में आना-जाना आरम्भ हो गया था। किन्तु इनकी भाषा का प्रभाव तीन-सौ वर्ष तक नहीं पड़ा इसका कारण यह था कि इनका कार्यक्षेत्र आरम्भ में समुद्र तटवर्ती प्रदेशों में ही विशेपकर रहा इसी कारण प्राचीन हिन्दी साहित्य यूरोपीय भाषा से अछूता रहा। १८०० ई० के लगभग जब मुगल राज्य का क्षय हो गया और अंग्रेजों ने शासन सत्ता हथियाली तब हिन्दी शब्दों पर अंग्रेजी भाषा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। यथा अपील, अस्पताल, आर्डर, आफिस, इंच, इनकम-टैक्स, इस्कूल, इस्पीच, एजंट, ऐक्टर, कलक्टर, कलैंडर, कापी, गजट, गिलास, गैस, चाक, चिक, जंपर, जज, जेल आदि बहुत से शब्द हिन्दी-भाषा में आ मिले जिनको निकालना सर्वथा असंभव है। कुछ पुर्तगाली डच और फ्रांसीसी शब्द तो हिन्दी में ऐसे घुल मिल गये हैं कि सहसा विदेशी नहीं मालूम पड़ते। यथा-अलमारी, आचार, इस्पात, कमीज, कनरतर, कमरा, काज, गमला, गिर्जा, गोभी, तौलिया, नीलाम, परात, पिस्तौल, पीपा, बालटी, मेज, सितार आदि। फ्रांसीसी-कार्तूस,कूपन, अंग्रेज-डच-तुरुप, बम (गाड़ी का)।

समान्यतः हिंदी भाषा का विकास तीन मुख्य कालों में बांटा जा सकता है-१-प्राचीन काल (जो ११०० से १५०० ई० तक)। २-मध्यकाल (१५०० से १८०० ई० तक) और ३-आधुनिक काल जिसका आरम्भ १८०० से होता है।

प्राचीनकाल

हिन्दी भाषा के इतिहास का आरम्भ तबसे हुआ जब अपभ्रंश और प्राकृतों का प्रभाव ११०० ई० में हिन्दी की बोलियों के निश्चित स्पष्ट रूप विकसित नहीं हो पाये थे। इस काल में तीन प्रकार की सामग्री थी, जो १-शिलालेख, ताम्रपत्र और प्राचीन पत्र आदि । २-अपभ्रंश काव्य और ३-चारण काव्य आदि रूपों में मानी जाती है।

मध्यकाल

इसका प्रारम्भ उस समय होता है जब हिन्दी में अपभ्रंशों का प्रभाव बिल्कुल हट गया था। हिन्दी की बोलियां विशेषतः ब्रज और अवधी अपने पैरों पर स्वतंत्रता पूर्वक खड़ी हो गई थी।

आधुनिक काल

जब से हिन्दी की बोलियों के मध्यकाल के रूपों में परिवर्तन आरंभ हो गया है तथा साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से खड़ी बोली ने हिन्दी की दूसरी बोलियों को दबा दिया है और आज जब भारत स्वतंत्र होगया है और हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त हो गया है तब ऐसी अवस्था में हिंदी के शब्द-भंडार को बढ़ाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

(लघ्वावलि) संकेत-चिह्नों का विवरण

[अव्य.]	अव्यय।	(अं.)	अंग्रेजी भाषा
[उप.]	उपसर्ग	(अ.)	अरबी ,,
[क्रि. अ.]	क्रिया अकर्मक	(गुज.)	गुजराती ,,
[क्रि. वि]	क्रिया-विशेषण	(डिं.)	डिंगल ,,
[क्रि. स.]	क्रिया सकर्मक	(ता.)	तातारी ,,
[प्रत्य.]	प्रत्यय	(तु)	तुर्की ,,
[वि.]	विशेषण	(देश.)	देशज ,,
[संज्ञा उ.]	संज्ञा उभयलिङ्गी दोनों	(पा.)	पाली ,,
	लिङ्गों में प्रयुक्त होनेवाली	(पुर्त.)	पुर्तगाली ,,
[संज्ञा पु.]	संज्ञा पुंलिङ्ग	(प्रा.)	प्राकृत ,,
[संज्ञा स्त्री.]	संज्ञा स्त्रीलिङ्ग	(फा.)	फारसी ,,
[सर्व.]	सर्वनाम	(फ्रैं.)	फ्रैञ्च ,,
[स्त्री.प्र.]	स्त्रीलिङ्ग-प्रधान (स्त्रीलिङ्ग	(बँग.)	बंगला ,,
	में ही प्रयुक्त होने वाला)	(सं.)	संस्कृत ,,
❀ कविताओं में प्रयुक्त होनेवाला शब्द।		(स्पे.)	स्पेनी ,,
× स्थानिक बोलचाल में प्रयुक्त होने वाला शब्द		(हिं.) (हिं.)	हिन्दी ,,

हिन्दी अक्षरों का क्रम

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, क-क्ष, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज-ज्ञ, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त-त्र, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह।

नालन्दा
विशाल शब्द सागर

अ (अ)

अ हिन्दी और संस्कृत के स्वर वर्णों का प्रथम अक्षर, इसका उच्चारण कण्ठ से होता है इस कारण यह कण्ठ्यवर्ण कहलाता है। व्यञ्जनों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के विना नहीं हो सकता, यथा क्+अ=क, ख् + अ = ख इत्यादि। यह अक्षरों में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। तन्त्रशास्त्र के अनुसार अकार से ईश्वरत्व का ज्ञान होता है। (१) अभाव अथवा रहित यथा अपार, अक्षय। (२) अपकर्ष यथा—अनादर। (३) क्षय, न्यूनता यथा—अपरिपक्व, अबुद्धि। (४) वृद्धि, श्रेष्ठ्य यथा—अमानुषिक, अपौरुषेय, अलौकिक।

[संज्ञा पु.] ब्रह्मा, सृष्टि, अमृत, मेघ, ब्राह्मण कीर्ति, कण्ठ, ललाट।

अइना [पु.] (फा.) आइना, दर्पण।

अइया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दादी, नानी इत्यादि के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द।

अइली [ग्रा.] (हिं.) आता हूँ।

अइसन [वि ग्रा.] (हिं.) इस प्रकार का, ऐसा।

अइसा [वि.] (हिं.) ऐसा, इस प्रकार का।

अइहैं [ग्रा.] (हि.) आवेंगे।

अउ [अव्य] (हिं.) और।

अउठा [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा नापने की लकड़ी।

अउर [अव्य] (हिं) और।

अऊत [वि] (हिं.) सन्तानहीन, विना पुत्र का।

अऊलना [क्रि.] (हिं.) गरमी पड़ना, जलना।

अऋण [वि] (सं.) ऋणरहित, विना कर्जेवाला।

अऋणी [वि.] (सं.) जिसने ऋण न लिया हो, जिसने ऋण चुका दिया हो।

अएरना [क्रि.] (हिं.) १— अङ्गीकार करना, मानना, स्वीकार करना।

[राजस्थानी] २—यत्नपूर्वक सम्भाल कर रखना।

अउघड़ [संज्ञा पु.] (हि.) औघड़ गोरखनाथ द्वारा चलाया हुआ उपासक सम्प्रदाय। इस सम्प्रदाय के अनुयायी सन्यासी शिव की पूजा करते हैं।

अंक, अङ्क [सञ्ज्ञा पु.] (सं.) १—चिह्न, निशान, छाप, आंक। २—लेख, लिखावट, अक्षर। ३—संख्या का चिह्न यथा १, २, ३ आदि। भाग्य, किस्मत। ५—नज़र लगने से बचाने के निमित्त बच्चों के माथे पर लगाई गई काजल की विंदिया, डिठौना, अनखा। ६—दाग़, धब्बा। ७—नाटक का एक परिच्छेद। ८—एक से नव तक की सख्या। ९—गोद, अङ्कवार। १०—गोद देह। ११—पाप, दुःख। १२—वार, दफा। १३—एक प्रकार का रूपक।

अङ्क देना=आलिङ्गन करना। नम्बर देना।

अङ्क भरना=लिपटाना। लिपटना। दोनों हाथों द्वारा घेरकर प्यार से दबाना।

अङ्क लगाना=गले लगाना। नम्बर डालना।

अंकक, अंङ्कक [संज्ञा पु.] (सं.) १—गिनती करने वाला। २—चिह्न लगाने वाला।

अंककार, अङ्ककार [संज्ञा पु.] (सं.) परीक्षक, न्यायाधीश, हार तथा जीत का निर्णायक।

अंकगणित, अङ्कगणित [संज्ञा पु.] (सं.)संख्याओं का हिसाब। वह विद्या जिसके द्वारा जोड़, गुणा, भाग, शेष आदि का ज्ञान हो।

अँकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—कङ्कड़ का छोटा टुकड़ा। २—कङ्कड़ अथवा पत्थर का छोटा-सा कण या टुकड़ा जिसे अनाज में से चुनकर निकाल लिया जाता है।

अँकटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) महीन छोटी कङ्कड़ी।

अँकड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) कङ्कड़, पत्थर का छोटा टुकड़ा।

अँकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—काँटी, कँटिया। २—तीर का मुड़ा हुआ फल। ३—लता, बेल। ४—वृक्ष से फल तोड़ने का बांस का डण्डा जिसके सिरे पर फँसाने के निमित्त एक छोटी लकड़ी बँधी रहती है। लग्गी।

अंकधारण, अङ्कधारण [संज्ञा पु] (सं.) तप्त मुद्रा के द्वारा चिह्नों को दगवाना।

अंकधारिणी, अङ्कधारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) तप्तमुद्रा के द्वारा चिह्न धारण करने वाली।

अंकधारी [वि.] (हि.) गरम धातु के द्वारा शरीर पर शङ्ख, चक्र या त्रिशूल अङ्कित कराने वाला

अंकपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कागज का एक छोटा टुकड़ा जो निश्चित मूल्य पर मिलता है टिकट, स्टाम्प।

अंकपत्रित [वि.] (सं.) अङ्कपत्र लगा हुआ। टिकट लगा हुआ।

अंकन, अङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) १—निशान करना। चिह्न करना। २—लेखन, लिखना यथा—चित्राङ्कन, चरित्राङ्कन।

अँकना [क्रि.] (हिं.) आँकना, कूतना। हिसाब लगाना।

अंकनीय, अङ्कनीय [वि.] (सं.) चिह्न करने योग्य, अङ्कन योग्य, लेखनीय, छापने के लायक।

अंकपरिवर्त्तन, अङ्कपरिवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) करवट बदलना, करवट लेना।

अंकपलई [संज्ञा स्त्री.) (हिं.) अङ्कपल्लव। वह विद्या जिसके द्वारा अङ्कों को अक्षरों के स्थान पर लाते हैं तथा उनके समूह से उसी प्रकार अभिप्राय निकालते हैं जिस प्रकार शब्दों तथा वाक्यों से। यथा उदाहरणतया '१, को 'क, अक्षर समझें।

अंकपालिका, अङ्कपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाई, धाय।

अंकमाल, अङ्कमाल [संज्ञा पु.] (सं.) गले लगाना। भेट, आलिङ्गन, परिरम्भण।

अङ्कमाल देना = गले लगाना। आलिङ्गन करना।

अंकमालिका, अङ्कमालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अङ्कमालिका। १—छोटी माला, छोटा हार। २—भेंट, आलिङ्गन।

अँकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) अङ्कुर। एक प्रकार की घास जो गेहूँ या जौ के खेत में स्वतः पैदा होती है।

अँकरास [संज्ञा पु.] (हिं.) अकरास। अंगड़ाई। देह टूटना। कार्य-शिथिलता।

अँकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंकरा। एक प्रकार की घास।

अँकरोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंकटी, छोटी कङ्कड़ी। खपड़े का छोटा टुकड़ा।

अँकवार, अङ्कवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अङ्कपाली, अङ्कमाल। गोद, छाती।

अँकवार देना=गले लगना। भेंटना। छाती से लगना। आलिङ्गन करना।

अँकवार भरना=गले मिलना। गोद भरना। सन्तानयुक्त होना।

अंकविद्या, अङ्कविद्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) अङ्कविद्या। अङ्कगणित। वह विद्या जिसमें अङ्कों द्वारा हिसाब किया जाता है।

अँकाई, अङ्काई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—आँकना अन्दाजा। तखमीना। कूत। २—जमींदार तथा किसान फ़सल में से हिस्सों का ठहराव।

अँकाना [क्रि.] (हिं.) अन्दाजा करना, परखना,

अँकवाना [क्रि.] (हिं.) मूल्य निर्धारित कराना। जँचवाना। कूत करवाना। परीक्षा करना। मूल्य निर्धारित कराना।

अँकाव, अङ्काव [संज्ञा पु.] (हिं.) कूतने अथवा आँकने का कार्य। तख़मीना वा अन्दाज़ा करने का कार्य। अँकाई।

अंकावतार, अङ्कावतार [संज्ञा पु.] (सं.) अङ्कावतार। नाटक के एक अंक के अन्त में आने वाले दूसरे अंक की घटना का पात्रों द्वारा सूचित करने का संकेत।

अंकिका, अङ्किका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—चिह्न करने वाली। २—हिसाब रखने वाली। ३—गिनती करने वाली।

अंकित, अङ्कित [वि.] (सं.) अङ्कित। १-चिह्नित। दागदार। निशान किया हुआ। २—लिखित। खिचित। ३—वर्णन किया हुआ। वर्णित।

अंकितक [संज्ञा पु.] (सं.) वह काग़ज़ का छोटा-सा टुकड़ा जिस पर नाम पता आदि लिखकर किसी वस्तु पर चिपकाया जाता है।

अंकित-मूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह मूल्य जो किसी वस्तु पर अंकित रहता है पर किन्हीं कारणों या विशेष अवस्थाओं में घटता-बढ़ता है। जैसे रुपये का मूल्य सोलह आने होने पर भी उसकी विनिमय दर चौदह या अठारह आने भी हो सकती है। फेस-वैल्यू।

अंकिल, अङ्किल [वि.] (हिं.) अंकित। चिह्नित। निशान किया हुआ। दाग़ा हुआ।

[संज्ञा पु.] दाग़ वाला। दाग़ा हुआ सांड।

अँकुड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—लोहे का मोड़कर टेढ़ा किया हुआ कांटा। २—लोहे का मुड़ा-हुआ छड़ जिसके द्वारा मनिहार (चुड़िहार) लोग भट्टी में से पिघला हुआ सा कांच निकालते हैं। ३—पशुओं के पेट की पीड़ा। ४—मुड़ी हुई कील अथवा कटिया जिसके द्वारा पटहार तागे आदि अटका कर काम करते हैं। लकड़ी आदि तौलने की बड़ी तराजू की डंडी के बीचों-बीच लगा हुआ लोहे का टेढ़ा कांटा

अँकुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—मुड़ी हुई काँटी। २—झुके हुए सिरे की लोहे की छड़ जो लोहार के भट्टी खोदने के उपयोग में आती है। ३—हल की लकड़ी का वह भाग जिसमें फाल (फार) लगाया जाता है। ४—तांगे तथा इक्के के पहिये के जोड़ों में लगी हुई कील।

अँकुड़ीदार [वि.] (हिं.) अँकुड़ी लगा हुआ। कसीदाकारी का एक भेद जिसे 'गड़ारी' भी कहते हैं।

अंकुर, अङ्कुर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—नया उगा हुआ तृण। प्ररोह। गाभ। अँखुवा। २—आँख। कोंपल। ३—कलिका। ४—नोक। ५—रक्त, खून। ६—रोंआँ। लोम। ७—जल ८—भरते हुए घाव में दिखाई देने वाले छोटे-छोटे नये दाने। मांस के छोटे दाने। अंगूर। भराव।

अंकुरक, अङ्कुरक [संज्ञा पु.] (सं.) घोंसला।

अँकुरना [क्रि. अ.] (हिं.) उगना। उत्पन्न होना। अंकुर फोड़ना। बीज जमना। निकलना।

अँकुराना [क्रि. अ.] (हिं.) अंकुर निकलना। उगना। अँकुरना।

अँकुरित, अङ्कुरित [वि.] (हिं.) १—अंकुर निकला हुआ। अँखुवा फूटा हुआ। २-उत्पन्न।

अंकुरक, अङ्कुरक [संज्ञा पु.] (सं.) घोंसला।

अंकुरना [क्रि. अ.] (हिं.) उगना। उत्पन्न होना। अंकुर फोड़ना। बीज जमना। निगलना।

अंकुराना [क्रि. अ.] (हिं.) अंकुर निकलना। उगना। अंकुरना।

अंकुरित, अङ्कुरति [वि.] (हिं.) (१) अंकुर निकला हुआ। अंखुवा फूटा हुआ। (२) उत्पन्न।

अंकुरितयौवना, अङ्कुरितयौवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यौवनावस्था प्राप्त युवती जिसके कुच आदि चिह्न निकल आये हों। वह स्त्री जिसका यौवन उमड़ रहा हो। उमड़ती हुई जवान स्त्री।

अंकुरण [संज्ञा पु.] (सं.) बीज का जमीन में पड़ कर निकलना या अंकुरित होना।

अंकुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भिगाये हुये चने की घुघनी।

अंकुश, अङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का कांटा जिसके द्वारा हाथी चलाया जाता है। गजबाग (२) कण्ट्रोल। प्रतिबंध।

अंकुश देना=ज़बरदस्ती करना। दबाव डालना वश में करना

अंकुश मानना=दबाव मानना

अंकुशग्रह, अङ्कुशग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) हाथीवान फीलवान। महावत

अंकुशदंता, अङ्कुशदन्ता [वि.] (सं.) एक प्रकार का हाथी। जिसका एक दांत सीधा तथा दूसरा नीचे की ओर झुका हुआ होता है।

अंकुशदुर्धर, अंङ्कुशदुर्धर [संज्ञा पु.] (सं.) मतवाला हाथी।

अंकुस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अंकुश। लोहे का कांटा जिसके द्वारा हाथी चलाया जाता है। (२) प्रतिबंध।

अंकुसा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा अंकुश।

अंकुसी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १—लोहे की झुकी हुई कील जो किसी पदार्थ के लटकाने तथा फंसाने के काम आती है। २—ठठेरों का एक औजार जो लोहे अथवा पीतल का होता है जिसके द्वारा भट्टी की राख निकालते हैं। ३—फल तोड़ने की लग्गी के सिरे पर बंधी छोटी सी लकड़ी। ४—नारियल के भीतर गरी निकालने वाला सूजा।

अंकोट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंकोल'

अंकोटक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंकोल'

अंकोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे का एक प्रकार का कांटा जिसमें रस्से को फंसाकर पानी में नाव खींची जाती है। बड़ी कंटिया। एक प्रकार का छोटा लंगर।

अंकोर, अङ्कोर [संज्ञा पु.] (हिं.) (१) गोद, छाती (२) रिशवत। घूस। भेंट। नज़र।

अँकोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंक। गोद। (२) आलिंगन

अंकोल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष

अंक्य, अङ्क्य [वि.] (सं.) अंकित करने योग्य। चिह्न करने योग्य। दाग़ लगाने लायक अपराधी।

विशेष—प्राचीन काल में विशेष प्रकार के अपराधियों के माथे कई प्रकार से गरम लोहे से दाग़ने की सजा देते थे। उसे दाग़ी कहते थे।

अँखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—आँख, नेत्र, २—चितवन।

अँखमिचौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आँखमिचौली।

अँखमीचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आँखमिचौली।

अँखाना [क्रि.] (हिं.) क्रोध दिखलाना।

अँखिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—नक्काशी करने की कलम। २—आँख। ३—बीज का महीन अंकुर।

अँखुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) अंकुर। बीज में से निकला हुआ महीन अंकुर। कोंपल। डाभ।

अँखुआना [क्रि. अ.] (हिं.) अंकुरित होना। बीज जमना।

अँग, अङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अङ्ग। १—शरीर। बदन। देह। तन। गात्र। २—अवयव। ३—भाग। टुकड़ा। अंश। खण्ड। ४—भेद। प्रकार। ५—सहायक। सुहृद। तरफ़दार। ६—प्रकृति। ७—उपाय। ८—वह साधन जिससे कोई कार्य संम्पादित किया जाये। ९—जन्मलग्न। १०—वर्तमान विहार प्रदेश के पास का अङ्गदेश किसी राजधानी का

नाम चम्पा था। ११—ध्रुव के वंश का एक राजा। १२—एक भक्त का नाम। १३—योग के आठ अङ्ग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा तथा समाधि। १४—राजनीति के सात अङ्ग—स्वामी, आमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग तथा सेना।

अङ्ग उभरना=जवानी के लक्षण होना।

अङ्ग-अङ्ग ढीला होना = शिथिलता आना। थक जाना।

अङ्ग-अङ्ग फूले न समाना = अत्यधिक प्रसन्न होना।

अङ्ग-अङ्ग मुसकराना=१—प्रसन्नता से रोम-रोम खिलना। २—सौन्दर्य की परिपूर्णता झलकना।

अङ्ग करना=स्वीकार करना।

अङ्ग छूना=सौगन्द खाना। माथा छूना। शपथ खाना।

अङ्ग टूटना = अंगड़ाई आना। शिथिलता होना।

अंगदेना=थोड़ा आराम करना।

अंग में अंग चुराना=संकुचित होना।

अंग मोड़ना=१—शरीर के अवयवों का सिकोड़ना। २—अंगड़ाई लेना। ३—पीछे हटना।

अंग लगना=आलिंगन करना। लिपटाना। देह को पुष्ट करना। शरीर को बलवान करना। ३—हज़म होना। ४—काम में आना।

अंग लगाना= १—लिपटाना। २—साथ लगा देना यथा—इस कन्या को किसी के अंग लगा दो। ३—स्वीकार करना। ४—पहनना।

अंग लाना=हृदय से लगाना।

अंगकर्म, अङ्गकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर को संवारना अथवा मलना।

अंगग्रह, अङ्गग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का दर्द। देह की पीड़ा। शरीर का जकड़ना। देह में पीड़ा देने वाला रोग।

अंगचालन, अङ्गचालन [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ पैर हिलाना।

अंगच्छेद, अङ्गच्छेद [संज्ञा पु.](सं.) शरीर का कोई अंग अथवा अवयव निकालना या कर देना। ऐम्प्यूटेशन।

अंगज, अङ्गज [वि.] (सं.) शरीर से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १—पुत्र। बेटा। २—पसीना ३—केश। बाल। ४—काम-क्रोध आदि भाव ५—कामदेव। ६—रोग। ७—मद।

अंगजा, अङ्गजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) कन्या। पुत्री।

अंगजात, अङ्गजात [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। काम। रोग। मद। रोम। रुधिर। पसीना।

अंगजाता, अङ्गजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेटी। पुत्री।

अंगड़खंगड़, अङ्गड़खङ्गड़ [वि.] (हिं.) १—टूटा फूटा अथवा गिरा पड़ा अंश। २—बचा खुचा।

अंगड़ाई, अङ्गड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देह टूटना। जम्हाई के साथ अंगों फैलाना।

अंगड़ाई तोड़ना=कुछ काम न करना। आलसी बने रहना।

अगडाना [क्रि. अ.] (हिं.) अंगड़ाई लेना बदन तोड़ना। अवयवों को तानना अथवा फैलाना।

अंगण, अङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) आंगन। चौक। सहन। घर के बीच का खुला हुआ भाग। चबूतरा।

अंगति, अङ्गति [संज्ञा पु.] (सं.) १—अग्नि। ब्रह्मा। ३—विष्णु। ४—अग्निहोत्री। सवारी।

अंगत्राण, अङ्गत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) अँगरखा। कुरता। कवच। शरीर को ढकने वाला वस्त्र।

अंगद, अङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.)१—एक प्रकार का आभूषण जो बाहुओं पर बांधा जाता है। २—बाली का पुत्र। ३— लक्ष्मण के दो पुत्रों में से एक का नाम।

अंगदान, अङ्गदान [संज्ञा पु.] (सं.) १—संग्राम से भागना। लड़ाई से पीछे फिरना। पीठ दिखलाना। २—रति। तन समर्पण।

अंगद्वार, अङ्गद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के मुख, नासिका आदि दस छिद्र।

अंगधारी, अङ्गधारी [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर धारण करने वाला। प्राणी।

अंगन, अङ्गन [संज्ञा पु.] (सं.) आँगन। सहन। चौक।

अंगना, अङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दरी। रूपवती स्त्री। अच्छे अङ्गों वाली स्त्री। कामिनी।

अंगनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहन। चौक। आंगन

अंगनाप्रिय, अङ्गनाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक का वृक्ष।
[वि.] स्त्री को प्रिय।

अँगनैया [संज्ञा पु.] (हिं.) आंगन। सहन। चौक

अँगन्यास, अङ्गन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्रशास्त्रानुसार मन्त्रों को पढ़ते हुए अङ्गस्पर्श करना।

अंगपाक, अङ्गपाक [संज्ञा पु.] (सं.) अंग पकने का रोग। शरीर के किसी भाग का सड़ना। देह में व्रण होना।

अंगपाली, अङ्गपाली [संज्ञा पु.] (सं.) आलिंगन

अंगप्रोक्षण, अङ्गप्रोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—गीले कपड़े द्वारा शरीर से मल साफ करना। २—शरीर पोंछना। देह पोंछना वा अंगोछना

अंगभंग, अङ्गभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—शरीर के किसी अवयव का टूटना या नष्ट होना। २—मोहित करने के निमित्त की गई स्त्री की कटाक्ष क्रिया।

अंगभंगी, अङ्गभङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) स्त्रियों का हावभाव। स्त्रियों की मोहित करने की क्रिया।

अंगभाव, अङ्गभाव [संज्ञा पु.] (सं.) गाते समय मन के भावों को प्रदर्शित करने के निमित्त मटकाना।

अंगभूत, अङ्गभूत [वि.] (सं.) १—अंग से उत्पन्न। २—भीतरी। अन्तर्गत।

अंगमर्द, अङ्गमर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) १—हड्डियों में पीड़ा। हड़फूटन का रोग। २—शरीर पर मालिश करने वाला नौकर। हाथ पैर दबाने वाला सेवक। नौकर। सेवक। भृत्य।

अंगमर्दन, अङ्गमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की मालिश। हाथ पैर दबाना। देह दबाना।

अंगरक्षक, अङ्गरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) सुरक्षा के निमित्त रखा गया भृत्य। बॉडीगार्ड।

अंगरक्षा, अङ्गरक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की रक्षा। देह की हिफाज़त।

अँगरखा, अङ्गरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) पहिनने का वस्त्र। घुटने तक का अंगा जिसमें बांधने के लिए बंद टँके रहते हैं। चपकन।

अंगरस, अङ्गरस [संज्ञा पु.] (सं.) पत्ती, फूल अथवा फल का कूटकर निचोड़ा हुआ रस। रांग।

अँगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगारा। धधकता हुआ कोयला। बैलों को होने वाला एक रोग।

अंगराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगड़ाई।

अंगराग, अङ्गराग [संज्ञा पु.] (हिं.) १—चन्दन केसर आदि का लेप या उबटन। २—वस्त्राभूषण। ३—शरीर की शोभा के निमित्त महावर आदि की सामग्री। ४—स्त्रियों के शरीर के पांच अंगों की सजावट यथा—मांग में सिंदूर, माथे पर रोली, गाल पर तिल के दाग की रचना, केसर का लेप, हाथ पैर में मेंहदी या महावर। ५—एक प्रकार की सुन्दर बुकनी। पाउडर।

अंगराज, अङ्गराज [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगदेश का राजा कर्ण। राजा दशरथ के परम मित्र लोमपाद।

अंगराना [क्रि.] (हिं.) अंगड़ाना। अंगड़ाई लेना। बदन तोड़ना।

अंगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जिरहबख्तर। कवच।

अँगरेज, अङ्गरेज [संज्ञा पु.] (अं.) इङ्गलैण्ड का निवासी। इङ्गलिस्तान का रहने वाला आदमी

अँगरेजी, अङ्गरेजी [वि.] (अं.) अंगरेजों की। इङ्गलैण्ड देश की।
[संज्ञा स्त्री.] अंगरेजों की भाषा। अंगरेजों की बोली।

अंगलेट [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर का ढांचा। देह

की गठन। काठी।

अँगवाना क्रि. स.] [हिं.) १—अङ्गीकार या स्वीकार करना। २—ओढ़ना। सिर पर लेना ३—सहन करना। बरदाश्त करना। उठाना।

अँगवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—गांव के थोड़े से भाग का स्वामी। २—खेत की जोताई में एक दूसरे की मदद करना या सहायता पहुँचाना।

अंगविकृति, अङ्गविकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपस्मार या मृगी रोग। मूर्च्छा रोग।

अंगविक्षेप, अङ्गविक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १—अङ्गों का हिलना। मटकना। चमकाना। २—नृत्य। नाच। ३—कलाबाजी।

अंगविद्या, अङ्गविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सामुद्रिक विद्या। शरीर के चिह्नों को देखकर जीवन की घटनाओं को बताने वाली विद्या। हाथ, पैर, मुख आदि के भावों अथवा रेखाओं को देखकर शुभाशुभ बताने वाली विद्या।

अंगविधि, अङ्गविधि [संज्ञा पु.] (सं.) अप्रधान विधि।

अंगविभ्रम, अङ्गविभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तिष्क का वह रोग जिसमें रोगी अपने अङ्ग को नहीं पहचानता। अंगभ्रान्ति।

अंगवैकृत, अङ्गवैकृत [संज्ञा पु.] (सं.) इशारा। इङ्गित। भाव।

अंगशुद्धि, अङ्गशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर साफ करने की विधि।

अंगशैथिल्य, अङ्गशैथिल्य [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की सुस्ती। अंग का ढीलापन। थकावट।

अंगशोष, अङ्गशोष [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर को क्षीण करने वा सुखाने वाला रोग। क्षयरोग। सुखंडी नामक रोग।

अंगसंग, अङ्गसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सम्भोग। मैथुन। रति संयोग।

अंगसंस्कार, अङ्गसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का शृङ्गार। देह का बनाव शृङ्गार। सुगन्धित द्रव्यों द्वारा देह की सजावट।

अंग-संस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) जीवविज्ञान के अन्तर्गत वह अंग अथवा शाखा जिसमें प्राणियों, वनस्पतियों आदि के अंगों तथा आकृतियों का विवेचन होता है। *मारफॉलोजी*

अंगसख्य, अङ्गसख्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रगाढ़ मैत्री। गहरी दोस्ती।

अंगसिहरी, अङ्गसिहरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कँपकँपी। ज्वर आने से पूर्व देह की कँपकँपी। २—जूड़ी।

अंगहानि, अङ्गहानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काम में त्रुटि।

अंगहार, अङ्गहार [संज्ञा पु.] (सं.) १—अंगविक्षेप। मटकना। चमकना। २—नाच।

अंगहारी, अङ्गहारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाचघर। नृत्य करने योग्य स्थान।

अंगहीन, अङ्गहीन [वि.] (स.) जिसका कोई एक अंग न हो। जिसके शरीर का कोई एक-एक भाग टूटा हुआ हो। लूला। लंगड़ा। २—कामदेव का एक नाम।

अंगांगीभाव, अङ्गाङ्गीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १—गौण तथा मुख्य भाव का परस्पर सम्बन्ध। अलंकार में संकर का एक भेद। जिनमें एक ही पद में कुछ अलंकार प्रधानरूप से आयें और उसके आश्रय अथवा उपकार से दूसरे और अलंकार भी आजावें।

अंगा, अङ्गा [संज्ञा पु.] (सं.) अँगरखा। चपकन

अंगाकड़ी, अङ्गाकड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) अंगारों पर सेकी हुई मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी।

अंगाकड़ी करना=बाटी तैयार करना।

अंगाकड़ी बनाना=बाटी बनाना या पकाना।

अंगार, अङ्गार [संज्ञा पु.] (सं.) दहकता हुआ कोयला। धुआँरहित अग्नि। चिनगारी।

अंगार उगलना=जली कटी बातें मुँह से निकालना। क्रोधित स्वर में दुर्वचन करना

अंगार बनाना या होना=१—लाल होना २—शरीर में सुर्खी आना।

अंगार बरसना=१— कड़ी धूप पड़ना २—आपत्ति आना।

अङ्गार सिर पर धरना=अत्यधिक कष्ट सहना।

अङ्गारों पर पैर रखना=१—जानबूझकर नुकसान के काम करना। २—जमीन पर पैर न रखना। इठलाकर चलना।

अङ्गारों पर लोटना=१—आग बबूला होना। झल्लाना। २—ईर्ष्या से जलना। ३—दुःख सहना।

अङ्गारों पर लोटाना=कष्ट देना।

अङ्गारा होना=क्रोध से लाल होना।

अंगारक, अङ्गारक [संज्ञा पु.] (हिं.) १—दहकता हुआ कोयला। २—मंगल ग्रह। ३—भंगरा। भँगरैया। भृङ्गराज। पियाबांसा। कुरंटक। कटसरैया का पेड़। ५—वह अधातवीय तत्व जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों तथा खनिज पदार्थों में पाया जाता है। कोयला, पैट्रोल आदि सब इसी के बल से जलते हैं। कार्बन।

अंगारकमणि, अङ्गारकमणि [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगा।

अंगारधनिका, अङ्गारधनिका [संज्ञा पु.] (सं.) अँगीठी।

अंगारपाचित, अङ्गारपाचित [संज्ञा पु.] (सं.) अंगार या आग पर बनाया हुआ खाना यथा—कबाब। नानखताई, बिस्कुट आदि।

अंगारपुष्प, अङ्गारपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) इंगुदी वृक्ष। हिंगोट का पेड़।

अंगारवल्ली, अङ्गारवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुङ्घची की बेल। चिरमटी की बेल। गुञ्जालता।

अंगारमणि, अङ्गारमणि [संज्ञा पु.] (सं.) मूङ्गा।

अंगारमञ्जरी, अङ्गारमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करौंदा।

अंगारमती, अङ्गारमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्ण की स्त्री।

अंगारवल्लरी, अङ्गारवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुङ्घची की बेल। गुञ्जालता। चिरमटी की बेल।

अंगारशकटी, अङ्गारशकटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अँगीठी। छोटी गाड़ी।

अंगारा, अङ्गारा [संज्ञा पु.] जलता हुआ कोयला

अंगारिणी, अङ्गारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अँगीठी। २—वह दिशा जिस पर सूर्यास्त की लाली छाई हो।

अंगारित, अङ्गारित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परास की कली।

[वि.] जली हुई लकड़ी।

अंगारी, अङ्गारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—चिनगारी। २—दहकते कोयले का छोटा टुकड़ा। बाटी। ३—दहकते कोयलों पर पकाई रोटी। ४—अँगीठी।

अँगारी, अङ्गारी [संज्ञा स्त्री.] (स.) १—ईख का पत्तियों वाला ऊपर का भाग। २—गँडेरी। ईख के कोल्हू में पेलने के निमित्त बनाये गये छोटे टुकड़े।

अंगिका, अङ्गिका [संज्ञा स्त्री.] (स.) अँगिया। चोली। कंचुकी। स्त्रियों की पहिरने की कुरती।

अँगिया, अङ्गिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चोली। कुरती। कंचुकी।

अंगिरस, अङ्गिरस [संज्ञा पु.] (स.) १—दस प्रजापतियों में से गिने जाने वाले एक ऋषि। २—बृहस्पति का नाम। ३—साठ संवत्सरों में से छठे संवत्सर का नाम। ४—कटीला। कतीरा।

अंगिरा, अङ्गिरा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अङ्गिरस'।

अंगिराना, अङ्गिराना [क्रि. अ.] (हिं) देखो 'अँगड़ाना'।

अंगी, अङ्गी [वि.] (सं.) १—शरीर धारण करने वाला। देहधारी। २—नेता। मुखिया। प्रमुख। प्रधान।

[संज्ञा पु.] (सं.) १—नाटक प्रधान नायक। नाटकों में 'शृङ्गार' तथा 'वीर' ये दो रस अङ्गी (प्रमुख) कहलाते हैं।

अंगीकार, अङ्गीकार [संज्ञा पु] (सं.) स्वीकार। सम्मति। मंजूर।

अंगीकृत, अङ्गीकृत [वि] (सं.) स्वीकार किया हुआ। ग्रहण किया हुआ। स्वीकृत।

अंगीकृति, अङ्गीकृति [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्वीकृति। मंजूरी।

अँगीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी अँगीठी।

अँगीठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आग रखने का पात्र। आतिशदान।

अँगुठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगूठे में पहिनने का गहना जिसे गरीब देहाती स्त्रियां पहिनती हैं

अंगुर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगुल।

अंगुरियावेल, [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगूर-लता के ढंग की बनाई हुई कालीन या गलीचे की बेल

अंगुरी, अङ्गुरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) ऊँगली।

अंगुल, अङ्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) साठ जव के बराबर की नाप। एक हाथ का चौबीसवाँ भाग।

अंगुलित्राण अङ्गुलित्राण [संज्ञा पु.] (सं.) अँगुली की रक्षा के निमित्त पहिना गया आवरण। अंगुस्ताना।

अंगुलितोरण, अङ्गुलितोरण [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिपुंडतिलक। एक प्रकार का टीका जिसे शैव लोग माथे पर चन्द्राकार समानांतर पतली रेखाओं द्वारा बनाते हैं।

अंगुलिपंचक, अङ्गुलिपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ की पांच उँगलियां यथा— अंगुष्ठ, तर्जनी (प्रदर्शनी), मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठा।

अंगुलिपर्व, अङ्गुलिपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) उँगली की पोर।

अंगुलि-प्रतिमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हस्ताक्षर के स्थान पर लगाई जाने वाली अंगुलि के अग्र-भाग की छाप। पहचान के लिए लगाई गई अंगुलियों के अग्रभाग की छाप।

अंगुलिमुद्रा, अङ्गुलिमुद्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) नाम खुदी हुई अंगूठी। मुहर लगाने के निमित्त नाम खोदी हुई अंगूठी।

अंगुलिमुख, अङ्गुलिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) उँगली के आगे का भाग।

अंगुलिवेष्टन, अङ्गुलिवेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) दस्ताना। उँगलियों तथा हथेली को ढकने का आवरण।

अंगुलिसंज्ञा, अङ्गुलिसंज्ञा [संज्ञा स्त्री] (सं.) उँगली से इशारा करना।

अंगुलिसन्देश, अङ्गुलिसन्देश [संज्ञा पु.] (सं.) चुटकी बजाकर सूचना देना।

अंगुलिस्फोटन, अङ्गुलिस्फोटन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उँगली चटकाना।

अंगुली, अङ्गुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—उँगली। २— हाथी की सूंड का अग्रभाग। ३—एक नदी का नाम।

अंगुली काटना=पछताना।

अंगुल्यादेश, अङ्गुल्यादेश [संज्ञा पु.] (सं.) उँगली का संकेत। उँगली द्वारा अभिप्राय प्रकट करना। इशारा।

अंगुल्यानिर्देश, अङ्गुल्यानिर्देश [संज्ञा पु.] (सं.) उँगली उठाना। दोषारोपण। लांछन। बदनामी।

अंगुश्तनुमाई [संज्ञा स्त्री.) (फा.) बदनामी। उँगली उठाना।

अंगुश्तरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अँगूठी। मुंदरी। मुद्रिका।

अंगुश्ताना [संज्ञा पु.] (सं.) अंगूठा। सिलाई करते समय दर्जियों की उँगली में पहिनने की लोहे या पीतल की टोपी।

अंगुष्ठ; अङ्गुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) अंगूठा। हाथ अथवा पैर की सबसे मोटी अंगुली।

अंगुसा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंकुर, अंखुआ।

अँगुसाना [क्रि. अ.] (हिं.) धोये हुए अनाज का अँखुआ निकलना। अंकुरित होना।

अँगुसी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १—हल में लगने वाला फाल। २—सुनारों का वह औजार जिसके द्वारा दीपक की लौ को फूंक टांका जोड़ते हैं इस टेढ़ी नली को बकनाल भी कहते हैं।

अँगूठा [संज्ञा पु.] (हिं.) तर्जनी के पास की मोटी अंगुली।

अंगूठा चूमना = १—खुशामद करना। २— आधीन होना।

अंगूठा दिखाना = १—विश्वास देकर समय पर निराश कर देना। २—निराश आदमी को कार्य बिगड़ने पर सहायता के स्थान पर और उलटा चिढ़ाना।

अंगूठा नचाना=चिढ़ाना।

अंगूठे पर मारना=परवाह न करना। तुच्छ समझना।

अंगूठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुंदरी। छल्ला। मुद्रिका।

अंगूर, अंङ्गूर [संज्ञा पु.] (फा.) १—द्राक्षा। दाख एक बेल पर लगने वाले फल का नाम। २— घाव भरने के समय दिखाई पड़ने वाले लाल दाने।

अंगूर तड़कना=घाव भरते समय आई हुई झिल्ली का तड़कना।

अंगूर फटना=भरते घाव के पतले चमड़े का फटना।

अंगूर बंधना या भरना=घाव के अंकुर पर झिल्ली आना। घाव भरना।

अंगूरी, अङ्गूरी [वि.] (फा.) १—अंगूर के रंग का। हलके हरे रंग का। २—अंगूर का बना हुआ।

अँगेजना [क्रि. स.] (हिं.) अपने ऊपर लेना। स्वीकार करना।

अंगेठा, अङ्गेठा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी अँगीठी।

अंगेठी, अङ्गेठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अँगीठी। आग रखने का पात्र।

अंगेरना [क्रि. स.] (हिं.) १—स्वीकार करना। अङ्गीकार करना। २—सहना।

अंगोछ, अङ्गोछ [क्रि. स.] (हिं.) गीली देह को वस्त्र से पोंछना।

अंगोछना [क्रि. अ.] (हिं.) गीले वस्त्र को फेर-कर शरीर को पोंछना या साफ करना।

अंगोछा, अङ्गोछा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—शरीर पोंछने का वस्त्र। तौलिया। गमछा। २— उपरना। उपवस्त्र। कन्धे पर डालने का वस्त्र

अंगोछी, अङ्गोछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देह पोंछने का छोटा कपड़ा। छोटी धोती।

अंगोजना [क्रि. स.] (हिं.) अंगेजना।

अंगोरा, अङ्गोरा [संज्ञा पु.] (देश.) मच्छर। भुनगा।

अंगोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अंगारी'।

अँगौरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) मजदूरी के स्थान पर हल-बैल मंगनी देना। वह खेत का मज-दूर जिसे मजदूरी के बदले मंगनी में हल व बैल देना।

अंग्रेज [संज्ञा पु.] (अं.) इङ्गलिस्तान देश का निवासी।

अंघड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर के अंगूठे में पहिनने का कांसे का गहना जिसे गरीब देहाती स्त्रियां पहिनती हैं।

अंघराई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पशुओं पर लगने वाला कर।

अंघस [संज्ञा पु.] (सं.) पाप। पातक। अपराध।

अंघिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) महीन आटा छानने की चलनी। अँगिया।

अंघ्रि [संज्ञा पु.] (सं.) पैर। चरण। पांव।

अंघ्रिप [संज्ञा पु.] (सं.) पेड़। वृक्ष।

अंचरा [संज्ञा पु.] (हिं.) साड़ी का वह छोर या सिरा जो छाती पर रहता है। साड़ी या ओढ़नी का सिर और छाती पर आने वाला भाग।

अंचल, अञ्चल [संज्ञा पु.] (सं.) १—आंचल। पल्ला। छोर। २—प्रांत अथवा देश की सीमा के आसपास का भाग। ३—किनारा। तट।

अञ्चल पसारना=नम्रतापूर्वक मांगना।

अंचला, अञ्चला [संज्ञा पु.] (सं.) अंचल। पल्ला। छोर।

अंचवन [संज्ञा पु.] (हिं.) आचमन। पीना। भोजनोपरान्त हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना।

अंचवना [क्रि. स.] (हिं.) आचमन करना। भोजन के उपरान्त कुल्ला करना।

अंचवाना [क्रि. स.] (हिं.) आचमन कराना। मुँह धुलाना। कुल्ला कराना।

अंचित [वि.] (सं.) आराधित। पूजित।

अंछर [संज्ञा पु.] (हिं.) १—मुख का एक प्रकार का रोग। २—अक्षर। जादू। टोना।

अंछर मारना = जादू करना। मन्त्र प्रयोग करना।

अंछया [संज्ञा पु.] (हिं.) इच्छा, अभिलाषा।

अंज, अञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल। पद्म। कमल का फूल।

अंजन, अञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १—सुरमा। काजल। २—रात। ३—स्याही। ४—एक प्रकार का बगला। ५—छिपकली। ६—एक प्रकार का वृक्ष। ७—एक पर्वत का नाम। ८—लेप। ९—माया। १०—एक सर्प। अलङ्कार में एक वृत्ति।

अंजनकेश, अञ्जनकेश [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक। चिराग। दीया।

अंजनकेशी, अञ्जनकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नख नामक सुगन्धित पदार्थ जिसके जलाने से अच्छी महक उड़ती है।

अंजनशलाका, अञ्जनशलाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुरमा लगाने की सलाई।

अंजनसार, अञ्जनसार [वि.] (सं.) सुरमा लगा हुआ।

अंजनहारी, अञ्जनहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आँख की पलक के किनारे की फुंसी। बिलनी। गुहेरी। २—एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा।

अंजना, अञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—हनुमान की माता। २—बिलनी। गुहेरी। ३—दो रंग की छिपकली।

अंजनानंदन, अञ्जनानन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान।

अंजनी, अञ्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—हनुमान की माता। २—माया। ३—चन्दन लगाए हुई स्त्री। ४—एक औषधि। कुटकी। ५—आंख की पलकों के किनारे पर होने वाली फुंसी। बिलनी। गुहेरी।

अंजबार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक पौधा जिसकी औषधि बनती है।

अंजरपंजर, अञ्जरपञ्जर [संज्ञा पु.] (हिं.) अस्थिपंजर। ठठरी। शरीर का जोड़।

अञ्जरपञ्जर ढीला होना = १—मशीन का बिगड़ना। २—अङ्ग-अङ्ग ढीला होना। ३—अभिमान नष्ट होना।

अंजल अञ्जल, अंजला अञ्जला [सज्ञा पु.] (सं.) दोनों हथेलियों को मिलाने से बना गड्ढा। २—उतनी वस्तु जितनी एक अंजुली में आती है। दो पसर। पाव के बराबर की तोल। ३—दोनों हथेलियों के बीच आने वाला अन्न जो दान के निमित्त निकाला जाता है।

अंजलिगत, अञ्जलिगत [वि] (सं.) १—अंजली में आया हुआ। २—प्राप्त। हाथ में आया हुआ।

अंजलिपुट, अञ्जलिपुट [संज्ञा पु] (सं.) उतना खाली स्थान जो दोनों हथेलियों के मिलाने से बनता है। अँजली।

अंजलिबद्ध, अञ्जलिबद्ध [वि.] (सं.) करबद्ध हाथ जोड़े हुए।

अंजवाना [क्रि. स.] (हिं.) सुरमा या अंजन लगवाना।

अंजहा [वि.] (हिं.) अन्न के मेल से बना हुआ।

अंजही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अनाज की मंडी। २—अन्न से बना हुआ।

अंजाना [क्रि. स.] (हिं.) काजल या सुरमा लगवाना।

अंजाम [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १—परिणाम। २—समाप्ति। अन्त। पूर्ति।

अंजित, अञ्जित [वि.] (सं.) १—काजल अथवा अञ्जन लगाये हुए। २—आराधित।

अंजीर, अञ्जीर [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष या उसका फल।

अंजुमन [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सभा। मण्डली।

अँजुरी, अंजुली, अञ्जुली❀+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अंजली' 'अँजली'।

अँजोर❀+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रकाश। उजाला। रोशनी। चांदना।

अंजोरना❀ [क्रि. स.] (हिं.) १—बटोरना। लेना हरना।

अँजोरा+ [वि.] (हिं.) उजेला।

अँजोरी❀+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रकाश। उजाला

अंझा [संज्ञा पु.] (सं.) छुट्टी। तातील। नागा। अनाध्याय।

अँटकना [क्रि. अ.] (हिं.) अटकना। रुकना।

अंटना [क्रि. अ.] (हिं.) १—समाना। २—पूरा होना। ३—पूरा पड़ना। काफी होना।

अंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाये। अंग्रेजों के बिलियर्ड खेलने का कमरा।

अंटाचित्त [क्रि. वि.] (हिं.) १—पीठ के बल पड़ा हुआ। सीधा। २—स्तम्भित।

अंटाबंधू [संज्ञा पु.] (हिं.) जुए में फेंके जाने वाली कौड़ी।

अँटिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) घास का छोटा पूला। छोटा पुलिन्दा। छोटा गट्ठा।

अँटियाना [क्रि. स.] (हिं.) १—उंगलियों के चारों ओर लपेट कर पिंडी बनाना। २—उंगलियों के बीच छिपा लेना। ३—गायब करना। ४—घास लकड़ियों आदि का मुट्ठा बांधना।

अंटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—उँगलियों के बीच का स्थान। २—गांठ। कमर पर की धोती की लपेट। ३—लच्छी।

अंटी करना = चीज उड़ा लेना।

अंटीबाज = १—धोखेबाज। २—रकम खा जाने वाला।

अंटी मारना = जूआ खेलते समय कौड़ी का उँगली में छिपा लेना। आंख बचाकर चुपके से दूसरे की वस्तु चम्पत कर देना।

अंटी रखना = छिपाकर रखना।

अंटीतल [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल की आँखों को ढकने के निमित्त बांधा जाने वाला ढक्कन।

अंठई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कीड़ा। चिचड़ी। किलनी।

अंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—चीया। बीज, गुठली। २—नवोढा के उभरते हुए स्तन। ३—गांठ, गिरह। ४—गिलटी।

अंठली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नवयौवना के उभरते हुए स्तन।

अंड, अण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १—अंडा। २—फोता। अण्डकोश। ३—विश्व। ब्रह्मांड। ४—वीर्य। ५—कस्तूरी का नाफा। मृग की नाभि जिसमें कस्तूरी निकलती है। ६—कोश ७—कामदेव। ८—सुन्दर देखने के लिए मकानों की छाजन के ऊपर के गोल कलश।

अंडकटाहा, अण्डकटाहा [संज्ञा पु.] (सं.) विश्व ब्रह्माण्ड।

अंडकोश, अण्डकोश [संज्ञा पु.] (सं.) १—फोता। लिङ्गेन्द्रिय के नीचे लटकने वाली थैली। सम्पूर्ण विश्व। ३—फल के ऊपर की बक्कल। ४—सीमा। हद।

अंडज, अण्डज [संज्ञा पु.] अंडे से उत्पन्न होने वाले जीव।

अंडजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

अंडबंड, अण्डबण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) १—बे-मतलब की बात।

अँडरना [क्रि. अ.] (हिं.) धान के पोधे में बाल निकलने की अवस्था।

अंडवृद्धि, अण्डवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फोते बढ़ने का रोग।

अंडस [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठिनाई।

अंडा, अण्डा [संज्ञा पु.] (सं.) वह गोला जिसमें से पक्षिओं के बच्चे निकलते हैं।

अंडा खटकना = अंडा फूटना।

अंडा ढीला होना = दुबला-पतला होना।

अंडा सेना = चिड़ियों का अंडों पर बैठकर गर्माना। गोद में बच्चे लेकर सोना। घर में बैठे रहना।

अंडाकार, अण्डाकार [वि.] (सं.) अंडे के समान आकार वाला।

अंडाकृति, अण्डाकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंडे की आकृति या शकल।

अंडिनि [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्त्रियों का योनि सम्बन्धी एक रोग जिसमें मांस बढ़कर बाहर निकल आता है।

अँड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—आग में सेकी हुई बाजरे की बाल। २—काते हुए सूत की लच्छी।

अंडी, अण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—रेंड नामक फल का बीज। २—एरंड नामक वृक्ष। ३—

एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

अँडुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पशु जो बधिया न किया गया हो। सांड। आंडू।

अँडुआना [क्रि. स.] (हिं.) पशु को बधिया करना

अँडुआ-बैल [संज्ञा पु.] (हिं.) साँड। बिना बधिया किया हुआ बैल।

अँडुवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

अंडैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जिसके पेट में अण्डे हों। अंडे वाली।

अंत, अन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १—समाप्ति। आखीर। २—मृत्यु। अवसान। ३—पार। छोर। ४—परिणाम। फल। नतीजा। ५—पास। समीप। ६—प्रलय। ७—अन्तिम भाग।

अन्त करना = १—हद्द करना। २—नष्ट करना समाप्त करना।

अन्त पाना = रहस्य जान लेना।

अन्त बनना = अन्तिम भाग का अच्छा होना आखीर अच्छा होना।

अन्त बिगड़ना = १—परिणाम बुरा होना। २—परलोक बिगड़ना।

अन्त होना = नाश होना। अवसान होना।

अंतक, अन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १—नष्ट करने वाला। २—काल। यमराज। ३—सन्निपात ज्वर का एक भेद। ४—ईश्वर। शिव।

अंतकर अन्तकर, अंतकर्त्ता, अन्तकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) संहार करने वाला। नाश अथवा अन्त करने वाला।

अंतकारक, अन्तकारक [संज्ञा पु.] (सं.) संहार करने वाला। नाश करने वाला।

अंतकारी, अन्तकारी [संज्ञा पु.] (सं.) विनाश करने वाला। संहार करने वाला।

अंतकाल, अन्तकाल [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम समय। मरणकाल। आखिरी वक्त। मौत।

अंतकृत, अन्तकृत [संज्ञा पु.] (सं.) अन्त करने वाला। यमराज।

अंतक्रिया, अन्तक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्तिम क्रिया। अन्त्येष्टि कर्म। मृतक कर्म।

अंतग, अन्तग [संज्ञा पु.] (सं.) निपुण। पूरा जानकार।

अंतघाई [वि.] (हि.) अन्त में दगा देने वाला। विश्वासघाती।

अँतड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आँत, अन्त्र।

अँतड़ी टटोलना = रोग पहिचानने के लिए पेट को दबाकर देखना।

अंतड़ियां कुलबुलाना या लगना १—खूब भूख लगना। २—भूख से सूखना।

अंतड़ियां गले पड़ना = किसी विपत्ति में फँसना।

अंतड़ियां जलना = तेज भूख लगना।

अंतड़ियों का कुल ओह अल्लाह पढ़ना = अत्यधिक भूख लगना।

अंतड़ियों के बल खोलना = बहुत दिन पश्चात् पेटभर भोजन करना।

अंतड़ियों में आग लगना = भूख से पेट में लहर-सी उठना।

अंतड़ियों में बल पड़ना = पेट में दुःख या दर्द होना।

अंतपाल, अन्तपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) दरवान। ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

अंतरंग, अन्तरङ्ग [वि.] (सं.) जिगरी। आत्मीय दिली।

[संज्ञा पु.] (सं.) जिगरी दोस्त। अभिन्न-मित्र

अंतरंग-मंत्री, अन्तरङ्ग-मन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति का निजी सचिव। प्राइवेट-सेक्रेटरी।

अंतरंग-सभा, अन्तरङ्ग-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रबन्धकारिणी सभा या समिति। कार्यकारिणी सभा।

अंगरंगी, अन्तरङ्गी [वि.] (सं.) जिगरी, दिली। भीतरी।

[संज्ञा पु.] (सं.) गहरा मित्र। जिगरी दोस्त।

अंतर, अन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १—भेद। फर्क। विभिन्नता। २—फासला। दूरी। दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। ३—मध्यवर्ती समय। दो घटनाओं के बीच का समय। ४—परदा। आड़।

अंतरअयन, अन्तरअयन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्तर्ग्रही। तीर्थों की एक विशेष प्रकार की परिक्रमा। २—एक देश का नाम।

अंतरअग्नि, अतरअग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट की अग्नि। जठराग्नि जिससे खाया हुआ भोजन पचता है।

अंतरचक्र, अन्तरचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—दिशाओं तथा विदिशाओं के मध्य के अन्तर का चार-चार अंशों में बांटने से बने हुए ३२ अंश। २—उपरोक्त दिशाओं के भिन्न-भिन्न विभागों में पक्षियों की बोली सुनकर शुभाशुभ बताने वाली विद्या। ३—षट्चक्र। ४—आत्मीय जन। स्वजन समूह।

अंतरछाल, अन्तरछाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छाल के अन्दर की कोमल झिल्ली।

अंतरजाल, अन्तरजाल [संज्ञा पु.] (सं.) व्यायाम करने की एक लकड़ी।

अंतरज्ञ, अन्तरज्ञ [वि.] (सं.) मन की बात जानने वाला। अन्तर्यामी। २—भेद जानने वाला।

अंतरण, अन्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक से दूसरे के हाथ बिकना। २—किसी कार्यकर्ता या अधिकारी का अन्य विभाग में बदलना। बदली। ३—धन का एक खाते से दूसरे खाते में जाना।

अंतरणकर्ता, अन्तरणकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अंतरिवक'।

अंतरतम, अन्तरतम [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग। २—हृदय का भीतरी भाग। ३—विशुद्ध अन्तःकरण।

अंतरदिशा, अन्तरदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विदिशा। कोण। दो दिशाओं के मध्य की दिशा।

अंतरपट, अन्तरपट [संज्ञा पु.] (सं.) परदा। आड़। ओट।

अंतरणपत्र, अन्तरणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति, स्वत्व, सत्ता आदि दूसरे के अधिकार में करता है या दूसरे के हाथ सोंपता है। ट्रान्सफरैंस डीड।

अंतरपुरुष, अन्तरपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १—आत्मा। २—अंतर्यामी। परमेश्वर।

अंतरप्रभव, अन्तरप्रभव [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ण-सङ्कर।

अंतररति, अन्तररति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैथुन या सम्भोग के सात आसन। यथा—तिर्यक् सम्मुख, विमुख, अध, ऊर्ध्व और उत्तान।

अंतरशायी, अन्तरशायी [संज्ञा पु.] (सं.) जीवात्मा।

अंतरस्थ, अन्तरस्थ [वि.] (सं.) भीतर का।

[संज्ञा पु.] (सं.) देह में रहने वाली आत्मा।

अँतरा [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तर। बीच। नागा।

अंतरा, अन्तरा [क्रि. वि.] (हिं.) १—मध्य। २—पास। निकट। ३—अतिरिक्त। सिवाय ४—अलग। पृथक। ५—बिना।

[संज्ञा पु.] गीत की टेक के अतिरिक्त शेष पद

अंतराना [क्रि. स.] (हिं.) अलग करना। पृथक करना।

अंतरात्मा, अन्तरात्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—जीवात्मा। २—अन्तःकरण। ३—जीव।

अंतरापत्या, अन्तरापत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती। हामिला। गर्भिणी।

अंतराय, अन्तराय [संज्ञा पु.] (सं.) १—विघ्न। बाधा। २—ज्ञान का बाधक। ३—योगसिद्धि के विघ्न के नौ प्रकार।

अंतरायण, अन्तरायण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति को उसके निवास-स्थान में ही नजरबन्द रखने का कार्य।

अंतरायाम, अन्तरायाम [संज्ञा पु.] (सं.) वायुकोप का एक रोग जिसमें मनुष्य की आँखें ठुड्डी तथा पसली स्तब्ध रह जाती और मुख से कफ गिरने लगता है तथा दृष्टिभ्रम हो जाता है।

अंतराल, अन्तराल [संज्ञा पु.] (सं.) १—घिरा हुआ स्थान। आवृत जगह। २—बीच।

अंतरालदिशा, अन्तरालदिशा [संज्ञा पु.] (सं.) दो दिशाओं के मध्य की दिशा।

अंतरिक्ष, अन्तरिक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—पृथ्वी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान

२—स्वर्गलोक। ३—एक ऋषि का नाम। तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ४—गुप्त। अप्रकट।

अंतरिक्षविज्ञान, अन्तरिक्षविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वायुमण्डल के विक्षोभ के आधार पर गरमी, सरदी, वर्षा आदि का विवेचक विज्ञान।

अंतरिक्षसत्, अन्तरिक्षसत् [वि.] (सं.) आकाशचारी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—आत्मा। २—पक्षी।

अंतरिख, अन्तरिख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंतरिक्ष'।

अंतरिच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंतरिक्ष'।

अंतरित, अन्तरित [वि.] (सं.) १—भीतर रखा या छिपाया हुआ। २—स्थानान्तरण किया हुआ। ३—एक हाथ से दूसरे हाथ में गया हुआ। एक के पास से दूसरे के पास बिक कर गया हुआ। हस्तांतरित।

अंतरितक, अन्तरितक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपनी सम्पत्ति तथा उससे सम्बन्धित अधिकार आदि हस्तांतरित करे या दे।

अंतरिती, अन्तरिती [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके हाथ कोई अपनी सम्पत्ति तथा उसके सम्बन्ध के अधिकार या स्वत्व आदि दे या अंतरित करे। वह जिसके पक्ष में अंतरण हो

अंतरिम, अन्तरिम [वि.] (सं.) दो अलग कालों अथवा समयों के बीच का। मध्यवर्ती। *इण्टेरिम*।
अन्तरिम अपलाभ=मध्यवर्ती अपलाभ।

अंतरिम आज्ञा, अन्तरिम आज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मध्यवर्ती आदेश या हुक्म।

अंतरिमकाल, अन्तरिमकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बीच का समय। मध्यवर्ती काल।

अँतरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक दिन का अंतर देकर आने वाला ज्वर।

अंतरीक, अन्तरीक [संज्ञा पु.] (सं.) अंतरिक्ष। आकाश।

अंतरीप, अन्तरीप [संज्ञा पु.] (सं.) १—द्वीप। टापू। भूमि का वह भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो।

अंतरीय, अन्तरीय [संज्ञा पु.] (सं.) भीतर का वस्त्र। बनियान।
[वि.] भीतर का। अन्दर का।

अंतरौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) महीन साड़ी के नीचे पहिनने का कपड़ा। पेटीकोट।

अँतर्गडु [वि.] (सं.) व्यर्थ। वृथा। फिजूल।

अंतर्गत, अन्तर्गत [वि.] (सं.) १—शामिल। सम्मिलित। भीतर आया हुआ। २—छिपा हुआ। गुप्त। ३—अंतःकरण स्थित।

अंतर्गति, अन्तर्गति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन का भाव। चित्तवृत्ति। हार्दिक अभिलाषा।

अंतर्गान्धार, अन्तर्गान्धार [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत के तीसरे स्वर में एक विकृत स्वर।

अंतर्ग्रह, अन्तर्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) भीतर का घर या कोठरी।

अंतर्घट, अन्तर्घट [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय। अंतःकरण।

अंतर्चितवन, अन्तर्चितवन [संज्ञा पु.] (सं.) अंतर्दृष्टि।

अंतर्जानु, अन्तर्जानु [वि.] हाथों को घुटनों के बीच किये हुए।

अंतर्ज्योति, अन्तर्ज्योति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंतर्यामी। परमात्मा।

अंतर्ज्ञान, अन्तर्ज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) परिज्ञान। अंतर्बोध। परोक्षदर्शन। अंतःकरण की बात जानना।

अंतर्दशा, अन्तर्दशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महादशा के भीतर की दशा।

अंतर्दशाह, अन्तर्दशाह [संज्ञा पु.] (सं.) मरने के पश्चात् दस दिन तक वायुरूप मृतक आत्मा प्रेत कहलाती है। इन दस दिनों में हिन्दू शास्त्रानुसार जो कर्मकाण्ड किये जाते हैं उसको 'अन्तर्दशाह' कहते हैं।

अंतर्देशीय अन्तर्देशीय [वि.] (सं.) किसी देश के आंतरिक भागों में होने अथवा उससे सम्बन्ध रखने वाला। *इनलैंड*।

अंतर्दृष्टि, अन्तर्दृष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १—ज्ञानचक्षु। प्रज्ञा। हिये की आंखें। आत्मचिन्तन।

अंतर्द्धान, अन्तर्द्धान [संज्ञा पु.] (सं.) लोप। छिपाव। अदर्शन।

अंतर्द्वार, अन्तर्द्वार [संज्ञा पु.] (सं.) चोर दरवाजा। घर के अन्दर का गुप्तद्वार।

अंतर्निविष्ट, अन्तर्निविष्ट [वि.] (सं.) अन्तःकरण में स्थित। हृदय में रखा हुआ।
अंतर्निविष्ट करना=भीतर बैठना।
अंतर्निविष्ट होना=हृदयंगत होना।

अंतर्बोध, अन्तर्बोध [संज्ञा पु.] (सं.) १—आत्मज्ञान। २—आंतरिक अनुभव।

अंतर्भाव, अन्तर्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १—अंतर्गत होना। शामिल होना। २—छिपाव। ३—अभाव। ४—आर्हत अथवा जैनदर्शन में आठ कर्मों का क्षय जिससे मोक्ष होता है। ५—आंतरिक अभिप्राय। आशय।

अंतर्भावना, अन्तर्भावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ध्यान। मनन। चिन्तन।

अंतर्भावित, अन्तर्भावित [वि.] (सं.) १—भीतर शामिल। अन्तर्गत। २—छिपाया हुआ।

अंतर्भूत, अन्तर्भूत [वि.] (सं.) शामिल। अन्तर्गत।

अंतर्भूमि, अन्तर्भूमि [संज्ञा स्त्री] (सं.) धरती का भीतरी भाग। भूगर्भ।

अंतर्भौम, अन्तर्भौम [वि.] (सं.) भूगर्भ का। पृथ्वी के भीतरी भाग का। *सबटेरनियन*।

अंतर्मना, अन्तर्मना [वि.] (सं.) व्याकुल चित्त उदास। विकल।

अंतर्मल, अन्तर्मल [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्दर का मैल। पेट के भीतर का मल। २—मन का विकार। मन की बुरी वासना। चित्त का दोष।

अंतर्मुख, अन्तर्मुख [वि.] (सं.) जिसका मुख भीतर की ओर हो। जो परमात्मा का ध्यान लगाये बैठा हो।
[संज्ञा पु.) कछुआ।

अंतर्मृत, अन्तर्मृत [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भ के अन्दर ही मरा हुआ बालक।

अंतर्यामी, अन्तर्यामी [वि.] (सं.) हृदय की बात जानने वाला। अन्तःकरण में स्थित होकर प्रेरणा देने वाला।
[संज्ञा पु.] परमेश्वर। चैतन्य। पुरुष।

अंतर्योग, अन्तर्योग [संज्ञा पु.] (सं.) गम्भीर विचार।

अंतर्राष्ट्रिय अन्तर्राष्ट्रिय [वि.] (सं.) सब या कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धित।

अंतर्लंब, अन्तर्लम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिकोण के भीतर गिरने वाला (लम्ब) लंब।

अंतर्लापिका, अन्तर्लापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पहेली जिसका उत्तर उसी के अंतर्गत हो

अंतर्लीन, अन्तर्लीन [वि.] (सं.) निमग्न। ग़र्क़। भीतर छिपा हुआ। विलीन।

अंतर्वर्ग, अन्तर्वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वर्ग या विभाग के अन्दर होने वाला कोई अन्य छोटा वर्ग या विभाग।

अंतर्वती, अन्तर्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—गर्भवती। हामला। २—अन्तरस्थित। भीतरी अन्दर रहने वाली।

अंतर्वर्ती, अन्तर्वर्ती [वि.] (स.) बीच का। मध्यवर्ती।

अंतर्वस्त्र, अन्तर्वस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे पहिनने का वस्त्र। बनियान। कच्छा। पेटीकोट।

अंतर्वस्तु, अन्तर्वस्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वस्तु के अंतर्गत रहने वाली अन्य वस्तु। *कण्टेण्ट्स*।

अंतर्वृद्धि, अन्तर्वृद्धि [संज्ञा पु] (सं.) आंत बढ़ाने वाला रोग।

अंतर्वत्नी, अन्तर्वत्नी [वि.] (सं.) गर्भवती। हामला।

अंतर्वाणिज्य, अन्तर्वाणिज्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश के आंतरिक या भीतरी भागों में होने वाला वाणिज्य या व्यवसाय।

अंतर्वाणी, अन्तर्वाणी [संज्ञा पु.] (स.) शास्त्रज्ञ विद्वान्। शास्त्रों का ज्ञाता।

अंतर्वाष्प, अन्तर्वाष्प [संज्ञा पु.] (सं.) आंतरिक दुःख जिसमें आंसू न निकलें।

अंतर्विकार अन्तर्विकार [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का विकार जैसे भूख, प्यास इत्यादि।

अंतर्वेग, अन्तर्वेग [संज्ञा पु.] (सं.) मन के भीतर की चिन्ता। भीतरी व्याकुलता।

अंतर्वेगीज्वर, अन्तर्वेगीज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ज्वर जिसे कष्टज्वर भी कहते हैं इसमें रोगी के भीतर दाह, प्यास, चक्कर, सिरदर्द तथा पेट में पीड़ा होती है।

अंतर्वेद, अन्तर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १—गङ्गा तथा यमुना के मध्य का देश। ब्रह्मावर्त। २—दो आब। ३—वह देश जिसमें यज्ञ करने की वेदियां हों।

अंतर्वेदी, अन्तर्वेदी [वि.] (सं.) गंगा तथा यमुना के बीच के देश का रहने वाला। अन्तर्वेद का निवासी।

अंतर्वेध, अन्तर्वेध [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की गांठों में होने वाला दर्द।

अंतर्वेश्म, अन्तर्वेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) जनानखाना। अन्तःपुर।

अंतर्वेशिक, अन्तर्वेशिक [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर का रक्षक। जनानखाने का पहरेदार।

अंतर्वेश्मिक, अन्तर्वेश्मिक [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःपुर की रखवाली करने वाला।

अंतर्हास, अन्तर्हास [संज्ञा पु.] (सं.) भीतर ही भीतर हँसना। गुप्त हँसी। मुस्कराहट।

अंतर्हित, अन्तर्हित [वि.] (सं.) अदृश्य। छिपा-हुआ। गायब। गुप्त। तिरोहित।

अंतलघु, अन्तलघु [संज्ञा पु.] (सं.) छन्द का वह चरण जिसके अंत में लघुवर्ण अथवा मात्रा हो। ऐसा शब्द जिसका अन्तिम वर्ण लघु हो।

अंतवर्ण, अन्तवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम वर्ण का। शूद्र।

अंतविदारण, अन्तविदारण [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य और चन्द्रग्रहण के दस मोक्षों में से एक

अंतवेला, अन्तवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्तिम समय। मरणकाल। नाश का समय।

अंतशय्या, अन्तशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मृत्युशय्या। २—श्मशान। मरघट। ३—मृत्यु।

अंतश्छद्, अन्तश्छद् [संज्ञा पु.] (सं.) भीतर का तल। मिहराब के नीचे का तल।

अंतस्, अन्तस् [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःकरण। हृदय। चित्त। मन।

अंतसद्, अन्तसद् [संज्ञा पु.] (सं.) चेला। शिष्य।

अंतसमय, अन्तसमय [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम समय। मरणकाल। मृत्युकाल।

अंतस्ताप, अन्तस्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) आन्तरिक दुःख। मानसिक व्यथा। चित्त का संताप। भीतरी उष्णता।

अंतस्थ, अन्तस्थ [वि.] (सं.) १—भीतर का। मध्यवर्ती। बीच का।

[संज्ञा पु.] (सं.) य, र, ल, व यह चारों वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं। स्पर्श तथा उष्मवर्णों के बीच वाले वर्ण।

अंतस्थिति, अन्तस्थिति [वि.] (सं.) १—हृदय के भीतर का। अन्तःकरण का। २—भीतरी। भीतर स्थित।

अंतस्नान, अन्तस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान।

अंतस्सलिल, अन्तस्सलिल [वि.] (सं.) जिसके जल का प्रवाह भीतर हो बाहर न दीखे।

अंतस्सलिला, अन्तस्सलिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती नदी। फल्गु-नदी।

अंताराष्ट्रीय, अन्ताराष्ट्रीय [वि.] देखो 'अन्तर्राष्ट्रिय।

अंतावरी, अन्तावरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्तड़ी आँतों का समुदाय।

अंतावशायी, अन्तावशायी [संज्ञा पु.] (सं.) १—गांव की सीमा के बाहर बसने वाला। २—अस्पृश्य वर्ण यथा चाण्डाल आदि।

अंतावसायी, अन्तावसायी [संज्ञा पु.] (सं.) १—नाई। हज्जाम। २—हिंसक। चाण्डाल।

अंतिक, अन्तिक [वि.] (सं.) पास। निकट। पड़ोस। समीप।

अंतिकतम, अन्तिकतम [वि.] (सं.) बिलकुल पास का।

अंतिकता, अन्तिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पड़ोस

अंतिम, अन्तिम [वि.] (सं.) अन्त का। सबके पीछे का। आखिरी। २—सबसे बढ़कर। हद दरजे का। चरम।

अंतिमयात्रा, अन्तिमयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाप्रस्थान। अन्तिम सफर। अन्तकाल। मृत्यु। मौत।

अंतेवर, अन्तेवर [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःपुर। जनानखाना।

अंतिमेत्थम्, अन्तिमेत्थम् [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम चुनौती। अल्टीमेटम।

अंतेवासी, अन्तेवासी [संज्ञा पु.] (सं.) १—चेला गुरु के पास रहने वाला। २—गांव के बाहर रहने वाला। अन्त्यज। चाण्डाल।

अंतःकरण, अन्तःकरण [संज्ञा पु.] (सं.) भीतर की वह इन्द्रिय जो संकल्प-विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुखदुखादि का अनुभव करती है

अंतःक्रिया, अन्तःक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मन को शुद्ध करने वाला कर्म। २—अप्रकट कर्म।

अंतःकोप, अन्तःकोप [वि.] (सं.) मन के अंदर का कोध। मानसिक कोध।

अंतःकोष, अन्तःकोष [संज्ञा पु.] (सं.) भण्डार घर का भीतरी कमरा।

अंतःपट, अन्तःपट [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के अवसर पर वर तथा कन्या के बीच में लगाया जाने वाला वस्त्र विशेष।

अंतःपटी, अन्तःपटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—नाटक का परदा। २—परदे पर चित्रित पर्वत नगर, वन आदिक दृश्य।

अंतःपरिधी, अन्तःपरिधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—घेरे अथवा परिधि का भीतरी स्थान। २—तीन हरी लकड़ियों द्वारा यज्ञ के लिए घेरा हुआ बीच का स्थान।

अंतःपवित्रा, अन्तःपवित्रा [वि.] (सं.) शुद्ध चित्त वाली। निर्मल अन्तःकरण वाली।

अंतःपुर, अन्तःपुर [संज्ञा पु.] (सं.) महल के भीतर स्त्रियों के रहने की जगह। रनिवास। जनानखाना।

अंतःपुरप्रचार, अन्तःपुरप्रचार [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों की गप्प। प्रपंच।

अंतःपुरिक, अन्तःपुरिक [संज्ञा पु.] (सं.) जनानखाने का पहरेदार; अंतःपुर रक्षक। कंचुकी।

अंतःपूजा, अन्तःपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कल्पित. वस्तु द्वारा देवता की पूजा। इच्छित फल प्राप्ति की आशा में चढ़ावा बोलना।

अंतःप्रज्ञ, अन्तःप्रज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मज्ञानी। तत्त्वदर्शी।

अंतःशरीर, अन्तःशरीर [संज्ञा पु.] वेदान्त के अनुसार स्थूल शरीर के अन्दर का सूक्ष्म शरीर। लिंग शरीर।

अंतःशल्य, अन्तःशल्य [वि.] (सं.) मर्मभेदी; गांसी के समान हृदय में चुभने वाला।

अंतःशुद्धि, अन्तःशुद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय की पवित्रता। अन्तःकरण की निर्मलता। दिल की सफाई।

अंतःसंज्ञा, अन्तःसंज्ञा [संज्ञा पु.) (सं.) वह जीव जो अपने सुख-दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सके यथा—वृक्ष या पौदा।

अंतःसत्वा, अन्तःसत्वा [वि.] (सं.) गर्भवती। हामला।

[संज्ञा पु.] भिलांवा।

अंतःसार, अन्तःसार [संज्ञा पु.] (सं.) आंतरिक तत्व। गुरुता।

[वि.] जो भीतर से खोखला न हो। जिसके भीतर कुछ तत्व हो। जिसके भीतर कोई प्रयोजनीय पदार्थ हो।

अंतःसारवान, अन्तःसारवान [वि.] (सं.) जो पोला न हो। जिसके भीतर कुछ तत्व हो। काम का। प्रयोजनीय। तत्वपूर्ण।

अंतःस्वेद, अन्तःस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

अंतःसुख, अन्तःसुख [वि.] (सं.) आत्मा का सुख।

अंत्य, अन्त्य [वि.] (सं.) अन्त का। अन्तिम। आखरी। छोटा।

अंत्यकर्म, अन्त्यकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम क्रिया। अंत्येष्टि क्रिया।

अंत्यज, अन्त्यज [संज्ञा पु.] (सं.) जो अंतिम वर्ण से उत्पन्न हुआ हो। शूद्र।

अंत्यभ, अन्त्यभ [संज्ञा पु.] (सं.) १—रेवती नामक अन्तिम नक्षत्र। २—मीनराशि।

अंत्ययुग, अन्त्ययुग [संज्ञा पु.] (सं.) कलियुग अन्तिम युग।

अंत्ययोनि, अन्त्ययोनि [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्र, चाण्डाल।

अंत्यवर्ण, अन्त्यवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १—पद के अन्त में आने वाला अक्षर। २—अन्तिम अक्षर 'ह'। अन्तिम वर्ण।

अंत्यविपुला, अन्त्यविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्य्या नामक छन्द का एक भेद। 'इसके दूसरे दल के पहिले तीन गणों तक चरण पूरा नहीं होता। और दोनों दलों में दूसरा तथा चौथा गण होता है।'

अंत्या, अन्त्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाण्डाल की स्त्री। चाण्डालिनी।

अंत्याक्षर, अन्त्याक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) १—वर्णमाला का अंतिम अक्षर। २—पद अथवा शब्द का अंतिम अक्षर।

अंत्याक्षरी, अन्त्याक्षरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी कहे हुए छन्द अथवा पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होने वाला दूसरा छन्द।

अंत्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। तुकांत। मेल। तुकबंदी। एक अलंकार।

अंत्यावसायी, अन्त्यावसायी [संज्ञा पु.] (स.) बिलकुल नीच जाति का व्यक्ति।

अंत्येष्टि, अन्त्येष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) मृतक व्यक्ति का क्रियाकर्म।

अंत्र, अन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) आँत, अँतड़ी।

अंत्रकूजन, अन्त्रकूजन [संज्ञा पु.] (सं.) अँतड़ियों की कुड़कुड़ाहट।

अंत्रप्रदाह, अन्त्रप्रदाह [संज्ञा पु.] (सं.) आँतों की जलन का रोग।

अंत्रवृद्धि, अन्त्रवृद्धि [संज्ञा स्त्री] (सं.) आँतों के उतरने का एक रोग। फोतों की वृद्धि।

अंत्रांडवृद्धि, अन्त्राण्डवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँत का उतर कर फोते में चले जाने का रोग

अंत्रालजी, अन्त्रालजी [संज्ञा स्त्री] (सं.) कफ तथा वात प्रकोप से होने वाली गोल फुंसी।

अंत्री, अन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अँतड़ी।

अँथऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) जैनियों का सन्ध्याकालीन भोजन।

अंदर [क्रि. वि.] (हिं.) भीतर।

अंदरी [वि.] (हिं.) भीतर की। अन्दरूनी।

अंदरूनी [वि.] (फा.) भीतर का।

अंदाज, अन्दाज [संज्ञा पु.] (फा.) १—अनुमान अटकल। कूत। नापजोख। २—ढङ्ग। तौर। तर्ज़। ३—मटक। भाव। चेष्टा। ठसक।

अंदाज उड़ाना=पूरी-पूरी नकल करना।

अंदाज़न, अन्दाज़न [क्रि. वि.] (फा.) १—लगभग। तक़रीबन। २—अन्दाज़ से।

अंदाज़पट्टी, अन्दाज़पट्टी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खेत में खड़ी हुई फ़सल का अनुमान या कूत।

अंदाज़पीटी, अन्दाज़पीटी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रात-दिन बनाव शृङ्गार में रहने वाली तथा अपने सौन्दर्य पर इतराने वाली स्त्री। फ़ैशनेबिल।

अंदाज़ा, अन्दाज़ा [संज्ञा पु.] (फा.) अटकल। अनुमान। परिणाम। नापजोख।

अँदाना [क्रि. स.] (हिं.) बचाना। बरकाना।

अंदु, अन्दु [संज्ञा पु.] (हि.) १—पाजेब। पैंजना पैर का आभूषण। २—बांधने की रस्सी। हाथी बांधने का सांकड़ा।

अंदुआ, अन्दुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी के पिछले पैर में डालने का कांटेदार लकड़ी का चौखटा।

अंदेशा, अन्देशा [संज्ञा पु.] (सं.) १—सोच। फ़िक्र। चिन्ता। ३—अनुमान। सन्देह। संशय। ३—आशङ्का। भय। खटका। ४—हानि। हरज। ५—पसोपेश। दुविधा। असमञ्जस।

अंदोर, अन्दोर [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्ला। कोलाहल। शोर। आन्दोलन।

अंदोलन, अन्दोलन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लहर का उतार-चढ़ाव।

अंदोह, अन्दोह [संज्ञा पु.] (फा.) १—दुःख। शोक। खेद। २—संदेह। खटका।

अंद्रससत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्रशस्त्र। वज्र।

अंध, अन्ध [वि.] (सं.) १—नेत्रहीन। जिसकी आंखों में ज्योति न हो। २—अज्ञानी। अविवेकी। मूर्ख। अनजान। ३—असावधान अचेत। ४—मतवाला। उन्मत्त।

अंधक, अन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्रहीन।

अंधकरिपु, अन्धकरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्धकार का नाश करने वाला। सूर्य। २—चन्द्रमा। ३—अग्नि। ४—अन्धक नामक दैत्य के शत्रु, शिव।

अंधकार, अन्धकार [संज्ञा पु.] (सं.) तिमिर। अंधेरा।

अंधकारमय, अन्धकारमय [वि.] अन्धकार से परिपूर्ण।

अंधकारी, अन्धकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागनी विशेष।

अंधकूप, अन्धकूप [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्धकार वाला कुँआ। सूखा हुआ कुंआ। वह कुंआ जिसका पानी सूखा हुआ हो और जिसमें घास-फूंस भरी हो। २—एक नरक का नाम।

अंधखोपड़ी, अन्धखोपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्ख। बुद्धिहीन।

अंधड़, अन्धड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) आंधी। तूफान धूल से भरी प्रचण्ड वायु।

अंधतमस, अन्धतमस [संज्ञा पु.] (सं.) घोर अन्धकार। गाढ़ा अँधेरा।

अंधता, अन्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्धापन।

अंधतामिस्र, अन्धतामिस्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—घोर अन्धकारयुक्त नरक। २—भयानक अँधेरा। ३—योगशास्त्रानुसार पांच क्लेशों में से एक। मृत्यु का भय।

अंधधुंध, अन्धधुन्ध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अंधाधुंध'।

अंधपरंपरा, अन्धपरम्परा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिना सोचे-समझे पुरानी चाल का अनुकरण। भेड़िया-धँसान।

अंधपूतनाग्रह, अन्धपूतनाग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों को होने वाला एक रोग।

अंधवाई, अन्धवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आँधी। अंधवायु।

अंधरा, अन्धरा [वि.] (हिं.) अंधा। नेत्रहीन।

अंधरात्रि, अन्धरात्रि [वि.] (सं.) अंधेरी रात।

अंधरी, अन्धरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अन्धी स्त्री। अन्धी। २—पहिये की पट्टियों के अन्दर की चूल।

अंधविंदु, अन्धविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) आँख के भीतर के परदे पर की वह जगह जो प्रकाश ग्रहण नहीं करती और सामने पड़ी कोई वस्तु दिखाई नहीं देती।

अंधविश्वास, अन्धविश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) बिना सोचे-समझे किसी बात का निश्चय। विवेकशून्य धारणा।

अंधस, अन्धस [संज्ञा पु.] (सं.) भात। पका हुआ चावल।

अंधा, अन्धा [वि.] (हिं.) बिना आँख का। नेत्रहीन।

अंधा बनना=लापरवाह बनना।

अंधा बनाना=बेवकूफ बनाना। आँख में धूल डालना। धोखा देना।

अंधा होना=परवाह न होना।

अंधी सरकार=अन्यायी राज।

अंधे की लाठी अथवा लकड़ी=१—एक मात्र सहारा। २—इकलौता लड़का।

अंधा दीया=धुँधला प्रकाश।

अंधा तारा=नेपच्यून नामक तारा।

अंधा शीशा=धुँधला दर्पण या शीशा।

अंधाधुंध, अन्धाधुन्ध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—घोर अन्धकार। २—अन्याय। अंधेर। कुप्रबन्ध।

[वि.] १—विचार रहित। बेधड़क। बिना

सोचे समझे। बेतहाशा। मारामार। २—बहुतायत से।

अंधाधुन्ध मचाना = अन्याय अथवा अंधेर मचाना।
अंधाधुंध लुटाना = अत्यधिक खर्च करना।

अंधार, अन्धार [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अंधकार। २—रस्सी का बना वह जाल जिसमें भूसा या घास भरी जाती है।

अंधारी, अन्धारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अंधड़, तूफान।

अंधिका, अन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—रात। २—जूआ। ३—आंख में होने वाला एक रोग।

अंधियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अंधेरा। तम। २—धुंधलापन। धुंध।
(वि.) (हिं.) १—प्रकाशरहित। २—धुंधला। ३—उदास। सूना। मनहूस।

अंधियार-कोठरी (संज्ञा स्त्री.) (हिं.) १—अंधकार पूर्ण छोटा कमरा। २—पेट। कोख। गर्भस्थान।

अंधु [संज्ञा पु.] (सं.) कुंआ।

अंधुल [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिस का वृक्ष।

अंधेर, अन्धेर [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अन्याय। अत्याचार। २—कुप्रबन्ध। अनर्थ। उपद्रव। धींगाधींगी।
अंधेरखाता = ठीक-ठीक हिसाब न होना। अन्याय।
अंधेरछाना = गड़बड़ होना।
अंधेरगुप = घोर अंधकार।
अंधेरनगरी = अन्याय का स्थान।
अंधेरमचना = गड़बड़ होना।

अंधेरना, अन्धेरना (क्रि. स.) (हिं.) १—गड़बड़ी करना। २—अंधेरा करना।

अंधेरा, अंधेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—उजाले का अभाव। अंधकार। तम। २—धुंधलापन।
अंधेर छाना = शोक छाना। निराशा होना।
अंधेर छोड़ना = उजाले के सामने से हटना।
अँधेरे-उजेले = वक्त-बे-वक्त। समय-कुसमय
अंधेरे घर का उजाला = इकलौता लड़का।
अंधेरेमुंह अथवा मुंह-अन्धेरे = तड़के ही। बहुत सवेरे।

अंधेरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अंधेरा। २—अंधेरी रात। कृष्ण पक्ष। ३—ईख की पहली गोड़ाई। बैठावन।

अंधेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—आंधियारी रात। २—अन्धकार। [वि.] प्रकाशरहित। तमाच्छादित।
अंधेरी झुकना = बहुत अंधेरा होना।
अंधेरी कोठरी = गर्भ। पेट। कोख।
अंधेरी डालना या देना = किसी की आंखों को मूंदकर उसकी दुर्गति करना।

अंधोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े की आंख पर बांधे जाने वाला ढक्कन।

अंध्यार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंधेरा'।

अंध्यारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अंधियारी'।

अंध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—शिकारी। व्याध। बहेलिया। २—मगध का एक राजवंश। ३—दक्षिण भारत का एक प्रदेश जिसे तिलंगाना भी कहते हैं। ४—शिकार करके निर्वाह करने वाली एक जाति विशेष।

अंध्रभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) मगध के अन्तिम राजा पुलोम के गङ्गा में डूब मरने के पश्चात् क्रमशः रामदेव, प्रतापचन्द्र आदि सेनापतियों द्वारा राज्य सञ्चालन के कारण यह सेनापतियों का वंश या अंध्रभृत्य कहलाता है।

अंब, अम्ब [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अंबा'।

अंबक, अम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १—नेत्र। आंख। २—तांबा। ३—पिता।

अंबर, अम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १—वस्त्र। कपड़ा। स्त्रियों के पहिनने की धोती, जिसका किनारा एक रंग का होता है। ३—आकाश, आसमान। ४—कपास। ५—एक इत्र ६—अभ्रक। ७—बादल। मेघ। ८—अमृत। ९—राजस्थान का एक प्राचीन नगर।
अम्बर के तारे डिगना = असम्भव बात का होना।

अंबरबारीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी को 'दारूहल्दी' तथा रस को 'रसवत' कहते हैं यह हिमालय तथा नीलगिरि में पाया जाता है।

अंबरबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अमरबेल। आकाश बेल। बिना जड़ की सूत के समान पीले रंग की होती है जो पेड़ों का रस चूस कर बढ़ती है।

अंबरमणि [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

अंबरसारी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कर या टैक्स जो पहले घरों पर लगता था।

अंबराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान जहां आम के वृक्ष हों। आम का बगीचा।

अंबराव [संज्ञा पु.] (हिं.) आम का बाग।

अंबरांत, अम्बरान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १—क्षितिज २—कपड़े का छोर।

अंबरीष, अम्बरीष [संज्ञा पु.] (सं.) १—भाड़। २—विष्णु। ३—शिव का एक नाम। ४—सूर्य का नाम ५—१ से १० साल तक का बालक। ६—एक नरक का नाम। ७—परम वैष्णव अयोध्या का एक राजा। ८—आमड़े का फल तथा वृक्ष। ९—लड़ाई। समर। १०—पश्चाताप।

अंबर्रीसक [संज्ञा पु.] (हिं.) भाड़। भरसायँ।

अंबरौक, अम्बरौक [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक देवता।

अँबली [संज्ञा पु.] (देश.) गुजरात का कपास।

अंबष्ठ, अम्बष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) पंजाब के मध्य भाग का प्राचीन नाम २—अम्बष्ठ देश का निवासी। ३—ब्राह्मण तथा वैश्य स्त्री से उत्पन्न एक जाति विशेष। ४—फीलवान, महावत। ५—कायस्थों का एक गोत्र।

अंबष्ठकी, अम्बष्ठकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अंबष्ठा'।

अंबष्ठा, अम्बष्ठा [संज्ञा स्त्री.] अम्बष्ठ की स्त्री। एक बेल का नाम।

अंबा, अम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अम्मा। माँ। माता। जननी। २—पार्वती। गौरी। दुर्गा। देवी। ३—अंबष्ठा। ४—काशी नरेश इन्द्रद्युम्न की बड़ी पुत्री। उत्तर प्रदेश की ससुरखदेरी नदी का प्राचीन नाम।

अंबाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) आमड़ा। एक प्रकार का फल जो जामुन के आकार का होता है।

अंबापोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आम का परतों में जमाया हुआ रस। अमावट। अमरस।

अँबार, [संज्ञा पु.] (फा.) ढेर। राशि। समूह।

अँबारी [संज्ञा पु.] (फा.) हाथी की पीठ के ऊपर रक्खा जाने वाला मंडपदार हौदा।

अंबालिका अम्बालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—माता। जननी। भीष्म के भाई विचित्रवीर्य की स्त्री तथा काशी नरेश इन्द्रद्युम्न की तीन कन्याओं में से सबसे छोटी। ३—पाठा। अंबष्ठा-लता।

अंबिका, अम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—माता। पार्वती। देवी। दुर्गा। ३—जैनियों की एक देवी। ४—अंबष्ठालता। पाठा। ५—काशी नरेश इन्द्रद्युम्न क तीन कन्याओं में से मझली। ६—कुटकी का वृक्ष।

अंबिकावन [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक पौराणिक वन जहां पुरुष स्त्रियां हो जाते थे २—ब्रज के एक वन का नाम।

अंबिकेय, अम्बिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) अंबिका के पुत्र, गणेश, कार्त्तिकेय धृतराष्ट्र।

अँबिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिना जाली पड़ा आम का कच्चा फल।

अंबिरथा [वि.] (हिं.) व्यर्थ का। निष्फल।

अंबु, अम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १—जल। २—सुगन्ध वाला। ३—जन्मकुण्डली के १२ घरों में से चौथा। ४—चार की संख्या, क्योंकि जल चौथा तत्व है।

अंबुकंटक, अम्बुकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) मगर। एक जलजन्तु।

अंबुकिरात, अम्बुकिरात [संज्ञा पु.] (सं.) मगर।

अंबुकेशी, अम्बुकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) एक जलजन्तु। ऊद।

अंबुचर, अम्बुचर [संज्ञा पु.] (सं.) जलचर।

अंबुचामर, अम्बुचामर [संज्ञा पु.] (सं.) सेवार या शैवाल।

अंबुज, अम्बुज [संज्ञा पु.] (सं.) १—जल से उत्पन्न वस्तु। २—कमल। ३—बेंत। ४—वज्र। ५—ब्रह्मा। ६—शङ्ख। ७—जल के किनारे होने वाला एक वृक्ष, हिज्जल।

अंबुजा, अम्बुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी

अंबुजाक्ष, अम्बुजाक्ष [वि.] (सं.) कमल के नेत्र वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अंबुजात, अम्बुजात [वि.] जल से उत्पन्न।
[संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

अंबुजासन, अम्बुजासन [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के आसन वाला, ब्रह्मा।

अंबुजासना, अम्बुजासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमल के आसन वाली लक्ष्मी। कमला।

अंबुताल, अम्बुताल [संज्ञा पु.] (सं.) शैवाल। सेवार।

अंबुद, अम्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) १—बादल। २—नागरमोथा।
[वि.] (सं.) जो जल दे।

अंबुधर, अम्बुधर [संज्ञा पु.] (सं.) बादल।
[वि.] जो जल को धारण करे।

अंबुधि, अम्बुधि [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र

अंबुधिस्रवा, अम्बुधिस्रवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्वारपाठा। घृतकुमारी। घीकुआंर।

अंबुनाथ, अम्बुनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—समुद्र सागर। २—वरुण देवता।

अंबुनिधि, अम्बुनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र सागर।

अंबुप, अम्बुप [संज्ञा पु.] (सं.) १—समुद्र। सागर। २—शतभिषा नक्षत्र। ३—वरुण देवता।

अंबुपति, अम्बुपति [संज्ञा पु.] (सं.) १—सागर २—वरुण।

अंबुपत्रा, अम्बुपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा।

अंबुभृत, अम्बुभृत [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। बादल। नागरमोथा।

अंबुराशि, अम्बुराशि [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र।

अंबुरुह, अम्बुरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

अंबुवाची, अम्बुवाची [संज्ञा पु.] (सं.) अषाढ़ मासान्तर्गत आर्द्रा नक्षत्र का प्रथम चरण।

अंबुवाह, अम्बुवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १—बादल २—नागरमोथा।

अंबुविहार, अम्बुविहार [संज्ञा पु.] (सं.) जलक्रीड़ा।

अंबुशायी, अम्बुशायी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अंभ, अम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १—जल। पानी। २—लग्न की चौथी राशि। ३—चार की संख्या। ४—पितरलोक। ५—आकाश।

अंभसार, अम्भसार [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ता। मोती।

अंभस्, अम्भस् [संज्ञा पु.] (सं.) भाप। धुआँ।

अंभोज, अम्भोज [संज्ञा पु.] (सं.) १—कमल। २—चन्द्रमा। ३—कपूर। ४—शङ्ख। ५—सारस पक्षी।

अंभोजिनी, अम्भोजिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कमलिनी। पद्मिनी। २—वह स्थान जहां पर बहुत से कमल हों।

अंभोद, अम्भोद [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ

अंभोधर, अम्भोधर [संज्ञा पु.] (सं.) १—बादल मेघ। २—मोथा। ३—समुद्र। सागर।

अंभोधि, अम्भोधि [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र।

अंभोधिवल्लभ, अम्भोधिवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) मूँगा। प्रवाल।

अंभोनिधि, अम्भोनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र सागर।

अंभोराशि, अम्भोराशि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

अंभोरुह, अम्भोरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

अँवरा, अँवला [संज्ञा पु.] (हि.) आँवला।

अँवदा⁂+ [वि.] (हिं.) औंधा। उलटा। नीचे की ओर मुंह वाला।

अंश [संज्ञा पु.] १—भाग। विभाग। २—हिस्सा बाँट। ३—भाज्यअङ्क। ४—भिन्न की रेखा की ऊपर की संख्या। ५—कला। सोलहवाँ भाग। ६—राजा पुरुहोत्र के पुत्र का नाम।

अंशक [संज्ञा पु.] (सं.) १—हिस्सेदार। साझीदार २—भाग। टुकड़ा। ३—दिन। ४—पुत्र।
[वि.] (सं.) १—अंश धारण करने वाला। २—बांटने वाला। विभाजक।

अंशतः [क्रि. वि.] (सं.) किसी अंश या कुछ अंशों में ही।

अंशतीसु [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

अंशदान [संज्ञा पु.] (सं.) अन्य लोगों के साथ-साथ अपना अंश अथवा भाग भी देना या सहायता आदि के रूप में देना। कांट्रिब्यूशन

अंशदाता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अन्य लोगों के साथ-साथ देन या सहायता आदि के रूप में अपना भाग या अंश देता हो।

अंशपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह कागज जिसमें साझियों का हिस्सा लिखा हो। शराकतनामा

अंशभाज् [संज्ञा पु.] (सं.) हिस्सेदार।

अंशमापन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु के अंश को नापना।

अंशसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना नदी।

अंशावतार [संज्ञा पु.] (सं.) जो पूर्ण अवतार न हो

अंशी [संज्ञा पु.] (सं.) हिस्सेदार। साझीदार।
[वि.] (सं.) १—शक्ति या सामर्थ्य रखने वाला। २—अंश रखने वाला। अवतारी।

अंशु [संज्ञा पु.] (सं.) १—किरण। प्रभा। ज्योति २—सूर्य। ३—सूत। तागा। ४—तागे का सिरा। ५—एक ऋषि का नाम। ६—अल्पमात्रा।

अंशुक [संज्ञा पु.] (सं.) १—वस्त्र। २—रेशमी वस्त्र। ३—पतला कपड़ा। मलमल। ४—दुपट्टा। उपरना। ५—ओढ़नी। ६—तेजपात

अंशुनाभि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समानान्तर प्रकाश की किरणें तिरछी तथा संकुचित होकर जहां मिलें वह बिन्दु।

अंशुपति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। भानु।

अंशुपर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक औषधि जिसे शालपर्णी कहते हैं।

अंशुमत् [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।
[वि.] किरणयुक्त।

अंशुमत्फला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य।

अंशुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी का वृक्ष।

अंशुमंत, अंशुमन्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। सूर्यमान नामक राजा।

अंशुमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किरणों का समूह।

अंशुमाली [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य। २—बारह की संख्या।

अंशुल [संज्ञा पु.] (सं.) १—चतुर व्यक्ति। २—चाणक्य मुनि।

अंशुहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

अंस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अंश'।

अंसकट [संज्ञा पु.] (सं.) सांड की पीठ पर का उभरा हुआ भाग।

अंसत्र [संज्ञा पु.] कंधे का बचाव करने वाला कवच।

अंसभार [संज्ञा पु.] (सं.) कंधे पर का बोझा।

अंसभारिक [संज्ञा पु.] (सं.) कंधे पर बोझा ढोने वाला व्यक्ति।

अंसल [संज्ञा पु.] (सं.) गठीला। बलवान।

अंसुआ, अँसुवा⁂+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आंसू। अश्रु।

अंसुवाना [क्रि. अ.] (हिं.) आँसू से आँखों का भर जाना। अश्रु पूर्ण होना।

अंह [संज्ञा पु.] (सं.) १—पाप। अपराध। २—दुःख। घबड़ाहट। ३—विघ्न। बाधा।

अंहति, अंहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दान। २—त्याग। ३—रोग।

अंहुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की बेल जिसके फलियां लगती हैं। बाकला।

अंहुर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गतिमान्।

अउ [संयो. अव्य.] (हिं.) और। तथा।

अउठा [संज्ञा पु.] (हिं.) नापने की दो हाथ लम्बी लकड़ी जिसे जुलाहे लिये रहते हैं।

अउर [संयो. अव्य.] (हिं.) और।

अउत [वि.] (हिं.) निस्संतान। निपूता। पुत्रहीन।

अऊलना [क्रि. अ.] (हिं.) १—गरमी पड़ना। २—जलना। ३—औलना।

अऋण [वि.] (सं.) ऋणमुक्त। जिस पर कर्जा न हो।

अऋणी [वि.] (सं.) जिस पर कर्जा न हो।

अएरना [क्रि. स.] (हिं.) स्वीकार करना।

अङ्गीकार करना।

अकंटक, अकण्टक [वि.] (सं.) १—कंटक रहित। विना कांटे का। बेधड़क। निर्विघ्न।

अकंपन, अकम्पन [वि.] (सं.) स्थिर। अचल। न कांपने वाला।

अकंपत्व, अकम्पत्व [संज्ञा पु.] (सं.) कंपहीनता।

अकंपित, अकम्पित [वि.] (सं.) निश्चल। जो कांपा न हो।

अकंप्य, अकम्प्य [वि.] (सं.) स्थिर। अचल। न कांपने वाला।

अक [संज्ञा पु.] (सं.) १—पाप। २—दुःख।

अकच [वि.] (सं.) गंजा। जिसके सिर में बाल न हों।

[संज्ञा पु.] केतुग्रह।

अकच्छ [वि.] (हिं.) नंगा व्यभिचारी।

अकड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐंठ। तनाव। मरोड़। हठ। ढिठाई।

अकड़तकड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—ऐंठन। २—तेजी। ताव। घमण्ड।

अकड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १—सूख कर सिकुड़ना तथा कड़ा हो जाना। ऐंठना। खरा हो जाना। २—ठिठुरना। सुन्न होना। ३—तनना। ४—हठ करना। जिद करना। शेखी दिखाना। घमंड दिखाना।

अकड़वाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर की ऐंठन।

अकड़वाज❀+ [वि.] (हिं.) ऐंठदार। शेखीखोर। अभिमानी।

अकड़वाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शेखी। अभिमान ऐंठ।

अकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं में फैलने वाला रोग।

अकड़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) ऐंठन। तनाव। खिचाव।

अकड़ैत [वि.] (हिं.) शेखीखोर। ऐंठदार। अकड़बाज।

अकत [वि.] (हिं.) समूचा। सारा। समग्र। सम्पूर्ण।

[क्रि. वि.] (हिं.) पूरी तरह से।

अकथ [वि.] (हिं.) जो कहा न जा सके। अवर्णनीय।

अकथनीय [वि.] (सं.) न कहने योग्य। जिसका वर्णन् न हो सके। अवर्णनीय।

अकथ्य [वि.] (सं.) न कहने योग्य। बेकार। व्यर्थ।

अक़द [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वायदा। प्रतिज्ञा। इक़रार।

अक़दन [क्रि. वि.] (फ़ा.) वायदा करते हुए।

अक़दबन्दी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रतिज्ञापत्र। इक़रारनाम।

अकधक [संज्ञा पु.] (हिं) सोचविचार। आशङ्का। आगापीछा। भय।

अकनना [क्रि. स..] (हिं) आहट लेना। कान लगा कर सुनना। चुपचाप सुनना।

अकबक [संज्ञा पु.] (हिं.) अनापशनाप। असंबद्ध प्रलाप। बकझक।

[वि.] (हिं.) अवाक्। चकित। भौचक्का।

अकबकाना [क्रि. अ.] (हिं.) घबड़ाना। भौचक्का होना।

अकबर [वि.] (फा.) बड़ा। महान्।

[संज्ञा पु.] भारत का एक मुसलमान शासक। जन्म १५४२ में हुआ। राज्य १५५६ से १६०७ तक किया।

अकबराबाद [संज्ञा पु.] आगरे का पुराना नाम।

अकबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक फलहारी मिठाई

[वि.] (हिं.) अकबर सम्बन्धी। अकबर द्वारा बनाई हुई।

अकबरी-अशर्फी [संज्ञा स्त्री.] अकबर के समय का सोने का सिक्का।

अकथ्य [वि.] (सं.) वर्णन् करने योग्य।

अक़बाल [संज्ञा पु.] (अ.) इकबाल। प्रताप। पराक्रम।

अकर [वि.] (सं.) १—न करने योग्य। दुष्कर। २—विना हाथ का। ३—जिसका महसूल या कर न लगता हो।

अकरकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अफ्रीकी पौदा जिसकी जड़ औषधि के काम में आती है।

अकरखना [क्रि. स.] (हिं.) १—खींचना। तानना २—चढ़ाना।

अकरण [संज्ञा पु.] (सं.) कर्म का अभाव। कर्म का फलरहित होना। ईश्वर। इन्द्रियरहित।

अकरणीय [वि.] (सं.) न करने योग्य।

अकरब [संज्ञा पु.] वह घोड़ा जिसके मुख पर सफेद रोवें हों परन्तु बीच बीच दूसरे रंग के भी रोवें हों।

अकरा [वि.] (हिं.) १—महंगा। कीमती। अधिक दाम का २—अमूल्य। उत्तम, श्रेष्ठ। खरा।

अकराथ [वि.] (हिं.) व्यर्थ। फिजूल। अकारथ।

अकराल [वि.] (सं). जो भयङ्कर न हो। सौम्य। सुन्दर।

अकरास [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगड़ाई। शरीर का टूटना।

अकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हल के साथ बंधा वह पोला बाँस जिसमें से बीज गिराया जाता है। बीज डालने का औजार। २—असगन्ध के समान एक पौदा।

अकरुण [वि.] (सं.) करुणाहीन। कठोर। निर्दयी निष्ठुर।

अकर्तव्य [वि.] अनुचित। न करने योग्य।

अकर्ता, अकर्त्ता [वि.] (सं.) कर्म से अलग। कार्य न करने वाला।

अकर्तृक [संज्ञा पु.] (सं.) जो किसी के द्वारा न रचा गया हो। कर्ताविहीन।

अकर्तृभाव [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ न करने का भाव।

अकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १—बुरा काम। २—कर्म का अभाव।

अकर्मक [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मविहीन क्रिया। व्याकरण में वह क्रिया जिसका कर्म न हो।

अकर्मण्य [वि.] (सं.) निकम्मा। बेकाम। सुस्त। निठला।

अकर्मा [वि] (सं) निकम्मा। काम न करनेवाला। काम के लिये अनुपयुक्त।

कर्मान्वित [वि.] (सं) अयोग्य। कुकर्मी।

अकर्मणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) पाप करने वाली। दुष्कमा। पापिन।

अकर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्कर्मा। बुरा कार्य करने वाला। पापी।

अकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) आकर्षण। खिचावं।

अकलंक, अकलङ्क [वि.] (सं.) कलंकरहित। निष्कलङ्क। दोषरहित। बेदाग। साफ।

अकलंकता, अकलङ्कता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्कलङ्कता। पवित्रता। स्वच्छता।

अकलंकित, अकलङ्कित [वि.] (सं.) निर्दोष। कलङ्करहित।

अकल [वि.] (सं.) १—अङ्गहीन। व्यर्थ। निष्फल २—अखण्ड। निर्गुण।

[संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर का एक नाम।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) अक्ल। बुद्धि।

अकलखुरा [वि.[(हिं.) अकेला खाने वाला अर्थात् लोभी, लालची, स्वार्थी।

अकलबर, अकलबीर[संज्ञा पु.] (हिं.) भांग की तरह का एक पौदा।

अकल्पित [वि.] (सं.) अकृत्रिम। सहज।

अकल्मष [वि.] (सं.) निर्दोष। पापरहित। निर्विकार। दोषविहीन।

अकल्य [वि.] (सं.) रोगी। आरोग्यविहीन।

अकल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) अशुभ। अमङ्गल। अकुशल। अहित।

अकस [संज्ञा पु.] (अ.) शत्रुता। वैर। अदावत विरोध। डाह।

अकसना [क्रि. स.] (हिं.) वैर करना। आँट करना। शत्रुता करना।

अकसर [क्रि. वि.] (अ.) प्रायः। बहुधा। अधिकतर। विशेष करके।

अकसीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.)१—कीमियां। रसायन २—सब रोगों पर समान रूप से गुणकारी औषधि।

[वि.] अचूक। अत्यधिक गुणकारी। अव्यर्थ

अकस्मात् [क्रि. वि.] (सं.) १—अनायास। अचानक। सहसा। एक बारगी। तत्क्षण

२—संयोगवश। दैवयोग से। अकारण।

अकह [वि.] (हिं.) न कहने योग्य। अनुचित। अवर्णनीय।

अकहुआ [वि.] (हिं.) अकथनीय। जो कहा न जा सके। अनिर्वचनीय।

अकांड, अकाण्ड [वि.] (सं.) बिना डाल का।

अकांडजात, अकाण्डजात [वि.] (सं.) होते ही मर जाने वाला।

अकांडतांडव, अकाण्डताण्डव [संज्ञा पु.] (सं.) व्यर्थ की उछलकूद। व्यर्थ की बकवाद।

अकांडपात, अकाण्डपात [वि.] (सं.) जन्मते ही मर जाने वाला।

अकाउंट, अकाउन्ट [संज्ञा पु.] (अं.) हिसाब। लेखा। हिसाब-किताब।

अकाउंटेंट, अकाउण्टेण्ट [संज्ञा पु.] (अं.) हिसाब जांचने वाला। निरीक्षक।

अकाउंट-बुक अकाउण्ट-बुक, [संज्ञा पु.] बही-खाता। हिसाब की किताब।

अकाज [वि.] (हिं.) दुष्कर्म। बिगाड़। कार्य की हानि।

[क्रि. वि.] (हिं.) निष्प्रयोजन। व्यर्थ। बिना काम का।

अकाजना [क्रि. अ.] (हिं.) १—हानि होना। खो जाना। २—जाता रहना। मरना।

[क्रि. स.] (हिं.) हानि करना। हर्ज करना।

अकाजी [वि.] (हिं.) कार्य की हानि करने वाला काम का हर्ज करने वाला। बाधक। विघ्नकारी।

अकाट्य [वि.] (सं.) न काटने लायक। जिसके टुकड़े न हो सकें। अटल। दृढ़।

अकाथ [क्रि. वि.] (हिं.) अकारथ। व्यर्थ। वृथा फ़जूल। बेकार।

अकादर [वि.] (हिं.) जो कादर अथवा कायर न हो। शूरवीर। साहसी। पराक्रमी।

अकाम [वि.] (हिं.) कामनारहित। निष्पृह। इच्छारहित।

[क्रि. वि.] (हिं.) व्यर्थ। फ़जूल। निष्प्रयोजन

अकामतः [अव्य.] (सं.) व्यर्थ।

अकामनिर्जरा [संज्ञा स्त्री] (सं.) जैन मतानुसार तपस्या के द्वारा जो निर्जरा (कर्म) का नाश होता है उसके दो भेदों में से एक। यह कर्म सभी प्राणियों में रहता है क्योंकि उन्हें बेबस होकर अनेक दुःख सहन करने पड़ते हैं।

अकामा [वि.स्त्री.प्र.] (सं.) वह नवयौवना जिस में काम का प्रवेश या प्रादुर्भाव न हुआ हो।

[संज्ञा स्त्री०] (सं.) काम-चेष्टाविहीन स्त्री।

अकामी [वि.] (सं.) कामना या इच्छारहित। जिसे किसी बात की इच्छा न हो। निस्पृह।

अकाय [वि.] (स.) (१) अशरीरी। जन्म न लेने वाला। (२) निराकार (३) बिना देह का। कायारहित।

अकार ❀ [संज्ञा पु.] (सं.) १—बनावट २—'अकार' 'अ' अक्षर।

अकारज ❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) कार्य की हानि। नुकसान। हर्ज।

अकारण [वि.] (सं.) कारण रहित, बिना वजह का। निष्प्रयोजन।

अकारथ [वि.] (हिं.) बेकाम। निष्प्रयोजन। वृथा। बेफायदा।

अकारन [वि.] (हिं.) अकारण। बिना कारण के निष्प्रयोजन।

अकारी [वि.] (सं.) कार्यविहीन।

अकार्पण्य (सं.) जिसमें कृपणता या कंजूसी न हो

अकार्य, अकार्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—कार्यशून्य काम का अभाव। अकाज। हर्ज। २—बुरा काम। कुकर्म।

अकाल [संज्ञा पु०] (सं.) १—अनुपयुक्त समय कुसमय। उपयुक्त समय से पहिले या पीछे का समय। अनियमित समय। २—दुर्भिक्ष। महंगी।

अकालकूष्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) अपने परिवार को हानि पहुँचाने वाला व्यक्ति।

अकालकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) १—बिना ऋतु के फूला हुआ फूल। २—असंग वार्ता। बिना समय की चीज।

अकाल-जलद [संज्ञा पु.] (सं.) बिना समय का बादल।

अकालजलोदय [संज्ञा पु.] (स.) बिना वर्षा के बादलों का उठना। असमय का उठना।

अकालपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) सिक्ख धर्मानुसार ईश्वर का नाम।

अकालभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) दास बनाने के निमित्त दुर्भिक्ष से बचाया हुआ व्यक्ति।

अकालमूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अविनाशी पुरुष

अकालमृत्यु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बे-समय की मौत ठीक समय से पूर्व की मृत्यु। अल्पावस्था की मृत्यु। अपमृत्यु। अचानक या अनायास आने वाली मृत्यु।

अकालमघोदय [संज्ञा पु.] (सं.) असमयके मेघ या बादल।

अकालवृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) असमय की। बरसात।

अकालिक [वि.] (सं) असामयिक। बे-मौके का बिना अवसर का।

अकाली [संज्ञा पु.] (हिं.) नानक संप्रदाय के साधु जो सिर पर लोहे के चक्रसहित काली पगड़ी धारण करते हैं।

अकाव + [संज्ञा पु.] (हिं.) आक। मदार।

अकास [संज्ञा पु.] (हिं.) आकाश। आसमान। गगन।

अकासकृत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली।

अकास-दिया [संज्ञा पु.] (हिं.) आकाशदीप। वह दीपक जो बांस के सहारे बड़ी ऊंचाई पर लटका दिया जाता है।

अकास-नीम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ बड़ी सुन्दर होती है।

अकासबानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आकाशवाणी रेडियो की शक्ति द्वारा प्रसारित वाणी।

अकास-बेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अमरबेल। आकास-बौर।

अकिंचन, अकिञ्चन [वि.] (सं.) जिसके पास कुछ भी न हो। दरिद्र। निर्धन। कङ्गाल। गरीब। दीन। २—आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करने वाला। परिग्रहत्यागी। जैन-मतानुकूल परिग्रह का त्याग अथवा ममता से से निवृत्ति।

अकिंचनता, अकिञ्चनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गरीबी। दरिद्रता। निर्धनता।

अकिंचनत्व अकिञ्चनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) निर्धनता। दरिद्रता।

अकिंचतज्ञ, अकिञ्चतज्ञ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्ञानशून्य। विवेकरहित कुछ न जानने वाला

अकिंचत्कर अकिञ्चत्कर [वि.] (सं.) कुछ न कह सकने वाला। अशक्त।

अकिल [संज्ञा स्त्री] (हिं) अक्ल। ज्ञान। समझ बुद्धि।

अकिलबहार [संज्ञा पु.] (हिं.) वैजयन्ती पौदा अथवा दाना।

अकिल्विष [वि.] (सं.) पापरहित। निर्मल। पवित्र।

अक़ीक़ [संज्ञा पु.] (अ.) कई रंगों में पाया जाने वाला चमकदार पत्थर।

अकीरति, अकीर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपयश। बदनामी।

अकीरतिकर [वि.] (सं.) १—बदनामी करने वाला। अपयश देने वाला

अकुंठ अकुण्ठ [वि.] (सं.) जो कुंठित न हो तीक्ष्ण। तीव्र। तेज।

अकुंठि, अकुण्ठि [वि.] (सं.) तेज। तीक्ष्ण।

अकुटिल [वि.] (सं.) १—सीधा। जो टेढ़ा न हो। सरल। २—सीधासाधा। निष्कपट। साफ दिल का।

अकुटिलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कुटिलता का अभाव। सिधाई। २—सादापन। निष्कपटता

अकुताना ❀ [क्रि. अ.] (हिं.) घबड़ाना। ऊबना उतावला होना।

अकुतोभय [वि.] (सं.) भयरहित। निर्भय। साहसी। निर्भीक।

अकुप्य [संज्ञा स्त्री.] (स.) सोना। चांदी।

अकुमार [वि.] (सं.) जिसकी कुमारावस्था बीत गई हो। बालिग। युवा।

अकुल [वि.] (सं.) परिवार-विहीन। जिसके कुल में कोई न हो।

अकुलन [संज्ञा पु.] (हिं.) अभाव। हानि।

अकुलाना [क्रि. अ.] (हि.) १—उतावला होना। ऊबना। शीघ्रता करना। २—घबड़ाना। व्याकुल होना। ३—आवेग में आना। विह्वल होना। मग्न होना।

अकुलनी* [वि.] (हि.) कुलटा। व्यभिचारिणी। जो कुलवती न हो।

अकुलीन [वि.] (सं.) नीच कुल का। क्षुद्र। कुलहीन। कमीना।

अकुशल [संज्ञा पु.] (सं.) अमंगल। अशुभ। बुराई अहित।

[वि.] (हि.) अनाड़ी, अनिपुण। जो दक्ष न हो

अकुशल-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १—धर्म से अनभिज्ञ। पापी स्वभाव का। २—बौद्धमत के अनुसार जीवों का पाप करने का स्वभाव।

अकूट [वि.] (सं.) जो अवास्तविक या कृत्रिम न हो। सच्चा। असली।

अकूत [वि.] (हि.) जो कूता न जा सके। जिसकी संख्या परिणाम न बताया जा सके। अपरमित। अगणित।

अकूपार [सज्ञा पु.] (सं.) १—जिसका पार थोड़ा न हो। समुद्र। २—वह कच्छप जिस पर पृथ्वी का भार है। ३—पत्थर या चट्टान।

अकूर्च [वि.] (सं.) नमूँछा। विना मूँछ का।

[संज्ञा पु.] बुद्धदेव।

अकूलपाथार [संज्ञा पु.] (हिं.) महासागर।

अकूहल* [वि.] (देश) अत्यधिक। असंख्य। वहुत।

अकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख या संकटरहित। सुगमता। असंकोच।

अकृत [वि.] (सं.) १—विना किया हुआ। असम्पादित। २—बिगड़ा हुआ। अंडबंड किया हुआ। ३—नित्य, स्वयंभू। ४—प्राकृतिक। ५—कर्महीन। बे काम। निकम्मा।

अकृतकाल [वि.] (सं.) जिसके लिये कोई समय न हो। बे-मियाद।

अकृतघ्न [वि.] (सं.) अहसान मानने वाला। कृतज्ञ।

अकृतज्ञ [वि.] (सं.) कृतघ्न। अहसान-फरामोश उपकार न मानने वाला। अकृतज्ञता।

अकृताभ्यागम [संज्ञा पु.] (सं.) विना किये हुये कर्म के फल की प्राप्ति।

अकृतार्थ [वि.] (सं.) १—जिसका कार्य पूरा न हुआ हो। २—फलरहित।

अकृति, अकृती [वि.] (सं.) काम न करने योग्य निकम्मा। अयोग्य।

अकृत्रिम [वि.] (सं.) जो बनावटी न हो। स्वाभाविक। प्राकृतिक। नैसर्गिक। २—वास्तविक। यथार्थ। ३—हार्दिक।

अकृपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृपाविहीन। निर्दय नाराजी। कोप।

अकृपण [वि.] (सं.) जो कृपण या कंजूस न हो उदार। मुक्तहस्त।

अकृपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाराजी। रोष। अप्रसन्नता।

अकृष्टकर्म [वि.] (सं.) सदाचार। निर्दोषता।

अकृष्टपच्य [वि.] (सं.) जो विना जोते बोये आप से आप उत्पन्न होकर पक जाये।

अकेतन [वि.] (सं.) जिसके पास घरवार न हो खानाबदोश। बेठिकाना।

अकेल* अकेला [वि.] (हि.) जिसका कोई साथी न हो। एकाकी।

[संज्ञा पु.] (हिं.) अनुपम। निराला। एकांत। निर्जन स्थान।

अकेले [क्रि. वि.] (हिं.) १—एकाकी। विना साथ के। तनहा। २—केवल। सिर्फ।

अकेहरा [वि.] (हिं.) एक परत का। दोहरे का एक भाग।

अकैतव [वि.] (सं.) निष्कपट। छलरहित। सीधा।

अकैया [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं की पीठ पर लादन के निमित्त बनाया गया थैला या टोकरी। खुरजी या गोन।

अकोर [संज्ञा पु.] (सं.) असंख्य। करोड़ों।

अकोढ़ई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसी भूमि जो सींचने से यथा शीघ्र भर जाती हैं। ऐसी भूमि जहां पानी रुका रहता है।

अकोतरसौ [वि.] (हिं.) एक-सौ-एक।

अकोप [संज्ञा पु.] (हिं.) कोप का अभाव। प्रसन्नता।

अकोर [संज्ञा पु.] (हिं.) गोद। छाती। अंक।

अकोरना [क्रि. अ.] (हिं.) भुनना। तलना।

अकोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अँकवार। गोद। छाती।

अकोला [संज्ञा पु.] (हिं.) अंकोल का वृक्ष।

अकोविद [वि.] (सं.) जो विद्वान् न हो। मूर्ख। अज्ञानी। अनाड़ी।

अकोसना [क्रि. स.] (हिं.) कोसना। गालियाँ देना। बुरा भला कहना।

अकौआ, अकौवा [संज्ञा पु.] (हि.) १—आक। मदार। २—गले की घण्टी। कौवा।

अकौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) धुरा। डंडा जिस पर पहिया घूमता है।

अकौटिल्य [संज्ञा पु.] (हिं.) सरलता। कुटिलता का अभाव। निष्कपटता।

अकौशल [संज्ञा पु.] (सं.) कुशलता का अभाव। विरोध।

अक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माता। अम्मा। मां।

अक्के-दुक्के [क्रि.वि.] हि. अकेले। दुकेले।

अक्खड़ [वि.] हि. १—उद्धत। अड़ियल। उग्र। न मुड़ने वाला। उछृंखल। २—झगड़ालू। बिगड़ैल। ३—निर्भय। ४—निडर। ५—असभ्य। अशिष्ट। उजड्ड। मूर्ख। ६—जिसे कुछ कहने अथवा करने में कुछ संकोच न हो। स्पष्टवक्ता। खरा।

अक्खड़पन [संज्ञा पु.] (हिं.) उजड्डपन, अशिष्टता उछृंखलता। २—कलहप्रियता। उग्रता। ३—स्पष्टवादिता। ४—निश्शंकता।

अक्खर [संज्ञा पु.] (हिं.) अक्षर। हरफ। वर्ण।

अक्खा [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ों अथवा बैलों की पीठ पर रखकर अन्नादि लादने का थैला खुरजी। गौन।

अक्खोमक्खो [संज्ञा पु.] (हि.) एक टोटका, जिसमें स्त्रियां दीपक की लौ तक हाथ लेजाकर बच्चे के मुँह पर फेरती हैं।

अक्टोबर [संज्ञा पु.] (अं.) अंग्रेजी साल का दसवाँ महीना जिसमें ३१ दिन होते हैं।

अक्त [वि.] (सं) व्याप्त। संयुक्त। सकल। लिप्त। भरा हुआ।

अक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात।

अक्तूबर [संज्ञा पु.] (अं.) अंग्रेजी साल का। दसवां महीना।

अक्र [वि.] (सं.) स्थिर। सुदृढ़।

अक्रतु [वि.] (सं.) संकल्प-रहित।

अक्रम [वि.] (सं.) जो क्रम के अनुसार न हो। क्रमरहित। बे-तरतीब। बे-सिलसिले उलटा। सीधा।

[संज्ञा पु.] (सं.) क्रम का अभाव। व्यतिक्रम विपर्य्य। बे-तरतीब।

अक्रमसंन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम के अनुसार ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के पीछे संन्यास का क्रम आता है परन्तु इस क्रम के अनुसार न लिया गया संन्यास।

अक्रमातिशयोक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम की अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य सूचित किया जाता है।

अक्रव्याद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांस न खाने वाला।

अक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छोटी कटैया।

अक्रिय [वि.] (सं.) क्रियारहित। निश्चेष्ट। स्तब्ध।

अक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्रशस्त-कार्य।

अक्रीड [वि.] (सं.] क्रीड़ारहित।

अक्रूर [वि.] (सं.) जो क्रूर न हो। कोमल। दयालु। सरल।

[संज्ञा पु.] श्रीकृष्ण के चाचा का नाम।

अक्रोध [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध का अभाव। सहिष्णुता। दया।

अक्ल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) समझ। ज्ञान। बुद्धि। प्रज्ञा।

अक्ल का अजीर्ण होना = मूर्ख होना (व्यङ्ग)।

अक्ल का दुशमन = मूर्ख। बेवकूफ।

अक्ल का पुतला = बुद्धिमान।

अक्ल का पूरा = मूर्ख (व्यङ्ग)।

अक्ल का काम करना = समझ में आना।

अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरना = काम बिगड़ना। समझ के विपरीत कार्य करना।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना = नाना प्रकार के विचार करना।

अक्ल खर्च करना = सोचना। समझ से काम करना।

अक्ल चकराना, चक्कर में आना = हैरान होना। विस्मित होना।

अक्ल चरने जाना = बुद्धि का अभाव होना। समझ का जाता रहना।

अक्ल दंग रह जाना = स्तम्भित होना।

अक्ल दंग होना = विस्मित होना।

अक्ल देना = समझाना। सीख देना।

अक्ल दौड़ाना या लड़ाना = सोचना-विचारना। बुद्धि का प्रयोग करना। गौर करना।

अक्ल पर पत्थर पड़ना = मौके पर मूर्ख हो जाना।

अक्ल मारी जाना = बुद्धि नष्ट होना। विवेक-शून्य होना।

अक्ल से सरोकार न होना = बेवकूफ होना कुछ न समझना।

अक्लमन्द की दुम बनना = अपने को पण्डित या बुद्धिमान समझना।

अक्लम [संज्ञा पु.] (सं.) थकावट का अभाव।

अक्लमंद, अक्लमन्द [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चतुर। बुद्धिमान्। विज्ञ। सयाना। समझदार।

अक्लमंदी, अक्लमन्दी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) समझदारी। बुद्धिमानी। विज्ञता। सयानापन

अक्लांत, अक्लान्त [वि] (सं.) ग्लानिरहित।

अक्लिन्नवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों का वह रोग जिसमें पलकें चिपकती हैं।

अक्लिष्ट [वि.] (सं.) १—कष्ट रहित। बिना क्लेश का। २—सहज। सरल। सुगम।

अक्लेश [संज्ञा पु.] (सं.) १—क्लेश का अभाव। २—सरलता। सुगमता।

अक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—जूआ खेलने का पासा २—चौसर या पासों का खेल। ३—छकड़ा। गाड़ी। पहिये की धुरी। ५—वह डंडा या छड़ जिसमें पिरोई हुई गोल वस्तु घूमती है। ६—वह कल्पित सीधी रेखा जो आरपार दोनों ध्रुवों में मिलती है तथा जिस पर पृथ्वी घूमती है। ७—तराजू की डंडी। ८—व्यवहार या मामला। मुकदमा। ९—सोहागा। १०—आंख। ११—बहेड़ा। १२—रुद्राक्ष। १३—तूतिया। १४—साँप। १५—गरुड़। १६—आत्मा। १७—जन्मान्ध। १८—रावण का पुत्र। १९—आँवला। २०—सोलह माशे की तौल।

अक्षक [वि.] (सं.) जुआरी। पासे-जुआ खेलने वाला।

अक्षकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) रावण का पुत्र जो प्रमोदवन उजाड़ते समय हनुमान के हाथ से मारा गया था।

अक्षकूट, अक्षकूटक [संज्ञा पु.] (सं.) आँख की पुतली।

अक्षक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पासे का खेल। चौपड़। चौसर।

अक्षक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दङ्गल। कुश्ती करने का अखाड़ा। वह स्थान जहां मल्लयुद्ध होता है।

अक्षणिक [वि.] (सं.) स्थिर। निश्चल।

अक्षत [वि.] (सं.) १—बिना टूटा हुआ। जिसमें घाव न लगे हों। अखण्डित।

[संज्ञा पु.] १—बिना टूटे चावल जो पूजा के काम में आते हैं। २—जौ। ३—गणित में पूर्णाङ्क। जो भिन्न न हों। धान का लावा।

अक्षतयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—वह योनि जिसमें वीर्यपात न हुआ हो। २—वह कन्या जिसने पुरुष के साथ समागम न किया हो।

अक्षतवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री-प्रसङ्ग न किया हुआ पुरुष। वह पुरुष जिसका वीर्यपात न हुआ हो।

अक्षता [वि.] (सं.) जिसका पुरुष के साथ संसर्ग न हुआ हो।

[संज्ञा स्त्री.] १—वह स्त्री जिसने पुरुष के साथ संयोग न किया हो २—काकड़ासींगी।

अक्षदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायाधीश।

अक्षदेवी [वि.] (सं.) जूआ खेलने वाला।

अक्षद्यूत [संज्ञा पु.] (सं.) पासे का जूआ।

अक्षधुर [संज्ञा पु.] (सं.) पहिये की धुरी।

अक्षधूर्त [वि.] (सं.) पासे के खेल में चतुर।

अक्षन् [संज्ञा पु.] आँख।

अक्षपटल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—आँख की पलक। २—एक प्रकार का आंख का रोग।

अक्षपरि [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा पासा जिससे जुए में हार होती है।

अक्षपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—न्यायशास्त्र के प्रवर्तक गौतमऋषि। कहा जाता है कि गौतमऋषि ने अपने मत के खण्डनकर्ता वेदव्यासजी का मुख न देखने का प्रण किया था। जब वेदव्यासजी ने इन्हें प्रसन्न किया तो इन्होंने पैरों में नेत्र उत्पन्न करके इनको देखा और इस प्रकार अपना प्रण पालन किया इसीसे इनका नाम 'अक्षपाद' पड़ा। २—तार्किक। नैयायिक।

अक्षबंद, अक्षबन्द [संज्ञा पु.] (सं.) नजरबन्दी का खेल जिससे आसपास के लोग कुछ नहीं देख पाते। नज़रबन्दी।

अक्षम× [वि.] (सं.) १—क्षमारहित। असहिष्णु

अक्षमता× [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—असामर्थ्य २—असहिष्णुता। ३—ईर्ष्या। डाह।

अक्षमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईर्ष्या। क्षमा का अभाव।

अक्षमाला (संज्ञा स्त्री.) (सं.) १—रुद्राक्ष की माला २—'अ' से 'क्ष' तक के अक्षरों की वर्णमाला। ३—गुरु वशिष्ठ की स्त्री का नाम।

अक्षय [वि.] (सं.) १—जो नश्वर न हो। अविनाशी। २—स्थायी। कल्प के अन्त तक रहने वाला।

अक्षयकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के एक पुत्र का नाम जिसे हनुमान ने प्रमोदवन को उजाड़ते समय मारा था।

अक्षयतृतीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आखातीज। वैशाखशुक्ल-तृतीया। सतयुग का आरम्भ इसी तिथि को हुआ था इसी कारण से इसकी पुण्यस्मृति में स्नान-दान आदि करते हैं।

अक्षयनवमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिक-शुक्ला नवमी। त्रेतायुगारम्भ तिथि।

अक्षयवट [संज्ञा पु.] (सं.) प्रयाग तथा गया का बरगद का वृक्ष। प्राचीन मत है कि इसका नाश प्रलय में भी नहीं होगा।

अक्षया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमवती अमावस्या। रविवार की सप्तमी, मङ्गलवार की चौथ और अक्षयतृतीया अक्षयतिथि कहलाती है।

अक्षय्य [वि.] (सं.) अविनाशी। सदा बना रहने वाला। अक्षय।

अक्षय्योदक [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध में पिंड दान के उपरांत 'अक्षय्य' हो कहकर जल छोड़ा जाय।

अक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) अकारादि। हरुफ़।

[वि.] अविनाशी। स्थिर। नित्य।

अक्षर घोटना = पुस्तक के एक एक अक्षर को याद करना।

अक्षर घसीटना = जल्दी में लिखना।

अक्षर से भेट होना = १—अपढ़ होना। २—अनभिज्ञ होना।

अक्षरचंचु, अक्षरचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर अक्षर लिखने वाला। सुलेखक।

अक्षरछंद [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णवृत्त।

अक्षरजननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लेखनी। कलम।

अक्षरजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक। मुनीम।

अक्षरजीवी [वि.] (स.) लेखक।

अक्षरतूलिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) चित्रकार की कलम।

अक्षरन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १—लिखावट। लेख। २—तन्त्रशास्त्र की एक क्रिया जिसमें मन्त्र के एक एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नाक कान आदि छूते हैं।

अक्षरपंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंक्ति नामक वैदिक छंद का एक भेद जिसके चार पदों के वर्णों का योग बीस होता है।

अक्षरमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्णमाला।

अक्षरसुख [वि.] (सं.) अक्षर सीखने वाला।

अक्षरलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अक्षरों के लिखने की रीति।

अक्षरविन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) लेख। लिपि।

अक्षरशः [क्रि. वि.] (सं.) एक एक अक्षर। अक्षर अक्षर।

अक्षरशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) निरक्षर। मूर्ख। अनपढ़।

अक्षरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धुरी की रेखा।

अक्षरौटी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १—वर्णमाला। २—अक्षरौटी सितार पर बोल बजाने की क्रिया।

अक्षवाट् [संज्ञा पु.] (सं.) १—जूआ खेलने का स्थान। कुशती लड़ने का अखाड़ा।

अक्षसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष की माला।

अक्षहीन [वि.] (सं.) अंधा। नेत्रहीन।

अक्षांति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलन। ईर्ष्या। डाह।

अक्षांश [संज्ञा पु.] (सं.) १—पृथ्वी की धुरी। २—जिस अक्ष पर पृथ्वी घूमती है।

अक्षारलवण [संज्ञा पु.] (सं.) क्षार रहित लवण वह नमक जो मिट्टी से निकाला गया हो। २—बिना नमक का पदार्थ।

अक्षि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आंख।। नेत्र।

अक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) आल का वृक्ष।

अक्षिगत [वि.] (सं.) आंख पर चढ़ा हुआ (वैरी)

अक्षिगोलक [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का ढेढ़न।

अक्षितारा [संज्ञा स्त्री] आंख की पुतली।

अक्षिपटल [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का परदा।

अक्षिविक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) कटाक्ष। आंख मारना।

अक्षिविभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) आंख घुमाना।

अक्षीण [वि.] (सं.) १—न घटने वाला। जो कम न हो। २—अविनाशी। नाशरहित।

अक्षीव [वि.] (सं.) जो मतवाला न हो। चैतन्य। शान्त। धीर।

[संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन का वृक्ष। २—समुद्र का नमक।

अक्षुण्ण, अक्षुरण [वि.] (सं.) १—बिना टूटा हुआ। अभग्न। २—अकुशल। अनाड़ी।

अक्षेम [संज्ञा पु.] (सं.) अशुभ। अमङ्गल। बुराई

अक्षोट [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट।

अक्षोनि❀ [संज्ञा पु.] ((सं.) अक्षौहिणी।

अक्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) १—क्षोभ का अभाव। अनुद्वेग। स्थिरता। शांति। २—हाथी बांधने का खूंटा।

[वि.] (सं) क्षोभरहित। स्थिर। उद्वेगहीन।

अक्षौहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पूर्ण चतुरङ्गिणी सेना। वह सेना जिसमें १०९३५० पैदल ६५६१० घोड़े २१८७० रथ तथा २१८७० हाथी।

अक्स [संज्ञा पु.] (अ.) प्रतिबिम्ब। परछाईं। छाया।

अक्सर [क्रि. वि.] (अ.) प्रायः। बहुधा।

अक्सीतसवीर [संज्ञा पु.] (फा.) फोटो। आलोक-चित्र।

अखंग, अखङ्ग❀ (सं.) न चुकने वाला। अविनाशी।

अखंड, अखण्ड (वि.) १—अटूट। जिसके टुकड़े न हों। पूरा। सम्पूर्ण। २—जिसका क्रम न टूटे। जो बीच में न रुके। ३—बेरोक। निर्विघ्न।

अखंडनीय, अखण्डनीय [वि.] १—जिसका टुकड़ा न हो सके। जो काटा न जा सके। २—अकाट्य। जिसके विपरीत कहा न जा सके। पुष्ट।

अखंडल❀ [वि.] (सं.) १—अखण्ड। अटूट। अविच्छिन्न। २—सम्पूर्ण। समूचा। पूरा।

अखंडित, अखण्डित [वि.] १—अविच्छिन्न। विभागरहित। २—सम्पूर्ण। समूचा। पूरा। ३—बाधारहित। जिसमें कोई विघ्न न हो।

अख [संज्ञा पु.] (देशज) बगीचा। बाग।

अखगरिया [संज्ञा पु.] (फा.) जिस घोड़े के मलते समय चिनगारियां निकलती हों।

अखड़ [वि.] (हिं.) अनाड़ी। अशिष्ट। असभ्य

अखड़ा+ [संज्ञा पुं.] (हिं.) चंदवा। ताल की बीच का गड्ढा जिसमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

अखड़ैत [संज्ञा पु.] पहलवान। बलवान मनुष्य

अखती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अक्षयतृतीया। वैशाख शुक्ल तृतीया।

अखतीज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अक्षयतृतीया। वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया।

अखनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मांस का रस या शोरवा।

अखबार [संज्ञा पु.] (अं.) समाचारपत्र। संवाद पत्र।

अखय❀ [वि.] (हिं.) जिसका क्षय न हो। न छीजने वाला। अविनाशी।

अखर [संज्ञा पु.] (हिं.) अक्षर। वर्ण। हरुफ।

अखरना [स. क्रि.] (हिं.) बुरा लगना। अनुचित जान पड़ना। खलना।

अखरा [वि.] (हिं.) जो खरा न हो। झूठा। बनावटी। कृत्रिम।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १—अक्षर। हरुफ। २—भूसी मिला जौ का आटा।

अखरोट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष तथा उसका फल। एक मेवा।

अखरोट-जङ्गली [संज्ञा पु.] जायफल।

अखर्ब [वि.] (सं.) लम्बा। बड़ा।

अखसत [संज्ञा पु.] (हिं.) अक्षत। चावल।

अखा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बारीक आटा चालने की चलनी। अँगिया।

[वि.] (हिं.) पूरा। परिपूर्ण। सम्पूर्ण।

अखाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—मल्लयुद्ध या कुश्ती करने का स्थान। २—साधुओं की मंडली। ३—साधुओं के रहने का स्थान। ४—तमाशा दिखाने वाले तथा नाच-गान करने वालों का जमावड़ा। ५—सभा। दरबार मजलिस। रंगशाला। मैदान।

अखात [संज्ञा पु.] (सं.) १—ताल। झील। जलाशय। २—खाड़ी।

अखाद्य [वि.] (सं.) न खाने योग्य। अभक्ष्यं।

अखानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक टेढी छुरी या लकड़ी जो गल्ला पीटने के काम आती है।

अखार [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हार के चाक के ऊपर रखा मिट्टी का लौंदा।

अखारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अखड़ा'।

अखिल [वि.] (सं.) १—समग्र। सम्पूर्ण। सब। २—अखण्ड। सर्वाङ्गपूर्ण।

अखीन ❀ [वि.] (हिं.) न घटने वाला। न छीजने वाला। स्थिर। नित्य।

अखीर [संज्ञा पु.] (फा.) १—अन्त, छोर। २—समाप्ति।

अखूट [वि.] (हिं.) अक्षय। अखंड। जो न घटे या समाप्त हो।

अखेट [संज्ञा पु.] (हिं.) आखेट। शिकार। मृगया।

अखेटक [संज्ञा पु.] ((हिं.) शिकारी। आखेटक।

अखेद [वि.] (सं) खेदरहित। प्रसन्न।

[संज्ञा पु.] (सं.) दुःख का अभाव। प्रसन्नता

अखै ❀ [वि.] (हिं.) अक्षय। अविनाशी।

अखैनी [संज्ञा स्त्री] (हि.) जेली। चार पांच हाथ लम्बी लकड़ी जिससे किसान कटे अनाज उलट-पलटकर सुखाते हैं।

अखैबर [संज्ञा पु.] (हि.) अक्षयवट।

अखोर❀ [वि.] (फा.) १—अच्छा। भद्र। सज्जन। २—सुन्दर। ३—निर्दोष। बुराई से रहित।

[संज्ञा पु.] १—कूड़ा-करकट। निकम्मी वस्तु। २—बुरा चारा। खराब घास।

अखोल [संज्ञा पु.] (हिं) अंकोल का वृक्ष।

अखोह [संज्ञा पु.] (हिं.) उबड़खावड़ भूमि। ऊंची-नीची पृथ्वी।

अखौट, अखौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—चक्की के बीच की खूंटी जिस पर ऊपर का पाट घूमता है। २—लकड़ी अथवा लोहे का डंडा जिस पर गडारी घूमती है।

अख्खाह [अव्य.] (हिं.) उद्वेग अथवा आश्चर्य-सूचक शब्द।

अख्ज [संज्ञा पु.] (अ.) लेना। ग्रहण।

अख्तावर [संज्ञा पु.] (फा.) वह घोड़ा जिसके जन्म से ही अंडकोश की कौड़ी न हो।

अख्तियार [संज्ञा पु.] (फा.) १—अधिकार। २—अधिकारक्षेत्र। ३—सामर्थ्य। ४—प्रभुत्व। स्वत्व।

अख्यात [वि.] (सं.) अप्रसिद्ध। अज्ञात। जिसे कोई जानता न हो।

अख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १—आख्यान। वर्णन वृतान्त। २—कथा। कहानी। ३—उपन्यास के तीन भेदों में से एक।

अख्यायिका [संज्ञा स्त्री] (सं) कथा। कहानी। आख्यायिका।

अगंड [संज्ञा पु.] (सं.) बिना हाथ पैर का धड़।

अग [वि.] (सं.) १—न चलने वाला। स्थावर। २—टेढ़ा चलने वाला।

[संज्ञा पु.] १—वृक्ष। पेड़। २—पर्वत। पहाड़ ३—सूर्य। ४—सांप।

अगई [संज्ञा पु.] १—उत्तरप्रदेश, बंगाल, मध्य प्रदेश तथा मद्रास में पाया जाने वाला एक वृक्ष।

अगज [वि.] (सं) पर्वत से उत्पन्न होने वाला।

[संज्ञा पु. (सं.) १—शिलाजीत। २—हाथी।

अगट [संज्ञा पु.] (देश.) मांस बेचने वाले की दूकान।

अगटना [क्रि. अ.] (हिं.) एकत्रित होना। जमा होना।

अगड़ ꙮ [संज्ञा पु.] (हिं.) अकड़। ऐंठ। दर्प।

अगड़धत, अगड़धत्ता [वि.] (हिं) ऊंचा, लम्बा-तड़ङ्गा। २—श्रेष्ठ। बढ़ाचढ़ा।

अगड़बगड़ [वि.] (हिं.) १—बे काम का। अंड-बंड। बेसिर पैर का। २—व्यर्थ का काम। अनुपयोगी कार्य।

अगड़ा+ [संज्ञा पु.] (देश.) दाना झड़ी हुई। ज्वार बाजरे की बाल।

अगणनीय [वि.](सं.)१—अनगिनत। असंख्य।

अगणित [वि.] देखो 'अगणनीय'।

अगण्य [वि.] (सं.) न गिनने योग्य। सामान्य। तुच्छ। असंख्य।

अगत [वि.] (सं.) महावत हाथीको आगे बढ़ाने के लिये 'अगत-अगत' शब्द कहते हैं। २—ꙮ + देखो 'अगति'।

अगात [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी गति। दुर्दशा। खराबी।

अगतिक [वि.] (सं.) जिसका कोई ठिकाना न हो। अशरण। अनाथ।

अगती [वि.] (सं.) मोक्ष के अधिकारी से वंचित। पापी। बुरी गति वाला। दुराचारी। [संज्ञा पु.] (सं.) कुकर्मी मनुष्य। पापी आदमी।

अगत्तर +[वि.] (हिं.) आने वाला।

अगत्या [क्रि. वि.] (सं) १—भविष्य में। २—आगे चल कर। पीछे से ३—अकस्मात्।

अगद [वि.] (सं.) निरोग। आरोग्य। चंगा।

[संज्ञा पु.] औषधि। दवा।

अगदतंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) आयुर्वेद के आठों भागों में से एक जिसमें सर्प, बिच्छू आदि के विष की चिकित्सा का उल्लेख है।

अगन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) आग। अग्नि।

अगनत [वि.] (हिं.) अगणित। जिसकी गणना न की जाती हो असंख्य।

अगनित (वि.) (हिं.) अनगिनत। बे-हिसाब। बहुत। बेशुमार।

अगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—आग। अग्नि। २—घोड़े के माथे के घुमे हुये बाल जिसमें भौंरी पड़ी हुई हो।

अगनू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अग्निकोण।

अगनेउ [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नेय दिशा। अग्नि-कोण।

अगनेतꙮ [संज्ञा पु.] अग्नेयकोण।

अगम [वि.] (हिं.) १—न जानने योग्य। जहां कोई जा न सके। दुर्गम। गहन। २—विकट। कठिन। ३—न मिलने योग्य। दुर्लभ। ४—अपार। अत्यन्त। बहुत। ५—बुद्धि से परे। दुर्बोध। ६—अथाह। बहुत गहरा।

अगमनꙮ [क्रि. वि.] (हिं.) आगे। पहिले प्रथम।

अगमनीया [वि.] (हिं.) न गमन करने योग्य स्त्री।

अगमानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मेहमान का आगे जाकर स्वागत करना। अगवानी।

[संज्ञा पु.] सरदार। नेता। नायक। अगुआ।

अगमासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—वह लकड़ी (हल की) जिसमें फाला लगा होता है। २—खेतिहर मजदूर की वह मजदूरी जो पैदावार में से पाता है। अकवाँसी।

अगम्य [वि.] (सं.) १—न जानने योग्य। जहां कोई न जा सके। दुर्गम। २—विकट। कठिन मुशकिल। ३—अपार। अत्यन्त। ४—बुद्धि की पहुंच से बाहर। अज्ञेय। ५—अथाह। गहरा।

अगम्या [वि.] (सं.) न गमन करने योग्य (स्त्री)।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध है जैसे गुरुपत्नी, राजपत्नी, सोतेली मां, मां, कन्या आदि।

अगम्यागमन [संज्ञा पु.] (सं.) निषिद्ध स्त्री से संभोग। अगम्या स्त्री से सहवास।

अगर [अव्य.] (फा.) यदि। जो।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक सुगन्धित वृक्ष।

अगर मगर करना=१—मीन-मेख निकालना व्यर्थ की तर्क करना। २—व्यर्थ का लड़ाई झगड़ा करना। टालमटूल करना।

अगरई [वि.] (हिं.) श्यामता लिये हुए सुनहरे रंग का।

अगरचे [अव्य.] (फा.) यद्यपि। गोकि।

अगरना [अव्य.] (हिं.) आगे बढ़ना। भागना।

अगरपार [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रियों की ए जाति।

अगरबत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूपबत्ती। अग तथा अन्य सुगन्धित पदार्थों से लिपटी सींक।

अगरवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) बनियों की ए जाति।

अगरसार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सुगन्धित वृक्ष।

अगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—एक प्रकार की घास। २—किवाड़ की आगल। सिटकनी। ३—चूहे का विष उतारने की जड़ी।

अगरू [संज्ञा पु.] (सं.) अगर की लकड़ी।

अगरोꙮ [वि.] (हिं.) १—पहिला। अगला। २—श्रेष्ठ। ३—अधिक।

अगर्व [वि.] (सं.) गर्व या अभिमान रहित। निराभिमान।

अगर्हित [वि.] (सं.) प्रशंसित। निन्दा न किया हुआ।

अगलबगल [वि.] (फा.) आसपास। साथसाथ। इधर-उधर।

अगलहिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक चिड़िया।

अगला [वि.] (हिं.) १—आगे का। २—पहिला। प्रथम। ३—प्राचीन। पुराना। ४—आनेवाला भविष्य। आगामी। ५—एक के बाद का। दूसरा।

[संज्ञा पु.] १—अगुआ। अग्रसर। प्रधान। २—चतुर मनुष्य। चालाक व्यक्ति। ३—पूर्वज। पुरखा।

अगबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अगवानी। अभ्यर्थना

अगवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) घर के आगे का भाग।

अगवान [संज्ञा पु.] (हिं.) १—स्वागत या अभ्यर्थना करने आगे आने वाला। २—विवाह में कन्या पक्ष के द्वारा बरात का स्वागत कार्य।

अगवानीं [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिथि के आते पर आगे बढकर उदार अभ्यर्थना करना। २—कन्या पक्ष की ओर से उत्साहपूर्वक बरात की गई अभ्यर्थना।

अगवार [संज्ञा पु.] (हिं.) घर के सामने का भाग। २—खेतिहर मजदूर के लिए खलिहान से निकाला हुआ अन्न का भाग। ३—गांव का चमार।

अगवासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १—हल की लकड़ी का वह भाग जिससें फाल लगा होता है। २—खेतिहार मजदूर की मजदूरी का वह भाग जो उसे फसल से प्राप्त होता है।

अगसारी [क्रि. वि.] (हिं.) आगे।

अगस्त, ऑगस्ट् [संज्ञा पु.] (अं) अंग्रेजी साल

का आठवां महीना ।

अगस्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक ऋषि का नाम जो मित्रावरुण के पुत्र थे । २—भादोंमास में सिंह के सूर्य से सत्रहवें अंश पर उदय होने वाले तारे का नाम । ३—एक वृक्ष ।

अगस्त्यकूट [संज्ञा पु.] (सं.) मद्रास प्रान्त के पर्वत का नाम जिसमें से ताम्रापर्णी नदी निकली है ।

अगस्त्यगीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगस्त्यरचित महाभारत कालीन पुस्तक ।

अगस्त्यचार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगस्त्य नक्षत्र का उदय ।

अगस्त्यसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगस्त्यमुनि प्रणीत शास्त्र ।

अगस्त्यहर्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक आयुर्वैदिक औषधि ।

अगस्त्योदय [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण दिशा की ओर से अगस्त्य नक्षत्र का उदय ।

अगह [वि.] (हिं.) जो ग्रहण न किया जा सके । न पकड़ने योग्य । न हाथ में आने लायक । चंचल । २—न धारण करने योग्य । कठिन । मुशकिल । ३—जो वर्णन तथा चिन्तन के बाहर हो ।

अगहन [संज्ञा पु.] (हिं.) मंगसिर मार्गशीर्ष ।

अगहनिया [वि.] (हिं.) अगहन मास में काटा जाने वाला धान ।

अगहनी [वि.] (हिं.) अगहन में तैयार होने वाला ।

[संज्ञा स्त्री.] अगहन में काटी जाने वाली फसल । यथा उरद, धान, जड़हन इत्यादि ।

अगहर*+ [क्रि. वि.] (हिं.) १—पहिले । प्रथम २—आगे ।

अगहाट [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भूमि जो किसी के अधिकार में हो और उससे बेदखल न किया जा सके ।

अगहुँड़* [वि.] (हिं.) आगे चलने वाला । अगुआ । अग्रगामी ।

अगाउनी* [क्रि. वि.] (हिं.) आगे । पहिले ।

अगाऊ [वि.] (हिं.) १—पेशगी । अग्रिम । २—अगला । आगे का ।

*[क्रि. वि.] (हिं.) आगे से । पहले । प्रथम

अगाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) आगे का भाग । हुक्के की निगाली । २—खेत सींचने की ढेंकली के सिरे पर लगी लकड़ी ।

अगाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—यात्री द्वारा अगले पड़ाव पर पहिले से भेजा जाने वाला सामान २—कछार । तरी ।

अगाड़ी, अगाड़ [वि.] (हिं.) १—आगे । २—पहिले । ३—भविष्य में ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १—किसी वस्तु का अग्रभाग । २—कुरते का सामने का हिस्सा । ३—सेना का पहला धावा । ४—घोड़े की गर्दन में बांधने की रस्सी ।

अगात्र [वि.] (सं.) बिना शरीर का ।

अगाध [वि.] (सं.) १—अथाह । बहुत गहरा । २—अपार । असीम । बहुत । ३—जिसका कोई पार न पा सके ।

अगामैं [क्रि. वि.] (हिं.) आगे ।

अगार [क्रि. वि.] (हिं.) १—आगे । अगाड़ी । २—घर । निवासस्थान ।

अगारी [क्रि. वि.] (हिं.) अगाड़ी ।

अगाव+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊख के ऊपर का नीरस भाग । अगौरा ।

अगास* [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आकाश । २—द्वार के आगे का चबूतरा ।

अगासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चील की चीत्कार । पगड़ी ।

अगाह [वि.] (हिं.) १—बहुत गहरा । अथाह । २—बहुत । अत्यन्त । ३—गंभीर । उदास । चिन्तित । ४—ज्ञात । विदित । प्रगट ।

अगियाना, अगिआना [क्रि. अ.] (हिं.) गरमाना । जल उठना । जलन मालूम होना ।

अगिन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—आग । अग्नि । २—एक प्रकार की छोटी चिड़िया । ३— एक प्रकार की घास । ४—ईख का ऊपरी भाग ।

अगिनबोट [संज्ञा पु.] (अं.) भाप के एंजिन द्वारा चलने वाली बड़ी नाव । स्टीमर । धुआँकस ।

अगिनित *[वि.] अनगिनती । अगणित ।

अगिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एक प्रकार की घास जो कोदों तथा ज्वार के पौधों को जला देती है । २—घोड़ों तथा बैलों का एक रोग । ३—पैर में पीले छाले हो जाने का एक रोग । ४—राजा विक्रमादित्य के एक बैताल का नाम । ५—एक जहरीले रोवों वाला पौदा ।

अगियाकोइलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा विक्रमादित्य के दोनों सिद्ध बैतालों के नाम ।

अगियाबैताल [संज्ञा पु.] (हिं.) विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक का नाम । २—मुँह से आग फेंकने वाला भूत । उल्कामुख-प्रेत ।

अगिर [संज्ञा पु.] (सं.) १—अग्नि । २—स्वर्ग । ३—सूर्य । ४—राक्षस ।

अगिरीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घर के आगे का भाग ।

अगिला+ [वि.] (हिं.) अगिला । पहिला ।

अगिहाना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आग रखने का स्थान । चूल्हा । अंगीठी । भट्टी ।

अगीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) आगे का भाग । अगवाड़ा ।

अगीतपछीत* [क्रि. वि.] (हिं.) आगे-पीछे । आगे-पीछे की ओर ।

[संज्ञा पु.] अगवाड़ा-पिछवाड़ा । आगे का तथा पीछे का भाग ।

अगु [संज्ञा पु.] (सं.) राहुग्रह । किरणविहीन ।

अगुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अग्रणी । आगे चलने वाला । २—मुखिया । नेता । सरदार । नायक । प्रधान । ३—रहनुमा । मार्गदर्शक । ४—विवाह सम्बन्ध ठीक करने वाला ।

अगुआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अग्रसरता । २—प्रधानता । सरदारी । ३—मार्ग-प्रदर्शन । रहनुमाई ।

अगुआना [क्रि. अ.] (हिं.) आगे करना । अगुआ बनना । मुखिया या नेता बनना ।

अगुवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अभ्यर्थना । अगवानी ।

अगुण [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुण । गुण रहित । दोष । बुराई । दूषण ।

[वि.] निर्गुणी । अनाड़ी । मूर्ख ।

अगुणज्ञ [वि.] (सं.) गुण को न जानने वाला । अनाड़ी । मूर्ख । गंवार । जिसे गुण की परख न हो ।

अगुणी [वि.] (सं.) गुणरहित । अनाड़ी । निगुणी । मूर्ख ।

अगुताना*+ [क्रि. अ.] (हि.) उकताना ।

अगुन [वि.] (हिं.) अगुण । गुणरहित । मूर्ख ।

अगुमन [क्रि. वि.] (हिं.) अगमन । आगे । पहिले ।

अगुरु [वि.] (सं.) १—हलका । गौरवहीन । २—बिना गुरु का । निगुरा । ३—लघु या ह्रस्व (वर्ण) ।

[संज्ञा पु.] (सं.) शीशम का वृक्ष । अगुरु चन्दन ।

अगुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अगुआ' ।

अगूढ़ [वि.] (सं.) जो छिपा न हो । स्पष्ट । आसान । सरल । अगुप्त ।

अगूढ़गंध, अगूढ़गन्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) हींग । जिसी गन्ध छिपी न हो ।

अग्रह्य [वि.] (सं.) न ग्रहण करने योग्य ।

अगेंथ [संज्ञा पु.] (हिं.) अरनी का वृक्ष । गनियारी ।

अगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वतराज अर्थात् हिमालय । सुमेरु ।

अगेला [सज्ञा पु.] (हिं.) १—वह आभूषण जो हाथ में सबसे आगे पहिना जाता है । २—भूसे के साथ उड़कर आगे आने वाला अन्न ।

अगेह [वि.] (सं.) बिना घरबार का । गृहरहित । बे-ठिकाने ।

अगौरा [संज्ञा पु.] (हि.) नई फसल का पहला अन्न ।

अगोई [वि.] (हिं.) जो छिपो न हो । प्रगट ।

अगोचर [वि.] (सं.) जो इन्द्रियों से अनुभव न

हो सके। अप्रगट। अव्यक्त। इन्द्रियातीत। अप्रत्यक्ष।

अगोट [संज्ञा स्त्री] (हि.) रोक। ओट। आड़। भीत।

अगोटना [क्रि. स.] (हि.) १—रोकना। २—कैद करना। बन्द कर रखना। ३—छिपाना। टांकना।
[क्रि. अ.] (हि.) रुकना। अड़ना। उलझना। ठहरना। फंसना।

अगोता [क्रि. वि.] (हि.) आगे। सामने।

अगोरदार [संज्ञा पु.] (हि.) रखवाली करनेवाला। रक्षक। पहरेदार। चौकीदार।

अगोरना [क्रि. स.] (हि.) १—वाट जोहना। प्रतीक्षा करना। २—रखवाली करना। पहरा देना। ३—रोकना।

अगोरा [संज्ञा पु.] (हि.) रखवाला।

अगोरिया+ [संज्ञा पु.] (हि.) खेत की या वृक्ष के फलों की रखवाली करने वाला।

अगोही+ [संज्ञा पु.] (हि.) ऐसा बैल जिसके सींग आगे की ओर वढ़े हुए हों।

अगौंड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ईख के ऊपर का भाग। अगाव।

अगौढ़+ [संज्ञा पु.] (हि.) पेशगी। अगाऊ। अग्रिम धन।

अगौनी* [संज्ञा स्त्री.] (हि) १—अगवानी। विवाहोत्सव पर बरात आने पर द्वारपूजा के समय छोड़ी जाने वाली आतशबाजी।
[क्रि. वि.] आगे।

अगौरा [संज्ञा पु.] (हि.) ईख के ऊपर का नीरस भाग।

अगौली [संज्ञा पु.] (हि.) नाटे कद की ईख।

अगौहैं [क्रि. वि.] (हि.) आगे। अगाड़ी की ओर।

अग्नायी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) **अग्निदेवता** की पत्नी। स्वाहा।

अग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—आग। पावक। अनल। वह्नि। वैद्यक मतानुसार अग्नि तीन प्रकार की होती है १—भौमाग्नि = जो काठ तृण आदि से जलती है। २—दिव्याग्नि = आकाश में बिजली से उत्पन्न होती है। ३—जठराग्नि = नाभि के ऊपर और हृदय के नीचे रहकर अन्न पचाती है। कर्मकाण्ड के अनुसार अग्नि छः प्रकार की मानी जाती है—गार्हपत्य, आह्वनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य, औपासनाग्नि। वेद के तीन देवताओं में से एक (अग्नि, वायु तथा सूर्य)। अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम — काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता।

अग्निक [संज्ञा पु] (सं.) इन्द्रगोप. वीरवहूटी नामक कीड़ा।

अग्निकण [संज्ञा पु.] (सं.) चिनगारी। स्फुलिंग

अग्निकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १—होम। हवन। अग्निहोत्र। २—शवदाह। अग्निसंस्कार।

अग्निकारिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) भूख बढ़ाने वाली औषधि।

अग्निकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र। आग जलाने का काम। अग्निकर्म।

अग्निकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) अगर की लकड़ी।

अग्निकीट [संज्ञा पु.] (सं.) समन्दर नाम कीड़ा

अग्निकुक्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) १—लुक। लुकरी २—लालपक्षी।

अग्निकुंड [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय। षडानन

अग्निकुल [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों का एक वंश या कुल।

अग्निकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १—शिव का एक २—रावण की सेना का एक राक्षस।

अग्निकोण [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व तथा दक्षिण का कोण।

अग्निक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शवदाह। अग्निसंस्कार। मुर्दा जलाना।

अग्निक्रीडा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आतिशबाज़ी।

अग्निगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकान्तमणि। आतशी शीशा।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमी का वृक्ष। बबूल।

अग्निगर्भ-पर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वालामुखी पहाड़।

अग्निगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमी की वेल।

अग्निघृत [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषधि जो भूख बढ़ाती है।

अग्निचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्रानुसार दोनों भौंहों के मध्य का स्थान जिसमें बिजली के समान ज्योति होती है।

अग्निचित् [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्री।

अग्निज [वि.] (सं.) १—अग्नि से उत्पन्न। २—पाचक। ३—अग्नि को पैदा करने वाला ४—अग्नि या उसके ताप से होने या बनने वाला इग्नियस।
[संज्ञा पु.] १—कार्तिकेय। २—सुवर्ण। सोना।

अग्निजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १—कार्तिकेय, सोना, सुवर्ण।

अग्निजार [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष।

अग्निजिह्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १—देवता। २—अग्नि की सात शिखा।

अग्निज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अग्नि की लपट। २—धव का वृक्ष। ३—जलपिप्पली का वृक्ष। अग्निझाल।

अग्निझाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपिप्पली नामक औषधि।

अग्नितापस [वि.] (सं.) अपने चारों ओर अग्नि जलाकर तपस्या करने वाला।

अग्नितुंडी, अग्नितुंडावटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजीर्ण दूर करने वाली गोली।

अग्निदाता [संज्ञा पु.] (सं.) अंत्येष्टि क्रिया में मुखाग्नि देने वाला।

अग्निदाह [संज्ञा पु.] (सं) १—आग में जलाने का कार्य। २—शवदाह।

अग्निदीपक [वि.] (सं.) पाचन शक्ति को वढ़ाने वाला। जठराग्नि को प्रज्वलित करने वाला।

अग्निदीपन [संज्ञा पु.] (सं.) १—जठराग्नि की वृद्धि। २—पाचन शक्ति को वढ़ाने वाली दवा।

अग्निदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) आग का देवता। जो देवता माने जाते हैं।

अग्निधान [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र का स्थान।

अग्निदेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृत्तिका नक्षत्र।

अग्निनिर्वापण [संज्ञा पु.] (सं.) आग को बुझा देना।

अग्निपरिक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं.) हवन आदि से अग्नि की पूजा।

अग्निपरीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—सोना चांदी को आग में तपाकर खोटा खरा देखना। २—आग पर चलाकर दोषादोष की परीक्षा करना।

अग्निपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह पुराणों में से आठवां पुराण जिसे अग्नि ने पहिले वशिष्ठजी को सुनाया।

अग्निप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं) शुभ कार्य में अग्नि की स्थापना।

अग्निप्रस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) चमकदार पत्थर। अग्नि उत्पन्न करने वाला पत्थर।

अग्निबाण [संज्ञा पु.] (सं.) वह बाण जिसके चलाने से अग्नि की ज्वाला प्रकट हो। भस्म करने वाला बाण।

अग्निबाव [संज्ञा पु.] (सं.) पशुओं को होने वाला रोग।

अग्निबीज [संज्ञा पु.] (सं.) सोना।

अग्निबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) धूआँ। धूम्र।

अग्निभ [संज्ञा पु.] (सं.) १—सोना। सुवर्ण। २—कृत्तिका नक्षत्र। ३—लाल पदार्थ।

अग्निभू [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय। जल। सुवर्ण।

अग्निमंथ, अग्निमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) अरणी नामक वृक्ष जिसकी लकड़ी को परस्पर घिसने से अग्नि प्रज्वलित हो जाती है।

अग्निमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्यकांतमणी एक मूल्यवान पत्थर। २—सूर्यमुखी शीशा आतशी शीशा।

अग्निमांद्य [संज्ञा पु.] (सं.) भूख न लगने का रोग। मन्दाग्नि।

अग्निमारुति [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि का नाम

129802
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

R: 1.1
नवल-ना

अग्निमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १—देवता २—ब्राह्मण। ३—प्रेत। ४—चीते का वृक्ष। ५—भिलावे का पेड़। ६—एक अजीर्ण नाशक औषधि।

अग्निमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री मन्त्र। भिलाँवे का पेड़।

अग्नियुग [संज्ञ पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार पाँच वर्ष का काल।

अग्निरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि से रक्षा करने का मन्त्र।

अग्निरूप [बि.] (सं.) अग्नि के से रंग का।

अग्निरेतस् [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। सुवर्ण।

अग्निरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह रोग जिसमें रोगी के शरीर में लाल फफोले पड़ जाते हैं। तथा दाह और ज्वर होता है।

अग्निलिंग [संज्ञा पु.] (सं.) आग की लपट की रंगत तथा उसके झुकाव से शुभाशुभ का फल बताने की विद्या।

अग्निलोक [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरु पर्वत के अंचल का प्रदेश।

अग्निवक्र [संज्ञा पु.] (सं.) भिलाँवे का पेड़।

अग्निवत् [वि.] (सं.) अग्नि के समान।

अग्निवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष की पुत्री।

अग्निवर्धक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूख बढ़ाने वाली औषधि।

अग्निवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) १—साखू का वृक्ष साल का पेड़। साल से निकली हुई गोंद।

अग्निवाह [संज्ञा पु.] (सं.) आग प्रज्वलित करने वाला पदार्थ। धुवाँ।

अग्निवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि का रथ। बकरा।

अग्निविकार [संज्ञा पु.] (सं.) भूख न लगने का रोग। मंदाग्नि।

अग्निविद् [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्री।

अग्निविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्निहोत्र। प्रातः सायं मंत्रों द्वारा अग्नि की उपासना की विधि।

अग्निविन्दु [वि.] (सं.) चिनगारी। स्फुलिङ्ग।

अग्निविश्वरूप [संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता के अनुसार केतु ताराओं का एक भेद।

अग्निवीज, अग्निवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्ण सोना।

अग्निवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूख अधिक लगना।

अग्निवेश [संज्ञा पु.] (सं.) महर्षि आत्रेय के शिष्य जो प्राचीन समय में पाञ्चाल देश में राज्य करते थे।

अग्निव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १—वेद की एक ऋचा का नाम। २—अग्निसंस्कार।

अग्निशर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम जो खड़े कोणी थे।

अग्निशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि रखने की जगह।

अग्निशिख [संज्ञा पु.] (सं.) १—कुसुम या बर्रे का वृक्ष। २—सोना। सुवर्ण। ३—केसर। कुंकुम। ४—दीपक। ५—बाण। तीर।

अग्निशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की ज्वाला। आग की लपट।

अग्निशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अग्नि से शुद्ध करने की क्रिया। २—अग्नि की परीक्षा।

अग्निशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकुम या केसर का पौदा।

अग्निश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की ज्योति।

अग्निष्टुत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक दिन में पूरा होने-वाला यज्ञ।

अग्निष्टोम [संज्ञा पु.] (सं.) वसन्तऋतु में स्वर्ग प्राप्ति के निमित्त किया जाने वाला पाँच दिन का यज्ञ जिसमें सोमरस पिया जाता है इसमें ऋत्विजों की संख्या सोलह होती है। और इस यज्ञ को करने का अधिकार केवल ब्राह्मण अग्निहोत्री को ही होता है।

अग्निसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) दाहक्रिया। मुरदा जलाने का कार्य।

अग्निसखा [संज्ञा पु.] (सं.) हवा। वायु। पवन।

अग्निसंभव [संज्ञा पु.] (सं.) १—अग्नि से उत्पन्न होने वाली वस्तु। २—सुवर्ण। सोना। ३—जंगली केशर।

अग्निसहाय [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। धुवाँ।

अग्निसाक्षिक [वि.] (सं.) अग्नि को साक्षी करने वाला।

अग्निसात् [वि.] (सं.) अग्नि द्वारा भस्म किया हुआ।

अग्निसाध्य [वि.] (सं.) जो अग्नि से जलाया जा सके।

अग्निसार [संज्ञा पु.] (सं.) रसाञ्जन।

अग्निसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलरहित शाखा। मञ्जरी।

अग्निसेवन [संज्ञा पु.] (सं.) आग तापना।

अग्निष्वात्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १—पितरों का एक भेद २—आग, बिजली आदि विद्याओं का ज्ञाता।

अग्निस्तोक [संज्ञा पु.] (सं.) चिनगारी

अग्निहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ। वेद मन्त्रों द्वारा अग्नि में आहुति डालने की क्रिया।

अग्निहोत्री [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र करने वाला।

अग्नीय [वि.] (सं.) अग्नि के पास का

अग्नीष्टक [संज्ञा स्त्री] (सं.) ऐसी पक्की ईंटें जो रात दिन आग में रहने पर भी खराब न हों।

अग्न्यस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—अग्निबाण। २—बन्दूक। ३—तोप। ४-पिस्तोल। ५-बमगोला।

अग्न्यागार [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र का घर।

अग्न्यात्मक [वि.] (सं.) अत्यधिक कठोर हृदय वाला। अतिक्रूर।

अग्न्याधान [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अग्नि की विधिपूर्वक स्थापना। २—अग्निहोत्र।

अग्न्यधेय [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्री।

अग्न्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र का घर।

अग्न्याशय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जठराग्नि का स्थान।

अग्न्युत्पात [संज्ञा पु.] (सं.) १—आग लगना। आकाश से अग्निवर्षा। ३—उल्कापात। ४—धूम्रकेतु।

अग्न्युद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने के लिये अरणि द्वारा आग निकालना

अग्यꣵ [वि.] (सं.) मूर्ख। अज्ञानी। बेवकूफ। नासमझ।

अग्यारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धूप देने का पात्र। धूपदानी।

अग्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—अगला हिस्सा या भाग। आगा। सिरा। नोक। २—अवलम्बन। समूह।

[वि.] अगला। प्रथम। श्रेष्ठ। उत्तम।

अग्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) दाहिना हाथ।

अग्रकाय [संज्ञा पु.] (सं.) देह का अगला भाग!

अग्रगण्य [वि.] (सं.) जिसकी गणना पहिले की जावे। अगुआ। मुखिया। नेता। प्रधान। श्रेष्ठ। बड़ा।

अग्रगामी [संज्ञा पु.] (सं.) आगे चलने वाला। अगुआ। प्रधान व्यक्ति। नेता।

[वि.] (सं.) जो आगे चले। अग्रसर।

अग्रगामीदल [संज्ञा पु.] (सं.) भारत का एक राजनैतिक दल जिस के संस्थापक नेताजी सुभाषचंद्र बोस थे।

अग्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो भाई पहिले जन्मा हो, बड़ा भाई, ज्येष्ठ भ्राता। २—अगुआ नायक। नेता। ६—ब्राह्मण।

[वि.] (सं.) श्रेष्ठ। उत्तम।

अग्रजंघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जांघ का अगला भाग।

अग्रजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १—ब्रह्मा। २—ब्राह्मण ३—बड़ा भाई।

अग्रजात [संज्ञा पु.] (सं) १—बड़ा भाई। ब्राह्मण।

अग्रजाति [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

अग्रजिह्वा [संज्ञा स्त्री] (सं.) जीभ का अगला भाग।

अग्रणी [संज्ञा पु.] (सं.) मुखिया। नेता अगुआ।

129802

[वि.] (सं.) अगुआ। प्रधान। मुखिया।

अग्रत: [अव्य.] (सं.) पहिले। आगे।

अग्रदानी [संज्ञा पु.] (सं.) निकृष्ट दान लेने वाला ब्राह्मण।

अग्रधान्य [सज्ञा पु.] (सं.) बाजरा। जो अन्न पहिले पैदा हो।

अग्रपश्चात् [संज्ञा पु.] (सं.) आगापीछा।

अग्रबीज [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह वृक्ष जिसकी कलम लगे।

अग्रनिरूपण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भविष्यवाणी। पूर्वज्ञान।

अग्रपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर नामक औषधि।

अग्रपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ का अगला भाग दाहिना भाग।

अग्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो फूल पहिले फूला हो। बेत का फूल।

अग्रभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १—अगला भाग या हिस्सा। २—सिरा। नोक। चोटी। छोर।

अग्रभुक् [वि.] (सं.) भुक्खड़। पेटू।

अग्रभू [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा भाई।

अग्रभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—आगे की जगह। पड़ाव। २—घर की छत। पाटन।

अग्रमहिषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रधान रानी। पटरानी।

अग्रमास [संज्ञा पु.] (सं.) फुफ्फुस। फेफड़ा।

अग्रयान [संज्ञा पु.] (सं.) १—सेना का आगे बढ़ना। फौज का पहिला धावा। २—आगे बढ़ती हुई फौज। धावा करती हुई सेना।

अग्रयायी [संज्ञा पु.] (सं.) अगुआ। अग्रगामी। अग्रसर।

अग्रयोधा [संज्ञा पु.] सेना के आगे लड़ने वाला वीर।

अग्रवर्ती [वि.] आगे रहने वाला। नेता। अगुआ

अग्रवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) वैश्यजाति की एक शाखा।

अग्रवीर [संज्ञा पु.] सेना का प्रमुख योद्धा।

अग्रव्रीहि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नई फसल का अन्न।

अग्रशोची [संज्ञा पु.] (सं.) दूरदर्शी। दूरन्देश।

अग्रसन्धानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमराज की वह बही जिसमें सब प्राणियों का पाप-पुण्य का लेखा-जोखा रहता है।

अग्रसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज का लेखक।

अग्रसन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तड़का। प्रभात। प्रात:काल।

अग्रसर [वि.] (सं.) १—जो आगे जाय। अगुआ २—जो प्रारम्भ करे। ३—प्रधान। मुख्य। [संज्ञा पु.] १—अग्रगामी। आगे जाने वाला व्यक्ति। २—आरम्भ करने वाला। ३—प्रधान व्यक्ति। मुखिया।

अग्रसरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्परहित डंठल। पौधे की मंजरी।

अग्रसारण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आगे की ओर बढ़ना। २—किसी के निवेदन, प्रार्थना आदि उचित आदेश के निमित्त अपने से बड़े अफसर या अधिकारी के पास भेजा हुआ।

अग्रसेन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा जनमेजय के एक पुत्र का नाम।

अग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) गार्हस्थ को न धारण करने वाला पुरुष। वानप्रस्थ।

अग्रहायण [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष का पहिला महीना। अगहन। मार्गशीर्ष।

अग्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) ३—राजा की ओर से ब्राह्मण को दिया गया दान। २—ब्राह्मण को दान में दीगई भूमि या गांव।

अग्रांश [संज्ञा पु.] (सं.) १—अग्रभाग। २—चन्द्रमा का वह भाग जो पृथ्वी पर से सदैव दिखाई नहीं देता।

अग्रांशु [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश की किरण का अन्त।

अग्राणीक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आगे जाने वाली सेना।

अग्राम्य [वि.] (सं.) १—नगरवासी। २—जंगली।

अग्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन करने से पूर्व देवता के निमित्त निकाला गया भोजन का अंश।

अग्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) जो आसन ब्राह्मण के पहिले बैठने के लिए दिया जाय।

अग्राह्य [वि.] (सं.) १—न ग्रहण करने योग्य। अग्रहणीय। धारण करने के अयोग्य। २—न लेने योग्य। ३—त्याज्य। छोड़ने लायक।

अग्रिम [वि.] (सं.) १—अगाऊ। पेशगी। २—आगे आने वाला। आगामी। ३—प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम।
[संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा भाई। ज्येष्ठ भ्राता।

अग्रिमधन❀ [संज्ञा पु.] पेशगी। अगौढ़। अगाऊ।

अग्रिय, अग्रीय [संज्ञा पु.] (सं.) १—बड़ा भाई २—पहिला फल।

अग्रु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंगुली। नदी।

अग्रे [अव्य.] (सं.) १—आदि में। २—पहिले। सामने।

अगेग्र, अग्रेगा, अग्रेगू [वि.] (सं.) अग्रगामी। नेता। अगुआ। मुखिया।

अग्रेदिधिषु [संज्ञापु.] (सं.) ऐसी स्त्री से विवाह करने वाला पुरुष जो पहिले और किसी की पत्नि रह चुकी हों।
[संज्ञा स्त्री] (सं.) वह कन्या जिसका विवाह अपनी बड़ी बहन से पूर्व ही हो जाये।

अग्रेपा [वि.] (सं.) आगे पीने वाला।

अग्र्य [वि.] (सं.) १—नेता २—श्रेष्ठ ३—अग्रसर।
[संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा भाई।

अघ [सज्ञा पु.] (सं.) १—पाप। अधर्म। गुनाह। २—दु:ख। ३—व्यसन ४—अघासुरनामक। कंस का सेनापति जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

अघट [वि.] (सं.) १—जो कार्यरूप में परिणत न हो सके। न होने योग्य। २—कठिन। ३—जो ठीक न उतरे। अनुपयुक्त। बेमेल। अयोग्य।

अघटित [वि.] (सं.) १—जो घटित न हुआ हो। २—असम्भव। न होने लायक। ३—अनिवार्य। अवश्य होने वाला। ४—**अयोग्य**। अनुययुक्त। अनुचित।

अघन [वि.] (सं.) पतला। जो गाढ़ा न हो।

अघनाशक [वि.] (सं.) १—पाप का नाश करने वाला। २—पाप को दूर करने वाला।

अघमय [वि.] (सं.) पाप से परिपूर्ण

अघमर्षण [संज्ञा पु.](सं.) पाप का नाश करने वाला।

अघम [संज्ञा पु.] (सं.) शीतकाल।

अघवाना [क्रि. स.] (हिं.) १—भर पेट खिलाना। २—मन भरना।

अघविष [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

अघहरण [संज्ञा पु.] (सं.) पाप का नाश।

अघहार [संज्ञा पु.] (सं.) पवित्र मनुष्य।

अघाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पेट भर खाने का भाव। तृप्ति। सन्तोष।

अघाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १—बिना घाट की जगह। २—वह भूमि जिस के बेचने या अलग करने का अधिकार उस के स्वामी को न हो।

अघात [संज्ञा पु.] (सं.) मार। चोट। प्रहार।
[वि.] खूब। अधिक। पेटभर।

अघाना [क्रि. अ.] (हि.) १—पेटभर भोजन खाना या पीना। २—सन्तुष्ट होना। तृप्त होना। इच्छापूर्ण होना। ३—प्रसन्न होना। ४—थकना। ऊबना। ५—पूर्णता को पहुंचना।

अघायु [वि.] (सं.) पापी। हत्यारा।

अघारि [संज्ञा पु.] (फा.) १—पाप का शत्रु। पापनाशक। २—अघासुर को मारने वाला। श्रीकृष्ण।

अघाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। निकृष्ट घोड़ा।

अघासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस जो पूतना का भाई था जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

अघी [वि.] (सं.) पापी

अघृण [वि.] (सं.) दयारहित। क्रूर।

अघृणी वि.] (सं.) जो घृणित न हो। अच्छा।

अघेरन [वि.] (सं.) जौ का मोटा आटा।

अघोर [वि.] (हि) सौम्य । सोहावना । प्रिय ।
[संज्ञा पु.] (हि.) शिव का एक रूप । महादेव । एकपंथ जिस के अनुयायी नरमांस, मांस, मद्य तो खाते ही हैं वरन वे मल, मूत्र तक से भी घृणा नहीं करते ।

अघोरपंथ [संज्ञा पु] (हि.) अघोरियों का मत या सम्प्रदाय । अवघड़ों का मत ।

अघोरपंथी [संज्ञा पु.] (हि.) अघोरपंथ का अनुयायी । औघड़ । अघोरी ।

अघोरा [संज्ञा स्त्री] (स.) भाद्रकृष्ण चतुर्दशी । भादो बदी चौदस ।

अघोरी [संज्ञा पु.] (हि.) १—औघड़ । अघोर मतका अनुयायी । २—घृणित व्यक्ति । सर्वभक्षी । घिनौने पदार्थों का व्यवहार करने वाला ।

अघोष [वि.] (स.) १—शब्दरहित । नीरव । चुप । २—अल्पध्वनियुक्त ।
[संज्ञा पु.] व्याकरण के एक वर्णसमूह का नाम जिस में प्रत्येक वर्ग का पहिला और दूसरा अक्षर तथा श, ष और स भी हैं ।

अघौघ [संज्ञा पु.] (स.) पापों का समूह ।

अघ्न्य [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

अघ्रान [संज्ञा पु.] (सं.) गंधग्रहण । सूंघने का कार्य ।

अघ्रानना [क्रि. स.] (हिं.) सूंघना । महक लेना ।

अघ्रेय [वि.] (सं.) न सूंघने योग्य । दुर्गन्धि ।

अचंचल, अचञ्चल [वि.] (सं.) १—जो चंचल न हो । स्थिर । २—धीर, गम्भीर ।

अचंचलता, अचञ्चलता [संज्ञा स्त्री.] (स.) १—स्थिरता । २—गम्भीरता ।

अचंड, अचण्ड [वि.] (सं.) उग्रताशून्य । शान्त सुशील । सौम्य । सीधा ।

अचंडी, अचण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुशीला स्त्री । सीधी गाय । शूकरी ।

अचंभव, अचम्भव ❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अचरज । विस्मय । आश्चर्य । २—अचरज की बात ।

अचंभा, अचम्भा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आश्चर्य विस्मय । २—अचरज की बात ।

अचंभित, अचम्भित [वि.] (हिं.) चकित । विस्मित ।

अचंभो अचम्भो +[संज्ञा पु.] (हिं.) आश्चर्य । विस्मय । अचरज ।

अचंभौ, अचम्भौ+[संज्ञा पु.] (हिं.) आश्चर्य । अचरज ।

अचक [वि.] (हिं.) अत्यधिक । भरपूर । पूर्ण ।
[संज्ञा पु.] (हि.) घबराहट । विस्मय । भौचक्कापन ।
[अव्य.] अचानक । यकायक । अकस्मात् ।

अचकन [संज्ञा स्त्री.] (हि) एक प्रकार का बन्द गले का कोट ।

अचकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अशिष्टता । अत्याचार । अक्खड़पन ।

अचका, अचकाँ [क्रि. वि.] अकस्मात् । यकायक ।

अचकित [वि.] (सं.) भयहीन । स्थिर । अतृप्त ।

अचक्का [संज्ञा पु.] (हि.) अनजान । अपरिचित व्यक्ति ।

अचक्षु (सं.) १—अंधा । नेत्रहीन । २—इन्द्रियरहित ।

अचक्षुदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) आंखों के अलावा अभ्यांन्तरिक इंन्द्रियों द्वारा ज्ञान की प्राप्ति ।

अचक्षुदर्शनावरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्म जिसके द्वारा अचक्षुदर्शन नामक ज्ञान प्राप्त हो ।

अचक्षुदर्शनावरणीय [वि.] (सं.) जैन शास्त्रकारों द्वारा माने गये जीव के मूल आठ कर्म तथा उनमें से दर्शनावरणीय कर्म के नौ भेदों में से एक ।

अचगरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ज्यादती । छेड़छाड़ । शरारत ।

अचना❀ [क्रि. स.] (हिं.) पीना । आचमन करना ।

अचपल [वि.] (स.) १—अचंचल । गंभीर ।

अचपलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अचंचलता । गंभीरता । स्थिरता ।

अचपली [संज्ञा स्त्री.] (स.) अठखेली । किलोल क्रीडा ।

अचभौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) अचम्भा । आश्चर्य

अचम्भव [संज्ञा पु.] (हिं.) आश्चर्य ।

अचमन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आचमन । मुँह धोना ।

अचर [वि.] (सं.) ठहरा हुआ । न चलने वाला । स्थावर । जड़ ।

अचरज [संज्ञा पु.] (हिं.) आश्चर्य । विस्मय ।

अचरम [वि.] (सं.) जो अन्त का न हो । मध्य का

अचरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साड़ी का छोर । ओढ़नी का पल्लू । अंचला ।

अचरित [वि.] (सं.) १—अप्रचलित । २—नवीन अछूता । जो खाया न गया हो ।

अचल [वि.] (स.) १—जो न हिले । निश्चल । २—चिरस्थायी ।

अचलकन्या [संज्ञा स्त्री.] (स.) पार्वती ।

अचलकीला [संज्ञा स्त्री.] (स.) पृथ्वी ।

अचलजा [संज्ञा स्त्री.] (स.) पार्वती ।

अचलधृष [संज्ञा पु.] (स.) इन्द्र ।

अचलधृति [संज्ञा पु.] (स.) एक वर्णवृत्त छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ५ नगण तथा एक लघु होता है ।

अचलनारी [संज्ञा स्त्री.] हिमालय की स्त्री ।

अचलपति [संज्ञा पु.] हिमालय पर्वत ।

अचलराज [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत ।

अचलसंपत्ति, सम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (स.) स्थिर सम्पत्ति । वह सम्पत्ति जो अपने स्थान पर अचल रूप से स्थित हो तथा कहीं हटाई बढ़ाई न जा सकती हो ।

अचला [वि.] (स.) १—स्थिर । निश्चल । चिरस्थायी ।
[संज्ञा स्त्री.] १—हिमालय की पत्नी । पृथ्वी ।

अचलासप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (स.) माघसुदी सप्तमी । इस दिन का किया हुआ दान, पुण्य अचल समझा जाता है ।

अचवन [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आचमन । पीना । २—भोजनोपरांत हाथ मुँह धोकर कुल्ली करना ।

अचवना [क्रि. स.] (हि.) आचमन करना । पीना । कुल्ला करना ।

अचवाई+ [वि.] (हि.) आचमन की हुई । साफ स्वच्छ । धोई हुई ।

अचवाना [क्रि. स.] (हि) आचमन कराना । पान कराना । पिलाना । भोजन के बाद हाथ मुँह धुलाकर कुल्ली कराना ।

अचांचक [क्रि. वि.] (हि.) अकस्मात् । सहसा । एकाएक । अचानक ।

अचाक* [क्रि. वि.] (हिं.) बिना पूर्व सूचना के अकस्मात् । दैवात् ।

अचाका*+ [क्रि. वि.] (हि) अचानक । अकस्मात् । एकाएक ।

अचान* [क्रि. वि.] (हि.) अचानक । अकस्मात् सहसा ।

अचानक [क्रि. वि.] (हि.) बिना पूर्व सूचना ।

अचार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १—फल अथवा तरकारियों में नाना प्रकार के मिर्च मसाले डालकर तैयार किया हुआ खाने का पदार्थ । २—आचार । आचरण । व्यवहार । ३—चिरौंजी का वृक्ष ।

अचारज❀ [संज्ञा पु] (हि.) आचार्य ।

अचारी❀ [वि.] (हिं.) आचार करने वाला ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) आचार विचार से रहने वाला व्यक्ति ।
[संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार का आम का अचार ।

अचालू [संज्ञा पु.] (हि.) कम चलने वाला । न चलने वाला ।

अचाह❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) इच्छा अथवा
[वि.] किसी पदार्थ की इच्छा न रखने वाला

अचाहा* [वि.] (हिं.) १—न चाहा हुआ । अवांछित । २—जो प्रेमपात्र न हो ।
[संज्ञा पु.] १—निर्मोही । प्रीति न रखने वाला । २—वह व्यक्ति जो प्रेम पात्र न हो ।

अचाही* [वि] (हिं) किसी बात की आकांक्षा न रखने वाला। निस्पृह । निरीह ।

अचिंत, अचिन्त* [वि] (सं) चिंतारहित। बेफ़िक्र । निश्चिन्त ।

अचिंतनीय, अचिन्तनीय [वि.] (स.) जिसका चिंतन न हो सके। अज्ञेय। निर्बोध।

अचिंतित अचिन्तित [वि.] (स.) १—बिना सोचा-विचारा। असम्भावित। आकस्मिक। २—निश्चिंत। बेफ़िक्र।

अचिंत्य, अचिन्त्य [वि.] (स.) १—जिसका चिन्तन न हो सके। अज्ञेय। कल्पनातीत। २—जिसका अंदाजा न हो सके। अतुल। अकूत। ३—आशा से अधिक। उम्मीद से ज्यादा। ४—आकस्मिक।

[संज्ञा पु] एक अलङ्कार का भेद, जिसमें विलक्षण अथवा साधारण कारण से विलक्षण कार्य की उत्पत्ति तथा इसके प्रतिकूल अर्थात् विलक्षण कारण से अविलक्षण कार्य की उत्पत्ति का वर्णन् हो।

अचिंत्यात्मा, अचिन्त्यात्मा [संज्ञा पु.] (स) ईश्वर।

अचिकित्स्य [वि] (स) जिसकी चिकित्सा न हो सके। असाध्य। लाइलाज।

अचित् [संज्ञा पु] (स.) जड़प्रकृति। 'चित्' की काया पलट या उल्टा। अचेतन।

अचिर [क्रि वि] (स) शीघ्र। जल्दी। तुरन्त। [वि.] थोड़े समय तक रुकने वाला।

अचिरद्युति [संज्ञा स्त्री] (सं) बिजली।

अचिरप्रभा [संज्ञा स्त्री] (स) बिजली। विद्युत।

अचिरांशु [संज्ञा स्त्री] (स) बिजली।

अचिरात् [क्रि वि] (स.) तुरन्त। शीघ्र। जल्दी।

अचिराभ [संज्ञा स्त्री] (स.) बिजली।

अचिष्णु [वि.] (सं) जाने वाला।

अचीता [वि.] (स.) १—बिना सोचा समझा। असम्भावित। २—अचिंत्य। बहुत। अधिक

अचूक [वि.] (सं.) १—न चूकने वाला। जो लक्षित कार्य अवश्य करे। जो खाली न जाय। २—जिसमें भूल न हो। ठीक। भ्रमरहित।

अचेत [वि] (स.) १—चेतनारहित। बेसुध। २—विकल। विह्वल। ३—असावधान। ४—अनजान। बेखबर। ५—नासमझ। मूर्ख ६—जड़।

[संज्ञा पु.] निर्जीव पदार्थ। जड़प्रकृति। अज्ञान। माया।

अचेतन [वि] (स.) जिसमें चेतना का अभाव हो। चेतनारहित। ज्ञानशून्य।

अचेष्ट [वि] (स) निश्चेष्ट। बेहोश। ज्ञानशून्य

अचेष्टता [संज्ञा स्त्री] (स) ज्ञानशून्यता।

अचैतन्य [वि] (स.) चेतनारहित। जड़।

[संज्ञा पु.] चेतना का अभाव। अज्ञान।

अचैन [संज्ञा पु.] (स) व्याकुलता। बेचैनी। विकलता। कष्ट।

[वि] विकल। बेचैन।

अचैना [संज्ञा पु.] (हि) लकड़ी का वह मोटा कुन्दा जिस पर गंडासे से चारा काटते हैं। ठीहा। निहठा।

अचोट [वि.] (हिं.) बिना चोट लगा।

अचोना [संज्ञा पु.] (हि) आचमनी। आचमन करने का पात्र। पानी पीने का छोटा बरतन या पात्र।

अच्छ [वि] (हिं.) अच्छा। स्वच्छ। पवित्र।

[संज्ञा पु.] १—भालू। २—स्फटिक ३—स्वच्छ पानी।

अच्छत [संज्ञा पु.] (हिं.) देवताओं को चढ़ाया जाने वाला बिना टूटा चावल।

[वि.] अखंडित। लगातार।

अच्छभल्ल [संज्ञा पु.] (स.) भालू। रीछ।

अच्छर [संज्ञा पु.] (हिं.) अक्षर। वर्ण। हरफ़।

अच्छरा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अप्सरा।

अच्छरी [संज्ञा स्त्री.] (हि) अप्सरा। देवाङ्गना।

अच्छा [वि.] (हि.) चोखा। उत्तम। भला। खरा

[संज्ञा पु.] १—बड़ा आदमी। श्रेष्ठ पुरुष। २—बड़े बूढ़े। बाप-दादा।

[क्रि. वि] अच्छी तरह। खूब। बहुत।

अच्छा आना = उपयुक्त अवसर पर आना।

अच्छा करना = १—आराम करना। २—काम बनाना।

अच्छा कहना = १—प्रशंसा करना। २—सुन्दर भाषण करना। ३—चुभती हुई या समय की बात कहना।

अच्छा घर = प्रतिष्ठित कुल। सम्पन्न घर।

अच्छा-विच्छा = भला-चंगा।

अच्छा भोजन = ठीक खाना।

अच्छे दिन आना = भाग्य खुलना।

अच्छे मिलना = १—खूब प्राप्त होना। २—आवश्यकता के समय मिलना। ३—(व्यंग में) बात टालकर कहना।

अच्छे रहना = बीमार न रहना। काम बना लेना।

अच्छे लगना = भला जान पड़ना। सजना। सोहना।

अच्छे-अच्छे = बड़े-बड़े।

अच्छाई [संज्ञा स्त्री] (हि.) अच्छापन। सुन्दरता। सुघराई। उत्तमता।

अच्छापन [संज्ञा पु] (हिं.) उत्तमता। अच्छे होने का भाव।

अच्छावाक [संज्ञा पु.] (स.) यज्ञ कराने वाले होता। आह्वान करने वाला।

अच्छिन्न [वि] (सं.) १—छिद्ररहित। २—जो कटा हुआ न हो। अखंडित।

अच्छिद्र [वि.] (स) १—बिना छेद का। २—दोषरहित। ३—बिना भ्रांति का।

अच्छीत [वि] (हिं.) अधिक। बहुत। पूरा।

अच्छुप्ता [संज्ञा स्त्री] (स.) जैनों की सोलह देवियों में से एक का नाम।

अच्छोत* [वि.] (हिं) अधिक। बहुत। पूरा।

अच्छोहिनी [संज्ञा स्त्री] (हिं) अक्षोहिणी।

अच्युत [वि.] (सं.) १—जो गिरा न हो। २—दृढ़। अटल। अविनाशी। ३—जो न चूके। जो त्रुटि न करे। जो विचलित न हो।

[संज्ञा पु.] विष्णु तथा उसके अवतारों के नाम। २—चार श्रेणी के जैन देवताओं में वैमानिक श्रेणी के कल्पभाव नामक देवताओं का एक भेद।

अच्युतकुल [संज्ञा पु] (सं.) रामानन्दी सम्प्रदाय के वैष्णव लोग।

अच्युतगोत्र [संज्ञा पु.] (स) देखो 'अच्युतकुल'

अच्युतमध्यम [संज्ञा पु] (स) सङ्गीत में एक विकृत स्वर।

अच्युतषडज [संज्ञा पु.] (स) सङ्गीत में एक विकृत स्वर जिसका आरम्भ छंदवत नामक श्रुति से आरम्भ होता है।

अच्युताग्रज [संज्ञा पु.] (सं) श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम।

अच्युतात्मज [संज्ञा पु.] (स) श्रीकृष्ण के पुत्र कामदेव।

अच्युतानन्द [संज्ञा पु] (सं.) नित्यानन्द। ईश्वर

अछंभो* [संज्ञा पु.] (हि.) अचम्भा। आश्चर्य।

अछक* [वि.] (हिं.) न छका हुआ। भूखा। अतृप्त।

अछकना* [क्रि. वि.] (हि) अतृप्त होना। भूखे रहना।

अछत* [क्रि. वि.] (हिं.) १—रहते हुए। उपस्थिति में। विद्यमानता। २—सिवाय। अतिरिक्त। ३—अनुपस्थित।

अछताना-पछताना [क्रि. अ.] (हि.) पछताना। खेद करना। किसी बीती या भूली बात पर बारम्बार खेद प्रगट करना।

अछन [संज्ञा पु.] (हिं.) दीर्घकाल। चिरकाल। बहुत दिन।

[क्रि. वि.] धीरे धीरे। ठहरकर।

अछना* [क्रि. अ.] (हिं) विद्यमान। रहना।

अछप [वि.] (हि) प्रगट। प्रकाशमान। ज़ाहिर।

अछय [वि.] (हि.) अप्रत्यक्ष। अक्षय।

अछयकुमार [संज्ञा पु.] (हि.) अक्षयकुमार।

अछरा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अप्सरा।

अछरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) अप्सरा।

अछरौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्णमाला।

अछरौटी वर्तनी = हिज्जे करना।

अछल [वि.] (हि.) छलरहित। निष्कपट। सीधा-सादा।

अछवाना [क्रि. स.] (हिं.) साफ करना।

अछवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रसूता-स्त्री को पिलाया जाने वाला एक मसाला।

अछाम❋ [वि.] (हिं.) हृष्टपुष्ट । बलवान् । मोटाताजा।

अछित [क्रि. वि.] (हिं.) आगे। अतिरिक्त। पीछे। बाद में।

अछियार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लाल किनारी की साड़ी।

अछी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आल का वृक्ष।

अछूत❋ [वि.] (हिं.) १—बिना छुआ। अस्पृश्य। २—नया। कोरा। पवित्र।
[संज्ञा पु.] अन्त्यज। निम्न कोटि का व्यक्ति या जाति।

अछूता [वि.] (हिं.) १—बिना छुआ हुआ। २—जो बरता न गया हो। नया। पवित्र।

अछूतोद्धार [संज्ञा पु.] (हिं.) अछूतों का उद्धार।

अछेद [वि.] (हिं.) जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। अखंड्य।
[संज्ञा पु.] अभिन्नता। अभेद।

अछेद्य [वि.] (सं.) अभेद्य। अखंड्य। अविनाशी

अछेव❋ [वि.] (हिं.) बिना छिद्र का। दूषण-रहित। निर्दोष।

अछेह❋ [वि.] (हिं.) १—अखंडित। निरन्तर। २—अनन्त। अत्यन्त। ज्यादा।

अछोप❋ [वि.] (हिं.) बिना ढपा हुआ। आच्छादनरहित। नंगा। तुच्छ।

अछोभ❋ [वि.] (हिं.) १—क्षोभरहित। स्थिर। अचञ्चल। उद्वेगशून्य। २—खेदरहित। माया। मोहशून्य। ३—निडर। निर्भय। ४—जिसे नीच कर्म से ग्लानि न हो। नीच।

अछोर❋ [वि] (हिं.) १—अनन्त। असीम। २—बहुत। अधिक।

अछोह, अछोही [वि.] (हिं.) दयाहीन। निर्दय। निष्ठुर।

अजंगम, अजङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) छप्पय नामक एक मात्रिक छंद जिसमें ११४ वर्ण होते हैं जिनमें ३८ गुरु तथा ७६ लघु होते हैं मात्रा १५२ होती हैं।

अजंट [संज्ञा पु.] (अं.) एजेंट। १—प्रतिनिधि। २—अधिकृत व्यक्ति। ३—आढ़तिया। गुमाश्ता। दलाल।

अजंटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एजेंट कार्यालय।

अजंसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १—एजेंट का निवास स्थान। २—आढ़तिया का काय स्थान।

अज [वि.] (सं.) अजन्मा। जिसका जन्म न हो। स्वयम्भू।
[संज्ञा पु.] १—ब्रह्मा। २—विष्णु। ३—शिव। ४—कामदेव। ५—सूर्यवंशी राजा दशरथ के पिता। ६—बकरा। ७—मेंढा। ८—माया। शक्ति। ९—ज्योतिष में शुक्र की **पक्षि**।
[क्रि. वि.] अभीतक। अब।

अजकर्ण, अजकर्णक [संज्ञा पु.] (हिं.) १—बकरे का कान। २—साल का वृक्ष।

अजकव [संज्ञा पु.] १—शिवजी के इंद्रधनुष का नाम। २—बबूल का पेड़। विषधर बड़ा बिच्छू।

अजका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकरे के गले का स्तन।

अजकाजात [संज्ञा पु.] (सं.) आँख में होने वाली लाल फूली जो आँख की पुतली के ऊपर हो जाती है। ढेढड़। टेढड़।

अजगंधा, अजगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवाइन। अजमोदा।

अजगंधिनी, अजगन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासींगी।

अजगर [संज्ञा पु.] (सं.) बकरे को निगल जाने वाला भारी सर्प।
[वि.] आलसी। उद्यमहीन।

अजगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अजगर के समान निरुद्यम वृत्ति।
[वि.] १-अजगर की सी। बिना परिश्रम की।

अजगलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वात और कफ के प्रकोप से होने वाली पीड़ारहित मूङ्ग के दाने के बराबर की फुंसी।

अजगव [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी का धनुष। पिनाक।

अजगुत [संज्ञा पु.] आश्चर्य की बात। अद्भुत घटना।

अजगैब [संज्ञा पु.] अलक्षित स्थान। अदृष्ट स्थान।
[वि.] विलक्षण। अद्भुत।

अजधन्य (वि.) (सं.) श्रेष्ठ। भला। उत्तम।

अजघोष [संज्ञा पु.] (सं.) सन्निपात ज्वर का एक भेद।

अजजीविक [वि.] (सं.) भेड़ बकरी का व्यापारी। गणेरिया।

अजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिना जटा का।

अजड़ [वि.] (सं.) जो जड़ न हो। सजीव व्यक्ति

अजण [संज्ञा पु.] (सं.) राजा सहस्रार्जुन का नाम।

अजध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पीली जूही का वृक्ष तथा पुष्प। २—पीली चमेली।

अजदाह [संज्ञा पु.] (फा.) अजगर।

अजदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) बकरे का अधिष्ठाता देवता।

अजन [वि.] (सं.) जिसका जन्म न होता हो। अजन्मा। निर्जन स्थान। एकान्त। सुनसान।

अजनबी [वि.] (फा.) १—अपरिचित। अज्ञात। २—अनजान। नवा क़िफ।

अजन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हैदराबाद (दक्षिण) राज्य में स्थित एक संसार-प्रसिद्ध गुफा।

अजन्म, अजन्मा [वि.] (सं.) जन्मरहित। अनादि। नित्य। अविनाशी।

अजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) न जान पड़ने वाले प्रकृति के कर्म। शुभाशुभसूचक। सृष्टि-व्यापार, यथा भूकम्प आदि।

अजप [संज्ञा पु.] (सं.) बकरी पालने वाला व्यक्ति। गड़ेरिया। २—बुरा जाप या पाठ करने वाला व्यक्ति।

अजपति [संज्ञा पु.] (सं.) १—उत्तम बकरा। मेषराशि का स्वामी मङ्गलग्रह।

अजपथ [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर का बनाया मार्ग। छायापथ।

अजपा [वि.] (सं.) १—जिसका उच्चारण न किया जाने वाला तांत्रिकों का मत। २—बकरियों का पालक। गड़रिया।

अजपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक रुद्र विशेष। २—पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र।

अजपाल [वि.] (सं.) बकरियां पालने वाला। गड़ेरिया।

अजब [वि.] (अ.) अद्भुत। आश्चर्यजनक। विलक्षण।

अजबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्ख। विवेकहीन व्यक्ति।

अजबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्यामा-तुलसी।

अजभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बकरियों का प्रिय भोजन जिसे वह बड़े चाव से खाती हैं। बबूल का वृक्ष।

अजमत [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रताप। शान। बड़ाई। महत्व। २—चमत्कार।

अजमल [संज्ञा पु.] (सं.) बकरी की लेंड़ी। गेहूँ।

अजमल-खां [संज्ञा पु.] जन्म काल १८६५ ई०। देहली निवासी तथा भारत के प्रसिद्ध हकीम थे। तिब्बी कालेज नामक संस्था की स्थापना की जिसे आजकल गांधी-अजमल-आयुर्वैदिक तथा यूनानी-तिब्बी-कालेज के नाम से जानते हैं। यह अच्छे राजनीतिज्ञ थे भारतीय राष्ट्रीय महासभा के प्रधान रह चुके थे।

अजमाइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आजमाइश। जांच। परख। परीक्षा।

अजमाना [क्रि. स.] (हि.) आजमाना। परख करना। जाँच करना।

अजमूदा [वि.] (फा.) आजमूदा। परखा हुआ। जाँचा हुआ। परीक्षा किया हुआ।

अजमेर-मेरवाड़ा [संज्ञा पु.] यह राजस्थान के मध्य मुख्य-आयुक्त (चीफ-कमिश्नर) का प्रान्त है। यह उत्तर अक्षांश २५·२४ से २६·४२ तक तथा पूर्व देशान्तर ७३·४५ से ७५·२४ तक अवस्थित है।

अजमोदा [संज्ञा स्त्री.] अजवाइन।

अजय [संज्ञा पु.] (सं.) १—पराजय। हार। २—छप्पय छन्द के ७१ भेदों में प्रथम जिसमें ७० गुरु तथा १२ लघुवर्ण मिलाकर

८२ होते हैं और मात्राओं का योग १५२ होता है ।

अजयपाल [संज्ञा पु] (स.) १—संगीत में एक राग विशेष । २—जमालगोटा । ३—एक राजा का नाम ।

अजया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—विजया । भांग । २—बकरी ।

अजय्य [वि.] (सं.) अजेय । जो पराजित न किया जा सके ।

अजर [वि.] (सं.) १—जरारहित । जो बूढ़ा न हो । जो सदा एक रस रहे । परमेश्वर का एक विशेषण । जो न पचे या हजम न हो ।

अजरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—घृतकुमारी । घी कुआर । २—विधारा ।

अजरायल [वि.] १—कभी जीर्ण न होने वाला । पुराना न पड़ने वाला । सदा एक सा रहने वाला । पक्का । अमिट । चिरस्थायी । २—निर्भय । निडर । निःशंक ।

अजराल [वि.] (हिं.) बलवान । शक्तिशाली । जो कभी बूढ़ा न हो ।

अजलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) आँख में लगाने का सुरमा ।

अजलोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवांच का वृक्ष ।
[वि.] बकरे के समान रोवें वाला ।

अजव [वि.] (सं.) वेगरहित ।

अजवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषधि । मेढ़ासिंघी ।

अजवाइन, अजवायन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यवानी । एक प्रकार का मसाला ।

अजवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी का मार्ग ।

अजशृंगी, अजश्रृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासिंगी ।

अजश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकरी ।

अजस [संज्ञा पु.] (सं.) 'अयश । अपयश । अपकीर्त्ति ।

अजस [संज्ञा पु.] [सं.] अयश । अपयश । बदनामी ।

अजसी [वि.] (सं.) अपयशी । यशहीन । अख्यात ।

अजस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) चिरस्थायी ।
[वि.] निरन्तर । सर्वदा ।

अजहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अजहत्स्वार्था'

अजहत्स्वार्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अलंकारशास्त्र में लक्षण के दो भेदों में से एक जिसमें लक्षकशब्द अपने वाच्यार्थ को न त्यागकर कछ भिन्न अर्थ प्रगट करे ।

अजहद [वि.] (फा.) अपरिमित । अत्यन्त । बहुत अधिक ।

अजहूं [अव्य] (हिं) अभीतक । अबभी । आजतक भी ।

अजांबिका, अजाम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादोंबदी एकादशी को होने वाले व्रत का नाम ।

अजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—बकरी । २—प्रकृति माया । ३—शक्ति । दुर्गा । भादों कृष्णपक्ष एकादशी का व्रत ।
[वि.] जन्मरहित । जो उत्पन्न न की गई हो ।

अजाक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) बकरी का दूध ।

अजागर [संज्ञा पु.] (सं.) भृङ्गराज । भंगरैया ।
[वि.] न जागने वाला ।

अजागल [संज्ञा पु.] (सं.) बकरे की गर्दन ।

अजाचक [संज्ञा पु.] (हिं.) अयाचक । वह व्यक्ति जिसे कुछ मांगने की आवश्यकता न हो । सम्पन्नव्यक्ति ।
[वि.] जो न मांगे । सम्पन्न । भरापूरा ।

अजाची [संज्ञा पु.] (हिं.) न मांगने वाला व्यक्ति सम्पन्नव्यक्ति ।
[वि.] भरापूरा । सम्पन्न ।

अजाजि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—जीरा । २—गूलर का वृक्ष ।

अजाजिक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद जीरा ।

अजाजीव [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़ बकरी का व्यापारी ।

अजात [वि.] (सं.) जन्मविहीन । अजन्मा । जिसका जन्म न हुआ हो ।

अजातदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) बिना दांत का । दन्तरहित बालक ।

अजातपक्ष [वि.] (सं.) पक्षी का वह छोटा बच्चा जिसके पंख न निकले हों ।

अजातव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) अप्राप्तवयस्क । नाबालिग ।

अजातशत्रु [वि.] जिसका कोई शत्रु न हो । शत्रुविहीन ।
[संज्ञा पु.] १—राजा युधिष्ठिर । २—शिव । एक काशी नरेश । जिसका वर्णन् उपनिषद् में आता है । मगध नरेश बिम्बसार का पुत्र ।

अजातारि [संज्ञा पु.] (सं.) जिसका कोई शत्रु न हो । युधिष्ठिर ।

अजाति, अजाती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जाति से निकाला हुआ । पतित । जातिच्युत ।

अजादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेर का वृक्ष ।

अजादुग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) बकरी का दूध ।

अजान [वि.] (सं.) जो न जाना हुआ हो । अबोध । अनभिज्ञ । २—अपरिचित । अज्ञात

अजानपन [संज्ञा पु.] (हिं.) अज्ञानता । नासमझी । अनजानपन ।

अजानि [संज्ञा पु.] (सं.) पत्नीरहित पुरुष ।

अजापालक [वि.] (सं.) भेड़ बकरियां पालने वाला ।

अजाप्रिया [संज्ञा पु.] (सं.) बेर का झाड़ ।

अजाब [संज्ञा पु.] (अ.) प्रायश्चित । यातना । सज़ा । पीड़ा ।

अजामिल [संज्ञा पु.] (स.) एक पापी ब्राह्मण का नाम । जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेने मात्र से ही तर गया ।

अजाय [वि.] (हिं.) अनुचित । बेजा ।

अजायब [संज्ञा पु.] (अ.) आश्चर्यजनक पदार्थ

अजायबखाना, अजायबघर [संज्ञा पु.] (अ.) आश्चर्यजनक । वस्तुओं को संग्रह करने का स्थान अथवा भवन ।

अजार* [संज्ञा पु.] (हिं.) रोग । बीमारी ।

अजारा [संज्ञा पु.] अधिकार । इजारा ।

अजिऔरा *+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आजी या दादी के पिता का घर ।

अजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवान बकरी ।

अजित [वि.] (सं.) अपराजित । जो हारा न हो
[संज्ञा पु.] १—विष्णु । २—शिव । ३—बुद्ध ४—जैनियों के २४ तीर्थङ्करों में से दूसरा ।

अजितनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के २४ तीर्थङ्करों में से दूसरा ।

अजिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादोंबदी एकादशी ।

अजितात्मा [वि.] (सं.) इंद्रियलोलुप । विषयासक्त ।

अजितेन्द्रिय [वि.] (सं.) जो इन्द्रियों के वश में हो । विषयासक्त । इन्द्रियलोलुप ।

अजिन [संज्ञा पु.] (सं.) १—चर्म । खाल । छाल । २—मृगछाला ।

अजिनपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़े के समान पर वाली । चमगीदड़ ।

अजिनवासी [वि.] (सं.) चमड़े के वस्त्र पहिनने वाला ।

अजिनयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) मृग । हिरन ।

अजिर [संज्ञा पु.] (सं.) १—आंगन । सहन । २—हवा । वायु । ३—शरीर । ४—इन्द्रियों का विषय । ५—मेंढक ।

अजिह्व [संज्ञा पु.] मेंढक ।
[वि.] बिना जीभ का ।

अजी [अव्य.] (हिं.) सम्बोधनसूचक शब्द । अरे । जी ।

अजीवक [संज्ञा पु.] (स.) शिवजी का धनुष ।

अजीगर्त [संज्ञा पु.] (स.) एक ऋषि जो शुनःशेफ के पिता थे ।

अज़ीज़ [वि.] (अ.) प्यारा । प्रिय ।
[संज्ञा पु.] (सं.) सम्बन्धी । मित्र । सुहृद् ।

अजीटन [संज्ञा पु] (हि) सेनापति का सहायक ।

अजीत [वि.] (सं.) अपराजित । जो हारा न हो

अजीब [वि.] (अ.) विलक्षण । विचित्र । आश्चर्यजनक । अनूठा ।

अजीरन [संज्ञा पु] (हि.) अपच । बदहजमी ।

अजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्न का अच्छी प्रकार से न पकना। अपच। बदहजमी। २—अत्यन्त। अधिकता। बहुतायत।
[वि.] नया। जो पुराना न हो।

अजीव [वि.] (सं.) चेतनाविहीन। विना प्राण का। मृत। निर्जीव।

अजीवन [संज्ञा पु.] (हि.) मृत्यु। मौत।

अजुगुत [संज्ञा पु.] देखो 'अजगुत'।

अजुगुप्सित [वि.] (सं.) आनन्दित। निन्दा न किया हुआ।

अजू❋ [अव्य.] (हि.) सम्बोधनसूचक शब्द। अजी।

अजूजा❋ [क्रि. स.] (देश.) मृतक शरीर खाने वाला जानवर।

अजूबा [वि.] (अ.) अनोखा। अनूठा। अद्भुत।

अजूरा❋ [वि.] (हि.) अप्राप्त। अनुपस्थित। पृथक्। अलग। जुदा।

अजूह [संज्ञा पु.] (हिं.) युद्ध। लड़ाई।

अजे [संज्ञा पु.] (हिं.) अजय। हार। पराजय।

अजेइ (हिं.) अजेय। न जीते जाने योग्य।

अजेय [वि.] (सं.) जिसे कोई जीत न सके।

अजै [संज्ञा पु.] (हिं.) अजय। पराजय। हार।

अजो [वि.] (हिं.) आजतक। अभीतक।

अजोग❋ [वि.] (हिं.) १—अयोग्य। अनुचित। नामुनासिब। २—अयुक्त। बेजोड़। ३—नालायक। निकम्मा।

अजोता [संज्ञा पु.] (हिं.) चैत्रपूर्णिमा का दिन। इस दिन बैल नहीं जोते जाते।

अजोरना [क्रि. स.] (हिं.) बटोरना। छीनना। लेना। हरना।

अजौं [क्रि. वि.] (हिं.) अबतक। अब भी। आज भी।

अज्झल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ढाल।

अज्ञ [वि.] (सं.) अज्ञानी। मूर्ख। मूढ़। नासमझ। जड़। अनजान।

अज्ञता, अज्ञत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्खता। नासमझी। नादानी। अनाड़ीपन।

अज्ञात [वि.] (सं.) १—अविदित। अप्रगट। अपरिचित। नामालूम। २-जिसे ज्ञान न हो। (क्रि.) (वि.) बिना जाने। अनजाने में।

अज्ञातक [वि.] (सं.) अनजाना। अपरिचित।

अज्ञातनामा [वि.] (सं.) १-जिसका नाम विदित न हो। २—जिसे कोई न जानता हो। अविख्यात। तुच्छ।

अज्ञातवास [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसे स्थान का रहना जहां पता न चले।

अज्ञातयौवन [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह स्त्री जिसे अपनी उभरती जवानी का भास न हो। मुग्धा-नायिका के दो भेदों में से एक।

अज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १—जड़ता। मूर्खता। अविद्या। मोह। २—जीवात्मा को गुण तथा गुण के कार्यों से पृथक न समझने का अविवेक।
(वि.) मूर्ख। विना ज्ञान का।

अज्ञानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.)मूर्खता। निर्बोधता। अविद्या। नासमझी।

अज्ञानपन [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्खता। नासमझी। नादान। जड़ता।

अज्ञानी [वि.](सं.) ज्ञानशून्य। अनाड़ी। मूर्ख। नासमझ।

अज्ञेय [वि.] (सं.) न जानने योग्य। समझ में न आने योग्य। बोधागम्य।

अज्ञेयवाद [संज्ञा पु.] (सं.) दृश्य जगत से परे जो कुछ है वह जाना नहीं जा सकता, ऐसे सिद्धान्त पर मत।

अज्येष्ठ [वि.] (सं.) जो बड़ा न हो।

अज्यों [क्रि. वि.] (हिं.) अब भी। अबतक।

अझर [वि.] (हिं) जो न गिरे। जो न झरें। या जो न बरसे।

अझोरी ❋ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) झोली।

अटंबर, अटम्बर [संज्ञा पु.](हिं.) ढेर। राशि। समुदाय।

अटक (संज्ञा पु.] (हिं.) १—रोक। रुकावट। उलझन। बाधा। अड़चन। २—संकोच ३—सिन्धुनदी की पश्चिमी धारा। ४—सिंधनदी (पाकिस्तान के अन्तर्गत) पर स्थित एक छोटा नगर जहां प्राचीन तक्षिला नगरी थी। ५—हर्ज। अत्याधिक आवश्यकता।

अटकन ❋ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अटक'।

अटकन-बटकन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटे बालकों का खेल।

अटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १—रुकना। अड़ना। २—उलझना। फंसना। लगा रहना। ३—प्रेम में फंसना। ४—विवाद करना। उलझना। झगड़ना।

अटकर ❋ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) अनुमान। कूत। अन्दाजा।

अटकरना [क्रि.स.] (हि.) अटकल लाना। अनुमान करना। कूतना।

अटकल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—अनुमान। कल्पना। २—अन्दाज। तखमीना।

अटकलना [क्रि. स.] (हि.) अनुमान करना। अन्दाज करना। अटकल लगाना।

अटकलपच्चू [संज्ञा पु.] (हिं.) अनुमान। मोटा अन्दाज। कपोलकल्पना।
(वि.) अनुमान से। अन्दाज से।

अटका [संज्ञा पु.] (हिं) जगन्नाथ को चढ़ाया हुआ भात जो सुखाकर प्रसाद-रूप में दूर-दूर के देशों में भेजा जाता है।

अटकाना [क्रि.स.] (हि.)१—रोकना। अड़ाना। ठहराना। लगाना। २—फंसाना। उलझाना। ३—डाल रखना। उठा रखना। पूरा करने में देर करना।

अटकाव [संज्ञा पु.] (हि.) रोक। अड़चन। रुकावट। बाधा। प्रतिबन्ध। बाधा। विघ्न।

अटखट ❋ [वि.] (हि.) छिन्नभिन्न। अट्टसट्ट। अंडबंड।

अटखेली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चंचलता। खेल-कूद। क्रीड़ा। कौतुक। झूमती हुई मादक चाल।

अटट-ट्ट [वि.] (हिं.) पुष्ट, पोढ़ा। दृढ़।

अटन [संज्ञा पु.] (सं.) घूमना-फिरना। भ्रमण। डोलना। चलना।

अटना [क्रि. अ.] (हि.) १—चलना। घूमना। २—यात्रा करना। ३—पूरा पड़ना। ४--आड़ करना। ओट करना।

अटनि, अटनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष का वह भाग जहां पर रोंदा चढ़ाया जाता है।

अटपट [वि.] (हि.) १—टेढ़ामेढ़ा। कठिन। विकट। दुस्तर। २—गूढ़। गहरा। अनोखा। जटिल। ३—उलटा-सीधा।

अटपटाना [क्रि. अ.] (हि.) १—लड़खड़ाना। घबड़ाना। अंडबंड होना। २—हिचकना। संकोच करना। आगापीछा करना।

अटपटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) तिरछी। नटखट। अनरीति। संकोच भरी।

अटब्बर [संज्ञा पु.] (हि.) १—आडम्बर। दर्प। २—(पंजाबी) परिवार। कुटुम्ब। कुनबा।

अटम [संज्ञा पु.] (हि.) ढेर। राशि। समुदाय।

अटमबम [संज्ञा पु.] परमाणुबम। परमाणुवाद के सिद्धान्त पर तैयार किया गया एक अग्निशस्त्र।

अटरनी [संज्ञा पु.] (अं.) प्रतिनिधि। मुख्तार।

अटरूष [संज्ञा पु.] (सं.) अडूसे का पेड़।

अटल [वि.] (सं) १—न टलने वाला। स्थिर। अचल। २—नित्य। चिरस्थायी। ३-अवश्यम्भावी। जो अवश्य हो। ४—पक्का। ध्रुव।

अटलस् [संज्ञा पु.](अं.) भूमण्डलके समस्त देशों के मानचित्रों की पुस्तक। अंग्रेजी 'एट्लस' का बिगड़ा रूप।

अटहर❋ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—ढेर। समूह। २—नित्य। अमिट। चिरस्थायी।

अटा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अटारी। कोठा।

अटाउ [वि. संज्ञा पु.] (हि.) बुराई। बिगाड़। नटखटी। शरारत।

अटाटूट [वि.] (हि.) बिलकुल। नितान्त। अतिनिपट।

अटारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छत। ऊपर के खण्ड पर बनी हुई कोठरी।

अटाल [संज्ञा पु.] (हि.) बुर्ज। उंचा घर। धरहरा।

अटाला [संज्ञा पु.] (हि.) १—ढेर। राशि। २—सामान। ३—कसाइयों की बस्ती।

अटिया [संज्ञा. स्त्री.] (हि.) छोटा घर। झोंपड़ी। घास आदि का बंधा हुआ पूला या मुट्ठा। आंटी।

अटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है।

अटूट [वि.] (हि.) १—न टूटने वाला। जिसका खण्ड न हो सके। मजबूत। २—जिसका पतन न हो। अजेय। ३—अखण्ड। निरन्तर। ४—अपरिमित।

अटेरन [संज्ञा पु.] (हि.) सूत की आँटी बनाने का एक यंत्र।

अटेरन होना = १—अत्यन्त दुर्बल होना। २—घोड़े को चक्कर देने की एक रीति।

अटेरन कर देना = दाव-पेच में डालकर चकरा देना।

अटेरना [क्रि. स.] (हि.) १—अटेरन द्वारा सूत की आँटी बनाना। २—हद से ज्यादा नशा करना।

अटोक* [वि.] (हि.) बिना रोकटोक का। अप्रतिबंधित।

अट्ट * [संज्ञा पु.] (सं.) १—महल। अट्टालिका। २—बाजार। हाट।

अट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपरी खण्ड की कोठरी।

अट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) ढाल। अप्रतिष्ठा।

अट्टहास [संज्ञा पु.] (सं.) अत्याधिक जोर की हंसी। ठठाकर हँसना।

अट्टहसित [वि.] (सं.) ठहाके की हँसी।

अट्टहास [संज्ञा पु.] (सं.) तीव्र हँसी। ठट्ठा मारकर हँसना।

अट्टहासक [संज्ञा पु.] (सं.) १—खिलखिलाकर हँसाने वाला। २—कुंद का पुष्प तथा वृत्त।

अट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—मचान। अट्टालिका।

अट्टाट्टहास [संज्ञा पु.] (हिं.) जोर की हँसी। खिलखिलाना।

अट्टाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महल के सबसे ऊपर के खंड का कमरा।

अट्टालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अटारी। प्रासाद। महल। विशाल भवन। राजगृह।

अट्टालिकाबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) डाट। महराबदार नीव।

अट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अटेरन पर लिपटा हुआ सूत। लच्छी।

अट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी भी रंग की आठ बूटियों वाला ताश का पत्ता।

अट्ठाइस, अट्ठाइस [वि.] (हिं.) बीस और आठ के जोड़ से बनी संख्या '२८'।

अट्ठाइसवाँ [वि.] (हिं.) सत्ताइस के बाद का। अट्ठाइस संख्या वाला।

अट्ठाईस [वि.] (हिं.) बीस और आठ '२८'।

अट्ठानबे [वि.] (हिं.) नब्बे और आठ '९८'।

अट्ठानबेवां [वि.] (हिं.) सत्तानवें के बाद का। अट्ठानवेवीं संख्या वाला।

अट्ठावन [वि.] (हिं.) पचास में आठ जोड़ने से बनने वाली संख्या '५८'।

अट्ठावनवां [वि.] (हिं.) सत्तावन के बाद का। जो क्रम तथा संख्या में जिसका स्थान अट्ठावनवां हो।

अट्ठासिवां [वि.] (हिं.) सत्तासी के बाद की संख्या।

अट्ठासी [वि.] (हिं.) अस्सी और आठ का जोड़ '८८'।

अठंग, अठङ्ग* [संज्ञा पु.] (हिं.) अष्टाङ्ग योगी।

अठ* [वि.] (हिं.) आठ।

अठइसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सौ चालीस (अट्ठाइस पंचा २८×५—१४०)। फलों की बिक्री में इसका व्यवहार होता है यह संख्या १०० समझी जाती है।

अठइसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अठइसा'।

अठकौसल [संज्ञा पु.] (हिं.) १—पंचायत। गोष्ठी। २—सलाह। मन्त्रणा!

अठखेलपन [संज्ञा पु.] (हिं.) चंचलता। खेल-कूद। नटखटी।

अठखेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—चपलता। चुलबुलापन। विनोदक्रीड़ा। २—मादक या मतवाली चाल।

अठत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और आठ '७८'।

अठन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आठ आने या आधे रुपये का सिक्का।

अठपतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कसीदाकारी जिसमें आठ पत्तियां बनाई जाती हैं।

अठपहला, अठपहलू [वि.] (हिं.) आठ पहल या पार्श्व का।

अठपाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊधम। उपद्रव। शरारत।

अठबन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बाँस जिस पर ताने का सूत लपेटा जाता है।

अठमासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आषाढ़ से माघ तक समय-समय पर जोता जाने वाला खेत जिसमें ईख बोई जाती है। २—आठ माशे की तोल। ३—आठ महीने का।

अठमासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आठ माशे का सोने का सिक्का। गिन्नी।

अठलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १—इतराना। गर्व जताना। २—चोचला करना। नखरा करना। ३—मदोन्मत्त होना। मस्ती दिखाना।

अठवना* [क्रि. अ.] (हिं.) १—जमना। ठनना। २—इकट्ठा होना।

अठवाँस [संज्ञा पु.] (हि.) अठपहलू पदार्थ। अठपहले पत्थर का टुकड़ा।

[वि.] अठपहला। अठकोना।

अठवाँसा [वि.] (हिं.) वह गर्भ जिसमें आठ महीने में बालक उत्पन्न हो जाये।

[संज्ञा पु.] १—सीमन्त संस्कार। आठ मास तक जोता जाने वाला खेत।

अठवारा [संज्ञा पु.] (हि.) आठ दिन का समय या काल। आठवां दिवस। सप्ताह। हफ्ता।

अठवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह रीति जिसके अनुसार किसान जोताई के समय प्रति आठवें दिन अपना हल और बैल जमींदार को खेत जोतने के निमित्त देते हैं।

अठवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह पालकी जिसे आठ आदमी उठाते हैं।

अठसिल्या* [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंहासन।

अठहत्तर [वि.] (हि.) सत्तर और आठ '७८'।

अठहत्तरवाँ [वि.] (हि.) अठहत्तर संख्या वाला

अठान [संज्ञा पु.] (हि.) १—अयोग्य व दुष्कर कार्य। न ठनने योग्य काम। २—बैर। शत्रुता। विरोध। झगड़ा।

अठाना*+ [क्रि. स.] (हि.) १—सताना। पीड़ित करना। २—नचाना। ठनना। छेड़ना मचाना।

अठारह [वि.] (हि) दस और आठ '१८'।

[संज्ञा पु.] पुराणों की संख्या का सूचक। चौसर का एक दाव।

अठारहवाँ [वि.] (हिं.) अठारह की संख्या वाला।

अठासिवाँ [वि.] (हिं.) अठासी की संख्या वाला

अठासी [वि.] (हिं.) अस्सी और आठ '८८'।

अठिलाना* [क्रि. अ.] (हि) इतराना। चोंचला दिखाना। मदोन्मत्त होना।

अठे [क्रि. वि.] (हिं.) यहां। इस जगह पर।

अठेल* [वि.] (हि.) बलवान। न ठेलने योग्य जोरावर।

अठोठ* [संज्ञा पु.] (हिं.) आडम्बर। ठाटबाट

अठोतरसो [वि.] (हिं.) एक सौ आठ की संख्या '१०८'।

अठोतरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक सौ आठ दानों की जपमाला।

अठोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) आठ पत्ते लगाकर बनाया हुआ दौना।

[वि.] आठ का।

अठंग [संज्ञा पु.] (हि.) अष्टांग योग साधने वाला

अडंग, अडङ्ग [संज्ञा पु.] (हि.) हाट। बाजार। मंडी।

अड़ंगा, अड़ङ्गा [संज्ञा पु] (हिं.) रुकावट। अवरोध। अड़चन। हस्तक्षेप।

अडंड [वि.] (हिं.) १—अदंडनीय २—निर्भय। निडर।

अडंबर, अडम्बर❀ [संज्ञा पुं.] (हिं.) आडंबर ऊपरी बनावट। ढोंग।

अड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) हठ। टेक। ज़िद।

अड़काना [क्रि. स.] (हिं.) रोकना। ठहराना। टिकाना। उलझाना। फंसाना।

अडग [वि.] (हिं.) न डिगने वाला। स्थिर। अचल। अटल।

अड़गोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) उपद्रवी चौपाये के गले में डालने का लकड़ी का मोटा डंडा। ठेकुर। डेंगना।

अड़चन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाधा। रुकावट। विघ्न। दिक्कत।

अड़डंडा, अड़डण्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) मस्तूल में बांधा हुआ बांस या लकड़ी का डंडा जिसमें पाल बँधी रहती है।

अड़ड़पोपो [संज्ञा पु.] (देश.) १—हाथ देखकर जीवन की शुभाशुभ घटनाओं को बताने वाला। सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता। २—वृथा की बकबक करने वाला। बकवादी। पाखण्डी गप्पी। झूँठा आडम्बरी।

अड़तल [संज्ञा पु.] (हिं.) १—ओट। अवरोध। आड़। २—शरण। छाया। ३—बहाना। उज्र।

अड़तल पकड़ना या लेना = १—शरण में जाना २—बहाना करना।

अड़तालिस, अड़तालीस [वि.] (हिं.) चालीस और आठ का जोड़ '४८'।

अड़तालिसवाँ [वि.] (हिं.) क्रम या संख्या में जो सेंतालीस के उपरांत आये।

अड़तीस [वि.] (हिं.) तीस और आठ का जोड़ '३८'।

अड़तीसवाँ [वि.] (हिं.) क्रम अथवा संख्या के अनुसार सेंतीस के बाद आने वाला।

अड़दार [वि.] (हिं.) १—रुकने वाला। अड़ियल २—मस्त। मतवाला। ऐंड़दार।

अड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १—रुकना। अटकना। ठहरना। २—हठ करना। टेक ठानना।

अड़पायल [वि.] बलवान। शक्तिवान। जोरावर

अड़बंग [वि] (हिं.) १—टेढ़ामेढ़ा। ऊँचा-नीचा। २—विकट। कठिन। ३—विलक्षण। अनोखा। अद्भुत।

अडर [वि.] (हिं.) निडर। निर्भय।

अड़व [संज्ञा पु.] (हिं.) वह राग जिसमें पाँच स्वर आवें।

अड़वल [वि] (हि.) अड़ियल। अड़ने वाला।

अडवोकेट [संज्ञा पु.] (अं.) वह वकील जिसे वकालतनामे की आवश्यकता नहीं होती।

अड़सठ [वि.] (हि.) साठ और आठ '६८'।

अड़सठवाँ [वि.] (हि.) क्रमानुसार सड़सठ के बाद आने वाला।

अड़हु [संज्ञा पु.] (सं.) मौलसिरी का वृक्ष।

अड़हुल [संज्ञा पु.] (हि.) जप या जवापुष्प। देवीफूल। गहरे लाल रंग का फूल।

अड़ाड़ [संज्ञा पु.] (हि.) पशुओं को बांधने का हाता या बाड़ा।

अड़ाड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) ढकोसला। आडम्बर ढोंग।

अड़ान [संज्ञा पु.] (हि.) १—रुकने का स्थान। २—पड़ाव। पथिकों का विश्राम स्थान।

अड़ाना [क्रि. स.] (हि.) १—अटकाना। रोकना उलझाना। २—टेकना। डाट लगाना। ३—ठूसना। भरना। ४—गिराना। रुकावट डालकर गति रोकना।

[संज्ञा पु.] १—एक राग जो कन्हड़ा का भेद है। २—डाट। पूनी। ठेवा।

अड़ानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १—बड़ा पंखा। २—कुश्ती का एक दाँव।

अड़ायतो [वि.] (हि.) आड़ करने वाला। जो ओट करे।

अड़ार [संज्ञा पु.] (हि.)१—समूह। राशि। ढेर। २—लकड़ी या ईंधन की दूकान। ६—ईंधन का ढेर।

अड़ाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य। मयूरनृत्य।

अडिग [वि.] (सं.) न डोलने वाला। स्थिर। निश्चल।

अड़ियल [वि.] (हि.) १—अकड़ कर चलने वाला। चलते-चलते रुकनेवाला। २—सुस्त। काम में देर करने वाला २—हठी। जिद्दी।

अड़ियल टट्टू = रुक कर काम करने वाला।

अड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साधुओं की कुब्बड़ी अथवा तकिया जिस को टेक कर बैठते हैं।

अड़िल्ल [संज्ञा पु.] (हि.) अरियल। सोलह मात्राओं का एक छन्द।

अड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—रोक। २--अड़ान। आग्रह। हठ। जिद। ३—मौका। आवश्यक समय।

अडीखम्भ❀ [हि.] (हि.) शक्तिवान्। पुष्ट। जोरावर।

अडीठ [वि.] (हि.) १—अदृष्ट। जो दिखाई न पड़े। लुप्त। २—छिपा हुआ। गुपचुप। अन्तर्हित।

अडूलना [क्रि. स.] (हि.) उड़ेलना। गिरना। डालना।

अडूसा [संज्ञा पु.] (हि.) एक औषधि।

अडोर [संज्ञा पु.](हिं.) तुमुलघोष। शोर। गुल।

अडोल [वि.] (हि.) १-न हिलने वाला। स्थिर। अटल। २—स्तब्ध।

अड़ोसपड़ोस [संज्ञा पु.] (हि.) आसपास। करीब।

अड़ोसी-पड़ोसी [संज्ञा पु.] (हि.) आसपास का रहने वाला। समीप का रहने वाला।

अड्डन [संज्ञा स्त्री.] ((सं.) ढाल।

अड्डा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—ठहरने की जगह। २—मिलने या इकट्ठा होने का स्थान। ३—धूर्तों का मिलकर बैठने का स्थान। ४—वह स्थान जहाँ पर सवारी उठाकर ले जाने वाले वाहन हों। ५—दुराचारिणी या वेश्याओं के रहने का स्थान। ६—केन्द्रस्थान। ७—पिंजड़े के भीतर लगा वह डंडा जिस पर चिड़ियाँ बैठती हैं। ८—छीपी के कपड़ा छापने का गद्दा। ९—लम्बे बांस पर बंधी हुई टट्टी जिस पर कबूतर बैठते हैं। १०—रहट की वह लकड़ी जो उल्टा घूमने से रोकती है। ११—जुलाहे का करघा। बुने निवाड़ को लपेटने की लकड़ी।

अड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—लकड़ी छेदने की बरमी। २—जूते का किनारा।

अड्रेस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १—मानपत्र। अभिनन्दनपत्र। २—पता। ठिकाना।

अढ़तिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दलाल। दलाली पर माल बेचने वाला। आढ़त करने वाला।

अढ़न ❀ [संज्ञा पु.] (हि.) धाक। मर्यादा।

अढ़वना❀ [क्रि. स.] (हि.) काम में लगाना। आज्ञा देना।

अढ़ारटंकी, अढ़ारटङ्की❀ [संज्ञा पु.] (हि.) धनुष।

अढ़ाई [वि.] (हि.) दो और आधे से मिलकर बनी संख्या '२½'।

अढ़िया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—गारा ढोने का तसला। २—काठ या पत्थर का छोटा बरतन।

अढुक [संज्ञा पु.] (हि.) ठोकर। चोट।

अढुकना [क्रि. अ.] (हि.) १—ठोकर खाना। चोट लगना। २—सहारा लेना।

अढैया [संज्ञा पु.] (हि.) १—अढाई सेर की तोल। पंसेरी का आधा। २—ढाई गुणे का पहाड़ा।

अण, अणक❀ [वि.] (सं.) अधम। नीच। बकवादी।

अणद ❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) आनन्द।

अणमण ❀ [वि.] (हि.) १—अप्रसन्न। नाराज। २—बीमार। रोगी।

अणसंक ❀ [वि.] (हि.) निर्भय। निडर। बेडर।

अणास ❀ [संज्ञा पु.] (हि.) कठिनाई।

अणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—नोक। २—धार। ३—सीमा। सिवान। मेड़। ४—किनारा। ५—बिलकुल छोटा। ६—पहिये की धुरी की कील।

अणिमा [संज्ञा पु.] (सं.) १—अतिसूक्ष्मपरिमाण। २—आठ सिद्धियों में से प्रथम जिससे

योगी लोग अणु के समान सूक्ष्म-शरीर धारण कर लेते हैं।

अणिमादिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ सिद्धियाँ यथा—१—अणिमा, २—महिमा, ३—गरिमा, ४—लघिमा, ५—प्राप्ति, ६—प्राकाम्य, ७—ईशित्व, ८—वशित्व।

अणियाली ❀ [[संज्ञा स्त्री.] (हि.) कटारी।

अणी ❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अणि'।

अणीय [वि.] (हिं.) अतिसूक्ष्म। वारीक। झीना।

अणु [संज्ञा पु.] (सं.) १—परमाणु से बड़ा तथा द्वयणुक से छोटा। २—कण। छोटा। टुकड़ा ३—रज। रजकण। ४—संगीत के अनुसार तीन ताल के काल का चतुर्थांश समय। ५—एक मुहूर्त का ५४६७५००० वाँ भाग। ६—सूक्ष्म कण।
[वि.] १—क्षुद्र। २—बहुत छोटा। ३—जो कठिनता से दिखाई पड़े।

अणुबम [संज्ञा पु.] (सं.) एक महाविनाशकारी बम।

अणुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली।

अणुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शनशास्त्रानुसार वह सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा को अणु माना गया हो। वल्लभाचार्य का सिद्धान्त। २—वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के अणु नित्य माने गये हों। वैशेषिकदर्शन।

अणुवादी [संज्ञा पु.] (सं.) अणुवाद में विश्वास रखने वाला।

अणुवीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) सूक्ष्मदर्शक यंत्र जिसके द्वारा सूक्ष्मपदार्थ भी बड़े दिखाई देते हैं। २—बाल की खाल निकालना।

अणुव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) जैनशास्त्रों के अनुसार गृहस्थधर्म का एक अङ्ग।

अणुव्रीही [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़िया धान जिसका चावल पक कर लम्बा हो जाता है। मोतीचूर।

अणोरणीयान् [संज्ञा पु.] (सं.) उपनिषद् के मंत्र का नाम
[वि.] १—अत्यन्त सूक्ष्म।

अतंक ❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) आतंक। कष्ट।

अतंत +[वि.] (हि.) अत्यंन्त। अधिक। बहुत ज्यादा।

अतंद्रिक अतन्द्रिक [वि.] (सं.) १—आलस्यरहित। चंचल। २—व्याकुल। विकल।

अतः [अव्य.] (सं.) इस कारण से। इसलिये। इस हेतु।

अतएव [अव्य.] (सं.) इसलिये। इस कारण से।

अतट [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत का शिखर। टीला। चोटी।

अतत्वविद [संज्ञा पु.] (सं.) तत्व को न जानने वाला।

अतथोचित [वि.] (सं.) १—अनिश्चित। २—अयोग्य।

अतथ्य [वि.] (सं.) १—मिथ्या। अन्यथा। २—असमान।

अतद्गुण [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थालंकार जिसमें एक बड़ा पदार्थ का किसी ऐसे दूसरे पदार्थ के गुणों को न ग्रहण करना दिखवाया जाय जिसके कि वह अत्यन्त समीप न हो।

अतद्वान् [वि.] (सं.) असमान।

अतनु [वि.] (सं.) १—बिना देह का। शरीर रहित। २—मोटा स्थूल।
[संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

अतप [वि.] (सं.) जो गरम न हो।

अतप्त [वि.] (सं.) १—बिना तपाया हुआ। ठंढा। २—जो पका न हो। कच्चा।

अतप्ततनु [वि.] (सं.) तप्तमुद्रा से बिना छाया लगा हुआ। जिसकी देह तप आदि से क्षीण न हुई हो।

अतप्यमान [वि.] (सं.) दुःख या कष्टरहित।

अतबान ❀ [वि.] (हिं.) अत्याधिक। अत्यन्त। बहुत ज्यादा।

अतरंग [संज्ञा पु.] (देश.) लंगर को भूमि से ऊपर उठाये रखने की क्रिया।

अतर [संज्ञा पु.] (हिं.) पुष्पसार। इत्र। कुसुमनिर्यास। फूलों का सुगन्धित सत्व।

अतरदान [संज्ञा पु.] (हिं.) इत्रदान। फूलदान के आकार का वह पात्र जिसमें इत्र से सुवासित किया हुआ फाहा रक्खा होता है, यह सभा या महफिल में सत्कार के निमित्त उपस्थित किया जाता है।

अतरल [वि.] (सं.) जो तरल न हो। जो पतला न हो। गाढ़ा।

अतरबन [संज्ञा पु.] (सं.) १—दरवाजे की चौखट के ऊपर की पत्थर की पटिया। २—छप्पर या फूस को छाते समय नीचे लगाई जाने वाली मूँज।

अतरसों [क्रि. वि.] (हिं.) १—परसों के बाद का दिन। आज से आने वाला तीसरा दिन। २—गत परसों से पहिले का दिन। आज से व्यतीत तीसरा दिन।

अतरिख [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्तरिक्ष। वायुमण्डल।

अतर्क [वि.] (सं.) बिना तर्क या हेतु का। तर्करहित।

अतर्किक [वि.] (सं.) १—बिना विवेचन किया हुआ। २—आकस्मिक। ३—बेसोचा समझा

अतर्कित [वि.] (सं.) देखो 'अतर्किक'।

अतर्क्य [वि.] (सं.) तर्करहित। विवेचना रहित अनिर्वचनीय। अचिन्त्य।

अतर्पी [वि.] (सं.) तपस्या न करने वाली।

अतल [वि.] (सं.) १—जिसका तल न हो। २—गहरा। सात पातालों में से दूसरा पाताल

अतलस [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार का अत्यन्त कोमल वस्त्र।

अतलस्पर्श, अतलस्पर्शी [वि.] (सं.) बहुत गहरा अथाह। अतल को छूने वाला।

अतलस्पृक् [वि.] (सं.) अत्यन्त गहरा। बहुत गहरा।

अतस् [अव्य.] (सं.) इसलिये। इस कारण से।

अतस [संज्ञा पु.] (सं.) १—आत्मा। २—अस्त्र। ३—वायु। वल्कल-वस्त्र।

अतसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अलसी। तीसी।

अतलांतक [संज्ञा पु.] (हिं.) अफरीका तथा अमरीका के मध्य का महासागर।

अतवार [संज्ञा पु.] (हिं.) रविवार।

अता [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अनुग्रह। कृपा। दया

अताई [वि.] (अ.) १—निपुण। प्रवीण। दक्ष। कुशल। २—धूर्त। ३—अशिक्षित। अर्ध शिक्षित।
[संज्ञा पु.] बिना दक्षता प्राप्त किये गाने वाला गवैया।

अताना [संज्ञा पु.] मालकोस राग की एक रागनी

अतापी ❀ [वि.] (सं.) दुःखरहित। तापरहित। ठंडा। शांत।

अतालीक [संज्ञा पु.] (अ.) शिक्षक। उस्ताद। गुरु। अध्यापक।

अति [वि.] (सं.) बहुत। अधिक। अतिशय।
[संज्ञा स्त्री.] अधिकता। ज्यादती।

अतिउक्ति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बहुत बढ़ाकर वर्णन करने की शैली। मुबालिगा। अत्युक्ति

अतिउत्पादन [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक फसल या कल-कारखानों में माल की इतनी अधिकता होना कि मण्डियों में उसकी पूरी-पूरी खपत न हो सके।

अतिकटु [वि.] (सं.) अतिशय कडुआ।

अतिकठोर (सं.) बहुत क्लिष्ट। बहुत कड़ा।

अतिकंटक, अतिकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा गोखरू।

अतिकथ [वि.] (सं.) न कहने योग्य।

अतिकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—शेखी। २—नमक मिर्च लगाकर कही बात। ३—व्यर्थ प्रलाप।

अतिकर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो साधारण कर के अतिरिक्त हो तथा बहुत अधिक आय वालों से लिया जाता है।

अतिकर्पण [वि.] (सं.) बहुत खींचने वाला।

अतिकश [वि.] (सं.) किसी से न दबने वाला। स्वेच्छाचारी। उद्दण्ड।

अतिकांत, अतिकान्त [वि.] (सं.) बहुत प्रिय।

अतिकाय [वि.] (सं.) दीर्घकाय। बड़े डील

डौल वाला। स्थूल। मोटा। विशालकाय।

अतिकारक [वि.] (सं.) अति करने वाला। निर्दयी।

अतिकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १—विलंब। देर। २—कुसमय।

अतिकुत्सित [वि.] (सं.) बहुत बुरा। अति निन्दनीय।

अतिकुल्य [वि.] (सं.) अत्याधिक रोवें वाला।

अतिकृच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १—बहुत कष्ट या दुःख। छः दिन का एक कठिन व्रत या उपवास जो प्रायश्चित के निमित्त किया जाता है।

अतिकृत [वि.] (सं.) मर्यादा को पार करके किया हुआ।

अतिकृति [वि.] (सं.) १—मर्यादा का उल्लंघन करके किया गया कार्य। २—पच्चीस वर्णों के वृत्तों की जाति यथा सुन्दरी (स ८+ग) अरविन्द (स ८+ल) आदि।

अतिकृप [वि.] (सं.) बहुत दुबला।

अतिकृष्ण [बि.] (सं.) गहरे काले रंग का।

अतिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) मर्यादा का उल्लंघन। उलटा व्यवहार। व्युत्क्रम।

अतिक्रमण × [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लंघन। बढ़ती हद के बाहर जाना। भङ्ग (उल्लंघन) खण्डन

अतिक्रमणीय [वि.] (सं) पार न करने योग्य।

अतिक्रमक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपने अधिकार या स्वत्व की सीमा का उल्लंघन करके आगे बढ़े। दूसरे के अधिकारों में हस्तक्षेप करने वाला।

अतिक्रांत, अतिक्रान्त [वि.] (सं.) लांघा हुआ। सीमा के पार पहुँचा हुआ।

अतिक्रांतभावनीय [संज्ञा पु.] (सं.) चार प्रकार के योगियों में से एक। वैराग्य सम्पन्न योगी

अतिक्रुद्ध [वि.] (सं.) बहुत गुसैल।

अतिगत [वि.] (सं.) अधिक चला हुआ।

अतिगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोक्ष। उत्तम गति। मुक्ति।

अतिगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) चम्पा का वृक्ष या पुष्प।
[वि.] (सं.) अधिक महक वाला।

अतिगर्वित [वि.] (सं.) अहंकारी। अभिमानी। बड़ा घमंडी।

अतिगहन [वि.] (सं.) अतिगूढ़। बहुत गहरा।

अतिगह्वर [वि.] (सं.) अप्रवेश्य। अधिक घना।

अतिगुण [वि.] (सं.) अधिक गुण वाला।

अतिगुप्त [वि.] (सं.) बिलकुल छिपाया हुआ।

अतिगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) परम पूजनीय व्यक्ति।
[वि.] (सं.) बहुत भारी।

अतिगो [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी गाय।

अतिग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा मगर या घड़ियाल।

अतिग्राह्य [वि.] (सं.) अधिक ग्रहण करने योग्य

अतिघ [संज्ञा पु.] (सं.) १—हथियार। शस्त्र। २—क्रोध।

अतिघ्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गहरी नींद। चैन

अतिचण्ड [वि.] (सं.) अत्याधिक भयङ्कर।

अतिचमू [वि.] (सं.) सेना पर विजय प्राप्त करने वाला।

अतिचर [वि.] (सं.) उलट-पलट होने वाला।

अतिचरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—स्त्रियों का एक रोग जिसमें बार-बार मैथुन करने पर तृप्ति होती है। वैद्यक मतानुकूल ऐसी योनि जो अधिक मैथुन से तृप्त न हो।

अतिचरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली का पौधा।

अतिचापल्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्याधिक चपलता या चंचलता।

अतिचार [संज्ञा पु.] (सं.) १—ग्रहों की शीघ्र चाल। २—जैनमतानुसार विघात। व्यतिक्रम। ३—लाँघकर जाना।

अतिचारी [वि.] (सं.) बहुत घूमने-फिरने वाला।

अतिच्छत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कुकुरमुत्ता। तालमखाना।

अतिछत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

अतिजगती [वि.] (सं.) संसार को लाँघनेवाली।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेरह वर्ण के वृत्तों की जाति यथा गाया (म+त+या+स+ग) २—एकावलि (भ+न+ज+ज+ल)। ३—मंजुभाषिणी (स+ज+स+ज+ग)। ४—राधा (र+त+म+य+ग)। ५—चण्डी (न२+स२+ग)। ६—रमाविलास (र४+ग)।

अतिजन [वि.] (सं.) निर्जन स्थान।

अतिजर [वि.] (सं.) अत्यन्त वृद्ध।

अतिजल [वि.] (सं.) पानी से खूब सींचा हुआ।

अतिजागर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बगला।

अतिजीर्ण [वि.] (सं.) बहुत पुराना।

अजीर्णता [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बुढ़ापा।

अतिजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) साधारणतः औरों का अन्त हो जाने की अवस्थाओं में भी बचा रहना।

अतित [वि.] (सं.) बहुत फैला हुआ।

अतितपस्विनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) गोरखमुण्डी।

अतितपस्वी [वि.] (सं.) अधिक तपस्या करने वाला।

अतितार [संज्ञा पु.] (सं.) तीव्र स्वर। उच्चध्वनि।

अतितीक्ष्ण [वि.] (सं.) १—बहुत तेज। २—बहुत तीखा या खारा।

अतितीव्र [वि.] (सं.) बहुत तेज (गति)।
[संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में वह स्वर जो तीव्र से तनिक उच्च हो।

अतितृप्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) पूर्ण सन्तोष।

अतितृष्णा [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक प्यास।

अतिथि [संज्ञा पु.] (सं.) १—अभ्यागत। महमान। एक स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरने वाला संन्यासी। व्रात्य। २—मुनि (जैन साधु)। यज्ञ में सोमलता को लाने वाला।

अतिथिक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभ्यागत का सत्कार।

अतिथिविद्वेष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महमान से झगड़ा।

अतिथिपरिचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभ्यागत का आदर सत्कार।

अतिथिपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेहमानदारी। अभ्यागत का आदर सत्कार।

अतिथियज्ञ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिथिपूजा। अभ्यागत का सत्कार।

अतिथिसंविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) जैन मतनुसार चार शिक्षा व्रतों में से एक।

अतिदग्ध [वि.] (सं.) ज्यादा जला हुआ।

अतिदर्शी [वि.] (सं.) अधिक दूर तक देखने वाला।

अतिदाता [संज्ञा पु.] (सं.) अत्याधिक उदार व्यक्ति।

अतिदान [संज्ञा पु.] (सं.) अपरिमित दान। बहुत बड़ा दान।

अतिदानी [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक दान करने वाला।

अतिदारुण [वि.] (सं.) अतिशय। भीषण। महाभयकर।

अतिदाह (सं.) हद से ज्यादा जलन।

अतिदिष्ट [वि.] (सं.) समान। धर्म, प्रकृति, स्वरूप आदि के विचार से किसी के सदृश।

अतिदीप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—बड़ा प्रकाश। २—श्वेत तुलसी।

अतिदीर्घ [वि.] (सं.) बहुत लम्बा।

अतिदुःखित [वि.] (सं.) बहुत दुखी।

अतिदुर्गत [वि.] (सं.) बुरी अवस्था में।

अतिदुर्धष [वि.] (सं.) तीव्र स्वभाव वाला। अति क्रोधी। बड़ी कठिनता से प्राप्त।

अतिदुर्लभ [वि.] (सं.) कठिनता से प्राप्त होनेवाली।

अतिदुष्कर [वि.] (सं.) बहुत कठिन। बहुत असाध्य।

अतिदुष्ट [संज्ञा पु..] (सं.) बड़ा खोटा व्यक्ति। गोखरू।

अतिदूर [वि.] (सं.) बहुत दूर।

अतिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) सबसे बड़ा देवता। १—विष्णु। २—शिव।

अतिदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक विषय को त्यागकर दूसरे स्थान पर आरोपण। २—वह नियम जो अपने लक्षित विषय के अलावा अन्य विषयों में भी काम आवे। ३—कई अलग या विरोधी बातों या वस्तुओं में कुछ विशेष तत्त्वों की समानता। सादृश्य। एनालोजी।

अतिदोष [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा अपराध।

अतिधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा तीरन्दाज़।

अतिधवल [वि.] (सं.) बहुत सफेद।

अतिधृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अधैर्य। असन्तोष। २—उन्नीस वर्ण के छन्दों की जाति यथा—(१) शार्दूलविक्रीड़ित (म+स+ज+स+त+त+ग)। (२) रसाल (भ+न+ज+भ+ज+ज+ल)। (३) मणिमाल (स+ज+ज+भ+र+स+ल)।

अतिनाठ [संज्ञा पु.] (सं.) मिश्रित राग का एक भेद।

अतिनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्याक्ष के नौ पुत्रों में से एक का नाम।

अतिनिपुण [वि.] (सं.) बहुत चतुर या प्रवीण

अतिनिर्हारी [वि.] (सं.) बहुत अच्छी महक वाला।

अतिनीच [वि.] (सं.) महा अधम। बड़ा नीच।

अतिपन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सुमार्ग। अच्छी राह।

अतिपक्व [वि.] (सं.) भलीभांति पका हुआ।

अतिपतन [संज्ञा पु.] (सं.) अतिक्रमण। गड़बड़ी। अव्यवस्था।

अतिपथ [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी राह। सुपन्थ। सुमार्ग। सुन्दर पथ।

अतिपन्न [वि.] (सं.) सीमा का उल्लंघन किये हुए। अतिक्रांत।

अतिपर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रबल शत्रु।

अतिपरोक्ष [वि.] (सं.) आंखों से देखी हुई।

अतिपात [संज्ञा पु.] (सं.) १—अतिक्रम। अव्यवस्था। २—बाधा। हानि।

अतिपातक [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्रानुसार नौ पातकों में सब से बड़ा पातक।

अतिपातित [संज्ञा स्त्री.](सं.) हड्डियों का टूटना

अतिपांडुकंबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैन धर्मानुसार सिद्धशिला के दक्षिण का वह सिंहासन जिसपर तीर्थङ्कर बैठते हैं।

अतिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम कोटि का मनुष्य।

अतिपूत [वि.] (सं.) बहुत पवित्र या निर्मल।

अतिप्रजन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर या देश की जनसंख्या का इतना बढ़ जाना जिसके कारण उनका पूरे तौर से निर्वाह न हो सके

अतिप्रणय [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यंत अनुग्रह।

अतिप्रणन [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक दाम लगाने का भाव।

अतिप्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पूरा प्रबन्ध।

अतिप्रभंजनवात [संज्ञा पु.] (सं.) ८० या १०० मील प्रति घंटे की गति से चलने वाली वायु

अतिप्रवृद्ध [वि.] (सं.) बहुत बूढ़ा।

अतिप्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिक प्रवृत्ति या झुकाव।

अतिप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) गूढ़ प्रश्न। समझ में न आने वाला प्रश्न।

अतिप्रसक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रबल आसक्ति या चाह।

अतिप्रसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) उत्कट इच्छा या अभिलाषा। अति मैथुन।

अतिप्रसिद्ध [वि.] (सं.) अति विख्यात।

अतिप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्गीय जीवन।

अतिप्राणप्रिय [वि.] (सं.) प्राणों से भी अधिक प्यारा।

अतिप्रौढ [वि.] (सं.) महाबली।

अतिप्रौढ़यौवन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिपूर्ण युवावस्था।

अतिप्रौढा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्ण आयु की कन्या। अच्छी तरह बढ़ी हुई कन्या।

अतिबैरवै [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मात्रिक छन्द जिसके पहिले तथा तीसरे चरणों में बारह और दूसरे तथा चौथे चरणों में नौ मात्रायें होती हैं। उसके विषम पदों के आदि में जगणरहित होना चाहिए तथा सम पदों के अन्त का वर्ण लघु होना अनिवार्य है।

अतिबरसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अतिवर्षा २—मेघमाला। घटा।

अतिबल [वि.] (सं.) प्रबल। बड़ा बलवान।

अतिबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एक प्रकार की प्राचीन युद्धविद्या का नाम। २—एक औषधि

अतिबालक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा सा बालक।

अतिबाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लगभग दो वर्ष के वय का बच्चा।

अतिबृहत्फल [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का फल।

अतिब्रह्मचर्य [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मचर्य आश्रम के उपरान्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश।

अतिभार [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा भार। अत्याधिक वेग। पर्वत। वज्र।

अतिभारग [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत भार खैंचने वाला। खच्चर।

अतिभारन्यस्त [क्रि स.] (सं.) अत्याधिक कर लगाना।

अतिभाररोपण [संज्ञा पु.] (सं.) जैन शास्त्रानुसार पशुओं पर अधिक बोझ लादने का अत्याचार।

अतिभाव [संज्ञा पु.] (सं.) आधिक्य या अधिकता।

अतिभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत। बिजली।

अतिभीषण [वि.] (सं.) महाभयङ्कर।

अतिभोग [संज्ञा पु.] (सं.) नियत समय के उपरांत भी या बहुत दिनों से किसी सम्पत्ति का भोग करना।

अतिभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) परिमाण से अधिक भोजन।

अतिभ्रू [वि.] (सं.) बड़ी-बड़ी भौंहवाला।

अतिमञ्जुला [वि.] (सं.) अतिशय सुन्दर।
[संज्ञा स्त्री.] सेवती का पौधा।

अतिमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज़िद। हठ।

अतिमर्यादा [अव्य.] (सं.) मर्यादा की सीमा के बाहर।
[वि.] बिना मर्यादा का।

अतिमर्श [संज्ञा पु.] (सं.) निकट का सम्बन्ध।

अतिमात्र [वि.] (सं.) अतिशय। बहुत ज्यादा।

अतिमान [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक अभिमान। बड़ा घमंड।
[वि.] आवश्यकता से अधिक।

अतिमानिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ा हठ। बड़ा घमंड।

अतिमानी [वि.] (सं.) अत्याधिक अभिमानी बड़ा घमंडी।

अतिमानुष [वि.] (सं.) मानव धर्म से परे। दैवी दिव्य।

अतिमारुत [वि.] (सं.) खूब हवादार।
[संज्ञा पु.] आँधी। तूफान।

अतिमित [वि.] (सं.) हद से ज्यादा। अपरिमित। अतुल।

अतिमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) परम मित्र। जिगरी दोस्त।

अतिमुक्त [वि.] (सं.) १—निर्वाण प्राप्त। मुक्ति प्राप्त किया हुआ। २—विषयवासनारहित। वीतराग। निःसंग।
[संज्ञा पु.] १—माधवीलता। २—तिनसुना। ३—मरुआ का पौधा।

अतिमुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुण्यमय देह।

अतिमुक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) परम मुक्ति।

अतिमुशल [संज्ञा पु.] (सं.) यदि किसी नक्षत्र में मंगल अस्त हो तथा उसके सत्रहवें अथवा अठारहवें नक्षत्र से अनुवक्र हो तो उस वक्र को अतिमुशल कहते हैं।

अतिमूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बहुमूत्र रोग।

अतिमृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ति। मोक्ष।

अतिमैथुन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्याधिक स्त्री प्रसङ्ग।

अतिमोदा [संज्ञा स्त्री.] नेवारी या नवमल्लिका का पौधा अथवा पुष्प।

अतियश [वि] (सं.) विख्यात। अत्याधिक प्रसिद्ध।

अतियुक्त [वि.] (सं.) बराबर कहा हुआ।

अतियुवा [वि.] (सं.) बहुत जवान।

अतियोग [संज्ञा पु.] (सं.) १—अधिक मिलाव २—किसी मिली हुई औषधि में किसी द्रव्य की संतुलित मात्रा से अधिक मिलाव।

अतिरक्त [वि.] (सं.) १—लाल रंग का। २—अत्यन्त अनुरक्त।

अतिरक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवाकुसुम।

अतिरंजना, अतिरञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बढ़ाचढ़ाकर कहने की रीति। अत्युक्ति।

अतिरथ, अतिरथी [संज्ञा पु.] (सं.) अनगिनत शत्रुओं को पराजित करने वाला योद्धा।

अतिरभस [संज्ञा पु.] ((सं.) बहुत तेज चाल। अति तीव्र गति।

अतिरस [संज्ञा पु.] (सं.) मोटी ईख।

अतिराज, राजा [संज्ञा पु.] (सं.) महाराजाधिराज। राजराजेश्वर।

अतिराजकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं) सर्वोत्कृष्ट राजकुमारी।

अतिरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा यज्ञ जो एक ही रात्रि से आरम्भ होकर समाप्त हो जावे। अतिरात्रयज्ञ के अन्त में गाया जाने वाला मन्त्र।

अतिराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक पौराणिक सर्प का नाम। २—विशाल देश।

अतिरिक्त [क्रि. वि.] (सं.) सिवाय। अलावा। [वि.] (सं.) १—अधिक। ज्यादा। शेष। २—न्यारा। भिन्न। अलग। जुदा।

अतिरिक्तकंबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैन धर्मानुसार सिद्धशिला के उत्तर का वह सिंहासन जिस पर तीर्थङ्कर बैठते हैं।

अतिरिक्तकथन आवश्यकता से ज्यादा कहना।

अतिरिक्तधन-निष्कासन [संज्ञा पु.] (सं.) जमापूंजी से अधिक निकालने का भाव। ओवरड्रॉं।

अतिरिक्तन्यायाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) अपर न्यायधीश। जज-एक्स्ट्रा।

अतिरिक्तपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह अलग छपा हुआ पत्र जो समाचारपत्रों या दैनिकपत्रों आदि के साथ बटता है। क्रोड़पत्र।

अतिरिक्तलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक लाभ या नफा।

अतिरिक्तसमय [संज्ञा पु.] (सं.) फालतू समय। आवश्यकता से अधिक समय।

अतिरुचि [वि.] (सं.) बड़ी चमक वाला। दैदीप्यमान।

अतिरुक्ष [वि.] (सं.) बहुत रूखा। निर्मोही।

अतिरूप [वि.] (सं.) १—रूपहीन। २—परमेश्वर। ३—सुन्दर आकृति।

अतिरेक [संज्ञा पु.] (सं.) आधिक्य। बाहुल्य। अतिशय। किसी वस्तु या बात का औचित्य से अधिक विकट या गंभीर होने का भाव।

अतिरोग [संज्ञा पु.] (सं.) क्षयरोग। तपेदिक। राजयक्ष्मा।

अतिरोधान [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश। उजाला। [वि.] (सं.) प्रकाशित। खुला हुआ।

अतिरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १—बहुत चढ़ना। २—जीवन। अवस्था। वय।

अतिलक्ष्मी [संज्ञा पु.] (सं.) अपरमित धन।

अतिलंघन [संज्ञा पु.] (सं.) लम्बा उपवास।

अतिलम्ब [वि.] (सं.) बहुत लम्बा।

अतिलंबी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर का पौधा।

अतिलुब्ध [वि.] (सं.) बहुत लालची।

अतिलोभ [संज्ञा पु.] (सं.) अत्याधिक लोभ या लालच।

अतिलोभता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्याधिक लालच।

अतिलोम [वि.] (सं.) घने रोवें वाला।

अतिलोहित [वि.] (सं.) बहुत लाल।

अतिलौल्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी चंचलता या या चपलता।

अतिवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बोलने वाला व्यक्ति। बकवादी।

अतिवक्र [वि.] (सं.) बहुत टेढ़ा।

अतिवय [वि.] (सं.) बहुत वृद्ध। अधिक आयु वाला।

अतिवर्णाश्रमी [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो वर्णाश्रम से बिलकुल अलग हो अर्थात् किसी भी वर्णाश्रम में न हो।

अतिवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) कसरत। व्यायाम।

अतिवर्ती [वि.] (सं.) अग्रगामी।

अतिवर्तुल [संज्ञा पु.] (सं.) बिलकुल गोलाकार।

अतिवात [संज्ञा पु.] (सं) आँधी। तूफान। झंझावात।

अतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) अत्युक्ति। कठोर वचन।

अतिवादी [वि.] (सं.) १—सत्यवक्ता। खरी बात कहने वाला। २—कटुवादी। ३—डींग मारने वाला। गर्वी।

अतिवास [संज्ञा पु.] (सं.) श्रद्धा करने के पहले दिन का उपवास।

अतिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) लिङ्ग शरीरी का दूसरे शरीर में प्रवेश।

अतिवाहन [वि.] (सं) जो भारी बोझ न ले जा सके।

अतिवाहिक [संज्ञा] (सं.) १—सूक्ष्म शरीर। २—पाताल का निवासी।

अतिवाहित [वि.] (सं.) लाँघा या उल्लंघन किया हुआ। अतिक्रमण किया हुआ।

अतिविकट [वि.] (सं.) बहुत भयंकर।

अतिविदाही [संज्ञा स्त्री.] (सं) अति दाह उत्पन्न करने वाला।

अतिविद्ध [वि.] (सं.) बहुत घायल।

अतिविपिन [वि.] (सं.) बहुत जंगली।

अतिविलम्बी [वि.] (सं) बहुत विलम्ब या देर करने वाला। महा आलसी।

अतिविश्रब्ध-नवोढा [संज्ञा स्त्री.] (सं) नायिका का एक भेद। वह मध्या नायिका जिसे अपने पति पर अत्याधिक प्रेम हो।

अतिविश्व [संज्ञा पु.] (सं.) संसार भर में श्रेष्ठ।

अतिविष, अतिविषा [संज्ञा पु.] (सं) अतीस। एक औषधि।

अतिवृंहित [वि.] (सं.) पुष्ट। बलवान। दृढ़।

अतिवृत [वि.] (सं.) १—बिलकुल गोल या वर्तुल। २—अतिशयी।

अतिवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आगे बढ़ जाना।

अतिवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिक उन्नति।

अतिवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्याधिक वर्षा।

अतिवृष्टिहत मूसलाधार वर्षा के कारण चोट खाया हुआ।

अतवेगित [वि.] (सं.) बड़े वेग या बड़ी तेजी का।

अतिवेपथु [वि.] (सं.) बहुत काँपता हुआ।

अतिवेल [वि.] (सं.) अत्यंत। बेहद। असीम।

अतिवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विलम्ब। देर।

अतिवैचक्षण्य [वि.] (सं.) बहुत बुद्धिमानी।

अतव्यथन, अतिव्यथा [वि] (सं.) बहुत दुःख या पीड़ा।

अतिव्यय [वि] (सं.) आवश्यकता से अधिक खर्च।

अतिव्याप्त [वि] (सं.) सर्वव्यापी। सब जगह में व्याप्त।

अतिव्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आजाने को न्याय में अतिव्याप्ति दोष कहते हैं। २—अधिक व्याप्ति।

अतिव्यायाम [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक परिश्रम बहुत ज्यादा कसरत।

अतिशक्त [वि.] (सं) अत्याधिक शक्तिमान।

अतिशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाशक्ति। हद से ज्यादा ताकत या शक्ति।

अतिशक्तिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाबल।

अतिशक्र [वि.] (सं.) इन्द्र से भी महान्।

अतिशङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत भय ।

अतिशक्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पन्द्रह वर्ण के वृत्तों की संज्ञा । इसके सम्पूर्ण भेद ३२७६८ हो सकते हैं ।

अतिशय [वि.] (सं.) बहुत । ज्यादा । अत्यन्त [संज्ञा पु.] प्राचीन साहित्यकारों के मतानुसार एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर संभावना या असम्भावना प्रदर्शित की जाय ।

अतिशयन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिक नींद लेना ।

अतिशयोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन् किया जाय ।

अतिशयोपमा [संज्ञा स्त्री.] (स.) काव्य में उपमालंकार का एक भेद जिसमें यह प्रदर्शित किया जाय कि कोई वस्तु सदा अपने विषय में एक है, दूसरी वस्तु से उसकी उपमा नहीं दी जा सकती ।

अतिशर्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधीरात ।

अतिशस्त [वि.] (सं.) अत्युत्तम ।

अतिशस्त्र [वि.] (सं.) सब शस्त्रों में उत्तम शस्त्र ।

अतिशायी [वि.] (सं.) अधिक । प्रचुर ।

अतिशीत [संज्ञा पु.] (सं.) जोर का जाड़ा ।

अतिशीलन [संज्ञा पु.] (सं.) अभ्यास । वारम्वार मनन या सम्पादन ।

अतिशुक्र, अतिशुक्ल [वि.] (सं.) बहुत सफेद ।

अतिशूद्र [संज्ञा पु.] (सं.) अन्त्यज अछूत ।

अतिशेष [वि.] (सं.) थोड़ा सा बचा हुआ ।

अतिशोभन [वि.] (सं.) बहुत सुन्दर या मनोहर ।

अतिशोष [संज्ञा पु.] (सं.) राजयक्ष्मा । तपेदिक ।

अतिश्री [वि.] (सं.) महाधनी । बड़ा श्रीमान् ।

अतिश्रेष्ठ वि.] (सं.) सर्वोत्कृष्ट । सर्वश्रेष्ठ । बहुत बड़ा

अतिसंध, अतिसंध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विधि या आदेश का उल्लंघन करना । प्रतिज्ञा या आज्ञा भंग करना

अतिसंधान, अतिसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) १—विश्वासघात । धोखा । २—अतिक्रमण ।

अतिसंधित, अतिसन्धित [वि.] (सं.) ठगा हुआ ।

अतिसंधेय, अतिसन्धेय [वि.] (सं.) प्रसन्न करने योग्य ।

अतिसंस्कृत [वि.] (सं.) भलीभाँति संस्कार किया हुआ ।

अतिसक्ति [वि.] (सं.) अधिक प्रेम ।

अतिसन्तप्त [वि.] (सं.) अत्यन्त पीड़ित । बहुत सताया हुआ ।

अतिसमर्थ [वि.] (सं.) बहुत योग्य ।

अतिसमीप [वि.] (सं.) बिलकुल पास या निकट ।

अतिसम्पर्क [संज्ञा पु.] (सं.) अति समीपता ।

अतिसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दान । उत्सर्ग ।

अतिसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अधिक दान । २—वध ।

अतिसांतपनकृच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रायश्चित ।

अतिसाध्वी [संज्ञा स्त्री.] (स.) बड़ी पतिव्रता ।

अतिसांवत्सर [वि.] (सं.) एक वर्ष से अधिक ।

अतिसामान्य [वि.] (स.) अत्यन्त साधारण । बिलकुल मामूली । सहज ।
[संज्ञा पु.] वह उक्ति जो इतने सहजभाव से कही जाय कि उसका आशय पूर्णरूप से न घटे ।

अतिसार [संज्ञा पु.] (सं.) पेट का रोग जिसमें रक्त मिश्रित आंव के दस्त आते हैं ।

अतिसारी [वि.] (सं.) अतिसार रोग से पीड़ित ।

अतिसुजन [वि.] (सं.) बहुत भला या सज्जन । महामाननीय ।

अतिसुन्दर [वि.] (सं.) अत्यन्त मनोहर ।

अतिसुलभ [वि.] (सं.) सरलता से प्राप्त होने वाला ।

अतिसूक्ष्म [वि.] (सं.) बहुत बारीक ।

अतिसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिक शुश्रूषा ।

अतिसौरभ [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत सुगन्धित ।

अतिस्तुति [संज्ञा स्त्री] (सं.) बहुत प्रशंसा ।

अतिस्थिर [वि.] (सं.) अचल ।

अतिस्थूल [वि.] (स.) बहुत मोटा ।
[संज्ञा पु.] एक प्रकार का मेदरोग जिसमें चरबी के बढ़ने से देह मोटी पड़ जाती है ।

अतिस्निग्ध [वि.] (सं.) बहुत चिकना ।

अतिस्वस्थ [वि.] (सं.) बिलकुल भला चंगा । बिलकुल निरोग ।

अतिहसित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अट्टहास ।

अतिहायन [संज्ञा पु.] (सं.) इतना अधिक वृद्ध होना कि काम-धंधा न हो सके । २—बहुत पुराना ।

अतिहास [संज्ञा पु.] (सं.) जोर की हँसी ।

अतिह्रस्व [वि.] (सं.) बहुत छोटा । नन्हा सा ।

अतींद्रिय, अतीन्द्रिय [वि.] (स.) अगोचर । अप्रत्यक्ष । अव्यक्त ।

अतीक्ष्ण [वि.] (सं.) जो तीखा या तेज न हो ।

अतीत [वि.] (सं.) १—बीता हुआ । भूत । गत व्यतीत । २—निर्लेप । विरक्त । पृथक । मृत । मरा हुआ ।
[क्रि. वि.] परे । बाहर ।
[संज्ञा पु.] १—विरक्त साधु । वीतराग सन्यासी । २—अभ्यागत । अतिथि ।

अतीतना * [क्रि. अ.] (हि.) बीतना । गुजरना

अतीथ [संज्ञा पु.] (हिं.) अतिथि । अभ्यागत मेहमान ।

अतीव [वि.] (स.) अधिक । ज्यादा । अतिशय अत्यन्त ।

अतीव्र [वि.] (सं.) जो तीव्र या तीक्ष्ण न हो

अतीस [संज्ञा पु.] (हिं.) हिमालय के अंचल होने वाला एक पौधा जो औषधि के काम आता है ।

अतीसार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँव-रक्तमिश्रि दस्त लाने वाला एक प्रकार का उदर रोग ।

अतुंग, अतुङ्ग [वि.] (सं.) जो ऊंचा न हो ।

अतुंद, अतुन्द [वि.] (सं.) दुर्बल । बलहीन

अतुराई [संज्ञा स्त्री.] (स.) १—आतुरता शीघ्रता । हड़बड़ी । २—चंचलता ।

अतुराना [क्रि. अ.] (हि.) आतुर होना घबड़ाना ।

अतुल [वि.] (सं.) १—जो तोला या कूता जासके । २—असीम । अमित । अपार बहुत अधिक । ३—तुलनारहित । अनुपम अद्वितीय ।

अतुलनीय [वि.] (सं.) १—अपरमित । बे अन्दाज । अपार । २— अनुपम । बेजोड़

अतुलित [वि.] (सं.) १—बिना तोला हुआ २—बे अन्दाज । अपरमित । अपार । ३-असंख्य । ४—बेजोड़ ।

अतुल्य [वि.] (सं.) १—अनुपम । अद्वितीय निराला । २—असमान । असदृश ।

अतुल्ययोगिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्था लंकार जिसमें अनेक पदार्थों का समान ध कथन होने के कारण तुल्ययोगिता संभावना दिखाई पड़ने पर भी किसी अभीष्ट वस्तु का विपरीत गुण बतला उसकी विलक्षणता प्रदर्शित की जाय ।

अतुष [वि.] (सं.) तुषरहित । बिना भूसे छिलके का ।

अतुष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं.) असन्तोष । लालच लोभ ।

अतुष्टिकर [वि.] (स.) असन्तोषप्रद । अरुचि

अतुहिनरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य । दिनक प्रभाकर ।

अतूथ * [वि.] (सं.) अपूर्व । विलक्षण । ब ऊंचा ।

अतूल * [वि.] (सं.) अतुल्य । अनुप अतुल ।

अतृप्त [वि.] (सं.) १—असन्तुष्ट । २— न भरने की अवस्था । भूखा ।

अतृप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्त की अशान्ति असन्तोष ।

अतृष्ण [वि.] (सं.) तृष्णा या लालसारहि

) कामनाहीन । निर्लोभ । निस्पृह ।

अतेज [वि.] (सं.) १—तेजहीन । निस्तेज । मंद । मलिन । अंधकारयुक्त । २—प्रताप रहित । हतश्री ।

अतोर [वि.] (सं) न टूटने वाला । पुष्ट । दृढ़ । अभंग ।

अतोल [वि.] (हिं.) १—बिना तोला हुआ । बिना अंदाज किया हुआ । २—बे-अंदाज । अतुलित ३—अनुपम । बेजोड़ ।

अतोषणीय [वि.] (सं.) सन्तुष्ट होने योग्य ।

अतौल [वि.] (हिं.) बिना तौल का । बे अंदाज ।

अत्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अति । अधिकता । ज्यादती ।

अत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—माता । सास । २—बड़ी बहिन । ३—मौसी ।
[संज्ञा पु.] ईश्वर का एक नाम । चराचर का ग्रहण करने वाला ।

अत्तार [संज्ञा पु.] (अ.) १—इत्र बेचने वाला । गंधी । २—यूनानी औषधियां बनाने तथा बेचने वाला ।

अत्ति*+ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अत्त' ।

अत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी बहिन ।

अत्तु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

अत्यंत, अत्यन्त [वि.] (सं.) अतिशय । बहुत अधिक । बेहद ।

अत्यंतभाव, अत्यन्तभाव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का पूर्णतया अभाव । सत्ता का पूर्णरूप से न होना । २—वैशेषिक के मतानुसार पाँच अभावों में से चौथा । ३—बिलकुल कमी ।

अत्यंतिक, अत्यन्तिक [वि.] (सं.) १—बहुत घूमने वाला । घुमक्कड़ । २—बहुत चलने वाला । ३—निकटवर्ती । समीप का ।

अत्यम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) इमली का वृक्ष । [वि.] नितान्त खट्टा ।

अत्यम्लपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बेल जिसे 'रामचना' या 'खटुआ' भी कहते हैं ।

अत्यनुमिति [क्रि. सं.] (सं.) अधिक आँकना । कूतना ।

अत्यम्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजौरा नीबू ।

अत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १—नाश । ध्वंस । मृत्यु । २—अतिक्रमण । ३—दंड । सजा । ४—दोष । कृच्छ्रकष्ट ।

अत्यवधि [संज्ञा पु.] (सं.) काल तिरोहित ।

अत्यर्क [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद मदार का पेड़ ।

अत्यर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) अतिशय । बहुतायत ।

अत्यल्प [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत थोड़ा ।

अत्यष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १७ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा ।

अत्यसम [वि.] (सं.) अधिक ऊँचा-नीचा ।

अत्याकार [संज्ञा पु.] (सं.) अपयश, तिरस्कार ।

अत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण । स्वीकार । जो छोड़ा न जा सके ।

अत्यागी [वि.] (सं.) त्याग न करने वाला । विषयासक्त । दुर्व्यसनी ।

अत्याचार [संज्ञा पु.] (सं.) १—सदाचार का उलटा । आचार का अतिक्रमण । अन्याय । विरुद्धाचरण । ज्यादती । २—पाप । दुराचार । ३—आडंबर । पाखंड । ढकोसला ।

अत्याचारी [वि.] (सं.) १—अत्याचार करने वाला । दुराचारी । अन्यायी । निठुर । २—पाखंडी । ढोंगी । धर्मध्वजी ।

अत्याज [वि.] (सं.) १—न छोड़ने योग्य । २—जो कभी न छोड़ा जा सके ।

अत्यादर [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक मान ।

अत्यानंदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक के मतानुसार वह योनि जो अधिक प्रसंग से भी तृप्त न हो । इस रोग के द्वारा स्त्रियां बांझ हो जाती हैं ।

अत्यायु [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक आयु वाला व्यक्ति ।

अत्याशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीव्र आशा ।

अत्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक भोजन ।

अत्याहारी [वि.] (सं.) अधिक भोजन करने वाला । भोजनभट्ट ।

अत्युक्त [वि.] (सं.) बहुत बढ़ाचढ़ाकर कहा गया ।

अत्युक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत बढ़ाचढ़ाकर वर्णन् करने की रीति । एक अर्थालंकार जिसमें सीमा से बढ़ाचढ़ाकर किसी का वर्णन् किया जाय ।

अत्युकट [वि.] (सं.) बहुत उग्र । महा भयंकर ।

अत्युकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं) दो वर्णों के वृत्तों की संज्ञा ।

अत्युग्रगंधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा ।

अत्युत्साह [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यन्त उत्साह ।

अत्युदार [वि.] (सं.) बहुत उदार । बड़ा खर्चीला ।

अत्युष्ण [वि.] (सं.) बहुत गरम ।

अत्र [क्रि. वि.] (सं.) यहाँ । इस स्थान पर । [संज्ञा पु.] अस्त्र । हथियार ।

अत्रक [वि.] (सं.) १—यहां का । २—इस लोक का । ऐहिक । लौकिक ।

अत्रप [वि.] (सं.) निर्लज्ज । बेहया ।

अत्रत्य [वि.] (सं.) यहाँ का । यहाँ वाला ।

अत्रभवान् [संज्ञा पु.] (सं.) माननीय । श्रेष्ठ । पूज्यपाद ।

अत्रस्त [वि.] (सं.) भयरहित । निडर ।

अत्रस्थ [वि.] (सं.) यहां रहने वाला । यहां का ।

अत्रास [संज्ञा पु.] (सं.) भय का अभाव । निडर होना । बेखौफ ।

अत्रि [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तर्षियों में से एक जो ब्रह्मा के नेत्रों से उत्पन्न हुए थे ।

अत्रिगुण [वि.] (सं.) त्रिगुणातीत । सत, रज और तम नामक तीनों गुणों से पृथक ।

अत्रिज [संज्ञा पु.] (सं.) अत्रि के पुत्र—चन्द्रमा, दत्तात्रेय, दुर्वासा ।

अत्रिनेत्रज [संज्ञा पु.] (सं.) अत्रि ऋषि के नेत्रों से उत्पन्न चन्द्रमा ।

अत्रिप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्रि ऋषि की पत्नी अनसूया ।

अत्रेय [संज्ञा पु.] (सं.) १—अत्रि का पुत्र । २—अत्रि नदी के तट का प्रदेश ।

अत्रैगुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) सत, रज, तम इन तीनों का अभाव ।

अत्रैव [अव्य.] (सं.) इसी स्थान में ।

अत्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीघ्रता का अभाव ।

अथ [अव्य.] (सं.) १—अब । इस समय । २—अनन्तर । आरम्भ में ।

अथऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्यास्त होने से पहिले किया गया भोजन । इसे जैन लोग करते हैं ।

अथक [वि.] (हिं.) न थकने वाला । अश्रांत । परिश्रमी ।

अथकिं [अव्य.] (सं.) और क्या । फिर कैसे ।

अथच [अव्य.] (सं.) फिर । और । और भी ।

अथमना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पश्चिम दिशा । [क्रि. अ.] (हिं.) न रुकना । न ठहरना ।

अथरा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी की चौड़ी नांद ।

अथरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—छोटा अथरा । २—दही जमाने की मिट्टी की हँडिया ।

अथर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—ब्रह्मा का जेठा बेटा जिसे उन्होंने ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया । २—एक वेद का नाम । ३—अथर्ववेद का एक मन्त्र ।

अथर्वन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अथर्व' ।

अथर्वनी [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरोहित । कर्मकांडी । यज्ञ करने वाला ।

अथर्ववेद [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर्थवेद जो ब्रह्मा के उत्तरमुख से निकला इसकी नौ शाखायें बताई जाती हैं इन शाखाओं में से आज कल शौनकीय मिलती हैं । जिसमें २० काण्ड, १११ अनुवाक, ७३१ सूक्त तथा ४७६३ मन्त्र हैं । इसका उपवेद धनुर्वेद है । इसके प्रधान उपनिषद प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य हैं । इसका गोपथब्राह्मण आजकल प्राप्य है ।

अथर्वशिर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की ईट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम में आती थी

अथर्वशिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद की एक ऋचा का नाम ।

अथर्वांगिरस [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्व।

अथल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भूमि जो किसान को लगान पर जोतने के निमित्त दी जाय।

अथवना [क्रि. अ.] (हि.) १—अस्त होना। डूबना। २—लुप्त होना। नष्ट होना। चला जाना।

अथवा [अव्य.] (सं.) या। वा। किंवा।

अथाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—बैठने का स्थान। २—पंचायत करने का स्थान। चौपाल। ३—घर के सामने का चबूतरा। ४—गोष्ठी। मंडली। सभा। जमावड़ा।

अथान, अथाना [संज्ञा पु.] (हिं.) अचार।

अथाना [क्रि. अ.] (हिं.) अस्त होना। डूबना।
[क्रि. स.] (सं.) १—थाह लेना। गहराई नापना। २—ढूंढना।

अथायत्* [वि.] (हिं.) अस्त। डूबा हुआ।

अथाह [वि.] (हिं.) १—जिसकी थाह न हो। अगाध। बहुत गहरा। २—जिसका कोई पार न पा सके। अपरमित। अपार। ३—गम्भीर गूढ़। कठिन।
[संज्ञा पु.] १—जलाशय। गहराई। गड्ढा। २—सागर। समुद्र।
अथाह में पड़ना=कठिनाई में पड़ना।

अथिर* [वि.] (हि.) १—चलायमान। चंचल। २—क्षणस्थायी।

अथोर* [वि.] (हिं.) १—थोड़ा नहीं। कम नहीं। अधिक पूरा।

अदंक* [संज्ञा पु.] (हिं.) डर। भय। आतंक।

अदंड [वि.] (हिं.) जो दंड के योग्य न हो। सजा से बरी। २—जिसपर कर न लगे। कर रहित। ३—निर्भय।

अदंडनीय [वि.] (सं.) जो दंड पाने योग्य न हो। अदंड्य।

अदंडमान [वि.] (सं.) दंड के अयोग्य। दंड से मुक्त। सजा से बरी।

अदंड्य [वि.] (सं.) दंड से मुक्त। सजासे बरी।

अदंत [वि.] (हिं.) १—बिना दांतका २—जिसके दांत न निकले हों। दुधमुहाँ। ३-(वह चौपाया) जिसने दाँत न तोड़ा हो।

अदंभ [वि.] (हिं.) १—पाखंडरहित। सच्चा। बिना आडंबर का। २—निश्छल। कपटरहित। ३—स्वाभाविक। स्वच्छ। शुद्ध।
[संज्ञा पु.] शिव।

अदंभित्व [संज्ञा पु.] (सं.) पाखंड वा आडंबर का अभाव।

अदक्ष [वि.] (सं.) जो निपुण न हो। अचतुर।

अदक्षिण [वि.] (सं.) १—बाँया। दाहिने का उल्टा। २—विरुद्ध। विपरीत। ३—बिना दक्षिणा का। ४—अनाड़ी।

अदग [वि.] (हिं.)१—बेदाग। निष्कलंक। शुद्ध। २—पापरहित। निरपराध। ३—अछूता। अस्पृष्ट। बचा हुआ।

अदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) विधि के अनुसार न दिया हुआ। वह दान जो शास्त्रानुसार न दिया गया हो।

अदत्तदान [संज्ञा पु.] (सं.) बिना दिया हुआ दान। अपहरण। चोरी डाके से प्राप्त वस्तु।

अदत्तदायी [वि.] (सं.) बिना दिये संपत्ति लेने वाला। चोर। ठग।

अदत्ता [वि.] (सं.) जो न दीगई हो।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमारी। कन्या। अविवाहिता कन्या।

अदद [संज्ञा पु.] (स.) १—संख्या। गिनती। २—संख्या लिखने का चिह्न या संकेत।

अदन [संज्ञा पु.] (सं.) १—खाना। भक्षण। २—यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान मतानुसार स्वर्ग का वह नन्दनवन जहाँ ईश्वर ने आदम (आदिपुरुष) को बनाया गया था।

अदना [वि.] (अ.) १—तुच्छ। क्षुद्र। छोटा। नीच। २—सामान्य। मामूली।

अदनीय [वि.] (सं.) खाने योग्य। भक्ष्य।

अदब [संज्ञा पु.] (अ.) शिष्टाचार। कायदा। बड़ों का आदर।

अदबदकर, अदबदाकर [क्रि. वि.] (हिं.) हठ से। टेक करके। अवश्य। जरूर।

अदभ्र [वि.] (सं.) १—अधिक ज्यादा। बहुत। २—अपार। अनन्त।

अदमपैरवी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अभियोग या मुकदमे में आवश्यक कार्रवाई का अभाव।

अदमसबूत [संज्ञा पु.] (अ.) किसी मुकदमे में सबूत का अभाव। प्रमाण का न होना।

अदमहाजिरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुकदमे से गैरहाजरी। अनुपस्थिति।

अदम्य [वि.] (सं.) जिसका दमन न किया जा सके। प्रबल। अजेय।

अदय [वि.] (सं.) १—दयारहित। करुणाविहीन २—निष्ठुर। निर्दय।

अदयालु [वि.] (सं.) करुणारहित। क्रूर। निर्दयी

अदरक [संज्ञा पु.] (फा.) अदरख। आर्द्रक।

अदरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोंठ तथा गुड़मिश्रित टिकिया। सोंठौरा।

अदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) आर्द्रानक्षत्र।

अदराना [क्रि. अ.] (हिं.) बहुत आदर पाने पर शेखी में इतराना। फूलना। इतराना। मान या आदर पाना।
[क्रि. स.] आदर पाकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना। फुलाना।

अदर्श [संज्ञा पु] (हिं.) दर्पण। आइना।

अदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अविद्यमानता। दर्शन का अभाव। २—लोप। विनाश।

अदर्शनीय [वि.] (सं.) दर्शन के अयोग्य। कुरूप। भद्दा। बुरा।

अदल [संज्ञा पु.] (अ.) न्याय। इंसाफ। फै
[वि.] (सं.) १—बिना पत्ते का। पत्रवि
२—बिना फौज का। सेनारहित।

अदलबदल [संज्ञा पु.] (हिं.) उलटफेर। हे
फेर-बदल। परिवर्तन।

अदलबदली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—लेन
२—परिवर्तन।

अदली [वि.] (हिं.) १—न्यायी। २—पत्रवि

अदवाइन, अदवान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.)
के ओर की वह रस्सी जो चारपाई या
की बुनावट को कसने के लिये लगाई
है।

अदहन [संज्ञा पु.] (हिं.) खौलता हुआ
आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जि
दाल चावल आदि पकाये या उबाले जा

अदाँत [वि.] (हिं.) दाँतरहित। जिस (प
दाँत न आये हों।

अदांत [वि.] (हि.) इंद्रियों का दमन न
सकने वाला। अजितेन्द्रिय। विषयास

अदा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—हावभाव। न
मोहित करने का प्रयत्न। २—तर्ज। अं
आन। ढंग।
[वि.] चुकता। बेबाक। दिया हुआ।
अदा करना=पालन करना। पूरा करना।

अदाई [वि.] (हिं.) चालबाज। चतुर। ढों

अदाक्षिण्य [संज्ञा पु.] (सं.) दयाही
अकृपा।

अदाँया [वि.] (हि.) वाम। प्रतिकूल। बुरा

अदाग, अदागी [वि.] (हिं.) दाग या चिह्न
बेदाग। निर्मल। निर्दोष।

अदाता [संज्ञा पु.] (सं.) न देने वाला। कृ
कंजूस। सूम।
[वि.] जो न दे। कंजूस।

अदान [संज्ञा पु.] कृपण। कंजूस। न देने
[वि.] नासमझ। नादान। निर्बुद्धि।

अदानी [वि.] (हिं.) दान न देने वाला।
कंजूस। कृपण।

अदान्य [वि.] (सं.) कृपण। कंजूस। सूम।

अदाय [वि.] (सं.) १—न पाने योग्य।
पैतृक-सम्पत्ति का अंश।

अदायाद [वि.] (सं.) पतित।

अदार [संज्ञा पु.] (सं.) बिना बहू का।
रहित।

अदालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) न्यायालय।

अदालत-खफीफा [संज्ञा. स्त्री.] (अ.) वह
अदालत जिसमें साधारण दीवानी मु
होते हों।

अदालत-दीवानी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) स
सम्बन्धी मुकदमों का फैसला देने
अदालत।

अदालत-फौजदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) फौ
मुकदमों का फैसला देने वाली अदालत।

अदालत-माल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जमींदारी लगान, मालगुजारी आदि मुकदमों का फैसला देने वाली अदालत।
अदालत करना = मुकदमा लड़ना।

अदालती [वि.] १—अदालत सम्बन्धी। न्याया-लय विषयक। २—मुकदमा लड़ने वाला।

अदावँ [संज्ञा पु.] बुरा दावँ। कठिनाई। असमंजस।

अदावत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शत्रुता। विरोध। बैर। लाग। दुश्मनी।

अदावती [वि.] (अ.) १—शत्रुता रखने वाला। दुश्मनी बढ़ाने वाला।
२—विरोधजन्य। द्वेषमूलक।

अदास [संज्ञा पु.] (सं.) स्वतंत्र। जो दास न हो।

अदाह [संज्ञा स्त्री.] अदा। हावभाव। नखरा।

अदाहक [वि.] (सं.) जिसमें जलाने या भस्म करने की शक्ति न हो।

अदाह्य [वि.] (सं.) जो फूंका न जा सके। वह मृतक जिसका दाहसंस्कार शास्त्रानुसार न किया जा सके।

अदित [संज्ञा पु.] (सं.) १—आदित्य। देवता। २—सूर्य। ३—इन्द्र। ४—वामन। ५—वसु।

अदिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—प्रकृति। २—पृथ्वी। ३—कश्यपऋषि की पत्नी जिससे सूर्य आदि तैंतीस उत्पन्न हुए थे। ४—द्युलोक। ५—अंतरिक्ष। ६—माता ७—पिता ८—पुत्र। ९—विश्वेदेवा। १०—पञ्चजन। ११—वाणी। १२—प्रजापति। १३—उत्पन्न करने की शक्ति।

अदितिज, अदितिनंदन, अदितसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १—देवता। सूर्य।

अदिन [संज्ञा पु.] (सं.) कुदिन। कुसमय। बुरा दिन। संकट। अभाग्य।

अदिव्य [वि.] (सं.) १—जो चमत्कारी न हो। लौकिक। साधारण। २—स्थूल। जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो।

अदिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १—अलक्षित। अनदेखा। २—लुप्त। गायब।

अदिष्टी [वि.] (सं.) १—अदूरदर्शी। अविचारी। मूर्ख। २—अभागा।

अदीक्षित [वि.] (सं.) जिसको दीक्षा न मिली हो।

अदीठ [वि.] (सं.) बिना देखा हुआ। अप्रत्यक्ष। गुप्त।

अदीन [वि.] (सं.) १—दीनतारहित। अवि-नीत। उग्र। २—उच्चाशय। उदार। ३—धनी।

अदीनात्मा [वि.] (सं.) अतिशय उदार।

अदीपित [वि.] (सं.) बिना जलाया हुआ।

अदीयमान [वि.] (सं.) जो न दिया जाय।

अदीह [वि.] (सं.) छोटा सूक्ष्म।

अदुंद [वि.] १—जिसमें कोई झगड़ा न हो। बाधारहित। २—शान्त। निश्चिन्त। ३—बेजोड़। अद्वितीय।

अदुःख [वि.] (सं.) जिसे दुःख या कष्ट न हो। प्रसन्न।

अदुर्ग [वि.] (सं.) जहाँ पहुँचना न कठिन हो। सहज में पहुँचने योग्य।

अदुर्वृत [वि.] (सं.) सच्चरित्र। अच्छे आचरण वाला

अदुष्ट [वि.] १—दुष्ट न हो। दूषणरहित। ठीक। २—भला। सज्जन।

अदूर [क्रि. वि.] (सं.) समीप। पास। निकट।

अदूरदर्शी [वि.] (सं.) आगे तक की न सोचने वाला। जो दूर तक के परिणाम का सोच न करे। नासमझ। स्थूलबुद्धि। अविचारी। अनग्रसोची।

अदूरभव [वि.] (सं.) पास में रहने वाला। निकटवर्ती।

अदूषण [वि.] (सं.) निर्दोष। बे-ऐब। स्वच्छ। अच्छा। शुद्ध।

अदूषित [वि.] (सं.) दोष से परे या अलग। निर्दोष। निर्मल। विमल।

अदृढ़ [वि.] (सं.) जो दृढ़ न हो। कमजोर। २—अस्थिर। चंचल।

अदृप्त [वि.] (सं) दर्पहीन। निरभिमान। सौम्य। सीधासाधा।

अदृश्य [वि.] (सं.) १—जो दिखाई न दे। अलख। २—अगोचर। परोक्ष। ३—गायब। लुप्त। अन्तर्द्धान।

अदृष्ट [वि.] (सं.) १—न देखा हुआ। अलक्षित। अनदेखा। २—लुप्त। गायब। ओझल। तिरोहित। अन्तर्द्धान।
[संज्ञा पु.] १—प्रारब्ध। भाग्य। किस्मत। २—अनसोची आपत्ति आना यथा आग लगना, बाढ़ आना, तूफान आना।

अदृष्टिगति [वि.] (सं.) १—न दीखने वाली गति या चाल। चुपचाप कार्य करने वाला। २—चालबाज। कूटनीतिपरायण।

अदृष्टपूर्व [वि.] (सं.) १—जो पहिले न देखा गया हो। २—निराला। अद्भुत। विलक्षण। अनोखा।

अदृष्टफल [वि.] (सं.) वह परिणाम जो दीख न पड़े। भावी फल।

अदृष्टरूप [वि.] (सं.) अनदेखा रूप।

अदृष्टवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार बिना विवेचना के परलोक आदि की अपरोक्ष बातों पर शास्त्रों में लिखे होने मात्र से ही विश्वास किया जाये।

अदृष्टाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) इस प्रकार लिखे अक्षर जो बिना किसी क्रिया के न पढ़े जायें। प्याज नीबू आदि से लिखे अक्षर जो सूखने पर भी नहीं पढ़े जाते। जिन्हें आँच पर रखने से स्पष्ट दीखने लगते हैं।

अदृष्टार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायदर्शन के अनु-सार ऐसे विषयों पर विश्वास जिनका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा नहीं हो सकता, यथा मोक्ष, स्वर्ग, ईश्वर इत्यादि।

अदृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) १—तीन प्रकार के शिष्यों में से एक। २—कोपदृष्टि। क्रूर-दृष्टि।
[वि.] अन्धा।

अदेख [वि.] अदृश्य। अनदेखा। गुप्त। अदृष्ट।

अदेखी [वि.] जो देख न सके। ईर्षालु। द्वेषी।
[संज्ञा स्त्री.] बिना देखी हुई।

अदेय [वि.] (सं.) दान न देने योग्य। समर्पण न करने योग्य।

अदेव [वि.] (सं.) देवता से सम्बन्ध न रखने वाला।
[संज्ञा पु.] १—वह जो देवता न हो। २—राक्षस। निशाचर। दैत्य। असुर। ३—जैनियों के मत से तीर्थङ्करों या जैन देवताओं के अनन्तर और देवता।

अदेवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निशाचरी। राक्षसी।

अदेश [संज्ञा पु.] (सं.) अयोग्य स्थान। म्लेच्छ देश।

अदेस [संज्ञा पु.] १—आज्ञा। आदेश। शिक्षा। २—प्रणाम। दंडवत।

अदेह [वि.] (सं.) शरीर रहित।
[संज्ञा पु.] कामदेव। अनंग।

अदोख [संज्ञा पु.] अदोष। पापरहित। निर-पराध।

अदोखिल [वि.] निर्दोष। निष्कलंक। बे-ऐब।

अदोष [संज्ञा पु.] (सं.) दोष का अभाव।
[वि.] १—निर्दोष। निष्कलंक। बे-ऐब। दूषणरहित। २—पापरहित। निरपराध।

अदोस [वि.] देखो 'अदोष'।

अदोरी [संज्ञा स्त्री.] उड़द की सुखाई हुई बरी।

अद्ध [वि.] अर्द्ध। आधा। बराबर के दो भागों में से एक।

अद्धरज [संज्ञा पु.] अध्वर्यु। यज्ञ कराने वाला यजुर्वेदी पुरोहित।

अद्धा [संज्ञा पु.] १—किसी वस्तु का आधा परिमाण। २—पूरी बोतल से आधी बोतल। ३—प्रत्येक घण्टे के मध्य में बजने वाला घण्टा। ४—संगीत में चार मात्राओं का एक ताल जो कौआली का आधा होता है। इसमें तीन आघात तथा एक खाली होता है। ५—एक छोटी नाव।

अद्धामिश्रित-वचन [संज्ञा पु.] जैनमतानुसार

समय सम्बन्धी झूठ, यथा सन्ध्या समय ही कोई कहदे कि रात हो गई है।

अद्धी [संज्ञा स्त्री.] १—आधी दमड़ी। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। २—महीन वस्त्र जिसे तन्जेब भी कहते हैं।

अद्भुत [वि.] (सं.) विचित्र। विलक्षण। आश्चर्यजनक। अनोखा। अपूर्व। अलौकिक अजीब।
[संज्ञा पु.] १—अलंकारशास्त्र के अनुसार नवरसों में से एक किसी असाधारण वस्तु को देखकर जब हमारे हृदय में विस्मय का भाव उत्पन्न हो, उस ऐसे वर्णन को अद्भुत रस कहते हैं। विभाव, अनुभाव तथा संचारिभावों के मेल या योग से विस्मय स्थायीभाव परिपक्व होकर मानवहृदय में अद्भुतरस रूप में आस्वादित होता है। २—केशव के अनुसार रूपक के तीन भेदों में से एक जिसमें किसी वस्तु का अलौकिक रूप से एकरस होना प्रदर्शित किया जाय।

अद्भुतता, अद्भुतत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विलक्षणता। विचित्रता। अनोखापन।

अद्भुतदर्शन [वि.] (सं.) जो देखने में अद्भुत या विचित्र मालूम हो।

अद्भुतालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां आश्चर्यजनक वस्तुओं का संग्रह हो। अजायबघर।

अद्भुतोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अर्थालङ्कार में उपमा का एक भेद जिसमें उपमान के ऐसे गुणों का उल्लेख किया जाय जो उपमेय में कभी सम्भव न हों।

अद्य [क्रि. वि.] (सं.) आज। अभी। अब।

अद्यतन [वि] (सं.) वर्त्तमान। आज के दिन का।
[संज्ञा पु.] गत आधीरात से लेकर आने वाली आधीरात तक का समय।

अद्यप्रभृति [क्रि. वि.] (सं.) आज से। अब से।

अद्यापि [क्रि. वि.] आज-भी। अब-भी। अबतक। आजतक।

अद्यावधि [क्रि. वि.] आजतक। अबतक।
[संज्ञा स्त्री] (सं.) १—सीमा। हद। २—वह नियत या निश्चित समय जिसके पहले कोई काम होना आवश्यक हो। मियाद। ३—पद या काम का आदि से अन्त तक का समय।

अद्रव [वि] (सं.) जो पतला न हो। गाढ़ा। घना। ठोस।

अद्रव्य [संज्ञा पु] (सं.) सत्ताहीन वस्तु। अयोग्यपात्र। असत्। शून्य। अभाव।
[वि.] द्रव्य या धनरहित। निर्धन। दरिद्र।

अद्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक नक्षत्र का नाम। आर्द्रा।

अद्रि [संज्ञा पु.] (हिं) पर्वत। पहाड़। पत्थर। सूर्य।

अद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनियाँ धान्यक।

अद्रिकीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धरती। पृथ्वी भूमि।

अद्रिछिद् [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र। बिजली।

अद्रिज [संज्ञा स्त्री.] शिलाजीत। गेरू।

अद्रिजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १—पार्वती। २—गंगानदी।

अद्रितनया [संज्ञा स्त्री.](सं.) १—पार्वती। गौरी। २—गंगा। ३—एक छंद जिसमें २३ वर्ण होते हैं। इसे अश्वललित भी कहते हैं।

अद्रिनन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

अद्रिपति, अद्रिराज [संज्ञा पु.] हिमालय। पर्वतों में श्रेष्ठ।

अद्रिसार [संज्ञा पु.] (सं) १—लोहा। २—शिलाजीत।

अद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोह या डाह का अभाव

अद्रोही [वि.] (सं.) कभी द्रोह न करने वाला।

अद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्तद्वार।
[वि.] बिना दर्वाजे का।

अद्विज [वि.] अब्राह्मण। अन्त्यज।

अद्वितीय [वि.] (सं.) १—एकाकी। अकेला। एक। २—जिसका दूसरा न हो। जिसकी जोड़ का दूसरा न हो। बेजोड़। अनुपम। ३—प्रधान। मुख्य। ४—विचित्र। विलक्षण अजीब। अद्भुत।

अद्वेष [वि.] (सं.) द्वेषरहित। जो बैर न रखे। शांत। ईर्षा का अभाव।

अद्वेषी [वि.] (हिं.) द्वेष न रखने वाला। ईर्षा न रखने वाला।

अद्वैत [वि.] (सं.) १—एकाकी। अकेला। २—अनुपम। बेजोड़। अनोखा।
[संज्ञा पु.] ब्रह्म। ईश्वर।

अद्वैतवाद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदान्तमत। वह सिद्धान्त जिसके अनुसार यह संसार मिथ्या है तथा ब्रह्म से ही सकल विश्व की उत्पत्ति है।

अद्वैतवादी [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म तथा जीव को एक मानने वाला। अद्वैतसिद्धांत को मानने वाला।

अधंतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) मलखम पर की जाने वाली कसरत।

अधः [अव्य.] (सं.) नीचे। तले।

अधःकाय [संज्ञा पु.] (सं.) कमर के नीचे के अवयव। नाभि नीचे के अंग।

अधःपतन [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे को गिरना। २—अवनति। अधःपात। तनज्जुली। ३—दुर्दशा। दुर्गति। ४—विनाश क्षय।

अधःप्रस्तर [संज्ञा पु]] (सं) कुशासन। तृणों का बना आसन।

अधःपात [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे गिरना पतन। २—अवनति। दुर्गति। दुर्दशा।

अधःपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

अधःशयन [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि पर सोना।

अधःस्वस्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल्पि बिन्दु जो देखने वाले के पैरो के ठीक मा जाता है। अधोबिन्दु।

अध [अव्य] (हिं.) नीचे। तले।
[वि.] आधा।

अधकचरा [वि.] (हिं) १—अपरिपक्व। अपूर्ण। अधूरा। २—अकुशल। अदक्ष ३—आधा कुटा हुआ। अधपिसा। दरदरा

अधकच्चा [वि.] (हिं.) आधा कच्चा। अपरि पक्व। कुछ पका हुआ तथा कुछ-कुछ कच्चा

अधकच्ची [वि.] (हिं.) अपरिपक्व। कुछ पकी कुछ बिना पकी। थोड़ी पकी हुई।

अधकच्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) नदी के किनारे किनारे के पास की वह ढालुवाँ भूमि जो तट से मिलती है।

अधकछार [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़ के अंचल की ढालुआँ उपजाऊ भूमि।

अधकपारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आधे सिर का दर्द। आधासीसी। सूर्यावर्त।

अधकरिया, अधकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आधा महसूल। आधी किस्त।

अधकहा [वि.] (हिं.) आधा कहा हुआ। अस्पष्ट

अधखिला [वि.] (हि.) आधा खिला हुआ अर्धविकसित।

अधखुला [वि.] (हि.) आधा खुला हुआ।

अधगति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अधोगति। पतन। दुर्गति।

अधगोरा [संज्ञा पु.] (हि.) यूरेशियन। जो विशुद्ध यूरोपियन न हो।

अधगोहुवां, अधगेहुवां [संज्ञा पु.] (हि) जौ मिले गेहूँ।

अधघट [वि.] (हि.) जिससे पूरा या ठीक अर्थ न निकले। जो ठीक या पूरा न उतरे। अटपट कठिन।

अधचरा [वि.] (हिं.) आधा चरा हुआ। आधा खाया हुआ।

अधजर [वि.] (हिं.) अधजला। अर्धविदग्ध।

अधड़ा [वि.] (सं.) बिना आधार का। असंबद्ध बे-बुनियाद।

अधड़ी [वि.] (हि.) १—न ऊपर न नीचे की निराधार। आधार रहित। २—असंबद्ध बे-सिरपैर की। ऊटपटांग।

अधन [वि.] (सं.) धनहीन। निर्धन। गरीब कंगाल। अकिंचन।

अधन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) टका। एक आने का आधा। आध आने का सिक्का।

अधन्य [वि.] (सं.) अभागा। भाग्यहीन। निंद्य

बुरा। जो धन्य न हो।

अधप [संज्ञा पु.] (सं.) भूखा सिंह।

अधपई [संज्ञा स्त्री.] आधे पाव या दो छटांक की एक तोल। अधपैया। तोलने का एक बाट जो एक सेर का आठवाँ भाग होता है।

अधफर [संज्ञा पु.] (हि.) पृथ्वी तथा आकाश के मध्य का भाग।

अधफर [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्तरिक्ष। बीच का भाग।

अधचर [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आधा मार्ग। आधा रास्ता। २—बीच का अधड़।

अधवांच [संज्ञा पु.] (हि.) चमरावत। चमारों को दी जाने वाली वार्षिक उजरत जो उनको चमड़े का मोट बनाने के सम्बन्ध में देते हैं।

अधबुध [संज्ञा पु.] (हि.) पूर्ण ज्ञान न रखने वाला मनुष्य। अर्धशिक्षित। अधकचरा।

अधबैस [वि.] (हिं.) अधेड़। मध्यम अवस्था। की (स्त्री)। ढलती जवानी की (स्त्री)।

अधबैसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अधेड़ स्त्री। मध्यम अवस्था की स्त्री।

अधम [वि.] (सं.) १—नीच। निकृष्ट। खोटा। बुरा। २—पापी।

[संज्ञा पु.] १—एक वृक्ष का नाम। तीन प्रकार के कवियों में से एक-दूसरे की निंदा करने वाला कवि।

अधमई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुराई। नीचता। खोटाई।

अधमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीचता। बुराई। अधमपना।

अधमरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने स्वार्थ के निमित्त किया गया प्रेम यथा वेश्या की प्रीति।

अधमरा [वि.] (हि.) अधमुआ। आधा मरा हुआ। मृतप्राय। अर्द्धमृत।

अधमर्ण [वि.] (सं.) कर्जदार। ऋणी। धरता।

अधमांग, अधमाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) चरण। पैर। पाँव।

अधमा [संज्ञा स्त्री.] वह नायिका जो हित करने वाले नायक पर रोष करती है।

अधमाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अधमाता। नीचता। खोटाई।

अधमाचार [वि.] (सं.) बुरा व्यवहार।

अधमादूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधम कुटनी। वह दूती जो अपना कार्य ठीक रूप से न करे वरन कटु बातें कहकर नायक तथा नायिका को झूठा सँदेसा परस्पर पहुँचावे।

अधमाधम [वि.] (सं.) बुरे-से-बुरा। महानीच।

अधमानायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकृति के तीन भेदों में से एक। वह नायिका जो नायक के हितकारी होने पर भी उसके प्रति दुर्व्यवहार करे।

अधमुआ [वि.] (हि.) अधमरा। आधा मारा हुआ। मरे के समान।

अधमुख [संज्ञा पु.] (हि.) अधोमुख। मुँह के बल। सिर के बल। औंधा। उलटा।

अधरंगा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का फूल।

अधर [संज्ञा पु.] (सं.) १—ओंठ। नीचे का ओंठ।

अधर चबाना = क्रोधावेश में दाँतों से ओंठ चबाना।

[संज्ञा पु.] १—बिना अधर का स्थान। आकाश। अन्तरिक्ष।

अधर में झूलना = १—अधूरा रहना। पूरा न होना। २—दुविधा में पड़ना।

अधर में पड़ना = अधर में झूलना।

अधर में लटकना = अधर झूलना।

[वि.] १—जो पकड़ा न जा सके। चंचल। २—नीच। बुरा। ३—विवाद या मुकदमे में हारा हुआ।

अधरज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओठों की लाली। ओठों की सुर्खी।

अधरपान [संज्ञा पु.] नीचे के ओंठ का चुम्बन। सात प्रकार की बाह्य रतियों में से एक।

अधरबिंब [संज्ञा पु.] (सं.) बिंबा या कुंदरू के पके फल के समान लाल ओंठ।

अधरम [संज्ञा पु.] (हि.) अधर्म। पाप। अन्याय। अनीति।

अधरमकाय [संज्ञा पु.] (हिं.) अधर्म। पाप। जैन शास्त्रानुसार ६ प्रकार के द्रव्यों में से एक।

अधरमधु [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे के ओंठ का रस।

अधराधर [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे का ओंठ।

अधरामृत [संज्ञा पु.] (सं.) अधरमधु। नीचे के ओंठ का रस।

अधरीकृत [वि.] (सं.) हारा हुआ।

अधरीभूत [वि.] (सं.) हराया हुआ। विजित।

अधरेद्युः [संज्ञा पु.] (सं.) परसों। बीते दिन के पहले का दिन

अधरोत्तर [वि.] (सं.) ऊँचानीचा। समीप-दूर।

अधरोत्तर [वि.] (सं.) १—ऊँचानीचा। ऊबड़-खाबड़। २—अच्छा-बुरा। ३—न्यूनाधिक। कम-ज्यादा।

[क्रि. वि.] ऊँचे-नीचे।

अधरौंथा [वि.] (हि.) आधा चबाया हुआ। आधा जुगाली किया हुआ।

अधरोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे का ओठ।

अधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) पाप। पातक। धर्म के विरुद्ध कार्य। कुकर्म। दुराचार। बुरा काम। अन्याय।

अधर्मात्मा [वि.] (सं.) पापी। दुराचारी। बुरा। अधर्मी।

अधर्मास्तिकाय [संज्ञा पु.] (सं.) अधर्म। पाप। जैनशास्त्रानुसार छः प्रकार के द्रव्यों में से एक

अधर्मी [संज्ञा पु.] पापी। दुराचारी।

अधर्म्य [वि.] (सं.) धर्म के विरुद्ध। पापमय।

अधर्षणी [वि.] (सं.) जिसे कोई दबा या डरा न सके। अपराजित। निर्भय। प्रबल। प्रचण्ड।

अधवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधवा। 'सधवा' का उलटा। राँड। जिसका पति मर गया हो।

अधवारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी मकान बनाने के काम में आती है।

अधश्चर, अधश्चौर [संज्ञा पु.] (सं.) सेंध लगाने वाला व्यक्ति। चोर। नीचे-नीचे चलने वाला व्यक्ति।

[वि.] जो नीचे-नीचे चले।

अधसेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सेर का आधा भाग तोलने का बाट। दो पाव का मान।

अधस्तन [वि.] (सं.) अधीनस्थ। अधीन रहने वाला।

अधस्तल [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे का कमरा। तहखाना। नीचे की तह।

अधांगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की भूरे रंग की चिड़िया जिसकी गरदन का ऊपरी भाग लाल तथा डैने और पैर सुनहले होते हैं।

अधाधुंध [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'अंधाधुंध'।

अधाना [संज्ञा पु.] (हि.) संगीत में खयाल का एक भेद।

अधामार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़चिड़े का पौधा। अपामार्ग।

अधार [संज्ञा पु.] (हिं.) अवलम्ब। सहारा। आधार।

अधारिया [संज्ञा. पु.] (हि.) बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान।

अधारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १—सहारा। आधार की वस्तु। आश्रय। २—साधुओं का सहारा लेने का पीढ़ा जिसमें काठ का डंडा जड़ा होता है। ३—यात्रा-सम्बन्धी सामिग्री रखने का थैला।

[वि.] सहारा देने वाली। प्यारी। भली। प्रिय।

अधार्मिक [वि.] (सं.) धर्मच्युत। पापी। दुराचारी। अधर्मी।

अधाय [वि.] (सं.) जो धारण न किया जा सके।

अधावट [वि.] (हिं.) वह जो (दूध) खौलते २ आधा रहे और खूब गाढ़ा हो जावे।

अधि (एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के आगे या पहिले लगाया जाता है। जिसके यह अर्थ होते हैं—) १—ऊपर। ऊँचा। पर। २—प्रधान। मुख्य। ३—अधिक। ज्यादा। ४—सम्बन्ध में।

अधिक [वि.] (सं.) १—बहुत। ज्यादा। विशेष। २—अतिरिक्त। फालतू। शेष। बचा हुआ। अवशिष्ट।

[संज्ञा पु.] १—काव्य में वह अलंकार जिसमें आधेय का आधार से वर्णन करते हैं। २—न्यायशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का निग्रहस्थान जहाँ आवश्यकता से अधिक हेतु तथा उदाहरण का प्रयोग होता है।

अधिकतम [वि.] (सं.) सब से अधिक या ज्यादा।

अधिकतर [वि.] (सं.) दो पदार्थों में से अधिक। ज्यादातर।

अधिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं) बहुतायत। वृद्धि। विशेषता। ज्यादती।

अधिक-तिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह तिथि जो सौर वर्ष पूर्ण करने के लिये जोड़ी जाती है।

अधिक-दन्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक दाँत के ऊपर चढ़ा हुआ दूसरा दाँत।

अधिक-दिन [संज्ञा पु.] (हिं.) सौरवर्ष पूर्ण करने के लिये जोड़ी जाने वाली तिथि।

अधिकमास [संज्ञा पु.] (सं.) लौंद का महीना। मलमास। अधिक महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक का समय जिसमें संक्रांति न पड़े। यह हर तीसरे वर्ष आता है। और चांद्र वर्ष तथा सौरवर्ष को बराबर करने के निमित्त चांद्रवर्ष में जोड़ लिया जाता है।

अधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आधार। सहारा। आसरा। २—व्याकरण में कर्म तथा क्रिया का आधार। सातवाँ कारक। ३—प्रकरण। ४-न्यायालय। अदालत, न्यायसभा।

अधिकरण-मंडप [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय। अदालत। कचहरी।

अधिकरणशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह शुल्क या फीस जो किसी न्यायालय में कोई प्रार्थना उपस्थित करते समय स्टाम्प या अंकपत्रक के रूप में देनी पड़ती है।

अधिकरण-सिद्धांत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय दर्शनानुसार वह सिद्धांत जिसके प्रमाणित होने से कुछ अन्य सिद्धांत या अर्थ भी आप से आप प्रमाणित हो जायँ।

अधिकरण्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को कोई कार्य करने की आज्ञा या स्वत्व दिया गया हो। यथा किसी को पकड़ने या गिरफ्तार करने का अधिकरण्य। अनुज्ञापत्र अधिपत्र। वारंट।

अधिकर्णिक [अव्य.] (सं.) न्यायाधीश। मुंसिफ। फैसला करने वाला। जज।

अधिकर्म [अव्य.] (सं.) देख-भाल। बड़ा काम

अधिकर्मकृत [संज्ञा पु.] (सं.) काम करने वालों का जमादार।

अधिकर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ लोगों के ऊपर रहकर कार्यों की देख-भाल करने वाला अधिकारी। ओवरसियर।

अधिक-वाक्योक्ति [संज्ञा स्त्री] (स) अधिक प्रशंसा।

अधिकांग, अधिकाङ्ग [संज्ञा पु.] (स.) नियत संख्या से अधिक अवयव। अधिक-अंग।

अधिकांश [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा। [वि.] बहुत।
[क्रि. वि.] (सं.) १—ज्यादातर। बहुधा। विशेषकर। २—अकसर। प्रायः।

अधिकाई❀ [संज्ञा स्त्री.] १—अधिकता। विपुलता। ज्यादती। २—महिमा। बड़ाई। महत्व।

अधिकाधिक [वि] (सं.) अधिक से अधिक। ज्यादा से ज्यादा।

अधिकाना❀ [क्रि. अ.] (हिं.) अधिक होना। ज्यादा होना। बढ़ना। वृद्धि पाना।

अधिकाभेदरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) रूपअलंकार के तीन भेदों में से एक, जिसमें उपमान तथा उपमेय के मध्य बहुत सी बातों में अभेद या समानता दिखलाकर पीछे से उपमेय में कुछ विशेषता पाई जाय।

अधिकाम [संज्ञा पु.] (सं.) उत्कट अभिलाषा।

अधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रभुत्व। अधिपत्य। २—स्वत्व। हक। अखत्यार। कब्जा। प्राप्ति। ४—शक्ति। क्षमता। सामर्थ्य। ५—योग्यता। ज्ञान। परिचय। ६—प्रकरण। शीर्षक।

अधिकार-अभिलेख [संज्ञा पु.] (सं.) स्वत्व लेख प्रमाण। स्वत्व-संबन्धी कागज-पत्र।

अधिकारक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जो अधिकार की सीमा के अन्तर्गत हो।
अधिकार क्षेत्र का तर्क=न्याय प्रभुत्व की मीमांसा। *अधिकार क्षेत्र का प्रश्न*=न्याय-प्रभुत्व की सीमा के अन्तर्गत आने वाले प्रश्न।

अधिकार-त्याग [संज्ञा पु.] (सं.) अपना अधिकार छोड़कर अलग होना।

अधिकारपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई कार्य करने का स्वत्व प्राप्त हो।

अधिकारस्थ [वि.] (स, अधिकार में आया हुआ।

अधिकारिक [संज्ञा पु.] (स.) वह जिसे किसी कार्य का अधिकार प्राप्त हो। अधिकारी।

अधिकारिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिकारियों का वर्ग या समूह। वर्ग या संघात।

अधिकारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधिपत्य। स्वामित्व।

अधिकारित्व [संज्ञा पु] (सं.) स्वामित्व।

अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रभु। स्वामी। २—वह जिसे कोई स्वत्व या हक मिला हुआ हो। ३—वह जिसमें कोई विशेष योग्यता या क्षमता प्राप्त हो। ४—विशेष क्षमता या योग्यता रखने वाला व्यक्ति। ५—अफसर। किसी कार्य या पद पर रहकर कार्य क वाला कर्मचारी। ६—उपयुक्त पात्र।

अधिकार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक से अधिक अ वाला पद या शब्द।

अधिकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक कष्ट।

अधिकृत [वि.] (सं.) १—जिसपर अधिकार क लिया गया हो। २—किसी के अधिकार व कब्जे में हो। ३—जिसे कोई कार्य करने क स्वत्व दिया गया हो। ४—जिसको कोई का करने का अधिकार हो।

अधिकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वत्व। अधि कारी।

अधिकौहाँ❀ [वि.] (हिं.) बराबर बढ़ता र वाला।

अधिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) आरोहण। आक्रमण धावा। चढ़ाई।

अधिक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) अपने वरिष्ठ श अथवा स्वत्व किसी को हटाकर या दबाक उसका स्थान स्वयं लेना।

अधिक्रांत, अधिक्रान्त [वि.] (सं.) दबाया य हटाया हुआ। जिसपर अधिक्रमण हुआ हो

अधिक्षिप्त [वि.] (सं.) १—फेंका हुआ। २-अपमानित। तिरस्कृत। निन्दित।

अधिक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के अधिका अथवा कार्य का क्षेत्र।

अधिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १—फेंकना। २-अपमान। निंदा। तिरस्कार। ३—तनाजनी व्यंग।

अधिगणन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अधिक गिनना २—किसी वस्तु का अधिक दाम लगाना।

अधिगत [वि.] (सं.) १—पाया हुआ। प्राप्त २— विदित। ज्ञात। अवगत। समझा बूझा या जाना हुआ।

अधिगम [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्राप्ति। पहुँच गति। ज्ञान। २—ऐश्वर्य। बड़प्पन। ३-किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई होने के उपरांत न्यायालय द्वारा निकाला गया निष्कर्ष।

अधिगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी वाक्य की पदयोजना के आधार पर की गई व्याख्या या व्याकृति। २—अध्ययन। ३—आविष्का ४—प्राप्ति। *रीडिङ्ग*।

अधिग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) अधिकारपूर्वक या अधियाचन के द्वारा किसी की सम्पत्ति या अन्य वस्तु ले लेना। *एक्विज़िशन*।

अधिग्राहक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वैध उपाय के द्वारा प्राप्त करने वाला व्यक्ति।

अधिगुप्त [वि.] (सं.) भलीभाँति छुपाया हुआ। सुरक्षित।

अधिज [वि.] (सं.) उच्चकुलोत्पन्न।

अधिजनन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्पत्ति। पैदायश।

अधिजिह्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार बीमारी

जिसमें रक्त से मिले हुए कफ के कारण जीभ के ऊपर सूजन हो जाती है।

अधिज्य [वि.] (सं.) डोरी से खिंचाहुआ (धनुष) जिसकी प्रत्यंचा या चिल्ला चढ़ा हो ।

अधित्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पर्वत के ऊपर का समतल भाग। ऊंचा पत्थरीला। मैदान। टेबुललैंड ।

अधिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) इष्टदेव । परमेश्वर।

अधिदेवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलदेवी। अधिष्ठात्री देवी ।

अधिदैव [वि.] दैवयोग से होने वाली। आकस्मिक। दैविक।
[संज्ञा पु.] इष्टदेव। परमेश्वर। अधिष्ठाता देवता ।

अधिदैवत [संज्ञा पु.] (सं.] अधिष्ठात्री देवी। परमेश्वर। २—विज्ञान का पदार्थ। २—विज्ञान का पदार्थ संवन्धी प्रकरण।
[वि.] देवता-संवन्धी ।

अधिदैविक [वि.] (सं) ईश्वर या आत्मा संवन्धी ।

अधिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—सब का स्वामी। २—सरदार। अफसर ।

अधिनायक [संज्ञा पु.] १—अफसर । सरदार। मुखिया। २—मालिक । स्वामी । विशेष परिस्थितियों के निमित्त नियत किया गया सर्वप्रधान तथा पूर्ण अधिकार प्राप्त शासक या अधिकारी।

अधिनायकतंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य जहाँ केवल अधिनायक की ही आज्ञा या आदेश से सब कार्यों का संचालन होता हो।

अधिनायकी [संज्ञा पु] (सं.) अधिनायक का पद अथवा कार्य।

अधिनियम [क्रि. स.] (सं.) १—व्यवस्था बनाना। २—नियम बनाना। कानून वनाना ।

अधिनियमय [संज्ञा पु.] (सं.) १—व्यवस्था कार्य । वह नियम जो किसी विशेषाज्ञा अथवा निश्चय के अनुसार किसी प्रकार की व्यवस्था या प्रवन्ध के लिये वना हो । २—साधारण नियम से अधिक महत्व का वह नियम जो किसी विधान के आधीन बना हो।

अधिप [संज्ञा पु] (सं.) १—स्वामी । मालिक । २—अफसर। सरदार। मुखिया। ३-राजा।

अधिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अनुज्ञापत्र । वारंट। वह पत्र जिसमें किसी को कोई काम करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। वह कागज़ या पत्र जिसमें किसी को पकड़ने अथवा गिरफ्तार करने की आज्ञा लिखी हो।

अधिपति [संज्ञा पु.] (सं) १—स्वामी। मालिक। २—प्रधान अधिकारी । ३—न्यायालय प्रमुख। विचारक या अधिकारी।

अधिपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महारानी । साम्राज्ञी।

अधिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) परम पुरुष । श्रेष्ठपुरुष। परमात्मा ।

अधिप्रचार [संज्ञा पु.] (सं.) वह सङ्घटित प्रयत्न या प्रचार जो किसी सिद्धान्त, मत, विचार आदि के पोषण या प्रसार के निमित्त किया जाता है। *प्रोपेगंडा।*

अधिप्रचारक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मत, सिद्धान्त या विचारों का संघटित रूप से प्रचार करने वाला व्यक्ति।

अधिविन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अध्यूढ़ा। पहली स्त्री। वह स्त्री जिसके रहते हुए भी उसका पति दूसरी स्त्री से विवाह करले।

अधिभार [संज्ञा पु.] (सं.) वह अतिरिक्त या विशेष अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये या किसी विशेष परिस्थिति में अलग से अधिक लिया जाता है। परिमाण से अधिक कर या शुल्क। *सरचार्ज!*

अधिभू [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी। राजा। पति। मालिक।

अधिभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रचुर मात्रा में भोजन। अधिक खाना।

अधिभौतिक [वि.] (सं.) प्राकृतिक।

अधिमंथ [संज्ञा पु.] (सं.) अभिष्यंद नामक एक रोग का अंश।

अधिमांस [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर में कहीं भी मांस बढ़ने का एक रोग विशेष।

अधिमांसक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कफ के विकार से उत्पन्न एक रोग जिसमें नीचे की डाढ़ में विशेष पीड़ा और सूजन होकर मुंह से लार आती है।

अधिमान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या व्यक्ति का वह आदर या प्रसंग जो औरों की अपेक्षा उसे अधिक अच्छा समझकर किया जाता है। किसी को औरों की अपेक्षा अधिक अच्छा समझ कर लेना। तरजीह। प्रीफरैंस।

अधिमानित [वि.] (सं.) जिसे औरों की अपेक्षा अच्छा या योग्य समझकर ग्रहण किया गया हो। जिसका अधिमान किया गया हो।

अधिमान्य [वि.] (सं.) जो औरों की अपेक्षा अच्छा या योग्य होने के कारण ग्रहण किया जा सके। अधिमान के योग्य। तरजीह के काबिल।

अधिमात्र [वि.] (सं.) अधिक प्रमाण।

अधिमास [संज्ञा पु.] (सं.) मलमास। लौंद का महीना। अधिक महीना। असंक्रांत मास।

अधिमुद्रण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी ग्रंथ या सामयिक पत्र-पत्रिका में मुद्रित लेख या प्रकरण को किसी कार्य के लिये (केवल वही अंश, लेख या प्रकरण को) छापना।

अधिमित्र [वि.] (सं.) [पु. प्र.] १—परस्पर मित्र। २—ज्योतिष के अनुसार दो परस्पर मित्र ग्रहों के योग का नाम।

अधिमुक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुक्ति। सीप।

अधियज्ञ [वि. पु.] [पु. प्र.] (सं.) यज्ञ से [संज्ञा पु.] बड़ा यज्ञ।

अधिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—आधा हिस्सा। आधा भाग। गांव में आधी पट्टी की साझेदारी। २—गांव की वह रीति जिसके अनुसार खेत की उपज का आधा भाग किसान को तथा जमींदार को जाता है।

अधियाचन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विशेष कार्य के निमित्त किसी से कुछ मांगने या कोई कार्य करने के लिये साधिकार कहना। *रीक्वीज़ीशन।*

अधियान [संज्ञा पु.] (हिं.) गोमुखी। वह थैली जिसमें हाथ डाल कर माला के मनके घुमाते हैं।

अधियाना [क्रि. स.] (हिं.) दो बराबर के भागों में बांटना। आधा करना।

अधियार [संज्ञा पु.] (हिं.) १—किसी सम्पत्ति का आधा भाग। २—आधे का स्वामी। ३—जमींदार या आसामी जिसका आधा संवंध तो एक गांव से तथा आधा दूसरे गांव से हो।

अधियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—किसी सम्पत्ति में आधी साझेदारी। २—किसी जमींदार की दो अलग-अलग जमींदारी।

अधियुक्त [वि.] (सं) वेतन या मजदूरी पर किसी काम में लगा हुआ।

अधियुक्ती [संज्ञा पु.] (सं.) वेतन या पारिश्रमिक पर किसी कार्य में लगा हुआ व्यक्ति। *एम्प्लाँई।*

अधियोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो वेतन या पारिश्रमिक देकर लोगों को अपने कार्यालय या कारखाने आदि में काम पर रखे। काम कराने वाला मालिक। *एम्प्लाँयर।*

अधियोजक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अधियोक्ता'

अधियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी को वेतन आदि देकर अपने कार्यालय या कारखाने में काम पर लगाना। २—किसी का वेतन आदि पर किसी कारखाने या कार्यालय में काम पर लगा रहना। *एम्प्लायमेंट।*

अधियोध [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा योद्धा।

अधिरक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) वह आरक्षी या पुलिस विभाग का कर्मचारी जिसके आधीन कुछ सिपाही रहते हैं। *हैडकांस्टेबुल।*

अधिरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—रथ पर चढ़ा हुआ योद्धा। २—रथ हांकने वाला। सारथी। ३—गाड़ीवान। ४—बड़ा रथ। बढ़िया रथ।

अधिरथी [संज्ञा पु.] (सं.) १—समुद्र। सूर्य।

अधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। सम्राट।

अधीश्वर। महाराज। बादशाह।

अधिराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) साम्राज्य। चक्रवर्ती राज्य।

अधिराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य। बादशाहत।

अधिरूढ़ [वि.] (सं.) १—वृद्धियुक्त। २—चढ़ा हुआ।

अधिरोप (ण) [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पर अपराध का अभियोग, दोप या आरोप लगाया जाना। चार्ज।

अधिरोपित [वि.] (सं.) १—जिसपर अपराध का अधिरोप हुआ हो। २— वह अपराध जिसका अधिरोप किया गया हो।

अधिरोह [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर का चढ़ाव।

अधिरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर उठना। चढ़ना सवार होना।

अधिरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीढ़ी। नसेनी। जीना।

अधिलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कारखाने या कम्पनी आदि में नौकरों या मजदूरों को नौकरी और भत्ते के अतिरिक्त कारखाने या कम्पनी के लाभ में से दिया जाने वाला कुछ अंश।

अधिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। दुनियाँ। ब्रह्माण्ड।

अधिलोकनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) संसार का स्वामी। परमात्मा।

अधिवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह वकील जिसे अपना वकालतनामा लेने की आवश्यकता नहीं होती। एडवोकेट।

अधिवाचन [संज्ञा पु.] (सं.) चुनाव। निर्वाचन।

अधिवास [संज्ञा पु.] (सं.) १—रहने का स्थान। निवास। २—एक देश से आकर अन्य देश में इस प्रकार बस जाय जिससे कि उसे उस देश के नागरिक अधिकार प्राप्त हो जायं।

अधिवासन [संज्ञा पु.] (सं.) स्थापन। अधिवास।

अधिवासित [वि.] (सं.) सुगन्धित। खुशबूदार।

अधिवासित्व [संज्ञा पु.] (सं.) अधिवासी होने का अधिकार।

अधिवासी [संज्ञा पु.] (सं.) १—निवासी। २—अन्य देश में जाकर बसने वाला।

अधिवासीकृपक [संज्ञा पु.] (सं.) वह किसान जिसने जमींदार से कुछ वार्षिक कर पर खेती का स्वत्व प्राप्त किया हो। काश्तकार।

अधिवेत्ता [संज्ञा पु.] (सं.) पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने वाला व्यक्ति।

अधिवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्त्री के रहते दूसरा विवाह करना।

अधिवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) जलसा, सभा, सम्मेलन आदि की बैठक।

अधिशयन [संज्ञा पु.] (सं.) लेटना। सोना।

अधिशायित [वि.] (सं.) लेटा हुआ।

अधिशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण से अधिक या अतिरिक्त वह शुल्क जो किसी विशेप परिस्थिति में लिया जाता है।

अधिश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें कोई वस्तु रखी हो।

अधिश्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) चूल्हे पर किसी पात्र को रखना।

अधिश्रयणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—जीना। सीढ़ी। नसेनी। २—चूल्हा। अँगीठी।

अधिश्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आग पर चढ़ाना या रखना। २—तंदूर। भाड़। अँगीठी। चूल्हा।

अधिश्रित [वि.] (सं.) आग पर चढ़ाया हुआ।

अधिश्री [वि] (सं.) अत्यन्त शोभा। परम मनोहर।

अधिष्ठाता [संज्ञा पु.] (सं.) १—अध्यक्ष। प्रधान। मुखिया। सरदार। २—किसी कार्य या संस्था की देखभाल करने वाला। वह व्यक्ति जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो

अधिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) १—रहने का स्थान। वासस्थान। २—नगर। शहर। जनपद। बस्ती। ३—पड़ाव। मुकाम। स्थिति। टिकान। ४—आधार। सहारा। ५—ऐसी वस्तु जिससे अन्य वस्तु का भान हो। ६—सांख्यशास्त्रानुसार भोक्ता तथा भोग का संयोग। ७—अधिकार। राजसत्ता। शासन। ८—गच जिसपर खंभा या पाया बनाया जाय। ९—संस्था के कार्यकर्ता और अधिकारी लोग। लाभ के लिये व्यापार।

अधिष्ठानशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह सूक्ष्मशरीर जिसमें मृत्यु के पश्चात् आत्मा पितृलोक में रहता है।

अधिष्ठित [वि.] (सं.) १—स्थापित। ठहरा हुआ बसा हुआ। २—निर्वाचित। नियुक्त।

अधिष्ठितस्वार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्वार्थ जो कहीं धन व्यय करके अथवा व्यवसाय आदि में लगाकर स्थापित किया गया हो।

अधिसूचना [संज्ञा पु.] (सं.) विज्ञप्ति। अधिकृतसूचना। प्रज्ञापन। विज्ञापन।

अधीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) परिदर्शक। निगरानी करने वाला। निरीक्षक। किसी कार्यालय या विभाग का वह प्रधान कर्मचारी जो अपने आधीनस्थ कर्मचारियों के सब कामों की निगरानी करे। *सुपरिएटेएडेएट*।

अधीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रबन्ध। जांच। अधीक्षक का काम।

अधीत [वि.] [पु. प्र.] (सं.) पढ़ा हुआ। बाँचा हुआ।

अधीन [वि.] (सं.) १—आश्रित। मातहत। वशीभूत। काबू का। आज्ञाकारी। नसका। २—विवश। लाचार। दीन।

[संज्ञा पु.] दास। सेवक।

अधीन-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा अधिकारी या अफसर। किसी की मातहती में काम करने वाला अफसर। आश्रित अधिकारी।

अधीन-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी अदालत। आधीनस्थ न्यायालय। मातहत अदालत। अदालत-खफीफा।

अधीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—परवशता। परतन्त्रता। अज्ञाकारिता। मातहती। बेवसी। लाचारी। दीनता।

अधीनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) अधीनता। परवशता।

अधीनना [क्रि. स.] (हिं.) अपने अधीन करना। [क. अ.] (हिं.) किसी के अधीन होना।

अधीनस्थ [वि.] (सं.) किसी के अधीन।

अधीनीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को अपने अधीन करना या अपने अधीन में लाना।

अधीयान [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ने वाला विद्यार्थी।

अधीर [वि.] (सं.) १—धैर्यहीन। व्यग्र। बेचैन। घबड़ाया हुआ। व्याकुल। विह्वल। २—चञ्चल। अस्थिर। उतावला। आतुर। तेज। ३—असंतोपी।

अधीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—बिजली। २—वह नायिका जो नायक में विलास के चिह्न देखकर अधीर हो जाती है परन्तु प्रत्यक्ष में रोप प्रगट करती है।

[वि.] (स्त्री. प्र.) जो धैर्य न धारण करे। जो धीर न धरे।

अधीश [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वामी मालिक। अध्यक्ष। पति। २—राजा। भूपति। नरेश।

अधीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १—मालिक। स्वामी। सरदार। अध्यक्ष। २—राजा। भूपति। अधिपति।

अधीष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को सम्मानपूर्वक किसी कार्य में लगाना। नियोग।

[वि.] आदरसहित बुलाकर किसी कार्य में लगाना।

अधुत [वि.] (सं.) बिना हिलाया हुआ। कंपरहित।

अधुना [क्रि. वि] (सं.) आजकल। सम्प्रति। अब। इस समय।

अधुनातन [वि.] (सं.) वर्तमान समय का। अब का। साम्प्रतिक।

अधुर [वि.] (सं) बिना बोझ का।

अधूत [संज्ञा पु.] (सं.) १—अकम्पित। २—निर्भय। निडर। उचक्का।

अधूरा [वि.] (हिं.) अपूर्ण। जो पूरा न हो। असमाप्त। अधकचरा। खण्डित। आधा।

अधूरा कर देना = कमजोर कर देना।

अधूरा जाना = असमय गर्भपात हो जाना।

अधृत [वि.] (सं.) धारण न किया हुआ।

अधृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अधीरता। घबड़ाहट। २—आतुरता।

अधेंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का भूरे रंग का पक्षी जिसके डैने तथा पैर सुनहरे होते हैं

अधेड़ [वि.] (हिं.) उतरती अवस्था का। ढलती जवानी का। यौवन का उतार। जवानी और बुढ़ापे के मध्य की अवस्था।

अधेला [संज्ञा पु.] (हिं.) आधा पैसा। आधे पैसे के बराबर का सिक्का।

अधेलिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंधकार। अँधेरिया।

अधेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आधा रुपया। अठन्नी। आठ आनों के बराबर मूल्य का सिक्का।

अधैर्य, अधैर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—धैर्य का अभाव। व्याकुलता। व्यग्रता। घबड़ाहट। चंचलता। २—उतावलापन।

[वि.] १—व्याकुलता। धैर्यहीन। चंचल। २—आतुर। उतावला।

अधैर्यवान् अधैर्य्यवान् [वि.] (सं.) व्याकुल। व्यग्र। धैर्यरहित। उद्विग्न। घबड़ाने वाला। २—आतुर। उतावला।

अधोंशुक [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे का वस्त्र। कमर से नीचे पहने जाने वाला वस्त्र यथा पाजामा, धोती, पतलून।

अधो [अव्य.] नीचे का।

अधोगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पतन। उतार। गिराव। २—अवनति। दुर्गति। दुर्दशा। ३—नरक। गमन।

अधोगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अवनति। २—नीचे जाना। पतन। दुर्दशा।

अधोगामी [वि.] (सं.) १—नीचे को जाने वाला २—अवनति की ओर जाने वाला। दुर्दशा को पहुँचने वाला।

अधोघंटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिचड़ी। अपामार्ग

अधोजानु [संज्ञा पु.] (सं.) जाँघ के नीचे का भाग।

अधोतर [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत मोटी खादी। एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

अधोदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—नीचे का प्रदेश। दक्षिण दिशा।

अधोदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीचे की ओर दृष्टि

अधोदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे का स्थान। नीचे की जगह। २—निचला भाग।

अधोबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) कमर में बांधने की पेटी। नाला। इजारबंद।

अधोभाग [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे का भाग। योनि

अधोभुवन [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल। नीचे का लोक।

अधोमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे का मार्ग। सुरंग का रास्ता। २—गुदा।

अधोमुख [वि.] (सं.) १—मुँह लटकाए हुए। नीचे मुँह किये हुए। २—औंधा। उलटा। [क्रि. वि.] औंधा। उलटा। मुँह के बल।

अधोमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनन्तमूल का पौधा।

अधोयंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अर्क खींचने का यन्त्र

अधोरध [क्रि. वि.] ऊपर-नीचे।

अधोर्ध, अधोर्द्ध [क्रि. वि.] (सं.) तले-ऊपर। ऊपर-नीचे।

अधोलंब, अधोलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) वह सीधी खड़ी रेखा जो किसी आड़ी रेखा पर खड़ी हो और उसके पार्श्व के दोनों कोण समकोण हों। लम्ब। २—साहुल। लोहे तथा पत्थर में सूत की डोर से बंधा वह लट्टू जिससे दीवार की सीध देखते हैं। ३—३—पानी की गहराई नापने का यन्त्र।

अधोलोक [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे का लोक। पाताल।

अधोवातावरोधोदावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) अधोवायु के वेग को रोकने से उत्पन्न उदावर्त्त रोग।

अधोवायु [संज्ञा पु.] (सं.) पाद। अपानवायु। गुदा से निकलने वाली वायु।

अधोविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश में का वह स्थान जो हमारे पैर के नीचे है।

अधौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—मोटा चमड़ा। २—पूरी पकी हुई खाल का आधा भाग। *अधौड़ी तनना* = खूब पेट भर जाना। *अधौड़ी तानना* = खूब पेट भर के खाना।

अध्मान [संज्ञा पु.] (सं.) पेट अफरने का रोग।

अध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वामी। मालिक। २—अफसर। नायक। सरदार। मुखिया। प्रधान। ३—अधिकारी। अधिष्ठाता। ४—लोकसभा या संसद का अध्यक्ष। स्पीकर।

अध्यक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अध्यक्ष होने की क्रिया या भाव। अध्यक्ष का स्थान या पद।

अध्यक्षर [क्रि. वि.] (सं.) अक्षरशः। अक्षर अक्षर।

अध्याग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के अवसर पर मायके वालों की ओर से अग्नि को साक्षि करके कन्या को दिया जाने वाला धन।

अध्यच्छ (हि.) अध्यक्ष। प्रधान। अफसर। अधिकारी।

अध्यधिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) अत्याधिक तिरस्कार

अध्यधीन [वि.] (सं.) बिलकुल परतन्त्र।

अध्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) १—पढ़ाई। पठन-पाठन। २—ब्राह्मणों द्वारा किये जाने वाले षट्कर्मों में से एक।

अध्ययनावकाश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कर्मचारी अथवा अधिकारी को किसी विषय का विशेषरूप से अध्ययन करने के लिये मिलने वाली छुट्टी या अवकाश।

अध्ययनीय [वि.] (सं.) पढ़ने योग्य।

अध्यर्ध [वि.] (सं.) १—एक और आधे का जोड़। डेढ़। २—वायु। हवा।

अध्यर्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) अर्बुद रोग के स्थान पर फिर अर्बुद हुआ हो उसे अध्यर्बुद कहते हैं।

अध्यर्थ [संज्ञा पु.] (सं) वह पदार्थ जिस पर अपना अधिकार अथवा स्वत्व जताया जाय।

अध्यर्थन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु पर स्वत्व या अधिकार जमाना।

अध्यवसान [संज्ञा पु.] (सं.) १—अभिप्राय। मतलब। आशय। तात्पर्य। २—चेष्टा। ३—हौसला। ४—उत्साह।

अध्यवसाय [संज्ञा पु.] (सं.) लगातार उद्योग। निरन्तर प्रयत्न। अविश्रान्त। परिश्रम। दृढ़तापूर्वक किसी कार्य में लगा रहना। २-उत्साह। ३—निश्चय। प्रतीति।

अध्यवसायित [वि.] (सं.) दृढ़ निश्चय किये हुए

अध्यवसायी [वि.] (सं.) निरन्तर परिश्रम करने वाला। उद्योगी। उद्यमी। २—उत्साही।

अध्यवसित [वि.] (सं.) अनुमोदित। दृढ़निश्चय किया हुआ।

अध्यशन [संज्ञा पु.] (सं.) अजीर्ण। अपच। बदहजमी।

अध्यस्त [वि.] (सं.) ऊपर रखा हुआ। अप्रत्यक्ष। छिपा हुआ। गुप्त।

अध्यात्म [संज्ञा पु.] (सं.) आध्यात्मज्ञान। ज्ञानतत्त्व। ब्रह्मविचार।

(वि.) आत्मा या ब्रह्मसम्बन्धी।

अध्यात्मज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा तथा परमात्मा का ज्ञान।

अध्यात्मवाद [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा तथा ब्रह्म को मुख्य मानने का सिद्धान्त।

अध्यात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा। ईश्वर।

अध्यात्मिक [वि.] (सं.) आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध का।

अध्यादेश [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य की ओर से निकाला गया वह अधिकारिक अचिरादेश जो किसी कार्य, व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में हो।

अध्यापक [संज्ञा पु.] (सं.) शिक्षक। गुरु। पढ़ाने वाला। उस्ताद। मुदर्रिस।

अध्यापकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अध्यापनकार्य। पढ़ाने का कार्य। पढ़ाई।

अध्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ाना-लिखाना। शिक्षण।

अध्यापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पढ़ाने वाली। गुरुआइन। शिक्षा देने वाली।

अध्यापित [वि.] (सं.) पढ़ाया लिखाया हुआ।

अध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १—ग्रन्थ विभाग। २—पाठ। सर्ग। परिच्छेद।

अध्यायी [वि] (हिं) अध्ययन करने वाला। पढ़ने वाला। पढ़ने लिखने में लगा हुआ।

अध्यारूढ़ [वि.] (सं.) चढ़ा हुआ। सभारूढ़। अधिक ऊँचा।

अध्यारोप [संज्ञा पु] (सं.) १—अध्यास। अपवाद। दोष। २—झूठी कल्पना। वेदांत के अनुसार अन्य अन्य वस्तु का भाव ३—सांख्य के अनुसार एक के कार्य को दूसरे में आरोपित करना।

अध्यारोपण [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न की बोवाई।

अध्यारोपित [वि] (सं.) गलत समझा हुआ। धोखे का। मिथ्यारोपित।

अध्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १—मिथ्या ज्ञान। भ्रांत धारणा। कल्पना।

अध्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) १—बैठना। उपवेशन। २—आरोपण।

अध्यासित [वि.] (सं.) सभापति के आसन पर बैठा हुआ।

अध्यासीन [संज्ञा पु.] (सं.) बैठा हुआ। उपविष्ट। *अध्यासित होना* = अध्यक्ष होना। सभापति होना।

अध्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) १—तर्कवितर्क। ऊहापोह। बहस। २—अपूर्ण वाक्य को पूर्ण करने के निमित्त और शब्द जोड़ना। ३—अस्पष्ट भावों को अन्य शब्दों के द्वारा स्पष्ट करना।

अध्याहार्य [वि.] (सं.) अनुसंधान करने योग्य।

अध्याहृत [वि.] (सं.) तर्क किया हुआ।।

अध्युष्ट [वि.] (सं) [पु. प्र.] बसा हुआ। आबाद।

अध्यूढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके रहते उसका पति दूसरा विवाह करले। प्रथम विवाहिता स्त्री।

अध्येतव्य [वि.] (सं.) [पु. प्र.] पठन योग्य। पढ़ने योग्य। पाठ्य।

अध्येता [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ने वाला विद्यार्थी।

अध्येय [वि.] (सं) अध्ययन करने योग्य। पढ़ने योग्य।

अध्येषण [संज्ञा पु.] (सं.) याचना। माँगना।

अध्रियामणी [संज्ञा स्त्री] (डिंगल) कटार। कटारी।

अध्रियामाण [वि.] (सं) मरा हुआ। न पकड़ा हुआ।

अध्रुव [वि.] (सं.) [पु. प्र.] १—चलायमान। डाँवाँडोल। चल। अस्थिर। चंचल। २—अनित्य। अनिश्चित। बेठौर-ठिकाने का।

अध्व [संज्ञा पु.] (सं.) रास्ता। मार्ग। पथ।

अध्वग [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक। बटोही। मुसाफिर। यात्री।

अध्वगामी [वि.] (सं.) यात्रा करने वाला।

अध्वन् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पथ। भूमि। आकाश। दूरी। स्थान।

अध्वपति [संज्ञा पु.] (सं.) मार्गरक्षक। सूर्य।

अध्वर [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ।

अध्वररथ [संज्ञा पु.] मार्ग को भली प्रकार जानने वाला दूत।

अध्वर्यु [संज्ञा पु.] यज्ञ करने वाला यजुर्वेदी पुरोहित।

अन् [अव्य.] (सं.) संस्कृत व्याकरणानुसार निषेधार्थक अव्यय। न, नहीं।

अनंग, अनङ्ग [वि.] (सं.) देहरहित। बिना शरीर का।
[संज्ञा पु.] कामदेव।

अनंग-क्रीड़ा, अनङ्ग-क्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संभोग। प्रसंग। रति। २—छंद शास्त्रानुसार मुक्तकवृत्त का एक भेद जिसमें पूर्व दल में १६ गुरु-वर्ण तथा उत्तर दल में ३२ वर्ण हों।

अनंगना, अनङ्गना [क्रि. अ.] (हिं.) देह की सुधबुध छोड़ना। बेसुध होना।

अनंगवती, अनङ्गवती [वि.] (सं.) [स्त्री प्र.] कामिनी। कामवती।

अनंगशेखर, अनङ्गशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) दंडक नामक वर्णवृत्त का एक भेद जिसमें ३२ वर्ण होते हैं तथा लघु गुरु का कोई क्रम नहीं होता।

अनंगारि, अनङ्गारि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव का वैरी या शत्रु। महादेव।

अनंगी, अनङ्गी [वि.] (सं.) १—अंग या अवयवरहित। देहरहित। अशरीर।
[संज्ञा पु.] १—कामदेव। परमात्मा।

अनंत, अनन्त [वि.] (सं.) १—असीम। जिसका अंत न हो। बेहद। अपार। बहुत बड़ा। २—बहुत अधिक। असंख्य। ३—अविनाशी। नित्य।
[संज्ञा पु.] १—विष्णु। २—शेषनाग। ३—लक्ष्मण। ४—बलराम। ५—आकाश। ६—अभ्रक। ७—अनंतचतुर्दशी का व्रत। ८—एक जैन तीर्थङ्कर का नाम। ९—भुजा में पहना जाने वाला एक गहना। १०—रामानुजाचार्य के एक प्रमुख शिष्य का नाम।

अनंतकाय, अनन्तकाय [संज्ञा पु.] वह वनस्पतियां जो जैन धर्मानुसार खाना वर्जित है।

अनंतचतुर्दशी, अनन्तचतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी। इस दिन व्रत रखा जाता है तथा चौदह गांठों का अनन्त बाहु पर बांधा जाता है।

अनंतटंक, अनन्तटङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का राग जो मेघराग का पुत्र माना जाता है।

अनंतता, अनन्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असीमता। अधिकता। अमितत्व।

अनंतत्व, अनन्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) अनन्तता। असीमता।

अनंतदर्शन, अनन्तदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा ज्ञान जो दिशा, काल आदि से बद्ध न हो। सब बातों का पूर्ण ज्ञान।

अनंतदृष्टि, अनन्तदृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

अनंतदेव, अनन्तदेव [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग। शेषनागशायी विष्णु।

अनंतनाथ, अनन्तनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) चौदहवें जैन तीर्थङ्कर।

अनंतपार, अनन्तपार [वि.] (सं.) बहुत लंबा चौड़ा।

अनंतमूल, अनन्तमूल [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली चमेली। एक औषधि का नाम।

अनंतर, अनन्तर [क्रि. वि.] (सं.) १—पीछे। उपरांत। बाद। २—लगातार। निरन्तर।
[वि.] १—बिना व्यवधान का। अंतररहित। निकटस्थ। २—अखण्डित।

अनंतरज, अनन्तरज [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जिसके पिता का वर्ण माता के वर्ण से एक वर्ण उत्तम हो यथा माता वैश्य कुलोत्पन्न हो तो पिता क्षत्रिय हो।

अनंतरजात [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अनंतरज'।

अनंतराशि, अनन्तराशि [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी संख्या जिसका अन्त न हो।

अनंतरित, अनन्तरित [वि.] (सं.) १—जिसमें बीच न पड़ा हो। निकटस्थ। २—अखंडित। बिना टूटा हुआ।

अनंतरूप, अनन्तरूप [संज्ञा पु.] (सं.) अनगिनत रूप वाला। ईश्वर।

अनंतर्हित, अनन्तर्हित [वि.] (सं.) १—पास का। निकटस्थ। मिला हुआ। २—शृङ्खलाबद्ध। अखंडित।

अनंतविजय, अनन्तविजय [संज्ञा पु.] (सं.) युधिष्ठिर के शंख का नाम।

अनंतवीर्य, अनन्तवीर्य [वि.] (सं.) अपार पौरुष वाला।
[संज्ञा पु.] तेईसवें जैन तीर्थङ्कर का नाम।

अनंतव्रत, अनन्तव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) अनन्त चौदस को किया जाने वाला व्रत।

अनंतशक्ति, अनन्तशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपरमित बल।

अनंतशीर्षा, अनन्तशीर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनगिनत फल वाली वासुकि नाग की पत्नी

अनंता, अनन्ता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसकी सीमा या अन्त न हो।
[संज्ञा स्त्री.] १—पृथ्वी। २—पार्वती। ३—

३ अनन्तमूल । ४—दूब । ५—पीपर । ६-जवासा ७—अरणीवृक्ष । ८—अनंतसूत्र । ६—करियारी का पौधा ।

अनंतात्मा, अनन्तात्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) परमात्मा । जिसका अन्त नहीं है ।

अनंतानुबंधी [संज्ञा पु.] (सं.) वह खोटा स्वभाव जो कभी न जाय उसे जैन धर्म में 'अनंतानुबंधी' कहते हैं ।

अनंताभिधेय, अनन्ताभिधेय [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके नामों का अंत न हो । ईश्वर ।

अनंत्य, अनन्त्य [वि.] (सं.) असीम । बेहद ।

अनंद, अनन्द [वि.] (सं.) आनन्ददायक ।
[संज्ञा पु.] १—आनन्द । प्रसन्न । हर्ष । २-वर्णवृत्त जिसमें १४ वर्ण होते हैं (ज+र+ज+र+ल+गु) ।

अनंदना, अनन्दना [क्रि. अ.] (हिं.) प्रसन्न होना आनन्दित होना । खुश होना ।

अनंदी, अनन्दी [संज्ञा पु.] (हिं.) १—एक प्रकार का धान । २—प्रसन्न । सुखी । आनन्दी ।

अनंभ, अनम्भ [वि.] (सं.) १—बिना जल का । २—बाधारहित । निर्विघ्न । बेआँच ।

अनंश [वि.] वह जिसे पैत्रिक सम्पत्ति का अधिकार न मिला हो ।

अन [क्रि. वि.] (सं.) बिना । बगैर ।
[वि.] अन्य । और । दूसरा ।

अनअहिवात [संज्ञा पु.] (हिं.) अहिवात अर्थात सौभाग्य का अभाव । वैधव्य । रंडापा ।

अनइस [संज्ञा पु.] (हिं.) अनिष्ट । बुराई । अहित

अनइसी [वि.] (हिं.) अप्रिय । खराब । बुरा । जो इष्ट न हो ।

अनऋतु [संज्ञा पु.] (सं.) बेऋतु । बेमौसम । असमय । ऋतुविरुद्ध ।

अनकंप [संज्ञा पु.] (हिं.) अकंप । न कांपने वाला । कंपनरहित ।

अनक [संज्ञा पु.] (हिं.) आनक । १-डंका । भेरी । बड़ा ढोल । नगाड़ा । दुंदुभी । मृदंग । २—गरजता हुआ बादल ।

अनकना [क्रि. स.] (हिं.) १—छिपकर सुनना । चुपचाप सुनना ।

अनक़रीब [क्रि. वि.] (अ.) लगभग । प्राय ।

अनकहा [वि.] (हिं.) बिना कहा हुआ । अकथित अनुक्त ।
अनकही देना = चुपचाप होना । स्तब्ध होना ।

अनक्षर [वि.] (सं.) मूर्ख । बेवकूफ । बुद्धिहीन ।

अनख [संज्ञा पु.] (हिं.) १—झुँझलाहट । क्रोध । कोप । रिस । २—दुःख । ग्लानि । खिन्नता । ३—ईर्षा । द्वेष । डाह । ४—झंझट । अनरीति ५—डिठौना ।
[वि.] बिना नख का ।

अनखना [क्रि. अ.] (हिं.) क्रोध करना । रूठना । रिसाना ।

अनखाना [क्रि. अ.] (हिं.) रूठना । रिसाना । क्रोध करना ।
[क्रि. स.] खिझाना । नाराज करना । अप्रसन्न होना ।

अनखाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अप्रसन्नता । क्रोध ।

अनखी [वि.] (हिं.) क्रोधी । कुपित होने वाला । गुस्सावर ।

अनखौहा [वि.] (हिं.) १—कुपित । क्रोध से भरा । २—चिड़चिड़ा । थोड़ी-सी बात पर चिढ़ जाने वाला । ३—क्रोध दिखाने वाला । ४—खोटा । बुरा । अनुचित ।

अनगढ़ [वि.] (हिं.) १—बिना गढ़ा हुआ । २—जिसे किसी ने न बनाया हो । स्वयम्भू । ३—बेडौल । भद्दा । बेढंगा ४—उजड्ड । अनाड़ी । असंस्कृत । अपरिष्कृत । ५—अंडबंड । बेसिर पैर का । बेतुका ।

अनगन [वि.] (हिं.) अगणित । बहुत ।

अनगा [क्रि. स.] (हिं.) टपकते हुए खपरैल की मरम्मत करना । छाजन से टूटे हुए खपरों के स्थान पर नवीन लगाना ।
[वि.] बिना गिना हुआ । बहुत । अगणित ।
[संज्ञा पु.] गर्भ का आठवाँ मास ।

अनगवना [क्रि. अ.] (हिं.) जान-बूझकर देर करना ।

अनगाना [क्रि.] (हिं.) सुधारना । गिनवाना ।

अनगिन, अनगिनत [वि.] (हिं.) जिसकी गिनती न हो । असंख्य । अगणित । बहुत । बेशुमार ।

अनगिना [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] १—बिना गिना हुआ । २—असंख्य । अगणित ।

अनगौरी [वि.] (हिं.) पराया । गैर । अपरिचित । बेजान-पहचान का ।

अनग्न [वि.] (सं.) जो नंगा न हो । वस्त्र पहिने हुए ।

अनग्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नग्न या नंगा न रहने की अवस्था ।

अनग्नि [वि.] (सं.) यज्ञादि कर्म से रहित । श्रौत तथा स्मार्त्त कर्म से विपरीत या विमुख ।

अनघ [वि.] (सं.) १—पापरहित । निष्पाप । निर्दोष । बेगुनाह । २—शुद्ध । पवित्र । निर्मल ।
[संज्ञा पु.] वह जो पाप न हो । पुण्य ।

अनघरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुसमय । बुरा समय । बेमौका । अनावसर ।

अनघैरी [वि.] (हिं.) बिना बुलाया हुआ । आमंत्रण-रहित । अनिमंत्रित ।

अनघोर [संज्ञा पु.] (हिं.) अत्याचार । ज्यादती । अंधेर । जुल्म ।

अनचहा [वि.] (हिं.) बिना चाहा हुआ । अनिच्छित । अप्रिय ।

अनचाहत [वि.] (हिं.) न चाहा हुआ ।
[संज्ञा पु.] न चाहने वाला व्यक्ति । प्रेम न करने वाला पुरुष ।

अनचीन्हा [वि.] (हिं.) अपरिचित । अज्ञात । बिना जान-पहिचान का ।

अनचैन [संज्ञा. स्त्री.] (हिं.) बेचैनी । विकलता । व्याकुलता । घबड़ाहट ।

अनच्छ [वि.] (सं.) मैला । गंदा । अपवित्र । जो स्वच्छ न हो ।

अनजान [वि.] (हिं.) १—बिना जाना-पहिचाना हुआ । अज्ञात । अपरिचित । २—भोला-भाला । नासमझ । अनभिज्ञ । नादान । सीधा । अज्ञ । अज्ञानी ।
[संज्ञा पु.] १-एक प्रकार की भैंसों के खाने की घास जिससे दूध में नशा सा आजाता है । २—एक वृक्ष का नाम

अनजोखा [वि.] (हिं.) बिना तोला हुआ ।

अनट [संज्ञा पु.] उपद्रव । अन्याय । अत्याचार । अनीति । बलवा ।

अनडीठ [वि.] (हिं.) बिना देखा । अदृष्ट ।

अनडुह [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल ।

अनुडुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाय ।

अनड्वान् [संज्ञा पु.] (सं.) १—बैल । साँड । २—सूर्य । दिवाकर ।

अनत [वि.] (सं.) सीधा । जो झुका हुआ न हो ।
[क्रि. वि.] दूसरे किसी स्थान पर । और कहीं । अन्यत्र ।

अनति [वि.] (सं.) थोड़ा । बहुत नहीं । न्यून ।
[संज्ञा स्त्री.] नम्रतारहित । अहंकार ।

अनतिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) हद से बाहर न जाना ।

अनतिक्रमणीय [वि.] (सं.) उल्लङ्घन न करने योग्य ।

अनदेखा [वि.] (हिं.) बिना देखा हुआ ।

अनद्यतन [वि.] (सं.) जो आज का न हो ।
[संज्ञा पु.] गत रात्रि के पिछले दोपहर तथा आने वाली रात्रि के प्रथम दोपहर और सारे दिन को काटकर बाकी गत या आने वाले समय को अनद्यतन कहते हैं । गत आधी रात से लेकर आने वाली आधीरात तक के समय को छोड़कर बाकी गत या भविष्य के समय को अनद्यतन कहते हैं ।

अनद्यतन-भविष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—आगामी अर्धरात्रि के पश्चात् का समय । २—व्याकरण में भविष्यकाल का एक भेद जिसका अब प्रयोग नहीं होता ।

अनद्यतनभूत [संज्ञा पु.] (सं.) गत आधीरात के पहिले का समय ।

अनधिक [वि.] (सं.) असीम । बेहद ।

अनधिकार [संज्ञा पु.] अधिकार का न होना । प्रभुत्व का अभाव । २—बेबसी । लाचारी ।

३—अयोग्यता। अक्षमता।

[वि.] १—अधिकार-रहित। २—अयोग्य। अयोग्यता के बाहर।

अनधिकारी चर्चा = जिस विषय में अधिकार न हो उसमें टाँग अड़ाना। योग्यता से बाहर बात करना।

अनधिकारप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) बिना अधिकार के किसी घर में प्रवेश करना। बेजा मदाखलत।

अनधिकारप्रविशक [संज्ञा पु.] (सं.) अनधिकृत रूप से प्रवेश करने वाला।

अनधिकारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिकार-शून्यता। अधिकार का न होना।

अनधिकारी [वि.] (हिं.) १—जिसे अधिकार न हो। स्वत्वहीन। २—अयोग्य। अपात्र। कुपात्र।

अनधिकृत [वि.] (सं.) अधिकार न दिया हुआ। स्वत्वहीन।

अनधिगत [वि.] (सं.) अज्ञान। बिना समझा-बूझा। अनवगत।

अनधिगत मनोरथ = हताश।

अनधिगत शास्त्र = जिसे शास्त्रों का ज्ञान न हो

अनधिगम्य [वि.] (सं.) अप्राप्य। दुष्प्राप्य। प्राप्त न होने योग्य।

अनध्यक्ष [वि.] (सं.) १—अप्रत्यक्ष। जो देख न पड़े। नज़र के बाहर। २—बिना मालिक का। अध्यक्षरहित।

अनध्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) १— पाठ का अनध्याय।

अनध्यवसाय [संज्ञा पु.] (सं.) १—अध्यवसाय का अभाव। अतत्परता। ढिलाई। २—वह काव्यालङ्कार जो कई समान-गुणवाली वस्तुओं के मध्य न हो बल्कि एक वस्तु के सम्बन्ध में धारणा का निश्चय प्रगट किया जाय।

अनध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने की मनाही हो। २—छुट्टी का दिन।

अननुष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) त्याग। लोभ। भूल।

अननुभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायशास्त्रानुसार जब वादी अपने विषय को स्पष्ट करने के लिए तीन बार दोहराये तथा सब लोग समझ जायें, तदनन्तर प्रतिवादी उसका कुछ उत्तर न दे ऐसी अवस्था को 'अननुभाषण' कहते हैं और प्रतिवादी हारा हुआ माना जाता है।

अननुसन्धेय [वि.] (सं.) हस्तक्षेपायोग्य। हस्तक्षेप के अयोग्य।

अननुसन्धेय अपराध = भारी अपराध या क़सूर।

अनन्नास [संज्ञा पु.] (*ब्रैजिलियन*) एक पौधा तथा उसका नाम।

अनन्य [वि.] (सं.) दूसरे से सम्बन्ध न रखनेवाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन।

[संज्ञा पु.] विष्णु का नाम।

अनन्यगति [वि.] (सं.) जिसका दूसरा सहारा अथवा उपाय न हो। जिसको और कोई ठिकाना न हो।

अनन्यचित्त [वि.] (सं.) एकाग्रचित्त। जिसका मन या चित्त एक जगह न हो।

अनन्यज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव। अनंग।

अनन्यता, अनन्यत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एकनिष्ठा। एकाग्रता। एक ही में लीन रहना। २—निरालापन। अनोखापन।

अनन्यदृष्टि [वि.] (सं.) टकटकी बाँधकर देखने वाला।

अनन्यपूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पुरुष के साथ संसर्ग न हुआ हो। अविवाहिता।

अनन्यभव [वि.] (सं.) स्वतः उत्पन्न होने वाला।

अनन्यभाव [वि.] (सं.) ईश्वर में ही ध्यान लगाने वाला।

अनन्यमनस्क [वि.] (सं.) एकाग्रचित्त। एक ही विषय में अपना ध्यान स्थिर करने वाला।

अनन्ययोग्य [वि.] (सं.) जो किसी दूसरे के उपयोग का न हो।

अनन्यवृत्ति [वि.] (सं.) जीवन का एक भाग उपाय।

अनन्यसाधारण [वि.] (सं.) सब से अनोखा या निराला।

अनन्यहृत [वि.] (सं.) सुरक्षित। जिसे कोई ले न जासके।

अनन्यार्थ [वि.] (सं.) किसी अन्य वस्तु से सम्बन्ध न रखने वाला।

अनन्याश्रित [वि.] (सं.) जो दूसरे के आधीन न हो। स्वतंत्र।

अनन्वय [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जहां उपमेय के समान उपमेय को ही बताया जाय अर्थात् एक ही वस्तु उपमेय और उपमान के रूप में कही जाय। केशवदास के मतानुसार इसे अतिशयोपमा भी कहते हैं।

अनन्वित [वि.] (सं) असम्बद्ध। अंडबंड। अयुक्त। अयोग्य। पृथक। अलगाव।

अनप [वि.] (सं.) जलरहित। बिना पानी का।

अनपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) चोट न लगना।

अनपकार [संज्ञा पु.] (सं.) अहित न करना। भोलापन। सीधापन।

अनपकारी [वि.] (हि.) अहित या अनिष्ट न करने वाला।

अनपकृत [वि.] (सं.) अपकारविहीन।

अनपच [संज्ञा पु.] (हिं.) अजीर्ण। बदहज़मी। भोजन का न पचना।

अनपढ़ [वि.] (हिं.) अशिक्षित। बिना पढ़ा-लिखा। निरक्षर। मूर्ख। अपठित। अपढ़। बेपढ़ा।

अनपत्य [वि.] (सं.) सन्तानरहित। निःसन्तान।

अनपराध [वि.] (सं.) निर्दोष। बेकसूर।

अनपराधि [वि.] (सं.) बेकसूर। निरअपराधी। निर्दोष।

अनपहृत [वि.] (सं.) चोरी न किया हुआ। अपहरण न किया हुआ।

अनपायिपद [संज्ञा पु.] (सं.) स्थिर पद। परम पद। मोक्ष।

अनपायी [वि.] (सं.) स्थिर। निश्चल। दृढ़। अचल। अनश्वर।

अनपाश्रय [वि.] (सं.) स्वाधीन। स्वतंत्र। निर्द्वन्द्व।

अनपेक्ष [वि.] (सं.) बेपरवाह। निरपेक्ष। अपेक्षा-रहित। पक्षपातरहित।

अनपेक्षत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—पक्षपातहीनता। २—बेपरवाही।

अनपेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनपेक्षत्व। पक्षपातशून्य। लापरवाही।

अनपेक्षित [वि.] (सं.) ध्यान न दिया हुआ। अपेक्षा न किया हुआ।

अनपेक्ष्य [वि.] (सं.) किसी की अपेक्षा या परवाह न करने वाला।

अनफाँस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मोक्ष। मुक्ति।

अनफा [संज्ञा पु.] (*यूनानी*) ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार सोलह योगों में से एक।

अनबन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिगाड़। विरोध। झगड़ा। झंझट। द्रोह।

[वि.] विविध। भिन्न। पृथक्। अलग।

अनबिधा, अनबंध [धा] [वि.] (हि.) बिना छेद किया हुआ। बिना बिधा हुआ।

अनबोल [वि.] (हिं.) १—मौन। न बोलने वाला। चुप्प। २—गूंगा। बेजबान। ३—अपना सुख-दुःख न प्रगट करने वाला।

अनबोलत, अनबोला [वि.] (हि.) न बोलने वाला। मौन रहने वाला। गूंगा।

अनब्याहा [वि.] (हि.) अविवाहित। बिनब्याहा। क्वारा।

अनभल [संज्ञा पु.] (हि.) बुराई। अहित। हानि

अनभल ताकना = बुराई चाहना।

अनभला [वि.] (हि.) [पु. प्र.] बुरा। निन्दित। खराब। हेय।

अनभाया, अनभावता [वि.] (हि) अप्रिय। अरुचिकर। नापसंद। जो अच्छा न लगे।

अनभिग्रह [वि] (सं.) भेदशून्य।

[संज्ञा पु.] एकरूपता। भेदशून्यता। समकक्षता।

अनभिज्ञ [वि.] (सं.) १—अनजान। अनाड़ी। मूर्ख। २—अपरिचित। नावाकिफ़।

अनभिज्ञता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १—नादानी। मूर्खता। अनाड़ीपन। अज्ञता। २—नावाकिफ़ियत। परिचय का अभाव।

अभिप्रेत [वि] (सं.) १—अनभिमत। अभिप्रायविरुद्ध। तात्पर्य से भिन्न। २—अनिष्ट। इच्छा के प्रतिकूल। नापसंद।

अनभिमत [वि] (सं) १—मत या राय के विरुद्ध। २—अनभीष्ट। नापसंद। ३—और का और। तात्पर्य विरुद्ध।

अनभिधेय [वि] (सं.) जो कहा न जा सके।

अनभिभव [संज्ञा पु] (सं.) पराजय। हार।

अनभिभूत [वि.] (सं) न हराया हुआ।

अनभिरूप [वि] (सं.) कुरूप। बेडौल। भद्दा।

अनभिलाप [संज्ञा पु] अभिलापा या इच्छा का न होना। अरुचि। आनन्दरहित।

अनभिलाषी [वि.] (हिं.) इच्छा न रखने वाला।

अनभिव्यक्त [वि.] (सं.) जो व्यक्त न हो। गुप्त। अस्पष्ट। अप्रगट।

अनभिसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) प्रयोजनरहित।

अनभिसम्बन्ध [वि.] (सं.) बिना सम्बन्ध का।

अनभिहित [वि.] (सं.) अकथित। न कहा हुआ। बिना बंधन का।

अनभीष्ट [वि] (सं.) १—इच्छा के विरुद्ध। नापसंद। २—अनिष्टकर। बुराई करने वाला

अनभो [संज्ञा पु.] (हिं.) आश्चर्य। अचम्भा। अनहोनी बात।
[वि.] अपूर्व। अलौकिक। अप्राकृतिक। विलक्षण। विचित्र। लोकोत्तर। अद्भुत।

अनभोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुलवा। हीला-हवाला। कपट। छल। धोखा।

अनभ्यसित, अनभ्यस्त [वि.] (सं.) बिना अभ्यास किया हुआ। अभ्यास न करने वाला। जो बार-बार न किया गया हो। जिसका साधन किया गया हो।

अनभ्यास [संज्ञा पु.] (सं.) अभ्यास का अभाव। मश्क न होना। साधना की त्रुटि।

अनभ्यासी [वि.] (हिं.) अभ्यासरहित। बारम्बार प्रयत्न न करने वाला। साधनाविहीन। जो अभ्यास न करे।

अनभ्र [वि.] (सं.) मेघरहित। बिना बादल का। अनभ्रवज्रपात = आकस्मिक पीड़ा। अचानक दुःख पहुँचाना।

अनम [वि.] (हिं.) उद्धत। बली। उजड्ड।

अनमद [वि.] (हिं.) अहंकाररहित। गर्वरहित। मदशून्य।

अनमन, अनमना [वि.] (हि.) १—उदास। खिन्न। सुस्त। अन्यमनस्क। २—बीमार। अस्वस्थ।

अनमनापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १—उदासी। खिन्नता। २—उदासीनता। रुखाई। बेदिली।

अनमापा [वि.] (हि.) बिना नपा। जिसे नापा न हो।

अनमारग [संज्ञा पु.] (हि.) १-कुमार्ग। बुरी राह। २—दुराचार। अन्याय। पाप। अधर्म।

अनमिख [संज्ञा पु.] (हि.) अनिमेष। बिना पलक गिराये। टकटकी बांधे हुए।

अनमिल, अनमिलत [वि.] १—बेमेल। असंबद्ध बेतुका। बेसिर पैर का। असंगत। २—पृथक। अलग। भिन्न। निर्लिप्त।

अनमिलता [वि.] (हि.) अप्राप्य। अलभ्य। न मिलने वाला।

अनमीलना [क्रि. अ.] (हि.) आँख खोलना। आँख उघारना।

अनमेल [वि.] (हि.) १—बिना मिलावट का। विशुद्ध। खालिस। २—बेमेल। असंबद्ध। बेतुका। असंगत।

अनमोल [वि.] (हि.) १—अमूल्य। मूल्यवान। कीमती। बहुमूल्य। २—सुन्दर। उत्तम।

अनम्र [वि.] (सं.) जिसमें नम्रता न हो। अविनीत। उद्धत। उद्दंड। अकड़ या ऐंठ वाला।

अनय [संज्ञा पु.] १-अन्याय। अनीति। २ विपद्। अमंगल। दुर्भाग्य।

अनयन [वि.] (सं.) नेत्रहीन। अंधा। बिना आँखों वाला। चक्षुहीन।

अनयस [वि.] (हिं.) बुरा। अनुत्तम। खराब। निकृष्ट।

अनयास [क्रि. वि.] (हिं.) अनायास। बिना प्रयास। बिना परिश्रम। सहसा। अचानक। अकस्मात्। एकाएक। बिना उद्योग।

अनरथ [संज्ञा पु.] (हि.) उलटा अर्थ। अनर्थ। उलटा मतलब।

अनरना [क्रि. स.] (हिं.) अपमान। अनादर करना।

अनरस [संज्ञा पु.] (हि.) १—रसहीनता। नीरसता। फीकापन। शुष्कता। २—रूखाई। कोप। मान। ३—मनमुटाव। अनबन। मनोमालिन्य। ४-रसहीन काव्य। ५-दुःख। खेद।

अनरसा [वि.] (हिं.) अनमना। बीमार। रुग्ण।

अनराता [वि.] (हि.) बिना रंगा हुआ। सादा।

अनरीति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—कुरीति। बुरी चाल। कुप्रथा। २—अन्यथाचार। अनुचित व्यवहार।

अनरुचि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—अरुचि। घृणा। अनिच्छा। मंदाग्नि।

अनरूप [वि.] (हिं.) १—रूपरहित। कुरूप। २—असमान। असदृश। अतुल्य।

अनर्कचतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी। जो हनुमान जी का जन्मदिन माना जाता है।

अनर्गल [वि.] (सं.) १—प्रतिबंधशून्य। बेरोक। बेधड़क। २—व्यर्थ। विचारशून्य। अंडबंड। ३—लगातार।

अनर्घ [वि] (सं) १—बहुमूल्य। कीमती २—सस्ता कम दाम का। अल्पमूल्य।

अनर्घ्य [वि.] (सं.) १—अपूज्य। पूजा के अयोग्य। बहुमूल्य। अमूल्य।

अनर्जित [वि.] (सं.) जो अर्जित न हो। जो कमाया न गया हो।

अनर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १—विपरीत अर्थ। उलटा अर्थ। २—कार्य की हानि। बिगाड़। नुकसान। अनिष्ट। ३—अधर्म से प्राप्त धन।

अनर्थक [वि] (सं.) १—निरर्थक। अर्थशून्य। २—व्यर्थ। बेमतलब। बेफायदा। निष्प्रयोजन

अनर्थकारी [वि.] (सं) १—उलटा अर्थ या मतलब निकालने वाला। २—अनिष्टकारी। हानिकारक। उपद्रवी। नुकसान पहुँचाने वाला।

अनर्थत्व [संज्ञा पु.] (सं) बेमतलबी।

अनर्थदर्शी [वि] (सं.) निरर्थक विषय पर विचार करने वाला। बुराई चाहने वाला। अहित करने वाला।

अनर्थनाशी [संज्ञा पु.] (सं.) अनर्थ का नाशक शिव।

अनर्थबुद्धि [वि] (सं.) उलटी खोपड़ी वाला। उलटी बुद्धि वाला।

अनर्थभाव [वि.] (सं.) ईर्ष्या। द्वेष।

अनर्ह [वि.] (सं) अनुपयुक्त। अयोग्य। अपात्र अनधिकारी। भद्दा।

अनल [संज्ञा पु.] (सं.) १—अग्नि। आग। २—तीन की संख्या। ३—चीता। ४—भिलावा। ५—विभीषण का मंत्री।

अनलचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं) बारूद। दारू।

अनलपंख [संज्ञा पु.] (हि) एक प्रकार की चिड़िया जिसके सम्बंध में कहते हैं। कि वह सर्वदा आकाश में उड़ती रहती है, वहीं अंडा भी देती है जो नीचे गिर कर फूट जाता है तथा उसमें से बच्चा निकल आता है और बच्चा भी उड़ने लगता है इस प्रकार वह अपने मां बाप से जा मिलता है।

अनलपंखचार [संज्ञा पु.] (हि.) हाथी।

अनलपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वदा आकाश में उड़ने वाला पक्षी जो उड़ते हुए ही अंडा देता है इसका अंडा मार्ग में ही पक कर फूट जाता है और बच्चा अपने मां-बाप से उड़ता हुआ जा मिलता है।

अनलप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की लकड़ी जिसे रतनजोत भी कहते हैं।

अनलमुख [वि.] (सं.) जिसका मुख अग्नि हो।
[संज्ञा पु.] १—देवता। २—ब्राह्मण। ३—चीता। ४—भिलावा।

अनलस [वि.] (सं.) १—निरालस्य। फुर्तीला। २—चैतन्य।

अनलायकॐ [वि.] (हि.) देखो "नालायक"।

अनलेखा [वि.] (हि) जिसका लेखा अथवा हिसाब न हो सके। बेहिसाब। अनगिनत। असंख्य।

अनल्प [वि.] (सं.) जो अल्प या थोड़ा न हो। बहुत। अधिक।

अनशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उल्कापात से भिन्न अग्निमय पत्थर जो आकाश से गिरते हैं।

अनलस [वि.] (सं.) आलस्यरहित। फुर्तीला। चंचल।

अनला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप नामक ऋषि की पत्नी थी। २—एक राक्षस कन्या जो माल्यवान की पुत्री थी।

अनलायक [वि] (सं.) नालायक। अयोग्य।

अनलेख [वि.] (हिं.) अदृश्य। अगोचर। जिसका वर्णन न लिखा जासके।

अनवकांक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—निरपेक्षता। निस्पृहता। अनिच्छा। २—जैन शास्त्रानुसार किसी परिणाम के लिये व्यग्र होना। जो जैन साधु मृत्यु की इच्छा से उपवास रखते हैं तथा घबराते नहीं उनको 'अनवकांक्षमाण' कहते हैं।

अनवकाश [संज्ञा पु.] (सं.) अवकाश या फुरसत का न होना।

अनवकाशित [संज्ञा पु.] एक पैर के बल पर खड़ा रहकर तप करने वाला ऋषि।

अनवगाह [वि.] (सं.) बहुत गहरा। अथाह। गम्भीर।

अनवगाहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्यधिक गहरी। गंभीरता।

अनवगाही [वि.] (हिं.) पार न जाने वाला।

अनवगाह्य [वि.] (सं.) गम्भीर। अथाह। अत्यधिक गहरा।

अनवगीत [वि] (सं.) अनिन्दित।

अनवग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) स्वच्छन्द। जो पकड़ में न आवे।

अनवच्छिन्न [वि.] (सं.) १—अखंडित। अटूट। २—अलग न किया हुआ। संयुक्त। जुड़ाहुआ *अनवच्छिन्न संख्या*=गणित के अनुसार ऐसी संख्या जिसका किसी वस्तु से सम्बन्ध हो यथा, दो लड़के, चार चर्खे।

अनवट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चाँदी का छल्ला जिसको स्त्रियाँ पैर के अंगूठे में पहिनती हैं। २—कोल्हू में जुतने वाले बैल की आँख का ढकन। ढोका।

अनवद्य [वि.] (सं.) अनिंद्य। निर्दोष। बेऐब। जिसकी कोई निंदा न करे।

अनवद्यता [संज्ञा स्त्री.] निर्दोषता।

अनवद्यत्व [संज्ञा पु.] निर्दोषता।

अनवद्यांग [वि.] (सं) सुंदर अंगों वाला। सुडौल। खूबसूरत।

अनवधान [संज्ञा पु.] (सं.) असावधानी। चित्तविक्षेप। अमनोयोग। गफ़लत। बेपरवाही। प्रमाद।

अनवधानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पागलपन। असावधानी। गफलत। प्रमाद।

अनवधि [वि.] (सं.) असीम। बेहद। अत्यधिक। [क्रि. वि.] निरंतर। सदैव। सर्वदा। हमेशा।

अनवय [संज्ञा पु.] (सं.) अन्वय। वंश। कुल। खानदान।

अनवर [वि.] (सं.) १—श्रेष्ठ। उत्तम। २—सभ्य। शिष्ट।

अनवरत [क्रि. वि.] (सं.) लगातार। निरन्तर। सतत। हमेशा। सदैव। अजस्र।

अनवलंब, अनवलम्ब [वि.] (सं) बेसहारे का। निराश्रय। निराधार।

अनवलंबन, अनवलम्बन [संज्ञा पु.] आश्रय में रहना। किसी के सहारे रहना।

अनवलंबित, अनवलम्बित [वि.] (सं.) बिना सहारा। बेआश्रय। निराधार।

अनवसर [संज्ञा पु.] (सं.) १—फुरसत का न होना। अवकाशरहित। २—बेमौका। कुसमय। ३—वह अलंकार जिसमें किसी कार्य का अनवसर होना अथवा करना प्रदर्शित किया जाय।

अनवसान [वि.] (सं.) जो अस्त न होता हो। अनन्त।

अनवसित [वि.] (सं.) असमाप्त। अधूरा।

अनवस्थ [वि.] (सं.) १—अस्थिर। चंचल। उतावला। अधीर। २—अव्यवस्थित। डावांडोल।

अनवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अव्यवस्था। अनियमितता। २—व्याकुलता। व्यग्रता। अधीरता। ३—न्याय का वह दोष जिसमें तर्क निकले और विवाद का अन्त न हो।

अनवस्थित [वि.] (सं.) १—अस्थिर। अधीर। व्यग्र। चंचल। २—बेसहारा। निरवलम्ब। निराधार। बेसहारा।

अनवस्थित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधीरता। अस्थिरता। चंचलता। अनिश्चयता। २—आधारहीनता। अवलम्बहीनता। ३—योगशास्त्रानुसार समाधि प्राप्त होने पर भी मन का स्थिर न होना।

अनवहित [वि.] (सं.) असावधान। बेखबर। लापरवाह। बेफिक्र।

अनवाँसना [क्रि. स.] (हिं.) नये बरतन को पहली बार काम में लाना।

अनवाँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—कटी हुई फसल का एक पूला। औंसा। मुट्ठा। २—पहिले-पहिल काम में लाया हुआ।

अनवाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बिस्वाँसी का बीसवाँ भाग। एक बिस्वे का एक बटे चार-सौवाँ भाग।

अनवाद [संज्ञा पु.] (हि.) कटुवचन। अपश कुबोल।

अनवानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचलित होने अवस्था।

अनवाप्त [वि.] (सं.) अप्राप्त। न पाया हु जो मिला न हो।

अनवाप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्राप्ति। न पान

अनवाय, अनवय [वि.] (सं.) निराकार। नि वयव। आकारविहीन।

अनशन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्नत्याग। उ वास। निराहार। व्रत। २—जैनमतानु मरने का समय निकट जान अन्नजल परित्याग।

अनशनता [संज्ञा स्त्री.] निराहार व्रत। अन जल का परित्याग। उपवास।

अनश्रु [वि.] (सं.) अश्रुरहित। जिसके आ न निकलते हों।

अनश्व [वि.] (सं.) अश्वविहीन। घोड़ा न र वाला।

अनश्वर [वि.] (सं.) नष्ट न होने वाला। स्थायी स्थिर। अटल। सदा कायम रहने वाला।

अनष्ट [वि.] (सं.) नष्ट न किया हुआ। बेटूट अखंडित। अभंग।

अनसखरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नखरी। घी पका हुआ भोजन। पक्की रसोई।

अनसठ [वि.] (हि.) अधम। नीच। छिछोरा

अनसत्त [वि.] (हि.) असत्य। झूठा।

अनसमझा [वि.] (हिं.) जिसने न समझा हो बेसमझ। जो समझ में न आया हो। अ

अनसहत [वि.] (हि.) असह्य। न सहने योग

अनसहन [वि.] (हिं.) असहनशील। जो सह सके।

अनसाना [क्रि अ] बुरा मानना। चिढ़ना अनखाना।

अनसुना [वि.] (हि.) बिना सुना हुआ। अश्रु

अनसुनी [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] बिना सुने अश्रुत।

अनसुनी करना=ध्यान न देना। सुनी बात को सुनकर भी टालना।

अनसूय (वि.) दूसरे के गुणों में दोष न देखे वाला। अछिद्रान्वेषी।

अनसूया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—ईर्षा न करना नुकताचीनी न करना। २—अत्रिमुनि पत्नी। ३—शकुन्तला की एक सखी का

अनस्तमित [वि.] (सं.) जो डूबा या अस्त हुआ हो।

अनस्तित्व [वि.] (सं.) अस्तित्वहीन। अवि मानना। नेस्ती। सत्ताभाव।

अनहंकार, अनहङ्कार [वि.] (सं.) अहंकार घमंडहीन।

अनहंकारी, अनहङ्कारी [वि] (सं) गर्वहीन । घमंड न करने वाला ।

अनहक [क्रि वि] (हि) नाहक । व्यर्थ । फिजूल अनधिकार ।

अनहदनाद [संज्ञा पु.] (हि.) दोनों कान बंद करने के पश्चात ध्यानमग्न होने पर कानों से आने वाली ध्वनि ।

अनर्हता [संज्ञा पु.] (स .) अयोग्यता ।

अनहित [संज्ञा पु] (हि.) १—अहित । अपकार । अमंगल । बुराई । हानि । २—अहितचिंतक । अपकारी । शत्रु ।

अनहितू [वि.] (हि.) बुराई सोचने वाला । अहितचिंतक । शत्रु । अमित्र । अपकारी ।

अनहीकरण [क्रि अ.] (सं) अयोग्य ठहराना ।

अनहोता [वि] (हि) १—न होने वाला । असभव । अलौकिक । २—जिस पर न हो । दरिद्र । निर्धन । गरीब ।

अनहोनी [वि] (हि.) [स्त्री प्र.] न होने वाली । असंभव । अलौकिक । अनहोनी ।

[संज्ञा स्त्री] अलौकिक घटना । असंभव बात

अनाईपठाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ससुराल से दुलहन के पहले तीन बार मायके में आने जाने के बाद के आने जाने को अनाईपठाई कहते हैं ।

अनाकनी, आनाकानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जानबूझकर टालना । टालमटोल । सुनी-अनसुनी करना ।

अनाकार [वि.] (सं.) १—बिना आकार का । २—निराकार ।

अनाकाल [संज्ञा पु.] (स) दुर्भिक्ष । अकाल ।

अनाकाश [वि.] (सं) मेघविहीन । स्वच्छ ।

अनाकुल [वि] (हि) जो घबड़ाया हुआ न हो । अव्यग्र ।

अनाक्रांत, अनाक्रान्त [वि] (स) आक्रमणरहित । अपीड़ा । रक्षा ।

अनाखर [वि.] (हि) १—अनक्षर । अक्षर न पहचानने वाला । मूर्ख । असभ्य । २—बेडौल । बेढंगा ।

अनागत [वि] (स) न आया हुआ । अविद्यमान । अनुपस्थित । अप्राप्त । २—आगे आने वाला । भावी । ३—अज्ञात । अपरिचित । ४—अनादि । अजन्मा । ५—अद्भुत ।

[संज्ञा पु.] सगीत में ताल का एक भेद ।

[क्रि. वि] अचानक । अकस्मात् । एकाएक । सहसा ।

अनागतविधाता [संज्ञा पु.] (स) आने वाली विपत्ति के निवारण का उपाय पहिले ही कर लेने वाला व्यक्ति । दूरंदेश आदमी ।

अनागतार्तवा [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह स्त्री जो रजस्वला न हुई हो । बालिका । कुमारी ।

अनागति [संज्ञा स्त्री] (स.) अप्राप्ति । नापहुँच ।

अनागम [संज्ञा पु.] (सं.) न आना । आगमन का अभाव ।

अनागम्य [वि.] (स) न पहुँचने योग्य ।

अनाघात [संज्ञा पु] (स) संगीत में एक ताल विशेष ।

अनाचरण, अनाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १—अशुद्ध आचरण । दुराचार । कदाचार । २—कुरीति । कुचाल ।

अनाचारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—दुष्टाचरण । दुराचारिता । २—कुरीति ।

अनाचारी [वि] (स) दुराचारी । आचारहीन । पतित । भ्रष्ट ।

अनाज [संज्ञा पु.] (हि.) अन्न । धान्य । दाना । नाज । गल्ला ।

अनाजी [वि] (हि) अन्न का बना ।

अनाज्ञा [वि.] (स .) बिना आज्ञा पाया हुआ ।

अनाज्ञाकारिता [संज्ञा स्त्री] (स) आज्ञा का न मानना । आदेश विमुख ।

अनाज्ञाकारी [वि] (स) हुक्म न मानने वाला । आदेश पर न चलने वाला ।

अनाड़ी [वि] (हि.) [पु प्र] गंवार । नादान । नासमझ । असभ्य । २—अकुशल । अदक्ष । अनिपुण ।

अनाढ्य [वि] (स) दरिद्र । कंगाल । असम्पन्न । निर्धन ।

अनातप [संज्ञा पु.] (स) गरमी का अभाव । धूप का न होना । छाया । शीतलता ।

अनातुर [वि] (स) १—अविचलित । धीर । जो आतुर न हो । २—स्वस्थ । रोगरहित । निरोग । तंदुरुस्त ।

अनात्म [वि] (स) आत्मारहित । जड़ ।

[संज्ञा पु] आत्मा से भिन्न वस्तु । जड़पदार्थ ।

अनात्मकदु:ख [संज्ञा पु.] (स .) १—सांसारिक दु:ख-धन्धे । भवबाधा । २—जैन मतानुसार दोनों लोकों के दु:ख ।

अनात्मज्ञ [वि] आत्मा को न जानने वाला ।

अनात्मधर्म [संज्ञा पु.] (स) शारीरिक धर्म । देह का धर्म ।

अनाथ [वि] (स) १—नाथहीन । बिना मालिक या स्वामी का । २—जिसका कोई पालन पोषण करने वाला न हो । बेमां-बाप का । लावारिस । ३—असहाय । जिसका कोई सहारा न हो । ४—दीन । दुखी ।

अनाथानुसारी [वि.] (स) दीन अनाथों को पालने वाला । अनाथों की सहायता के लिए पीछा या अनुसरण करने वाला ।

अनाथालय [संज्ञा पु.] (सं.) बिना मां-बाप के बच्चों का पालन पोषण करने का स्थान । अनाथाश्रम । यतीमखाना ।

अनाथाश्रम [संज्ञा पु.] (स) देखो 'अनाथालय' ।

अनादर [संज्ञा पु.] (स) १—निरादर । अवज्ञा । २—अपमान । तिरस्कार । अप्रतिष्ठा । ३—एक अलकार जिसमें किसी प्राप्त वस्तु के समान दूसरी अप्राप्त वस्तु से प्राप्त वस्तु का अनादर हो ।

अनादरणीय [वि] (स .) अनादर या निरादर करने के योग्य । निंद्य । बुरा ।

अनादरित [वि] (स.) तिरस्कृत । अपमानित ।

अनादि [वि.] (स) जिसका आदि न हो । जिसके समय तथा स्थान का आरम्भ न हो । विशेष-शास्त्रों के अनुसार ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीनों अनादि हैं ।

अनादित्व [संज्ञा पु.] (स .) अनादि होने का भाव । नित्यता ।

अनादिष्ट [वि] (स) आज्ञा न दिया हुआ । आदेशरहित ।

अनादृत [वि.] (स) तिरस्कृत । अपमानित । जिसका अनादर हुआ हो ।

अनादेय [संज्ञा पु] ग्रहण न करने योग्य ।

अनाधार [वि] (सं) [पु प्र] आधाररहित । निरवलंब । बेसहारा ।

अनाना [क्रि स] मंगाना । लाना ।

अनापद [संज्ञा स्त्री] (स) दुर्भाग्य का अभाव

अनापन्न [वि.] (स) अप्राप्त ।

अनापशनाप [संज्ञा पु] १—ऊटपटांग । अंट-संट । अंड़बंड । २—फिजूल की बकवाद । असंबद्ध-प्रलाप ।

अनापा [वि] (हि) १—बिना मापा हुआ । २—असीम । बेहद ।

अनाप्त [वि] (स) १—अप्राप्त । २—असत्य । झूठ । ३—अकुशल । अनाड़ी । अनिपुण । ४—अनात्मीय ।

अनाप्ति [संज्ञा स्त्री] (स) अप्राप्ति ।

अनाप्य [वि.] (स) प्राप्त न करने योग्य ।

अनाप्लुत [वि] (स .) गोता न लगाया हुआ । बिना स्नान किया हुआ । न धोया हुआ ।

अनाविद्ध [वि.] (सं.) १—बिना बिंधा । बिना छेद का । २—चोट न खाया हुआ ।

अनाम [वि.] (स) १—बिना नाम का । २—अप्रसिद्ध । अविख्यात

अनामक [वि] (सं) अविख्यात । अप्रसिद्ध । बेनाम ।

अनामत्व [संज्ञा पु] (स .) अप्रसिद्ध ।

अनामय [वि] (स) १—रोगहीन । निरामय । स्वस्थ । २—निर्दोष । दोषरहित ।

[संज्ञा पु.] १—निरोगता । २—कुशलक्षेम ।

अनामा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] बिना नाम की । अप्रसिद्धि । अविख्यात ।

[संज्ञा स्त्री.] कनिष्ठा तथा मध्यमा के बीच की अंगुली । अनामिका ।

अनामिकबंधक [संज्ञा स्त्री.] (स .) बिना नाम की रहन या बंधक । नीति विरुद्ध गिरवी या रहन

अनामिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—सबसे छोटी

अँगुली के पास वाली अँगुली। अनामा। २—कविवर निराला की एक पुस्तक का नाम।

अनामिष [वि] (सं) निरामिष। मांसरहित।

अनायक [वि] (सं) बिना नायक या नेता का।

अनायत [वि] (सं) प्रर्चलित। पास का, समीप का न फैला हुआ।

अनायत्त [वि] (सं) १—स्वतंत्र। २—जो वश में न हो। अनधीन।

अनायास [क्रि वि] बिना प्रयास या परिश्रम। बिना उद्योग। बैठे-बिठाए। सहसा। एकाएक अकस्मात्। अचानक।

अनायुध [वि] (सं) बिना हथियार का। शस्त्रविहीन।

अनार [संज्ञा पु.] (फा) १—एक वृक्ष तथा उसके फल का नाम। दाड़िम। २—एक प्रकार की आतिशबाजी या फूलझड़ी।

अनारदाना [संज्ञा पु.] (फा.) खट्टे अनार के सुखाये हुए दाने।

अनारी [वि] (हिं.) १—अनार के समान रंग वाला। २—अनाड़ी। मूर्ख। ३—एक प्रकार की मिठाई।

अनारोग्य [संज्ञा पु.] (सं) आरोग्य का अभाव। सेहत ठीक न रहना।

अनार्जव [वि] (सं) १—कुटिल। २—टेढ़ा-मेढ़ा। बेईमान।

अनार्तव [वि] (सं.) बेमौसम का। बिना ऋतु का। अनवसर।
[संज्ञा पु.] स्त्रियों के रजोधर्म की रुकावट।

अनार्तवा [वि] (सं.) [स्त्री प्र] जो ऋतुमती न हो।

अनार्य [वि.] (सं) जो आर्य न हो। म्लेच्छ। अश्रेष्ठ।

अनार्यज [संज्ञा पु.] (सं) अनार्य देश में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति।

अनार्यता, अनार्यत्व [संज्ञा स्त्री] (सं) म्लेच्छता। दुष्टता। नीचता।

अनार्ष [वि] (सं) जो ऋषि प्रणीत न हो।

अनालम्बी [संज्ञा स्त्री] शिव की वीणा का नाम

अनालाप [वि.] (सं) मौन या चुप रहने वाला।

अनालोचित [वि.] (सं) बिना समझाबूझा। बिना जाना-पहचाना।

अनावर्षण [संज्ञा पु] (सं.) अनावृष्टि। वर्षा का अभाव। सूखा।

अनावश्यक [वि] (सं) जिसकी आवश्यकता न हो। अप्रयोजनीय। बिना जरूरत।

अनावश्यकता [संज्ञा स्त्री.] (सं) आवश्यकता का अभाव। अप्रयोजनीयता। गैरजरूरत।

अनावासिक [वि] (सं) जो पूरे तौर से बसा हुआ न हो बल्कि अस्थाईरूप से कुछ दिनों के लिए कहीं से आकर रह या ठहर गया हो। अस्थायीरूप से रहने वाला।

अनाविद्ध [वि] (सं.) बिना चोट खाया हुआ।

अनाविल [वि] (सं.) स्वच्छ। साफ। निर्मल।

अनावृत [वि] (सं) १—जो ढका न हो। आवरणहीन। खुला। अनावेष्टित। २—जो घिरा न हो।

अनावृष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वर्षा का अभाव। सूखा पड़ना। अनावर्षण।

अनावेदित [वि.] (सं) प्रगट न किया हुआ।

अनाश [वि.] (सं.) १—नाशरहित। २—निराशा

अनाशी [वि.] (हिं) नाश न होने वाला। अविनाशी। नित्य।

अनाशु [वि.] (सं.) १—विलम्ब। देर। २—सुस्त। आलसी।

अनाश्रमी [वि.] (सं.) चारों आश्रमों में से किसी से सम्बन्ध न रखने वाला। आश्रमहीन। २—पतित। भ्रष्ट।

अनाश्रय [पु.] (सं.) बेसहारा। अवलम्बरहित। निराश्रय।

अनाश्रित (सं.) बिना सहारे का। आश्रयहीन। निरवलम्ब।

अनासती [संज्ञा स्त्री] (डि) कुसमय। अशुभवेला।

अनासिक [वि.] (सं.) नकटा। बिना नाक का।

अनास्था [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-अश्रद्धा। आस्था या श्रद्धा का अभाव। २—अनादर। तिरस्कार। निरादर। अप्रतिष्ठा।

अनास्वाद [वि] (सं.) [पु. प्र] स्वादविहीनता। बेस्वाद। फीकापन।

अनास्वादित [वि] (सं.) बिना स्वाद लिया हुआ। बेचखा।

अनाह [संज्ञा पु] अफरा। पेटफूलना।
[क्रि. वि] व्यर्थ। फिजूल। झूठमूठ।

अनाहक [क्रि वि] (हिं) नाहक। बेफायदे। व्यर्थ।

अनाहत [संज्ञा पु.] (सं.) १—शब्दयोगानुसार वह नाद जो कानों को बंद कर लेने से सुनाई देता है। २—हठयोग में भीतर के छ चक्रों में से एक। ३—नवीन वस्त्र। ४—दुबारा किसी पदार्थ को अमानत में देना या धरोहर में रखना।
[वि] जिस पर आघात न किया गया हो। बिना चोट लगा हुआ।

अनाहतनाद [संज्ञा पु.] (सं.) दोनों कानों को दोनों अंगूठों से बन्द करने पर सुनाई पड़ने वाला शब्द या नाद।

अनाहद-वाणी [संज्ञा स्त्री.] आकाशवाणी। शून्य से आये हुए शब्द।

अनाहार [संज्ञा पु.] (सं.) उपवास। अनशन। भोजन का त्याग।
[वि] १—जिसने कुछ खाया न हो। २—जिसमें कुछ खाया न जाय।

अनाहारमार्गणा [संज्ञा स्त्री] (सं) जैनियो एक व्रत।

अनाहारी [वि] (हिं) उपवास किया हुआ।

अनाहार्य [वि.] (सं.) भोजन के अयोग्य।

अनाहिताग्नि [वि] जो अग्निहोत्री न हो।

अनाहूत [वि.] (सं) बिन बुलाया। अनिमन्त्रि

अनाह्लाद [वि] (सं) अप्रसन्न। उदास।

अनिकेत [वि] (सं) १—बेघर का। गृहही २—परिव्राजक। सन्यासी। ३—च फिरता रहने वाला। खानाबदोश।

अनिगीर्ण [वि.] (सं) जो निगला न गया।

अनिग्रह [वि.] (सं.) १—बन्धनरहित। असीम। अनवरोध। ३—पीड़ारहि निरोग। ४—जिसने दंड न पाया हो। दंड के योग्य न हो।
[संज्ञा पु.] दंड अथवा पीड़ा का अभा अनवरोध।

अनिच्छ [वि.] (सं) इच्छारहित। तृप्त।

अनिच्छा [संज्ञा स्त्री] (सं.) इच्छा या अ लाषा का अभाव। अरुचि। अनचाहा

अनिच्छित [वि] (सं) जिसे चाह न हो। चाहा २—अरुचिकर।

अनिच्छु, अनिच्छुक [वि.] (सं.) आकांक्षा अभिलाषा न रखने वाला। निराकांक्षी। चाह न हो।

अनिंद, अनिन्द [वि] (हिं) निर्दोष। न्दनीय। निष्कलंक।

अनिंदित, अनिन्दित [वि.] (सं.) [पु अकलंकित। निर्दोष। उत्तम। पवित्र।

अनिंदनीय, अनिन्दनीय [वि] (सं) के अयोग्य। निर्दोष। निष्कलंक।

अनिंद्य, अनिन्द्य [वि] (सं) [पु. प्र.] निन्दा के अयोग्य। २—उत्तम। पवित्र। सज्जन।

अनित [वि.] (हिं) अनित्य। जो नित्य अस्थायी। अध्रुव।

अनित्य [वि] (सं) १—अस्थायी। सदा रहने वाला। २—नश्वर। ३—असत्य। मिथ्या। झूठा।

अनित्यता [संज्ञा स्त्री] (सं) १— नित्य न रहने की अवस्था। २— क्षणभंगुरता।

अनित्यत्व [संज्ञा पु] (सं) १— अध्रुव अवस्था। २—क्षणभंगुरता। रता।

अनिद्र [वि] (सं) निद्राविहीन। जिसे आवे।
[संज्ञा पु.] निद्रा न आने का एक रोग। गर।

अनिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निद्रा न आने का अभाव। जागरण।

अनिद्रित [वि] (सं.) अजागृत। निद्रारहित। जो सोता हुआ न हो।

अनिप [संज्ञा पु] (हिं) सेनापति। सेनानायक। सेना का अफसर।

अनिपुण [वि] (सं) अकुशल। जो प्रवीण न हो। अपटु। मूर्ख।

अनिबद्ध [वि.] (सं.) जो बँधा हुआ न हो।

अनिभृत [वि] (सं.) १—छिपा न हो। २—अगुप्त। प्रकट। ३—असंकोची। बेतकल्लुफ

अनिभ्य [वि.] (सं.) धनहीन। कंगाल।

अनिमंत्रित, अनिमन्त्रित [वि.] (सं.) निमंत्रण न दिया हुआ। अनाहूत।

अनिमा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अणिमा। अति सूक्ष्म परिमाण।

[संज्ञा पु.] शौच कराने की एक डाकटरी क्रिया। *एनिमा।*

अनिमिख [वि.] (हि.) टकटकी लगाया हुआ।

[क्रि. वि.] निरन्तर। लगातार। बिना पलक गिराये।

अनिमित्त [वि.] (सं.) अकारण। बिना हेतु का

[क्रि. वि.] १—बिना कारण। बिना किसी प्रयोजन के। झूठमूठ।

अनिमित्तक [वि.] (सं.) १—बिना कारण या हेतु का। २—बिना प्रयोजन।

अनिमिष [वि.] (सं.) निमेषरहित। आँख न झपकाने वाला।

[क्रि. वि.] १—बिना पलक गिराये। एकटक। २—निरन्तर।

[संज्ञा पु.] १—देवता। मछली।

अनिमिषाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति। देवगुरु।

अनिमेष [वि.] (सं.) स्थिरदृष्टि। निमेषरहित। टकटकी के साथ।

[क्रि. वि.] १—एकटक। बिना पलक गिराए। २—निरन्तर। बराबर।

अनियंत्रित, अनियन्त्रित [वि.] (सं.) १—अबद्ध। बिना रोकटोक का। प्रतिबन्धरहित। २—मनमाना।

अनियत [वि.] (सं.) १—अनिश्चित। जो नियत न हो। अनिर्धारित। २—अदृढ़। अस्थिर। ३—असीम। अपरिमित। ४—असाधारण।

अनियतात्मा [वि.] (सं.) १—चंचल चित्त वाला। डाँवाडोल मन का। २—जिसका मन या आत्मा वश में न हो। अजितेन्द्रिय।

अनियम [संज्ञा पु.] (सं.) व्यतिक्रम। बेकायदगी। नियम का अभाव।

अनियमित [वि] (सं) १—नियमरहित। अव्यवस्थित। बेकायदा। २-अनिश्चित। अनिर्दिष्ट

अनियमिता [संज्ञा पु.] (सं.) व्यतिक्रम। अव्यवस्था।

अनियाउ [संज्ञा पु.] (हि.) अन्याय।

अनियारा [वि.] (हिं.) नुकीला। कटीला। तीक्ष्ण। पैना। तीखी धार वाला।

अनियारी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] नुकीला। तीखी कटीली।

अनियुक्त [वि.] (सं.) किसी काम में न लगाया हुआ।

अनियोगी [वि.] (हिं.) संबन्ध न रखने वाला।

अनिरवा [संज्ञा पु.] (हि.) इधर उधर भटकने वाला पशु। आवारा पशु।

अनिरुद्ध [वि.] (सं.) न रोका हुआ। अबाध। अबद्ध। बेरोक।

[संज्ञा पु.] प्रद्युम्न के पुत्र तथा श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम जिनका विवाह उषा से हुआ था

अनिरूपित [वि.] (सं.) वर्णन न किया हुआ। अवर्णित।

अनिर्जित [वि.] (सं.) न जीता हुआ।

अनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) निर्णय का अभाव। अनिश्चय।

अनिर्णित [वि.] (सं.) अनिश्चित।

अनिर्दशा [वि.] (सं.) [स्त्री. पु.] जिसको बच्चा दिये दस दिन हुए हों (गाय)।

अनिर्दिष्ट [वि.] (सं.) अनिरूपित। अवर्णित। अनिर्वाचित। अनिर्धारित। २—अनिश्चित। अनियत। ३—अपरिमित। असीम।

अनिर्देश्य [वि.] (सं.) अनिर्वचनीय। निर्गुण। निर्विशेष।

अनिर्धारित [वि.] (सं.) अनिश्चित। बिना स्थिर किया हुआ।

अनिर्धार्य [वि.] (सं.) जिसका निरूपण न हो सके। जिसके विषय में कोई बात तय न की जा सके। जिसका लक्षण स्थिर न किया जा सके।

अनिर्बंध, अनिर्बन्ध [वि.] (सं.) १—बन्धनरहित। अबाध। बेरोकटोक। २—स्वाधीन। स्वतन्त्र।

अनिर्मल [वि.] (सं.) मलिन। मैला। गन्दा।

अनिर्वचनीय [वि.] (सं.) जिसका वर्णन न किया जा सके। अकथ्य। अकथनीय। अवर्णनीय। अगम्य।

[संज्ञा पु.] परमात्मा। ब्रह्मा।

अनिर्वाच्य [वि.] (सं.) १—जिसका वर्णन न हो सके। निर्वाचन के अयोग्य। जिसके सम्बन्ध में कुछ स्थिर न हो सके। २—जो चुनाव के अयोग्य हो।

अनिर्वाह [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाह का अभाव। आय की शून्यता।

अनिर्वाह्य [वि] (सं) निर्वाह न करने योग्य।

अनिर्वृत्त [वि.] (सं.) दुखित। बुरी स्थिति का।

अनिर्वृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुःख। बुरी स्थिति।

अनिल [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। वायु। हवा।

अनिलकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) १—हनूमान। पवनकुमार। २—जैनशास्त्र के अनुसार भुवनपति देवताओं का एक भेद।

अनिलसखा [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

अनिलाशी [वि.] हवा को पीने वाला।

[संज्ञा पु.] सर्प। सांप।

अनिवर्ती [वि.] (सं.) १—पीछे न लौटने वाला। २—तत्पर। अध्यवसायी। ३—पीठ न दिखलाने वाला। वीर।

अनिवारित [वि.] (सं.) बिना रोका अथवा हटाया हुआ।

अनिवार्य [वि.] (सं.) १—अवश्यम्भावी। जो अवश्य हो। २—अटल। न हटाने योग्य। ३—परमावश्यक। जिसके बिना कार्य न चल सके।

अनिवृत्ति-बादर [वि.] (सं.) जैन-शास्त्रानुसार एक कर्म जिसके अनुसार परिणाम दूर हो जाय परन्तु वासना अवशेष रहे।

अनिवेदित [वि.] (सं.) अवर्णित। अकथित।

अनिश [क्रि. वि.] (सं.) अनवरत। लगातार। निरन्तर।

अनिश्चित [वि.] (सं.) जिसका निश्चय न किया न किया हो। अनियत। अनवधारित। अनिर्दिष्ट। जिसके विषय में कुछ तय न किया हो

अनिषिद्ध [वि.] (सं.) जिसका निषेध न किया गया हो। बिना रोकटोक का।

अनिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) अहित। बुराई। अमंगल। इच्छा के विपरीत कार्य। खराबी। हानि

[वि.] इच्छा के विपरीत। जो इष्ट न हो। अवांछित। अनभिलषित।

अनिष्टकर [वि.] (सं.) अनिष्ट करने वाला। अहितकारी। हानिकारक।

अनिष्टसूचक [वि.] (सं.) अनिष्ट या अपकार की सूचना देने वाला।

अनिष्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपूर्णता। असफलता। नाकामयाबी।

अनिष्पन्न [वि.] (सं.) १—अपूर्ण। अधूरा। २—असम्पन्न। असिद्ध।

अनी [संज्ञा स्त्री.] (हि) १—नोक। सिरा। कोर। २—नाव अथवा जलयान का अग्रभाग। माँगा। माथा। ३—जूते की नोक। ४—पानी से निकला हुआ भूमि का अग्रभाग। ५—खेद। ग्लानि। ६—झुण्ड। समूह। दल

अनीक [संज्ञा पु] सेना। फौज। समूह। झुंड। २—लड़ाई। संग्राम।

[वि] बुरा। खराब। अनुत्तम।

अनीकिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अक्षौहिणी सेना का दसवाँ भाग जिसमें २१८७ हाथी, ५६६१ घोड़े तथा १०६३५ पैदल होते हैं। २—कमलिनी। नलिनी।

अनीच [वि] (सं.) प्रतिष्ठित। जो नीच न हो। माननीय।

अनीठ [वि] (हिं.) अनिष्ट। अनिच्छित। २—खराब। बुरा।

अनीत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्याय। अनीति।

अनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दुर्नीति। अन्याय। बेइंसाफी। नीति का विरोध। २—शरारत। ३—अत्याचार। अंधेर।

अनीतिज्ञ [वि.] (सं.) नीति न जानने वाला। नीति में अनिपुण।

अनीतिमान् [वि.] (सं.) अन्याय करने वाला। अत्याचारी।

अनीप्सित [वि] (सं.) अनिच्छित। अन-अभिलषित।

अनीलवाजी [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेत घोड़े वाला व्यक्ति। अर्जुन।

अनीश [संज्ञा पु.] (सं.) १—विष्णु। २—ईश्वर से भिन्न वस्तु। जीव। माया।
[वि] १—ईश्वर रहित। बिना स्वामी का। २—अनाथ। असमर्थ। ३—जिसके ऊपर कोई न हो।

अनीशत्व [संज्ञा पु.] (सं.) बेबसी।

अनीश्वर [वि.] (सं.) प्रभुहीन। बिना मालिक का। ईश्वर से भिन्न।

अनीश्वरता, अनीश्वरत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईश्वर की अनुपस्थिति। ईश्वर का न होना।

अनीश्वरवाद [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर को न मानने का मत। नास्तिकता। मीमांसा।

अनीश्वरवादी [वि.] (सं.) ईश्वर को न मानने वाला। नास्तिक। मीमांसक।

अनीस [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अनीश। अनाथ २—ईश्वर-रहित। ३—अधिकार-रहित। ४—स्वतन्त्र।

अनीसून [संज्ञा पु.] (यू.) सौंफ।

अनीह [वि.] (सं.) १—इच्छारहित। निस्पृह। २—निश्चेष्ट। अचेत।

अनीहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—निस्पृहता। अनिच्छा। २—बेपरवाही। निश्चेष्टता।

अनु [उप.] (सं.) १—शब्द के आगे लगने से—१—पीछे। २—सदृश। ३—साथ। ४ प्रत्येक ५—बारंबार।

अनुकंपक, अनुकम्पक [वि.] (सं.) दयालु। कृपालु। अनुग्रह करने वाला।

अनुकंपन, अनुकम्पन [वि.] (सं.) दया। कृपा। महरबानी।

अनुकंपा, अनुकम्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दया। कृपा। अनुग्रह। महरबानी। २—सहानुभूति। हमदर्दी।

अनुकंपित, अनुकम्पित [वि.] (सं.) जिस पर कृपा की गई हो। अनुगृहीत।

अनुक [संज्ञा पु.] (सं.) कामुक। कामी। विषयी।

अनुकथन [संज्ञा पु.] (सं.) वार्त्तालाप। बातचीत। कहावत। कथनोपकथन।

अनुकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—नकल। देखा-देखी काम करना। समान आचरण। २—पीछे आने वाला।

अनुकरणीय [वि.] (सं.) अनुकरण या नकल करने योग्य।

अनुकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनुकरण करने-वाला। नकल करने वाला। २—आज्ञाकारी। हुक्म पर चलने वाला।

अनुकलन [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे की कोई बात लेकर तथा उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना। एडाप्टेशन।

अनुकल्पित [वि.] (सं.) ध्यान में आया हुआ। पीछे किया हुआ।

अनुकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—गाड़ी या रथ के नीचे का भाग। तला। २—खिंचाव। आकर्षण। ३—कर्त्तव्य का देर से पालन। देवता का आवाहन।

अनुकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आकर्षण। खिंचाव। २—आवाहन।

अनुकांक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकांक्षा। इच्छा।

अनुकांक्षित [वि.] (सं.) इच्छित। आकांक्षित।

अनुकांक्षिणी [वि.](सं.)[स्त्री. प्र.] चाहने वाली। इच्छा रखने वाली।

अनुकांक्षी [वि.] (सं.) इच्छा रखने वाला। आकांक्षी। चाहने वाला।

अनुकार [संज्ञा पु.] (सं.) अनुकरण। नकल।

अनुकारी [वि.] (सं.) १—नकलची। अनुकरण करने वाला। २—आज्ञाकारी।

अनुकीर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णन्। गुणगान। यश का बखान।

अनुकूल [वि.] (सं.) १—अनुसार। मुआफ़िक। २—पक्ष में रहने वाला। हितकर। ३-प्रसन्न।
[क्रि. वि.] ओर। तक।
[संज्ञा पु.] १—एक ही स्त्री पर अनुरक्त रहने वाला। २—एक काव्यालंकार जिसमें प्रतिकूल के द्वारा अनुकूल पदार्थ की सिद्धि प्रदर्शित की जाय।

अनुकूलता [संज्ञा स्त्री.] १—अविरुद्धता। अप्रतिकूलता। २—पक्षपात। सहायता।

अनुकूलन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अप्रतिकूलता। अविरुद्धता। २—सहायता। हितकारिता। प्रसन्नता।

अनुकूलना [क्रि. स.] (हिं.) १—सहायक होना। अप्रतिकूल होना। २—पक्ष में होना। हितकर होना। ३—प्रसन्न होना।

अनुकूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्ष वाला वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (भ+त २ गु) होते हैं।

अनुकृत [वि.] (सं.) अनुकरण किया नकल किया हुआ।

अनुकृति [संज्ञा स्त्री. [illegible] नकल। २—एक [illegible] लंकार जिसमें पदार्थ के कारणांतर से दूसरे पदा अनुसार हो जाय।

अनुक्त [वि.] (सं.) अकथित। बिना कहा

अनुक्तम [संज्ञा पु.] (सं.) अनुगतक्रम। सिलसिला। अनुगत शृंखला। पिछला हुआ तार।

अनुक्ति [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] बिना कही

अनुक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम। सिलसि शृंखला।

अनुक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) पीछे को चल

अनुक्रमणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १— सिलसिला। २—सूचिका। सूचि तालिका। ३—कात्यायन का एक ग्रन्थ।

अनुक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं.) अनुकरण। न

अनुक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) दया। अनु अनुग्रह। महरबानी।

अनुक्षण [क्रि. वि.] (सं.) १—प्रतिक्षण। लगातार। निरन्तर।

अनुग [वि.] (सं.) अनुयायी। अनुगामी। पीछे चलने वाला।
[संज्ञा पु.] सेवक। चाकर। नौकर।

अनुगणित [वि.] (सं.) गिनती किया हुआ।

अनुगत [वि.] (सं.) १—पीछे चलने वा अनुयायी। अनुगामी। २—अनुकूल। फिक। अनुसार।

अनुगतार्थ [वि.] (सं.) लगभग एक जैसे वाला। प्रायः समान अर्थ वाला।

अनुगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अनुग अनुसरण। २—अनुकरण। नकल। अंतिम अवस्था। मृत्यु।

अनुगम, अनुगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १— सरण। २—विधवा का मृत पति के साथ सती होना। ३—समान आचरण। संभोग। सहवास। ५—निष्कर्ष।

अनुगांग [वि.] (हिं.) गंगा के अंचल का।

अनुगामी [वि.] (सं.) १—अनुसरण वाला। २—समान आचरण करने वा ३—आज्ञाकारी। संभोग करने वाला।

अनुगीत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का

अनुगीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के पर्व के १६ से ६२ तक का नाम।

अनुगुण [वि.] (सं.) समान गुण वाला।

[संज्ञा पु] एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी पदार्थ के पहिले गुण का अन्य पदार्थ के संसर्ग से बढ़ा हुआ दरसाया जाय।

अनुगुप्त [वि] (सं.) छिपा हुआ। अप्रगट। ढँका हुआ।

अनुगृहीत [वि] (सं.) १—जिस पर कृपा की गई हो। उपकृत। २—कृतज्ञ।

अनुग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख दूर करने की आकांक्षा कृपा। दया। अनुकंपा। २—अनिष्टनिवारण।

अनुग्राहक [वि.] (सं.) अनुग्रह करने वाला। कृपालु। सहायक। उपकारी।

अनुग्राही [वि.] (हि.) अनुग्रह करने वाला। दयालु। उपकारी।

अनुघत [संज्ञा पु.] (सं.) नाश। संहार।

अनुचर [संज्ञा पु.] (सं.) १—पीछे चलने वाला नौकर। सेवक। दास। २—सहचर। साथी।

अनुचारक [संज्ञा पु.] (सं.) अनुगामी। सेवक। सहचर। साथी।

अनुचारी [वि.] (सं.) पीछे चलने वाला।
[संज्ञा पु.] सेवक। नौकर। चाकर। दास।

अनुचिंतन [संज्ञा पु.] (सं.) १—विचार। गौर। २—भूली हुई बात को चित्त में लाना।

अनुचिंता, अनुचिन्ता [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) बराबर चिन्ता। निरन्तर चिंता।

अनुचित [वि.] (सं.) अयोग्य। अयुक्त। बुरा। अकर्तव्य। खराब।

अनुच्च [वि.] (सं.) नीचा। जो ऊंचा न हो।

अनुच्छिन्न [वि.] (सं.) जो कटा हुआ न हो।

अनुच्छिष्ट [वि.] (सं.) जो झूठा या उच्छिष्ट न हो

अनुच्छेद [संज्ञा पु] (सं.) १—साहित्यिक लेख। २—परिच्छेद। भाग। ३—पुस्तक में लेख के किसी प्रकरण में वह विशिष्ट विभाग जिसमें किसी एक विषय या अंग का एक साथ विवेचन होता है। *पैराग्राफ*। ४—नियमावली, विधान, संविदा आदि का कोई एक विशिष्ट अंग जिसमें किसी एक विषय पर प्रतिबंध आदि का एक साथ विवेचन होता है। आर्टिकल।

अनुज [वि] (सं.) जो बाद में पैदा हुआ हो।
[संज्ञा पु.] १—छोटा भाई। २—एक पौधा।

अनुजन्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी बहिन।

अनुजा [संज्ञा स्त्री.] छोटी बहिन।

अनुजात [संज्ञा स्त्री] (सं) छोटी बहिन। अनुजा।

अनुजीवी [वि] (सं) आश्रित। आश्रय पर जीने वाला।
[संज्ञा पु] सेवक। नौकर। चाकर।

अनुज्ञप्त [वि] (सं.) जिसके लिए स्वीकृति मिल गई हो।

अनुज्ञप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी कार्य को करने की स्वीकृति या अनुज्ञा का भाव। २—अनुमति-पत्र। *सैंक्शन*। *लाइसेंस*।

अनुज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—आज्ञा। हुकुम। २—अनुमति। इजाजत। वह अनुमति या स्वीकृति जो किसी अधिकारी से किसी कार्य के लिये प्राप्त हो। ३—एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसे प्राप्त करने की आकांक्षा प्रदर्शित की जाय।

अनुज्ञापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अधिपत्र। वारंट। पकड़ने का हुकुमनामा।

अनुज्ञात [वि.] (सं.) स्वीकृत। अनुमतिप्राप्त।

अनुज्ञापक [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनुमति देने वाला। २—अनुज्ञापत्र या अधिपत्र देने वाला व्यक्ति।

अनुज्ञापन [संज्ञा पु] (सं.) आज्ञा। आदेश। हुक्म।

अनुज्ञापित [वि.] (सं.) देखो 'अनुज्ञप्त'।

अनुतप्त [वि.] (सं.) १—तपा हुआ। गर्म। २—दुखी। खेदपूर्ण। रंजीदा।

अनुताप [संज्ञा पु.] (सं.) १—तपन। जलन। गर्मी। २—दुःख। खेद। रंज। ३—पछताना। अफसोस।

अनुतापी [वि.] (सं.) पछतावे में पड़ा हुआ।

अनुतोष [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी काम से होने वाला संतोष। २—किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने के लिये दिया जाने वाला धन। *ग्रैटिफिकेशन*।

अनुतोषण [संज्ञा पु.] (सं) १—किसी को अनुतोष करने की क्रिया या भाव। किसी को संतुष्ट अथवा प्रसन्न करना। २—किसी को कुछ देकर अपने अनुकूल करना। *ग्रैटिफिकेशन*।

अनुत्मक [वि] (सं.) अनुत्सुक। अभिलाषारहित

अनुत्तम [वि.] (सं.) सर्वोत्तम। सर्वोत्कृष्ट। सब से अच्छा।

अनुत्तर [वि.] (सं.) १—निरुत्तर। लाजवाब। २—सर्वश्रेष्ठ। ३—मौन।

अनुत्तरित [वि.] (सं.) जिसका उत्तर न दिया गया हो।
[संज्ञा पु] जैन देवताओं का एक भेद।

अनुत्तान [वि.] (सं.) मुँह नीचे किये हुए। अधोमुख।

अनुत्पति [संज्ञा स्त्री] (सं.) उत्पत्ति का अभाव। पैदा न होना।

अनुत्पन्न [वि.] (सं) जो उत्पन्न न हुआ हो। असमाप्त।

अनुत्साह [संज्ञा पु] (सं) उत्साह-हीनता। हौसला न होना।

अनुत्सुक [वि.] (सं.) उत्साहरहित। उत्कंठारहित। हौसला न होना।

अनुत्सुकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्कंठा या उत्साह का अभाव।

अनुदक [वि.] (सं) बिना पानी का। जलरहित।

अनुदय [संज्ञा पु] (सं) उदय न होना। न देख पड़ना।

अनुदर [वि] (सं) दुबला-पतला। कृशोदर।

अनुदात्त [संज्ञा पु] (सं) १—जो उच्चाशय न हो। छोटा। मामूली। तुच्छ।

अनुदान [संज्ञा पु.] (सं) १ उपहार। २—दान। ३—सहायता देने का कार्य।

अनुदार [वि.] (सं.) जो उदार न हो।

अनुदित [वि.] (सं) १—अरुणोदय का समय। पौ फटने की वेला। २—अनुवाद किया हुआ।

अनुदिन [क्रि. वि] (सं.) नित्यप्रति। हर रोज। प्रतिदिन।

अनुदिवस [क्रि. वि] प्रतिदिन। हर रोज।

अनुदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुकूलदृष्टि। दया-दृष्टि।

अनुदेश [संज्ञा पु] (सं.) १—शिक्षा। उपदेश। २—हिदायत। आज्ञा।

अनुद्धत [वि.] (सं) जो उद्धत न हो। अप्रगल्भ। सौम्य। शान्त। २—विनीत।

अनुद्धर्ष [संज्ञा पु] (सं) उद्वेग का अभाव। शान्ति।

अनुद्धार [संज्ञा पु] उद्धार का अभाव। छुटकारा पाना।

अनुद्धृत [वि] (सं.) उद्धार किया हुआ। अप्रमाणित।

अनुद्यत [वि.] (सं) उद्यत न हो। आलसी।

अनुद्यम [संज्ञा पु.] (हि) उद्यमहीनता। बेकारी। श्रम का अभाव।

अनुद्यमी [वि.] (हि) उद्योग न करने वाला। परिश्रम न करने वाला।

अनुद्योग [संज्ञा पु] (सं) उद्योग या परिश्रम का का अभाव।

अनुद्योगी [वि.] (सं.) उद्योग न करने वाला। सुस्त। अहदी।

अनुद्वाह [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह का न होना।

अनुद्विग्न [वि.] (सं.) व्याकुलतारहित। बिना उद्वेग या व्याकुलता का।

अनुद्वेग [संज्ञा पु.] (सं.) व्यग्रता का अभाव। घबड़ाहट न होना। बेफिक्री।

अनुधावन [संज्ञा पु] (सं.) १—अनुसरण। पीछे चलना। २—अनुकरण। नकल। ३—खोज। अनुसंधान। ४—विचार। चिन्तन।

अधावित [वि.] (सं) पीछे चलने वाला। अनुसरण करने वाला।

अनुध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) पिछली चिन्ता या सोच।

अनुनय [संज्ञा पु.] (सं.) १—विनती। विनय। प्रार्थना। २—मानना।

अनुनयमान [वि.] (सं.) प्रसन्न करने वाला। सम्मान प्रदान करने वाला।

अनुनयी [वि.] (सं.) विनती। सभ्य।

अनुनाद [संज्ञा पु.] (सं.) गूँज। प्रतिध्वनि। गुंजार।

अनुनादित [वि.] (सं.) प्रतिध्वनित। गूंजा हुआ। गुंजरित।

अनुनासिक [वि.] (सं.) मुंह तथा नाक से बोला जाने वाला (अक्षर) यथा ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार।

अनुनीत [वि.] (सं.) १—विनीत। २—पीछे लिया हुआ।

अनुनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विनीतभाव। नम्रता। सभ्यता।

अनुन्नत [वि.] (सं.) जो उन्नत न हो। नीच।

अनुन्मत्त [वि.] (सं.) जिसे नशा न हो। जो पागल न हो। समझदार।

अनुन्मुक्त [वि.] (सं.) न छोड़ा हुआ। न किया हुआ।

अनुपकार [संज्ञा पु.] (सं.) १—उपकार या भलाई का अभाव। २—अपकार। हानि।

अनुपकारी [वि.] (सं.) १—अपकार करने वाला। हानि करने वाला। २—निकम्मा। फजूल।

अनुपगत [वि.] (सं.) दूर का। पास न पहुँचा हुआ।

अनुपज [संज्ञा पु.] (हि.) उपज या पैदावार का अभाव।

अनुपतित [वि.] (सं.) गिरा हुआ।

अनुपथ [वि.] (सं.) सीधे मार्ग से जाने वाला।

अनुपद [क्रि. वि.] (सं.) १—पीछे-पीछे। कदम-ब-कदम। २—अनन्तर।

अनुपदिष्ट [वि.] (सं.) अशिक्षित।

अनुपधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंचकता। ठगी। धूर्त्तता।

अनुपनीत [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो।

अनुपन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) निश्चय या प्रमाण का अभाव। अप्रमाणित।

अनुपपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असमाधान। असंगति। २—अप्राप्ति। असमर्थता।

अनुपपन्न [वि.] (सं.) अयुक्त। जो प्रमाणित न हुआ हो। अप्रतिपादित।

अनुपभुक्त [वि.] (सं.) उपभोग या व्यवहार में न लाया हुआ। बिना इस्तेमाल किया हुआ।

अनुपम [वि.] (सं.) उपमारहित। अनूठ। बेजोड़। अति उत्कृष्ट। बहुत सुंदर। जिसकी टक्कर का दूसरा न हो।

अनुपमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनूठापन। उपमा का अभाव। अति उत्कृष्ट होना।

अनुपमित [वि.] (सं.) उपमारहित। अनूठा। अनोखा।

अनुपमेय [वि.] (सं.) अनुपम। उपमारहित। अनूठा। बेमिसाल।

अनुपयुक्त [वि.] (सं.) १—अयोग्य। बेठीक। बेढब। उपयोग में न लाया हुआ।

अनुपयुक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अयोग्यता।

अनुपयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १—उपयोग का अभाव। काम में न लाना। दुर्व्यवहार।

अनुपयोगिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अयोग्यता। निरर्थकता। बेकारी।

अनुपयोगी [वि.] (सं.) बेकाम। बेकार। व्यर्थ का। फिजूल।

अनुपलक्षित [वि.] (सं.) विशेष रूप से न बताया हुआ।

अनुपलब्ध [वि.] (सं.) १—अप्राप्त। न मिला हुआ। अविदित।

अनुपलब्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्राप्ति। न मिलना। लाभ का अभाव।

अनुपवीत [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो।

अनुपशय [संज्ञा पु.] (सं.) रोगविज्ञान के पाँच नियमों में से एक जिसमें आहार-विहार के परिणाम को देखकर रोग का निश्चय किया जाता है।

अनुपशान्त [वि.] (सं.) अशान्त। अस्थिर।

अनुपस्थित [वि.] (सं.) अविद्यमान। गैरहाजिर। जो मौजूद न हो।

अनुपस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अविद्यमानता। उपस्थित का अभाव। गैरहाजरी। नामौजूदगी।

अनुपहत [वि.] (सं.) चोट न खाया हुआ। बिना चोट लगा।

अनुपात [संज्ञा पु.] (सं.) १—गणित की दो राशियों में सम्बन्ध दिखलाने की क्रिया। २—किसी एक वस्तु का मान, माप, उपयोगिता आदि की तुलना के विचार से अन्य वस्तु से रहने वाला सम्बन्ध। तुलनात्मक स्थिति।

अनुपातक [संज्ञा पु.] (सं.) चोरी, झूठ बोलना, परस्त्री गमन आदि का पाप जो ब्रह्महत्या के समान समझा जाता है।

अनुपातकी [वि.] (सं.) बहुत बड़ा पाप करने वाला।

अनुपादक [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्र के अनुसार ऐसा तत्व जो आकाश से भी सूक्ष्म होता है।

अनुपान [संज्ञा पु.] (सं.) औषधि के साथ या ऊपर खाई जाने वाली वस्तु।

अनुपाय [वि.] (सं.) जिसके पास जिसका कोई उपाय न हो।

अनुपालन [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी आज्ञा का ठीक पालन। २—किसी पत्र आज्ञा को उचित स्थान पर पहुँचाने का (तामील, *सरविस*)।

अनुपासन [संज्ञा पु.] (सं.) उपासना का

अनुपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) शिष्य। चेला।

अनुपूरक [वि.] (सं.) १—किसी के साथ अथवा मिलकर उसकी पूर्ति करने २—छूट, त्रुटि आदि को पूरा करने के पीछे से बढ़ाया हुआ। परिशिष्ट।

अनुपूरक-अनुदान [संज्ञा पु.] (सं.) १—कि साथ लग या मिलकर सहायता देने का २—किसी काम में रही छूट, त्रुटि आदि पूरा करने या बढ़ाने में सहायता देना।

अनुपूरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु में किसी प्रकार की त्रुटि या कमी पूरी करने लिये पीछे से उसमें कुछ और जोड़ मिलाना या बढ़ाना। *सप्लिमेंट*।

अनुपूर्व [वि.] (सं.) क्रमानुसार। यथा सिलसिलेवार। अनुक्रमिक।

अनुप्रपन्न [वि.] (सं.) पीछे पड़ा हुआ।

अनुप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिबिम्ब का प

अनुप्राणन [संज्ञा पु.] (सं.) (किसी में) डालना या जीवन का संचार करना।

अनुप्रापण [संज्ञा पु.] (सं.) (कर, दंड, आदि रूप में) प्राप्तव्य धन एकत्रित करना उगाहना। वसूली करने का काम। वसूली

अनुप्राप्त [वि.] (सं.) एकत्रित किया या उ हुआ। वसूल किया हुआ।

अनुप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (कर, दंड के रूप में) प्राप्तव्य धन एकत्रित करने कार्य। वसूली।

अनुप्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) खाना। भक्षण।

अनुप्रास [संज्ञा पुः] (सं.) एक शब्दाल जिसमें किसी वाक्य में एक ही पद अ एक ही अक्षर की आवृति एक या एक अधिक बार हो।

अनुप्रेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एकाग्रचि होकर देखना। ध्यान से देखना। २—पु के अर्थ का चिंतन या मन से अभ्यास। हुए विषय का एकाग्रचित्त से मनन।

अनुबंध, अनुबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १—बंध २—लगाव। ३—आगापीछा। ४—आरम्भ ५—अनुसरण। ६—होने वाला शुभाशु ७—वात, पित्त, कफ में से जो प्रधान हो। किसी विषय की सब बातों का विवेचन ९—दो पक्षों में कोई कार्य करने के लिये वाला ठहराव या समझौता। १०—वस्तु जीवों, अंगों आदि में अनिवार्य रूप से

अनुबंधन, अनुबन्धन वाला पारस्परिक संबन्ध। एग्रिमेंट। को-*रिलेशन*।

अनुबंधन, अनुबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) लगाव संबन्ध।

अनुबंधी, अनुबन्धी [वि.] (सं.) १—संबन्धी। सहचर। लगाव रखने वाला। २-फलस्वरूप। परिणामस्वरूप।

अनुबद्ध [वि.] (सं.) १—बंधा हुआ। २—जिसके संबन्ध में कोई समझौता अथवा अनुबन्ध हुआ हो।

अनुबल [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षा के निमित्त पीछे रखी जाने वाली सेना।

अनुबाधन [संज्ञा पु.] (सं.) यादगार। स्मरण।

अनुबोधक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति विशेष को स्मरण रखने के लिये दिया जाने वाला पत्र। *मेमोरैंडम*।

अनुबोधन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को कोई बात या विषय स्मरण कराने की क्रिया या भाव।

अनुभक्त [वि.] (सं.) सब लोगों को उनकी आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया गया हो। *राशन*।

अनुभक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो लोगों को उनकी आवश्यकता का ध्यान रखते हुए (निश्चित परिणाम में) उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया गया हो।

अनुभव [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान। २—परीक्षा से प्राप्त ज्ञान। उपलब्ध ज्ञान। तजरबा।

अनुभवना [क्रि. स.] अनुभव करना। समझ लेना। बोध करना।

अनुभवसिद्ध [वि.] (सं.) प्रयोग अथवा परीक्षा से ज्ञात या प्राप्त। जो तजुर्बे से मालूम हो।

अनुभवी [वि.] (सं.) अनुभव प्राप्त। अनुभव रखने वाला। तजुरबेकार। जानकर। अनुभवसिद्ध।

अनुभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रणाली जिसमें लोगों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए किसी वस्तु का समानरूप से निश्चित मात्रा में वितरण किया जाता है। *राशनिङ्ग*।

अनुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रभाव। महिमा। बड़ाई। २—अलंकारशास्त्र के अनुसार रस के चार अंगों में से एक। रस का बोध कराने वाले गुण और क्रिया।

अनुभावक [वि.] (सं.) अनुभव कराने वाला।

अनुभावन [संज्ञा पु.] (सं.) संकेत या अनुमान से किसी विषय को बतलाना।

अनुभावी [वि.] (सं.) १—किसी विषय का अनुभव रखने वाला। साक्षात्कारक। अनुभव तथा संवेदना रखने वाला। २—वह गवाह जिसने सब बातें स्वयं देखी और सुनी हो।

अनुभूत [वि.] (सं.) १—अनुभव से ज्ञात। २—परीक्षित। आजमूदा।

अनुभूति [संज्ञा स्त्री.] अनुभव। परिज्ञान। उपलब्धि। तजुर्बा।

अनुभोग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य के बदले माफी में दी जाने वाली भूमि। माफी।

अनुभ्राता [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा भाई। अनुज।

अनुमत [वि.] (सं.) प्रशंसा किया हुआ। प्रिय।

अनुमति [संज्ञा स्त्री.] १—आज्ञा। अनुज्ञा। हुक्म। २—सम्मति। ३—पूर्णकलारहित पूर्णिमा। ४—अवकाश। छुट्टी।

अनुमतिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमाणपत्र। परवाना। लायसंस।

अनुमतिप्राप्त [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञाप्राप्त मनुष्य। लायसेंसदार।

अनुमतिदाता [संज्ञा पु.] अनुमति-पत्र देने वाला व्यक्ति।

अनुमानसिद्ध [वि.] (सं.) अनुमान से सिद्ध। सम्भव। अटकल से प्रमाणित।

अनुमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अनुमान। २—न्याय में अनुभूति के चार भेदों में से एक।

अनुमेय [वि.] (सं.) अनुमान के योग्य।

अनुमोदक [वि.] (सं.) स्वीकार करने वाला।

अनुमोदन [संज्ञा पु.] (सं.) १—समर्थन। ताईद। २—प्रसन्नता दिखलाना। [क्रि.] १—समथन करना। २—प्रसन्न होना।

अनुमोदित [वि.] (सं.) १—समर्थन प्राप्त। २—प्रसन्न। ३—स्वीकार करने योग्य। कहने वाला व्यक्ति।

अनुयाचक [संज्ञा पु.] (सं.) अपने किसी कार्य को कराने के लिये समझा-बुझाकर सादर प्रेरित करने वाला व्यक्ति। अनुयाचन करने वाला व्यक्ति। कैन्वैसर।

अनुयाचन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को समझा-बुझा कर अपने अनुकूल करते हुए किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित करना या कहना।

अनुयायी [वि.] (सं.) १—अनुगामी। पीछे चलने वाला। २—अनुकरण करने वाला। शिक्षा या आदर्श का अनुसरण करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर। सेवक। अनुचर। चाकर। दास।

अनुयुक्त [वि.] (सं.) १—जिसके विषय में कुछ पूछा गया हो। जिज्ञासित। २—निन्दित।

अनुयोग [संज्ञा पु.] (सं.) जिज्ञासा। पूछताछ। प्रश्न।

अनुयोगी [वि.] (सं.) जोड़ने वाला। संयुक्त करने वाला।

अनुयोजन [संज्ञा पु.] पूछने की क्रिया। प्रश्न करना।

अनुयोजित [वि.] (सं.) जिसके सम्बन्ध में पूछताछ की गई हो।

अनुयोज्य [वि.] (सं.) १—जिसके सम्बन्ध में पूछगछ की आवश्यकता हो। २—निन्दनीय। बुरा।

अनुरंजक, अनुरञ्जक [वि.] (सं.) अनुराग या प्रेम उत्पन्न करने वाला।

अनुरंजन, अनुरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनुराग। आसक्ति। प्रीति। प्रेम। २—दिल बहलाव।

अनुरंजित, अनुरञ्जित [वि.] (सं.) प्रीति से प्रमुदित किया हुआ।

अनुरक्त [वि.] (सं.) १—प्रेमयुक्त। आसक्त। अनुरागयुक्त। २—लीन।

अनुरक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आसक्ति। प्रेम। प्रीति। प्यार। अनुराग।

अनुरणन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी का बोलना या बजना।

अनुरत [वि.] (सं.) आसक्त। अनुरागी। लीन। प्रिय।

अनुरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुराग प्रेम। प्रीति। लीनता। आसक्ति।

अनुरस [संज्ञा पु.] (सं.) अप्रधान या गौणरस। किसी वस्तु का अपूर्ण स्वाद।

अनुराग [संज्ञा पु.] (सं.) आसक्ति। प्रेम। प्रीति प्यार।

अनुरागना [क्रि. स.] (हिं.) प्रीति करना। प्रेम दिखाना। आसक्त होना।

अनुरागी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] अनुराग या प्रेम रखने वाला। प्रेमी।

अनुराध [संज्ञा पु.] (हि.) आराधन। प्रार्थना। याचना। विनय। विनती।

अनुराधना [क्रि. स.] (हि.) विनती करना। प्रार्थना करना। विनय करना।

अनुराधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राशिचक्र के २७ नक्षत्रों में से १७ वां नक्षत्र, यह नक्षत्र बहुत शुभ माना जाता है।

अनुरुद्ध [वि.] (सं.) अनुरोध किया हुआ। प्रसन्न

अनुरूप [वि.] (सं.) १—समान रूप का। सदृश। सरीखा। २—अनुकूल। योग्य।

अनुरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिमूर्ति। प्रतिमा।

अनुरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—समानता। सादृश्य। २—अनुकूलता।

अनुरूपना* [क्रि. अ.] (हिं.) किसी के अनुरूप होना।

अनुरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १—बाधा। रुकावट। २—प्रेरणा। उत्तेजना। ३—फरमायश। आग्रह। विनीत भाव से किया हठ।

अनुरोधक, अनुरोधी [संज्ञा पु.] (सं.) आग्रह करने वाला। रोकने वाला। प्रेरणा देने वाला

अनुलंब, अनुलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) वह अवस्था

जिसमें हाँ या नाँ का कुछ निश्चय न हुआ हो पर अभी होने को हो । *सस्पेन्स* ।

अनुलंबखाता, अनुलम्बखाता [संज्ञा पु.] (सं.) वह खाता जिसमें किसी को कुछ धन, बाद में हिसाब देने के लिये दिया जाय । *सस्पेन्स-एकाउण्ट* ।

अनुलंबन, अनुलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कर्मचारी का दोष अथवा अपराध विदित होने पर उसकी ठीक जांच होने तक उसको उसके पद से वंचित करने की क्रिया या भाव । मुअत्तल । *सस्पेन्शन* ।

अनुलंबित, अनुलम्बित [वि.] (सं.) अपराध या अभियोग का आरोप होने के कारण अनुलम्बन होने वाला । जो अंतिम निर्णय तक के लिए अपने कार्य या पद से विलग कर दिया गया । मुअत्तल । *सस्पेण्डेड* ।

अनुलग्न [वि.] (सं.) किसी के साथ लगा, मिला या जुड़ा हुआ । अटैच्ड या एन्क्लोज्ड ।

अनुलग्नक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र या कागज जो किसी अन्य पत्र के साथ लगा या जुड़ा हुआ हो । *एनक्लोज़र* ।

अनुलाप [संज्ञा पु.] (सं.) बार-बार कही हुई बात । पुनरुक्ति ।

अनुलिप्त [वि.] (सं.) अनुरंजित । देह में इत्र आदि लगाये हुए ।

अनुलेख [संज्ञा पु.] (सं.) किसी लेख अथवा किसी पत्र पर अपनी स्वीकृति, सहमति आदि लिखकर उसका उत्तरदायित्व पूर्णरूप से अपने ऊपर ले लेना । एंडोर्समेंट ।

अनुलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) १—घटना अथवा कार्य आदि का लेखा आदि लिखना । यथा—वायु की गति अथवा भूकम्प के धक्के आदि का अनुलेखन । २—देखो 'अनुलेख' ।

अनुलेपन [संज्ञा पु.] (सं.) १—लेपन । किसी तरल पदार्थ की तह चढ़ाना । २—सुगन्धित पदार्थों को देह पर उबटना । ३—लीपना । पोतना ।

अनुलोम [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनुक्रम । ऊंचे से नीचे का क्रम । २—उत्तम से अधम की ओर आता हुआ । ३—सङ्गीत में स्वरों का अवरोह या उतार ।

अनुलोमविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) कट्टरपन्थी हिन्दुओं के मतानुसार उच्चवर्ण के पुरुष का निम्नवर्ण की स्त्री के साथ विवाह ।

अनुलोमज [वि.] (सं.) अनुलोम विवाह करने से उत्पन्न (संतान)।

अनुलोमन [संज्ञा पु.] (सं.) कोष्ठबद्ध को दूर करने वाली रेचक औषधि ।

अनुवंश [क्रि. वि.] (सं.) वंश के अनुकूल ।

अनुवक्र [वि.] (सं.) थोड़ा सा टेढ़ा ।

अनुवचन [संज्ञा पु.] (सं.) कहे हुए को उसी प्रकार (जैसे का तैसा) दोहराना ।

अनुवत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार पांच वर्ष का युग होता है उसका चौथा वर्ष । [क्रि. वि.] प्रति वर्ष । सालाना ।

अनुवर्तन [वि.] (सं.) १—अनुसरण । २—अनुकरण । किसी नियम का अनेक स्थानों पर लगना ।

अनुवर्ती [वि.] (सं.) अनुयायी । अनुसरण करने वाला । अनुगामी ।

अनुवासित [वि.] (सं.) १—वस्त्र पहिने हुए । २-किसी के उपरांत उसके परिणामस्वरूप होने वाला ।

अनुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुएँ के जगत का वह स्थान जहां से खड़े होकर पानी खींचते हैं ।

अनुवाक [संज्ञा पु.] (सं.) १—वेद के अध्याय का एक भाग । २—अध्याय या प्रकरण का एक भाग ।

अनुवाचन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञों में मन्त्रों का विधि के अनुसार पाठ ।

अनुवाचित [वि.] (सं.) पहिले कहा हुआ । पूर्वोक्त । पूर्वकथन ।

अनुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—भाषांतर । उल्था । तर्जुमा । २—पुनरुक्ति । दोहराना । पुनरुल्लेख । ३—मीमांसा में किसी विधि प्राप्त आशय का दूसरे शब्दों में दोहराना ।

अनुवादक [संज्ञा पु.] (सं.) अनुवाद करने वाला । भाषांतर करने वाला । उल्था करने वाला । तर्जुमा करने वाला ।

अनुवादित [वि.] (सं.) अनुवाद किया हुआ । भाषांतर किया हुआ ।

अनुवादी [वि.] (सं.) सङ्गीत में स्वर का एक भेद जिसके लगाने से राग अशुद्ध होजाता है

अनुवाद्य [वि.] (सं.) १—अनुवाद करने के योग्य । २—जिसका अनुवाद होने को हो ।

अनुवासन [संज्ञा पु.] (सं.) १—सुगन्धित पदार्थों द्वारा वस्त्रों को सुवासित करना । २—तरल औषध शरीर में पहुँचाने की क्रिया । *अनीमा* ।

अनुवासनवस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—सुवासित करने का यन्त्र । पिचकारी । २—शरीर के भीतर तरल औषध पहुँचाने की पिचकारी ।

अनुवासित [वि.] (सं.) सुवासित । सुगंधित किया हुआ ।

अनुविद्ध [वि.] (सं.) जड़ा हुआ । संलग्न ।

अनुविष्ट [वि.] (सं.) जो अपने स्थान पर लिखा गया हो । अंकित या अंकित किया हुआ ।

अनुवृत [वि.] (सं.) पीछे रहने वाला ।

अनुवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—किसी पद के पहले भाग से कुछ वाक्य उसके पिछले भाग में अर्थ को स्पष्ट करने को लाया जाय । २—किसी कर्मचारी की निरंतर निश्चितकाल तक सेवा करने के उपलक्ष में या उसकी वृद्धावस्था के विचार से उसके वेतन का कुछ अंश भरण-पोषण के हेतु दिया जाना । *पेन्शन* ।

अनुवृत्तिक [वि.] (सं.) १—अनुवृत्ति संबं अनुवृत्तिका । २—जिसके लिये अनुवृ मिलती या मिल सकती हो । *पेन्शनेबिल* ।

अनुवृत्तिधारी [संज्ञा पु.] (सं.) अनुवृत्ति पेन्शन पाने वाला व्यक्ति वह जिसे अनुवृ मिलती हो ।

अनुवेश [संज्ञा पु.] (सं.) बड़े पुत्र से पहले छो पुत्र का विवाह होना ।

अनुवेश्य [संज्ञा पु.] (सं.) मंगल करने वा से एक घर के अंतर पर रहने वाला ब्राह्म

अनुव्रजन [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक ।

अनुशंसा [संज्ञा स्त्री.] किसी व्यक्ति या प्रार्थ आदि के संबंध में यह पुष्ट करना कि अच्छा, उपयुक्त, ग्राह्य अथवा मान्य है सिफारिश । *रिकमेंडेशन* ।

अनुशंसित [वि.] (सं.) जिसके सम्बन्ध अनुशंसा या सिफारिश की गई हो ।

अनुशय [संज्ञा पु.] (सं.) १—पुराना बै अदावट । २—झगड़ा । वादविवाद । ३-किसी दी हुई आज्ञा या किये हुए कार्य को के समान करना । रद्द करना । *रिवोकेशन* ।

अनुशयाना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परकीया नायि का एक भेद । वह नायिका जो अपने प्रि तम के संकेत स्थान पर न पहुँचने से अत्यं दुखी हो ।

अनुशयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की फुं जो पैर में होती है ।
[वि.] १—झगड़ालू । २—वैरी । ३—प ताने वाला । ४—अनुरक्त । आसक्त । ५-पैरों में पड़ कर प्रणाम करने वाला ।

अनुशर [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस ।

अनुशायी [संज्ञा पु.] (सं.) पछतावा क वाला ।

अनुशासक [संज्ञा पु.] (सं.) १—आज्ञा दे वाला । २—देश अथवा राज्य का प्रबंधक अनुशासन या राज्यकीय व्यवस्था क वाला व्यक्ति । वह जो अनुशासन क हो । ३—उपदेष्टा । शिक्षक ।

अनुशासन [संज्ञा पु.] (सं.) १—आदेश आज्ञा । २—उपदेश । शिक्षा । ३—महाभार का एक पर्व । ४—राज्य का प्रबंध या व्य वस्था । राज्य अथवा लोक-प्रबंध के शा पक्ष से संबंध रखने वाला कार्य । एडमि *निस्ट्रेशन* । ५—वह विधान जो किसी सं या वर्ग के सब सदस्यों को भली प्रकार कार्य अथवा आचरण करने के लिये बा करे । नियमपालन । *डिसिप्लिन* ।

अनुशासनीय [वि.] (सं.) १—आदेश या आ देने योग्य । २—उपदेश देने योग्य । शि देने योग्य । ४—प्रबन्ध और व्यवस्था क योग्य । अनुशासन करने योग्य ।

अनुशासित [वि.] (सं.) १—जिसको आदेश अथवा आज्ञा दी गई हो। २—शिक्षित। उपदिष्ट। ३—जिसका प्रबन्ध या व्यवस्था की गई हो।

अनुशीलन [संज्ञा पु.] (सं.) चिंतन। मनन। विचार। २—सतत अभ्यास। आवृत्ति। बारंबार की जाने वाली सेवा।

अनुशीलनीय [वि.] (सं.) चिंतन करने योग्य। मनन करने योग्य। २—अभ्यास करने योग्य

अनुशीलित [वि.] (सं.) बारंबार चिंतित।

अनुशोक [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चाताप। पछतावा।

अनुशोचत [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चाताप करने वाला

अनुश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परम्परा से चली आई हुई बात, कथा, उक्ति आदि।

अनुषंग, अनुषङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—संबंध। लगाव। २—दया। करुणा। ३—प्रसङ्गवत पहिले वाक्य से आगे एक और वाक्य लगा देना। ४—न्याय में उपनय के अर्थ को निगमन में लेजाकर घटाना। ५—एक बात के बाद दूसरी बात आप-से-आप होना।

अनुषंगिक, अनुषङ्गिक [वि.] (सं.) सम्बद्ध। संयुक्त।

अनुषंगी, अनुषङ्गी [वि.] (सं.) संबन्धी। किसी कार्य, विषय या तथ्य के पश्चात् सहायक या संबद्ध रूप में होने वाला। एक्सेसरी आफ्टर दि फैक्ट।

अनुषक्त [वि.] (सं.) सटा हुआ। मिला हुआ।

अनुषक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने राजा या राज्य के प्रति जनता या नागरिक के कर्त्तव्य तथा निष्ठा।

अनुष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) ३२ अक्षरों का वर्ण छन्द जिसमें आठ-आठ वर्ण के चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में पाँचवाँ लघु तथा छटवाँ वर्ण गुरु होता है।

अनुष्ठाता [संज्ञा पु.] (सं.) अनुक्रम से कार्य करने वाला।

अनुष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी कार्य का आरम्भ। २—नियमानुसार कोई कार्य करना ३—शास्त्रविहित कर्म करना। ४—किसी फल की इच्छा से किसी देवता की पूजा। प्रयोग।

अनुष्ठापक [संज्ञा पु] (सं.) अनुष्ठान करने वाला

अनुष्ण [वि.] (सं.) जो गरम न हो। शीतल। ठंडा।

अनुसंरक्त [वि.] (सं.) लीन। संलग्न।

अनुसमर्थन [संज्ञा पु.] (सं.) निश्चय। दृढ़ीकरण [क्रि. अ.] स्थिर करना। निश्चित करना। प्रमाणित करना।

अनुसंधान, अनुसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्वेषण। खोज। जांच। पड़ताल। २—पीछे लगना। पश्चादगमन। ३—चेष्टा। प्रयत्न। कोशिश।

अनुसंधानना, अनुसन्धानना [क्रि. स.] (हिं.) १—खोजना। ढूँढना। २—सोचना विचारना।

अनुसंधानी, अनुसन्धानी [वि.] (हिं.) अनुसंधान करने वाला। जाँच पड़ताल करने वाला।

अनुसंधि, अनुसन्धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुप्त सन्त्रणा। अन्तरंग परामर्श। षड्यन्त्र। भीतरी बातचीत।

अनुसंधेय, अनुसन्धेय [वि.] (सं.) खोज करने वाला

अनुसंबद्ध, अनुसम्बद्ध [वि.] (सं.) मिला हुआ। संलग्न।

अनुसयना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अनुशायना'।

अनुसर [वि.] (हिं.) अनुकूल। सदृश। मुवाफिक समान।

अनुसरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—पीछे चलना। २—अनुकरण। नकल। ३—अनुरूप आचरण

अनुसरना [क्रि. स.] (हिं.) १—पीछे चलना। २—अनुकरण या नकल करना।

अनुसार [वि.] (सं.) समान। सदृश। अनुकूल।

अनुसारतः [क्रि. वि.] (सं.) तदनुसार। किसी के अनुसार।

अनुसारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुसार होने की क्रिया या भाव। एकॉर्डेंस।

अनुसारना [क्रि. स.] (हिं.) १—अनुरूप आचरण करना। अनुसरण करना। २—आचरण करना

अनुसारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अनुसारता'

अनुसारी [वि.] (सं.) अनुसरण करने वाला। अनुकरण करने वाला।

अनुसाल [संज्ञा पु.] (हिं.) पीड़ा। वेदना। [illegible]या।

अनुसूचितक्षेत्र [संज्ञा पु.]. (सं.) निर्धारित सीमा या क्षेत्र।

अनुसूचितजनजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्धारित आदिवासी या वन जातियां।

अनुसूचितजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिगणित जाति। हरिजन। अंत्यज।

अनुसूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोष्ठक, सूची आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के रूप में परिशिष्ट के रूप में हो। शेड्यूल।

अनुसूया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शकुन्तला की सखी का नाम।

अनुसेवी [वि.] (सं.) सेवा करने वाला। अभ्यास करने वाला।

अनुसृति [संज्ञा स्त्री.] १—अनुसरण। २—नकल। अनुकरण।

अनुस्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) बाद में स्मरण आना फिर याद आना।

अनुस्मारक [संज्ञा पु.] (सं.) याद दिलाने वाला मनुष्य या पदार्थ। याददाश्ती चिट्ठी।

अनुस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) शिव पर चढ़े निर्माल्य को धारण करना।

अनुस्यूत [वि.] (सं.) सीया हुआ। २—पिरोया हुआ। ३—गूंथा हुआ। सिलसिलेवार। क्रमबद्ध। श्रेणीबद्ध।

अनुस्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वर के पीछे उच्चारण होने वाला एक अनुनासिक वर्ण। २—स्वर के ऊपर की बिन्दी।

अनुहरण [संज्ञा पु.] (सं.) अनुकरण। नकल।

अनुहरण [संज्ञा पु.] (हिं.) अनुकरण। नकल।

अनुहरत [वि.] (हि.) अनुसार। अनुरूप। समान। नकल किया हुआ।

अनुहरना [क्रि. स.] (हि.) अनुकरण करना। नकल करना। समानता करना।

अनुहरिया [वि.] (हिं.) समान। सदृश। बराबर। तुल्य।
[संज्ञा स्त्री.] आकृति। मुखानी। मुखड़ा।

अनुहार [वि.] (सं.) समान। तुल्य। सदृश। बराबर।
[संज्ञा स्त्री.] १—भेद। प्रकार। रूप। २—आकृति। मुखड़ा।

अनुहारक [वि.] (सं.) अनुकरण करने वाला। नकल करने वाला।

अनुहारना [क्रि. स.] (हिं.) समान करना। बराबर करना। नकल करना।

अनुहारि [वि.] (हिं.) १—समान। सदृश। बराबर। २—योग्य। ३—उपयुक्त। ४—अनुसार। अनुकूल।

अनुहारी [वि.] (सं.) अनुकरण या नकल करने वाला।

अनूक [संज्ञा पु.] (सं.) १—पूर्व जन्म। २—कुल। वंश। ३—शील। स्वभाव। ४—रीढ़ की हड्डी। ५—मेहराब के बीच की ईंट। ६—यज्ञ की वेदी बनाने के निमित्त बनाई गई ईंट।

अनूक्त [वि.] (सं.) पढ़ा हुआ। पीछे से कहा गया

अनूक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुनः कथन। वेदाध्ययन।

अनूचान [संज्ञा पु.] (सं.) १—वेदाग मे पारङ्गत स्नातक। २—विद्या प्रेमी। ३—चरित्रवान।

अनूजरा [वि.] (हि.) जो उजला या साफ न हो। मैला।

अनूठा [वि.] (हि.) १—अपूर्व। अनोखा। विलक्षण। निराला। २—सुन्दर। अच्छा। बढ़िया

अनूठापन [संज्ञा पु] (हि.) १—विचित्रता। विलक्षणता। सुंदरता।

अनूठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) अपूर्व। अनोखी। निराली। विलक्षण। २—सुंदर। अच्छी। बढ़िया।

अनूढ़ [वि.] (सं.) क्वारा। बिनब्याहा।

अनूढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पुरुष से प्रेम रखने वाली अविवाहिता स्त्री।
अनूढ़गमन=व्यभिचार। छिनालपन।

अनूतर [वि.] (हिं.) १—निरुत्तर। २—मौन या चुपचाप बैठने वाला।

अनूदित [वि.] (सं.) १—वर्णन किया हुआ। कहा हुआ। २—अनुवादित। भाषांतरित। तर्जुमा या उल्था किया हुआ।

अनून [वि.] (सं.) १—अखंड। पूर्ण। पूरा। सारा। २—अधिक। बहुत। ज्यादा।

अनूप [वि.] (सं.) जहां जल अधिक हो। जल से परिपूर्ण। [संज्ञा पु.] १—अधिक जल-वाला प्रदेश। २—भैंस।
[वि.] १—जिसकी कोई उपमा न हो। अनुपम। बेजोड़। अद्वितीय। २—सुन्दर। अच्छा।

अनूरु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का सारथी। अरुण। [वि.] जिसके जाँघ न हो। ऊरुहीन।

अनूर्ध्व [वि.] (सं.) जो ऊंचा न हो। नीचा।

अनूह [वि.] (सं.) जिस पर विचार न हो सके।

अनृण [वि.] (सं.) बिना कर्जे वाला। ऋणरहित। जिसके ऋण न हो।

अनृणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋण का अभाव। कर्जे का न होना।

अनृणी [वि.] (सं.) जो कर्जदार न हो।

अनृत [संज्ञा पु.] (सं.) १—असत्य। मिथ्या। झूठ। २—विपरीत। अन्यथा।
अनृतभाषण=झूठ बोलना।
अनृतवादी=झूठ बोलने वाला।

अनृशंस [वि.] (सं.) जो क्रूर या जालिम न हो। दयावान।

अनृशंसता [संज्ञा स्त्री.] कोमलता। दयालुता।

अनेक [वि.] (सं.) एक से अधिक। बहुत। ज्यादा। अनगिनत।

अनेकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिकता। बहुतायत

अनेकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) अधिकता।

अनेकधा [क्रि. वि.] (सं.) प्रायः। बहुधा।

अनेकविध [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का। कई प्रकार का।

अनेकशः [क्रि. वि.] कई बार।

अनेकलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

अनेकज [वि.] (सं.) अनेक बार उत्पन्न होने वाला

अनेकांत [वि.] (सं.) १—जो एकान्त न हो। २—अस्थिर। चंचल।

अनेकांतवाद [संज्ञा पु.] जैनदर्शन। आर्हत-दर्शन।

अनेकाक्षर [वि.] (सं.) जिससे कई एक मिले हों।

अनेकाच [वि.] (सं.) बहुत से स्वरों से संयुक्त। बहुत से स्वरों वाला।

अनेकार्थ [वि.] (सं.) जिसके एक से अधिक अर्थ हों। जिसके बहुत से अर्थ हों।

अनेकाल [वि.] (सं.) जिसमे एक से अधिक अक्षर हों।

अनेग [वि.] (हि.) अनेक। कई एक। बहुत। अधिक। ज्यादा।

अनेरा [वि.] (हिं.) झूठ। व्यर्थ। असत्य। निष्प्रयोजन। २—दुष्ट। अन्यायी। झूठा। निकम्मा। क्रूर।
[क्रि. वि.] व्यर्थ। फिजूल।

अनेह [संज्ञा पु.] (हिं.) स्नेह का अभाव। अप्रीति। अप्रेम। विरक्त।

अनेहा [संज्ञा पु.] (सं.) समय। काल। वक्त।

अनै [संज्ञा पु.] (हि.) १—अमंगल। विपद्। दुर्भाग्य। २—अनीति। अन्याय।

अनैकांतिकहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय के पांच हेत्वाभासों में से एक।

अनैक्य [संज्ञा पु.] (सं.) एकता का अभाव। एकता का न होना। मतभेद।

अनैच्छिक [वि.] (सं.) जो अपनी इच्छा से या जान-बूझकर न किया गया हो बल्कि अन्य की इच्छा से या परिस्थितियों आदि के कारण कारण कुछ विवश होकर अथवा यों ही किया गया हो।

अनैठ [संज्ञा पु.] (हिं.) बाजार बन्द रहने का दिन।

अनैतिक [वि.] (सं.) नीति के अनुसार न होने वाला। नीतिविरुद्ध।

अनैतिहासिक [वि.] (सं.) जो इतिहास के अनुरूप न हो। जो इतिहास से विरुद्ध न हो।

अनैपुण [संज्ञा पु.] (सं.) निपुणता का अभाव।

अनैश्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—ऐश्वर्य या संपदा का अभाव। अप्रभुत्व। २—अनीश्वरता। सिद्धियों की अप्राप्ति।

अनैस [संज्ञा पु.] (हि.) अनिष्ट। बुराई। अहित।

अनैसर्गिक [वि.] (सं.) अस्वाभाविक। प्रकृति विरुद्ध।

अनैसना [क्रि. अ.] (हि.) बुरा मानना। रूठना। गुमान करना।

अनैसा [वि.] (हि.) जो इष्ट न हो। बुरा। खराब। अप्रिय।

अनैसे [क्रि. वि.] (हिं.) बुरे अभाव से। बुरी तरह से।

अनैहा [संज्ञा पु.] (हि.) उपद्रव। उत्पात। बखेड़ा।

अनोकह [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह जो अपना स्थान छोड़े। २—वृक्ष। पादप। पेड़।

अनोखा [वि.] (हि.) १—अपूर्व। विलक्षण। निराला। अनूठा। विचित्र। २—नवीन। नया। ३—सुंदर। मनोहर।

अनोखापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १—अनूठापन। अपूर्वता। विचित्रता। विलक्षणता। २—नवीनता। नयापन। ३—सुंदरता। खूबसूरती।

अनोदयनाम [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वह पाप कर्म जिसके उदय से मनुष्य को कोई नहीं पतियाता।

अनौचित्य [संज्ञा पु.] (सं.) उचित न हो। अनुपयुक्तता।

अनौट [संज्ञा पु.] (हि.) पैर के अंगूठे में पहिनने का छल्ला।

अनौद्धत्य [संज्ञा पु.] गर्व का रहना।

अन्तर्जातीय-विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) जात-पाँत के भेदभाव के बिना किया गया विवाह। एक जाति का अन्य जाति की स्त्री से विवाह

अन्तर्राष्ट्रीय [वि.] (सं.) एक से अधिक राष्ट्र या देशों का संबंध।

अनाग्रसन [क्रि. स.] (सं.) १—फंसाना। लिपटाना। २—मिलाना। सन्निहित होना।

आग्रस्त [वि.] (सं.) सम्बद्ध।

अन्न [संज्ञा पु.] (सं.) १—खाद्यपदार्थ। २—अनाज। धान्य। दाना। नाज। गल्ला। ३—पकाया हुआ अन्न। भात ४—सूर्य। ६—विष्णु। ७—पृथ्वी। ८—प्राण। जल। ९—सबको भक्षण तथा ग्रहण करने वाला। [वि.] अन्य दूसरा। विरुद्ध।
अन्न अङ्ग न लगना=दुबला होना। मोटा या तन्दुरुस्त न होना। *अन्नजल उठना*=आजीविका न रहना। *अन्नजल करना*=जलपान करना। *अन्न पहचानना*=खाना पहचानना या समझना। *अन्न मिट्टी होना*=१—भलीभाँति न पकाना। अन्न नष्ट होना। २—खानापीना हराम होना। *अन्न लगना*=रोटी लगना।

अन्नकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्न का ढेर। २—वैष्णवों द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को वैष्णवों के यहां होता है। उस दिन नाना प्रकार के भोजनों से भगवान को भोग लगाते हैं।

अन्नकोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्न रखने का स्थान या कोठरी। २—गञ्ज। गोला। खत्ती।

अन्नचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) अनुचित रीति से महँगे भाव पर बेचने की इच्छा से अन्न छिपाकर रखने वाला व्यक्ति। चोरबाजारी की खातिर अन्न छिपाकर रखने वाला व्यक्ति

अन्नछेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) भूखे भिखारियों को अन्न बांटने का स्थान।

अन्नज, अन्नजात [वि.] (सं.) अन्न से उत्पन्न।

अन्नजल [संज्ञा पु.] (सं) १—दानापानी।

जीविका । २—खानपान । ३—संयोग ।

अन्नजल छोड़ देना = उपवास करना ।

अन्नद [संज्ञा पु.] (सं.) अन्नदाता । रक्षक । प्रतिपालक ।

अन्नदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्नपूर्णा देवी ।

अन्नदाता [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्नदान करने वाला । २—पोषक । प्रतिपालक ।

अन्नदान [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन देना ।

अन्नदोष [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्न से उत्पन्न होने वाले दोष या विकार । २—निषिद्ध व्यक्ति या स्थान के अन्न से उत्पन्न दोष ।

अन्नद्रव-शूल [संज्ञा पु.] (सं.) निरन्तर पेट में रहने वाली पीड़ा । सदा पेट में बना रहनेवाला दर्द ।

अन्नद्वेष [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न में रुचि का न होना । भूख न लगना ।

अन्नपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

अन्नपाक [संज्ञा पु.] (सं.) उदर या पेट में अन्न का पकना या हजम होना ।

अन्नपानी [संज्ञा पु.] (सं.) दानापानी । अन्नजल । जीविका ।

अन्नपूर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्न की अधिष्ठात्री देवी । दुर्गा का एक रूप ।

अन्नप्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) एक संस्कार जिसमें बच्चे को आठ मास की अवस्था में अन्न चटाया जाता है ।

अन्नभाग [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन का अंश ।

अन्नमय [वि.] (सं.) खाद्य सामग्री से परिपूर्ण ।

अन्नमय-कोष [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य तक का समुदाय । स्थूल शरीर जिसका पालन-पोषण अन्न से होता है ।

अन्नमल [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न से निकाला रस । अन्न से बनी शराब ।

अन्नरस [संज्ञा पु.] (सं.) जठराग्नि में अन्न का परिपाक होने पर बनने वाला रस ।

अन्नलिप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन की इच्छा, खाना खाने की इच्छा ।

अन्नवस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) खाना-कपड़ा ।

अन्नविकार [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न का परिवर्तित रूप । अन्न के पचने से बनने वाले—रक्त, मांस, मज्जा, चरबी, हड्डी, तथा वीर्य आदि रस ।

अन्नसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां भूखों और मुहताजों को भोजन दिया जाता है । अन्नक्षेत्र ।

अन्नसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन के पदार्थ को पवित्र करना ।

अन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एक छोटी अँगीठी जिसमें सुनार सोना या चांदी रखकर भाथी से तपाते या गलाते हैं । २—धाय । धात्री । दूध पिलाने वाली स्त्री ।

अन्नाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—ईश्वर । सबको ग्रहण करने वाला । २—विष्णु के सहस्र नामों में से एक ।
[वि.] अन्न खाने वाला । अन्नाहरी ।

अन्नार्थी [वि.] (सं.) भोजन मांगने वाला । भिखारी । भिक्षुक ।

अन्नाशन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अन्नप्राशन' ।

अन्य [वि.] (सं.) दूसरा । भिन्न । इतर । गैर । पराया । और कोई ।
अन्यकृत—दूसरे का किया हुआ ।

अन्यग, अन्यगामी [वि.] (सं.) व्यभिचारी ।

अन्यगोत्र [वि.] (सं.) दूसरे के वंश का ।

अन्यच्च [क्रि. वि.] (सं.) और भी ।

अन्यचित [संज्ञा पु.] (सं.) अन्यमनस्क । जिसका मन दूसरी ओर लगा हुआ हो ।

अन्यजात [वि.] (सं.) दूसरी जाति सें उत्पन्न ।

अन्यतम [वि.] (सं.) १—बहुतों में से एक । २—गहरा । जिगरी ।

अन्यतः [क्रि. वि.] १—किसी और से । किसी दूसरे से । २—किसी और स्थान से । कहीं और से ।

अन्यतोपाक [संज्ञा पु.] (सं.) दाढ़ी, कान, भौं आदि में वायु के प्रवेश से होने वाली आँखों की पीड़ा ।

अन्यत्र [वि.] (सं.) दूसरी जगह । अन्य स्थान में ।

अन्यतम [वि.] (सं.) सब से बढ़कर । सर्वोत्कृष्ट

अन्यत्वभावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनशास्त्र के अनुसार जीवात्मा को देह से भिन्न समझना

अन्यथा [वि.] (सं.) १—विपरीत । उलटा । अन्य प्रकार । और का और । २—झूठ । मिथ्या । असत्य ।
[अव्य.] नहीं तो ।
अन्यथा करना = पूर्व आज्ञा अथवा निश्चय रद करना या उलटना । *अन्यथाभूत* = जहाँ कुछ का कुछ हो गया हो । *अन्यथासिद्ध* = अन्य प्रकार से सिद्ध होने वाली वस्तु ।

अन्यथानुपपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पदार्थ के अभाव में किसी अन्य पदार्थ की उपपत्ति या अस्तित्व की सम्भावना ।

अन्यथासिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय में एक दोष जिसमें वास्तविक बात न दिखला कर किसी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाय ।

अन्यदीय [वि.] (सं.) दूसरे के सम्बन्ध का ।

अन्यदेशीय [वि.] (सं.) दूसरे देश का । विदेशी । परदेशी ।

अन्यधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) भिन्न धर्म या जुदे-जुदे गुण ।

अन्यपर [वि.] (सं.) जिसका चित्त अन्य तरफ लगा हुआ हो ।

अन्यपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १—गैर आदमी । दूसरा मनुष्य । २—व्याकरण के अनुसार पुरुषवाची सर्वनाम का तीसरा भेद । वह पुरुष जिसके विषय में कुछ कहा जाय ।

अन्यपुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका पोषण और के द्वारा हो । कोकिल । कोयल ।

अन्यपूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कन्या जो किसी से या तो ब्याही जाय या वाग्दत्ता होकर फिर अन्य से ब्याही जाय ।

अन्यभृत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिसका पोषण कोई और करे । कोकिल । कोयल ।

अन्यमन [वि.] (सं.) अनमना । उदास । चिंतित

अन्यमनस्क [वि.] (सं.) अनमना । उदास । चिंतत । जिसका मन न लगता हो ।

अन्यराष्ट्रीय [वि.] (सं.) दूसरे राष्ट्र या देश का

अन्यरूप [संज्ञा पु.] (सं.) बदले हुए वेष का । दूसरे रूप में ।

अन्यवर्ण [वि.] (सं.) दूसरे रंग का ।

अन्यवादी [वि.] (सं.) मिथ्यावादी । झूठा । प्रतिवादी । असत्यभाषी ।

अन्यव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) यथेच्छाचारी व्यक्ति ।

अन्यसंक्रामण [क्रि. अ.] (सं.) स्वत्व अलग करना । चित्त हटाना ।

अन्यसंभोगदुःखिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो अन्य स्त्री में समागम के चिह्न देखकर तथा यह जानकर दुखी हो कि मेरे पति ने इस के साथ रतिक्रीड़ा की है ।

अन्यसुरतिदुःखिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अन्यसंभोगदुःखिता' ।

अन्याधीन [वि.] (सं.) दूसरे के आधीन । दूसरे पर भरोसा करने वाला ।

अन्यापदेश [संज्ञा पु.] (सं.) अन्योक्ति । वह उक्ति जिसका अर्थ साधर्म्य के अनुसार वर्णित वस्तुओं के अलावा दूसरी वस्तुओं पर घटाया जाय ।

अन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय विरुद्ध आचरण । अनीति । अंधेर । अत्याचार । ३—जुल्म ।

अन्यायी [वि.] (सं.) अन्याय करने वाला । जालिम । दुराचारी । अत्याचारी ।

अन्यारा [वि.] (हि.) जो पृथक न हो । निराला । अनोखा । २—खूब । बहुत ।

अन्यास [वि.] (हि.) देखो 'अनायास' ।

अन्यासक्त [वि.] (सं.) १—दूसरे पर आसक्त या मोहित । २—दूसरे के आधार पर स्थित ।

अन्यून [वि.] (सं.) जो कम न हो । काफी । पर्याप्त । बहुत । पूर्ण ।

अन्येद्यु [क्रि. वि.] (सं.) दूसरे दिन ।

अन्येद्युक [वि.] (सं.) दूसरे दिन होने वाला।

अन्येद्युःज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एकतरा ज्वर। एक दिन छोड़कर एक दिन चढ़ने वाला ज्वर

अन्योक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्यापदेश। वह अलंकार जिसमें अर्थसाधर्म्य के अनुसार वर्णित वस्तुओं के अलावा दूसरी वस्तुओं पर घटाया जाय। अप्रस्तुत प्रशंसा।

अन्योढा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरे की विवाहिता स्त्री।

अन्योत्सुक [वि.] (सं.) दूसरे के लिये उत्सुक।

अन्योदर्य [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरी माता के पेट से उत्पन्न। सौतेला भाई।

अन्योन्य [सर्व.] (सं.) आपस में परस्पर।
[संज्ञा पु.] वह अर्थालंकार जिसमें दो पदार्थों को किसी गुण या क्रिया का एक दूसरे के कारण उत्पन्न हुआ कहा जावे।

अन्योन्यकलह [संज्ञा पु.] (सं.) आपस का झगड़ा

अन्योन्याघात [संज्ञा पु.] (सं.) आपस की मार-कुटाई। परस्पर की लड़ाई।

अन्योन्यवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक का दूसरे पर प्रभाव।

अन्योन्याभाव [संज्ञा पु.] (सं.) एक वस्तु नहीं हो सकती ऐसा भाव।

अन्योन्याश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक दूसरे के सहारे पर। परस्पर का सहारा। २—सापेक्ष ज्ञान।

अन्वक्ष [वि.] (सं.) प्रत्यक्ष। साक्षात्।
[क्रि. वि.] १—सामने। २—पीछे। बाद। उपरांत।

अन्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १—संयोगमेल। २—परस्पर सम्बन्ध। तारतम्य। ३—पद्य के शब्दों को वाक्यरचना के नियमानुसार पहिले कर्ता, फिर कर्म, तदनन्तर क्रिया का रखना। ४—अवकाश। खाली स्थान। ५—भिन्न-भिन्न पदार्थों को साधर्म्य के अनुसार एक कोटि में लाना। ६—कार्य तथा कारण का सम्बन्ध। ७—वंश। कुल। खानदान।

अन्वयी [वि.] (सं.) १—एक ही वंश का। २—संबंधी।

अन्वर्थ [वि.] (सं.) १—सार्थक। अर्थसहित। २—अर्थ के अनुकूल।

अन्वव्यतिरेक [वि.] (सं.) न्याय के अनुसार वह साधक हेतु जिससे साध्य निश्चित किया जाता है।

अन्ववेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुरोध। अपेक्षा।

अन्वष्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक श्राद्ध जो पूस, माघ, फागुन तथा क्वार की कृष्णपक्ष की नवमी को होता है।

अन्वाचय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रधान या प्रमुख कार्य के साथ अप्रधान कार्य को भी करने का आदेश। 'एक पंथ दो काज' करने की सलाह

अन्वादेश [संज्ञा पु.] (सं.) एक कार्य के कर लेने पर दूसरा कार्य करने का आदेश।

अन्वाधान [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र कर लेने के पश्चात् अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिये ईंधन डालने का कार्य।

अन्वाधि [संज्ञा पु.] (सं.) किसी एक वस्तु का एक हाथ से दूसरे हाथ में जाना और उससे अन्य हाथ में जाना।

अन्वाधेय [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के उपरांत पिता या पति के घर से मिलने वाला धन।

अन्वारूढ़ [वि.] (सं.) पीछे चढ़ने वाला।

अन्वासीन [वि.] (सं.) पीछे बैठा हुआ।

अन्वाहार्य-श्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मासिक श्राद्ध।

अन्वाहित [वि.] (सं.) वह (वस्तु) जो एक के यहां अमानत रखता है और वह किसी अन्य के यहां रख दे।

अन्विच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाद की अभिलाषा

अन्वित [वि.] (सं.) युक्त। सहित। शामिल। मिला हुआ। अनुगत।

अन्वितार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १—अन्वय करने पर निकलने वाला अर्थ। २—अंदर छिपा हुआ अर्थ। गूढ़ आशय।

अन्वीक्षण [संज्ञा पु.] १—ध्यान देकर देखना। गौर। विचार। २—खोज। तलाश। अनुसंधान।

अन्वीक्षा [संज्ञा स्त्री.] ध्यान से देखना। खोज। तलाश।

अन्वेषक [वि.] (सं.) खोजने वाला। ढूँढ़ने वाला। अनुसंधान करने वाला।

अन्वेषण [संज्ञा पु.] (सं.) खोज। अनुसंधान। तलाश।

अन्वेषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुसंधान। खोज। तलाश। ढूँढ।

अन्वेषित [वि.] (सं.) खोजा हुआ। तलाश किया हुआ। अनुसंधान किया हुआ।

अन्वेषी [वि.] (सं.) खोजने वाला। अनुसंधान करने वाला। ढूँढने वाला।

अन्वेष्टा [वि.] (सं.) खोजने वाला। तलाश करने वाला।

अन्हवाना [क्रि. स.] (हिं.) स्नान कराना। नहलाना।

अन्हाना [क्रि. अ.] स्नान करना। नहाना।

अप् [संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी।

अपंकिल [वि.] (सं.) १—पंकरहित। सूखा। बिना कीचड़ का। २—शुद्ध। निर्मल। साफ। स्वच्छ।

अपंग [वि.] (हिं.) १—अंगहीन। २—लूला। लंगड़ा। काम करने में अशक्त। बेबस। असमर्थ।

अप [उप.] (सं.) उलटा। बुरा। अधिक बुरा। यह उपसर्ग जिस शब्द के आगे लगता है उसके अर्थ निम्न प्रकार से बदल जाते हैं। १—निषेध। २—अपकृष्ट। ३—विकृति। ४—विशेषता।
[सर्व.] 'आप' शब्द का संक्षिप्त रूप जो योगिक शब्दों में आता है जैसे अपस्वार्थी।

अपक [संज्ञा पु.] (डि.) पानी। जल।

अपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) दुराचार। बुरा बर्ताव। दुर्व्यवहार।

अपकरुण [वि.] (सं.) निष्ठुर। निर्दयी। बेरहम।

अपकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १—हानि पहुँचाने वाला। २—बुरा काम करने वाला।

अपकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) खोटा काम। कुकर्म। पाप।

अपकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे को खींचना। गिराना। २—बेकदरी। निरादर। अपमान। ३—घटाव। उतार। कमी।

अपकर्षक [वि.] (सं.) १—निरादर करने वाला। २—अपकर्ष करने वाला।

अपकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे को खींचना गिराना। २—बेकदरी। निरादर। अपमान। ३—घटाव। उतार। कमी।

अपकलंक [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा कलंक जो मिटाये न मिटे।

अपकाजी [वि.] (हि.) अपस्वार्थी। मतलबी।

अपकार [संज्ञा पु.] १—अनिष्ट। अहित। बुराई हानि। अनुपकार। २—अनादर। ३—अत्याचार। दुर्व्यवहार।

अपकारक [वि.] (सं.) १—अपकार करने वाला। हानि पहुँचाने वाला। २—विरोधी। द्वेषी।

अपकारी [वि.] (सं.) हानिकारक। अनिष्टसाधक। २—विरोधी। द्वेषी।

अपकारीचार [वि.] (हिं.) हानि पहुँचाने वाला। विघ्नकर्ता।

अपकीरति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपमान। निंदा। अपयश। अपकीर्त्ति।

अपकीर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपमान। अपयश। निंदा। बदनामी।

अपकृत् [वि.] (सं.) १—जिसका अपकार या हानि की गई हो। २—बदनाम। अपमानित। ३—जिसका विरोध किया गया हो।

अपकृति [संज्ञा स्त्री. (सं.) १—अपकार। हानि। अनिष्ट। २—निंदा। बदनामी। अपमान।

अपकृष्ट [वि.] (सं.) १—गिरा हुआ। पतित। भ्रष्ट। २-अधम। नीच। ३—घृणित। बुरा। खराब।

अपकृष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—बुराई। २—अधमता। नीचता।

अपक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) अनियम। व्यतिक्रम। क्रमभंग। उलटपलट।

अपक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी सभा या स्थान

मे रुष्ट या असंतुष्ट होकर उठ जाना। वाक्-आउट।

अपक्रमी [वि.] (सं.) भगाने वाला।

अपक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा कार्य। अपकार। कुकर्म।

अपक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) धमकी। भर्त्सना।

अपक्व [वि.] (सं.) १—कच्चा। बिना पका। असिद्ध। अनअभ्यस्त।

अपक्वता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कच्चापन। पका हुआ न होना। २—अनभ्यस्तता। असिद्धता

अपक्वकलुष [संज्ञा पु.] (सं.) शैवदर्शन में सकल के दो भेदों में से एक। वह बद्धजीव जो संसार में बारंबार जन्म लेता है।

अपक्ष [वि.] (सं.) १—पक्षरहित। २—बिन सहायक के।

अपक्षपात [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षपात का अभाव। न्याय। निरपेक्षता। खरापन।

अपक्षपाती [वि.] (सं.) पक्षपात न करने वाला। पक्षपातरहित। न्यायी। समदर्शी। खरा।

अपक्षिप्त [वि.] (सं.) फेंका हुआ। गिराया हुआ। पतित।

अपक्षेपण [संज्ञा पु.] १—फेंकना। पलटना। २—गिराना। अधःपतन। ३—प्रकाश का किसी वस्तु से टकराकर पलटना।

अपगत [वि.] (सं.) १—भागा हुआ। २—हटा हुआ। गत। ३—मृत। नष्ट।

अपगम [संज्ञा पु.] (सं.) १—अलग होना। वियोग। २—दूर होना। भागना।

अपगमन [संज्ञा पु.] (सं.) भाग जाना।

अपग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिकूलग्रह।

अपगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

अपघन [वि.] (सं.) बिना बादल का। मेघविहीन

अपघात [संज्ञा पु.] (सं.) १—हिंसा। हत्या। विश्वासघात। धोखा। ३—आत्महत्या। खुदकुशी।

अपघातक [वि.] (सं.) १—घातक। विनाशक। २—वंचक। धोखेबाज। विश्वासघाती।

अपघाती [वि.] (सं.) देखो 'अपघातक'।

अपच [संज्ञा पु.] (सं.) अजीर्ण। बदहजमी। न पचने का रोग।

अपचय [संज्ञा पु.] (सं.) १—कम होना। कमी। घटाव। ह्रास। २—नाश। ३—गंवाना।

अपचरण [संज्ञा पु.] (सं.) अपने अधिकार के क्षेत्र अथवा सीमा को लाँघकर दूसरे के अधिकार के क्षेत्र या सीमा में प्रवेश करना जो अनुचित तथा आपत्तिजनक समझा जाता है। ट्रेसपासिङ्ग।

अपचायित [वि.] (सं.) १—सम्मानित। पूजित। आदृत।

अपचार [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनुचित व्यवहार। २—अनिष्ट। अहित। ३—अपयश। अनादर। अपमान। ४—कुपथ्य। ५—अभाव। हीनता। ६—भूल। दोष। ७—वर्जित स्थान या क्षेत्र में जाना जो अधिकार की दृष्टि से निषिद्ध हो। ट्रेसपास।

अपचारक [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह जो वर्जित या अनुचित कार्य करे। २—अधिकार-विरुद्ध वर्जित स्थान या क्षेत्र में जाने वाला व्यक्ति। ट्रेसपासर।

अपचारी [वि.] (हिं) दुराचारी। बुरे आचरण करने वाला। दुष्ट।

अपचाल [संज्ञा पु.] कुचाल। खोटाई।

अपचित [वि.] (सं.) सम्मानित। पूजित। आदृत

अपची [संज्ञा स्त्री.] गंडमाला में जब गाँठें पुरानी होकर पक जाती हैं तथा स्थान-स्थान पर फोड़े निकल आते हैं।

अपच्छी [संज्ञा पु.] (हिं.) विपक्षी। विरोधी-शत्रु। गैर।

[वि.] पक्षरहित। बिना पंख का।

अपच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) हानि। बाधा।

अपछरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—अप्सरा। २—भारत में रंडियों की एक जाति।

अपजय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पराजय। हार।

अपजस [संज्ञा पु.] (हिं.) अपयश। दुर्नाम। बदनामी। अपकीर्ति।

अपज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १—इनकार। नाहीं करना। २—छिपना। दुराव।

अपटन [संज्ञा पु.] (हिं.) उबटन।

अपटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—परदा। कपड़े की दीवार। कनात। ३—आवरण। आच्छादन।

अपटीक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में परदा हटाकर पात्रों का सहसा रंगभूमि में प्रवेश।

अपटु [वि.] (सं.) १—जो कार्यकुशल न हो। २—सुस्त। आलसी। गावदू। ३—रोग। ४—वह (ग्रह) जिसका प्रकाश मन्द हो जाय

अपटुता [संज्ञा स्त्री.] अनाड़ीपन। पटुता का अभाव। अकुशलता।

अपठ [वि.] (हि.) १—निरक्षर। अपढ़। २—मूर्ख।

अपठ्यमान [वि.] (हि.) १—जो पढ़ा न जा सके २—न पढ़ने योग्य।

अपडर※ [संज्ञा पु.] (हि.) भय। शंका।

अपडरना※ [क्रि. अ.] (हि.) भयभीत होना। शंकित होना। डरना।

अपड़ाना※ [क्रि. अ.] (हिं.) झगड़ना। खींचातानी करना।

अपड़ाव [संज्ञा पु.] (सं.) झगड़ा। तकरार। रार। कलह।

अपढ़ [वि.] (हिं.) अपठ। बिना पढ़ा। मूर्ख। अशिक्षित।

अपंडित, अपण्डित [वि.] (सं.) जो पंडित न हो मूर्ख।

अपण्य [वि.] (सं.) न बेचने योग्य। धर्मशास्त्रानुसार बेचने का निषेध।

अपतंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वायुप्रकोप से होने वाला रोग जिससे शरीर टेढ़ा हो जाता है सिर और कनपटी में दर्द होता है, गले में खरखराहट का शब्द होता है, सांस कठिनाई से आती है और आंखें फटी पड़ती हैं।

अपत※ [वि.] (सं.) १—बिना पत्तों का। पत्रहीन। २—नग्न। आच्छादितरहित। ३—लज्जारहित। निर्लज्ज। ४—अधम। पातकी। नीच।

[संज्ञा पु.] विपत्ति। आपत्ति।

अपतई※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—निर्लज्जता। ढिठाई। उत्पात। बेहयाई। उत्पात। २—चंचलता।

अपतान [संज्ञा पु.] (हि.) बखेड़ा। प्रपंच। जंजाल।

अपतानक [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग।

अपताना [संज्ञा पु.] (हिं.) जंजाल। प्रपंच। बखेड़ा।

अपति※ [वि.] (हि.) १—विधवा। पतिविहीन।

[पु. प्र.] पापी। दुराचारी। दुष्ट।

[संज्ञा स्त्री.] दुर्दशा। अगति। दुर्गति।

अपतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा तीर्थ।

अपतोस※ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अफसोस'।

अपत्र [वि.] (सं.) पत्रविहीन। बिना पत्ते का।

अपत्य [संज्ञा पु.] (सं.) संतान। बालबच्चे।

अपत्यशत्रु [संज्ञा पु.] केकड़ा। सर्प।

अपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिना पंख का। बिना पत्ते का।

अपत्रप [वि.] (सं.) बेहया। निर्लज्ज।

अपत्रस्त [वि.] (सं.) भयभीत। डरा हुआ।

अपथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—कुपथ। कुमार्ग। २—विकट मार्ग। न चलने योग्य मार्ग। बीहड़ रास्ता।

अपथ्य [वि.] (सं.) १—जो पथ्य न हो। स्वास्थ्यनाशक। २—अहितकर।

अपद [संज्ञा पु.] (सं.) बिना पैर वाला। रेंगकर चलने वाला, यथा सांप, केंचुआ, जोंक इत्यादि।

अपदांतर, अपदान्तर [वि.] (सं.) १—संयुक्त। मिलाजुला। २—पास। समीप। सन्निकट। ३—समान। बराबर।

[क्रि. वि.] (सं.) तत्क्षण। शीघ्र। जल्द।

अपदार्थ [वि.] (सं.) तुच्छ। नाचीज़।

अपदिष्ट [वि.] (सं.) प्रयुक्त। कहा हुआ।

अपदेखा [वि.] (हिं.) अपने आपको बड़ा समझने वाला। घमंडी। स्वार्थी। आत्मप्रशंसक।

अपदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट देवता। असुर। दानव। राक्षस।

अपदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १—मिस। बहाना। व्याज। २—लक्ष्य। उद्देश। ३—भेष बदलना। अपने स्वरूप को छुपाना।

अपदोष [वि.] (सं.) दोषरहित। निष्कलंक।

अपद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—बुरा धन। २—बुरी वस्तु। निकृष्ट द्रव्य।

अपद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) चोर दरवाजा। खिड़की का छिपा हुआ द्वार।

अपध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) अनिष्टचिंतन। बुरा विचार।

अपध्वंस [संज्ञा पु.] (सं.) १—अधःपतन। २—अपमान। अवज्ञा। निरादर। हार। बेइज्जती ३—नाश। क्षय।

अपध्वंसी [वि.] (सं.) १—नाश करने वाला। २—अपमान करने वाला। निरादर करने वाला। ३—पराजय करने वाला।

अपध्वस्त [संज्ञा पु.] (सं.) १—पराजित। परास्त हारा हुआ। २—निंदित। अपमानित। ३—नष्ट।

अपन❀+ [सर्व.] (हि) अपना। हम।

अपनपौ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आत्मीयता। अपनापन। २—निज स्वरूप। आत्मभाव। ३—सुध। ज्ञान। ४—अहंकार। अभिमान। गर्व। ममत्व। ५—मान। मर्यादा।

अपनय [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी नीति। खण्डन।

अपनयन [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्थानांतरित करना। एक जगह से दूसरी जगह लेजाना। २—खण्डन। ३—हटाना। दूर करना।

अपना [सर्व.] (हिं.) निज का। निजी।
[संज्ञा पु.] स्वजन। आत्मीय।
अपना उल्लू सीधा करना—मतलब निकालना। *अपना करना*—अपना बनाना या अपने अनुकूल करना। *अपना काम करना*—प्रयोजन निकालना। *अपना किया पाना*—कर्म का फल पाना। *अपना गान*—डींग मारना। शेखी बघारना। *अपना कर लेना*—अपना बनाना। *अपना लेना*—अपने अनुसार कर लेना। *अपना घर समझना* — १—निरसङ्कोच रहना। २—गृहस्थी सँभालना। *अपना टका सीधा करना*—येनकेनप्रकारेण रुपया कमाना। हर प्रकार से रुपया कमाना। *अपना ठिकाना करना* — अपने लिये रहने का इन्तजाम करना। *अपना-पराया* — मित्र-शत्रु। *अपना बेगाना* — अपना-पराया। *अपना-सा करना*—भरसक प्रयत्न करना। *अपना-सा मुंह लेकर रहजाना*—कोई काम न बन पड़ने पर लज्जित होना। *अपना ही राग गाना*—अपने मतलब की कहना। *अपनी-अपनी पड़ना*—अपनी-अपनी चिन्ता में व्यग्र होना। *अपनी गाना*—अपनी ही बात कहना और किसी की न सुनना। *अपनी-अपनी गाना* — परस्पर विरुद्ध बातें कहना। *अपनी गुड़िया सँवार देना*—अपनी सामर्थ्य के अनुसार बेटी का विवाह कर देना। *अपनी खाल में मस्त रहना*—अपनी हालत में खुश रहना। *अपनी खिचड़ी अलग पकाना*—अपनी बात सबसे अलग रखना। *अपनी छाती पर हाथ धर के कहना*—अपने सा हाल दूसरे का भी समझना। *अपनी तरफ खयाल करना* — अपने को समझने का आदेश। अपनी अवस्था पर विचार करने के लिये कहना। *अपनी नींद सोना*—अपनी इच्छानुसार काम करना। *अपनी बात का एक*—दृढ प्रतिज्ञ। पक्का वायदा करने वाला। *अपनी बात पर आना*—हठ पकड़ना। जिद पकड़ना। *अपनी बीती* — अपना अनुभव किया हुआ। अपने पर गुजरी हुई। *अपने ख्याल में रहना* — किसी की परवाह न करना। *अपने ढङ्ग का* — अनोखा। *अपने पांव में आप कुल्हाडी मारना*—जानबूझकर विपत्ति में फँसना। बुराई मोल लेना। *अपने पैरों पर खडा होना*—स्वयं निर्वाह योग्य होना। *अपने मुंह मियांमिट्ठू बनना*—अपनी प्रशंसा आप करना। *अपने तक रखना*—किसी से न कहना। किसी को पता न देना। *अपने सिर लेना*—अपने जिम्मे लेना। *अपने हक में कांटे बोना या विष बोना*—अपने लिए आप बुराई करना। *अपने हाल में रहना*—संज्ञारहित होना। होश-हवास में रहना। *अपने पर आना*—अपने दुःस्वभाव के अनुसार काम करना। *अपने भावें*—अपनी जान में। अपने अनुसार। *अपने तईं खिचना*—अपना भला चाहना। *अपने को लाट समझना*—अपने को बड़ा समझना। *अपने गिरह का क्या जाता है*—अपना कुछ खर्च न होना। *अपने गिरेबान में मुंह डालना*—अपनी हैसियत गुण आदि का विचार करना। *अपने हाथों कब्र या कुआँ खोदना*—अपना नाश आप करना।

अपनाना [क्रि. स.] (हिं.) अपना बनाना। अपने अनुसार करना। ग्रहण करना। अपनी शरण में लेना। अपने पक्ष में लाना। अपने अधिकार में करना।

अपनापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आत्मीयता। २—आत्माभिमान।

अपनाम [संज्ञा पु.] (हिं.) दुर्नाम। बदनामी। निंदा।

अपनायत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनापन। आत्मीयता।

अपनिद्र [वि.] (सं.) निद्रारहित।

अपनीत [वि.] (सं.) दूर किया हुआ। निकाला हुआ। अपमानित।

अपनेता [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को भगा लेजा वाला व्यक्ति।

अपनोदन [संज्ञा पु.] (सं.) १—दूर करना। हटाना। २—खण्डन। प्रतिवाद।

अपभय [संज्ञा पु.] १—निर्भयता। २—व्यर्थ का भय। ३—डर। भय।
[वि.] निर्भय। निडर।

अपभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) अपमान-वचन। निंदा। बुराई।

अपभीति [वि.] (सं.) निर्भय। निडर। न डरने वाला। भयभीत।

अपभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) १—पतन। गिराव। २—विकृति। बिगाड़। ३-बिगड़ा हुआ शब्द
[वि.] विकृत। बिगड़ा हुआ।

अपभ्रंशित [वि.] (सं.) १—गिरा हुआ। २—बिगड़ा हुआ। भ्रष्ट किया हुआ।

अपमर्श [संज्ञा पु.] १—अपहरण। २—निंदा।

अपमान [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनादर। अवज्ञा। अवहेलना। २—तिरस्कार। बेइज्जती।

अपमानजनक [वि.] (सं.) अपमान के योग्य। निंदात्मक।

अपमानलेख [संज्ञा पु.] (सं) निंदापत्र। तौहीन। निंदात्मक लेख।

अपमानवचन [संज्ञा पु.] (सं.) कलंक। मानहानि। अपयश। निंदा।

अपमानना [क्रि. स.] (हिं.) अपमान करना, निंदा करना। तिरस्कार करना।

अपमानित [वि.] (सं.) तिरस्कृत। निंदित। बेइज्जत।

अपमानी [वि.] (हि.) तिरस्कार करने वाला। निरादर करने वाला।

अपमान्य [वि.] (सं.) अपमान करने योग्य। निंद्य।

अपमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कुमार्ग। कुपथ। बुरी राह।

अपमार्गी [वि.] (हिं.) १—कुमार्गी। अन्यथाचारी। २—नीच। पापी।

अपमार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सफाई। शुद्धि। संशोधन। संस्कार।

अपमिश्रण [संज्ञा पु.] (सं.) मिलावट। हीनमिश्रण।

अपमुख [वि.] (सं.) विकृत या टेढ़े मुख वाला।

अपमृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) असमय की मृत्यु। अनहोनी मौत। कुमृत्यु।

अपयश [संज्ञा पु.] (सं.) १—अपकीर्ति। बदनामी। २—कलंक। लांछन।

अपयशस्क [वि.] (सं.) जिससे अपयश हो। अपकीर्तिकर। जिससे बुराई हो।

अपयान [संज्ञा पु.] (सं.) १—पलायन। भागना। २—बुरी सवारी।

अपयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १—बुरा योग। २—कुसमय। ३—असगुन। ४—नियत मात्रा से कम या अधिक औषध द्रव्यों का योग। ५—देखो 'अपयोजन'।

अपयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) अनुचित रूप से किसी का धन या सम्पत्ति अपने काम में लाना।

अपरंच, अपरञ्च [अव्य.] (सं.) फिर भी। और भी। तो भी।

अपरंपार, अपरम्पार [वि.] हिं.) असीम। अनन्त। बेहद। जिसका पारावार न हो।

अपर (सं.) (सं.) १—पहिला। पूर्वका। २—पिछला। ३—अन्य। दूसरा। और। भिन्न। ४—हाथी का पिछला भाग।
अपरकाल = पिछला समय।

अपरछन [वि.] (सं.) १—गुप्त। छुपा हुआ। २—आवरणरहित। जो ढका न हो।

अपरतंत्र [वि.] (सं.) स्वतंत्र। स्वाधीन। आजाद

अपरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परायापन। अपनापन
[वि.] मतलबी। स्वार्थी।

अपरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्वार्थ। बेईमानी।

अपरत्र [क्रि. वि.] (सं.) दूसरे समय में। और कभी।

अपरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—पिछलापन। अर्वाचीनता। २—परायापन। ३—न्यायशास्त्र के अनुसार २४ गुणों में से एक

अपरदक्षिण [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण और पश्चिम का कोना।

अपरदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पश्चिम।

अपरना [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पार्वती का एक नाम

अपरनाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश विशेष का नाम।

अपरपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—कृष्णपक्ष। २—प्रतिवादी।

अपरबल [वि.] (सं.) बलवान्। उद्धत। बली।

अपरन्यायाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) अतिरिक्त-न्यायाधीश। अतिरिक्त अधिकर्णिक।

अपररात्र [संज्ञा पु.] (सं.) रात का पिछला भाग

अपरलोक [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरा लोक। परलोक। स्वर्ग।

अपरवक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक छन्द जिसके विषय चरण में दो नगण, एक रगण तथा लघु गुरु हों और समचरण में एक नगण दो जगण और गुरु हों।

अपरवश [वि.] (सं.) पराये वश का परतंत्र। पराधीन।

अपरस [वि.] (हि.) १—अस्पृश्य। न छूने योग्य। २—जिसे किसी ने छूआ न हो। जो छूआ न गया हो।
[संज्ञा पु.] एक चर्मरोग।

अपरांत, अपरान्त [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम का देश।

अपरांतक, अपरान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम दिशा के एक पर्वत का नाम।

अपरांतिका, अपरान्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैताली छन्द का एक भेद जिसके अनुसार वैताली छन्द के समचरणों की तरह चारों चरण हों तथा चौथी और पांचवीं मात्रा मिल कर दीर्घाक्षर हो जाय।

अपरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पश्चिम दिशा। २—लौकिक विद्या। पदार्थ विद्या। ३—ज्येष्ठ-कृष्णपक्ष की एकादशी।
[वि.] दूसरी।

अपराग [संज्ञा पु.] (सं.) विराग। उदासीनता। विषयत्याग।
[वि.] क्लेशरहित।

अपराजित [वि.] (सं.) जो पराजित न हो।
[संज्ञा पु.] १—विष्णु। २—शिव।

अपराजिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कोयल। २—दुर्गा। ३—अयोध्यानगरी का एक नाम। ४—चौदह अक्षर का एक वर्णवृत्त। जिसमें (न+न+र+स+ल.+गु.) प्रत्येक चरण में हो।

अपराध [संज्ञा पु.] (स.) १—वह अनुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचे। २—विधि या विधान के विरुद्ध कोई ऐसा कार्य जिसके कारण कर्त्ता को दंड मिल सकता हो। ३—बुरा काम। दोष। पाप। ४—भूल। चूक।

अपराधविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान जिसमें अपराध करने के कारणों की विवेचना तथा निवारण के उपायों की विवेचना हो।

अपराधशील [वि.] (सं.) जो स्वभाव से ही अपराध करने वाला या अपराधों की ओर प्रवृत्त होने वाला हो।

अपराधी [वि.] (हिं.) दोषी। पापी। कसूरवार। मुलजिम।

अपराधभंजन, अपराधभञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) पापों या अपराधों का नाश करने वाला। शिव।

अपरामृष्ट [वि.] (सं.) १—अछूता। बिना छूआ हुआ। २—अव्यवहृत। कोरा।

अपरावर्ती [वि.] (हिं.) १—बिना कार्य किये न लौटने वाला। २—किसी कार्य से पीछे न हटने वाला। मुस्तैद।

अपराह्ण [संज्ञा पु.] (सं.) दोपहर बाद का समय। तीसरा पहर।

अपरिकल्पित [वि.] (सं.) अज्ञात। अश्रुत। बिना देखा सुना।

अपरिक्लिन्न [वि.] (सं.) सूखा। शुष्क।

अपरिगण्य [वि.] (सं.) बेशुमार। अगणित। अनगिनत।

अपरिगत [वि.] (सं.) अपरिचित। अनजान। अज्ञात।

अपरिगृहीत [वि.] (सं.) व्यक्त। छोड़ा हुआ। अस्वीकृत। त्यागा हुआ।

अपरिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) दान का न लेना। अस्वीकार। २—शरीर की आवश्यकता से अधिक धन का परित्याग। ३—'संयम' नामक पांचवां यम। ४—जैनशास्त्रानुसार मोह का परित्याग।

अपरिचय [वि.] (सं.) परिचय का अभाव। जानपहिचान का अभाव।

अपरिचित [वि.] (सं.) १—अज्ञात। अनजान। बिना जान-पहिचान का। २—जो जानाबूझा न हो।

अपरिच्छन्न [वि.] (स.) १—जो ढका न हो। खुला। नंगा। २—आवरणरहित। बेपर्द। ३—सर्वव्यापक।

अपरिच्छिन्न [वि.] (सं.) १—असीम। सीमारहित। २-जो अलग न हुआ हो। मिल हुआ। ३—जिसके विभाग न हो सकें। अभेद्य।

अपरिज्ञान [संज्ञा पु.] तत्वज्ञान। शून्यता।

अपरिणत [वि.] (सं.) १—अपरिपक्व। कच्चा। जो पका न हो। २—विकारशून्य।

अपरिणामी [वि] (सं.) १—परिणामरहित। विकारशून्य। २—निष्फल। जिसका कोई परिणाम न निकले।

अपरिणीत [वि.] (सं.) अविवाहित। क्वारा। बिनब्याहा।

अपरितोष [संज्ञा पु.] (सं.) असंतोष।

अपरिपक्व [वि.] (सं.) १—जो पूरी तरह से पका न हो। अधकच्चा। २—कच्चा। जो परिपक्व न हो। ३—अधकचरा। अप्रौढ़। अधूरा

अपरिमाण [वि.] (सं.) १—परिमाणरहित। बेअंदाज। २—बहुत अधिक। ज्यादा।

अपरिमित [वि.] (सं.) १—असीम। बेहद। २—असंख्य। अनंत। अगणित।

अपरिमेय [वि.] (सं.) १—बेअंदाज। अकूत। २—असंख्य। अनगिनत।

अपरिवृत [वि.] (सं.) अपरिच्छन्न। जो ढका हुआ न हो।

अपरिवर्तनीय [वि.] (सं.) १—न बदलने योग्य। परिवर्तन के अयोग्य। २—जिसमें फेरबदल न हो सके। ३—जो बदले में न दिया जा सके। ४—नित्य। एक जैसा रहने वाला।

अपरिशेष [वि.] (सं.) जिसका नाश न हो। अनंत। अविनाशी।

अपरिष्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १—असंशोधन। सफाई या कांटछांट का अभाव। २—मैलापन। गंदगी। ३—भद्दापन।

अपरिष्कृत [वि.] (सं.) १—बिना परिष्कार किया हुआ। २—मैलाकुचैला। भद्दा।

अपरिहरणीय [वि] (स.) न छोड़ने योग्य । अत्याज्य ।

अपरिहार [संज्ञा पु.] (स .) अनिवारण । दूर करने के उपाय का अभाव ।

अपरिहारित [वि.] (सं.) अनिवारित । अवर्जित । जो दूर न किया गया हो ।

अपरिहार्य [वि.] (सं.) १—जिसका परिहार न हो सके जो किसी भी प्रकार से दूर न किया जा सके । २—अत्याज्य । ३—आदरणीय । ४—न छीनने योग्य ।

अपरिक्षित [वि.] (सं.) जो परखा हुआ न हो । जिसकी परीक्षा न की गई हो । जिसकी जांच न हुई हो ।

अपरुष [वि] (सं.) क्रोध न करने वाला । गर्व-रहित ।

अपरूप [वि.] (सं.) १—कुरूप । भद्दा । बेडौल । २—अद्भुत । अपूर्व ।

अपरेशन [संज्ञा पु.] (अं.) शस्त्रचिकित्सा । चीर-फाड़ ।

अपरोक्ष [अव्य.] (सं.) प्रत्यक्ष ।

अपर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पार्वती का एक नाम । २—दुर्गा ।

अपर्याप्त [वि.] (सं.) अपूर्ण । जो काफी न हो । अयथेष्ट ।

अपर्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अपूर्णता । कमी । त्रुटि । २—अयोग्यता । अक्षमता । असामर्थ्य ।

अपलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—बुरे लक्षण या चिह्न । २—अतिव्याप्ति तथा व्याप्तिदोष से दूषित लक्षण । दुष्ट लक्षण ।

अपलाप [संज्ञा पु.] (सं.) १—मिथ्यावाद । बक-वाद । २—बात बनाना ।

अपलोक [संज्ञा पु.] (सं.) अपयश । अपकीर्ति । बदनामी । २—अपवाद । मिथ्यादोष ।

अपवन [संज्ञा पु.] (सं.) उपवन । बाग ।

अपवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—मोक्ष निर्वाण । मुक्ति । २—त्याग । ३—दान ।

अपवर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १—त्याग । छोड़ना । २—मोक्ष । मुक्ति । निर्वाण । ३—दान ।
[क्रि. अ.] रोकना । अलग करना । अवरोध करना ।

अपवर्जित [वि.] (सं.) १—त्यागा हुआ । छोड़ा हुआ । त्यक्त । २—मुक्त ।

अपवर्तक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गणित के अनुसार वह संख्या जिससे अन्य दो या अधिक संख्या को भाग देने पर कुछ भी शेष न रहे जैसे ४ का अंक ८ तथा १२ का अपवर्तक है ।

अपवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १—परिवर्तन । उलट फेर । पलटाव । २—जब्ती ।

अपवर्तित [वि.] (सं.) १—जब्त किया हुआ । २—पलटाया या लौटाया हुआ । बदला हुआ।

अपवश [वि.](हिं.) अपने आधीन। अपने वश का

अपवाचा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपवाद । निंदा । अपकीर्ति ।

अपवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—विरोध । प्रतिवाद । खंडन । २—दोष । पाप । कलंक । ३—निंदा । अपकीर्ति । ४—नियम के विपरीत नियम । ५—अनुमति । राय । विचार । सम्मति । ६—आदेश । आज्ञा । ७—मिथ्यावार्ता । मिथ्या विश्वास ।

अपवादक [वि.] (सं.) १—निंदक । २—प्रतिरो-धक । बाधक । विरोधी ।

अपवादित [वि.] (सं.) १—निंदित । २—विरोध किया हुआ ।

अपवादी [वि.] (सं.) १—निंदा या बुराई करने वाला । २—विरोधी । बाधक ।

अपवारण [संज्ञा पु.] (सं.) १—व्यवधान । रुका-वट । २—हटाने या अलग करने का कार्य । ३—ओट । आच्छादन । ४—अंतर्द्धान ।

अपवारित [वि.] (सं.) १—छिपाया हुआ । ढका हुआ । १—अंतर्हित । ३—हटाया हुआ ।

अपवाहक [वि.] (सं.) एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने वाला ।
[संज्ञा पु.] वह यन्त्र जो भारी वस्तुओं को उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रख देता है । गृध्रयंत्र ।

अपवाहन [संज्ञा पु.] एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेजाने का कार्य ।

अपवाहित [वि.] (सं.) स्थानांतरित । एक जगह से दूसरी जगह लाया हुआ ।

अपवाहुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वायु प्रकोप जिसमें बाहु की नसें मरने से बेकाम हो जाती हैं । भुजस्तम्भ रोग ।

अपविघ्न [वि.] (सं.) निर्विघ्न । विना बाधा के ।

अपवित्र [वि.] (सं.) अशुद्ध । दूषित । नापाक । मैला । मलिन ।

अपवित्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अशुद्धि । मलिनता । मैलापन ।

अपविद्ध [वि.] (सं.) १—त्यक्त । त्यागा हुआ । २—विद्ध । बेधाहुआ । ३—मात-पिता द्वारा त्यागे हुए बालक का अन्य द्वारा पुत्रवत् पालापोसा जाय ।

अपविद्या [संज्ञा स्त्री.] अपविद्या । कुविद्या ।

अपविष [वि.] (सं.) विना विष का । विषरहित ।

अपव्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १—अधिक व्यय या या खर्च । फजूलखर्ची । २—बुरे कामों में खर्च ।

अपव्ययी [वि.] (सं.) १—अधिक खर्च करने वाला । फजूलखर्च । २—बुरे कामों में खर्च करने वाला ।

अपशंक, अपशङ्क [वि.] (सं.) निर्भय । निडर । निःशंक ।

अपशकुन [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा सगुन । असगुन

अपशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) १—अपभ्रंश शब्द । अशुद्ध शब्द । दूषित शब्द । २—गाली । कुवाच्य । ३—असंबद्ध प्रलाप । ४—अपान वायु का छुटना । पाद ।

अपश्चात्तापी [वि.] (सं.) पश्चाताप करने वाला । पछतावा करने वाला ।

अपश्चिम [वि.] (सं.) जो पीछे वाला न हो । अगला ।

अपसगुन [संज्ञा पु.] (हिं.) असगुन । बुरा शकुन । अपशकुन ।

अपसद [संज्ञा पु.] (सं.) अनुलोम विवाह द्वारा द्विजों से उत्पन्न पुत्र ।
[वि.] नीच । वर्णसंकर । अधम ।

अपसना [क्रि. अ.] (हि.) १—खिसकना । भागना । सरकना । २—चल देना ।

अपसर [वि.] (हि.) आप ही आप । अपने मन का । मनमाना ।
[संज्ञा पु.] पीछे हटना । अपसरण ।

अपसरक [संज्ञा पु.] (सं.) अपना कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व छोड़ कर भागने वाला व्यक्ति विशेषतः सैनिक सेवा या पत्नी अथवा संतान के पालन-पोषण आदि छोड़ कर भागने वाला व्यक्ति ।

अपसरण [संज्ञा पु.] (सं.) भागना । चल देना । कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व को छोड़ कर भाग जाना ।

अपसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—त्याग । उत्सर्ग । २—मनाही । रोक ।

अपसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १—विसर्जन । त्याग । मोक्ष । २—उत्तरदायित्व न निभाना ।

अपसर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) पीछे सरकना । पीछे हटना । खिसक जाना ।

अपसर्पित [व.] (सं.) पीछे खिसका या सरका हुआ । पीछे हटा हुआ ।

अपसवना [क्रि. अ.] हट जाना । खिसक जाना ।

अपसव्य [वि.] (सं.) १—दाहिना । दक्षिण । २—उलटा । विरुद्ध । ३—दाहिने कंधे पर पर जनेऊ रक्खे हुए ।

अपसार [संज्ञा पु.] (सं.) जलकण । पानी का छींटा । २—पानी की भाप ।

अपसारण [संज्ञा पु.] (सं.) दूर करना । किसी किसी व्यक्ति अथवा वाक्य को कहीं से हटा देना या निकाल देना ।

अपसादी [वि.] (सं.) एक दूसरे से विपरीत या भिन्न दिशा में रहने, होने या चलने वाला ।

अपसृत [वि.] (सं.) १—जो कहीं से निकालकर विलग किया गया हो । २—वह सेवा (विशे-षतः सैनिक सेवा) से विमुख हो गया या भाग गया हो । ३—वह जिसने अपनी पत्नी

अथवा पति को छोड़ दिया हो और उसकी देखभाल भी छोड़ दी हो।

अपसिद्धांत [संज्ञा पु.] (सं.) वह विचार जो सिद्धान्त के विपरीत हो। २—जहां किसी सिद्धान्त को मानकर उसी के विपरीत बात कही जाय। ३—जैनशास्त्रानुसार उनके विरुद्ध सिद्धांत।

अपसोस [संज्ञा पु.] (हिं.) सोच। दुःख। चिन्ता

अपसोसना [क्रि. अ.] (हि.) अफसोस करना। चिंता करना। सोच करना।

अपसौन [संज्ञा पु.] (हि.) अपशकुन। असगुन।

अपसौना [क्रि. अ.] (हि.) पहुँचना। आजाना।

अपस्नात [वि.] (सं.) प्राणी के मरने पर उदक क्रिया के समय का किया हुआ स्नान।

अपस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) मृतकस्नान। किसी के मरने पर उदकक्रिया के समय कुटुम्बियों द्वारा किया गया स्नान।

अपस्मार [संज्ञा पु.] (सं) मिरगी रोग। वह रोग जिसमें रोगी काँपकर मूर्छित होकर भूमिपर गिर पड़ता है। *हिस्टीरिया।*

अपस्मारी [वि.] (सं.) अपस्मार रोग से पीड़ित।

अपस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुलक्कड़पन। जल्दी भूल जाना।

अपस्वार्थी [वि.] (हि.) मतलबी। अपना स्वार्थ साधने वाला।

अपह [वि.] (सं) विनाशक। नाश करने वाला

अपहत [वि.] (सं.) १—विनाश किया हुआ। मारा हुआ। २—हटाया हुआ। दूर किया हुआ।

अपहतपाप्मा [वि.] (सं.) सब पापों से मुक्त। पाप शून्य।

अपहति [संज्ञा स्त्री.] विनाश। नाश।

अपहार [वि.] (सं.) चोरी करने वाला। छीनने वाला।

अपहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—हर लेना। छीनना। २—चोरी। लूट। ३—छिपाव। संगोपान।

अपहरणीय [वि.] (सं.) १—हर लेने योग्य। लेने योग्य। २—चुराने या लूटने योग्य। ३—छिपाने योग्य।

अपहरना [क्रि. स.] (हि.) १—लूटना। छीनना। २—चुराना। ३—कम करना। नाश करना। क्षय करना।

अपहर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) हर लेने वाला। छीन लेने वाला। २—लूटने वाला। चोर। ३—छिपाव।

अपहार [संज्ञा पु.] (सं.) १—अपहरण। चोरी। लूट। २—छिपाव। संगोपन।

अपहारक [संज्ञा पु.] (सं.) १—छीनने वाला। बलपूर्वक हरने वाला। २—डाकू। चोर। लुटेरा।

अपहारित [वि.] (हिं.) १—छीना हुआ। हराया हुआ। २—चुरवाया हुआ। लूटा हुआ। ३—छिपाया हुआ।

अपहारी [संज्ञा पु.] (सं.) १—हरण करने वाला। २—चोर। लुटेरा। डाकू। ३—नाश करने वाला।

अपहार्य [वि.] (सं.) छीनने योग्य। चुराने लायक।

अपहास [संज्ञा पु.] (सं.) १—उपहास। २—अकारण हास्य।

अपहृत [वि.] (सं.) चुराया हुआ। लूटा हुआ। छीना हुआ।

अपहेला [संज्ञा पु.] (सं.) तिरस्कार। फटकार। झिड़की।

अपह्नव [संज्ञा पु.] (सं.) १—छिपाव। दुराव। मिस। बहाना। टालमटूल।

अपह्नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दुराव। छिपाव २—बहाना। टालमटूल। ३—एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का निषेध करके दूसरी वस्तु की स्थापना की जाती है।

अपह्नुवान [वि.] (सं.) १—छिपता हुआ। छिपाने वाला। २—इन्कार करने वाला।

अपहास [संज्ञा पु.] (सं.) कमी। टोटा। घाटा।

अपांग [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की कोर। कटाक्ष। आंख का कोना।
[वि.] अंगहीन। अंगभंग।

अपांनाथ, अपांनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। जलपति।

अपांपति [संज्ञा पु.] (सं.) १—समुद्र। सागर। २—वरुण।

अपांवत्स [संज्ञा पु.] (सं.) चित्रानक्षत्र से पांच अंश उत्तर में दिखाई देने वाला एक बड़ा तारा।

अपांशुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिव्रता स्त्री।

अपांशुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिव्रता स्त्री।

अपांसुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिव्रता स्त्री।

अपा [संज्ञा पु.] (हिं.) अभिमान। अहंकार। घमंड। गर्व।

अपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १—अपच। अजीर्ण। २—कच्चापन।

अपाकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—अलग करना। २—हटाना। निराकरण। दूर करना। ३—चुकता करना। बेबाक करना।

अपाकशाक [संज्ञा पु.] (सं.) अदरक। आदी।

अपाकृत [वि.] (सं.) हटाया हुआ। दूरीकृत।

अपाटव [संज्ञा पु.] (सं.) १—पटुता का अभाव। अनाड़ीपन। अकुशलता। २—सुस्ती। अचंचलता। ३—कुरूपता। बदसूरती। ४—बीमारी। रोग। ५—मद्य। शराब।
[वि.] १—अनाड़ी। २—अचंचल। सुस्त। ३—रोगी। ४—बदसूरत।

अपाठ्य [वि.] (सं.) न पढ़ने योग्य। न बांचने योग्य।

अपात्र [वि.] (सं.) १—कुपात्र। अयोग्य। २—मूर्ख। अनाड़ी। ३—श्राद्धादि में न बुलाने योग्य।

अपात्रता [संज्ञा पु.] कुपात्रता। अयोग्यता। अनाड़ीपन।

अपात्रदायी [वि.] (सं.) कुपात्र को दान देनेवाला

अपात्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्म जिसके करने से ब्राह्मण अपात्र हो जाता है।

अपाद [वि.] (सं.) बिना पैर का। पंगु। पादरहित

अपादान [संज्ञा पु.] (सं.) १—हटाना। अलगाव। विभाग। २—व्याकरण में वह कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का आरम्भ होता है। इस कारक में पंचमी विभक्ति लगती है।

अपान [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की पांच वायु में से एक।
[संज्ञा पु.] (हिं.) आत्माभिमान। आत्मगौरव। आत्मभाव। सुध।
[वि.] १—सब संकटों को दूर करने वाला। २—ईश्वर का एक विशेषण।
[सर्व.] (हि.) अपना। निज का।

अपानवायु [संज्ञा पु.] (सं.) १—शरीर की पांच प्रकार की वायु में से एक। २—गुदामार्ग से आने वाली वायु। पाद।

अपाना [सर्व.] (हिं.) अपना। निज का।

अपाप [संज्ञा पु.] (सं.) जो पाप न हो। पुण्य। पुण्यकर्म।
[वि.] पापरहित। निष्पाप।

अपामार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) चिचड़ा। चिचड़ी। ऊँगा। लटजीरा। अंझाझारा।

अपाय [संज्ञा पु.] (सं.) १—अलगाव। विश्लेष २—अपगमन। पीछे हटना। ३—अन्यथाचार। अनरीति। ४—नाश।
[वि.] १—अपाहिज। लँगड़ा। बिना पैर का।

अपायी [वि.] (सं.) १—अस्थिर। अनित्य। नश्वर। २—पृथक होने वाला।

अपार [वि.] (सं.) १—असीम। अनन्त। बेहद। २—अतिशय। अधिक। असंख्य। अगणित। बहुत।
[संज्ञा पु.] सांख्यशास्त्रानुसार वह तुष्टि जो धनोपार्जन के परिश्रम और निंदा से छुटकारा पाने पर होती है।

अपारग [वि.] (सं.) अयोग्य। नालायक। अक्षम।

अपारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी। दुर्गा।

अपार्जित [वि.] (सं.) निकाला हुआ। फैंका हुआ

अपार्थ [वि.] (सं.) १—अर्थशून्य। निरर्थक। २—व्यर्थ। निष्प्रयोजन। ३—प्रभावशून्य। नष्ट। [संज्ञा पु.] कविता में पद का अर्थ न होने का दोष।

अपार्थक [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायानुसार एक निग्रह स्थान।

अपाल [वि.] (सं.) रक्षकरहित। विना रक्षक का

अपाव [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्याय। अत्याचार। उपद्रव। अन्यथाचार।

अपावन [वि.] (सं.) अपवित्र। मलिन। अशुद्ध

अपावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १—वापसी। पलटाव। २—भागना। पीछे हटना। ३—लौटना।

अपाश्रय [वि.] (सं.) आश्रयहीन। वेसहारा।

अपाश्रित [वि.] (सं.) १—विरक्त। त्यागी। २—एकांत सेवी।

अपासन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने सम्मुख आई प्रार्थना, कथनादि की अस्वीकृति। नामंजूरी।

अपासित [वि.] (सं.) अस्वीकृत। जो माना न गया हो।

अपास्त [वि.] (सं.) त्यागा हुआ। हटाया हुआ

अपाहरण [संज्ञा पु.] (सं.) आकर्षण। खिंचाव।

अपाहिज [वि.] (हिं.) १—अंगहीन। लूला-लंगड़ा। २—काम न करने योग्य। ३—आलसी। सुस्त।

अपिंडी [वि.] (सं.) अशरीरी। बिना देह या शरीर का। पिंडरहित।

अपि [अव्य.] (सं.) १—भी। ही। २—निश्चय। ठीक।

अपिच [अव्य.] (सं.) १—और भी। पुनश्च। २—बल्कि।

अपितु [वि.] (सं.) १—किंतु। २—बल्कि।

अपितृ [संज्ञा पु.] (सं.) विना माँ बाप का।

अपिधान [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छादन। आवरण। ढौक। ढकन।

अपिनद्ध [वि.] (सं.) बँधा हुआ। ढका हुआ।

अपिवद्ध [वि.] (सं.) बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। ढका हुआ।

अपिहित [वि] (सं.) आच्छादित। आवृत्त।

अपीच [वि.] (सं.) सुन्दर। अच्छा। सुहावना। मनोहर।

अपीच्य [वि.] (सं.) १—सुंदर। मनोहर। खूबसूरत। २—छिपा हुआ। गोप्य।

अपील [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १—विचारार्थ प्रार्थना। पुनर्विचारार्थ प्रार्थना। २—छोटी अदालत के फैसले के विरुद्ध बड़ी अदालत में फिर विचारार्थ अभियोग उपस्थित करना

अपील-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) अपील करने की अदालत। अभियोग पर पुनः विचार करने वाली अदालत।

अपीलांट [संज्ञा पु.] (अं.) अपील विचारार्थ निवेदन करने वाली अदालत।

अपीली [वि] (अं.) अपील-संबंधी।

अपुंस्त्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नामर्दी। क्लीवत्व

अपुच्छ [वि.] (सं.) बिन पूंछ या दुम का।

अपुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) पाप।

[वि.] १—पुण्यरहित। २—मैला। ३—बुरा

अपुत्र, अपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) निःसन्तान। पुत्ररहित। जिसके बेटे न हों। निपूता।

अपुत्रता [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्रहीनता।

अपुत्रता, अपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्रहीन स्त्री।

अपुनपो [संज्ञा पु.] (हिं.) आत्मीयता। अपनापन। मेलजोल।

अपुनरावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ति। मोक्ष। पुनरावर्तन का अभाव।

अपुनरावृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोक्ष। मुक्ति। निर्वाण।

अपुनर्भव [संज्ञा पु.] (सं.) दुबारा जन्म न लेने का भाव। मुक्ति। मोक्ष। निर्वाण।

अपुनीत [वि.] (सं.) १—अपवित्र। अशुद्ध। २—दूषित। दोष वाली।

अपुरातन, अपुराण [वि.] (सं.) जो पुराना न हो। नवीन। नूतन।

अपुरुष [वि.] (सं.) जनाना। हिजड़ा। नामर्द।

अपुरोदंत, दन्त [वि.] (सं.) बिना दांत वाला। पोपला।

अपुष्ट [वि.] (सं.) १—दुबला-पतला। दुर्बल। २—अपक्व।

अपुष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्टता का अभाव। दुबलापन।

अपुष्प [वि.] (सं.) बिना फूल वाला।

[संज्ञा पु.] कुसुमरहित वृक्ष जिसके फल लगें

अपूजक [वि.] (सं.) पूजा न करने वाला।

अपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनादर। सन्मान का अभाव।

अपूजित [वि.] (सं.) विना पूजा किया हुआ।

अपूज्य [वि.] (सं.) न पूजने योग्य। निंदनीय।

अपूठना [क्रि. अ.] (हिं.) १—तोड़ना। मिटाना। नष्ट करना। २—उलटना। पलटना।

अपूठा [वि.] (हि.) अपरिपक्व। अपुष्ट। कच्चा। अनभिज्ञ।

अपूत [वि.] (सं.) अपवित्र। अशुद्ध।

[वि.] (हिं.) निपूता। पुत्रहीन।

[संज्ञा पु.] कपूत बुरा लड़का।

अपूय [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ के आटे की लिट्टी।

अपूर [वि.] (हि.) अपूर्ण। भरपूर। भरा हुआ।

अपूरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपास का पौधा।

अपूरना [क्रि. स.] (हि.) १—आपूर्णन। भरना। २—फूँकना। फूँक मारना। बजाना।

अपूरब [वि.] (हिं.) अपूर्व। विलक्षण।

अपूरा [संज्ञा पु.] (हि.) भरा हुआ। फैला हुआ

अपूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भरी हुई। फैली हुई।

अपूर्ण [वि.] (सं.) १—अधूरा। २—कम। जो पूरा न हो। जो भरा न हो।

अपूर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अधूरापन। न्यूनता। कमी।

अपूर्णभूत [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में का वह भूतकाल जिसमें क्रिया की न हो।

अपूर्व [वि.] (सं.) १—अनुपम। उत्तम। २—अद्भुत। अनोखा। विचित्र। अलौकि ३—पहिले न रहा हुआ।

अपूर्वता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विलक्षणता। खापन। निरालापन।

अपूर्वत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपूर्वता। क्षणता। अनोखापन।

अपूर्वरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनोखा २—वह काव्यालंकार जिसमें पूर्वगु मिलना असम्भव हो।

अपूर्वविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अनूठा २—किसी वस्तु को प्राप्त करने की ऐसी जिसका बोध प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्र से न हो सके।

अपृक्त [वि.] (सं.) १—अनमेल। बेजोड़। असंबद्ध। ३—खालिस। अकेला।

[संज्ञा पु.] पाणिनि के मत से एक अक्षर प्रत्यय।

अपृथक् [अव्य.] (सं.) जो अलग न रहे। हुआ।

अपृष्ठ [वि.] (सं.) बिना पूछा हुआ।

अपेक्षणीय [वि.] (सं.) अपेक्षा करने यो अनुरोध करने योग्य। जिसकी राह दे पड़े।

अपेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—इच्छा। अ लाषा। आकांक्षा। चाह। २—आश्र भरोसा। आशा। ३—आवश्यकता। ज ४—निस्बत। तुलना। मुकाबिला। अनुरोध।

अपेक्षाकृत [क्रि. वि.] (सं.) तुलना या मुकाब

अपेक्षाबुद्धि [संज्ञा स्त्री.] बुद्धि की स्वच्छ

अपेक्षित [वि.] (सं.) १—जिसकी अपेक्षा आवश्यकता हो। २—इच्छित। चाहा हु आकांक्षायुक्त। वांछित।

अपेक्षिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकांक्षा। इच्छा चाह।

अपेक्षी [वि.] (सं.) अपेक्षा करने वाला। देखने वाला। बाट जोहने वाला।

अपेक्ष्य [वि.] (सं.) देखो 'अपेक्षित'।

अपेच्छा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपेक्षा। आकां

अपेत [वि.] (सं.) दूर गया हुआ। विगत।

अपेय [वि.] (सं.) न पीने योग्य। निषिद्ध

अपेल [वि] (हिं.) अटल। अभेद्य। न टलने वाली। न हटने वाली।

अपैंठ* [वि] (हिं.) जहाँ पहुँच न हो सके। पहुँच से बाहर। दुर्गम। अगम।

अपैतृक [वि.] (सं.) वह जो पिता से (विरासत) में न मिला हो।

अपैशुन [वि] (सं.) भला। सच्चा। ईमानदार।

अपोगंड [वि.] (सं.) १—१६ वर्ष से ऊपर की आयु का। २—बालिग।

अपोमय [वि.] (स) जल से परिपूर्ण। पानी से भरा हुआ।

अपोह [संज्ञा पु.] (स) छुटकारा। त्याग।

अपोहनीय [वि] (सं.) जो हटाया जा सके।

अपोहित [वि] (सं) हटाया हुआ।

अपौरुष [वि.] (सं) नामर्द। पौरुषहीन।

अप्तोर्याम [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निष्टोम नामक यज्ञ का एक अंग।

अप्यय [संज्ञा पु] (सं.) १—लय। नाश। २—अपगमन।

अप्रकट, अप्रकटित [वि] (सं.) अप्रकाशित। गुप्त। छिपाया हुआ।

अप्रकरण [संज्ञा पु.] अपप्रधान विषय।

अप्रकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठता का अभाव।

अप्रकांड, अप्रकाण्ड [वि] (सं) बिना डाल का शाखाविहीन।

अप्रकाश [संज्ञा पु] (स) अंधकार। प्रकाश का अभाव। उजाले का न होना। २—छिपाव।

अप्रकाशमान [वि] (स) देखो 'अप्रकाशित'।

अप्रकाशित [वि] (सं.) १—अंधेरा। बिना उजाले का। २—गुप्त। अप्रगट। जो छिपा हुआ हो। ३-जिसे छापकर प्रचलित न किया गया हो। जो सर्वसाधारण के सामने न आया हो।

अप्रकाश्य [वि] (सं.) प्रकाश न करने योग्य। प्रगट न करने योग्य। गोप्य।

अप्रकृत [वि] (स.) १—अस्वाभाविक। अयथार्थ। २—बनावटी। कृत्रिम। गढ़ा हुआ। ३—झूठा।

अप्रकृतआश्रितश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेषशब्दालङ्कार का एक भेद जिसमें अप्रकृत तथा अप्रस्तुत का श्लेष हो।

अप्रखर [वि.] (सं.) कोमल। मृदुल। मुलायम।

अप्रगल्भ [वि.] (सं) १—अपरिपक्व। अप्रौढ। २—निरुत्साह। निरुद्यम। सहनशील। सभ्य।

अप्रगाध [वि] (सं.) अति गम्भीर। बहुत गहरा।

अप्रचरित [वि] (सं) जिसका प्रचार न हो। २ अप्रचलित।

अप्रचलित [वि](स) जो प्रचलित न हो। अव्यवहृत। अप्रयुक्त। व्यवहार में न आने वाली।

अप्रचुर [वि.] (सं.) कम। न्यून। थोड़ा।

अप्रच्छन्न [वि.] (सं.) १—खुला हुआ। अनावृत २—स्पष्ट। प्रगट।

अप्रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं) वन्ध्या। बांझ स्त्री।

अप्रतर्क्य [वि] (सं.) जिसके विषय में तर्क-वितर्क न हो सके।

अप्रतिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १—बदले का न होना। २—उपाय या तदबीर का अभाव। [वि.] १—जिसका उपाय न हो सके। २—जिसका बदला न दिया जा सके।

अप्रतिकारी [वि.] (सं.) १—उपाय या तदबीर न करने वाला। २—बदला न लेने वाला।

अप्रतिक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं) उपशमन न होना। न दबाया जाना।

अप्रतिगृहीत [वि.] (सं.) जो न लिया गया हो। जिसको ग्रहण न किया गया हो।

अप्रतिग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी वस्तु का ग्रहण न करना। दान न लेना। २—कन्यादान का ग्रहण न करना।

अप्रतिघात [वि.] (सं.) १—बिना विरोध का। २—बिना चोट लगा हुआ। धक्के से बचा हुआ। बेठोकर।

अप्रतिदेय [वि.] (सं.) जो सर्वदा के लिये स्थायी रूप से दिया गया हो और जिसे लौटाना या चुकाना न पड़े।

अप्रतिदेय-ऋण [संज्ञा पु.] (सं.) लौटाया न जाने वाला सहायता के रूप में दिया गया ऋण।

अप्रतिपत्ति [संज्ञा स्त्री.] १—क्या करना चाहिए इसका ज्ञान न होना। २—निश्चय का अभाव ३—प्रकृत अर्थ समझने की अक्षमता।

अप्रतिपन्न [वि.] (सं.) १—कर्त्तव्यज्ञानरहित। २—अनिश्चित। अज्ञात।

अप्रतिबंध, अप्रतिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) रुकावट का न होना। स्वच्छन्दता।

अप्रतिबद्ध [वि.] (सं.) १—बेरोक। स्वतंत्र। स्वच्छंद। मनमाना।

अप्रतिभ [वि.] (सं.) १—प्रतिभारहित। चेष्टाहीन। उदास। २—सुस्त। मन्द। अप्रगल्भ ३—मतिहीन। ४—लजीला। लजालू।

अप्रतिभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिभा का अभाव। स्फूर्ति का अभाव। २—न्यायानुसार वह निग्रह स्थान जहाँ उत्तर देने वाले पक्ष का दूसरे पक्ष वाले उत्तर न दे सकें।

अप्रतिम [वि.] (सं.) जिसके सदृश अन्य कोई न हो। अनुपम। अद्वितीय।

अप्रतिमान [वि.] (सं.) बेजोड़। अनुपम। अद्वितीय।

अप्रतियोगी [वि.] (सं.) अनुपम। अनोखा। २ जिसका कोई शत्रु न हो। बेजोड़।

अप्रतिरूप [वि.] (सं.) अनुपम। अद्वितीय।

अप्रतिवीर्य [वि.] (सं.) अत्यन्त पराक्रमी।

अप्रतिसिद्ध [वि.] (सं.) जिसका निषेध न हो। अनिषिद्ध। सम्मत।
[संज्ञा पु.] वास्तुविद्या के नौ भागों में से एक

अप्रतिषेध [संज्ञा पु.] (सं.) निषेध का अभाव।

अप्रतिष्ठ [वि.] (सं.) तिरस्कृत। प्रतिष्ठारहित।

अप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अपकीर्ति। अपयश। २—अनादर। अपमान।

अप्रतिष्ठित [वि.] (सं.) जो प्रतिष्ठित न हो। अपमानित। बदनाम। तिरस्कृत।

अप्रतिहत [वि.] (सं.) १—जिसका विघात न हुआ हो। २—अपराजित। ३—न रोकाहुआ

अप्रतीक [वि.] (सं.) समूचा। सम्पूर्ण। समग्र। पूरा।

अप्रतीकार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतीकार का अभाव।

अप्रतीकारी [वि] (सं.) बदला न लेने वाला।

अप्रतीघात [वि.] (सं) बिना प्रतिघात का।

अप्रतीयमान [वि] (सं.) जो निश्चित न हो। अनिश्चित।

अप्रतीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विश्वास का अभाव। अविश्वास। ज्ञान का न होना।

अप्रतीप [वि] (सं.) अनुकूल। अनुसार। मुताबिक।

अप्रतुल [वि.] (सं.) १—जिसकी तुलना न हो। जिसका मान न हो सके। बेहद। २—अनुपम। बेजोड़।

अप्रत्यक्ष [वि.] (सं.) १—परोक्ष। २—गुप्त। छिपा। ३—इन्द्रियज्ञान से परे।

अप्रत्यक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अज्ञानता। अदृश्य।

अप्रत्यनीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक काव्यालंकार जिसमें शत्रु के जीतने की सामर्थ्य के कारण उससे संबंधित वस्तुओं का तिरस्कार किया जाय।

अप्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) अविश्वास। अश्रद्धा।

अप्रत्याशित [वि.] (सं.) जिसकी आशा न की गई हो। अचानक या अकस्मात् होने वाला।

अप्रथित [वि.] (सं.) अप्रकाशित। अज्ञात।

अप्रधान [वि.] (सं.) जो प्रधान या मुख्य न हो। गौण। साधारण। सामान्य।

अप्रधानता [संज्ञा स्त्री.] (स) १—प्रधानत्व का अभाव। २—आधीनता। ३—नीचता।

अप्रपन्न [वि.] (सं.) न जाना हुआ। अज्ञात।

अप्रबल [वि.] (सं.) पराक्रमरहित। शक्तिहीन।

अप्रभ [वि.] (सं.) प्रभारहित। सुस्त।

अप्रभु [वि] (सं.) अयोग्य। असमर्थ।

अप्रभुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रभुता का अभाव। २—कमी। त्रुटि।

अप्रमत्त [वि.](सं.) जो मदमस्त न हो। जो नशे में न हो। सावधान।

अप्रमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भ्रममूलक ज्ञान।

अप्रमाण [वि.] (सं.) अपार। असीम।
[संज्ञा पु.] प्रमाण का अभाव। असम्भव कथन

अप्रमाणिक [वि.] (सं.) १—प्रमाण से सिद्ध न होने वाली। २—अधिकारशून्य।

अप्रमाद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमाद या पागलपन का अभाव।
[वि.] १-जो मतवाला न हो। २—भ्रमरहित

अप्रमादी [वि.] (सं.) सचेत। होशियार।

अप्रमित [वि.] (सं.) १—अपरिमित। जिसकी नाप न हो सके। २—अज्ञात। ३-अप्रमाणित

अप्रमेय [वि.] (सं.) जो नापा न जा सके। जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो सके। अपरिमित। अपार। अनंत।

अप्रयत्न [वि.] (सं.) यत्न का न होना।

अप्रयुक्त [वि.] (सं.) व्यवहार में न लाया हुआ। जो काम में न लाया हुआ हो। जिसका प्रयोग न हुआ हो। अव्यवहृत।

अप्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रयोग का अभाव।

अप्रयोजक [वि.](सं.) प्रयोग न कर सकने वाला

अप्रलंब, अप्रलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) शीघ्रता। जल्दी। फुर्ती।

अप्रवर्तक [वि.] (सं.) कार्य में उत्साह न दिखाने वाला।

अप्रवीण [वि.] (सं.) अनाड़ी। मूर्ख। अज्ञान।

अप्रवृद्ध [वि.] (सं.) ज्यादा न बढ़ा हुआ।

अप्रवृत्त [वि.] (सं.) कार्य में न लगा हुआ। अकार्यसाधक। अव्यवहारीय।

अप्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—प्रवृति का अभाव। चित्त या मन का झुकाव न होना। २—अनुत्साह। अप्रचार।

अप्रशंसनीय [वि.] (सं.) प्रशंसा न पाने योग्य। निंदनीय। निंदा के अयोग्य।

अप्रशस्त [वि] (सं.) जो प्रशस्त न हो। नीच। खराब।

अप्रसंग [संज्ञा पु.] (सं.) अलगाव।
[वि.] संबंधरहित।

अप्रसन्न [वि.] (सं.) १—असंतुष्ट। जो प्रसन्न न हो। नाराज। २—खिन्न। विरक्त। उदास। दुखी।

अप्रसन्नता [संज्ञा स्त्री.] १—असंतोष। नाराजगी। २—रोष। ३—खिन्नता। उदासी।

अप्रसव [वि.] (सं.) प्रसव का अभाव।

अप्रसह्य [वि.] (सं.) सहन न करने योग्य।

अप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) कृपा का अभाव। ना-महरबानी।

अप्रसिद्ध [वि.] (सं.) १—जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात। २—गुप्त। छिपा हुआ।

अप्रसूत [वि.] (सं.) बाँझ। सन्तानहीन।

अप्रस्तुत [वि.] (सं.) अनुपस्थित। जो प्रस्तुत न हो। २—अप्रसंगिक। ३—जो तैयार न हो। अनुद्यत। ४—गौण। अप्रधान।

अप्रस्तुतप्रशंसा [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें अप्रस्तुत के वर्णन से प्रस्तुत की प्रतीति कराई जाय।

अप्रहत [वि.] (सं.) १—जिस पर मार न पड़ी हो। २—कोरा (कपड़ा)। बिना पहिना (वस्त्र) ३—जो (भूमि) जोती न गई हो।

अप्राकृत [वि.] (सं.) जो स्वाभाविक न हो। असाधारण। असामान्य।

अप्राचीन [वि.] (सं.) जो पुराना न हो। नया। नवीन।

अप्राज्ञ [वि.] (सं.) बिना पढ़ा-लिखा। अशिक्षित। निरक्षर।

अप्राज्ञता [संज्ञा स्त्री.] शिक्षा का अभाव। नादानी।

अप्राण [वि.] (सं.) १—प्राणहीन। निर्जीव। मृत। २—ईश्वर का एक विशेषण।

अप्राणी [वि.] (सं.) बिना प्राण का। निर्जीव।

अप्राप्त [वि.] (सं.) १—जो प्राप्त न हो। न मिलने वाला। अलभ्य। २—जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३—अप्रस्तुत। परोक्ष। अप्रत्यक्ष। ४—अनागत। जो न आया हो।

अप्राप्तकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १—आने वाला समय। भविष्य। २—उपरोक्त समय से पहले का अवसर।

अप्राप्तयौवन [संज्ञा पु.] (सं.) जवानी आने से पहले का समय। नाबालिग।

अप्राप्तव्यवहार [वि.] (सं.) नाबालिग। सोलह वर्ष से कम आयु का।

अप्राप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिना ब्याही लड़की। कुमारी।

अप्राप्य [वि.] (सं.) अलभ्य। दुष्प्राप्य। जो प्राप्त न हो सके। जो न मिले।

अप्रामाणिक [वि.] (सं.) १—जो प्रमाण से सिद्ध न हो। प्रमाणरहित। ऊटपटांग। २—जिस पर विश्वास न किया जा सके।

अप्रामाण्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमाण का अभाव। बेसबूत।

अप्रासांगिक, साङ्गिक [वि.] (सं.) प्रसंग के प्रतिकूल। जिसकी कोई चर्चा न हो। बेमौका

अप्रिय [वि.] (सं.) [पु. प्र.] १—जो प्रिय न हो। अरुचिकर। नापसंद। २—जो प्यारा न हो। जिसकी इच्छा न हो।
अप्रियकारी = अनभीष्ट करने वाला। *अप्रियभागी* = हतभाग्य। *अप्रियवादी* = असभ्यता से बोलने वाला।
[संज्ञा पु.] वैरी। शत्रु।

अप्रीति [संज्ञा स्त्री.] १—प्रेम या प्रीत का अभाव। २—विरोध। वैर। ३—अ
अप्रीतिकर = संतोष प्रदर्शित करने वाला।

अप्रेंटिस [संज्ञा पु.] (अं.) काम सीखने वा उम्मेदवार।

अप्रैल (अं.) अंग्रेजी वर्ष का चौथा महीना ३० दिन का होता है।

अप्रैलफूल [संज्ञा पु.] (अं.) अप्रैल मास पहली तारीख को हंसी में लोगों को बनाया जाता है। इस दिन योरोप वाले परिहास करना उचित समझते हैं।

अप्रौढ़ [वि.] (सं.) १--कच्ची उमर का। ना लिग। २—जो पुष्ट न हो। कमजोर। गर्वरहित। ४—कातर। कायर।

अप्रौढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कम उमर लड़की जिसका विवाह हो गया हो।

अप्सर [संज्ञा स्त्री.] देखो 'अप्सरा'।

अप्सरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—जलकण। वा कण। २—स्वर्ग की वेश्या। देवांगना परी। अनुपम सुन्दर स्त्री।

अप्सुचर [वि.] (सं.) जल में चलने वाला। ज चर।

अफ़गान [संज्ञा पु.] (अ.) अफगानिस्तान निवासी। काबुली।

अफ़जूँ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) अधिकता।
[वि.] अवशेष। उबरा हुआ। खर्च से ब हुआ।

अफ़ताब [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सूर्य। आदित्य।

अफ़ताबा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) हाथ मुंह धोने मूठदार गड़ुवा।

अफ़ताबी [वि.] (फ़ा.) १—सूर्य से सम्बन्धी। २—धूप में पकाई हुई।
[संज्ञा स्त्री.) एक प्रकार की आतिशबाजी।

अफ्यून [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) अफीम। अहिफेन।

अफ्यूनी [वि.] (फ़ा.) अफीम खाने वाला। अफीमची।

अफरना [क्रि. अ.] (हिं.) १—खूब पेट भ कर खाना। भोजन से तृप्त होना २—पे फूलना। ३—ऊबना।
अफर जाना = खूब पेट भर कर खाना।

अफरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—पेट फूलना। २—अपच के कारण वायु से पेट का फूलना। पेट फूलने का एक रोग।

अफ़रातफ़री [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—लौटफेर। उलट-फेर। २-जल्दी। हड़बड़ी। व्यतिक्रम। हड़बड़ी।

अफ़राना [क्रि. अ.] (अ.) पेट भर कर खा या खिलाना। भोजन से तृप्त करना। अघा

अफ्रीका [संज्ञा पु.] एक प्रसिद्ध महाद्वीप।

अफ़रीद [संज्ञा पु.] (अ.) पाकिस्तान राज्य अंतर्गत पेशावर के उत्तर में पहाड़ियों रहने वाली जाति। एक पठान जाति।

अफल [वि.] ((सं.) १—निष्फल । फलरहित । बिना फल का २—व्यर्थ । निष्प्रयोजन । ३—बाँझ । बंध्या । [संज्ञा पु.] झाऊ का वृक्ष ।

अफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मुंहआँवला । २— घृतकुमारी । घीक्वार ।

अफलित [वि.] (सं.) १—फलहीन । २—परिणामरहित । निष्फल ।

अफ़वा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अफ़वाह । उड़ती ख़बर । किंवदन्ती ।

अफ़वाह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—उड़ती ख़बर । किंवदन्ती । २—गप्प । मिथ्या समाचार ।

अफ़शा [संज्ञा पु.] (फा.) प्रकाश । रोशनी ।

अफसंतीन [संज्ञा पु.] (यू.) एक प्रकार का पौधा जो काशमीर में पाया जाता है यह यूनानी दवाइयों में काम आता है ।

अफ़सर [संज्ञा पु.] (अं.) १—अधिकारी । प्रधान । मुखिया । २—हाकिम । प्रधान कर्मचारी ।

अफ़सरी [संज्ञा स्त्री.] १—अफ़सर का कार्य । २-अधिकार । ३—शासन । हुकूमत ।

अफ़साना [संज्ञा पु.] (फा.) किस्सा । कहानी । आख्यायिका । कथा ।

अफ़सून [संज्ञा पु.] (फा.) जादू । टोना ।

अफ़सोस (फा.) १—शोक । रञ्ज । २—पछतावा । खेद । पश्चात्ताप ।

अफ़ीडेविट् [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १—शपथ । हलफ़ । २—शपथपत्र । हलफनामा ।

अफ़ीम [संज्ञा स्त्री] (यू.) पोस्त के ढेंढ से निकली हुई गेंद ।

अफ़ीमची [संज्ञा पु.] (अ.) अफ़ीम खाने वाला व्यक्ति ।

अफ़ीमी [वि] (अ.) अफीम खाने वाला व्यक्ति ।

अफुल्ल [वि.] (सं.) अविकसित । मुकुलित । बिना खिला हुआ ।

अफू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अफीम । अहिफेन ।

अफेन [वि.] (सं.) बिना फेन या झाग वाला ।
[संज्ञा पु.] अफीम । अहिफेन ।

अफेल [संज्ञा पु.] (सं.) अफीम । अहिफेन ।

अब [क्रि वि] (हि.) इस समय । अभी । अबकी । इस बार । अब ।
अब का = इस समय का । आधुनिक । अब की = इस बार । अब जाकर = इतनी देर पीछे । अब-तब करना = हीला-हवाला करना । अब-तब होना = १—मृत्यु समय निकट आना । २—टल जाना ।

अबका [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौधा ।

अबखरा [संज्ञा पु.] (अ.) भाप या वाष्प ।

अबखोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आबखोरा' ।

अबज़रवेटरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वेधग्रह । ज्योतिषसम्बन्धी विषयों को देखने का स्थान

अबटन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उबटन' ।

अबतर [वि.] (फा.) १—बुरा । रद । खराब । २—गिरा हुआ । बिगड़ा हुआ ।

अबतरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १—बुराई । खराबी । २—क्षय । घटाव । बिगाड़ ।

अबद्ध [वि.] (सं.) १—मुक्त । जो बँधा न हो । २—स्वच्छन्द । निरंकुश । ३—असम्बद्ध ।

अबध [संज्ञा पु.] (सं.) दण्ड का अभाव ।
[वि.] अचूक । जो रोका न जा सके ।

अबधार्ह [वि.] (सं.) न मारे जाने योग्य ।

अबधू* [वि.] (हि.) अबोध । अज्ञानी । मूर्ख ।
[संज्ञा पु.] त्यागी । सन्यासी । विरागी । अवधूत । सन्त । साधु ।

अबध्य [वि.] (सं.) १—न मारने योग्य । २—जिसे मारने का विधान न हो । ३—जो किसी से न मरे । जिसे कोई न मार सके ।

अबंधक, अबन्धक [वि.] (सं.) ऐसा ऋण जिसमें कोई वस्तु गिरवी न रखनी पड़े ।

अबंधन, अबन्धन [वि.] (सं.) बन्धनरहित । जो बंधा हुआ न हो ।

अबंधु, अबन्धु [वि.] (सं.) बन्धुरहित । मित्रहीन

अबंधुर, अबन्धुर [वि.] (सं.) १—कड़ा । २—असम । ३—कुरूप ।

अबर, अब्बर [वि.] (सं.) कमजोर । निर्बल ।

अबरक [संज्ञा पु.] (हिं.) खानों से निकलने वाला तहदार धातु । यह कांच के समान पारदर्शक होता है । भारत में अधिकतर राजस्थान प्रदेश में निकलता है । इसे अमेरिका आदि देशों में भेजा जाता है ।

अबरख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अबरक' ।

अबरन [वि.] (हि.) १—न वर्णन करने योग्य । अकथनीय ।
[वि.] (सं.) १—अवर्ण । वर्णशून्य । बिना रूप रंग का । २-जो एक रंग का न हो । भिन्न
[संज्ञा पु.] आवरण । आच्छादन । परदा ।

अबरनीय [वि.] (हिं.) बिना रंग का । भिन्न वर्ण का ।

अबरस [संज्ञा पु.] (फा.) सब्जे से खुलते हुए सफेद रंग का घोड़ा ।
[वि.] सब्जे से कुछ खुलता हुआ सफेद रंग का

अबरा [संज्ञा पु.] (फा.) दोहरे वस्त्र के ऊपर का भाग या पल्ला । उपल्ला । उपल्ली ।
[वि.] कमजोर । दुबल ।

अबरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १—वह चिकना कागज जो पुस्तकों की जिल्द के ऊपर लगाया जाता है यह नाना प्रकार से चित्रित होता है । २—वह पीले रंग का पत्थर जो पच्चीकारी के काम में आता है । ३—एक प्रकार की लाह की रंगामेजी ।

अबरू [संज्ञा स्त्री.] (फा) भौंह । भ्रू ।

अबल [वि.] (सं.) निर्बल । कमजोर । दुर्बल ।

अबलक [वि.] (हिं.) देखो 'अबलख' ।

अबलख [वि.] (हिं.) कबरा । दो रंगा । सफेद तथा काला या सफेद और लाल रंग का ।
[संज्ञा पु.] १—सफेद और काले रंग का घोड़ा । २—कबरा बैल ।

अबलखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक चिड़िया जिसका पेट सफेद, शरीर काला तथा चोंच नारंगी रंग की होती है ।

अबलग [क्रि. वि.] (हिं.) अबतक । इस समय तक

अबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री । औरत ।

अबलावल [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव । शंकर । शिव ।

अबलासेन [संज्ञा पु.] (सं.) अनंग । कामदेव ।

अबल्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्बलता । निर्बलता । कमजोरी ।

अबवाब [संज्ञा पु.] (फा.) १—मालगुजारी पर लिया जाने वाला अतिरिक्त कर । २—अधिक कर । घरद्वारी । भिटौरी ।

अबस [वि] (हिं.) देखो "अवश" ।

अबहु [वि.] (सं.) थोड़ा कम ।

अबा [संज्ञा पु.] (अ.) अंगे के ऊपर पहने जाने वाला लबादा । चोगा ।

अबाती [वि.] (हिं.) १—वायुरहित । २—जिसे हवा न हिलाती हो । ३—भीतर ही भीतर सुलगने वाला ।

अबाद [वि.] (हिं) १—निर्विवाद । २—आबाद । बसा हुआ ।

अबादान [वि] (हि.) बसा हुआ । आबाद ।

अबादानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १—बस्ती । पूर्णता । २—चहल-पहल ३—शुभचिंतकता ।

अबाध [वि] (सं.) १—निर्विघ्न । २—बाधारहित । अनियन्त्रित । ३—अपार । असीम ।

अबाधव्यापार [संज्ञा पु] (सं) देखो 'मुक्तव्यापार' ।

अबाधा [वि.] (सं.) १—बाधारहित । बेरोक । २—निर्विघ्न ।

अबाधित [वि.] (सं.) १—बेरोक । बाधा रहित । २—स्वतंत्र । स्वच्छंद ।

अबाध्य [वि.] (सं.) १—जो रोका न जा सके । २—अनिवार्य ।

अबान [वि] (हिं.) निहत्था । बिना हथियार का । खाली हाथ ।

अबाबील [संज्ञा स्त्री] (फा.) एक प्रकार की चिड़िया जो काले रंग की होती है । कृष्णा । कन्हैया । देवदिलाई ।

अबार* [संज्ञा स्त्री] (हि) देर । विलम्ब । बेर ।

अबाल [वि] (सं.) १—जो बालक न हो । तरुण जवान । पूरा । पूर्ण ।
[संज्ञा पु.] (देश.) चरखे की रस्सी जिससे पंखुड़ियां बांधकर तानी जाती है ।

अबाली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का पक्षी

अबालेंदु [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णचन्द्र । पूरा चांद

अबास* [संज्ञा पु.] (हिं.) निवास-स्थान । रहने की जगह ।

अबाह्य [वि.] (सं.) अंतरंग । जो बाहर का न हो

अबिंधन, अबिन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १—समुद्र । २—बड़वानल ।

अबिंध्य, अबिन्ध्य [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के एक मंत्री का नाम ।

अबिद्ध [वि.] (सं.) अविद्ध । बिना छेदा हुआ ।

अबिद्धकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाढ़ा नामक एक बेल ।

अबिरल [वि.] (हिं.) देखो 'अविरल' ।

अबीर [संज्ञा पु.] (अ.) गुलाल । रंगीन बुकनी जिसे हिंदू लोग होली के दिन अपने मित्र-सम्बन्धियों के चहरे पर मलते हैं ।

अबीरी [वि.] (अ.) अबीर के रंग की ।
[संज्ञा पु.] अबीरी रंग ।

अबुझ* [वि.] (हिं.) अबोध । नासमझ । मूर्ख ।

अबुध [वि.] (सं.) अबोध । मूर्ख । गंवार ।

अबूझ* [वि.] (सं.) नासमझ । अज्ञानी । गंवार मूर्ख ।

अबे [अव्य.] (हि.) अरे ! हे ! ओ ! क्यों रे ! निरादरसूचक संबोधन ।
अबे तबे करना=अनादरसूचक बातें बोलना।

अबेध [वि.] (हिं.) अविद्ध । अनबिधा । बिना छिदा हुआ ।

अबेर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विलम्ब । देर । अतिकाल ।

अबेश [वि.] (फा.) अधिक । बहुत ।

अबैन* [वि.] (हिं.) मौन । चुप ।

अबोध [वि.] (सं.) अनजान । नादान । मूर्ख ।
[संज्ञा पु.] अज्ञान । मूर्खता ।

अबोल* [वि.] (हि.) १—न बोलने वाला । मौन । अवाक् । २—अनिर्वचनीय ।
[संज्ञा पु.] बुरी बात । कुबोल ।

अबोला [संज्ञा पु.] (सं) दुःख के कारण मौन रहना।

अब्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १—जल से उत्पन्न होने वाली वस्तु । २—कमल । ३—शंख । ४—हिज्जल । इज्जल । निचुल । ५—चन्द्रमा । ६—धन्वन्तरि । ७—कपूर । ८—एक संख्या । सौ करोड़ । अरब ।

अब्जकर्णिका [संज्ञा पु.] (सं) कमल का छाता ।

अब्जज [संज्ञा पु.] (सं.) १—ब्रह्मा । २—यात्रा का एक योग ।

अब्जबाँधव [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य ।

अब्जयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

अब्जवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

अब्जवाहना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी ।

अब्जस्थित [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

अब्जहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

अब्जासन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

अब्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी ।

अब्जिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पद्मलता । २—कमलवन ।

अब्द [संज्ञा पु.] (सं.) १—वर्ष । साल । २—नागरमोथा । ३—मेघ । बादल ।

अब्दकोश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाला एक प्रकार का कोष जिसमें किसी देश, समाज अथवा वर्गविषयक सर्वप्रकार की जानने योग्य बातों का संग्रह हो । ईयरबुक

अब्दुर्ग [संज्ञा पु] (सं.) वह किला जिसके चारों ओर खाई हो ।

अब्धि [संज्ञा पु.] (सं.) १—सागर । समुद्र । २—सरोवर । तालाब । ३—सात की संख्या ।

अब्धिकफ [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन ।

अब्धिज [वि.] (सं.) समुद्र में उत्पन्न ।
[संज्ञा पु.] १—शंख । २—चन्द्रमा । ३—अश्विनीकुमार । ५—लक्ष्मी ।

अब्धिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—सुरा । शराब । लक्ष्मी ।

अब्धिनगरी [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारिकापुरी ।

अब्धिमंडूकी [संज्ञा पु.] (सं.) सीप का मोती ।

अब्धिशय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

अब्धिसार [संज्ञा पु.] (सं.) रत्न । जवाहिरात ।

अब्ध्यग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़वानल । समुद्र की अग्नि ।

अब्बा [संज्ञा पु.] (फा.) पिता । बाप ।

अब्बास [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का पौधा ।

अब्बासी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मिश्रदेश की कपास

अब्भक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का सर्प ।

अब्र [संज्ञा पु.] (फा.) बादल । मेघ ।

अब्रअंबर [संज्ञा पु.] देखो 'अंबर'।

अब्रह्मण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह कर्म जो ब्राह्मण के लिये उचित न हो । २—हिंसादि कर्म । ३—वह जो ब्राह्मणनिष्ठ न हो ।

अभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—मेघ । बादल । २—आकाश । ३—सुवर्ण । ४—अभ्रक

अभ्रक [संज्ञा पु.] (सं.) अबरक धातु ।

अभ्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत का वृक्ष ।

अभ्रमातंग [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत । इन्द्र का हाथी ।

अभंग, अभङ्ग [वि.] (सं.) १—अखण्ड । पूर्ण । २—न मिटने वाला । ३—जिसका क्रम न टूटे

अभंगपद, अभङ्गपद [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेष अलंकार का एक भेद जिससे अक्षरों को इधर-उधर न करना पड़े तथा शब्दों से भिन्न-भिन्न अर्थ निकल आवें ।

अभंगी, अभङ्गी [वि.] (सं.) १—
पूर्ण । अखंड । २—जिसका कोई
सके ।

अभंगुर, अभङ्गुर [वि.] (सं.) १—टूटने
दृढ़ । मजबूत । २—न मिटने वाला ।
शवान ।

अभंजन, अभञ्जन [वि.] (सं.) अटूट ।
[संज्ञा पु.] द्रव या तरल पदार्थ
टुकड़े न हो सकें यथा जल, तेल।

अभक्त [वि.] (सं.) १—भक्तिशून्य ।
रहित । २—विभागरहित । ३—
टुकड़े न हुए हों। समूचा। जो बांटा न

अभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भक्ति का
अविश्वास ।

अभच्छ [वि.] (हिं.) अभक्ष्य । न खाने

अभक्ष्य [वि.] (सं.) १—अखाद्य ।
खाने योग्य । २—जिसके खाने का
में निषेध हो ।

अभगत [वि.] (हिं.) अभक्त । श्रद्धाहीन।

अभग्न [वि.] (सं.) अखंड । समूचा ।

अभद्र [वि.] (सं.) १—अशुभ ।
२—अशिष्ट । असभ्य । बेहूदा ।
अश्रेष्ठ।

अभद्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अशुभ ।
गलिकता । २—अशिष्टता । असाधुता।

अभय [वि.] (सं.) निर्भय । निडर ।
अभय देना या अभय बाँह देना=
निर्भय करना ।

अभयदक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
बचने के लिये दिया गया ब्राह्मण को

अभयदान [संज्ञा पु.] (सं.) भय से
वचन देना । निर्भय करना । रक्षा
शरण देना ।

अभयपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसे
कर कोई व्यक्ति किसी संकटपूर्ण
निरापद पार हो सके । कांडक्ट ।

अभयपद [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष । मुक्ति।

अभयवचन [संज्ञा पु.] (सं.) निर्भय रहने
आश्वासन देना । रक्षा का वचन।

अभया [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] निडर ।
बेडर की ।
[संज्ञा स्त्री.] १—वह हड़ जिसमें
रेखाएं होती हैं । २—विजया । भांग।

अभर [वि.] (हिं.) न उठने योग्य । न ढोने

अभरन [संज्ञा पु.] (हि.) आभरण ।
[वि.] अपमानित । तिरस्कृत ।

अभरम [वि.] (हिं.) १—अभ्रांत । अचूक ।
निःशंक । निडर
[क्रि. वि.] निःसंदेह । निश्चय ।

अभल* [वि.] (हि.) जो भला न हो
बुरा खराब ।

अभव [संज्ञा पु.] (सं.) १—न होना । २—नाश । प्रलय ।

अभव्य [वि.] (सं.) १-न होने योग्य । २—विलक्षण । अद्भुत । ३—अशुभ । बुरा । ४—अशिष्ट । बेहूदा । भोंडा ।
[संज्ञा पु.] जैन मतानुसार वह जीव जो मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते ।

अभाऊ [वि.] (हि.) अच्छा न लगने वाला । जो भावे न । २—अशोभित ।

अभाग [संज्ञा पु.] (हिं.) अभाग्य । बदकिस्मती ।
[संज्ञा पु.] (सं.) भागरहित । सारा । अंश या भाग का अभाव ।

अभागा [वि.] (सं.) भाग्यहीन । बदकिस्मत । मंदभाग्य ।

अभागी [वि.](सं.) १-भाग्यहीन। बदकिस्मत। २-जिसे कुछ भाग न मिले।

अभाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) भाग्यहीनता । बदकिस्मती । दुर्दैव ।

अभाजन [संज्ञा. पु.] (सं.) कुपात्र। बुरा आदमी

अभार्य [संज्ञा पु.] (सं.) जिसकी स्त्री न हो।

अभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनस्तित्व । असत्व । असत्ता । २—टोटा । कमी । घाटा । ३—कुभाव । विरोध । दुर्भाव ।

अभावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विचार का अभाव । ध्यान का न होना ।

प्रभावनीय [वि.] (सं.) अचिंतनीय । जो भावना में न आसके ।

अभावपदार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सत्ताहीन पदार्थ। असत् पदार्थ ।

अभावप्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय के अनुसार वह प्रमाण जिसमें कारण के न होने से कार्य के न होने का बोध हो ।

अभावित [वि.] (सं.) जिसकी भावना न की गई हो।

अभावी [वि.] (सं.) न होने वाला ।

अभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) मौनभाव । खामोशी ।

अभास [संज्ञा पु.] (हिं.) अभास । संकेत । झलक ।

अभि [उप.] (सं.) एक उपसर्ग जो शब्दों में लग कर निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है, तरफ, भीतर, वास्ते, पर, पास, सामने, समीप।

अभिक [वि.] (सं.) कामुक । कामी । विषयी।

अभिकथन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति अथवा पक्ष की ओर से कही जाने वाली ऐसी बात या लगाया जाने वाला आरोप जो कभी प्रमाणित न हुआ हो या जिसके प्रमाणित होने में कुछ संदेह हो । दोषारोप ।

अभिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी की ओर से उसके अधिकर्ता या एजेंट के रूप में कार्य करना । घटक-कार्य । २—अभिकर्त्ता या एजेंट का कार्य-स्थान । घटक-स्थान ।

अभिकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह कार्यकर्त्ता जो किसी व्यक्ति अथवा संस्था की ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में कुछ काम करने के लिए नियुक्त हो । एजेंट ।

अभिकर्त्तापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा कोई अभिकर्ता नियुक्त किया गया हो तथा उसे कोई काम करने का सम्पूर्ण अधिकार दे दिया गया हो ।

अभिकर्तृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—अभिकर्त्ता होने का भाव । २—देखो 'अभिकरण' ।

अभिक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) धावा । चढ़ाई ।

अभिकांक्षा [संज्ञा स्त्री.] अभिलाषा । इच्छा । चाह । वांछा ।

अभिकांक्षित [वि.] (सं.) वांछित । चाहा हुआ

अभिकांक्षी [वि.] (सं.) अभिलाषायुक्त ।

अभिकाम [संज्ञा पु.] (सं.) अभिलाषा । इच्छा । वाञ्छा ।

अभिक्रांत, अभिक्रान्त [वि.] (सं.) १—प्राप्त । आया हुआ । २—आक्रमण किया हुआ ।

अभिक्रांती, अभिक्रान्ती [वि.] (सं.) १—उद्योगी । कामकाजी । २—किसी वस्तु को अपने स्थान से हटा दिया जाना ।

अभिक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) घृणा । निन्दा ।

अभिख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाम । यश । कीर्ति । शोभा ।

अभिख्यात [वि.] (सं.) प्रसिद्ध । मशहूर।

अभिख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) यश। कीर्ति । प्रसिद्धि ।

अभिगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १—पास जाना । २—सहवास । संभोग ।

अभिगामी [वि.] (सं.) १—पास जाने वाला । २—स्त्री से सहवास या संभोग करने वाला

अभिगुप्त [वि.] (सं.) छिपा हुआ ।

अभिगुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निगहवानी । निरीक्षण ।

अभिगृहीत [वि.] (सं.) पकड़ा हुआ ।

अभिगोप्ता [वि.] (सं.) भलीभांति रक्षा करने वाला ।

अभिग्रह [संज्ञा पु.] १—आक्रमण । अभियोग । २-कलह । झगड़ा । ३-लेना । स्वीकार । ग्रहण ।

अभिघट [संज्ञा पु.] (सं.) घड़े के आकार का एक प्राचीन बाजा जिसके मुँह पर चमड़ा मढ़ा रहता है ।

अभिघात [संज्ञा पु.] (सं.) १—चोट पहुँचना । मार । प्रहार । २—पुरुष के बांई ओर तथा स्त्री के दाहिनी ओर का मसा ।

अभिघातक [संज्ञा पु.] (सं.) मारने वाला । शत्रु

अभिघाती [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु । मारने वाला

अभिघार [संज्ञा पु.] (सं.) १—सींचना । छिड़कना । २—घी से छौंकना । ३—घी । ४—घी की आहुति ।

अभिचर [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर । सेवक । भृत्य ।

अभिचार [संज्ञा पु.] (सं.) १—मंत्र-तंत्र द्वारा मारण तथा उच्चाटन आदि हिंसक कार्य ।

अभिचारक [संज्ञा पु.] (सं.) मंत्र-तंत्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि कर्म ।

अभिचारी [वि.] (सं.) मंत्र-तंत्र करने वाला ।

अभिजन [संज्ञा पु.] १—वंश । कुल । २—परिवार । ३—जन्मभूमि । ४—ख्याति । कीर्ति । ५—घर का अगुआ या बड़ा आदमी ।

अभिजय [संज्ञा पु.] (सं.) विजय । जीत ।

अभिजात [वि.] (सं.) १—कुलीन । उच्चकुलोत्पन्न । २—बुद्धिमान । पंडित । ३—मान्य । पूज्य । ४—सुन्दर । मनोहर । ५—योग्य ।

अभिजात-तंत्र, अभिजात-तन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शासन करने की एक प्रणाली जिसमें राज्य करने का संपूर्ण प्रबन्ध थोड़े से उच्च कुल के तथा सम्पन्न लोगों के हाथ में रहता है ।

अभिजित [वि.] (सं.) विजयी ।
[संज्ञा पु.] १—सिंघाड़े की सी आकृति का एक तारा । २—दिन का आठवां मुहूर्त । ३—उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के १५ अंतिम दंड और श्रवणनक्षत्र के चार दंड ।

अभिज्ञ [वि.] (सं.) १—विज्ञ । जानकार । २—निपुण । कुशल ।

अभिज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहले देखी हुई बात से मन में उत्पन्न होने वाला संस्कार ।

अभिज्ञात [वि.] (सं.) पूर्वपरिचित । पहिले से जाना हुआ ।
[संज्ञा पु.] पुराण के अनुसार शाल्मली नामक द्वीप के सात खंडों में से एक ।

अभिज्ञातार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में एक प्रकार का निग्रहस्थान ।

अभिज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्मृति । ख्याल । २—वह चिह्न जिससे कोई वस्तु पहिचानी जाय । पहिचान । लक्षण । ३—किसी बात के स्मरण या विश्वास दिलाने के निमित्त उपस्थित की गई वस्तु ।

अभिज्ञापक [वि.] (सं.) सूचित करने वाला । संदेश पहुँचाने वाला ।

अभितप्त [वि.] (सं.) १—जलाया हुआ । २—उदास । दुःखी ।

अभिताप [संज्ञा पु.] (सं.) उद्वेग । बेचैनी । संक्षोभ । अभितृप्त ।
[वि.] भली प्रकार से संतुष्ट किया हुआ ।

अभितोमुख [वि.] (सं.) वह जिसका मुख चारों ओर रहे ।

अभिदक्षिण [अव्य.] (सं.) दक्षिण की ओर ।

अभिदत्त [वि.] (सं.) किसी वस्तु को उसके नियत स्थान पर पहुँचाया जाना । डिलीवर्ड ।

अभिदान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी की वस्तु उसके पास पहुँचाने का कार्य। *डिलीवरी*।

अभिदिष्ट [वि.] (सं.) १—संकेत किया हुआ। प्रसंगवश जिसका उल्लेख, चर्चा अथवा उद्धरण किया गया हो या जिसकी ओर निर्देश अथवा संकेत किया गया हो। २—किसी को कहीं भेजकर उसके संबंध में किसी का मत अथवा आदेश प्राप्त किया गया हो।

अभिदेश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पूर्व घटना, उल्लेख आदि की ऐसी चर्चा जो साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूप में की गई हो। २—किसी विषय में किसी का मत अथवा आदेश लेने के निमित्त वह विषय अथवा उससे संबंधित कागज-पत्र उसके पास भेजना। रेफ़रेंस।

अभिद्रुत [वि.] (सं.) १—आक्रांत। २—भागता हुआ।

अभिद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) अपकार। अत्याचार। निदयता।

अभिधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द की तीन शक्तियों में से एक। वह शक्ति जिसके द्वारा शब्दों से सीधासाधा अर्थ निकले।

अभिधान [संज्ञा पु.] (सं.) १—कथन। २–नाम। लकब। ३—शब्दार्थ-प्रकाशक ग्रन्थ। शब्द-कोश। ४-किसी पद का विशेष नाम या संज्ञा

अभिधानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रस्सी। डोरी।

अभिधानीय [वि.] (सं.) नाम लिया जाने वाला।

अभिधायक [वि.] (सं.) १—निर्वाचक। नाम लेने वाला। २—सूचक। ३—कहने वाला।

अभिधायी [वि.] (सं.) १—निर्वाचक। २—बोलने वाला। ३—नाम लेने वाला।

अभिधावक [वि.] (सं.) धावा करने वाला। आक्रमण करने वाला।

अभिधावन [संज्ञा पु.] (सं.) १—आक्रमण। २—शिकार। आखेट।

अभिधेय [वि.] (सं.) १—जिसका नाम लेने मात्र से ही बोध हो। २—वर्णन करने योग्य। ३—वाच्य। प्रतिपाद्य।
[संज्ञा पु.] नाम।

अभिध्या [संज्ञा स्त्री.] १—पराई वस्तु की इच्छा २—इच्छा। अभिलाषा। लोभ।

अभिनंदन, अभिनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रार्थना। २—प्रोत्साहन। २—आनन्द। ४—प्रशंसा। ५—उत्तेजना। ६—संतोष।

अभिनंदनपत्र, अभिनन्दनपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के आगमन पर दिया जाने वाला आदर-सूचक पत्र। फेयरवैल-एड्रेस।

अभिनंदनीय, अभिनन्दनीय [वि.] (सं.) प्रशंसनीय। वंदनीय। बधाई के योग्य।

अभिनंदित, अभिनन्दित [वि.] (सं.) प्रशंसित। वन्दित।

अभिनम्र [वि.] (सं.) आगे की ओर झुका हुआ।

अभिनय [संज्ञा पु.] (सं.) बनावटी। हावभाव द्वारा किसी विषय का वास्तविक अनुकरण करके दिखलाना। हृदय के भावों को प्रकाशित करने के निमित्त अंगों द्वारा कीगई चेष्टा *अभिनय करना*=स्वांग भरना। नाचना-कूदना।

अभिनव [वि.] (सं.) १—नया। नवीन। नूतन २—ताजा।

अभिनव-अभिधान [संज्ञा पु.] (सं.) नवीन शब्दार्थ-प्रकाशक ग्रन्थ। ताजा शब्दकोश।

अभिनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के दोषी या निर्दोषी होने के सम्बन्ध में दिया गया निर्णायक का निर्णय।

अभिनिर्णायक [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायाधीश के साथ बैठकर किसी के दोषी या निर्दोष होने के सम्बन्ध में निर्णय देने वाले व्यक्ति।

अभिनिर्देश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बात में प्रसङ्गवश होने वाली किसी अन्य बात की साधारण चर्चा। २—किसी विषय में किसी का मत या आदेश लेने के लिये वह विषय उसके पास भेजना। रेफरेस।

अभिनिधन [वि.] (सं) मरणासन्न।

अभिनियुक्त [वि.] (सं.) परित्यक्त। छोड़ा हुआ

अभिनिविष्ट [वि.] (सं.) १—गढ़ा हुआ। धंसा हुआ। २—बैठा हुआ। उपविष्ट। ३—लिप्त। मग्न।

अभिनिविष्टता [संज्ञा स्त्री.] १—मनोयोगिता। २—व्यग्रता। घबड़ाहट।

अभिनिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १—गति। प्रवेश। २—मनोयोग। लीनता। एकाग्रचिंतन। ३—दृढ़ संकल्प। ४—मृत्यु के भय से उत्पन्न क्लेश। मृत्युशंका।

अभिनिवेशित [वि.] (सं.) प्रविष्ट।

अभिनिवेशी [वि.] (सं.) हठी। जिद्दी।

अभिनीत [वि.] (सं.) १—पास लाया हुआ। २—सुसज्जित। भूषित। अलंकृत। ३—अभिनय किया हुआ। नकल करके दिखाया हुआ। ४—विज्ञ। ५—उचित। युक्त। न्याय।

अभिनीति [संज्ञा स्त्री.] १—मीठे वचन। २—मित्रता। ३—अभिनय।

अभिनीयमान [वि.] (सं.) निकट लाया जाने वाला।

अभिनेता [संज्ञा पु.] (सं.) अभिनय करने वाला। नाटक का पात्र। एक्टर।

अभिनेत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभिनय करने वाली। नाटक की स्त्री-पात्र। ऐक्ट्रैस।

अभिनेय [वि.] (सं.) अभिनय करने योग्य। खेल जाने योग्य।

अभिन्न [वि.] (सं.) १—जो भिन्न न हो। अपृथक। २—सम्बद्ध। मिला हुआ। ३
दृढ़। पुष्ट। ४—गणित के अनुसार पूर्णा

अभिन्नता [संज्ञा स्त्री.] १—पूर्णता। असंड
२—भिन्नत्व का अभाव। ३—संबन्ध। ४
मेल।

अभिन्नपद [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेष नामक
अलंकार का भेद।

अभिन्नपुट [संज्ञा पु.] १—महुवे का फूल। २
कमल।

अभिन्नात्मा [वि.] (सं.) एक दिल। एक हृदय

अभिन्यस्त [वि.] (सं.) जमा किया हुआ। हि
मद में डाला हुआ।

अभिन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १—सन्निपात
का एक भेद। २—जमा करना।

अभिपतन [संज्ञा पु.] (सं.) १—नीचे की ओ
गिरना। २—धावा। आक्रमण।

अभिपन्न [वि.] (सं.) अभिभूत। पलायि
आपद्ग्रस्त।

अभिपीड़ित [वि.] (सं.) व्यथित। क्लेश पा
हुआ।

अभिपूजित [वि.] (सं.) सम्मानित।

अभिपूर्ण [वि.] (सं.) परिपूर्ण। अच्छी तर
भरा हुआ।

अभिपोषण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिनिधियों
किये हुए कार्य की स्वीकृति प्रदान करके
अंगीकार करना या पक्का करना।

अभिप्रणय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम। कृपा। अ
रंजन।

अभिप्रणयन [संज्ञा पु.] (सं.) संस्कार।

अभिप्रणीत [वि.] (सं.) अच्छी प्रकार से ब
हुआ।

अभिप्रतप्त [वि.] (सं.) १—अत्यन्त उष्ण। २
अति शुष्क।

अभिप्रहत [वि.] (सं.) आहत। घायल। जख

अभिप्राप्त [वि.] (सं.) उपस्थित। आया हुआ
हस्तगत। आगत।

अभिप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहुँच। आमद।

अभिप्राय [संज्ञा पु.] (सं.) आशय। मतलब
तात्पर्य। प्रयोजन। गरज।

अभिप्रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—उत्साह। प्र
न्नता। हौसला। २—अभिलाषा। इच्छा
मर्जी।

अभिप्रेदय [क्रि. वि.] (सं.) दृष्टि डालकर
निगाह उठाकर।

अभिप्रेत [वि.] (सं.) अभीष्ट। अभिलषित।
चाहा हुआ। पसन्द किया हुआ। चाहे
वाला।

अभिप्लुत [वि.] (सं.) १—चारों ओर भरा हुआ
२—अभिभूत। आधीन।

अभिबुद्धि [संज्ञा स्त्री.] बुद्धीन्द्रिय। अक्ल
समझ।

अभिभंग, अभिभङ्ग [वि.] (सं.) १—भंग करने वाला। तोड़ने वाला। २—टूटा हुआ।

अभिभव [संज्ञा पु.] (सं.) १—पराजय। हार। २—तिरस्कार। अनादर। ३—अनहोनी बात। विलक्षण घटना।

अभिभवनीय [वि.] (सं.) हारने वाला। अभिभूत होने वाला।

अभिभार [संज्ञा पु.] अतिभारयुक्त। बहुत वज़नदार।

अभिभावक [वि.] (सं.) १—पराजित करने वाला। तिरस्कार करने वाला। २—स्तंभित कर देने वाला। ३—वशीभूत करने वाला। ४—रक्षक। सरपरस्त।

अभिभावन [संज्ञा स्त्री.] विजय। जीत।

अभिभावित [वि.] (सं.) किसी के नीचे दवा हुआ

अभिभावी [वि.] (सं.) १—जीतने वाला। २—पराजित करने वाला।

अभिभावुक [वि.] (सं.) १—तिरस्कार करने वाला २—पराजित करने वाला।

अभिभाषक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'एडवोकेट'।

अभिभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्मुख बोलना। व्याख्यान। २—न्यायालय में विधिज्ञ का भाषण।

अभिभाषित [वि.] (सं.) निवेदित। कहा हुआ। कथित।

अभिभाषी [वि.] (सं.) सम्मुख बोलने वाला। भाषण करने वाला।

अभिभाष्य [वि.] (सं.) कथनीय। कहने योग्य।

अभिभू [वि.] (सं.) पराजित करने वाला। अनादर करने वाला।

अभिभूत [वि.] (सं.) १—हारा हुआ। पराजित। २—पीड़ित। ३—व्याकुल। ४—वशीभूत। जो बस में किया गया हो।

अभिभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पराजय। पराभव। हार।

अभिमंडन, अभिमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १—सँवारना। सजाना। २—प्रतिपादन। समर्थन

अभिमंडित, अभिमण्डित [वि.](सं.) विभूषित। अलंकृत। सजा हुआ।

अभिमंत्रण, अभिमन्त्रण [संज्ञा पु.] (सं.) मंत्र द्वारा संस्कार। २—आवाहन। बुलाहट।

अभिमंत्रित, अभिमन्त्रित [वि.] (सं.) १—जादू या टोना किया हुआ। २—आवाहन किया हुआ।

अभिमत [वि.] (सं.) १—मनोनीत। वांछित। २—सम्मत। राय के मुताबिक। [संज्ञा पु.] १—मत। राय। २—विचार। ३—अभिलषित वस्तु।

अभिमतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अनुरूपता। २—प्रेम। चाह।

अभिमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अभिमान। गर्व। २—मिथ्या ज्ञान। ३—सम्मान। आदर। ४—अभिलाषा।

अभिमन्तव्य [वि.] (सं.) १—ज्ञातव्य। खयाल करने योग्य। २—स्पृहनीय। चाहने योग्य। ३—अधिक मान किया जाने वाला।

अभिमन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन के पुत्र का नाम।

अभिमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १—पीसना। चूर्ण करना। २—रगड़। युद्ध।

अभिमर्श, अभिमर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) स्पर्श। घर्षण। रगड़। मिलाव।

अभिमर्शक, अभिमर्षक [वि.] (सं.) स्पर्श करने वाला। छूने वाला। २—नीचा दिखाने वाला

अभिमर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्पर्श। छूना। २—पराभव।

अभिमाद [संज्ञा पु.] (सं.) नशा। खुमार। मद।

अभिमद्यत [वि.] (सं.) उन्मत्त होने वाला।

अभिमान [संज्ञा पु.] (सं.) १—अहंकार। घमंड। गर्व। २—आदरसहित रोष। ३—प्रणय या प्रेम प्रार्थना। ४—शृङ्गार रस की अवस्था विशेष। नखरा। मान। ५—मारकाट।

अभिमानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्व। धृष्टता। गरूर।

अभिमानवत् [वि.] (सं.) १—नखरेबाज। २—दर्पित।

अभिमानशून्य [वि.] (सं.) गर्वरहित। दर्पहीन। जिसे घमंड न हो।

अभिमानित [वि.] (सं.) घमंडी। गर्वयुक्त।

अभिमानता, अभिमानत्व [संज्ञा पु.] अभिमान रहने का भाव। गर्वित रहने की दशा।

अभिमानी [वि.] (सं.) गर्व। अहंकार। घमंडी। अहंकारी।

अभिमीलित [वि.] (सं.) अवरुद्ध। आँखों की झपक के समान।

अभिमुख [वि.] (सं.) १—सम्मुख। समक्ष। २—काम में लगा हुआ। ३—उपस्थित होने वाला।

अभिमुखता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपस्थिति। समीप रहने की अवस्था।

अभिमुखीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १—सामना। कार्य की अनुकूलता।

अभिमुखीभूत [वि.] (सं.) सामने मुँह किये हुए।

अभिमूर्छित [वि.] (सं.) १—विक्षिप्त। २—मोहित। ३—व्यग्र। उन्मत्त। मतवाला।

अभिमृष्ट [वि.] (सं.) पराजित।

अभियंता, अभियन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'इंजीनियर'।

अभियंत्रणा, अभियन्त्रणा [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभियंता या इंजीनियर का कार्य २—यंत्रविद्या।

अभिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आक्रमण। हमला। धावा।

अभियाचन [संज्ञा पु.] (सं) सम्मुख होकर की जाने वाली प्रार्थना।

अभियाचना [संज्ञा पु.] (सं.) मांग। जिज्ञासा। तकाजा।

अभियाचित [वि.] (सं.) मांगा हुआ।

अभियान [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धयात्रा। हमला। चढ़ाई। अभिगमन।

अभियुक्त [वि.] (सं.) १-प्रतिवादी। मुदालह। जिस पर मुकदमा या अभियोग चलाया गया गया हो। २—उक्त। कथित। कहा हुआ। ३—अपराधी। दोषी।

अभियुक्ति [संज्ञा स्त्री.] अभियोग।

अभियोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) अभियोगकर्ता। वादी। मुद्दई। फरियादी।

अभियोग [संज्ञा पु.] १—अपकार के निवारण या क्षतिपूर्ति करने के निमित्त की गई न्यायालय में प्रार्थना। दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन। २—युद्धार्थ आक्रमण। चढ़ाई। ३—उद्योग। तदबीर। ४—खटका।

अभियोगपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जीदावा। नालिश करने के लिये दिया गया लिखित पत्र

अभियोगी [वि.] (सं.) वादी। अभियोगकर्ता। नालिश करने वाला। मुद्दई।

अभियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अभियोग। २-जुड़ी हुई वस्तु को पुनः दृढ़ता के साथ जुड़ाई जाय।

अभियोज्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभियोग लगाये जाने योग्य। जिस पर इलजाम लगाया जा सके।

अभियोज्य-दोष [संज्ञा पु.] (सं.) वह दोष जिसमें अभियोग चल सके।

अभिरक्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद सरसों फेंककर मन्त्रों द्वारा राक्षसों से रक्षा।

अभिरक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन्त्र द्वारा यज्ञादि की रक्षा।

अभिरक्षित [वि.] (सं.) चारों ओर से सुरक्षित।

अभिरंजित, अभिरञ्जित [वि.] (सं.) १—अनुरंजित। रंगा हुआ। २—प्रेमासक्त।

अभिरत [वि.] (सं.) १—अनुरक्त। लीन। २—युक्त। सहित।

अभिरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अतिशय आसक्ति। अनुराग। प्रीति। लगन। २—संतोष। हर्ष।

अभिरना [क्रि. स.] १—लड़ना-भिड़ना। २—टेकना। सहारा लेना।

अभिरमण [संज्ञा पु.] (सं.) अनुराग। हर्ष। खुशी

अभिरमणीय, अभिरम्य [वि.] (सं.) मनोरम। क्रीड़ा करने योग्य।

अभिराम [वि.] (सं.) मनोहर । मनोज्ञ । सुंदर । प्रिय ।
[संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द । सुख ।

अभिरामता [संज्ञा स्त्री.] मनोज्ञता । मनोहरता । सौंदर्य ।

अभिरामी [वि.] (सं.) रमण करने वाला । मजा उड़ाने वाला ।

अभिराष्ट्र [वि.] (सं.) राज्य पाने वाला ।

अभिरुचि, अभिरुची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिशय रुचि । अत्यंत चाह । पसंद ।

अभिरुचित [वि.] (रा.) प्रसन्न । हर्षित ।

अभिरुत [वि.] (सं.) १—मुखरित । कूजित । मधुर ।

अभिरुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत की कोई मूर्छना ।

अभिरूप [वि.] (सं.) मनोहर । रमणीय । सुन्दर ।
[संज्ञा पु.] १—शिव । २—विष्णु । ३—कामदेव । ४—चन्द्रमा । ५—पंडित ।

अभिरूपक [वि.] (सं.) देखो 'अभिरूप' ।

अभिरूपपति [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर पति या स्वामी ।

अभिरोग [संज्ञा पु.] पशुओं को होने वाला एक रोग जिससे जीभ में कीड़े पड़ जाते हैं ।

अभिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) बीमारी । पीड़न ।

अभिलक्षित [वि.] (सं.) चिह्नित । अंकित । निशान वाला ।

अभिलक्ष्य [वि.] (सं.) निशाना लगाने योग्य ।

अभिलंघन, अभिलङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) १—उल्लंघन । कूदफांद ।

अभिलषण [संज्ञा पु.] (सं.) उत्कंठा । स्पृहा । लालच ।

अभिलषिकरोग [संज्ञा पु.] (सं.) वात-व्याधि के चौरासी भेदों में से एक ।

अभिलषित [वि.] (सं.) इच्छित । वांछित । चाहा हुआ ।

अभिलाख [संज्ञा पु.] (हिं.) अभिलाषा । इच्छा ।

अभिलाखना [क्रि. स.] (हिं.) इच्छा करना । चाहना ।

अभिलाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) अभिलाषा । इच्छा

अभिलाखी [वि.] (हिं.) अभिलाषा करने वाला । आकांक्षी ।

अभिलाप [संज्ञा पु.] (सं.) १—संकल्प वाक्य । मन के किसी संकल्प का कथन । २—कथन । बातचीत ।

अभिलाष [संज्ञा पु.] (सं.) १—इच्छा । मनोरथ । चाह । २—वियोग । प्रिय से मिलने की इच्छा ।

अभिलाषक [वि.] (सं.) इच्छा या आकांक्षा करने वाला ।

अभिलाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकांक्षा । इच्छा । कामना ।

अभिलाषी [वि.] (सं.) आकांक्षी । इच्छा करने वाला ।

अभिलाषुक [वि.] (सं.) इच्छा करने वाला । आकांक्षा करने वाला ।

अभिलास [संज्ञा पु.] (हि.) इच्छा । मनोरथ ।

अभिलासा [संज्ञा पु.] (हि.) इच्छा । अभिलाषा । कामना ।

अभिलेख-अधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अभिलेखन्यायालय' ।

अभिलेखपाल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्यालय के अभिलेख आदि की देखभाल करने वाला अधिकारी ।

अभिलेखालय [संज्ञा पु.] (सं.) अभिलेख आदि सुरक्षित रखने का स्थान । रेकार्ड रूम ।

अभिलिखित [वि.] (सं.) अक्षरों में लिखा हुआ । तहरीर में लाया हुआ ।

अभिलीन [वि.] (सं.) १—संलग्न । २—हृदय से लगाया हुआ ।

अभिलुप्त [वि.] (सं.) उद्विग्न । घबराया हुआ ।

अभिलेख [संज्ञा पु.] (सं.) लेखप्रमाण । ज्ञान-प्रमाण । सरकारी लेखेजोखे के कागज-पत्र ।

अभिलेखन्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य के प्रमुख अभिलेख विभाग का वह अधिकरण या न्यायालय जो अभिलेखों आदि में लिपि संबंधी या अन्य भूलें सुधारने का एक मात्र अधिकारी होता है । कोर्ट-आफ-रेकडर्स ।

अभिलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय की सब बातें किसी विशेष उद्देश्य से लिखना । रेकार्डिंग ।

अभिवचन [संज्ञा पु.] (सं.) सत्य वचन । प्रतिज्ञा । कौल । इकरार ।

अभिवंदन, अभिवन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १—नमस्कार । प्रणाम । २—स्तुति ।

अभिवंदना, अभिवन्दना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—नमस्कार । प्रणाम । २—स्तुति ।

अभिवंदनीय, अभिवन्दनीय [वि.] (सं.) १—प्रणाम करने योग्य । नमस्कार करने योग्य । २—स्तुति या प्रशंसा करने योग्य ।

अभिवंदित, अभिवन्दित [वि.] (सं.) ३—प्रणाम या नमस्कार किया हुआ । २—प्रशंसित ।

अभिवंद्य [वि.] (सं.) देखो 'अभिवंदनीय' ।

अभिवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वकील ।

अभिवचन [संज्ञा पु.] (सं.) वादा । इकरार । प्रतिज्ञा ।

अभिवदन [संज्ञा पु.] (सं.) अनुकूल कथन । अनुकूल वाक्य ।

अभिवांछित, अभिवाञ्छित [वि.] (सं.) अभिलषित । चाहा हुआ ।

अभिवाद [संज्ञा पु.] प्रणाम । नमस्कार ।

अभिवादक [वि.] (सं.) प्रणाम या नमस्कार वाला ।

अभिवादन [संज्ञा पु.] (सं.) १—नमस्कार प्रणाम । २—स्तुति । वन्दना ।

अभिवादित [वि.] (सं.) सादर प्रणाम किया हुआ

अभिवाद्य [वि.] (सं.) अभिवादन के योग्य ।

अभिवास [संज्ञा पु.] (सं.) १—आच्छादन आवरण । २—चादर ।
[क्रि. अ.] ओढ़ना ।

अभिवासन [संज्ञा पु.] (सं.) १—आच्छादन आवरण । २—चादर ।
[क्रि. अ.] ओढ़ना ।

अभिविख्यात [वि.] (सं.) लोक प्रसिद्ध । अच्छी तरह प्रसिद्ध ।

अभिविज्ञप्त [वि.] (सं.) सूचित । जो लोगों को बता दिया गया हो ।

अभिविनीत [वि.] (सं.) १—भलीभांति बरताव करने वाला । २—सुशील । ३—साधु ।

अभिविश्रुत [वि.] (सं.) सुप्रसिद्ध ।

अभिवृद्ध [वि.] (सं.) विस्तरित । बढ़ा हुआ ।

अभिवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समृद्धि । बढ़ती ।

अभिवृष्ट [वि.] (सं.) १—सींचा हुआ । २—बरसा हुआ ।

अभिवेग [संज्ञा पु.] (सं.) अभीष्ट । विचार । इरादा ।

अभिव्यंजक, अभिव्यञ्जक [वि.] (सं.) प्रक करने वाला । प्रकाशक ।

अभिव्यंजन, अभिव्यञ्जन [संज्ञा पु.] (सं. प्रकट, व्यक्त, स्पष्ट या सूचित करने का भाव ।

अभिव्यंजित, अभिव्यञ्जित [वि.] (सं.) जिसका अभिव्यंजन किया गया हो ।

अभिव्यक्त [वि.] (सं.) प्रकाशित । प्रगट किया हुआ । जाहिर किया हुआ ।

अभिव्यक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—स्पष्टीकरण । साक्षात्कार । प्रकट होना । २—उस वस्तु का प्रत्यक्ष होना जो पहिले प्रत्यक्ष हो । ३—न्यायानुसार सूक्ष्म तथा अप्रत्यक्ष कारण क प्रत्यक्ष । कार्य में अविर्भाव ।

अभिव्यापक [वि.] (सं.) सर्वव्यापक । सब दिशाओं में तथा शरीर के सब अंगों में समाया हुआ ।
[संज्ञा पु.] ईश्वर ।

अभिव्याप्त [वि.] (सं.) शामिल । सम्मिलित । मिला हुआ ।

अभिव्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब ओर समाई हुई ।

अभिव्याहृत [वि.] (सं.) उच्चरित । बोला हुआ ।

अभिशंक, शङ्क [वि.] (सं.) सब ओर से शंकायुक्त

अभिशंका, शङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भ्रम । संशय ।

अभिशंकित, शङ्कित

अभिशंकित, शङ्कित [वि] (सं.) शंकाशील । शंकायुक्त । भयत्रस्त ।

अभिशंसन [संज्ञा पु.] (सं.) व्यभिचार का मिथ्या दोपारोप ।

अभिशंसा [संज्ञा स्त्री.] (स.) वह निर्णय जिसमें अभियुक्त पर दोप सिद्ध हो गया हो । कनविक्शन ।

अभिशंसित [वि.] (सं.) न्यायालय में जिसका दोषी होना सिद्ध हो गया हो । कनविक्टेड ।

अभिशप्त [वि.] (सं.) १—शापित । शाप दिया हुआ । २—मिथ्या दोषारोप ।

अभिशब्दित [वि.] (सं.) सम्मुख (मुँह पर) कहा हुआ ।

अभिशस्त [वि.] (सं.) मिथ्या दोषारोप ।

अभिशास्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अपवाद । बदनामी । २—हिंसा । ३—अभिशाप । ४—दोपनिश्चय । दोषनिर्णय ।

अभिशाप [संज्ञा पु.] (सं.) १—शाप । वददुआ । २—मिथ्या दोषारोपण । झूठी बदनामी ।

अभिशापित [वि.] (सं.) देखो 'अभिशप्त' ।

अभिशक्त [वि.] (सं.) पराजित । निन्दित ।

अभिषंग, अभिषङ्ग [संज्ञा पु.] १—पराजय । २—निंदा । आक्रोश । कोसना । ३—झूठा दोपारोपण । ४—दृढ़ । मिलाप । ५—शपथ । कसम । ६—भूतप्रेत का आवेश । ७—शोक । दुःख ।

अभिषंगा, अभिषङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद की एक ऋचा ।

अभिषव [संज्ञा पु.] (सं.) १—यज्ञ में स्नान । २—शराव या मद्य खींचना । ३—सोमलता को कुचल कर गारना । ४—सोमरसपान । ५—यज्ञ ।

अभिषिक्त [वि.] (सं.) १—विधिपूर्वक स्नान कराया हुआ । जिसका अभिषेक हुआ हो । २—बाधा-शांति के निमित्त जिस पर मंत्र पढ़ कर दूर्वा तथा कुश से जल छिड़का गया हो । ३—जल छिड़क कर विधिपूर्वक अधिकार का भार दिया गया हो । राजपद पर निर्वाचित ।

अभिषुक [संज्ञा पु.] (सं.) पिस्ता नामक मेवा ।

अभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) १—शान्ति या मंगल के निमित्त मंत्र पढ़कर कुश तथा दूब से जल छिड़कना । २—जलसिंचन । छिड़काव । ३—विधि के अनुसार मंत्रों द्वारा जल छिड़क कर अधिकार प्रदान करना । राजपद पर निर्वाचन । ४—यज्ञ के पश्चात शांति के निमित्त स्नान । ५—छेद वाला वह घड़ा जो शिवलिंग पर टपकाने के लिये तिपाई पर रक्खा जाता है ।

अभिषेकशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह राज्य-भवन जिसमें राजतिलक का संस्कार किया जाता है ।

अभिषेचन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो अभिषेक ।

अभिषेचित [वि.] (सं.) जिसका अभिषेक किया गया हो ।

अभिष्टुत [वि.] (सं.) प्रशंसित । स्तुति कियाहुआ ।

अभिष्यंदी, अभिष्यन्दी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अभिस्यंद' । २—टपकने वाला ।

अभिस्यंद, अभिस्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १—बहाव । श्राव । २—आँख का एक रोग । आँख आना ।

अभिसंधक, सन्धाक [वि] (सं.) आक्षेप करने वाला ।

अभिसंधान, अभिसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) १—वंचना । धोखा । जाल । २—लक्ष्य । फलोद्देश ।

अभिसंधि, अभिसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—धोखा । प्रतारणा । २—कुचक्र । षड्यंत्र ।

अभिसंधिता, अभिसन्धिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो स्वयम् अपने प्रियतम का अनादर कर पछताने वाली । कलहांतरिता नायिका ।

अभिसमय [संज्ञा पु.] (सं.) अस्थायी अधिवेशन या सभा ।

अभिसर [संज्ञा पु.] (सं.) १—संगी । साथी । २—सहायक । ३—अनुचर । सेवक ।

अभिसरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आगे जाना । २—प्रिय से मिलने के निमित्त जाना । ३—सम्मुख गमन ।

अभिसरन [संज्ञा पु.] (सं.) सहाय । शरण । सहारा ।

अभिसरना* [क्रि. अ.] (सं.) १—गमन करना । जाना । २—नायिका का प्रियतम से मिलने के निमित्त संकेत स्थल में जाना ।

अभिसाधक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अभिकर्त्ता'

अभिसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अभिकरण' ।

अभिसार [संज्ञा पु.] १—युद्ध । चढ़ाई । आक्रमण । २—सहारा । सहाय । ३—नायिका का नायक से या नायक का नायिका से मिलने संकेत-स्थान पर जाना ।

अभिसारना [क्रि. अ.] (हिं.) १—गमन करना । जाना । २—नायिका का अपने प्रियतम से मिलने संकेत-स्थल पर जाना ।

अभिसारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नायिका के दस भेदों में से एक । वह स्त्री या नायिका जो अपने प्रियतम से मिलने संकेत-स्थान पर जावे या अपने नायक या प्रियतम को बुलावे । वह स्त्री जो काम पीड़ित होकर या तो संकेत स्थल पर स्वयम् जाय या प्रियतम को बुलावे, पण्डित लोग उसे अभिसारिका नायिका कहते हैं । हिन्दी कवियों ने अभिसारिका तीन प्रकार की कही हैं । १—दिवसाभिसारिका, दिन में गमन करने वाली । २—शुक्लाभिसारिका, चाँदनी रात में गमन करने वाली । कृष्णाभिसारिका, अंधेरी रात में गमन करने वाली ।

अभिसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अनुसरणी । नौकरानी । २—अपने प्रियतम से मिलने जाने वाली स्त्री । एक वैदिक छंद ।

अभिसारी [वि.] (सं.) १—सम्मुख जाने वाला । २—आक्रमण करने वाला । ३—अनुचर । नौकर । सेवक ।

अभिसूचना [संज्ञा स्त्री.](सं.) विशेष तौर से किसी कार्य के लिए कहना ।

अभिसेख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अभिषेक' ।

अभिसेवन [संज्ञा पु.] (सं.) लगन से की गई सेवा । बड़ी खिदमत ।

अभिस्थिर [क्रि. वि.] (सं.) अत्यन्त दृढ़तापूर्वक । बहुत मजबूती से ।

अभिस्फुरित [वि.] (सं.) पूर्णरूप से विकसित । अच्छी तरह खिली हुई ।

अभिस्रवणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभिस्रावण करने की भट्टी या कारखाना ।

अभिस्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) भभके द्वारा शराब, अर्क आदि टपकाना या चुआना ।

अभिहत [वि.] (सं.) १—मारा-पीटा हुआ । सन्तप्त । २—(गणित में) गुणन किया हुआ ।

अभिहति (सं.) १—मारपीट । २—गुणन ।

अभिहर [वि.] (सं.) उठाले जाने वाला ।

अभिहरणीय [वि.] (सं.) निकट लाने योग्य ।

अभिहर्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुराने वाला । उठा ले जाने वाला ।

अभिहार [संज्ञा पु.] (सं.) १—सामने से उठा ले जाना । २—आलिङ्गन । बंधन । ३—अभियोग । इलजाम । ४—चोरी । ५—मेल । मुलाकात ।

अभिहास [संज्ञा पु.] हास्य । विनोदोक्ति । प्रहसन । हँसी । दिल्लगी ।

अभिहित [वि.] (सं.) कथित । कहा हुआ ।

अभिहिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—उपाधि । खिताब । २—कथन । वर्णन ।

अभी [क्रि. वि.] (हिं.) इसी समय । इसी क्षण । इसी वक्त ।

अभीक [वि.] (सं.) १—निर्भय । निडर । २—निष्ठुर । ३—उत्सुक । ४—कामुक । [संज्ञा पु.] १—स्वामी । मालिक । २—कवि ।

अभीष्ण [वि.] (सं.) निरन्तर । लगातार ।

अभीति [वि.] (सं.) निर्भय । बेखौफ । [संज्ञा स्त्री.] भय का अभाव ।

अभीत्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [illegible] । बाधा ।

अभीमोद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसन्नता। खुशी।

अभीर [संज्ञा पु.] (स.) १—गोप। ग्वाला। अहीर। २—एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११ मात्राएं और अन्त में जगण (।ऽ।) होता है।

अभीरी [स ज्ञा स्त्री.] (सं.) अहीरों की बोली।

अभीरु [वि.] (सं.) निर्भय। निडर।
[संज्ञा पु.] १—शिव। २—भैरव।

अभीष्ट [वि.] (सं.) १—अभिलषित। वांछित। चाहा हुआ। २—मनोनीत। पसंद का। ३—अभिप्रेत। आशय के अनुसार।
[संज्ञा पु.] १—मनचाही बात। २—प्राचीन पंडितों के मतानुसार एक अलंकार जिसमें अपने इष्ट की सिद्धि दूसरे के कार्य द्वारा प्रदर्शित की जाय।

अभीष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियता। चाह।

अभीष्टलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) मन-वांछित वस्तु की प्राप्ति। प्रिय पदार्थ की प्राप्ति।

अभीष्टसिद्धि [स ज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अभीष्ट लाभ'।

अभीष्टा [संज्ञा स्त्री.] १—सुगन्धित रेणुका। पाऊडर। २—ताम्बुलपान। ३—गृह-स्वामिनी। प्रियतमा। पत्नी।

अभुआना [क्रि. अ.] (हिं.) हाथ पैर पटकना और सिर धुनना या जोर से सिर हिलाना जिससे यह समझा जाय कि भूत आगया है।

अभुक्त [वि.] (सं.) १—जो न खाया गया हो २—भोग न किया हुआ। बिना काम में आया हुआ। अव्यवहृत।

अभुक्तमूल [संज्ञा पु.] ज्येष्ठानक्षत्र के अंत की तथा मूलनक्षत्र की दो घड़ी। कहते हैं इस काल में उत्पन्न संतान पितृधन का भोग नहीं कर सकती।

अभुग्न [वि.] (सं.) १—सीधा। जो टेढ़ा न हो। २—निरोग। स्वस्थ।

अभुज [वि.] (सं.) बाहुहीन। जिसका हाथ टूट जाय।

अभू [क्रि. वि.] (सं.) अब भी। अभी। इसी वक्त

अभूखन [संज्ञा पु.] (हिं.) आभूषण। अलंकार। गहना।

अभूत [वि.] (सं.) १—जो बीता न हो। वर्तमान। २—जो हुआ न हो। ३—अनोखा। विलक्षण। अद्भुत। अपूर्व।

अभूतपूर्व [वि.] (सं.) १—जो पहले न हुआ हो। २—अपूर्व। विलक्षण।

अभूतशत्रु [वि] (सं.) जिसका कोई दुशमन न हो।

अभूताभिनिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) असत्य को सत्य मान लेना। मिथ्या को सत्य समझना।

अभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—सम्पत्ति का अभाव। निर्धनता। २—शक्ति का अभाव। दुर्बलता। ३—उत्पत्ति का अभाव।
[वि.] १—निर्धन। २—नापैद। जन्मशून्य।

अभूतोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा के दश भेदों में एक जिसमें उपमान का गुण नहीं बताते।

अभूयिष्ट [वि.] (सं.) कम। न्यून। जो अधिक न हो।

अभूरि [वि.] (सं.) कुछ। थोड़ा। कतिपय।

अभूष [वि.] (सं) जो सजा हुआ न हो। वेश-भूषारहित।

अभृत [वि.] (सं.) भाड़ा न पाने वाला। किराये से वंचित।

अभेड़ा [स ज्ञा पु.] (हिं.) विग्रह। युद्ध। लड़ाई

अभेद [संज्ञा पु.] (सं.) १—भेद का अभाव। फर्क का न पड़ना। २—एक अलंकार।

अभेदक [वि.] (सं.) अभिन्न। न बटने वाला।

अभेदनीय [वि.] (सं.) १—विभक्त न होने वाला छेदा न जाने वाला।

अभेद्य [स ज्ञा पु.] (सं.) हीरा। किसी भी धातु से न छिदने के कारण हीरे को अभेद्य कहते हैं।
[वि.] देखो 'अभेदनीय'।

अभेय [संज्ञा पु.] (हिं.) अभेद। अभिन्नता। एकता।
[वि.] अभिन्न। एक। न बटने वाला।

अभेरना [क्रि. सं.] (हिं.) मिलाना।

अभेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। विग्रह।

अभेव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अभेद'।

अभै [संज्ञा पु.] (हिं.) भय का अभाव। निर्भय। भयरहित।
[क्रि. वि.] अभी। इसी समय। फौरन्।

अभैर [संज्ञा. पु.] (हिं.) कलवाँसा। दढ़ेरी। वह लकड़ी जिसमें डोरी बांधकर कंधियां लटकाई जाती हैं।

अभोक्ता [वि.] (सं.) व्यवहार में न लाने वाला। काम में न लाने वाला।

अभोग [संज्ञा पु.] (सं.) काम में लाने की स्थिति। जिसका भोग न किया गया हो। अछूता।

अभोगिन [वि] (सं.) देखो 'अभोगी'।

अभोगी [वि.] (सं.) भोग न करने वाला। आनंद न लेने वाला। विरक्त।

अभोग्य [वि.] (सं.) भोग करने के अयोग्य। आनन्द लेने के अयोग्य।

अभोज [वि.] (हिं.) न खाने योग्य। अभक्ष्य।

अभोजन [स ज्ञा पु.] (सं.) भोजन का अभाव। उपवास। व्रत।

अभोजित [वि.] (सं.) न खिलाया हुआ। भोजन न कराया हुआ।

अभोज्य [वि.] (सं.) भोजन के अयोग्य। भोजन के लिए निषिद्ध। अभक्ष्य।

अभौतिक [वि.] (सं.) १—पंचभूत से संबंध रखने वाला। जो पंचभूत का न बना हो २—अगोचर।

अभौम [वि.] (सं.) भूमि से उत्पन्न न होनेवा

अभ्यंग, अभ्यङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—चो और पोतना। मल-मलकर लगाना। लेपन २—तेल की मालिश। तैलमर्दन।

अभ्यंजन, अभ्यञ्जन [संज्ञा स्त्री.] १—तैल मालिश। २—सजावट। ३—आभूषण अलंकार।

अभ्यंजनीय, अभ्यञ्जनीय [वि.] (सं.) १- मालिश करने योग्य। २—पोतने योग्य लगाने योग्य।

अभ्यंतर, अभ्यन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १—मध्य बीच। हृदय।

अभ्यतीत [वि.] (सं) मृत। मुर्दा। गया-गुजरा

अभ्यधिक [वि.] (सं.) अधिक परिमाण का।

अभ्यनुज्ञा [स ज्ञा स्त्री.] (स.) १—अनुमति २—आज्ञा। ३—पृथक करना। बरतरफी।

अभ्यनुक्त [वि.] (सं.) स्पष्ट रूप से न कहा हुआ

अभ्यर्चन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जो पूजा को अनुकूल बनाने को की जाती हो।

अभ्यर्चनीय [वि.] (सं.) सर्वथा पूजनीय।

अभ्यर्चा [स ज्ञा स्त्री.] देखो 'अभ्यर्चन'।

अभ्यर्चित [वि.] (सं.) १—सर्व प्रकार से पूजित २—प्रशंसित।

अभ्यर्च्य [वि.] (सं.) सर्वथा पूजनीय।

अभ्यर्थन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अभ्यर्थना'।

अभ्यर्थना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विनय। प्रार्थना दरख़ास्त २—अगवानी। सम्मान के लि आगे बढ़कर लेना।

अभ्यर्थनीय [वि.] (सं.) १—प्रार्थनीय। विनय करने योग्य। २—अगवानी करने योग्य।

अभ्यर्थित [वि.] (सं.) १—याचित। जिसकी प्रार्थना की गई हो। २—अगवानी कियाहुआ

अभ्यर्थी [स ज्ञा पु.] (सं.) १—प्रार्थी। २—परी देने वाला।

अभ्यर्थक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का स्वामित्व या अधिकार किसी को देने वाला व्यक्ति।

अभ्यर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का स्वामित्व या अधिकार किसी को सौंपने का कार्य। असाइनमेंट।

अभ्यर्पणग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अभ्यर्पि

अभ्यर्पित [वि.] (सं.) (किसी वस्तु का स्वत्व) जो किसी को सौंप दिया गया हो। असाइंड।

अभ्यर्पिती [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का

स्वामित्व या अधिकार पाने वाला व्यक्ति। असाइनी।

अभ्यसित [वि] (सं.) अभ्यास किया हुआ।

अभ्यस्त [वि.] (सं.) अभ्यास किया हुआ। बार-बार एक ही जैसा कार्य करने वाला। मश्क किया हुआ। २—जिसने अनुशीलन किया हो। दक्ष। निपुण।

अभ्याकांक्षित [वि] अभिलषित। चाहा हुआ। [संज्ञा पु.] झूठा दावा या अभियोग। झूठी नालिश।

अभ्याख्यात [वि] (सं.) जिस पर झूठा अभियोग लगाया हुआ हो।

अभ्याख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) मिथ्या अभियोग। झूठा जुर्म। झूठा दावा।

अभ्यागत [संज्ञा पु.] (सं.) १-अतिथि। मेहमान। पाहुना। २—सम्मुखागत। सामने आयाहुआ।

अभ्यागम [संज्ञा पु.] (सं.) १—सामने आना। उपस्थिति। २—सामना। ३—निकटता। ४—युद्ध। लड़ाई। ५—रणस्थल। लड़ाई का मैदान। ६—विरोध। दुश्मनी। ७—अभ्युत्थान। अगवानी।

अभ्याघात [संज्ञा पु.] (सं.) १—आघात। मार। २—मारने की सलाह।

अभ्याचार [संज्ञा पु.] (सं.) आक्रमण। हमला।

अभ्याश [संज्ञा पु.] (सं.) १—निकट। पड़ोस। २—अभिव्याप्ति। पहुँच। ३—फल। नतीजा

अभ्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्य को बारबार करना। पुनः पुनः अनुशीलन। २—पुनरावृत्ति। दोहराव। ३—स्वभाव। मुहावरा। आदत। बान। टेव। ४—शिक्षा। ५—एक काव्यालंकार जिसमें किसी दुष्कर बात को सिद्ध करने वाले कार्य का वर्णन हो।

अभ्यासकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग की चार कलाओं में से एक, जिसमें आसन तथा प्राणायाम की एकता होती है यह विधि साधन के संयोग से निकलती है।

अभ्यासयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १—जीवात्मा तथा परमात्मा का मेल। २—अभ्यास द्वारा किसी कार्य का मनःसंयोग।

अभ्यासी [संज्ञा पु.] (सं.) अभ्यास करने वाला। साधक।

अभ्याहत [वि.] (सं.) आहत। चोट खाया हुआ। जख्मी।

अभ्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) १—डाका। दिन दहाड़े की लूटमार। २—अभियोग। ३—भक्षण। खाना।

अभ्युक्त [वि.] (सं.) सामने कहा हुआ। साक्षात रूप से कहा गया।

अभ्युक्ति [संज्ञा स्त्री.] किसी व्यवहार या मुकदमे में वादी प्रतिवादी के कथन या वक्तव्य।

अभ्युक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) छिड़काव। सिंचन

अभ्युक्षित [वि.] (सं.) १—छिड़का हुआ। सींचा हुआ। २—छिड़का या सींचा गया हो।

अभ्युच्छ्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १—चढ़ाव। उठान। २—सङ्गीत में स्वर साधन की एक प्रणाली।

अभ्युचित [वि.] (सं.) साधारण। मामूली। जिसका रिवाज हो गया हो।

अभ्युत्क्रोशन [संज्ञा पु.] (सं.) जोर की चिल्लाहट

अभ्युत्क्रोशनमंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी की प्रशंसा में गाया हुआ गीत।

अभ्युत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १—उठाना। २—किसी का आदर करने के लिये आसन छोड़ कर खड़ा हो जाना। ३—उच्चपद प्राप्ति। अधिकार प्राप्ति। ४—उठान। उदय। आरम्भ। उत्पत्ति।

अभ्युत्थायी [वि] (सं.) उठ कर खड़ा होने वाला। २—सत्कार के लिये उठकर खड़ा होने वाला। ३—उन्नतिशील। बढ़ने वाला।

अभ्युत्थित [वि.] (सं.) १—अभिवादन के लिये खड़ा हुआ। आदरणीय व्यक्ति के सम्मानार्थ उठकर खड़ा हुआ। उठा हुआ। २—उन्नत।

अभ्युत्थेय [वि.] (सं.) १—जिसके अभिवादन को आसन से उठना पड़े। अगवानी के योग्य। १—उन्नति के योग्य।

अभ्युदय [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य आदि ग्रहों का उदय। २—अभीष्ट कार्य का प्रदुर्भाव। ३—उन्नति। बढ़ती। ४—आरम्भ। ५—विवाह, पुत्र, जन्मादि शुभ अवसर। ६—उत्सव। ७— शुभ फल। ८—दैवयोग।

अभ्युदित [वि.] (सं.) १—सर्वांशउदित। भलीभांति निकला हुआ। २—दिन चढ़े तक सोने वाला। ३—सूर्योदय के समय उठकर नित्य कर्म करने वाला। ४—उन्नत। समृद्ध।

अभ्युन्नत [वि.] (सं) उठा हुआ। बढ़ाचढ़ा।

अभ्युन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी उन्नति।

अभ्युपगत [वि.] (सं.) १—पास आया हुआ। सामने आया हुआ। २—स्वीकृत। अंगीकृत। मंजूरशुदा। ३—प्रमाणित।

अभ्युपगंतव्य [संज्ञा स्त्री] (सं.) निकट जाने योग्य।

अभ्युपगम [संज्ञा पु.] (सं) १—पास गया। हुआ। समीपगमन। २—अंगीकार। स्वीकार। प्रतिज्ञा। इकरार। ३—नियम। ४—विश्वास। न्यायशास्त्र के चार सिद्धान्तों में से एक जिसमें से बिना देखे सुने कोई बात कही जाती है, तब उसकी विशेष परीक्षा करने को 'अभ्युपगम-सिद्धान्त' कहते हैं।

अभ्युपेय [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्वीकार किया जाने वाला।

अभ्युषित [वि.] (सं.) सामने रहने वाला।

अभ्येषण [संज्ञा पु.] (सं.) १—इच्छा। चाह। २—आक्रमण। हमला।

अभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—मेघ। बादल। २—आकाश। ३—अभ्रक धातु। ४—स्वर्ण। सोना

अभ्रक [संज्ञा पु.] (सं.) अबरक। भोडर। भोडल

अभ्रकसत्व [संज्ञा पु.] (सं.) इस्पात। लोहा।

अभ्रनामक [संज्ञा पु.] (सं.) मुस्ता। मोथा।

अभ्रपटल [संज्ञा पु.] (सं.) अबरक।

अभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रम का अभाव।

अभ्रांत, अभ्रान्त [वि.] (सं.) १—भ्रमरहित। भ्रान्तिशून्य। २—घबराहट या गलती में न पड़ने वाला। भ्रान्तिशून्य। ३—प्रमादरहित।

अभ्रांति, अभ्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] १—भ्रांति का अभाव। स्थिरता। अंचलता। २—भूल-चूक का न होना। ३—प्रमाद का अभाव।

अमंगल, अमङ्गल [वि.] (सं.) अशुभ। अकुशल [संज्ञा पु.] १—अकल्याण। दुःख। अशुभ। २—रेंड का वृक्ष।

अमंद, अमन्द [वि.] (सं.) १—मंद या धीमा न हो। तेज। २—उत्तम। श्रेष्ठ। सुंदर। ३—उद्योगी। कार्य-कुशल। चलतापुरजा। [संज्ञा पु.] वृक्ष। पेड़।

अम [संज्ञा पु.] (सं.) १—बीमारी रोग। २—सेवक। नौकर। ३—कच्चा फल।

अमका [संज्ञा पु.] (हि.) अमुक। ऐसा। फलाना

अमचूर [संज्ञा पु] (हिं) सूखे हुए आम का पिसा हुआ चूर्ण।

अमड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) एक वृक्ष जिसकी पत्तियों से छोटी तथा सींकों में लगती हैं। इसमें छोटे खट्टे फल लगते हैं जो चटनी तथा अचार बनाने के काम में आते हैं। अमारी।

अमत [संज्ञा पु.] (सं) १—असम्मत। मत का अभाव। २—रोग। ३—मृत्यु।

अमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—ज्ञान का अभाव। मूर्खता। २—अप्रशस्त बुद्धि। ओछी समझ। [वि.] १—ज्ञानहीन। बेसमझ। २—दुष्ट।

अमत्त [वि.] (सं) १—मदरहित। जो मतवाला न हो। २—घमंडरहित। ३—शांत।

अमत्सर [संज्ञा पु.] (सं) दूसरे की भलाई में ईर्षा का न करना।

अमद [वि] (सं) विषण्ण। निरानन्द। बेचैन।

अमदन [क्रि. वि] (अ) इच्छापूर्वक। जानबूझकर।

अमधुपर्क्य [वि] (सं.) जो मधुपर्क के अयोग्यहो

अमधुर [वि.] (सं.) कटु। जो मीठा न हो। अरुचिकर। [संज्ञा पु.] संगीतशास्त्र के अनुसार बंशी के छः दोषों में से एक।

अमन [संज्ञा पु.] (अ) शांति। चैन। आराम। बचाव।

अमनस्क [वि.] (सं.) १—अनमना। उदास। २—उदासीन। मन व इच्छा से रहित।

अमनि [संज्ञा स्त्री.] १—गति। चाल। २—पथ। राह।

अमनिया [वि.] (हिं.) स्वच्छ। पवित्र। शुद्ध। अछूता।

अमनुष्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पौरुषहीनता। नामर्दी। क्लीवत्व।

अमनैक [संज्ञा पु.] (हिं.) १—सरदार। अधिकार प्राप्त व्यक्ति। अवध के वह कृषक जिन्हें लगान के विशेष अधिकार प्राप्त हैं। अधिकार जताने वाला। साहसी। ढीठ।

अमनोगत [वि.] (सं.) अनभिप्रेत। ध्यान में न लाया हुआ।

अमनोज्ञ [वि.] (सं.) नापसंद। चित्त को अप्रिय लगने वाला।

अमनोनीत [वि.] (सं.) नापसंद। अनभिप्रेत।

अमनोरम्य, अमनोहर, [वि.] (सं.) मन को न भाने वाला। अनीप्सित। नापसंद।

अमन्तव्य [वि.] (सं.) ध्यान न दिया जाने वाला

अममता, अममत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ममता का अभाव। उदासीनता। लापरवाही।

अमर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २—कुलिश-वृक्ष। सेहुड़। ३—पारद। पारा। ४—अमर-कोश। ५—अमरकोश के रचयिता अमरसिंह ६-उनञ्चास पवनों में से एक। ७—विवाह से पूर्व वर-कन्या के राशिवर्ग के संयोग के निमित नक्षत्रों का एक गण।

अमरकंटक, अमरकण्टक [संज्ञा पु.] विंध्याचल पर्वत पर एक ऊंचा स्थान जहां से नर्मदा और सोन नदियां निकलती हैं। हिन्दू लोग इसे तीर्थ स्थान मानते हैं और प्रति वर्ष यहां महादेव का मेला लगता है।

अमरकंटिका, अमरकण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावरी। सतावर।

अमरकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु। देवकाष्ठ।

अमरकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग। लवंग।

अमरकोष [संज्ञा पु.] (सं.) अमरसिंह प्रणीत अभिधान विशेष। अमरसिंह का बनाया हुआ एक शब्दकोश।

अमरख❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—क्रोध। कोप। गुस्सा। रिस। क्षोभ। अमर्ष। २—रस के ३३ संचारी भावों में से एक।

अमरखी [वि.] (हिं.) क्रोधी। बुरा मानने वाला।

अमरण [संज्ञा पु.] (सं.) अमरता। मृत्यु का अभाव। नित्यता। अनश्वरता।
[वि.] अमर। मरणरहित। चिरजीवी।

अमरणीय [वि.] (सं.) अमर। अनश्वर। नित्य

अमरतरु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु।

अमरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनश्वरता। कभी न मरने की अवस्था। २—देवत्व।

अमरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—अमरता। अनश्वरता। चिरजीवन। २—देवत्व।

अमरदारु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु का वृक्ष।

अमरद्विज [संज्ञा पु.] (सं.) पुजारी ब्राह्मण। देवता का पूजन करने वाला ब्राह्मण।

अमरनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—इन्द्र। २—एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो काशमीर राज्यान्तर्गत है। यहां महादेव का विशाल मंदिर है। श्रावण पूर्णिमा को बर्फ के बने हुए शिवलिंग का दर्शन होता है। अमरनाथ काशमीर की पूर्वदिशा में पर्वतमाला के मध्य लगभग १५००-१६०० फुट की ऊंचाई पर अवस्थित है

अमरपख [संज्ञा पु.] (हिं.) अमरपक्ष। पितृपक्ष।

अमरपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र। देवराज।

अमरपद [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वर्ग। २—मोक्ष मुक्ति।

अमरपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १—देवताओं का नगर स्वर्ग। अमरावती। २—ब्रह्मदेश की प्राचीन राजधानी।

अमरपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १—कल्पवृक्ष। २—सुपारी का पौधा। ३—काँस का पौधा। ४—केतकी। ५—आम। ६—तालमखाना। ७—गोखरू।

अमरपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अमरपुष्प'।

अमरपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] १—सोया। कांस।

अमरपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अमरपुष्पिका'

अमरप्रख्य [वि.] (सं.) देवता जैसा। देवता के समान।

अमरप्रभ [वि.] (सं.) देखो 'अमरप्रख्य'।

अमरप्रभु [संज्ञा पु.] (सं.) १—इन्द्र। २-विष्णु

अमरबेल [संज्ञा स्त्री.] अमरवल्ली। एक पीली लता जिसके जड़ और पत्ते नहीं होते। यह वृक्ष का रस चूसकर बढ़ती है।

अमररत्न, अमलरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक। बिल्लौर।

अमरराज [संज्ञा. पु.] (सं.) देवताओं के राजा। इन्द्र।

अमरलोक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रपुरी। देवलोक। स्वर्ग।

अमरलोकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग का आनन्द।

अमरवत (सं.) देवता की भांति।

अमरवर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र। देवताओं में श्रेष्ठ।

अमरवल्ली, अमरवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरबेल। आकाशवल्ली।

अमरस [संज्ञा पु.] (हिं.) निचोड़कर सुखाया हुआ आम का रस जिसकी मोटी पर्त्त बन जाती है। अमावट।

अमरसिंह [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रसिद्ध संस्कृत शब्दकोषकार।

अमरसी [वि.] (हिं.) आम के रस के समान पीला या सुनहला।

अमरस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की अप्सरा।

अमरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दूर्वा। दूब। २—इन्द्रायण। ३—नीलदूर्वा। काली दूब। ४—गुर्च। गिलोय। ५—वह झिल्ली जिसमें गर्भ का बच्चा लिपटा रहता है। ६—घीक्वार। ७—इंद्रपुरी। ८—नदीवट।

अमराई❀ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आम का बाग।

अमरांगना, अमराङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की अप्सरा।

अमराचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के गुरु, बृहस्पति।

अमराद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का पर्वत, सुमेरु।

अमरपगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की नदी, गंगा।

अमरालय [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का स्थान। स्वर्ग। इन्द्रलोक।

अमराव [संज्ञा पु.] (हिं.) आम का बगीचा। अमराई। आम की बारी।

अमरावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रपुरी। देवताओं की नगरी।

अमरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—कन्या। देव पत्नी। २—एक प्रकार का वृक्ष।

अमरु [संज्ञा पु.] (सं.) 'अमरुशतक' के रचयिता

अमरुत [वि.] (सं.) वायुरहित। बिना हवा का।

अमरू [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जो काशी में बुना जाता है।

अमरूत [संज्ञा पु.] (हि.) अमरूद। एक वृक्ष और फल का नाम।

अमरूद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष और फल का नाम। जिसका तना कमजोर, टहनियां पतली तथा पत्ते पाँच छः अंगुल लम्बे होते हैं। इलाहाबाद के अमरूद भारत में प्रसिद्ध हैं।

अमरेश [संज्ञा पु.] (सं.) १—शिव। २—इंद्र।

अमरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का राजा। इंद्र।

अमरैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अमराई। आम की बारी।

अमरोपम [वि.] (सं.) देवता के समान।

अमर्त [वि.] (सं.) कभी न मरने वाला। अमर।

अमर्त्य [वि.] (सं.) मरणरहित। मर न सकने वाला।

अमर्दित [वि.] (सं.) जो दला या मला न गया हो। जो पैर से कुचला न गया हो। जिसका मर्दन न हुआ हो।

अमर्धत् [वि.] (सं.) अहिंसक।

अमर्याद [वि.] (सं.) १—अप्रतिष्ठित। सम्मान रहित। २—सीमारहित। ३—अव्यवस्थित। बेकायदा।

अमर्यादा [संज्ञा स्त्री] (सं.) अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। प्रगल्भता। सीमा का उल्लङ्घन।

अमर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १—क्रोध। गुस्सा। रोष। सहनशीलता का अभाव। ३—साहस। हिम्मत। ४—अलंकारशास्त्र के अनुसार एक व्यभिचारी भाव।

अमर्षज [वि.] (सं.) अधैर्य या घृणा से उत्पन्न।

अमर्षण [संज्ञा पु] (सं.) क्रोध। अक्षमा। असहिष्णुता।

अमर्षहास [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध का हास्य। गुस्से की हंसी।

अमर्षित [वि.] (सं.) क्रुद्ध। क्षमा न करने वाला

अमर्षी [वि.] (सं) क्रोधी। असहनशील।

अमल [वि.] (सं.) १—निर्मल। स्वच्छ। २—दोषरहित। पापशून्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—अभ्रक। अबरक। २—समुद्रफेन। ३—कपूर। २—शासन। हुकूमत। ३—नशा। उन्माद। ४—व्यसन। आदत। ५—प्रभाव। असर। ६—समय। वक्त।

अमलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—निर्मलता। सफाई। स्वच्छता। २—निर्दोषता।

अमलतास [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष जिसमें फुट-डेढ़ फुट लम्बी फलियां लगती हैं। इसके फूल पीले और पत्तियां सिरस की सी होती हैं। इसके फूलों का गुलकंद तथा फलियां दवा के काम में आते हैं।

अमलतासिया [वि.] (हिं.) अमलतास के पीले फूल जैसे रंग वाला। गंधकी। हलका पीला रंग।

अमलदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—अधिकार। दखल। शासन। २—कनकूत। मालगुजारी। रुहेलखंड का खेती सम्बन्धी नियम जिसमें कृषक को पैदावार के अनुसार लगान देना पड़ती है।

अमलदीप्ति [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

अमलपट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह अभिलेख या दस्तावेज जो किसी कारिंदे को किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाय।

अमलबेत [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार की बेल या लता जो पश्चिम के पहाड़ों में होती है।

अमलमणि [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक। बिल्लौर।

अमलरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक। बिल्लौर।

अमला [संज्ञा स्त्री] (सं.) १—लक्ष्मी। २—सातला वृक्ष। पाताल आंवला।
[संज्ञा पु.] (सं.) आंवला।
[संज्ञा पु.] (अ.) राजकर्मचारी सरकारी नौकर

अमलानक [संज्ञा पु.] (सं) सदा बहार। अम्लान पुष्प।

अमलिन [वि.] (सं.) शुद्ध। निर्मल। निष्कलंक। साफ।

अमली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) इमली। अम्लिका। एक झाड़ीदार वृक्ष।
[वि] (हिं) १—अमल करने वाला। कर्मण्य। २—व्यवहारिक। अमल में आने वाला। ३—नशेबाज।

अमलूक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पहाड़ी वृक्ष जिसका फल सूखा और ताजा खाया जाता है

अमलोनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लोनिया घास। नोनी। इसकी पत्ती छोटी, मारी और खट्टी होती है। इसका साग बनाकर खाते हैं यह मंदाग्नि को दूर करता है। इसको कुलफा भी कहते हैं। इसके रस को निचोड़कर पीने से धतूरे का विष उतर जाता है।

अमल्लक [वि.] (हिं.) समूचा। बिलकुल। ज्यों का त्यों।

अमस [संज्ञा पु.] (सं.) १—काल। समय। वक्त। २—रोग। बीमारी। ३—निर्बोध। अज्ञानी।

अमसूल [संज्ञा पु.] (हिं.) कोकण, कनारा तथा कुर्ग के जंगलों में मिलने वाला एक पतला वृक्ष जिसकी टहनियां नीचे की ओर झुकी रहती हैं। इसका तैल मालिश करने तथा मरहम बनाने के काम में आता है। इसका फल खाया जाता है।

अमसृण [वि.] (सं.) कठोर। कठिन। जो कोमल न हो।

अमस्तु [संज्ञा पु.] (सं.) दधि। दही।

अमहत [वि.] (सं.) रोग से पीड़ित।

अमहर [संज्ञा पु.] (हिं.) कच्चे तथा छिले हुए आम की सूखी फांक।

अमहल [वि.] (हिं.) जिसके पास घर न हो। जिसके रहने का कोई स्थान न हो। व्यापक।

अमांस [वि.] (डि.) दुबला। मांसहीन।

अमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमावस्या। अमावस।
[संज्ञा पु.] १—आत्मा। २—घर। गृह। २—यह लोक या संसार।

अमाघौत [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार हो जाता है।

अमातना* [क्रि. स.] (हि.) निमन्त्रण देना। न्योता देना। तलब करना। बुलाना।

अमातापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) माता तथा पुत्र दोनों का न रहना।

अमातृक [वि.] (सं.) बिन मां का। जिसकी माता न रहे।

अमात्य [संज्ञा पु.] (सं.) मंत्री। वजीर।

अमात्र [वि] (सं.) अपरिमित। मात्रारहित। बेहद।

अमान [वि.] (सं.) १—मानरहित। बेअंदाज। अपरिमित। २—बेहद। असीम। ३—निरभिमान। सीधासाधा। ४—अप्रतिष्ठित। अनादृत। तुच्छ। आत्माभिमानरहित।
[संज्ञा पु.] (अ.) १-रक्षा। बचाव। २-शरण।

अमानत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—थाती। धरोहर। उपनिधि। २—किसी वस्तु का कुछ दिनों के लिये रखना।

अमानतदार [संज्ञा पु.] (अ.) अमानत या धरोहर रखने वाला व्यक्ति।

अमानत, अमानना [संज्ञा स्त्री.] १—आदर या सम्मान का अभाव। २—गौरवहीन। बेइज्जत

अमानव [वि.] (सं.) जो मनुष्य न हो।

अमाननीय [वि.] (सं.) न मानने योग्य। अमान्य

अमाना [क्रि. अ.] (हिं) १—पूरे तौर पर भर जाना। भलीभांति समाना। २—फूलना। प्रफुल्लित होना। इतराना।
[संज्ञा पु.] अन्न के गोदाम का द्वार। बखार का मुँह। आना।

अमानी [वि] (सं.) अभिमानरहित। अहंकारशून्य।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह सरकारी भूमि जिसका अधिकार जिला कलक्टर के पास होता है। २—वह काम जो ठेके पर न हो। ३—लगान की वसूली जिसमें फसल का बिगड़ना विचारकर कुछ कमी की जाय। ४—मनमानी व्यवस्था। अंधेर।

अमानुष [वि.] (सं.) जो मनुष्य के बस का न हो। मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध।
[संज्ञा पु.] १—मनुष्य से भिन्न प्राणी। २—देवता। ३—राक्षस।

अमानुषिक [वि.] (सं.) देखो 'अमानुषी'।

अमानुषी [वि.] (हिं.) मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध। पैशाचिक। २—अलौकिक।

अमानुष्य [वि.] (सं.) देखो 'अमानुष'।

अमाप [वि.] (सं.) १—अमान। जिसके परिमाण का अंदाजा न हो। अपरिमित। २—असीम बेहद।

अमाय [वि.] १—मायारहित। निर्लिप्त २-निष्कपट। निस्वार्थ।

अमाया [वि.] (सं.) १—मायाशून्य। निर्लिप्त। २—निश्छल। निष्कपट। निःस्वार्थ।

अमार [संज्ञा पु.] (सं.) न मरने की अवस्था। जीवन।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १—अम्बार। अन्न रखने का स्थान। यह अरहर के सरकंडों की टट्टी से घेरकर छाया जाता है। इसके ऊपर नीचे भुस डाल देते हैं। २—अमड़ा।

अमारग [संज्ञा पु.] (हिं.) अमार्ग। मार्ग का अभाव।

अमारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) हाथी का हौदा। इस पर छाया करने के लिए ऊपर मंडप छाया रहता है।

अमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—मार्ग का अभाव। २—कुमार्ग। कुराह। ३—बुरी चाल। दुराचरण।

अमार्जित [वि.] (सं.) १—अशुद्ध। मैला। जो साफ न किया गया हो। २—जिसका संस्कार न हुआ हो। बिना शोधा या सुधारा हुआ।

अमाल [संज्ञा पु.] (अ.) अधिकारी। शासक। हाकिम।

अमालनामा [संज्ञा पु.] (अ.) १—वह पुस्तक या रजिस्टर जिसमें कर्मचारियों के भले-बुरे कार्य अंकित किये जाते हैं। २—कर्मपुस्तक। इसलाम धर्म के अनुसार शुभाशुभकर्म अंकित करने की पुस्तक जिससे कि प्रलयकाल में लेखाजोखा सुनाया जा सके।

अमावट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आम के सूखे हुए रस की जमी हुई तह या पर्त। २—पहिनानामक जाति की मछली।

अमावड़ (डि.) शक्तिशाली।

अमावना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'अमाना'।

अमावस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अमावस्या। कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि।

अमावसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमावस्या।

अमावस्या, अमावास्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि। अमावस।

अमाह [संज्ञा पु.] (हि.) एक नेत्र रोग जिससे आंख में लाल मांस उभर आता है। नांखूना

अमाही [वि.] (हिं.) नेत्ररोग-संबंधी। आमाह रोग संबंधी।

अमिट [वि.] (हिं.) १—मिटने वाला। नष्ट न होने वाला। स्थायी। २—जो न टले। अवश्यंभावी। अटल।

अमित [वि.] (सं.) १—अपरमित। असीम। बेहद। २—अत्याधिक।
[संज्ञा पु.] केशव के मतानुसार एक अर्थालंकार जिसमें साधन ही साधक की सिद्धि का फल भोगे।

अमितवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) असीम शक्ति सम्पन्न। अत्याधिक बलवान।

अमिताभ [संज्ञा पु.] (सं.) एकध्यानी बुद्ध।
[वि.] अत्याधिक चमक-दमक वाला। असीम प्रभासम्पन्न।

अमिताशन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।
[वि.] जो सब कुछ खाय। अपरिमित भोजी। अतिभोजी। अत्याधिक खाने वाला।

अमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैरी। शत्रु।
[वि.] १—जो मित्र न हो। २—बिना मित्र का। जिसका कोई मित्र न हो।

अमित्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी। मित्र न होने की अवस्था।

अमिय※ [संज्ञा पु.] (हिं.) अमृत।

अमियमूरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अमृतबूटी। संजीवनीबूटी।

अमिरती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'इमरती'।

अमिल※ [वि.] (हिं.) १—न मिलने वाला। अप्राप्य। पृथक। बेमेल। ३—भिन्नवर्गीय। ४—ऊंची नीची। उभड़-खभड़।

अमिलतास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अमलतास'

अमिलपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौड़ी तुरपन। एक प्रकार की सिलाई।

अमिलित [वि.] (सं.) पृथक। न मिला हुआ। अलग।

अमिलियापाट [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का पटसन।

अमिली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इमली'।

अमिश्रण [संज्ञा पु.] (सं.) मिश्रण का अभाव। बिना मिली अवस्था।

अमिश्रराशि [संज्ञा पु.] (सं.) गणित के अनुसार १ से ९ तक की राशि अमिश्रराशि कहलाती है। इकाई द्वारा प्रगट की जाने वाली राशि।

अमिश्रणीय [वि.] (सं.) न मिलने योग्य। मिश्रण के अयोग्य।

अमिश्रित [वि.] (सं.) १—मिश्रणरहित। बिना मिलाई हुई। २—खालिस। शुद्ध।

अमिष [संज्ञा पु.] (सं.) १—छल का अभाव। बहाने का न होना। अकपट।
[वि.] छलरहित। धोखा न देने वाला।

अमी※ [संज्ञा पु.] (हिं.) अमृत। अमिय।

अमीकर [संज्ञा पु.] (हिं.) अमृत बरसाने वाला। चन्द्रमा।

अमीत※ [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु। दुश्मन। वैरी। जो मित्र न हो।

अमीन [संज्ञा पु.] (अ.) न्यायालय का वह कर्मचारी जो बाहर-बाहर का काम करता हो। यथा कुर्की कराना, भूमि नापना, किसी स्थान विशेष का निरीक्षण करना।

अमीनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १—चन्द्रमा। २—अमृत का सागर या समुद्र।

अमीर [संज्ञा पु.] (अ.) १—अधिकारी। २—धनवान। धनाढ्य। ३—उदार। ४—अफगानिस्तान के बादशाह की एक उपाधि।

अमीराना [वि.] (अ.) अमीरों या धनवानों जैसा। जिससे अमीरी प्रगट हो।

अमीरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—धनाढ्यता। ऐश्वर्य। दौलतमन्दी। २—उदारता।
[वि.] अमीर जैसा। अमीर के योग्य। अमीराना।

अमीव [संज्ञा पु.] (सं.) १—पाप। २—रोग। ३—दुःख। कष्ट।

अमीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अमीव'।

अमुक [वि.] (सं.) फलाँ। ऐसा-ऐसा। कोई।

अमुक्त [वि.] (सं.) १—बंधा हुआ। बद्ध। २—जिसे जन्म-मरण से छुटकारा न मिला हो। जिसको मोक्ष न मिली हो। ३—जो फँसा हो

अमुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मुक्ति या मो का अभाव। २—स्वतंत्र न होने का भाव।

अमुख्य [वि.] (सं.) अप्रधान। आधीन। मात

अमुग्ध [वि.] (सं.) १—मुग्ध या मोहित न हो वाला। २—विरक्त। जितेन्द्रिय। ३—च

अमुची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डायन। चुडैल।

अमुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) परलोक।

अमुष्य [वि.] (सं.) प्रसिद्धा विख्यात।

अमुष्यकुल [संज्ञा पु.](सं.) प्रसिद्ध कुल या वं

अमुष्यपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कुलीन व्यक्ति। प्रसिद्धकुलोत्पन्न।

अमूक [वि.] (सं.) १—बोलने वाला। वक २—जो गूगा न हो। ३—चतुर।

अमूढ़ [वि.] (सं.) १—विद्वान। बुद्धिमान होशियार। २—जो मूर्ख न हो। चतुर।

अमूर [वि.] (सं.) १—अमूढ़। विद्वान। २—चतुर।

अमूर्त्त [वि.] (सं.) निराकार। मूर्तिरहित अपरिच्छन्न। निरवयव

अमूर्त्ति [वि.] (सं.) आकृतिहीन। निराकार।
[संज्ञा पु.] विष्णु। ईश्वर।

अमूर्त्तिमान [संज्ञा पु.](सं.) मूर्तिरहित। बेशक्ल

अमूल [वि.] (सं.) जिसकी जड़ न हो। बिना मूल का।
[संज्ञा पु.] सांख्यशास्त्र के अनुसार प्रकृ का एक नाम।

अमूलक [वि.] (सं.) १—निर्मूल। बिना ज का। २—मिथ्या। असत्य।

अमूल्य [वि.] (सं.) १—मूल्यरहित। अनमोल २—बहुमूल्य।

अमृणाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद खस। खं उशीर।

अमृत [वि.] (सं.) १—जीवित। जो मरा न हो २—मरणरहित। जो न मरा हो।
[संज्ञा पु.] १—समुद्र मंथन से निकले १ रत्नों में से एक। सुधा। पीयूष। २—जल पानी। ३—देवता। ४—इन्द्र। ५—सूर्य ६—शिव। ७—पारा। ८—धन्वन्तरि। ९— उड़द। १०—सोना। ११—घी। १२—दूध १३—अन्न। अनाज। १४—विष। १५— बच्छनाग। १६—धन। १७—मुक्ति। १८— अरत्व। १९—स्वर्ग। २०—सोमरस। २१— भोजन।

अमृतक [संज्ञा पु.] (सं.) पीयूष। सुधा।

अमृतकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। चांद।

अमृतकुंड, अमृतकुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) अमृ रखने का पात्र।

अमृतकुंडली, अमृतकुण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एक छन्द जो चंद्रायण के अंत हरिगीतिका के दो पद जोड़ने से बनता है २—एक प्रकार का वाद्य।

अमृतक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) नौसादर।

अमृतगति [संज्ञा स्त्री.] एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में (न+ज+न+गु.) होता है। इसको त्वरितगीत भी कहते हैं।

अमृतगर्भ [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्म। ईश्वर।

अमृतजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामांसी। जटामासी।

अमृततरंगिणी, अमृततरङ्गिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदनी। चंद्रिका। चन्द्रज्योत्सना।

अमृतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १—मृत्यु का अभाव। न मरना। २—मोक्ष। मुक्ति।

अमृतदान [संज्ञा पु.] (हिं.) खाद्य वस्तु रखने का एक ढकनेदार पात्र।

अमृतद्युति [संज्ञा पु.] (सं) चांद। चन्द्रमा।

अमृतद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा की किरण।
[वि.] अमृत बरसाने वाला।

अमृतधार [वि.] (सं.) अमृत बहाने वाला।

अमृतधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके पहिले चरण में २० दूसरे में १२ तीसरे में १६ और चौथे चरण में ८ अक्षर होते हैं।

अमृतधुनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अमृतध्वनि'।

अमृतध्वनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक २४ मात्राओं का तथा ६ चरणों वाला छंद। इसके पहिले दो चरण का एक दोहा होता है। बाकी प्रत्येक चरण में झटके के साथ द्वित्व वर्णों से युक्त तीन यमक रहते हैं।

अमृतप [वि.] (सं.) अमृत का पान करने वाला
[संज्ञा पु.] १—देवता। २—विष्णु।

अमृतफल [संज्ञा पु.] (सं.) १—नाशपाती। २—परवल।

अमृतफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अंगूर। २—आंवला। ३—मुनक्का।

अमृतबंधु, अमृतबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १—देवता। २—चन्द्रमा।

अमृतबान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मिट्टी का रोगनी बरतन। यह अचार मुरब्बा आदि रखने के काम आता है।

अमृतबिंदु, अमृतबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद् जिसे अथर्ववेदीय मानते हैं।

अमृतमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद का नाम।

अमृतमहल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैसूर राज्यान्तर्गत एक प्रकार की भैंस।

अमृतमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

अमृतयोग [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ फलदायक योग।

अमृतरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) चांद। चन्द्रमा।

अमृतरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला अंगूर। कपिला द्राक्ष।

अमृतलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिलोय। गुर्च। गुडूची।

अमृतलतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिलोय। गुर्च। गुडूची।

अमृतलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग। बहिश्त।

अमृतवपु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

अमृतवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिलोय। गुर्च। गुडूची।

अमृतवाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक चिड़िया। पक्षी विशेष।

अमृतसंजीवनी, अमृतसञ्जीवनी [वि.] (सं.) देखो 'मृतसंजीवनी'।

अमृतसंभवा, अमृतसम्भवा [संज्ञा स्त्री.] गिलोय गुर्च।

अमृतसर [संज्ञा पु.] (सं.) पंजाब का एक प्रसिद्ध नगर।

अमृतसहोदर [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

अमृतसार [संज्ञा पु.] (सं.) १—घी। २—मक्खन नवनीत।

अमृतांधस् [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

अमृतांशु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। चांद।

अमृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—गुर्च। २—आंवला ३—बड़ी हर। ४—तुलसी। ५—अतीस। ६—मदिरा। शराब। ७—इन्द्रायण। ८—पीपल। पिप्पली। ९—दूब। १०-नागबल्ली। पान। ११—फिटकरी। १२—खरबूजा। १३—लाल निसोत। १४—मालकँगनी।

अमृताक्षर [वि.] (सं.) अजर। अमर।

अमृताशन [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

अमृतासु [वि.] (सं.) अधिक दिन जीने वाला।

अमृताहरण [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

अमृतेश [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत के ईश। शिव।

अमृतेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

अमृषा [क्रि. वि.] (सं.) सचमुच। बेशक।

अमृष्ट [वि.] (सं.) जो साफ न हो। अमार्जित।

अमृष्य [वि.] (सं.) सहन न करने योग्य।

अमेघ [क्रि.] (सं.) बादलरहित।

अमेजना [क्रि. स.] (हिं.) मिलावट होना। मिल जाना।

अमेठना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उमेठना'।

अमेध्य [वि.] (सं.) अपवित्र। अशुद्ध।
[संज्ञा पु.] (सं.) विष्ठा। मैला। मूत्र।

अमेध्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपवित्रता। अशुद्धता। मैलापन।

अमेध्यत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अमेध्यता'।

अमेध्ययुक्त [वि.] (सं.) मलिन। मैला।

अमेन [संज्ञा पु.] (?) रंडुआ।

अमेय [वि.] (सं.) १—असीम। अपरिमाण। २—अज्ञेय। समझ में न आने वाला।

अमेरिका [संज्ञा पु.] (सं.) एक महाद्वीप।

अमेल [वि.] (हिं.) १—जिसमें मेल न हो। २—असम्बद्ध।

अमेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनमिल। असम्बद्ध।

अमेव [वि.] (हिं.) देखो 'अमेय'।

अमेड़* [वि.] (हिं.) मर्यादा या बन्धन न मानने वाला।

अमोघ [वि.] (सं.) निष्फल न होने वाला। अचूक। लक्ष्य पर पहुँचने वाला। वृथा या खाली न जाने वाला।

अमोघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—हड़। २—बायविडंग। ३—कश्यप की पत्नी।

अमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) छूटने न पाना। मुक्ति का अभाव।
[वि.] न छूटने वाला।

अमोद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आमोद'।

अमोनिया [संज्ञा पु.] (अं.) नौसादर।

अमोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आम का कच्चा फल। अंबिया।

अमोल [वि.] (हिं.) अमूल्य।

अमोलक [वि.] (हिं.) बहुमूल्य। कीमती।

अमोला [संज्ञा पु.] (हिं.) आम का नया निकलता हुआ पौधा।

अमोही [वि.] (हिं.) १—निष्ठुर। निर्मोही। २—विरक्त।

अमौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १—आम के रस के समान रंग। २—अमौआ रंग का कपड़ा।
[वि.] आम के रस के रंग का।

अमौलिक [वि.] (सं.) १—निर्मूल। बिना जड़ का। २—बे-सिरपैर का। अयथार्थ। मिथ्या। निराधार।

अम्मरस [संज्ञा पु.] (हिं.) अमृतसर का कबूतर। वह कबूतर जो सारा सफेद और कंठ काला होता है।

अम्मां [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माता। मां।

अम्माम [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का साफा जिसे मुसलमान लोग बांधते हैं।

अम्मारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अंबारी'।

अम्र [संज्ञा पु.] (अ.) बात। विषय। मुआमिला

अम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) खटाई। तेजाब।
[वि.] खट्टा। तुर्श।

अम्लक [संज्ञा पु.] (सं.) बड़हर। लकुच वृक्ष।

अम्लका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खट्टे पालक का शाक।

अम्लकेशर [संज्ञा पु] (सं.) अनार का वृक्ष।

अम्लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खट्टापन।

अम्लपादप [संज्ञा पु.] (सं.) इमली का वृक्ष।

अम्लपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है वह सब पित्तदोष के कारण खट्टा हो जाता है।

अम्लवेत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अमलवेत'।

अम्लसार [संज्ञा पु] (सं.) १—नींबू। २—काँजी। ३—चूक। अमलवेत। ४—हिंताल। ५—आमलासार गंधक। ६—चूक।

अम्लहरिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँवा हलदी।

अम्लाध्युषित [रोग] [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक खटाई खाने से होने वाला एक आँख का रोग

अम्लान [वि.] (सं.) १—जो कुम्हलाया या उदास न हो। प्रफुल्ल। प्रसन्न। २—निर्मल। स्वच्छ। साफ।

अम्लिका [संज्ञा पु.] (सं.) इमली।

अम्लोदगार [संज्ञा पु.] (सं.) खट्टी डकार।

अम्हौरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) गरमी के दिनों में पसीने से होने वाली छोटी-छोटी फुंसी। अंधोरी।

अयं [सर्व.] (सं.) यह।

अयःपान [संज्ञा. पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

अयःशूल [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक अस्त्र। २—तीव्र उपताप।

अय [संज्ञा पु.] (सं.) १—पासा। २—लोहा। ३—अग्नि। ४ | शस्त्र।
[संबोधन] अरे! ओ!

अयक्ष्म [वि.] (सं.) १—निरोग। ३—बाधारहित। निरुपद्रव।

अयक्तप्रभाव् [संज्ञा पु.] (सं) अनुचित प्रभाव। भीतरी प्रभाव।

अयजनीय [वि] (सं.) १—निंदित। २—यज्ञ में आदर-सत्कार के अयोग्य।

अयज्ञिय [वि.] (सं.) १—यज्ञ में काम न आने वाला। २—यज्ञ में न दिया जाने वाला। यज्ञ के अयोग्य। शास्त्रानुसार जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो।

अयत [वि.] (सं.) यत्न न करने वाला।

अयतेंद्रिय [वि.] (सं.) १—इन्द्रियों को वश में न रखने वाला। २—इन्द्रियलोलुप। ३—ब्रह्मचय-भ्रष्ट।

अयत्न [संज्ञा पु.] (सं.) यत्न का अभाव।
[वि.] यत्न का प्रयत्न न करने वाला।

अयत्नकारी (सं.) सुस्त। शिथिल।

अयत्न [संज्ञा पु.] (सं.) उद्योगशून्यता। यत्न का अभाव।
[वि.] यत्नरहित। उद्योगहीन।

अयथा [वि.] (सं.) १—मिथ्या। तथ्यहीन। झूठ। २—अयोग्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—किसी कार्य को विधिविहित न करना। विधि के विरुद्ध काय। ३—अनुचित कार्य।

अयथातथ [वि.] (सं.) अयथार्थ। विपरीत। विरुद्ध।

अयथापूर्व [वि.] (सं.) १—भूतपूर्व। २—साधारण। मामूली।

अयथार्थ [वि.] (सं.) १—असत्य। मिथ्या। जो यथार्थ न हो। २—अनुचित। अनुपयुक्त।

अयथेष्ट [क्रि. वि.] (सं.) इच्छा के विरुद्ध।

अयथोचित [वि.] (सं.) अनुपयुक्त। अनुचित। नामुनासिब।

अयन [संज्ञा पु.] (सं.) १—गमन। २—सूर्य तथा चन्द्रमा का दक्षिण से उत्तर और उत्तर से दक्षिण की ओर गमन को उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। ३—सूर्य के उत्तर तथा दक्षिण दिशा में जाने का समय। एक वर्ष में छः ऋतु होती हैं। तीन ऋतु का एक अयन तथा दो अयन का एक वर्ष होता है। ४—ज्योतिपशास्त्र। ५—सेना की गति। ६—माग। राह। ७—स्थान। ८—आश्रम। ९—घर। १०—समय। काल। ११-अंश। १२—अयन के आरम्भ में होने वाला यज्ञ। १३—गाय भैंस के स्तन का ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।

अयनकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १—छः महीने का समय। २—वह समय जो एक अयन में लगे

अयनसंक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-अयन संक्रांति। मकर तथा कर्क की संक्रांति। २—प्रत्येक संक्रांति से २० दिन पूर्व का समय।

अयनसंक्रांति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मकर तथा कर्क की संक्रांति। अयन-संक्रम।

अयनसंपात [संज्ञा पु.] (सं.) अयनांशों का योग। अयनांश का पतन।

अयनांत, अयनान्त [संज्ञ पु.] (सं.) अयन की सीमा। वह संधिकाल जहां एक अयन का अन्त हो तथा दूसरे का प्रारम्भ हो।

अयनांश [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की गति का विशेष भाग। अयन भाग।

अयमित [वि.] (सं.) अनिवारित। प्रतिबन्धरहित। न रोका हुआ।

अयव [संज्ञा पु.] (सं.) १—गोबरीला कीड़ा। पुरीष का एक कीड़ा जो यव से छोटा होता है। २—पितृकर्म, क्योंकि इस कृत्य में यव का प्रयोजन नहीं पड़ता। ३—कृष्णपक्ष। ४—शुक्र।

अयश [संज्ञा पु.] (सं.) १—अपकीर्ति। अपयश। २—निंदा।

अयशकर [वि.] (सं.) अपवादजनक। अकीर्तिकर। बदनाम करने वाला।

अयशस्य [वि.] (सं.) बदनाम करने वाला।

अयशस्वी [वि.] (सं.) १—जिसे यश प्राप्त न हो। अकीर्तिमान्। २—बदनाम।

अयशी [वि.] (सं.) बदनाम।

अयस [संज्ञा पु.] (सं.) लोहा।

अयस्कांत [संज्ञा पु.] (सं.) चुम्बक।

अयस्काम [वि.] (सं.) लोहा पाने का इच्छु

अयस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहार।

अयस्कीट [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का जंग।

अयां [वि.] (अ.) १—प्रकाशित। खुला हु प्रगट। २—स्पष्ट।

अया [अव्य.] (सं.) इस तरह। ऐसे। यों। प्रकार से।

अयाचक [वि.] (सं.) १—याचना न वाला। न मांगने वाला। २—संतुष्ट।

अयाचित [वि.] (सं.) विना मांगा हुआ।

अयाचितवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिक्षा निर्वाह।

अयाची [वि.] (सं.) १—न मांगने वाला। सम्पन्न। ३—धनी।

अयाच्य [वि.] (सं.) १—जिसे मांगने की आ श्यकता न हो। परिपूर्णकाय। भरापू २—संतुष्ट। तृप्त।

अयाज्य [वि.] (सं.) १—यज्ञ कराने के अयोग यज्ञ के अधिकार से वंचित। २—प ३—चांडाल।

अयाज्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पतित होने का गिर जाने की अवस्था।

अयाज्ययाजक [संज्ञा पु.] (सं.) पतित व्यक्ति यज्ञ कराने वाला व्यक्ति।

अयातपूर्व [वि.] (सं.) १—अनुयायी। अगला। दूसरा।

अयातयाम [वि.] (सं.) २—प्रयोग करने बिगड़ा हुआ। २—नूतन। टटका। ता ३—विगत दोप। शुद्ध। ४—जिसको पहर समय भी न बीता हो। ५—मौके ६—जो खाया न गया हो।

अयातयामता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवीनत ताजगी।

अयातु [वि.] (सं.) अहिंसक। न मारने वाल

अयाथार्थिक [वि.] (सं.) १—अनुचित। अयोग्य गैरमुनासिब। २—बनावटी। कृत्रिम कल्पित। जो असली न हो।

अयाथार्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) अनौचित्य। अ ग्यता।

अयान [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वभाव। निसर्ग २—अचंचलता। स्थिरता। ३—ठहराव गमनाभाव।
[वि.] १—वाहनहीन। विना सवारी। गतिहीन।

अयानत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सहायता। सहा मदद।

अयानप [संज्ञा पु.] (हिं.) १—ज्ञान का अभाव अज्ञानता। अनजानपन।

अयानपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अयानप'।

अयाना* [वि.] (हिं.) अज्ञान। बुद्धिहीन।

अयानी [संज्ञा स्त्री] (हि) अज्ञानी । समझ न रखने वाली स्त्री ।

अयाल [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े या शेर की गर्दन के बाल । केशर ।
(अ.) लड़के-वाले । वाल-बच्चे ।

अयास* [क्रि वि.] (हि.) अनायास ।

अयास्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—शत्रु । विरोधी । २—प्राणवायु । ३ — अंगिराऋषि ।

अयाहय [संज्ञा पु.] (सं.) कांस्य धातु । कांसा ।

अयि [अव्य.] (सं.) संबोधन का शब्द । हे ! अय ! अरे ! अरी !

अयुक्छद [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तपर्ण वृक्ष । सतवन । सतनी वृक्ष की प्रत्येक डाल में अलग-अलग सात पत्ते रहते हैं ।

अयुक्त [वि] (सं.) १—अयोग्य । अनुचित । नालायक । २—अमिश्रित । अलग । ३—आपद्ग्रस्त । मुसीबत में पड़ा हुआ । ४—अनमना । जो अन्य विषय पर आसक्त हो । ५—असंबद्ध । युक्तिशून्य ।

अयुक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्रयोग । कार्य से अलग रहने का भाव ।

अयुक्तत्व [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो अयुक्तता ।

अयुक्तरूप [वि] (सं.) अयोग्य । अनुचित ।

अयुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—युक्ति का अभाव । मेल न मिलना । २—योग न देना । अप्रवृत्ति । ३—वंशी बजाने का एक ढंग ।

अयुग [वि] (सं.) विषम । ताक । अकेला ।

अयुगपद [क्रि वि.] (सं.) धीरे-धीरे । एक-एक । क्रम-क्रम से ।

अयुगपद्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) क्रमानुसारिता । सिलसिलेवार ।

अयुग्म [वि.] (सं.) १—विषम । ताक । २—अकेला । एकाकी ।

अयुग्मच्छद [संज्ञा पु.] (सं) सप्तपर्ण वृक्ष । सतनी । छतिवन ।

अयुग्मनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

अयुग्मबाण [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

अयुग्मवाह [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

अयुग्मशर [संज्ञा पु] (सं) कामदेव ।

अयुत [संज्ञा पु] (सं) १—दस हजार की संख्या का स्थान । २—दस हजार की संख्या ।
[वि.] असंयुक्त । असम्बद्ध ।

अयुध [संज्ञा पु] (सं) १—युद्ध न करने वाला व्यक्ति । २—हथियार ।

अयुध्य [वि.] (सं.) जिसे जीता न जा सके ।

अयुष [संज्ञा स्त्री] देखो 'आयुष' ।

अये [संज्ञा पु] (हि.) अये अये बोलने वाला कोई जंतु ।
[अव्य] (सं.) १—सावधान । खबरदार । २—दुःख । ३—संबोधन शब्द अरे, क्या, कहां, भला ।

अयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १—योग का अभाव । २—कुसमय । कुकाल । ३—संकट । ४—ऐसा वाक्य जिसका अर्थ सुगमता से न लगे । ५—असंभव । ६—अप्राप्ति । ७—अप्रशस्त योगयुक्तकाल । फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्टग्रह नक्षत्र आदि का मेल हो ।
[वि.] अयोग्य । अनुचित । २—अप्रशस्त । बुरा ।

अयोगगुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की गोली ।

अयोगव [संज्ञा पु.] (सं.) वैश्य जाति की स्त्री और शूद्रपुरुष से उत्पन्न । एक वर्णसंकर जाति ।

अयोगवाह [संज्ञा पु.] (सं.) अनुस्वार और और विसर्ग तथा जिह्वामूलीय और उपध्मानीय । विसर्ग के जिह्वामूलीय तथा उपध्मानीय यह दो रूप और भी हैं । ककार-खकार के पूर्व अर्द्ध विसर्ग के समान जो चिह्न होता है, उसे जिह्वामूलीय कहते हैं । यथा, ⨯क⨯ख फिर पकार-फकार से पहले जो अर्ध विसर्ग के समान चिन्ह पड़ता है उसे उपध्मानीय कहते हैं । यथा ≍प ≍फ । अच् के पश्चात एक विन्दु रहने से उसे अनुस्वार तथा दो विन्दु रहने से विसर्ग कहते हैं ।

अयोगी [वि.] (सं.) १—योग न जानने वाला । जिसे साधन मन का ज्ञान न हो । जो योगी न हो । २—अयोग्य ।

अयोग्य [वि.] (सं.) १—अनुपयुक्त । जो योग्य न हो । २—अकुशल । नालायक । निकम्मा । अपात्र । ३—अनुचित ।

अयोग्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अक्षमता । अनुपयुक्तता ।

अयोघन [संज्ञा पु.] (सं.) हथौड़ा ।

अयोच्छिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का जंग ।

अयोध्या [वि.] (सं.) जिससे कोई लड़ न सके ।
[संज्ञा स्त्री.] सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी । इसे सरयू के किनारे स्वतः मनु ने बसाया था । यहीं श्री रामचन्द्रजी का जन्म हुआ था । साकेत ।

अयोध्याकांड [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण का दूसरा कांड । इस कांड में राम के राज्याभिषेक से प्रस्तव से लेकर अत्रिमुनि के आश्रम में जाने तक सम्पूर्ण वृत्तान्त हैं ।

अयोनि [वि.] (सं.) १—अजन्मा । योनि से न उत्पन्न होने वाला । २—नित्य ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—ब्रह्मा । २—शिव ।

अयोनिज [वि.] (सं.) १—जो योनि से उत्पन्न न हो । २—स्वयंभू । ३—अदेह ।
[संज्ञा पु.] १—विष्णु । २—ब्रह्मा ।

अयोनिजत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योनि से उत्पन्न होने की अवस्था ।

अयोनिजेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

अरंग, अरङ्ग [संज्ञा पु.] (हि) सुगन्ध । महक ।

अरंड [संज्ञा पु.] (हि.) एरंड । रेंड । अंडा ।

अरंभ [संज्ञा पु.] (हि.) आरम्भ ।

अरंभना [क्रि. अ.] (हि.) बोलना । शब्द निकलना । आवाज देना ।
[क्रि. स.] आरम्भ करना । शुरू करना ।
[क्रि. अ.] आरम्भ होना । शुरू होना ।

अर [संज्ञा पु.] (हिं.) हठ । जिद । अड़ ।
(सं.) १—अरागज । आरी । २-कोण । कोना । ३—सेवार ।

अरइल [वि.] (हि.) अड़ियल । जो चलते २ ठिठक जाय ।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष का नाम ।

अरई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बैल हांकने की एक छोटी छड़ी जिसके सिरे पर नुकीली कील लगी रहती है ।
अरई लगाना = सचेत करना ।

अरक [संज्ञा पु.] (सं.) १—शैवाल । सेवार । पहिये का अरा ।
(अ.) १-भभके से खींचा हुआ रस । आसन । २—रस । ३—पसीना ।
अरक अरक होना = पसीने में भीग जाना ।

अरकगीर [संज्ञा पु.] (फा.) नमदे का वह टुकड़ा जिसे घोड़े की पीठ पर लगाकर जीन खेंचते हैं

अरकटी [संज्ञा पु.] (हि.) पतवार घुमाने वाला मांझी ।

अरकना [क्रि. अ.] (हि.) १—तड़कना । टक्कर खाना । कटना । दरकना ।

अरकनाना* [संज्ञा पु.] (अ.) पोदीने और सिरके का अर्क ।

अरकबादियान [संज्ञा पु.] (अ.) सौंफ का अर्क ।

अरकला [संज्ञा पु.] (हि) रोक । ठहराव । मर्यादा ।

अरकाना [संज्ञा पु.] (अ.) राज्य के प्रधान कर्मचारी । मंत्रिमंडल । राज्य के प्रमुख संचालक

अरकासार [संज्ञा पु.] (डि.) तड़ाग । तालाब । बावली ।

अरकोल [संज्ञा पु.] (हि.) हिमालय पर्वत पर पाया जाने वाला एक वृक्ष । इसके गोंद को काकरासींगी या काकड़ासींगी कहते हैं ।

अरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) लाख । लाक्ष ।

अरक्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दस वर्ष से अधिक वय की अविवाहिता लड़की ।

अरक्षित [वि.] (सं.) अनाश्रय । जिसकी रक्षा न की गई हो ।

अरग [संज्ञा पुं.] (हिं.) अरगजा । एक पीले रंग का सुगंधित मिश्रित द्रव्य । इसे देवताओं को चढ़ाते हैं तथा माथे पर भी लगाते है ।

अरगजा [संज्ञा पु] (हि.) केशर चंदन और कपूर के मिश्रण से बना हुआ सुगन्धित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है ।

अरगजी [वि] (हि.) १—अरगजे के से रंग वाला । २—अरगजी का रंग । अरगजा ।

अरगट [वि.] (हि.) भिन्न । पृथक । जुदा ।

अरगएट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपत्यका । घाटी ।

अरगन [संज्ञा पु.] (अं.) धौंकनी से बजने वाला एक अंगरेजी बाजा ।

अरगनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वस्त्रादि लटकाने की लकड़ी या रस्सी । इसे कपड़े आदि टांगने को घर में बांधते हैं ।

अरगल [संज्ञा पु.] (सं.) वह लकड़ी जो किवाड़ बन्द करने के पश्चात् आड़ी लगाई जाती हैं । व्योंड़ा । गज ।

अरगवानी [संज्ञा पु.] (फा.) लाल रंग । रक्तवर्ण [वि.] १—गहरे लाल रंग का । लाल । २—बैंगनी ।

अरगाना [क्रि. अ] (हि.) १-अलग होना । पृथक होना । २—मौन होना । सन्नाटा खींचना । चुप्पी साधना ।

प्राण अरगाना = प्राण सूखना । विस्मित होना

अरघ [संज्ञा पु.] (हि.) १—सोलह प्रकार के उपचारों में से एक । देवता के सामने फूल, अक्षत, दूब आदि गिराने का कार्य । २—महापुरुष के आगमन पर हाथ धुलाने के निमित्त दिया जाने वाला जल । ३—वह जल जो बरात के आने पर भेजा जाता है । ४—किसी के आने पर प्रसन्नता प्रगट करने के लिये लुढ़काया जाने वाला जल । ५—जल का छिड़कना ।

अरघट्ट, अरघट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) रहट । अरहट ।

अरघा [संज्ञा पु.] (हि.) १—अर्घ देने का तांबे का पात्र । २—जलहरी । शिवलिंग स्थापित करने का पात्र । वह पात्र जिसमें रखकर अर्घ दिया जाता है । कुएँ के जगत पर की पानी निकालने की राह या स्थान ।

अरघान [संज्ञा पु.] (हि.) गंध । महक । आघ्राण

अरचन [संज्ञा पु.] (हि.) पूजा । नव प्रकार की भक्ति में से एक ।

अरचना [क्रि. स.] (हि.) पूजा करना ।

अरचल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अड़चन । रोक । रुकावट ।

अरचा [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'अर्चा' ।

अरचि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आभा । तेज । दीप्ति । ज्योति ।

अरचित [वि.] (हि.) देखो 'अर्चित' ।

अरज [संज्ञा स्त्री.] (अ.) विनय । प्रार्थना । निवेदन । विनती ।

अरजल [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह घोड़ा जिसके तीन पैर एक रंग के और एक पैर एक रंग का होता है ऐसा घोड़ा निकृष्ट समझा जाता है । २—नीच कुलोत्पन्न पुरुष । ३—वर्णसंकर । [वि.] (अ.) नीच ।

अरजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—भार्गवऋषि की कन्या । २—घीक्वार ।

अरजी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—आवेदनपत्र । प्रार्थनापत्र । २—प्रार्थी ।

अरजुन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अर्जुन' ।

अरझना [क्रि. अ.] (हि.) लिपटना । फंसना । अरुझना ।

अरट [संज्ञा पु.] (सं.) पृथुश्रवा नामक राजा का एक मंत्री ।

अरडींग [वि.] (डि.) शक्तिशाली । बलिष्ठ । ताकतवर ।

अरणि, अरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एक प्रकार का वृक्ष । बनियार । अँगेथू । २—सूर्य । ३—बढ़ई के बरमे के समान बना हुआ एक काठ का यंत्र जिसको कुशा पर रखकर वेदमन्त्रों के उच्चारणं सहित घुमाते हैं । तब छेद के नीचे वाली कुशा जल उठती है । यह आग प्रायः यज्ञ में काम लाई जाती है ।

अरणिक [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निमंथन वृक्ष ।

अरणिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'अरणिक' ।

अरणीसुत [संज्ञा पु.] (सं.) शुकदेव ।

अरण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—वन । जंगल । २—कायफल । कटफल । ३--दस प्रकार के सन्यासियों में से एक । ४—रामायण का एक कांड ।

अरण्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १—वन । जंगल । २—महानिम्ब । बकैन । बकायन ।

अरण्यगज [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली हाथी ।

अरण्यगत [वि.] (सं.) वन में पहुँचा हुआ ।

अरण्यगान [संज्ञा पु.] (सं) सामवेद का एक गान जो जंगल में गाया जाता है ।

अरण्यचटक [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली कबूतर ।

अरण्यभव [वि.] (सं.) वनजात । वन में उत्पन्न होने वाला ।

अरण्यमार्जार [संज्ञा पु.] (सं.) वनबिलाव ।

अरण्यरोदन [संज्ञा पु.] (सं.) वृथा रोना । ऐसी पुकार जिसका कोई सुनने वाला न हो । वह कथन जिसका कोई सुनने वाला न हो ।

अरण्यवास [संज्ञा पु.] (सं.) वनवास । जंगल का रहना ।

अरण्यषष्ठी [संज्ञ स्त्री.] (सं.) ज्येष्ठमास के शुक्लपक्ष की षष्ठी । इस दिन स्त्रियां संतानवर्द्धन की कामना से व्रत करती हैं ।

अरण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बूटी । एक औषधि विशेष ।

अरण्यचंद्रिका, अरण्यचन्द्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यर्थ का बनाव शृङ्गार । बनाव शृङ्गार के उपरांत भी जब पति का मन न रीझे तब 'वनचन्द्रिका' कहते हैं ।

अरणीय [वि.] (सं.) जंगली । वन की ।

अरत [वि.] (सं.) १—सांसारिक वस्तुओं अलग रहने वाला । विरत । २—मंद ।

अरति [संज्ञा पु.] १—विराग । चित्त का लगना । २—जैनशास्त्रानुसार एक कर्म जिस उदय से मन किसी काम में नहीं लगता ।

अरतिस, अरतीस [वि.] (हि.) अड़तीस । और आठ । '३८' ।

अरत्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १—बाहु । हाथ । कुहनी । ३—मुट्ठी बंधा हाथ । ४—मीमांसा शास्त्र के अनुसार एक नाप जिससे पूर्व में यज्ञ की वेदी नापी जाती थी ।

अरत्निक [संज्ञा पु.] (सं.) कुहनी ।

अरत्निमात्र [वि.] (सं.) केवल एक हाथ भर नाप ।

अरथ [वि.] (सं.) बिना रथ का । बेगाड़ी । [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अर्थ' ।

अरथात (हि.) देखो अर्थात् ।

अरथाना [क्रि. स.] १—अर्थ लगाना । समझाना । ३—व्याख्या करना ।

अरथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लकड़ी की बनी सी की सी एक वस्तु जिस पर रखकर मुर्दे शमशान भूमि ले जाते हैं । विमान टिखटी । २—जो रथी न हो । पैदल । [वि.] देखो 'अर्थी' ।

अरदंड, दएड [संज्ञा पु.] (हि.) गंगा के किनारे उत्पन्न होने वाला । एक प्रकार का करील ।

अरद [वि.] (सं.) बिना दांत का । पोपला ।

अरदन [वि.] (सं.) दन्तरहित । भग्न-दन्त पोपला ।

अरदना [क्रि. स.] (हि.) १—लाते मार रौंदना । कुचलना । २—मारना । वध करना कत्ल करना ।

अरदल [संज्ञा पु.] लंकाद्वीप और पश्चिमी पर होने वाला एक प्रकार का वृक्ष ।

अरदली [संज्ञा पु.] (हि.) चपरासी । वह सेवक जो किसी राज्याधिकारी या न्यायाधीश कार्यालय में आज्ञा-पालन के निमित्त नियुक्त रहता है ।

अरदावा [संज्ञा पु.] (हि.) १—दला या कुचला हुआ अन्न । २—भरता ।

अरदास [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—निवेदन भेंट । विनती भाव से चढ़ाया गया उपहार २—ईश प्रार्थना ।

अरधंग, अरधङ्ग [संज्ञा पु.] (हि.) 'अर्द्धाङ्ग' ।

अरधंगी, अरधङ्गी [संज्ञा पु.] (हि.) 'अर्द्धाङ्गी' ।

अरध [वि.] (हि.) देखो 'अर्ध' ।

अरधांगी, अरधाङ्गी [संज्ञा पु] (हि.) 'अरर्द्धाङ्गी' ।

अरन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की निहाई जो नोकदार होती है। २—देखो 'अरण्य।

अरना [संज्ञा पु.] (हिं.) १—जंगली भैंसा। जो बहुत बलवान और साधारण भैंसे से आकार में भी बड़ा होता है। यह शेर तक का भी सामना करता है।
[क्रि. अ.] देखो अड़ना।

अरनी (हिं.) एक प्रकार का वृक्ष जो हिमालय पर होता है इसके फल को लोग खाते हैं और गुठली भी काम में आती है। २—अरणी।

अरन्य [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अरण्य'।

अरपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अर्पण'।

अरपनगंडा [वि.] (हिं.) असंख्य। अनगिनत। अगणित।

अरपना [क्रि. स.] (हि.) अर्पण करना। भेंट चढ़ाना। देना।

अरपा [संज्ञा पु.] (हि.) एक मसाला।
[वि.] दिया। अर्पित किया।

अरपित [वि.] (हि.) दिया हुआ। अर्पित।

अरब [संज्ञा पु.] (हि.) १-सौ करोड़ की संख्या। २—घोड़ा। ३—इन्द्र।
[संज्ञा पु.] (अ.) एक अरब नामक देश जिसका क्षेत्रफल १२००००० वर्ग मील है। यह मरुदेश है।

अरबर [वि.] (हि.) क्रमरहित। ऊटपटांग। असम्बद्ध।

अरबराना [क्रि. अ.] (हिं.) १—भयभीत होना। घबराना। विचलित होना। २—डावाँडोल होना। इधर उधर करना।

अरबरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भय। घबराहट।

अरबिस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) अरबदेश।

अरबी [वि.] (फा.) अरब देश का।
[संज्ञा पु.] १—अरबी घोड़ा। २—अरबी ऊंट। ३—अरबी बाजा। ताशा। ४—अरब देश की भाषा।

अरबीला [वि.] (हिं.) १—साधारण। मामूली। २—भोलाभाला।

अरभक [वि.] देखो 'अर्भक'।

अरम [वि.] १—अधम। २—निकृष्ट।

अरमनी [संज्ञा पु.] (फा.) आरमेनिया देश का निवासी।

अरमान [संज्ञा पु.] (तु.) इच्छा। लालसा। चाह। अभिप्रेत। हौसला।
अरमान निकालना=हौसला पूरा करना। अरमान भरा=उत्सुक। अरमान रहना या रह जाना=इच्छा पूरी न होना। मन की अभिलाषा मन ही में रहना। निराश होना। अरमान आना=घमंड आना। अरमान ठंडे पड़ना या सिराना=हविश रह जाना। अरमान होना=उत्सुकता या आतुरता होना।

अरर [अव्य.] (हिं.) व्यग्रता प्रदर्शित करने वाला शब्द।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—किवाड़। कपाट। २—ढक्कन।

अररना-दररना [क्रि. स.] (हि.) दलना। पीसना।

अरराना [क्रि. स.] (हिं.) १—अररराटे का शब्द करते हुए गिर पड़ना। २—टूटते या गिरते समय शब्द करना। ३—सहसा गिर पड़ना।

अरलु [संज्ञा पु.] (सं.) १—श्योनाक। टेंटू। सोना। २—कड़वी लौकी।

अरवन [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी फसल जो बिन पके ही कट जाय। पहिले-पहिल काटी जाने वाली फसल जिसे देवपूजन के निमित्त खलिहान में न जाकर घर ले जाई जायं। अवली। अवाँसी। कवल।

अरवल [संज्ञा पु.] (हि.) घोड़े के कान की जड़ में गले की ओर होने वाली भौंरी। इसे अशुभ समझते हैं।

अरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—बिना उबाले या भूने धान से निकाला हुआ चावल। २—आला। ताक।

अरवाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छज्जे का वह भाग जिसे पानी नीचे गिराता है। ओलती। ओरौनी।

अरवाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़ाई। झगड़ा।

अरवाही [वि.] (हि.) झगड़ालू। लड़ाका।

अरविंद, अरविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १—कमल। पद्म। २—सारस। ३—तांबा। ताम्र।

अरविंददलप्रभ, अरविन्ददलप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) ताम्र। तांबा।

अरविंदनयन, अरविन्दनयन [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के समान नयन वाले। विष्णु।

अरविंदनाभ, अरविन्दनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अरविंदबंधु, अरविन्दबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

अरविंदयोनि, अरविन्दयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

अरविंदलोचन, अरविन्दलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अरविंदाक्ष, अरविन्दाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अरविंदसद्, अरविन्दसद [संज्ञा पु.](सं.) कमल पर बैठने वाले ब्रह्मा।

अरविंदिनी, अरविन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—ऐसा देश जिसमें कमल उत्पन्न हों। २—कमलसमूह। ३—पद्मलता। ४—पद्मनी

अरवी [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार का कंद जिसकी तरकारी बनाकर खाते हैं। यह काली और सफेद दो प्रकार की होती है। इसके पान के समान बड़े बड़े पत्ते होते हैं।

अरस [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वाद का अभाव। नीरस। फीका। २—गंवार। अनाड़ी।

अरसठ [वि.] (हि.) अड़सठ। साठ और आठ '६८'।

अरसथ [संज्ञा पु.] (हि.) मासिक आय व्यय लिखने का खाता।

अरसन-परसन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो अरस परस।

अरसना [क्रि. अ.] (हिं.) ढीला या शिथिल पड़ना। मंद होना।

अरसना-परसना [क्रि. स.] (हिं.) मिला-भेंटी करना। आलिंगन करना। छूना।

अरसपरस [संज्ञा पु.] (हि.) १—देखाभाली। २—आंख मिचौनी का खेल जिसे प्रायः बच्चे खेला करते हैं।

अरसा [संज्ञा पु.] (सं) १—समय। वक्त। २—विलम्ब। देर।

अरसात [संज्ञा पु.] (हि.) एक छंद जिसमें २४ अक्षर होते हैं। इसमें सात भगण और एक रगण होता।

अरसाना [क्रि. अ.] (हिं) अलसाना। आलस्य आना। नींद लगना।

अरसिक [वि.] (सं.) १—जो रसिक न हो। अरसज्ञ। रूखा। कविता का मर्म न समझने वाला।

अरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अलसी। तीसी।

अरसीला [वि.] (हिं.) आलस्यभरा। आलस्य-पूर्ण।

अरसौंहां [वि.] (हिं.) आलस्यपूर्ण। आलस्यभरा

अरहत [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अर्हत'।

अरहट [संज्ञा पु.] (हिं.) रहंट। कुएं से पानी निकालने का एक यन्त्र।

अरहन [संज्ञा पु.] (हिं.) तरकारी में पड़ने वाला बेसन या आटा।

अरहना [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पूजा।

अरहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक अन्न जिसकी दाल बनती है। तुवरी।

अरहित [वि] (सं) सम्पन्न। भरापूर।

अरहेड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) चौपायों का झुण्ड। पशुदल। रेवड़।

अरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आरा'।

अराअरी [संज्ञा स्त्री.] (हि) होड़। स्पर्धा। बाजी।

अराक [संज्ञा पु] (अ.) १—अरब देश का एक प्रांत। २—अराक का घोड़ा।

अराकान [संज्ञा पु] (देश.) ब्रह्मदेश का एक प्रदेश।

अराग [वि] (सं) विरक्त। रागहीन। मंद।

अराज [वि] बिना राजा का। नृपतिरहित।
[संज्ञा पु.] अराजकता। बलवा।

अराजक [वि] (सं.) जहां राजा न हो। राजहीन। २—राज्य में प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला।

अराजकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—राजा न रहने की अवस्था। २—शासन का अभाव। ३—अशांति। हलचल। अंधेर।

अराड़जाना [क्रि. अ.] गर्भपात हो जाना। गर्भ का गिरना। यह शब्द केवल पशु के लिए ही प्रयुक्त होता है।

अराति [संज्ञा पु.] (सं.) १—दुश्मन। शत्रु। २—ज्योतिष के अनुसार कुण्डली का छठा स्थान। ३—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य आदि मनुष्य के छः शत्रु। छः की संख्या।

अराद्धि [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपराध। दोष। गुनाह। पाप।

अराधन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आराधन'।

अराधना* [क्रि. स.] (हिं.) १-आराधना करना। उपासना करना। २—पूजा करना। अरचना ३—जप करना। ध्यान करना।

अराधी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आराधी'।

अराना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'अड़ाना'।

अरावा [संज्ञा पु.] (अ.) १—रथ। गाड़ी। बहल २—तोप रखने की गाड़ी। ३—जलयान के ऊपर एक साथ एक दिशा में तोपों का दागा जाना।

अराम [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आराम'।

अरारूट [संज्ञा पु.] (अं.) अमरीका से भारतवर्ष में एक पौधा। तीखुर।

अरारोट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अरारूट'।

अराल [वि.] (सं.) टेढ़ा। कुटिल।
[संज्ञा पु.] १—राल। २—मस्त हाथी।

अराला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—अपवित्र स्त्री। २—सरल स्त्री।

अरावल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'हरावल'।

अरावली [संज्ञा पु.] (हि.) भारत की एक लम्बी पर्वत श्रेणी जो राजस्थान प्रदेश में तीन सौ मील तक फैली हुई है।

अरिंज [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बबूल जो पंजाब, राजस्थान, मध्य तथा दक्षिण भारत में पाया जाता है।

अरिंद [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु।

अरिंदम [वि.] (सं.) शत्रु को नाश करने वाला। वैरी को पराजित करने वाला। विजयी।

अरि [संज्ञा पु.] (सं.) १—शत्रु। वैरी। २—चक्र। पहिया। ३—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य यह छः वृत्ति। ४—छः की संख्या। ज्योतिष में लग्न का छठा स्थान। ६—विट्खदिर। दुर्गन्ध खैर। अरिमेद।

अरिआकंध [संज्ञा स्त्री.] (देश.) उड़ीसा प्रान्त के अंगुल जिले की एक जाति।

अरिकुल [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु का वंश।

अरिकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) केशी वैरी श्रीकृष्ण।

अरिक्थभाग [वि.] (सं.) दुष्कर्मों के कारण बाप दादा की सम्पत्ति के अधिकार से वंचित। अनंश। आवारिस।

अरिघ्न [वि.] (सं.) शत्रु का नाश करने वाला।

अरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी।

अरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—डांड। नाव रखने का डंडा। २—जल की थाह लेने की डोरी। ३—लंगर।

अरित्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी।

अरिदमन [वि.] (सं.) शत्रु का दमन करने वाला
[संज्ञा पु.] राजा दशरथ के पुत्र तथा लक्ष्मण के लघुभ्राता शत्रुघ्न।

अरिनिपात [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु का आक्रमण या हमला।

अरिनुत [वि.] (सं.) जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करे।

अरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) राजा नल के पिता का नाम।

अरिमर्द [वि.] (सं.) वैरी का दमन करने वाला।

अरिमर्दन [वि.] (सं.) शत्रुओं का नाश करने वाला।
[संज्ञा पु.] कैकेय नरेश भानुप्रताप के भाई। यही शापवश कुंभकर्ण हुआ था। अक्रूर का भाई।

अरिमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु का सहायक।

अरिमेद [संज्ञा पु.] (सं.) १—विट्खदिर। दुर्गन्ध खैर। २—एक प्रकार का बदबूदार कीड़ा। ३—एक वृक्ष विशेष।

अरियाना [क्रि. स.] (सं.) अबेतबे करना। अरे कहकर बोलना। तिरस्कार करना।

अरिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु राष्ट्र।

अरिल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छंद जिसमें १६ मात्रायें होती हैं। अन्त में दो लघु और एक यगण होता है।

अरिवन [संज्ञा पु.] (हि.) रस्सी के अगले सिरे का फंदा, जिसमें फंसकर गगरा कुएँ में लटकाते हैं। उबका। फैसरी।

अरिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १—रीठे का वृक्ष। २—लहसुन। ३—नीम। निम्ब। ४—गुडची। ५—काक। कौवा। ६—वृषभासुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ७—एक ऋषि। ८—काढ़ा। ९—अनिष्टसूचक उत्पात यथा तूफान भूकम्प आदि। १०—क्लेश। दुःख। पीड़ा। ११—विपत्ति। आपत्ति। १२—अमंगल। दुर्भाग्य। १३—असगुन। १४—अनिष्टग्रहों का योग जो फलित ज्योतिष के अनुसार अनिष्टकर होता है। १५—वह अरक जो दवाओं को फुलाकर बनाया जाता है। औषधियों का धूप में खमीर उठाकर बनाया हु मद्य। १६—एक दैत्य। १७—मट्ठा। त छाय। १८—सूतिकाग्रह। सौरी।
[वि.] १-अविनाशी। दृढ़। स्थिर। २—शुभ भलाई। ३—अशुभ। बुरे आसार।

अरिष्टक [संज्ञा पु.] १—रीठा। निर्मली। २ रीठे का पेड़। नीम। निंब।

अरिष्टनेमि [संज्ञा पु.] (स.) १—कश्यपजी पुत्र जो विनता के गर्भ से हुआ था। २ कश्यप प्रजापति का नाम। ३—राजा सग के ससुर का नाम। ४—जैनियों के बाईस तीर्थङ्कर। ५—सोलहवां प्रजापति।

अरिष्टमथन [संज्ञा पु.] (सं.) असुरों का द करने वाला। विष्णु।

अरिष्टलक्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मौत के लक्षण

अरिष्टसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अरिष्टहन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

अरिष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कुटकी। २—नागबला। गुलशकरी। ३—मदिरा। शराब ४—दक्ष की कन्या जो कश्यप को ब्याही थी

अरिष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—रीठी। २—कुटकी।

अरिहन [संज्ञा पु] (सं.) १—शत्रुघ्न। २—वीतराग।

अरिहा [वि.] (सं.) शत्रु का नाश करने वाला
[संज्ञा पु.] शत्रुघ्न। लक्ष्मण के छोटे भाई

अरी [अव्य.] (हिं.) एरी ' ओरी ' संबोधनार्थक अव्यय।
[संज्ञा स्त्री.] अड़ी। मौका।
[वि.] अटकी हुई।

अरीठा [संज्ञा पु.] (हि.) अरिष्ट। रीठा।

अरीढ़ [वि.] (यू.) शत्रु से न दबने वाला

अरीत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—रीति का अभाव २—कुरीति। बुरी चाल।

अरुंतुद [वि.] (सं.) १—मर्मस्पृक। दुःखदायी २—कठोर बात कहकर मन को पीड़ा पहुंचाने वाला।
[संज्ञा पु.] वैरी। शत्रु।

अरुंधती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २—दक्ष की कन्या। ३—सप्तर्षि तारों के पास उगने वाला एक छोटा तारा विवाहोपरांत इसे पत्नी को दिखाया जा है। ४—तंत्र के अनुसार जिह्वा।

अरुंपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक साधारण रोग

अरु [संयो.] (हि.) देखो 'और'।

अरुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अरवी'।

अरुकटि [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आकांडु। आरक

अरुगण [वि.] (सं.) रोगरहित। निरोग।

अरुचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अनिच्छा। २

घृणा। नफ़रत। ३—खाने को जी न चाहना

अरुचिकर [वि.] (सं.) अरुचि उत्पन्न करने वाला। जिसे खाने को जी न चाहे। जो भला न लगे।

अरुचिर [वि.] (सं.) घृणीत। अग्राह्य।

अरुज [वि.] (सं.) रोगरहित। नीरोग।

अरुझाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उलझाना। फंसना। २—अटकना। ठहरना। अड़ना। ३—लड़ना। भिड़ना।

अरुझाना [क्रि. स.] (हिं.) उलझाना। फंसाना।
[क्रि. अ.] लपट-झपट करना। उलझना। लिपटना।

अरुण [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य। २—सूर्य का सारथी। ३—गरुड़। ४—संध्या की लालिमा। ५—एक दानव। ६—एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ७—गहरा लाल रंग। ८—माघ मास के सूर्य को अरुण कहते हैं। ९—गुड़। १०—प्रातःकाल। ११—पुन्नाग का वृक्ष। १२—कुमकुम। १३—सिंदूर। १४—अफीम। १५—मजीठ। मञ्जिष्ठा। १६—देश विशेष। १७—लाल कमल। १८—एक प्रकार की मणि। लाल। १९—एक आचार्य का नाम। २०—हिमालय के इस पार एक झील। २१—वह पुच्छलतारा जिसकी शिखा चंवर के समान होती है। इनकी संख्या ७७ है और यह वायुपुत्र कहलाते हैं।

अरुणचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्गा। कुक्कुट। अरुणशिखा।

अरुणज्योतिस् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

अरुणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुर्खी। ललाई। लालिमा।

अरुणनाग [संज्ञा पु.] (सं.) मुरदाशंख।

अरुणनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—पारावत। कबूतर। २—कोकिल। कोयल।

अरुणप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अप्सरा। २—संज्ञा तथा छाया सूर्य की भार्या मानी गई हैं।

अरुणमल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) मल्लार का एक भेद जिसके सब स्वर शुद्ध होते हैं।

अरुणलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १—कपोत। कबूतर। २—कोयल।

अरुणशिखा [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्गा। कुक्कुट।

अरुणसार [संज्ञा पु.] (सं.) हींग। हिंगुल।

अरुणसारथी [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

अरुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मजीठ। २—कोदो। ३—अतिविषा। ४—गुड़। ५—एक नदी का नाम। ६—गोरखमुंडी। ७—लाल गाय। ८—इन्द्रायण। ९—कदम्ब का फूल। १६—घुङ्घची। गुञ्जालता। ११—उषा।

अरुणाई⊛ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अरुणता। ललाई। सुर्खी।

अरुणाग्रज [संज्ञा पु.] गरुड़।

अरुणालाभ [वि.] (सं.) लाली लिये हुए।

अरुणार [वि.] (सं.) देखो 'अरुनार'।

अरुणित [वि.] (सं.) १—लाल किया हुआ। २—रक्तवर्ण। लाल।

अरुणिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ललाई। लालिमा। अरुणता।

अरुणोद [संज्ञा पु.] (सं.) १—लाल सागर। | २-जैन मतानुसार एक सागर जो पृथ्वी को आवेष्टित किये हुए है।

अरुणोदक [संज्ञा पु.] (सं.) मन्दर पर्वत पर स्थित एक सरोवर।

अरुणोदधि [संज्ञा पु.] (सं.) लोहित सागर। लाल समुद्र। यह अरब तथा मिश्र के मध्य अवस्थित है।

अरुणोदय [संज्ञा पु.] (सं.) उषाकाल। भोर। तड़का।

अरुणोदयसप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघ शुक्लपक्ष की सप्तमी। इस दिन अरुणोदय में स्नान करना शुभ माना गया है।

अरुणोपल [संज्ञा. पु.] (सं.) पद्मरागमणि। लाल

अरुद्ध [वि.] (सं.) रोका हुआ। अनिवारित।

अरुन [वि.] (हिं.) देखो 'अरुण'।

अरुनई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अरुणाई'।

अरुनचूड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अरुणचूड़'।

अरुनता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अरुणता'।

अरुनशिखा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अरुणशिखा'

अरुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अरुणाई'।

अरुनाना [क्रि. अ.] (हि.) लाल होना। सुर्ख पड़ना।
[क्रि. स.] लाल करना। सुर्ख बनाना।

अरुनायी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अरुणाई'।

अरुनारा [वि.] (हिं.) अरुण। लाल।

अरुनोदय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अरुणोदय'।

अरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिसके जड़ में कंद पड़ता है उसी को लोग शाक समान प्रयुक्त करते हैं। इसका पत्ता पान के पत्ते के सदृश्य होता है।

अरुष [वि.] (सं.) लाल। रक्तवर्ण।

अरुष्क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिलावा।

अरूक्ष [वि.] (सं.) स्निग्ध। मुलायम। चिकना।

अरूढ़ [वि.] (सं.) देखो 'आरूढ़'।

अरूप [वि.] (सं.) १—रूपरहित। निराकार। २—कुरूप। भद्दा।

अरूपक [वि.] (सं.) १—अलंकार-रहित।

अरूपता [संज्ञा स्त्री.] १—रूपशून्यता। २—असमानता।
[संज्ञा पु.] बौद्धदर्शन के अनुसार योगियों की एक भूमि या अवस्था। निर्जीव समाधि।

अरूपावचर [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धदर्शन के अनुसार चित्त की वृत्ति का वह भेद जिससे अरूपलोक दीख पड़ता है।

अरूरना [क्रि. अ.] दुखित होना। पीड़ित होना। क्लेश उठाना।

अरूलना [क्रि. अ.] (हिं.) छिलना। छिदना। विदारित होना। घुसना।

अरूस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अडूसा'।

अरे [अव्य.] (सं.) १—ए। ओ। देख · सुन। २—एक आश्चर्यसूचक अव्यय।

अरेरना [क्रि. अ.] (हि.) रगड़ना। मलना। घिसना।

अरेरे [अव्य.] (सं.) अबे। ओबे। आश्चर्यबोधक अव्यय।

अरोक [वि.] (हिं.) बिना रोक का। अबाध्य।

अरोख [संज्ञा पु.] (हिं.) अरोष। क्रोध का अभाव।

अरोग [वि.] (सं.) निरोग। रोगशून्य।

अरोगना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'आरोगना'।

अरोगिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती

अरोगी [वि.] (सं.) जो रोगी न हो। अरोग्य। निरोग।

अरोग्य [वि.] (सं.) निरोग।

अरोग्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती

अरोच [संज्ञा पु.] (हि.) अरुचि। अनिच्छा।

अरोचक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें क्षुधा तथा इच्छा होने पर भी नहीं खाया जाता। यह घृणित और दुर्गन्धयुक्त चीजें खाने या देखने से होता है
[वि.] (सं.) अरुचिकर। जो रुचे नहीं।

अरोड़ [वि.] (हिं.) वीर। शूरवीर। बहादुर।

अरोड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) पंजाब की एक जाति जो अपने को खत्रियों में गिनती है।

अरोधन [वि.] (सं.) बेपर्दा। आवरणरहित।

अरोष [संज्ञा पु.] (सं.) रोष या क्रोध का अभाव

अरोहन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आरोहण'।

अरोहना [क्रि. अ.] (हि.) सवार होना। चढ़ना

अरोही [वि.] (हिं.) सवार होने वाला।
[संज्ञा पु.] (हि.) आरोही। सवार।

अरौद्र [वि.] (सं.) १—जो भयंकर न हो। २—सुन्दर आकृति।

अर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य। २—इन्द्र। ३—विष्णु। ४—पंडित। ५—क्वाथ। काढ़ा। ६—बड़ा। ज्येष्ठ। ७—रविवार। ८—अन्न। ९—वज्र। १०—मन्त्र। ११—वृक्ष। १२—

बारह की संख्या । १३—आग । १४—अरक । रस । १५—सप्तमी तिथि ।

अर्कक्षीर [संज्ञा पु] (सं) आक का दूध । मंदार का दूध ।

अर्कक्षेत्र [संज्ञा पु] (सं.) १—सिंहराशि । २—भाद्रमास । ३—उड़ीसा प्रांत का एक तीर्थ-स्थान ।

अर्कचंदन, चन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चंदन । रक्तचन्दन ।

अर्कज [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य के पुत्र । यम, शनि, अश्विनीकुमार, सुग्रीव और कर्ण ।

अर्कजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—सूर्य की कन्या । २—यमुना । ताप्ती ।

अर्कतनय [संज्ञा पु.] (सं.) १—कर्ण । वैवस्वत-मनु ।

अर्कतनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अर्कजा' ।

अर्कत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीप्ति । चमक ।

अर्कदल [संज्ञा पु.] (सं.) आक का पेड़ ।

अर्कदिन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का दिन । रविवार ।

अर्कनयन [संज्ञा पु.] (सं.) विराट् पुरुष । पुराणों के अनुसार विराट् पुरुष के सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि यह तीन नयन होते हैं ।

अर्कपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अर्कमूल । एक बेल जो विष की औषधि होती है । २—सुनन्दा ।

अर्कपत्रिका, अर्कपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अर्कपत्रा' ।

अर्कपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आक या मंदार का वृक्ष । मंदार का पत्ता ।

अर्कपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्यमुखी ।

अर्कप्रिया [संज्ञा स्त्री.] जवापुष्प । जवासे का फूल । अड़हुल । गुड़हर ।

अर्कबंधु, बन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १—गौतम । पद्म । कमल ।

अर्कवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुड़हर ।

अर्कवेध [संज्ञा पु.] (सं.) तालीशपत्र ।

अर्कभ [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य के साथ एक ही राशि में पड़ा हुआ नक्षत्र । सर्यकान्त-नक्षत्र । २—सिंहराशि । उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र ।

[वि.] (सं.) १—तेजस्वी । चमकदार । २—लाल । रक्तवर्ण ।

अर्कभक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—हुरहुर का वृक्ष । हुड़हुड़ । २—ब्राह्मी । ३—सूर्य की उपासना करने वाली स्त्री ।

अर्कमूल [संज्ञा पु.] (सं.) इसरमूल । अहिगन्ध ।

अर्कव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-माघशुक्ला सप्तमी को होने वाला व्रत । २—प्रजा के उत्कर्ष के लिए राजा का कर लेना ।

अर्कसुता [संज्ञा स्त्री] (सं.) यमुना ।

अर्कसुधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आक का दूध ।

अर्काश्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्यकांतमणि । २—अरुणोपल । लाली । चुन्नी ।

अर्की [संज्ञा पु.] (सं.) मोर । मयूर ।

अर्कीय [वि.] (सं.) सूर्यसम्बन्धी ।

अर्कोपल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकांतमणि । लाल पद्मराग ।

अर्गजा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अरगजा' ।

अर्गट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की कांटेदार झाड़ी ।

अर्गल [संज्ञा पु.] (सं.) १—अरगल । लकड़ी का वह डंडा जो किवाड़ बंद करके पीछे की ओर लगाया जाता है । अगरी । ब्योंड़ा । २—किवाड़ । ३—अवरोध । ४—कल्लोल । ५—सूर्योदय और सूर्यास्त के समय दिखाई पड़ने वाले बादल जिनमें से सूर्य उदय और अस्त होता है ।

अर्गला [संज्ञा स्त्री.] १—अरगत । अगरी । २—चिटखनी । किल्ली । ३—सीकड़ । साँकल । ४—वह जंजीर जिससे हाथी बांधा जाता है ५—दुर्गासप्तशती के आदि में पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र । मत्स्यसूक्त । ६—अवरोध । ७—अवरोधक । बाधक ।

अर्गलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरगल । ब्योंड़ा दरवाजा बन्द करने का डंडा जो किवाड़ों के पीछे लगता है ।

अर्गली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिश्र, श्याम प्रभृति देशों की भेड़ें ।

अर्गलीय [वि.](सं.) अरगल से संबन्ध रखने वाला ।

अर्गवध [संज्ञा पु.] (सं.) लटजीरे का वृक्ष ।

अर्घ [संज्ञा पु.] (सं.) १—मूल्य । दाम । २-पूजा का उपचार । जल, दूध, दही, कुशाग्र, सरसों तंडुल, जव प्रभृति वस्तुओं का मिश्रण देवता को अर्पण करना । ३—अर्घ देने का एक पदार्थ । ४—जलदान । ५—हाथ धोने के लिए जल का दिया जाना । ६—भेंट । ७—पच्चीस मोतियों के बराबर की तोल । ८—उपहार । भेंट ।

अर्घट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भस्म । कुशाता ।

अर्घदान [संज्ञा पु.] (सं.) अर्घ-समर्पण । उपहार का चढ़ावा ।

अर्घपतन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाव में गिरावट । माल के मूल्य में कमी ।

अर्घपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) शंख के आकार का एक तांबे का पात्र जिससे अर्घ दिया जाता है या पितरों का तर्पन किया जाता है । अर्घा ।

अर्घा [संज्ञा पु.] (सं.) १—जलहरी । २—
पात्र ।

अर्घीश [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव । शिव ।

अर्घ्य [वि.] (सं.) १—पूजनीय । अर्चनीय
बहुमूल्य । पूजा करने के योग्य । (जल,
फूल प्रभृति ।) ४—भेंट देने योग्य ।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक वन का
जरत्कारु मुनि तप करते थे ।

अर्चक [वि.] (सं.) पूजा करने वाला । पूजक
अर्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १—पूजन । पूजा ।
आदर-सत्कार ।
[संज्ञा पु.] (देश.) ऐसी घुंडी जिस पर
दूर कलाबत्तू लपेटा हो ।

अर्चना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पूजा । २—
सत्कार ।

अर्चनीय [वि.] (सं.) १—पूजनीय । पूजा
के योग्य । २—सत्कार के योग्य । आदर

अर्चमान [वि.] (सं.) देखो 'अर्चनीय' ।

अर्चा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—प्रतिमा ।
२—पूजा ।

अर्चि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—अग्निशिखा ।
की लपट । २—कांति दीप्ति । चमक ।
किरण ।

अर्चित [वि.] (सं.) १—पूजित । २—सत्कार
हुआ । आदर-प्राप्त ।
[संज्ञा पु.] विष्णु ।

अर्चिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकाश की किर

अर्चिमान [वि.] (सं.) प्रकाशमान । चमकता

अर्चिमाल्य [संज्ञा पु.] (सं.) महर्षि मरीचि
पुत्र जो वाल्मीकि के कथनानुसार बन्द

अर्चिरादिमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर पथ
मार्ग से देवता आते-जाते हैं ।

अर्चिष्मत् [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य । २—

अर्चिष्मती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्निपरी या

अर्चिष्मान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २—
३—एक प्रकार के देवता । ४—वाल्मीकि
अनुसार मरीचिऋषि का बन्दर पुत्र ।
[वि.] दीप्त । प्रकाशमान् ।

अर्च्य [वि.] (सं.) १—पूजनीय । अर्चनीय
२—सत्कार के योग्य ।

अर्ज [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रार्थना । निवे
विनती । विनय ।

अर्जइसराल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) राज्यको
रुपया जमा कराने का आज्ञापत्र ।

अर्जदाश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निवेदन
प्रार्थना-पत्र ।

अर्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १—उपार्जन । प्रा
लाभ । कमाना । पैदा करना । २-संग्रह
संग्रह ।

अर्जनीय [वि] (सं.) १—संग्रहणीय। २—प्राप्त करने योग्य।

अर्जमा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अर्यमा'।

अर्जित [वि.] (सं.) १—उपार्जन किया हुआ। २—संगृहीत। संग्रह प्राप्त। कमाया हुआ। इकट्ठा किया हुआ।

अर्जी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रार्थना-पत्र। आवेदन-पत्र।

अर्जीदावा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दावे की अर्जी। वह आवेदन-पत्र जो अभियोग करने के लिये दिया जाता है। अभियोग-पत्र।

अर्जीमरम्मत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अभियोग-पत्र में छूटी हुई बातों का संशोधन या परिवर्द्धन

अर्जुन [संज्ञा पु.] (सं.) १—तीसरे पांडव। पार्थ। २—एक घास का नाम। ३—अर्जुन नामक एक वृक्ष। ४—एक नेत्र रोग। ५—मयूर। मोर। ६—रूप। ७—करवीर। ८—श्वेत वर्ण। ९—इन्द्र का पुत्र। १०—इकलौता बेटा।

अर्जुनक [वि.] (सं.) अर्जुन संवंधी।

अर्जुनछवि [वि.] (सं.) सफेद। श्वेत।

अर्जुनध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान चित्रित ध्वज।

अर्जुननामाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन नाम का वृक्ष।

अर्जुनरोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्र रोग। पलक के किनारे होने वाली एक फुंसी। विलनी।

अर्जुनायन [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर की ओर का एक देश।

अर्जुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—हिमालय से निकल कर गंगा में मिलने वाली एक नदी, जिसे बाहुदा या करतोया भी कहते हैं। २—सफेद रंग की गाय। ३—कुटनी। ४—उषा। अनिरुद्ध की पत्नी।

अर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १—वर्ण। अक्षर। २—साखू का पेड़। ३—लहर। तरंग। ४—दंडक छंद का एक भेद। ५—जल।

अर्णभव [संज्ञा पु.] (सं.) शंख।

अर्णव [संज्ञा पु.] (सं.) १—सागर। समुद्र। २—सूर्य। ३—इन्द्र। ४—अंतरिक्ष। ५—दंडक छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में २ नगण और ६ रगण हों। ६—चार की संख्या।

अर्णवपोत [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज। जलयान।

अर्णवफेन [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन।

अर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

अर्णोद [संज्ञा पु.] (सं.) १—मेघ। वादल। २—मोथा।

अर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १—पीड़ा। व्यथा। दर्द। २—धनुष के दोनों छोर।

अर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १—शब्द का अभिप्राय। मनुष्य के हृदय का आशय जो शब्द द्वारा प्रगट हो। अलंकारशास्त्र के अनुसार शब्द-शक्ति तीन प्रकार की है--अभिधा से वाच्यार्थ लक्षण से लक्ष्यार्थ एवं व्यंजना से व्यंग्यार्थ। २—अभिप्राय। मतलब। प्रयोजन। माने। ३—काम। इष्ट। ४—हेतु। निमित्त। ५—धन। सम्पत्ति। ६—शब्द, स्पर्श, रस, रूप एवं गन्ध इन्द्रियों के पांच विषय।

अर्थकर [वि.] (सं.) [पु. प्र.] धन का साधन। जिससे धन उपार्जन किया जाय। लाभकारी २—उपयोगी।

अर्थकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थ या धन से संबंधित मुकदमा। दीवानी मुकदमा।

अर्थकिल्विषी [वि.] (सं.) जो लेन देन का साफ न हो। वेईमान।

अर्थकृच्छ् [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थसंकट। धन का कष्ट।

अर्थगत [वि.] (सं.) व्यर्थ। वेफायदा। वेमतलव

अर्थगौरव [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ी वात का वड़ा मतलव।

अर्थचिंतक, चिन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थमंत्री। राज्य के आय व्यय का ध्यान रखने वाला व्यक्ति।

अर्थदंड, दण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) जुर्माना। किसी अपराधी से दंड में आया हुआ धन। धन की सजा।

अर्थद [वि.] (सं.) धन वाला।
[संज्ञा पु.] १—कुवेर। २—धन देकर विद्या पढ़ने वाला विद्यार्थी।

अर्थना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिक्षा। भीख।
[क्रि. स.] मांगना।

अर्थ-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थ-संवंधी वादों या मुकदमों पर विचार करने वाला न्यायालय। दीवानी अदालत।

अर्थनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) अभिप्राय का निर्णय।

अर्थनीय [वि.] (सं.) मांगने के योग्य।

अर्थपति [संज्ञा पु.] (सं.) १—राजा। २—कुवेर। ३—धनवान।

अर्थपिशाच [वि.] (सं.) धनसंग्रह में कर्तव्याकर्तव्य का विचार न करने वाला। धन-लोलुप।

अर्थ-प्रक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्रक्रिया जो अर्थ न्यायालय द्वारा हो। सिविल-प्रोसीजर।

अर्थप्रसर [संज्ञा पु.] (सं.) वह आज्ञा या सूचना जो अर्थन्यायालय द्वारा निकली हो।

अर्थबुद्धि [वि.] (सं.) स्वार्थी। अपना मतलव साधने वाला।

अर्थभावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन की चिंता।

अर्थभेद [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थ या आशय की भिन्नता। अर्थ का आधार।

अर्थमंत्री, अर्थमन्त्री [संज्ञा पु.] (स.) राज्य के आर्थिक विषयों की देखभाल करने वाला मन्त्री या सचिव।

अर्थलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) धन की प्राप्ति।

अर्थलोभ [संज्ञा पु.] (सं.) धन की अभिलाषा। धन का लालच।

अर्थमूलक [वि.] (सं.) अर्थविभाग से सम्बन्ध रखने वाला।

अर्थवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रशंसनीय वाक्य। २—निंदासूचक वाक्य। ३—निंदार्थ कथन।

अर्थ-विधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जनता के अधिकारों की रक्षा के निमित्त राज्य की ओर से वनाया गया कानून या विधि। *सिविल-लॉ।*

अर्थ-विवाद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अर्थकार्य'।

अर्थ-व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अर्थकार्य'।

अर्थ-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १—धनप्राप्ति का ज्ञान। २—आशय समझने का भाव। तात्पर्य समझने का ज्ञान।

अर्थविद् [वि.] (सं.) तात्पर्य का मर्म समझने वाला।

अर्थवेद [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्पशास्त्र।

अर्थशास्त्र [संज्ञा पु] (सं.) अर्थनीतिविषयक वह शास्त्र जिसमें धनोपार्जन, रक्षण एवं वृद्धि का विधान हो या इन सिद्धातों की विवेचना हो।

अर्थसंग्रह, अर्थसंचय [संज्ञा पु.] धन संचय। दौलत का इकट्ठा करना।

अर्थसचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अर्थमंत्री'।

अर्थसमाहार [संज्ञा पु.] (सं.) १—धन का उपार्जन। २—अर्थ का संक्षेप।

अर्थसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—तात्पर्य की सिद्धि। २—धन की सिद्धि। दौलत की कामयावी।

अर्थहर [संज्ञा पु.] (सं.) चोर।

अर्थहीन [वि.] (सं.) १—धनहीन। २—अभिप्राय विहीन।

अर्थांतर, अर्थान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरा आशय या तात्पर्य।

अर्थांतरन्यास, अर्थान्तरन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक अर्थालङ्कार जिसमें सामान्य से विशेष अथवा विशेष से सामान्य का समर्थन हो। २—न्याय के अनुसार जव वादी ऐसी वात कहे जो वास्तविक विषय से कुछ संवंध न रखती हो।

अर्थात् [अव्य.] (सं.) यानी यह विवरण करने में प्रयुक्त होता है।

अर्थाना* [क्रि. स.] (हि.) अर्थ लगाना। ब्यौरे वार समझाकर कहना।

अर्थानुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) विधि से जिसका विधान किया गया हो उसका अनुवचन या किसी मतलब को बार बार कहना।

अर्थापत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मीमांसा के अनुसार वह प्रमाण जिसमें प्रगट रूप से किसी विषय को प्रकाशित न करके केवल शब्द द्वारा ही विषय की सिद्धि होती है। २—एक अर्थालंकार जिसमें एक अर्थ द्वारा दंडपूपिका न्याय द्वारा दूसरा स्वतः सिद्ध हो जाय या एक बात के कथन दूसरी की सिद्ध दिखलाई जाय।

अर्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी गूढ़पद अथवा वाक्य का अर्थ लगाना या बताना। यह बताना कि इसका अमुक अर्थ है। इंटर-प्रीटेशन।

अर्थालंकार [संज्ञा पु.] (सं.) वह अलंकार जिसमें अर्थ का गौरव हो।

अर्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह जो मन में कोई अर्थ अथवा कामना रखता हो। २—वह जो कोई पद, कार्य अथवा सेवा प्राप्त करने की अभिलाषा रखता हो। कैंडिडेट।

अर्थित [वि] (सं.) माँगा हुआ। याचित।

अर्थिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) याचना या माँगने की अवस्था।

अर्थी [वि.] (सं.) १—इच्छा रखने वाला। २—प्रयोजन वाला। गर्ज़ी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—याचक। ३—वादी। ४—सेवक। ५—धनी।

अर्थोपचार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ६—देखो 'अरथी' [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थविधि या न्यायालय द्वारा प्राप्त होने वाली क्षतिपूर्ति। सिविलरेमेडी

अर्थोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा अलंकार।

अर्थोपाजन [संज्ञा पु.] (सं.) धन अथवा सम्पत्ति की प्राप्ति।

अर्थ्यक [क्रि. स.] (सं.) किसी से प्राप्य धन या मूल्यादि का ब्यौरा देने वाला पत्र। बिल।

अर्थ्य-समाहर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थ्यकों में लिखे हुए प्राप्य धन को उगाहने या इकट्ठा करने वाला व्यक्ति। बिल-कलक्टर।

अर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १—पीड़न। हिंसा। दलन। २—याचना। माँगना। ३—जाना। विचलित।

अर्दना (हि.) पीड़ित करना। कष्ट देना।

अर्दनि [संज्ञा पु.] (सं.) १—मंदाग्नि रोग। २—अग्नि। ३—मांग।

अर्दली [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अरदली'।

अर्दित [वि.] (सं.) १—पीड़ित। दलित। २—याचित। ३—गत।
[संज्ञा पु.] (सं.) पक्षाघात रोग।

अर्ध, अर्द्ध [संज्ञा पु] (सं.) आधा। दो समान भागों में से एक।

अर्धक, अर्द्धक [संज्ञा पु.] (सं.) जल सर्प। पानी का सांप।

अर्धकृत, अर्द्धकृत [वि] (सं.) आधा किया हुआ

अर्धकोट, अर्द्धकोटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधा करोड़। पचास लाख।

अर्धक्रोश, अर्द्धक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) आध कोस। एक मील।

अर्धगंगा, अर्द्धगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कावेरी।

अर्धगुच्छ, अर्द्धगुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) चौबीस लड़ियों वाली मोती की माला।

अर्धगुञ्जा, अर्द्धगुंजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधी रत्ती।

अर्धगोल, अर्द्धगोल [संज्ञा पु.] (सं.) वृत्त का आधा भाग।

अर्धचंद, अर्द्धचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) आधा चाँद। अष्टमी का चन्द्रमा। २—चंद्रिका। मोर पंख की आँख। ३—किसी को निकाल बाहर करने के लिये गले में हाथ लगाने की मुद्रा। गरदनिया। ४—नाखून का दाग। सानुनासिक का एक चिह्न। ँ। ६—एक प्रकार का बाण अधचंद्रदेना=गर्दन पर हाथ देकर निकाल देना।

अर्धचंद्रिका, अर्द्धचन्द्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) कनफोड़ा नाम की लता।

अर्धजल, अर्द्धजल [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान में मुर्दे को जलस्नान कराकर आधे जल में तथा आधा बाहर करके डाल देने की अवस्था

अर्धजाह्नवी, अर्द्धजाह्नवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अर्धगङ्गा। कावेरी नदी।

अर्धज्योतिका, अर्द्धज्योतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौदह प्रकार के तालों में से एक।

अर्धदग्ध, अर्धजल [वि.] (सं.) आधा जला।

अर्धनयन, अर्द्धनयन [संज्ञा पु.] (सं.) तृतीय नेत्र। ज्ञानचक्षु। तीसरी आँख। देवताओं की तीसरी आँख। देवताओं की तीसरी आँख जो ललाट में होती है।

अर्धनाराच, अर्द्धनाराच [संज्ञा पु.] (सं.) १—जैन शास्त्र के अनुसार मर्कटबंध और कीलक पाश से आबद्ध अस्थि। २—एक प्रकार का बाण।

अर्धनारीश, अर्द्धनारीश [संज्ञा पु.] (सं.) १—तंत्र के अनुसार शिव तथा पार्वती का रूप। २—आयुर्वेद में रसांजन जिसे आंख में लगाने से ज्वर उतर जाता है।

अर्धनारीश्वर, अर्द्धनारीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १—महादेव। शिव। रसांजन जिसके लगाने से ज्वर उतर जाता है।

अर्धनिशा, अर्द्धनिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात।

अर्धपल, अर्द्धपल [संज्ञा पु.] (सं.) एक चार तोला।

अर्धपारावत, अर्द्धपारावत [संज्ञा पु.] तीतर।

अर्धपोहल, अर्द्धपोहल [संज्ञा पु.] (हि.) मोटी पत्तियों वाला एक पौधा।

अर्धभास्कर, अर्द्धभास्कर [संज्ञा पु.] दोपहर।

अर्धप्रदेश, अर्द्धप्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १— वित्ते की नाप। २—आधा सेतु। ३— देश।

अर्धभाग, अर्द्धभाग [संज्ञा पु.] (सं.) आधा

अर्धभाज, अर्द्धभाज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधे हिस्सेदार।

अर्धमागधी, अर्द्धमागधी [संज्ञा स्त्री.] प्राकृत भाषा। जो पहिले मथुरा और के मध्य बोली जाती थी।

अर्धमात्रा, अर्द्धमात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १— आधा परिमाण या वजन। २—संगीत शास्त्र और पद्य की अर्धमात्रा का उच्चारण काल।

अर्धवृत्त, अर्द्धवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) १—वृत्त का आधा भाग। २—पूरे वृत्त का आधा भाग २—पूरे वृत्त की परिधि का आधा भाग।

अर्धवृद्ध, अर्द्धवृद्ध [वि.] (सं.) आधा बुड्ढा

अर्धव्यास, अर्द्धव्यास [संज्ञा पु.] (सं.) व्यास का अर्ध भाग। वृत्त की त्रिज्या।

अर्धशत, अर्द्धशत [संज्ञा पु.] (सं.) पचास की संख्या।

अर्धशब्द, अर्द्धशब्द [वि.] (सं.) धीमी आवाज़ वाला।

अर्धसम, अर्द्धसम [वि] (सं.) आधे के समान आधे के बराबर।

अर्धसमवृत्त, अर्द्धसमवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृत्त जिसका पहला तीसरा और दूसरा चौथा पाद समान होते हैं। यथा दोहा और सोरठा।

अर्धांग, अर्द्धाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) १—शरीर का आधा अंग या भाग। २—एक रोग। पक्षाघात। लकवा। फालिज। इस रोग में अंग शक्तिहीन हो जाता है। ३—शिव। महादेव।

अर्धांगिनी, अर्द्धाङ्गिनी [संज्ञा पु.] (सं.) पत्नी बीबी।

अर्धांगी, अर्द्धाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव। महादेव।
[वि.] अर्धाङ्ग रोग से पीड़ित।

अर्धाली, अर्द्धाली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आधी चौपाई। चौपाई की दो पंक्तियां।

अर्धासन, अर्द्धासन [संज्ञा पु.] (सं.) सम्मानार्थ किसी को अपने साथ आसन पर बैठाना या अर्द्धांश उसे बैठने के निमित्त सादर देना।

अर्धिक, अर्द्धिक [वि.] (सं.) अर्धभागविशिष्ट। [संज्ञा पु.] (सं.) १—आधासीसी। २—वैश्य स्त्री तथा ब्राह्मण पिता से उत्पन्न संतान जिसका संस्कार हुआ हो।

अर्धीकरण, अर्द्धीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—आधा करना। २—अर्धभाग बनाने की क्रिया

अर्धुक, अर्द्धुक [वि.] (सं.) सम्पन्न। कामयाब।

अर्धेन्दु, अर्द्धेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) आधा चांद। देखो 'अर्धचन्द्र'।

अर्धोदय, अर्द्धोदय [संज्ञा पु.] (सं.) माघ मास की अमावस्या, रविवार, व्यतीपात तथा श्रवण नक्षत्र पड़ने से महा-पुण्यपर्व माना जाता है। इस दिन स्नान करने से सूर्यग्रहण का सा पुण्य प्राप्त होता है।

अर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रदान। देना। दान। किसी पदार्थ पर से अपना अधिकार हटाकर अन्य का स्थापित करना। २—नजर। भेंट।

अर्पणीय [वि] (सं.) अर्पण करने योग्य।

अर्पना [क्रि स] (हिं.) देखो 'अरपना'।

अर्पित [वि] (सं.) दिया हुआ। स्थापित।

अर्प्य [वि.] (सं.) १—त्याज्य। छोड़ने योग्य। २—लगाने योग्य।

अर्बदर्ब [संज्ञा पु.] (हिं.) द्रव्य। सम्पत्ति। धन-दौलत। मालमता।

अर्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) १—दस करोड़ की संख्या २—मेघ। बादल। ३—दो मास का गर्भ। ४—राजस्थान का एक पर्वत। आबू। अरावली। ५—गणित में नवें स्थान की संख्या। ६—एक प्रकार का सर्प।

अर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १—बालक। २—शरदऋतु ३—शिष्य। छात्र। ४—सागपात।
[वि.] मलिन। धुंधला।

अर्भक [वि.] (सं.) १—छोटा। अल्प। २—मूर्ख ३—दुबला। पतला।
[संज्ञा पु.] बालक। लड़का।

अर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक प्रकार का नेत्र रोग २—पुराना गांव या नगर।

अर्मक [वि.] (सं.) संकीर्ण। तंग। पतला।

अर्मनी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अरमनी'।

अर्य, अर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी। ईश्वर। २—वैश्य।
[वि.] श्रेष्ठ। उत्तम।

अर्यजारा, अर्य्यजारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्य की पत्नी।

अर्यमा, अर्य्यमा [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य। २—बारह आदित्यों में से एक। ३—पितर गणों में सर्वश्रेष्ठ। ४—मदार। ५—उत्तराफाल्गुणीनक्षत्र।

अर्रा [संज्ञा पु.] (?) १—जंगली वृक्ष। २—अरहर।

अर्वट [संज्ञा पु.] (सं.) भस्म। खाक।

अर्वण [संज्ञा प.] (सं.) १—घोड़ा। २—एक माप। ३—गति। चाल। ४—इन्द्र।

अर्वा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अर्वण'।

अर्वाक [अव्य.] (सं.) १—पीछे। इधर। २—निकट। समीप।

अर्वाचीन [वि.] (सं.) १—आधुनिक। नूतन। नवीन। २—पीछे का।

अर्वाचीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवीनता। नयापन।

अर्श [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग। बवासीर।
[संज्ञा पु.] (अ.) १—आकाश। आसमान। २—स्वर्ग।

अर्शसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) जमींकन्द। सूरण।

अर्शोज [संज्ञा पु.] (सं.) भगन्दर रोग।

अर्शवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की बवासीर।

अर्शहर [संज्ञा पु.] (सं.) जमींकन्द।

अर्शोघ्न [संज्ञा पु.] जमींकन्द।

अर्सा [संज्ञा पु.] (अ.) समय। विलंब। देर।

अर्सी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अलसी। तीसी।

अर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १—विष्णु। २—इन्द्र। ३—पूजा। ४—सोना।
[वि.] १—पूज्य। योग्य। २—उपयुक्त।

अर्हण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—पूजा। २-सम्मान।

अर्हणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूज्य।

अर्हत, अर्हन [वि.] (सं.) पूजा।
[संज्ञा पु.] जिनदेव। जैनियों के देवता।

अर्हता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग्यता। नैतिक शक्ति। (गुण) विशिष्टता।

अर्हा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूजा।

अर्हित [वि.] (सं.) पूजित।

अर्ह्य [वि.] (सं.) १—पूज्य। मान्य। २—माननीय। आदरणीय।

अलं [अव्य.] देखो 'अलम'।

अलंकटंकटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युतकेश राक्षस की पत्नी। सुकेश की माता।

अलंकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—अलंकृत करना। २—सजावट।

अलंकार, अलङ्कार [संज्ञा पु.] (सं) १—आभूषण। गहना। जेवर। २—अर्थ तथा शब्द की वह युक्ति जिससे काव्य की शोभा बढ़े। काव्य में चमत्कारपूर्ण वर्णन।

अलंकित, अलङ्कित [वि.] [सं] देखो 'अलंकृत'।

अलंकृत, अलङ्कृत [वि.] (सं.) १—विभूषित। सजाया हुआ। गहना पहनाया हुआ। २—काव्यालंकार युक्त।

अलंग, अलङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) ओर। दिशा। तरफ।
अलंग पर आना या होना=घोड़ी का मस्ताना।

अलंघन, अलङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) न लांघने की अवस्था।

अलंघनीय, अलङ्घनीय [वि] (सं.) जो लांघने योग्य न हो।

अलंघनीयता, अलङ्घनीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—न लांघने की अवस्था। २—गौरवान्वितता।

अलंघ्य अलङ्घ्य [वि.] (सं.) न लांघने योग्य।

अलंब, अलम्ब [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आलम्ब'।

अलंबुष, अलम्बुष [संज्ञा पु.] (सं.) १—वमन। उलटी। कै। २—एक राक्षस कौरवों का सहायक जिसे घटोत्कच ने मारा था।

अलंबुषा, अलम्बुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—गोरखमुंडी। २—स्वर्ग की एक अप्सरा। ३—घुसने से रोकने के लिये खींची गई रेखा। ४—लज्जावंती। छुईमुई।

अल [संज्ञा पु.] (सं.) १—बिच्छू का डंक। २—हरताल। ३—विष। जहर।

अलक [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक के इधर उधर लटकते हुए बाल। बाल। केश। लटा। घुंघराले बाल। छल्लेदार बाल।

अलकतरा [संज्ञा पु.] (अ.) पत्थर के कोयले को आग पर पिघलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा पदार्थ।

अलकनंदा, अलकनन्दा (संज्ञा स्त्री.) (सं.) हिमालय से निकलने वाली एक नदी जो गंगोत्री के आगे गंगा की धारा में मिल जाती है।

अलकप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अलकापुरी। कुबेरपुरी।

अलकलड़ैता [वि.] (सं.) प्यारा। लाड़ला। दुलारा।

अलकसलोरा [वि.] (सं.) लाड़ला। दुलारा।

अलका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कुबेरपुरी। यक्षों की नगरी। २—वसा। चर्बी। ३—आठ या दश वर्ष की लड़की।

अलकाधिप, अलकाधिपति, अलकापति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

अलकावलि [संज्ञा स्त्री] (सं.) बालों की लटें। केशों का समूह।

अलक्त, अलक्तक [संज्ञा पु.] (सं) १—लाख। चपड़ा। लाक्षा। २—महावर।

अलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—बुरा लक्षण। अशुभ चिह्न। कुलक्षण। २—चिह्न या संकेत का न होना। ३—ठीक-ठीक गुण धर्म का अनिर्वाचन।

अलक्षित [वि] (सं.) १—अप्रगट। अज्ञात। २—अदृश्य। गायब। ३—अचिहित।

अलक्ष्य [वि] (सं.) १—अदृश्य। गायब। जो देख न पड़े। २—जिसका लक्षण न कहा जा सके।

अलख [वि] (हि) जो दिखाई न पड़े। नजर न आने वाला। अदृश्य। अप्रत्यक्ष।
अलख जगाना=१—भगवान के नाम पर भिक्षा मांगना। २—तीव्र स्वर से बोलकर भगवान का स्मरण करना या कराना।

अलखधारी, अलखनामी [संज्ञा पु.] (सं.) गोरखनाथ के अनुयायी साधु जो अलख-अलख पुकार कर भिक्षा मांगते हैं।

अलखित [वि.] (हि.) देखो 'अलक्षित'।

अलग [वि.] (हिं.) पृथक। जुदा। न्यारा। भिन्न।
अलग करना=१—पृथक करना। हटाना। खिसकाना। २—छुड़ाना। ३—चुनना। छांटना। ४—बेंच डालना। ५—निपटाना। ६—रक्षित। बचा हुआ। बेलाग।

अलगगीर [संज्ञा पु.] (अ.) घोड़े की पीठ पर की जीन के नीचे का नमदा या कम्बल।

अलगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़े लटकाने के निमित्त बांधी गई आड़ी डोरी या बांस।

अलगरज [वि] (अ.) बेफिक्र। जिसे कोई चिंता न हो।

अलगरजी [वि.] (अ.) बेपरवाह। बेग़रज़।
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) बेपरवाही। निद्वन्द्वता।

अलगाना [क्रि. स.] (हिं.) १—अलग करना। पृथक करना। २—दूर करना।

अलगाव [संज्ञा पु.] (हिं.) पृथकता। जुदाई। भिन्नता।

अलगावा [संज्ञा पु.] (हि.) जुदाई। भिन्नता। २ पृथकता।

अलगोजा [संज्ञा पु.] (अ.) कलम के समान कटे हुए मुंह की एक प्रकार की बांसुरी।

अलच्छ [वि.] (हिं.) देखो 'अलक्ष्य'।

अलज [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की चिड़िया।
[वि.] (सं.) निलज्ज। बेशरम।

अलजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक दुःखदायक लाल या पीली फुंसी।

अलज्ज [वि.] (सं.) निर्लज्ज। बेशरम।

अलप [वि.] (हिं.) १—अल्प। थोड़ा।
[संज्ञा स्त्री.] मौत का समय। मरणकाल।

अलपत [वि.] (सं.) चुप। मौन।

अलपाका [संज्ञा पु.] (अं.) दक्षिण अमेरिका के पेरू प्रान्त का एक पशु, जो ऊंट के समान होता है। इसके बाल लम्बे और कोमल होते हैं।

अलफ [संज्ञा पु.] (अ) घोड़े का आगे के दोनों पैर उठाकर पिछले पैरों के बल खड़ा होना।

अलफा [संज्ञा पु.] (अ.) घेरदार ढीलाढाला बिना बांह का लम्बा कुर्ता जिसे प्रायः मुसलमान फकीर पहिनते हैं।

अलबट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमर। टेंट। गांठ।

अलता [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्त्रियों के पैरों में लगाने का लाल रंग। २—महावर।

अलबत्ता [अव्य.] (अ.) १—निस्संदेह। निःसंशय। २—हां। ठीक-ठीक। ३—परन्तु।

अलबम [संज्ञा पु.] (फा.) चित्र रखने की पुस्तक

अलबेला [वि.] (हिं.) १—बांका। छैल-छबीला। २—अनुपम। बेजोड़। ३—निर्द्वन्द्व। बेपरवाह।

अलबेलापन [संज्ञा पु] (हिं.) १—सजधज। ठाटबाट। २—सुंदरता। अनूठापन। ३—अल्हड़पन। बेपरवाही। निर्बन्धता।

अलब्ध [वि.] (सं.) अप्राप्त। हाथ न आया हुआ

अलब्धभूमिकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) समाधि न पाने की अवस्था। समाधि की अप्राप्ति।

अलब्धाभीप्सित [वि.] (सं.) हताश। नाउम्मेद।

अलभ्य [वि.] (सं.) १—प्राप्ति के अयोग्य। न मिलने योग्य। २—दुर्लभ। ३—अमूल्य। अनमोल।

अलम् [अव्य.] (सं.) यथेष्ट। प्रचुर। पर्याप्त।

अलम [संज्ञा पु.] (अ.) १—रंज। दुःख। २—पश्चाताप। ३—पताका। झंडा।

अलमनक [संज्ञा पु.] (अ.) पत्रा। जंत्री।

अलमर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

अलमस्त [वि.] (फा.) १—मतवाला। मदोन्मत्त। २—निर्द्वन्द्व। बेफिक्र।

अलमारी [संज्ञा स्त्री.] (पोर्तगालीज) एक प्रकार का खड़ा संदूक जिसमें किवाड़ लगे होते हैं। अंदर आड़े फट्टे या तख्ते भी लगे रहते हैं। इसी प्रकार यह दीवार में भी बनीहुई होती है

अलमास [संज्ञा पु.] (फा.) हीरक। हीरा।

अलरबलर [वि.] (हिं.) खराब। बुरा। भ्रष्ट।

अलर्क [संज्ञा पु.] १—पागल कुत्ता। २—सफेद मदार या आक। ३—एक प्राचीन दानी राजा जिसने याचना करने पर एक अंधे ब्राह्मण को अपनी आँखें निकाल कर देदी थी।

अललटप्पू [वि.] (हिं.) अटकलपच्चू। मनमाना। अंडबंड।

अललबछेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १—घोड़े का छोटा बच्चा। २—अल्हड़ व्यक्ति। अनुभव शून्य व्यक्ति।

अललाना+ [क्रि. अ.] (हि.) जोर से चिल्लाना या गला फाड़कर बोलना।

अलबल [संज्ञा पु] (हि.) नखरा। ढको

अलल्लां [संज्ञा पु.] (डि) घोड़ा।

अलवांती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) प्रसूता। ज

अलवाई [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र] एक दो की व्याई हुई (गाय या भैंस)।

अलवान [संज्ञा पु.] (अ) ऊनी चादर। प की चादर।

अलवायी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक दो मा व्याई हुई गाय या भैंस।

अलस [वि.] (सं.) आलस्ययुक्त। आ सुस्त। निरुद्योगी।
[संज्ञा पु.] पानी व कीच में रहने से पां चमड़े का फूल जाना। इस रोग को खरवात या कंदरी कहते हैं।

अलसता, अलसत्व [संज्ञा पु.] (सं.) आ सुस्ती।

अलसाना [क्रि. अ.] (हिं.) आलस्य में प शिथिल होना। क्लांत होना।

अलसी [संज्ञा स्त्री] (हि.) एक पौधा या बीज। तीसी।

अलसेट [संज्ञा पु] (हिं.) १—विलम्ब। ढिलाई। २—भुलावा। चकमा। टालम ३—बाधा। अड़चन।

अलसेटिया [वि.] (हिं.) १—रोकने अथवा चन डालने वाला। २—व्यर्थ की देर वाला।

अलसौहां* [वि.] (हिं.) आलस्ययुक्त। शिथिल। क्लांत।

अलह* [वि.] (हिं.) देखो 'अलभ्य'।

अलहदा [वि.] (अ.) अलग। पृथक। जुदा।

अलहदी देखो 'अहदी'।

अलहन [संज्ञा पु.] (हिं.) शामत। कुसमय।

अलहिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक रागनी सब कोमल स्वर लगते हैं।

अलहैरी [संज्ञा पु.] (हि.) तेज चलने कुबड़ा। अरबी ऊंट।

अलाई [वि.] (हि.) आलसी। सुस्त।
[संज्ञा पु.] घोड़े की एक जाति।

अलागलाग [संज्ञा पु.] (हि.) नाचने या करने का एक ढंग।

अलात [संज्ञा पु.] (सं.) १—कोयला। अं २—जलती हुई लकड़ी।

अलातचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी जलती लकड़ी को जल्दी २ आकाश में घुमाने खिच जाने वाला घेरा। २—बनेठी। एक प्रकार का नाच।

अलान [संज्ञा पु.] (हि.) १—हाथी को का खूंटा। हाथी बांधने की संकल। बंधन। बेड़ी। ४—बेल चढ़ाने के लिए हुई लकड़ी।

अलाप [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आलाप'।

अलापना [क्रि. अ.] (हिं.) १—बोलना। बातचीत करना। २-विशुद्ध स्वर से गान करना। तान लगाना।

अलापी [वि.] (हि.) बोलने वाला। बातचीत करने वाला। शब्द निकालने वाला।

अलाबू [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—लौकी। कद्दू। २—तूंबा।

अलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) हानि। लाभ का अभाव। नुकसान।

अलाम* [वि.] (हि.) अल्लामा। बात बनाने वाला। मक्कार।

अलामत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) लक्षण। निशान। चिह्न।

अलायक [वि.] (हिं.) अयोग्य। नालायक।

अलायी [वि.] (हिं.) सुस्त। ढीला।

अलार [संज्ञा पु.] (सं.) १—कपाट। किवाड़। २—दरवाजा। द्वार।
ॐ (हिं.) अलाव। धूनी। भट्टी।

अलार्म-घड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इच्छित समय पर घंटी बजाने वाली घड़ी। जगाने वाली घड़ी।

अलाल [वि.] (हि.) १—काहिल। सुस्त। २—निकम्मा। अकर्मण्य।

अलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) आग का ढेर। अपने अपने घर के आगे का वह गड्ढा जिसमें घास फूस, कंडे, लक्कड़ डालकर आग जलाते है। और उसके चारों ओर तापते हैं।

अलावज [संज्ञा पु.] (हि.) एक पुराने समय का एक बाजा जो चमड़ा मढ़कर बनाया जाता था।

अलावनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) प्राचीनकाल का एक बाजा जो तार से बजाया जाता था।

अलावा [क्रि. वि.] (अ.) सिवाय। अतिरिक्त। भिन्न।

अलास [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ के नीचे निकलने वाला एक फोड़ा जिससे जीभ दाढ़ तक तन जाती है।

अलास्य [वि.] (सं.) आलस। काहिल। सुस्त।

अलाहाबाद [संज्ञा पु.] (फा.) भारत में उत्तरप्रदेश का एक नगर।

अलिंग, अलिङ्ग १—लिंगरहित। बिना चिह्न का। लक्षणरहित। २—जिसकी कोई पहचान न बतलाई जा सके।
[संज्ञा पु.] व्यवहार के अनुसार वह शब्द जो दोनों लिंगों में प्रयुक्त हो। यथा हम, मैं, तुम, वह।

अलिंजर, अलिञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) पानी रखने के लिए मिट्टी का छोटा बरतन। झंझर घड़ा। सुराही।

अलिंद, अलिन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १—घर के बाहरी दरवाजे के आगे का चबूतरा। २—भौंरा।

अलि [संज्ञा पु.] (सं.) १—कोयल। कोकिल। २—भौंरा। भ्रमर। ३—कौवा। ४—बिच्छू। ५—वृश्चिकराशि। ६—कुत्ता। ७—मदिरा।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सखी। सहेली।

अलिक [संज्ञा पु.] (सं.) १—ललाट। मत्था। २—कपोल। गाल।

अलिकुल [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरों का झुण्ड।

अलिकुलप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली।

अलिजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—गले का कौवा २—गले की घंटी।

अलिपक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भ्रमर। भौंरा। २-कोकिल। कोयल। ३—कुत्ता। ४—गाड़ीवान

अलिपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिछुवा घास।

अलिपर्णिका, अलिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अलिपत्रिका'।

अलिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १—आम का वृक्ष। २—लाल कमल। ३—कंदवृक्ष।

अलिप्त [वि.] (सं.) निर्लिप्त। जो लिप्त न हो।

अलिमक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अलिपक'।

अलिमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भ्रमरसमूह।

अलिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—ताख। अरब। २—वह गड्ढा जिसमें कोई वस्तु रखकर ढक दी जाय।

अलिल [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत के अनुसार एक पक्षी।

अली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १—सखी। सहेली। २—पंक्ति।
[संज्ञा पु.] भौंरा। भ्रमर।

अलीक [वि.] (सं.) मिथ्या। झूठा। बेसिर-पैर का। अप्रतिष्ठित।
[संज्ञा पु.] (सं.) अप्रतिष्ठा। अमर्यादा।

अलीकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिथ्या। झूठापन।

अलीजा [वि.] (हि.) आलीजाह। अधिक। बहुत। अच्छा।

अलीन [संज्ञा पु.] (हिं) १—द्वार की चौखट के दोनों ओर के बाजू जिसमें किवाड़ लगते हैं। २—दालान या बरामदे का दीवार से सटा अर्धगोल खम्भा।
[वि.] अनुचित। अनुपयुक्त। बेजा।

अलील [वि.] (अ.) बीमार। रुग्ण।

अलीह [वि.] (सं.) मिथ्या। असत्य।

अलुक् [संज्ञा पु.] (सं) व्याकरण में वह समास जिसमें बीच की विभक्ति ज्यों की त्यों रहती है

अलुझना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'उलझना'।

अलुटना [क्रि. अ.] (हि.) लड़खड़ाना। डगमगाना। आगे-पीछे पांव पड़ना।

अलुप्त [वि.] (सं.) जो गुम अथवा कम न हुआ हो। अक्षत।

अलुब्ध [वि.] (सं.) लोभरहित। जो लालची न हो।

अलून [वि.] (सं.) अक्षत। साबित।

अलूना [वि.] (हि.) नमक न खाने वाला। नमकरहित।

अलूप [वि.] (हि.) लुप्त। गुम। गायब।

अलूमिनियम [संज्ञा पु.] (अ.) एक हलका श्वेत रंग का धातु जो वायुयान में लगता है तथा बरतन भी बनते हैं।

अलूला [संज्ञा पु.] (हि.) बुलबुला। भभूका। लहर। तरंग।

अले [अव्य.] (हि.) देखो 'अरे'।

अलेख [वि.] (हि.) १—अलक्ष्य। २—अज्ञेय। दुर्बोध। ३—जिसका लेखा न हो सके।

अलेखा [वि.] (सं.) बेहिसाब। व्यर्थ। निष्फल।

अलेखी [वि.] (हिं.) अन्यायी। जालिम। गड़बड़ मचाने वाला।

अलेले [अव्य.] (हि.) देखो 'अरे'।

अलेश [वि.] (सं.) अत्याधिक।

अलैया [संज्ञा स्त्री.] देखो 'अलहिया'।

अलोक [वि.] १-अदृश्य। जो देखने में न आवे। २—लोकशून्य। निर्जन। एकांत। ३—पुष्पहीन।
[संज्ञा पु.] १—पाताल आदि लोक। परलोक २—लोक का अभाव। ३—मिथ्या कलंक। झूठी बदनामी।

अलोकन [संज्ञा पु.] (सं.) दीख न पड़ने की अवस्था। अन्तर्धान। अदर्शन।

अलोकना [क्रि. स.] (हिं.) देखना। दृष्टि डालना। ताकना।

अलोकनीय [वि.] (सं.) अदृश्य। न दीख पड़ने वाला।

अलोकित [वि.] (सं.) अदृश्य। न देखा हुआ।

अलोना [वि.] (हिं.) १—बिना नमक का। नमक पड़ा हुआ। २—फीका स्वादरहित। ३—जिसमें नमक न खाया जाय।

अलोपॐ [वि.] (हिं.) देखो 'लोप'।

अलोपा [संज्ञा पु.] (हि.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी मुलायम, सुर्ख और मजबूत होती है यह इमारत तथा नाव बनाने के काम में आती है

अलोभ [वि.] (सं.) लोभरहित। जो लालची न हो।

अलोल [वि.] (सं.) अचंचल। स्थिर। टिका हुआ।

अलोला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ वर्ण होते हैं।

अलोलिक [संज्ञा पु.] (हि.) अचंचलता। स्थिरता।

अलोलुप [वि.] (सं.) १—अनभिलाष। २—लोभरहित।

ाहित [वि.] (सं.) १—रक्तशून्य। २—जो लाल न हो।
[संज्ञा पु.] लाल कमल।

अलौकिक [वि.] (सं.) १-जो इस लोक में दीख न पड़े। लोकोत्तर। २—असाधारण। अपूर्व। अद्भुत : ३—अमानवी।

अल्प [वि] (सं.) १—क्षुद्र। छोटा। २—कम। थोड़ा।
[संज्ञा. पु.] एक अलंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता प्रदर्शित की जाय

अल्पक [वि] (सं.) थोड़ा। कम।

अल्पकालिक [वि.] (सं.) थोड़े समय के लिए होने अथवा दिये जाने वाला।

अल्पक्रीत [वि.] (सं) सस्ता। जिसकी खरीद में थोड़ा धन लगे।

अल्पगंध, गन्ध [संज्ञा पु] (सं.) लाल कमल।

अपचेष्टित [वि] (सं.) सुस्त। आलसी।

अल्पच्छद [वि] (सं.) भलीभांति कपड़े न पहिने हुए।

अल्पजीवी [वि] (सं) अल्पायु। कम उमर वाला

अल्पज्ञ [वि.] (सं.) १—कम समझ। २—थोड़ा ज्ञान रखने वाला। तुच्छ बुद्धि का।

अल्पज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—नासमझी। २—ज्ञान की अपूर्णता।

अल्पता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १—न्यूनता। कमी। २—छोटाई।

अल्पत्व [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'अल्पता'।

अल्पदृष्टि [वि] (सं.) परिमित ज्ञान वाला। कम समझ।

अल्पप्रमाणक [संज्ञा पु.] (सं.) १—खरबूजा। २—तरबूज।

अल्पप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में व्यंजन वर्ण के प्रत्येक वर्ग का पहिला, तीसरा, तथा पांचवां अक्षर और य र ल व।

अल्पबल [वि] (सं) निर्बल। कमजोर।

अल्पबुद्धि [वि] (सं.) मूर्ख। नादान। कम समझ।

अल्पभाग्य [वि] (सं.) निर्भाग। कमबख्त।

अल्पभाषी [वि] (सं) कम बोलने वाला।

अल्पमत [संज्ञा पु.] (सं.) १—थोड़े से लोगों का मत। २—अल्पसंख्यक।

अल्पमध्यम [वि] (सं.) पतली कमर वाला।

अल्पमात्र [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ी देर। थोड़ा समय।

अल्पमूर्ति [वि] (सं.) छोटे शरीर वाला।

अल्पमूल्य [वि] (सं.) कम कीमत। सस्ता।

अल्पवयस्क [वि.] (सं.) छोटी अवस्था का। कम उम्र। कमसिन।

अल्पवर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) तीतर नामक पक्षी।

अल्पवादी [वि.] (सं.) कम बोलने वाला।

अल्पशः [क्रि. वि.] (सं.) थोड़ा-थोड़ा करके। धीरे-धीरे। क्रमशः।

अल्पसंख्यक [संज्ञा पु.] (सं.) वह समाज या जाति जिसके सदस्यों की संख्या औरों की अपेक्षा कम हो। *माइनॉरिटी*।

अल्पसंख्यकवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कम गिनती वाली जाति, श्रेणी या समाज।

अल्पसंख्यक-प्रतिनिधित्व [संज्ञा पु.] (सं.) कम गिनती वाली जाति या समाज का प्रतिनिधित्व।

अल्पायु [वि.] (सं.) कम उम्र का। थोड़े दिन जीने वाला।

अल्पाहार [संज्ञा पु.] (सं.) हलका खाना।

अल्पाहारी [वि.] (सं.) कम भोजन करने वाला।

अल्पिष्ठ [वि.] (सं.) बहुत थोड़ा।

अल्पीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) गौरवहीनता। अप्रतिष्ठा। लघुता।

अल्ल [संज्ञा पु.] (अ.) वंश का नाम। उपगोत्र।

अल्लम-गल्लम [संज्ञा पु] (हि.) कूड़ा-करकट। आयंबायं। अंडबंड। प्रलाप।

अल्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—माता। मा। २—धनिया। धान्यक।
[संज्ञा पु.] (फा.) परमेश्वर। ईश्वर। खुदा। ब्रह्म।

अल्लाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चौपायों के गले में होने वाली एक बीमारी।

अल्लाना [क्रि. अ.](हि) गला फाड़कर चिल्लाना। गुल मचाना।

अल्लामा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कर्कशा नारी या स्त्री। लड़ाका औरत।

अल्लायी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अल्लाई'।

अल्हजा [संज्ञा पु.] (हि) बात का बतंगड़। बेतुकी बात।

अल्हड़ [वि.] (हिं.) १—अल्पवयस्क। कमसिन। २—अनुभवहीन। ३—उद्धत। उजड्ड। अकुशल। ४—अनाड़ी। गंवार।
[संज्ञा पु.] छोटा बछड़ा जिसके दाँत न आये हों।

अल्हड़पन [संज्ञा पु.] (हि.) १—अल्पवयस्कता। कमसिनी। २—मनमौजीपन। लापरवाही। ३—अक्खड़पन। उजड्डता। ४—अनाड़ीपन

अवंति, अवन्ति [संज्ञा पु.] (सं) मालवदेश की प्रमुख नगरी का नाम।

अवंतिका, अवन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उज्जयिनी नगरी।

अवंती, अवन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मध्यप्रदेश के अन्तर्गत मालवा का एक नगर जो आजकल उज्जैन के नाम से प्रसिद्ध है।

अवंश [वि.] (सं.) वंशहीन। निःसंतान।
[संज्ञा पु.] नीचा कुल।

अव [उप.] (सं.) यह उपसर्ग जिन जिन से जो अर्थ प्रगट करता है वह निम्न से हैं। १—निश्चय। २—अनादर। न्यूनता या कमी। ४—निचाई या ५—व्याप्ति।
[अव्य.] (हि.) और।

अवकंपित, अवकम्पित [वि.] (सं.) वि घबड़ाया हुआ।

अवक्रंदन, अवक्रन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) धीरे रोना।

अवकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) बलपूर्वक पदार्थ को खींच ले जाना।

अवकलन [संज्ञा पु.] (सं.) १—इकट्ठा मिला देना। २—देखना। ३—जानना। ४—ग्रहण।

अवकलना॰ [क्रि. स.] (हि.) ज्ञान होना। आना। समझ पड़ना।

अवकलित [वि.] (सं.) १—इष्ट। देखा २—ज्ञात। जाना हुआ। ३—संगृ इकट्ठा करके मिलाया हुआ।

अवका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शैवाल। सेव

अवकाश [संज्ञा पु.] (सं.) १—विश्राम समय। २—अवसर। ३—समय। स्थान। जगह। ५—फालतू या ख समय। ६—एक प्रकार का छंद।

अवकाश-ग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम से छुट्टी लेना या पृथक हो जाना।

अवकाश-संख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) कार्यक को मिलने वाली छुट्टी से संबंधित हि या लेखा।

अवकिरण [संज्ञा पु.] (सं.) बखेरना। फै छितराना।

अवकीर्ण [वि.] (सं.) १—व्याप्त। २—फै हुआ। ३—चूर्ण किया हुआ। ४—नाश हुआ। नष्ट। ध्वस्त।
[संज्ञा पु.] ब्रह्मचर्य का नाश।

अवकीर्णी [वि.] (सं) वह ब्रह्मचारी जि ब्रह्मचर्य-व्रत भंग हो गया हो।

अवकुंचन, अवकुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) टना। बटोरना।

अवकृष्ट [वि.] (सं.) १—दूर किया हु निकाला हुआ। २—नीचे उतारा हुआ। नीच। नीच जाति।
[संज्ञा पु.] घर में झाड़ू लगाने वाला।

अवकोकिल [वि] (सं) कोयल के समान वाला।
[संज्ञा पु] कोयल की बोली।

अवक्खन [संज्ञा पु.] (हि.) देखना।

अवक्तव्य [वि.] (सं.) १—न कहने योग्य। अश्लील। ३—मिथ्या। ४—निषिद्ध।

अवक्र [वि.] (सं.) सीधा। सरल। जो टेढ़ा न हो।

अवक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे जाना।

अवक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १—बदला। २—मूल्य। दाम। ३—किराया। भाड़ा। ४—कर

अवक्रांति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अधोगमन। गिराव। २—झुकाव।

अवक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) १—कर्कश स्वर। कड़ी बोली। २—कोसना। गाली।

अवक्लिन्न [वि.] (सं.) १—आर्द्र। तर। २—भीगा हुआ। गीला।

अवक्वण [संज्ञा पु.] (सं.) बेसुरा-गीत। बिना स्वर ताल का गाना।

अवक्षिप्त [वि.] (सं.) गिरा हुआ।

अवक्षीण [वि.] (सं.) विनाशोन्मुख। नाश होने वाली।

अवक्षुत [वि.] (सं.) जिसपर छींक पड़ गई हो।

अवक्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे फेंकना। गिराव। अधःपात।

अवखात [संज्ञा पु.] (सं.) गहिरा गड्ढा। गंभीर गर्त।

अवगण [वि] (सं.) अकेला।

अवगणन [संज्ञा पु.] (सं.) १—तिरस्कार। अवज्ञा। २—पराभव। पराजय। हार। ३—अपमान। नीचा दिखाना। ४—गिनती।

अवगणित [वि.] (सं.) १—निंदित। अपमानित तिरस्कृत। २—पराजित। ३—नीचा देखा हुआ। ४—गिना हुआ।

अवगत [वि.] (सं.) १—विदित। जाना हुआ। ज्ञात। २—गिरा हुआ।

अवगतना [क्रि. स.] (हिं.) सोचना। समझना। विचारना।

अवगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—निश्चयात्मक ज्ञान। बुद्धि। धारणा। २—कुगति। बुरी गति।

अवगम [संज्ञा पु.] (सं.) निश्चयात्मक ज्ञान।

अवगमन [संज्ञा पु.] (सं.) देख सुनकर किसी बात के आशय को जान लेना। जानना। समझना।

अवगर्हित [वि.] (सं.) निंदित।

अवगाढ़ [वि.] (सं.) १—निविड़। २—अंतःप्रविष्ट। घुसा। निमग्न।

अवगारना॰ [क्रि. स.] (हिं.) समझाना। जताना चितावना।

अवगाह॰ [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्नान। जल में मलमलकर स्नान। २—भीतर प्रवेश। ३—गहरा स्थान। ४—संकट की जगह।
[वि.] अथाह। अत्यन्त गहरा।

अवगाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १—निमज्जन। पानी में घुसकर स्नान। २-प्रवेश। ३-मथन। बिलोडन। ४—खोज। छानबीन। ५—लीन होकर विचारना।

अवगाहना॰ [क्रि. अ.] (हिं.) १—घुसकर स्नान करना। निमज्जन करना। २—डूबना। धंसना। पैठना। मग्न होना।
[क्रि. स.] (हिं.) १—थहाना। छानना। छानबीन करना। २—मथना। विचलित करना। हलचल डालना। ३—चलना। डुलाना। हिलना। ४—समझना। विचारना। सोचना। ५—धारणा करना। ग्रहण करना।

अवगाहित [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान किया हुआ। नहाया हुआ।

अवगुंठन, अवगुण्ठन [संज्ञा पु.] १—ढकना। छिपाना। २—पर्दा। घूंघट। बुर्का। ३—घूंघट डालना।

अवगुंठनमुद्रा, अवगुण्ठनमुद्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) घूंघट को तर्जनी अंगुली से घुमाकर आकर्षित करने वाली मुद्रा में देखना।

अवगुंठनवती, अवगुण्ठनवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घूंघट वाली स्त्री।

अवगुंठिका अवगुण्ठिका [संज्ञा पु.] (सं.) १—घूंघट। २—पर्दा। चिक। ३—जवनिका

अवगुंठित, अवगुण्ठित [वि.] (सं.) १—आच्छादित। आवृत। ढका हुआ।

अवगुंठ्य, अवगुण्ठ्य [वि.] (सं.) छिपाने योग्य। आच्छादन के योग्य।

अवगुंफन, अवगुंम्फन [संज्ञा पु.] गूंथन। गुंधायी। ग्रन्थन।

अवगुंफित, अवगुम्फित [वि.] (सं.) गूंथा हुआ। ग्रन्थित।

अवगीत [वि.] (सं.) १—अपवादग्रस्त। २—निंदित।

अवगुण [संज्ञा पु.] (सं.) १—दोष। दूषण। ऐब। २—अपराध। खोटाई।

अवग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १—रुकावट। बाधा। अटकाव। २—वर्षा का न होना। अनावृष्टि। ३—बोध। वेद। ४—अनुग्रह का उलटा। ५—हाथी का ललाट। ६—संधिविच्छेद। व्याकरण। ७—स्वभाव। प्रकृति। ८—कोसना। शाप। ९—गजसमूह। गेजयूथ। १०—प्रतिबंधक।

अवग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) अनादर। अपमान।

अवघट [संज्ञा पु.] (सं.) पीसने का यंत्र। जाँता।
[वि.] विकट। कठिन। दुर्घट। अटपट। कुघट।

अवघटित [वि.] (सं.) चलाया हुआ। चालित।

अवघर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे रखकर घिसना। मार्जन।

अवघात [संज्ञा. पु.] (सं.) १—चोट। २—हनन। ३—सभी प्रकार का ताड़न।

अवघाती [वि.] (सं.) १—चोट पहुँचाने वाला। २—मारने वाला।

अवचट [संज्ञा पु.] (हिं.) अनजान। अचक्का। कठिनाई।

अवचन [वि.] (सं.) मूक। गूंगा।

अवचनीय [वि.] (सं.) १—अश्लील। फूहड़। २—न कहने योग्य।

अवचय [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्पादि चयन करना। चुनकर इकट्ठा करना।

अवचाय [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ से फल फूल आदि का ग्रहण करना।

अवचित [वि.] (सं.) संचित। इकट्ठा किया हुआ।

अवचूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टिप्पणी। टीका।

अवचूलक [संज्ञा पु.] (सं.) चमार।

अवचेतना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चेतना की वह सुप्त अवस्था जिसके अन्तर्गत किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। अर्द्धचेतना।

अवच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) ढंकना। सरपोश।

अवच्छिन्न [वि.] (सं.) १—पृथक किया हुआ। अलग किया हुआ। २—विशेषणयुक्त।

अवच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १—छेदन। अलगाव। भेद। २—सीमा। ३—परिच्छेद। विभाग। ४—संगीत सम्बन्धीय मृदंग के १२ प्रबन्धों में से एक प्रबन्ध। ५-छानबीन।

अवच्छेदक [वि.] (सं.) १—अलग करने वाला। छेदक। २—हद बांधने वाला। ३—अवधारक। निश्चय करने वाला।
[संज्ञा पु.] विशेषण।

अवच्छेदकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अवच्छेद करने की अवस्था। अलग रखने का भाव। २—हद बांधने का कार्य।

अवच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १—कटायी। तराशी। २—विभाजन। बंटवारा। ३—पहचान।

अवच्छेद्य [वि.] (सं.) अलगाव के योग्य।

अवच्छेपणी [संज्ञा. पु.] (सं.) दहाना। लगाम। दाँती।

अवछंग [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उछंग'।

अवजनित [वि.] (सं.) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।

अवजय [संज्ञा पु.] हार। पराजय।

अवजित [वि.] (सं.) परास्त। हारा हुआ।

अवज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अपमान। अनादर। २—आज्ञा न मानना। अवहेलना। ३—पराजय। हार। ४—वह अलंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न प्राप्त करना वर्णित हो।

अवज्ञात [वि.] (सं.) १—अनादर। तिरस्कार। २—पराजित। ३—जिसका उल्लंघन किया

गया हो।

अवज्ञेय [वि.] (सं.) १—अनादरणीय। २—तिरस्कार के योग्य।

अवट [संज्ञा पु.] (सं.) १—गर्त। गड्ढा। २—कुंड। ३—छिद्र। ४—कुआँ।

अवटना [क्रि. स.] (हिं) १—मथना। आलोडन करना। किसी द्रव पदार्थ को आग पर रख कर चलाकर गाढ़ा करना।
अवटि मरना = भ्रमना। मारे मारे फिरना। चक्कर मारना। दुःख उठाना।

अवटीट [वि.] (सं.) चपटी नाक वाला।

अवडेर [संज्ञा पु.] (हि.) झंझट। बखेड़ा।

अवडेरना [क्रि. स.] (हि.) झंझट में डालना। कष्ट देना।

अवडेरा [वि.] (हिं.) झञ्झटी। बेढंगा।

अवढर [वि.] (हि.) अकारण ही प्रसन्न या अनुरक्त होने वाला।

अवतंसित [संज्ञा पु.] (सं.) १—भाषण या अलंकार। २—शिरोभूषण। टीका। ३—मुकुट। कीट। ४—माला। हार। ५—बाली। मुरकी। कर्णभूषण। कर्णफूल। ६—भतीजा। ७—दूल्हा।

अवतंसित [वि.] (सं.) भूषित। अलंकृत।

अवतमस [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार से परिपूर्ण।

अवतरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—उतरना। पार होना। २—जन्म लेना। शरीर धारण करना। ३—प्रतिकृति। नकल। ४—प्रादुर्भाव। ६—घाट की सीढ़ी। ७—घाट।

अवतरणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—ग्रन्थ की प्रस्तावना। भूमिका। उपोद्‌घात। अवतरणी। २—परिपाटी। रीति।

अवतरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जो भूमिका इस आशय से लिखी जाती है कि विषय की संगति मिल जाय। उपोद्‌घात। २—परिपाटी। रीति।

अवतरना* [क्रि. अ.] (हि.) प्रगट होना। उपजना। जन्मना।

अवतरित [वि.] (सं.) १—ऊपर से नीचे आया या उतरा हुआ। उद्‌धृत। अवतार लिया हुआ।

अवतार [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रादुर्भाव। अवतरण। २—उतरना। नीचे आना। ३—जन्मग्रहण। शरीर धारण करना। ४—पुराणों के अनुसार देवताओं का मानव शरीर धारण करना। ५—शरीर रचना। सृष्टि।
अवतार लेना = शरीर धारण करना। जन्म लेना। *अवतार धरना* = जन्म ग्रहण करना। *अवतार करना* = शरीर धारण करना।

अवतारण [संज्ञा पु.] (सं.) १—उतारना। नीचे लाना। २—नकल करना। उतारना। ३—उद्धरण। उदाहृत करना।

अवतारना [क्रि. स.] (हिं.) १—उत्पन्न करना। रचना। २—जन्म देना। उतारना।

अवतारित [वि.] (सं.) आरोपित। रक्षित।

अवतारी [वि.] (हिं.) १—अवतार ग्रहण करने वाला। उतरने वाला। २—अलौकिक। देवांशधारी।

अवतीर्ण [वि.] (सं.) १—जो ऊपर से नीचे आगया हो। २—दूसरा रूप धरने वाला।

अवदंश, अवदंस [संज्ञा पु.] (सं.) मद्यपान के समय खाये जाने वाले रुचिकर पदार्थ यथा भुना मांस, बड़े आदि।

अवदलित [वि.] (सं.) टूटाफूटा हुआ। चिटका

अवदाध [संज्ञा पु.] (सं.) १—निदाघ। धूप। २—ग्रीष्मकाल। गर्मी का मौसम।

अवदात [संज्ञा पु.] (सं.) शुभ्र। श्वेत रंग।
[वि.] १—सफेद। उजला। २—स्वच्छ। साफ। निर्मल। ३—गौरवर्ण का। ४—पीतवर्ण का। पीला।

अवदान [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रशस्त कर्म। अच्छा काम। २—खंडन। तोड़ना। ३—बल। शक्ति। पराक्रम। ४—उल्लंघन। अतिक्रम। ५—साफ करना। ६—उशीर।

अवदान्य [वि.] (सं.) १—पराक्रमी। बली। शक्तिशाली। २—कृपण। कंजूस।
३—अतिक्रमणकारी। सीमा का उल्लंघन करने वाला।

अवदारक [वि.] (सं.) विदारक। फोड़ने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी खोदने का बेलचा। फावड़ा। खंता। रंभा।

अवदारण [संज्ञा पु.] (सं.) १—विदारण करना। तोड़ना। टुकड़े टुकड़े करना। २—मिट्टी खोदने का औजार। फावड़ा। रंभा। खंता।

अवदारित [वि.] (सं.) १—विदारित। फटा हुआ। २—विभाजित। बांटा हुआ।

अवदाह [संज्ञा पु.] (सं) १—शरीर की जलन। आग से जलना। २—खस। उशीर।

अवदीर्ण [वि.] (सं.) १—विदीर्ण। फटा हुआ। २—पिघला हुआ। ३—आश्चर्यान्वित। ४—विभक्त। बंटा हुआ।

अवदोह [संज्ञा पु.] (सं.) १—दुग्ध। दूध। २—दोहन। दुहाई।

अवद्य [वि.] (सं.) १—अधम। पापी। २—कुत्सित। त्याज्य। निकृष्ट।

अवध [संज्ञा पु.] (सं.) १—वध का अभाव। २—कोशल। अयोध्या।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) अवधि। सीमा। हद। पराकाष्ठता।

अवधान [संज्ञा पु.] (सं.) १—मनोयोग। चित्त का लगाव। २—चित्त की वृत्ति को निरोधकर उसे एक ओर लगाना। ३—समाधि। ध्यान। सावधानी। चौकसी। ४—गर्भ। गर्भधान। पेट। ५—किसी काम या की देखभाल। ६—अपने अधीन किसी का संचालन करना। चार्ज।

अवधायक [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति अधीन कोई काम या कार्यालय आदि हो

अवधायक-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) अधिकारी जो किसी काम का या का अवधायक हो।

अवधार [संज्ञा पु.] (सं.) निश्चय।

अवधारण [संज्ञा पु.] (सं.) १—निरूपण। विचारपूर्वक निर्धारण। निश्चय।

अवधारणीय [वि.] (सं.) निरूपण करने योग्य निश्चय के योग्य।

अवधारना [क्रि. स.] (हि) धारण करना। करना।

अवधारित [वि.] (सं.) निश्चित। निर्धारित।

अवधार्य्य [वि.] (सं.) निश्चय करने योग्य निर्णय करने योग्य। अवधारणीय।

अवधि [संज्ञा पु.] (सं.) १—सीमा। हद। काल। ३—मनोयोग। अपादान।
[अव्य.] (सं.) तक। पर्यन्त।
अवधि देना = समय निर्धारित करना।

अवधिज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अवधि दर्शन'।

अवधिदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) जैन-शास्त्रानु जिसके द्वारा अग्नि, जल, वायु, अंधकार और छाया से व्यवहित द्रव्यों भी प्रत्यक्ष हो तथा आत्मा का ज्ञान हो उपरोक्त पदार्थों के जानने से पूर्व सत्ता का प्रतिभास हो।

अवधिमान [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र।

अवधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अवध की अवध की बोली।
[वि.] १—अवध-सम्बन्धी। २— 'अवधि'।

अवधीरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अवज्ञा।

अवधीरित [वि.] (सं.) तिरस्कृत। अवज्ञात।

अवधूत [वि.] (सं.) १—कम्पित। हिला २—नष्ट किया हुआ। विनष्ट।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—साधु। योगी। २—एक प्रकार के संन्यासी।

अवधृत [वि.] (सं.) नियमित। व्यवस्थापित।

अवधेय [वि.] (सं.) १—श्रद्धेय। २— णीय। ३—जानने योग्य।

अवधेश [संज्ञा पु.] बुंदेलखंड के एक कवि।

अवध्वंस [संज्ञा पु.] (सं.) १—परित्याग। छोड़ना। २—निंदा। कलंक। ३— नाश।

अवध्वंस्त [वि.] (सं.) १—नष्ट । २—निंदित । ३—व्यक्त । चूर्ण किया हुआ ।

अवन [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रसन्न करना । २—रक्षा करना । बचाव । ३—प्रीति । ४—हर्ष । ५—जमीन । भूमि । ६—राह । सड़क ।

अवनत [वि.] (सं.) १—अधोमुख । झुका हुआ । नीचा । २—गिरा हुआ । पतित । ३—कम ।

अवनति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—घटती । कमी न्यूनता । घाटा । २—अधोगति । हीन दशा । ३—झुकना । झुकाव । ४—नम्रता ।

अवनम्र [वि.] (सं.) अत्याधिक नम्र ।

अवना [क्रि. अ.] (हिं.) आना ।

अवनि, अवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूमि । पृथ्वी । जमीन ।

अवनिनाथ, अवनीपाल, अवनीश्वर [संज्ञा पु.] (सं) राजा । नृप ।

अवनेजन [संज्ञा प.] (सं.) १—धोना । प्रक्षालन । २—श्राद्ध के अंतर्गत पिंडदान की वेदी पर बिछाए हुए कुशों पर जल सींचने का संस्कार । ३—भोजन के बाद का आचमन ।

अवपतन [संज्ञा पु.] (सं.) उतार । गिराव ।

अवपाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रोग ।

अवपात [संज्ञा पु.] (सं.) १—गिराव । पतन । २—गढ़ा । कुंड । ३—हाथी पकड़ने का गड्ढा ।

अवपूर्ण [वि.] (सं.) परिपूर्ण । भरा हुआ ।

अवप्लुत [वि.] (सं.) आर्द्र । भीगा हुआ ।

अवबाहुक [संज्ञा पु.] (सं.) भुजस्तम्भ नामक रोग ।

अवबोध [संज्ञा पु.] (सं.) १—ज्ञान । बोध । २—२—जागना । जागरण । ३—शिक्षा ।

अवबोधक [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य । सूर्योदय से समय का ज्ञान होता है इस कारण इसे अवबोधक कहते हैं । २—चारण । वंदी । ३—चौकीदार । रात को पहरा देने वाला व्यक्ति ।

अवबोधकत्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पथप्रदर्शन ।

अवबोधस [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञापन । जानना । चेतावनी ।

अवभास [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रकाश । ज्ञान । २—मिथ्या ज्ञान । ३—स्नान ।

अवभासक [वि.] (सं.) १—प्रकाशक । २—बोध कराने वाला ।

अवभासित [वि.] (सं.) १—प्रकाशित । २—लक्षित ।

अवभासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर के ऊपर का चम । देह के ऊपर की खाल ।

अवभृथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्रधान यज्ञ के समाप्त होने पर दूसरे यज्ञ का आरम्भ । २—यज्ञ के अन्त में किया जाने वाला स्नान ।

अवमंथ, अवमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह रोग जिसमें लिंग पर बड़ी-बड़ी फुंसिया हो जाती हैं ।

अवम [संज्ञा पु.] (सं.) १—अधम । निकृष्ट । कमीना । २—रक्षक । ३—मलमास । ४—पितरों का एक गण ।

अवमत [वि.] (सं.) १—अवज्ञात । नामालूम । २—तिरस्कृत ।

अवमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अवज्ञा । अपमान । तिरस्कार । निन्दा ।

अवमतिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऐसी तिथि जिसका क्षय हो गया हो ।

अवमदिन [संज्ञा पु.] (सं.) एक बार एक साथ तीन तिथि ।

अवमर्द [ग्रहण] [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ग्रहण जिसमें राहु सूर्यमंडल या चन्द्रमंडल को पूर्णतया ढककर अधिक समय तक ग्रसे रहे ।

अवमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ा देना । दुख देना । दलन ।

अवमर्दित [वि.] (सं.) पादाक्रान्त । मला अथवा कुचला हुआ ।

अवमर्श [संज्ञा पु.] (सं.) स्पर्श । संयोग छूवाछात ।

अवमर्षण [संज्ञा पु.] अधैर्य । असहनशीलता ।

अवमान [संज्ञा पु.] (सं.) तिरस्कार । अपमान । अनादर । कोई ऐसा काम या बात करना जिससे किसी का मान अथवा प्रतिष्ठा कम हो । मानहानि ।

अवमानन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अवमानना ।

अवमानना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपमान करना ।

अवमाननी [वि.] (सं.) घृणित । अनादर के योग्य ।

अवमानित [वि.] (सं.) १—अपमानित । अवज्ञात ।

अवमूल्यन [संज्ञा पु.] (सं.) विनिमय के सिक्कों आदि का मूल्य अथवा दर घटाकर कम करना ।

अवमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १—उन्मोचन । २—स्वतंत्रता-प्रदान ।

अवयव [संज्ञा पु.] (सं.) १—अंश । भाग । २—शरीर का कोई भाग । अंग । ३—न्यायशास्त्र अनुसार वाक्य का एक-एक अंश या भेद ।

अवयवी [वि.] (सं.) १—अवयव रखने वाला । अंगी । २—कुल । संपूर्ण । समूचा ।
[संज्ञा पु.] १—वह वस्तु जिसमें बहुत से अवयव हों । २—देह । शरीर ।

अवयस्क [वि.] (सं.) अल्पवयस्क । नाबालिग । कम उम्र । कमसिन ।

अवर [वि.] (सं.) १—अन्य । और । दूसरा । २—अधम । नीच । ३—हाथी की जांघ का पिछला भाग । ४—निर्बल । बलहीन ।

अवरक्षक [वि.] (सं.) पालक । रक्षक ।

अवरज [वि.] (सं.) १—छोटा भाई । २—नीच वंश में उत्पन्न । नीच ।

अवरण [संज्ञा पु.] देखो 'अवर्ण' 'आवरण' ।

अवरत [वि.] (सं.) १—विरत । प्रेम न रखने वाला । २—स्थिर । ठहरा हुआ । ३—अलग । पृथक । ४—देखो 'आवर्त्त' ।

अवरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—विराम । ठहराव । निवृत्ति । छुटकारा ।

अवरव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूर्य । २—आक । मंदार ।
[वि.] हीनव्रत । अधम ।

अवरसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कार्यकर्त्ता जिसकी गिनती ऊँचे या बड़े सेवकों में न होती हो ।

अवरसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजकीय या लोक सेवा का वह अंग जिसके अंतर्गत निम्नकोटि के कर्मचारी होते हैं । इन्फीरियर सर्वेंट ।

अवराधक [वि.] (हि.) १—आराधना करने वाला । पूजा करने वाला । २—दास । सेवक ।

अवराधन [संज्ञा पु.] (हि.) उपासना । पूजा । आराधना । सेवा ।

अवराधना [क्रि. स.] (हि.) पूजा करना । उपासना करना । सेवा करना ।

अवराधी [संज्ञा पु.] (सं.) उपासक । पूजक । आराधक ।

अवरावर [वि.] (सं.) बिलकुल छोटा ।

अवरुद्ध [वि.] (सं.) १—रुका हुआ । रुँधा हुआ ।

अवरुद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—रखेली । अपने वर्ण की वह दासी जिसे कोई घर में डालले । २—ऐसी स्त्री जिसे कोई रखले । उढ़री । रखुई ।

अवरूढ़ [वि.] (सं.) १—उतरा हुआ । २—उखड़ा हुआ । ३—ऊपर से नीचे आया हुआ ।

अवरूप [वि.] (सं.) १—कुरूप । बदसूरत । २—वर्णसंकर ।

अवरेवना [क्रि.] (स.) १—चित्रित करना । लिखना । २—देखना-भालना । ३—अनुमान करना । कल्पना करना । सोचना । ४—मानना । जानना ।

अवरेब [संज्ञा पु.] (हि.) १—तिरछी या वक्र चाल । २—कपड़े की तिरछी काट । ३—उलझन । पेच । ४—बिगाड़ । कठिनाई । ५—झगड़ा । विवाद । खींचातानी । ६—वक्रोक्ति । काकूक्ति ।

अवरेबदार [वि.] (हि.) १—तिरछी काट का ।

पेचीला।

अवरेवी [वि.] (हि.) देखो 'अवरेबदार'।

अवरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १—विरोध। झगड़ा। २—कैद। घेरा। ३—अनुरोध। दबाव। ४—अन्त:पुर। ५—निरोध।

अवरोधक [वि.] (सं.) रोकने वाला।

अवरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १—निरोध। रोक-टोक। २—कैद। फंसाव। ३—अन्त:पुर।

अवरोधना [क्रि. स.] (हिं.) रोकना। निषेध करना। बाँधना।

अवरोधित [वि.] (सं.) घेरा हुआ। रोका हुआ।

अवरोधी [वि.] (सं.) [पु. प्र.] रोकने वाला। विरोध करने वाला।

अवरोपण [संज्ञा पु] (वि.) उखाड़ना। उत्पाटन

अवरोपणीय [वि.] (सं.) उखाड़ने योग्य।

अवरोपित [वि.] (सं.) १—उखाड़ा हुआ। उन्मूलित। २—उतारा हुआ।

अवरोह [संज्ञा पु.] (सं.) १—उतार। अवतरण। २—अवनति। विपत्त। ३—वररोह। ४—एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु के रूप तथा गुण का क्रमशः अवतरण प्रदर्शित किया जाता है।

अवरोहक [वि] (सं.) १—गिराने वाला। २—अवनति करने वाला।
[संज्ञा पु.] असगंध।

अवरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १—उतार। अवतरण। गिराव। पतन।

अवरोहना [क्रि. अ.] (हिं.) १—उतरना। नीचे आना। २—ऊपर जाना। चढ़ना।
[क्रि अ] (हि.) १—खींचना। चित्रित करना। अंकित करना। २—रोकना।

अवरोहित [वि.] (सं.) १—गिराने वाला। २—हीन। अवनत।

अवरोही [संज्ञा पु.] (सं.) १—उतरा हुआ स्वर। वटवृक्ष।

अवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सब स्वर वर्ण। अकार अक्षर।
[वि.] (सं) वर्गरहित। बिना समूह का।

अवर्ण [वि.] (सं) १—बिना रंग का। वर्ण-रहित। बदरंग। २—वर्ण धर्मरहित। ब्राह्मण आदि के धर्म से शून्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) अकार अक्षर।

अवर्ण्य [वि.] (सं.) वर्णन के अयोग्य।
[संज्ञा पु.] (सं) प्रधान विषय। उपमान।

अवर्त्त [संज्ञा पु.] (सं) १—प्रकाशरहित वस्तु। वह वस्तु जो पारदर्शक न हो। २—भंवर या पानी का चक्करदार फेरा। ३—घुमाव। चक्कर।

आवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं) १—जीविका का अभाव या अनुपलब्धि।

अवर्त्तमान [वि.] (सं.) १—अनुपस्थित। अप्रस्तुत। २—भूत या भविष्य।

अवर्धमान, अवर्द्धमान [वि.] (सं.) १—वृद्धि-रहित। न बढ़ने वाला। २—क्षयशील।

अवर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा का अभाव। अनावृष्टि।

अवलग्न [संज्ञा पु.] (सं.) देह का मध्य भाग।
[वि.] (सं.) लगा हुआ। संलग्न।

अवलंघना [क्रि. स.] (हि.) लाँघना। पार होना। फाँदना।

अवलंब, अवलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) आश्रय। ठिकाना। आधार। सहारा।

अवलंबक, अवलम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक छन्द। २ जुकाम का एक भेद।

अवलंबन, अवलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) १—आधार। सहारा। आश्रय। २—धारण। ग्रहण।

अवलंबना, अवलम्बना [क्रि. स.] (हि.) आश्रय लेना। सहारा लेना। टिकना।

अवलंबित, अवलम्बित [वि.] (सं.) १—आश्रित सहारा लिया हुआ। निर्भर। २—शीघ्र। जल्द।

अवलंबी, अवलम्बी [वि.] (सं.) १—सहारा लेने वाला। २—सहारा देने वाला। पालने-वाला।

अवलिप्त [वि.] (सं.) १—गर्वित। घमण्डी। २—लेप किया हुआ।

अवलिप्तता, अवलिप्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) घमंड। गर्व।

अवली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—पंक्ति। पाँती। २—झुंड। समूह। ३—पहिले-पहल खेत में से काटा जाने वाला अन्न। ४—वह ऊन जो गड़रिया भेड़ से एक बार में उतारता है।

अवलीक [वि.] (हिं.) अपराधरहित। निष्पाप। निष्कलंक। शुद्ध।

अवलीढ [वि.] (सं.) १—खाया हुआ। भक्षित। २—चाटा हुआ।

अवलीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनादर। अपमान।

अवलुंचन, अवलुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १—छेदना। काटना। २—उखाड़ना। नोचना। ३—खोलना। ४—दूर करना। हटाना।

अवलुंचित, अवलुञ्चित [वि.] (सं.) १—नोचा हुआ। उखाड़ा हुआ। २—दूर किया हुआ। हटाया हुआ।
३—बिना बांधा हुआ। ४—कटा हुआ। ५—खुला हुआ। मुक्त।

अवलुंठन, अवलुण्ठन [संज्ञा पु.] (सं.) लोटना। भूमि में पड़कर लोटपोट होना।

अवलुंठित, अवलुण्ठित [वि.] (सं.) १—लोटा हुआ। २—लौटा हुआ।

अवलुंपन, अवलुम्पन [संज्ञा पु.] (सं.) फांद।

अवलून [वि.] (सं.) कटा हुआ।

अवलेख [संज्ञा पु.] (सं.) पृथक की हुई वस्तु

अवलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) पृथक करण अलगाव।

अवलेखना [क्रि. स.] (हि.) १—खोदना। चना। २—चिह्न बनाना। लकीर खैंचना।

अवलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—लूटपाट। साजबाज।

अवलेप [संज्ञा पु.] (सं.) १—गर्व। घमंड। लेप। उबटन। ३—दोष देना।

अवलेपन [संज्ञा पु.] (सं.) १—लगाना। पोत २—गर्व। घमंड। अहंकार।

अवलेह [संज्ञा पु.] (सं.) १—लेई के समान न अधिक गाढ़ी हो और न अधिक पतली चटनी। माजून। २—चाटी जाने ओषधि।

अवलेहन [संज्ञा पु.] (सं.) १—चाटना। जीभ नोक लगाकर खाना। २—चटनी।

अवलेह्य [वि.] (सं.) चाटने योग्य।

अवलोक [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शन। देखना

अवलोकक [वि.] (स.) देखने वाला।

अवलोकन [संज्ञा पु.] (सं.) १—देखना। निरीक्षण। देखभाल। जांच। पड़ताल।

अवलोकना [क्रि. स] (हि.) देखना। जांच

अवलोकनि [संज्ञा स्त्री] (हि) नेत्र। आँख

अवलोकनीय [वि] (सं.) देखने योग्य। दर्श

अवलोकित [वि] (सं.) देखा हुआ।

अवलोचना [क्रि. स] (हि.) दूर करना।

अवलोभन [संज्ञा स्त्री] (सं) मानसिक लाषा।

अववर्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वत्र वर्षा का

अववाद [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'अपवाद'।

अवश [संज्ञा पु.] (सं) विवश। परवश। धीन। लाचार।

अवशिष्ट [वि.] (सं.) शेष। बचा हुआ। बचाखुचा।

अवशीन [संज्ञा पु.] (सं.) बिच्छू। वृश्चि

अवशेष [वि.] (सं.) बचा हुआ। बाकी। शे

अवशिष्टाधिकार [संज्ञा पु] (सं) बचा स्वत्व। अवशोषित पदवी।

अवशेष-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बचा हुआ का

अवशेषित [वि] (सं.) अवशिष्ट। बाकी।

अवशोष [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत ज्यादा शु अत्याधिक शुष्कता।

अवश्यंभावी, अवश्यम्भावी [वि.] (सं.) अटल। ध्रुव। न टलने वाला।

अवश्य [क्रि.अ.](सं.) निश्चय करके। निःसंदेह। जरूर। [वि.] (सं.) जो वश में न आसके। दुर्दान्त।

अवश्यक [वि.] (सं.) निश्चयात्मक। जरूरी।

अवश्यकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निश्चय।

अवश्यपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) खोटा बेटा।

अवश्यम् [अव्य.] (सं.) निश्चय। जरूरी।

अवश्यमेव [क्रि. वि.] (सं.) निःसंदेह। अवश्य। जरूर-बिल-जरूर।

अवश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेकाबू स्त्री।

अवश्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १—हिम। तुषार। पाला। ३—झाड़ी। ३—अभिमान। अहंकार।

अवश्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) पके हुए भोजन को चूल्हे पर से उतारकर नीचे रखना।

अवष्टंभ, अवष्टम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहारा। आश्रय। २—खंभा। थाम। ३—सीना। ४—अनम्रता।

अवष्टब्ध [वि] (सं.) १—आश्रित। २—अवलम्बित।

अवसंडीन, अवसण्डीन [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों की आकाश से नीचे उतरने की गति।

अवस [क्रि. वि.] देखो 'अवश्य'।

अवसक्त [वि.] (सं.) १—संलग्न। लगा हुआ। २—अभिलाषयुक्त।

अवसक्थिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—योग करने का एक आसन विशेष। २—अदावन। उञ्चन।

अवसज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) आलिंगन। प्रेम में छाती से छाती का मिलाना।

अवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) १—गांव। ग्राम। २—जनपद। वसती। ३—घर। मकान। ४—स्कूल। कॉलिज। बोर्डिङ्गहाउस।

अवसन्न [वि.] (सं.) १—विषादप्राप्त। विसन्न। २—विनाशोन्मुख। बारबार जानेवाला। ३—सुस्त। आलसी। अपना काम न बना सकने वाला।

अवसन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुख। रंज। अनुत्साह। दिलगीरी।

अवसन्नत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अवसन्नता'

अवसभ [वि.](सं.) जो सभा से निकाल दिया गया हो।

अवसर [संज्ञा पु.] (सं.) १—समय। काल। २—अवकाश। फुरसत। ३—संयोग। इत्तिफाक।

अवसर चूकना=मौका हाथ से जाने देना।
अवसर ताकना=मौका देखना। उपयुक्त समय की प्रतीक्षा करना। अवसर मारा जाना—समय बीत जाना।

अवसर-ग्रहण [संज्ञा पुं.] (सं) अपने काम से छुट्टी लेकर सदा के लिए हट जाना।

अवसर-प्राप्त [वि.] (सं.) नौकरी की अवधि का समय पूरा होने पर काम से हटने वाला। रिटायर्ड।

अवसरवाद [संज्ञा पु.] (सं.) पाश्चात्यदार्शनिक मेलब्रांश तथा ज्यूलोक का सिद्धान्त जिसमें जीव नहीं, ईश्वर ही कर्ता एवं ज्ञाता होता है, वह ही सारा शारीरिक कार्य चलाता है।

अवसरवादी [वि.](हि.) १-अवसरवाद सिद्धान्त को मानने वाला। २—जैसा समय हो वैसा ही कार्य करने वाला। स्वार्थी। अपने ही मतलब की बात करने वाला।

अवसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्वेच्छाचार। मनमानी। २—स्वतंत्रता।

अवसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) छुटकारा। मुक्ति।

अवसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १—चर। जासूस। गुप्तचर। भृत्य। दास।

अवसर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) उतार। अवरोहण। नीचे को कदम रखना।

अवसर्पिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार उतार का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।

अवसर्पी [वि.] (सं.) गिरने वाला। नीचे जानेवाला।

अवसव्य [वि.] (स.) दक्षिण। दाहिना। जो बाँयाँ न हो।

अवसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वतन्त्रता। छुटकारा।

अवसाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—नाश। क्षय। २—विषाद। रञ्ज। ३—दीनता। ४—थकावट।

अवसादक [वि.] (सं.) काम बिगाड़ने वाला। थकाने वाला। समाप्त होने वाला।

अवसादन [संज्ञा पु.] (सं.) १—नाश। क्षय। ध्वंस। २—विरक्त होना। ३—दीन होना। ४—वैदिक में व्रण चिकित्सा का एक भेद। मरहमपट्टी।

अवसादित [वि.] (सं.) १—डुबाया हुआ। २—थकाया हुआ। ३—सताया हुआ।

अवसान [संज्ञा पु.] (सं.) १—विराम। ठहराव। २—अन्त। समाप्ति। ३—सीमा। ४—सायङ्काल। ५—मरण।

अवसायक [वि.] (सं.) १—पूरा करने वाला। २—निश्चयकारक। ३—ठीकठाक करने वाला

अवसायिता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऋद्धि।

अवसायी [वि.] (सं.) निवासी। वाशिन्दा।

अवसि [क्रि वि.] (हि.) निश्चय। जरूर।

अवसित [वि.] (सं.) १—समाप्त। २—बढ़ा-हुआ। ऋद्ध। ३—परिपक्व। ४—निश्चित। ५—सम्बद्ध। मिला हुआ।

अवसी [संज्ञा स्त्री.] अनाज जो कच्चा ही काट लिया गया हो। गद्दर।

अवसुप्त [वि.] (सं.) सोया हुआ।

अवसृष्ट [वि.] (सं.) १—दत्त। दिया हुआ। २—त्यक्त। त्यागा हुआ। ३—निकाला हुआ।

अवसेख [वि.] (हिं.) देखो 'अवशेष'।

अवसेचन [संज्ञा पु.] (सं.) १—सींचना। पानी देना। २—पसीजना। पसीना निकलना। ३—रोगी के शरीर से पसीना निकालने की क्रिया। ४—जोंक, सींगी, तूंबी तथा फस्द द्वारा रक्त निकालना।

अवसेर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—विलम्ब। २—चिन्ता। फिक्र। ३—दुःख।

अवसेरना [क्रि. स.] (हि.) तङ्ग करना। दुःख देना।

अवस्कंद, अवस्कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) सेना के ठहरने का स्थान। शिविर। डेरा। २—जनवासा।

अवस्कंदन, अवस्कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १—सारे शरीर को डुबाकर स्नान करना। २—आक्रमण।

अवस्कंदित, अवस्कन्दित [वि.](सं.) १—आक्रमण किया हुआ। स्नान किया हुआ।

अवस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) मलमूत्र।

अवस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) १—परदा। चिक। जवनिका। २—पलङ्ग। शय्या।

अवस्तु [वि.] (सं.) १—शून्य। २—तुच्छ। हीन

अवस्त्र [वि.] (सं.) वस्त्रहीन। नग्न। नंगा।

अवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—दशा। हालत। २—समय। काल। ३—आयु। उम्र। ४—स्थिति। वेदांतदर्शन के अनुसार मनुष्य की चार अवस्था। स्मृति के अनुसार मनुष्य की आठ अवस्था, निरुक्ति के अनुसार ६ अवस्था। कामशास्त्र के अनुसार दश अवस्थायें होती हैं

अवस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १—स्थिति। सत्ता। टिकाव। २—घर। मकान। ३—स्थान। ४—रेलगाड़ी के रुकने का स्थान। ५—पुलिस या सेना के रहने का स्थान।

अवस्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) १—निवेशन। २—लगाव। ३—स्थापना करना।

अवस्थित [वि.] (सं.) उपस्थित। विद्यमान। मौजूद।

अवस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अवस्थान। ठहराव। वर्त्तमानता। स्थिति।

अवस्यंदन, अवस्यन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १—टपकना। चूना। गिरना। २—गले मिलना।

अवह [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह नदी जिसमें नाले न हों। २—वह वायु जो आकाश के तीसरे स्कंध पर है।

अवहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—लूट। चोरी। २—

सेना का युद्धस्थान से शिविर में जाना।

अवहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ का ऊपर का भाग। उलटा हाथ।

अवहार, अवहारक [संज्ञा पु.] (सं.) घड़ियाल। जलहस्ती। सूंस।

अवहार्य [वि.] (सं.) १—दूसरी जगह पहुँचाने योग्य। २—दान दिया जाने वाला।

अवहास [संज्ञा पु.] १—उपहास। मजाक। ठट्ठा। २—मृदुहास्य। मुस्कराहट।

अवहास्य [वि.] (सं.) उपहास के योग्य।

अवहित [वि.] (सं.) १—होशियार। सावधान। २—नियत। नियुक्त।

अवहितकरणकलाप [वि.] (सं.) स्थिर। ठहरा हुआ। जिसका हवास काम न करे।

अवहितता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—विनय। अर्ज। २—ध्यान। गौर।

अवहितांजलि, अवहिताञ्जलि [वि.] (सं.) हाथ जोड़े हुये।

अवहित्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाहरी आकार को छिपाना।

अवही [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बबूल का वृक्ष।

अवहेल [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनादर। बेइज्जती। अवज्ञा।

अवहेलन [संज्ञा पु.] (सं.) १—अवज्ञा। अपमान। २—आज्ञा का न मानना। लापरवाही।

अवहेलना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अवज्ञा। अपमान। २—ध्यान न देना। लापरवाही।
[क्रि. स.] (हिं.) तिरस्कार करना। अवज्ञा करना। लापरवाही करना।

अवहेलित [वि.] (सं.) जिसकी अवहेला हुई हो। तिरस्कृत।

अवहेला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अवहेलना'।

अवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आवाँ'।

अवांछनीय [वि.] (सं.) जिसके होने की इच्छा न की जाय।

अवांतर, अवान्तर [वि.] (सं.) अंतर्गत। मध्यवर्ती। बीच का।
[संज्ञा पु.] (सं.) मध्य। भीतर। बीच।

अवांतरदिशा, अवान्तरदिशा [संज्ञा स्त्री.] बीच की दिशा।

अवांतरदेश, अवान्तरदेश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रांत के बीच का प्रदेश।

अवाँसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फसल में से पहले काटा हुआ बोझ। कवल। अवली।

अवाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—आगमन। पहुँच। २—गहरा जोतना।

अवाक् [वि.] (सं.) १—मौन। चुप। २—स्तब्ध। जड़। चकित। विस्मित।

अवाकर [संज्ञा पु] (सं.) १—टकसाल घर। २—खजाना।

अवाकी [वि.] (सं.) जो न बोल रहा हो।

अवाक [वि.] (सं.) मौन। चुप।

अवाक्पुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—एक पौधा जिसके पुष्प अधोमुख हों। २—सौंफ। ३—सोया।

अवाक्संदेस [संज्ञा पु.] (बंग.) एक बंगला मिठाई।

अवागी [वि.] (हिं.) मौन। चुप। खामोश।

अवाग्र [वि.] (सं.) अवनत। झुका हुआ। नम्र। कोमल।

अवाङ्ज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) अपमान। बेइज्जती।

अवाङ्नरक [संज्ञा पु.] (सं. जिह्वा छेदने का दुःख। जिह्वा काटने का दंड।

अवाङ्मुख [वि.] (सं.) १—अधोमुख। मुंह लटकाये हुए। २—लज्जित।

अवाची [संज्ञा स्त्री] (सं) दक्षिण दिशा।

अवाचीन [वि.] (सं.) दक्षिणीय।

अवाच्य [संज्ञा पु.] (सं.) न कहने योग्य वचन। गालीगलौज। निंदा।
[वि.] नीच। निंदित।

अवाच्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्लीलता। फूहड़पन।

अवाज़] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) ध्वनि। शब्द।

अवाजी [वि.] (हिं.) शब्द करने वाला। चिल्लाने वाला।

अवात [वि.](सं.) वातशून्य। जहाँ हवा न लगे।

अवादा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'वादा'।

अवादी [वि.] (सं.) विवाद न करने वाला। न झगड़ने वाला।

अवाध [वि.] (सं.) बाधारहित। अनर्गल।

अवाध्य [वि.] (सं.) रोकने से न मानने वाला।

अवान [संज्ञा पु.] (सं.) १—सूखे फल। २—सांस लेने का कार्य।

अवापित [वि.] (सं.) आरोपित। जो बोया न गया हो।

अवाप्त [वि.] (सं.) प्राप्त। हाथ आया हुआ। लब्ध।

अवाप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिकारपूर्वक कर, शुल्कादि के रूप में लगान लेना या उगाहना। २—साधिकार लोगों को बुलाकर सेना के रूप में परिवर्त्तित करना। लेवी।

अवाप्य [वि.] (सं.) साधिकार कर, शुल्कादि के रूप में लेने योग्य। जिससे अधिकारसहित धन या कर आदि लिया जासके।

अवाम [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जनता

अवाय [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ का आभूषण। कड़ा।
[वि.] (हिं.) अनिवार्य्य। कट्टर।

अवायी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) आगमन। आ
पहुँच।

अवार [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के इस
किनारा।

अवारजा [संज्ञा पु.] (फा.) १—वह बही
प्रत्येक आसामी की जोत इत्यादि लिखी
है। २—जमाखर्च की वही। ३—
लेखा।

अवारण [वि.] (सं.) १—जिसका नि
हो सके। सुनिश्चित। २—बेरोक। अनि

अवारणीय [वि.] (सं.) १—जिसे रोक न
२—दमन न किया जाने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) असाध्य रोग।

अवारना❀ [क्रि. स.] (हिं.) १—रोकना।
करना। २—देखो 'वारना'।

अवारपार [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। साग

अवारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिया।

अवारिजा [संज्ञा पु.] देखो 'अवारजा'।

अवारित [वि.] (सं.) १-निवारण न किया
अनिवारित।

अवारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १—लगाम।
डोर। २—तट। किनारा। ३—मुँह का

अवार्य [वि.] (सं.) १—अनिबार्य। जो ह
न जा सके। २—अवारणीय।

अवावट [संज्ञा पु.] (सं) जो लड़का
पिता तथा अपनी जाति की स्त्री से उत्प

अवास [संज्ञा पु] (हि.) निवासस्थान।

अवाह्य [वि.] (सं) न लेजाने योग्य।

अवि [संज्ञा पु.] (सं.) १—मेष। भेड़।
सूर्य। ३—पर्वत। ४—नाथ। ५—
६—छाग। बकरा। ७—आक का पेड़।
कम्बल।
[संज्ञा स्त्री.] १—लज्जा। २—ऋतुमती

अविक [संज्ञा पु.] (सं.) १—मेष। भेड़।
हीरक। हीरा।

अविकच [वि.] (हिं.) १—बिना खिला
२—जो सफल न हुआ हो।

अविकट [वि.] (सं.) १—जो भयंकर
२—अविशाल। ३—अविस्तार।

अविकल [वि.] (सं.) १-व्याकुल न रहने
ज्यों का त्यों। बिना उलटफेर का। ३—
पूरा।

अविकल्प [वि.] (सं.) १—जो विकल्प से
निश्चित। २—निःसंदेह। असंदिग्ध।
जिसमें कुछ हेरफेर न हो सके।

अविकार [संज्ञा पु.] १—विकार का
दोष का न रहना।
[वि.] विकार-रहित। निर्दोष।

अविकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १—जिसमें

न हों। विकारशून्य। निर्विकार। २—जिसमें किसी का विकार न हो।

अविकाशी [वि.] (सं.) जो विकाशी न हो। निकम्मा। निष्क्रिय।

अविकृत [वि.] (सं.) [पु. प्र.] जो विकृत न हो। जो बिगड़ा न हो।

अविकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विकार का अभाव।

अविक्रांत, अविक्रान्त [वि.](सं.) १-अतुलनीय। अनुपम। २—दुर्बल। कमजोर।

अविक्रिय [वि.] (सं.) विकारशून्य। जो बिगड़ा न हो। बेदाग़।

अविक्रीत [वि.] (सं.) जो बेचा न गया हो।

अविक्रय [वि.] (सं.) विक्रय के अयोग्य। न बेचने योग्य।

अविगत [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो विगत न हो। २—अज्ञात। जानने के अयोग्य। ३—अनिर्वचनीय। जिसका वर्णन न हो सके। ४—जिसका नाश न हो। नित्य।

अविगर्हित [वि.] (सं.) जिसकी निंदा न की जासके। प्रशंसनीय।

अविग्रह [वि.] (सं.) १—स्पष्ट रूप से न जाना हुआ। अविज्ञात। २—निराकार। निरवयव। व्याकरण के अनुसार वह समास जिसका विग्रह न हो।

अविघ्न [संज्ञा. पु.] (सं.) विघ्न का अभाव।

अविघात [संज्ञा पु.] (सं.) विघ्न का न होना।

अविचक्षण [वि.] (सं.) मूर्ख। मन्द। अपटु। अनाड़ी।

अविचल [संज्ञा पु.] (सं.) स्थिर। अचल। अटल।

अविचार [संज्ञा पु.] (सं.) १—अविवेकी। विचार हीन। २—अत्याचार। अन्यायी।

अविचारित [वि.] (सं.) बिना विचारा हुआ।

अविचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-अविवेकी। विचार-हीन। २—अत्याचारी। अन्यायी।

अविचेतन [वि.] (सं.) संज्ञारहित। बेहोश।

अविच्छिन्न [संज्ञा पु.] (सं.) अटूट। लगातार। अविच्छेद।

अविच्छेद [संज्ञा. पु.] (सं.) जिसका विच्छेद न हो। अटूट। लगातार।

अविज्ञ [वि.] (सं.) अनिपुण। जो प्रवीण न हो।

अविज्ञात [वि.] (सं.) अज्ञात। अनजाना। भली प्रकार न जाना हुआ।

अविज्ञेय [वि.] (सं.) दुर्ज्ञेय। जो जाना न जा सके।

अवितत् [वि.] (सं.) प्रतिकूल। विरुद्ध। उलटा।

अवितरकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १—पाशुपतदर्शन के अनुसार कम जो अन्य मत वालों के विचार में निंदित हो। २—जैन शास्त्रानुसार कार्याकार्य के विवेक में व्याकुल पुरुष की नाईं लोक निंदित कर्म करना। ३—विरुद्धाचरण।

अवितत्थ [वि.] (सं.) असत्य। मिथ्या। झूठ।

अवितथ [वि.] (सं.) सत्य। सच्चा।

अवितद्भाषण [संज्ञा पु.] (सं.) व्याहत तथा निरर्थक शब्दों का उच्चारण। उलटा-पुलटा कहना। अंडबंड बकना।

अवितर्कित [वि.] (सं.) १—जिसमें तर्क न किया गया हो। २—निःसंदेह।

अवित्त [वि.] (सं.) १—धनहीन। निर्धन। २—अविख्यात। गुमनाम।

अवित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—लाभ का अभाव। २—ज्ञान का अभाव।

अवित्यज [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

अविद [वि.] (सं.) मूर्ख। अनाड़ी। अनजान।

अविदग्ध [वि.] (सं.) जो जला या पका न हो। कच्चा।

अविदित [वि.] (सं.) १—अज्ञात। जो जाना न गया हो। २—परमेश्वर। ३—गुप्त।

अविदूर [वि.] (सं.) निकट। समीप।

अविद्ध [वि.] (सं.) जो बेधा या छेदा न गया हो।

अविद्धकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाढ़ा नामक लता।

अविद्य [वि.] (सं.) १—मूर्ख। बेवकूफ। २—विद्या से सम्बन्ध न रखने वाला।

अविद्यमान [वि.] (सं.) १—अनुपस्थित। गैर-हाजिर। २—असत। न होने वाली। ३—मिथ्या। असत्य। झूठा।

अविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—ज्ञान का अभाव। अज्ञान। मिथ्या या विरुद्ध ज्ञान। २—माया। ३-माया का एक भेद। ४—कर्मकांड। ५—सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति। अव्यक्त। जड़। ६—वैशेषिकशास्त्र के अनुसार इन्द्रियों के दोष और संस्कार के दोष से उत्पन्न दुष्ट ज्ञान। वेदांत के अनुसार माया।

अविद्वता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्खता। अज्ञानता।

अविद्वान [वि.] (सं.) [पु. प्र.] मूर्ख। जो विद्वान न हो।

अविद्वेष [संज्ञा पु.] (सं.) विरोध का अभाव। अनुराग।

अविधवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सधवा। सुहागन।

अविधान [संज्ञा पु.] (सं.) विधि के विपरीत कार्य करने वाला। २—विधान का अभाव।
[वि.] (सं.) विधिविरुद्ध। नियम के विपरीत।

अविधि, अविधिक [संज्ञा पु.] (सं.) विधि का अभाव।
[वि.] नियमविरुद्ध। विधिविरुद्ध।

अविनय [संज्ञा पु.] (सं.) विनय का अभाव। उद्दंडता। ढिठाई।

अविनश्वर [वि.] (सं.) चिरस्थाई। कभी न मिटने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

अविनाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १—संबंध। २—व्याप्य। व्यापक संबंध।

अविनाश [संज्ञा पु.] (सं.) विनाश का अभाव। अक्षय। रक्षा।

अविनाशी (वि.) (सं.) [पु. प्र.] १—नित्य। शाश्वत। २—जिसका विनाश न हो। अक्षय। अक्षर।

अविनासी [वि.] (हि.) देखो 'अविनाशी'।
[संज्ञा पु.] (हि.) परमेश्वर। ब्रह्मा।

अविनिमेय-मुद्रा [संज्ञा पु.] (सं.) १—अप्रचलित सिक्का। २—वह सिक्का जिसके सम्बन्ध में अन्य देशों से उसकी दर निश्चित न हुई हो।

अविनीत [वि.] (सं.) १—जो विनीत न हो। उद्धत। २—दुर्दान्त। सरकश। ३—ढीठ।

अविनीता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] कुलटा। असती। दुराचारिणी।

अविपन्न [वि.] (सं.) स्वस्थ। निरोग।

अविपर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) विपर्यय या विकार का अभाव। क्रमानुसार। क्रम के विपरीत न होना।

अविपश्चित [वि.] (सं.) विवेकशून्य। मूर्ख। अनाड़ी।

अविपाक [संज्ञा पु.] (सं.) अजीर्ण। बदहजमी।

अविपाल [वि.] (सं.) भेड़ पालने वाला। गड़रिया।

अविपित्तक [संज्ञा पु.] (सं.) अम्लपित्त रोग को दूर करने वाला चूर्ण।

अविपुल [वि.] (सं.) छोटा। क्षुद्र। नाचीज।

अविबुध [वि.] (सं.) १—अज्ञानी। नादान। बुद्धिहीन।
[संज्ञा पु.] (सं) असुर। दैत्य। राक्षस।

अविभक्त [वि.] (सं.) विभागरहित। जो बटा न हो। २—मिला हुआ। ३—एक। अभिन्न। ४—भेदरहित। ५—जो निकाला न गया हो।

अविभक्त कुटुम्ब—संयुक्त परिवार। सम्मिलित परिवार।

अविभक्त परिवार—ऐसा परिवार या कुटुम्ब जो न्यारे न हुए हों। जिस परिवार में अभिन्नता हो। साझीदार परिवार। ऐसा परिवार या कुटुम्ब जिसमें सम्पत्ति का बटवारा न हुआ हो।

अविभाज्य [वि.] (सं.) जिसका विभाग न किया जा सके। जिसका टुकड़ा न किया जा सके।

अविभावित [वि.] (सं.) १—अलक्षित। २—अचिंतित। बिना विचारा।

अविमुक्त [वि.] (सं.) १—जो मुक्त न हो। बद्ध।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—कनपटी। २—काशी।

अवियोग [संज्ञा पु.] (सं.) वियोग का अभाव। २—मेल। मिलाप। संयोग।
[वि.] (सं.) १—वियोगरहित। जिसका वियोग न हुआ हो। २-संयुक्त। सम्मिलित। एकीभूत।

अवियोगव्रत [संज्ञा पु.] (सं) कल्किपुराण के अनुसार एक व्रत। जिसमें स्त्रियों को पति-वियोग नहीं होता। यह व्रत अगहनशुक्ल तृतीया को पड़ता है। स्त्रियां चन्द्रदर्शन करके दूध पीती हैं।

अविरत [संज्ञा पु.] (सं.) विराम का अभाव।
[क्रि. वि.] (सं.) १—निरंतर। लगातार।
[वि.] (सं.) २—विरामरहित। निरंतर। २—अनिवृत्त। लगाहुआ।

अविरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—निवृत्ति का अभाव। लीनता। २—विषयासक्ति। ३—विराम का अभाव। अशान्ति। ४—जैनमत के अनुसार धर्मशास्त्र की मर्यादा से रहित वर्त्ताव करना।

अविरथा [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'वृथा'।

अविरल [वि.] (सं.) १—मिला हुआ। अभिन्न। २—घना। सघन। अव्यवच्छिन्न।

अविराम [वि.] (सं.) १—अविश्रान्त। २—निरंतर। लगातार। सतत।

अविरुद्ध [वि.] (सं.) १—जो विरुद्ध या प्रतिकूल न हो। २—अनुकूल :

अविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-समानता। साधर्म्य। २—अनुकूलता। ३—मेल। संगति।

अविरोधी [वि.] (हिं.) १-विरोध न करने वाला अनुकूल। २—मित्र।

अविलंब, अविलम्ब [क्रि. वि.] (सं.) फौरन। तुरन्त। तत्काल।

अविलंबित, अविलम्बित [क्रि. वि.] (सं.) शीघ्र सत्वर। चपल।

अविलास [संज्ञा पु.] (सं.) १—विलास का अभाव। २—हाव-भाव का अभाव।

अविलोकन [क्रि. स.] (हि.) देखो 'अवलोकना'।

अविलोकना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'अवलोकना'।

अविवक्षित [वि.] (सं.) असंबद्ध विषय का।

अविवर [वि.] (सं.) घना। विना छिद्र का।

अविवाद [वि.] (सं.) विवादरहित। निर्विवाद।

अविवाहित [वि.] (सं.) [पु. प्र.] बिनब्याहा। कुआंरा। अनूढ़।

अविवाही [वि.] (सं.) विवाह न करने वाला।

अविवेक [संज्ञा पु.] (सं.) १—विवेक का अभाव। अविचार। २—अज्ञान। नादानी। ३—अन्याय। ४—न्यायदर्शन के मत से विशेष ज्ञान का अभाव। ५-सांख्यशास्त्र के मतानुसार मिथ्या ज्ञान।

अविवेकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अविवेचना। मूर्खता। नादानी। अज्ञानता।

अविवेकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अविवेकता'।

अविवेकी [वि.] (सं.) १—अज्ञानी। विवेकशून्य। तत्वज्ञान अनभिज्ञ। २—अविचारी ३-मूर्ख। मूढ़। ४—अन्यायी।

अविवेचक [वि.] (सं.) जिसे अपने कर्तव्य का ज्ञात हो।

अविवेचना [संज्ञा पु.] (सं.) अविवेकता। मूर्खता। नादानी।

अविशंका, अविशङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंका का अभाव। एतबार। भरोसा।

अविशुद्ध [वि.] (सं.) १—जो शुद्ध न हो। अशुद्ध। मलिन। अपवित्र। नापाक। ३—जो विशुद्ध न हो। जो खालिस न हो। मेल-माल का।

अविशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अशुद्धि। २—मलिनता। अपवित्रता ३—विकार।

अविशेष [वि.] (सं.) जिसमें किसी अन्य वस्तु से कोई विशेपता न हो। तुल्य। समान।
[संज्ञा पु.] (सं.) १--भेदक धर्म का अभाव। अभेद। २—ऐक्य। एका।

अविश्रांत, अविश्रान्त [वि.] (सं.) १—विराम-रहित। न रुकने वाला। २—न थकने वाला।

अविश्वभिन्न [वि.] (सं.) प्रत्येक वस्तु में व्याप्त न होने वाला।

अविश्वसनीय [वि.] (सं.) विश्वास करने के अयोग्य। जिस पर विश्वास न किया जासके।

अविश्वस्त [वि.] (सं.) संदिग्ध। विश्वास के अयोग्य।

अविश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वास का अभाव। संदेह। २—अनिश्चय। अप्रत्यय।
अविश्वास प्रस्ताव=विश्वास न होने का विषय। *अविश्वासपात्र*=विश्वास न किये जाने योग्य।

अविश्वासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिरप्रसूत गौ। बहुत दिन की ब्याई हुई गाय।

अविश्वासी [वि.] (सं.) १—विश्वास करने वाला। २—जिस पर विश्वास न किया जाय। अविश्वासपात्र।

अंविष [संज्ञा पु.] (सं.) १—राजा। २-सागर। ३—आकाश।
[वि.] (सं.) १—विषरहित। २—रक्षक। रखवाला।

अविषम [वि.] (सं.) १—सम। विषम न होने वाला। हमवार। २—संयुक्त। ३—सुगम। सीधा।

अविषय [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो विषय न हो। अगोचर। २—विषयशून्य।
[वि.] (सं.) १—अदृश्य। गुम। २— न होने वाला। इन्द्रियातीत।

अविषयीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) विना का काम। वृथा चेष्टा।

अविषा [संज्ञा स्त्री.] १—अतिविषा। २— के समान एक जड़ी जो हिमालय के पर मिलती है। निर्विषीतृण।

अविषाद [वि.] (सं.) प्रसन्नता। खुश।

अविस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) विस्तार का

अविस्तीर्ण [वि.] (सं.) संकुचित। रहित। सिकुड़ा हुआ।

अविस्तृत [वि.] (सं.) क्षुद्र। संलग्न। सटा हुआ।

अविहड़ [वि.] (हि.) विहड़ न होने अखंड। अनश्वर। अटूट।

अविहर [वि.] (हि.) देखो 'अविहड़'।

अविहित [वि.] (सं.) १—विरुद्ध। २— अयोग्य। ३—नीच। निकृष्ट।

अविह्वल [वि.] (सं.) १—व्याकुल न होने २—स्वस्थ।

अवीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शन का

अवीक्षित [वि.] (सं.) अदृष्ट। जो देखा हो।

अवीचि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण के अनुसार नरक।

अवीज [वि.] (सं.) १—वीजशून्य। जो न रखता हो। खराब। २—नामर्द। वीर्यरहित।

अवीजा [संज्ञा स्त्री.] किशमिश।

अवीर [वि.] (सं.) १—जो वीर न हो। बलवान न हों।

अवीरा [संज्ञा स्त्री.] १—वह स्त्री जिसके और पति न हो। २—स्वतंत्र स्त्री।

अवीर्य [वि.] (सं.) निर्बल। प्रभावरहित।

अवीह [वि.] (हि.) निडर। निर्भय।

अवुक [संज्ञा पु.] (सं.) छाग। बकरा।

अवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीविका का २—स्थिति का अभाव।

अवृद्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्धिहीन बिना ब्याज का रुपया।

अवेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १—अवलो देखना। २—जाँच-पड़ताल। देखभाल।

अवेक्षणीय [वि.] (सं.) १—दर्शनीय। योग्य। २—परीक्षा के योग्य।

अवेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—देखभाल। अवधान। गौर। ३—पर्यालोचना।

अवेक्षित [वि.] (सं.) १—देखभाल। दृष्ट। पर्यालोचित। परीक्षा किया हुआ।

अवेज* [संज्ञा पु.] (हि.) एवज । बदला । प्रतिकार ।

अवेद्य [वि.] (सं) १—अज्ञेय । न जानने वाला । २—अलभ्य । न मिलने वाला ।

[संज्ञा पु.] (सं.) बछड़ा । नादान बालक ।

अवेद्या [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] वह स्त्री जिससे विवाह नहीं कर सकते ।

अवेल [वि.] (सं.) १—सीमारहित । बेहद । २—निर्मर्याद । बेइज्जत ।

अवेश [संज्ञा पु.] (हि.) १—आवेश । जोश । २—चैतन्यता । अनुप्रवेश । ३—भूतावेश । भूत चढ़ना । भूत लगना ।

अवेष्ट [वि.] (सं.) खुला । जो बँधा न हो ।

अवेष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ द्वारा प्रायश्चित ।

अवैज्ञानिक [वि.] (सं.) विज्ञान के सिद्धान्तों के विपरीत ।

अवैतनिक [वि.] (सं.) विना वेतन या नौकरी लिये काम करने वाला । कार्य के बदले में वेतन न पाने वाला । आनरेरी ।

अवैदिक [वि.] (सं.) वेदविरुद्ध ।

अवैद्य [वि.] (सं.) जो वैद्यकशास्त्र अनभिज्ञ । जो वैद्य न हो ।

अवैध [वि.] (सं.) विधिविरुद्ध । निषिद्ध । अनुचित । अन्याय ।

अवैधकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १—विधिविरुद्ध । काय । न्याय के विपरीत । काम । २—अनुचित क्रम ।

अवैधकारानिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) विधि के विरुद्ध बंदीगृह में रोक रखना ।

अवैधदत्तकता [संज्ञा पु.] (सं.) १—अनुचित रूप से गोद लेने का कार्य । २-न्याय के विरुद्ध गोद लेना या सम्पत्ति का अधिकारी वनाना ।

अवैधनिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) अनुचित रूप से रोकने का भाव । २—विधिविरुद्ध गिरफ्तार करना ।

अवैधव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) नियमविरुद्ध आचरण ।

अवैधलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) अनुचित लाभ । अपलाभ । काला बाजारी ।

अवैधविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) अनुचित विरोध ।

अवैधसाक्ष्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निषिद्ध प्रमाण ।

अवैधसमूह [संज्ञा पु.] (सं.) विधि के विरुद्ध वनाई गई सभा या संघ ।

अवैधाचरण [संज्ञा पु.] (सं.) नियमविरुद्ध व्यवहार । न्यायविरुद्ध व्यवसाय । विधिविरुद्ध व्यवसाय । अभद्र व्यवहार ।

अवैधानुबंध [संज्ञा पु.] (सं.) १—विधिविरुद्ध सगाई । २ — न्यायविरुद्ध लिखा गया पट्टा ।

अवैमत्य [संज्ञा पु.] (सं.) मतभेद का अभाव । ऐकमत्य ।

[वि.] मतभेदरहित । सर्वसम्मत ।

अवैर [संज्ञा पु.] (सं.) वैर का अभाव । शत्रुता का न होना ।

अवैराग्य [संज्ञा पु.] (सं.) वैराग्य का अभाव । विषयासक्ति ।

अवोक्षण [संज्ञा पु.] (स.) तिरछा हाथ करके जल गिराना या छिड़कना ।

अव्यंग, अव्यङ्ग [वि.] (सं.) जो व्यंग अथवा टेढ़ा न हो ।

अव्यंगांग, अव्यङ्गाङ्ग [वि.] (सं.) जिसका कोई अंग टेढ़ा न हो । सुडौल ।

अव्यंगा, अव्यङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंच । केवांच । करैंच ।

अव्यंज, अव्यञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) विना सींग वाला पशु यथा सिंह, व्याघ्रादि ।

[वि.] (सं.) १—उपकरणरहित । २—कुलक्षण । ३—जिसमें कोई चिह्न न हो । ४—डूंडा । विना सींग का ।

अव्यंडा, अव्यण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवांच । कौंच । करैंच ।

अव्यक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १—विष्णु । २—कामदेव । ३—शिव । ४—प्रकृति । ५—ब्रह्म । ईश्वर ।

[वि.] (सं.) १—जो स्पष्ट न हो । अप्रत्यक्ष अगोचर । २—अज्ञात ।

अव्यक्तक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीजगणित की एक क्रिया ।

अव्यक्तगणित [संज्ञा पु.] (सं.) बीजगणित ।

अव्यक्तगति [वि.] (सं.) गुप्त रूप रखने वाला ।

अव्यक्तमूर्ति [वि.] (सं.) गुप्त रूप रखने वाला ।

अव्यक्तराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीज गणित में अज्ञात अंक अथवा अलक्षित परिमाण ।

अव्यक्तमूलप्रभव [संज्ञा पु.] (सं.) संसार जगत ।

अव्यक्तराग [संज्ञा. पु.] (सं.) १-अरुण । हलका लाल रंग । २—गौर । श्वेत ।

अव्यक्तलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । जिन महादेव की बातें मालूम न पड़े ।

अव्यक्तलिंग, लिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—वह रोग जो पहचाना न जाय । संन्यासी ।

अव्यक्तसाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) बीजगणित के अनुसार अव्यक्त राशि ।

अव्यक्तानुकरण [संज्ञा प.] शब्द का अस्फुट अनुकरण । पशु-पक्षियों की बोली अनुकरण या नकल ।

अव्यथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यथा का अभाव । १—हरीतगी । हड़ । सोंठ ।

अव्यपदेश्य [वि.] (सं.) जो कहा न जा सके । अनिर्वचनीय । १-न्याय अनुसार निर्विकल्प । निश्चित । २—अनिर्देश्य ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १—निर्विकल्प ज्ञान । ब्रह्म ।

अव्यवभिचारी [वि.] प्रतिकूल कारण से हटने वाला । जो किसी प्रकार व्यभिचारित न हो ।

[संज्ञा पु.] न्यायानुसार सध्य-साधक-व्याप्ति विशिष्ट हेतु ।

अव्यय [वि.] (सं.) १—जो विचार को प्राप्त न हो । सदा एक जैसा रहने वाला । अक्षय । २-नित्य । ३—परिणाम रहित । विकारशून्य ।

[संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह शब्द जिसका प्रयोग सब लिंगों, सब विभक्तियों तथा सब वचनों में समान रूप से हो । १—शिव । २—विष्णु । ३—परमेश्वर ।

अव्ययीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें अव्यय के साथ उत्तर पद समस्त होता है ।

अव्ययेत [संज्ञा पु.] (सं.) यमकानुप्रास के दो भेदों में से एक जिसमें यमकात्मक अक्षरों के वीच कोई और अक्षर वा पद न पड़े ।

अव्यर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो व्यर्थ न हो । फ़ल । २—सार्थक । ३—अमोघ ।

अव्यलीक [वि.] (सं.) १—प्रिय । २—सत्य । सच्चा ।

अव्यवधान [संज्ञा पु.] (सं.) १—व्यवधान या अंतर का अभाव । २—निकटता । लगाव । रोक का न होना । रुकावट का अभाव ।

अव्यवसाय [संज्ञा पु.] (सं.) १—निश्चय का अभाव २—उद्यम का अभाव । व्यवसाय का न होना ।

[वि.] (सं.) उद्यमरहित । आलसी । निश्चयरहित ।

अव्यवसायी [वि.] (सं.) १—उद्यमहीन । २—आलसी । पुरुषार्थ हीन । निखट्टू ।

अव्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—कर्तव्या कर्तव्य के नियम का उल्लंघन । बेकायदगी । २—शास्त्रों के विरुद्ध व्यवस्था । ३—स्थिति का अभाव । ४—गड़बड़ । बदइंतजामी ।

अव्यवस्थित [वि.] (सं.) १—शास्त्रादि मर्यादारहित । बेमर्याद । १—अस्थिर । चंचल । २—अनियतरूप । बे ठिकाने का ।

अव्यवहार्य्य [वि.] (सं.) १—जो व्यवहार के योग्य न हो । जो काम के योग्य न हो । व्यवहार में न लाया जाने वाला । २—पतित । पंक्तिच्युत ।

अव्यवहित [वि.] (सं.) व्यवधान रहित । सटा-हुआ ।

अव्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी आदत का न होना ।

अव्याकुल [वि.] (सं.) १—निराकुल । न घबड़ाने वाला । २—स्वच्छन्द । आजाद ।

अव्याकृत [वि.] (सं.) १—अप्रकाशित । गुप्त ।

२—कारणरूप । कारणस्थ ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १—अज्ञान । २—वेदांत के अनुसार अप्रकट बीजरूप जगत्कारण अज्ञान । ३—सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति ।

अव्यक्तधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध शास्त्रानुसार वह स्वभाव जिससे शुभ और अशुभ दो प्रकार के कर्म किये जा सकें ।

अव्याख्या [संज्ञा स्त्री] (सं) व्याख्या का अभाव वर्णन की स्वच्छता का अभाव ।

अव्याख्येय [वि.] (सं.) १-व्याख्या के अयोग्य । २—व्याख्या की आवश्यकता अनुभव न करने वाला ।

अव्याघात [वि.] (सं.) १—रोका न जाने वाला । २—समूचा । भरा हुआ । लगातार ।

अव्याज [संज्ञा पु.] (सं.) १—छल का अभाव । २—परिच्छिन्न । घिरा हुआ।

अव्यापकता [संज्ञा स्त्री] (सं.) व्यापकता का अभाव ।

अव्यापार [संज्ञा पु.] (सं.) उद्यम का अभाव । व्यापार का न होना ।

अव्यापारी [संज्ञा पु] (सं.) १—उद्यमरहित । बेकाम । २—जो काम न कर सकता हो ।

अव्यापी [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो व्यापक न हो । जो समाया न हो । २—परिच्छिन्न । घिरा हुआ । ३—छोटामोटा ।

अव्याप्त [वि.] (सं.) परिछिन्न । जो समाया न हो । व्याप्त न हो ।

अव्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याप्ति का अभाव ।

अव्याप्य [वि.] (सं.) व्याप्य न होने वाला । जिसमें घुस न सकें । २—जो प्रत्येक अवस्था में पृथक न हो सके । ३—अद्भुत । निराला । खास ।

अव्यावृत [वि.] (सं.) १—संयुक्त । लगा हुआ । २—जैसे का तैसा । ज्यों का त्यों ।

अव्याहत [वि.] (सं.) १—बेरोक । व्याघातरहित । २—सच्चा । ३-नवीन । नया । ४—हताश न होने वाला ।

अव्युच्छिन्न [वि.] (सं.) बेरोक । अव्याहत ।

अव्युत्पन्न [वि.] (सं.) १—अनभिज्ञ । अनुभव रहित । २—व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके ३—व्याकरण न जानने वाला ।

अव्रण [वि.] (सं.) १—बेदाग । २—क्षतरहित । बिना जखम ।

अव्रणशुक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्र रोग जिसमें पुतली पर श्वेतवर्ण की फूली सी पड़ जाती है ।

अव्रत [वि.] (सं) १—व्रतहीन । जिसका व्रत खंडित हो गया हो । २—व्रत धारण न करने वाला । ३—नियमरहित ।

[संज्ञा पु.] जैन मतानुसार व्रत का त्याग ।

अव्वल [वि.] (अ.) १—पहिला । प्रथम । आदि का । २—उत्तम । श्रेष्ठ ।

[संज्ञा पु.] (अ.) आदि । आरम्भ ।

अव्वलन [क्रि. वि.] (अ.) प्रथमतः । पहिलेपहल ।

अशंक, अशङ्क [वि.] (सं.) १—निर्भय । निःशंक । निर्द्वन्द । २—रक्षित । निश्चित ।

अशंका, अशङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—संशय का अभाव । २—भय का अभाव ।

अशंकित, अशङ्कित [वि.] (सं.) १—सन्देह रहित । २—निडर ।

अशंभु, अशम्भु [संज्ञा पु.] (सं.) अकल्याण । अमंगल । अशुभ । अहित ।

अशकुन [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा सगुन । बुरा लक्षण ।

अशक्त [वि.] (सं.) १—अयोग्य । अक्षम । असमर्थ । २—निर्बल ।

अशक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अयोग्यता । अक्षमता । निर्बलता । असमर्थता ।

अशक्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अशक्तता' ।

अशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—निर्बलता । कमजोरी । २—अयोग्यता । ३—नपुंसकता । नामर्दी । ४—सांख्य मत से बुद्धि और इन्द्रिय के विपर्यय या नाकाम हो जाने को भी अशक्ति कहते हैं ।

अशक्य [वि.] (सं.) १—असाध्य । असंभव २—अकरणीय । न किया जाने वाला ।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक काव्यालंकार जिसमें बाधा के कारण किसी कार्य का न होना दिखाया जाय ।

अशठ [वि.] (सं.) पुण्यात्मा । नेक । भला ।

अशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १—चन्द्रमा । २—मित्र । ३—युधिष्ठिर । ४—महात्मा गांधी ।

[वि.] (सं.) जिसे किसी से दुश्मनी न रहे ।

अशन [संज्ञा पु.] (सं.) १—भोजन । अहार । अन्न । २—भक्षण । खाना ।

अशना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन की इच्छा या आकांक्षा ।

अशनि [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र । बिजली ।

अशनीय [वि.] (सं.) भोजन के उपयुक्त । खाने योग्य ।

अशब्द [वि.] (सं.) शब्दहीन । बिना शब्द का ।

अशरण [वि.] (सं.) बिना शरण का । अनाथ ।

अशरफी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १—मोहर । सोने का सिक्का । २—एक प्रकार का पीला फूल ।

अशराफ [वि.] (अ.) भद्र । भलामानुस ।

अशरीर [वि.] (सं) देहरहित ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १—परमात्मा । २—कामदेव

अशरीरत्व [संज्ञा स्त्री] (सं) मोक्ष । निर्वाण ।

अशरीरी [वि] (सं) देहरहित । बिना शरीर का

अशर्म [संज्ञा पु.] (सं.) कष्ट । दुःख ।

[वि.] (सं.) १—दुखी । बेचैन ।

घरद्वार का । गृहरहित ।

अशांत, अशान्त [वि.] (सं.) जो शांत

अस्थिर । बेचैन ।

अशांति, अशान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

का अभाव । अस्थिरता ।

असंतोष ।

अशालीन [वि.] (सं.) धृष्टता । प्रगल्भ ।

अशालीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

ढिठाई ।

अशाश्वत [वि.] (सं.) १—पैदा और

वाला । २—अस्थिर ।

अशासावेदनीय [संज्ञा पु.] (सं.) जैन

नुसार कर्म विशेष, जिसके प्रादुर्भाव से

का अनुभव होता है ।

अशिक्षित [वि.] (सं.) १—अविनीत ।

अनाड़ी । मूर्ख । २—अनपढ़ । उजड्ड ।

शिक्षा प्राप्त न की हो ।

अशित [वि.] (सं.) खाया हुआ । भुक्त ।

अशित्र [संज्ञा पु.] (सं.) चोर ।

अशिथिल [वि.] (सं.] १—दृढ़ । २—

अशिर [संज्ञा पु.] (सं.) १—हीरा । २—

३—राक्षस । ४—सूर्य ।

अशिव [संज्ञा पु.] (सं.) अमंगल ।

अकल्याण ।

अशिशु [संज्ञा पु.] (सं.) १—जो बच्चा न

२—किशोर । ३—युवा ।

[वि.] (सं.) शिशुरहित । बिना संतान

अशिष्ट [वि.] (सं.) असाधु । अभद्र ।

उजड्ड । बेहूदा ।

अशिष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असाधुता ।

द्रता । ढिठाई । बेहूदगी ।

अशीत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीत का

गर्मी । उष्णता ।

अशीतल [वि.] (सं.) जो ठंडा न हो ।

अशील [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा स्वभाव ।

अशुचि [वि.] (सं.) १—अपवित्र

मैला ।

अशुचिता [संज्ञा स्त्री] १—अपवित्रता ।

गंदगी । मैलापन ।

अशुचित्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अशुचिता'

अशुद्ध [वि.] (सं) १—अपवित्र ।

नापाक । २—बिना साफ किया हुआ ।

शोधा हुआ । असंस्कृत ।

अशुद्धता [संज्ञा स्त्री] (सं) १—

मैलापन । गंदगी । २—गलती ।

अशुद्धि [संज्ञा स्त्री] (सं) १—अपवित्रता ।

गलती ।

अशुन [संज्ञा पु.] (हि.) अश्विनी नक्षत्र।

अशुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १—अमंगल। अकल्याण। अहित। २—पाप। अपराध।
[वि.] (सं.) जो शुभ न हो। अमङ्गलकारी। बुरा।

अशुभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) जो रंग सफेद न हो। कृष्ण। काला।

अशुष्क [वि.] (सं.) सरस। हरित। तर। ताजा। हरा।

अशून्य [वि.] (सं.) १—जो खाली न हो। २—पूर्ण। भरापूरा।

अशून्यशयनद्वितीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'अशून्यशयनव्रत'।

अशून्यशयनव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) श्रावण कृष्ण द्वितीया को होने वाला विष्णु का एक व्रत।

अशृत [वि.] (सं.) अपक्व। जो पका हुआ न हो।

अशेष [संज्ञा पु.] (सं.) १—शेषरहित। पूरा। समूचा। सब। २—समाप्त। ३—अनंत। अपार। बहुत। अधिक। अगणित।

अशेषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पूर्णता।

अशोक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष जिसकी पत्तियां आम की पत्तियों के समान लम्बी तथा लहरियादार होती हैं। २—पारा। ३—एक सम्राट का नाम।
[वि.] (सं.) शोकरहित। दुःखशून्य।

अशोकपुष्पमंजरी, मञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दंडक वृत्त का एक भेद। जिसमें २८ अक्षर होते हैं तथा लघु, गुरु का कोई नियम नहीं होता।

अशोकवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह बाग जिसमें अशोक वृक्ष लगे हों। २—शोक को दूर करने वाला सुरम्य बगीचा। ३—रावण का प्रसिद्ध उद्यान जिसमें सीता जी को रक्खा था।

अशोकषष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत्रशुक्ला अष्टमी। इस दिन पानी में अशोक के आठ पल्लव डालकर उसे पीने का विधान है।

अशौच [संज्ञा पु.] (सं.) अपवित्रता। अशुद्धता। वह अशुद्धि जो परिवार में जनन या मृत्यु होने पर हिन्दुओं में मानी जाती है।

अशौचत्व [संज्ञा पु.] (सं.) अशुद्धता। अपवित्रता।

अशौर्य [संज्ञा पु.] (सं.) वीरता का अभाव।
[वि.] (सं.) पराक्रमहीन।

अश्मंत, अश्मन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १—अशुभ। अमङ्गल। २—मरण। ३— चूल्हा। खेत।

अश्मंतक, अश्मन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) मूंज की सी एक घास जिसमें प्राचीनकाल में ऋषि लोग करधनी या मेखला बनाते थे। २—छाजन। आच्छादन। ढकना। दीवट। दीपाधार।

अश्म [संज्ञा पु.] (सं.) १—पर्वत। मेघ। बादल ३—पत्थर।

अश्मक [संज्ञा पु.] (सं.) भारत के एक दक्षिण प्रदेश का नाम जिसे आजकल ट्रावनकोर कहते हैं।

अश्मकर [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। सुवर्ण।

अश्मकुट्ट [संज्ञा पु. (सं.) पूर्वकाल के वानप्रस्थ जो सिलबट्टा या उखली आदि नहीं रखते, केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे।

अश्मगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) मरकत। पन्ना।

अश्मज [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत। २—मोमियाई। । ३—लोहा।

अश्मभेद [संज्ञा पु.] (सं.) पखानभेद नाम की जड़ी जो मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों में दी जाती है।

अश्मर [वि.] (सं.) पथरीला।

अश्मरी [संज्ञा स्त्री .] (सं.) एक मूत्र रोग। पथरी।

अश्मसार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहा।

अश्रद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रद्धा का अभाव।

अश्रद्धेय [वि.] (सं.) श्रद्धा के अयोग्य। घृणा के अयोग्य। बुरा।

अश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस

अश्रांत, अश्रान्त [वि.] (सं.)१— श्रमरहित। स्वस्थ। जो थकामादा न हो। २—विश्राम रहित। लगातार। निरन्तर।

अश्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १— घर का कोना। अस्त्र-शस्त्र की नोक।

अश्रु [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्रजल। अस्क। आंसू। आंख से निकलने वाला जल। काव्य के ६ सात्विक अनुभावों में यह भी आता है।

अश्रुकण [संज्ञा स्त्री.] आंसू की बूंद।

अश्रुत [वि.] (सं) १—जो सुना न गया हों। अज्ञात। २—वेदविरुद्ध।
[संज्ञा पु.] (सं.) १—श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २—द्युतमत् के पुत्र।

अश्रुतपूर्व [वि] (सं.) पहले सुना न जाने वाला।

अश्रुपात [संज्ञा पु.] (सं.) रुदन। रोना। आंसू गिरना।

अश्रुपूर्ण [वि.] (सं.) नेत्रजल से भरा हुआ। जो आंसू से भरा हो।

अश्रुमुख [वि.] (सं) रोता हुआ। रोनी सूरत वाला।
[संज्ञा पु.] (सं) वह नक्षत्र जिसपर मंगल का उदय होता है।

अश्रुलोचन [वि.] (सं) जिसकी आंख में आंसू भरे हों।

अश्रेयस [वि.] (सं) अकल्याण। अमंगल। २—हीन। बुरा।

अश्रेष्ठ [वि.] (सं.) अनुत्तम। कुत्सित। बुरा

अश्रौत [वि.] (सं.) श्रुति या वेदविरुद्ध।

अश्लाघनीय [वि.] (सं.) १—अप्रशंसनीय। निंद्य। २—नीच।

अश्लाघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्लाघा का अभाव। सौजन्यता का न होना।

अश्लाघ्य [वि.] (सं.) देखो 'अश्लाघनीय'।

अश्लिष्ट [वि.] (सं.) श्लेषरहित। असंगत। असंबद्ध।

अश्लील [वि.] (सं.) कुत्सित। फूहड़। भद्दा। लज्जाजनक।

अश्लीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूहड़पन। भद्दापन। गालीगलौज। लज्जा का उल्लंघन। काव्य का दोष विशेष।

अश्लेष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राशिचक्र के २७ नक्षत्रों में से नवां नक्षत्र।

अश्लेषाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) केतुग्रह।

अश्लीन [वि.] (सं.) जो पंगु या लंगड़ा न हो।

अश्व [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा। तुरंग। बाजी। घोटक।

अश्वकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १—घोड़े का कान। एक प्रकार का शालवृक्ष। ३—शाल-लता।

अश्वकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अस्तबल। तबेला। घोड़े के रहने का स्थान।

अश्वकुशल [वि.] (सं.) घोड़ा चलाने में निपुण।

अश्वक्रांता, अश्वक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] संगीत में एक मूर्च्छना।

अश्वखुर [संज्ञा पु.] (सं.) १—नख नामक सुगंधित द्रव्य। २—घोड़े का सुम या खुर।

अश्वगंधा, अश्वगन्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) असगंध।

अश्वगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—घोड़े की चाल। २—एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पांच भगण और एक गुरु होता है। २—चित्रकाव्य का एक चक्र जिसमें ६४ खाने होते हैं।

अश्वगोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वशाल। घुड़साल। अस्तबल।

अश्वग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) कश्यपऋषि की दनुनाम्नी पत्नी से उत्पन्न। २—हयग्रीव।

अश्वचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १—घोड़े के चरण-चिह्नों द्वारा शुभाशुभ का विचार। २—घोड़ों का झुंड।

अश्वचलनशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुड़दौड़ का मैदान।

अश्वचिकित्सक [संज्ञा पु.] (सं.) अश्ववैद्य। घोड़ों का डाक्टर। घोड़ों को दवा देने वाला हकीम।

अश्वजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) चना। जिसे खाकर घोड़ा जीवन प्राप्त करता है।

अश्वतर [संज्ञा पु.] (सं.) १—एक प्रकार का सर्प । २—खच्चर ।

अश्वदंष्ट्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) गोखरू ।

अश्वत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल ।

अश्वत्थामा [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम ।

अश्वदूत [संज्ञा पु.] (सं.) घुड़सवार । संदेशवाहक ।

अश्वपति [संज्ञा पु.] (सं.) १—घुड़सवार । २—रिसालेदार । ३—घोड़ों का स्वामी । ४—भरत जी के मामा । ५—कैकय देश के राजकुमारों की उपाधि ।

अश्वपाल [संज्ञा पु.] (सं.) साईस ।

अश्वबंध, अश्वबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) चित्रकाव्य के अनुसार एक छंद जिसमें घोड़ेका चित्र अङ्कित कर इस प्रकार लिखा जाता है कि उसके अक्षरों से अङ्ग प्रत्यङ्ग तथा साजों और आभूषणों के नाम निकल आवें ।

अश्वबंधन, अश्वबन्धन [संज्ञा पु.](सं.) घोड़ा बांधने की अगाड़ी-पिछाड़ी ।

अश्वबला [संज्ञा स्त्री] (सं.) मेथी ।

अश्ववाल [संज्ञा पु. [(सं.) कांस । काशतृण ।

अश्वमार [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का पेड़ ।

अश्वमुख [संज्ञा पु.] (सं) किन्नर ।

अश्वमेघ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक प्रधान यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बांधकर उसे समस्त भूमंडल पर घूमने के लिये छोड़ देते थे । घोड़े के साथ कुछ वीर पुरुष चलते थे । जब किसी प्रदेश के राजा को अश्वमेघ यज्ञ करने वाले का अधिपत्य स्वीकार न होता था तो वह उस घोड़े को बांध लेता तथा घोडे के साथ चलने वाले वीर सैनिकों से युद्ध करता था । वह वीर उस अश्व बांधने वाले को पराजित कर छुड़ाकर आगे बढ़ते थे । इस प्रकार घोड़ा जब समस्त भूमण्डल का चक्कर काटकर लौटता था तो उसे मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था । यह महान यज्ञ कोई प्रबल प्रतापी राजा ही करते थे ।

अश्वयान [संज्ञा पु.] (सं.) घोडे की सवारी ।

अश्वयुज [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विन या कुआर का महीना ।

अश्वरक्षक [संज्ञा पु.] साईस ।

अश्वरथ [संज्ञा पु.] घोड़ागाडी ।

अश्वरोधक [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर ।

अश्वल [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

अश्वललित [संज्ञा पु.] (सं.) अद्रितनया नामक वर्णवृत्त ।

अश्ववदन [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का प्राचीन नाम ।

अश्ववार [संज्ञा पु.] (सं.) घुड़सवार ।

अश्ववैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वचिकित्सक ।

अश्वशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुड़साल ।

अश्वसूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) वेद का वह सूक्त जिसमें घोड़े का वर्णन है ।

अश्वस्तन [वि.] (सं.) केवल एक दिन से सम्बन्ध रखने वाला । वर्तमान दिवस संबंधी । [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा गृहस्थ जिसमें केवल दिन का ही खाने का ठिकाना हो । कलके लिये कुछ न रखने वाला गृहस्थ ।

अश्वस्तनिक [वि.] (सं.) १—कल के लिये कुछ न रखने वाला । २—आगे के लिये संचय न करने वाला ।

अश्वारि [संज्ञा पु.] (सं.) भैंस । महिष ।

अश्वारूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े पर चढ़ा हुआ । घुड़सवार ।

अश्वारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की सवारी ।

अश्वारोही [वि.] (सं.) घोड़े का सवार ।

अश्वावतारी [संज्ञा पु.] (सं.) ३१ मात्राओं के छंदों की जाति ।

अश्विनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—घोड़ी । २—२७ नक्षत्रों में से प्रथम नक्षत्र ।

अश्विनीकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम्नी स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र । कहा जाता है कि वे देवताओं के वैद्य थे ।

अषाढ़ [संज्ञा प्रु.] (सं.) असाढ़ का महीना । अषाढ़ ।

अष्टंगी, अष्टङ्गी [वि.] देखो 'अष्टाङ्गी' ।

अष्ट [वि.](सं.) आठ की संख्या ।

अष्टक [संज्ञ पु.] (सं.) १—आठ वस्तुओं का

अष्टकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर्मुख ब्रह्मा ।

अष्टकमल [संज्ञा पु.] (सं.) हठयोग के अनुसार मूलाधार से ललाट तक ये आठ कमल माने गये हैं । मूलाधार, विशुद्ध, मणिपूरक, स्वाधिष्ठान, अनहत या अनहद । अज्ञाचक्र, सहस्रारचक्र तथा सुरतिमल ।

अष्टछाप [संज्ञा पु.] (सं.) आठ सर्वोत्तम पुष्टिमार्गी कवियों का वर्ग जिसे गोसाईं विट्ठलनाथ जी ने निश्चित किया था । यह आठ कवियों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—सूरदास, कुंभनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, छीत स्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास ।

अष्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—अष्टमी । २—अगहन, पूस, माह तथा फागुन के महिने के कृष्णपक्ष की अष्टमी । ३—अष्टमी के दिन होने वाला कृत्य । ४—अष्टका में कृत्य श्राद्ध ।

अष्टकुल [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण के अनुसार सर्पों के आठ कुल शेष, वासुकि, कंबल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक हैं ।

अष्टकुली [वि.] (सं.) सर्पों के आठ कुलों के किसी एक में उत्पन्न ।

अष्टकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वल्लभ कुलानु आठ कृष्ण-श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरा विट्ठलनाथ, गोकुलनाथ, द्वारकानाथ, मोहन और गोकुलचन्द्रमा ।

अष्टकोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-तन्त्र के अनु एक आठ कोणों वाला यंत्र । २—आठ को वाला क्षेत्र । ३—आठ कोणों वाला कुण्ड [वि.] (सं.) आठ कोने वाला । जिसमें आ कोने हों ।

अष्टगंध, अष्टगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आठ सु धित द्रव्यों का समूह । देखो 'गधाष्टक' ।

अष्टगुण [वि.] (सं.) आठगुना ।

अष्टतारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवती आठ मूर्ती । तारा, उग्रा, महोग्रा, वज्रा, सरस्वती, कामेश्वरी और चामुण्डा ।

अष्टताल [संज्ञा पु.] (सं.) आठ प्रकार के ताल आड़, दोज, ज्योति, चंद्रशेखर, गंजन, ताल, रूपल, समताल ।

अष्टदल [संज्ञा पु.] (सं.) आठ दल वाला कम [वि.] (सं.) १—आठ दल का । २—आ कोण का । ३—आठ पहल का ।

अष्टद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) हवन में प्रयुक्त हों वाले आठ द्रव्य-पीपल अश्वत्थ, गूलर, पा वट, तिल, सरसों, पावस, घी ।

अष्टधाती [वि] (सं.) १—आठ धातुओं के से बना हुआ । २—दृढ़ । मजबूत । ३- उत्पाती । उपद्रवी ।

अष्टधातु [संज्ञा पु.] (सं.) आठ प्रकार की धा सोना, चांदी, तांवा, रांगा, जसता, सी लोहा और पारा ।

अष्टपद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अष्टपाद'

अष्टपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गीत जि केवल आठ पद होते हैं । आठ पदों का स

अष्टपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १—शरभ । शार्दू २–मकड़ी । ३-टिड्डी ।

अष्टभाव [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार भाव स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंगा वैव कम्प, वैवर्ण्य, और अश्रुपात ।

अष्टभुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुर्गा ।

अष्टभुजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ भुजा वा देवी ।

अष्टम [वि.] (सं.)[पु. प्र.] आठवाँ ।

अष्टमंगल, अष्टमङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकार के मंगल पदार्थ–सिंह वृष, नाग, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक ।

अष्टमान [संज्ञा पु.] (सं.) आठ मूठी का परिमाण ।

अष्टमिका [संज्ञा पु.] (सं.) १—चार तोले एक परिमाण । २— आधे पल अथवा कर्ष का एक परिमाण ।

अष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि। आठ। २—आठवीं।

अष्टमूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १—शिव की आठ मूर्तियां—क्षिति, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, अर्क और चंद्र अथवा सर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव।

अष्टवर्ग [संज्ञा पु.] (सं) आठ प्रकार की औषधियों का समाहार—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २—ज्योतिष का गोचर विशेष।

अष्टसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ प्रकार की सिद्धि—अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और कामावायिता।

अष्टांग, अष्टाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १—आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण। २—योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि। ३—आठ अंग—जनु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का विधान है। ४—वह अर्ध जो सूर्य को दिया जाता है। इसमें जल, क्षीर, कुशाग्र, घी, मधु, दही, रक्तचंदन और करवीर यह आठ पदार्थ होते हैं।

[वि.] (सं.) १—आठ अवयव वाला। २—अठपहला।

अष्टांगी, अष्टाङ्गी [वि.] (सं.) आठ अंग वाला।

अष्टाकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १—आठ मिट्टी के पात्रों या खप्परों में पकाया हुआ पुरोडाश। २—वह यज्ञ जिसमें अष्टाकपाल पुरोडाश काम में लाया जाय।

अष्टाक्षरी [संज्ञा पु.] (सं.) आठ अक्षर वाला मन्त्र।

[वि.] (सं.) आठ अक्षरों का।

अष्टाध्यायी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं.

अष्टापद [संज्ञा पु.] (सं.) १—सोना। २—शरभ। ३—मकड़ी। ४—कृमि। ५—कैलाश। ६—धतूरा।

अष्टावक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

अष्टाश्रि [वि.] (सं.) आठ कोने वाला। अठकोना।

[संज्ञा पु.] (सं.) आठ कोने वाला घर।

अष्टाह [वि] (सं) आठ दिन ठहरने वाला।

अष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक सोलह अक्षर की वृत्ति

अष्टी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दीपक राग की एक रागनी।

अष्टीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—मूत्राशय संबंधी एक रोग। २—पत्थर की गोली।

असंक [वि.] (हिं.) देखो 'अशंक'।

असंक्रांतिमास, असंक्रान्तिमास [संज्ञा पु.] (सं.) बिना संक्रांति का महीना। मलमास।

असंख [वि.] (हि.) देखो 'असंख्य'।

असंख्य, असङ्ख्य [वि.] (सं.) अनगिनत। अगणनीय। अत्याधिक। बेशुमार।

असंख्यता, असङ्ख्यता [संज्ञा स्त्री.] अमितता। अनगिनत होने का भाव।

असंख्यात, असङ्ख्यात [वि.] (सं.) अनेक। बहुसंख्य। बहुत।

असंग, असङ्ग [वि.] (सं.) १-अकेला। एकाकी। साथ के बिना। २—किसी से संबंध न रखने वाला। न्यारा। ३—जुदा। पृथक। अलग।

असंगत, असङ्गत [वि.] (सं.) १—असंबद्ध। अयुक्त। बेठीक। अनुचित।

असंगति, असङ्गति [वि.] (सं.) १—असंबंध। बेसिलसिलापन। २—अनुपयुक्तता। ३—एक काव्यालंकार जिसमें किसी नियत काल में होने वाले काय का किसी अन्य समय में होना दिखाया जाय।

असंत [वि.] (हि.) बुरा। दुष्ट। दुर्जन। खल।

असंतुष्ट, असन्तुष्ट [वि.] (सं.) १—जो संतुष्ट न हो। २—अतृप्त। ३—अप्रसन्न।

असंतोष, असन्तोष [संज्ञा पु.] (सं.) १—संतोष का अभाव। अधैर्य। २—अतृप्ति। ३—अप्रसन्नता।

असंतोषी, असन्तोषी [वि.] (सं.) संतोष न करने वाला। जो तृप्त न हो।

असंप्रज्ञातसमाधि [संज्ञा स्त्री] (सं.) योग की दो समाधियों में से एक।

असंपत्ति, असम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन का अभाव।

असंपन्न, असम्पन्न [वि.] (सं.) निर्धन। कंगाल। सम्पत्तिरहित।

असंपर्क, असम्पर्क [संज्ञा पु.] (सं.) संबंध का अभाव। जुदाई।

असंपूर्ण, असम्पूर्ण [वि.] (सं.) अपूर्ण। अधूरा

असंप्राप्य, असम्प्राप्य [वि.] (सं.) बिना पहुँच का।

असंबद्ध, असम्बद्ध [वि.] (सं.) १—संबंधरहित। जो मेल में न हो। २—पृथक। अलग। ३—बेमेल। बिना सिरपैर का। अंडबंड।

असंबाधा, असम्बाधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (म+त+न+स+२ गुरु) SSS, SSI, III, IIS, SS होते हैं।

असंभव, असम्भव [वि.] (सं.) जो संभव न हो। अनहोना। जो न हो सके। असंगत।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें यह प्रदर्शित किया जाय कि जो बात हो गई है उसका होना असंभव था।

असंभार, असम्भार [वि] (सं.) १—जो संभालने योग्य न हो सके। २—अपार।

असंभावना, असम्भावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संभावना का अभाव। अभवितव्यता। अनहोनापन।

असंभावनीय, असम्भावनीय [वि.] (सं.) असंगत। ऊटपटांग। अंडबंड।

असंभावित, असम्भावित [वि.] (सं.) जिसके होने की संभावना न रही हो। अनुमानविरुद्ध।

असंभाव्य, असम्भाव्य [वि.] (सं.) जिसकी संभावना न हो। अनहोना।

असंभाष्य असम्भाष्य [वि.] (सं.) १—न कहे जाने योग्य। २—न उच्चारण करने योग्य। ३—जिससे बातचीत करना उचित न हो।

[संज्ञा पु.] (सं) बुरा वचन। दुष्ट वचन।

असंयत [वि.] (सं.) संयतरहित। क्रमशून्य जो नियमबद्ध न हो।

असंयुक्त [वि.] (सं.) जो मिला हुआ न हो। वियुक्त।

असंयोग [संज्ञा पु.] (सं.) संयोग का अभाव। मेल का न होना।

असंरुद्ध [वि.] (सं.) बिना रोक का। बिना घिरा हुआ।

असंलग्न [वि.] (सं.) असम्बद्ध। पृथक। अलग।

असंवृत [वि.] (सं.) जो ढका हुआ न हो। खुला हुआ।

असंशय [संज्ञा पु.] (सं.) सन्देह का अभाव।

[अव्य.] निःसंदेह।

असंश्लिष्ट [वि.] (सं.) असंगत। जुदा। विभक्त

असंसक्त [वि.] (सं.) पृथक। विभक्त।

असंसवित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—लगाव न होना। निर्लिप्तता। २—विरक्ति।

असंसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) संसर्ग का अभाव। साथ का न होना।

असंसारी [वि.] (सं.) १—अलौकिक। अद्भुत। २—संसार से अलग। विरक्त।

असंसिद्ध [वि.] (सं.) जो पूरा न हो। अपूर्ण। अधूरा।

असंसृष्ट [वि.] (सं.] संसर्गरहित। जुदा। अलग।

असंस्कृत [वि.] (सं.) १—अपरिमार्जित। २—जिसका संस्कार न हुआ हो।

असंस्तुत [वि.] (सं.) स्तुति न किया हुआ। अपरिचित।

असंस्थित [वि.] (सं) चंचल। चुलबुला।

असंहत [वि.] (सं.) असंलग्न। एकत्रित न होने वाला।

अस [सर्व.] (हि.) ऐसा। यह। [वि.] १—इस प्रकार का। २—तुल्य। समान।

असकताना [क्रि. अ.] (हि) आलस्य में पड़ना। आलस्य अनुभव करना।

असकन्ना [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ करने वाला औजार जो रेती के समान खुरदरा होता है।

असकल [वि.] (सं.) असम्पूर्ण। अधूरा।

असकृत [अव्य.] (सं.) अनेक बार। बारंबार।

असक्त [वि.] (हि.) शक्तिहीन। दुर्बल। निर्बल।

असगंध [संज्ञा पु.] (हि.) अश्वगंधा। एक सीधी झाड़ी जो गर्म प्रदेशों में होती है। हयगंधा।

असगोत्र [वि.] (सं.) भिन्न गोत्र का। अन्य गोत्र वाला।

असगुन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अशकुन'।

असज्जन [वि.] (सं.) दुष्ट। दुर्जन। खल। अशिष्ट।

असढिया [सज्ञा पु.] (हि.) विभिन्न प्रकार की चित्तियों वाला एक प्रकार का लम्बा सांप। इसमें विष बहुत कम होता है।

असण [संज्ञा पु.] (हि.) गड्ढा।

असती [वि] (सं.) जो सती न हो। कुलटा। पुंश्चली।

असत् [वि] (सं.) १—असत्य। मिथ्या। सत्ताहीन। अस्तित्वहीन। २—बुरा। ३—खोटा। असाधु। असज्जन।

असत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) अपमान। निरादर।

असत्कृत [वि] (सं.) अनादृत। अपमानित।

असत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १--सत्ता का अभाव। अविद्यमानता। अनस्तित्व। २—असाधुता। असज्जनता।

असत्प्रतिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रनिषिद्ध-दान

असत्प्रतिग्राही [वि] (सं.) निषिद्ध दान लेने वाला।

असत्व [संज्ञा. पु.] (सं.) जो द्रव्य न हो। सत्व का अभाव।

असत्य [वि.] (सं.) मिथ्या। झूठ।

असत्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिथ्यात्व। झुठाई

असत्यवाद [संज्ञा पु.] (सं.) मिथ्यावाद। झूठ बोलना।

असत्यवादी [वि.] (सं.) मिथ्यावाद। झूठा। झूठ बोलने वाला।

असत्संग [वि.] (सं.) बुरी संगत में पड़ा हुआ।

असथन [संज्ञा पु.] (हि.) जायफल।

असदाचार [संज्ञा पु.] (सं.) सदाचार के विरुद्ध आचरण। बदचलनी।

असद्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा सिद्धांत जो सत्ता को कोई वस्तु ही नहीं मानता।

असदृश [वि.] (सं.) असमान। बेमेल।

असद्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट अभिप्राय। बुरा मतलब।

असद्व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट व्यवहार। दुर्व्यवहार।

असन* [संज्ञा पु.] (हि.) भोजन। अहार।

असना [संज्ञा पु.] (सं.) शाल के समान एक वृक्ष, जिसकी लकड़ी मकान बनाने के काम आती है।

असनान [संज्ञा पु.] (हि) स्नान। नहाना।

असनायी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आशनाई। प्रेम। मोहब्बत।

असन्नाध [वि.] (सं.) १—अतत्पर। जो तैयार या मुस्तैद न हो। २—घमंडी। अहंकारी।

असन्निहित [वि.] (सं.) दूर का। जो पास न हो।

असन्मान [संज्ञा पु.] (सं.) अपमान। ढिठाई। असत्कार।

असफल [वि.] (हिं.) देखो 'विफल'।

असबर्ग [संज्ञा पु.] (फा.) खोरासन की लम्बी घास जिसके फूलों से रेशम रंगी जाती है।

असबाब [संज्ञा पु.] (अ.) वस्तु। चीज। सामान। अटाला। प्रयोजनीय पदार्थ।

असभई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अशिष्टता। बेहूदगी

असभ्य [वि.] (सं.) अशिष्ट। गँवार। उजड्ड।

असभ्यता [संज्ञा पु.] (सं.) अशिष्टता। गँवारपन

असमंजस, असमञ्जस [संज्ञा पु.] (सं.) १—दुविधा। आगापीछा। फेरफार। २—अड़चन। अंडस। कठिनाई। ३—सूर्यवंशी राजा सगर का बड़ा बेटा।

असमंत, असमन्त [संज्ञा पु.] (सं.) चूल्हा।

असम [वि.] (सं.) १—अतुल्य। जो बराबर न हो। असदृश। २—विषम। ताक। ३—ऊंचानीचा। ऊबड़खाबड़। ४—एक काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलन। असंभव प्रदर्शित किया जाय।

असमक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अप्रत्यक्ष। असम्मुख। [वि.] देख न पड़ने वाला।

असमग्र [वि.] (सं.) असम्पूर्ण। अधूरा।

असमनेत्र [वि.] (सं.) जिसके नेत्र सम न हों। काणा। भेंडा।
[संज्ञा पु.] (सं.) त्रिनेत्र। शिव।

असमय [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा समय। विपत्ति का समय।
[क्रि. वि.] कुअवसर। बेवक्त। बेमौका।

असमर्थ [वि.] (सं.) १—अयोग्य। १—अशक्त। सामर्थ्यहीन। दुर्बल।

असमर्थता [संज्ञा पु.] (सं.) १—सामर्थ्य का अभाव। २—अयोग्यता। ३—दुर्बलता।

असमर्थता-निवृत्तवेतन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असामर्थ्य उत्तर वेतन। पेन्शन। देखो 'अनुवृत्ति'।

असमबाण [संज्ञा पु.] (सं) पंचबाण। कामदेव।

असमवायिकारण [संज्ञा पु.] (सं.) अकस्मिकहेतु। न्यायदर्शनानुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो।

असमशर [संज्ञा पु.] (सं) कामदेव।

असम्मत [वि] (सं.) १—राजी न होने विरुद्ध। जिस पर किसी की राय न हो

असम्मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्मति होना। विरुद्ध मत या राज्य।

असम्मर [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार।

असमान [वि.] (सं.) जो बराबर न हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) आकाश। आसमान

असमाप्त [वि.] (सं.) अपूर्ण। अधूरा।

असमाप्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपूर्णता। पन।

असमावृत्त [वि.] (सं.) जिसका समावर्त्तन न हुआ हो।

असमाहित [वि.] (सं.) चित्त की एकाग्र रहित। अस्थिरचित्त। चंचल।

असमीक्ष्य [अव्य.] (सं.) बिना सोचे विचारे

असमीचीन [वि.] (सं.) अनुचित। अयुक्त।

असमूचा [वि.] (हि.) १—अधूरा। २—अस

असमृद्ध [वि.] (सं.) निर्धन। गरीब।

असयाना [वि.] (हि.) १—भोलाभाला। साधा। २—अनाड़ी। मूर्ख। गंवार।

असर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रभाव। दबाव। दिन का चौथा पहर।

असरन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अशरण'।

असरा [सज्ञा पु.] (हिं.) आसाम राज्य के में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का चावल।

असरार [क्रि. वि] (हिं.) निरंतर। लगा बराबर।

असल [वि.] (अ.) १—सच्चा। खरा। उच्च। ३—शुद्ध। खालिस। [संज्ञा पु.] जड़। मूल। तत्व। बुनियाद। २—मूल

असलियत [संज्ञा स्त्री] (अ.) १—तथ्य। वा विकता। २—जड़। मूल। बुनियाद। मूलतत्व। तत्व। सार। निचोड़।

असली [वि] (हि.) असल। मुख्य। सच्चा विशुद्ध।

असलील [वि.] (हि.) देखो 'अश्लील'

असलोक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्लोक'।

असवर्ण [वि.] (सं) विभिन्न वर्ण का। असजाति

असवार [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सवार'।

असवारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सवारी'।

असह [वि.] (सं.) न सहने योग्य। असह्य।
[संज्ञा पु.] (हि.) हृदय।

असहन [वि.] (सं.) जो सहन न करे। असहिष्णु। [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु। वैरी।

असहनशील [वि.] (सं.) १—असहिष्णु। चिड़चिड़ा। तुनक मिजाज।

असहनशीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहन

की शक्ति का अभाव। असहिष्णुता। तुनकमिजाजी।

असहनीय [वि.] (सं.) १—असह्य। न सहने योग। दुःसह।

असहयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १—योग न देने का भाव। २—मिल कर कार्य न करना। ३—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का प्रचारित आंदोलन जो देश में जनता का असंतोष प्रगट करने के लिये किया जाता है।

असहाय [वि.] (सं.) १—निःसहाय। निराश्रय। निरवलंब। २—अनाथ। लाचार।

असहायता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निराश्रयता। निरवलंवता।

असहायत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'असहायता'।

असहित [वि.] (सं.) विना साथ वाला। निःसंग

असहिष्णु [वि.] (सं.) १—असहनशील। २—चिड़चिड़ा।

असहिष्णुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—असहनशीलता। २—चिड़चिड़ापन।

असही [वि.] (हि.) दूसरे का उत्कर्ष देखकर जलने वाला। ईर्ष्यालु।

असह्य [वि.] (सं.) सहन न करने योग्य। असहनीय।

असाच [वि.] (हि.) असत्य। भूठ। मृषा।

असा [संज्ञा पु.] (अ.) १—मोटा डंडा। सोटा। २—चांदी या सोने से मढ़ा हुआ सोटा जिसे राजा-महाराजाओं के या बरात आदि के आगे सजावट के निमित्त लेकर चलते हैं। देखो 'आसा'।

असांसद [वि.] (सं.) संसद की मर्यादा के अयोग्य।

असाई [वि.] (हि.) अशिष्ट। असभ्य।

असाक्षात् [अव्य.] (सं.) परोक्ष में।

असाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्र के अनुसार जिसकी गवाही या साक्षी मान्य न हो। साक्षी होने का अनधिकारी।

असाढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष का चौथा महीना। अषाढ़मास।

असाढ़ा [संज्ञा पु.] (सं.) १—महीन बटे हुए रेशम का तागा। २—एक प्रकार की खांड। कच्ची चीनी।

असाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अषाढ़ में बोई जाने वाली फसल। खरीफ। २—आषाढ़ीय पूर्णिमा [वि.] (सं.) आषाढ़ का।

असाढ़ [संज्ञा पु.] (हि.) मोटी चट्टान। मोटा पत्थर।

असात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृतिविरुद्ध पदार्थ।

असाधारण [वि.] (सं.) असामान्य। विशेष। जो साधारण न हो।

असाधु [वि.] (सं.) १—दुष्ट। बुरा। दुर्जन। खल। २—अशिष्ट।

असाधुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्जनता। अशिष्टता। खोटाई।

असाधुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'असाधुता'।

असाध्य [वि.] (सं.) १—कठिन। दुष्कर। २—जिसके रोगमुक्त होने की संभावना न हो।

असानी [संज्ञा पु.] (अ.) दूसरी व्यवस्था होने तक दिवालिए की संपत्ति का स्वत्व न्यायालय द्वारा दिया जाने वाला व्यक्ति।

असान्निध्य [संज्ञा पु.] (सं.) अंतर। दूरी।

असामर्थ्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—शक्ति का अभाव। अक्षमता। २—निर्बलता।

असामयिक [वि.] (सं.) असमयोचित। जो नियत समय से पहले या पीछे हो।

असामान्य [वि.] (सं.) असाधारण। विशेष। गैरमामूली।

असामी [संज्ञा पु.] (हि.) १—व्यक्ति। प्राणी। २—वह व्यक्ति जिससे किसी प्रकार का लेनदेन हो। ३—जमींदार से लगान पर खेत जोतने के लिये लेने वाला व्यक्ति। काश्तकार। ४—देनदार। मुद्दालेह। ५—अपराधी। ६—मित्र। सुहृद। ७—वह व्यक्ति जिससे किसी प्रकार का मतलब गांठना हो।
आसामी बनाना=अपने मतलब पर चढ़ाना।
[संज्ञा स्त्री.] १—परकीया या वेश्या। रखेली। २—नौकरी। जगह।

असाम्प्रतम् [अव्य.] (सं.) अयोग्य। अनुचित।

असार [वि.] (सं.) १—साररहित। तत्वशून्य। निःसार। २—खाली। शून्य। ३—तुच्छ।
[संज्ञा पु.] १—रेंड का पेड़। २—अगरु। चंदन।

असारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निःसारता। तत्व शून्यता। २—तुच्छता। ३—मिथ्यात्त्व।

असालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १—कुलीनता। २—सचाई। तत्व।

असालतन [क्रि. वि.] (अ.) स्वयं। खुद।

असाला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हालों। चंसुर।

असावधान [वि.] (सं.) जो सतर्क न हो। जो सावधान न हो। जो सचेतन न हो।

असावधानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेपरवाही। लापरवाही।

असावधानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेपरवाही। बेखबरी।

असावरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छत्तीस रागनियों के अंतर्गत एक प्रधान रागनी। यह प्रातःकाल सात से नौ बजे तक गाई जाती है।

असासा [संज्ञा पु.] (अ.) माल। असबाब।

असासुलबैत [संज्ञा पु.] (अ) घर का असबाब। घर का अटाला।

असाहस [संज्ञा पु.] (सं.) साहस का अभाव। हिम्मत का न होना।

असाहसिक [वि.] (सं.) साहस न रखने वाला। जो हिम्मती न हो। शान्त।

असाहाय्य [वि.] (सं.) सहायतारहित। बिन मदद का।

असि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १—तलवार। खड्ग। एक नदी का नाम।

असिक [संज्ञा पु.] (सं.) १—होंठ और ठुड्डी के मध्य का भाग २—एक देश का नाम।

असिजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) खड्ग से जीविका कमाने वाला व्यक्ति।

असित [वि.] (सं.) १—जो श्वेत न हो। काला। २-दुष्ट। बुरा। ३-कुटिल।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा भरत का पुत्र। २-एक ऋषि का नाम। ३-शनि। ४-पिंगला नामक की एक नाड़ी।

असितांग, असिताङ्ग [वि.] (सं.) कृष्णवर्ण। काले रंग का।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि का नाम।

असिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना नदी।

असितानन [संज्ञा पु.] (सं.) लंगूर।

असिद्ध [वि.] (सं.) १-जो सिद्ध न हो। २-बिना पका। कच्चा। ३-अपूर्ण। अधूरा। ४-निष्फल। व्यर्थ। ५-अप्रमाणित।

असिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अप्राप्ति। अनिष्पत्ति। २-कचाई। अपक्वता। ३-अपूर्णता।

असिधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तलवार की धार।

असिधावक [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार साफ करने वाला व्यक्ति। सिकलीगर।

असिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईख का वृक्ष। २-तलवार की म्यान। ३-एक नरक।

असिपत्रवन [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषों के अनुसार एक नरक।

असिपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मगर। २-पूंछ मारने वाली एक मछली। सकुची मछली।

असिस्टेंट [वि.] (अ.) सहायक।

असी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काशी में गंगा से मिलने वाली एक नदी जो अब केवल नाले के समान रह गई है।

असीम [वि.] (सं.) १—सीमारहित। बेहद। २—अपरिमित। अनंत। ३—अपार। अगाध।

असील [वि.] (हि.) देखो 'असल'।

असीस [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'आशिष'।

असीसना [क्रि. स.] (सं.) आशीर्वाद देना। दुआ देना।

असुंदर, असुन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यंग जिसकी अपेक्षा वाच्यार्थ मे अधिक चमत्कार हो। गुणीभूत व्यंग का एक भेद। [वि] (सं) कुरूप। बदसूरत। २—अनुचित।

असु [संज्ञा पु.] (सं.) १—प्राणवायु। २—चित्त

असुकर [वि.] (सं.) दुष्कर। कठिन।

असुख [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख। कष्ट।

असुखी [वि.] (सं.) दुःखी। सुखरहित।

असुग❀ [वि.] (हि.) देखो 'अशुक्र।

असुगम [वि.] (सं.) दुर्गम। दुर्बोध। कठिन। २ क्लिष्ट।

असुचि [वि.] (हि.) देखो 'असुचि'।

असुपाद [संज्ञा पु.](सं.) प्राणियों द्वारा एक सांस के अनन्तर अन्य सांस लेने के समकाय चतुर्थांश

असुप्त [वि.] (सं.) जागृत। जागता हुआ। अनिद्रा।

असुभ [वि.] (हि.) देखो 'अशुभ'।

असुविधा [संज्ञा स्त्री] १—कठिनाई। अड़चन। २—तकलीफ। दिक्कत।

असुविधा [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो 'असुविधा'।

अशुभ [वि.] (हि·) देखो 'अशुभ'।

असुर [संज्ञा पु] (सं.) १—दैत्य। राक्षस। २—रात्रि। ३—पृथ्वी। सूर्य। ५—नीचवृत्ति का पुरुष। ६—बादल। ७—राहु ८—वैद्यक शास्त्रानुसार एक प्रकार का प्रमाद रोग जिसमें पसीना नहीं आता और रोगी अंडबंड बकता रहता है।

असुरकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) जैन-शास्त्रानुसार एक त्रिभुवन पति देवता।

असुरक्ष्य [वि] (सं.) कठिनता से बचाने योग्य।

असुरगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्राचार्य।

असुरमाया [संज्ञा पु.] (सं.) भूतों का जादू।

असुररिपु [संज्ञा पु.] (सं.) बिष्णु।

असुरसेन [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस। पौराणिकथनानुसार कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा है।

असुराई [संज्ञा स्त्री.] (हि) खोटाई। शरारत।

असुराधिप [संज्ञा पु] (सं.) असुरों का अध्यक्ष।

असुरारि [संज्ञा पु.] (सं) १--विष्णु। २—देवता।

असुलभ [वि.] (सं.) सरलता से न मिलने वाला।

असुहृद [वि] (सं) शत्रु। रिपु।

असूक्ष्म [संज्ञा पु] (सं) स्थूल। मोटा।

असूझ [वि.] (हि.) १—अँधेरा। अंधकारमय। २—अपार। जिसका आरपार न दीख पड़े। अत्याधिक। बहुत विस्तृत। ३—जिसके करने का उपाय न सूझे। विकट। कठिन।

असूत [वि.] (हि.) विरुद्ध। असंबद्ध। प्रतिकूल।

असूया [संज्ञा स्त्री.] (सं) १—दूसरे के गुण में दोष बताना। २—इसके अंतर्गत एक संचारीभाव। ३—ईर्ष्या। शत्रुता। डाह।

असूर्यपश्या [वि] (सं) [स्त्री प्र.] १—परदे में रहने वाली। जिसे सूर्य भी न देखे। २—साध्वी स्त्री।

असूल [संज्ञा पु.] देखो 'उसूल' और 'वसूल'।

असृक् [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त। रुधिर। लहू।

असृग्धारा [संज्ञा स्त्री] (सं.) रक्त का प्रवाह।

असेग❀ [वि.] (हि.) असह्य। न सहने योग्य। कठिन।

असेचन [वि.] (सं.) सींचा न जाने वाला।

असेक्षित [वि.] (सं.) अनपेक्षित। भूला हुआ।

असेव्य [वि.] (सं.) १—सेवा न करने योग्य। २—काम में न आने योग्य।

असेसर [संज्ञा पु.] (अं.) वह व्यक्ति जो न्यायाधीश को अपराधी के संबंध में अपनी संमति देने के लिये नियुक्त किया जाता है।

असैना [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'असना'।

असैनिक [वि.] (सं.) १—नागरिक। २- सभ्य। ३-दीवानी।

असैनिक-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरिक अधिकार।

असैला [वि.] (हि.) १-रीति-नीति के विपरीत कार्य करने वाला। कुमार्गी। २-शैलीविरुद्ध। अनुचित।

असो, असों [क्रि. वि.](हि.) इसवर्ष। इससाल

असोक [वि.] (हि.) देखो 'अशोक'।

असोकी [वि.] (हि.) शोकरहित। शोक न करने वाला।

असोच [वि.] (हि.) १-शोच या चिन्ता न करने करने वाला। २-निश्चिन्त। बेफिक्र।

असोज❀ [संज्ञा पु.] (हि.) आश्विन। क्वार का महीना।

असोस [वि.] (हि.) न सूखने वाला।

असोसियेशन [संज्ञा पु.] (अ.) सीमित। समाज। परिषद्। संघ।

असौध❀ [संज्ञा पु.] (हि.) दुर्गन्ध। बदबू।

असौच [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अशौच'।

असौदर्य, असौन्दर्य [संज्ञा पु.] (सं.) सौन्दर्य का अभाव। सुन्दरता का न होना। कुरूपता

असौम्य [वि.] (सं.) १-अप्रिय। २-भद्दा। बदसूरत।

अस्क [संज्ञा पु.] (हि) नाकमें पहिनने का बुलाक

अस्खलित [वि.] (सं.) न फिसलने वाला। स्थायी। टिकाऊ।

अस्तंगत [वि.] (सं.) १-अस्त होने वाला। नष्ट। २-अवनत। हीन।

अस्त [वि.] (सं) १-छिपा हुआ। तिरोहित। २-दिखाई न पड़ने वाला। अदृश्य। डूबा हुआ। ३-नष्ट। ध्वस्त। [संज्ञा पु.] (सं) लोप। अदर्शन। तिरोधान।

अस्तकोप [वि.] (सं) क्रोध करके ठंडा पड़ने

अस्तगत [वि.] (सं) अदृश्य। डूबा हुआ।

अस्तन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'स्तन'।

अस्तबल [संज्ञा पु.] (अ.) अश्वशाला। घुड़साल।

अस्तमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी।

अस्तमन [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त होना। तिरो २-सूर्यादिग्रह का अस्त होना।

अस्तमननक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह नक्षत्र पर कोई ग्रह अस्त हो वह नक्षत्र का अस्तमन नक्षत्र होता है।

अस्तमनवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सायं संध्या का समय।

अस्तमित [वि.] (सं.) १-तिरोहित। छिपा २-नष्ट। मृत।

अस्तर [संज्ञा पु.] (फा.) १-नीचे की पल्ला। ऊपर वाले के नीचे का पल्ला। दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ऊपर रखकर सिले हुए चमड़ों में नीचे चमड़ा। ४-चंदन का वह तेल विभिन्न सुगन्धों का आरोप करके इत्र किया जाता है। जमीन। ५-बारीक नीचे लगाकर पहिना जाने वाला अंतरौटा। अंतरपट। ६-नीचे के रंग के चढ़ाया जाने वाला रंग।

अस्तरकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दीवारों चूने की लिपाई। सफेदी कलई। २-गच पन्ना लगाना। पलस्तर।

अस्तव्यस्त [वि.] (सं.) अव्यवस्थित। पुलटा। छिन्नभिन्न।

अस्ताचल [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिमाचल जिसकी ओट में सूर्य छिपता है।

अस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सत्ता। मानता। ३-जरासंध की कन्या।

अस्तिकाय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमत के वह पांच सिद्ध पदार्थ जो प्रदेशों या के अनुसार कहे जाते हैं।

अस्तिकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में वह जिसका उदय पश्चिम में हो और जो में फैला हो।

अस्तित्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्ता का विद्यमानता। मौजूदगी। २-सत्ता। भाव।

अस्तीन [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'आस्तीन'।

अस्तु [अव्य.] (सं.) १-जो हो। चाहे जो ३-खैर। अच्छा। भला।

अस्तुति [संज्ञा पु] (सं) अपकीर्ति। बुराई। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) प्रशंसा। स्तुति।

अस्तुरा [संज्ञा पु.] (सं.) बाल उतारने का उस्तरा।

अस्तेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोरी न करना। साहूकारी। २-योग के आठ अंगों में से तीसरा। जैनमत से अदत्त दान का त्याग। चोरी न करने का व्रत।

अस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंककर चलाने का हथियार। जैसे बाण। शक्ति। गोला। गोली २-वह हथियार जिसके द्वारा कोई वस्तु फेंकी जाय। जैसे बंदूक। धनुष। तोप। ३-वह हथियार जिससे शत्रु का वार रोका जाय। जैसे ढाल। ४-चिकित्सक का चीरफाड़ का औजार। ५- शस्त्र। हथियार।

अस्त्रकार [वि.] (सं.) हथियार बनाने वाला।

अस्त्रघला [वि.] (सं.) अस्त्र चलाने वाला।

अस्त्रचिकित्सक [संज्ञा पु.] (सं.) चीरफाड़ द्वारा चिकित्सा करने वाला वैद्य। जर्राह।

अस्त्रचिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] वैद्यकशास्त्र का वह भाग जिसमें चीरफाड़ का विधान है। चीरफाड़ द्वारा इलाज। जर्राही।

अस्त्रजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रादि से युद्ध करके जीविका चलाने वाला व्यक्ति।

अस्त्रधारी [वि.] अस्त्र धारण करने वाला।

अस्त्रविद् [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्र चलाने में निपुण व्यक्ति।

अस्त्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्धादि के नियम बताने वाला शास्त्र।

अस्त्रवेद [संज्ञा पु.] (सं.) धंनुर्वेद। वह शास्त्र जिसमें अस्त्र बनाने तथा प्रयोग करने का विधान हो।

अस्त्रवैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्र चिकित्सक। जर्राह।

अस्त्रशरत्र [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध करने के सब प्रकार के हथियार।

अस्त्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अस्त्रशस्त्र रखने का स्थान। अस्त्रागार।

अस्त्रशिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथियार चलाने की शिक्षा।

अस्त्रागार [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रशाला। हथियार घर।

अस्त्राहत [वि.] (सं.) हथियार से मारा हुआ।

अस्त्रि [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रधारी मनुष्य। हथियारबंद आदमी।

अस्थल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'स्थल'।

अस्थाई [वि.] (हिं.) देखो 'स्थायी'।

अस्थान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्थान'।

अस्थायी [वि.] (हिं.) देखो 'स्थायी'।

अस्थावर [वि.] (सं.) न चलने वाला। जंगम।

अस्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड्डी।

अस्थिकुंड [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक।

अस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अस्थिरता। चंचलता। डावांडोलपन।

अस्थिपंजर, अस्थिपञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की हड्डियों का ढांचा। ठठरी।

अस्थिमय [वि.] (सं.) १-जिसमें केवल अस्थियां शेष हों। २-अस्थिनिर्मित।

अस्थिमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड्डियों की बनी हुई माला।

अस्थिमाली [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

अस्थिर [वि.] (सं.) १-जो स्थिर न हो। चंचल। डांवडोल। चलायमान। २-बेठौरठिकाने का। जिसका कुछ ठीक न हो। ३-देखो 'स्थिर'।

अस्थिरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनिश्चितता। चंचलता।

अस्थिशेष [वि.] (सं.) जिसके शरीर में केवल हड्डियां ही बाकी हों।

अस्थिसंचय, अस्थिसञ्चय [संज्ञा पु.] (सं.) अंत्येष्टि संस्कार के पीछे चिता के शांत हो जाने पर जली हुई हड्डियों को एकत्रित करने का कार्य।

अस्थिसंधि, अस्थिसंधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड्डी का जोड़। दो हड्डियों के मिलने का स्थान।

अस्थूल [वि.] (सं.) १-जो स्थूल न हो। सूक्ष्म। २-देखो 'स्थूल'।

अस्थैर्य [संज्ञा पु.] (सं.) चंचलता। चपलता।

अस्नान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्नान'।

अस्निग्ध [वि.] (सं.) १-कर्कश। जो चिकना न हो। २-निर्दय।

अस्निग्धदारुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का देवदार का वृक्ष।

अस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) स्नेह का न होना। घृणा

अस्पताल [संज्ञा पु.] (हिं.) औषधालय। चिकित्सालय। दवाखाना।

अस्पर्श [संज्ञा पु.] (सं.) न छूने का भाव। अछूत। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्पर्श'।

अस्पर्शनीय [वि.] (सं) स्पर्श न करने योग्य। न छूने लायक।

अस्पर्शित [वि.] (सं.) बिना छूआ हुआ।

अस्पृश्य [वि.] (सं.) १-न छूने योग्य। २-अंत्यज जातिका।

अस्पृष्ट [वि.] (सं.) स्पर्श न किया हुआ। अछूता।

अस्पृह [वि.] (सं.) निःस्पृह। निर्लोभ। लालच न करने वाला। विरक्त। इच्छा न रखने वाला।

अस्पृहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इच्छा का अभाव।

अस्फुट [वि.] (सं.) १- अव्यक्त। जो साफ न हो। २-गूढ़। जटिल।

अस्मदीय [वि.] (सं.) हमारा। हम लोगों का।

अस्मरणीय [वि.] (सं.) याद न आने वाला। विस्मृत। भूला हुआ।

अस्मित [वि.] (सं.) अविकसित। बिना खिला।

अस्मिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-योगशास्त्र के अनुसार पांच प्रकार के क्लेशों में से एक। २-अहंकार। आत्मश्लाघा। ३-मोह।

अस्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोना। २-रुधिर। ३-जल। ४-आंसू।

अस्रप [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-मूलनक्षत्र

अस्रपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलौका। जोंक। २-डाइन। टोना करने वाली।

अस्रफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलाई का वृक्ष।

अस्रार्जक [संज्ञा स्त्री] (सं.) श्वेत तुलसी।

अस्ल [वि.] (हिं.) देखो 'असल'।

अस्ली [वि.] (हिं.) देखो 'असली'।

अस्लील [वि.] (हिं.) देखो 'अश्लील'।

अस्लोक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्लोक'।

अस्वच्छ [वि.] (सं.) कलुष। धुंधला।

अस्वतंत्र, अस्वतन्त्र [वि.] (सं.) पराधीन। मातहत। परतंत्र।

अस्वप्न [संज्ञा पु.] (सं.) १- निद्रा का अभाव। २-देवता।

अस्वरथ [वि.] (सं.) रोगी।

अस्वस्थ-प्रज्ञ [संज्ञा पु.] वह जिसकी बुद्धि अथवा प्रज्ञा भलीभांति समझ-बूझकर कार्य करने के अयोग्य हो।

अस्वस्थता [वि.] (सं.) व्यथा। पीड़ा। बीमारी।

अस्वतन्त्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) पराधीनता। मातहती।

अस्वादु [वि.] (सं.) नीरस। फीका। बेस्वाद।

अस्वादुकंटक [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू।

अस्वाभाविक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकृतिविरुद्ध। २-कृत्रिम। बनावटी।

अस्वामिविक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरे की वस्तु को उसी की आज्ञा के बिना बेचना। खयानत। २-निक्षिप्त।

अस्वार्थ [वि.] (सं.) स्वार्थ का न होना। निस्पृह।

अस्वारथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) बीमारी। रोग। रुग्णता।

अस्वीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वीकृत करने का अभाव। नामंजूर करना।

अस्वीकार [संज्ञा पु] (सं.) इनकार। नामंजूरी नाही।

अस्वीकृत [वि.] (सं.) अस्वीकार किया हुआ। नामंजूर किया हुआ। नामंजूर।

अस्सी [वि.] (सं) सत्तर और दस की संख्या। नब्बे में दस कम। '८०'।

अहं [सर्व.] (सं.) मैं। [संज्ञा पु.] (सं.) अभिमान। अहंकार।

अहंकार, अहङ्कार [संज्ञा पु.] (सं) अभिमान।

गर्व। घमंड।

अहंकारी, अहङ्कारी [वि.] (सं.) अहंकार या घमंड करने वाला। गर्वी।

अहंकृति, अहङ्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अहंकार। अभिमान।

अहंता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अहंकार। घमंड। गर्व।

अहंवाद [संज्ञा पु.] (सं.) डींग मारना। शेखी बघारना।

अह [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन। २-विष्णु। ३-दिन का अभिमानी देवता।
[अव्य.] (सं.) एक दुःख, आश्चर्य इत्यादि सूचक शब्द।

अहक [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छा। आकांक्षा। लालसा

अहकना [क्रि. स.] (हि.) लालसा या इच्छा करना।

अहकाम [संज्ञा पु.] (अ.) १-नियम। कायदा। २-हुक्म। आज्ञाएं।

अहटाना [क्रि. अ.] (हि.) १-आहट लेना। पता चलना! २-टोह लेना। पता चलना। ३-दुखना। दर्द करना।

अहथिर [वि.] (हिं.) १-देखो 'स्थिर' २-देखो 'अस्थिर'।

अहद [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रतिज्ञा। वादा। २-समय। राजत्वकाल। ३-संकल्प। इरादा।

अहददार [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानी राज्य में वह ठेकेदार जो दो या तीन रुपया सैकड़ा बंधेज पर राज्य की ओर से कर वसूल करने वाला अफसर।

अहदनामा [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्रतिज्ञापत्र। एकरारनामा। २-सुलहनामा। संधिपत्र।

अहदी (अ.) १-आलसी। आसकती। २-अकर्मण्य। निठल्लू। [संज्ञा पु.] (अ.) अकबरकालीन एक प्रकार के सिपाही जो बहुत आवश्यक समयपर ही काम करते थे नहीं तो निठल्ले बैठे खाते थे। यह लोग अनदेवाल जमींदारों से मालगुजारी वसूल करने के लिये अड़कर बैठ जाते थे।

अहदीखाना [संज्ञा पु.] (फा.) अहदियों के रहने का स्थान।

अहदेहुकूमत [संज्ञा पु.] (फा.) शासन काल। राज्य।

अहन् [संज्ञा पु.] (सं.) दिन।

अहन्-पुष्प [संज्ञा पु.] (स.) दुपहरिया का फूल। गुल-दुपहरिया।

अहना [क्रि. अ.] (हि.) होना।

अहनिसि [अव्य.] (हि.) देखो 'अहर्निश'।

अहमक़ [वि.](अ.) १-जड़। २-मूर्ख। नासमझ।

अहमहमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लागडाँट। पहिले मैं पहिले और। हमाहमी। चढ़ा-ऊपरी।

अहमिति [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो 'अहम्मति'।

अहमेव [संज्ञा पु.] (सं.) अहंकार। गर्व। घमंड।

अहम्मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अहंकार। २-अविद्या।

अहर [संज्ञा पु.] (सं.) गणित के अनुसार वह राशि जो बँट न सकती हो।

अहरणींय [वि.] (सं.) हरण न किया जाने वाला।

अरहन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) स्थूला। निहाई।

अहरना [क्रि. स.] (हि.) १-लकड़ी को छील कर सुडौल करना। २-डोलना।

अहरनि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अहरन'।

अहरह [क्रि. वि.] (सं.) १-नित्य। सदा। ३-निरन्तर। लगातार। ३-प्रतिदिन।

अहरा [संज्ञा पु.] (हि.) १-जलाने के लिये किया गया कंडों का ढेर। २-इस प्रकार की गई तैयार कंडों की आग। ३-लोग जहां ठहरें वह स्थान। ४-प्याऊ। पयशाला।

अहरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पानी पीने का स्थान। २-पशुओं के पानी पीने का हौज। चरही। किसी कार्य के लिये भरा जाने वाला हौज।

अहर्गण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिनों का समूह। २-ज्योतिष कल्प के आदि से किसी इष्ट या नियत काल तक का समय।

अहर्निश [क्रि. वि.] (सं.) १-रातदिन। २-सदा। नित्य।

अहर्मुख [अव्य.] (सं.) प्रातःकाल। सवेरा।

अहर्ष [वि.] (सं.) मन्दभाग्य।

अहर्षित [संज्ञा स्त्री.] (सं) जो प्रसन्न न हो। अप्रसन्नता।

अहलकार [संज्ञा पु.] (फा.) १-कर्मचारी। २-कारिंदा।

अहलना [क्रि. अ.] (हि.) हिलना। कांपना। दहलना।

अलहमद [संज्ञा पु.] (फा.) न्यायालय का वह कर्मचारी जो अभियोगों की मिसलों को रजिष्टर में अङ्कित करता, न्यायालय की आज्ञायें निकालता तथा न्यायालयसम्बन्धी कागजपत्रों को सुरक्षित रखता है।

अहला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अहिला'।

अहलाद (संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आह्लाद'।

अहलादी वि.] (हि.) देखो 'आह्लादी'।

अहल्य [वि.] (सं.) हल से न जोता जाने वाला

अहल्या [वि.](सं.)जो भूमि जोती न जा सके। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौतमऋषि की पत्नी का नाम।

अहवनीय [वि.] (सं.) हवन के अयोग्य।

अहवात [संज्ञा पु.] (हिं.) सौभाग्य। सोहाग।

अहवान [संज्ञा पु.] हिं.) बुलाना। आवाहन।

अहवाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-समाचार। वृत्तान्त। २-दशा। अवस्था।

अहसान [संज्ञा पु.] (अ.) किसी के साथ या भालाई करना। उपकार। सलूक। कृपा। अनुग्रह। निहोरा। कृतज्ञता।

अहस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

अहह [अव्य.] (सं.) क्लेश, शोक, दुख, आश्चर्य प्रगट करने वाला शब्द।

अहा [अव्य.] (हि.) प्रसन्नता तथा प्रशंसा करने वाला शब्द।

अहाता [संज्ञा पु.] (अ.) १-घेरा। हाता। बाड़ा। चारदीवारी।

अहान [संज्ञा पु.] (हि.) शोर। पुकार। चि हट।

अहार [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आहार'

अहारना [क्रि.] (सं.) खाना। भक्षण करना। चिपकाना। लेई लगा कर चिपकाना। कपड़े में मांडी देना।

अहारी [वि.] (हिं.) देखो 'आहारी'।

अहार्य [वि.] (सं.) १-जो धन या घूंस के में न आ सके। २-चोरी न होने योग्य।

अहाहा [अव्य.] (हिं.) हर्षसूचक अव्यय।

अहिंसक [वि.] (सं.) हिंसा न करने वा जो किसी को पीड़ा न पहुँचाए किसी को दु न देने वाला।

अहिंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विश्ववंद्य मह गांधी का सिद्धांत। किसी को दुःख न दे २-बौद्धमत के अनुसार त्रस तथा स्थावर पीड़ा न पहुँचाना। ३-योगशास्त्र के अनु पाँच यमों में से पहला। मन, वचन तथा से किसी प्राणी को पीड़ा न पहुँचाना। शास्त्रों के नियमविरुद्ध किसी को हिंसा करना।

अहिंस्त [वि.] (सं.) हिंसा न करने वाला। हिंसक।

अहि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांप। सर्प। २- ३-वृत्रासुर। ४-खल। वंचक। ५- नक्षत्र। ६-पृथ्वी। ७-सूर्य। ८-पथिक। सीसा। १०-मात्रिक गण में टगण 'ISI ११-२१ अक्षरों या वर्णों का एक छंद जि पहिले ६ भगण और अंत में मगण होता

अहिक [संज्ञा पु.] (सं.) अंधा सर्प।

अहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमल का वृक्ष।

अहिक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण पांचाल राजधानी। २-दक्षिण पांचाल।

अहिगण [संज्ञा पु.] (सं.) मात्रिकगण में ट का सातवां भेद (ऽ|||)।

अहिच्छत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण पांचा २-सेढ़ा सींगी।

अहिजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-कृष्ण

अहिजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागफनी का

अहिटा [संज्ञा पु.] (हि.) लगान न देने पर ज़ दार की ओर से फसल काटने से रोक

लिये बैठाया गया व्यक्ति।

अहित [संज्ञा पु.] बुराई। अकल्याण। [वि.] (सं.) १–शत्रु। वैरी। विरोधी। २–हानिकारक। अनुपकारी।

अहिनाह [संज्ञा पु.] (हि.) सर्पों का राजा। शेषनाग।

अहिपति [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

अहिफेन [संज्ञा पु.] (सं.) १–सांप की लार। २–अफीम।

अहिफेनबीज [संज्ञा पु.] (सं.) पोस्त का दाना।

अहिबेल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नागवेलि। पान।

अहिम [वि] (सं.) जो ठंडा न हो। गरम।

अहिमात (सं.) चाक में का वह गड्ढा जिसके ऊपर चाक को रखते हैं।

अहिमाली [संज्ञा पु.] (हि.) सर्पों की माला पहिनने वाले शिव।

अहिमेध [संज्ञा पु.] (सं.) सर्पयज्ञ।

अहिर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अहीर'।

अहिरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) १–गरुड़। २–नेवला। नकुल। ३–मोर। मयूर।

अहिर्बुध्न [संज्ञा पु.] (सं.) १–११ रुद्रों में एक। २–उत्तरा-भाद्र-पद नक्षत्र।

अहिलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली। पान।

अहिलव [संज्ञा पु.] (हि.) अधिकता। बढ़ोतरी।

अहिला [संज्ञा पु.] १–पानी की बाढ़। २–गड़बड़ दंगा।

अहिवर [संज्ञा पु.] (हि.) दोहे का एक भेद। जिसमें ५ गुरु और ३८ लघु होते हैं।

अहिवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली। पान।

अहिवात [संज्ञा पु.] (हि.) सौभाग्य। सोहाग।

अहिवातिन [संज्ञा स्त्री.](हि.) सौभाग्यवती स्त्री। सधवा। सोहागिन।

अहिवाती [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] सौभाग्यवती। सोहागिन। सधवा।

अहिश्तना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बच्चों का एक रोग

अहिसाव (सं.) सांप का बच्चा। सँपोला। पोआ।

अहीन [वि.] (सं.) समग्र। भरा हुआ। पूरा।

अहीनगु [संज्ञा पु.] (सं.) एक सूर्यवंशी राजा।

अहीनवादी [वि.] (सं.) निरुत्तर न होने वाला। जो वाद में न हारा हो।

अहीर [संज्ञा पु.] (हि.) गाय भैंस पालने वाली तथा दूध बेचने वाली एक जाति। ग्वाला।

अहीरी [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जिसमें सारे कोमल स्वर होते हैं।

अहीश [संज्ञा पु.] (सं.) १–शेषनाग। २–शेष के अवतार लक्ष्मण तथा बलराम।

अहुटना [क्रि. अ.] (हि.) हटना। दूर होना। अलग होना।

अहुटाना [क्रि. स.] (हि.) हटाना। अलग करना भगाना।

अहुठ [वि.] (हि.) साढ़े तीन। तीन और आधा।

अहुत [संज्ञा पु.] (सं.) जप। ब्रह्मयज्ञ। वेदपाठ। यह मनुस्मृति के अनुसार पाँच यज्ञों में से है [वि.] (सं.) होम न किया हुआ।

अहूठन [संज्ञा पु.] (हिं) लकड़ी का वह कुन्दा जिस पर चारा काटा जाता है।

अहे [संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ जिसकी लकड़ी भूरे रंग की होती है वह मकानों, हल तथा गाड़ी बनाने में लगती है। [अव्य.] (सं.) देखो 'हे'।

अहेड़ [वि.] (सं.) माननीय। प्रतिष्ठित।

अहेतु [वि.] (सं.) १–अकारण। निमित्तरहित। २–व्यर्थ। फिजूल। [संज्ञा पु.] (सं.) एक काव्यालङ्कार जिसमें कारणों के होने पर भी कार्य न हो।

अहेतुक [वि.] (सं.) देखो 'अहेतु'।

अहेर [संज्ञा पु.] (हि.) १–आखेट। मृगया। २–वह जन्तु जिसका शिकार किया जाय। शिकार।

अहेरी [संज्ञा पु.] (हिं.) शिकार करने वाला व्यक्ति आखेटक। शिकारी।

अहो [अव्य.] (सं.) एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी सम्बोधन के समान और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष और विस्मय प्रगट करने के लिये होता है। १–हाय! २–धिक्कार। ३–अरे! ४–क्यों! ५–वाहवाह! ६–शाबास।

अहोरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) दिनरात। दिन और रात्रि का मान। [अव्य.] सर्वदा। निरंतर। बारम्बार।

अहोर-बहोर [क्रि. वि.] (हि.) फिर फिर। बारंबार।

अहोरा-बहोरा [संज्ञा पु.] (हि.) विवाह की एक रीति जिसमें वधु ससुराल जाकर उसी दिन अपने पिता के घर लौट आती है। हेराफेरी। [क्रि. कि.] (हिं.) बारबार। लौट-लौटकर। पुनः-पुनः।

आ

आ हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर। यह 'अ' का दीर्घ रूप है। यह बुलाने के अर्थ में प्रयुक्त होता है यथा-यहां 'आ'। [संज्ञा पु.] (सं.) महेश्वर। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मां। माता।

आँ [अव्य.] (हिं.) १–विस्मयबोधक शब्द। २–बालक के रोने के शब्द का अनुकरण।

आँक [संज्ञा पु.] (हि.) १–अंक। चिह्न। निशान। २–संख्या का चिह्न। अदद। ३–अक्षर। हरफ। ४–दृढ़ निश्चय। निश्चित सिद्धांत। बात। गढ़ी हुई बात। ५–अंश। भाग। हिस्सा। ६–पहिये के धुरे का ढपना। ७–लकीर

आँकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंक। अदद। संख्या का चिह्न। २–पेंच। फन्दा। ३–चौपायों की एक बीमारी। ४–आक। मदार।

आँकड़े [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी विषय अथवा विभाग की स्थिति सूचित करने वाले अंक।

आँकन [संज्ञा पु.] (हि.) ज्वार का दाना। भुट्टा

आँकना [क्रि. स.] (हि.) चिह्न करना। निशान लगाना। दागना। २–कूतना। अंदाजा करना मूल्य लगाना। ३–अनुमान करना। ठहरना। निश्चित करना।

आँकर [वि.] (हिं.) १–गहरा २–बहुत अधिक। ३–महंगा।

आँकल [संज्ञा पु.] (हि.) दाग कर छोड़ा हुआ सांड।

आँकुड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अंकुड़ा'।

आँकुस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंकुश'।

आँकू [संज्ञा पु.] (हिं.) आंकने वाला। कूतने वाला। अंदाजा लगाने वाला।

आँख [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखने की इन्द्रिय जिससे रंग, रूप, आकार और विस्तार का बोध होता है। लोचन। नयन। नेत्र। अक्षि। चक्षु। विलोचन। दृक्। वीक्षण। प्रेक्षण। (योगिक पद) *उनीदी आख* – नींद से भरी आंख। *कंजी आख* –नीली तथा भूरी बिल्ली के समान आंखें। *कटीली आख*–आकर्षक आंख। मोह लेने वाली आंख। *गिलाफी आख*–कबूतर के समान पपटों से ढकी आंख *चंचल आख*–यौवन मद के कारण स्थिर न रहने वाली आंख। *चरबाक आख*–चंचल आंख। *चियासी आँख*–छोटी आंख। *चोर आँख*–जिनमें सुरमा या काजल न दीखे। *धंसी आंख*–भीतर की ओर धुसी हुई आंख। *मतवाली आँख*–मद से परिपूर्ण आंख। *मदभरी आँख*–भावुक आंख। *रसभरी आँख*–वह आंख जिससे भाव टपकता हो। *रसीली आँख*–आकर्षक आंख। शरबती आंख। मोहक आंख। *आँख*–१–ध्यान। लक्ष्य। २–विचार। विवेक। परख। ३–कृपा दृष्टि। मुरव्वत। शील। ४–संतान। लड़का-बाला। *आँख अटकना*–प्रेम होना। *आँख आना*–आंख में पीड़ा होना। लाली पड़ना और सूजन होना *आँख उठना*–आंख आना। आंख लाली और पीड़ा होना। *आंख उठाना*–१–देखना। नजर सामने करना। २–बुरी दृष्टि से देखना। हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। *आँख उठाकर न देखना*–१–ध्यान न देना। तिरस्कार करना। २–लज्जा या संकोचवश

निगाह न मिला सकना। आँख उलट जाना-१-पुतली का ऊपर चढ़ जाना। पुतली फिर जाना । आँख पथरा जाना । २-घमंड से निगाह बदल जाना । गर्व होना । आँख ऊँची न होना-लाज से निगाह नीची रहना । आँख ऊपर न उठना-लज्जा अथवा भय से नजर ऊपर की ओर न होना । निगाह नीची रहना। आँख ओट पहाड़ ओट-जब निगाह के सामने नहीं तब क्या पास क्या दूर । आँख ओझल-अपने पीछे । आँख ओट-आँख ओझल ।

आँख कडुवाना-अधिक देखने से अथवा जागने से एक प्रकार की पीड़ा होना । आँख का अंधा गाठ का पूरा-अनाड़ी मालदार । मूर्ख धनी । आँख का काटा होना-१-खटकना। दुःख देना । २-बाधक होना । शत्रु होना ।

आँख का काजल चुराना-सफाई के साथ चोरी करना। आँख कान से दुरुस्त होना-खूबसूरत तथा बिना ऐब होना । आँख की पुतली समझना-अत्याधिक प्रेम करना । आँख खुलना-उठना सचेत होना । आँख खोलना-आंख अच्छी करना या बनाना । २-ध्यान से । आँख गड़ना-नजर जमाना । टकटकी बंधना । आँख जाना-आंख फूटना । आँख का जाला-आँख की पुतली पर एक सफेद झिल्ली छा जाना । आँख का डेला-आँख का उभरा हुआ श्वेत भाग जिस पर पुतली लगी रहती है। आँख का बट्टा। आख का तारा-१-आँख का तिल । २-सन्तति ।

आख का तिल-आँख की पुतली के मध्य का तिल के समान गोल काला धब्बा जिसमें सामने की वस्तु का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। आँख का तेल निकलना-आँख को जोर पड़ना आँख का परदा उठना-ज्ञान चक्षु का खुलना । सचेत होना । आँख का पानी ढल जाना-लाज लिहाज का अभाव होना । आँख का पानी भरना-आँख का पानी ढलना । आँख की किरकिरी-आँख का काटा जिसके देखने से मन में पीड़ा हो । आँख की ठंडक-मन को संतोष पहुँचाने वाली प्रिय वस्तु या व्यक्ति । आँख की पुतली-१-आँख के मध्य का वह भाग जो सफेदी पर की गोल काट से होकर दिखाई देता है । २-प्रियजन । आँख की पुतली फिरना-आँख की पुतली चढ़ जाना । आँख पथराना । आँख की बदी भौं के आगे-किसी के दोष को उसके प्रियजनों के आगे रखना । आँखों की सूइया निकलना-कठिन कार्य किसी द्वारा होना और समाप्ति पर थोड़ा सा कार्य यत्न द्वारा समाप्त होने पर पूर्व व्यक्ति को फल न मिलना जिसने यह कार्य किया हो । आँखों के आगे अंधेरा छाना-मूर्छा आना । बेहोशी होना । आँख के आगे अँधेरा होना-विपत्ति अथवा दुःख के समय घोर निराशा होना । संसार सूना दिखाई देना । आँख के आगे चिनगारी छूटना-मस्तिष्क पर आघात से चकाचौंध सा लगना । आंखों का तिलमिलाना। आँख के आगे नाचना-ध्यान पर चढ़ा रहना । स्मृत में बना रहना । आँख के आगे पलकों की बुराई-किसी के सुहृद मित्र के आगे ही बुराई करना । आँख के आगे फिरना-ध्यान पर चढ़ रहना । स्मृति में बना रहना । आँख के आगे रखना-आंखों के सामने रखना ।

आँख के कोए-आंखों के ढेले । आँख के डोरे-आंखों की सफेद झिल्ली। लाल रंग की बारीक नसें। आँख के तारे छूटना-आंखों के आगे चिनगारियां सी छूटना । आँख के सामने नाचना-ध्यान पर बना रहना । आँख के सामने रखना-पास रखना । पास से जाने न देना । आँख के सामने होना-सम्मुख होना । आँख को रो बैठना-अन्धा होना । आँख खटकना-आंख किर किराना या टीसना । आँख खुलना-१-उठना । २-पलक खुलना । ३-सचेत होना ४-चित्त स्वस्थ होना । आँख खुलवाना- १-आंख बनवाना या ठीक कराना । आँख खोलना- १-पलक उठाकर देखना । आंख बनाना । ३-सावधान करना । वास्तविक बोध करना । ४-ज्ञान का अनुभव होना । ५-स्वस्थ होना । सुध में होना । आँख गडना- १-नजर जमाना । टकटकी बांधना । २-आंख किरकिराना या दुखना । ३-आंख धसना या बैठना । ४-प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना ।

आँख गड़ाना-१-टकटकी बांधना । २—नजर रखना । आँख गरम करना-दर्शन का सुख प्राप्त करना । आँख घुलना-दृष्टि से दृष्टि मिलाना । आँख चढ़ना-निद्रा के अभाव में आंखें लाल होना । आँखो चढ़ाना-क्रोध करना आँखों चमकाना-आंखों से तरह तरह के संकेत करना । आँख चरने जाना-सामने की वस्तु दिखाई न देना । आँख चार करना- १-निगाह से निगाह मिलाना । २-सामने आना आँख चार होना-आंख से आंख मिलाना । विद्या का होना । आँख चीर-चीरकर देखना-गौर से देखना । आंख फाड़-फाड़कर देखना । आँख चुराना- १-टाल जाना । कतरा जाना । २-लाज से बराबर न ताकना । ३-रुखाई करना । ध्यान न देना ।

आँख चुराकर देखना- छिप कर देखना । आँख चुरा जाना-आंख बचाकर निकल जाना आँख चुराकर कुछ करना-छिपकर कोई काम करना । आँख चूकना- असावधानी होना ।

आँख छत से लगाना-आँखों का अपलक रहना । २-टकटकी बांधना (मरने से पूर्व की अवस्था) । आँख छिपाना—१-कतराकर जाना । २-लाज से बराबर न ताकना । ३-रुखाई करना । आँख जमना-दृष्टि स्थिर रहना। नजर न ठहरना। आँख जोडना-आंख मिलाना । आँख झपकना-१-आँख बंद होना २-नींद आना । आँख झेंपना-दृष्टि नीची होना । लाज लगना । आँख टंगना-१-टकटकी लगाना । २-आँख ऊपर को चढ़ जाना।

आँख टेढ़ी करना-१-भौं टेढ़ी करना।
प्रदर्शित करना । २-आंखें बदलना।
करना । आँख ठंडी होना-संतोष होना
भरना । तृप्ति होना । आँख डबडबाना-
में आंसू आना । आँख डालना-१-
नजर से देखना । २-दृष्टि डालना।
ढकर-ढकर करना-पलकों का जल्दी
गिरना । आँख तरसना-देखने के लिये
होना । आँख तरेरना-क्रोध की दृ
देखना । आँखों तले न लाना-तुच्छ सम
आँख दबाना — आँख मिच
आँख दिखाना-कुपित दृष्टि से देखना।
दीदे से डरना-ईश्वर से डरना। पा
डरना । आँख दुखना-आंखों में पीड़ा
देखते-जानबूझकर । आँख देखा-स्व
आँख दौड़ाना-नजर दौड़ाना । निगाह
रना । आँख न उठना-१-नजर न उ
सम्मुख न देखना । २-लाज निगाह
रखना । ३-किसी कार्य में बराबर लगे
आँख न खोलना-१-बेसुध रहना। २-आं
रखना । आँख न ठहरना-आंखें एक
जमना । आँख न डालना-न देखना।
पसीजना-आंखों में आंसू का आ
होना। आँख से डरना-ईश्वर से डरना।
आँख निकालना-क्रोध से देखना ।
नीची करना-१-दृष्टि नीची करना।
से निगाह न मिलना । आँख नीची
लज्जा उत्पन्न होना । आँख नीली
करना-त्यौर बदलना । बहुत गुस्सा
आँख पनपटा जाना आँख फूटजाना। आँ
होना-आँख फूट जाना । आँख पड़
ध्यान जाना । २-दृष्टि पड़ना। ३-चा
दृष्टि होना । आँख पथराना-नेत्र स्तब्ध
आँख अपलक देखते देखते थक जाना।
पर चढ़ना-१-निगाह में पड़ना। २-हृद
प्रेम और विश्वास जमना। आँख पर
रख लेना-१-जानबूझ कर अनजान ब
२-रुखाई करना। ३-गुण न मानना।
घ्नता करना । ४-निर्लज्ज होना। आँ
तिनका रखना-देखो 'आँख पर ठीकरी र
आँख पर पट्टी बाँधना-१-कपड़े से आँख
२-ध्यान न देना। आँख पर पर्दा पड़
भ्रम होना । अज्ञान का अंधकार छाना।
विचार का जाता रहना। ३-निर्बलता।
के आगे अंधकार छा जाना। आँख पर
का बोझ नहीं होता-१-अपनी वस्तु का
भारी मालूम नहीं देता। २-अपने कुटु
को खिलाना पिलाना नहीं खलता। ३
की वस्तु मँहँगी नहीं मालूम होती। आँ
बिठाना-बहुत सत्कार करना। आव
आँखों पर रखना-बहुत आराम से र
आँखों पसारना या फैलाना-दूर तक दे
आँख पहचानना-इशारा समझना।
पाना-देखने की शक्ति लौट आना।
फटना-आश्चर्य में होना। आँख

आँख (मुहावरे)
शुभाशुभ सूचित करना। आँख फाडफाड कर देखना–उत्सुकता पूर्वक देखना। खूब आँख खोलकर देखना। आँख फिर जाना–१–निगाह बदल जाना। २–चित्त में प्रतिकूलता आना। आँख फूटना–नयन की ज्योति का नष्ट होना। आँख फेरना–१–नजर बदलना। २–विरुद्ध होना। आँख फैलाना–निगाह पसारना। दृष्टि फैलाना।

आँख फोड़ना–१–आंखों की ज्योति का नाश करना। २–आंखों पर जोर डालने वाला काम करना। आँख बंद करके काम करना–करने वाला। आँख बंद होना–१–पलक ध्यान रखना। आँख बंद होना–१–पलक गिरना। २–मृत्यु होना। आँख बचाकर कोई काम करना–छिपकर कार्य करना। आँख बचाना–कतराना। आँख बचे का चांटा–बालकों का एक खेल। आँखें बदल जाना–बेमुरव्वत हो जाना। आँख बनवाना–आंख की चिकित्सा करना। आँख बराबर करना–आंख सामने करना। आँख बहाना–आंसू बहाना। रोना। आँख बिगड़ना–१–नयनों की ज्योति कम होना। २—आंख पथराना। आँख बिछाना–१–प्रेम पूर्वक स्वागत करना। २–बाट जोहना। आँख बैठ जाना–आंख का भीतर धंस जानां। आंख फूटना। आँख भर आना–आंखों में आंसू आना। आँख भरकर देखना–भलीभांति देखना। इच्छा भरकर देखना। आँख भर लाना–आंखों में आंसू ले आना। आँख भौं टेढ़ी करना–गुस्सा करना। आँख मचकाना–१–पलकों को सिकोड़ कर गिराना। २–इशारा करना। आँख मटकाना–इतराना। नाज़ नखरे दिखाना। आँख मारना–इशारा करना। संकेत करना। आँख मिचकाना–इशारा करना। आँख मिलाना–१–आंख लड़ाना। २–सामने आना। आँख मुँदना–आंख बंद होना। आंख मूंदना–१–आंख बन्द करना। २–मृत्यु होना। मरना। आँख में–दृष्टि में। परख में। निगाह में। अनुमान में। आँख में आँख डालना–१–आंख से आंख मिलाना। २–ढिठाई से ताकना। आँखों में काजल घुलना–आंखों में काजल का खूब लगना। आंख में खटकना–निगाहों में बुरा लगना। आंख में खून उतर आना–क्रोध से आंखें लाल होना। आंख में गड़ना–१–आंख में खटकना। २–मन में बसना। आंख में घर करना–१–आंखों में समाना। हृदय में बसना। २–किसी को मोहित कर लेना।

आँखों में चढ़ना–नजर में जंचना। पसंद आना। आँखों में चरबी छाना–१–घमंड या असावधानी से सामने की वस्तु की ओर ध्यान न जाना। २–मदोन्ध होना। घमंड में चूर होना। आँख में चुभना–१–आँख में खटकना। २–आंख में खटकना। ३–आंखों पर गम्भीर प्रभाव डालना। आँख में चोब आना–चोट से आंख में ललाई आना। आँखों में झांई पड़ना–आंखों का थक जाना। आँखों में टेसू फूलना, आंखों में तीसी फूलना, आंखों में सरसों फूलना–१–सब ओर एक ही रंग दिखाई देना। २–नशा होना। आंखों में तकला या टेकुआ चुभाना–आँख फोड़ना। आँखों में तरावट आना–आंखों में ठंडक आना। आंखों में धूल झोंकना, आंखों में धूल देना, आंखों में धूल डालना–धोखे या भ्रम में डालना। आँखों में नाचना–ध्यान पर चढ़ा रहना। आंखों में नून देना–आँख फोड़ना। आँखों में नूनराई–आंखें फूटे। आँखों में पालना–बड़े लाड़ प्यार से पालन पोषण करना। आंखों में फिरना–स्मृति में बना रहना। आँख में बसना–हृदय में समाना। आँख में बैठना–१–पसंद आना। २–आँखों पर गहरा प्रभाव डालना। आँखों में भंग घुटना–आंख पर भांग का नशा गहरा होना। आँखों में रखना–१–लाड़ प्यार से रखना। २–सावधानी से रखना। आंखों में रात काटना–सारी रात चिन्ता या व्यग्रता सहित रात बिताना। आंखों में शील होना–मन में कोमलता आना। आंखों में समाना–मन में बसना। चित्त पर चढ़ना। आंख मोड़ना–देखो 'आंख फेरना'। आंख रखना–ध्यान रखना। नजर रखना। आंख लगना–१–नींद आना। २–प्रेम होना। ३–टकटकी लगाना। आंखों लगना–आंखों में लगना। ऊपर आना। आंख लगना–१–प्रेम करना। २–टकटकी बांध कर देखना।

आंख लगी–प्रेमिका। जिससे प्रीत हुई हो। आंख लड़ाना–आंख मिलाना। घूराघूरी होना आंख ललचाना–देखने की इच्छा होना। आंख लाल करना–क्रोध करना। आंख वाला–१–जिसके आंख हो। २–परख करने वाला। आंख सामने न करना–१–सामने न ताकना। २–नजर न मिलाना। आंख सामने न होना–लाज से निगाह न मिलना। आंख सुख कलेजे ठंडक–पूरी प्रसन्नता। आंख सेंकना–दर्शनों का सुख प्राप्त करना। आंख से आंख मिलाना–१–सामने ताकना। २–नजर लड़ाना आंख से उतरना–निगाह से गिरना। दृष्टि में नीचा ठहरना। आंखों से ओझल होना–नजर से गायब होना। आंखों से काम करना–संकेतों से काम निकालना। आंख से कोई काम करना–अत्याधिक प्रेम तथा भक्ति से कोई कार्य करना। आंखों से गिरना–नजरों से गिरना। दृष्टि में तुच्छ रहना। आंख से भी न देखना–दृष्टिपात भी न करना। तुच्छ समझना। आंख से लगाकर रखना–प्रियजन को आदर सत्कार से रखना। आंखों से लगाना–प्यार करना। चूम लेना। आंखों से लहू टपकाना–बहुत कष्ट होना। आंखों ही आंखों में–आंख के इशारों से। आंखहोना–१–परख होना। १–नजर गड़ाना। ३–ज्ञान होना।

आँख [संज्ञा पु.] (हिं.)/आंख के आकार का एक छंद या चिह्न।

आँखड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख।

आँखफोड़टिड्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–आक के पौधे पर पाया जाने वाला एक कीड़ा। २–कृतघ्न।

आँखमिचौली, आँखमीचली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बालकों का एक खेल जिसको आंख मूदकर खेला जाता है।

आँखमुचाई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'आंखमिचौली'।

आँखमुँदाई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'आंखमिचौली'

आँखी [संज्ञा स्त्री.] आंख।

आँग [संज्ञा पु.] (हि.) १–अंग। २–प्रति चौपाये पर ली जाने वाली चराई। ३–कुच। स्तन।

आँगन [संज्ञा पु.] (हि.) एक भीतर का सहन या चौक।

आँगिक [संज्ञा पु.] (हि.) १–मनोभाव। प्रगट करने वाली चेष्टा। २–रस में कायिक अनुभाव। ३–नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक। [वि.] (सं.) अंगसंबंधी।

आँगिरस [संज्ञा पु.] (सं.) १–अंगिराऋषि के पुत्र बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त्त। २–अंगिरा के गोत्र का पुरुष। ३–अथर्व की चार ऋचाओं का एक सूक्त जिसके रचयिता अंगिरा थे। [वि.] (सं.) अंगिरा संबंधी। अंगिरा का।

आँगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–अंगिया। चोली। २–महीन आटा छानने की चलनी।

आँगुर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अंगुल'।

आँगुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उंगली।

आँगुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंगुल'।

आँधी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मैदा छानने की चलनी मैदा चालने की चलनी।

आँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गरमी। ताप। २–आग की लपट। ३–आग। अग्नि।
आँच का काम–भयानक कार्य। *आँच खाना*–१–गरमी पाना। २–ताव खाना। *आँच दिखाना*–१–गर्म करना। २–नष्ट करना। *आँच न आने देना*–कुछ हानि न होने देना। *आँच से खेलना*–खतरनाक काम हाथ में लेना।

आँचका [संज्ञा पु.] (हि.) नाव का लटकता हुआ रस्सा।

आँचना [क्रि. स.] (हिं.) जलाना। तापना।

आँचर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आँचल'।

आँचल [संज्ञा पु.] (हि.) १–पल्ला। छोर। धोती दुपट्टा आदि के दोनों छोरों के भाग जो बिना सिले होते हैं। २–साधुओं का अंचला। ३–साड़ी या ओढ़नी का स्त्रियों की छाती पर रहने वाला भाग।
आँचल डालना–मुसलमानों में होने वाली एक विवाह की रीति। *आँचल दबाना*–दूध

पीना । *आँचल देना*–१–बच्चे को दूध पिलाना। २–विवाह की एक रीति । ३–आंचल से हवा करना । *आँचल पड़ेना*–आंचल छू जाना। *आँचल फाड़ेना*–१–पर्देवाली का पराये आदमी से बातें करना । २–प्रगल्भतापूर्ण बातचीत । ३–जादू टोना करना । *आँचल पसारना*–भीख मांगना ।

आँचल बिछाना-अत्यन्त आदर सत्कार करना *आँचल मुँह पर लेना*–घूंघट निकालना । *आँचल में बाँधना*–हर समय साथ रखना। *आँचल में बात बाँधना*–स्वयं याद रखना। *आँचल लेना*–आवभगत करना । *आँचल सँभालना*–देह को भली प्रकार से ढकना।

आँचू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक कटीली झाड़ी।

आँजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंजन'।

आँजना [क्रि. स.] (हि.) अंजन लगाना।

आँजनेय [संज्ञा पु.] (सं.) अंजना का पुत्र। हनुमान ।

आँट [संज्ञा पु.] (हि.) १–हथेली में तर्जनी तथा अँगूठे के मध्य का भाग। २–दाँव। वश। ३–बैर। लागडाँट। ४–गिरह। गांठ। ५–गट्ठा। पूला। पेंच।

आँट पर चढ़ना–दांव पर चढ़ना । *आँट लगाना*–रोक देना।

आँटना [क्रि. अ.] (हि.) १–समाना। अँटना। २–पूरा पड़ना। ३–आना। मिलना। ४–पहुँचना ।

आँटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पूला। २–लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३–कुश्ती का एक पेंच। ४–सूत का लच्छा। ५–धोती की गिरह। टेंट मुर्रा।

आँटी काटना–जेब काटना। *आँटी गर्म करना*–घूस देना। रिश्वत देना। *आँटी गर्म होना*–अधिक धन होना।

आँटसाँट [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-गुप्त अभिसंधि। साजिश। मेलजोल।

आँठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–गिरह। गांठ। २–गुठली। बीज। नवोढा के उठते हुए स्तन। ४–दही।

आँड [संज्ञा पु.] (हि.) अंडकोश।

आँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अंटी। गांठ। फंद। २–कोल्हू के जाठ का गोला। ३–बैलगाड़ी के पहिये के छेद के चारों ओर जड़ी हुई लोहे की सामी।

आँड़ू [वि.] (हि.) अंडकोश वाला। अंडकोशयुक्त

आँड़े बाँड़े खाना [क्रि. अ.] (हि.) इधर उधर फिरना। चक्कर खाना।

आँत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अंतड़ी। प्राणियों के पेट से लेकर गुदा तक जाने वाली नली।

आंतरिक [वि.] (सं.) १–भीतरी। अंदर का। २–किसी देश के भीतरी भागों से संबंधित।

आँत उतारना–एक रोग जिसमें आंत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है। *आँत का बल खुलना*–पेट भरना। *आँतों का बल खुलवाना*–पेट भर खिलाना। *आँते कुलबुलाना*–भूख से बुरी हालत होना। *आँते गले में आना*–नाकों दम होना। तंग होना। *आँते मुंह में आना*–तंग होना। जंजाल में फंसना। *आँतों में बल पड़ेना*–पेट में बल पड़ना। *आँते समेटना*–भूख सहना। *आँतें सूखना*–भूख से बुरी दशा होना।

आँतकट्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं का एक रोग।

आँतर [संज्ञा पु.] (हि.) १–जितना एक बार में जोता जाय, खेत का उतना भाग। २–अंतर। दो पदार्थों के मध्य का स्थान।

आंदू [संज्ञा पुं.] (हिं.) १–लोहे का कड़ा। बेड़ी। २–बांधने की सीकड़।

आंदोलन, आन्दोलन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बारंबार हिलना। डोलना। २–हलचल। धूम। उथलपुथल करने वाला प्रयत्न।

आंदोलित, आन्दोलित [वि.] (सं.) १–हिलने डुलने वाला। डोलायमान। झोखा खाता हुआ।

आँध [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–अंधेरा। धुंध। २–रतौंधी। ३–आफत। कष्ट।

आँधना [क्रि. अ.] (हि.) वेग से धावा करना टूट पड़ना।

आँधर [वि.] (हि.) अंधा।

आँधरा [वि.] (हिं.) अंधा।

आँधारंभ, आँधारम्भ [संज्ञा पु.] (हिं.) अंधेरखाता। बिना समझाबूझा आचरण।

आँध्र, आन्ध्र [संज्ञा पु.](सं.) भारत में एक प्रांत। तामिल-तेलुग-प्रदेश।

आँधी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) धूलिपूर्ण प्रचंड वायु। अंधड़।

[वि.] (हिं.) आंधी के समान तेज।

आँधी उठाना–धूम मचाना। हलचल मचाना। *आँधी के आम*–बहुत सस्ती चीज। *आँधी रोग होना*–परेशानी होना। *आँधी होना*–बहुत तेज चलना।

आँब [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आम'।

आँबाहलदी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'आमाहलदी'।

आँबिकेय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अंबिकेय'।

आँयबाँय [संज्ञा पु.] (हि.) अनापशनाप। व्यर्थ की बात। असंबद्ध प्रलाप।

आँव [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का लसदार चिकना सफेद मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

आँवठ [संज्ञा पु.] (हि.) १–किनारा। वारी। २–कपड़े की किनार। ३–बरतन की बारी।

आँवड़ना [क्रि. अं.] (हि.) अड़ना। उठना।

आँवड़ा [वि.] (हिं.) गहन। गहरा।

आँवन [संज्ञा पु.] (हिं.) पहिये के बीच हुई लोहे की सामी जिसमें धुरे घूमता है।

आँवरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आंवला

आँवल [संज्ञा पु.] (हि.) वह झिल्ली जो बच्चे के लिपटी रहती है।

आंवलगट्टा [संज्ञा पु.] (हि.) आंवले फल।

आंवला [संज्ञा पु.] (हि.) एक वृक्ष गोल, कसैला और खट्टा होता औषधि में प्रयुक्त होता है। २–कुश्ती दाव या पेंच।

आंवलापत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक जिसमें पत्ती के समान तिरछे टांके हैं।

आंवलासारगंधक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भांति साफ की हुई पारदर्शक स्वाद में खट्टी होती है।

आंवां [संज्ञा पु.] (हि.) वह गड्ढा जहां कुम्हार लोग अपने मिट्टी के पकाते हैं।

आँवा का आँवा बिगड़ेना–सारे बिगड़ना। *आँवा बिगड़ना*–आवें के का ठीक ठीक न पकना।

आंशिक [वि.] (सं.) १–अंशसंबंधी। विषयक। हिस्से का। २–अपूर्ण। पक्षपाती।

आंशुकजल [संज्ञा पु.] (सं.) किरण दिखा पानी। वैद्यक के अनुसार वह जल के पात्र में रखकर छान लिया यह जल अत्यन्त गुणकारक है।

आंस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–पीड़ा। दर्द। दना। २–सुतली। डोरी। ३–रेशा।

आंसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) इष्ट मित्रों जाने वाली मिठाई। भाजी। बैना।

आंसू [संज्ञा पु.] (हिं.) अश्रु। आंखों से वाला जल।

आँसू गिरना–रोना। *आँसू ढबढबाना* अवस्था होना। *आंसू निकलना*। *आँसू ढलना*–आंसू गिराना। रोना। कुसमय की वर्षा।

आँसू थमना–रोना बन्द होना। *आँसू जाना*–अपनी पीड़ को रोक कर करना। *आँसू पुछना*–ढाढ़स बंधना *पोंछना*–१–बहते आंसुओं को कपड़े से २–आश्वासन देना। *आँसू भर* फूट पड़ना। *आँसू भर लाना*–रोने *आँसुओं का तार बंधना, आंसुओं* टूटना; *आँसुओं की झड़े बंधना*–अवि

बहना। *आसुओं से मुंह धोना*-खूब रोना। अत्याधिक विलाप करना।

आंसूढाल [संज्ञा पु.] (हि.) एक पशु रोग, जिसमें उनकी आंखों से जल बहा करता है।

आहड़ [संज्ञा पु.] (हि.) बरतन। भांड।

आंहां [अव्य.] (हि.) नहीं।

आ [अव्य.] (सं.) यह शब्द मर्यादा, अभिव्याप्ति और अतिक्रमण आदि में प्रयुक्त होता है। [उप.] (सं.) यह प्रायः गत्यर्थक धातुओं में प्रयुक्त होकर उनमें कुछ विशेषता ला देता है। [संज्ञा पु.] ब्रह्मा। पितामह।

आइंदा, आइन्दा [क्रिया. वि.] (फा.) आगे। भविष्य में। [संज्ञा पु.] भविष्यकाल। आने वाला समय। [वि.] आने वाला। आगन्तुक भविष्य।

आइ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आयु। जीवन।

आइना [संज्ञा पु.] (हिं.)

आइस, आइसु [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आयसु'।

आई [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-मौत। मृत्यु। २-देखो 'आइ'। [क्रि. अ.] (हि.) 'आना' का भूतकाल स्त्री.।

आईन [संज्ञा पु.] (फा.) १-नियम। विधि। २-कानून। राजनियम। विधान।

आईना [संज्ञा पु.] (फा.) दर्पण। शीशां। आरसी *आईना होना*-समझ में आजाना। *आईने में मुंह देखना*-अपनी योग्यता को जांचना।

आईनादार [संज्ञा पु.] (फा.) दर्पण दिखलाने वाला नौकर। नाई। हज्जाम।

आईनाबंदी, आईनाबन्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कमरे या बैठक में झाड़फानूस की सजावट। २-कमरे या घर के फर्श में पत्थर आदि की जुड़ाई। ३-रोशनी करने के लिये कायदे से टट्टियां खड़ी करना।

आईनासाज [संज्ञा पु.] (फा.) दर्पण या आईना बनाने वाला।

आईनासाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दर्पण बनाने का कार्य। कांच पर कलई करने का काम।

आईनी [वि.] (फा.) कानूनी। राजनियम के अनुसार।

आउंस [संज्ञा पु.] (अं.) एक अंगरेजी तौल या मान। यह दो प्रकार का होता है द्रव तथा ठोस पदार्थों को तोलने का। यह भारतीय सवा दो तोले के बराबर होता है।

आउ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आयुष्य। जीवन। उम्र।

आउज़ [संज्ञा पु.] (हि.) डफला। ताशा।

आउझ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आउज'।

आउट [वि.] (अ.) क्रिकेट के खेल में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द जिसका अर्थ हारा हुआ या बाहर निकला हुआ होता है।

आउबाउ [संज्ञा पु.] (हि.) अंडबंड बात। असंबद्ध प्रलाप।

आउस [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का धान जो मई जून में बंगाल में बोया जाता है तथा अगस्त में काट लिया जाता है। भदई। ओसहन।

आकंप, आकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) कांपना। कंपकपी।

आकंपन, आकम्पन [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा कंप। कंपकंपी।

आकंपित, आकम्पित [वि.] (सं.) काँपा हुआ। हिला हुआ।

आक [संज्ञा पु.] (हि.) मदार। अकवन। अकौवा *आक की बुढ़िया*- १-मदार का घूआ या डोडा अत्यन्त बूढ़ी स्त्री।

आकड़ा [संज्ञा पु] (हि.) मदार। आक। अकवन

आकन [संज्ञा पु.] (हि.) जोते हुए खेत में निकला हुआ घासफूस।

आक़बत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) परलोक। मरने के बाद की अवस्था।

आकबत बिगडना- १-परलोक बिगड़ना। २-बुरा परिणाम होना।

आकबत में दिया दिखाना-परलोक में काम आना।

आक़बतअंदेश [वि.] (फा.) परिणाम सोचने वाला। अग्रसोची। दूरंदेश।

आक़बतअंदेशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) परिणाम का विचार। दूरंदेशी।

आक़बतीलंगर [संज्ञा पु.] (फा.) जहाज का वह लङ्गर जो मुसीबत के समय में डाला जाता है।

आकबाक [संज्ञा पु.] (हि:) ऊटपटांग बात। वृथा की बकवाद।

आकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-खानि। उत्पत्ति स्थान २-खजाना। भंडार। ३- भेद। किस्म। जाति ३-तलवार चलाने का बत्तीस हाथों में से एक [वि.] (सं.) १-श्रेष्ठ। उत्तम। २-अधिक। दक्ष। कुशल। ४-गुणा।

आकरकढ़ा [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'आकरकरहा'।

आकरकरहा [संज्ञा पु.] (अ.) एक जड़ी। अकरकरा।

आकरखना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'आकर्पना'।

आकर-भाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूल प्राचीन भाषा जिससे आवश्यकता पड़ने पर शब्द लिये जा सकें। यथा हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत और उर्दू की अरबी फारसी।

आकरिक [वि.] (सं.) खान खोदने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) खान खोदने या खुदाने वाला मनुष्य।

आकरी [वि.] (सं.) देखो 'आकरिक'।

आकरोट, आखोट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अखरोट'।

आकर्ण [वि.] (सं.) कान तक फैला हुआ।

आकर्णन [संज्ञा पु.] (सं.) सुनना। कान करना।

आकर्णित [वि.] (सं.) सुना हुआ।

आकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-खिचाव। कशिश। २-पासे का खेल। ३-चौपड़। पासा खेलने की बिसात। ४-इन्द्रिय। ५-चुंबक। ६-कसौटी। ७-धनुष चलाने का अभ्यास।

आकर्षक [वि.] (सं.) खींचने वाला। आकर्षण करने वाला।

आकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खिंचाव। २-किसी स्थान से किसी वस्तु का बलात् दूसरे स्थान पर खिंच जाना। तंत्रशास्त्र के अनुसार वह प्रयोग जिससे दूरस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आजाता है।

आकर्षणशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जो अन्य पदार्थों को अपनी ओर खैंचती है। यह शक्ति प्रत्येक परिमाणु में विद्यमान रहती है।

आकर्षणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अँकुसी। फुल तोड़ने की एक प्रकार की लग्गी। लकसी। [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक सिक्का।

आकर्षन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आकर्षण'।

आकर्षना [क्रि. स.] (हि.) खींचना।

आकर्षित [वि.] (सं.) आकृष्ट। खिंचा हुआ।

आकलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लेना। ग्रहण। २-संग्रह। बटोरना। संचय। ३-गिनना। गिनती करना। ४-अनुष्ठान। संपादन। ५-अनुसंधान। जांच।

आकलन-पक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) खाते अथवा हिसाब का वह पक्ष या अंग जिसमें आया हुआ धन जमा किया जाताहै। क्रेडिट-साइड।

आकलन-पत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्रक जो खाते में किसी के समुचित आकलन पक्ष अथवा यथेष्ट धन जमा होने का परिचायक होता है। क्रेडिट-नोट।

आकलनीय [वि.] (सं.) १-ग्रहण करने योग्य। लेने योग्य। २-संग्रह करने योग्य। ३-गिनने योग्य। ४-जांचने या पता लगाने योग्य।

आकलित [वि.] (सं.) १-लिया हुआ। २-गुँथा हुआ। ३-गिना हुआ। परिमाणित। ४-संपादित। अनुष्ठित। ५-परीक्षित। जांचा हुआ।

आकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आकुलता। व्याकुलता बेचैनी।

आकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंगार करना। वेशरचना। २-कल्पपर्यन्त।

आकष [सज्ञा पु.] (सं.) कसौटी।

आकसमात [क्रि वि.] (हि.) देखो 'अकस्मात्'।

आकस्मात [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'अकस्मात्।

आकस्मिक [वि.] (सं.) १-सहसा होने वाला। २-योंही किसी समय हो जाने वाला।

आकस्मिक-छुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह छुट्टी जो योंही या सहसा किसी कार्य के आ पड़ने पर हो जाय।

आकस्मिक-निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश या राज्य की विषेश समय के लिये रखी गई सुरक्षित निधि या कोश जो सहसा किसी संकट अथवा कार्य के आ पड़ने पर काम में लाई जाय। जैसे भूकम्प अकाल आदि पर सहायताकार्य में लाई जाय।

आकस्मिकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अकस्मात हो जाने वाली घटना या बात।

आकांक्षक [वि.] (सं.) इच्छा करने वाला। अभिलाषा करने वाला।

आकांक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इच्छा। अभिलाषा। वांछा। चाह। २-अपेक्षा। ३-अनुसंधान। खोज। ४-न्यायानुसार वाक्यार्थ ज्ञान के चार प्रकार के हेतुओं में से एक। ५-जैनियों के अनुसार एक अतिचार।

आकांक्षित [वि.] (सं.) १-इच्छित। अभिलाषित वांछित। २-अपेक्षित।

आकांक्षी [वि.] (सं.) इच्छा करने वाला। इच्छुक चाहने वाला।

आक़ा [संज्ञा पु.] (अ.) मालिक। स्वामी।

आका [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौड़ा। अलाव। २-भट्टी। ३-पजावा। आंवां।

आकार [संज्ञा पु.] (सं.) आकृति। रूप। स्वरूप। २-डील डौल। कन्द। ३-बनावट। संगठन। ४-चिह्न। ५-चेष्टा। ५-'अ' वर्ग। ६-बुलावा।

आकारक [संज्ञा पु.] (सं.) साक्षी आदि को बुलाने के अभिप्राय से न्यायालय द्वारा भेजा गया आज्ञा-पत्र। सम्मन।

आकारण [संज्ञा पु.] (सं.) आह्वान। बुलावा।

आकारित [वि.] (सं.) आहूत। बुलाया हुआ।

आकारी [वि.] (हि.) बुलाने वाला।

आकारीठ [संज्ञा पु.] (हि.) युद्ध। संग्राम।

आकालिक [वि.] (सं.) असामयिक। बेवख्त।

आकाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-नभ। गगन। आसमान। अंतरिक्ष। २-शून्य स्थान। आकाश की ओर-क्षितिज। आकाश खुलना-बादल हटना। आसमान साफ होना। आकाश चूमना या छूना-बहुत ऊंचा होना। आकाश पाताल एक करना-१-कठिन परिश्रम करना। २-आंदोलन करना। धूम मचाना। आकाश पाताल का अंतर-बहुत बड़ा अंतर। आकाश बांधना-असंभव बात कहना। आकाश से बातें करना-बहुत ऊंचा होना। आकाश के तारे तोड़ लाना-बहुत कठिन काम कर दिखाना। आकाश पर दीया जलाना-इतराना। अभिमान करना। आकाश-पाताल के कुलावे मिलाना-भारी उद्योग करना।

आकाशकक्षा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-क्षितिज। आसमान से लगा भूमि का किनारा। २-आकाश में वह मंडल जहां तक सूर्य की किरणों का संचार है। सूर्यसिद्धांत के अनुसार इस मंडल की परिधि १८७१२०६६२०-००००००० योजन है।

आकासकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश का फूल। २-अनहोनी बात। असंभव बात।

आकाशगंगा, आकाशगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ पुराण के अनुसार आकाश में बहने वाली गंगा। २-अत्यन्त छोटे-छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण में फैला है।

आकाशगामी [वि.] (सं.) आकाश में फिरने वाला। देखो 'आकाशचारी'।

आकाशचारी [वि.] (सं.) आकाश में विचरण करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्यादिग्रह नक्षत्र। २-वायु। ३-पक्षी। ४-देवता। ५-राक्षस।

आकाशचोटी [संज्ञा पु.] (हिं.) सिर के ऊपर सीध में पड़ने वाला कल्पित बिन्दु।

आकाशजल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर से बरसने वाला जल। २-तुषार। ओस।

आकाशदीप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आकाशप्रदीप'।

आकाशदीया [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आकाशप्रदीप'।

आकाशधुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खगोल का ध्रुव

आकाशध्रुव [संज्ञा पु.] (सं.) आकाशधुरी।

आकाशनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'आकाशगंगा'।

आकाशनिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खुले हुए मैदान में सोना।

आकाशनीम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीम पर फैलने वाली बेल।

आकाशपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) [आकाश का फूल। आकाशकुसुम।

आकाशप्रदीप [संज्ञा पु.] (सं.) वह दीपक जो कार्तिक के महीने में हिन्दू लोग कंडील में रख कर ऊंचे बांस के सिरे पर बांधकर जलाते हैं।

आकाशफल [संज्ञा पु.] (सं.) संतान। लड़का लड़की।

आकाशबेल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरबेल।

आकाशभाषित [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाटक के अभिनय में एक संकेत। अभिनेता स्वयम् ही प्रश्न करता तथा स्वयम् ही आकाश की ओर देखकर उत्तर देता है तब उसे 'आकाशभाषित' कहते हैं। २-देववाणी।

आकाशमंडल, आकाशमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) नभ-मंडल। खगोल।

आकाशमुखी [संज्ञा पु.] (हि.) शैवसम्
के वह साधु जो ऊपर की ओर मुँह
तपस्या करते हैं।

आकाशमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलकुम्भी।

आकाशयान [संज्ञा पु.] (सं.) वायुयान।
जहाज।

आकाशलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) जिस जग
ग्रहों की गति, स्थिति आदि देखी जाती
मानमन्दिर। ऑबजरवेटॉरी

आकाशवचन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आका
भाषित'।

आकाशवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरबेल।

आकाशवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह वा
या शब्द जो आकाश से देवता लोग बो
देववाणी। २-रेडियो द्वारा प्रसारित ध्व

आकाशवायु [संज्ञा स्त्री] (सं) वह वायु जो पृ
मंडल को घेरे हुए है।

आकाशवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संदिग्ध आ
दनी। विना बंधी आमदनी।
[वि.] (सं.) जिस आकाशवृत्ति का ही सहा
हो। जिसे आकाशजल का ही सहारा हो।

आकाशसलिल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा का जल

आकाशास्तिकाय [संज्ञा पु.] (सं.) जैन मता
सार। छः प्रकार के द्रव्यों में से एक।

आकाशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूप आदि से बच
के लिये तानी जाने वाली चांदनी।

आकाशीय [वि.] (सं.) १-आकाशसंबंधी।
आकाश का। २-आकस्मिक।

आकिल [वि.] (अ.) बुद्धिमान्। ज्ञानी। अक्ल
मंद।

आकीर्ण [वि.] (सं.) व्याप्त। पूर्ण। भराहुआ।

आकुंचन, आकुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.)
सिकुड़ना। सिमटना। संकोचना। २-वै
षिक के मतानुसार पाँच प्रकार के कर्मों
पदार्थों का संकोचन भी एक है।

आकुंचनीय, आकुञ्चनीय [वि.] (सं.) सिकु
योग्य। सिमटने योग्य।

आकुंचित, आकुञ्चित [वि.] (सं.) १-सिकु
हुआ। सिमटा हुआ। २-टेढ़ा। कुटिल।

आकुंठन, आकुण्ठन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुठ
होना। कुंद होना। २-लज्जा। शर्म।

आकुंठित, आकुण्ठित [वि.] (सं.) १-कुं
२-लज्जित। शर्माया हुआ। ३-स्तब्ध। ज

आकुल [वि.] (सं) १-व्यग्र। व्यस्त। घबड़ा
हुआ। उद्विग्न। क्षुब्ध। २-विह्वल। कातर
अस्वस्थ। ३-संकुल। व्याप्त।

आकुलता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-व्याकुलता। घ
ड़ाहट। २-व्याप्ति।

आकुलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आकुलता'।

आकुलित [वि](सं.) १-व्याकुल । घवड़ाया हुआ । क्षुब्ध । २-व्याप्त ।

आकुलीकृत [वि.] (सं.) व्याकुल । घवड़ाया हुआ । क्षुब्ध । दुखित ।

आकुलीभूत [वि.] (सं) जो स्वयं व्याकुल हो गया हो ।

आकूत [संज्ञा पु.] (सं.) आशय । अभिप्राय । मतलब ।

आकूति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-अभिप्राय । मतलब । २-मनु की तीन कन्याओं में से एक । ३-अध्यवसाय । उत्साह । ४-सदाचार ।

आंकूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वयंभुवमनु की तीन कन्याओं में से एक ।

आकृति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-बनावट । ढांचा । गढ़न । अवयव । २-मूर्ति । रूप । ३-मुख । ४-चेष्टा । मुख का भाव । ५-२२ वर्णों की एक वर्णवृत्ति ।

आकृतिगण [संज्ञा पु.] (सं) नमूने की सूची ।

आकृष्ट [वि.] (सं.) खींचा हुआ ।

आकृष्टमानस [वि.] (सं.) भ्रान्तचित्त ।

आकृष्यमाण [वि.] (सं.) खिंचा हुआ ।

आक्रंद, आक्रन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोना । २-चिल्लाना । चीखना । ३-बुलाना । पुकार । ४-मित्र । भाई । बन्धु । ५-घोरयुद्ध । ६—ध्वनि । शब्द ।

आक्रंदन, आक्रन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोना २-चिल्लाना ।

आक्रंदित, आक्रन्दित [वि.] (सं.) १-चिल्लाता हुआ । २-रोता हुआ ।

आक्रम* [संज्ञा पु.] (सं.) पराक्रम । शूरता ।

आक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हमला । चढ़ाई । धावा । २-आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना । ३-घेरना । छेंकना । ४-आक्षेप करना । निंदा करना ।

आक्रमणीय [वि.] (सं.) आक्रमण करने योग्य । धावा या हमला करने योग्य ।

आक्रमित [वि.] (सं.) जिस पर आक्रमण किया गया हो ।

आक्रमिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्रौढा नायिका जो अपने प्रियतम को सब प्रकार से वश में कर लेती है ।

आक्रांत, आक्रान्त [वि.] (सं.) १-जिस पर आक्रमण या हमला किया गया हो । २-घिरा हुआ आवृत्त । ३-पराजित । वशीभूत । विवश । ४-व्याप्त ।

आक्रामक [वि.] (सं.) आक्रमण करने वाला ।

आक्रीड [संज्ञा पु.] (सं.) क्रीड़ा का स्थान । खेल की जगह ।

आक्रीडन [संज्ञा पु.](सं.) खेल । तमाशा । विहार

आक्रुष्ट [वि.] (सं.) कोसा हुआ । शापित ।

आक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) कोसना । शाप देना । गाली देना । अपवाद ।

आक्रोशनीय [वि.] (सं.) कोसने योग्य । शाप देने योग्य । गाली देने योग्य ।

आक्रोशित [वि.] (सं.) शापित । कोसा हुआ ।

आक्लांत, आक्लान्त [वि.] (सं.) सना हुआ । पोता हुआ । लिपटा हुआ ।

आक्लिन्न [वि.] (सं.) १-आर्द्र । तर । २-नरम । कोमल ।

आक्षिक [वि.] (सं.) द्यूत-सम्बन्धी ।

आक्षिप्त [वि.] (सं.) १-फेंका हुआ । उछाला हुआ । २-निंदित । अपमानित । ३-अपवादित दूषित ।

आक्षीव [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन ।

आक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंकना । गिराना । २-आरोप । दोष लगाना । ३-ताना । गाली । निंदा । ४-एक प्रकार का वातरोग । ५-ध्वनि

आक्षेपक [वि.] (सं.) १-निंदा करने वाला । २-आकर्षक । खींचने वाला । ३-फेंकने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) एक वातरोग जिससे शरीर कांपता है ।

आक्षेपी [वि.] (सं.) देखो 'आक्षेपक' ।

आक्षोट [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट ।

आक्साइड [संज्ञा पु.] (अं.) आक्सीजन और धातुओं के मेल से बना एक पदार्थ । मुर्चा । जंग । मोरचा ।

आक्सिजन [संज्ञा पु.] (अं.) एक गैस या सूक्ष्म । वायु । अम्लज । अम्लजन । प्राणद ।

आखंडल, आखण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

आख [संज्ञा पु.] (सं.) खंता । खंती । रंभा ।

आखत* [संज्ञा पु.] (हि.) १-अक्षत । २-चंदन या केसर में रंगा हुआ चावल जो मूर्ति स्थापना के समय मस्तक में और वर वधु के माथे में विवाह के समय लगाया जाता है ।

आख़ता [वि.] (फा.) अंडकोश निकाला हुआ । बधिया ।

आखन [क्रि. वि.] (हि.) प्रतिक्षण । हरघड़ी ।

आखना* [क्रि. स.] (हि.] १-कहना । बोलना । २-चाहना । इच्छा करना । ३-देखना । ताकना । ४-छानना ।

आखर* [संज्ञा पु.] (हि.) अक्षर । हरूफ ।

आखा [संज्ञा पु.] १-महीन कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी । २-खुरजी । गठिया [वि.] (सं.) १-कुल । पूरा । समग्रं । समूचा २-अनगढ़ा ।

आखातीज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैसाख सुदी तीज । इस दिन वट के पूजन का विधान है

आखानवमी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कार्तिक शुक्ला नवमी ।

आखिर [वि.] (फा.) १-अंतिम । पिछला । पीछे का । २-समाप्त । खतम । [संज्ञा पु.] (फा.) १-अंत । २-परिणाम । फल । [क्रि. वि.] १-अन्त में । अन्त को । लाचार होकर । हार मानकर । ३-अवश्य । जरूर । ४-भला । अच्छा । खैर ।

आखिरकार [क्रि. वि.] (फा.) सबसे पीछे । अन्त में । अन्त को ।

आखिरी [वि.] (फा.) अन्तिम । पिछला ।

आखु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूसा । चूहा । २-देवताल । देवदार का वृक्ष ।

आखुपाषाण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुम्बक-पत्थर ।

आखेट [संज्ञा पु.] (सं.) मृगया शिकार । अहेर ।

आखेटक [संज्ञा पु.] (सं.) शिकार । अहेर । मृगया । [वि.] (सं.) शिकार करने वाला । शिकारी । अहेरी ।

अखेटविधान [संज्ञा. पु.] (सं.) शिकारसंबंधी कानून ।

आखेट-स्वीकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिकार खेलने का परमिट या अनुज्ञापत्र ।

आखेटिक [संज्ञा पु.] (सं.) शिकारी । शिकारी कुत्ता ।

आखेटी [वि.] (सं.) शिकारी । अहेरी ।

आखोट [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट ।

आखोर [संज्ञा पु.] (सं.) (फा.) १-पशुओं के खाने से बचा हुआ घास या चारा । २-कूड़ा करकट निकम्मी वस्तु । [वि.] (फा.) १-निकम्मा । वेकाम । २-सड़ागला । रद्दी । ३-मैला-कुचैला ।

आखोर की *भरती*—निकम्मों का समूह ।

आख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाम । २-कीर्ति । यश । ३-विवरण । व्याख्या ।

आख्यात [वि.] (सं.) १-विख्यात । प्रसिद्ध । कथित । कहाहुआ । ३-राजकुल संवन्धित व्यक्तियों का हाल ।

अख्याता [संज्ञा पु.] (सं.) उपदेशक । व्याख्यान दाता । भाषणकर्त्ता ।

आख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ख्याति । नामवरी । २-कथन ।

आख्यातव्य [वि.] (सं.) कहने योग्य । वर्णन करने लायक ।

आख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथन । वर्णन । वृत्तान्त । २-कथा कहानी । किस्सा । ३-उपन्यास के सब भेदों में से एक ।

आख्यानक [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णन । वृत्तान्त । २-कथा । कहानी । कथानक । छोटा किस्सा ।

आख्यानकी [संज्ञा पु.] (सं.) दंडक वृत्त के भेदों में से एक । जिसके विषय में चरणों में (त+त+ज+ग+ग) हो और सब में (ज+त+ज+ग+ग) हो ।

आख्यापक [वि.] (सं.) कहने वाला ।

आख्यापन [वि.] (सं.) कहनेवाला । [संज्ञा पु.] प्रगट करना । कहना । कथन ।

आख्यायक (सं.) देखो 'आख्यापक' ।

आख्यायिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कथा । कहानी । शिक्षाप्रद कल्पित कथा ।

आख्येय [वि.] (सं.) वर्णन करने योग्य ।

आगंतुक, आगन्तुक [वि.] (सं.) १-आने वाला । आगमनशील । जो इधर-उधर से घूमता-घामता आजाय । [संज्ञा पु.] (सं.) १-अतिथि । पाहुना । २-सहसा होनेवाला रोग । ३-बिना मालिक का पशु । लावारिस पशु ।

आग [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-अग्नि । बसुंदर । २-जलन । गरमी । ताप । ३-कामाग्नि । ४-वात्सल्य प्रेम । ५-डाह । ईर्ष्या । [वि.] १-जलता हुआ । बहुत गरम । २-उष्ण गुण वाली ।

आग उठाना-झगड़ा फैलाना । आग कंजियाना या झंवाना-आग का ठंडा होना । आग का पुतला-क्रोधी । चिड़चिड़ा । आग का बाग-१-सुनार की अँगीठी । २-आतशबाजी । आग के मोल-बहुत मंहगी । आग खाना अंगार हगना-जैसा करना वैसा फल पाना । आग तलवे से लगाना-अत्यन्त क्रुद्ध होना । आग देना-१-बरबाद करना । २-दाह देना । आग निकालना-१-किसी वस्तु का अत्याधिक गर्म होना । २-किसी वस्तु की चोट या रगड़ द्वारा आग पैदा होना । आग पड़ना-मंहगा होना । आग पर आग डालना-दुःख पर दुःख देना । आग पर लौटना-बेचैन होना । आगपानी का बैर-स्वाभाविक शत्रुता । आग पानी में लगा-जहां लड़ाई न हो वहां लड़ाई करना । आग पेट की-भूख । आग फुंकना-क्रोध में और क्रोध आना । आग फूकना-आग लगाना । आग फूंस का बैर-स्वाभाविक शत्रुता । आग बढ़ना-क्रुद्ध होना । आग बन जाना-क्रोध के कारण मुख लाल होना । आग बबूला होना । आग बरसाना-तेज धूप पड़ना । आग बरसाना-शत्रु पर गोलियां चलना ।

आग बुझना-भूख मिटना । आग बुझा देना या लेना-१-बदला लेना । २-आग पर पानी डालना । आग बोना-लड़ाई या झगड़े के बीज बोना । आग भड़काना-१-हलचल मचाना । २-बदला लेने का भाव उमड़ना । आग भड़काना-देखो 'आग भड़कना' । आग भभूका बनना-गुस्से में लाल होना । आग भी न लगाना-कुछ भी न समझना । आग में बांधना-भविष्य का निश्चय करना । आग मुंह में लगाना-१-चुप होना । २-मरना ।

आग में कूदना-दूसरे का दुःख या आफत अपने सिर लेना । आग में पड़ना-देखो 'आग में कूदना' । आग में घी पड़ना-क्रोध बढ़ना । आग में झोंकना-खराब करना । आफत में झोंकना । आग में पानी डालना-झगड़ा मिटना । आग लगना-१-आग से किसी वस्तु का जलना । २-क्रोध उत्पन्न होना । ३-ईर्षा होना । ४-लाल फूलों का चारों ओर फूलना । ५-मंहगाई बढ़ना । ६-बदनामी फैलाना । ७-दूर होना । जाना । ८-किसी तीव्र भाव का उदय होना । ९-सत्यानाश होना । आग लगाना-१-आग द्वारा किसी वस्तु को जलाना । २-गरमी करना । ३-उद्वेग बढ़ाना । ४-ईर्षा उत्पन्न करना । ५-चुगली करना । ६-गुस्सा पैदा होना । ७-नष्ट करना । ८-फूंकना । ९-बड़े बड़े काम करना । (व्यंग में) । आग लगाकर तमाशा देखना-दूसरों को झगड़े में फंसाकर आप अलग हो जाना । आग लगाकर पानी को दौड़ाना-स्वयं पहिले झगड़ा उठाना फिर सब को दिखाकर उसे ठंडा करने का प्रयत्न करना । आग लगे पर कुआँ खोदना-किसी कठिन कार्य के आ पड़ने पर उसके सीधे उपाय को छोड़ बड़ी लम्बी चौड़ी युक्ति में लगना । आग लेने आना-आकर तुरन्त वापस लौट जाना । आग से पानी होना या हो जाना-गुस्सा न रहना । आग होना-क्रुद्ध होना ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊख का अगौरा । २-हल के हरसे की नोक के पास के खड्डे जिनमें रस्सी अंटकाकर जुआठे बाँधते हैं ।

आगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मुरझाई हुई बाल जिसके दाने सूख गये हों ।

आगण [संज्ञा पु.] (हिं.) अगहन । मार्गशीर्ष ।

आगणन [संज्ञा पु.] (सं.) पहले से किया गया व्यय या लागत आदि का अनुमान । कूत ।

आगत [वि.] (सं.) आया हुआ । प्राप्त । उपस्थित । [संज्ञा पु.] (सं.) मेहमान । पाहुना । अतिथि ।

आगतपतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायका जिसका प्रियतम परदेश से लौटा हो ।

आगतस्वागत [संज्ञा पु.] (सं.) आदर । सत्कार । महमानदारी ।

आगति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आगमन ।

आगपीछ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'आगापीछा' ।

आगम [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगमन । आमद । २-भविष्यकाल । ३-होनहार । भवितव्यता । ४-समागम । ५-आय । आमदनी । ६-व्याकरण में किसी शब्द साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय । ७-उत्पत्ति । ८-योगशास्त्रानुसार शब्दप्रमाण । ९-वेद । १०-शास्त्र । ११-तंत्रशास्त्र । १२-नीतिशास्त्र । नीति ।

[वि.] (सं.) आगामी । आने वाला ।

आगमजानी [वि.] (हि.) होनहार का जानने वाला ।

आगमज्ञानी [वि.] (सं.) भविष्य का जानने वाला । आगमजानी ।

आगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवाई । आमद । आना । २-आय । लाभ । प्राप्ति ।

आगमना [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगे चलने
सेना । २-पूर्वदिशा ।

आगमपतिका [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो
पतिका' ।

आगमवक्ता [वि.] (सं.) भविष्य
ज्योतिषी ।

आगमवाणी [संज्ञा स्त्रीं.] (सं.) भविष्यवा

आगमविद्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) वेदविद्या ।

आगमसोची [वि.] (सं.) अग्रसोची । दूर

आगमापायी [वि.] ((सं.) अनित्य ।
उत्पत्ति तथा विनाश हो ।

आगमित [वि.] (सं.) पढ़ा हुआ । समझा

आगमी [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी ।
वक्ता । [वि.] (सं.) होनहार कहने

आगर [संज्ञा पु.] (सं.) १-खान । आकर
समूह । ढेर । ३-कोष । निधि । ४-वह
जिसमें नमक जमाया जाता है । ५-नमक
का कारखाना । ६-ब्यौड़ा । अगरी ७-
गृह । ८-छप्पर । [वि.] (सं.) १-
उत्तम । २-चतुर । होशियार ।

आगरवध [संज्ञा पु.] (हि.) कंठमाला नामक

आगरी [संज्ञा पु.] (हि.) नमक बनाने
व्यक्ति । लोनिया ।

आलग [संज्ञा पु.] (हिं) अर्गल । ब्योंड़ा ।
(हि.) अगला । [क्रि. वि.] (हि.)
आगे ।

आगला [क्रि. वि.] (हिं.) सामने । आगे ।
(हि.) आगला ।

आगवन [संज्ञा. पु.] (हि.) आगमन । आना ।

आगवाह [संज्ञा पु.] (हिं) धुवां ।

आगस् [संज्ञा पु.] (सं.) अपराध । दोष ।

आगस्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण ।
की दिशा ।

आगा [संज्ञा पु.](सं.) १-अग्रभाग । अगाड़ी ।
शरीर का अगला भाग । ३-छाती ।
४-मुख । मुंह । ५-ललाट । माथा । ६-
न्द्रिय । ७-कमीज़, कुरते की काट में आगे
टुकड़ा । ८-घर के आगे का हिस्सा ।
का अग्रभाग । १०-नाव का
मांग । ११-घर के आगे का सहन । १२-
खीमा । आगड़ा । १३- पल्ला ।
१४-भविष्य परिणाम ।

आगातागा लेना -१-भलीभांति देखभाल
२-आवभगत करना । आदर सत्कार
आगाभारी होना-गर्म रहना । आगा
करना—हिचकना । टालमटोल
आगा पीछा सोचना-परिणाम सोचना ।
मारना-बढ़ोतरी में विघ्न डालना ।
मारा जाना-भावी उत्कर्ष में रुकावट
आगा संभालना-आघात रोकना ।

(तु.) १-मालिक सरदार । २-कबुली । अफगान ।

आगाज [संज्ञा पु.] (अ.) आरम्भ । शुरू ।

आगान [संज्ञा पु.] (हिं) प्रसंग । वर्णन । वृत्तान्त ।

आगापीछा [संज्ञा पु.) (हिं.) १-हिचक । सोच । परिणाम । पूर्वापर सम्बन्ध । ३-शरीर का अगला और पिछला भाग । शरीर के आगे तथा पीछे के गुप्ताङ्ग । आगे पीछे की अवस्था ।

आगामि, आगामी [वि] (सं) भविष्य । भावी आनेवाला ।

आगार [संज्ञा पु.) (सं.) १-घर । मन्दिर । मकान । २-स्थान । जगह । ३-कोष । खजाना ।

आगाह [वि.] (फा.) ज्ञानी । जानकर । [संज्ञा पु.] (हिं) आगम । होनहार । भविष्य ।

आगाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जानकारी । वाकफियत । विज्ञप्ति । इत्तिला ।

आगि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'आग' ।

आगिल [वि] (हि.) १-आगे का । अगला । २-भावी । भविष्य का ।

आगिला [वि.] (हिं.) देखो 'अगला' ।

आगिवर्त [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण के अनुसार एक प्रकार का मेघ ।

आगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'आग' ।

आगुआ [संज्ञा पु.] (हि.) तलवार की मुठिया के नीचे का गोल भाग ।

आगू [क्रि वि.] (हिं.) देखो 'आ' ।

आगे [क्रि. वि.] (हि.) १-अग्रभाग में । 'पीछे' का उलटा । २-समक्ष । सामने । ३-जीवन काल में । जीते जी । ४-इसके बाद । ५-भविष्य में । ६-अनंतर । बाद । ७-पहिले ८-अतिरिक्त । अधिक । ६-गोद में ।

आगे आगे-क्रमशः । आगे आना- १-सामने आना । मिलना । ३-सामना करना । भिड़ना । ४-बदला मिलना । आगे करना-अगुवा बनाना । आफत में भौंकना । आगे का कदम पीछे पड़ना- १-कायरता दिखाना । अवनति होना । आगे डोलना-बच्चों का रोना । आगे फिरना-बच्चों का रोना । आगे धरना-आदर्श बनाना । आगे लेना । आगेपीछे फिरना-खुशामद के रूप में साथ रहना । आगे पीछे रहना-देख भाल रखना । निगरानी करना । आगे दौड़ पीछे चौड़ १-आगे शीघ्रता से कार्य करते जाना परन्तु पीछे का कार्य बिगड़ना । आगे का कपड़ा खींचना-घू घट निकालना । आगे डोलता-बालक ।

आगे पीछे न होना-वंशज न होना । आगे बढ़ना-१-सामने आना । २-उन्नति करना । ३-मार्ग दिखाना । ४-बाधा पहुँचाना । ५-सामना करना । आगे रंग लाना-१-गुल खिलाना । २-भविष्य में बुराई लाना । आगे से लेना, आगे होकर लेना-स्वागत करना ।

आगौन [संज्ञा पु.] (हि.) आगमन । अवाई ।

आग्निक [वि.] (सं.) अग्निसंबंधी ।

आग्नीध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ में अग्नि प्रज्वलित करने वाला पुरोहित । २-यज्ञमंडल । ३-मनु के एक पुत्र का नाम । ४-राजा प्रियव्रत के दास पुत्रों में से एक ।

आग्नेय [वि.] (सं.) १-अग्नि संबंधी । २-जलाने वाला । जिसका देवता अग्नि हो । ४-अग्नि से उत्पन्न । [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना । २-रक्त । ३-कृत्तिकानक्षत्र । ४-कार्त्तिकेय नामक अग्निपुत्र । ५-दीपन औषधि । ६-ज्वालामुखी पर्वत । ७-प्रतिपदा । ८-ब्राह्मण । ६-अग्निकोण । १०-जहरीले तथा डंक मारने वाले कीड़ों की जाति । ११-अग्नि पुराण । १२-बारूद, लाह आदि पदार्थ जो अग्नि से भड़क उठते हैं ।

आग्नेयास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) आग उगलने वाला अस्त्र ।

आग्नेयी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-अग्नि को दीपन करने वाली औषधि । २-पूर्व तथा दक्षिण के बीच की दिशा ।

आग्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) नये अन्न से यज्ञ अथवा अग्निहोत्र ।

आग्रस्त [वि.] (सं.) छेदाहुआ । वेधाहुआ ।

आग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुरोध । हठ । २-परायणता । तत्परता । ३-बल । जोर । आवेश

आग्रहायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगहन मास । मार्गशीर्ष । २-मृगशिरानक्षत्र ।

आग्रही [वि.] (सं.) हठी । जिद्दी । आग्रह करने वाला ।

आग्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) आग्रयण । नवान्न ।

आघ* [संज्ञा पु.] (सं.) मूल्य । कीमत ।

आघर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मर्दन । मालिश । २-मंथन ।

आघर्षणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) बालों की कूंची । तूलिका ।

आघर्षित [वि] (स.) रगड़ा हुआ । मांजा हुआ ।

आघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठोकर । धक्का । २-मार । प्रहार । चोट । आक्रमण । ३-वधस्थान । बूचड़खाना ।

आघात-पत्र [संज्ञा पु] (सं.) वह पत्र जिसमे चोटों या आघातों का विवरण अंकित हो ।

आघार [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में आहुति देने का एक विधान ।

आघी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ब्याज के बदले में दिया जाने वाला अन्न ।

आघु [संज्ञा स्त्री] (हि) मूल्य । कीमत ।

आघूर्ण [वि] (सं.) १-घूमता हुआ । चक्कर खाता हुआ । २-हिलता या कांपता हुआ ।

आघूर्णित [वि.] (सं) भटकता या चक्कर खाता हुआ ।

आघ्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूंघना । २-तृप्ति ।

आघ्रात [वि.] (सं.) सूंघा हुआ । (संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण के दस भेदों में से एक ।

आच [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ ।

आचमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल पीना । २-शुद्धि के निमित्त मुँह में जल लेना । ३-पूजा से पहिले दहिने हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़कर पीना ।

आचमनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आचमन करने का पात्र जिससे आचमन किया जाता है ।

आचमनीय, आचमनीयक [वि.] (सं.) आचमन के योग्य । पीने या कुल्ला करने योग्य ।

आचमित [वि.] (सं.) पीया हुआ ।

आचय [संज्ञा पु.] (सं.) समूह । ढेर । संचय ।

आचरज [संज्ञा पु.] (हि.) आश्चर्य । अचरज ।

आचरजित [वि] हि.) आश्चर्यित । विस्मित । चकित ।

आचरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार । बर्ताव । २-अनुष्ठान । ३-रथ । छकड़ा । ४-चिह्न । लक्षण । ५-सदाचार के १५ आचरण जिन्हें बौद्ध मातानुयायी मानते हैं ।

आचरण-पुस्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्यकर्त्ता के कार्यों, आचरणों अथवा व्यवहारों का उल्लेख करने वाली पुस्तिका ।

आचरणीय [वि.] (सं.) १-अनुष्ठान करने योग्य २-व्यवहार करने योग्य ।

आचरन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आचरण' ।

आचरन [क्रि. वि.] (हि.) व्यवहार करना । आचरण करना ।

आचरित [वि.] (सं.) अनुष्ठान किया हुआ । किया हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) कर्जदार से धन वसूल करने के पांच उपायों में से एक ।

आचान* [क्रि वि.] (हिं.) देखो 'अचान' ।

आचानक [क्रि. वि.] (हि) देखो 'अचानक' ।

आचाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-भात । २-मड़ । ३-आचमन ।

आचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार । आचरण । अनुष्ठान । २-चरित्र । चालढाल । ३-शील । ४-शुद्धि । सफाई ।

आचारज [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'आचार्य्य ।

आचारजी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आचार्य का कार्य । आचार्य होने का भाव । पुरोहिताई ।

आचारभ्रष्ट [वि] (सं.) देखो 'आचारहीन' ।

आचारवान् [वि] (सं.) पवित्रता से रहने वाला । शुद्धाचरण वाला ।

आचारविचार [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्धाचरण । पवित्रता । आचार और विचार ।

आचारविरुद्ध [वि.] (सं.) पद्धति के प्रतिकूल ।

आचारहीन [वि.] (सं) बदचलन । स्वधर्मत्यागी ।

आचार से गिरा हुआ।

आचारित [वि.] (सं.) व्यवहार कियां हुआ। अनुष्ठित।

आचारी [वि.] (सं.) चरित्रवान्। आचारवान्। शुद्धाचरण वाला।

आचार्य, आचार्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपनयन के अवसर पर गायत्री मंत्र का उपदेश देने वाला। २-वेद पढ़ाने वाला। ३-यज्ञादि के क्रम का उपदेशक। ४-पुरोहित। ५-अध्यापक। ६-ब्रह्मसूत्र का प्रमुख भाष्यकार। ७-एक उपाधि।

आचार्यकुल [संज्ञा पु.] (सं.) गुरुकुल।

आचार्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आचार्य का कार्य अथवा पद।

आचार्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) आचार्य होने का भाव। आचार्यता।

आचार्यी [वि.] (सं.) [स्त्री: प्र.] आचार्य की। आचार्य-संबंधिनी।

आचिंत्य, आचिन्त्य [वि.] (हि.) १-सर्व प्रकार से चिंता के योग्य। २-अचिंत्य।

आचित [संज्ञा पु.] (सं.) १-२५ मन के बराबर का एक प्राचीन तौल। २-गाड़ी भर का बोझ। [वि.] (सं.) व्याप्त। समाया हुआ।

आच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा जिससे लाल रंग बनता है।

आच्छद [संज्ञा पु.] ढांकने का वस्त्र।

आच्छन्न [वि.] (सं.) १-ढका हुआ। आवृत्त। २-छिपा हुआ।

आच्छादक [संज्ञा पु.] (सं.) ढाँकने वाला। छिपाने वाला।

आच्छादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढकना। २-वस्त्र। कपड़ा। ३-छाजन।

आच्छादित [वि.] (सं.) १-आवृत। ढका हुआ। २-छिपा हुआ। गुप्त।

आच्छिन्न [वि.] (सं.) १-छीना हुआ। २-कटा हुआ।

आच्छेद, आच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) कांट-छांट। कटाई।

आच्छोटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चुटकी बजाना। २-उँगली चटकाना।

आछत [क्रि. वि.] (हि.) रहते हुए। होते हुए। सामने। विद्यमानता में।

आछना* [क्रि. अ.] (हि.) १-रहना। ठहरना। विद्यमान होना। २-होना।

आछा [वि.] (हिं.) देखो 'अच्छा'।

आछी [वि.] (हि.) अच्छी। भली।

आछे* [क्रि. वि.] (हिं.) भली प्रकार से। अच्छी तरह से।

आछेय [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अक्षेप'।

आछो [वि] (हिं) देखो 'अच्छा'।

आछोटण [संज्ञा पु.] (हिं.) शिकार। आखेट।

आज [संज्ञा पु.] (हि.) वर्त्तमान दिन। जो दिन बीत रहा है।

[क्रि. वि.] (हिं) अद्य। वर्तमान दिन। इन दिनों। इन समय।

आज को-१-इस समय। इस अवसर पर। आजकल करना या बताना-टालमटोल करना आजकल में-एक आध दिन में। शीघ्र ही। आजतक-इस समय तक। आजदिन-वर्तमान समय में। आजलौं-आज तक।

आज बरस कर फिर बरसेगा-ऐसा ही फिर भी होगा।

आंजकल [क्रि. वि.] (हि.) इस समय। वर्तमान दिनों में।

आजकाल [क्रि. वि] देखो 'आजकल'।

आजगव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का धनुष। पिनाक।

आजन्म [क्रि. वि.] (सं.) जीवनपर्यन्त। जन्मभर। आजीवन।

आज़माइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) परीक्षा। परख। जाँच।

आज़माना [क्रि. स.] (फा.) परखना। जाँच करना। परीक्षा करना।

आजमीढ [वि.] (सं.) १-अजमीढ राजा के वंश का। २-अजमीढ देश का नरेश।

आजमूदा [वि.] (फा.) परीक्षित। जांचा हुआ। आजमाया हुआ।

आजवह [वि.] (सं.) जिसका वाहन बकरा हो। बकरे के ढोने की।

आजा [संज्ञा पु.] (हि.) पितामह। दादा।

आजागुरु [संज्ञा पु.] (हिं.) गुरु का गुरु।

आज़ाद [वि.] (फा.) १-जो बंधा न हो। मुक्त। बरी। छूटा हुआ। २-चितारहित। बेफिक्र। ३-स्वतंत्र। स्वाधीन। ४-निडर। निर्भय। ५-स्पष्टवक्ता। ६-उद्धत। ७-एक जगह न टिकने वाला। ८-सूफी सम्प्रदाय के मुसलमान फकीर जो अद्वैतवाद के सिद्धांत को मानते हैं। तथा दाढ़ी, मूछ और भौं आदि सफाचट रखते हैं।

आजादगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्वतन्त्रता।

आजादाना [वि.] (फा.) स्वतंत्र स्वाधीन।

आजादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्वतंत्रता। स्वाधीनता।

आजान [संज्ञा पु.] उत्पत्ति। जन्मभूमि।

आजानदेव [संज्ञा पु.] (सं.) वे देवता जो सृष्टि के आरम्भ में देवता ही उत्पन्न हुए थे।

आजानु [वि.] (सं.) जाँघ तक लम्बा। घुटने तक लम्बा।

आजानुबाहु [वि.] (सं.) जिसके बाहु जानु तक लम्बे हों। घुटने तक लम्बे हाथ वाला।

आजानेय [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की एक जाति।

आजार [संज्ञा पु.] (फा.) १-रोग। बीमारी व्याधि। २-दुःख। कष्ट।

आजि [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। रण। संग्राम लड़ाई।

आजिज़ [वि.] (अ.) १-दीन। विनीत। हैरान। तंग।

आजिज़ी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) नम्रता। दीनता। विनीतभाव।

आजीव [संज्ञा पु.] (सं.) जीवन का उपाय व्यवसाय।

आजीवन [क्रि. वि.] (सं.) जीवनपर्यन्त। जिन्दगीभर।

[संज्ञा पु.] (सं.) वृत्ति का उपाय।

आजीविका [संज्ञा स्त्री.] (सं) रोजी। वृत्ति। रोजगार। जीवन-निर्वाह का सहारा।

आजीविका-कर [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवसाय पर लिया जाने वाला कर या महसूल।

आजु [क्रि. वि.] (सं.) देखो 'आज'।

आजुर्दगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खेद। दुःख।

आजुर्दा [वि.] (फा.) खिन्न। दुखी।

आजू [संज्ञा पु.] (सं.) बंगार।

आज्ञप्त [वि.] (सं.) आज्ञा दिया हुआ। आदेश दिया हुआ।

आज्ञप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आज्ञा। हुक्म। आदेश।

आज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आदेश। अनुमति। हुक्म।

आज्ञाकारी [वि.] (सं.) आज्ञा मानने वाला। हुक्म मानने वाला। सेवक।

आज्ञाचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के मतानुसार सुषुम्ना नाड़ी के बीचोंबीच दोनों भौंवों के मध्य दो दल के कमल के आकार का माना हुआ पद्माकर चक्र।

आज्ञानुगामी [वि.] (सं.) आज्ञा के अनुसार चलने वाला।

आज्ञानुसारी [वि.] (सं.) देखो 'आज्ञानुगामी'।

आज्ञापक [वि.] (सं.) १-आज्ञा देने वाला। २-प्रभु। स्वामी। हाकिम।

आज्ञापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) आदेशपत्र। हुक्मनामा।

आज्ञापन [संज्ञा पु.] (सं.) आदेश। हुक्म। सूचना। जताना।

आज्ञापालक [वि.] (सं.) १-आज्ञाकारी। आज्ञा के अनुसार चलने वाला। २-दास। टहलुआ।

आज्ञापित [वि.] (सं.) आदेश दिया हुआ। २-सूचित। जाना हुआ।

आज्ञापालन [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञा के अनुसार कार्य करना।

आज्ञाफलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी विषय अथवा व्यवहार से संबंध रखने वाली आज्ञा लिखी हो।

आज्ञाभंग, आज्ञाभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) आज्ञा का न मानना। हुक्म-उदूली।

आज्ञावह [वि] (सं.) आज्ञानुसार कार्य करने वाला।

आज्य [संज्ञा पु.] (सं.) घृत। घी।

आज्यादोह [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद की तीन ऋचाओं का एक सूक्त।

आज्यपा [संज्ञा पु.](सं.) सात पितरों में से एक।

आज्यपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) घी रखने का पात्र।

आज्यभाग [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि तथा सोम देवताओं को उत्तर और दक्षिण भागों में आघार के पीछे दी जाने वाली घी की दो आहुतियाँ।

आज्यमुक [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

आज्यास्थाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ के लिये घी रखने का पात्र।

आटना [क्रि. स] तोपना। दबाना। छिपाना। मूदना।

आटविक [वि.] (सं.) जंगल में रहने वाला।

आटा [संज्ञा पु.] किसी अन्न का चूर्ण। पिसान्ना। चून। १-बुकनी।

गरीबी में आटा गीला होना-धन की कमी के समय गांठ से कुछ और चला जाना। आटे दाल का भाव मालूम होना-व्यावहारिक ज्ञान का पता लगाना। आटेदाल की फिक्र-जीविका की चिंता। आटे की आपा-अत्यंत भोली स्त्री। आटामाटी होना-नष्टभ्रष्ट होना।

आटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रोक। अटक। डाट।

आटोप [संज्ञा पु.] १-अच्छादन। २-आडम्बर। विभव। ३-पेट की गुड़गुड़ाहट।

आट्टोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेट की नसें तनने का एक रोग। २-पेट की नसों का तनाव।

आठ [वि.] (हि.) चार का दूना। चार और चार का जोड़ '८'।

आठ-आठ आँसू रोना—अत्याधिक विलाप करना। आठों-गांठ कुम्मैत—१-सर्वगुण सम्पन्न। २-छटा हुआ। धूर्त। चतुर। आठों पहर-दिन रात।

आठक [वि.] (हिं.) आठ।

आठवां [वि.] (हि.) संख्या में आठवाँ स्थान। अष्टम।

आठें, आठों [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अष्टमी तिथि।

आडंबर, आडम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-गम्भीर शब्द। २-तुरही का शब्द। हाथी की चिंघाड़। ४-ऊपरी बनावट। मटामटी। ढोंग। झूठा आयोजन। ५-आच्छादन। ६-तम्बू। ७-युद्ध में बजाया जाने वाला बड़ा ढोल। पटह। ८-दर्प।

आडंबरी, आडम्बरी [वि.] (सं) १-अभिमानी। घमंडी। २-आडम्बर करने वाला। ऊपरी बनावट रखने वाला।

आड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ओट। परदा। ओझल। २-रक्षा। शरण। आश्रय। ३-रोक। ४-थूनी। टेक। ५-ईंट या पत्थर का टुकड़ा जो रोक के लिये पहिये के पीछे लगाते हैं। ६-संगीत के अंतर्गत अष्टताल का एक भेद। ७-बिच्छू या भिड़ का डंक। ८-स्त्रियों के माथे पर लगाने की टिकली। ६-माथे पर का आड़ा तिलक। १०-एक प्रकार का करछुल। ११-तिल की बोंड़ी जिसमें तिल भरे रहते हैं।

आड़गीर [संज्ञा पु.] (हि.) खेत के किनारे उगने वाली घास।

आड़ण [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ढाल।

आड़न [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ढाल।

आड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-रोकना। छंकना। २-बांधना। ३-न करने देना। ४-गिरवी रखना।

आड़बंद, आड़बन्द [संज्ञा पु.] (हि.) जाँघिये पर कसने का लंगोट। फकीरों का लंगोट।

आड़बन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आड़बंद'।

आड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) १-धारीदार वस्त्र। २-जहाज का लट्ठा या शहतीर। ३-नाव या जहाज में लगे हुए बगली तख्ते। ५-जुलाहों का वह सामान जिस पर सूत फैलाते हैं। [वि.] (हि.) तिरछा।

आड़े आना-१-विघ्न डालना। २-कठिन समय में सहायक होना। *आडा तिरछा होना*-बिगड़ना। *आड़े पडना*-बीच में पड़ना। *आड़े हाथों लेना*-व्यंग्योक्ति से लज्जित करना। खरीखोटी सुनना। *आडा होना*-रुकावट डालना।

आड़ा-खेमटा [संज्ञा पु.] (हिं.) मृदंग का साढ़े तेरह मात्राओं का एक ताल।

आड़ा-चौताल [संज्ञा पु.] (हिं.) मृदंग का सात पूर्ण मात्राओं का एक ताल। जिसमें चार आघात और तीन खाली होते हैं।

आड़ा-ठेका [संज्ञा पु.] (हि.) नौ मात्राओं का एक ताल।

आड़ा-पंचताल [संज्ञा पु.] (हिं.) ५ आघात और ६ मात्राओं का एक ताल।

आड़ालोट [संज्ञा स्त्री.](हि.) कंपकंपी। चंचलता। डांवाडोलपन।

आडि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक प्रकार की मछली। २-शरालि नामक जलपक्षी।

आडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संगीत में एक ताल। २-चमारों की छुट्टी। ३-ओर। तरफ। ४-सहायक। अपने पक्ष का। ५-देखो 'आरी'।

आड़ू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का फल। शफतालू।

आढ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) चार सेर की एक तौल। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ओट सहारा। ३-अन्तर। बीच। नागा।

आढ़आढ़ करना-बीच में अवधि डालना।

[वि.] (सं.) कुशल। दक्ष। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की मछली। स्त्रियों के माथे पर पहिनने का आभूषण। टीका।

आढक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार सेर के बराबर का एक तौल। अन्न नापने का एक पात्र। ३-अरहर।

आढकी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अरहर नामक एक अन्न सुगन्धित मिट्टी।

आढ़त [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-किसी व्यापारी का माल बिकाने का व्यापार। २-माल की बिक्री कराने के एवज में मिलने वाला कमीशन।

आढ़तदार, आढ़तिया [संज्ञा पु.] (हि.) आढ़त का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

आढ़ती [वि.] (हि.) आढ़त सम्बन्धी।

आढ्यंकर, आढ्यङ्कर [वि.] (सं.) असम्पन्न को सम्पन्न करने वाला।

आढ्य [वि.] (सं.) सम्पन्न। विशिष्ट। धनी। युक्त।

आढ्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विभव। ऐश्वर्य।

आणक [संज्ञा पु.] (सं) एक रुपये का सोलहवां भाग। आना। [वि.] (सं.) अधम। कुत्सित।

आतंक, आतङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोब। दबदबा। प्रताप। २-भय। शंका। ३- रोग। ४-मुरचंग की ध्वनि।

आत [संज्ञा पु.] ((सं.) १-शरीफा। २-सीताफल।

आतताई [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आततायी'

आततायिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वध। चोरी।

आततायी [संज्ञा पु.] (सं.) १-आग लगाने वाला विष देने वाला। ३-भूमि छीनने वाला। ४-धन हरने वाला। ५-स्त्री हरने वाला। ६-जान से मारने को उद्यत।

आतप [संज्ञा पु.] (सं.) १-धूप। घाम। २-गर्मी उष्णता। ३-सूर्य का प्रकाश। ४-ज्वर। बुखार।

आतपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) छाता। छतरी।

आतपशुष्क [वि.] (सं.) धूप में सुखाया हुआ।

आतपी [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। [वि.] धूप का। धूप या घास सम्बन्धी।

आतपोदक [संज्ञा पु.] (सं.) मृगतृष्णा।

आतम [वि.] (हि.) देखो 'आत्म'।

आतमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'आत्मा'।

आतर [संज्ञा पु.] उतराई। नदी पार करने का

कर। नाव का भाड़ा।

आतपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) मांगलिक लेपन।

आतश [संज्ञा स्त्री] (फा.) अग्नि। आग।

आतशक [सज्ञा स्त्री.] एक रोग। उपदंश रोग। फिरंगरोग। गर्मी।

आतशखाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-अग्नि रखने का स्थान। २-पारसी लोगों के अग्नि स्थापन का स्थान।

आतशगाह [संज्ञा पु.] (फा) देखो 'आतशखाना'।

आतशजनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आग लगने का कार्य।

आतशदान [संज्ञा पु.]. (फा) अंगीठी। बोरसी।

आतशपरस्त [संज्ञा पु.] (फा.) अग्निपूजक। पारसी।

आतशबाज [संज्ञा पु.] (फा) आतशबाजी बनाने वाला। हवाईगढ़।

आतशबाजी [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-बारूदनिर्मित खिलौने के जलने का दृष्य। २-बारूद से बने खिलौने जिनमें से नाना प्रकार की रङ्गबिरङ्गी चिनगारियां निकलती हैं। ३-अगौनी।

आतशी [वि.] (फा.) १-अग्निसम्बन्धी। २-अग्नि उत्पन्न करने वाला। ३-जो आग में तपाने से टूटने या तड़कने वाली न हो।

आतापी [संज्ञा पु] (फा) १-एक असुर का नाम २-चील नामक पक्षी।

आतार [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'आतार'।

आतासंदेश [संज्ञा पु.] (बं.) छेने की बनी एक बंगला मिठाई जिसमें शरीफे की सी महक आती है।

आतिथेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अतिथि सेवा में निपुण व्यक्ति। अतिथि-सत्कार-संबंधी सामग्री।

आतिथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अतिथि की परिचर्या। पहुनाई। मेहमानदारी। २-अतिथि को देने योग्य वस्तु।

आतिवाहिक [संज्ञा पु.] (सं.) मरने के उपरान्त यमलोक जाने वाली वायुमय लिंगशरीर।

आतिश [संज्ञा स्त्री.] (फा) देखो 'आतश'।

आतिशय्य [संज्ञा पु] (सं) आधिक्य। बहुतायत। अधिकाई।

आतीपाती [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बालकों द्वारा छिपने और छूने का एक खेल।

आतुर [वि.] (सं.) १-व्याकुल। व्यग्र। घबड़ाया हुआ। २-उद्विग्न। बेचैन। अधीर ३-उत्सुक। ४-दुखी। [क्रि वि] (सं) शीघ्र। जल्दी।

आतुरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घबड़ाहट। व्यग्रता। व्याकुलता। २-शीघ्रता।

आतुरताई, आतुरतायी [संज्ञा स्त्री] (हि) उतावलापन। शीघ्रता।

आतुरसन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) वह सन्यास जो मरने से कुछ समय पूर्व ही धारण कराया जाता है।

आतुरी [सज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घबड़ाहट। व्याकुलता। २-शीघ्रता। उतावलापन।

आतुर्य [सज्ञा पु.] (सं.) १-घबड़ाहट। व्यग्रता। २-उतावलापन।

आत्त [वि.] (सं.) गृहीत। स्वीकृत।

आत्तलक्ष्मी [वि.] (सं.) धन गंवा देने वाला।

आत्म [वि.] (सं.) अपना। स्वकीय। निजी।

आत्मक [वि.] (सं.) मय। युक्त।

आत्मकल्याण [संज्ञा पु.] (सं) अपना ही भला। अपनी भलाई।

आत्मकाम [संज्ञा पु.] (सं.) स्वार्थी। मतलबी।

आत्मकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) निजी काम। अपना ही काम।

आत्मकृत [वि.] (सं.) अपने ही हाथ से किया हुआ।

आत्मगत [अव्य.] (सं.) आप ही आप। स्वगत।

आत्मगुप्त [वि.] (सं.) अपनी ही शक्ति द्वारा रक्षित।

आत्मगुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवांच।

आत्मगौरव [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मान का विशेष ध्यान। अपनी बड़ाई।

आत्मग्राही [वि.] (सं.) स्वार्थी। मतलबी।

आत्मघात [संज्ञा पु.] (सं.) अत्महत्या। अपने हाथों अपने को मार डालने का कार्य। खुदकुशी।

आत्मघातक [वि.] (सं.) देखो 'आत्मघाती'।

आत्मघाती [वि.] (सं.) अपने हाथों अपने को मार डालने वाला।

आत्मघोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपनी बोली में अपना नाम पुकारने वाला। २- मुर्गा। ३-कौवा। [वि.] अपने मुँह मियांमिट्ठू बनने वाला। स्वयं अपनी बड़ाई करने वाला।

आत्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। लड़का। २-कमदेव। ४-रक्त।

आत्मजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) कन्या। पुत्री।

आत्मजात [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आत्मज'।

आत्मजिज्ञासा [संज्ञा स्त्री] (सं) अपने को जानने की अभिलाषा।

आत्मजिज्ञासु [वि.] (स .) अपने को जानने की अभिलाषा रखने वाला।

आत्मज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) जिसे निज स्वरूप का भली भाँति ज्ञान हो। सिद्ध। ब्रह्मज्ञ।

आत्मज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्मा तथा परमात्मा के संबंध में जानकारी। २-ब्रह्म का साक्षात्कार।

आत्मज्ञानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आत्मा तथा परमात्मा के संबंध में जानकारी रखने वाला।

आत्मतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा का स्वरूप।

आत्मतत्वज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्ती।

आत्मतुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मज्ञान उत्पन्न संतोष। आत्मा का आनन्द। [वि.] (सं.) आत्मज्ञान द्वारा संतोष करने वाला।

आत्मत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे की भलाई निमित्त अपने स्वार्थ का त्याग। परोपकार भावना से अपने लाभ की ओर ध्यान न

आत्मत्यागी [वि.] (सं.) दूसरों की भलाई के लिये अपने स्वार्थ का त्याग करने वा

आत्मदान [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा का आत्मत्याग।

आत्मद्रोही [वि.] (सं.) अपनी ही हानि वाला। चिड़चिड़ा।

आत्मन [संज्ञा पु.] (सं.) अपनापन। निजत्व

आत्मनिंदा, आत्मनिन्दा [संज्ञा पु.] (सं.) अपना तिरस्कार।

आत्मनिवेदन [संज्ञा पु.] (स.) १-आत्मसम अपना सबकुछ देवता को अर्पित करदेना। नवधाभक्ति में से अंतिमभक्ति।

आत्मनिवेदनासक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) अपने तथा अपने सर्वस्व को अपने इष्टदेव समर्पित करने की उत्कट अभिलाषा।

आत्मनिष्ठ [वि.] (सं.) मोक्ष की अभि करने वाला व्यक्ति।

आत्मपरित्याग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आत्म निवेदन'।

आत्मनीन [संज्ञा पु.] १-पुत्र। २-साला। विदूषक।

आत्मनेपद [संज्ञा पु.] (सं.) संस्कृत व्याकरण धातु में लगने वाले दो प्रत्ययों में से एक।

आत्मप्रबोध [संज्ञा पु.] (स) देखो 'आत्मज्ञा

आत्मप्रभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। कामदेव।

आत्मप्रशंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं) अपने मुँह अपनी प्रशंसा या बड़ाई करना।

आत्मबंधु, आत्मबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) मौसेरा और फुफेरा भाई।

आत्मबुद्धि [संज्ञा स्त्री] (सं) आत्मा के में जानकारी।

आत्मबोध [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'आत्मज्ञान'।

आत्मंभरि, आत्मम्भरि [संज्ञा पु.] (सं.) अपने को पालने वाला व्यक्ति।

आत्मभव [वि] (सं) १-अपने आप उत्पन्न २-अपने आप निकला हुआ।

आत्मभू [वि] (सं) १-अपने शरीर से उत्पन्न २-आप ही आप उत्पन्न। [संज्ञा पु.]

१-पुत्र। २-विष्णु। ३-ब्रह्मा। ४-कामदेव। ५-शिव।

आत्मयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। विष्णु। ३-शिव। ४-कामदेव।

आत्मरक्षक [वि.] (सं.) अपनी रक्षा करने वाला

आत्मरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) अपना बचाव। अपनी रक्षा।

आत्मरक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनी रक्षा। अपना बचाव या हिफाजत।

आत्मरत [वि.] (सं.) आत्मा से प्रेम करने वाला। आत्मज्ञान प्राप्त।

आत्मरति [संज्ञा स्त्री] (सं.) आत्मज्ञान। आत्मा का आनन्द।

आत्मवंचक, आत्मवञ्चक [वि.] (सं.) अपने ही को धोखा देने वाला। स्वयं अपनी हानि करने वाला। कृपण। कंजूस।

आत्मवंचना, आत्मवञ्चना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वयं अपने को धोखा देना।

आत्मवत् [अव्य.] (सं.) अपनी तरह।

आत्मवध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आत्मघात'।

आत्मवश [वि.] (सं.) जितेन्द्रिय।

आत्मविक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) अपने शरीर को किसी के हाथ बेच देना।

आत्मविक्रयी [वि.](सं.) अपने को बेचकर दास बनने वाला।

आत्मविक्रेता [वि.] (सं.) स्वयं अपने को बेच डालने वाला।

आत्मविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) योगाभ्यास द्वारा परमात्मा के स्वरूप की जानकारी।

आत्मविद्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-आत्मा तथा परमात्मा की जानकारी बताने वाली विद्या। आध्यात्म-विद्या। २-*मिस्मेरिज्म*।

आत्मविस्मृति [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपने को भूल जाना। आत्मविस्मरण।

आत्मवृत्तान्त [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी कहानी। निजी आख्यान।

आत्मवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने जीवन का उपाय। पेशा या व्यवसाय।

आत्मशल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावरी।

आत्मशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देहशुद्धि। चित्त-शुद्धि। मन की पवित्रता।

आत्मश्लाघा [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी प्रशंसा।

आत्मश्लाघी [वि.] (सं.) अपनी प्रशंसा करने वाला।

आत्मसंभव, आत्मसम्भव [वि.] अपने शरीर से उत्पन्न। बेटा। पुत्र।

आत्मसंयम [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी चित्त-वृत्ति को वश में रखना। अपने मन को रोकना।

आत्मसंवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी आत्मा का अनुभव। आत्मबोध।

आत्मसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) अपना सुधार। निज का सुधार।

आत्मसमुद्भव [वि.] १-अपने शरीर से उत्पन्न। २-आप ही आप उत्पन्न। ३-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव। ४-कामदेव। ५-पुत्र।

आत्मसमुद्भवा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कन्या। बेटी। २-बुद्धि।

आत्मसाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) जीवों का द्रष्टा।

आत्मसात् [अव्य.] (सं.) सर्व प्रकार से अपने आधीन।

आत्मसिद्ध [वि.] (सं.) अपने-आप बना हुआ। बिना प्रयास ही होने वाला।

आत्मसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आत्मभाव की प्राप्ति। मोक्ष। मुक्ति।

आत्मस्तुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनी प्रशंसा। आत्मश्लाघा।

आत्महत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आत्मघात। खुद-कुशी। अपने-आपको मार डालना।

आत्महन [वि.] (सं.) आत्मघाती। अपने-आपको मार डालने वाला।

आत्महिंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आत्मघात। आत्म-हत्या। खुदकुशी।

आत्महित [वि.] (सं.) अपना भला चाहने वाला

आत्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीव। २-चित्त। ३-मन। ४-बुद्धि। ५-अहंकार। ६-ब्रह्म। ७-देह। शरीर। ८-सूर्य। ९-अग्नि। १०-वायु। ११-स्वभाव। १२-धम। १३-पुत्र। बेटा।

आत्मा ठंडी होना—१-तुष्टि होना। संतोष होना। २-भूख मिटाना। *आत्मा मसोसना*—१-भूख दबाना। २-किसी उत्कट अभिलाषा को दबाना।

आत्मादिष्ट [वि.] (सं.) अपने-आप उपदेश प्राप्त

आत्माधीन [वि.] अपने आधीन या वश में। १-पुत्र। २-विदूषक।

आत्मानंद, आत्मानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-आत्मा में लीन होने का सुख। २-आत्मज्ञान

आत्मानुभव [संज्ञा पु.] (सं.) अपना तजुरबा।

आत्मानुरूप [वि.] (सं.) जो जाति, वृत्ति तथा गुणादि में अपने तुल्य हो।

आत्माभिमान [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मान या प्रतिष्ठा का ख्याल।

आत्माभिमान [वि.] (सं.) अपने मान या प्रतिष्ठा का ध्यान रखने वाला।

आत्माराम [संज्ञा पु.] (सं.) १-आत्मा के ज्ञान से संतुष्ट योगी। २-जीव। ३-ब्रह्म। ४-सुग्गा। तोता।

आत्मावलंबी, आत्मावलम्बी [वि.] (सं.) अपने बलपर सब कार्य करने वाला।

आत्मिक [वि.] (सं.) १-आत्मा से संबंध रखने वाला। २-अपना। ३-मानसिक।

आत्मीकृत [वि.] (सं.) स्वीकृत। अपनाया हुआ

आत्मीय [वि.] १-आत्मसंबंधी। २-निजका। अपना। स्वजन। अपना संबंधी। रिश्तेदार। इष्टमित्र।

आत्मीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनायत। मैत्री। अपना खास रिश्ता।

आत्मेश्वर [वि.] (सं.) अपने मन पर अधिकार रखने वाला।

आत्मोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) स्वार्थ का परित्याग। दूसरे की भलाई के निमित्त अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना।

आत्मोद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) सांसारिक विषयों का परित्याग और परमार्थिक पदार्थों का ग्रहण। मोक्ष। मुक्ति।

आत्मोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-कामदेव।

आत्मोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कन्या। २-बुद्धि।

आत्मोन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आत्मा की उन्नति। २-अपना उत्कर्ष।

आत्मोपम [वि.] (सं.) अपने तुल्य।

आत्म्य [वि.] (सं) आत्मासंबंधी।

आत्यंतिक, आत्यन्तिक [वि.] (सं.) अतिशय। अत्यधिक। जो बहुतायत में हो।

आत्रेय [वि.] (सं.) अत्रिगोत्र वाला। अत्रि सम्बन्धी। १-अत्रि के पुत्र। २-दीनाजपुर ज़िले के अंतर्गत आत्रेयी नदी के तट का प्रदेश।

आत्रेयी [संज्ञा स्त्री.] १-एक तपस्विनी। २-एक नदी विशेष। ३-रजस्वला स्त्री। ४-अत्रि गोत्र की स्त्री।

आथ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अर्थ'।

आथना* [क्रि. अ.] (हि.) होना। रहना।

आथर्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अथर्ववेद का ज्ञाता ब्राह्मण। अथर्ववेदविहित कर्म। ३-अथर्वा नामक ऋषि का पुत्र। ४-अथर्वा गोत्रोत्पन्न।

आथि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूंजी। जमा।

आदंश [संज्ञा पु.] (सं.) दांत। डंक। दशन।

आदत [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वभाव। प्रकृति। २-अभ्यास। टेव। चाल।

आदत्त [वि.] (सं.) गृहीत। पकड़ा हुआ। स्वीकृत

आदम [संज्ञा पु.] (अ.) यहूदियों और मुसलमानों धर्मशास्त्रों के अनुसार मनुष्य का आदि प्रजापति।

आदमचश्म [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का घोड़ा जो बड़ा नटखट होता है।

आदमज़ाद [संज्ञा पु.] (अ.) १-आदम की संतान।

२-मनुष्य ।

आदमियत [संज्ञा पु.] (अ.) मनुष्यत्व । इनसानियत । २-सभ्यता ।

आदमी [संज्ञा पु.] (अ.) १-मनुष्य । मानव । २-नौकर । सेवक । ३-पति । स्वामी ।

आदमी बनना-सभ्यता या शिष्टता सीखना ।

आदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्मान । सत्कार । २-प्रतिष्ठा । इज्जत ।

आदरणीय [वि.] (सं.) आदर के योग्य । सम्माननीय ।

आदरना❀[क्रि.वि.] (हि.) आदर करना । सम्मान करना । इज्जत करना । मानना ।

आदरभाव [संज्ञा पु.] (सं.) सम्मान । सत्कार । प्रतिष्ठा ।

आदरस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आदर्श' ।

आदर्य [वि.] (सं.) आदरणीय । सम्माननीय ।

आदर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्पण । शीशा । २-टीका । व्याख्या । ३-वह जिसके रूप तथा गुणादि का अनुकरण किया जाय । नमूना ।

आदर्शमंदिर, आदर्शमन्दिर [संज्ञा पु.] शीश महल ।

आदर्शित [वि.] (सं.) दिखलाया हुआ ।

आदहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलन । ईर्षा । २-श्मशान ।

आदा+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अदरक ।

आदान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी से कुछ लेने या ग्रहण करने का भाव ।

आदान-प्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) लेनादेना ।

आदापन [संज्ञा पु.] (सं.) निमन्त्रण । न्यौता ।

आदाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-नियम । २-लिहाज । ३-नमस्कार । प्रणाम ।

आदाब अर्ज करना-नमस्कार करना । *आदाब बजा लाना*-नियमानुसार प्रणाम करना ।

आदि [वि.] (सं.) १-प्रथम । पहला । आरम्भ का २-बिलकुल । [संज्ञा पु.] १-आरम्भ । बुनियाद । मूलकारण । २-ईश्वर ।

आदिक [अव्य.] (सं.) आदि । वगैरह ।

आदिकवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाल्मीकिऋषि । २-शुक्राचार्य ।

आदिकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर ।

आदिकारण [संज्ञा पु.] (सं.) मूलकारण । सब कारणों का मूल तथा प्रकृति, ईश्वर ।

आदित [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आदित्य' ।

आदित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अदित के पुत्र । २-देवता । ३-इन्द्र । ४-सूर्य । ५-वामन । ६-वसु । ७-विश्वेदेवा । ८-बारह मात्राओं के छंदों की एक संज्ञा । ९-आक का पौधा ।

आदित्यकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम जिसकी ९ पीढ़ियों ने ३७५ वर्ष तक दिल्ली में राज्य किया था ।

आदित्यपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) लाल फूल का आक या मदार ।

आदित्यभक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुरहुर ।

आदित्यमंडल, आदित्यमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का वृत्त ।

आदिव्यवर [संज्ञा पु.] (सं.) रविवार ।

आदिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-सूर्य । ३-विष्णु ।

आदिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

आदिम [वि.] (सं.) पहले का । प्रथम । पुराना ।

आदिम-निवास [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रदेश या राज्य के मूल निवासी ।

आदिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूमि । पृथ्वी ।

आदिमान [संज्ञा पु.] (सं.) वह आदर अथवा मान जो किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्य को औरों से पूर्व दिया जाता है ।

आदिरस [संज्ञा पु.] (सं.) शृंगार रस ।

आदिल [वि.] (फा.) न्याय करने वाला ।

आदिवंश (संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरातनकुल । २-प्रथम-कुल ।

आदिवासी [संज्ञा पु.] (सं.) मूलनिवासी । देखो 'आदिम निवासी' ।

आदिविपुला [संज्ञा पु.] (सं.) वह आर्य्याछन्द जिसके प्रथम पाद के गणत्रय में पाद अपूर्ण हो, तथा दूसरे दल में दूरा और चौथा गण जगण हो ।

आदिविपुलाजघनचपला [संज्ञा पु.] (सं.) वह आर्य्याछन्द जिसके प्रथम पाद के गणत्रय में पाद अपूर्ण हों, और दूसरे दल में दूसरा तथा चौथा गण जगण हो ।

आदिशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईश्वर की मायारूप शक्ति ।

आदिश्यमान् [वि] (सं.) आदेश पाया हुआ ।

आदिष्ट [वि.] (सं.) १-जिसे आदेश मिला हो । २-जिसको आज्ञा दी गई हो ।

आदी [वि.] (अ.) अभ्यस्त ।

❀ + [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अदरक ।

आदीचक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की अदरक ।

आदीनव [संज्ञा पु.] (सं.) १-दोश । क्लेश ।

आदीपक [वि.] (सं.) उद्दीपक । प्रकाशक ।

आदीपित [वि.] (सं.)उद्दीपित । प्रकाशित ।

आदीप्त [वि.] (सं.) जलाया हुआ ।

आदृत [वि.] (सं.) सम्मानित । आदर किया हुआ ।

आदेय [वि.] (सं.) लेने योग्य । ग्रहण करने योग्य ।

आदेयकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमत वह कर्म जिससे जीव जो कहे वही

आदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-आज्ञा । ३-नमस्कार । प्रणाम । ४-ग्रहों ५-व्याकरण में एक अक्षर की अक्षर आना । अक्षर परिवर्त्तन ।

आदेशक [वि.] (सं.) आज्ञा देने उपदेश देने वाला ।

आदेशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्मन । लय का वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा को उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती

आदेस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आदेश' ।

अद्यांत, अद्यान्त [क्रि. वि.] (सं.) आदि से तक । आद्योपांत ।

आद्य [वि.] (सं.) पहला । आरम्भ का ।

आद्य-शेष [संज्ञा पु.] (सं.) हिसाब से पृष्ठ की बाकी जो नये खाते या नये चली जाय । ओपनिंग बैलेंस ।

आद्यश्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह श्राद्धों पहला ।

आद्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दुर्गा । २-दस विद्याओं में से प्रथम ।

आद्याक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) संक्षिप्त हस्ताक्षर

आद्याक्षरित [वि.] (सं) जिस पर रूप में नाम के शब्दों के आरम्भ के लिखे हों । इनीशियल्ड ।

आद्योत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश । उजाला ।

आद्योपांत आद्योपान्त [क्रि. वि] (सं.) अखीर तक ।

आद्रा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'आर्द्रा' ।

आध [वि.] (हि.) आधा । दो बराबर से एक ।

आधर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय द्वारा युक्त को दोषी समझकर अपराध करना तथा दंड देना । कनविक्शन ।

आधर्षित [वि.](सं) १-अपमानित । २-अपराध सिद्ध होने पर न्यायालय दंडित होने वाला ।

आधा [वि.] (सं) दो समान भागों में अर्द्ध ।

आधा होना-दुर्बल होना । *आधोंआध*-दो भागों में । *आधा तीतर आधा बटेर*- अंडबंड । *आधेआध*-दो समान भागों हुआ । *आधीबात*-तनिक सी भी जनक बात । *आधेपेट खाना*-भर पेट न करना । *आधेपेट रहना*-तृप्त होकर न *आधी बात कहना* या मुँह से तनिक सी भी अपमानजनक बात *आधी बात न पूछना*-कुछ कदर न करना ।

आधाझारा [संज्ञा पु.] (सं.) अपामार्ग । ओंगा । चिचड़ा ।

आधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थापना । रखना । २-गिरवी या रहन रखना । ३- गर्भ ।

आधानवती [संज्ञा स्त्री.] (सं) गर्भवती ।

आधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहारा । आश्रय । अवलम्ब । २-व्याकरण में अधिकरणकारक । ३-थाला । आलवाल । ४-पात्र । ५-नींव । जड़ । मूल । ६-योग शास्त्र में एक चक्र का नाम । [वि.] आश्रय देने वाला । पालन करने वाला ।
आधार होना-थोड़ा पेट भर जाना ।

आधारिक [वि.] (सं.) १-आधार सम्बन्धी । २-जिस पर कोई अन्य बड़ी वस्तु की स्थिति हो ।

आधारित [वि.] (सं.) अवलम्बित । आश्रित । किसी के सहारे पर ठहरा हुआ ।

आधारी [वि.] (सं.) सहारे पर रहने वाला । [संज्ञा स्त्री.] अड्डे के आकार की एक लकड़ी जिसका सहारा लेकर साधु लोग बैठते हैं ।

आधासीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अर्ध कपाली । आधे सिर की पीड़ा ।

आधि [संज्ञा स्त्री.](सं.) मानसिक व्यथा । चिंता । २-रहन । गिरवी । बन्धक ।

आधिक [वि.] (हि.) आधे के लगभग ।

आधिकरणिक [वि.] (सं.) १-न्यायालय से सम्बन्धित । न्यायालय की आज्ञा या आदेश से होने वाला ।

आधिकर्त्ता [संज्ञा पु.] ऋण के बदले सब कुछ बन्धक रखने वाला व्यक्ति । परिपणधाता । (पान्-अर्) ।

आधिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) अधिकता । बहुतायत ।

आधिदैविक [वि.] (सं.) देवताकृत । यक्ष, देवता भूत-प्रेत आदि द्वारा होने वाला दुःख ।

आधिपत्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभुत्व । स्वामित्व । सरदारी ।

आधिधर्ता [संज्ञा पु.](सं.) वह व्यक्ति जिसके पास गिरवी रक्खा जाता है ।

आधिभोग [संज्ञा पु.] (सं.) बन्धक की वस्तु को उपयोग में लाना ।

आधिभौतिक [वि.] (सं.) व्याघ्र, सर्प आदि द्वारा प्राप्त (दुःख)

आधिवेदनिक (धन) [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरा विवाह करने से पूर्व पहली पत्नी को संतुष्ट करने के निमित्त दिया जाने वाला साधन ।

आधीन [वि.] (हि.) देखो 'अधीन' ।

आधीनता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अधीनता' ।

आधीरात [संज्ञा स्त्री] (हि.) अर्धरात्रि । रात के बारह बजे का समय ।

आधुनिक [वि.] (सं) अर्वाचीन । वर्तमान समय का । नवीन । सांप्रतिक ।

आधूत [वि.] (सं) १-कांपता हुआ । पागल । व्याकुल ।

आधेक [वि.] (हि.) आधे के बराबर ।

आधेय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के सहारे पर टिकी हुई वस्तु ।
[वि.] (सं.) १-ठहराने योग्य । २-रचने योग्य । ३-रहन रखने योग्य ।

आधोरण [संज्ञा पु.] (सं.) हाथीवान । महावत ।

आध्मान [संज्ञा पु.] (सं.) पेट फूलने का एक रोग विशेष । अफरा ।

आध्या [संज्ञा स्त्री] (सं) चिंता । फिक्र ।

आध्यात्मिक [वि.] (सं.) आत्मासम्बन्धी ।

आध्वरिक [वि.] (सं.) सोमयज्ञ सबंधी ।

आनंद, आनन्द (सं.) हर्ष । प्रसन्नता । खुशी ।

आनंदक, आनन्दक [वि.] (सं.) आनंद देने वाला ।

आनंदकर, आनन्दकर [वि.] (सं.) देखो 'आनन्दक' ।

आनंदता, आनन्दता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खुशी । प्रसन्नता ।

आनंदना, आनन्दना [क्रि. अ.] (हिं) प्रसन्न होना ।

आनंदपट, आनन्दपट [संज्ञा पु.] (सं.) वधु के वस्त्र । दुलहिन की पोशाक ।

आनंदबधाई, आनन्दबधाई [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मंगल उत्सव । २-मंगल अवसर पर ।

आनंदवन, आनन्दवन [संज्ञा पु.] (सं.) काशी । बनारस । वाराणसी ।

आनंदभैरव, आनन्दभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रस ।

आनंदभैरवी, आनन्दभैरवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भैरव राग की एक रागनी ।

आनंदमत्ता, आनन्दमत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की नायिका । देखो 'आनन्दसम्मोहिता'

आनंदसम्मोहिता, आनन्दसम्मोहिता [संज्ञा-स्त्री.] (सं.) वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्याधिक निमग्न होने के कारण मुग्ध हो रही हो ।

आनंदित, आनन्दित [वि.] (सं.) प्रसन्न । हर्षित । प्रमुदित । सुखी ।

आनंदी, आनन्दी [वि.] (सं.) प्रसन्न रहने वाला । हर्षित । सुखी ।

आन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मर्य्यादा । २-शपथ । सौगन्ध । ३-दुहाई । विजयघोषणा । ४-ढंग । तर्ज । ५-लमहा । क्षण । ६-अकड़ । ऐंठ । ७-अदब । लिहाज । दबाव । हया । ८-प्रतिज्ञा प्रण । टेक । [वि.] दूसरा । अन्य । और ।

आनक [संज्ञा पु] (सं.) १-नगाड़ा । भेरी । दुंदुभी । २-गरजता हुआ बादल ।

आनकदुंदुभी [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा नगाड़ा । २-श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव ।

आनत [वि.] (सं.) १-झुका हुआ । अतिनम्र ।

आनतान [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊटपटांग बात । अंडबंड बात । २-मर्य्यादा । ३-टेक । अड़ ।

आनति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पारिश्रमिक के रूप में किसी को आदरसहित भेंट किया गया धन । *आँनरेरियम* ।

आनद्ध [वि.] (सं.) १-कसा हुआ । २-मढ़ा हुआ [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े से मढ़ा जाने वाला बाजा । यथा—ढोल, मृदङ्ग आदि ।

आनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख । मुँह । २-चेहरा

आननफानन [क्रि. वि.] (अ.) अतिशीघ्र । झटपट । फौरन ।

आनना [क्रि. स.] (हि.) लाना । लिवा लाना ।

आनबान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सजधज । ठाठ बाट । बनावट । २-ठसक ।

आनयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाना । २-उपनयन संस्कार ।

आनर [संज्ञा पु.] (अं.) सम्मान । प्रतिष्ठा ।

आनरेबुल [वि] (अं) माननीय । प्रतिष्ठित ।

आनरेरी [वि.] (अं.) १-अवैतनिक । केवल प्रतिष्ठा के लिए अवैतनिक कार्य करने वाला २-वेतनरहित ।

आनर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-नृत्यशाला । नाचघर द्वारका । आनर्त्त देश का निवासी ।

आनर्त्तक [वि.] (सं.) नाचने वाला ।

आना [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक रुपये का सोलहवाँ अंश । २-किसी वस्तु का सोलहवाँ भाग ।
[क्रि. अ.] १-बुलाने वाले के पास पहुँचना । २-जाकर लौटना । ३-काल अथवा समय का प्रारम्भ होना । ४-फल फूल लगना । ५-किसी भाव का उत्पन्न होना । ६-स्खलित होना ।
आनाजाना-१-आवागमन । २-सहवास । संभोग करना ।

आनाकानी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सुनी-अनसुनी करने का कार्य । २-टालमटूल ।

आनानास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अनन्नास' ।

आनाय [संज्ञा पु.] (सं.) मछली पकड़ने का जाल ।

आनायी [संज्ञा पु.] (सं.) धीवर । मछुआ ।

आनाह [संज्ञा पु.] (सं) मलमूत्र रूकने का एक रोग ।

आनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'आन' ।

आनिला [संज्ञा पु.] (सं.) जलयान के लंगर की कुंडी ।

आनीजानी [वि.] (हि.) अस्थिर । क्षणभंगुर ।

आनतोषिक [संज्ञा पु.] (सं.) संतुष्ट या प्रसन्न करने के निमित्त दिया गया धन ।

आनुपूर्वी [वि] (सं.) क्रमानुसार। सिलसिलेवार

आनुमानिक [वि.] (सं) अनुमान-संबंधी। ख्याली।

आनुश्राविक [वि.] (सं) जिसको परंपरा से सुनते चले आये हों।

आनुषंगिक, षङ्गिक [वि.] (सं.) अनुरूप। बराका। गौण। अप्रधान। प्रासंगिक।

आन्वीक्षिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आत्मविद्या। २-तर्कविद्या। न्याय।

आप [सर्व] (सं.) १-स्वयं। खुद। २-'तुम' तथा 'वे' के स्थान में आदरार्थक प्रयोग।

आप-आप करना-खुशामद करना। *आप-आप की पडना*-अपना-अपना ख्याल होना। *आप आपको*-अलग-अलग। *आप-आप में*-आपस में। *आपको भूलना*-आपा भूलना। मदहोश हो जाना। *आपसे*-स्वयं। *आपसे आप*-स्वयं। *आपही*-स्वयं। *आपही आप*-१-बिना किसी प्रेरणा के। २-मन ही मन में।

[संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी।

आपकाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अपना काम। २-स्वार्थ।

आपगा [संज्ञा पु.] (सं.) नदी।

आपजाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) गुणादि के विचार से अपने जनक, उत्पादक, वर्ग या मूल से कम तथा हीन होना।

आपण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाजार। हाट। २-वह बाजारी। बाजार से प्राप्त कर या किराया।

आपत् [संज्ञा स्त्री.] देखो 'आपद्'।

आपत्काल [संज्ञा पु.] (सं.) १-विपत्ति। मुसीबत। २-दुष्काल। कुसमय।

आपत्कालिक [वि.] (सं) विपत्ति के समय होने वाला।

आपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुःख। क्लेश। विघ्न। २-विपत्ति। आफत। ३-कष्ट का समय। ४-आजीविका का कष्ट। ५-उज्र। ६-दोषारोपण।

आपत्तिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य अथवा विषय में आपत्ति तथा मतभेद प्रगट करने वाला पत्र।

आपत्य [वि.] (सं.) सन्तान-सम्बन्धी।

आपद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विपत्ति। २-दुःख। कष्ट।

आपद [सज्ञा स्त्री] देखो 'आपद्'।

आपदा [सज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुःख। क्लेश। २-विपत्ति। सङ्कट। ३-कष्ट का समय। ४-आजीविका का क्लेश।

आपद्ग्रस्त [वि.] (सं.) विपत्ति से पीड़ित। आफत में फँसा हुआ।

आपद्धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) वह धर्म जिसका विधान केवल विपत्ति के समय के लिये हो।

आपधाप [सज्ञा स्त्री.] (हिं) अपनी-अपनी चिंता।

आपन※+[सर्व.] (हि.) देखो 'अपना'।

आपनपो [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'अपनपो'।

आपनपौ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अपनपो'।

आपना※+ [सर्व.] (हि.) देखो 'अपना'।

आपनिक [संज्ञा पु.] (सं.) बहुमूल्य हरा पत्थर। पन्ना।

आपनो※+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'अपना'।

आपन्न [वि.] (सं.) १-दुखी। आपद्ग्रस्त। २-प्राप्त।

आपबीती [सज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपने ऊपर बीतने या गुजरने वाली घटना या बात।

आपया [सज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

आपराधिक [वि.] (सं.) १-अपराध-सम्बन्धी। २-अपराधी।

आपराह्णिक [वि.] (सं.) तीसरे पहर होने वाला।

आपरूप [वि.] (हि.) स्वयं। सक्षात्। खुद।

आपवर्ग्य [वि.] (सं.) मोक्ष देने वाला।

आपस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सम्बन्ध। नाता। भाईचारा। २-एक दूसरे का साथ।

आपस का-१-परस्पर का। २-अपने भाई बन्धुओं के बीच का। *आपस में*-एक दूसरे के साथ।

आपसदारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भाईचारा। रिश्तेदारी।

आपसी [वि.] (हिं) आपस का। पारस्परिक।

आपा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अपना अस्तित्व। अपनी असलियत। २-अहंकार। घमंड। गर्व। ३-होशहवास। सुधबुध। ४-बड़ा भाई। (महाराष्ट्र)। [संज्ञा स्त्री] बड़ी बहिन। मुसलमानी।

आपा खोना-१-निरभिमान होना। नम्र होना। २-अपने को मिटाना। ३-मरना। हस्ती खराब होना। *आपा तजना*-१-अपने अस्तित्व को भूलना। २-अपने आपको मिटाना। ३-अहंकार का त्याग करना।

आपा दिखलाना-अपना दर्शन देना। *आपा बिसरना*-१-अत्मभाव का त्याग। २-सुधबुध भूलना। *आपा बिसारना*-१-अपने पराये का भेद भुलाना। *आपे में आना*-होश में आना। *आपे में न रहना*-१-बेकाबू होना। २-बदहवास होना। *आप मिटना*-घमंड का नाश होना। *आपा मेटना*-अहंकार का परित्याग करना। *आपा संभालना*-१-सावधान होना। २-देह का ख्याल रखना। *आपे से निकलना*-आवेश में सुधबुध खो देना। *आपे से बाहर होना*-१-बेकाबू होना। २-उद्विग्न होना।

आपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-पतन। गिराव। २-किसी घटना का अचानक हो जाना। ३-प्रारंभ। ४-अन्त।

आपातत: [क्रि. वि.] (सं.) १-अकस्मात्। नक। २-आखिरकार। अंत को।

आपातिक [वि.] (सं.) सहसा इस सामने आये जिसकी कोई आशा या सं न हो।

आपाती [वि.] (सं.) अधोगामी। उतार।

आपादमस्तक [वि.] (सं.) सिर से पैर तक

आपाधापी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अपनी चिन्ता या फिक्र। २-खींचतान।

आपान [संज्ञा पु.] (सं.) १-मदिरा प्रेमि गोष्ठी। २-शराब पीने का स्थान। मदि मधुशाला।

आपापंथी, आपापन्थी [वि.] (हि.) ही राह चलने वाला। मनमानी करने

आपायत※ [वि.] (हि.) प्रबल। जोरावर।

आपी※ [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वाषाढ़नक्षत्र।

आपीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) सिर पर पहिने धारण करने की वस्तु।

आपीत [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामाखी। सोनामाखी के रंग का। कुछ पीला।

आपु※ + [सर्व.] (हि.) देखो 'आप'।

आपुन※ + [सर्व.] (हि.) देखो 'अपना'।

आपुनो※ + [सर्व.] (हिं.) देखो 'अपना'।

आपुस※ + [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'आपस

आपूप [संज्ञा पु.) (हिं.) टिकिया। रोटी।

आपूर [वि.] (सं.) व्याप्त। पूरा। भरा।

आपूरना※ [क्रि. अ.] (हिं.) भरना।

आपूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रांगा। २-सीसा

आपेक्षिक [वि.] (सं.) १-सापेक्ष। अपेक्षा वाला। २-निर्भर रहने वाला।

आप्त [वि.] (सं.) १-प्राप्त। पाया हुआ कुशल। दक्ष। ३-विषय भलीभांति वाला। ४-पूर्वतत्वज्ञ का कहाहुआ और कारण प्रमाणिक। [संज्ञा पु.] १-ऋषि। शास्त्रानुसार शब्द-प्रमाण। ३-भाग

आप्तकाम [वि.] (सं.) पूर्णकाम। जिसकी कामना पूर्ण हो गई हों।

आप्तकारी [संज्ञा पु.] (सं.) उचित रीति से करने वाला।

आप्तगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भिणी स्त्री

आप्य [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वाषाढ़नक्षत्र।

आप्यान [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्धि। बढ़ती।

आप्यायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृद्धि। २-तृप्ति। तर्पण। ३-एक अवस्था से अवस्था को प्राप्त होना।

आप्यायित [वि.] (सं.) १-तृप्त। संतुष्ट आर्द्र। तर। ३-परिवर्धित। बढ़ा हुआ दूसरे रूप में परिवर्तित।

आप्रच्छन्न [वि] (सं.) अत्यंत गुप्त ।

आप्लावन [संज्ञा पु.] (सं.) डुबाना ।

आप्लावित [वि.] (सं.) १-डुबाया हुआ । २-स्नात । भिगोया हुआ ।

आप्लुत [वि.] (सं.) स्नात । भीगा हुआ ।

आफत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आपत्ति । विपत्ति । २-कष्ट । दुःख । ३-विपत्ति के दिन । *आफत उठाना*-१-कष्ट सहना । २-ऊधम मचाना । *आफत का टुकड़ा*-आफत का पर काला । *आफत का पर काला*-१-किसी कार्य को अत्यन्त शीघ्रता से करने वाला । २-अत्याधिक प्रयत्नशील । घोर उद्योगी । ३-ऊधम मचाने वाला । उपद्रवी । *आफत का मारा*-१-विपत्ति से सताया हुआ । २-संकट में पड़ा हुआ । *आफत ढाना*-१-ऊधम या उपद्रव मचाना । २-दुःख पहुँचाना । ३-अनहोनी बात कहना । *आफत का पर लेना या लाना*-१-झगड़ा मोल लेना । २-संकट में पड़ना ।

आफताब [संज्ञा पु] (फा.) सूर्य ।

आफताबा [संज्ञा पु.] (फा.) हाथ मुँह धोने का मूठदार गडुवा ।

आफताबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लकड़ी के डंडे में लगा वह पंख जिसमें सूर्य का चिह्न अंकित रहता है, और वह राजाओं या बरातों में झंडे के साथ चलता है । २-एक प्रकार की आतिशबाजी । ३-धूप से बचाने के निमित्त खिड़की या दरवाजे के आगे लगा जाने वाला सायबान । [वि] (फा.) १-गोल । सूर्य संबंधी ।

आफियत [संज्ञा स्त्री] (अ.) कुशल । क्षेम ।

आफिस [संज्ञा पु] (अं.) दफ्तर । कार्यालय ।

आफू [संज्ञा स्त्री.] (हि) अफीम ।

आफूक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अहिफेन । अफीम ।

आबंध, आबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-निश्चित बात अथवा समझौता । २-भूमिकर अथवा राजस्व-कर निश्चित करने का कार्य । ३-गांठ

आबंधक-अधिकारी, आबन्धक-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह सरकारी अफसर जो भूमि का कर या राजस्व निश्चित करता है ।

आबंधन, आबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली भांति बांधना । २-देखो 'आबंध' ।

आब [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-चमक । आभा । कान्ति । पानी । तड़कभड़क । २-उत्कर्ष । प्रतिष्ठा । गुण । शोभा । छवि । *आब-आब करना*-पानी मांगना ।

आबकार [संज्ञा पु.] (फा.) शराब बनाने तथा बेचने वाला कलाल या कलवार ।

आबकारी [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-वह स्थान जहां शराब तैयार की जाती है । शराबखाना । शराब बेचने का स्थान । २-मादक वस्तुओं से संबंध रखने वाला सरकारी विभाग ।

आबखोरा [संज्ञा पु.] (फा) १-पानी पीने का पात्र । गिलास । २-प्याला । कटोरा ।

आबगीन [संज्ञा पु.] (फा.) १-शीशे का गिलास । २-आइना । दर्पण । हीरा ।

आबगीर [संज्ञा पु.] (फा.) जुलाहों की कूची ।

आबजोश [संज्ञा पु.] (फा.) पानी सहित उबला हुआ मुनक्का ।

आबकाब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तड़कभड़क । कान्ति । शोभा ।

आबदस्त [संज्ञा पु.] (फा.) १-मलत्याग करने के उपरांत गुदा को पानी से धोना । २-गुदा प्रक्षालन का जल ।

आबदाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-अन्नजल । दाना पानी । २-जीविका । ३-रहने का संयोग । *आबदाना उठना*-जीविका का अभाव होना । रहने का संयोग टलना ।

आबदार [वि.] (फा.) चमकीला । कांतिमान् । भड़कीला ।

आबदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कान्ति । चमक ।

आबद्ध [वि.] (सं)१-बंधा हुआ । २-कैद ।

आबनजूल [संज्ञा पु.] (फा.) अंडवृद्धि का रोग ।

आबनूस [संज्ञा पु.] (फा.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी काली तथा वज़नदार होती है । *आबनूस का कुंदा*-अत्याधिक काले रङ्ग का आदमी ।

आबनूसी [वि.] (फा.) १-आबनूस के समान काले रंग का । २-आबनूस का बना हुआ ।

आबपाशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सिंचाई ।

आबरवां [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का महीन कपड़ा ।

आबरू [संज्ञा स्त्री] (धा.) प्रतिष्ठा । इज्जत । मान ।

आबला [संज्ञा पु.] (फा.) फफोला ।

आबहवा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जलवायु । सरदी गरमी के अनुसार किसी प्रदेश की प्राकृतिक स्थिति ।

आबाद [वि.] (फा.) १-बसा हुआ । प्रसन्न । उपजाऊ ।

आबादकार [संज्ञापु.] (फा.) जंगल काटकर खेती करने वाला किसान ।

आबादानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अबादानी' ।

आबादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बस्ती । २-जनसंख्या । ३-गांव की भूमि का बसा हुआ भाग ।

आबी [वि.] (फा) जलसम्बन्धी । जल से उत्पन्न फीका । ४-हलका नीला । आस्मानी ५-जल तट का निवासी । [संज्ञा पु.] सांभर नमक । २-एक प्रकार का पक्षी जो जल के किनारे रहता है । एक प्रकार का अंगूर । *आबी करना*-कपड़े के थान पर चमक लाना ।

आबू [संज्ञा पु.] (सं.) अरवलीपर्वत शृंखला में एक स्थान ।

आब्दिक [वि] (सं.) वार्षिक । सालाना । सांवत्सरिक ।

आभ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शोभा । कान्ति । आभा । [संज्ञा पु.] (फा.) पानी । जल ।

आभरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-गहना । आभूषण । २-पोषण । परवरिश ।

आभरन [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'आभरण' ।

आभरित [वि] (सं) अलंकृत । सजा हुआ । विभूषित ।

आभा [संज्ञा स्त्री.] १-चमक । कान्ति । दीप्ति । द्युति । प्रभा । २ झलक । छाया । प्रतिबिम्ब ।

आभाणक [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्रकार के नास्तिक । २-कहावत । मसल ।

आभार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोझ । भार । २-गृह प्रबन्ध के देख भाल की जिम्मेदारी । गृहस्थी का बोध । ३-उपकार । एहसान

आभारक [संज्ञा पु.] (सं) उपकृत । आभारी ।

आभारी [वि] (हि.) उपकार मानने वाला । उपकृत ।

आभाषण [संज्ञा पु] (सं) वार्तालाप । बातचीत ।

आभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिबिम्ब । छाया । झलक । २-पता । संकेत । ३-मिथ्याज्ञान ।

आभास्वर [वि] (सं.) खूब चमकने वाला ।

आभिधानिक [वि.] (सं.) कोष बनाने वाला ।

आभिजात्य [संज्ञा पु.] (सं.) कुलीनों के लक्षण और गुण । कुल संस्कार ।

आभीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अहीर । ग्वाल । गोप । २- ११ मात्राओं का एक छन्द जिसके अन्त में जगण होता है । ३- एक राग ।

आभीरनट [संज्ञा पु.] एक राग ।

आभीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी । अहीरा

आभील [संज्ञा पु.] [सं.] दुःख । कष्ट ।

आभुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) किसी सुख अथवा सुभीते का वह लाभ जो पहले से प्राप्त हो ।

आभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) आभरण । गहना । अलंकार ।

आभूषन [संज्ञा पु] (हि) देखो 'आभूषण' ।

आभोग [संज्ञा पु.] (सं.) रूप की पूर्णता । परिपूर्णता । किसी पद्य के बीच कवि के नाम का उल्लेख । ३-सुखादि का पूरा अनुभव ।

आभ्यंतर, आभ्यन्तर [वि.](सं) भीतर । अन्दर का ।

आभ्यंतरिक, आभ्यन्तरिक [वि] (सं) अंतरंग भीतर ।

आभ्यासिक [वि.] (सं.) समीपस्थ । पड़ौस का

आभ्युदयिक [वि.] (सं.) मंगल या कल्याण सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] एक श्राद्ध जिसे नांदी मुख भी कहते हैं।

आमंत्रण, आमन्त्रण [संज्ञा पु.] (सं.) आह्वान। निमंत्रण। न्योता। बुलावा।

आमंत्रित, आमन्त्रित [वि.] (सं.) १-बुलाया हुआ। २-निमंत्रित। न्योता हुआ।

आम् [अव्य.] (सं.) हां। ठीक। जरूर।

आम [संज्ञा पु.] (सं.) एक बड़ा प्रसिद्ध पेड़ जिसके फल खाये या चूसे जाते हैं। [वि.] कच्चा। अपक्व। अप्रसिद्ध। [संज्ञा पु.] १-आँव। खाए हुए अन्न का अपक्व मल जो सफेद और लसीला होता है। २-वह रोग जिसमें आँव गिरती है। [वि.] (अ.) १-साधारण। सामान्य। सामूली। २-विख्यात। प्रसिद्ध। *आम के आम गुठली के दाम*-दोहरा लाभ होना। *आम खाने से काम या पेड़ गिनने से*-अपने काम से काम निरर्थक प्रश्नों से क्या प्रयोजन।

आमक [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हड़ा।

आमखास [संज्ञा पु.] (अ.) महल के अन्दर का राजा के बैठने का स्थान।

आमड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) आम के बराबर का वृक्ष जिसके फल बड़े बेर के समान होते हैं। इसके फल खट्टे होते हैं।

आमद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-आगमन। आना। २-आय। आमदनी। आमद-आमद होना-१-आने का समय बिलकुल निकट होना। २-आने की खबर फैलाना या धूम होना।

आमदनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-आने वाला धन। आय। २-देशान्तर से आया हुआ माल।

आमदरफ्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-आवागमन। २-आमदनी।

आमन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-साल भर में एक ही फसल उत्पन्न करने वाली भूमि। २-बंगाल में होने वाली जाड़े की फसल।

आमन-सामन [क्रि. वि.] (हि.) एक दूसरे के सामने या मुकाबले में।

आमनस्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख। रंज।

आमना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'आवना' या 'आना'।

आमनाय [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आम्नाय'।

आमना-सामना [संज्ञा पु.] (हि.) एक दूसरे के समक्ष। मुकाबले में।

आमनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'आमन'।

आमने-सामने [क्रि वि] (हि.) एक दूसरे के मुकाबिले में। एक दूसरे के समक्ष।

आमय [संज्ञा पु.] (सं.) रोग। व्याधि। बीमारी

आमरक्तातिसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें आंव के साथ लहू भी दस्त में आता है।

आमरख [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आमर्ष'।

आमरखना [क्रि. अ.] (हि.) क्रोधित होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।

आमरण [क्रि. वि.] (सं.) मृत्युपर्यन्त। जीवन भर।

आमरस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अमरस'।

आमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-संकोचन। २-रौंदन। ३-टक्कर।

आमर्दकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आमला। आंवला। २-फागुनसुदी एकादशी का नाम।

आमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) जोर से मलना। खूब पीसना या रगड़ना।

आमर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोध। गुस्सा। २-असहनशीलता। ३-साहित्य में एकसंचारी भाव।

आमलक [संज्ञा पु.] (सं.) आमला। आंवले का फल।

आमलकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी जाति का आंवला। २-फागुनसुदी एकादशी।

आमला [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आंवला'।

आमवात [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वात रोग जिसमें अन्न भलीप्रकार से नहीं पचता तथा अंग में पीड़ा और हाथ-पैरों में सूजन आजाती है।

आमशूल [संज्ञा पु.] (सं.) आंव के कारण पेट में ऐंठन तथा दर्द होने का रोग।

आमाँ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आवाँ'।

आमाजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) आंव के कारण भोजन का न पचना।

आमातिसार [संज्ञा पु.] (सं.) आंव तथा लोहू के दस्त।

आमात्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन्त्री। २-नायक। ३-सरदार।

आमादगी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) (फा.) तत्परता। तैयारी। मौजूदगी। मुस्तैदी।

आमादा [वि.] (फा.) उद्यत। तत्पर। उतारू। सन्नद्ध।

आमानाह [संज्ञा पु] (सं.) आंव के कारण पेट का फूलना।

आमान्न [संज्ञा पु.] (सं.) कच्चा अन्न। कोरा अन्न जो पकाया न गया हो।

आमाल [संज्ञा पु.] (अ.) करनी। कर्म।

अमालक+ [संज्ञा पु.] (देश.) पहाड़ी अंचल की भूमि।

आमालनामा [संज्ञा पु.] (सं.) वह रजिस्टर जिसमें नौकरों की दैनिक गतिविधियों का विवरण लिखा होता है।

आमाशय [संज्ञा पु.] (सं.) जठर। पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाया हुआ और पचता है।

आमाहल्दी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक हल्दी जो औषधियों में प्रयुक्त

आमिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फटा छेना। पनीर।

आमिख [संज्ञा पु.] (हि.) देखो

आमिन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अवध में एक जाति विशेष।

आमिर [संज्ञा पु.] देखो 'आमिल'।

आमिल [क्रि. स.] (अ.) १-कार्य हाकिम। अधिकारी। ३-ओझा या ४-पहुँचा हुआ फकीर या सिद्ध।

आमिष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांस। भोग्य वस्तु। भोजन। ३-लोभ। तृष्णा। ४-लाभ। फायदा।

आमिषप्रिय [वि.] (सं.) जिसे मांस [संज्ञा पु.] मांसाहारी पक्षी। यथा-कौवा, गिद्ध और बाज आदि।

आमिषाशी [वि.] (सं.) मांस खाने वा

आमिषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामांसी।

आमीं [अव्य.] (इब.) एवमस्तु। ऐसा ही

आमी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा आम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जौ तथा गेहूँ की बाल।

आमुख [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्तावना। एक अंग।

आमुष्मिक [वि.] (सं.) परलोक संबंधी।

आमेज़ [वि.] (फा.) मिला हुआ। मिश्रि

आमेजना [क्रि. स.] (फा.) मिलाना।

आमेजिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मिलावट

आमेर [संज्ञा पु] जयपुर राज्य की पुरानी

आमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) संयोग।

आमोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हर्ष। प्रसन्नता। २-दिल बहलाव।

अमोदप्रमोद [संज्ञा पु.] (सं.) हंसीखुशी। रागरंग।

आमोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावरी।

आमोदित [वि.] (सं.) १-हर्षित। प्रसन्न दिल बहला हुआ। ३-सुगन्धित।

आमोदी [वि.] (सं.) प्रसन्न रहने वाला

आम्नाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभ्यास। तर्क शास्त्रादि का पाठ तथा वेद। श्रुति।

आम्म [संज्ञा पु.] (हि.) नेवले की तरह जंतु।

आम्र [संज्ञा पु.] (सं.) आम का वृक्ष

आम्रकूट [संज्ञा पु.] (सं.) अमरकंटक पर्वत।

आम्रात्, आम्रातक [संज्ञा पु.] (सं.) आमड़े का वृक्ष या फल।

आम्लवेतस[संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अम्लवेतस'।

आम्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

आयंदा, आयन्दा [क्रि. वि.] देखो 'आइंदा'।

आय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–आमदनी। लाभ। प्राप्ति। धनागम। २–जन्मकुण्डली में ग्यारहवां स्थान।

आयत [वि.] (सं.) विशाल। दीर्घ। विस्तृत। ज्यामिति का दीर्घ चतुरस्र आकार[संज्ञा स्त्री.] (अ.) कुरान का वाक्य। इंजील का वाक्य।

आयतन [संज्ञा पु.] (सं.) १–मकान। गृह। मन्दिर। २-विश्रामस्थान। देवताओं का वंदना स्थान।

आयत्त [वि.] (सं.) आधीन। मातहत।

आयत्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) आधीनता। परवशता

आयद [वि.] (अ.) आरोपित। लगाया हुआ।

'आयमा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) माफी की जमीन।

आयव्यय [संज्ञा पु.] (सं.) आमदनी और खर्च।

आयव्ययफलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिस पर एक ओर सारी आमदनी तथा दूसरी ओर सारे खर्च का सारांश लिखा हो।

आयव्ययिक [संज्ञा पु.] (सं.) भविष्य के लिये कुछ निश्चित समय तक का आयव्यय का अनुमानिक हिसाब। व्याकल्प। बजट।

आयस [संज्ञा पु.] (सं.) १–लोहा। २–लोहे का बना कवच।

आयसी [वि.] (सं.) लोहे का।

आयसुॐ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आदेश। आज्ञा।

आया [क्रि. अ.] (हिं.) उपस्थित हुआ। 'आना' शब्द का भूतकाल। [संज्ञा स्त्री.] धाय। धाती।

आयाचित [वि.] (सं.) मांगा हुआ।

आयात [वि.] (सं.) आया हुआ। [संज्ञा पु.] वह वस्तु अथवा माल जो व्यापार के निमित्त अपने देश में लाया या मँगाया जाय।

आयाम [संज्ञा पु.] (सं.) १–विस्तार। लम्बाई। २–नियम। कायदा।

आयास [संज्ञा पु.] (सं.) परिश्रम। मेहनत।

आयु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वय। उम्र। जीवनकाल।

आयुक्त [वि.] (सं.) नियुक्त। मुकर्रर।

आयुत [वि.] (सं) पिघला हुआ।

आयुध [संज्ञा पु.] (सं) लड़ाई में काम आने वाले हथियार। शस्त्र।

आयुधजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) भट। योद्धा।

आयुध-विधान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विधान जिसमें जनता द्वारा शस्त्र रखने तथा उनके प्रयोग से संबंधित नियम हों।

आयुधागार [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्रालय। हथियार रखने का स्थान।

आयुधी [संज्ञा पु.] (सं) सिपाही। योद्धा।

आयुर्बल [संज्ञा पु.] (सं.) आयुष्य। उम्र।

आयुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) धन्वन्तरि प्रणीत चिकित्साशास्त्र। वैद्य विद्या।

आयुर्वेदिक [वि.] (सं.) आयुर्वेद संबंधी।

आयुर्वेदी [संज्ञा पु.] (सं.) चिकित्सक। वैद्य।

आयुष्कार [वि.] (सं.) आयु बढ़ाने वाला।

आयुष्मान् [वि.] (सं.) चिरजीवी। दीर्घजीवी। बड़ी उम्र वाला।

आयुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) आयु। उम्र।

आयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी कार्य में लगना। नियुक्ति। २–प्रबंध। इन्तजाम। सामग्री-संपादन। तैयारी। उद्योग। ४–सामग्री। ५–किसी कार्य के निमित्त पहले से किया जाने वाला प्रबंध।

आयोजित [वि.] (सं.) ठीक-ठाक किया हुआ। तैयार।

आयोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १–लड़ाई। युद्ध। २–रण-भूमि। लड़ाई का मैदान।

आरंभ, आरम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य की प्रथम अवस्था का संपादन। शुरू। २–किसी वस्तु का आदि। उत्थान। उत्पत्ति।

आरंम्भक, आरम्भक [वि.] (सं.) शुरू करने वाला।

आरंभतः, आरम्भतः [क्रि. वि.] (सं.) बिलकुल शुरू से। ठीक पहले से। २–बिलकुल नये सिरे से।

आरंभता, आरम्भता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपक्रम आरंभ होने का भाव।

आरंभना, आरम्भना+ [क्रि. अ.] (हि.) शुरू होना। [क्रि. स.] काम में हाथ लगाना।

आर [संज्ञा पु.] (सं.) १–ताजा खान से निकाला हुआ लोहा। २–पीतल। ३–किनारा। ४–कोना। पहिए का आरा। [संज्ञा स्त्री] १–कील जो सांटे में लगी रहती है। २–मुर्गे के पंजे के ऊपर का कांटा। ३–बिच्छु, भिड़ आदिका डंक। ४–चमड़ा छेदने का सूआ। सुतारी। [संज्ञा पु.] (देश.) ईख का रस निकालने का कच्छुला। पल्ली। २–सांचे के भीतर गाभ के ऊपर का मिट्टी का लौंदा। (हिं.) अड़। जिद। हठ। [संज्ञा स्त्री] (अ.) १–तिरस्कार। घृणा। २– अदावत। वैर। ३– शर्म। हत्या।

आरक्त [वि.] (स.) ललाई लिए हुए। २–लाल।

आरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) नगर व्यवस्थापक। नगररक्षक। पुलिस। दंडधारी।

आरक्षकबल [संज्ञा पु.] (सं.) पुलिसदल।

आरक्षिक [वि.] (सं.) आरक्षी या पुलिस विभाग से सम्बन्ध रखने वाला। पुलिस का।

आरक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह विभाग जिसका कार्य देश में शान्तिव्यवस्था बनाये रखना तथा अपराधियों आदि को पकड़कर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करने का होता है। पुलिस। २–इस विभाग का कोई कर्मचारी। ३–इस विभाग के कार्य तथा कर्त्तव्य।

आरज [वि.] (हि.) देखो 'आर्य्य'।

आरजा [संज्ञा पु.] (अ.) रोग। बीमारी।

आरज़ू [संज्ञा स्त्री.] [फा.] १–इच्छा। वांछा। अनुनय। विनय।

आरज़ूमंद [वि.] (फा.) इच्छुक। अभिलाषी।

आरण्य [वि.] (सं) १–जंगली। बनैला। २–जंगल का।

आरण्यक [वि.] (सं.) १–जंगली। बनैला। २–जंगल का। वन का [संज्ञा पु.] वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कार्य का विवरण तथा उनके उपयोग में आने वाला उपदेश है।

आरत [वि.] (हिं.] देखो 'आर्त्त'।

आरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–विरक्ति। २–देखो 'आर्ति'।

आरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी मूर्ति के ऊपर। दीपक घुमाने का कार्य। निराजन। २–वह पात्र जिसमें घी की बत्ती रख कर घुमायी जाती है। ३–आरती के समय गाया या पढ़ा जाने वाला स्तोत्र।

आरनॐ [संज्ञा पु.] (हि.) जंगल। वन।

आरनाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–कच्ची गेहूं का खींचा हुआ अर्क। २–कांजी।

आरपार [संज्ञा पु.] (सं.) यह छोर और वह छोर। यह किनारा और वह किनारा। [क्रि. वि] एक छोर से दूसरे छोर तक।

आरबल, आरबला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आयुर्बल'।

आरब्ध [वि.] (सं.) आरम्भ किया हुआ। शुरू किया हुआ।

आरभटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रोधादिक उग्र भावों की चेष्टा। नाटक में एक वृत्ति का नाम जिसमें यम का प्रयोग अधिक होता है। और जिसका व्यवहार रौद्र, भयानक तथा वीभत्सादि रसों में होता है।

आरव [संज्ञा पु.] (सं.) १–शब्द। आवाज। २–आहट।

आरष, आरषी [वि.] (सं.) आर्ष ऋषियों की।

आरस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आलस्य' [संज्ञा स्त्री.] देखो 'आरसी'

आरसा [संज्ञा पु.] (हि.) रस्सा।

आरसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–दर्पण। शीशा। आइना। २–शीशा जड़ी हुई अंगीठी जिसे स्त्रियां हाथ के अंगूठे में पहनती हैं।

आरा [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़ा सीने का सूआ या सुतारी। २ लकड़ी चीरने का एक औजार। ३–लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिये की

गडारी तथा पुट्ठी के मध्य जड़ी रहती है। ३-दीवारदासा। दासा। ४-देखो 'आला'।

आराइश [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-सजावट। २-फुलवाड़ी।

आराकश [संज्ञा पु.] (फा.) आरा चलाने का काम करने वाला आदमी।

आराजी [संज्ञा स्त्री.] (अ) १-भूमि। जमीन। २-खेत।

आराति [संज्ञा पु.] (सं) शत्रु। दुश्मन। बैरी।

आराधक [वि.] (सं.) उपासना करने वाला। पूजापाठ करने वाला।

आराधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूजा। उपासना। सेवा। २-प्रसन्न करना।

आराधना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपासना। पूजा।

आराधनीय [वि.] (सं.) पूजनीय। आराधना करने योग्य।

आराधित [वि.] (सं) पूजित। अर्चित। पूजा किया हुआ।

आराध्य [वि.] (सं.) पूज्य। पूजनीय।

आराध्यमान [वि.] (सं) पूजा जाने वाला।

आराम [संज्ञा पु.] (सं.) बाग। उपवन। फुलवारी। [संज्ञा पु.] (फा.) १-सुख। चैन। २-स्वास्थ्य। चङ्गापन। ३-विश्राम। थकावट मिटाना।

आराम करना–सोना। *आराम में होना*। सोना। *आराम में आना*–आनन्द में होना। *आराम से*–फुरसत में। धीरे-धीरे।

आराम से पाँव फैलाना–सुख की नींद सोना। *आराम होना* – १-सुविधा होना। २-लाभ होना। ३-निरोग होना।

आरामकुर्सी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की लम्बी कुर्सी।

आरामगाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शयनागार।

आरामतलब [वि.] (फा.) १-सुख चाहने वाला। सुकुमार। २-सुस्त। आलसी।

आरामदान [संज्ञा पु.] (फा.) १-पानदान। २-सिंगारदान।

आरामिक [संज्ञा पु.] (सं.) बागवान। माली।

आरालिक [वि.] (सं.) रसोइया। पाचक।

आरास्ता [वि.] (फा.) सजा हुआ। सुसज्जित।

आरि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हठ। जिद। टेक।

आरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ककड़ी के समान एक फल।

आरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लकड़ी चीरने का औजार। २-गाड़ी हांकने वाले के पैने में लगी हुई लोहे की कील। ३-जूता सीने का औजार। सुतारी।

आरुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक जड़ी जो हिमालय से आती है।

आरूढ़ [वि.] (सं.) १-चढ़ा हुआ। सवार। २-स्थिर। दृढ़। ३-तत्पर। सन्नद्ध। उतारू।

आरूढ़यौवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मध्यानायिका जिसे पति प्रसंग अच्छा लगे।

आरे [क्रि. वि.] (हिं.) समीप। पास।

आरो* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आरव'।

आरोग [वि.] (हिं) देखो 'आरोग्य'।

आरोगना [क्रि. स.] (हि.) खाना।

आरोग्य [वि.] (सं.) निरोग। रोगरहित। स्वस्थ।

आरोग्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।

आरोग्यशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिकित्सालय। हस्पताल।

आरोधक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिबन्धक। रोकने वाला।

आरोधना* [क्रि. स.] हि.) रोकना। आड़ करना। छेंकना।

आरोधनीय [वि.] (सं.) रोके जाने योग्य।

आरोप [संज्ञा पु.] (सं) १-स्थापित करना। लगाना। मढ़ना। २-एक पौधे को एक स्थान उखाड़ कर अन्य स्थान पर लगाना। ३-मिथ्या ज्ञान। भूठी कल्पना। ४-एक वस्तु में अन्य वस्तु के गुण की कल्पना। ५-किसी के विषय में यह कहना कि इसने ऐसा किया है।

आरोप करना–किसी का यह कहना कि अमुक व्यक्ति ने यह दोष या अपराध किया है। *आरोप लगाना*–दफा लगाना। दोषी ठहराना

आरोपक [वि.] (सं.) आरोपण करने वाला। लगाने वाला।

आरोपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लगाना। स्थापित करना। मढ़ना। २-पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाना। ३-भूठा ज्ञान। भ्रम। ४-किसी वस्तु में स्थित गुण को दूसरी में मानना। [क्रि. स.] कर लगाना।

आरोपना [क्रि. स.] (सं.) १-लगाना। स्थापित करना।

आरोपफलक [संज्ञा पु.] (सं.) अभियोगपत्र। आरोपों की सूची या विवरण का वह पत्र जो न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

आरोपित [वि.] (सं.) १-लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। मढ़ा हुआ। २-रोपा हुआ। बैठाया हुआ।

आरोप्य [वि.] (सं.) १-रोपने योग्य। लगाने योग्य। स्थापित करने योग्य।

आरोह [संज्ञा पु.](सं.) १-चढ़ाव। ऊपर की ओर बढ़ना। २-आक्रमण। चढ़ाई। ३-वेदांत के अनुसार क्रमशः जीव आत्मा की ऊर्ध्वगति अथवा उत्तमोत्तम योनियों को प्राप्त होना। ४-सवारी। घोड़े या हाथी आदि पर चढ़ना। ५-कारण से कार्य का उत्पन्न होना। ६-विकाश। आविर्भाव। ७-संगीत में स्वरों का चढ़ाव।

आरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चढ़ना। होना। २-अंकुर निकलना। ३-सीढ़ी।

आरोहित [वि.] (सं.) १-चढ़ा हुआ। हुआ।

आरोही [वि.] (सं.) १-चढ़ने वाला। वाला। २-उन्नतशील। [संज्ञा पु.] में वह स्वर जो षड़ज से निषाध तक उठता जाय। २-सवार।

आर्घा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारंग। मक्खी।

आर्जव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरलता। २-सीधापन। ३-व्यवहार की ईमानदारी।

आर्ट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कलाकौशल। शिल्पविद्या।

आर्टिकल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-लेख। २-वस्तु। चीज।

आर्डर [संज्ञा पु.] (अं.) आज्ञा। आदेश।

आर्डिनरी [वि.] (अ.) १-सामान्य। २-प्रसिद्ध।

आर्त्त [वि.] (सं.) १-पीड़ित। चोट। हुआ। २-दुखित। दुखी। ३-अस्वस्थ

आर्त्तगल [संज्ञा पु.] (सं.) नीली कटसरैया

आर्त्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीड़ा। दुःख। क्लेश।

आर्त्तनाद [संज्ञा पु.] (सं.) दुःखसूचक कराह।

आर्त्तव [वि.] (सं.) १-मौसमी। सामयिक ऋतुसंबंधी।

आर्त्तस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ा से निकला शब्द। कराह।

आर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीड़ा। दर्द दुःख।

आर्त्विज [वि.] (सं.) ऋत्विज-संबंधी।

आर्थिक [वि.] (सं) द्रव्य-संबंधी। धन माली।

आर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अर्थसंभव २-एक प्रकार का उपमालंकार।

आर्द्र [वि.] (सं.) १-गीला। तर। लथपथ।

आर्द्रक [संज्ञा पु.] (सं.) अदरक।

आर्द्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गीलापन।

आर्द्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सत्ताईस से छठा नक्षत्र। २-११ अक्षर की जिसके पहिले तथा चौथे चरण में तगण और दो गुरु होते हैं तथा तीसरे चरण में दो तगण, जगण, गुरु होते हैं। २-वह समय जब सूर्य नक्षत्र का होता है।

आर्द्रावीर [संज्ञा पु.] (सं.) वाममार्गी।

आर्द्राशनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्युत। बिजली। २-एक अस्त्र।

आर्य [वि.] (सं.) १-श्रेष्ठ। उत्तम। २-बड़ा। पूज्य। ३-श्रेष्ठकुलोत्पन्न। [संज्ञा पु.] १-श्रेष्ठ पुरुष। २-सब से पहले सभ्यता प्राप्त करने वाली एक जाति।

आर्यधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सदाचार।

आर्यपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) नाट्यभाषा में पति को पुकारने का शब्द। आदरसूचक शब्द।

आर्यसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द थे

आर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-दुर्गा। ३-सास। ४-दादी। ५-एक अर्धमात्रिक छंद जिसमें पहले तथा तीसरे चरण में बारह-बारह और दूसरे तथा चौथे में पंद्रह-पंद्रह मात्राएं होती हैं। इस छंद में चार मात्राओं के गण को समूह कहते हैं इसके पहले, तीसरे, पांचवें और सातवें में जगण का निषेध है। छठे गण में जगण होना आवश्यक है।

आर्यागीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्याछंद का एक भेद जिसके विषय में बारह तथा समचरणों में बीस मात्राएं होती हैं। विषम गणों में जगण नहीं होता। तथा अंत में गुरु होता है

आर्यवर्त [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तरीय भारत।

आर्ष [वि.] (सं.) १-ऋषि-संबंधी। २-ऋषिकृत। ३-वैदिक।

आर्षकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन ऋषियों की परिपाटी।

आर्षप्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याकरण-नियम के विरुद्ध वह प्रयोग जो प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। ऐसे अशुद्ध प्रयोग को आर्ष कहते हैं।

आर्षविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह का वह विधान जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेकर देता था।

आलंकारिक, आलङ्कारिक [वि.] (सं.) १-अलंकार जानने वाला। २-अलंकार-संबंधी।

आलंग [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ियों की मस्ती।

आलंब, आलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) अवलंब। आश्रय। सहारा। २-गति। शरण।

आलंबन, आलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आश्रय सहारा। २-रस का एक अंग, जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है।

आलंबित, आलम्बित [वि.] (सं.) आश्रित। अवलंबित।

आलंबितबिंदु, आलम्बितबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलंबित पुल के आरपार का वह स्थान जहां जंजीरों के सिरे खम्भों से लगे रहते हैं।

आलंभ, आलम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-छूना। मिलना। पकड़ना। २-हिंसा। वध।

आलंभन, आलम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आलंभ'।

आल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरताल। २-आंसू।
[संज्ञा स्त्री.] १-एक पौधा जिसका रंग बनता था। २-इस पौधे से बना हुआ रंग। ३-तरी। गीलापन।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-प्याज का तरा डंठल २-लौकी। कद्दू।
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बेटी की संतति। २-
[संज्ञा पु.] (अनु.) झंझट। बखेड़ा।
[संज्ञा पु.] (देश.) गांव का एक भाग।

आलकस+ [संज्ञा पु.] (हि.) आलस्य।

आलजाल [वि.] (हिं.) व्यर्थका। ऊटपटांग।

आलथी-पालथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैठने का एक ढंग।

आलन [संज्ञा पु.] (हि.) १-दीवारों पर लीपने की मिट्टी में मिला हुआ घास भूसा। २-किसी साग में मिलाया जाने वाला बेसन या आटा।

आलना [संज्ञा पु.] (हिं.) घोसला।

आलपाका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अलपका'।

आलपीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह घुंडीदार सूई जो कागज नत्थी करने में लगाई जाती है।

आलम [संज्ञा पु.] (अ.) १-संसार। दुनिया। २-दशा। अवस्था। ३-जनसमूह। ४-नकल। तमाशा।

आलमारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'अलमारी'।

आलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। मकान। गृह। २-स्थान।

आलवाल [संज्ञा पु.] (सं.) थाला। वृक्षों के नीचे का थाँवला।

आलस [वि.] (हि.) आलसी। सुस्त। काहिल। ❀ + [संज्ञा पु.] (सं.) आलस्य। सुस्ती।

आलसी [वि.] (हि.) सुस्त। काहिल। अकर्मण्य।

आलस्य [संज्ञा पु.] (सं.) काम करने में अनुत्साह। सुस्ती। काहिली।

आला [संज्ञा पु.] (हिं.) ताक। ताख। [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हार का आंवा। पजावा। [संज्ञा पु.] (अ.) हथियार। औजार। ❀ +[वि.] (हि.) १-गीला। भीगा। तर। २-हरा। ताजा।

आलाइश [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मलिनता। गंदापन

आलात [संज्ञा पु.] (सं.) अंगारा। कोयला या जलती लकड़ी।

आलान [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी को बांधने का खूंटा। २-हाथी बांधने की जंजीर। ३-बंधन। रस्सी।

आलाप [संज्ञा प.] (सं.) १-कथनोपकथन। संभाषण। बातचीत। २-संगीत में सातों स्वरों का रागसहित उच्चारण। तान।

आलापक [वि.] (सं.) १-बातचीत करने वाला। २-गानेवाला।

आलापचारी [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर-साधन का कार्य। तान लड़ाने की क्रिया।

आलापन [संज्ञा पु.] (सं.) परस्पर वार्तालाप।

आलापना [क्रि. स.] (हिं.) गाना। सुर खींचना

आलापनीय [वि.] (सं.) १-बातचीत करने योग्य। २-गाने योग्य।

आलापित [वि.] (सं.) १-बोला हुआ। संभाषित। २-गाया हुआ।

आलापिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) बाँसुरी।

आलापी [वि.] (सं.) १-बोलने वाला। २-आलापें लगाने वाला। गाने वाला।

आलारासी [वि.] (हि.) १-बेपरवाह। निर्द्वन्द। २-जहां किसी बात की पूछताछ न हो।

आलावर्त्त [संज्ञा पु.] कपड़े का पंखा।

आलिंगन, आलिङ्गन [संज्ञा पु.] (सं.) गले से लगाना। परिरंभण। अँकवारी।

आलिंगिना, आलिङ्गिना [क्रि. स.] (हिं.) भेंटना। हृदय से लगाना। गले लगाना।

आलिंगत, आलिङ्गित [वि.] (सं.) आलिगन किया हुआ। गले लगाया हुआ। परिरंभित।

आलिंगी, आलिङ्गी [वि.] (सं.) आलिंगन करने वाला।

आलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सखी। सहली। २-भ्रमरी। ३-पंक्ति। अवली।

आलिम [वि.] (अ.) विद्वान। पंडित।

आली [सज्ञा स्त्री.] (सं.) सखी। सहेली। [वि.] (अ.) बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ। [वि.](हि.) गीली। भीगी हुई। तर।

आलीजाह [वि.] (अ.) उच्चपदस्थ। ऊंचे दर्जे का।

आलीशान [वि.] (अ.) भव्य। भड़कीला। विशाल। शानदार।

आलुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आलू। कंद। २-शेषनाग।

आलू [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कंद जिसकी तरकारी बनाकर खाते हैं। [सज्ञा स्त्री.] छोटा लोटा। घंटी।

आलूचा [संज्ञा पु.] (फा.) एक वृक्ष या फल।

आलूबालू [संज्ञा पु.] (देश.) अलूचे के समान एक वृक्ष।

आलूबुखारा [संज्ञा पु.] (फा.) आलूचा नामक वृक्ष का सूखा फल।

आलेख [संज्ञा पु.] (सं.) लिखावट। लिपि। लिपाई।

आलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिपिबद्ध करना। २-चित्रादि अंकित करना।

आलेख्य [संज्ञा पु.] (सं.) चित्र। तसवीर। [वि.] (सं.) लिखने योग्य।

आलेप [संज्ञा पु.] (सं.) लेप। पलस्तर।

आलेपन [संज्ञा पु..] (सं.) लेप करने का काम।

आलोक [संज्ञा पु.] (सं) १-प्रकाश। चांदना। उजाला। ज्योति। २-दर्शन। ३-किसी विषय पर लिखित टिप्पणी अथवा सूचना।

आलोकचित्रण [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा प्रकाश में रहने वाली वस्तु का प्रतिबिम्ब लेकर चित्र बनाया जाता है।

आलोकन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश डालना। २-चमकाना। ३-दिखलाना। ४-अवलोकन। दर्शन।

आलोकनीय [वि.] (सं.) दर्शनीय। देखने योग्य।

आलोकित [वि.] (सं.) १-जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो। २-चमकता हुआ।

आलोक-पत्र (सं.) किसी विषय को स्पष्ट रखने के निमित्त स्मारक के रूप में लिखा गया लेख या पत्र।

आलोच [संज्ञा पु.] (हि.) फसल काटने के समय खेत में गिरा हुआ। अन्न बीनना।

आलोचक [वि.] (सं.) १-किसी वस्तु के गुण-दोष की विवेचना करने वाला। जांचने वाला। २-देखने वाला।

आलोचण❀ [संज्ञा पु.] देखो 'आलोच'।

आलोचन [संज्ञा पु.] (सं) १-दर्शन। २-गुण-दोष की जांच। विवेचन।

आलोचना [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी वस्तु के सम्बन्ध में गुण-दोष का विचार या निरूपण

आलोचित [वि.] (सं.) जिसके गुण-दोष की जांच की गई हो। आलोचना किया हुआ।

आलोच्य [वि.] (सं.) आलोचना करने योग्य।

आलोडन [संज्ञा पु.] (सं) १-मथना। हिलोरना २-सोचविचार।

आलोडना [क्रि. स.] (हि.) १-मंथन करना। मथना। २-खूब सोचविचार करना।

आलोडित [वि.] (सं.) १-मंथन किया हुआ। मथा हुआ। २-सोचा हुआ। विचारा हुआ।

आलोल [वि.] (सं.) १-विचलित। २-हिलता हुआ। कम्पित।

आलोलित [वि.] (सं.) १-घवड़ाया हुआ। २-हिलाया हुआ।

आलोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई पद अथवा स्थान आदि का न रहने देना। २-किसी आदेश या निश्चय का रद्द करना। सेट-एसाइड।

आल्हा [संज्ञा पु.] (देश.) एक ३१ मात्राओं का छंद जिसे वीर छंद भी कहते हैं। इसमें सोलह मात्राओं पर विराम लगता है। २-पृथ्वीराज के समय का एक व्यक्ति विशेष जो महोबे का था। ३-बहुत लंबा चौड़ा वर्णन। *आल्हा गाना*-आप बीती सुनाना। *आल्हा का पँवारा*-व्यर्थ का लंबा चौड़ा वर्णन

आवंत्य आवन्त्य [वि.] (सं.) अवंतिदेश का निवासी। अवंतिदेश का।

आव❀ [संज्ञा पु.] (हि.) आयु। आयुष्य। उम्र।

आव-आदर [संज्ञा पु.] (हि.) आदरसत्कार। आवभगत।

आवज [संज्ञा पु.] (हि.) ताशे के ढंग का एक पुराना बाजा।

आवझ❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आवज'।

आवटना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हलचल। उथल-पुथल। अस्थिरता। २-संकल्पविकल्प। ऊहापोह।

[क्रि. स.] (हि.) खौलना। औटना।

आवधिक [वि.] (सं.) अवधि का। अवधी या सीमासंबंधी।

आवन❀ [संज्ञा पु.] (हि.) आगमन। आना।

आवनि ❀[संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'आवन'।

आवनेय [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी का पुत्र। मंगल

आवपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोआई। २-वृक्ष का लगाना। ३-थाला। थावला। ४-सारे सिर का मुंडन।

आवभगत [संज्ञा पु.] (हिं.) आदर-सत्कार। खातिर-तवाजा।

आवभाव [संज्ञा पु.] (हिं.) आदर-सत्कार। आवभगत।

आवरखावो [संज्ञा पु.] (बं.) एक बंगला मिठाई का नाम।

आवरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आच्छादन। ढकना। २-किसी वस्तु पर लपेटा गया वस्त्र। बेठन। ३-परदा। ४-ढाल। ५-दीवार इत्यादि का घेरा। ६-अज्ञान। ७-चलाये हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करने वाला अस्त्र।

आवरणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.)) पुस्तक की रक्षा के लिये चढ़ाया हुआ वह कागज जिस पर पुस्तक का और लेखक का नामादि अंकित होता है।

आवरणपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आवरणपत्र'

आवरणशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदांत के अनुसार आत्मा की ज्ञानदृष्टि पर परदा डालने वाली शक्ति।

आवर्जित [वि.] (सं.) त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। पृथक किया हुआ।

आवर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल का भंवर। २-चार प्रकार के मेघाधिपों में से एक। ३-एक रत्न। लाजवर्द। ४-सोनामाखी। ५-रोएं में पड़ी हुई भंवरी। ६-संसार।

आवर्त्तक [वि.] (सं.) घूमने या चक्कर खाने वाला। कुछ निश्चित समय पर बारंबार होने वाला। यथा। आवर्त्तक अनुदान।

आवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिराव। घुमाव। चक्कर देना। २-विलोडन। मथन। ३-किसी कार्य या बात का बार-बार होना। ४-तीसरा पहर।

आवर्त्तनीय [वि.] (सं.) फिराने योग्य। घुमाने योग्य। मथने योग्य।

आवर्त्तमणि [संज्ञा पु.] (सं.) लाजवर्द-पत्थर।

आवर्त्तित [वि.] (सं.) १-घुमाया हुआ। २-मथा हुआ। ३-फिराया हुआ।

आवर्त्ती [वि.] (सं.) देखो 'आवर्त्तक'। बार-बार आने वाला।

आवर्दा [वि.] (फा.) १-कृपापात्र। २-लाया हुआ

आवलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। श्रेणी। क़तार।

आवलित [वि.] (सं.) हिलाहुआ। कुछ चंचल

आवली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। श्रेणी। कतार। २-वह युक्ति या विधि जिससे खेत की उपज का अनुमान लगाया जाता है।

आवश्यक [वि.] (सं.) १-जिसे अवश्य होना चाहिए। जरूरी। सापेक्ष। प्रयोजनीय काम का।

आवश्यकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अपेक्षा। जरूरत। २-प्रयोजन। मतलब।

आवश्यकीय [वि.] (सं.) जरूरी। प्रयोजनीय

आवस❀ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ओस'।

आवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बस्ती। २-गांव।

आवसथ्य [वि.] (सं.) घरेलू। खानगी।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन पकाने के काम आनेवाली अग्नि। लौकिकाग्नि।

आवह [संज्ञा पु.] (सं.) वायु के सात स्कंधों में से प्रथम। भू-वायु।

आवां [संज्ञा पु.] (हि.) वह गड्ढा जिसमें कुम्हार बर्तन पकाते हैं।

आवागमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आना जाना। आवाजाई। आमदरफ्त। २-बार-बार जन्म लेने तथा मरने का बन्धन।

आवागवन❀+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आवागमन'।

आवागौन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आवागमन'।

आवाज़ [संज्ञा पु.] (फा.) १-ध्वनि। शब्द। नाद। बोली। वाणी। स्वर। ३-आह्वान। पुकार। ४-कोलाहल।

आवाज उठाना-१-आँदोलन करना। २-विरुद्ध खड़ा होना। ३-गाने में स्वर ऊंचा करना। *आवाज कसना*-१-ताने मारना। २-स्पष्ट शब्द निकालना। *आवाज खुलना*-बैठी हुई आवाज का साफ निकालना। *आवाज देना, मारना, लगाना*-जोर से पुकारना। *आवाज निकालना*-बोलना। जबान खोलना। *आवाज पड़ना, बैठना*-१-बुलाहट। पुकार। २-गला बैठना। *आवाज पर कान रखना*-सुनना। ध्यान देना। *आवाज भर्राना*-आवाज भारी होना। *आवाज भारी होना*-कफ के कारण स्वर विकृत होना। *आवाज मारा जाना*-स्वर सुरीला न रहना। *आवाज में* आवाज

मिलाना–१–स्वर मिलाना। २–हाँ में हाँ मिलाना।

आवाजा [संज्ञा पु.] (फा.) ताना। व्यंग।

आवाजाही* [संज्ञा स्त्री] (हि.) आना जाना।

आवादानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अवादानी'।

आवाय [संज्ञा पु.] (हिं.) १–थाला। थावंला। २–वोआई। धान आदि का खेत में रोपना। ३–हाथ का कड़ा या कंकण।

आवारगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लुच्चापन। शुहदापन।

आवारजा [संज्ञा पु.] (फा.) जमाखर्च की वही। देखो 'अवारजा'।

आवारा [वि.] (फा) १–व्यर्थ इधर-उधर फिरने या भटकने वाला। निकमा। २–वेठौर ठिकाने का। लुच्चा। वदमाश। कुमार्गी।

आवारागर्द [वि.] (फा.) व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला। निकम्मा।

आवारागर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) व्यर्थ इधर-उधर घूमना। वदमाशी। लुच्चापन।

आवाल [संज्ञा पु.] (सं.) थाला। थाँवला।

आवास [संज्ञा पु.] (सं.) १–निवास-स्थान। रहने की जगह। २–घर। मकान।

आवासी* [संज्ञा स्त्री] (हि.) जौ की तोड़ी हुई कच्ची या हरी वाल।

आवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) आवाहन करने या वुलाने वाला व्यक्ति।

आवादन [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी को वुलाने या पुकारने का काम। २–वुलाना। निमंत्रित करना।

आविक [वि.] (सं.) १–भेड़ संवंधी। २–ऊनी।

आविद्ध [वि.] (सं.) छिदा या भेदा हुआ। २–फेंका हुआ। [संज्ञा पु.] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

आविर्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रकाश। प्राकट्य। २–उत्पत्ति। ३–प्रकट या उत्पन्न होकर सम्मुख आना।

आविर्भूव [वि.] (सं.) १–प्रकाशित। प्रकटित। २–उत्पन्न।

आविल [वि.] (सं.) मैला। कलुष।

आविष्करण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश। दिखावा।

आविष्कर्ता [वि.] (सं.) आविष्कार करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) आविष्कार करने वाला। व्यक्ति।

आविष्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रकट होना। २–किसी ऐसी वस्तु का निर्माण करना जिसके वनाने की विधि किसी को न मालूम रही हो। ईजाद।

आविष्कारक [वि.] (सं.) आविष्कार या ईजाद करने वाला।

आविष्कृत [वि.] (सं.) प्रकाशित। प्रकटित। आविष्कार या ईजाद किया हुआ।

आविष्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'आविष्कार'

आवीती [वि.] (सं.) उलटा जनेऊ रक्खे हुए। अपसव्य।

आवृत [वि.] (सं.) १– छिपा हुआ। आच्छादित। घेरा हुआ।

आवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वारवार किसी वात का अभ्यास एक ही काम को वारंवार करना। २–पढ़ना। ३–किसी पुस्तक का प्रथम वार या जैसी की तैसी फिर छपना।

आवृष्ट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी वर्षा।

आवेग [संज्ञा पु.] (सं.) जोश। चित्त की प्रवल वृत्ति। उत्कंठासहित मन का वेग।

आवेज़ा [संज्ञा पु.] (फा.) लटकने वाली वस्तु। कुंडल। वाली।

आवेदक [वि.] (सं.) निवेदन करने वाला। प्रार्थी।

आवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १–निवेदन। किसी कार्य के निमित्त की जाने वाली प्रार्थना। २–अपनी दशा को सूचित करना।

आवेदन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिस पर अपनी दशा या प्रार्थना लिखकर सूचित करे। अर्जी।

आवेदनीय [वि.] (सं.) निवेदन करने वाला।

आवेदित [वि.] (सं.) निवेदित। सूचित।

आवेदी [वि.] (सं.) निवेदन करने वाला। सूचित करने वाला। नालिश करने वाला।

आवेद्य [वि.] (सं.) निवेदन करने योग्य।

आवेलतेल [संज्ञा पु.] (देश.) नारियल की ताजा गिरी का निकाला हुआ तेल।

आवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १–जोश। मन की प्रेरणा। झोंक। वेग। व्याप्ति। संचार। दौरा। ३–भूतप्रेत की वाधा। ४–मृगी रोग।

आवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) घेरा। हाता।

आवेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) छिपाने या ढांकने का कार्य। २–छिपाने या ढांकने की वस्तु। वह वस्तु जिसमें कुछ लपेटा हो।

आवेष्ठित [वि.] (सं.) छिपा हुआ। घिरा हुआ। लपेटा हुआ।

आशंका, आशङ्का [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–शक। संदेह। २–भय। डर। ३–अनिष्ट की भावना।

आशंकित, आशङ्कित [वि.] (सं.) १–संदेहयुक्त भयभीत। डराहुआ।

आशंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–इच्छा। कामना। वासना। २–आशा। ३–संदेह। ४–प्रशंसा। वडाई। ५–आदर-सत्कार।

आशंसित [वि.] इच्छा किया हुआ।

आशना [संज्ञा पु. स्त्री.] (फा.) १–जिससे जानपहचान हो। २–प्रेमी। चाहने वाला। ३–प्रेमपात्र। सुहृद। मित्र।

आशनाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–जानपहचान। २–प्रेम। प्रीति। मैत्री। ३–अनुचित संवंध।

आशय [संज्ञा पु.] (सं.) १–अभिप्राय। मतलव। तात्पर्य। २–इच्छा। वासना। ३–उद्देश्य। नीयत।

आशर [संज्ञा पु.] (सं.) १–राक्षस। २–अग्नि।

आशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा या कामना। २–अप्राप्त को पाने की आकांक्षा और अल्प निश्चय। ३–एक राग।

आशा तोडना–निराश करना। *आशा देना*–उम्मेद वंधाना। *आशा वँधना*–आशा उत्पन्न होना।

आशाढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) आषाढ़।

आशावाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह मत या सिद्धांत कि सर्वदा भली वातों की आशा रखनी चाहिए। *आप्टिमिज्म*।

आशिक़ [संज्ञा पु.] (अ.) आसक्त। प्रेम करने वाला पुरुष। दिल से चाहने वाला व्यक्ति। अनुरक्त पुरुष।

आशिक़ाना [वि.] (अ.) आशिकों के ढंग का। प्रेमीजनों सा।

आशियाँ, आशियाना [संज्ञा पु.] (फा.) १–घोंसला। पक्षियों के रहने का स्थान। २–झोंपड़ा। छोटा सा घर।

आशिष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–असीस। आशीर्वाद। दुआ। २–एक काव्यालंकार जिसमें अप्राप्त पदार्थ के लिए प्रार्थना की जाती है।

आशिषाक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) एक काव्यालंकार जिसमें अन्य का हित प्रदर्शित करते हुए ऐसी वातों के करने की शिक्षा दी जाय जिसके द्वारा वस्तुतः अपने ही दुःखों की निवृत्ति हो

आशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सर्प का विषैला दाँत २–सर्प का विष। [वि.] भक्षक। खाने वाला

आशीर्वचन [संज्ञा पु.] (सं.) आसीस। दुआ। आशीर्वाद।

आशीर्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलकामनासूचक वाक्य। आशिष। दुआ।

आशीविष [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

आशु [क्रि. वि.] (सं.) शीघ्र। जल्द। तुरन्त।

आशुकवि [संज्ञा पु.] (सं.) तत्क्षण कविता वनाने वाला कवि।

आशुकारी [वि.] (सं.) शीघ्र काम करने वाला।

आशुकोपी [वि.] (सं.) जल्दी से क्रुद्ध होने वाला। तुनुकमिजाज।

आशुक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल्दी का काम।

आशुग [वि.] (सं.) जल्दी चलने वाला। शीघ्रगामी। यह एक्सप्रेस ट्रेन के लिये आशुग-रेल, या अत्यावश्यक तार, पत्र। जहां एक्स-

प्रेस शब्द प्रयुक्त होता है वहाँ 'आशुग' लिखा जा सकता है। [संज्ञा पु.] १-वायु। हवा। २-बाण तीर।

आशुतोष [वि.] (सं.) शीघ्र संतुष्ट होने वाला। जल्दी प्रसन्न होने वाला। [संज्ञा पु.] शिव। महादेव।

आशुशुक्षणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-वायु।

आशोब [संज्ञा पु.] (फा.) नेत्र पीड़ा। आँख का दर्द।

आशौच [संज्ञा पु.] (सं.) गंदगी। मलिनता। अमेध्यता।

आश्चर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अचम्भा। विस्मय। ताज्जुब। २-रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

आश्चर्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विस्मय। ताज्जुब। अचम्भा।

आश्चर्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आश्चर्यता'।

आश्चर्यभूत [वि.] (सं.) अनोखा। विचित्र। अद्भुत।

आश्चर्यमय [वि.] (सं.) आश्चर्यपूर्ण।

आश्चर्यित [वि.] (सं.) विस्मित। चकित।

आश्मरिक [संज्ञा पु.] (सं.) गुर्दे में पथरी पड़ने का रोग।

आश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋषियों तथा मुनियों का निवास स्थान। तपोवन। २-साधुसन्त। के रहने का स्थान। कुटी। मठ। ३-विश्राम स्थान। ४-हिन्दुशास्त्रोक्त जीवन की भिन्न-भिन्न चार अवस्थाएँ।

आश्रमवास [संज्ञा पु.] (सं.) मुनिजनों का तपोवन में निवास।

आश्रमवासी [वि.] (सं.) आश्रम में रहने वाला।

आश्रमस्थान [संज्ञा पु.] मुनिजन का निवासस्थान

आश्रमी [वि.] (सं.) १-आश्रमसंबंधी। २-आश्रम में रहने वाला। ३-चार आश्रमों में से किसी एक को धारण करने वाला।

आश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहारा। आधार। अवलम्ब। २-शरण। पनाह। ३-वह वस्तु जिसके सहारे पर अन्य वस्तु हो। आधार। वस्तु। ४-भरोसा। जीवन निवाह का अवलम्ब। ६-घर। मकान।

आश्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) सहारा लेने का काम

आश्रयणीय [वि.] (सं.) अवलम्बन या सहारे के योग्य।

आश्रयास [संज्ञा पु.] (सं.) आग। अग्नि।

आश्रयी [वि.] (सं.) आश्रय या सहारा लेने वाला। आश्रय या सहारा पाने वाला।

आश्रित [वि.] (सं.) १-ठहराया हुआ। सहारे पर टिका हुआ। २-भरोसे पर रहने वाला। शरणागत। ३-सेवक। दास।

आश्रितत्व [संज्ञा पु.] (सं.) आधीनता।

आश्रुत [वि.] (सं.) भलीभांति सुना हुआ।

आश्रेय [वि.] (सं.) सहारा देने योग्य।

आश्लिष्ट [वि.] (सं.) १-आलिंगित। हृदय से लगाहुआ। २-सटाहुआ। मिलाहुआ।

आश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-आलिंगन। २-लगाव।

आश्लेषण [संज्ञा पु] (सं.) मिलावट। मेल।

आश्लेषा [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेषानक्षत्र।

आश्वमेधिक [वि.] (सं.) अश्वमेघयज्ञ-संबंधी।

आश्वसित [वि.] (सं.) आश्वासन या भरोसा दिया हुआ।

आश्वस्त [वि.] (सं.) जिसे आश्वासन या भरोसा मिला हो।

आश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-सान्त्वना। दिलासा। तसल्ली। २-कथा का एक भाग।

आश्वासक [वि.] (सं.) दिलासा या तसल्ली देने वाला।

आश्वासन [संज्ञा पु.] (सं.) सान्त्वना। तसल्ली। दिलासा।

आश्वासनीय [वि.] (सं.) सन्त्वना या दिलासा देने योग्य।

आश्वासित [वि.] (सं.) सान्त्वना या दिलासा दिया हुआ।

आश्वासी [वि.] (सं.) सान्त्वना देने वाला। प्रसन्न करने वाला।

आश्वास्य [वि.] (सं.) 'आश्वासनीय।'

आश्विन [संज्ञा पु.] (सं.) क्वार का महीना।

आश्विनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्विन मास की पूर्णिमा।

आश्विनेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अश्विनीकुमार। २-नकुल-सहदेव।

आषाढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) जेठ के महीने के बाद आने वाला महीना। असाढ़।

आषाढ़ा [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वाषाढ़ा तथा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ाभू [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

आषाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आषाढ़मास की पूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा।

आषाढ़ीयोग [संज्ञा पु.] (सं.) आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को अन्न की तोल से सुवृष्टि आदि का निश्चय।

आसंग, आसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-साथ। संग। २-लगाव। सम्बन्ध। ३-आसक्ति। अनुरक्ति। [क्रि. वि.] सतत। लगातार।

आसंजन आसञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'आसंग'। २-कुर्की। न्यायालय के आदेशानुसार किसी देनदार, अपराधी या ऋणी की सम्पत्ति पर अर्थदंड चुकाने के निमित्त गया अधिकार।

आसंजित, आसञ्जित [वि.] असंजन हुआ। कुर्क किया हुआ। एटैच्ड।

आसंदी, आसंदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मचि मूढ़ा। कुर्सी। खटोला।

आस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-आशा। उम्मेद। कामना। लालसा। ३-सहारा। आधार। *आस करना*–१-आस करना। २-मुँह ताक *आस छोडना*–उम्मीद न रखना। *आस टू* निराशा होना। *आस तकना*–१-दूसरे सहारा देखना। २-मुंह ताकना। *आस त* नाउम्मीद होना। *आस तोडना*–आस प्रतिकूल कार्य करना। *आस देना*–इच्छानु कार्य करने का यचन देना। *आस पु* आशा पूर्ण करना। *आस पूजना*–इच्छानु फल की प्राप्ति। *आस बँधना*–आशा होना। *आस होना*–१-आशा होना। सहारा होना। ३-गर्भ रहना। [संज्ञा (हिं.) १-दिशा। २-कमान। धनुष। चूतड़।

आसकत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आलस्य। सु

आसकती [वि.] (हिं.) आलसी।

आसक्त [वि.] (सं.) [पु. प्र.] १-अनुरक्त। लि लिप्त। २-मोहित। मुग्ध।

आसक्ति [[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनुरक्ति लिप्तता। २-चाह। प्रेम। लगन। इश्क।

असतीन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'आस्तीन'।

आसतें✽ [क्रि. वि.] (हिं) १-धीरे-धीरे। होते हुए। [क्रि. अ.] होना।

आसतोष✽ [संज्ञा पु.] देखो 'आशुतोष'।

आसथा✽ [संज्ञा स्त्री] (हि.) अंगीकार।

आसथान✽ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आस्था

आसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैठने की वि बैठक। स्थिति। २-बैठने की कोई व यथा, चौकी, कुरसी आदि। ३-निवास- *आसन उखड़ना*–जमने न पाना। अपने स से हिल जाना। *आसन उठना*– स्थान छूट *आसनकरना*–योग के नियमानुसार शरीर मोड़ना। २-ठहरना। *आसन कसना*–अङ्गों तोड़ मरोड़कर बैठना। *आसन जमाना*– निश्चल बैठना। २-एक स्थान पर रहना। आसरे रहना। पूर्णतया टिक जाना। डोलना– १-चित्त चलायमान होना। २- से कोप जाना। चित्त पर प्रभाव होना। दया आना। *आसन तले आना*–वश में आ आधीन होना। *आसन देना*–१-सादर बै २-उत्तम स्थान देना। *आसन बांध लेना*– जांघों से जकड़ लेना। *आसन पाटी* पडना–दुःख अथवा क्रोध प्रदर्शित करने लिये बिना कुछ खाये पीये आडम्बरपूर्ण से खाट पर पड़ना। *आसन लगाना*– १-

लव गांठने के लिये अड़कर बैठना। २-बिछौना बिछाना। ३-आसन मारना। जमकर बैठना।

आसना [क्रि अ] (हि) होना। [संज्ञा पु.] १-जीव। २-वृक्ष।

आसनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा आसन। छोटा बिछौना।

आसन्न [वि] (सं.) निकट आया हुआ। समीपस्थ। प्राप्त।
आसन्न काल-१-आया हुआ समय। २-मृत्यु काल। *आसन्न प्रसवा*-जिसे शीघ्र बच्चा होने वाला हो।

आसन्नता [संज्ञा स्त्री] (सं.) समीपता। नैकट्य।

आसन्नभूत [संज्ञा पु.] (सं.) भूतकाल की क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमानकाल से उसकी समीपता विदित हो। यथा मैंने लिखा है।

आसपास [क्रि. वि.] (हि.) चारों ओर। निकट। अगल-बगल। पड़ोस।

आसमान [संज्ञा पु.] (फा.) १-आकाश। गगन। २-स्वर्ग। वैकुंठ। देवलोक।
आसमान के तारे तोडना-कोई असम्भव कार्य करना। *आसमान जमीन के कुलावे मिलाना*-बढ़ बढ़ कर बातें करना। *आसमान जमीन एक कर देना*-आफत ढाना। बहुत यत्न करना। *आसमान टूट पडना*-१-अचानक विपत्ति आपड़ना। २-भयंकर घटना घटित होना। *आसमान ताकना या झांकना*-अभिमान से सिर ऊपर उठाना। *आसमान दिखाना*-पछाड़ना। कुश्ती में चित्त करना। *आसमान पर उडना*-१-इतराना। २-शक्ति से बाहर कार्य का संकल्प करना। *आसमान पर कदम रखना*-बड़ा समझना। *आसमान पर चढ़ना*-अत्याधिक गर्व करना। *आसमान पर चढ़ाना*-१-खूब प्रशंसा करना। बढ़ावा देना। २-झूठी प्रशंसा के पुल बांधना। *आसमान पर थूकना*-आदरणीय व्यक्ति की बुराई करना। *आसमान फट पडना*-सहसा विपत्ति आना। *आसमाच में थेगली लगाना*-विकट कार्य करना। *आसमान में छेद करना*-जो काम किसी से न हो सके उसे करना। *आसमान में छेद हो जाना*-अत्याधिक वर्षा होना। *आसमान सिर पर उठाना*-१-ऊधम मचाना। २-खूब आंदोलन करना। *आसमान सिर पर टूट पडना*-१-घोर विपत्ति पड़ना। २-वज्रपात होना। *आसमान से गिरना*-१-बिना कमाया मिलना। २-टपक पड़ना। *आसमान से बातें करना*, *टकराना*, *टक्कर लेना*-बहुत ऊँचा होना।

आसमानी [वि.] (फा.) १-आकाश-सम्बन्धी। २-आकाश के रंग का। हलका नीला। २-दैवी। ईश्वरीय।

आसमुद्र [क्रि. वि.] (सं.) समुद्र के तट तक। समुद्रपर्यन्त।

आसय❀ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आशय'।

आसर [संज्ञा पु.] (हि.) आशर। राक्षस।

आसरना❀ [क्रि. स.] (हि.) आश्रय लेना। सहारा लेना।

आसरा [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधार। सहारा। अवलम्ब। २-भरण-पोषण की आशा। भरोसा। ३-जीवन या कार्य-निर्वाह का आधार। आश्रयदाता। ४-शरण। ५-प्रतीक्षा। प्रत्याशा। इन्तजार। ६-आशा।

आसव [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलों के खमीर को निचोड़कर बनाया हुआ मद्य। २-छाने हुए तरल खमीर को आसव कहते हैं। ३-अर्क।

आसवी [वि.] (सं.) शराबी। मद्यपान करने वाला।

आसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'आशा'। २-सोने चाँदी का वह डंडा जिसे चोबदार राजकीय जलूसों या बरातों के आगे लेकर चलते हैं।

आसाइश [संज्ञा पु.] (फा.) आराम। सुख। चैन

आषाढ़❀ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आषाढ़'।

आसान [वि.] (फा.) सहज। सरल। सीधा। सहल।

आसानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सरलता। सुगमता

आसापाला [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष विशेष।

आसाम [संज्ञा पु.] (देश.) भारत का एक प्रांत।

आसामी [वि.] (हि.) आसाम राज्य का। आसाम राज्यसंबंधी।
[संज्ञा पु.] देखो 'असामी'।
[संज्ञा पु.] आसाम राज्य का निवासी।
[संज्ञा स्त्री.] आसाम राज्य की बोली या भाषा।

आसार [संज्ञा पु.] (अ.) १-चिह्न। लक्षण। २-चौड़ाई।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूसलाधार वृष्टि। २-मेघमाला।

आसारित [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक गीत।

आसावरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रातःकाल के समय गाई जाने वाली एक रागनी। ३-एक प्रकार का कबूतर। ३-एक प्रकार का सूती कपड़ा।

आसिख, आसिखा❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'आशिष'।

आसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) राजाज्ञा से गिरफ्तार प्रतिवादी।

आसिन [संज्ञा पु.] (हिं.) क्वार का महीना।

आसीन [वि.] (सं.) विराजमान। बैठा हुआ। उपविष्ट।

आसीस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आशिष'।

आसु [सर्व.] (हि.) इसका।

आसुग❀ [वि., संज्ञा पु.] देखो 'आशुग'।

आसुतोष❀ [संज्ञा पु.] [वि.] देखो 'आशुतोष'।

आसुर [वि.] (सं.) असुर सम्बन्धी। पैशाची। शैतानी।

आसुरविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) कन्या के पिता को धन देकर किया गया विवाह।

आसुरी [वि.] (सं.) आसुरसंबंधी। राक्षसी।

आसुरीसंपत्, सम्पत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार्ग से आई हुई संपत्ति। भ्रष्टाचार से आई हुई कमाई।

आसूदगी [संज्ञा स्त्री.] तृप्ति। संतोष।

आसूदा [वि.] (फा.) १-संतुष्ट। तृप्त। २-सम्पन्न। भरापूरा।

आसेध [संज्ञा पु.] (सं.) हिरासत। नजरबंदी।

आसेब [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्रेतबाधा। २-हानि। ३-भय।

आसेर❀ [संज्ञा पु.] (हि.) किला।

आसोज+ [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विन मास। क्वार का महीना।

आसौं❀ [क्रि. वि.] (हिं.) इस वर्ष। इस साल।

आस्कंद, आस्कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक्रमण। हमला। २-झिड़की।

आस्कंदी, आस्कन्दी [वि.] (सं.) १-आक्रमण करने वाला। २-झिड़काने वाला।

आस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी की झूल। २-बिछौना। बिछावन।

आस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शय्या। २ बिस्तर बिछौना। ३-दुपट्टा।

आस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) विस्तार। फैलाव।

आस्तारपंक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छन्द का नाम।

आस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पत्ति। धन दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और जो खरीदी तथा बेची जा सकती हो। *प्रापर्टी*।

आस्तिक [वि.] (सं.) ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने वाला। ईश्वर तथा परलोक को मानने वाला।

आस्तिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद, ईश्वर तथा परलोक में विश्वास।

आस्तिकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आस्तिकता'।

आस्तिकपन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'आस्तिकता'।

आस्तिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आस्तिकता।'

आस्तीन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पहिनने के कपड़े का वह अंश जो बांह को ढँकता है।
आस्तीन का सांप-मित्र बनकर शत्रु का काम करे। ऐसा साथी जो प्रकट रूप में मिला झुला रहे और मन से शत्रु हो। *आस्तीन चढ़ाना*-लड़ने पर उतारू होना। किसी कार्य

के लिये मुस्तैद होना। **आस्तीन में सांप पालना**-अशुभ चिन्तक को पास रखकर उसका पोषण करना।

आस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रद्धा। पूज्यबुद्धि। २-सहारा। आलंबन। ३-सभा। बैठक।

आस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैठने का स्थान। बैठक। २-सभा। दरबार।

आस्पद [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थान। २-काम। कृत्य। ३- पद। प्रतिष्ठा। ४-अल्ल। कुल। वंश। जाति। ५-कुंडली में दसवां स्थान।

आस्पन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) कम्पन। कंपकंपी।

आस्फालन [संज्ञा पु.] १-आत्मश्लाघा। डींग। २-संघर्ष। ३-उछलकूद।

आस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठोकर लगने से या रगड़ से उत्पन्न शब्द। २-ताल ठोकने का शब्द। ३-आक। मदार।

आस्फोटक [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट।

आस्फोटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताल ठोकने का शब्द। २-फड़फड़ाहट का शब्द।

आस्फोटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवमल्लिका। चमेली।

आस्य [संज्ञा पु.] (सं.) मुख। मुँह। चेहरा। आकृति।

आस्यपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

आस्तव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पनाला। २-इन्द्रिय द्वार। ३-कष्ट। क्लेश।

आस्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) स्वाद। जायका। रस। मजा।

आस्वादन [संज्ञा पु.] (सं.) चखना। स्वाद लेना

आस्वादनीय [वि.] (सं.) चखने योग्य। स्वाद लेने योग्य। मजे के लायक।

आस्वादित [वि.] (सं.) चखा हुआ। स्वाद लिया हुआ।

आह [अव्य.] (सं.) पीड़ा, शोक, क्लेश, खेद तथा ग्लानिसूचक अव्यय। [संज्ञा स्त्री.] कराहना, दीर्घश्वास, दुःख या क्लेशसूचक शब्द। [संज्ञा पु.] १-साहस। २-बल। *आह करना*-ठंडी सांस लेना। *आह खींचना*-दीर्घ श्वास लेना। उसास खींचना। *आह पड़ना*-शाप पड़ना। किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। *आह भरना*-ठंडी उसास खींचना। *आह मारना*-ठंडी सांस खींचना। *आह लेना*-किसी को सताने का फल अपने ऊपर लेना।

आहट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चलने में पैर या दूसरे अंग से उत्पन्न शब्द। पाँव की चाप। खड़का। २-वह शब्द जिससे किसी स्थान में किसी के रहने का अनुमान हो। २-सुराग। टोह। पता।

आहत [वि.] (सं.) १-चोट खाया हुआ। घायल। जख्मी। २-वह संख्या जिसे गुणा करें। गुण्य।

आहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आघात। चोट। मार। २-गुणन। गुणना।

आहन [संज्ञा पु.] (फा.) लोहा।

आहनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताड़न। मारपीट। पशुवध।

आहनी [वि.] (फा.) लोहे का।

आहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समय। काल। दिन। २-युद्ध। लड़ाई। ३-जलस्थान। हौज।

आहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरलेना। छीनना २-किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले आना। स्थानान्तरित करना। अपनयन ३-लेना। ग्रहण।

आहरणीय [वि.] (सं.) छीनने योग्य। हरलेने योग्य।

आहरन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लोहारों और सोनारों की निहाई।

आहरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-थाला। २- छोटा तालाब। ३-कुए के पास का वह हौज या गड्ढा जिसमें पशु पानी पीते हैं।

आहर्ता [वि.] (सं.) हरण करने वाला। २-अनुष्ठान करने वाला।

आहला [संज्ञा पु.] (हिं.) बाढ़। सैलाब।

आहव [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध। लड़ाई। २-यज्ञ।

आहवन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करना। हवन करना।

आहवनी [वि.] (सं.) यज्ञ या होम करने योग्य।

आहवनीय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ में जलने वाली अग्नि।

आहाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुकार। बुलावा। २-हांक। दुहाई। (अव्य) (हिं.) नकारात्मक शब्द।

आहा [अव्य.] (हि.) आश्चर्य तथा हर्षबोधक अव्यय।

आहार [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन। खाना। २-खाने की वस्तु।

आहारक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमत के एक प्रकार की उपलब्धि।

आहारपाक [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन का पचना। हज़म होना।

आहारविरह [संज्ञा पु.] (सं.) रोटी का लाला। भोजन का कष्ट।

आहार-विहार [संज्ञा पु.] (सं.) खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन।

आहारी [वि.] (सं.) खानेवाला। भक्षक।

आहार्य्य [वि.] (सं.) १-ग्रहण किया हुआ। गृहीत २-कृत्रिम। बनावटी। ३-खाने योग्य। [संज्ञा पु.] नायक तथा नायिका का आपस में एक दूसरे के वेश को धारण करना चार प्रकार के अनुभवों में चौथा।

आहार्य्याभिनय [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में वह अभिनय जिसमें अभिनेता को कुछ नहीं बोलना या करना पड़ता, केवल उसी की वेश भूषा से ही काम चल जाता है।

आहि [क्रि. अ.] (हिं.) 'आसना' का वर्त्तमान कालिक रूप है।

आहिक [संज्ञा पु.] केतुग्रह। पुच्छलतारा।

आहित [वि.] (सं.) १-रक्खा हुआ। स्थिति। धरोहर रक्खा हुआ। [संज्ञा पु] (सं.) वह दास जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रहकर पटाता रहे।

आहिताग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्री।

आहिस्ता [क्रि. वि.] (फा.)धीरेधीरे। शनैःशनैः।

आहुत [संज्ञा पु] (सं.) १-आतिथ्यसत्कार। २-भूत। यज्ञ। बलिवैश्य-देव।

आहुति [संज्ञा स्त्री] (सं.) मन्त्र द्वारा अग्नि में घृत सामग्री आदि डालना।

आहुतीॐ + [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'आहुति'।

आहू [संज्ञा पु.] (फा.) हिरन। मृग।

आहूत [वि.] (सं.) बुलायाहुआ। निमन्त्रित।

आहृत [वि.] (सं.) १-जो लिया गया हो। २-लाया हुआ।

आहै [क्रि. अ.] (हि.) 'आसना' का वर्त्तमानकालिक रूप।

आह्निक [वि.] (सं.) दैनिक। रोजाना। प्रतिदिन का। [संज्ञा पु.] एक दिन का काम।

आह्लाद [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द। खुशी। हर्ष। प्रसन्नता।

आह्लादक [वि.] (सं.) आनन्ददायक। प्रसन्न करने वाला।

आह्लादित [वि.] ((सं.) आनन्दित। हर्षित। प्रसन्न। खुश।

आह्लादी [वि.] (सं.) आनन्दकारी। खुश करने वाला।

आह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाम। संज्ञा २-पकारने का नाम। बाजी लगाकर मेंढे, तीतर, बटेर आदि लड़ाना।

आह्वर [वि.] (सं.) कुटिल। टेढ़ा।

आह्वान [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुलाना। बुलावा। निमन्त्रण। २- समन। तलबनामा। वारंट ३-यज्ञ में मन्त्र द्वारा देवताओं का बुलाना।

आह्वायक [संज्ञा पु.] (सं.) दूत। हरकारा।

इ

इ हिंदी वर्णमाला का तीसरा स्वरवर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु है और प्रयत्न विवृत है। 'ई' इसका दीर्घ रूप है।

इंग, इङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-संकेत। चिह्न। २-चलना। हिलना। डुलना। ३-हाथी का दाँत।

इंगन, इङ्गन [संज्ञा पु.] (सं.) चलना। काँपना। हिलना। २-संकेत करना।

इंगला, इङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) इड़ा नामक एक नाड़ी।

इंगलिश, इङ्गलिश [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अंग्रेजी भाषा।
[वि.] (अं.) इंगलैंड-देश-संबंधी। अंगरेजी। २-रंगरूटों की भाषा। पेंशन।

इंगलिस्तान, इङ्गलिस्तान [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजों का देश। इङ्गलैंड।

इंगलिस्तानी, इङ्गलिस्तानी [वि.] (हिं.) अंगरेजी। इंगलैंड देश का।

इंगित, इङ्गित [संज्ञा पु.] (सं.) संकेत-चिह्न। इशारा। चेष्टा।
[वि.] (सं.) जिसकी ओर संकेत किया जाय।

इंगुद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'इंगुदी'।

इंगुदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिंगोट का वृक्ष। २-मालकँगनी।

इंगुर※+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ईंगुर'।

इंगुरीटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इंगुरौटी'।

इंगुरौटी [सज्ञा स्त्री.] (हिं.) ईंगुर या सिंदूर रखने की डिबिया। सिंधोरा।

इंगुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिंगोट का वृक्ष या फल। गोंदी।

इंच, इञ्च [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक फुट का बारहवाँ भाग।

इंचना, इञ्चना [क्रि. अ.] (हिं.) खिंचना। किसी की ओर आकर्षित होना।

इंजन, इञ्जन [संज्ञा पु.] (अं.) १-कल। पेंच। २-भाप या बिजली से चलने वाला यंत्र। ३-रेलगाड़ी के आगे वाली वह गाड़ी जो भाप की शक्ति से सब गाड़ियों को खेंच ले जाता है। ४-चलकल।

इंजीनियर, इञ्जीनियर [सज्ञा पु.] (अं.) १-अभियंता। यंत्रविद्याविशारद। यंत्रों के संबंध में जानकारी रखने वाला। २-शिल्पविद्या में निपुण। ३-राजकीय भवन, पुल तथा सड़कों का निरीक्षण करने वाला अधिकारी।

इंजीनियरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अभियंत्रणा। अभियांत्रिकी। इंजीनियर का कार्य अथवा पद।

इंजील, इञ्जील [संज्ञा स्त्री.] (यू.) १-सुसमाचार। २-ईसाइयों की धर्मपुस्तक।

इंटकोहरा [संज्ञा पु.] (हि.) ईंट का टुकड़ा या गिट्टी।

इंटाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का पंडक या पेंडुकी।

इंडहर [संज्ञा पु.] (हि.) उर्द और चने की दाल से बनी तरकारी।

इंडिया [संज्ञा पु.] (अ.) भारत।

इँडुरी※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गेंडुरी। कुण्डली।

इँडुवा [संज्ञा पु.] (हि.) गेंडुरी। सिर पर बोझा उठाने के लिये बनी, कपड़े की गोल गद्दी।

इंतकाल, इन्तकाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-मृत्यु। मौत। २-एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

इंतखाब, इन्तखाब [संज्ञा पु.](अ.) १-निर्वाचन। चुनाव। २-पसंद। ३-पटवारी के खाते की नकल।

इंतजाम, इन्तजाम [संज्ञा पु.] (अ.) प्रबन्ध। व्यवस्था। बन्दोबस्त।

इंतज़ार, इन्तज़ार [संज्ञा पु.] (अ.) प्रतीक्षा। बाट जोहना।

इंतहा, इन्तहा [संज्ञा पु.] (अ.) अन्त। हद।

इंदर※ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'इंद्र'।

इंदव [संज्ञा पु.] (सं.) मत्तगयंद और मालती नामक छंद।

इँदारा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुआँ। कूप।

इँदारुन [संज्ञा पु.] (हि.) इन्द्रायन। माहर।

इंदिया [संज्ञा पु.] (अ.) सम्मति। राय। मंशा।

इंदिरा, इन्दिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-शोभा। छवि।

इंदीवर, इन्दीवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलकमल। नीलोत्पल। २-कमल।

इंदु, इन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर। ३-एक की संख्या।

इंदुआ [संज्ञा पु.] (देश.) इँडुरी। गेंडुरी।

इंदुकर, इन्दुकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा की किरण।

इंदुकला, इन्दुकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा की कला। चन्द्रकिरण।

इंदुजा, इन्दुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर्मदा नदी।

इंदुमणि, इन्दुमणि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकांत मणि।

इंदुमती, इन्दुमती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पूर्णिमा। २-राजा अज और राजा चंदविजय की पत्नियों का नाम।

इंदुमनि, इन्दुमनि [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रकान्त मणि।

इंदुर, इन्दुर [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा। मूसा।

इंदुरत्न, इन्दुरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ता। मोती

इंदुवदना, इन्दुवदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में (भ+ज+स+न+२गुरु) होते हैं।

इंदुवधु, इन्दुवधु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'इन्द्र वधु'।

इंद्र, इन्द्र [वि.] (सं.) १-एश्वर्यवान्। विभूति। सम्पन्न। २-श्रेष्ठ। बड़ा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन वैदिक देवता जो अंतरिक्ष में रहता है। यह देवताओं का राजा माना जाता है। २-१२ आदित्यों में से एक। सूर्य। ३-बिजली। ४-मालिक। स्वामी। ५-ज्येष्ठा-नक्षत्र। ६-चौदह की संख्या। ७-कुटज नामक वृक्ष। ८-रात। ९-एक प्रकार का छप्पय छंद। १०-दाहिनी आंख की पुतली। ११-जीव। प्राण।
इन्द्र का अखाडा–इन्द्र की सभा जिसमें अप्सराओं का नाच होता है। २-नृत्य-संगीत से पूर्ण सभा। *इन्द्र की परी*–बहुत सुन्दर स्त्री

इंद्रकील, इन्द्रकील [संज्ञा पु.] (सं.) मंदराचल पर्वत का एक नाम।

इंद्रगोप, इन्द्रगोप [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी।

इन्द्रजव, इन्द्रजव [संज्ञा पु.] (सं.) कुड़ा। कुरैया का बीज।

इंद्रचाप, इन्द्रचाप [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

इंद्रजाल, इन्द्रजाल [संज्ञा पु.] (सं.) मायाकर्म। जादूगरी।

इंद्रजालिक, इन्द्रजालिक [वि.] (सं.) इन्द्रजाल करने वाला। जादूगर। मायावी।

इंद्रजाली, इन्द्रजाली [वि.] (हिं.) देखो 'इन्द्रजालिक'।

इंद्रजित्, इन्द्रजित [वि.] (सं.) इन्द्र पर विजय प्राप्त करने वाला। [संज्ञा पु.] रावण का पुत्र मेघनाद।

इंद्रजीत, इन्द्रजीत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'इन्द्रजित्'।

इंद्रतरु, इन्द्रतरु [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुनवृक्ष।

इंद्रत्व, इन्द्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र की शक्ति।

इंद्रदमन, इन्द्रदमन [संज्ञा पु.] (सं) १-बाढ़ के समय नदी के जल का किसी कुण्ड, ताल, अथवा बट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक वर्ष समझा जाता है। २-बाणासुर का एक पुत्र। ३-मेघनाद का एक नाम।

इंद्रदारु, इन्द्रदारु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु।

इंद्रद्रुम, इन्द्रद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'इन्द्रतरु'।

इंद्रधनुष, इन्द्रधनुष [संज्ञा पु.] (सं.) वह सात रंगों का अर्द्धवृत्त जो वर्षाऋतु में सूर्य के सामने की दिशा में दिखाई देता है।

इंद्रध्वज, इन्द्रध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र की

पताका। २–भाद्रशुक्ल द्वादशी का ध्वजा रोहण उत्सव।

इंद्रनील, इन्द्रनील [संज्ञा पु] (सं.) नीलमणि। नीलम।

इंद्रनेत्र, इन्द्रनेत्र [वि]· (सं.) एक हजार की संख्या।

इंद्रपुरी, इन्द्रपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरावती। स्वर्ग। इन्द्र का स्थान।

इंद्रपुरोहिता, इन्द्रपुरोहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्यनक्षत्र।

इंद्रप्रस्थ, इन्द्रप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं) वर्तमान दिल्ली नगर ३२ मील की दूरी पर एक स्थान जो पहिले पांडवों ने बसाया था।

इंद्रफल, इन्द्रफल [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजव।

इंद्रभाष इन्द्रभाष [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में इंद्रताल के छः भेदों में से एक।

इंद्रमंडल, इन्द्रमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) अभिजित से अनुराधा तक के सात नक्षत्रों का समूह।

इंद्रयव, इन्द्रयव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'इन्द्रजव'

इंद्रलुप्त, इन्द्रलुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) गंजेपन का रोग।

इंद्रलोक, इन्द्रलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

इंद्रवंशा, इन्द्रवंशा [संज्ञा पु.] (सं.) १२ वर्णों का एक छंद जिसमें (त + त + ज + र) होते हैं।

इंद्रवज्रा, इन्द्रवज्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद जिसमें (त + त + ज + र गुरु) होते हैं।

इंद्रवधू, इन्द्रवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीरवहूटी।

इंद्रवल्ली, इन्द्रवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रायन

इंद्रवस्ति, इन्द्रवस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जांघ की हड्डी।

इंद्रवारु, इन्द्रवारु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रायन।

इंद्रवारुणी, इन्द्रवारुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रायन।

इंद्रवृद्ध, इन्द्रवृद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की फुंसी या फुड़िया।

इंद्रव्रत, इन्द्रव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजा का हित-चिंतक राजा।

इंद्रसावर्णी, इन्द्रसावर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) चौदहवें मनु का नाम।

इंद्रसेन, इन्द्रसेन [संज्ञा पु] (सं.) राजा बलि का एक नाम।

इंद्रा, इन्द्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–देवराज इंद्र की पत्नी, शची। २–इन्द्रायन।

इंद्राणी, इन्द्राणी [संज्ञा स्त्री.] १–इन्द्र की पत्नी शची। २–बड़ी इलायची। ३–इन्द्रायन। ४–दुर्गादेवी। ५–बांई आँख की पुतली।

इंद्रानुज, इन्द्रानुज [संज्ञा पु] (सं.) वामन अवतार विष्णु।

इंद्रायन, इन्द्रायन [संज्ञा स्त्री] (सं.) तरबूज के समान एक लता जिसका फल देखने में सुन्दर, पर खाने में अत्यन्त कड़ुआ होता है।

इंद्रायुध इन्द्रायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १–वज्र। २–इन्द्रधनुष।

इंद्राशन, इन्द्राशन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुंजा। घुंघची। २–भांग। विजया।

इंद्रासन, इन्द्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) १–इंद्र का सिंहासन। २–राजसिंहासन। ३–वह स्थान जहां सब सुख मिलें।

इंद्रिय, इन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] १–वह शक्ति जिसके द्वारा बाहरी पदार्थों के भिन्न-भिन्न गुणों का भिन्न-भिन्न रूपों में अनुभव होता है। शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञानप्राप्त करती है। ३–लिंगेद्रिय। ४–पांच की संख्या। ५–वीर्य। ६–कुश्ती के एक पेंच का नाम।

इंद्रियज, इन्द्रियज [वि.] (सं.) इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला।

इंद्रियजित, इन्द्रियजित [वि.] (सं.) इन्द्रियों को वश में रखने वाला। जो विषयासक्त न हो।

इंद्रियनिग्रह, इन्द्रियनिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रियों को वश में करने का कार्य। इन्द्रियों को दबाना।

इंद्रियवज्री, इन्द्रियवज्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाजी करण क्रिया का एक भेद।

इंद्रियार्थ, इन्द्रियार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रियों का विषय।

इंद्री, इन्द्री+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'इन्द्रिय'।

इंद्रीजुलाव, इन्द्रीजुलाव [संज्ञा पु.] (हि.) मूत्र लाने वाली औषधि।

इंद्रोपल, इन्द्रोपल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीले रंग का हीरा।

इंधन, इन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) आग जलाने की सामग्री, लकड़ी तृणादि।

इंधरौड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) ईंधन रखने का स्थान। ईंधनगृह।

इंसाफ, इन्साफ [संज्ञा पु.] (अ.) १–न्याय। अदल। निर्णय। फैसला।

इंस्टिटयूट [संज्ञा स्त्री] (अ.) संस्था। सभा। समाज।

इंस्पेक्टर [संज्ञा पु.] (अ.) निरीक्षक। देखभाल या जाँच करने वाला।

इ [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

इकंग* [वि.] (हि.) एक ओर का। एक तरफा। [संज्ञा पु.] (हि.) शिव। अर्द्धनारीश्वर।

इकंत* [वि.] (हि.) देखो 'एकांत'।

इक* [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'एक'

इक-आँक* [क्रि वि.] (हि.) निश्चय। निश्चय करके। अवश्य।

इकइस* [वि.] (हि.) देखो 'इक्कीस'।

इकजोर* [क्रि. वि.] (हि.) एक साथ।

इकटक* [वि.] (हि.) १–स्थिर। अचल। टकटकी लगाया हुआ।

इकट्ठा [वि.] (हि) एकश:। मिलाहुआ। [क्रि. वि.] (हि.)। साथ-साथ। मिलकर।

इकडाल [संज्ञा पु. वि.] (हि.) देखो 'एकडाल'।

इकतर* [वि.] (हि.) देखो 'एकत्र'।

इकतरा [संज्ञा पु.] (हि.) अँतरिया। एक दिन छोड़कर एक दिन आने वाला ज्वर।

इकता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'एकता'।

इकताई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एकता। अकेलापन

इकताना * [वि.] (हि.) एकरस। स्थिर अनन्य।

इकतार [वि.] (हि.) एक रस। समान। बराबर [क्रि. वि.] (हि.) लगातार।

इकतारा [संज्ञा पु.] (हि.) १–सितार के समान एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार है। २–एक प्रकार का हाथ से बुना वस्त्र।

इकताला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'एकताल'।

इकतालीस [वि.] (हि.) चालीस और एक '४१

इकतीस [वि.] (हि.) तीस और एक '३१'।

इकत्र [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'एकत्र'।

इकदाम [संज्ञा पु.] (अ) १–किसी अपराध करने की चेष्टा। २–संकल्प। इरादा।

इकपेचा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की पगड़ी

इकबारगी [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'एकबारगी

इकबाल [संज्ञा पु.] (अ.) १–स्वीकृत। अंगीकार २–भाग्य।

इकरदन [संज्ञा पु.] देखो 'एकरदन'।

इकरस [वि.] (हि.) एक रस। एक रंग समान।

इकराम [संज्ञा पु.] (अ.) १–पारितोषिक। उपहार भेंट। २–आदर। प्रतिष्ठा।

इकरार [संज्ञा पु.] (अ.) १–वाइदा। प्रतिज्ञा। स्वीकृति।

इकरारी [वि.] (अ.) १–वाइदा करने वाला। मान लेने वाला।

इकलड़ा [वि.] (हि.) एक ही डोर में बँधा हुआ इकहरा। [संज्ञा पु.] एक लर का हार।

इकला [वि.] (हि.) देखो 'अकेला'।

इकलाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक पाट की महीन चादर। २–अकेलापन।

इकलाई [वि.] (हि.) एक ही टुकड़े की बनी हुई

इकलौता [संज्ञा पु.] (हि.) वह लड़का जो अपने माता के अकेला हो।

इकल्ला [वि.] (हि.) १–अकेला। एकाकी। एकहरा या एक पर्त्त का।

इकवाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.] एक प्रकार की निवाड़

इकसठ [वि] (हि) साठ और एक '६१'।

इकसर* [वि] (हि.) अकेला। एकाकी।

इकसार [वि] (हि.) समान। बराबर। सदृश।

इकसूत* [वि] (हि.) एक साथ। एकत्र। इकट्ठा।

इकहत्तर [वि] (हि.) सत्तर और एक '७१'।

इकहरा [वि] (हिं.) देखो 'एकहरा'।

इकहाई ※ [क्रि. वि.] (हिं) १-एक साथ। तुरन्त। फौरन। २-एकदम। अचानक।

इकान्त ※ [वि.] (हिं.) देखो 'एकान्त'।

इकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एकांक।

इकेला* [वि.] (हि.) देखो 'अकेला'।

इकैठ ※ [वि.] (हिं.) इकट्ठा। एकत्र।

इकोत्तर※ [वि] (हि.) देखो 'एकोत्तर'।

इकौज [संज्ञा स्त्री] (हि.) केवल एक बार संतान उत्पन्न करने वाली स्त्री।

इकौना [संज्ञा पु.] (हि.) मिश्रित अन्न। विना छांटा हुआ अन्न।

इकौसो ※ [वि] (हिं.) एकांत। निराला।

इक्कस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ईर्ष्या। डाह।

इक्का [वि.] (हि.) १-अकेला। एकाकी। २-अनोखा निराला। [संज्ञा पु.] १-कान की बाली जिसमें एक मोती रहता है। २-लड़ाई में अकेला लड़ने वाला योद्धा। ३-एक ही बूटी वाला ताश का पत्ता। ४-दो पहिये की गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जुतता है। ५-अपने झुण्ड से अलग निकला हुआ पशु।

इक्कादुक्का [वि] (हिं.) अकेला-दुकेला।

इक्कावन [वि.] (हिं.) देखो 'इक्यावन'।

इक्कासी [वि.] (हि.) देखो 'इक्यासी'।

इक्की [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक बूटी का ताश का पत्ता।

इक्कीस [वि.] (हि.) बीस और एक '२१'।

इक्यावन [वि.] (हिं) पचास और एक '५१'।

इक्यासी [वि.] (हि.) अस्सी और एक '८१'।

इक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) ईख। गन्ना।

इक्षुकांड, इक्षुकाण्ड [संज्ञा पु.] १-ऊख का डंठल। २-कास। ३-मूंज। ४-रामशर।

इक्षुगंध, इक्षुगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा। गोखरू २-काश।

इक्षुगंधा, इक्षुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-गोखरू २-तालमखाना। कोकिलाक्ष। ३-सफेद विदारीकंद। ४-कास।

इक्षुज [संज्ञा पु.] (सं.) ईख से बनने वाले पदार्थ।

इक्षुदंड [संज्ञा पु.] (सं.) ईख। ईख का डंठल।

इक्षुपात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-ज्वार। मक्का। २-बाजरा।

इक्षुपाक [संज्ञा पु.] (सं.) गुड़।

इक्षुप्र [संज्ञा पु] (सं) रामशर। शर।

इक्षुप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ मधु या शक्कर जाती है।

इक्षुमेह [संज्ञा पु.] (सं.) मधुप्रमेह। इक्षुप्रमेह।

इक्षुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोखरू। २-तालमखाना।

इक्षुरस [संज्ञा पु.] (सं) १-ईख का रस। २-कास।

इक्षुरसवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षीरविदारी। महाश्वेता।

इक्ष्वाकु [संज्ञा पु.] (सं.) एक सूर्यवंशी प्रमुख राजा का नाम।

इक्ष्वालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नरकट। नरकुल। २-काँस। ३-मूंज।

इखद* [वि.] (हिं.) देखो 'ईषत'।

इखराज [संज्ञा पु.] (अ.) खर्च। निकास। उठान

इखलास [संज्ञा पु.] (अ.) १-मित्रता। २-प्रेम। प्रीति। ३-संबंध।

इखु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'इक्षु'।

इख्तियार [संज्ञा पु.] (अ.) १-अधिकार। २-अधिकारक्षेत्र। ३-सामर्थ्य। काबू। ४-प्रभुत्व। स्वत्व।

इख्तिलात [संज्ञा पु.] (अ.) मेलजोल। परिचय।

इख्तिलाफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-विरोध। फर्क। २-अनबन। बिगाड़।

इख्तिसार [संज्ञा पु.] (अ.) संक्षेप। कमी।

इगारह* [वि.] (हि.) देखो 'ग्यारह'।

इग्यारह* [वि.] (हि.) देखो 'ग्यारह'।

इचकना + [क्रि. अ.] क्रोध में दाँत निकालना।

इच्छक [वि.] (सं.) अभिलाषी।

इच्छता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभिलाषा। चाह।

इच्छत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'इच्छता'।

इच्छना* [क्रि. स.] (हि.) इच्छा करना। चाहना।

इच्छा [संज्ञा स्त्री] (सं.) वांछा। चाह। लालसा। अभिलाषा।

इच्छापत्र※ [संज्ञा पु.] (सं.) रिक्थपत्र। वसीयतनामा। वह लेख अथवा पत्र जिसमें वसीयत की सब शर्तें लिखी हों। दित्सापत्र।

इच्छापत्रहीन※ [वि.] (सं.) जिसने इच्छापत्र या वसीयतनामा न लिखा हो।

इच्छापत्रहीनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छापत्र या वसीयतनामा न लिखने का अभाव।

इच्छाभेदी [वि.] (सं.) इच्छा के अनुसार दस्त या विरेचन कराने वाली (औषधि)।

इच्छाभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुचि के अनुसार भोजन। २-रुचि के अनुकूल खाद्यपदार्थ।

इच्छित [वि] (सं.) वांछित। चाहा हुआ। अभीष्ट। अभिप्रेत।

इच्छु※ [संज्ञा पु] इक्षु। ईख।
[वि] चाहने वाला।

इच्छुक [वि] (सं) इच्छा करने वाला। अभिलाषी। चाहने वाला।

इजमाल [संज्ञा पु] (अ) १-कुल। समष्टि। २-संयुक्ताधिकार। साझा।

इजमाली [वि] (अ) संयुक्त। साझे का।

इजरा [संज्ञा स्त्री.] (हि) परती भूमि।

इजराय [संज्ञा पु.] (अ.) १-जारी या प्रचलित करना। २-व्यवहार या काम में लाना।

इजलास [संज्ञा पु.] (अ.) १-बैठक। २-न्यायालय। कचहरी। ३-अधिवेशन।

इजहार [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रकाशन। प्रकट करना। २-न्यायालय के सम्मुख बयान। साक्षी। गवाही।

इजाज़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आज्ञा। आदेश। हुक्म। २-अनुमति। स्वीकृति।

इज़ाफ़ा [संज्ञा पु] (अ) वृद्धि। बढ़ती।

इज़ार [संज्ञा स्त्री] (अ) पायजामा। सुथना।

इज़ारबंद, बन्द [संज्ञा पु] (फा.) पायजामा या लहँगे के नेफे में डालने की डोरी जिससे यह कमर पर कसा जाता है।

इज़ारदार, इजारदार [वि] (फा.) पट्टेदार। ठेकेदार। अधिकारी।

इजारा [संज्ञा पु.] (अ.) १-ठेका २-स्वत्व। अधिकार।

इज्ज़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। आदर। सत्कार।

इज्जत उतारना -मर्यादा नष्ट करना। *इज्जत रखना*-प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

इज्ज़तदार [वि.] (फा.) सम्मानित। प्रतिष्ठित।

इज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ। देवपूजा।

इटालियन [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार का कपड़ा। २-इटली देश का निवासी।

इटालिक [संज्ञा पु.) (अं.) छापे के तिरछे अक्षर।

इठलाना [क्रि. अ.] (हि.) १-इतराना। गर्व के साथ चलना। २-नखरा करना। ३-छकाने के लिए जानबूझकर अनजान बनना।

इठलाई, इठलाहट [संज्ञा स्त्री] (हि इठलाने का भाव। ठसक।

इठाई ※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-अभिलाषा। चाह। २-मित्रता। प्रेम।

इड़रहर + [संज्ञा पु.] देखो 'इंडहर'।

इड़ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूमि। अन्न। वर्षाकाल।

इड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। भूमि। २-गाय। ३-वाणी। ४-स्तुति। ५-एक यज्ञपात्र। ६-प्रयाजा और अनुयाजा के बीच में दी जाने वाली आहुति। ७-अन्न। हवि। ८-नभ। देवता। ९-दुर्गा। अंबिका। १०-एक नाड़ी जो पीठ की रीढ़ से होकर नाक तक आती है।

इतःपर [क्रि वि.] (सं) इसके बाद। इसके उपरान्त।

इंत※ + [क्रि. वि.] (हिं.) इस ओर। यहां। इधर।

इंतउत [क्रि वि.] (हि) इधर-उधर। जहां तहां।

इतना [वि] (हि) इस मात्रा का इस कदर।

इतने में–इसी समय में । इसी बीच में ।

इतनी [वि.] (हि.) देखो 'इतना' ।

इतनों ॐ+ [वि.] (हि.) देखो 'इतना ।

इतमाम ॐ+ [संज्ञा पु.] (अ.) इंतजाम । प्रबंध ।

इतमीनान [संज्ञा पु.] (अ.) संतोष । विश्वास । दिलजमई ।

इतमीनानी [वि] (फा.) विश्वसनीय । विश्वासपात्र ।

इतर [वि] (सं.) १–अन्य । दूसरा । और । २–नीच । पामर । ३–साधारण ।
+ [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'अतर' ।

इतराजी [संज्ञा स्त्री] (हि.) विरोध । एतराज । अनबन ।

इतराना [क्रि. अ] (हि.) १–सफलता पर फूल उठना । घमंड करना । २–ठसक दिखाना । इठलाना ।

इतराहट [संज्ञा स्त्री.] (हि) घमंड । गर्व । दर्प । ठसक ।

इतरेतर [क्रि. वि] (सं.) परस्पर । आपस में ।

इतरेतरयोग [संज्ञा पु] (सं.) परस्पर संबंध ।

इतरेतराभाव [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायशास्त्र के अनुसार एक के गुणों का दूसरे में होना ।

इतरौहाँ [वि] (हि.) इठलाने या इतराने वाला ।

इतवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इत्वरी' ।

इतवार [संज्ञा पु] (हिं.) आदित्य वार । रविवार ।

इतस्ततः [क्रि वि.] (सं) इधर-उधर । यहाँ-वहाँ ।

इताअत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) आज्ञापालन । तावेदारी ।

इताति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इताअत' ।

इति [अव्य.] (सं.) समाप्ति-सूचक-अव्यय । [संज्ञा-स्त्री.] समाप्ति । पूर्णता ।

इतिकर्तव्यता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–किसी कार्य के करने की विधि । परिपाटी २–कर्त्तव्य ।

इतिमात्र [वि.] (सं.) केवल इतना ही ।

इतिवृत्त [संज्ञा पु.] (सं) पुरानी कथा । कहानी । आख्यायिका । पुरावृत्त ।

इतिहास [संज्ञा पु.] (सं.) विगत प्रसिद्ध घटनाओं और पुरुषों का कालक्रम के अनुसार वर्णन । तवारीख । हिस्ट्री ।

इतेक+ [वि.] (हि) देखो इतना एक । इतना ।

इतोॐ [वि.] (हि) इतना या इस मात्रा का । निर्दिष्ट मात्रा का ।

इतौॐ [वि] (हि.) इतना या इस मात्रा का । इतो ।

इत्तफ़ाक [संज्ञा पु.] (अ) १–मेल । एका । सहमति । मिलाप । २–संयोग । अवसर ।
इत्तफ़ाक करना–सहमत होना । *इत्तफ़ाक पड़ना*–अवसर आना । *इत्तफाक से*–संयोगवश । अकस्मात् ।

इत्तिफ़ाक़न [क्रि.वि.] (अ.) संयोगवश । अचानक ।

इत्तिफ़ाक़िया (वि] (अ.) आकस्मिक ।

इत्तला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सूचना । खबर । विज्ञापन । चेतावनी ।

इत्तलानामा [संज्ञा पु.] (अ.) सूचनापत्र ।

इता [वि.] (हि.) इतना ।

इतो [वि.] (हि.) देखो 'इतो' ।

इत्थं [क्रि वि.] (सं) यों । ऐसा । इस तरह से ।

इत्थंभूत [वि.] (सं.) इस प्रकार का ऐसा ।

इत्थंमेव [वि.] (सं.) ऐसा ही । [क्रि. वि.] इसी प्रकार से ।

इत्थंभाव [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी अवस्था ।

इत्यादि [अव्य.] (सं.) इसी प्रकार । अन्य । और । और दूसरे । वगैरह ।

इत्यादिक [वि.] (सं.) ऐसे ही और दूसरे । इसी प्रकार के अन्य और ।

इत्र [संज्ञा पु.] (अ.) इतर । अतर । । सुगन्धित

इत्रदान [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'अतरदान' ।

इत्रफ़रोश [संज्ञा पु.] (अ.) अतर बेचने वाला ।

इत्रीफल [संज्ञा पु.] (हि.) एक हकीम औषध ।

इत्वर [वि.] (सं.) नीच । क्रूर । [संज्ञा पु.] १–नपुंसक । २–पथिक । मुसाफिर ।

इत्वरी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] छिनाल । कुलटा ।

इदं, इदम् [सर्व.] (सं.) यह ।

इदानीतन [वि.] (सं.) १–आधुनिक । इस समय का । २–नबीन । नया ।

इद्ध [वि.] (सं.) १–जलाहुआ । दग्ध । २–निर्मल ।

इधर [क्रि. वि.] (हि.) यहाँ । इस ओर । इस तरफ ।
इधर उधर–१–यहाँ वहाँ । इतस्ततः । २–आसपास । ३–टालमटूल । *इधर उधर करना*–१–तितरबितर करना । २–हटना । ३–टालमटोल करना । ४–उलटपुलट कर देना । *इधर-उधर की बात*–१–अफवाह है । उड़ती खबर । २–व्यर्थ की बात । ३–पक्ष-विपक्ष की बात । *इधर-उधर की लगाना*–चुगली खाना । *इधर-उधर की हांकना*–गप्प ठोंकना । झूठ-मूठ बकना । *इधर उधर में रहना*–आवारा घूमना । *इधर का उधर हो जाना*–उल्टा हो जाना । *इधर का रहना (होना) न उधर का*–१–किसी की ओर भी न रहना । २–किसी का काम न करना । ३–किसी ओर न होना । *इधर की उधर करना या लगाना*–१–किसी दूसरे का भेद देना । २–एक से दूसरे की बुराई करना । *इधर की दुनिया उधर होना*–असम्भव का सम्भव होना ।

इध्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–काठ । लकड़ी । २–यज्ञ की समिधा ।

इन [सर्व.] (हिं.) 'इस' का बहुवचन ।

इनकम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) आय । अर्थागम ।

इनकमटैक्स [संज्ञा पु.] (अ.) आय पर

इनकार [संज्ञा पु.] (अ.) अस्वीकार । नामंजूरी ।

इनफ्लुएंजा [संज्ञा पु.] (अ.) प्रबल श्लेष्मा

इनसान [संज्ञा पु.] (अ.) मनुष्य । मानव ।

इनसानियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मनुष्य मानवता । २–बुद्धिमत्ता । ३–भलम सज्जनता ।

इनाम [संज्ञा पु.] (अ.) पुरस्कार । उपहार । तोषिक ।

इनामदार [संज्ञा पु.] (अ.) बिना लगान का मालिक ।

इनायत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अनुग्रह । दया । एहसान ।

इनारा [संज्ञा पु.] (हिं.) कूप । कुआँ ।

इनेगिने [वि.] (हि.) १–कुछ । थोड़े से । २–चुने-चुनाये ।

इन्कार [संज्ञा पु.] देखो 'इनकार' ।

इन्नर [संज्ञा पु.] हि.) तुरंत की ब्याही हुई के दूध में मसाला मिलाकर जमाना । जमे हुए दूध को 'इन्नर' कहते हैं ।

इन्सान [संज्ञा पु.] (अ.) मनुष्य । आदमी ।

इन्सानियत [सज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'इ नियत' ।

इन्ह [सर्व.] (हि.) देखो 'इन' ।

इफ़रात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अधिकता । ज्याद अधिकाई ।

इबरानी [वि.] (अ.) यहूदीसंबंधी ।
[संज्ञा स्त्री.] यहूदिया की भाषा ।

इबलीस [संज्ञा पु.] (अ.) शैतान ।

इबादत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) आराधना । अर्चा ।

इबारत [संज्ञा स्त्री] (अ.) १–लेख । २– शैली । वाक्यरचना ।

इबारती [वि.] (अ.) लेखसबंधी । जो इबार हो ।

इबतिदा, इब्तिदा [संज्ञा स्त्री] (अ.) १–आरं आदि । २–जन्म । पैदाइश । ३–निकास ।

इभ [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी ।

इभकरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपीपर । पिप्पली ।

इभकुभ, इभकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी मस्तक ।

इभराज [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत हाथी ।

इभ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हथिनी । २– वृक्ष ।

इमकान [संज्ञा पु.] (अ.) संभव । मजाल । बस ।

इमकोस [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार की म्यान ।

इमचार [संज्ञा पु.] (हिं.) गुप्तचर । छिपा हुआ जासूस ।

इमदाद [संज्ञा स्त्री] (अ.) मदद । सहायता ।

इमदादी [वि.] (अ.) सहायता प्राप्त । मदद पाने वाला ।

इमरती [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक मिठाई ।

इमली [संज्ञा स्त्री] (हि.) १–एक बड़ा वृक्ष जिसकी पत्तियाँ बहुत छोटी छोटी और खट्टी होती हैं। इसका फल भी खट्टा होता है । २–इस वृक्ष का फल ।

इमाम [संज्ञा पु.] (अ.) १–अगुआ । पुरोहित । २–मुसलमानों के शिया सम्प्रदाय के धार्मिक कृत्य कराने वाला मनुष्य ।

इमामदस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) खरल के समान लोहे या पीतल का खलबट्टा ।

इमामबाड़ा [संज्ञा पु.] (अ.) ताजिया रखने तथा गाड़ने का हाता ।

इमारत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) विशाल भवन । आलीशान मकान ।

इमि❀ [क्रि वि.] (हिं.) इस प्रकार । ऐसे । इस तरह ।

इम्तहान [संज्ञा पु.] (अ.) परीक्षा । जांच ।

इम्ला [संज्ञा पु.] (अ.) लेखनप्रणाली ।

इयत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सीमा । हद । २–गण-पूर्ति । कोरम ।

इरम्मद [संज्ञा पु.] (सं.) १–बिजली की आग या गरमी । २–बिजली ।

इरषा❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ईर्षा' ।

इरषित❀ [वि.] (हिं.) देखो 'ईर्षित' ।

इरसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पहिये की धुरी ।

इरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कश्यप ऋषि की पत्नी और बृहस्पति की माता । १–भूमि । पृथ्वी । वाणी । वाचा । ४–जल । ५–अन्न ।

इराकी [वि.] (अ.) इराक देश का । [संज्ञा पु.] घोड़े की एक जाति विशेष ।

इरादा [संज्ञा पु.] (अ.) विचार । संकल्प ।

इरावत [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक पर्वत । २–एक सर्प । ३–अर्जुन के एक पुत्र का नाम ।

इरावदी [संज्ञा स्त्री.] ब्रह्मदेश की एक प्रमुख नदी

इर्दगिर्द [क्रि. वि.] (हि.) चारों ओर । आस-पास । इधर-उधर ।

इर्शाद [संज्ञा पु.] (अ.) आज्ञा । हुक्म ।

इर्षना❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एषणा । प्रबल इच्छा ।

इलज़ाम [संज्ञा पु.] (अ.) १–दोषारोपण । दोष । अपराध । २–अभियोग ।

इलहाम [संज्ञा पु.] (अ.) देववाणी । आकाश-वाणी । ईश्वरवाणी ।

इला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पृथ्वी । २–पार्वती । ३–वाणी । सरस्वती । ४–बुद्धिमती स्त्री । ५–गौ । धेनु ।

इलाक़ा [संज्ञा पु.] (अ.) १–सम्बंध । लगाव । २–जमींदारी । राज्य । रियासत ।

इलाचा [संज्ञा पु.] (?) एक कपड़ा जो रेशम और सूत की मिलावट से बनता है ।

इलाची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'इलायची' ।

इलाज [संज्ञा पु.] (अ.) १–औषध । दवा । २–चिकित्सा । ३–युक्ति । तदबीर । निवारण का उपाय ।

इलाम❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) सूचनापत्र । आज्ञा । हुक्मनामा ।

इलायची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सदावहार वृक्ष जिसके फल के सुगन्धित बीज मसाले में पड़ते हैं ।

इलायचीदाना [संज्ञा पु.] (हि.) १–इलायची का बीज । २–चीनी में पागा हुआ इलायची का दाना ।

इलावर्त्त❀ [संज्ञा पु.] (सं.) जंबूद्वीप के नव-खंडों में से एक ।

इलाही [संज्ञा पु.] (अ.) ईश्वर । परमात्मा । खुदा

इलाहीखर्च [संज्ञा पु.] (अ.) फजूलखर्च । अप-व्यय । अधिक खर्च ।

इलाहीमुहर [वि.] (अ.) अछूता । खालिस । [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अमानत । धरोहर ।

इलाहीरात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) रतजगे की रात ।

इलिश [संज्ञा स्त्री.] (अ.) हिलसा मछली ।

इलेक्ट्रिक [वि.] (अ.) बिजली संबंधी ।

इल्जाम [संज्ञा पु.] (अ.) दोषारोप । आरोप ।

इल्तिजा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) निवेदन । प्रार्थना ।

इल्म [संज्ञा पु.] (अ.) १–विद्या । २–ज्ञान । ३–विज्ञान ।

इल्लत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–रोग । बीमारी । २–बाधा । ३–दोष । अभियोग ।

इल्ला [संज्ञा पु.] (हि.) त्वचा के ऊपर निकली हुई मसे के समान छोटी फुंसी ।

इल्वला [संज्ञा पु.] (सं.) मृगशिरानक्षत्र के सिर पर रहने वाले ५ तारों का समूह ।

इव [अव्य.] (सं.) समान । सदृश । तुल्य । नाई

इशरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सुख । चैन । आराम । भोगविलास ।

इशारा [संज्ञा पु.] (अ.) १–संकेत । चिह्न । सैन । २–संक्षिप्त कथन । ३–सूक्ष्म आधार । ४–गुप्त प्रेरणा ।

इशिका, इशीका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'इषीका' ।

इश्क [संज्ञा पु.] (अ.) चाह । प्रेम । लगन । आसक्ति ।

इश्कबाज [संज्ञा पु.] (अ.) कामुक रसिया ।

इश्कबाजी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कामुकता ।

इश्तहार [संज्ञा पु.] (अ.) विज्ञापन । नोटिस । ऐलान ।

इश्तयाक [संज्ञा पु.] (अ.) चाह । अभिलाषा ।

इश्तयालक [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–उत्तेजना । बढ़ावा । २–बत्ती उभारने की सींक जो दीपक में पड़ी रहती है ।

इष [संज्ञा पु.] (सं.) क्वार का महीना । आश्विन

इषण❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) प्रबल इच्छा । कामना । वासना ।

इषीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बाण । तीर । २–मूंज के ऊपर की सींक जिस पर जीरा या भुआ होता है । ३–हाथी की आंख का ढेला

इषु [संज्ञा पु.] (सं.) बाण । तीर ।

इषुधि, इषुधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तूण । तूणीर । तरकस ।

इषूमान [वि.] (सं.) तीर चलाने वाला ।

इष्ट [वि.] (सं.) १–अभिलाषित । वांछित । चाहा हुआ । २–अभिप्रेत । ३–पूजित । [संज्ञा पु.] (सं.) १–अग्निहोत्रादि । शुभ-कर्म । धर्मकार्य । २–कुलदेव । ३–अधिकार । वश । ४–मित्र । दोस्त । ५–रेंड का पेड़ । ६–ईंट ।

इष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) ईंट ।

इष्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईंट ।

इष्टकाल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में किसी घटना के घटित होने का ठीक समय ।

इष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मित्रता । मिताई । दोस्ती ।

इष्टदेव, इष्टदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) आराध्य-देव । कुल-देवता ।

इष्टसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) अभीष्ट की सिद्धि ।

इष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं) हवन में लगने की लकड़ी ।

इष्टापूर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) हवन करना, कुआँ या तालाब खुदवाना, बगीचा लगवाना आदि शुभकर्म ।

इष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–यज्ञ । २–इच्छा । अभिलाषा । ३– निमंत्रण ।

इष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईंट ।

इष्य [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतऋतु ।

इस [सर्व.] (हिं.) 'यह' शब्द का रूप जो विभक्ति लगाने पर इस हो जाता है ।

इसकंदर [संज्ञा पु.] (यू.) सिकन्दर नामक बादशाह ।

इसपंज, इसपञ्ज [संज्ञा पु.] (अ.) समुद्र में रहने वाला एक प्रकार का जीव इसके भीतर चक्र तथा ऊपर अनेक छेद होते हैं ।

इसपात [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का कड़ा तथा उत्तम लोहा ।

इसपिरिट [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी वस्तु का सत। २-एक प्रकार की खालिस सुरा या शराब।

इस्पेशल [वि.] (अं.) विशेष। खास। [संज्ञा स्त्री.] असामान्य रेलगाड़ी जो किसी विशेष अवसर या विशेष व्यक्ति के लिये चलाई जाती है।

इसबगोल [संज्ञा पु.] (फा.) एक झाड़ी अथवा पौधा जिसके बीज गोल होते हैं तथा औषधि में प्रयुक्त होते हैं।

इसरार [संज्ञा पु.] (अ.) १-आग्रह। अनुरोध। जिद। २-सारंगी के सदृश एक बाजा।

इसराज [संज्ञा पु.] (अ.) एक बाजा।

इसलाम [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानी धर्म।

इसलाह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) संशोधन। सुधार।

इसाई [वि.] (हिं.) देखो 'ईसाई'।

इसीका [सर्व.] (हिं.) 'यह' का संबंधकारक।
※ [संज्ञा स्त्री] देखो 'इषीका'।

इसे [सर्व.] (हि.) 'यह' का कर्मकारक तथा संप्रदानकारकरूप।

इस्कात [संज्ञा पु.] (अ.) १-पतन। गिराव। २-गर्भपात।

इस्तमरार [संज्ञा पु.] (अ.) एकाधिकार। ठहराव।

इस्तमरारदार [संज्ञा पु.] (अ.) पट्टेदार।

इस्तमरारी [वि.] (अ.) न बदलने वाला। सर्वदा रहने वाला।

इस्तिंगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जहाज की रस्सी जिससे पाल ताने जाते हैं।

इस्तिंजा [संज्ञा पु] (अ.) पेशाब करने के पश्चात् मूत्र सुखाने की क्रिया जो मुसलमान लोग करते हैं।
इस्तिंजे का ढेला-तुच्छ व्यक्ति। *इस्तिंजा लड़ना*-अत्यंत मित्रता का होना। *इस्तिंजा लड़ोना*-घनिष्ट मित्रता होना।

इस्तिरी [संज्ञा स्त्री] (हि.) धोबी या दरजियों का एक औजार जिससे वे कपड़े की तह जमाते हैं।

इस्तीफा [संज्ञा पु.] (अ.) त्यागपत्र। नौकरी या सेवायें छोड़ने का प्रार्थना-पत्र।

इस्तेदार [संज्ञा स्त्री] (अ.) विद्या की योग्यता। लियाकत।

इस्तेमाल [संज्ञा पु.] (अ.) उपयोग। व्यवहार। प्रयोग।

इस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो १-'इस्तिरी'। २-'स्त्री'।

इस्पंज, इस्पञ्ज [संज्ञा स्त्री] देखो 'इसपंज'।

इस्पात [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'इसपात'।

इस्म [संज्ञा पु] (अ.) नाम। संज्ञा।

इस्लाम [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानी धर्म।

इह [अव्य.] (सं.) इस जगह। इस लोक में। इस काल में। यहाँ। [संज्ञा पु.] (सं.) यह लोक या संसार।

इहकाल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्तमान समय। यह जिंदगी।

इहतियात [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-सावधानी। खबरदारी। २-रक्षा। बचाव।

इह-लीला [संज्ञा स्त्री] (सं.) इसलोक या संसार की लीला या जीवन। जिन्दगी।

इहवाँ [क्रि. अ.] (हि.) यहां। इस जगह।

इहसान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'एहसान'।

इहाँ [क्रि. वि.] (हि.) यहाँ। एक स्थान में।

इहागत [संज्ञा पु.] (सं.) यहाँ पर आया हुआ।

इहामृग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ईहामृग'।

ई

ई हिंदी वर्णमाला का चौथा स्वरवर्ण, यह यथार्थ में 'इ' का दीर्घरूप है इसका उच्चारण स्थान तालु। इसको प्रत्यय के समान कुछ शब्दों में लगाकर संज्ञा तथा विशेषण, स्त्रीलिंग, क्रिया-स्त्रीलिंग और भाववाचक संज्ञा आदि बनाते हैं।

ईं [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी। [संज्ञा पु.] (अ.) कामदेव। [अव्य.] जोर देने का शब्द।

ईंगुर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली तथा सुन्दर होती है। सौभाग्यवती स्त्रियां इसको अपनी मांग में भरती हैं और माथे पर शोभा के लिये इसकी बिंदी लगाते हैं।

ईंघे [क्रि. वि.] (हि.) इस ओर। यहां। इस तरफ

ईंचना [क्रि. स.] (सं.) खींचना। ऐंचना।

ईंचमनौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमींदार का लगान का रुपया वसूल करने का एक ढंग, जिसमें किसान के पास रुपया न होने की अवस्था में उसके किसान के महाजन से रुपया लेकर किसान के नाम सूद पर उतने रुपये उसकी वही में चढ़वा देता है।

ईंट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढला हुआ मिट्टी का लम्बा चौकोर टुकड़ा जो दीवार आदि चुनने में काम आता है। २-ताश का एक रंग।
ईंट का घर मिट्टी करना-घर बरबाद करना। *ईंट चुनना*-दीवार बनाने के लिये ईंट पर ईंट जमाना। *ईंट से ईंट बजाना*-फूट डाल कर नाशकारी लड़ाई करना। किसी नगर या घर को ध्वस्त करना। *डेढ़ ईंट की मसजिद, अलग पकाना*-सब से निराले ढंग रखना। *ईंट पत्थर*-व्यर्थ की चीजें।
३—धातु का चौखूंटा टुकड़ा।

ईंटकारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ईंट की जुड़ाई।

ईंटा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ईंट'।

ईंडुरी [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े की गोल गद्दी बोझा उठाते समय सिर पर रख लेते हैं।

ईंडवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ईंडुरी'।

ईंडवी [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-पगड़ी। 'ईंडुरी'।

ईंढ [वि.] (हिं.) बराबर। समान। सदृश।

ईंत [संज्ञा पु.] (हि.) ईंट का टुकड़ा जो चढ़ाने के घेरे के नीचे रखते हैं।

ईंदर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मिठाई ताजा ब्याई हुई गाय के दूध की बनती है।

ईंदूर [संज्ञा पु.] (हि.) चूहा। मूसा।

ईंधन [संज्ञा पु.] (हि.) जलाने की लकड़ी, आदि। जलावन।

ई [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

ईकार [संज्ञा पु.] (सं.) चौथा स्वर वर्ण 'ई'।

ईक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) देखने वाला व्यक्ति।

ईक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन। देखना। आँख। ३-विवेचन। जांच। विचार।

ईक्षणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दैवज्ञ। २-सामुद्रिकविद्या का ज्ञानी।

ईख [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शर नामक की घास जिसके डंठल में मीठा रस जो गुड़ और चीनी बनाने के काम ऊख। गन्ना। इक्षु।

ईखन* [क्रि स.] (हि.) देखना।

ईखराज [संज्ञा पु] (हि.) ईख बोने का दिन।

ईछन* [संज्ञा पु.] (हिं) आंख। ईक्षण।

ईछना* [क्रि स.] (हि) चाहना। इच्छा

ईछा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इच्छा'।

ईजा [संज्ञा स्त्री.] (अ) १- दुःख। २-कष्ट। पीड़ा।

ईजाद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) आविष्कार। नवीन वस्तु का निर्माण।

ईजान [वि.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

ईजाब [संज्ञा पु.] (अ.) स्वीकृति। मंजूरी।

ईठ* [संज्ञा पु.] (हि) मित्र। सखा।

ईठना* [संज्ञा पु.] (हि.) इच्छा करना।

ईठि [संज्ञा स्त्री.] (हि) १-मित्रता। दोस्ती। चेष्टा। प्रयत्न।

ईठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाला। बरछी।

ईठीदाड़ू [संज्ञा पु.] (हिं.) खेलने का डंडा।

ईडा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्तुति। प्रशंसा।

ईडित [वि.] (सं.) प्रशंसा किया हुआ। स्तुति की गई हो।

ईढ, ईढा [संज्ञा पु.] (हि.) हठी। जिद्दी।

ईढी [वि.] (हि) जिद करने वाला।

ईत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) डाँस या वनमक्खी।

ईतर* [वि] १-इतराने वाला। ढीठ। शोख। २-साधारण। निम्न श्रेणी का।

ईति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खेती को हानि पहुँचाने वाले उपद्रव। यथा—अनावृष्टि, अतिवृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना और पक्षियों की अधिकता। २-बाधा। ३-दुःख।

ईथर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला द्रव्य जो गंधक के तेजाब और मद्यसार के योग से बनता है।

ईद [संज्ञा स्त्री] (अ.) रमजान मास के अंत में आने वाला एक मुसलमानी त्यौहार।

ईदी [संज्ञा स्त्री.] १-त्यौहार के दिन दी गई सौगात। २-किसी त्यौहार के उपलक्ष में बनाई कविता। ३-त्यौहार की दक्षिणा।

ईदगाह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) त्यौहारों पर नमाज पढी जाने का स्थान।

ईदृक् [वि.] (सं.) ऐसा। इस प्रकार का।

ईदृश [क्रि. वि.] (सं.) ऐसे। इस प्रकार। इस भांति। [वि.] ऐसा। इस प्रकार का।

ईप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभिलाषा। इच्छा। वांछा।

ईप्सित [वि] (सं.) वांछित। चाहा हुआ।

ईप्सु [वि.] (सं.) चाहने वाला।

ईफ़ावादा [संज्ञा पु.] (अ.) प्रतिज्ञा पूरी करना।

ईबीसीबी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सिसकारी का शब्द। सिसकार।

ईमन [संज्ञा पु.] (हि.) रात्रि के प्रथम पहर में गाई जाने वाली एक रागनी। एमन।

ईमनकल्यान [संज्ञा पु.] (हि.) एक मिश्रित राग का नाम।

ईमान [संज्ञा पु.] (अ.) विश्वास। धार्मिक विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २-चित्त की सद्वृत्ति। ३-धर्म। ४-सत्य।
ईमान की कहना-सच कहना। ईमान ठिकाने न होना-धर्म पर स्थिर न रहना। ईमान देना-धर्म के विरुद्ध काम करना।
ईमान में फ़र्क़ आना-नीयत खराब होना।
ईमान से कहना-सच-सच कहना।

ईमानदार [वि.] (फ़ा.) १-सच्चा। २-विश्वासपात्र। ३-विश्वास करने वाला। ४-व्यवहार का सच्चा। ५-सत्य का पक्षपाती।

ईमानदारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) सत्यता। सचाई।

ईर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ईढ़'।

ईरखा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ईर्षा'।

ईरमद [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'इरम्मद'।

ईरान [संज्ञा पु] (फ़ा) फारस देश।

ईरिण [संज्ञा पु.] (सं) ऊसर। बलुआ मैदान।

ईरित [वि.] (सं.) १-प्रेरित। २-कहा हुआ।

ईर्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इर्षा। डाह।

ईर्षा [संज्ञा स्त्री] (हि.) दूसरे का लाभ या उत्कर्ष देखकर जलना। डाह।

ईर्षालु [वि.] (सं.) ईर्ष्या करने वाला। दूसरे की बढोतरी देखकर जलने वाला। डाह रखने वाला।

ईर्षित [वि.] (सं.) जिससे ईर्षा की गई हो।

ईर्षी, ईर्षु [वि.] (सं.) डाह या जलन रखने वाला।

ईर्ष्यमण [वि.] (सं.) देखो 'ईर्षालु'।

ईर्ष्या [संज्ञा स्त्री] (सं) देखो 'ईर्षा'।

ईर्ष्यालु [वि.] (सं.) देखो 'ईर्षालु'।

ईल [संज्ञा पु.] (देश.) एक बनैला जन्तु। [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की मछली।

ईश [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वामी। मालिक। २-ईश्वर। परमात्मा। ३-राजा। ४-शिव। महादेव। ५-ग्यारह की संख्या। ६-आर्द्रा नक्षत्र।

ईशता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वामित्व। प्रभुत्व।

ईशा [संज्ञा स्त्री.] १-ऐश्वर्य्य सम्पन्न स्त्री। २-दुग। ३-ऐश्वर्य्य।

ईशान [संज्ञा पु.] (सं.)१-अधिपति। स्वामी। २-शिव। महादेव। ३- ग्यारह रुद्रों में से एक। ४-ग्यारह की संख्या। ५-पूर्व और उत्तर के मध्य का कोना।

ईशानी [संज्ञा स्त्री (सं.) १-दुर्गा। २-समीवृक्ष।

ईशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ सिद्धियों में से एक। जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।

ईशित्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ईशिता'।

ईश्वर [संज्ञा पु.] १-योगशास्त्र के अनुसार क्लेश, कर्म, विपाक तथा आशय से पृथक। परमेश्वर। २-स्वामी। मालिक।

ईश्वरनिष्ठ [वि.] (सं.) 'ईश्वर है' ऐसा विश्वास करने वाला।

ईश्वरपरायण [वि.] (सं.) केवल ईश्वर का सहारा लेने वाला।

ईश्वरप्रणिधान [संज्ञा पु.] (सं.) प्रगाढ़ समाधियोग। योगाभ्यास के पांच नियमों में से एक।

ईश्वरवाद [संज्ञा पु.] 'ईश्वर है और वही केवल सारी सृष्टि का रचयिता तथा कर्त्ता-धर्त्ता' है ऐसा विश्वास।

ईश्वरसख [क्रि. स.] (सं.) शिवजी के सखा, कुबेर।

ईश्वरीय [वि.] (सं.) १-ईश्वर-सम्बन्धी। २-ईश्वर का।

ईषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं) त्वरा। जल्दबाजी।

ईषत [वि] (सं) थोड़ा। कुछ। कम। अल्प।

ईषत्स्पृष्ट [संज्ञा पु.] (स.) वर्ण के उच्चारण में एक प्रकार का आभ्यंतर प्रयत्न जिसमें जिह्वा, तालु मूर्द्धा और दन्त, ओष्ठ को अल्प स्पर्श करता है। य, र, ल, व, ईषत्स्पृष्ट वर्ण कहलाते हैं।

ईषद [वि.] (सं.) देखो 'ईषत्'।

ईषदुष्ण [वि.] (सं) थोड़ा गरम। मन्दोष्ण।

ईषद्दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) कटाक्ष। चितवन।

ईषद्धास [संज्ञा पु.] (सं.) मंद हँसी। मुसकुराहट।

ईषना* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) प्रबल इच्छा।

ईस* [संज्ञा पु.] (हि.) ईश। ईश्वर।

ईसन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ईशान कोण।

ईसर [संज्ञा पु.] ((सं.) १-ऐश्वर्य। २-महत्व।

ईसबगोल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'इसबगोल'।

ईसरगोल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ईसबगोल'।

ईसवी [वि.] (फ़ा.) ईसा से सम्बन्ध रखने वाला

ईसा [संज्ञा पु.] (अ.) ईसाई धर्म के प्रवर्तक या आचार्य।

ईसाई [वि.] (फ़ा.) ईसा के बताये धर्मानुसार चलने वाला।

ईसान* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ईशान'।

ईहग [वि.] (सं.) इच्छानुसार चलने वाला।

ईहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चेष्टा। उद्योग। ३-इच्छा। वांछा। ४-लोभ।

ईहामृग [संज्ञा पु.] (सं) रूपक नाटक का एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।

ईहावृक [संज्ञा पु.] लकड़बग्घा।

ईहित [वि.] (सं.) अपेक्षित। इच्छित। वाँछित। चाहा हुआ।

उ

उ हिन्दी वर्णमाला का पाँचवाँ स्वरवर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। यह तीन मुख्य स्वरों में से है।

उँ [अव्य.] (हि.) अव्यक्त उच्चारण जो मुँह बन्द रहते ही किया जाता है, जो अवज्ञा, प्रश्न तथा क्रोध को सूचित करता है।

उँकोत [संज्ञा पु.] (हि.) वर्षाकाल में पैर सड़ने का रोग।

उँखारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) गन्ने या ईख का खेत।

उँगनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) गाड़ी के पहिये में तेल देने का काम।

उँगल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उंगुल'।

उँगलाना [क्रि. अ] (हि) देखो 'उंगली करना'।

उँगली [संज्ञा स्त्री] (हि.) हथेली से जुड़े हुए पाँच अवयव जिनसे चीजें पकड़ी या छुई जाती हैं।

उँगली उठना–बदनामी होना। *उँगली उठाना* १–लांछित करना। २–टेढ़ी नजर से देखना। *उँगली करना*–सताना या हैरान करना। *उँगली चटकाना*–१–उगलियां दबा कर या खींच कर चट-पट शब्द करना। २–शाप देना। *उँगलियाँ चमकाना*–लड़ाई या बात चीत में उगलियों को हिलाना। *उँगली पर नाचना*–अपने वश में करना। *उँगली पर नचाना*–हैरान करना। *उँगली रखना*–दोष दिखाना। *उँगली लगाना*–छूना। *उगली पकड़ कर पहुचा पकड़ना*–थोड़ा सा सहारा पाकर और अधिक की इच्छा करना।

उँघाई [संज्ञा स्त्री] (हि.) निद्रा। झपकी।

उँचन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उदवान। खाट के पायताने कीं रस्सी जो खाट तानने के लिये लगाई जाती है।

उँचना [क्रि. स.] (हिं.) अदवान खींचना या तानना।

उँचनाव [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कपड़ा।

उँचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ऊंचापन। उच्चता। २–विशिष्टता।

उँचान* [संज्ञा पु.] (हि.) उँचाई। बुलंदी।

उँचाना [क्रि. स.] (हिं.) ऊँचा करना। उठाना।

उँचाव*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊँचापन। उच्चता। ऊँचाई।

उँचास*+ [संज्ञा पु.] (हि.) ऊँचा होने का भाव। ऊंचाई उच्चता।

उंचास* [वि.] (हिं.) देखो 'उनचास'।

उंचौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भावी। होनहार।

उंछ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीला बीनना। फसल उठ जाने के उपरांत जीविका के लिये दाने बीनने का काम।

उंछवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवन निर्वाह के लिए खेत में दाने चुनने का काम।

उंछशिल [संज्ञा पु.] (सं.) उंछवृत्ति।

उँछशील [वि.] (सं.) उंछवृत्ति पर जीवन निर्वाह करने वाला।

उँजरिया* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'अँजोरिया'।

उँजियार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उजियार'।

उँजेरा, उँजेला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उजाला'-'उजेला'।

उँज्यारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'उजारी'।

उँटड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उटडा'।

उँटरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उटड़ा'।

उँडेलना [क्रि. स.] तरल पदार्थ को अन्य किसी पात्र में डालना।

उँदरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बाल झड़ने का रोग। गंज।

उँदरू [संज्ञा पु.] (हिं.) बबूल के समान एक प्रकार की काँटेदार झाड़ी।

उँदुर [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा। मूसा।

उँह [अव्य.] (हि.) १–अस्वीकार। २–अफसोस। हाय। नहीं।

उ [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्मा। २–नर।

उअना* [क्रि. अ.] (हिं.) उगना या उदय होना।

उआना* [क्रि स.] (हिं.) उगाना। उदय करना (* +) किसी को मारने के लिये हाथ या हथियार तानना।

उऋण [वि.] (हि.) ऋणमुक्त। जो ऋण से मुक्त हो।

उकचन [संज्ञा पु.] (हि.) मुचकुंद का फूल।

उकचना [क्रि. अ.] (हिं.) १–उखड़ना। अलग होना। २–पर्त्त से अलग होना।

उकटना [क्रि. स.] (हि.) वारंवार कहना। देखो 'उघटना'।

उकटा [वि.] (हि.) उकटने वाला। एहसान जताने वाला।

उकठना [क्रि. अ.] (हिं.) सूखना। शुष्क होना।

उकठा [वि.] (हि.) शुष्क। सूखा।

उकडू [संज्ञा पु.] (सं.) घुटने मोड़कर तलवों के बल बैठने की एक मुद्रा।

उकत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उक्ति'।

उकताना [क्रि. अ.] (हि.) १– घबड़ाना। २–ऊबना।

उकति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उक्ति'।

उकलना [क्रि. अ.] (हिं.) १– तह अलग होना। पृथक होना। २–उघड़ना।

उकलवाना [क्रि. स.] (हि.) १–तह अलग करवाना। २–दूसरे को उकेलने के लिये नियुक्त करना।

उकलाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वमन। मचली। उलटी। कै।

उकलाना [क्रि. अ.] (हि.) १–वमन या उलटी करना। २–उकताना। घबड़ाना।

उकलेसरी [संज्ञा पु.] (देश.) उकलेसर का बना कागज।

उकलैदिस [संज्ञा पु.] (यू.) एक यूनानी गणितज्ञ जिसने रेखागणित निकाली। रेखागणित।

उकवथ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चर्मरोग जो घुटनों से नीचे होता है।

उकवाँ [क्रि. वि.] (हिं.) अनुमान से। अन्दाजन।

उकसना [क्रि. अ.] (हिं.) १–उभरना। ऊपर की ओर निकलना। २–निकलना या अंकुरित होना। ३–उघड़ना।

उकसनि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–उभाड़। २–उत्तेजना। ३–घबड़ाहट।

उकसवाना [क्रि. स.] [हि.] निकलवा

उकसाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–निकल
हटवाई। ३–उभड़ाई।

उकसाना [क्रि. स.] (हिं.) १–उभाड़ना।
उठाना। ३–उठा देना। हटा देना।

उकसौंहाँ [वि.] (हिं.) उभरता हुआ।

उकाब [संज्ञा पु.] (अ.) गरुड़। गिद्ध
एक बड़ा पक्षी।

उकारांत, उकारान्त [वि.] (सं.)
जिसके अंत में 'उ' आता हो।

उकालना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उके

उकासना* [क्रि. स.] (हिं.) उभाड़ना
की ओर फेंकना। ऊपर को खींचना।

उकासी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खुल
स्थिति। २–अवकाश। छुट्टी।

उकिड़ना+उकिलाना+ [क्रि. अ.] (हि
'उकलना'।

उकिलवाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उक

उकिसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उक

उकीरना [क्रि. स.] (हि.) १–खोदना।
ड़ना। उभाड़ना।

उकुति * [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उ

उकुतिजुगति * [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो
युक्ति'।

उकुरु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उकडू'।

उकुसना* [क्रि. स.] (हि.) उजाड़ना। उ

उकेलना [क्रि. स.] (हि.) परत
छिलका निकालना। उधेड़ना।

उकेला [संज्ञा पु.] (देश.) १–रस्से की ऐं
परत। ३–कम्बल का बाना। [क्रि. स.]
लना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

उकौथ, उकौथा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

उक्त [वि.] (सं.) कहा हुआ। कथित।

उक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कथन। वचन
चमत्कारपूर्ण कथन। अनोखा वाक्य।

उक्तियुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्मति
उपाय। सलाह और तदबीर।

उक्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १–नाना प्रकार के
के वैदिक स्तोत्र। २–यज्ञ या हवन
समय जब 'उक्थ' का पाठ होता है
प्राण।

उक्ष [वि.] (सं.) १–बृहत्। बड़ा। २–शुद्ध

उक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य। २–बैल।

उक्षित [वि.] (सं.) सींचा हुआ। लगा हु

उखटना [क्रि. अ.] (हिं.) १–लड़खड़ाना।
समय पर इधर-उधर रखना।
कुतरना।

उखड़ना [क्रि. अ.] (हि.) १–जमी हुई व
अपने स्थान से अलग होना। २–किसी

स्थिति से अलग होना। ३-जोड़ से हट जाना। ४-चाल में भेद पड़ना। तार या क्रम का टूटना। ५-बेताल और बेसुरा होना। ६-ग्राहक सौदा लेने की अवस्था में न होना या भड़क जाना। ७-उठ जाना। अलग, अलग हो जाना। हटना। ८-टूट जाना। *उखडी-उखडी वातें करना*–अनुत्साह प्रगट करते हुए वात करना। *उखडी-पुखडी सुनाना*–अंडवंड सुनाना।

उखड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को उखाड़ने में प्रवृत्ति करना।

उखभोज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ईख की बुआई का प्रथम दिन।

उखम [संज्ञा पु.] (हि.) उष्म। गरमी। ताप।

उखमज*+[संज्ञा पु.] (हिं.) उष्मज जीव या क्षुद्रकीट।

उखर [संज्ञा पु.] (हिं.) गन्ना बोने के पीछे की जाने वाली हल की पूजा।

उखरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उखड़ना'।

उखलना [क्रि. अ.] (हि.) गरम होना। खौलना।

उखली [संज्ञा स्त्री.] (हिं) लकड़ी या पत्थर का एक पात्र जिसमें डालकर अन्न आदि कूटा जाता है। ऊखल।

उखहाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ऊख की चुसाई। गन्ना चूसने का कार्य।

उखा* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उषा'। [संज्ञा स्त्री] (सं.) देग। बटलोई।

उखाड़ [संज्ञा पु.] (हि.) १-उखाड़ने का कार्य। उच्छेदन। २-कुश्ती में वह युक्ति जिसके द्वारा कोई पेंच रद्द किया जाता है।

उखाड़ना [क्रि. स.] (हि.) १-छिन्नभिन्न करना। २-हटाना। टालना। ३-किसी जमी हुई वस्तु को निज स्थान से अलग या पृथक करना। ४-किसी कार्य से अनुत्साह करना। भड़काना। ५-नष्ट या ध्वस्त करना।

उखाड़ू [वि.] (हि.) १-उखाड़ने वाला। निर्मूल करने वाला। २-इधर की उधर लगाने वाला। चुगलखोर।

उखारना*+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उखाड़ना'

उखारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊख का खेत।

उखालिया [संज्ञा पु.] (हि.) प्रातःकाल का भोजन।

उखेड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उखाड़'।

उखेड़ना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उखाड़ना'।

उखेड़वाना [क्रि. स.] (हि.) किसी को उखड़ने में प्रवृत्त करना। उखड़वाना।

उखेरना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उखाड़ना'।

उखेलना* [क्रि. स.] (हि.) लिखना। तसवीर बनाना।

उख्य [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में आहुति देने के निमित्त हांडी में पकाया मांस।

उगटना*[क्रि. अ.] १-बारंबार कहना। उबटना। २-ताना मारना।

उगदना [क्रि. अ.] (हिं.) कहना। बोलना। बतलाना (दलाली बोली)।

उगना [क्रि. अ.] (हि.) १-उदय होना। २-जमना अंकुरित होना। ३-उत्पन्न होना। उपजना।

उगलना [क्रि. स.] (हि.) १-पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना। २-छिपाने की बात को प्रगट कर देना। ३-पचाया हुआ माल विवश होकर वापस करना। ४-दबाव या संकट की अवस्था में गुप्त बात बता देना

उगलवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उगलाना'।

उगलाना [क्रि. स.] (हि.) मुख से निकलवाना। २-दोष स्वीकार करना। ३-पचे हुए माल को वापस निकलवाना।

उगवना* [क्रि. स.] (हि.) १-उगाना। २-उत्पन्न करना।

उगवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-उदय कराना। २-उत्पन्न कराना।

उगसाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उकसाना'।

उगसारना* [क्रि. स.] (हिं.) कहना। बयान करना। वर्णन करना। प्रगट करना।

उगहना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उगाहना'।

उगाना [क्रि. स.] (हिं.) १-उपजाना। पैदा करना। २-प्रकट करना।

उगार* [संज्ञा पु.] (हि.) १-थूक। खखार। २-निचुड़ कर इकट्ठा हुआ पानी।

उगाल [संज्ञा पु.] (हि.) १-थूक। खखार। पीक। २-पुराने वस्त्र (ठगों की बोली।

उगालदान [संज्ञा पु.] (हि.) थूकने का पात्र। पीकदान।

उगाला [संज्ञा पु.] (हि.) खड़ी फसल को हानि पहुँचाने वाला कीड़ा। +[संज्ञा स्त्री.] सर्वदा पानी से तर रहने वाली भूमि। पनमार।

उगाहना [क्रि. स.] (हिं.) वसूल करना। दूसरों से धन लेकर इकट्ठा करना।

उगाही [संज्ञा स्त्री.] (हि.) धन इकट्ठा करने का कार्य। वसूल करने का काम। वसूली।

उगिलना*+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उगलना'

उगिलवाना*+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उगलवाना'।

उग्गाह [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का आर्याछन्द। इसके विषम चरणों में बारह मात्राएं और सम चरणों में अठारह मात्राएं होती हैं। विषम चरणों में जगण न हो।

उग्र [वि.] (सं.) उत्कट। तीव्र। प्रचंड। प्रबल। घोर। रौद्र। [संज्ञा पु.] १-महादेव। शिव। २-विष्णु। ३-सूर्य। ४-करेल देश। ५-क्षत्री पिता तथा शूद्रा-माता से उत्पन्न एक संकर जाति।

उग्रकांड, उग्रकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) करेला।

उग्रगंध [संज्ञा पु.] (सं.) १-लहसन। २-कायफल। ३-हींग। ४-चंपा।

उग्रगंधा, उग्रगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अजवायन। २-अजमोदा। ३-बच।

उग्रगंधी, उग्रगन्धी [वि.] (सं.) तीखी गंध वाला

उग्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचंडता। उत्कटता। उद्दंडता। तेजी।

उग्रधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १-इंद्र। २-शिव।

उग्रशेखरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव के माथे पर रहने वाली गंगा।

उग्रसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंस का पिता तथा मथुरा का राजा। २-परीक्षित का एक पुत्र।

उग्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-बच। ३-अजवायन। ४-उग्र जाति की स्त्री। ६-कर्कशा स्त्री।

उघटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खोलना। २-ताल देना। ३-उभाड़ना। गड़े मुर्दे उखाड़ना। हंसी उड़ाना।

उघटवाना [क्रि. स.] देखो 'उघटाना'।

उघटा [वि.] (हिं.) १-कृत एहसान को बार-बार कहने वाला। २-खोलना। [संज्ञा पु.] (सं.) उघटने का काम।

उघटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खोलने या उघटने का काम।

उघटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-खोलनेवाना। २-कहलवाना।

उघड़ना, उघढ़ना [क्रि. अ.] (हि.) १-आवरण का हटना। खुलना। २-आवरणरहित होना। ३-नंगा होना। ४-प्रकट होना। ५-भंडा फूटना। *उघड़ पड़ना*–वास्तविक रूप को खोल देना। भेद प्रकट कर देना। *उघड़ कर नाचना*–लोकलाज छोड़ कर मनचाहा कार्य करना।

उघन्नी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ताली। कुंजी। चाभी।

उघरना+ * [क्रि. अ.] (हिं.) १-खुलना। आवरण हटना। २-आवरणरहित होना। बेपर्द होना। ३-नंगा होना।

उघरारा [संज्ञा पु.] (हिं) खुला हुआ स्थान। [वि.] खुला हुआ। खुला रहने वाला।

उघाड़ना [क्रि. स.] (हि.) आवरण हटाना। खोलना। आवरणरहित करना। बेपर्द करना नंगा करना। प्रकाशित करना। भंडा फोड़ना।

उघाड़ी [वि.] (हिं.) प्रगट। प्रकाशित। २-नंगा।

उघाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उगाहना'।

उघाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-उगाहने का कार्य। २-कर की वसूली।

उघारना* [क्रि. स.] (हि.) १-आवरण अलग

करना। २-नङ्गा करना। ३-प्रकट करना। कुवां खोदने के स्थान की पहली खुदाई।

उघेलना* [क्रि. स.] (हि.) उघाड़ना। खोलना।

उचकन [संज्ञा पु.] (हि.) किसी वस्तु को ऊंचा करने के लिये नीचे लगाया जाने वाला ईंट का टुकड़ा।

उचकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ऊंचा होना। ऊंचा करना। २-उछलना। कूदना। [क्रि. स.] उछल कर लेना। लपककर छीनना। ले भागना।

उचका* [क्रि. वि.] (हि.) अचानक। सहसा।

उचकवाना [क्रि. स.] (हि.) उचकने का कार्य दूसरे से लेना।

उचकाना [क्रि. स.] (हि.) उठना। ऊपर करना।

उचकौना [वि.] (हिं.) १-छीनने वाला। २-ऊंचा होने वाला।

उचक्का [संज्ञा पु.] (हि.) उचक कर चीज ले भागने वाला। ठग। बदमाश। लुच्चा। धूर्त्त। वंचक।

उचक्कापन [संज्ञा पु.] (हि.) धूर्तता। ठगी। लफंगापन।

उचटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जमी हुई वस्तु का उखड़ना। २-पृथक या अलग होना। भड़कना। ४-विरक्त होना। हटना।

उचटाना*[क्रि. स.] (हिं.) १-उचाड़ना। २-पृथक करना। ३-खिन्न या विरक्त करना। ४-बिचकाना। भड़काना।

उचड़ना [क्रि. अ.] (हि.) सटी या चिपकी हुई वस्तु का अलग होना।

उचना* [क्रि. अ.] (हि.) १-ऊंचा होना या ऊपर उठना। २-उठना। [क्रि. स.] ऊंचा करना या ऊपर उठाना।

उचनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उभाड़। उठान। उचकाई।

उचरंग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) उड़ने वाला कीड़ा। पतिंगा।

उचरना* [क्रि. स.] (हिं.) बोलना। उच्चारण करना। [क्रि. अ.] १-मुख से शब्द निकलना। २-देखो 'उचड़ना'।

उचरवाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उचारना'।

उचराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उच्चारण करने की स्थिति। २-उचड़ाई।

उचराना [क्रि. स.] (हिं.) १-कहलाना। या उच्चारण करवाना। २-उचड़वाना।

उचाट [संज्ञा पु.] (हिं.) विरक्ति। उदासीनता। मन का उचटना।

उचाटन* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उच्चाटन'।

उचाटना [क्रि. स.] (हिं.) उच्चाटन करना। विरक्त या उदासीन करना।

उचाटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उदासीनता। खिन्नता। विरक्ति। उचाट।

उचाटू+ [वि.] (हिं.) १-उचाट करने वाला। २-मन को खिन्न करने वाला।

उचाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-चिपकी हुई वस्तु को उखाड़ना। २-उखाड़ना।

उचाना*+ [क्र. स.] (हिं.) १-ऊपर उठाना। ऊंचा करना। २-उठाना।

उचायत+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-बनिये की उधार का हिसाब। २-बनिये से लीगई उधार वस्तु।

उचार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उच्चार'।

उचारक* [वि.] (हिं.) उच्चारण करने वाला। बोलने वाला।

उचारन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उच्चारण'।

उचारना* [क्रि. स.] (हिं.) बोलना। उच्चारण करना।

उचाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उच्चाट'।

उचालना+ [क्रि. स.] (हिं.) 'उचाड़ना'।

उचावा [संज्ञा पु.] (देश.) बर्राना। स्वप्न में बकझक।

उचित [वि.] (सं.) योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

उचेड़ना,+उचेलना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उकेलना' 'उचाड़ना'।

उचौंहा [वि.] (हि.) उभड़ाहुआ। ऊंचाउठाहुआ।

उच्च [वि.] (सं.) १-उन्नत। ऊंचा। २-श्रेष्ठ। उत्तम। महान्। बड़ा।

उच्चन्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रांत का वह प्रधान न्यायालय जिसमें छोटी अदालत या सेशन कोर्ट के निर्णय से संतुष्ट न होने पर अपील की जाती है। हाईकोर्ट।

उच्चतम [वि.] (सं.) सब से ऊंचा।

उच्चतम-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वोच्च न्यायालय। सुप्रीम कोर्ट।

उच्चतर [वि.] (सं.) दो पदार्थों में ऊँचा।

उच्चता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऊँचाई। उन्नत अवस्था। २-श्रेष्ठता। उत्तमता। बड़प्पन।

उच्चत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उच्चता'।

उच्चनीय [वि.] (सं.) ऊँचानीचा। भला बुरा।

उच्चपद [संज्ञा पु.] (सं.) सम्मान का पद।

उच्चभाषी [वि.] (सं.) जोर से बोलने वाला।

उच्चय [संज्ञा पु.] (सं.) १-इकट्ठा करने का काम। २-समूह। ३-त्रिकोण का पार्श्वभाग।

उच्चयापचय [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़ती-घटती।

उच्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुख से शब्द निकलना।

उच्चरना* [क्रि. स.] (हि.) उच्चारण करना। बोलना।

उच्चरित [वि.] (सं.) उच्चारण किया हुआ। कहा हुआ।

उच्चाकांक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊँची या महत्व की आकांक्षा या इच्छा।

उच्चाट [संज्ञा पु.] (हि.) १-उखड़ने या की क्रिया। २-विरक्ति। उदासीन का न लगना।

उच्चाटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिली या वस्तु को पृथक करना। २-उखा खसोट। ३-चित्त को हटाना। ४- खिन्नता। उदासीनता।

उच्चाटनीय [वि.] (सं.) १-उखाड़ने यो उच्चाटन प्रयोग के योग्य।

उच्चाटित [वि.] (सं.) १-उखड़ा हुआ जिस पर उच्चाटन का प्रयोग किया

उच्चार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोलना। मल। विष्ठा।

उच्चारक [वि.] (सं.) उच्चारण करते वा

उच्चारण [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों के व्यक्ति और स्पष्ट ध्वनि निकल वर्णों या शब्दों को बोलने का ढंग।

उच्चारणस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) उर, कं जिह्वा, दाँत, नाक, ओठ और तालु यह शब्द के उच्चारण के आठ स्थान हैं।

उच्चावचन [संज्ञा पु.] (सं.) घटबढ़। उतार।

उच्चारणीय [वि.] (सं.) उच्चारण करने बोलने योग्य।

उच्चारना* [क्रि. स.] (हिं.) उच्चारण बोलना।

उच्चारित [वि.] (सं.) उच्चारण किया बोला हुआ। कहा हुआ।

उच्चार्य्य [वि.] (सं.) उच्चार के योग्य। या कहने योग्य।

उच्चार्य्यमाण [वि.] (सं.) उच्चारण किया वाला।

उच्चावच [वि.] (सं.) ऊँचनीच। भलाबुरा।

उच्चैःश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कान और सात मुख वाला इन्द्र का समुद्र मंथन में निकला था। [वि] वाला। बहिरा।

उच्छन्न [वि.] (सं.) दबा हुआ। लुप्त।

उच्छरना* [क्रि. अ.] (हिं) देखो

उच्छलना* [क्रि. अ.] देखो 'उछलना'।

उच्छव* [संज्ञा पु.] (हि.) उत्सव।

उच्छाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उत्साह। २-धूम-धाम।

उच्छास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

उच्छाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उत्साह'।

उच्छिन्न [वि.] (सं.) १-कटा हुआ। खंडि उखड़ा हुआ। ३-नष्ट। निर्मूल।

उच्छिष्ट [वि.] (सं) १-किसी के खाने से हुआ। झूठा। २-दूसरे का बर्ता या

किया हुआ। [संज्ञा पु.] १-झूठी वस्तु। २-शहद। मधु।

उच्छिष्टता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-झूठन। २-अपवित्रता।

उच्छिष्टभोजी [वि.] (सं.) दूसरे का खाने वाला।

उच्छू [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह खांसी जो खाते या पीते समय पानी आदि के रुकने से आने लगती है। सुनसुनी।

उच्छून [वि.](सं.) १-बढ़ा हुआ। २-फूला हुआ।

उच्छृंखल, उच्छृङ्खल [वि.] (सं.) १-जो शृंखलाबद्ध न हो। क्रमहीन। २-निरंकुश। स्वेच्छाचारी। उद्दण्ड। अक्खड़।

उच्छेतव्य [वि.] (सं.) उच्छेद के योग्य। उखाड़ने या निर्मूल करने योग्य।

उच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-उखाड़पखाड़। उत्पाटन। खंडन। २-नाश। ध्वंस।

उच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उखाड़पखाड़। खंडन। २-नाश। ध्वंस।

उच्छेदनीय [वि.] (सं.) उच्छेदन करने योग्य। उखाड़ने योग्य।

उच्छ्वसित [वि.] (सं.) १-उछ्वासयुक्त। २-जिस पर उछ्वास का प्रभाव पड़ा हो। ३-विकसित। फूला हुआ। ४-जीवित। ५-बाहर गया हुआ।

उच्छ्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-उसांस। ऊपर को को खींची हुई सांस। २-सांस। श्वास। ३-ग्रन्थ का विभाग या प्रकरण।

उच्छ्वासित [वि.] (सं.) १-उछ्वासयुक्त। २-उछ्वास का प्रभाव जिस पर पड़ा हो। ३-विकसित। फूला हुआ। प्रफुल्लित।

उच्छ्वासी [वि.] (हि.) सांस लेने वाला।

उछंग* [संज्ञा पु.] (हि.) १-गोद। क्रोड। २-हृदय। *उछंग लेना*-हृदय से लगाना। आलिंगन करना।

उछकना* [क्रि. अ.] (हि.) चौंकना। विस्मित होना। चेतना।

उछरना*+ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'उछलना'।

उछलकूद [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-खेलकूद। २-उछलने या कूदने की क्रिया अथवा भाव।

उछलना [क्रि. अ.] (हि.) १-वेगसहित ऊपर उठना। २-कूदना। ३-अत्याधिक प्रसन्न होना खुशी से फूलना। ४-क्रोध से उत्तेजित होना। तड़पना।

उछलवाना [क्रि. स.] (हि.) उछालने में प्रवृत्त करना।

उछलाना [क्रि. स.] (हि.) उछालने का कार्य किसी से करवाना। उछलवाना।

उछाँटना [क्रि. स.] (हि.) १-उचाटना। विरक्त या खिन्न करना। * २-छाँटना। चुनना।

उछार * [संज्ञा पु.] (हि.) १-उछाल। सहसा ऊपर उठने की क्रिया। २-ऊपर उठने की हद ३-ऊंचाई। छींटा। उछलता हुआ कण। ४-कै। वमन।

उछारना*+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उछालना'।

उछाल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उछार'।

उछालछक्का [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] व्यभिचारिणी।

उछालना [क्रि. स.] १-ऊपर की ओर फेंकना या उचकाना। २-प्रकट करना। प्रकाशित करना।। उजागर करना।

उछाला [संज्ञा पु.] (हि.) १-जोश। उबाल। २-वमन। उलटी।

उछाव [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उत्साह'।

उछास [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उच्छ्वास'।

उछाह [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उत्साह'।

उछाही *+ [वि.] (हि.) देखो 'उत्साही'।

उछिन्न*+ [वि.] (हि.) देखो 'उच्छिन्न'।

उछिष्ट*+ [वि.](हि) देखो 'उच्छिष्ट'।

उछीड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कमी। न्यूनता। ओछापन।

उछीनना* [क्रि स.] उच्छिन्न करना। नोचना। उखाड़ना।

उछीर* [संज्ञा पु.] (हि.) अवकाश। जगह। स्थान।

उछेद*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उच्छेद'।

उज़क [संज्ञा पु.] (तु.) बादशाही काल की बड़ी मुहर।

उजका* [संज्ञा पु.] (हि.) चिड़ियों के डराने का वह पुतला जो खेत में गाड़ देते हैं।

उजट* [संज्ञा पु.] (हि.] घास-फूंस का बना झोंपड़ा। पर्णशाला।

उजड़ [वि.] (हि.) देखो 'उजड्ड'।

उजड़ना [क्रि. अ.] (हि.) टूटफूटकर नष्ट होना उच्छिन्न होना। उखड़ना-पुखड़ना। ध्वस्त होना। २-गिरा पड़ा हो जाना तितर-बितर हो जाना। ४-बरबाद या नष्ट होना।

उजड़वाना [क्रि. स.] (हि.) ध्वस्त कराना। विनष्ट कराना। किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजड़ा [वि.] (हि.) १-ध्वस्त। अस्त-व्यस्त। २-जिसका घरबार उजड़ गया हो। ३-नष्ट।

उजड्ड [वि.] (हि.) १-वज्रमूर्ख। निरा गंवार। असभ्य। २-उद्दण्ड। निरंकुश।

उजड्डपन [संज्ञा पु.] (हि.) उद्दण्डता। अशिष्टता। मूर्खता। असभ्यता।

उजबक [संज्ञा पु.] (तु.) तातारियों की एक जाति। [वि.] उजड्ड। अनाड़ी। मूर्ख। गंवार।

उजरत [संज्ञा पु.] (अ) १-पारिश्रमिक। काम का दाम। मजदूरी। २-किराया। भाड़ा।
उजरत पर देना-भाड़ पर या किराये पर देना।

उजरना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'उजड़ना'।

उजरा* [वि.] (हि.) देखो 'उजड़ा' 'उजला'।

उजराई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शुक्लता। सफेदी। निर्मलता। गोरापन। सफाई।

उजराना* [क्रि. स.] (हिं.) १-उज्वल करना। सफेद करना। २-साफ करना।

उजलत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) उतावली। जल्दी।

उजलवाना [क्रि. स.] (हि.) गहना तथा वस्त्रादि साफ कराना। मैल निकलवाना।

उजला [वि.] (हि.) उज्ज्वल। निर्मल। स्वच्छ। साफ। सफेद।
उजला मुँह करना-गौरवान्वित करना।
उजला मुँह होना-१-कलंकरहित होना। २-गौरवान्वित करना।

उजली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोबिन।

उजवास* [संज्ञा पु.] (हि.) प्रयत्न। चेष्टा। तैयारी।

उजागर [वि.] (हि.) १-प्रकाशित। जाज्वल्यमान। जगमगाता हुआ। २-विख्यात। प्रसिद्ध।

उजाड़ [संज्ञा पु.] (हि.) १-उजड़ा या ध्वस्त स्थान। २-निर्जन स्थान। ३-जंगल। बयाबान। [वि.] नष्ट। बरबाद। उच्छिन्न। गिरापड़ा।

उजाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) उखाड़ना। नाश करना। लूटना। दरिद्र बनाना।

उजाड़ [वि.] (हिं.) उजाड़ने वाला। नाश करने वाला।

उजान [क्रि. वि.] (हि.) धारा से उलटी ओर। चढ़ाव की ओर।

उजार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उजाड़'।

उजारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) उजाला। प्रकाश। [वि.] कान्तिमान्। प्रकाशमान्।

उजारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उजाली'। + फसल में से देवता के लिये अलग निकाला हुआ अन्न।

उजालना [क्रि. स.] (हिं.) गहना तथा हथियार आदि साफ करना। मैल निकालना। चमकाना। निखारना। २-प्रकाशित करना। ३-जलाना या बालना।

उजाला [संज्ञा पु.] (हि.) १-प्रकाश। चाँदना। २-अपने कुल अथवा जाति में उत्तम व्यक्ति। [वि.] प्रकाशमान्।

उजाली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चाँदनी। चंद्रिका।

उजास [संज्ञा पु.] (हि.) प्रकाश। चमक। उजाला

उजियर* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उजाला'।

उजियरिया + [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चाँदनी। प्रकाश। उजेला।

उजियार* [संज्ञा पु.] (हि.) प्रकाश। उजाला। [वि] उज्ज्वल। कांतिमान। प्रकाशमान।

उजियारना* [क्रि. स.] (हि.) १-प्रकाशित करना। २-जलाना या बालना।

उजियारा* [संज्ञा पु.] (हि.) उजाला। प्रकाश [वि.] १-प्रकाशमय। २-उज्ज्वल। कान्तियुक्त।

उजियारी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चंद्रिका। चाँदनी। २-प्रकाश। रोशनी। ३-वंश के नाम को उज्ज्वल करने वाली स्त्री। सती-साध्वी।

उजियाला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उजाला'।

उजीर*+ [संज्ञा पु.] (हि.) वजीर। मंत्री।

उजीता [वि.] (हि.) प्रकाशमान्। रोशन। [संज्ञा पु.] प्रकाश। उजाला।

उजूबा [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का बैंगनी रंग का चमकदार चितकबरा पत्थर। [वि.] देखो 'अजूबा'।

उजेनी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उज्जैन।

उजेर* [संज्ञा पु.] (हि.) प्रकाश। उजाला।

उजेरा* [संज्ञा पु.] (हि.) १-प्रकाश। उजाला। २-हल इत्यादि में बिना जुता बैल। [वि.] कांतियुक्त। प्रकाशमान्।

उजेला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उजाला'। [वि.] (हि.) प्रकाशमान्। कान्तिमान्।

उज्जर [वि.] (हिं.) देखो 'उज्ज्वल'।

उज्जल [वि.] (हि.) देखो 'उज्ज्वल'। [क्रि. वि.] बहाव से विपरीत दिशा की ओर। उजान।

उज्जयिनी [संज्ञा स्त्री.] (स.) मालवादेश की प्राचीन राजधानी जो क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है।

उज्जासन [संज्ञा पु.] (सं.) मारण। वध।

उज्जैन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उज्जयिनी'।

उज्झड़ [वि.] (हि.) झक्कड़। झक्की। मनमौजी। उद्धत। मूर्ख।

उज्यारा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उजाला'।

उज्यारी*+ [संज्ञा स्त्री] (हि.) 'उजाली'।

उज्यास* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उजास'।

उज्र [संज्ञा पु.] (अ.) १-आपत्ति। विरोध। विरुद्ध वक्तव्य।

उज्रदार [वि.] (फा.) आपत्ति करने वाला।

उज्रदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आपत्ति प्रकट करना।

उज्वल, उज्ज्वल [वि.] (सं.) १-प्रकाशमान्। दीप्तियुक्त। शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३-बेदाग। ४-सफेद। श्वेत।

उज्वलता, उज्ज्वलता [संज्ञा स्त्री.] (स.) १-कांति। चमक। आभा। २-स्वच्छता। निर्मलता। ३-सफेदी।

उज्वलन, उज्ज्वलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। दीप्ति। कान्ति। २-जलना। बलना। ३-साफ करने का काम।

उज्वला, उज्ज्वला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारह अक्षरों की एक वृत्ति जिसमें (न + न + भ + र) होते हैं।

उज्वलित, उज्ज्वलित [वि.] (सं.) १-प्रकाशित किया हुआ। प्रदीप्त। २-साफ किया हुआ।

उझकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-अचकना। उछलना। २-उभड़ना। ऊपर उठना। ३-देखने के लिये सिर उठाना। ४-चौंकना।

उझकुन+ [क्रि. अ.] (हिं) देखो 'उचकन'।

उझलना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उँडेलना'। [क्रि. अ.] उमड़ना। बढ़ना।

उझाँकना* [क्रि. सं.] (हिं.) उचक कर देखना। झाँकना।

उझालना+ [क्रि. स.] (हि.) किसी तरल पदार्थ को ऊपर से गिराना। [क्रि. अ.] उमड़ना। बढ़ना।

उझिलना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उझालना'।

उझिला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-खेत की मिट्टी जो ऊँचे स्थान से निकाली गई हो। २-उबटन के लिये उबाली हुई सरसों।

उझीना [संज्ञा पु.] (देश.) जलाने के लिये उपले जोड़के का ढंग।

उटंग, उटङ्ग [वि.] (हि.) पहिनने में ऊँचा या छोटा (कपड़ा)।

उटंगन, उटङ्गन [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की घास जिसका साग पकाते हैं।

उटकना* [क्रि. सं.] (हि.) अनुमान करना। अटकल लगाना।

उटकनाटक [वि.] (हि.) ऊंचा-नीचा। ऊबड़खाबड़।

उटकरलैस [वि.] (हि.) अटकलपच्चू। अंडबंड।

उटज [संज्ञा पु.] (सं.) झोपड़ी। कुटी।

उटड़पा [संज्ञा पु.] (हिं.) गाड़ी के आगे लगा वह डंडा जो बैलगाडी को खड़ा करने में काम देता है।

उटड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह टेढ़ी लकड़ी जो गाड़ी के अगले भाग में गाड़ी को टिकाने के लिये लगाई जाती है।

उटारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकड़ी का वह कुन्दा जिस पर रख कर चारा काटा जाता है। निहटा।

उटेव [संज्ञा पु] (हि.) वह लकड़ी के टुकड़े जो छाजन रखने के काम आते हैं।

उट्टा* [संज्ञा पु.] (हि.) ओटनी।

उठंगन* [संज्ञा पु.] (हि.) १-आड़। टेक। थूनी। २-बैठने पर पीठ को सहारा देने वाली वस्तु।

उटंगना* [क्रि. स.] (हि.) आश्रय
टेकना। तकिया लगाना।

उठंगल* [वि.] (देश.) १-भोंडा।
२-बेशऊर। अशिष्ट।

उठंगाना* [क्रि. स.] (हि.) १-टेक
२-किवाड़ बंद करना।

उठक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उत्थान। उठान।

उठगन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उठंगन'।

उठती [वि.] (हि.) (स्त्री. प्र.] चढ़ती-

उठना [क्रि.वि.] १-नीची स्थित से ऊंचा
२-ऊंचा होना। ३-ऊपर जाना या
४-उछलना कूदना। ५- जागना।
होना। निकलना। ७- उत्पन्न होना।
अचानक उभड़ना या शुरू होना।
होना। सन्नद्ध होना। तैयार होना।
किसी चिह्न या अङ्क का उभड़ना। ११-
आना या सड़कर उफनना। १२-दुकान,
या समाज का बंद होना। १३-कार्या
कार्य का समय पूरा होना। काम काज
या खतम होना। १५-किसी प्रथा का
होना। १६-खर्च होना। १७-भाड़े पर
बिकना। १८-ध्यान पर चढ़ना या
आना। १९-मकान या दीवार का
गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना।
उठ खड़ा होना-चलने को तैयार होना।
जाना-मर जाना। संसार कूंच कर जा
उठती जवानी-यौवन का उभोड़ शुरू हो
उठते-बैठते-हर समय। प्रतिक्षण।
बैठना-आनाजाना। संग। साथ।
उठाबैठी-१-बेकली या बेचैनी। २-
दौड़धूप। ३-उठने-बैठने की कसरत।
उठना-मारने के लिये सन्नद्ध होना।

उठल्लू [वि.] (हि.) १-एक स्थान पर न
वाला। २-आवारा।
उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा-
आवारा।

उठवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उठने या उठाने
कार्य।

उठवाना [क्रि. स.] (हिं.) उठाने का काम
दूसरे से लेना।

उठवैया [वि.] (हि.) बोझा उठाने में सहा
करने वाला।

उठांगन [संज्ञा पु.] (हि.) लम्बा-चौड़ा
आंगन।

उठाईगीरा [वि.] (हिं.) १-आँख बचाकर
चुराने वाला। उचक्का। २-लुच्चा
उठान [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-उठने की क्रिया
भाव। ७-बढ़ने का ढंग। वृद्धिक्रम। ३-
की प्रारंभिक अवस्था। आरम्भ। ४-
खर्च। खपत।

उठाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ऊंचा करना।
नीचे से ऊपर ले जाना। २-कुछ समय

ऊपर लिये रहना। ४–स्थान त्याग कराना। हटाना। ५–जगाना। ६–उत्पन्न करना। ७–अचानक उभाड़ना या आरम्भ करना। ८–तैयार करना। सन्नद्ध करना। ९–मकान या दीवार आदि तैयार करना। १०–प्रथा बंद करना। ११–व्यय करना। १२–भाड़े या किराये पर देना। १३–हस्तगत करना। १४–अनुभव करना। १५–कोई वस्तु लेकर सौगंद खाना। *उठा रखना*–बाकी रखना। छोड़ना। *उठा-धरना*–चढ़ जाना।

उठाव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उठान'।

उठावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) उठाने का कार्य। पारिश्रमिक। अग्रिम दक्षिण।

उठौआ [वि.] (हि.) देखो 'उठौवा'।

उठौनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–उठाने की क्रिया। २–अग्रिमधन। अगाऊ दिया हुआ रुपया। ३–अग्रिम दक्षिणा। ४–मरने के तीसरे दिन की एक रीति। ५–हलके हल की जुताई। ६–प्रसूता की सेवा सुश्रूषा।

उठौवा [वि.] (हिं.) किसी एक निश्चित स्थान पर न रहने वाला। ॐ[संज्ञा स्त्री.] (हि.) प्रसूता की दाई द्वारा की जाने वाली सेवा सुश्रूषा।

उड़ंकू [संज्ञा पु.] (हि.) १–उड़ने वाला। २–उड़ने की योग्यता रखनेवाला। ३–चलने फिरने वाला। डोलने वाला।

उड़ंत [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

उड़ंबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्राचीन बाजा।

उड़ेंच+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुटिलता। कपट। २–वैर। अदावत। दुश्मनी।

उड़ [संज्ञा पु.] देखो। 'उडु'।

उड़चक+ [संज्ञा पु.] (हि.) चोर। उचक्का।

उड़द+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उरद'।

उड़न [संज्ञा स्त्री] (हि.) उड़ने की क्रिया। उड़ान

उड़नखटोला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उड़ने वाला खटोला या विमान।

उड़नगोला [संज्ञा पु.] (हि.) तोप से निकलने वाला गोला।

उड़नछू [वि.] (हि.) चंपत। गायब।

उड़नझाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छल। धोखा। चकमा।

उड़नफल [संज्ञा पु.] (हि.) वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति आये।

उड़नफाखता [संज्ञा स्त्री] (हि.) सीधा-सादा मूर्ख।

उड़ना [क्रि. अ.] (हि.) १–हवा में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। २–हवा में ऊपर उठना। ३–हवा में फैलना। जैसे–महक उड़ना। ४–फहराना। ५–तेज चलना। ६–कटकर दूर गिरना। ७–पृथक होना। ८–जाता रहना। ९–रंग आदि का फीका पड़ना। १०–डंडे आदि की मार पड़ना। [क्रि. स.] कूद-कर पार करना। *उड़आना*–बहुत जल्द आना। *उड़कर खाना*–बुरा लगना। *उड़ चलना*–भाग जाना। तेज दौड़ना। शोभा पाना। घमंड करना। *उड़ता होना*–भागजाना। *उड़ती खबर*–अनिश्चित बात। *उड़ती चिड़िया पहचानना*–दिल की

उड़प [संज्ञा पु.] (हि.) नृत्य का एक भेद। २–देखो 'उडुप'।

उड़पतिॐ [संज्ञा पु.](हि.) देखो 'उडुपति'।

उड़पाल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उडुपाल'।

उड़राज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उडुराज'।

उड़री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा उर्द

उड़व [संज्ञा पु.] (हि.) एक राग जिसके अन्तर्गत पांच स्वरों का प्रयोग होता है।

उड़वाना [क्रि. स.] (हि.) उड़ाने में प्रवृत्त करना उड़ाने का कार्य अन्य से कराना।

उड़ांकॐ [वि.] (हि.) १–उड़ने वाला। उड़ंकू। जिसमें उड़ने की योग्यता हो। जो उड़ सकता हो।

उड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) रेशम खोलने का एक औजार।

उड़ाऊ [वि.] (हि.) १–उड़ने वाला। २–अपव्यय करने वाला। अमितव्ययी। फजूलखर्च।

उड़ाका [वि.] (हि.) १–अत्याधिक उड़ने वाला। जो उड़ता हो। २–वायुयान चलाने वाला।

उड़ाकू [वि.] (हिं.) उड़ने वाला जो उड़ सकता हो।

उड़ान [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–उड़ने का कार्य। २–कुदान। छलांग। ३–उतनी दूरी, जितनी एक बार में दौड़ कर तै करे। ॐ ४–कलई। पहुँचा। ५–मालखंभ की कसरत।

उड़ानघाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) धोका। चालाकी।

उड़ानपर्दा [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलगाड़ी पर डाला जाने वाला पर्दा।

उड़ानफल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उड़नफल'। *उड़ान मारना*–बहाना करना।

उड़ाना [क्रि. स.] (हि.) १–उड़ने में प्रवृत्त करना। २–हवा में फैलाना। ३–उड़ने वाले प्राणियों को भगाना या हटाना। ४–चट से अलग करना। काटना। ५–हटाना। दूर करना ६–भोजन करना। ७–क्रीड़ा करना। ८–खर्च कर देना। ९–भुलवा देना। १०–हज्म करना। ११–मारना। १२–झूठी अपकीर्ति फैलाना। १३–किसी विद्या को गुप्तरूप से प्राप्त कर लेना या सीख लेना। १४–वेग से भगाना। दौड़ाना।

उड़ायकॐ [वि.] (हि.) उड़ने वाला।

उड़ाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कचनार के वृक्ष की छाल।

उड़ासॐ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रहने का स्थान। वासस्थान। महल।

उड़ासना [क्रि. स.] (हि.) १–विस्तर को समेटना। ॐ २–किसी वस्तु को नष्ट-भ्रष्ट करना। उजाड़ना। ३–किसी के सोने या बैठने में बाधा उपस्थित करना।

उड़िया [वि.] (हिं.) उड़ीसा राज्य का रहने वाला।

[संज्ञा स्त्री.] उड़ीसा राज्य की भाषा या बोली।

उड़ियाना [संज्ञा पु.] (हि.) २२ मात्राओं का एक छंद विशेष।

उड़िल [संज्ञा पु.] (हि.) बिना मूड़ी गई भेड़। बाल वाली भेड़।

उड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–मालखंभ की एक कसरत। २–कलाबाजी।

उड़ीसा [संज्ञा पु.] उत्कल देश।

उडुंबर [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर। ऊमर।

उडु [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–तारा। नक्षत्र। २–पक्षी। चिड़िया। ३–केवट। मल्लाह।

उडुप [संज्ञा पु.] (सं.) १–चंद्रमा। २–नाव। ३–भिलावा। ४–बड़ा गरुड़। ५–चमड़े का बना एक पात्र। ६–एक प्रकार का नाच।

उडुपति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

उडुराज [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

उडुस [संज्ञा पु.] (हि.) खटमल।

उड़ेदंड [संज्ञा पु.] (हि.) व्यायाम में एक हुंकार का दंड।

उड़ेरनाॐ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उडेलना'।

उड़ेलना+ [क्रि. स.] (हि.) १–एक पात्र से दूसरे पात्र में ढालना। २–किसी द्रव पदार्थ को गिराना या फेंकना।

उड़ैनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खद्योत। जुगनू।

उड़ौहाँ [वि.] (हि.) उड़ने वाला।

उड्डयन [संज्ञा पु.] (सं.) उड़ना। उड़ान।

उड्डयनविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वायुयानों की व्यवस्था करने वाला राजकीय विभाग।

उड्डीयन [संज्ञा पु.] (सं.) हठयोग का एक बंध या क्रिया।

उड्डीयमान [वि.] (हि.) उड़ने वाला। उड़ता हुआ।

उढ़+ [संज्ञा पु.] (हि.) पक्षियों को डराने के लिए खेत में गाड़ने का पुतला, जो घास फूस का बना हुआ होता है। विजूखा।

उढ़कन [संज्ञा पु.] (हि.) १–ठोकर। रोक। २–सहारा।

उढ़कना [क्रि. अ.] (हि.) १–अड़ना। ठोकर खाना। २–रुकना। ठहरना। ३–सहारा लेना या टेक लगाना।

उढ़काना [क्रि. स.] (हि.) किसी के सहारे रखना या टेक से ठहराना।

उढ़रना+ [क्रि. अ.] (हि.) अपने बिवाहित पति

को छोड़कर स्त्री का अन्य पुरुष के साथ भाग जाना।

उढ़री [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-उपपत्नी। रखुई। सुरैतिन। २-वह स्त्री जिसे कोई भगा ले गया हो।

उढ़ाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'ओढ़ाना'।

उढ़ारना [क्रि. स.] (हि.) किसी की स्त्री को भगा ले जाना।

उढ़ावनी❋+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ओढ़नी। चद्दर।

उढ़ुकन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उढ़कन'।

उढ़ुकना+ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'उढ़कना'।

उढ़ुकाना+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'उढ़काना'।

उढ़ौनी❋ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ओढ़नी'।

उतंक, उतङ्क [वि.] (हि.) एक ऋषि का नाम।

उतंग, उतङ्ग❋ ऊंचा। बुलंद।

उतंत❋ [वि.] (हि.) वड़ा। स्याना। जवान।

उत❋+ [क्रि. वि.] (हि.) उधर। उस ओर।

उतन❋ [क्रि. वि] (हि.) उस ओर। उस तरफ।

उतना [वि.] (हि.) उस परिमाण का। उस मात्रा का। उसके बरावर।

उतन्ना [संज्ञा पु.] (हि.) कान के ऊपरी भाग में पहरने की वाली।

उतपन्न❋+ [वि.] (हि.) देखो 'उत्पन्न'।

उतपात❋+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उत्पात'।

उतपानना❋ [क्रि. स.] (हि.) उत्पन्न करना। उपजाना।
[क्रि अ.] (हि.) उत्पन्न होना।

उतमंग, उतमङ्ग❋ [संज्ञा पु.] (हि.) उत्तमाङ्ग। मस्तक। माथा।

उतरंग [संज्ञा पुं.] (हि.) लकड़ी या पत्थर की वह पटरी जो दरवाजे के ऊपरी ढाँचे के ऊपर रखी जाती है।

उतर❋ [संज्ञा पु.] देखो 'उत्तर'।

उतरन+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पहनकर उतारे हुए जीर्ण कपड़े।

उतरनपुतरन+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उतारे हुए पुराने कपड़े।

उतरना [क्रि. अ.] (हि.) १-ऊँचे स्थान से नीचे की ओर आना। २-ढलना। अवनति पर होना। ३-शरीर के जोड़ या नस का अपने स्थान से हटना। ४-नदी या नाला पार करना। ५-निगल जाना। ६-प्रवेश करना। ७-समाप्त होना। ८-भाव का कम होना। ९-डेरा करना। टिकना। १०-अंकित होना। नकल होना। ११-वच्चों का मर जाना। १२-प्रभाव या उद्वेग कम होना। १३-सचारित होना। १४-भभके से खिचकर तैयार होना। १५-मैल में ठहरना। १६-अवतार लेना। १७-अखाड़े या मैदान में आना। १८-समुद्र का भाटा। १९-परिपक्व होना। २०-कुम्ह लाना। २१-स्त्री संभोग करना। (असभ्यों की भाषा) २२-सामने आना। घटित होना। २३-धारण की हुई वस्तु का अलग होना। *उतरकर*-नीचे दरजे का। *नीचे उतरना*-१—निगल जाना। २-मन में धंसना। *चित्त से उतरना*-१-विस्मृत होना। २-अप्रिय लगना। *चेहरा उतरना*-मुख पर उदासी छाना।
[क्रि. स.] नदी, नाले या पुल के उस पार जाना।

उतरवाना [क्रि. स.] (हि.) उतारने का कार्य किसी अन्य से करना।

उतरहा [वि.] (हि.) उत्तर वाला। उत्तर का।

उतराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊपर से नीचे की ओर आने की क्रिया। २-नदी पार करने की उजरत या महसूल।

उतराना [क्रि. अ. (हि.) १-पानी के ऊपर आना। पानी की सतह पर तैरना। २-उबालना या उफान खाना। ३-प्रकट होना। ४-'उतारना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप।

उतरायल [वि.] (हि.) उतारा हुआ। व्यवहार किया हुआ। पुराना जीर्ण।

उतरारी❋+ [वि.] (हि.) उत्तर की (वायु)।

उतरांव [संज्ञा पु.] (हिं.) उतार। ढाल।

उतरावना❋+ [क्रि. स.] (हि.) उतारने का कार्य किसी अन्य से कराना।

उतराहा+ [क्रि. वि.] (हि.) उत्तर की ओर।

उतरिन❋+ [वि.] (हि.) उऋण।

उतलाना❋+ [क्रि. अ.] (हि.) उतावला होना। आतुर होना। जल्दी करना।

उतल्ला [वि.] (हि.) देखो 'उतायल'।

उतवंग ❋ [संज्ञापु.] (हि.) सिर मस्तक।

उताइल❋ [वि.] (हिं.) देखो 'उतायल'।

उताइली ❋ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उतायली'।

उतान [वि.] (हि.) उत्तान। चित्त। सीधा।

उतायल❋ [वि.] हि.) जल्दी। शीघ्र। तेज।

उतायली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीघ्रता। जल्दी।

उतार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऊपर से नीचे आने का कार्य। २-ढाल। २-उतरने के योग्य जगह। ३-किसी पदार्थ की मोटाई का कम से कम होना। ४-घटाव। कमी। ६-नदी में हल कर पार करने योग्य स्थान। ७-समुद्र का भाठा। ८-उतारन। निकृष्ट। ९-विष उतारने की औषध। १० प्रतिलेख।
उतार-चढ़ाव बताना-ऊँचा-नीचा समझना।

उतार-चढ़ाव [संज्ञा पु.] (हि.) १-भलाई-बुराई। २-घटती-बढ़ती।

उतारन [संज्ञा पु.] (हि.) १-उतारा हुआ कपड़ा। २-न्योछावर। उतारा। ३-निकृष्ट वस्तु।

उतारना [क्रि. स.] (हि.) १-ऊपर से नीचे की ओर लाना। २-प्रतिरूप बनाना या लिखना।
चित्र खींचना। ३-लिपटा हुई
करना। उचाड़ना। उधेड़ना।
वस्तु को अलग करना।
चारों ओर घुमाना। ६-घुमाकर
भेंट चौराहे पर रखना। उतारा
डेरा देना। ठहरना। ८-वारना।
करना। ९-चुकाना। अदा करना।
भाव का दूर करना। ११-जन्म
करना। १२-पीना। घूंटना।
करना। उगाहना। १४-कोई वस्तु
रखना। १५-आग पर वस्तुयें
करना। १६-अर्क खींचना।
आदि के पार पहुँचना।

उतारा [संज्ञा पु.] (हि.) १-डेरा
टिकने का कार्य। २-पड़ाव।
जगह। ३-नदी पार करने की
भूत, प्रेत की बाधा या ग्रहशान्ति
कुछ पदार्थ किसी के शरीर के
घुमा कर नदी किनारे या चौराहे
५-उतारे की सामग्री या द्रव्य।

उतारू [वि.] (हि.) तत्पर। उद्यत। सन्नद्ध
उतरने वाला। [संज्ञा पु.] मुसाफिर।

उताल [क्रि. वि.] (हिं.) जल्दी। शीघ्र।
स्त्री.] (हि.) शीघ्रता।

उताली❋ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शीघ्रता।
वली। जल्दी। [क्रि. वि.] (हि.)
साथ। जल्दी से।

उतावल❋ [क्रि. वि.] शीघ्रता से।
[संज्ञा स्त्री.](हि.) व्यग्रता। बेचैनी।
शीघ्रता।

उतावला [वि.] (हि.) १-जल्दी करने
हड़बड़ी मचाने वाला। २-व्यग्र।
घबड़ाया हुआ।

उतावली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-शीघ्रता।
हड़बड़ी। २-व्यग्रता। चंचलता।
(हिं.) [स्त्री प्र.] जल्दी या शीघ्रता
उताहल❋ [क्रि. वि.] (हि.) जल्दी से।
से। [वि.] उतावला।

उताहित❋ [क्रि. वि.] (हि.) देखो

उतृण [वि.] (हि.) १-उऋण या ऋणमुक्त
उपकार का बदला चुकाने वाला।

उत, उतै❋+ [क्रि. वि.] (हि.) वहां।
उस ओर।

उतैला❋+ [क्रि. वि.] (हि.) देखो
[संज्ञा पु.] (देश.) उर्द। माष।

उत्कंठा, उत्कण्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
अभिलाषा। प्रबल इच्छा उत्सुकता।
एकसंचारी का नाम।

उत्कंठित, उत्कण्ठित [वि.] (सं.)
बेचैन। उत्साहित। चाव से भरा।

उत्कंठिता, उत्कण्ठिता [संज्ञा स्त्री.]
अपने प्रियतम के संकेतस्थान पर न

उत्कंप, उत्कम्प

से तर्क-वितर्क करने वाली नायिका।

उत्कंप, उत्कम्प [संज्ञा पु.] (सं.) कंप-कंपी। थरथराहट।

उत्कंपी, उत्कम्पी [वि] (सं.) कंपने वाला। झकोरा खाने वाला।

उत्कच [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके बाल खड़े हों।

उत्कट [वि] (सं.) तीव्र। विकट। कठिन। उग्र। प्रबल।

उत्कटा [संज्ञा स्त्री] (सं.) सफेद घुमची।

उत्कर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ाई। प्रशंसा। २-श्रेष्ठता। उत्तमता। ३-समृद्धि। ४-भाव, मूल्य, महत्वादि का बढ़ना।

उत्कर्षक [वि.] (सं.) १-उन्नति करने वाला। २-ऊपर को खींचने या उखाड़ने वाला।

उत्कर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर को खिंचाव।

उत्कर्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रेष्ठता। बड़ाई। उत्तमता। २-समृद्धि। ३-अधिकता। प्रचुरता।

उत्कर्षित [वि.] (सं.) खिंचा हुआ।

उत्कल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्त्तमान उड़ीसा राज्य।

उत्कलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्कंठा २-फूल की कली। ३-लहर। तरंग। ४-वह गद्य जिसके अन्तर्गत बड़े बड़े समासयुक्त पद हों।

उत्कलित [वि.] (सं.) १-लहराता हुआ। २-खिला हुआ।

उत्का* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उत्कंठिता'।

उत्काका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रति वर्ष बच्चा देने वाली गाय।

उत्कीर्ण [वि.] (सं.) १-लिखा हुआ। २-खुदा हुआ। ३-छिदा हुआ।

उत्कीर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रशंसा।

उत्कुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्कुण। खटमल। उडुस। २-जूँ।

उत्कृति [संज्ञा पु.] (सं.) २६ वर्णों के वृत्तों का नाम। [वि.] छब्बीस की संख्या।

उत्कृष्ट [वि.] (सं.) श्रेष्ठ। उत्तम। सर्वोत्तम।

उत्कृष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़प्पन। श्रेष्ठता। बड़ाई।

उत्कोच [संज्ञा पु.] (सं.) घूस। रिशवत।

उत्कोचक [वि.] (सं.) रिशवत या घूंस लेने वाला। रिशवतखोर।

उत्क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम भंग। उलट-पलट।

उत्क्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रम का उलंघन। २-मरण। मृत्यु।

उत्क्रांत, उत्क्रान्त [वि.] (सं.) १-ऊपर की ओर चढ़ने वाला।

उत्क्रांति, उत्क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रमशः उत्तमत्ता तथा पूर्णता की ओर प्रवृत्ति देखो 'आरोह'।

उत्क्लेदन [संज्ञा पु.] (सं.) तर या गीला करना।

उत्क्षेपक [संज्ञा पु.] (सं.) वस्त्रादि का चोर।

उत्क्षेपण [संज्ञा प.] (सं.) १-चुराना। चोरी। २-ऊपर की ओर फेंकना। ३-एक नाप। ४-पंखा। ५-किसी वस्तु का ढकना। ६-मूसल। मुंगरी। ७-सूप।

उत्खनन [संज्ञा पु.] (सं.) खोदने का काम। खोदाई।

उत्खात [वि.] (सं.] उखाड़ा हुआ।

उत्खाता [वि.] (सं.) उखड़ने वाला। खोदने वाला।

उत्तंग* [वि.] देखो 'उत्तुङ्ग'।

उत्तंस* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अवतंस'।

उत्त* [संज्ञा पु.] (सं.) आश्चर्य। संदेह।

उत्तप्त [वि.] (सं.) १-खूब तपा हुआ। पीड़ित। संतप्त। क्लेशित। ३-कुपित। क्रोधित।

उत्तम [वि.] (सं.) उत्कृष्ट। श्रेष्ठ। सबसे अच्छा। बढ़िया।

उत्तमगंधा, उतमगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली

उत्तमश्लोक [वि.] (सं.) यशस्वी। कीर्तिमान्। [संज्ञा पु.] १-सुयश। उत्तमकीर्ति। २-नारायण। विष्णु।

उत्तमतया [क्रि. वि.] (सं.) अच्छी प्रकार से। भलीभांति।

उत्तमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। खूबी। भलाई।

उत्तमताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उत्तमता'।

उत्तमत्व [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छापन। भलाई।

उत्तमपद [संज्ञा पु] (सं.) ऊंचा स्थान या पद।

उत्तमपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठ मनुष्य। २-व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलने वाले पुरुष का बोध कराता है। यथा 'मैं' 'हम'।

उत्तमर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) ऋणदाता। कर्ज देने वाला महाजन।

उत्तमसाहस [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक हजार पण के जुरमाने का दंड। २-कोई बड़ा दंड। फांसी, देशनिकाला, आदि का दंड।

उत्तमांग, उत्तमाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सिर। मस्तक। शीर्ष।

उत्तमा [वि.] (सं.) अच्छी। भली। [संज्ञा स्त्री.] एक रोग विशेष।

उत्तमादूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नायक या नायिका को मीठी बातों द्वारा समझाबुझाकर मना लेने वाली दूती।

उत्तमानायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नायिक या पति के प्रतिकूल होने पर भी अनुकूल रहने वाली स्वकीया नायिका।

उत्तमोतम [वि.] (सं.) सर्वश्रेष्ठ। सब से अच्छा

उत्तमौजा [वि.] (सं.) जिसका बल या पराक्रम उत्तम हो। [संज्ञा पु.] मनु का एक लड़का।

उत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। २-जवाब। प्रतिवाक्य। ३-प्रतिकार। ४-एक वैदिककालीन गीत। ५-विराट राजा का पुत्र। ६-एक काव्यालंकार जिसमें उत्तर सुनते ही प्रश्न का अनुमान लगाया जाता है। [वि.] १-पिछला। बाद का। उपरान्त का। २-ऊपर का। ३-बढ़कर। श्रेष्ठ। [क्रि. वि.] पीछे। बाद में।

उत्तरकांड, उत्तरकाण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रामायण का एक अंश या भाग। २-पुस्तक का शेषांश।

उत्तरकाय [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का ऊपरी भाग

उत्तरजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे की मृत्यु के बाद जीने वाला व्यक्ति।

उत्तरकाल [संज्ञा पु.] (सं.) भविष्यकाल।

उत्तरकाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरिद्वार के उत्तर में एक स्थान।

उत्तरकोशल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अयोध्या के आस-पास का एक प्रदेश। अवध।

उत्तरकोशला [संज्ञा स्त्री] (सं.) अयोध्या-नगरी।

उत्तरक्रिया [संज्ञा स्त्री.] अंत्येष्टिक्रिया।

उत्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के पार जाना। उतराई।

उत्तरदाता [संज्ञा पु.] (सं.) जिम्मेदार। जवाबदेह। वह जिसे किसी कार्य के बनने बिगड़ने पर जवाब देना पड़े।

उत्तरदायक [वि.] (सं.) प्रत्युत्तरदाता। सवाल का जवाब देने वाला।

उत्तरदायित्व [संज्ञा पु.] (सं.) जिम्मेवारी। जवाबदेही।

उत्तरदायी [वि.] (सं.) उत्तर देने वाला। जिम्मेवार। जवाबदेह।

उत्तरनाभि [संज्ञा स्त्री] (सं.) यज्ञ में उत्तर की ओर का कुण्ड।

उत्तरपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-जवाब की दलील। शास्त्रार्थ में वह सिद्धान्त जिसके द्वारा पूर्वपक्ष अर्थात् पहले किये हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन अथवा समाधान हो। २-कृष्णपक्ष

उत्तरपट [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुपट्टा। चादर। उपरना। २-बिछाने की चादर।

उत्तरपथ [संज्ञा पु.] (सं.) देवयान। उत्तरीयमार्ग

उत्तरपद [संज्ञा पु.](सं.) किसी समास का अन्तिम पद।

उत्तर-प्रत्युत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) वादविवाद। झगड़ा।

उत्तरप्रोष्ठपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र।

उत्तरफाल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारहवां नक्षत्र।

उत्तरभाद्रपद [संज्ञा पु] (सं) छब्बीसवा नक्षत्र ।

उत्तरमानस [संज्ञा पु.] (सं) गयातीर्थ के अन्तर्गत एक सरोवर ।

उत्तरमीमांसा [संज्ञा स्त्री] (सं) वेदान्तदर्शन का ब्रह्मसूत्र ।

उत्तरवयस [संज्ञा स्त्री] (सं.) बुढ़ापा । वृद्धावस्था ।

उत्तरवादी [वि.] (सं) प्रतिवादी । मुद्दालेह ।

उत्तरसाक्षी [संज्ञा पु.] वह साक्षी या गवाह जो औरों के मुख से मामले का हाल सुन कर साक्षी या गवाही दे ।

उत्तरसाधक [वि] (सं.) १-सहायक । मददगार । २-बचे हुए कार्य को पूरा करने वाला ।

उत्तरा [संज्ञा स्त्री] (सं.) विराट नरेश की कन्या तथा अभिमन्यु की पत्नी ।

उत्तराखंड, उत्तराखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत के आसपास का उत्तरीय भाग ।

उत्तराधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पत्ति का क्रमिक सत्व । विरासत । बपौती । वह अधिकार या सत्व जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सम्पत्ति या उसके हटने पर उसका स्थान या पद पाता है ।

उत्तराधिकार-शुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) विरासतकर । किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सम्पत्ति पर लगाया जाने वाला कर ।

उत्तराधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो किसी के मर जाने के उपरान्त उसकी सम्पति का मालिक या वारिस हो । २-किसी के हट जाने या रहने की अवस्था में उसके पद या स्थान का अधिकारी हो ।

उत्तराफाल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारहवाँ नक्षत्र

उत्तराभाद्रपद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छब्बीसवां नक्षत्र ।

उत्तराभास [संज्ञा पु.] (सं.) झूठा जवाब । अंडबंड जवाब ।

उत्तरायण [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन । सूर्य की मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर गमन । २-छः मास का वह समय जब सूर्य इस गति से बराबर उत्तर दिशा की ओर अग्रसर होता रहता है ।

उत्तरायणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में एक मूर्छना ।

उत्तरारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि मंथन की दो लकड़ियों में से ऊपर की लकड़ी ।

उत्तरार्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पिछला भाग । पीछे का अर्द्ध भाग ।

उत्तराषाढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इक्कीसवां नक्षत्र

उत्तरित [वि.] (सं.) जिसका उत्तर दिया जा चुका हो । जवाब दिया हुआ ।

उत्तरीय [संज्ञा पु.] (सं.) उपरना । दुपट्टा । चादर । ओढ़नी । [वि.] १-ऊपर का । ऊपर वाला । उत्तर दिशा का ।

उत्तरोतर [क्रि. वि.] (सं.) एक के अनन्तर दूसरा एक पीछे एक । क्रमशः ।

उत्ता + [वि.] (हि.) उतना ।

उत्तान [वि.] (सं.) चित । सीधा । मुख ऊपर और पीठ जमीन पर लगाये हुए ।

उत्तानपाद [संज्ञा पु.] (सं.) स्वायंभुव मनु का पुत्र । एक राजा ।

उत्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताप । तपन । गरमी । २-वेदना । पीड़ा । ३-दुःख । शोक । ४-क्षोभ

उत्तापन [संज्ञा पु.] (सं.) गरम करने का काम ।

उत्तापित [वि.] (सं.) गरम किया हुआ । तपाया हुआ ।

उत्तारक [वि.] (सं.) पार लगाने वाला ।

उत्ताल [वि] (सं.) श्रेष्ठ । उत्कट । भारी । तीव्र । कठिन ।

उत्तीर्ण [वि.] (सं.) १-उतरा हुआ । पार गया हुआ । २-मुक्त । ३-परीक्षा में सफल । जो पास हो चुका हो ।

उत्तु ग,उत्तुङ्ग [वि.] (सं.) बहुत ऊँचा ।

उत्तू [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह औजार जिससे बेलबूटे या चुनट के निशान डालते हैं । २-बेलबूटे का काम जो इस औजार से बनता है । *उत्तू करना*-अत्यधिक पीटना या मारना । [वि.] नशे में चूर । बदहवास ।

उत्तूकश [संज्ञा पु.] (फा.) उत्तू का काम करने वाला व्यक्ति ।

उत्तूगर [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'उत्तूकश ।

उत्तेजक [वि.] (सं.) १-प्रोत्साहक । उभाड़ने वाला । प्रेरक । २-वर्गों तीव्र करने वाला ।

उत्तेजन [संज्ञा पु.] (सं.) उत्साह प्रेरणा । बढ़ावा

उत्तेजना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रोत्साहन । प्रेरणा । बढ़ावा । २-वर्गों को तीव्र करने का काम ।

उत्तेजित [वि.] (सं.) प्रेरित । उभाड़ा या भड़काया हुआ ।

उत्तोलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर को उठाना या ऊँचा करना । तानना । २-तौलना । वजन करना ।

उत्तोलित [वि.] (सं.) उठाया हुआ । चढ़ाया हुआ ।

उत्थनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'उत्थान' ।

उत्थवना* [क्रि. स.] (हि.) आरम्भ करना । अनुष्ठान करना ।

उत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-उठने की क्रिया । ऊँचा होने की स्थिति । २-आरम्भ उठान । ३-उन्नति । समृद्धि । बढ़ती ।

उत्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर उठाना । तानना । २-हिलना । डुलाना । ३-जगाना ।

उत्थापित [वि] (सं) प्रेरित । प्रबोधित । या उभाड़ा हुआ ।

उत्थित [वि.](सं.) १-उठा हुआ । उन्नत । उठकर खड़ा हुआ हो ।

उत्पट [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर पहिनने का उपरना । दुपट्टा । २-वृक्ष की गोंद ।

उत्पतन [संज्ञा पु.] (सं.) उत्पत्ति । उत्थान । ऊपर उठना ।

उत्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उद्भव । पैदाइश । २-सृष्टि । ३- आरम्भ । शुरू ।

उत्पथ [संज्ञा. पु.] (सं.) १-विकट मार्ग । रास्ता । २-कुमार्ग ।

उत्पन्न [सर्व.] (सं.) जात । पैदा । जन्महुआ ।

उत्पन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहनकृष्ण

उत्पल [संज्ञा पु.] (सं) १-कमल । कमल ।

उत्पाट [संज्ञा पु.] (सं.) उत्पात । अखाड़

उत्पाटन [संज्ञा पु.] (सं.) उखाड़ना ।

उत्पाटित [वि.] (सं.) उखाड़ा हुआ ।

उत्पात [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपद्रव । आकस्मिक दुखदायी घटना । २-हलचल । ३-ऊधम । दंगा । शरारत ।

उत्पातक [वि.] (सं.) उपद्रव या उत्पादन वाला । [संज्ञा पु.] कान का एक रोग ।

उत्पाती [संज्ञा पु.] (सं.) उपद्रवी । दंगा वाला । अशान्ति उत्पन्न करने वाला ।

उत्पाद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उत्पादन' ।

उत्पादक [वि.] (सं) उत्पन्न करने निर्माता ।

उत्पादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पन्न पैदा करना । २-बनाना ।

उत्पादनशुक्ल [संज्ञा पु.] (सं.) बने हुए माल पर लगाने वाला कर या महसूल ।

उत्पादित [वि.] (सं.) उत्पादन किया बनाया हुआ ।

उत्पादी [वि.] (सं.) देखो 'उत्पादक' । [स्त्री उत्पन्न करने वाली ।

उत्पीड़ [संज्ञा पु.] (सं) १-शराब की फेन । २-बाधा । कष्ट ।

उत्पीड़न [वि.] (सं.) किसी को कष्ट पहुंचा बहुत दुःख देना ।

उत्पीड़ित [वि.] (सं.) सताया हुआ । पाया हुआ । कष्ट झेला हुआ ।

उत्प्रवास [संज्ञा पु.] (सं.) स्वदेश त्याग गमन ।

उत्प्रेक्षक [वि.] (सं.) उत्प्रेक्षा करने वाला ।

उत्प्रेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) सम्भावना । दृष्टि ।

उत्प्रेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपेक्षा ।

वाही । उलटा विचार । २-उद्भावना । आरोप । ३-एक काव्यालंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु में अन्य प्रकार की सम्भावना की जाती है ।

उत्प्रेक्षित [वि.](सं.) मिलाहुआ । सदृश कियाहुआ

उत्प्रेक्षोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु के गुणों का बहुतों में पाया जाना वर्णन किया जाता है ।

उत्प्रेपण-लेख [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी अदालत से अभियोग का बड़ी अदालत में जाना ।

उत्प्लवन [संज्ञा पु.] (सं.) उछलकूद ।

उत्फुल्ल [वि.] (सं.) १-विकसित । खिला हुआ । प्रफुल्लित । २-चित । उत्तान ।

उत्संग, उत्सङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोद । क्रोड़ । कोरा । अंक । २-बीच । मध्यभाग । ३-विरक्त । ४-ऊपर का भाग ।

उत्सन्न [वि] (सं.) १-उखड़ा हुआ । नष्ट । २-बढ़ा हुआ ।

उत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्याग । छोड़ना । २-दान । न्योछावर । ३-समाप्ति । ४-व्याकरण का कोई साधारण या व्यापक नियम । ५-समाप्ति । अन्त ।

उत्सर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्याग । छोड़ना । २-दान । ३-किसी कर्मचारी को उस पद से अलग करना या हटाना । डिस्चार्ज ।

उत्सर्जित [वि.] (सं.) त्यागा या छोड़ा हुआ । २-अपने पद से हटाया हुआ । ३-किसी के लिए दान रूप में छोड़ा हुआ ।

उत्सर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर चढ़ना । चढ़ाव । लाँघना । उल्लंघन ।

उत्सर्पी [वि.] (सं.) ऊपर को चढ़ा हुआ ।

उत्सव [संज्ञा पु.](सं.) १-उछाह । मंगल कार्य । धूम-धाम । २-आनन्द मंगल का समय । ३-व्योहार । पर्व ।

उत्सादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई पद अथवा स्थान आदि का न रहने देना । किसी आज्ञा अथवा निश्चय को रद्द करना ।

उत्सादित [वि.] (सं.) उन्मूलित पद या स्थान । २-आज्ञा या निश्चय जो रद्द किया गया हो ।

उत्सारक [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल । चोबदार ।

उत्साह [संज्ञा पु.] (सं.) १-उमंग । उछाह । जोश । हौसला । २-हिम्मत । साहस । ३-वीररस का एक स्थायीभाव ।

उत्साहिल* [वि.] (हिं.) देखो 'उत्साही' ।

उत्साही [वि.] (सं.) उत्साह रखनेवाला । उमंग वाला । हौसलेवाला ।

उत्सुक [वि.] (सं.) १-उत्कंठित । चाह से व्याकुल अत्यंत इच्छुक ।

उत्सुकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्याकुलता । बेचैनी । आकुल इच्छा । २-रस में एक संचारी भाव ।

उत्सूर [संज्ञा पु.] (सं.) सायंकाल । संध्या ।

उत्सृष्ट [वि.] (सं.) छोड़ा हुआ । त्यागा हुआ । व्यक्त ।

उत्सेक [संज्ञा पु.] (सं.) अहंकार । घमंड । गर्व । वृद्धि ।

उत्सेकी [वि.] (सं.) घमंडी । अहंकारी ।

उत्सेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-उन्नति । बढ़ती । २-ऊंचाई । ३-शोथ । [वि.] १-श्रेष्ठ उत्तम । २-ऊंचा ।

उथपना [क्रि. स.] (हिं.) उठना । उखाड़ना । उजाड़ना ।

उथल [वि.] (हिं.) १-तुच्छ । छिछोरा । २-भेद की बात को गुप्त न रखने वाला ।

उथलना [क्रि. अ.] (हिं.) उलटपुलट होना । डगमगाना । डांवांडोल होना । चलायमान होना । पानी का छिछला होना ।

उथलपुथल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उलट पुलट । विपर्य्यय । क्रमभंग । [वि.] विपर्य्यस्त । अंडवंड । इधर का उधर ।

उथला [वि.] (हिं.) कम गहरा । छिछला ।

उथलाना [क्रि. स.] (हिं.) इधर उधर लगाना । गड़बड़ करना ।

उदंड [वि.] (हिं.) देखो 'उद्दंड' ।

उदंत [वि.] (हिं.) बिना दाँत का । जिसके दांत न जमे हों । [संज्ञा पु.] (हिं.) वार्ता । वृत्तांत ।

उदंतक, उदन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वार्ता । वृत्तांत ।

उद् [अ.] (सं.) यह उपसर्ग शब्दों के आगे लग कर उनमें दोष, उत्कर्ष, आश्चर्य, प्रकाश, शक्ति, प्राधान्यादि विशेषतायें प्रकट करता है । [संज्ञा पु.] १-मोक्ष । २-ब्रह्म । ३-सूर्य । ४-जल ।

उदउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उदय' ।

उदक् [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तरदिशा ।

उदक [संज्ञा पु.] (सं.) जल । पानी ।

उदकअद्रि* [संज्ञा पु.] (हि.) 'उदगद्रि' ।

उदककाय [संज्ञा पु.] (सं.) मृत के लिये जल देने का काम ।

उदकक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलदान । तिलांजलि । २-तर्पण ।

उदकदान [संज्ञा पु.] (सं.) जलदान । तर्पण ।

उदकना* [क्रि. अ.] (हिं.) उछलना । कूदना । छटकना ।

उदकपरीक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) जल में डूबकर शपथ का करना या खाना ।

उदकप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेह रोग का एक भेद ।

उदकेचर [संज्ञा पु.] (सं.) जलचर ।

उदकोदर [संज्ञा पु.] (सं.) जलोदर ।

उदक्य [वि.] (सं.) १-जल वाला । २-अपवित्र । अशुचि ।

उदक्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला ।

उदगद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय ।

उदगयन [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तरायण ।

उदगरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-निकलना । बाहर होना । २-प्रकाशित होना । प्रकट होना । ३-उभड़ना ।

उदगार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उद्गार' ।

उदगारना [क्रि. स.] (हिं.) १-बाहर निकालना । बाहर फेंकना । २-भड़काना ।

उदगारी* [वि.] (हिं.) १-उगलने वाला । २-बाहर निकलने वाला ।

उदग्ग [वि.] (हिं.) १-उन्नत । ऊँचा । २-प्रचंड । उग्र । उद्धत ।

उदग्र [वि.] (सं.) १-ऊंचा । उन्नत । २-परिवर्द्धित । बढ़ा । ३-प्रचंड । उद्धत ।

उदघटना* [क्रि. स.] (हिं.) उदय होना । निकलना । प्रगट होना ।

उदघाटन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उद्घाटन' ।

उदघाटना* [क्रि स.] (हिं.) प्रकाशित करना । प्रगट करना । खोलना ।

उदजन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अदृश्य, गंधहीन तथा वर्णहीन वाष्प जिसकी गणना तत्वों में होती है ।

उदजनबम [संज्ञा पु.] (सं.) उदजन के तत्वों से निर्मित एक प्रलयकारी आग्नेय अस्त्र ।

उदथ [संज्ञा पु.] (हि.) सूरज । सूर्य ।

उदधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र । २-घड़ा । ३-मेघ । बादल ।

उदधिमेखला [संज्ञा स्त्री] (सं.) पृथ्वी ।

उदधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

उदधिवस्त्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी ।

उदधिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-अमृत । ३-शंख । ४-कमल ।

उदधिसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समुद्र से उत्पन्न वस्तु । २-लक्ष्मी । ३-सीप ।

उदपान [संज्ञा पु.] (सं.) १-कूल । कुएं के पास का गड्ढा । २-कमण्डलु ।

उदवस* [वि.] (हिं.) १-उजाड़ । शून्य । सूना । २-एक स्थान पर न रहने वाला । खानाबदोश ।

उदवासना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी स्थान से हटा देना । रहने में विघ्न डालना । भगा देना । २-उजाड़ना ।

उदभट*+ [वि.] [संज्ञा पु.] देखो 'उद्भट ।

उदभव* [संज्ञा पु.] देखो 'उद्भव' ।

उदभौत* [संज्ञा पु.] (हिं.) अद्भुत वस्तु या

घटना । अचम्भा ।

उदमद* [वि.] (हि.) देखो 'उन्मत्त' ।

उदमदना* [क्रि अ] (हि) पागल होना । उन्मत्त होना ।

उदमाद* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उन्माद' ।

उदमादी* [वि.] (हिं.) उन्मत्त । मतवाला ।

उदमान [वि.] (हिं.) उन्मत्त ।

उदमानना* [क्रि. अ.] (हि.) पागलपन होना । उन्मत्त होना ।

उदय [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलना । प्रगट होना । ऊपर आना । २-उन्नति । बढ़ती । वृद्धि । ३-निकलने का स्थान । उद्गम । ४-उदयाचल । उदय से अस्त तक या लों-सारी पृथ्वी ।

उदयगढ़* [संज्ञा पु.] (सं.) उदयाचल ।

उदयगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) उदयाचल ।

उदयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवंतिदेश का राजा । २-एक दार्शनिक आचार्य । ३-उत्थान । निकास । उठान ।

उदयनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जिस नक्षत्र पर कोई ग्रह दिखाई पड़े वह नक्षत्र उस ग्रह का 'उदयनक्षत्र' कहलाता है ।

उदयना [क्रि. अ] (हि.) उदय होना ।

उदयाचल [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण के अनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहां से सूर्य उदय होता है ।

उदयातिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह तिथि जिसमें सूर्योदय हो ।

उदयाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) उदयाचल ।

उदरंभर, उदरम्भर* [वि.] (हिं.) देखो 'उदरंभरि' ।

उदरंभरि, उदरम्भरि [वि.] (सं.) अपना ही पेट भरने वाला । पेटू ।

उदरंभरी, उदरम्भरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पेटूपन ।

उदर [संज्ञा पु.] (सं.) १- पेट । जठर । २-किसी वस्तु का मध्यभाग । मध्य । ३- भीतर का भाग । अन्तर ।

उदरज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जठराग्नि । २-भूख ।

उदरना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-फटना । विदीर्ण होना । छिन्नभिन्न होना ।

उदरपरायण [वि.] (सं.) भुक्खड़ । पेटू ।

उदरपिशाच [वि.] (सं.) अत्याधिक खाने वाल । सर्व अन्नभक्षक ।

उदररेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैठने से पेट सुकुड़ने पर पड़ने पर पड़ने वाली लकीर ।

उदरवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट बढ़ने का रोग । जलोदर ।

उदरामय [संज्ञा पु.] (सं.) पेट का रोग ।

उदरावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) नाभि । ढोढ़ी ।

उदवना* [क्रि. अ.] (हिं.) उगना । उदय होना । प्रगट होना । निकलना ।

उदवाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उद्वाह' ।

उदवेग*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उद्वेग' ।

उदसना [क्रि. अ.] (हिं.) उखड़ना । नष्ट होना ।

उदस्त [वि.] (सं.) निकला हुआ । फेंका हुआ ।

उदाकर्ष [वि.](सं.) बैंक, खजाना आदि से अपना रुपया या आभूषण आदि निकलवाने वाला । निकालने वाला ।

उदाकर्षराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निकाली हुई वस्तु । निकाला गया धन ।

उदात्त [वि.] (सं.) ऊंचे स्वर से उच्चारण किया हुआ । २-कृपालु । दयावान । ३-दाता । उदार । ४-स्पष्ट । विशद । ५-श्रेष्ठ । बड़ा । ६-योग्य । समर्थ । [संज्ञा पु.] १-वेद के स्वरोच्चारण का एक ढंग । २-एक काव्यालंकार जिसमें सांभाव्य विभूति का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है । ३-दान । ४-एक प्रकार का आभूषण । ५-एक बाजा ।

उदान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की प्राणवायु जिसका स्थान कंठ है । इसकी गति हृदय से कंठ और तालु तक तथा शिर से भूमध्य तक है ।

उदाम* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उद्दाम' ।

उदायन* [संज्ञा पु.] (हि.) उद्यान । बगीचा । उपवन । वाटिका ।

उदार [वि.] (सं.) १-दाता । देने वाला । २-बड़ा । श्रेष्ठ । ३- जो संकीर्ण हृदय का न हो । ऊंचे दिल का । ४-सरल । सीधा । शिष्ट । ५-दक्षिण । अनुकूल ।

उदारचरित [वि] (सं.) जिसका चरित्र उदार हो । ऊंचे दिल का । शीलवान् ।

उदारचेता [वि.] (सं.) देखो 'उदारचरित' ।

उदारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दानशीलता । २-उच्चविचार ।

उदारना* [क्रि. स.] (हि.) १-गिराना । तोड़ना । २-फाड़ना । विदीर्ण करना ।

उदारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीतशास्त्र के अनुसार नाभि से उठने वाला सप्तक ।

उदाराशय [वि.] (सं.) जिसके उद्देश और विचार उच्च हों । महात्मा ।

उदावर्त [संज्ञा पु.] (स .) एक गुदा रोग जिसमें कांच निकल आती है तथा मलमूत्र रुक जाता है ।

उदावर्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्रियों का रजोधर्म रुकने के संबंधी रोग ।

उदास [वि.] (सं.) १-जिसका मन किसी वस्तु से दुखी होकर हट गया हो । विरक्त । खिन्न । २-निरपेक्ष । तटस्थ । झगड़े से अलग
दुःखी । रंजीदा ।

उदासना* [क्रि. स.] (हि.) १-उजाड़ना
करना । २-समेटना या बटोरना ।

उदासिल* [वि.] (हि.) उदास । उदासीन

उदासी [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरक्त पुरुष ।
सन्यासी । २-नानक पंथी साधुओं
भेद ।
[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-खिन्नता ।
२-आनन्द का अभाव ।

उदासीन [वि.] (सं.) १-विरक्त । २-झगड़े
से अलग । तटस्थ । निष्पक्ष ।

उदासीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-
त्याग । २-तटस्थता । निरपेक्षता ।

उदाहट [संज्ञा पु.] (हि.) नीले रंग में
आभा । ऊदापन ।

उदाहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दृष्टांत ।
२-बहुत-सी घटनाओं या बातों में से
कोई घटना या बात जिससे उन सब
नाओं या बातों का स्वरूप मालूम हो
३-धर्मादि का प्रकाशन । ४-कथाप्रसं
नाटक का गर्भाङ्क । ६-कोई ऐसी घट
तथ्य जिसके द्वारा किसी विषय या
का ठीक ठीक स्वरूप समझ में आजा

उदाहृत [वि.] (सं.) वर्णन किया हुआ
हुआ ।

उदियाना* [क्रि. अ.] (हि.) उद्विग्न होना
ड़ाना । हैरान होना ।

उदित [वि.] (सं.) १-जो उदय हुआ हो ।
हुआ । २-प्रकट । ३-स्वच्छ ।
प्रफुल्लित । प्रसन्न । ५-कहा हुआ ।

उदितयौवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह
जिसमें तीन भाग यौवन तथा
लड़कपन हो ।

उदीची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तर दिशा ।

उदीच्य [वि.] (सं.) १-उत्तर की दिशा
उत्तर का रहने वाला । [संज्ञा पु.]
का वैताली छंद जिसके विषम
दूसरी तथा तीसरी मात्राएँ मिलकर
वर्ण हो जाय ।

उदीपन* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उद्दीप

उदीपित* [वि.] (हिं.) देखो 'उद्दीपित' ।

उदीरित [वि.] (सं.) १-कहा हुआ । २-
हुआ ।

उदीर्ण [वि.] (सं.) १-उदित । चढ़ा हुआ
प्रबल ।

उदुंबर, उदुम्बर [संज्ञा पु.] (सं.)
डेउढ़ी । देहली । ३-नपुंसक । ४-
अस्सी रत्ती का एक तौल । ३-कोढ़ ।

उदुआ+ [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का

उदूल [संज्ञा पु.] (अ.) आज्ञा का न मानना।

उदूलहुक्मी [संज्ञा स्त्री](फा.) आज्ञा का उल्लंघन करना।

उदेग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उद्वेग'।

उदेल+ [संज्ञा पु.] (अ.) लोहबान।

उदै, उदो* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उदय'।

उदोत* [संज्ञा पु.] (हि.) प्रकाश। दीप्ति। [वि.] १-प्रकाशित। दीप्त। २-शुभ्र। उत्तम।

उदोतकर* [वि.] (हिं) १-प्रकाश करने वाला। प्रकाशक। २-चमकाने वाला।

उदोती* [वि.] (हिं.) प्रकाश देने वाला। उदय करने वाला। विकाशक।

उदौ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उदय'।

उद्गत, उद्‌गत [वि.] (सं.) १-उत्पन्न। उदित। निकला हुआ। २-प्रकट। ३-व्याप्त। फैला हुआ। ४-प्राप्त।

उद्गम, उद्‌गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदय। आविर्भाव। २-उत्पत्ति का स्थान। निकास। ३-वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।

उद्गाथा, उद्‌गाथा [संज्ञा पु.] (सं.) आर्या छन्द का एक भेद।

उद्गार, उद्‌गार [संज्ञा पु.] (सं.) १-उबाल। उफान। २-वमन। उलटी। ३-थूक। कफ। ४-घोर शब्द। ५-मन के विचार या भाव। ६-किसी के विरुद्ध बहुत दिन से मन में रखी हुई बात एक बारगी कहना।

उद्गारी, उद्‌गारी [वि.] (हिं.) १-उगलने वाला। २-प्रकट करने वाला।

उद्गीत, उद्‌गीत [वि.] (सं.) ऊंचे स्वर में गाया हुआ गीत।

उद्गीति, उद्‌गीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्या छंद का एक भेद।

उद्गीथ, उद्‌गीथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामवेद के गायन का एक अंग। २-ओंकार।

उद्गीर्ण, उद्‌गीर्ण [वि.] (सं.) १-कहा हुआ। निकाला हुआ।

उद्ग्रहण उद्‌ग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) कर इकट्ठा करना। उगाहना। आरोपण।

उद्घटन [संज्ञा पु.] (सं.) आघात। रगड़ा।

उद्घटित [वि.] (सं.) उन्मुक्त। खुला हुआ।

उद्घाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौकी। चुङ्गीघर। २-खोलने का कार्य।

उद्घाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्घाटन करने वाला व्यक्ति। २-चाभी। कुंजी।

उद्घाटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खोलना। उघाड़ना। २-प्रकाशित करना। प्रकट करना। ३-किसी प्रमुख व्यक्ति का सम्मेलन आदि का कार्य आरम्भ करना।

उद्घाटित [वि.] (सं.) १-खोला हुआ। २-अनावरण किया हुआ। ३-प्रकाशित।

उद्घात [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठोकर। आघात। धक्का। २-आरम्भ।

उद्घातक [वि.] (सं.) धक्का या ठोकर मारने वाला। [संज्ञा पु.] नाटक में प्रस्तावना का एक भेद।

उद्घाती [वि.] (हिं.) १-ठोकर या धक्का देने वाला। २-ऊंचानीचा।

उद्घोषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सार्वजनिक रूप से दी जाने वाली सूचना।

उद्दंड, उद्दण्ड [वि.] (सं.) १-उद्धत। अक्खड़। निडर। जिसे दंड का भय न हो। २-जिसका डंडा ऊंचा हो।

उद्दाम [वि.] (सं.) १-बंधनरहित। २-निरंकुश। उग्र। उच्छृङ्खल। ३-स्वतंत्र। ४-गंभीर। महान्। [संज्ञा पु.] (सं.) १-दंडवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में २ जगण और १३ रगण होते हैं।

उद्दालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-एक वनकोदव नाम का अन्न। ३-एक व्रत का नाम।

उद्दित* [वि.] देखो 'उद्यत' 'उदित' 'उद्धत'।

उद्दिम* [संज्ञा पु.] देखो 'उद्यम'।

उद्दिष्ट [वि.] (सं.) १-दिखाया हुआ। इंगित किया हुआ। २-लक्ष्य। अभिप्रेत। [संज्ञा पु.] वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कोई छंद मात्रा प्रस्तार का कौनसा भेद है। २-लालचंदन।

उद्दीपक [वि.] (सं.) उत्तेजित करने वाला। उभाड़ने वाला।

उद्दीपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तेजित करने की क्रिया। उभाड़ना। जागना। २-उत्तेजित करने वाले पदार्थ। काव्य में वह विभाग जो रस को उत्तेजित करते हैं।

उद्दीप्त [वि.] (सं.) १-उत्तेजित। २-जिसका उद्दीपन हुआ हो। ३-उमड़ा हुआ। बढ़ा हुआ। जागा हुआ।

उद्देश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिलाष। चाह। इष्ट। अभिप्राय। मतलब। २-कारण। हेतु। ३-अनुसन्धान। ४-न्याय में प्रतिज्ञा।

उद्देश्य [वि.] (सं.) लक्ष्य। इष्ट। मतलब का। कहने योग्य। [संज्ञा पु.] वह वस्तु जिस पर ध्यान रख कर कोई बात कही जाय। अभिप्रेत पदार्थ या बात। इष्ट। २-व्याकरण में वह जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। विशेष्य। ३-मतलब। तात्पर्य।

उद्दोत* [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रकाश। [वि.] १-प्रकाशित। चमकीला। २-उदित। उत्पन्न।

उद्ध* [क्रि. वि.] (हि.) ऊपर।

उद्धत [वि.] (सं.) १-उत्कट। उग्र। प्रचंड। २-प्रगल्भ। [संज्ञा पु.] १-४० मात्राओं का एक छंद जिसमें हर दसवीं मात्रा पर विराम होता है और अंत में गुरु लघु होता है। २-राजा का पहलवान।

उद्धतपन [संज्ञा पु.] (हिं.) उग्रता। उजड्डपन।

उद्धना* [क्रि. अ.] (हिं.) उड़ना। फैलना। छितराना।

उद्धम [वि.] (हि.) देखो 'उत्तम'।

उद्धरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर उठना। २-मुक्त होना। ३-बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना। ४-पढ़े हुए पाठ का दोहराव। ५-किसी लेख के अंश को अन्य लेख में ज्यों का त्यों रखना।

उद्धरणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पढ़े हुए पाठ को बारबार दोहराना।

उद्धरणीय [वि.](सं.) ऊपर चढ़ने योग्य।

उद्धरना* [क्रि. स.] (हिं.) उद्धार करना। बचाना। उबारना।

उद्धव [संज्ञा पु.].(सं.) १-उत्सव। २-यज्ञ की अग्नि। ३-श्रीकृष्ण के एक सखा।

उद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २-सुधार। दुरुस्ती। ३-ऋण से मुक्ति। ४-बिना ब्याज का ऋण। ५-उधार।

उद्धारक [वि.] (सं.) उद्धार करने वाला।

उद्धारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्धार करने की क्रिया या भाव। २-वाक्य, पद, शब्द आदि को किसी उद्देश्य से कहीं से अलग कर देना।

उद्धारणिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने किसी ऋण या उधार लिया हो। कर्ज लेने वाला व्यक्ति।

उद्धारना* [क्रि. स.] (हिं.) उद्धार करना। मुक्त करना। छुटकारा देना।

उद्धार-विक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) उधार बेचना।

उद्ध्वस्त [वि.] (सं.) गिरा पड़ा हुआ। टूटा हुआ। भंग। नष्ट।

उद्धृत [वि.] (सं.) १-उगला हुआ। २-ऊपर उठाया हुआ। ३-किसी दूसरे स्थान से कोई अंश उद्धरण के रूप में ज्यों का त्यों लिया हुआ

उद्‌बुद्ध [वि.] (सं.) १-विकसित। खिला हुआ। २-प्रबुद्ध। ३-चैतन्य। ४-जागा हुआ। ५-ज्ञान प्राप्त किया हुआ।

उद्‌बुद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जो अपनी इच्छा से पर-पुरुष स्नेह बढ़ाती है।

उद्‌बोध [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा ज्ञान। अल्प ज्ञान।

उद्‌बोधक [वि.] (सं.) १-चेताने वाला। २-जागृत करने वाला। ३-प्रकाशित करने वाला। सूचित करने वाला। ४-उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाला।

उद्बोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चेतना। बोध कराना। २-उत्तेजित करना। ३-जगाना।

उद्बोधिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष के प्रेम-प्रदर्शित करने पर उस पर मुग्ध होती है।

उद्भट,उद्भट [वि.] (सं.) १-प्रबल। प्रचंड। श्रेष्ठ। २-उच्चाशय। [संज्ञा पु.] १-सूप। २-कच्छप।

उद्भव, उद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पत्ति। जन्म। सृष्टि। २-वृद्धि। बढ़ती। ३-किसी पूर्वज के वंश में उत्पन्न होने या किसी मूल से निकलने का तथ्य या भाव।

उद्भावन, उद्भावन [संज्ञा पु] (सं.) १-कल्पना करना। उत्पन्न होना।

उद्भावना, उद्भावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कल्पना। २-उत्पत्ति।

उद्भास, उद्भास [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। चमक। शोभा। २-मन में किसी बात का उदय। प्रतीति।

उद्भासित, उद्भासित [वि.] (सं.) १-उत्तेजित। उद्दीप्त। २-प्रकाशित। प्रकट। ३-प्रतीत। विदित।

उद्भिज, उद्भिज [संज्ञा पु.] देखो 'उद्भिज्ज'।

उद्भिज्ज, उद्भिज्ज [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि को फोड़कर उत्पन्न होने वाला, लता, वृक्षादि।

उद्भिद, उद्भिद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उद्भिज्ज'।

उद्भिद विद्या, उद्भिदविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनस्पति शास्त्र।

उद्भिन्न, उद्भिन्न [वि.] (सं.) १-तोड़ा हुआ। फोड़ा हुआ। २-उत्पन्न।

उद्भूत [वि.] (सं.) उत्पन्न। निकला हुआ।

उद्भेद, उद्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-फोड़कर निकलना। २-प्रकाशन। उद्घाटन। ३-एक अलंकार जिसमें चतुरता के साथ गुप्त किये हुए विषय को कारणवश प्रकाशित करते हैं।

उद्भेदन, उद्भेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फोड़कर निकल आना। २-तोड़ना-फोड़ना।

उद्भ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकुलता। उद्वेग।

उद्भ्रांत, उद्भ्रान्त [वि.] (सं.) १-भ्रांतियुक्त। भूला हुआ। २-चकित। भौचक्का। ३-घूमता या चक्कर मारता हुआ।

उद्यत [वि.] (सं.) १-प्रवृत्त। तत्पर। लगा हुआ। २-उठाया हुआ। ताना हुआ।

उद्यम [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। मेहनत। २-काम। धंधा। व्यापार। व्यवसाय।

उद्यमित [वि.] (सं.) यत्न से किया हुआ।

उद्यमी [वि.] (सं.) उद्योगी। प्रयत्नशील। प्रयत्न करने वाला।

उद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) बाग बगीचा। उपवन।

उद्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्रत के समाप्त होने पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।

उद्यापित [वि.] (सं.) पूर्ण किया हुआ।

उद्याम [संज्ञा पु.] रज्जू। रस्सी।

उद्योग [संज्ञा पु.] १-प्रयास। प्रयत्न। कोशिश। २-काम धंधा। उद्यम। कारबार।

उद्योगधंधे, धन्धे [संज्ञा पु.] (हिं.) लोगों के व्यवहार के लिए कच्चे माल से पक्का माल तैयार करने की व्यवसाय या कारोबार।

उद्योगपति [संज्ञा पु.] (सं.) उद्योग धंधों का स्वामी। कच्चेमाल से पक्का माल तैयार करने वाले किसी कारखाने का मालिक या स्वामी।

उद्योगी [वि.] (सं.) उद्योग करने वाला। प्रयत्न करने वाला। उत्साही।

उद्योत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश। रोशनी। उजाला

उद्रिक्त [वि.] (सं.) फूटा हुआ। चिह्नित।

उद्रेक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अधिकता। बढ़ती वद्धि। २-एक काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी वस्तु से अधिक तुच्छ दिखाई पड़ती है।

उद्वर्तक [वि.] (सं.) बढाने वाला।

उद्वर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) उबटन।

उद्वर्तित [वि.] (सं.) आकर्षित। सुगंधित किया हुआ।

उद्वह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-सात प्रकार की वायुओं में से एक।

उद्वहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उठना। ऊपर खिंचना २-विवाह।

उद्वहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या। पुत्री।

उद्वांत, उद्वान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वमन। कै। उलटी। [वि.] उगला हुआ। कै किया हुआ।

उद्वासन [संज्ञा पु.] १-स्थान छुड़ाना। भगाना। २-उजाड़ना। ३-मारना। वध। ४-एक संस्कार। ५-प्रतिमा की प्रतिष्ठा के एक दिन पहले उसे रात भर औषध के जल में डाल रखने का कृत्य।

उद्वाह [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह।

उद्वाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर ले जाना। उठाना। ऊपर चढ़ाना। २-हटाना। ३-विवाह। ४-जोते हुए खेत को दोबारा जोतना

उद्वाहिक [वि.] (सं.) विवाह-संबंधी।

उद्वाहित [वि.] (सं.) विवाह किया हुआ।

उद्विग्न [वि.] (सं.) १-उद्वेग युक्त। आकुल। घबड़ाया हुआ। २-व्यग्र।

उद्विग्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घबड़ाहट। २-व्यग्रता। व्याकुलता।

उद्वेग [संज्ञा पु.] (सं.) चित्त की व्याकुलता। घबड़ाहट। २-मनोवेग। आवेश। ३-झोंक। ४-संचारी भावों में से ए किसी चिन्ताजनक घटना के कारण होने वाला वह भय जिसके फ अपने बचाव के उपाय सोचने लगते

उद्वेजक [वि.] (सं.) उद्विग्न करने वा

उद्वेजन [संज्ञा पु.] (सं.) उद्विग्न करना

उद्वेजित [वि.] (सं.) उद्विग्न किया हुआ

उद्वेल [संज्ञा पु.] (सं.) छलकना। छलक

उधड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) खुलना। बिखरना। २-उचड़ना। पर्त से अल

उधम॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऊधम'।

उधर [क्रि. वि.] (हि.) वहां। उस ओ तरफ।

उधरना॰ [क्रि. स.] (हिं.) १-उद्धार मुक्त होना। २-देखो 'उधड़ना'।

उधराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हवा से बिखर जाना। २-मदांध होना।

उधाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पें

उधार [संज्ञा पु.] (हिं.) ऋण। कर्ज। २-छुटकारा। ३-उद्धार।

उधार खाए बैठना–अपने अनुकूल होने कार्य के लिये अत्यन्त उत्सुक रहना चाहना।

उधारक॰ [वि.] (हिं.) देखो 'उद्धारक'।

उधार-ग्रहण [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उधार लेने की क्रिया।

उधारना॰ [क्रि. स.] (हिं.) उद्धार करना। छोड़ना।

उधारिया [वि.] (हिं.) उधार लेने वाला।

उधारी॰ [वि.] (हिं.) उद्धार करने वाला।

उधेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-जमी या पर्तों को अलग अलग करना। उचाड़ २-सिलाई खोलना। ३-छितराना राना।

उधेड़बुन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सोच ऊहापोह। २-उपाय। युक्ति बांधना।

उधेरना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उधेड़ना'

उनंत [वि.] (हिं.) झुका हुआ।

उन [सर्व.] (हि.) 'उस' का बहुवचन।

उनइस॰ [वि.] (हिं.) देखो 'उन्नीस'।

उनका [संज्ञा पु.] (अ.) एक कल्पित पक्षी [वि.] (अ.) विलक्षण। अद्भुत।

उनचन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैताने के वह रस्सी जो बुनावट कसने के हैं। अदवान।

उनचना [क्र. स.] (हिं.) पैताने की रस्सी चन) का खैंचना।

उनचास [वि.] (हिं.) चालीस और नौ

एक कम पचास ।

उनतीस [वि.] (हि) बीस और नौ '२९'। एक कम तीस ।

उनदा× [क्रि.] (हि.) उनींदा । नींद से भरा ।

उनदौंहा [वि.] (हि.) देखो 'उनींदा' ।

उनमद* [वि] (हि.) मतवाला । उन्मत्त ।

उनमना* [वि.] (हि.) देखो 'अनमना' ।

उनमाथना* [क्रि. स] (हिं.) मथ डालना । विलोड़न करना ।

उनमाथी* [वि.] (हिं.) मथनेवाला । विलोड़न करने वाला ।

उनमाद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उन्माद' ।

उनमान* [वि.] (हिं.) १-अनुभव । ध्यान । समझ । २-अटकल । अंदाज । [संज्ञा पु.] १-नाप । तौल । थाह । परिमाण । २-शक्ति सामर्थ्य । [वि.] तुल्य । समान । सदृश ।

उनमानना* [क्रि. स.] (हि.) १-अनुमान करना। अन्दाज लगाना ।

उनमुना* [वि.] (हि.) मौन । चुपचाप । मूक ।

उनमूलना* [क्रि. स.] (हि.) उखाड़ना ।

उनमेख+ [संज्ञा पु] (हि.) १-आँख खुलना । उन्मेष । २-फूल खिलना ।

उनमेखना* [क्रि. स.] (हि.) १-उन्मीलित होना आँख का खुलना । २-विकसित होना (फूलों आदि का) ।

उनमेद [संज्ञा पु.] (हि.) वर्षा के आरम्भ में होने वाले जल का जहरीला फेन । मौजा ।

उनरना* [क्रि. अ.] (हि.) १-उठना । चढ़ना । उमड़ना । २-उछलते कूदते हुए चलना ।

उनवना* [क्रि. अ.] (हि.) १-झुकना । लटकना २-छाना । घिर आना । ३-ऊपर पड़ना । टूटना ।

उनवर* [वि.] (हि.) कम । न्यून ।

उनवान* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अनुमान' ।

उनसठ [वि.] (हि.) पचास और नौ '५९'।

उनसठि * [वि.] (हि.) देखो 'उनसठ' ।

उनहत्तर [वि.] (हि.) साठ और नौ '६९' ।

उनहत्तरि* [वि.] (हि.) देखो 'उनहत्तर' ।

उनहानि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) समता । बराबरी ।

उनहार* [वि.] (हि.) समान । सदृश । बराबर ।

उनहारि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) समानता । सादृश्य । बराबरी ।

उनाना*+ [क्रि. स.] (हि.) १-झुकाना । मोड़ना । २-लगाना । प्रवृत्त करना । ३-सुनना । ४-आज्ञा मानना ।

उनासी*+ [वि.] (हि.) देखो 'उन्नासी' ।

उनींदा [वि.] (हिं.) ऊंघता हुआ । नींद से भरा हुआ ।

उन्नइस* [वि.] (हि.) देखो 'उन्नीस' ।

उन्नत [वि.] (सं.) १-ऊंचा उठा हुआ । २-समृद्ध । बढ़ा हुआ । ३-श्रेष्ठ । बड़ा । महान्

उन्नतांश [संज्ञा पु.] (सं.) ऊंचाई । दूज के चन्द्रमा का वह सिरा जो दूसरे से ऊंचा हो २-किसी आधार, स्तर अथवा रेख से ऊपर की ओर का विस्तार । ऊंचाई ।

उन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृद्धि । बढ़ती । समृद्धि । २-ऊंचाई । चढ़ाव ।

उन्नतोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १--चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल । २-वह वस्तु जिसका ऊपरी भाग उभड़ा हुआ हो ।

उन्नवी [संज्ञा पुं.] (सं.) संकीर्ण राग का एक भेद

उन्नयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर की ओर उठाना या उन्नत करना । २-उच्च पद अथवा ऊंची कक्षा में भेजा जाना ।

उन्नाव [संज्ञा पु.] (अ.) बेर के समान सूखा फल जो हकीमी नुसखों में पड़ता है ।

उन्नावी [वि.] (अ.) कालापन लिए हुए लाल रंग का । उन्नाव के रंग का ।

उन्नाय [संज्ञा पु.] (सं.) १--उठाना या ऊपर ले जाना । २-सोच विचार ।

उन्नायक [वि.] (सं.) १-ऊँचा या उन्नत करने वाला । २-तरक्की देने वाला । बढ़ाने वाला।

उन्नासी [वि.] (हि.) सत्तर और नौ । एक कम अस्सी ।

उन्निद्र [वि.] (सं.) १-निद्रा रहित । जागता हुआ । २--विकसित । खिला हुआ ।

उन्नीत [वि.] (सं.) १-ऊपर की कक्षा या पद में तरक्की पाया हुआ । २-ऊपर चढ़ाया या पहुँचाया हुआ ।

उन्नीस [वि.] (हि.) दस और नौ '१९'।
उन्नीस बिस्वे-१-अधिकतर । २-प्रायः ।
उन्नीस होना-१-थोड़ा कम होना । २-गुण में घट कर होना । *उन्नीस बीस होना*-१-थोड़ा कम होना । २-भला बुरा होना ।
उन्नीस बीस का फर्क-बहुत ही थोड़ा अंतर।

उन्नीसवां [वि.] (हि.) अठारहवें के बाद का ।

उन्नेता [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाले सोलह ऋत्विजों में से चौदहवां ।

उन्मंथ, उन्मन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग ।

उन्मत [वि.] (सं.) १-मतवाला । मदांध । २-बेसुधा । ३-पागल । सिड़ी । विक्षिप्त ।

उन्मतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पागलपन । विक्षिप्तता । मतवालापन ।

उन्मथन [संज्ञा पु.] (सं.) धक्कामुक्की । मारकाट ।

उन्मथित [वि.] (सं.) रगड़ा या मथा हुआ ।

उन्मद [वि.] (सं.) १-मदांध । उन्मत्त । २-बेसुध ।

उन्मनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हठ योग की एक मुद्रा

उन्माद [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक रोग जिसमें मन तथा बुद्धि का कार्यक्रम बिगड़ जाता है। पागलपन । विक्षिप्तता । २-रस के ३३ संचारी भावों में से एक ।

उन्मादक [वि.] (सं.) १-नशा पीने वाला । २-पागल करने वाला ।

उन्मादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उन्मत या मतवाला करने की क्रिया या भाव । २-कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

उन्मादी [वि.] (सं.) उन्मत्त । मतवाला । पागल ।

उन्मादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजया । भांग ।

उन्मान [संज्ञा पु.] (सं.) १-नापने या तोलने का कार्य । २-नाप । तोल । ३-किसी का मान, महत्व या मूल्य समझना ।

उन्मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुपथ । कुमार्ग । बुरी राह । ३-निकृष्ट आचरण । बुरा ढंग ।

उन्मार्गगामी [वि.] (सं.) बदचलन । पथभ्रष्ट ।

उन्मार्गी [वि.] (सं.) कुमार्गी । कुपथ पर चलने वाला ।

उन्मिषित [वि.] (सं.) १-खुला हुआ । २-विकसित । खिला हुआ ।

उन्मीलन [संज्ञा पु.] (सं.) (आँख का) खुलना । २-खिलना । विकसित होना ।

उन्मीलना* [क्रि. स.] (हि.) खोलना (आँख) ।

उन्मीलित [वि.] (सं.) खुला हुआ । प्रकाशित । [संज्ञा पु.] एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच इतना अधिक सादृश्य वर्णन किया हो कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े ।

उन्मुक्त [वि.] (सं.) खुला हुआ । बंधनरहित ।

उन्मुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छुटकारा । २-अभियोग आदि से छुटकारा । ३-नियम के बंधनों से किसी विशेष कारण से छुटकारा पाना या मुक्त होना ।

उन्मुख [वि.] (सं.) १-उर्ध्व मुख या ऊपर मुँह किये हुए । २-उत्सुक । उत्कंठित । ३-उद्यत । तैयार ।

उन्मुखता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उन्मुख होने का भाव ।

उन्मूल [वि.] (सं.) जड़ से उखाड़ा हुआ ।

उन्मूलक [वि.] (सं.) जड़ समेत उखाड़ने वाला। समूल नष्ट करके वाला । बरबाद करने वाला

उन्मूलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जड़ से उखाड़ना । समूल नष्ट करना । २-पहले की आज्ञा या आदेश, निश्चय अथवा कार्य न रहने देना । ३-अस्तित्व मिटाना ।

उन्मूलनीय [वि.] (सं.) १-उखाड़ने योग्य । २-नष्ट करने योग्य । अस्तित्व मिटाने योग्य ।

उन्मूलित [वि.] (सं.) १-उखाड़ा हुआ । २-नष्ट किया हुआ । ३-जिसका अस्तित्व ही मिटा

दिया हो।

उन्मेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-(आँख का खुलना। २-थोड़ा प्रकाश। चमक। ३-विकास। खिलना।

उन्मोचन [संज्ञा पु.] (सं) १-देखो 'मोचन'। २-किसी विशेष कारण से किसी को किसी नियम के प्रतिबन्ध से अलग रखना।

उन्हाँलागम* [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रीष्म ऋतु। जेष्ठ तथा असाढ़।

उन्हानि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) समता। बराबरी। सादृश्य।

उन्हारि* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समानता। एकरूपता। २-सूरत। आकृति।

उपंग, उपङ्ग [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का बाजा।

उपंत* [वि.] (हि.) उत्पन्न। पैदा।

उप [उप.] (सं.) एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लग कर उनमें समीपता, सादृश्य, सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, पूजा, मारण, तथा उद्योग के अर्थों को प्रकाशित करता है।

उपकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आख्यायिका। कहानी

उपकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनी कन्या की सहेली।

उपकर [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ विशेष अवस्थाओं में या विशिष्ट पदार्थों पर लगने वाला कर या महसूल। विकर।

उपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामग्री। सामान। २-राजा के छत्र, चमर आदि चिह्न। ३-साधन।

उपकरना* [क्रि. स.] (हिं.) उपकार या भलाई करना।

उपकर्त्ता [वि.] (सं.) उपकार करने वाला।

उपकल्पन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य की तैयारी। आयोजन।

उपकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हित साधन। भलाई। नेकी। २-लाभ। फायदा।

उपकारक [वि.] (सं.) उपकार करने वाला। भलाई करने वाला।

उपकारिका [वि.] (सं.) उपकार करने वाली। [संज्ञा स्त्री] १-खेमा। तम्बू। २-राजभवन।

उपकारिता[संज्ञा स्त्री.] (सं.) भलाई। सहाय्य। प्रयोजन की सिद्धि।

उपकारी [वि.] (सं.) १-उपकार करने वाला। २-लाभ पहुंचाने वाला।

उपकार्य्य [वि.] (सं.) जिसके साथ उपकार या भलाई करना योग्य हो।

उपकूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी या समुद्र आदि के तट के पास की भूमि।

उपकृत [वि.] (सं.) १-जिसके साथ उपकार किया गया हो। २-कृतज्ञ।

उपकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपकार। एहसान।

उपकेश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनावटी बाल या केश।

उपक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्यारम्भ की पहली अवस्था। अनुष्ठान। २-किसी कार्य के आरम्भ होने से पूर्व का आयोजन या तैयारी ३-भूमिका। ४-चिकित्सा। इलाज।

उमक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) आरम्भ। अनुष्ठान। २-आयोजन। तैयारी। ३-भूमिका।

उपक्रमणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पुस्तक की भूमिका।

उपक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपकार। भलाई।

उपक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) निंदा। अपमान।

उपक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक अभिनय के आरम्भ में नाटक की कथा का संक्षेप। ३-ठेका पाने की इच्छा से व्यय आदि के विवरण से युक्त पत्र जो ठेका या काम मिलने से पूर्व दिया जाता है। टेंडर।

उपखंड, उपखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) विधि-विधानों में किसी धारा अथवा उपधारा के अंश। या खंड का कोई विभाग।

उपखान* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उपाख्यान'।

उपगंता, उपगन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहुँचाने वाला। २-जानने वाला। स्वीकार करने वाला।

उपगत [वि.] (सं.) १-प्राप्त। उपस्थित। २-ज्ञात। जाना हुआ। ३-स्वीकार किया हुआ। ४-व्यय, भार आदि के रूप में आया या लगा हुआ।

उपगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्राप्ति। स्वीकृति। २-ज्ञान।

उपगम [संज्ञा पु.] (सं.) अंगीकार। स्वीकृति।

उपगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पास जाना। २-स्वीकार। ३-ज्ञान।

उपगाता [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का वह ऋत्विज जो गाने में उद्गाता का साथ देता है।

उपगामी [वि.] (सं.) समीप या पास उपस्थित होने वाला।

उपगीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्य्याछंद का एक भेद।

उपगूढ [वि.] (सं.) गुप्त। छिपाया हुआ। नियन्त्रित।

उपगूहन [संज्ञा पु.] (सं.) आलिङ्गन।

उपग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरफ्तारी। २-पकड़ा जाना। ३-कैद। ४-कैदी। ५-अप्रधान ग्रह। किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमने वाला छोटा ग्रह।

उपग्रहण [संज्ञा पु.] (सं) १-स्वीकृति। मंजूरी। २-कैद करना। ३-संस्कारपूवक अध्ययन। पड़ना।

उपघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग। बीमारी। अशक्ति। इन्द्रियों का कार्य न करना। विनाश। ४-चोट। आघात।

उपघातक [वि.] (सं.) पीड़ा देने वाला। करने वाला।

उपघाती [वि.] (हि.) देखो 'उपघातक'।

उपचना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-उन्नत हो बढ़ना। २-उफनना।

उपचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) उपनेत्र। चश्मा।

उपचय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृद्धि। बढ़ती। २-संचय। जमा करना।

उपचरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पास जा पहुँचना। सेवा। पूजा करना।

उपचरित [वि.] (सं.) १-सेवित। पूजित। लक्षणों से जाना हुआ।

उपचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेवा। परि २-चिकित्सा। इलाज।

उपचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार। विधान। २-चिकित्सा। इलाज। की हानि अथवा अपकार का प्रतिकार। घूस। रिश्वत। ५-सेवा। ६-पूजन या विधान। ७-खुशामद। ८-एक प्रका संधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श हो जाता है। जैसे-निःछल से नि निःसंदेह से निस्संदेह। रेमेडी।

उपचारक [वि.] (सं.) १-उपचार करने वा सेवा करने वाली। २-विधान करने ३-चिकित्सा करने वाला।

उपचारछल [संज्ञा पु] (सं.) न्यायमत के सार अशुद्ध प्रयोग से अर्थ का निरा

उपचारना* [क्रि. स.] (हि.) १-व्यवह लाना। २-विधान करना।

उपचारपर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्णतया में लगा हुआ व्यक्ति। २-दृढ़ सेवक।

उपचारात् [क्रि. वि.] (सं.) केवल दिखावे या रस्म अदा करने के रूप में।

उपचारी [वि.] (सं.) देखो 'उपचारक'।

उपचार्य [वि.] (सं.) १-उपचार करने सेवा करने योग्य। २-चिकित्सा।

उपचित [वि.] (सं.) १-इकट्ठा किया हु संचित। २-बढ़ा हुआ। समृद्ध।

उपचिति [संज्ञा स्त्री.] १-संग्रह। उन्नति।

उपचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) समवृत्त वर्ण का एक भेद।

उतचित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोलह मात्रा का एक भेद।

उपच्छाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वस्तु मूलछाया के अतिरिक्त इधर-उधर पड़ने उसकी मंद आभा या हलकी झलक,

के समय चन्द्रमा अथवा पृथ्वी की वास्तविक छाया के अतिरिक्त दृष्टिगोचर होती है

उपज [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-पैदावार । उत्पत्ति । २-सूझ । नई उक्ति । उद्भावना । ३-मनगढंत बात । ४-गाने की सुंदरता के निश्चित तानों के अलावा अपनी ओर से कुछ तान मिला देना ।

उपजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पैदा । होना । उत्पन्न होना । २-उगना ।

उपजाऊ [वि.] (हिं.) जिसमें अधिक उपज हो । उर्वर । जरखेज ।

उपजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोत्र । २-वे छंद जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा तथा वंशस्थ और इन्द्रवंशा के योग से बनते हैं ।

उपजाना [क्रि स] (हिं) उत्पन्न करना । पैदा करना ।

उपजीविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रधान जीविका के अतिरिक्त जीवन निर्वाह का और कोई साधन । २-जीवन निर्वाह के लिए मिलने वाली अतिरिक्त सहायता या वृत्ति ।

उपजीवी [वि.] (सं.) १-दूसरे के आश्रय पर निर्वाह करने वाला । २-वेतनभोगी ।

उपज्ञा [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह ज्ञान जो विना उपदेश के आता हो । २-कोई नया यंत्र, पदार्थ या प्रक्रिया ढूंढ़ निकालना । ईजाद ।

उपटन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उबटन' ।

उपटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना । निशान पड़ना । २-उखड़ना ।

उपटा [संज्ञा पु.] (हि) १-पानी की बाढ़ । २-ठोकर ।

उपटाना* [क्रि. स.] (हि.) १-उबटन लगवाना । २-हटवाना । उखड़वाना ।

उपटारना* [क्रि. सं.] (हिं.) १-जगह से उठा देना । उच्चाटन करना । २-हटाना ।

उपड़ना [क्रि. अ.] (हि.) १-उखड़ना । २-उपटना । निशान होना ।

उपतप्त [वि.] (सं.) १-जलाभुना । २-कष्ट या संकट में पड़ा हुआ ।

उपताप [संज्ञा पु.] (सं.) उत्ताप । रोग । पीड़ा । दुःख ।

उपत्यका [संज्ञा स्त्री] (सं.) पर्वत के पास की भूमि । तराई ।

उपदंश [संज्ञा पु.] (सं.) शिश्न (लिंग) पर घाव पड़ जाने का रोग । आतशक । गरमी । फिरंग रोग ।

उपदग्ध [वि] (सं) थोड़ा जला हुआ ।

उपदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल । पहरेदार ।

उपदान [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो किसी को उसे सन्तुष्ट या प्रसन्न करने के लिये दिया जाय । आनुतोषिक । पैंचुश्टी ।

उप-दित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दित्यापत्र (इच्छापत्र) या वसीयतनामें के अंत लिखा हुआ परिशिष्ट रूप में कोई संक्षिप्त लेख या टिप्पणीकरण के रूप में होती है । कांडिसिल

उपदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो दिशाओं के मध्य की दिशा । कोण ।

उपदिष्ट [वि.] (सं.) १-जिसे उपदेश दिया गया हो । २-जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो । ज्ञापित ।

उपदेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिक्षा । सीख । नसीहत । हित की बात बतलाना । २-दीक्षा । गुरुमंत्र ।

उपदेशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपदेश करने वाला । शिक्षा देने वाला । २-घूम फिर कर अच्छी बातों का प्रचार करने वाला व्यक्ति ।

उपदेश्य [वि.] (सं.) १-जिसे उपदेश देना उचित हो । २-जिस (बात) का उपदेश करना उचित हो । ३-शिक्षा देने योग्य ।

उपदेष्टा [वि.] (सं.) उपदेश देने वाला ।

उपदेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उपदेश'।

उपदेसना* [क्रि. स.] (हिं.) १-उपदेश देना । २-शिक्षा देना ।

उपद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पात । हलचल । ऊधम । दंगाफसाद । २-किसी प्रधान रोग के बीच में होने वाले अन्य विकार या पीड़ा

उपद्रवी [वि.] (सं.) १-उत्पाती । ऊधम मचाने वाला । दंगाफसाद करने वाला । -नटखट फसादी ।

उपद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा टापू । प्रायद्वीप

उपधरना* [क्रि. अ.] (हिं.) स्वीकार करना । ग्रहण करना । अपनाना ।

उपधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छल । धोखा । २-उपाधि । ३-व्याकरण में किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले का अक्षर ।

उपधातु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ प्रधान धातुओं के मेल से बनने वाली धातु या उनके विकार अथवा मैल से बनने वाली धातुओं को 'उपधातु' कहते हैं । जैसे—सोनामक्खी, कांसा आदि ।

उपधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-तकिया । गेडुआ । २-विशेषता । ३-प्रेम । प्रणय ।

उपधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विधान या किसी लेख के अन्तर्गत आने वाली धारा का कोई विभाग या अंग ।

उपधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-छल । कपट । २-भय । डर ।

उपध्मा [संज्ञा स्त्री] (सं.) सांस लेने की क्रिया ।

उपनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सत्ताईस नक्षत्रों के छोटे-छोटे तारे ।

उपनत [वि.] (सं) नम्र । झुका हुआ ।

उपनद्ध [वि.] (सं.) १-बंधा हुआ । २-नथा हुआ ।

उपनना* [क्रि. अ.] (हिं.) उपजना । पैदा होना ।

उपनय [संज्ञा. पु.] (सं) १-समीप ले जाने का कार्य । २-बालक को गुरु के पास ले जाने का कार्य । ३-उपनयन संस्कार । ४-न्यायमत से कोई उदाहरण देकर उसका धर्म या सिद्धांत और कहीं सिद्ध करना । ५-अपने पक्षपोषण करने या इसी प्रकार के अन्य कार्य के लिये किसी उक्ति, सिद्धांत, विधि आदि का उल्लेख करना ।

उपनयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकट लाना । पास ले जाना । २-यज्ञोपवीतसंस्कार । जनेऊ ।

उपनागरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अलंकार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद जिसमें कान को मधुर लगने वाले वर्ण आते हैं ।

उपनाना* [क्रि. स.] (हिं.) उत्पन्न करना । पैदा करना ।

उपनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाम के अतिरिक्त अन्य नाम । प्रचलित नाम । २-पदवी । उपाधि ।

उपनायक [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में नायक (मुख्य पात्र) का साथी या सहकारी ।

उपनायन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उपनयन'।

उपनाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सितार की खूटी जिसमें तार बंधे रहते हैं । २-मरहम । ३-आँख का एक रोग । बिलनी ।

उपनिधि [संज्ञा स्त्री] (सं.) अमानत । धरोहर ।

उप,निबंधक, उपनिबन्धक [संज्ञा पु.] (सं) निबंधक के आधीन रहकर उसका या उसके समान कार्य करने वाला व्यक्ति । सब रजिस्ट्रार

उप-नियम [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नियम के अन्तर्गत बना हुआ और छोटा नियम । सब रूल ।

उप-निर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) वह निर्वाचन या चुनाव जो किसी सत्र की अवधिपूर्ण होने से पहले किसी विशेष कारण से उस स्थान अथवा पद के रिक्त हो जाने पर उसकी पूर्त्ति के लिए किया जाता है ।

उपनिविष्ट [वि.] (सं.) दूसरे स्थान से आकर बसने वाला ।

उपनिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना । २-अन्य स्थान से आकर बसे हुए लोगों की बस्ती । एक देश के लोगों की दूसरे देश में आबादी । कालोनी । ३-बाहरी तत्वों, कीटाणुओं आदि का किसी जगह एक त्रित होना

उपनिवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) उपनिवेश बसाने का कार्य । उपनिवेश-स्थापना ।

उपनिवेशित [वि.] (सं.) दूसरे स्थान या देश से आकर बसा हुआ ।

उपनिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेद की शाखाओं

के ब्राह्मणों के वे अन्तिम भाग जिसमें आत्मा तथा परमात्मा आदि का निरूपण है। २-समीप बैठाना। ३-ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिये गुरु के पास बैठाना।

उपनीत [वि] (सं.) १-पास लाया हुआ। २-जिसका उपनयन संस्कार होगया हो।

उपनीता [संज्ञा स्त्री] (सं) ब्याह कर लाई हुई स्त्री।

उपनेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-ले जाने वाला। २-भेंट चढ़ाने वाला। ३-उपनयन कराने वाला गुरू या आचार्य।

उपनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों पर लगाने का चश्मा।

उपन्ना [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उपरंना'।

उपन्यस्त [वि.] (सं.) १-पास रक्खा हुआ। २-धरोहर या अमानत में रक्खा हुआ।

उपन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाक्य का प्रयोग। बंधान। २-वह कल्पित बड़ी कहानी जिसमें बहुत से पात्र तथा जीवन के सब अंगों पर प्रकाश डालने वाली विस्तृत घटनाएं हों।

उपपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरे की विवाहिता पत्नी से प्रेम करने वाला पुरुष। २-दूसरे की स्त्री से प्रेम किया जाने वाला पुरुष। यार। जार।

उपपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-युक्ति। हेतु। २-संगति। घटना। प्राप्ति। सिद्धि। प्रतिपादन

उपपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पुरुष से फँसी हुई दूसरे की पत्नी या स्त्री।

उपपन्न [वि.] (सं.) १-पास आया हुआ। २-शरणागत। ३-प्राप्त। लब्ध पाया हुआ। मिला हुआ। ४-युक्त। सम्पन्न। ५-उपयुक्त।

उपपातक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा पाप।

उपपादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिद्ध करना। ठहराना। २-सम्पादन करना।

उपपादनीय [वि.] (सं.) सिद्ध करने योग्य। प्रतिपादनीय।

उपपादित [वि.] (सं.) १-युक्ति द्वार। समर्थन किया हुआ। २-सम्पादित।

उपपाद्य [वि.] (सं.) प्रतिपादन या सिद्ध किये जाने योग्य।

उपपुर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर अथवा केन्द्र के आस-पास के स्थान का क्षेत्र।

उपपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह मुखपुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण। यह भी गिनती में १८ हैं।

उपप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पात। दंगा-फसाद। हलचल। २-बाढ़। ३-भूकम्प। ४-आँधी। तूफान। ५-विघ्न। ६-राहु।

उपप्लवी [वि.] (सं.) १-उपद्रव मचाने वाला। आफत ढाने वाला। २-डुबाने वाला। ३-जिस पर या जहाँ पर आपत्ति आई हो। जिस पर ग्रहण लगा हो।

उपबंध, उपबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) निर्देश।

उपबंधित, उपबन्धित [वि.] (सं.) निर्देशित।

उपबरहन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तकिया'।

उपभुक्त [वि.] (सं.) १-जिसका भोग किया गया हो। व्यवहार में लाया हुआ। बर्त्ता हुआ। २-जूठा। उच्छिष्ट।

उपभोक्ता [वि.] (सं.) १-उपभोग करने वाला। काम में लाने वाला।

उपभोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु के व्यवहार का सुख या आनन्द लेना।
२-काम में लाना। बरतना।

उपभोगी [वि.] (सं.) उपभोग करने वाला।

उपभोग्य [वि.] (सं.) उपभोग करने योग्य।

उपमंडल, उपमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मंडल अथवा जिले का विशेष छोटा भाग। तहसील।

उपमंत्री, उपमन्त्री [संज्ञा प.] (सं.) वह मंत्री के नीचे हो।

उपमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरी तरह से दबाना यो रौंदना। २-उपेक्षा या तिरस्कार करना।

उपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सादृश्य। समानता। तुलना। मिलान। २- एक अर्थालंकार जिसमें समानता न होने पर भी किसी की, किसी प्रसिद्ध वस्तु से तुलना की जाय।

उपमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धाय। माता के समान स्त्री। [वि.] (सं.) उपमा देने वाला।

उपमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिस के साथ समता की जाय। २-न्याय में चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। ३-२३ मात्राओं का एक छंद जिसमें तेरहवीं मात्रा पर विराम होता है।

उपमानलुप्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) लुप्तोपमा का भेद। वह लुप्तोपमा अलंकार जिसमें उपमा के चारों अंगों में से उपमान लुप्त हो।

उपमित [वि.] (सं.) जिसकी उपमा दी गई हो। [संज्ञा पु] (सं.) कर्मधारय के अन्तर्गत एक समास जो दो शब्दों के उपमावाचक शब्द का लोप करके बनाया जाता है। जैसे घनश्याम।

उपमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा या सादृश्य से होने वाला ज्ञान।

उपमेय [वि.] (सं.) उपमा के योग्य। जिसकी उपमा दी जाय। वर्ण्य। [संज्ञा पु.] वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु सदृश बताई गई हो।

उपमेयोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय को उपमान के समान तथा उपमान को उपमेय के समान बताया। जाय।

उपयना* [क्रि. अ.] (हिं.) रहजाना। उड़जाना।

उपयंता, उपयन्ता [वि.] (हिं.) विवाह करने वाला। वर। पति।

उपयंत्र, उपयन्त्र [संज्ञा पु] (सं.) जर्राहों का एक यंत्र।

उपयमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विवाह। ३-बटा हुआ कुश।

उपयुक्त [वि.] (सं.) उचित। योग्य। मुनासिब।

उपयुक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग्यता। औचित्य।

उपयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम। प्रयोग। २-योग्यता। ३-लाभ। प्रयोजन। आवश्यकता।

उपयोगिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाभकारी में आने की योग्यता।

उपयोगिता-वाद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तथा बात का विचार केवल उसकी या लाभकारिता की दृष्टि से किया सिद्धान्त।

उपयोगी [वि.] (सं.) १-काम में प्रयोजनीय। २-लाभकारी। मुआफिक।

उपयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने काम में लाना।

उपरंजक, उपरञ्जक [वि.] (सं.) २-प्रभावकारी। असर डालने वाला [संज्ञा पु.] सांख्य में वह वस्तु आभास उसकी पास वाली वस्तु है।

उपरंजन, उपरञ्जन [संज्ञा पु.] वस्तु या बात का अन्य वस्तु अथवा पड़ने वाला ऐसा अनिष्ट प्रभाव वित होने वाली वस्तु या बात की कम होती है।

उपरंजित, उपरञ्जित [वि.] (सं.) जिस का कोई प्रतिकूल या अनिष्ट प्रभाव

उपरक्त [वि.] (सं.) देखो 'उपरंजित'।

उपरत [वि.] (सं.) १-विरक्त। उदास भरा हुआ।

उपरति [संज्ञा पु.] (सं.) १-विषय से विरति। त्याग। २-उदासी। मौत।

उपरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) कम मूल्य के

उपरना [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊपर ओढ़ने चादर। दुपट्टा।

उपरफट, उपरफट्ट [वि.] (हिं.) ऊपरी। व्यर्थ का निष्प्रयोजन।

उपरम [संज्ञा पु.] (सं.) वैराग्य। विरति।

उपरवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाँगर भूमि।

उपरस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में पारे

गुण वाले पदार्थ। गंधक, ईंगुर, अभ्रक, मैनशिल, सुर्मा, तूतिया, लाजवर्द पत्थर, चुम्बक पत्थर, फिटकिरी, शंख, खड़िया मिट्टी, गेरू, मुलतानी मिट्टी, कौड़ी, कौसीस और बालू यह सब उपरस कहलाते हैं।

उपरहित* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पुरोहित'।

उपरहिती* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पुरोहिती'।

उपराँठा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पराँठा, परोंठा, पराँवठा'।

उपरांत, उपरान्त [क्रि. वि.] (सं.) अनन्तर। बाद। पीछे।

उपराग [संज्ञा पु.] (सं.) १–रंग। २–किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास पड़ना। ३–वासवा। ४–चाँद या सूर्य। ग्रहण।

उपरा-चढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक ही कार्य के लिये कई आदमियों का उद्योग। स्पर्द्धा।

उपराज [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का प्रतिनिधि।

उपराजना* [क्रि. स.] (हि.) १–उत्पन्न करना। २–रचना। बनाना। निर्माण करना। ३–उपार्जन करना। कमाना।

उपराजप्रमुख [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य के वैधानिक शासक का सहायक। जो राजप्रमुख अनुपस्थिति में उसका कार्य भार संभालता है।

उपराज्यपाल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी उपप्रान्त या प्रदेश जिसमें चीफ कमिश्नर शासन करता हो उसमें राज्यपाल के अधिकारों से युक्त कार्य करने वाला शासक।

उपराना+ [क्रि. अ.] (हि.) १–ऊपर आना। उठना। २–प्रगट होना। ३–उतरना।

उपराम [संज्ञा पु.] (सं.) १–त्याग। उदासीनता। २–आराम। विश्राम। ३–निवृति। छुटकारा।

उपराला [संज्ञा पु.] (हिं.) सहायता। मदद। रक्षा।

उरावटा [वि.] (हि.) अभिमाननी। गर्व से सिर ऊंचा किया हुआ।

उपराष्ट्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) राष्ट्रपति की मृत्यु, पदत्याग या पद से हटाये जाने अथवा अन्य कारण से उस पद में हुई रिक्तता की अवस्था में अनुपस्थिति, बीमारी या अन्य किसी कारण से जब राष्ट्रपति अपने कृत्य को करने में असमर्थ हो तब उपराष्ट्रपति उसके कृत्यों का निवाह न करेगा। राष्ट्रपति का सहायक जो उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य करे।

उपराहीं* [क्रि. वि.] (हि.) ऊपर।

उपरि [क्रि. वि.] (सं.) ऊपर।

उपरिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) परोंठा या पराँवठा।

उपरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'ऊपरी' 'उपली'।

उपरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक के भेदों में से दूसरा भेद। छोटा नाटक।

उपरैना* [संज्ञा पु.] (हिं.) दुपट्टा। चद्दर।

उपरैनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओढ़नी।

उपरोक्त [वि.] (हि.) ऊपर कहा हुआ। पहले कहा हुआ।

उपरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १–रुकावट। रोक। २–आच्छादन। ढकना। आड़।

उपरोधक [संज्ञा पु.] (सं.) १–रोकने या बाधा डालने वाला। २–भीतर की कोठरी।

उपरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) रुकावट। अड़चन। प्रतिबन्धन।

उपरोधी [वि.] (सं.) रोकने या बाधा डालने वाला।

उपरोहित+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पुरोहित'।

उपरोहिती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुरोहिती'

उपरौंछा+ [क्रि. वि.] (हिं.) ऊपर की ओर।

उपरौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊपर का पल्ला।

उपरौठा+ [वि.] (हि.) ऊपर वाला। ऊपर की ओरका।

उपरौना* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उपरना'।

उपर्युक्त [वि.] (सं.) ऊपर कहा हुआ। पहले कहा हुआ।

उपल [संज्ञा पु.] (सं.) १–पत्थर। २–ओला। ३–रत्न। ४–बादल।

उपलक्ष [संज्ञा पु.] देखो 'उपलक्ष्य'।

उपलक्षक [वि.] (सं.) अनुमान करने वाला। तोड़ने वाला। उद्भावना करने वाला। [संज्ञा पु.] उपादान के लक्षण से भिन्न बोधक शब्द।

उपलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १–बोध कराने वाला चिह्न या संकेत। २–अपनी तरह दूसरी वस्तु को बताने वाला शब्द।

उपलक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–संकेत। चिह्न। २–दृष्टि। उद्देश्य।

उपलब्ध [वि.] (सं.) १–प्राप्त। मिला हुआ। २–जाना हुआ।

उपलब्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–प्राप्ति। २–बुद्धि। ज्ञान। समझ।

उपला [संज्ञा पु.] (हिं.) जलाने के लिये पाथकर सुखाया हुआ गोबर। कंडा। गोहरा।

उपली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा उपला। कंडी। चिपड़ी।

उपलेप [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी वस्तु से लीपना या पोतना। २–गाय के गोबर से लीपना।

उपलेपन [संज्ञा पु.] (सं.) लीपने का काम।

उपल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊपर की पर्त या तह।

उपवन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाग। बगीचा। फुलवारी। कुंज २–छोटे-छोटे जंगल।

उपवना* [क्रि. अ.] (हि.) ऊपर जाना। उड़ जाना। अदृश्य हो जाना।

उपवर्ण्य [संज्ञा पु.] (सं.) उपमान। वह जिससे उपमा दी जाय।

उपवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) गाँव। बस्ती।

उप-वाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बड़े वाक्य का वह भाग जिसमें कोई समापिका क्रिया हो।

उपवाद [संज्ञा पु.] (सं.) अपवादी। निंदा।

उपवास [संज्ञा पु.] (सं.) अनशन। भोजन का छूटना। फाका।

उप-विधि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह छोटी विधि जो किसी के आधीन हो।

उपविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विभाग के अन्तर्गत बना हुआ विभाग।

उपविष [संज्ञा पु.] (सं.) हलका विष। जैसे— अफीम। धतूरा।

उपविषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस।

उपविष्ट [वि.] (सं.) बैठा हुआ।

उपवीत [संज्ञा पु.] (सं.) १–जनेऊ। यज्ञसूत्र। २–उपनयन।

उपवेद [संज्ञा पु.] (सं.) वे विद्याएं जो वेदों से निकली हुई कही जाती हैं।

उपवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बैठना। २–जमना। स्थित होना।

उपवेशित [वि.] (सं.) बैठा हुआ।

उपशम [संज्ञा पु.] (सं.) १–इन्द्रियनिग्रह। तृष्णा का नाश। २–निवृत्ति। छुटकारा। ३–किसी के क्लेशों या विपत्तियों के निवारण की युक्ति या उपाय।

उपशमक [वि.] (सं.) शांति प्रदान करने वाला।

उपशमन [संज्ञा पु.] (सं.) १–दबाना। शांत रखना। २–निवारण।

उपशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–नगर के आस-पास की जमीन। २–भाला।

उपशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी शाखा। डाल

उपशाला [संज्ञा पु.] (सं.) मकान का वह भाग जो लोगों के उठने बैठने के लिए बनाया गया हो। दालान। कमरा। बैठक।

उप-शिष्य (सं.) चेले का चेला।

उप-संपादक, उप-सम्पादक [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी कार्य के मुख्य कर्ता का सहायक या एवज में काम करने वाला। २–किसी पत्र के सम्पादक का सहायक।

उपसंहार [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी पुस्तक का अंतिम प्रकरण जिसमें उसका उद्देश संक्षेप में बतलाया गया हो। २–परिहार। हरण। ३–समाप्ति। ४–सारांश। निचोड़।

उपस + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुर्गन्ध। बदबू।

उपसना [क्रि. स.] (हिं.) दुर्गन्धित होना। सड़ जाना।

उप-सभापति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संस्था के सभापति या प्रधान के नीचे का अधिकारी जो सभापति की अनुपस्थिति में उसका सब कार्य संभालता है। उप प्रधान।

उप-समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी बड़ी सभा या समिति द्वारा बनाई हुई छोटी समिति।

उपसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अव्यय जो किसी शब्द के पहले जोड़ा जाता है और इसके अर्थ में विशेषता लाता है । २-अपशकुन। ३-दैवी उत्पात। उपद्रव। ४-किसी वस्तु के बनाते बनाते अन्य पदार्थ का भी उसके साथ बन जाना। जैसे-गुड़ बनाते समय सीरा भी बन जाता है।

उपसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढालना । २-उपद्रव। उत्पात। ३-गौण वस्तु। ४-त्याग।

उपसागर [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा समुद्र। खाड़ी।

उपसना [क्रि. स.] (हि.) बासी करना। सड़ाना

उपसेचन [संज्ञा पु.] (सं.) पानी से सींचना। पानी छिड़कना। तर करना।

उपस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर का सामान या सजावट की सामग्री। २-कोई चीज बनाने या कोई कार्य करने का छोटा यंत्र।

उपस्करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर, वास-स्थानादि सजाने का कार्य।

उपस्कार [वि.] (सं.) घर की सजावट में काम आने वाली । वस्तुएं। जैसे मेज, कुरसी, अलमारी आदि। [संज्ञा पु.] घर की सजावट का सामान। फरनीचर।

उपस्कृत [वि.] (सं.) उपस्कारों द्वारा सजा हुआ (घर का कमरा)।

उपस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीचे या मध्य का भाग। २-पेड़ू। ३-पुरुषचिह्न। लिंग। ४-योनि। स्त्रीचिह्न। ५-गोद। ६-मलद्वार। [वि.] पास बैठा हुआ।

उपस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नितम्ब। चूतड़। कूल्हा। पेड़ू।

उपस्थली [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कूल्हा। २-कटि। ३-नितम्ब। चूतड़। ४-पेड़ू।

उपस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपस्थिति। पास या सामने आना। २- उपासना या पूजा के निमित्त निकट आना। ३-सभा। समाज।

उपस्थापक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वीकृत के लिए कोई विषय और विचार किसी सभा के सम्मुख उपस्थित करने वाला व्यक्ति। २-अभियोगों तथा वादों आदि से संबंधित कागज पत्रों न्यायालय के न्यायकर्त्ता के सम्मुख उपस्थित करके उन पर आज्ञाएं आदि लिखवाने वाला व्यक्ति। पेशकार।

उपस्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अधिकारी या सभा समाज के सम्मुख कोई विषय या प्रस्ताव स्वीकृत के निमित्त उपस्थित करना।

उपस्थायी [वि.] (सं.) उपस्थित होनेवाला।

उपस्थित [वि.] (सं.) १-पास आया हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाजिर। २-ध्यान में आया हुआ। याद।

उपस्थिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दस-दस वर्ण के चार पद का एक छंद। जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण, दो जगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

उपस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी।

उपस्थिति-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिक्षा संस्था का वह अधिकारी जो शिक्षार्थियों की उपस्थिति संबंधी देखभाल करता या उपस्थिति बढ़ाने का प्रयत्न करता हो।

उपस्थिति-पंजिका, पञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्यार्थियों कर्मचारियों आदि की उपस्थित का रजिस्टर (पंजिका)। हाजिरी का रजिस्टर।

उपस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यवस्था संबंधी गौण पुस्तक।

उपस्वत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जमीन या जायदाद से प्राप्त होने वाली आमदनी का अधिकार।

उपहत [वि.] (सं.) १-चोट खाया हुआ। २-आपत्ति में पड़ा हुआ। ३-नष्ट किया हुआ। ४-जिस पर किसी प्रकार का अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो।

उपहसित [संज्ञा पु.] (सं.) नाक फुलाकर आंखें टेढ़ी करके तथा गर्दन हिलाकर हँसने का ढंग। हास के छः भेदों में चौथा। [वि.] (सं.) उपहास किया हुआ।

उपहार [संज्ञा पु.] (सं) भेंट। नजर। नजराने की वस्तु।

उपहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-निंदासूचक हास। २-हँसी-ठट्टा। दिल्लगी।

उपहासक [वि.] (सं.) हंसी उड़ाने वाला।

उपहासास्पद [वि.] (सं.) १-हंसी उड़ाने लायक। उपहास के योग्य। २-निंदनीय।

उपहास्य [वि.] (सं.) देखो 'उपहासास्पद'।

उपहासी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंसी। ठट्ठा। निंदा।

उपहित [वि.] (सं.) १-ऊपर रक्खा हुआ। स्थापित। २-धारण किया हुआ। ३-पास लाया हुआ। दिया हुआ। ४-मिला हुआ। ५-उपाधियुक्त।

उपही* [संज्ञा पु.] (हि.) अपरिचित। अजनबी। बाहरी या विदेशी आदमी।

उपांग, उपाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंग का भाग। अवयव। २-किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति करने वाली वस्तु। ३-तिलक। टीका। ४-प्राचीन समय का एक बाजा।

उपांत, उपान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-आखिरी हिस्सा या भाग। २-आस-पास ३-छोटा किनारा। ४-कागज के बगलों का वह भाग जो कोई लिखने के वास्ते जोड़ा जाता है। मार्जिन।

उपांतस्थ, उपान्तस्थ [वि.] (सं.) हाशिये पर लिखा जाने वाला।

उपांतस्थसाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) उपांत या हाशिये पर हस्ताक्षर चिह्न करने वाला साक्षी।

उपांत्य, उपान्त्य [वि.] (सं.) अंति का। आखिरी के पास वाला।

उपाइ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो '

उपाउ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो '

उपाकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-योजना अनुष्ठान। २-यज्ञ में वेदपाठ।

उपाकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-संस्का ग्रहण। २-यज्ञोपवीत संस्कार।

उपाख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरा पुराना वृत्तांत। २-उपन्यास।

उपागत [वि.] (सं.) १-उपस्थित। ३-अनुभूत। मालूम किया हुआ।

उपाग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो '

उपाटना, उपाड़ना* [क्रि. स.] (हि.)

उपाति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो '

उपादान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राप्ति। स्वीकार। ग्रहण। ३-ज्ञान। बोध कारण जो स्वयं कार्य के रूप में जाय। ५-वह सामग्री जिससे कोई

उपादेय [वि.] (सं.) ग्रहण करने योग्य कार करने योग्य। उत्तम। श्रेष्ठ।

उपाधान [संज्ञा पु.] (सं.) तकिया।

उपाधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-और को लानेका छल। कपट। २-वह जिससे कोई वस्तु और की और या किसी में दिखाई दे। ३-उपद्रव। कर्त्तव्य का विचार। ५-प्रतिष्ठा खिताब।

[वि.] (हिं.) उपद्रवी। उत्पात करने वाला।

उपाधि-धारी [संज्ञा पु.] (सं.) खिताब प्राप्त व्यक्ति।

उपाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अध्यक्ष या प्रधान का सहायक उसके आधीन काम करने वाला उपप्रधान।

उपाध्या [संज्ञा पु.] (हि.) देखो '

उपाध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अध्याप शिक्षक। २-वेदवेदांग पढ़ाने वा ब्राह्मणों का एक भेद।

ाध्याया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अध्यापिका। पढ़ाने वाली।

ाध्यायानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपाध्याय की पत्नी। गुरुपत्नी।

ाध्यायी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपाध्याय की स्त्री। २-अध्यापिका। पढ़ाने वाली।

पान [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इमारत की कुरसी। जिसपर खंभा बैठाया जाता है।

उपानत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-जूता। २-खड़ाऊँ।

उपानद [संज्ञा पु.] (सं.) हिंडोल राग का एक भेद।

उपानह [संज्ञा पु.] (सं.) जूता। पनही।

उपाना [क्रि. स.] (हि.) १-उत्पन्न करना। २-बनाना। सम्पादन करना।

उपाबद्ध [वि.] (सं.) आनुषंगिक। अंगभूत।

उपाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-समीप पहुँचना। २-वह कार्य या प्रयत्न जिससे अभीष्ट तक पहुँचे। साधन। युक्ति। तरकीब।

उपायन [संज्ञा पु.] (सं.) उपहार। भेंट। सौगात। नज़राना।

उपायी [वि.] (हिं.) उपाय करने वाला। युक्ति निकालने वाला।

उपायुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) किसी जिले या उपप्रांत की शान्ति तथा व्यवस्था रखने वाला मुख्य अधिकारी। डिप्टी-कमिश्नर।

उपायोजन [संज्ञा पु.] (सं.) नौकरी। काम। देखो 'अधियोजन'।

उपारना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उखाड़ना'।

उपार्जक [वि.] (सं.) कमाने वाला।

उपार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कमाना। पैदा करना। लाभ करना।

उपार्जनीय [वि.] (सं.) कमाने योग्य। प्राप्त करने योग्य। संग्रह करने योग्य।

उपार्जित [वि.] (सं.) १-कमाया हुआ। २-संग्रहीत। २-प्राप्त किया हुआ।

उपालंभ, उपालम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) उलाहना। शिकायत। निन्दा।

उपालंभन ,उपालम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) उलाहना देना। निन्दा करना।

उपाव※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उपाय'।

उपास[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उपवास'।

उपासक [वि.] (सं.) पूजा करने वाला। आराधना करने वाला। भक्त। सेवक।

उपासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पास बैठना। २-सेवा में उपस्थित रहना। ३-पूजा करना। ४-अभ्यास करने के लिये बाण चलाना।

उपासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आराधना। पूजा। परिचर्य्या। २-पास बैठने की क्रिया या भाव। [क्रि. स.] (हिं.) उपासना करना। पूजा करना। सेवा करना। भजना। [क्रि. अ.] उपवास करना। भूखा रहना। निराहार रहना।

उपासनीय [वि.] (सं.) पूजनीय। आराध्य। सेवा करने योग्य।

उपासा [संज्ञा पु.] (हि.) भूखा। निराहार। उपवास किया हुआ।

उपासित [वि.] (सं.) पूजित। आराधित।

उपासी [वि.] (हिं.) उपासना करने वाला। सेवक। भक्त।

उपास्य [वि.] (सं) आराध्य। पूजा के योग्य। सेवा करने योग्य।

उपेंद्र, उपेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र के छोटे भाई वामन या विष्णु भगवान।

उपेंद्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्यारह वर्णों की एक वृत्ति जिसमें (ज + त + ज) दो गुरू) होते हैं।

उपेक्षक [वि.] (सं.) १-उपेक्षा करने वाला। लापरवाह। २-घृणा करने वाला।

उपेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदासीन होना। विरक्तहोना। लापरवाही। २-घृणा करना।

उपेक्षणीय [वि.] (सं.) १-प्रतीकार की चेष्टा न करने वाला। २-घृणा के योग्य। ३-त्यागने योग्य।

उपेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २-किसी को तुच्छ अथवा नगण्य समझना। अयोग्य जानकर ध्यान न देना या सत्कार न करना।

उपेक्षित [वि.] (सं.) जिसकी उपेक्षा की गई हो। अनादर किया हुआ। तिरस्कृत।

उपेक्ष्य [वि.] (सं.) उपेक्षा के योग्य। घृणा के योग्य।

उपेत [वि.] (सं.) १-बीता हुआ। २-प्राप्त। मिला हुआ। ३-संयुक्त।

उपेय [वि.] (सं.) जिसके लिये उपाय करना उचित हो। उपाय-साध्य।

उपैना+ [वि.] (हि.) खुला हुआ नंगा। उघाड़ा।

उपोद्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान। समझ।

उपोद्घात [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्तावना। भूमिका। पुस्तक के आरम्भ का कथन।

उपोष, उपोषण [संज्ञा पु.] (सं.) उपवास निराहार व्रत।

उपोषित [वि.] (सं.) उपवास किया हुआ।

उपोसथ [संज्ञा पु.] (सं.) निराहार व्रत। उपवास (जैन तथा बौद्धों का शब्द)।

उफ [अव्य.] (अ.) आह। ओह। अफसोस।

उफक [संज्ञा पु.] (अ.) क्षितिज।

उफड़ना※ [क्रि. अ.] (हि.) उबलना। उफनना।

उफ़तादा [वि.] (फा.) परती पड़ा हुआ (खेत)।

उफ़नना※ [क्रि. स.] (हि.) १-उबल कर उठना। जोश खाना। २-उमड़ना। ३-झगड़े के लिये तत्पर होना।

उफनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उबलना। उमड़ना। हिलोरा मारना।

उफान [वि.] (सं.) उबाल। आँच या गरमी पाकर फेन सहित ऊपर उठना।

उफाल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लम्बा डग।

उबकना [क्रि. अ.] (हिं.) वमन करना। उगलना

उबका [संज्ञा पु.] (हि.) सरकने वाली गांठ या फन्दा।

उबकाई※+ [संज्ञा स्त्री.](हि.) वमन का उद्गार। मतली। कै।

उबछना + [क्रि. स.] (हिं.) १-जल को ऊपर की ओर फेंकना। पछाड़कर धोना। के लिए पानी खीचना।

उबट※ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुमार्ग। अटपट मार्ग। विकट मार्ग। [वि.] ऊबड़खाबड़। ऊंचानीचा। अटपट।

उबटन [संज्ञा पु.] (हिं.) अङ्गराग। शरीर पर मलने कालेप। बटना।

उबटना [क्रि. अ.] (हि.) उबटन लगाना।

उबना※ [क्रि. अ.] (हि.) अंकुरित होना। जमना

उबरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उद्धार पाना। निस्तार पाना। मुक्त होना। २-बचना।

उबरा+ [वि.] (हि.) १-फालतू। बचा हुआ। २-जिसका उद्धार हुआ हो। [संज्ञा पु.] बोने से बचा हुआ जो खेतिहर मजदूरों को बांट दियां जाता है।

उबरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'ओबरी'। एक प्रकार की काश्तकारी। [वि.] १-मुक्त। २-बची हुई। शेष।

उबलना [क्रि. अ.] (हि.) १-गरमी पाकर तरल पदार्थों का फेन के साथ ऊपर उठना। २-उमड़ना। वेग से निकलना।

उबसन [संज्ञा पु.] (हि.) मूंज या नारियल की कुटी हुई जटा जिससे रगड़कर बरतन मांजते हैं। जूना। गुझना।

उबसना [क्रि. स.] (हिं.) १-बरतन मांजना। देखो 'उपसना'।

उबहन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी खींचने की रस्सी।

उबहना※ [क्रि. स.] (हि.) १-हथियार खींचना या म्यान से निकालना। २- उलीचना। पानी फेंकना। ३-जोतना। [वि.] (हि.) बिना जूते का। नङ्गा।

उबांत※+ [संज्ञा स्त्री.] उलटी। कै। वमन।

उबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊब जाने की स्थिति। व्यग्रता।

उबाना [वि.] (हि.) नंगे पैर। बिना जूते का।

उवार [संज्ञा पु.] (हिं.) मोक्ष। उद्धार। निस्तार। छुटकारा।

उवारना [क्रि. स.] (हिं.) मुक्ति देना। उद्धार करना। छुड़ाना।

उवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुएँ के पास का वह जलकुंड जिसमें पशु पानी पीते हैं। अहरी। निपान। चवंर।

उवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–उबलने की क्रिया या भाव। उफान। उद्वेग। क्षोभ। जोश।

उवालना [क्रि. स.] (हिं.) किसी तरल पदार्थ को आँच पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेनसहित ऊपर उठ आवे। खौलना। जोश देना।

उवासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जंभाई।

उवाहना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उवाहना'।

उविठना*, **उवीठना** [क्रि. स.] (हिं.) जी भर जाने के कारण अच्छा न लगना। [क्रि. अ.] ऊवना। घबराना।

उवीधना [क्रि. अ.] (हिं.) १–उलझना। फंसना। २–धंसना। गड़ना।

उवीधा [वि.] (हिं.) १–फंसा हुआ। धंसा हुआ। गड़ा हुआ। २–कंटीला। कांटों से भरा हुआ

उवेना*+ [वि.] (हिं.) नंगे पैर का।

उवेरना*[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उवारना।

उवौना [वि.] (हिं.) उवाने वाला।

उवौंवा [वि.] (हिं.) ऊब जाने वाला।

उभई [वि.] (हिं.) देखो 'उभय'।

उभटना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–अभिमान करना। २–उभड़ना।

उभड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी तल या सतह की आस-पास सतह से कुछ ऊंचा होना। उकसना। २–ऊपर निकलना। ३–उठना। ४–प्रकट होना। उत्पन्न होना। ५–खुलना। प्रकाशित होना। ६–बढ़ना। प्रबल होना। ७–समृद्ध होना। ८–चल देना। ६–गाय, भैंस आदि का मस्त होना। १०–जवानी पर आना।

उभना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उभड़ना'।

उभय [वि.] (सं.) दोनों।

उभयतः [क्रि. वि.] दोनों ओर से।

उभयतोदंत [वि.] (सं.) जिसके दोनों ओर दो दाँत निकलते हैं।

उभयतोमुख [वि.] (सं.) दो मुख वाला।

उभयतोमुखी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दो मुख वाली।

उभयनिष्ठ [वि.] (सं.) १–दोनों में निष्ठा रखने वाला। २–जो दोनों में सम्मिलित हो।

उभयवादी [वि.] (सं.) स्वर और ताल दोनों का बोध करने वाला।

उभयविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्य्याछंद का का एक भेद।

उभय-संकट [संज्ञा पु.] (सं.) काम करने या न करने दोनों अवस्थाओं में आने वाला संकट

उभयोन्नतोदर [वि.] (सं.) जिसका पेट दोनों ओर को निकला हो।

उभरना*+ [क्रि. अ.] (हि.) उभड़ना।

उभरौंहा [वि.] (हिं.) उभार पर आया हुआ।

उभाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–उठान। ऊंचाई। ऊंचापन। २–ओज। वृद्धि।

उभाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १–उकसाना। २–उत्तेजित करना। बहकाना। ३–जगह से उठना।

उभाड़दार [वि.] (हिं.) १–उभड़ा हुआ। उठा हुआ। २–भड़कीला।

उभाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'अभुआना'।

उभिटना* [क्रि. अ.](हिं.) ठिठकना। हिचकना।

उभै* [वि.] (हिं.) देखो 'उभय'।

उमंग, उमङ्ग [संज्ञा स्त्री.] १–चित्त का उभाड़। सुखदायक मनोवेग। जोश। २–अधिकता। पूर्णता। उभाड़।

उमंगना [क्रि. अ.] (हिं.) उमड़ना। उभड़ना। २–फूले न समाना। उल्लास में होना। हुलसाना।

उमंड, उमण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जोश। चित्त का उवाल। २–उठान।

उमंडना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो उमड़ना'।

उमकना* [क्रि. अ.] (देश.) १–उखड़ना। २–देखो 'उमगना'।

उमग* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उमंग'।

उमगन* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हर्ष। खुशी। प्रसन्नता।

उमगना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उमंगना'।

उमगा [वि.] (हिं.) सीमा से बाहर हुआ। सीमोल्लंघित।

उमचना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–पैर से कुचलना। २–चौंक पड़ना। सजग होना। चौकन्ना होना

उमड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–उमड़ने की क्रिया या भाव। बाढ़। बढ़ाव। २–घिराव। छाजन। ३–धावा।

उमड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १–द्रव पदार्थ का बहुतायत होने के कारण ऊपर उठना। २–उठकर फैलना या छाना। ३–उमंग या आवेश में आना।

उमड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) 'उमड़ना' शब्द की प्रेरणार्थक क्रिया।
[क्रि. अ.] (हि.) देखो 'उमड़ना'।

उमदना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–मतवाला होना। मस्त होना। २–उमगना। उमड़ना।

उमदा [वि.] (अ.) अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

उमदाना* [क्रि. अ.] (हि.) १– मस्त होना। २–उमंग में आना। जोश में आना।

उमर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–वय। आयु। जीवनकाल।

उमरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार

उमरा [संज्ञा पु.] (अ.) अमीर धनी लोग। प्रतिष्ठित लोग। सरदा

उमराव*+ [संज्ञा पु.] देखो 'उमरा

उमरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पौधा कर उसकी राख की सज्जीखार

उमस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गर्मी न बरसने से और हवा न चलने है।

उमहना [क्रि. अ.](हिं.) १–उमड़ना। घेरना। ३–उमंग में आना।

उमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–शिवपत्नी। २–दुर्गा। ३–हलदी। ४–अलसी। ६–कीर्ति। ७–ब्रह्मज्ञान।

उमाकना* [क्रि. स.] (हिं.) जड़ से खोदकर फेंक देना। नष्ट करना।

उमाकिनी*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] उखाड़ने वाली। नष्ट करने वाली।

उमागुरु [संज्ञा पु.] (सं.) पार्वती के हिमाचल।

उमाचना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १– निकालना। २–उभाड़ना। ऊपर को

उमाद* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो

उमाधव [संज्ञा पु.] (सं.) उमापति।

उमापति [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

उमाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उमंग'।

उमाहना [क्रि. अ.] (हिं.) १–उमड़ना। २–उमंग में आना।

उमाहल* [वि.] (हिं.) उत्साह से परि से भरा। उत्साहित।

उमेठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मरोड़। ऐंठ बल।

उमेठना [क्रि. स.] (हि.) मरोड़ना। ऐंठ

उमेठवां [वि.] (हिं.) ऐंठा हुआ। मरोड़

उमेड़ना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उमेठ

उमेदवार [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'उम्मे

उमेदवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो

उमेलना* [क्रि. स.] (हिं.) १–खोलना करना। २–वर्णन करना।

उमैना* [क्रि. अ.] (हिं.) मनमाना करना।

उम्दगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अच्छापन।

उम्दा [वि.] (अ.) अच्छा। भला। श्रेष्ठ।

उम्मत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-किसी मत के मानने वालों की मंडली। समिति। समाज। ३-औलाद। संतान।

उम्मीद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'उम्मेद'।

उम्मेद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आशा। भरोसा। आसरा।
उम्मेद होना–गर्भ के लक्षण दीख पड़ना।
उम्मेद से होना–गर्भवती होना।

उम्मेदवार [संज्ञा पु.] (फा.) १-आशा या भरोसा रखने वाला। २-नौकरी के लिये प्रार्थना करने वाला। ३-किसी पद के लिये चुनाव में खड़ा होना।

उम्मेदवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आशा। आसरा। २-उम्मेदवार होने का भाव। ३-किसी स्थान पर नियुक्त होने या चुने जाने की आशा रखने वाला। ४-विना या कम वेतन पर उम्मेदवार होकर कार्य करना।

उम्र [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'उमर'।

उरंग, उरङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) साँप। सर्प।

उरंगम, उरङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

उर [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाती। वक्षस्थल। २-हृदय। मन। चित्त।
उर आनना, उर लाना–ध्यान करना। विचार करना। *उर धरना*–ध्यान करना।

उरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उशीर। खस।

उरकना* [क्रि. अ.] (हिं.) रुकना। ठहरना।

उरग [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

उरगड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह खूटी जिसे जुलाहा भूमि में गाढ़ता है।

उरगना* [क्रि. स.] (हिं.) १-स्वीकार करना। अंगीकार करना। २-सहना।

उरगाद [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

उरगाय* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'उरुगाय'।

उरगारि संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

उरगिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सर्पिणी। नागिनी।

उरज,* उरजात* [संज्ञा पुं.] (हिं.) कुच। स्तन।

उरझना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उलझना'।

उरझाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उलझाना'।

उरझेर* [संज्ञा पु.] (?) हवा का झोंका।

उरण [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़ा। मेढ़ा। २-युरेनस नाम का एक ग्रह।

उरद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौधा जिसके दानों की (जो कि फलियों में से निकलते हैं) दाल बनती है। माष।

उरदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उरद की एक उपजाति। २-पीतल की थाली के बीच का चिह्न। ३-लोहे का वह ठप्पा जिससे थाली में चिह्न बनाते हैं।

उरध* [क्रि. वि.](हि.) देखो 'ऊर्ध्व'।

उरधारना [क्रि स.] विखराना। उधेड़ना। छिटकाना।

उरप-तरप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उड़प'।

उरबसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उर्वशी।
[वि.] हृदय में बसने वाली।

उरवी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उर्वी'।

उरभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़।

उरमना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) लटकना।

उरमाना*+ [क्रि. स.] (हिं.) लटकाना।

उरमाल [संज्ञा पु.] (हिं.) रूमाल।
[संज्ञा स्त्री.] गले की वह माला जो छाती तक आती है।

उरविज* [संज्ञा पु.] (हिं.) भौम। मंगलग्रह।

उरला [वि.] (हिं.) १-पिछला। पीछे का। २-निराला। बिरला।

उरस* [वि.] (हिं.) फीका। निरस। [संज्ञा पु.] १-हृदय। २-छाती। वक्षस्थल।

उरसना* [क्रि. अ.] (हिं.) ऊपर-नीचे करना। उथल-पुथल करना।

उरसिज [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन। छाती।

उरस्क [संज्ञा पु.] (सं.) छाती। वक्षस्थल।

उरहना* [संज्ञा पु.] (हिं.) उलाहना। शिकायत।

उरा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथिवी। उर्वी।

उराउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उराव'।

उराट* [संज्ञा पु.] (हिं.) छाती। उर। वक्षस्थल

उराना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ओराना'।

उराय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उराव'।

उरारा* [वि.] (हिं.) चौड़ा। विस्तृत। विशाल

उराव* [संज्ञा पु.] (हिं.) चाव। उमंग। उत्साह हौसला।

उराहना [संज्ञा पु.] (हिं.) उपालंभ। उलाहना। शिकायत।

उरिण* [वि.] (हिं.) देखो 'उऋण'।

उरिन* [वि.] (हिं.) देखो 'उऋण'।

उरिष्ठ [संज्ञा पु.] (हिं.) रीठा। फेनिल। रीठी।

उरु [वि.] (सं.) १-विस्तीर्ण। लम्बा-चौड़ा। २-विशाल। * [संज्ञा पु.] (हि.) जांघ। जंघा।

उरुक्रम [वि.] (सं.) १-बलवान। २-लम्बे-लम्बे डग भरने वाला। [संज्ञा पु.] १-विष्णु का वामन रूप या अवतार। २-सूर्य।

उरुगाय [वि.] (सं.) १-प्रशंसित। २-जिसकी बड़ाई के गीत गाये जायं। ३-फैला हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-सूर्य। ३-प्रशंसा। ३-स्तुति।

उरुजना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उरझना'।

उरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) उल्लू के सदृश एक चिड़िया। रुरुआ।

उरूज [संज्ञा पु.] (अ.) उन्नति। बढ़ती।

उरे [क्रि वि.] (हिं.) १-परे। आगे। २-दूर। उस ओर।

उरेखना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'अवरेखना'।

उरेह [संज्ञा पु.] (हिं.) चित्रकारी। नक्काशी।

उरेहना [क्रि. स.] (हिं.) १-खींचना। लिखना। २-रंगना।

उरोज [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन। कुच। पयोधर।

उर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उरद'।

उर्दू [संज्ञा पु.] (तु.) १-छावनी का बाजार। २-हिन्दी भाषा का वह रूप जिसमें अरबी तथा फारसी के शब्द बहुतायत में होते हैं। और जो फारसी लिपि में लिखी जाती है।

उर्दू बजार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छावनी का बाजार २-वह बाजार जहां पर सब प्रकार की वस्तुएं मिलें।

उर्घ* [वि.] (सं.) ऊर्ध्व।

उर्फ़ [संज्ञा पु.] (अ.) उपनाम। पुकारने का नाम।

उर्मि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऊर्मि'।

उर्मिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मणजी की पत्नी का नाम।

उर्वरा [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपजाऊ भूमि। २-पृथ्वी। भूमि। ३-एक अप्सरा।
[वि.] [स्त्री. प्र.] उपजाऊ। जरखेज़।

उर्वशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्गलोक की एक अप्सरा।

उर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीसा। शीशक।

उर्वारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-खरबूजा। २-ककड़ी।

उर्वारुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खरबूजा। २-ककड़ी

उर्विजा* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'उर्वीजा'।

उर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथिवी। भूमि।
[वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-विस्तृत। सपाट।

उर्वीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

उर्वीधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेष। २-पर्वत।

उर्स [संज्ञा पु.] (अ.) किसी मुसलमान साधु या पीर के मृत्यु दिवस का कृत्य। मुसलमानी पीर की निर्वाणतिथि।

उलंग [वि.] (हिं.) नंगा।

उलंगना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उलंघना'।

उलंघन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उल्लंघन'।

उलंघना, उलँघना* [क्रि. स.] (हिं.) १-उल्लंघन करना। नाघना। फाँदना। २-अवज्ञा करना। अवहेलना करना।

उलका* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उल्का'।

उलगट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कूद। फाँद।

उलगना+ [क्रि. अ.] (हिं.) उछलना। कूदना। फाँदना।

उलगाना+ [क्रि. स.] (हिं.) कुदाना । फँदाना ।

उलचना [क्रि. स. (हिं.) देखो 'उलीचना' ।

उलछना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-छितराना । बिखराना । इधर-उधर फेंकना । २-उलीचना

उलछा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत में बोने के लिये बीज बिखराने का कार्य ।

उलछारना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उछालना' ।

उलझन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अटकाव । फँसाव । गाँठ । २-बाधा । ३-चिन्ता । फिक्र । ४-समस्या ।

उलझन में डालना-झंझट में फँसाना ।

उलझन मे पड़ना-चक्कर में पड़ना ।

उलझना [क्रि. अ.] (हिं.) फँसाना । अटकना । २-लपेट में पड़ना । गुथ जाना । ३-लिपटना । ४-किसी काम में लगाना या लीन होना । ५-आसक्त होना । प्रेम करना । ६-विवाद करना । ७-कठिनाई में पड़ना । ८-बलखाना या टेढ़ा होना ।

उलझना-सुलझना-फंसना और खुलना ।

उलझना-पुलझना-भली प्रकार फंसना ।

उलझा-सुलझा-टेढ़ा सीधा । भला बुरा ।

उलझना-उलझाना-बात-बात में हस्तक्षेप करना ।

उलझाना* [क्रि. अ.] (हिं.) उलझना । फंसना

उलझाना (हिं.) १-अटकाना । फंसाना । २-लिप्त रखना । लगाए रखना । ३-टेढ़ा करना ।

उलझाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उलझने की क्रिया या भाव । अटकाव । झगड़ा बखेड़ा । झंझट । ३-खींचातानी ।

उलझेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उलझाव' ।

उलझौहाँ [वि.] (हिं.) १-अटकाने वाला । २-फंसाने वाला ।

उलटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नीचे का ऊपर या ऊपर का नीचे होना । पलटना । २-फिरना । घूमना या पीछे मुड़ना । ३-उमड़ना । टूट पड़ना । ४-अस्तव्यस्त होना । क्रम-विरुद्ध होना । अंडबंड होना । ५-विपरीत । होना । कुछ का कुछ होना । ६-क्रुद्ध होना । चिढ़ना । ७-नष्ट होना । ध्वस्त होना । ८-मरना । ९-बेसुध होना । १०-गिरना । ११-इतराना । गर्व करना । १२-चौपायों का पहली बार गर्भ न ठहरना । १३-मोटा या पुष्ट होना । [क्रि. स.] १-नीचे का भाग ऊपर या ऊपर का नीचे करना । २-लौटना । २-औंधा गिरना । ३-पटकना । दे मारना । फेंक देना । ४-लटकती हुई वस्तु को सेट कर ऊपर की ओर चढ़ना । ५-अस्तव्यस्त करना । ६-कुछ का कुछ करना । विपरीत करना । ७-पहले के अनुसार न होकर उसके विरुद्ध या प्रतिकूल होना । जैसा पहले था उसके विपरीत रूप में लाना । ८-उत्तर-प्रत्युत्तर करना । ९-खोद कर फेंकना । उखाड़ देना । ९-खेत में बीज मारे जाने की अवस्था में फिर से जोतना । १०-बेसुध करना । ११-कै या उलटी करना । १२-उड़ेलना । १३-नष्ट करना । १४-रटना । बार-बार जपना ।

उलटपलट [संज्ञा पु.] (हिं.) अव्यवस्था । परिवर्तन । अदल-बदल । गड़बड़ी । [वि.] १-बदला हुआ । २-अस्तव्यस्त । अंडबंड ।

उलटपुलट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उलटपुलट ।

उलटफेर [संज्ञा पु.] (हिं.) परिवर्त्तन । अदल-बदल । हेर-फेर ।

उलटा [वि.] (हिं.) औंधा । विपरीत । नीचे का ऊपर या ऊपर का नीचे किया हुआ ।

उलटा जमाना-खोटा जमाना । *उलटा तवा*-अत्यन्त काला ।

उलटा लटकना-किसी वस्तु के लिये घोर प्रयत्न करना । *उलटा सीधा*-भला बुरा । *उलटी खोपड़ी*-मूर्ख । *उलटी गंगा बहना*-जो कभी न हुआ (बुरा काम) हो उसे करना । *उलटी छुरी से काटना*-अत्यन्त दुःख देना । *उलटी टाँगें या आँतें गले में आना*-अपनी करनी से आप फँसना । *उलटी पट्टी पढ़ना*-बहकाना । *उलटी माला फेरना*-अहित चाहना । *उलटी सीधी सुनना*-भला बुरा कहना । *उलटी सांस चलना*-मरणासन्न । *उलटे मुँह गिरना*-दूसरे को नीचा दिखाने के स्थान पर स्वयं नीचा देखना । *उलटे छुरे से मूँडना*-बेवकूफ बनाना *उलटे पाँव लौटना या वापिस जाना*-तुरन्त लौटना । *उलटे पाँव फिरना*-तुरन्त लौट जाना । [क्रि. वि .] (हिं.) अंडबंड । क्रम विरुद्ध से । २-विपरीत अवस्था के अनुसार । [संज्ञा पु.] १-एक पकवान । २-विपरीत ३-सामने के रुख से पीछे का रुख ।

उलटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पलटना । नीचे का ऊपर करना । लौटाना । २-और का और करना । ३-पक्ष या रुख बदलना ।

उलटापुलटा [वि.] (हिं.) बिना ठीक ठिकाने का अंडबंड । इधर का उधर ।

उलटापुलटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फेरफार । अदल बदल ।

उलटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पलटाव । फेर । २-घुमाव ।

उलटी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] विपरीत । विरुद्ध [संज्ञा पु.] १-वमन । कै । मालखंभ की की एक कसरत । कलैया ।

उलटीसरसों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीचे मुँह वाली कलियों की सरसों । यह जादू टोने के काम में आती है ।

उलटीसवाई [संज्ञा स्त्री] (हि.) जहाज की जंजीर ।

उलटे [क्रि. वि.] (हिं.) १-विरुद्ध कम से । २-विरुद्ध न्याय से ।

उलठपलठ* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'उलट-पलट' ।

उलठना* [क्रि. अ.] या [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उलटना' ।

उलठाना* [क्रि. स.] (हिं.) 'उलटाना' ।

उलथना* [क्रि. अ.] (हिं.) उलटपुलट होना । उलटना । ऊपर नीचे होना ।

उलथा [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का २-कलाबाजी । कलैया । ३-करवट ४-अनुवाद । उल्था ।

उलद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्षा की झड़ी । गिराव ।

उलदना* [क्रि. स.] (हिं.) उलटना । ढालना । बरसाना ।

उलफ़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-प्रेम । मुहब्बत । प्रीति ।

उलमना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) लटकना ।

उलरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-कूदना । २-नीचे ऊपर होना । ३-झपटना ।

उलरुआ [संज्ञा पु.] (हिं) उलार न होने बैलगाड़ी के पीछे बंधी हुई लकड़ी ।

उललना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-ढरकना । २-उलटना । पलटना ।

उलसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-उल्लसित । २-चमकना । ३-शोभित होना ।

उलहना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-उभड़ना । लना । अंकुरित होना । २-प्रसन्न । प्रफुल्लित होना ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उलाहना' ।

उलही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उलाह

उलाँक [संज्ञा पु.] (हिं.) चिट्ठीपत्री की व्यवस्था । डाक ।

उलाँकपत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) पोस्टकार्ड ।

उलाँकी [संज्ञा पु.] (हिं.) डाक का हरकारा

उलाँघना*+ [क्रि. स.] (हि.) १-लाँ फाँदना । २-अवज्ञा करना । विरुद्ध करना ।

उला* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भेड़ का बच्चा ।

उलाटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उलटना

उलार [वि.] (हिं.) भार के कारण पीछे की झुकी हुई (गाड़ी) ।

उलारना [क्रि. सं.] (हि.) उछालना । फेंकना ।

उलाहना [संज्ञा पुं.] (हिं.) उपालम्भ । शिकायत गिला । [क्रि. स.] (हि.) १-उलाहना गिला करना । २-दोष देना ।

उलिचना, उलीचना [क्रि. स.] (हिं.) किसी अन्य वस्तु से जल फेंकना ।

उलूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पक्षी २-इन्द्र । ३-कणादमुनि का एक नाम ।

उलूखल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओखली। ऊखल। २-खरल। २-गुग्गुल।

उलूत [संज्ञा पु.] (सं.) अजगर की जाति का साँप।

उलूपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अर्जुन की एक पत्नी जो नाग की कन्या थी। २-मछली।

उलेटना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उलटना'।

उलेटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उलटा'।

उलेड़ना॰ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उड़ेलना'।

उलेल॰ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उमंग। जोश। २-उछल-कूद। ३-बाढ़। [वि.] १-बेपरवाह। २-अल्हड़। ३-बेसमझ।

उलैंडना॰ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उड़ेलना'।

उल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकाश। तेज। २-ज्वाला। लुक। जलती लकड़ी। ३-मशाल। ४-दीया। दीपक। ५-एक प्रकार का प्रकाश-पिंड या तेजपुंज जो रात्रि के समय इधर से उधर जाते या भूमि पर गिरते हुए दिखाई पड़ते हैं। टूटता तारा। ५-फलित ज्योतिष के अनुसार मंगला आदि आठ दिशाओं में से एक।

उल्काचक्र+ [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पात। विघ्न। २-हलचल।

उल्कापात [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश से तारा टूटना। लुक गिरना। २-उत्पात। विघ्न।

उल्कापाती [वि.] (सं.) उत्पाती। ऊधम मचाने वाला। विघ्नकारी।

उल्कामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीदड़। २-मुंह से आग फेंकने वाला प्रेत। अगियावैताल। ४-महादेव का एक नाम।

उल्टा [वि.] (हिं.) देखो 'उलटा'।

उल्था [संज्ञा पु.] (हिं.) अनुवाद। भाषांतर। तरजुमा।

उल्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंगार। २-उल्का। ३-एक यादव का नाम। ४-महाभारतकालीन एक राजा।

उल्लंघन, उल्लङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लांघना। डाँकना। पार जाना। २-अतिक्रमण। २-विरुद्धाचरण। न मानना।

उल्लंघना, उल्लङ्घना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उलांघन'।

उल्लंघनीय,उल्लङ्घनीय [वि.] (सं.) लांघने योग्य।

उल्लंघित, उल्लङ्घित [वि.] (सं.) लांघा हुआ।

उल्लंबित, उल्लम्बित [वि.] (सं.) सीधा खड़ा हुआ।

उल्लसता [संज्ञा स्त्री.] (सं) प्रसन्नता। खुशी।

उल्लसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हर्षजनक व्यापार। खुशी करना। २-रोमांच।

उल्लसता [वि.] (सं.) १-आनन्दित। प्रसन्न। २-रोमांचित।

उल्लाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-आर्त्तनाद। कराहना २-काकूक्ति। ३-दुष्टवाक्य।

उल्लापक [वि.] (सं.) खुशामदी। ठकुरसुहाती कहने वाला।

उल्लापन [संज्ञा पु.] (सं.) खुशामद। ठकुरसुहाती।

उल्लापी [वि.] (सं.) जोर से चिल्लाने वाला।

उल्लाप्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक एकांकी उपरूपक का भेद। २-सात प्रकार के गीतों में से एक।

उल्लाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक अर्द्धसम छंद जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में पंद्रह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह मात्राएँ होती हैं।

उल्लाला [संज्ञा पु.] (हिं.) एकमात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में तेरह मात्राएँ होती हैं।

उल्लास [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। चमक। रोशनी। २-हर्ष। सुख। आनंद। ग्रंथ का एक भाग। पर्व। अध्याय। ४-एक अलंकार जिस में एक गुणदोष से दूसरे का गुणदोष का होना दिखाया जाता है।

उल्लासक [वि.] (सं.) आनन्द करने वाला। आनंदी।

उल्लासना॰ [क्रि. स.] (हिं.) प्रकट करना। प्रकाशित करना।

उल्लासित [वि.] (सं.) १-हर्षित। मुदित। प्रसन्न। खुश। २-उद्धत। ३-स्फुरित।

उल्लासी [वि.] (सं.) १-सुखी। आनन्दी। २-चमकदार।

उल्लिखित [वि.] (सं.) १-खोदा हुआ। उत्कीर्ष। २-छीला हुआ। ३-ऊपर लिखा हुआ। ४-जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो। कहा हुआ। ५-चित्रित। ६-लिखित।

उल्लू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह पक्षी जिसे दिन में दिखाई न पड़े। २-मूर्ख। बेवकूफ। *उल्लू का गोश्त खिलाना*-मूर्ख बनाना। *उल्लू बोलना*-उजाड़ होना।

उल्लेख [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिखना। लेख। २-वर्णन। ३-चर्चा। ४-एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन हो।

उल्लेखन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खुदाई। निर्दोष। ४-चित्रकारी ५-उल्लेख होने का भाव।

उल्लेखनीय [वि.] (सं.) लिखने योग्य। उल्लेख करने योग्य।

उल्लोल [संज्ञा पु.] (सं.) लहर। कल्लोल। हिलोरा।

उल्व [संज्ञा पु.] (सं.) झिल्ली। जिसमें चिपटा हुआ बच्चा होता है। २-गर्भाशय।

उल्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'उल्व'। २-विलक्षण। अद्भुत। ३-वशिष्ठ का एक पुत्र

उवना॰ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उगना'।

उवनि॰ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रकाश। उदय।

उशवा [संज्ञा पु.] (अ.) एक वृक्ष जिसकी जड़ रक्तशोधक होती है।

उशीनर [संज्ञा पु.] (सं.) गंधार देश।

उशीर [संज्ञा पु.] (सं.) खस। गांड़र की जड़।

उशीरक [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

उषस् [संज्ञा स्त्री.] देखो 'उषा'।

उपसुत [संज्ञा पु.] (सं.) नोनी मिट्टी में से निकला हुआ। नमक।

उषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अरुणोदय की लालिमा। २-प्रभात। तड़का। २-वाणासुर की कन्या तथा अनिरुद्ध की पत्नि।

उषाकाल [संज्ञा पु.] (सं.) भोर। प्रभात। तड़का

उषापति [संज्ञा पु.] (सं.) अनिरुद्ध।

उषीर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उशीर'।

उष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) ऊंट।

उष्ण [वि.] (सं.) १-गरम। तप्त। २-तासीर में गरम। ३-तेज। फुरतीला। [संज्ञा पु.] १-ग्रीष्मऋतु। २-प्याज। ३-एक नरक।

उष्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रीष्मकाल। २-ज्वर

उष्णकटिबंध, बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) कर्क और मकर रेखाओं के मध्य पड़ने वाला भूभाग।

उष्णकर [वि.] (सं.) सूर्य।

उष्णकाल [संज्ञा पु.] (सं.) गरमी का मौसम।

उष्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गरमी। ताप।

उष्णत्व [संज्ञा पु.] (सं.) गरमी।

उष्णवाष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरम भाप। २-आँसू।

उष्णांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

उष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्षयरोग। २-संताप। ३-गरमी।

उष्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं।

उष्णिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्ताप। गरमी।

उष्णीष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पगड़ी। साफा। २-मुकुट। ताज।

उष्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरमी। ताप। २-धूप। ३-गरमी का मौसम।

उष्मज [संज्ञा पु.] (सं.) पसीने और मैल से उत्पन्न होने वाले छोटे-छोटे कीड़े। जैसे-खटमल, जूं आदि।

उष्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गरमी। २-धूप। ३-क्रोध।

उस [सर्व.] (हि.) 'वह' का रूप जो विभक्ति लगाने पर यह रूप धारण करता है।

उसकन [संज्ञा पु.] (हिं.) घासपात का मुट्ठा

जिसके बरतन साफ करते हैं।

उसकना❀ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उकसाना'।

उसकाना❀ [क्रि. सं.] (हिं.) देखो 'उकसाना'।

उसकारना❀ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उकसाना'।

उसनना [क्रि. स.] (हिं.) १-उबालना। पकाना। २-पानी डाल कर गूथना।

उसनाना [क्रि. स.] (हिं.) उबलवाना। पकवाना।

उसनीस❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उष्णीष'।

उसमा❀ [संज्ञा पु.] (सं.) उबटन। बटना।

उसमान [संज्ञा पु.] (अ.) मुहम्मद के चार मित्रों में से एक।

उसरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सरकना। अलग होना। दूर होना। २-बीतना। गुजरना।

उसलना❀ [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'उसरना'। २-तरना। पानी के भीतर से ऊपर आना।

उससना❀ [क्रि. स.] (हिं.) १-खिसकना। टलना। २-सांस लेना। दम-लेना।

उसाँस❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) लम्बी साँस।

उसाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ओसाना'।

उसारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ओसारा'।

उसारना❀ [क्रि. स.] (हिं.) १-उखाड़ना। हटाना। २-नाश करना।

उसालना❀ [क्रि. स.] (हिं.) उखाड़ना। २-हटाना। टालना। ३-भागना।

उसास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लम्बी सांस। ऊपर को खैंची हुई सांस। २-उच्छ्वास। सांस। श्वास। ३-ठंडी सांस। दुःख या शोक-सूचक सांस।

उसासना [क्रि. स.] (हिं.) श्वास लेना। आह भरना।

उसासां [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) श्वास लेने का समय।

उसासी❀+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दम लेने की फुरसत। २-अवकाश। छुट्टी।

उसिनना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'उसनना'।

उसीर [संज्ञा पु.] (हिं.) उशीर। खस।

उसीसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिरहाना। २-तकिया।

उसूल [संज्ञा पु.] (अ.) सिद्धांत। मत। [वि.] देखो 'वसूल'।

उसेना+ [क्रि. स.] (हिं.) उबालना। पकाना।

उस्तरा [संज्ञा पु.] (फा.) बाल मूड़ने का औजार। छुरा। उस्तरा।

उस्ताद [संज्ञा पु.] (फा.) १-शिक्षक। गुरु। अध्यापक। २-वेश्याओं का संगीत शिक्षक। [वि.] १-धूर्त। चालाक। २-निपुण। विज्ञ। दक्ष।

उस्तादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गुरुआई। शिक्षक की वृत्ति। चतुराई। निपुणता। ३-विज्ञता। ४-चालाकी। धूर्तता।

उस्तानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गुरुआनी। गुरु-पत्नी। २-अध्यापिका। शिक्षिका। ३-धूर्त स्त्री। ठगिन।

उस्तुरा [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'उस्तरा'।

उस्वास❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उसांस'।

उहदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ओहदा'।

उहदेदार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ओहदेदार'।

उहवाँ+ [क्रि. वि.] (हिं.) वहाँ। उस जगह।

उहाँ [क्रि. वि.] (हिं.) वहां। उस जगह।

उहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ओहार'।

उहि+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'वह'।

उही+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'वही'।

उहूल❀ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) तरंग। लहर। मौज।

उहै❀ [सर्व.] (हिं.) देखो 'वही'।

ऊ

ऊ संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का छठा स्वरवर्ण जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। यह 'उ' का दीर्घ रूप है। कहीं-कहीं यह अव्यय के रूप में यह 'भी' और सर्वनाम के रूप में वह का अर्थ देता है।

ऊँख❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऊख' 'ईख'।

ऊँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऊंघ'।

ऊँगना❀ [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों को होने वाला एक रोग जिससे उनका शरीर ठंडा पड़ जाता है तथा खाना पीना छूट जाता है। २-देखो 'औंगना'।

ऊँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) अपामार्ग। चिचड़ा

ऊँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिचड़ी। अपामार।

ऊँघ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उँघाई। नींद का दौरा। झपकी लेना।

ऊँघन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊँघ झपकी।

ऊँघना [क्रि. स.] (हिं.) झपकी लेना। नींद में झूमना। निद्रालु होना।

ऊँच❀+ [वि.] (हिं.) १-ऊचा। ऊपर उठा हुआ २-श्रेष्ठ। उत्तम। बड़ा। ३-कुलीन।

ऊँचा [वि.] (हिं.) १-उठा हुआ। उन्नत। ऊपर की ओर गया हुआ। *ऊँचा नीचा*-१-ऊबड़ खाबड़। २-भला बुरा। *ऊँचा नीचा सुनाना*-फटकारना। भला बुरा कहना। *ऊँचा सुनना*-कुछ बहरापन। *ऊँचा होना* १-अधिकार, प्रतिष्ठा आदि में उच्च होना। २-अधिक होना। ३-जिसका छोर नीचे तक न हो। ४-श्रेष्ठ। बड़ा। ५-जोर का (स्वर)।

ऊँचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उच्चता। बलँदी। २-गौरव। बड़ाई।

ऊँचे×× [क्रि. वि.] (हिं.) १-ऊपर की ऊपर को। २-जोर से। शब्द करना। ऊँचे नीचे पैर पड़ना-व्यभिचार में

ऊँछ [संज्ञा पु.] (देश.) एक राग का नाम

ऊँछना [क्रि. अ.] (हिं.) कंघी करना।

ऊँट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक चौपाया जिसकी और गर्दन लम्बी होती है। यह बोझ और सवारी के काम में आता है।

ऊँटकटारा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का दार पौधा।

ऊँटकटीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऊंट

ऊँटगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊंट द्वारा जाने वाली गाड़ी।

ऊँटवान [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊंट चलाने वाला

ऊँड़ा❀+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह बरतन धन रख कर भूमि में गाड़ा जाता है। चहबच्चा। तहखाना।

ऊँदर [संज्ञा पु.] (हिं.) चूहा। मूसा।

ऊँधा [संज्ञा पु.] (हिं.) औंधा। उलटा।

ऊँहूँ [अव्य.] (हिं.) नहीं। कभी नहीं। यह हो सकता।

ऊअना❀ [क्रि. अ.] (हिं.) उगना। उदय निकलना।

ऊआबाई❀ [वि.] (हिं.) निरर्थक। अंड व्यर्थ।

ऊक❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उल्का। टूटता २-लुक। लुआठा। ३-आग। ताप। जलन। दाह।

ऊकना❀+ [क्रि. अ.] (हिं.) चूकना भूल [क्रि. स.] १-भूल जाना। छोड़ देना। जलाना। दाहना। तपाना।

ऊख [संज्ञा पु.] (हिं.) ईख। गन्ना। ❀[गरम। तपा हुआ।

ऊखम❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऊष्म'।

ऊखल [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ या पत्थर प्रकार का गहरा बरतन जिसमें मूसल से आदि कूटते हैं।

ऊगना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उगना'।

ऊगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) उबला हुआ खाद्य

ऊज❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्पात। उपद्रव।

ऊजड़ [वि.] (हिं.) उजड़ा हुआ। ध्वस्त। जनशून्य।

ऊजर❀ [वि.] (हिं.) १-उजला। साफ। उजाड़। उजड़ा हुआ।

ऊजरा❀ [वि.] (हिं.) देखो 'ऊजर' 'ऊजल'।

ऊटक-नाटक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निरर्थ व्यर्थ। २-टेढ़ा-मेढ़ा। बे मेल।

ऊटना❀ [क्रि. अ.] (हिं.) १-उत्साहित मंसूबा बांधना। २-सोचविचार करना। वितर्क करना।

ऊटपटांग [वि.] (हि.) १-असम्बद्ध। बेजोड़। अंडबंड। २-निरर्थक। व्यर्थ। वाहियात।

ऊड़ना* [क्रि. स.] (हि.) विवाह करना।

ऊड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाटा। टोटा। कमी। अकाल। २-नाश। लोप।

ऊड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जुलाहे के सांटे में लगी हुई फिरकी। २-गोता। डुबकी। ३-पनडुब्बी चिड़िया।

ऊढ़ [वि.] (हिं.) विवाहित।

ऊढ़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) सोचविचार करना। चिंतन करना। अनुमान करना।

ऊढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विवाहित स्त्री। २-एक प्रकार की परकीया नायिका जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे।

ऊत [वि.] (हिं.) १-निःसंतान। निपूता। २-उजड्ड। मूर्ख।
[संज्ञा पु.] (हिं.)वह जो मरने पर पिंड आदि न पाकर प्रेत या भूत बनता है।

ऊतर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो १-'उत्तर'। २-देखो 'बहाना'।

ऊतला* [वि.] (हिं.) उतावला। चंचल। जल्दबाज।

ऊताताई [वि.] (हिं.) नासमझी का काम करने वाला।

ऊतिम*+ [वि.] (हिं.) देखो 'उत्तम'।

ऊद [संज्ञा पु.] (अ.) १-अगर का वृक्ष या लकड़ी। २-एक प्रकार का बाजा।

ऊदबत्त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अगर की बत्ती जो लोग सुगंध के लिये ले जाते हैं।

ऊदबिलाव [संज्ञा पु.] (हि.) नेवले के समान एक जंतु जो जलस्थल दोनों में रहता है।

ऊदल [संज्ञा पु.] (हिं.) आल्हा का छोटा भाई जो महोबे के राजा परमाल का मुख्य सरदार था।

ऊदा [वि.](हिं.) लाली मिलाहुआ काले रंग और बैंगनी रंग का।

ऊदीसेम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) केवाँच।

ऊधम [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्पात। उपद्रव। बखेड़ा।

ऊधमी [वि.] (हिं.) उपद्रवी। उत्पाती। ऊधम करने वाला।

ऊधव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उद्धव'।

ऊधम् [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन।

ऊधस* [संज्ञा पु.] (हि.) दूध।

ऊधो [संज्ञा पु.] (हिं.) उद्धव। श्रीकृष्ण के एक सखा।
ऊधो का लेना न माधो का देना-किसी से कुछ संबंध न रखना।

ऊन [वि.] (सं.) १-छोटा। तुच्छ। क्षुद्र। २-कम। न्यून। थोड़ा। [संज्ञा पु.](हिं.) १-भेड़, बकरी के रोएं जिनसे गरम वस्त्र बनते हैं। २-मन छोटा करना। दुःख। खेद। रंज।

ऊनता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-न्यूनता। कमी। हीनता। त्रुटि। ३-घाटा।

ऊना [वि.] (हि.) १-कम। थोड़ा। तुच्छ। नाचीज। हीन। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की लचीली सुन्दर तलवार जिसे रानियां अपने तकिये के नीचे रखती थी।

ऊनित [वि.] (सं.) घटायी अथवा कम किया हुआ।

ऊनी* [वि.] (हि.) ऊन का बना हुआ। (सं.) कम। न्यून। [संज्ञा स्त्री.] १-कमी। घटी। न्यूनता। २-उदासी।

ऊनोदरतातप [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों का एक व्रत।

ऊप [संज्ञा पु.] (हि.) अनाज का ब्याज, जो किसान महाजन से बोने के लिए अन्न लेने पर उसका सवाई ऊप देता है।

ऊपना [क्र. अ.] (हिं.) ब्याज पर अन्न का ऋण देना।

ऊपर [क्रि. वि.] (हिं.) १-ऊंचाई पर। ऊंचे स्थान में। २-आधार पर। सहारे पर। ३-उच्चकोटि में। ऊंची श्रेणी में। ४-(लिखने समय) पहले। ५-अधिक। ज्यादा। ६-प्रत्यक्ष में। देखने में। ७-तट पर। किनारे पर। ८-अतिरिक्त। प्रतिकूल। परे।
ऊपर आना-चिढ़ जाना। *ऊपर-ऊपर जाना*-१-व्यर्थ होना। २-बीच या नीचे की चीज छोड़ना। ३-न ठहरना। *ऊपर से ऊपर खा जाना*-चुपके से स्वयं खा जाना। *ऊपर से ऊपर लेना या ले लेना*-पहले ही ले लेना। *ऊपर ऊपर की*-दिखावे की। *ऊपर का दम भरना*-१-ऊंचा सांस लेना। ३-दिखावटी प्रेम या सहानुभूति प्रकट करना।
ऊपर की आमदनी-इधर-उधर की कमाई। *ऊपर की दोनों जाना*-अंधा हो जाना। *ऊपर डालना*-जिम्मेदार बनना। *ऊपर तले के*-एक के बाद दूसरा। *ऊपर तले होना*-एक के बाद शीघ्र दूसरा। *ऊपर वाला*-१-परमेश्वर। २-मालिक या अधिकारी। ३-बाहरी। ४-नौकर-चाकर। *ऊपर होना*-१-आगे बढ़ जाना। २-उत्तमतर होना। ३-मान्य होना। *ऊपर मढ़ना*-१-डालना। २-ऋण मढ़ना। ३-जुर्माना या देनदारी।

ऊपरचूँट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाल को ऊपर से काट लेना और नीचे का भाग खड़ा रहने देना। उपरछंट। छपका।

ऊपरी [वि.](हि.) १-ऊपर का। २-बाहरी। बाहर का। ३-बँधे हुए के सिवा। ४-बनावटी। नुमाइशी।

ऊब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्याकुलता। ऊबने की क्रिया या भाव। उद्वेग। घबराहट। २-उत्साह। उमंग।

ऊबट [संज्ञा पु.] (हि.) कठिन मार्ग। विकट रास्ता। [वि.] ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।

ऊबड़खाबड़ [वि.] (हि.) ऊंचा-नीचा। जो समतल न हो। अटपट।

ऊबना [क्रि. अ.] (हिं.) उकताना। घबड़ाना। अकुलाना।

ऊबर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) उबरने की क्रिया या भाव।

ऊबरना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'उबारना'।

ऊभ* [वि] (हिं.) ऊंचा। उभरा हुआ। उठा हुआ। [संज्ञा स्त्री.] १-व्याकुलता। २-गरमी या उमस। उमंग। हौसला।

ऊभना* [क्रि. अ.] (हि.) १-उद्विग्न होना। घबड़ाना। २-उठना। खड़ा होना।

ऊभासांसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उद्वेग। घबड़ाहट

ऊमक* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) झोंक। वेग। उठान

ऊमना* [क्रि. अ.] (हिं.) उमड़ना। उमगना।

ऊमर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गूलर। २-बनियों की एक जाति।

ऊमस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'उमस'।

ऊमहना [क्रि. अ.] (हिं.) 'उमहना'।

ऊमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जौ या गेहूँ की हरी बाल।

ऊर [संज्ञा पु.] (देश.) पंजाब में धान बोने की एक रीति।

ऊरज [वि., संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऊर्ज'।

ऊरध* [वि.] (हिं.) देखो 'उर्ध्व'।

ऊरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जुलाहों का एक औजार।

ऊरु [संज्ञा पु.] (सं.) जानु। जंघा। रान।

ऊरुसंभव, उरुसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) वैश्य। बनिया।

ऊरुस्तंभ, ऊरुस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक वात रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।

ऊर्ज [वि.] (सं.) बलवान। शक्तिमान।
[संज्ञा पु.] १-बल। शक्ति। २-कार्तिक मास। ३-एक काव्यालंकार जिसमें किसी के सहायकों की कमी हो जाने पर भी गर्व का त्याग न करना वर्णन किया जाता है।

ऊर्जवाह [संज्ञा पु.] (सं.) शचि के एक पुत्र का नाम।

ऊर्जस्वनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियव्रत की कन्या का नाम।

ऊर्जस्वल [वि.] (सं.) बलवान। शक्तिमान।

ऊर्जस्वित [वि.] (सं.) चढ़ा हुआ।

ऊर्जस्वी [वि.] (सं.) १-बलवान। शक्तिमान। २-तेजवान। ३-प्रतापी। [संज्ञा पु.] एक काव्यालंकार जिसमें अत्याधिक अहंकार प्रदर्शित किया जाता है।

ऊर्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बल। उत्साह। वृद्ध।

ऊर्जित [वि.] (सं.) देखो 'ऊर्जा'।

र्ण [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़ या बकरी के बाल। ऊन।

ऊर्णनाभ, ऊर्णनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) मकड़ी। लूता।

ऊर्णपट [संज्ञा पु.] (सं.) मकड़ा। लूता।

ऊर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऊन। चित्ररथ नामक गंधर्व की पत्नी।

ऊर्दर [संज्ञा पु.] (सं.) वीर। बहादुर।

ऊर्णायु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कम्बल। २-ऊनी वस्त्र। ३-एक गंधर्व का नाम।

ऊद्र्ध्व [क्रि. वि.] (सं.) ऊपर। ऊपर की ओर। [वि.] (सं.) १-उच्च। ऊंचा। २-खड़ा।

ऊद्र्ध्वक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मृदंग।

ऊद्र्ध्वकाय [वि] (सं.) उन्नत शरीर वाला।

ऊद्र्ध्वक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृत व्यक्ति के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध आदि कर्म।

ऊद्र्ध्वग [वि.] (सं.) १-ऊंचा जाने वाला। २-स्वर्गगामी।

उद्र्ध्वगत [वि.] (सं.) ऊपर गया हुआ।

ऊद्र्ध्वगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चढ़ाई। २-स्वर्गारोहण। मुक्ति।

ऊद्र्ध्वगमन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उद्र्ध्वगति'

ऊद्र्ध्वगामी [वि.] (सं.) १-ऊपर जाने वाला। २-मुक्ति

ऊद्र्ध्वचरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह तपस्वी जो सिर के बल खड़ा होकर तथा पैर ऊपर करके तपस्या करता हो।

ऊद्र्ध्वता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊद्र्ध्व होने का भाव। उच्चता। ऊंचाई।

ऊद्र्ध्वताल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताल।

ऊद्र्ध्वतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

ऊद्र्ध्वदेव [संज्ञा पु.] (सं.) नारायण। विष्णु।

ऊद्र्ध्वदेश [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपरी भाग। ऊपर का हिस्सा।

ऊद्र्ध्वदेह [संज्ञा पु.] (सं.) मरणोपरान्त प्राप्त होने वाला शरीर।

ऊद्र्ध्वद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊंचा दरवाजा। २-ब्रह्मांड पर का छिद्र।

ऊद्र्ध्वपथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपरी रास्ता। २-आकाश मार्ग।

ऊद्र्ध्वपुंड्र [संज्ञा पु.] (सं.) खड़ा तिलक।

ऊद्र्ध्वबाहू [संज्ञा पु.] (सं.) ऊंचे हाथ करके तपस्या करने वाला साधु।

ऊद्र्ध्वमंडल [संज्ञा पु.] (सं.) वायुमंडल का वह भाग जो अधो मंडल ऊपर तथा पृथ्वीतल से २० मील तक की ऊंचाई तक माना जाता है। इस में ताप-क्रम स्थिर रहता है।

ऊद्र्ध्वमंथी [वि.] (सं.) स्त्रीप्रसंग से बचने वाला। [संज्ञा पु.] ब्रह्मचारी।

ऊद्र्ध्वमुख [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। [वि.] मुँह ऊपर किया हुआ।

ऊद्र्ध्वमूल [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। दुनिया। जगत।

उद्र्ध्व रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर की वह रेखा जो अंगूठे या उसके पास की अंगुली से आरम्भ होकर एड़ी तक पहुँचती है, जिसके यह रेखा होती है वह अंशावतारी समझा जाता है।

ऊद्र्ध्वरेता [वि.] (सं.) स्त्री प्रसंग से बचने वाला। वीर्य न गिराने वाला।
[संज्ञा पु.] १-महादेव। २-भीष्मपितामह। ३-हनुमान। ४-सनकादिमुनि। ५-सन्यासी। ६-ब्रह्मचारी।

ऊद्र्ध्वलिंगी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-ऊद्र्ध्वरेता। ३-ब्रह्मचारी।

ऊद्र्ध्वलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-स्वर्ग। वैकुंठ।

ऊद्र्ध्ववात [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक डकार आने का रोग।

ऊद्र्ध्ववायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डकार।

ऊद्र्ध्वश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) लम्बी सांस। मरते समय की श्वास।

ऊद्र्ध्वस्थित [वि.] (सं.) ऊपर रहने वाला।

ऊद्र्ध्वांग, ऊद्र्ध्वाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सिर। मस्तक।

ऊद्र्ध्वाकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर की ओर का खिंचाव।

ऊद्र्ध्वारोह, ऊद्र्ध्वारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर को चढ़ना। २-स्वर्गारोहण। ३-मरण। मरना।

ऊर्ध [क्रि. वि.] [वि.] (सं.) देखो 'ऊद्र्ध्व'।

ऊर्ध्व [क्रि. वि.] [वि.] (सं.) देखो 'ऊद्र्ध्व'।

ऊर्मि, ऊर्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तरंग। लहर। २-पीड़ा। दुःख। ३-छः की संख्या। ४-कपड़े की सलवट या शिकन।

ऊर्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अंगूठी। २-भौंरे की गूंजन।

ऊर्मिमाली [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

ऊर्मिल [वि] (सं.) तरंगित। जिसमें लहरें उठती हों।

ऊलंग [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की धाय।

ऊलजलूल [वि.] (देश.) १-असम्बद्ध। ऊटपटांग। अंडबंड। २-अनाड़ी। बेसमझ। ३-अशिष्ट। बेअदब।

ऊलना ॐ [क्रि. अ.] (हिं.) १-उछलना। प्रसन्न होना।

ऊलर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काश्मीर रा एक बड़ी झील।

ऊलूक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'उलूक'।

ऊष [संज्ञा पु.] (सं.) १-खारी मिट्टी। २ का छेद। ३-तड़का।

ऊषक [संज्ञा पु.] (सं.) सवेरा। प्रत्यूष काल।

ऊषर [संज्ञा पु.] (सं.) ऊसर। रेह की भूमि।

ऊषा [संज्ञा पु.] (सं.) १-अरुणोदय। पौ का समय। २-प्रभात। सवेरा। ३-अनि की पत्नी जो बाणासुर की कन्या थी।

ऊषाकाल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल। सवे तड़का। अरुणोदय।

ऊषापति [संज्ञा पु.] (सं.) अनिरुद्ध।

ऊष्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरमी। २-भाप। गरमी का मौसम। [वि] गरम।

ऊष्मवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) श, ष, स और ह चार अक्षर व्याकरण में ऊष्म कहलाते हैं।

उष्मांतःस्थ, उष्मान्तःस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर, जो पूरा न हो।

उष्मा [संज्ञा स्त्री] (सं.) ग्रीष्मकाल। २-गरमी। ३-भाप।

ऊसर [संज्ञा पु.] (हिं.) नोनी भूमि जिसमें उत्पन्न न हो।

ऊह [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुमान। विचार। तर्क। दलील। [अव्य.] (हिं.) १-दुःख क्लेशसूचक शब्द। २-विस्मय-सूचक शब्द

ऊहन [संज्ञा पु.] (सं.) तर्क। दलील।

ऊहनीय [वि.] (सं.) तर्क करने योग्य। विच योग्य।

ऊहा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ऊह'।

ऊहापोह [संज्ञा पु.] (सं.) मन में होने वाला तर्क वितर्क। सोच-विचार।

ऊहित [वि.] (सं.) १-तर्क या बहस कि हुआ। २-छिपा हुआ। ३-अनुमान कि हुआ।

ऋ

ऋ हिन्दी वर्णमाला या सातवाँ स्वर वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ऋ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवमाता। अदिति। २-निंदा। बुराई।

ऋक् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऋग्वेदोक्त मन्त्र ऋचा। २-स्तुति। पूजा। ३-देखो 'ऋग्वेद'

ऋक्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुवर्ण। सोना। २ धन। दौलत। ३-विरासत। दायधन। ४

ः हिस्से की जायदाद । हिस्सा ।

ऋक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्षत्र । तारा । २-भालू । ३-मेष, वृष आदि राशि । ४-भिलावाँ । ५-शोनाकवृक्ष ।

ऋक्षजिह्वा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।

ऋक्षनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा । चाँद ।

ऋक्षनेमि [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु ।

ऋक्षपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-भालुओं के सरदार जाँबवान ।

ऋक्षराज [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

ऋक्षवान [संज्ञा पु.] (सं.) ऋक्षपर्वत जो नर्मदा नदी के किनारे से लेकर गुजरात नक फैला हुआ है ।

ऋक्षेश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

ऋग्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) चारों वेदों में से पहला वेद, जो पद्य में है ।

ऋग्वेदी [वि.] (सं.) ऋग्वेद का पढ़नेवाला या जानने वाला ।

ऋचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह वेदमन्त्र जो पद्य में हों । २-स्तुति । स्तोत्र । ३-वेदमन्त्र ।

ऋचीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम ।

ऋच्छ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ऋक्ष' ।

ऋच्छका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इच्छा । अभिलाषा ।

ऋजीक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।
[वि.] (सं.) १-मिला हुआ । रंगा हुआ । बिगड़ा हुआ ।

ऋजीष [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का तसला । २-सीठी । ३-सोमलता की सीठी ।

ऋजु [वि.] (सं.) १-सीधा । जो टेढ़ा न हो । २-सरल । सुगम । ३-सीधे स्वभाव का सज्जन । ४-अनुकूल । प्रसन्न ।

ऋजुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीधापन । २-सरलता । सुगमता । ३-सरल प्रकृति । सज्जनता ।

ऋजुनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीधी चाल ।

ऋजहस्त [वि.] (सं.) हाथ फैलाया हुआ ।

ऋण [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ समय के लिए किसी से कुछ द्रव्य लेना । कर्ज । उधार ।
ऋण उतारना-कज उतारना । ऋण चढ़ना-कज बढ़ना । ऋण पटना, पटाना-कज वसूल होना या वसूल करन ।

ऋणकर्ता [वि.] (सं.) ऋण लेने वाला कर्जदार ।

ऋणग्रस्त [वि.] (सं.) ऋण के भार से लदा हुआ ।

ऋणग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) ऋण लेने वाला व्यक्ति

ऋणग्राहक [वि.] (सं.) ऋण लेने वाला ।

ऋणद [वि.] (सं.) ऋण चुकाने वाला ।

ऋणदाता [वि.] (सं.) ऋण देने वाला ।

ऋणदायक [वि.] (सं.) ऋण देने वाला ।

ऋणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पत्र या कागज जिसके आधार पर कोई किसी से ऋण या कर्ज लेता है । २-वह पत्र जिसके आधार पर जनसाधारण से कोई संस्था ऋण या कर्ज लेती है ।

ऋणमार्गण [संज्ञा पु.] (सं.) जामिन । प्रतिभू ।

ऋणमुक्त [वि.] (सं.) कर्जा अदा किया हुआ ।

ऋणमुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्जे की अदायगी । ऋणपरिशोधन ।

ऋणमोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) ऋण से छुटकारा ।

ऋणमोक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) १५ प्रकार के दासों में से एक ।

ऋणशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्ज अदा होने का भाव । ऋणपरिशोधन ।

ऋणार्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋण को चुकाने के लिए दूसरा ऋण लेना ।

ऋणिक [संज्ञा पु.] (सं.) ऋणी । कर्जदार ।

ऋणिया + [वि.] (हिं.) ऋणी ।

ऋणी [वि.] (हिं.) १-ऋण लेने वाला । कर्जदार । देनदार । २-उपकृत । उपकार मानने वाला ।

ऋत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्य । सचाई । २-उंछवृत्ति । ३-मोक्ष । ४-जल । ५-कर्मफल । ६-यज्ञ । [वि.] २-दीप्त । २-पूजित । ३-सत्य ।

ऋतधामा [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर । विष्णु । [वि.] शुद्ध प्रकृति या स्वभाव वाला ।

ऋतपेय [संज्ञा पु.] (सं.) एकाहयज्ञ जो छोटे छोटे पापों के नाश के निमित्त किया जाता है

ऋतस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञपति वायु ।

ऋति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कल्याण । भलाई । २-गति । ३-स्पर्द्धा । ४-निंदा । ५-मार्ग ।

ऋतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-काल विशेष । मौसम । एक वर्ष में छः मौसम या ऋतु होती हैं । जैसे—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर । २-रजोदर्शन के पीछे का वह समय जिसमें स्त्रियाँ गर्भ धारण करती हैं ।

ऋतुकर [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव । शिव ।

ऋतुकाल [संज्ञा पु.] (सं.). रजोदर्शन की पहली रात्रि से सोलहवी रात्रि तक का समय जिसमें स्त्रियां गर्भ धारण करती हैं ।

ऋतुगमन [संज्ञा पु.] (सं.) ऋतुकाल में स्त्री से सम्भोग ।

ऋतुगामी [वि.] (सं.) ऋतुकाल में स्त्री सम्भोग करने वाला ।

ऋतुचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था ।

ऋतुदान [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भाधान ।

ऋतुप्राप्त [वि.] (सं.) फलने वाला (वृक्ष) ।

ऋतुमती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-रजस्वला । मासिकधर्मयुक्ता । जिसका ऋतुकाल हो ।

ऋतुराज [संज्ञा पु.] (सं.) वसन्तकाल ।

ऋतुवती [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'ऋतुमती'

ऋतुविपर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) मौसम का उलट-पलट ।

ऋतुसमय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ऋतुकाल' ।

ऋतुस्नाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋतुकाल के चौथे दिन स्नान करनेवाली स्त्री ।

ऋतुस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) ऋतुदर्शन के चौथे दिन स्नान ।

ऋत्विक् [संज्ञा पु.] (सं.) वेदमन्त्रों द्वारा कर्मकांड कराने वाला व्यक्ति । पुरोहित ।

ऋत्विज [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ऋत्विक्' ।

ऋद्ध [वि.] (सं.) संपन्न । समृद्ध ।

ऋद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बढ़ती । समृद्धि । वृद्धि । २- वैद्यक के अनुसार अष्टवर्ग के अतंर्गत एक औषधि ।

ऋद्धि-सिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समृद्धि और सफलता । सुख-सम्पत्ति ।

ऋनिया [वि.] (हिं.) ऋणी-कर्जदार ।

ऋनी [वि.] (हिं.) ऋणी-कर्जदार ।

ऋभु [संज्ञा पुं.] (सं.) १-एक गण देवता । २-देवता ।

ऋभुक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग । २-वज्र । ३-इन्द्र ।

ऋषभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल । २-नाक नामक जल जंतु की पूंछ । ३-श्रेष्ठतासूचक शब्द । ४-संगीत के सात स्वर में से दूसरा ।

ऋषभदेव [संज्ञा पु.] (सं.) जैन धर्म के आदि तीर्थङ्कर ।

ऋषभध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) शिव महादेव ।

ऋषभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुरुष के समान रंग रूप वाली स्त्री ।

ऋषि [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदमन्त्रों का प्रकाशक । मंत्रद्रष्टा । २-अध्यात्मिक तथा भौतिक तत्वों का ज्ञाता ।

ऋषिऋण [संज्ञा पु.] (सं.) ऋषियों के प्रति कर्तव्य जो वेदों का पठनपाठन है ।

ऋषिकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत कालीन एक नदी का नाम ।

ऋषीक [संज्ञा पु.] (सं.) ऋषि का पुत्र ।

ऋष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शस्त्र । हथियार । २-खड्ग । तलवार । ३-दीप्ति । कान्ति ।

ऋष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण कालीन दक्षिण का एक देश ।

ऋष्य [संज्ञा पु.] (सं.) हलके काले रंग का एक प्रकार का मृग ।

ऋष्यकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) अनिरुद्ध।

ऋष्यप्रोक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) सतावर।

ऋष्यमूक [संज्ञा पु.] (सं.) भारत के दक्षिण का एक पर्वत।

ऋष्यशृंग [संज्ञा पु.] (सं) एक ऋषि जो विभांडकऋषि के पुत्र थे।

ॠ

ॠ हिन्दी तथा संस्कृत स्वर का आठवां अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसका प्रयोग केवल संस्कृत ही में होता है।

ॠ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छाती। वक्षःस्थल। २–देवमाता। स्मृति। [संज्ञा पु.] १–महादेव। भैरव।

ऌ

ऌ हिन्दी तथा संस्कृत स्वर का नवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान दन्त है। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवमाता भूमि।

ॡ

ॡ हिन्दी तथा संस्कृत स्वर का दसवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान दन्त है। पाणिनि के अनुसार यह लृकार का दीर्घ नहीं होता। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–देवनारी। २–माता। ३–कामधेनु। ४–दैत्य स्त्री। [संज्ञा पु.] शंकर। महादेव। शिव।

ए

ए स्वर वर्ण का ग्यारहवां अक्षर, इसका उच्चारण स्थान कंठ और तालु है। यह अ और इ के योग से बनता है।

एँचपेंच [संज्ञा पु.] (हिं.) १–उलझन। घुमाव। उलझाव। २–घात। चाल। टेढ़ी चाल। गूढ़ युक्ति।

एँचाताना [वि.] (हिं.) तिरछा देखने वाला।

एँचातानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खींचखांच। २–कलह। २–युद्ध।

एँजिन [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'इंजन'।

एँड़ाबेंड़ा [वि.] (हिं.) उलट-पुलट। उलटा-सीधा। अंडबंड।

एँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो रेंड़ के पत्ते खाता है। इस कीड़े से निकले हुए रेशम को अंडी कहते हैं।

एँडुआ, एँडुवा [संज्ञा पु.] (हि.) बोझा संभालने के लिए रखी गई सिर पर गोल गद्दी।

ए [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। [अव्य.] (हिं.) इस अव्यय का प्रयोग बुलाने में करते हैं। ❀ [सर्व.] यह।

एकंग, एकङ्ग [वि.] (हिं.) अकेला। तनहा।

एकंगा, एकङ्गा [वि.] (हिं.) एक ओर का या एक तरफ का।

एकंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का गदका

एकँड़िया [वि.] (हिं.) एक अंडे का। [संज्ञा पु.] एक ही अंडकोष वाला घोड़ा या बैल। २–एक पुतिया लहसन। ३–लहसन की गांठ।

एकंत [वि.] (हिं.) देखो 'एकांत'।

एक [वि.] (सं.) १–इकाइयों में पहली तथा सबसे छोटी संख्या। २–अकेला। एकता। ३–अनुपम। अद्वितीय। बेजोड़। ४–कोई। अनिश्चित। किसी। ५–समान। तुल्य। एक ही तरह का।

एक अंक या एक आँक–एक ही बात। दृढ़ निश्चय। *एक आंख न भाना*–बिलकुल, थोड़ी देर के लिए भी अच्छा न लगना। *एक आंख से देखना*–एकसा समझना।

एक-एक करके–बारी बारी से। *एक-एक के दो-दो करना*–१–दूना लाभ लेना। २–एक काम से दो काम बनाना। ३–मनसूबे बांधना। व्यर्थ समय गवांना। *एक-एक कोना छान मारना*–सारे में ढूँढ़ लेना। *एक एक पग चलना दूभर होना*–थकान अथवा निर्बलता से चल न पाना। *एक और एक ग्यारह होना*–मेल से अत्यधिक शक्ति बढ़ जाना। *एक कहूँ न दस सुनूँ*–किसी को खोटी खरी न कहो जिससे सुनना पड़े। *एक की दस सुनाना*–एक खोटी बात के बदले में अधिक खोटी बातें सुनना। *एक की दो कह लेना*-दुगना बदला लेना। *एकजान करना*–१–दूसरे की भी अपनी जैसी अवस्था करना। २-मरना या मारना। *एक टांग से खड़ा रहना*–१–काम पर तैयार रहना। २–भक्ति अथवा सेवा करना। *एक डाल पर रहना*–१–बात न बदलना। २–स्थायित्व। *एक तरकस के तीर हैं, एक जान, एक ही बात है*–एक गुट्ट के। *एक दो तीन बोलना या होना*–१–नीलाम करना। २–कार्य प्रारम्भ करने का अन्तिम क्षण। *एक न चलना*–कोई युक्ति सफल न होना। *एक पर एक होना*–एक से दूसरा बढ़ा हुआ होना। *एक बाजार बन्द होना*–काना होना। *एक बात, एक जबान*-१–पक्का वायदा। २–बंधे हुए दाम। ३–सच्ची बात। *एक मां बाप का होना*-१-

रहना। २–जबान में पक्के होना।

बोलना, होना–सब की एक राय।

से कहना–एक की राय या मत

मिलना। *एक लांठी से हांकना*-

सब से एक जैसा व्यवहार करना।

के ढले–शक्लसूरत में एक। एक से

बढ़कर। *एक से इक्कीस होना, देना,*

वृद्धि करना। फलना। फूलना।

न रहना–सर्वदा एक जैसी अवस्था

रहना। *एक से दिन न जाना*–दुःख

स्थायी न रहना। *एक ही भाव तौल*-

को एक समान समझना।

एकक [वि.] (सं.) १–एक से सम्बन्ध वाला। जिसमें एक ही हो। सोल। हाय। अकेला।

एकक-शारीरक [संज्ञा पु.] (सं.) वह (संस्था) जो एक ही व्यक्ति से संबंध हो।

एककुंडल, एककुण्डल [संज्ञा पु.] बलराम। २–कुबेर।

एक-गाछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक ही तने को खोखला बनाकर बनाई हुई

एकचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य का सूर्य।

एकचर [वि.] (सं.) अकेले चरने वाला। [संज्ञा पु.] १–सिंह, साँप आदि अकेले वाले जन्तु। १–गैंड़ा।

एकचरण [वि.] (सं.) एक पैर वाला।

एकचारी [वि.] (सं.) अकेला चरने वाला।

एकचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिव्रता

एकचित [वि.] (हिं.) देखो 'एकचित'।

एकचित्त [वि.] (सं.) १–एकाग्रचित्त। दिल। खूब हिलामिला।

एकचित्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ध्यान की या एकाग्रता।

एकचोबा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक ही सहारे खड़ा होने वाला तम्बू या खेमा।

एकछत्र [वि.] बिना और किसी के का (राज्य)। अभिन्न शासन का। सम्पन्न। [संज्ञा पुं.] अनन्य शासन एक ही का पूर्णप्रभुत्व हो।

एकज [वि.] (सं.) एकही। एकमात्र। [संज्ञा पु.] (सं.) १–शूद्र। २–राजा।

एकजद्दी [वि.] (फा.) जो एक ही पूर्वज से हुए हों।

एकजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्र। राजा। सहोदर। एक ही माँ-बाप से उत्पन्न। वस्तु से उत्पन्न।

एकजात [वि.] (सं.) समान जाति वाला। ही जाति से उत्पन्न।

एकजाति [वि.] (सं.) समान जाति वाला। एक ही जाति से उत्पन्न।

एकजातीय [वि] (सं.) एक ही जाति से संबंध रखने वाला।

एकज़िक्यूटिव [वि.] (अं.) १-प्रबंध विषयक। कार्य सम्पदान-संबंधी। २-प्रबंध करने वाला कार्यरूप में परिणत करने वाला।

एकज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वृत्त के व्यासार्ध का चिह्न।

एकटंगा [वि] (हि) एक टांग का लंगड़ा।

एकट [संज्ञा पु.] (अं.) अधिनियम। विधि। कानून। व्यवस्था।

एकटकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) स्तब्ध दृष्टि। टकटकी।

एकट्ठा [वि.] (हि.) एकत्र। जमा किया हुआ।

एकठा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'एक गाछी'।

एकड़ [संज्ञा पु.] (हि.) भूमि की एक नाप जो एक बीघा और बारह बिस्वा के लगभग होती है।

एकडाल [वि] (हिं.) १-एकमेल का। एक ही तरह का। २-एक ही टुकड़े का बना हुआ। [संज्ञा पु.] वह धुरा या कटार जिसका फल और बेंटा एक ही लोहे का होता है।

एकतंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सम्पूर्ण अधिकार एक राजा अथवा अधिनायक को प्राप्त हों। [वि.] (सं.) जिसमें कहीं और किसी का आधिपत्य न हो।

एकत: [क्रि. वि.] (सं.) एक ओर से। एक पक्ष में।

एकत* [क्रि. वि] (हिं.) एकत्र। एक जगह। इकट्ठा।

एकतरफा [वि.] (फा.) १-एक ओर का। एक पक्ष का। २-पक्षपात किया हुआ। एकरुखा या पार्श्व का।

एकतरफा डिगरी-मुद्दालैह के उपस्थित न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो।

एकतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक दिन छोड़कर चढ़ने वाला ज्वर।

एकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेल। एक्य। २-समानता। बराबरी। ३-अभिन्नता। [वि.] (फ़ा.) अकेला। अनोखा। अद्वितीय। अनुपम

एकतान [वि.] (सं.) तन्मय। लीन। एकाग्रचित्त। एक ही काम से चित्त लगाये हुए। [संज्ञा पु.] स्वर और ताल की एकता। गाने-बजाने का मेल।

एकतारा [संज्ञा पु.] (हि.) सितार के समान एक तार का बाजा।

एकतारी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार का आभूषण।

एकताल [संज्ञा पु.] (सं.) गीत वाद्य का सुरीला गाना।

एकताला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक ताल का गाना-बजाना। जिसमें अन्य ताल की आवश्यकता न हो।

एकतालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो रोगों से मिल कर बने हुए रोगों में से एक।

एकतालीस [वि.] (हिं.) चालीस और एक '४१'

एकतीर्थी [संज्ञा पु.] (हिं.) गुरू भाई।

एकतीस [वि.] (हिं.) तीस और एक '३१'।

एकत्र [क्रि. वि.] (सं.) एकट्ठा। एक जगह।

एकत्रा [संज्ञा पु.] (सं.) कुल जोड़। मीजान। टोटल।

एकत्रित [वि.] (सं.) संगृहीत। इकट्ठा किया हुआ।

एकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एकता। मेल। २-एक ही प्रकार का या बिलकुल एकसा होना। पूर्ण समानता।

एकदंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

एकदंत, एकदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) गणेशजी।

एकदंता [वि.] (हि.) एक दांत वाला।

एकदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक दर का दालान।

एकदस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कुश्ती का एक पेच

एकदा [क्रि. वि.] (सं.) एक समय। एक बार।

एकदृक [वि.] (सं.) १-काना। २-समदर्शी। ३-ब्रह्मज्ञानी। तत्वज्ञ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-कौवा।

एकदृष्टि [वि. संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'एकदृक'।

एकदेव [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा।

एकदेश [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्थान। एक ही जगह।

एकदेशी, एकदेशीय [वि.] (सं.) १-एक देशवासी। २-जो सर्वत्र व्यापक न हो।

एकदेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुध ग्रह। २- गोत्र। वंश। ३-दम्पती।

एकनयन [वि.] (सं.) काना। एक आंखका।
[संज्ञा पु.] १-कौवा। २-कुबेर।

एकनिष्ठ [वि.] (सं.) एकासक्त। एक ही में लीन।

एकनेत्र [वि.] (सं.) देखो एक नयन'।

एकपक्ष [वि. (सं.) एक ही पक्षवाला। पक्षपाती।

एकपक्षीय [वि.] (सं.) एक तरफा। एक ओर का।

एकपटा [वि.] (हिं.) एक पार का। जिसमें जोड़ न हो।

एकपट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

एकपतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक ही पतिकी स्त्री।

एकपत्नी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जो एक ही पत्नी हो। पतिव्रता।

एकपत्नी-व्रत [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही पत्नी रखने वाला व्यक्ति। विवाहित पत्नी को छोड़ अन्य स्त्री से प्रेम न करने वाला। व्यक्ति

एकपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधारण शब्द २-वैकुंठ। ३-कैलाश।

एकपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पगडंडी रास्ता।

एकपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

एकपर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्गा।

एकपात् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-सूर्य। ३-शिव।

एकपिंग [संज्ञा पु.] (सं) कुबेर।

एकपिंगल [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

एकपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं) १-कौड़िल्ला पक्षी।

एकपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) प्रधान पुरुष। परमेश्वर

एकपेचा [वि..] (फा.) एक पेच का। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की पतली पगड़ी।

एकप्रभुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) साम्राज्य। सलतनत

एकफर्दा [वि.] (फा.) एक ही बार फलने वाला।

एकफसला [वि.] (फा.) वर्ष में केवल एक ही फसल उपजे।

एकबद्धी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एकपरत की रस्सी।

एकबारगी [क्रि. वि.] (फा.) १-एक ही समय में। २-अकस्मात्। अचानक। ३-सारा। बिलकुल।

एकबाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रताप। २-भाग्य। ३-स्वीकार।

एकभार्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिव्रता स्त्री। साध्वी।

एकभुक्त [वि.] (सं.) जो रात दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला।

एकमत [वि.] (सं.) समान मत के। एक राय के।

एकमात्रिक [वि.] (सं.) एकमात्रा का। जिसमें एक ही मात्रा हो।

एकमुँहा [वि.] (हिं.) एक मुँह का।

एकमुखी [वि.] एक मुँह वाला।

एकमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शाल-पर्णी। २-तीसी। अलसी।

एकरंग [वि.] (हि.) १-तुल्य। बराबर। [२-स्वच्छ हृदय का। ३-चारों ओर एक समान।

एकरदन [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

एकरस [वि.] (सं.) समान। एक ढंग का। न बदलने वाला।

एक-राजतंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का राज्य। एक प्रकार की शासन-प्रणाली जिसके अनुसार एक राजा कुछ मंत्रियों की सहायता से सारे राज्य का शासन करता हो।

एकरात्रिक [वि.] (सं.) एक रात में होनेवाला।

एकरार [संज्ञा पु.] (अ.) १-स्वीकार। स्वीकृति। मंजूरी। २-प्रतिज्ञा। वादा।

एकरूप [वि.] (सं.) १-समान आकृति का। एक ही रूप का। २-ज्यों का त्यों। जैसे का तैसा।

एकरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समानता। एकता। बराबरी। २-सायुज्य मुक्ति।

एकरूपी [वि.] (सं.) एकसा। एक तरह का।

एकलंगा [संज्ञा पु.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच।

एकलंगाडंड [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की कसरत या व्यायाम।

एकल* [वि.] (सं.) १-अकेला। २-अद्वितीय।

एकलत्तीछपाई [संज्ञा स्त्री.] (?) कुश्ती का एक पेंच।

एकल-निगम [संज्ञा पु.] (सं.) वह निगम (संस्था) जो एक ही व्यक्ति से संबंध रखती हो। *सोल-कारपोरेशन*।

एकलव्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक निषाद का नाम जिसने द्रोणाचार्य की मूर्ति से आस्था रखकर शस्त्राभ्यास किया था।

एकल-संक्रमणीय-मत [संज्ञा पु.] (सं.) एकहरा संक्रास्यमत। मत या वोट देने का एक ढंग जिसमें मतदाता किसी पत्र आदि पर लिखित रूप से अपना मत उम्मेदवार को चुनने के निमित्त देता है।

एकला*+ [वि.] (हि.) अकेला। एकाकी।

एकलिंग, एकलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव का एक नाम। २-कुबेर। ३-एकलिंग का मंदिर जो राजस्थान राज्य के उदयपुर प्रदेश के अंतर्गत है।

एकलो+ [संज्ञा पु.] (हि.) तास का एका।

एकलौता [वि.] (हिं.) देखो 'इकलौता'।

एकवचन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह वचन जिसमें एक का बोध हो।

एकवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठ जाति। २-एक अक्षर।

एकवर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करताल।

एकवर्षी [वि.] (हिं.) एक ही वर्ष तक जीवित रहकर नष्ट हो जाने वाला।

एकवाँज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जिस स्त्री के एक ही संतान हुई हो। काकवंध्या।

एकवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थ का बोध करने वाला वाक्य। राय की बात।

एकवाक्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुछ लोगों का कथन या मत एक होना। ऐकमत्य।

एकवाद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डायन। चुड़ैल।

एकविध [वि.] (सं.) एकही प्रकार का साधारण।

एकवृंद, एकवृन्द [संज्ञा पु.] (सं.) गले का एक रोग।

एकवेणी [वि.] (सं.) १-वह स्त्री जो अपने सब बालों की एक ही वेणी या लट गूंथकर रखे। २-विधवा। वियोगिनी।

एकशफ [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जिसके खुर फटे न हों, जैसे-घोड़ा, गधा आदि।

एकश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदपाठ का ढंग।

एकशृंग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक सींग वाला पशु। २-विष्णु।

एकसठ [वि. (हिं.) साठ और एक '६१'।

एकसत्तावाद [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शन का एक मत या सिद्धान्त जिसमें सत्ता ही प्रधान वस्तु मानी गई है।

एकसर*+ [वि.] (हिं.) १-अकेला। २-एक पल्ले का। एक परत का [वि.] (फा.) पूरा। परिपूर्ण। तमाम।

एकसाँ [वि.] (फा.) १-समान। बराबर। २-समतल। हमवार।

एकस्थ [वि.] (सं.) एक स्थान में रखा हुआ।

एकस्व [वि.] (सं.) स्वाधिकार। अपना अधिकार। पेटेंट।

एकस्व-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य से प्राप्त वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा अपनी किसी वस्तु अथवा अविष्कार का सार्वाधिकार सुरक्षित रहे। पेटेंट-लैटर।

एकहत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और एक '७१'।

एकहत्था [वि.] (हि.) १-एक ही हाथ से काम करनेवाला। २-(काम या व्यवसाय) जो एक ही हाथ में हो।

एकहरा [वि.] (हि.) एक परत का। २-एक लड़ी का।

एकहरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कुश्ती का पेच।

एकहत्थी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मालखंभ की एक कसरत।

एकहाज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाच।

एकांकी, एकाङ्की १-रूप के दस-दस भेदों में से एक। इसमें प्रसिद्ध नायक का चरित्र होता है, जिसका कथानक रसमय हो। इसकी भाषा सरल तथा वाक्य छोटे-छोटे और सारयुक्त होने चाहिएं। २-एक ही अंक में समाप्त होने वाला नाटक।

एकांग, एकाङ्ग [वि.] (सं.) एक अंग का। जिसके एक अंग हो। [संज्ञा पु.] १-बुद्ध-ग्रह। २-चंदन।

एकांगी, एकाङ्गी [वि.] (सं.) १-एक पक्ष का। एकतरफा। २-हठी। जिद्दी।

एकांत, एकान्त [वि.] (सं.) १-अत्यंत। बिलकुल। नितांत। २-अलग। पृथक। अकेला [संज्ञा पु.] (सं.) निर्जन स्थान।

एकांतकैवल्य, एकान्तकैवल्य [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ति का एक भेद। जीवनमुक्ति।

एकांतता, एकान्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अकेलापन। निर्जनता।

एकांतर, एकान्तर [रिका] [वि.] (सं.) को छोड़कर एक। एक के अन्तर से।

एकांतवास, एकान्तवास [संज्ञा पु.] (सं.) स्थान में रहना। अकेले में रहना।

एकांतवासी, एकान्तवासी [वि.] (सं.) में रहने या निवास करने वाला।

एकांतविहारी, एकान्तविहारी [वि.] अकेला घूमने वाला।

एकांतस्वरूप, एकान्तस्वरूप [वि.] (सं.) निर्लिप्त।

एकांतिक, एकान्तिक [वि.] (सं.) देखो देशीय'।

एकांती, एकान्ती [संज्ञा पु.] (सं.) वह एकान्त में बैठकर भगवत् भजन

एका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा। [संज्ञा पु.] एकता। ऐक्य। मेल।

एकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एकत्व। मान। २-वह मात्रा जिसके गुणन से दूसरी मात्राओं का मान निश्चित जाता है। यूनिट। ३-अंकों की गिनती में अंक अथवा उसका स्थान।

एकाएक [क्रि. वि.] (हि.) अकस्मात्। सहसा।

एकाएकी* [क्रि. वि.] (हि.) एकाएक। नक। सहसा। [वि.] अकेला। तनहा।

एकाकार [संज्ञा पु.] (सं.) मिलमिला होने का भाव। भेद का अभाव।

एकाकी [वि.] (सं.) अकेला। तनहा।

एकाकीपन [संज्ञा पु.] (हिं.) अकेलापन।

एकाक्ष [वि.] (सं.) काना। एक आंख [संज्ञा पु.] १-कौआ। २-शुक्राचार्य।

एकाक्षपिंगल [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

एकाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) एक ओंकार।

एकाक्षरी [वि.] (सं.) १-एक अक्षर जिसमें एक अक्षर हो। २-एक संबंधित।

एकाग्र [वि.] (सं.) १-एक ओर स्थिर। रहित। २-एक ही ओर मन अनन्यचित।

एकाग्रचित [वि.] (सं.) एक ही ओर लगाये हुए। स्थिरचित्त।

एकाग्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन का एक ही विषय में आसक्ति।

एकाग्रत्व [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'एकाग्रता'।

एकाग्रदृष्टि [वि.] (सं.) एक ही विषय डालने वाला।

एकात्मता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-अभेद। २-एक ही आत्मा का भाव। रूप, गुण आदि के विचार से

होना कि दोनों एक जान पड़ें। आइडेंटिटी।

एकात्मवाद [संज्ञा पु.] (सं.) सारे संसार के प्राणियों तथा पदार्थों में एक ही आत्मा व्याप्त है, ऐसा मानने का सिद्धांत या मत।

एकात्मवादी [वि.] (सं.) एकात्मवाद का अनुयायी या मानने वाला।

एकात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) अद्वितीय आत्मा।
[वि.] एक रूप।

एकादश [वि.] (सं.) ग्यारह।

एकादशाह [संज्ञा पु.] (सं.) मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का (हिन्दु) कृत्य।

एकादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चान्द्रमास के शुक्ल तथा कृष्णपक्ष की ग्यारहवीं तिथि।

एकादेश [संज्ञा पु.] (सं.) एक आज्ञा। व्याकरण में दो शब्दों या स्थान में एक ही आदेश।

एकाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य, वस्तु या व्यवसाय पर किसी व्यक्ति, समाज अथवा दल का होने वाला एक मात्र अधिकार। मोनोपोली।

एकाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मात्र स्वामी २-सम्राट।

एकाधिपत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम या राष्ट्र पर किसी व्यक्ति, दल अथवा समाज का होने वाला एक मात्र आधिपत्य। २-देखो 'एकाधिकार'।

एकायन [वि.] (सं.) १-एकाग्र। २-एक मात्र चलने योग्य (राह)

एकार्थ [वि.] (सं.) समान अर्थवाला।

एकार्थक [वि.] (सं.) समानार्थक।

एकावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक काव्यालंकार जिसमें शृंखला-बद्ध वर्णित पदार्थों में विशेषण-विशेष्य-भाव सम्बन्ध हो। या, जिसमें पूर्व का तथा पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन या निषेध प्रदर्शित किया जाता है। [वि.] एकहरा। एक लर का।

एकाह [वि.] (सं.) एक दिन में समाप्त होने वाला

एकाहार [संज्ञा पु.] (सं.) दिन में केवल एक बार भोजन।

एकाहारी [वि.] (सं.) दिन में केवल एक बार भोजन करने वाला।

एकाहिक [वि.] (सं.) एक दिन में समाप्त होने वाला। एक दिन का।

एकीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) दो या दो से अधिक वस्तुओं को मिलाकर एक करना। मिलाकर एक करना। एमल्गमेशन।

एकीकृत [वि.] (सं.) इकट्ठा किया हुआ। मिलाया हुआ।

एकीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिलाना। एक होना। २-इकट्ठा होना।

एकीभूत [वि.] (सं.) १-मिला हुआ। मिश्रित। २-जो इकट्ठा किया हुआ हो।

एकेक्षण [वि.] (सं.) काना। एक आंख का।

एकेंद्रिय, एकेन्द्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) वह जीव जिसके केवल एक ही इन्द्रिय अर्थात त्वचा होती है। जैसे—जोंक आदि।

एकैक [वि.] (सं.) एकाकी। अकेला।

एकोतरसो [वि.] (हिं) एक सौ एक।

एकोतरा [संज्ञा पु.] (हि.) एक रुपया प्रतिशत सूद।
[वि.] एक दिन अन्तर देने वाला।

एकोदर [संज्ञा पु.] (सं.) सहोदर। एक ही पेट से उत्पन्न।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध) [संज्ञा पु.] (सं.) किसी एक मृत व्यक्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध।

एकौंझा* [वि.] (हिं.) अकेला। तनहा।

एकौतना+ [क्रि. अ.] (हिं.) धान अथवा गेहूँ में उस पत्ते का निकलना जिसके गाभ में बाल हो।

एक्का [वि.] (हिं.) १-एक वाला। एक से संबंध रखने वाला। २-अकेला। एकाकी।
[संज्ञा पु.] १-झुंएड छोड़कर अकेला चरताहुआ घूमने वाला पशु या पत्ती। २-एक बूटी वाला ताश। ३-दुपहिया गाड़ी जिसमें एक बैल घोड़ा खैंचता है। ४-वह वीर योद्धा जो अकेला बड़े, बड़े काम कर सकता हो।

एक्कावान [संज्ञा पु.] (हि.) एक्का हांकने या चलाने वाला व्यक्ति।

एक्कावनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक्का हांकने का कार्य। २-एक्का हांकने की मजदूरी।

एक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक बैल से चलने वाली गाड़ी। २-एक बूटी वाला ताश का पत्ता।

एक्यानवे [वि.] (हिं.) नब्बे और एक '९१'।

एक्यावन [वि.] (हिं.) पचास और एक '५१'।

एक्यासी [वि.] (हिं.) अस्सी और एक '८१'।

एक्सचेंज [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह स्थान जहां नगर व्यवसायी व्यक्ति तथा महाजन परस्पर लेन देन अथवा क्रयविक्रय के निमित्त एकत्रित होते हैं।

एक्सपोज [संज्ञा पु.] (अ.) सम्मुख अथवा निकट रखने का कार्य।

एखनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मांस का रस अथवा शोरवा।

एगानगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-ऐक्य। २-मैत्री।

एजेंट, एजेंट [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'अभिकर्ता'

एजेंसी, एजेंसी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'अभिकरण'।

एड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'एड़ी'।
एड़ करना-१-एड़ लगाना। २-चलदेना।
एड़ देना व लगाना-१-घोड़े को एड़ी मारकर चलाना। २-भले-चंगे कार्य में बाधा उपस्थित करना। ३-लात मारना।

एड़क [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़ा। मेढ़ा।

एडिटर (अं.) किसी पुस्तक या पत्र को ठीक करके प्रकाशित करने योग्य बनाने वाला। सम्पादक।

एडिटरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एडिटर या सम्पादक कार्य।

एड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पैर के नीचे का पिछला निकला हुआ भाग।
एड़ी घिसना या रगडना-१-दुःख झेलकर मरना। २-बहुत दौड़-धूप या यत्न करना।
एड़ी से चोटी तक-१-सिर से पैर तक। २-आदि से अंत तक।

एडीकांग, एडीकांग [संज्ञा पु.] (सं.) सेनापति का सहायक तथा अंगरक्षक।

एड्रेस [संज्ञा पु.] (अं.) १-मानपत्र। २-पता। ठिकाना।

एढ़ा* [वि.] (हि.) बलवान। बली।

एण [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी मृग।

एतक़ाद [संज्ञा पु.] (अ.) विश्वास। भरोसा।

एतद [सर्व.] (सं.) यह।

एतदर्थ [क्रि. वि.] (सं.) १-इसके लिए। २-इस हेतु। [वि.] इसी कार्य के लिए बना हुआ। एडहाक।

एतदर्थसमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एडहाक कमेटी। किसी कार्य के निमित्त मनोनीत कमेटी या समिति।

एतद्देशीय [वि.] (सं.) इस देश का।

एतबार [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वास। भरोसा।

एतराज [संज्ञा पु.] (अ.) विरोध। आपत्ति।

एतवार [संज्ञा पु.] देखो 'इतवार'।

एतवारी [वि.] (हिं.) १-एतवार को होने वाला। २-एतवार-संबंधी।

एता*+ [वि.] इतना। इस मात्रा या परिमाण का।

एतादृश [वि.] (सं.) ऐसा। इस के सदृश। इस के समान।

एतावत् [वि.] (सं.) इस परिमाण का।

एतावता [क्रि. वि.] (सं.) इसलिए।

एतिक*+ [वि.] (हि.) इतनी। इस परिमाण की।

एनस [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। २-अपराध। दोष।

एबा [संज्ञा पु.] देखो 'अबा'।

एमन [संज्ञा पु.] (हि.) कल्याण और केदारा

राग के मिलने से बना हुआ एक संपूर्ण जाति का राग।

एरंड [संज्ञा पु.] (सं) रेंड। रेंडी।

एरंडखरबूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) पपीता।

एरंडा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली।

एरंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुलेमान पर्वत तथा पश्चिम हिमालय के ६००० फुट की ऊंचाई पर लगने वाली एक झाड़ी।

एराफेर* [संज्ञा पु.] देखो 'हेरफेर'।

एराक [संज्ञा पु.] (अ.) अरब देश के अन्तर्गत एक प्रदेश जहां का घोड़ा बहुत अच्छी नस्ल का होता है।

एराकी [वि.] (फा.) एराक देश का। [संज्ञा पु.] एराक देश का घोड़ा।

एराफ़, एराब [संज्ञा पु.] (अ.) जहाज का पेंदाँ।

एलक* [संज्ञा पु.] (हि.) १–आटा छानने की चलनी। २–मैदा छानने का आखा।

एलकेशी [संज्ञा स्त्री.] (बं.) बंगाल में होने वाला एक प्रकार का बैंगन।

एलची [संज्ञा पु.] (तु.) १–दूत। २–राजदूत।

एलचीगीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दूत का कार्य।

एलविल [संज्ञा पु.] (सं.) कुवेर।

एला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–इलायची। २–शुद्ध राग का एक भेद।

एलुवा [संज्ञा पु.] (अ.) मुसव्वर।

एवं [क्रि. वि.] (सं.) ऐसा ही। इसी प्रकार।

एव [अव्य.] (सं.) इसी प्रकार से। ऐसे ही। भी। निश्चयार्थक शब्द।

एवज [संज्ञा पु.] (अ.) १–प्रतिफल। प्रतिकार। २–परिवर्त्तन। बदला। ३–स्थानापन्न पुरुष। बदले में काम करने वाला व्यक्ति।

एवजी [संज्ञा पु.] (फा.) स्थानापन्न या दूसरे के स्थान पर कुछ समय के लिये काम करने वाला व्यक्ति।

एवमस्तु [अव्य.] (सं.) ऐसा ही हो।

एशिया [संज्ञा पु.] (यू.) पांच बड़े महाद्वीपों में से एक।

एशियाई [वि.] (हिं.) एशिया का। एशिया संबंधी।

एषण [संज्ञा पु.] (सं.) १–जाना। गमन। २–अन्वेषण। छानबीन। ३–इच्छा। अभिलाषा। ४–खोज। तलाश। ५–लोहे का बाण।

एषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इच्छा। अभिलाषा।

एसिड [संज्ञा पु.] (अं.) अम्ल। तेजाब।

एह* [सर्व.] (हिं.) एषः। यह।

एहतमाम [संज्ञा पु.] (अ.) निरीक्षण। प्रबन्ध।

एहतियात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–सावधानी। होशियारी। बचाव। २–परहेज।

एहसान [संज्ञा पु.] (अ.) कृतज्ञता। उपकार।

एहसानमंद, मन्द [वि.] (अ.) कृतज्ञ। उपकार मानने वाला।

एहि* [सर्व.] (हिं.) एषः। यह।

एहो [अव्य.] (हि.) संबोधन शब्द। हे, अरे, ओ, ऐ।

ऐ

ऐ संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का बारहवां अक्षर इसका उच्चारण स्थान कंठ और तालु है।

ऐं [अव्य.] (हि.) १–इस अव्यय का प्रयोग भलीभांति न सुनी या समझी हुई बात को फिर सुनने या जानने के लिए होता है। २–एक आश्चर्यसूचक व्यय।

ऐंचना [क्रि. स.] (हि.) १–खींचना। तानना। २–ओढ़ना। दूसरे का कर्ज अपने जिम्मे लेना

ऐंचाताना [वि.] (हि.) फिरी हुई आंखि वाला। भेंगा देखने वाला।

ऐंचातानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'खींचा-खींची'

ऐंचना* [क्रि. स.] (हिं.) १–झाड़ना। साफ करना। २–(बालों में) कंघी करना। उँछना।

ऐंठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अकड़। ठसक। २–गर्व। घमंड। ३–द्वेष। विरोध। कुटिलभाव।

ऐंठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ऐंठने की क्रिया या भाव। २–मरोड़। बल। ३–तनाव।

ऐंठना [क्रि. स.] (हि.) १–घुमाव देना। मरोड़ना या बल देना। २–दबाव डाल कर वसूल करना। ३–धोखा देकर लेना। झंसा देना। [क्रि. अ.] (हि.) १–अकड़ दिखाना। गर्व करना। २–बल खाना घुमाव के साथ तनना

ऐंठवाना [क्रि. स.] (हि.) ऐंठने का काम दूसरे से करवाना!

ऐंठा (हि.) रस्सी बटने का एक औजार या यंत्र।

ऐंठावैंठा [वि.] (हि.) १–अंडबंड। २–बांका। टेढ़ा।

ऐंठाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'ऐंठवाना'।

ऐंठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मुड़ी हुई। फिरी हुई।

ऐंठू [वि.] (हि.) अकड़बाज। ऐंठ रखने वाला। घमंडी।

ऐंड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–ठसक। गर्व। घमंड। २–पानी का भंवर। [वि.] निकम्मा। खराब। नष्ट।

ऐंड़दार [वि.] (हि.) १–ठसक वाला। अभिमानी। गर्वीला। २–शानदार। बांका तिरछा

ऐंड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १–ऐंठना। बलखाना। २–अंगड़ाई लेना। अंगड़ाना। ३–इतराना। घमंड करना। [क्रि. स.] ऐंठना या बलदेना।

२–बदन तोड़ना। अंगड़ाना। ऐंड़ा ऐंड़ा फिरना या डोलना–इत

ऐंड़बेंड़ [वि.] (हि.) बांका तिरछा। हुआ।

ऐंड़ा [वि.] (हिं.) ऐंठा हुआ। टेढ़ा। [१–बाट अंहड़ा। २–सेंध। अंग ऐंड़ा करना–ऐंठ दिखलाना।

ऐंड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–अंगड़ाना लेना। २–इठलाना। अकड़ दिखाना।

ऐंढ़ा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का

ऐंदव, ऐन्दव [वि.] (सं.) चन्द्रमा सं [संज्ञा पु.] (सं.) मृगसिरा नक्षत्र।

ऐंद्र, ऐन्द्र [वि.] (सं.) इन्द्र सम्बन्धी [संज्ञा पु.] (सं.) १–इन्द्र का पुत्र। नक्षत्र।

ऐंद्रजालिक, ऐन्द्रजालिक [संज्ञा पु.] गर। [वि.] मायावी। इन्द्रजाल

ऐंद्रि, ऐन्द्रि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र जयन्त।

ऐंद्रिय, ऐन्द्रिय [वि.] (सं.) इन्द्रिय होने वाला। इन्द्रिय संबंधी।

ऐंद्रियक [वि.] (सं.) देखो 'ऐंद्रिय'।

ऐंद्री, ऐन्द्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्र इंन्द्राणी। शचि। २–दुर्गा। ३– ४–इलायची।

ऐंहड़ा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ऐंड़ा

ऐ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [अव्य.] धन।

ऐकपत्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'एका

ऐकमत्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विष लोगों का एक राय या मत होने की

ऐकागारिक [वि.] (सं.) एक ही घर में

ऐक्ट [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अधिनियम

ऐक्टर [संज्ञा पु.] (अ.) अभिनेता।

ऐक्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'एकता'।

ऐगुन*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अवगु

ऐची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चंडू या मद एक नली।

ऐच्छिक [वि.] (सं.) १–इच्छा के अनुसार अपनी इच्छा से किया हुआ। अथवा पसंद से लिया या दिया ४–जिसका करना अथवा न करना इच्छा पर हो। वैकल्पिक। ऑप्शनल

ऐज़न [अव्य.] (अ.) तथा। वैसा ही।

ऐडवोकेट [संज्ञा पु.] (अं.) अदालत का पक्ष लेकर बोलने वाला वकील वक्ता।

ऐड्वोकेटजनरल [संज्ञा पु.] (अं.) बड़े

वकील जो हाईकोर्ट में सरकार का पक्ष लेकर बोलता है। महाधिवक्ता।

ऐडमिरल [संज्ञा पु] (अ) सामुद्रिक सेना का सेनापति।

ऐत* [वि] (हि.) इतना।

ऐतरेय [संज्ञा पु] (सं.) ऋग्वेद की एक शाखा।

ऐतरेयी [संज्ञा पु.] (सं.) ऐतरेय ब्राह्मण पढ़ने वाला।

ऐतिहासिक [वि.] (सं.) १-इतिहास सम्बंधी। २-जो इतिहास में हो। ३-इतिहास पढ़ने वाला। ४-इतिहास जानने वाला।

ऐतिह्य [संज्ञा पु.] (सं.) परम्परागत। यह प्रमाण कि लोक में बहुत दिनों से ऐसा ही सुनते आये हैं।

ऐन [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'अयन' और 'एण'। [वि.] (अ.) १-ठीक। उपयुक्त। सटीक। २-पूरा पूरा। विलकुल।

ऐनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आँख पर लगाने का चश्मा। उपनेत्र।

ऐना+ [संज्ञा पु.] (हि.) आइना। दर्पण।

ऐनि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का पुत्र।

ऐनिता [संज्ञा पु.] (फा.) (कलंदरों की भाषा में)। बंदर को शीशा दिखाना।

ऐपन [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्दी के साथ पिसे हुए चावल का लेप जिससे देवताओं की पूजा में कलश आदि पर थापा लगाते हैं।

ऐब [संज्ञा पु.] (अ.) १-दोप। दूपण। २-अवगुण। वुराई। कलंक। *ऐब लगाना*-कलंक लगाना। दोपारोपण करना।

ऐबारा+ [संज्ञा पु.] (हि.) भेड़ बकरी बांधने का वाड़ा।

ऐबी [वि.] (अ.) १-बुरा। खोटा। दूपणयुक्त। २-नटखट। दुष्ट। ३-अंगहीन। विशेपत: काना।

ऐया+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बड़ी बूढ़ी स्त्री। २-दादी। ३-सास।

ऐयाम [संज्ञा पु.] (अ.) समय। अवसर। दिन। मौसम।

ऐयार [संज्ञा पु.] (अ.) १-धूर्त। चालाक। धोखेवाज। २-भेस बदल कर विकट तथा अनोखे काम करने वाला व्यक्ति।

ऐयारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चालाकी। धूर्त्तता। छल।

ऐयाश [वि.] (अ.) १-अत्याधिक सुख या ऐश करने वाला। २-विपयी। इन्द्रियलोलुप।

ऐयाशी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-विषयाशक्ति। भोगविलास। २-लम्पटता।

ऐरागैरा [वि.] (हि.) १-अपरिचित। अजनबी। वेगाना। २-तुच्छ। हीन।

ऐराक [संज्ञा पु.] देखो 'एराक'।

ऐराकी [वि] देखो 'एराकी'।

ऐरापति* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ऐरावत'।

ऐराव [संज्ञा पु.] (अ.) शतरंज में वादशाह की किस्त बचाने के लिये किसी मोहरे को बीच में डाल देना।

ऐरावण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ऐरावत'।

ऐरावत [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिजली से चमकता हुआ बादल। इरावान मेघ। २-इंद्रधनुष। ३-विजली। ४-इन्द्र का हाथी। ५-एक नाग का नाम।

ऐरावती [संज्ञा स्त्री.] १-ऐरावत हाथी की हथिनी। विजली। ३-रावी नदी। ४-ब्रह्मा की एक प्रधान नदी।

ऐल [संज्ञा पु.] (सं.) १-इला का पुत्र पुरुवा। २-वाढ़। ३-अधिकता। वहुतायत। ३-कोलाहल। हलचल।

ऐलक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'एलक'।

ऐश [संज्ञा पु.] (अ.) सुख। चैन। आराम। विलास।

ऐशानी [वि.] (सं.) ईशान कोण संबंधी।

ऐशू [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों के मुँह का एक रोग।

ऐश्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन-संपत्ति। विभूति। २-प्रभुत्व। आधिपत्य। ३-अणिमादिक सिद्धि।

ऐश्वर्यवान् [वि.] (सं.) वैभवशाली। संपत्तिवान्। संपन्न।

ऐपीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र जो मंत्र पढ़कर चलाया जाता था।

ऐस* [वि.] देखो 'ऐसा'।

ऐसा [वि.] (हिं.) इस प्रकार का। इस ढंग का। *ऐसा तैसा या ऐसा वैसा*-साधारण। तुच्छ। *ऐसी तैसी करना*-बलात्कार करना। *ऐसी-तैसी में जाना*-भाड़ में जाना।

ऐसे [क्रि. वि.] (हि.) इस रीति से। इस प्रकार। इस ढंग से।

ऐहिक [वि.] (सं.) इस लोक से सम्बन्ध रखने वाला। सांसारिक। दुनियावी।

ओ

ओ संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ स्वर वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और कंठ है। यह अ+उ के मेल से बना है।

ओं [अव्य.] (सं.) १-परब्रह्मवाचक शब्द प्रणवमंत्र कहलाता है। २-हां। अच्छा। वथास्तु।

ओंइछना* [क्रि. स.] (हि.) वारना। न्योछावर करना।

ओंकना* [क्रि. अ.] (हि.) १-देखो 'ओकना'। २-हट या फिर जाना। मन।

ओंकार [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा का सूचक 'ओं' शब्द।

ओंकरनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) मध्य-प्रदेश के मानधाता ग्राम में एक मंदिर। शिव के द्वादश लिंगों में से एक।

ओंगना [क्रि. स.] (हि.) गाड़ी के पहिये की धुरी में चिकनाई लगाना।

ओंगा [संज्ञा पु.] (हि.) अपामार्ग। चिचड़ा। लटजीरा।

ओंटना+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'ओटना'।

ओंठ [संज्ञा पु.] (हि.) ओष्ठ। होंठ। मुँह के बाहर उमड़े हुए छोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं। लब।

ओंठ *कांपना*-अधिक सरदी अनुभव करना। ओंठ *काटना*-क्रोध से होठों को दाँतों तले दबाना। ओंठ *चबाना*-किसी निरपराध पर अत्याचार होता देख जोश अथवा क्रोध आना। ओंठ *चाटना*-जीभ चटकारना। स्वाद की लालसा। ओंठ *चिपकना*-खूब मीठा होना। ओंठ *तक न हिलाना*-मुख से आवाज न निकलना। ओंठ *फड़कना*-गुस्से में ओठों का कांपना। ओंठ *मटकाना*-कहने योग्य बात को ओठों तक लाना। फिर उचित समझ कर चुप रहना। ओंठ *मलना*-दु:खकर वचन कहने वालों का मुँह मसलना या मुंह तोड़ना। ओंठ *हिलाना*-मुख से शब्द निकालना। ओंठो *पर आना*-तनिकसा भी कभी न कहना। ओंठों *पर लाना*-कहना।

ओंठो *मे कहना*-धीमे तथा अस्पष्ट स्वर में कहना। ओंठों *से खाना*-दाँत लगाने की आवश्यकता न पड़ना। ओंठो *से टूटना*-मुलायम या खस्ता होना। ओंठों *में मुसकराना* मंद हँसी। ओठों *पर नाचना*-१-खूब याद होना। २-याद आना पर कहन पाना।

ओंड़ा* [वि.] (हि.) गहरा। [संज्ञा पु.] १-गड्ढा। २-सेंध।

ओंध* [संज्ञा पु.] (हि.) छप्पर बांधने की रस्सी

ओ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा। [अव्य.] १-एक संबोधनसूचक शब्द। २-संयोजक शब्द। और विस्मय या आश्चर्यबोधक शब्द। ओह। ४-एक स्मरणबोधक शब्द।

ओआ [संज्ञा पु.] (देश.) हाथी फंसाने का गड्ढा।

ओई [संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ का नाम।

ओक [संज्ञा पु.] (सं.) १-निवास स्थान। घर। २-आश्रय। रहने का ठिकाना। ३-अंजली। [संज्ञा स्त्री.] मतली। वमन करने की इच्छा।

ओकना [क्रि. अ.] (हि.) १–कै करना। २–भैंस के समान अर्राना या चिल्लाना।

ओकपति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य या चन्द्रमा।

ओकस [संज्ञा पु.] देखो 'ओक'।

ओकाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–वमन। कै। २–परती भूमि।
वमन करने की इच्छा।

ओकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'ओ' अक्षर।

ओकारांत, ओकारान्त [वि.] (सं.) जिस शब्द के अन्त में 'ओ' हो।

ओकी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ओकाई'।

ओखद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'औषध'।

ओखरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ओखली'।

ओखल* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ओखली। २–

ओखली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (हि.) एक काठ या पत्थर का बना हुआ गहरा पात्र जिसमें धान आदि कूटते हैं।
ओखली में सर देना–जानबूझकर संकट में फँसना।

ओखा [संज्ञा पु.] (हि.) वहाना। मिस।
[वि.] १–कठिन। विकट। २–सूखा। रूखा। ३–खोटा। झीना।

ओग* [संज्ञा पु.] (हि.) १–कर। महसूल। २–चंदा।

ओगरना+ [क्रि. अ.] (हि.) रसना। निचुड़ना। चूना।

ओगल [संज्ञा पु.] (देश.) परतीभूमि।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कुआँ।

ओगारना+ [क्रि. स.] (हि.) कुएँ का पानी निकाल डालना। कुआँ साफ करना।

ओघ [संज्ञा पु.] (सं.) १–समूह। ढेर। २–घनापन। घनत्व। ३–बहाव। धारा।

ओछना [क्रि.सि.] (हिं.) देखो 'ऊंझना'।

ओछा [वि.] (हिं.) १–तुच्छ। क्षुद्र। छिछोरा। बुरा। खोटा। २–जो गहरा न हो। छिछला। ३–हलका। ४–छोटा। कम।

ओछाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षुद्रता। नीचता। छिछोरापन। खोटाई।

ओछापन [संज्ञा पु.] (हि.) नीचता। क्षुद्रता। छिछोरापन।

ओज [संज्ञा पु.] (सं.) १–बल। प्रताप। तेज। २–उजाला। प्रकाश। ३–शरीर के रसों का सार भाग। ४–कविता का वह गुण जिसके द्वारा सुनने वालों के चित्त में आवेश उत्पन्न हो।

ओजना+ [क्रि. स.] (हि.) रोकना। अवरोध करना। भार लेना।

ओजस्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेजस्विता। कांति। दीप्ति। प्रभाव।

ओजस्वी [वि.] (सं.) प्रतापी। प्रभावशाली। तेजवान्।

ओजित [वि.] (सं.) १–बलवान्। प्रतापी। तेजवान्। २–उत्तेजित।

ओज़ोन [संज्ञा पु.] (अं.) कुछ घना किया हुआ अम्लजन तत्व।

ओज़ोनपेपर [संज्ञा पु.] (अं.) वायु में ओजोन की परीक्षा करने वाला कागज।

ओझ [संज्ञा पु.] (हि.) उदर। पेट। आंत।

ओझइत+ [संज्ञा पु.] (हि.) 'ओझा'।

ओझल [संज्ञा पु.] (हि.) ओट। आढ़।

ओझला [संज्ञा पु.] (हि.) बच्चे का दूध पीकर उगलना।

ओझा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मैथिल, सरजूपारी और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २–भूत प्रेत उतारने वाला स्याना।

ओझाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झोझा की वृत्ति। प्रेत झाड़ने या उतारने का कार्य।

ओझैती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ओझाई'।

ओट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–अवरोध। रोक। आड़। २–शरण। रक्षा। पनाह।
आँखों से ओट होना–दृष्टि से ओझल होना।
ओट में–पनाह। रक्षा। शरण।

ओटन [संज्ञा पु.] कपास से बिनौले अलग करने की चर्खी।

ओटना [क्रि. स.] १–कपास से बिनौले अलगाना। २–बार-बार कहना। ३–अपनी ही कहे जाना। ४–रोकना। आड़ना। ५–अपने जिम्मे या अपने ऊपर लेना।

ओटनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कपास से बिनौले निकालने की चर्खी।

ओटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–परदे की दिवार। पतली दिवाल। २–कपास ओटाने वाला व्यक्ति। ३–सुनारों का एक औजार। ४–पिसनहारियों के बैठने का चबूतरा।

ओटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कपास ओटने की छोटी कल या चर्खी।

ओटंगना [क्रि. अ.] (हि.) १–किसी वस्तु से टिक कर बैठना या सहारा लेना। २–आराम करना। कमर सीधी करना।

ओठ+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ओंठ'।

ओड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ओट'।

ओड़चा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ओलचा'।

ओड़न*+ [क्रि. स.] (हि.) १–रोकना। आड़ करना। ऊपर लेना। २–फलाना। पसारना।

ओड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १–रोकना। आड़ करना। ऊपर लेना। २–फैलाना। पसारना।

ओड़व [संज्ञा पु.] (सं.) राग का एक भेद जिसमें केवल पांच स्वर लगते हैं।

ओड़ा [संज्ञा पु.] (?) १–देखो 'ओंड़ा'। २–खोंचा। बड़ा टोकरा। ३–
टोटा।

ओड्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–उड़ीसा
देश का निवासी। ३–गुड़हर
ओढ़न [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–ओढ़
२–शरीर को वस्त्र से ढांपने
ओढ़ना [क्रि. स.] (हि.) १–वस्त्र
ढकना। २–अपने जिम्मे लेना।
लेना। [संज्ञा पु.] ओढ़ने का
ओढ़ना उतारना–आवरण उता
बात प्रकट करना। *ओढ़ना बि*
चीज को हर समय काम में ला
बिछौना बांधना या समेटना–चल
लेना–जिम्मे लेना।

ओढ़नी [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों के
वस्त्र। फरिया। उपरेती।

ओढ़र*+ [संज्ञा पु.] (हि.)
बहाना। मिस।

ओढ़वाना [क्रि. स.] (हि.) कपड़ों
ओढ़ने का कार्य किसी दूसरे से

ओढ़ाना [क्रि. स.] (हि.) ढांकना।
आच्छादित करना। दूसरे के
से ढांपना।

ओत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–आराम
आलस्य। ३–किफायत। (हि.)
[वि.] १–बना हुआ। २–भरा हु

ओतप्रोत [वि.] (सं.) बहुत मिलाजुला
मिला हुआ कि उसका अलग कर
सा हो। [संज्ञा पु.] ताना-बाना।

ओता*+ [वि.] (हि.) उस परिमाण

ओती* [वि.] (हिं.) उतना।

ओतु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिल्ली।

ओतो+ [वि.] (हिं.) देखो 'ओता'।

ओत्ता+ [वि.] देखो 'ओता' या

ओद+ [संज्ञा पु.] (हि.) नमी। तरी।
[वि.] (हि.) गीला। तर।

ओदन [संज्ञा पु.] (सं.) भात।
चावल।

ओदनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बीज

ओदर* [संज्ञा पु.] देखो 'उदर'।

ओदरना [क्रि. स.] (हि.) १–फट
होना। २–ढहना। नष्ट होना।
होना।

ओदा [वि.] (हिं.) गीला। तर। नम।

ओदारना [क्रि. अ.] (हि.) १–फाड़
करना। २–छिन्न-भिन्न करना
करना।

ओधना [क्रि. अ.] (हिं.) बंधन
अटकना। उलझना।

धे [संज्ञा पु.] (हि.) स्वामी । मालिक ।

नंत* [वि.] (हिं.) नत । झुका हुआ ।

नचन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खरिया के पायतने में कसने की रस्सी । अदवायन ।

चनना [क्रि. स.] (हि.) अदवायन कसना ।

नवना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उनवना' ।

ओना* [संज्ञा पु.] (हिं.) गड्ढे तालाब इत्यादि के निकालने का मार्ग या निकास ।

ओनाड़* [वि.] (हिं.) जोरावर । बलवान ।

ओनाना [क्रि. स.] (हि.) सुनना । कान लगाना ।

ओनामासी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–अक्षरारम्भ । २–प्रारम्भ । शुरू ।

ओप [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–चमक । आभा । कान्ति । शोभा । २–पालिश । कलई ।

ओपची [संज्ञा पु.] (हि.) कवचधारी योद्धा । रक्षक योद्धा ।

ओपना [क्रि. स.] (हिं.) पालिश करना । चमकाना । मांजना । [क्रि. अ.] झलकना । चमकना ।

ओपनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलवार आदि को चमकाने की वस्तु । मांजने की वस्तु ।

ओपित [वि.] (हिं.) १–चमकीला । २–सुन्दर ।

ओफ [अव्य.] (अ.) पीड़ा, खेद, शोक तथा आश्चर्यसूचक अव्यय । ओह ! अरे राम !

ओबरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कमरा । कोठरी । मिट्टी की बनी बड़ी संदूक, जिसमें गाँव में अन्न भरकर रखते हैं ।

ओम् [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वरवाचक शब्द । प्रणवमन्त्र । ओंकार ।

ओर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–दिशा । तरफ । २–पक्ष ।

[संज्ञा पु.] १–छोर । किनारा । सिरा । अंत । २–आदि । आरम्भ ।

ओर आना–नाश का समय आना ।

ओरमना+ [क्रि. अ.] (हि.) लटकना ।

ओरमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सिलाई ।

ओरवना+ [क्रि. अ.] (हि.) बच्चा देने का (गाय भैंस का) समय निकट आना ।

ओरहना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उलहना' ।

ओराना+ [क्रि. अ.] (हि.) समाप्त होना । [क्रि. स.] (हिं.) समाप्त करना । खतम करना

ओराहना+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उलाहना' ।

ओरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ओलती' ।

[अव्य.] (हि.) स्त्रियों को पुकारने का एक संबोधन सूचक शब्द ।

ओरौता+ [वि.] (हि.) अन्त । समाप्ति ।

ओरौती+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ओलती ।

ओलंदेज [वि.] (अं.) १–हालैंड देश का । हालैंड देश-सम्बन्धी ।

ओलंबा+ [संज्ञा पु.] (हि.) उलाहना । देखो 'ओलंभा' ।

ओलंभा [संज्ञा पु.] (हि.) उलाहना । गिला । शिकायत ।

ओल [संज्ञा पु.] (सं.) जिमींकन्द । सूरन ।

[वि.] (?) गीला । तर ।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गोद । २–आड़ । ओट ३–शरण । ४–जमानत के रूप में किसी वस्तु या प्राणी का दूसरे के पास तब तक रहना जब तक कुछ रुपया न मिले अथवा कोई शर्त पूरी न हो । ५–इस प्रकार जमानत में रहने वाला व्यक्ति अथवा वस्तु । ६–मिस । बहाना । होस्टेज ।

ओलचा [संज्ञा पु.] (हि.) १–एक प्रकार का काठ का बरतन जिससे खेत का पानी उलींचते हैं ।

ओलची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आलू-बालू नामक एक फल ।

ओलती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छप्पर का वह किनारा जहाँ से बरसात का पानी नीचे गिरता है । ओरी ।

ओलना [क्रि. स.] (हि.) १–परदा करना । ओट में देना । २–अड़ना । रोकना । ३–सहना । ऊपर लेना । ४–घुसाना । चुभाना ।

ओलमना [क्रि. अ.] (हिं.) १–लटकना । झुकना । २–सहारा लेना ।

ओलहना [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'उलाहना' ।

ओला [संज्ञा पु.] (हि.) १–वर्षा के साथ गिरा हुआ बरफ का टुकड़ा । २–मिश्री या खाँड का बना हुआ लड्डू । ३–परदा । ओट । भेद । रहस्य । गुप्त बात । [वि.] (हि.) ओले के समान ठंडा ।

ओलाना [क्रि. स.] (हि.) भूनना । सेकना ।

ओलिक [संज्ञा पु.] (हिं.) परदा ओट ।

ओलियाना* [क्रि. स.] (हि.) १–गोद में भरना । २–गिरा कर ढेर लगाना । ३–घुसाना ।

ओली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–गोद । २–अंचल । पल्ला । ३–झोली । ४–खेत की उपज की कूत करने का एक ढंग ।

ओली लेना–गोद लेना । *ओली ओड़ना*–विनती करना । अंचल फैला कर कुछ मांगना

ओलौना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) उदाहरण । दृष्टान्त । मिसाल ।

ओवरकोट [संज्ञा पु.] (अं.) जाड़े के दिनों में सब कपड़ों के ऊपर पहने जाने वाला लम्बा गरम कोट । लबादा ।

ओवरसियर [संज्ञा पु.] (अं.) अधिकर्मी ।

ओवा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ओंआ' ।

ओषध, ओषधि [संज्ञा पु.] (सं.) वनस्पति । दवा के काम में आने वाली जड़ी-बूटी । दवा ।

ओषधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा । २–कपूर ।

ओषधीश [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा । २–कपूर ।

ओष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) होंठ । ओंठ । लब ।

ओष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बिंबाफल । कुंदरू । २–कुंदरू की बेल ।

ओष्ठ्य [वि.] (सं.) १–ओष्ठ-संबंधी । २–जिनका उच्चारण ओंठ से हो । जैसे–उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म, ।

ओष्ण [वि.] (सं.) थोड़ा गरम ।

ओस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हवा में मिली हुई भाप जो रात्रि के समय सरदी से जमकर जलकण के रूप में गिरती है । शीत । शबनम ।

ओसनना [क्रि. स.] (हि.) आटा गूंधना ।

ओसर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गर्भ धारण करने योग्य गाय अथवा भैंस ।

ओसरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ओसर' ।

ओसरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) १–अवसर । समय । मौका । २–दूध दूहने का समय । ३–बारी । दाँव ।

ओसरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पारी । दाँव । बारी ।

ओसवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) जैनियों की शाखा ।

ओसाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–ओसने का काम । गल्ले की हवा में उड़ने का कार्य जिससे दाना और भूसा अलग हो जाय । २–ओसने के काम की मजदूरी ।

ओसाना [क्रि. अ.] (हिं.) दायें हुए गल्ले को हवा में उड़ाकर भूसा और अन्न अलग करना । बरसाना ।

ओसार [संज्ञा पु.] (हि.) १–विस्तार । फैलाव । चौड़ाई । २–देखो 'ओसारा' । [वि.] चौड़ा ।

ओसारा* [संज्ञा पु.] (हि.) १–दालान । बरामदा २–सायबान । ओसरे की छाजन ।

ओसीसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उसीसा' ।

ओसूल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वसूल' ।

ओसेका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बसीका' ।

ओह [अव्य.] (हि.) आश्चर्य, दुःख और लापरवाहीसूचक शब्द ।

ओहका+ [अव्य.] (देश.) उसका (ग्रामीण भाषा) ।

ओहट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यवधान । ओट । आड़ ।

ओहदा [संज्ञा पु.] (अ.) किसी विभाग में किसी कर्मचारी या कार्यकर्त्ता का पद अथवा स्थान । बड़ी जगह । रुतबा ।

ओहदेदार [वि.] (अ.) पदाधिकारी । अधिकारी । हाकिम । बड़े पद वाला ।

ओहमां+ [सर्व.] (हिं.) उसमें (ग्रामीण भाषा)।

ओहर [अव्य.] (हिं.) उस ओर। उस तरफ।

ओहरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) बढ़ती तथा उमड़ती हुई वस्तु का घटना। घटाव पर होना।

ओहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकावट।

ओहरूवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झालर। २-पर्दा।

ओहा+ [संज्ञा पु.] गाय का थन।

ओहार [संज्ञा पु.] (हिं.) परदा। रथ या पालकी पर पड़ा हुआ कपड़ा।

ओहेला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अवहेला'।

ओहो [अव्य.] (हिं.) विस्मय तथा आनन्दसूचक शब्द।

औ

औ संस्कृत-हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ स्वरवर्ण इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है। यह अ और ओ के मेल से बना हुआ है।

औंगना [क्रि. स.] (हिं.) बैलगाड़ी के पहिये के धुरे में तेल देना।

औंगा [वि.] (हिं.) मौन। गूंगा। चुपचाप। खामोश।

औंगी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) खामोशी। चुप्पी। गूंगापन।

औंघ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औंघाई। झपकी। हलकी निद्रा।

औंघना, औंघाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) अलसाना। झपकी लेना। ऊंघना।

औंघाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तंद्रा। हलकी निद्रा। झपकी।

औंजना※+ [क्रि. अ.] (हिं.) झपकी।

औंटन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चारा काटने का लकड़ी का ठीहा। २-वह ठीहा या लकड़ी का कुंदा जिसपर ऊख की गँडेरी काटी जाती है।

औंटना [क्रि. अ.] (हिं.) उबलना। खौलना। जलना।

औंटाना [क्रि. स.] (हिं.) उबालना। पकाना। खौलाना।

औंठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उठा हुआ या उभड़ा हुआ किनारा।

औंड़※ [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी खोदने वाला मजदूर। बेलदार।

औंड़ा [वि.] (हिं.) १-गहरा। गम्भीर। २-उभड़ा हुआ। बढ़ा हुआ।

औंड़ाबौंड़ा+ [वि.] (हिं.) देखो 'अंडबंड'।

औंदना※+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-उन्मत्त होना। बेसुध होना। २-घबड़ाना। व्याकुल होना। अकुलाना।

औंदाना※ [क्रि. अ.] (हिं.) ऊबना। व्याकुल होना। घबड़ाना।

औंधना [क्रि. अ.] (हिं.) उलट जाना। उलटा होना।

[क्रि. स.] (हिं.) उलटा देना। उलटा कर देना

औंधा [वि.] (हिं.) उलटा। पट। मुँह के बल पड़ा हुआ।

औंधी खोपड़ी–मूर्खानन्द। कूढ़मग्ज। *औंधी समझ*–उलटी समझ। *औंधे मुँह*–मुँह के बल। अधोमुख। *औंधे मुँह गिरना*–१-मुँह के बल गिरना। २-बेतरह चूकना या धोखा खाना। *औंधा हो जाना*–१-गिर पड़ना। २-बेसुध होना। [संज्ञा पु.] (हिं.) बेसन का एक नमकीन पकवान। चिलड़ा चिल्ला। उलटा।

औंधाना [क्रि. स.] (हिं.) १-उलटना। उलट देना। अधोमुख करना। २-नीचा करना।

औंनापौना [वि.] (हिं.) चौथे हिस्से का कम। थोड़ा कम।

औंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आँवला'।

औंस [संज्ञा पु.] देखो 'आउंस'।

औंसना [क्रि. अ.] (हिं.) उमस होना।

औंहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अड़चन। उलझन। बाधा। रुकावट।

औ [संज्ञा पु.] (सं.) अनन्त। शेष।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।
※ [अव्य.] (हिं.) देखो 'और'।

औकन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ढेर। राशि।

औकात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-समय। वक्त। २-हैसियत। बिसात। [संज्ञा पु.] (सं.) समय। वक्त।

औकान [संज्ञा पु.] (हिं.) कटे हुए अन्न का ढेर।

औकास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अवकाश'।

औखद [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'औषध'।

औखल [संज्ञा पु.] (हिं.) नये सिरे से जोती हुई भूमि।

औखा [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय बैल का चमड़ा। (वस्तुतः यह शब्द गौखा है)।

औगत※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुर्दशा। दुर्गति।
[वि.] (हिं.) देखो 'अवगत'।

औगल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि के नीचे की तरी।

औगाह [वि.] (हिं.) तरी।

औगाहना※ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'अवगाहना'।

औगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बैल हांकने की की छड़ी। २-रस्सी का बटा हुआ कोड़ा जो घोड़े को चक्कर काटते समय फटकारते हैं। ३-कारचोबी जूते के ऊपर का चमड़ा। ४-हाथी, शेर, भेड़िया आदि के गड्ढा जो घासफूंस से ढका

औगुन※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

औगुनी※+ [वि.] (हिं.) १- ऐबी। दोषी।

औघ [संज्ञा पु.] (सं.) बाढ़।

औघट※+ [वि.] (हिं.) देखो

औघड़ [वि.] (हिं.) फूहड़। पलटा। [संज्ञा पु.] १-अघोमत अघोरी। २-मनमौजी। अपशकुन। (ठगों की बोली)।

औघर [वि.] (हिं.) १-अटपट। बंड। २-अनोखा। विलक्षण।

औचक [क्रि. वि.] (हिं.) अचानक। एकाएक। सहसा।

औचट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संकट।
[क्रि. वि.] १-अचानक। सहसा। २-भूल से।

औचिंत [वि.] (हिं.) चिन्तारहित। बेखबर।

औचिती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) औचित्य।

औचित्य [संज्ञा पु.] (सं.) उपयुक्त सचाई।

औछ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दारु या मूल।

औज+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ओज'।

औजकमाल [संज्ञा पु.] (अ.) एक फारसी संगीत या गाना।

औजड़ [वि.] (हिं.) उजड्ड। अनाड़ी। गँवार।

औजार [संज्ञा पु.] (अ.) लोहार, कारीगरों के काम करने का हथियार उपकरण।

औझक [क्रि. वि.] (हिं.) एकाएक।

औझड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रहार।
[क्रि. वि.] (हिं.) लगातार। निरन्तर १-झक्की। २-अक्खड़।

औझर [क्रि. वि.] (हिं.) देखो

औटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उबाल। की स्थिति। २-तम्बाकू काटने का

औटना [क्रि. स.] (हिं.) १-द्रव पदार्थों को आँच पर रखकर गाढ़ा उबालना। २-खौलाना। ३-घूमना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी तरह गरमी खाकर गाढ़ा होना। २-खौल

औटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलवाई आदि घोटने का डंडा।

औटा [वि.] (हिं.) खौलाया हुआ।

औटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औटाने का

औटाना [क्रि. स.] (हिं.) पकाकर गाढ़ा

खौलाना।

औटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–औटाकर या उबाल कर गाढ़ी की हुई औषधि (गाय भैंस के लिए) २–पानी मिलाकर पकाया हुआ ऊख का रस।

औठपाय* [संज्ञा पु.] (हि.) शरारत। नटखटपना। पाजीपन।

औढव [वि.] (हि.) बेढंगा। ऊटपटांग।

औढर [वि.] (हि.) इधर उधर घूमने वाला। मनमौजी।

औणक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक गीत।

औतंस* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अवतंस'।

औतारना❀ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'अवतारना'।

औतार* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अवतार'।

औत्तापिक [वि.] (सं.) उत्ताप-संबंधी।

औत्पत्तिक [वि.] (सं.) उत्पत्ति-संबंधी।

औत्सुक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–उत्कंठा। उत्सुकता। हौसला। २–अलंकार के अनुसार अप्राप्ति से उत्पन्न होने वाला भाव।

औथरा❀ [वि.] (हि.) उथला। छिछला।

औदमिक [संज्ञा पु.] (सं.) रोटी बनाने वाला। रसोइया।

औदयिक [वि.] (सं.) उदयसंबंधी।

औदरिक [वि.] (सं.) १–उदरसंबंधी। २–पेटू। बहुत खाने वाला।

औदस [संज्ञा पु.] (हि.) अपयश। दुर्नाम।

औद्सा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दुर्दशा'।

औदात* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अवदात'।

औदान+ [संज्ञा पु.] (हि.) १–मोल लेने वाले को प्रसन्न करने के निमित्त ऊपर से दी जाने वाली वस्तु। घलुआ। २–❀देखो 'अवदान'

औदार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–उदारता। २–सात्विक नायक का एक गुण।

औदासीन्य [संज्ञा पु.] (सं.) उदासीनता।

औदीच्य [संज्ञा पु.] (सं.) गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।

औदुंबर, औदुम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। २–चौदह यमों में से एक। ३–एक प्रकार के मुनि।

औद्धत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–उग्रता। अक्खड़पन। २–धृष्टता। ढिठाई। ३–अविनीत। अशालीनता।

औद्योगिक [वि.] (सं.) १–उद्योग संबंधी। २–माल तैयार करने से सम्बन्ध रखने वाला। इन्डस्ट्रियल।

औद्योगीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश या राष्ट्र में उद्योगधंधों आदि को बढ़ाने तथा उसमें कल-कारखाने आदि खोलने का कार्य। इन्डस्ट्रियलाइजेशन।

औद्वाहिक [वि.] (सं.) विवाह-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] विवाह से मिला धन।

औध* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'अवध'। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अवधि'।

औधमोहरा [संज्ञा पु.] (हि.) सिर ऊपर उठाकर चलने वाला हाथी।

औधि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अवधि'।

औधिया+ [संज्ञा पु.] (हि.) ठग। उठाईगीरा। चोर।

औनत* [वि.] (हि.) देखो 'अवनत'।

औनापौना [वि.] (हि.) थोड़ा बहुत। [क्रि. वि.] कमती-बढ़ती पर।

औनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अवनी'।

औनिप❀ [संज्ञा पु.] (हि.) राजा।

औपचारिक [वि.] (सं.) १–उपचार-सम्बन्धी। २–जो केवल कहने सुनने या दिखलाने भर के लिए हो। जो वास्तविक न हो।

औपदेशिक [वि.] (सं.) उपदेश से मिला हुआ।

औपद्रविक [वि.] (सं.) उपद्रव या उत्पात सम्बन्धी।

औपधिक [वि.] (सं.) भय दिखाकर धन लेने वाला व्यक्ति।

औपनिधिक [वि.] (सं.) उपनिधि या धरोहर सम्बन्धी।

औपनिवेशिक [वि.] (सं.) उपनिवेश-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] उपनिवेश का रहने वाला या निवासी।

औपनिवेशिक-स्वराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का स्वराज्य जो आधीनस्थ उपनिवेशों को प्राप्त है। जैसे—आस्ट्रेलिया, कनाडा।

औपन्यासिक [वि.] (सं) १–उपन्यास-सम्बन्धी। उपन्यासविषयक। २–उपन्यास में वर्णन करने योग्य। ३–विचित्र। विलक्षण। [संज्ञा पु.] उपन्यास लेखक।

औपनिषद [वि.] (सं.) उपनिषद् के अनुसार आचरण करने वाला।

औपनिषदिक [वि.] (सं.) उपनिषद–सम्बन्धी। उपनिषद् के समान।

औपपत्तिक [वि.] (सं.) तर्क अथवा युक्ति द्वारा सिद्ध होने वाला।

औपपत्तिकशरीर [संज्ञा पु.] लिंगशरीर। जीवों का नैसर्गिक शरीर।

औपमिक [वि.] (सं.) उपमा द्वारा कहा हुआ।

औपम्य [संज्ञा पु.] (सं.) सादृश्य। बराबरी। तुल्यता। समता।

औपयौगिक [वि.] (सं.) उपयोग संबंधी।

औपवासिक [वि.] (सं.) उपवास के उपयोग का।

औपशमिक [वि.] शान्तिकारक। ठंडा करने वाला।

औपसर्गिक [वि.] (सं.) उपसर्ग-संबंधी।

औपश्लेषिक-आधार [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में अधिकरणकारक में वह आधार जिसका लगाव किसी अंश में ही हो।

औपस्थिका [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वेश्या। रंडी।

औपहारिक [वि.] (सं.) उपहार के उपयोग में आने वाला।

औपाधिक [वि.] (सं.) उपाधि-संबंधी।

औपासन [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह वैदिक अग्नि जो उपासना के निमित्त हो। २–औपासन अग्नि के पास किया जाने वाला कृत्य।

औम [संज्ञा स्त्री] (हि.) अवम तिथि।

और [अव्य.] (हि.) एक संयोजक शब्द। दो वाक्यों या शब्दों को जोड़ने वाला शब्द। [वि.] १–दूसरा। भिन्न। २–अधिक। ज्यादा।

और का और–कुछ का कुछ। विपरीत। *और का और होना*–कुछ का कुछ होना। २–बदलजाना। *और क्या*–हां ऐसा ही है। *और तो और*–दूसरी बात तो जाने दीजिये। *और ही कुछ होना*–१–अनोखी बात हो जाना। २–अन्य ही होना। ३–अनोखा या विलक्षण होना। *और ही रंग खिलना*–विलक्षण कार्य होना।

औरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–स्त्री। महिला। २–पत्नी। जोरू।

औरस [संज्ञा पु.] (सं.) समान जाति की विवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र। [वि.] १–न्याय संगत। वैध। नियम के अनुसार। २–खरा। लैजिटइमैट्।

औरसक [वि.] (सं.) उत्तम। श्रेष्ठ।

औरसत्व [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायसंगतता।

औरसना* [क्रि. अ.] (हि.) कष्ट होना। बिगड़ना। उदासीन होना।

औरस्य [संज्ञा पु.] (सं.) औरसपुत्र।

औरेब [संज्ञा पु.] (हि.) १–वक्रगति। तिरछी चाल। २–कपड़े की तिरछी काट। ३–पेंच। उलझन। ४–पेचीदा बात। जटिल विषय। ५–थोड़ी खराबी।

और्द्धदैहिक [वि.] (सं.) अंत्येष्टिक्रिया-सम्बन्धी।

और्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़वानल। २–नोनी मिट्टी का नमक।

औलंभा*+ [संज्ञा पु.] देखो 'ओलंभा'।

औल [संज्ञा पु.] (देश.) जंगली ज्वर या बुखार।

औलफौल [संज्ञा पु.] (हि.) बकझक। गालीगलौज।

औलाद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–सन्तान। सन्तति।

वंशपरम्परा। नस्ल।

औलामौला [वि.] (हिं.) मनमौजी।

औलिया [संज्ञा पु.] (अ.) (मुसलमानी-मत) सिद्धजन। दर्वेश। पहुँचा हुआ फकीर।

औली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताजी तोड़ी हुई अन्न की बाल।

औलू [वि.] (हिं.) १–नया। २–अनोखा। ३–असाधारण। ४–कठिन।

औलूक [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लुओं का समूह।

औलूक्य [संज्ञा पु.] (सं.) कणाद या उलूकऋषि का वैशेषिकदर्शन।

औवल [वि.] (अ.) १–पहला। २–प्रधान। मुख्य ३–सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।
[संज्ञा पु.] शुरू। प्रारंभ।

औशि* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'अवश्य'।

औषध [संज्ञा पु.] (सं.) रोग दूर करने वाली वस्तु। रोग दूर करने वाली वस्तुओं (औषधियों) का मिश्रित रूप। दवा।

औषधालय [संज्ञा पु.] (सं.) दवाओं के मिलने, बिकने और बनने का स्थान।

औषधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दवा।

औषधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दवा।

औषर [संज्ञा पु.] (सं.) छुटिया नोन। रेह का नमक।

औसत [संज्ञा पु.] (अ.) बराबर का परता। समष्टि। समविभाग। भिन्न-भिन्न संख्याओं के जोड़ को जितने स्थान हों उतने से विभाग करने से निकलने वाला फल।
[वि.] माध्यमिक। साधारण। मामूली।

औसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–उष्णता। गरमी। २–व्याकुलता। घबड़ाहट।

औसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–ऊमस होना। गरमी पड़ना। २–बासी होना। ३–गरमी से घबड़ाना या व्याकुल होना। ४–फलों का भूसे आदि में दबकर पकना।

औसर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अवसर'।

औसान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अवसान' 'एहसान'।

औसाना [क्रि. स.] (हिं.) फल या अन्य वस्तुओं को भूसे आदि में दबाकर पकाना।

औसि* [क्रि. वि.] (हिं.) 'अवश्य'।

औसेर * [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अवसेर'

औहत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दुर्दशा। बुरा हाल। २–अपमृत्यु।

औहाती*+ [वि.] (हिं.) देखो 'अहिवाती'।

औहास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अवहास'।

क

क हिन्दी-वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ है। इसे स्पर्श-वर्ण भी कहते हैं।

कं, कम् [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल। २–मस्तक। ३–सुख। ४–अग्नि। ५–काम। ६–सोना।

कंउधा* [संज्ञा पु.] (हिं.) बिजली की चमक।

कंक, कङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १–सफेद चील। क्रौंच पक्षी। २–बकुला। बगला। ३–यमराज ४–एक प्रकार का बड़ा आम। अज्ञातवास के समय का युधिष्ठिर का नाम।

कंकई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) शिकम और नैपाल को अलग करने वाली एक नदी का नाम।

कंकड़ [संज्ञा पु.] हिं.) १–मिट्टी और चूने का अंशमिश्रित टुकड़ा जिससे सड़क बनाई जाती है। २–पत्थर या अन्य किसी वस्तु का टुकड़ा। ३–पीने की सूखी तम्बाखू। ४–रवा। डला।

कंकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा कंकड़। २–छोटा टुकड़ा। कण।

कंकड़ीला [वि.] (हिं.) कंकड़ मिला हुआ। जिसमें कंकड़ हो।

कंकण, कङ्कण [संज्ञा पु.] (सं.) १–कलाई में पहिनने का एक आभूषण। कड़ा। कंगन। चूड़ा। २–विवाह से पूर्व वर-वधु के हाथ में बांधा जाने वाला धागा। ३–ताल के आठ भेदों में से एक।

कंकणास्त्र, कङ्कणास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अस्त्र।

कंकत्रोट, कङ्कत्रोट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली। कौआ मछली।

कंकन, कङ्कन [संज्ञा पु.] देखो 'कंकण'।

कंकपत्र, कङ्कपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–कंक का पर। २–बाण।

कंकपत्री, कङ्कपत्री [संज्ञा पु.] (सं.) बाण। तीर।

कंकपर्वा, कङ्कपर्वा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

कंकपृष्ठी, कङ्कपृष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

कंकमुख, कङ्कमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चिकित्सक का अस्त्र जिससे वह कांटे आदि को निकालता है।

कंकर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंकड़'।

कंकरीट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) चूने, कंकड़, बालू (केवल पत्थर की बालू) मिला गच बनाने का मसाला। छर्रा। बजरी। २–सड़क पर बिछाई जाने वाली छोटी कंकड़ियां।

कंकरीला [वि.] (हिं.) देखो 'कंकरी

कंकरेत [वि.] (हिं.) देखो 'कंकरीट।

कंकाल, कङ्काल [संज्ञा पु.] (सं.) पंजर।

कंकालमाली, कङ्कालमाली [संज्ञा पु.] शिव। महादेव। भैरव।

कंकालशर, कङ्कालशर [संज्ञा पु.] प्रकार का बाण जिसके सिरे पर होती थी।

कंकालास्त्र, कङ्कालास्त्र [संज्ञा पु.] से बनने वाला एक अस्त्र।

कंकालिनी, कङ्कालिनी [संज्ञा स्त्री.] दुर्गा। २–उग्रस्वभाव, कर्कश स्त्री।

कंकाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुर्गा [संज्ञा पु.] गांव-गांव घूमकर कर भीख मांगने वाली एक कर्कशा। लड़ाकी।

कंकेरू, कङ्केरू [संज्ञा पु.] (सं.)

कंकेल, कङ्केल [संज्ञा पु.] (सं.)

कंकेलि, कङ्केलि [संज्ञा पु.] (सं.)

कंकोल, कङ्कोल [संज्ञा पु.] (सं.) १– का शीतलचीनी का वृक्ष। २– इसे कंकोलमिर्च भी कहते हैं।

कंखवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काँख में फुड़िया या फुंसी।

कंखौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–काँख की फुड़िया।

कंग [संज्ञा पु.] (हिं.) कवच।

कंगण [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे का एक अकाली सिक्ख अपने सिर में

कंगना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'कं कंकण बांधने के समय गाया गीत। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहाड़ी होने वाली एक घास जिसे बैल चाव से खाते हैं।

कंगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा छत के नीचे का दीवार का भाग। ३–कार्निस। ४–एक अन्न

कंगल [संज्ञा पु.] (हिं.) कवच।

कंगला [वि.] (हिं.) देखो 'कंगाल'।

कँगसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कँघी। (कुश्ती)।

कँगही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कँघी'

कंगाला [वि.] (हिं.) १–निर्धन। गरीब। २–भुक्खड़।

कंगाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निर्धन। गरीबी।

कँगुरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कनगुरिया'।

कँगूरा [संज्ञा पु.] (हि.) १-महल की चोटी। शिखर। २-किले की दीवार में थोड़ी दूर पर त्रिकोणाकार सा स्थान जिसकी ओट में से सिपाही लड़ते हैं। बुज। ३-आभूषण के कंगूरे का दाना।

कंगूरेदार [वि.] (हि.) कंगूरे वाला। जिसमें कंगूरे हो।

कंघा [संज्ञा पु.] (हि.) लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई वह वस्तु जिससे सिरके बाल झड़ते, बनाते या बाहते हैं। २-जुलाहे का एक औजार जिससे वह तागे कसता है। बय।

कंघी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटा कंघा जिसके दोनों ओर दाँत होते हैं। २-जुलाहे का एक औजार। ३-एक पौधे का नाम। कंघी चोटी-बनाव-सिंगार। कंघी चोटी करना बनाना-सिंगार करना।

कँघेरा [संज्ञा पु.] (हि.) कंघा बनाने वाला व्यक्ति। ककहरा।

कंचन, कञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुवर्ण। सोना। २-धन। सम्पत्ति। २-धतूरा। ४-कचनार की एक जाति। ५-एक जाति जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्यावृत्ति करती हैं। [वि.] १-निरोग। स्वस्थ। २-स्वच्छ। सुन्दर। मनोहर।

कंचनपुरुष, कञ्चनपुरुष [संज्ञा पु.] (हि.) १-मृतककर्म में महाब्राह्मण को दी जाने वाली स्वर्ण-पत्र पर अंकित पुरुष-प्रतिमा। २-प्रतिमा को दान देने वाला व्यक्ति।

कंचनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वेश्या। रंडी।

कंचुक, कञ्चुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जामा। चपकन। २-चोली। अंगिया। वस्त्र। ४-कवच। ५-केंचुल।

कंचुकी, कञ्चुकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अँगिया। चोली। [संज्ञा पु.] १-अंतःपुररक्षक। २-द्वारपाल। ३-साँप। ४-छिलके वाला अन्न।

कंचुरि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) केंचुल।

कँचुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) केंचुल।

कँचुवा+ [संज्ञा पु.] (हि.) कुर्त्ता। चोली।

कँचेरा [संज्ञा पु.] (हि.) काँच का काम करने वाला व्यक्ति या जाति।

कँचेली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक वृक्ष का नाम।

कंछा+ [संज्ञा पु.] (हि.) पतली डाल।

कंज, कञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-ब्रह्मा ३-अमृत। ४-केश। सिर के बाल।

कंज-अवलि, कञ्जअवलि [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कंजावलि'।

कंजई [वि.] (हि.) धुएं के रंग का। खाकी। [संज्ञा पु.] १-खाकी रंग। २-वह घोड़ा जिसकी आंखें कंजई रंग की होती हैं।

कंजड़ [संज्ञा पु.] (हि.) एक जाति, जिसके लोग घूमते फिरते हैं और रस्सी, सिरकी आदि बनाने का काम करते हैं।

कंजा [वि.] (हि.) १-कलई। खाकी। २-कंजई आंखों का। [संज्ञा पु.] १-कंजी आंखों वाला मनुष्य। २-एक कटीली झाड़ी जिसकी फलियां औषधि के काम में आती हैं।

कंजावलि, कञ्जावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (भ + न + ज + ज + एक लघु) होता है।

कंजास+ [संज्ञा पु.] (हि.) कूड़ा।

कंजियाना [क्रि. अ.] (हि.) धधकते हुए अंगारे मन्द पड़ना। मुरझाना।

कंजुवा+ [संज्ञा पु.] (हि.) एक औषधि।

कंजूस [वि.] (हि.) सूम। कृपण। जो धन का भोग न तो स्वयं करे न करने दे।

कंजूसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कृपणता। सूमपन।

कंटक, कण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कांटा। २-सूई का अग्रभाग या नोक। ३-काम में होने वाली बाधा। ४-ऐसा काम जिससे किसी को दुःख हो। ५-रोमाँच। ६-कवच।

कंटकारी, कण्टकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-भटकटैया। २-सेमल।

कंटकाल, कण्टकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटहल। २-काटों का घर।

कंटकालु, कण्टकालु [संज्ञा पु.] (सं.) जवासा

कंटकाशन, कण्टकाशासन [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

कंटकित, कण्टकित [वि.] (सं.) १-रोमांचित। पुलकित। २-काँटेदार।

कंटकी, कण्टकी [वि.] (हि.) कंटीला। काँटेदार।
[संज्ञा पु.] १-छोटी मछली। २-खैर का वृक्ष। ३-बाँस। ४-गोखरू। ५-काँटेदार वृक्ष। ६-बेर का पेड़। [संज्ञा स्त्री.] भटकटैया।

कंटबांस [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का बांस।

कंटर [संज्ञा पु.] (अं.) शीशे की सुराही जिसमें मदिरा और सुगन्धित द्रव्य रखे जाते हैं।

कंटा [संज्ञा पु.] (हि.) चुरिहारे के चूड़ी रंगने का औजार।

कंटाइन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चुड़ैल। भुतनी। २-लड़ाकी, कर्कशा स्त्री।

कंटाप [संज्ञा पु.] (हि.) भारी सिरा या अग्र भाग।

कंटाल [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का बाँस।

कंटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कागज नत्थी करने की सूई जो लोहे या पीतल की होती है। आलपीन। पिन।

कंटिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटी कील। कांटी। २-मछली मारने की नोकदार अँकुसी। ३-कुंए में गिरी हुई वस्तुओं का गुच्छा। ४-एक सिर का गहना।

कंटीला [वि.] (हि.) कांटेदार। जिसमें कांटे हों।

कंटूनमेंट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह स्थान जहां फौजें रहती हैं। छावनी।

कंटोप [संज्ञा पु.] (हि.) सिर और कानों तक ढकने वाली टोपी।

कंट्रक्ट [संज्ञा पु.] (अं.) ठेका।

कंट्रेक्टर [संज्ञा पु.] (अं.) ठेकेदार।

कंठ, कण्ठ [संज्ञा पु] (सं.) १-भोजन उतारने और आवाज निकालने वाली गले की नालियां। घांटी। २-गला। टेंटुआ। ३-स्वर। शब्द। आवाज। ४-तीर। तट। किनारा।
कंठ *खुलना*-१-रुंधे हुए गले का साफ होना। २-आवाज निकलना।
कंठ *बैठना*-आवाज का बेसुरा होना। कंठ *फूटना*-१-आवाज खुलना। २-मुख से शब्द निकलना। कंठ *करना या रखना*-कंठस्थ करना या रखना। कंठ *होना*-कंठाग्र होना। कंठ *सूखना*-प्यास से गला सूखना।

कंठकूजिका, कण्ठकूजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीणा।

कंठगत, कण्ठगत [वि.] (सं.) गले में स्थित। गले में आया या अटका हुआ।

कंठतालव्य, कण्ठतालव्य [वि.] (सं.) कंठ और तालु से उच्चारण होने वाले (शब्द)। जैसे 'ए' और 'ऐ'।

कंठदबाव [संज्ञा पु.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच।

कंठमणि, कण्ठमणि [संज्ञा पु.] (सं.) कंठ के पास वाली घोड़े की भंवरी।

कंठमाला, कण्ठमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक गले का रोग जिसमें रोगी के गले में फुंसिया निकलती हैं।

कंठला [संज्ञा पु.] (हि.) बच्चों के पहनने का एक गले का आभूषण।

कंठशालूक, कण्ठशालूक [संज्ञा पु.] (सं.) गले में होने वाली एक गांठ जो कफ प्रकोप के कारण होती है।

कंठशूल, कण्ठशूल [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े के गले की एक भंवरी जो अच्छी नहीं समझी जाती।

कंठश्री, कण्ठश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक गले का आभूषण। २-पोत की कंठी।

कंठस्थ, कण्ठस्थ [वि.] (सं.) १-गले में अटका हुआ। कंठगत। २-कंठाग्र। जबानी याद। जिह्वाग्र।

कंठहरिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कंठी।

कंठहार, कण्ठहार [संज्ञा पु.] (सं.) गले में पहनने का आभूषण।

कंठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गले का चिह्न जो तोते के गले पर होता है। २–गले का आभूषण। ३–गले के पास का अंगरखे या कुरते का अर्धचंद्राकार भाग। २–पुष्पमाला।

कंठाग्र, कण्ठाग्र [वि.] (सं.) कंठस्थ। जबानी।

कंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटे दाने का कंठा। २–तुलसी आदि की माला। ३–तोते आदि पत्तियों के गले की रेखा।

कंठी छूना या उठाना–सौगन्द खाना। *कंठी देना*–चेला बनाना। *कंठी बांधना*–१–चेला मूंड़ना। २–अपना अंधभक्त बनाना। ३–भक्त होना। ४–मदिरा-मांस त्याग करना। ५–विषयों को छोड़ना।

कंठी लेना–१–भक्त होना। २–मद्य-मांस छोड़ना। ३–विषयों को त्यागना।

कंठीरव, कण्ठीरव [संज्ञा पु.] (सं.) १–कबूतर। २–मतवाला हाथी।

कंठौष्ठ्य, कण्ठौष्ठ्य [वि.] (सं.) कंठ और ओठ से बोला जाने वाला।

कंठ्य, कण्ठ्य [वि] (सं) १–गले से उत्पन्न। २–जिसका कंठ से उच्चारण हो। [संज्ञा पु.] १–वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ से होता है। जैसे अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग २–गले के लिए उपकारी औषध।

कंड़रा [संज्ञा पु.] (हिं.) मूली सरसों, आदि के मध्य का मोटा डंठल जिसकी सागभाजी बनाते हैं।

कंडरा, कण्डरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोटी नस। मोटी नाड़ी।

कंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) थापा हुआ सूखा गोबर जिसे जलाने के काम में लेते है।

कंडारी [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज का माँझी।

कंडाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नरसिंहा। तुरही। तूरी। २–जुलाहों का कैंची जैसा औजार। ३–एक प्रकार का पानी का बरतन।

कंडिका, कण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वेद की ऋचाओं का समूह। २–वैदिक ग्रंथों का एक छोटा वाक्य। पैरा।

कंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा कंडा। उपली। २–सूखामल।

कंडील [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अबरक या कागज की बनी हुई लालटेन।

कंडीलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रकाशगृह। रोशनी रखने का ऊंचा धरहरा।

कंडु, कण्डु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खुजली। खाज।

कंडुक, कण्डुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–भिलावां। २–तमाल।

कंडुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बाल वाले अन्नों का एक रोग।

कंडू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कंडु'।

कंडेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) धुनिया।

कंडौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'कंडुवा'। २–कंडा पाथने का स्थान। ३–कंडों का ढेर।

कंडौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंडौर',

कंडोल, कण्डोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक बड़ा पात्र जो सड़कों पर रखा रहता है। इसमें कूड़ा डाला जाता है।

कंत, कंथ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–स्वामी। पति। २–मालिक। ईश्वर।

कंथा, कन्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुदड़ी।

कंद, कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १–बिना रेशे की गूदेदार जड़। जैसे—सूरन, शकरकंद। २–बादल। ३–तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार यगण और एक लघु होता है। ४–छप्पय छंद के ७१ भेदों में से एक। ५–योनि संबंधी एक रोग। ६–चीनी। मिश्री।

कंदन, कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) नाश। ध्वंस।

कंदमूल, कन्दमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक पौधा जिसका साग बनता है। २–कंद और मूल।

कंदर, कन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गुफा। गुहा। २–अंकुश।

कंदरा, कन्दरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुफा। गुहा।

कंदराकर, कन्दराकर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत।

कंदर्प, कन्दर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १–कामदेव। २–संगीत के रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

कंदला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चाँदी का वह लम्बा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं। २–सोने या चाँदी का लम्बा तार।

कंदली, कन्दली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा।

कंदलाकचहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तार खींचने का कारखाना।

कंदलाकश [संज्ञा पु.] (हिं.) तारकश। तार खींचने वाला कारीगर।

कंदलाकशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तार खींचने का काम।

कंदसार, कन्दसार [संज्ञा पु.] (सं.) १–नंदनवन। २–हिरन की एक जाति।

कंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'कंद'। २–शकरकंद। + ३–घुइयां। अरुई।

कंदील [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'कंडील'।

कंदु, कन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कंदुक'।

कंदुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंडुआ'।

कंदुक, कन्दुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–गेंद। २–छोटा गोल तकिया। ३–सुपारी। ४–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार यगण और एक गुरु होता है।

कंदुकतीर्थ, कन्दुकतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रज का एक तीर्थ स्थान जहाँ श्रीकृष्ण गेंद खेलते थे।

कंदूरी, कन्दूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुँदरु

कंदैला [वि.] (हिं.) गंदला। मैला।

कंदोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) करधनी।

कंध* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–डाली। २–

कंधनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किंकणी। पहनने का एक आभूषण।

कंधर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गरदन। ग्रीवा। बादल। ३–सोथा।

कंधा [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर का वह भाग गले और मोढ़े के बीच में है। स्कन्ध।

कंधा देना–अर्थी में कंधा लगाना। २– देना। *कन्धा बदलना*–१–बोझे को एक दूसरे कंधे पर लेना या बदलना। २– के कंधे से बोझे को अपने कंधे पर *कन्धे की उडान*–मालखंभ की एक *कन्धे से कन्धा छिलना*–अत्यधिक होना। *कन्धा डालना*–१–जूआ डालना साहस छोड़ना। *कन्धा लगाना*–जुए से कंधा छिल जाना।

कंधार [संज्ञा पु..] (हिं.) १–अफगानिस्तान का एक नगर और उससे संलग्न प्रदेश नाम। २–केवट। मल्लाह।

कंधारी [वि.] (हिं.) कंधार देश का। [संज्ञा पु.] १–कंधार देश का घोड़ा। केवट। मांझी।

कँधावर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जूए का भाग जो बैल के कंधों पर रहता है। रखने की चादर।

कँधियाना [क्रि. स.] (हिं.) कंधा देना। रखना।

कंधेला [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों की साड़ी वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।

कंधेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ी में जुते घोड़े की गर्दन पर रखा जाने वाला मेखला।

कंधैया [संज्ञा पु.] (हिं.) 'देखो 'कन्हैया'।

कंप, कम्प [संज्ञा पु.] (सं.) १–कांपना। कँपी। २–शृङ्गार के सात्विक अनुभवों में एक। [संज्ञा पु.] (अं.) डेरा। पड़ाव।

कँपकँपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थरथराहट काँपना।

कंपति, कम्पति [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

कंपन, कम्पन [संज्ञा पु.] (सं.) काँपना। थराहट। कँपकँपी।

कंपना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'काँपना'।

कंपनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कँपकँपी। थरथराहट

कंपनी, कम्पनी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १–व्यापारियों का वह समूह जो अपने संयुक्त धन के नियमानुसार व्यापार करते हों। कारोबार। २–सेना का वह भाग जिसमें

सैनिक होते हैं। ३-मंडली। जत्था।

कंपमान्, कम्पमान् [वि.] (सं.) देखो 'कंपायमान'।

कंपा [संज्ञा पु.] (हिं.) लासा लगी हुई बांस की लग्गी जिससे चिड़िमार पक्षियों को फंसा कर पकड़ते हैं।

कँपाना [क्रि. स.] हिं.) १-हिलाना। हिलाना-डोलाना। २-भय दिखना। डराना।

कंपायमान, कम्पायमान [वि.] (सं.) हिलता हुआ कंपित।

कंपास [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कुतुबनुमा। २-परकाल। पैमाइश करने का एक यंत्र।

कंपित, कम्पित [वि.] (सं.) १-कांपता हुआ। अस्थिर। चलायमान। चंचल। २-भयभीत। डरा हुआ।

कंपिल्ल, कम्पिल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) कमीला।

कंपू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेना के रहने का स्थान। छावनी। २-पड़ाव। ३-डेरा खंभा। ४-सेना। फौज।

कंपोज [संज्ञा पु.] (अं.) छापने को अक्षर या टाइप जमाना या जोड़ना।

कंपोजिंग [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कम्पोज करने का काम या उजरत।

कंपोजीटर [संज्ञा पु.] (अं.) छापने के अक्षर या टाइप जमाने वाला कारीगर।

कंपौंडर [संज्ञा पु.] (अं.) नुसखे बनाने वाला। डाक्टर का सहायक।

कंबखत [वि.] (फा.) देखो 'कमबखत'।

कंवर※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंबल'।

कंबल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओढ़ने बिछाने के काम में आने वाला मोटा ऊनी कपड़ा। २-एक बरसाती कीड़ा। कमला।

कंबिका, कम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन समय का एक बाजा।

कंबु, कम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शंख। २-शंख की चूड़ी। ३-हाथी। ४-घोंघा।

कंबुक, कम्बुक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कंबु'।

कंबोज, कम्बोज [संज्ञा पु.] (सं.) अफगानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम।

कंभारी, कम्भारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंभारि का पेड़।

कंवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पचास पान की एक गड्डी (तमोलियों की एक भाषा)।

कंवल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कमल'।

कंवलककड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमल की जड़।

कंवलगट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल का बीज।

कंवलवाव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कमलवायु'।

कंवासा [संज्ञा पु.] (देश.) नाती का लड़का।

कंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँसा। २-प्याला। छोटा गिलास। ३-सुराही। ४-कांसे का बना हुआ बरतन। ५-झाँझ। मंजीरा। ६-मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का।

कंसक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसीस। २-कांसे का बना पात्र।

कंसताल [संज्ञा पु.] (सं.) झाँझ।

कंसपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कांसे का बरतन। २-चार सेर के तोल के बराबर की नाप।

कंसरवेटिव [वि.] (अं.) १-पुरानी लकीर का फकीर। रूढ़िवादी। २-इंगलैंड देश का एक राजनैतिक दल जो निर्धारित राज्यप्रणाली में कोई परिवर्त्तन अथवा प्रजातंत्र के सिद्धान्तों का प्रसार नहीं चाहता।

कंसर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) संगीतमंडली।

कंसासुर [संज्ञा पु.] (सं.) मथुरा का राजा कंस जिसे असुर भी कहते थे।

कंसुला [संज्ञा पु.] (हिं.) कांसे का गड्ढा किया हुआ पासा जिसमें ठोक कर सोनार घुंघरू आदि बनाते हैं।

कंसुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कंसुला।

कंसुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कीड़ा जो ईख के नवीन पौधे को नष्ट करता है।

क [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-कामदेव। ४-सूर्य। ५-प्रकाश। ६-वायु। ७-राजा। ८-यम। ९-आत्मा। १-प्रजापति। ११-दक्ष। १२-अग्नि। १३-मन। १४-शरीर। १५-काल। १६-धन। १७-मयूर। १८-शब्द। १९-ग्रंथि। गांठ।

कइत+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) ओर। तरफ। पार्श्व।

कइयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ओर। तरफ। पार्श्व।

कई [वि.] (हिं.) एक से अधिक। अनेक। कतिपय।

कउवा※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कव्वा'।

कउर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कवर'।

ककई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कंघी'।

ककड़ासींगी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'काकड़ासींगी'।

ककड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमीन पर फैलने वाली एक बेल जिसका फल लम्बा होता है और खाने के काम में आता है।

ककड़ी के चोर को कटारी **से** *मारना*-छोटे से अपराध पर कठोर दंड देना।

ककना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंगन'।

ककनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा कंगन। २-इमली का छोटा फल। ३-एक प्रकार की मिठाई।

ककराली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कांख का फोड़ा। कंखवाली। कँखवार।

ककरासींगी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'काकड़ासींगी'।

ककरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ककड़ी'।

ककवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक औजार जिससे जुलाहे करघे में भरनी से तागे भरते हैं।

ककसा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काँख।

ककसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली जिसका मांस रूखा होता है।

ककहरा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।

ककही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'कंघी'। २-एक प्रकार का कपास जिसकी रूई कुछ लाल होती है।

ककुद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल के कंधे पर का कुब्बड़। २-राजचिह्न। [वि.] प्रधान। श्रेष्ठ।

ककुद्मान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल। २-एक पर्वत। २-एक औषधि।

ककुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन का वृक्ष। २-वीणा का एक अंग। प्रसेवक। ३-एक राग। ४-एक छंद जिसमें तीन पद होते हैं। ५-दिशा।

ककुभा [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिशा। २-मालकोस राग की पांचवीं रागनी।

ककुम्मती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद।

ककेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बेल जिसके फल सांप के आकार के होते हैं।

ककैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लखोरिया ईंट।

ककोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेखसा। ककरौल।

ककोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) खरोचना। खुरचना।

ककोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ककोड़ा'।

कक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) तम्बाकू की संक्री या सूखी पत्ती जो छोटी चिलम में रखकर पीयी जाती है।

कक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-केकय देश जो काश्मीर राज्य के अन्तर्गत है। २-दुन्दुभी। नगाड़ा। ३-काका।

कक्कोल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंकोल'।

कक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोख। बगल। २-कांछ। लांग। ३-कच्छ। कछार। ४-कास। ५-जंगल। ६-सूखीघास। ७-सूखावन। ८-भूमि। ९-भीत। पाखा। १०-घर। कमरा। ११-दोष। पाप। १२-कखबार। कांख का फोड़ा। १३-अंचल। १४-दर्जा। श्रेणी। १५-तराजू का पल्ला। १६-बेल। लता। १७-पेटी। कमरबंद।

कक्षप [संज्ञा पु.] (सं.) कच्छप। कछुआ।

कक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परिधि। घेरा। २-ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३-श्रेणी। दर्जा। ४-कांख। बगल। ५-घर की दीवार। ६-कछोटा। कांछ। ७-हाथी बांधने की रस्सी

८-कंखवार।

कक्षापट [संज्ञा पु.] (सं.) कौपीन। कांछ।

कक्षीवत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कक्षीवान्'।

कक्षीवान् [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

कक्षोत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा।

कक्ष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आंगन। २-चमड़े की रस्सी। ५-ड्योढ़ी। ६-हौदा। ७-घुंघची ८-समानता। ९-उद्योग।

कखवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ककराली'।

कखौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'काँख'। २-काँख का फोड़ा।

कगदही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कागज बांधने का बस्ता।

कगर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऊंचा किनारा। २-बाट। औंठ। ३-मेंड़। ४-दीवार में उमड़ी हुई पट्टी। [क्रि. वि.] १-किनारें पर। २-समीप। निकट। ३-अलग। दूर।

कगार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऊंचा किनारा। २-नदी का करारा। ३-ऊंचा टीला।

कगोड़ी [संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ का नाम।

कच [संज्ञा पु.] (सं.) १-केश। बाल। २-सूखा फोड़ा या उसकी पपड़ी। झुंड। ३-अंगरखे का पल्ला। ४-चादल। ५-धंसने या चुभने का शब्द। ६-कुचले जाने का शब्द। [वि.] (हिं.) कच्चा।

कचक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दबाने या कुचल जाने से उत्पन्न चोट।

कचकच [संज्ञा पु.] (हिं.) बकझक। बातों का झगड़ा वा युद्ध।

कचकचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-कचकच शब्द करना। धसाने या चुभाने का शब्द करना। २-दांत पीसना।

कचकड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कछुए का खोपड़ा।

कचकना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-कुचलना। दवाना। २-ठेस लगाना। ठोकर खाना।

कचकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-चुभाना। धसाना। २-तोड़ना। फोड़ना।

कचकेला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का केला जो रूखा और स्वाद में फीका होता है।

कचकोल [संज्ञा पु.] (हिं.) कपाल। खोपड़ी। नारियल का बना हुआ भिक्षापात्र।

कचड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कचरा'।

कचदिला [वि.] (हिं.) कच्चे दिल का। दुर्बल हृदय का। डरपोक। भीरु।

कचनार [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगंधित फूलों का एक वृक्ष, इसकी कलियों का साग बनता है।

कचपच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गिचपिच। थोड़े से स्थान में बहुत सी वस्तुओं या लोगों का भर जाना। २-देखो 'कचकच'।

कचपचिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कचपची'।

कचपची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वृत्तिकानक्षत्र जिसमें अनेक छोटे-छोटे नक्षत्र होते हैं। २-चमकीले बुंदे जो स्त्रियां माथे पर लगाती हैं

कचपेंदिया [वि.] (हिं.) १-कच्ची पेंदी का। २-बात का कच्चा। अस्थिर विचार का।

कचबची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमकीले बुंदे जो स्त्रियां माथे पर लगाती हैं। चमकी। तारा। सितारा।

कचरकचर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कच्चे फल खाने का शब्द। २-देखो 'कचकच'।

कचरकूट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खूब पीटना और लतियाना। २-+भरपेट भोजन।

कचरघान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत-सी चीजों का इकट्ठा होना जिससे गड़बड़ी हो। २-बहुत से लड़के वाले या कच्चे-बच्चे। ३-घमासान। ४-गुत्थमगुत्था।

कचरना*+ [क्रि. सं.] (हिं.) पैरों से कुचलना। रौंदना। दबाना। २-खूब खाना या चबाना *कचर-कचर कर खाना*–चबा-चबा कर खूब भरपेट खाना।

कचरपचर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कचपच। २-गिचपिच।

कचरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कच्चा खरबूज़ा या ककड़ी। २-कूड़ा-करकट। रद्दी चीज। ३-समुद्र की सेवार। ४-फूट का कच्चा फल।

कचरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल पकाकर खाये जाते हैं। पेंहटा। २-कचरी या कच्चे पेहंटे के सुखाए गये टुकड़े। ३-सूखी कचरी की तरकारी। ४-छिलकेदार दाल। ५-रुई का बिनौला।

कचलंपट, कचलम्पट [वि.] (हिं.) व्यभिचारी। रंडीबाज।

कचला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काली चिकनी मिट्टी। २-कीचड़।

कचलू [संज्ञा पु.] (देश.) एक पहाड़ी वृक्ष।

कचलोंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) कच्चे आटे का पेड़ा।

कचलोन [संज्ञा पु.] (हिं.) वह लवण जो काँच की भट्टियों में जमे हुए क्षार से बनता है।

कचलोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कच्चा लोहा। २-अधूरा वार।

कचलोही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कचलोहा'।

कचलोहू [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पनछा या पानी जो खुले घाव में से थोड़ा थोड़ा निकलता है

कचवाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत मापने का एक मान।

कचवाट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खिन्नता। विराग। नफरत। चिढ़।

कचहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोष्ठी, जमा २-न्यायालय। अदालत। कोर्ट। ३- राजसभा। ४-कार्यालय। दफ्तर।

कचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कच्चापन। अनुभव की कमी या अभाव।

कचाकची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाद। झग

कचाकु [वि.] (सं.) १-उद्दंड। २-कुटिल।

कचाटुर [संज्ञा पु.] (सं.) वनमुरगी।

कचाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-कचियाना। हि हारना। २-डरना।

कचायध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कच्चेपन की गं

कचायन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किच-किच। ल झगड़ा। बकझक।

कचार [संज्ञा पु.] (हिं.) नदी के किनारे छिछला पानी।

कचारना [क्रि. स.] (हिं.) पटक-पटककर धोना।

कचालू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की या अरवी। २-आलू आदि की बनी प्रकार की चाट।

कचालू करना या बनाना–खूब मरम्मत कर

कचावट [संज्ञा पु.] (हिं.) आम की खटा

कचास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कचाई'।

कचिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दांती हँसिया।

कचियाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कचाना'।

कचीची* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वृत्तिकान २-दाढ। जबड़ा।

कचीची बटना–दांत पीसना। *कचीची ले*–मरते समय का दांत पीसना। *कचीची बँ*–दांत बैठना।

कचुल्ल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कचुल्ला'।

कचुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) चौड़ी पेंदी कटोरा।

कचूमर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुचल कर बना हुआ अचार। २-कुचली हुई वस्तु। *कचूमर करना या निकालना*–१-कुचलना। चूर करना। २-खूब पीटना।

कचूर [संज्ञा पुं.] (हिं.) १-हलदी जैसा पौधा जो कपूर के समान तीव्र महक है। नरकचूर। २-कटोरा।

कचूर होना–कचूर के समान हरा होना।

कचेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंचेरा'।

कचेहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कचहरी'।

कचोना [क्रि. स.] (हिं.) चुभाना। धंसाना।

कचोरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कटोरा। प्याला।

कचोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कटोरी। प्याली। छोटा कटोरा।

कचौड़ी, कचौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह

जिसमें उड़द आदि की पीठी भरी हो।

कच्चर [वि] (सं.) मलिन। मैला।

कच्चा [वि] (हि) १-बिना पका। अपक्व। २-जो आंच पर न पका हो।।३-अपरिपुष्ट। ४-जिसके तैयार होने में कसर हो। ५-कमजोर। अदृढ़। ६-अप्रामाणिक। अयुक्त। ७-अनभ्यस्त। ८-नियमरहित। अस्थायी। ६-बिना रस का। १०-प्रामाणिक तौल अथवा माप में कम हो। ११-कच्ची मिट्टी का बना हुआ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूर-दूर पर पड़ा हुआ धागे का डोभ जिस पर बखिया फेरते हैं। २-ढंचा। गड्ढा। ३-पांडुलेख। मसौदा। ४-जबड़ा। दाढ़।

कच्चा करना-१-लज्जित करना। २-झूठा ठहराना। ३-हिम्मत परत करना। कच्ची सिलाई करना। *कच्चा खा जाना या चबा जाना*-आवेश या गुस्से के समय मार डालने की धमकी। *कच्चा चिट्ठा खोलना या सुनना*-रहस्य खोलना। *कच्चा धागा*-अस्थायी। कमजोर। *कच्चा पक्का*-जो टिकाऊ न हो। अधकचरा। *कच्चा पक्का करना*-१-अनिश्चित। २-अधूरा होना। *कच्चा पड़ना*-१-झूठा पड़ना। २-लज्जित होना। *कच्चा बैठना*-मरने के समय ऊपर नीचे के दांतों का ऐसा मिल जाना कि खुल न सके। *कच्चा होना*-धीरज छूटना। *कच्ची खा जाना*-हिम्मत टूट जाना। *कच्ची गोटी या गोली खेलना*-अनअभ्यस्त। अनाड़ी होना। *कच्ची पक्की खिलना*-ठीक-ठीक खाना न मिलना। *कच्चे घड़े चढ़ना*-ताड़ी पीना। *कच्चे घड़े की पीना*-नशे के कारण मूर्खता के काम। *कच्चे घड़े पानी भरना या भरवाना*-कठिन काम करना। *कच्चे बच्चे*-छोटे-छोटे बालबच्चे।

कच्चाकागज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह दस्तावेज जिसकी रजिस्ट्री न हुई हो। २-एक प्रकार का बिना घुटा कागज।

कच्चाकाम [संज्ञा पु.] (हि.) झूठे सलमे सितारे का काम। झूठा काम।

कच्चाकोढ़ [संज्ञा पु.] (हि.) १-खुजली। २-आतशक। गरमी।

कच्चाघड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) आवे में बिना पकाया घड़ा।

कच्चाचिट्ठा [संज्ञा पु.] (हि.) १-ज्यों का त्यों कहा हुआ। वृतांत। २-रहस्य। गुप्तभेद।

कच्चामाल [संज्ञा पु.] (हि.) व्यवहार में आने वाली। वस्तुओं के बनाने की सामग्री। जैसे-तेलहन, रूई धातु इत्यादि।

कच्चाहाथ [संज्ञा पु.] हि.) अनअभ्यस्त हाथ। वह हाथ जो किसी काम में न बैठा हो।

कच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कच्ची रसोई। [वि.] कच्चा का स्त्रीलिंग।

कच्चीआय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह समूची या सारी आमदनी जिसमें से लागत, परिव्यय आदि घटाये न गये हों।

कच्चीकली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-अप्राप्त-यौवन। २-मुँहबंध कली। ३-वह स्त्री जिससे पुरुष समागम न हुआ हो। अछूती।

कच्ची कली टूटना-१-छोटी उमर में मरना। २-मासूम लड़की का पुरुष के साथ संयोग होना।

कच्चीचीनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह चीनी जो भली-भांति साफ न की गई हो।

कच्चीजाकड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ठीक तरह पर न बिके हुए माल के लेने-देने की बही।

कच्चीपेशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुकद्दमे की पहली पेशी जिसमें कुछ भी फैसला नहीं होता।

कच्चीबही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूर्णरूप से निश्चित न किये हुए हिसाब लिखने की व्यापारिक बही।

कच्चीमिति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पक्की मिती से पूर्व की अथवा रुपया मिलने या चुकाने का दिन।

कच्चीरसोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) केवल जल में पका हुआ अन्न। जैसे रोटी, दाल, भात आदि

कच्चीरोकड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह बही जिसमें प्रतिदिन के आय-व्यय का कच्चा हिसाब अंकित रहता है।

कच्चीशक्कर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खाँड़। राब से जूसी अलग करके बनाई हुई चीनी।

कच्चीसड़क [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह सड़क जिस पर कंकर-पत्थर न पीटा गया हो।

कच्चीसिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दूर-दूर पर टांका लगाई हुई सिलाई।

कच्चू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अरबी। घुइयाँ। २-बेड़ा।

कच्चेपक्के-दिन [संज्ञा पु.] (हि.) १-दो ऋतुओं की संधि का समय। २-चार-पाँच महीने का गर्भकाल।

कच्चेबच्चे [संज्ञा पु.] (हि.) बहूत छोटे-छोटे बच्चे। बहुत से लड़के-वाले।

कच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलप्राय देश। २-जल के पास की भूमि। कछार। ३-गुजरात के पास का एक अंतरीप। कच्छभुज। ४-कच्छ देश का घोड़ा। ५-धोती की लांग। ६-एक छप्पय छंद जिसमें १५२ मात्राएं होती हैं।

कच्छ की उखेड़-कुश्ती का एक पेंच।

*[संज्ञा पु.] (हि.) कछुवा।

कच्छप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कछुआ। २-विष्णु के २४ अवतारों में से एक। ३-कुश्ती का एक पेंच। ४-शराब खींचने का भभका।

कच्छपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी छोटी फुंसियों का एक रोग।

कच्छपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कच्छप की स्त्री। २-सरस्वती की वीणा का एक नाम। ३-एक छोटी वीणा। ४-देखो 'कच्छपिका'।

कच्छा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की बड़ी नाव। २-कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बेड़ा।

कच्छार [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश।

कच्छी [वि.] (हिं.) १-कच्छदेश का। २-कच्छ देश में उत्पन्न।

[संज्ञा पु.] कच्छदेश का घोड़ा।

कच्छ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कच्छप। कछुवा।

कछना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घुटने के ऊपर तक पहने जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र। घुटने तक का पायजामा। २-घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती।

कछनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटी धोती। २-घुटने के ऊपर तक की धोती। ३-वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

कछारा [संज्ञा पु.] चौड़े मुँह का घड़ा।

कछराली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ककराली'।

कछरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा कछरा।

कछवारा [संज्ञा पु.] (हि.) साग तरकारी बोने का खेत।

कछवाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) राजपूतों की एक जाति

कछान [संज्ञा पु.] (हि.) घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।

कछार [संज्ञा पु.] (हि.) नदी या समुद्र के किनारे की नीची भूमि।

कछियाना [संज्ञा पु.] (हि.) किसानों की बस्ती।

कछु*+ [वि.] (हि.) देखो 'कुछ'।

कछुआ [संज्ञा पु.] (हि.) एक जलजन्तु जिसकी पीठ पर कड़ी ढाल के समान खोपड़ी होती है।

कछुई [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कछुवे की स्त्री। कच्छपी।

कछुक* [वि.] (हिं.) कुछ। थोड़ा।

कछुवा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कछुआ'।

कछू*+ [वि.] (हि.) देखो 'कुछ'।

कछोटा, कछौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कछाना'। २-देखो 'कछानी'।

कज [संज्ञा पु.] (फा.) १-टेढ़ापन। २-दोष। कसर। ऐब।

कजक [संज्ञा पु.] (फा.) हाथी हाँकने का अंकुश।

कजकोल [संज्ञा पु.] (फा.) भीख मांगने का खप्पर।

कजनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बरतन खुरचने का औजार। खरदनी।

कजपूती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कयपूती'।

कजरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'काजल'। २-

काली आँखों वाला बैल। [वि] काली आँखों वाला।

कजराई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कालापन। श्यामता।

कजरारा [वि.] (हिं) १-कज्जलयुक्त। काजल लगा हुआ। २-काला। श्यामवर्ण का। स्याह।

कजरी [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'कजली'।
[संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का धान जो काले रंग का होता है।

कजरौटा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कजलौटा'।

कजरौटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कजलौटी'।

कजल [संज्ञा पु.] (हि) काजल। [वि.] काली आँखवाला।

कजला [संज्ञा पु.] (हि.) १-काजल। २-काली आँखों वाला बैल। ३-एक काला पक्षी।
[वि.] (हि.) देखो 'कजरा'।

कजलाना [क्रि. अ.] (हि.) १-काला पड़ना। सांवला होना। २-आग का बुझना।
[क्रि. स] (हि.) काजल लगाना। आंजना।

कजली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कालिख। २- पिसे हुए पारे तथा गंधक की बुकनी। ३-रस फूंकने में धातु का वह अंश जो काला पड़ जाता है। ४-काली आँख की गाय। ५-भादोंबदी तीज का त्यौहार। ६-बरसात में गाया जाने वाला गीत। ७-एक प्रकार की ईख। ८-जौ के नये अंकुर।

कजलीतीज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भादोंबदी तीज।

कजलीबन [संज्ञा पु.] (हि.) १-आसाम राज्य का एक जंगल जहां हाथी बहुत होते थे। २-केले का जंगल।

कजलौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काजल रखने की डंडी लगी डिबिया। २-गोदना। गोदने की स्याही की डिबिया।

कजलौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कजलौटा।

कजही+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कायजा'।

क़ज़ा*+ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मौत। मृत्यु।
क़ज़ा करना-मरजाना।

कज़ाक [संज्ञा पु.] (तु.) लुटेरा। डाकू। बटमार।

कज़ाकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लुटेरापन। लूटमार। २-धोखेबाजी। छल।

कजावा [संज्ञा पु.] (फा.) ऊँट की पीठ पर रखी जाने वाली काठी।

कजिया [संज्ञा पु.] (अ.) झगड़ा। बखेड़ा। टंटा। दंगा।

कजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-टेढ़ापन। टेढ़ाई। २-दोष। ऐब। कसर।

कज्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-काजल। अंजन। २-सुरमा। ३-कालिख। ४-मेघ। बादल। ५-चौदह मात्रा का एक छंद जिसके अंत में एक गुरु और एक लघु होता है।

कज्जलित [वि.] (सं.) १-काजल लगा हुआ। २-काला।

कज़्ज़ाक [संज्ञा पु.] (तु.) १-डाकू। लुटेरा। २-चालाक। धोखेबाज़।

कज़्ज़ाकी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लुटेरापन। २-धोखेबाजी। चालाकी।

कट [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी की कनपटी या गंडस्थान। २-गंडस्थल। ३-खस, सरकंडा आदि की घास। ४-नरकट की चटाई। ५-टट्टी। ६-शव। लाश। ७-अरथी। ८-श्मशान। ९-लकड़ी का तख्ता। १०-समय। ऋतु। अवसर। ११-पासे की एक चाल।
[संज्ञा पु.] (हि.) १-काला रंग। २-'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे-कटखना कुत्ता।
[संज्ञा पु.] (अं.) काट। तराश। ब्योंत।
[वि.] (सं.) उत्कट। अतिशय। बहुत। उग्र।

कटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना। दल। फौज। २-छावनी। सेना के रहने का स्थान। कंटूनमेंट। ३-राजशिविर। कंकण। कड़ा। ५-पर्वत का मध्य भाग। ६-समूह। झुंड। ७-उड़ीसा प्रांत का प्रसिद्ध नगर।

कटकई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सेना। फौज। लशकर।

कटकट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दाँतों के बजने या कड़कड़ाने का शब्द। लड़ाई। झगड़ा।

कटकटाना [क्रि. अ.] (हि.) दाँतों का शब्द होना या दाँत पीसना।

कटकटिका [संज्ञा स्त्री] (हि.) बुलबुल पक्षी।

कटकाई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सेना। फौज।

कटकार [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्पकार। चटाई आदि बनाने वाला।

कटकोल [संज्ञा पु.] (सं.) पीकदान।

कटकी [संज्ञा पु.] (सं.) १-गज। हाथी। २-फौज। सेना। [वि.] (हि.) कटक का रहने वाला।

कटकीना [संज्ञा पु.] (हि.) गहरी चाल अथवा युक्ति। हथकंडा।

कटकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूस की झोपड़ी। पर्णशाला।

कटखना [वि.] (हि.) काट खाने वाला। दाँत से काटने वाला।

कटखादक [वि.] (सं.) सर्वभक्षी। भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करने वाला।

कटघरा [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह काठ का घर जिसमें जंगला लगा हुआ हो। २-बड़ा पिंजड़ा।

कटजीरा [संज्ञा पु.] (हि.) काला जीरा।

कटड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) भैंस का नर बच्चा या पँड़वा।

कटत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कटती'।

कटताल [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार
जिसे करताल भी कहते हैं।

कटताला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कटताल'।

कटती [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'कटत'।

कटनंस* [संज्ञा पु.] (हि.) काटने और
की क्रिया।

कटनास [संज्ञा पु.] (हि.) नीलकंठ नामक

कटना [क्रि. अ.] (हि.) १-किसी धारदार
यार की दाव से किसी वस्तु के दो
होना। २-पिस जाना। बारीक चूर्ण
जैसे-मसाला कटना। ३-किसी धार
वस्तु का धंसना या घुसना। ४-किसी
या भाग का अलग हो जाना। ५-
मरना। ६-कतरा या ब्योंता जाना।
हटना। छंटना। जैसे-मैल कटना। ८-
का बीतना। ९-समाप्त होना। १०-
देकर साथ छोड़ देना। ११-लज्जित
झेंपना। १२-जलना। १३-मोहित
आसक्त होना। १४-व्यर्थ व्यय होना।
प्राप्ति होना। १६-लिखावट पर
फिरना।
कटती कहना-मर्मभेदी बात कहना।

कटनास [संज्ञा पु.] (हि.) देखो कटमांस

कटनि [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-कांटछांट।
२-प्रीति। आसक्ति।

कटनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-काटने का
२-काटने का काम। ३-फसल काटने
कार्य। ४-तिरछी दौड़।
कटनी काटना-इधर से उधर और
इधर भागना। *कटनी मारना*-जोतने
खेत की घास खोदना।

कटपीस [संज्ञा पु.] (अं.) वस्त्र का वह
जो थान की नाप से बच जाता है।

कटपूतन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का

कटर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की
[संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार की
जिसमें डांडा नहीं लगता। ३-वह
कुछ काटी जाय। ४-काटने वाला

कटरना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की

कटरा [संज्ञा पु.] (हि.) १-छोटा चौकोर
२-भैंस का नरबच्चा।

कटरिया [संज्ञा पु.] (देश.) आसाम में
वाला एक धान।

कटरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धान की फसल
रोग।
[संज्ञा स्त्री.] (हि.) नदी के किनारे की
दल वाली जमीन।

कटरेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकड़ी रेतने
औजार।

कटल्लू [संज्ञा पु.] (हि.) १-कसाई।

२-मुसलमान के लिये एक घृणासूचक शब्द।

कटवाँ [वि.] (हिं.) कटा हुआ। काटकर बना हुआ। जिसमें कटाई का काम हो। *कटवाँ ब्याज*-वह ब्याज जो मूलधन का कुछ अंश चुकता होने पर शेष अंश पर लगे।

कटवाँसी [सज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का ठोस बाँस।

कटवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटी मछली जिसके गलफड़ों में कांटे होते हैं।

कटसरैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अडूसे के समान एक कांटेदार पौधा।

कटहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कटहल'।

कटहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कटघरा। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

कटहल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक पेड़ जिसमें बड़े और भारी फल लगते हैं। यह फल कांटेदार होते हैं। २-इस वृक्ष का फल कांटेदार होता है।

कटहा* [वि.] (हिं.) काट खानेवाला।

कटा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मारकाट। २-वध। हत्या।

कटाइक [वि.] (हि.) काटने वाला।

कटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काटने का काम। २-फसल काटने का काम। ३-फसल काटने की मजदूरी।

कटाऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कटाव'।

कटाकट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटकट का शब्द। २-लड़ाई। ३-वैर। वैमनस्य।

कटाकटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मारकाट।

कटाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिरछी चितवन। तिरछी नजर। २-व्यंग। आक्षेप।

कटाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) घासफूस डालकर जलाई हुई आग।

कटाछनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कटाकट'।

कटान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काटने का काम।

कटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-काटने का कार्य अन्य से कराना। २-दाँतों से नोंचवाना।

कटार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एकदुधारा हथियार जो प्रायः एक बालिश्त के बराबर होता है। २-एक प्रकार का बनबिलाव।

कटारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी कटार। २-इमली का फल।

कटारिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

कटारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कटार।

कटाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भटकटैया।

कटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कांटछांट। कतरब्योंत। २-काटकर बनाये हुए बेलबूंटे।

कटावदार [वि.] (हिं.) जिस पत्थर अथवा लकड़ी पर बेलबूटे खोदकर या काटकर बनाये गये हों।

कटावन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटाव का काम। २-कटा हुआ भाग। कतरन।

कटास [संज्ञा पु.) (हिं.) १-कटार। २-एक प्रकार का बनबिलाव।

कटासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुर्दा गाड़ने का स्थान।

कटाह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी कड़ाही या कड़ाह। २-कछुए की खोपड़ी। ३-कुआं। ४-नरक। ५-झोंपड़ी। भैंस का कटरा। ६-ऊंचा टीला।

कटाहक [संज्ञा पु.] (सं.) कड़ाह।

कटिंजरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में एक ताल का नाम।

कटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर का मध्य भाग। कमर। २-हाथी की कनपटी या गंडस्थल। ३-मंदिर का द्वार। ४-पीपल।

कटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतली कमर।

कटिकूप [संज्ञा पु.] (सं.) चूतड़ का गड्ढा।

कटिजेब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमर का आभूषण। करधनी।

कटितट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमर। २-नितम्ब। चूतड़।

कटित्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करधनी। कमरबंद।

कटिदेश [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमर।

कटिबंध, कटिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमरबंद। २-पृथ्वी का वह भाग जो शीतलता तथा उष्णता के अनुसार निर्धारित होता है। यह भूमंडल पाँच कटिबंधों में बटा हुआ है।

कटिबद्ध [वि.] (सं.) १-कमर कसे हुए। २-तैयार। तत्पर। उद्यत। मेखला।

कटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नगों या जवाहिरात आदि को छांटकर सुडौल करने वाला २-चौपायों का चारा। ३-मछली फंसाने का काँटा। ४-'कटरे' का स्त्रीलिंग।

कटियाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-कंटकित होना। २-पुलकित होना। रोमांचित होना।

कठियाली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भटकटैया।

कटिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मेखला। कमर में पहनने का डोरा।

कटीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कतीरा'।

कटील [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कपास।

कटीला [वि.] (हिं.) १-कटने वाला। तीक्ष्ण। २-प्रभावशाली। हृदयग्राही। ३-मोहित करने वाला। आनबान वाला। ५-कांटेदार। ६-नुकीला। [संज्ञा पु.] १-एक नोकदार लकड़ी जो गाय या भैंस के बच्चों की नाक पर बांधी जाती है जिससे कि मां का दूध न पी सकें। २-देखो 'कतीरा'।

कटु [वि.] (सं.) ५-छः रसों में से एक। कड़ुवा। तीता। कसैला। तीक्ष्ण। २-जो मन को न भावे। अनिष्ट।

कटुकद, कटुकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-अदरक। २-लहसुन। ३-मूली।

कटुक [वि] (सं.) १-कड़ुआ। कटु। २-अप्रिय। नागवार।

कटुकत्व [संज्ञा पु] (सं.) कड़ुवापन। चरपराहट।

कटुकत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च, सोंठ और पीपल, इन तीन वस्तुओं का समूह।

कटुका [संज्ञा स्त्री] (सं.) कुटकी।

कटुकीट [संज्ञा पु.] (सं.) मच्छड़। डांस।

कटुग्रंथि, कटुग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ७-सोंठ। २-पिपरामूल।

कटुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुवापन। कड़ुवाई।

कटुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) कड़ुवापन।

कटुफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कायफल। २-करेला।

कटुभङ्गा [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ।

कटुभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) अदरक।

कटुभाषी [वि.] (सं.) कर्कश शब्द बोलने वाला।

कटुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कच्ची हलदी।

कटुवा [संज्ञा पु.] (हि.) व्यापारी के पास आने वाली वस्तु जिसका मूल्य पीछे एकत्रित होता है

कटूक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुवी बात। अप्रिय बात।

कटूभर [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगली गूलर।

कटेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भटकटैया।

कटेली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कपास

कटेहर [संज्ञा पु.] (हि.) हल के नीचे की लकड़ी का वह भाग जिसमें फाल बैठाया जाता है। खौंपा।

कटैया [वि.] (हिं.) काटने वाला।

कटैला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बहुमूल्य पत्थर।

कटोरदान[संज्ञा पु.] (हिं.) गोल डिब्बे के आकार का एक ढक्कनदार पात्र जिसमें भोजनआदि रखते हैं।

कटोरा [संज्ञा पु.] (हि.) चौड़े पेंदे और खुले मुंह का एक पात्र जिसकी दीवारें छोटी होती हैं। प्याला। बेला।

कटोरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कटोरा।

कटोरी [संज्ञा स्त्री.] १-छोटा कटोरा। प्याली। २-चोली या अंगिया का वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं। ३-तलवार की मूठ के ऊपर का गोल भाग। ४-फूल के सींके का सिरा जिसपर दल रहते हैं।

कटोवा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) काटने वाला ।

कटौती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किसी रकम को देते हुए उसमें से कुछ बंधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना ।

कटौती का प्रस्ताव–इस आशय का प्रस्ताव कि अमुक प्रस्तावित व्यय में कितनी कमी की जाय । (विधायिका सभा में) । *कटमोशन*।

कटौनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) फसल काटने का काम ।

कट्टर [वि.] (हि.) १–काट खानेवाला । कटहा । २–अपने विश्वास पर दृढ़ रहने वाला । अन्धविश्वासी । ३–हठी । दुराग्रही ।

कट्टहा [संज्ञा पु.] (हि.) महाब्राह्मण । महापात्र ।

कट्टा [वि.] (हि.) १–मोटा-ताजा । हट्टा-कट्टा । २–बलवान । [संज्ञा पु.] जबड़ा ।

कट्टे लगाना–१–दूसरे के कारण अपनी वस्तु नष्ट होना । २–दूसरे की नजर में खटकने वाली वस्तु नष्ट हो जाना ।

कट्ठा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–भूमि की एक नाप जो पांच हाथ चार अंगुल होती है । २–धातु गलाने की भट्टी । ३–अन्न नापने का पात्र । ४–खराब गेहूँ ।

कठंगर [वि.] (हि.) १–स्थूल । मोटा । २–कठोर कड़ा ।

कठ [संज्ञा पु] (सं.) १–एक ऋषि । २–यजुर्वेदीय उपनिषद जिसमें यम तथा नचिकेता का संवाद है । ३–एक प्रकार का पुराना बाजा । ३–(केवल समस्त पदों में) जंगली या निकृष्ट जाति का । जैसे कठकेला । ४–कहीं-कहीं काठ का बना हुआ अर्थ में भी आता है । जैसे कठपुतली ।

कठकीली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पच्चड़ ।

कठकेला [संज्ञा पु.] (हि.) जंगली केला ।

कठकोला [संज्ञा पु.] (हि.) कठफोड़वा पक्षी ।

कठगुलाब [संज्ञा पु.] (हि.) जंगली गुलाब जिसमें छोटे-छोटे फूल लगते हैं ।

कठताल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लकड़ी का करताल ।

कठधूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) यजुर्वेद की कठशाखा का अच्छा ज्ञाता ।

कठपुतली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–काठ की गुड़िया या पुतली जो धागों की सहायता से नाचती है । २–वह व्यक्ति जो केवल दूसरों के संकेतों पर काम करे ।

कठड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) १–कटघरा । कटहरा । २–काठ का बड़ा सन्दूक । ३–काठ का पात्र ।

कठफुत्ता [संज्ञा पु.] (हि.) कुकुरमुत्ता । छत्रक । खुमी ।

कठफोड़वा [संज्ञा पु.] (हि.) भूरे या खाकी रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच लम्बी होती है और वह पेड़ों की छाल छेदती है ।

कठफोड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कठफोड़वा' ।

कठबंधन, कठबन्धन [संज्ञा पु] (हि.) वह लकड़ी की बेड़ी जो हाथी के पैर में डाली जाती है । अँदुआ ।

कठबाप [संज्ञा पु.] (हि.) सौतेला बाप ।

कठबेल [संज्ञा पु.] (हि.) कैथा का पेड़ ।

कठमलिया [संज्ञा पु.] (हि.) १–काठ की माला पहनने वाला वैष्णव । २–झूठा साधु । बनावटी फकीर ।

कठमस्त, कठमस्ता [वि.] (हि.) १–संडमुसंड । व्यभिचारी ।

कठमस्ती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मुसंडापन । मस्ती ।

कठमाटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कीचड़ की मट्टी जो बहुत जल्दी सूखकर कड़ी हो जाती है ।

कठवत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कठौत' ।

कठरा [संज्ञा पु.] (हि.) १–काठ का बड़ा सन्दूक २–काठ का पात्र । ३–कठघरा ।

कठरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कठैली' ।

कठला [संज्ञा पु.] (हि.) आधिव्याधि से रक्षा करने के निमित्त पहनाया जाने वाला बच्चों के गले का एक आभूषण ।

कठवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा का एक उपनिषद् ।

कठारा*+ [संज्ञा पु.] नदी या तालाब का किनारा ।

कठारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–काठ का पात्र या बरतन । २–कठमंडल ।

कठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खड़िया ।

कठिन [वि.] (सं.) १–कड़ा । कठोर । दृढ़ । सख्त २–दुष्कर । दु:साध्य । मुशकिल ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) कष्ट । संकट ।

कठिनता [संज्ञा स्त्री.] हि.) १–कठोरता । कड़ापन । सख्ती । २–मुशकिल । असाध्यता । ३–निर्दयता । बेरहमी । ४–मजबूती । दृढ़ता ।

कठिनताई [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'कठिनता' ।

कठिनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कठिनता' ।

कठिनाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–कठोरता । सख्ती । २–मुशकिल । क्लिष्टता । ३–असाध्यता ।

कठिया [वि.] (हि.) कड़े छिलके वाला ।
[संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का गेहूँ जिसका छिलका लाल और मोटा होता है ।

कठियाना [क्रि. अ.] (हि.) काठ के समान सूख कर कड़ा होजाना ।

कठीर* [संज्ञा पु.] (हि.) सिंह ।

कठुला [संज्ञा पु.] (हि.) बच्चों के गले में पहरने की माला । देखो 'कठला' ।

कठुवाना [क्रि. अ.] (हि.) १–सूखकर काठ के समान कड़ा हो जाना । २–शीत से हाथ पैर ठिठुरना ।

कठूमर [संज्ञा पु.] (हि.) जंगली गूलर ।

कठेठ, कठेठा* [वि.] (हि.) [पु. प्र.] १– कठोर । कठिन । २–तगड़ा । अधिक वाला ।

कठेठी [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र] कठोर ।

कठेल [संज्ञा पु.] (हि.) धुनिये की कमान रूई धुनी जाती है ।

कठैला [संज्ञा पु.] (हि.) काठ का कठौता ।

कठैली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) काठ का छोटा

कठोदर [संज्ञा पु.] (हि.) एक रोग जिसमें काठ के समान कड़ा हो जाता है ।

कठोर [वि.] (सं.) १–कठिन । कड़ा । २–निदर्य । निष्ठुर । बेरहम ।

कठोरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कड़ाई । २–निदर्यता । निष्ठुरता । बेरहमी ।

कठोरताई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो

कठोरपन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कठोरता' ।

कठौत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा कठौता ।

कठौता [संज्ञा पु.] (हि.) लकड़ी का बड़ा काठ का बड़ा बरतन ।

कठौती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा कठौता

कड़ंगा [वि.] (हि.) मोटा । तगड़ा ।

कड़ [संज्ञा पु.] (देश.) १–कुसुम । कुसुम का बीज ।
+ [संज्ञा पु.] (हि.) कमर । कटि ।

कड़क [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–कड़कड़ शब्द । कठोर शब्द । २–तड़प । गाज । वज्र । ४–घोड़े की सरपट कसक । रुक-रुककर होने वाला दर्द ।

कड़कड़ [संज्ञा पु.] (हि.) १–दो वस्तुओं स्पर टकराने का शब्द । घोर शब्द । कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द ।

कड़कड़ाता [वि.] (हि.) कड़कड़ शब्द हुआ । २–कड़ाके का । तीव्र । बहुत प्रचंड ।

कड़कड़ाना [क्रि. अ.] (हि.) १– करना या होना । घोर नाद करना । २– चूर-चूर करना ।

कड़कड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १– कर्कश शब्द । २–गरज । ३–घोर

कड़कना [क्रि. अ.] (हि.) १– होना । २–चटखना । ३–कड़ा या शब्द करना । ४–चिटखने का कना । ५–आवाज के साथ टूटना ।

कड़कनाल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चौड़े तोप ।

कड़कवांका [संज्ञा पु.] (हि) बलवान पुरुष ।

कड़कबिजली [संज्ञा स्त्री] (हि.)

रने का स्त्रियों का एक आभूषण जिसे 'चांद वाला' भी कहते हैं।

कड़का [संज्ञा पु.] (हिं.) कठोर शब्द । कड़ी आवाज।

कड़खा [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़ाई के समय गाया जाने वाला गीत जिससे वीरों में लड़ने की भावना को उत्तेजना मिलती है।

कड़खैत [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़खा गाने वाला चारण या भाट।

कड़बड़ा [वि.] (हिं.) चितकबरा। कबरा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) कबरी दाढ़ी वाला व्यक्ति।

कड़बा [सज्ञा पु.] (हिं.) हल के फाल पर बांधी जाने वाली एक गोल वस्तु।

कड़बी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मकई या ज्वार के पौधे जो कुट्टी काटकर पशुओं को खिलाये जाते हैं।

कड़वा+ [वि.] (हिं.) देखो 'कटु'।

कड़वी+ [वि.] (हिं.) देखो 'कड़ई'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुट्टे कटी हुई ज्वार जो चारे के काम में आती है।

कड़हन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा चावल।

कड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हाथ या पैर में पहनने का चूड़ा या कंगन। २–लोहे का कुंडा। ३–एक प्रकार का कबूतर।
[वि.] (हिं.) १–कठिन। सख्त। ठोस। २–रूखा। ३–उग्र। दृढ़। ४–कसा हुआ। चुस्त। ५–जो गीला न हो। कम गीला। ६–हृष्टपुष्ट। तगड़ा। दृढ़। ७–सहने या झेलने वाला। ८–दुष्कर। दुःसाध्य। जिसका करना सरल न हो। ९–तीव्र प्रभाव वाला। १०–असह्य। कर्कश। *कड़ी छत या पाटन*–लदाव की छत। *कड़ा लगाना*–लदाव की छत बनाना।

कड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कठोरता। कड़ापन। सख्ती।

कड़ाका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। २–उपवास। लंघन। फाका। *कड़ाके का*–जोर का। तेज।

कड़ाबीन [सज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चौड़े मुँह की बन्दूक। २–कमर में बांधने की छोटी बन्दूक

कड़ाह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कड़ाहा'।

कड़ाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) आग पर चढ़ाने का एक गोल वर्तन। जिसमें दो कड़े लगे हुए होते हैं। इसमें पूरी हलवा आदि बनाते हैं।

कड़ाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कड़ाहा। *कड़ाही करना*–मनौती पूर्ण होने पर किसी देवता की पूजा के निमित्त हलवा पूरी आदि करना। *कड़ाही में हाथ डालना*–अग्नि परीक्षा देना।

कड़ियल [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ टुकड़ा जिसमें आग रखकर दबाई जाती है।
+ [वि.] देखो कड़ा'।

कड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) अरहर का सूखा पौधा जो अन्न झाड़ लेने के बाद बच रहता है। कांडी। रहटा।

कड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जंजीर का एक छल्ला। २–किसी वस्तु को अटकाने के लिये लगाया गया छोटा छल्ला। ३–गीत का एक पद। ४–छोटी धरन। ५–कठिनाई। संकट। मुसीबत।
[वि.] [स्त्री. प्र.] कठिन। कठोर सख्त।
कड़ी बोलना–धरन से चिटकने की आवाज निकलना। *कड़ी धरती*–१–वह प्रदेश जहां के लोग हट्टे-कट्टे हों। २–भूत प्रेत के रहने का स्थान। *कड़ी दृष्टि या आंख रखना*–पूरी निगरानी रखना। *कड़ी दृष्टि या आंख होना*–१–पूरी-पूरी निगरानी होना। २–गुस्से का भाव होना। *कड़ी सुनना*–खोटी खरी सुनना

कड़ीदार [वि.] (हिं.) कड़ी वाला। जिसमें कड़ी या छल्ला हो। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का कसीदा जिसमें कड़ीदार जंजीर बनाई जाती है।

कड़ुआ [वि.] (हिं.) १–कटु। स्वादु में तीखा। तीखी प्रकृति का।
कड़ुआ होना–नाराज होना। बिगड़ना। *कड़ुआ करना*–१–रुपया लगाना। २–कुछ दाम खड़े करना। *कड़ुआ होना*–बुरा बनना। *कड़ुए कसैले दिन*–१–कष्ट के दिन। २–गर्भ का आठवां मांस जिसमें गर्भ गिरने का भय रहता है।
कड़ुआ घूंट–कठिन काम।

कड़ुआ-तेल [संज्ञा पु.] (हिं.) सरसों का तेल।

कड़ुआना [क्रि. अ.] (हि.) १–कड़ुआ लगना। खीझना। क्रोध करना। ३–उनींदा रहने के कारण आँख में किरकिरी पड़ने का सा दर्द होना।

कड़ुआहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कड़ुआपन। कटुता।

कड़ुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कटु। चरपरी।

कड़ुईरोटी, खिचड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृतक के घर के प्राणियों को दो दिन तक कराया जाने वाला भोजन।

कड़ू+ [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] देखो 'कड़ुआ'।

कड़ेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खराद कर के कोई वस्तु बनाने वाला व्यक्ति।

कड़ेलोट, कड़ेलोटन [संज्ञा पु.] (हिं.) माल खंभ की एक कसरत।

कड़ोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) उच्च पदाधिकारी।

कड्ढा, कड्ढू [वि.] (हिं.) ऋण लेकर अपना काम चलाने वाला।

कढ़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १–निकलना। बाहर आना। २–उदय होना। ३–बढ़ जाना। अग्रसर होना। ४–अपने प्रेमी के साथ स्त्री का घर छोड़कर भाग जाना। ५–गढ़ा होना। *गढ़ जाना*–अपने प्रेमी या उपपति के साथ भागजाना।

कढ़नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मथनी की रस्सी। नेती।

कढ़लाना*+ [क्रि. स.] (हिं) घसीटना या घसीटकर बाहर करना।

कढ़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'कड़ाही'। २–निकालने का काम। ३–निकालने की मजदूरी। ४–कसीदा निकालने का काम। ५–कसीदा काढ़ने की उजरत।

कढ़ाना, कढ़वाना [क्रि. स.] (हि.) निकलवाना। बाहर निकालना। खिचवा लेना।

कढ़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कसीदे का काम। २–बेलबूटों का उभार। ३–देखो 'कड़ाह'।

कढ़ावना*+ [क्रि. स.] (हिं) निकलवाना। बाहर करना। खिचवाना।

कढ़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बेसन को पकाकर गाढ़ा करने से बनने वाला एक सालन।
कढ़ी का सा उबाल–शीघ्र ही घट जाने वाला दोष। *कढ़ी में कोयला*–१–साधारण सा दोष। २–दाल में काला।
बासी कढ़ी में उबाल आना–१–छोड़े हुए काम को फिर करने को उद्यत होना। २–बुढ़ापे में पुनः युवावस्था की सी उमंग आना।

कढ़ुआ, कढ़ुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निकाला हुआ। २–रात का रखा हुआ भोजन। ३–कर्जा। ऋण। ४–मटके में से पानी निकालने का छोटा पात्र। पुरवा। बोरना।

कढ़ेरना [संज्ञा पु.] (हिं.) नक्काशी करने का एक औजार।

कढ़ैया [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'कड़ाही'। + [संज्ञा पु.] १–निकालने वाला। २–उद्धार कर्ता। बचाने वाला।

कढ़ोरना* [क्रि. स] घसीटना। खींचना।

कण [संज्ञा पु.] (सं.) १–बहुत छोटा टुकड़ा। किन का। रवा। धूल का जर्रा। २–अन्न का एक दाना। ३–चावल का बारीक टुकड़ा।

कणकच+ [संज्ञा पु.] (देश) १–केवांच। कौंछ। २–करंज। कंजा।

कणकु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'लेखा'।

कणगच, कणगज [संज्ञा पु.] देखो 'कणकच'।

कणजीरक, कणजीरा [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद जीरा।

कणप [संज्ञा पु.] (सं.) माला। बरछा।

कणप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) गौरया चिड़िया।

कणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिपली। पीपल।

कणाच+ [संज्ञा पु.] (देश.) केंवांच। करेंच।

कणाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि जो वैशेषिक शास्त्र के रचियता थे। २–सोनार।

कणाक्ष [वि.] (सं.) अन्न के कण से जीविका

चलाने वाला।

कणामूल [संज्ञा पु.] (सं.) पिपला। पिपरामूल

कणासुफल [संज्ञा पु.] (सं.) अंकोल।

कणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किनका। अत्यन्त छोटा टुकड़ा।

कणित [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ायुक्त शब्द।

कणिश [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न की बाल।

कणिष्ठ [वि.] (सं.) दूसरे की अपेक्षा कम उमर का।

कणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कणिका।

कणीसक※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अन्न की बाल।

कण्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि।

कंत [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्मली। २-रीठा। (अ.) कलम की नोक की तिरछी काट। ※ [अव्य.] (हि.) क्यों। किसलिए।

कतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्मली। २-रीठा। [अव्य.] १-देखो 'कत'। २-कितना।

कतकवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रीठे का पेड़।

कतना [क्रि. अ.] (हि.) काता जाना। [क्रि. वि.] कितना। किस कदर।

कतनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सूत कातने की टेकुरी। २-वह टोकरी जिसमें सूत कातने का सामान रखा जाता है।

कतन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) कतरने की बड़ी कैंची।

कतन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कतरनी। कैंची।

कतरछाँट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कतरब्योंत। काँट-छाँट।

कतरन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) काटने से बचा हुआ छोटा रद्दी टुकड़ा।

कतरना [क्रि. स.] (हिं.) कैंची या अन्य किसी औजार से काटना।

कतरनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बाल, कपड़े आदि काटने की कैंची।
कतरनी सी जवान चलना–जल्दी-जल्दी बोलना। बकवाद करना।

कतरब्योंत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-काँट-छाँट। २-उलट-फेर। हेरफेर। ३-दूसरे के लिए कुछ निकाल लेना। ४-उधेड़-बुन। सोच-विचार। ५-युक्ति। जोड़-तोड़।
कतरब्योंत से–हिसाब से।

कतरवाँ [वि.] (हि.) घुमावदार। औरेबदार। टेढ़ा। तिरछा।

कतवाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कतरवाने की क्रिया या भाव। २-कतरवाने की मजदूरी।

कतरा [संज्ञा पु.] (हि.) १-कटा हुआ टुकड़ा। खंड। २-गढ़ाई में से निकला हुआ पत्थर का छोटा टुकड़ा।

कतरा [संज्ञा पु.] (अ.) बूंद। बिंदु।

कतराई [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-कतरने का काम। २-कतरवाने की मजदूरी।

कतराना [क्रि. अ.] (हि.) बचकर निकल जाना। [क्रि. स.] काटना। कटवाना।

कतरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कोल्हू का पाट पर बैठकर आदमी बैलों को हाँकता है। २-हाथ पहरने का एक पीतल का गहना जिसे गरीब स्त्रियां पहनती हैं। ३-लकड़ी का बना एक औजार जिससे राज कारनिस जमाते हैं। ४-कैंची।

कतल [संज्ञा पु.] (अ.) बध। हत्या।

कतलबाज [संज्ञा पु.] (सं.) वधिक। जल्लाद।

कतलाम [संज्ञा पु.] (अ.) सर्वसंहार। सर्वसाधारण की हत्या।

कतवाना [क्रि. स.] (हि.) कातने का काम दूसरे से कराना।

कतली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चौकोर कटी हुई मिठाई, बर्फी।

कतवार [संज्ञा पु.] (हि.) १-कूड़ा-करकट। वे काम का घासफूस। २-कातने वाला व्यक्ति।

कतहुं, कतहूँ ※+ [अव्य.] (हि.) कहीं। किसी जगह। किस ओर।

कता [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बनावट। आकार। २-कपड़े की काटछांट।
कता करना–कपड़े को ब्योंतना।

कताई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कातने की क्रिया। २-कातने की मजदूरी।

कतान [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का रेशम जिस पर कलाबत्तू बनता है। २-इस रेशम का बना हुआ वस्त्र।

कताना [क्रि. स.] (हि.) कातने का कार्य अन्य से कराना। कतवाना।

कतार [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पंक्ति। श्रेणी। २-समूह। झुंड।

कतारा [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का लाल रंग का मोटा गन्ना या ऊख। २-इमली का फल।

कतारी※+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'कतार'। २-एक प्रकार की ईख।

कति,※ कतिक※ [वि.] (हि.) १-कितने। २-किस कदर। ३-कौन। बहुत से। अगणित।

कतिधा [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का। [क्रि वि.] अनेक प्रकार से। बहुभांति से।

कतिपय [वि.] (सं.) १-कितने ही। कई एक। २-कुछ। थोड़े से।

कतीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) गुलु नामक वृक्ष का गोंद

कतेक※ [वि.] (हि.) देखो 'कतिक'।

कत्तर [संज्ञा पु.] (हि.) स्त्रियों की चोटी बांधने की डोरी।

कत्तल [संज्ञा पु.] (हि.) १-कटा हुआ टुकड़ा। २-पत्थर का छोटा टुकड़ा।

कत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बांस चीरने औजार। २-एक प्रकार की छोटी वार। ३-पासा (चौपड़ का)।

कत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चाकू। छोटी तलवार। ३-कटारी। ४-कतरनी। ५-एक प्रकार की पगड़ी लगाकर बांधी जाती है।

कत्थ [संज्ञा पु.] (हि.) लोहे की स्याही की स्याही।

कत्थई [वि.] (हि.) कत्थे या खैर के रंग

कत्थक [संज्ञा पु.] (हि.) एक जाति गाने का काम करती है।

कत्था [संज्ञा पु.] (हि.) खैर की लकड़ी उबालकर निकाला हुआ सत्व जो खाने के काम आता है।

कत्ल [संज्ञा पु.] देखो 'कतल'।

कथं [अव्य.] (सं.) १-क्यों। कहां से। प्रकार से। किस रीति से।

कथंचित् [क्रि. वि.] (सं.) शायद।

कथ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कत्था'।

कथक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथावाचक कहने वाला। २-देखो 'कत्थक'। की कथा का वर्णन करने वाला पात्र

कथकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मविषयक चना।

कथक्कड़ [संज्ञा पु] (हि.) खूब किस्से कहने वाला।

कथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुछ कहना बोलना या बखान करना। २-कही हुई उक्ति। ३-किसी के सन्मुख वक्तव्य। बयान। स्टेटमेंट।

कथना※ [क्रि. स.] (हिं.) १-कहना। बात करना। २-निंदा करना। बुराई

कथनी※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कथन। कहना। २-हुज्जत। बकवाद

कथनीय [वि.] (सं.) १-कहने योग्य करने योग्य। २-निन्दनीय। बुरा।

कथम् [अव्य.] (सं.) देखो 'कथं'।

कथमपि [अव्य.] (सं) किस प्रकार से से।

कथरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुदड़ी। पुराने को जोड़ कर बनाया हुआ बिछौना। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागफनी।

कथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह जो कहा बात। २-धर्म विषय। व्याख्यान। चर्चा। ४-हाल। समाचार।
कथा उठना–कथा समाप्त होना। *कथा*–१-कथा होना। २-कथा शुरू होना *बैठाना*–कथा कहने के निमित्त किसी वाचक को नियुक्त करना। *कथा*

झगड़ा-टंटा मिटाना । २-मार डालना ।

कथानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथा । २-छोटी कथा । कहानी । ३-कथा या कहानी का सारांश ।

कथानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपन्यास का एक भेद जिसमें प्रमुख पत्रों द्वारा वार्तालाप से कहानी का प्रधान भाग कहलाया जाय ।

कथानुराग [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत में मन लगाना ।

कथान्त [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत की समाप्ति ।

कथान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरी वार्ता । २-कलह । झगड़ा ।

कथापीठ [संज्ञा पु.] (सं.) कथा की प्रस्तावना ।

कथाप्रबंध, कथाप्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) कथा की गठन या बंदिश ।

कथाप्रसंग, कथाप्रसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक प्रकार की बातचीत । बातचीत का दौर ।

कथामय [वि.] (सं.) किस्से कहानियों से भरा हुआ ।

कथामुख [संज्ञा पु.] (सं.) कथा ग्रन्थ की प्रस्तावना ।

कथायोग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कथाप्रसंग' ।

कथारंभ, कथारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कथा या कहानी का आरम्भ ।

कथा-वस्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपन्यास अथवा कहानी का ढांचा ।

कथालाप [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वार्तालाप । बातचीत ।

कथावार्त्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनेक प्रकार के प्रसङ्ग । २-पौराणिक आख्यान ।

कथाशेष [संज्ञा पु.] (सं.) कथा की समाप्ति ।

कथिक [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कत्थक' ।

कथित [वि.] (सं.) कहा हुआ ।

कथीर [संज्ञा पु.] (हि.) कस्तीर । रांगा ।

कथील, कथीला (हि.) देखो 'कथीर' ।

कथोदय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कथा का उत्थान ।

कथोद्‌घात [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्तावना । कथा का प्रारम्भ । २-(नाटक में) सूत्रधार की बात या उसके अनुसार पहले पात्र का आना और अभिनय आरम्भ करना ।

कथोपकथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथा पर कथा । २-बातचीत । विविध वार्ता । ३-वाद-विवाद ।

कथ्य [वि.] (सं.) १-कहने के योग्य । कथनीय । २-जो कहा जाता हो । कहलाने वाला । ३-साधारण बोलचाल की भाषा में प्रचलित ।

कथ्यमान [वि.] (सं.) कहा जाने वाला ।

कदंब, कदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक सदाबहार वृक्ष, जिसका फल खटमीठा होता है । २-स[illegible] झुंड । ३-ढेर । राशि ।

कदंबक, कदम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कदंब' ।

कदंबका, कदम्बका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलहंसी ।

कदंबनट, कदम्बनट [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगाते हैं ।

कद [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ईर्ष्या । द्वेष । शत्रुता । २-हठ । जिद । [संज्ञा पु.] (सं.) बादल । मेघ । [अव्य.] कब । किस समय ।

क़द [संज्ञा पु.] (अ.) डीलडौल । लम्बाई-चौड़ाई ।

कदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-डेरा । २-चँदवा । चाँदनी ।

कदक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी या भद्दी लिखावट ।

कदध्व* [संज्ञा पु.] (सं.) खोटा मार्ग । कुपथ । कुमार्ग ।

कदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरण । विनाश । २-युद्ध । ३-पाप । ४-दुःख । ५-हिंसा । ६-मारने वाला । घातक ।

कदन्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-घटिया या मोटा अन्न । २-वह अन्न जिसका खाना शास्त्रों के अनुसार निषिद्ध है ।

कदभ्यास [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा अभ्यास या बुरी आदत ।

कदम [संज्ञा पु.] (सं.) कदम्ब नामक वृक्ष ।

क़दम [संज्ञा पु.] (अ.) १-पैर । पांव । २-पैर का चिह्न । ३-घोड़े की एक चाल । ४-चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का चिह्न । पैंड । पग । फलांग ।

कदम उठाना-१-शीघ्र चलना । २-उन्नति करना । ३-तेज चाल से चलना । *कदम-कदम जाना*-१-पैदल जाना । २-धीरे-धीरे चलना । *कदम को हाथ लगाना*-१-विनय करना । २-पैर छूना । ३-कसम खाना । *कदम गाढ़ के बैठना*-धरना देना । *कदम चूमना*-१-अत्याधिक आदर-सत्कार करना । २-चिरौरी करना । *कदम न निकलना*-१-परदे में ही रहना । २-आज्ञा का उल्लंघन न करना । *कदम पर कदम रखना*-१-पीछे चलना । चरण चिह्नों पर चलना । २-किसी के अनुसार कार्य करना । *कदम बढ़ाना, आगे रखना*-१-तेज चलना । २-उन्नति करना । ३-ज्यादती करना । *कदम भरना*-आगे बढ़ना । *कदम मारना*-१-दौड़-धूप करना । २-बहुत शीघ्र चलना । ३-व्यस्त होना । *कदमों में लगे रहना*-हर समय साथ रहना ।

कदमचा [संज्ञा पु.] (फा.) पैर रखने का स्थान ।

क़दमबाज़ [वि.] (अ.) कदम चलने वाला घोड़ा

कदमा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की मिठाई ।

क़दर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मान । मात्रा । २-मान । प्रतिष्ठा । बड़ाई ।

कदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आरा (लकड़ी चीरने का) । १-अंकुश । ३-सफेद खैर ।

कदरई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कायरता । भीरुता ।

कदरज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध पापी का नाम । [वि.] देखो 'कदर्य' ।

कदरदान [वि.] (फा.) गुणग्राहक । क़दर करने वाला ।

कदरदानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गुणग्राहकता ।

कदरमस* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मार-पीट । लड़ाई-झगड़ा ।

कदराई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कायरता । भीरुता

कदराना* [क्रि. अ.] (हिं.) कायर होना । डरना । भयभीत होना ।

कदरो [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मैना के समान एक पक्षी ।

कदर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्सित पदार्थ । कूड़ा-करकट । [वि.] (सं.) निरर्थक । कुत्सित । खराब ।

कदर्थन [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ा । कष्ट । तकलीफ ।

कदर्थना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गति । दुर्दशा । बुराई ।

कदर्थित [वि.] (सं.) १-दुर्दशा किया हुआ । दुर्गति प्राप्त । २-विडम्बित । घृणित ।

कदर्य [वि.] (सं.) कंजूस । मक्खीचूस । कृपण ।

कदर्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंजूसी । सूमपन ।

कदर्यभाव [संज्ञा पु.] (सं.) अश्लील वार्ता ।

कदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केला । २-काले तथा लाल रंग का हिरन ।

कदश्व [संज्ञा पु.] (सं.) खराब घोड़ा ।

कदा [क्रि. वि.] (सं.) कब । किस समय ।

कदाकार [वि.] (सं.) बुरे आकार का । बदसूरत । कुरूप ।

कदाख्य [वि.] (सं.) बदनाम ।

कदाच* [क्रि. वि.] (हिं.) कदाचित् । शायद ।

कदाचन [क्रि. वि.] (सं.) १-किसी समय । कभी २-शायद ।

कदाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्सित व्यवहार । बदचलनी । २-अनुचित या बुरा व्यवहार या आचरण । *मिसबिहेवियर* ।

कदाचारी [वि.] (सं.) बुरा व्यवहार या बुरा आचरण करने वाला । बदचलन ।

कदाचित् [अव्य.] (सं.) कभी । शायद कभी । शायद । किसी समय ।

कदापि [क्रि. वि.] (सं) किसी समय । कभी । हरगिज ।

कदामत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-प्राचीनता । पुरानापन । २-प्राचीनकाल । सनातन ।

कदी [वि.] (हि.) हठी । जिद्दी ।

कदीम [वि.] (हि.) (अ.) पुराना । प्राचीन ।

कदीमी [वि.] (अ.) पुरातन। पुराना । बहुत समय से चला आता हुआ।

कदुष्ण [वि.] (सं.) थोड़ा गरम।

कदूरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वैमनस्य। मनमुटाव।

कद्दावर [वि.] (फा.) प्रशस्त शरीर का। बड़े डीलडौल वाला।

कद्दी [वि.] (अ.) हठी। जिद्दी।

कद्रु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाग की माता का नाम।

कद्रुज [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। नाग। साँप।

कद्दू [संज्ञा पु.] (फा.) १-लौकी। घीया।

कद्दूकश [संज्ञा पु.] (फा.) लौकी के लच्छे बनाने का एक औज़ार।

कद्रू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार कश्यप की पत्नी जिससे सर्प पैदा हुए थे।

कधी [क्रि. वि.] (हिं.) कभी किसी समय।

कधीकधार [क्रि. वि.] (हिं.) कभी-कभी। जब-तब।

कन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी पदार्थ का बहुत छोटा टुकड़ा। जर्रा। कण। २-अन्न का एक दाना। ३-अन्न के दाने का एक टुकड़ा। ४-प्रसाद। जूठन। ५-भीख। भिक्षान्न। ६-बूंद। कतरा। ७-चावलों का कना। ८-बालू अथवा रेत का एक कण। ९-कान का संक्षिप्त रूप। जैसे—कनटोप।

कनई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोपल। नई शाखा। कनखा। २-गीली मिट्टी। कीचड़। गिलाव।

कनउँगली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कनिष्ठिका। कानी अंगुली। सब से छोटी अंगुली।

कनउड़ [वि.] (हिं.) कनौड़ा। कृतज्ञ।

कनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-धतूरा। ३-पलाश। टेसू। ढाक। ४-नागकेसर। ५-खजूर। ६-गेहूँ का आटा। ७-गेहूँ। ८-छप्पयछंद का एक भेद।

कनक-कदली [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का केला।

कनक-कली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान में पहनने का एक आभूषण।

कनककशिपु [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्यकश्यपु एक दैत्य।

कनकक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) सोहागा।

कनकचंपा, कनकचम्पा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चंपा का वृक्ष या फूल।

कनकचूर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

कनकजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का महीन धान इसका चावल टिकाऊ होता है।

कनकटा [वि.] (हिं.) १-जिसका कान कटा हुआ हो। बूचा। २-कान काटने वाला।

कनकटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान के पीछे का एक रोग।

कनकन [संज्ञा पु.] (हिं.) शब्द विशेष।

कनकना [वि.] (हिं.) तनिक से आघात से टूट जाने वाला।

कनकना [वि.] (हिं.) १-कनकनाहट करने वाला (शब्द)। २-चुनचुनाने वाला। ३-अरुचिकर। ४-चिड़चिड़ा।

कनकनाना [क्रि. अ.] १-सूरन, अरवी आदि तरकारियों के स्पर्श से अंगों में चुनचुनाहट होना। चुनचुनाना। २-अरुचिकर लगना। ३-चौकन्ना होना। ४-रोमांचित होना।

कनकनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कनकनाने का भाव। कनकनी।

कनकपल [संज्ञा पु.] (सं.) सोना तौलने की सौलह माशे की तौल।

कनकपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णपुरी लंका।

कनकप्रभा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-बड़ी रतनजोत २-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।

कनकफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-धतूरे का फल। २-जमालगोटा।

कनकमय [वि.] (सं.) सुनहला। सोने का बना हुआ।

कनकमृग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने का मृग। सीताहरण के समय मारीच नामक राक्षस ने सोने के मृग का रूप धारण किया था।

कनकरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-गला हुआ सोना। २-हरताल।

कनकबीज [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरे के बीज।

कनकशक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

कनकस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने की खान।

कनका [संज्ञा प.] (हिं.) किसी वस्तु के टूटे फूटे दाने या टुकड़े।

कनकाचल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने का पर्वत। २-सुमेरु पर्वत।

कनकानी [संज्ञा पु.] (हिं.) तेज चलने वाली जाति का घोड़ा।

कनकी [संज्ञा स्त्री.] १-चावल के छोटे-छोटे टुकड़े। छोटेकण।

कनकूत [संज्ञा पु.] (हिं.) खड़ी फसल के अन्न का अनुमान।

कनकैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कनकौवा। पतंग। गुड्डी।

कनकौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) कागज की बड़ी पतंग। गुड्डी।

कनखजूरा [संज्ञा पु.] (हि.) एक बालिश्त के के बराबर का एक कीड़ा जिसके बहुत सारे पैर होते हैं।

कनखा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोंपल। २-शाखा। डाली।

कनखिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कनखी। तिरछी नजर।

कनखियाना [क्रि. स.] (हि.) देखना। तिरछी नजर से देखना। करना। आंख से संकेत करना।

कनखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आँख को कोने पर ले जाकर तथा दूसरों बचाकर देखना। २-आंख का संकेत। कटाक्ष।

कनखी मारना–१-आँख से इशारा आँख के संकेत द्वारा किसी को करने से रोकना। *कनखियों लगना*–देखना। ताकना।

कनखैया* [वि.] (हिं.) कटाक्ष करने आंख से इशारा करने वाला। [संज्ञा कनखी। कटाक्ष। तिरछी नजर।

कनगुज [संज्ञा पु.] (हिं.) कान का एक रोग

कनगुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सबसे छोटी अंगुली।

कनछेदन [संज्ञा पु.] (हिं.) हिन्दुओं में के कान छेदना का एक संस्कार।

कनटोप [संज्ञा पु.] (हिं.) कानों तक वाली। एक प्रकार की टोपी।

कनधार* [संज्ञा पु.](हिं.) कर्णधार। केवट। माँझी।

कनपट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कनपटी'।

कनपटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कान और बीच का स्थान।

कनपेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कान के वाली एक गिल्टी।

कनफटा [संज्ञा पु.] (हिं.) गोरखपंथी दोनों कानों को फड़वाकर इनमें मुद्राएं पहनते हैं।

कनफुंकवा [वि.] (हिं.) कान फूंकने मंत्रोपदेशक।

कनफुंका [वि.] (हिं.) १-कान फूंकने दीक्षा देने वाला। २-जिसका कान गया हो। [संज्ञा पु.] १-दीक्षा देने गुरु। २-कान फुंकवाने वाला चेला।

कनफुसका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कान में बोलने वाला व्यक्ति। २-चुगलखोर। पीछे लोगों की बुराई करने वाला।

कनफुसकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो फूसी'।

कनफूल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) फूल के का आभूषण।

कनफेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कान के वाली गिल्टी।

कनफोड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं) एक लता

के काम आती है।

कनविधा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कान छेदने वाला। २-जिसका कान छेदा हुआ हो।

कनमनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सोये हुए प्राणी का धीरे-धीरे सचेत होना तथा हिलना-डोलना। किसी के विरुद्ध कोई बात कहना या सचेष्टा करना।

कनमैलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) कान का मैल निकालने वाला व्यक्ति।

कनय* [संज्ञा पु.] (हि.) सोना। स्वर्ण।

कनरई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गुलु नामक वृक्ष जिससे कतीरा निकलता है।

कनरश्याम [संज्ञा पु.] (हि.) सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग।

कनरस [संज्ञा पु.] (हि.) १-संगीत का स्वाद या आनन्द। २-संगीत की रुचि।

कनरसिया [संज्ञा पु.] (हि.) संगीतप्रिय। गाना-बजाना सुनने का प्रेमी।

कनवई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छटांक। एक सेर का सोलहवां अंश।

कनवाँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) नांती या नवासे का पुत्र। दोहित्र का पुत्र।

कनवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कनवई'।

कनवास [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जिससे नावों के पाल और जूते बनते हैं। यह सन या पटसन का बनता है।

कनवी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का कपास।

कनवोकेशन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) विश्वविद्यालय का उपाधि-वितरणोत्सव।

कनसलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कनखजूरे के समान एक छोटा कीड़ा। २-कुश्ती का एक पेंच।

कनसाल [संज्ञा पु.] (हि.) चारपाई का तिरछा छेद जिसके कारण चारपाई टेढ़ी हो जाती है

कनसार [संज्ञा पु.] (हिं.) ताम्रपत्र पर लेख खोदने वाला।

कनसुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आहट। टोह।
कनसुई या कनसुइयां लेना – छुपकर बातें सुनाना।

कनसुर [वि.] (हि.) १-अप्रसन्न। नाराज। २-मन्दस्वरयुक्त।

कनस्तर [संज्ञा पु.] (अ.) टीन का चौखूंटा पीपा जिसमें घी, तेल आदि भर कर रखा जाता है।

कनहा [संज्ञा पु.] (हि.) फसल की कूत करने वाला कर्मचारी।

कनहार* [संज्ञा पु.] (हि.) मल्लाह। केवट। मांझी।

कना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कन'। २-सरकंडा। सरपत।

कनाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कोमल शाखा। पतली डाल। २-टहनी।

कनाउड़ा* [वि.] (हि.) देखो 'कनौड़ा'।

कनागत [संज्ञा पु.] (हि.) १-पितृपक्ष। क्वार मास का कृष्णपक्ष। २-श्राद्ध।

कनात [संज्ञा स्त्री.] (तु.) मोटे कपड़े की दीवार जिससे कोई स्थान घेरा जाता है।

कनार [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़े का जुकाम।

कनारा [संज्ञा पु.] (देश.) मदरास प्रांत का एक भाग। कनाड़ा।

कनारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किनारी। २-मदरास प्रांत के कनाड़ा जिले की भाषा। ३-कनारा का निवासी।

कनाल+ [संज्ञा पु.] (देश.) पंजाब में जमीन की एक नाप जो घुमाव के आठवें भाग या बीघे की चौथाई के बराबर होती है।

कनावड़ा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कनौड़ा'।

कनासी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आरे के दाँते निकलने वाली रेती।

कनिआरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कनकचंपा का वृक्ष।

कनिक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गेहूँ का मोटा आटा।

कनिका* [संज्ञा पु.] (हि.) किसी वस्तु का अत्याधिक छोटा टुकड़ा।

कनिगर* [संज्ञा पु.] (हि.) अपनी कीर्ति स्थायी रखने वाला व्यक्ति।

कनियां [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोद। क्रोड़। उत्संग।

कनियाना [क्रि. अ.] (हि.) १-कतराकर निकल जाना। २-पतंग का किसी ओर झुकजाना। कन्नी खाना। ३-गोद लेना या गोद में उठाना।

कनियार [संज्ञा पु.] (हिं.) कनकचंपा।

कनिष्क [संज्ञा पु.] (सं.) भारत के प्राचीन राजा का नाम।

कनिष्ठ [वि.] (सं.) १-बहुत छोटा। सब से छोटा। २-जो पीछे उत्पन्न हुआ हो ३-हीन। निकृष्ट। ४-पद, मर्यादा या अवस्था में छोटा। जूनियर।

कनिष्ठा [वि.](सं.) [स्त्री प्र.] १-बहुत छोटी। सबसे छोटी। २-हीन। नीच। [संज्ञा स्त्री.] १-नायिका भेद के अनुसार दो या दो से अधिक (स्त्रियों में वह स्त्री जिसपर पति का प्रेम कम हो। २-छोटी अंगुली। छिगुनी

कनिष्ठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांचों अंगुलियों में से सबसे छोटी उँगली।

कनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटा टुकड़ा। २-हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा। ३-चावल के छोटे टुकड़े। किनकी। ४-बूंद।
कनी खाना या चाटना–हीरे की कनी निगल कर प्राण देना।

कनीनक [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की पुतली।

कनीनिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-आंख की पुतली का तारा। २-कन्या।

कनु* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कण'।

कने+ [क्रि. वि.] (हि.) निकट। पास। समीप।

कनेखी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कनखी'।

कनेठा [संज्ञा पु.] (हि.) १-कोल्हू में लगी हुई वह लकड़ी जो इसके चारों ओर घूमती है। २-कान। [वि.] १-काना। २-भेंगा।

कनेठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कान उमेठने या मरोड़ने की सजा।

कनेती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रुपया (दलालों की बोली)।

कनेर [संज्ञा पु.] (हिं.) कणेर। लाल, पीले और और सफेद फूल का एक छोटे आकार का एक वृक्ष।

कनेरिया [वि.] (हि.) कुछ कालापन लिये हुए लाल रंग का।

कनेव [संज्ञा पु.] (हि.) चारपाई का टेढ़पन।

कनोखी* [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] देखो 'कनखी'

कनोतर [वि.] (हि.) उन्नीस (दलालों की बोली)

कनौज [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कन्नौज'।

कनौजिया [वि] (हि.) कन्नौज का निवासी।

कनौठा [संज्ञा पु.] (हि.) १-कोण। कोना। २-किनारा। बगल। [वि.] कनिष्ठ। छोटा।

कनौडा [वि.] (हि.) १-काना। २-जिसका कोई अंग खंडित हो। अपंग। खोंड़ा। ३-कलंकित। निंदित। ४-लज्जित। संकुचित। ५-दबैल। उपकृत।

कनौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पशुओं के कान या कानों की नोक। २-घोड़े का कान उठाये रखने का ढंग। ३-कान में पहनने की बाली। मुरकी।
कनौतिया बदलना–१-कानों को खड़ा करना। २-चौकन्ना होना।

कन्नड़श्याम [संज्ञा प.] देखो 'कनरश्याम'।

कन्ना [संज्ञा पु.] (हि.) १-पतंग डोरी का वह भाग जो इसके बीच में बँधा होता है। २-किनारा। कोर। ३-जूते के पंजे का किनारा। ४-चावल की एक कनी। ५-पौधों का एक रोग।
कन्ने ढीले होना या पडना–१-थक जाना। शिथिल होना। शक्ति व गर्व न रहना।
[वि.] (हि.) काना (फल या लकड़ी)।

कन्नासी]संज्ञा स्त्री.] (हि.) 'कन्नासी'।

कन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पतंग या कनकौए के के दोनों ओर के किनारे। २-किनारा। हाशिया। ३-पतंग को सीधी रखने के निमित्त

एक ओर को बांधी गई कोई वस्तु। ४-राजगीरों की करनी।

कन्नी खाना या मारना–पतंग का एक ओर झुक कर उड़ना। *किसी की कन्नी दबाना*–१-किसी को अधीन या वशीभूत करना। २-दबाना। सहमना। ३-झेंपना।

कन्नौज [संज्ञा पु.] (हिं.) फरुखाबाद जिले का एक नगर।

कन्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्वारी लड़की। २-पुत्री। बेटी।

कन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्वारी लड़की। २-पुत्री। बेटी। ३-एक राशि।

कन्याकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारत के दक्षिण में रामेश्वर के पास का एक अंतरीप। रासकुमारी।

कन्यागत [संज्ञा पु.] (सं.) कनागत।

कन्याग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह। शादी।

कन्याजात [वि.] (सं.) क्वारी कन्या के गर्भ से उत्पन्न होने वाला। कानीन।

कन्यादाता [संज्ञा पु.] (सं.) कन्यादान करने वाला व्यक्ति।

कन्यादान [संज्ञा पु.] (सं.) हिन्दूसमाज में वर को विवाह के समय कन्या को दान देने की रीति।

कन्याधन [संज्ञा पु.] (सं.) अविवाहिता स्त्री का स्त्री-धन।

कन्यापति [संज्ञा पु.] (सं.) जामाता। दामाद।

कन्यापाल [संज्ञा पु.] (सं.) कुमारी लड़कियों को बेचने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

कन्यापुर [संज्ञा पु.] (सं.) कन्याओं के रहने का छात्रावास। किसी विद्यालय आदि का लड़कियों के रहने का छात्रावास। *गर्ल्स बोर्डिंगहाऊस*।

कन्यारत्न [संज्ञा पु.] (सं.) असाधारण रूप तथा गुण वाली कन्या।

कन्याराशी [वि.] (हिं.) १-जिसके जन्म के समय कन्याराशि का चन्द्रमा हो। २-चौपट। सत्यानाशी। ३-निकम्मा। कमजोर। कायर।

कन्यावानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जिस समय सूर्य कन्या का होता है। उस समय बरसने वाला जल जो शुभ समझा जाता है।

कन्यावेदी [संज्ञा पु.] (सं.) दामाद। जामाता।

कन्याशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) कन्याधन।

कन्यिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कन्या'।

कन्हड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कर्णाटी'।

कन्हाई [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

कन्हावर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंधावर'।

कन्हैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-प्रिय व्यक्ति। ३-सुन्दर लड़का। बांका आदमी।

कपट [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिप्राय साधन के निमित्त हृदय की बात छिपाने की वृत्ति। छल। दम्भ। धोखा। २-दुराव। छिपाव।

कपटचारी [वि.] (सं.) वंचक। धोखेबाज।

कपटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपट। व्यवहार। धोखेबाजी।

कपटधारी [वि.] (सं.) कपटचारी। धोखेबाज।

कपटना [क्रि. स.] (हिं.) काटकर अलग करना। काटना। छांटना।

कपटप्रबंध, कपटप्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) छल या धोखे की बात।

कपटलेख [संज्ञा पु.] (सं.) झूठा दस्तावेज।

कपटवेश [संज्ञा पु.] (सं.) छद्मवेश।

कपटवेशी [वि.] (सं.) सूरत बनाये हुए। रूप बदले हुए।

कपटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कीड़ा जो धान की फसल को हानि पहुचाता है।

कपटी [वि.] (सं.) कपट करने वाला। धोखेबाज। धूर्त्त।

कपड़कोट [संज्ञा पु.] (हिं.) डेरा। खैमा। तम्बू।

कपड़गंध, कपड़गन्ध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़ा जलने की दुर्गंध।

कपड़छन, कपड़छान [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी चूर्ण को कपड़े में छानने का काम।

कपड़द्वार [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा रखने का भंडार। वस्त्रागार।

कपड़धूलि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का महीन वस्त्र।

कपड़मिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु या औषधि फूंकने के संपुट पर चारों ओर मिट्टी चिपका कर कपड़ा लपेटने की विधि।

कपड़विदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फटे कपड़े की मरम्मत करने वाला रफूगर। २-कपड़ा ब्योंतने वाला दर्जी।

कपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रूई, ऊन, रेशम, के तागों से बुना हुआ पट। वस्त्र। *कपड़ों से होना*–रजस्वला होना। मासिक धर्भ से होना। २-पहनावा। पोशाक। *कपड़ों में न समाना*–फूले अंग न समाना। *कपड़े उतार लेना*–खूब लूटना। *कपड़े छानना* पीछा छोड़ाना। *कपड़े रंगना*–१-योगी होना। २-गेरुआ वस्त्र पहनना।

कपड़ौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कपड़मिट्टी'।

कपरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति विशेष।

कपरौटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कपड़मिट्टी'।

कपर्द, कपर्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव का जटाजूट। २-कौड़ी।

कपर्दा, कपर्दि, कपर्दिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कौड़ी।

कपर्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटाधारि
भवानी।

कपर्दी [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्यारह रुद्रों में से
शिव।

कपसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिकनी
मिट्टी। २-गारा। लेई।

कपसेठा [संज्ञा पु.] (हिं.) कपास का
जलाने के काम आता है।

कपसेठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कपसेठा
कपाट [संज्ञा पु.] (सं.) किवाड़। पाट।

कपाटघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) किवाड़ तोड़ने
चोर।

कपाटबद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का
काव्य, जिसके अक्षरों को विशेष
लिखने से कपाट के समान चित्र
जाता है।

कपाटमंगल, कपाटमङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.)
बंद करना।

कपाटवक्षा [वि.] (सं.) किवाड़ के समान
छाती वाला।

कपाटसंधिक [संज्ञा पु.] (सं.) कान का
कपार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कपाल
कपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-खोपड़ा।
हड्डी। २-ललाट। मस्तक। ३-
भाग्य। ४-भिक्षापात्र। खप्पर। ५-
टुकड़ा। ६-वह पात्र जिसमें यज्ञ
डाश पकाया जाता है। ७-भड़भूंजे के
भूनने का पात्र। ८-अंडे के छिलके
भाग। ९-एक तरह का कोढ़। ढक्कन।
कपाट खुलना–१-भाग्य उदय होना।
से लहू निकलना।

कपालक* [वि.] (हिं.) देखो 'कापालिक

कपालकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक केतु जिसकी
धूंएदार प्रकाशरश्मि के समान होती है
पूर्वार्द्ध में अमावस्या के दिन उदय
है। इसके तारे के उदय से भारी
अनावृष्टि होती है।

कपालक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शवदाह के
खोपड़ी फोड़ने का कार्य।

कपालचूर्ण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नृत्य में
की क्रिया।

कपालमालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-
देवी। २-खोपड़ी।

कपालमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

कपालमाली [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादे

कपालमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) काशी का
ताल।

कपालअस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार
अस्त्र। २-ढाल।

कपालि [संज्ञा पु.] शिव। महादेव।

कपालिक [संज्ञा पु.] देखो 'कापालिक'।

कपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खोपड़ी । २-घड़े के नीचे या ऊपर का भाग । ३-एक दंत रोग । ४-काली । रणचंडी ।

कपालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा । शिवा ।

कपाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । महादेव । २-भैरव । ३-ठीकरा हाथ में लेकर भिक्षा मांगने वाला भिक्षुक । ४-एक वर्णसंकर जाति ।

कपास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रूई का पौधा । २-बिनौलों सहित रूई ।
कपास खाना-और को और दही के धोखे कपास खाना-और को और समझना ।

कपासी [वि.] (हिं.) कपास के फूल के रंग का बहुत हलके पीले रंग का ।

कपिंजल, कपिञ्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पपीहा । २-गौरा पक्षी । ३-तीतरी । [वि.] पीले रंग का । हरताली रंग का ।

कपि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बंदर । २-हाथी । गज । ३-कंजा । करंज । ४-सूर्य । ५-शिलारस नामक एक औषधि ।

कपिकंदुक [संज्ञा पु.] (सं.) खोपड़ा । कपाल ।

कपिकच्छु [संज्ञा स्त्री.] (सं.] केवांच । करेंच । मर्कटी । कौंछ ।

कपिकच्छुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कपिकच्छु'

कपिका [संज्ञा पु.) (सं.) मदार का पौधा ।

कपिकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन का नाम । जिनकी ध्वजा पर हनुमान जी थे ।

कपिकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन ।

कपित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कैथ का वृक्ष या फल । २-नृत्य में एक प्रकार का हस्तक जिस अंगूठे के छोर को तर्जनी के छोर से मिलाते हैं ।

कपिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन ।

कपिप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केंवाच । कौंछ ।

कपिप्रभु [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीरामचन्द्र । २-वालि । ३-सुग्रीव ।

कपिप्रिय[वि.] (सं.) १-आमड़ा । २-कैथ ।

कपिरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीरामचन्द्रजी । २-अर्जुन ।

कपिरोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केवाँच । २-रेणुका ।

कपिल [वि.] (सं.) १-भरा । मटमैला । तामड़े रंग का । २-सफेद । ३-भोलाभाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि । २-कुत्ता । ३-चूहा । ४-शिलाजीत । ५-महादेव । ६-विष्णु ७-सूर्य । ८-एक मुनि जो सांख्यदर्शन के प्रवर्तक थे । ९-सगर के पुत्रों को भस्म करने वाले एक मुनि । एक प्रकार का सीसम । वरन ।

कपि-लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवाँच । कौंछ ।

कपिलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भूरापन । मटमैलापन । २-ललाई । ३-पीलापने । ४-सफेदी

कपिलद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

कपिलधारा १-काशी का एक तीर्थस्थान । २-गया का एक तीर्थस्थान ।

कपिलवस्तु [संज्ञा.पु.] (सं.) शकयराजाओं की राजधानी । महात्मा गौतमबुद्ध का जन्मस्थान जो नैपाल की तराई में वस्ती जिले के अंतर्गत थी ।

कपिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद रंग की गाय । २-एक प्रकार की जोंक । ३-एक प्रकार की चींटी । माटा । ४-दक्ष प्रजापति की कन्या ५-रेणुका नामक एक औषधि । ६-एक नदी का नाम ।
[वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-भूरे रंग की । मटमैले रंग की । २-जिसके शरीर में सफेद दाग हो । ४-भोलीभाली । सीधीसाधी ।

कपिलागम [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्यशास्त्र ।

कपिलाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

कपिश [संज्ञा पु.] (सं.) मटमैला । भूरे रंग का ।

कपिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मद्य । सुरा । शराब । २-कश्यप की पत्नी जो पिशाचों की माता थी ।

कपींद्र, कपीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान । २-बाली । ३-सुग्रीव । ४-विष्णु ।

कपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घिरनी । रस्सी लपटने की गड़ारी । चरखी ।

कपीश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कपींद्र' ।

कपूत [संज्ञा पु.] (हिं.) अपने कुल तथा धर्म विरुद्ध आचरण करने वाला पुत्र । बुरा लड़का । कुपुत्र ।

कपूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुत्र का बुरा आचरण । नालायकी ।

कपूर [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद रंग का एक सुगंधित द्रव्य जो हवा में उड़ने लगता है तथा अग्नि में जलने लगता है ।
कपूर खाना-विष खाना ।

कपूरकचरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सुगंधित जड़ की लता जो औषधि के प्रयोग में आती है ।

कपूरकाट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धन जिसका चावल सुगंधित और स्वादिष्ट होता है ।

कपूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़ बकरी आदि का अंडकोष ।

कपूरी [वि.] (हिं.) १-कपूर के रंग का । हलके पीले रंग का । २-कपूर का बना हुआ ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-हलका पीला रंग । २-एक प्रकार का पान जो बहुत लम्बा और कडुआ होता है । [संज्ञा पु.] एक बूटी जिसकी जड़ से कपूर की सी सुगंध आती है ।

कपोत [संज्ञा पु.] (सं.) १-कबूतर । २-परेवा । ३-पक्षी मात्र । चिड़िया । भूरे रंग का कच्चा सुरमा ।

कपोतपालिका, कपोतपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कबूतरों का दर्बा । काबुक । २-कबूतरों के बैठने की छतरी । चिड़ियाखाना ।

कपोतवंका, कपोतवङ्का [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ब्राह्मीबूटी ।

कपोतवर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची ।

कपोतवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संचयहीन जीविका । रोज कमाना रोज खाना ।

कपोतव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहने का व्रत ।

कपोतसार [सज्ञा प.] (सं.) सुरमा (धातु) ।

कपोतांजन, कपोताञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कपोतसर ।

कपोतारि [संज्ञा पु.] (सं.) बाज पक्षी ।

कपोती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कबूतरी । २-पेंडुकी । ३-कुमरी । [वि.] कपोत के रंग का । खाकी ।

कपोतेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती । २-दुर्गा ।

कपोल [संज्ञा पु.] (सं.) गाल ।

कपोलकल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनगढ़ंत । बनावटी बात । झूठी बात ।

कपोलकल्पित [वि.] (सं.) असत्य । बनावटी । मनगढ़ंत ।

कपोलगेंदुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) गाल के नीचे रखने का गेंदुआ ।

कपौला [संज्ञा पु.] (हि.) एक वैश्यजाति ।

कप्तान [सज्ञा पु.] (अं.) १-जहाज अथवा सेना का अफसर । २-अधिपति । किसी दल का नायक ।

कप्तानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कप्तान का कार्य ।

कप्पर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा । वस्त्र ।

कप्फा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अफीम का अर्क । अफीम का पसेव । २-साफा । वह वस्त्र जिसपर अफीम सुखाई जाती है ।

कप्यास [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दर की गुदा का स्थान । बंदर का चूतड़ । [वि.] लाल रक्त ।

कफ [संज्ञा पु.] (सं.) थूकने या खाँसने के समय शरीर से निकलने वाला श्लेष्मा । बलगम ।

कफ़ [संज्ञा पु.] (अं.) कमीज या कुरते की आस्तीन का अगला दोहरी पट्टी का भाग और उस दोहरी पट्टी में बटन लगे होते हैं । (फा.) झाग । फेन ।

कफ़गीर [संज्ञा पु.] (फा.) दाल घी आदि का झाग निकालने वाली करछुल ।

कफ़न [संज्ञा पु.] (अ.) वह वस्त्र जिसमें लपेटकर मुर्दा गाड़ा या फूंका जाता है।
कफ़न को कौड़ी न होना या रहना–बहुत कंगाल होना। *कफ़न फाड़कर उठना*–१–एक दम जोर से चिल्ला उठना। २–मरते-मरते बचना। ३–एक दम उठना। *कफ़न फाड़कर चिल्लाना*–सहसा जोर से चिल्लाना। *कफ़न सिर से बांधना*–मरने को तैयार होना।

कफ़नखसोट [वि.] (हिं.) मुर्दे पर डाले गये कपड़े में से टुकड़ा फाड़ने वाला। २–दूसरे के माल को जबरदस्ती छीनकर हजम कर जाने वाला। ३–कंजूस। अत्यन्त लोभी। सूम।

कफ़नखसोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–डोमों का वह कर जो वे श्मशान पर मुर्दों का कफ़न फाड़कर लेते थे। २–कंजूसी। कृपणता। ३–भ्रष्टाचार से धन एकत्र करने की वृत्ति।

कफ़नचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मामूली सी वस्तु भी न छोड़ने वाला चोर। २–दुष्ट।

कफ़नाना [क्रि. स.] (हिं.) गाड़ने या जलाने के निमित्त मुर्दे को कफ़न में लपेटना।

कफ़नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–मुर्दे के गले में डालने का कपड़ा। २–विना सिला वस्त्र जिसको साधु लोग पहनते हैं।

क़फ़स [संज्ञा पु.] (अ.) १–पिंजड़ा। दरबा। २–बंदीगृह। कैदखाना।

कफ़ाबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

कफ़ालत [संज्ञा पु.] (अ.) जिम्मेदारी। जमानत।

कफ़ाशय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां कफ रहता है।

कफ़िश्ना [संज्ञा पु.] (अ.) लकड़ी या लोहे की कोहनियां जो जहाजों में लगती हैं।

कफ़ीना [संज्ञा पु.] (अ.) जहाज के फर्श पर लगाने वाले तख्ते।

क़फ़ील [संज्ञा पु.] (अ.) जामिन। जिम्मेवार।

कफ़ोणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोहनी। टिहुनी।

कफ़ोदर [संज्ञा पु.] (सं.) पेट का एक रोग जो कफ से उत्पन्न होता है।

कबंध, कबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल। पानी। २–उदर। पेट। ३–मेघ। बादल। ४–बिना सिर का धड़। ५–एक राक्षस का नाम। ६–राहु। ७–एक केतु। ८–एक गंधर्व का नाम। ९–एक मुनि का नाम।

कब [क्रि. वि.] (हिं.) १–किस समय। २–नहीं। कभी नहीं।
कबका, कबके, कबसे–देर से। विलंब से। *कब कब*–कभी कभी। बहुत कम। *कब नहीं*–बराबर। सदा। *कबका*–कभी नहीं।

कबड्डी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बालकों का एक खेल जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं। कॉंपा। कम्पा। *कबड्डी खेलना*–कूदना। फांदना। *कबड्डी खेलते फिरना*–व्यर्थ इधर उधर घूमना।

कबर+ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'कब्र'।

कबरस्तान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कब्रिस्तान'।

कबरा [वि.] (हिं.) देखो 'चितकबरा'।

कबरिस्तान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कब्रिस्तान'।

कबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के सिर की बेणी या चोटी।

क़बल [अव्य.] (अ.) पेशतर। पहले।

कबा [संज्ञा पु.] (अ.) घुटनों तक लम्बा और कुछ ढीलाढाला पहरावा।

क़बाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) काम में न आने वाली चीज। निरर्थक पदार्थ।

कबाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) निरर्थक कार्य। झगड़ा। बखेड़ा।

कबाड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–टूटीफूटी वस्तुओं का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। २–झगड़ालू मनुष्य।

कबाड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–टूटी फूटी वस्तुएँ बेचने वाला व्यक्ति। २–झगड़ालू।

कबाब [संज्ञा पु.] (सं.) सींखों में मांस खोंसकर भूना हुआ मांस। *कबाब करना*–जलाना या दुःख देना। *कबाब होना*–१–जलना। भुनना। २–क्रोध से जलना भुनना।

कबाबचीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिर्च की जाति का एक गोल फूल खाने में कडुवे और ठंडे लगते हैं। शीतलचीनी।

कबाबी [वि.] (अ.) १–कबाब बेचने वाला। २–कबाब खाने वाला। मांसभक्षी।

कबाय॥ [संज्ञा पु.] (अ.) एक ढीला पहनावा।

कबायली [संज्ञा पु.] (अ.) पश्चिमी पाकिस्तान के सीमावर्त्ती क्षेत्र में रहने वाले किसी कबीले का आदमी।

कबार [संज्ञा पु.] (हिं.) १–व्यवसाय। रोजगार। २–देखो 'क़बाड़'।

कबारना+ [क्रि. स.] (हिं.) उखाड़ना। नोचना।

कबाल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खजूर का रेशा जिससे रस्सी बनती है।

कबाला [संज्ञा पु.] (अ.) वह दस्तावेज जिसके द्वारा किसी मनुष्य की सम्पत्ति दूसरे के अधिकार में आती है।

कबालानवीस [संज्ञा पु.] (फा.) कबाला लिखने वाला व्यक्ति।

कबालानीलाम [संज्ञा पु.] (फा.) नीलाम का कबाला या प्रमाणपत्र।

कबाहट॥ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कबाहत'।

क़बाहत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–खराबी। बुराई। २–मुश्किल। अड़चन। झंझट। बखेड़ा।

कबीट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कैथ का वृक्ष या फल।

कबीर [संज्ञा पु.] (अ.) १–एक वैष्णव भक्त कवि जो जुलाहे थे। २–एक
अश्लील गीत जो होली में गाया
[वि.] (अ.) श्रेष्ठ। बड़ा।

कबीर-पंथी [वि.] (हिं.) कबीर का मत
कबीर सम्प्रदाय का।

कबीर-बड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बड़
जिसके फैलाव का घेरा १४००० हाथ
जिसके नीचे ७००० आदमी से
हैं। यह नर्मदा के किनारे भड़ौच

कबीला [संज्ञा पु.] (ल.) १–समूह।
परिवार। एक वंश के सब लोग
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) पत्नी। जोरू।

कबुलवाना, कबुलाना [क्रि. स.]
कार करवाना। कबूल करवाना।

कबूतर [संज्ञा पु.] (फा.) कपोत।

कबूतरखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) कबूतर
दरबा।

कबूतरबाज [वि.] (फा.) जिसे
तथा उड़ाने की लत हो।

कबूतरबाजी [संज्ञा स्त्री] (फा.) १–
की लत।

कबूतरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–कबूतर
२–नाचने वाली। ३–सुन्दर स्त्री।

कबूद [वि.] (फा.) नीला। आसमानी।
[संज्ञा पु.] (अ.) वंसलोचन का
जिसे 'नीलकंठी' भी कहते हैं।

कबूदी [वि.] (फा.) नीला। आसमानी।

कबूल [संज्ञा पु.] (अ.) स्वीकार।
मंजूर।

कबूलना [क्रि. स.] (हिं.) स्वीकार
मंजूर करना। मानना।

कबूलियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह
पट्टा लेने वाला पट्टे की स्वीकृति
अथवा पट्टा देने वाले को लिख दे।
पत्र।

कबूली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चने की
खिचड़ी।

क़ब्ज़ [संज्ञा पु.] (अ.) १–मल का
दस्त का साफ न होना। २–अवरोध
पकड़।

कब्जा [संज्ञा पु.] (अ.) १–आधिपत्य।
धिकार। दखल। २–मूठ। दस्ता।
या संदूक में पेंच से जड़े जाने वाले
टुकड़े। ४–भुजदंड। दंड। ५–कुश्ती
पेंच।

कब्जादर [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह
जिसका कब्जा हो। २–दखीलकार
[वि.] जिसमें कब्जा लगा हो।

कब्जियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मल
रोध। पायखाने का साफ न आना।

क़ब्र [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–वह गड्ढा

ईसाई, मुसलमान, यहूदियों का मुर्दा गाड़ा या दफ़नाया जाता है। २-गड्ढे के ऊपर बना चबूतरा।

क़ब्र का मुंह झांकना या झाँक आना-मरते-मरते बचना। *क़ब्र में पैर या पाँव लटकाना*-१-मरणासन्न होना। २-बहुत वृद्ध होना।

क़ब्रिस्तान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह स्थान जहां बहुत सी क़ब्रें हों। २-मुर्दे गाड़ने का स्थान।

कभी [क्रि. वि.] (हि.) किसी समय।

कभी का-बहुत देर से। *कभी-कभी*-कुछ काल के अंतर पर। बहुत कम *कभीकभार*-कभी-कभी। *कभी-कभी*-किसी न किसी समय। आगे चलकर अवश्य किसी अवसर पर।

कभी कुछ कभी कुछ-एक ढंग पर नहीं।

कभू⊛ [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'कभी'।

कमंगर, कमङ्गर [संज्ञा पु.] (हि.) १-कमान बनाने वाला। कमानसाज। २-हड्डी बैठाने वाला। ३-चितेरा। चित्रकार।

कमंगरी, कमङ्गरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कमान बनाने का काम। २-हड्डी बैठाने का काम।

कमंचा, कमञ्चा [संज्ञा पु.] (हि.) लोहे की कमानी। बढ़ई का बरमा चलाने का एक औजार।

कमंडल, कमण्डल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कमंडलु'।

कमंडली, कमण्डली [वि.] (हि.) १-कमंडलु रखने वाला। साधु। वैरागी। २-पाखंडी। बहुरूपिया।

कमंडलु, कमण्डलु [संज्ञा पु.] (सं.) सन्यासियों का जलपात्र जो धातु या दरयायी नारियल का होता है। तुम्बा।

कमंद, कमन्द⁕ देखो 'कबंध'।

[संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु फंसाये जाते हैं। २-एक फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर डाकू आदि ऊंचे मकानों पर चढ़ जाते हैं। फंदा।

कमंध, कमन्ध [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'कबंध' २-कलह। लड़ाई-झगड़ा।

कम [वि.] (फ़ा.) १-अल्प। थोड़ा। न्यून। तनिक २-बुरा। *कम से कम*-अधिक नहीं तो इतना अवश्य। [क्रि. वि.] प्रायः नहीं। बहुधा नहीं

कम-असल [वि.] (फ़ा.) अकुलीन। वर्णसंकर। दोगला।

कमकस [वि.] (हि.) काम से जी चुराने वाला। सुस्त। काहिल।

कमखाब [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का रेशमी मोटा और गफ कपड़ा जिसपर कलाबत्तू के बेलबूटे बने होते हैं।

कमखोरा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चौपायों के मुख का एक रोग।

कमचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कमची'। २-देखो 'कमंचा'।

कमची [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-बाँस, झाऊ आदि की लचकदार टहनी जिससे टोकरी आदि बनाई जाती हैं। बांस की पतली लचीली पट्टी। तीली। २-पतली लचकदार टहनी या छड़ी। ३-लकड़ी आदि की पतली पट्टी।

कमच्छा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कामाख्या'।

कमज़ोर [वि.] (फ़ा.) निर्बल। अशक्त। दुर्बल।

कमज़ोरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) दुर्बलता। निर्बलता। अशक्तता।

कमट [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कांटेदार पौधा।

कमटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-लचकदार पतली टहनी। २-बांस या लकड़ी की लचीली फट्टी

कमठ [संज्ञा पु] (सं.) १-कछुआ। कच्छप। २-साधुओं का तुम्बा। ३-बांस। ४-एक प्रकार का पुराना बाजा।

कमठा [संज्ञा पु.] (हिं.) धनुष। कमान।

कमठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कच्छपी। कछुई। (हि.) बांस या लकड़ी की लम्बी पतली फट्टी

कमती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कमी। घटती। [वि.] कम। थोड़ा।

कमनचा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कमंचा।

कमना⊛ [क्रि. अ.] कम होना। घटना। न्यून होना।

कमनी⁕ [वि.] (हि.) देखो 'कमनीय'।

कमनीय [वि.] (सं.) १-कामना करने योग्य। २-मनोहर। सुंदर।

कमनीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौन्दर्य। खूबसूरती

कमनैत [संज्ञा पु.] (हि.) कमान चलाने वाला। धनुर्धारी। तीरंदाज।

कनैती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) तीर चलाने की विद्या। तीरंदाजी। धनुर्विद्या।

कमबख़्त [वि.] (फ़ा.) अभागा। भाग्यहीन बदनसीब।

कमबख़्ती [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) अभाग्य। दुर्भाग्य। बदनसीबी।

कमयाब [वि.] (फ़ा.) विरल। कठिनता से मिलने वाला।

कमरंग [संज्ञा पु.] (हि.) कमरख।

कमर [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-कटि। शरीर का मध्य भाग। २-किसी लम्बी वस्तु के मध्य का भाग। २-कुश्ती का एक पेच।

कमर करना-१-कमर को इस प्रकार (घोड़े का) उछालना जिससे कि सवार का आसन उखड़ जाय। २-कबूतर का कलाबाजी करना। *कमर कसकर बांधना*-काम करने का पका इरादा करना। *कमर कसना*-तैयार होना। *कमर खोलना*-१-विश्राम करना। २-इरादा छोड़ना ३-हिम्मत हारना। *कमर झुकना*-बुड्ढा होना। *कमर टूटना*-१-उत्साह न रहना। २-सहायता न रहना। ३-किसी का मर जाना। *कमर ठोकना*-उत्साहित करना। *कमर तोड़ना*-किसी का सहारा छीन लेना। *कमर पकड़ना या थामना*-सहायता करना। *कमर पकड़ कर उठना*-बहुत कमजोर होना। *कमर पकड़ कर बैठ जाना*-गहरी मुसीबत या निराशा की अवस्था होना। *कमर बांधना*-१-हिम्मत देना। २-काम करने के निमित्त तैयार रहना। *कमर लगना*-१-खाट पर पड़े-पड़े पीठ दुखने लगना। २-घोड़े की पीठ में घाव होना। *कमर सीधी करना*-विश्राम करना।

कमरकस [संज्ञा पु.] (हिं.) ढाक या पलास की गोंद।

कमरकोट, कमरकोटा [संज्ञा पु.] (हि.) १-किले के चारों ओर बनी हुई कंगूरेदार दीवार जिसमें निशाना लगाने के छेद बने होते हैं। २-रक्षा के निमित्त घेरी हुई दीवार।

कमरख [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक वृक्ष जिसमें फांक वाले लम्बे-लम्बे फल होते हैं जिनका स्वाद खट्टा होता है।

कमरखी [वि.] (हि.) कमरख के समान फांक वाली। जिसमें कमरख की सी उभड़ी हुई फांकें हों।

कमरचंडी, कमरचण्डी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खड्ग। तलवार।

कमरटूटा [वि.] (हिं.) १-ढीली कमर वाला। २-कुब्ज। कुबड़ा। २-नामर्द। सुस्त।

कमरतेगा [संज्ञा पु.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच।

कमरतोड़ [संज्ञा पु.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच।

कमरपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कटिबंध। कमर पर बांधने की पट्टी।

कमरपेटा [संज्ञा पु.] (हि.) १-मालखंभ की एक कसरत। २-कुश्ती का एक पेंच।

कमरबंद, कमरबन्द [संज्ञा पु.] (फा.) १-कमर के चारों ओर लपेटने का कपड़ा। २-पेटी। ३-नाड़ा। इजारबंद। ४-वह रस्सी अथवा डोरी जो किसी पदार्थ के मध्य भाग में बांधी जाय। [वि.] कमर कसे हुए तैयार। कटिबद्ध।

कमरबंदी, कमबन्दी, [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-युद्ध की तैयारी। २-लड़ाई की पोशाक।

कमरबंध, कमरबन्ध [संज्ञा पु.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच।

कमरबल्ला [संज्ञा पु.] (हि.) खपड़े की छाजन की वह लकड़ी जो लम्बे बड़ेर के नीचे रखी जाती है।

कमरबस्ता [वि.] (फ़ा.) १-प्रस्तुत। सन्नद्ध। कटिबद्ध। तैयार। २-हथियारबंद। ३-देखो 'कमरबल्ला'।

कमरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कोठा। कोठरी। २–कम्बल। (अं.) फोटो या चित्र उतारने का यंत्र।

कमरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा कम्बल। २–कमर। कटि। ३–बौना हाथी।

कमरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'कमली'। २–सलूका। छोटी फतुई। [संज्ञा पु.] १–घोड़े की एक बीमारी। २–टूटा जहाज। [वि.] चलने में पीठ मारने वाला घोड़ा।

कमरेंगा [संज्ञा पु.] (देश.) बंगाल की एक मिठाई का नाम।

कमल [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल में उगने वाला एक पौधा जो अपने सुन्दर फलों के कारण बहुत प्रसिद्ध है। २–इस पौधे का फूल के आकार का एक मांस पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। ४–जल। पानी। ५–गर्भाशय का अग्रभाग। टगा। फूल। धरन। ६–एक प्रकार का पित्तरोग। ७–एक प्रकार का मृग। ८–रोरी। कुंकुम। ९–आँख का कोया। १०–मुत्राशय। मसाना। दीपक राग का दूसरा पुत्र। ११–छः मात्राओं का एक छंद। १२–छप्पय के ७१ भेदों में से एक। १३–एक वर्णवृत्त जिसका एक नगण होता है।

कमलअंडा, कमलअण्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) कँवलगट्टा।

कमलकंद, कमलकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़। भसीड़। मुरार। भिस्सा।

कमलगट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल का बीज।

कमलज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मा।

कमलनयन [वि.] (सं.) जिसकी आँखें कमल सदृश हों। सुन्दर नेत्र वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु। २ राम। कृष्ण।

कमलनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

कमलनाल [संज्ञा पु.] (सं.) मृणाल। कमल की डंडी जिस पर फूल होता है।

कमलबंध, कमलबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसके अक्षरों को एक विशेषक्रम से लिखने पर कमल के आकार का एक चित्र बन जाता है।

कमबंधु, कमलबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

कमलबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रोग जिसमें शरीर तथा विशेषकर नयन पीले पड़ जाते हैं।

कमलभव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

कमलभू [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

कमलमूल [संज्ञा पु.] (सं.) भसीड़। मुरार।

कमलयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

कमला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लक्ष्मी। २–धन। ऐश्वर्य। ३–नारंगी। संतरा। ४–एक नदी का नाम। ५–सुन्दर स्त्री।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का कीड़ा जिसके काटने से खुजली होती है। सूंड़ी। २–अनाज या सड़े हुए फलों में पड़ने वाला कीड़ा।

कमलाई [संज्ञा पु.] (हिं.) राजस्थान और मध्य प्रांत में पाया जाने वाला एक प्रकार का वृक्ष।

कमलाकर [संज्ञा पु.] (सं.) सरोवर। तालाब।

कमलाकांत, कमलाकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

कमलाकार [वि.] (सं.) १–कमल के आकार का। [संज्ञा पु.] छप्पय का एक भेद जिसमें १२५ वर्ण और १५२ मात्राएं होती हैं।

कमलाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १–कमल का बीज। कमलगट्टा। देखो 'कमलनयन'।

कमलग्रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी की बड़ी बहिन, दरिद्रा।

कमलानिवास [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मी के रहने का स्थान। कमल का फूल।

कमलापति [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मी के पति, विष्णु।

कमलालया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह जिसका निवास कमल में हो। लक्ष्मी।

कमलावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पद्मावती छन्द का दूसरा नाम।

कमलासन [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्मा। २–देखो 'पद्मासन'।

कमलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कमल। २–छोटा कमल। ३–वह तालाब जिसमें कमल हों।

कमली [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्मा। २–छोटा कमल।

कमलेश [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मी के पति, विष्णु।

कमलो [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊंट। उष्ट्र। सांडिया

कमवाना [क्रि. स.] (हिं.) कमाने का कार्य अन्य से कराना।

कमसमझी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्खता। नासमझी। अल्पज्ञता।

कमसरियट [संज्ञा पु.] (अं.) सेना का वह विभाग जो सेना को खाने आदि की सामग्री पहुँचाता है।

कमसिन [वि.] (फा.) अल्पवयस्क। कम उमर। छोटी अवस्था का।

कमसिनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लड़कपन। कम-उमरी

कमहा+ [वि.] काम करने वाला। मजदूर।

कमहिम्मत [वि.] (फा.) डरपोक। भीरुहृदय।

कमहिम्मती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) भीरुता। बुजदिली।

कमांडर [संज्ञा पु.] (अं.) फौज का वह अफसर जो लेफ्टीनेंट के ऊपर तथा कप्तान के अधीन होता है। कमानअफसर। बलाधिकृत। ध्यक्ष।

कमांडर-इन-चीफ [संज्ञा पु.] (अं.) सबसे बड़ा अफसर। प्रधान सेना मुख्यबलाधिकृत।

कमाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कमाया हुआ अर्जितद्रव्य। २–कमाने का काम या साय। धंधा।

कमाऊ [वि.] (हिं.) कमाने वाला। करने वाला।

कमाच [संज्ञा पु] (हिं.) १–एक प्रकार का वस्त्र। २–देखो 'कौंछ'।

कमाची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमान के झुकी हुई तीली।

कमान [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–धनुष। २–इन्द्रधनुष। ३–मेहराबदार बनावट। राव। ४–तोप। ५–बंदूक। ६–मालखंभ की कसरत। ७–कालीन बुनने वालों का औजार।
[संज्ञा स्त्री.] (अं.) १–फौजी आज्ञा। २–नौकरी। ड्यूटी। फौजी *कमानचढ़ाना*–१–दौरदौरा होना। चढ़ना। क्रोध में होना। *कमान पर जाना*–नौकरी पर जाना। २–लड़ाई पर जाना। *कमान पर होना*–काम पर होना। पर होना। *कमानबोलना*–नौकरी पर की आज्ञा देना। *कमान बोली जाना*–पर जाने की आज्ञा मिलना।

कमान-अफसर [संज्ञा पु.] (हिं.) सेना अधिकारी जो कप्तान के अधीन, पर के ऊपर होता है। कमांड-अधिकारी।

कमानगर [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'कमंगर'।

कमानगरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो

कमानचा [संज्ञा पु.] (फा.) १–छोटी २–सारङ्गी बजाने की कमानी। मिहराब।

कमानदार [संज्ञा पु.] (हिं.) आज्ञा देने फौजी अफसर वा अधिकारी।
[वि.] (फा.) १–मेहराबदार। २–धनुर्धर।

कमाना [क्रि. स.] (हिं.) १–व्यापार या द्वारा धनोपार्जन करना। २–सुधारकर योग्य बनाना। ३–सेवासंबंधी छोटे काम करना। जैसे—पाखाना कमाना, दाढ़ी कमाना। हजामत बनाना। ४–कर्म करना। कर्म करना। जैसे पाप कमाना। कमाना। ५–कम करना। घटाना।
[क्रि. अ.] १–मेहनत मजदूरी करना। करना या व्यभिचार द्वारा धन करना।

कमानिया [संज्ञा पु.] (हिं.) धनुष चलाने वाला तीरंदाज।

कमानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–कोई वस्तु, जो इस तरह बैठाई जाय कि दब

उठ जाय। २-झुकाई हुई लचीली लोहे की तीली। ३-चमड़े की वह पेटी जिसे आँत उतरने के रोगी अपनी कमर में बांधते हैं। ४-बांस की एक पतली कमची जो दरी बुनने के करघे में काम आती है।

कमानीदार [वि.] (फा.) जिसमें कमानी लगी हो

कमायज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सारंगी आदि बजाने का गज।

कमाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-परिपूर्णता। २-निपुणता। कुशलता। ३-आश्चर्य। अद्भुत-कर्म। ४-कारीगरी। ५-कबीरदासजी के बेटे का नाम।
[वि.] १-पूरा। सम्पूर्ण। सब। २-पहुँचा हुआ। सर्वोत्तम। ३-बहुत ज्यादा। अत्यंत।

कमालियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-परिपूर्णता। पूरापन। २-निपुणता। कुशलता।

कमासुत [वि.] (हिं.) कमाने वाला। धन पैदा करने वाला। २-उद्यमी।

कमिता [त्रि.] (सं.) १-कामुक। कामी। २-कामना करने वाला।

कमिश्नर [संज्ञा पु.] (अ.) १-माल तथा पुलिस का बड़ा अधिकारी। २-वह अधिकारी जिसे कोई काम करने का अधिकार मिला हो।

कमी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-न्यूनता। अल्पता। कोताही। २-हानि। नुकसान। टोटा। घाटा।

कमीज़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह कुरता जिसमें कली और चौबगले नहीं होते।

कमीना [वि.] (फा.) ओछा। नीच। क्षुद्र।

कमीनापन [संज्ञा पु.] (हिं.) नीचता। ओछापन। क्षुद्रता।

कमीनीबाछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गांव या देहात का वह कर जो जमींदार वहां (गांव) के बसने वालों से वसूल करता है जो खेती नहीं करते।

कमीला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा पेड़ जिसके पत्ते अमरूद के समान होते हैं।

कमीशन [संज्ञा पु.] १-कुछ चुने हुए व्यक्तियों की एक समिति जो कुछ समय के लिये किसी गंभीर या गूढ विषय पर विचार करने के निमित्त नियत की जाती है। २-कोई ऐसी सभा जो किसी कार्य की जांच के निमित्त अथवा खोज के लिये मनोनीत की जाय। ३-किसी दूर रहने वाले व्यक्ति की गवाही लेने के लिये एक या एक से अधिक वकीलों का नियत होना। ४-दलाली। दस्तूरी।

कमीस [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कमीज'।

कमुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव खेने के डांड़ का दस्ता।

कमुकंदर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धनुष तोड़ने वाले श्रीरामचन्द्र।

कमून [संज्ञा पु.] (अ.) जीरा। जीरक। अजाजी।

कमूनी [वि.] (फा.) जीरे से सम्बन्ध रखने वाला। जीरे का।

कमूल [संज्ञा पु.] देखो 'कमलाई'।

कमेटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सभा। समिति।

कमेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काम करने वाला मजदूर। नौकर। २-अधीन नौकर या कर्मचारी। कर्मी।

कमेला [संज्ञा पु.] (हिं.) वधस्थान। वह स्थान जहां पशु मारे जाते हैं।

कमेहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कसकुट की चूड़ियां ढालने का मिट्टी का सांचा।

कमोदन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुमुदिनी।

कमोदिक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राग कमोद गाने वाला व्यक्ति। २-गवैया।

कमोदिन*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कुमुदिनी'।

कमोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौड़े मुँह का मिट्टी का घड़ा जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है। २-घड़ा। कछरा।

कमोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कमोरा। मटका।

कम्मल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंवल'।

कम्मा [संज्ञा पु.] (देश.) ताड़ पत्र पर लिखा हुआ लेख।

कम्युनिज्म [संज्ञा. पु.] (अं.) वह मत अथवा सिद्धान्त जिसमें सम्पत्ति का अधिकार समाज का माना जाना चाहिए, व्यक्ति विशेष का स्वत्व नहीं होना चाहिए। समष्टिवाद। साम्यवाद।

कम्युनिस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) कम्युनिज्म के सिद्धान्त के मानने तथा प्रचार करने वाला व्यक्ति। साम्यवादी।

कयपूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सदाबहार वृक्ष जिसके पत्तों में से सुगंधित तेल निकलता है।

कया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'काया'।

कयाम [संज्ञा पु.] (अ.) १-ठहराव। टिकाव। २-ठहरने या टिकने का स्थान। विश्राम स्थान। ३-स्थिरता। निश्चय।

कयामत [संज्ञा पु.] (अ.) १-मुसलमान, ईसाइयों और यहूदियों के मतानुसार सृष्टि का अन्तिम दिन जिस दिन सब मुर्दे उठ खड़े होंगे तथा भगवान के सम्मुख कर्मों का लेखा रखा जायेगा। अन्तिम दिन। २-प्रलय। ३-विपद। दुःख। संताप। उपद्रव।
कयामत का-गज़ब का। अत्याधिक प्रभावशाली।

कयारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूखी घास। सूखा चारा।

कयास [संज्ञा पु.] (अ.) अनुमान। अटकल। सोचविचार। ध्यान।
क़यास लगाना, लड़ाना या दौड़ना-अनुमान लगाना। *क़यास में आना*-समझ में आना। मन में जंचना।

करंक, करङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक। २-कमंडलु। ३-नारियल की खोपड़ी। ४-पंजर। ठठरी।

करंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

करंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'करंगा'।

करंज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंजा। २-एक प्रकार का छोटा जंगली वृक्ष। ३-एक प्रकार की आतशबाजी। ४-मुरगा।

करंजा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करंज' 'कंजा'।
[वि.] भूरी आंख वाला।

करंजुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'करंज' 'कंजा'। २-खाकी रंग। करंज का सा रंग। ३-जौ के पौधे का एक रोग। [वि.] करंज के रंग का। खाकी।

करंड [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुकोश। शहद की मक्खियों का छत्ता। २-तलवार। ३-करंडव नामक हंस। ४-बांस की बनी पिटारी अथवा टोकरी। हजारा चमेली। (हिं.) कुरुल नाम का एक पत्थर जिसपर छुरी और हथियार सान चढ़ाये जाते हैं।

करंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कच्चे रेशम की चादर। अंडी।

करंब, करम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) मिश्रण। मिलावट।

करंवित, करम्वित [वि.] (सं.) १-मिश्रित। मिला हुआ। २-खचित। बना हुआ।

करंही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जूता सीने का एक औजार जो एक हाथ लम्बा, ६ अंगुल चौड़ा और तीन अंगुल मोटा होता है।

कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ। २-हाथी का सूंड, जिसे वह हाथ के समान प्रयोग करता है। ३-सूर्य या चंद्रमा की किरण। ४-ओला। पत्थर। ५-जनता के उपार्जित धन में से राज्य का भाग। महसूल। टैक्स। ६-करने वाला। उत्पन्न करने वाला। जैसे सुखकर, कल्याणकर। ७-छल। युक्ति। पाखंड [प्रत्य.] (हिं.) का।

करइत+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का कीड़ा। २-एक प्रकार का सर्प।

करई [संज्ञा पु.] (हिं.) जल रखने का एक प्रकार का टोंटीदार बरतन।

करकंटक, करकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) नख। नाखून।

करक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमंडल। करवा। २-दाड़िम। अनार। ३-कचनार। ४-पलास। ५-बकुल। मौलसिरी। ६-करील का वृक्ष। ७-नारियल की खोपड़ी। ८-ठठरी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-कसक। चिकन। २-रुक-रुक जलन अथवा पेशाब लगने का

रोग। ३-साँट।

करकच [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र के पानी से निकला हुआ नमक।

करकट [संज्ञा पु.] (हि.) कूड़ा। कतवार।

करकटिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की लम्बी पूंछ वाली चिड़िया। देखो 'करकरा'।

करकना [क्रि. अ.] (हि.) १-तड़कना। चिटकना। फटना। २-कसकना। सालना। खटकना।

करकनाथ [संज्ञा पु.] (हि.) एक काला पक्षी जिसकी हड्डियां तक भी काली होती है।

करकमल [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के समान सुन्दर हाथ।

करकर [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र के पानी से निकाला जाने वाला नमक। [वि.] गड़ने वाला।

करकरा [संज्ञा पु.] (हि.) कई प्रकार का सारस। [वि.] (हिं.) खुरखुरा। गड़नेवाला।

करकराहट [संज्ञा पु.] १-खुरखुराहट कड़ापन। २-आँख में किरकरी पड़ने के समान पीड़ा।

करकस [व.] (हि.) देखो 'कर्कश'।

करका [संज्ञा पु] (हिं.) ओला। वर्षा का पत्थर।

करकाचतुर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करवाचौथ। कार्तिककृष्णचतुर्थी।

करकायु [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

करखा* [संज्ञा पु.] (हि.) १-उत्तेजना। बढ़ावा। २-देखो 'कालिख'। ३-'कड़ख'। ४-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ होती है और अंत में यगण होता है। इसमें ८, १२, ८, और ९ पर विराम लगता है।

करखाना* [क्रि. अ.] (हि.) काला पड़ना। कलसाना।

करगत [वि.] (सं.) हाथ में आया हुआ। हस्त गत।

करगता [संज्ञा पु.] (हि.) सोने या चांदी की करधनी। करधनी।

करगह [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'करघा'।

करगहना [संज्ञा पु.] (हि.) पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा जिसे खिड़की या दरवाजे की चौखट पर रखकर जोड़ाई करते हैं। भरेठा।

करगही [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का अगहनिया मोटा धान।

करगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चीनी बटोरने की खुरचनी। *+२-बाढ़। बूड़ा।

करग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिग्रहण। विवाह। शादी।

करघा [संज्ञा पु.] (हि.) जुलाहों का कपड़ा बुनने का यंत्र जिसे खड्डी भी कहते हैं।

करचंग [संज्ञा पु.] (हि.) १-ताल देने का एक बाजा। २-एक प्रकार का छोटा डफ।

करछा [संज्ञा पु.] (हि.) बड़ी कलछी।

करछाल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उछाल। छलांग। कुलांच। फलांग।

करछिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक पहाड़ी चिड़िया जो हिमालय, काश्मीर और नैपाल प्रदेश में पाई जाती है।

करछी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कलछी'।

करछुल+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कलछी'।

करछुला [संज्ञा पु.] (हि.) १-बड़ी कलछी। २-भड़भूजों की एक प्रकार की बड़ी कलछी जिससे गरम बालू डालते हैं।

करछुली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कलछी'।

करज [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख। नाखून। २-उँगली। ३-नख नामक एक सुगंधित द्रव्य। ४-करंज। कंजा। [वि.] हाथ से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कर्ज'।

करज्योड़ि [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषधि का नाम।

करट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौआ। २-हाथी की कनपटी। ३-कट्टर नास्तिक। ४-एकादशाह श्राद्ध। ५-दुष्ट मनुष्य।

करटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौआ। २-चौर शास्त्र के प्रवर्तक कर्णी के पुत्र।

करटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठिनाई से दूही जाने वाली गाय।

करटिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हस्तिनी। हथिनी।

करटी [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी। हस्ती।

करड़करड़ [संज्ञा पु.] (हि.) १-किसी वस्तु के बार बार टूटने अथवा चिटकने का शब्द। २-दांतों से कड़ी वस्तु तोड़ने का शब्द।

करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है। तृतीया विभक्ति। २-किसी कार्य को करने का साधन। हथियार। औजार। इंस्ट्रूमेंठ। ३-विधिक क्षेत्र के अन्तर्गत वह लेख्य जो किसी कार्य, व्यवहार, संविदा, प्रक्रिया आदि का बोधक हो तथा जिससे कोई अधिकार अथवा दायित्व उत्पन्न, अन्तरित, परिमित, विस्तारित, निर्वापित या अभिलिखित होता है। साधनपत्र। इन्स्ट्रमेंट। ४-देह। ५-क्रिया। कार्य। ६-स्थान। ७-हेतु। ८-ज्योतिष में एक तिथियों का विभाग। ९-नृत्य में कर संचालन की एक क्रिया। १०-गणित में वह संख्या जिसका पूरा-पूरा वर्गमूल न निकल सके। ११-एक जाति। १२-आसाम, बर्मा और श्याम की एक जंगली जाति। १२-(ज्योतिष) गणित की एक क्रिया। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कर्ण'।

करणत्व [वि.] करने वाला। कर्त्ता। [संज्ञा पु.] (सं.) साधनत्व। जरिया।

करणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी का कोई कार्य करने वाला व्यक्ति। कार्यकर्ता। २-किसी कार्यालय आदि में लिखा-पढ़ी का कार्य करने वाला व्यक्ति। क्लर्क।

करणी [संज्ञा स्त्री.] गणित में वह सं का अति सूक्ष्मरूप से वर्गमूल नहीं जा सकता।

करणीय [वि.] (सं.) करने योग्य

करतब [संज्ञा पु.] (हि.) १-कार्य। कला। हुनर। ३-करामात। जादू।

करतबिया [वि.] (हि.) देखो 'करतबी'।

करतबी [वि.] (हिं.) १-काम करने पुरुषार्थी। २-गणी। निपुण। दिखाने वाला। बाजीगर।

करतरी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो

करतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ की २-मात्रिक गणों में चार मात्राओं (डगण) का एक रूप। ३-छप्पय के का नाम।

करतलध्वनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ताली शब्द।

करतली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-हथेली। हथेली का शब्द। [संज्ञा स्त्री.] गाड़ीवान के बैठने का स्थान।

करतव्य*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

करता* [संज्ञा पु.] (हि.) कर्त्ता। २-एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में और एक लघु गुरु होता है। ३- जहाँ तक बंदूक से छूटी हुई गोली है।

करतार [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-विधाता। २-देखो 'करताल'।

करतारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कर्त्तार की लीला। २-देखो 'करताली'।

करताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दोनों हाथों बजाने का शब्द। २-हाथ से लकड़ी या कांसे का एक बाजा। मंजीरा।

करताली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दोनों के परस्पर आघात का शब्द। २- का बाजा।

करती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) गाय के बछड़े की में भरा हुआ भूसा जो बछड़े के होता है। इसे दिखा कर ग्वाला है।

करतू+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेत सींचने आने वाली कोई वस्तु।

करतूत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कर्म। काम। २-कला। गुण। हुनर।

करतूति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कर्म। काम। करतब। २-कला। हुनर। गुण

करतोया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपायगुड़ी में से निकलने वाली एक नदी।

करद [वि.] (सं.) १-किसी प्रकार का कर या राजस्व देने वाला। अधीन। २-सहारा देने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छुरी। चाकू। बड़ा छुरा।

करदत्त [वि.] (सं.) हाथ का कारीगर। दस्तकार।

करदम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कर्दम'।

करदराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) मांडलिक राज्य।

करदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा-करकट। २-दाम में वह कमी या कटौती जो ऐसे कूड़े-करकट के कारण की जाय। ३-पुरानी वस्तुओं को नई वस्तुओं से वदलने में जो धन ऊपर से दिया जाय। वाध। वट्टा।

करदाता [संज्ञा पु.] (हिं.) कर या राजस्वर देने वाला व्यक्ति।

करदौना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दौना'।

करधनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमर में पहनने का आभूषण। २-कई लड़ों का सूत जो कमर में पहना या वांधा जाता है। [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का मोटा धान।

करधर [संज्ञा पु.] (हिं.) मेव। वादल।

करधृत [वि.] (सं.) हाथ से पकड़ा हुआ।

करन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कर्ण'। २-देखो 'करण'।

करनधार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कर्णधार।

करनफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) फूल के आकार का एक कान का आभूषण।

करनवेध [संज्ञा पु.] (हिं.) वच्चों के कान छेदने का संस्कार।

करना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सफेद फूलों का एक पौधा। २-बिजौरे का एक वड़ा नीवू। [क्रि. स.] १-किसी काम को चलाना। किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना। संपादित करना। निवटाना। भुगताना। २-पका कर तैयार करना। ३-पति या पत्नी के रूप में ग्रहण करना। ४-भाड़े पर सवारी लेना। ५-एक रूप से दूसरे रूप में लाना। वनाना। ६-कोई वस्तु पोतना। किसी वस्तु में करना-डालना।

करनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तुरुही।

करनाट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कर्णाट'।

करनाटक [संज्ञा पु.] (हिं.) मद्रास प्रांत का एक भाग।

करनाटकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-करनाटक प्रदेश का निवासी। २-कलावाज नट। ३-वाजीगर। जादूगर।

करनाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नरसिंघा। भोंपा। २-एक प्रकार की तोप। ३-एक वड़ा ढोल। ४-पंजाव का एक नगर।

करनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कार्य। कर्म। करतूत। करतव। २-मृतक संस्कार। अन्त्येष्टि क्रिया। ३-राजगीर का एक औजार। कन्नी।

करनैल [संज्ञा पु.] (अं.) सेना का एक उच्च कर्मचारी।

करन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्रोक्त मन्त्रों को उच्चारण करते हुए अंगुली और हाथ के भिन्न भागों को स्पर्श करना।

करपंकज, करपङ्कज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के सदृश हाथ।

करपर* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खोपड़ी।
[वि.] कंजूस। कृपण।

करपरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वरी। मुंगौरी। पीठी की पकौड़ी।

करपलई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'करपल्लवी'

करपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) उँगली।

करपल्लवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या। २-हाथ के इशारे से वातचीत।

करपा [संज्ञा पु.] (देश.) अन्न की वाल वाली डाँठ या लेहना।

करपान [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चर्म रोग।

करपाल [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार। सङ्ग।

करपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथ की छोटी छड़ी। २-छुरा। ३-मुद्गर।

करपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'करपालिका'।

करपिचकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथेलियों से पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने की मुद्रा या कार्य।

करपीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिग्रहण। विवाह।

करपुट [संज्ञा पु.] (सं.) अंजुलि। बद्धांजुलि।

करपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली के पीछे का भाग।

करप्रद [संज्ञा पु.] (सं.) महसूल या कर देने वाला।

करप्राप्त [वि.] (सं.) हाथ में आया हुआ।

करवच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वैल पर लादने की खुरजी या गौन।

करवराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कुलबुलाना। २-पक्षियों का कलरव करना।

करवला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अरव देश का उजांड़ मैदान जहां हुसैन का वध हुआ था। २-ताजियों के दफनाने का स्थान। ३-पानी न मिलने का स्थान।

करवस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चावुक।

करवाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख। नाखून। २-तलवार।

करवी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ज्वार के पौधा जिसकी कुट्टी काट कर चौपायों को खिलाई जाती है।

करवुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) 'कर्वुर'।

करवूस [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रस्सी या तस्मा जो हथियार लटकाने के निमित्त घोड़े की जीन में लगा होता है।

करभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-हथेली के पीछे का भाग। करपृष्ठ। २-ऊँट या ऊँट का वच्चा ३-हाथी का वच्चा। ४-नख नामक एक सुगंधित औषधि। ५-कमर। कटि। ६-एक प्रकार का दोहा जिसमें सोलह गुरु तथा सोलह लघु वर्ण होते हैं।

करभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हथनी। २-उटनी।

करभीर [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

करभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ का भूषण।

करभोरु [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी की सूंड के सदृश जांघें। [वि.] हाथी की सूंड के समान जांघ वाली। सुन्दर जांघ वाली।

करम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कर्म। काम। करनी। २-भाग्य। प्रारब्ध।
करम का धनी या वली-१-जिसका भाग्य प्रवल हो। २-अभागा। वदकिस्मत (व्यंग)।
करम रेख-भाग्य का लिखा।
करम फूटना-भाग्य मन्द होना।
[संज्ञा पु.] (अ.) महरवानी। कृपा।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वहुत ऊंचा वृक्ष।

करमई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कचनार के सदृश एक वृक्ष।

करमकल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की गोभी जिसमें केवल पत्ते ही पत्ते होते हैं। बन्दगोभी।

करमचंद, करमचन्द+* [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्म। भाग्य। प्रारब्ध।

करमट्ठा* [वि.] (हिं.) कृपण। कंजूस। सूम।

करमठ*+ [वि.] (हिं.) कर्मनिष्ठ। कर्मकांडी।

कमरिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शान्ति। अमन-चैन।

करमर्द, करमर्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आंवला २-करौंदा।

करमसेंक [संज्ञा पु.] (हि.) १-पंचों का हुक्का। २-थोड़े घी में पके हुए परोंठे।

करमात* [संज्ञा पु.] (हि.) कर्म। भाग्य। प्रारब्ध किस्मत।

करमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उङ्गलियों के पोर जिन पर उङ्गली रखकर माला के अभाव में जप की गिनती करते हैं।
+ [संज्ञा पु.] (देश.) अमलतास।

करमाली [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

करमी* [वि.] (हिं.) १-कर्म करने वाला। २-कर्मठ। कर्मरत।

करमुखा* [वि.] (हिं.) १-काले मुंह वाला। २-कलंकी।

करमुहा [वि.] (हिं.) १-काले मुंह वाला । २-कलंकी ।

करमुक्त [वि.] (सं.) हाथ से छूटा हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) बरछा।

करमूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलाई । मणिबन्ध ।

करमूली [संज्ञा पु.] (देश.) एक पहाड़ी वृक्ष ।

करमोद [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का धान ।

करर [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक जहरीला कीड़ा जिसका शरीर ग्रन्थिमय होता है। २-एक रंग विशेष का घोड़ा । एक प्रकार का जंगली कुसुम ।

करर ना, करराना* [क्रि. अ.] (हि.) १-चरसराकर टूटना । २-कर्कश शब्द । करना । कठोर शब्द बोलना ।

कररान* (हि.) धनुष के चढ़ाने का शब्द ।

कररी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बनतुलसी ।

कररुद्ध [वि.] [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ से रोका हुआ ।

कररुह [संज्ञा पु.] (सं.) नख । नाखून ।

कर-रेख [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथ की लकीर । २-कर्मरेखा ।

कररेचकरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में ५१ प्रकार की कर-संचालन मुद्रा में से एक ।

करल [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ का वृक्ष । *[संज्ञा पु.] (हिं.) कड़ाह । कड़ाही ।

करला* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कल्ला' ।

करली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कल्ला । कोमलपत्ता ।

करवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ या पार्श्व के बल लेटने की स्थिति । करवट न लेना–१–किसी कर्त्तव्य का ध्यान न रहना । २–लौटकर न आना । करवट बदलना–१–दूसरे पार्श्व घूमकर लेटना । २–पलटा खाना । ३–एक पक्ष से दूसरे पक्ष में जाना । करवट बैठना या लेना–पक्ष में होना (कहावत) । करवटें बदलना–याद में व्याकुल होना या तड़पना । करवटों में कटना या बिताना–बेचैनी से समय काटना । [संज्ञा पु.] १–करवत । आरा । २–वह प्राचीन आरे जिनसे कटकर लोग स्वर्ग प्राप्ति की आशा में मरते थे ।

करवत [संज्ञा पु.] (हिं.) आरा ।

करवर*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विपत्ति । संकट । आपत्ति । आफत ।

करवरना [क्रि. अ.] कलरव करना । चहकना ।

करवल [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कांसा मिली हुई चांदी ।

करवा [संज्ञा प.] (हि.) १–धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा । बधना । २–एक प्रकार की मछली ।

करवागौर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'करवाचौथ ।'

करवाचौथ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कार्तिक कृष्ण चतुर्थी ।

करवाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी कार्य को करने के निमित्त दूसरे को प्रवृत्त करना । करने में लगाना ।

करवार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कृपाण । तलवार ।

करवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नख । नाखून । २–तलवार ।

करवालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी गदा ।

करवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी तलवार । करौली ।

करवीर [संज्ञा पु.] (सं.) १–कृपाण । तलवार । २–कनेर का वृक्ष । ३–श्मशान । मरघट ।

करवील+ [संज्ञा पु.] (हिं.) करील ।

करवैया*+ [वि.] (हिं.) करने वाला ।

करवोटी [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम

करशाखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगुली ।

करशू [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जो हिमालय पर पाया जाता है ।

करश्मा [संज्ञा पु.] (फा.) चमत्कार । करामात । अद्भुत काम ।

करष [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्ष । खींचना । घसीटना । ऐंचना । २–क्रोध । ताव । आमर्ष ।

करषक* [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्षक । खेतिहर । किसान ।

करषना* [क्रि. स.] (हिं.) १–कर्षण । खींचना । घसीटना । २–सोख लेना । ३–बुलाना निमन्त्रित करना । ४–इकट्ठा करना । समेटना । बटोरना ।

करसना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'करषना' ।

करसनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बेल ।

करसाइल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करसायल' ।

करसान* [संज्ञा पु.] (हिं.) किसान । खेतिहर ।

करसायल, करसायर [संज्ञा पु.] (सं.) काला मृग या हिरन ।

करस्पर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य का एक भेद ।

करहंच* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करहंस' ।

करहँज [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत में पड़ा वह अन्न का दाना जो बढ़ तो बहुत जाता है पर उसमें दाना बहुत कम पड़ता है ।

करहंत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करहंस' ।

करहंस [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (न + स + लघु) होता है ।

करह* [संज्ञा पु.] (हिं.) करभ । ऊंट ।

करहनी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान जो अगहन में होता है ।

करहा [संज्ञा पु.] (देश.) सफेद सिरस का पेड़ ।

करहाई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बेल

करहाट, करहाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १- जड़ । भसीड़ । मुरार । २-कमल का ३-मैनफल ।

करही+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पीटने के बाल में लगा रहने वाला दाना।

कराँकुल [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी के पास वाला कूंज नामक जलपक्षी।

कराँत [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी चीरने का

कराँती [संज्ञा पु.] (हिं.) आरा चलाने कारीगर। आराकश।

करा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कला'।

कराइत [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का विषैला साँप।

कराइन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छप्पर के ऊ फूंस।

कराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मूंग, उर्द, आदि के ऊपर की भूसी। २- श्यामता। ३-करने का भाव।

कराग्र [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के सूंड़ का

कराघात [संज्ञा पु.] (हिं.) घूंसा। थप्पड़। की मार।

कराची [संज्ञा पु.] (हिं.) पाकिस्तान देश की धानी।

कराट [संज्ञा पु.] (सं.) थप्पड़। तमाचा।

कराड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) माल खरीदने महाजन।

करात [संज्ञा पु.] (हिं.) चार सौ के एक तोल जो सोना, चांदी और औषधि के प्रयोग में आती है।

कराना [क्रि. स.] (हिं.) कार्य में लगाना। वाना।

करापहरण [संज्ञा पु.] (सं.) महसूल की महसूल का सामान बिना चुंगी जाना।

करापहारक [संज्ञा पु.] (सं.) महसूल करने वाला व्यक्ति।

करापहारना [क्रि. स.] (हिं.) महसूल की करना। चुंगी चुराना।

करावत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-समीपता। दीकी। २-नाता। रिश्ता। संबंध।

करावतदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नातेदारी। संबंध।

करावा [संज्ञा पु.] (अ.) शीशे का बड़ा

करामात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चमत्कार।

करामाती [वि.] (अ.) करामात दिखलाने सिद्ध।

करायजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कौरैया। इन्द्रजवा।

करायल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलैंजी। [संज्ञा पु.] (हिं.) तेल मिली हुई

करार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नदी का

ऊंचा किनारा ।

क़रार [संज्ञा पु.] (अ.) १–इक़रार । सहमति । ठहराव । स्थिरता । ३–धैर्य । तसल्ली । संतोष ३–आराम । चैन । ४–वायदा । ५–प्रतिज्ञा । कौल ।

क़रारना* [क्रि वि.] (हि.) कर्कश स्वर निकालना ।

करारा [संज्ञा पु.] (हि.) १–नदी का वह ऊंचा किनारा जो पानी के काटने से बने । २–ऊंचा किनारा । ३–टीला । ढूह । ४–कौआ । [वि.] (हि.) १–कड़ा । कठोर । २–दृढ़चित्त । ३–इतना तला अथवा सेका हुआ कि तोड़ने पर कुर-कुर शब्द करे । ४–अधिक गहरा । ५–तेज । तीक्ष्ण । ६–चोखा । खरा । ७–हट्टा-कट्टा । बलवान । [संज्ञा पु.] एक प्रकार की मिठाई ।

करारापन [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़ापन ।

कराल [वि.] (सं.) १–बड़े-बड़े दाँत वाला । २–डरावनी सूरतवाला । भयानक । भीषण । ३–दाँतों का एक रोग ।

करालमंच [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताल का नाम ।

करालवदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–भयंकर आकृतिवाली स्त्री । २–काली ।

कराला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनन्तमूल । सारिवा ।

कराली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।
[वि.] भयावनी । डरावनी ।

कराव, क़रावा [संज्ञा पु.] (हि.) विवाह, सगाई आदि का कर्म । बैठावा ।

कराह [संज्ञा पु.] (हि.) १–बेदना या व्यथा-सूचक शब्द । पीड़ा का शब्द ।
*+ २–देखो 'कड़ाह' ।

कराहना [क्रि. अ.] (हि.) पीड़ा या क्लेश देने वाला शब्द मुख से निकलना ।

कराहा*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कड़ाहा' ।

कराही*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कड़ाही' ।

करिंद*करिन्द [संज्ञा पु.] (हि.) १–हाथियों में श्रेष्ठ । उत्तम हाथी । २–ऐरावत ।

करि [संज्ञा पु.] (हि.) हाथी ।

करिखई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कालिख । श्यामता । कालापन ।

करिखा*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कालिख' ।

करिगह [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'करगह' ।

करिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हथिनी हस्तिनी । २–वैश्य पिता और शूद्र माता से उत्पन्न कन्या ।

करिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'करिणी' ।

करिपोत [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी बांधने का खूंटा ।

करिल [संज्ञा पु.] (हि.) कोंपल । कोमल पत्ता ।
[वि.] काला ।

करिवर [संज्ञा पु.] (सं.) १–श्रेष्ठ हाथी । २–ऐरावत ।

करिवू [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बारहसिंघा ।

करिभ [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का वृक्ष ।

करिया [संज्ञा पु.] (हि.) १–पतवार । कलवारी । २–माँझी । केवट । मल्लाह । कर्णधार । ३–ईख का एक रोग ।
[वि.] काला । श्याम ।

करियाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–कालापन । कालिमा । श्यामता । २–कजली । कालिख ।

करियाद [संज्ञा पु.] (सं.) दरियायी घोड़ा ।

करियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कलियारी विष । २–लगाम ।

करिवदन [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के समान मुख वाला, गणेश ।

करिष्णु [संज्ञा पु.] (सं.) करनेवाला । करणशील ।

करिष्यमाण [वि.] (सं.) करने के लिए उद्यत ।

करिहस्ताचार [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में भूमिचर के ३५ भेदों में से एक ।

करिहाँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कमर । कटि ।

करिहाँव [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–कमर । कटि । २–कोल्हू का गड़ारीदार मध्य भाग ।

करिहारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'करियारी' या 'कलियारी' ।

करी [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी । २–आठ की संख्या । [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–कली । बिना खिला फूल । २–पंद्रह मात्राओं का एक छंद जिसे चौपाई या चौपैयां कहते हैं । ३–कड़ी । धरन । छत पाटने की शहतीर ।

करीना [संज्ञा पु.] (देश.) १–टांकी । पत्थर गढ़ने की छेनी । २–*केराना । मसाला । ३–एक प्रकार का पकवान ।

क़रीना [संज्ञा पु.] (अ.) १–नियम । ढंग । तर्ज । तौर । तरीका । २–क्रम । तरतीब । ३–रीति-व्यवहार । शऊर । ४–नीचे का भाग ।

क़रीब [क्रि. वि.] (अ.) १–समीप । पास । निकट । २–प्राय । लगभग ।

करीम [संज्ञा पु.] (अ.) ईश्वर । [वि.] दयालु । कृपालु । करुणामय ।
करीम लेना–भालू के नाखून काटना । कलंदर

करीमभार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की जंगली घास ।

करीर [संज्ञा पु.] (सं.) बांस का अंखुआ या नया कल्ला । २–करील का वृक्ष । ३–घड़ा ।

करील [संज्ञा पु.] (हि.) ऊसर और कँकरीली भूमि में होने वाली एक प्रकार की कँटीली झाड़ी

करीष [संज्ञा पु.] (सं.) जंगल में सूखा हुआ गोबर । अरना कंडा । बनकंडा ।

करुआ [संज्ञा पु.] (देश.) दारचीनी के सदृश एक वृक्ष । +* [वि.] (हिं.) १–कडुआ । २–अप्रिय ।

करुआई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कडुआपन ।

करुखी [क्रि. वि.] (हिं.) कनखी । तिरछी नजर ।

करुण [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह मनोविकार जो दूसरों की पीड़ा या क्लेश से उत्पन्न होता है तथा दूसरों की पीड़ा या दुःख दूर करने के लिए प्रेरित करता है । दया । २–वह क्लेश जो अपने प्रियजन के वियोग से उत्पन्न होता है । शोक । काव्य के नव रसों में से तीसरा रस । ३–परमेश्वर । ४–एक बुद्ध का नाम । ५–कलिकापुराण में वर्णित एक तीर्थ का नाम । नींबू का पेड़ । [वि.] करुणायुक्त । दयार्द्र ।

करुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दूसरे के दुःख या पीड़ा निवारण की इच्छा । दया । रहम । तरस । कृपा । २–प्रियजन के वियोग से उत्पन्न दुःख । शोक । ३–करना का वृक्ष ।

करुणाकर [वि.] (सं.) अत्याधिक दयालु । बहुत मेहरबान ।

करुणादृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दयादृष्टि । कृपा । २–नृत्य में छत्तीस प्रकार की दृष्टियों में से एक ।

करुणानिधान [वि.] (सं.) जिसका हृदय करुणा से परिपूर्ण हो । बड़ा दयालु ।

करुणानिधि [वि] (सं.) देखो 'करुणानिधान' ।

करुणामय [वि.] (सं.) जिसमें अत्याधिक करुणा या दया हो ।

करुणार्द्र [वि.] (सं.) जिसका हृदय करुणा से द्रवित हुआ हो ।

करुणायुक्त [वि.] (सं.) देखो 'करुणामय' ।

करुना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'करुणा' ।

करुर* [वि.] (हिं.) कटु । कडुआ । तीखा ।

करुवा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'करवा' ।
[वि.] (हिं.) कडुआ । कटु । तीखा ।

करुवाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कटुता । कडुवापन । तीखापन ।

करुवार [संज्ञा पु.] (हि.) नाव खेने का एक प्रकार का डंडा ।

करू [वि.] (हिं.) देखो 'कडुआ' ।

करूला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ में पहनने का एक प्रकार का कंगन ।

करूष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम ।

करूषक [संज्ञा पु.] (सं.) १–वैवस्त मुनि के पुत्र का नाम । २–फालसा ।

करेंसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) लेन देन के व्यवहार में धन की तरह काम आने वाला । प्रचलित मुद्रा ।

करेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) यकृत। कलेजा। हृदय।

करेजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पशु के कलेजे का मांस।

करेणु [संज्ञा पु.] (सं.) १–गज। हाथी। कनेर का पेड़।

करेणुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हस्तिनी। हथिनी।

करेता [संज्ञा पु.] (देश.) बरियारा। बला। खिरैंटी।

करेपाक [संज्ञा पु.] (देश.) कृष्ण नीम। मीठा नीम। बरसंग।

करेब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पतला रेशमी कपड़ा जिसे अंग्रेजी में क्रेप बोलते हैं।

करेम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास जो पानी में होती है और उसका शाक बनाकर खाया जाता है।

करेर*+ [वि.] (हिं.) कठोर। कड़ा कठिन।

करेरुवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की कांटेदार बेल।

करेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का बड़ा मुगदर। २–करेल घुमाने की कसरत।

करेलनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घास बटोरने की फरुही।

करेला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बेल के कडुवे फल जिनका साग और अचार बनाया जाता है। २–माला या हमेल की लम्बी गुरिया। ३–एक प्रकार की आतिशबाजी।

करेली [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली करेला जिसके फल बहुत कडुवे और छोटे होते हैं।

करैत [संज्ञा पु.] (हिं.) एक काला विषैला साँप।

करैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की काली मिट्टी जो तालाबों से प्राप्त होती है। यह बड़ी कठोर और लसीली होती है।

करैला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करेला'।

करैली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'करेली।

करैलीमिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'करैल'।

करोट [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक की हड्डी। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करवट'।

करोटन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार के पौधे जिनके पत्ते अनेक प्रकार के होते हैं, यह सुन्दरता के निमित्त गमलों में उगाकर घरों में रखे जाते हैं।

करोटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोपड़ी (हिं.) करवट

करोड़ [वि.] (हिं.) एककोटि। सौ लाख की '१०००००००'। करोड़ की एक–बहुत सी बातों का तत्व।

करोड़खुख [वि.] (हिं.) लाखों करोड़ों की बात हांकने वाला झूठा।

करोड़पति [वि.] (हिं.) करोड़ रुपयों का स्वामी। बहुत बड़ा धनी।

करोड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) खजानची। रोकड़िया। तहबीलदार।

करोत [संज्ञा पु.] (हिं.) करपत्र। आरा। लकड़ी चीरने का औजार।

करोदक [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ में रखा हुआ जल

करोदना* [क्रि. स.] (हिं.) खरोचना। खुरचना। करोना।

करोध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्रोध'।

करोना [क्रि. स.] (हिं.) खुरचना। खसोटना।

करोनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खुरचन नाम की मिठाई। २–दूध, दही खुरचने का औजार।

करोर* [वि.] (हिं.) देखो 'करोड़'।

करोला*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–करवा। गडुवा। २–भालू। रीछ।

करौंछा [वि.] (हिं.) कुछ-कुछ श्यामवर्ण। सांवला।

करौंजी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलौंजी। मंगरैला।

करौंट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करवट'।

करौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कंटीला झाड़ जिसके फल छोटे और खट्टे होते हैं। करमर्द। करांबुक। २–कान के पास की गिलटी।

करौंदिया [वि.] (हिं.) १–करौंदे के रंग का। २–सांवलापन लिये लाल रंग का।

करौत [संज्ञा पु.] (हिं.) करपत्र। आरा। [संज्ञा स्त्री.] रखैली स्त्री।

करौता [संज्ञा पु.] (हिं.) 'करौत'। २–देखो 'करैल मिट्टी'। ३–कांच का बड़ा बरतन।

करौती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–आरी। लकड़ी चीरने का औजार। २–शीशे का छोटा बरतन। ३–कांच की भट्टी।

करौना [संज्ञा पु.] (हिं.) नकाशी खोदने की कलम या छेनी।

करौला* [संज्ञा पु.] (हिं.) शिकार हांकने वाला। हंकवा करने वाला। शिकारी।

करौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार की सीधी छुरी। २–राजस्थान राज्य का एक जिला।

कर्कंधु, कर्कन्धू [संज्ञा पु.] (सं.) झरबेर का वृक्ष या फल।

कर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १–केकड़ा। २–बारह राशियों में से चौथी। ३–काकड़ासींगी। ४–अग्नि। ५–दर्पण। ६–घड़ा। ७–कात्यायश्रौत सूत्र के एक टीकाकार।

कर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा। २–कर्कराशि। ३–एक प्रकार का सारस। ४–लौकी। घीया। ५–कमल की जड़। ६–सड़ँसा। ७–वृत्त की त्रिज्या। २–तराजू की डंडी का सिरा जिसमें पलड़े की रस्सी बंधी रहती है। नृत्य में १३ प्रकार के हस्तकों में से एक।

कर्कटक [संज्ञा पु.] (सं.) १–केकड़ा। २–कर्कराशि। ३–एक प्रकार का विष। ४–
आंवला। ५–हड्डी टूटने का एक रोग।

कर्कटकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मादा
२–काकड़ासींगी।

कर्कटक्रांति, क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
रेखा से साढ़े तेईस अंश पर स्थित

कर्कटशृंगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासींगी।

कर्कटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रकार
ककोड़ा। खेखसा।

कर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कछुई।
३–सेमल का फल। ४–घड़ा। ५–साँप।
६–तरोई। ७–काकड़ासींगी।
बेल।

कर्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १–कंकड़।
पत्थर जिसकी सान बनती है। ३–
एक भेद। ४–दर्पण। ५–हथौड़ा। [वि.]
कड़ा। दृढ़। मजबूत। २–खुरखुरा।

कर्करेटु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का

कर्कश [संज्ञा पु.] (सं.) १–कमीला
२–ईख। गन्ना। ३–तलवार। [वि.]
कठोर। २–कांटेदार। खुरखुर।
हृदय। क्रूर। ४–अधिक।

कर्कशता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कठोरता।
पन। २–खुरखुरापन।

कर्कशत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कर्कशता'

कर्कशा [संज्ञा पु.] (सं.) १–वृश्चिकाली
पौधा। २–झगड़ालू स्त्री।
[वि.] [स्त्री. प्र.] झगड़ालू। लड़ाकी।
भाषिणी।

कर्कारु [संज्ञा पु.] (सं.) पेठा। भूरा कुम्हड़ा

कर्कारुक [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

कर्कि [संज्ञा पु.] कर्कराशि।

कर्की [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

कर्केतन [संज्ञा पु.] (सं.) एकरत्न।

कर्केतर [संज्ञा पु.] (सं.) कर्केतन रत्न।

कर्कोट [संज्ञा पु.] १–नागराज। सर्पों का
२–काश्मीर का एक राजवंश।
पेड़। ३–खेखसा। ककोड़ा। ४–एक
नाम।

कर्कोटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बनतोरई।
२–खेखसी। ककोड़ा। ३–देवदाली।

कर्चरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कचौड़ी।
बेढ़वी।

कर्ची [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की

कर्चूर, कच्चूर [संज्ञा पु.] (सं.)
सुवर्ण। २–कचूर। नरकचूर।

कर्ज, कर्जा [संज्ञा पु.] (अ.) ऋण। उधार।
कर्ज उतारना–कर्ज देना या चुकाना।
उठाना–ऋण लेना।

लेना। २-उपकृत होना। *कर्ज खाये बैठना*-उधार खाये बैठना।

कर्जदार [वि.] (फ़ा.) ऋणी। उधार लेने वाला।

कर्जी [वि.] (हि.) देखो 'कर्जदार'।

कर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कान। श्रवणेन्द्रिय। २-कुन्ती के सब से बड़े पुत्र का नाम जो महादानी था। ३-नाव की पतवार। ४- समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा। ५-छप्पय के चौथे भेद का नाम। *कर्ण का पहरा*-प्रातःकाल। जो दान-पुण्य करने का समय है।

कर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष को फोड़कर निकलने वाला पत्ता। २-सन्निपात रोग का एक भेद। कर्णधार। मांझी। केवट। मल्लाह।

कर्णकटु [वि.] (सं.) कान को कर्कश या अप्रिय लगने वाला।

कर्णकसन्निपात [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात रोग जिसमें कान बहरे हो जाते हैं।

कर्णकीटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कनखजूरा। गोजर।

कर्णकुहर [संज्ञा पु.] (सं.) कान का बिल। कान का छेद।

कर्णक्ष्वेड [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग जिसमें बांसुरी सा शब्द होता रहता है।

कर्णगूथ [संज्ञा पु.] (सं.) कान का मैल।

कर्णगोचर [वि.] (सं.) कान से सुन पड़ने वाला।

कर्णग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) मल्लाह। माँझी। केवट। कर्णधार।

कर्णजाप [संज्ञा पु.] (सं.) कानाफूसी।

कर्णजीरक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा जीरा।

कर्णदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) कान का देवता, वायु।

कर्णधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांझी। मल्लाह। नाविक। २-पतवार। कलवारी। ३-वह जो दुःख आदि का निवारण करे।

कर्णधारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाविक का काम।

कर्णनाद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कान में सुनाई पड़ने वाली गूंज। २-देखो 'कर्णक्ष्वेड'।

कर्णपरंपरा, कर्णपरम्परा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक के कान से दूसरे के कान में बात जाने का क्रम। श्रुतिपरम्परा।

कर्णपाल [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग।

कर्णपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कान की लौ या लोलक। २-कान की बाली। मुरकी। ३-कान की लौ का एक रोग।

कर्णपिशाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी जिसके सिद्ध होने पर मनुष्य जो चाहे सो सुन सकता है।

कर्णपुट [संज्ञा पु.] (सं.) कान का घेरा।

कर्णपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्पानगरी या आधुनिक भागलपुर।

कर्णपूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नील कमल। २-कान का एक आभूषण। करनफूल। ३-अशोक वृक्ष। २-सिरस का पेड़।

कर्णपूरक [संज्ञा पु.] (सं.) कदंब का पेड़।

कर्णमूल [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग।

कर्णमृदंग, कर्णमृदङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कान के भीतर की झिल्ली।

कर्णयुग्मप्रकीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में ५१ प्रकार के चालकों में से एक।

कर्णलग्नस्कंध [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में कंधे के पांच भेदों में से एक।

कर्णलता, कर्णलतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान की लर।

कर्णवर्जित [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

कर्णविद्रधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान के भीतर होने वाली फुंसी, फुड़िया या घाव।

कर्णवेध [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों के कान छेदने का संस्कार।

कर्णवेधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान छेदने की सुई

कर्णशष्कली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कर्णमृदंग'

कर्णस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) कान से मवाद या पीप बहने का रोग।

कर्णहीन [संज्ञा पु.] सांप। सर्प।

कर्णाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत के दक्षिण का एक देश। २-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो मेघराग का पुत्र माना जाता है।

कर्णाटक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कर्णाटक'।

कर्णाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कर्णाटक देश की स्त्री। २-कर्णाटक देश की भाषा। ३-एक प्रकार की रागनी। ४-शब्दालंकार में अनुप्रास की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग ही के अक्षर आते हैं।

कर्णाभरणक [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

कर्णारि [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन।

कर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तीर।

कर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कान का एक आभूषण। करनफूल। २-हाथ की बीच की उंगली। ३-हाथी की सूंड़ की नोक। ४-कमल का छत्ता। ५-सफेद गुलाब। सेवती। ६-डंठल। कलस। लेखनी। ८-मेढासींगी। ६-एक योनि रोग।

कर्णिकार [संज्ञा पु.] (सं.) चम्पा का वृक्ष।

कर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का बाण। [संज्ञा पु.] १-सात पर्वतों में से एक। २-बाण। तीर। [वि.] १-कान वाला। २-जिसमें पतवार लगी हो। ३-बड़े कान वाला।

कर्णेजप [संज्ञा पु.] (सं.) कानाफुसी करने वाला। चुगली खाने वाला। पीठ पीछे लोगों की बुराई करने वाला।

कर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काटना। कतरना। २-कातना (सूत आदि)।

कर्त्तनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) कैंची। कतरनी।

कर्त्तव※ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'करतव'।

कर्त्तरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कैंची। कतरनी। २-काती (सुनारों की)। ३-छुरी। छोटी तलवार। कटारी। ४-फलित ज्योतिष का एक योग। ५-एक बाजा। करताल।

कर्त्तव्य [वि.] (सं.) १-करने के योग्य। करणीय [संज्ञा पु.] करणीयकार्य। अवश्य करने योग्य कार्य। धर्म। फर्ज। ड्यूटी।

कर्त्तव्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कर्त्तव्य का भाव। औचित्य। विधेयता। २-कर्मकांड की दक्षिणा इतिकर्त्तव्यता-उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा

कर्त्तव्यमूढ़, कर्त्तव्यविमूढ़ [वि.] (सं.) १-जिसको अपना कर्त्तव्य न सूझे। जो कर्त्तव्य स्थिर न कर सके। २-भौचक्का।

कर्त्तव्याकर्त्तव्य [संज्ञा. पु.] (सं.) भला-बुरा काम। करने योग्य और न करने योग्य कार्य

कर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-करने वाला। काम करने वाला। २-रचने वाला। बनाने वाला। ३-विधाता। ईश्वर। ४-व्याकरण में वह कारक जो क्रिया को करता है।

कर्त्ताधर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) जिसे किसी काम के करने में सब प्रकार का अधिकार प्राप्त हो। २-सब कुछ करने धरने वाला।

कर्त्तार [संज्ञा पु.] हि.) १-करने वाला। बनाने वाला। २-विधाता। ईश्वर।

कर्त्तित [वि.] (सं.) कतरा हुआ। कांटा-छांटा हुआ।

कर्त्तुमभिप्रेत [संज्ञा पु.] (सं.) कर्त्तव्य के अभिप्राय से करना। अवश्य करना चाहिए ऐसा समझ कर करना।

कर्त्तृ [संज्ञा पु.] (सं.) १-करने वाला। २-बनाने वाला।

कर्त्तृक [वि.] (सं.) किया हुआ। सम्पादित। बनाया हुआ।
[संज्ञा पु.] (सं.) कार्यकर्त्ताओं अथवा कर्मचारियों का समूह। स्टाफ। कर्मचारी वृन्द।

कर्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी तलवार। कटारी।

कर्तृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्त्ता का भाव। २-कर्त्ता का धर्म।

कर्तृ-निरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) कर्तृ-वर्ग या कर्मचारी वृन्द का निरीक्षण या देखभाल करने वाला व्यक्ति। स्टाफ इन्स्पेक्टर।

कर्तृप्रधान-क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह क्रिया जिसमें कर्त्ता प्रधान हो।

कर्तृप्रधान-वाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाक्य जिसमें कर्त्ता प्रधान रूप से आया हो। जैसे केशव रसगुल्ले खाता है।

कर्तृ-वर्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी कार्यालय के कर्मचारियों या कार्यकर्त्ताओं का वर्ग या समूह। कर्मचारी वृन्द। कर्तृक। स्टाफ़।

कर्तृवाचक [वि.] (सं.) व्याकरण में कर्त्ता का बोध कराने वाला।

कर्तृवाची [वि.] (सं) जिससे कर्ता का बोध हो।

कर्तृवाच्य [संज्ञा पु.] (सं.) क्रिया पद द्वारा कर्त्ता को सूचित करने वाला वाक्य।

कर्तृवाच्य-क्रिया [संज्ञा पु.] (सं.) वह क्रिया जिससे कर्ता का बोध स्पष्ट रूप से विदित हो।

कर्द [संज्ञा पु.] (सं.) कर्दम। कीचड़।

कर्दट [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़। [वि.] (सं.) कीचड़ में चलने वाला।

कर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) पेट की गुड़गुड़ाहट का शब्द।

कर्दम [संज्ञा पु.] (सं.) १–कीचड़। कीच। २–पाप। ३–छाया। ४–मास।

कर्दमित [वि.] (सं.) कीचड़ किया हुआ।

कर्दमिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कीचड़ वाली धरती। दलदली जमीन।

कर्नल [संज्ञा पु.] (अं.) एक फौजी अफसर।

कर्नेता [संज्ञा पु.] (देश.) एक विशेष रंग का घोड़ा।

कर्पट [संज्ञा पु.] (सं.) पुराना मैला कपड़ा या चिथड़ा। गूदड़।

कर्पटिक [संज्ञा पु.] (सं.) गुदड़े चिथड़े पहनने वाला भिखमंगा।

कर्पटी [संज्ञा पु.] (सं.) फटा पुराना या गुदड़े चिथड़े पहनने वाला भिखारी।

कर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शस्त्र।

कर्पर [संज्ञा पु.] (सं.) १–कपाल। खोपड़ी। ३–खप्पर। ३–कछुवे की खोपड़ी। ४–कड़ाह। ५–गूलर। ६–कपोल। गाल। ७–एक शस्त्र।

कर्पराल [संज्ञा पु.] (सं.) पीलू का पेड़।

कर्पराशी [संज्ञा पु.] (सं.) बटुक भैरव।

कर्परी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दारु हल्दी के काढ़े से निकाला हुआ तूतिया। खपरिया।

कर्पास [संज्ञा पु.] (सं.) १–कपास। २–कपास का पौधा।

कर्पासफल [संज्ञा पु.] (सं) बिनौला।

कर्पासी [संज्ञा स्त्री] (सं) कपास का पौधा।

कर्पूर [संज्ञा पु] (सं) कपूर।

कर्पूरक [संज्ञा पु.] (सं.) कचूर। कच्ची हल्दी।

कर्पूरगौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संकर जाति की एक रागिनी।

कर्पूरनालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का मोयनदार पकवान।

कर्पूरमणि [संज्ञा पु.] (सं.) दवा के नाम में आने वाला एक पत्थर जो वातनाशक समझा जाता है।

कर्फर [संज्ञा पु.] (सं.) आरसी। दर्पण। शीशा। आईना।

कर्बुदार [संज्ञा पु.] (सं.) १–लिसोड़ा। २–तेंदू नामक वृक्ष जिससे आबनूस निकलता है। सफेद कचनार।

कर्बुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्वर्ण। सोना। २–धतूरा। ३–पाप। ४–जल। पानी। ५–राक्षस। ६–कचूर। [वि.] अनेक वर्ण का। रंगबिरंगा। चितकबरा।

कर्बुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वनतुलसी। २–कालीतुलसी।

कर्बुरित [वि.] (सं.) चितकबरा।

कर्बुरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्गा।

कर्मद [संज्ञा पु.] (सं.) एक भिक्षु सूत्रकार ऋषि।

कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह जो किया जावे। कार्य। काम। २–धार्मिक कृत्य। ३–व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४–भाग्य। प्रारब्ध। ५–मृतकसंस्कार। क्रियाकर्म।

कर्मकर [वि.] (सं.) वेतन या पारिश्रमिक पर काम करने वाला।

कर्मकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासी। बांदी। मजदूरिन।

कर्मकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १–कार्यकरक। काम करने वाला। २–व्याकरण के अनुसार वह वाच्य जिसमें कर्तृत्व की विवक्षा से कर्म ही कर्त्ता होता है।

कर्मकांड, कर्मकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म संबंधी कर्म। यज्ञादि कर्म। २–वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।

कर्मकांडी, कर्मकाण्डी [संज्ञा पु.] (सं.) विधिवत् यज्ञादि कर्म करने वाला ब्राह्मण।

कर्मकार [संज्ञा पु.] (सं.) १–लोहे या सोने का काम करने वाला। २–बैल। ३–नौकर। सेवक। मजदूर। ४–बिना वेतन के काम करने वाला। बेगार।

कर्मकारक [संज्ञा पु.] (सं.) १–व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े।

कर्मकशल [वि.] (सं.) काम करने में चतुर।

कर्मक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–कर्म या कार्य करने का स्थान। २–भारतवर्ष।

कर्मचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १–काम करने वेतन पर काम करने वाला। २– आधीन राज्य प्रबन्ध अथवा कार्यालय से सम्बन्धित कार्य हो।

कर्मचारी-वृंद, (वृन्द) [संज्ञा पु.] कार्यालय के कार्यकर्त्ताओं या सारा समूह। कर्तृक। कर्तृ-वर्ग।

कर्मज [वि.] (सं.) १–कर्म से उत्पन्न। तर के किये हुए पाप पुण्य से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १–कलियुग। २– कर्मफल के कारण होने वाला रोग।

कर्मजित [संज्ञा पु.] (सं.) १–मगध जो जरासंध का वंशज था। २– एक राजा।

कर्मठ [वि.] (सं.) १–काम करने में २–धर्म सम्बन्धी कृत्य करने वाला निष्ठ। [संज्ञा पु.] देखो 'कर्मकांडी'।

कर्मणा [क्रि. वि.] (सं.) कर्म से। कर्म

कर्मण्य [वि.] (सं.) कार्यकुशल। प्रयत्न करने वाला।

कर्मण्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्य तत्परता।

कर्मदक्ष [वि.] (सं.) काम करने में निपुण।

कर्मधारयसमास [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याक वह समास जिसमें विशेषण और का समान अधिकरण होता है।

कर्मना* [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'कर्मणा'।

कर्मनाशा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) विहार एक प्रसिद्ध नदी।

कर्मनिष्ठ [वि.] (सं.) १–शास्त्रविहित निष्ठा रखने वाला। संध्या, अग्निहोत्र कर्म (कर्तव्य) करने वाला। २–भले कार्य करनेवाला।

कर्मपंचमी [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग नाम।

कर्म-प्रधान-क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह जिसमें कर्म ही मुख्य होकर कर्त्ता के आता है तथा जिसका लिंग वचन के अनुसार होता है।

कर्म-प्रधान-वाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्म जिसमें मुख्य रूप से कर्त्ता के आया हो।

कर्मफल [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म या अधर्म करने से सुख दुःख मिलने का परिणाम।

कर्मबधन, कर्मबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) नुसार जन्मग्रहण।

कर्मभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारतवर्ष। आर्यावर्त

कर्मभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कर्मभू'।

कर्मभोग [संज्ञा पु.] (सं.) किये हुए कर्मों का

कर्ममास [संज्ञा पु.] (सं.) श्रावण का महीना।

कर्ममीमांसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्म के संबंध में निश्चय करने वाला शास्त्र।

कर्मयुग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलियुग। २-काम करने का युग।

कर्मयोग [संज्ञा पु.] (सं.) चित्त शुद्ध करने वाला शास्त्र विहित कर्म जिसके बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। २-कर्त्तव्य का वह पालन जो सिद्धि और असिद्धि या सफलता और विफलता में समानभाव रखकर किया जाय।

कर्मयोगी [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मयोग के सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने वाला।

कर्मरंग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमरख का वृक्ष। २-कमरख का फल।

कर्मरेख [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्म या भाग्य का लेख।

कर्मवश [क्रि. वि.] (हिं.) कर्म के आधीन।

कर्मवशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काम लगे रहने का भाव।

कर्मवाच्यक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह क्रिया जिसमें कर्म प्रधान होकर मुख्य रूप से कर्त्ता के समान प्रयोग किया गया हो।

कर्मवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मीमांसा जिसमें कर्म प्रधान माना गया हो। २-कर्मयोग।

कर्मवादी [संज्ञा पु.] (सं.) कर्म को प्रधान मानने वाला। मीमांसक।

कर्मवान [वि.] (सं.) काम करने वाला। कर्मनिष्ठ। क्रियावान।

कर्मविपयय [संज्ञा पु.] (सं.) काम का उलटफेर। कार्य का का व्यतिक्रम।

कर्मविपाक [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वजन्म के किये हुए शुभाशुभकर्म का भला और बुरा फल।

कर्मशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिल्पादि कार्य करने का स्थान। कारखाना। वर्कशाप।

कर्मशील [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिणाम की अभिलाषा त्याग करके स्वभावतः काम करे। २-यत्नवान। उद्योगी।

कर्मशूर [संज्ञा पु.] (सं.) साहस तथा दृढ़ता के साथ कार्य में प्रवृत्त होने वाला व्यक्ति। उद्योगी।

कर्मसन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) कर्म का त्याग। २-कर्मफल का त्याग।

कर्मसन्यासी [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मत्यागी। यती

कर्मसमाधि [सज्ञा पु.] (सं.) कर्म का शेष या मुक्ति।

कर्मसंभव ,कर्मसम्भव [वि.] (सं.) कर्म से उत्पन्न [संज्ञा पु.] कर्म की उत्पत्ति।

कर्मसाक्षी [वि.] (सं.) जिसके सामने कोई कार्य हुआ हो। [संज्ञा पु.] वे देवता जो प्राणियों के कामों को देखते रहते हैं तथा उनके साक्षी रहते हैं। यह नौ हैं सूर्य, चंद्र. यम, काल, पृथ्वी, जल, अग्नि वायु और आकाश।

कर्मसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्य की सिद्धि।

कर्मसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कर्मसाधन'।

कर्मस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'कर्मशाला'। कर्मक्षेत्र।

कर्महीन [वि.] (सं.) अभागा।

कर्मांत, कर्मान्त [संज्ञा पुं.] (सं.) १-काम का अन्त या समाप्ति। २-जोती हुई धरती।

कर्मादान [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यापार जिसका श्रावकों को निषेध है।

कर्मार [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मकार। लौहार।

कर्मारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कार्य का आरम्भ।

कर्माशय [संज्ञा पु.] (सं.) कर्म के धर्म और अधर्म का गुण।

कर्मिक [वि.] (सं.) कर्मनिष्ट। कामकाजी।

कर्मिष्ठ [वि. स.] कर्म करने वाला। काम करने में निपुण।

कर्मी [वि:] (सं.) काम करने वाला। फल की इच्छा से कर्म करने वाला। वेतन प्राप्ति की अभिलाषा से काम या परिश्रम करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मजदूर'।

कर्मीर [वि.] (सं.) १-नारंगी रंग का। २-चितकबरा।

कर्मेंद्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काम करने वाली इंद्रिय। यह पांच है यथा हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।

कर्मोद्योग [संज्ञा पु.] (सं.) उद्योग का कार्य प्रयत्न।

कँरी [संज्ञा पु.] (हिं.) जुलाहों का सूत फैलाकर तानने का कार्य। [वि.] १-कड़ा। कठोर। सख्त। २-कठिन। मुश्किल।

कर्राना* [क्रि. अ.] (हिं.) कड़ा या कठोर होना। सख्त होना।

कर्री [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष का नाम। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] कड़ी। कठोर। सख्त।

कर्वट [संज्ञा पु.] (सं.) १-दोसौ गावों के मध्य का व्यापारिक क्षेत्र। मंडी। २-नगर। ३-कांटेदार झाड़ियों से घिरा गांव।

कर्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याघ्र। २-राक्षस।

कर्शित [वि] (सं.) दुर्बल किया हुआ। कमजोर (दुबला) किया हुआ।

करर्य [संज्ञा पु.] (सं.) कचूर। नरकचूर। जरंवाद।

कर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोलह माशे का परिमाण अस्सी रत्ती की तौल। २-खिचाव। घसीटना। ३-जोताई। ४-हल से बनी हुई रेखा। खींचना। खरोचना। ५-बहेड़ा। ६-वाव। जोश। ७-देखो 'करष'। ८-वह भार अथवा दबाव जिसके कारण हानिया अनिष्ट की अशंका हो। स्टेन।

कर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खींचने वाला। २-किसान। खेतिहर। ३-हल जोतने वाला व्यक्ति।

कर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृषि कर्म या खेती का काम। २-जोतना। ३-खींचना। ४-खरोंच कर लकीर डालना।

कर्षणयंत्र, कर्षणयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) खेत जोतने का वह भीमकाय। (यंत्र) या हल जो पैट्रोल या अन्य डीजल आदि तेलों से चलता है। ट्रैक्टर।

कर्षणीय [वि.] (सं.) १-खीचे जाने योग्य। २-जोते जाने योग्य। ३-खरोंच कर लकीर डाले जाने योग्य।

कर्षफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहेड़ा २-आँवला।

कर्षना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'खींचना'।

कर्षिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खिरनी (क्षीरिणी) का वृक्ष। २-घोड़े की लगाम।

कर्षित [वि.] (सं.) १-आकर्षित। खींचा हुआ। २-जोता हुआ।

कर्षी [वि.] (सं.) मन को आकर्षित करने वाला। मनोहर। सुन्दर।

कर्षू [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंडे की आग। २-खेती ३-आजीविका। [संज्ञा स्त्री.] १-छोटा ताल या पोखर। २-नदी। ३-नहर। ४-यज्ञ की अग्नि रखने का छोटा कुंड।

कर्हिं [क्रि. वि.] (सं.) कब ?। किस समय ?।

कर्हिचित [क्रि. वि.] (सं) १-कभी। किसी समय २-कदाचित।

कलंक, कलङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिह्न। दाग। धब्बा चन्द्रमा का काला दाग।

कलंकर, कलङ्कर [वि.] (सं.) १-दाग या चिह्न लगाने वाला। २-अपमानित करने वाला।

कलंकधर, कलङ्कधर [संज्ञा पु.] (सं.) चंद्रमा।

कलंकमय, कलङ्कमय [वि.] (सं.) १-धब्बेदार। चिह्नित। २-बदनाम।

कलंकांक, कलङ्काङ्क [संज्ञा पु.] (सं) चन्द्रमा का काला धब्बा।

कलंकित, कलङ्कित [वि.] (सं.) १-धब्बेदार। चिह्नयुक्त। २-जिसे कलंक लगा हो। लांछित। दोपयुक्त। बदनाम। ३-जिसमें मुरचा लगा हो।

कलंकी, कलङ्की [वि.] (सं.) जिसे कलंक लगा हो। दोषी। अपराधी।
+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कल्कि अवतार।

कलंकुर, कलङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) पानी की भँवर।

कलंगड़ा, कलङ्गड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तरबूत। २-एक प्रकार का गाना।

कलंगा, कलङ्गा [संज्ञा पु.] (हि.) १-नक्काशी करने की ठठेरों की छेनी। २-छीपियों का ठप्पा। ३-देखो 'कलगा'।

कलंगी, कलङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो "कलंगी"।

कलंज, कलञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-तम्बाकू का पौधा। २-मृग। ३-पक्षी। ४-पक्षी का मांस। ५-१० पल का एक तौल।

कलंडर,कलण्डर [संज्ञा पु.](अं.) अंगरेजी तिथि पत्र जो जनवरी मास से प्रारंभ होता है।

कलंदर, कलन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्ण संकर जाति।

कलंदर, क़लन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुसलमान फकीर जो संसार से विरक्त होता है। २-वह मदारी जो बन्दर भालू आदि का तमाशा करते हैं।

कलंदरा, कलन्दरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। २-खीमें का कांटा। खूटी। [संज्ञा पु.] (अ.) १-देखो "कलंडर"। २ अपराध या अपराधों की वह सूची या याददाश्त जो न्यायी को ऐसे अभियोगों में तैयार करनी पड़ती है जिन्हें वह दौरे सुपुर्द करता है।

कलंदरी, कलन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह छोटा खेमा या छोलदारी जिसमें कलंदर लगे हों।

कलंब, कलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १- कदंम। २-शर। २-शाक का डंठल।

कलंबिका, कलम्बिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) गले के पीछे की एक नाड़ी। मन्या।

कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अव्यक्त मधुर ध्वनि। २-वीर्य। ३- साल का वृक्ष।
[वि.] (सं.) १-सुन्दर। मनोहर। २-मधुर। कोमल।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुख। चैन। आराम। २-आरोग्यता। तदुरुस्ती। ३-संतोष। तुष्टि। कलसे-चैन से। आराम से।
[क्रि. वि.] (हिं.) १-आने वाले दिन का। दूसरे का सवेरा। २- भविष्य में। किसी दूसरे समय। २-गया दिन। बीता हुआ दिन। *कलका*-थोड़े दिनों का। हाल का। *कल की बात*-थोड़े दिनों की बात। *कल की रात*-बीती हुई रात।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ओर। बल। पहलू। २-युक्ति। ढंग। ३-पेंच और पुरजों के जोड़ से बनी वस्तु जिससे कोई कार्य लिया जाय। यंत्र। ३-पेंच। परजा। ४-बन्दूक का घोड़ा। *कल ऐंठना*-किसी के मन को किसी ओर फेरना। *कल का पुतला*-दूसरे के कहने पर चलने वाला। *कल-बेकल होना*-१-पुरजा ढीला होना। २-कम बिगड़ना।
[वि.] (हि.) 'काला' शब्द का संक्षिप्त रूप। जैसे कलमुँहा।

कलइया+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कलैया'।

कलई [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-रांगा। २-चमकाने के लिए चढ़ाया गया रांगे का हलका लेप। ३-सफेदी। चूने आदि का लेप। ४-चूना। कली। ५-बाहरी चमक-दमक। तड़क-भड़क। ऊपरी दिखावट। ऊपरी बनावट। *कलई खुलना*-वास्तविक रूप प्रगट होना। असली भेद खुलना। *कलई न लगना*-युक्ति न चलना।

कलईगर [संज्ञा पु.] (फा.) कलई करने वाला।

कलईदार [वि.] (फा.) जिसपर कलई की गई हो

कलकंठ, कलकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोकिल। कोयल। कबूतर। ३-हंस। [वि.] मीठी ध्वनि करने वाला। मधुर बोलने वाला।

कलक [संज्ञा पु.] (अ.) १-बेकली। बेचैनी। २-दुःख। खेद। (हिं.) कल्क। चूर्ण। चूरन।

कलकना* [क्रि. अ.] (हि.) चिल्लाना। शोर करना। चीत्कार करना।

कलकफल [संज्ञा पु.] (सं.) दाड़िम वृक्ष। अनार का पेड़।

कलकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-झरने आदि के जल के गिरने या चलने का शब्द। २-कोलाहल। शोर। ३-साल की गोंद। राल। [संज्ञा स्त्री.] वादविवाद। दाँताकिटकिट। झगड़ा। (हि.) खुजली।

कलकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्रोध। गुस्सा।

कलकानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोलाहल। २-हैरानी। दुःख।

कलकि, कलकी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कल्कि'

कलकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का कीड़ा। २-संगीत में एक ग्राम।

कलकुंजिका, कलकुञ्जिका [वि.] (सं.) देखो 'कलकूजिका'।

कलकूजिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-मधुर स्वर निकालने वाली। २-विलासिनी।

कलक्टर [संज्ञा पु.] (अं.) वह बड़ा अधिकारी जिसके अधिकार में जिले का प्रबंध होता है। यह सरकारी मालगुजारी वसूल करता है तथा मुकदमों का निर्णय करता है।

कलक्टरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलक्टर का कार्य अथवा पद। [वि.] कलक्टर से संबंध रखने वाला।

कलगट [संज्ञा पु.] (देश.) कुल्हाड़ा।

कलगा [संज्ञा पु.] (हि.) १-मदरसे के समान एक पौधा। २-देखो 'कलगी'।

कलगी [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-राजाओं की पगड़ी या ताज में लगाने का बहुमूल्य पर। २-सिर लगाने का एक आभूषण जो मोती या सोने का बनता है। ३-मुर्गे, मोर आदि की चोटी। ४-किसी उन्नत भवन का शिखर। ४-एक प्रकार लावनी गीत गाने का ढंग।

कलचिड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मधुर एक चिड़िया।

कलचुरि [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण प्रचीन राजवंश।

कलछा [संज्ञा पु.] (हि.) बड़ी डाँड़ी

कलछी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बड़ी चम्मच जिससे बटलोई में निकालते हैं।

कलछुल+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) इसके के सिरे पर एक कटोरी लगी

कलछुला [संज्ञा पु.] (हि.) बड़ी

कलछुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो

कलजिब्भा [वि.] (हि.) १-पशु काली हो। २-जिसकी कही हुई सही हों।

कलजीहा [वि.] (हिं.) देखो [संज्ञा पु.] काली जीभ वाला बुरा समझा जाता है।

कलझँवाँ [वि.] (हि.) साँवला।

कलटोरा [संज्ञा पु.] (हि.) काली चोंच वाला कबूतर।

कलट्ठर* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो

कलत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-भार्या। २-नितम्ब। ३-किला। दुर्ग।

कलदार [वि.] (हि.) जिसमें कोई लगा हो। [संज्ञा पु.] सरकारी टकसाल रुपया।

कलदुमा [वि.] (हि.) काली पूंछ [संज्ञा पु.] काली दुम वाला

कलधूत [संज्ञा पु.] (सं.) चांदी। [वि.] मधुर स्वर से परिपूर्ण।

कलधौत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। ३-मधुर ध्वनि।

कलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पन्न बनाना। सजाना। २-धारण आचरण। ४-लगाव। सम्बन्ध की क्रिया। हिसाब लगाना (जैसे-संकलन, व्यकलन। ६- ७-ग्रहण। ८-बेत। ९-गर्भ में का मिलकर एक रूप होना। का गर्भ।

कलना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धारण करना। २-विशेष बातों का ज्ञान ३-गणना। विचार। ४-लेनदेन।

कलनाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलहंस ध्वनि। रसीली बोली।

कलप [संज्ञा पु.] (हि.) १-कलफ। ३-देखो 'कल्प'।

कलपना [क्रि. अ.] (हि.) १-बिलखना

करना। ※ २-कल्पना करना।
※ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कल्पना'।

कलपनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कतरनी। कैंची।

कलपाना [क्रि. स.] (हिं.) तरसाना। दुःखी करना। रुलाना।

कलफ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पके हुए चावल या मैदा की पतली लेई जो कपड़ों में कड़ापन लाने के लिये लगाई जाती है। माँड़ी। २-झांई। चेहरे पर का काला धब्बा।

कलफा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दारचीनी की छाल।

कलब [संज्ञा पु.] (देश.) टेसू के फूलों से निकाला हुआ रंग।

कलबल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उपाय। दाँव-पेंच। जुगत। २-हल्ला-गुल्ला। शोरगुल।
[वि.] (हिं.) अस्पष्ट शब्द।

कलबीर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अकलबीर'।

कलबूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सांचा। ढांचा। लकड़ी का वह सांचा या फरमा जिसपर चढ़ाकर जूता सीया जाता है।

कलभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी का बच्चा। ऊँट का बच्चा। ४-धतूरा।

कलभवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) पीलू का पेड़।

कलभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चों की बोली।

कलभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथी या ऊँट का मादा बच्चा। २-चंचु। चेंच का पौधा।

कलम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लेखनी। स्याही में डुबाकर कागज पर लिखने या अंकित करने का उपकरण। २-किसी वृक्ष की वह शाखा या टहनी जो लेखनी के समान तिरछी काटकर दूसरी जगह लगाई जाती है। ३-कलम लगा कर तैयार किया गया पौधा। कलमी पौधा। ४-वह धान जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरी जगह लगाया जाता है। ५-हजामत के समय कनपटी के पास छोड़े जाने वाला। ६-सात छेद वाली एक प्रकार की बाँसुरी। ७-चित्र अंकित करने की चित्रकार की कूची। तूलिका। ८-सोनारों या संगतराशों का एक औजार। ९-खुदाई का कोई औजार। १०-छछूंदर। फूलझड़ी (आतशबाजी)। ११-बहीखाते आदि में लिखा जाने वाला कोई पद। आइटम।
क़लम करना-काटना। *क़लम खींचना, फेरना, मारना*-लिखे हुए को काटना। *क़लम घिसना*-लिखते रहना। *क़लम चलना*-१-लिखाई होना। २-कलम का कागज पर अच्छी तरह चलना। *क़लम चलाना*-१-लिखना। २-तेज लिखना। *कलम चूमना*-प्रशंसा करना *क़लम जारी रहना*-१-लिखते रहना। २-आज्ञा लिखने का अधिकार बना रहना। *क़लम तोड़ना*-१-अत्यधिक लिखना। २-अनूठी तथा हृदयग्राही बात लिखना। *कलम दान देना*-लिखने की कोई नौकरी देना। *कलम न रुकना*-लेख लिखते ही रहना। *कलम बंद*-पूरा-पूरा। ठीक-ठीक। *कलम बंद करना*-लिख चुकना। *कलमबंद लगाना*। देखो 'कलम बंद'। *कलम बंद सुनाना*-बहुत गालियां देना *कलम में जोर होना*-लेख में प्रभाव होना।

क़लमकसाई [संज्ञा पु.] (हि.) वह जिसकी लिखावट से जनता को हानि पहुँचती है। क्रूर।

क़लमकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रकार। २-कल के द्वारा जीविका चलाने वाला। ३-एक प्रकार का बूटीदार वस्त्र।

क़लमकारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) कलम से किया हुआ कार्य।

कलमकीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

कलमख※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कल्मष'।

कलमतराश [संज्ञा पु.] (फ़ा.) क़लम बनाने का चाकू। तेज छुरी।

क़लमदान [संज्ञा.पु.] (फ़ा.) काठ की लम्बी पतली संदूक जिसमें कलम पैंसिल आदि रखी जाती हैं।

कलमना※ [क्रि·स.] (हि.) काटना। दो टुकड़े करना।

कलमरिया [संज्ञा स्त्री.] (पुर्त.) हवा बंद हो जाने का भाव (लश०)।

कलमलना [क्रि. अ.] (हि.) संकुचित स्थान में अंगों को इधर उधर घुमाना। कुलबुलाना।

कलमलाना [क्रि. अ.] (हि.) कुलबुलाना।

कलमस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो "कल्मष"।

कलमा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वाक्य। बात। २-वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूलमंत्र।
कलमा पढ़ाना-मुसलमान करना। *कलमा पढ़ना* मुसलमान होना।

कलमास [वि.] (हि.) चितकबरा।

कलमी [वि.] (फ़ा.) १-लिखित। लिखा हुआ। २-कलम लगाकर उगा हुआ। जैसे-कलमी आम ३-जिसमें रवे हों।
[संज्ञा स्त्री.] करेमू। कलमी साग।

कलमीशोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) साफ किया हुआ शोरा जिसमें कलमें होती हैं।

कलमुहाँ [वि.] (हि.) काले मुँह का। २-कलंकित। लांछित। बदनाम।

कलयिता [संज्ञा पु.] (सं.) हिसाब लगाने वाला। गणित करने वाला। कैलकुलेटर।

कलरव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुर शब्द। २-कोकिल। ३-कबूतर।

कलरिन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जोंक लगाने वाली स्त्री।

कलल [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भ में लिपटी हुई झिल्ली। जरायु।

कललज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ। २-राल।

कलवरिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कलवार की दुकान। शराबखाना। मदिरालय।

कलवार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति जो मद्य बनाती और बेचती है।

कलविंक, कलविङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चटक। गौरवा। २-तरबूज। कलिंदा। ३-सफेद चँवर। ४-कलंक। धब्बा।

कलविंकविनोद, कलविङ्कविनोद [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य के ५१ मुख्य चालकों में से एक।

कलश [संज्ञा पु.] (सं.) १-घड़ा। गगरा। २-चोटी। सिरा। ३-मंदिर आदि का ऊपरी भाग या शिखर।

कलशक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कर्णाटक प्रदेश का एक तीर्थस्थान।

कलशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा घड़ा। गगरी।

कलशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गगरी। छोटा कलसा। २-मंदिर का छोटा कंगुरा। ३-पृष्ठपर्णी। पिठवन। ४-एक बाजा।

कलस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कलश'।

कलसरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच

कलसा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कलशी'।

कलसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की काले सिर वाली चिड़िया [वि.] [स्त्री. प्र.] लड़ाकी। झगड़ालू (स्त्री)।

कलसी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कलशी'।

कलसीसुत [संज्ञा पु.] (सं.) घड़े से उत्पन्न, अगस्त्य ऋषि।

कलहंतरिता, कलहन्तरिता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कलहांतरिता'।

कलहंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजहंस। २-हंस। ३-श्रेष्ठ राजा। ४-ब्रह्म। परमेश्वर। ५-तेरह वर्णों के एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें (स+ज+स+स+गुरु) होता है। ६-संकरजाति की एक रागिनी।

कलह [संज्ञा पु.] (सं.) १-विवाद। झगड़ा। २-लड़ाई। युद्ध। ३-तलवार की म्यान। ४-पथ। रास्ता।

कलहकार, कलहकारक, कलहकारी [वि.] (सं.) झगड़ा करने वाली। विवादप्रिय।

कलहकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झगड़ालू स्त्री।

कलहनी [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] देखो 'कलहिनी'

कलहप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) नारद।
[वि.] झगड़े से प्रसन्न रहने वाला। जिसे लड़ाई भली लगे।

कलहप्रिया [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] झगड़ालू।
[संज्ञा स्त्री.] मैना। सारिका।

कलहांतरिता, कलहान्तरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो नायक या पति का अपमान करके पीछे स्वयं पछताती हैं।

कलहार※ [वि.] (हि.) झगड़ालू।

कलहारी [वि.] (सं.) कलह करने वाली। झग,

ड़ालू। कर्कशा।

कलहास [संज्ञा पु.] (सं) मधुर तथा अस्फुट ध्वनियुक्त हास या हँसी।

कलहिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] लड़ाकी। झगड़ालू। [संज्ञा स्त्री.] शनि की स्त्री का नाम।

कलही [वि.] (हिं) झगड़ालू। लड़ाका।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'कहिनी'।

कलाँ [वि.] (फा.) बड़ा। दीर्घाकार।

कलांकुर, कलाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंसासुर। २-कराकुलपक्षी। चौर-शास्त्र प्रवर्त्तक कर्णीसुत।

कलांतर, कलान्तर [संज्ञा पु.](सं.) सूद। ब्याज।

कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अंश। भाग। २-चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। ३-सूर्य का बारहवां भाग। ४-अग्निमण्डल के दस भागों में से एक। ५-समय का एक विभाग जो तीस काष्ठ के बराबर होता है। ६-राशि के तीसवें अंश का साठवां भाग। ७-पुरुष देह के अनुसार सोलह अंश या उपाधि। ८-छंदशास्त्र तथा पिंगल में 'मात्रा' को कला कहते हैं। ९-किसी कार्य को भलीभांति करने का कौशल। किसी कार्य को नियम तथा व्यवस्था के अनुसार करने का कौशल। किसी कार्य को नियम तथा व्यवस्था के अनुसार करने की विद्या। फन। हुनर। १०-मनुष्य शरीर के १६ अध्यात्मिक विभाग। ११-सूद। १२-नृत्य का एक भेद। १३-नौका। १४-जिह्वा। १५-शिव। १६-लेश। लगाव। १७-वर्ण। अक्षर। (तंत्र) १८-मात्रा। (छंद)। १९-स्त्री का रज। २०-पशुपतदर्शन के अनुसार शरीर के अंश या अवयव। २१-विभूति। २२-तेज। २३-शोभा। छटा। प्रभा। २४-ज्योति। तेज। २५-कौतुक। खेल। लीला। २६-मिस। बहाना। हीला। २७-युक्ति। ढंग। करतब। २८-नटों की एक कसरत। २९-यज्ञ के तीन अंगों में से कोई अंग। ३०-यन्त्र। पेंच। ३१-मरीचिऋषि की पत्नी का नाम। ३२-एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और एक गुरु होता है। ३३-किसी सभा या समिति के कार्यों का संक्षिप्त विवरण। मिनट।

कलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हथेली का ऊपरी जोड़। मणिबंध। कट्टा। २-एक प्रकार की कसरत। ३-पूला। गट्ठा। ४-सूत का लच्छा। कुकरी। ५-हाथी के गले में बांधने का कलावा ६-घँदुआ। अलान। ७-उरद।

कलाकंद, कलाकंद [संज्ञा पु.] (फा.) खोया और चीनी मिलाकर बनाई हुई बड़ी बरफी।

कलाकर [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक के समान एक वृक्ष।

कलाकार [संज्ञा पु.] (सं.) कलापूर्ण कार्य करने वाला व्यक्ति। कला-कुशल। जैसे-अभिनेता, कवि, चित्रकार। आर्टिस्ट।

कलाकूल [संज्ञा पु.] (सं.) हलाहलविष। जहर।

कलकेलि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव। कन्दर्प।

कलाकौशल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिल्प। दस्तकारी। २-कला की चातुरी या निपुणता। हुनर की सफाई। कारीगरी।

कलाक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ स्थान जो कामरूप देश के अंतर्गत बताया जाता है।

कलाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलई।

कलाजंग [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

कलाजाजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलौंजी। मंगरौल।

कलाद [संज्ञा पु.] (सं.) सोनार।

कलादक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णकार। सोनार।

कलादा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कलावा'।

कलाधर [संज्ञा पु.](सं.) १-चाँद। चन्द्रमा। २-शिव। ३-दंडकवृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु, एक लघु, इस क्रमानुसार १५ गुरु तथा १५ लघु होकर अन्त में में गुरु होता है।
[वि.] कलाओं का जानकार।

कलानक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक गण का नाम।

कलानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-एक गंधर्व का नाम।

कलानिधि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कलान्यास [संज्ञा पु.) (सं.) तंत्र का एक न्यास जो शिष्य के शरीर पर किया जाता है।

कलापंजी, कलापञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी सभा अथवा समिति के कार्य का संक्षिप्त विवरण लिखने की पुस्तिका या रजिस्टर। मिनटबुक।

कलाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। झुण्ड। २-मोर की पूंछ। ३-बाण। तरकस। ५-कमरबंद। पेटी। ६-चन्द्रमा। ७-कलावा। ८-व्यापार। ९-गहना। आभूषण। १०-व्यापार। ११-एक रागिनी।

कलापक [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। झुंड। २-चार श्लोकों का समूह। ३-पूला। मुट्ठा। ४-हाथी के गले का रस्सा।

कलापट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव या जहाज की पेंदी के छेद में सन वगैरह भरने का कार्य।

कलापिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात। रात्रि। २-नागरमोथा। ३-मोरनी। मयूरी।

कलापी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। २-कोयल। कोकिल। ३-बरगद का वृक्ष। ४-वैशंपायन। का एक शिष्य।
[वि.] १-तूणीर या तरकस बांधने वाला। २-समूह में रहने वाला। ३-कलाप-व्याकरण पढ़ा हुआ।

कलापूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा।

कलाबतून [संज्ञा पु.] (तु.) देखो 'कला

कलाबतूनी [वि.] (तु.) कलाबत्तू से बना हुआ।

कलाबत्तू [संज्ञा पु.] (हिं.) रेशम के लपेटा हुआ सोने चांदी का तार जिस पर बेल-बूटे बनाये जाते हैं।

कलाबाज [वि.] (हिं.) नट क्रिया करने

कलाबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उछल की विद्या। नटविद्या। नाचकूद।
कलाबाजी खाना-सिर नीचे कर के खाना।

कलभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कलाम [संज्ञा पु.] (अ.) १-वाक्य। उक्ति। २-बातचीत। कथन। वाइदा। प्रतिज्ञा। ४-वक्तव्य। उज्र।
कलाम होना-शंका होना।

कलामोचा [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाल वाला एक प्रकार का धान।

कलाय [संज्ञा पु.] (सं.) मटर।

कलार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कलवार'।

कलाल [संज्ञा पु.] (हिं.) मदिरा बनाने वाला। कलवार।

कलालखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) मदिरा शराब बिकने का स्थान।

कलालाप [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

कलावंत, कलावन्त [संज्ञा पु.] (हिं.) कला में निपुण व्यक्ति। गवैया। बाजी करने वाला। नट। [वि.] कला ज्ञाता।

कलावती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-कला २-शोभा वाली। छवि वाली। [संज्ञा एक अप्सरा का नाम।

कलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टेकुए में हुआ सूत का लच्छा। २-लाल, पीले वह लच्छा जिसे विवाह आदि अवसर कलाई, घड़ों तथा अन्य वस्तुओं पर हैं। ३-हाथी की गरदन।

कलावान [वि.] (सं.) कलाकुशल। गुणी।

कलाविक [संज्ञा पु.] (सं.) कुक्कुट। मुर्गा।

कलास [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत प्राचीन एक बाजा।

कलासी [संज्ञा पु.] (देश.) दो तख्तों के जोड़ लकीर।

कलाहक [संज्ञा पु.] (सं.) काहल नामक बाजा।

कलिंग, कलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुलिंग पक्षी। २-कुटज। कुरैया। ३-इन्द्रजौ। तरबूज। ५-सिरस का वृक्ष। ६-समुद्र एक प्राचीन राज्य जो गोदावरी तथा वैतरणी

नदी के बीच में बसा हुआ था। ७-कलिंग राज्य का निवासी। [वि.] कलिंग देश का।

कलिंगक, कलिङ्कक [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रजव। २-तरबूज।

कलिंगड़ा, कलिङ्गड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) दीपक राग का पाँचवां पुत्र जिसे रात के चौथे पहर में गाया जाता है।

कलिंगा, कलिङ्गा [संज्ञा पु.] (देश.) तेवरी नामक एक वृक्ष।

कलिंज, कलिञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) नरकट नाम की घास।

कलिंजर, कलिञ्जर [संज्ञा पु.] देखो 'कालिंजर'

कलिंद, कलिन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहेड़ा। २-सूर्य। ३-वह पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है।

कलिंदक, कलिन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज। कुम्हड़ा।

कलिंद-कन्या, कलिन्द-कन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

कलिंदजा, कलिन्दजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

कलिंद-नंदिनी, कलिन्द-नन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

कलिंदा, कलिन्दा [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

कलिंदी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कालिंदी'।

कलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहेड़े का फल या बीज। २-कलह। झगड़ा। ३-पाप। ४-क्लेश। ५-संग्राम। युद्ध। ६-कलियुग। ७-छंद में टगण का एक भेद (SSII)। ८-वीर। [वि.] (सं.) श्याम। काला।

कलिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। संग्राम।

कलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिना खिला फूल। कली। २-एक प्रकार का संस्कृत छंद। ३-अंश। भाग। ४-वीणा का मूल। ५-एक प्रकार का बाजा।

कलिकापूर्व [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का कारण अंशतः अज्ञात पूर्व हो (जैसे-जन्म आग्नेयादि यज्ञ) तथा जिसका फल या परिणाम (जैसे-स्वर्ग आदि) नितान्त अपूर्व या अज्ञातपूर्व हो।

कलिकारक [वि.] (सं.) १-झगड़ा करने वाला। २-झगड़ा लगाने वाला। [संज्ञा पु.] १-पूतिकरंज। २-नारदऋषि।

कलिकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियारी विष।

कलिकाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियुग।

कलित [वि.] (सं.) १-विदित। उक्त। २-शोभित सुसज्जित। सजाया हुआ। ३-प्राप्त। गृहीत। ४-सुन्दर।

कलिद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) बहेड़े का वृक्ष।

कलिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत के चार आचार्यों में से एक।

कलिप्रिय [वि.] (सं.) झगड़ालू। दुष्ट। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारदमुनि। २-बहेड़े का वृक्ष। ३-बन्दर।

कलिमल [संज्ञा पु.] (सं.) पाप। कलुष। गुनाह।

कलिया [संज्ञा पु.] (अ.) पकाया हुआ रसेदार मांस।

कलियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कली निकलना। अंकुरित होना। २-पक्षियों के नवीन पर निकलना।

कलियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती हैं।

कलियुग [संज्ञा पु.] (सं.) चार युगों में से चौथा। वर्तमान युग।

कलियुगाद्या [संज्ञा पु.] (सं.) माघ की पूर्णिमा जिससे कलियुग का आरंभ हुआ था।

कलियुगी [वि.] (सं.) १-कलियुग में उत्पन्न होने वाला। २-कुप्रवृत्त वाला। पापी। दुराचारी।

कलिल [वि.] (सं.) १-मिश्रित। मिला हुआ। २-गहन। घना। दुर्गम। [संज्ञा पु.] (सं.) समूह। ढेर।

कलिवर्ज्य [वि.] (सं.) जिसका करना कलियुग में निषिद्ध है।

कलिहारी [संज्ञा स्त्री.](सं.) कलियारी। करियारी।

कलींदा [संज्ञा पु.] (हिं.) तरबूज।

कली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिना खिला फूल। २-अक्षत योनि कन्या। ऐसी कन्या जिसका पुरुष के साथ समागम न हुआ हो। ३-पक्षियों का निकला हुआ नवीन पर या पंख। ४-कुरते में लगने वाला कटा हुआ तिकोना कपड़ा। ५-हुक्के के नीचे का भाग। ६-वैष्णवों का एक प्रकार का तिलक। ७-पत्थर या सीप का फुकाहुआ टुकड़ा जिससे चूना बनता है।

दिल की कली खिलना-चित्त प्रसन्न होना। *कच्ची कली*-अप्राप्तयौवना।

कलीट* [वि.] (हिं.) काला-कलूटा।

कलील [संज्ञा पु.] (अ.) थोड़ा कम।

कलीसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) ईसाइयों या यहूदियों की धार्मिक मंडली।

कलुख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कलुष'।

कलुखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कलुषाई।

कलुखी [वि.] (हिं.) देखो 'कलुषी'।

कलुवावीर [संज्ञा पु.] (हि.) जादू टोने का एक प्रधान देवता।

कलुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलिनता। मैलापन। २-पाप। दोष। ३-क्रोध। ४-भैंसा। [वि.] १-मलिन.। मैला। गंदा। २-निंदित। कुत्सित। ३-पापी। दोषी।

कलुषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मलिनता। २-अंधेरा। ३-घबराहट।

कलुषयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णसंकर। दोगला।

कलुषाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मलिनता। अपवित्रता। २-चित्त का विकार या दोष।

कलुषित [वि.] (सं.) १-दूषित। २-मलिन। मैला। ३-काला। ४-दुःखित। ५-क्षुब्ध। ६-असमर्थ। ७-पापी।

कलुषी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-पापिनी। दोषी। २-मलिन। गंदी। [पु. प्र.] १-मैला। गंदा। मलिन। २-पापी। दोषी।

कलूटा [वि.] (हिं.) अधिक काला। बहुत काले रंग का।

कलूना [संज्ञा पु.] (देश.) पंजाब का एक मोटा धान।

कलेऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रातःकाल का लघु भोजन। जलपान। कलेवा। २-विवाह के समय वर का प्रातःकाल का जलपान।

कलेजई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बैंगनी रंग।

कलेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) प्राणियों का एक भीतरी अवयव जो छाती के भीतर 'बाईं' ओर फैला हुआ होता है तथा जिससे नाड़ियों के सहारे शरीर में रक्त का संचार होता है। यकृत। हृदय। दिल। २-छाती। वक्षस्थल।

कलेजा उछलना-१-दिल धड़कना। २-आनंद विभोर होना। *कलेजा उड़ जाना*-होश बिगड़ना। *कलेजा काटना*-१-बहुत उलटी होने से जी घबराना। २-होस न रहना। *कलेजा काढ़ना*-१-हीरे की कनी या अन्य किसी विष से आँतों में छेद होना। २-दस्त में खून आना। ३-हृदय पर आघात करना। ४-बुरा लगना। ५-जलन होना। *कलेजा काढ़ना या काढ़ लेना*-१-सर्वस्व ले लेना। २-बहुत दुःख देना। ३-मोहित करना। ४-सब से अच्छी वस्तु छांट लेना। *कलेजा काढ़ के देना*-सबसे प्रिय या सार वस्तु देना। *कलेजा खाना*-१-बहुत तंग करना। २-बहुत तकाजा करना। *कलेजा खिलाना*-सब से प्रिय वस्तु देना। *कलेजा चीर कर दिखाना या रखना*-१-पूर्ण विश्वास दिलाना। २-सब कुछ दे देना। *कलेजा छलनी होना*-कष्ट सहते सहते दिल कमजोर हो जाना। *कलेजा छिदना या सालना* कठोर बातों से जी दुखना। *कलेजा छेदना, कलेजा बींधना*-बहुत कड़ी बातें कहना। *कलेजा टूक-टूक होना*-दिल पर चोट पहुँचाना। *कलेजा टूटना*-हिम्मत या उत्साह न रहना। *कलेजा टूक-टूक होना*-रंज से दिल फटना। दिल पर आघात लगाना। *कलेजा टूटना* हिम्मत टूटना। *कलेजा ठंडा करना*-संतुष्ट करना। अभिलाषा पूर्ण करना।

कलेजा ठंडा होना-शांति प्राप्त होना। कलेजा -

तर होना-१-धन का अभाव दूर होने से लापरवाह होना। २-चित्त को आनन्द मिलना। कलेजा तोड़-तोड़कर कमाना-बहुत मेहनत से कमाना। कलेजा थर-थर करना-दिल कांपना। कलेजा थामना (थाम लेना)-कष्ठ उठाने को जी कड़ा करना। कलेजा थाम कर बैठ जाना-१-मन मसोस कर रह जाना। २-संतोष करना। कलेजा थाम कर रोना-मन मसोसकर रोना। कलेजा दहलना-मन में हिचकिचाहट और घबराहट होना। २-दिल में धड़कन होना। कलेजा-धक-धक करना-डर से व्याकुल होना भयत्रस्त होना। कलेजा धक से जाना-१-डर से हृदय स्तब्ध हो जाना। २-भौचक्का रह जाना। कलेजा धड़कना-कलेजा डर से कांपना। कलेजा धड़काना-१-डरा देना। २-खटके में डाल देना। कलेजा निकल जाना-१-दम छूटना। २-बहुत व्याकुल होना। कलेजा निकलना-१-बहुत दुःख होना। २-सार वस्तु चली जाना। कलेजा निकलना-देखो 'कलेजा काढ़ना'। कलेजा निकालकर रख देना-१-मन की सब बातें प्रगट करना। २-सब कुछ अर्पण कर देना। कलेजा पक जाना-दुःखों से जी ऊब जाना। कलेजा पत्थर का होना-१-पीड़ा झेलने के निमित्त तैयार हृदय। २-दुःख सहते-सहते दिल सुन्न हो जाना। कलेजा पत्थर करना-१-चित्त दबाना। २-चित्त कठोर करना। कलेजा पानी होना-दया उदय होना। कलेजा फटना-१-हृदय में पीड़ा होना। २-ईर्ष्या होना। कलेजा बढ़ जाना-हौंसला या हिम्मत हो जाना।

कलेजा बैठ जाना-हृदय बैठना। हृदय की गति मन्द तथा संज्ञाशून्य होता जाना। कलेजा मलना-दिल दुखाना या कष्ट पहुँचाना। कलेजा मसोस कर रह जाना-देखो 'कलेजा थाम कर रह जाना'। कलेजा मुँह को या मुँह तक आना-१-मन विकल होना। २-दुःख होना। कलेजा सन्न होना-कलेजा धक हो जाना। कलेजा सुलगना-संताप होना। दिल जलना। कलेजा सुलगाना-अत्याधिक कष्ट देना। कलेजा हाथ भर का होना-१-उत्साह होना। २-सहनशक्ति होना। ३-विशाल होना। उदार होना। कलेजा हिलना-अत्याधिक भय होना। कलेजे का टुकड़ा-१-संतान। बेटा। लड़का। २-प्रिय व्यक्ति। कलेजे पर चोट आना-सदमा पहुँचना। कलेजे पर छुरी चल जाना, फेरना-दिल पर चोट पहुँचना। कलेजे पर पत्थर रखना-१-दिल पक्का कर लेना। २-धीरज धरना। कलेजे पर साँप लोटना-किसी बात को याद करके दुःख या जलन होना। कलेजे पर हाथ धरना या रखना-सच्ची बात को आत्मा स्वीकार करे। कलेजे पर हाथ रखकर देखना-अपने अन्तःकरण द्वारा निर्णय करना। कलेजे में आग लगना-बहुत दुःख होना। कलेजे में घुसना या बैठना-मन में विश्वास पैदा करके हृदय का भेद लेना। कलेजे में डालना-पास रखना। कलेजे से लगाकर रखना-१-प्रिय वस्तु को दूर न होने देना। २-बहुत प्रयत्नपूर्वक रक्षा करना। कलेजे से लगाना-छाती से लगाना।

कलेजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलेजे का मांस।

कलेटा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बकरी जिसकी ऊन के कम्बल बनते हैं।

कलेवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। देह। चोला २-ढाँचा।

कलेवर चढ़ाना-भैरव, महावीर आदि देवताओं की मूर्तियों पर तेल में मिले सेंदुर का लेप करना। *कलेवर बदलना*-१-चोला बदलना। २-एक रूप से दूसरे रूप में जाना। ३-जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नवीन मूर्ति स्थापित करना। ४-कायाकल्प होना। ५-पुराने वस्त्र उतारकर नये वस्त्र धारण करना।

कलेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जलपान। २-विवाह के समय वर को सुसराल में भोजन कराना। ३-पाथेय। संबल।

कलेवा करना-निगल जाना। खा जाना।

कलेश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्लेश।'

कलेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्लेश'।

कलैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीचे सिर और ऊपर पैर करके उलट जाने की क्रिया। कलाबाजी।

कलोईबोड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा साँप या अजगर जो बंगाल में पाया जाता है।

कलोपनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात मूर्छनाओं में से दूसरी।

कलोर [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बिना गाभिन हुई जवान बछिया।

कलोल [संज्ञा पु.] (हिं.) कल्लोल। आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। केलि।

कलोलना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

कलौंजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मंगरैल। २-एक प्रकार की तरकारी जो करेला, परवल, भिंडी आदि का पेट चीरकर उसमें मसाला भर तेल या घी में तलकर तैयार करते हैं।

कलौंस [वि.] (हिं.) कालापन लिये हुए। सियाही मायल।

[संज्ञा पु.] १-कालिख। कालापन लिये हुए। स्याही। २-कलंक।

कसौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुँगरा चावल।

कल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुकनी। चूर्ण। २-गूदा। पीठी। ३-घमंड। गर्व। ४-शठता। ५-मल। मैल। कीट। ७-कान का मैल। खूँट। ८-विष्ठा। ६-पाप। १०-अवलेह। ११-बहेड़ा।

कल्कफल [संज्ञा पु.] (सं.) अनार।

कल्कि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का दसवाँ अवतार।

कल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधि। विधान। २-वेद के छः अंगों में से एक जिसमें यज्ञ करने का विधान है। ३-वैद्यक में शरीर या किसी अंग को फिर से नया तथा निरोग करने का उपाय या युक्ति। जैसे-कायाकल्प। ४-प्रकरण। विभाग। जैसे-औषधकल्प। ५-एक प्रकार का नृत्य। ६-चौदह मन्वन्तर का एक काल या ४३२००००००० वर्ष होते हैं। [वि.] (सं.) समान। तुल्य। जैसे-ऋषिकल्प।

कल्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नापित। नाई। २-कचूर। ३-ग्रन्थकर्ता। [वि.] १-कल्पना करने वाला। रचने वाला। २-कटने वाला।

कल्पकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्पशास्त्र के रचयिता। २-नापित। नाई। [वि.] १-आरोपक। २-लगाने वाला। ३-वेश बनाने वाला।

कल्पक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) संसार का नाश। प्रलय।

कल्पगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगानदी।

कल्पतरु [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग का वह वृक्ष जो मुँहमांगी वस्तुएँ प्रदान करता है। कल्पवृक्ष।

कल्मद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कल्पतरु'।

कल्पन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रचना। बनावट। विधान।

कल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सजावट। बनावट। अच्छी रचना। २-वह शक्ति जो अन्तःकरण में नई और अनूठी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है। उद्भावना। ३-किसी एक वस्तु में दूसरी वस्तु का आरोप। अध्यारोप। जैसे-रस्सी को सांप समझने की भावना। ४-भावना। ५-अनुमान करना। मान लेना।

कल्पनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कैंची। कतरनी।

कल्पनीय [वि.] (सं.) कल्पना करने योग्य। अन्दाज के लायक।

कल्पपादक [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

कल्पलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कल्पवृक्षा।

कल्पवास [संज्ञा पु.] (सं.) माघ मास में महीने भर गंगा तटपर संयम के साथ रहना।

कल्पविटप [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

कल्पवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह रत्नों में से एक रत्न जो समुद्रमंथन के समय निकला था।

कल्पशाखी [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

कल्पसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक कर्मों के अनुष्ठान बतलाने वाला ग्रन्थ।

कल्पांत, कल्पान्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलय।

कल्पांतर, कल्पान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) संसार का

दूसरा निर्माण या उत्पत्ति।

कल्पातीत [वि.] (सं.) जिसका अन्त कल्प में भी न हो। नित्य।

कल्पित [वि.] (सं.) १-जिसकी कल्पना की गई हो। २-मनमाना। फर्जी। मनगढंत। ३-बनावटी। नकली।

कल्पितोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का उपमालंकार। जिसमें प्रकृत उपमा न मिलने से कल्पना की आवश्यकता होती है।

कल्पितार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) केवल तर्क करने के उद्देश्य से किसी बात के संबंध में यह कहना कि यदि ऐसा हुआ, (तो क्या होगा) हाईपाथेसिस।

कल्मलीक [वि.] (सं.) चमकीला।

कल्मष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। अघ। २-मैल। मल। ३-+पीव। ४-एक नरक।

कल्माष [वि.] (सं.) १-चितकबरा। २-काला।

कल्माषकंठ, कल्माषकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव

कल्माषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कालिन्दी। यमुना नदी।

कल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सवेरा। प्रातःकाल। २-मधु। शराब।

कल्यपाल [संज्ञा पु.] (सं.) कलवार।

कल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मद्य। शराब।

कल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगल। शुभ। भलाई। २-सोना। ३-एक राग जो श्रीराग का सातवाँ पुत्र माना जाता है। ४-बम्बई का एक उपनगर। [वि.] शुभ। अच्छा। भला।

कल्याणकर [वि.] (सं.) भलाई करने वाला।

कल्याणकामोद [संज्ञा पु.] (सं.) रात के प्रथम पहर में गाया जाने वाला संपूर्ण जाति का संकर-राग।

कल्याणकारक [वि.] (सं.) कल्याणप्रद।

कल्याणनट [संज्ञा पु.] (सं.) कल्याण और नट के संयोग से बनने वाला एक राग।

कल्याणप्रद [वि.] (सं.) मंगलप्रद।

कल्याणभार्या [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुरुष जो कई बार विवाह करे पर जिसकी प्रत्येक स्त्री मर जाय।

कल्याणी [वि.] (सं.) कल्याण करने वाली। सुन्दरी। [संज्ञा स्त्री.] १-गाय। २-माषपर्णी। ३-प्रयाग की एक देवी।

कल्यान+* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कल्याण'।

कल्लर [संज्ञा पु.] (हि.) १-नोनी मिट्टी। २-रेह। ३-ऊसर। बंजर।

कल्ला [संज्ञा पु.] (हि.) १-पौधे का अंकुर या गोंफा। २-नयी टहनी। ३-गाल के भीतर का भाग। ४-लालटेन या लैम्प का सिरा, जिसमें बत्ती जलती है। ५-झगड़ा। तकरार। *कल्ला चलना*-मुँह चलना या खाना। *कल्ला दबाना*-१-बोलने से रोकना। २-अपने सामने किसी और को बोलने देना। *कल्ले पाए*-सिर और पैर का मांस। *कल्ला मारना*-डींग हांकना। गाल बजाना।

कल्लातोड़ [वि.] (हिं.) १-मुँहतोड़। २-बराबरी का।

कल्लादराज [वि.] (फा.) कड़ी बातें कहने वाला। मुँहजोर।

कल्लादरजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बढ़बढ़कर बातें करना। मुंह जोरी।

कल्लाना [क्रि. अ.] (हि.) १-चमड़े के ऊपरी भाग में जलन होना। जैसे-थप्पड़ लगने से। २-दुखदाई होना।

जी कल्लाना-चित्त को दुःख पहुचाना।

कल्लू [वि.] (हि.) काला। कलूटा।

कल्लेदराज [वि.] देखो 'कल्लादराज'।

कल्लेदराजी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कल्लादराजी'।

कल्लोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी की लहर। तरंग। मौज। उमंग। आमोद-प्रमोद। आनन्द। हर्ष।

कल्लोलित [वि.] (सं.) १-लहराती हुई। तरंगित। २-आनन्दित। हर्षित।

कल्लोलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी। कल्लोल करने वाली नदी।

कल्लोलिनी-वल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र।

कल्व [संज्ञा पु.] (सं.) वास्तु या भवननिर्माण कला के अन्तर्गत द्वार के वह किनारे जो नुकीले बनाये जाते हैं।

कल्ह+ [क्रि वि.] (हि.) देखो 'कल'।

कल्हक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कबूतर के आकार की एक चिड़िया।

कल्हर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कल्लर'।

कल्हरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-भुनना। कड़ाही में तलना। २-दुःख से कराहना। पीड़ायुक्त शब्द करना।

कल्हारना+ [क्रि. स.] (हिं.) कड़ाही में डालकर भूनना या तलना।

[क्रि. अ.] दुःख से कराहना। चिल्लाना।

कवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-केवल। ग्रास। २-कुकुरमुत्ता। छत्रक।

कवच [संज्ञा पु.] (सं.) १-आवरण। छाल। छिलका। २-जिरहबख्तर। तनुत्राण। सँजोया। ३-लड़ाई का एक बड़ा नगारा।

कवचपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

कवचित [वि.] (सं.) १-कवच द्वारा सुसज्जित। कवच धारण किये हुए। २-बख्तरबंद।

कवचित-अक्षौहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यन्त्र-संज्जित डिविजन। अस्त्रशस्त्र से सज्जित सेना।

कवचित-यान [संज्ञा पु.] (सं.) (तनुत्राण) बख्तरबन्द मोटर गाड़ी।

कवचित-रणपोत [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई या युद्ध का वह लड़ाकू जलयान या जहाज जो आधुनिक अस्त्रशस्त्र से सज्जित हो। बख्तरबन्द जहाज।

कवचित-रेलगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यन्त्र-सज्जित रेलगाड़ी।

कवची [वि.] (हि.) कवच धारण करने वाला। कवचयुक्त।

[संज्ञा पु.] शिव।

कवटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपाट। किवाड़ी।

कवन* [सर्व. वि.] (हि.) देखो 'कौन'।

कवयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली। सुंभा।

कवर [संज्ञा पु.] (हि.) १-ग्रास। कौर। निवाला।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-केशपाश। जुल्फ। २-गुच्छा। ३-नमक। ४-लोनापन। खटाई। ५-चितकबरा।

[संज्ञा पु.] (अ.) १-ढकना। २-आच्छादन। वेठन। ३-पुस्तकों के ऊपर चढ़ाने का कागज। ४-लिफाफा।

कवरना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'कौरना'।

कवरा, कवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोटी। जूड़ा। वेणी।

कवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) क, ख, ग, घ, ङ आदि पांच वर्णों का समूह।

कवल [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रास। कौर।

कवलग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) दवा तौलने में काम आने वाली एक प्राचीन तौल।

कवलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घाव या फोड़े पर बांधी जाने वाली गद्दी।

कवलित [वि.] (सं.) खाया हुआ। निगला हुआ। भक्षित।

कवलीकृत [वि.] (सं.) देखो 'कवलित'।

कवाट [संज्ञा पु.] (सं.) कपाट। किवाड़।

क़वाभ [संज्ञा पु.] (अ.) शहद के समान पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। किमाम। चाशनी। शीरा।

क़वायद [संज्ञा पु.] (अ.) १-नियम। व्यवस्था। २-व्याकरण के नियम। ३-सेना के युद्ध करने के नियम, युद्ध के नियमों का अभ्यास।

कवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-एक प्रकार का जलपक्षी।

कवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-छंद या कविता का रचयिता। शायर। २-पंडित। ३-शुक्र। ४-सूर्य। ५-ब्रह्मा। ६-ऋषि।

कविक [संज्ञा पु.] (सं.) लगाम।

कविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लगाम। २-केवड़े

का फूल । ३-कवई मछली ।

कविज्येष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) आदिकवि वाल्मीकि।

कविता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काव्य । पद्यमय वर्णन।

कविताई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कविता'।

कवित्त [संज्ञा पु.] (हि.) १-कविता । काव्य । २-दंड के अन्तर्गत ३१ अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८, ८, ८, ७ के ऊपर विराम होती है।

कवित्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-काव्य की रचना। शक्ति । २-काव्य का गुण ।

कविनासा‡ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कर्मनासा ।

कविराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठ कवि । २-भाट । ३-वैद्यों की उपाधि ।

कविराय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कविराज'।

कविलास‡ [संज्ञा पु.] (हि.) १-कैलास । २-स्वर्ग ।

कविलासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वीणा ।

कविवर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठ कवि ।

कविशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ताल के ६१ मुखभेदों से एक ।

कवीठ [संज्ञा पु.] (हिं.) कैथा ।

कवेरा [संज्ञा पु.] (हि.) ग्रामीण । देहाती ।

कवेला [संज्ञा पु.] (हि.) कौए का बच्चा ।

कवोष्ण [वि.] (सं.) थोड़ा गरम । गुनगुना ।

कव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह अन्न जो पितरों के निमित्त दिया जावे ।

कव्यवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह अग्नि जिसमें पिंड से पितृयज्ञ में आहुति दी जाती है।

कश [संज्ञा पु.] (सं.) चाबुक । [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-खिंचाव । २-हुक्के, चिलम आदि की दम ।

कशमकश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-खींचातानी । आकर्षण । २-भीड़ । धकमधका । ३-आगा-पीछा । सोच-विचार । असमंजस ।

कशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रस्सी । २-कोड़ा । चाबुक ।

कशिक [संज्ञा पु.] (सं.) नकुल । नेवला ।

कशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़े की चाबुक ।

कशिपु [संज्ञा पु.] (फा.) १-तकिया । २-बिछौना । ३-पहनावा । कपड़ा । ४-अन्न । ५-भात ।

कशिश [संज्ञा पु.] (फा.) खिंचाव । आकर्षण ।

कशीदपा [संज्ञा पु.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच ।

कशीदा [संज्ञा पु.] (फा.) कपड़े पर सुई और धागे से निकला हुआ काम ।

कशेरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीठ की रीढ की हड्डी। २-एक प्रकार की घास जिसके ठोस भाग को खाया जाता है।

कशेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कशेरु'।

कशेरुका [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ की रीढ की हड्डी

कशेरू [संज्ञा पु.] देखो 'कसेरू'।

कश्चिन् [वि.] (सं.) कोई । एक न एक । [सर्व.] (सं.) कोई (व्यक्ति) ।

कश्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नौका । नाव । २-शतरंज का एक मोहरा । ३-पान, मिठाई आदि रखने के निमित्त धातु अथवा काठ की एक प्रकार की थाली ।

कश्मल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप । २-मोह । ३-मूर्छा । बेहोशी । ४-अंबरवारी ।

कश्मीर [संज्ञा पु.] (सं.) पंजाब के उत्तर में हिमालय से घिरा हुआ पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य तथा उर्वरता के कारण जगत प्रसिद्ध है।

कश्मीरज [संज्ञा पु.] (सं.) केसर ।

कश्मीरी [वि.] (हिं.) कश्मीर का या कश्मीर में उत्पन्न । [संज्ञा स्त्री.] कश्मीर देश की भाषा ।

कश्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा । शराब ।

कश्यप [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वैदिक कालीन ऋषि का नाम । २-एक प्रजापति का नाम । ३-कच्छप । कछुआ । ४-एक प्रकार की मछली ५-एक प्रकार का मृग । ६-सप्तऋषि मंडल में से एक तारे का नाम । [वि.] १-शराबी । २-काले दाँतवाला ।

कष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सान । २-कसौटी । (पत्थर) ३-जाँच । परीक्षा ।

कषण [संज्ञा पु.] (सं.) घर्षण । रगड़ ।

कषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कशा । चाबुक ।

कषाय [वि.] (सं.) १-कसैला । २-सुगंधित । ३-रंगा हुआ । ४-गैरिक । [संज्ञा पु.] १-कसैला पदार्थ । २-गोंद । ३-क्वाथ । ४-क्रोधलोभादि विकार । ५-कलियुग ।

कषायता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कसैलापन ।

कषायफल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुपारी ।

कषायित [वि.] (सं.) लाल रंगा हुआ ।

कषित [वि.] (सं.) १-चोट खाया हुआ । २-परीक्षित ।

कष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्लेश । पीड़ा । दुःख । व्यथा । २-संकट । आपत्ति ।

कष्टकल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत खींचखांच कर कठिनता से बैठने वाली युक्ति ।

कष्टकारक [वि.] (सं.) क्लेश देने वाला । दुःख का कारण ।

कष्टजीवन [वि.] (सं.) कष्ट से जीवन निर्वाह करने वाला ।

कष्टतर [वि.] (सं.) अधिक कष्ट देने वाला ।

कष्टलभ्य [वि.] (सं.) कठिनता से प्राप्त होने वाला ।

कष्टसह [वि.] (सं) कष्ट या दुःख सहने वा

कष्टसाध्य [वि.] (सं.) कठिनता से होने वा

कष्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसव पीड़ा वाली स्त्री ।

कस [संज्ञा पु.] (सं.) १-परीक्षा । कसौ जांच । २-तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परीक्षा होती है । बल । जोर । ४-वश । काबू । ५-अवरो रोक । ६-कसाव का संक्षिप्त रूप । तत्व ।

‡+ [क्रि. वि.] (हि.) कैसे ? । क्यों ? । कसका-वश का । अधीन । कस में करना रखना-अधीन रखना । कस की गोदी- का एक पेंच ।

कसई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कसी' या 'केसई'।

कसक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-हलका या मीठा दर्द । टीस । साल । २-पुराना वैर । ३-अर मान । अभिलाषा । ४-हमदर्दी । सहानुभूति कसक निकालना या काढ़ना-पुराने वैर का बदला लेना । कसक मिटाना या निकालना हौसला पूरा करना ।

कसकना [क्रि. अ.] (हि.) टीसना । दर्द करना सालना ।

कसकुट [संज्ञा पु.] (हिं.) तांबा और जस्ते समान मिश्रण से बनने वाली धातु । कांसा भरत ।

कसगर [संज्ञा पु.] (हि.) मिट्टी के छोटे बरतन बनाने वाले जो प्रायः मुसलमान होते हैं।

कसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसने की क्रिया । २-कसने की दशा या ढंग । ३-कसने की रस्सी ४-घोड़े की तंग ।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) दुःख । क्लेश।

कसनई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक चिड़िया जिसके पंख काले तथा छाती और पीठ लाल होती है

कसना [क्रि. स.] (हि.) १-बांधने के समय दृढ़ करने के लिए रस्सी आदि खींचना । २-बंधन खींचकर बंधी हुई वस्तु को खूब दबाना ३-जकड़ना । बाँधना । ४-पुरजों का दृढ़ करके बैठाना । ५-साज रखकर सवारी तैयार करना ६-ठूंस-ठूंस कर भरना । ७-कसौटी पर चढ़ाना । ८-परखना । ९-तलना । घी में खूब भूनना । १०-क्लेश देना । पीड़ा पहुँचाना। कसकर-१-खींचकर । बलपूर्वक । २-पूरा-पूरा कसा तौसना-कम तौलनां । कसाकसाया-चलने के निमित्त बिलकुल तैयार ।

[क्रि. अ.] (हि.) १-बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय । २-बंधना । खूब भर जाना ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-बेठन । २-पिटारी या तकिए आदि का गिलाफ । ३-एक प्रकार का जहरीला मकड़ा । ४-जिससे कोई वस्तु कसी जाय ।

कसनि [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'कसन'।

कसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–रस्सी। २–चोली। ३–वेठन। गिलाफ। ४–कसौटी। ५–परीक्षा। जांच। परख ६–हथौड़ी। कसैला काढ़ा।

कसब [संज्ञा पु.] (अ.) १–पेशा। परिश्रम। २–व्यभिचार। छिनाला।

कसबल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शक्ति। सामर्थ्य। बल। २–साहस। हिम्मत।

कसबा [संज्ञा पु.] (अ.) गांव से बड़ी और शहर से कम आबादी।

कसबाती [वि.] (हिं.) १–कसबे का रहने वाला। २–जो कसबे में हो।

कसबिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कसबी'।

कसबी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वेश्या। रंडी। पतुरिया। २–व्यभिचारिणी स्त्री। छिनाल औरत।

कसम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शपथ। सौगन्ध। *कसम उतारना*–१–सौगन्ध का प्रभाव दूर करना। २–किसी काम को केवल नाममात्र को करना। *कसम देना, दिलाना, रखाना*–किसी को किसी सौगन्द द्वारा किसी कार्य के लिए बाध्य करना। *कसम लेना*–सौगन्द उठाने के लिए बाध्य करना। *किसी काम की कसम खाना*–किसी बात की प्रतिज्ञा करना। *कसम तोड़ना*–प्रतिज्ञा भंग करना। *कसम खाने को*–नाम-मात्र को।

कसमसाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–उकताकर हिलना डोलना। कुलबुलाना। २–विचलित होना। बेचैन होना। ३–आगा-पीछा करना। हिचकना।

कसमसाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कुलबुलाहट। २–व्यग्रता। व्याकुलता। घबराहट। बेचैनी।

कसमसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कसमसाहट'

कसर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–कमी। न्यूनता। त्रुटि। २–मनमोटाव। द्वेष। बैर। ३–हानि। घाटा। ४–विकार। द्वेष। ५–किसी वस्तु के सूखने या कूड़ा निकालने की कमी। *कसर करना*–कम करना। *कसर खाना*–घाटा उठाना। *कसर निकालना*–१–कमी पूरी कर लेना। २–बदला लेना। *कसर पड़ना*–घाटा पड़ना। *कसर रखना*–द्वेष या मनमोटावा रखना।

कसरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–व्यायाम। मेहनत। २–अधिकता। बढ़ती।

कसरती [वि.] (हिं.) १–कसरत करने वाला। २–(कसरत द्वारा) पुष्ट तथा बलवान।

कसरवानी [संज्ञा पु.] (हिं.) बिहारी बनियों की एक जाति।

कसरहट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बाजार जहां कसेरे बरतन बनाते और बेचते हैं।

कसली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पतली धार वाला छोटा फावड़ा।

कसवाना [क्रि.स.] (हिं.) कसने का कार्य दूसरे से कराना। कसने में प्रवृत्त करना।

कसवार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा गन्ना या ऊख।

कसहँड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कांसे के बरतनों के टूटेफूटे टुकड़े।

कसहँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कसहँड़ी'।

कसहँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौड़े मुह का कांसे या पीतल का बरतन जो खाने पकाने के काम आता है।

कसाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बधिक। बूचड़। [वि.] (हिं.) निष्ठुर। निर्दय। क्रूरहृदय। *कसाई के खूटे बँधना*–निर्दयी के पाले पड़ना

कसाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–कसैला हो जाना। २–स्वाद में कसैला लगना। [क्रि. स.] कसवाना।

कसार [संज्ञा पु.] (हिं.) चीनी मिला घी में भुना हुआ आटा या सूजी।

कसाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–क्लेश। कष्ट। २–श्रम। परिश्रम। मेहनत। ३–वह खटाई का मसाला जिससे सुनार गहने साफ करते हैं।

कसाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कसने का भाव। २–कसैलापन। ३–आकर्षण। खिचाव।

कसावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कसने या तनने का भाव। खिंचावट।

कसबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कसाई।

कसिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया जिसका रंग भूरा होता है।

कसियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) कसावयुक्त होना।

कसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पृथ्वी नापने की एक रस्सी जो ४६ इंच की होती है। २–हल की कुसी। ३–एक पौधा।

कसीटना⁕ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'कसना'।

कसीदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कशीदा'।

क़सीदा [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार की फारसी या उर्दू की कविता जो १७ पंक्तियों से कम नहीं होती।

कसीस [संज्ञा पु.] (हिं.) एक खनिज पदार्थ जो लोहे का विकार है।

कसीसन⁕ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'खींचना'।

कसूँभी [वि.] (हिं.) १–कुसुभ-पुष्प के रंग से हुआ। २–कुसुम के रंग का।

कसून [संज्ञा पु.] (देश.) कंजी आँख का घोड़ा।

कसूमर [संज्ञा पु.] देखो 'कुसुम'।

क़सूर [संज्ञा पु.] (अ.) अपराधी। दोषी।

क़सूरमंद, मन्द [वि.] (फा.) अपराधी। दोषी।

कसूरवार [वि.] (फा.) देखो 'कसूरमंद'।

कसेरहट्टा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कसरहट्टा'।

कसेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) काँसे फूल आदि के बरतन बनाने और बेचने वाला।

कसेरू [संज्ञा पु.] (हिं.) मोथे की गठीली जड़ जो स्वाद में मीठी होती है।

कसैया⁕+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कसने वाला या कस कर बांधने वाला। २–परखने वाला। जाँचने वाला।

कसैला [वि.] (हिं.) कषाय स्वाद वाला। कसने वाला। जीभ को ऐंठने वाला।

कसैलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) कसैला होने का भाव।

कसैली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुपारी।

कसोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कटोरा। मिट्टी का प्याला।

कसौंजा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जो बरसात में उगता है। यह बढ कर आदमी के कद के बराबर हो जाता है। उसकी पत्तिया और बीज बवासीर रोग में दवा के रूप में प्रयोग की जाती है।

कसौंजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कसौंजा'।

कसौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कसौंजा'।

कसौंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कसौंजा'।

कसौटी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक विशेष काला पत्थर जिस पर रगड़ कर सोने के खोटे खरे की परख की जाती है। २–परख। जाँच। परीक्षा।

कसौली [संज्ञा पु.] (?) शिमले के पास का एक पहाड़ी स्थान जहां कुत्ते और स्यार के काटे की चिकित्सा होती है।

कस्तरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध पका कर रखने का पात्र।

कस्तुरिका [संज्ञा स्त्री](सं.) कस्तूरी। मुश्क।

कस्तूर [संज्ञा पु.] (हिं.) कस्तूरी मृग। वह मृग जिसकी नाभि में से एक सुगंधित वस्तु निकलती है, उसी को कस्तूर या कस्तूरी कहते हैं।

कस्तूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कस्तूरी मृग। २–वह सीप जिसमें मोती निकलता है। ३–एक पुष्टिदायक औषधि।

कस्तूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

कस्तूरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) कस्तूरी मृग। [वि.] १–कस्तूरी वाला। कस्तूरी मिश्रित। २–कस्तूरी के समान रंग वाला। मुश्की।

कस्तूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के हिरन या मृग की नाभि में से निकलता है। *कस्तूरी हो जाना*–किसी वस्तु का बहुत महंगा हो जाना।

कस्तूरी-मृग [संज्ञा पु.] (सं.) वह हिरन या मृग

जिसकी नाभि में से कस्तूरी नामक सुगन्धित-द्रव्य निकलता है।

कस्द [संज्ञा पु.] (अ.) संकल्प। इरादा। विचार।

कस्सर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लंगर खींचना या उठाना।

कस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बबूल की छाल जिससे चमड़ा कमाया जाता है। २–बबूल की छाल से बनने वाली मदिरा।

कस्साचना [संज्ञा पु.] देखो 'केसारी'।

क़स्साब [संज्ञा पु.] (अ.) कसाई।

कस्सी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भूमि खोदने का छोटा फावड़ा। २–भूमि की एक नाप जो दो कदम के बराबर होती है।

कहँ* [प्रत्य.] (हिं.) के लिये।
* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'कहाँ ?'।

कहकहा [संज्ञा पु.] (अ.) अट्टहास। जोर की हँसी।

कहकहादीवार [संज्ञा पु.] (फा.) १–चीन की प्रसिद्ध ऊँची दीवार। २–कठिन रोक जो किसी तरह पार न की जा सके।

कहगिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दीवार में लगाने की मिट्टी या गारा।

क़हत [संज्ञा पु.] (अ.) दुर्भिक्ष। अकाल।

कहतरी [संज्ञा स्त्री.] हिं.) देखो 'कस्सरी'।

कहतसाली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दुर्भिक्ष का समय।

कहता [संज्ञा पु.] (हिं.) कहने वाला व्यक्ति।
[वि.] कहने वाला।

कहतूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रसिद्ध वार्ता।

कहन [संज्ञा स्त्री.] १–कथन। उक्ति। २–वचन। बात। ३–कहावत। कहनूत। ४–कविता। शायरी।

कहना [क्रि. स.] (हिं.) १–बोलना। शब्दोच्चारण द्वारा अभिप्राय प्रकट करना। वर्णन करना। २–प्रकट करना। खोलना। जाहिर करना। ३–सूचना या खबर देना। ४–पुकारना। ५–समझाना बुझाना। ६– बहकाना। बातों में भुलाना। ७–अयुक्त बात बोलना। भला बुरा बोलना। ८–कविता करना। उक्तिबौधना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) कथन। अनुरोध। आज्ञा।
कहना बदना–१–निश्चय करना। २–ललकार कर। खुले-खजाने। *कहने को*–१–नाममात्र को २–भविष्य में स्मरण के लिए। *कहने की बात* वह बात जो वास्तव में न हो।

कहनाउत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो कहनावत'।

कहनावत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कहावत। मसल। २–बात। कथन।

कहनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कहन'।

कहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कथन। बात। २–कथा। कहानी।

कहनूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कहावत। मसल।

क़हर [संज्ञा पु.] (अ.) संकट। आफत। विपत्ति।
कहर का–१–कठिन। २-भयानक। *कहर करना* १–अत्याचार करना। २–अनोखा काम करना ३–अमानुष कृत्य। *कहर टूटना*–दैवी विपत्ति पड़ना।
[वि.] (अ.) अगम। अपार। भयंकर।

कहरना [क्रि. अ.] (हिं.) कराहना।

कहरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पांच मात्राओं का एक ताल। २-कहरवा ताल पर गया जाने वाला दादरा गीत। ३–कहरवा ताल पर होने वाला नाच।

कहरी [वि.] (हिं.) कहर करने या विपत्ति ढाने वाला।

कहरुबा [संज्ञा पु.] (फा.) १–एक प्रकार का गोंद जो दवा के काम में आती है। २–एक प्रकार का वृक्ष।

कहल*+ [संज्ञा पु.] (देश.) १–उमस। औंस। २–ताप। कष्ट।

कहलना* [क्रि. अ.] (हिं.) गरमी से व्याकुल होना। अकुलाना। दहलना।

कहलवाना [क्रि. स.] (हिं.) कहने का कार्य अन्य से कराना।

कहलाना [क्रि. स.] (हिं.) १–दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २–सँदेसा भेजना। ३–पुकारा जाना।

कहवाँ*+ [क्रि. वि.] (हिं.) कहाँ। किस स्थान पर।

क़हवा [संज्ञा पु.] (अ.) एक पेड़ का बीज जिसे कूटकर चाय के समान पकाकर पीते हैं।

कहवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'कहलाना'।

कहवैया+ [वि.] (हिं.) कहने वाला।

कहाँ [क्रि. वि.] (हिं.) किस जगह ? किस स्थान पर ?
कहां का–१–असाधारण। बड़ा भारी। २–कहीं का नहीं। जो नहीं है। *कहां का कहां*–बहुत दूर। *कहां से*–१–क्यों व्यर्थ में। २–नहीं। *कहाँ की बात*–यह बात उचित नहीं। *कहां तक*–१–कितनी दूर तक। २–कितने परिमाण तक। ३–कितनी देर तक। *कहाँ से*–१–क्यों ?। व्यर्थ। नाहक। २–कभी नहीं।
[संज्ञा पु.] (हिं.) तुरन्त के उत्पन्न शिशु के रोने की ध्वनि।

कहा [संज्ञा पु.] (हिं.) कथन। कहना। बात। आज्ञा। उपदेश।
* [क्रि. वि.] (हिं.) कैसे। किस प्रकार से।
*+ [सर्व.] (हिं.) क्या। (ब्रज)।
[वि.] (हिं.) क्या। जैसे-कहा वस्तु।

कहाना [क्रि. स.] (हिं.) कहलाना।

कहानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कथा। किस्सा। आख्यायिका। २–मिथ्या वचन। झूठी या मनगढंत बात।
कहानी जोड़ना–आख्यायिका रचना बनाना।

कहार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति जो पानी और डोली लेकर चलने का काम करती है।

कहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा टोकरा। झौवा।

कहाल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का

कहावत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बोलचाल में आने वाला ऐसा बंधा चमत्कारपूर्ण जिसमें कोई अनुभव या तथ्य संक्षेप में कहीं गई हो। लोकोक्ति। २–कही हुई बात। उक्ति।

कहासुना [संज्ञा पु.] (हिं.) अनुचित वचन व्यवहार। भूलचूक।

कहासुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वादविवाद। झगड़ा। तकरार।

कहिया [क्रि वि.] (हिं.) किस समय। कब।
[संज्ञा पु.] (हिं.) रांगे से जोड़ने औजार।

कहीं [क्रि. वि.] (हिं.) १–किसी निश्चित में ऐसे स्थान में जिसका ठीक ठिकाना २–नहीं। कभी नहीं। ३–कदाचित्। ४–बढ़कर।
कहीं आकर–बहुत दिनों में। *कहीं और*– जगह। *कहींकहीं*–१–किसी-किसी २–बहुत कम। *कहीं का*–जो पहले न *कहीं का न रहना या होना*–किसी भी न रहना। *कहीं ....न*–ऐसा न हो *कहीं ...तो नहीं*–प्रश्न के रूपमें तथा आशा प्रकट करने के लिए।

कहुँ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'कहूँ'।

कहुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक औषधि जो चीनी, मिर्च तथा सोंठ को आग पर बनती है। यह दवा जुकाम (सरदी) में जाती है।

कहूं* [क्रि. वि.] (हिं.) किस स्थान पर।

काँइयां [वि.] (हिं.) धूर्त्त। चालाक।

काँई* [अव्य.] (हिं.) क्यों।
[सर्व.] (हिं.) किसे। किसको।

काँक [संज्ञा पु.] (हिं.) कँगनी नाम का

काँकड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) बिनौला। का बीज।

काँकर* [संज्ञा पु.] (हिं.) कंकड़।

काँकरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कंकड़ी।
काँकरी चुनना–चुपचाप मन मार कर बैठना।

काँकाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) कौए की बोली।

काँकुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कँगनी'।

कांक्षनीय [वि.] (सं.) अभिलाषा करने योग्य। चाहने लायक।

कांक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इच्छा। अभिलाषा। चाह।

कांक्षित [वि.] (सं.) इच्छित। अभिलाषित। चाहा हुआ।

कांक्षी [वि.] (सं.) चाहने वाला। इच्छा रखने वाला। [संज्ञा स्त्री.] सुगंधित मिट्टी।

काँख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा। बगल।

काँखना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पीड़ा या श्रम की अवस्था में दुःखसूचक शब्द उच्चारण करना। उँहआँह शब्द निकलना। कराहना। २-मलत्याग के लिए पेट की वायु नीचे दबाना।

काँखा-सोती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुपट्टे को दाहिनी बगल के नीचे से लेजा कर बाएँ कन्धे पर डालना।

कांखी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कांक्षी'।

कांगड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) पंजाब का एक जिला। २-भूरे रंग का एक पक्षी।

कांगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी अंगीठी जिसे काश्मीरी लोग सरदी के दिनों गले से लटकाए रहते हैं।

काँगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कंगनी'।

कांग्रेस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-वह महासभा जिसमें देश के भिन्न-भिन्न स्थानों के प्रतिनिधि एकत्र होकर राजनैतिक विषयों पर अपना विचर प्रगट करते हैं। २-अमेरिका की राजसभा।

कांछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धोती का वह छोर जिसे दोनों जाँघों के बीच से लेजाकर पीछे कमर में खोंसते हैं। लांग। २-गुदा का भीतर का भाग। गुदाचक्र। गुदावत्त।

काँछ खोलना-१-प्रसंग करना। २-साहस छोड़ना। हिम्मत हारना।

कांछ निकलना-१-बेदम करना। बहुत चोट या कष्ट पहुँचाना। १-बहुत परिश्रम करना।

कांछ निकालना-१-अत्याधिक परिश्रम लेना। २-चोट या कष्ट पहुँचाना।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक मिश्र धातु जो वालू और रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है और पारदर्शक होती है इसके गिलास, बोतल, चूड़ियां आदि नाना प्रकार की वस्तुएँ बनती हैं। शीशा।

कांचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। स्वर्ण। २-कचनार। चम्पा। ४-गूलर। ५-नागकेशर। ६-धतूरा।

कांचनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंपा। २-हरताल।

कांचनजंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) नैपाल और सिक्कम के मध्य एक हिमालय की चोटी।

कांचनार [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार।

कांचनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हलदी। २-गोरोचन

कांचरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कांचली'।

कांचली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साप की केंचुली।

काँचा* [वि.] (हिं.) १-अपक्व। कच्चा। २-दुर्बल। अस्थिर। अदृढ़।

काचा मन-कच्चा मन। *मन काचा होना*-उत्साह और दृढ़ता का अभाव।

कांची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेखला। करधनी। २-गोटा। ३-गुंजा। घुंघची। ४-मदरास के पास का एक तीर्थस्थान जिसे अब कांजीवरम् कहते हैं।

कांचीकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) मेखला। करधनी।

कांचीगुणस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) पुट्ठा। कमर।

कांचीपद [संज्ञा पु.] (सं.) पुट्ठा। कमर।

कांचीपुर [संज्ञा पु.] (सं.) कांची। कांजीवरम्।

कांचीपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कांची। कांजीवरम्।

कांचू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) केंचुल। [वि.] जिसे कांच निकलने का रोग हो।

काँछना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'काछना'।

कांछा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अभिलाषा। कांक्षा।

कांजिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कांजी। २-चावल का मांड जो पर्याप्त समय रहने से उठ गया हो। पचुई।

[वि.] (सं.) सिरके कांजी आदि से सम्बन्ध रखने वाला या इनके स्वाद का। खट्टा। (एसेटिक)

कांजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवंती लता।

काँजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पिसी हुई राई आदि घोलकर बनाया हुआ एक प्रकार का खट्टा रस। २-मठा। छाछ।

काँजीवरम् [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कांची'।

काँजीहाउस [संज्ञा पु.] (अ.) खेती आदि को हानि पहुँचाने वाले लावारिस चौपायों को बन्द करने का स्थान।

काँजीहौद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कांजीहाउस'।

काँट* [संज्ञा पु.] (हिं.) कांटा।

काँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वृक्ष की टहनियों के नुकीले अंकुर जो सूई के समान होते हैं। कंटक। २-मोर, मुर्गा, तीतर आदि के पैर के पंजे पर निकलने वाला कांटा। ३-मैना के गले का कांटा। ४-जीभ पर उभरने वाले छोटी फुंसियां। ५-लोहे की मुड़ी या सीधी कील। ६-नोंकदार अँकुड़ी कंटिया जिससे मछली फांसते हैं। ७-कूएं में पड़ी आदि पात्रों को निकालने का अंकुड़ियों का गुच्छा। ८-सूई या कील के समान कोई नुकीली वस्तु। ९-लोहे की वह तराजू जिसके ऊपर मध्य में डांडी पर कांटा होता है। १०-नाक का एक आभूषण। कील। लौंग। ११-त्रिशूल के समान एक उपकरण जिससे पाश्चात्य ढंग के लोग भोजन खाते हैं। १२-गणित में शुद्धाशुद्ध के जांच की एक क्रिया। १३-एक प्रकार की आतिशबाजी।

कांटा खटकना-संदेह होना। *कांटा चुभोना*-तंग करना। *कांटा निकलना या निकल जाना*-सन्देह, बाधा, जलन, या दुःख मिटाना। *काँटा निकालना*-१-खटका मिटाना। बाधा या कष्ट दूर करना। *काँटा बोना*-१-अनिष्ट या बुराई पैदा करना। २-अड़चन डालना। *काँटा सा खटकना*-अच्छा न लगना। *काँटा सा होना*-बहुत दुबला-पतला होना। *काँटी खाना*-कैद काटना। *काँटे की*-सुसंगत। नपी-तुली। *काँटों पर लोटना*-१-बेचैन होना। २-ईर्ष्या या जलन होना। *काँठों में उलझना*-विपत्ति में फंसना। *कांटों में खींचना या घसीटना*-१-किसी की आवश्यकता से अधिक बड़ाई करके उसे शरमिन्दा करना। २-बहुत दुःख देना। *काँटों में फँसना*-कठनाई में पड़ना।

कांटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा महीन कांटा। २-कील। ३-अंकुड़ी। ३-बेड़ी।

कांटेदार [वि.] (हिं.) कांटा लगा हुआ। कांटों से युक्त।

कांठा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कंठ। गला। २-तोते के गले की लाल रेखा। ३-तट। किनारा ४-पार्श्व। ५-बाना चढ़ाने की जुलाहे की लकड़ी।

कांड [संज्ञा पु.] (सं.) १-बांस का दो गांठों के मध्य का भाग। पोर। २-सरकंडा। ३-वृक्षों का तना। ४-शाखा। डाली। ५-किसी कार्य अथवा विषय का विभाग। ६-धनुष के बीच का मोटा भाग। ७-समूह। ८-बाण। ९-डाँड। बल्ला। १०-निर्जन स्थान। एकांत। ११-अवसर। १२-प्रशंसा। खुशामद। १३ जल। [वि.] कुत्सित। बुरा।

कांडतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

कांड़ना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-रौंदना। २-कुचलना। २-खूब मारना।

कांडपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारी धनुष। २-कर्ण के धनुष का नाम। ३-धनुष बनाकर जीविका कमाने वाला ब्राह्मण। ४-सिपाही। ५-अपने कुल को त्याग अन्य कुल में मिलने वाला व्यक्ति।

काँडली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोनी। कुलफा।

काँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वृक्षों का एक रोग। २-दाँव में लगने वाला कीड़ा। ३-लकड़ी का कीड़ा।

काँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ओखली गडढा। बांस या लकड़ी का लट्ठा। ३-अरहर की सूखी लकड़ी।

काँड़ी कफ़न-मुरदे की अरथी का सामान।

कांत, कान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-पति। २-चन्द्रमा। ३-कुंकुम। ४-वसंत ऋतु। ५-

विष्णु। ६-शिव। ७-एक प्रकार का लोहा। ८-हिंजल का पेड़।
[वि.] १-सुन्दर। २-प्रिय।

कांतता, कान्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौंदर्य। २-स्वामित्व।

कांतत्व, कान्तत्व [संज्ञा. पु.] (सं.) देखो 'कांतता'

कांतपाषाण, कान्तपाषाण [संज्ञा पु.] (सं.) चुम्बक पत्थर।

कांतलोह, कान्तलोह [संज्ञा पु.] (सं.) कांतसार।

कांतसार, कान्तसार [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोहा जो वैद्यक में औषध के काम में आता है। इस्पात का लोहा।

कांत, कान्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रिया। पत्नी। २-सुंदर स्त्री। ३-विवाहित स्त्री।

कांतार, कान्तार [संज्ञा पु.] (सं.) भयानक वन।

कांतासक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवान को पति मान पत्नी के भाव से भक्ति करने वाला भक्त।

कांति, कान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीप्ति। चमक आभा। २-शोभा। छवि। सौन्दर्य। ३-एक प्रकार का आर्याछंद जिसमें १६ लघु और २५ गुरु वर्ण होते हैं।

कांतिकर, कान्तिकर [वि.] (सं.) सौन्दर्य बढ़ाने वाला।

कांतिदायक, कांन्ति दायक [वि.] (सं.) छवि प्रदान करने वाला। शोभा देने वाला।

कांतिमान्, कान्तिमान् [वि.] (सं.) १-कांति वाला। दीप्तियुक्त। २ सुन्दर।

कांतिसार कान्तिसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक उत्तम कोटि का लोहा।

कांतिसुर, कान्तिसुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं की छवि। २-सोना।

कांतिहर, कान्तिहर [वि.] (सं.) सौन्दर्य या छवि का नाश करने वाला।

काँथरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कथड़ी। गुदड़ी।

कांदना* [क्रि. अ.] (हिं.) रोना। चिल्लाना।

काँदव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'काँदो'।

काँदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक पौध जिसका गुल्म प्याज के समान होता है, दूसरे मांडी बनती है। २-प्याज।

काँदू [संज्ञा पु.] (हिं.) बनियों की एक जाति।

काँदो*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कीचड़। पंक। (देश.) प्याज।

काँध*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कंधा।
कांध देना-१-उठाने में सहायता करना। २-ऊपर लेना। स्वीकार करना। *कांध मारना*-धोखा देना। *कांध लेना*-उठाना। ऊपर लेना

काँधना* [क्रि. स.] १-उठाना। सिर पर लेना। संभालना। २-मचाना। ठानना। ३-स्वीकार करना। ४-भार सहना।

काँधर* [संज्ञा पु.] (हिं.) कृष्ण।

काँधा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कंधा'। २-देखो 'देखो 'कन्हा'।

काँधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कंधा।
काँधी देना-टालमटूल करना।

काँप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाँस या इस प्रकार की किसी लचकदार वस्तु की तीली। २-पतंग या गुड्डी की पतली तीली। ३-कान का एक गहना। ४-हाथी का दांत। ५-सूअर का खाँग। ६-करनफूल। ७-कलई का चूना। ८-कंप। कंपकंपी।

काँपना [क्रि. स.] (हिं.) १-हिलना। थरथराना। २-डर से काँपना। थर्राना। ३-डरना। भयभीत होना।

काँबोज [वि.] (सं.) १-कंबोज देश का। २-कंबोज देश का निवासी।

काँयकाँय [संज्ञा पु.] (हिं.) कौवे का शब्द।

काँवकाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) कौवे का शब्द।

काँवर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस के एक मोटे फट्टे के दोनों छोरों पर छींका बंधी बंहगी जिसमें सामान या जल आदि कंधे पर रख कर ढोते हैं। बहंगी।

काँवरा+ [वि.] (हिं.) व्याकुल। उद्विग्न। घबड़ाया हुआ।

काँवरि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बहँहगी। २-गंगा-जल ले जाने की कांवर या बहँगी।

काँवरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) काँवर लेकर चलने वाला व्यक्ति। काँवाँरथी।

काँवरू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कामरूप देश। २-+कमल रोग।

काँवाँरथी [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी कामना से कांवर लेकर तीर्थ-यात्रा करने वाला व्यक्ति।

काँस [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की लम्बी घास जिसे बटने से टोकरे और रस्सियाँ बनाई जाती हैं।
कांस में तैरना-दुविधा में पड़ना। *कांस में फँसना*-संकट में पड़ना।

काँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ताँबा और जस्ते के के संयोग से बनने वाली एक धातु। कांस्य। भरत। कसकुट। २-भीख मांगने का खप्पर।

काँसागर [संज्ञा पु.] (हिं.) कांसे के बरतन बनाने वाला व्यक्ति।

काँसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का अन्न। मोथ।

काँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धान के पौधे का एक रोग। २-काँसा। ३-सबसे छोटी स्त्री। कनिष्ठा। ४-कास रोग। खांसी।

काँसुला [संज्ञा पु.] (हिं.) कांसे का बना एक चौकोर टुकड़ा जिसमें चारों ओर छोटे बड़े गड्ढे होते हैं। सोनार लोग पीटकर गोल कटोरियां बनाते।

कांस्टेबल [संज्ञा पु.] (अं.) पुलिस का सिपाही। आरक्षी।

कांस्य [संज्ञा पु.] (सं.) कांसा। कसकुट।

कांस्यकार [संज्ञा पु.] (सं.) कसेरा। ठठेरा।

कांस्यताल [संज्ञा पु.] (सं.) मँजीरा। ताल।

कांस्यदोहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कांसे का बरतन जिसमें दूध दूहा जाता है।

का [प्रत्य.] (हिं.) संबंध या षष्ठी का चिह्न अथवा विभक्ति। जैसे केशव का कुरता। +[सर्व.] १-क्या ?। २-कौन का वह रूप (ब्रजभाषा में) जो विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

काई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की महीन घास या सूक्ष्म, वनस्पति जाल। २-मैल। ३-वह हरा मुरचा जो तांबे, पीतल के बरतनों पर लगता है।
काई छुड़ाना-१-मैल दूर करना। २-दुख दरिद्रता दूर करना। *काई सा फट जाना*-तितरबित्तर होना।

कउंसिल, काउन्सिस [संज्ञा पु.] (हिं.) कुछ विशिष्ट विषयों पर विचार करने वाली सभा या परिषद।

काऊ*+ [क्रि. वि.] (हिं.) कभी।
[सर्व.] (हिं.) १-कोई। २-कुछ। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी खूंटी।

काक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौआ। २-एक प्रकार की लकड़ी जिसकी बोतल की डाट बनती है।

काककंगु [संज्ञा पु.] (सं.) काकुन। चेना। कँगनी।

काककला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चतुर्दश ताल का एक भेद। २-काकजंघा। नामक एक औषधि।

काकगोलक [संज्ञा पु.] (सं.) कौए की आँख को कहते हैं। कौए की आँखें तो दो होती हैं पर पुतली एक होती है और वही इधर उधर दोनों आंखों में घूमती रहती है।

काकचरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) शकुनशास्त्र का एक प्रकरण जिसमें कौए की गतिविधि से शकुन का विचार लगाया जाता है।

काकचिंचा, काकचिञ्चा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुञ्जा। घुमची।

काकजंघा [संज्ञा स्त्री.] सं.) १-चकसेनी। मसी। २-गुंजा। घुमची। ३-मद्गपर्णीलता।

काकड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) एक विशाल पहाड़ी वृक्ष। [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक हिरन जिसे सांभर भी कहते हैं। २-कपास का बीज। बिनौला।

काकड़ासींगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिमालय के पश्चिम होने में वाला काकड़ा नामक एक वृक्ष में लगा हुआ एक प्रकार का टेढ़ा, पोला पदार्थ जिसका प्रयोग औषधियों में होता है।

काकण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कोढ़।

काकची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुङ्ची।

काकतालीय [वि.] (सं.) संयोग वश होने वाला।

काकतालीय-बहुमत [संज्ञा पु.] (सं.) अल्पबहुमत। थोड़ा सा बहुमत।

काकतालीय-न्याय [संज्ञा प.] (सं.) इस प्रकार संयोगवश किसी कार्य का हो जाना, जिस प्रकार कौए के बैठने मात्र से ही ताड़ का वृक्ष गिर जाय।

काकतुंड, काकतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) काला अगर।

काकतुंडी, काकतुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नीला फूल। कौआ टोंटी।

काकदंत, काकदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) कोई असम्भव बात।

काकध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) वड़वानल। बाड़वाग्नि।

काकपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बालों के पट्टे जो पुराने जमाने में दोनों ओर कानों के ऊपर रखे जाते थे।

काकपद [संज्ञा पु.] (सं.) पंक्ति में छूटते हुए शब्द का स्थान जताने वाला चिह्न। जो इस प्रकार का होता है।

काकपच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'काकपक्ष'।

काकपीलु [संज्ञा पु.] (सं.) कुचला।

काकपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

काकपुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

काकफल [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का फल।

काकफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बन जामुन।

काकवंध्या वन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके एक ही सन्तान उत्पन्न हुई हो। एक बांझ।

काकबलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कोवों को दिया जाता है।

काकभीरु [संज्ञा पु.] (सं.) कौवे से डरने वाला पक्षी, उल्लू।

काकभुशुंडि [संज्ञा पु.] (सं.) एक रामभक्त ब्राह्मण जो लोमश ऋषि के शाप से काक हो गये थे।

काकमाची, काकमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मकोय

काकरव [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो तनिक सी बात से डर जाय और कौए के समान कांव कांव करने लगे। डरपोक मनुष्य।

काकरासिंगी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'काकड़ासींगी'।

काकरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ककड़ी।

काकरूक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रीभक्त। जोरू का गुलाम। २-उल्लू।

काकरुत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौवे की बोली।

काकरेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काकरेजी रंग का वस्त्र। २-काकरेजी रंग।

काकरेजी [संज्ञा पु.] (फा.) लाल और काले के संयोग से बना रंग। [वि.] काकरेजी रंग का

काकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामने की ओर निकली हुई गले की हड्डी। टेंटुवा। घंटी। २-काला कौआ।

काकली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मधुरध्वनि। कलनाद। २-सेंध लगाने की सबरी। ३-घुंघची। गुंजा। ४-संगीत में वह स्थान जहां सूक्ष्म और अस्फुट स्वर लगते हैं। ५-साठी धान।

काकलीद्राक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा अंगूर। २-किशमिश।

काकलीनिषाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विकृत स्वर।

काकलीरव [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

काकशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त का वृक्ष या फूल।

काकसेन [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज के मजदूरों का जमादार। ('काक्सवेन्' अंगरेजी शब्द अपभ्रंश)।

काका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोर की बोली। २-कौवा। ३-घुंघची। ४-मकोय। ५-कठगूलर। कटूमर। [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता का छोटा भाई। चाचा।

काकाकौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा तोता। काकातूआ।

काकाक्षिगोलकन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी एक शब्द या वाक्य को उलटकर उसका अर्थ अलग-अलग लगाना।

काकातुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) चोटीदार एक प्रकार का बड़ा तोता जो प्रायः सफेद होता है।

काकादानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ओंआ ठोठी। २-सफेद घुंघची।

काकिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कौड़ी। २-माशे का चौथाई भाग। ३-घुंघची। ४-पण का चौथा भाग जो पांच गंडा कौड़ी के समान होता है।

काकिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'काकिणी'।

काकी [ज्ञा स्त्री.] (सं.) कौए की मादा। (देश.) चाची। चची।

काकीय [वि.] (सं.) काक-संबंधी।

काकु [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यंग। ताना। छिपी हुई चुटीली बात। २-अलंकार में वक्रोक्ति के दो भेदों में से एक जिसमें शब्द की ध्वनि से भिन्न अर्थ या अभिप्राय ग्रहण किया जाता है।

काकुत्स्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ककुत्स्थ राजा के वंश में उत्पन्न पुरुष। २-रामचंद्र।

काकुन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कंगन'।

काकुल [संज्ञा पु.] (फा.) कनपटी पर लटकते हुए लम्बे बाल। जुल्फें।

काकुल छोड़ना-बालों की लट बिखराना। *काकुल झाड़ना*-बालों में कंघी करना।

काकुवाद [संज्ञा पु.] गिड़गिड़ा कर कही हुई बात।

काकूक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'काकुवाद'।

काकोदर [संज्ञा पु.] (सं.) सांप।

काकोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक विष का नाम। २-पहाड़ी कौआ।

काकोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर के समान जड़ या कंद जो औषधि के प्रयोग में आती है।

काग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कौआ। वायस। २-बोतल में लगाने कार्क या डट्टा।

कागज [संज्ञा पु.] (अ.) १-घास, बांस आदि को सड़ाकर बनाया हुआ पतला पत्र जो लिखने या अक्षर छापने के काम में आता है। २-प्रमाणिक लेख। लेख्य। ३-समाचारपत्र। अखबार ४-प्रामिसरी नोट। नोट।

कागज करना-दस्तावेज। टिकट वाले कागज पर रुपये या जायदाद का अधिकार लिखना। *कागज काला करना*-व्यर्थ कुछ लिखना। लिख-लिख कागज बिगाड़ना। *कागज की नाव*-अस्थायी। न टिकने वाली वस्तु। *कागज के या कागजी घोड़े दौड़ाना*-खूब लिखा-पढ़ी करना। *कागज खोलना*-भेद या दोष प्रगट करना। *कागज पर चढ़ना*-लिख लेना।

काग़ज़ात [संज्ञा पु.] (अ.) कागज-पत्र।

काग़ज़ी [वि.] (अ.) १-कागज का बना हुआ। २-कागज या पत्र-सम्बन्धी। ३-जिसका छिलका कागज के समान पतला हो। [संज्ञा पु.] १-कागज बेचने वाला व्यक्ति। २-सफेद कबूतर।

कागद [संज्ञा पु.] (हिं.) कागज।

कागभुसुंड, कागभुसुंडी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'काकभुशुंडि'।

कागर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कागज। २-पंख। पर।

कागरी* [वि.] (हिं.) हीन। तुच्छ।

कागा [संज्ञा पु.] (हिं.) काक।

कागावासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रातःकाल पीजाने वाली भांग।

कागारोल [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्ला। शोरगुल।

कागौर [संज्ञा पु.] (हिं.) श्राद्धादि में कौए को दिया जाने वाला ग्रास।

काच [संज्ञा पु.] (सं.) १-शीशा। २-लाख। चपड़ा। ३-काला नमक।

काचमल [संज्ञा पु.] (सं.) काच लवण।

काचलवण [संज्ञा पु.] (सं.) काला नमक।

काचिया नोन।

काचरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'कचरी'। २-देखो 'कांचली' या 'केंचुली'।

काचा* [वि.] (हिं.) १-कच्चा। २-कच्चे दिल का। कायर। डरपोक।

काची+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध रखने की हांडी।

काचो* [वि.] (हिं.) १-कच्चा। २-अनित्य। असार।

काछ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जांघ का ऊपरी भाग। २-धोती की लांग। ३-अभिनय करने के निमित्त नटों का वेश बनाव।

काछना [क्रि. स.] (हिं.) १-धोती को कमर में खोंसना। २-शृङ्गार करना। बनाना। सँवारना। पहनना। ३-तरल पदार्थ को हाथ से किसी पात्र के किनारे पर धरना।

काछनी [संज्ञा स्त्री.] १-कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगे पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी २-घाघरे के समान एक पहरावा।

काछा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊपर को चढ़ाकर कसी हुई धोती।

काछी [संज्ञा पु.] (हिं.) तरकारी बोने और बेचने वाला।

काछे* [क्रि. वि.] (हिं.) निकट। पास। नजदीक।

काज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कृत्य। काम। कार्य। २-व्यवसाय। धंधा। पेशा रोजगार। ३-उद्देश्य। प्रयोजन। मतलब। ४-विवाह संबंध। ५-बटन का घर। कुरते आदि का वह छेद जिसमें बटन फँसाया जाता है।

काजर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'काजल'।

काजरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गाय जिसकी आंख के किनारे का घेरा काला होता है।

काजल [संज्ञा पु.] किसी ठीकरे पर दीपक का धुआं जमाकर बनाई जाने वाली कालिख। कज्जल।
काजल धुलाना, डालना, देना, सारना-काजल लगाना। *काजल पारना*-दीपक के धुँए को किसी बरतन में जमाना। *काजल की कोठरी* दूषित या कलंकित स्थान। *काजल का तिल*-काजल की छोटी बिंदी।

काज़ाक [संज्ञा पु.] मध्य एशिया की एक घूमने वाली जाति।

क़ाज़ी [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानों के धर्म तथा रीतिनीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करने वाला। मुसलिम समाज का विचारपति।

काजू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक वृक्ष जिसकी फली खाई जाती है। २-इस वृक्ष का फल।

काजूभोजू [वि.] (हिं.) वह दिखाऊ वस्तु जिससे अधिक काम न लिया जा सके।

काट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काटने का कार्य। काटने की क्रिया २-काटने का ढंग। कटाव। चालबाजी। विश्वासघात। तेल घी आदि का तलछट। ६-कुश्ती में पेंच का तोड़।

काटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह छड़ी या लकड़ी जिससे कलंदर बंदर या भालू को नचाता है।

काटन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी कटी हुई वस्तु के छोटे छोटे टुकड़े जिन्हें बेकार समझ कर फेंक दिया जाता है।

काटना [क्रि. स.] (हिं.) १-तीखे शस्त्र से किसी वस्तु के दो टुकड़े करना। २-चूरा करना। पीसना। ३-घाव करना। ४-किसी वस्तु का कोई भाग या अंश अलग करना। ५-वध करना। ६-कतरना। ब्योंतना। ७-नष्ट करना। मिटाना। ८-समय बिताना। ९-रास्ता या मार्ग तै करना। १०-अनुचित प्राप्ति करना। ११-कलम की लिखावट पर लकीर फेरना। १२-गणित में एक संख्या से दूसरी संख्या को ऐसा भाग देना जिसमें शेष कुछ न बचे। ११-कारावास में समय बिताना। १४-विषैले जंतु का डंक मारना। डसना। १५-घस्से आदि से डोर तोड़ना। १६-किसी शृंखला में कोई भाग अलग हो जाना। १७-जीव का आगे से रास्ता पार कर जाना। १८-बुरा लगना।
काट खाना-नुकसान उठाना। *काट खाने को दौड़ना*-रूखेपन से जबाब देना। *काटने दौड़ना*-चिड़चिड़ाना। नाराज होना।

काटर* [वि.] (हिं.) १-कड़ा। कठिन। कठोर। २-कट्टर। ३-काटने वाला।

काटू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काटने वाला। २-डरावना। भयानक।

काठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वृक्ष का सूखा स्थूल अंग। २-सूखकर कड़ा हो जाना। ३-जलाने की लकड़ी। ईंधन। ४-लकड़ी की बनी हुई बेड़ी।
काठ का उल्लू-वज्रमूर्ख। *काठ का घोड़ा*-लंगड़े आदमी की लकड़ी। *काठ की हांडी*-१-धोखे की चीज। २-अस्थायी या जिसका धोखा एक बार ही चले।
काठ चबाना-रूखी-सूखी रोटी खाना। *काठ में पांव देना*-१-अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना। २-विपत्ति में फँसना। *काठ में पांव पड़ना*-कफस में जाना। मुश्किल में पड़ना।

काठड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ का बना हुआ बड़ा पात्र। कठौता।

काठबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इन्द्रायन के समान एक बेल।

काठमांडू, [माण्डू] [संज्ञा पु] (हिं.) नैपाल राज्य की राजधानी।

काठिन्य [संज्ञा पु.] (सं.) कठिनता। कठोरता। कड़ापन। सख्ती।

काठियावाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) आधुनि
राज्य जो गुजरात के पश्चिम है।

काठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोड़े
पीठ पर रखने की जीन जिसके
लगा रहता है। २-शरीर की गठन।
३-तलवार की काठ की म्यान। [
काठियावाड़ संबंधी। २-काठिया
(घोड़ा)।

काठों [संज्ञा पु.] (हिं.) पंजाब में होने
प्रकार का मोटा धान।

काड [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की
जिसके जिगर का तेल पुष्टिकारक
यह डाक्टरी इलाज में काम आता है

काढ़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-निकालना।
करना। २-आवरण हटाकर दिखा
किसी कपड़े पर बेल-बूटे बनाना।
लेना। ऋण लेना। ५-पकाना।
लना। जैसे पूरी काढ़ना।

काढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) औषधियों
उबालकर या औटाकर बनाया हुआ
क्वाथ। जोशांदा।

काण [वि.] (सं.) (काणा) काना। एक
[संज्ञा पु.] कौआ।

काणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) कानापन।

कातंत्र, कातन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.)
व्याकरण जिसे कार्तिकेय की कृपा
वर्मा ने बनाया था।

कात [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भेड़ों के बाल
की कैंची। २-मुर्गे के पैर का कांटा।

कातना [क्रि. स.] (हिं.) रुई को बटकर
बनाना। चरखा चलाना।

कातर [वि.] (सं.) १-अधीर। व्याकुल
भयभीत। डरा हुआ। ३-डरपोक।
४-विवश। लाचार। आर्त।
[संज्ञा पु.] १-एक प्रकार की मछली
घड़नैल। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोल्हू
जिस पर बैठकर हांकने वाला
चलाता है।

कातरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अधीरता।
लता। २-दुःख से होने वाली
३-भीरुता। डरपोकपन। कायरता।

कातराचार [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य के अन्तर्गत
प्रकार का हस्तक।

कातर्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कातरता'।

काता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काता हुआ
तागा। डोरा। २-बांस काटने या
छुरी।

कातिक [संज्ञा पु.] (हिं.) क्वार के बाद
वाला महीना। कार्तिक का महीना।

कातिकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कार्तिक
पूर्णमासी।

कातिब [संज्ञा पु.] (अ.) लिपिकार । लिखन वाला । लेखक ।

कातिल [वि.] (अ.) प्राण लेने वाला । घातक । [संज्ञा पु.] कत्ल या वध करने वाला व्यक्ति । हत्यारा ।।

काती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कैंची । २-सुनारों की कतरनी । ३-छुरी । चाकू । ४-छोटी तलवार ।

कातीय [वि.] (सं.) कात्यायन-संबंधी । [संज्ञा पु.] कात्यायन का छात्र ।

कात्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कतऋषि का गोत्रज ऋषि । २-कात्यायन । [वि.] कतऋषि-संबंधी ।

कात्यायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन ऋषि । २-एक बौद्ध आचाय । ३-पाली व्याकरण के कर्त्ता एक बौद्ध आचार्य ।

कात्यायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कत-गोत्र में उत्पन्न स्त्री । २-अधेड़ विधवा स्त्री । ३-दुर्गा । ४-कत्यायन ऋषि की पत्नी । ५-याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी ।

काथरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कथरी' ।

कादंब, कादम्ब [वि.] (सं.) १-कदम्ब-संबंधी । २-समूह-संबंधी । [संज्ञा पु.] १-कदंब का वृक्ष, फल या फूल । २-कलहंस । ३-ईख । ४-वाण । ५-दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश

कादंबर, कादम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दही की मलाई । २-ऊख का गुड़ । ३-कदंब के फूलों की मदिरा । ४-मदिरा । शराब । ५-हाथी का मद ।

कादंबरी, कादम्बरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोकिल । कोयल । २-सरस्वती । वाणी । ३-मदिरा । शराब । ४-मैना । ५-बाणभट्ट विरचित कथा की नायिका ।

कादंबिक, कादम्बिक [वि.] (सं.) भोजन बनाने वाला ।

कादंबिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घटा । मेघमाला २-मेघराग की रागिनी ।

कादर [वि.] (हिं.) १-अधीर । २-व्याकुल । ३-डरपोक । भीरु ।

कादा [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज की पटरी । [संज्ञा पु.] (देश.) कीचड़ । पंक ।

कादिरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुसलमान बेगमों के पहनने की एक प्रकार की चोली । सीनाबंद ।

कान [संज्ञा पु.] (हिं.) सुनने की इन्द्रिय । श्रवण । श्रुति । श्रोत्र ।

कान आ लगना-कानों में गुप्त (खुफिया) बातें करना । *कान उमेठना या ऐंठना*-१-चेतावनी देना । २-किसी कार्य को न करने की प्रतिज्ञा करना । ३-भूल स्वीकार करना । ४-दंड देना । *कान करना*-ध्यान देना । सुनना । *कान कतरना या काटना*-१-मात करना । २-चकमा देना । *कान का कच्चा*-१-शीघ्र विश्वास कर लेने वाला । २-सुनकर कह देने वाला । *कान का परदा फटना*-अधिक शोरगुल न सह सकना । *कान का मैल निकालना*-सुनने योग्य न होना । व्यंग । *कान खड़े करना* । चौकन्ना होना । सचेत होना । *कान खड़े होना*-चेत होना । सचेत होना । *कान खाना या खाजाना*-१-अत्याधिक होहल्ला मचाना । २-बहुत बार कहना । *कान खुलना या खुल-जाना*-सबक लेना । समझ लेना । *कान खोलना, खोल देना*-भूल बनाना । चेताना । *कान गरम करना*-दबाव डालना

कान गरम करना-१-दबाव डालना । २-कान उमेठना । कान दबाना-विरोध करना । सहमना । कान देना-ध्यान देना । कान धरना-१-ध्यान से सुनना । २-सुना हुआ याद रखना । ३-न करने की प्रतिज्ञा करना । ४-कान उमेठना । ५-मानना । कान न दिया जाना-१-न सुना जाना । २-कर्कश या करुण स्वर सुनने की क्षमता न रहना । ३- न सुना जाना । कान न हिलना-बिना विरोध के बात मान लेना । कान पकड़ना-१-भूल अंगीकार करना । २-भूल बताने पर गुरु मानना । ३-न करने की प्रतिज्ञा करना । ४-पछतावे के साथ प्रतिज्ञा । ५-किनारा कसना । ६-जबरदस्ती । कान पकड़ी छेरी-आज्ञाकारिणी । कान पकड़ कर निकाल देना-तिरस्कार करके बाहर करना । कान पड़ी आवाज न सुनना-बहुत शोर गुल होना । कान पर जूं न रेंगना-१-तनिक भी परवाह न होना ।२-बेखबर होना । कान पर रखना-याद रखना । कान पर से गोली जाना-किसी विपत्ति से बाल-बाल बचना । कान पर हाथ धरना या रखना-१-एक दम न सुनना । २-डरना । ३-अज्ञानता जाहिर करना । कान पूंछ फटकारना-सावधान होना । कान पूंछ दबाकर चला जाना-चुपचाप चले जाना-कान फटना या कान का परदा फटना-शब्द सुनने से बाज आना । कान फड़-फड़ना-होशियार होना । कान फूंकना-१-चेला बनाना । कान भरना । कान भरना या कान भर देना-किसी के मन में किसी के विरुद्ध कोई बात बैठा देना । कान भर जाना-सुनते-सुनते जी ऊब जाना । कान में डाल देना-सरसरी तौर पर सुना देना । कान में कौड़ी डालना-दास या गुलाम बनाना कान में तेल डाल बठना-१-बहरा बन जाना । २-बेखबर या लापरवाह होना ।

कान में फूंकना-१-भीतर ही भीतर किसी को बहका देना । २-कोई लगती हुई बात कहना । *कान में रखना*-याद रखना । *कान रखना*-निगाह में रखना । पता लगाना । *कान से लगाना*-१-चुपके-चुपके कहना । २-बात मानी जाना । ३-कान के पीछे घाव होना ।

कान लगाना-ध्यान देना । *कान लगाकर सुनना*-ध्यान से एक-एक शब्द सुनना । *कान से निकल जाना*-सुनी हुई बात भूल जाना । *कान होना*-चेत होना, ख्याल आना । *काना-फूंसी करना, होना*-चुपके-चुपके बात होना । २-श्रवण शक्ति । ३-लकडी का वह टुकड़ा जो हल के अग्रभाग में बांध दिया जाता है । ४-सोने का एक आभूषण । ५-चारपाई का टेढ़ापन । ६-किसी वस्तु का निकला हुआ कोना जो देखने में भद्दा जान पड़े । ७-तराजू का पासंग । ८-रंजकदानी ।

कानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जायफल । २-धतूरे का बीज ।

कनाड़ा [वि.] (हिं.) काना । एक आंख का ।

कानन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंगल । वन । २-गृह । घर ।

कानफरेंस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-किसी आवश्यक विषय के संबंध में निश्चय करने के निमित्त एकत्रित जनसमूह । २-सभा । समिति ।

कानस्टेबिल [संज्ञा पु.] (अं.) पुलिस का सिपाही ।

काना [वि.] (हिं.) १-एकाक्ष । एक आंख वाला । २-कीड़े का खाया हुआ (फल आदि) । ३-तिरछा । टेढ़ा ।
[संज्ञा पु.] 'आ' की मात्रा जो किसी अक्षर को लगाई जाती है जो इस प्रकार की (ा) होती है ।

कानाकानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुप्त वार्ता । काना-फूसी ।

कानाफुसकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'काना-फूसी' ।

कानाफूसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान में धीरे से कही हुई बात ।

कानाबाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चुपके-चुपके कान में बात कहना । २-बच्चों के कान में कुछ कहकर हँसाने का ढंग ।

कानाबेज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का महीन वस्त्र ।

कानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लोकलाज । मर्यादा का ध्यान । २-लिहाज । दबाव । संकोच । ३- सीख । शिक्षा ।

कानिद [संज्ञा पु.] (हिं.) खराद पर चढ़ाते समय हीरा पन्ना आदि रत्नों को बनाने की बांस की कमची ।

कानी [वि.](हिं.) [स्त्री. प्र.] १-एक आँख वाली । जिस (स्त्री) की एक आंख फूट गई या जाती रही हो । २-सब से छोटी (ऊंगली) ।

कानीन [वि.] (सं.) क्वारी कन्या से उत्पन्न ।
[संज्ञा पु.] (सं.) अविवाहिता कन्या का पुत्र ।

कानून [संज्ञा पु.] (अ.) १-राज्य में शांति बनाये

रखने के नियम। **विधि। राज्यनियम।** २–एक प्रकार का **रूमी** बाजा।

कानून छांटना–कुतर्क करना। कानूनी बहस करना। हुज्जतबाजी करना।

कानूनगो [संज्ञा प.] (अ.) माल विभाग का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागजात देखता भालता है।

कानूनदाँ [संज्ञा पु.] (फा.) १–विधिज्ञ। कानून जानने वाला व्यक्ति। २–हुज्जत करने वाला व्यक्ति।

कानूनिया [वि.] (हिं.) १–कानून जानने वाला। हुज्जती। तकरार करने वाला।

कानूनी [वि.] (अ.) १–कानून संबंधी। अदालती २–नियमानुसार। ३–जो कानून जाने। ४–हुज्जती। तकरार करने वाला।

कान्यकुब्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्राचीन प्रांत जो वर्तमान कन्नौज के अड़ौसपड़ौस में था। ३–कान्यकुब्ज देश का निवासी। ४–कान्यकुब्ज देश का ब्राह्मण।

कान्ह* [संज्ञा पु.] (हि.) श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जो मेघराग का पुत्र समझा जाता है।

कान्हड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी जो दीपकराग की पत्नी मानी जाती है।

कान्हम [संज्ञा पु.] (हि.) भड़ौंच की वह काली मटियार भूमि जो कपास की पैदावार के लिए अत्याधिक प्रसिद्ध है।

कान्हमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान्हम भूमि में उत्पन्न कपास।

कान्हर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कोल्हू की वह लकड़ी जो इसके कमर में बंधी होती है। २–श्रीकृष्ण।

कान्हरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कन्हड़ा'।

कापटिक [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का मर्म जानने वाला व्यक्ति। वंचक।

कापट्य [संज्ञा पु.] (सं.) कपटता। धोखेबाजी। चालाकी।

कापड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा। वस्त्र।

कापड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति का नाम।

कापथ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुपथ। कुमार्ग। बुरा रास्ता।

कापर [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा। वस्त्र। [संज्ञा पु.] (अ.) ताम्र। ताँबा।

कापाटिक [संज्ञा पु.] (सं) खिड़की के कपाट या किवाड़।

कापाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार का प्रचीन अस्त्र। २–वायबिडंग। ३–संधि का एक भेद जिसमें एक पक्ष दूसरे के समान स्वत्व स्वीकार करे।

कापालिक [संज्ञा पु.] (सं.) शैवमत का तांत्रिक साधु जो मद्य मास खाते हैं तथा हाथ में मनुष्य का कपाल रखते हैं।

कापालिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुँह से बजाया जाने वाला एक प्राचीन बाजा।

कापाली [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शिव। २–एक प्रकार का वर्णसंकर।

कापिल [संज्ञा पु.] (सं.) १–सांख्यदर्शन जानने वाला। २–कपिल के दर्शन का अनुयायी। ३–भूरा रंग। [वि.] १–कपिलका। कपिल संबंधी। २–भूरा।

कापिश [संज्ञा पु.] (सं.) माधवी के फूलों की बनी मदिरा।

कापिशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाणिनि के समय का एक प्रदेश का नाम।

कापी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–प्रतिलिपि। नकल। २–लिखने के कोरे कागजों की पुस्तक।

कापी-राइट [संज्ञा पु.] (अ.) मुद्रण अधिकार। अनुमति के बिना ग्रन्थकार की पुस्तक न छापने का स्वत्व।

कापुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) कायर। डरपोक आदमी। निकम्मा।

कापुरुषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निकम्मापन। भीरुता। डरपोकपन।

कापुरुषत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कापुरुषता'।

कापेय [वि.] (सं.) कपि-संबंधी। बन्दर का। [संज्ञा पु.] (सं.) शौनकऋषि।

काफल [संज्ञा पु.] (सं.) कायफल।

काफिया [संज्ञा पु.] (अ.) अन्त्यानुप्रास। तुक। सज।

काफिया तंग करना—बहुत हैरान करना। *काफिया तंग रहना या होना*–नाकों दम रहना या होना। *काफिया मिलाना*–१–तुक मिलाना २–अपना साथी बनाना।

काफियाबंदी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) तुकबंदी। तुक जोड़ना या मिलाना।

काफिर [वि.] (अ.) १–मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म मानने वाला। २–नास्तिक। ईश्वर को न मानने वाला। ३–निर्दयी। निष्ठुर। बेदर्द। ४–बुरा। दुष्ट।

काफिला [संज्ञा पु.] (अ.) यात्रियों का दल।

काफ़ी [वि.] (अ.) पर्याप्त। पूरा। कम न ज्यादा [संज्ञा पु.] एक राग विशेष जो जल्दी गाया जाता है। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कहवा'।

काफ़ूर [संज्ञा पु.] (अ.) कर्पूर। कपूर।

काफ़ूरी [वि.] (अ.) १–कपूर का बना हुआ। २–कपूर के रंग का।

काब [संज्ञा स्त्री.] (तु.) चीनी मिट्टी की बनी बड़ी **रिकाबी।**

काबर [वि.] (हिं.) चितकबरा। अनेक रंग का। **[संज्ञा पु.]** (हिं.) १–कुछ कुछ रेतीली भूमि। दोमट। **खाभर।** २–एक प्रकार की मैना।

काबला [संज्ञा पु.] (हि.) एक बड़ा पेच जि ढेबरी कसी जाती है।

काबा [संज्ञा पु.] (अ.) अरब के मक्के का वह स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज को जाते हैं।

काबिज [वि.] (अ.) १–अधिकार-प्राप्त। रखने वाला। २–मल का अवरोध वाला।

क़ाबिल [वि.] (अ.) १–योग्य। लायक़। पंडित। विद्वान।

क़ाबिलियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–योग्य लियाकत। २–पांडित्य। विद्वत्ता।

काबिस [संज्ञा पु.] (हिं) एक रंग जिससे रंग बरतन पकाये जाते है।

काबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पें

काबुक [संज्ञा पु.] (फा.) कबूतरों का दरबा।

काबुल [संज्ञा पु.] अफगानिस्तान की राज

काबुली [वि.] (हिं.) काबुल का। काबुल उत्पन्न।

काबू [संज्ञा पु.] (तु.) वश। अधिकार। बल।

काबू में करना या काबू करना–वश में कर *काबू चढ़ना या काबू पर चढ़ना*–अधिका चढ़ना। दांव में चढ़ना। *काबू पाना*–अधि कार पाना। दांव पाना।

काम [संज्ञा पु.] (सं.) १–इच्छा। मनोरथ। महादेव। ३–कामदेव ४–सहवास की इ ५–चार वर्गों में से एक। ६–इन्द्रियों की अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति (कामशा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–काय। कर्म। वह किया जाय। २–कठिन कार्य। ३–प्रयो उद्देश्य। मतलब। ४–गरज। वास्ता। कार। ५–उपयोग। व्यवहार। इस्तेमाल। कारबार। व्यवसाय। रोजगार। ७–कारी रचना। बनावट। दस्तकारी। ८–बेलबूटे नक्काशी के कार्य से तैयार होने वाले।

काम अटकना–कार्य रुकना। हर्ज होना। *काम आना*–१–मारा जाना। २–प्रयोग में ३–लाभ होना। *काम करना*–१– डालना। २–प्रयत्न में सफलता प्राप्त ३–मतलब निकालना। *काम का*–फायदे लाभदायक। *काम के सिर होना*– लगना। *काम खुलना, खोलना*–प्रारंभ या होना। *काम चमकना*–रोजगार खूब च *काम चलाना*–१–होता रहना। २–काम गति मध्यम होना। ३–कार्य सिद्ध होना। *काम चलाना*–१–चलता रखना। २–जैसे तैसे काम निकालना।

काम तमाम या आखिर करना या होना– काम पूरा होना। जैसे तैसे काम निकाल *काम देखना*–चलते हुए काम की जांच कर

कार्य का निरीक्षण करना । काम देना–व्यवहार में आना । काम निकलना–१–कार्य सिद्ध हो जाना । २–जरूरत पूरी होना । काम निकालना–१–मतलब निकालना । २–गुजारा करना । काम पड़ना–१–आवश्यकता होना । २–वास्ता । काम बटाना–हाथ बटाना । किसी कार्य में सहायता करना । काम बढ़ाना–१–नियमित समय पर किसी कार्य को बन्द करना । २–रोजगार फैलाना । काम बनना–स्वार्थ सिद्ध होना । काम पूरा होना । काम बनाना–कार्य में सहायक होना । काम बना रहना–समय अच्छा रहना । काम बिगड़ना–१–बात बिगड़ना । २–धन्धा या रोजगार नष्ट होना । काम भुगताना–पूरा करना । काम में आना–बर्ता जाना । उपयोग में आना । काम में लाना–उपयोग करना । काम रखना–१–होशियारी । कठिन कार्य । २–वास्ता या ताल्लुक । काम लगाना–१–नौकर होना । २–काम जारी होना । काम लगा रहना–१–व्यस्त रहना । २–काम पड़ता रहना । काम लेना–१–कार्य कराना । २–इस्तेमाल करना । काम से काम रखना–अपने ही कार्य में ध्यान रखना । काम से जाता रहना–नौकरी आदि से अलग होना । काम होना–१–मरना । २–बहुत कष्ट पहुँचाना । ३–जरूरत पूरी होना ।

कामकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मैथुन । रति । २–कामदेव की पत्नी रति । ३–चन्द्रमा की सोलह कला । ४–एक तंत्रोक्त विद्या ।

कामकाज [संज्ञा पु.] (हिं.) कामधन्धा । कारबार । व्यवसाय ।

कामकाजी [वि.] (हिं.) काम या उद्योगधन्धे में लगा रहने वाला । कारबारी । व्यवसायी ।

कामकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १–वेश्यागामी । रंडीबाज । वेश्याप्रिय । २–वेश्याओं के छल छन्द ।

कामग [वि.] (सं.) १–स्वेच्छाचारी । २–वेश्यागामी । लंपट । ३–कामदेव ।

कामगार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कामदार' ।

कामचर [संज्ञा पु.] (सं.) स्वेच्छापूर्वक विचरने वाला ।

कामचलाऊ [वि.] (हिं.) किसी न किसी प्रकार से कार्य चलाने वाला ।

कामचार [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छानुसार भ्रमण । [वि.] स्वच्छ विचरने वाला ।

कामचारी [वि.] (सं.) १–कामुक । लम्पट । २–स्वेच्छाचारी ।

कामचोर [वि.] (हि.) काम से जी चुराने वाला । अकर्मण्य । आलसी ।

कामज [वि.] (सं.) वासना या अभिलाषा से उत्पन्न ।

कामजित् [वि.] (सं.) काम या वासना को जीतने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव । महादेव । २–कार्तिकेय । ३–जिनदेव ।

कामजज्वर, कामज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ज्वर जो अखण्ड ब्रह्मचर्य पालन करने से स्त्री पुरुष को उत्पन्न होता है ।

कामठ [वि.] (सं.) कमंडलु संबंधी ।

कामड़िया [संज्ञा पु.] (हि.) रामदेव मत के अनुयायी साधु जो राजस्थान में सर्वत्र पाये जाते हैं ।

कामतरु [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष ।

कामता* [संज्ञा पु.] चित्रकूट ।

कामतिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रयोदशी । तेरस ।

कामद [वि.] (सं.) मनोरथ पूर्ण करने वाला । इच्छानुसार फल देने वाला । [संज्ञा पु.] ईश्वर ।

कामदमणि [संज्ञा पु.] (सं.) चिंतामणि ।

कामदहन [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव को भस्म करने वाले ।

कामदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कामधेनु । २–एक वर्ण वृत्त जिसमें (र+य+ज+गुरु) दस अक्षर होते हैं ।

कामदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बदले के तार या सलमे सितारे के बने बेलबूटे ।

कामदार [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्मचारी । कारिन्दा । [वि.] जिस पर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों ।

कामदुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामधेनु ।

कामदूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–परवल की बेल । २–कोयल ।

कामदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्त्री पुरुष के संयोग की प्रेरणा देने वाला एक पौराणिक देवता । २–वीर्य । संभोग की इच्छा ।

कामधाम [संज्ञा पु.] (हिं.) कामकाज । धंधा । व्यवसाय ।

कामधुक्* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कामधेनु' ।

कामधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक गाय जो सब मनोरथों को पूर्ण करती है । स्वर्ग की गाय ।

कामध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव की पताका । मछली ।

कामना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनोरथ । इच्छा । ख्वाहिश ।

कामनाशक [संज्ञा पु.] (सं.) काम का नाश करने वाला, शिव ।

कामपाल [संज्ञा. पु.] (सं.) १–श्रीकृष्ण । २–बलराम । ३–महादेव ।

कामबाण [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव के बाण । यह पाँच हैं—मोहन, उन्मादन, संतापन, शोषण और निश्चेष्टकरण ।

कामभूरुह [संज्ञा पु.] (हिं.) कल्पवृक्ष ।

काममर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

काममाली [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश ।

काममुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र की एक मुद्रा ।

कामयाब [वि.] (फा.) सफल । कृतकार्य । जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो ।

कामयाबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सफलता । कृतकार्यता ।

कामरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव के शत्रु महादेव । शिव ।

कामरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कम्बली । कमली । कम्बल ।

कारुचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अस्त्र जिसको विश्वामित्र ने अन्य शस्त्रों को विफल करने के निमित्त रामचन्द्र को दिया था ।

कामरू [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कामरूप' ।

कामरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १–आसाम राज्य का जिला जिसमें कामाख्यादेवी का प्राचीन मन्दिर है । २–देवता । ३–एक २६ मात्राओं का छन्द जिसमें ९, ७, और १० पर विराम होता है, अंत में गुरु लघु होते हैं ।

कामरूपत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जैन मतानुसार एक प्रकार की सिद्धि जिसके प्रभाव से साधक मनमाना रूप धारण कर सकता है ।

कामरूपी [वि.] (हिं.) इच्छानुसार रूप धारण करने वाला । मायावी ।

कामरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या । रंडी ।

कामल [संज्ञा पु.] (सं.) १–कमल रोग जिससे सारा शरीर पीला पड़ जाता है । यह रोग पित्त की प्रबलता के कारण होता है । २–वसंतकाल ।

कामला [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कामल' ।

कामली [वि.] (सं.) कामल रोग से पीड़ित । * [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कम्बल । कमली ।

कामलोक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धदर्शन के अनुसार एक परोक्ष लोक ।

कामवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दारु हल्दी । २–मैथुन की अभिलाषा करने वाली स्त्री ।

कामवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) १–आम का वृक्ष । २–वसन्तऋतु ।

कामवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदनी । चन्द्रिका

कामवान् [वि.] (सं.) सम्भोग की इच्छा करने वाला ।

कामविद्ध [वि.] (सं.) मैथुन की इच्छा से व्याकुल ।

कामशर [संज्ञा पु.] (सं.) १–कामबाण । २–आम

कामशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें स्त्री पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो ।

कामसखा [संज्ञा पु.] (सं.) १–बसन्त । २–आम

कामसुत [संज्ञा पु.] (सं.) अनिरुद्ध ।

कामहा [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-विष्णु

कामांग, कामाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) आम।

कामांध, कामान्ध [वि.] (सं.) काम की प्रबलता में भले-बुरे का ज्ञान न रखने वाला।

कामा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कामिनी स्त्री। सुंदरी स्त्री। २-एक वृत्ति जिसमें दो गुण होते हैं। [संज्ञा पु.] (अं.) वह विराम जो वाक्यों या शब्दों के मध्य में आता है। इसका चिह्न इस प्रकार है (,)।

कामाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक देवी का नाम।

कामाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक देवी।

कामातुर [वि] (सं.) कामवेग में व्याकुल। समागम की इच्छा से उद्विग्न।

कामानुज [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध। गुस्सा।

कामायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैवस्तमनु की पत्नी श्रद्धा का एक नाम। २-कविवर जयशंकरप्रसाद का एक काव्यग्रन्थ।

कामायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम। २-शिश्न। उपस्थ।

कामारथी* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कामार्थी'।

कामारि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव के शत्रु, शिव।

कामार्त [वि] (सं) काम की इच्छा से पीड़ित।

कामावतार [संज्ञा पु.] (सं.) छः मात्राओं का एक चार पद का छंद।

कामावशायिता, कामावसायिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्य संकल्पता।

कामाशन [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छानुसार भोजन।

कामासक्त [वि.] (सं) काम से वशीभूत।

कामिका [संज्ञा पु.] (सं) श्रावणकृष्ण एकादशी।

कामित* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कामन'।

कामिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कामी या कामुक होने का भाव। २-वह शक्ति, वृत्ति अथवा गुण जो प्राणियों में कामवासना उत्पन्न करता है। *सेक्सुएलिटी*।

कामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कामवती स्त्री। २-सुन्दर स्त्री। ३-मदिरा। ४-मालकोस राग की एक रागिनी।

कामिनीकांत, कान्त [संज्ञा पु.] (सं) एक छंद जिसमें छः छः मात्रा के चार पद होते हैं।

कामिनीमोहन [संज्ञा पु.] (सं.) स्रग्विणी छंद का एक नाम।

कामिल [वि.] (अ.) १-पूरा। पूर्ण। समूचा। २-व्युत्पन्न।

कामी [वि.] (सं.) १-इच्छुक। कामना रखने वाला। २-विषयी। कामुक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकवा। २-चिड़ा। ३-कबूतर। ४-सारस। चन्द्रमा। ६-काकड़ासींगी ७-विष्णु का एक नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) कांसे या अन्य धातु की ढली हुई छड़।

कामुक [वि.] (सं.) १-जिसे कामवासना बहुत हो। २-विषयी। कामी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अशोक। २-माघ की लता। ३-चिड़ा; गौरा।

कामुकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विषयवासना। आशिकी।

कामुका [वि.](सं.)[स्त्री. प्र.] इच्छा करने वाली।

कामेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तेज के अनुसार एक भैरवी। २-कामाख्या की पांच मूर्त्तियों में से एक।

कामोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जो मालकोस का पुत्र और सम्पूर्ण जाति का भी माना जाता है। इसके गाने का समय रात का पहला आधा पहर है।

कामोदक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जलाञ्जलि जो इच्छानुसार उस मृत प्राणी को दी जाती है जो चूड़ा कर्म के पहले मरा हो तथा जिसके लिए उदक क्रिया की विधि न हो।

कामोदकल्याण [संज्ञा पु.] (हिं.) कामोद और कल्याण के योग से बनने वाला एक संकर राग।

कामोदकतिलक [संज्ञा पु.] (सं.) कामोद और तिलक के योग से बनने वाला एक संकर राग

कामोदकनट [संज्ञा पु.] (सं.) कामोद और नट के योग से बनने वाला एक संकर राग।

कामोद-सामंत, सामन्त [संज्ञा पु.] (सं.) कामोद और सामन्त के योग से बनने वाला एक संकर राग।

कामोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कामोदी'।

कामोदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात के दूसरे पहर की दूसरी घड़ी में गाई जाने वाली एक रागनी, जो मालकोस के पुत्र कामोद की स्त्री है।

कामोद्दीप [वि.] (सं.) जिससे स्त्री सहवास या प्रसंग की कामना बढ़े।

कामोद्दीपन [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन की इच्छा तीव्र होना।

कामोपहत [वि.] (सं.) कामदेव के बाणों से व्याकुल।

काम्य [वि.] (सं.) १-जिसकी इच्छा हो। २-जिससे कामना की सिद्धि हो। [संज्ञा पु.] किसी कामना की सिद्धि के निमित्त किया जाने वाला। यज्ञ अथवा कर्म।

काम्यकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अभीष्ट सिद्धि के निमित्त किया हुआ कर्म।

काम्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामनीयता। खूबसूरती।

काम्यमरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-इच्छानुसार मृत्यु। २-मुक्ति।

काम्यदान [संज्ञा पु.](सं.) १-वह दान जो कि इच्छा से किया जाय। २-रत्न बहुमूल्य वस्तुओं का दान।

काम्येष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामना की के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ।

काय [वि.] (सं.) प्रजापति संबंधी। [संज्ञा पु.] १-शरीर। देह। जिस्म। २-कनिष्ठा का नीचे का भाग। ३-प्रजापति का ४-मूलधन। असल। ५-लक्ष्य। ६- भिक्षुओं का संघ। ७-प्रजापत्य विवाह।

कायक [वि.] (सं.) शारीरिक। देहसंबंधी।

कायचिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर प्रत्येक अंग पर प्रभाव डालने वाले रोगों चिकित्सा।

कायजा [संज्ञा पु.] (अ.) लगाम की डोरी घोड़े की पूंछ तक लेजाकर बांधते हैं। *कायजा करना*-घोड़े के लगाम की डोरी पूंछ में फँसाना।

कायथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कायस्थ'।

कायदा [संज्ञा पु.] (अ.) १-नियम। २- ढंग। ३-विधि-विधान। ४-क्रम।

कायफर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

कायफल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष छाल दवा के काम आती है।

कायबंधन, कायबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) कमरबंद।

कायम [वि.] (अ.) १-स्थिर। ठहरा हुआ। २- स्थापित। ३-निर्धारित। निश्चित। बाजी बराबर रहे। *कायम उठाना*-शतरंज की बाजी उठना।

क़ायममुक़ाम [वि.] (अ.) स्थानापन्न।

कायर [वि.] (हिं.) भीरु। कातर। असाहसी।

कायरता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भीरुता। पन।

कायल [वि.] (अ.) दूसरे की बात को स्वीकार करने वाला। जिसने तर्क सिद्ध बात स्वीकार करली हो। *कायल करना*-१-समझा बुझाकर बात वाना। २-शर्मिन्दा करना। *कायलिया होना*- दूसरे की बात को यथार्थ मान लेना। स्वीकार करना। ३-शर्मिन्दा होना।

कायली+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-लज्जा। २-मथानी। खैलर।

कायव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर में कफ और त्वक, रक्त, मांस तथा शुक्र के और विभाग आदि का कर्म।

कायस्थ [वि.] (सं.) १-जीवात्मा। २-परमात्मा ३-एक जाति का नाम।

कायस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरीतकी। २-आंवला। ३-तुलसी। ४-कोकिला।

काया [संज्ञा स्त्री] (हिं) शरीर। देह। तन।

कायाकल्प [संज्ञा पु.] (हिं.) औषधियों के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण तथा सशक्त करने की विधि।

कायापलट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भारी हेर फेर या परिवर्तन। एक शरीर के रूप को दूसरे शरीर में पलटना।

कायिक [वि.] (सं) शरीर-संबंधी। २-शरीर से काम किया हुआ। शरीर से उत्पन्न। ३-संघ-संबंधी। बौद्ध।

कायिकावृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मजदूरी या काम जो ऋणी व्यक्ति सूद के बदले में करे अथवा अपने गाय बैल से करा दे।

कायोढ़ज [संज्ञा पु.] (सं) प्राजापत्य विवाह से उत्पन्न।

कायोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जैन शिल्प में अर्हन्त की वीतरागावस्था में खड़ी मूर्ति।

कारंड, कारण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) हंस की जाति का एक पक्षी। एक प्रकार की बत्तख।

कारंडव, कारण्डव [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'कारंड'।

कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रिया। कार्य। २-करने या रचने वाला। व्यवसाय करने वाला। ३-एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञा के समान बोध करता है। जैसे-चीत्कार, झनकार। ४- एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के साथ लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है।

कारक [वि.] (सं.) १-करने वाला। जैसे-सुखकारक। २-किसी के स्थान पर अथवा प्रतिनिधि के रूप में कार्य करनेवाला। ऐक्टिंग। [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।

कारकदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें कई क्रियाओं का एक ही कर्ता रहता है।

कारकर [वि.] (सं.) काम करने वाला।

कार-करदा [वि.] (फा.) कार्य करने में अभ्यस्त। अनुभवी। तजरुबेकार।

कारकुन [संज्ञा पु.] (फा.) इन्तजाम करने वाला। प्रबंधकर्त्ता। २-कारिंदा।

कारखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह स्थान जहां व्यापार के निमित्त कोई वस्तु अधिक मात्रा या मान में बनती हो।

कारगर [वि.] (फा.) १-प्रभावोत्पादक। प्रभावजनक। २-उपयोगी। लाभकारक।

कारगुजार [वि.] (फा.) अपना कर्त्तव्य भलीभांति पूरा करने वाला।

कारगुजारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कर्त्तव्य पालन। २-कर्मण्यता। ३-कायपटुता।

होशियारी।

कारचोब [संज्ञा पु.] (फा.) १-लकड़ी का वह चौखटा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है। २-जरदोजी या कसीदे का काम करने वाला व्यक्ति। जरदोज।

कारचोबी [वि.] जरदोजी का। [संज्ञा स्त्री] (फा.) जरदोजी। गलकारी। कसीदा।

कारज*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कार्य। काम।

कारड+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कार्ड। पत्र।

कारटा [संज्ञा पु.] (हिं.) करट। कौआ। काग।

कारटून [संज्ञा पु.] (अ.) व्यंगचित्र।

करड+ [संज्ञा पु.] देखो 'कार्ड'।

कारण [संज्ञा पु.] (सं) १-वजह। सबब। वह जिसके फलस्वरूप कोई काय हो। २-वह जिसके विचार से अथवा जिसका ध्यान रख कर कोई काय किया जाय। हेतु। निमित्त। प्रयोजन। रीजन। ३-वह जिससे कुछ उत्पन्न या प्रगट हो। आदि। मूल। ४-साधन। ५-तांत्रिक उपचार या कर्म। ६-एक प्रकार का गाना। ६-विष्णु।

कारण-जल [संज्ञा पु.] (सं) ब्रह्माण्ड की सृष्टि का कारण जल।

कारणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कारण का कर्म। हेतुता।

कारणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कारणता।

कारणभूत [वि.] (सं.) कारणस्वरूप।

कारणमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कारणों अथवा हेतुओं की शृंखला। एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न होने वाले कार्य से पुनः किसी अन्य कार्य के होने का वर्णन होता है।

कारणविहीन [वि.] (सं.) कारणरहित। बेसबब।

कारणशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्त में अनुवाद के अनुसार वह कल्पित शरीर जिसमें शरीर की इन्द्रियां तो काम नहीं करती परन्तु इसमें अहंकार आदि का संस्कार बना रहता है।

कारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यातना। बड़ी वेदना। नरकयन्त्रणा।

कारणिक [वि.] (सं.) १-कारण-संबंधी। २-कारण के रूप में होने वाला। कॉजल। ३-किसी कार्यालय में लिखने पढ़ने का कार्य करने वाले कर्मचारी अथवा करणिक से संबंधित। मिनिस्टीरियल। ४-जाँच करने वाला। परीक्षक।

कारणिक-सेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सेवा-कार्य-विभाग अथवा कर्मचारियों का वर्ग जो कारणिकों से संबंधित हो अथवा कारणिकों का हो। मिनिस्टीरियल सर्विस।

कारणीय [वि.] (सं.) दावा करने योग्य। वाद योग्य।

कारणोपाधि [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर (वेदान्त)।

कारतूस [संज्ञा पु.] (पु. कारटूस) मोटे कागज की बनी नली जिसमें गोली, छर्रा तथा बारूद भरी रहती है। गोली।

कारन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कारण'। २-करुणा। रहम।

कारनिस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दीवार की कँगनी या कगर।

कारनी* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कराने वाला। प्रेरक। २-भेद कराने वाला। भेदक।

कारपरदाज़ [वि.] (फा.) १-काम करने वाला। कारकुन। २-प्रतिनिधि। ३-प्रबंधकर्त्ता।

कारपरदाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दूसरे की ओर से किसी कार्य के प्रबंध करने का काम। २-कार्यपटुता।

कारबन [संज्ञा पु.] (अ.) रसायनशास्त्र के अनुसार एक तत्त्व जो सृष्टि के बीच दो रूपों में मिलता है, एक हीरे के रूप में दूसरा कोयले के रूप में।

कारबार [संज्ञा पु.] (फा.) कामकाज। व्यापार। व्यवसाय। पेशा।

कारबारी [वि.] (फा.) कामकाजी। [संज्ञा पु.] कारकुन। कारिन्दा।

कारबोलिक [वि.] (अं.) अलकतरा। संबंधी। अलकतरा मिश्रित अथवा उससे बना हुआ। [संज्ञा पु.] (अं.) एक सार पदार्थ जो पत्थर के कोयले के तेल या अलकतरे से निकाला जाता है।

काररवाई [संज्ञा स्त्री.] (फा) १-काम। कृत्य। २-कर्मण्यता। कार्यतत्परता। ३-गुप्त प्रयत्न। चाल।

कारवाँ [संज्ञा पु.] (फा.) यात्रियों का समूह। मुसाफिरों का झुंड।

कारवेल्ल [संज्ञा पु.] (सं) करेला।

कारसाज [वि.] (फा.) काम बनाने वाला। बिगड़े हुए काम को संभालने वाला।

कारसाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-काम पूरा उतारने की युक्ति। २-चालबाजी। कपट प्रयत्न।

कारस्तानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कारसाजी। कारवाई। २-चालबाजी।

कारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बन्धन। कैद। २-कारागार। ३-पीड़ा। क्लेश। * + [वि.] (हिं.) देखो 'काल'।

कारागार [संज्ञा पु.] (सं.) बंदीगृह। जेलखाना।

कारागृह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कारागार'।

कारादंड, कारादण्ड [संज्ञा पु] (सं.) जेल की सजा।

काराधीक्षक [संज्ञा पु.] (सं) जेलों या बंदीगृहों का वह प्रधान अधिकारी जिसके नचे प्रांत की समस्त जेलें होती हैं। वही प्रांतीय जेलों के सम्बन्ध में वहां की सरकार के प्रति उत्तर-

दायी होता है। *सुपरिन्टेंडेन्ट आफ जेलस।*

कारापाल [संज्ञा पु.] (सं.) कैदखाने या बन्दीगृह का रक्षक।

कारावंदी, कारावन्दी [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दी। कैदी। बन्धुआ। जेल की सजा पाया हुआ व्यक्ति।

कारारोध [संज्ञा पु.] (सं.) कारागार में बन्द करने अथवा होने की क्रिया या भाव। *इंप्रिज़नमेंट।*

कारावास [संज्ञा पु.] (सं.) कारावास में बन्द रहने की स्थिति। कैद।

कारावेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) 'कारागार'।

कारिंदा, कारिन्दा [संज्ञा पु.] (फा.) दूसरे की ओर से काम करने वाला कर्मचारी या गुमाश्ता।

कारिक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) करघे का ताना ठीक करने की लकड़ी।

क़ारिक़ [संज्ञा पु.] (अ.) कुरकी करने वाला।

कारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या। २-नाटक करने वाले की पत्नी। नटी। ३-संकीर्ण राग का एक भेद (संगीत)।

कारिख*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कलौंछ। स्याही। कालिमा। २-काजल। ३-कलंक।

कारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपना काम करने वाली स्त्री।

कारित [वि.] (सं.) कराया हुआ। [संज्ञा पु.] (देश.) काठ बेल।

कारिता [संज्ञा पु.] (सं.) स्तूर से अधिक व्याज जिसे ऋणी ने अपनी इच्छा से देना स्वीकार किया हो।

कारी [वि.] (हिं.) करने वाला। बनाने वाला। जैसे न्यायंकारी। (फा.) घातक। मर्मभेदी। [संज्ञा स्त्री.] करने का काम। जसे चित्रकारी। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'काली'।

कारीगर [संज्ञा पु.] (फा.) हाथ से काम करने वाला। व्यक्ति। दस्तकार। शिल्पी। [वि.] निपुण। कुशल। हुनरमन्द।

कारीगरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अच्छे-अच्छे काम बनाने की कला। निर्माणकला। २-सुंदर बनावट या रचना।

कारीजीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कालीजीरी'

कारु [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्पी। कारीगर। दस्तकार।

कारुणिक [वि.] (सं.) कृपालु। दयालु।

कारुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) करुणा का भाव। दया। मेहरबानी।

कारुपथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का प्राचीन नाम।

क़ारूँ [संज्ञा पु.] (अ.) हजरत मूसा का बड़ा भाई जो बहुत धनी, पर कंजूस था। [वि.] कंजूस। कृपण। मक्खीचूस।

कारू का खजाना–असीम धन। अनन्त सम्पत्ति।

कारूनी [संज्ञा स्त्री.] (?) घोड़ों की एक जाति।

क़ारूरा [संज्ञा पु.] (अ.) मूत्र। पेशाब।

कारूष [वि.] (सं.) करूषदेश-सम्बन्धी। करूष देश का।

[संज्ञा पु.] करूषदेश का निवासी।

कारोंछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'कालौंछ'।

कारो*+ [वि.] (हिं.) देखो 'काला'।

कारोबार [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'कारबार'।

कार्क [संज्ञा पु.] (अ.) एक वृक्ष जिसकी छाल बहुत हलकी होती है और उसके डट्टे बोतलों में लगाये जाते हैं।

कार्ड [संज्ञा पु.] (अ.) १-मोटे कागज का टुकड़ा। २-वह कागज का टुकड़ा जिस पर समाचार लिखकर डाक से भेजा जाता है। ३-ताश। पत्रा।

कार्णिक [वि.] (सं.) कान-संबंधी।

कार्तवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रवंशी। राजा कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन।

कार्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विन और अगहन के बीच का महीना।

कार्तिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) कृत्तिकानक्षत्र में उत्पन्न होने वाले स्कन्दजी। षडानन।

कर्निस [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'कारनिस'।

कार्दम [वि.] (सं.) कीचड़ से भरा हुआ। पंकिल।

कार्पट [संज्ञा पु.] (सं.) पुराने वस्त्र का टुकड़ा। चिथड़ा।

कार्पण्य [संज्ञा पु.] (सं.) कृपणता। कंजूसी।

कार्पासिक [वि.] (सं.) रूई का बना हुआ।

कार्बन [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'कारबन'।

कार्बोनिक [वि.] (अं.) कारबन या कोयला-संबंधी। कारबन मिश्रित। कारबन से बना हुआ।

कार्बोलिक [वि.] (अं.) देखो 'कारबोलिक'।

कार्मण [संज्ञा पु.] (सं.) मन्त्र-तन्त्र आदि का प्रयोग।

कार्मणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जादू-टोना।

कार्मणोन्माद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उन्माद रोग।

कार्मना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कार्मण'।

कार्मार [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मकार। लोहार।

कार्मिक [वि.] (सं.) १-काम में लगा हुआ। २-बनाया हुआ।

[संज्ञा पु.] मजदूर। श्रमिक।

कार्मिक-संघ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रमिक-संघ। ट्रेड यूनियन।

कार्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष। २- का एक भाग। चाप। ३-इन्द्रधनुष। धुनने की धुनकी। ५-योग में एक ६-धनुराशि। ७-एक प्रकार की बकायन। ६-सफेद खैर।

कार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम। कृत्य। २-काम करने की स्थिति। क्रिया। ३-वह जो कारण से उत्पन्न हो। ५- सिद्ध के निमित्त होने वाला प्रयत्न। व्यवसाय, सेवा, जीविका आदि के से किया जाने वाला कार्य।

कार्यकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई विशेष करने वाला। २-कर्मचारी।

कार्य-कारण-भाव [संज्ञा पु.] (सं.) कार्य कारण का संबंध।

कार्य-कारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी कार्य अथवा व्यवस्था आदि के निमित्त हुई समिति। २-प्रबंधकारिणी। *वर्किंग कमेटी।*

कार्यकारी [संज्ञा पु.] १-विशेष रूपसे करने वाला व्यक्ति। २-किसी पदाधिकारी अनुपस्थिति में उसके पद पर रहकर सब कार्यों को करने वाला। *ऐक्टिंग।*

कार्यक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-होने अथवा जाने वाले कार्यों का क्रम। २-इस प्रकार बनाने वाली कार्यों की सूची। प्रोग्राम।

कार्यकुशल [वि.] (सं.) काम करने में प्रवीण

कार्यक्षम [वि.] (सं.) काम करने में दक्ष।

कार्यदिवस [संज्ञा पु.] (सं.) दिन के कोई व्यक्ति जितनी देर कार्य करता और जितनी गिनती एक पूरे दिन है। *वर्किङ्ग-डे।*

कार्यदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम की भाल। २-किये हुए काम की फिर से जाँच

कार्यदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) काम की देख करने वाला। निरीक्षक।

कार्यपंचक, कार्यपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) के पांच विशेष काम-अनुग्रह, तिरोभाव आदान, स्थिति और उद्भव।

कार्यपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कार्य-कारिणी'। [वि.] किसी राज्य या संस्था प्रबंध, शासन या कार्य साधन से रखने वाला।

कार्यपालिकाशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्य-कारी शक्ति या प्रबन्धाधिकार।

कार्यपुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंडबंड काम करने वाला व्यक्ति। उन्मत्त। २-क्षपणक। बौद्ध भिक्षुक।

कार्यवश [क्रि वि] (सं) काम की वजह से। कार्य के कारण।

कार्यवाद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवृत्तिवाद। कर्मण्यतावाद।

कार्यवाहक [संज्ञा पु.] (सं) किसी पदाधिकारी की अनुपस्थिति में उसके पद पर रह कर सब कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न करने वाला व्यक्ति। स्थानापन्न।

कार्यवाहक-अध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं) स्थानापन्न अध्यक्ष।

कार्यवाही [संज्ञा स्त्री] देखो 'कारवाई'।

कार्यशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काम करने का कारखाना या स्थान। वर्कशाप।

कार्यशेष [संज्ञा पु.] (सं.) काम का अवशेष या बाकी भाग।

कार्यसम [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायमतानुसार चौबीस जाति के अन्तर्गत एक जाति।

कार्यसमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कार्यकारिणी'।

कार्यसागर [संज्ञा पु.] (सं) बड़ा काम। भारी काम।

कार्यसाधक [वि.] (सं.) काम पूरा करने वाला।

कार्यसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्य की सिद्धि। अभीष्टसिद्धि। कामयाबी।

कार्यहंता, कार्यहन्ता [वि.] (सं.) काम बिगाड़ने वाला।

कार्यहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) वह कारण जिसके द्वारा कोई कार्य अथवा व्यवहार (मुकदमा) न्यायालय के समक्ष विचारार्थ रखा जाता है। कॉज आफ-ऐक्शन।

कार्याधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह कार्यकर्त्ता अथवा अधिकारी जिस पर कोई विशेष कार्य य प्रबंध करने का भार हो।

कार्याध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह मुख्य अधिकारी जो सब के ऊपर रह कर किसी कार्य अथवा प्रबंधादि की देखभाल करता हो।

कार्यान्वित [वि.] (सं.) काम में लगा हुआ। २-प्रत्यक्ष कार्य के रूप में किया हुआ।

कार्यार्थी [वि.] (सं.) कार्य की सिद्धि चाहने वाला। कोई गरज रखने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मुकदमे की पैरवी करने वाला।

कार्यापन्न [वि.] (सं.) काम में लग्न हुआ।

कार्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां किसी विशेष व्यापार अथवा कार्य की व्यवस्था करने वाले अधिकारी बैठकर सब कार्य नियमित और व्यवस्थित रूप से करते हों। दफ्तर। आफिस।

कार्यावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी सभा, समिति की बैठक के विचारणीय विषयों की सूची। एजेंडा।

कार्रवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कारखाई'।

कार्श्य [संज्ञा पु.] (सं) १-दुबलापन। २-साल का वृक्ष।

कार्षापण [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन समय की एक मुद्रा या सिक्का।

कार्ष्ण [वि.] (सं.) १-कृष्ण-संबंधी। २-कृष्ण-द्वैपायन-संबंधी। ३-कृष्णमृग-सम्बन्धी।

कार्ष्णायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यासवंशीय ब्राह्मण। २-वसिष्ठ गोत्र का ब्राह्मण।

कार्ष्णि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृष्ण का पुत्र। २-कामदेव। ३-एक गंधर्व का नाम।

कार्ष्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर।

कार्ष्ण्यं [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णता। कालापन।

कालंजर [संज्ञा पु.] (सं.) 'कालिंजर'।

काल [संज्ञा. पु.] (सं.) १-वह सम्बन्ध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य और वर्तमान आदि की प्रतीति होती है। समय। वक्त। टाइम। २-अंत। मृत्यु। अन्तिम काल। ३-यमराज। यमदूत। ४-नियत समय। नियत ऋतु। ५-अवसर। मौका। ६-अकाल। दुर्भिक्ष। महंगी। ७-काला सांप। ८-लोहा। ९-शनि। [वि.] काला। काले रंग का। ❀ [क्रि. वि.] (हिं.) कल। *काल काटना*-१-समय व्यतीत करना। २-मुशकिल से समय बिताना। *काल के गाल में जाना*-मर जाना। समाप्त होना। *कालक्षेप करना*-देर करना। *काल पाकर*-१-कुछ समय पश्चात। २-मौका पाकर।

कालकंट, कण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

कालकंठ, कालकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-मोर। ३-नीलकंठ पक्षी। ४-गौरापक्षी। ५-खंजन।

कालकंदक, कालकन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का सांप।

कालकंध, कालकन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) तमाल वृक्ष।

कालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँख की पुतली। २-बीजगणित में द्वितीय अव्यक्त राशि। ३-एक केतु का नाम। ४-यकृत।

कालकर्णिका [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) गरीबी। धन का अभाव।

कालकवि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

कालका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कश्यप की पत्नी का नाम।

कालकूट [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीव्र विष। काला बच्छ नाग।

कालकूटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुचले का वृक्ष। २-शिव। महादेव।

कालकेशी [संज्ञा स्त्री] (सं) काले बाल वाली स्त्री।

कालकेतु [संज्ञा पु.] (सं) एक राक्षक का नाम।

कालकोठरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जेल खाने की एक संकुचित और अंधेरी कोठरी जिसमें अलग रखे जाने वाले कैदी रखे जाते हैं।

कालक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) समय का प्रवाह।

कालक्षेप [संज्ञा पु] (सं.) दिन काटना। समय बिताना।

कालगंगा, कालगङ्गा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-वह गंगा जिसका रंग काला हो अर्थात् यमुना नदी। २-लंकाद्वीप की एक रानी।

कालगंडैत [संज्ञा पु.] (हिं) काली चित्तियों वाला विषधर सर्प।

कालगंध, कालगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला चन्दन। २-एक प्रकार का काला सर्प।

कालग्रंथि, कालग्रन्थि [संज्ञा पु.] (सं.) वत्सर। साल।

कालग्रास [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मौत।

कालगौतम [संज्ञा पु.] (सं) एक ऋषि का नाम

कालचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक समय का उलट फेर। २-एक वस्त्र का नाम।

कालजुवारी [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ाजुवारी। अत्याधिक जुवा खेलने वाला। २-ज्योतिषी ३-मुर्गा।

कालज्ञान [संज्ञा पु.] (सं) १-समय की पहचान। स्थिति तथा अवस्था की जानकारी। २-मृत्यु का समय जान लेना।

कालतुल्य [वि.] (सं.) मृत्यु के समान। मौत के बराबर।

कालतुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांख्यमतानुसार यह विचार कर संतुष्ट रहना कि जब समय आयेगा तब यह बात स्वयं हो जायेगी।

कालत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) भूत, भविष्य और वर्तमानकाल।

कालदंड, कालदण्ड [संज्ञा पु] (सं.) मौत का चपेटा। मृत्युदंड।

कालदमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काल या मृत्यु निवारणी दुर्गा।

कालदान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी सभा, बैठक या अधिवेशन आदि को स्थगित करना। स्थगित करने का भाव।

कालधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृत्यु। विनाश। अवसन। २-समयानुसार धर्म।

कालनाग [संज्ञा पु.] (सं.) काला सर्प जिसके काटने से मौत अवश्य होती है।

कालनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-कालभैरव।

कालनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

कालनिरूपण [संज्ञा पु.] (सं.) समय का निरूपण

करना।

कालनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) समय का निर्धारण।

कालनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुली।

कालनिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीवाली की रात। अंधेरी रात।

कालनेमी [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस जो रावण का मामा था।

कालपक्व [वि.] (सं.) अपने आप समय पर पकने वाला।

कालपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जहाज की दरार में सन आदि ठूसने का कार्य।

कालपर्णी [संज्ञ स्त्री.] (सं.) काली तुलसी।

कालपाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-समय का बन्धन। २-यमराज का बन्धन।

कालपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर का विराट रूप। २-काल।

कालप्रभात [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरदऋतु। २-बुरा दिन।

कालप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें काला मूत्र आता है।

कालबंजर [संज्ञा पु.] (हिं.) जो भूमि बहुत दिनों से जोती बोई न गई हो। पुरानी परती।

कालबूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कच्चा भराव जिसके ऊपर महराब बनाई जाती है। २-काठ का सांचा जिस पर चढ़ाकर जूता सीया जाता है। ३-रस्सी बटने का एक औजार।

कालभक्ष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव। महादेव।

कालभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के मुख्यगणों में से एक गण।

कालम [संज्ञा पु.] (अ.) १-पुस्तक या संवादपत्र के पृष्ठ की चौड़ाई किये हुए विभागों में एक। २-पंक्ति। ३-स्तम्भ। खम्भा।

कालमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली तुलसी।

कालमहिमा [संज्ञा स्त्री] (सं.) समय का महात्म्य। समय की शक्ति।

कालमेघ [संज्ञा पु.] (सं.) औषधि में प्रयोग होने वाला एक पौधा।

कालयवन [संज्ञा पु.] (सं.) यवनों का एक राजा जिसने मथुरा में जरासंध से युद्ध किया था।

कालयापन [संज्ञा पु.] (सं.) समय बिताना। कालक्षेप। दिन काटना। गुजारा करना।

कालयुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभव आदि साठ संवत्सरों में से बावनवाँ।

कालयोग [संज्ञा पु.] (सं.) समय या वक्त का सिलसिला या क्रम।

कालर [संज्ञा पु.] (अं.) १-गले में बांधने का एक प्रकार का पट्टा। २-गले के चारों ओर की कुरते या कमीज की उठी हुई पट्टी।

कालराति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कालरात्रि'

कालरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अंधेरी और भयावनी रात। २-प्रलय की रात। ३-मौत की रात। ४-ज्योतिष के अनुसार रात्रि का वह भाग जिसमें किसी कार्य का आरम्भ निषिद्ध समझा जाता है। ५-दीवाली की रात। ६-दुर्गा की एक मूर्ति। ७-यमराज की बहिन। ८-मनुष्य की आयु में ७७ वर्ष के सातवें महीने के सातवें दिन पड़ने वाली रात।

कालरूप [वि.] (सं.) काल के समान। मौत के सदृश।

कालवाचक [वि] (सं.) समय का ज्ञान कराने वाला।

कालवाची [वि.] (सं.) देखो 'कालवाचक'।

कालविपाक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम के पूरा होने की अवधि।

कालवृंत, कालवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) कुलथी।

कालवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह ब्याज जो बढ़ते-बढ़ते दूने से अधिक हो जाय।

कालवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार योग या समय जिसमें किसी कार्य का करना निषिद्ध हो।

कालशाक [संज्ञा पु.] (सं.) पटुआ साग। करेमू।

कालसर [संज्ञा प.] (हिं.) देखो 'कालसिर'।

कालसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला हिरन। २-काली तुलसी।

कालसिर [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज के मस्तूल का सिरा।

कालसूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक सूक्त जिसमें काल का वर्णन है।

कालसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) फाँसी की रस्सी।

कालसूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पान्त के समय का सूर्य।

कालसेन [संज्ञा पु.] (सं.) हरिचन्द्र को मोल लेने वाले डोम का नाम।

कालांजनी, कालाञ्जनी [संज्ञा पु.] (सं.) नरमा। वनकपास।

कालांतक, कालान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

कालांतर, कालान्तर [संज्ञा पु.](सं.) समयान्तर। उत्पत्ति के बाद का समय।

कालांतर-विष, कालान्तर-विष [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा विष जिसका प्रभाव तत्काल नहीं दीखता परन्तु बाद में होता है। जैसे-चूहे का विष।

काला [वि.] (हिं.) १-काजल या कोयले के रंग का। कृष्ण। स्याह। २-कलुषित। बुरा। ३-भारी। प्रचंड। बड़ा।

काला नाग-घातक। अत्यन्त कुटिल। *काला पहाड़*-डरावनी और न बीतने योग्य। *काला चोर जानना-समझना*-तुच्छ समझना। *काला भुजंग*-बहुत काला आदमी। *काला मुंह करना*-१-बुरा काम करना। २-अनुचित सहवा या समागम करना। ३-कलंक लगाना। ४- बुरे को दूर हटाना। ५-झंझट दूर बुरे आदमी का दूर होना। ७-कलंक कारण होना।

कालाकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक धान।

कालाकलूटा [वि.] हिं.) बहुत काला।

कालाकृष्ट [वि.](हिं.) मौत के पंजे में फंसा हु

कालाक्षरिक, कालाक्षरी [संज्ञा पु.] (सं.) समय पर विद्या पढ़ने वाला विद्यार्थी। [वि.] (सं) सब विद्याओं और भाषाओं पंडित।

कालागरु [संज्ञा पु.] (सं.) काला अजगर।

कालागांड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार गन्ना जो बहुत मोटा और काले रंग का है।

कालागुरु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कालागरु'।

कालागेंड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कालागां

कालाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकाल अग्नि।

कालाचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत भारी २-तुच्छ मनुष्य।

कालाजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार जीरा जो रंग में काला होता है। २- प्रकार का धान।

कालाढोकरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार वृक्ष।

कालातिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) समय का उल्लं

कालातिरेक [संज्ञा पु.] (सं.) निर्दिष्ट समय बिताना।

कालातिल [संज्ञा पु.] (सं.) काले रंग का ति *काले तिल चबाना*-अधीन या वशवर्ती होन

कालातीत [वि.] (सं.) जिसका समय बीत हो। विगत। बीता हुआ।

कालात्यक [संज्ञा पु.] (सं.) कालस्वरूप मेश्वर।

कालात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) समय को नष्ट

कालादाना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार लता जिसमें नीला फूल होता है इसके रेचक होते हैं।

कालाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

कालानमक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार काले रंग का नमक जो पाचक होता सोंचर।

कालानाग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काला सां विषधर सर्प। २-अत्यन्त कुटिल या खोटे आदमी।

काला-पहाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत भारी औ

भयानक।

कालापान [संज्ञा पु.] (हि.) ताश में 'हुकुम' का रंग।

कालापानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बंगाल की खाड़ी का वह भाग जहां का पानी बहुत काला होता है। २–निकोबार और एंडेमानद्वीप जहां देश निकालने के कैदी भेजे जाते हैं। ३–देश निकाले का दंड। ४–मदिरा। शराब।

कालापोश [वि.] (हिं.) काला वस्त्र पहरे हुए।

कालाबाल [संज्ञा पु.] (सं.) झांट। पशम। *काला बाल जानना या समझना*–किसी को अत्यन्त तुच्छ समझना।

कालाभुजंग, कालाभुजङ्ग [वि.] (हिं.) बहुत काला। अत्यन्त काला।

कालाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) बरसने वाला काला बादल।

कालामोहरा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का विषैला पौधा।

कालायस [संज्ञा पु.] (सं.) कांतलोह।

कालावधि [संज्ञा. पु.] (सं.) नियत समय। मुकर्रर वक्त।

कालाशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष में वह समय जो शुभ कार्यों के लिए निषिद्ध हैं।

कालास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार में प्रतिद्वन्दी का मरना निश्चित समझा जाता था।

कालिंग, कालिङ्ग [वि.] (हिं.) कलिंग देश का। [संज्ञा पु.] (सं.) १–कलिंग देश का निवासी। २–कलिंग देश का राजा। ३–हाथी। ४–सांप। ५–तरबूज। ६–कुम्हड़ा। ७–लोहा।

कालिंगिका, कालिङ्गिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) निसोत।

कालिंगी, कालिङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ककड़ी।

कालिंजर, कालिञ्जर [संज्ञा पु.] (हि.) एक पर्वत जो ३० मील बांदा के पूर्व में है।

कालिंदी, कालिन्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कलिन्द पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी। २–ओड़व जाति की एक रागिनी।

कालिंदीभेदन, कालिन्दीभेदन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने हल से यमुना नदी को वृंदावन तक खींच लाने वाले, बलराम।

कालि*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'कल'।

कालिक [वि.] (सं.) १–समय-सम्बन्धी। २–समयोचित। ३–जिसका समय नियत हो। [संज्ञा पु.] नक्षत्र मास। २–कलाचन्दन। ३–कौंचपक्षी।

कालिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–देवी की एक मूर्ति। चंडिका। काली। २–कालिख। ३–कालापन। ४–आँख की पुतली। ५–स्याही मसी। ६–बिच्छू। ७–रणचंडी। ८–चार वर्ष की कन्या। ९–कौवे की मादा। १०–मदिरा। शराब।

कालिकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) जिसकी आँख स्वभावतः काली हो।

कालिकापुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण का नाम।

कालिकावन [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत।

कालिकाला+ [क्रि. वि.] (हि.) कदाचित्। कभी। किसी समय।

कालिख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह काली बारीक बुकनी जो आग या दीपक के धुएँ के जमने से वस्तुओं में लग जाती है। कलौंछ। स्याही *कालिख लगना*–कलंक लगाना। *कालिख लगाना*–१–बदनामी का कारण होना। २–दोषी ठहराना।

कालिज [संज्ञा पु.] (अ.) वह विद्यालय जिसमें उच्चकोटि की पढ़ाई होती है।

कालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्द्रानक्षत्र।

कालिब [संज्ञा पु.] (अ.) १–एक गोलाकार ढांचा जिसपर चढ़ाकर टोपियां ठीक की जाती हैं। २–शरीर। देह।

कालिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कालापन। २–कालिख। कलौंछ। ३–अँधेरा। ४–कलंक। लांछन।

कालिय [संज्ञा पु.] (सं.) एक सर्प जिसे श्रीकृष्ण ने वश में किया था। [वि.] काल संबंधी।

कालियदमन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

काली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चंडी। कालिका। दुर्गा। २–पार्वती। गिरिजा। ३–हिमालय पर्वत से निकलने वाली एक नदी। ४–अग्नि की सात जिह्वाओं में से पहली।

कालीक [संज्ञा पु.] (सं.) क्रौंचपक्षी। एक प्रकार का बगुला।

कालीघटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उमड़ता हुआ काला बादल। सघन कृष्ण मेघमाला।

कालीजबान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह जिह्वा जिस से निकली अशुभ बातें सच निकल जावें।

कालीजीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटी जीरा। २–एक औषधि।

कालीदह [संज्ञा पु.] (हि.) वृन्दावन में यमुना का एक दह या कुण्ड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।

कालीन [वि.] (सं.) काल-सम्बन्धी। जैसे—समकालीन यह शब्द समस्त पद के अन्त में आता है अकेला व्यवहार में नहीं आता।

क़ालीन [संज्ञा प.] (अ) गलीचा। बेलबूटे बना हुआ ऊन या सूत का मोटा और भारी बिछावन।

कालीपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण जिस में काली के सम्बन्ध में वर्णन किया गया है।

कालीफुलिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का बुलबुल।

कालीमिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चिकनी करैल मिट्टी जो लीपने-पोतने के काम आती है।

कालीमिर्च [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गोल मिर्च। देखो 'मिर्च'।

कालीयक [संज्ञा पु.] (सं.) एक सुगंधित पीले रंग का काठ।

कालीलर [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक प्रकार की लता।

कालीशीतला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीतला या चेचक रोग जिसमें शरीर में काले दाने निकलते हैं और रोगी को बहुत पीड़ा होती है।

कालीहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटीहर्र। जंगीहर्र।

कालुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) कलुषता। मैल।

कालू [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सीप के अन्दर का कीड़ा। [वि.] काला।

कालेश [संज्ञा पु.] (सं.) १–काला चन्दन। २–दारुहल्दी। ३–कुकुरमुत्ता।

कालेय [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य। शिव। महादेव।

कालोत्पादित [वि.] (सं.) यथा समय उत्पन्न।

कालोपयुक्त [वि.] (सं.) यथा समय आवश्यक।

कालौंछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कालापन। स्याही। २–कालिख।

काल्पनिक [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पना करने वाला [वि.] (सं.) कल्पित। मनगढ़ंत। फर्जी।

काल्य [वि.] (सं.) प्रातःकाल किया जाने वाला।

काल्ह, काल्हि*+ [क्रि. वि] (हि.) देखो 'कल'।

कावड़ [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'कावर'।

कावर [संज्ञा पु.] (देश.) एक छोटी बर्छी जो ह्वेल आदि का शिकार करने के निमित जहाज में रखते हैं।

कावरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्ते का फंदा। मुद्धी।

कावल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी संपत्ति को सुरक्षित रखने के निमित्त या किसी व्यक्ति को भगाने आदि से रोकने के लिए अपने अधिकार, देखरेख अथवा रक्षा में लेकर रखने की क्रिया या भाव अभिरक्षा। कास्टडी।

कावली [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार की मछली।

कावा [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया। चक्कर। *कावा काटना*–१–चक्कर खाना। २–आंख बचाकर दूसरी ओर फिर निकल जाना।

कावा देना-चक्कर देना। वृत्त में दौड़ाना। *कावे पर लगाना*-कावा या चक्कर देना (घोड़े को।

कावेर [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) कुंकुम। रोली।

कावेरी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-दक्षिण की एक नदी। २-हल्दी। ३-वेश्या। ४-सम्पूर्ण जाति की एक रागनी।

काव्य [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-वह रचना, विशेषतः पद्यमयी रचना, जिसके द्वारा चित्त किसी रस अथवा मनोवेग से परिपूर्ण हो जाय। कविता। २-वह पुस्तक जिसमें कविता हो। काव्यग्रंथ। ३-रोला छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारहवीं मात्रा लघु पड़ती है

काव्यलिंग, काव्यलिङ्ग [संज्ञा पु.] (*सं.*) वह अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा अथवा पद के अर्थ द्वारा प्रदर्शित किया जाय।

काव्यसुधा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) वह आनन्द जो काव्य के सुनने पर होता है।

काव्यहास्य [संज्ञा पु.] (*सं.*) प्रहसन। नकल।

काव्या [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-पूतना। २-बुद्धि।

काव्यार्थापत्ति [संज्ञा पु.] (*सं.*) देखो 'अर्थापत्ति अलंकार'।

काश [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-कांस। एक प्रकार की घास। २-खांसी। ३-एक प्रकार का चूहा। ४-एक मुनि का नाम।

काशिका [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-काशीपरी। चित्त को परम शान्ति प्रदान करने वाली। २-जयदित्य और वामन की बनाई हुई पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति'। [वि.] १-प्रकाश करने वाली। २-प्रकाशित। प्रदीप्त।

काशिराज [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-काशि का राजा। २-धन्वन्तरि।

काशीकरवट [संज्ञा पु.] (*सं.*) काशी का एक तीर्थ-स्थान जहाँ प्राचीनकाल में लोग आरे के नीचे कटकर प्राण त्यागना बहुत पुण्य समझते थे।

काशीफल [संज्ञा पु.] कुम्हड़ा।

काशीस [संज्ञा पु.] (*सं.*) कसीस नामक उपधातु।

काशू [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) बरछी। भाला।

काशेय [वि.] (*सं.*) १-काशी का। २-काशी में उत्पन्न।

कारत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-खेती। कृषि। २-जमींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी भूमि पर खेती करने का स्वत्व। *कारत लगाना*-अवधि पूर्ण हो जाने के पश्चात किसी काश्तकार को किसी खेत पर दखलकारी का स्वत्व प्राप्त हो जाय।

कारतकार [संज्ञा पु.] (फा.) कृषक। किसान। खेतिहर।

कारतकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-खेतीबारी। किसानी। काश्तकार का स्वत्व या हक। ३-वह भूमि जिस पर किसी को खेती करने का स्वत्व प्राप्त हो।

कारमीर [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-एक देश का नाम देखो 'काश्मीर'। २-काश्मीर का निवासी। ३-काश्मीर में उत्पन्न वस्तु। ४-केसर। ५-सुहागा।
[वि.] (*सं.*) काश्मीर का। काश्मीर में उत्पन्न।

कारमीरा [संज्ञा पु.] (*सं.*) एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

काश्मीरी [वि.] (*हिं.*) १-काश्मीरदेश संबंधी। काश्मीर देश का। २-काश्मीरदेश निवासी।

काश्यप [वि.] (*सं.*) १-कश्यप संबंधी।

काश्यपी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-पृथ्वी। जमीन। प्रजा।

काष [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-सान का पत्थर। २-एक ऋषि।

काषाय [वि.] (*सं.*) १-हड़, बहेड़े आदि कसीली वस्तुओं में रंगा हुआ। २-गेरु में रंगा हुआ गेरुआ।

काष्ठ [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-लकड़ी। काठ। २-ईंधन।

काष्ठ-कदली [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) कठकेला।

काष्ठकुट्ट [संज्ञा पु.](*सं.*) कठफोड़वा नामक पक्षी

काष्ठतंतु, काष्ठतन्तु [संज्ञा पु.] (*सं.*) काठ के भीतर रहने वाला कीड़ा।

काष्ठपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) केतकी का वृक्ष।

काष्ठफलक [संज्ञा पु.] (*सं.*) लकड़ी का तख्ता।

काष्ठभूत [वि.] (*सं.*) लकड़ी के समान कड़ा और बेजान।

काष्ठमठी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) चिता। सरा।

काष्ठरंजनी, काष्ठरञ्जनी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) दारुहल्दी।

काष्ठलेखक [संज्ञा पु.] (*सं.*) घुन।

काष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-हद। अवधि। २-उच्चतम चोटी। उत्कर्ष। ३-अठारह पल का समय या एक कला का तीसवां भाग। ४-चन्द्रमा की एक कला। ५-घुड़दौड़ का मैदान। ७-दिशा। ओर। तरफ।

कास [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-खांसी। २-सहिजन का वृक्ष।

कासकद [संज्ञा पु.] (*सं.*) कसेरू।

कासनी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १-एक पौधा जिस की जड़, डंठल और बीज दवा के काम आते हैं। २-इस पौधे का बीज।
[वि.] कासनी के फूल के रंग के समान नीला।

कासमर्द [संज्ञा पु.] (*सं.*) कसौंदा।

कासर [संज्ञा पु.] (*सं.*) भैंसा। महिष।
[संज्ञा स्त्री.] (*देश.*) काली भेड़ जिसके के रोंए लाल होते हैं।

कासा [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्याला। २-भोजन। आहार।

कासार [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-छोटा ताल। पोखर। २-एक प्रकार का ३-२० रगण का एक दंडवृत्त।

क़ासिद [संज्ञा पु.] (*अ.*) सन्देशा ले जाने हरकारा। पत्रवाहक।

कासी+ [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'काशी'।

कासुंदा+ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'कसौंदा'।

कास्टिक [वि.] (*अं.*) जलाने वाली जारक।

काहँ+ [प्रत्य.] (*हिं.*) देखो 'कहँ'।

काह* [क्रि. वि.] (*हिं.*) क्या?। कौन

काहल [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-बड़ा ढोल बिल्ला। ३-मुर्गा। ४-अव्यक्त हुँकार।

काहला [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-वरुण की २-एक अप्सरा का नाम।

काहिल [वि.] (*अ.*) सुस्त। आलसी।

काहिली [संज्ञा स्त्री.] (*अ.*) सुस्ती। आलस।

काही [वि.] (*हिं.*) घास के रंग का। रंग का।

काहु* [सर्व.] (*हिं.*) देखो 'काहू'।

काहू [सर्व.] (*हिं.*) किसी। [संज्ञा पु.] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके दवा के काम में आते हैं।

काहे* [क्रि. वि.] (*हि.*) क्यों? किसलि

किं [अव्य.] (*सं.*) देखो 'किम्'।

किंकर, किङ्कर [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-दास सेवक। नौकर। २-राक्षसों का एक वर्ग।

किंकर्त्तव्य-विमूढ, किङ्कर्त्तव्य-विमूढ [वि.] जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या करना चाहि हक्कावक्का। भौंचक्का।

किंकर्तव्यता, किङ्कर्त्तव्यता [संज्ञा स्त्री] यह चिन्ता कि क्या करना होगा।

किंकिणी, किङ्किणी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) क्षुद्रघंटिका। २-करधनी। ३-खट्टी

किंकिर, किङ्किर [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-हाथी का मस्तक। २-कोकिल। भौंरा। ४-घोड़ा। कामदेव। ६-लालरंग।

किंकिरात, किङ्किरात [संज्ञा पु.] (*सं.*) १- का वृक्ष। २-कटसरैया। ३-कामदेव। सूआ। तोता।

किंगिरी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) छोटी सारंगी के आकार का बाजा।

किंगोरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की झाड़ी।

किंचन, किञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-थोड़ी वस्तु। २-पलाश।

किंचित्, किञ्चित् [वि.] (सं.) कुछ। थोड़ा। अल्प। जरा-सा। [क्रि वि.] कुछ। थोड़ा।

किंचित्मात्र, किञ्चित्मात्र [वि.] (सं.) अल्प। परिमित। थोड़ा।

किंचिलिक, किञ्चिलिक [संज्ञा पु.] (सं.) केंचुआ नामक एक कीड़ा।

किंजल्क, किञ्जल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-पद्म-केशर। कमलकेशर। २-कमल के फूल का पराग। ३-नागकेशर।

किंजल्की, किञ्जल्की [वि.] (सं.) केशरयुक्त। रेशेदार।

किंडरगार्टन [संज्ञा पु.] (जर्मन) खेल खेल में शिक्षा देने की प्रणाली।

किंतु, किन्तु [अव्य.] (सं.) १-पर। परन्तु। लेकिन। २-वरन्। बल्कि।

किंतुघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) ग्यारह करणों में से एक (ज्योतिष)।

किंदुबिल्व, किन्दुबिल्व [संज्ञा पु.] (सं.) गीत गोविन्द के रचयिता वैष्णव कवि जयदेव के ग्राम का नाम जो बंगाल में है।

किंनर* [संज्ञा पु.] देखो ‘किन्नर’।

किंपुरुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो ‘किंपुरुष’।

किंपुरुष, किम्पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-किन्नर २-दोगला। वर्णसंकर। नीच। ३-प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति।

किंभूत, किम्भूत [वि.] (सं.) १-किस प्रकार का। २-विलक्षण। अद्भुत। अजीब। ३-भौंड़ा। भद्दा।

किंवदंती, किम्वदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अफवाह। उड़ती खबर। जन-रव।

किंवा [अव्य.] (सं.) या। अथवा। या तो।

किंशुक [संज्ञा पु.] (सं.) पलाश। ढाक। टेसू।

कि [क्रि. वि.] (हिं.) कैसे?। किस प्रकार?। [अव्य.] (फा.) एक संयोजक शब्द जो कहना, वर्णन करना, देखना, सुनना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषय वर्णन के पहले आता है। इतने में। ३-या। अथवा।

किक [संज्ञा स्त्री.] (अं) पांव का आघात या ठोकर।

किकि [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलकंठ पक्षी। २-नारियल।

किकियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कीं-कीं या कें-कें का शब्द करना। २-चिल्लाना। चीखना। ३-रोना।

किकोरी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पौधा।

किचकिच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्यर्थ का वाद-विवाद। २-झूठा झगड़ा या तकरार।

किचकिचाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-क्रोध से दांत पीसना। २-पूरा बल लगाने के निमित्त दांत पर दांत रखकर दबाना।

किचकिचाहट [संज्ञा पु.] (हिं.) क्रोध में दांत पीसने की अवस्था। किचकिचाने का भाव।

किचकिची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किचकिचाहट। *किचकिची बाधना*–क्रोध में दांत पीसना।

किचपिच [वि.] (हिं.) क्रम रहित। अस्पष्ट। गिचपिच।

किचड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) आंख कीचड़ से भरना। कीचड़ से युक्त होना।

किचरपिचर [वि.] (हि.) देखो ‘गिचपिच’

किछु* [वि.] (हिं.) देखो ‘कुछ’।

किटकिट [संज्ञा पु.] (हिं.) वादविवाद। किचकिच।

किटकिटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-क्रोध से दांत पीसना। २-दांतों के नीचे कंकड़ के समान कड़ा लगना।

किटकिना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपना ठेका दूसरे के नाम कर देता है। २-सुनार का बेलबूटे उभारने का ठप्पा। ३-चाल। चालाकी।

किटकिनादार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जो किसी वस्तु को ठेकेदार से ठेके पर ले।

किटकिरा [संज्ञा पु.] (?) देखो ‘किटकिना’।

किटिभ [संज्ञा पु.] (सं.) केशकीट। जूँ।

किटिभकुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कोढ़।

किड़कना [क्रि. अ.] (हि.) चुपके से चला जाना। खिसकना।

किड़किड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो ‘किटकिटाना’

किण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांसग्रन्थि। २-घुन।

कित*+ [क्रि. वि.] (हिं.) कहां। २-किस ओर। किधर।

कितक*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो ‘कितना’।

कितना [वि.] (हिं.) १-किस परिमाण, मात्रा या संख्या का? २-अधिक। बहुत। ज्यादा। [क्रि. वि.] (हिं.) १-किस परिमाण अथवा मात्रा में। २-अधिक।

कितव [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुआरी। २-धूर्त। छली। ३-पागल। उन्मत्त। ४-खल। दुष्ट। ५-धतूरा। ६-गोरोचन।

किता [संज्ञा पु.] (अ.) १-सिलाई के लिए कपड़े की काटछांट। ब्योंत। २-चाल। ढंग। ३-संख्या। अदद। ४-प्रदेश। भूभाग।

किताब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पुस्तक। ग्रन्थ। २-रजिस्टर। बहीखाता।

किताबी कीड़ा–१-पुस्तक चाट जाने वाला कीड़ा। २-सदा पुस्तक ही पढ़ने वाला व्यक्ति। *किताबी चेहरा*–लम्बी आकृति वाला।

किताबी [वि.] (अ.) किताब के आकार का।

कितिक*+ [वि] (हिं) देखो ‘कितक’ ‘कितना’

कितेक*+ [वि.] (हिं.) १-कितना। २-बहुत। असंख्य।

कितो*+ [वि.] (हिं.) कितना।

कितौ*+ [वि.] (हि.) कितना।

कित्ता+ [वि.] (हिं.) कितना।

कित्ति*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कीर्ति। यश।

किदारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो ‘केदारा’।

किधर [क्रि. वि.] (हि.) कहां? किस ओर? किस तरफ?

किधर आया किधर गया–किसी के आने-जाने की कुछ भी खबर नहीं। *किधर का चाँद निकला*–यह कैसी अनहोनी बात हुई। *किधर जाऊँ क्या करूँ*–कोई उपाय नहीं दीख पड़ता

किधौं* [अव्य.] (हिं.) १-अथवा। या। २-या तो। न जाने।

किन [सर्व.] (हिं.) ‘किस’ का बहुवचन। [क्रि. वि.] १-क्यों न। चाहे। २-क्यों नहीं। * [संज्ञा पु.] चिह्न। दाग।

किनका [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न का टूटा हुआ दाना।

किनाह [वि.] (हिं.) (ऐसा फल) जिसमें कीड़े पड़े हों।

किनाती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तालों के किनारे रहने वाली एक चिड़िया।

किनार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो ‘किनारा’।

किनारदार [वि.] (हिं.) किनारे वाला (वस्त्र)।

किनापेंच [संज्ञा पु.] (हिं.) दरी के ताने की दोनों ओर की मोटी डोरी।

किनारा [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसी वस्तु का वह भाग जहाँ उसकी लम्बाई अथवा चौड़ाई समाप्त होती है। अन्तिम सिरा या छोर। २-नदी या जलाशय का तट। तीर। ३-पार्श्व। बगल।

किनारा करना या कसना–दूर होना। छोड़ना। *किनारे करना*–दूर करना। *किनारे न जाना*–दूर रहना। *किनारे न लगना*–पास न फटकना। *किनारे बैठना*–१-अलग हो जाना। २-मरने को तैयार होना। *किनारे लगना*–समाप्त होना। मरना। *किनारे लगाना*–समाप्त करना। *किनारे होना*–छुट्टी पाना।

किनारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुनहला या रूपहला पतला गोटा।

किनारे [क्रि. वि.] (हिं.) १-सीमा की ओर। सिरे पर। २-तट पर। ३-अलग। पृथक।

किन्नर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के देवता

जिनका मुख घोड़े के समान बताया जाता है। २-गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति।

+ [संज्ञा पु.] (देश.) विवाद। तकरार। दलील।

किन्नरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किन्नर की स्त्री। २-किन्नर जाति की स्त्री। ३-एक प्रकार का तम्बूरा। ४-सारंगी।

किन्निमित्त [वि.] (सं.) किस कारण।

किफ़ायत [संज्ञा पु.] (अ.) १-मितव्यय। कम-खर्ची। २-बचत। ३-थोड़ा मूल्य।

किफ़ायती [वि.] (अ.) कम खर्च करने वाला। सँभालकर खर्च करने वाला।

क़िबलई [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पश्चिम दिशा।

क़िबला [संज्ञा पु.] (अ.) १-पश्चिम दिशा, जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २-मक्का नगर। ३-पूज्य व्यक्ति। पिता। बाप।

क़िबलाआलम [संज्ञा पु.] (अ.) १-ईश्वर। २-राजा। सम्राट। बादशाह।

क़िबलागाह, क़िबलागाही [संज्ञा पु.] (अ.) पिता। बाप।

क़िबलानुमा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पश्चिम दिशा को बताने वाला यंत्र। दिग्दर्शक यन्त्र।

किम् [वि सर्व.] (सं.) १-क्या? २-कौनसा?

क़िमरिक [संज्ञा पु.] (अं.) कैम्ब्रिक नामक एक प्रकार का कपड़ा जो नैनसुख के समान होता है।

किमाकार [वि] (सं.) देखो 'किंभूत'।

किमाछ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केंवांच'।

क़िमाम [संज्ञा पु.] (हिं.) शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत।

क़िमारख़ाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जुआ खेलने का स्थान।

किमारबाज़ [वि.] (फ़ा.) जुआरी। जुआ खेलने वाला।

किमारबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) जुवे का खेल।

क़िमाश [संज्ञा पु.] (अ.) तर्ज। ढंग। रीति। २-गंजीफे का रंग।

किमि* [क्रि. वि.] (हिं.) कैसे? किस प्रकार? किस तरह।

किमुत [अव्य.] (सं.) १-क्यों। २-अथवा। या। ४-बहुत।

किम्मत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चातुरी। होशियारी

कियत् [क्रि. वि.] (सं.) कितना।

कियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेतों या बगीचों में थोड़े-थोड़े अंतर पर दो पतले मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें बीज या पौधे बोये जाते हैं। क्यारी। २-खेत का एक विभाग। ३-एक बड़ा कड़ाह जिसमें समुद्र का खारा पानी नमक नीचे बैठने के निमित्त भरते हैं। ४-चार पाई (सोनारों की बोली में)।

कियाह [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रंग का घोड़ा।

किरंटा [संज्ञा पु.] (अ.) छोटे दरजे का क्रिस्तान।

किरक [संज्ञा. पु.] (सं.) लेखक। लिखनेवाला। कातिब।

किरका [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा कंकड़। किरकिरी।

किरकिटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'किरकिरी'।

क़िरकिन [संज्ञा पु.] (हिं.) गदहे या घोड़े का चमड़ा जो दानेदार होता है।

किरकिरा [वि.] (हिं.) कंकरीला। जिसमें छोटे छोटे कड़े रवे हों।

किरकिरा हो जाना–रंग में भंग हो जाना।

किरकिराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किरकिटी पड़ने के समान पीड़ा होना। २-देखो 'किटकिटाना'।

किरकिराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किरकिराने की सी पीड़ा। २-दांत के नीचे कंकरीली वस्तु पड़ने का शब्द। ३-कंकरीलापन।

किरकिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धूल या तिनके का छोटा टुकड़ा। २-हेठी। अपमान।

किरकिल* [संज्ञा पु.] (हिं.) गिरदान। गिरगिट। ❀ [संज्ञा स्त्री.] शरीरस्थ दश वायुओं में से वह वायु जिसके कारण छींक आती है।

किरकिला [संज्ञा पु.] (हिं.) आकाश से मछलियों पर टूटने वाला पक्षी।

किरकी❀ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार का गहना।

किरच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की पतली तलवार जिसकी नोंक भोंक दी जाती है। २-छोटा नुकीला टुकड़ा।

किरचिया [संज्ञा पु.] (हिं.) बगले के समान एक पक्षी।

किरची [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रेशम का लच्छा।

किरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किरन।

किरण-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) किरणों की सहायता से आंखों की पुतलियों पर बनने वाला वह चिह्न जो किसी चमकदार रंगीन पदार्थ पर से सहसा दृष्टि हटा लेने पर भी कुछ समय तक बना रहता है।

किरणमाली [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

किरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह ज्योति की अति सूक्ष्म रेखाएं जो प्रवाह के रूप में सूर्य चन्द्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकल कर प्रसारित होती दीख पड़ती हैं। प्रकाश की रेखा। किरण। २-कलाबत्तू की झालर जो कपड़ों में लगाई जाती है।

किरन फूटना–१-सूर्योदय होना। २-कलाबत्तू की झालर।

किरनारा [वि.] (हिं.) किरणों वाला।

किरपा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृपा'।

किरपान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कृपाण'।

किरम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कृमि। कीड़ा। देखो 'किरमदाना'।

किरमई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की या लाह।

किरमाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार।

किरमाला [संज्ञा पु.] (हिं.) अमलतास। वारा।

किरमिच [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का विलायती कपड़ा जिसके परदे, जूते बनाये जाते हैं तथा जिस पर तैल अंकित होते हैं। कैन्वस।

किरमिज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मटमैलापन हुए करौंदिया रंग। हिरमिजी। २- रंग का घोड़ा।

किरयात [संज्ञा पु.] (हिं) चिरायता।

किरराना [क्रि अ.] (हिं.) १-क्रोध से पीसना। २-किर्र किर्र शब्द करना।

किरवार* [संज्ञा पु.] (हिं) तलवार।

किरवारा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अमलतास

किरांची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बैलगाड़ी पर अनाज भूसा आदि लादा जाता है।

किरात [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जाति। २-हिमालय का पूर्वीय भाग उसके आस-पास का देश।

क़िरात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जवाहरात की लगभग ४ जौ के बराबर होती है।

किरातपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव

किरातार्जुनीय [संज्ञा पु.] (सं.) भारविकृत सर्गों का एक काव्य।

किरातनाशी [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

किरातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किरात की स्त्री। २-जटामासी।

किराती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किरात की २-दुर्गा। ३-स्वर्ग की गंगा। ४-कुटनी ५-चँवर डोलने वाली।

क़िरान+ [क्रि. वि.] (अ.) पास। निकट। नज़दीक।

किराना [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्दी, मिर्च मसाले जो पंसारियों की दूकान पर बिकते हैं [क्रि. स.] पछोरना। सूप से बनाना या करना।

किरानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसके पिता में से एक युरोपियन तथा दूसरा तीय हो। २-देखो 'लिपिक'।

किराया [संज्ञा पु.] (अ.) वह दाम जो व्यक्ति की कोई वस्तु काम में लाने के

में उस वस्तु को स्वामी को दिया जाय। भाटक। भाड़ा। रेण्ट।

किरायेदार [संज्ञा पु.] (फा.) किसी वस्तु को भाड़े पर लेने वाला व्यक्ति।

किरार [संज्ञा पु.] (देश.) एक जाति।

किराव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केराव'।

किरावल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के निमित्त आगे जाती है।

किरासन [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगरेजी 'केरोसीन' का अपभ्रंश शब्द। मिट्टी का तेल। घासलेट का तेल।

किरिच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नोकदार टुकड़ा। देखो 'किरच'।

किरिकिरा-गोला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जहाजी गोला जो शत्रु के जहाज के पाल आदि फाड़ने या मस्तूल आदि गिराने के काम आता था।

किरिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'किरण'।

किरिम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृमि'।

किरिमदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) किरमिज नामक कीड़ा जो थूहर के पेड़ पर फैल जाता है, इन को सुखाकर रंग बनाया जाता है।

किरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १- शपथ। सौगंध। कसम। २-कर्तव्य। काम। ३-मृतव्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म।

किरियाकरम+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्रिया-कर्म। मृतकर्म। २-दुर्दशा।

किरिना+ [क्रि. अ.] (हिं.) भरपूर बल लगाने के निमित्त दाँत पर दाँत रखकर दबाना।

किरीट [संज्ञा पु.] (सं) १-एक प्रकार का शिरो-भूषण। मुकुट। ताज। २-एक वर्णवृत्त या सवैया जिसमें आठ भगण होते हैं।

किरीटमाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन। २-किरीट धारण करने वाला।

किरीटी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-इन्द्र। अर्जुन। ३-राजा। [वि.] किरीट धारण करने वाला। जो किरीट पहने हो।

किरीरा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'क्रीड़ा'।

किरोड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करोड़'

किरोध* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'क्रोध'।

किरोर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'करोड़'।

किरोलना [क्रि स.] (हिं.) करोदना। खुरचना।

किरौना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कीड़ा।

किर्च* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'किरच'।

किर्मिज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का रंग। हिरमिजी। २-हिरमिजी रंग का घोड़ा।

किर्मीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीमसेन द्वारा मारा गया एक राक्षस। २-नारङ्गी का वृक्ष। [वि.] चितकबरा।

किर्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छेनी जिससे धातु पर खुदाई की जाती है।

किल [अव्य.] (सं.) वास्तव में। सचमुच। संभवतः। शायद। २-निश्चय।

किलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किलकने की क्रिया। हर्षध्वनि करने की क्रिया। २-आनन्दसूचक शब्द। किलकार।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलकना [क्रि. अ] (हिं.) किलकारी मारना। हर्षध्वनि करना।

किलकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हर्षध्वनि।

किलकारना [क्रि. अ.] (हिं.) हर्षध्वनि करना।

किलकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) हर्षध्वनि।

किलकिंचित, किलकिञ्चित [संज्ञा पु.] (सं.) नायक के समागम से प्रमुदित होकर नायिका जो स्मित-हास, भय, क्रोधादि हाव-भाव प्रदर्शित करती है उसे 'किलकिंचित' कहते हैं।

किलकिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वादविवाद। किटकिट। झगड़ा।

किलकिला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किलकारी। हर्ष-ध्वनि। आनन्दसूचक शब्द। [संज्ञा पु.] १-मछली खाने वाला एक पक्षी। २-समुद्र का वह भाग जहां की लहरें घोर शब्द करती हैं।

किलकिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) आनन्दसूचक शब्द करना। हर्षध्वनि करना। २-अस्पष्ट शब्दों में चिल्लाना। ३-वादविवाद करना।

किलकिलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किलकिलाने का शब्द।

किलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बढ़ई का चिह्न लगाने का औजार।

किलकैया [संज्ञा पु.] (देश.) नहरुए के ढंग का एक रोग जिसमें चौपायों के खुरों में कीड़े पड़ जाते हैं। [संज्ञा पु.] (हिं.) किलकने वाला।

किलटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का टोकरा।

किलना [क्रि. अ] (हिं.) १-कीला जाना। २-वश में किया जाना। ३-गति का रोका जाना।

किलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पशुओं के शरीर में रहने वाला एक कीड़ा।

किलबिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कुलबुलाना'

किललाना [क्रि अ.] देखो 'चिल्लाना'।

किलवांक [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार का काबुली घोड़ा।

किलवा [संज्ञा पु] (हिं) भूमि खोदने का बड़ा फावड़ा।

किलवाई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सूखी घास या पयाल इकट्ठा करने की फरुई।

किलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-कील ठुकवाना। कील जड़वाना। २-जादू या टोना करवा देना। मन्त्र या तंत्र द्वारा किसी भूतप्रेत के विघ्न-कारी कृत्यों को रुकवा देना।

किलवारी+ [संज्ञा स्त्री.] ((हिं.) पतवार। छोटा डांड।

किलविष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किल्विष'।

किलहँट [संज्ञा पु.] (हिं.) सिरोही नाम का पक्षी।

किलहा [संज्ञा पु.] (हिं.) आम का अचार जो तेल में बना हुआ हो।

क़िला [संज्ञा पु.] (अ.) लड़ाई के समय बचाव करने का एक सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़। कोट।
किला फतह करना–महा कठिन कार्य कर लेना *किला बांधना*–शतरंज के खेल में अपने राजा को सुरक्षित रखना। *किला टूटना*–किसी कठिन कार्य का सम्पन्न होना।

किलाट [संज्ञा पु.] (सं.) खटाई आदि डालकर फाड़ा हुआ दूध 'छेना'।

किलात [वि.] (सं.) वामन। बौना। छोटा।

किलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'किलवाना'।

किलाबंदी, बन्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दुर्ग। निर्माण। २-सेना की श्रेणियों को मोरचे पर विशेष नियमानुसार खड़ा करना। ३-शतरंज के खेल में बादशाह को सुरक्षित घर में बैठाना।

क़िलावा [संज्ञा पु.] (?) सुनार का एक औजार।

किलिक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलिंज, किलिञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पतला तख्ता। २-चटाई। ३-परदा।

किलिन [संज्ञा पु.] (?) नाव का पिछला भाग जहां पर मुड़े हुए तख्ते जुड़े होते हैं।

किलोवा [संज्ञा पु.] (बरमी) बरमा में पेगू और मर्तबान के जंगलों में होने वाला एक लम्बा बांस। इसकी लम्बाई ६० से १२० फुट तथा घेरा ५ से ८ इंच तक होता है।

किलोल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कलोल'।

किलौनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'किलनी'।

किल्लत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-कमी। २-तंगी। ३-कठिनता।

क़िल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत बड़ी मेख या कील। खूंटा। २-जांते की मेख। कील।

किल्लाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'किलकिलाना'

किल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कील। मेख। खूंटी। २-सिटकनी। बिल्ली। ३-किसी कल या पेंच की मुठिया जिसके घुमाने से वह चलती है।
किसी की किल्ली किसी के हाथ मे होना–किसी

का वश किसी पर होना। *किल्ली घुमाना या ऐंठना*–युक्ति लगाना।

किल्विष [संज्ञा पु.] (सं.) १–दोष। पाप। अपराध। २–रोग।

किल्विषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पापी। अपराधी।

किवाँच [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'केवाँच'।

किवाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी का पल्ला जो चौखट में जड़ा रहता है तथा द्वार बंद करने के काम आता है। पट। कपाट।

किवाड़ देना, लगाना या भिड़ाना–किवाड़ बंद करना। *किवाड़ खटखटाना*–किवाड़ खुलवाने के लिये उसकी कुंडी हिलाना या दस्तक देना

किवार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किवाड़'।

किशटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा शफतालू।

किशनतालु [संज्ञा पु.] (हिं.) काले तालु वाला हाथी जो अच्छा समझा जाता है।

किशमिश [संज्ञा पु.] (फा.) सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर। सूखी दाख।

किशमिशी [वि] (फा.) १–जिसमें किशमिश हो। २–किशमिश के रंग का।

किशल, किशलय [संज्ञा पु.] (सं.) कोमल नया पत्ता। कल्ला। नया निकल हुआ पत्ता।

किशोर [संज्ञा पु.] (सं.) १–ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक का बालक। २–पुत्र। बेटा। ३–घोड़े का बछेड़ा।

किशोरक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा बालक। बच्चा।

किशोरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की बालिका।

किश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के आघात में पड़ना। शह।

किश्तवार [संज्ञा पु.] (हिं.) पटवारियों का वह खाता जिसमें खेतों के नम्बर रकबा आदि दर्ज रहता है।

किश्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–नाव। नौका। २–एक प्रकार की छिछली थाली। ३–शतरंज का एक मोहरा जिसे हाथी भी कहते हैं।

किश्तीनुमा [वि.] (फा.) नाव के समान जिसके दोनों किनारे टेढ़े या धन्वाकार होकर दोनों छोरों पर कोना डालते हुए मिलें।

किष्किंध, किष्किन्ध [संज्ञा पु.] (सं) १–मैसूर के आसपास के देश का प्राचीन नाम। २–मैसूर के एक पर्वत का नाम।

किष्किंधा, किष्किन्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) किष्किंधादेश की एक पर्वतश्रेणी।

किस [सर्व.] (हिं.) 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो विभक्ति लगने पर उन्हें प्राप्त होता है। जब इस शब्द के अन्त में निश्चयार्थक 'ही' लगता है तब उसका रूप 'किसी' हो जाता है।

किसनई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसान का कार्य। किसानी। खेती।

क़िसबत [संज्ञा प.] (अ.) नाई का वह थैला या बैग जिसमें कैंची, उस्तरे आदि रखता है।

क़िसमत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'क़िस्मत'।

किसमिस [संज्ञा पु.] देखो 'किशमिश'।

किसमिसी [वि.] देखो 'किशमिशी'।

किसमी* [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रमजीवी। कुली। मजदूर।

किसल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किशल'।

किसलय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किशलय'

किसान [संज्ञा पु.] हिं.) खेतिहर। कृषक।

किसानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसान का काम। कृषिकर्म। खेती। [वि.] खेती से संबंध रखने वाला।

किसिम+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'किस्म'।

किसी [सर्व. वि.] (हिं.) 'कोई' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है।

किसी न किसी–एक-न-एक। कोई-न-कोई।

किसू* [सर्व.] (हिं.) देखो 'किसी'।

क़िस्त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–कई बार करके ऋण चुकाने या अदा करने का एक ढंग। २–ऋण का वह अंश जो इस प्रकार चुकाया या अदा किया जाय।

किस्तबंदी, किस्तबन्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) थोड़ा-थोड़ा करके ऋण अदा करने का एक ढंग।

किस्तबार [क्रि. वि.] (फा.) १–किस्त के नियमानुसार। २–प्रत्येक किस्त पर।

किस्म [संज्ञा पु.] (अ.) १–प्रकार। भांति। तरह। २–ढंग। तर्ज।

क़िस्मत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–भाग्य। प्रारब्ध। नसीब। २–किसी प्रदेश का वह भाग जिसके अन्तर्गत कई जिले हों।

किस्मत आजमाना–किसी कार्य को आरम्भ करके यह देखना कि फलीभूत होते हैं या नहीं। *किस्मत उलटना या बिगड़ना*–भाग्य अच्छा न होना। *किस्मत का लिखा पूरा होना*–भाग्य में लिखा हुआ मिलना। *किस्मत जागना*–भाग्य खुलना। समय अनुकूल होना। *किस्मत चमकना*–भाग्य प्रबल होना। यश फैलना। *किस्मत पलटना, किस्मत फिरना*–प्रारब्ध का अच्छे से बुरा अथवा बुरे से अच्छा होना। *किस्मत फूटना*–बुरे दिन आना। काम बिगड़ना। *किस्मत लडना*–१–भाग्य परीक्षा होना। २–भाग्य खुलना।

किस्मतवर [वि.] (फा.) भाग्यशाली। भाग्यवान्।

किस्सा [संज्ञा पु.] (अ.) १–कहानी। कथा। आख्यान। २–वृतांत। समाचार। हाल। ३–कांड। झगड़ा। तकरार।

किस्सा उठाना या खड़ा करना–झगड़ा करना। *किस्सा खतम करना, चुकाना, तमाम पाक करना*–१–झगड़ा मिटाना। २– वस्तु, या विषय को समूल नष्ट करना। *किस्सा मोल लेना*–विपत्ति या झगड़ा सिर लेना।

किहिं* [सर्व.] (हिं.) १–किसका। २–किसे।

किहकल [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया

किहुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुहनी'।

की [प्रत्य.] (हिं.) 'का' का स्त्रीलिंग जैसे–उसकी गाय। [क्रि. स.] 'करना' के भूतकालिक रूप 'किया' का स्त्रीलिंग *[अव्य.] (हिं.) १–क्या? २–या।

कीक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चीख। चिल्लाहट।

कीकट [संज्ञा पु.] (सं.) १–मगध देश का वैदिक नाम। २–इस देश का निवासी। घोड़ा।

कीकना [क्रि. अ.] (हिं.) की-की कर के चीत्कार करना।

कीकर [संज्ञा पु.] (हिं.) बबूल का पेड़।

क़ीकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की

कीकश [संज्ञा पु.] (सं.) चांडाल। हत्यारा

कीका [संज्ञा पु.] (हिं.) कीकट। घोड़ा।

कीकान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पश्चिमोत्तर केकाण देश। २–इस देश का घोड़ा। घोड़ा।

कीच [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्दम। कीचड़।

कीचक [संज्ञा पु.] (सं.) १–बांस के छिद्र घुस कर वायु का हू-हू शब्द। २–राजा विराट का साला।

कीचड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पानी मिली धूल मिट्टी। कर्दम। पंक। २–आंख का मल।

कीचड में फँसना–कठिनाई में फँसना। असमंजस में पड़ना।

कीट [संज्ञा पु.] (सं.) कीड़ा। मकोड़ा। रेंगने या उड़ने वाला। क्षुद्र प्राणी या जन्तु।

कीटजा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमी हुई मैल। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्षा। लाख। लाह।

कीटपोष [संज्ञा पु.] (सं.) रेशमी कीड़ा पालने का कार्य।

कीट-भृंग [संज्ञा पु.] (सं.) एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब दो कई वस्तुएं बिलकुल एक रूप हो जाती हैं।

कीट-भोजी [संज्ञा पु.] (सं.) कीड़े मकोड़े खाकर पेट भरने वाला जीव या जन्तु। इन्द्रिय... घोरस।

कीटमणि [संज्ञा पु.] (सं.) जुगनू। खद्योत।

कीटाणु [संज्ञा पु.] (सं.) अति सूक्ष्म कीड़ा जो आंख से दिखाई नहीं पड़ता। केवल सूक्ष्मदर्शक यंत्र द्वारा ही देखा जा सकता है।

कीड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) उड़ने या रेंगने वाला छोटा जन्तु। जैसे-जूं, खटमल, फतिंगा आदि। २-मकोड़ा। ३-सांप। ४-थोड़े दिन का बच्चा।

कीड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा कीड़ा। २-चींटी। पिपीलिका।

कीदहुं [अव्य.] (हिं.) देखो 'किधौं'।

कीदृश [वि.] (सं.) किस प्रकार का। कैसा।

कीनखाब [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कमखाब'।

कीनना [क्रि. स.] (हिं.) खरीदना। मोल लेना। क्रय करना।

कीना [संज्ञा पु.] (फा.) द्वेष। वैर। शत्रुता।

कीनिया* [संज्ञा पु.] (हिं) कपट रखने वाला व्यक्ति। द्वेष या वैर रखने वाला।

कीनास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यम। यमराज। २-एक प्रकार का बन्दर। ३-किसान। खेतिहर।

कीप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे मुंह के पात्र मे तरल पदार्थ डालने की चूच्छी।

कीमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मूल्य। दाम। २-महत्व।

कीमत ठहरना-मूल्य निश्चित करना। कीमत चुकाना-१-दाम देना। मूल्य निश्चित करना। कीमत लगाना-१-दाम आंकना। २-दाम कहना।

कीमती [वि.] (अ) अधिक दामों का। बहुमूल्य।

कीमा [संज्ञा पु.] (अ.) मांस को काटकर किया हुआ छोटा-छोटा टुकड़ा।

कीमा करना-किसी वस्तु के छोटे-छोटे टुकड़े करना।

कीमिया [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रसायन। रासायनिक क्रिया।

कीमियागर [संज्ञा पु.] (फा.) रसायन बनाने वाला व्यक्ति। रसायनिक परिवर्त्तन में प्रवीण।

कीमियागरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रसायन बनाने की विद्या।

कीमुख्त [संज्ञा पु.] (अ.) घोड़े या गधे का हरा दानेदार चमड़ा जिसका जूता बरसात में पहना जाता है।

कीमुख्ती [वि.] (अ.) कीमुख्त का बना हुआ।

कीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोता। सुगा। शुक। २-व्याध। ३-काश्मीर देश।

कीरतन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कीर्त्तन'।

कीरति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'कीर्त्ति'।

कीरशब्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चतुर्दश ताल का एक भेद जिसमें तीन आघात, एक खाली तथा पुनः तीन आघात होते हैं।

कीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'कीड़ी'। २-व्याध की स्त्री।

कीर्ण [वि.] (सं.) १-बिखरा या फैला हुआ। २-छाया हुआ।

कीर्त्तक, कीर्तक [वि.] (सं.) वर्णन करने वाला

कीर्त्तन, कीर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथन। यशवर्णन। गुणकथन। २-ईश्वर या उसके अवतारों के सम्बन्ध में भजन और कथा।

कीर्त्तनिया, कीर्तनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) कृष्णलीला सम्बन्धी भजन तथा कथा सुनाने वाला। कीर्त्तन करने वाला।

कीर्त्ति, कीर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुण्य। २-ख्याति। बड़ाई। यश। ३-वह अच्छा तथा बड़ा काम जिससे किसी के बाद उसका नाम चले। ४-सीता की एक सखी। ५-विस्तार। ६-प्रसाद। ७-दीप्ति। ८-संगीत में एक ताल। ९-आर्याछंद का एक भेद जिसमें १४ गुरु तथा १६ लघुवर्ण होते हैं। १०-दशाक्षरी वृत्तों में से एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन सगण तथा एक गुरु होता है।

कीर्त्तिकर, कीर्तिकर [वि.] (सं.) यशकारक।

कीर्त्तित, कीर्तित [वि.] (सं.) कहा हुआ। प्रसिद्ध। मशहूर।

कीर्त्तिधर, कीर्तिधर [वि.] (सं.) देखो 'कीर्त्तिमान'।

कीर्त्तिमंत, कीर्तिमन्त [वि.] (सं.) देखो 'कीर्त्तिमान'।

कीर्त्तिमान, कीर्तिमान [वि.] (सं.) यशस्वी। नेकनाम। विख्यात।

कीर्त्तिवंत, कीर्तिवन्त [वि.] (सं.) देखो 'कीर्त्तिमान'।

कीर्त्तिवान, कीर्तिवान [वि.] (सं.) देखो 'कीर्त्तिमान'।

कीर्त्तिस्तंभ, कीर्तिस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी की कीर्त्ति का स्मरण कराने के निमित्त बनाया हुआ स्तम्भ। २-वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्त्ति स्थायी रहे।

कील [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लोहे या काठ की मेख। कांटा। २-नाक का एक छोटा आभूषण। लौंग। ३-मुहांसे की मांस की कील। ४-वह मूढ़गर्भ जो योनि में अटक जाता है

कीलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूंटी। कील। २-गाय, भैंस बांधने का खूंटा। ३-तंत्र के अनुसार एक देवता। ४-वह मंत्र जिसके द्वारा किसी मंत्र की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय।

कीलकाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कील, मेख आदि सामग्री। २-किसी कार्य को सम्पन्न करने के निमित्त समस्त आवश्यक और उपयोगी सामग्री।

कीलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बंधन। रोक। रुकाव। २-मन्त्र को कीलने का काम। [वि.] कीलने वाला।

कीलना [क्रि. स.] (हिं.) १-मेख या कील जड़ना। २-किसी मंत्र अथवा युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। ३-सर्प को ऐसा मोहित करना कि वह किसी को डस न सके। ४-अधीन या वश में करना।

कीलमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कीलाक्षर'।

कीलशायी [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता। कुक्कुर।

कीला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी कील। काँटा। शंकु। २-देखो 'कील'।

कीलाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कील या कांटे के समान होते थे।

कीलाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी। रक्त। लहू। ३-अमृत। शहद। ५-पशु। [वि.] बंधन दूर करने वाला।

कीलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनुष्य के शरीर की वे हड्डियां जो ऋषभ तथा नाराच को छोड़ कर दूसरे स्नायु से बँधी होती हैं। २-एक प्रकार का बाण।

कीलित [वि.] (सं.) १-जिसमें कील जड़ी हों। २-कीला हुआ। मंत्र से बंधा हुआ।

कीलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरवट हांकने वाला। मोट के बैलों को हांकने वाला।

कीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी चक्र के मध्य की वह कील जिस पर वह घूमता है। २-देखो 'कील'।

कीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बंदर। बानर। लंगूर। २-चिड़िया। ३-सूर्य।

कीशफल [संज्ञा पु.] (सं.) शीतल चीनी। कल्लोल।

कीस [संज्ञा पु.] (हिं.) गर्भ की थैली।

कीसा [संज्ञा पु.] (फा.) १-थैली। २-जेब।

कुँअर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुँवर'।

कुँअरपुरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की हल्दी जो प्रति पाँचवें वर्ष खोदी जाती है यह कटक के पास कुँअरपुर स्थान में होती है।

कुँअरविरास [संज्ञा पु.] (हिं.) कुंअरविलास नामक एक धान या चावल।

कुँअरविलास [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान या चावल।

कुँअरेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा (कुंअर) कुंवर। कुमार। लड़का। बालक।

कुँआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुंवा। कूप।

कुँआरा [वि.] (हिं.) अविवाहित। कुंवारा।

कुँआरी [वि] (हिं.) [स्त्री प्र.] अविवाहिता (कन्या)। बिना ब्याही हुई (लड़की)।

कुँइयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कुआ।

कुँई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कुमुदिनी।

कुंकुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-केसर। जाफरान। २-रोली। ३-कुंकुमा।

कुंकुम-फूल [संज्ञा पु.] (देश.) दुपहरिया का फूल।

कुंकुमा [संज्ञा पु.] (हिं.) लाख का बना हुआ पीला गोला जिसके भीतर गुलाल भर कर होली पर लोग एक दूसरे पर फेंकते हैं।

कुंचन, कुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिकुड़ना। सिमटना। २-आंख का एक रोग।

कुंचि, कुञ्चि [संज्ञा पु] (सं.) आठ मुट्ठी का एक परिमाण।

कुंचिका, कुञ्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घुँघची। गुंजा। २-बाँस की टहनी। ३-कुंजी। ताली। चाभी। ४-एक प्रकार की मछली। ५-हुरहुर।

कुंचित, कुञ्चित [वि.] (सं.) १-घूमा हुआ। टेढ़ा। वक्र। २-घूँघर वाले। छल्लेदार (बाल)।

कुंची, कुञ्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताली। कुंजी। चाभी।

कुंज, कुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्षों या लताओं के झुरमुट से मंडप के समान आच्छादित स्थान। २-हाथी का दाँत।

कुंजक, कुञ्जक+ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कंचुकी'

कुंजकुटीर, कुञ्जकुटीर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लताओं से घिरा घर। कुंजों में बनी हुई झोंपड़ी।

कुंजगली, कुञ्जगली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ। २-पतली गली।

कुंजड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुंदुर'।

कुंजड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती हैं।

कुँजड़े कसाई-नीच-कोटि के लोग। *कुँजड़े की दुकान*-वह स्थान जहां हरएक जासके। भीड़ भाड़ और हो-हल्ले का स्थान। *कुँजड़े का गल्ला*-जिसके लेने-देने का लेखा न लिखा जाता हो। २-बेसिरपैर का लेखा। ३-गोलमाल। गड़बड़।

कुंजर, कुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-बाल। ३-आठ की संख्या। ४-छप्पय का एक भेद जिसमें ५०गुरु ५२ लघु, १०२ वर्ण और १५२ मात्राएँ या ५० गुरु ४८ लघु, ९८ वर्ण और १४८ मात्राएं होती हैं। ५-पाँच मात्रा के छंदों के प्रस्तार में प्रथम प्रस्तार।

कुंजरकरण, कुञ्जरकरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पिली। गजपीपल।

कुंजरच्छाय, कुञ्जरच्छाय [संज्ञा स्त्री] (सं) ज्योतिष के अनुसार एक योग।

कुंजरदरी, कुञ्जरदरी [संज्ञा स्त्री](सं) एक प्रदेश का नाम। अनुमलय।

कुंजरपिप्पली, कुञ्जरपिप्पली [संज्ञा स्त्री] (सं.) गजपिप्पली।

कुंजरा, कुञ्जरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथिनी।

कुंजराराति, कुञ्जराराति [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का शत्रु। सिंह।

कुंजरारि, कुञ्जरारि [संज्ञा पु.] (सं.) गज वैरी। सिंह।

कुंजरारोह, कुञ्जरारोह [संज्ञा पु.] (सं.) महावत। पीलवान।

कुंजराशन, कुञ्जराशन [संज्ञा पु.] (सं) अश्वत्थ। पीपल।

कुंजल, कुञ्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। हस्ती। गज। २-कांजी।

कुंजविहारी, कुञ्जविहारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंजों में विहार करने वाला व्यक्ति। २-श्रीकृष्ण।

कुंजा, कुञ्जा* [संज्ञा पु.] (हिं) पुरवा। सकोरा। चुक्कड़।

कुंजिका, कुञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला जीरा।

कुंजित, कुञ्जित [वि.] (सं.) कुंजों से युक्त।

कुंजी, कुञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चाभी। ताली। २-वह पुस्तक जो किसी दूसरी पुस्तक के अर्थ बताये। टीका।

कुंजी हाथ में आना-किसी का बस में होना।

कुंठ, कुण्ठ [वि.] (सं.) १-गुठला। कुंद। जो तीक्ष्ण न हो। २-मूर्ख। स्थूल बुद्धि का। कुंदजहन।

कुंठता, कुण्ठता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुण्ठ या कुंद होने का भाव। २-संकोच। मूर्खता। निकम्मापन।

कुंठित, कुण्ठित [वि.] (सं.) १-कुंद। जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो। भूंटा। गुठला। २-बेकाम। निकम्मा।

कुंड, कुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौड़े मुंह का गहरा एक मिट्टी का पात्र। कुंडा। २-छोटा बंधा हुआ जलाशय। छोटा सा तालाब। ३-खोदा हुआ गड्ढा या मिट्टी अथवा धातु का बना हुआ पात्र जिसमें हवन करते हैं। ४-कूंड। खोद। अन्न नापने का एक प्राचीन काल की एक नाप।

कुंड पड़ना-नदी के बहाव में किसी स्थान का अधिक गहरा हो जाना।

कुंडकीट [संज्ञा पु.] (सं.) पतित ब्राह्मणी का पुत्र।

कुंडगोलक, कुण्डगोलक [संज्ञा पु] (सं.) काँजी।

कुंडपायिनामयन, कुण्डपायिनामयन [संज्ञा पु.] (सं) एक यज्ञ जिसके अन्तर्गत यज्ञमान २१ रात्रि तक दीक्षित रहना पड़ता है उसके एक मास पश्चात सोम-सत्र निमित्त जाना पड़ता है।

कुंडपायी, कुण्डपायी [संज्ञा पु.] (सं.) १- याग करने वाला वह यजमान जिसे ऋत्विज्ञों से सोमसत्र करा कर कुं चमचे से सोमपान करे। २-याज्ञिकों संप्रदाय।

कुंडपुजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रबी की समाप्त होने पर होने वाला किसानों उत्सव। कुंडमुंदनी।

कुंडबुजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुंडपुजी।

कुंडमुदनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो

कुंडरा [संज्ञा पु] (हिं) १-मंडलाकार रेखा। २-इंडुआ। गेंडुरी। ३-कुण्डा।

कुंडल, कुण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक आभूषण। कनफटे साधुओं के पहनने की मुद्रा। ३-कोई मंडलाकार पण। ४-रस्सी आदि का गोल फंदा। मंडल जो बदली में चन्द्रमा या सूर्य के ओर दिखाई देता है। ६-दो मात्रिक गण। ७-२२ मात्राओं का जिसमें १२ और १० पर विराम होता है अंत में दो गुरु होते हैं।

कुंडलपुर, कुण्डलपुर [संज्ञा पु.] (हिं. प्राचीन नगर जो विदर्भदेश के अंतर्गत

कुंडलाकार, कुण्डलाकार [वि] (सं) कार। मंडलाकार। गोल।

कुंडलिका, कुण्डलिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कुंडलिया'। मंडलाकार रेखा। मिठाई।

कुंडलित, कुण्डलित [वि.] (सं.) जो कुं हुए हो। कई बलों में घूमा हुआ।

कुंडलिन, कुण्डलिन [संज्ञा स्त्री.] योग में शरीर के अन्दर का एक जो मूलाधार के अन्तर्गत सुषमना नीचे माना गया है। जलेबी या (मिठाई)।

कुंडलिया, कुण्डलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं) तथा रोला छंद के योग से बनने वाला छंद जिसमें दोहे के अंतिम चरण के शब्द रोले के आदि में अविकल आते हैं।

कुंडली, कुण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १- लिनी। २-गिलोय। ३-कचनार। ४- ५-जन्मकाल में ग्रहों की स्थिति सूचित वाला वह चक्र जिसमें बारह घर होते (ज्योतिष)। ६-गेंडुरी। ७-सांप के कार बैठने की मुद्रा। ८-खंजड़ी। [वि.] जो कुंडल पहने हो। कुंडलधारी।

कुंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन। २-दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें सांकल अटकाई जाती है। ३-कुश्ती का एक पेंच। ४-जहाज के मस्तूल का चौड़ा खंड।

कुंडाला [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी की कूंडी या पथरी।

कुंडिका, कुण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमंडलु। २-कूंडी। पथरी। ३-हवन करने का ताँबे का कुंड।

कुंडिन, कुण्डिन [संज्ञा पु.] (सं.) विदर्भदेश का एक प्राचीन नगर।

कुंडिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चौखूंटा गड्ढा। कठौती।

कुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिट्टी या पत्थर का एक बरतन जो कटोरे के आकार का होता है। २-जंजीर की कड़ी। ३-किवाड़ में लगी हुई सांकल।

कुंडू [संज्ञा पु.] (देश.) काले रंग की एक चिड़िया।

कुंडोदर [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी का एक गण।

कुंड़वा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी कूजा। कुल्हिया। पुरवा।

कुंत, कुन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-गवेधुक। कौडिल्ला। २-भाला। बरछी। ३-जूँ। ४-क्रूर भाव। अनख।

कुंतल, कुन्तल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर के बाल। केश। २-बहुरूपिया। ३-एक देश का नाम जो कोंकण और बरार के मध्य था। ४-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो दीपक का चौथा पुत्र माना जाता है, यह ग्रीष्मऋतु में दोपहर को गाया जाता है। ५-हल।

कुंतलवर्द्धन, कुन्तलवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) भृंगराज। भँगरा। भँगरैया।

कुंतली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी मधुमक्खी।

कुंतां*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुंती'।

कुंती, कुन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-युधिष्ठिर. अर्जुन और भीम की माता। २-भाला। बरछी। ३-देखो 'कुंतली'।

कुंद, कुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-जूही के समान एक पौधा। २-कनेर का पेड़। ३-कमल। ४-एक पर्वत का नाम। कुबेर की नौ निधियों में से एक। ६-नौ की संख्या। ७-विष्णु। ८-खराद। ९-कुंदुर नामक गोंद। [वि.] (फ़ा.) १-कुंठित। गुठला। २-मंद। मन्द।

कुंदन, कुन्दन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साफ किये हुए सोने का महीन पत्र जो नगीना जड़ने के उपयोग में आता है। २-खालिस सोना। स्वच्छस्वर्ण।

कुंदन सा दमकना-खालिस सोने सा चमकना। *कुंदन हो जाना*-निखर आना।

[वि.] (हिं.) १-खालिस। स्वच्छ। २-स्वस्थ और सुंदर। निरोग।

कुंदनपुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुंडिन'।

कुंदनसाज [संज्ञा पु.] (हिं.) कुंदन का पत्तर बनाने वाला। २-नगीना जड़ने वाला, जड़िया।

कुंदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलिंग देश में उपजने वाली एक घास। २-विष्णु।

कुंदरू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिस में परवल के आकार के फल लगते हैं। रक्तफला। बिंबा। तुंडी।

कुंदना [संज्ञा पु.] (हिं) बाजरे का एक रोग।

कुंदलता [संज्ञा पु.] (सं.) २६ अक्षरों की एक वर्णवृत्त जिसे सुखभी कहते हैं।

कुंदला [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का तम्बू या खेमा।

कुंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी का बड़ा और बिना चीरा टुकड़ा। २-लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते या कुंदीगर कपड़े की कुन्दी करते हैं। ३-बन्दूक का पिछला चौड़ा भाग। ४-दस्ता। मूठ। ५-लकड़ी की बड़ी मोगरी जिससे कपड़ों की कुंदी की जाती है। ६-चिड़िया का पर। डैना। ७-कश्ती का एक पेंच। ८-भुना हुआ दूध। **खोया।**

कुंदा चढ़ाना-बन्दूक की नली में लकड़ी जड़ना। *कुंदे बांध, जोड़ या तोलकर उतारना*-पक्षी का अपने पंख समेटकर नीचे आना।

कुंदी, कुन्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धुले या रंगे कपड़े को तह करके मोगरी से कूट कर उसकी सिकुड़न दूर करने की क्रिया। ठोकना। पीटना। खूब मारना।

कुंदीगर [संज्ञा पु.] (हिं.) कुंदी करने वाला व्यक्ति।

कुंदुर [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार की पीले रंग का सुगंधित गोंद जो औषधि में प्रयोग होता है।

कुंदेरना [क्रि. स.] (हिं.) खुर्चना। छीलना। खरोटना।

कुंदेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खरादने वाला। कुनेरा।

कुंबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कायफल। २-कुंभी। ३-कुम्भनायक वृक्ष।

कुंभ, कुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिट्टी का घड़ा। कलश। घट। २-हाथी के सिर के दोनों ओर का ऊपर वाला भाग। ३-ज्योतिष में दसवीं राशि। ४-प्रति बारहवें वर्ष पड़ने वाला एक पर्व। ५-प्राणायाम के तीन भागों में से एक। कुंभक।

कुंभक, कुम्भक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम में सांस अन्दर लेकर वायु को रोकना।

कुंभकरण, कुम्भकरण [संज्ञा पु.] (सं.) छःमास जागने और छःमास सोने वाला रावण का एक भाई।

कुंभकार, कुम्भकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुम्हार। २-कुक्कुट। मुर्गा।

कुंभकारी, कुम्भकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुम्हार की स्त्री। २-कुलथी। ३-मैनसिल।

कुंभज, कुम्भज [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े से उत्पन्न पुरुष। २-अगस्त्यमुनि। ३-वशिष्ठ। ४-द्रोणाचार्य।

कुंभजन्मा, कुम्भजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि का एक नाम।

कुंभजात, कुम्भजात [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुंभज'।

कुंभदासी, कुम्भदासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटनी। दूती। २-कुंभिका। जलकुंभी।

कुंभनदास, कुम्भनदास [संज्ञा पु.] व्रज के अष्टछाप कवियों में से एक। यह श्रीकृष्ण की उपासना सखाभाव से करते थे।

कुंभपर्णी, कुम्भपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोहड़े की लता।

कुंभपाद,कुम्भपाद [वि.] (सं.) मोटे पैर वाला।

कुंभ-मेला, कुम्भ-मेला [संज्ञा पु.] (सं.) मकर राशि में वृहस्पति और सूर्य का योग होने पर प्रयाग, हरद्वार, तथा पुष्कर तीर्थ में लगने वाला मेला।

कुंभयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त्यमुनि का एक नाम। २-गूमा का वृक्ष।

कुंभरेता, कुम्भरेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त्य मुनि। २-अग्नि।

कुंभला, कुम्भला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

कुंभसंधि, कुम्भसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के सिर का वह गड्ढा जो उसके दोनों कुम्भों के मध्य होता है।

कुंभसंभव, कुम्भसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्य मुनि का एक नाम।

कुंभहनु, कुम्भहनु [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के दल का एक राक्षस।

कुंभा, कुम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

कुंभांड, कुम्भाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) बाणासुर के एक मन्त्री का नाम।

कुंभार [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हार।

कुंभिक, कुम्भिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नपुंसक।

कुंभिका, कुम्भिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुंभी। २-वेश्या। रंडी। ३-आंख का एक रोग। ४-कायफल। ४-परवल का वृक्ष।

कुंभिनी. कुम्भिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-जमालगोटा।

कुंभिल, कुम्भिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंध लगाने वाला चोर। २-अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न बालक।

३-साला। ४-एक मछली।

कुंभिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कुम्हलाना'।

कुंभी, कुम्भी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मगर। घड़ियाल। २-हाथी। ३-एक जहरीला कीड़ा। ४-एक प्रकार की मछली।

कुंभीक, कुम्भीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का नपुंसक। कुंभिक। २-कुंभी। जलकुंभी। ३-पुन्नागवृक्ष।

कुंभीका, कुम्भीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कुंभिका'।

कुंभीनस, कुम्भीनस [संज्ञा पु.] (सं.) जहरीला सर्प। २-एक जहरीला कीड़ा। ३-रावण।

कुंभीपाक, कुम्भीपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नरक। २-एक प्रकार का सन्निपात रोग।

कुंभीपुर. कुम्भीपुर* [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिनापुर। पुरानी दिल्ली।

कुंभीमुख, कुम्भीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक फोड़ा (चरक)।

कुंभीर, कुम्भीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्र। घड़ियाल। २-एक छोटा कीड़ा। ३-एकयज्ञ।

कुंभीरासन, कुम्भीरासन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आसन जिसमें भूमि पर चित्त लेट कर दोनों हाथों को माथे पर और एक पैर को दूसरे पैर पर रख लेते हैं।

कुंभेर, कुम्भेर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खंभारि खंभारी। गंभारि।

कुंभोदार, कुम्भोदार [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव के एक गण का नाम।

कुंभोलूक, कुम्भोलूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वड़े आकार का उल्लू।

कुंवर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक राजपुत्र। राजा का लड़का। २-लड़का। पुत्र। वेटा।

कुंवरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुमारी। २-राजकन्या।

कुंवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुवरि'।

कुंवरेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा लड़का। वालक। वच्चा।

कुंवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुआँ'।

कुंवारा [वि.] (हिं.) विन व्याहा। अविवाहित।

कुंहकुंह [संज्ञा पु.] (हिं.) कुंकुम। केशर। जाफरान।

कु [उप.] (सं.) संज्ञा के आगे लगकर यह विशेपण का काम देता है। जिस शब्द के पहले यह लगाया जाता है। अर्थ में 'नीच' या 'कुत्सित' का भाव आ जाता है। यथा-'संग' या 'कुसंग'। पुत्र का 'कुपुत्र'।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

कु-अंक, कु-अङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूपित अंक। दुर्भाग्य। वदकिस्मती।

कुआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) कूप। वह खोदा हुआ गड्ढा जिसमें प्राकृतिक पानी निकालते हैं। *कुआँ खोदना*-१-दूसरे का नाश करने या उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। २-आजीविका के निमित्त परिश्रम करना। *कुआँ चलाना*-कुएँ के पानी से खेत सींचना। *कुआँ या कुएँ झाँकना*-कोशिश में इधर उधर भागदौड़ करना। *कुआँ झंकाना*-कष्ट देना। पीड़ा पहुँचाना। *कुआँ झाकना*-परेशान होना। *कुआँ टूटना*-कुएँ में पानी कम हो जाना। *कुएँ की मिट्टी कुएं में लगाना*-जहाँ कमाना वहीं गमाना। *कुएँ पर से प्यासे आना*-जहाँ किसी वस्तु की प्राप्ति का स्थान हो वहाँ से निराश होना। *कुएं में गिरना*-आफत में फंसना। *कुएँ में फेंकना*-टाल देना। जाने देना। *कुएँ में वाँस डालना*-वहुत ढूंढ-खोज करना। *कुएँ में भाँग पड़ना*-सब की बुद्धि मारी जाना। *कुएँ में डालना*-जन्म नष्ट करना। *कुएँ में वोलना*-वहुत धीरे से बोलना।

कुआड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संगीत की एक लय।

कुआर [संज्ञा पु.] (हिं.) अश्विनमास। असौज।

कुइंदर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुए के वैठ जाने के कारण वना हुआ गड्ढा।

कुइयां [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा कुआँ।

कुईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा कुआँ।

कुकटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक प्रकार की कपास जिस की रूई लाली लिये हुए सफेद होती है।

कुकड़ना [क्रि. स] (हिं.) सिकुड़ कर रह जाना। संकुचित होना।

कुकड़वेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंडाल।

कुकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा। अंटी। २-मदार का डोडा या फल। ३-देखो 'खखड़ी'।

कुकनू [संज्ञा पु.] (यू.) एक प्रकार का पक्षी जिसके सम्वन्ध में कहते हैं कि वह नर ही पैदा होता है। यह गाना बहुत ही सुरीला गाता है। इसकी चोंच में कई छिद्र होते हैं। जिनसे मधुर स्वर लहरियाँ निकलती हैं। कहते हैं गाते समय इसकी चोंच के छिद्रों से आग निकलती है। जिस समय वसंत ऋतु में यह पूर्ण युवा होता है तो लकड़ियां इकट्ठी करके उन पर वैठ कर मधुर स्वर लहरिया छोड़ता है जिससे उसकी चोंच के छिद्रों में से आग निकल कर लकड़ियों में लग कर उसे भस्म कर डालती है। वरसात की ऋतु में जब उस भस्म हुई राख पर पानी पड़ता है तो उसमें अंडा पैदा होता है जिससे थोड़े दिनों में एक और पक्षी निकल आता है।

कुकरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जंगली मुर्गी। २-पीड़ा। दर्द। ३-झिल्ली। ४-खुखड़ी।

कुकरौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुकरौंधा'।

कुकरौंधा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा पौधा जिसके पत्ते लम्बे लम्बे होते हैं। इसमें से तीव्र गंध निकलती है।

कुकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) खोटा काम। खोटे कर्म।

कुकर्मकारी [वि] (सं.) खोटा काम करने

कुकर्मा, कुकर्मी [वि.] (सं.) बुरा काम वाला। पापी।

कुकीर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपमान। बदनामी।

कुकुंदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुकरौंधा। के ऊपर का गड्ढा।

कुकुत्संद [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध जो पूर्व हुए थे।

कुकुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंगली मुर्गा एक राग का नाम। ३-एकमात्रिक जिसके प्रत्येक चरण में १६ और विराम से तीस मात्राएं होती है, अंत गुरु होना नितांत आवश्यक है।

कुकुभा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-एक देखो 'ककुभा'।

कुकुर [संज्ञा पु] (सं.) १-यदुवंशी क्षत्रि एक जाति। २-एक प्रदेश जहां कुकुर रहते थे। ३-एक सांप। ४-कुत्ता।

कुकुरआलू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार जिसका कंद खाया जाता है।

कुकुर-खांसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूखी जिसमें कफ नहीं आता।

कुकुर-ढांसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुकुरखांसी

कुकुरदंत, दन्त [संज्ञा पु.] (हिं.) साधारण के अतिरिक्त नीचे को आड़ा निकलने दांत जिससे होंट ऊपर उठ जाता है।

कुकुरदंता, दन्ता [वि.] (हिं.) जिसके कुकुरदन्त हो।

कुकुरभंगरा [संज्ञा पु.] (हिं) काला देखो 'भंगरा'।

कुकुरमाछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पशुओं के से चिपटने वाली एक प्रकार की मक्खी शरीर में लगती और काटती है।

कुकुरमुत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की दुगंध वाली खुमी।

कुकुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुकड़ी।

कुकुरौंछी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो माछी'।

कुकुही*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वनमुर्गी।

कुकूण [संज्ञा पु.] (सं.) आंखों का एक प्रायः बच्चों को होता है।

कुक्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुर्गा। २- ३-लुक।

कुक्कुटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनमुर्गा। वर्णसंकर जाति।

कुक्कुट-नाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक टेढ़ी नाली जिसके द्वारा भरे पात्र में से खाली पात्र में जल पहुँचाया जाता है।

कुक्कुटमस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) चव्य। चाब।

कुक्कुटव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) सन्तान की अभिलाषा से भाद्रपद मास की शुक्ला सप्तमी को स्त्री द्वारा किया गया व्रत।

कुक्कुटशिख [संज्ञा पु.] (सं.) कुसुम का वृक्ष या फूल।

कुक्कुटांडक [संज्ञा पु.] (सं.) एक धान।

कुक्कुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुर्गी। २-पाखण्ड। ३-सेमल का वृक्ष। एक प्रकार का कीड़ा।

कुक्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ता। २-एक यदुवंशी राजा। ३-एक मुनि का नाम। ४-गांठदार। गंठीला।

कुक्कुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुतिया।

कुक्रिय [वि.] (सं.) कुकर्म करने वाला।

कुक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोटा काम। दुष्कार्य

कुक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) उदर। पेट। जठर।

कुक्षि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पेट। २-कोख। ३-किसी वस्तु के मध्य का भाग। ४-गुहा। ५-संतति।

कुक्षिभेद [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहितानुसार सात प्रकार के ग्रहण के मोक्ष के भेदों में से एक।

कुखेत [संज्ञा पु.] (हि.) बुरा स्थान। कुठांव।

कुख्यात [वि.] (सं.) निन्दित। बदनाम।

कुख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निन्दा। बदनामी।

कुगठन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बुरी बनावट।

कुगुणी [वि.] (सं.) कुत्सित लोगों में गिना जाने वाला।

कुगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्दशा। बुरी हालत। दुर्गति।

कुगहनि*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनुचित आग्रह। हठ। ज़िद।

कुग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) अशुभ फल देने वाला ग्रह।

कुघा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दिशा। ओर। तरफ

कुघात [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुअवसर। बेमौका। २-बुरा दांव। छल। कपट। बुरी चाल।

कुचंदन, कुचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल चंदन। देवीचंदन। २-बक्कम। पटरंग। ३-कुंकुम।

कुच [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन। छाती। [वि.] (सं.) १-सिकुड़ा हुआ। २-कृपण। कंजूस।

कुचकार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की भेड़।

कुचकुचवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) उल्लू। कुच-कुच शब्द करने वाला पक्षी।

कुचकुचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-लगातार कोंचना। २-थोड़ा कुचलना। ३-पैनी चीज धंसाना।

कुचकुंभ, कुचकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कलश के समान ऊंचे स्तन।

कुचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरों को हानि पहुँचाने वाला गुप्त प्रयत्न या षडयंत्र।

कुचक्री [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरों को बुरी सलाह देने वाला व्यक्ति।

कुचना* [क्रि. अ.] (हिं.) सिमटना। सिकुड़ना।

कुचर [वि.] (सं.) १-नीच कर्म करने वाला। २-पराईनिंदा करने वाला। ३-बुरी जगह फिरने ने वाला।

कुचरा* [संज्ञा पु.] (सं.) झाड़ू।

कुचर्या [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निन्दनीय आचरण।

कुचलना [क्रि. स.] (हिं.) १-बारंबार ऐसीं दाब डालना कि वह विकृत हो जाय। २-पैरों से रौंदना या दबाना।
सिर कुचलना–पराजित करना।

कुचला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष के विषैले बीज जो दवा के प्रयोग में आते हैं।

कुचली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह दाँत जो राजदन्त और दाढ़ के मध्य में होते हैं। कुचलने वाले दांत।

कुचाग्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुच या स्तन का अग्र भाग। चूचुका।

कुचाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बुरा आचरण। खराब चाल चलन। २-दुष्टता। खोटाई।

कुचालिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुचाली'।

कुचाली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुमार्गी। २-पाजी। दुष्ट। बदमाश।

कुचाह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अमंगल। अशुभ-बात।

कुचिंता, कुचिन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुश्चिन्ता। बुरी फिक्र।

कुचिक [संज्ञा पु.] (सं.) ईशान दिशा का एक प्राचीन देश।

कुचिकित्सक [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा हकीम।

कुचिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी-छोटी टिकिया।

कुचियादाँत [संज्ञा पु.] वह दाँत जिससे प्राणी अपने आहार को कुचल-कुचल कर खाते हैं। डाढ़। चौभर।

कुचिलना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'कुचलना'।

कुचिला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुचला'।

कुचील*+ [वि.] (हिं.) मैला-कुचैला। मलिन।

कुचीला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुचला'।

कुचुमार [संज्ञा पु.] (सं.) कामशास्त्र के एक प्रमुख आचार्य।

कुचेल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलिन या मैला वस्त्र। २-पाठा। [वि.] १-मैला वस्त्र पहने हुए। मैला। गंदा।

कुचेष्ट [वि.] (सं.) जिसकी बुरी चेष्टा हो।

कुचेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुप्रयत्न। बुरी चेष्टा। मुख का दुराभाव।

कुचैन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कष्ट। दुःख। व्याकुलता। [वि.] बेचैन। व्याकुल।

कुचैला [वि.] (हिं.) १-मैले कपड़े वाला। २-मैला। गंदा।

कुचोद्य+ [संज्ञा. पु.] (हिं.) कुत्सित प्रश्न। कुतर्क। वितंडा।

कुच्ची+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेली की तेल नापने की कुप्पी।

कुच्छित* [वि.] (हिं.) कुत्सित। नीच।

कुछ [वि.] (हिं.) थोड़ा सा। टुक। [सर्व.] १-कोई। २-कोई अच्छी बात। ३-कोई सार वस्तु। [क्रि. वि.] थोड़े परिमाण में।
कुछ और गाना–प्रश्न कुछ और उत्तर कुछ और। *कुछ एक*–थोड़े से। *कुछ ऐसा*–विलक्षण। *कुछ ऐसा-वैसा*–असाधारण। *कुछ का कुछ*–और-का-और। उलटा। *कुछ कहना*–बुरा-भला कहना। गाली देना। *कुछ न चलना*–अधिकार से बाहर की बात। *कुछ-से-कुछ हो जाना*–बड़ा भारी उलट-फेर होजाना। *कुछ हो रहना*–किसी योग्य हो जाना।

कुजंत्र, कुजन्त्र [संज्ञा पु.] (हिं.) बुरा यन्त्र। अभिचार। जादू-टोना।

कुजंभा, कुजम्भा [वि.] (सं.) विकराल दाँत वाला। [संज्ञा पु.] प्रह्लाद का पुत्र जो एक असुर था।

कुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगल। ग्रह। २-वृक्ष। पेड़। नरकासुर। [वि.] लाल रंग का (मंगल के समान।

कुजा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीता। जानकी। कत्यायिनी का नाम।

कुजात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुजाति'।

कुजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी जाति। नीच जाति। [संज्ञा पु.] १-नीच पुरुष। २-पतित या अधम पुरुष।

कुजाष्टम [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग।

कुजिया + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी घरिया। छोटा पात्र।

कुजून+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुसमय। बुरा समय। २-अतिकाल। देर।

कुजोग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुसंग। कुमेल। २-बुरा संयोग। प्रतिकूल अवस्था।

कुजोगी* [वि.] (हिं.) असंयमी।

कुज्जा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी का प्याला। पुरवा। २-मिस्री की गोल डली। मिट्टी के कूजे में जमाई हुई मिस्री।

कुटंक, कुटङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) छप्पर।

कुटंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुटाई। कूटने का भाव। २-मार। प्रहार।

कुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। गृह। २-कोट। गढ़। ३-कलश। ४-वृक्ष। ५-पर्वत। ६-वह घन जिससे पत्थर तोड़ा जाता है। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक मोटी झाड़ी जिसकी जड़ की सुगंध बड़ी मनोहर होती है। [संज्ञा पु.] १-टुकड़ा। कुटा हुआ टुकड़ा।

कुटका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा टुकड़ा। २-कसीदे का तिकोना बूटा। सिंघाड़ा।

कुटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक पौधा जिसकी जड़ दवा के उपयोग में आती है। २-एक जड़ी जो बल और वीर्यवर्धक होती है। ३-कंगनी। चेना। ४-एक उड़ने वाला कीड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक छोटी चिड़िया।

कुटज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुरैया। कर्ची। २-अगस्त्यमुनि। ३-द्रोणाचार्य का एक नाम।

कुटजगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेरह वर्ण का एक छंद।

कुटनई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुटनपन'।

कुटनपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुटनी का काम। दूतीकम। २-इधर की उधर लगाने का कार्य। चुगलखोरी।

कुटनपेशा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुटनपन द्वारा जीविका निर्वाह।

कुटनहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धान कूटने का काम करने वाली स्त्री।

कुटना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रियों को वहकाने या पर पुरुष से मिलाने वाला व्यक्ति। २-चुगलखोर। ३-कूटे जाने की क्रिया। ४-कुटाई करने का औजार। [क्रि. अ.] (हिं.) १-कूटा जाना। २-मारा या पीटा जाना।

कुटनाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी स्त्री को बहका कर कुमार्ग पर ले जाना। २-बहकाना।

कुटनापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुटनपन'।

कुटनापा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुटनपन'।

कुटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों को वहका कर पर पुरुष से मिलाने वाली स्त्री। चुगली खाने वाली। झगड़ा कराने वाली।

कुटनीपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुटनपन'।

कुटन्नक [संज्ञा पु] केवटमोथा। कसेरू।

कुटप [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर के पास का बगीचा २-कमल। पद्म।

कुटर, कुटर [संज्ञा पु.] (हिं) कोई बड़ी चीज को दांतों से तोड़ने का शब्द।

कुटल [संज्ञा पु.] (सं.) छप्पर। छानी।

कुटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-कूटने की क्रिया अन्य से कराना। कूटने में तत्पर करना।

कुटाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कूटने का काम। २-कूटने की मजदूरी।

कुटार [संज्ञा पु.] (हिं.) नटखट टट्टू।

कुटास [संज्ञा स्त्री.] खूब मारना। पीटना।

कुटिचर [संज्ञा पु.] (हिं.) दरयाई सूअर।

कुटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झोपड़ी। छोटा घर।

कुटिल [वि.] (सं.) १-वक्र। टेढ़ा। २-घूमा या वलखाया हुआ। ३-छल्लेदार। घुंघराला। ४-कपटी। दगाबाज।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-शठ। खल। २-१४ अक्षर का एक वर्णवृत्त।

कुटिलकीट [संज्ञा पु.] (सं) सर्प। सांप।

कुटिलगति [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।
[वि.] टेढ़ी चाल वाला।

कुटिलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-टेढ़ापन। २-खोटाई। धोखेबाजी। छल। कपट।

कुटिलपन [संज्ञा. पु.] (हिं.) देखो 'कुटिलता'।

कुटिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती नदी। २-राधिका की ननद।

कुटिलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुटिलता'।

कुटिहा+ [वि.] (हिं.) व्यंग्य से हंसी उड़ाने वाला। दिल्लगीबाज।

कुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घासफूंस से बना छोटा घर। कुटिया। झोंपड़ी।

कुटीचक [संज्ञा पु.] (सं.) चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला जो अपने या अपने कुटुम्बियों के घर रहता तथा अपने बंधुबांधवों से भिक्षा मांग उदरपूर्ति करता है। यह शिखासूत्र का त्याग नहीं करता।

कुटीचर [संज्ञा पु.] देखो 'कुटीचक'।
[वि.] (हिं.) छली। कपटी। दुष्ट।

कुटीर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुटी'।

कुटुंब, कुटुम्ब [संज्ञा पु.] (हिं.) परिवार। कुनबा। खानदान।

कुटुंबिक, कुटुम्बिक [वि.] (सं.) सपरिवार घर में रहने वाला।

कुटुंबिता, कुटुम्बिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पारिवारिक सम्बन्ध।

कुटुंबिनी, कुटुम्बिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बालबच्चेदार स्त्री।

कुटुंबी, कुटुम्बी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परिवार वाला। कुनबेदार। २-नातेदार। कुटुम्ब के लोग।

कुटुम*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुटुंब'।

कुटुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुटैया। कूटने वाला २-बैल या भैंसे को बधिया बनाने वाला।

कुटेक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनुचित हठ। बुरीजिद।

कुटेव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खराब आदत। बुरी बान।

कुटौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धान कूटने का काम। २-धान कूटने की मजदूरी।

कुट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में वृद्धावस्था
मुद्रा। दांत बजने का भाव।

कुट्टनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कुटनी'।

कुट्टमित [वि.] (सं.) समागम काल में स्त्रियों
आनन्द लेते हुए भी मिथ्या दुःख
प्रदर्शित करना। यह ग्यारह प्रकार के
में माना गया है।

कुट्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटकटा कबूतर।

कुट्टित [वि.] (सं.) कुटा हुआ। चूर्ण
हुआ। टुकड़े किया हुआ।

कुट्टिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कुटनी'।

कुट्टिम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्का फर्श।
अनार। दाड़िम।

कुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गंडासे आदि से
चारे के छोटे-छोटे टुकड़े। २-कूटा
सड़ाया हुआ कागज जिसकी अनेक
बनती है। ३-लड़कों का एक
वह मैत्री भङ्ग के समय प्रयोग
४-परकटा कबूतर।

कुठ [संज्ञा पु.] (सं.) चीते की झाड़ी।

कुठर [संज्ञा पु.] (सं.) मथानी बांधने का

कुठला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अन्न रखने का
का बड़ा बरतन। २-चूने की भट्टी।

कुठाँउ, कुठाँय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

कुठाँव* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुरी ठौर।
जगह।
कुठांव मारना-मर्मस्थान पर मारना।
मरना।

कुठाक+ [संज्ञा पु.] (देश.) कठफोड़वा

कुठाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुप्रबन्ध।
आयोजन। २-बुरा साज। बुरा सामान।

कुठाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'कुठांव'।

कुठार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुल्हाड़ी। २-
फरसा। ३-नाश करने वाला। सत्यानाशी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज आदि रखने
बड़ा बरतन। कोठिला।

कुठारपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ में कुठार
परशु लिये हुए, परशुराम।

कुठारघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुल्हाड़ी
अघात। २-गहरी चोट।

कुठारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुल्हाड़ी। २-
करने वाली।

कुठारु [संज्ञा पु.] (सं.) हथियार बनाने
कारीगर। शस्त्रकार।

कुठाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं) चाँदी सोना
की मिट्टी की घरिया।

कुठाहर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुठौर। कुठांव
स्थान। २-बेमौका।

कुठिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्न रखने का

का बरतन ।

कुठिला+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कठुला'।

कुठौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरी जगह। कुठाव। २-अनुचित अवसर। बेठिकाना। बेमौके।

कुड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुट नामक औषध। २-अन्न की राशि। कूड़ा। [संज्ञा स्त्री.] हलकी अगवाँसी। जांघा।

कुड़कुड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) अव्यक्त शब्द।

कुड़कुड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) मन ही मन कुढ़ना। कुड़बुड़ाना। बुरा लगना।

कुड़कुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भूख अथवा अजीर्ण द्वारा पेट में होने वाला गुड़गुड़ शब्द। *कुड़कुड़ी होना*–पेट में चूहे कूदना।

कुड़प [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुड़ाव'।

कुड़पना [क्रि. स.] (हि.) खेत का जोतना।

कुड़बुड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) मन ही मन कुढ़ना। कुड़कुड़ाना।

कुड़मल [संज्ञा पु.] (सं.) कली।

कुड़रिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'कुड़री'।

कुड़री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गेंडुरा। इंडुरी। २-नदी के घुमाव से तीन ओर पानी से घिरी हुई भूमि।

कुड़ल [संज्ञा स्त्री.] रक्त के कम पड़ने या ठंडा पड़ने से उत्पन्न शरीर की ऐंठन। ऐसा मिर्गी या निर्बलता के कारण होता है।

कुड़व [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न नापने का एक पुराना मान। २-३२ तोले का एक मान।

कुड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-इन्द्रजौ का वृक्ष। कुरैया। २-देखो 'कुढ़ा'।

कुड़ाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुठारी। कुल्हारी।

कुड़क [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अंडा देने वाली मुर्गी। २-व्यर्थ। खाली। *कुड़क बोलना*–खाली जाना।

कुड़ेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुरिया में राब का सीरा निकालने की नाली।

कुड़ेरना [क्रि. स.] (देश.) राब के बोरों को इस प्रकार रखना कि जिससे उनकी जूसी बहकर निकल जाय।

कुडौल [वि.] (हिं.) बेढंगा। भद्दा।

कुड्मल [संज्ञा पु.] (सं.) मुकुल। कली।

कुढंग [संज्ञा पु.] (हिं.) बुरा ढंग। कुचाल। [वि.] १-बेढंगा। भद्दा। बुरा। २-बुरी तरह का।

कुढंगा [वि.] (हिं.) १-बुरी चाल का। जो काम करने का ढंग न जानता हो। बेशऊर। उजड्ड। २-बेढंगा। भद्दा।

कुढंगी [वि.] (हिं.) कुमार्गी। बुरे आचरण का।

कुढ़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मन-ही-मन होने वाला दुःख। वह क्रोध जो मन-ही-मन रहे।

कुढ़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मन-ही-मन दुःख करना, खीजना अथवा चिढ़ना। २-डाह करना। जलना।

कुढब [वि.] (हिं.) १-बेढब। बुरे ढंग का। २-कठिन। दुस्तर।

कुढर [वि.] (हिं.) १-जो भली प्रकार से न ढला हो। २-भद्दा। भोंड़ा।

कुढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सूजाक के रोग में वह गांठ जो पेशाब की नली के भीतर पड़ जाती है।

कुढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) कोई ऐसा कार्य करना जिससे कोई कुढ़े। दुःखी करना।

कुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीलर। २-नाभि का मैल। ३-बच्चा।

कुणक [संज्ञा पु.] (सं) तुरत का उत्पन्न बच्चा।

कुणप [संज्ञा पु.] (सं.) १-शव। लाश। मृत शरीर। २-इंगुदी। गोंदी। ३-रांगा। ४-बरछी। भाला।

कुणपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बरछी। भाला।

कुणपाशी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शवभक्षक प्रेत। २-मुर्दा खाने वाला जन्तु। जैसे गीदड़, कौआ, गीध।

कुणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुन का वृक्ष। २-वह व्यक्ति जिसकी बाहु टेढ़ी हो गई हो या मारी गई हो।

कुतक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुतका'।

कुतका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गतका। २-सोंटा। मोटा डंडा। ३-भांग घोटने का डंडा। *कुतका दिखाना या देखना*–साफ इन्कार करना।

कुतना [क्रि. अ.] (हिं.) कूताजाना। आंका जाना।

कुतनु [वि.] (सं.) भद्दे शरीर वाला। भोंडा।

कुतप [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिनमान का आठवां भाग जो मध्याह्न-काल में होता है। २-एक बाजा। ३-अग्नि। ४-द्विज। ५-अतिथि। ६-भांजा। ७-बकरी के बालों का बना कम्बल ८-मिताक्षर के अनुसार आठ वस्तुएं जिनकी श्राद्ध में आवश्यकता होती है।

कुतपस्वी [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभाँति तपस्या न करने वाला। बुरा या निन्दित तपस्वी।

कुतरन [संज्ञा पु.] कुतरा हुआ टुकड़ा।

कुतरना [क्रि. स.] (हिं.) दांत से छोटा टुकड़ा काट लेना। किसी वस्तु में से कुछ अंश निकाल या उड़ा लेना।

कुतर्क [संज्ञा पु.] (सं.) बेढंगी दलील। बुरा तर्क। वितंडा।

कुतर्की [संज्ञा पु.] वृथा का तर्क करने वाला। बकवादी। वितंडावादी।

कुतला* [संज्ञा पु.] (हिं.) हंसिया।

कुतवार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फसल काटने वाला व्यक्ति। २-देखो 'कोतवाल'।

कुतवारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोतवाली'।

कुतवाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोतवाल'।

कुतवाली [संज्ञा. स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोतवाली'।

कुतार+ [संज्ञा पु.] असुविधा। अंडस।

कुताही [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कोताही'।

कुतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कूकरी। कुत्ती।

कुतुक [संज्ञा पु.] (सं.) कौतुक। कौतूहल।

कुतुप [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'कुतप' (१) २-तेल रखने की चमड़े की बनी कुप्पी।

कुतब [संज्ञा पु.] (अ.) ध्रुवतारा।

कुतुबखाना [संज्ञा पु.] (फा.) पुस्तकालय।

कुतुबनुमा [संज्ञा पु.] (अ.) दिग्दर्शक यन्त्र जिस से दिशाओं का ज्ञान होता है।

कुतुबफरोश [संज्ञा पु.] (फा.) पुस्तकविक्रेता।

कुतुबमीनार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दिल्ली की एक बड़ी ऊँची मीनार।

कुतुरफा [संज्ञा पु.] (देश.) एक पक्षी।

कुतुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) इमली। कोमल फल

कुतूणक [संज्ञा पु.] देखो 'कुथुआ'।

कुतूहल [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु को देखने अथवा किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा। उत्कंठा। २-वह वस्तु जिसके देखने की अभिलाषा हो। कौतुक। ३-क्रीड़ा। खिलवाड़। ४-आश्चर्य। अचंभा। ५-नायिका का एक अलंकार जिसमें वह मनोहर पदार्थ को देखने की अभिलाषा रखती है।

कुतूहला [वि.] (हिं.) किसी वस्तु को देखने की उत्कट अभिलाषा रखने वाला। कौतुकी।

कुत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भेड़िये, गीदड़ और लोमड़ी आदि की जाति का एक हिंसक पशु, जिसे प्रायः घर की रक्षा के निमित पालते हैं। २-यन्त्र में किसी घूमने वाले को उलटा चलने से रोकने का साधन। ३-बंदूक का घोड़ा। ४-कपास को न खुलने देने के निमित्त लगाया हुआ अवरोध। ५-नीच या तुच्छ मनुष्य। नीच। क्षुद्र। *कुत्ता काटना*–१-पागल होना। २-मूर्खता के काम करना। *कुत्ते का दिमाग या भेजा होना*–हर समय बोलते रहना। बहुत बकझक करना। *कुत्ते की मौत मरना या मारना*–बुरी तरह चिल्ला-चिल्ला कर या दुःख मारना। *कुत्ते की दुम*–अपना टेढ़ा स्वभाव न छोड़ना

कुत्ती [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कुतिया। कुत्ते की मादा कुकुरी।

कुत्र [अव्य.] (सं) कहां। किस अवस्था में।

कुत्रचित् [अव्य] (सं.) किसी स्थान में।

कुत्सन [संज्ञा पु] (सं.) १-निन्दा। बदनामी। दुर्नाम। २-नीच काम।

कुत्सा [संज्ञा स्त्री] (सं.) निन्दा।

कुत्सित [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुष्ट या कुट नामक औषधि । २-कुड़ा । कोरैया ।
[वि.] १-नीच । अधम । २-निन्दित । गर्हित । ३-बुरा । खराब ।

कुत्स्य [वि.] (सं.) निन्दा के योग्य । निन्दनीय ।

कुथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथरी । कंथा । २-हाथी की झूल । ३-एक कीड़ा । ४-प्रातःकाल स्नान करने वाला ब्राह्मण ।

कुथरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कथरी' ।

कुथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या ।

कुथित [वि.] (सं.) सड़ा गला ।

कुथुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख का एक रोग ।

कुदई+ [संज्ञा स्त्री.] हिं.) देखो 'कोदो' ।

कुदकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कूदना' ।

कुदक्का+ [संज्ञा पु.] (हिं.) उछलकूद ।
कुदक्का मारना–इधर उधर कूदते फिरना ।

कुदरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-शक्ति । अधिकार । प्रभुत्व । २-प्रकृति । ३-ईश्वर शक्ति । ४-रचना । कारीगरी ।

कुदरती [वि.] (अ.) प्राकृतिक । स्वाभाविक । २-दवी । ईश्वरीय ।

कुदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुदाल । कुदार ।

कुदर्शन [वि.] (सं.) कुरूप । बदसूरत । भद्दा ।

कुदलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) कूदते हुए चलना ।

कुदाँई* [वि.] (हिं.) बुरे ढंग से दांव-घात करने वाला । विश्वासघाती ।

कुदाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विश्वासघात । धोखा । २-औचट । संकट की स्थिति । ३-विकट स्थान ।

कुदाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुदाल ।

कुदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरा दान । २-कुपात्र या अयोग्य को दान ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कूदने की क्रिया या भाव । २-वह दूरी जो एक बार कूदने से पार हो । ३-कूदने का स्थान ।

कुदाना [क्रि. स.] (हिं.) १-कूदने में प्रवृत्त करना २-दौड़ाना ।

कुदाम* [संज्ञा पु.] (हिं.) खोटा रुपया । खोटा सिक्का ।

कुदाय [संज्ञा पु.] (हिं.) कुदांव ।

कुदार+ [संज्ञा पु.] (हिं) कुदाल ।

कुदारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुदाली ।

कुदाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे का भूमि खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार ।
कुदाल बजाना–खोदा जाना (घर) ।

कुदाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी कुदाल ।

कुदाव [संज्ञा पु.] (हिं.) कुदाई । कुदान ।

कुदास [संज्ञा पु.] (?) नाव की पतवार का डंडा ।

कुदिन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आपत्ति का समय । खराब दिन । २-वह दिन जिसमें ऋतु विरुद्ध या कष्ट देने वाली घटनाएँ हों ।

कुदिष्ट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुरी नजर । पापदृष्टि । बद-निगाह ।

कुदृश्य [वि.] (सं.) न देखने योग्य ।

कुदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] १-बुरी नजर । पापदृष्टि । २-ऐसा तर्क जो वेद से अनुमोदित न हो ।

कुदेव [संज्ञा पु.](सं.) १-भूदेव । ब्राह्मण । २-दैत्य । राक्षस ।

कुदेश [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्सित देश । बुरा देश ।

कुदेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्सित देह । २-भद्दा शरीर ।

कुद्दार [संज्ञा पु.] (सं.) कुदाल ।

कुद्दाल [संज्ञा पु.] (सं.) कुदाल ।

कुद्मल [संज्ञा पु.] (सं.) फूल की कली ।

कुद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) कोदो । कोदई ।

कुधर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहाड़ । पर्वत । २-शेषनाग ।

कुधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरी धातु । २-लोहा ।

कुधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) क्षुद्रधान्य । घास आदि में से निकलने वाला धान्य । शास्त्र वर्जित धान्य ।

कुधी [वि.] (सं.) मंदबुद्धि । मूर्ख ।

कुनकुना [वि.] (हिं.) थोड़ा गरम । गुनगुना । मन्दोष्ण (तरल पदार्थ) ।

कुनख [संज्ञा पु.] (सं.) नख गिरने का एक रोग ।

कुनखी [वि.] (सं.) १-जिसको नख गिरने का रोग हो । २-बुरे नखवाला ।

कुनना [क्रि. स.] (हिं.) १-खरादना । २-छीलना खुरचना ।

कुनप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुणप' ।

कुनबा [संज्ञा पु.] (हिं.) परिवार । खानदान । कुटुंब ।
कुनबा जोड़ना–नाते रिश्तेदारों को इकट्ठा करना ।

कुनबी [संज्ञा पु.] (हिं.) खेती करने वाली एक हिन्दू जाति । कुर्मी ।

कुनलई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का कटीला छोटा पेड़ ।

कुनवा [संज्ञा पु.] (हिं.) धातु के पात्र खरादने वाला, खरादिया ।

कुनह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-द्वेष । मनोमालिन्य । मनमोटाव । २-पुराना वैर ।

कुनही [वि.] (हिं.) द्वेष रखने वाला । बुरा मानने वाला ।

कुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलने वाला चूरा । बुरादा । २-खरादने की क्रिया । खरादने की मजदूरी ।

कुनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा स्वामी या पति ।

कुनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बवंडर । वातावर्त । नवनिधियों में से एक ।

कुनाम [संज्ञा पु.] (सं.) बदनामी । कुख्याति । अपयश ।

कुनित [वि.] (हिं.) बजता हुआ । क्वणित ।

कुनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खरादने वाला । २-अनुमान से गणना करने वाला ।

कुनैन [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंकोना वृक्ष की छाल का सत्व जो शीत-ज्वर की लाभदायक औषधि है ।

कुपंथ, कुपन्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरा मार्ग । २-निषिद्ध आचरण । ३-बुरा मत या सिद्धान्त ।

कुपट [संज्ञा पु.] (सं.) फटा पुराना कपड़ा । जीर्ण वस्त्र ।

कुपढ़ [वि.] (हिं.) अशिक्षित । अनपढ़ ।

कुपत्थी* [वि.] (हिं.) कुपथ्य या बदपरहेजी करने वाला ।

कुपथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमार्ग । बुरा रास्ता । २-निषिद्धाचरण । ३-देखो 'कुपथ्य' ।

कुपथगामी [वि.] (हिं.) निषिद्ध आचरण वाला ।

कुपथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य के लिये हानिकर हो । बदपरहेजी ।

कुपना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रोध करना ।

कुपाठ [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी मंत्रणा । बुरी सलाह ।

कुपाठी [वि.] (सं.) बदमाश । दुष्ट । उत्पाती ।

कुपाणि [वि.] (सं.) वक्रहस्त । टेढ़े-मेढ़े हाथ वाला ।

कुपात्र [वि.] (सं.) १-अयोग्य । नालायक । किसी विषय का अनधिकारी । २-वह जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध है ।

कुपार* [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र ।

कुपित [वि.] (सं.) १-क्रुद्ध । क्रोधित । २-अप्रसन्न । नाराज ।

कुपिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मछली रखने का पात्र ।

कुपीन [संज्ञा पु.] देखो 'कौपीन' ।

कुपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) माता पिता की आज्ञा न मानने वाला बेटा । कपूत । दुष्ट पुत्र ।

कुपुरुष [संज्ञा पु.) (सं.) वह मनुष्य जो संसार में कोई भला कार्य न करे ।

कुप्पक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों को होने वाला रोग जिसमें उन्हें ज्वर के साथ नाक में पानी भी बहता है ।

कुप्पल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की सब्जी ।

कुप्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) घी, तेल आदि रखने का चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का पात्र ।

कुप्पासाज़ [संज्ञा पु.] (सं.) कुप्पा बनाने वाला।

कुप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमड़े का बना छोटा कुप्पा। कुलेली।

कुप्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक धातु जो जस्ता, रांगा और सीसे के योग से बनता है।

कुप्रिय [वि.] (सं.) अप्रिय। नागवार।

कुफुर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुफ्र'।

कुफेन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काबुल नदी का प्राचीन नाम।

कुफ्र [संज्ञा पु.] (अ.) १-मुसलमानी धर्म से भिन्न धर्म। २-मुसलमानी धर्म के विरुद्ध वाक्य।

कुफ्ल [संज्ञा पु.] (अ.) ताला। जंतरा।

कुफ्ली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कुल्फी'।

कुबंड, कुबण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) धनुष। कोदण्ड।

कुबज* [वि.] (हिं.) खोंडा। विकृतांग। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कूबड़'।

कुबजा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुब्जा'।

कुबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मनुष्य जिसकी पीठ टेढ़ी होगई हो। [वि.] टेढ़ा, मुड़ी हुई पीठ वाला।

कुबड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्त्री जिसकी पीठ टेढ़ी हो। २-वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो।

कुबत*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निंदा। बुरी बात। २-कुचाल। बुरी चाल।

कुबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कंस की दासी जिसकी पीठ टेढ़ी थी। २-झुकी मूठ वाली छड़ी। ३-एक प्रकार की मछली।

कुबटऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुवाक्य'।

कुबलयापीड़ [संज्ञा पु.] देखो 'कुवलयापीड़'।

कुबली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिंडी। गोला।

कुबाक* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुवचन। कठोर वचन। कड़ी बात। २-गाली। शाप।

कुबानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुटेव। बुरी आदत। बुरी लत।

कुबानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुरा व्यवसाय या वाणिज्य। [संज्ञा स्त्री.] बुरी या अशुभ बात।

कुबासन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुवासन'।

कुबाहुल [संज्ञा पु.] (सं.) उष्ट्र। ऊँट।

कुबिचार* [वि.] (हिं.) देखो 'कुविचार'।

कुबिचारी*+ [वि.] (हिं.) देखो 'कुविचार'।

कुबिजा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुब्जा'।

कुबुद [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बगला।

कुबुद्धि [वि.] (सं.) दुर्बुद्धि। मूर्ख। मन्दबुद्धि। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूर्खता। बेवकूफी। २-कुमंत्रण।

कुबेर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुवेर'।

कुबेला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनुपयुक्त काल। बुरा समय।

कुबोलिनी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] कुभाषिणी। खराब बात कहने वाली।

कुब्ज [वि.] (सं.) जिसकी पीठ टेढ़ी हो। कुबड़ा। [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें वायु विकार से पीठ उभड़ आती है।

कुब्जकंठ, कुब्जकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात।

कुब्जक [संज्ञा पु.] (सं.) मालती।

कुब्जत्व [संज्ञा पु.] (सं.) कुबड़ापन।

कुब्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुबड़ी स्त्री। २-कंस की एक कुबड़ी दासी जो श्रीकृष्ण से प्रेम रखती थी। कुबरी। ३-मंथरा नाम की कैकेयी की एक दासी।

कुब्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गादेवी का एक नाम। २-आठ वर्ष की वय की लड़की।

कुब्जित [वि.] (सं.) टेढ़ा किया हुआ।

कुब्बा* [संज्ञा पु.] (हिं.) कूबड़ा। कुब्ज।

कुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काबुल नदी का वैदिककालीन नाम। २-पृथ्वी की छाया। बुरी दीप्ति।

कुभार्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निंद्य स्त्री। खराब औरत।

कुभुक्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खराब भोजन। कुखाद्य।

कुभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। २-सात की संख्या। ३-शेषनाग।

कुभृत्य [संज्ञा पु.] बुरा भृत्य या नौकर।

कुमंठी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पतली लचीली टहनी।

कुमंत्रणा, कुमन्त्रणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी सलाह।

कुमक [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-सहायता। मदद। २-पक्षपात। हिमायत। ३-सैनिकों आदि के रूप में मिलने वाली सहायता।

कुमकी [वि.] (तु.) कुमक से संबंध रखने वाला। [संज्ञा स्त्री.] वह सिखाई हुई हथिनी जिससे हाथियों के पकड़ने में सहायता लेते हैं।

कुमकुम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुंकुम। केसर। २-कुमकुमा।

कुमकुमा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह लाख का बना पोला गोला जिसमें अबीर, गुलाल भर कर होली में एक दूसरे को मारते हैं। २-काँच का बना हुआ पोला गोला। ३-सोनार के दाना बैठाने की टाँकी। लोटा।

कुमकुमी [वि.] (हिं.) कुमकुमे के आकार का।

कुमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुत्सित आशय। २-थोड़ी समझ। मूर्खता। [वि.] (हिं.) बदतमीज। नासमझ।

कुमरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा हाथी।

कुमरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पंडुक जाति का एक पक्षी।

कुमसुम [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष।

कुमाच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। गंजीफे के पत्ते के एक रंग का नाम। ३-देखो 'कौंच'।

कुमार [संज्ञा पु.] (सं) १-पांच वर्ष की अवस्था का बालक। २-पुत्र। बेटा। लड़का। ३-युवराज। ४-कार्तिकेय। ५-सुग्गा। तोता। ६-खरा सोना। ७-सनक, सनन्दन, सनत और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं। ८-कार्त्तिकेय। ९-एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है। [वि.] (सं.) बिन ब्याहा। कुँआरा।

कुमारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजकुमार। २-बालक। लड़का। ३-आंख का ढेला।

कुमारग [संज्ञा पु.] (हिं.) कुमार्ग। बुरा मार्ग।

कुमारतंत्र, कुमारतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों की चिकित्सा का शास्त्र।

कुमारबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) जुवा खेलने वाला व्यक्ति। जुआरी।

कुमार-भृत्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। २-गर्भिणी और नव प्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा।

कुमारमात्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारतीय राज्यों में वह अधिकारी जो किसी मन्त्री अथवा दंडनायक के आधीन और उसके सहायक के रूप में रहकर कार्य करता था। इस पद पर पहले प्रायः राज-परिवार के लोग रहते थे, इसी कारण इसमें 'आमात्य' शब्द से पूर्व 'कुमार लगा है'।

कुमारललिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह वर्ण का एक छंद जिसमें एक जगण, एक सगण और अन्त में गुरु होता है। २-बालकों की क्रीड़ा।

कुमारलसिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ अक्षर का एक वृत्त जिसमें एक जगण, एक सगण और अंत में एक लघु और एक गुरु होता है।

कुमारसंभव [संज्ञा पु.] (सं.) महाकवि कालिदास कृत एक काव्य का नाम।

कुमारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमारी।

कुमारिलभट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध मीमांसक जिन्होंने मीमांसावार्तिक लिखा है।

कुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या। २-घीकुवार। ३-पार्वती।

४-दुर्गा। ५-भारत के दक्षिण में एक अंतरीप का नाम। ६-सोलह अक्षर का एक छंद। ७-सीता जी का एक नाम।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] अविवाहिता।

कुमारीपूजन [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्रमत के अनुसार अविवाहिता कन्या का पूजन।

कुमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरा मार्ग। बुरी राह। २-अधर्म।

कुमार्गगामी [वि.] (सं.) १-कुपंथी। कुमार्गी। २-अधर्मी। बदचलन।

कुमार्गी [वि.] (हिं.) देखो 'कुमार्गगामी'।

कुमालक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन प्रदेश जो मालवा के अन्तर्गत था।

कुमाला [संज्ञा पु.] (देश.) एक छोटा पेड़ जो असाढ़ में फूलता है तथा इसका फल खाया जाता है।

कुमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) अपकारी बन्धु। खराब दोस्त।

कुमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण का एक योद्धा। २-सूअर।
[वि.] [पु. प्र.] बुरे मुख वाला। भद्दे चेहरे का।

कुमुद [संज्ञा. पु.] (सं.) १-कुई। कोका। २-लालकमल। ३-चाँदी। ४-विष्णु।

कुमुदनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कुमुदिनी'।

कुमुदबंधु, बन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कुमुदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद कमल का पौधा। कुईं। कोईं। २-चाँदनी।

कुमुदिनीपति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कुमुदिनीनायक [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कुमुद् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुमुद'।

कुमुद्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-षड्ज स्वर की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति। २-नागराज कुमुद की बहिन।

कुमेध [वि.] (सं.) बुद्धिहीन। बेवकूफी।

कुमेरु [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुवतारा के ठीक नीचे का स्थान। दक्षिणी ध्रुव।

कुमैंड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छल। कपट। धोखा। दगा।

कुमैड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) छली। कपटी। दगाबाज।

कुमोद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुमुद'।

कुमोदनी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुमुदिनी'।

कुमोदिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुमुदिनी'।

कुम्मैत [संज्ञा पु.] (हिं.) कालापन लिये लाल रंग का घोड़ा।
[वि.] कुम्मैत रंग का।

कुम्मैद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुम्मैत'।

कुम्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बेल जिसका फल बड़ा होता है और तरकारी के काम आता है।
कुम्हड़े की बतिया-१-कुम्हड़े का कच्चाफल। २-अशक्त और निर्बल व्यक्ति।

कुम्हड़ौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरी जिसमें कुम्हड़े के महीन टुकड़े मिला दिये जाते हैं।

कुम्हलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मुरझाना। पीला पड़ना। २-सूखने पर होना। ३-प्रभाहीन होना। कांतिरहित होना।

कुम्हार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिट्टी के बरतन बनाने वाला। कारीगर। २-मिट्टी के बरतन बनाने वाली जाति।

कुम्ही*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी पर फैलने वाला एक पौधा।

कुयश [संज्ञा पु.] (हिं.) अपयश। बदनामी।

कुयाजी [वि.] (सं.) निंद्य यज्ञ करने या कराने वाला।

कुयोग [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहनक्षत्र आदि का अनिष्टकारक संयोग। कुलग्न।

कुयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षुद्र जंतुओं की कोटि। तिर्यग्ग्योनि।

कुरंग, कुरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २-मृग। हिरन। ३-बरवैछन्द का एक नाम।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरा रंगढंग। बुरा लक्षण। २-लखौरी रंग का घोड़ा।
[वि.] (हिं.) बदरंग। बुरे रंग का।

कुरंग-लांछन, कुरङ्गलाञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कुरंगसार, कुरङ्गसार [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी। मुश्क।

कुरंगिन, कुरङ्गिन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिरनी।

कुरंटक, कुरण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) पीली कटसरैया।

कुरंड [संज्ञा पु.] (हिं.) एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज करने की सान बनाते हैं।

कुरंडक, कुरण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) पीली कटसरैया।

कुरंबा [संज्ञा पु.] (देश.) भेड़ की एक जाति।

कुरकनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घोड़े या गधे के चमड़े का अग्रभाग जिसका किमुख्त नहीं बन सकता।

कुरका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिलई। चीड़।

कुरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुर्की'।

कुरकुड [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

कुरकुट [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा टुकड़ा।

कुरकुटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टुकड़ा। कूटा हुआ रवा। २-रोटी का टुकड़ा।

कुरकुर [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी खरी वस्तु के कर टूटने का शब्द।

कुरकुरा [वि.] (हिं.) कुरकुर शब्द करने वाला। खरा और करारा।

कुरकुराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुरकुर होने का भाव।

कुरकुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुलायम हड्डी। जैसे-कान। २-घोड़े की एक

कुरगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कारनिस आदि काम बनाने की छोटी थापी।

कुरच+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कराकुल नामक पक्षी।

कुरचिल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) कंकड़ा।

कुरड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) अरबी और तुर्की के घोड़ों के जोड़े से उत्पन्न एक दोगली जाति का घोड़ा।

कुरता [संज्ञा पु.] (तु.) सिर डाल कर पहने वाला एक वस्त्र।

कुरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों का एक पह जो फतूही जैसा होता है।

कुरथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुलथी।

कुरन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुरंड'।

कुरना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-इकट्ठा होना। लगाना। २-मीठी बोली बोलना।

कुरबक [संज्ञा पु.] (सं) कटसरैया।

कुरबनही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बढ़इयों का औजार।

कुरवान [वि.] (अ.) निछावर।
कुरवान करना-वारना। न्योछावर
कुरवान जान-न्योछावर होना। बलि
कुरवान होना-(१) न्योछावर होना। मरना।

कुरवानी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बलिदान।

कुरमा* [संज्ञा पु.] (हिं.) कुटुंब। परिवार।

कुरमा-का-बांक [संज्ञा पु.] (देश.) जहाज में लगने वाली आड़ी लकड़ी।

कुरमा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुनबी'।

कुटर [संज्ञा पु.] (सं.) गिद्ध की जाति का एक पक्षी। २-क्रौंच पक्षी।

कुररा [संज्ञा पु.] (हिं.) क्रौंच पक्षी। २-टिटिहरी।

कुररी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुररा की स्त्री। २-आर्याछंद का एक भेद जिसमें चार गुरु और ४६ लघु होते हैं।

कुरलना* [क्रि. अ.] (हिं.) मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना। चहकना।

कुरला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुल्ला'।

कुरव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं। २-आक। सफेद मदार। ३-सियार। ककश स्वर वाला।

कुरवक [संज्ञा पु.] हिं.) एक लाल फूल वाला एक प्रकार का वृक्ष।

कुरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटसरैया । २-एक सेर की नाप का पात्र।

कुरवारना* [क्रि. स.] (हिं.) खोदना। खरोंचना।

कुरविंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुरुविंद'।

कुरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-आसव । २-मदिरा ।

कुरसथ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मैली खांड।

कुरसा [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जिसका काठ कठोर और लाल रंग का होता है।

कुरसी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पीठ को सहारा देने वाली चौकी जो बैठने के उपयोग में आती है। ऊंचा चबूतरा जिस पर इमारत खड़ी की जाती है। ३-पीढ़ी। पुश्त।

कुरसीनामा [संज्ञा पु.] (फा.) वह पत्र जिसमें किसी वंश परंपरा लिखी हो। वंशवृत्त। पुश्तनामा।

कुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) पुराने जख्म में पड़ी हुई गांठ।

कुराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुरा रास्ता। तंग और नीचा-ऊंचा रास्ता। (देश.) पांव में डालने का काठ।

कुराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) निंद्य राज्य। बुरी सल्तनत।

कुरान [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानों का धर्मग्रंथ जो अरबी भाषा में लिखा हुआ है।

कुरानी [वि.] (हिं.) कुरान पर विश्वास करने वाला। मुसलमान।

कुराय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा। रास्ते का ऊँचा-नीचा स्थान।

कुराल [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष का नाम।

कुराह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुमार्ग। खराब रास्ता। २-कुत्सित आचरण।

कुराहर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कोलाहल। गुलगपाड़ा।

कुराही [वि.] (हिं.) कुमार्गी। बदचलन।

कुरिंद, कुरिन्द [संज्ञा पु.] (हिं.) दरिद्र। निर्धन।

कुरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फूस की झोपड़ी। कुटी। बहुत छोटा गांव। ३-ढेर। बोझ। ४-चोरों में भरकर राब की जूसी निकालने का काम।

कुरियाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पक्षियों का आनन्द से बैठकर पर खुल जाना।

कुरियाल में आना–१-चिड़ियों का मौज में आना। २-आनन्द या उमंग में होना।

कुरील+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चमड़े का व्यापार करने वाला व्यक्ति। २-जूता बनाने वाला कारीगर।

कुरी [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक अन्न। २-अरहर की फलियां। २-*वंश। घराना। खानदान। (देश.) कोल्हू। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विभाग। खंड। टुकड़ा।

करी-करी होना–टुकड़े-टुकड़े होना।

कुरीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुप्रथा। २-कुचाल।

कुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैदिक आर्यों का कुल। २-हिमालय के पश्चिम तथा दक्षिण का एक प्रदेश। ३-एक राजा जिसके कुल में पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे। ४-कर्त्ता। भात। पका हुआ चावल।

कुरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) दस छटांक के बराबर का एक मान।

कुरुई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बांस या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया।

कुरुक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन स्थान जहां महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। यह स्थान अम्बाले और दिल्ली के बीच में है।

कुरुखेत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुरुक्षेत्र।

कुरुख [वि.] (हिं.) मुँह बनाए हुए। नाराज। कुपित।

कुरुजांगल, कुरुजाङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) पांचाल देश के पश्चिम का एक प्रदेश।

कुरुम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कूर्म'।

कुरुरी [संज्ञा पु.] (सं.) बाज नामक पक्षी।

कुरुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाल की लट जो माथे पर बिखरी हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुरंड'।

कुरुल्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (संगीत में)। एक प्रकार की गमक।

कुरुविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोथा। २-काला नमक। ३-उड़द। ४-मानिक। ५-दर्पण। आइना। ६-ईंगुर। शिंगरफ।

कुरुविल्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-पद्मरागमणि। २-वनकुलथी।

कुरूप [वि.] (सं.) बदसूरत। बेढौल। बेढंगा।

कुरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुरूप होने का भाव। बदसूरती। भौंड़ापन।

कुरेदना [क्रि. स.] (हिं.) खुरचना। खरोचना। करोदना।

कुरेदनी [संज्ञा स्त्री.] भट्ठी की आग हटाने का सींकचा।

कुरेभा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साल में दो बार ब्याने वाली गाय।

कुरेर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुलेल'।

कुरेलना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'कुरेदना'।

कुरेलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुरेदनी'।

कुरैत [संज्ञा पु.] (हिं.) भागीदार। साझी। हिस्सेदार।

कुरैना* [संज्ञा पु.] (हिं.) राशि। ढेर।

कुरैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक जंगली वृक्ष जिसके फल को इन्द्रजव कहते हैं।

कुरौना* [क्रि. स.] (हिं.) राशि। ढेरी।

कुरौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राशि। ढेरी।

कुर्क [वि.] (तु.) जब्त।

कुर्कअमीन [संज्ञा पु.] (तु.) वह सरकारी कर्मचारी जो न्यायालय की आज्ञा द्वारा किसी की सम्पत्ति की जब्ती का अधिकार पत्र लेकर जाय और जायदाद आदि जब्त करे।

कुर्कनामा [संज्ञा पु.] (तु.) न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमें सम्पत्ति आदि को जब्त करने का आदेश हो।

कुर्की [संज्ञा स्त्री.] (तु.) ऋण अथवा अपराधी से दंड वसूल करने के निमित्त राजद्वारा होने वाला किसी की सम्पत्ति पर अधिकार। आसंजन।

कुर्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुरता'।

कुर्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुरती'।

कुर्दमी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जहाज का रस्सा।

कुर्पर [संज्ञा पु.] (सं.) घुटना। कोहनी।

कुर्पासक [संज्ञा पु.] (सं) अंगिया। चोली।

कुर्बानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'कुरबानी'।

कुर्मी [संज्ञा पु.] (हिं.) तरकारी आदि बोने वाली एक जाति। कुनबी। गृहस्थ।

कुर्मुक [संज्ञा पु.] (हिं.) सुपारी।

कुर्रना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कुरलना'।

कुर्री [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-हेंगा। पटरा। २-कुरकुरी हड्डी। ३-गोल टिकिया।

कुर्स [संज्ञा पु.] (अ.) १-गोल टिकिया। २-अरब देश का एक सिक्का जो हमारे डेढ़ आने के मूल्य का होता है। ३-एक चीन देश का सिक्का। (देश.) एक घास।

कुर्सी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कुरसी'।

कुर्सीनामा [संज्ञा पु.] देखो 'कुरसीनामा'।

कुलंग, कुलङ्ग [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक पक्षी जिसका शरीर मटमैला, शिर लाल रंग का और गरदन लंबी होती है। २-मुर्गा। कुक्कुट। ३-लम्बी टांग वाला व्यक्ति (व्यंग)।

कुलंज, कुलञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'कुलंजन'। [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़े का एक दोष।

कुलंजन, कुलञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अदरक के समान एक पौधा। गंधमूल। २-पान की जड़ या डंठल।

कुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वंश। घराना। खानदान। २-जाति। ३-समूह। समुदाय। ४-भवन। घर। मकान। ५-वाममार्ग। ६-तंत्र के अनुसार प्रकृति, काल, आकाश, जल, तेज, वायु आदि पदार्थ। ७-संगीत में एक ताल। [वि.] (अ.) समस्त। सब। तमाम। पूरा। सारा।

कुल बखानना–१–वंश विरदावली वर्णन करना। २–बहुत गालियाँ देना।

कुलकंटक, कण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी कुचाल से अपने वंश वालों को कष्ट पहुँचाने वाला।

कुलक [संज्ञा पु.] (सं.) १–मकरतेंदुआ नाम का वृक्ष। २–कुचिला। ३–परवल या उसकी लता। ४–हरा साँप। ५–दीपक। गद्य लिखने का (संस्कृत) एक ढंग।

कुलकना [क्रि. अ.] (हिं.) प्रसन्न होना। आनन्दित होना।

कुलकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वंश का आदि पुरुष या संस्थापक। कुलपति।

कुलकलंक, कुलकलङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) वंश को धब्बा लगाने या अपमानित करने वाला व्यक्ति।

कुलकलंकिनी, कुलकलङ्किनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिता या ससुर के घराने की मर्यादा को नष्ट करने वाली स्त्री।

कुलकानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुल या वंश की मयादा या लाज।

कुलकी+ [संज्ञा स्त्री.] (बं.) चिलम।

कुलकुंडलिनी, कुलकुण्डलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक शक्ति।

कुलकुलाना [क्रि. अ.] (हिं.) कुलकुल शब्द करना।

आंतें कुलकुलाना–अत्याधिक भूखा होना।

कुलकुलानि [क्रि. अ.] (हि.) १–कुलकुल शब्द करना। २–धीरे-धीरे बोलना। ३–प्रसन्न होना।

कुलक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घराने का काम। कुल का कार्य।

कुलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १–बुरा लक्षण या चिह्न। २–बदचलनी। कुचाल।
[वि.] (सं.) १–बुरे लक्षण वाला। २–दुराचारी।

कुलक्षणी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बुरे लक्षण वाला। २–दुराचारी।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बुरे लक्षण वाली। २–दुराचारिणी।

कुलक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) वंश का अधःपतन और ताश।

कुलगरिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंश गौरव। वंश का बड़प्पन।

कुलघ्न [वि.] (सं) वंशनाशक। खानदान बिगाड़ने वाला।

कुलचंडी, कुलचण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक देवी।

कुलचा [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक प्रकार की खमीर की रोटी। २–तम्बू या खेमे के डंडे के ऊपर लगने वाला गोल लट्टू। ३–छिपा कर इकट्ठा किया हुआ रुपया।

कुलच्युत [वि.] (सं.) जाति से बहिष्कृत किया हुआ।

कुलच्छन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुलक्षण'।

कुलच्छनी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुलक्षणी'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुलक्षणी'।

कुलज [संज्ञा पु.] (सं.) १–उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष। २–परवल।

कुलजा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बड़े डीलडौल की एक जंगली भेड़ जो पामीर और गिलगित में पाई जाती है।

कुलजात [वि.] (सं.) वंश में उत्पन्न। वंशोद्भव।

कुलट [वि.] (सं.) [पु. प्र.] व्यभिचारी। बदचलन। औरस के अतिरिक्त और प्रकार का पुत्र। जैसे क्षेत्रज।

कुलटा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] बहुतों से प्रेम करने वाली या व्यभिचार कराने वाली। व्यभिचारिणी। पुंश्चली। स्वैरिणी।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जो एक से अधिक पुरुषों से प्रेम रखती है।

कुलतंतु, कुलतन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) घरवालों का एक मात्र आधार पुरुष।

कुल-तंत्र, कुलतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्राचीन शासन प्रणाली जिसमें किसी विशिष्ट कुल के नायक राज्य के शासन का सब कार्य करते थे।

कुलतारन [वि.] (हिं.) कुल को तारने वाला। वंश को पवित्र करने वाला।

कुलतिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रशास्त्र के अनुसार चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी तथा चतुर्दशी तिथि।

कुलतिलक [संज्ञा पु.] (सं.) वंश में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति।

कुलत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) कुलथी। कुरथी।

कुलत्थिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलथी। कुरथी।

कुलथ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुलथी।

कुलथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उड़द के समान एक मोटा अन्न जो चौपायों को खिलाया जाता है। गरीब लोग दाल भी बनाकर खाते हैं।

कुलदीप [वि.] (सं.) कुल श्रेष्ठ।

कुलदूषण [वि.] (सं.) कुलया वंश को दोष लगाने वाला।

कुलदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परम्परा से होती आई हो।

कुलदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुल परम्परा से पूजित देवी।

कुलधर [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। बेटा।

कुलधारक [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। बेटा।

कुलधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) परम्परा से चला आता हुआ वंश या कुलका कर्तव्य। वंशधर्म।

कुलनंदन, कुलनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने सद्-आचरण से कुल को प्रसन्न करने वाला व्यक्ति।

कुलन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीड़ा। दर्द। कष्ट।

कुलनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्र के अनुसार भरणी, रोहिणी, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, जेष्ठा, पूर्वाषाढा, श्रवण और उत्तर भाद्रपद कुलनक्षत्र कहलाते हैं।

कुलना [क्रि. अ.] (हिं.) टीस मारना। दर्द करना।

कुलपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–घर का मालिक। २–वह गुरु या आचार्य जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३–वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न तथा शिक्षा दे। ४–किसी विश्वविद्यालय का उपाध्यक्ष सर्वोच्च अधिकारी।

कुलपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्ति, ऋक्ष, विंध्य और परियात्र नामक सात पहाड़ों का समूह।

कुलपूज्य [वि.] (सं.) जो परंपरा से वंश में पूज्य चला आता हो।

कुलफ*+ [संज्ञा पु.] (अ.) ताला।

कुलफ़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मानसिक व्यथा।

कुलफा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का शाक।

कुलफी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–पेंच। २–धातु का बना हुआ चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बरफ जमाया जाता है। ३–इस प्रकार जमाया हुआ दूध या शरबत।

कुलबधु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुलवधु'।

कुलबुल [संज्ञा पु.] (हि.) छोटे-छोटे कीड़ों की गति का शब्द।

कुलबुलाना [क्रि. अ.] (हि.) १–छोटे-छोटे जीवों का सरकना। २–धीरे-धीरे हिलना डोलना। ३–चंचल होना।

कुलबुलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धीरे-धीरे हिलने डोलने का भाव।

कुलबोरन [वि.] (हिं.) १–वंश को डुबाने वाला। वंश की मर्यादा भ्रष्ट करने वाला। २–अयोग्य। नालायक।

कुलभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुलतिलक'।

कुलराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुलतंत्र'।

कुलवंत [वि.] (सं.) कुलीन।

कुलवर्धन [वि.] (सं.) वंश की उन्नति करने वाला।

कुलवधु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलवती, मर्यादा से रहने वाली स्त्री।

कुलवान् [वि.] (सं.) कुलीन। खानदानी। अच्छे कुल का।

कुलसंकुल, कुलसङ्कुल [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक।

कुलसन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया।

कुलह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कुलाह। टोपी। २–

शिकारी पक्षियों की आंख ढकने की टोपी।

कुलहवरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों के पहनने का एक प्रकार का कंटोप।

कुलहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुलह'।

कुलही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों का कनटोप।

कुलांगार, कुलाङ्गार [संज्ञा पु.] (सं.) कुल का नाश करने वाला। सत्यानाशी।

कुलाँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दोनों हाथों की दूरी। २-चौकड़ी। छलांग। उछाल।

कुलाँट* [संज्ञा पु.] (हिं.) छलांग। चौकड़ी। उछाल।

कुलाकुल [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार कुछ निश्चित नक्षत्र, वार और तिथियां।

कुलाचल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुलपर्वत'।

कुलाचार [संज्ञा पु.] किसी वंश में बहुत समय से होता आने वाला आचार या रीति व्यवहार।

कुलाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) कुलगुरु। पुरोहित।

कुलाधि [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पाप। दोष। ऐब।

कुलाबा [संज्ञा पु.] (अ.) १-किवाड़ में लगा हुआ पायजा। २-पानी निकालने की नाली। मोरी।

कुलाभिमान [संज्ञा पु.] (सं.) कुल या वंश का अभिमान।

कुलायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिड़िया घर। पक्षिशाला।

कुलाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुम्हार। २-जंगली मुर्गा। ३-उलूक। उल्लू।

कुलालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिड़ियाखाना।

कुलाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुम्हारिन।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) दूरबीन।

कुलाह [संज्ञा पु.] (सं.) काले पैरों वाला भूरे रंग का घोड़ा।

[संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की ऊंची टोपी जिसके ऊपर पगड़ी बाँधी जाती है।

कुलाहल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोलाहल'।

कुलिंग, कुलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक पक्षी। २-गौरा। चिड़ा। ३-पक्षी। चिड़िया। ४-काकड़ासींगी।

[संज्ञा स्त्री.] एक नदी का नाम।

[वि.] (सं.) बुरे लिंग का।

कुलिंगक, कुलिङ्गक [संज्ञा पु.] गौरवा नामक पक्षी। चिड़ा। चटक।

कुलिंजन, कुलिञ्जन [संज्ञा पु.] देखो 'कुलंजन'।

कुलिंद, कुलिन्द [संज्ञा पु.] १-उत्तर पश्चिम भारत का देश। कुनिंद। २-उस देश का निवासी। ३-उस देश का राजा।

कुलि* [वि.] (हिं.) देखो 'कुल'।

कुलिक [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्पकार। दस्तकार। २-उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष। ३-कुल या जाति का प्रधान पुरुष।

कुलिज [संज्ञा पु.] (सं.) नख। नाखून।

कुलिश [संज्ञा पु.] (सं.) १-हीरा। २-वज्र। बिजली। गाज। कुठार।

कुलिशधर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र। सुरराज।

कुलिशपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

कुलिशासन [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध देव का एक नाम।

कुलिशी [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) एक वेदवर्णित नदी जो आकाश में मानी जाती है।

कुली [संज्ञा पु.] (तु.) मजदूर। बोझा उठाने वाला श्रमिक।

कुलीकबारी [संज्ञा पु.] (हिं.) गरीब लोग। निम्न श्रेणी के लोग।

कुलीन [वि.] (सं.) उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे घराने का। खानदानी। २-पवित्र। साफ।

कुलीना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का आर्या छंद।

कुलीर [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

कुलीरक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा केकड़ा।

कुलुफ [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ का मैल। जीभ के ऊपर जम जाने वाला सफेद मैल।

कुलुफ [संज्ञा पु.] (हिं.) ताला।

कुलुस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मछली जिसकी लम्बाई पांच फुट तक होती है।

कुलू [संज्ञा पु.] (हिं.) कांगड़े के पास का प्रदेश।

कुलूत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कुलू'।

कुलूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूसे की आग।

कुले [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कल्लोल। क्रीड़ा।

कुलेलना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

कुलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुलपति। २-शिव। महादेव।

कुलेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

कुल्टू [संज्ञा पु.] देखो 'कोट्टू' या 'कुट्टू'।

कुल्थी [संज्ञा पु.] देखो 'कुलथी'।

कुल्फ [संज्ञा पु.] (अ.) ताला।

कुल्फी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुलफी'।

कुल्माष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुल्थी। २-उर्द। माष। ३-वह अन्न जिसमें दो भाग दाल हों। ४-खिचड़ी। ५-कांजी। ६-एक रोग।

कुल्य [वि.] (सं.) उत्तम कुल का। माननीय।

कुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नहर। कृत्रिम नदी। २-परनाला। ३-कुलीन स्त्री।

कुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुख साफ करने के निमित्त मुँह में पानी लेकर इधर उधर हिला कर फेंकने का कार्य। २-एकबार मुख में लिया जा सके उतना पानी।

कुल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'कुल्ला'। २-बाल। जुल्फ।

कुल्लुक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बांस।

कुल्लूक [संज्ञा पु.] (सं.) मनुसंहिता के प्रसिद्ध टीकाकार।

कुल्हड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरवा। चुक्कड़।

कुल्हा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कूल्हा। २-कुल्हड़।

कुल्हड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) लकड़ी चीरने फाड़ने का एक औजार। कुठार।

कुल्हाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा 'कुल्हाड़ा'। कुठार। २-बसूला।

कुल्हारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुल्हाड़ा'।

कुल्हिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पुरवा। छोटा कुल्हड़।

कुल्हिया में गुड़ फोड़ना-गुपचुप कोई कार्य करना।

कुल्हू [संज्ञा पु.] (हिं.) कांगड़े के पास का प्रदेश

कुवंग, कुवङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक धातु।

कुव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-फूल।

कुवज [संज्ञा पु.] (सं.) (कमल से उत्पन्न) ब्रह्मा।

कुवद [संज्ञा पु.] निन्दा। बुराई। बुरी बात।

कुवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यधिक वर्षा होना। अतिवृष्टि।

कुवल [संज्ञा पु.] १-बेर का फल। २-जल। ३-सर्प का पेट।

कुवलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-नील कमल। २-नील कोईं। कोका। ३-भूमंडल। ४-एक प्रकार का असुर।

कुवलयानंद, कुवलयानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) अलंकार का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

कुवलयापीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का रूप धारण करने वाला एक दैत्य जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था।

कुवलयाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-धुंधमार नामक एक राजा का नाम। २-ऋतुध्वज राजा का नाम। ३-प्रतर्दन का एक नाम। ३-पाताल केतु को मारने के लिए आकाश से सूर्य का भेजा हुआ घोड़ा।

कुवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुआँ'।

कुवाँट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगली गुलाब।

कुवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्वचन। गाली। कुत्सित वाक्य।

कुवाच्य [वि.] (सं.) जो न कहने योग्य हो। गंदा। बुरा। [संज्ञा पु.] दुर्वचन। गाली।

कुवाट* [संज्ञा पु.] (हिं.) कपाट। किवाड़। दरवाजा।

कुवाण+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धनुष। कमान।

कुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी बात।

कुवार [संज्ञा पु.] (हिं.) असोज। आश्विन मास

कुवारी [वि.] (हिं.) क्वार के महीने में होने वाला। क्वार का। जैसे क्वारी धान, क्वारी फसल।

कुवासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा अभिप्राय या ख्वाहिश।

कुविंद, कुविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) जुलाहा। कोरी

कुविचार [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट विचार। बुरा विचार।

कुविचारी [वि.] (सं.) बुरे विचार वाला। जिसके विचार बुरे हों।

कुविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रविरुद्ध विवाह

कुवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निंदित आचरण या बुरा बर्ताव।

कुवेर [संज्ञा पु.] (सं.) यक्षों के राजा जो इन्द्र की निधियों के भंडारी माने जाते हैं।

कुवेरक [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत का वृक्ष।

कुवेराचल [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास पर्वत।

कुवेराद्रि [संज्ञा पु.] कैलास पर्वत।

कुवैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) खराब वैद्य या हकीम। नीम हकीम।

कुश [संज्ञा पु.] (सं.) १-कांस के समान एक घास जिसकी पत्तियां नुकीली, तीखी, और कड़ी होती हैं। २-जल। पानी। ३-श्रीरामचन्द्र के एक पुत्र का नाम। फाल। कुसिया। हल की कुसी। [वि.] १-कुत्सित। २-पागल।

कुशकंडिका, कुशकण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक संस्कार।

कुशकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-राजा कुशध्वज।

कुशद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौराणिक टापू जो चारों ओर से घृतसमुद्र से घिरा है।

कुशध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) राजा जनक के छोटे भाई का नाम जिनकी दो पुत्रियों का विवाह भरत और शत्रुघ्न के साथ हुआ था।

कुशन [संज्ञा पु.] (अं.) मोटा गद्दा।

कुशनाभ [संज्ञा पु.] (सं) रामचन्द्रजी के पुत्र कुश का बेटा।

कुशपत्रक [संज्ञा पु.) (सं.) फोड़ा चीरने का उपकरण या हथियार।

कुशप्लवन [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतोक्त एक तीर्थ।

कुशमुद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुश की बनी हुई अंगूठी। पवित्री। पैंती।

कुशरीर [वि.] (सं.) बुरे शरीर वाला। बेडौल। भद्दा।

कुशल [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षेम। मंगल। खैरियत। वह जिसके हाथ में कुश हो। कुशद्वीप का निवासी। ४-शिव। [वि.] (सं.) १-चतुर। दक्ष। प्रवीण। २-श्रेष्ठ। अच्छा। भला। ३-पुण्यशील।

कुशल-क्षेम [संज्ञा पु.] (सं) राजीखुशी। खैर आफियत।

कुशलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निपुणता। चतुराई। चालाकी। २-योग्यता। प्रवीणता।

कुशलप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं) राजीखुशी या कुशलमंगल पूछना।

कुशलबुद्धि [वि.] (सं.) शिक्षित। समझदार। होशियार।

कुशलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुशलता'।

कुशलात* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुशल समाचार। मंगल समाचार।

कुशली [वि.] (हिं.) १-सकुशल। कल्याणयुक्त। २-निरोग। स्वस्थ।

कुशवन [संज्ञा पु.] (सं.) व्रज में गोकल के पास का एक वन।

कुशस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) होम करने से पूर्व यज्ञभूमि या यज्ञकुंड के चारों ओर कुश बिछाने का कार्य।

कुशस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वारका का एक नाम।

कुशहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) दान या श्राद्धतर्पण के निमित्त उद्यत।

कुशांबु, कुशाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) निमिवंशीय राजा कुश का पुत्र जिसने कौशांबी नगरी बसाई थी।

कुशांबु, कुशाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'कुशांब'। २-कुश के अग्रभाग से टपकने वाला पानी।

कुशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'कुश'। २-रस्सी। २-मीठा नीबू।

कुशाक्ष [संज्ञा पु.] (सं) बंदर। वानर।

कुशाग्र [वि.] (सं.) कुश की नोक के समान तीखा। तीव्र। तेज।

कुशाग्रबुद्धि [वि.] (सं.) तीव्र बुद्धि वाला। चतुर। होशियार।

कुशादगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) विस्तार। फैलाव। चौड़ाई।

कुशादा [वि.] (फा.) १-खुला हुआ। २-विस्तृत। लम्बा चौड़ा।
कुशादा करना-१-खोलना। २-फैलाना।

कुशारणि [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्वासाऋषि।

कुशावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरिद्वार के एक तीर्थ का नाम। २-एक ऋषि।

कुशाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) इक्ष्वाकुवंशी एक राजा जिसकी राजधानी विशाला थी।

कुशासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुश का बना हुआ आसन। कुश की चटाई। २-बुरा शासन। बुरा राज्यप्रबंध।

कुशिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन आर्य वंश जिसमें विश्वामित्र उत्पन्न हुए थे। २-कुशिकवंश का पुरुष। ३-हल की कुसी। फल। ४-साल वा साखू। ५-तेल की तल

कुशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल का फाल।

कुशी [संज्ञा पु.] (हिं.) कुशवाला। जिसके हा में कुश हो। २-वाल्मीकिऋषि।

कुशीद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुसीद'।

कुशीनार [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव का निर्वा स्थान।

कुशील [वि.] (सं.) मन्द स्वभाव का। असभ्य। शीलरहित।

कुशीलव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कवि। चारण। २-नट। अभिनेता। ३-गवैया। ४-वाल्मी ऋषि का एक नाम।

कुशीवश [संज्ञा पु.] (सं.) वाल्मीकऋषि।

कुशूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न रखने का या कोठार। कोठला। २-कड़ाही। ३- राक्षस। ४-तुषाग्नि। ५-बुरी पीड़ा।

कुशूलधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) तीन वर्ष के लि आहार के निमित्त संचित धान्य।

कुशूलधान्यक [संज्ञा पु.] (सं.) कुशूल ध संचित करने वाला गृहस्थ।

कुशेशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। पद्म। २- सारस। ३-कनकचंपा।

कुशोदक [संज्ञा पु.] (सं.) कुश मिला जल (हाथ में लिया हुआ दान के निमित्त कुश और जल)।

कुशोदका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम।

कुश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) रसायनिक क्रिया द्वारा धातुओं का फूंक कर बनाया हुआ भस्म।

कुश्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दो आदमियों का एक दूसरे को गिराने या पछाड़ने के निमित्त लड़ना। मल्लयुद्ध।
कुश्ती खाना-कुश्ती में हार जाना। कुश्ती *मारना*-कुश्ती में जीतना। कुश्तमकुश्ता-मु भेड़। लड़ाई।

कुश्तीबाज [वि.] (फा.) कुश्ती लड़ने वाला। पहलवान।

कुश्रुत [वि.] (सं.) साफ साफ न सुना हुआ।

कुषुंभ, कुषुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कीड़ों की वि थैली जिसमें उनका विष रहता है।

कुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोढ़। २-कुट नाम औषधि।

कुष्ठकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) भुईंखखसा नाम लता। भूम्याहुल्य।

कुष्टगंधि, कुष्टगन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एलुवा

कुष्ठघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) हिंवावली नाम औषधि।

कुसारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुसयारी'।

कुसिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुसी।

कुसियार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मोटी, सफेद और कोमल ऊख।

कुसियारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुसयारी'।

कुसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हल का फाल।

कुसीद [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याज पर रुपया देने का काम। सूद। २-व्याज पर दिया हुआ धन। ३-लालचन्दन।

कुसीदपथ [संज्ञा पु.] (सं.) सूद पर रुपया देना।

कुसीदिक [वि.] (सं.) सूद पर रुपया देने वाला। सूदखोर। महाजन।

कुसीनार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुशीनार'।

कुसुंब, कुसुम्ब [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक बड़ा वृक्ष जो भारत, बरमा और चीन में होता है।

कुसुंबिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुसुंब'।

कुसुंभ, कुसुम्भ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुसुम। बर्रे। अग्निशिखा। २-केसर। कुमकुम।

कुसंभा, कुसुम्भा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुसुम का रंग। २-भांग और अफीम के मेल से बना हुआ एक मादक द्रव्य।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) आषाढ़ शुक्लपक्ष की छठ।

कुसुंभी, कुसुम्भी [वि.] (हिं.) कुसुम के रंग का लाल।

कुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल। पुष्प। २-स्त्रियों का रज। ३-वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों। ४-पीले फूल का एक पौधा। बर्रे। ५-एक प्रकार का छंद। ६-संगीत में एक राग जो मेघराग का पुत्र माना जाता है। यह दोपहर को गाया जाता है। ७-आंख का एक रोग।

कुसुमकार्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

कुसुमचाप [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

कुसुमधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

कुसुमपुर [संज्ञा पु.] (सं) पटने का प्राचीन नाम। पाटलिपुत्र।

कुसुमफल [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल। जातीफल।

कुसुम-मय [वि.] (सं.) फूलों से भरा हुआ। पुष्पों से परिपूर्ण।

कुसुमरेणु [संज्ञा पु.] (सं.) पराग।

कुसुमवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला स्त्री।

कुसुमवाण [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

कुसुमविचित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (न + य + न + य) होता है।

कुसुमशयन [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों का बिछौना।

कुसुमशर [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव का पुष्पवाण।

कुसुमस्तवक [संज्ञा प.] (सं.) १-फूलों का गुच्छा। २-एक दंडक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नौ या नौ से अधिक सगण होते हैं।

कुसुमांजन, कुसुमाञ्जन [संज्ञा पु] (सं.) जस्ते का भस्म।

कुसुमांजलि, कुसुमाञ्जलि [संज्ञा स्त्री.] (सं) फूलों से भरी हुई अंजलि। पुष्पांजलि।

कुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जायफल का वृक्ष।

कुसुमाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसंत। २-बगीचा। बाग। बाटिका। ३-छप्पय का एक भेद जिसमें ६ गुरु + १४० लघु = १४६ वर्ण, १५२ मात्राएं होती हैं या ६ गुरु + १३६ लघु = १४२ वर्ण और १४८ मात्राएं होती हैं।

कुसुमागम [संज्ञा. पु.] (सं.) वसंतकाल।

कुसुमाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) चम्पा का वृक्ष।

कुसुमायुध [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

कुसुमाल [संज्ञा पु.] (सं.) चोर।

कुसुमावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूलों का गुच्छा। फूलों का समूह।

कुसुमासव [संज्ञा पु.] १-फूलों का रस। मकरंद। २-पुष्पमधु। मधु।

कुसुमित [वि.] (सं.) फूला हुआ। पुष्पित।

कुसुमितलतावेल्लिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (म + त + न + य + य + य) अठारह वर्ण होते हैं।

कुसुमेषु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

कुसुमोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्पवाटिका। फुलवाड़ी।

कुसुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुसली'।

कुसूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरा सूत। २-कुप्रबन्ध। ३-कुब्योंत।

कुसूर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कसूर'।

कुसूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवयोनि। २-देखो 'कुशूल'।

कुसृत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इन्द्रजाल। २-दुराचार। ३-शठता। दुष्टता।

कुसेसय+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल। पद्म।

कुस्तंबरु, कुस्तम्बरु [संज्ञा पु.] (सं.) धनिया का बीज।

कुस्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुश्ती'।

कुस्तुंबरी, कुस्तुम्बरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिया।

कुस्तुभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

कुस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) व्यभिचारिणी स्त्री। बुरी औरत।

कुस्वप्न [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा सपना।

कुस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरा पति। २-बुरा मालिक।

कुस्सा [संज्ञा पु.] (देश.) कुदाल।

कुह [संज्ञा. पु.] (सं.) कुबेर।

कुहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माया। धोखा। फरेब। २-धूर्त। वंचक। ६-मेंढक। ४-मुर्गे की कूक। ५-नागविशेष। ६-इन्द्रजाल जानने वाला।

कुहकना [क्रि. अ.] (हिं.) पक्षी का मधुर स्वर में बोलना। पीकना।

कुहकिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोयल।

कुहुकुहु [संज्ञा पु.] (हिं.) केसर। कुंकुम।

कुहक [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के आठ भेदों में से एक।

कुहन [वि.] (सं.) १-ईर्ष्या करने वाला। २-मक्कार। धोखेबाज। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूहा। मूसा। २-मिट्टी का बरतन। ३-सांप ४-शीशे का बतन।

कुहना+ [क्रि. स.] (हिं.) मार-मारकर कचूमर निकालना। [संज्ञा पु.] गाना। अलापना।

कुहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ और बाँह के जोड़ की हड्डी। २-तांबे या पीतल की बनी हुई टेढ़ी नली।

कुहनीउड़ान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

कुहप [संज्ञा पु.] (हिं.) रात्रिचर। राक्षस।

कुहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-गड्ढा। बिल। छेद। सुराख। गले का छेद।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) बहरी नामक पक्षी जो चिड़ियों को पकड़ लेता है।

कुहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वायु में जल के अत्यन्त सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंडक पाकर वायु की भाप में जम जाता है तथा धीरे-धीरे भूमि पर उतरता है।

कुहराम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विलाप। रोना-पीटना। आर्तनाद। २-हलचल। बावेला।

कुहाँर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुम्हार'।

कुहाना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) रूठना। नाराज होना। रिसाना।

कुहारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) कुल्हाड़ा। टांगी।

कुहासा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुहरा'।

कुहिर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुहरा'।

कुहिरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुहरा'।

कुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।
[संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े की एक जाति।

कुहु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अमावस्या। २-कोयल की बोली।

कुहुक [संज्ञा पु.] (हिं.) पक्षियों का मधुर कूजन। पीक। कूक।

कुहुकना [क्रि. अ.] (हिं.) पक्षियों का मधुर स्वर में कूजना या बोलना।

कुहुकबान [संज्ञा पु.] (हिं.) बांस की कई पट्टियों को जोड़कर बनाया हुआ बाण जिसे चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।

कुहू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अमावस्या। २-अमावस्या की अधिष्ठात्री देवी। ३-मोर या कोयल की कूक।

कुहूकंठ, कहूकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

कुहूक [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

कुहूकबान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुहुकबान'।

कुहूमुख [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

कुहूरव [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

कुहेड़ी, कहेलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुहरा।

कूख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोख। पेट। गर्भ।

कूखना [क्रि. अ.] (हिं.) पीड़ित अवस्था में उहँ-उहँ शब्द निकलना।

कूग [संज्ञा पु.] (हिं.) तांबे पीतल के बरतन खरादने का एक यंत्र।

कूगा [संज्ञा पु.] (देश.) बबूल की छाल का काढ़ा जिसमें डुबाकर चमड़ा कमाया या सिझाया जाता है।

कूच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जुलाहे की कूंची। २-लोहार की बड़ी संडसी। ३-एड़ी के ऊपर की बड़ी नस।

कूचना+ [क्रि. स.] (हिं.) कूटना। कुचलना। *मुँह कूँचना*-१-मारना। पीटना। २-मान-ध्वंस करना।

कूचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झाड़ू। बोहारी। २-भड़भूजे का करछा।

कूची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा कूंचा। छोटी झाड़ू। २-मूंज या बालों आदि का गुच्छा। ३-चित्र बनाने की तूलिका।
कूंची देना-१-कूंची से रंग करना। २-कूंची से साफ करना। निखारना। ३-खेत को एक कोने से दूसरे कोने तक जोतना।

कूज [संज्ञा पु.] (हिं.) क्रौंच पक्षी। कराकुल।

कूजड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुंजड़े की स्त्री।

कूजना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कूजना'।

कूजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कूंजड़ी'।

कूड [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-युद्ध में पहनने की लोहे की टोपी। ४-पानी भरने का लोहे या मिट्टी का गहरा बरतन। ३- सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का डोल। ४-वह गहरी लकीर जो खेत में हल जोतने के कारण बन जाती है। कुंड।

कूडा [संज्ञा पु.] (हिं.) गहरा तथा चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन जिस में पानी रखा जाता है। २-पौधे लगाने का गमला। ३-रोशनी करने की शीशे की बड़ी हाँडी।

कूडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्थर की प्याली। पत्थरी। २-छोटी नांद।

कूथना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कराहना। २-
तरों का गुटरगूँ शब्द।

कूई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुमुदिनी। कोका।

कूक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लम्बी सुरीली
२-मोर या कोयल की बोली। ३-
महीन तथा सुरीले स्वर में रोने की
४-घड़ी आदि में चाबी या कुंजी देने का

कूकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मधुर ध्वनि
कूजना। २-कोयल या मोर का बोलना।
[क्रि. अ.] (हिं.) घड़ी या चाबी भरना।

कूकर [संज्ञा पु.] (हिं.) कुत्ता।

कूकरकौर [संज्ञा प.] (हिं.) १-कुत्ते को
जाने वाला उच्छिष्ट टुकड़ा। २-तुच्छ
कूकरचंदी, -चन्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुत्ते
काटे पर लगाई जाने वाली एक जंगली

कूकरनिंदिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुत्ते के
हलकी नींद।

कूकरबसेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) थोड़ा विश्राम।

कूकरभंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काला भंगरा।
कुकरौंधा।

कूकरमुत्ता* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुकुरमुत्ता

कूकरलेंड [संज्ञा पु.] (हिं.) कुत्तों का मैथुन।

कूका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सिख सम्प्रदाय जिसमें
गुरुग्रन्थ साहब के पद चिल्ला-चिल्लाकर
उच्चारण करते हैं।

कूकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जाड़े की फसलों को
हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा।

कूख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोख'।

कूच [संज्ञा स्त्री.] (तु.) प्रस्थान। रवानगी।
कूच कर जाना-मर जाना। *देवता कूच कर*
जाना-भय या अन्य कारणों से विवेक नष्ट
हो जाना। *कूच का डंका या नक्कारा बजना*-
१-रवाना होना। २-मर जाना। *कूच बोलना*-
कूच करना।

कूचा [संज्ञा पु.] (फा.) १-छोटा रास्ता। गली।
२-कूंचा।
कूचा झाकना-गली-गली मारा फिरना।

कूचिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी चाबी।
२-तूलिका।

कूची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कूँची'।

कूज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ध्वनि। शब्द। २-
शब्द करने की क्रिया।

कूजन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कूज'।

कूजना [क्रि. अ.] (हि.) मधुर शब्द करना।
बोलना।

कूजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्याले या पुरवे के
आकार का मिट्टी का बरतन। कुल्हड़। २-
मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार
मिश्री।

कूजित
[संज्ञा पु.] (सं) मोतिया या बेले का फूल।

कूजित [वि.] (सं.) १-जो बोला या कहा गया हो। ध्वनित। २-ध्वनिपूर्ण। ३-पक्षियों के मधुर शब्दों से युक्त।

कूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़ की ऊंची चोटी। २-सींग। ३-राशि। ढेर। ४-छल। धोखा। ५-गुप्त रहस्य। ६-वह पद जिसका अर्थ जल्दी स्पष्ट न हो। ७-वह हास्य अथवा व्यंग जिसका अर्थ गूढ़ हो। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काटने, कूटने या पीसने की क्रिया। २-कूट नामक एक औषध। ३-कुटी। झोंपड़ा। [वि.] (सं.) १-झूठा। मिथ्यावादी। २-छलिया। धोखेबाज। ३-कृत्रिम। बनावटी। नकली। ४-प्रधान। श्रेष्ठ। ५-निश्चल। ६-धर्मभ्रष्ट।

कूटकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-छल। कपट। धोखा। २-छिपाकर किया हुआ काम।

कूटकर्मा [वि.] (सं.) कपटी। छली। धोखेबाज।

कूटकार [वि.] (सं) १-वंचक। २-झूठी गवाही देने वाला।

कूटता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कठिनाई। २-झुठाई। ३-छल कपट।

कूटतुला [संज्ञा पु] (सं.) पासंग वाली तराजू। डांडी चोर तराजू।

कूटत्व [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'कूटता'।

कूटधर्मा [वि.] (सं) मिथ्या व्यवहार को धर्मकार्य बताने वाला।

कूटना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु को बारंबार आघात पहुचाना। ठोंकना। २-मारना। पीटना। ठोंकना।
कूट कूट कर भरना-ठसाठस भरना।

कूटनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दांव पेंच की चाल। छिपी हुई चाल।

कूटनीतिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) कूटनीति में प्रवीण।

कूटपाठ [संज्ञा पु.] (सं.) मृदंग के चार वर्णों में से एक वर्ण।

कूटपालक [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तज्वर।

कूटपाश [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों को फँसाने का जाल।

कूटपूर्व [संज्ञा पु.] (सं.) हाथियों को होने वाला त्रिदोषज ज्वर।

कूटमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठीक नाप से बड़ा या छोटा पैमाना। २-ठीक तौल से हलका या भारी तौल।

कूटमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जाली सिक्का।

कूटयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं) शत्रु को धोखा देनेवाली लड़ाई।

कूटयोजना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) षड्यंत्र।

कूटयोधी [वि] (सं.) छिप कर लड़ने वाला।

कूटलेख [संज्ञा पु.] (सं.) १-समझ में न आने वाली लिखावट। २-झूठी या जाली दस्तावेज।

कूटलेखक [संज्ञा पु.] (सं) जाली दस्तावेज लिखने वाला। जालसाज।

कूटशासन [संज्ञा पु.] (सं.) मिथ्या शासन। धोखे का राज्य।

कूटसाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) झूठा गवाह। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झूठी गवाही।

कूटस्थ [वि.] (सं.) १-सर्वोपरि स्थित। सब के ऊपर रहने वाला। २-अटल। अचल। ३-अविनाशी। ४-छिपा हुआ। गुप्त। [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याघ्रनख नामक सुगंधित द्रव्य। २-परमात्मा। ३-जीव।

कूटस्वर्ण [संज्ञा पु.] (सं) खोटा सोना। बनावटी सोना।

कूटा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुटपन करने वाला।

कूटाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बनावटी पासा।

कूटागार [संज्ञा पु.] (सं.) घर के ऊपर वाले खंड या मंडप। क्रीड़ागृह।

कूटी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मसखरा। २-जालसाज

कूटू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष जिसके फल के बीजों का आटा पीस कर फलाहार में व्रत के दिन व्यवहार होता है।

कूड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जमीन पर पड़ी हुई धूल और टूटे-फूटे पदार्थ जिन्हें झाड़ू से बुहारते हैं। कतवार। २-व्यर्थ और निकम्मी चीज

कूड़ाकोठ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान अथवा पात्र जिसमें कूड़ा फेंका जाता है।

कूड़ाखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) कूड़ा फेंकने का स्थान। घूर

कूढ़ [वि.] (हिं.) नासमझ मूर्ख। बेवकूफ। [संज्ञा पु.] १-हल का वह भाग जिसके एक सिरे पर मुठिया और दूसरे पर खोंपी रहती है। २-हलकी गड़ारी में से बीज बोने की रीति।

कूढ़मग्ज [वि.](हिं.) मन्दबुद्धि। बात को न समझने वाला।

कूणि [वि.] (सं.) टेढ़े हाथ वाला। वक्रहस्त।

कूणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीणा, सितार आदि की वह खूंटी जिसमें तार बंधे रहते हैं।

कूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु की संख्या या परिमाण का बिना गिने अथवा बिना नाप का ठहराव। अनुमान। अन्दाज। २-देखो 'कनकूत'।

कूतना [क्रि. अ] (हिं.) अनुमान करना। अंदाज लगाना।

कूद [संज्ञा स्त्री] (सं.) कूदने की क्रिया।

कूदना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उछलना। फाँदना। २-जान-बूझकर ऊपर से नीचे को गिरना। ३-अचानक बीच में आपड़ना। [क्रि. स.] (हिं.) उल्लंघन। लांघना।
किसी के बल पर कूदना-किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़-बढ़ कर बोलना।

कूदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत आदि नापने का परिमाण।

कून [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'कूण'। २-देखो 'कुंद'।

कूनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोल्हू का वह गड्ढा जिसमें डालकर ऊख पेलते हैं। कूंडी।

कूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुआँ। इनारा। २-छेद। सूराख।

कूपक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा कुआँ। २-चमड़े का कुप्पा। ३-नाव। बांधने का खूंटा। ४-नाव या जहाज का मस्तूल। ५-चिता।

कूपकार [संज्ञा पु.] (सं.) कुआं खोदने वाला।

कूपज [संज्ञा पु.] (सं.) लोम। केश। बाल।

कूपदर्दुर [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'कूपमंडूक'।

कूपन [संज्ञा पु.](अं.) वह मुद्रित पत्र का टुकड़ा जो इस बात का सूचक होता है कि इसके स्वामी को अमुक वस्तु इतनी मात्रा में पाने का अधिकार है।

कूपमंडूक, कूपमण्डूक [संज्ञा पु.] (सं) १-कुएं का मेढक। २-बाहरी जगत का कुछ भी ज्ञान न रखने वाला व्यक्ति। ३-कम जानकारी रखने वाला व्यक्ति।

कूबड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पीठ का टेढ़ापन। २-किसी वस्तु का उभाड़दार टेढ़ापन।

कूबर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कूबड़'।

कूबरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कुबरी'।

कूबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कूबड़। २-बड़ेरा रखने की टेढ़ी लकड़ी।

कूम [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जो गढ़वाल और चटगांव में बहुतायत से पाया जाता है

कूमटा [संज्ञा पु.] (देश.) राजस्थान और सिंध में बहुतायत से पाया जाने वाला एक पेड़। [संज्ञा स्त्री.] धारवाड़ प्रांत में पैदा होने वाली एक प्रकार की कपास।

कूर [वि.] (हिं.) १-निर्दय। दयारहित। २-भयंकर। डरावना। ३-दुष्ट। नीच। ४-निकम्मा। अकर्मण्य। ५-मूर्ख। [संज्ञा पु.] १-लगान की कमी। २-गुझिया, समोसे आदि में भरने का मसाला।

कूरत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। २-जड़ता। मूर्खता। ३-अरसिकता। ४-कायरता। डरपोकपन।

कूरपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कूरता'।

कूरम+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कूर्म'।

कूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढेर। राशि। २-भाग। अंश। हिस्सा।

कूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा ढेर। (देश.)

एक प्रकार की घास।

कूर्च [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुट्ठी भर कुश। २-दोनों भौं के बीच का स्थान। ३-अंगूठा और तर्जनी के मध्य का स्थान। ४-भूठ। ५-दंभ। ६-मस्तक। सिर। ७-कूंची। ८-गोदाम। भंडार

कूर्चशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का वृक्ष।

कूर्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कूंची। २-कली। ३-कुंजी। ४-सूई। ५-फटा हुआ दूध। छेना।

कूर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चों का खेलकूद।

कूर्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत्र मास की पूर्णिमा, इस दिन कामदेव का उत्सव होता है।

कूर्प [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कूर्च'।

कूर्पर [संज्ञा पु.] (सं.) घुटना। कोहनी।

कूर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-कच्छप। कछुवा। २-विष्णु का दूसरा अवतार। ३-शरीर में की वह वायु जो पलकों को खोलती तथा बंद करती है। ४-नाभिचक्र के पास की एक नाड़ी।

कूर्मक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह तीर्थ स्थान जहाँ कूर्मावतार भगवान का दर्शन होता है।

कूर्मचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) शुभाशुभ का शकुन और फल जानने का चक्र जिसे तांत्रिक लोग बनाते हैं।

कूर्मद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कूर्मावतार का जन्म दिन जो पौषशुक्ल द्वादशी को माना जाता है।

कूर्मपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह पुराणों में से एक।

कूर्मपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कछुए की पीठ। २-कछुए की पीठ के समान उभड़ा हुआ स्थान।

कूर्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वीणा।

कूर्मासन [संज्ञा पु.] (सं.) योग में एक आसन का नाम।

कूर्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन बाजा जिसमें तार लगे होते थे।

कूर्मी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कूर्मिका'।

कूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तट। किनारा। २-नहर। तालाब। ३-सेना का पिछला भाग। [अव्य.] समीप। पास। निकट।

कूलचर [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी, भैंस, हिरन, सूअर आदि नदी के किनारे घूमने वाले पशु।

कूला [संज्ञा पु.] (हिं.) नाली। कृत्रिम जल प्रवाह।

कूलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

कूली [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुली'।

कूलेचर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कूलचर'।

कूल्हना+ [क्रि. अ.] (हिं.) कराहना। कांखना।

कूल्हा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कमर या पेडू के दोनों ओर निकली हुइ हड्डियां। २-कुश्ती का एक पेंच।

कूल्हा सरकना-कूल्हे का अपने स्थान से हट-जाना। *कूल्हा मटकाना*-चूतड़ मटकाना।

कूल्ही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पीतल। (सोनारों की बोली।

कूवत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शक्ति। बल। ताक़त।

कूवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ का वह भाग जिस पर जूआ बांधा जाता है। २-रथ में रथिक के बैठने का स्थान। ३-कुबड़ा। ४-कूजा। कूल। [वि.] मनोहर। सुन्दर।

कूश्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के हवनीय देवता।

कूष्मांड, कूष्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुम्हड़ा। २-पेठा।

कूष्मांडिनी, कूष्माण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम।

कूष्मांडी, कूष्माण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यजुर्वेद की ऋचा।

कूसल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास जिसकी डंठलों की झाड़ू बनती है।

कूह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथी की चिंग्घाड़। २-चीख। चिल्लाहट।

कूहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुहरा'।

कूही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पक्षियों का शिकार करने वाली एक चिड़िया।

कृक [संज्ञा पु.] (सं.) कण्ठ। गला।

कृकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक की वह वायु जिसके द्वारा छींक आती है। २-शिव। ३-कनेर का पेड़। ४-एक पक्षी।

कृकल [संज्ञा पु.] देखो 'कृकर'।

कृकलास [संज्ञा पु.] (सं.) गिरगिट।

कृकाट, कृकाटक [संज्ञा पु.] (सं) हलक।

कृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कष्ट। दुःख। २-पाप। ३-मूत्र रोग। ४-संतापन आदि व्रत, पहले निराहार रहकर दूसरे दिन पंचगव्य पीकर उपवास किया जाता है।

कृछ्कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) कठिनता से होने वाला कार्य।

कृछ्साध्य [वि.] (सं.) कठिनता से होने वाला।

कृत [वि.] (सं.) १-किया हुआ। संपादित। २-बनाया हुआ। रचित। ३-संबंध रखने वाला। तत्संबन्धी। ४-चार युगों में से पहला युग।

कृतक [वि.] (सं.) बनावटी। छद्म।

कृतक-नागरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देश या राष्ट्र का नागरिक बनने का कार्य या भाव। २-नागरिक अधिकार देना।

[वि.] (सं.) १-कष्टसाध्य। २-कष्टयुक्त।

कृत-कर्मा [वि.] (सं.) १-सफलता प्राप्त। कामयाब। २-चतुर। प्रवीण।

कृत-काम [वि.] (सं.) जिसकी कामना या इच्छा पूर्ण हो गई हो।

कृत-कारज* [वि.] (हिं.) देखो 'कृतकार्य'।

कृत-कार्य [वि.] (सं.) जिसका कार्य परिपूर्ण हो गया हो। सफल मनोरथ।

कृतकाल [संज्ञा पु.] (सं.) निर्धारित समय।

कृतकीर्ति [वि.] (सं.) यश लाभ करने वाला।

कृतकृत्य [वि.] (सं.) पूर्ण रूप से जिसका क पूरा हो चुका हो। कृतार्थ। सफल मनोरथ।

कृतकृत्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफलता। कृ याबी।

कृतकौतुक [वि.] (सं.) खिलाड़ी।

कृतघ्न [वि.] (सं.) किये हुए उपकार को भू जाने वाला। अकृतज्ञ। अहसान फरामोश।

कृतघ्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किये हुए उप को न मानने की अवस्था। अकृतज्ञ अहसान फरामोशी।

कृतघ्नताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृतघ्न

कृतघ्नी+ [वि.] (हिं.) देखो 'कृतघ्न'।

कृतज्ञ [वि.] (सं.) किये हुए उपकार को मा वाला। अहसान मानने वाला।

कृतज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किये हुए उपकार के मानने का भाव। अहसानमंदी। निहो मानना।

कृतदंड, कृतदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

कृतनिंदक, निन्दक [वि.] (सं.) कृतघ्न।

कृतनिश्चय [वि.] (सं.) दृढ निश्चय कि हुआ।

कृतपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) कृतयुग। सतयुग।

कृतपुण्य [वि.] (सं.) पुण्य कार्य सम्पन्न क चुकने वाला।

कृतपूर्व [वि.] (सं.) पहले से किया हुआ।

कृतफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शीतलचीनी। कोलशिवी। सुअरासेम।

कृतबुद्धि [वि.] (सं.) बुद्धिस्थिर किया हुआ।

कृतमाल [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

कृतमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण देश की ए छोटी नदी।

कृतमुख [संज्ञा पु.] (सं.) पंडित।

कृतयुग [संज्ञा पु.] (सं.) सतयुग।

कृतविद्य [वि.] (सं.) जिसे किसी विद्या का अ अच्छा ज्ञान हो। पंडित।

कृतवेदी [वि.] (सं.) उपकार मानने वाला। कृतज्ञ।

कृतवेश [वि.] (सं.) अलंकृत। सजा हुआ। भेष किया हुआ।

कृतसापत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके

जीवनकाल मे ही उसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो।

कृतहस्त [वि.] (सं.) १-किसी कार्य में निपुण या चतुर। २-बाण चलाने में निपुण।

कृतांक, कृताङ्क [वि.] (सं.) चिह्नित। निशान किया हुआ।

कृतांजलि, कृताञ्जलि [वि.] (सं.) हाथ जोड़े हुए। हाथ बांधे हुए।

कृतांत, कृतान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-समाप्त करने वाला। २-यम। धर्मराज। ३-मृत्यु। ४-पाप। ५-देवता। ६-सिद्धांत। ७-शनिवार। ८-भरणी नक्षत्र। ९-दो की संख्या।

कृतांता, कृतान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेणुका नामक गंध द्रव्य।

कृताकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-किया और न किया हुआ। २-अधूरा कार्य। ३-कार्य और कारण। ४-कच्चा और पक्का। ५-सोना और चांदी।

कृतात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्ध आत्मा वाला मनुष्य। महात्मा।

कृतात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्यमतानुसार भोग द्वारा कर्मों का नाश।

कृतान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकाया हुआ अन्न। २-पचाया हुआ अन्न।

कृतापकार [वि.] (सं.) अपकार करने वाला।

कृतापराध [वि.] (सं.) दोषी। मुलजिम।

कृतार्थ [वि.] (सं.) १-जो अपना काम बन जाने के कारण प्रसन्न और संतुष्ट हो। कृतकृत्य। २-किसी की कृपा अथवा उपकार से संतुष्ट।

कृतार्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफलता। कामयाबी।

कृतालक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक अनुचर।

कृतावधान [वि.] (सं.) सावधान। होशियार।

कृतावधि [वि.] (सं.) नियत। सीमाबद्ध।

कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-करतूत। करनी। २-चित्र, ग्रन्थ, वास्तु आदि के रूप में बनाई हुई वस्तु। ३-जादू। इन्द्रजाल। ४-अनुष्टुप जाति का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बीस अक्षर होते हैं। ५-बीस की संख्या। ६-कटारी। [संज्ञा पु.] विष्णु।

कृतिकर [संज्ञा पु.] (सं.) बीस हाथ वाला। रावण।

कृतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कृत्तिका'।

कृतिवास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कत्तिवास'।

कृतिस्वाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की किसी कृति की प्रतियां छापने अथवा प्रस्तुत करने का वह अधिकार या स्वत्व जो उसके रचयिता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। कॉपी-राइट।

कृती [वि.] (सं.) १-कुशल। निपुण। २-साधु। ३-पुण्यात्मा।

कृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृगचर्म। २-चमड़ा। खाल ३-भोजपत्र। ४-कृत्तिकानक्षत्र।

कृत्तिकांजि [संज्ञा पु.] (सं.) शकटाकार तिलक जो घोड़े को अश्वमेघ यज्ञ में लगाया जाता है।

कृत्तिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सत्ताईस नक्षत्रों में तीसरा नक्षत्र। २-छकड़ा। गाड़ी।

कृत्तिवास, कृत्तिवासा [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

कृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो कुछ किया जाय। कार्य। काम। २-कर्त्तव्य कर्म। वेद-विहित आवश्यक कार्य। ३-समारोह। जैसे-सामाजिक कृत्य। फंकशन।

कृत्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हत्या आदि भयंकर कार्य करने वाली स्त्री। डायन। चुड़ैल।

कृत्यविद [वि.] (सं.) कुशल। निपुण। कर्त्तव्य कर्म को जानने वाला।

कृत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक राक्षसी जिसे तांत्रिक लोग अनुष्ठान द्वारा उत्पन्न करके अपनी कार्यसिद्धि के निमित्त शत्रु का विनाश करवाते हैं। २-अभिचार। ३-कर्कशा स्त्री।

कृत्यादूषण [संज्ञा पु.] (सं.) कृत्या के प्रतिकार निमित्त कृत्य।

कृत्याकृत्य [वि.] (सं.) करने तथा न करने योग्य कार्य। भला-बुरा काम।

कृत्रिम [वि.] (सं.) नकली। बनावटी।

कृत्रिम-मित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह मित्र जिसके साथ किसी उपकार आदि के कारण मित्रता स्थापित हो।

कृत्स्न [वि.] (सं.) सम्पूर्ण। सब।

कृदंत, कृदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह शब्द जो धातु में 'कृत' प्रत्यय के लगाने से बने। जैसे पाचक।

कृप [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन एक राजऋषि का नाम।

कृपण [वि.] (सं.) १-सूम। कंजूस। २-अनुदार। ३-नीच। क्षुद्र।

कृपणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कंजूसी। २-क्षुद्रता।

कृपनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृपणता'।

कृपया [क्रि. वि.] (सं.) कृपापूर्वक। कृपा करके। मेहरबानी करके।

कृपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनुग्रह। दया। मेहरबानी। २-क्षमा। माफी।

कृपाकर [वि.] (सं.) दयालु। मेहरबान।

कृपाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार। २-कटार। छुरा। ३-३२वर्णों का एक दंडकवृत्त जिसमें आठ वर्णों पर यति होती है। इसमें ३१ वां वर्ण गुरु और ३२ वां लघु होता है।

कृपाणक [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार। २-कटार।

कृपाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी तलवार। २-कटारी।

कृपाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी तलवार।

कृपानिधि [संज्ञा पु.] (सं.) दयावान्। मेहरबान

कृपापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो कृपा प्राप्त करने का अधिकारी हो। २-वह व्यक्ति जिस पर कृपा हो।

कृपायतन [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यंत कृपालु। कृपानिधि।

कृपाल [वि.] (हिं.) देखो 'कृपालु'।

कृपालता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृपालुता'।

कृपालु [वि.] (सं.) कृपा करने वाला। दयालु।

कृपालुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दया का भाव। मेहरबानी।

कृपावान् [वि.] (सं.) दया करने वाला।

कृपासिंधु, कृपासिन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) दया का सागर। कृपानिधि।

कृपिण* [वि.] (हिं.) कृपण।

कृपिणता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कृपणता।

कृपिन+ [वि.] (हिं.) कृपण।

कृपिनता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कृपणता।

कृपिनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृपनाई'।

कृमि [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा कीड़ा। २-हिरमिज़ी कीड़ा या मिट्टी। किरमिजी। ३-लाह।

कृमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रन्थपर्णी। राई।

कृमिकोश [संज्ञा पु.] (सं.) रेशम के कीड़ों का घर। कोया।

कृमिघ्न [संज्ञा पु.] १-वायविडंग। २-प्याज। कांदा। ३-भिलावां। ४-नीम।

कृमिज [वि.] (सं.) कीड़ों से उत्पन्न होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेशम। २-अगर। ३-लाह। ४-हिरमिजी।

कृमिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रेशम। २-लाह। ३-हिरमजी। अगर।

कृमि-फल [संज्ञा पु.] गूलर का फल।

कृमि-भोजन [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

कृमि-रोग [संज्ञा पु.] (सं) आमाशय तथा पक्वाशय में केंचुए या कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृमिल [वि.] (सं.) जिसमें कीड़े पड़ गये हों।

कृमिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके बहुत बच्चे पैदा होते हैं।

कृमीलक [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली मूंग।

कृश [वि.] (सं.) १-दुबला। पतला। क्षीण। २-अल्प। छोटा।

कृशता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-दुबलापन। दुबै-

लना । पतलापन । क्षीणता । २-अल्पता । सूक्ष्मता । कमी ।

कृशताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृशता' ।

कृशत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कृशता' ।

कृशन [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्ण । सोना ।
[वि.] सुवर्णनिर्मित ।

कृशर [संज्ञा पु.] (सं.) खिचड़ी । २-तिल चावल की खिचड़ी । केसारी । लोबिया मटर ।

कृशरान्न [संज्ञा पु.] (सं.) खिचड़ी ।

कृशांगी, कृशाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुबली पतली स्त्री ।

कृशाच [संज्ञा पु.] (सं.) मकड़ा ।

कृशानु [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि । आग ।

कृशानुरेता [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

कृशित [वि.] (सं.) दुर्बल । दुबला-पतला । क्षीण-काय ।

कृशोदरी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] पतली कमर वाली (स्त्री) ।

कृषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसान । खेतिहर । काश्तकार । २-हल की फाल ।

कृषकवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह मत या सिद्धांत जिसके अनुसार भूमि का समान रूप से विभाजन हो ।

कृषाण [संज्ञा पु.] (सं.) किसान । खेतिहर । काश्तकार ।

कृषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेतों में अन्न आदि बोने तथा उनमें अन्न उत्पन्न करने का कार्य । खेती । काश्त । किसानी । एग्रीकलचर ।

कृषिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसान । २-हल की फाल । [वि.] खेतीबारी से संबंध रखने वाला ।

कृषिकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसान । खेतिहर ।

कृषिजवी [संज्ञा पु.] (सं.) कृषि या खेती पर जीवन निर्वाह करने वाला व्यक्ति ।

कृषिमंत्रालय, कृषिमन्त्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) कृषिमंत्री से संबंधित कार्यालय जिसमें खेती बारी की उन्नति विषयक योजनाएँ तैयार की जाती हैं ।

कृषिमंत्री, कृषिमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य या प्रान्त के कृषिविभाग का वह प्रधान अधिकारी या मन्त्री जो कृषि संबंधी विकास-योजनाओं को तैयार करता है और उन्हें काय रूप में परिणत करवाता है ।

कृषि-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्ञान या विज्ञान जिसमें कृषि-सम्बन्धी सब तत्वों का विवेचन होता है ।

कृषि-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह विभाग जिस की देखरेख में कृषि के विकास की योजनायें बनती हैं तथा कृषि से संबंधित सब बातों की खोज की जाती है । जैसे-पौधों के रोगों के निराकरण की ।

कृषि-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कृषिमंत्री' ।

कृषी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कृषि' ।

कृषीवल [संज्ञा पु.] (सं.) किसान ।

कृष्ट [वि.] (सं.) कर्षित । जोता हुआ ।

कृष्टिमा [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांडित्य । पंडिताई । २-मनुष्यत्व ।

कृष्ण [वि.] (सं.) १-श्याम । काला । २-नीला या आसमानी ।
[संज्ञा पु.] १-यदुवंशी वसुदेव के पुत्र । २-अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद् । ३-वेद-व्यास । ४-अर्जुन । ५-अँधेरा पक्ष । ७-लोहा । ८-सुरमा । ९-कोयल । १०-कौवा । ११-चन्द्रमा का धब्बा । १२-छप्पय छंद का एक भेद जिसमें २२ गुरु+१०४ लघु=१२६ वर्ण और १४८ मात्राएं होती हैं । १३-चार अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रतिचरण में एक 'तगण' और एक लघु होता है ।

कृष्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-काले हिरन का चमड़ा । २-काली सरसों ।

कृष्णकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला बजारी । ब्लेक-मार्केटी । २-हिंसा आदि पाप पूर्ण कार्य । ३-फोड़े की चिकित्सा की एक प्रक्रिया ।

कृष्णकाय [संज्ञा प.] (सं.) भैंसा ।

कृष्णकेलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुलवास का एक फूल । २-गुलवास का वृक्ष ।

कृष्णगंगा, गङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक ऋषि जिसने ऋग्वेद के कई मन्त्रों का प्रकाश किया था ।

कृष्णगंधा, कृष्णगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सैजन । शोभांजन ।

कृष्णगति [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि ।

कृष्णगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कायफल ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्ण नामक असुर की भार्या ।

कृष्णग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकंठ, महादेव ।

कृष्णचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण ।

कृष्णचूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुंजा । घुंघची । २-एक प्रकार का कटीला वृक्ष ।

कृष्णचैतन्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'चैतन्य' ।

कृष्णछवि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काले हिरन का चमड़ा । २-काला बादल ।

कृष्णजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी ।

कृष्णजिह्व [संज्ञा पु.) (सं.) काली जीभ वाला अशुभ घोड़ा ।

कृष्णद्वैपायन [संज्ञा पु.] (सं.) पाराशर के पुत्र वेदव्यास । पाराशर्य ।

कृष्णपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अंधियारा पक्ष । वदी ।

कृष्णपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं) काले पत्ते की वाली तुलसी ।

कृष्णपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की काली चिड़िया ।

कृष्णपाक [संज्ञा पु.] (सं.) करौंदा ।

कृष्णपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) रोहू मछली ।

कृष्णपिंगला, पिङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

कृष्णपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) काला धतूरा ।

कृष्णफल [संज्ञा पु.] (सं.) करौंदा ।

कृष्णफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिरच की २-एक प्रकार का छोटा जामुन ।

कृष्णबीज [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज ।

कृष्णभूमि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह स्थान जहां की मिट्टी काली हो ।

कृष्णभेदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी ।

कृष्णभोगी [संज्ञा पु.] (सं.) काला सांप ।

कृष्णमंडल, कृष्णमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की पुतली ।

कृष्णमणि [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम ।

कृष्णमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-लंगूर । २-एक दानव का नाम ।

कृष्णयजुष् [संज्ञा पु.] (सं) यजुर्वेद के दो भेदों में से एक जिसमें ६८ शाखाएँ हैं ।

कृष्णराज [संज्ञा पु.] (सं.) भुजंगा पक्षी ।

कृष्णला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घुंघची । २-शीशम का वृक्ष । ३-रत्ती ।

कृष्णसखा [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन ।

कृष्णसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला मृग । २-सेंहुड़ । ३-शीशम का वृक्ष । ४-खैर का

कृष्णस्कंध, स्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-तमाल का वृक्ष । २-तमाखू का पौधा ।

कृष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-द्रौपदी । २-नील । ३-दक्षिण देश की एक नदी । ४-काली दाख । ५-काली । ६-काला जीरा । ७-नीलबरी । ८-दूब ।

कृष्णाचल [संज्ञा पु.] (सं.) नीलगिरी पर्वत ।

कृष्णाजिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काले हिरन का चमड़ा । २-एक ऋषि ।

कृष्णाभिसारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अभिसारिका नायिका जो अंधेरी रात में अपने प्रियतम के पास जाती है ।

कृष्णाभ्र [संज्ञा पु.] (सं) १-काला । अभ्रक । २-काला बादल ।

कृष्णायस [संज्ञा पु.] (सं.) इसपात लोहा ।

कृष्णावास [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारिकापुरी ।

कृष्णाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था ।

कृष्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राई। २-श्यामा पक्षी।

कृष्णिमा [संज्ञा पु.] (सं.) कालापन। कलौंस।

कृष्णोदर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

कृष्य [वि.] (सं.) खेती करने या जोतने योग्य (भूमि)।

कॢप्त [वि.] (सं.) रचित। बनाया हुआ।

केंकें [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिड़ियों का दुःख-सूचक शब्द। २-झगड़ा व असंतोष-सूचक शब्द।

केंचुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूत के समान एक बरसाती कीड़ा। २-केंचुए के आकार का सफेद कीड़ा। जो पेट में से मल के साथ निकलता है।

केंचुक [संज्ञा. स्त्री.] (हिं.) देखो 'केंचुल'।

केंचुल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सांप की अपने आप गिर जाने वाली खाल।

केंचुल बदलना–पोशाक बदलना।

केंचुल में आना या भरना–केंचुल छोड़ने पर होना।

केंचुली [वि.] (हिं.) केंचुल के समान।

केंचुवा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'केंचुआ'।

केंत [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का मोटा बेंत।

केंदु [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदू का वृक्ष।

केंदुवाल [संज्ञा पु.] (सं.) नाव खेने का डाँड़।

केंदू [संज्ञा पु.] (हिं.) तेंदू।

केंद्र, केन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वृत्त या परिधि के ठीक बीचोंबीच का बिंदु। नाभि। २-वह मूल या प्रमुख स्थान जहाँ से चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए कार्यों का प्रबन्ध या संचालन होता है। ३-बीच का स्थान।

केंद्रकारी, केन्द्रकारी [वि.] (सं.) एकसत्ताकारी। एकाधिकारी। एककारी।

केंद्रित, केन्द्रित [वि.] (सं.) एक ही केंद्र में इकट्ठा किया हुआ। एक स्थान पर लाया या आया हुआ।

केंद्री, केन्द्री [वि.] (सं.) केंद्र में रहने वाला। केंद्रस्थित।

केंद्रीकरण, केन्द्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) चीजों, शक्तियों, अधिकारों आदि को किसी एक केंद्र में लाकर एकत्रित करना।

केंद्रीकृत, केन्द्रीकृत [वि.] (सं.) केन्द्र में एकत्रित किया हुआ। केन्द्रीकरण किया हुआ। देखो 'केंद्रित'।

केंद्रीभूत, केन्द्रीभूत [वि.] (सं.) देखो 'केंद्रित'।

केंद्रीय, केन्द्रीय [वि.] (सं.) केन्द्र से सम्बन्ध रखने वाला। मध्य-स्थानीय।

केंद्रीय-गुप्तवार्ता-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) केन्द्र में स्थित गुप्तचर या खुफिया विभाग या महकमा।

केंद्रीय-व्यवस्थापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केन्द्रीय धारासभा।

के [प्रत्य.] (हिं.) सम्बन्धसूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप। जैसे–केशव के घोड़े।

केउँआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कच्चु। २-चुकंदर। ३-शलगम।

केउ+ [सर्व.] (हिं.) कोई।

केउटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का विषैला सर्प

केउटी [वि.] (हिं.) देखो 'केवटी'।

केउर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केयूर'।

केकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्कट। पानी में रहने वाला एक जन्तु जिसके आठ पैर और दो पंजे होते हैं।

केकड़े की चाल–टेढ़ी तिरछी चाल।

केकय [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तर भारत के एक प्राचीन जनपद का नाम। (यह अब काश्मीर प्रदेश में है)। २-केकय देश का राजा या निवासी। ३-राजा दशरथ के ससुर और कैकेयी के पिता।

केकयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दशरथ की मझली पत्नी, भरत की माता। २-केकय देश की स्त्री।

केकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐंचा। भेंगा। २-तन्त्र में चार अक्षर का एक मन्त्र।

केकरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केकड़ा'।

केकल [संज्ञा पु.] (सं.) नाचने वाला नर्तक।

केकसी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कैकसी'।

केका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोर की बोली।

केकी [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

केचित् [सर्व.] (सं.) कोई-कोई।

केजा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केना'।

केडवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-साग, फल आदि बोने का बगीचा। २-नये पौधों का बगीचा। २-नये पौधों का बाग। नौरंगा।

केड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नया पौधा या अंकुर। कोंपल। २-नवयुवक। ३-खेत में काटी हुई फसल या घास का गट्ठा।

केत [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। भवन। मकान। २-स्थान। जगह। ३-ध्वज। ४-बुद्धि। ५-संकल्प। ६-सलाह। मंत्रणा। ७-अन्न।

केतक [संज्ञा पु.] (सं.) केवड़ा।

केतकर* [वि.] (हिं.) १-कितने। किस कदर। २-बहुत।

[संज्ञा स्त्री.] केतकी।

केतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक छोटा वृक्ष जिसमें तलवार के समान पत्तों का एक सुगंधित फूल होता है। केवड़ा। २-एक रागनी का नाम।

केतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निमन्त्रण। आह्वान। २-ध्वज। ३-चिह्न। ४-घर। भवन। मकान। ५-स्थान। जगह।

केता*+ [वि.] (हिं.) कितना।

केतारा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ऊख।

केतिक*+ [वि.] (हिं.) कितना। किस कदर।

केती* [वि.] (हिं.) देखो 'केता'।

केतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्ञान। २-दीप्ति। चमक। ३-ध्वजा। पताका। ४-नवग्रहों में से एक। ५-पुच्छतारा। ६-चिह्न। ७-चलने-फिरने का कार्य।

केतुकुंडली, केतुकुण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारह कोष्ठों का एक चक्र जिससे प्रत्येक वर्ष का स्वामी निकाला जाता है। फलित ज्योतिष

केतुपताका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ कोष्ठों का एक चक्र जिसके द्वारा वर्षेश निकाला जाता है (फलित ज्योतिष)।

केतुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रावण की नानी। २-एक अर्धसमवृत्त जिसके विषम पादों में (स + ज + स + एक गुरु) होता है। सम पादों में (भ + न + र + दो गुरु) होते हैं।

केतुमान् [वि.] (सं.) तेजवान। तेजस्वी। २-जिसके पास पताका हो। ३-बुद्धिमान। [संज्ञा पु.] १-धन्वन्तरि का पुत्र। २-एक दानव का नाम।

केतुरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन नाम का रत्न।

केतुवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मेरु पर्वत के चारों ओर के पर्वतों पर कदंब, जामुन, पीपल और बरगद के वृक्ष।

केतो* [वि.] (हिं.) कितना।

केदली+ [संज्ञा पु.] (हिं) केले का वृक्ष।

केदार [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्यारी। २-थाँवला। ३-मेघराग का चौथा पुत्र जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है। ४-हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत। ५-कामरूप देश का एक तीर्थ।

केदारक [संज्ञा पु.] (सं.) गढ़वाल प्रांत की एक प्रसिद्ध नदी।

केदारगंगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गढ़वाल प्रांत की एक नदी।

केदारनट [संज्ञा पु.] (हि.) नट और केदार के योग से बना एक संकरराग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

केदारनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय के अन्तर्गत एक पर्वत का नाम जिसके शिखर पर केदार नाथ नामक शिवलिंग है।

केदारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केदारी'।

केदारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीपक राग की पांचवी रागनी।

केन [संज्ञा पु.] (सं) एक उपनिषद जिसका आरंभ

'केन' शब्द से होता है।
[संज्ञा स्त्री] (देश.) बांदा जिले की एक नदी जो विन्ध्याचल से निकल कर यमुना में गिरती है।

केना* [संज्ञा पु.] (हिं.) साग भाजी खरीदने के निमित्त दिया हुआ थोड़ा अन्न।

कैनिपात, कैनिपातक [संज्ञा पु.] (सं.) डांड या बल्ली जिसके द्वारा नाव चलाई जाती है।

केम* [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'कदंब'।

केमद्रुम [संज्ञा पु.] (हि) ज्योतिष में चन्द्रमा का एक योग।

केमुक [संज्ञा पु.] (सं.) केउआं। बंडा।

केयूर [संज्ञा पु.] (सं.) भुजबंद। भुजभूषण।

केयूरबल [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध देवता।

केयूरी [वि.] (सं) जो केयूर पहने हो।

केर* [अव्य] (हिं.) संबंधसूचक अव्यय। का।

केरक [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतकालीन एक प्रदेश का नाम।

केरल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण भारत का एक देश। २-केरल देश का निवासी। ३-एक फलित ज्योतिष जिसका आविष्कार केरलदेश हुआ था।

केरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केला'।

केराना [क्रि. स.] (हिं.) सूप के द्वारा हिला-हिला कर छोटे-बड़े दाने अलगाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) हल्दी, नमक, मसाला जो नित्य के व्यवहार में आने वाली वस्तुएं जो पंसारी के मिलती हैं।

केरानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह व्यक्ति जिसके माता-पिता में से कोई एक युरोपियन और दूसरा हिन्दुस्तानी हो। २-मुंशी। क्लर्क।

केराया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किराया'।

केराव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मटर।

केरावल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किरावल'।

केरि + [प्रत्य.] (हिं.) देखो 'केरी'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'केलि'।

केरी [प्रत्य] (हिं.) की।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) अँबिया।

केरोसिन [संज्ञा पु.] (अं.) मिट्टी का तेल।

केल [संज्ञा पु.] (हिं.) हिमालय पर पाया जाने वाला एक वृक्ष।

केलक [संज्ञा पु.] (सं.) नर्तक। नाचने वाला।

केला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पत्ते लगभग सवा गज लम्बे और फल भी लम्बे और गूदेदार होते हैं। कदली फल या वृक्ष।

केलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खेल। क्रीड़ा। २-मैथुन। स्त्री प्रसंग। रति। ३-हंसी। ठट्टा। परिहास। ४-पृथ्वी।

केलिक [संज्ञा पु.] (सं.) अशोकवृक्ष।

केलिकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रतिक्रीड़ा। स्त्री-समागम। २-सरस्वती की वीणा।

केली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा केला।

केलोमेल [संज्ञा पु.] (अं.) रसकपूर से मिलता-जुलता एक रसायनिक योग जो पारे से बनता है।

केवई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कूईं।

केवकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत छोटा कीड़ा।

केवट [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव चलाने वाली एक जाति। मल्लाह।

केवटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'केवकी'।

केवटीदाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो या दो से अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दाल।

केवटीमोथा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सुगंधित मोथा।

केवड़ई [वि] (हिं.) केवड़े के समान रंग का। हलके पीले रंग का।

केवड़ा [संज्ञा पु.] (हि) १-सफेद केतकी का पौधा। २-इस पौधे का कांटेदार सुगंधित फूल। ३-इस फूल का उतारा हुआ रस।

केवरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'केवड़ा'।

केवल [वि] (सं.) १-एकमात्र। अकेला। २-उत्तम। श्रेष्ठ। ३-शुद्ध। पवित्र। ४-जिसमें अन्य किसी वस्तु या बात का मेल न हो।
[क्रि. वि.] मात्र। सिर्फ।

केवलज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रियों की सहायता के बिना केवल आत्मा से उत्पन्न ज्ञान।

केवलव्यतिरेकी [संज्ञा पु.] (सं.) केवल व्यतिरेक द्वारा ज्ञान अर्थात प्रत्यक्ष कारण देखकर अनुमान। जैसे-भूमि को गीली देखकर वर्षा का अनुमान।

केवलात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २-शुद्ध स्वभाव वाला व्यक्ति।

केवलान्वयी [संज्ञा पु.] (सं.) जिसका विपक्ष नहीं होता और जो केवल अन्वय व्याप्ति द्वारा ही जाना जाता है।

केवली [संज्ञा पु.] (हिं.) २-मुक्ति का अधिकारी साधु। २-मुक्तिप्राप्त साधु।

केवाँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौंच'।

केवा [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल। कमल-कली।
[संज्ञा पु.] बहाना। मिस। आनाकानी।

केवाड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किवाड़'।

केवाड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'किवाड़ा'।

केविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक फूल का नाम।

केश [संज्ञा पु.] (सं.) १-रश्मि। किरण। २-वरुण। ३-विश्व। ४-विष्णु। ५-सूर्य।
सिर के बाल।

केशकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-केशविन्यास।
को संवारने और गूथने की क्रिया।
केशांत नामक संस्कार।

केशकलाप [संज्ञा पु.] (सं.) बालों का

केशकार [संज्ञा पु.] (सं.) बालों को
वाला।

केशकीट [संज्ञा पु.] (सं.) जूँ।

केशग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) बलपूर्वक झोंटा

केशट [संज्ञा पु.] (सं.) १-खटमल।
३-छाग। ४-कामदेव का शोषण
वाण।

केशपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) केश-समूह।

केशपर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपामार्ग।

केशपाश [संज्ञा पु.] (सं.) बालों की लट।

केशबंध, केशबन्ध [संज्ञा पु.] (सं)
हस्तक।

केशमथनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) शमी का वृक्ष।

केशमार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) बालों की

केशमार्जनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) कंघी।

केशरंजन, केशरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं)
भंगरैया।

केशर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'केसर'।

केशराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-भुजंगा
भंगरैया।

केशराम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनार। २-
नीबू।

केशरी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'केसरी'।

केशरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेड़ पर का

केशव [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-कृष्ण।
३-परमेश्वर। ४-नागकेसर।

केश-वर्द्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेवी
बूटी।

केशवप्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-राधिका।
गोरोचन।

केशवायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु का
आम।

केशवालय [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल।

केशविन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) बालों को गूंथ,
या सजाकर जूड़ा बांधना।

केशहंत्री, केशहन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं)
वृक्ष।

केशांत, केशान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाल
का संस्कार। २-बाल का सिरा।

केशारुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेवी
बूटी।

केशि [संज्ञा पु] एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण
मारा था।

केशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावरी।

केशिनी [संज्ञा स्त्री.] १-बड़े-बड़े और सुन्दर बालों वाली स्त्री। २-एक अप्सरा का नाम। ३-राजा सगर की पत्नी का नाम। ४-पार्वती की सहेली।

केशी [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक गृहपति का नाम। २-एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ३-घोड़ा। ४-सिंह। [वि.] १-अच्छे बालों वाला। २-किरणयुक्त।

केश्य [संज्ञा पु.] (सं.) काला अगर।

केस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'केश'। २-आंख का एक रोग। (अं.) किसी वस्तु के रखने का खाना या घर। २-दुर्घटना। ३-मुकदमा। ४-छोटे-छोटे खाने वाला टाइप रखने का बक्सा।

केसई [संज्ञा स्त्री] देखो 'कसई'।

केसर [संज्ञा पु.] (सं) १-वह बाल के समान सींके जो फूल में होती हैं। २-ठंडे देश में होने वाले फूलों के वह सींके जिनसे उत्कृष्ट सुगंध निकलती है। जाफरान। ३-घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गर्दन के बाल। अयाल। ४-नागकेसर। ५-बकुल। मौलसरी। ६-पुन्नाग। ७-हींग का पेड़। ८-एक विष। ९-स्वर्ण। १०-कसीस।

केसरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेई।

केसरिया [वि.] (हिं.) १-केसर के रंग का। पीला। २-केसर के रंग में रंगा हुआ। ३-केसर मिला हुआ।

केसरिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान।

केसरी [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-सिंह। ३-नागकेसर। ४-हनुमान के पिता का नाम। ५-एक प्रकार का बगुला। [वि.] केसरिया।

केसारी [संज्ञा पु.] (हिं.) मटर की जाति का एक अन्न।

केसू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टेसू। पलास। ढाक।

केहरि+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिंह। शेर। २-घोड़ा।

केहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोर। मयूर। २-बटेर के समान एक जंगली पक्षी।

केहि* [वि.] (हिं.) किस।

केहुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोहिनी। कुहनी। २-पीतल तांबे की टेढ़ी नली।

केहूँ* [क्रि. अ.] (हिं.) किस प्रकार। किस तरह। किस भाँति।

केहू+ [सर्व.] (हिं.) कोई।

कै- [अव्य.] (हिं.) देखो 'के'।

कैंकर्य, कैंकुर्य [संज्ञा पु.] (सं) सेवा। खिदमत। किंकरता।

कैंचा [वि.] (हिं.) टेढ़ी आँख वाला। भेंगा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह बैल जिसका एक सींग सीधा खड़ा हो और दूसरा आँख के नीचे की ओर मुड़ा हो। २-बड़ी कैंची।

कैंची [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-बाल, कपड़े आदि कतरने का शस्त्र या उपकरण। कतरनी। २-कुश्ती का एक पेंच। ३-वह दो सीधी रीतियां या अन्य वस्तुएं जो कैंची के समान एक दूसरे पर खड़ी हों।
कैंची करना-कतरना। *कैंची काटना*-१-कहकर मुकर जाना। २-निगाह बचा कर निकल जाना। *कैंची लगाना*-१-काटना छांटना। २-सिर के बाल काटना। ३-दो सीधी वस्तुओं को कैंची के समान तिरछी रखना।

कैंडल [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगली तीतर।

कैंडा [संज्ञा पु] (हिं.) १-एक यंत्र जिससे किसी चीज का नकशा ठीक किया जाता है। २-नाँपने का पात्र। पैमाना। मान। ३-कोई कार्य भली प्रकार करने का ढंग।

कैंता [संज्ञा पु] (हिं) पत्थर की तख्ती या पटिया।

कैंप [संज्ञा पु] (अं.) पड़ाव। छावनी।

कैंवा+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'कैमा'।

कै+ [वि.] (हिं.) कितना। किस कदर।
*[अव्य.] (हिं.) या। वा। या तो। अथवा।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वमन। उलटी।
[संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का जड़हन धान जो मोटा होता है।

कैकस [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

कैकसी [संज्ञा स्त्री] (सं.) रावण की माता का नाम।

कैकेय [संज्ञा पु.] कैकय गोत्र का पुरुष।

कैकेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कैकय गोत्र की स्त्री। २-राजा दशरथ की पत्नी।

कैगर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का ऊँचा और सुन्दर वृक्ष।

कैटभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य जो विष्णु द्वारा मारा गया था।

कैटभा [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुर्गा का एक नाम।

कैटभारि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

कैटभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाकाली।

कैटर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कायफल। २-नीम। ३-मदन वृक्ष। ४-महानिंब।

कैडर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कायफल। २-करज। ३-पूतिकरंज।

कैत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओर। तरफ।

कैतव [संज्ञा पु.] (सं.) १-धोखा। छल। कपट। २-जूआ। द्यूत क्रीड़ा। ३-तहसुनिया। वैदुर्यमणि। [वि.] १-धोखेबाज। छली। २-धूर्त। शठ। ३-जूआ खेलने वाला। जुआरी।

कैतवापह्नुति [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपह्नुति-अलंकार का एक भेद जिसमें असली बात खुले शब्दों में नहीं परन्तु व्याज (बहाने) से छिपाई जाती है।

कैतून [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार का बारीक गोटा जो वस्त्र के किनारे पर लगाया जाता है।

कैथ, कथा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कँटीला पेड़। जिसमें बेल के आकार के कसैले और खट्टे फल लगते हैं।

कैथिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कायस्थ जाति की स्त्री

कैथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिहार में प्रचलित एक पुरानी लिपि जिसमें शीर्षरेखा नहीं होती।

कैद [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-बंधन। अवरोध। २-वह दंड जो राजनियम के अनुसार या राजाज्ञा से दिया जाता है। जिसमें दंडित व्यक्ति को बंद स्थान में रखते हैं। कारावास। ३-किसी प्रकार की शर्त।
कैद काटना या भरना-कैद में दिन बिताना।

कैदक [संज्ञा स्त्री] (अ.) एक प्रकार का कागज का बन्द या पट्टी जिसमें किसी एक विषय या व्यक्ति से संबंधित कागजपत्र रखे जाते हैं।

कैदखाना [संज्ञा पु] (फा) कारागार। बन्दीगृह। जेलखाना।

कैदतनहाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कालकोठरी में बंद रखने की सजा।

कैद-सहज [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सादी कैद।

कैद-सख्त [संज्ञा स्त्री.] (अ कैद + फा सख्त) कड़ी कैद।

कैदसोवारी [संज्ञा स्त्री] (हिं) तबले की एक गति।

कैदी [संज्ञा पु.] (अ.) दंडप्राप्त। जिसे कैद की सजा दी गई हो। बन्दी। बँधुआ।

कैधौं [अव्य.] (हिं.) या। अथवा।

कैन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बांस की टहनी। २-वृक्ष की पतली टहनी।

कैनित [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खराद के काम में आने वाला एक खनिज पदार्थ।

कैफ [संज्ञा पु] (अ.) नशा। मद। नशीली वस्तु।

कैफियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-विवरण। तफसील। २-समाचार। हाल। वर्णन। ३-आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।
कैफियत तलब करना-नियमानुसार विवरण मांगना।

कैफी [वि.] (अ.) १-मतवाला। मदभरा। २-नशेबाज।

कैबर [संज्ञा पु.] (देश.) तीर का फल या गांसी

कैबा+ [संज्ञा स्त्री., अव्य] (हिं) १-कितनी बार? २-कई बार।

कैबिनेट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-मंत्रियों की वह सभा जो किसी एकान्त स्थान में बैठ राज्य-

प्रबन्ध पर विचार विमर्श करे। मंत्रिमंडल। २–छोटा कमरा। ३–लकड़ी का सामान।

कैमा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कदम का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और कड़ी होती है।

कैमुतिक-न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) एक न्याय या उक्ति जिसका प्रयोग यह दिखलाने के लिए होता है कि जब इतना बड़ा काम हो गया, तब यह क्या है?

कैमेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कमरा'।

कैय्यट [संज्ञा पु.] महाभाष्य का एक टीकाकार।

कैया [संज्ञा पु.] (देश.) १–रांगे से झालने का हथौड़ी के आकार का एक उपकरण या औजार। २–आधा पाव की नाप।

कैर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'करील'।

कैरव [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुमुद। २–सफेद कमल। ३–शत्रु। ४–जुआरी।

कैरवि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कैरवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चांदनी रात। २–मेथी।

कैरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भूरा (रंग)। २–वह सफेदी जिससे ललाई की चमक हो। [वि.] (हिं.) १–कैरे रंग का। २–जिसकी आंखें भूरी हों। कंजा।

कैराटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का स्थावर विष।

कैरात [वि.] (सं.) १–किरात-जाति सम्बन्धी। २–किरातदेश-सम्बन्धी। [संज्ञा पु] (सं.) १–चिरायता। २–शंबर चंदन। ३–बलवान मनुष्य। ४–कैरत सांप। ५–संगीत में शुद्ध राग का एक भेद।

कैराल [संज्ञा पु.] (सं.) बायविडंग।

कैरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १–भूरे रंग की। २–ललाई मिले संफेद रंग की। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अँबिया।

कैलास [संज्ञा पु.] (सं.) १–हिमालय की एक चोटी का नाम। २–स्वर्ग।

कैलासनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

कैलासपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

कैलासवास [संज्ञा पु.] (सं.) मरण। मृत्यु।

कैलासी [वि.] (हिं.) कैलाश का रहने वाला।

कैलैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) तालमखाना।

कैवर्त [संज्ञा पु.] (सं.) केवट। मल्लाह।

कैवर्तमुस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) केवटी मोथा।

कैवर्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बेल का नाम।

कैवल [संज्ञा पु.] वायविडंग। वाभिरंग।

कैवल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–शुद्धता। निर्लिप्तता। एकता। २–एक उपनिषद् का नाम। ३–मुक्ति। मोक्ष।

कैशिक [वि.] (सं.) बड़े-बड़े केशों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १–केश समूह। २–शृंगार। ३–नृत्य का एक भाव जिसमें सुकुमारता से किसी का अभिनय किया जाता है।

कैशिक-निषाद [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक विकृत स्वर जो तीव्र से शुरू होता है।

कैशिकपंचम [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक विकृतस्वर जो संदीपनी नाम की श्रुति से आरम्भ होता है।

कैशिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक की चार वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य, गीत, वाद्य तथा भोग-विलासों का अधिक वर्णन होता है। यह वृत्ति शृंगाररस प्रधान नाटकों में होती है।

कैसर [संज्ञा पु.] (अं.) १–सम्राट। २–जर्मन सम्राट की उपाधि।

कैसा [वि.] (हिं.) १–किसी प्रकार का। किस ढंग का। २–(निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किसी प्रकार का नहीं।

कैसे [क्रि. वि.] (हिं.) १–किस प्रकार से? किस ढंग से? २–किस हेतु? किसलिए? क्यों?

कैसो*+ [वि.] (हिं.) देखो 'कैसा'।

कोंई* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुई'।

कोंकण [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २–उक्त देश का निवासी।

कोंकणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परशुराम की माता रेणुका को 'कोंकणावती' भी कहते थे।

कोंकणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोंकण देश की भाषा।

कोंचना [क्रि. स.] (हिं) चुभाना। गोदना। गड़ाना।

कोंचफली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौंछ'।

कोंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–क्रौंच पक्षी। २–बहेलियों की वह लम्बी लग्गी जिसके पतले छोर पर वे लासा लगाकर चिड़ियों को फंसाते हैं।

कोंछ [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों की ओढ़नी के आंचल का छोर।

कोंछना [क्रि. स.] (हिं.) साड़ी के अगले भाग को चुनना।

कोंछियाना [क्र. स.] (हिं.) १–साड़ी का वह भाग जो पहनने के समय पेट के आगे खोंसा जाता है। २–कोंछ में कोई वस्तु भर कर उसे कमर के अगले भाग में खोंसना।

कोंछी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साड़ी या धोती को पेट के आगे कोंछने की क्रिया या भाव।

कोंड़ई [संज्ञा पु.] (देश.) एक कंटीला झाड़।

कोंडरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे का वह कड़ा जो मोट के मुँह पर लगा रहता है।

कोंडरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हुडुक नामक बाजे की वह लकड़ी जिस पर चमड़ा चढ़ा रहता है

कोंड़हा [वि.] (हिं.) देखो 'कोंढ़ा'।

कोंढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) धातु का किसी वस्तु को अटकाने का छल्ला या कड़ा। [वि.] जिसमें कोंढ़ा लगा हो।

कोंढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'कोंढ़ा'। २– मुंह बंधी कली।

कोंथ [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरानी दीवार के छेदों में मिट्टी आदि का भराव।

कोंथना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कूंथना' 'कूंथना'।

कोंपना+ [क्रि. अ.] (हिं.) कोंपल निकलना।

कोंपर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा, अधपका डाल का पका आम।

कोंपल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृक्ष की नई मुलायम पत्ती। अंकुर। कल्ला।

कोंवर*+ [वि.] (हिं.) नरम। मुलायम।

कोंस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लंबी फली। छीमी।

कोंहड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हड़ा।

कोंहड़ौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुम्हड़े की बनाई हुई बरी।

कोंहरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) तेल में छौंके नमक, मिर्च लगे उबले चने।

कौंहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुम्हार'।

को* [सर्व.] (हिं.) कौन?। [प्रत्य.] (हिं.) और सम्प्रदान की विभक्ति।

कोआ [संज्ञा पु.](हिं.) १–रेशम के कीड़े का २–टसर नामक रेशम का कपड़ा। ३– का पका फल। धुनी हुई ऊन की पोनी। आंख का ढेला। आंख का कोना।

कोआर [संज्ञा पु.] (देश.) कोरा नामक वृक्ष।

कोइँदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोइना'।

कोइँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महुए का बीज।

कोइडार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कोइरी लोगों के साग, तरकारी बोने का स्थान।

कोइना* [संज्ञा पु.] (हिं.) महुए का पका हुआ फल।

कोइरी [संज्ञा पु.] (हिं.) साग तरकारी उपजाने और बेचने वाली एक जाति।

कोइल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मथानी के ऊपर रखने का छेददार ढक्कन।

कोइलाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोइला'।

कोइला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोयला'।

कोइलारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गायों के मुद्धी। २–बदमाश चौपायों के गले में डालने का लकड़ी का गोल कड़ा।

कोइलिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोयल'।

कोइली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कच्चा आम। २–आम की गुठली। ३–कोयल।

कोई [सर्व.] (हिं.) १–ऐसा एक (मनुष्य या

पदार्थ) जो अज्ञात हो। २-अविशेष वस्तु अथवा व्यक्ति। ३-एक भी (व्यक्ति)। [वि.] १-ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो न जाना जा सके। २-बहुतों में से चाहे जो एक। [क्रि. वि.] लगभग। करीब-करीब। *कोई एक या कोई सा*-जो चाहे सो एक। *कोई कहीं समझ कोई कहीं समझे*-कहीं का घाटा कहीं पूरा हुआ समझना। *कोई दम का मेहमान होना*-मरणासन्न। थोड़ी देर में मर जाने वाला। *कोई न कोई*-एक नहीं तो दूसरा। *कोई बात भी हो, यह भी कोई बात है*-कुछ बात नहीं।

कोउ+ [सर्व.] (हिं.) कोई।

कोउक+* [सर्व.] (हिं.) कोई एक। कुछ लोग। कतिपय।

कोऊ+* [सर्व.] (हिं.) कोई।

कोकंब [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पेड़ जिसके अंग खट्टे होते हैं।

कोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्रवाक। चकवा पक्षी। सुरखाव। २-रतिशास्त्र का एक आचार्य। ३-विष्णु। ४-भेड़िया। ५-मेंढक। ६-जंगली खजूर। ७-संगीत का छठा भेद।

कोकई [वि.] (हिं.) गुलाबी झलक लिये नीला रंग। कौड़ियाला।

कोककला [संज्ञा स्त्री.] (सं) रति या संभोग संबंधी विद्या।

कोकदेव [संज्ञा पु.] (हिं.) कोकशास्त्र के रचियता

कोकन [संज्ञा पु.] (देश.) एक ऊंचा वृक्ष जो आसाम और पूर्वी बंगाल में पाया जाता है।

कोकनद [संज्ञा पु.] (सं) १-लाल कमल। २-लाल कुमुद।

कोकना [क्रि. स.] (हिं.) कच्चा करना। कच्ची सिलाई करना।

कोकनी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का तीतर। २-एक प्रकार का रंग। [वि.] (देश.) १-छोटा। नन्हा। २-कम मूल्य का घटिया।

कोकबंधु, कोकबन्धु [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य।

कोकम [संज्ञा पु.] (देश.) दक्षिण भारत का एक छोटा सदाबहार का वृक्ष।

कोकव [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग।

कोकवा [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का बांस।

कोकशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कोक नामक पंडित का बनाया हुआ कामशास्त्र।

कोका [संज्ञा. पु.] (अं.) दक्षिण अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी सूखी पत्तियां चाय या कहवे के समान उत्तेजक होती है। [संज्ञा स्त्री.] (तु.) धाय की संतान। दूध भाई या दूध बहिन। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कबूतर। [संज्ञा स्त्री.] (?) नीली कुमुदिनी।

कोकाबेरी, कोकाबेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीली कुमुदिनी जिसके बीज का आटा व्रत में खाया जाता है।

कोकामुख [संज्ञा पु.] (सं.) भारत का एक प्राचीन तीर्थ जिस का वर्णन महाभारत में मिलता है।

कोकाह [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद रंग का घोड़ा।

कोकिल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोयल। नीलम की छाया। ३-एक प्रकार का चूहा। जलता हुआ अंगारा। ४-छप्पय छंद का एक भेद जिसमें ५२ गुरु + ४८ लघु = १०० वर्ण और १५२ मात्राएं होती है।

कोकिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोयल। पिक।

कोकिलाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) तालमखाना।

कोकिलाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताल।

कोकिलारव [संज्ञा पु.] ताल के ६० भेदों में से एक।

कोकिलासन [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक आसन।

कोकिलेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी जामुन।

कोकीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोकेन'।

कोकुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) समष्ठिल नाम का पौधा।

कोकेन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से बना एक मादक पदार्थ जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

कोको [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-मादा कौआ। २-लड़कों को बहकाने का शब्द।

कोख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जठर। उदर। पेट। २-पेट के दोनों ओर का स्थान। ३-गर्भाशय। *कोख उजड़ना*-१-पुत्र मरजाना। २-गर्भ गिर जाना। *कोख की आंच*-१-संतान की इच्छा २-संतान का प्रेम। ३-संतान का वियोग। *कोख खुलना*-संतान होना। *कोख मारी जाना* बांझ बनना। *कोख लगना या सटना*-भूख या अन्य किसी कारण से पेट अन्दर धसना।

कोखजली [वि.] (हिं.) जिसके बालक मर जाते हों।

कोखबंद [वि.] (हिं.) बंध्या। बांझ।

कोगी [संज्ञा पु.] (देश.) लोमड़ी के समान एक जानवर।

कोच [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार की चौपहिया घोड़ा गाड़ी। २-गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।

कोचकी [संज्ञा पु.] (?) लाली लिये भूरा रंग।

कोचना (हिं.) नुकीले कांटों वाला एक उपकरण जिससे अचार मुरब्बे आदि के लिए फल कोंचे जाते हैं। [क्रि. स.] धँसना। चुभाना। गड़ाना।

कोचा करेला-शीतला के दागों से भरपूर चेहरा।

कोचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नुकीला चुभाने का एक औजार। २-बैल हांकने की छड़ी।

कोचबकस [संज्ञा पु.] (अं.) बग्गी के हांकने वाले के बैठने का स्थान।

कोचरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की लता जिसमें जेठ, असाढ़ में पीले रंग के फूलों के गुच्छे लगते हैं।

कोचरी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

कोचवान [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा गाड़ी हांकने वाला।

कोचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तलवार, कटार आदि का हलका घाव या आघात। २-लगती हुई बात। व्यंग्य ताना।

कोचिंड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) जंगली प्याज।

कोचिला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुचला'।

कोची [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली बबूल।

कोचीन [संज्ञा पु.] (देश.) एक देशी रियासत जो ट्रवन की रियासत में विलय होकर एक संघ बना है।

कोजागर [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विन मास की पूर्णिमा। शरद पूर्णिमा।

कोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-किला। दुर्ग। गढ़। २-प्राचीर। शहरपनाह। राजमहल।
[संज्ञा पु.] (हिं.) समूह। अनेक। यूथ। जत्था।
[संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी ढंग का एक वस्त्र जो कमीज कुरते के ऊपर पहना जाता है।

कोटचक [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्र के अनुसार एक चक्र।

कोटपाल [संज्ञा पु.] (सं.) गढ़ की रक्षा करने वाला। किलेदार।

कोटपीस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोर्टपीस'।

कोटभरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव के किनारे-किनारे की ओर जड़ी हुई लकड़ी।

कोटमास्टर [संज्ञा पु.] देखो 'क्वार्टर मास्टर'।

कोटर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्षगह्वर। पेड़ का खोखला भाग। २-दुर्ग की रक्षा के लिए इसके चारों ओर लगा हुआ जंगल।

कोटरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाणासुर की माता का नाम।

कोटरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा। चंडिका।

कोटा [संज्ञा पु.] (अं.) किसी के निमित्त निश्चित किया हुआ भाग जो उसे दिया जाय या लिया जाय। सम्पूर्ण में का वह भाग अथवा अंश जो किसी को देने या पाने आदि के जिम्मे पड़े। [संज्ञा पु.] (हिं.) राजस्थान राज्य का एक नगर।

कोटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष का सिरा। २-

तलवार की धार। ३-सौलाख की संख्या। करोड़। ४-एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की वह श्रेणी या विभाग जो क्रमिक उत्तमता अथवा श्रेष्ठता की दृष्टि से किया गया हो वर्ग, श्रेणी, दर्जा। ग्रेड। ५-किसी वाद विवाद का पूर्व पक्ष। ६-उत्तमता। उत्कृष्टता। समूह। जत्था।

कोटिक [वि.] (हिं.) १-करोड़। २-अमित। अनगिनत। असंख्य।

कोटि-क्रम [संज्ञा पु.] (*सं*) कोई विषय प्रतिपादित अथवा स्थापित करने का क्रम।

कोटि-च्युत [वि.] (*सं.*) जो अपनी कोटि (ग्रेड) से नीचे की कोटि में भेज दिया या उतार दिया गया हो। *डिग्रेडेड*।

कोटि-च्युति [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) अपनी कोटि से नीचे की कोटि में भेज दिये जाने का भाव। *डिग्रेडेशन*।

कोटिज्या [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) धनुष के आकार का क्षेत्र।

कोटितीर्थ [संज्ञा पु.] (*सं.*) तीर्थ विशेष।

कोटिफली [संज्ञा पु.] (*सं.*) गोदावरी नदी के सागर संगम के पास का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

कोटिबंध, कोटिबन्ध [संज्ञा पु.] (*सं.*) बहुत सी वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा कर्मचारियों को उनके महत्व अथवा वेतन के अनुसार भिन्न-भिन्न कोटियों या ग्रेडों में स्थान देना। कोटियां स्थिर करना। ग्रेडेशन।

कोटिबद्ध [वि.] (सं.) १-किसी खास कोटि में रखा हुआ। २-छोटी बड़ी कोटियों में विभक्त होने वाला। ग्रेडेड।

कोटिमान [वि.] (सं.) नोकीला। नोकदार।

कोटिशः [क्रि. वि.] (सं.) अनेक प्रकार से। [वि.] बहुत अधिक। अनेकानेक।

कोट्ट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कूट्ट'।

कोटेशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-लेख अथवा वाक्य का उद्धृत अंश। उद्धरण। २-शीशे का ढला हुआ चौकोर पोला टुकड़ा।

कोट्याधीश [संज्ञा पु.] (*सं.*) करोड़पति। बहुत बड़ा धनी।

कोठ [संज्ञा पु.] (*सं.*) एक प्रकार का कोढ़।
+[वि.] (*हिं.*) १-कुंठित। चबाई न जा सकने वाली। २-अधिक खट्टे होने के कारण उस वस्तु को न चबा सकने वाले (दांत)।

कोठड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'कोठरी'।

कोठर [संज्ञा पु.] (*सं.*) अंकोल का वृक्ष।

कोठरपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) विधारा नामक वृक्ष।

कोठरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोठरी'।

कोठरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चारों ओर दिवारों से घिरा तथा छाया हुआ तंग कोठा या छोटा कमरा।

कोठा [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-लम्बी चौड़ी कोठरी। बड़ा कमरा। २-भण्डार घर। ३-अटारी। ४-उदर। पेट। ५-धरन। गर्भाशय। ६-खाना। घर। ७-शरीर अथवा मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग।

कोठा बिगड़ना—१-अपच रोग होना। २-गर्भाशय में रोग होना।

कोठा साफ होना—१-हृदय में कोई बुरा विचार उत्पन्न न होना। २-साफ दस्त होने के बाद पेट हलका होना।

कोठाकुचाल [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों को भूख न लगने की बीमारी।

कोठादार [संज्ञा पु.] (*हिं.*) भंडारी। कोठारी।

कोठार [संज्ञा पु.] (*हिं.*) अन्न-धन आदि रखने का स्थान। भंडारघर।

कोठारी [संज्ञा पु.](*हिं.*) भंडारघर का प्रबन्धकर्ता। भंडारी।

कोठिला [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'कुठला'।

कोठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बड़ा और पक्का मकान। हवेली। २-वह मकान जहां रुपये का लेनदेन या कोई बड़ा कारबार होता हो। ३-कुएं की दीवार या पुल के खम्भे में पानी के नीचे जमीन तक होने वाली ईंट पत्थर की जोड़ाई। ४-बखार। गंज। बंदूक में बारूद ठहरने का स्थान।

कोठी उतारना, बैठाना, डालना—कुएँ या पुल के खंभे में जमघट या गोले के ऊपर की जोड़ाई को नीचे उतारना। *कोठी करना या खोलना*—लेनदेन का काम आरंभ करना। आढ़त की दुकान खोलना। *कोठी बैठना*—दिवालिया बनना।

कोठीवाल [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-वह जिसके कोठी चलती हो। महाजन। साहुकार। २-बड़ा व्यापारी।

कोठीवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोठी चलाने का काम। २-मुड़िया लिपि।

कोठेवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

कोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) खेत की मिट्टी को गहरी खोदकर उलट देना। खेत गोड़ना।

कोड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे के द्वारा कोड़ने का काम कराना।

कोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सांटा। चाबुक। २-उत्तेजक या मर्मस्पर्शी बात। ३-चेतावनी।

कोड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत गोड़ने का काम या खेत गोड़ने की मजदूरी।

कोड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे से कोड़ने का काम कराना।

कोड़ार [संज्ञा. पु.] (हिं.) कोल्हू की लकड़ी के चारों ओर जड़ा हुआ लोहे का गोल बंद। कुंडरा। तौक।

कोड़िक [संज्ञा पु.] (हिं.) सूअर पालने वाली एक जाति।

कोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बीस का समूह। कोड़ी।

कोढ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुष्ठ। एक प्रकार का रक्त और त्वचा-संबंधी रोग जो संक्रामक तथा पुरुषानुक्रमिक होता है।

कोढ़ चूना का टपकना—कोढ़ से अंगों का गल गलकर गिरना। *कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज*—दुःख पर दुःख।

कोढ़ा [संज्ञा पु.] (सं.) खेत में का वह स्थान जहां गोबर इकट्ठा करने के अभिप्राय से पशुओं को रखते हैं।

कोढ़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) तम्बाखू के पत्तों का एक रोग।

कोढ़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति।

कोण [संज्ञा पु.](*सं.*) १-कोना। २-दो दिशाओं के बीच की दिशा। विदिशा। ३-दोनों रेखा के परस्पर मिलने का स्थान।

कोणकुण [संज्ञा पु.] (*सं.*) खटमल।

कोणमापकयंत्र, यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं) दूर दूर की चीजों पर तोप का निशाना साधने या बांधने और उसे ठीक कोण पर दागने में सहायक यंत्र।

कोणाकोणी [अव्य.] (*सं*) एक कोने से दूसरे कोने तक।

कोणाघात [संज्ञा पु.] (*सं.*) दस हजार ढोलों और एक लाख हुडुकों के एक साथ बजने का शब्द।

कोणार्क [संज्ञा पु.] (*सं*) जगन्नाथपुरी का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

कोत + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुव्वत। बल। शक्ति। जोर।

कोतल [संज्ञा पु.] (*फा.*) सजासजाया बिना सवार का घोड़ा। जलूसी घोड़ा। २-राजा की सवारी का घोड़ा। [वि] जिससे कोई काम न हो। खाली।

कोतलगारद [संज्ञा पु] (हि) छावनी का वह स्थान जहां दलेल वाले सिपाहियों के निरीक्षण के निमित्त संरक्षक नियुक्त होते हैं।

कोतवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी। *पुलिस-इन्स्पेक्टर*। २-पंडितों की सभा बिरादरी या साधुओं की बैठक। भोज आदि का निमंत्रण देने वाला व्यक्ति।

कोतवाली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कोतवाल के रहने का स्थान। २-वह मकान या स्थान जहां कोतवाल का कार्यालय हो। ३-कोतवाल का पद या ओहदा।

कोतह [वि.] (*फा.*) छोटा। कम। अल्प।

कोता* [वि.] (हिं.) छोटा। कम।

कोताह [वि.] (*फा.*) कम। अल्प। छोटा।

कोताही [संज्ञा स्त्री.] (*फा.*) त्रुटि। कमी। छोटाई। कसर।

कोति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दिशा। ओर।

कोथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आंख की पलक के भीतर का एक रोग। २-भगंदर।

कोथला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ा थैला। २-पेट।

कोथली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लम्बी थैली जिसमें भरकर रुपये पैसे कमर में बांध लेते हैं।

कोथी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) म्यान के सिरे पर लगा धातु का छल्ला।

कोदंड, कोदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष। कमान। २-भौंह। ३-धनुराशि।

कोद+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दिशा। ओर। २-कोना।

कोदइत* [संज्ञा पु.] (हिं.) कोदो दलने वाला।

कोदई [संज्ञा पु.] (हिं.) कोदो।

कोदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कोदो।

कोदरैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) कोदो दलने की चक्की।

कोदव [संज्ञा पु.] (हिं) कोदो।

कोदो, कोदों [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अन्न जो सारे भारत में होता है।

कोदो देकर पढ़ना या सीखना–अधूरी या बेढंगी शिक्षा प्राप्त करना।

कोदो दलना–व्यर्थ परिश्रम करना।

कोद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) कोदो।

कोध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोद'।

कोन [संज्ञा पु] (हिं.) कोना।

कोन देना–कोने पर से हल घुमाना। *कोन मारना*–जोतने में छूटे हुए कोनों को गोड़ना।

कोनलाय [संज्ञा पु.] (देश.) दलाली बोली में १६ की संख्या।

कोनसिला [संज्ञा पु.] (हिं.) छाजन में तिरछी लगी हुई लकड़ी।

कोना [संज्ञा पु.] (हिं) १-एक बिंदु पर मिलती हुई ऐसी दो रेखाओं का अन्तर जो फिर एक नहीं होती। २-नुकीला छोर या किनारा ३-लम्बाई चौड़ाई मिलने का स्थान। ४-एकान्त स्थान।

कोना झांकना–बगलें झांकना। *कोना दबाना*–दाब या वश में होना।

कोनियां [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-दीवार के कोने पर चीजें रखने की पटरी या पटिया। २-चित्र या मूर्ति आदि के चारों कोनों का अलंकरण।

कोनेदंड, कोनेदण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की कसरत।

कोप [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध। रिस। गुस्सा।

कोपन [वि.] (हिं.) देखो 'कोपी'।

कोपना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रोध करना। नाराज होना।

कोपनीय [वि.] (सं.) जिस पर क्रोध किया जाए।

कोप-भवन [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां कोई मनुष्य रूठ कर जा रहे।

कोपर [संज्ञा पु.] (हिं.) डाल का पका आम। टपका।

कोपल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृक्ष की नवीन कोमल पत्ती।

कोपलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कनफोड़ा नाम की बेल।

कोपली [वि.] (हिं.) १-बैंगनी या लाल रंग का। २-आम के नये निकले हुए पत्ते।

कोपवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रोध करने वाली स्त्री।

कोपवान् [वि.] (सं.) नाराज।

कोपि [सर्व.] (सं.) कोई भी।

कोपित [वि.] (सं.) कुपित। क्रोधित। नाराज।

कोपी [वि.] (हिं.) क्रोध करने वाला।

कोपीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौपीन'।

कोफ्त [संज्ञा पु.] (फा.) लोहे पर सोने या चांदी की पच्चीकारी। [संज्ञा स्त्री.] १-दुःख। खेद। २-परेशानी।

कोफ्तगरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लोहे के बरतनों या हथियारों पर चांदी या सोने की पचीकारी करने का काम।

कोफ्ता [संज्ञा पु.] (फा.) कूटे हुए मांस की गोली जिसमें अदरक, पुदीना, खस-खस और भुने चने का आटा मिला रहता है।

कोबा [संज्ञा पु.] (फा.) १-चमड़ा कूटने की मुंगरी। २-दुरमुट।

कोबिद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोविद'।

कोबिदार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोविदार'।

कोबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोभी का फूल।

कोमता [संज्ञा पु.] (देश.) कीकर का सा एक वृक्ष।

कोमर [संज्ञा पु.] (देश.) खेत का किसी ओर से बढ़ा हुआ कोना।

कोमल [वि.] (सं.) १-मृदुल। मुलायम। २-सुकुमार। नाजुक। ३-अपरिपक्व। ४-सुंदर। मनोहर। ५-स्वर का एक भेद (संगीत)।

कोमलता, कोमलताई* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृदुलता। मुलामियत। २-मधुरता। लालित्य। ३-सुंदरता।

कोमला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह वृत्ति या अक्षर योजना जिसमें कोमल पद हों। २-खिरनी। खजूर।

कोमलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोमलता'

कोय*+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'कोई'।

कोयता [संज्ञा पु.] (हिं.) ताड़ी टपकाने का एक औजार।

कोयर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सागपात। २-हरा चारा।

कोयल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक काले रंग की चिड़िया जो बहुत सुन्दर बोलती है।

कोयला [संज्ञा पु.] (हिं.) जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ टुकड़ा। २-इसी प्रकार का एक पदार्थ जिसे पत्थर का कोयला कहते हैं।

कोयलों पर मोहर होना–छोटे और तुच्छ खर्चों की जांच पड़ताल होना।

कोया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आंख का ढेला। २-आंख का कोना। ३-कटहल का बीजकोश।

कोरंड, कोरण्ड [संज्ञा पु.] (सं) अंडवृद्धि का रोग।

कोरंगा [संज्ञा पु.] (देश.) गोबर और मिट्टी से पुती हुई दौरी या टोकरी जिसमें अनाज रखते हैं।

कोरंगी, कोरङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-छोटी इलायची। २-पिप्पली।

कोरंजा [संज्ञा पु.] (हिं.) मजदूरी के बदले में दिया जाने वाला अन्न।

कोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किनारा। सिरा। २-कोना। ३-द्वेष। बैर। वैमनस्य। ४-दोष। ऐब। बुराई। हथियार की धार। ६-पंक्ति। श्रेणी।

कोर दबना–बस में होना।

कोरई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

कोरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कली। मुकुल। २-फूल या कली का बाहर का हरा भाग। ३-कमल की की नाल। मृणाल। ४-शीतलचीनी। ५-चोरक नाम का गंधद्रव्य।

[संज्ञा पु.] (हिं.) मोटा और मजबूत बेत।

कोर-कसर [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-दोष और त्रुटि। ऐब और कमी। २-कमीबेशी। न्यूनता या अधिकता।

कोरट [संज्ञा पु] (अं. कोर्ट आफ वार्डस) किसी राज्य या जमींदारी का सरकार की ओर प्रबन्ध जब तक इसका मालिक नाबालिग रहता है।

कोरट छूटना–किसी जायदाद का कोरट आफ वार्डस के प्रबंध से निकलना। *कोरट बैठना*–कोरट के प्रबंध में आना।

कोरना [क्रि. स.] (हिं) देखो 'कोड़ना'।

कोरनी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पत्थर पर खुदाई का काम।

कोरमा [संज्ञा पु.] (तु.) खूब घी में भूनकर पकाया हुआ मांस।

कोरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पान की खेती का दूसरा वर्ष। २-कोरा।

कोरसाकेन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का घना और छायादार वृक्ष।

कोरहा+ [वि.] (हिं.) १-किनारदार। नोकीला।

२-गोद बहुत रहने वाला।

कोरा [वि] (हिं.) १-जो व्यवहार में लाया गया हो। नया। २-जिस पर कुछ लिखा या चित्रित न किया गया हो। जो रंग न गया हो। दाग या चिह्नरहित। साफ। सादा। ३-बिन धोया। ४-खाली। रहित। वंचित। ५-निष्कलंक। ६-अपढ़ मूर्ख। ७-धनहीन। ८-केवल। सिर्फ। [संज्ञा पु.] १-गोद। उछंग। २-ताल के किनारे रहने वाली एक चिड़िया [संज्ञा पु.] (?) बिना किनारे की रेशमी धोती।

कोरा जवाब-नाहीं कर देना। *कोरा बचना*-सूखा बचना। *कोरा रखना, रहना*-१-बिलकुल कुछ न सिखाना। २-मूर्ख होना। ३-कुछ लाभ न होना। *कोरा लौटना*-असफल या बिना लिये ही वापिस आना।

कोरान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुरान'।

कोरापन [संज्ञा पु.] (हिं.) नवीनता। अछूतापन।

कोरि [वि] (हिं.) सौ लाख। करोड़।

कोरी [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटे कपड़े बुनने वाली एक जाति। हिन्दू जुलाहा। [वि] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १-अछूती। नवीन। २-देखो 'कोरा'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कोड़ी'।

कोर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) अदालत। कचहरी।

कोर्टपीस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) ताश का एक खेल।

कोर्टमार्शल [संज्ञा पु.] (अं.) सैनिक अदालत जिसमें अनुशासन भंग करने वाले सैनिकों को दंड दिया जाता है।

कोर्टशिप [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कन्या संवरण। गंधर्व विवाह।

कोलंबक, कोलम्बक [संज्ञा पु.] (सं) वीणा का तूंबा और डंडा।

कोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूअर। शूकर। २-गोद। उत्संग। ३-बेर। बदरीफल। ४-एक जंगली जाति।

कोलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अखरोट का वृक्ष। २-काली मिरच। ३-शीतलचीनी।
[संज्ञा पु.] (देश.) रेती और आरी तेज करने का औजार।

कोलगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत का कोलाचल नामक पर्वत।

कोलदल [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य

कोलना [क्रि. स.] (हिं.) बीच में खोदकर पोला करना। छेदना।

कोलपार [संज्ञा पु.] (देश.) एक मझोले कद का वृक्ष जो बरार और दार्जिलिंग में होता है।

कोलपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं) सफेद चील। कंक।

कोलमूला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिपलामूल।

कोलशिंबी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम की फली।

कोलमा [संज्ञा पु.] (हिं.) इंगनी धातु। बैंगबीज।

कोला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी पीपल। पिप्पली। २-चव्य। ३-बैर का पेड़।
[संज्ञा पु.] (देश.) १-गीदड़। २-कोयला।

कोलाहट [संज्ञा पु.] (सं.) वह नृत्य में प्रवीण व्यक्ति जो तलवार की धार पर भी नाच सकता हो।

कोलाहल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलकल ध्वनि। हल्ला। शोरगुल। सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग जो कल्याण, कान्हड़ा और बिहाग के मेल से बनता है।

कोलिआर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का झाड़ीदार वृक्ष।

कोलिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तंग रास्ता। पतली गली। २-पतले आकार का छोटा खेत।

कोलियाना + [क्रि. अ.] (हिं.) १-तंग गली से निकल जाना। २-छाती से लगना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) गांव में कोलियों की बस्ती।

कोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आलिंगन के समय दोनों बाहुओं के बीच का स्थान।
[संज्ञा पु.] (हिं.) हिन्दू जुलाहे। कोरी।

कोलौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) महुए का पका फल।

कोल्हाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख पेरने और गुड़ बनाने का स्थान।

कोल्हुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुश्ती का एक पेंच। २-+देखो 'कोल्हू'।

कोल्हू [संज्ञा पु.] (हिं.) तेल या ऊख पेरने का यंत्र।

कोल्हू का बैल-१-बहुत परिश्रमी। २-काला चश्मा या अंधौटा लगाना। *कोल्हू में डालकर पेरना*-बहुत दुःख देना।

कोविद [वि.] (सं.) पंडित। विद्वान।

कोविदार [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार का वृक्ष।

कोश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंड। अंडा। २-अंडकोश। ३-डिब्बा। गोलक। ४-फूल की कली। ५-आवरण। गिलाफ। ६-वेदान्त के अनुसार पांच सम्पुट जो मनुष्य के शरीर में होते हैं। ७-संचित धन। ८-खान से निकला हुआ विशुद्ध सोना या चांदी। ९-रेशम का कोया। १०-अकारादिक्रम से लिखी हुई पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ दिये हों। अभिधान।

कोशकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार की म्यान बनाने वाला। २-शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके उनके अर्थ बताने वाला। ३-रेशम का कीड़ा।

कोशकीट [संज्ञा पु.] (सं.) रेशम का कीड़ा।

कोशचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) सारस।

कोशज [संज्ञा पु] (सं) १-रेशम। २-मोती।

मुक्त

कोशनायक [संज्ञा पु.] (सं) खजाञ्ची। कोशाध्यक्ष।

कोशपति [संज्ञा पु.] (सं.) कोशाध्यक्ष। खजानची।

कोशपाल [संज्ञा पु.] (सं) संचित धन का संरक्षक।

कोशफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंडकोश। २-जायफल। ३-कुम्हड़ा, ककड़ी, तरबूज आदि फल।

कोशफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घीया, तोरई, लौकी, ककड़ी, खीरा, कुम्हड़ा आदि फल।

कोशल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरयू नदी के दोनों ओर का देश। २-अयोध्यानगरी। ३-एक राग विशेष।

कोशला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोशल की राजधानी अयोध्या।

कोशलिक [संज्ञा पु.] (सं) उत्कोच। घूस। रिशवत।

कोशवान् [वि.] (सं.) १-कोशयुक्त। जिसके अंडकोश हों। २-खजाने वाला।

कोशवृद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) अंडकोश बढ़ने का रोग।

कोशवेश्म [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोशागार। खजाना।

कोशस्थ [संज्ञा पु] (सं.) सुश्रुत के अनुसार पांच प्रकार के जीवों में से एक।

कोशांड, कोशाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) अंडकोश।

कोशांबी, कोशाम्बी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कौशांबी'।

कोशागार [संज्ञा पु.] (सं.) खजाना। भंडार।

कोशातक [संज्ञा पु.] (सं) यजुर्वेद की कठ नाम की शाखा।

कोशातकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तोरई। तरोई।

कोशाम्र [संज्ञा पु.] (सं) कोसम नामक वृक्ष का फल।

कोशाधिप, कोशाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) कोशाध्यक्ष। खजांची।

कोशाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) खजानची। भंडारी।

कोशाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं) १-खजानची। २-कुबेर।

कोशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा बरतन।

कोशिश [संज्ञा स्त्री.] (फा) प्रयत्न। चेष्टा। उद्योग।

कोशी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-अन्न की बाल। २-नख नामक सुगंधित द्रव्य।

कोष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कोश'। २-खजाना।

कोषफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंकोल मिर्च। २-देखो 'कोशफल'।

कोषफला [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'कोशफला'।

कोषवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'कोशवृद्धि'।

कोषकार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कोशकार'।

कोषाणु [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत ही सूक्ष्म या छोटे कणों अथवा छोटे-छोटे कीड़े जो हवा या खाने पीने के पदार्थों में मिले रहते तथा अनेक प्रकार के रोगों के मूल कारण माने जाते हैं।

कोषाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १–खजानची २–रोकड़िया।

कोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १–पेट का भीतरी भाग। २–शरीर के अन्दर का वह भाग जिसमें कोई विशेष शक्ति हो। जैसे—आमाशय। ३–कोठरी। ४–अन्न रखने का स्थान। ५–कोश। भंडार। खजाना। ६–प्राकार। कोट। चारदीवारी। ७–देखो 'कोष्ठक'।

कोष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीवार, लकीर आदि से घिरा हुआ स्थान। खाना। कोण। २–वह चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों। सारिणी। ३–लिखने में एक प्रकार के चिह्नों का जोड़ा जिसके अन्तर्गत केवल व्याख्या या सूचना के रूपमें वाक्य या अंक आदि लेखे जाते हैं। जैसे— [ ], , ( ) आदि।

कोष्ठबद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मल की रुकावट। कब्जियत।

कोष्ठबद्धता [संज्ञा स्त्री] (सं.) पेट में मल का रुकना। दस्त न होना।

कोष्ठशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट का मलरहित होना।

कोष्ठाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जठर की पचाने वाली अग्नि या शक्ति।

कोष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्मपत्री।

कोष्ण [वि.] (सं.) थोड़ा गरम। गुनगुना।

कोस [संज्ञा पु.] (हिं.) आज कल की दो मील का दूरी का नाप।

कोसों या काले कोसों–बहुत दूर। कोसों दूर रहना–अलग रहना। कोसों भागना–बहुत बचना।

कोसना [क्रि. स.] (हिं.) शाप के रूप में गालियां देना। गालियां देना।

पानी पी पीकर कोसना–बहुत अधिक दुर्वचन कहना। कोसना काटना–शाप और गाली देना।

कोसभ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कोसम'।

कोसम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

कोसल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कोशल'।

कोसली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की रागनी।

कोसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का मोटा रेशम। २–मिट्टी का बड़ा दिया। सकोरा। ३–देखो 'कोसाकाटी'।

कोसाकाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शाप के रूप में दुर्वचन। बद दुआ।

कोसिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–मिट्टी का छोटा कसोरा। २–चूना रखने की कूंडी।

कोसिला+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौशल्या'।

कोसिली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पिराक या गुझिया नाम का पकवान।

कोसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नैपाल से निकलने वाली एक नदी।

कोसू [संज्ञा पु.] (हिं.) कोसने वाला।

कोसों [क्रि. वि.] (हिं.) कई कोस की दूरी पर।

कोहँड़ौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोहड़े और उर्द की बरी।

कोह [संज्ञा पु.] (फा.) पर्वत। पहाड़।
❀[संज्ञा पु.] (हिं.) क्रोध। गुस्सा।

कोहना [क्रि. स.] (हिं.) क्रुद्ध होना। रिसियाना।

कोहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुहनी'।

कोहनूर [संज्ञा पु.] (फा.) जगद्विख्यात तथा इतिहास प्रसिद्ध एक बहुमूल्य हीरा।

कोहबर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घर जहां विवाह के अवसर पर कुल देवता स्थापित किये जाते हैं।

कोहरा [संज्ञा पुं.] (हिं.) कुहासा। कुहरा।

कोहरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उबले या तले हुए चने आदि।

कोहल [संज्ञा पु.] (सं.) १–नाट्यशास्त्र प्रणेता एक गंधर्व। २–जौ की शराब। ३–कुम्हड़े की शराब। ४–एक प्रकार का बाजा।

कोहाँर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुम्हार'।

कोहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मिट्टी का बड़ा कूंडा। २–कपाल की आकृति का मिट्टी का बर्तन।

कोहान [संज्ञा पु.] (फा.) ऊंट की पीठ पर का कूबड़।

कोहाना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–रूठना। नाराज होना। २–क्रोध करना।

कोहिस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) पहाड़ी प्रदेश। पर्वतस्थली।

कोही [वि.] (हिं.) क्रोधी। गुस्सैल।

कौं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'को'।

कौंकिर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हीरे की कनी। २–कांच की किरच।

कौंकुम [संज्ञा पु.] (सं.) तीन पूंछ या चोटी वाले लाल रंग के पुच्छलतारे।

कौंच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार की बेल जिसमें सेम की सी फलियां लगती हैं, उसकी तरकारी बनाकर खाई जाती है। २–इस बेल की फली।

कौंची* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस की पतली टहनी।

कौंछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौंच'।

कौंतल [वि.] (सं.) कुंतल देश का।

कौंतिक [संज्ञा पु.] (सं.) भाले वाला। बरछा चलाने वाला।

कौंती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेणुका नाम का गंधद्रव्य।

कौंतेय [संज्ञा पु.] (सं.) १–युधिष्ठिर आदि कुंती के पुत्र। २–अर्जुन वृक्ष।

कौंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली की चमक।

कौंधना [क्रि. अ.] (हिं.) बिजली का चमकना।

कौंधनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करधनी।

कौंधा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली की चमक। कौंध।

कौंभ, कौंभसर्पि [संज्ञा पु.] (सं.) सौ बरस पुराना घी जो बहुत गुणकारी समझा जाता है

कौंर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

कौंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कांवरा'।

कौंरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पान की चौपाई डोली। कँवरी।

कौंल [संज्ञा पु.] देखो 'कमल'।

कौंली-हड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुरकुरी हड्डी।

कौंसलर [संज्ञा पु.] (अं.) परामर्शदाता। सलाह देने वाला।

कौंसिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सभा। परिषद।

कौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कौवा'।

कौआना* [क्रि. स.] (हिं.) १–भौचक्का होना। स्वप्न में अंड-बंड बकना।

कौआर* [संज्ञा पु.] (हिं.) कौओं का शब्द। कांव-कांव का शोर।

कौआल [संज्ञा पु.] (हिं.) कव्वाली गाने वाला।

कौच [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'कोच'।

कौचुमार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुरूप को सुन्दर बनाने की विद्या।

कौटिल्य [संज्ञा पु.] १–टेढ़ापन। २–कुटिलता। कपट। ३–चाणक्य का एक नाम।

कौटुंबिक, कौटुम्बिक [वि.] (सं.) १–कुटुम्ब सम्बन्धी। २–परिवार वाला।

कौड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बड़ी कौड़ी। २–जाड़े के दिनों में गड्ढे में जलाई हुई आग। ३–एक प्रकार की जंगली प्याज।

कौड़िया [वि.] (हिं.) १–कौड़ी के समान। २–कौड़ी के रंग का।

कौड़ियाला [वि.] (हिं.) नीला जिसमें कुछ गुलाबी की चमक हो। कोकई।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जहरीला साँप। एक पौधा जिसमें छोटे-छोटे फूल लगते हैं। ३–कौड़िल्ला पक्षी। ४–कृपण धनाढ्य।

कौड़ियाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जो ऊसर भूमि में होता है।

कौड़ियाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कौड़ियों में चुकाई जाने वाली मजदूरी।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] कौड़ियों पर काम करने वाली।

कौड़िल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) मछली पकड़कर खाने वाली एक चिड़िया। किल[illegible]ा।

कौड़िहाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौड़ियाही'।

कौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोंघे की तरह का एक समुद्री कीड़ा जो एक अस्थिकोश के भीतर रहता है। २-धन। द्रव्य। रुपया। पैसा। ३-वह कर जो सम्राट अपने अधीन राजाओं से लेता है। ४-आंख का ढेला। ५-गिलटी जो कांख या जांघ में होती है। ६-छोटी हड्डी जो छाती के नीचे बीच में होती है। ७-कटार की नोक।

कौड़ी का, कौड़ी या दो कौड़ी का, कौड़ी काम का नहीं-१-किसी भी दाम में अच्छा न होना। २-निकृष्ट।

कौड़ी का कर डालना-१-खराब कर देना। २-इज्जत खराब करना। *कौड़ी का बल न पड़ना*-तनिक भी हिसाब न छूटना। *कौड़ी के तीन-तीन होना*-१-बिलकुल सस्ते होना। २-बेकदर होना। *कौड़ी को न पूछना*-१-मुफत भी न लेना। २-बिलकुल तुच्छ समझना। *कौड़ी कोस दौड़ाना*-थोड़ी प्राप्ति के बदले में अधिक दूर तक जाना या ज्यादा परिश्रम करना। *कौड़ी-कौड़ी अदा करना, भरना, चुकाना*-सारा कर्जा दे देना। *कौड़ी-कौड़ी का मुहताज होना*-रुपये पैसे से बिलकुल खाली होना। *कौड़ी-कौड़ी जोड़ना*-बड़े परिश्रम से धन इकट्ठा करना।

कौड़ी-कौड़ी भर पाना-कुछ भी बाकी न रहना। सब वसूल कर लेना। *कौड़ी-कौड़ी लेना*-१-अपना एक पैसा भी न छोड़ना। २-दूसरे का सारा धन ले लेना। *कौड़ी पास न होना*-गरीबी होना। *कौड़ी फिरना*-जुए में किसी का दाव पड़ना।

कौड़ीगुड़गुड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़कों का एक खेल।

कौड़ीजगनमगन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कौड़ी गुड़गुड़'।

कौड़ीजूड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सिर का गहना।

कौड़ेना [संज्ञा पु.] (देश.) कसेरे का नक्काशी करने का औजार।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कौड़ियाली।

कौणिक [वि.] (सं.) जिसमें कोण या नोक हो। नुकीला।

कौणप [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-वासुकी का वंशज एक सप।

कौणपदंड,दण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्म।

कौतिग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कौतुक'।

कौतुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुतूहल। २-आश्चर्य। अचम्भा। ३-विनोद। दिल्लगी। ४-आनंद। प्रसन्नता। ५-खेल-तमाशा।

कौतुकिया [संज्ञा पुं] (हिं.) १-कौतुक करने वाला। २-विवाह-सम्बन्ध कराने वाला नाऊ, पुरोहित आदि।

कौतुकी [वि.] (सं.) १-कौतुक करने वाला। विनोदशील। २-विवाह-सम्बन्ध कराने वाला। ३-खेल-तमाशा करने वाला।

कौतूहल [संज्ञा पु.] (सं.) कुतूहल। कौतुक।

कौतूहल्य [संज्ञा पु.] (सं.) कुतूहल।

कौथ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कौन तिथि? २-क्या सम्बन्ध? क्या वास्ता?

कौथा+ [वि.] (हिं.) गणना में किस स्थान का

कौथि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौथ'।

कौथुम [संज्ञा पु.] (सं.) कौथुमी शाखा का अध्ययन करने वाला।

कौथुमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सामवेद की एक शाखा जिसका प्रचार कुथुम नामक ऋषि ने किया था।

कौदन [वि.] (फा.) कम समझ। नासमझ।

कौदालीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति। धोबी पिता और धोबिन माता से उत्पन्न।

कौद्रविक [संज्ञा पु.] (सं.) काला नमक।

कौधनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करधनी। कौंधनी

कौन [सर्व.] (हिं.) एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा अभिप्रेत वस्तु या व्यक्ति पूछी जाती है। विभक्ति लगने 'कौन' का रूप 'किस' हो जाता है। कैसा। किस प्रकार का।

कौनसा-कौन। *कौन किसका होता है*-कोई दूसरे की सहायता नहीं करता। *कौन होना*-१-क्या अधिकार या मतलब रखना। २-क्या सम्बन्ध होना।

कौनप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कौणप'।

कौपीन [संज्ञा पु.] (सं.) सन्यासियों आदि के पहनने की लंगोटी। चीर।

कौम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वर्ण। जाति। नस्ल।

कौमकुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक केतु तारा। २-रक्त। लहू।

कौमार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमार अवस्था। २-जन्म से १६ वर्ष तक की अवस्था (तंत्र मत से)। ३-कुमार।

कौमारभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) आयुर्वेद का एक ग्रन्थ जिसमें बालकों के लालन-पालन और चिकित्सा सम्बन्धी वर्णन है।

कौमारिक [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

कौमारिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) कुमारी का पुत्र। कानीन।

कौमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी पुरुष की पहली स्त्री। २-कार्तिकेय की शक्ति। ३-एक मातृ का नाम। ४-पार्वती। ५-वाराहीकंद।

कौमी [वि.] (अ.) १-कौम का। जातीय। २-राष्ट्रसंबंधी। राष्ट्रिय।

कौमुद [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकमास। कातिक।

कौमुदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ज्योत्सना। चांदनी। २-कार्तिकी पूर्णिमा। ३-कुमुदिनी। कोईं।

कौमुदीचार [संज्ञा पु.] (सं.) शरदपूर्णिमा।

कौमुदीजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर नामक पक्षी।

कौमुदीपति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

कौमोदकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णु की गदा।

कौमोदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णु की गदा।

कौर [संज्ञा पु.] (हिं.) उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। गस्सा। निवाला।

मुंह का कौर छीनना-किसी को मिलता हुआ अंश छीन लेना।

कौरना+ [क्रि. स.] (हिं.) थोड़ा भूनना। सेंकना।

कौरव [संज्ञा पु.] (सं.) कुरु राजा की संतति। [illegible] वंशज। [वि.] कुरु-सम्बन्धी।

कौरवपति [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्योधन। सुयोधन।

कौरव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौरव। कुरु-संतान। २-महाभारतकालीन एक नगर।

कौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्वार के दोनों ओर के पाख। द्वार का कोना। २-देखो 'कौड़ा'। ३-कुत्ते या अन्त्यज आदि को दिया जाने वाला भोजन।

कौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अँकवार। गोद। २-अंकवार भर कटे हुए अनाज के पौधे जो मजदूरों को मजदूरी में दिये जाते हैं। ३-[illegible] की फली।

कौरी भर मिलना-आलिंगनसहित मिलना।

कौलंज [संज्ञा पु.] (हिं.) बायसूल की पीड़ा।

कौल [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम कुल में उत्पन्न। २-वाममार्गी। ३-कमल। ग्रास। ४-[illegible] एक प्रकार का चलता गाना।

क़ौल [संज्ञा पु.] (अ.) १-कथन। उक्ति। बात। २-प्रतिज्ञा। वादा।

कौल करार-परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा। *कौल का पूरा, पक्का या धनी*-बात का सच्चा। *कौल तोड़ना*-किसी से की हुई प्रतिज्ञा छोड़ना। *कौल पर जमना*-बात कहकर उससे न हटना। *कौल से फिरना*-वायदा पूरा न करना।

कौलई [वि.] (हिं.) ललाई लिये पीला। नारंगी रंग का।

कौलदुमा [वि.] (हिं.) लम्बी कमल की पत्ती के समान पूंछ वाला।

कौला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कमला। संतरा। २-क्रोड़। गोद। ३-कोना।

[संज्ञा पु.] (देश) प्याला। कटोरा।

कौलिया [संज्ञा पु] (हिं.) छोटे बबूल का वृक्ष।

कौलेज

कौलेज [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'कालिज'।

कौल्य [वि.] (सं.) कुलीन। उत्तम कुल में उत्पन्न।

कौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर तथा चालाकी के लिये प्रसिद्ध है। वायस। काक। २–काइयां। बहुत धूर्त व्यक्ति। ३–छाजन की वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे लगाई जाती है। कौहा। ४–गले के अन्दर का मांस का टुकड़ा। घांटी। लंगर। ५–एक प्रकार की मछली। कौवा गुहार या कौवा रोर–१–बहुत अधिक बकबक। २–बहुत शोर। कौवा गुहार में पड़ना या फंसना–बहुत बोलने वालों के बीच में फंसना।

कौवाठोंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिसके फूल सफेद और नीले रंग के और आकार में कौवे की नाक के समान होते हैं। काकनासा।

कौवापरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत काली और बदसूरत स्त्री।

कौवी [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की चिड़िया। २–खजूर के आकार का एक वृक्ष जिसमें लाल फूलों का गुच्छा लगता है। २–कोवाठोंठी।

कौवाल [संज्ञा पु.] (अ.) कौवाली गाने वाला।

कौवाली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–एक प्रकार का अध्यात्मिक शिक्षा से परिपूर्ण गाना जो पीरों की कब्रों और सूफियों की मजलिसों में गाया जाता है। २–इस की धुन में गाई जाने वाली गजल।

कौबेर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर का उपासक।

कौबेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुबेर की शक्ति।

कौश [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुशद्वीप। २–रेशमी कपड़ा। ३–एक गोत्र।

कौशल [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी कार्य को भली-भांति करने का ढंग। कुशलता। निपुणता। एफिशिएन्सी। २–कौशल देश का निवस्सी।

कौशलबाध [संज्ञा पु.] (सं.) कार्यालयों अथवा राजकीय सेवा में उन्नति के मार्ग में वह बन्धन जो अपना कार्य निपुणता-पूर्वक करने से दूर होता है। एफिशिएन्सी-बार।

कौशलेय [संज्ञा पु.] (सं.) कौशल्या के पुत्र, रामचन्द्र।

कौशल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा दशरथ की पत्नी और श्रीराम की माता।

कौशांबी, कौशाम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बहुत प्राचीन नगर जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। भगवान बुद्ध भी कुछ समय समय तक यहाँ रहे थे और यहां एक मंदिर में उनकी चंदन की मूर्त्ति है। इस कारण यह स्थान बौद्धों का पवित्र तीर्थ है।

कौशिक [संज्ञा. पु.] (सं) १–इन्द्र। कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ३–विश्वामित्र। ४–रेशमी वस्त्र। ५–एक राग। ६–कोषाध्यक्ष। ७–घड़ियाल। मगर। ८–सर्प। ९–नेवला। १०–उल्लू पक्षी। ११—अथर्ववेद का एक सूत्र। १२–एक उप-पुराण का नाम।

कौशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पानी पीने का पात्र। कटोरा। गिलास। २–एक प्रकार की मदिरा।

कौशिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चंडिका। २–राजाकुशिक की पोती और ऋषिकमुनि की पत्नी। ३–कोसी नामक एक नदी। ४–एक रागिनी। काव्य में चार प्रकार की वृत्तियों में से पहली वृत्ति।

कौशिकी-कान्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कौशकी और कान्हड़ा के योग से बनने वाला एक संकर-राग।

कौशिल्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

कौशिल्या [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कौशल्या'।

कौशीधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) कोश में उत्पन्न होने वाला अन्न। जैसे–तिल।

कौशील [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्रधार। प्रधान नट।

कौशीलव [संज्ञा पु.] (सं.) खेल तमाशे का पेशा।

कौशेय [संज्ञा पु.] (सं.) रेशमी वस्त्र।

कौश्मांडी, कौश्माण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदों की ३४ पवित्र करने वाली ऋचाओं में से एक।

कौषिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कौशिक'। [वि.] (सं.) १–रेशम का बना। रेशमी। २–रेशम के समान चिकना और कोमल।

कौषिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–देखो 'कौशिकी'। २–काली के शरीर से उत्पन्न एक देवी।

कौषीतक [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण।

कौषीतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–ऋग्वेद की एक शाखा। २–ऋग्वेद के अन्तगत एक ब्राह्मण या उपनिषद्।

कौषेय [संज्ञा प.] (सं.) रेशमी कपड़ा। [वि.] रेशम का। रेशमी।

कौसल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कौशल'।

कौसल्या [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौशिल्या'।

कौसिक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कौशिक'।

कौसिया [संज्ञा पु.] (देश.) एक संकर राग।

कौसिला॥ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कौशल्या'।

कौसीद [वि.] (सं.) सूदखोर। ब्याज खाने वाला।

कौसुंभ, कौसुम्भ [संज्ञा.पु.] (सं.) १–जंगली कुसुम। २–एक प्रकार का साग।

कौसुरुविंद, कौसुरुविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जो दस रातों में समाप्त होत है।

कौस्तुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक रत्न जिसे विष्णु अपने हृदयस्थल पर धारण करते थे। २–तंत्र के समान एक मुद्रा।

कौह [संज्ञा पु.] (हिं.) अर्जुनवृक्ष।

कौहर॥ [संज्ञा पु.] (देश.) इन्द्रायन।

कौहा [संज्ञा पु.] (देश.) बड़ेर की आड़ में लगाई जाने वाली लकड़ी।

क्या [सर्व.] (हिं.) एक प्रश्नवाचक शब्द जो उपस्थित या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है। कौन सी बात? । कौन सी वस्तु?। [वि.] (हिं.) १–कितना। २–बहुत अधिक। ३–अपूर्व। विलक्षण। [क्रि. वि.] (हिं.) क्यों?। किसलिए?। क्या उखाड़ना–कुछ न कर सकना। क्या कहना–१–खूब किया, धन्य। २–कुछ नहीं। (व्यंग में)। क्या कुछ–सब कुछ। क्या किया–उचित न किया। क्या क्या न किया–बहुत सहायता की। कुछ कमी न की। क्या खूब–बहुत अच्छे। क्या चीज है–ना चीज है। तुच्छ है। क्या जाता है–कुछ हानि नहीं। क्या जाने?–कुछ नहीं जानता। क्या पड़ी है–कोई आवश्यकता नहीं। क्या पूछना है–बहुत अच्छा हुआ। क्या मुंह दिखाओगे–लज्जित होना पड़ेगा। क्या उत्तर दोगे। क्या समझना–कुछ न समझना। क्या हुआ–कुछ चिंता नहीं। कोई हानि नहीं। क्या से क्या हो गया–बिलकुल बदल गया।

क्यार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ का थाला या थांवला।

क्यारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कियारी'।

क्यों [क्रि. वि.] (हिं.) १–किसी बात के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस वास्ते? किस लिये? २–किस भांति। किस प्रकार? कैसे? क्यों कर–कैसे नहीं। क्यों नहीं–१–ऐसा ही है। २–हां, अवश्य। ३–ऐसा नहीं है (व्यंग) ४–ऐसा नहीं कर सकता (व्यंग)। क्यों न हो–१–वहवा! क्या खूब। धन्य हो। २–छीः (व्यंग)।

क्योलारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कोइलारी'

क्रंदन, कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) रोना। विलाप।

क्रकच [संज्ञा पु.] (सं.) १–ज्योतिष शास्त्र का एक अशुभ योग। २–आरा। करवत। ३–एक प्रकार का बाजा। ४–करील का वृक्ष। ५–वातजनित सन्निपात।

क्रकचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी। केवड़ा।

क्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) १–करील का वृक्ष। २–किलकिला नामक एक चिड़िया। ३–आरा। करवत। ४–केवड़ा। ४–दरिद्र।

क्रकराट [संज्ञा पु.] (सं.) भारद्वाज पक्षी।

क्रतक [संज्ञा पु.] (सं.) वासुदेव के पुत्र का नाम।

क्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-निश्चय। संकल्प। २-इच्छा। अभिलाषा। ३-विवेक। ४-जीव। ५-इन्द्रिय। ६-विष्णु। ७-आषाढ़ मास। ८-यज्ञ।

क्रतुध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करने वाले शिव।

क्रतुपशु [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा। अश्व।

क्रतु-पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यज्ञपुरुष'।

क्रतुभुक [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में देवताओं को अर्पण किये जाने वाला पदार्थ।

क्रतुभुज् [संज्ञा पु.] (सं.) देवता। सुर।

क्रतुराज [संज्ञा पु.] (सं.) राजसूय-यज्ञ।

क्रतुविक्रयी [संज्ञा पु.] (सं.) धन लेकर यज्ञ का फल बेचने वाला व्यक्ति।

क्रतुस्थला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यजुर्वेदोक्त एक अप्सरा।

क्रथनक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सफेद अगर। २-ऊंट।

क्रप [संज्ञा पु.] (सं.) १-दयालु। २-कृपाचार्य।

क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर रखने अथवा डग भरने की क्रिया। २-सिलसिला। तरतीब। ३-उचित रूप से कार्य करने का ढंग। ४-वेदपाठ की प्रणाली। ५-एक अलंकार जिसमें किसी बात का वर्णन क्रम से किया जाता है। इसे यथा संख्या अलंकार भी कहते हैं। *क्रम से*-क्रमानुसार। *क्रम-क्रम करके*-धीरे-धीरे। शनैः-शनैः। *क्रम से, क्रम-क्रम से*-धीरे-धीरे।

क्रमक [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम का अध्ययन करने वाला व्यक्ति।

क्रमज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गणित ज्योतिष के अनुसार क्रांतिज्या।

क्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर। पांव। २-पारे के अठारह संस्कारों में से एक।

क्रमणीय [वि.] (सं.) आक्रमण करने योग्य।

क्रमनासा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कर्मनाशा'।

क्रमपद [संज्ञा पु.] (सं.) वेदपाठ का एक ढंग।

क्रमपाठ [संज्ञा पु.] (सं.) वेदों के पाठ का एक प्रकार।

क्रमपूरक [संज्ञा पु.] (सं.) मौलसिरी का पेड़।

क्रमप्राप्त [वि.] (सं.) क्रमानुसार या सिलसिले से मिला हुआ।

क्रमभंग, क्रमभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नियम का टूटना। सिलसिला खतम होना।

क्रमशः [क्रि. वि.] (सं.) १-क्रम से। सिलसिलेवार। २-धीरे-धीरे। थोड़ा-थोड़ा करके।

क्रम-संख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रम से लिखी जाने वाली संख्या। सीरियल नम्बर।

क्रमसंन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) वह संन्यास जो क्रम से ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के पश्चात् लिया जाय।

क्रमांक, क्रमाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) एक क्रम से लिखे जाने वाले नामों, बातों, वस्तुओं आदि से पूर्व क्रमानुसार लिखी जाने वाली संख्या। *सीरियल नम्बर*।

क्रमागत [वि.] (सं.) १-जो क्रम-क्रम से आया या बना हो। २-क्रम से बराबर होता आया हो। परम्परागत। ३-जिसका क्रम न टूटे। धारावाहिक।

क्रमात् [क्रि. वि.] (सं.) देखो 'क्रमानुसार'।

क्रमानुकूल [क्रि. वि.] (सं.) क्रम के अनुसार। क्रम से। सिलसिलेवार।

क्रमानुसार [क्रि. वि.] (सं.) क्रम या सिलसिलेवार। क्रमशः।

क्रमान्वय [क्रि. वि.] (सं.) क्रम से एक के बाद एक।

क्रमि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'कृमि'।

क्रमिक [क्रि. वि.] (सं.) १-क्रमागत। क्रमयुक्त। ३-परम्परागत।

क्रमुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुपारी। २-नागरमोथा। ३-कपास का बिनौला। ४-देवदारु। ५-शहतूत। ६-एक प्राचीन जनपद का नाम।

क्रमेतर [वि.] (सं.) क्रम से भिन्न।

क्रमेल, क्रमेलक [संज्ञा पु.] (सं.) उष्ट्र। ऊंट।

क्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मोल लेने या खरीदने का काम।

क्रयकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) खरीददार। माल लेने वाला।

क्रयविक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) चीजें खरीदने और बेचने का कार्य। व्यापार। रोजगार।

क्रयविक्रयानुशय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'क्रीतानुशय'।

क्रय-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी समाज अथवा राष्ट्र का वह आर्थिक बल या सामर्थ्य जिससे वह जीवन निर्वाह के निमित्त आवश्यक वस्तुएं खरीदता है। *परचेजिंग-पावर*।

क्रयारोह [संज्ञा पु.] (सं.) क्रय-विक्रय का स्थान। हाट। बाजार। मंडी।

क्रयी [संज्ञा पु.] (सं.) खरीदने वाला। मोल लेने वाला।

क्रय्य [वि.] (सं.) बेचने के निमित्त रखा हुआ। जो वस्तु बेचने के निमित्त हो।

क्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) मांस। गोश्त।

क्रव्याद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांस खाने वाला। चिता की आग।

क्रांत, क्रान्त [वि.] (सं.) १-दबा या ढका हुआ। जिस पर आक्रमण हुआ हो। ३-दबाया या दबोचा हुआ। अभिभूत। ४-अपनी सीमा, मर्यादा आदि से आगे बढ़ा हुआ।

क्रांतदर्शी, क्रान्तदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर। २-त्रिकालदर्शी। सर्वज्ञ।

क्रांति, क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाल। २-खगोल में वह कल्पित वृत्त पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता पड़ता है। ३-वह बहुत भारी परिवर्त्तन जिसके द्वारा किसी स्थिति रूप बिलकुल बदलकर और जाय। उलटफेर। रिवोल्यूशन। क्रांति।

क्रांतिक्षेत्र, क्रान्तिक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) गति जानने के लिए खींचा हुआ। वह स्थान जहां कुछ उलट-फेर हो।

क्रांतिज्या, क्रान्तिज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृत्त क्षेत्र स्थिति अक्षक्षेत्र का एक

क्रांतिपात, क्रान्तिपात [संज्ञा पु.] (सं.) रेखा और अयनमंडल के मिलाप जहां पर पृथ्वी के आने से दिन-रात होते हैं।

क्रांतिभाग, क्रान्तिभाग [संज्ञा पु.] (सं.) लीय नाड़ी मंडल से क्रान्ति-मंडल बिंदु की दूरी।

क्रांतिमंडल, क्रान्तिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पित वृत्त जिसपर पृथ्वी के चारों घूमता हुआ जान पड़ता है।

क्रांतिवलय, क्रान्तिवलय [संज्ञा पु.] (सं.) 'क्रांति-मण्डल'।

क्रांतिवृत्त, क्रान्तिवृत्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) का मार्ग।

क्रांतिसाम्य, क्रान्तिसाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) तिष में ग्रहों की तुल्य क्रांति।

क्रांतिसूत्र, क्रान्तिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्र को स्पर्श करने वाला क्रांतिसूत्र एक योग।

क्राइस्ट [संज्ञापु.] (अं.) ईसामसीह।

क्राउन [संज्ञा पु.] (अं.) १-राजमुकुट। २-१५ इंच चौड़ी और २० इंच लम्बी के कागज की एक नाप।

क्राथ [संज्ञा पु.] (सं.) हिंसा करना।

क्रिकेट [संज्ञा पु.] (अं.) ग्यारह-ग्यारह दलों में होने वाला एक गेंद-बल्ले का रेजी खेल।

क्रिचयन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चांद्रायण।

क्रिमि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कीड़ी। कीट। का एक रोग।

क्रिमिज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगर। २-

क्रिमिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाह। लाख।

क्रिमिभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का

क्रिय [संज्ञा पु.] मेषराशि।

क्रियमाण [वि.] (सं.) १-वह जो किया जा रहा हो। २-उस समय किये जाने वाले कर्म जिनका फल आगे मिलेगा।

क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी कार्य का होना या किया जाना। कर्म। २-प्रयत्न । चेष्टा। हिलना। डोलना। अनुष्ठान । आरम्भ। ४-व्याकरण में किसी व्याकरण के होने या करने का अर्थसूचक शब्द। ५-स्नान पूजन आदि नित्यकर्म। ६-मृतक के श्राद्ध आदि कर्म।

क्रियाकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अन्त्येष्टक्रिया।

क्रियाकल्प [संज्ञा पु.] चिकित्सा का नियम।

क्रियाकांड [संज्ञा पु.] (सं.) वेदशास्त्र जिसमें यज्ञादि का विधान हो।

क्रियाकार [संज्ञा पु.] (सं.) काम करने वाला।

क्रियाचतुर [संज्ञा पु.] (सं.) शृङ्गाररस में नायक का एक भेद।

[वि.] अपना काम पूर्ण करने में निपुण।

क्रियातंत्र, क्रियातन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) काम में लगा हुआ व्यक्ति।

क्रियातिपत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक काव्यालङ्कार जिसमें प्रकृत से भिन्न कल्पना करके किसी विषय का वर्णन किया जाय।

क्रियातियोग [[illegible] पु.] (सं.) वमन आदि अति योग।

क्रियात्मक [वि.] (सं.) १-क्रिया-सम्बन्धी। २-क्रिया या कार्यरूप में परिणत हुआ हुआ। जो सचमुच करके दिखलाया गया हो।

क्रियाद्वेषी [संज्ञा पु.] (सं.) १-विवाद में दलील को न मानने वाला। २-कर्मकांड से द्वेष रखने वाला।

क्रियान्वित [वि.] (सं.) सत्कर्म करने वाला।

क्रियानिष्ठ [वि.] (सं.) संध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करने वाला।

क्रियापंथ, क्रियापन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मकांड।

क्रियापथ [संज्ञा पु.] (स.) चिकित्सा का नियम।

क्रियापद [संज्ञा पु.] (सं.) क्रिया का सिद्ध रूप जैसे-लिखता है।

क्रियाफल [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञादि का पुण्य और पाप।

क्रियायोग [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की पूजा करना तथा मन्दिर आदि बनवाना।

क्रियार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि वाक्य।

क्रियालक्षणयोग [संज्ञा पु.] (सं.) जप, ध्यान आदि के द्वारा आत्मा, परमात्मा का सम्बन्ध स्थापित करना।

क्रियावसन्न [संज्ञा पु.] (सं.) साक्षी या प्रमाण के अभाव में हारने वाला वादी।

क्रियावाचक [संज्ञा पु.] (सं.) जिससे अर्थ क्रिया है।

क्रियावान् [वि.] (सं.) कर्मप्रवृत्त। कामकाजी। कर्मनिष्ठ।

क्रियाविदग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो नायक पर अपना भाव क्रिया द्वारा प्रकट करे।

क्रियाविशेषण [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह शब्द जिसके द्वारा क्रिया के किसी विशेष काल, भाव अथवा रीति आदि का बोध हो। जैसे—अब, तब, यहां, वहां, क्रमशः, अचानक आदि।

क्रियाशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईश्वर की वह शक्ति जिससे वह ब्रह्मांड की सृष्टि करता है

क्रियाशील [वि.] (सं.) कर्मठ । कर्मनिष्ठ । सक्रिय।

क्रियाशून्य [वि.] (सं.) कर्महीन।

क्रिश्चयन [संज्ञा पु.] (अं.) ईसाई। किरानी।

क्रिस्टल [संज्ञा पु.] (अं.) स्फटिक। बिल्लौर।

क्रिस्टान [संज्ञा पु.] देखो 'क्रिश्चयन'।

क्रिस्तान [संज्ञा पु.] देखो 'क्रिश्चयन'।

क्रिस्तानी [वि.] (हिं.) ईसाइयों का । ईसाई मत का।

क्रीट*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'किरीट'।

क्रीड़क [वि.] (सं.) क्रीड़ा करने वाला। खिलाड़ी।

क्रीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रीड़ा करना। खेलना कूदना। २-आमोद-प्रमोद।

क्रीड़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रीड़ा करना। खेलना-कूदना।

क्रीड़नीय [वि.] (सं) खेलने में सहायता देने वाला।

क्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खेलकूद । आमोद-प्रमोद। कल्लोल। २-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। ३-एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण और एक गुरु होता है।

क्रीड़ा-कानन [संज्ञा पु.] (सं.) खेलकूद के उपयोग में आने वाला बगीचा।

क्रीड़ा-कौतुक [संज्ञा पु.] (सं.) खेल-तमाशा।

क्रीड़ा-गृह [संज्ञा पु.] (सं.) अवकाश के समय आमोद-प्रमोद के लिये इकट्ठा होने का स्थान या घर। क्लब।

क्रीड़ाचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) छः गण का एक वृत्त।

क्रीड़ावन [संज्ञा पु.] (सं.) पाईं बाग । नजर भाग।

क्रीड़ारत्न [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन। रतिक्रिया।

क्रीड़ारथ [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों का रथ।

क्रीड़ास्थल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ किसी ने क्रीड़ाएं की हों। २-वह स्थान जहां नाना प्रकार के खेल होते हैं। प्ले-ग्राउण्ड।

क्रीत [वि.] (सं.) मोल लिया हुआ। खरीदा हुआ।

[संज्ञा पु.] किसी से मोल लेकर बनाया हुआ। जैसे—क्रीतदास, क्रीतपुत्र।

*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यश। कीर्ति। सुनाम।

क्रीतक [संज्ञा पु.] (सं.) क्रीतपुत्र । माता पिता को धन देकर खरीदा हुआ पुत्र । खरीदा हुआ पुत्र।

क्रीतानुशय [संज्ञा पु.] (सं.) जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को खरीदने के उपरांत, नियम विरुद्ध उसे फेरना चाहता है तो उस समय जो विवाद होता है उसे क्रीतानुशय कहते हैं

क्रुद्ध [वि.] (सं.) क्रोध से भरा हुआ।

क्रुमुक [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी।

क्रुश्वा [संज्ञा पु.] (सं.) सियार। गीदड़।

क्रुष्ट [वि.] (सं.) १-बुलाया हुआ। आवाज दिया हुआ। २-शाप दिया हुआ।

क्रूर [वि.] (सं.) १-दूसरे को कष्ट पहुँचाने वाला। पर-पीड़क। २-निर्दय। निष्ठुर। ३-कठिन। ४-तीक्ष्ण। तीखा। ५-नीच बुरा। खराब।

क्रूरकर्मा [वि.] (सं.) निर्दयता का काम करने वाला।

क्रूरकोष्ठ [वि.] (सं.) जिसका पेट या कोठा बहुत कड़ा हो। दस्तावर। दवाओं से भी साफ न होने वाला (पेट)।

क्रूरगंध, क्रूरगन्ध [संज्ञा पु.](सं.) गंधक।

क्रूरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निष्ठुरता। निर्दयता। २-दुष्टता।

क्रूरदंती, क्रूरदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम।

क्रूरदृक् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनिग्रह। २-मंगल-ग्रह। दुष्ट। खल।

क्रूरस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) कर्कश या कठोर शब्द।

क्रूरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौड़ी। [वि.] [स्त्री.प्र.] क्रूर स्वभाव वाली।

क्रूरात्मा [वि.] (सं.) दुष्ट प्रकृति। बुरे स्वभाव का।

क्रूराशय [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा आशय या मतलब।

क्रूर्च [संज्ञा पु.] (सं.) दाढ़ी।

क्रूस [संज्ञा पु.] (सं.) ईसाइयों का एक धर्म चिह्न जो इस सूली का सूचक है जिस पर ईसा मसीह चढ़ाये गये थे।

क्रेता [संज्ञा पु.] (सं) खरीदने वाला।

क्रोड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आलिंगन के समय दोनों बाहुओं के बीच का भाग। २-गोद। अँकवार।

क्रोड़चूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी गोरखमुंडी।

क्रोड़पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो किसी पुस्तक अथवा समाचार पत्र में उसकी पूर्त्ति के लिए ऊपर से लगाया जाय। अतिरिक्त पत्र। पूरक। जमीमा।

क्रोड़पर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भटकटैया। कटेली।

क्रोड़मल्लक [संज्ञापु.] (सं.) भिक्षुक। भिखारी।

क्रोड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंकवार। गोद।

क्रोड़ीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) गैंडा।

क्रोड़ेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोथा।

क्रोध [संज्ञा पु.] (सं.) चित्तवृत्ति का वह उग्रभाव जो कष्ट या हानि पहुँचाने वाले अथवा अनुचित कार्य करने वाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।

क्रोधज [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध से उत्पन्न, मोह।

क्रोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोप करने वाला। क्रोधी। २-कौशिक एक पुत्र का नाम। ३-तंत्रोक्त एक भैरव।

क्रोधनीय [वि.] (सं.) गुस्सा दिलाने वाला।

क्रोधभवन [संज्ञा पु.] (सं.) कोपभवन।

क्रोधवंत, क्रोधवन्त [वि.] (हिं.) गुस्से से भरा हुआ। कुपित।

क्रोधवश [क्रि. वि.] (हिं.) क्रोध में। क्रोध के कारण से।

क्रोधवशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष प्रजापति की कन्या।

क्रोधहा [वि.] (सं.) कोप मिटाने वाला।

क्रोधान्वित [वि.] (सं.) क्रोधयुक्त। नाराज।

क्रोधालु [वि.] (सं.) क्रोधी।

क्रोधित [वि.] (सं.) क्रुद्ध। नाराज। कुपित।

क्रोधी [वि.] (सं.) क्रोध करने वाला। गुस्सेवर।

क्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोस। २-रुलाई। ३-आह्वान। बुलावा।

क्रोशताल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा जिसे धक्का कहते हैं।

क्रोष्टशीर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वातरोग जिससे घुटनों में पीड़ा और सूजन होती है।

क्रोष्टु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सियार। गीदड़। २-एक यदुवंशी राजा का नाम।

क्रोष्टशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'क्रोष्टशीर्ष'।

क्रौंच, क्रौञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) १-करांकुल नामक पक्षी। २-हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत का नाम। ३-पुराणानुसार सातद्वीपों में से एक। ४-एक प्रकार का अस्त्र।

क्रौंचपदा, क्रौञ्चपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (भ+म स+भ+न+न+न+न) होता है।

क्रौंचपदी, क्रौञ्चपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

क्रौंचरंध्र, क्रौञ्चरन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत की एक घाटी का नाम।

क्रौंचारुण, क्रौञ्चारुण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की व्यूहरचना।

क्लंद, क्लन्द [संज्ञा पु.] (सं.) रोदन। रुलाई।

क्लब [संज्ञा पु.] (अं.) सार्वजनिक विषयों पर विचार करने अथवा आमोद के निमित्त संगठित की हुई कुछ लोगों की समिति।

क्लम [संज्ञा पु.] (सं.) खेद। सुस्ती।

क्लमथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिश्रम। मिहनत। २-शिथिलता।

क्लर्क [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्यालय का वह कर्मचारी जो पत्र व्यवहार करने, नकल करने, तथा हिसाब आदि का कार्य करता हो।

क्लांत, क्लान्त [वि.] (सं.) थका हुआ। श्रान्त

क्लांति, क्लान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परिश्रम। २-थकावट।

क्लाक [संज्ञा पु.] (अं.) लंगर के सहारे चलने वाली बड़ी घड़ी।

क्लारनेट [संज्ञा पु.] (अं.) मुँह से बजाया जाने वाला एक प्रकार का अंगरेजी बाजा।

क्लारेट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक विलायती शराब

क्लास [संज्ञा पु.] (अं.) कक्षा। श्रेणी। जमाअत

क्लिप [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी वस्तु को पकड़ रखने की कमानीदार चिमटी।

क्लिशित [वि.] (सं.) कष्ट में पड़ा हुआ।

क्लिष्ट [वि.] (सं.) १-दुःख से पीड़ित। दुखी। क्लेशयुक्त। २-कठिन। मुशकिल। ३-बेमेल। या पूर्वापर विरुद्ध (बात)। ४-जिसका अर्थ कठिनता से निकले।

क्लिष्टवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का एक रोग

क्लिष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्लिष्ट होने का भाव। २-देखो 'क्लिष्टत्व'।

क्लिष्टत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-कठिनता। कठिनाई। २-अलंकार-शास्त्र के अनुसार काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने में कठिनाई हो।

क्लिष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आत्मा को कष्ट पहुँचाने वाली चित्तवृत्तियां।

क्लीत [संज्ञा पु.] (सं.) मल, मूत्र और सड़ी लाश में पड़ने वाले कीड़े।

क्लीतकिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का पेड़।

क्लीब [वि.] (सं.) [पुं. प्र.] १-नपुंसक। नामर्द २-डरपोक। कायर। कमहिम्मत।

क्लीबता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नामर्दी। नपुंसकता।

क्लीबत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नपुंसकता। हिजड़ापन। नामर्दी।

क्लेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीलापन। आर्द्रता। २-पसीना।

क्लेदक [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की दस प्रकार अग्नियों में से एक।
[वि.] पसीना लाने वाला।

क्लेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर की पांच की श्लेष्माओं में से एक। २-पसीना का कार्य।

क्लेदु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्र। २-

क्लेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुःख। कष्ट। व्यथा। वेदना। ३-लड़ाई। झगड़ा।

क्लेशकारी [वि.] (सं.) कष्ट देने वाला।

क्लेशित [वि.] (सं.) दुःखित। पीड़ित।

क्लैव्य [संज्ञा पु.] (सं.) नपुंसकता।

क्लोम [संज्ञा पु.] (सं.) दाहिनी ओर फुफ्फुस।

क्लोरोफार्म [संज्ञा पु.] (अं.) एक गंध वाली औषधि जिससे रोगी को किया जाता है।
क्लोरोफार्म देना-क्लोरोफार्म सुंघाना।

क्वचित् [क्रि. वि.] (सं.) कोई ही। कोई। बहुत कम।

क्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीणा का शब्द। घुघरू का शब्द।

क्वणन [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। आवाज।

क्वणित [वि.] (सं.) १-शब्द करता हुआ। गुंजार करता हुआ। ३-बजता हुआ।

क्वथन [संज्ञा पु.] (सं.) काढ़ा बनाने की

क्वथित [वि.] (सं.) पकाया हुआ।

क्वथिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कढ़ी। से बनने वाला आसव।

क्वाँचर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) काम करते जाने वाला बैल।
[वि.] दुर्बल। कमजोर।

क्वारंटाइन [संज्ञा पु.] (अं.) रोग का बचाने के लिये रेल या जहाज के को कुछ समय के लिए किसी निर्धारित पर ठहराना।

क्वाँर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुआर'।

क्वाँरा [वि.] (हिं.) देखो 'क्वारा'।

क्वाँरापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्वारपन'।

क्वाथ [संज्ञा पु.] (सं.) औषधियों को उबालकर गाढ़ा किया हुआ रस। जोशांदा।

क्वाथोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) रसौत।

क्वारछल [संज्ञा पु.] (हिं.) क्वारापन।
क्वारछल उतारना-प्रथम समागम करना।

क्वाना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्वार'।

क्वारपत [संज्ञा पु.] देखो 'क्वारपन'।

क्वारपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अविवाहित

का भाव। कुमारपन।

[वि.] (हिं) जिसका विवाह न हुआ हो। बिना ब्याहा।

[संज्ञा पु] (हिं) देखो 'क्वारपन'।

मास्टर [सज्ञा पु.] (अं.) रसद का प्रबंध करने वाला एक फौजी अफसर।

[वाक्य] (सं) तू कहां है? तू किस जगह पर है?

[संज्ञा पु.] (अ.) कुनैन।

[संज्ञा पु.] (अं.) पर की कलम।

[संज्ञा स्त्री.] (अ.) महारानी।

* [संज्ञा पु.] देखो 'कोयला'।

री [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कोइलारी'।

व्य, क्षन्तव्य [वि.] (सं.) क्षमा करने योग्य।

ता, क्षन्ता [वि.] (सं.) क्षमाशील। क्षमा करने वाला।

क्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १–समय या काल का छोटा भाग। २–काल। ३–अवसर। मौका। ४–समय। वक्त। ५–उत्सव। क्षणमात्र–थोड़ी देर।

क्षणक्षण [अव्य.] (सं.) बार-बार। छिन-छिन।

क्षणद [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल। २–ज्योतिषी। ३–वह जिसे रात को दिखाई न देता हो।

क्षणदा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–रात। रात्रि। २–हल्दी।

क्षणदाकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

क्षणद्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युति। बिजली।

क्षणप्रकाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत। बिजली

क्षणप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली। विद्युत।

क्षणभंग, क्षणभङ्ग [वि.] (सं.) क्षणभंगुर। क्षणभर में नाश होने वाला।

क्षणभंगुर, क्षणभङ्गुर [वि.] (सं.) १–क्षणभर में नाश होने वाला। २–अनित्य।

क्षणविध्वंसी [वि] (सं.) १–क्षणिक। क्षणभंगुर। २–अनित्य।

क्षणिक [वि.] (सं.) १–एक क्षण रहने वाला। क्षणभंगुर। २–अनित्य। [संज्ञा पु.] क्षणिकवाद।

क्षणिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षणभर रहने का भाव। क्षणभंगुरता।

क्षणिकवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह मत या सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु को उसकी उत्पत्ति से दूसरे क्षण में उसे नष्ट हो जाने वाला मानते हैं (बौद्ध-मत)।

क्षणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली। विद्युत।

क्षणिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

क्षती [वि.] (सं.) विश्रांत। थका हुआ।

क्षणेक* [क्रि. वि.] (हिं.) क्षणभर। बहुत थोड़ी देर।

क्षत [वि.] (सं.) १–घाव लगा हुआ। पीड़ित। २–घिसा हुआ। [संज्ञा पु.] १–घाव। जख्म। २–व्रण। फोड़ा। ३–मारना या काटना। ४–क्षति या अघात पहुँचाना।

क्षतघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) कुकरौंधा।

क्षतघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाख। लाह।

क्षतज [वि.] (सं.) १–क्षत से उत्पन्न। २–लाल। सुर्ख। [संज्ञा पु.] १–रक्त। खून। २–मवाद। पीव।

क्षतयोनि [वि.] (सं.) वह योनि जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

क्षतविक्षत [वि.] (सं.) जिसे बहुत चोटें लगी हों। घायल। लोहूलुहान।

क्षतव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) चोट लगने से बना घाव।

क्षतव्रत [वि.] (सं.) जिसका नियम भंग हो गया हो।

क्षतशौच [संज्ञा पु.] (सं.) घायल की छूत।

क्षतहर [संज्ञा पु.] (सं.) अगर का पेड़।

क्षति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हानि। नुकसान। २–क्षय। नाश। ३–किसी को किसी काम में होने वाला घाटा या नुकसान। डैमेज।

क्षतिपूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घाटा या नुकसान पूरा करने का भाव।

क्षतिपूर्ति-बिल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बिल या विधेयक जो किसी प्रकार की क्षति, हानि, कमी या नुकसान को पूरा करने के लिए हो। *बिल आफ इन्डैम्निटि।*

क्षतोदर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उदर या पेट का रोग।

क्षतोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त। खून। लहू।

क्षत्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १–द्वारपाल। दरबान। २–सारथी।

क्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–बल। २–राष्ट्र। ३–धन। ४–शरीर। ५–जल। ६–तगर का पेड़। ७–क्षत्रिय।

क्षत्रकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियोचित कर्म। क्षत्रियों का काम।

क्षत्रधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों का अवश्य पालनीय धर्म।

क्षत्रधर्मा [वि.] (सं.) १–क्षत्रधर्म का पालन करने वाला। २–वीर। योद्धा।

क्षत्रधृति [संज्ञा पु.] (सं.) श्रावण पूर्णिमा को किया जाने वाला एक यज्ञ।

क्षत्रप [संज्ञा पु.] (सं.) सौराष्ट्र का एक प्राचीन राजवंश।

क्षत्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों का पालक राजा।

क्षत्रबंधु, बन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) नाममात्र का क्षत्रिय। कर्त्तव्यरहित क्षत्रिय।

क्षत्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्व वेदोक्त राजयोग विशेष।

क्षत्रवर्धन [वि.] (सं.) धन या बल बढ़ाने वाला।

क्षत्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षत्रियों की विद्या।

क्षत्रवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मुचकुंद का पेड़।

क्षत्रवृद्ध, क्षत्रवृद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) तेरहवें मनु के पुत्र का नाम।

क्षत्रवेद [संज्ञा पु.] (सं.) धनुर्वेद।

क्षत्रसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यज्ञादि जिसे केवल क्षत्रिय ही कर सकते हों। जैसे–अश्वमेघ यज्ञ।

क्षत्रांतक, क्षत्रान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

क्षत्रिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

क्षत्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १–हिन्दुओं के चार वर्णों में दूसरा। २–इस वर्ण का पुरुष। ३–राजा। ४–बल शक्ति।

क्षत्रिया [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्री की स्त्री।

क्षत्रियाणी [संज्ञा स्त्री.] क्षत्री की स्त्री।

क्षत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षत्रिय'।

क्षदन [संज्ञा पु.] (सं.) दांत।

क्षपणक [संज्ञा पु.] (सं.) १–नंगा रहने वाला जैन साधु। २–बौद्धभिक्षु।
[वि.] (सं.) निर्लज्ज

क्षपांत, क्षपान्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। भोर।

क्षपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–रात। रात्रि। हल्दी।

क्षपाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा। कपूर।

क्षपाचर [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर। राक्षस।

क्षपाचरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निशाचरी। राक्षसी। डायन।

क्षपाट [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

क्षपानाथ [संज्ञा पु.] (सं) १–चन्द्रमा। २–कपूर।

क्षपापति [संज्ञा पु.] (सं) १–चन्द्रमा। २–कपूर।

क्षम [वि.] (सं.) शक्त। योग्य। समर्थ। उपयुक्त।
[संज्ञा पु.] (सं.) शक्ति। बल।

क्षमणीय [वि.] (सं.) क्षमा करने योग्य।

क्षमता [संज्ञा पु.] (सं.) योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति।

क्षमताशाली [वि.] (सं.) सुयोग्य। समर्थ। प्रतियुक्त। शक्त।

क्षमना* [क्रि. स.] (हिं.) क्षमा करना। माफ करना।

क्षमनीय* [वि] (हिं) क्षमणीय। क्षमा करने योग्य।

क्षमवाना* [क्रि. (हिं.) क्षमा कराना। माफ कराना।

क्षमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चित्त की एक प्रकार की वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाया हुआ कष्ट सह लेता है और उसके प्रतिकार

अथवा दंड की अभिलाषा नहीं रखता। क्षांति। माफी। २-सहिष्णुता। सहन-शीलता। ३-पृथ्वी। दुर्गा।

क्षमाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षमा करना।

क्षमादंश [संज्ञा पु.] (सं.) सहजन का पेड़।

क्षमाना* [क्रि. स.] (सं.) क्षमा कराना। माफ कराना।

क्षमापन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षमा करने का काम। माफी। २-माफ कराने का भाव।

क्षमापन [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षमा करने का भाव।

क्षमावान् [वि.] (सं.) १-क्षमा करने वाला। २-सहनशील। सहिष्णु। गमखोर।

क्षमाशील [वि.] (सं.) १-क्षमा करने वाला। क्षमावान्। २-शांतप्रकृति।

क्षमाष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर्दश ताल का एक भेद (संगीत)।

क्षमितव्य [वि.] (सं.) क्षमा करने योग्य।

क्षमी [वि.] (सं.) १-क्षमाशील। क्षमावान्। २-शांतप्रकृति। ३-समर्थ। सशक्त।

क्षम्य [वि.] (सं.) जो क्षमा किया जाय। क्षंतव्य।

क्षयंकर, क्षयङ्कर [वि.] (सं.) नाश करने वाला। नाशक।

क्षय [संज्ञा पु .] (सं.) १-धीरे-धीरे घटना। ह्रास। अपचय। २-नाश। ३-क्षयी नामक एक रोग। ४-अंत। समाप्ति।

क्षयकर [वि.] (सं.) नाश करने वाला। पदार्थों आदि को धीरे-धीरे खाजाने वाला।

क्षयकास [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष्मा या क्षयी रोग में होने वाली खांसी।

क्षयतरु [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल।

क्षयथु [संज्ञा पु.] (सं.) खांसी। कास।

क्षयनाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवंती या डोडी का पेड़।

क्षयपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णपक्ष। अंधेरापक्ष।

क्षय-मास [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दिनों में पड़ने वाला एक चांद्रमास जिसमें दो संक्रांतियां होती हैं। और जिसके तीन मास पूव तथा तीन मास पश्चात् एक-एक अधिमास पड़ता है।

क्षयवान [वि.] (सं.) नाशवान्।

क्षयवायु [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकाल की वायु।

क्षयित [वि.] (सं.) बिगाड़ा या नाश किया हुआ।

क्षयित्व [संज्ञा पु.] (सं.) नाश। बरबादी।

क्षयिष्णु [वि.] (सं.) क्षयशील। नष्ट होने वाला।

क्षयी [वि.] (सं.) १-क्षीण होने वाला। नष्ट होने वाला। २-जिसे क्षय रोग हो। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षयरोग। तपेदिक। यक्ष्मा। [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

क्षय्य [वि.] (सं.) नष्ट किये जाने योग्य। जिसका क्षय हो सकें।

क्षर [वि.] (सं.) नाशवान्। नष्ट होने वाला। [संज्ञा पु.] १-जल। २-मेघ। ३-जीवात्मा। ४-शरीर। ५-अज्ञान।

क्षरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रस-रस कर चूना। स्रवण। रसना। २-क्षीण होना।

क्षरपत्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) क्षवपत्रा।

क्षरित [वि.] (सं.) चुआया हुआ। टपकाया हुआ

क्षरी [संज्ञा पु.] (सं.) बरसात। वर्षाकाल।

क्षवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपामार्ग। लटजीरा। २-राई। लाही।

क्षवकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) नकछिंकनी नामक पौधा।

क्षवथु [संज्ञा पु.] (सं.) नाक के ३१ प्रकार के रोगों में से एक।

क्षवपत्रा, क्षवपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रोणपुष्पी। गूमा।

क्षांत, क्षान्त [वि.] (सं.) १-क्षमा करने वाला। क्षमाशील। २-सहनशील। सहिष्णु।

क्षांति, क्षान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्षमा। २-सहिष्णुता। सहनशीलता।

क्षांतिमान्, क्षान्तिमान् [संज्ञा पु.] (सं.) सहनशील व्यक्ति।

क्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथिवी।

क्षात्र [वि.] (सं.) क्षत्रिय-सम्बन्धी।

क्षाम [वि.] (सं.) १-क्षीण। कृश। दुबला-पतला। २-बलहीन। कमजोर। ३-अल्प। थोड़ा। [संज्ञा पु.] विष्णु।

क्षामोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतली कमर वाली स्त्री।

क्षाम्य [वि.] (सं.) क्षमा करने योग्य। क्षमणीय

क्षार [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाहक, जारक, विस्फोटक या इसी प्रकार की अन्य वनस्पत्य औषधियों को जलाकर अथवा खनिजपदार्थों को पानी में घोल और रसायनिक क्रिया द्वारा शुद्ध करके तैयार की हुई राख का नमक। खार। एसिड। २-शोरा। ३-सोहागा। ४-भस्म। राख। ५-सज्जी। खार। ६-गुड़। [वि.] १-खारा। २-क्षीरणशील। ३-धूर्त्त।

क्षारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षार। २-सज्जी। ३-चिड़ियों को फंसाने का जाल।

क्षारकर्दम [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

क्षारगुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषधि का नाम। (चक्रदत्त)।

क्षारण [संज्ञा पु.] (सं.) भस्म करने की क्रिया।

क्षारत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) तीनक्षारों का समूह। (सज्जी, शोरा और सुहागा)।

क्षारपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ नामक साग।

क्षारपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) बथुवे का साग।

क्षारपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिल्ली नामक

क्षारमेह [संज्ञा पु.])(सं.) मेह रोग का एक

क्षारलवण [संज्ञा पु.] (सं.) खारी नमक।

क्षारवर्ग [संज्ञा पु.](सं.) सज्जी शोरा और
इन तीनों खारों का समूह।

क्षारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षुधा। भूख।

क्षारित [वि.] (सं.) १-दूषित। बदनाम।
स्रवित। टपका हुआ। झरा हुआ।

क्षारोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-खारा-समुद्र।
सागर। २-क्षार अंश वाले पदार्थ।

क्षालन [संज्ञा पु.] (सं.) धोने का कार्य।

क्षालित [वि.] (सं.) धोया हुआ। साफ
हुआ।

क्षिति [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथिवी। २-
स्थान। जगह। ३-क्षय। ४-प्रलयकाल
गोरोचन।

क्षितिकंप, क्षितिकम्प [संज्ञा पु.] (सं.)

क्षितिकण [संज्ञा पु.] (सं.) धूलि। गर्द।

क्षितिक्षम [संज्ञा पु.] (सं.) खैर का पेड़।

क्षितिज [संज्ञा पु.](सं.) १-मंगलग्रह। २-
सुर। ३-केंचुआ। ४-वृक्ष। पेड़। ५-
की पहुँच की अंतिम सीमा पर का वह
जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिले हुए
पड़ते है।

क्षितिदेव, क्षितिदेवता [संज्ञा पु.] (सं.)
ब्राह्मण।

क्षितिधर [संज्ञा पु.] १-पर्वत। पहाड़। २-
३-हाथी। ४-सर्प।

क्षितिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। दरख्त।

क्षितिवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहिष्णुता।
खोरी।

क्षितीश [संज्ञा पु.] (सं.) भूमिपति। विष्णु

क्षितीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) भूमिपति। विष्णु

क्षिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग। २-सूर्य। ३-
सींग।

क्षिपक [वि.] (सं.) फेंकने वाला।

क्षिपण [संज्ञा पु.] (सं.) फेंकने की क्रिया या

क्षिपणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाव की पतवार।

क्षिपणु [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याध। २-
लिया। चिड़िमार।

क्षिपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात्रि। रात। २-
फेंकना।

क्षिप्त [वि.] (सं.) १-व्यक्त। छोड़ा हुआ। २-
विकीर्ण। फलाया हुआ। ५-पतित। ६-
उचटा हुआ या चंचल (चित्त)। ७-
ग्रस्त।

क्षिप्र [क्रि. वि.] (सं.) १-शीघ्र। जल्दी। २-
तत्काल। तुरन्त।

क्षिप्र [वि.] १-तेज। द्रुत। जल्द। चंचल।

क्षिप्रमूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्रेंद्रिय सम्बन्धी एक रोग।

क्षिप्रश्येन [संज्ञा पु.] (सं.) एक शिकारी चिड़िया।

क्षिप्रहस्त [वि.] (सं.) तेज काम करने वाला।

क्षिप्रहोम [संज्ञा पु.] (सं.) सायंकाल और प्रातःकाल का दैनिक होम, जो संक्षिप्त तथा शीघ्र समाप्त होता है।

क्षीण [वि.] (सं.) १-सूक्ष्म। बारीक। २-दुबला। पतला। ३-जो कम हो गया हो।

क्षीणक [वि.] (सं.) क्षीण करनेवाला।

क्षीणक-रोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह रोग जिसमें रोगी का शरीर दिन-प्रतिदिन घटता या गलता जाता है। वेस्टिंग-डिज़ीज़।

क्षीणचंद्र, क्षीणचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णपक्ष की अष्टमी के पश्चात से शुक्लपक्ष की अष्टमी तक का चन्द्रमा।

क्षीणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निर्बलता। कमज़ोरी। दुबलापन। पतलापन। सूक्ष्मता।

क्षीणबल [वि.] (सं.) दुर्बल। कमजोर।

क्षीणशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्बल। कमजोर।

क्षीयमान [वि.] (सं.) १-नित्य घटने अथवा कम होने वाला। २-नाशवान।

क्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध। पय। २-जल। पानी। ३-द्रव या तरल पदार्थ। ४-पेड़ों का रस या दूध। ५-खीर।

क्षीरकंठ, क्षीरकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) दूध पीने वाला बच्चा।

क्षीरकंद, क्षीरकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीरविदारी

क्षीरकांडक, क्षीरकाण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूहड़। २-मंदार। आक।

क्षीरकाकोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषधि जो हलकी तथा वीर्यवर्द्धक होती है और जिसके सेवन से स्त्रियों का दूध बढ़ता है।

क्षीरकीट [संज्ञा पु.] (सं.) दूध का कीड़ा।

क्षीरखर्जूर [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडखजूर।

क्षीरघृत [संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन।

क्षीरज [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-शंख। ३-कमल। ४-दही। [वि.] (सं.) दूध से उत्पन्न या बना हुआ।

क्षीरजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

क्षीरतैल संज्ञा पु.] (सं.) एक औषधसिद्ध तैल (सुश्रुत)।

क्षीरतोयधि [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीर समुद्र।

क्षीरदल [संज्ञा पु.] (सं.) मंदार। आक।

क्षीरद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वत्थ।

क्षीरधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बच्चे को दूध पिलाने वाली धाय।

क्षीरधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

क्षीरनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

क्षीरनीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आलिंगन। २-मिलन। मिलजाना।

क्षीरपर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) मंदार। आक।

क्षीरपलांडु, क्षीरपलाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद प्याज।

क्षीरपाक [वि.] (सं.) दूध में पकाया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार वह औषधि जो अठगुने दूध और चौगुने जलमें औटा कर तैयार की जाय।

क्षीरपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'क्षीरकाकोली'

क्षीरभृत [संज्ञा पु.] (सं.) दूध के बदले में पशु चराने वाला ग्वाला (मनु)।

क्षीरविदारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षीरकंद से मिलती-जुलती एक जड़ी जिसमें से दूध निकलता है।

क्षीरवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-गूलर। २-महुआ। ३-अश्वत्थ। ४-खिरनी।

क्षीरव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) केवल मात्र दूध पीकर रहने का व्रत।

क्षीरशाक [संज्ञा पु.] (सं.) कच्चा फटा हुआ दूध।

क्षीरषष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) दूध में पकाया हुआ साठी चावल।

क्षीरस [संज्ञा पु.] (सं.) दूध या दही पर की मलाई।

क्षीरसमुद्र, क्षीरसागर [संज्ञा पु.] (सं.) सात समुद्रों में से एक जिसे दूध का बताया जाता है (पुराण)।

क्षीरस्फटिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उत्तम स्फटिक।

क्षीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकोली नामक जड़ी।

क्षीरका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिंडखजूर। २-वंशलोचन। ३-खिरनी।

क्षीरोद [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीरसागर।

क्षीरोदतनय [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

क्षीरोदतनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

क्षीरोदधि [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीर समुद्र।

क्षीव [वि.] (सं.) उन्मत्त। मतवाला।

क्षीवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उन्मत्तता। पागलपन।

क्षुणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

क्षुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूमि। पृथ्वी।

क्षुण्ण [वि.] (सं.) १-अभ्यस्त। २-दलित। ३-टुकड़ा किया हुआ। चूर्ण किया हुआ। ४-जिसका कोई अंश टूट या कट गया हो।

क्षुत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूख। क्षुधा।

क्षुत [संज्ञा पु.] (सं.) छींक।

क्षुत्क्षाम [वि.] (सं.) क्षुधा या भूख से पीड़ित।

क्षुद्र [वि.] (सं.) १-कृपण। कंजूस। २-अधम। नीच। ३-अल्प। छोटा या थोड़ा। ४-क्रूर। खोटा। ५-दरिद्र। निर्धन। [संज्ञा पु.] चावल का कण।

क्षुद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) क्षुद्र। २-तोला (परिमाण)

क्षुद्रघंटिका, क्षुद्रघण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटे छोटे घुंघुरू लगी हुई करधनी। २-घुंघुरू।

क्षुद्रचंदन, क्षुद्रचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चंदन।

क्षुद्रजंतु, क्षुद्रजन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) कीड़ा। मकोड़ा।

क्षुद्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीचता। कमीनापन। २-ओछापन।

क्षुद्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'क्षुद्रता'।

क्षुद्रदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ओछी निगाह। अल्पदर्शन।

क्षुद्रधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) कंगनी, चेना, कोदों आदि कुधान्य।

क्षुद्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

क्षुद्रपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमलोनी। नोनिया साग।

क्षुद्रपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वच।

क्षुद्रप्रकृति [वि.] (सं.) ओछे या बुरे स्वभाव। नीच प्रकृति का।

क्षुद्रप्राण [वि.] (सं.) अल्प प्राण। शीघ्र मरने वाला।

क्षुद्रफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जामुन। २-इन्द्रायण।

क्षुद्रबुद्धि [वि.] (सं.) १-दुष्ट या नीच बुद्धि वाला। २-नासमझ। मूर्ख।

क्षुद्रम [संज्ञा पु.] (सं.) छः माशे की एक तौल।

क्षुद्रमुस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कसेरू।

क्षुद्ररोग [संज्ञा पु.] (सं.) फोड़ा, फुंसी, झांईं, मुहासा, कुनख आदि साधारण रोग।

क्षुद्रशुक्ति, क्षुद्रशुक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी सीप।

क्षुद्रश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का श्वास रोग।

क्षुद्रसुवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) पीतल।

क्षुद्रहा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

क्षुद्रांजन, क्षुद्राञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) शोधे हुए आंवले आदि का बना अंजन।

क्षुद्रांत्र, क्षुद्रान्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय के पास की छोटी नाड़ी।

क्षुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १–वेश्या । रंडी । २. मधुमक्खी । ३–हिचकी ।

क्षुद्रावली [सं ज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षुद्र घंटिका । किंकणी

क्षुद्राशय [वि.] (सं.) नीच प्रकृति । कमीना ।

क्षुद्राशयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीचापन । ओछापन ।

क्षुद्रंगुदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवासा ।

क्षुधा [संज्ञा स्त्री] (सं.) भूख । भोजन करने की इच्छा ।

क्षुधातुर [वि.] (सं.) भूखा ।

क्षुधालु [वि.] (सं.) भुक्खड़ । जिसे सदैव भूख लगी रहती हो ।

क्षुधावंत, क्षुधावन्त [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'क्षुधावान्' ।

क्षुधावती [सं ज्ञा स्त्री.] (सं.) भूख बढ़ाने वाली एक औषधि ।

क्षुधावान् [वि.] (सं.) क्षुधा पीड़ित । भूखा ।

क्षुधित [वि.] (सं.) बुभुक्षित । भूखा । जिसे भूख लगी हो ।

क्षुप [संज्ञा स्त्री] (सं.) छोटी डालियों वाला छोटा वृक्ष । पौधा । झाड़ी

क्षुपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी झाड़ी ।

क्षुब्ध [वि.] (सं.) १–जिसे क्षोभ हुआ हो । २–चंचल । चपल । ३–व्याकुल । विह्वल । ४–भयभीत । डरा हुआ । ५–क्रुद्ध । कुपित ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–मथानी की डंडी । रति-बंध या कामशास्त्र की एक क्रिया ।

क्षुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य के एक प्रकार के पारिषद् देवता ।

क्षुभित [वि.] (सं.) क्षुब्ध ।

क्षुमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–बाण । २–अलसी । ३–सनई । ४–नील का पौधा ।

क्षुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–नाई का छुरा । उस्तरा । २–पशु का खुर । ३–एक प्रकार का तीर ।

क्षुरक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद तालमखाना ।

क्षुरकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) हजामत । क्षौर ।

क्षुरक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं.) हजामत ।

क्षुरधान [संज्ञा पु.] (सं.) नाई की किसबत ।

क्षुरधार [वि.] (सं.) छुरे के समान तेज धार वाला ।

क्षुरपत्र [वि.] (सं.) जिसके पत्ते छुरे के समान तेज धार वाले हों ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–एक बाण । २–शर नामक गुच्छ ।

क्षुरपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पालक ।

क्षुरपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पालकी । पालक ।

क्षुरपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बच । बचा ।

क्षुरप्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–खुरपा । २–एक प्राकर का बाण ।

क्षुरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छुरी । चाकू । २–पालकी नामक साग । ३–यजुर्वेदान्तर्गत एक एक उपनिषत् का नाम ।

क्षुरी [संज्ञा पु.] (सं.) नापित । नाऊ । हज्जाम ।
[संज्ञा स्त्री.] छुरी । चाकू ।

क्षुल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) क्षुद्र ।

क्षुव [संज्ञा पु.] (सं.) १–छींक । २–राई । ३–लाही ।

क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–खेत । २–भूमि का बड़ा या लम्बा चौड़ा टुकड़ा । ३–प्रदेश । ४–स्थान । ५–रेखाओं या सीमा से घिरा स्थान । ६–धार्मिक स्थान । पुण्य स्थान । तीर्थ ।

क्षेत्रकर [वि.] (सं.) क्षेत्र तैयार करने वाला ।

क्षेत्रकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) खेत का काम ।

क्षेत्रगणित [संज्ञा पु.] (सं.) गणित की वह शाखा जिसमें क्षेत्रों को नापने और उनके क्षेत्रफल निकालने की विधि होती है ।

क्षेत्रज [वि.] (सं.) क्षेत्र में या क्षेत्र से उत्पन्न होने वाला । [संज्ञा पु.] वह पुत्र जो किसी रोगी, असमर्थ या अयोग्य व्यक्ति की बिना संतान वाली स्त्री या मृत पुरुष की बिना संतान वाली विधवा ने दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न किया हो ।

क्षेत्रजात [वि.] (सं.) खेत में उत्पन्न होने वाला ।

क्षेत्रज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १–जीवात्मा । २–परमात्मा । ३–किसान । खेतिहर । ४–साक्षी ।
[वि.] जानकार । ज्ञाता ।

क्षेत्रद [वि.] (सं.) खेती का दान करने वाला ।

क्षेत्रप [संज्ञा पु.] (सं.) १–खेत का रखवाला । २–ईश्वर । ३–बटुक भैरव ।

क्षेत्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–खेत का रखवाला । क्षेत्रपाल । २–खेतिहर । ३–जीवात्मा । ४–परमात्मा ।

क्षेत्रपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–खेत का रखवाला । २–किसी स्थान का प्रधान प्रवन्धकर्ता । भूमिया ।

क्षेत्रफल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी भूमि स्थान या पदार्थ के ऊपरी तल की लम्बाई और चौड़ाई के घात या गुण से जाना जाने वाला । वर्गफल । रकबा । एरिया ।

क्षेत्रभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेत का बटवारा ।

क्षेत्रभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेत की जमीन ।

क्षेत्रमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गणित की वह शाखा जिसके अन्तर्गत रेखाओं की लम्बाई, धरातल का क्षेत्रफल तथा ठोस पदार्थों का घनफल निकालने के नियमों का विवेचन होता है ।

क्षेत्रवित् [वि.] (सं.) मर्म को जानने वाला ।
[संज्ञा पु.] (सं.) जीवात्मा ।

क्षेत्रविद् [वि.] (सं.) स्थानों और मार्गों की पूर्ण जानकारी रखने वाला ।
[संज्ञा पु.] (सं.) जीवात्मा ।

क्षेत्रव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) कर्म तथा परिणाम या फलों की सहायता से क्षेत्र माण का निर्णय, यह रेखा गणित परिमित के तत्वों से ज्ञात होता है ।

क्षेत्रसंभूत, क्षेत्रसम्भूत [वि.] (सं.) क्षेत्र उत्पन्न ।

क्षेत्र-संन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यास का भेद जिसमें इस बात की प्रतिज्ञा की है कि हम निर्धारित क्षेत्र या भू भाग में रहेंगे इसके बाहर नहीं जायेंगे ।

क्षेत्राधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के अथवा कार्यक्षेत्र । अधिकार ज्युरिसडिक्शन ।

क्षेत्राधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १–खेत का २–बारहों राशियों के अधिपति ग्रह ।

क्षेत्रिक [वि.] (सं.) १–खेत संबंधी । २–कृषि से संबंध रखने वाला । एग्रीरि

क्षेत्री [संज्ञा पु.] (सं.) १–खेत का स्वामी । २–नियोग करने वाली विवाहित पति । ३–स्वामी ।

क्षेप [संज्ञा पु.] (सं) १–फेंकना । २–घात । ३–गिराना । ४–बिताना । गुजार

क्षेपक [वि.] (सं) १–फेंकने वाला । ऊपर बाद में मिलाया हुआ ।
[संज्ञा पु.] (सं) ग्रंथों आदि में ऊपर पीछे से मिलाया हुआ वह अंश जो मूलकर्त्ता की रचना न हो ।

क्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) १–फेंकना । २–३–काटना । बिताना । ४–अपवाद । निं

क्षेपणिक [सं ज्ञा पु.] (सं.) नाव खेने मल्लाह । केवट ।

क्षेपणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बंदूक की नाव की डांड ।

क्षेपणीय [वि.] (सं.) फेंकने योग्य ।

क्षेपपात [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में और क्रांति-मंडल का योग ।

क्षेप्ता [वि.] (सं.) फेंकने वाला ।

क्षेमंकरी, क्षेमङ्करी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–एक की चील । २–एक देवी का नाम ।

क्षेम [संज्ञा पु.] (सं.) १–हानि, संकट, नाश से किसी वस्तु की रक्षा या बचाव सुरक्षा । सेफ्टी । २–कुशल-मंगल । ३–सुख आनन्द । ४–मुक्ति । ५–अभ्युदय ।

क्षेमक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक नाग का नाम । २–एक राक्षस का नाम । ३–शिव ।

क्षेमकर [वि.] (सं.) मंगलकारक । भलाई करने वाला ।

क्षेमकर्ण [संज्ञा पु.](सं.) अर्जुन के पौत्र का

क्षेमकर्मा [वि.] (सं.) पालने वाला।

क्षेमकल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) हम्मीर और कल्याण के संयोग से बना एक संकरराग।

क्षेमकार [वि.] (सं.) भलाई करने वाला।

क्षेमकृत [वि.] (सं.) मंगलकारक।

क्षेमदर्शी [वि.] (सं.) भलाई देखने वाला।

क्षेमवान् [वि.] (सं.) मंगलयुक्त। अच्छा। भला

क्षेमी [वि.] (सं.) १-मंगलकारक। शुभदायक। २-भलाई चाहने वाला।

क्षेमासन [संज्ञा पु.] (सं.) तेज या हठ योग का एक आसन।

क्षेमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी। हरिद्रा।

क्षेमेंद्र, क्षेमेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) काश्मीर का एक सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि।

क्षेय [वि.] (सं.) क्षय किये जाने के योग्य।

क्षैण्य [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीणता। क्षीण होने का भाव।

क्षैरेय [वि.] (सं.) दूध से बनाहुआ।

क्षोड [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी बांधने का खूंटा। आलान।

क्षोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके। २-एक प्रकार की वीणा।

क्षोणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-एक की संख्या।

क्षोणिप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

क्षोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

क्षोणीपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

क्षोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूर्ण। बुकनी। २-चूर्ण पीसने का काम। ३-जल। पानी।

क्षोदित [वि.] (सं.) १-खोदा हुआ। चूर्ण किया हुआ।

क्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षुब्ध होने का भाव। २-खलबली। ३-व्याकुलता। घबड़ाहट। ४-भय। डर। ५-रंज। शोक। ६-क्रोध।

क्षोभक [संज्ञा पु.] (सं.) कामाख्या का एक पहाड़।

क्षोभण [वि.] (सं.) क्षोभित करने वाला।

क्षोभन [वि.] (सं.) घबड़ाने वाला।

क्षोभिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निषाद स्वर की दो श्रुतियों में अंतिम श्रुति (संगीत में)।

क्षोभित* [वि.] (सं.) १-व्याकुल। २-विचलित। ३-भयभीत। ४-क्रुद्ध।

क्षोभी [वि.] (सं.) १-व्याकुल। २-उद्वेगशील। ३-चंचल।

क्षोम [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'क्षौम'।

क्षौणि, क्षौणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-एक की संख्या।

क्ष्णोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) छुरे, चाकू आदि की धार तेज करने का यंत्र। सान।

क्षौद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षुद्रता। २-छोटी मधुमक्खी का शहद। ३-धूल। ४-पानी। जल। ५-चम्पावृक्ष।

क्षौद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शहद। मधु। २-एक प्राचीन देश।

क्षौद्रज [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

क्षौद्रधातु [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामक्खी।

क्षौद्रप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) मधुमेह।

क्षौद्रेय [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

क्षौम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। २-कपड़ा। वस्त्र।

क्षौमका [संज्ञा पु.] (सं.) चोवा।

क्षौमिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सन या अलसी के रेशे की बनी करधनी। २-क्षौम वस्त्र की बनी गुदड़ी।

क्षौमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सन की करधनी।

क्षौमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्था। कथरी। गुदड़ी।

क्षौर, क्षौरकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) हजामत।

क्षौरिक [संज्ञा पु.] (सं.) नापित। नाई। हज्जाम।

क्ष्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-एक की संख्या।

क्ष्माज [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

क्ष्मातल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूतल। जमीन की सतह।

क्ष्मापाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

क्ष्मापति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

क्ष्माभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-पर्वत।

क्ष्मायित [वि.] (सं.) कांपने वाला।

क्ष्वेड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अव्यक्त शब्द या ध्वनि। २-विष। जहर। ३-शब्द। ध्वनि। ४-कान का एक रोग। ५-चिकनाई।
[वि.] (सं.) १-छिछोरा। नीच प्रकृति। २-कुटिल। कपटी।

क्ष्वेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रीड़ा। खेल।

ख

ख हिन्दी वर्णमाला में स्पर्शव्यंजन के अन्तर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान कंठ है।

खं, खम् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शून्य स्थान। खाली जगह। २-छिद्र। बिल। ३-आकाश। ४-निकलने का मार्ग। ५-शून्य। बिंदु। सिफर। ६-स्वर्ग। ७-इन्द्रिय। ८-सुख। ९-मोक्ष। निर्वाण। १०-अभ्रक। ११-ब्रह्मा। १२-कर्म।

खंक* [वि.] (हिं.) दुर्बल। कमजोर। बलहीन।

खंख [वि.] (हिं.) १-रिक्त। खाली। २-उजाड़। वीरान।

खँखरा [संज्ञा पु.] (देश.) चावल पकाने का ताँबे का बड़ा बरतन।
[वि.] (देश.) १-सूखा। २-कड़ा सेका हुआ। ३-जिसमें बहुत से छिद्र हों। ४-झीना।

खँखार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खखार'।

खँखारना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खखारना'।

खंग, खड्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार। २-गैंडा पशु।

खँगड़ [वि.] (हिं.) गंवार। झगड़ालू।
[संज्ञा पु.] (हिं.) कूड़ा-करकट।

खँगना [क्रि. अ.] (हिं.) कम होना। छीजना।

खँगर [संज्ञा पु.] (देश.) अधिक पकने के कारण पककर परस्पर सटी हुई ईंट।
[वि.] (देश.) शुष्क। बहुत सूखा हुआ।
खंगर लगाना–दुर्बलता का रोग होना।

खँगहा [वि.] (हिं.) जिसके दाँत आगे को निकले हों। खाँग वाला।
[संज्ञा पु.] (हिं.) गैंडा पशु।

खँगारना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खंगालना'।

खँगालना [क्रि. स.] (हिं.) १-हलका या कम धोना (बरतन, कपड़ा आदि) २-सब कुछ चुरा ले जाना या उठा ले जाना।

खँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमी। घटी।

खँगुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) गैंड़े के मुँह के ऊपर का सींग।

खँगैल [वि.] (हिं.) १-खांग रोग से पीड़ित। २-लम्बे दांत वाला। (हाथी)

खँगौरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गले में पहनने की हँसुली।

खँधारना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खंगालना'।

खँचना+ [क्रि. अ.] (हिं.) निशान पड़ना। अंकित होना।

खँचाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-अंकित करना। चिह्न बनाना। २-जल्दी-जल्दी लिखना। ३-देखो 'खींचना'।

खँचिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खांची'।

खँचुला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खांचा'।

खँचैया [वि.] (हिं.) खींचने वाला।

खँज, खञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का जिसमें मनुष्य के पैर अकड़ जाते हैं। २-लंगड़ा। पंगु। ३-खंजन पक्षी।

खंजक, खञ्जक [वि.] (सं.) लंगड़ा। पंगु।

खंजकारि, खञ्जकारि [संज्ञा पु.] (सं.) खेसारी

खँजड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की डफली।

खंजन, खञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पक्षी जो शरत और शीतकाल में दिखाई देता है।

खंडरिच । ममोला । २-खंडरिच के रंग का घोड़ा । ३-गंगाधर या गंगोदक नामक छन्द का नाम ।

खंजनरति, खञ्जनरति [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्त रतिक्रिया । बहुत ही गुप्त विहार ।

खंजनासन, खञ्जनासन [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र-मंत्र से एक प्रकार का आसन ।

खंजनिका, खञ्जनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खंजन के आकार की एक चिड़िया ।

खंजर [संज्ञा पु.] (फा.) कटार ।

खंजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डफली के समान एक बाजा । २-खंजर का स्त्रीलिंग । ३-धारीदार कपड़ा ।

खंजरीट, खञ्जरीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-खंजन । ममोला । २-संगीत में एक प्रकार का ताल ।

खंजा, खञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृत्त जिसके विषम पादों में ३० लघु और अंत में एक गुरु और सम पादों में २८ लघु और अंत में एक गुरु होता है ।

खंड, खण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-टुकड़ा । काटकर पृथक किया हुआ भाग । २-देश । जैसे- भरतखंड । ३-नौ की संख्या । ४-खांड । चीनी । ५-दिशा । ६-काला नमक । ७-गणित में समीकरण की एक क्रिया । ८-विधि विधान के अन्तर्गत किसी धारा अथवा उपधारा का कोई स्वतंत्र अंश । क्लॉज़ ।

[वि.] (सं.) १-खंडित । अपूर्ण । २-छोटा । लघु ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) खांड़ा ।

खंडक, खण्डक [वि.](सं.) १-खंड करने वाला । टुकड़े करने वाला । २-किसी मत या सिद्धांत का खंडन करने वाला ।

[संज्ञा पु.] (सं.) खांड का बना बताशा, इलायचीदाना आदि ।

खंडकथा, खण्डकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कथा या कहानी का एक भेद । २-उपन्यास का एक भेद ।

खंडकर्णी, खण्डकर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) सकरकंद

खंडकाव्य, खण्डकाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह छोटा प्रबंधकाव्य जिसमें सम्पूर्ण काव्य के पूरे लक्षण न हों ।

खंडताल, खण्डताल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताला नामक ताल जिसमें केवल एक द्रुत होता है ।

खंडधारा, खण्डधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कैंची । कतरनी ।

खंडन, खण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोड़ने फोड़ने या काटछांट का काम । छेदन । २-किसी सिद्धांत को अप्रमाणित करने का कार्य । 'मंडन' का उलटा । ३-नृत्य में मुँह या ओठों का एक भाव ।

खंडना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खँडरा' ।

खंडना [क्रि. स.] (हिं.) खंडन करना । टुकड़े-टुकड़े करना ।

खंडनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालगुजारी की किस्त । कर ।

[वि.] (हिं.) देखो 'खंडी' 'खंडिनी' ।

खंडनीय [वि.] (सं.) १-तोड़फोड़ करने लायक । २-खंडन या निराकरण करने योग्य । ३-जिसका खंडन न हो सके ।

खंडपति, खण्डपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा । नरेश ।

खंडपरशु, खण्डपरशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव २-विष्णु । ३-परशुराम । ४-राहु । ५-दांत टूटा हाथी ।

खंडपाल, खण्डपाल [संज्ञा पु.] (सं.) हलवाई ।

खंडपूरी [संज्ञा पु.] (हिं.) खांड के साथ मेवे मसाला भर कर बनाई हुई मीठी पूरी ।

खंडप्रलय, खण्डप्रलय [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रलय जो एक चतुर्युगी या ब्रह्मा का एक दिन बीत जाने पर होता है ।

खंडप्रसार, खण्डप्रसार [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक प्रकार का ताल ।

खंडफण, खण्डफण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप ।

खंडमय, खण्डमय [वि.] (सं.) टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।

खंडमोदक, खण्डमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) बताशा ।

खंडर, खण्डर [संज्ञा पु.] (सं.) खंडहर ।

खंडरना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खंडना' ।

खंडरा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बेसन का चौकोर बड़ा ।

खंडरिच, खण्डरिच [संज्ञा पु.] (हिं.) खंजन पक्षी ।

खंडल, खण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-खंड । २-खंड धारण करने वाला ।

खांडलवण, खण्डलवण [संज्ञा पु.] (सं.) काला नमक ।

खांडला, खण्डला [संज्ञा पु.] (हिं.) टुकड़ा । कतरा ।

खांडवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खांड मिला या घुला पानी । शरबत । २-कन्या पक्ष वालों की ओर से बरातियों को जलपान या शरबत भेजने की एक रसम ।

खाँडविला [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का धान ।

खांडव्यायाम, खण्डव्यायाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक नृत्य जिसमें केवल कमर और पैरों को गति देते हैं ।

खांडशीला, खण्डशीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या । रंडी ।

खांडसर, खण्डसर [संज्ञा पु.] चीनी । सेवारी खाँड ।

खँड़सार, खँड़साल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शक्कर बनाने का कारखाना ।

खाँडहर [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी टूटे-फूटे गिरे हुए मकान का अंश ।

खांडाभ्र, खण्डाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों रोग ।

खांडाली, खण्डाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नापने का एक परिमाण । २-काम रखने वाली स्त्री ।

खंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चावल खूद । २-छोटी तलवार ।

खंडिक, खण्डिका [संज्ञा पु.] (सं.) २-खंड-खंड करके पढ़ने वाला विद्यार्थी ।

खंडिका, खण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निश्चित समयों पर थोड़ा-थोड़ा जाने वाला देन का कुछ अंश । इन्स्टालमेंट ।

खंडित, खण्डित [वि.] (सं.) १-टूटा भग्न । २-अपूर्ण । जो पूरा न हो ।

खंडिता, खण्डिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नायिका जिसका प्रियतम रात अन्य स्त्री के पास रहकर सवेरे आवे और उसमें संभोग के चिह्न कुपित हो ।

खंडिनी, खण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी

खडिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईख की गंडेरियां, २-गंडेरियां बनाने वाला ।

[संज्ञा स्त्री.] टुकड़ा । खंड ।

खंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'खंडिया' । गांव के चारों ओर के वृक्ष ।

खंडुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह कुआं कोठी पत्थर के ढोकों से बनाई गई हो । देखो 'कंदुआ' ।

खंडेश्वर, खण्डेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) खंड का राजा ।

खंडौरा+ [संज्ञा पु.] (सं.) खांड या बना लड्डू । ओला ।

खंडौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चावल का टुकड़ा ।

खतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दरार । खाँडा । कोना । अंतरा ।

खता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुदाल । फावड़ा ।

खदक [संज्ञा पु.] (अ.) १-खाई । २-बड़ा

खदा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खोदने वाला ।

खधवाना [क्रि. स.] (हिं.) खाली कराना ।

खधा [संज्ञा पु.] (हिं.) आर्यागीत नामक एक नाम ।

खधार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्कन्धावार । छावनी । २-डेरा । खेमा । ३-सरदार ।

खंधारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कंधारी'।

खंधलाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खंधा'।

खंधियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु को पात्र में से निकालना। खाली करना।

खंबायची, खंबायती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खम्माच'।

खंभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्तम्भ। खंभा। २-सहारा। आसरा।

खंभा [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर आदि का वह खड़ा ऊँचा टुकड़ा जिसके सहारे छत या पाटन रहती है। स्तम्भ।

खंभात [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुजरात के पश्चिम प्रांत का एक प्रदेश। २-इस प्रदेश का एक नगर।

खंभायची-कान्हड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'खम्माच-कान्हड़ा'।

खंभार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आशंका। अंदेशा चिन्ता। २-घबराहट। व्याकुलता। ३-डर। भय। ४-शोक।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खंभारी'।

खंभारि, खंभारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंभारी नाम एक वृक्ष।

खंभावती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अर्द्धरात्रि में गाई जाने वाली एक रागिनी।

खंभिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पतला खंभा।

खँवँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गड्ढा जिसमें अनाज भरकर रखते हैं। खत्ता।

खँवँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी खँवँ। बड़ा खत्ता।

ख* [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्त। गड्ढा। २-खाली स्थान। ३-निर्गम। निकास। ४-छेद। बिल। ५-इन्द्रिय। ६-गले की प्राणवायु आने जाने की नाली। ७-कुवाँ। ८-तीर का घाव। ९-थाला। १०-आकाश। ११-सुख। १२-स्वर्ग। १३-कर्म। १४-जन्मकुण्डली में दसवां स्थान। १५-शून्य। १६-सिफर। बिंदू। ब्रह्मा। १८-शब्द।

खई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्षय। २-युद्ध। ३-लड़ाई। झगड़ा।

खकक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशमंडल की परिधि।

खकामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा की एक मूर्ति।

खकुंतल, खकुण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

खक्खट [संज्ञा पु.] (सं.) खड़िया मिट्टी।

खक्खासाहु [संज्ञा पु.] (हिं.) १-व्यापार में चतुर व्यक्ति। २-खत्री जाति का व्यापारी।

खखखा [संज्ञा पु.] (हिं.) जोर की हँसी। अट्टहास

[संज्ञा पु.] (देश.) १-पंजाब का सिपाही। २-अनुभवी पुरुष। ३-बड़ा और ऊँचा हाथी।

खखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देग। २-बांस का बना हुआ बड़ा टोकरा।

खखरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बेसन या मैदे की पतली पूरी।

खखसा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खेखसा'।

खखार [संज्ञा पु.] (हिं.) खखारने से निकलने वाला गाढ़ा कफ या थूक। कफ।

खखारना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गले पर जोर देकर कफ बाहर निकालना। २-दूसरे को सावधान करने के निमित्त गले से खरखराहट का शब्द पैदा करना।

खखेटना* [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाना। २-भगाना। ३-घायल करना।

खखेटा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भगदड़। २-घाव। चोट। ३-खटका। अंदेशा। ४-छंद।

खखोंडर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोटर में बना पक्षी का घोंसला। २-उल्लू पक्षी का घोंसला।

खखोरना* [क्रि. स.] (देश.) भली भांति ढूंढना। छानबीन करना।

ख-गंगा, ख-गङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाश गंगा। मंदाकिनी।

खग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। चिड़िया। २-बाण। तीर। ३-गंधर्व। ४-ग्रह। तारा। ५-बादल। ६-देवता। ७-सूर्य। ८-चन्द्रमा। ९-वायु। हवा।

खगकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

खग-खान [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष का कोटर।

खगगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पक्षी की गति। २-ग्रह की गति।

खगना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-गड़ना। पैठना। २-चित्त में बैठना या असर करना। ३-लिप्त होना। अनुरक्त होना। ४-चिह्नित हो जाना। उभर आना। ५-अड़जाना।

खगपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-सूर्य।

खगवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी। जमीन।

खगहा [संज्ञा पु.] (हिं.) गैंडा।

खगाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

खगासन [संज्ञा पु.] विष्णु।

खगुण [वि.] (सं.) जिसका गुण शून्य हो। गुण रहित।

खगेंद्र, खगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

खगेश, खगेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

खगोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। मंडल। २-खगोलविद्या।

खगोलविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशमंडल अर्थात ग्रह आदि की बातों का ज्ञान कराने वाली विद्या। ज्योतिष।

खग्ग* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलवार।

खग्रास [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्रमा का पूर्ण बिम्ब ढक जाय। पूर्ण ग्रहण।

खचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंकित करना। २-बांधने या जोड़ने की क्रिया।

खचना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-जड़ा जाना। २-अंकित होना। ३-रमजाना। ४-अटक रहना। फंसाना।

खचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-मेघ। ३-ग्रह। ४-नक्षत्र। ५-वायु। ६-पक्षी। ७-बाण। तीर। ८-राक्षस। ९-कसीस। १०-एक ताल का नाम जिसे रूपक भी कहते हैं। (संगीत दामोदर)।

[वि.] आकाश में चलने वाला।

खचरा [वि.] (हिं.) १-वर्णसंकर। दोगला। २-दुष्ट। नीच।

खचाखच [क्रि. वि.] (हिं.) अधिक भरा हुआ। ठसाठस।

खचाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खंचाना'। *अपनी खंचाना*–अपनी ही हांके जाना दूसरे की बात न सुनना।

खचारी [वि.] (सं.) आकाशगामी। आकाश में चलने वाला।

खचावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं) खिचने की क्रिया या भाव।

खचित [वि.] (सं.) १-चित्रित। लिखित। खींचा हुआ। २-जड़ा हुआ।

खचिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी टोकरी।

खचीना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रेखा। लकीर। २-चिह्न। निशान।

खचेरना* [क्रि. स.] (हिं.) दबाकर या बलपूर्वक उपदेश करना।

खच्चर [संज्ञा पु.] (देश.) गधे तथा घोड़े के संयोग से पैदा पशु।

खज* [वि.] (हिं.) जो खाया जा सके। भक्ष्य।

खजक [संज्ञा प.] (सं.) मथानी।

खजल [संज्ञा पु.] (सं.) २-तुषार। पाला। २-मेघ-जल।

खजला [संज्ञा पु.] (हिं.) खाजा नाम की मिठाई

खजलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगूर के पौधों का एक रोग।

खजहजा* [संज्ञा पु.] (हिं.) खाने योग्य उत्तम खाद्यफल या मेवा।

ख़ज़ानची [संज्ञा पु.] (फा.) कोषाध्यक्ष। खजाने का अधिकारी।

खजाना [संज्ञा पु.](अ.) १-धन-संग्रह करके रखने का स्थान। धनागार। २-कोश। ३-राजस्व। कर।

खजित [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के शून्यवादी बौद्ध।

खजिल+ [वि.] (फा.) लज्जित। शरमिंदा।

खजीना [संज्ञा पु.] देखो 'खजाना'।

खजुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) खजला या खाजा नाम की मिठाई।

खजुरहट, खजुरहटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नैपाल की तराई में होने वाली एक प्रकार की खजूर

खजुरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों की चोटी में बांधने की डोरी।

खजुराही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान जहाँ खजूर के बहुतायत में पेड़ उगे हों।

खजुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा खजूर। २-एक प्रकार की मिठाई। ३-एक प्रकार का ऊख।

खजुलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खुजलाना'।

खजुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'खुजली'। २-एक प्रकार की काई जिसके शरीर में स्पर्श होने से खुजली होने लगती है। ३-खाजे की तरह की एक मिठाई जो चीनी में पगी होती है।

खजूर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताड़ की जाति का एक (सीधा और लम्बा) वृक्ष जिसके फल खाये जाते हैं। २-एक प्रकार की मिठाई।

खजूरछड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसमें खजूर के समान धारियां होती हैं।

खजूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फूंस से छाई हुई छत की बँडेर जो अधिकतर खजूर की होती है। मँगरा। २-कनखजूरा।

खजूरी [वि.] (हिं.) १-खजूर-संबंधी। २-खजूर की तरह का। ३-तीन लड़ों को गूंथकर बनाया हुआ।

खज्योति [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत। जुगनू।

खट [संज्ञा पु.] (हिं.) टकराने, ठोंकने, पीटने आदि का शब्द।
खट से-तुरन्त। तत्काल।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-कफ। बलगम। २-घूंसा मुक्का। ३-अंधाकुआं। ४-एक प्रकार की सुगन्धित घास। ५-कुल्हाड़ी। ६-देखो 'षट्'।

खटक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खटका। आशंका। २-खटकने की क्रिया या भाव।

खटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खटखट शब्द होना २-रह-रह कर दुखना या हलकी पीड़ा होना। ३-बुरा जान पड़ना। खलना। ४-विरक्त होना। उचटना। ५-डरना। भय करना। ६-परस्पर झगड़ा होना। ७-अनिष्ट की आशंका होना। ८-ठीक न जान पड़ना।

खटका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-'खट-खट' शब्द। डर। भय। ३-चिन्ता। ४-कोई पेंच जिसके दबाने से 'खड़' शब्द होता है। ५-किवाड़ की सिटकनी। ६-पक्षियों के लिए पेड़ में लटकाया हुआ फटे बांस का टुकड़ा।

खटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-'खट'-'खट' शब्द करना। २-शंका उत्पन्न करना। भड़कना।

खटकामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा। २-तीरंदाजी का एक आसन

खटकीड़ा, खटकीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खटमल।

खटखट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ठोकने पीटने आदि से होने वाला शब्द। २-झंझट। झमेला। ३-लड़ाई। झगड़ा।

खटखटा [संज्ञा पु.] (हिं.) पक्षियों को उड़ाने के लिए पेड़ में लटकाया हुआ फटे बांस का टुकड़ा।

खटखटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-'खट' 'खट' शब्द करना। खड़खड़ाना। २-स्मरण कराना।

खटना [क्रि. स.] (हिं.) धन कमाना।
[क्रि. अ.] १-काम में लगना। २-परिश्रम करना।

खटपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अनबन। झगड़ा। २-'खट-खट' का शब्द।

खटपटिया [वि.] (हिं.) लड़ाई करने वाला। झगड़ालू।

खटपद [संज्ञा पु.] (हिं.) षटपद। भौंरा।

खटपदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'षटपदी'।

खटपाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खाट की पाटी।
खटपाटी लेना या लगना-हठ, क्रोध आदि के कारण स्त्रियों का काम धंधा छोड़ देना।

खटपूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी फोड़ने की मुंगरी।

खटबुना [संज्ञा पु.] (हिं.) खाट बुनने वाला।

खटभिलावाँ [संज्ञा पु.] (देश.) वह वृक्ष जिसमें चिरौंजी लगती है।

खटभेमल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा पेड़।

खटमल [संज्ञा पु.] (हिं.) मटमैले उन्नावी रंग का मनुष्यों के शरीर से रक्त चूसने वाला कीड़ा, जो गरमी में खाट, कुरसी और बिस्तरों आदि में उत्पन्न होता है।

खटमली [वि.] (हिं.) खटमल केसे रंग का।

खटमिट्ठा [वि.] (हिं.) (स्वाद में) कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

खटमीठा [वि.] (हिं.) देखो 'खटमिट्ठा'।

खटमुख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'षट्मुख'।

खटरस [वि.] (हिं.) देखो 'षटरस'।

खटराग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झंझट। बखेड़ा। २-व्यर्थ और अनावश्यक वस्तुएं।

खटरिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का कीड़ा।

खटलर [संज्ञा पु.] (देश.) सान लगाने का एक औजार।

खटला [संज्ञा पु.] (देश.) स्त्रियों के कानों में बाली पहनने का छेद।

खटवाट [संज्ञा स्त्री.] खटपाटी। स्त्रियों का रूठ कर अलग जा बैठना।

खटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खट्टापन। अम्लता २-खट्टी चीज।
खटाई देना या खटाई में देना-साफ क… लिए गहनों को खटाई में रखना। … *डालना*-किसी कार्य का योंही पड़े … *खटाई में पड़ना*-दुविधा में पड़ना।

खटाका [संज्ञा पु.] (हिं.) जोर का 'खट' … शब्द।

खटाखट [संज्ञा पु.] (हिं.) 'खट' …
[क्रि. वि.] १-खटखट शब्द के साथ। … पटपट। ३-जल्दी।

खटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खट्टा होना। … निभाना। निर्वाह होना। ३-… ठहरना।
[क्रि. स.] १-परिश्रम कराना। २-… लाभ कराना।

खटापट, खटापटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) …

खटाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र की … लहर जो पूर्णिमा के दिन उठती है।

खटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) निर्वाह। गुजर…
[संज्ञा पु.] (देश.) नाव बांधने का …

खटास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खट्टापन। …
[संज्ञा पु.] मुशकबिलाव। गंधबिलाव…

खटिक [संज्ञा पु.] (हिं.) तरकारी बेचने… एक (हिन्दू जाति)।

खटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी चारपाई… खाट।

खटीक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खटिक'।

खटेटी+ [वि.] (हिं.) जिस पर बिछौना… हो।

खटोलना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खटोला'।

खटोला [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी खाट या चार… पाई।

खट्टन [वि.] (सं.) छोटा। नाटा। बौना।

खट्टा [वि.] (हि.) तुर्श। अम्ल। कच्चे आम… और इमली के स्वाद का।
खट्टा होना-नाराज होना। *खट्टा खाना*-… रहना। मुंह फुलाना। *जी खट्टा होना*-… अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-नीबू की जाति का… खट्टा फल। २-पलंग। चारपाई।

खट्टाचूक [वि.] (हिं.) बहुत अधिक खट्टा।

खट्टामीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुछ खट्टा और कुछ मीठा।
जी खट्टा मीठा होना-जी ललचना।

खट्टीमीठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की …

खट्टू [संज्ञा पु.] (देश.) पीले रंग का संगमरमर।
[संज्ञा पु.] (हिं.) कमाने वाला।

खटवांग [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारपाई का पाया या पाटी। २-शिव का एक अस्त्र। ३-… प्रायश्चित करने वाले का भिक्षा मांगने का पात्र। तंत्र के अनुसार एक मुद्रा।

खट्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खटिया। चारपाई।

२-फोड़े पर पट्टी बांधने का एक ढंग (सुश्रुत)।

खड़ंजा [संज्ञा पु.](हिं.) ईंटों की खड़ी चिनाई।

खड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-धान की पेड़ी। पायल २-घास। ३-श्योनाक। ४-चांदी सोने की बुकनी जिससे गिलट की हुई वस्तुओं पर कलई करते हैं। ५-एक ऋषि का नाम।

खड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खटक'।

खड़काना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खटकाना'।

खड़खड़ा [संज्ञा पु.] १-पत्तियों को उड़ाने का बांस का ढांचा। २-काठ का एक ढांचा जिसमें जोतकर घोड़े सधाए जाते हैं।

खड़खड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) 'खड़खड़' शब्द करना। [क्रि. स] 'खड़खड़' शब्द उत्पन्न करना।

खड़खड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-'खड़खड़' शब्द। २-खड़खड़ाने का भाव।

खड़खड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की पालकी। पीनस। २-माल, फल, तरकारी आदि ढोने की घोड़ागाड़ी।

खड़ग※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खड्ग'।

खड़गी※ [वि.] (हिं.) तलवारधारी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) गैंड़ा।

खड़जी [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'खिडगी'।

खड़बड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खड़खड़। खटखट। २-व्यतिक्रम। उलटफेर। ३-हलचल।

खड़बड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विचलित होना। घबड़ाना। २-सिलसिला टूटना।
[क्रि. स.] १-कुछ उलट-पुलटकर 'खड़बड़' शब्द उत्पन्न करना। २-क्रम रहित करना। उलटफेर करना। ३-विचलित करना।

खड़बड़ाहट [संज्ञा पु.](हिं.) खड़बड़ाने का भाव

खड़बड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-व्यतिक्रम। उलटफेर। २-हलचल।

खड़बिड़ा [वि.](हिं.) ऊंचानीचा। अ-समतल।

खड़बीहड़※ [वि.] (हिं.) देखो 'खड़बिड़ा'।

खड़मंडल [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यतिक्रम। गोलमाल। घोटाला।

खड़सान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खरसान'।

खड़ा [वि.] (हिं.) १-सीधा, ऊपर की ओर उठा हुआ। २-(प्राणी) टाँगे सीधी करके उनके आधार पर शरीर को ऊंचा किये हुए। दंडायमान। ३-ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ४-उत्पन्न। उपस्थित। तैयार। ५-उद्यत। सन्नद्ध तैयार। ६-आरंभ। जारी ७-स्थापित। निर्मित (घर दीवार)।
खड़ा जवाब देना-तुरन्त इन्कार करना। *खड़ा पड़ा पीटना*-हर दशा में शोक से रोते रहना। *खड़ा रहना*-प्रतीक्षा में रहना। *खड़ा होना*-सहायता देना। ८-जो उखाड़ा न गया हो। ९-जो काटा न गया हो। १०-समूचा। पूरा। ११-स्थिर।

खड़ाऊ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पादुका। काठ का खुला जूता।

खड़ाका [संज्ञा पु.] (हिं.) खटका। खड़खड़ शब्द।

खड़ादसरंग [संज्ञा पु.] (देश.) कुश्ती का एक पेंच।

खड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सफेद मिट्टी।
खड़िया में कोयला-बेमेल बात।

खड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खड़िया। खरी मिट्टी। २-पहाड़। ३-बारहखड़ी।

खड़ीडंकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मालखंभ की एक कसरत।

खड़ीबोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आधुनिक हिन्दी का वह पूर्व रूप जिसमें संस्कृत के शब्द मिलाकर वर्तमान हिन्दी भाषा तथा फारसी अरबी मिलाकर उर्दू जबान बनाई गई है। ठेठ हिन्दी।

खड़ुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर या हाथ में पहनने का कड़ा।

खड्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की तलवार। खाँडा। २-गैंडा।

खड्गपाणि [वि.] (सं.) हाथ में तलवार लिये हुए।

खड्गपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की कटारी

खड्गपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटार। छुरी।

खड्गमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक मुद्रा।

खड्गारींट [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े की ढाल।

खड्गिक, खड्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिकारी। आखेट करने वाला। भैंस के दूध का फेन।

खड्गी, खड्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-खड्गधारी। २-गैंडा।

खड्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) गड्ढा। गढ़ा।

खड्ढा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गड्ढा। गढ़ा। २-अधिक रगड़ के कारण बना हुआ चिह्न।

खणक [संज्ञा पु.] (हिं.) मूसा। चूहा।

खणनाड़िका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धर्मघड़ी।

खतंग [संज्ञा पु.] (देश.) मटमैले रंग का एक कबूतर।

ख़त [संज्ञा पु.] (अ.) १-पत्र। चिट्ठी। लिखावट। ३-रेखा। लकीर। ४-दाढ़ी के बाल। ५-हजामत। ६-माथे का ऊपरी भाग।
ख़त बनाना-माथे के ऊपरी भाग के बालों को उस्तरे से बराबर करना।
[संज्ञा स्त्री.] पृथिवी। जमीन।

खतखोट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड।

खतना [संज्ञा पु] (अ.) शिशन के आगे की त्वचा काटने की एक मुसलमानों की (प्रणाली) रस्म। सुन्नत।

खतम [वि.] (अ.) पूर्ण। समाप्त।
ख़तम करना-मार डालना। *ख़तम करना*-मर जाना।

ख़तमी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) गुलखैरू की जाति का एक पौधा जो औषधि के प्रयोग में आता है।

खतमीखतमा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी काम का पूरा हो जाना। अन्त। आखीर।

खतरम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खत्रियों का समाज। २-वह स्थान जहाँ खत्री बहुतायत में रहते हों।

खतर, खतरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-डर। भय। खौफ। २-आशंका। खटका।

खतरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खत्री जाति की स्त्री।

खतरेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) खत्री।

ख़ता [संज्ञा पु.] (अ.) १-कसूर। अपराध। २-धोखा। फरेब।
खता खाना-गलती करना।

खतावार [वि.] (अ. फा.) दोषी। अपराधी।

खति※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षति। हानि। नुकसान।

खतिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) 'खाती' देखो।
[संज्ञा स्त्री.] छोटा गड्ढा।

खतियाना [क्रि स.] (हिं.) प्रतिदिन के आय-व्यय या क्रयविक्रय के खाते को पृथक-पृथक लिखना।

खतियौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बही जिसमें रकम खतियाकर लिखी गई हो। खाता। २-पटवारी का वह कागज जिसमें हर एक आसामी की जमीन का रकबा तथा लगान दर्ज होता है।

खत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गड्ढा। २-अन्न रखने का स्थान ३-नील या शोरा बनाने का गड्ढा

खत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा खत्ता।

खत्म [वि.] (अ.) देखो 'खतम'।

खत्रवट, खत्रावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्षत्रीपन। २-वीरता।

खत्रिय [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रिय।

खत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भारत की एक जाति। २-क्षत्रिय।

खत्रीवाट※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खत्रवाट'।

खद [संज्ञा पु.] (सं.) स्थिरता। ठहराव।
[संज्ञा पु.] (हिं.) मुसलमान।

खदन [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन। खाना।

खदबदाना [क्रि. अ.] (हिं.) उबलते समय का 'खदबद' शब्द।

खदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गड्ढा। २-बछड़ा।
[वि.] बेकाम। रद्दी।

खदशा [संज्ञा पु.] (अ.) भय। डर। आशंका।

खदान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु को खोद कर निकालने के निमित्त बनाया हुआ गड्ढा। खान।

खदिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैर का वृक्ष। २-खैर। कत्था। ३-इन्द्र। ४-चन्द्रमा। ५-एक ऋषि का नाम।

खदिरपत्ती, खदिरपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाजवन्ती या लजाधुर नाम की बेल।

खदिरसार [संज्ञा पु.] (सं.) खैर। कत्था।

खदिरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वराहक्रांता। लाजवंती। लजाधुर।

खदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तालों के पास उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की घास।

खदीव [संज्ञा पु.] (फा.) मिस्र के बादशाह की उपाधि।

खदुका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-महाजन से ऋण लेकर व्यापार करने वाला व्यक्ति। २-ऋणी। कर्जदार।

खदुहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा व्यापार करने वाला व्यक्ति।

खदूरवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्ध की एक शक्ति का नाम।

खदेड़ना, खदेरना [क्रि. स.] (हिं.) डरा धमकाकर भगाना। हटाना। दूर करना।

खद्दड़, खद्दर [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ-कता हाथ-बुना कपड़ा। खादी।

खद्योत [संज्ञा पु.] (सं.) जुगनूँ। सूर्य।

खद्योतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-एक प्रकार का वृक्ष।

खद्योतन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

खन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षण। लमहा। २-समय। वक्त। ३-तुरंत। तत्काल। ४-खंड। तल्ला। मंजिल। ५-रुपये की आवाज।

खनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमीन खोदने वाला। चूहा। मूसा। ३-सेंधिया चोर। ४-भूतत्व शास्त्र का ज्ञाता।
[संज्ञा पु.] (हिं.) धातुखंडों के टकराने या बजने का शब्द।

खनकना [क्रि. अ.] (हिं.) खनखन शब्द होना।

खनकाना [क्रि. स.] (हिं.) खनखन शब्द उत्पन्न करना।

खनखजूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कनखजूरा।

खनखनाना [क्रि. अ.] (हिं.) खनखन शब्द होना।
[क्रि.स.] (हिं.) खनखन शब्द उत्पन्न करना।

खनना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खोदना'।

खननीय [वि.] (सं.) खोदने के योग्य।

खनयित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खंती खनक उपकरण या औजार।

खनवाना [क्रि. स] (हिं.) 'खनना' (खोदना) का प्रेरणार्थक रूप। खुदवाना।

खनहन+ [वि.] (हिं.) दुबला-पतला। कमजोर। २-सुंदर।

खनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खान।

खनिज [वि.] (सं.) खान में से खोदकर निकाला हुआ।

खनिजसंपत्, सम्पत् [संज्ञा पु.] (सं.) वह सम्पत्ति जो किसी खान से खोदकर निकाली गई हो। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि पदार्थरूपी सम्पत्ति जो खान से खोदकर निकाली गई हो।

खनित्र, खनित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) खोदने का औजार। खंता। गैंती।

खनिवसति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी स्थान पर कोई धातु निकालने की सभावना होने की अवस्था में वहां खान खोदने का निर्णय। *माइनिंग-सैटलमेंट*।

खनोना*+ [क्रि. स.] खनना। खोदना।

खन्न [संज्ञा पु.] (हिं.) खन-खन का शब्द।

खन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) चारा काटने का स्थान।

खपची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस की पतली तीली। कमठी।

खपटा+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'खपड़ा'।

खपड़झार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख पेलने के वर्ष के पहले दिन का समारोह।

खपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो घर की छाजन पर रखने के काम आता है। २-भिखमंगों के भीख मांगने का पात्र। ३-कछुए की पीठ पर का कड़ा ढकन। ४-ठीकरा। ५-घड़े के नीचे का आधा भाग। ३-चौड़े फल का तीर। (देश.) गेहूँ में होने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

खपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भड़भूजे की नांद। २-खोपड़ी।

खपड़ैल [संज्ञा पु.] (हिं.) खपरैल।

खपत, खपती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समावेश। समाई। गुंजायश। २-माल की कटती या बिक्री।

खपना [क्रि. अ.] (हिं) १-काम में आना या लगना। २-निभना। गुजारा होना। ३-नष्ट होना। ४-अत्याधिक परिश्रम करना।

खपरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूरे रंग का एक एक खनिज पदार्थ। छोटा खपड़ा। ३-फसल में लगने वाला एक कीड़ा।

खपरैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खपड़े से छाई हुई छत।
खपरैल डालना–खपड़े की छत छाना।

खपली [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गेहू।

खपाच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बांस की तीलियों का बना रेशम वालों का एक औजार। २-खपची।

खपाची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खपची'।

खपाट [संज्ञास्त्री] (हिं.) धौंकनी के भीतर के डंडे।

खपाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी प्रकार काम में लाना या व्यय करना। २-निभाना। निर्वाह करना। ३-नष्ट करना। ४-तंग करना। हैरान करना।
माथा या सिर खपाना–सिरपच्ची करना।

खपुआ* [वि] (हिं.) डरपोक। भगोड़ा। कायर।
[संज्ञा पु.] (हिं.) चूल के छेद में ठोंकी जाने वाली खपची।

ख-पुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंधर्वनगर। २-राजा हरिश्चन्द्र की आकाश-स्थित नगरी। ३-सुपारी का वृक्ष। ४-भद्रमोथा। ५-नखा।

ख-पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाशकुसुम। २-असम्भव या अनहोनी घटना।

खप्पड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खप्पर'।

खप्पर [संज्ञा पु.] (हिं) १-तसले के आकार का मिट्टी का बरतन। २-भिक्षापात्र। ४-खोपड़ी। ५-कालीदेवी का रुधिर पान करने का पात्र।
खप्पर भरना–खप्पर में भेंट भरकर देवी पर चढ़ाना।

खफगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अप्रसन्नता। नाराजगी। २-क्रोध। कोप।

ख़फ़ा [वि.] (अ.) २-अप्रसन्नता। नाराज। २-क्रुद्ध। रुष्ट।

ख़फ़ीफ़ [वि.] (अ.) १-अल्प। थोड़ा। कम। २-हलका। ३-तुच्छ। क्षुद्र। ४-लज्जित। शरमिंदा।

ख़फ़ीफ़ा [वि.] (अ.) [स्त्री. प्र.] देखो 'ख़फ़ीफ़'।

ख़फ्फ़ा [संज्ञा पु.] (देश.) कुश्ती का एक पेंच।

ख़बर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-समाचार। वृत्तांत। हाल। २-सूचना। जानकारी। ३-संदेशा। ४-चेत। सुधि। संज्ञा। ५-पता। खोज।
खबर उड़ना–अफवाह फैलाना। *खबर फैलना*–खबर उड़ना। *खबर लेना*–१-समाचार जानना। २-दीन अवस्था पर ध्यान देना।

ख़बरगीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-देखभाल। चौकसी। २-सहानुभूति और सहायता।

ख़बरदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सावधानी। होशियारी।

ख़बरि* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'खबर'।

ख़बरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खबर'।

ख़बरी [संज्ञा पु] (फा) दूत।

खबीस [संज्ञा पु.] (अ) दुष्ट तथा भयंकर व्यक्ति।

खब्त [संज्ञा पु.] (अ.) सनक। पागलपन। *खब्त सवार होना*–सनक चढ़ना।

खब्ती [वि.] (अ.) सनकी। सौदाई। पागल।

खब्बर, खब्बल [संज्ञा पु.] (देश.) दूब नामक घास।

खब्बा [वि.] (हिं.) १–बायाँ। दाहिने का उलटा। २–बाएं हाथ से काम करने वाला।

खभड़+ [वि.] (हिं.) बुड्ढा और दुर्बल। दुबला। पतला।

खभरना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १–मिलाना। मिश्रित करना। २–उथल-पुथल मचाना।

खभरुआ [वि.] (हिं.) छिनाल या पुंश्चली स्त्री का लड़का।

खभार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खँभार'।

खम [संज्ञा पु.] (फा.) १–टेढ़ापन। कज। लय में लोच लाने के लिए गाने के बीच बीच में विश्राम। *खम खाना*–१–मुड़ना। झुकना। २–हारना। पराजित होना। *खम ठोकना*–१–लड़ने के लिए ताल ठोकना। २–दृढ़ता दिखलाना। *खम ठोककर*–१–ताल ठोक कर। २–पूर्णतया। ३–निश्चयपूर्वक। *खम बजाना या मारना*–देखो 'खम ठोकना'।

खमकना [क्रि. अ.] (हिं.) खमखम शब्द करना।

खमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। सूरज।

खमदम [संज्ञा पु.] (फा.) पुरुषार्थ। साहस।

खमदार [वि.] (फा.) झुका हुआ टेढ़ा।

खमसना+ [क्रि. स.] (हिं.) मिलाना डालना।

खमसा [संज्ञा पु.] (अ.) १–पांच चरण की एक गजल। २–संगीत में एक प्रकार का ताल।

खमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'क्षमा'।

खमाल+ [संज्ञा पु.] (देश.) १–खजूर के हरे फल। २–जहाज में सामान की लदाई।

खमीर [संज्ञा पु.] (अ.) १–गुंधे हुए आटे का सड़ाव। २–कटहल अनानास आदि का सड़ाव जो पीने की तम्बाखू में सुगंध के लिए डाला जाता है।

खमीरा [वि.] (अ.) [पु. प्र.] खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाकर बनाया हुआ।

ख-मूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्मस्वरूप। २–शिव।

खमो [संज्ञा पु.] (देश.) एक छोटा सदाबहार पेड़।

खमोश [वि.] देखो 'खामोश'।

खमोशी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'खामोशी'।

खम्माच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालकोस राग की दूसरी रागिनी।

खम्माच-कान्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।

खम्माचटोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खंभावती और टोरी से मिलकर बनी एक सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

खम्माची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'खम्माच'।

खय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षय'।

ख़यानत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–धरोहर रखी हुई वस्तु न देना। २–चोरी या बेईमानी।

ख़याल [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'ख्याल'।

खयाली [वि.] (अ.) देखो 'ख्याली'।

खरंजा [संज्ञा पु.] (देश.) १–अधिक पकी हुई ईंट। झाँवाँ। खड़ंजा।

खर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गधा। २–खच्चर। ३–तृण। तिनका। ४–कौवा। ५–रावण का भाई। [वि.] १–कड़ा। सख्त। २–तेज। तीक्ष्ण। ३–घना। मोटा। ४–हानिकारक। अमांगलिक। ५–तेज धार का। ६–आड़ा। तिरछा।

खरक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चौपायों को रखने का घेरा। बाड़ा। २–पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।

खरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–खर-खर शब्द होना। २–फांस चुभने से पीड़ा होना। ३–सरकना। खड़कना।

खरकवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो उंगल चौड़ी जुलाहों की एक चिकनी पटरी जिसपर फैलाकर बिनाई होती है।

खरका [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़ा तिनका। *खरका करना*–भोजनोपरान्त। तिनके से खोदकर अन्न निकालना।

खरकोण [संज्ञा पु.] (सं.) तीतरपक्षी।

खरकोमल [संज्ञा पु.] (सं.) जेठ का महीना।

खरखरा [वि.] (हिं.) देखो 'खुरखुरा'।

खरखशा [संज्ञा पु.] (फा.) १–झगड़ा। लड़ाई। २–भय आशंका। डर। ३–झंझट। बखेड़ा।

खरखौकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खर, तृण आदि खाने वाली अग्नि।

खरग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खड्ग'।

खरगोश [संज्ञा पु.] (फा.) शशक। खरहा।

खरच [संज्ञा पु.] देखो 'खर्च'।

खरचना [क्रि. स.] (हिं.) १–व्यय करना। खर्च उठाना। २–व्यवहार में लाना। ३–बरतना।

खरचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खर्चा'।

खरची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'खर्ची'।

खरज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'षड्ज'।

खरजूर [संज्ञा पु.] देखो 'खजूर'।

खरतरगच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) जैन सम्प्रदाय की एक शाखा।

खरतल+ [वि.] (हिं.) १–खरा। स्पष्टवादी। २–शुद्ध हृदय वाला। ३–शील संकोचन करने वाला। ४–साफ। स्पष्ट। ५–उग्र। प्रचंड।

खरतुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) बथुए के समान एक घास।

खरदंड, खरदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पद्म।

खरदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खरादने का औजार।

खरदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठगूलर। श्यामलता।

खरदा [संज्ञा पु.] (देश.) अंगूर की पत्तियों को खा जाने वाला एक रोग।

खरदूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १–खर और दूषण नामक रावण के भाई। २–धतूरा। [वि.] जिसमें बहुत से दोष हों।

खरधार [संज्ञा पु.] (सं.) तेज धार वाला अस्त्र। [वि.] तेज धार वाला।

खरध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) १–रामचन्द्र। २–कृष्णचन्द्र।

खरनादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेणुका नामक गंध द्रव्य।

खरना [क्रि. स.] (हिं.) पानी में उबाल कर साफ करना।

खरपा [संज्ञा पु.] (हिं.) चौबगला।

खरब [संज्ञा पु.] (हिं.) सौ अरब की संख्या।

खरबूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) ककड़ी की जाति की बेल के लगने वाला एक गोल फल।

खरब्बा+ [वि.] (हिं.) चरित्रहीन। बदचलन।

खरभर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–रौला। शोर। गुल। २–हलचल।

खरभराना [क्रि. अ.] (हिं.) १–शोर करना। रौला करना। २–हलचल मचाना। ३–व्याकुल होना।

खरभराहट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खरभर'।

खरमंजरी, खरमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिचड़ा। अपामार्ग।

खरमस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दुष्टता। पाजीपन।

खरमास [संज्ञा पु.] (सं.) पौष और चैत्रमास जिनमें विवाह आदि शुभकार्य वर्जित हैं।

खरमिटाव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जलपान। कलेवा।

खरल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पत्थर या लोहे की कुंडी जिसमें औषधियां घोटी जाती हैं। *खरल करना*–महीन कूटना।

खरली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खली'।

खरवट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) किसी वस्तु को रेतने का एक औजार।

खरवाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) खरमास। पौष और चैत्रमास जबकि सूर्य धन और मीनराशि में होता है।

खरशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) गदहे का रेंकना। कर्कश स्वर।

खरशिला [संज्ञा पु.] (सं.) मन्दिर आदि की कुरसी का ऊपरी भाग।

खरस [संज्ञा पु.] (हिं) भल्लूक। भालू। रीछ।

खरसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का भोज्य पदार्थ। २–खाज। खुजली।
[संज्ञा पु.] (देश.) १–ग्रीष्मऋतु। २–अकाल

खरसाइंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु के जलने की गंध।

खरसान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हथियार तेज करने की एक प्रकार की सान।

खरसुमा [वि.] (हिं.) ऊपर उठे हुए सूमों वाला (घोड़ा)।

खरसैला [वि.] (हिं.) जिसे (पशु को) खुजली हुई हो।

खरहर [संज्ञा पु.] (देश.) बलूत की जाति का एक पेड़।
[संज्ञा पु.] (हिं.) कूड़ा करकट फेंकने का स्थान।

खरहरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) झाड़ू देना।

खरहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–अरहर या रहठे के डंठलों का बना झाड़ू। झंखरा। २–वह कंघी वा बुरुश जिससे घोड़े के रोंए साफ किये जाते हैं।

खरहरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक मेवा।

खरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) चूहे की जाति का पर उससे बड़े आकार का एक प्रसिद्ध जंतु। खरगोश।

खरही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढेर। समूह। राशि। (अन्न या घास)।

खरांडक, खराण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

खरांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूय।

खरा [वि.] (हिं.) १–तीखा। तीक्ष्ण। तेज। चोखा। २–अच्छा स्वच्छ। विशुद्ध। बढ़िया। ३–करारा। ३–कड़ा। चीमड़।
खरा खोटा–भला बुरा। *खरा खोटा परखना*–अच्छे बुरे की पहचान करना। *जी खरा खोटा होना*–नीयत खराब होना। *खरे आये*–अच्छे मिले। *कान खरा करना*–कान मलना।
५–साफ। छल-कपटरहित। ६–नकद (दाम) ७–स्पष्टवक्ता। ८–यथातथ्य। अप्रिय सत्य। ९–बहुत। अधिक।
खरा आदमी–लेन देन का सच्चा। ईमानदार। *रुपये खरे होना*–रुपये मिलने का निश्चय होना। खरी सुनाना.। *खरीखरी सुनाना*–सच्ची बात कहना।

खराई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) खरापन। खरा होने का भाव।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) प्रातः जलपान न मिलने के कारण तबियत खराब होना।

खराऊँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खड़ाऊँ'।

खराद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक यंत्र जिस पर चढ़ाकर काठ या धातु वस्तुए सुडौल और चिकनी बनाई जाती है। २–खरादने की क्रिया या भाव। ३–गढ़न। बनावट। ढंग।

खरादना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी वस्तु को खराद पर चढ़ा कर सुडौल और चिकना बनाना। २–काटछांटकर सुडौल बनाना।

खरादी [संज्ञा पु.] (हिं.) खरादने का काम करने वाला व्यक्ति।

खरापन [संज्ञा पु.](हिं.) १–खरा होने का भाव। २–सत्यता। सचाई। ३–उन्मत्तता।
खरापन बघारना–सच्चाई की डींग मारना।

खराब [वि.](अ.) १–बुरा। निकृष्ट। २–मर्यादा भ्रष्ट। पतित। ३–जो दुरवस्था में हो।
खराब करना–(किसी पर स्त्री के साथ) कुकर्म करना। *खराब होना*–बदचलन होना।

खराबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–दोष। अवगुण। २–दुर्दशा। दुरवस्था। ३–गंदगी।
खराबी में पड़ना–विपत्ति में फंसना।

खरायँध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूत्र या क्षार के समान बदबू।

खरारि, खरारी [संज्ञा पु.] (सं.) १–रामचन्द्र। २–विष्णु। ३–कृष्णचन्द्र। ४–३२ मात्राओं के एक छंद का नाम।

खँराश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खरोंछ। छिलन। हलका घाव।

खरिक [संज्ञा पु.] (देश.) खरीफ की फसल के बाद बोया जाने वाला ऊख।

खरिच+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खर्च'।

खरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घास भूसा आदि बांधने की जाली। २–झोली। ३–कंडे की राख। ४–खड़िया मिट्टी।

खरियाना [क्रि. स.] (हिं.) १–थैले या झोली में भरना। २–झोली में से उलटना।

खरिहट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह पतली लकड़ी जिसके डोरा बंधा रहता है और जिसकी सहायता से चाक पर से कुम्हार बरतन मिट्टी में से काट कर उतारता है।

खरिहान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खलियान'।

खरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की ईख।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खड़िया मिट्टी। २–खली।

खरीता [संज्ञा पु.] (अ.) १–थैली। जेब। खीसा। २–वह बड़ा लिफाफा जिसमें राजकीय आदेश पत्र भेजे जाते हैं।

खरीद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–क्रय। मोल लेने की क्रिया मोल लिया हुआ पदार्थ।

खरीददार [संज्ञा पु.] (फा.) १–मोल लेने वाला व्यक्ति। ग्राहक। २–चाहने वाला।

खरीदना [क्रि. स.] (हिं.) मोल लेना। क्रय करना। क्रय।

खरीदार [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'खरीददार'।

खरीदारी [संज्ञा स्त्री] (फा.) मोल लेने की व्यवस्था।

खरीफ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) असाढ़ से तक में काटी जाने वाली फसल।

खरील [संज्ञा पु.] (देश.) बंदी के समान पर पहनने का एक गहना।

खरें [संज्ञा पु.] (देश.) आने रुपयों की (दलालों की बोली)।

खरेठ [संज्ञा पु.] (देश.) एक अगहनियां

खरेडुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खरोरी'।

खरेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खरहरा'।

खरोंच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छिल जाने का खराश। २–एक प्रकार की पकोड़ी।

खरोंचना [क्रि. स.] (हिं.) छीलना। करोना।

खरोंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) गहरी रगड़ या

खरोष्ट्री, खरोष्ठी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक लिपि जो दाहिने से बांए को लिखी थी। गांधारलिपि।

खरौंट [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'खरोंच'।

खरौंटना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खरोंचना'।

खरौंहा* [वि.] (हिं.) कुछ-कुछ खारा या नमकीन।

खर्खोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का

खर्ग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

खर्च [संज्ञा पु.] (हिं.) १–किसी काम में होने वाला व्यय। २–व्यय। सरफा। खपत।
खर्च उठाना–व्यय का भार सहना। *डालना*–१–व्यय करने को विवश करना। २–किसी रकम का खर्च के मद में लिखना। *खर्च चलाना*–खर्च के लिए रुपये देते रहना।

खर्चना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खरचना'।

खर्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खर्च'।

खर्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–फीस। मेहनताना। २–वेश्या को कसब कराने का पुरस्कार।
खर्ची पर चलना या जाना–कुकर्म कराना।

खर्चीला [वि.] (हि.) बहुत अधिक खर्च वाला।

खर्जरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जी मिट्टी।

खर्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपदंश रोग।

खर्जूर [संज्ञा पु.] (सं.) १–खजूर। २–चांदी। ३–बिच्छू। ४–हरताल।

खर्जूरवेध [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में एक प्रकार का योग।

खर्पर [संज्ञा पु.] (सं.) १–भिक्षा मांगने का खप्पर। २–खोपड़ा। २–काली का रुधिर पान का पात्र। ३–धूर्त्त। ३–चोर। ५–खपरिया नाम की उपधातु।

खर्ब [वि.] (सं.) १–छोटा। लघु। २–जिसका अंग हो। [संज्ञा पु.] १–सौ अरब की संख्या।

बारहवें स्थान की संख्या। ३-कुबेर की नौ निधियों में से एक ४-कूजा नामक वृत्त।

खर्वट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत पर बसा हुआ गांव। २-चारसौ गांवों के मध्य का गांव।

खर्वित [वि.] (सं.) ह्रस्व। कटा हुआ।

खर्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह अमावस्या जिसमें चतुर्दशी मिली हो। २-वह तिथि जिसका कालमान पहले दिन की तिथि के कालमान से कुछ कम हो।

खर्राच+ [वि.] (हिं.) खर्चीला।

खर्रांट [वि.] (हिं.) देखो 'खुर्रांट'।

खर्रा [संज्ञा पु.] (हिं) १-वह लम्बा कागज जिसमें कोई विवरण या हिसाब लिखा हो। २-पीठ पर छोटी-छोटी फुंसियां निकलने का रोग।

खर्राटा [संज्ञा पु.] (हिं.) निद्रा की अवस्था में नाक से निकलने वाला शब्द।
खर्राटा भरना, मारना या लेना-बेखबर होना।

खर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़ के नीचे बहने वाली छोटी नदी।

खल [वि.] (सं.) १-क्रूर। २-नीच। कमीना। दुष्ट। दुर्जन। चुगलखोर। ५-निर्लज्ज। ६-विश्वासघाती।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-खलियान। २-तमाल का वृक्ष। ३-सूर्य। ४-कोठिला। ५-तलछट। ६-पृथ्वी। ७-स्थान। ८-दवा घोटने की खरल।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-पत्थर का बड़ा टुकड़ा। २-सुनारों का ठप्पा।
[संज्ञा स्त्री] (देश.) देखो 'खली'।
खल करना-खरल में बारीक पीसना।

खलई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खलता।

ख़लक़+ [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्राणीमात्र। जीवधारी। २-दुनिया। संसार।

ख़लक़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सृष्टि। २-भीड़। झुंड।

खलखलाना [क्रि. अ.] (हिं.) उबलना। खलना।

खलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाल। २-चमड़ा।

खलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुष्टता। नीचता। कमीनापन।
[संज्ञा पु.] (हिं.) झोला। थैला।

खलत्व [संज्ञा प.] (सं.) खलता। दुष्टता। नीचता।

खलना [क्रि. अ.] (हिं.) बुरा लगना। अप्रिय मालूम होना।
[क्रि. स.] मोड़ना। झुकाना।

खलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोनारों का एक औजार।

खलबल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हलचल। २-शोर। हल्ला। ३-कुलबुलाहट।

खलबलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खलबल शब्द करना। २-खौलना। ३-कुलबुलाना। ४-विचलित होना।
[क्रि. स.] खलबली डालना। खलबली मचाना।

खलबली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हलचल। २-व्याकुलता। घबराहट।

खलमूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

खलयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) खलियान में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

खलल [संज्ञा पु.] (अ.) रोक। अवरोध। रुकावट। बाधा।

खलसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ी मछली।

खलाइत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धौंकनी।

खलाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खलता। दुष्टता।

खलाना※+ [क्रि. स.] (हिं.) १-खाली करना। गड्ढा बनाना। ३-फूले हुए भाग को नीचे की ओर दबाना। ४-पिचकाना।

खलार [वि.] (हिं.) नीच। गहरा।

खलास [वि.] (अ.) ११-छुटा हुआ। मुक्त। २-खतम। समाप्त।

खलासी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुक्ति। छुटकारा। छुट्टी। [संज्ञा पु.] (उर्दू) १-जहाज पर काम करने वाला। २-सामान ढोने या खेमा खड़ा करने वाला मजदूर।

खलाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूरी बाजी की हार (ताश के खेल में)।

खलित※ [वि.] (हिं.) १-चलायमान। चंचल। २-गिरा हुआ। पतित।
खलित होना-वीर्यपात होना।

खलिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़े की लगाम। २-वह लोहा जिसमें लगाम जुड़ी रहती है।

खलियान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खेतों के पास का वह स्थान जहां फसल काटकर रखी जाती है। २-राशि। ढेर।

खलियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-खाल उतारना। चमड़ा उपाड़ना। २-खाली करना।

खलिवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) मसूड़ों की जड़ का मांस बढ़ जाने का रोग।

खलिश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) पीड़ा। कड़क।

खलिहान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खलियान'।

खली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेलहन से तेल निकाल लेने के उपरान्त बची हुई सीठी।
[वि.] (हिं.) खलने या खटकने वाला।
[संज्ञा पु.] (हिं.) महादेव।

खलीज [संज्ञा पु.] (अ.) खाड़ी।

खलीता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खरीता'।

खलीफा [संज्ञा पु.] (अ.) १-अधिकारी। २-बूढ़ा व्यक्ति। ३-नाई। हजाम। ४-खानसामा। खुर्रांट (दरजी)।

खलु [अव्यय., क्रि. वि.] (सं.) १-निश्चयपूर्वक अव्य। मत। नहीं। २-शब्दालंकार में निश्चय अवश्य, अब इस समय यह शब्द पाद पूर्ण करने के निमित्त व्यवहार होता है

खलूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास या व्यायाम करने का स्थान।

खलेल [संज्ञा पु.] (हिं.) तेल में मिला खली का अंश। फुलेल का गाज।

खल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का कपड़ा। २-चमड़ा। ३-चमड़े की मशक। खरल। ५-चातक।

खल्लड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चमड़े की मशक या थैला। खरल। ३-चमड़ा। ४-वह वृद्ध जिसकी चमड़ी लटक गई हो।

खल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खलिहान। २-जूता। नृत्य में एक प्रकार का भाव।

खल्लासर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में दसवाँ योग।

खल्ली [संज्ञा पु.] (सं.) एक वायु रोग। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खली'।

खल्लीट [संज्ञा पु.] (सं.) गंज। सिर के बाल झड़ जाने का रोग।

खल्व [संज्ञा पु.] (सं.) सिर के बाल झड़जाने का रोग। गंजापन।

खल्वाट [संज्ञा पु.] (सं.) गंजापन का रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं। [वि.] जिसकी खोपड़ी के बाल झड़ गये हों। गंजा।

खवा [संज्ञा पु.] (हिं.) स्कंध। कंधा। भुजमूल।
खवे से खवा छिलना-कंधे से कंधा छिलना। २-अधिक भीड़ होना।

खवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खाने की क्रिया। २-भोजन के निमित्त दिया गया धन। (देश.) नाव का वह गड्ढा जिसमें मस्तूल खड़ा किया जाता है।

खवाना+※ [क्रि. स.] (हिं.) भोज कराना। खिलाना।

ख़वास [संज्ञा पु.] (अ.) रईसों और राजाओं का खास नौकर जिसका काम कपड़े पहनना और अन्य सजावट करने वाला व्यक्ति।

ख़वासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खवास काम। खिदमतगारी। २-चाकरी। नौकरी। ३-अंगिया में बगल का जोड़।

खवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक घास का नाम।

खवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) खाने वाला। भोजन करने वाला।

खश [संज्ञा पु.] देखो 'खस'।

खस [संज्ञा स्त्री] (फा.) गाडर नामक घास की सुगन्धित जड़ जिसके गरमियों में कमरे ठंडे करने के लिए पर्दे और टट्टियां बनती हैं।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्तमान गढ़वाल का

प्राचीन नाम। २-इस प्रदेश में रहने वाली एक प्राचीन जाति।

खसकंत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खसकने का काम।

खसकना [क्रि अ.] (हिं.) सरकना। स्थानांतरित होना।

खसकवाना [क्रि. स.] (हिं.) खसकाने का कार्य कराना।

खसकाना [क्रि. स.] (हिं.) सरकामा। हटाना। 'खसकना' का सकर्मक रूप।

खसखस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पोस्ते का दाना।

खसखसा [वि.] (हिं) १-भुरा-भुरा । २-बहुत छोटा। जैसे-खसखसी दाढ़ी।

खसखाना [संज्ञा पु.] (फा.) खस की टट्टियों से घिरा कमरा या स्थान।

खसखास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खसखस'।

खसखासी [वि.] (हिं.) खसखस (पोस्ते) के फूल के समान रंग का। नीलापन लिये सफेद रंग का।

खसना* [क्रि. अ.] (हिं.) अपने स्थान से हटना। खसकना। गिरना।

खसनीब [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का गंधाबिरोजा।

खसम [संज्ञा पु.] (अ.) १-पति। खाविंद। २-मालिक। स्वामी।

खसम करना-किसी पुरुष को पति बनाना। *खसम पीटी*-(गाली) पति मृत्यु देखने वाली।

खसरा [संज्ञा पु.] (अ.) पटवारी का वह कागज जिसमें प्रत्येक खेत का नम्बर और रकबा लिखा रहता है। कच्चा चिट्ठा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की खुजली।

खसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध।

खसलत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) स्वभाव। आदत। प्रकृति।

खसाना [क्रि. स.] (हिं) गिराना। नीचे की ओर खसकाना।

खसिया [वि.] (हिं.) १-अंडकोश निकला हुआ। बधिया। २-हीजड़ा। नपुंसक। ३-बकरा।

खसियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) अंडकोश निकलवाकर नपुंसक करवाना। बधिया करना।

खसी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खस्सी'।

खसीस [वि.] (अ.) कृपण। कंजूस।

खसीसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कंजूसी। कृपणता।

खसोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बुरी तरह से नोचना। २-बलपूर्वक लेने या छीनने की क्रिया।

खसोटना [क्रि. स.] (हिं.) १-नोचना। झटके से उखाड़ना। २-छीनना।

खसोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

खसोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खसोट'।

खस्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथिवी।

खस्ता [वि.] (सं.) थोड़े से दबाव से टूट जाने वाला। भुरभुरा।

खस्वस्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल्पित बिन्दु जो सिर के ऊपर आकाश में माना गया है। शीर्षबिन्दु।

खस्सी [संज्ञा पु.] (अ.) बकरा। [वि.] १-बधिया। २-नपुंसक।

खहर [संज्ञा पु.] (सं.) गणित में वह राशि जिसका हर शून्य हो। जैसे-४।

खाँ [संज्ञा पु.] देखो 'खान'।

खाँई+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'खाई'।

खाँख+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छिद्र। छेद। सूराख

खाँखर+ [वि.] (हिं.) १-छिद्रयुक्त। सूराखदार। २-जिसकी बुनावट दूर-दूर पर हो। ३-खोखला। पोला।

खाँग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काँटा। कंटक। २-तीतर आदि पक्षियों के पैर में निकलने वाला कांटा। ३-गैंडे के मुंह के ऊपर का सींग। ४-मुंह के बाहर निकला हुआ जंगली सूअर का दांत।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमी। त्रुटि। अभाव।

खाँगड़, खाँगड़ा+ [वि.] (हिं.) १-खांग रखने वाला। २-शस्त्रधारी। हथियारबंद। ३-अक्खड़। ४-बलवान।

खाँगना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-लंगड़ा या चलने में असमर्थ होना। २-कम होना। घटना।

खांगी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कमी। घाटा। त्रुटि।

खाँच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संधि। जोड़। २-गठन। खींचने का भाव।

खाँचना* [क्रि. स.] (हिं.) १-अंकित करना। चिह्न बनाना। खींचना। २-खींच कर या कस कर बनाना। २-जल्दी जल्दी लिखना।

खाँचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झावा। बड़ा टोकरा। २-बड़ा पिंजड़ा।

खाँड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कच्ची शक्कर। बिना साफ की हुई चीनी।

खाँडव, खाण्डव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन वन जिसे अर्जुन ने जलाया था। २-खांड़ की बनी मिठाई।

खाँडवप्रस्थ, खाण्डवप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) इंद्रप्रस्थ कौ पहला नाम।

खाँडविक, खाण्डविक [संज्ञा पु.] (सं.) मिठाई बनाने वाला। हलवाई।

खांड़ा, खाण्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खड्ग। तलवार। २-खंड। टुकड़ा। भाग।

खांडिक, खाण्डिक [संज्ञा पु.] (सं.) खांडविक। हलवाई।

खांड़ो [संज्ञा पु.] देखो 'षाड़व'।

खाँधना* [क्रि. स.] (हिं.) खाना।

खांपना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-खोसना। २-लगाना। जड़ना। ३-चारपाई की बुना कसना।

खाँभ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खंभा। २-लिफाफा।

खाँभना [क्रि. स.] (हिं.) लिफाफे में बंद करना

खाँवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गहरी और खाई। २-खेत की चौड़ी मेंड़।

खाँसना [क्रि. अ.] (हिं.) गले में अटके हुए या दूसरी चीज निकालने अथवा केवल करने के लिए वायु को झटके के साथ बाहर निकालना।

खांसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खांसने का २-खांसने की क्रिया। ३-खांसने का

खाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रक्षा के निमित्त स्थान के चारों ओर खोदा हुआ खंदक।

खाऊ [वि.] (हिं.) १-बहुत खाने वाला। २-किसी का धन या वस्तु हजम कर वाला।

खाक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-धूल। मिट्टी। राख। गर्द। भस्म। २-तुच्छ। अकिंचन। ३-कुछ नहीं।

खाक उडना-(कहीं पर) तबाही होना। होना। *खाक उडाना*-१-कुछ न करना। अपनी इज्जत बरबाद करना। पलीद करना। *खाक उडाते फिरना*- छानना। इधर उधर भटकते फिरना। *करना*-मिट्टी में मिलाना। *खाक बात कहना*-अत्याधिक नम्र होकर बोलना *खाक चाटना*-सिर नवाना। अनुनय-विनय करना। *खाक छानना*-१-बहुत तलाश करना २-मारा-मारा फिरना। *खाक डालना* दबाना। छिपाना। २-भूल जाना। *फांकना*-१-भटकता फिरना। झूठ बोलना *खाक बरसाना*-अच्छी हालत न रहना। *में मिलना*-१-बरबाद होना। २-हस्ती देना। अपने को समाप्त कर देना। *मिलाना*-नष्ट-भ्रष्ट कर देना।

खाकरोब [संज्ञा पु.] (फा.) गलियों में झाड़ू देने वाला। मेहतर।

खाकसार [वि.] (फा.) १-धूल में मिला हुआ। २-तुच्छ। अकिंचन।

[संज्ञा पु.] १-एक मुसलमान लोकसेवक दल जो सैनिक वेश में रहते हैं और साथ में बेलचा रखते हैं। २-इस दल का सदस्य स्वयंसेवक।

खाकसीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खूबकलां नाम की औषधि।

खाका [संज्ञा पु.] (फा.) १-चित्र का डौल। ढांचा। नकशा। २-कच्चा चिट्ठा। ३-मसौदा। आलेख।

खाका उड़ाना-नकल उतारना। २-उपहास

करना। धूल उड़ाना।

खाकी [वि.] (फा.) १-मिट्टी के रंग का। भूरा। २-बिना सींची हुई (भूमि)।

खाख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खाक'।

खाखस [संज्ञा पु.] (हिं.) पोस्ते का दाना।

खाग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खांग'।

खागना [क्रि. अ.] (हिं.) चुभना। गड़ना।

खाज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुजली।

खाजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भक्ष्य या खाद्य वस्तु। २-एक प्रकार की मिठाई। ३-एक जंगली वृक्ष।
खाजा होना-शिकार होना।

खाजिक [संज्ञा पु.] (सं.) लाजा। लावा। लाई।

खाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खाजा'।

खाट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चारपाई। माची। खटिया।
खाट पर पड़े खाना-१-बीमारी की अवस्था में ... होना। २-निःशंक खर्च करना। *खाट लगना या खाट से लगना*-बीमारी या दुर्बलता के कारण खाट से उठने योग्य भी न होना। *खाट से उतारना*-मरणासन्न।

खाटि, खाटिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरथी। जनाजा।

खाटिक* [संज्ञा पु.] (देश.) एक अगहनिया धान।

खाटा* [वि.] (हिं.) देखो 'खट्टा'। [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'कढ़ी'।

खाड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) गड्ढा। गर्त।

खाड़व [संज्ञा पु.] (हिं.) षाड़व। छः स्वर का एक राग।

खाड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। खलीज।

खाड़ौ* [संज्ञा पु.] (सं.) वे पतली-पतली और लम्बी लकड़ियां जिनके ऊपर खपड़े छाए जाते हैं।

खाढ़र+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खादर'।

खात [संज्ञा पु.] (सं.) १-खोदना। २-तालाब। ३-कुआं। गड्ढा। वह गड्ढा जिसमें कूड़ा करकट इकट्ठा करके खाद बनाया जाता है। [वि.] मैला। गंदा।

खातक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा तालाब। तलैया। २-ऋणी। कर्जदार। ३-परिखा। खाई।

खातभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुएं का गड्ढा। २-परिखा। खाई।

खातव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) वह गणित जिसके द्वारा पोखर, तालाब आदि का क्षेत्रफल जाना जाता है।

खातमा [संज्ञा पु.] (फा.) १-अन्त। २-मृत्यु।

खाता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अन्न रखने की बड़ी खत्ती। किसी व्यक्ति, कार्य, विभाग आदि के लेनदेन अथवा आयव्यय का अलग लेखा। अकाउण्ट। ३-हिसाब-किताब की बही। ४-मद। विभाग।
खाता खोलना-१-हिसाब खोलना। २-नया संबंध स्थापित करना। *खाता डालना*-लेनदेन आरम्भ करना।

खाताबही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बही जिसमें लोगों या मदों के पृथक-पृथक खाते या हिसाब रहते हैं। लेजर।

खाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोदने का कार्य।

ख़ातिर [संज्ञा पु.] (अ.) सम्मान। इज्जत। आदर।
+[अव्य.] (अ.) वास्ते। निमित्त। लिए।

ख़ातिरख़ाह [क्रि. वि., अव्य.] (फा.) जैसा चाहिए वैसा। यथेच्छ। इच्छानुसार।

ख़ातिरजमा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) संतोष। तसल्ली।

ख़ातिरदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आवभगत।

ख़ातिरी [संज्ञा स्त्री.] १-खातिरदारी। २-संतोष। तसल्ली।

खाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खोदी हुई भूमि। २-छोटा ताल। ३-जमीन खोदने वाली एक जाति। खतिया। ४-बढ़ई।

खाद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गला-सड़ा कूड़ा जो खेत की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए डाला जाता है। पांस।

खादक [वि.] (सं.) १-खाने वाला। भक्षक। २-ऋण लेने वाला।

खादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आहार। भोजन। खाना। २-दांत।

खादनीय [वि.] (सं.) खाने योग्य। भक्षणीय।

खादर [संज्ञा पु.] (हिं.) नीची जमीन। कछार। बांगर का उलटा।
खादर लगना-चौपायों के चरने योग्य घास उगना।

खादि [संज्ञा पु.] (सं.) १-भक्ष्य। खाद्य। २-कवच। ३-दस्ताना। हस्तत्राण। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोष। ऐब।

खादित [वि.] (सं.) खाया हुआ। भक्षित।

ख़ादिम [संज्ञा पु.] (अ.) १-नौकर। सेवक। २-दरगाह का रक्षक।

खादिर, खादिरसार [संज्ञा पु.] (सं.) कत्था। खैर।

खादी [वि.] (हिं.) १-खाने वाला। भक्षक। २-रक्षक। ३-कंटीला। ४-छिद्रान्वेषी। ५-दूषित। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'खद्दड़'।

खादुक [वि.] (सं.) हिंसालु। जिसकी प्रवृत्ति सदा हिंसा की ओर हो।

खाद्य [वि.] (सं.) खाने योग्य। भक्ष्य। भोज्य। [संज्ञा पु.] खाने की वस्तु। भोजन।

खाद्यान्न [संज्ञा पु.] (सं.) खाने के काम आने वाले अन्न। जैसे-चावल, गेहूँ, चना आदि।

खाधु*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भोज्य पदार्थ। भोजन।

खाधुक [संज्ञा पु.] (हिं.) भोज्य-पदार्थ। भोजन

खान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भोजन। खाने का काम। २-भोजन की सामग्री। ३-भोजन करने का ढंग अथवा आचार। [संज्ञा स्त्री.] १-वह स्थान जहां से धातु, पत्थर, आदि खोदकर निकाले जाते हैं। आकर। खानि। खदान। २-आधार या उत्पत्ति स्थान। ३-खजाना। ४-कल्हू का खौंयाघर। [संज्ञा पु.] १-सरदार। उमराव।

खानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खान खोदने वाला। २-बेलदार। ३-मेमार। राज।

ख़ानक़ाह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुसलमान साधुओं के रहने का स्थान या मठ।

ख़ानगी [वि.] (फा.) १-निज का। आपस का। २-घरेलु। ३-घरू। [संज्ञा स्त्री.] कसब करने वाली। कसबी।

ख़ानजादा [संज्ञा पु.] (फा.) १-अमीर का पुत्र। २-उच्चकुलोत्पन्न व्यक्ति।

ख़ानदान [संज्ञा पु.] (फा.) वंश। कुल। घराना।

ख़ानदानी [वि.] (फा.) १-अच्छे कुल या वंश का। २-वंश-परम्परागत। पैत्रिक। पुश्तैनी।

खानदेश [संज्ञा पु.] (हिं.) सतपुरा की पर्वत माला के दक्षिण में एक प्रदेश।

खानपान [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन और जल। आबदाना। २-खानापीना। ३-भोजन करने की रीति। खानेपीने का आचार। ४-खाने पीने का संबंध।

ख़ानसामा [संज्ञा पु.] (फा.) अंगरेजों, मुसलमानों आदि का रसोइया।

खाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भोजन करना। भक्षण करना। २-हिंसक जंतुओं का शिकार करना। ३-विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४-तंग करना। कष्ट देना। ५-उड़ा देना। न रहने देना। ६-हड़प जाना। बेईमानी से लेना। ६-रिश्वत आदि लेना। ७-(आघात, प्रभाव आदि) सहना। बरदास्त करना। [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन।
खाना और गुर्राना-उपकार न मानना। *खाना कमाना*-मेहनत मजदूरी से निर्वाह करना। *खाना न पचना*-बेकल रहना। जीन मानना। *खाना पीना लहू मट्टी करना*-क्रोध, शोक, खेद आदि के कारण खाने का आनन्द बिगड़ना। *खाने के दांत और दिखाने के और*-भीतर बाहर में अंतर होना। *खाने दौड़ना*-बहुत क्रोधित होना।

ख़ाना [संज्ञा पु.](फा.) १-आलय। घर। मकान २-किसी वस्तु के रखने का घर (केस)। ३-

सारणी या चक्रका विभाग। कोष्ठक। ४-संदूक। पेटी।

खानाख़राब [वि.] (फा.) १-चौपट करने वाला। सत्यानाशी। २-जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो। आवारा।

ख़ानाजंगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गृहकलह। आपस की लड़ाई।

ख़ानाज़ाद [वि] (फा.) घर में पैदा या पाला-पोसा हुआ। [संज्ञा पु] दास। गुलाम।

ख़ानातलाशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कोई खोई या चुराई वस्तु किसी के घर ढूंढ़ना।

ख़ानादारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गृहस्थी।

खानापीना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खान-पान'।

ख़ानापुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी चक्र अथवा सारणी के कोठों या खाली स्थानों में यथा स्थान संख्या, विवरण आदि लिखना। नकशा भरना।

खानाबदोश [वि] (फा.) जिसके रहने अथवा ठहरने का कोई निश्चित स्थान न हो।

खानाशुमारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मकानों को गिराने का कार्य।

खानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'खान'। २-ओर। तरफ। ३-तरह। प्रकार।

खानिक*+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खान। खदान

खानिल [वि.] (सं.) सेंध लगाने वाला। सैंधिया चोर।

खानिष्क [संज्ञा पु.] (सं.) अति शुष्क मांस।

खानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खान। खदान।

खान्य [वि.] (सं.) खोदने योग्य। जो खोदने योग्य हो।

खापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा। सुरसरि।

खापट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भूमि जिसमें रेह का भाग अधिक रहता है।

खापर+ [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'खापट'। २-ऊभड़-खाभड़ भूमि।

खाब*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वप्न। सपना।

खाबड़खूबड़ [वि.] (हिं.) ऊंचा-नीचा।

खाभा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मिट्टी का पात्र जिसमें कोल्हू से तेल निकल कर आता है।

खाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लिफाफा। २-जोड़। टांका। ३-खंभा। ४-मस्तूल।

ख़ाम [वि.] (फा.) १-अपक्व। कच्चा। २-अदृढ़। जो मजबूत न हो। ३-अनुभवहीन। नौसिखिया।

खामख़याली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अविचार। गलतफ़हमी।

खामखाह, खामखाही [क्रि. वि] देखो 'खाहमखा'।

खामना [क्रि. स.] (हिं.) १-चिट्ठी को लिफाफे में बन्द करना। २-गीली मिट्टी या आटे से किसी बरतन का मुंह बन्द करना।

खामी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कचाई। कच्चापन। २-नौसिखियापन। ३-त्रुटि। कमी।

खामोश [वि.] (फा.) मौन। चुप।

खामोशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मौन रहने की अवस्था। चुप्पी।

खाया [संज्ञा पु.] (फा.) अंडकोष।

खायाबरदार [वि.] (फा.) १-चापलूस। २-गुलाम। ३-कमीना।

खायाबरदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चापलूसी। खुशामद। गुलामी।

खार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नमक क्षार। २-सज्जी ३-लोना। रेह। ४-धूल। गर्द। ५-एक प्रकार की झाड़ी जिससे खार निकलता है।

खार [संज्ञा पु.] (फा.) १-कंटक। कांटा। २-मुर्गा, तीतर आदि के पैर का तीखा नाखून। ४-डाह। जलन। विद्वेष।

खारक [संज्ञा पु.] (हिं.) छोहारा।

खारवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) खलासी। मल्लाह। जहाजी।

खारा [वि.] (हिं.) १-नमकीन। २-अरुचिकर। अप्रिय।

[संज्ञा पु.] १-एक प्रकार का धारीदार वस्त्र। २-घास, भूसा बांधने का जाला। ३-आम तोड़ने का जालीदार थैला। ४-झावा। खांचा। बड़ा पिंजड़ा।

खारिक*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छोहारा।

खारिज [वि.] (अ.) १-बहिष्कृत। अलग किया हुआ। २-भिन्न। ३-अलग। ४-(वह अभियोग) जिसकी सुनवाई से इनकार कर दिया हो या जो ठीक न माना गया हो।

खारिश [संज्ञा पु.][संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कण्डू। खुजली। २-खरखराहट।

खारिश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'खारिश'।

खारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तौल।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का क्षार या नमक।

[वि.] (हिं.) जिसमें खार हो। खारयुक्त। नमकीन।

खारीमाट [संज्ञा पु.] (हिं.) नील का रंग बनाने का एक तरीका।

खारुआँ, खारुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का लाल रंग। २-इस रंग से रंगा गया कपड़ा।

खारेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली कुसुम।

खारो* [वि.] (हिं.) देखो 'खारा'।

खार्जूर [संज्ञा पु.] (सं.) खजूर के रस की बनी मदिरा।

खाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मनुष्य, पशु की देह का बहिरावरण। चमड़ा। त्वचा। आधाचरसा। अधौड़ी। ३-धौंकनी। ४-मृतशरीर। ५-किसी वस्तु का आवरण।

खाल उड़ाना-बहुत मारपीट करना। *उधेड़ना या खींचना*-१-शरीर पर से उधेड़ लेना। २-बहुत मारना पीटना। *बिगाड़ना*-शामत आना।

खालफूंका [संज्ञा पु.] (हिं.) धौंकनी वाला व्यक्ति।

खालसा [वि.] (हिं.) १-जो एक ही के में हों। एकाधिकृत। २-राज्य का। *खालसा करना*-१-अधिकार में लेना। करना। २-नष्ट करना। खाल से खालसा करना।

[संज्ञा पु.] सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

खाला [वि.] (हिं.) नीचा। निम्न।

खाला ऊंचा-१-समतल न हो। २-

ख़ाला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मौसी। मां की *खालाजी का घर*-सहज काम।

ख़ालिक़ [संज्ञा पु.] (अ.) स्रष्टा। संसार सिरजनहार।

खालिस [वि.] (अ.) विशुद्ध। खरा। बिना वट का।

खाली [वि.] (अ.) १-रिक्त। रीता। जो हो। २-निठल्ला। बेकाम। ३-व्यर्थ।

[क्रि. वि.] केवल। सिर्फ। अकेले।

[संज्ञा पु.] वह ताल जो खाली छोड़ जाता है (संगीत)।

खाली करना-१-भीतर कुछ न रहने देना। २-छोड़ देना। *खाली जाना*-सफलता न मिलना। *खाली दिन*-छुट्टी का दिन। न जाना-वजन निष्फल न होना। (हाथ) होना-१-रुपया पैसे का अभाव होना। २-हथियार के बिना। ३-फुरसत होना। हाथ का काम समाप्त होना। ४-हाथ में साथ में कुछ भेंट न होना। *खाली होना*-१-कोई कामधाम न रहना। २-बिना के रहना।

खालू [संज्ञा पु.] (फा.) मौसा। मां की बहन का पति।

खाले+ [क्रि. वि.] (हिं.) नीचे तले। गड्ढे में।

खाव+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शून्य। खाली जगह। अवकाश। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जहाज में माल रखने की कोठरी।

खावी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्ष के आरम्भ में नौकरों को पेशगी दिया जाने वाला धन।

ख़ास [वि.] (अ.) १-विशेष। मुख्य। प्रधान। २-निजका। आत्मीय। प्रिय। ३-स्वयं। ४-विशुद्ध। ठेठ। खालिस। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मोटे कपड़े की थैली। २-

नमक, चीनी आदि रखने की थैली। *खास कर*–विशेषतः। प्रधानतः। *खास खास*–चुने-चुने। अच्छे और प्रतिष्ठित।

खासकलम [संज्ञा पु.] (अ.) अपना लेखक या मुंशी। प्राइवेट सेक्रेटरी।

खासगी [वि.] (हिं.) राजा या मलिक आदि का। निज का।

खासतराश [संज्ञा पु.] (फा.) राजा का नाई।

खासतहसील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह तहसील जिसमें बड़ा हाकिम रहता हो। जिला तहसील।

खासदान [संज्ञा पु.] (हिं.) पानदान।

खासनवीस [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'खासकलम'

खासबरदार [संज्ञा पु.] (फा.) राजा की सवारी के आगे-आगे चलने वाला नौकर।

खासबाजार [संज्ञा पु.] (फा.) राजा के महल के पास का बाजार।

खासा [वि.] (उर्दू.) उत्तम। अच्छा। २–निरोग। स्वस्थ। ३–संझोला। ४–सुडौल। सुंदर। भरपूर। [संज्ञा पु.] (अ.) १–राजा का भोजन। २–राजा की सवारी। २–एक प्रकार का पतला सफेद सूती कपड़ा। ४–मोयनदार पूरी।

खासियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–स्वभाव। आदत। २–गुण। सिफत।

खासियाना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मजीठ।

खासी [वि.] (अ.) [स्त्री. प्र.] 'खासा' का स्त्रीलिंग। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) राजा के बांधने की तलवार, ढाल, या बंदूक।

खास्सा [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'खासियत'।

खाह [अव्य.] देखो 'ख्वाह'।

खाहमखाह, खाहमख़ाह [क्रि. वि.] देखो 'ख्वाहमख्वाह'।

खाहाँ [वि.] देखो 'ख्वाहिश'।

खाहिशमंद [वि.] देखो 'ख्वाहिशमंद'।

खाहीनखाही [क्रि. वि.] देखो 'ख्वाहमख्वाह'।

खिंग [संज्ञा पु.] (फा.) सफेद रंग का वह घोड़ा जिसके मुंह पर का पट्टा और सुम का रंग कुछ गुलाबी और कुछ सफेद होता है।

खिंगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैदे की छोटी खस्ता पूरी या मठरी।

खिंचना [क्रि. अ.] (हिं.) १–आकर्षित होना। घसिटना। २–निकलना। बाहर होना। ३–तनना। कड़ा पड़ना। ४–जाना। बढ़ना। ५–खपना। चुसना। ६–भभके से बनना। उतरना। ७–कलम आदि से बनकर तैयार होना। ८–रुकना। बंद होना। ९–पहुँचना। चला जाना। १०–बिगड़ना। अच्छा न लगना। ११–मंहगा पड़ना। चढ़ना।

चित्त खिंचना–मन मोहित होना। *पीड़ा या दर्द खिंचना*–(औषध आदि से) दर्द दूर होना। *हाथ खिंचना*–[illegible] आदि बंद होना।

खिंचवा [वि.] ([illegible]) [illegible]चने वाला।

खिंचवाना [क्रि. स.] (हिं.) खींचने का काम कराना।

खिंचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खींचने की क्रिया या भाव। २–खींचने की मजदूरी।

खिंचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) खींचने का भाव।

खिंचावट, खिंचाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खींचने की क्रिया या भाव।

खिंचिया [वि.] (हिं.) खींचने वाला।

खिंडाना [क्रि. स.] (हिं.) फैलाना। बिखेरना।

खिखिंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १–किष्कन्धापर्वत। २–बीहड़ भूमि।

खिचड़ावर [संज्ञा पु.] (हिं.) खिचड़ी दान करने का दिन। मकरसंक्रान्ति।

खिचड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दाल चावल का मेल। २–दाल और चावल को मिलाकर बनाया हुआ भोजन। ३–विवाह में होने वाली एक प्रथा। ४–दो मिले हुए पदार्थ। ५–मकर संक्रांति। ६–बेरी का एक फूल। ७–अगाऊ दिया हुआ धन। बयाना। साई।
[वि.] १–मिलाजुला। २–गड़बड़।
खिचडी पकाना–गुप्त मंत्रणा करना। गुप्त सलाह करना। *ढाई चावल की खिचडी अलग पकाना*–सब से अलग होकर कोई काम करना या मत रखना।

खिचना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खिंचना'।

खिचवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खिंचवाना'।

खिचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खिंचाव'।

खिच्चड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) खिचड़ी।

खिच्चा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (खेचरिकान्न) खिचड़ी।

खिजना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खीजना'।

खिजमत, ख़िजमित [संज्ञा स्त्री.] देखो 'खिदमत'।

खिजलाना [क्रि. अ.] (हिं.) झुंझलाना। चिढ़ना।
[क्रि. स.] (हिं.) दुखी करना। चिढ़ाना।

खिजाँ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–पतझड़ की ऋतु। अवनति का समय।

ख़िज़ाब [संज्ञा पु.] (अ.) बाल काले करने की औषध। केशकल्प।

खिझना [क्रि. अ.] (हिं.) खींजना।

खिझाना [क्रि. स.] (हिं.) चिढ़ाना। तंग करना।

खिझावना* [क्रि. स.] देखो 'खिझाना'।

खिझुवर* [वि.] (हिं.) चिढ़ने या शीघ्र अप्रसन्न होने वाला।

खिड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) खिसक जाना। चल देना।

खिड़काना [क्रि. स.] (हिं.) १–टालना। टकाना। २–औने-पौने करना।

खिड़की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा द्वार। २–किसी मकान में हवा और प्रकाश आने के निमित्त बना हुआ छोटा दरवाजा। झरोखा। दरीचा। ३–फाटक में लगा छोटा दरवाजा। ४–गुप्तद्वार।

खित [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी। धरती।

खिताब [संज्ञा पु.] (अ.) उपाधि। पदवी।

खिताबी [वि.] (अ.) उपाधिधारी। जिसे खिताब या पदवी मिली हो।

खित्ता [संज्ञा पु.] (अ.) प्रांत। देश। सूबा।

खिदमत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सेवा। टहल। शुश्रूषा।

खिदमतगार [संज्ञा पु.] (फा.) सेवक। टहलुआ।

खिदमतगारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सेवकाई। नौकरी। टहल।

खिदमती [वि.] (फा.) १–सेवा करने वाला। २–सेवा-संबंधी। ३–सेवा के बदले में प्राप्त। जैसे ख़िदमती जागीर।

खिदिर [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा। २–दीन। ३–तपस्वी।

खिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–रोग। २–दरिद्रता।

खिन [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षण। लमहा।
खिन-खिन–प्रतिक्षण। हरदम।

खिन्न [वि.] (सं.) १–उदासीन। चिन्तित। २–अप्रसन्न। नाराज। ३–दीनहीन। असहाय।

खिपना* [क्रि. स.] (हिं.) १–खपना। २–मिल-जुल जाना।

खिपाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खपाना'।

खियानत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'खयानत'।

खियाना* [क्रि. स.] (हिं.) घिस जाना।
[क्रि. स.] (हिं.) भोजन कराना। खिलाना।

खियाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खयाल'।

खिर [संज्ञा.स्त्री.] (देश.) जुलाहों की वह ढरकी जिसमें बाने का सूत रहता है और जिसे बुनते समय एक ओर से दूसरी ओर चलाना पड़ता है।

खिरकी*.[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खिड़की'।

खिरचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खरका'।

खिरडरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कत्थे की एक प्रकार की गोली जिसमें सुगंधित मसाला डाला जाता है।

खिरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार का ऊँचा और छतनार सदाबहार वृक्ष। २–इस वृक्ष का फल जो निमकौड़ी के आकार का होता है।

खिराज [संज्ञा पु.] (अ.) राजस्व । मालगुजारी । कर ।

खिरिरना+ [क्रि. वि.] (हिं.) १-अन्न को सींक के बने छाज में रखकर छानना। २-खुरचना

खिरैंटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बला। बरियारा। बीजबंद ।

खिलअत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) राजा या बादशाह की ओर से सम्मान सूचनार्थ दी हुई पोशाक

खिलक़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-संसार । सृष्टि । २-भीड़ । जनसमूह ।

खिलकौरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) खिलवाड़ । खेल-कूद ।

खिलखिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) खिलखिल करके हंसना । कहकहा लगाना । अट्टहास करना ।

खिलजी [संज्ञा पु.] (फा.) अफगानिस्तान की सीमा पर रहने वाली पठानों की एक जाति ।

खिलत, खिलति*+ देखो 'खिलअत' ।

खिलना [क्रि. स.] (हिं.) १-फूलना । कली की पंखड़ियां खुलना । २-प्रसन्न होना । मौज में आना । ३-अच्छा लगना । ठीक जंचना । ४-बीच से फटना । दरकना । ५-अलग-अलग हो जाना । जैसे-चावल खिलना ।

खिलवत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एकान्त स्थान ।

खिलवतखाना [संज्ञा पु.] (फा.) गुप्तमन्त्रणा-स्थान । एकान्त स्थान ।

खिलवाड [संज्ञा पु.] (हिं.) हँसी-खेल । ठट्ठा ।

खिलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे से भोजन कराना । २-प्रफुल्लित कराना । ३-खीलें बनवाना । ४-खीलें लगवाना । ५-देखो 'खेलवाना' ।

खिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भोजन की क्रिया या खाने का काम । २-खिलाने का काम । ३-लड़कों को खिलाने वाली दाई ।

खिलाड़, खिलाड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खेल करने वाला । २-खेलने वाला । ३-बाजीगरी। ३-बैलों की एक जाति ।

खिलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-खेल में लगाना । २-भोजन कराना । ३-फुलाना ।

खिलाफ़ [वि.] (अ.) विरुद्ध । उलटा ।

खिलाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूरी बाजी की हार ।

खिलौना [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों के खेलने की वस्तु ।
हाथ का खिलौना-आमोद प्रमोद की वस्तु ।

खिलौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धनिया और खरबूजे ककड़ी के भुने हुए बीज ।

खिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हँसी । हास्य । दिल्लगी । २-पान का बीड़ा । गिलौरी । ३-कील । काँटा ।

खिल्लो [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] खिलखिलाकर हँसने वाली ।

खिवाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की ऊख

खिसकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खसकना' ।

खिसकाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खसकाना' ।

खिसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खसना' ।

खिसलना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फिसलना' ।

खिसलाना [क्रि. स.] (हिं.) खिसलना का प्रेरणार्थक रूप ।

खिसलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) खिसकने या फिसलने की स्थिति । खिसकने या फिसलने का भाव ।

खिसलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खिसलाव'

खिसाना*+ [क्रि. अ.] देखो 'खिसियाना' ।

खिसारा [संज्ञा पु.] (फा.) घाटा । नुकसान । हानि ।

खिसारी [संज्ञा स्त्री] देखो 'खेसारी' ।

खिसिआनपन [संज्ञा पुं.] (हिं.) खिसियाने का भाव ।

खिसिआना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लजाना । शरमाना । २-खफा होना । क्रुद्ध होना । रिसिआना । [वि.] (हिं.) लज्जित ।

खिसिआहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लाज । शरम । २-क्रोध । गुस्सा ।

खिसियाना [वि. क्रि. अ.] (हिं) देखो 'खिसिआना' ।

खिसियाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खिसिआहट' ।

खिली*+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-लज्जा । शरम । २-ढिठाई । धृष्टता ।

खिसौंहा* [वि.] (हिं.) लज्जित । संकुचित ।

खींच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आकर्षण । खिंचाव । खींचने का भाव ।

खींच-तान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए दो में एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग । खींचा-खींची । २-शब्द अथवा वाक्य का जबरदस्ती भिन्न अर्थ करना ।

खींचना [क्रि. स.] (हिं.) १-बलपूर्वक अपनी ओर लाना । घसीटना । २-किसी कोश, थैले आदि में से किसी वस्तु को बाहर निकालना । ३-सोखना । चूसना । ४-भभके से अर्क, शराब आदि चुवाना । ५-किसी वस्तु का गुण या प्रभाव निकाल लेना । ६-चित्र बनाना । ७-वशीभूत करना ।
हाथ खींचना-देना या और कोई काम रोकना ।

खींचाखींची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए दो में एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग । खींचतान ।

खींचातान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खींचतान' ।

खींचातानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खींचतान' ।

खीखर [संज्ञा पु.] (देश.) कटास नामक एक प्रकार का बनबिलाव ।

खीज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झुंझलाहट । चिढ़ाने का शब्द या वाक्य ।
खीज निकालना-किसी को चिढ़ाने के कोई नई बात निकालना ।

खीजना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) झुंझलाना । लाना ।

खीझ*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खीज'

खीझना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खीजना'

खीन*+ [वि] (हिं.) क्षीण ।

खीनता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षीणता ।

खीनताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खीनता'

खीप [संज्ञा पु.] (देश.) १-सीधा और वृक्ष विशेष । २-लाजवन्ती । पसारा ।

खीमा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'खेमा'।

खीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध में पका चावल ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) दूध ।

खीरचटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बालक को पहले पहल अन्न खिलाने संस्कार ।

खीरमोहन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बंगाली जो छेने से बनती है।

खीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) ककड़ी की जाति फल ।
खीरा ककड़ी-अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

खीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौपायों के थन का मांस । वाख ।

खील [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भुना और हुआ धान । २-कील । मेख । स्त्रियों के नाक में पहनने का आभूषण मुहासे की कील ।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) परती पड़ी उपरांत पहले पहल जोती गई भूमि।

खीलना [क्रि. स.] (हिं.) खील लगाना गोद कर पत्तों का दौना बनाना।

खीला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कांटा । मेख।

खीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पान का बीड़ा

खीलन, खीवनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मतवालापन ।

खीवर* [संज्ञा पु.] (हिं.) वीर । सूर।

खीस [वि.] (हिं) नष्ट । बरबाद ।
खीस जाना-नष्ट होना। *खीस डालना*- करना ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-अप्रसन्नता । २-रोष । गुस्सा । ३-लज्जा । शरम । ४-बाहर निकले दांत । ५-घाटा । हानि।
खीस काढ़ना-१-बेढंगे तौर से हंसना दीन होकर कुछ मांगना । ३-मरजाना।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) ब्याने के पीछे

भैंस का दूध।

खीसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जेब। खलीता। २-थैला। थैली। ३-हाथ में पहन कर बदन साफ करने की थैली। ४-ओठों से बाहर निकले हुए दांत।

खुँटकढ़वा [संज्ञा पु.] (हिं.) कान का मैल निकालने वाला। कनमैलिया।

खुंटाली [वि.] (हिं.) अतिदुष्ट या पाजी (बालक)।

खुंड [संज्ञा पु.] (देश.) काली मिट्टी वाली भूमि में होने वाली एक घास।

खुंडल [संज्ञा पु.] (हिं.) टूटा फूटा या गिरा पड़ा घर या झोंपड़ा।

खुंदाना [क्रि. स.] (हिं.) कुदाना (घोड़ा)।

खुंदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खूद'।

खुंबी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खुमी'।

खुंभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खुमी'।

खुआर* [वि.] (हिं.) १-खराब। दुर्दशाग्रस्त। २-बेइज्जत।

खुआरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बरबादी। नाश। खराबी। २-अनादर। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

खुक्ख [वि.] (हिं.) खाली कमाये हुए रुपये को खोने या हार जाने वाला। २-जो ताश के खेल में हार गया हो।

खुखंड [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की राई।

खुखड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सड़ा-घुना पेड़। खोखला वृक्ष।

खुखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-तकुए पर चढ़ा कर लपेटा हुआ सूत। कुकड़ी। २-नैपाली छुरी।

खुखला* [वि.] (हिं.) देखो 'खोखला'।

खुखुड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खुखडी'।

खुगीर [संज्ञा पु.] (फा.) १-घोड़ों के चारजामा के नीचे लगने वाला ऊनी कपड़ा। नमदा। २-चारजामा। जीन।

खुचर, खुचुर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यर्थ का दोषारोप। झूठमूठ अवगुण दिखलाने का कार्य।

खुजलाना [क्रि. स.] (हिं.) खुजली मिटाने के लिए नाखूनों से अंग रगड़ना। सहलाना। [क्रि. अ.] (हिं.) किसी अंग के खुजली मालूम होना।

खुजलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुजली। सुरसुरी। चुल।

खुजली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खुजलाहट। सुरसुरी। २-खाज की बीमारी।
खुजली उठना-१-दंड भुगतने की इच्छा होना। २-प्रसंग कराने की इच्छा होना। *खुजली मिटना*-१-दंड मिलना। २-प्रसंग होने पर चुल मिटना।

खुजवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खोजवाना'।

खुजाना [क्रि. स.] [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खुजलाना'।

खुज्झा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खूझा'।

खुझड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खूझा'।

खुँभर [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ की वह जड़ जो धरती के भीतर न जाकर ऊपर-ऊपर चारों ओर फैलती है।

खुटक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खटका। आशंका। चिन्ता।

खुटकना [क्रि. स.] (हिं.) ऊपर का भाग तोड़ना। किसी वस्तु को ऊपर से तोड़ या नोच लेना।

खुटका* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खटका'।

खुटचाल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुष्टता। २-कुत्सित आचरण। ३-उपद्रव।

खुटचाली* [वि.] (हिं.) १-दुष्ट। पाजी। उपद्रवी। २-बदचलन। दुराचारी।

खुटना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-खुलना। २-अलग होना। ३-समाप्त होना।

खुटपन, खुटपना [संज्ञा पु.] (हिं.) खोटापन। दोष। ऐब।

खुटाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) खुटना। समाप्त होना

खुटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खोटापन। दोष।

खुटिला [संज्ञा पु.] (देश.) करनफूल। कान का गहना।

खुटेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खैर का पेड़।

खुट्ट [वि.] (हिं.) पृथक। अलग।

खुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तिल और गुड़ या चीनी से बनने वाली एक प्रकार की मिठाई। २-घाव के ऊपर की पपड़ी या खुरंड।

खुठमेरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का मोटा धान।

खुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) वातरक्त रोग।

खुड़क [संज्ञा पु.] (सं.) टखना। गुल्फ। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खटका।

खुड़ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चिड़ियाखाना। २-मुर्गियों का दर्बा।

खुड़वात [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वायु रोग।

खुड़ुआ, खडुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) घोघी।

खुड्डाक [वि.] (सं.) १-क्षुद्र। तुच्छ। २-छोटा। ३-कनिष्ठ। पिछला।

खुड्डी, खुड्ढी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पाखाने में पैर रखने का पायदान। २-पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतका [संज्ञा पु.] देखो 'कुतका'।

खुतबा [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रशंसा। २-सामयिक राजा की प्रशंसा।

खुत्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ काट लेने पर जड़ का ऊपरी भाग। ठूठ।

खुत्थ, खुत्थी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ज्वार या अरहर का वह भाग जो काट लेने पर भी भूमि पर लगा रहता है। २-धरोहर। अमानत। थाती। ३-रुपया रखने की थैली। ४-सम्पत्ति। दौलत।

खुद [अव्य.] (फा.) स्वयं। आप।

खुदका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कुतका'।

खुदकाश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) भूमिपति द्वारा स्वयं जोती जाने वाली भूमि।

खुदकुशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आत्महत्या।

खुदगरज [वि.] (फा.) स्वार्थी।

खुदगरजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्वार्थपरता।

खुदना [क्रि. अ.] (हिं.) खुद जाना।

खुदमुखतार [वि.] (फा.) स्वतन्त्र। स्वच्छंद। किसी का दबाव न मानने वाला।

खुदमुखतारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्वतन्त्रता। स्वच्छन्दता।

खुदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षुद्र वस्तु। फुटकर चीज।
खुदरा कराना-नोट रुपया आदि भुनाना।

खुदराई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्वेच्छाचार।

खुदराय [वि.] (फा.) स्वेच्छाचारी। मनचला।

खुदरायी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्वेच्छाचार।

खुदवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खुदवाने की क्रिया या भाव। २-खुदवाने की मजदूरी।

खुदवाना [क्रि. स.] (हिं.) खोदने का काम कराना।

खुदा [संज्ञा पु.] (फा.) ईश्वर।
खुदा खुदा करके-बहुत कठिनता से। *खुदा की मार*-ईश्वरीय प्रकोप।

खुदाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-ईश्वरता। २-सृष्टि।
[वि.] ईश्वरीय।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खोदने की क्रिया या भाव। २-खोदने की मजदूरी।

खुदाईखिदमतगार [संज्ञा पु.] (फा.) राष्ट्रीय विचार धारा के पठान स्वयंसेवकों का दल जो सामाजिक और राजनैतिक कार्य करते हैं।

खुदावंद [संज्ञा पु.] (फा.) १-परमेश्वर। २-अन्नदाता। मालिक। ३-महाशय। हुजूर।

खुदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अहंकार। अहंभाव। २-अभिमान। घमंड। शेखी।

खुद्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चावल, दाल आदि के छोटे टुकड़े। २-तलछट।

खुनकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शीतलता। सरदी।

खुनखना [संज्ञा पु.] (हिं.) बालकों का खिलौना। जिसे झुनझुना भी कहते हैं।

खुनस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्रोध। गुस्सा।

खुनसाना [क्रि. अ.] (हिं.) क्रोध करना। गुस्सा

होना ।

खुनसी [वि.] (हिं.) गुस्सावर । क्रोधी ।

खुफिया [वि.] (फा.) छिपा हुआ । गुप्त । पोशीदा

खुफियापुलिस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुप्त पुलिस । जासूस । सी. आई. डी ।

खुभना [क्रि. स.] (हिं.) चुभना । घुसना । धसना ।

खुभराना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-उपद्रव के लिए घूमना । २-इतराए फिरना ।

खुभिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खुभी' ।

खुभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लौंग के आकार का कान का एक गहना । २-देखो 'खुमी' ।

खुमरा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की भीख मांगने वाले मुसलमान ।

खुमा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'खुमारी' ।

खुमान*+ [वि.] (हिं.) आयुष्मान । बड़ी आयु वाला । दीर्घजीवी ।

खुमार [संज्ञा पु.] (अ.) १-नशा । मद । २-नशे का उतार ।

खुमारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खुमार' ।

खुमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्षुद्र उद्भिज्जों की एक जाति । इसके पत्र पुष्प नहीं आते । यथा-भूफोड़, कुकरमुत्ता । २-दांतों में जड़ी जाने वाली सोने की कील आदि । ३-हाथी के दांत पर चढ़ाने का धातु का पोला खोल ।

खुरंट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खुरंड' ।

खुरंड [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घाव के ऊपर की सूखी पपड़ी ।

खुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो फटी हुई होती है । २-खाट के पाये का निचला भाग । ३-नखी नामक औषधि ।

खुरक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोच । खटका । अंदेशा ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-तिल का पौधा । २-एक प्रकार का नृत्य ।

खुरक-रांगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की धातु ।

खुरका [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जो अफीम के पेड़ को बिगाड़ देती है ।

खुरखुर [संज्ञा पु.] (हिं.) कंठ का घर-घर शब्द । जो कफ आदि अटकने के कारण होता है ।

खुरखुरा [वि.] (हिं.) खुरदरा । जो चिकना न हो । असमतल ।

खुरखुराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खुर-खुर शब्द करना । २-गले में कफ के कारण घरघराहट का शब्द होना । ३-खुरदरा मालूम होना ।

खुरखुराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गले में कफ रुकने से होने वाला शब्द । २-खुरदरापन ।

खुरचन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खुरच कर निकाली गई वस्तु । २-दूध के पात्र में से खुरच कर निकाला हुआ अंश । ३-गुड़ पकाने के कड़ाह से खुरच कर निकाला गया गुड़ । ४-जूता बनाने का एक औजार ।

खुरचना [क्रि. स.] (हिं.) किसी जमी हुई वस्तु को कुरेद कर निकालना । करोचना । करोना ।

खुरचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खुरचने का उपकरण या औजार । २-चमड़ा खुरचने का एक औजार ।

खुरचाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाजीपन । बदमाशी । शरारत ।

खुरचाली [वि.] (हिं.) असदाचारी । पाजी । दुष्ट ।

खुरजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) घोड़े, बैल आदि पर लादने का थैला ।

खुरट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खुरपका' ।

खुरतार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुर या टाप की चोट ।

खुरथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुलत्थ । कुलथी ।

खुरदांय [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलों से कटी फसल को कुचलवाने का काम ।

खुरपका [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं का एक रोग जिसमें इनके खुर और मुख में दाने निकल आते हैं ।

खुरपा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घास छीलने का एक औजार । २-चमड़े की सतह छीलने का औजार ।

खुरफा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुलफा नामक एक साग ।

खुरमा [संज्ञा पु.] (अ.) १-छोहारा । २-एक प्रकार का पकवान ।

खुरसीटा+ देखो 'खुरपका' ।

खुरहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खुर का चिह्न । २-खुर के चिह्नों से बनी (जंगल में) पगडंडी । ३-तंग रास्ता । पगडंडी ।

खुरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खुरपका' ।

खुरहुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खुरू' ।

खुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'खुरपका' । २-हल के फाल का लोहे का कांटा ।

खुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पशुओं के दोनों पैर बांधने की एक रस्सी ।

खुराक [संज्ञा पु.] (फा.) १-भोजन । खाना । २-मात्रा (औषधि) ।

खुराकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-खुराक के लिए दिया जाने वाला धन । भोजन-व्यय । [वि.] अधिक खाने वाला ।

खुराफात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बेहूदा और रद्दी विषय या बात । २-गाली । निन्दावाद । ३-उपद्रव । झगड़ा ।

खुरायल* [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत जो बोने को तैयार हो ।

खुरालक [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का तीर ।

खुरालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपधान ।
नाराचअस्त्र । ३-छुरहरी ।

खुरासान [संज्ञा पु.] (फा.) फारस देश
प्रांत ।

खुराही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीची
बचकर चलने की जगह । (कहारों

खुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कटो
प्याली । २-घुटने के जोड़ पर
हड्डी ।

खुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुर का चि
निशान ।

खुरी करना-१-खुर वाले पशुओं
खोदना । २-बहुत जल्दी करना ।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) जोर से बहने
जिसके विरुद्ध नाव न चल या च

खुरुचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुरची
वस्तु । २-खुरचने का औजार ।

खुरुहरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

खुरु [संज्ञा पु.[(हिं.) १-खुर से भूमि
काम । २-उपद्रव । नटखटी ।
सत्यानाश । ध्वंस ।

खुरुरू [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नारियल
की गिरी ।

खुर्द [वि.] (फा.) लघु । छोटा ।

खुर्दबीन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सूक्ष्मदर्शक

खुर्दबुर्द [क्रि. वि.] (फा.) १-नष्ट
समाप्त ।

खुर्दा [संज्ञा पु.] (फा.) सामान्य द्रव्य ।
मोटी चीज ।

खुर्दाफरोश [संज्ञा पु.] (फा.) सामान
बेचने वाला । छोटी मोटी वस्तु
वाला सौदागर ।

खुर्राट [वि.] (देश.) १-बूढ़ा । वृद्ध ।
भवी । तजरुबेकार । ३-चालाक ।

खुर्राटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खर्राटा'

खुलती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुलथी'

खुलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सामने का
या ऊपर का आवरण हटना । बंद
२-दरार होना । फटना । ३-बांधने
जोड़ने वाली वस्तु का हटना । ४-
होना । चलना । जैसे-सड़क खुलना
खुलना । ५-नित्य का कार्य आरम्भ
६-किसी सवारी का रवाना होना ।
बात प्रकट होना । ८-अपने मन
खोलना ।

खुल कर-बिना रुकावट के । खुला
अनावृत जगह । खुल जाना-खोजाना
आम, खुले खजाने, खुले मैदान, खुले
सब के सामने । छिपकर नहीं । प्रकट
खुलता रंग-वह रंग जो गहरा न हो ।

खुलवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) गली हुई

ने में भरने वाला

खुलवाना [क्रि. स.] (हिं) खोलने का काम दूसरे से कराना । खुलाना ।

खुला [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] १-जो बंधा न हो । २-अवरोधहीन । ३-स्पष्ट । प्रगट । जो छिपा न हो ।
खुले बंद-बेधड़क । निःशंक ।

खुलताल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) बाएं हाथ से तबले पर खुली थाप देकर बजाना आरम्भ करना । (संगीत) ।

खुलासा [संज्ञा पु.] (अ.) सारांश । संक्षेप ।
[वि.] (हिं.) १-खुला हुआ । २-अवरोध रहित । बिना रुका । बटका । ३-साफ । स्पष्ट । ४-संक्षिप्त । सारांश रूप ।

खुल्लक [वि.] (सं.) १-स्वल्प । थोड़ा । २-नीच । कमीना । ३-कनिष्ठ । छोटा । ४-दरिद्र । गरीब । ५-निष्ठुर । बेरहम । ६-खल ।

खुल्लतात [संज्ञा पु.] (सं.) पिता का छोटा भाई । चाचा ।

खुल्लम [संज्ञा पु.] (सं.) पथ । राह ।

खुल्लमखुल्ला [क्रि. वि.] (हिं.) प्रकाश रूप में । खुले तौर पर । सब के सामने ।

खुवार+ [वि.] देखो 'ख्वार' ।

खुवारी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ख्वारी' ।

खुश [वि.] (फा.) १-प्रसन्न । मुदित । मगन । २-अच्छा ।

खुशकिस्मत [वि.] (फा.) भाग्यवान । अच्छी किस्मत वाला ।

खुशकिस्मती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सौभाग्य ।

खुशकी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'खुश्की' ।

खुशखत [वि.] (फा.) सुलेखक । जिसकी लिखावट सुन्दर हो ।

खुशखबरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) प्रसन्न करने वाला समाचार । अच्छी खबर ।

खुशदिल [वि](फा.) १-सदा प्रसन्न रहने वाला २-हंसोड़ । मसखरा ।

खुशनवीस [संज्ञा पु.](फा.) सुलेखक ।

खुशनवीसा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सुन्दर अक्षर लिखने की कला ।

खुशनवीसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सुलेख्य । अच्छे अक्षरों की लिखावट ।

खुशनसीब [वि.] (फा) भाग्यवान् ।

खुशनसीबी [संज्ञा स्त्री] (फा.) सौभाग्य ।

खुशनुमा [वि.] (फा.) सुन्दर । मनोहर ।

खुशबू [संज्ञा स्त्री] (फा) सुगंधित । सौरभ ।

खुशबूदार [वि] (फा.) सुगंधित ।

खुशरंग [वि.] (फा) चटकीले रंग वाला ।
[संज्ञा पु.] (फा.) चटकीला रंग ।

खुशहाल [वि.] (फा.) संपन्न ।

खुशहाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आराम । अमन चैन । सुख ।

खुशाब [संज्ञा पु] (फा.) धान की निरौनी का एक ढंग ।

खुशामद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दूसरे को प्रसन्न करने के लिए की जाने वाली प्रशंसा । चाटुता । चापलूसी ।

खुशामदी [वि.] (फा.) १-खुशामद करने वाला । चापलूस । सब तरह का काम करने वाला ।

खुशामदीटट्टू [संज्ञा पु.] (हिं.) दूसरे की खुशामद करके अपना काम चलाने वाला व्यक्ति।

खुशियाली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आनन्द । खुशी । २-कुशलक्षेम ।

खुशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-आनन्द । प्रसन्नता। *खुशी खुशी*-आनन्दसहित ।

खुश्क [वि.] (फा.) १-जो तर न हो । सूखा । २-जिसमें रसिकता न हो ।

खुश्कसाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अनावृष्टि ।

खुश्का [संज्ञा पु.] (फा.) केवल पानी में उबाल कर पकाया हुआ चावल । भात ।

खुश्की [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रूखापन । रुखाई । शुष्कता । २-स्थल या भूमि । पलेथन । ४-अकाल । अवर्षण ।

खुसाल, खुस्याल [वि.] (हिं.) आनंदित । मुदित । खुश ।

खुसखुस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खुसुरफुसर' ।
[क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'खुसुरफुसुर' ।

खुसुरफुसुर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत धीमी आवाज से कही हुई बात ।
[क्रि. वि.] (हिं.) अस्फुट स्वर से । फुस-फुस ।

खुही [संज्ञ स्त्री] (हिं.) मोड़कर बनाया हुआ कम्बल जिससे शरीर का ऊपरी भाग शीत और वर्षा से बचा रहे । घोघी । खोही ।

खूँखार [वि.] (फा.) १-भयंकर । डरावना । २-क्रूर । निर्दय । ३-रक्त पान करने वाला । खून पीने वाला ।

खूँट [संज्ञा पु.](हिं.) १-छोर । कोना । २-भारी । ३-ओर । तरफ । ४-भाग । हिस्सा । ५-लकड़ी पर का महसूल । ६-देवता को चढ़ाने के लिए बनाई गई छोटी पूरी ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रोक । पूछताछ ।
[संज्ञा पु.] (?) कान का मैल ।
[संज्ञा स्त्री.] (देश) एक प्रकार का कान का गहना ।
[संज्ञा पु.] (देश.) आठ सेर की तौल ।

खूँटना [क्रि स] (हिं) १-टोंकना । कुछ पूछताछ करना । २-छेड़छाड़ करना । ३-कम होना । घटना । ४-देखो 'खोंटना' ।

खूँटा [संज्ञा पु] (हिं.) १-बड़ी मेख जिससे रस्सी के द्वारा पशु बांधते हैं । २-भूमि पर खड़ी गड़ी लकड़ी ।
खूंटा गाड़ना-सीमा निर्धारित करना ।

खूँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी मेख । -पौधे की वह सूखी डंठल जो भूमि पर र[illegible] हो । ३-गुल्ली । अंटी । ४-मूड़ने के पश्चात रहे बालों के कड़े अंकुर । ५-नील की दोरंजी फसल जो नील कट जाने पर उसके फसल से उपजती है । ६-सीमा । छोर । ७-खुंटिया ।
खूंटी निकालना या लेना-बालों को जड़ सहित मूंड़ना ।

खूँटीउखाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भौंरी जो घोड़े के पैरों में पुट्ठे के पास होती है । यह अशुभ मानी जाती है ।

खूँटीगाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े का अशुभ चिह्न ।

खूँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे की एक छड़ जिसमें नरा लगाकर जुलाहे ताना डालते हैं ।

खूँड़ी [संज्ञा. स्त्री.] (हिं.) एक पतली लकड़ी जिसके छोर पर कांच का एक चुल्ला फोड़कर बाँधते हैं । इससे रेशम के बारीक तार डाल कर जुलाहे ताना डालते हैं ।

खूथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खुत्थी' ।

खूद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थोड़ी जगह में घोड़े का इधर उधर चलते रहना ।

खूदना [क्रि, अ.] (हिं.) १-उछल-कूद करना । पैर उठा-उठाकर जल्दी-जल्दी भूमि पर पटकना । २-पैरों से रौंदना । ३-कूटना । कुचलना ।

खूखी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चैत की फसल में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा । कूकी । कुकुही । गेरुई ।

खूख+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सूअर । शूकर ।

खूच [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जलडमरूमध्य ।

खूझा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत उलझा हुआ रेशेदार लच्छा । २-फल आदि के भीतर का निकम्मा रेशा ।

खूटना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-अवरुद्ध होना । रुक जाना । २-कम हो जाना । [क्रि. स.] छोड़ना ।

खूद, खूदड़, खूदर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मैल । तलछट । फोंका ।

खून [संज्ञा पु.] (फा.) १-रक्त । लहू । रुधिर । २-वध । हत्या ।
खून उतरना-(आंखों में)-क्रोध से आंखें लाल होना । *खून उबलना या खौलना*-गुस्से से तमक कर लाल हो जाना । *खून करना*-जान लेना या मार देना । *खून का प्यासा*-जान का इच्छुक । *खून की नदी बहाना*-खूब मार-काट करना । *खून खुश्क होना*-अत्याधिक भयभीत होना । *खून गर्दन पर चढ़ना या सवार होना*-१-किसी को मार डालने को

उद्यत होना। २-कत्ल के बाद पहचान का कारण होना। *खून सुखाना*-दुख से दुर्बल होना।

खूनखरावा [संज्ञा पु.] (हिं.) मारकाट। (देश.) लकड़ी पर की जाने वाली वार्निश।

खूनी [वि.] (फा.) १-हिंसाकारी। कातिल। घातक। २-जालिम। अत्याचारी।

खूब [वि.] (फा.) अच्छा। भला। उत्तम। [क्रि. वि.] अच्छी तरह। भलीभांति।

खूबकलाँ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) फारस देश की एक घास के बीज जो पोस्ते के दानों के समान तथा गुलाबी रंग के होते हैं।

खूबड़खाबड़+ [वि.] (हिं.) जो समतल न हो। ऊंचा-नीचा।

खूबसूरत [वि.] (फा.) सुंदर। रूपवान्।

खूबसूरती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सौंदर्य। सुंदरता।

खूबानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की मेवा जिसे जरदालु भी कहते हैं।

खूबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-भलाई। अच्छाई। २-गुण। विशेषता। विलक्षणता।

खूरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रोग जिससे हाथी के पैर के नाखून फट जाते हैं। इसमें कुछ पीड़ा होती है जिससे हाथी लंगड़ा कर चलने लगता है।

खूसट [संज्ञा पु.] (हिं.) उल्लू। घुग्घू। [वि.] (हिं.) मनहूस। शुष्कहृदय। २-बुड्ढाखबीस। डोकरा।

खूसर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खूसट'। [वि.] (हिं.) देखो 'खूसट'।

खृष्टीय [वि.] (हिं.) ईसा संबंधी। ईसा का। ईसाई।

खेई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) झड़बेरी की सूखी झाड़ी। झाड़झंखाड़।

खेऊ [संज्ञा पु.] (देश.) ब्रह्मा, स्याम और मनीपुर के जंगलों में होने वाला एक बड़ा पेड़।

खेकसा, खेखसा [संज्ञा पु.] (देश.) परवल के आकार का एक फल जिसका साग बनता है।

खेचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाशचारी। आसमान में चलने या उड़ने वाला। २-सूर्य चन्द्रादि ग्रह। ३-तारागण। ४-वायु। ५-देवता। ६-विमान। ७-पक्षी। ८-बादल। ९-भूतप्रेत। १०-राक्षस। ११-शिव। १२-विद्याधर। १३-पारा। १४-कसीस।

खेचरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरबेल।

खेचरान्न [संज्ञा पु.] (सं.) खिचड़ी।

खेचरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तन्त्रोक्त मुद्रा जिसमें जीभ उलट कर तालु में लगाई जाती है तथा दृष्टि दोनों भौहों के बीच स्थिर की जाती है।

खेचरीगुटिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक मंत्र सिद्ध गोली जिसको मुंह में रखने से मनुष्य पक्षी के समान उड़ सकता है।

खेचरीमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'खेचरी'।

खेजड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) शमी का वृक्ष।

खेट [संज्ञा पु.] (सं.) १-खेतिहरों के गांव। खेड़ा। २-एक प्रकार का अस्त्र। ३-घास। ४-बारहों ग्रह। ५-घोड़ा। ६-मृगया। आखेट। ७-कफ। ८-ढाल। ९-लाठी। छड़ी १०-चमड़ा। ११-तृण। तिनका।

खेटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खेड़ा। गांव। २-तारा। सितारा। ३-ढाल। ४-लाठी। ५-बलदेव जी की गदा। ६-मृगया। शिकार।

खेटकी [संज्ञा पु.] (सं.) १-भड्डरी। ज्योतिषी। २-शिकारी। ३-बधिक।

खेड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा गांव। *खेड़े की दूब*-दुर्बल या तुच्छ। [संज्ञा पु.] (देश.) मिश्रित और सस्ता अन्न जो चिड़ियों और कबूतरों को खिलाया जाता है।

खेड़ापति [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गांव का मुखिया। २-गांव का पुरोहित।

खेड़िताल [संज्ञा पु.] (सं.) गायक। गवैया।

खेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार का लोहा जिसके हथियार बहुत अच्छे बनते हैं। २-वह मांस खंड जो जरायुज जीवों के बच्चों की नाल के दूसरे छोर में लगा होता है।

खेढ़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) समूह।

खेढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'खेड़ी'।

खेत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह भूमि जिसमें अन्न उपजाने के लिए बोते जोतते हैं। २-खेत में खड़ी फसल। ३-किसी वस्तु अथवा पशुओं के उत्पन्न होने का स्थान। ४-समर भूमि। लड़ाई का मैदान। ५-तलवार का फल। *खेत आना*-रण में मारा जाना। *खेत कमाना*-१-उपजाऊ बनाने के लिए खेत में खाद डालना। २-खेत में फसल उत्पन्न करना। *खेत करना*-१-एकसा करना। २-चन्द्रोदय का प्रकाश। ३-युद्ध करना। *खेत छोड़ना*-१-काश्तकारी छोड़ना। २-लड़ाई से भागना। *खेत रखना*-विजय पाना। *खेत रहना*-मारा जाना। *खेत हाथ रहना*-मैदान मारना।

खेतबँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हर खेत के टुकड़े-टुकड़े करके बांटने का एक ढंग।

खेतिहर [संज्ञा पु.] (हिं.) खेती करने वाला किसान। कृषक।

खेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेत में अन्न उपजाने का काम। कृषि। किसानी। काश्तकारी। २-खेत में उगी हुई फसल। *खेती मारी जाना*-फसल नष्ट होना।

खेतीबारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कृषि। किसानी।

खेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुःख। रंज। २-ग्लानि। थकावट। चित्त की शिथिलता।

खेदन [संज्ञा पु.] (सं.) खेद। रंज।

खेदना [क्रि. स.] (हिं.) १-भगाना। २-शिकार का पीछा करना।

खेदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हांका या हल्ला कर वन्य पशु को खदेड़कर पर लाने का कार्य। २-शिकार। आखेट।

खेदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेदने का २-खेदने का कार्य। ३-खेदने की

खेदि [संज्ञा पु.] (सं.) किरण।

खेदित [वि.] (सं.) १-दुःखित। खिन्न। २-परिश्रम से थका हुआ। शिथिल।

खेद्य [वि.] (सं.) जिसे अफसोस करना

खेना [क्रि. स.] (हिं.) १-नाव चलाने के डांडों को चलाना। २-बिताना। गुजारना।

खेप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उतनी वस्तु जो एक बार लादी या ढोई जा सके। २-गाड़ी की एक बार की यात्रा। ३-दोष। खोटा सिक्का। *खेप हारना*-माल में घाटा उठाना।

खेपड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नौका या डांड।

खेपना [क्रि. स.] (हिं.) बिताना। काटना। गुजारना।

खे-परिभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश में करने का भाव। [वि.] आकाश में करने वाला।

खेम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षेम'

खेमकल्यानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

खेमटा [संज्ञा पु.] (देश.) १-बारह मात्राओं का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक होता है। २-इस ताल में गाया जाने वाला गाना। इस ताल पर होने वाला नाच।

खेमा [संज्ञा पु.] (अ.) तम्बू। डेरा।

खेय [वि.] (सं.) खननीय। खोदा जाने वाला।

खेरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र में जहाज वाला नाविक। मल्लाह।

खेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खेड़ा'।

खेरापति [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खेड़ापति'।

खेरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बंगाल में होने वाला एक प्रकार की कड़ी और लाल गेहूँ। २-एक प्रकार का प्रकार की घास।

खेरोरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खंडोरा'।

खेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-केवल चित्त की अथवा मन बहलाव या व्यायाम के लिए इधर-उधर उछल-कूद और दौड़-धूप या कोई साधारण कृत्य। २-मामला। बात। बहुत तुच्छ काम। काम-क्रीड़ा। विषय

विहार। ५-किसी प्रकार का तमाशा, अभिनय आदि। ६-कोई विचित्र कार्य। [संज्ञा स्त्री.] चौपायों के पानी पीने का कुंड। *खेल खेलाना*-बहुत तंग करना। *खेल बिगाड़ना*-१-काम खराब होना। २-रंग में भंग होना। *खेल करना*-किसी काम को अनावश्यक या तुच्छ समझ कर हँसी में उड़ाना। *खेल समझना*-साधारण या तुच्छ समझना।

खेलक* [संज्ञा पु.] (हिं.) खिलाड़ी। खेलने वाला व्यक्ति।

खेलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खेल। क्रीड़ा। २-खेलने की वस्तु जिनसे खेला जाय। जैसे—गेंद, बल्ला, ताश आदि।

खेलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खेल करना। मन बहलाना। २-विहार करना। काम क्रीड़ा करना। ३-देवी या भूत के प्रभाव से सिर आदि हिलाना। ४-विचारना। चलना। बढ़ना। *खेली खाई*-पुरुष समागम से जानकार। *खुल खेलना*-खुल्लम खुल्ला कोई ऐसा कार्य करना जिसे लोग बुरा समझते हों। [क्रि. स.] (हिं.) १-मन बहलाव का काम करना। २-किसी वस्तु को लेकर अपना जी बहलाना। अभिनय करना। *जान या जी पर खेलना*-ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो

खेलवाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) खेल। क्रीड़ा। मन बहलाव। तमाशा।

खेलवाड़ी [वि.] (हिं.) १-खेलने वाला। २-विनोदशील। कौतुकप्रिय।

खेलवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) खेल करने वाला। खेलाड़ी।

खेला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सट्टा'।

खेलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्रीड़न। खेल। २-खेलाने की मजदूरी।

खेलाड़ी [वि.] (हिं.) १-खेलने वाला। क्रीड़ाशील। २-विनोदी। ३-खेल में सम्मिलित होने वाला व्यक्ति। ४-तमाशा करने वाला। २-ईश्वर।

खेलाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी अन्य व्यक्ति को क्रीड़ा या खेल में प्रवृत्त करना। २-खेल में शामिल करना। ३-बहलाना। उलझाए रखना। *खेला-खेलाकर मारना*-दौड़ा दौड़ाकर धीरे धीरे मारना।

खेलार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खिलाड़ी'।

खेलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गान। गाना। २-बाण। तीर। ३-सूर्य। ४-पक्षी। ५-जन्तु।

खेलुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़े को मुलायम करने का एक औजार।

खेलौना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खिलौना'।

खेव [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

खेवक* [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव खेने वाला। मल्लाह। केवट। मांझी।

खेवट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक पट्टीदार की जमीन का विवरण होता है। २-नाव खेने वाला। मल्लाह। मांझी।

खेवटिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खेवट। मल्लाह।

खेवणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव की डांड।

खेवनहार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खेने वाला। मल्लाह। केवट। २-ठिकाने तक पहुँचाने वाला। पार लगाने वाला।

खेवना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खेना'।

खेवनाव [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

खेवरियाना [क्रि. स.] (देश.) एकत्र करना। बटोरना।

खेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाव का किराया। २-नाव की खेप। ३-बार। दफा। ४-बोझ से लदी हुई नाव।

खेवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाव खेने का काम। २-नाव खेने की उजरत या मजदूरी। ३-डांड को नाव से बांधने के काम आनेवाली रस्सी।

खेस [संज्ञा पु.] (देश.) बहुत मोटे सूत की बनी एक लम्बी चादर।

खेसर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'खच्चर'।

खेसारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मटर जिसकी फलियां चिपटी होती हैं। इसकी दाल बनाई जाती है।

खेह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूल। राख। खाक। *खेह खाना*-धूल फांकना। व्यर्थ समय खोना। २-दुर्दशा-ग्रस्त होना।

खैंग, खैङ्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा।

खैंचना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खींचना'।

खैंचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देवदार की लकड़ी की एक तख्ती जो डेढ़ हाथ लम्बी और एक बिता चौड़ी होती है जिस पर तेल लगा कर सीकल किये हुए औजार साफ किये जाते हैं।

खैंचाखैंची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खींचाखींची'।

खैंचातान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खींचतान'।

खैंचातानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खींचतान'

खैबर [संज्ञा पु.] (देश.) पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच की एक घाटी का नाम।

खैर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का बबूल। कथकीकर। २-इस वृक्ष की लकड़ी का निकाला हुआ सत। कत्था। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कुशल। क्षेम। **[अव्य.]** १-कुछ चिंता नहीं। कुछ परवा नहीं। २-अस्तु। अच्छा।

खैरआफ़ियत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) क्षेमकुशल। कुशलमंगल।

खैरखाह [वि.] (फा.) शुभचिंतक। भला चाहने वाला।

खैरखाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शुभचिंतन। भलाई सोचना।

खैरवाल [संज्ञा पु.] (देश.) केलियार नामक वृक्ष।

खैरसार [संज्ञा पु.] (हिं.) कत्था। खैर।

खैरा [वि.] (हिं.) खैर के रंग का। कत्थई। [संज्ञा पु.] कत्थई रंग का घोड़ा या कबूतर। [संज्ञा पु.] (देश.) १-धान की फसल का एक रोग। २-तबला बजाने में एक ताले की दून। ३-एक प्रकार की छोटे आकार की मछली जो बंगाल में पाई जाती है।

खैरात [संज्ञा पु.] (अ.) दान। पुण्य।

खैरियत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कुशलक्षेम। २-भलाई। कल्याण।

खैलर [संज्ञा पु.] (हिं.) मथानी।

खैला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बैल जिसे काम में न लिया गया हो।

खोंइचा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंचल। किनारा (स्त्रियों के कपड़ों का)।

खोंखना [क्रि. अ.] (हिं.) खाँसना। खों-खों करना।

खोंखल [वि.] (हिं.) देखो 'खोखला'।

खोंखा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कास। खाँसी।

खोंखी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कास। खाँसी।

खोंखों [संज्ञा पु.] (हिं.) खाँसने का शब्द।

खोंगा [संज्ञा पु.] (देश.) रुकावट। अटकाव। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बैल जिसे काम में न लिया गया हो। बछड़ा।

खोंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) बहेलियों का वह लंबा बांस जिससे चिड़िया फंसाते हैं।

खोंचों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भिक्षा। भीख।

खोंटना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु का ऊपर का भाग तोड़ना।

खोंटा [वि.] (हिं.) देखो 'खोटा'।

खोंड़र [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ का भीतरी पोला भाग।

खोंड़हा [वि.] (हिं.) देखो 'खोंड़ा'।

खोंड़ा [वि.] (हिं.) जिसका कोई अंगभंग हो।

खोंतल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खोता। घोंसला।

खोंता [संज्ञा पु.] (हिं.) घोंसला। चिड़ियों का घर।

खोंथा [संज्ञा पु.] देखो 'खोंता'।

खोंप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिलाई का लम्बा टांका

खोपना+ [क्रि. स] (हिं.) धंसाना। गड़ाना।

खोंपा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगता है। २-छप्पर का कोना। ३-भूसा रखने का स्थान जो छप्पर से ढका रहता है।

खोंपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हजामत के खत का कोना। २-खोंपा।

खोंसना [क्रि. अ.] (हिं.) अटकाना। घुसेड़ना। लगाना।

खोआ [संज्ञा पु.] (हिं.) खोया। मावा। उबाल कर गाढ़ा किया हुआ दूध।

खोइडार [संज्ञा पु.] (हिं.) कोल्हू में वह स्थान जहां खोई जमा की जाती है।

खोइलर [संज्ञा पु.] (हिं.) बांस की छड़ी जिससे कोल्हू में पड़े गंडों को उलटते पलटते हैं।

खोइहा [संज्ञा पु.] (हिं.) खोई उठाने या फेंकने वाला मजदूर।

खोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊख के रस निकले टुकड़े। २-भुने हुए चावल या धान की खील लाई। ३-कम्बल की पोघी।

खोखर [संज्ञा पु.] (देश.) दिन के पहले पहर में गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग।

खोखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) टूटा हुआ जहाज।

खोखला [वि.] (हिं.) जिसके भीतर कुछ भी न हो। पोला।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-खाली या पोला स्थान। २-रंध्र। बड़ा छेद।

खोखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह कागज जिस पर हुंडी लिखी गई हो। २-बालक। लड़का।

[संज्ञा पु.] (देश.) तख्ते आदि का बना अस्थायी घर।

खोगीर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खुगीर'।

खोचकिल* [संज्ञा पु.] (देश.) चिड़ियों का घोंसला।

खोज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अनुसंधान। तलाश। २-चिह्न। निशान। पता। ३-गाड़ी के पहिये के निशान।

खोज मिटाना-नष्ट करना। ध्वस्त करना। बरबाद करना।

खोजक* [वि.] (हिं.) खोज करने वाला। तलाश करने वाला।

खोजना [क्रि. स.] (हिं.) तलाश करना। पता लगाना। ढूंढ़ना।

खोजमिटा [वि.] (हिं.) जिसका चिह्न न रह जाय। जिसका नाम निशान न रह जाय। नष्ट (स्त्रियों की बोली)।

खोजवाना [क्रि. स.] (हिं.) खोजने का कार्य किसी से करवाना।

खोजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह सेवक जो मुसलमानी अंतःपुर में रक्षक का कार्य करता है। जो नपुंसक होता है। २-सेवक। नौकर। ३-सरदार।

खोजाना* [क्रि. स.] देखो 'खोजवाना'।

खोजी* [वि.] (हिं.) खोजने वाला। ढूंढने वाला।

खोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दोष। ऐब। बुराई। २-किसी उत्तम द्रव्य में निकृष्ट द्रव्य का मिश्रण।

खोटता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खोटाई। बुराई। खोटापन।

खोटपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खोटापन'।

खोटा [वि.] (हिं.) दूषित। खराब। जो खरा न

खोटा खरा-भलाबुरा। *खोटा खाना*-बेईमानी या बुरी तरह से खाना। *खोटा पैसा*-१-बुरी कमाई। २-खराब। न चलने वाला पैसा (सिक्का)। ३-मूर्ख या बुरा लड़का।

खोटी करना-बुराई करना। *खोटी बोलना*-बुरी बात बोलना। *खोटी खरी सुनाना*-दुर्वचन कहना।

खोटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बुराई। दुष्टता। क्षुद्रता। २-छल। कपट। दोष। ऐब। नुक्स।

खोटापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दोष। नुक्स। २-फरेब। धोखा। छल। ३-दुष्टता। बदमाशी। ४-क्षुद्रता। ओछापन।

खोड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूत-प्रेत, देवता आदि का प्रकोप। ऊपरी फेर।

खोड़रा [संज्ञा पु.] (हिं.) पुराने वृक्ष का खोखला भाग। कोटर।

खोद [संज्ञा पु.] (फा.) योद्धाओं का लड़ाई में पहनने का लोहे का टोप। शिरस्त्राण।

[संज्ञा पु.] (हिं.) जांच परताल। पूछताछ।

खोदई [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय की तराई में पाया जाने वाला एक वृक्ष।

खोदना [क्रि. स.] (हिं.) १-खनन करना। गड्ढा करने के लिए कुदाल आदि से जमीन की मिट्टी निकालना। २-उसकाना। उभाड़ना। उत्तेजित करना। ३-उपहास करना। ४-नक्काशी करना।

खोद खोद कर पूछना-अच्छी तरह पूछना।

खोदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खोदने का छोटा औजार।

खोदवाना [क्रि. स.] (हिं.) खोदने का काम दूसरे से कराना।

खोदविनोद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छानबीन। जांच पड़ताल। छेड़छाड़।

खोदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खोदने का काम। २-खोदने की मजदूरी। ३-नक्काशी या खोदने का काम।

खोना [क्रि. स.] (हिं.) १-व्यर्थ फेंक देना। गंवाना। २-नष्ट करना। खराब करना। ३-भूल से कोई वस्तु कहीं पर छोड़ देना।

[क्रि. अ.] किसी वस्तु का भूल से कहीं जाना।

खोया जाना-सिटपिटा जाना।

खोन्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी थाल या जिसमें फेरी वाले मिठाई आदि बेचते हैं।

खोन्चा लगाना-बेचने के लिए मिठाई आदि सजाना।

खोपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिर की कपाल। २-सिर। ३-गिरी का गोला। नारियल। ५-भिक्षुकों का खप्पर। पहियों के बीच धुरों से मिलने वाली

खोपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपाल। हड्डी। २-सिर।

अंधी खोपड़ी का, औंधी खोपड़ी का-

खोपड़ी खा जाना-बहुत बात करके

खोपड़ी चाट जाना-व्यर्थ की बातें करना। *खोपड़ी चटकना*-अधिक अथवा पीड़ा के कारण सिर में चक्कर अनुभव करना। सिर

खोपड़ी खुजलाना-१-मारखाने को जी २-सिर पर जूता मारना। *खोपड़ी गंजी* मार खाते-खाते सिर के बाल झड़ जाना।

खोपड़ी गंजी करना-सिर पर खूब जूते

खोपरा+ [संज्ञा पु.] देखो 'खोपड़ा'।

खोपा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छप्पर या कोना। २-स्त्रियों की गुथी हुई ३-जूड़ा बंधी हुई बेणी। ४-नारियल गोला।

खोबा [संज्ञा पु.] (देश.) गच या पलास्तर की थापी।

खोभरना [क्रि. अ.] (हिं.) आड़ा पड़ना। पड़ना।

खोभराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खुभराना'।

खोभार [संज्ञा पु.] (?) कूड़ा कर्कट फेंकने गड्ढा।

खोम* [संज्ञा पु.] (अ.) समूह। झुंड।

[संज्ञा पु.] (हिं.) किले की बुर्ज।

खोय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आदत। बान। स्वभाव।

खोया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उबाल कर गाढ़ा किया हुआ दूध। मावा। २-ईंट पाथने का

[क्रि. स.] (हिं.) 'खोना' का भूतकाल।

खोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-संकीर्ण पथ। गली। २-पशुओं को चारा खिलाने की

[संज्ञा पु.] (देश.) बबूल की जाति का और सुन्दर वृक्ष।

[वि.] (सं.) खंज। लंगड़ा।

खोरक [संज्ञा पु.] (सं.) गधे को चढ़ने वाला बुखार।

खोरना* [क्रि. अ.] (हिं) स्नान करना। नहाना।

खोती [संज्ञा स्त्री.](हिं.) भड़भूजे की वह लकड़ी जिससे भाड़ झोंकते समय बाहर रखे हुए ईंधन को भाड़ के भीतर करते हैं।

खोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटोरा। बेला। २-आबखोरा। गिलास।
[वि.] (हिं.) लूला। लंगड़ा। अंगभंग।

खोराक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-भोजन सामग्री। २-खाने की मात्रा। औषध की मात्रा।

खोराकी [वि.] (फा.) अधिक मात्रा में भोजन करने वाला। पेटू।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) खोराक के निमित्त दिया गया धन।

खोरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सँकरी गली। २-दोष। ऐब। नुक्स। ३-बुराई। ४-देखो 'खौरा' 'खौरि'।

खोरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा कटोरा। बेलिया। छोटा अबखोरा। गिलास। २-छोटे चमकीले बुन्दे।

खोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिलास। उछाड़। २-कीड़े का ऊपरी चमड़ा। ३-ओढ़ने का मोटा कपड़ा। मोटी चादर।

खोलना [क्रि.स.] (हिं.) १-उघाड़ना। अवरोध हटाना। २-छेदना। बिगाड़ देना। ३-तोड़ना। छुटना। मुक्त करना। छोड़ना। ५-लगाना। ठहराना। ६-कोई क्रम चलाना या जारी करना। ७-सड़क, नहर आदि चलती करना। ८-आरम्भ करना। ९-गुप्त या गूढ़ बात प्रकट या स्पष्ट करना।

खोलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तृण। घास।

खोलिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पनालीदार रुखानी जिससे बढ़ई लकड़ी पर बेलबूटे बनाती है।

खोवा [संज्ञा पु.] (हिं.) खोया। मावा।

खोह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुहा। गुफा। कंदरा। २-पहाड़ के बीच का गहरा गड्ढा। ३-दो पहाड़ों के मध्य का तंग स्थान।

खोही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्तों की छतरी। २-घोघी। खुडुआ।

खौं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खात। गड्ढा। २-खत्ती। अनाज रखने का गहरा गड्ढा।

खौंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साढ़े छः का पहाड़ा। २-एक प्रकार की संदूक जिसमें मिठाई आदि खाने पीने की वस्तु रखी जाती हैं।

खौंढ़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनाज रखने का गड्ढा। २-गाड़हा।

खौफ [संज्ञा पु.] (अ.) डर। भय। भीति।

खौर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चंदन का आड़ा धनुषाकार तिलक। त्रिपुण्ड। चन्दन का आड़ा टीका। २-मस्तक पर धारण करने का स्त्रियों का एक गहना। ३-एक प्रकार की

मछली फसाने का जाल।

खौरना [क्रि. स.] (हिं.) तिलक करना। चंदन का टीका लगाना।

खौरहा [वि.] (हिं.) १-गंजा जिसके सिर के बाल उड़ गये हों। २-जिसके खुजली हो हो गई हो। खजहा।

खौरा [वि.] (हिं.) जिसे खौरा हुआ हो।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की खुजली जिसमें चमड़ा रूखा हो जाता है।

खौरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खौर'।

खौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खोपड़ी।
[संज्ञा स्त्री.](देश.) राख (सोनारों की बोली)।
खौरी करना--सोने या चांदी को राख कर देना।

खौरु [संज्ञा पु.](देश.) बैल या सांड की डकार अथवा बोली।

खौलना [क्रि. अ.] (हिं.) उबलना।

खौलाना [क्रि. स.] (हिं.) उबालना। पानी आदि को इतना गर्म करना कि वह बोलने लगे।

खौहड़+ [वि.] (हिं.) देखो 'खौहा'।

खौहा [वि.] (हिं.) १-बहुत अधिक खाने वाला। पेटू। २-खाने का लालची। ३-दूसरे की कमाई खाने वाला।

ख्यात [वि.] (सं.) प्रसिद्ध। मशहूर।
[संज्ञा स्त्री.] वह कविता जिसमें किसी की वीरता कीर्ति आदि का वर्णन हो।

ख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्धि। नामवरी।

ख्यातिकर [वि.] (सं.) प्रशंसा करने वाला।

ख्यातिघ्न[वि.] (सं.) प्रसिद्धि को मिटाने वाला।

ख्यातिमत् [वि.] (सं.) ख्यातियुक्त। नामवर। प्रसिद्ध।

ख्यात्यापन्न [वि.] (सं.) ख्याति या प्रसिद्धि प्राप्त किया हुआ।

ख्यापक [वि.] (सं.) १-ज्ञापक। बताने वाला। २-प्रकाशक।

ख्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाशन।

ख्याल [संज्ञा पु.] (अ.) १-ध्यान। २-अनुमान। अटकल। अंदाज। ३-विचार। भाव। सम्पति। ४-आदर। लिहाज। ५-एक गान जिसमें केवल एक स्थायी पद और अंतरा होता है। ६-लावनी गाने का एक ढंग।
ख्याल करना-१-याद करना। २-रिआयत करना। *ख्याल पड़ना*-याद आना। *ख्याल पर चढ़ना*-ध्यान में आना। *ख्याल में आना*-समझ में आना। *ख्याल रखना*-१-ध्यान रखना। २-लिहाज रखना। ३-कृपादृष्टि रखना। *ख्याल रहना*-याद रहना। *ख्याल से उतरना या उतर जाना*-भूल जाना। *किसी के ख्याल में पड़ना*-किसी के पीछे पड़ना। *ख्याल बाँधना*-अनुमान लगाना। *ख्याल मे लाना*-१-महत्वपूर्ण समझना। २-रिआयत करना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) खेल। क्रीड़ा। हँसी। दिल्लगी।

ख्याली [वि.] (फा.) १-कल्पित। फर्जी। अनुमित। २-सनकी। वहमी। सक्ती।
ख्याली पुलाव पकाना--असम्भव बातें सोचना। मनोराज्य करना।
[वि.] (हिं.) खेल या कौतुक करने वाला।

ख्रिष्टान [संज्ञा पु.] (हिं.) ईसाई। क्रिस्तान।

ख्रिष्टीय [वि.] (हिं.) १-ईसवी। २-ईसा संबंधी। ३-ईसाई धर्म संबंधी।

ख्रिष्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) हजरत ईसामसीह।

ख्वाजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-मालिक। २-सरदार। ३-कोई प्रसिद्ध पुरुष। ४-बड़ा व्यापारी। ५-पहुँचा हुआ मुसलमान फकीर। ६-रनिवास का नपुंसक। भृत्य। खोजा।

ख्वान् [संज्ञा पु.] (फा.) परात। थाल।

ख्वान्चा [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'खोन्चा'।

ख्वाब [संज्ञा पु.] (फा.) १-सोने की अवस्था। नींद। २-स्वप्न।
ख्वाब होना या हो जाना-स्वप्नदोष होना।

ख्वाबगाह [संज्ञा पु.] (फा.) शयनागार।

ख्वार [वि.] (फा.) २-नष्ट। खराब। बर्बाद। २-अनादृत। तिरस्कृत।

ख्वारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नष्टता। बर्बादी। २-अनादर। तिरस्कार।

ख्वास्तगार [संज्ञा पु.] (फा.) चाहने वाला। इच्छा करने वाला।

ख्वाह [अव्य.] (फा.) या। अथवा। या तो।

ख्वाहाँ [वि.] (फा.) १-इच्छा रखने वाला। इच्छुक। २-प्रेमी।

ख्वाहिश [संज्ञा स्त्री.](फा.) अभिलाषा। आकांक्षा। इच्छा।

ख्वाहिशमंद [वि.] (फा.) इच्छुक। आकांक्षी।

ख्वैंतर [संज्ञा पु.] (देश.) गोफना। ढेलवाँस।

ख्वैना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खोना'।

ग

ग व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ है। इसका आभ्यन्तर प्रयत्न जिह्वामूल स्पर्श तथा वाह्य प्रयत्न संवारनाद घोष है।

गंग, गङ्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अकबर के समय का एक हिन्दी का कवि। २-एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ९ मात्राएं होती हैं और अन्त में दो गुरु होते हैं।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंगानदी।

गंगई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैना की जाति की एक प्रकार की चिड़िया। यह बहुत बोलती है। गलगलिया।

गंगकुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की हल्दी जिसकी गांठ लम्बी और बड़ी होती है।

गंगतिरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जो सजल भूमि में उगता है।

गंग-बरार [संज्ञा पु.] (हिं.) गंगा या अन्य किसी नदी की धारा या बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि।

गंगभोज, गङ्गभोज [संज्ञा पु.] (हिं.) गंगाजी की यात्रा के उपरान्त जाति के लोगों को दिया जाने वाला भोज।

गंगरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बनी नाम की एक कपास।

गंगला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का शलगम जो गंगा के किनारे होता है।

गंगवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष का नाम जो दक्षिण में समुद्र के तट पर तथा बर्मा, अंडमान और लंका में होता है।

गंगशिकस्त [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भूमि जिसे कोई नदी काट लेगई हो।

गंगा, गङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भारत की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी जो हिमालय से निकल कर १५६० मील पूर्व को बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। भागीरथी। मंदाकिनी। जाह्नवी। सुर नदी।

गंगाचिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक जलपक्षी जिसका सिर काले रंग का होता है। जलकुक्कुटी।

गंगाजमुनी [वि.] (हिं.) १-मिलाजुला। दो रंगा। संकर। २-दो धातुओं के मेल से बना हुआ। ३-काला उजला।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कान का एक भूषण। २-वह दाल जिसमें उरद और अरहर की दाल मिली हो। ३-जरतारी का वह काम जिसमें सुनहले और रुपहले तार लगे हों।

गंगाजल, गङ्गाजल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंगा का पानी। २-एक कपड़े का नाम।

गंगाजली, गङ्गाजली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जल भरने की शीशी। २-धातु या शीशे का वह पात्र जिसमें यात्री लोग गंगाजल भरकर लाते हैं।
गंगाजली उठाना–गंगाजली हाथ में लेकर सौगंध उठाना।
[संज्ञा पु.] भूरे और कड़े रंग का एक प्रकार का गेहूँ।

गंगाजाल, गङ्गाजाल [संज्ञा पु.] (हिं.) रीहा नामक घास का बना मछुओं का जाल।

गंगादत्त, गङ्गादत्त [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्म का एक नाम।

गंगाद्वार, गङ्गाद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) हरिद्वार।

गंगाधर, गङ्गाधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-एक औषध का नाम। ३-२४ अक्षर का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८२ गण होते हैं।

गंगापथ, गङ्गापथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

गंगापुत्र, गङ्गापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीष्म। २-गंगातट के घाटों पर रहने वाले एक प्रकार के ब्राह्मण जो दान आदि लेते हैं।

गंगापूजा, गङ्गापूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह की एक रसम जिसमें वर-वधु तालाब पर देव पूजन के निमित्त जाते हैं और इसी दिन वर-वधु के हाथ के कंगन खोले जाते हैं।

गंगाप्राप्ति, गङ्गाप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा लाभ। मृत्यु।

गंगायात्रा, गङ्गायात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरणासन्न व्यक्ति का मरने के लिए गंगा तट पर जाना।

गंगाराम, गङ्गाराम [संज्ञा पु.] (हिं.) तोते के प्यार से बोलने का नाम।

गंगाल, गङ्गाल [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

गंगाला, गङ्गाला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ तक गंगा के चढ़ाव का पानी पहुँचता है।

गंगालाभ, गङ्गालाभ [संज्ञा पु.] (सं.) गंगा की प्राप्ति। मृत्यु।
गंगा लाभ होना–१-गंगातट पर मरना। २-डूब कर मरना।

गंगालहरी, गङ्गालहरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा की लहर या तरङ्ग।

गंगावतरण, गङ्गावतरण [संज्ञा पु.] (सं.) गङ्गा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।

गंगावासी, गङ्गावासी [संज्ञा पु.] (हिं.) गंगा के तट पर बसने वाला। व्यक्ति।

गंगासागर, गङ्गासागर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहां गंगा समुद्र से मिलती है। २-एक प्रकार का बड़ा टोंटीदार लोटा ३-मोटे कपड़े की छपी हुई जनानी धोती।

गंगासुत, गङ्गासुत [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्म।

गंगेठी, गङ्गेठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दवा के काम में आने वाली एक बूटी।

गंगेरन, गङ्गेरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहदेई के समान एक पौधा जो औषध में काम आता है।

गंगेरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पहाड़ी वृक्ष जिसके आंवले के आकार के फल लगते हैं।

गंगेरू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गंगेरन'।

गंगेश, गङ्गेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

गंगोभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गंगाजल। २-गंगा-भोज।

गंगोत्तरी, गङ्गोत्तरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गढ़वाल में हिमालय पर्वत पर एक स्थान जहां गंगा ऊपर से गिरती है।

गंगोदक, गङ्गोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंगा-जल। २-२४ अक्षर का एक वृत्त जिस के प्रत्येक चरण में ८ रगण होते हैं।

गंगोल, गङ्गोल [संज्ञा पु.] (सं.) गोमेदक नामक मणि।

गंगौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंगा किनारे की या मिट्टी।

गंगौलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का नींबू जिसका छिलका दानेदार होता है।

गंज, गञ्ज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिर के झड़ने का रोग। खल्वाट।
[संज्ञा पु.] [फा. स.] १-खजाना। कोष। ढेर। राशि। अंबार। ३-समूह। झुंड। अन्नादि रखने का स्थान। कोठी। ५-गले की मण्डी। हाट। बाजार। स्थान जहां यनिये बसाये जाते हैं और लगता है। ७-मद्यपात्र। ८-मदिरालय।
गंज डालना–मंडी आबाद करना।
[संज्ञा पु.] (सं.) अवज्ञा। निरस्कार।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मोटी बेल।

गंजगोला, गञ्जगोला [संज्ञा पु.] (हिं.) तोप का वह गोला जिसमें छोटी-छोटी गोलियां भरी रहती हैं।

गंजन, गञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवज्ञा। तिरस्कार। २-अष्ट ताल के आठ भेदों में से एक (संगीत)।

गंजना, गञ्जना [क्रि. स.] (हिं.) १-अवज्ञा करना। २-तिरस्कार करना। ३-चूरचूर करना। नाश करना।

गंजनी, गञ्जनी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक घास जो सुगंध बनाने के काम आती है।

गंजावर, गञ्जावर [संज्ञा पु.] (सं.) कोषाध्यक्ष। खजानची।

गंजा, गञ्जा [संज्ञा पु.] (हिं.) गंज नामक रोग।
[वि.] (हिं.) जिसके सिर के बाल झड़ गये हों।

गंजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रुपये रखने की सूत की बनी हुई थैली। २-घसियारे की घास भरने की जालीदार थैली। ३-तंग मुँह का बना हुआ मिट्टी का बना बरतन।

गंजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढेर। समूह। गांज। २-कंदा। शकरकंद। ३-बनियान की तरह की बनी हुई कुरती।

गंजीफा [संज्ञा पु.] (फा.) एक खेल का नाम।

गंजेड़ी [वि.] (हिं.) गांजा पीने वाला।

गंटम [संज्ञा पु.] (?) ताड़पत्र पर लिखने की लोहे की कलम।

गँठकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) गिरहकट।

गँठजोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) गँठबंधन।

गँठबंधन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विवाह की रसम जिसमें वर और वधू के दुपट्टे को परस्पर बांध देते हैं। २-व्यक्तियों या वस्तुओं का प्रायः बना रहने वाला साथ।

गँठिवन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ग्रंथिपर्णी। देखो 'गठिवन'।

गँठुआव [संज्ञा पु.] (हिं.) धागे जोड़ने का (जुलाहे का) काम।

गंड, गण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपोल। गाल। २-कनपटी। ३-गले में पहनने का, गंडा। ४-फोड़ा। ५-चिह्न। निशान। ६-गोल मंडलाकार चिह्न अथवा लकीर। ७-गांठ। ८-वीथी नामक नाटक का वह अंग जिसमें सहसा प्रश्नोत्तर होते हैं।

गंडक, गण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गले में पहनने का गंडा। २-वह प्रदेश जहां गंडकी नदी बहती है। ३-गांठ। ४-एक रोग जिसमें बहुत से फोड़े निकलते हैं। ५-गैंडा। ६-चिह्न। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'गंडकी'।

गंडका, गण्डका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीस वर्णों का एक वृत्त जिसे वृत्त और दंडिका भी कहते हैं।

गंडकी, गण्डकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नैपाल में हिमालय से निकलने वाली एक नदी जो पटना के पास गंगा में मिलती है। [संज्ञा पु.] १७ मात्राओं का एक ताल जिसमें १३ आघात और ४ खाली होते हैं।

गंडगोपालिका, गण्डगोपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

गंडघिसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-अत्याधिक निकृष्ट परिश्रम। २-बहुत खुशामद और विनती।

गँडतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों के मलमूत्र से बचाने के लिए बिछावन के ऊपर बिछाया हुआ कपड़ा।

गंडदूर्वा, गण्डदूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गांडर घास की जड़ जिसे खस कहते हैं। २-पृथ्वी पर फैलने और दूर तक जड़ पकड़ती जाने वाली दूब।

गंडनी, गण्डनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरपोका। सर्पाक्षी। सरहटी।

गँडपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मलमार्ग से उत्पन्न पुत्र (असंभव बात। गाली)।

गंडमंडल, गण्डमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) कनपटी।

गंडमाला, गण्डमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माला के समान पास-पास गले में निकलने वाली फुंसियों का एक रोग। कंठमाला।

गंडमूर्ख, गण्डमूर्ख [वि.] (सं.) घोर मूर्ख। बहुत बेवकूफ।

गँडरा [संज्ञा पु.] (हिं.) मूंज के समान एक घास जिसकी जड़ को खस कहते हैं। २-भादों कुआर में होने वाला एक धान।

गंडरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंडरा घास। गांडर।

गंडली, गण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी पहाड़ी। २-शिव।

गंडसूचि, गण्डसूचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नृत्य में एक प्रकार का भाव।

गंडस्थल, गण्डस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) कनपटी।

गंडांत, गण्डान्त [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार ज्येष्ठा, श्लेषा, और रेवती के अंत के पांच या तीन दंड और मूल, मघा और अश्विनी के अंत के तीन दंड जिसमें उत्पन्न बालक दोषी समझे जाते हैं तथा दोष शान्त करने के निमित्त पूजा की जाती है।

गंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गांठ। २-भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिए किसी धागे में मंत्र पढ़कर गांठ लगाने का कार्य। ३-कौड़िया और घुंघरू बंधा पट्टा जो घोड़ों के बांधा जाता है। ४-चार की संख्या का समूह। ५-आड़ी धारी। ६-तोते चिड़ियों आदि के गले की धारी।

गंडा तावीज-टोटका। जादू टोना। *गंडा पड़ना*-धारी होना या निकलना।

गंडारि, गण्डारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कचनार।

गंडाली, गण्डाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाँडर घास।

गँडखा [संज्ञा पु.] (हिं.) चारे या घास के टुकड़े करने का औजार।

गँडासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा गंडासा।

गंडिनी, गण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुर्गा।

गँडिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गांडू'।

गंडीर, गण्डीर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गिड़नी नामक साग जो कफ नाशक होता है। २-पोई का साग। ३-सेहुँड़।

गंडीरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गंडीर'।

गंडुपद, गण्डुपद [संज्ञा पु.] (सं.) फीलपाव नामक रोग।

गंडू, गण्डू [संज्ञा पु.] देखो 'गांडू'।

गंडूक, गण्डूक [संज्ञा पु.] देखो 'गंडूष'।

गंडूपद, गण्डूपद [संज्ञा पु.] (सं.) केंचुआ।

गंडूपदभव, गण्डूपदभव [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक एक धातु।

गंडूष, गण्डूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-हथेली का गड्ढा। चुल्लू। २-कुल्ली। ३-हाथी के सूंड की नोक।

गँडेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ईख के छोटे-छोटे टुकड़े। छोटा लम्बोतरा टुकड़ा।

गँडोरा [संज्ञा पु.] (हिं) हरी तथा कच्ची खजूर।

गंडोल, गपडोल [संज्ञा पु.] (हि.) १-गुड़। कच्ची शक्कर। २-ऊख। ३-कौर। ग्रास।

गंता, गन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) जाने वाला।

गंदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मलिनता। मैलापन। २-अपवित्रता। ३-मैल। मल। ४-बदबू। दुर्गन्ध।

गंदना [संज्ञा पु.] (हिं.) लहसुन या प्याज की तरह का एक कंद।

गंदम [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पत्ती।

गँदला [वि.] (हिं.) गंदा। मैलाकुचैला। मलिन।

गंदा, गन्दा [वि.] (फा.) १-मैला। मलिन। २-अशुद्ध। नापाक। ३-घृणित। घिनौना।

गंदा करना-१-भ्रष्ट करना। २-कलंकित करना।

गंदादहन, गन्दादहन [वि.] (फा.) जिसके मुंह से दुर्गन्ध आती हो।

गंदापानी, गन्दापानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मद्य। शराब। २-वीर्य। धातु।

गंदा पानी निकालना-संभोग करना। अयोग्य स्त्री से मैथुन करना।

गंदाबगल, गन्दाबगल [संज्ञा पु.] (हिं) वह घोड़ा जिसके दोनों बगल दो भौंरिया हों।

गँदीला [संज्ञा पु.] (हिं.) काली, ऊसर और तर भूमि में उगने वाली एक घास।

गंदुम, गन्दुम [संज्ञा पु.] (फा.) गेहूँ।

गंदुमी, गन्दुमी [वि.] (फा.) गेहूँ के रंग का। गेहुआं।

गँदोलना* [क्र. स.] (हिं.) गंदा करना। गंदला करना।

गंध, गन्ध [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वास। महक। २-सुगंध। सुवास। ३-शरीर में लगाने का सुगंधित द्रव्य। जैसे—चन्दन। ४-लेश। अणुमात्र। ५-गंधक। ६-शोभांजन। सहिजन।

गंधक, गन्धक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक जलने वाला पीला खनिज पदार्थ।

गंधकवटी, गन्धकवटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुद्ध गंधक के मिश्रण से बनने वाली औषध या गोली।

गंधकालिका, गन्धकालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्यवती। योजनगंधा।

गंधकाली, गन्धकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्यवती। योजनगंधा।

गंधकाष्ठ, गन्धकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) अगरु। अगर की लकड़ी।

गंधकी, गन्धकी [वि.] (हिं) गंधक के रंग का। हलके पीले रंग का।

गंधकीतेजाब, गन्धकीतेजाब [संज्ञा पु.] (हिं.) गंधक का तेजाब।

गंधगात, गन्धगात* [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्दन।

गंधजात, गन्धजात [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपात।

गंधत्राण, गन्धत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) नीलीचाय।

गंधद, गन्धद [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

गंधदला, गन्धदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा

गंधन, गन्धन [संज्ञा पु.] देखो 'गंदना'। [संज्ञा पु.] (?) (सोनारों की बोली) सोना।

गंधनाकुली, गन्धनाकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नाकुली कंद।

गंधनाल, गन्धनाल [संज्ञा पु] (हिं) नाक का छेद। नथुना।

गंधपत्र, गन्धपत्र [संज्ञा पु]. (सं.) १–सफेद तुलसी। २–मरुवा। ३–बेल। ४–नारंगी।

गंधपत्रा, गन्धपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूर कचरी।

गंधपत्री, गन्धपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा

गंधपर्णी, गन्धपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सप्तपर्णी

गंधपलाशी, गन्धपलाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूर कचरी।

गंधपसार, गन्धपसार [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गंधप्रसारिणी'।

गंधपसारी, गन्धपसारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गंधप्रसारिणी'।

गंधप्रत्यय, गन्धप्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) घ्राणेंद्रिय। नाक।

गंधप्रसारिणी, गन्धप्रसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की बेल जिसकी गंध कड़ुई और असह्य होती है।

गंधप्रियंगु, गन्धप्रियङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) फूलफेन। प्रियंगु।

गंधफल, गन्धफल [संज्ञा पु.] (सं.) १–कैथा। २–बेल।

गंधफला, गन्धफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–प्रियंगु। २–विदारी।

गंधफली, गन्धफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगु। २–चम्पा।

गंधबंधु, गन्धबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) आम।

गंधबबूल, गन्धबबूल [संज्ञा पु.] (हिं.) बबूल की जाति का एक वृक्ष जिसके फूल सुगंधित होते हैं।

गंधबिलाव, गन्धबिलाव [संज्ञा पु.] (सं.) नेवले के सदृश एक अफ्रीकी जन्तु।

गंधबेन, गन्धबेन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की सुगंधित घास।

गंन्धमृग, गन्धमृग [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरीमृग

गंधमाद, गन्धमाद [संज्ञा पु.] (सं.) १–भौंरा। २–एक यादव का नाम।

गंधमार्जार, गन्धमार्जार [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धबिलाव।

गंधमादन, गन्धमादन [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक पर्वत का नाम। २–भौंरा। ३–एक सुगंधित द्रव्य।

गंधमादिनी, गन्धमादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मद्य। मदिरा। २–लाख।

गंधमालती, गन्धमालती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक सुगंधित द्रव्य।

गंधमासी, गन्धमासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी।

गंधमुण्ड, गन्धमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक लता का नाम।

गंधमूली, गन्धमूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपूर कचरी।

गंधमूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छछूंदर।

गंधरब* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गंधर्व'।

गंधरबिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गंधर्विन'।

गंधरस, गन्धरस [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंधसार।

गंधराज, गन्धराज [संज्ञा पु.] (सं.) १–मोगरा। बेला। २–चन्दन। ३–नख नामक सुगन्धित द्रव्य।

गंधराजगुग्गुल [गन्ध] [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'गुग्गुल'।

गंधराजी, गन्धराजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नख नामक सुगंधित द्रव्य।

गंधर्व, गन्धर्व [संज्ञा पु.] १–देवताओं का एक भेद जो स्वर्ग में रहते हैं और गाने का काम करते हैं। २–मृग। ३–घोड़ा। ४–एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करने वाली आत्मा। ५–स्त्रियों की वह अवस्था जब उनके स्वर में मिठास होता है। ६–एक रोग। ७–विधवा स्त्री का दूसरा पति। ८–एक जाति जिनकी कन्याएं नाचती गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं। ९–संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

गंधर्वतैल, गन्धर्वतैल [संज्ञा पु.] (सं.) रेंडी का तेल।

गंधर्वनगर, गन्धर्वनगर [संज्ञा पु.] (सं.) १–काल्पनिका या मिथ्यानगर। २–हलकी बदली में दिखाई पड़ने वाला चन्द्रमा के किनारे का मंडल।

गंधर्वपुर, गन्धर्वपुर [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्वनगर।

गंधर्ववधू, गन्धर्ववधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीड़ा नाम का एक गंध द्रव्य।

गंधर्वहस्त, गन्धर्वहस्त [संज्ञा पु] (सं.) एरंड। रेंड।

गंधर्वविद्या, गन्धर्वविद्या [संज्ञा पु] (सं.) संगीत। गान-विद्या।

गंधर्वविवाह, गन्धर्वविवाह [संज्ञा पु] (सं) आठ प्रकार के भेदों में से एक।

गंधर्ववेद, गन्धर्ववेद [संज्ञा पु.] (सं.) संगीतशास्त्र।

गंधर्वा, गन्धर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का नाम।

गंधर्वास्त्र, गन्धर्वास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक अस्त्र का नाम।

गंधर्विन, गन्धर्विन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंधर्व की स्त्री। २–गंधर्व जाति की स्त्री।

गंधर्वी, गन्धर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गंधर्व की स्त्री। २–सुरभी की पुत्री। [वि] (हिं.) गंधर्व का। गंधर्व संबंधी।

गंधर्वोन्माद, गन्धर्वोन्माद [संज्ञा पु] (सं.) १-गंधर्वग्रह। २–गंधर्व रोग।

गंधवती, गन्धवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी। वसुन्धरा।

गंधवल्कल, गन्धवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) दार चीनी।

गंधवह, गन्धवह [संज्ञा पु] (सं.) १–वायु

गंधवाह, गन्धवाह [संज्ञा पु.] (सं) वायु। हवा

गंधसार, गन्धसार [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्दन। २–मोगरा। बेला। ३–कचूर।

गंधहर, गन्धहर [संज्ञा पु.] (सं.) नाक।

गंधहस्ती, गन्धहस्ती [संज्ञा पु.] (सं) मतवाला हाथी। मदवाला हाथी।

गंधा, गन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चम्पाकली। २–कपूर। ३–वंशलोचन।

गंधाना, गन्धाना+ [क्रि. स.] (हिं) गंध देना। दुर्गंध करना। [संज्ञा पु.] (हिं.) रोला छंद का एक नाम।

गंधानुवासन, गन्धानुवासन [संज्ञा पु.] (सं) अर्क का एक संस्कार।

गंधाविरोजा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष का गोंद जो फारस से आता है।

गंधार, गन्धार [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम।

गंधारी, गन्धारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गांधारी'।

गंधाली, गन्धाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी। गंधपसार।

गंधाशन, गन्धाशन [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। वायु।

गंधाष्टक, गन्धाष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) आठ गंध द्रव्यों के मेल से बना हुआ एक संयुक्त गंध। अष्टगंध।

गंधिनी, गन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा। शराब।

गंधिया, गन्धिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बरसात के दिनों में रात को उड़ने वाला एक कीड़ा जिसमें दुर्गंध निकलती है। २–भुनगो के आकार का एक हरे रंग का कीड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरसात में उगने वाली एक घास।

गंधी, गन्धी

गंधी, गन्धी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-इत्र और सुगन्धित तैल बेचने वाला। अत्तार। २-गंधिया घास। ३-गंधिया कीड़ा।

गंधीला* [वि.] (हिं.) मैला। गंदला।

गंधेज, गन्धेज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

गंधेल, गन्धेल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा पेड़ या झाड़।

गंधेला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक चिड़िया का नाम।
[वि.] (हिं.) दुर्गन्धयुक्त। बदबूदार।

गंधोली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपूर कचरी।

गंध्य, गन्ध्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्तु जिसमें सुगन्ध हो।

गंभारी, गम्भारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते पीपल के पत्तों के समान चौड़े होते हैं। काश्मरी। भद्रा।

गंभीर, गम्भीर [वि.] (सं.) १-बहुत गहरा। २-घना। ३-गूढ़ अर्थवाला। जटिल। ४-विकट। भारी। ५-शांत। धीर।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-जंभीरी नीबू। २-कमल। ३-ऋग्वेद का एक मन्त्र। ४-शिव। ५-एक राग।

गंभीरवेदी, गम्भीरवेदी [संज्ञा पु.] (सं.) अंकुश की गम्भीर चोट को भी कुछ अनुभव न करने वाला हाथी। मतवाला हाथी।

गंभीरिका, गम्भीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी ढोल।

गँवँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घात। दाँव। मतलब। प्रयोजन। ३-अवसर। मौका। ४-उपाय। युक्ति। ढंग।
गँवँ से-ढंग से। युक्ति से।

गँवइया [वि.] (हिं.) गाँव का। गाँव से सबंध रखने वाला।

गँवई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा गांव।

गँवरदल [वि.] (हिं.) १-गंवार के समान। गंवारों का सा। २-भद्दा। बेहूदा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) गंवारों का दल। गंवारों की भीड़।

गँवरमसला [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रामीण कहावत या उक्ति।

गँवहियाँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) अतिथि। मेहमान।

गँवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बिताना। काटना (समय)। २-पास की वस्तु को निकल जाने देना। खोना।

गँवार [वि.] (हिं.) १-ग्रामीण। देहाती। २-असभ्य। ३-मूर्ख।
गंवार का लट्ठ-उजड्ड। उजबक।

गँवारता* [संज्ञा स्त्री.] (हि) गँवारपन।

गँवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गंवारपन। २-मूर्खता। अज्ञानता। बेवकूफी। ३-गंवार-स्त्री। [वि.] [स्त्री. प्र.] २-गंवार का सा। २-भद्दा। बेढंगा। बदसूरत।

गँवारू [वि.] (हिं.) गंवार का सा भद्दा। बेढंगा।

गंस*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्वेष। वैर। गाँठ। २-आक्षेप। ताना। [संज्ञा स्त्री.] तीर की नोक। गांसी।

गंसना*+ [क्रि. स.] (हिं.) जकड़ना। गांठना। २-बुनावट में सूतों को खूब पास-पास सटाना। [क्रि. अ.] १-बुनावट का ठस होना। २-कसा या जकड़ा जाना।

गँसीला [वि.] (हिं.) तीर के समान नोकदार।

ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीत। २-गंधर्व। ३-गुरुमात्रा। ४-गणेश।
[वि.] १-गाने वाला। २-जाने वाला।

गइंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गयंद'।

गइनाही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जानकारी।

गई-करना* [क्रि. अ.](हिं.) टालना। सुनी-अनसुनी करना। तरह देना। अनुचित बात पर ध्यान न देना।

गई-बहोर [वि.] (हिं.) खोई हुई वस्तु को पुनः देने या बिगड़ी बात को बनाने वाला।

गऊंथ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास

गऊ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गौ। गाय।

गक्कर [संज्ञा पु.] (हिं.) पंजाब के उत्तर-पश्चिम में रहने वाली एक जाति।

गगन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-शून्य स्थान। ३-अबरक। ४-छप्पय छंद का एक भेद जिसमें १२ गुरु+१२८ लघु=१४० वर्ण और १५२ मात्राएं या १२ गुरु+१२४ लघु =१३६ वर्ण और १४८ मात्राएं होती हैं।

गगनकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) आकाशकुसुम।

गगनगढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत ऊंचा महल या इमारत।

गगनगति [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाशचारी। आसमान में चलने वाला। सूर्यचन्द्र आदि ग्रह। नक्षत्र। ३-आकाशगामी।

गगनचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। २-ग्रह। नक्षत्र। ३-आकाशगामी।

गगनचुंबी, चुम्बी [वि.] (हिं.) देखो 'गगनभेदी'।

गगनधूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। २-केवड़े के फूल पर धूल।

गगनध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-बादल।

गगनपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

गगनवाटिका [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश की बगिया (असम्भव बात)।

गगनभेड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करांकुल या कूंज नाम का पक्षी।

गगनभेदी [वि.] (सं.) आकाशभेदी। बहुत ऊंचा।

गगनवटी* [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

गगनवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशवाणी।

गगनस्पर्शी [वि.] (सं.) आकाश को छूने वाला। बहुत ऊंचा।

गगनस्पृक् [वि.] (सं.) आकाश को छूने वाला। बहुत ऊंचा।

गगनांगना, गगनाङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

गगनांबु, गगनाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश से गिरा हुआ जल।

गगनानंग, गगनानङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पच्चीस मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ वीं मात्रा पर विश्राम होता है और आरम्भ में रगण होता है।

गगनापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

गगनेचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्षत्र। ग्रह। २-पक्षी। ३-देवता। [वि.] आकाश में चलने वाला।

गगनोल्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

गगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) धातु या मिट्टी का बड़ा घड़ा। कलसा।

गगरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गगरी'।

गगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु या मिट्टी का छोटा घड़ा। कलसी।

गगली [संज्ञा पु.] (देश.) अगर की एक जाति।

गगोरी [संज्ञा पु.] (हिं.) बिल बना कर रहने वाला एक छोटा कीड़ा।

गच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नरम वस्तु में पैनी या कड़ी वस्तु के घुसने का शब्द। २-चूने सुरखी के मेल से बना मसाला। ३-चूने सीमेंट आदि का बना पक्का फर्श।

गचकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गच बनाने का काम। चूने का काम।

गचगर [संज्ञा पु.] (हिं.) गच का काम करने वाला कारीगर। गच पीटने वाला। थवई।

गचगीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गचकारी'।

गचना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठूंस के भरना। २-देखो 'गाँसना'।

गचपच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गिचपिच'।

गचाका [संज्ञा पु.] (हिं.) गच से गिरने या लगने का शब्द।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (बाजारी भाषा) जवान स्त्री। यौवन से परिपूर्ण स्त्री।
[वि.] (हिं.) भरपूर।

गच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़। २-साधुओं का मठ (जैन)। ३-वे साधु जो एक ही गुरु के शिष्य हों।

गछना* [क्रि. अ.] (हिं.) चलना। जाना।

[क्रि. स.] (हिं.) १–चलाना। निबाहना। २–अपने ऊपर लेना।

गज [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी। २–आठ की संख्या।

गज़ [संज्ञा पु.] (फा.) १–तीन फ़ुट या ३६ इंच का एक माप। २–लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बन्दूक अथवा तोप भरी जाती है। ३–वह कमानी जिससे सारंगी आदि बजाते हैं। ४–एक प्रकार का तीर।

गज़भर–सोलह सेर का भाव।

गजअसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गजाशन'।

गज़इलाही [संज्ञा पु.] (हिं.) अकबर के समय का गज जो ४१ अंगुल का होता था।

गजकंद, गजकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध। हस्तिकंद।

गज़क [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह खाद्य पदार्थ जो शराब पीने के समय खाई जाती है। २–जलपान। ३–तिलपपड़ी।

गजकणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपीपल।

गजकरन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अरुवा'।

गजकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

गजकुंभ, गजकुम्भ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी के मस्तक पर का दोनों ओर का उभड़ा हुआ भाग।

गजकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

गजकेसर [संज्ञा पु.] (हिं.) अगहन में तैयार होने वाला एक प्रकार का धान।

गजक्रीड़ित [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

गजगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हाथी के समान मंद और मस्त चाल। २–एक वर्णवृत्त जिस के प्रत्येक चरण में नगण, भगण और एक लघु तथा एक गुरु होता है।

गजगमन [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के समान मन्द गति।

गजगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना जो हाथियों को पहनाया जाता है।

गजगामिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] हाथी के समान मंदगति से चलने वाली।

गजगामी [वि.] (हिं.) देखो 'गजगामिनी'।

गजगाह [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हाथी की झूल। २–पाखर। झूल।

गजगौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गजगामन'।

गजगौनी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'गजगामिनी'।

गजगोहर [संज्ञा पु.] (फा.) गजमुक्ता। गजमोती।

गजचर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी का चमड़ा। २–एक रोग जिसमें शरीर का चमड़ा मोटा और रूखा हो जाता है।

गजचिर्भिट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तरबूज।

गजचिर्भिटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रायन।

गजच्छाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्यग्रहण का काल।

गज़ट [संज्ञा पु.] (अं.) केंद्रीय सरकार अथवा प्रांतीय सरकार द्वारा प्रकाशित वह समाचार जिसमें बड़े-बड़े अधिकारियों की नियुक्ति, कानूनों के मसविदे तथा सरकारी विभाग के जानने योग्य बातें प्रकाशित की जाती हैं। वार्त्तायन।

गजट कराना–सूचना आदि को गजट में प्रकाशित कराना। *गजट होना*–१–किसी बात का गजट आदि में प्रकाशित होना। २–किसी बात का अत्यधिक प्रसिद्ध होना।

गजता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथियों का झुंड।

गजदंत, गजदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी का दांत। २–दीवार में गड़ी खूंटी। ३–दांत के ऊपर निकला हुआ दांत। ४–नृत्य में एक प्रकार का भाव।

गजदंतफला, गजदन्तफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिचड़ा।

गजदंती, गजदन्ती [वि.] (हिं.) हाथी के दांत का। हाथी दांत का बना।

गजदान [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी का दान। २–हाथी का मद।

गजधर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मकान बनाने वाला मिस्त्री। राज। मेमार। २–मकान का नकशा बनाने वाला व्यक्ति।

गजनबी [वि.] (फा.) गजनी नगर का रहने वाला।

गजना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'गाजना'।

गजनाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी रखने वाला व्यक्ति।

गजनाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की बड़ी भारी तोप जिसे हाथी खींचते थे।

गजनासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी की सूंड।

गजनी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार की मिट्टी।

ग़ज़नी [संज्ञा पु.] अफ़गानिस्तान का एक नगर।

गजपति [संज्ञा पु.] (सं) १–बहुत बड़ा हाथी। २–वह व्यक्ति जिसके पास बहुत सारे हाथी हों।

गजपाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जल-पक्षी।

गजपादप [संज्ञा पु.] (सं.) बेलिया पीपल।

गजपाल [संज्ञा पु.] (सं.) महावत। हाथीवान।

गजपिप्पली [संज्ञा पु.] (सं.) मझोले आकार के के एक पौधे का नाम।

गजपीपर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गजपिप्पली'।

गजपुट [संज्ञा पु.] (सं.) सवा हाथ लम्बा, सवा हाथ चौड़ा और सवा हाथ गहरा गड्ढा जिसमें कंडे जलाकर वैद्य लोग धातु की भस्म बनाते हैं। इस रीति को गजपुट कहते हैं।

गजपुर [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिनापुर।

गजपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) नागपुष्पी। नागकेसर।

गजपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गजपुष्प'।

गजप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलई। शल्लकी।

गजबंध, गजबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें कविता के अक्षरों को हाथी का चित्र बनाकर उसके अंग-प्रत्यंग में भरते हैं।

ग़ज़ब [संज्ञा पु.] (हिं.) १–रोष। क्रोध। २–आपत्ति। आफ़त। ३–अंधेर। अन्याय। ४–विचित्र बात।

गज़ब का–विलक्षण। अपूर्व।

गजबदन [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश। गजानन।

गजबाँक, गजबाग [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी का अंकुश।

गजबीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा के समूह का नाम जिसके बीच से होकर शुक्र गमन करे।

गजबेली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कान्तिसार नामक लोहा।

गजभक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल।

गजमंडन, गजमण्डन हाथी का अलंकार या आभूषण।

गजमणि [संज्ञा स्त्री., पु.] (सं.) गजमुक्ता। गज मोती।

गजमनि [संज्ञा स्त्री., पु.] (हिं.) गजमुक्ता।

गजमुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक से निकलता है। (अब तक इस प्रकार का कोई मोती किसी हाथी के मस्तक से नहीं निकला)।

गजमुख [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश का एक नाम।

गजमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक रूप जिसे धारण करके हाथी की ग्राह से रक्षा की थी।

गजमोती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गजमुक्ता।

गजर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द। २–बहुत सवेरे के समय का घंटा। ३–जागने की घंटी।

गजरदम या गजर बजे–तड़के। पौ फटते।

[संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद और लाल मिला हुआ गेहूँ।

गजरथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा रथ जिसे हाथी खैंचते हैं।

गजरप्रबंध [प्रबन्ध] [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर और बाजे का मिलान।

गजरबजर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–अंडबंड। गोलमाल। २–भक्ष्याभक्ष्य। खाद्याखाद्य।

गजरभात, गजरभत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) गाजर के टुकड़ों को मिलाकर उबाला हुआ चावल।

गजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गाजर के पत्ते। २–फूलों की घनी गुंथी हुई माला। हार। ३–कलाई पर बांधने का एक गहना। ४–एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

गजराज [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा हाथी।

गजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कलाई पर बांधने का एक आभूषण। २–छोटी गाजर।

गजरौट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाजर की पत्ती। गजरा।

गजल [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) फारसी और उर्दू में शृङ्गाररस की कविता। इसका कोई नियत छंद नहीं होता।

गजलील [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ भेदों में से एक।

गजवदन [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

गजवान [संज्ञा पु.] (हिं.) महावत। हाथीवान।

गजशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथीखाना। हाथियों के बांधने का सामान।

गजही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कच्चा दूध से मक्खन निकालने की लकड़ी।

गजा [संज्ञा पु.] (हिं.) नगाड़ा पीटने का डंडा।

गजाधर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गदाधर'।

गजानन [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

गजारि [संज्ञा पु.] (सं.) १–सिंह। २–एक प्रकार का शालवृक्ष।

गजारोह [संज्ञा पु.] (सं.) महावत। पीलवान।

गजाल [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक प्रकार की मछली। २–खूंटी।

गजाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १–पीपल। २–अश्वत्थ वृक्ष।

गजास्य [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

गजाह्व, गजाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिनापुर।

गजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिटाई करने वालों का एक औजार।

गजी [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी का सवार।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हथिनी।

गजेंद्र, गजेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–ऐरावत। २–बड़ा हाथी।

गजेंद्रगुरु, गजेन्द्रगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में रुद्रताल का एक भेद।

गज्जर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कीचड़ से भरी जमीन। दलदल।

गज्जल [संज्ञा पु.] (सं.) अंजीर।

गज्जूह* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों का झुंड।

गझ्झा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पानी, दूध या किसी अन्य तरल पदार्थ में उठने वाले छोटे-छोटे बुलबुलों का समूह। २–गज। ३–ढेर। अंबर। २–खजाना। कोश। ३–धन। सम्पत्ति ४–लाभ। फायदा।

गझ्झा मारना–माल मारना।

गझिन [वि.] (हिं.) १–साधन। घना। २–ठस बुना हुआ।

गटई+ [संज्ञा स्त्री.] १–गला। ग्रीवा। २–देखो 'गिट्टी'। ३–देखो 'गोटी'।

गटकना [क्रि. स.] (हिं.) १–खाना। निगलना। २–हड़पना।

गटकीला [वि.] (हिं.) गटकने अथवा निगलने वाला।

गटगट [संज्ञा पु.] (हिं.) कई बार निगलने अथवा पानी पीने के समय गले से उत्पन्न होने वाला शब्द।

गटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) गंठना। बंधना।

गटपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अत्यधिक मेल। घनिष्ठता। २–सहवास। संभोग।

ग़टरमाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़े-बड़े दानों वाली माला।

गटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गट्टा'।

गटागट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गटगट'।

गटापारचा [संज्ञा पु.] (हिं.) रबर के समान एक प्रकार का गोंद।

गटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गांठ।

गट्ट [संज्ञा.पु.] (हिं.) किसी वस्तु को एक बार निगलने से उत्पन्न शब्द।

गट्ट करना–१–निगल जाना। २–हड़प जाना।

गट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हथेली और पहुंचे का जोड़। कलाई। २–पैर की नली और तलुए के बीच की गांठ। ३–गांठ। ४–एक प्रकार की मिठाई। ५–बीज। ६–नैंचे के नीचे की वह गांठ जहां दोनों नै मिलती हैं।

गट्टी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–जहाज के खम्भे के नीचे की वह चूल जिसमें पाल बंधती है। २–नदी का किनारा।

गट्टू* [संज्ञा पु.] (हिं.) मुठिया। दस्ता।

गट्ठर [संत्रा पु.] (हिं.) १–बड़ी गठरी। बोझा। गट्ठा।

गट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घास या लकड़ी का बोझा। गट्ठर। २–बड़ी गठरी। ३–प्याज या लहसुन की गांठ।

गठकटा [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] १–गिरहकट। २–धोखा या बेईमानी से रुपया ठगने वाला।

गठजोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गठजोड़ा'।

गठडंड [संज्ञा पु.] (हिं.) कसरत में एक प्रकार का डंड।

गठबंधन, गठबन्धन [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह की एक रसम जिसमें वर और वधु के वस्त्र के सिरे को मिलाकर बांध देते हैं।

गठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनावट।

गठना [क्रि. अ.] (हिं.) १–दो वस्तुओं का मिलकर एक होना। जुड़ना। सटना। २–सिलाई होना। टांके लगना। ३–बुनावट का दृढ़ होना। ४–कोई गुप्त विचार या कुचक्र करना। ५–अनुकूल या ठीक होना। सधना। ६–अच्छी प्रकार बनना या होना। ७–बहुत मेल-मिलाप होना।

गठरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कपड़े में गांठ देकर बांधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। २–धन। ३–एक प्रकार का तैरना।

गठरी करना–जोड़ना।

गठरी बांधना–१–सामान बांधकर चलने की तैयारी करना। २–घुटनों को छाती से लगा कर दोनों हाथों से जकड़ना। *गठरी मारना*–चालाकी चोरी आदि से माल उड़ाना। २–बांधकर डाल देना।

गठरेवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपायों का एक रोग।

गठवाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गट्ठे या बिस्वे का बीसवां अंश। बिस्वांसी।

गठवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–गठाना। सिलवाना। २–जोड़ लगवाना। ३–संयोग कराना।

गठाना [क्रि. स.] (हिं.) १–सिलवाना। सिलाई करना। २–जोड़ मिलवाना।

गठानी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक कर जिसे जमींदार आसामियों से वसूल करते हैं।

गठाव [संज्ञा पु.] (हिं.) गठन। बनावट।

गठित [वि.] (सं.) गठाहुआ। बनाहुआ।

गठिबंध, गधिबन्ध [संज्ञा पु.] (हिं.) गठबंधन।

गठिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बोझ लादने का बोरा या थैला। २–बड़ी गठरी। ३–एक प्रकार का वायुरोग जिसमें घुटने में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–गाँठ लगाना। २–गाँठ में बांधना।

गठिवन [संज्ञा पु.] (हिं.) नीले फूल वाला एक वृक्ष।

गठीला [वि.] (हिं.) १–गांठदार। जिसमें बहुत सी गांठ हों। २–गठाहुआ। चुस्त। २–दृढ़। मजबूत।

गठुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गठुवा'।

गठुरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भूसे की गांठ।

गठुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह कपड़े का टुकड़ा जिसे जुलाहे करघे में इसलिए रखते हैं कि उसके तागे से ताने के तागों को गठकर बुनने के निमित्त चढ़ावें। २–भूसे के छोटे-छोटे टुकड़े। खूंटी। गेठुरा।

गठौद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाँठ की बंधाई। २–

धरोहर। थाती।

गठौत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मेल। मिलाप। घनिष्टता। २-गठीगठाई बात। मिलकर पक्की की हुई बात। अभिसंधि। ३-उपयुक्तता

गठौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गठौत'।

गडंग, गडङ्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) बारूद गोले और हथियार रखने का स्थान। *मेगज़ीन*।

गडंग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घमंड। शेखी। डींग। २-आत्मश्लाघा।

गड़ंग मारना या हांकना–१-डींग मारना। शेखी बघारना। २-अहंकार करना।

गडंगिया+ [वि.] (हिं.) घमंडी। डींग मारने वाला।

गडंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ने का काम।

गड [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओट। आड़। २-घेरा। चारदिवारी। खाई। गड्ढा। ४-प्राकार। गढ़।

गडक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

गड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) गड़गड़ शब्द करना।

गड़काना [क्रि. स.] (हिं.) गड़-गड़ शब्द उत्पन्न करना। गुड़गुड़ाना।

गड़क [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डुबाव। २-डूबने का शब्द।

गड़गज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गरगज'।

गड़गड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का हुक्का।

गड़गड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) गड़गड़ करना। गरजना। कड़कना। [क्रि. स.] गड़गड़ बोलना गड़गड़ शब्द निकालना।

गड़गड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गड़गड़ाने का शब्द। २-हुक्का पीने का शब्द।

गड़गड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नगाड़ा। डुग्गी।

गड़गूदड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिथरा। लत्ता।

गड़चा+ [संज्ञा पु.] (?) १-धमकी। घुड़की। २-दबोच। ३-चकमा।

गड़दार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ भाला लेकर चलता है। २-महावत। फीलवान।

गड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चुभना। धंसना। २-शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचाना। ३-खुरखुरा लगाना। ४-दर्द करना। ५-मिट्टी आदि के नीचे दबाना। दफन होना। ६-खड़ा होना। ७-जमना। स्थिर होना। ८-समाना।

गड़ जाना–लजाना। *गड़े गुर्दे उखाड़ना*–दबी दबाई या पुरानी बात उभड़ना।

गड़पंख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक बड़ी चिड़िया। २-लड़कों का एक खेल।

गड़प [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पानी या कीच में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

गड़पना [क्रि. स.] (हिं.) १-निगलना। २-किसी वस्तु पर अनुचित अधिकार करना।

गड़प्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गड्ढा। २-धोखा खाने की जगह।

गड़बड़ [वि.] (हिं.) १-ऊँचा नीचा। अव्यवस्थित। २-खराब। बुरा।

[संज्ञा पु.] १-क्रम भंग। २-कुप्रबन्ध। अव्यवस्था। ३-उपद्रव। दंगा। फसाद।

गड़बड़झाला [संज्ञा पु.] (हिं.) अव्यवस्था। २-उपद्रव।

गड़बड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) गर्त्त। गड्ढा। खत्ता।

गड़बड़ाध्याय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गड़बड़झाला'।

गड़बड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गड़बड़ में पड़ना। भूल में पड़ना। २-क्रमभ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना। ३-बिगड़ना। नष्ट होना। [क्रि. स.] १-गड़बड़ी में डालना। २-भ्रम में डालना। क्रम भ्रष्ट करना। अस्तव्यस्त करना।

गड़बड़िया [वि.] (हिं.) गड़बड़ करने वाला। उपद्रव करने वाला।

गड़बड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गड़बड़'।

गड़रिया [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़ बकरी पालने वाली एक जाति।

गड़री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गेड़री'।

गड़रू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुड़रू'।

गड़लवण [संज्ञा पु.] (हिं.) झील से निकलने वाला नमक। साँभरलवण।

गड़वाँत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ी के पहियों की लीक या चिह्न।

गड़वा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोटा। गडुवा। २-देखो 'गाड़ा'।

गड़वाट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जमीन में गाड़ने की क्रिया। २-गड्ढा खोदने का काम।

गड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) गाड़ने का काम दूसरे से करवाना।

गड़हा [संज्ञा पु.] (हिं.) गड्ढा। गर्त्त। गहरी जमीन।

गड़हा पड़ना–*गड़हा होना*। *गड़हा खोदना*–बुराई करना। *गड़हा भरना या पाटना*–१-टोटा भरना। २-भली बुरी चीज से पेट भरना। *गड़हे में पड़ना*–असमंजस मे पड़ना।

गड़ही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा गड्ढा।

गड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) ढेर। राशि। अटाला। अंबार।

गड़ाकू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली

गड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) चुभाना। धंसाना।

गड़ाप [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी आदि में डूबने का शब्द।

गड़ापा [संज्ञा पु.] (हिं.) गड़ाप से डूबने को स्थान। गहरा स्थान।

गड़ाबटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत की बटाई।

गड़ायत* [वि.] (हिं.) गड़ने वाला। वाला।

गड़ारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मंडलाकार गोल लकीर या वृत्त। २-घेरा। आड़ी धारी। आड़ी लकीरों की पंक्ति। ४-कुएं में से पानी खैंचने की घिरनी। ५-घिरनी के बीच का जिसमें रस्सी बैठाई जाती है। ६-की घास जिसका साग बनता है।

गड़ारीदार [वि.] (हिं.) १-जिस पर धारियां पड़ी हों। २-घेरदार।

गड़ावन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार

गड़ासा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गड़ांसा

गड़ि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बच्चा। मट्ठर बैल।

गड़ियार [वि.] (हिं.) देखो 'गरियार'।

गडु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कूबड़। गलगंड।

गडुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गडुवा'।

गडुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी रखने का छोटा बरतन।

गडुर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गडुल'।

गडुल [संज्ञा पु.] (सं.) कुबड़ा आदमी। [वि.] (सं.) कुबड़ा। कुब्ज।

गडुलना [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'गड़ोलना'।

गडुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जिसमें पानी गिराने के लिये समान एक नली लगी रहती है। तमहा।

गडेर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेघ। बादल।

गडेरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. गड़ेरिन] 'गड़रिया'।

गडेरुआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौपायों को वाला एक रोग।

गड़ोना [क्रि. स.] (हिं.) चुभाना। धसाना। ड़ना।

गडोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रास। कौर।

गड़ोलना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छोटी जिसमें बच्चों को चढ़ाकर घुमाते फिरते हैं।

गड़ौना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पान की एक काँटा।

गड्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक ही आकार वस्तुओं का ऊपर नीचे रखा हुआ २-खत्ता। गड्ढा। ३-लागत, मूल्य विचारानुसार एक साथ रहने वाली बड़ी अथवा नाना प्रकार की वस्तुओं समूह।

गड्डड़, गड्डमड्ड
गड्ड या गड्ड-ढेर का ढर।

गड्डड़, गड्डमड्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) घपला। घालमेल। क्रमशून्य मिश्रण। [वि.] अंडबंड बिना क्रम के मिलाजुला।

गड्डर [संज्ञा पु.] (सं.) मेष। भेड़ा।

गड्डरिक [संज्ञा पु.] (सं.) गड़ेरिया। [वि.] (सं.) भेड़ का। भेड़ सम्बन्धी।

गड्डल [संज्ञा पु.] (सं.) मेष। भेड़ा।

गड्डलिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गड्डरिक'।

गड्डलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भेड़ों की पंक्ति या कतार। २-क्रमगत। लगातार। धारावाही।

गड्डलिकाप्रवाह [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़ियाधसान।

गड्डाम [वि.] [अं. गॉड्डाम] नीच। लुच्चा। बदमाश। पाजी।

गड्डामी [वि.] (अं. गॉड्डाम-यी) लुच्चा। पाजी बदमाश।

गड्डालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नदी जिसका प्रवाह अधिक प्रबल हो।

गड्डालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'गड्डलिका'

गड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक आकार की ऐसी वस्तुओं का ढेर जो तले ऊपर रखी हों। जैसे-ताश की गड्डी।

गड्ढा [संज्ञा पु.] (हिं.) गहरा तल या स्थान। गड़्ढा। २-थोड़े घेरे की गहराई।

गढ़ंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कल्पित। बनावटी। २-मन की उपज। ३-कुश्ती के तीन भेदों में से एक।

गढ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खाई। २-किला। कोट। दुर्ग।

गढ़ जीतना या तोड़ना-१-किला जीतना। २-कठिन काम करना। ३-प्रथम समागम में कृतकार्य होना।

गढ़कप्तान [संज्ञा पु.] (हिं.) किले की फौज का अफसर।

गढ़त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनावट। आकृति। रचना। ढाँचा।

गढ़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनावट। गठन।

गढ़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-काटछाँटकर बनाना। २-सुडौल करना। दुरुस्त करना। ३-बातें बनाना। कपोलकल्पना करना। ४-मारना पीटना। ठोंकना।

गढ़गढ़ कर बातें करना या बनाना-झूठमूठ की कल्पना करके बात करना।

गढ़पति [संज्ञा प.] (हिं.) १-किलादार। २-राजा। सरदार।

गढ़वइ, गढ़वै [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गढ़पति'।

गढ़वार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गढ़वाल'।

गढ़वाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसके अधिकार में गढ़ हो। २-उत्तर प्रांत के कमायूं विभाग का पश्चिमी जिला।

गढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गड्ढा'।

गढ़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गढ़ने का काम। २-गढ़ने की मजदूरी।

गढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) गढ़वाना। बनवाना। गढ़ने का कार्य कराना। [क्रि. अ.] खलना। बुरा लगना। कष्टकर प्रतीत होना।

गढ़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) गढ़ने वाला।

गढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोटा किला।

गढ़ीस+ [वि.] (हिं.) किलादार। गढ़पति।

गढ़ैया [वि] (हिं.) गढ़ने वाला। रचने वाला। बनाने वाला।

गढ़ोई*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) किलादार। गढ़पति।

गण [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। झुंड। जत्था। २-श्रेणी। जाति। कोटि। ३-ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिसमें किसी प्रकार की समानता हो। ४-दूत। ५-सेवक। ६-अनुचरों का दल ७-वस्तुओं, जीवों आदि का वह विभाग जिसमें और भी उपविभाग हों। ८-नक्षत्रों की तीन कोटियों में से एक। ९-छंदशास्त्र के अनुसार तीन वर्णों का समूह जो लघु गुरु क्रम के अनुसार ८ गण माने गये हैं। जैसे-मगण (SSS), यगण (ISS), रगण (SIS), सगण (IIS), तगण (SSI), जगण (ISI) भगण (SII) और रगण (III) इनके अतिरिक्त ५ मात्रिक गण भी होते हैं। जैसे-टगण, ठगण, डगण, ढगण और णगण। १०-व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान लोप, आगम, वर्ण विकारादि हों। ११-पक्षपाती। अनुयायी।

गणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणना करने वाला। २-ज्योतिषी।

गणक-केतु [संज्ञा पु.] (सं.) तारापुञ्ज के समान दिखाई पड़ने वाला एक प्रकार का धूमकेतु।

गणकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) इन्द्रवारुणी।

गणकार [वि.] (सं.) गणना करने वाला।

गण-तंत्र, गणतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन-प्रणाली जिसके द्वारा जनता ही अपने विधान निर्माण करने वाले प्रतिनिधि तथा प्रधान शासक चुनती है। रिपब्लिक।

गण-तंत्री, गण-तन्त्री [वि.] (सं.) १-गणतन्त्र संबंधी। २-गणतंत्र के सिद्धान्तों के अनुसार। ३-गण-तंत्र का समर्थक। रिपब्लिकन।

गणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समूह। ढेर।

गणदीक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ कराने वाला याज्ञिक। [वि.] बहुतों को यज्ञ कराने वाला।

गणदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के देवता जो समूह बना कर रहते हैं। समूहचारी देवता।

गणद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) सर्व साधारण की सम्पत्ति।

गणधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आचार्य। अध्यापक। २-जैनाचार्य।

गणन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिनना। गिनती

गणना [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-गिनती। शुमार। २-हिसाब। संख्या। ४-केशव के मतानुसार एक अलंकार जिसमें एक ही संख्या बारबार आती है।

गणनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणों का स्वामी। २-गणेश। ३-शिव।

गणनानुदान [संज्ञा पु.] (सं.) लेखा विषयक मत। हिसाब-किताब पर मत। वोट् ऑन अकाउण्ट।

गणना-परीक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) आय-व्यय की जाँच-पड़ताल का कार्य। लेखेक्षण। ऑडिट।

गणनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। शिव।

गणनायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

गणनीय [वि] (सं.) १-गिनने योग्य। २-नामी। प्रसिद्ध।

गणप [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

गणपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणों का स्वामी या मालिक। २-गणेश। ३-शिव।

गणपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) कैलाश।

गणपूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी सभा अथवा परिषद् के सदस्यों की वह कम से कम संख्या जो कार्य-संचालन के निमित्त आवश्यक हो। कोरम।

गणमुख [संज्ञा पु.] (सं.) गांव का मुखिया।

गण-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य अथवा राष्ट्र जो किसी राजा के अधीन न हो बल्कि प्रजा में से चुके हुए मुखियों, गणों या प्रतिनिधियों के द्वारा चलाया जाता है।

गणाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) लोकगुरु। शिक्षक।

गणाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणों के स्वामी। २-शिव। ३-गणेश।

गणाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गणाधिप'।

गणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

गणिकारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गनियार का वृक्ष जो बसन्त में फूलता है।

गणिकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गनियार का वृक्ष।

गणित [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें संख्या परिमाण आदि निश्चित करने के उपायों का विचार होता है। २-हिसाब।

गणितज्ञ [वि.] (सं.) १-गणितशास्त्र का ज्ञाता। हिसाबी। २-ज्योतिषी।

गणेरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटनी। दूती।

गणेश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रधान हिन्दू देवता जिनका शरीर मनुष्य का और सिर हाथी का मानते हैं।

गणेश-कुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कनेर।

गणेशक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक योग की क्रिया जिसमें उंगली आदि की सहायता से से गुदा का मल साफ करते हैं।

गणेशचतुर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों और माघ की शुक्लाचतुर्थी या चौथ।

गणेशपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण का नाम।

गणेशभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

गण्य [वि.] (सं.) १-गिनने योग्य। २-जिसकी पूछ हो। प्रतिष्ठित।

गतंड* [संज्ञा पु.] (हिं.) नपुंसक। हिजड़ा।

गत [वि.] (सं.) १-बीता हुआ। गया हुआ। २-रहित। हीन।
गत होना-मरजाना।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दशा। अवस्था। हालत। २-रूप। रंग। वेश। आकृति। ३-काम में लाना। उपयोग। ४-दुर्दशा। दुर्गति। ५-मृतक का क्रियाकर्म। ६-वाजों के कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान (संगीत)। ७-नाचने का एक ढंग। *गत का*-काम का। अच्छा। *गत बनाना*-१-दुदशा करना। २-अपमान करना। ३-उपहास करना। झिपाना। ४-वेश धारण करना। ५-आकृति विगड़ना।

तका [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है। २-वह खेल जो गतके से खेला जाता है।

गतकार्य [वि.] (सं.) जिसका कार्य नष्ट हो गया हो।

गतकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बीता हुआ समय।

गतकीर्ति [वि.] (सं.) जिसका यश समाप्त हो गया।

गतकुल [संज्ञा पु.] (सं.) वह सम्पत्ति जिसका कोई अधिकारी न बचा हो।

गतनासिका [वि.] (सं.) विना नाक का। नकटा।

गतपुण्य [वि.] (सं.) जिसका पुण्य नष्ट हो गया हो।

गतप्रत्यागत [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ताल के साठ भेदों में से एक।

गतप्रत्यागता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो गृह से विना आज्ञा चली गई हो फिर कुछ दिन बाद वापस लौट आये उसको धर्मशास्त्र में उसको गतप्रत्यागता कहते हैं।

गतप्रभ [वि.] (सं.) निष्प्रभ। तेजहीन।

गतप्राण [वि.] (सं.) मराहुआ। मृत।

गतबुद्धि [वि.] (सं.) अज्ञान। निर्बोध।

गतरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीती हुई रात।

गतलज्ज [वि.] (सं.) निर्लज्ज। वेहया।

गतश्री [वि.] (सं.) जिसकी सुन्दरता नष्ट हो गई हो।

गताक, गताङ्क [वि.] (सं.) निकम्मा। गया-बीता। [संज्ञा पु.] (सं.) समाचारपत्र का पिछला अंक।

गताक्ष [वि.] (सं.) नेत्रहीन। अन्धा।

गतागत [वि.] (सं.) आया-गया। [संज्ञा पु.] आवागमन। जन्म-मरण।

गतायुः [वि.] (सं.) मरने वाला।

गतानुगतिक [वि.] (सं.) १-पुराना आदर्श देखकर उसी के अनुसार चलने वाला। २-अनुकरण करने वाला।

गतार, गतारि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वे दोनों लकड़ियां जो बैल के जुए में उपरौंछी और तरौंछी के बीच समानांतर लगी रहती हैं। २-वह रस्सी जिससे बोझ बांधा जाता है।

गतार्तवा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-जिसे रजोदर्शन न होता हो। २-वृद्धा। ३-वंध्या।

गतार्थ [वि.] (सं.) जिसका अर्थ ज्ञात हो।

गति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गमन। चाल। २-हिलना-डोलना। हरकत। ३-स्पन्दन। ४-अवस्था। दशा। ५-वाना। वेश। ६-प्रवेश। पैठ। ७-अंतिम उपाय। प्रयत्न की हद। ८-सहारा। अवलम्ब। ९-लीला। माया। १०-ढंग। रीति। ११-मृतक का क्रियाकर्म। १२-मोक्ष। मुक्ति। १३-कुश्ती का एक पैंतरा। १४-ग्रहों की चाल। १५-ताल और स्वर के अनुसार अंगचालन। १६-सितारवादन में कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान।

गतिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गति। चाल। २-अवस्था। हालत। ३-आश्रय। पनाह।

गतिक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गमनक्रिया। चलना। जाना।

गतिमंडल, गतिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में एक प्रकार का अङ्गहार।

गतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) तबलची।

गतिविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गणित तथा विज्ञान का वह विभाग जिसमें द्रव्य की क्षमता अथवा गति संबंधी मत निर्धारित किये जाते हैं।

गतिविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी के चाल-ढाल अथवा कार्यादि के रंग ढंग। २-चेष्टा।

गतिशील [वि.] (सं.) १-जिसमें गति हो। चलने फिरने वाला। २-आगे की ओर बढ़ने वाला। उन्नतिशील।

गतीक [वि.] (सं.) जाने योग्य।

गत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) कागज के कई परतों को सटाकर बनाई हुई दफ्ती। कुट।

गत्तालखाता [संज्ञा पु.] (हिं.) डूबी हुई रकम का लेखा। बट्टाखाता।
गत्तालखाते में जाना-हजम हो जाना। *गत्तालखाते लिखना*-डूबा या हजम हुआ समझना।

गत्थ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गथ'।

गत्यवरोध [संज्ञा पु.] (सं.) झगड़े आदि की
चीत में बाधा उपस्थित हो।

गत्वर [संज्ञा वि.] (सं.) १-गमनशील।
वाला। २-क्षणिक। नाशवान्।

गत्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल की
नाव।

गथ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पूंजी। जमा। २-
३-झुंड। गरोह।

गथना* [क्रि. स.] (हिं.) एक को दूसरे
मिलाना। आपस में गूंथना।

गद [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग। २-विष। ३-
कृष्णचन्द्र का छोटा भाई। ४-किसी
वस्तु पर या गुलगुली वस्तु के आघात
से होने वाला शब्द।

गदका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गतका'।

गदकारा [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] गुलगुल
गुदा। मुलायम और दब जाने वाला।

गदगद* [वि.] (हिं.) देखो 'गद्गद'।

गदगदा* [संज्ञा पु.] (देश.) रत्ती का पौधा।

गदचाम [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी का एक रोग।

गदना* [क्रि. स.] (हिं.) कहना।

गदम [संज्ञा पु.] (फा.) थाम। पुश्ता।

ग़दर [संज्ञा पु] (अ.) १-हलचल। खलबली।
उपद्रव। २-बलवा। विद्रोह। बगावत।

गदरा [वि.] (हिं.) देखो 'गद्दर'।

नदराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-(फल आदि का)
पकने पर होना। परिपक्वता को प्राप्त होने
के निकट होना। २-जवानी में अंगों का
भरना। ३-आंख आने को होना।

गदला [वि.] (फा) मटमैला। गंदा।

गदलाना [क्रि. स.] (हिं.) गदला या मटमैला
करना।
[क्रि. अ.] गदला होना। मटमैला होना।

गदहपचीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १६ से २५
तक की अवस्था जिसमें मनुष्य की बुद्धि
अनुभव के कारण अपरिपक्व रहती है।

गदहपन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्खता। बेवकूफी।

गदहपूरना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुनर्नवा नामक
पौधा जो औषध के काम में आता है।

गदरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो
२-देखो 'गदेला'।

गदहला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गदहिला'।

गदहलोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का
पेंच।

गदहलोटन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गदहे का
पर लोटना। २-वह स्थान जहां
लोटता है।

गदहहेंचू [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़कों का एक

गदहा [संज्ञा पु.] (सं.) रोग दूर करने वाला

वैद्य। चिकित्सक।

[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. गदही] १-घोड़े के आकार का पर उससे कुछ छोटा एक प्रसिद्ध पशु। गधा। २-मूर्ख। बेवकूफ।

गदहे पर चढ़ाना–बदनाम करना। *गदहे का हल चलना*–बिलकुल उजड़ जाना।

गदहागदही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गदहहेंचू'

गदहिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गदही।

गदहिला [संज्ञा पु.] (हिं.) ईंट सुरखी लादने वाला गदहा। २-गोबडौरे के समान एक विषैला कीड़ा।

गदही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) [पु. गदहा] 'गदहे' का स्त्री रूप।

गदांबर, गदाम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

गदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्राचीन अस्त्र का नाम। २-कसरत के सामानों में से एक। [संज्ञा पु.] (फा.) १-फकीर। २-दरिद्र।

गदाई [वि.] (हिं.) १-तुच्छ। नीच। क्षुद्र। २-रद्दी। वाहियात।

गदाका+ [वि.] (हिं.) गुदार और सुडौल शरीर वाला। [संज्ञा पु.] उठाकर जमीन पर पटकने की क्रिया।

गदाका सुनना–झिड़की सुनना।

गदाधर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। नारायण।

गदापाणि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

गदला [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी की पीठ पर कसने का गद्दा।

गदावरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

गदित [वि.] (सं.) कहा हुआ। कथित।

गदी [वि.] (हिं.) १-रोगी। २-जिसके पास गदा हो।

गदेला [संज्ञा पु.] (हिं.) रुई आदि से भरा हुआ मोटा बिछौना। [संज्ञा पु.] (देश.) छोटा लड़का।

गदोरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हथेली।

गद्गद [वि.] (सं.) १-हर्ष, प्रेम आदि के आवेग से परिपूर्ण। २-हर्ष, प्रेम आदि के आवेग से अवरुद्ध, अस्पष्ट या असंबद्ध (स्वर)। ३-अत्यधिक प्रसन्न।

गद्द [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी गरिष्ठ वस्तु के खाने के कारण पेट का भारीपन। २-गुदगुदे स्थान पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द। [वि.] (हिं.) मूर्ख बेवकूफ।

गद्दम [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया जिसका रंग पीला, पैर सफेद और पेट लाल होता है।

गद्दर [वि.] (देश.) १-अधपका। अधकचरा। २-मोटा गद्दा।

गद्दा [संज्ञा पु.] (हिं.) रुई, पयाल आदि भरा मोटा और गुदगुदा बिछौना। भारी तोशक।

गद्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा गद्दा। २-घोड़े, ऊंट आदि की जीन। ३-व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान।

गद्दी पर बैठना–१-सिंहासनारूढ़ होना। २-उत्तराधिकारी होना।

गद्दी लगाकर बैठना–अधिकारपूर्वक आराम के साथ बैठना। *गद्दी लगाना*–घोड़े को मलना।

गद्दीनशीन [वि.] (हिं.) १-सिंहासनारूढ़। २-उत्तराधिकारी।

गद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लेख जिसमें पद्य के नियमानुसार मात्रा और वर्ण की संख्या तथा स्थान आदि का कोई नियम न हो। पद्य का उलटा। वार्तिक। इबारत। २-संगीत में शुद्ध राग का एक भेद।

गद्याणक [संज्ञा पु.] (सं.) ४८ रत्ती या ६४ घुंघचियों के बराबर का कलिंगदेश का एक प्राचीन मान।

गद्यात्मक [वि.] (सं.) गद्य में लिखा या रचाहुआ।

गधा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. गधी] गदहा।

गधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गदही।

गधीला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गदहिला'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक जंगली जाति।

गभूल [संज्ञा पु.] (?) एक फूल का नाम।

गन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गण'।

गनक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गणक'।

गनकेरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय भैंस के चारे में काम आने वाली एक घास।

गनगनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जाड़े से (शरीर में) कंपकंपी होना। २-(शरीर का) रोमांचित होना।

गनगौर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चैत्रशुक्ला तृतीया। इस दिन गणेश और गौरी का पूजन होता है।

गनती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गिनती'।

गनना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'गिनना'।

गननाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गूंजना। २-घूमना। फिरना।

गननायक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गणनायक'।

गनप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गणप'।

गनपति [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गणपति'।

गनराय* [संज्ञा पु.] (हिं.) गणेश।

गनवर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नरकट। एक घास।

गनिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या।

गनियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शमी के समान एक कांटेदार पौधा जिसकी पत्तियां बबूल जैसी होती हैं।

ग़नी [वि.] (अ.) धनी। धनवान्। अमीर। ~ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गिनती।

ग़नीम [संज्ञा पु.] (अ.) १-लुटेरा। डाकू। २-वैरी। शत्रु।

ग़नीमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लूट का माल। २-मुफ्त का माल। ३-संतोष की बात।

गनेल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छप्पर छाने के काम आने वाली एक घास।

गनोरिया [संज्ञा स्त्री.] (लै.) सूजाक।

गनौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नागरमोथा।

गन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) ईख। ऊख।

गन्नी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पाट का टाट। २-एक प्रकार का कपड़ा जो सिकिम में बनता है

गप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-इधर उधर की बात। असत्य बात। बकवाद। २-झूठी बात। कपोल कल्पना। ३-अफवाह। मिथ्या खबर। ४-डींग। [संज्ञा पु.] १-झट से निगलने का शब्द। २-किसी नरम वस्तु में घुसने का शब्द।

गपकना [क्रि. स.] (हिं.) चटपट निगलना। झट से खा जाना।

गपछैया [संज्ञा स्त्री.] (?) रेगमाही।

गपड़चौथ [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यर्थ की बातचीत। [वि.] ऊटपटाँग। अंडबंड। लीपपोत।

गपना* [क्रि. स.] (हिं.) गप मारना। बकवाद करना।

गपिया [वि.] (हिं.) गप मारने वाला। बकवादी।

गपिहा* [वि.] (हिं.) गप्पी। गप हांकने वाला।

गपोड़, गपोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) झूठी बात। कपोल-कल्पना।

गपोड़बाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झूठमूठ की बकवाद।

गप्प [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गप'।

गप्पी [वि.] (हिं.) १-डींग मारने वाला। झूठ बोलने वाला। २-झूठा। मिथ्याभाषी।

गप्फा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत बड़ा ग्रास। बड़ा कौर। लाभ।

गप्फा मारना–बड़ा कौर खाना।

गफ [वि.] (हिं.) घना। ठस। गढ़ा।

गफलत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-असावधानी। लापरवाही। २-मोह। भ्रम। ३-भूल। चूक।

गफलाई* [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-असावधानी। भ्रम। मोह।

गबड्डी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'कबड्डी'।

गबदी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा पौधा।

गबद [वि.] (हिं.) मूर्ख। पशु के समान बुद्धि वाला।

गबन [संज्ञा पु.] (अ.) दूसरे का धन हजम कर जाना। खयानत।

गबर [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज में सब पालों के ऊपर पाल।

गबरगंड [वि.] (हिं.) मूर्ख । अज्ञानी ।

गबरहा [वि.] (हिं.) गोबर मिला हुआ । जिसके गोबर लगा हो ।

गबरू [वि.] (हिं.) [फा. खूबरू] १-उभड़ती जवानी का । २-सीधा । भोलाभाला ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) दूल्हा । पति । स्वामी ।

गबरून [संज्ञा पु.] (फा.) चारखाना कपड़ा ।

गबीना [संज्ञा पु.] (देश.) कतीरा । कतीला ।

गब्बर [वि.] (फा) १-अहंकारी । घमंडी । गर्वीला । २-जल्दी काम करने या उत्तर न देने वाला । मट्ठर । ३-बहुमूल्य । कीमती । धनी ।

गब्भा [संज्ञा पु.](फा.) १-रूई से भरा हुआ गद्दा । २-चारे का गट्ठा ।

गब्र [संज्ञा पु.] (फा.) पारसी । पारस देश का । अग्निपूजक ।

गभ [संज्ञा पु.] (सं.) भग । योनि ।

गभस्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-किरन । २-सूर्य । ३-हाथ । बांह ।

गभस्तिपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

गभस्तिमान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-एक द्वीप का नाम । ३-एक पाताल का नाम ।

गभस्तिहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

गभीर* [वि.] देखो 'गंभीर' ।

गभीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत धीमे स्वर वाली स्त्री ।

गभुआर [वि.] (हिं.) १-गर्भ का (बालक) । २-जिसका मुंडन न हुआ हो । ३-बहुत छोटा । नादान । अनजान ।

गभुवार [वि.] (हिं.) देखो 'गभुआर' ।

गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्ग । राह । रास्ता । २-गमन । सहवास । मैथुन ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहुँच । पैठ । गुजर ।
गम करना-चट कर जाना ।

ग़म [संज्ञा पु.] (अ.) १-दुःख । शोक । रंज । २-चिन्ता । फिक्र ।
ग़म खाना-ध्यान न देना । *ग़म गलत करना*-दुःख भुलाने का प्रयत्न करना ।

गमक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाने वाला । २-बोधक । सूचक । बतलाने वाला । ३-संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने का प्रकार ४-तबले का गम्भीर शब्द ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महक । सुगंध ।

गमकना [क्रि. अ.] (हिं.) महकना ।

गमकीला+ [वि.] (हिं.) महकने वाला । सुगंधित ।

ग़मखोर [वि.] (फा.) सहिष्णु । सहनशील ।

ग़मखोरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सहिष्णुता । सहनशीलता ।

ग़मगीन [वि.] (फा.) उदास । खिन्न । दुःखी ।

गमत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रास्ता । मार्ग । २-पेशा । व्यवसाय ।

गमतखाना [संज्ञा पु.] (?) नाव में वह स्थान जहां पानी रसकर या छेदों से आकर इकट्ठा होता है और उलीच कर बाहर फेंक दिया जाता है । बंधाल ।

गमतरी [संज्ञा स्त्री.] (?) गमतखाना ।

गमता [वि.] (?) चूने वाला ।

गमथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्ग । रास्ता । २-व्यापार । पेशा । ३-आमोद प्रमोद । ४-पथिक । राह चलने वाला ।

गमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाना । चलना । २-प्रस्थान । ३-संभोग । जैसे-वेश्यागमन ।

गमनना* [क्रि. अ.] (हिं.) जाना ।

गमनपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान जाने का स्वत्व प्राप्त हो । चालान । रवन्ना ।

गमना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-जाना । चलना ।

ग़मनाक [वि.] (फा.) शोकपूर्ण । दुःखभरा ।

गमनीय [वि.] (सं.) जाने योग्य ।

गमला [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह मिट्टी का पात्र जिसमें पौधे लगाते हैं । २-पाखाना फिरने का बरतन ।

गमागम [संज्ञा पु.] (सं.) आनाजाना ।

गमाना* [क्रि. स.] (हिं.) खोना । गुम करना । गंवाना ।

गमार* [वि.] (हिं.) ग्रामीण । देहाती । गंवार ।

ग़मी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) किसी आत्मीय की मृत्यु पर किया जाने वाला शोक । सोग । २-मृत्यु । मरण ।

गम्मत* [संज्ञा स्त्री.] (*मराठी.*) १-विनोद । हंसी दिल्लगी । २-मौज । बहार ।

गम्य [वि.] (सं.) १-जाने योग्य । २-प्राप्य । लभ्य । ३-भोग्य । संभोग करने योग्य । ४-साध्य ।

गयंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ा हाथी । २-दोहे का दसवां भेद जिसमें १३ गुरु और २२ लघु होते हैं ।

गय* [संज्ञा पु.] (हिं.) गज । हाथी ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-घर । २-अन्तरिक्ष । ३-धन । ४-प्राण । ५-गया नामक तीर्थ-स्थान ।

गयनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गजनाल ।

गयल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गैल' ।

गयवली [संज्ञा पु.] (देश.) मझोले कद का एक पेड़ ।

गयवा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली ।

गयशिर [संज्ञा पु.](सं.) १-अन्तरिक्ष । आकाश । २-गयातीर्थ ।

गया [संज्ञा पु.] (सं.) बिहार या मगधदेश का एक पुण्य स्थान जहां हिन्दू पिंडदान करते हैं ।
[क्रि. अ.] (हिं.) 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप ।
गया गुजरा या गया बीता-बुरी दशा
पहुँचा हुआ ।

गयापुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गया' ।

गयारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कृषक की वह
जिसे वह लावारिस छोड़ कर मर गया

गयाल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह
जिसका कोई दावेदार न हो ।

गयावाल [संज्ञा पु.] (हिं.) गयातीर्थ का

गयेर [संज्ञा पु.] (सं.) थूक । लार ।

गरंड [संज्ञा पु.] (हिं.) चक्की के चारों ओर
मिट्टी का घेरा जिसमें चूर्ण गिरता है ।

गर [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग । बीमारी । २-
जहर । ३-ज्योतिष में ग्यारह करणों में
पांचवां करण । [संज्ञा पु.] गला ।
[प्रत्य.] (फा.) (किसी कार्य को)
बनाने वाला । जैसे कलईगर ।

ग़रक़ [वि.] (अ.) १-निमग्न । डूबा हुआ ।
किसी कार्य में लीन । ३-नष्ट । बरबाद ।

ग़रक़ाब [संज्ञा पु.] (फा.) डूबने का भाव ।
[वि.] १-निमग्न । डूबाहुआ । २-बहुत
लीन ।

ग़रक़ी [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-डूबना । २-
३-लंगोटी । कौपीन । ४-नीची भूमि
पानी रुकता है ।

गरगज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किले का बुर्ज ।
ऊंचा स्थान या टीला जहां शत्रु
लगाया जाता है । ३-फांसी की टिकटी ।
+[वि.] बहुत बड़ा । विशाल । जैसे
घोड़ा ।

गरगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) घिरनी । चरखी ।

गरगवा [संज्ञा पु.] (देश.) १-चिड़ा ।
गौरैया । २-एक प्रकार की घास जो
बढ़ने नहीं देती ।

गरगाव* [वि.] (हिं.) देखो 'गरकाव' ।

गरज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत गम्भीर
तुमुल शब्द । जैसे-सिंह की गरज,
गरज ।

ग़रज़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आशय । प्रयोजन ।
मतलब । २-आवश्यकता । जरूरत । ३-इच्छा ।
चाह ।
ग़रज गांठना-मतलब सीधा करना ।
बावला-मतलब पूरा करने के लिए हानि
सहने वाला ।
[क्रि. वि.] (अ.) १-अन्ततोगत्वा । निदान ।
आखिरकार । २-अस्तु । अच्छा । खैर ।
ग़रज कि-मतलब यह है कि ।

गरजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) गरजने
भाव । गरज । कड़क ।

गरजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गम्भीर और

शब्द करना। २-(मोती का) चटकना। तड़कना।

गरजुमंद, ग़रज़मन्द [वि.] (फ़ा.) १-जरूरत वाला। २-इच्छुक। चाहने वाला।

गरज़ी [वि.] (फ़ा.) ग़रज़मन्द। ग़रज़वाला।

गरजुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) बरसात में निकलने वाली एक प्रकार की खुमी।

गरजू* [वि.] (फ़ा.) ग़रजमंद। ग़रजवाला।

गरट्ट* [संज्ञा पु.] (हिं.) समूह। झुंड।

गरद [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) देखो 'गर्द'

[संज्ञा पु.] (सं.) १-विष। २-एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

[वि.] (सं.) विषप्रद। विष देने वाला।

गरदन [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-धड़ और सिर को जोड़ने वाला अंग। ग्रीवा। २-बरतन आदि का ऊपरी भाग।

गरदन उठाना-१-सिर उठाना। २-विरोध करना। *गरदन उड़ाना*-सिर काटना। *गरदन ऐंठना*-गरदन मरोड़ना। *गरदन ऐंठी रहना*-घमंड में या नाराज रहना। *गरदन कटना, काटना*-१-धड़ से सिर अलग करना। २-बुराई होना। हानि पहुँचना। *गरदन झुकाना*-१-लज्जित होना। २-नम्र, आज्ञाकारी या अधीन होना। ३-बेहोश होना। ४-मरना। *गरदन न उठाना*-१-सब बातों को चुपचाप सह लेना। २-बीमारी के कारण पड़े रहना। ३-लज्जित होना।

गरदन नापना-१-गरदनिया देना। गरदन पकड़ कर निकालना। २-बेइज्जती करना। *गरदन नाचीज होना*-जान की कीमत होना। *गरदन पकड़ कर करा लेना*-जबरदस्ती करा लेना। *गरदन पकड़ कर निकालना*-बेइज्जती करना। *गरदन पर*-ऊपर। जिम्मे। *गरदन पर छुरा फेरना*-दुःखी या तंग करना। हानि पहुँचाना। *गरदन पर जुवा रखना*-१-जिम्मेदारी सिर पर लेना। २-सौंपना। भारी कार्य सौंपना। *गरदन पर बोझ होना*-१-बुरा लगना। खलना। २-सिर पड़ना। भार होना। *गरदन पर लेना*-अपने ऊपर हत्या लेना। *गरदन फँसाना*-जोखों में पड़ना। *गरदन मरोड़ना*-१-गला दबाना। २-कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना। *गरदन मारना*-१-सिर काटना। २-नुकसान पहुँचाना। *गरदन में हाथ देना या डालना*-१-बेइज्जती करना। २-गरदनिया देना। ३-प्रेम प्रदर्शित कर छाती से छाती मिलाना। *गरदन हिलाना*-१-अस्वीकार करना। २-झकझोर कर कहना।

गरदन-घुमाव [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

गरदन-तोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुश्ती का एक दाव। २-एक प्रकार का ज्वर।

गरदन-बाँध [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

गरदना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गरदन। मोटी गरदन। २-गरदन पर लगने वाला धौल या झटका। ३-गरदन का मांस।

गरदन सही या रसीद करना-गरदन पर धौल जमाना।

गरदनियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरदन पकड़कर धक्का देना या निकालना। अर्धचन्द्र।

गरदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुरते आदि का गला। गरेबान। २-एक आभूषण जो गले में धारण किया जाता है। हंसुली। ३-अर्द्धचन्द्र। गरदनियाँ। ४-वह घस्सा जो एक पहलवान की गरदन पर लगाते हैं। कुंदा। ५-घोड़े की गरदन से बांधा तथा पीठ पर डाला जाने वाला कपड़ा। ६-कारनिस। ७-कुश्ती का एक पेंच।

गरदर्प [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप। भुजंग।

गरदा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) धूल। मिट्टी। खाक। गर्द।

गरदान [वि.] (फ़ा.) घूम-फिरकर एक ही स्थान पर आने वाला। [संज्ञा पु.] १-शब्दों का रूप साधन। २-घूम-फिरकर अपने ही स्थान पर आने वाला कबूतर। ३-फेर। चक्कर।

गरदानना [क्रि. सं.] (फ़ा.) १-शब्दों का रूप साधना। २-बार बार कहना। उद्धरणी करना। ३-कुछ समझना या मानना।

गरदिश [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गर्दिश'।

ग़रदुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) वर्षा के आरम्भ में अधिक भीग जाने के कारण होने वाला एक पशु रोग जिससे उनका शरीर जकड़ जाता है

गरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-गलना। २-गड़ना। ३-निचुड़ना।

गरनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत चौड़े मुँह वाली तोप। घननाल।

गरप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

गरब* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'गर्व'। २-हाथी का मद।

गरबई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गर्व या अभिमान का भाव। घमंड।

गरबगहेला [वि.] (हिं.) गर्व करने वाला। घमंडी।

गरबाना*+ [क्रि. स.] (हिं.) अभिमान करना। घमंड में आना।

गरबित* [वि.] (हिं.) देखो 'गर्वित'।

गरबला [वि.] (हिं.) घमंडी। अभिमानी।

गरभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'गर्भ'। २-देखो 'गर्व'।

गरभदान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गर्भाधान'।

गरभाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गर्भवती होना। २-धान गेहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।

गरभी*+ [वि.] (हिं.) गर्वी। घमंडी। अभिमानी।

गरम [वि.] (फ़ा.) १-जलता हुआ। तप्त। तीक्ष्ण। उग्र। ३-क्रुद्ध। ४-तीव्र। प्रचंड। ५-गरमी पैदा करने या बढ़ाने वाला। ६-उत्साहपूर्ण। जोश से भरा हुआ।

गरम करना-१-गुस्सा दिलाना। २-कान उमेठना। *गरम मामला*-हाल की घटना। *गरम सर्द उठना, सहना या देखना*-भले बुरे दिन काटना। *गरम हो उठना*-नाराज या गुस्से में हो जाना।

गरम-कपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर को गरम रखने वाला वस्त्र। जाड़े का कपड़ा। ऊनी वस्त्र।

गरम-मसाला [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन में काम आने वाला मसाला जिसमें धनियां, लौंग, बड़ी इलाइची, जीरा, काली मिर्च आदि होती है।

गरमाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी।

गरमागरम [वि.] (हिं.) १-बहुत गरम। २-ताजा।

गरमागरमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुस्तैदी। सन्नद्धता। जोश। २-कहासुनी।

गरमाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गरम होना। उष्ण होना। २-उमंग में आना। मस्ताना। ३-आवेश में आना। झल्लाना। ४-लगातार दौड़ने या परिश्रम से तेजी पर आना। [क्रि. स.] गरम करना। तापना। औटना।

गरमा देना-रिश्वत देना।

गरमाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी। उष्णता।

गरमी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-उष्णता। ताप। जलन। २-तेजी। उग्रता। ३-आवेश। क्रोध। ४-उमंग। जोश। ५-ग्रीष्म ऋतु। ६-एक रोग। ७-हाथी घोड़ों का रोग।

गरमी करना-प्रकृति में उष्णता लाना। पेट या कलेजे में ताप उत्पन्न करना। *गरमी निकालना*-१-गर्व दूर करना। २-उष्णता दूर करना। प्रसंग करना। *गरमियों में*-गरमी के दिनों में।

गरमीदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) अंधौरी। अंभौरी।

गररा* [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'गर्रा'।

गरराना* [क्रि. अ.] (हिं.) गरजना। गम्भीर आवाज करना।

गररी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया। गलगलिया। सिरोही।

गरल [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-विष। जहर। २-सर्प का विष। ३-पूला। घास का मुट्ठा।

गरलधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-सांप।

गरलारि [संज्ञा पु.] (सं.) मरकत मणि। पन्ना।

गरव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) मयूर। मोर।

गरवा* [वि.] (हिं.) १-भारी। वजनी। २-

गरुई । महान् ।

गरसना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ग्रसना'।

गरह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रह । बाधा । अरिष्ट । *गरह कटना*–दुःख नष्ट होना ।

गरहन [संज्ञा पु.] (सं.) १–काली तुलसी । २–बबई । ममरी । [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–चन्द्र या सूर्य ग्रहण । २–पकड़ने की क्रिया । धारण । देखो 'ग्रहण'।

गरहर [संज्ञा पु.] (हिं.) नटखट चौपायों के गले में लटकाया जाने वाला कुंदा । ठेकुर ।

गरहाजरी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गैर हाजरी'।

गरहेंडुवा [संज्ञा पु.] (हिं) गवेधुक । कौड़िल्ला ।

गराँव [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपायों के गले में बांधने की रस्सी का फंदा ।

गरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गला । गरदन । ग्रीवा ।

गराऊ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पुराना भेड़ा ।

गरागरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौनैय। वेल । घघर वेल । कर्कोटी ।

गराज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गम्भीर आवाज । गर्जन ।

गराड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घिरनी । चरखी । साँट । रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी लकीर ।

गराड़ी पड़ना–गहरा चिह्न होना ।

गराना* [क्रि. स] (हिं.) १–गलाना । २–निचोड़ना । वहाना ।

गरानि [नी]* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ग्लानि'।

गराव [संज्ञा पु.] (देश.) १–तीन मस्तूलों वाला एक प्रकार का बड़ा जहाज । २–साधारण नाव ।

गरारा [वि.] (हिं.) १–गर्वयुक्त । २–प्रबल । प्रचंड । [संज्ञा पु.] १–पायजामों की ढीली मोहरी । २–ढीली मोहरी का पायजामा । ३–बड़ा थैला । ४–कुल्ला । ५–कुल्ला करने की औषध । ६–चौपायों का एक रोग । घुरकवा ।

गरारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गराडी'।

गरावन+ [संज्ञा पु.] (हिं.; दखो 'गड़ावन'।

गरावा+ [संज्ञा पु] (देश.) कम उपजाऊ भूमि ।

गरास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ग्रास'।

गरासना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ग्रासना'।

गरिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गुरुत्व । भारीपन । २–महिमा । गौरव । ३–गर्व । घमंड । ४–आत्मश्लाघा । शेखी । ५–आठ सिद्धियों में से एक ।

गरिया [संज्ञा पु.] (देश.) मध्य भारत, बरार और मद्रास प्रांत में पाया जाने वाला एक पेड़ ।

गरियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) दुर्वचन कहना । गाली देना ।

गरियार [वि.] (हिं.) सुस्त । बोदा । मट्ठर (चौपाया) ।

गरियालू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का काला नीला रंग जिससे ऊन रंगते हैं।

[वि.] काले नीले रंग का । गरियाले रंग का ।

गरिष्ठ [वि.] (सं.) १–अति गुरु । अत्यन्त भारी २–कब्ज करने वाला । जो जल्दी न पचे ।

गरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नारियल के फल के भीतर का गूदा । २–बीज की भीतर का कोमल भाग । मींगी ।

गरीब [वि.] (अ.) १–नम्र । २–दीन । हीन । ३–दरिद्र । निधन । अकिंचन । कंगाल ।

गरीब-गुरबा [संज्ञा पु.] (हिं.) दीन और अकिंचन व्यक्ति ।

गरीब-निवाज [वि.] (फा.) गरीबों पर दया करने वाला । दयालु ।

गरीब-नेवाज [वि.] देखो 'गरीब-निवाज'।

गरीब-परवर [वि.] (फा.) दीन प्रतिपालक । गरीबों का पालन करने वाला ।

गरीबाना [वि.] (फा.) गरीबों की तरह का ।

गरीबामऊ [वि.] (हिं.) गरीबों के योग्य । छोटा गोटा ।

गरीबी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–दीनता । नम्रता । २–निधनता । दरिद्रता । कंगाली । मुहताजी ।

गरीयस [वि.] (सं.) १–बड़ा भारी । गुरु । २–महान् । प्रबल । ३–गौरवान्वित । महत्वपूर्ण ।

गरु, गरुआ* [वि.] (हिं.) भारी । वजनी ।

गरुआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) गुरुता । भारीपन ।

गरुआना [क्रि. स.] (हिं.) भारी होना ।

गरुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु के वाहन जो पक्षियों के राजा कहलाते हैं । २–उकाबपक्षी । ३–एक सफेद रंग का बड़ा पक्षी जो पानी के किनारे रहता है । ४–सेना की एक प्रकार की व्यूहरचना । ५–छप्पय छंद का एक भेद । १०–नृत्य में एक प्रकार का स्थानक ।

गरुड़गामी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–विष्णु । २–श्रीकृष्ण ।

गरुड़घंटा, घण्टा [संज्ञा पु.] (सं.) वह घंटा जिसके ऊपर गरुड़ की मूर्ति बनी होती है ।

गरुणध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु । २–वह स्तम्भ जिस पर गरुड़ की मूर्त्ति बनी हो ।

गरुड़पक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कुहनी टेढ़ी करके दोनों हाथों को कमर पर रखने का भाव (नृत्य) ।

गरुड़पाश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का फांसी का फंदा ।

गरुड़पुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह पुराणों में से एक ।

गरूड़-प्लुत [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में एक प्र
का भाव ।

गरुड़-भक्त [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ की उपा
करने वाला व्यक्ति ।

गरुड़-यान [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु । श्री

गरुड़रुत [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह अक्षरों का
वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (न+ज+
भ + ज + त और गुरु) होता है ।

गरुड़व्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ की आकृ
एक सैन्य रचना ।

गरुड़-सिंह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की
आकृति जिसका अग्रभाग गरुड़ के
तथा पिछला सिंह के समान हो ।

गरुत [संज्ञा पु.] (सं.) पक्ष । पंख । पर ।

गरुता*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गुरुता ।
पन । २–गम्भीरता । बड़ाई ।

गरुत्मान् [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ ।

गरुल [संज्ञा पु.] (हिं) गरुड़ ।

गरुवाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

गरुहर [संज्ञा पु.] (हिं.) भारी । वजनी ।

गरू+ [वि.] (हिं.) भारी । वजनी । देखो

गरूर [संज्ञा पु.] (अ.) घमंड । अभिमान ।

गरूरत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गरूर'।

गरूरता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गरूर'।

गरूरी [वि.] (अ.) घमंडी । अभिमानी ।
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) घमंड । अभिमान ।

गरेड़िया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गड़ेरि

गरेबान [संज्ञा पु.] (फा.) १–कुरते में जिस
वह भाग जो गले पर पड़ता है । २–
पट्टी ।

गरेरना [क्रि. स.] (हिं.) १–घेरना । २–
छेकना ।

गरेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घिरनी ।
२–देखो 'गँड़ेरी'। [वि.] घुमावदार ।
दार ।

गरेली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गरेरी'।

गरैयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गराँव । पगहा ।

गरोह [संज्ञा पु.] (फा.) झुंड । जत्था । समूह ।

गर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १–बृहस्पति के वं
उत्पन्न एक ऋषि । २–बैल । सांड़ । ३–
पर्वत का नाम । ३–ब्रह्मा के एक मानस
का नाम । ४–संगीत में एक ताल
चार द्रुत तथा अन्त में एक विराम होता है ।

गर्ग-त्रिरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) कात्यायन श्रौ
के अनुसार तीन दिन में होने वाला
प्रकार का योग ।

गर्गर [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन वा

२-भंवर। ३-एक प्रकार की मछली। ४-गागर।

गर्गरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दही मथने का बरतन। माठ। दहेड़ी। गगरी। कलसी। २-मथनी।

गर्ज [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गरज'।

गर्ज़ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ग़रज़'।

गर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) गरजना। घोर शब्द करना। *गर्जन तर्जन*-१-तड़प। २-डांटडपट।

गर्जमान [वि.] (सं.) गर्जन वाला। घोर शब्द करने वाला।

गर्जना [क्रि. अ.] देखो 'गरजना'।

गर्जित [वि.] (सं.) घोर शब्द किया हुआ।

गर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-गढ़हा। गड्ढा। २-दरार। ३-घर। ४-रथ। ५-जलाशय। ६-एक नरक का नाम।

गर्द [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) धूल। राख। खाक। *गर्द उड़ाना*-नष्ट करना। धूल में मिलाना। *गर्द को न पहुंचना*-बराबरी न कर सकना। *गर्द झड़ना*-ऐसी मार खाना जिसकी परवाह न हो। *गर्द फाँकना*-फिजूल घूमना। आवारा फिरना।

गर्दगुबार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) धूल-मिट्टी।

गर्दखोर, गर्दखोरा [वि.] (फ़ा.) जो धूल पड़ने से जल्दी मैला न हो।
[संज्ञा पु.] पर पोंछने वाला टाट।

गर्दन [संज्ञा पु.] देखो 'गरदन'।

गर्दना [संज्ञा पु.] देखो 'गरदना'।

गर्दभंग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गांजा।

गर्दभ [संज्ञा पु.] (सं.) गधा। गदहा।

गर्दभयाग [संज्ञा पु.] (सं.) अवकीर्ण याग।

गर्दभशाक [संज्ञा पु.] (सं.) भारंगी। ब्रह्मयष्टि।

गर्दभांड, गर्दभाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पलखा। पकर। प्लक्ष।

गर्दभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद कंटकारी।

गर्दभि [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

गर्दभिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वातपित्त के विकार से होने वाला एक रोग।

गर्दभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गधी। गदही। २-सफेद भटकटैया। ३-एक प्रकार का कीड़ा (सुश्रुत)।

गर्दाबाद [वि.] (फ़ा.) १-धूल या राख से भरा हुआ। २-उजाड़। ३-बेसुधी।

गर्दालू [संज्ञा पु.] (फ़ा.) आलूबुखारा।

गर्दिश [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-घुमाव। चक्कर। २-विपत्ति। आपत्ति।

गर्दुआ [संज्ञा पु.] देखो 'गरदुआ'।

गर्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्पृहा। लाभ। लिप्सा। २-पलखा। पाकर।

गर्द्धित, गर्द्धित [वि.] (सं.) लुब्ध।

गर्द्धी [वि.] (सं.) १-लोभी। २-लुब्ध।

गर्नाल [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गरनाल'।

गर्ब [संज्ञा पु.] देखो 'गर्व'।

गर्भंड [संज्ञा पु.] (सं.) अंडे के समान उभरी हुई नाभि।

गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेट के भीतर का बच्चा। हमल। २-पेट। गर्भाशय।
गर्भ गिरना-गर्भपात होना। *गर्भ गिराना*-गर्भपात करना।
गर्भ रहना-पेट में बच्चा आना।

गर्भक [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्रजीव नामक वृक्ष। पतजिव।

गर्भकार [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके द्वारा गर्भ रहे।

गर्भकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भाधान के योग्य या समय। २-वह समय जिसमें स्त्री के पेट में बच्चा रहता है।

गर्भकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) फूल में के बाल के समान पतले सूत जो गर्भनाल के भीतर होते हैं।

गर्भकोष [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भाशय।

गर्भगृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकान के बीच की कोठरी। २-घर का मध्य भाग या आंगन। ३-मन्दिर के मध्य भाग में स्थित वह प्रधान कोठरी जिसमें मुख्य मूर्त्ति रखी जाती है।

गर्भघातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लांगलिका वृक्ष।
[वि.] गर्भपात करने वाली।

गर्भघाती [वि.] (सं.) [स्त्री. गर्भघातिनी] गर्भपात करने वाला।

गर्भज [वि.] (सं.) १-गर्भ से उत्पन्न। संतान। २-जो जन्म से हो।

गर्भद [वि.] (सं.) जिससे गर्भ रहे।
[संज्ञा पु.] पुत्रजीव नामक वृक्ष।

गर्भदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद भटकटैया।

गर्भदात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'गर्भदा'।

गर्भदास [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो जन्म से ही दास हो। दासीपुत्र।

गर्भदिवस [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भ का समय। गर्भकाल।

गर्भद्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्धि के निमित्त किया गया पारे का तेरहवां संस्कार।

गर्भद्रुह [वि.] (सं.) गर्भाधान न चाहने वाला। जो गर्भ ठहरने का विरोधी हो।

गर्भद्रुहा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-गर्भधारण की विरोधिनी हो। २-गर्भ गिराने वाली।

गर्भध [वि.] (सं.) गर्भधारण कराने वाला। गर्भधारक।

गर्भनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भाशय की एक नाड़ी जिससे गर्भधारण होता है (सुश्रुत)।

गर्भनाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर केसर होता है।

गर्भनिस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चे के उत्पन्न होने के उपरांत निकलने वाली झिल्ली।

गर्भपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोंपल। गाभा। कोमल पत्ता। २-फूल के भीतर के पत्ते जिन में गर्भकेसर होता है।

गर्भपाकी [संज्ञा पु.] (सं.) साठी धान।

गर्भपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ का अपरिपक्व अवस्था में गिरजाना। २-गर्भ गिरजाना।

गर्भपातक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सहिंजन। रक्तशोभांजन।

गर्भपातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ गिराना। २-रीठा।

गर्भपातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कलिहारी। २-विशल्या नामक एक दवा।

गर्भभवन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसूतिकागृह। सौरी।

गर्भमास [संज्ञा पु.] (सं.) वह महीना जिसमें गर्भाधान हो।

गर्भरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल की एक प्रकार की नाव।

गर्भवती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी।

गर्भवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ के अंदर की स्थिति। २-गर्भाशय।

गर्भव्याकरण [संज्ञा पु.] (सं.) चिकित्साशास्त्र का वह भाग जिसमें गर्भधारण, वृद्धि आदि का उल्लेख होता है।

गर्भव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध में सेना की एक प्रकार की रचना।

गर्भशंकु [संज्ञा पु.] (सं.) मरे हुए बच्चे को पेट से निकालने का एक औजार। इसके मुंह का घेरा आठ उंगल का होता है।

गर्भशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भ की उत्पत्ति का स्थान।

गर्भसंधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक के पांच प्रकार की संधियों में से एक।

गर्भस्थ [वि.] (सं.) जो गर्भ में हो।

गर्भस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भाशय।

गर्भस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) चार मास से कम।

गर्भस्रावी [संज्ञा पु.] (सं.) हिंताल नामक वृक्ष।

गर्भहत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भ्रूणहत्या। गर्भपात।

गर्भांक, गर्भाङ्क [संज्ञा प.] (सं.) नाटक के एक अंक का भाग जिसमें केवल एक दृश्य होता है।

गर्भागार [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'गर्भगृह'। २-

देखो 'गर्भस्थान'।

गर्भाधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भधारण। गर्भ की स्थिति। २-सोलह संस्कारों में से पहला संस्कार। गर्भधारण संस्कार।

गर्भाशय [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

गर्भिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती।

गर्भित [वि.] (सं.) १-किसी के भीतर भरा या पड़ा हुआ। पूरित। २-गर्भयुक्त।
[संज्ञा पु.] (सं.) काव्य का वह दोष जिसमें कोई अतिरिक्त वाक्य किसी वाक्य के अंदर आजाता है।

गर्भीला [वि.] (हिं.) जिसमें से आभा निकलती हो। (रत्न)।

गर्भोपघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ का नष्ट होना। २-बादल में जल उत्पन्न करने की शक्ति न रहना।

गर्भोपनिषद् [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद जिसमें गर्भ सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है।

गर्यालू [वि.] देखो 'गरियालू'।

गर्रा [वि.] (देश.) लाख के रंग का। लाही।
[संज्ञा पु.] १-लाखी रंग। २-लाखी रंग का घोड़ा। ३-लाखी रंग का कबूतर।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-गराड़ी। २-बहते पानी का थपेड़ा या झपेटा।

गर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तार लपेटने की चर्खी। २-खलिहान में लगाई हुई डंठल की गांज।

गर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-घमंड। अहंकार। २-एक संचारी भाव।

गर्वप्रहारी [वि.] (सं.) घमंड चूर्ण करने वाला।

गर्ववंत, गर्ववन्त [वि.] (हिं.) अभिमानी। अहंकारी।

गर्वाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) गर्व करना। अभिमान करना। घमंड करना।

गर्वित [वि.] (सं.) अभिमानी। गर्वयुक्त।

गर्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जिसे अपने रूप तथा गुणादि का गर्व या घमंड हो। यह दो प्रकार की होती है, रूपगर्विता और प्रेमगर्विता।

गर्विष्ठ [वि.] (सं.) घमंडी। गर्वयुक्त।

गर्वी [वि.] (हिं.) घमंडी। अहंकारी।

गर्वीला [वि.] (हिं.) अभिमान से भरा हुआ। घमंडी।

गर्हण [संज्ञा पु.] (सं.) निन्दा। शिकायत।

गर्हणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निन्दा। शिकायत।

गर्हणीय [वि.] (सं.) निन्दनीय। निन्दा के योग्य।

गर्हा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निन्दा।

गर्हित [वि.] (सं.) निन्दित। दूषित। बुरा।

गर्ही [वि.] (सं.) निन्दा करने वाला।

गर्ह्य [वि.] (सं.) निन्दा करने योग्य। निन्दनीय।

गलंश [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह सम्पत्ति जिसका स्वामी मर गया हो तथा उसका कोई दावेदार या उत्तराधिकारी न हो।

गल [संज्ञा पु.] (सं.) गला। कण्ठ।

गलई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गलही'।

गलकंबल [संज्ञा पु.] (सं.) गाय के गले की लटकती हुई झालर।

गलका [संज्ञा पु.] (हिं.) उङ्गलियों के अगले भाग में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।

गलकोड़ा, गलखोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मालखंभ की एक कसरत। २-कुश्ती का एक पेंच। ३-एक प्रकार का चाबुक या कोड़ा।

गलगंज [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्ला। शोरगुल।

गलगंजना [क्रि. स.] (हिं.) शोरगुल करना। हल्ला मचाना।

गलगंड, गलगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन हो जाती है तथा बढ़ते-बढ़ते उभड़ जाती है।
+[संज्ञा पु.] (देश.) हरगीला नामक चिड़िया।

गलगल [संज्ञा पु.](देश.) १-मैना की जाति की एक चिड़िया जिसे सिरगोटी भी कहते हैं। २-एक प्रकार का नीबू।

गलगला [वि.] (हिं.) भीगा हुआ। आर्द्र। तर।

गलगलाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) गीला होना। भीगना।

गलगलिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया का नाम। जिसे कलहँटी भी कहते हैं। सिरोही।

गलगाजना [क्रि. अ.] (हिं.) खुशी के मारे गरजना। गाल बजाना।

गलगुच्छा [संज्ञा पु.] देखो 'गलमुच्छा'।

गलगुथना [वि.] (हिं.) जिसका शरीर भरा हुआ तथा गाल फूले हुए हों।

गलग्रह [संज्ञा पु.] (सं) १-मछली का कांटा। २-कठिनता से टलने वाली आपत्ति। गले का एक रोग।

गलग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) मगर।

गलछट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गलफड़ा।

गलजंदड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) १-कभी पिंड न छोड़ने वाला व्यक्ति। गले का हार। २-वह पट्टी या रूमाल जो हाथ की चोट वा घाव पर सहारा देने के लिए बांधी जाती है।

गलजोड़, गलजोत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक बैल को दूसरे बैल के गले में लगाकर बाँधने की रस्सी। २-गलजंदड़ा। [वि.] असह्य।

गलझंप [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी के गले की की जंजीर या झूल।

गलतंग [वि.] (हिं.) अचेत। बेखबर। बेसुध।

गलतंस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऐसा मनुष्य जो कोई संतति न छोड़ कर मरा हो। २-नि सन्तान व्यक्ति की सम्पत्ति। लावारिस या जायदाड़।

गलत [वि.] (अ.) १-अशुद्ध। २-असत्य। मिथ्या।

गल-तकिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गाल के रखने का छोटा, गोल और कोमल तकिया।

गलतफ़हमी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) भ्रममूलक असत्य वार्ता।

गलतनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बैलों के गले बंधने वाली रस्सी।

गलताँ [वि.] देखो 'गलतान'।

गलता [संज्ञा पु.] (अ.) १-एक प्रकार का वस्त्र जो बहुत चमकीला गफ होता है। जिसका बाना सूत का होता है। २-कारनिस।

गलताड़ [संज्ञा पु.] (सं.) जूए की वह खूंटी भीतर की ओर होती है।

गलतान [वि.](फ़ा.) लुढ़कता हुआ। लड़खड़ाता हुआ।

गलती [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-भूल। चूक। धोखा। २-अशुद्धि।

गलथना [संज्ञा पु.] (हिं.) बकरियों की गरदन के दोनों ओर लटकने वाली थैलियां।

गलथैली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंदरों के गाल के नीचे की वह थैली जिसमें वे खाद्यपदार्थ लेते हैं।

गलदेश [संज्ञा पु.] (सं.) गला। गरदन। ग्रीवा।

गलन [संज्ञा पु.] (सं.) गलकर गिरना।

गलनहाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों का एक रोग जिसमें उनके नख गल-गलकर गिर जाते हैं।

गलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी वस्तु का कम या नष्ट होना। २-बहुत जीर्ण होना। ३-बदन सूखना। शरीर का दुबला होना। ४-अधिक ठंड से हाथ पैर ठिठुरना। ५-काम होना। निष्फल होना।

गलनीय [वि.] (सं.) गलने या सड़ने योग्य।

गलफड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जल जंतुओं का वह अवयव जिसके द्वारा वह पानी के भीतर सांस लेते हैं। २-गाल का चमड़ा।

गलफरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गलफड़ा'।

गलफाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखम्भ की एक कसरत।

गलफाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गले की फाँसी। २-कष्टदायक बात।

गलफूट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बड़बड़ाने का अभ्यास।

गलफूला [वि.] (हिं.) जिसका गाल फूला हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) गला फूलने या सूजने का एक रोग।

गलफेड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) गले में निकलने वाली गिल्टी।

गलबंदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले का एक आभूषण जिसे गुलूबंद भी कहते हैं।

गलबदरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (जोड़ में) ऐसा बादल जिसके साथ हाथ परे गलाने वाली सर्दी पड़े।

गलबल* [संज्ञा पु.](हिं.) कोलाहल। गड़बड़ी। खलबली।

गलबहियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में बांहें डालना। आलिंगन। गले लगाना।

गलबांही [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'गलबहियां'।

गलमंदरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) शिव पूजन के समय गाल बजाना। गल मुद्रा।

गलमुच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) दोनों गालों पर मूंछ के साथ बढ़ाये हुए बाल।

गलमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शिवजी के पूजन और स्तवन के समय उनको प्रसन्न करने के निमित्त गाल बजाने की मुद्रा। गलमंदरी।

गलमेखला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले का हार या माला।

गलवाना [क्रि. स.] (हिं.) गलाने का काम दूसरे से कराना।

गललग्न [वि.] (सं.) गले में लिपटा हुआ।

गलव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

गलशुंडी, गलशुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीभ की जड़ के पास गले के भीतर होने वाला एक रोग जिसमें मांस का टुकड़ा निकल आता है। २-जीभ की जड़ के पास की छोटी घंटी। जीभी कौआ।

गलसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में पहरने का एक आभूषण।

गलसुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाल के नीचे के भाग में सूजन होने का एक रोग। २-एक पशु रोग जिसमें गला सूज जाता है।

गलसुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गल-तकिया'।

गलस्तन [संज्ञा पु.] (हिं.) गल-थना।

गलस्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह बकरी जिसके गले में दो स्तन सी थैलियां लटकी रहती हैं।

गलस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) मुंह से फूंक मारकर बजाया जाने वाला एक बाजा।

गलहंड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गला फूलने का एक रोग। घेघा।

गलही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव का अगला उठा हुआ भाग।

गला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देह का वह भाग जो सिर को धड़ से जोड़ता है। कंठ। गरदन। २-गले के भीतर की वह नाली जिससे शब्द निकलता और भोजन अन्दर जाता है। ३-कंठ का स्वर। ४-बरतन के मुंह के नीचे का भाग।

गला आना-गले के भीतर छाले या सूजन होना। *गला काटना*-१-गरदन पर छुरी फेरना। २-धड़ से सिर अलग करना। ३-अत्यधिक कष्ट देना। अन्याय करना। ४-खाने की वस्तु का गले में चुभना। ५-अहित करना। *गला घुंटना*-अच्छी तरह सांस न आना। *गला घोंटना, दबाना या मरोड़ना*-१-जबरदस्ती करना। २-गला दबाकर प्राण निकालना। ३-गले को ऐसा दबाना कि सांस निकल जाय। ४-हानि पहुंचाना।

गला चलना-कंठ सुरीला होना। *गला छुड़ाना या घुटाना*-पिंड छुटाना। झंझट मिटाना। पल्ला छुड़ाना। *गला घूटना*-छुटकारा मिलना *गला पड़ना या बैठना*-१-गले से शब्द सुरीला अथवा स्पष्ट न निकलना। २-सरदी के कारण गला दुखना। *गला फंसना*-विवश होना। मजबूर होना। *गला फंसाना*—१-मुश्किल में डालना। २-जिम्मेदारी सिर पर ओटना। ३-वशीभूत करना। *गला फाड़ना*-अत्यधिक जोर से चिल्लाना। *गला फिरना*-तान अथवा लय के अनुसार स्वर निकालना। *गला फूलना*-उकता जाना। दम फूलना। *गला बंधना*-विवाह बंधन में जकड़ना। *गला बांध कर धन जोड़ना*-खाने पीने का कष्ट उठाकर भी धन एकत्रित करना। *गला रेतना* १-किसी की बुराई का सामना करना। हानि पहुँचाना। २-अधिक और असह्य दुख देना *गले का हार*-१-प्रियजन। २-पीछा न छोड़ने वाला। न चाहने पर भी साथ रहने वाला। *गले के नीचे उतरना या गले उतारना*-१-मन में जमना। स्वीकृत होना। २-निगलना। *गले (तक में) उतारना*-स्वीकार कराना। समझ में बैठाना। *गले पड़ना*-१-मत्थे मढ़ा जाना। २-सिर पर आना। ३-आगे आना *गले बांधना*-१-व्यर्थ में पास रखना। २-व्यर्थ में साथ लगाना। ३-अनुचित मेल। इच्छा के विरुद्ध विवाह करना। *गले मढ़ना* १-इच्छा के विरुद्ध देना। २-जबरदस्ती देना। ३-न चाहने पर भी कार्य भार देना। ४-इच्छा के विरुद्ध विवाह करना।

गले में जंजीर पड़ना-विवाह हो जाना। *गले लगना*-१-प्रेम से भेंटना। २-आलिङ्गन करना।

गलाऊ [वि.] (हिं.) गलने वाला। जो गल जाय। जैसे--गलाऊ-दाल।

गलाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को पृथक पृथक करके उनको द्रवित करना। २-नरम या मुलायम करना। पुलपुला करना। धीरे-धीरे (किसी वस्तु को) लुप्त करना। ३-खर्च करना। धन व्यय करना।

गलानि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्लानि'।

गलार [संज्ञा पु.] (?) एक वृत्त का नाम।
[वि.] (हिं.) झगड़ालू।
[संज्ञा पु.] मैना पत्ती।

गलारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गलगलिया नामक चिड़िया।

गलावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गलने की क्रिया या भाव। २-वह वस्तु जो अन्य वस्तु को गलावे।

गलित [वि.] (सं.) १-गिरा हुआ। च्युत। २-गला हुआ। ३-अत्यंत जीर्ण तथा खंडित। ४-परिपक्व। परिपुष्ट। ५-चूआ हुआ।

गलितकुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह कोढ़ (रोग) जिसमें अंग गलगल कर गिरने लगते हैं।

गलितयौवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका यौवन ढल चुका हो।

गलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चक्की का वह छेद जिसमें पीसने के निमित्त अन्न डाला जाता है।
[वि.] (हिं.) सुस्त। मट्ठर। (चौपाया)।

गलियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) गली के समान तंग या छोटा रास्ता।

गलियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गली। संकीर्ण या पतला रास्ता।

गली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घरों की दो पंक्तियों के मध्य का पतला और संकीर्ण रास्ता।

गली कमाना-१-पाखाना साफ करना। २-गली में झाड़ू देना।

गली गली फिरना या छानना-१-शहर भर ढूंढ लेना। २-व्यर्थ घूमना। *गली गली मारे मारे फिरना*-१-इधर उधर व्यर्थ घूमना। २-जीविका की खातिर इधर से उधर भटकना। *गली झांकना*-इधर-उधर हैरान करना।

गलीचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कालीन।

ग़लीज़ [वि.] (अ.) गंदला। मैला। २-नापाक। अपवित्र। [संज्ञा पु.] १-मैला। कूड़ाकरकट। २-पाखाना। मल।

गलीत* [वि.] (अ.) मैलाकुचैला। मलिन।

गलू [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पत्थर।

गलेफ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'गिलाफ'। २-देखो 'गिलेफ'।

गलेबाज [वि.] (हिं.) सुरीली आवाज का। अच्छा गाने वाला।

गलैचा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गलीचा। कालीन।

गलोना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का सुरमा।

गलौ* [संज्ञा पु.] (सं.) ग्लौ। चन्द्रमा।

गलौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) बंदरों के गालों के भीतर की थैली जिसमें वह खाद्य वस्तुएं भर लेते हैं।

गलौघ [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें [illegible]

के अन्दर सूजन हो जाता है।

गल्प [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिथ्या प्रलाप। गप्प। २-छोटी छोटी कहानियाँ। ३-मृदंग के बारह प्रवन्धों में से एक।

गल्याराॐ [संज्ञा पु.] देखो 'गलियारा'।

गल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) गाल। कपोल। [संज्ञा स्त्री.] (पंजाबी) बात।

गल्लई [वि.] (हिं.) गल्ले के रूप में। [संज्ञा पु.] १-बटाई। २-उपज के रूप में काश्तकारों से लिया जाने वाला लगान।

गल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शोरगुल। हौरा। २-झुंड। दल। ३-उतना अन्न जितना एक बार पीसने के लिये डाला जाय। ४-एक प्रकार का बेत।

ग़ल्ला [संज्ञा पु.] (अ.) १-फसल। पैदावार। २-अन्न। अनाज। ३-वह संदूक जिसमें रोज की बिक्री रहती है। गोलक। ४-मद। फंड। खाता।

ग़ल्लाफरोश [संज्ञा पु.] (फ़ा.) अन्न बेचने वाला व्यापारी।

गल्ली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'गली'। २-गप्पी।

गल्वर्क [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा पीने का पात्र।

गल्हाना + [क्रि. अ.] (हिं.) बात करना।

गवँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आशय। मतलब। २-घात। मौका।

गवँ से-१-घात देखकर। २-धीरे से। चुपचाप।

गव [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बंदर का नाम।

गवन*+ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्थान। प्रयाण। चलना। २-गवना। गौना।

गवनचार [संज्ञा पु.] (हिं.) वधू का पहले पहल वर के घर जाना। गौना।

गवनना* [क्रि. अ.] (हिं.) जाना।

गवना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गौना'।

गवय [संज्ञा पु.] (सं.) १-नील गाय। २-एक छंद का नाम जिसके प्रथम चरण में १६ मात्राएं होती हैं और ११ मात्राओं पर विराम होता है तथा दूसरे चरण में दोहा होता है।

गवर्नमेंट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-राज्य। शासन पद्धति। २-शासक-मण्डल।

गवर्नर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी प्रांत या राज्य का प्रधान शासक।

गवर्नरजनरल [संज्ञा पु.] (अं.) किसी देश का (औपनिवेशिक देश का) सब से बड़ा शासक

गवर्नरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-जहां पर गवर्नर शासन करता हो। २-शासन। अधिकार।

गवल [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली भैंसा। अरना।

गवहियाँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अतिथि। मेहमान

गवाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-झरोखा। छोटी खिड़की। गौंखा। २-रामचन्द्र की सेना का एक बंदर सेनापति।

गवाख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गवाक्ष'।

गवाछ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गवाक्ष'।

गवाँना [क्रि. स.] (हिं.) खोना।

गवामृत [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का दूध।

गवारा [वि.] (फ़ा.) १-मनभाता। अनुकूल। पसंद। २-सह्य। अंगीकार।

गवालीक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वह मिथ्या भाषण जो गाय आदि के लिए किया जाय।

गवाशन [संज्ञा पु.] (सं.) गो-मांस खाने वाला। गोभक्षक।

गवास [संज्ञा पु.] (हिं.) कसाई। हत्यारा। गो-नाशक।

गवाह [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह मनुष्य जिसने कोई घटना स्वयं देखी हो। २-किसी विवाद के विषय में अपनी जानकारी बतलाने वाला। साक्षी।

गवाही [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) गवाह का कथन। साक्षी का बयान।

गवाही देना या लिखना-साक्षी के रूप में हस्ताक्षर करना।

गविष्ट [वि.] (सं.) १-भूमिस्थित। २-स्वर्गस्थित।

गवेजा* [संज्ञा पु.] (हिं.) बातचीत। गपशप।

गवीधुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गवेधुक'।

गवीश* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गोस्वामी। २-विष्णु। ३-सांड।

गवेधु, गवेधुक [संज्ञा पु.] (सं.) कसेई। कौडिल्ला

गवेरिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लाल मिट्टी।

गवेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू। लाल मिट्टी।

गवेल [वि.] (हिं.) गंवार। देहाती।

गवेषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोज। अन्वेषण। तलाश। छानबीन।

गवेषी [वि.] (सं.) खोज या अन्वेषण करने वाला।

गवेसना* [क्रि. स.] (हिं.) ढूंढना। खोजना।

गवैया [वि.] (हिं.) गायक। गाने वाला।

गवैहां [वि.] (हिं.) ग्रामीण। देहाती। गांव में रहने वाला।

गव्य [वि.] (सं.) जो गाय से उत्पन्न अथवा प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी आदि। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाय का झुण्ड। २-पंचगव्य।

गव्यूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो हजार धनुष की दूरी जो दो कोस के बराबर होती है।

ग़श [संज्ञा पु.] (अ.) मूर्छा। बेहोशी।

ग़श खाना-मूर्छित होना।

ग़शी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बेहोशी।

गश्त [संज्ञा पु.] (फ़ा) १-टहलना। भ्रमण। २-पुलिस का चक्कर या दौरा। एक प्रकार का नाच जिसको वेश्याएं नाचती हुई चलती हैं।

गश्त मारना या लगाना-चारों ओर

गश्तसलामी [संज्ञा स्त्री.] (अ. फ़ा.) दौरे के समय मिलने वाली भेंट। अब प्रायः समाप्त होगई।

गश्ती [वि.] (फ़ा.) घूमने वाला। [वि.] (फ़ा.) [स्त्री. प्र.] कुलटा।

गसना [क्रि. स.] (हिं.) १-जकड़ना। २-बुनावट में बाने को कसना।

गसीला [वि.] (हिं.) १-जकड़ा हुआ। २-कपड़ा जिसके सूत की बुनावट हुई हो।

गस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रास। कौर।

गस्सा मारना-कौर मुख में डालना।

गहँड़िल+ [वि.] (हिं.) गंदला। (पानी)।

गह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पकड़ने की भाव। पकड़। २-हथियार आदि की दस्ता।

गहकना [क्रि. अ.](हिं.) १-चाह अथवा से भरना। ललकना। २-उमंग में आना।

गहकोड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्राहक।

गहगड्ड [वि.] (हिं.) गहरा। भारी। घोर

गहगह [वि.] (हिं.) १-उमंग से भरा प्रफुल्लित। प्रसन्न। २-धूमधाम (बाजा)। [क्रि. स.] धूम के साथ। घम।

गहगहा [वि.] (हिं.) १-उमंग और आनन्द परिपूर्ण। २-धूमधामसहित।

गहगहना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आनंद से प्रफुल्लित होना। २-फसल या पौधों का लहाना।

गहगहे [क्रि. वि.] (हिं.) धूमधाम से। प्रसन्नता से।

गहडोरना [क्रि. स.] (देश.) पानी को गंदला करना।

गहन [वि.] (सं.) १-गम्भीर। गहरा। २-घना। दुर्गम। दुर्भेद्य। ३-कठिन। ४-निविड़। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गहराई। थाह। दुर्गम स्थान। ३-वन में का गुप्त स्थान। दुःख। ५-जल। +[संज्ञा पु.] (हिं.) १-ग्रहण। दोष। ३-कष्ट। विपत्ति। ४-बंधन। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पकड़ने का भाव।

हठ। जिद। अड़। ३-जोते हुए खेत से घास निकालने का औजार। ४-पानी बरसने के उपरांत बोये हुए खेतों में की हुई हल्की जुताई।

गहना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आभूषण। जेवर। २-रेहन। बंधक। [क्रि. स.] पकड़ना। थामना। धरना।

गहनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टेक। हठ। जिद। अड़।

गहनी [संज्ञा स्त्री.] (?) १-पशुओं के दाँत हिलने का एक रोग। २-खेत से घास निकालने का एक औजार।

गहनु* [संज्ञा पु., स्त्री.] देखो 'गहन'।

गहने+ [क्रि. वि.] (हिं.) रेहन के रूप में। बंधक

गहबर*+ [वि.] (हिं.) १-दुर्गम। विषम। २-व्याकुल। उद्विग्न।

गहबरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-व्याकुल होना। घबराना। २-करुणा आदि से जी भर आना

गहर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देर। विलम्ब। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दुर्गम। २-गूढ़।

गहराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-देर लगाना। विलंब करना। २-झगड़ना। उलझना। ३-कुढ़ना। नाराज होना।

गहरवार [वि.] (हिं.) एक क्षत्रियवंश का नाम।

गहरा [वि.] (हिं.) १-जिसकी (पानी) थाह बहुत नीचे हो। गम्भीर। २-जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ३-बहुत। अधिक। ४-जड़। कठिन। ५-गाढ़ा।
गहरा आसामी-धनी व्यक्ति। अधिक देने वाला। *गहरा पेट*-१-ऐसा हृदय जिसका भेद न खुले। २-माल या बात हजम कर जाने वाला। *गहरा रंग पकड़ना*-झंझट या उलझन में पड़ते जाना। बात बढ़ती जाना। *गहरा हाथ पड़ना, मारना, लगाना*-१-काफी माल उड़ाना। बहुत रुपया हड़पना। २-हथियार या हाथ का पूरा वार होना। ३-खूब रुपया कमाना। कोई कीमती वस्तु मिलना। *गहरी घुटना या छनना*-१-गहरी मित्रता होना २-खूब आमोद प्रमोद होना। ३-घुल-घुलकर बातचीत होना। ४-गाढ़ी भंग घुटना। *गहरी नींद सोना*-प्रगाढ़ निद्रा में सोना।

गहराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'गहरा' होने का भाव गहरापन।

गहराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गहरा होना। २-रूठना। नाराज होना। [क्रि. स.] (हिं.) गहरा करना।

गहराव* [संज्ञा पु.] (हिं.) गहराई। गहरापन।

गहरु* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विलम्ब। देर।

गहरे* [क्रि. वि.] (हिं.) यथेच्छ। अच्छी तरह। *गहरे करना*-माल मारना। *गहरे चलना*-१-घात में लगना। २-जाते पथिक के प्राण लेना।

गहरेबाजी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इक्के के घोड़े की तेज चाल।

गहलौत* [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रियों की एक शाखा

गहवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) संड़सी। प्लास।

गहवाना [क्रि. स.] (हिं.) पकड़ने का काम अन्य से कराना।

गहवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) पालना। झूला। हिंडोला।

गहाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गहने या पकड़ने का भाव।

गहागड्ड [वि.] (हिं.) देखो 'गहगड्ड'।

गहागह [क्रि. वि.] देखो 'गहगह'।

गहाना [क्रि. स.] (हिं.) पकड़ाना। धराना।

गहिरा+ [वि.] देखो 'गहरा'।

गहिराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गहराई'।

गहिराव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गहराव'।

गहिरो* [वि.] देखो 'गहरा'।

गहिला+ [वि.] (हिं.) पागल। बावला। उन्मत्त।

गहीला+ [वि.] (हिं.) १-गर्वयुक्त। घमण्डी। २-पागल।

गहु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा रास्ता। गली।

गहुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटे मुँह की सँड़सी।

गहूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धरोहर रखने की मजदूरी।

गहेजुआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) छछूंदर।

गहेलरा+ [वि.] (हिं.) १-पागल। २-मूर्ख। अज्ञानी। गंवार।

गहेला [वि.] (हिं.) [स्त्री. गहेली] १-हठी। जिद्दी। २-अहंकारी। घमंडी। ३-पागल। खब्ती। ४-मूर्ख। गंवार।

गहैया [वि.] (हिं.) १-पकड़ने वाला। २-स्वीकार करने वाला।

गह्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंधेरी जगह। २-विवर। बिल। ३-विषम स्थान। ४-गुफा। ५-कुंज। लतागृह। ६-जंगल। [वि.] दुर्गम। २-विषम। ३-गुप्त।

गह्वरित [वि.] (सं.) १-गुप्त। २-विषम। दुर्गम।

गाँकर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अंगाकड़ी। बाटी। २-अरहर की लिट्टी।

गांग, गाङ्ग [वि.] (सं.) गंगा-संबंधी। गंगा का।

गांगट, गाङ्गट [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

गांगन, गाङ्गन [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार की फोड़िया।

गांगायनि, गाङ्गायनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीष्म २-कार्तिकेय

गांगिनी, गाङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंगा की एक धारा।

गांगेय, गाङ्गेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीष्म। २-कार्तिकेय।

गांगेरुक, गाङ्गेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) गोरख इमली का बीज।

गांग्य [वि.] (हिं.) गंगा-संबन्धी।

गाँछना [क्रि. स.] (हिं.) गूंथना। गांथना।

गाँज [संज्ञा पु.] (फा.) राशि। ढेर।

गाँजना [क्रि. स.] (हिं.) राशि लगाना। ढेर लगाना।

गाँजा [संज्ञा पु.] (हिं.) भाँग के समान एक पौधा जिसकी कलियों का धुआं नशा करने के हेतु पीते हैं।

गाँठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रस्सी, डोरी, धागे, कपड़े आदि में एक विशेष प्रकार से फेरा देकर बनाया हुआ बंधन। गिरह। २-कपड़े के पल्ले में रुपया आदि लपेट कर लगाया हुआ बंधन। ३-बोझ। गट्ठा। ४-अंग का जोड़। ५-बांस आदि की पोर। ६-हल्दी आदि का गोल टुकड़ा। ७-जड़।
गाँठ उखड़ना-किसी अंग का अपने स्थान से हट जाना। *गाँठ काटना*-१-गांठ में बँधी वस्तु का चोरी जाना। २-ठगा जाना। *गाँठ कतरना या काटना*-१-नुकसान होना। २-जेब कतरना। गांठ काटकर रुपया निकाल लेना। *गाँठ करना*-१-गांठ में बांध लेना। २-बटोरना, जमा करना। *गाँठ का पूरा*-रुपये वाला होना। *गाँठ का पैसा*-अपना धन। *गाँठ खुलना*-१-समस्या हल होना। २-असली बात का पता लगाना। *गाँठ खोलना*-उलझना या झगड़ा मिटाना। (हृदय की) *गाँठ खोलना*-१-मन में रखी हुई बातें कहना २-आंतरिक अभिलाषा प्रकट करना। ३-मन की निकालना। *गाँठ पकड़ना या करना* (मन में)-बुरा मानना। *गाँठ पड़ना* (मन में)-१-उलझन बढ़ती जाना। दिल में फरक हो जाना। *गाँठ पर गाँठ पड़ना*-१-दो गांठ पड़ना। २-मन में फरक पर फरक पड़ना। *गांठ बांधना*-१-याद रखना। २-निश्चय करना। *गांठ में होना*-पल्ले या पास में। *गांठ (मन में) रखना*-१-जी में बुरा मानना। २-ईर्ष्या या जलन रखना। ३-झटपट लेना। *गांठ से*-अपने पास से।

गाँठकट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गिरहकट। २-उचित मूल्य से अधिक पर सौदा बेचने वाला। ठग

गाँठगोभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की गोभी जिसमें गूदेदार गांठ होती है।

गाँठदार [वि.] (हिं.) जिसमें बहुत सी गांठें हों। गठीला।

गाँठना [क्रि. स.] (हिं.) १-गांठ लगाना। २-मरम्मत करना। ३-मिलाना। जोड़ना। क्रमबद्ध करना। ४-पक्ष में करना। अनुकूल करना। ५-किसी स्त्री को संभोग के लिए राजी करना। ६-निर्धारित करना। निश्चय

करना। ७-दबोचना। ८-वश में करना। ९-वार को रोकना।
मतलब गाँठना-काम निकालना।

गाँठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथों की कुहनी में पहनने गहना। २-भूसे या डंठल का गांठदार छोटा टुकड़ा।

गाँड [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुदा। शरीर का वह स्थान जहां से मल निकलता है। अपान। पायु गुह्य। २-किसी वस्तु के नीचे का भाग। पेंदी तला। तली।
गाँड़ की खबर न होना-किसी बात की जानकारी न होना। *गाँड़ के नीचे गंगा बहना*-अत्यधिक ऐश्वर्य होना। *गाँड़ खोल देना*-१-दबकर बात मान लेना। २-चापलूसी करना। *गाँड़ खोले फिरना*-१-नंगा फिरना। २-बच्चों के समान अनजान बना रहना। *गाँड़ गरदन की सुध या खबर न रहना*-असावधान होना।
गाँड़ गरदन एक हो जाना-१-थक कर सुध बुध खो देना। ३-बेहोश हो जाना। ३-बहुत मोटा हो जाना। *गाँड़ गले में आना*-१-संकट में फंसना। २-ऊब जाना। *गाँड़ फटना*-१-डर लगना। २-डर के मारे घबराहट होना। *गाँड़ में उँगली करना*-छेड़ना। तंग करना।

गाँडर [संज्ञा पु.] (हिं.) मूज के समान एक लम्बी घास।

गाँडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पेड़ पौधे का वह डंठल जो उससे काट लिया हो। २-ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा। ३-ईख। ऊख। गन्ना

गांडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास जो चौपायों के चरने के काम आती है।

गांडीव, गाण्डीव [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन के धनुष का नाम।

गांडीवी, गाण्डीवी [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन। २-अर्जुन नामक वृक्ष।

गाँडू [वि.] (हिं.) १-गुदा मैथुन कराने वाला। २-डरपोक। बुज़दिल। ३-निकम्मा।

गाँती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गाती'।

गाँधना [क्रि. स.] (हिं.) १-गूथना। गूधना। २-गांठना। जोड़ना।

गांदिनी, गान्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा। २-अक्रूर की माता।

गांदी, गान्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गान्दिनी।

गांधर्व, गान्धर्व [वि.] (सं.) १-गंधर्व-संबंधी। २-गंधर्व देश में उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १-सामवेद का उपवेद। २-गानविद्या। संगीत-शास्त्र। ३-आठ प्रकार के विवाहों में से एक। ४-घोड़ा। ५-गान्धर्व।

गांधर्वविवाह, गान्धर्वविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह विवाह जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से अनुरागपूर्वक मिलकर पति-पत्नीवत् रहते हैं।

गांधर्ववेद, गान्धर्ववेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामवेद का उपवेद जिसके अन्तर्गत सामगान के स्वर तालादि का वर्णन है। २-गानविद्या। ३-संगीतशास्त्र।

गांधर्विक, गान्धर्विक [वि.] (सं.) संगीत-शास्त्र का ज्ञाता। गांधर्ववेद का जानने वाला।

गांधर्वी, गान्धर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

गांधार, गान्धार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिन्धु नदी के पश्चिम का देश। २-इस देश का निवासी। ३-संगीत के सात स्वरों में तीसरा। ४-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है। ५-कई राग और रागनियों के मेल से बना एक संकरराग। ६-संगीत के तीन स्वर ग्रामों में से एक।

गांधारपंचम, गान्धारपञ्चम [संज्ञा पु.] (सं.) एक षाडव राग जो मांगलिक माना जाता है। म, प, ध, नि, स, ग, म इसका सरगम है।

गांधारभैरव, गान्धारभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग का नाम।

गांधारी, गान्धारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गांधार देश की स्त्री या राज्यकन्या। २-धृतराष्ट्र की स्त्री। ३-मेघराज की पांचवीं रागिनी। ४-तंत्र मतानुसार एक नाड़ी। ५-जैनों के एक शासन देवता। ६-जवासा। ७-गांजा।

गांधिक, गान्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंधी। २-एक कीड़ा। ३-गंधद्रव्य।

गांधी, गान्धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक हरे रंग का छोटा कीड़ा। २-एक घास। +३-हींग। ४-गुजराती वैश्यों की एक जाति। ५-भारत देश के राष्ट्रपिता जिनका जन्म आश्विन कृष्णा १२, संवत् १९२५ (२ अक्टूबर, १८६९ ई०) को पोरबन्दर (काठियावाड़) के एक वैश्य कुल में माता पुतलीबाई के गर्भ से हुआ। इनका पूरा नाम मोहनदास था। इनके पिता का नाम कर्मचन्द था। सत्य और अहिंसा तथा सब धर्मों का समान भाव से आदर में इनका अटूट विश्वास था और उसको अन्त समय तक प्राण देकर भी निभाया।

गांभीर्य, गाम्भीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंभीरता। गहराई। २-स्थिरता। अचंचलता। ३-धीरता। शांति का भाव। ४-गहनता। जटिलता।

गावँ, गांव [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छोटी बस्ती जिसमें किसान लोग कच्चे या पक्के मकान बनाकर रहते हैं। खेड़ा। ग्राम।
गाँवगिरावँ-१-देहात। २-जमींदारी।

गांस [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-बंधन। प्रतिरोध। २-वैर। द्वेष। ईर्षा। ३-हृदय की गुप्त बात। रहस्य। ४-गांठ। ५-हथियार की नोक। ६-वश। अधिकार। ७-देखरेख। निगरानी।
गाँस निकालना-वैर निकालना। *गाँस में करना या रखना*-अधिकार में रखना।

गांसना [क्रि. स.] (हिं.) १-गूथना। २-आस छेदना। ३-खूब कसना जिससे बुनावट हो। ४-वश में रखना। ५-तेजी से पक दबोचना। ६-कसकर भरना। ठंसना।
बात को गाँस कर रखना-मन में लिये रह

गांसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हथियार की नो २-गांठ। गिरह। ३-कपट। छलछंद। मनोमालिन्य।

गांहक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गाहक'।

गाइ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाय।

गाइड [संज्ञा पु.] (अं.) १-पथ-प्रदर्शक। आगे रास्ता बताने वाला। २-प्रसिद्ध का वर्णन (दर्शकों को) करने वाला व्यक्ति। ३-किसी संस्था या कार्यविभाग के निर्दे आदि की जानकारी कराने वाली पुस्तक।

गाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाय।

गाउन [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार का पहरावा जिसे अमेरीका तथा योरप की स्त्रियां पहनती हैं। २-न्यायाधीश के पहनने का लबादा। ३-उपाधिप्राप्त विद्यार्थियों का विशिष्ट वस्त्र।

गाऊघप्प [वि.] (हिं.) १-दूसरे के माल को हड़प कर जाने वाला। २-बहुत खर्च करने वाला।

गागर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गगरी। छोटा घड़ा।

गागरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'गागर'। २-भंगियों की एक ज़ाति।

गागरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घड़ा। गगरी।

गाच [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिस पर रेशम के बेलबूटे बने रहते हैं। फ्लॉवर।

गछ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा पेड़। पौधा। २-पेड़। वृक्ष।

गाछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेड़ों का कुंज। बाग। २-खजूर की कोमल पत्ती। ३-खुर

गाज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गरज। गर्जन। शोर। २-बिजली गिरने का शब्द। ३-बिजली। वज्र।
गाज पड़ना-बिजली गिरना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) फेन। झाग।
[संज्ञा स्त्री.] (?) कांच की चूड़ी।

गाजना [क्रि. स.] (हिं.) १-गरजना। हुंकार करना। २-प्रसन्न होना।

गाजर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक मीठे कंद का पौधा।
गाजर मूली समझना-तुच्छ समझना।

गाजा [संज्ञा पु.] (फा.) मुँह पर मलने का एक रोगन या पाउडर।

ग़ाज़ी [संज्ञा पु.] (अ.) १-मुसलमानी धर्म के अनुसार वह वीर जो धर्म के लिए युद्ध करे। २-वीर बहादुर।

ग़ाज़ीमियां [संज्ञा पु.] (अ.) महमूद गजनवी का भानजा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुआठे की वह लकड़ी जिसके इधर उधर बैल जोते जाते हैं।

[संज्ञा पु.] (?) १-देखो 'कट्ठा'। २-छोटा खेत।

[संज्ञा पु.] (अं.) लोहे की लम्बी तथा मोटी धरन जिसे दिवारों पर डाल कर छत पाटी जाती है।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा खेत। २-पयाल दाने को बैलों की नथाई।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गड्ढा। २-अन्न रखने का गड्ढा। ३-खेत की मेंड़ या चाढ़।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-गड्ढा खोदकर उसमें ई रखकर मिट्टी से ढकना। दफनाना। २-किसी वस्तु का सिरा किसी गड्ढे में जमाकर उसे खड़ा करना। ३-धंसाना। ४-छिपाना। गुप्त रखना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भेड़। २-देखो 'गांडर'।

[संज्ञा पु.] देखो 'गारुड़ी'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-छकड़ा। बैलगाड़ी। २-वह गड्ढा जिसमें प्राचीन काल में लोग शत्रु, ठग आदि का अन्वेषण करते थे।

गाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सामान या आदमियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने का पहिये वाला यान।
गाड़ी भर–बहुत सा। *गाड़ी जोतना*–चलाने के लिए गाड़ी तैयार करना। *गाड़ी छूटना*–गाड़ी का रवाना हो जाना।

गाड़ीखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) गाड़ियां खड़ी करने का स्थान।

गाड़ीवान [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोचवान। २-गाड़ी हांकने वाला।

गाढ़ [वि.] (सं.) १-दृढ़। मजबूत। २-अधिक। अतिशय। ३-घना। गाढ़ा। ४-विकट। कठिन। दुर्गम।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-कठिनाई। आपत्ति। २-जुलाहों का करघा।
गाढ़े में पड़ना–संकट में पड़ना।

गाढ़ा [वि.] (हिं.) १-जिसमें जल के साथ चूर्ण आदि मिला हो। २-घना। ठस। मोटा। (कपड़ा आदि)। ३-घनिष्ठ। गहरा। ४-कठिन। विकट। घोर। कट्टर। प्रचंड। *गाढ़ी छनना*–१-गूढ़ प्रेम होना। २-घुल-घुल कर बातें होना। ३-विरोध होना। *गाढ़े की कमाई*–बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। *गाढ़े का साथी या संगी*–संकट में सहारा देने वाला। *गाढ़े में*–संकट के समय में।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी। २-मस्त हाथी।

गाढ़े*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दृढ़ता से। जोर से। २-भलीभांति। अच्छी तरह। खूब।

गाणपत [वि.] (सं.) गणपति संबंधी।

गाणपत्य [संज्ञा पु.] (सं) गणेश का उपासक।

गात [संज्ञा पु.] (हिं) १-शरीर। अंग। २-गुप्तांग। ३-स्तन। कुच। ४-गर्भ।
गात उमगना–छाती उठना। *गात से होना*–गर्भवती होना।

गाता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाने वाला। गवैया। २-देखो 'गत्ता'।

गाती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह चादर जिसे गले में बांधते हैं। २-चादर ओढ़ने का एक ढंग।
गाती मारना–गाती बांधना।

गातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोयल। २-भौंरा। ३-गंधर्व। ४-गान। गाने वाला। ६-पथिक। ७-पृथ्वी।

गात्र [संज्ञा पु.] (सं.) देह। अंग। शरीर।

गात्रभंगा, गात्रभङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवांच। कौंच।

गात्रवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर साधन की एक प्रणाली।

गात्रसम्मित [वि.] (सं.) तीन मास से ऊपर का (गर्भ)।

गाथ [संज्ञा पु.] (सं.) यश। प्रशंसा।

गाथा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-स्तुति। प्रशंसा। २-कथा। वृत्तान्त। ३-प्राकृत भाषा का एक प्रसिद्ध छंद। ४-आर्या नाम की एक वृत्ति। ५-श्लोक। ६-गीत। संस्कृत और प्रकृत मिली एक प्राचीन भाषा।

गाथी [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद का गायक।

गाद+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तलछट। २-तेल का चीकट। कीट। ३-गाढ़ी चीज।
गाद बैठना–१-तलछट बैठना। २-कीट जमना।

गादड़+ [वि.] (हिं.) कायर। डरपोक।
[संज्ञा पु.] १-गीदड़। सियार। २-डंडा मारने पर भी न चलने वाला बैल।

गादर+ [वि.] (हिं.) १-डरपोक। कायर। २-सुस्त। मट्ठर। ३-गदराया हुआ।
[संज्ञा पु.] गीदड़।

गादा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत में अधपका अन्न। अपरिपक्व। फसल।

गादी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का पक्वान्न। २-देखो 'गद्दी'।

गादुर [संज्ञा पु.] (हिं.) चमगादर।

गाध [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थान। जगह। २-थाह। पानी के नीचे का स्थल। ३-नदी का बहाव। कूल। ४-लोभ। लिप्सा।
[वि.] १-छिछला। जो गहरा न हो। २-थोड़ा। स्वल्प।

गाधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्रीस्वरूपा महादेवी

गाधि [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के पिता का नाम।

गाधिपुर [संज्ञा पु.] (सं.) कान्यकुब्ज।

गाधी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गद्दी'।

गाधीपुर [संज्ञा पु.] (सं.) कान्यकुब्ज।

गाधेय [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र।

गान [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाना गाने की क्रिया। संगीत। २-गीत।

गानविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत विद्या।

गाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ताल तथा स्वर के नियमानुसार अथवा आलाप सहित ध्वनि निकालना। २-मधुर ध्वनि करना। २-स्तुति करना। बखान करना।
अपना ही गाना–अपनी ही बात कहते जाना।
[संज्ञा पु.] १-गाने की क्रिया। २-गीत।

गानिल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वच।

गाफ़िल [वि.] (अ.) १-बेसुध। २-बेपरवाह।

गाब [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पेड़।

गाभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पशुओं का गर्भ। २-देखो 'गाभा'।

गाभा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नया निकलता हुआ कोमल तथा हलके रंग वाला पत्ता। २-केले आदि के डंठल का भीतरी भाग जो नरम होता है। लिहाफ़ या तोशक आदि का भीतर की पुरानी रुई। ४-भरतवालों के सांचे के अन्दर का भाग। ५-कच्चा अन्न।

गाभिन [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] गर्भिणी (पशुओं के लिए)।

गाभिनी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी।

गाम [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव। ग्राम।

गामचा [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े के पैर का वह भाग जो सुम और टखने के बीच में होता है।

गामत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निकास।

गामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल की एक प्रकार की नाव।

गामी [वि.] (सं.) १-चलने वाला। २-संभोग करने वाला।

गामुक [वि.] (सं.) जाने वाला।

गाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध मादा चौपाया जिसके सींग होते हैं। गो। २-बहुत सीधा-साधा मनुष्य।
गाय का बछिया तले और बछिया का गाय तले करना–हेरा फेरी करना।

गायक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. गायकी] गाने वाला। गवैया।

गायकवाड़ [संज्ञा पु.] (*मराठी*) बड़ौदा के राजाओं की उपाधि।

गायकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाने वाली स्त्री।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-संगीत-विद्या। २-संगीतशास्त्र के नियमानुसार ठीक प्रकार से गान। ३-गानविद्या का पूर्णज्ञान।

गायगोठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोशाला।

ग़ायत [वि.] (अ.) बहुत अधिक।

गायताल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निकम्मा पशु। २-निकम्मी वस्तु।

[वि.] (हिं.) निकम्मा। रद्दी।

गायत्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. गायत्री] गायत्री छंद।

गायत्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैर का पेड़। २-उद्गारता। [संज्ञा स्त्री.] १-तीन चरण का एक वैदिक छंद। २-एक वैदिक मंत्र जो हिन्दूधर्म में सबसे अधिक पावन समझा जाता है। ३-दुर्गा। ४-गंगा। ५-६ अक्षरों की एक वर्णवृत्त।

गायन [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. गायिनी] १-गायक। २-गाना।

गायब [वि.] (अ.) लुप्त। अंतर्धान।

गायब करना-चुरा लेना।

गायबाना [क्रि. अ.] (अ.) १-गुप्त रीति से। २-पीठ पीछे।

गायबगला [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं के झुंड के साथ रहने वाला एक प्रकार का बगला जो उनके कीड़ों को खाता है।

गायरौन [संज्ञा पु.] (हिं.) गोरोचन।

गायिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'गायकी'। २-एक मात्रिक छंद।

गार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाली।

[संज्ञा पु.] (अ.) १-गहरा गड्ढा। २-गुफा। कंदरा।

गारत [वि.] (अ.) नष्ट। बरबाद।

गारद [संज्ञा स्त्री.] (अं. *गार्ड*) १-रक्षा के निमित्त नियुक्त किया हुआ सिपाहियों का दल। २-पहरा। चौकी।

गारद बैठाना-पहरा बैठाना। *गारद में करना* पहरे में करना। हवालात में बंद करना।

गारना [क्रि. स.] (हिं.) १-निचोड़ना। २-पानी के साथ घिसना। ३-निकालना। ४-त्यागना। ५-गलाना। ६-नष्ट या बरबाद करना।

तन या शरीर गारना-तप करना।

गारमेली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जंगली फालसा।

गारा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी या चूना, सुर्खी आदि का पानी में सना हुआ लेप जो ईंटों की जुड़ाई के काम में आता है।

गाराकान्हड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) संध्या के उपरांत गाया जाने वाला एक संपूर्ण जाति का राग।

गारी+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाली।

गारुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प का विष उतारने का मंत्र। २-गरुड़ के आकार की सेना की व्यूहरचना। ३-मरकतमणि। ४-सुवर्ण। सोना। ५-गरुड़पुराण।

[वि.] गरुड़-संबंधी। गरुड़ का।

गारुड़ि [संज्ञा पु.] (सं.) १-संगीत में आठ प्रकार के तालों में से एक। २-देखो 'गारुड़ी'।

गारुड़िक [संज्ञा पु.] (सं) १-सर्प का विष उतारने वाला। २-सँपेरा।

गारुड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) मंत्र द्वारा सर्प का विष उतारने वाला।

गारुत्मत [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरकत। पन्ना। २-गरुड़ जी का अस्त्र।

गारो* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गौरव। २-अहंकार। घमंड।

गार्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक ब्रह्मवादिनी स्त्री। २-दुर्गा। ३-याज्ञवल्क्य।

गार्ग्य [संज्ञा पु.] १-गर्गगोत्र में उत्पन्न पुरुष। २-एक प्राचीन व्याकरण।

गार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १-रक्षक। २-रेल का एक प्रमुख कर्मचारी जिसके इंगित पर गाड़ी रुकती और चलती है।

गार्डेन [संज्ञा पु.] (अं.) बाग। बगीचा।

गार्भिक [वि.] (सं.) गर्भ-संबंधी।

गार्हपत्याग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छः प्रकार की अग्नियों में प्रथम जिसकी रक्षा प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिये।

गार्हमेध [संज्ञा पु.] (सं.) पंचयज्ञ आदि गृहस्थों के कर्तव्य कर्म।

गार्हस्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-गृहस्थाश्रम। २-गृहस्थों के पांच प्रधान कर्तव्य।

गाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपोल। गंड। २-बकवाद करने का स्वभाव। ३-मध्य। बीच। ४-कौर। ग्रास।

गाल करना-१-मुँह जोरी करना २-डींग मारना। *गाल पर गाल चढ़ना*-मोटा होना। *गाल पिचकना*-दुबला पतला होना। *गाल फुलाना*-१-अभिमान प्रदर्शित करना। २-रूठना। *गाल बजाना*-१-डींग मारना। २-बढ़-बढ़कर बात करना। ३-व्यर्थ बकवाद करना। *(काल के) गाल में जाना*-मौत के मुंह में जाना। *गाल में भरना*-खाने के लिए मुख में भरना। *गाल मारना*-१-डींग हांकना। २-व्यर्थ बकना। ३-ग्रास मुख में रखना।

गालगूल [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यर्थ की बकवाद। गपशप।

गालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गलाने की क्रिया या भाव। २-किसी वस्तु को इस प्रकार छाना जाय कि उसकी गाद या मैल तो रह जाय और तरल पदार्थ छन जाय। *फिल्टरेशन*।

गालबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़े के तस्मे को फंसा कर बाँधने का कार्य। (जहाजी)।

गालमसूरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पकवान।

गालव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्रकार का नाम। ३-तेंदू का वृक्ष। ४-लोध का वृक्ष। एक स्मृतिकार।

गाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धुनी हुई रूई का गोला पूनी। २-ग्रास। ३-उद्दंडतापूर्ण बात।

रूई का गाला-सफेद। उजला।

गालित [वि.] (सं.) द्रवीकृत। गलाया हुआ।

गालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र की एक

गालिब [वि.] (अ.) विजयी। जीतने वाला।

ग़ालिम* [वि.] (अ.) प्रबल। दृढ़। बलवान।

गाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुर्वचन। अथवा कलंकसूचक वाक्य। २-कलंकपूर्ण आरोप।

गाली खाना-दुर्वचन सुनना। *गालियों पर उ रना*-गालियां देने लगना। *गालियों पर खोलना*-गाली बकना शुरू करना।

गालीगलौज [संज्ञा स्त्री.] परस्पर गाली देना।

गालीगुफ्ता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गालियों की लड़ाई।

गालना, गाल्हना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) करना।

गालू [वि.] (हिं.) गाल बजाने वाला। व्यर्थ शेखी मारने वाला। गप्पी।

गालोड्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमलगट्टा। २-प्रकार का अन्न।

गाव [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय। बैल।

गावकुशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गोवध।

गावकुस [संज्ञा पु.] (फा.) लगाम।

गावकोहान [संज्ञा पु.] (फा.) कूबड़ निकला हुआ घोड़ा।

गावखाना [संज्ञा पु.] (फा.) गोशाला।

गावखुर्द [वि.] (फा.) १-गायब। लापता। नष्टभ्रष्ट। बरबाद।

गावज़बान [संज्ञा स्त्री.] (फा.) औषध के में आने वाली एक बूटी।

गावजोरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बल-प्रदर्शन। २-हाथापाई। भिड़न्त।

गावड [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गला। गरदन।

गाव-तकिया [संज्ञा पु.] (फा.) वह बड़ा जिसके सहारे कमर लगाकर बैठते हैं। मसनद।

गावदी [वि.] (हिं.) नासमझ। कूढ़मगज़।

गावदुम [वि.] (फा.) जो ऊपर से गाय की के समान पतला होता आया हो। ऊपर नीचे पतला।

गावदुमा [वि.] (फा.) गाय की पूंछ के समान।

गावपछाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का दांव।

गावल [संज्ञा पु.] (हिं.) दल्लाल।

गावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दल्लाली।

गावसुम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) फटे हुए खुर वाला घोड़ा।

गिजगिजा [वि.] (हिं.) १-ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न मालूम दे। २-छूने पर गुलगुला मालूम होने वाला।

गिज़ा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) भोजन। खाद्यवस्तु।

गिटकिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ककड़ी। २-गाने में तान लेते समय विशेष प्रकार का स्वर कम्पन।

गिटकौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कंकड़ी।

गिटपिट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निरर्थक शब्द।
गिटपिट करना-टूटी फूटी या साधारण भाषा का प्रयोग करना या बोलना।

गिट्टक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिलम के छेद पर रखने का कंकड़। चुगल। २-पत्थर का छोटा टुकड़ा।

गिट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) कंकड़। पत्थर का छोटा टुकड़ा।

गिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गेरू के छोटे टुकड़े जो छत पर फैलाकर पीटे जाते हैं। २-सड़क कूटने के काम आने वाले छोटे टुकड़े।

गिठुआ [संज्ञा पु.] (देश.) जुलाहे का करघा या अड्डा।

गिठुरा* [संज्ञा पु.] देखो 'गेठुरा'।

गिड़गिड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) अधिक नम्रता के साथ विनती या प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विनती। प्रार्थना। चिरौरी। २-गिड़गिड़ाने का भाव।

गिड़राज [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

गिड्डा* [वि.] (देश.) नाटा। ठेगना।

गिद्द [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षपालक देवता।

गिद्दा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गीत।

गिद्ध [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मांसभक्षी पक्षी। २-छप्पय छंद का ५२ वां भेद।

गिद्धराज [संज्ञा पु.] (हिं.) जटायु।

गिनगिनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अधिक बल लगाते समय शरीर का कांपना। २-रोमांच हो आना। रोंगटे खड़े होना।
[क्रि. स.] (हिं.) झकझोरना।

गिनती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गिनने की क्रिया या भाव। गणना। २-संख्या। ३-हाजिरी। उपस्थिति की जांच। ४-एक से सौ तक की अंक माला।
गिनती में आना या होना-किसी कोटि में समझा जाना। *गिनती कराना*-किसी श्रेणी में समझा जाना। *गिनती कराने या गिनने के लिये*-नाम मात्र को। *गिनती के*-गिने चुने। *गिनती पर जाना*-१-हाजरी देने या लिखाने जाना। २-गिनना। *गिनती होना*-किसी महत्व का समझा जाना।

गिनना [क्रि. स.] (हिं.) १-गिनती करना। संख्या मालूम करना। २-हिसाब लगाना। ३-कुछ महत्व का समझना।
गिन-गिनकर सुनाना, या देना-बहुत अधिक गालियां देना। *गिन-गिनकर दिन काटना*-बहुत कष्ट के साथ समय बिताना। *गिन गिन कर पैर रखना*-धीरे धीरे सावधानी के साथ चलना। *गिन-गिनकर लगाना*-खूब पीटना। *गिनती से मरना*। १-आशा में समय बिताना। २-किसी प्रकार समय व्यतीत करना।

गिनवाना [क्रि स.] (हिं.) गिनाना।

गिनाना [क्रि. स.] (हिं.) गिनने का काम कराना।

गिनी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सोने का एक अंगरेजी सिक्का।

गिन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चक्कर। घुमाने की क्रिया। २-देखो 'गिनी'।
गिन्नी खाना-चक्कर मारना।

गिब्बन् [संज्ञा पु.] (अं.) मनुष्य के आकार का एक बंदर जो सुमात्रा आदि टापुओं में पाया जाता है।

गिमटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का मज़बूत बेल-बूटेदार सूती कपड़ा।

गिय* [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रीवा। गला। गरदन।

गियाह [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का घोड़ा।

गिरंट [संज्ञा पु.] (अं.) १-गोट लगाने के काम आने वाला एक रेशमी कपड़ा। २-साधारण सूती मलमल।

गिर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहाड़। पर्वत। २-दस प्रकार के संन्यासियों में से एक।

गिरई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

गिरगिट [संज्ञा पु.] (हिं.) छिपकली के आकार का एक जन्तु सूर्य की किरणों की सहायता से अपने शरीर के अनेक रंग बदल लेता है।
गिरगिट की तरह रंग बदलना-बहुत जल्दी अपनी सम्मति या सिद्धांत बदल लेना।

गिरगिटान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गिरगिट'।

गिरगिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सारंगी के आकार का लड़कों का एक खिलौना।

गिरजा [संज्ञा पु.] (पुर्त.) ईसाइयों का प्रार्थना-मन्दिर।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पार्वती। गंगा।

गिरद* [अव्य.] देखो 'गिर्द'।

गिरदा+ [संज्ञा पु.] (फा.) १-चक्कर। घेरा। २-तकिया। ३-काठ की थाली। ४-ढाल। फरी।

गिरदागिरद [क्रि. वि.] देखो 'गिर्दागिर्द'।

गिरदान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गिरगिट।

गिरदानक [संज्ञा पु.] (फा.) करघा घुमाने की लकड़ी।

गिरदाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गले हुए कच्चे लोहे को समेटकर एक करने की अंकुसी।

गिरदावर [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'गिर्दावर'।

गिरदावरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गिरदावर का काम या पद।

गिरधर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गिरधारी'।

गिरधारन* [संज्ञा पु.] देखो 'गिरधारी'।

गिरधारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत को उठाने वाला व्यक्ति। २-श्रीकृष्ण। वासुदेव।

गिरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-एकाएक ऊपर से नीचे को आना। २-भूमि पर पड़ या लेट जाना। अवनति पर होना। ४-किसी नदी का बड़े जलाशय में मिलना ५-शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना। ६-किसी पदार्थ को लेने के निमित्त टूट पड़ना। तेजी से आगे को बढ़ना। ७-जीर्ण या दुर्बल होना। ८-अपने स्थान से हटना। ६-किसी ऐसे रोग का हो जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हुआ माना जाता है—जैसे फालिज गिरना। १०-खेत रहना। ११-कबूतर का नीचे को उतरना।

गिरनार [संज्ञा पु.] (हिं.) गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत पर स्थित जैनियों का एक तीर्थ स्थान।

गिरनारी, गिरनाली [वि.] (हिं.) गिरनार पर्वत का निवासी।

गिरफ्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पकड़ने का भाव। पकड़ने की क्रिया।

गिरफ्तार [वि.] (फा.) १-जो पकड़ा या कैद किया गया हो। २-ग्रस्त। ग्रसा हुआ।

गिरफ्तारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गिरफ्तार होने की क्रिया या भाव।
गिरफ्तारी निकलना—पकड़ने का परवाना या अनुज्ञा निकलना।

गिरबूटी [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगूर। शेफा।

गिरमिट [संज्ञा पु.] (*अं. गिमलेट का अपभ्रंश*) बड़ा बरमा। (लकड़ी में छेद करने का)। [संज्ञा पु.](*अं. एग्रीमेंट का अपभ्रंश*) एकरारनामा। प्रतिज्ञापत्र। स्वीकृतिपत्र।

गिरमिटिया [वि.] (हिं.) एग्रीमेंट या स्वीकृतिपत्र पर हस्ताक्षर करने वाला। एकरारनामा मानने वाला।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एग्रीमेंट या एकरारनामे के अनुसार किसी उपनिवेश में जाने वाला व्यक्ति।

गिरवर [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़। श्रेष्ठ पर्वत।

गिरवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देवता। देव। सुर। [संज्ञा पु.] (फा.) १-कुरते आदि में गले का भाग। २-गला। गर्दन।

गिरवाना [क्रि. स.] (हिं.) गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी [वि.] (फा.) बंधक। रेहन।

गिरवीदार [संज्ञा पु.] (फा.) बंधक या गिरवी रखने वाला मनुष्य।

गिरवीनामा [संज्ञा पु.] (फा.) रेहननामा।

गिरवीपत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) गिरवीनामा। रेहननामा।

गिरह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गांठ। ग्रंथि। २-जेब। खरीता। ३-दो पोरों के जुड़ने का स्थान। गांठ। ४-एक गज का सोलहवां भाग। ५-कुश्ती का एक पेंच। ६-कलैया। कलाबाजी।

गिरहकट [वि.] (हिं.) जेब या गांठ का माल काट लेने वाला।

गिरहदार [वि.] (फा.) गाँठवाला। गंठीला।

गिरहबाज [संज्ञा पु.] (फा.) उड़ते-उड़ते कलाबाजी खा जाने वाला।

गिरहर, गिरहरा [वि.] (हिं.) गिरने वाला।

गिरही* [संज्ञा पु.] (हिं.) गृहस्थ।

गिराँ [वि.] (फा.) अधिक मूल्य का। महँगा।

गिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणी। बोलने की शक्ति। २-जिह्वा। ३-सरस्वती। ४-भाषा। बोली। ५-कविता।

गिराना [क्रि. स.] (हिं.) १-पृथ्वी पर डाल देना। २-पतन करना। ३-अवनत करना। घटाना। ४-जल का बहाव ढाल की ओर करना। ५-बल महत्व आदि कम कर देना। ६-लड़ाई में मार डालना। ७-सहसा उपस्थित करना।

गिरानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-महंगापन। मूल्य अधिक होना। २-अकाल। ३-अभाव। कमी ४-पेट का भारीपन।

गिरापति [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

गिरापितु* [संज्ञा पु.] (हिं.) सरस्वती के पिता। ब्रह्मा।

गिराब [संज्ञा पु] (अं.) तोप का गोला जिसमें गोली और छर्रे होते हैं।

गिराव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गिरने का भाव।

गिरावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गिरने की क्रिया या भाव।

गिरावना+ [क्रि. स.] (हिं.) गिराना।

गिरास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ग्रास'।

गिरासना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ग्रसना'।

गिराह*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्राह या मगर नामक जलजंतु।

गिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। पहाड़। २-तांत्रिक संन्यासियों का एक भेद। ३-परिव्राजकों की एक उपाधि। ४-पारे का एक दोष।

गिरिकंटक, गिरिकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

गिरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-पर्वत से उत्पन्न होने वाला।

गिरिकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अपरा लता। २-अपामार्ग। चिचिड़ा।

गिरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुहिया। मुसरी।

गिरिकानन [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ी जंगल।

गिरिकूट [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ की चोटी।

गिरिज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिलाजीत। लोहा। ३-अभ्रक। ४-गेरू।

गिरिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। गं

गिरिजापति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादे

गिरिजामल [संज्ञा पु.] (सं.) अभ्रक।

गिरिजावीज [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

गिरिज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

गिरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। शि समुद्र।

गिरिदुर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ पर बना

गिरिधर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

गिरिधरन* [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

गिरिधातु [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू।

गिरिधारण [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

गिरिधारन* [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

गिरिधारी [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

गिरिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

गिरिनंदिनी, नन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती। २-गंगा। ३-नदी।

गिरिनगर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत पर बसा नगर।

गिरिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

गिरिनिंब, गिरिनिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) यन।

गिरिपथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़ी रास्ता। दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा।

गिरिपीलु [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा।

गिरिपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) पत्थरफोड़ पौधा।

गिरिप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुरागाय।

गिरिबांधव, गिरिबान्धव [संज्ञा पु.] शिव। महादेव।

गिरिभिद [संज्ञा पु.] (सं.) पाषाणभेद।

गिरिभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-पहाड़ी जमीन।

गिरिमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटज। कौरैया।

गिरिभृत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गेरू।

गिरिराज [संज्ञा पुं.] (सं.) १-बड़ा पर्वत। २-हिमालय। ३-गोबर्द्धन पर्वत। ४-मेरु।

गिरिवासी [वि.] (सं.) पर्वत पर रहने वाला।

गिरिव्रज [संज्ञा पु.] (सं.) मगध देश के एक प्राचीन नगर का नाम।

गिरिशाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाज पक्षी।

गिरिशालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराजिता लता।

गिरिशृंग, गिरिश्रृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़ की चोटी। २-गणेश।

गिरिसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहा। २-शिलाजीत। ३-रांगा। ४-मलय पर्वत।

गिरिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) मैनाक पर्वत।

गिरिसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

गिरिस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

गिरींद्र, गिरीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिमालय। २-शिव। ३-बड़ा पहाड़।

गिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी बीज के भीतर का गूदा। २-देखो 'गिरि'। ३-देखो 'गरी'।

गिरीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-हिमालय। ३-सुमेरु पर्वत। ४-कैलास पर्वत। ५-कोई बड़ा पहाड़।

गिरेबान [संज्ञा पु.] (हिं.) पहनने के कपड़े का वह भाग जो गरदन के चारों ओर रहता है।

गिरैवा [संज्ञा पु.] (हिं) १-छोटी पहाड़ी। २-चढ़ाई का रास्ता।

गिरेश [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ब्रह्मा। २ विष्णु।

गिरैयाँ [वि.] (हिं.) गिरने वाला।

गिरो [वि.] (फ़ा.) रेहन। बंधक। गिरवी।

गिर्गिट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गिरगिट'।

गिर्जा, गिर्जाघर [संज्ञा पु.] देखो 'गिरजा'।

गिर्द [अव्य.] (फ़ा.) आस पास। चारों ओर।

गिर्दावर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-घूमने या दौरा करने वाला। २-घूमघूमकर काम की जांच करने वाला।

गिल [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मिट्टी। २-गारा।

गिलकार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) गारे का पलस्तर करने वाला व्यक्ति।

गिलकारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) गारा लगाने का कार्य।

गिलकिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घियातोरी।

गिलगिल [संज्ञा पु.] (सं.) नक्र। घड़ियाल।

गिलगिलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिरोही नामक पक्षी।

गिलगिली [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़े की एक जाति।

गिलट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी धातु पर सोना या चाँदी चढ़ाने का काम। २-चाँदी के समान सफेद, हलकी तथा कम मूल्य की धातु।

गिलटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चेप की गोल छोटी गाँठ जो शरीर के भीतर संधि-स्थान पर होती है। २-एक रोग जिसमें गांठें फूल जाती हैं।

गिलन [संज्ञा पु] (सं.) निगलना। लीलना।

गिलना※ [क्रि. स.] (हिं.) १-निगलना। २-मन में रखना। प्रकट न होने देना।

गिलबिला [वि.] (हिं.) पिलपिला।

गिलबिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) अस्पष्ट वचन बोलना।

गिलम [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-नरम और चिकना ऊनी कालीन। २-मोटा और मुलायम बिछौना।

गिलमिल [संज्ञा पु.] (देश.) पुराने जमाने के एक कपड़े का नाम।

गिलसुर्ख [संज्ञा स्त्री.] गेरू।

गिलहरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धारीदार मोटा वस्त्र।

गिलहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूहे जैसा, एक चपल जंतु जिसकी पीठ पर सफेद और काली धारियां और पूंछ रोंयेदार होती है। यह वृक्षों पर रहता है।

गिला [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-उलाहना। २-शिकायत। निंदा।

गिलई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गिलहरी।

गिलान+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ग्लानि। घृणा।

गिलाफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-लिहाफ आदि का खोल। २-लिहाफ। बड़ी रजाई। ३-कोश। म्यान।

गिलाय [संज्ञा स्त्री.] (अ.) गिलहरी।

गिलायु [संज्ञा पु.] (सं.) गले में गांठ पड़ने का एक रोग।

गिलावा+ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) गीली मिट्टी। गारा।

गिलास [संज्ञा पु.] (हिं.) (अं. *ग्लास*) एक गोल लम्बोतरा बरतन जो पानी पीने के काम आता है।

गिलिम [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गिलम'।

गिली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुल्ली'।

गिलेफ+ [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'गिलाफ़'।

गिलोय [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) गुड़ची। गुरुच।

गिलोला [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) गुले से फेंके जाने वाली मिट्टी गोली।

गिलौंदा + [संज्ञा पु.] देखो 'गुलैंदा'।

गिलौरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पान का बीड़ा।

गिलौरदान [संज्ञा पु.] (हिं.) पानदान। पान रखने का डिब्बा।

गिल्टी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गिलटी'।

गिल्यान※ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ग्लानि'।

गिल्ला [संज्ञा पु.] देखो 'गिला'।

गिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुल्ली।

· *गिल्लियाँ गढ़ना*–व्यर्थ बकवाद करना।

गिष्ण, गिष्णु [संज्ञा पु] (सं.) १-सामवेद का गायक। २-गवैया। गायक।

गींजना [क्रि. स.] (हिं.) किसी कोमल पदार्थ विशेषत: कपड़े, फूल को हाथ से इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय।

गींव+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गला। ग्रीवा।

गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणी। बोलने की शक्ति। २-सरस्वती देवी।

गीउ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गींव'।

गीठम [संज्ञा पु.] (देश.) कम दाम का सादा गलीचा।

गीड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख का कीचड़।

गीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाय। २-बड़ाई। यश।

गीत गाना–बड़ाई करना।

गीतक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक प्रकार की तान।

गीतगोविंद, गोविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) महाकवि जयदेव रचित एक गीत काव्य।

गीतज्ञ [वि.] (सं.) संगीत-शास्त्र में निपुण। गीत जानने वाला।

गीतप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

गीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह उपदेशात्मक ज्ञान जो किसी बड़े से इच्छा प्रकट करने पर प्राप्त हो। २-भगवद्गीता। ३-वृत्तान्त। कथा। ४-संकीर्ण राग का एक भेद। ५-छब्बीस मात्रा का एक छंद जिसमें चौदह तथा बारह मात्राओं पर विराम होता है।

गीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गान। गीत। २-आर्या छंद का एक भेद जिसमें विषम चरणों में १२ तथा सम चरणों में १८ मात्राएं होती हैं।

गीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-२६ मात्रा का एक छंद जिसमें चौदह और १२ पर यति होती है और अन्त में लघु गुरु होते हैं। २-एक वर्ण वृत्त जिसके प्रति चरण में (स+ज+ज+भ+र+स+लघु+गुरु) होते हैं। ३-गीत। गाना।

गीतिकाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह काव्य जो प्रधानतः गाने के निमित्त बना हो।

गीतिरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) वह रूपक जिसमें गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक रहता है।

गीत्यार्या [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पांच नगण और एक लघु होता है।

गीथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाक्य। २-गीत। गाना।

गीदड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) शृगाल। सियार।

गीदड़ भबकी–मन में डरते रहने पर भी ऊपर

से साहस दिखाना ।

गीदड़ बोलना–असगुन होना ।

[वि.] डरपोक । साहसहीन ।

गीदड़रूख [संज्ञा पु.] (हिं.) मझोले कद का एक पेड़ ।

गीदर [संज्ञा पु.] (हिं.) गीदड़ ।

गीदी [वि.] (फा.) डरपोक । कायर ।

गीध [संज्ञा पु.] (हिं.) गृद्ध । गिद्ध ।

गीधना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) एक बार लाभ उठा कर सर्वदा वही अभिलापा रखना । परचना । लुब्ध होना ।

गीवत+ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–अनुपस्थिति । गैरहाजरी । २–चुगलखोरी । पिशुनता ।

गीर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिरा । वाणी ।

गीरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–वृहस्पति का एक नाम । २–जीवात्मा ।

गीरवाण, गीरवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देवता । सुर ।

गीर्ण [वि.] (सं.) १–वर्णित । कहा हुआ । २–निगला हुआ ।

गीर्णि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वर्णन । स्तुति । २–निगलने का कार्य या क्रिया ।

गीर्देवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती । शारदा ।

गीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–वृहस्पति । २–विद्वान । पंडित ।

गीर्वाण [संज्ञा पु.] (सं.) सुर । देवता ।

गीर्वाणकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) लवंग । लौंग ।

गीर्लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी मालकँगनी ।

गीला [वि.] (हिं.) भीगा हुआ । तर । नम ।

गीलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) गीला होने का भाव । तरी । नमी ।

गीली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बहुत ऊंचा वृक्ष ।

गीव, गीवा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ग्रीवा । गरदन ।

गीष्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १–बृहस्पति । २–विद्वान । पंडित ।

गुंग+ [वि.] देखो 'गूंगा' ।

गुंगबहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लम्बी मछली जो सांप के समान मालूम होती है । बाम । बांबी ।

गुंगा+ [वि.] देखो 'गूंगा' ।

गुंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोमुँहा साँप ।

गुंगुआना [क्रि. अ.] (हिं.) १–गूंगे के समान बोलना । अस्पष्ट शब्द निकालना । २–धुंआ देना । ठीक तरह न जलना ।

गुंचा [संज्ञा पु.] (अ.) १–कली । २–नाच रंग । विहार ।

गुंचा खिलना–खूब नाच रंग होना ।

गुंची [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'घुंघची' ।

गुंज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भौंरों के भनभनाने का शब्द । गुंजार । २–कलरव । आनन्द ध्वनि । ३–घुंघची ।

गुंजन, गुञ्जन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–भौंरों की गूंज या भनभनाहट । २–कोमल मधुर ध्वनि ।

गुंजना [क्रि. स.] (हिं.) १–भौंरों का भनभनाना । गुंजार करना । २–मधुर ध्वनि निकालना ।

गुंजनिकेतन [संज्ञ पु.] (सं.) भौंरा । मधुकर ।

गुंजरना [क्रि. स.] (हिं.) १–गुंजार करना । २–मधुर ध्वनि निकालना । ३–शब्द करना । ४–गरजना ।

गुंजा, गुञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुंघची ।

गुंजाइश [संज्ञा पु.] (फा.) १–स्थान । जगह । अवकाश । सुभीता । समाई ।

गुंजान [वि.] (फा.) अविरल । घना । सघन ।

गुंजायमान [वि.] (सं.) गूंजता हुआ ।

गुंजार [संज्ञा पु.] (हिं.) भौंरों की गूंज ।

गुंजारित, गुञ्जारित [वि.] (सं.) गुंजारयुक्त । गुंजार किया हुआ ।

गुंजित, गुञ्जित [वि.] (सं.) भौंरों के गुंजार से युक्त ।

गुंजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के कान में पहनने का आभूषण ।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–दही में खाने का एक बड़ा । २–एक मिठाई ।

गुंटा [संज्ञा पु.](देश.) छोटा तालाब या जलाशय ।

गुंठा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का नाटा घोड़ा । टट्टू ।

[वि.] (देश.) नाटा । बौना ।

गुंड [संज्ञा पु.] (?) मलार राग का एक भेद ।

गुंडई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुंडापन । शोहदापन ।

गुंडली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कुंडली । २–गेंडुरी ।

गुंडा [वि.] (हिं.) १–व्यर्थ लोगों से लड़ने भिड़ने वाला । कुमार्गी । बदमाश । २–छैल चिकनिया ।

गुंडापन [संज्ञा पु.] (हिं.) अकारण लोगों से लड़ने झगड़ने या मारपीट करने का काम । बदमाशी ।

गुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गेंडुरी' ।

गुंथना [क्रि. अ.](हिं.) १–तागों या बालों की लट आदि का उलझना । २–मोटे टांकों से सिलना ।

गुंदला [संज्ञा पु.] (हिं.) नागरमोथा नामक घास ।

गुंदीला* [वि.] (हिं.) देखो 'गोंदीला' ।

गुंधना [क्रि. अ.] (हिं.) १–(पानी डालकर) गूंधा या मांड़ा जाना । २–देखो 'गुंथना' ।

गुंधवाना [क्रि. स.] (हिं.) गूंधने का काम कराना ।

गुंधाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गूंधने या मांड़ने की क्रिया या भाव । २–गूधने या मांड़ने उजरत । ३–गूथने की क्रिया या भाव । गूंथने की मजदूरी ।

गुंधावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गूंथने या गूंधने का ढंग । २–गूंथने या गूंथने की क्रिया भाव ।

गुंफ, गुम्फ [संज्ञा पु.] (सं.) १–उलझन । २–गुच्छा । ३–दाढ़ी । ४–गलमुच्छा । कारणमाला अलंकार ।

गुंफन, गुम्फन [संज्ञा पु.] (सं.) गूंथना ।

गुंफित, गुम्फित [वि.] (सं.) गुथा हुआ ।

गुंबज, गुम्बज [संज्ञा पु.] (फा.) गोल उभरी हुई छत ।

गुंबजदार [वि.] (फा.) जिसके ऊपर गुम्बज हो ।

गुंबद [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'गुंबज' ।

गुंबा [संज्ञा पु.] (हिं.) माथे या सिर पर लगने से उभड़ आने वाली कड़ी सूजन । गुलमा ।

गुंभी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंकुर । गाभ ।

गुंमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाल खींचने की

गुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चिकनी सुपारी । सुपारी ।

गुआर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्वार' ।

गुआरपाठा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ग्वारपाठा' ।

गुआरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्वार' ।

गुआलिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्वार' ।

गुइयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सखी । सहचरी ।

[संज्ञा पु.] सखा । साथी ।

गुखरू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोखरू' ।

गुगरल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बतख ।

गुगुलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्दर नचाने वाला । मदारी ।

गुग्गुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुग्गुल' ।

गुग्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) एक कांटेदार वृक्ष जिस का गोंद सुगंध के लिये जलाया जाता है । गूगल ।

गुच [संज्ञा पु.] (हिं.) दाढ़ी वाली भेड़ ।

गुची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आधी ढोली या सौ पानों की गड्डी ।

गुच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गुल्ली डंडे के खेल में खोदा जाने वाला बहुत छोटा गड्ढा । २–बहुत छोटा गड्ढा ।

[वि.] बहुत छोटी ।

गुच्चीपारा, गुच्चीपाला [संज्ञा पु.] (हिं.) कौड़ियां गड्ढे में फैंकने का खेल ।

गुच्छ, गुच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) १–गुच्छा । २–वह पौधा जिसमें केवल पत्तियां या पतली टहनियां फैलें । झाड़ । ३–मोर की पूंछ ।

गुच्छदंतिका, गुच्छदन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

ला। कदली।

गुच्छपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

गुच्छपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-अशोक वृक्ष। २-रीठा।

गुच्छा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक में लगे या बंधे हुए पत्तों और फूलों का समुदाय। २-एक में लगी अथवा बंधी हुई छोटी वस्तुओं का समूह। ३-फुंदना। झब्बा।

गुच्छी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-करंज। कंजा। २-एक प्रकार की खुम्मी जिसकी तरकारी बनती है।

गुजर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-निकास। गति। २-पैठ। पहुँच। प्रवेश। ३-निर्वाह। कालक्षेप।

गुजरना [क्रि. अ.] (फ़ा.) १-समय बीतना। २-किसी स्थान से होकर आना जाना। ३-नदी पार करना। ४-निर्वाह होना। *किसी पर गुजरना*-किसी पर (संकट या विपत्ति) पड़ना। *गुजर जाना*-मर जाना।

गुजरबसर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) निर्वाह। गुजारा।

गुजरबान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-पार उतारने वाला मल्लाह। २-घाट की उतराई लेने वाला व्यक्ति।

गुजरात [संज्ञा पु.] (हिं.) भारत के दक्षिण-पश्चिम का प्रदेश।

गुजराती [वि.] (हिं.) १-गुजरात देश का २-गुजरात का बना हुआ।
[संज्ञा स्त्री.] १-गुजरात देश की भाषा। २-छोटी इलायची।

गुजरान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) निर्वाह। गुजर। कालक्षेप।

गुजराना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'गुजारना'।

गुजरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन।

गुजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची। २-दीपक राग की एक रागिनी।

गुजरेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गूजर जाति की कन्या। २-ग्वालिन।

गुजरेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) गूजर जाति का लड़का। २-ग्वाला।

गुजश्ता [वि.] (फ़ा.) वीता हुआ।

गुजारना [क्रि. स.] (फ़ा.) विताना। काटना।

गुजारा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-गुजर। निर्वाह। २-जीवन निर्वाह के निमित्त मिलने वाली वृत्ति। ३-महसूल लेने का स्थान।

गुजारिश [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) निवेदन।

गुजी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नथनों में सूखकर जमा हुआ नाक का मल।

गुजुआ [संज्ञा पु.] (देश.) गोबर का कीड़ा। गोबरैला।

गुझा [संज्ञा पु.] (हिं) १-बांस की कील। २-गोभा। ३-गूदा।
[वि.] (हिं.) छिपाहुआ। अप्रकट।

गुझाना+ [क्रि. स.] (हिं.) छिपाना।

गुझराट*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े की सिकुड़न। २-स्त्रियों की नाभि के पास का भाग।

गुझरौट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुझराट'।

गुझिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़े के आकार का एक पकवान। २-एक प्रकार की मिठाई।

गुझौट* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुझरौट'।

गुटकना [क्रि. अ.] (हिं.) कबूतर के समान शब्द करना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-निगलना। २-खाजाना।

गुटका [संज्ञा पु.] (हिं.)१-छोटे आकार की पुस्तक २-लट्टू। ३-गुपचुप मिठाई। ४-एक प्रकार का मसाला। ५-देखो 'गुटिका'।

गुटरगू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कबूतर की बोली।

गुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोली। वटी। २-एक प्रकार की सिद्धि जिसमें एक गोली मुख में रखने से मनुष्य दिखाई नहीं देता।

गुट्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) समूह। झुंड। दल।
गुट्ट बांधना-झुंड इकट्ठा करना। *गुट्ट करना*-मिलकर सलाह करना।

गुट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) चौकोर गोटी जिनसे लड़कियां खेला करती है।
[वि.] (देश.) नाटा। ठेंगना।

गुट्ठल [वि.] (हिं.) १-(फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २-जड़। मूर्ख ३-गुठली के आकार का।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-गांठ। २-गिल्टी।

गुठली संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी फल का बड़ा और कड़ा बीज।

गुडंबा [संज्ञा पु.] (हिं.) चीनी में पकाया हुआ कच्चे आम का गूदा।

गुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) ऊख, खजूर आदि का रस पकाकर बनाई हुई भेली।
कुल्हिया में गुड़ फोड़ना-गुप्त रीति से कोई कार्य या सलाह होना। *गुड़ दिखाकर ढेला मारना*-कुछ लालच देकर फिर ऐसा बरताव करना जिससे न मिले बल्कि उलटा कष्ट उठाना पड़े। *गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दे*-जब नरमी से काम निकले तब कड़ाई करने की क्या आवश्यकता। *गुड़ खाना गुलगुलों से परहेज*-किसी काम का बड़ा भाग करना। छोटे से दूर रहना।
गुड़ होगा तो मक्खियाँ बहुत आ जायंगी-धन पास में होगा तो खाने वाले बहुत आ जाएंगे।

गुड़गुड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्द जल में नली आदि द्वारा वायु प्रवेश होने का शब्द।

गुड़गुड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-गुड़गुड़ शब्द करना। २-हुक्का पीना।
[क्रि. अ.] गुड़गुड़ शब्द होना।

गुड़गुड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुड़गुड़ शब्द होने का भाव।

गुड़गुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का हुक्का। फरशी।

गुड़च [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुरुच'।

गुड़धनिया, गुड़धानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुने हुए गेहूँ या जौ को गुड़ में मिलाकर बनाया हुवा लड्डू।

गुड़ना [क्रि. स.] (हिं.) पलटा खाता हुआ चला जाना।
[संज्ञा पु.] एक प्रकार का लड़कों का खेल।

गुड़हर [संज्ञा पु.] (हिं.) अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

गुड़हल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुड़हर'।

गुड़ाकू [संज्ञा पु.] (हिं.) गुड़ मिला पीने का तमाखू।

गुड़ाकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन। २-शिव। महादेव।

गुड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोली।

गुड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़े की पुतली जिससे लड़कियां खेलती हैं।
गुड़िया-सी-छोटी और सुन्दर। *गुड़िया संवारना*-हैसियत के अनुसार लड़की का विवाह करना। *गुड़ियों का खेल जानना, समझना*-सरल काम।

गुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुड्डी। पतंग। कनकौवा। २-गोली। कपट की गाँस।

गुडुच [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुरुच'।

गुडुरू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किवाड़ की चूल। २-छोटा छेद।

गुडुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े का बना हुआ पुतला।

गुडूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुरुच। गिलोय।

गुड्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े का बना पुतला जिससे लड़कियाँ गुड़िया का विवाह रचाती हैं। २-बड़ी पतंग।
गुड्डा बांधना-निन्दा करना।

गुड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पतंग। कनकौवा। २-घुटने की हड्डी। ३-एक प्रकार का हुक्का।

गुड्डू [संज्ञा पु.] (हिं.) धूल में घर बनाकर रहने वाला एक कीड़ा। [संज्ञा स्त्री.] देखो गुडुरू'

गुढ़* [संज्ञा पु.] (हिं.) छिपकर रहने की जगह।

गुढ़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छिपना। २-गूढ़ अर्थ समझना।

गुढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) छिपने का गुप्त स्थान।

गुढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाँठ गुत्थी।

गुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु में विद्यमान वह बात जिसके द्वारा वह वस्तु जो दूसरी वस्तु से पहचानी जाय या अलग मानी जाय।

धर्म। प्रॉपर्टी। २-प्रकृति के सत्व, रज और तम यह तीन भाव। ३-निपुणता। प्रवीणता। ४-कला अथवा विद्या। हुनर। ५-असर। तासीर। ६-अच्छा स्वभाव। शील। ७-विशेषता। ८-तीन की संख्या। ९-प्रकृति। १०-रस्सी, डोरा, या तागा। ११-धनुष की डोरी।

गुण गाना-प्रशंसा करना। *गुण मानना*-एहसान मानना। *गुण छाँटना*-किसी के महत्व को न समझना।

[प्रत्य.] एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार होना सूचित करता है। जैसे-द्विगुण।

गुणक [संज्ञा पु.] (सं.) वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करते हैं।

गुणकथन [संज्ञा पु.] (सं.) गुणों को वर्णन।

गुणकर [वि.] (सं.) लाभदायक।

गुणकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

गुणकर्म [संज्ञा पु॰] (सं.) १-गुण और कर्म। २-देखो कर्म।

गुणकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-संगीत-विद्या का पूर्ण ज्ञाता। २-रसोइया। पाचक। ३-पाक-विद्या का पूर्ण ज्ञाता। ४-भीमसेन।

गुणकारक [वि.] (सं.) लाभदायक।

गुणकारी [वि.] (सं.) लाभदायक।

गुणकिरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम

गुणकेली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

गुणगान [संज्ञा पु.] (सं.) यश का बखान। गुण-कीर्तन।

गुणगौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पतिव्रता। २-सुहागिन। ३-स्त्रियों का एक व्रत।

गुणग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) गुणों का समूह। गुण की खान।

गुणग्राहक [संज्ञा पु.] (सं.) गुणों अथवा गुणियों का आदर करने वाला व्यक्ति। कदरदान।

गुणग्राही [वि] (सं.) गुण की खोज करने वाला।

गुणज्ञ [वि.] (सं.) १-गुण को पहचानने वाला। गुण का पारखी। २-गुणी।

गुणज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुण की परख या पहचान।

गणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'गुणत्व'।

गुणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्रव्य ज्ञान के अधीन ज्ञान। २-अधीनता। ३-रस्सी की आकृति।

गुणत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) सत्व, रज और तम' यह तीन गुण।

गुणदोषविचार [संज्ञा पु.] (सं.) गुणागुण का विवेचन। गुण और दोष का विचार।

गुणन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुण। जरब। २-गिनना। ३-अनुमान करना। ४-रटना। उद्धरणी करना। ५-सोचना।

गुणनफल [संज्ञा पु.] (सं.) वह संख्या जो दो अंकों को गुणा करने से निकले या प्राप्त हो।

गुणना [क्रि. स.] (हिं.) १-गुणा करना। जरब देना। २-देखो 'गुनन'।

गुणनिधि [वि.] (सं.) देखो 'गुणसागर'।

गुणनीय [वि.] (सं.) गुण करने योग्य।

गुणप्रिय [वि.] गुणानुरागी।

गुणमय [वि.] (सं.) १-गुणात्मक। गुणस्वरूप। २-गुणयुक्त।

गुणवंत, गुणवन्त [वि.] (हिं.) जिसमें गुण हों। गुणी।

गुणवती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] गुणवाली।

गुणवाचक [वि.] (सं.) गुणों को प्रकट करने वाला।

गुणवाचकसंज्ञा [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।

गुणवाद [संज्ञा पु.] (सं.) मीमांसा में अर्थवाद का एक भेद।

गुणवान् [वि.] (सं.) गुणी। गुणवाला।

गुणविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीमांसा में वह विधि जिसमें गुण कर्म का विधान हो।

गुणव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार मूल व्रतों की रक्षा करने वाले तीन व्रत।

गुणशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) गुणों का बोध कराने वाले शब्द।

गुणशील [वि.] (सं.) सच्चरित्र। अच्छे गुण वाला।

गुणसागर [वि.](सं.) गुणों से भरा। गुणों का समुद्र। [संज्ञा पु.] हिंडोल राग का एक पुत्र।

गुणहीन [वि.] (सं.) जिसमें कोई गुण न हो। गुणशून्य।

गुणांक, गुणाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह अंक जिसे गुणा कराना हो।

गुणा [संज्ञा पु.] (हिं.) गणित में जोड़ की एक संक्षिप्त क्रिया जिसके द्वारा कोई संख्या एक बार में ही कई गुनी करली जाती है। जरब।

गुणाकार [वि.] (सं.) जिसमें बहुत से गुण हों। गुण-निधान।

गुणाख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) गुण या यश का कीर्तन या बखान।

गुणाढ्य [वि.] (सं.) गुणपूर्ण। बहुत से गुण-वाला।

गुणातीत [वि.](सं.) जो गुणों के प्रभाव से परे हो। त्रिगुणात्मिका से निर्लिप्त।

[संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

गुणानुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) गुणकथन। प्रशंसा बड़ाई।

गुणापवाद [संज्ञा पु.] (सं.) गुण की निंदा।

गुणावली [संज्ञा स्त्री] (सं.) गुणा कराने की प्रणाली या ढंग।

गुणित [वि.] (सं.) गुणा किया हुआ।

गुणी [वि.] (सं.) गुण वाला। जिसमें को हो।

[संज्ञा पु.] १-निपुण व्यक्ति। पुरुष। २-ओझा। झाड़ फूंक करने वा

गुणीभूतव्यंग, गुणीभूतव्यङ्ग [संज्ञा पु.] वह काव्य जिसमें व्यंगार्थ वाच्यार्थ या समान हो, अधिक न हो।

गुणेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीनों प्रभुत्व रखने वाला। परमेश्वर। चित्रकूट पर्वत।

गुणोपेत [वि.] (सं.) १-जिसमें गुण हों। २-किसी कला में निपुण।

गुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह अंक करना हो।

गुण्यांक, गुण्याङ्क [संज्ञा पु.] जो गुणा किया जाय।

गुत्ता+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-लगान का व्यवहार। २-लगान।

गुत्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) चटाई के समान का नैचा।

गुत्थमगुत्था [संज्ञा पु.] (हिं.) १- फँसाव। २-हाथापाई।

गुत्थी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक में गुथने से गांठ। उलझन।

गुत्स [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गुच्छ'।

गुथना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कई वस्तुओं में उलझ जाना। २-भद्दे तौर से सीया ३-लड़ने के लिए किसी से लिपट जा गाँथा जाना।

गुथुवाँ [वि.] (हिं.) गुथकर बनाया हुआ।

गुथवाना [क्रि. स.] (हिं.) गूथने का वाना।

गुद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुदा। गांड़।

गुदकार, गुदकारा [वि.] (हिं.) १-गूदेदार। गुदगुदा। मोटा।

गुदकील [संज्ञा पु.] (सं.) अर्शरोग। बवासीर।

गुदगदा [वि.] (हिं.) १-गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २-मुलायम।

गुदगदाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हंसाने के लिए कांख, तलवे, पेट आदि मांसल स्थानों उङ्गली आदि फेरना। २-विनोद के छेड़ना। ३-उत्सुकता उत्पन्न करना।

गुदगदाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुदगदी'।

गुदगदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बगल, पेट कोमल अंगों के छुने या सहलाने से होने वाला मधुर अनुभव। २-उत्कंठा। ३- उमंग। ४-प्रसंगेच्छा। चुल।

गुदगुदी करना-गुदगुदाना।

गुदग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) कोष्टबद्ध का रोग।

गुदड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुदड़ी लपेटने

पहनने वाला। २-फटे पुराने कपड़े बेचने वाला। ३-खेमादारी आदि भाड़े पर देने वाला।

गुदड़ियाफ़क़ीर [संज्ञा पु.] (हिं.) गुदड़ी पहनने वाला साधु।

गुदड़ियापीर [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव के पास का वह वृक्ष जिस पर ग्रामीण लोग चिथड़े लटका कर मनौती मानते हैं।

गुदड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फटे पुराने वस्त्र का बना हुआ ओढ़ना या बिछौना।

गुदड़ी में लाल–तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु। *गुदड़ी का लाल*–ऊपर से सीधा और गरीब पर बड़ा धनी या गुणी।

गुदड़ीबाजार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बाजार जिसमें पुरानी या टूटी फूटी वस्तुएं बिकती हों।

गुदनहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गोदनहारी'।

गुदना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोदना'।
[क्रि. अ.] (हिं.) चुभना। धंसना। गड़ना।

गुदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गोदनी'।

गुदपाक [संज्ञा पु.] गुदा के पक जाने का एक रोग

गुदभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) गुदा से कांच निकलने का रोग।

गुदमा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा और नरम कंबल।

गुदरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'गुजरना'।
[क्रि. स.] (हिं.) १-निवेदन करना। २-उपस्थित करना। पेश करना।

गुदरानना* [क्रि. स.] (हिं.) १-पेश करना। उपस्थित करना। २-निवेदन करना।

गुदरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुदड़ी।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का नीबू।

गुदरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुदड़ी'

गुदरैन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पढ़ा हुआ पाठ सुनाना। २-परीक्षा।

गुदांकुर, गुदाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) अर्श। बवासीर।

गुदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मलद्वार। गांड़।

गुदाज़ [वि.] (फ़ा.) गूदेदार।

गुदाना [क्रि. स.] (हिं.) गोदने की किया कराना।

गुदाम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोदाम'। २-+बटन। घुण्डी।

गुदार+ [वि.] (हिं.) गूदेदार।

गुदारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाव से नदी पार होने की क्रिया। २-गुजारा।
[वि.] (हिं.) देखो 'गुदार'।

गुदियारा+ [वि.] (हिं.) देखो 'गुदकारा'।

गुदी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नदी के किनारे का नावें मरम्मत करने का स्थान।

गुदुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-मटर की फली। २-मटर की फसल को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा।

गुद्दा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गूदा। गांड।
[संज्ञा पु.] (देश.) पेड़ की मोटी डाल।

गुद्दी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गिरी। मींगी। मग्ज। २-सिर का पिछला भाग। ३-हथेली का मांस।

गुद्दी नापना–गुद्दी पर धौल जमाना।

गुन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुण'।

गुनगुन [संज्ञा पु.] (हिं.) भौंरे के उड़ने से होने वाला शब्द।

गुनगना [वि.] (हिं.) १-नाक में बोलने वाला। २-कुनकुना। थोड़ा गरम।

गुनगुनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाक में बोलना। २-गुनगुन शब्द करना। अस्पष्ट स्वर में गाना।

गनना [क्रि. स.] (हिं.) १-गुणा करना। जरब देना। २-गिनना। ३-रटना। उद्धरणी करना। ४-सोचना। ५-समझना। मानना।

गुनवंत+ [वि.] (हिं.) जिसमें कोई गुण हो। गुणी।

गुनहगार [वि.] (फ़ा.) १-पापी। २-दोषी। अपराधी।

गुनहगारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-पाप। २-अपराध। दोष।

गुनही+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गुनहगार। अपराधी।

गुना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लग कर उसका उतनी बार होना सूचित करता है। २-गुणा। (गणित)।

गुनावन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मन में कुछ सोचने का काम। विचार।

गुनाह [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-पातक। पाप। २-अपराध। दोष।

गुनाही [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-पापी। २-दोषी।

गुनिया, गुनियाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुणवान्। २-कोने की सीध नापने का राज बढ़इयों का एक औजार। ३-नाव की नून खींचने वाला मांझी।

गुनी, गुनीला [वि., संज्ञा पु.] देखो 'गुणी'।

गुनोवर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का देवदार।

गुन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ब्रज में होली के अवसर पर एक दूसरे को (स्त्री-पुरुष) को मारने का कोड़ा।

गुपचुप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की मिठाई। २-लड़कों का एक खेल। ३-एक प्रकार का खिलौना।
[क्रि. वि.] (हिं.) गुप्त रीति से। चुपचाप।

गुपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोपाल'।

गुप्त [वि.] (सं.) १-छिपा हुआ। २-गूढ़। ३-रक्षित। [संज्ञा पु.] वैश्यों की उपाधि।

गुप्तकाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरिद्वार और बदरीनाथ के बीच में आने वाला एक तीर्थ स्थान।

गुप्तचर [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्तरूप से किसी बात का पता लगाने वाला। भेदिया। जासूस।

गुप्तदान [संज्ञा पु.] (सं.) वह दान जिसे दाता के अतिरिक्त और कोई न जानता हो।

गुप्तमार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भीतरी मार। २-छिपकर किया हुआ अनिष्ट।

गुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रेम संबंध छिपाने वाली परकीया नायिका। २-रखेली। रखनी।

गुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छिपाने की क्रिया। २-रक्षा करने की क्रिया। ३-कारागार। कैदखाना। ४-गुफा। कंदरा। ५-अहिंसा आदि योग के अंग। ६-तंत्र के अनुसार मन्त्र का संस्कार।

गुप्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह छड़ी जिसमें किरच या पतली तलवार छिपी हो।

गुप्तोत्प्रेक्षा [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रतीयमान उत्प्रेक्षा।

गुप्फा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फुंदना। झब्बा। २-फूलों का गुच्छा।

गुफा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कंदरा। गहा।

गुफ्तगू [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) वार्त्तालाप।

गुबरैला [संज्ञा पु.] (हिं.) गोबर का कीड़ा।

गुबार [संज्ञा पु.] (अ.) १-गर्द। धूल। २-मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।

गुबारा [संज्ञा पु.] देखो 'गुब्बारा'।

गुविंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोविंद'।

गुब्बा [संज्ञा पु.] (देश.) रस्सी के बीच में डाला हुआ फंदा।

गुब्बाड़ा, गुब्बारा [संज्ञा पु.] (हिं.) कागज, रबर आदि की थैली जिसमें धुआं या हवा भरकर आकाश में उड़ाते हैं।

गुभ [संज्ञा पु.] (देश.) समुद्र की खाड़ी।

गुभीला [संज्ञा पु.] (देश.) बद्धकोष्ठ के कारण होने वाला कड़ा मल।

गुम [वि.] (फ़ा.) १-गुप्त। छिपा हुआ। २-अप्रसिद्ध। ३-खोया हुआ।

गुमक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गमक'।

गुमकना [क्रि. स.] (हिं.) शब्द का भीतर ही भीतर गूंजना।

गुमका* [संज्ञा पु.] (देश.) भूसी से दाना अलगाने का काम।

गुमची* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुमची। गंजा।

गुमटा [संज्ञा पु.] (देश.) सिर पर चोट लगने के कारण होने वाली सूजन।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कीड़ा।

गुमटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी आदि की ऊँची छत। २-चौकीदार के रहने का गोलाकार घर। ३-सिर पर चोट लगने से बनने वाली सूजन।

गुमना [क्रि. अ.] (हिं.) खो जाना।

गुमनाम [वि.] (फ़ा.) १–अज्ञात। अप्रसिद्ध। २–जिसमें नाम न हो।

गुमर [संज्ञा पु.] (फा.) १–घमंड। शेखी। २–कानाफूसी। ३–मन का गुबार।

गुमराह [वि.] (फा.) १–कुपथगामी। २–रास्ता भूला हुआ।

गुमराही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–भूल। भ्रम। २–कुपंथ। बुरा मार्ग।

गुमान [संज्ञा पु.] (फा.) १–कल्पना। अनुमान। २–घमंड। गर्व।

गुमाना+ [क्रि. स.] (हिं.) खोना। गँवाना।

गुमानी [वि.] (हिं.) घमंडी। अहंकारी।

गुमाश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) मालिक की ओर से काम करने वाला। कर्मकार। प्रतिनिधि। एजेन्ट।

गुमाश्तागीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गुमाश्ते का पद या काय।

गुमिटना [क्रि. अ.] (हिं.) लपेटा जाना। लिपटाना।

गुमेटना+ [क्रि. स.] (हिं.) लपेटना।

गुम्मट [संज्ञा पु.] (हिं.) गुंबद।

गुम्मा [वि.] (हिं.) कम बोलने वाला। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी ईंट।

गुरंबा+ [संज्ञा पु.] देखो 'गुड़ंबा'।

गुर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह उपाय जिसके द्वारा कोई कार्य तुरन्त हो जाय। मूलयुक्ति। २–※ देखो 'गुरु'।

गुरखई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का रेहन या बंधक।

गुरखाई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह रेहन जिसके अंतर्गत रेहन रखने वाला बंधकभूमि का चौथाई भाग मालगुजारी देता है।

गुरगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–अनुगामी। चेला। २–नौकर। ३–जासूस।

गुरगाबी [संज्ञा पु.] (फा.) मुंडा जूता।

गुरच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुरुच'।

गुरचियान+ [क्रि. अ.] (हिं.) सिकुड़ कर टेढ़ा-मेढ़ा हो जाना।

गुरची+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिकुड़ना। बल। वट।

गुरचों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कानाफूसी।

गुरज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गुर्ज'।

गुरजा [संज्ञा पु.] (देश.) लोवा नामक पक्षी।

गुर्दा [संज्ञा पु.] (फा.) १–रीढ़ वाले प्राणियों के भीतर का अङ्ग जो कलेजे के पास होता है। यह मूत्र को बाहर निकालता है। २–साहस। हिम्मत। एक प्रकार की छोटी तोप।

गुरमुख [वि.] (हिं.) गुरु से मन्त्र की दीक्षा लिया हुआ।

गुरम्मर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मीठे आम का वृक्ष।

गुरवार [संज्ञा पु.] (हिं.) गुरुवार। बृहस्पतिवार।

गुरवी+ [वि.] (हिं.) अहंकारी। घमंडी।

गुरसल [संज्ञा पु.] (देश.) गिलगिलिया पक्षी।

गुरसी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गोरसी' या 'बोरसी'।

गुरसुम [संज्ञा पु.] (देश.) सोनारों की एक प्रकार की छेनी।

गुरहा [संज्ञा पु.] (देश.) १–भीतर की ओर नाव के दोनों सिरों पर जड़ा हुआ तख्ता। २–एक छोटी मछली।

गुराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोरापन। गौराई।

गुराब [संज्ञा पु.] (देश.) १–तोप लादने की गाड़ी। २–एक मस्तूल वाली बड़ी नाव।

गुराव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चौपायों को खिलाने के निमित्त चारा काटने की क्रिया। २–चारा काटने का हथियार। गड़ासा।

गुरिद※+ [संज्ञा पु.] (फा.) गदा।

गुरिदल [संज्ञा पु.] (देश.) १–जलाशयों के पास रहने वाला एक पक्षी। २–कचनार का पेड़।

गुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–माला का एक मनका। २–चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३–मछली के मांस की बोटी।

गुरिल्ला [संज्ञा पु.] देखो 'गोरिल्ला'।

गुरीरा※ [वि.] (हिं.) १–गुड़ के समान मीठा। २–उत्तम। बढ़िया।

गुरु [वि.] (सं.) १–बड़े आकार का। २–भारी। ३–देर से पचने वाला (भोजन)। [संज्ञा पु.] (सं.) १–विद्या या कला सिखलाने वाला। उस्ताद। २–बृहस्पति। ३–बृहस्पति नामक ग्रह। किसी मंत्र का उपदेष्टा। ४–दो मात्राओं वाली या दीर्घाक्षर।

गुरुआइन※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गुरुपत्नी। २–शिक्षा देने वाली स्त्री।

गुरुआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गुरु का काम। २–गुरु का धर्म। ३–चालाकी। धूर्तता।

गुरुआनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुरुआइन'।

गुरुकुल [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह स्थान जहां गुरु विद्यार्थियों को अपने पास रखकर शिक्षा देता है। २–गुरु का कुल। ३–वह आधुनिक संस्था जो विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय शिक्षापद्धति के अनुसार ब्रह्मचर्यपूर्वक शिक्षा दी जाती है।

गुरुकोप [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यधिक कोप या क्रोध।

गुरुक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) एक दूसरे को उपदेश देना।

गुरुगंधर्व, गुरुगन्धर्व [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रताल के छः भेदों में से एक।

गुरुघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) गुरु की वाला पापी।

गुरुच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औषध के आने वाली एक कड़वी बेल जिसे कहते हैं।

गुरुच-खाप [संज्ञा पु.](देश.) एक औजार लकड़ी गोल की जाती है।

गुरुचांद्री [वि.] (हिं.) गुरु और चन्द्रमा के से होने वाला (ज्योतिषी)।

गुरुज [संज्ञा पु.] देखो 'गुर्ज'।

गुरुजन [संज्ञा पु.] (सं.) माता, पिता, गुरु णीय पुरुष।

गुरुडम [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वयम् गुरु दूसरों से अपनी पूजा कराना।

गुरुतम [वि.] (सं.) बहुत भारी।

गुरुतल्प [संज्ञा पु.] (सं.) विमाता करने वाला पुरुष।

गुरुतल्पग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गुरु

गुरुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गुरुत्व। २–महत्व। बड़प्पन। ३–गुरु गुरुपन।

गुरुताई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुरु

गुरुतोमर [संज्ञा पु.] (सं.) तोमरछंद के दो मात्राएँ और जोड़ देने से छंद।

गुरुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–भारीपन। बोझ। २–महत्त्व। बड़प्पन। ३– कार्य।

गुरुत्वकेंद्र, केन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) के अनुसार किसी पदार्थ के बिन्दु जिसपर यदि उस पदार्थ विस्तार सिमटकर आजाय तो भी कर्षण में कुछ अन्तर न पड़े।

गुरुत्वलंब, लम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के गुरुत्व-केन्द्र से सीधे नीचे की खींची हुई रेखा।

गुरुत्वाकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिससे भारी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति।

गुरुदक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह भेंट जो यन समाप्त होने पर गुरु को संतुष्ट करने के निमित्त प्रदान की जाय।

गुरुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) गुरु के लिए आदर शब्द। देवतुल्य गुरु।

गुरुदैवत [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्यनक्षत्र।

गुरुद्वारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गुरु के रहने स्थान। २–सिखों का मंदिर या धर्मस्थान।

गुरुपुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति के दिन नक्षत्र के पड़ने का योग।

गुरुविनी* [संज्ञा स्त्री] देखो 'गुर्विणी'।

गुरुपुष्य [संज्ञा पु.] (सं) १-पुष्यनक्षत्र। २-मीन राशि। ३-धनुराशि।

गुरुभाई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक ही गुरु के चेले या शिष्य।

गुरुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) गम्भीर अभिप्राय।

गुरुमुख [वि.] (हिं) जिसने गुरु से मन्त्र या दीक्षा ली हो। दीक्षित।

गुरुमुखी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गुरुनानक की चलाई हुई एक लिपि।

गुरुरत्न [संज्ञा पु.] (सं) पुखराज नामक रत्न।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (स) संकीर्णराग का एक भेद।

गुरुवार [संज्ञा पु.] (हिं.) बृहस्पतिवार।

गुरुसिंह [संज्ञा पु.](सं.) बृहस्पति-सिंहराशि पर आने पर पड़ने वाला पर्व।

ग्रुस [संज्ञा पु.] (अं.) १४४ या बारह दर्जन वस्तुओं का समूह।

गुरू [संज्ञा पु.] (हिं.) अध्यापक। आचार्य। गुरु।

गुरूघंटाल [वि.] (हिं.) १-अत्यन्त चतुर। २-धूर्त। चालबाज।

गुरेट [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख के पकते हुए रस को चलाने का बेलन।

गुरेरना+ [क्रि. स] (हिं.) आँखें फाड़कर देखना। घूरना।

गुरेरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुलेला'।

गुर्चनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गेहूँ और चना मिला हुआ अन्न।

गुर्ज [संज्ञा पु.] (फा.) सोटा। गदा।

गुर्जमार [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का मुसलमान फकीर।

गुर्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुजरात देश। २-गुजरात देश का निवासी। ३-गूजर।

गुर्जराट [संज्ञा पु.] (हिं.) गुजरात देश।

गुर्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुजरात देश की स्त्री। २-सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

गुर्राना [क्रि. अ.] (हिं.) १-डराने के लिए कुत्ते बिल्ली आदि का गम्भीर शब्द करना। २-क्रोध या अभिमान के कारण भारी तथा कर्कश स्वर में बोलना।

गुर्री [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सुने हुए जौ।

गुर्वंगना, गुर्वङ्गना [संज्ञा स्त्री.](सं.) गुरुपत्नी। गुरु की स्त्री।

गुर्वर्थ [वि.] (सं.) कठिन व्याख्यायुक्त।

गुर्वादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य तथा बृहस्पति का एक राशि पर गमन।

गुर्विणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] गर्भवती। गर्भिणी।

गुर्वी [वि.] (सं) [स्त्री. प्र.] गर्भवती। [संज्ञा स्त्री] (सं) १-बड़ी अथवा श्रेष्ठ स्त्री। गुरुपत्नी।

गुलंचा+ [संज्ञा पु.] देखो 'गुड़ुच'।

गुल [संज्ञा पु.] (फा.) १-गुलाब का फूल। २-फूल। पुष्प। ३-पशुओं के शरीर पर का गोल धब्बा। ४-गालों पर हंसते समय पड़ने वाला गड्ढा। ५-गरम धातु आदि के दागने से बना चिह्न। दाग। ६-जलकर उभड़ा हुआ दीपक की बत्ती का अंश। ७-तम्बाखू का जला हुआ वह अंश जो चिलम पीने के बाद बच जाता है। ८-सुंदर स्त्री। नायिका। *गुल खिलना*-१-विलक्षण घटना होना। २-नया बखेड़ा खड़ा होना। *गुल करना*-दीपक बुझाना।

गुल [संज्ञा पु.] (फा.) शोर। हल्ला।

गुल-अजायब [संज्ञा पु.] (फा., अ.) १-एक प्रकार का फूल। २-इस फूल का पौधा।

गुलअब्बास [संज्ञा पु.] (फा., अ.) अब्बास नामक फूलदार पौधा।

गुलअशर्फी [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का पीले रंग का फूल।

गुलउर+ [संज्ञा पु.] देखो 'गुलौर'।

गुलऔरंग [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का गेंदा।

गुलकंद [संज्ञा पु.] (फा.) चीनी मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूल की पंखड़ियां जो रेचक होती हैं।

गुलकट [संज्ञा पु.] (हिं.) शीशम की लकड़ी का बना कपड़े छापने का ठप्पा।

गुलकार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेल-बूटे बनाने वाला कारीगर।

गुलकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेल-बूटे का काम।

गुलखैरू [संज्ञा पु.] (फा.) एक पौधा या इसके नीले रंग के फूल।

गुलगचिया [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गिलगिलया'।

गुलगपाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) चिल्लाहट। शोर। गुल। हल्ला।

गुलगीर [संज्ञा पु.] (फा.) दीपक की बत्ती काटने की कैंची।

गुलगुल [वि.] (हिं.) कोमल। नरम। मुलायम।

गुलगुला [वि.] (हिं.) गुदगुदा। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का मीठा पकवान।

गुलगुलाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी गूदेदार वस्तु को हाथ में लेकर मुलायम करना।

गुलगुलिया [संज्ञा पु.] (फा.) बंदर नचाने वाला मदारी।

गुलगुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

गुलगोथना [संज्ञा पु.] (हिं.) नाटा, मोटा और गाल फूला हुआ मनुष्य। *गुलगोथना सा*-फूले हुए गाल वाला।

गुलचना* [क्रि. स.] (हिं.) गुलचा मारना।

गुलचला [संज्ञा पु.] (हिं.) गोला चलाने वाला। तोप दागने वाला। तोपची।

गुलचाँदनी [संज्ञा पु.] (फा.) १-रात को फूलने वाला एक पौधा। २-इस पौधे का सफेद फूल।

गुलचा [संज्ञा पु.] (फा.) प्रेमपूर्वक धीरे से गालों पर किया हुआ आघात।

गुलचाना, गुलचियाना [क्रि स.] (हिं.) गुलचा मारना।

गुलची [संज्ञा स्त्री.] (?) बढ़इयों का एक औजार।

गुलचीन [संज्ञा पु.] (?) १-कलम से लगाया जाने वाला एक वृक्ष जो बारहों मास फूलता है। २-इस वृक्ष का फूल।

गुलछर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वच्छन्दतापूर्वक तथा अनुचित रीति से किया जाने वाला भोग-विलास। *गुलछर्रे उड़ना*-निर्द्वन्द्वरूप से अनुचित और भोग-विलास करना।

गुलजलील [संज्ञा पु.] (फा.) असवर्ग नामक फूल जो रेशम रंगने के काम आता है।

गुलजार [संज्ञा पु.] (फा.) बाग। बाटिका। [वि.] हराभरा। आनन्द और शोभायुक्त।

गुलझटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तागे आदि का लपेट जो सिकुड़कर गोली के आकार का हो जाता है। उलझन की गांठ। *गुलझटी पड़ना*-मनोमालिन्य होना। *गुलझटी निकालना*-मनोमालिन्य दूर होना।

गुलझड़ी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुलझटी'।

गुलतराश [संज्ञा पु.] (फा.) १-बत्ती काटने की कैंची। २-बाग के पौधों को कतरने छांटने वाला माली।

गुलता [संज्ञा पु.] (हिं.) गुलेल से फेंकी जाने वाली मिट्टी की गोली।

गुलतर्रा [संज्ञा पु.] (फा.) जटाधारी पौधा या फूल।

गुलथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उबला हुआ चावल जो भात से अधिक गीला हो।

गुलथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी तरल पदार्थ के गाढ़े होकर जमने से बनी हुई गुठली। २-मांस की जमी हुई गांठ।

गुलदस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) फूलों का गुच्छा।

गुलदाउदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का छोटा पौधा या उसका फूल।

गुलदान [संज्ञा पु.] (फा.) गुलदस्ता रखने का पात्र।

गुलदाना [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की बूंदिया नाम की मिठाई जिसके लड्डू भी बनते हैं।

गुलदार [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह सफेद कबूतर

जिस पर लाल या काले रंग के छोटे-छोटे चिह्न होते हैं। २-एक प्रकार का कशीदा। [वि.] फूलदार।

गुलदावदी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुलदाउदी'।

गुलदुपहरिया [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं।

गुलदुम [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बुलबुल।

गुलनरगिस [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की बेल।

गुलनारि [संज्ञा पु.] (फा.) १-अनार का फूल। २-इस फूल का सा गहरा लाल रंग।

गुलपपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक मिठाई का नाम।

गुलप्यादा [संज्ञा पु.] (फा.) कम महक वाला गुलाब।

गुलफानूस [संज्ञा पु.] (फा.) एक बड़ा वृक्ष जो शोभा के लिये लगाया जाता है।

गुलफिरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जिसमें गुलाबी फूल लगते हैं।

गुलबकावली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) हल्दी की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं।

गुलबक्सर [संज्ञा पु.] (फा.) ताश के नकस के खेल में जीत की एक बाजी।

गुलबदन [संज्ञा पु.] (फा.) एक बहुमूल्य रेशमी कपड़ा।

गुलबूटा [संज्ञा पु.] (फा.) बेलबूटा। नक्काशी।

गुलमेंहदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का फूलदार पौधा।

गुलमेख [संज्ञा पु.] (फा.) गोल सिरे की कील। फुलिया।

गुलरेज [संज्ञा पु.] (फा.) आतिशबाजी की फूलझड़ी।

गुललाला [संज्ञा पु.] देखो 'गुल्लाला'।

गुलशकरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की गुलाबी मिठाई।

गुलशन [संज्ञा पु.] (फा.) वाटिका। बाग। फुलवारी।

गुलशब्बो [संज्ञा पु.] (फा.) १-लहसुन के आकार का एक पौधा जिसके सफेद सुगंधित फूल आते हैं। २-एक खेल।

गुलसुम [संज्ञा पु.] (फा.) सोनारों का नक्काशी करने का एक औजार।

गुलहजारा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का गुलगुला।

गुलहती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुलत्थी'।

गुलाब [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रसिद्ध कंटीला पौधा जिसमें सुन्दर हलके लाल रंग के सुगंधित फूल लगते हैं। २-गुलाबजल।

गुलाबजल [संज्ञा पु.] (हिं.) गुलाब के फूलों का चुआया हुआ अर्क।

गुलाबजामुन [संज्ञा पु.] (हिं.) जामुन के आकार की एक मिठाई।

गुलाबपाश [संज्ञा पु.] (फा.) वह पात्र जिसमें भरकर लोगों पर गुलाब-जल छिड़कते हैं।

गुलाबाँस [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का पौधा जिसमें लाल रंग के फूल लगते हैं।

गुलाबबाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का उत्सव जिसमें शोभा के निमित्त गुलाब के फूलों से सजाया जाता है।

गुलाबा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का बरतन।

गुलाबी [वि.] (फा.) १-गुलाब के रंग का। २-गुलाब संबंधी। ३-थोड़ा या कम। हलका।

गुलाम [संज्ञा पु.] (अ.) १-खरीदा हुआ दास। २-साधारण सेवक। नौकर।

गुलामी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दासत्व। २-सेवा। नौकरी। ३-पराधीनता। परतंत्रता।

गुलाल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह लाल चूर्ण जिसे होली के दिनों में हिन्दू लोग उत्साहपूर्वक परस्पर मुख पर लगाते हैं।

गुलाला [संज्ञा पु.] देखो 'गुललाला'।

गुलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोली गुटिका।

गुलिका [वि.] (हिं.) महुए के बीज से निकाला हुआ।

गुलियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) घुली हुई औषध चोंगे में भरकर पशु को पिलाना।

गुलिस्ताँ [संज्ञा पु.] (फा.) बाग। वाटिका।

गुली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुल्ली'।

गुलुफ [संज्ञा पु.] देखो 'गुल्फ'।

गुलू [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक पहाड़ी वृक्ष। २-एक प्रकार की मछली। ३-एक प्रकार की बटेर।

गुलूबंद [संज्ञा पु.] (फा.) १-सिर पर या गले में लपेटने की एक ऊनी पट्टी। २-गले में पहनने का एक गहना।

गुलेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) महुए का पका फल।

गुले [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा पेड़।

गुलेटन [संज्ञा पु.) (हिं.) कुरंड पत्थर की बट्टी।

गुलेनार [संज्ञा पु.] देखो 'गुलनार'।

गुलेराना [संज्ञा पु.] (फा.) सुन्दर फूल।

गुलेल [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह कमान जिससे चिड़ियों और बन्दरों को मारने के लिए मिट्टी की गोलियां चलाई जाती हैं।

गुलेलची [संज्ञा पु.] (फा.) गुलेल चलाने वाला।

गुलेला [संज्ञा पु.] (फा.) १-मिट्टी की गोली जो गुलेल से चलाई जाती हैं। २-गुलेल।

गुलैंदा [संज्ञा पु.] देखो 'गुलेंदा'।

गुलोह [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गुडुच।

गुलौर, गुलौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) गुड़ बनाने का स्थान।

गुल्शा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ... सुन्दर वन में पानी के किनारे ... फैलता है।

गुल्फ [संज्ञा पु.] (सं.) एंड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा पौधा जो जड़ से कई तनों के रूप में निकले। ईख। २-सेना का एक समुदाय जिसमें ... हाथी, ६ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल ... हैं। ४-गांठ के आकार की नस की सूजन।

गुल्लक [संज्ञा पु.] देखो 'गोलक'।

गुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'गुलेला'। २-एक बंगला मिठाई। ३-शोर। हल्ला। ४-गुलेल। ५-रुई ओटने की चरखी में ... छड़।

[संज्ञा पु.] (देश.) गोटापट्टा बुनने ... एक डोरा। २-एक ऊंचा पहाड़ ... रेशमी धोतियों का ताना। ४-... बुनने के करघे में का बांस।

गुल्लाला [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का फूल।

गुल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी फल की गुठली। २-महुए की गुठली। ३-लड़कों के खेलने का एक काठ का टुकड़ा जिसके सिरे नुकीले होते है तथा पेटा मोटा होता है। ४-केवड़े के फूल। ५-गन्ने की गंडेरी। ६-सिकलीगर का एक औजार। ७-... वालों का एक औजार। ८-जिल्दसाजों का औजार।

गुवाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुपारी। २-... सुपारी।

गुवार* [संज्ञा पु.] देखो 'ग्वाल'।

गुवारपाठा [संज्ञा पु.] देखो 'ग्वारपाठा'।

गुवाल* [संज्ञा पु.] देखो 'ग्वाल'।

गुविंद* [संज्ञा पु.] देखो 'गोविंद'।

गुसल [संज्ञा पु.] (अ.) गुस्ल। स्नान।

गुसाँई [संज्ञा पु.] (हिं.) गोसांई। गोस्वामी।

गुसा* [संज्ञा पु.] देखो 'गुस्सा'।

गुस्ताख [वि.] (फा.) अशिष्ट। धृष्ट। ढीठ। बेअदब।

गुस्ताखी [संज्ञा स्त्री] (फा.) धृष्टता। अशिष्टता। बेअदबी।

गुस्ल [संज्ञा पु.] (अ.) स्नान।

गुस्लखाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) स्नानागार।

गुस्सा [संज्ञा पु.] (अ.) क्रोध। कोप। *गुस्सा उतरना*-क्रोध शान्त होना। *गुस्सा उतारना*-क्रोध में जो इच्छा हो उसे पूर्ण करना। २-एक के ऊपर जो क्रोध हो उसे अन्य पर उतारना। *गुस्सा थूक देना*-क्षमा करना।

गुस्से के मारे भूत होना-क्रोध से कांप जाना। गुस्सा चढ़ना-क्रोध आना। गुस्सा नाक पर रहना-थोड़ी सी बात पर क्रोध आना। गुस्सा निकालना-गुस्सा उतारना। गुस्सा पीना-क्रोध रोकना। गुस्सा मारना-क्रोध रोकना। गुस्से के मारे लाल होना-क्रोध से तमतमाना।

गुस्सैल [वि.] (अ.) जल्दी क्रोध करने वाला। क्रोधी।

गुह [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय। २-घोड़ा। ३-विष्णु। ४-राम का मित्र एक निषाद। ५-गुहा। ६-हृदय। (हिं.) गू। मैला। मल।

गुहड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों का एक रोग।

गुहना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-गूंथना। एक में पिरोना। २-सूई तागे से दृढ़ करके सी देना।

गुहराज [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रासाद जो गुह के आकार का बनता है।

गुहराना+ [क्रि. स.] (हिं.) पुकारना। चिल्लाकर बुलाना।

गुहवाना [क्रि. स.] (हिं.) गुंधवाना। गूंथने का काम दूसरे से कराना।

गुहषष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहन सुदी छट जो कार्त्तिकेय की जन्मतिथि मानी जाती है।

गुहांजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आंख पलक पर होने वाली फुड़िया। बिलनी। घुरघुरी।

गुहा [संज्ञा स्त्री] (सं.) गुफा। कंदरा।

गुहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गूंथने की क्रिया। २-गूंथने की मज़दूरी।

गुहाचर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म। परमात्मा।

गुहाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'गुहवाना'।

गुहामुख [संज्ञा पु.] (सं.) कन्दरा का द्वार।

गुहार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रक्षा के लिए पुकार। दोहाई।

गुहारि+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुहार'।

गुहाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गायों के रहने का स्थान।

गुहाशय [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा। प्राण।

गुहेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) गोध। गोह नामक कीड़ा।

गुह्य [वि.] (सं.) १-छिपा हुआ। गुप्त। २-गोपनीय। छिपाने के योग्य। ३-जिसका अभिप्राय सहज में प्रकट न हो। गूढ़। [संज्ञा पु.] (सं.) १-छल। कपट। २-कछुआ। कच्छप। ३-शिव। ४-विष्णु। ५-गुदा, भग, लिंग आदि गुप्तांग।

गुह्यक [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के खजानों की रक्षा करने वाले यक्ष।

गुह्यकेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

गुह्यदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत। जुगनू।

गुह्यपति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

गूंगा [वि.] (फा.) जो बोल न सके। मूक। गूंगे का गुड़-ऐसी बात जिसका अनुभव हो पर वर्णन न हो सके।

गूंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों की उंगली में पहनने की एक प्रकार की बिछिया। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] न बोल सकने वाली

गूँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुंघची। गुंजा।

गूँछ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी मछली।

गूँज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भौरों के गूंजने का शब्द। गुंजार। २-प्रतिध्वनि। व्याप्त ध्वनि। ३-लट्टू में नीचे की ओर लगी हुई कील। ४-कान की बालियों में शोभा के लिए दूर तक लपेटा छोटा पतला तार।

गूँजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भौरों का मधुर ध्वनि करना। गुजारना। प्रतिध्वनि से व्याप्त होना।

गूँठ [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़ी टट्टू। टाँगन।

गूँथना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'गूथना'।

गूँदा [संज्ञा पु.] देखो 'गोंदा'।

गूँधना [क्रि. स.] (हिं.) १-आटे को पानी से सानकर हाथों से दबाना या मलना। मड़ना। २-गूंथना। पिरोना।

गू [संज्ञा पु.] (हिं.) मल। विष्ठा।

गूगल, गूगुल [संज्ञा पु.] देखो 'गुग्गुल'।

गूजर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. गूजरी, गुजरिया] १-अहीरों की एक जाति। ग्वाला। २-क्षत्रियों का एक भेद।

गूजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। २-पैर में पहनने का एक गहना।

गूजी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का काला कीड़ा।

गूझा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. गुझिया] १-एक प्रकार का पकवान। +२-गूदा। ३-फलों के भीतर का रेशा।

गूटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-लीची का पेड़ लगाने का एक ढंग। २-चौपायों का एक रोग।

गूड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाजरे के बाल की प्याली।

गूढ़ [वि.] (सं.) १-गुप्त। छिपाहुआ। जिसमें बहुत अभिप्राय छिपा हो। २-जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे। [संज्ञा पु.] देखो 'सूक्ष्मालंकार'।

गूढ़गेह* संज्ञा पु.] (हिं.) १-मकान के भीतर का छिपा हुआ कमरा। तहखाना। २-मन्त्रणा-गृह।

गूढ़चारी [वि.] (सं.) भेदिया। जासूस।

गूढ़ज, गूढ़जात [संज्ञा पु.] (सं.) बारह प्रकार के पुत्रों में से एक। वह पुत्र जिसे पति के घर रहते हुए भी पत्नी ने किसी अपने गुप्त जार से पैदा किया हो।

गूढ़ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छिपाव। गुप्तता। २-कठिनता। गम्भीरता।

गूढ़त्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गूढ़ता'।

गूढ़पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्वाचन में रंगीन कागज के पुरजों की सहायता से गुप्तरूप से दिया जाने वाला मत। २-इस प्रकार मत देने का ढंग या प्रणाली। बैलट।

गूढ़पद, गूढ़पाद [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

गूढ़पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल, बड़, गूलर, पाकर आदि वृक्ष। २-मौलसिरी। बकुल वृक्ष।

गूढ़फल [संज्ञा पु.] (सं.) बेर का पेड़।

गूढ़मंडप [संज्ञा पु.] (सं.) मन्दिर के भीतर का बरामदा या दालान।

गूढ़मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्त पथ। सुरंग।

गूढ़मैथुन [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौवा।

गूढ़व्यंग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काव्य में वह लक्षणा जिसमें व्यंग्य का तात्पर्य सर्वसाधारण को जल्दी समझ में नहीं आ सकता।

गूढ़ांग, गढ़ाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपस्थ, भग, लिंग आदि गुप्त अंग। २-कछुवा। कच्छप।

गूढ़ांघ्रि, गूढ़ाङ्घ्रि [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

गूढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटी और लम्बी लकड़ी जो नाव में कोटभरिया के ऊपर लगाई जाती है।

गूढ़ोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त बात कही जाय। २-गूढ़ कथन या बात।

गूढ़ोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) वह काव्यालङ्कार जिसमें किसी प्रश्न का उत्तर कोई गूढ़ अभिप्राय लिये हुए दिया जाता है।

गूथ [संज्ञा पु.] (सं.) मैला। गू। विष्टा।

गूथना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कई वस्तुओं को एक गुच्छे या एक लड़ी में पिरोना। २-टांकना। अटकाना। ३-टांके से जोड़ना। ४-सीना। टांका मारना।

गूद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गूदा। मग्ज। २-गड्ढा। ३-निशान। दाग। [संज्ञा पु.] (देश.) पेट के ऊपर की चरबी।

गूदड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) फटा पुराना वस्त्र या चिथड़ा।

गूदर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गूदड़'।

गूदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फल के छिलके के नीचे का सार भाग। २-खोपड़ी का सार भाग। भेजा। ३-मींगी। गिरी।

गून [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव खींचने की रस्सी।

गूना [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का सुनहला रंग। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पकवान्न।

गूमड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) आघात से होने वाली

माथे की सूजन।

गूमा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

गूरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गुल्ला। ढेला।

गूर्स [वि.] (सं.) १-प्रशंसनीय। २-उद्यम विशिष्ट

गूलर [संज्ञा पु] (हिं.) १-बरगद की जाति का एक वृक्ष जिसके फल के भीतर छोटे उड़ने वाले कीड़े होते हैं। २-इस वृक्ष का फल। उदुंबर। क्षीरी।
गूलर का कीड़ा-कूपमंडूक। *गूलर का फूल*-दुर्लभ व्यक्ति या पदार्थ। *गूलर का पेट फड़वाना* भेद खुलवाना। *गूलर फोड़कर जीव उड़ाना*-गुप्तभेद प्रकट करना।

गूलू [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक वृक्ष जिसमें सफेद गोंद निकलता है।

गूषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोर की पूंछ पर बना हुआ अर्धचन्द्र चिह्न।

गूह [संज्ञा पु.] (हिं.) मल। विष्ठा। मैला।
गूह का चोथ-भद्दा और घिनौना। *गूह का टोकरा*-बदनामी का टोकरा।

गूहाँजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुहाँजनी'।

गूहालीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बदनामी और कलंक। अपवाद।

गृंजन, गृञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाजर। २-शलगम।

गृध्नु [वि.] (सं.) लुब्ध। लोभयुक्त।

गृध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीध पक्षी। २-जटायु, सम्पाति आदि पौराणिक पक्षी।

गृध्रकूट [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

गृध्रव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) गीध की आकृति जैसी सेना की बनावट।

गृध्रसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वात का रोग जिसमें कमर पीठ तथा जांघ में पीड़ा रहती है।

गृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। निवासस्थान। मकान। २-आश्रम। ३-खानदान। वंश।

गृहकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घीकुवार। ग्वारपाठा।

गृहकलह [संज्ञा पु.] (सं.) घरेलु लड़ाई झगड़ा।

गृहकुमारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गृहकन्या'।

गृहगोधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिपकली। बिसतुइया।

गृहगोधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिपकली। बिसतुइया।

गृहजात [संज्ञा पु.] (सं.) घर की दासी से उत्पन्न पुत्र। दासीपुत्र।

गृहणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कांजी।

गृहनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) कबूतर।

गृहनीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) गौरैया पक्षी।

गृहप [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर का मालिक। २-घर का चौकीदार। ३-कुत्ता।

गृहपति [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. गृहपत्नी] १-घर का मालिक। २-कुत्ता। ३-अग्नि।

गृहपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घर की मालिकिन। गृहपालिका।

गृहपशु [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

गृहपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर का रक्षक। चौकीदार। कुत्ता।

गृहप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) शुभ नक्षत्र तथा शुभ दिन देखकर हवन आदि करके घर में जाने की रस्म पूरी करना।

गृहमंत्री, गृहमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का वह मन्त्री जो देश की भीतरी बातों की व्यवस्था करता हो। होममिनिस्टर।

गृहमणि [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक। दीवा।

गृहमृग [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

गृहयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर का लड़ाई झगड़ा २-देश के भीतर की या देशवासियों की आपसी लड़ाई।

गृहरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य की ओर से स्थापित एक अर्द्ध-सैनिक संघटन जो भारत में स्थानिक शान्ति तथा सुरक्षा के उद्देश्य से संघटित किया गया है। २-इस संघटन का कोई सैनिक या अधिकारी। होमगार्ड।

गृहलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घर की लक्ष्मी, सच्चरित्रा स्त्री।

गृहसचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गृह-मंत्री'।

गृहस्त* [संज्ञा पु.] देखो 'गृहस्थ'।

गृहस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मचर्य के उपरांत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहने वाला व्यक्ति। ज्येष्ठाश्रमी। २-घरबार या बाल बच्चों वाला। ३-किसान।

गृहस्थाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम, जिसमें ब्रह्मचर्य का परित्याग कर और विवाह करके घरबार संभालते हैं।

गृहस्थी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गृहस्थ का कर्त्तव्य। गृहस्थाश्रम। २-घरबार। घर के काम-धंधे। ३-परिवार। लड़के-बाले। ४-घर का सामान। ५-खेती-बारी।
गृहस्थी संभालना-घर का काम-काज देखना।

गृहस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) घर का मालिक।

गृहाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) झरोखा। छोटी खिड़की।

गृहागत [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे के घर आया हुआ व्यक्ति।

गृहाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गृहप'।

गृहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घर-मालिकिन। २-भार्या। पत्नी।

गृही [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. गृहिणी) गृहस्थ। गृहस्थाश्रमी।

गृहीत [वि.] (सं.) १-जो ग्रहण किया गया हो। स्वीकृत। २-प्राप्त किया हुआ।

गृहोत्पात [संज्ञा पु.] (सं.) घर का विघ्न या उप-द्रव।

गृह्य [वि.] (सं.) गृह-सम्बन्धी। घर का।

गृह्यसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह संस्कारों की वैदिक पद्धति।

गेंगटा [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्कट। केकड़ा।

गेंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वाराहीकंद।

गेंड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख के ऊपर का पत्ता। अगौरा।

गेंड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-पतली दीवार से खेत को घेरकर हद बांधना। २-अन्न रखने के लिए गेंड़ बनाना। ३-घेरना। गोंठना। ४-कुल्हाड़ी से काटना।

गेंड़ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुंडली। गेंडुरी।

गेंडहिया+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सब रोम झड़े हुए रोएं या ऊन।

गेंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईख के ऊपर का पत्ता। २-ईख। ३-ईख की बड़ी गड़ेरी। ४-ईख के कटे हुए टुकड़े जो खेत में बोए जाते हैं। ५-देखो 'गैंड़ा'।

गेंडु, गेंडुक, गेण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) गेंद। कंदुक।

गेंडुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तकिया। सिरहना। २-बड़ा गेंद।

गेंडुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-इंडुरी। बिड़वा। २-फेंटा। कुंडली। ३-तवले के नीचे की इंडुरी। ४-सांपों का वर्तुलाकार बैठना।

गेंडुली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गेंडुरी'।

गेंती [संज्ञा स्त्री.] (?) १-एक प्रकार का छोटा वृक्ष।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) मिट्टी खोदने की कुदाल।

गेंद [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े, रबड़ या चमड़े का गोल खिलौना जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक।

गेंदई [वि.] (हिं.) गेंदे के फूल के रंग का। गेंदे रंग का।

गेंदघर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिलियर्ड आदि अङ्गरेजी खेल खेलने का मकान। २-गेंद खेलने का स्थान।

गेंदतड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक दूसरे को गेंद मारने का एक खेल, जिसके गेंद लगे वह चोर बनता है।

गेंदबल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गेंद और उसे मारने की लकड़ी। २-इनसे खेला जाने वाला एक खेल।

गेंदरामारना [क्रि. अ.] (हिं.) लंगर डाले हुए जहाज का हवा या लहर के कारण इधर-उधर हो जाना।

गेंडुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) तकिया। सिरहाना।

गेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गेंद के समान गोल और पीले फूल का पौधा। २-एक प्रकार की आतिशबाजी। ३-एक घुंघुरूदार गहना।

गेंदुक* [संज्ञा पु.] (हिं.) गेंद। कंदुक।

गेंदौड़िया [संज्ञा स्त्री.] (?) वैश्यों की एक जाति।

गेंदौरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गिंदौड़ा'।

गेंगला [वि.] (देश.) मूर्ख। जड़। भोंदू।

गेंगलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मूर्खता। जड़ता। भोंदूपन।

गेंदुरिया+ [संज्ञा पु.] (देश.) गुलदोपहरिया।

गेटिस [संज्ञा पु.] (अं.) मोजा बांधने का रबड़ या चमड़े का फीता।

गेंठना [क्रि. स.] (हिं.) १-लकीर से घेरना। २-परिक्रमा करना।

गेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लकड़ी से लकड़ी मार कर लकीर से पार करने का एक खेल। २-इस खेल के उपयोग में आने वाली टेढ़ी लकड़ी।

गेदा [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़िया का वह बच्चा जिसके पर न निकले हों।

गेंडुर [संज्ञा पु.] (देश.) पशुओं के खाने की एक बारहमासी घास।

गेय [वि.] (सं.) गाने योग्य। जो गाया जासके।

गेरना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'गिराना'।

गेरवां [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं के गले में लपेटने का बंधन।

गेराई, गेरांव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गेरवां'।

गेरुआ [वि.] (हिं.) १-गेरू के रंग का। जोगिया रंग का। २-गेरू में रंगा हुआ। जोगिया। भगवा।

गेरुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रबी की फसल का एक रोग जो पौधों की जड़ के पास लाल रंग के महीन-महीन कीड़ों के कारण होता है।

गेरू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी।

गेला [संज्ञा पु.] (अं.) गेली।

गेली [संज्ञा स्त्री.] (अं.) टाइप रखने की एक छिछली किश्ती।

गेल्हा [संज्ञा पु.] (देश.) चमड़े का कुप्पा जिसमें तेल और घी रखा जाता है।

गेवर [संज्ञा पु.] (हिं.) गंगवा नामक वृक्ष।

गेह [संज्ञा पु.] (हिं.) घर। मकान। निवास स्थान।

गेहनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गृहिणी'।

गेहपति [संज्ञा पु.] (हिं.) घर का मालिक।

गेहीक* [संज्ञा पु.] (हिं.) गृहस्थ। घरबारवाला।

गेहुंअन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बड़ा विषैला मटमैले रंग का सांप।

गेहुँआ [वि.] (हिं.) गेहूँ के रंग का।

गेहूँ [संज्ञा पु.] (हिं.) गोधूम। एक प्रसिद्ध अन्न जिसके आटे की रोटी बनती है।

गैंटा [संज्ञा पु.] (देश.) कुल्हाड़ी।

गैंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) भैंस के आकार का और कड़ी खाल वाला पशु जिसकी नाक पर सींग होता है।

गैंता [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी खोदने का एक औजार। कुदाल।

गैंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गैंता'।

गैती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) हिमालय पर होने वाला वृक्ष।

गैन* [संज्ञा पु.] (हिं.) गैल। रास्ता। मार्ग।

गैना [संज्ञा पु.] (हिं.) नाटा बैल।

गैब [संज्ञा पु.] (अ.) परोक्ष। वह जो सामने न हो।

गैबदाँ [वि.] (अ.) परोक्ष का जानने वाला।

गैबर [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया जिसके डैने, छाती और पीठ सफेद, पूंछ काली तथा चोंच और पैर लाल होते हैं।

गैबी [वि.] (अ.) १-गुप्त। छिपा हुआ। २-अज्ञात। अजनबी।

गैयर* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी। गज।

गैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाय। गो। गऊ।

गैर [वि.] (अ.) १-अन्य। दूसरा। २-अजनबी।

गैर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अत्याचार। अंधेर। (हिं.) १-हाथी। २-गैल। मार्ग। ३-देखो 'घैर'।

गैरखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हँसुली।

गैर-जिम्मेदार [वि.] (अ.+फा.) अपना उत्तरदायित्व न समझने वाला।

गैर-जिम्मेदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.+फा.) उत्तरदायित्व।

गैरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) लज्जा। शर्म। हया।

गैर-मनकूला [वि.] (अ.) वह सम्पत्ति जिसे एक स्थान उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जा सकें। स्थिर। अचल।

गैर-मामूली [वि.] (अ.) असाधारण।

गैर-मुनासिब [वि.] (अ.) अनुचित। अयोग्य।

गैर-मुमकिन [वि.] (अ.) असंभव। न होने योग्य

गैर-वाजिब [वि.] (अ.) अयोग्य। अनुचित। बेजा।

गैर-सरकारी [वि.] (अ.+फा.) १-जिसके लिए सरकार या राज्य उत्तरदायी न हो। २-जो सरकारी न हो।

गैरहाजिर [वि.] (अ.) अनुपस्थित।

गैरहाजिरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अनुपस्थित। नामौजूदगी।

गैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गेरू। २-सोना।

गैरिकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) जलमहुआ।

गैरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेत के कटे हुए डंठलों का ढेर। (सं.) लांगलिकी वृक्ष। विषलांगला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गड्ढा।

गैरेय [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

गैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मार्ग। रास्ता। राह।

गैलड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी स्त्री के पहले पति का लड़का दूसरा पति करने पर भी उसे वहां (दूसरे पति) के ले जाय।

गैलन [संज्ञा पु.] (अं.) तरल पदार्थों को मापने का एक अंगरेजी माप जो प्रायः अढाई सेर का होता है।

गैलरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सीढी के समान ऊपर नीचे बैठने का स्थान।

गैला, गैलारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाड़ी की लीक २-गाड़ी का मार्ग।

गैस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार का वाष्परूप पदार्थ।

गोंइँठा*[संज्ञा पु.] (हिं.) गोबर का सूखा चिप्पड़ उपला। गोहरा।

गोंइँड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव के आसपास की भूमि।

गोंइँड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'गोंइंड़'

गोंइँदा [संज्ञा पु.] (फा.) गुप्तचर। भेदिया।

गोंइँयाँ* [संज्ञा पु., स्त्री.] देखो 'गोइयां'।

गोंइँ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैलों की जोड़ी।

गोंगवाल [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति

गोंच* [संज्ञा पु.] (हिं.) जोंक।

गोंछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गलमोछा।

गोंटा [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का छोटा पेड़।

गोंठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोती की लपेट जो कमर पर रहती है।

गोंठना [क्रि. स.] (हिं.) १-चारों ओर लकीर से घेरना। २-किसी वस्तु की कोट को मोड़-मोड़ कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना।

गोंठनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोझिया गोंठने का एक औजार।

गोंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक असभ्य जंगली जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है। २-एक राग जो वर्षाकाल में गाया जाता है। ३-गायों के रहने का स्थान।

गोंडकिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी जो गोंड़राग का एक भेद मानी जाती है।

गोंडरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चरसे का मंडरा। २-गोल आकार की कोई वस्तु। ३-गोल घेरा।

गोंड़ला [संज्ञा पु.] (हिं.) लकीर का गोल घेरा।

गोंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २–मोहल्ला। पुरा। गांव। ३–बड़ी चौड़ी सड़क। ३–सहन। चौक।

गोंद [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ों के तनों से निकला चिपचिपा रस।

गोंदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोंद का पेड़।

गोंदपँजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रसूत स्त्री को दी जाने वाली गोंद मिली पंजीरी।

गोंदपाग [संज्ञा पु.] (हिं.) गोंद और चीनी के मेल से बनी एक मिठाई।

गोंदमखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) भूना हुआ मखाना जिसमें मसालों के साथ गोंद मिला होता है जिसे प्रसूता स्त्री को दिया जाता है।

गोंदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नरम घास का बना हुआ आसन। २–गोनरा नामक घास।

गोंदरी [संज्ञा स्त्री.] १–पानी में उगने वाली एक घास। २–इस घास की बनी एक चटाई।

गोंदला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जलाशयों के किनारे उगने वाला नागरमोथा। २–एक प्रकार की घास जिसकी गोंदरी बनाई जाती है।

गोंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भुने चनों का बेसन जिसे पानी में सानकर बुलबुलों को खिलाया जाता है। २–गारा।

गोंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हिंगोट'।

गोंदीला [वि.] (हिं.) जिस (वृक्ष) में से गोंद निकलता हो।

गो [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गाय। गऊ। २–किरण। ३–वृष राशि। ४–इन्द्रिय। ५–वाणी। ६–सरस्वती। ७–आंख। दृष्टि। ८–बिजली। ९–पृथ्वी। जमीन। १०–दिशा। ११–माता। जननी। १२–किसी धातु की बनी गाय की मूर्ति। १३–ऋषभ नामक दवा। १४–बकरी, भैंस आदि दूध देने वाले पशु। १५–जीभ। जिह्वा।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–बैल। २–नंदी नाम का शिव का गण। ३–घोड़ा। ४–सूर्य। ५–चन्द्रमा। ६–बाण। ७–गवैया। गाने वाला। ८–प्रशंसक। ९–स्वर्ग। १०–आकाश। ११–जल १२–वज्र। १३–शब्द। १४–नौ का अंक। १५–शरीर के रोम।

[अव्य] (फा.) यद्यपि।

[प्रत्य.] (फा.) कहने वाला। जैसे–कानूगो।

गोइँजी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

गोइँठा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'उपला'।

गोइँठौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां उपले जमा करते हैं।

गोइँड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गांव की सीमा। २–गांव के आसपास का स्थान।

गोइँदा [संज्ञा पु.] (फा.) गुप्तचर। गुप्त भेदिया।

गोइनका [संज्ञा पु.] (देश.) मारवाड़ी वैश्यों का एक गोत्र।

गोइयाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) साथी। सहचर।

[संज्ञा स्त्री.] सखी। सहेली।

गोइयार [संज्ञा पु.] (देश.) मटमैले रंग का एक छोटा पक्षी।

गोइलवाला [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों का एक गोत्र।

गोई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सखी। सहेली।

गोऊ*+ [वि.] (हिं.) चुराने वाला। छिपाने वाला।

गोकंटक, गोकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू।

गोकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामधेनु।

गोकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। भानु। रवि।

गोकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १–मालाबार का एक शैव क्षेत्र। २–इस स्थान पर स्थापित शिवमूर्ति। ३–खच्चर। ४–गाय का कान। ५–एक प्रकार का सर्प जिसके कान होते हैं। ६–नीलग्राम। ७–नृत्य में एक प्रकार का हस्तक।

[वि.] गाय के समान लम्बे कान वाला।

गोकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता। मुरहरी। चुरनहार।

गोकील [संज्ञा पु.] (सं.) १–हल। २–मूसल।

गोकुंजर, गोकुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १–मोटा और बलिष्ठ बैल या सांड। २–नदी।

गोकुंद [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

गोकुल [संज्ञा पु.] (सं.) १–गौओं का झुंड। २–गौशाला। ३–मथुरा के पूर्व दक्षिण का एक गांव जिसे अब महावन कहते हैं।

गोकुलस्थ [वि.] (सं.) गोकुल निवासी।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–वल्लभी गोस्वामियों का एक भेद। २–तैलंग ब्राह्मण का एक भेद।

गोकोस [संज्ञा पु.] (हिं.) उतनी दूरी जहां तक गाय के रम्भाने का शब्द सुनाई दे। २–छोटा या हलका कोस।

गोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) जोंक नामक कीड़ा।

गोक्षुर [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू का पौधा या फल।

गोखग [संज्ञा पु.] (सं.) थलचर। पशु। जानवर।

गोखरू [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक छोटा कंटीला पौधा या फल। २–धातु के वह गोल कंटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के निमित्त उनके रास्ते में बिछाये जाते हैं। ३–गोटे तथा बादले के तारों से गूथ कर बनाया हुआ एक साज जिसे स्त्रियां कपड़ों में टांका करती हैं।

गोखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मौखा। झरोखा। २–गाय या बैल का कच्चा चमड़ा।

गोखुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गाय का पैर। २–गाय के खुर का चिह्न।

गोखुरा [संज्ञा पु.] (हि.) करैत नामक सांप।

गोगा+ [संज्ञा पु.] (देश.) छोटा कांटा।

गोगापीर [संज्ञा पु.] राजस्थान राज्य में जाने वाला देवता।

गोगृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवल एक बार हुई गाय।

गोग्रास [संज्ञा पु.] (सं.) निकाला हुआ भोजन वह अंश जो श्राद्धादि में गौ को दिया है।

गोधरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की

गोघात [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोहत्या।

गोघातक, गोघाती [संज्ञा पु.] (सं.) हत्या करने वाला। कसाई।

गोघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १–गाय का मारने

गोचंदन, गोचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) का चन्दन।

गोचंदना, गोचन्दना [संज्ञा पु.] (सं.) की जहरीली जोंक।

गोचना+ [क्रि. स.] (हिं.) रोकना।

[संज्ञा पु.] चना मिला हुआ गेहूँ।

गोचनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गोचना'।

गोचर [वि.] (सं.) जिसका ज्ञान इन्द्रियों हो सके। [संज्ञा पु.] १–वह विषय ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके। ३–देश। प्रान्त।

गोचर-भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायों के लिए छोड़ी गई भूमि।

गोचरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भिक्षा वृत्ति।

गोचर्म्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–गाय का २–२१०० हाथ लम्बी और इतनी ही एक प्राचीन नाप।

गोची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हिमालय की नाम। २–एक प्रकार की मछली।

गोज़ [संज्ञा पु.] (फा.) अपान वायु। पाद।

गोजई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गेहूँ और जौ अन्न।

गोजर [संज्ञा पु.] (सं.) १–बूढ़ा बैल। जूरा।

गोजरा [संज्ञा पु.] (हि.) गेहूँ मिला हुआ जौ।

गोजल [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का मूत्र।

गोजा [संज्ञा पु.] (सं.) चावल। धान। चरवाहे का चौपायों को हांकने का डंडा।

गोजित [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी को जीतने

गोजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वनगोभी एक घास।

गोजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'गोजिया'।

गोजी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गाय हांकने

डंडा। २-बड़ी लाठी।

गोजीत [वि.] (सं.) जितेन्द्रिय।

गोझनवट+ [संज्ञा पु.] (देश.) साड़ी का वह भाग जो सिर और पीठ पर रहता है।

गोझा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पक्वान्न। २-एक प्रकार की कंटीली घास। ३-जेब। खलीता।

गोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़े के किनारे पर शोभा के लिये लगाया जाने वाला वाला फीता। २-किसी प्रकार का किनारा। गजी। ३-चौपड़ का मोहरा। ४-मंडली। गोष्ठी। ५-वह सैर जो नगर के बाहर किसी बाग या उपवन आदि में जिसमें खाने पीने का प्रबन्ध हो।

[संज्ञा पु.] (हिं.) गांव। खेड़ा।

गोटकसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भूमि जिसपर गांव बसा हो।

गोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बादले का वह सुनहला या रुपहला फीता जो कपड़ों पर लगाया जाता है। २-धनियां। ३-कतरकर एक में मिलाई हुई इलायची, सुपारी, और खरबूजे या बदाम की गिरी। ४-सूखा हुआ माल। मुहा।

गोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्थर या मिट्टी का वह छोटा टुकड़ा जिससे लड़के खेलते हैं। २-चौपड़ खेलने का मोहरा। ३-गोटियों का एक प्रकार का खेल। ४-लाभ का योग।

गोटी जमाना या बैठना–युक्ति चलना।

गोठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोशाला। २-गोष्ठी। श्राद्ध। ४-सैर।

गोठिल [वि.] (हिं.) कुंठित। कुंद।

गोड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर। पांव।

गोड़ भरना–१-पैर में महावर लगाना। २-विवाह की एक रसम।

गोड़इत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गांव में पहरा देने वाला चौकीदार।

गोड़ई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करघे की एक लकड़ी।

गोड़गाव [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े के पिछले पैर में बांधने की रस्सी।

गोड़न [संज्ञा पु.] (देश.) मिट्टी से नमक बनाने की क्रिया।

गोड़ना [क्रि. स.] (हि.) मिट्टी खोदकर उलट-पुलट देना जिससे वह पोली और भुरभुरी होजाय। कोड़ना।

गोड़नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) नाचने में प्रवीण पुरुष या स्त्री।

गोड़वांस [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रस्सा जिससे पशु का पैर खूंटे से बांधा जाता है।

गोड़वाना [क्रि. स] (हि) गोड़ने का काम कराना।

गोड़संकर [संज्ञा पु] (हि) स्त्रियों के पैर में

पहनने का एक आभूषण।

गोड़सिहा+ [वि.] (हिं.) डाह करने वाला। कुढ़ने वाला।

गोड़हरा [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों के पैरों का गहना।

गोड़ाँगी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पायजामा।

गोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पलंग आदि का पाया। २-घोड़िया।

गोडा [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर और जांघ के बीच का जोड़।

गोड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोड़ने की क्रिया। २-गोड़ने का भाव। ३-गोड़ने की उजरत।

गोड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) गोड़ने का काम दूसरे से कराना।

गोड़पाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बार-बार आना-जाना।

गोड़ारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पलंग का वह सिरा जिस ओर पैर रहते हैं। पैताना। २-जूना। ३-ताजा खोदी हुई घास।

गोडिंब, गोडिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) सियार। शृगाल। गीदड़।

गोड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा पैर। २-युक्ति लगाने वाला। [संज्ञा पु.] (देश.) मल्लाह।

गोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लाभ। फायदा। २-पैर। चरण।

गोड़ी जमना या लगना–उद्योग से सफलता होना। *गोड़ी आना या जाना*–चरण पड़ना।

गोण [संज्ञा पु.] (सं.) वृषभ। बैल।

गोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-टाट का अनाज भरने का दोहरा बोरा। गोन। २-एक बारीक कपड़ा। ३-एक प्राचीन माप या तोल।

गोत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुल। वंश। २-समूह। जत्था।

गोतम [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि। २-एक मन्त्रकार ऋषि।

गोतमस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ

गोतमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोतमऋषि की पत्नी। अहिल्या।

गोता [संज्ञा पु.] (हि.) जल आदि में डूबने की क्रिया। डुब्बी।

गोता खाना–१-डुबकी लगाना। २-धोखे में आना। *गोता देना*–१-डुबाना। २-धोखा देना। *गोता मारना*–१-डूबना। २-स्त्री प्रसंग करना। ३-नागा करना।

गोताखोर [संज्ञा पु.] (अ.) १-डुबकी मारने वाला। डुबकी लगाकर चीजें ढूढ़कर लाने वाला। २-डुबकनी नाव।

गोतामार [संज्ञा पु.] देखो 'गोताखोर'।

गोतिया [वि.] (हि.) [स्त्री. गोतिनी] अपने गोत्र का। गोती।

गोती [संज्ञा पु.] (हि.) अपने गोत्र का वह व्यक्ति जिसके साथ शौचाशौच का संबंध हो। गोत्रीय। भाई-बन्धु।

गोतीत [वि.] (सं.) जो इन्द्रियों से न जाना जा सके। अगोचर।

गोतीर्थक [संज्ञा पु.] (सं.) छेदों वाले फोड़ों की चीरफाड़ का एक ढंग (सुश्रुत)।

गोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-संतान। २-नाम। ३-राजा का छत्र। ४-दल। जत्था। ५-वंश। ६-भाई। बन्धु। ७-सम्पत्ति। ८-वृद्धि। बढ़ती। ६-कुल या वंश की संज्ञा जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होता है।

गोत्रज [वि.] (सं.) एक ही गोत्र में उत्पन्न। एक ही पूर्वज की संतान।

गोत्रसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

गोत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-गो-समूह।

गोत्री [वि.] ((सं) समान गोत्र वाला।

गोत्रोच्चार [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के अवसर पर वर, वधु के वंश गोत्र आदि का दिया जाने वाला परिचय।

गोदंती [वि.] (हिं.) कच्चा। सफेद (हरताल)।

गोद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वक्षस्थल के पास का वह स्थान जो एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है। उत्संग। २-अंचल।

गोद का–१-छोटा बालक। २-बहुत पास का। *गोद लेना*–दत्तक बनाना। *गोद भरना*–औलाद होना।

गोदगुदालो [संज्ञा पु.] (देश.) गुलू नाम का पेड़।

गोदनहर [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गोदनहारी'।

गोदनहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) शीतला का टीका लगाने वाला।

गोदनहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोदना गोदने वाली स्त्री।

गोदना [क्रि. स.] (हिं.) १-चुभाना। गड़ाना। २-उकसाना। ३-चुभती या लगती हुई बात कहना। ताना देना।

[संज्ञा पु.] १-तिल के आकार का वह नीला चिह्न या फूल पत्ते जो त्वचा पर सूइयों से छापकर बनाये जाते हैं। २-खेत गोड़ने का औजार।

गोदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोदना गोदने की सूई। २-चुभाने या गड़ाने की कोई वस्तु।

गोदा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोदावरी नदी।

[संज्ञा पु.] १-बड़, पीपल या पाकर का पका फल। २-पेड़ों की नई शाखा।

[संज्ञा पु.] (देश.) कटवांसी बांस।

गो-दान [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधवत् संकल्प करके ब्राह्मण को गौदान करने की क्रिया। २-मुंडन संस्कार। ३-मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास का

नाम ।

गोदाम [संज्ञा पु.] (हिं.) माल असबाब को सुरक्षित रखने का स्थान ।

गोदारण [संज्ञा पु.] (सं.) जमीन खोदने की कुदाल ।

गोदावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दक्षिण भारत की एक नदी । २–मदरास का एक जिला ।

गोदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बड़ी नदी या समुद्र में घेरा हुआ वह स्थान जहां जहाज मरम्मत के लिए रखे जाते हैं । २–देखो 'गोद'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बबूल ।

गोध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोह नाम जंगली जन्तु ।

गोधन [संज्ञा पु.] १–गौओं का समूह या झुंड । २–गौरूपी संपत्ति । ३–एक प्रकार के चौड़े फल वाला तीर । ४–❀ + गोवद्धन–पवत ।

गोधर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत ।

गोधर्म्म [संज्ञा पु.] (सं.) पशुओं के समान समागम करना ।

गोधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोह नाम का एक जन्तु ।

गोधापदी, गोधावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–१–मूसली नामक औषधि । २–हंसपदी नामक लता ।

गोधिकात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १–नर सांप और मादा गोह के संयोग से उत्पन्न जंतु । २–गोह के आकर का एक छोटा जंतु ।

गोधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का गेहूँ ।

गोधूम [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ ।

गोधूमक [संज्ञा. पु.] (सं.) गेहुअन नामक सांप ।

गोधूलि, गोधूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संध्या का समय ।

गोध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ । पर्वत ।

गान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है यह टाट, चमड़े या ऊन का बनता है । २–साधारण बोरा । ३–टाट का थैला । ३–२५६ सेर की अनाज की एक तोल । ४–वह मूंज की रस्सी जिसे नाव खींचने के लिए मस्तूल में बांधते हैं ।
७[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास ।

गोनरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव का मस्तूल जिसमें गोन बांधकर खींचते हैं ।

गोनरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की लम्बी घास ।

गोनद [संज्ञा पु.] (सं.) १–सारस पक्षी । २–नागरमोथा । ३–महादेव । ४–एक प्राचीन देश ।

गोनस [संज्ञा. पु.] (सं.) १–एक प्रकार का सर्प । २ वैक्रान्त मणि ।

गोना* [क्रि. स.] (हिं.) छिपाना । लुकाना ।

गोनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बढ़ई, लोहार और राज आदि का वह औजार जिससे कोनों की सिधाई जाँचते हैं । [संज्ञा पु.] १–अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोने वाला । २-रस्सी बांध कर नाव खींचने वाला ।

गोनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–टाट का थैला । बोरा २–पटुआ । सन । पाट ।

गोप [संज्ञा पु.] (सं.) १–गौ–रक्षक । २–अहीर । ग्वाला । ३–गोशाला प्रबन्धक । ४–राजा । ५–गांव का मुखिया । ६–रक्षा या उपकार करने वाला । ७–गले में पहनने का एक प्रकार का आभूषण ।

गोपक [संज्ञा पु.] (सं.) १–गौ–रक्षक । २–ग्वाला ।

गोपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव । २–विष्णु । ३–श्रीकृष्ण । ४–सूर्य । ५–राजा । ६–सांड । बैल । ७–ग्वाला । ८–नौ उपनन्दों में से एक ।

गोपथ [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्ववेद का ब्राह्मण ।

गोपद [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गायों के रहने का स्थान । २–गाय के खुर का चिह्न ।

गोपदल [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का पेड़ ।

गोपदी [वि.] (हिं.) गाय के खुर के समान छोटा

गोपन [संज्ञा पु.] (सं.) १–छिपाव । दुराव । २–छिपाना । लुकाना । ३–रक्षा । ४–व्याकुलता । ५–दीप्ति ।

गोपना* [क्रि. स.] (हिं.) छिपाया । लुकाया ।

गोपनीय [वि.] (सं.) छिपाने योग्य ।

गोपराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) ग्वालियर राज्य का प्राचीन नाम ।

गोपांगना, गोपाङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोप जाति की स्त्री । ग्वालिन ।

गोपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–गौ को पालने वाला । २–अहीर । ग्वाला । ३–श्रीकृष्ण । ४–राजा । ५–पन्द्रह मात्राओं का एक छंद जिसमें आठ और सात पर यति होती है ।

गोपालक [संज्ञा पु.] (सं.) १–ग्वाला । अहीर । २–शिव । ३–राजा ।

गोपालतापन, गोपालतापनीय [संज्ञा पु.] (सं.) शंकराचार्य तथा कई विद्वानों की कीगई एक उपनिषद की टीका ।

गापालदारक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक आचार्य का नाम ।

गोपालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रवर । २–शंकर ।

गोपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्वालिन । अहीरन

गोपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोपपत्नी । ग्वालिन ।

गोपाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कातिक सुदी अष्टमी ।

गोपिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–गोपी । २–अहीरिन । ग्वालिन । ३–छिपाने वाली ।

गोपित [वि.] (सं.) छिपा हुआ । गुप्त ।

गोपिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] छिपाने वाली । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) श्यामलता ।

गोपिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोफना ।

गोपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–ग्वालिनी । २–श्रीकृष्ण की प्रेमिका । व्रज की गोप जाति की स्त्रियां । ३–छिपाने वाली ।

गोपीकामोदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी ।

गोपीचंदन, गोपीचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं ।

गोपीत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का खंजन जिसे देखना अशुभ समझा जाता है।

गोपीथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–राजा । २–रक्षा । ३–वह स्थान जहाँ गौएं जल पीती

गोपीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) गोपियों के स्वामी श्रीकृष्ण ।

गोपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १–गाय की पूंछ । २–एक प्रकार का बंदर । ३–एक प्रकार का

गोपुटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची।

गोपुत्र [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य के पुत्र, कर्ण।

गोपुर [संज्ञा पु.] (सं) १–नगर का द्वार । २–किले का फाटक । ३–फाटक का दरवाजा । स्वर्ग । गो-लोक ।

गोपेंद्र, गोपेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

गोप्ता [वि.] (सं.) रक्षक । रक्षा करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा ।

गोप्य [वि.] (सं.) गुप्त रखने योग्य ।

गोप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) सन्ध्या । गोधूलि।

गोफ [संज्ञा पु.] (सं.) १–दास । सेवक । दासीपुत्र ।

गोफण [संज्ञा प.] (सं.) देखो 'गोफन'।

गोफणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फोड़े पर पट्टी बांधने का एक ढंग ।

गोफन, गोफना [संज्ञा पु.] (हिं.) ढेलवांस।

गोफा [संज्ञा पु.] (हिं.) नया निकला हुआ पत्ता गाभा ।

गोबर [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय का मल । गोविट् गोबर खाना–प्रायश्चित करना । गोबर चांथ–१–भद्दा और बेडौल । २–जड़ और मूर्ख ।

गोबरगणेश, गोबरगनेश [वि.] (हिं.) १–भद्दा बदसूरत । २–मूर्ख । बेवकूफ ।

गोबरहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) गोबर उठाने और

पाथने वाला नौकर।

गोबराना [क्रि स] (हिं) गोबरी करना ।

गोबरिया [संज्ञा पु] (हिं) बछनाग जाति का एक पौधा ।

गोबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कंडा । उपला । गोहरा । २-गोबर की लिपाई ।

गोबरैला [संज्ञा पु.] (हिं) गोबर में रहने वाला एक प्रकार का काला कीड़ा ।

गोबरौरा, गोबरौला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोबरैला'।

गोबिया [संज्ञा पु.] (देश) आसाम की पहाड़ियों में होने वाला एक प्रकार का छोटा बांस ।

गोबी [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'गोभी'।

गोभ [संज्ञा पु.] (हिं.) पौधे का एक रोग ।

गोभा [संज्ञा स्त्री.] (?) लहर ।

गोभिल [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेदीय गृह्यसूत्र के रचयिता एक ऋषि का नाम ।

गोभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की घास । गोजिया। वनगोभी। २-एक प्रकार का शाक फूलगोभी। गांठगोभी । ३-पौधों का गोभ नामक रोग।

गोभुज [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

गोभृत [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़ ।

गोमंडल, गोमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमण्डल। २-किरण समूह ।

गोमंत, गोमन्त [संज्ञा स्त्री.](सं.) कुत्ते पालने या बेचने वाला ।

गोम [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-नाभि के पास की घोड़ों की एक भंवरी। २-पृथ्वी।

गोमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शाहजहांपुर की एक झील से निकलकर सैदपुर के पास गंगा में मिलने वाली एक नदी। २-टिपरा बंगाल की एक नदी। ३-गोमत पर्वत पर रहने वाली एक देवी। ४-एक वैदिक मंत्र। ५-ग्यारह मात्राओं का एक छंद।

गोमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली (सुश्रुत)।

गोमय [संज्ञा पु.] (सं.) गोबर ।

गोमर [संज्ञा पु.] (हिं.) कसाई। गोघातक।

गोमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) सारस पक्षी।

गोमल [संज्ञा पु.] (सं.) गोबर।

गोमा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गोमती नदी ।

गोमाय [संज्ञा पु.] देखो 'गोमायु'।

गोमायु [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल । गीदड़ । सियार।

गोमी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शृगाल। गीदड़। २-पृथ्वी।

गोमुख [संज्ञा पु.] (सं) १-गौ का मुख । २-गौ मुख के आकार का एक शंख । ३-नरसिंहा नामक बाजा । ४-टेढ़ा-मेढ़ा घर । ५-गौमुख के आकर की एक थैली जिसमें माला रखकर फेरते हैं । ६-योग का एक आसन ।

गोमुख नाहर या व्याघ्र-देखने में सीधा और भला पर वास्तव में क्रूर व्यक्ति ।

गोमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गौमुख के आकार की एक थैली जिसमें रखकर माला फेरते हैं। २-हिमालय में गंगा का उद्गम स्थान।

गोमुद्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल का एक बाजा जो चमड़े से मढ़ा रहता था ।

गोमूत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का चित्रकाव्य । २-चित्रण आदि में लहरियेदार बेल । बैलमुतनी ।

गोमृग [संज्ञा पु.] (सं) नीलगाय ।

गोमेद, गोमेदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मणि जिसकी गणना नौ रत्नों में होती है । इसका रंग सुर्खी लिये हुए पीला होता है ।

गोमेध [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेध जैसा एक यज्ञ जिसमें गोमांस का हवन होता है ।

गोयँड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गांव के आस-पास की भूमि ।

गोय [संज्ञा पु.] (हिं.) गेंद ।

गोयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गोमेध' ।

गोया [क्रि. वि.] (फा.) मानो । जैसे ।

गोर [संज्ञा स्त्री.]·(फा.) कब्र। + [वि.] (हिं.) १-गोरा । २-उज्ज्वल वर्णमाला ।

गोरक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विषैला सांप ।

गोरका [संज्ञा पु.] (देश.) अरयल नाम का वृक्ष ।

गोरक्षक [वि.] (सं.) गाय की रक्षा करने वाला।

गोरखअमली, गोरखइमली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दक्षिण भारत का एक बहुत बड़ा वृक्ष ।

गोरख-ककड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह ककड़ी जिसमें फूट होता है ।

गोरख-डिब्बी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरम जलकुंड या स्रोत ।

गोरखधंधा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनेक तारों की कड़ियों या काठ के टुकड़ों का समूह जिन्हें विशेष युक्ति से परस्पर जोड़कर अलगा लेते हैं । २-कोई उलझन की बात या काम ।

गोरखनाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध हठ। योगी अवधूत जो पंद्रवीं शताब्दी में हुए थे।

गोरखपंथी [वि.] (हिं.) गोरखनाथ का अनुयायी ।

गोरखमुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक घास जिसमें छोटे-छोटे गोल और गुलाबी रंग के फूल निकलते हैं ।

गोरखर [संज्ञा पु.] (फा.) गधे की जाति का एक जंगली पशु ।

गोरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नैपाल में एक प्रदेश का नाम । २-इस देश का निवासी ।

गोरखाली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गोरखों की भाषा ।

गोरखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोरखा जाति की स्त्री । २-देखो 'गोरख-ककड़ी ।

गोरचकरा [संज्ञा पु.] (देश.) सन की तरह का एक जंगली पौधा ।

गोरज [संज्ञा पु.] (सं.) गाय के खुरों से उड़ने वाली धूल ।

गोरट [संज्ञा पु.] (सं.) खदिर । खैर ।

गोरटा [वि.] (हिं) [पु. प्र.] गोरा । गोरे रंग वाला ।

गोरन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष ।

गोरया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का अगहनिया धान ।

गोरल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जंगली बकरा ।

गोरवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बांस जिसके हुक्के के नैचे बनते हैं ।

गोरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध । २-दही । दधि । ३-तक्र । मठा । छाछ । इन्द्रियों का सुख ।

गोरसर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की पतली कमची ।

गोरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय के दूध से पलने वाला बच्चा ।

गोरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह अँगीठी जिस पर दूध गरम करते हैं ।

गोरा [वि.] (हिं.) १-सफेद और स्वच्छ वर्ण वाला (मनुष्य) । ३-जिसके शरीर का चमड़ा उज्ज्वल और साफ हो । [संज्ञा पु.] युरोप अमेरिका आदि देश का निवासी । फिरंगी ।

गोराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-गोरापन । २-२-सुन्दरता । सौंदर्य ।

गोराहु [संज्ञा पु.] (देश.) वह बालू मिट्टी जिसमें कोदो उत्पन्न होता है ।

गोरामूंग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली मूंग ।

गोरिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) अफ्रीका में पाया जाने वाला एक प्रकार का वनमानुष ।

गोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दर और गौरवर्ण वाली स्त्री ।

गोरीसर [संज्ञा पु.] (सं.) सालसा । उशबा ।

गोरू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सींग वाला पशु । चौपाया । २-दो कोस का मान ।

गोरूप [संज्ञा पु.](सं.) शिव । महादेव ।

गौना [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वधु को वर अपने घर लाता है। द्विरागमन।

गौमुख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गोमुख'।

गौमुखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गोमुखी'।

गौमेद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न।

गौर [वि.] (सं.) १-गोरा। २-सफेद।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल रंग। २-पीला रंग। ३-चन्द्रमा। ४-सोना। ५-केसर।
[संज्ञा पु.] (अ.) १-सोच विचार। चिंतन। २-ख्याल। ध्यान।

गौरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोरापन। गोराई। २-उज्वलता।

गौरव [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुरु या भारी होने का भाव। भारीपन। २-बड़प्पन। महत्व। ३-सम्मान। आदर। ४-उत्कर्ष। ५-अभ्युत्थान।

गौरवा [संज्ञा पु.] (?) चटक पक्षी। चिड़ा।

गौरवान्वित [वि.] (सं.) १-गौरव या महिमा से युक्त। २-मान्य। सम्मानित।

गौरवित [वि.] (सं.) देखो 'गौरवान्वित'।

गौरशाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का महुआ।

गौरशालि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शालिधान्य।

गौरसुवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साग।

गौरांग, गौराङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। ३-चैतन्यमहाप्रभु।
[वि.] गोरे शरीर वाला।

गौरांगी, गौराङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी इलायची।

गौरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोरे रङ्ग की स्त्री २-पार्वती। ३-हल्दी। ४-एक रागिनी।

गौरार्द्रक [संज्ञा पु.] अफीम, संख्या आदि स्थावर विष।

गौरियां [संज्ञा स्त्री.] (?) १-एक काले रङ्ग का जलपक्षी। २-मिट्टी का छोटा हुक्का। ३-एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

गौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोरे रंग की स्त्री। २-पार्वती। गिरजा। ३-आठ वर्ष की कन्या। ४-तुलसी। ५-सफेद गौ। ६-पृथ्वी। ७-गंगा नदी। ८-हल्दी। ९-दारू हल्दी। १०-गड़ से बनी हुई मदिरा। गौड़ी। ११-शरीर की एक नाड़ी।

गौरीचंदन, गौरीचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चन्दन।

गौरीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभ्रक। २-कार्त्तिकेय। ३-गणेश।

गौरीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) प्रियंगु नामक पेड़।

गौरीललित [संज्ञा पु.] (?) हड़ताल।

गौरीशंकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-हिमालय की एक चोटी का नाम।

गौरीसर [संज्ञा पु.] (?) हंसराज नामक बूटी।

गौरैया+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गौरिया'।

गौला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौरी। पार्वती। गिरजा।

गौल्मिक [संज्ञा पु.] (सं.) चौकसी देने वाला सिपाही।

गौल्य [संज्ञा पु.] (सं.) मीठापन। एक प्रकार की मदिरा।

गौशाला [संज्ञा पु.] देखो 'गोशाला'।

गौहर [संज्ञा पु.] (फा.) मोती। मुक्ता।

ग्यांचिर [संज्ञा पु.] (देश.) कीकर की जाति का एक पेड़।

ग्याति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जाति'।

ग्यान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्ञान'।

ग्यारस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एकादशी तिथि।

ग्यारह [वि.] (हिं.) दस और एक। '११'।

ग्रंथ, ग्रन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुस्तक। किताब। गांठ लगाना। ग्रंथन।

ग्रंथकर्त्ता, ग्रन्थकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रंथ की रचना करने वाला।

ग्रंथकार, ग्रन्थकार [संज्ञा पु.] (सं.) पुस्तक लिखने या बनाने वाला।

ग्रंथचुंबक, ग्रन्थचुम्बक [संज्ञा. पु.] (सं.) १-जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान न हो। २-जिसने ग्रंथों का केवल पाठ मात्र किया हो।

ग्रंथचुंबन, ग्रन्थचुम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) सरसरी तौर पर कहीं-कहीं से कोई ग्रंथ पढ़ना। पुस्तक का उड़ती नजर से पाठ।

ग्रंथन, ग्रन्थन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ना। २-गूंथना। ३-गाँठ लगाकर जोड़ना या बाँधना ४-गोंद लगाकर चिपकाना।

ग्रंथना, ग्रन्थना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ग्रंथन'।

ग्रंथसंधि, ग्रन्थसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्ग, परिच्छेद, अध्याय आदि ग्रंथ के विभाग।

ग्रंथसाहब, ग्रन्थसाहब [संज्ञा पु.] (हिं.) सिक्खों की धर्मपुस्तक जिसमें समस्त गुरुओं के उपदेश संकलित हैं।

ग्रंथालय, ग्रन्थालय [संज्ञा पु.] (सं.) पुस्तकालय।

ग्रंथि, ग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाँठ। २-बंधन। ३-मायाजाल। ४-आलू। ५-कुटिलता।

ग्रंथिक, ग्रन्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिपरामूल। २-गठिवन नामक वृक्ष। ३-गुग्गुल। ४-करीर।

ग्रंथिछेदक, ग्रन्थिछेदक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गिरहकट'।

ग्रंथित, ग्रन्थित [वि.] (सं.) १-गूंथा हुआ। २-जोड़ा हुआ। ३-गांठ दिया हुआ।

ग्रंथित्व, ग्रन्थित्व [संज्ञा पु.] (सं.) गूथने, जो
या गांठ देने की क्रिया।

ग्रंथिदूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाडर दूब।

ग्रंथिपत्र, ग्रन्थिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चोरक ना
गंध द्रव्य।

ग्रंथिपर्ण, ग्रन्थिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) गठि
का पेड़।

ग्रंथिपर्णी, ग्रन्थिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गा
दूब।

ग्रंथिफल, ग्रन्थिफल [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ
पेड़। २-मैनफल का वृक्ष।

ग्रंथिबंधन, ग्रन्थिबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) ग
बंधन।

ग्रंथिभेद, गन्थिभेद [संज्ञा पु.] (सं.) गिरह
गंठकटा।

ग्रंथिमूल, ग्रन्थिमूल [संज्ञा पु.] (सं.)
गाजर, मूली आदि मूल।

ग्रंथिमूला, ग्रन्थिमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
दूब।

ग्रंथिल, ग्रन्थिल [वि.] (सं.) गांठदार।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-आलू। २-अदरक।

ग्रंथिला, ग्रन्थिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
दूब।

ग्रंथीक, ग्रन्थीक [संज्ञा पु.] (सं.) पिपरामू

ग्रंस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुटिलता। छलक

ग्रसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निगलना। २-प
ड़ना। ३-ग्रहण।

ग्रसना [क्रि. स.] (हिं.) १-बुरी तरह से पक
२-सताना।

ग्रसमान [वि.] (सं.) ग्रास करने वाला।

ग्रसित [वि.] (सं.) देखो 'ग्रस्त'।

ग्रस्त [वि.] (सं.) १-पकड़ा हुआ। २-पीड़ि
३-खाया हुआ।

ग्रस्ताग्रस्त [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण में चन्द्रमा
सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

ग्रस्तोदय [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा या सूर्य
ग्रहण लगे रहने की अवस्था में उदय होना

ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह तारा जो सूर्य की
परिक्रमा करता हो। २-नौ की संख्या। ३-
लेना। ग्रहण करना। ४-चन्द्रमा या सूर्य
का ग्रहण। ५-अनुग्रह। कृपा। +[वि.]
बुरी तरह पकड़ने अथवा तंग करने वाला।
अच्छे ग्रह-सुख का समय। बुरे ग्रह-संक
का समय।

ग्रहक [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण करने वाला व्यक्ति

ग्रहकक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गोलाकार प
जिस पर ग्रह भ्रमण करता है।

ग्रहकल्लोल [संज्ञा पु.] (सं.) राहु नामक ग्रह।

ग्रहकुष्मांड, कुष्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.)

प्रकार की देवयोनि।

ग्रहगोचर [संज्ञा पु.] देखो 'गोचर'।

ग्रहचिंतक ग्रहचिन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी।

ग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-राहु द्वारा सूर्य या चन्द्र का आच्छादन। सूर्य, चन्द्रमा आदि पिंड के प्रकाश की वह रुकावट जो उस पिंड के सामने किसी दूसरे पिंड के आ जाने से होती है। २-पकड़ने या लेने की क्रिया। ३-स्वीकार ४-अर्थ। मतलब।

ग्रहणि, ग्रहणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक रोग जिसमें खाया हुआ अन्न नहीं पचता ज्यों का त्यों दस्त के रास्ते निकल जाता है।

ग्रहणीय [वि.] (सं.) ग्रहण करने योग्य।

ग्रहदशा [संज्ञा पु.] (सं) १-ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली अथवा बुरी अवस्था। २-गोचर ग्रहों की स्थिति। ३-अभाग्य।

ग्रहदाय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्म समय के ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी जातक की आयु। [illegible]।

ग्रहदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह की दूसरे ग्रह पर होने वाली दृष्टि।

ग्रहद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) काकड़ासींगी।

ग्रहनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-शनैश्चर ३-मन्दार। आक।

ग्रहनाश [संज्ञा पु.] (सं.) सतिवन नामक पेड़।

ग्रहनेम [संज्ञा पु.] (हिं.) आकाश।

ग्रहनेमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-आकाश।

ग्रहपति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ग्रहनायक'।

ग्रहपुष [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

ग्रहभीतिजित [संज्ञा पु.] (सं.) चीड़ नामक गंध-द्रव्य।

ग्रहमैत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वर और कन्या के ग्रहों के स्वामी की अनुकूलता।

ग्रहमैत्री [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ग्रहमैत्र'।

ग्रहयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों की उग्रता या कोप सम्बन्धी दोषों को दूर करने के लिए पूजन या यज्ञ विशेष।

ग्रहयुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राशि के एक ही अंश पर दो ग्रहों का एकत्र होना।

ग्रहयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) दो ग्रहों का एक साथ एक राशि के एक अंश पर इस प्रकार एकत्र होना कि उस ग्रह पर ग्रहण लगा हुआ जान पड़े (ज्योतिष)।

ग्रहयुद्धभ [संज्ञा पु.] (सं.) वह नक्षत्र जिसपर कोई दो ग्रह एक साथ एकत्र हों।

ग्रहयोग [संज्ञा पु.] देखो 'ग्रहयुति'।

ग्रहराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-बृहस्पति।

ग्रहविप्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के ब्राह्मण।

ग्रहवेध [संज्ञा पु.] (सं.) वेध करके ग्रहों की गति, स्थिति आदि जानना।

ग्रहशृंगाटक, ग्रहशृङ्गाटक [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों का एक योग जिसके अवस्थानुसार शुभाशुभ फल होते हैं।

ग्रहसमागम [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा के साथ मंगल, बुध आदि ग्रहों का योग।

ग्रहस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राग के वह स्वर जिससे राग आरम्भ होता है।

ग्रहाधार [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुव नक्षत्र।

ग्रहावर्मन [संज्ञा पु.] (सं.) १-राहु। २-ग्रह-युद्ध।

ग्रहाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुव नक्षत्र।

ग्रहीत [वि.] (सं.) देखो 'गृहीव'।

ग्रहीता [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] लेने वाला।

ग्रहीतव्य [वि.] (सं.) ग्रहण करने योग्य।

ग्रहोपराग [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों का ग्रहण।

ग्रह्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ पात्र।

ग्रांड़ील [वि.] (अं.) ऊँचे कद का।

ग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) १-गांव। २-बस्ती। आबादी। ३-समूह। ४-शिव। ५-संगीत में सात स्वरों का समूह।

ग्रामकुक्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) पालतू मुरगा।

ग्रामकूट [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्र।

ग्रामगेय [संज्ञा पु.] एक प्रकार का साम।

ग्रामज [वि.] (सं.) गाँव में उत्पन्न।

ग्रामणी [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाँव का मालिक। प्रधान। मुखिया।

ग्रामदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी गांव में पूजा जाने वाला देवता। २-गांव की रक्षा करने वाला देवता।

ग्रामपंचायत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गांव के चुने हुए प्रतिनिधियों की पंचायत या परिषद जिसमें गांव की सफाई का काम और गांव के लोगों के झगड़ों को निपटा या जाता है। विलेज-पंचायत।

ग्रामपरिषद [संज्ञा पु. स्त्री.] (सं.) देखो 'ग्राम-पंचायत'।

ग्रामपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गांव का मुखिया या सरपंच। २-गांव की रक्षा करने वाला सैनिक।

ग्रामप्रेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) गांव का सब लोगों की सेवा करने वाला व्यक्ति।

ग्रामभृत [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत लोगों की सेवा करने वाला मनुष्य।

ग्राममुख [संज्ञा पु.] (सं.) बाजार। हाट।

ग्राममृग [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

ग्रामयाचक [संज्ञा पु.] (सं.) गांव के सब लोगों का पुरोहित।

ग्रामवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेश्या। रंडी २-पलकी का साग।

ग्रामसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

ग्रामाधान [संज्ञा पु.] (सं.) आखेट। मृगया। शिकार।

ग्रामिक [वि.] (सं.) गांव-संबंधी। गांव का। [संज्ञा पु.] (सं.) गांव का मुखिया।

ग्रामीण [वि.] (सं.) देहाती। गंवार।

ग्रामोफोन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का बाजा जिसपर तवा या रिकार्ड चढ़ाकर बजाया जाता है।

ग्राम्य [वि.] (सं.) १-गांव-संबंधी। ग्रामीण। २-प्राकृत। असली। ३-मूढ़। मूर्ख। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का रतिबन्ध। २-वह काव्य जिसमें ग्रामीण शब्दों की अधिकता हो। ३-मैथुन। ४-अश्लील शब्द या वाक्य।

ग्राम्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असभ्यता। गंवारपन।

ग्राम्यदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ग्रामदेवता'।

ग्राम्यधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन। स्त्री-समागम।

ग्राम्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुमित्रानंदन पंत की एक पुस्तक का नाम। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] गाँव से संबंध रखने वाली।

ग्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्थर। २-ओला। ३-पर्वत। पहाड़।

ग्रावस्तुत् [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह ऋत्वजों में से तेरहवाँ।

ग्रावहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में एक ऋत्विक् जिसके हाथ में अभिषव का पत्थर रहता है।

ग्रावायण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाम।

ग्रास [संज्ञा पु.] (सं.) १-उतना भोजन जितना एक बार मुख में डाला जाय। निवाला। कौर। २-पकड़ने की क्रिया। ३-ग्रहण। उपराग।

ग्रासक [वि.] (सं.) १-पकड़ने वाला। २-निगलने वाला। २-छिपाने या दबाने वाला।

ग्रासकट [संज्ञा पु.] (अं.) घास काटने वाला। घसियारा।

ग्रासना [क्रि. स.] (हिं.) १-पकड़ना। धरना। निगलना। कष्ट देना। सताना।

ग्राह [संज्ञा प.] (सं.) १-मगर। घड़ियाल। २-ग्रहण। उपराग। ३-ग्रहण करना। ४-ज्ञान। ५-ग्राहक।

ग्राहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रहण करने वाला। २-खरीदने वाला। खरीदार। ३-लेने का इच्छुक। चाहने वाला।

ग्राहनाॐ [क्रि. स.] (हिं.) लेना। ग्रहण करना।

ग्राहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रिबली का तीसरा बल।

ग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रहण या स्वीकार करने वाला। २-मल रोकने वाला।

ग्राह्य [वि.] (सं.) १-लेने योग्य। २-स्वीकार करने योग्य। ३-जानने योग्य। ४-जो नियमानुसार विचार आदि के निमित्त लिया जा सकता हो। ५-जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो। एडमिसिबुल।

ग्रीक [वि.] (अं.) यूनान देश का। यूनान देश सम्बन्धी।
[संज्ञा स्त्री.] (अं.) यूनान देश की भाषा।
[संज्ञा पु.] (अं.) यूनान देश का निवासी।

ग्रीखम*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्रीष्म'।

ग्रीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्दन। गला।

ग्रीवी [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊंट। [वि.] लम्बी गर्दन वाला।

ग्रीषम*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्रीष्म'।

ग्रीष्म [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गरमी की ऋतु। २-ऊष्ण। गरम।

ग्रूप [संज्ञा पु.] (अं.) झुंड। समूह।

ग्रेटप्राइमर [संज्ञा पु.] (अं.) छापे का एक बड़ा अक्षर।

ग्रेन [संज्ञा पु.] (अं.) एक जव के बराबर का अंगरेजी तोल।

ग्रेह+* [संज्ञा पु.] देखो 'गेह'।

ग्रैवेयक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गले का गहना। २-हाथी की हैकल।

ग्रैजुएट [संज्ञा पु.] (अं.) उपाधि प्राप्त विद्वान्।

ग्रैव [वि.] (सं.) ग्रीवा-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] गले में पहनने का आभूषण।

ग्रैवेयक [संज्ञा पु.] (सं.) गले में पहनने का आभूषण। हंसुली।

ग्रैष्म [वि.] (सं.) ग्रीष्म-सम्बन्धी।

ग्लपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निन्दा। शिकायत। २-शिथिलता।

ग्लपित [वि.] (सं.) १-लज्जित। २-दग्ध। जला-हुआ।

ग्लहन [संज्ञा पु.] (सं.) जूआ का खेल। द्यूत-क्रीड़ा।

ग्लान [वि.] (सं.) १-बीमार। रोगी। २-थका-हुआ। ३-कमजोर। [संज्ञा स्त्री.] दीनता।

ग्लानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शारीरिक या मानसिक शिथिलता। अनुत्साह। अक्षमता। २-अपनी दशा अथवा दोषादि देखकर मन में होने वाला खेद। ३-पश्चाताप। ४-साहित्य में बीभत्सरस का एक स्थायीभाव।

ग्वांड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घेरा। वृत्त। २-किसी घर या मकान के चारों ओर का बाड़ा। ३-चार दीवारी में घिरा हुआ स्थान।

ग्वार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल बनती है। इसके बीज पशुओं को भी खिलाये जाते हैं।

ग्वारनट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक बढ़िया रंगीन रेशमी वस्त्र।

ग्वारपाठा [संज्ञा पु.] (हिं.) घृतकुमारी। घी-कुआँर।

ग्वारिन*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्वार'। २-ग्वालिन।

ग्वारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ग्वार'। २-ग्वालिन।

ग्वाल [संज्ञा पु.] (हिं.) अहीर। गोप।

ग्वालक-कड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली चिचड़ा जिसके बीज, जड़ और पत्तियां आदि औषधि के काम में आती हैं।

ग्वाल-दाड़िम [संज्ञा पु.] (हिं.) मालकंगनी की जाति का एक छोटा पेड़।

ग्वाला [संज्ञा पु.] (हिं.) अहीर।

ग्वालिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ग्वाले की स्त्री। २-ग्वाला जाति की स्त्री। ३-ग्वार की फली। ४-एक बरसाती कीड़ा। गिजाई।

ग्वैंठना+* [क्रि. स.] (हिं.) मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना या टेढ़ा करना।

ग्वैंठा+ [संज्ञा पु.] देखो 'गोइठा'।

ग्वैड़ा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव के आसपास की भूमि।

ग्वैंडे+ [क्रि. स.] (हिं.) निकट। पास।

ग्वैयाँ+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गोइँयां'।

घ

घ हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण स्थान कंठ या जिह्वामूल है। यह स्पर्श वर्ण है।

घँगोल+ [संज्ञा पु.] (देश.) कुमुद।

घँघरा [संज्ञा पु.] देखो 'घघरा'।

घँघराघोर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भ्रष्टाचार। जिसमें छूआछूत का विचार न हो।

घँघरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घघरी'।

घँघोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'घँघोलना'।

घँघोलना [क्रि. स.] (हिं.) १-हिलाकर घोलना। जल को हिलाकर उसमें कुछ मिला देना। २-पानी को हिलाकर मैला करना।

घंट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल पर बांधा जाता है। २-घंटा।

घंटा, घण्टा [संज्ञा पु.] (सं.) १-धातु का एक बाजा जो केवल ध्वनि उत्पन्न करता है। २-घड़ियाल के द्वारा दी जाने वाली समय की सूचना। ३-दिन-रात का चौबीसवां भाग। साठ मिनट का समय। ४-ठेंगा।
घंटा दिखाना-ठेंगा दिखाना। *घंटा हिलाना*-१-व्यर्थ का काम करना। २-पछताना।

घंटाकरन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

घंटाकर्ण, घण्टाकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक उपासक जो कानों में घंटे बांधे रहता था।

घंटाघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह ऊंची मीनार जिस पर लगी हुई घड़ी चारों ओर से दूर से दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

घंटिका, घण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा घंटा। २-घुंघरू। (हिं.) रहँट में लगी छोटी घरिया।

घंटियार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं के गले का एक रोग।

घंटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पीतल या फूल की छोटी लुटिया। २-छोटा घंटा। ३-घंटी का शब्द। ४-घुँघुरू। चौरासी। ५-गले की वह हड्डी जो आगे निकली रहती है। ६-जीभ की जड़ के पास लटकती हुई मांस की छोटी ग्रंथि। कौवा।
घंटी उठाना या बैठाना-गले की सूजन से गले की घंटी दबा कर मिटाना।

घंटील [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

घई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पानी में का भंवर या चक्कर। २-थूनी। टेक।
[वि.] (हिं.) बहुत गहरा। अथाह।

घउरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घवरि'।

घघरबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंदाल।

घघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों का लँहगा।

घघरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा लँहगा।

घचाघच [संज्ञा पु.] (हिं.) नरम वस्तु में धुसने या धँसने वाली या धार वाली वस्तु के घुसने या धँसने का शब्द।

घट [संज्ञा पु.] (सं.) १-घड़ा। २-शरीर। ३-मन। हृदय। ४-कुम्भराशि।
घट में बसना या बैठना-१-मन में बसना। २-हृदयंगम होना।
[वि.] (हिं.) कम। थोड़ा। मध्यम। घटा हुआ।

घटकंचुकी, घटकञ्चुकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की एक रीति।

घटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मध्यस्थ। बीच में पड़ने वाला। २-विवाह संबंध ठीक करने वाला। बरेखिया। ३-दलाल। ४-काम पूरा करने वाला। ५-चारण। वंशपरंपरा बताने वाला। ६-घड़ा। ७-दो पक्षों में बातचीत करने वाला व्यक्ति।

घटकर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक प्रकार का ताल।

घटकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) रावण का भाई कुम्भकर्ण।

घटका [संज्ञा पु.] (हिं.) मृत्युकाल की वह अवस्था जिसमें साँस रुक-रुककर घरघराहट के साथ निकलता है। गले में कफ रुकने की अवस्था।

घटका लगना-मरते समय कफ रुकना।

घटकार [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हार।

घटज [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि।

घटती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमी। न्यूनता। २-हीनता। अप्रतिष्ठा।

घटती का पहरा-अवनति के दिन। घटती से-निर्धारित मूल्य से कम मूल्य पर।

घटदासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुरुष का स्त्री से मेल कराने वाली दासी। २-कुटनी।

घटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गढ़ा जाना। २-उपस्थित होना। होना।

घटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-होना। २-ठीक बैठना। लगना। ३-ठीक उतरना। ४-कम होना। क्षीण होना।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) अकस्मात किसी विलक्षण या विकट बात का होना। वाकया। एक्सिडेंट।

घटनास्थल [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां कोई घटना हुई हो।

घटनीय [वि.] (सं.) घटना होने योग्य।

घटपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) वह खम्भा जिसका सिरा घड़े और पल्लव के आकार का हो (वास्तु-विद्या)।

घटबढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमी-बेशी। न्यूनाधिकता। २-नृत्य की एक क्रिया। [वि.] (हिं.) अपेक्षित से अधिक।

घटभव, घटयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि।

घटराशि [संज्ञा पु.] (सं.) एक द्रोण जो सोलह सेर के लगभग होता है।

घटवाना [क्रि. स.] (हिं.) घटाने का काम कराना।

घटवाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाट का कर लेने वाला। २-रोकने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कम करवाई।

घटवार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाट का महसूल लेने वाला। २-मांझी। केवट। ३-घाटिया ब्राह्मण। ४-घाट का देवता।

घटवारिया [संज्ञा पु.] देखो 'घटवालिया'।

घटवालिया [संज्ञा पु.] (हिं.) तीर्थ स्थानों में घाट पर बैठकर दान लेने वाला पंडा। घाटिया।

घटवाही [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घट्टकर'।

घटसंभव, घटसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि।

घटस्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी मंगल कार्य के करने से पूर्व जल से भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २-नव-रात्र का पहला दिन।

घटहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाट का ठेकेदार। २-इस पार से उस पार जाने वाली नाव।

घटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेघों का घना समूह। उमड़ते हुए बादल। मेघमाला। २-समूह। झुंड।

घटाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हीनता। २-अप्रतिष्ठा।

घटाकाश [संज्ञा पु.] (सं.) घड़े के भीतर का खाली स्थान।

घटाग [संज्ञा पु.] (सं.) वास्तुविद्या में खम्भे के नौ भागों में से एक।

घटाटोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-घनघोर घटा। २-गाड़ी या पालकी को ढकने का परदा। ओहार। ३-बादलों के समान चारों ओर से घेर लेने वाला दल या समूह।

घटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कम करना। न्यून करना। २-बाकी निकालना। २-प्रतिष्ठा कम करना।

घटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। २-अवनति। ३-नदी के पानी का उतार।

घटावना+ [क्रि. स.] (हिं.) घटाना।

घटि [वि.] देखो 'घट'।

घटिक [संज्ञा पु.] (सं.) घंटा पूरा होने पर घड़ियाल बजाने वाला व्यक्ति।

घटिका [संज्ञा पु.] (सं.) १-घड़ी। समय बताने वाला यंत्र। २-एक घड़ी या चौबीस मिनट का समय। ३-छोटा घड़ा। गगरी।

घटिकायन्त्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समय बताने वाला यन्त्र। घड़ी।

घटिघट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

घटित [वि.] (सं.) १-घटना के रूप में घटा हुआ। २-रचा हुआ। निर्मित। ३-अर्थ आदि के विचार से पूरा उतरा हुआ।

घटितव्य [वि.] (सं.) जिसके घटित होने की सम्भावना हो।

घटिताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमी। न्यूनता।

घटिया [वि.] (हिं.) १-अपेक्षाकृत खराब या कम मोल का। २-तुच्छ। अधम। नीच।

घटियारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

घटिहा [वि.] (हिं.) १-दाँव पाकर अपना स्वार्थ साधने वाला। २-चालाक। मक्कार। ३-धोखेबाज। बेईमान। ४-लंपट। व्यभिचारी। ५-दुष्ट। खल।

घटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चौबीस मिनट का समय। घड़ी। २-समयसूचक यंत्र। घड़ी। (हिं.) १-कमी। न्यूनता। २-नुकसान। घाटा। हानि। ३-मूल्य अथवा महत्त्व में होने वाली कमी।

घटीयंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'घटिका-यंत्र'।

घटूका* [संज्ञा पु.] देखो 'घटोत्कच'।

घटोत्कच [संज्ञा पु.] (सं.) हिडिंबा राक्षसी से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घटोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि।

घटोर* [संज्ञा पु.] (हिं.) मेढ़ा। भेड़ा। मेष।

घट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) नदी, सरोवर आदि का घाट

घट्टकर [संज्ञा पु.] (सं.) नदी पार करने वालों से घाट पर लिया जाने वाला कर।

घट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाटा। घटी। कमी। टोटा। २-छेद। दरार।

घट्टित [वि.] (सं.) १-निर्मित। बनाया हुआ। २-नृत्य में पैर चलाने का एक ढंग।

घट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर पर उभड़ा हुआ चिह्न जो रगड़ लगने से पड़ जाता है।

घड़घड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) गाड़ी चलने या बादल गरजने से उत्पन्न शब्द।

घड़घड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) गड़गड़ या घड़-घड़ शब्द करना। गड़गड़ाना।

घड़घड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घड़घड़ाने का भाव। २-बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द।

घड़त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'गढ़त'।

घड़नई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घड़नैल'।

घड़नैल [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँस में बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिसके द्वारा छोटी छोटी नदियाँ पार की जाती हैं।

घड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी या धातु का बना पानी भरने का बरतन। गगरा।

घड़ों पानी पड़ जाना।-बहुत लज्जित होना।

घड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गढ़ाई'।

घड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'गढ़ाना'।

घड़ामोड़ [वि.] (हिं.) शूरवीर।

घड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घरिया'।

घड़ियाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पूजा के समय बजाया जाने वाला घंटा। २-एक हिंसक और बड़े आकार वाला जलजन्तु। ग्राह।

घड़ियाली [संज्ञा पु.] (हिं.) घंटा बजाने वाला।

घड़िला [संज्ञा पु.] देखो 'घड़ोला'।

घड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समय बताने वाला यंत्र। २-दिन-रात का ३२ वाँ भाग। २४ मिनट का समय। ३-समय। ४-अवसर। उपयुक्त समय।

घड़ी-घड़ी-बारबार। घड़ी गिनना-१-मौके की बाट जोहना। २-मरने के निकट होना।

घड़ी तोला-घड़ी माशा -कभी कुछ कभी कुछ । जरा देर में बात बदल जाना । *घड़ी में घड़ियाल होना या बजना*-१-क्षण भर में मौत आना । २-दशा पलटते देर नहीं लगती ।

घड़ी सायत पर होना-मरने के करीब होना ।

घड़ीदिआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घड़ी-दीया' ।

घड़ी-दीया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घड़ा और दीया जो किसी के मरने पर घर में रखा जाता है ।

घड़ी साज [संज्ञा पु.] (हिं.) घड़ी की मरम्मत करने वाला ।

घड़ी-साज़ी [संज्ञा पु.] (हिं.+फा.) घड़ी ठीक करने का काम या व्यवसाय ।

घड़ोला [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा घड़ा ।

घड़ौची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घड़ा रखने की तिपाई

घण* [संज्ञा पु.] देखो 'घन' ।

घतर [संज्ञा पु.] (देश.) प्रभातकाल । तड़का ।

घतिया [वि.] (हिं.) धोखा देने वाला । घात करने वाला ।

घतियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-अपनी घात या दांव पर लाना । मतलब पर चढ़ाना २-चुराना छिपाना ।

घन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ । बादल । २-लोहारों का बड़ा हथौड़ा । ३-लोहा । ४-मुख । ५-समूह । ६-कपूर । ७-घंटा । घड़ियाल । ८-वह गुणनफल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से आता है । ९-लम्बाई चौड़ाई और मोटाई (ऊंचाई या गहराई) तीनों का विस्तार । १०-वह वस्तु जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई समान हों । ११-पिंड । शरीर । १२-ताल देने का एक बाजा ।

[वि.] (सं.) १-घना । गझिन । २-ठोस । गठा हुआ । ३-प्रचुर । अधिक । ज्यादा । ४-दृढ़ । मजबूत । भारी ।

घनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरज । गड़गड़ाहट ।

घनकना [क्रि. अ.] (हिं.) गरजना ।

घनकारा [वि.] (हिं.) गरजने वाला ।

घनकाल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाऋतु । बरसात ।

घनकोदंड, घनकोदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र-धनुष ।

घनक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह क्षेत्र जिसकी लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई समान हों ।

घनगरज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बादल के गरजने का शब्द । २-एक प्रकार की तोप । ३-खुमी ।

घनघनाना [क्रि. अ.] (हिं.) घंटे की सी ध्वनि होना । [क्रि. स.] घन-घन शब्द होना ।

घनघनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घन-घन का शब्द ।

घनघोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भीषण ध्वनि । २-बादल की गरज ।

[वि.] (हिं.) १-बहुत घना । २-भयावना । भीषण ।

घन-घोर-घटा-बड़ी गहरी काली घटा ।

घनचक्कर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चंचल बुद्धि वाला मनुष्य । २-मूढ़ । मूर्ख । ३-व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला । आवारा । ४-एक प्रकार की आतिशबाजी । ५-सूर्यमुखी फूल । ६-चक्कर । गर्दिश । फेरफार । जंजाल ।

घनज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली की चमक ।

घनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घना होने का भाव । ठोसपन । घनापन । लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई का ठोस होने का भाव ।

घनताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चातक । पपीहा । २-करताल ।

घनतिमिर [संज्ञा पु.] (सं.) गहरा अंधकार ।

घनतोल [संज्ञा पु.] (सं.) चातक । पपीहा ।

घनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'घनता' ।

घननाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल की गरज । २-रावण का पुत्र ।

घनपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

घनप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) मोर । मयूर ।

घनफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई (मोटाई या गहराई) तीनों के मान का गुणनफल । २-वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो ।

घनबहेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) अमलतास ।

घन-बान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाण जिसके चलने से बादल छा जाते हैं ।

घनबेल [वि.] (हिं.) बेलबूटेदार ।

घनमूल [संज्ञा पु.] (सं.) गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक । जैसे-२७ का घन-मूल ३ होगा ।

घनरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल । पानी । २-कपूर । ३-हाथियों का एक रोग ।

घनवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना ।

घनवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वायु ।

घनवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

घनवाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तपे हुए लोहे को घन से पीटने का काम । घन चलाने वाले के खड़े होने का स्थान जो गड्ढा होता है ।

घनश्याम [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला बादल । २-श्रीकृष्ण ।

[वि.] बादलों के समान काला ।

घनसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल । पानी । २-कपूर ।

घनहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दाना भुनाने के लिये भड़भूजे के पास जाने वाला ।

घनहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) खारिका ।

घना [वि.] (हिं) १-पास-पास स्थित । सघन । गझिन । २-निकट का । घनिष्ट । ३-बहुत । अधिक । ४-पास-पास बसा हुआ ।

घनाक्षरी [संज्ञा पु.] (सं.) दंडक या मनहर जिसे साधारणतया लोग कवित्त कहते हैं ।

घनाघन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बरसने बादल । २-इन्द्र । ३-मस्त हाथी ।

घनात्मक [वि.] (सं.) जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई (गहराई या मोटाई) समान हो ।

घनानंद, घनानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १- काव्य का एक भेद । २-हिन्दी का एक

घनाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बादलों का मेघ-माला ।

घनिष्ट [वि.](सं.) १-घना । गाढ़ा । २- निकट का । (संबंध) ।

घने [वि.] (हिं.) बहुत । अनेक ।

घनेरा+* [वि.] (हिं.) अतिशय । बहुत

घनेरे [वि.] (हिं.) बहुत अधिक । अगणित ।

घनो+* [वि.] (हिं.) देखो 'घना' ।

घनोपल [संज्ञा पु.] (सं.) ओला । करका ।

घन्नई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी के घड़ों लकड़ी के लट्ठों को बांध कर नदी को करने की नाव या बेड़ा ।

घपचिआना [क्रि. अ.](हिं.) चक्कर आना । ड़ाना ।

घपची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु को रखने के लिए दोनों हाथों की कसकर

घपला [संज्ञा पु.] (हिं.) दो भिन्न वस्तुओं ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे को करना कठिन हो । गड़बड़ । गोलमाल ।

घपुआ+ [वि.] (हिं.) मूर्ख । नासमझ ।

घपुचंद [संज्ञा पु.] (हिं.) मूर्ख । नासमझ ।

घपोकानंदन [संज्ञा पु.] (हिं.) मूर्ख । नासमझ ।

घप्पू [वि.] (हिं.) देखो 'घपुआ' ।

घबड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'घबराना' ।

घबड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घबराहट' ।

घबराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-व्याकुल होना । भय या दुःख से अधीर या अशान्त होना । २-सकपकाना किंकर्त्तव्य विमूढ़ होना । ३- उतावली में होना । ४-ऊबना । उचाट होना । [क्रि. स.] (हिं.) १-व्याकुल करना । २- भौचक्का करना । ३-हड़बड़ी डालना । ४- हैरान करना ।

घबराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्याकुलता । अधीरता । २-किंकर्त्तव्यविमूढ़ता । ३-हड़बड़ी । उतावली ।

घमंका*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घूंसा । २- प्रहार जिससे 'घम' शब्द हो ।

घमंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अभिमान । गर्व ।

अहंकार। २-भरोसा। सहारा। आसरा।

घमंडिन [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'घमंडी'।

घमंडी [वि.] (हिं.) [स्त्री. घमंडिन] अभिमानी। अहंकारी।

घमक [संज्ञा पु.] (हिं.) कोमल तल पर कड़ा आघात पड़ने का शब्द।

घमकना [क्रि. स.] (हिं.) घम-घम का शब्द होना। गरजना।

घमका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आघात का शब्द। घूंसा पड़ने का शब्द। २-ऊसम। घमसा।

[illegible] [वि.] (हिं.) घाम या धूप में रह सकने वाला।

घमघमाना [क्रि. अ.] (हिं.) गम्भीर शब्द होना। घमघम का शब्द होना।

[क्रि. स.] (हिं.) १-भारी आघात लगाना। २-घूंसा मारना।

घमर [संज्ञा पु.] (हिं.) नगाड़े आदि का गंभीर शब्द।

घमरा [संज्ञा पु.] (हिं.) भृंगराज नामक बूटी।

घमरौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हल्ला-गुल्ला। ऊधम। २-गड़बड़। घोटाला।

घमस, घमसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धूप की गरमी। ऊमस। सघनता।

घमसान [संज्ञा पु.] (हि.) भयंकर युद्ध। गहरी लड़ाई। [वि.] (हिं.) प्रचंड। भयंकर।

घमाका [संज्ञा पु.] (हि.) भारी आघात का शब्द।

घमाघम [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-घमाघम का शब्द २-धूमधाम। ३-भारी आघात का शब्द।

घमाघमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घमघम का शब्द २-मारपीट।

घमाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-घास लेना। धूप में बैठना। २-धूप खाना।

घमायल [वि.] (हि.) घाम की गरमी से पका (फल)।

घमासान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घमसान'।

घमाहू* [संज्ञा पु] (हिं.) धूप न सह सकने वाला बैल।

घमूह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास जो करील की झाड़ियों के नीचे हुआ करती है।

घमोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस में लगने वाला एक रोग जिसके होने से नये अंकुर नहीं फूटते।

घमोय [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गोभी के समान एक छोटा पौधा। सत्यानाशी। भँडभाँड।

घर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मनुष्यों का रहने का वह स्थान। आवास। मकान। २-स्वदेश। जन्मभूमि। ३-कुलवंश। ४-कोठरी। कमरा। ५-दीवारों आदि से घिरा हुआ स्थान। कोठा। खाना। ६-खँटने या समाने का स्थान। ७-कोई वस्तु रखने का डिब्बा। कोश। खाना। ८-मूलकारण। जैसे—रोग का घर खांसी। *घर अपना समझना*-आराम की जगह समझना। संकोच का स्थान न होना। *घर उजड़ना*-१-कुटुम्ब का नाश होना। सम्पत्ति आदि नष्ट होना। २-घर के आदमियों का तितर-बितर होना या मर जाना। *घर उठना*-१-घर की दीवार बनना। २-घर बिगड़ना। *घर करना*-१-रहना। निवास करना। २-जमना। जगह करना। ३-अपने लिये जगह बनाना। ४-छेद करना। बिल बनाना। ५-घर संभालना। ६-किफायत से चलना। ७-कंजूसी से जोड़ना। ८-किसी स्त्री का खसम करना। *घर आबाद करना*-विवाह कर लेना। *घर कहना*-१-स्वर-तालसहित ठीक-ठीक गाना। २-चिड़ियों का मधुर स्वर में बोलना। *घर का*-१-अपना। निज का। २-आपस का। ३-अपने संबंधी। ४-पति। स्वामी। *घर का अच्छा*-समृद्ध कुल। अच्छे खानदान का। *घर का आदमी*-१-घर का या निकट संबंधी। २-पति। स्वामी। *घर का आंगन होना*-१-घर उजड़ना। २-घर में संतान होना।

घर का उजाला-१-कुल दीपक। २-सुन्दर। मनोहर। ३-लाड़ला, बहुत प्यारा। *घर काटे खाना या काट खाने दोड़ना*-घर सूना या किसी के बिना भयानक लगना।

घर का बोझ उठाना या संभालना-घर का प्रबन्ध करना। *घर का भेदी*-छिपा हुआ भेद जानने वाला। *घर का भोला*-बहुत सीधा साधा। अनाड़ी।

घर का न घाटका-१-कहीं का न रहना। २-जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो। ४-बेकार। निकम्मा। *घर का रास्ता लेना, नापना, पकड़ना*-अपने काम से काम। चले जाना। दूर होना। *घर का रास्ता समझना, जानना*-संहल और सीधा काम। *घर का शेर, मर्द, बहादुर या वीर*-परोक्ष में शेखी बघारने वाला और मुकाबले में न आने वाला। *घर का नाम उछलना*-१-कीर्ति कमाना। २-घर का नाम डुबाना। *घर का नाम डुबाना*-कुल या वंश को कलंकित करना। *घर की*-स्त्री। घरवाली। *घर की पूंजी*-गांठ का पैसा। निज का धन। *घर की बात*-१-कुल संबन्ध रखने वाली बात। २-छिपी हुई बात। *घर के आले लेते फिरना*-घर के प्रत्येक स्थान को ढूंढना। *घर के घर*-१-गुप्त रीति से। २-बहुत से घर। ३-बिना नुकसान। बराबर। *घर के घर बंद होना साफ हो जाना*-घर के बहुत से आदमी मर जाना। *घर के घर रहना*-हानि लाभ कुछ भी न होना। *घर के बाड़े*-घर के मर्द। *घर की खेती*-अपने यहां होने अथवा मिलने वाली वस्तु। *घर को सिर पर उठाना*-सब परिवार वालों को तंग करना। *घर खाली छोड़ देना*-१-अवसर और साधन बाकी रखना। २-गोट के लिए स्थान छोड़ देना। ३-जगह छोड़ना। ४-वार चूक जाना या न करना। *घर खोज मिटना*-घर का नामो निशान भी न रहना। *घर खाना*-घर का सत्यानाश होना। *घर घर होना*-स्थान-स्थान पर। सब के यहां। *घर घर के हो जाना*-बेठिकाने। कहीं के न रहना। *घर घालना*-१-परिवार का नाश होना। २-वंश में कलंक लगना। *घर घाट एक करना*-बखेड़ा करना। *घर घाट देखना*-१-चालढाल, रीति-रिवाज और आर्थिक अवस्था जांचना। २-ढब या ढंग। ३-ठौर-ठिकाना।

घर घाट मालूम होना-१-वंश की उच्चता या घर गाँव के संबंध में मालूम होना। २-रीति-रिवाज, चाल-ढाल और रुपये-पैसे का ज्ञान। *घर घालना*-१-मोहित या वश में करना। प्रेम से व्याकुल करना। २-कुल दूषित करना। ३-नाश करना। ४-दुनिया का ज्ञान होना। *घर चढ़कर लड़ने आना*-झगड़ा करने के निमित्त किसी के घर जाना। *घर चलना*-निर्वाह होना। *घर जमना*-घर स्थायी हो जाना। *घर जाना*-१-घर का नाश होना। २-परिवार के सदस्यों का कहीं जाना। *घर जुगत*-घर का प्रबन्ध। *घर डुबाना*-१-घर बर्बाद होना। २-कलंकित होना। ३-सम्पत्ति समाप्त हो जाना। *घर डूबना*-१-घर बरबाद होना। २-कलंकित होना। ३-सम्पत्ति नष्ट हो जाना। *घर तक पहुंचना*-१-माँ बहिन की गाली देना। २-घर के आदमियों से शिकायत करना। *घर तक पहुंचाना*-१-अन्त तक। २-कायल करना। *घर पड़ना*-१-घर में पत्नी भाव से रहना। २-प्राप्त होना। मोल मिलना। *घर फूंक तमाशा देखना*-सम्पत्ति बरबाद करके मनोरंजन करना। *घर फोड़ना*-घर में झगड़ा खड़ा करना। *घर बन्द होना*-१-गोटी चलने को जगह न होना। २-घर में ताला लगना। ३-घर में कोई न रहना। ४-किसी स्थान या घर से सम्बन्ध न रहना। ५-उन्नति का मार्ग बन्द होना। *घर बड़े की सैर*-जेल जाना। *घर बनना*-१-मकान की इमारत तैयार होना। २-धनवान होना। *घरबार की होना*-(लड़की का) विवाह होना। *घर बिगड़ना*-घर समृद्धि नष्ट होना।

घर बनाना-१-कहीं जमकर या स्थायी तौर पर रहना। २-समृद्ध होना। ३-मकान तैयार करना। ४-रुपया बचाकर छिपाकर रखना। *घर बरबाद होना*-परिवार या समृद्धि नष्ट होना। *घर बसना*-१-घर में बहू आना। २-घर की दशा अच्छी होना। ३-घर आबाद होना। *घर बसाना*-१-पति करके रहना। २-पत्नी बनाकर लाना। ३-घर आबाद करना। ४-घर की अवस्था सुधारना। *घर बैठना*-१-काम छोड़ना। २-बेकार या बे-रोजगार रहना। ३-वर्षा से मकान बैठना। ४-किसी के घर पत्नी के रूप में रहना। *घर बैठी रोटी*-बिना परिश्रम की जीविका। *घर बैठे*-बिना परिश्रम। *घर बैठे की नौकरी*-बिना परिश्रम के धन की

प्राप्ति। *घर बैठे शिकार खलसा*–बिना काम किये धन कमाना। *घर भरना*–१–घर को धन धान्य से पूर्ण करना। २–घर का प्राणियों से भरना। ३–घाटा पूरा होना। ४–छेद मूंदना। *घर में गंगा*–बिना दौड़धूप किये किसी वस्तु की प्राप्ति। *घर में डालना*–किसी स्त्री को पत्नी बनाकर घर में रखना। *घर में पड़ना*–१–प्राप्त होना। २–किसी की पत्नी बनकर रहना। *घर से*–१–निज का धन। २–पति। ३–पत्नी। *घर से देना*–१–पास या पल्ले से देना। २–मूल धन में से खर्च करना। ३–स्वयम् हानि उठाना। *घर से पाँव निकालना*–१–मर्यादा से बाहर होना। २–बाहर जाना। *घर सेना*–१-घर में ही पड़े रहना। २–बिना आजीविका के होना। *घर होना*–१–गृहस्थी चलना। २–घर के प्राणियों में मेल होना।

घरऊ* [वि.] (हिं.) देखो 'घराऊ'।

घरघराना [क्रि. अ.] (हिं.) घर्र-घर्र शब्द करना। [संज्ञा पु.] (हिं.) वंश। कुल। परिवार।

घरघराहट [संज्ञा पु.] (हिं.) घर्र-घर्र का शब्द।

घरघाल [वि.] (हिं.) परिवार का नाश करने वाला। कुल की समृद्धि नष्ट करने वाला।

घरघालन [वि.] (हिं.) देखो 'घरघाल'।

घरचित्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) घरों में रहने वाला एक प्रकार का सांप।

घर-जाया [संज्ञा पु.] (हिं.) गृह-जात। गुलाम। घर का दास।

घरणी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घरनी'।

घर-दासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गृहणी। भार्या। पत्नी।

घर-द्वार [संज्ञा पु.] (हिं.) १–रहने का स्थान। ठौर। ठिकाना। २–गृहस्थी। ३–निज की सारी सम्पत्ति।

घरद्वारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रत्येक घर के पीछे लिया जाने वाला कर।

घरन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।

घरनई+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घन्नई'।

घरनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की प्राचीन समय की तोप।

घरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घरवाली। भार्या। गृहिणी।

घरपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रत्येक घर के पीछे लिये जाने वाला चंदा।

घरपरना [संज्ञा पु.] (हिं.) कच्ची मिट्टी का वह गोल पिंडा जिस पर ठठेरे घड़िया बनाते हैं।

घर-फोड़ना [वि.] (हिं.) परिवार में कलह कराने वाला।

घर-फोड़नी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] घर में या परिवार में झगड़ा कराने वाली।

घर-फोरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'घरफोड़नी'।

घरबसा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. घरबसी] उपपति। यार।

घरबसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उपपत्नी। सुरैतिन। रखेली स्त्री। [वि.] [स्त्री. प्र.] १–घर बसाने वाली। २–घर उजाड़ने वाली।

घरबार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घरद्वार'।

घर-बारी [संज्ञा पु.] (हिं.) बाल-बच्चों वाला। गृहस्थ। कुटुम्बी। [संज्ञा स्त्री.] घरबार का काम।

घरबैसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घरबसी।

घरमकर* [संज्ञा प.] (हिं.) सूर्य।

घरमना+* [क्रि. अ.] (हिं.) बहना।

घरर-घरर [संज्ञा पु.] (हिं.) घिसने से उत्पन्न शब्द

घररना [क्रि. स.] (हिं.) रगड़ना। घिसना।

घरवा, घरवाह [संज्ञा पु.] (हिं.) १–छोटा घर। कुटी। २–घरौंदा।

घरवात*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घर का सामान। गृहस्थी।

घरवाला [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. घरवाली] १–घर का मालिक। २–पति। स्वामी।

घरवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गृहणी। भार्या। पत्नी।

घरसा [संज्ञा पु.] (हि.) रगड़। घस्सा।

घरहांई+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–परिवार में विरोध कराने वाली स्त्री। चुगलखोर स्त्री। ३–अपकीर्ति फैलाने वाली स्त्री। [वि.] (हिं.) बदनामी या अपकीर्ति फैलाने वाली।

घराऊ [वि.] (हिं.) १–घर का। गृहस्थी संबंधी। २–निजका। आपस का।

घराती [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह में कन्यापक्ष के लोग।

घराना [संज्ञा पु.] (हिं.) वंश। कुल। खानदान।

घरिआर+* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घड़ियाल'।

घरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घड़ियाल'।

घरियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) कपड़े को तह लगा कर लपेटना।

घरियार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घड़ियाल'।

घरियारी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घड़ियाली'।

घरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–तह। परत। २–देखो 'घड़ी'।

घरीक+* [क्रि. वि.] (हिं.) घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गृहस्थी का उचित प्रबन्ध।

घरुआदार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. घरुआदारिन] गृहस्थी का उत्तम प्रबन्ध चलाने वाला व्यक्ति। समझबूझकर गृहस्थी का खर्च चलाने वाला मनुष्य।

घरुआदारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घर का प्रबन्धः करने का भाव।

घरुवां [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घरुआ'।

घरू [वि.] (हिं.) घर का। गृहस्थी सम्बन्धी।

घरेला [वि.] (हिं.) देखो 'घरेलू'।

घरेलू [वि.] (हिं.) १–जो घर के आदमियों में रहने वाला। पालतू। २–घरू। निज घर का। खानगी। ३–घर का बना।

घरैया+ [वि.] (हिं.) परिवार सम्बन्धी। घर का। [संज्ञा पु.] घर का आदमी। घर का प्राणी।

घरो+* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घड़ा'।

घरौंदा, घरौंधा [संज्ञा पु.] (हि.) १–कागज, आदि का छोटा घर, जिसे खेलने के छोटे बच्चे बनाते हैं। २–छोटा घर।

घरौना [संज्ञा पु.] (हि.) १–घर। मकान। स्थान।

घर्घर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गड़गड़ाहट २–प्राचीनकाल का एक बाजा।

घर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–घाम। धूप। प्रकार का यज्ञपात्र।

घर्मविंदु, विन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना।

घर्मांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

घर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–आंख में लगाने का प्रकार का अंजन। २–कफ के कारण वाली गले की घरघराहट। ३–कोल्हू पेरने कूएं से चरसा खींचने का कठिन काम (जेल में)।

घर्राटा [संज्ञा पु.] (हिं.) गहरी नींद में सांस का शब्द। खर्राटा। *घर्राटा मारना*–सोते में नाक बजना। *लेना*–सोते समय नाक बजना।

घर्रामी [संज्ञा पु.] (हिं.) छपरबंद।

घर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) रगड़। घिस्सा।

घर्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

घर्षित [वि.] (सं.) [स्त्री. घर्षिता] १–रगड़ा हुआ। २–रगड़ खाया हुआ।

घलना [क्रि. अ.] (हिं.) १–छूटकर गिर पड़ना। २–चढ़े हुए तीर या भरी हुई बंदूक का जाना।

घलाघल, घलाघली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीट।

घलुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खरीदने में तौल से कुछ अधिक दी जाने वाली वस्तु। घेलौना। घाल।

घवद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घौद'।

घवरि+* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) फलों या पत्तियों का गुच्छा।

घसकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खिसकना'।

घसखुदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घास खोदने वाला। मूर्ख। अनाड़ी।

घसन [संज्ञा पु.] (?) बकरा।

घसना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) रगड़ना। घिसना।

घसिटना [क्रि. अ.] (हिं.) रगड़ते हुए खिंचना।

घसियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. घसियारी या घसियारिन] घास छीलकर बेचने वाला।

घसियारिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घास बेचने वाली।

घसियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घास बेचने वाली।

घसीट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घसीटने की क्रिया या भाव। २-जल्दी लिखने का काम। ३-जल्दी का लिखा हुआ (अस्पष्ट) लेख।

घसीटना [क्रि. स.] (हिं.) १-रगड़ खाते हुए खींचना। २-जल्दी से लिखकर चलता करना। ३-जबरदस्ती शामिल करना।

घस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) घिस्सा। रगड़।

घहनाना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) घण्टे आदि से टनटन की ध्वनि निकलना। घहराना।

घहराना [क्रि. अ.] (हिं.) गरजने का सा गंभीर शब्द करना। घोर। शब्द करना।

घहरावना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घहरना। २-गरजना। चिघाड़ना।

घहरानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरज। गम्भीर शब्द।

घहरात*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घोर शब्द। गरज

घहरारी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंभीर शब्द। गरज।

घाँ+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दिशा। २-ओर। तरफ।

घाँघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. घांघरी] घाघरा। लहँगा।

घाँघरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा घाघरा या लहँगा।

घाँघरो [संज्ञा पु.] (हिं.) घाघरा। लहँगा।

घाँची+* [संज्ञा पु.] (हिं.) तेली।

घाँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गले के भीतर की घंटी। कौआ। २-गला।

घाँटो [संज्ञा पु.] (?) चैत के महीने में गाया जाने वाला राग।

घांही* [संज्ञा पु.] (हिं.) ओर। तरफ।

घा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओर। तरफ।

घाइ* [संज्ञा पु.] देखो 'घाव'।

घाइबो [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घाना'।

घाइल* [वि.] (हिं.) देखो 'घायल'।

घाईं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ओर। तरफ। २-दूसरा जोड़। संधि। ३-बार। दफा। ४-पानी में का भंवर या चक्कर।

घाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दो दंगलियों के बीच की जगह। अंटी। २-पेड़ी और डाल के बीच का कोना। ३-चोट। आघात। ४-धोखा। चालबाजी।

घाइयाँ बताना-झाँसा देना।

घाउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घाव'।

घाऊघप [वि.] (हिं.) गुप्तरूप से किसी का माल हज़म कर जाने वाला। २-चुपचाप अपना मतलब गांठने वाला।

घाएँ [अव्य.] (हिं.) ओर। तरफ।

घाग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घाघ'।

घागही* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पटसन। सन।

घाघ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अत्यंत चतुर मनुष्य। अनुभवी व्यक्ति। २-एक प्रसिद्ध अनुभवी और चतुर व्यक्ति जिसकी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं। ३-भारी चालाक।

घाघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक चुननदार और घेरदार पहनावा जिसे स्त्रियाँ कमर में पहनती हैं यह कमर में एड़ी तक अंग ढक लेता है। लहँगा। २-एक प्रकार का कबूतर।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरजूनदी का एक नाम।

घाघी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मछली पकड़ने का एक बड़ा जाल।

घाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नदी किनारे का वह पक्का स्थान जहां लोग पानी भरते, स्नान करते और नाव पर चढ़ते हैं। २-चढ़ाव उतार का पहाड़ी मार्ग। ३-पहाड़। ४-दिशा। ओर। तरफ। ६-तलवार की धार।

घाट-घाट का पानी पीना-बहुत घूम फिर कर अनुभव प्राप्त करना। २-बहुत जानकार होना। ३-सब जगह घूमना। *घाट धरना*-राह रोकना। *घाट मारना*-नाव या पुल का महसूल दिये बिना जाना। *घाट में आना*-चक्कर में आना। *घाट लगना*-१-नाव किनारे पर लाना। २-कहीं ठिकाना या आश्रय पाना। २-नाव चढ़ने के निमित्त पूरे आदमी होना।

[वि.] (हिं.) थोड़ा। कम।

घाट-कप्तान [संज्ञा पु.] (हिं.+अ.) बंदरगाह का अध्यक्ष।

घाटबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाव या जहाज चलाने की मनाही। २-घाट बंधने की क्रिया या भाव।

घाटा [संज्ञा पु.] (हिं.) हानि। नुकसान। घटी।

घाटा उठाना-हानि सहना। *घाटा भरना*-१-नुकसान भरना। २-नुकसान पूरा करना।

घाटारोह*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घाट का रोकना। घाट से जाने न देना।

घाटवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) घाट पर बैठकर दान लेने वाला ब्राह्मण। घाटिया।

घाटि*+ [वि.] (हिं.) कम। न्यून।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाप। नीचकर्म।

घाटिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरदन का पिछला भाग।

घाटिया [संज्ञा पु.] (हिं.) तीर्थ स्थानों के घाटों पर दान या दक्षिणा लेने वाला ब्राह्मण।

घाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पर्वतों के बीच की भूमि। २-पहाड़ की ढाल। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले का पिछला भाग।

घाटो+* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाटा। हानि। २-एक प्रकार का गीत।

[वि.] (हिं.) दरिद्र। गरीब।

घात [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रहार। चोट। २-वध। हत्या। ३-अहित। बुराई। ४-गुणनफल। (गणित में)। ५-प्रवेश। संक्रांति (ज्योतिष में)।

[संज्ञा स्त्री.] १-किसी कार्य को सिद्ध करने का उपयुक्त स्थान और अवसर। २-आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कोई का काम करने के लिए उपयुक्त अवसर की खोज। ताक। ३-छल। दांवपेच। ४-रंगढंग। तौर तरीका।

घात चलना-जादू टोना करना। *घात ताकना*-अवसर की प्रतीक्षा करना। *घात पर चढ़ना*-*घात में आना*-हत्थे चढ़ना। *घात में फिरना*-ताक में घूमना। *घात में बैठना*-आक्रमण करने के लिए छिपकर बैठना। *घात में रहना*-किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने के निमित्त अनुकूल अवसर ढूंढते रहना। *घात में होना*-विरुद्ध कार्य के लिए अवसर की प्रतीक्षा में रहना। *घात लगाना*-१-मौका ढूंढना। २-प्रतीक्षा या ताक में रहना।

घातक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हत्यारा। २-हिंसक। बधिक। ३-शत्रु।

[वि.] १-घात करने वाला। जिससे कोई मरे।

घातकी [संज्ञा पु.] देखो 'घातक'।

घातवर्त्तना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नृत्य में एक प्रकार की वर्त्तना।

घातिक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घातक'।

घातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वध करने वाला। हत्यारी।

घातिया [संज्ञा पु.] देखो 'घाती'।

घाती [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. घातिनी] १-घातक। हत्यारा। २-नाश करने वाला।

घातुक [वि.] (सं.) १-हिंसक। २-निष्ठुर। क्रूर।

घान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उतनी वस्तु या अंश जितना एक बार कोल्हू में डालकर पेरा या चक्की में पीसा जाय। २-उतनी वस्तु जितनी एक बार बनाई या पकाई जाय।

घान उतारना-१-कोल्हू में एक बार डाली गई वस्तु। २-कढाई में से पकवान का निकालना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) प्रहार। चोट।

घाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मारना। नाश करना।

पकड़ना।

घानी [संज्ञा स्त्री] (हिं) १–देखो 'घान'। २–समूह। ढेर।

घानी-की-सवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखंब की एक कसरत।

घाम* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूर्यताप। धूप।

घामड़ [वि.] (हिं.) १–घाम। धूप से व्याकुल (चौपाया)। २–मूर्ख। जड़। नासमझ। ३–आलसी।

घाय* [संज्ञा पु.] (हिं.) घाव। जख्म।

घायक [वि] (हिं.) १–मारने वाला। २–जिसे घाव हो जाय।

घायल [वि.] (हिं.) चोट खाया हुआ। जिसके घाव लगा हो। आहत। जख्मी।

घार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी के बहाव के कारण कटकर बना मार्ग या गड्ढा।

घारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घासफूस का वह मकान जिसमें चौपाये बंधते हैं।

घाल, घाला [संज्ञा पु.] (हिं.) घलुआ।

घालक [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. घालिका] १–मारने वाला। २–नाश करने वाला।

घालकता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मारने या नाश करने का कार्य।

घालना [क्रि. स.](हिं.) १–डालना। रखना। २–फेंकना। चलाना। छोड़ना। कर डालना। ४–बिगाड़ना। ५–मार डालना।

घालमेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–अनेक प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट। २–मेलजोल घनिष्टता।

घालिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नष्ट करने वाली। विनाश करने वाली।

घालिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मार डालने वाली। नाश करने वाली।

घाव [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर का वह स्थान जहां पर चोट लगी हो या कट गया हो। क्षत। जख्म।

घाव खाना–घायल खाना। *घाव पर नमक या लोन छिड़कना*–दुःख में दुःख होना।

घाव-पत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बेल। जिसके पत्ते घाव, फोड़े आदि पर बांधे जाते हैं।

घावरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक बड़ा और सुंदर वृक्ष।

घावरिया*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घावों की चिकित्सा करने वाला, जर्राह।

घास [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूमि पर उगने वाला छोटा तृण जिसे पशु चरते हैं।

घास-पात–१–तृण और वनस्पति। २–कूड़ा-करकट। *घास-फूस*–१–कूड़ा-करकट। बेकाम चीज। *घास काटना या खोदना*–१–तुच्छ काम करना। २–निरथक प्रयत्न करना। ३–किसी काम को लापरवाही से जल्दी करना। *घास खाना*–पशु के सदृश्य हो जाना।

घासलेट [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मिट्टी का तेल। २–तुच्छ, निंदनीय या अग्राह्य पदार्थ।

घासलेटी [वि.] (हिं.) १–तुच्छ, ओछा, निंदनीय और निम्न कोटि का। २–अश्लील। गंदा।

घासी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घास। चारा। तृण।

घाह*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उंगलियों के बीच की संधि। घाई। गावा।

घिअ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घी'।

घिआँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) घी रखने का मिट्टी का बरतन। घृतपात्र।

घिआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घिया'।

घिउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घी'।

घिग्घी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–लगातार रोने से सांस में होने वाली रुकावट। २–भय के कारण अस्पष्ट शब्द निकलना। भय के मारे बोलने में होने वाली रुकावट।

घिग्घी बँधना–१–रोने से सांस का रुक-रुक कर निकलना।

घिघियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–गिड़गिड़ाना। करुण स्वर में प्रार्थना करना। २–चिल्लाना।

घिचपिच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–स्थान की संकीर्णता। संकरापन। २–थोड़े स्थान में बहुत से व्यक्तियों या वस्तुओं का समूह।

[वि.] (हिं.) अस्पष्ट। गिचपिच।

घिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घृणा'।

घिनाना[क्रि. अ.] (हिं.) घृणा करना।

घिनावना [वि.](हिं.) [स्त्री. घिनावनी] घृणित। गंदा। बुरा।

घिनौना* [वि.] (हिं.) जिसे देखकर घिन या घृणा उत्पन्न हो।

घिनौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बरसाती कीड़ा जिसे ग्वालिन भी कहते हैं।

घिन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'घिरनी'। २–देखो 'गिन्नी'।

घिय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घी'।

घिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है। २–इस बेल का फल। नेनुआं।

घियाकश [संज्ञा पु.] (हिं. फा.) कद्दूकश।

घियातरोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घिया तोरी'।

घियातोरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घियातोरी'।

घियातोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है। २–इस बेल का लगा फल।

घिरत* [संज्ञा पु.] (हिं.) घृत। घी।

घिरना [क्रि. अ.] (हिं.) १–चारों ओर से घेरा या रोका जाना। आवृत्त होना। २–चारों ओर से छाना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घृणा'।

घिरनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–चरखी। गरा २–चक्कर। फेरा।

घिरनी खाना–चक्कर खाना। २–देखो

घिराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घेरने की क्रिया भाव। २–पशुओं को चराने का कार्य। पशुओं को चराने की मज़दूरी।

घिरायँद [संज्ञा पु.] (हिं.) मूत्र की दुर्गंध।

घिराव [संज्ञा पु.] (हिं) १–घेरने की क्रिया भाव। २–घेरा।

घिरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शिकार को घेरने लिए बनाया गया घेरा।

घिरौंची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घड़ौंची'।

घिरौरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) घूस का कि

घिर्राना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–घसीट घिघयाना। गिड़गिड़ाना।

घिर्री [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–देखो 'घिर देखो 'घिन्नी'। ३–एक प्रकार की घास।

घिव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घी'।

घिसकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खसकना'।

घिसघिस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–सुस्ती के कार्य में अनुचित विलम्ब। २–अनिश्च गड़बड़ी।

घिसटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घसिटना'।

घिसन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रगड़।

घिसना [क्रि. स.] (हिं.) एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दाव के साथ घुमाना या रगड़ना।

[क्रि. अ.] रगड़ खाकर कम होना।

घिस-घिस कर चलना–बहुत दिनों तक में आना।

घिसपिस + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घिस-पि २–सट्टाबट्टा। मेलजोल।

घिसवाना [क्रि. स.] (हिं.) रगड़वाना। का काम कराना।

घिसाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घिसने की क्रि या भाव। २–घिसने की मजदूरी।

घिसाना [क्रि. स.] (हिं.) रगड़ना।

घिसाव [संज्ञा पु.] (हिं.) रगड़।

घिसावट [संज्ञा स्त्री.] रगड़। घिसन।

घिसिआना+ [क्रि. स.] (हिं.) घसीटना।

घिसिरपिसिर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घिस पिस'।

घिस्टपिस्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गहरी घनिष्ठता २–अपवित्र या अनुचित सम्बन्ध।

घिस्समघिस्सा [संज्ञा पु.](हिं.) १–खूब भीड़भाड़। ऐसी भीड़ जिसमें कंधे से कंधा छिले। २– लड़कों का एक खेल।

घिस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रगड़ा। २-धक्का। टक्कर। २-वह आघात जो किसी (पहलवान) की गरदन पर कोहनी और कलाई पर किया जाय। कुंदा। रद्दा।

घींच+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरदन। ग्रीवा।

घींचना+ [क्रि. स.] (हिं.) खींचना। ऐंचना।

घी [संज्ञा पु.] (हिं.) दूध में से तपाकर निकाला हुआ सार। घृत।
घी के दिये जलाना–१-मनोरथ पूर्ण होना। २-आनन्द मंगल होना। *पाँचों उंगलियाँ घी में होना*–सुखभोग का अवसर मिलना।

घीउ, घीऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) घी। घृत।

घीकुआँर [संज्ञा पु.] (हिं.) घृतकुमारी। ग्वारपाठा।

घुइयाँ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अरवी नामक एक तरकारी।

घुंगची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घुंघची'।

घुंघची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिसके बीज लाल होते हैं। गुंजा। अरुण।

घुंघनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भिगोकर घी या तेल में तलाया हुआ अन्न। घुघरी।

घुंघरारे+* [वि.] (हिं.) घुँघराले। घूँघरवाले।

घुंघराले [वि.] (हिं.) घूमे हुए, टेढ़े और बल खाए हुए (बाल) छल्लेदार।

घुंघरू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु की बनी वह पोली गुरिया जो हिलने पर 'घनघन' बजती है। चौरासी। मंजीर। २-ऐसी गुरियों की लड़ी। ३-ऐसी गुरियों का बना आभूषण।
घुँघरू बोलना–घर्रा लगना। मरते समय कफ छेंकना।

घुंघरूदार [वि.] (हिं.) जिसमें घुँघरू लगे हों।

घुंघरूबंद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाचने गाने का कार्य करने वाली वेश्या।

घुंघरमोतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोतिया। बेला।

घुंघुवारे [वि.] (हिं.) देखो 'घुँघराले'।

घुंट [संज्ञा पु.] (देश.) घोंट नामक एक जंगली वृक्ष।

घुँटना [क्रि.अ.] (हिं.) देखो 'घुटना'।

घुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पहरने के कड़ों के सिरे की। २-कपड़े का मटर के आकार का गोल बटन। ३-कोई गोल गाँठ।
जी की घुंडी खोलना–चित्त से द्वेष निकालना।

घुंडीदार [वि.] (हिं.) जिसमें घुंडी लगी हो।

घुंसा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की लकड़ी जिसके सहारे से कोल्हू में जाठ उठाकर डालते हैं।

घुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घूआ'।

घुरना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'घूरना'।

घुइस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घूस'।

घुकुअ, घुकुवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घूका'।

घुग्घी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-शीत या पानी से बचने से कंबल को तिकोना लपेटने का एक ढंग। घोंघी। खडुआ। २-कपोत जाति की एक चिड़िया। पंडुक। फाख्ता।

घुग्घू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उल्लू पक्षी। २-एक खिलौना जो फूकने से बजता है।

घुघुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) 'घुग्घू'।

घुघुआना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उल्लू पक्षी का बोलना। २-उल्लू के समान बोलना। ३-बिल्ली का गुर्राना। ४-बिल्ली के समान गुर्राना।

घुघुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटे घुंघरू। २-देखो 'घुंघनी'।

घुघुवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'घुघुआना'।

घुटकना* [क्रि. स.] (हिं.) १-घूँट-घूँट करके पी जाना। २-निगल जाना।

घुटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले की वह नली जिसके द्वारा खाना-पानी आदि पेट में जाता है।

घुटना [संज्ञा पु.] (हिं.) टांग और जांघ के मध्य की गांठ।
घुटना टेकना–१-घुटनों के बल बैठना। २-हार मानना। पराजय स्वीकार करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-साँस रुकना। उलझ कर कड़ा पड़ जाना। फँसना। ३-गाँठ या बंधन का दृढ़ होना। ४-घिसकर चिकना होना। ५-पिसकर बारीक होना। ६-घनिष्टता होना। मेल-जोल होना।
घुट-घुट कर मरना–दम तोड़ते हुए सांसत से मरना। *घुटा हुआ*–छटा हुआ। भारी चालाक।

घुटन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) घुटनों तक का पायजामा

घुटरू [संज्ञा पु.] (हिं.) घुटना।

घुटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-घोटने का काम कराना। २-बाल मुँड़ाना।

घुटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोटने की क्रिया या भाव। २-घोटने की मजदूरी।

घुटाना [क्रि. स.] (हिं.) घोटने का काम कराना।

घुटुरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुटना'।

घुटुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुटना'।

घुट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घोटा'।

घुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों को पाचन के लिए पिलाने वाली दवा।
घुट्टी में पड़ना–स्वभाव के अंतर्गत होना।

घुड़कना [क्रि. स.](हिं.) जोर से बोलकर डराना। कड़ककर बोलना।

घुड़की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घुड़कने की क्रिया। २-डांट। डपट। फटकार।

घुड़चढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सवार। अश्वारोही।

घुड़चढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवाह की एक रीति जिसमें वर घोड़े पर चढ़कर कन्या के घर जाता है। २-घोड़े पर रखकर चलाई जाने वाली एक तोप।

घुड़-दौड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ों की दौड़ जिसमें हार-जीत की बाजी लगाती हैं।
[क्रि. वि.] (हिं.) बड़ी तेजी से। अति शीघ्रता से।

घुड़दौर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुड़दौड़'।
[क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'घुड़दौड़'।

घुड़नाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े पर रख कर चलाई जाने वाली एक तोप।

घुड़बहल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रथ जिसमें घोड़े जुते रहते हैं।

घुड़मक्खी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूरे रंग की एक मक्खी जो घोड़ों को तंग किया करती है।

घुड़मुँहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक कल्पित मनुष्य जिसका धड़ मनुष्य का और मुंह घोड़े का माना जाता है। २-लम्बे, भद्दे मुख वाला मनुष्य।

घुड़ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोड़े के आकार का खिलौना (मिट्टी या खांड का)। २-छोटा घोड़ा

घुड़सार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घुड़साल'।

घुड़साल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़ों के बांधने का स्थान। अस्तबल।

घुड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी घोड़ी। २-देखो 'घोड़िया'।

घुडुकना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'घुड़कना'।

घुण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'घुन'।

घुणाक्षर-न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनजान में ही कोई कार्य हो जाय या बन जाय। २-ऐसी रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय जिस प्रकार घुनों के खाते-खाते लकड़ी में अक्षर के समान बहुत से चिह्न बन जाते हैं।

घुन [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न, लकड़ी आदि में लगने वाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
घुन लगना–भीतर ही भीतर किसी वस्तु का ह्रास या क्षीण होना।

घुनघुना [संज्ञा पु.] (हिं.) झुनझुना।

घुनना [क्रि. स.] १-घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। २-किसी दोष के कारण किसी वस्तु का भीतर ही भीतर क्षीण होना।

घुनाक्षर-न्याय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुणाक्षर-न्याय'।

घुन्ना [वि.] (हिं.) [स्त्री. घुन्नी] अपने मनोभावों को अपने में ही रखने वाला। मन ही मन बुरा मनाने वाला। चुप्पा।

घुन्नी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] अपने मन के भाव गुप्त रखने वाली। चुप्पी। [संज्ञा स्त्री.] चुप्पी।

घुप [वि.] (हि.) गहरा (अंधेरा)। निविड़ (अंधेरा)

घुमँड़ना+ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'घुमड़ना'।

घुमक्कड़ [वि.] (हि.) बहुत घूमने वाला (व्यक्ति)।

घुमची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घुंघची'।

घुमटा [संज्ञा पु.] (हि) सिर का चक्कर या सिर घूमना।

घुमड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बरसने वाले बादलों की घेरघार।

घुमड़ना [क्रि. अ.] (हि.) १–बादलों का इकट्ठा होना। घने मेघों का छाना। २–छाजाना। इकट्ठा होना।

घुमड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–चक्कर के समान घूमना। २–सिर में चक्कर आना।

घुमड़ाना+ [क्रि. अ.] (हि.) घुमड़ना।

घुमड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–केन्द्र पर स्थिर रह कर चारों ओर घूमने की क्रिया। २–सिर में चक्कर आना। ३–परिक्रमा।

घुमना+ [वि.] (हि.) घूमने वाला। घुमक्कड़।

घुमनी [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] इधर-उधर घूमने वाली। [संज्ञा स्त्री.] १– पशुओं को होने वाला एक रोग। २–देखो 'घुमड़ी'।

घुमरना [क्रि. अ.] (हिं.) १–जोर की आवाज करना। २–देखो 'घुमड़ना'। + ३–घूमना।

घुमराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घुमरना'।

घुमरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–देखो 'घुमड़ी'। २–पानी का भंवर। २–एक पशु रोग। घुमनी।

घुमाँ [संज्ञा पु.] (हि.) दो बीघे के बराबर की जमीन की एक नाप।

घुमाना [क्रि. स.] (हि.) १–चक्कर देना। चारों ओर फिराना। २–टहलाना। सैर कराना। ३–किसी विषय की ओर प्रवृत्त करना। ४–मरोड़ना। ऐंठना।

घुमाव [संज्ञा पु.] (हि.) १–घूमने या घुमाने का भाव। २–मोड़। चक्कर।

घुमावदार [वि.] (हिं.) चक्करदार। जिसमें घुमाव या मोड़ हों।

घुम्मरना+ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'घुमरना'।

घुरकना+* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घुड़कना'।

घुरका [संज्ञा पु.] (हि.) चौपायों को होने वाला एक रोग।

घुरघुर [संज्ञा पु.] (हि.) १–घुर-घुर शब्द जो बिल्ली, सूअर आदि के गले से कफ रुकने के कारण निकलता है। २–कफ अवरोध के कारण सांस लेने पर मनुष्य के मुख से भी उपरोक्त स्वर निकलता है।

घुरघुरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) झींगुर।

घुरघुराना [क्रि. अ.] (हि.) गले से 'घुरघुर' शब्द निकालना।

घुरघुराहट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घुरघुर शब्द।

घुरचा+ [संज्ञा पु.] (देश.) कपास ओटने की चरखी।

घुरना* [क्रि. अ.] (हि.) १–देखो 'घुलना'। २–बजना। शब्द करना।

घुरबिनिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–घूरे पर से दाना या अन्न आदि बटोरने का काम। २–सड़क अथवा गली में से कूड़ा करकट या टूटी फूटी वस्तुए बटोरने का काम।

घुरहुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–पशुओं के खुरों से बना रास्ते का निशान। २–पगडंडी।

घुरमना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घूमना'।

घुर्मित [वि.] (हि.) घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ।

घुर्राना+ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'गुर्राना'।

घुरुवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक पशु रोग।

घुलना [क्रि. अ.] (हि.) १–किसी द्रव पदार्थ में भली भांति मिल जाना। हल होना। २–पिघलना। ३–पक कर पिलपिला होना। ३–किसी रोग अथवा चिन्ता के कारण दुर्बल होना।

घुल-घुल कर कांटा होना–रोग या चिन्ता के कारण क्षीण या दुबला होना। *घुल-घुल कर बातें करना*–अभिन्न हृदय होकर या घनिष्ठता-पूर्वक बातें करना। *घुल-मिलकर*–खूब मेल जोल से। *घुला-घुला कर मारना*–तंग करना। *घुला हुआ*–वृद्ध। बुड्ढा।

घुलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–द्रवित कराना। गलवाना। २-आँख में सुरमा लगवाना। ३–मिश्रित कराना। हल कराना।

घुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १–गलाना। द्रवित करना। २–शरीर क्षीण या दुर्बल करना। ३–मुख में रखकर धीरे-धीरे चूसना। ४–पका कर पिलपिला करना। ५–लगाना। सारना (सुरमा या काजल)। ६–बिताना। गुजारना (समय)।

घुलावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुलाने की क्रिया।

घुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घूआ'।

घुसड़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घुसना'।

घुसना [क्रि. अ.] (हिं.) १–प्रवेश करना। भीतर जाना। २–धँसना। ३–बिना अधिकार कहीं पहुँचना। ४–बात की तह तक पहुंचना।

घुसपैठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रवेश गति। पहुँच। रसाई।

घुसवाना [क्रि. स.] (हिं.) घुसाने का काम अन्य से कराना।

घुसाना [क्रि. स.] (हिं.) १–भीतर घुसेड़ना। पैठाना। २–चुभाना। धँसाना।

घुसेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) घुसाना। पैठाना। धँसाना।

घूँगची+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घुंघची'।

घूँघट [संज्ञा पु.] (हिं.) १–साड़ी, ओढ़नी या चादर का वह भाग जिसे लज्जाशील मुख पर डाले रखती हैं। २–द्वार के की परदे की दीवार।

घूँघट उठाना–१–पर्दाफाश करना। पर से पल्ला ऊपर करना। खोलना। *घूँघट उलटना*–घूँघट उठाना। *घूँघट करना, निकालना, मारना*–१–पीछे की ओर गर्दन मोड़ना। परदा करना। *घूँघट काढ़ना*–परदा करना। लड़ाई में पीठ दिखाना।

घूँघर [संज्ञा पु.] (हिं.) बालों में पड़े हुए या छल्ले।

घूँघरवारे, घूँघरवाले [वि.] (हि.) टेढ़े। छल्लेदार। झबरीले (बाल)।

घूँघरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का

घूँघरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नूपुर। घुँघुरू।

घूँघरू* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

घूँचा [संज्ञा पु.] (हि.) घूँसा।

घूँट [संज्ञा पु.] (हिं.) द्रव पदार्थ का जितना एक बार में गले से उतारा जाय।

घूँटना [क्रि. स.] (हिं.) किसी द्रव गले से नीचे से उतारना। पीना।

घूँटा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'घुटना'।

घूँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घुट्टी'।

घूँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घूस'।

घूँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मारने के तानी हुई मुट्ठी। मुक्का। २–मुट्ठी का *घूसों का क्या उधार*–मार पीट का तुरन्त लें।

घूआ [संज्ञा पु.] (देश.) काँस, मूँज फूल।

घूक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. घूकी] उल्लू

घूका [संज्ञा पु.] (हिं.) सकरे मुंह की

घूगस+ [संज्ञा पु.] (देश.) ऊँचा बुरज।

घूघ [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़ाई में सिर की लिए पहने जाने वाली लोहे या टोपी।

घूघी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–थैली। खीसा। ३–पेंडुकी। फाख्ता।

घूघू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुग्घू'।

घूटना* [क्रि. स.] (हिं.) दबाना। सांस रोक

घूना* [वि.] (देश.) १–चतुर। अनुभवी। २–देखो 'घुन्ना'।

घूम [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–घुमाव। चक्कर। मोड़।

घूमना [क्रि. अ.] (हि.) १–चारों ओर फिर चक्कर खाना। २–सैर करना। टहलना। यात्रा करना। ४–गोलाई में मुड़ना। वाला या उन्मत्त होना।

[illegible] पड़ना-बिगाड़ उठना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिर का चक्कर।

[illegible] [वि.] (हिं.) घेरदार। बड़े घेर का (घाघरा)।

घूर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कूड़े-करकट का ढेर। २-कूड़ा डालने का स्थान।

घूरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आंख गड़ाकर बुरे भाव से देखना। २-कुपित दृष्टि से तकना।

घूरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कूड़े करकट का ढेर। २-कूड़ा करकट डालने का स्थान।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घूरने की क्रिया।

घूस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चूहे के समान पर उससे बड़ा एक जन्तु। २-अपने अनुकूल कोई कार्य कराने के लिए अनुचित रूप से दिया जाने वाला द्रव्य। रिशवत। उत्कोच।

घूसखोर [वि.] (हिं.) घूस खाने वाला। अनुचित रीति से द्रव्य लेने वाला।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घूस। उत्कोच। रिश्वत।

घृणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुरी बात अथवा वस्तु को देखकर उससे दूर रहने की इच्छा या भावना। घिन। नफरत। २-वीभत्स रस का स्थायीभाव।

घृणित [वि.] (सं.) १-घृणा करने योग्य। २-जिसे देख या सुनकर घृणा उत्पन्न हो।

घृत [संज्ञा पु.] (सं.) घी।

घृतकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घीकुवार। ग्वारपाठा।

घृतधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घी की धारा। २-पश्चिम देश की एक नदी।

घृतपूर [संज्ञा पु.] (सं.) घेवर नामक पकवान।

घृतमेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेह रोग का एक भेद।

घृताची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वर्ग की एक अप्सरा। २-वह करछुल जिससे यज्ञ में घी डाला जाता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) भिगोये हुए चने और चावल का बना हुआ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घेघा'।

घेंट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गला। गरदन।

घेंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) सूअर का बच्चा।

घेंटी+ [संज्ञा स्त्री.] (?) १-चने की फली। २-चने की फली के आकार की कोई वस्तु।

घेंटुला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सूअर का छोटा बच्चा।

घेघा [संज्ञा पु.] (देश.) १-गले की नली जिसके द्वारा भोजन या पानी पेट में जाता है। २-गले का एक रोग।

घेड़ौंची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घड़ौंची'।

घेतल, घेतला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जूता जिसे महाराष्ट्र और दक्षिण में अधिक पहनते हैं।

घेनौची+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घनौंची'।

घेमना+ [क्रि. स.] (देश.) १-हाथ पैर से रौंदकर मिलाना। २-खुरचना। छीलना।

घेर [संज्ञा पु.] (हिं.) चारों ओर का फैलाव। परिधि। घेरा।

घेरघार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चारों ओर से घेरने की क्रिया। २-चारों ओर का फैलाव। ३-अनुरोध। खुशामद।

घेरना [क्रि. स.] (हिं.) १-चारों ओर से रोकना। २-बांधना। ३-किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना। ४-अनुरोध या विनय करना। खुशामद करना।

घेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चारों ओर की सीमा। परिधि। २-चारों ओर की सीमा या परिधि का मान। ३-घेरने वाली वस्तु। (जैसे-दीवार या रेखा आदि)। ४-घिरा हुआ स्थान। अहाता। ५-सेना का किसी दुर्ग आदि को घेरना या उसका मार्ग बन्द करना।

घेराई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घिराई'।

घेराव [संज्ञा पु.] देखो 'घिराव'।

घेलौना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घलुवा। घाल।

घेवर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मिठाई।

घेंटा [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'घेंटुला'।

घैंसाहर* [संज्ञा स्त्री.] (?) फौज। सेना।

घैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए को उठाने की क्रिया। २-वृक्ष में से रस आदि निकालने के निमित्त पहुँचाया हुआ आघात।

[संज्ञा पु.] (हिं.) ओर। तरफ। दिशा।

घैर, घैरु, घैरौ* [संज्ञा पु.] (देश.) १-अपयश बदनामी। २-चुगली। शिकायत।

घैला* [संज्ञा पु.] (हिं.) गगरा। घड़ा। कलशा।

घैहल [वि.] (हिं.) घायल। जख्मी।

घैहा* [वि.] (हिं.) घायल। जख्मी।

घोंघ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

घोंघा [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. घोंघी] १-शंख के समान एक कीड़ा। शंबुक। २-गेहूं की बाल का कोश जिसमें दाना रहता है।

[वि.] (हिं.) १-जिसमें कुछ सार न हो। २-मूर्ख। जड़।

घोंचवा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बैल जिसके सींग मुड़कर कान से जा लगे हों।

घोंची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गाय जिसके सींग कानों की ओर मुड़े हों।

घोंचुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घोंसुआ'।

घोंट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोंटने का काम। २-घूट नामक एक वृक्ष।

घोंटना [क्रि. स.] (हिं.) १-घूँट-घूँटकर पीना। २-दूसरे की वस्तु को हजम करना। पचाना। ३-गला मरोड़ना या दबाना।

घोंपना [क्रि. स.] (हिं.) १-गड़ाना। धसाना। चुभाना। २-बुरी तरह सीना। गांठना।

घोंसला [संज्ञा पु.] (हिं.) घासफूस से बना पक्षी का घर। नीड़।

घोंसुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) नीड़। घोंसला।

घोखना [क्रि. स.] (हिं.) बार बार पढ़कर याद करना। (पाठ)।

घोखवाना [क्रि. स.] (हिं.) रटवाना। याद कराना (पाठ)।

घोगर [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष।

घोघ [संज्ञा पु.] (देश.) बटेर फंसाने का जाल।

घोघी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'घुग्घी'।

घोचिल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

घोट, घोटक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा। अश्व।

घोटना [क्रि. स.] (हिं.) १-रगड़ना। मांजना। २-महीन पीसना। ३-रगड़ कर मिलाना। हल करना। ४-अभ्यास करना। मश्क करना ५-(गला) इस प्रकार दबाना कि सांस रुक जाय। (गला) मरोड़ना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) घोटने का औजार।

घोटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोटने का छोटा औजार।

घोटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-घोटकर चिकना करना। रगड़वाना। २-पालिश कराना। ३-(कपड़े) कुंदी कराना। ४-सिर अथवा दाढ़ी को मुड़वा डालना।

घोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोटने की वस्तु या औजार। २-घुटा हुआ चमकदार कपड़ा। ३-भांग घोटने का सोटा। ४-घोटने का काम। रगड़ा। ५-हजामत।

घोटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोटने की क्रिया या भाव। २-घोटने की मजदूरी।

घोटाघोंचा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष। कनकुटकी। रेवाचीनी।

घोटाला [संज्ञा पु.] (देश.) घपला। गड़बड़। *घोटाले में पड़ना।*

घोटू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोटने वाला। २-घोटने का औजार। घोटा। ३-पैर का घुटना।

घोड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा। अश्व।

घोड़चढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुड़चढ़ा'।

घोड़दौड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घुड़दौड़'।

घोड़बच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच नामक औषधि।

घोड़मुहाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घोड़मुहा'।

घोड़राई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़े दाने वाली राई।

घोड़रोज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रोज या नील गाय जो घोड़े के समान दौड़ता है।

घोड़सन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की सन।

घोड़सार, घोड़साल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुड़साल। अस्तबल।

घोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. घोड़ी] १–एक प्रसिद्ध चौपाया जिसके पैरों में पंजे नहीं होते, गोलाकार सुम होते हैं। २–एक खटका जिससे बन्दूक चलती है। ३–शतरंज का एक मोहरा जो ढाई घर चलता है। ४–दीवार से बाहर निकला हुआ वह पत्थर का टुकड़ा जो ऊपरी भार संभालने के लिये लगाया जाता है।

घोड़ा उठाना–घोड़े को तेज दौड़ाना। *घोड़ा चढ़ाना*–बन्दूक का खटका उठाना।

घोड़ा फेंकना–घोड़ा तेज दौड़ाना। *घोड़ा बेच कर सोना*–निश्चिन्त गहरी नींद सोना।

घोड़ा मर जाना–चलते-चलते घोड़े का दम फूल जाना।

घोड़ागाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े से चलने वाली गाड़ी।

घोड़ाचोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वैद्यक की एक औषधि।

घोड़ानस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एड़ी के पीछे की मोटी नस। कूंच। पै।

घोड़ानीम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकाइन वृक्ष।

घोड़ापलास [संज्ञा पु.] (देश.) मालखम्भ की एक कसरत।

घोड़ावच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुरसानी बच जो सफेद होती है।

घोड़ाबाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाल, आसाम में पाया जाने वाला एक बांस।

घोड़ाबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिसे सुराल और सरवाला भी कहते हैं।

घोड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटी घोड़ी। २–दिवार में लगाई हुई खूंटी। ३–छोटा टोड़ा।

घोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–घोड़े की मादा। २–विवाह की एक रीति। ३–पायों पर खड़ी काठ की लम्बी पट्टी। ४–विवाह में वर पक्ष की ओर से गाये जाने वाले गीत। ५–जुलाहों का एक औजार।

घोण [संज्ञा पु.] (देश.) प्राचीन काल का एक बाजा।

※[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाक।

घोमसा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

घोर [वि.] (सं.) १–भयंकर। भयानक। विकराल। डरावना। २–सघन। घना। दुगम। ३–कठिन। कड़ा। ४–गहरा। गाढ़ा। ५–बुरा। अति बुरा। ६–बहुत अधिक।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शब्द। ध्वनि। गर्जन।

[संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा।

[क्रि. वि.] (हिं.) बहुत। अत्यन्त।

घोरना※+ [क्रि. स.] (हिं.) घोलना।

[क्रि. अ.] (हिं.) गरजना। भारी शब्द करना

घोरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रवण, चित्रा आदि नक्षत्रों में बुध की गति घोरा कहलाती है।

[संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा। २–खूंटा। ३–टोड़ा।

घोरारा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाजा।

घोरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घोड़िया'।

घोरिला※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मिट्टी का बच्चों के खेलने का घोड़ा। २–घोड़े की आकृति का खूंटा।

घोरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'अघोरी'। २–देखो 'घोड़ी'। ३–देखो 'अगौरा'।

घोलदही [संज्ञा पु.] (हिं.) मट्ठा।

घोलना [क्रि. स.] (हिं.) किसी द्रव पदार्थ में कोई वस्तु हिलाकर मिलाना। हल करना।

घोल पीना–शरबत के समान पीना। २–सहज में मार डालना। ३–कुछ न समझना।

घोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घोलकर बना हुआ। २–खेत सींचने की नाली। बरहा।

घोले में डालना–१–खटाई में डालना। २–किसी कार्य में टालमटूल करना। *घोले में पड़ना*–बखेड़े में पड़ना।

घोलुवा+ [वि.] (हिं.) घोला हुआ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–अर्क। २–रसा। शोरबा ३–पानी में घुली हुई अफीम।

घोलुवा पीना–कड़वी दवा आदि पीना।

घोलुवा घोलना–किसी कार्य में विलम्ब करना

घोष [संज्ञा पु.] (सं) अहीरों की बस्ती। २–अहीर। ३–बंगाली। कायस्थों का एक भेद। ४–गोशाला। ५–शब्द। नाद। ६–गरज। गर्जन। ७–ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक। ८–शब्दों के उच्चारण में ११ बाह्य प्रयत्नों में से एक।

घोषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–उच्च स्वर से दी हुई सूचना। २–सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा आदि। प्रोक्लेमेशन। ३–मुनादी। डुग्गी। ३–कोई बात सबकी जानकारी के निमित्त सार्वजनिक रूप से कहना या प्रकाशित करना। विख्यापन। एनाउंसमेंट।

घोषणापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें सर्व-साधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो। सूचना-पत्र।

घोषलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुई तोरई।

घोषवत् [वि.] (सं.) वह शब्द जिसमें घोष प्रयत्न वाले अक्षर अधिक हों।

घोषवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीणा।

घोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

घोषाल [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाली ब्राह्मणों का एक गोत्र।

घोसी [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्वाला। दूध वाला। अहीर।

घौंर, घौंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घौद'।

घौद [संज्ञा पु.] (हिं.) फलों का गुच्छा। गुच्छा।

घौर, घौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घौद'।

घौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घौद'।

घौहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह फल जिसमें चोट लग चुकी हो। [वि.] जिसे हो।

घ्राण [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–नाक। शक्ति। ३–गंध। सुगंध।

ङ

ङ व्यंजन वर्ण का पांचवां तथा अन्तिम अक्षर। यह स्पर्श है और उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है।

ङ [संज्ञा पु.] (सं.) १–विषय। इच्छा। ३–भैरव।

च

च संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का अक्षर तथा छठा व्यंजन, इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंक※ [वि.] (हिं.) १–पूरापूरा। समस्त। सारा। २–एक उत्सव का नाम।

चंकुर, चङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–रथ। २–वृक्ष।

चंक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) घूमना। टहलना।

चंक्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रवर का नाम।

चंग [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) डफ जैसा एक बाजा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पतंग। गुड्डी।

[संज्ञा पु.] (?) गंजीफे के आठ रंगों में से एक रंग।

चंग चढ़ना या उमहना–वैभव या प्रताप की वृद्धि होना। *चंग पर चढ़ाना*–किसी को बढ़ा कर अपने अनुकूल करना।

[वि.] (सं.) १–दक्ष। कुशल। ३–सुन्दर।

चँगना※ [क्रि. सं.] (हिं.) १–कसना। तंग २–खींचना।

चंगला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

चंगआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का रोग।

[वि.] (हिं.) [स्त्री. चंगी] १-स्वस्थ । २-...ा । सुन्दर । ३-निर्मल । शुद्ध । ४-...चों का एक खेल ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चंगुल' ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-पशुओं या पक्षियों का मुड़ा हुआ पंजा । २-हाथ के पंजों की वह स्थिति जो उंगलियों को बिना हथेली से लगाए किसी वस्तु को पकड़ने अथवा उठाने के समय होती है ।

...में फँसना-काबू या वश में होना ।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बांस की बनी छोटी टोकरी या डलिया । डगरी । २-...(चमड़े की) । परवाल । ३-छोटे बच्चे का झूला या पालना ।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास ।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चंगेर' 'चंगेरी' ।

[संज्ञा पु.] (सं.) पांच अंगुल के बराबर की ...।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चंचु' ।

चञ्चत्पुट [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ...।

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चुनचुनाना' ।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) पत्थर के ऊपर से बहने वाला पानी । २-एक पक्षी । ३-कोसी । ...।

चंचरी, चञ्चरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पानी की भँवरी । २-होली में गाया जाने वाला एक गीत । ३-४६ मात्राओं का एक छंद जिसे हरिप्रिया भी कहते हैं । ४-एक वर्णवृत्त जिसके चरण में (र स ज ज भ र) होते हैं । ५-२६ मात्रा का एक छंद ।

चंचरीक, चञ्चरीक [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा । भ्रमर ।

चंचरीकावली, चञ्चरीकावली [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौंरों की पंक्ति । २-तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (य म र र एक गुरु) होता है ।

चंचल, चञ्चल [वि.] (सं.) [स्त्री. चंचला] १-चलायमान । अस्थिर । २-अधीर । अव्यवस्थित । एकाग्र न रहने वाला । ३-उद्विग्न । घबड़ाया हुआ । ४-चुलबुला । नटखट ।

चंचलता, चञ्चलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अस्थिरता । चपलता । २-नटखटी । शरारत ।

चंचलताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चंचलता' ।

चंचला, चञ्चला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी । २-बिजली । ३-पिप्पली । ४-१६ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (र ज र ज र ल) होते हैं ।

चंचलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'चंचलता' ।

चंचलाख्य, चञ्चलाख्य [संज्ञा पु] (सं.) एक

सुगंधित द्रव्य ।

चंचलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चंचलता ।

चंचा, चञ्चा [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों को डराने के लिए खेत में गाड़ा हुआ घासफूस का पुतला ।

चंचु, चञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चेंच नामक एक साग । २-मृग । हिरन ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिड़ियों की चोंच ।

चंचुका, चञ्चुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोंच ।

चंचुपत्र, चञ्चुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चेंच का साग ।

चंचुपुट, चञ्चुपुट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोंच । ठोर ।

चंचुभृत्, चञ्चुभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी ।

चंचुमान्, चञ्चुमान् [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी ।

चंचुर, चञ्चुर [वि.] (सं.) दक्ष । निपुण ।
[संज्ञा पु.] (सं.) चेंच का साग ।

चंचूसूची, चञ्चूसूची [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बत्तख ।

चँचोरना [क्रि. स.] (हिं.) दाँतों से दबाकर चूसना ।

चंट [वि.] (हिं.) १-चालाक । २-धूर्त्त । छटा-हुआ ।

चंड, चण्ड [वि.] (सं.) [स्त्री. चंडा] १-तेज । तीक्ष्ण । २-उग्र । प्रखर । ३-बलवान । ४-कठिन । विकट । ५-क्रोधी । उद्धत ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-ताप । गरमी । २-इमली का वृक्ष । ३-एक दैत्य जो दुर्गा द्वारा मारा गया था । ४-एक भैरव ।

चंडकर, चण्डकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।
[वि.] (सं.) तीक्ष्ण किरण वाला ।

चंडकौशिक, चण्डकौशिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि का नाम ।

चंडता, चण्डता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उग्रता । प्रबलता । २-बल । प्रताप ।

चंडतुंडक, चण्डतुण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम ।

चंडत्व, चण्डत्व [संज्ञा पु.] (सं.) उग्रता । प्रबलता ।

चंडदीधिति, चण्डदीधिति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य

चंडनायिका, चण्डनायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा । २-दुर्गा की एक सखी ।

चंडभार्गव, चण्डभार्गव [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मेजय के नागयज्ञ के होता एक ऋषि ।

चंडमुंड, चण्डमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) दो दैत्यों के नाम जो दुर्गा द्वारा मारे गये थे ।

चंडमुंडा, चण्डमुण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चामुंडादेवी ।

चंडमुंडी, चण्डमुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की एक देवी ।

चंडरसा, चण्डरसा [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक यगण होता है ।

चंडरुद्रिका, चण्डरुद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की तांत्रिक सिद्धि ।

चंडवती, चण्डवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा । २-अष्ट नायिकाओं में से एक ।

चंडवृष्टिप्रपात, चण्डवृष्टिप्रपात [संज्ञा पु.] (सं.) एक दण्डकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और सात नगण होते हैं ।

चंडांशु, चण्डांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।
[वि.] तीक्ष्ण किरण वाला ।

चंडा, चण्डा [वि.] (सं.) **[स्त्री. प्र.] उग्र स्वभाव** की । कर्कश । देखो 'चंड' ।
[संज्ञा स्त्री.] १-अष्ट नायिकाओं में से एक । २-केंवांच । ३-चोर नामक गंध द्रव्य । ४-सफेद दूब । ५-सौंफ । ६-सोवा ।

चंडाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शीघ्रता । जल्दी । २-प्रबलता । ३-ऊधम । उपद्रव । ४-अत्याचार ।

चंडात, चण्डात [संज्ञा पु.] (सं.) एक सुगंधित घास या पौधा ।

चंडातक, चण्डातक [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों की चोली ।

चंडाल, चण्डाल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. चंडालिन, चंडालिनी] चंडाल । डोम ।

चंडालता, चण्डालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चंडाल होने का भाव । २-अधमता । नीचता ।

चंडालत्व, चण्डालत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चंडालता' ।

चंडालपक्षी, चण्डालपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) काक । कौवा ।

चंडाल-बाल, चण्डाल-बाल [संज्ञा पु.] (सं.) माथे पर उगने वाला अशुभ मोटा बाल ।

चंडालवल्लकी, चण्डालवल्लकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'चंडाल-वीणा' ।

चंडाल-वीणा, चण्डाल-वीणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का तम्बूरा ।

चंडालिका, चण्डालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा । २-चंडाल वीणा ।

चंडालिनी, चण्डालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चांडाल वर्ण की स्त्री । २-दुष्टा स्त्री । ३-जिस दोहे के आदि में जगण पड़े उसे चंडालिनी दोहा कहते हैं ।

चंडावल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेना के पीछे का भाग । २-वीर योद्धा । ३-पहरेदार ।

चंडाह, चण्डाह [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।

चंडिआ [संज्ञा पु.] (देश.) एक तरह का साधारण लोहा ।

चंडिका, चण्डिका [संज्ञा स्त्री] (सं) १–दुर्गा। २–लड़ाकी या कर्कशा स्त्री। ३–गायत्रीदेवी। [वि.] (सं.) लड़ाकी। कर्कशा।

चंडी, चण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दुर्गा। २–कर्कशा स्त्री। ३–तेरह अक्षरों का एक छंद जिसमें दो नगण, दो सगण और एक गुरु होता है।

चंडीकुसुम, चण्डीकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कनेर।

चंडीपति, चण्डीपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चंडीश, चण्डीश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

चंडीसुर, चण्डीसुर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक तीर्थ स्थान का नाम।

चंडु, चण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) १–चूहा। २–एक प्रकार का छोटा बन्दर।

चंडू [संज्ञा पु.] (हिं.) अफीम का वह किवाम जिसे नशा करने के निमित्त तम्बाखू के समान पीते हैं।

चंडूखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां लोग इकट्ठे होकर चंडू पीते हैं।

चंडू खाने की गप्प–मतवालों की झूठी बकवाद

चंडूबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) चंडू पीने वाला व्यक्ति

चंडूल [संज्ञा पु.] (देश.) १–खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। २–मूर्ख।

पुराना चंडूल–भद्दा, बेडौल और मूर्ख व्यक्ति

चंडेश्वर, चण्डेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक प्रचंड रूप।

चंडोदरी, चण्डोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह राक्षसी जिसे रावण ने सीता के समझाने के लिए नियत किया था।

चंडोल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हौदे के आकार की एक पालकी। २–एक प्रकार का मिट्टी का खिलौना।

चंद, चन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्र। चांद। २–हिन्दी का एक कवि। [वि.] (फा.) १–कुछ। थोड़े से। २–कई एक। कुछ।

चंदक, चन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा। चांद। २–चाँदनी। ३–माथे पर पहनने का एक अर्द्धचन्द्राकार गहना (स्त्री)। ४–गहनों में चन्द्रमा या पान के आकार की बनावट।

चंदकपुष्प, चन्दकपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग। २–देखो 'चन्द्रकला'।

चंदचूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चन्द्रचूड़'।

चंदन, चन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी बहुत सुगन्धित होती है। श्रीखंड। २–चंदन की लकड़ी जिसे घिसकर लेप करते हैं। ४–छप्पयछंद का एक भेद।

चंदन उतारना–चंदन की लकड़ी को घिसना।

चंदन चढ़ाना–चंदन के लेप को शरीर पर लगाना।

चंदनगिरि, चन्दनगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) मलयाचल पर्वत।

चदनगोह [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी गोह।

चंदन-पुष्प, चन्दन-पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्दन का फूल। २–लौंग।

चंदन-यात्र, चन्दन-यात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अक्षयतृतीया।

चंदनवती, चन्दनवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केरल देश की भूमि। [वि.] (सं.) चन्दन से युक्त।

चंदनशारिवा [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक शारिवा जिसमें चन्दन की सी सुगंध आती है।

चंदनसार, चन्दनसार [संज्ञा पु.] (सं.) १–नौसादर। २–घिसाहुआ चंदन।

चंदनहार [संज्ञा पु.] (हिं.) गले में पहनने का एक आभूषण।

चदना [संज्ञा पु.] (सं.) चंदनशारिवा। *[संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

चंदनादि-तैल, चन्दनादि-तैल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चन्दन के योग से बनने वाला तैल।

चंदनी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चाँदनी।

चंदनीया [संज्ञा स्त्री] (सं.) गोरोचन।

चंदनौता [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लहंगा।

चंदवाण [संज्ञा पु.] (हिं.) अर्द्धचन्द्रकार लोहे की गाँसी लगा वाण।

चंदराना+ [क्रि. स.] (देश.) १–झुठलाना। २–जानबूझकर अनजान बनना।

चंदला [वि.] (हिं.) जिसकी चाँद या खोपड़ी के बाल उड़ गये हों। गंजा। खल्वाट।

चंदवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कपड़े फूलों आदि का छोटा मंडप। २–गोल चकती। ३–मोर की पूंछ पर का अर्धचन्द्राकार चिह्न। ४–एक प्रकार की मछली।

चंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चन्द्रमा। २–पीतल आदि की चादर का गोल टुकड़ा। २–किसी कार्य के लिए लिया हुआ कई व्यक्तियों से थोड़ा-थोड़ा धन। ४–किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि का वार्षिक या मासिक मूल्य।

चंदा मामा–बालकों को बहलाने का एक वाक्य

चंदावत [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रियों की एक जाति।

चंदावती, चन्दावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

चंदिका, चन्दिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चन्द्रिका'। चाँदनी।

चंदिनि, चन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चन्द्रिका। चांदनी। [वि.] चाँदनी। उजेली।

चँदिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खोपड़ी। सिर का मध्य भाग। २–पिछली (छोटी) रोटी। ३–ताल में का गहरा स्थान। ४–चांदी टिकिया।

चँदिया पर बाल न छोड़ना–सब कुछ ले लेना। २–सिर पर खूब जूते लगाना।

चंदिर, चन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा। हाथी।

चँदेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ग्वालियर राज्य एक प्राचीन नगर।

चंदेरीपति, चन्देरीपति [संज्ञा पु.] (सं.) नरेश, शिशुपाल।

चंन्देल, चन्देल [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों की जाति जिनका राज्य कालंजर और महोबे था।

चँदोया+ [संज्ञा पु.] देखो 'चँदवा'।

चँदोवा [संज्ञा प.] देखो 'चँदवा'।

चंद्र, चन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा। की संख्या। ३–मोर की पूंछ की चंद्रिका। ४–कपूर। ५–जल। ६–स्वर्ण। सानुनासिक के ऊपर लगाई जाने वाली ८–मृगशिरा नक्षत्र। ९–पिंगल में दसवां भेद। [वि.] १–आनन्ददायक। सुंदर। रमणीय।

चंद्रक, चन्द्रक [संज्ञा पु] (सं) १–चन्द्रमा। २–चन्द्रमा के समान मंडल या घेरा। चांदनी। ४–मोर की पूंछ की चंद्रिका। नाखून। ६–संगीत में मालकोश राग

चंद्रकला, चन्द्रकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चन्द्र मंडल का सोलहवाँ अंश। २–चन्द्रमा की किरण या ज्योति। ३–माथे पर करने का एक आभूषण। ४–छोटा ढोल। एक वर्णवृत्त जिसमें आठ सगण और गुरू होता है। सुन्दरी सवैया। ६–ताल एक भेद (संगीत)।

चंद्रकलाधर, चन्द्रकलाधर [संज्ञा पु.] महादेव।

चंद्रकांत, चन्द्रकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक रत्न (कल्पित) जिसके विषय में कहा जाता है कि वह चन्द्रमा के सामने रखने से पसीज जाता है। २–चंदन। कुमुद। ३–एक राग हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

चंद्रकांता, चन्द्रकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चन्द्रमा की पत्नी। २–रात्री। रात। ३–पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

चंद्रकांति, चन्द्रकान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चांदनी। २–चांदी।

चंद्रकाम, चन्द्रकाम [संज्ञा पु.] (सं.) काम से पीड़ित वह व्यक्ति जिस पर किसी स्त्री के वशीभूत करने के निमित्त मंत्रतंत्र आदि का प्रयोग किया हो।

चंद्रकी, चन्द्रकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोर। मयूर।

चंद्रकुमार, चन्द्रकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा का पुत्र, बुध।

चंद्रकेतु, चन्द्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मण के पुत्र का नाम।

चंद्रक्षय, चन्द्रक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) अमावस्या।

चंद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) मगध देश के प्रथम मौर्यवंशी राजा का नाम।

चंद्रगृह, चन्द्रगृह [संज्ञा पु.] (सं.) कर्कराशि।

चंद्रगोल, चन्द्रगोल [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्र-मंडल।

चंद्रगोलिका, चन्द्रगोलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रिका। चांदनी।

चंद्रग्रहण, चन्द्रग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा का ग्रहण जो उसके सूर्य की आड़ में पड़ने के कारण होता है।

चंद्रचंचल, चन्द्रचञ्चल [संज्ञा पु.](सं.) खरसा नामक मछली।

चंद्रचूड़, चन्द्रचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चंद्रचूड़ामणि, चन्द्रचूड़ामणि [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में ग्रहों का एक योग।

चंद्रज, चन्द्रज [संज्ञा पु.] (सं.) बुध।

चंद्रजोत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चन्द्रमा का प्रकाश। २-महताबी नामक एक आतशबाजी

चंद्रताल, चन्द्रताल [संज्ञा पु.] (सं.) एक बारह ताल वाला ताल (संगीत)।

चंद्रद्युति, चन्द्रद्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा की ज्योति। २-चन्दन।

चंद्रधनु, चन्द्रधनु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा के प्रकाश में दिखाई पड़ने वाला इन्द्रधनुष।

चंद्रधर, चन्द्रधर [संज्ञा पु.](सं.) शिव। महादेव

चंद्रपर्णी, चन्द्रपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी नामक लता।

चंद्रपुली [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक बंगाली मिठाई का नाम।

चंद्रपुष्पा, चन्द्रपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चांदनी। २-बकुची।

चंद्रप्रभ, चन्द्रप्रभ [वि.] (सं.) चन्द्रमा के समान प्रकाश वाला।

चंद्रप्रभा, चन्द्रप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चंद्रिका। चांदनी। २-कपूर। ३-वैद्यक की एक प्रसिद्ध गुटिका।

चंद्रबंधु, चन्द्रबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शंख। २-कुमुद।

चंद्रबधूटी, चन्द्रबधूटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बीर-बहूटी।

चंद्रबाण, चन्द्रबाण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाण जिसका फल अर्द्धचन्द्रकार होता है।

चंद्रबाला, चन्द्रबाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा की पत्नी। २-चन्द्रकिरण। ३-बड़ी इलायची।

चंद्रबाहु, चन्द्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

चंद्रबिंदु, चन्द्रबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) अर्द्ध अनुस्वार का एक बिंदु जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाता है।

चंद्रबिंब, चन्द्रबिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-संपूर्ण जाति का एक राग। २-चन्द्रमा का मण्डल।

चंद्रबोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अजगर

चंद्रभवन, चन्द्रभवन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिन के पहले पहर में गाया जाने वाला एक सम्पूर्ण जाति का एक राग।

चंद्रभस्म, चन्द्रभस्म [संज्ञा पु.] (सं) कपूर।

चंद्रभा, चन्द्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा का प्रकाश। २-सफेद भटकटैया।

चंद्रभाग, चन्द्रभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा की कली। २-सोलह की संख्या। ३-हिमालय पर एक स्थान जहां से चन्द्रभागा या चनाब नदी निकलती हैं।

चंद्रभागा, चन्द्रभागा [संज्ञा स्त्री.] चनाब नदी का नाम (पंजाब)।

चंद्रभाट [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव और काली के उपासक भिक्षुक या साधु।

चंद्रभानु, चन्द्रभानु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो सत्यभामा से उत्पन्न हुए थे।

चंद्रभाल, चन्द्रभाल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

चंद्रभूति, चन्द्रभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चांदी।

चंद्रभूषण, चन्द्रभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

चंद्रमणि, चन्द्रमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रकांत मणि। २-उल्लाला नामक छंद।

चंद्रमस, चन्द्रमस [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

चंद्रमा, चन्द्रमा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध उपग्रह जो आकाश में सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिम्ब से रात में चमकता है। शशि। इंदु। विधु। निशापति।

चंद्रमात्रा, चन्द्रमात्रा [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में तालों के १४ भेदों में से एक।

चंद्रमाललाट, चन्द्रमाललाट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

चंद्रमाललाम, चन्द्रमाललाम [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चंद्रमाला, चन्द्रमाला [संज्ञा पु.] (सं.) १-अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद। २-चन्द्रहार।

चंद्रमास, चन्द्रमास [संज्ञा पु.]देखो 'चांद्रमास'।

चंद्रमौलि, चन्द्रमौलि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चंद्ररेखा, चन्द्ररेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा की कला। २-चन्द्रकिरण। ३-द्वितीया का चन्द्रमा। ४-बकुची। ५-एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (म+र+म+य+य) होता है।

चंद्रलोक, चन्द्रलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा का लोक। २-पितरलोक।

चंद्रवंश, चन्द्रवंश [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों के दो आदि तथा प्रधान वंशों में से एक।

चंद्रवंशी, चन्द्रवंशी [वि.] (सं.) चन्द्रवंश में उत्पन्न। चन्द्रवंश का।

चंद्रवधू, चन्द्रवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीर बहूटी।

चंद्रवर्त्म, चन्द्रवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं) एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (र+न+भ+स) होते हैं।

चंद्रवल्लरी, चन्द्रवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

चंद्रवल्ली, चन्द्रवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोमलता। २-माधवीलता। ३-परसन।

चंद्रवार, चन्द्रवार [संज्ञा पु.] (सं.) सोमवार।

चंद्रवाला, चन्द्रवाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची।

चंद्रवेष, चन्द्रवेष [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चंद्रव्रत, चन्द्रव्रत [संज्ञा पु.] देखो 'चांद्रायण'।

चंद्रशाला, चन्द्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चांदनी। चंद्रिका। २-धुर ऊपर की कोठरी या अटारी। ३-सब से ऊपर का बंगला।

चंद्रशूर, चन्द्रशूर [संज्ञा पु.] (सं.) चंसूर नामक पौधा।

चंद्रशृंग चन्द्रशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दूज के चन्द्रमा के दोनों नुकीले छोर।

चंद्रशेखर, चन्द्रशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-एक पर्वत का नाम। ३-संगीत के अष्ट तालों में से एक।

चंद्रस+ [संज्ञा पु.] (देश.) गंधाबिरोजा।

चंद्रसरोवर, चन्द्रसरोवर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रज में गोवर्द्धन पर्वत के समीप का तीर्थ स्थान।

चंद्रहार, चन्द्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) गले में पहनने का एक गहना।

चंद्रहास, चन्द्रहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार का नाम। ३-चाँदी।

चंद्रहासा, चन्द्रहासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

चंद्रांकित, चन्द्राङ्कित [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

चंद्रा, चन्द्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चँदवा। २-छोटी इलायची।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मरने के समय आंखों की वह अवस्था, जब टकटकी बँध जाती है।

चंद्रागति-घात, चन्द्रागति-घात [संज्ञा स्त्री] (सं.) मृदंग की एक थाप।

चंद्रालय, चन्द्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) १–चांदनी। चंद्रिका। २–चँदवा। वितान।

चंद्रापीड़, चन्द्रापीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–काश्मीर का एक राजा।

चंद्रायण, चन्द्रायण* [संज्ञा पु.] देखो 'चांद्रायण'।

चंद्रायतन, चन्द्रायतन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रशाला।

चंद्रार्द्धचूड़ामणि, चन्द्रार्द्धचूड़ामणि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चंद्रालोक, चन्द्रालोक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चंद्रमा का प्रकाश। २–एक अलङ्कार का ग्रंथ।

चंद्रावर्त्ता, चन्द्रावर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पद में ४–नगण और १ सगण होता है।

चंद्रावली, चन्द्रावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक गोपी का नाम।

चंद्रिका, चन्द्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चाँदनी। ज्योत्सना। कौमुदी। २–मोर की पूंछ पर का गोल चिह्न। ३–बड़ी इलायची। ४–चंद्रभागा नदी। ५–मेथी। ६–माथे पर पहनने का एक गहना। बेंदी। बेंदा। ७–संस्कृत व्याकरण का एक ग्रंथ। ८–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (न+न+त+त+ग) होते हैं।

चंद्रिकाभिसारिका, चन्द्रिकाभिसारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुक्लाभिसारिका नामक नायिका।

चंद्रिकोत्सव, चन्द्रिकोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) शरत् पूनो का उत्सव।

चंद्रिल, चन्द्रिल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

चंद्रोदय, चन्द्रोदय [संज्ञा पु.] (सं.) १–चंद्रमा का उदय। वैद्यक में एक रस, जो बड़ा उत्तेजक होता है। ३–चंदवा। वितान।

चंद्रोपराग, चन्द्रोपराग [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रग्रहण।

चंद्रोपल, चन्द्रोपल, [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकान्त मणि।

चंद्रौल, चन्द्रौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राजपूतों की एक जाति।

चंप, चम्प [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चंपा। २–कचनार।

चंपई, चम्पई [वि.] (हिं.) चम्पा के फूल के रंग का। पीला।

चंपक, चम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चम्पा। २–चम्पा केला। ३–सम्पूर्ण जाति का एक राग।

चंपकमाल, चम्पकमाला [संज्ञा पु.] (सं.) १–चम्पा के फूलों की माला। २–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पाद में (भ+म+स+एक गुरु) होता है।

चंपकालु, चम्पकालु [संज्ञा पु.] (सं.) जक नामक एक वृक्ष।

चंपत, चम्पत [वि.] (देश.) गायब। अन्तर्द्धान।

चँपना, चँपना [क्रि. अ.] (हिं.) १–दबना। २–लज्जित होना। ३–उपकार से दबना।

चंपा, चम्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक वृक्ष जिसमें हलके पीले रंग के फूल लगते हैं। २–एक पुरी जो प्राचीन काल में अंग देश की राजधानी थी। ३–एक प्रकार का बढ़िया केला। ४–एक प्रकार का घोड़ा।

चंपाकली, चम्पाकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में पहनने का एक गहना।

चंपानेर, चम्पानेर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्राचीन नगर।

चंपारण्य, चम्पारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक वन जिसे आजकल चंपारन कहते हैं।

चंपारन, चम्पारन [संज्ञा पु.] (हिं.) विहार राज्य का एक जिला जिसमें विश्ववंद्य महात्मा गांधी ने सत्याग्रह किया था।

चंपू, चम्पू [संज्ञा पु.] (सं.) गद्य-पद्य मिश्रित काव्य।

चंपौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करघे की भँजनी में एक पतली लकड़ी जो दूसरी भाँज को दबाने के निमित्त लगी रहती है।

चंबल, चम्बल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–विंध्यापर्वत से निकलने वाली एक नदी। २–पानी की बाढ़।

चंबली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा प्याला।

चंवी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पट्टी। कतरनी।

चंवू [संज्ञा पु.] (?) १–एक प्रकार का धान। २–टोंटीदार छोटा गड़वा।

चंवेलिया+ [वि.] (हिं.) देखो 'चमेलिया'।

चंवेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चमेली'।

चंवर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सुरागाय की पूंछ का गुच्छा जो डंडी में बांधकर राजाओं या देवमूर्त्तियों के ऊपर डुलाया जाता है। २–कलगी। ३–झालर।

चंवरढार [संज्ञा पु.] (हिं.) चंवर डोलाने वाला सेवक।

चंवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डंडी लगा हुआ घोड़े की पूंछ का गुच्छा।

चंसुर [संज्ञा पु.] (हिं.) हालों अथवा हालिभ नामक पौधा।

च [संज्ञा पु.] (सं.) १–कच्छप। कछुआ। २–चन्द्रमा। ३–चोर। दुर्जन।

चइ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी घुमाने के प्रयोग में आने वाला शब्द।

चइत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चैत'।

चइन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चैन'।

चई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वृक्ष का नाम। देखो 'चाव'।

चउहान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौहान'।

चउक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौक'।

चउकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौकी'।

चउतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चबूतरा'।

चउथा [वि.] (हिं.) देखो 'चौथा'।

चउदस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौदस'।

चउदह+ [वि.] (हिं.) देखो 'चौदह'।

चउपाई+* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'चौपाई'।

चउपारि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौपार'।

चउर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चँवर। मोरछल।

चउरा [संज्ञा पु.] देखो 'चौरा'।

चउहट्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) चौहट्ट। चौराहा।

चऊतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चबूतरा'।

चक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चकवा पक्षी। नामक अस्त्र। २–पहिया। ४–जमीन का टुकड़ा। पट्टी। ५–छोटा गांव। खेड़ा। अधिकार। दखल। ७–सोने का एक गहना। [संज्ञा पु.] (सं.) १–साधु। २–खल। [वि.] (सं.) भ्रांत। भोचक्का। [वि.] (हिं.) भरपूर। अधिक। ज्यादा।

चकई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–मादा चकवा। सुरखाब। २–घिरनी की तरह का एक गोल खिलौना। [वि.] गोल बनावट का।

चकचकाना [क्रि. अ.] (देश.) १–किसी द्रव पदार्थ का रसकर बाहर निकलना। २–भीग जाना।

चकचकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करताल नाम का एक बाजा।

चकचकाना*+ [क्रि. स.] (हिं.) चौंधियाना। चकाचौंध लगना।

चकचाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चक्कर। भ्रमण। फेरा।

चकचाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) चकाचौंध।

चकचून [वि.] (हिं.) पिसा हुआ। चूर किया हुआ।

चकचूनर [वि.] (हिं.) देखो 'चकचून'।

चकचूरना* [क्रि. स.] (हिं.) चकनाचूर करना। चूर-चूर करना।

चकचौंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चकाचौंध'।

चकचौंधना* [क्रि. अ.] (हिं.) चकाचौंध होना। [क्रि. स.] (हिं.) चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंधी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चकाचौंध'।

चकचौंह* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चकाचौंध'।

चकचौंहना* [क्रि. स.] (देश.) आशा लगा टक बांधकर देखना।

चकचौंहाँ [वि.] (देश.) देखने योग्य। सुन्दर।

चकड़वा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चकरबा'।

चकडोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चकई नामक खिलौने की डोर। २-जुलाहे के करघे की नचनी में लगी हुई डोरी।

चकताई [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चकत्ता'।

चकता [संज्ञा पु.] (हिं.) दांत की पकड़। चौकोटा।

चकती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चमड़े, कपड़े आदि का छोटा गोल या चौकोर टुकड़ा। २-पैवन्द। थिगली।
बादल में चकती लगाना–अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।
३-दुम्बे नामक भेड़े की गोल, चौड़ी और भारी दुम।

चकत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर के किसी भाग पर पड़ा हुआ धब्बा। त्वचा के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन।
चकत्ता भरना या मारना–दाँतों से काटना।
[संज्ञा पु.] चगताई वंश का पुरुष।

चकदार [संज्ञा पु.] (हिं.) दूसरे की भूमि पर कुआं बनाने वाला और उस भूमि का लगान देने वाला।

चकनाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चकित होना। विस्मित होना। २-चौंकना। आशंकायुक्त होना।

चकनाचूर [वि.] (हिं.) जो बिलकुल टुकड़े-टुकड़े होगया हो। २-बहुत थका हुआ।

चकपक [वि.] (हिं.) चकित। स्तंभित। भौंचक्का।

चकपकाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विस्मित होकर चारों ओर देखना। भौंचक्का होना। २-चौंकना।

चकफेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परिक्रमा। भंवरी।

चकबँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत से खेतों को बाँटने का वह ढंग जिसमें हर खेत पृथक-पृथक नहीं बाँटा जाता, बल्कि कई-कई खेत अलग-अलग चकों के विचार से बांटे जाते हैं।

चकबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि को (खेतों की जमीन) को कई भागों या चकों में बाँटना।

चकबक [वि.] (हिं.) चकित। विस्मित।

चकबस्त [संज्ञा पु.] (फा.) जमीन की हद बंदी। काश्मीरी ब्राह्मणों का एक भेद।

चकमक [संज्ञा पु.] (तु.) एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट मारने से तुरन्त आग निकलने लगती है।

चकमा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धोखा। भुलावा। २-हानि। नुकसान।
चकमा खाना–धोखा खाना।

चकमाक [संज्ञा पु.] देखो 'चकमक'।

चकमाकी [वि.] (तु.) चकमक लगा हुआ। चकमक का। [संज्ञा स्त्री.] बंदूक।

चकर+* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चकवा पक्षी। २-देखो 'चक्कर'।

चकरबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चक्कर। फेर। असमंजस। २-झगड़ा। बखेड़ा। टंटा।

चकरसी [संज्ञा पु.] (देश.) एक बहुत बड़ा पेड़।

चकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का भँवर। [वि.] चौड़ा। विस्तृत।

चकराना [क्रि. अ.] (हिं.) (सिर का) चक्कर खाना या घूमना। २-चकित या विस्मित होना। भ्रांत होना। ३-आश्चर्य से इधर-उधर ताकना [क्रि. स.] चकित करना। आश्चर्य में डालना।

चकरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दासी। टहलुई।

चकरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सेवक। नौकर।

चकरिहा [संज्ञा पु.] (हिं.) सेवक। नौकर।

चकरी [संज्ञा स्त्री.] १-चक्की। २-चक्की का पाट। ३-एक खिलौना। चकई।
[वि.] (हिं.) चौड़ी। विस्तृत।

चकरीगिरह [संज्ञा स्त्री.] बेंवड़े में लगी हुई रस्सी की गांठ।

चकल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूसरे स्थान पर लगाने के लिये पौधे को मिट्टी समेत उखाड़ने की क्रिया। २-उखाड़ते समय पौधे की जड़ के पास की मिट्टी की पिंडी।

चकलई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौड़ाई।

चकला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रोटी बेलने का काठ या पत्थर गोल पाटा। २-चक्की। ३-इलाका जिला। ४-रंडियों के रहने का बाजार।
[वि.] चौड़ा।

चकलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पौधे को मिट्टी समेत उखाड़ना। २-चौड़ा करना।

चकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घिरनी। गड़ारी। २-छोटा चकला।
[वि.] [स्त्री. प्र.] चौड़ी।

चकलेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी भूमिखंड अथवा चकले का कर संग्रह करने वाला।

चकल्लस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मित्र मंडली का हास-परिहास। २-झगड़ा। बखेड़ा।

चकवंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बरसात में उगने वाला पौधा। २-चाक के पास का पानी का भरा पात्र (कुम्हार)।

चकवा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चकई] हंस की जाति का एक पक्षी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह रात को अपने जोड़े से अलग हो जाता है। चक्रवाक। सुरखाव।

चकवाना+* [क्रि. अ.] देखो 'चकपकाना'।

चकवार [संज्ञा पु.] (हिं.) कछुआ। कच्छप।

चकवाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चकवा'।

चकवी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'चकई' 'चकवा'।

चकसेनी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काकजंघा।

चकहा+* [संज्ञा पु.] (हिं.) पहिया। चक्का।

चकाँडू [संज्ञा पु.] (हि.) चिपटा आड़ू।

चका+* [संज्ञा पु.] (हिं.) पहिया। चाक। चक्का।

चकाकेवल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूखने पर चिटक जाने वाली काले रंग की मिट्टी जो कठिनता से जोती जाती है।

चकाचक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निरन्तर तलवार आदि से प्रहार का शब्द।
[वि.] (हिं.) १-चटकीला। २-मजेदार। ३-लथपथ। डूबा हुआ। [क्रि. वि.] खूब। भरपूर।

चकाचौंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीव्र प्रकाश के कारण आंखों में होने वाली झपक। तिलमिलाहट।

चकाचौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चकाचौंध'।

चकातरी [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष का नाम।

चकाना* [क्रि. अ.] (हिं.) चकराना। चकपकाना

चकाबू [संज्ञा पु.] (हिं.) प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु की सुरक्षा के निमित्त उसके चारों ओर कई मंडलाकार सैनिक की स्थिति। चक्रव्यूह।
चकाबू में पड़ना या फंसना–चक्कर में पड़ना।

चकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्णमाला में छटा व्यञ्जन वर्ण। २-दुःख अथवा सहानुभूति-सूचक शब्द।

चकावल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घोड़ों की अगले पैर में गमाचे की हड्डी का उभड़ आना।

चकासना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चमकना'।

चकित [वि.] (सं.) [स्त्री. चकिता] १-विस्मित। हक्काबक्का। आश्चर्यान्वित। भौचक्का। २-घबड़ाया हुआ। ३-सशंकित। चौकन्ना। ४-डरपोक। कायर।

चकितवंत+ [वि.] (हिं.) विस्मित। भ्रांत। आश्चर्ययुक्त।

चकिता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वर्णवृत्त।

चकुदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चकवड़। पमाड़।

चकुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी हांडी।

चकुला+* [संज्ञा पु.] (देश.) चिड़िया का बच्चा। चेंटुवा।

चकुलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा या झाड़ी।

चकृत* [वि.] (हिं.) देखो 'चकित'।

चकेठ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हार का चाक घुमाने का डंडा।

चकैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चकई'।

चकोटना [क्रि. स.] (हिं.) चुटकी से मांस नोचना। चुटक काटना।

चकोतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा नीबू। महानीबू।

चकोता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रोग। देखो 'चकत्ता'।

चकोर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चकोरी] १-एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चन्द्रमा का प्रेमी और अंगार खाने वाला माना जाता है। २-एक वर्णवृत्त प्रत्येक चरण में सात भगण, एक गुरु और एक लघु होता है।

चकोरिया, चकोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मादा चकोर।

चकोह* [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का भंवर।

चकौंड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चकवड़'।

चकौंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चकाचौंध'।

चकौटा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का लगान। २-ऋण के बदले दिया जाने वाला पशु।

चक्क [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ा। दर्द।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-चक्रवाक। चकवा पत्ती। २-कुम्हार का चाक। ३-दिशा। देखो 'चक'।

चक्कर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहिये के समान (घूमने वाली) कोई गोल वस्तु। २-घुमाव का रास्ता। ४-फेरा। परिक्रमण। ५-पहिये के समान अक्ष पर घूमना।

चक्कर *काटना*-मंडराना। मंडलाकार परिधि में घूमना। चक्कर *खाना*-१-पहिये के समान घूमना। २-भटकना। हैरान होना। चक्कर *देना*-१-परिक्रमा देना। २-चक्कर खाना। ३-दुखी करना। ४-सिर में घुमेरी आना।

चक्कर *पड़ना*-१-हिसाब ठीक न बैठना। २-जाने में फेर पड़ना। ३-विपत्ति आना।

चक्कर *बाँधना*-१-घूमना। २-आना जाना। फेर बांधना। चक्कर *मारना*-१-हो आना। २-घूमना। चारों ओर फिरना। ३-पहिये के समान अक्ष पर घूमना। ४-वृत्ताकार परिधि में घूमना। चक्कर में *आना*-१-आश्चर्य चकित रह जाना। २-फेर में आना।

चक्कर में *डालना*-१-ऐसी स्थिति में डालना जिसमें सूझ न पड़े क्या करना चाहिये। २-आश्चर्य में डालना।

चक्कर में *पड़ना*-१-दुविधा में फंसना। २-हैरान होना। ३-माथा खपाना। चक्कर *लगाना*-१-परिक्रमा करना। मँडराना। २-फेरा लगाना। ३-घूमना। फिरना। ४-घुमाव। पेंच। जटिलता। ५-सिर घूमना। ६-पानी का भंवर। ७-चक्र नामक अस्त्र। ८-कुश्ती का एक पेंच।

चक्कवइ* [वि.] (हिं.) चक्रवर्ती (राजा)।

चक्कवत [संज्ञा पु.] (हिं.) चक्रवर्ती राजा।

चक्कवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) चकवा पत्ती।

चक्कवै* [वि.] (हिं.) चक्रवर्ती (राजा)।

चक्कस [संज्ञा पु.] (हिं.) बुलबुल, बाज आदि पत्तियों के बैठने का स्थान।

चक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहिया। २-पहिये के समान कोई गोल वस्तु। ३-कोई ठोस बड़ा टुकड़ा। ४-ईंट या पत्थरों के नापने के लिये लगाया गया ढेर।

चक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पत्थर का यंत्र जिससे आटा पीसा जाता है। जांता।
चक्की *का पाट*-१-चक्की का पत्थर। २-बदसूरत। बेडौल। चक्की *पीसना*-लगातार काम करना। चक्की में *जुतना*-१-काम में फंसना। २-पैर के घुटने की गोल हड्डी। ३-चाकी। बिजली। बज्र।

चक्कीरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) चक्की को टाँकी से कूटकर खुरदरी करने वाला कारीगर।

चक्कू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चाकू'।

चक्खी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चखवाने का भाव। २-खाने की चटपटी वस्तु। ३-चटेरों की चुगाई।

चक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहिया। २-कुम्हार का चाक। ३-चक्की। जाँता। ४-तेल पेरने का कोल्हू। ५-पहिये के समान कोई गोला कार वस्तु। ६-पानी का भँवर। ७-वातचक्र। बवंडर। ८-समूह। मंडली। समुदाय। ९-लोहे का एक अस्त्र। १०-सेना। दल। ११-देखो 'चक्रव्यूह'। १२-ग्रामों या नगरों का समूह। मंडल। १३-चकवा पत्ती। १४-एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ भूभाग। १५-तगर का फूल। १६-योग के अनुसार शरीर के भीतर का एक पद्म। १७-मंडलाकार घेरा। वृत्त। १८-रेखाओं से घिरे हुए गोल या चौखूंटे खाने। १९-हथेली या पैर के तलवे में की घूमी हुई रेखा जिसके द्वारा सामुद्रिक शुभाशुभ का फल निकालते हैं। २०-चक्कर। फेरा। भ्रमण। २१-दिशा। प्रान्त। २२-धोखा। भुलावा। २३-संख्या के विचारानुसार बंदूक से गोली चलाने की क्रिया। *राउंड*। जैसे-पुलिस ने पांच चक्र गोलियाँ चलाईं। २४-योगानुसार शरीर के भीतर के वह स्थान जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट जीवन रक्षणी गिल्टियों के आस पास पड़ते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं-सहस्रार, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, मूलाधार और स्वाधिष्ठान। २५-उतना समय, जितने समय के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट घटनाएँ किसी क्रम से होती हैं और उतने ही समय में उनकी उसी प्रकार पुनरावृत्ति होती है। *माइकिल*। २६-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण, तीन नगण और लघु गुरु होते हैं।
चक्र *गिरना या पड़ना*-विपत्ति आना।

चक्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-न्याय में एक तर्क। २-एक प्रकार का सर्प।

चक्रकारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नसी नामक गंध द्रव्य। २-हाथ का नाखून।

चक्रकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्रपर्णी नामक लता।

चक्रगज [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड़।

चक्रगुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) अशोकवृक्ष।

चक्रगोसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेनापति। २-राज्यरक्षक।

चक्रजर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेली २-कुम्हार।

चक्रजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हार।

चक्रताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार चौताला। २-एक प्रकार का चौदह ताला

चक्रतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत के दक्षिण तीर्थ स्थान। २-नैमिषारण्य का एक कुंड।

चक्रतुंड, चक्रतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुँह वाली मछली।

चक्रदंड, चक्रदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक की कसरत।

चक्रदंती, चक्रदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृत्त। २-जमालगोटा।

चक्रदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

चक्रधर [वि.] (सं.) चक्र धारण करने
[संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। बाजीगर। ४-कई ग्रामों अथवा अधिपति। ५-सांप। ६-ग्रामीण ७-षाड़व जाति का एक राग जो मिलता-जुलता है।

चक्रधारी [संज्ञा पु.] देखो 'चक्रधर'।

चक्रनख [संज्ञा पु.] (सं.) व्याघ्रनख औषधि।

चक्रनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंडक नदी।

चक्रनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोनामाखी। चकवा पत्ती।

चक्रनायक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चक्रनख'।

चक्रपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

चक्रपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

चक्रपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाड़ी। रथ। हाथी।

चक्रपानि* [संज्ञा पु.] (हिं.) चक्रपाणि।

चक्रपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूबेदार। २-चक्र धारण करने वाला। ३-गोल वृत्त। ४-शुद्ध राग का एक भेद।

चक्रपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों द्वारा जाने वाली एक प्रकार की पूजा।

चक्रफल [संज्ञा पु.] (सं.) गोल फल लगा एक अस्त्र।

चक्रबंध [संज्ञा पु.] (सं.) एक चित्रकाव्य जिसमें पहिये अथवा चक्र के चित्र में पद्य के अंकित किये जाते हैं।

चक्रबंधु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

चक्रबांधव, बान्धव [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

चक्रभृत [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

चक्रभेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

चक्रभोग [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रह की एक गति (ज्योतिष)।

चक्रभ्रमर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

चक्रमंडल, चक्रमण्डल [संज्ञा पु.] चक्र के समान घूमकर नृत्य करने का एक ढंग।

चक्रमंडली, चक्रमण्डली [संज्ञा पु.](सं.) अजगर सांप।

चक्रमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चकवँड़'।

चक्रमीमांसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैष्णवों द्वारा चक्रमुद्रा धारण करने की विधि। २-विजयेन्द्र स्वामी रचित ग्रन्थ।

चक्रमुख [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

चक्रमुद्रा [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जिनको वैष्णव लोग अपने बाहु आदि अंगों पर अंकित करवाते हैं। २-तांत्रिकों की एक अंगमुद्रा।

चक्रयंत्र, चक्रयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष का एक यंत्र।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वक। बगला।

चक्रलक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुरुच। गुडूची।

चक्रलिप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राशिचक्र का एक भाग अर्थात् २१६०० भागों में से एक भाग।

चक्रवर्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी चक्र की अधिष्ठात्री। २-पानड़ी।

चक्रवर्ती [वि.] (सं.) [स्त्री. चक्रवर्तिनी] एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक राज्य करने वाला। सार्वभौम।
[संज्ञा पु.] १-वह राजा जिसका राज्य चारों ओर दूर-दूर तक फैला हो। आसमुद्रान्त भूमि का राजा। २-समूह का नायक। ३-बथुआ का साग।

चक्रवाक [संज्ञा पु.] (सं.) चकवा पक्षी।

चक्रवाड़ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चक्रवाल।

चक्रवात [संज्ञा पु.] (सं.) वेग से चक्कर खाती वायु जो ऊपर को उठती है। बवंडर।

चक्रवान [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौराणिक पर्वत का नाम।

चक्रवाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पुराण प्रसिद्ध पर्वत। २-मंडल। घेरा।

चक्रविरति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चक्रवृत्ति'।

चक्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण तीन नगण और अन्त में लघु गुरु होते हैं।

चक्रवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह सूद या ब्याज जिसमें ब्याज पर भी ब्याज लगता है। सूद-दर-सूद। २-गाड़ी आदि का भाड़ा।

चक्रव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये की जाने वाली एक प्रकार की मोरचाबन्दी जो इतनी चक्करदार होती थी कि इसके अंदर प्रवेश करना अत्यन्त कठिन होता था।

चक्रशल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद घुंघची। २-काकतुंडी।

चक्रश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासींगी।

चक्रसंज्ञा [संज्ञा पु.] (सं.) १-राँगा। २-चकवा पक्षी।

चक्रांक, चक्राङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) चक्र का चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगवाते हैं।

चक्रांकित, चक्राङ्कित [वि.] (सं.) जिसने चक्र का चिह्न दगवाया हो।

चक्रांगा, चक्राङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकड़ासिंगी। २-सुदर्शनालता।

चक्रांगी, चक्राङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटकी। २-मादा हंस। ३-एक प्रकार का शाक। हुलहुल। ४-मजीठ। ५-काकड़ासिंगी। ६-मूसाकरनी। वृषपर्णी।

चक्रांत, चक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्त मन्त्रणा। षड्यंत्र।

चक्रांतर, चक्रान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

चक्रांश [संज्ञा पु.] (सं.) राशिचक्र का ३६० वां अंश।

चक्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागरमोथा। २-काकड़ासिंगी।

चक्राकार [वि.] (सं.) पहिये के समान आकार वाला। गोल।

चक्राकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मादा हंस। हंसिनी।

चक्राट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सपेरा। साँप पकड़ने वाला। २-साँप का विष झाड़ने वाला। ३-धूर्त्त। ४-सोने का एक सिक्का। दीनार।

चक्राधिवासी [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी फल।

चक्रायुध [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

चक्रावल [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ों के पैरों में होने वाला एक रोग।

चक्राह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकवा पक्षी। २-चकवंड।

चक्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) चक्र धारण करने वाला

चक्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुटने की गोल हड्डी चक्की।

चक्रित* [वि.] (हिं.) देखो 'चकित'।

चक्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्र धारण करने वाला, विष्णु। २-गांव का पुरोहित। ३-चकवा। चक्रवाक। ४-कुलाल। कुम्हार। ५-सांप। ६-जासूस। दूत। ७-तेली। ८-बकरा। ९-चकवर्ती। ११-चकमर्द। चकवंड। १२-कौवा। १३-गधा। १४-रथ का सवार। १५-आर्य छंद का २२ वां भेद जिसमें ६ गुरु और ४५ लघु होते हैं।

चक्रेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्रवर्ती। २-अधिष्ठाता।

चक्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कृपादृष्टि। अनुग्रह। २-कथन। ३-मदिरा के ऊपर खाने की चाट।

चक्षम [संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति। उपाध्याय।

चक्षुःश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

चक्षु [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख। देखने की इन्द्रिय। नेत्र।

चक्षुरिंद्रिय, चक्षुरिन्द्रिय [ज्ञा स्त्री.] (सं.) आँख देखने की इन्द्रिय। नेत्र।

चक्षुर्वहन् [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतानुसार एक सर्प जिसके देखते ही जीव-जंतुओं की आँखें फूट जाती हैं।

चक्षुष्पति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

चक्षुष्य [वि.] (सं.) १-नेत्रों के लिये हितकर (औषधि)। २-सुन्दर। ३-नेत्रों से उत्पन्न।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-केतकी। केवड़ा। २-सहजन का वृक्ष। ३-अंजन। सुरमा। ४-तूतिया।

चक्षुष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चाकसू। २-मेढ़ासींगी।

चक्षुस् [संज्ञा पु.] (सं.) आँख। नेत्र।

चख* [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख। नेत्र।
[संज्ञा पु.] (फ़ा.) झगड़ा। तकरार।
चखचख-बकझक। तकरार।

चखचौंध* [संज्ञा स्त्री] देखो 'चकाचौंध'।

चखना [क्रि.स.] (सं.) (हिं.) मुँहपर रखकर स्वाद लेना।

चखाचखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लागडाँट। प्रतियोगिता। २-बकझक। तकरार।

चखाना [क्रि.] (सं.) खिलाना। स्वाद का परिचय कराना।

चखिया [वि.] (हिं.) १-झगड़ालू। तकरार करने वाला। २-मखौल उड़ाने वाला। परिहास करने वाला।

चखु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चक्षु'।

चखोड़ा*+ [संज्ञा पु.] (हि.) नज़र से बचाने के लिये लगाया हुआ काला टीका। दिठौना। डिठौना।

चखौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चटपटा खाना।

चगड़ [वि.] (देश.) चालाक। चतुर।

चगताई [संज्ञा पु.] (तु.) तुर्कों का एक वंश।

चगर [संज्ञा पु.] (देश.) १-घोड़ों की एक जाति। २-एक चिड़िया।

चगुनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

चचर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बहुत दिनों तक परती पड़ी हुई जो एक बार बोई जाती हो।

चचा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चची] पिता या या बाप का भाई। पितृव्य।
चचा बनाना-अच्छी तरह बदला लेना। *चचा बनाकर छोड़ना*-खूब बदला लेकर छोड़ना।

चचिया [वि.] (हिं.) चाचा के समान सम्बन्ध रखने वाला।

चचिया-ससुर [संज्ञा पु.] (हिं.) पति या पत्नि का चाचा।

चचिया-सास [संज्ञा पु.] (हिं.) पति या पत्नी की चाची।

चचींडा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है। २-अपामार्ग। चिचड़ी।

चची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चाचा की पत्नी।

चचेंड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चचींड़ा'

चचेरा [वि.] (हिं.) १-चाचा से उत्पन्न। चाचाजाद। २-चाचा के विचार से संबद्ध।

चचोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) दांत से नोचकर या खींचकर खाना।

चचोड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) चचोड़ने का काम कराना।

चट [क्रि. वि.] (हिं.) तुरन्त। फौरन। झट।
चट से–शीघ्र। जल्दी से।
*[संज्ञा पु.] (हिं.) १-दाग़। धब्बा। २-घाव का चकत्ता। ३-कलंक। दोष। ऐब। ४-किसी वस्तु के टूटने का शब्द। ४-उँगली फूटने का शब्द।
[वि.] (हिं.) चाट पोंछकर खायाहुआ।
चट कर *जाना*–१-सब खाजाना। २-पचाजाना।

चटक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. चटका] १-गौरैया पक्षी। चिड़ा। २-पीपलामूल।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चमकदमक। चटकीलापन। २-शीघ्रता।
[वि.] (हिं.) १-चटकीला। चमकीला। २-तेज। फुरतीला।
आलस्यहीन। चटपटा। चरपरा।
[क्रि. वि.] (हिं.) चटपट। तेजी। तुरन्त।
[संज्ञा पु.] छपे हुए कपड़ों को साफ करके धोने की रीति।

चटकई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेजी। फुर्ती।

चटकदार [वि.] (हिं.) चटकीला। चमकीला।

चटकन [संज्ञा पु.] (हिं.) टूटने या चटकने का शब्द।

चटकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चिटकना'।
[संज्ञा पु.] तमाचा। थप्पड़। चपत।

चटकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किवाड़ बन्द करने की सिटकिनी। अगरी।

चटकमटक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनाव-सिंगार। २-नाजनखरा।

चटकवाही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीघ्रता। फुरती। जल्दी।

चटका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फुरती। शीघ्रता। २-दाग। धब्बा। चकत्ता। ३-चरपरा। चटकारा (स्वाद)। ४-चसका।

चटकाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चटकीलापन।

चटकाना [क्रि. स] (हिं.) १-तोड़ना। २-उङ्गलिया फोड़ना। ३-ऐसा करना जिसमें 'चटचट' शब्द न हो। ४-अलग या दूर करना। ५-चिढ़ाना।
जूतियाँ *चटकाना*–मारा मारा फिरना।

चटकामुख [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक अस्त्र।

चटकारा [वि.] (हिं.) १-चटकीला। चमकीला। २-चपल। चंचल। ३-स्वादिष्ट वस्तु को खाते समय तालू से जीभ लगने का शब्द।
चटकारे *मारना*–खूब जीभ से चाट-चाट कर स्वाद लेना।

चटकाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गौरैया पक्षियों का झुंड। २-चिड़ियों की पंक्ति या समूह।

चटकाशिरा [संज्ञा पु.] (सं.) पिपरामूल।

चटकाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चटकने या टूटने का शब्द। २-चटकने अथवा तड़कने का भाव। ३-कलियों के प्रस्फुटित होने का अस्फुट शब्द।

चटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुलबुल जैसी एक चिड़िया।

चटकीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. चटकीली] १-जिसका रंग तेज हो। शोख। भड़कीला। २-चमकदार। आभायुक्त। ३-चटपटा। मजेदार चरपरा।

चटकीलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चमकदमक। आभा। २-चरपरापन।

चटखना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चटकना'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चटकना'।

चटखनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चटकनी'।

चटखौता [संज्ञा पु.] (हिं.) भालुओं द्वारा चरखा कातने के खेल का प्रदशन (कलंदर)।

चटचट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चटकने या टूटने का शब्द। २-जलती लकड़ियों में से उठने वाला शब्द। ३-उंगलियों के खींचने या मोड़ने से उत्पन्न शब्द।
[क्रि. वि.] (हिं.) शीघ्रता से।

चटकटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चटपट शब्द करते हुए टूटना। २-गंठीली लकड़ी या कोयले का जलते समय शब्द करना।

चट-चेटक [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्रजाल। जादू।

चटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चाटकर खाई जाने वाली वस्तु। अवलेह। २-भोजन के साथ चाटने की गीली चटपटी वस्तु।
चटनी *करना*–बहुत महीन पीसना। २-पीसकर चूर-चूर कर देना। ३-मार डालना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक काठ का खिलौना जिसे बच्चे चाटते या चूसते है।

चटपट [क्रि. वि.] (हिं.) तुरंत। तत्क्षण। तत्काल फौरन। शीघ्र।
चटपट *होना*–बात की बात में मर जाना।

चटपटा [वि.] (हिं) मिर्च, मसाले मिला और खाने से मजेदार।

चटपटाना* [क्रि. अ.] (हिं.) जल्दी करना। हड़बड़ी मचाना।

चटपटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आतुरता। उतावलापन। २-आकुलता। ३-उत्सुकता। ४-चटपटी वस्तु।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १-उतावली। २-घबराहट। ३-देखो 'चटपटा'।

चटर [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़ी वस्तु पर किसी चिमड़ वस्तु के गिरने का शब्द।

चटर्जी [संज्ञा पु.] (बं.) बंगाली ब्राह्मणों की एक शाखा। चट्टोपाध्याय।

चटरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिपटा अन्न। लतरी।

चटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-चाटने में प्रवृत्त करना। चटाना। २-छुरी, तलवार आदि पर सान चढ़वाना।

चटशाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों के पढ़ने की पाठशाला।

चटसार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाठशाला। चटशाला।

चटसाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चटशाला। विद्यालय। पाठशाला।

चटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तृण, सींक, ताड़ के पत्तों आदि का बना बिछावन। २-चाटने की क्रिया।

चटाक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी के टूटने, उंगली के चटकने, या चपत के पड़ने आदि का शब्द। २-चकत्ता। दाग।

चटाकर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष जिसके फल आते हैं।

चटाका [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी अथवा किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।
चटाके *का*–बहुत तेज। उग्र।

चटाख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चटाक'।

चटाचट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु के टूटने का शब्द।

चटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-चटाने का काम कराना। २-थोड़ा करके किसी के मुख में डालना। ३-घूस या रिश्वत देना। ४-छुरी, तलवार आदि पर सान चढ़वाना।

चटापटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शीघ्रता। जल्दी। २-किसी संक्रामक रोग के कारण बहुत से लोगों की शीघ्रता से मृत्यु।

चटावन [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रथम बार बच्चे को अन्न चटाने का संस्कार अन्नप्राशन।

चटिक* [क्रि. वि.] (हिं.) चटपट। तत्काल। तत्क्षण।

चटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिपरामूल।

चटियल [वि.] (देश.) जिसमें पेड़-पौधे न हों। बिलकुल खुला हुआ। वृक्षशून्य, (मैदान)।

चड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उछलकर मारी हुई लात

चड्डा [संज्ञा पु.] (देश.) जांघ की जड़ या ऊपरी भाग।
[वि.] (देश.) मूर्ख।

चड्डी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का लंगोट।

चड्ढी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का दूसरे की पीठपर चढ़कर चलता है। २–पीठ पर चढ़ाने का भाव।
चड्ढी देना–पीठ पर चढ़ाना।

चढ़त [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किसी देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु या धन।

चढ़ता [वि.] (हि॰) १–ऊपर को उभड़ा हुआ। आगे को बढ़ता हुआ। २–आरम्भ होता और अग्रसर होता हुआ।

चढ़न* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चढ़ने की क्रिया। चढ़ाई।

चढ़नदार [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव पर माल का रक्षक।

चढ़ना [क्रि. अ.] (हि.) १–नीचे से ऊपर जाना। ऊंचाई की ओर अग्रसर होना। २–ऊपर उठना। उड़ना। ३–ऊपर की ओर सिमटना। ४–एक चीज पर दूसरी चीज का चिपटना या सटना। ५–बढ़ना। ६–आक्रमण या धावा करना। ७–चढ़ाई करना। ८–भाव बढ़ना या मंहगा होना। ९–स्वर का ऊंचा होना। १०–बहाव के विरुद्ध चलना। ११–ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का कसा जाना। तनना। १२–देवता आदि को भेंट दिया जाना। १३–सवारी पर बैठना। १४–वर्ष, मास आदि का आरम्भ होना। १५–कर्ज होना। १६–बुरा असर होना। १७–दर्ज होना। अंकित होना। १८–पकाने के लिये चूल्हे पर रखा जाना। १९–लेप होना। २०–किसी मामले को लेकर अदालत तक जाना।

चढ़वाना [क्रि. स.] (हिं.) चढ़ने अथवा चढ़ाने का कार्य अन्य से कराना।

चढ़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चढ़ने की क्रिया या भाव। २–ऊपर का चढ़ाव। ३–धावा। आक्रमण। ४–देवता को भेंट चढ़ाने का आयोजन। ५–चढ़ावा।

चढ़ाउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चढ़ाव'।

चढ़ाउतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बारम्बार चढ़ने उतरने की क्रिया।

चढ़ाऊपरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) होड़। प्रतियोगिता। लागडाँट।
चढ़ा ऊपरी लगाना–होड़ाहोड़ी करना।

चढ़ाचढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) होड़ाहोड़ी। चढ़ाऊपरी।

चढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १–नीचे से ऊपर की ओर ले जाना। २–चढ़ने में प्रवृत्त करना। ३–ऊपर की ओर समेटना। ४–धावा या आक्रमण करना। ५–मंहगा करना। भाव बढ़ाना। ६–स्वर तीव्र करना। ७–सितार, ढोल आदि की डोरी या तार कसना या तानना। ८–देवता को अर्पण करना। ९–सवार कराना। १०–पी जाना। ११–ऋणी ठहरना। १२–पुस्तक या कागज पर अंकित करना। १३–पकने के लिये आँच में रखना। १४–मढ़ना।

चढ़ानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊँचाई की ओर ले जाने वाली सतह।

चढ़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चढ़ने का भाव। २–तेजी। मंहगी। ३–वृद्धि। बढ़ती। ४–वह दिशा जिस ओर से जल का प्रवाह आता है। ५–देखो 'चढ़ावा'।

चढ़ावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–विवाह के अवसर पर वर की ओर से वधू को दिये जाने वाले गहने। २–देवता के ऊपर चढ़ाई जाने वली सामग्री। पुजापा। ३–उत्साह बढ़ावा।
चढ़वा बढ़ावा देना—उत्साह बढ़ाना। उत्तेजित करना।

चढ़ैत [संज्ञा पु.] (हिं.) चढ़ने वाला। सवार होने वाला।

चढ़ैता [संज्ञा पु.] (हिं.) सवार।

चढ़ैया [वि.] (हिं.) चढ़ने वाला।

चढ़ौवाँ [वि.] (हिं.) उठीहुई एड़ी का जूता।

चणक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चना। २–एक गोत्रकार ऋषि।

चणकात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) चाणक्य।

चणद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग का नाम।

चणपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुदंती नामक पौधा

चणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूध बढ़ाने वाली एक घास का नाम।

चतरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चतुरंग'।

चतर* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'छत्र'।

चतरभंग [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलों का एक रोग जिसमें उनके डिल्ले का मांस एक ओर लटक जाता है।

चतरभंगा [वि.] (हिं.) चतरभंग रोग से पीड़ित (बैल)।

चतुःसीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी भवन अथवा क्षेत्र के चारों ओर की सीमा या हद। चौहद्दी। एव्वटल।

चतुरंग, चतुरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १–सेना के चार अंग हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। २–चतुरंगिणी सेना। ३–शतरंज का खेल। ४–वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। ५–चतुरंगणी सेना का प्रधान अधिकारी

चतुरंगिणी, चतुरङ्गिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] चार अंगों वाली। [संज्ञा स्त्री.] वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल यह चारों अंग हों।

चतुरंगिनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चतुरंगिणी'

चतुरंगुल, चतुरङ्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास ।

चतुरंगुला, चतुरङ्गुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीतली लता ।

चतुरंत, चतुरन्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी ।

चतुर [वि.] (सं.) [स्त्री. चतुरा] १-टेढ़ी चाल चलने वाला । वक्रगामी । २-बुद्धिमान । ३-व्यवहारकुशल । ४-निपुण । दक्ष । ५-धूर्त । चालाक ।

चतुरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चतुरता । चतुराई । चतुरई छोलना-चालाकी करना ।

चतुरक [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर ।

चतुरक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ताल ।

चतुरजाति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चतुर्जातक ।

चतुरता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चतुराई । प्रवीणता । चतुर होने का भाव ।

चतुरनीक [संज्ञा पु.] (सं.) चतुरानन । ब्रह्मा ।

चतुरपन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चतुराई । चतुरता ।

चतुरबीज [संज्ञा पु.] देखो 'चतुर्बीज' ।

चतुरभुज [संज्ञा पु.] देखो 'चतुर्भुज' ।

चतुरमास [संज्ञा पु.] देखो 'चातुर्मास' ।

चतुरमुख [संज्ञा पु.] देखो 'चतुर्मुख' ।

चतुरम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) चार अम्लों का समूह ।

चतुरशीति [वि.] (सं.) चौरासी ।

चतुरश्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मसंतान नामक केतु । २-चौथी या आठवीं राशि ।
[वि.] (सं.) जिसके चार कोने हों । चौकोर ।

चतुरसम+ [संज्ञा पु.] देखो 'चतुरस्सम' ।

चतुरस्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का तिताला ताल । २-नृत्य में एक प्रकार का हस्तक ।

चतुरह [संज्ञा पु.] (सं.) चार दिन में समाप्त होने वाला यज्ञ ।

चतुरा+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नृत्य मौहों को धीरे-धीरे कँपाने की क्रिया ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चतुरी] १-चतुर । प्रवीण । २-धूर्त । चालाक ।

चतुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निपुणता । दक्षता । २-धूर्तता । चालाकी ।

चतुरात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर । २-विष्णु ।

चतुरानन [संज्ञा पु.] (सं.) चार मुखवाला, ब्रह्मा ।

चतुरापन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चतुराई ।

चतुराम्ल [संज्ञा पु.] देखो 'चतुरम्ल' ।

चतुरिंद्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) चार इन्द्रियों वाले जीव ।

चतुरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पुराने ढंग की एक प्रकार की पतली नाव ।

चतुरूपण [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ, मिर्च, पीपर और पीपरामूल, इन चार गरम पदार्थों का समूह ।

चतुर [वि.] (सं.) चार ।

चतुर्गति [संज्ञा पु.] (सं.) १-कछुआ । २-विष्णु । ३-ईश्वर ।

चतुर्गुण [वि.] (सं.) १-चौगुना । २-चार गुणों वाला ।

चतुर्जातक [संज्ञा पु.] (सं.) इलायची (फल), दारचीनी । छाल, तेजपात (पत्ता), नागकेसर (फूल) इन चार पदार्थों का समूह (वैद्यक) ।

चतुर्णवत् [वि.] (सं.) चौरानबेवाँ ।

चतुर्णवति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौरानवे की संख्या
[वि.] (सं.) चौरानवे ।

चतुर्थ [वि.] (सं.) चौथा ।

चतुर्थक [संज्ञा पु.] (सं.) हर चौथे दिन चढ़ने वाला बुखार ।

चतुर्थकाल [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन का समय । दोपहर या उसके आसपास का समय ।

चतुर्थभक्त [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर्थकाल ।

चतुर्थभाज [वि.] (सं.) उपज का चौथाई अंश कर रूप में लेने वाला (राजा) ।

चतुर्थांश [संज्ञा पु.] (सं.) चौथाई ।

चतुर्थाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यास ।

चतुर्थिकर्म [संज्ञा पु.] देखो 'चतुर्थी' ।

चतुर्थिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ४ कर्ष के बराबर का एक परिमाण (वैद्यक) । पल ।

चतुर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी पक्ष की चौथी तिथि । २-चौथ । ३-विवाह के चौथे दिन होने वाला विशिष्ट कर्म ।

चतुर्दंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर । २-कार्तिकेय की सेना । ३-एक राक्षस का नाम ।

चतुर्दंत, चतुर्दन्त [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत हाथी ।

चतुर्दश [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह ।

चतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोदस । किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि ।

चतुर्दिक [संज्ञा पु.] (सं.) चारों दिशायें ।
[क्रि. वि.] (सं.) चारों ओर ।

चतुर्दिश [संज्ञा पु.] (सं.) चारों दिशायें ।
[क्रि. वि.] (सं) चारों ओर ।

चतुर्दोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार डंडों का हिंडोला या पालना । २-चार कहारों से ले चलने वाली सवारी ।

चतुर्धाम [संज्ञा पु.] (सं.) चार धाम । चार मुख्य तीर्थ ।

चतुर्बाहु [संज्ञा पुं.] (सं.) १-शिव । महादेव । २-विष्णु ।

चतुर्भद्र [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष इन चारों का समुदाय ।

चतुर्भुज [वि. सं.] [स्त्री. चतुर्भुजा] चार भुजाओं वाला ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-चार वाला क्षेत्र ।

चतुर्भुजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-एक विशि देवी' । २-गायत्रीरूपधारिणी महाश

चतुर्भुजी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक वैष्णव सम्प्रदाय का नाम । २-इस सम्प्रदाय का यायी ।
[वि.] (हिं.) चार भुजाओं वाला ।

चतुर्मास [संज्ञा पु.] (सं.) चातुर्मास । बरसात के चार महीने, असाढ़, सावन, भादों और कुंआर ।

चतुर्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा । २-प्रकार का चौताला ताल । ३-नृत्य में एक की चेष्टा ।
[वि.] (सं.) [स्त्री. चतुर्मुखी] चार वाला ।
[क्रि. [वि.] (सं.) चारों ओर ।

चतुर्मूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) चारों (विराट, सूत्रात्मा, अव्याकृत और तुरीय) रहने वाला, ईश्वर ।

चतुर्युगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चारों युगों समय । चौकड़ी । चौजुगी ।

चतुर्वक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) चार मुंह वाले, ब्रह्मा ।

चतुर्वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।

चतुर्वर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चार वर्ण ।

चतुर्वार्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) चार वर्षीय योजना

चतुर्वाही [संज्ञा पु.] (सं.) चार घोड़ों की गाड़ी । चौकड़ी ।

चतुर्विंश [वि.] (सं.) चौबीसवां ।

चतुर्विंशति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौबीस ।

चतुर्विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चारों वेदों की विद्या
[वि.] (सं.) चारों वेद जानने वाला ।

चतुर्वीज [संज्ञा पु.] (हिं.) चार प्रकार के दानों या बीजों (काला जीरा, अजवाइन, मेथी और हालिम) का समूह (वैद्यक) ।

चतुर्वीर [संज्ञा पु.] (सं.) चार दिन में होने वाला एक यज्ञ ।

चतुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर । ईश्वर । २-चारों वेद ।
[वि.] (सं.) चारों वेदों को जानने वाला ।

चतुर्वेदी [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारों वेदों का ज्ञाता । २-ब्राह्मणों की एक जाति ।

चतुर्व्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार मनुष्यों या पदार्थों का समुच्चय । २-विष्णु । ३-योग शास्त्र । ४-चिकित्साशास्त्र ।

चतुर्होत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर । २-विष्णु

[संज्ञा पु.] (सं.) स्थापन करने वाला।

चतुश्चक्र [संज्ञा पु.] (सं.) शुभाशुभ का विचार करने का तांत्रिकों का एक चक्र।

चतुश्चत्वारिंश [वि.] (सं.) चौवालीसवाँ।

चतुश्चत्वारिंशत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौवालीस की संख्या।

चतुःशृंग [संज्ञा पु.] (सं.) चार सींग वाला।

चतुष्क [वि.] (सं.) चार अंग या पार्श्व वाला। चौपहल। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का घर। २-एक प्रकार की छड़ी या डंडा।

चतुष्कार, चतुष्कारी [संज्ञा पु.] (सं.) पंजे वाले जानवर।

चतुष्कर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकेय की एक अनुचरी।

चतुष्कल [वि.] (सं.) जिसमें चार कला या मात्रा हों।

चतुष्की [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुष्करिणी का एक भेद। २-मसहरी। ३-चौकी।

चतुष्कोण [वि.] (सं.) चार कोण वाला। चौकोर। चौकोना। [संज्ञा पु.] वह जिसमें चार कोण हों।

चतुष्टय [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार की संख्या। २-चार वस्तुओं का समूह।

चतुष्टोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-अश्वमेघ यज्ञ का एक अंग। २-वायु।

चतुष्पंचाश, चतुष्पञ्चाश [वि.] (सं.) चौवनवाँ

चतुष्पंचाशत्, चतुष्पञ्चाशत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौवन की संख्या।

चतुष्पत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुसना नामक साग।

चतुष्पथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौराहा। चौमुहानी। २-ब्राह्मण।

चतुष्पद [संज्ञा पु.] (सं.) चार पैरों वाला पशु। चौपाया। [वि.] (सं.) चार पदों वाला। चार परों वाला।

चतुष्पदवैकृत [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति के चौपायों का दूसरी जाति का चौपायों से गमन करना।

चतुष्पदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में तीस मात्रायें होती हैं।

चतुष्पदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चौपाई छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह मात्रायें होती हैं तथा अन्त में गुरु वर्ण होता है। २-चार पद का गीत।

चतुष्पर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी अमलोनी २-सुसना नामक साग।

चतुष्पाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

चतुष्पाठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला।

चतुष्पाणि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। [वि.] (सं.) चार हाथों वाला।

चतुष्फल [वि.] (सं.) चौपहला।

चतुष्फला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागबाला नाम की एक औषधि।

चतुस्तन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चार स्तनो वाली, गाय।

चतुस्ताल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का चौताल। ताल।

चतुस्त्रिंश [वि.] (सं.) चौंतीसवां।

चतुस्त्रिंशत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौंतीस की संख्या

चतुस्सन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

चतुस्सम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक औषधि। २-एक गंधद्रव्य।

चतुःपंचाश, चतुःपञ्चाश [वि.] (सं.) चौवनवाँ।

चतुःपंचाशत्, चतुःपञ्चाशत् [संज्ञा पु.] (सं.) चौवन की संख्या।

चतुःषष्ट [वि.] (सं.) चौंसठवां।

चतुःषष्ठि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौंसठ की संख्या या अंक।

चतुःसंप्रदाय, चतुःसम्प्रदाय [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णवों के चार प्रधान सम्प्रदाय।

चतुःसप्तत [वि.] (सं.) चौहत्तरवां।

चतुःसप्तति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौहत्तर की संख्या या अंक।

चतूरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) चार रात्रियों में होने वाला एक यज्ञ।

चत्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौराहा। चौरस्ता। २-चबूतरा। वेदी। ३-कोई चौकोर घिरा हुआ स्थान। स्क्वेयर।

चत्वारिंश [वि.] (सं.) चालीसवाँ।

चत्वारिंशत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चालीस की संख्या।

चत्वाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-होमकुंड। २-वेदी। ३-चबूतरा। वेदी। ४-गर्भ। ५-कुश नामक घास।

चदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चादर'।

चदिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपूर। २-चन्द्रमा। ३-साँप। ४-हाथी।

चद्दर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी धातु का लम्बा-चौड़ा चौकोर पत्र। २-चादर। ३-तेज बहाव में नदी के ऊपरी तल की समतल अवस्था।
चद्दर पड़ना-नदी के बहते हुए पानी के कुछ भाग का एक दम समतल हो जाना।

चनक [संज्ञा पु.] (हिं.) चणक। चना।

चनकन+ [संज्ञा पु.] (देश.) शलगम।

चनकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चटकना'।

चनखना+ [क्रि. अ.] (?) चिढ़ना। रुष्ट होना। चिटकना।

चनचना [संज्ञा पु.] (हिं.) तमाखू की उपज को हानि पहुंचाने वाला कीड़ा।

चनन* [संज्ञा पु.] (हिं.) चंदन। संदल।

चनसित [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठ। महान्।

चना [संज्ञा पु.] (हिं.) चणक। चैत की फसल का एक प्रसिद्ध अन्न।
चने का मारा मरना-इतना कमजोर होना कि साधारण आघात से मर जाय। *नाकों चने चबवाना*-बहुत तंग करना। *लोहे का चना*-कठिन काम।

चना [संज्ञा पु.] (हिं.) चने की पत्तियों और डंठलों से निकला हुआ क्षार।

चनाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चन्द्रभागा। पंजाब की पांच नदियों में से एक।

चनार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

चनियारी [संज्ञा स्त्री.] (?) सांभरझील के निकट पाया जाने वाला एक जलपक्षी, जिसके पर बहुत सुन्दर होते हैं।

चनुआरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चनोरी'।

चनेष्ठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की घास। २-इस घास की बनी औषधि।

चनोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेद रोएँ वाली भेड़।

चन्हारिन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की जंगली चिड़िया।

चप [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घोली हुई वस्तु।

चपकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का अंगा या अंगरखा। २-किवाड़ या सन्दूक में ताला बन्द करने की कड़ी। ३-हल की हरिस के आगे लगने वाली कील।

चपकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चिपकना'।

चपका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कीड़ा।

चपकाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चिपकाना'।

चपकुलिस [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-अड़चन। झंझट। २-असमंजस। ३-भीड़भाड़।

चपट [संज्ञा पु.] (सं.) चपत। चमाचा।

चपटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चिपकना'।

चपटा+ [वि.] (हिं.) देखो 'चिपटा'।

चपटा-गाँजा [संज्ञा पु.] (हिं.) दबाया हुआ गाँजा

चपटाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चिपकाना'।

चपटी+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'चिपटी'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताली। थपोड़ी। २-भग। योनि।

चपटी-नत्थी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गत्ते की बनी वह साधारण नत्थी या दफ्ती, जिस पर कागज की नत्थियां रखकर बांधी जाती हैं। फ्लैट-फाइल।

चपड़गट्टू [वि.] (देश.) १–आफत का मारा। २–गुत्थमगुत्था।

चपड़चपड़ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कुत्तों की जीभ से होने वाला चट्-चट् शब्द।

चपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–साफ की हुई लाख का पत्तर। २–लाल रंग का एक कीड़ा।

चपड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पटिया। तख्ती। २–देखो 'चिपड़ी'।

चपत [संज्ञा पु.] (हिं.) १–तमाचा। थप्पड़। २–हानि। नुकसान।

चपती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकीरें खैंचने की काठ की चपटी छड़।

चपदस्त [संज्ञा पु.] (फा.) वह घोड़ा जिसका अगला दाहिना पैर सफेद हो।

चपना [क्रि. अ.] (हिं.) १–दबना। कुचल जाना। २–झेंपना। शरमाना। + ३–चौपट होना। नष्ट होना।

चपनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटी छिछली कटोरी। २–दरियाई नारियल का कमंडल। ३–हांडी ढक्कन। ४–घुटने की हड्डी। चक्की।

चपरउनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहारों का औजार

चपरगट्टू [वि.] (हिं.) १–सत्यानाशी। अभागा। २–गुत्थमगुत्था।

चपरना+* [क्रि. स.] (हिं.) १–चुपड़ना। २–आपस में मिलाना। ३–भाग जाना। खिसक जाना। [क्रि. अ.] जल्दी मचाना।

चपरनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मुजरा। गाना।

चपरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चपड़ा'। [वि.] मुकर जाने वाला। झूठा। [अव्य.] हठात्। मान न मान।

चपराना+ [क्रि. स.] (देश.) झूठा बनाना। झुठलाना।

चपरास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौकीदार, अरदली आदि की वह पेटी जिसपर बिल्ला लगा रहता है। २–मुलम्मा करने की कलम। ३–मालखंभ की एक कसरत।

चपरासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चपरास धारण करने वाला नौकर। २–कार्यालय के कागज-पत्र लाने लेजाने वाला नौकर।

चपरि* [क्रि. वि.] (हिं.) जल्दी से। चपलता से।

चपरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक कदन्न या घास। खेसारी।

चपरैला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

चपल [वि.] (सं.) १–स्थिर या शान्त न रहने वाला। २–चंचल। चुलबुला। ३–उतावला। हड़बड़ी मचाने वाला। जल्दबाज। ४–चालाक। धृष्ट।
[संज्ञा पु.] १–पारा। २–मछली। ३–चातक। पपीहा।

चपलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चंचलता। तेजी। २–उतावली। धृष्टता।

चपलत्व [संज्ञा पु.] चपलता। चंचलता।

चपलस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

चपला [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] चंचल। फुरतीला। तेज।
[संज्ञा स्त्री.] १–लक्ष्मी। २–बिजली। चंचला। ३–जीभ। ४–भांग। ५–दुश्चरित्रा स्त्री। ६–मदिरा। ७–एक प्राचीन नाव। ८–आर्याछंद का एक भेद।

चपलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चपलता।

चपलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) चलना। हिलना। डोलना।
[क्रि. स.] चलाना। हिलाना। डोलाना।

चपली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चप्पल'।

चपाक* [क्रि. वि.] (हिं.) चटपट।

चपाट [संज्ञा पु.] (हिं.) बिना एड़ी उठा हुआ जूता।

चपाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पतली रोटी।
चपाती सा पेट–कृशोदर।

चपाती-सुमा [वि.] (उर्दू.) रोटी के से सूम वाला (घोड़ा)।

चपाना [क्रि. स.] (हिं.) १–रस्सी जोड़ना। २–दबवाना। ३–लज्जित करना। झिपाना।

चपेकना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चिपकाना'।

चपेट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चपत। तमाचा। २–धक्का। ३–झोंका। ४–संकट।

चपेटना [क्रि. स.] (हिं.) १–दबाना। दबोचना। २–बलपूर्वक भगाना। ३–फटकार बताना। डाँटना।

चपेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चपेट'।

चपेटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों सुदी छठ।

चपेरना* क्रि. स.] (हिं.) दबाना। चापना।

चपेहर [संज्ञा पु.] (देश.) एक फूल का नाम।

चपोटसिरीस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सिरीस या सीसम की जाति का एक वृक्ष।

चपौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी टोपी।

चपौर [संज्ञा पु.] (देश.)१–एक जलपक्षी। २– २–चपटा जूता।

चप्पड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिप्पड़'।

चप्पन [संज्ञा पु.] (हिं.) छिछला कटोरा।

चप्पल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जूता जिसके ऊपर पट्टियाँ लगी होती हैं।

चप्पलसेहुंड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) नागफनी।

चप्पा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ-पैर दबाने की सेवा।

चप्पू [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव का वह डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।

चफाल+ [संज्ञा पु.] (हिं) भूमि का वह भाग जिसके चारों ओर दलदल हो।

चबक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रह-रहकर उठने वा
दर्द। चिलक। टीस।
[वि.] (हिं.) डरपोक। दब्बू।

चबकना [क्रि. अ.] (देश.) रह-रहकर दर्द
टीसना। चमकना। पीड़ा उठना।

चबकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) स्त्रियों के
बाँधने की डोरी। परांद।

चबनी-हड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरलता से
जाने वाली हड्डी, जो भुरभुरी और
होती है।

चबला+ [संज्ञा पु.] (देश.) पशुओं के खुरों
होने वाला एक रोग।

चबवाना [क्रि. स.] (हिं.) चबाने का काम

चबाना [क्रि. स.] (हिं.) १–दाँतों से
या कुचलकर खाना। जुगालना।
काटना।

चबारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो '

चबाव, चबावन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

चबूतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बैठने के लिए
और ऊँचा स्थान। चौतरा। २–
बड़ा थाना।

चबेना [संज्ञा पु.] (हिं.) भुना हुआ अन्न
जो चबाकर खाया जाता है। चर्वण।

चबेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जलपान
सामग्री। २–जलपान का मूल्य। ३–
का दोपहर का कलेवा।

चब्बा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौवा'।

चब्बू+ [वि.] (हिं.) १–अधिक भोजन
वाला। २–बहुत चबाने वाला।

चब्भू+ [वि.] (हिं.) देखो 'चब्बू'।

चब्भो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दूसरे का दिया
गोता। डुबकी।

चमक [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी में किसी वस्तु
डूबने का शब्द। + [संज्ञा स्त्री.]
डंक मारने की क्रिया।

चभड़चभड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खाते
मुख से निकलने वाला शब्द। २–कुत्ते,
आदि के जीभ से पानी पीने का शब्द।

चभाना [क्रि. स.] (हिं.) खिलाना।
करना।

चभोक+ [संज्ञा पु.] (देश.) मूर्ख।

चभोकना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–डुबाना।
देना। २–भिगोना।

चभोरना [क्रि. स.] (हिं.) १–डुबाना।
भिगोना।

चमंक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चमक'।

चमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–प्रकाश।
रोशनी। २–आभा। दमक। ३–कमर या
में अचानक उठा हुआ दर्द। चिलक।

चमकचाँदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनी-ठनी

हाथा। हलेसा। ४–कोयला निकालने का एक प्रकार का फावड़ा।

चमचिच्चड़ [वि.] (हिं.) चिचड़ी या किलनी के समान चिपटने वाला। पीछा न छोड़ने वाला।

चमची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा चमचा। २–आचमनी। ३–चिमटा। ४–पान पर कत्था और चूना और फैलाने की चिपटे मुँह की सलाई।

चमजुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चमड़े से चिपटी रहने वाली एक प्रकार की जूं। २–चिचड़ी के समान चिपटने वाली वस्तु। पीछा न छोड़ने वाली वस्तु।

चमजोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चमजुई'।

चमटना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चिमटना'।

चमटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिमटा'।

चमड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–प्राणियों के शरीर के ऊपर का आवरण। चर्म। त्वचा। जिल्द। २–मृत या मारे हुए प्राणियों का चर्म जिसके जूते आदि बनते हैं। खाल। ३–छाल। छिलका।

चमड़ा उधेड़ना या खींचना–१–शरीर से चमड़ा उपाड़ कर अलगाना। २–बहुत कठिन दंड। ३–मृत पशुओं की उतारी हुई खाल। *चमड़ा सिझाना*–चमड़े को पकाकर मुलायम करना।

चमड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चर्म। त्वचा। खाल।

चमत्करण [संज्ञा पु.] (सं.) चमत्कार करने अथवा होने की क्रिया।

चमत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १–आश्चर्य। विस्मय। २–आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना। करामात। ३–अनूठापन। विचित्रता। ४–डमरू।

चमत्कारक [वि.] (सं.) आश्चर्यजनक। चमत्कार उत्पन्न करने वाला।

चमत्कारी [वि.] (सं.) १–विलक्षण। अद्भुत। चमत्कार दिखाने वाला। करामाती।

चमत्कृत [वि.] (सं.) विस्मित। आश्चर्ययुक्त। चकित।

चमत्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्चर्य। विस्मय।

चमन [संज्ञा पु.] (फा.) १–हरी क्यारी। २–फुलवारी। बगीचा। ३–गुलजार बस्ती। रौनक वाला शहर।

चमर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री.चमरी] १–सुरागाय। २–सुरागाय की पूँछ का बना चँवर। चामर।

चमरख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमड़े की चकती जिसमें से होकर चर्खे का टेकुआ घूमता है। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] दुबली पतली (स्त्री)।

चमरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सुगंधित जड़ जो उबटन आदि में पड़ती है।

चमरजुलाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिन्दू जुलाहा। कोरी।

चमरबकुलिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चमरबगली'।

चमरबगली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बगले की जाति की एक काले रंग की चिड़िया।

चमरशिखा [संज्ञा स्त्री] (हिं.) घोड़ों की कलंगी।

चमरस [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़े के जूते की रगड़ से होने वाला घाव।

चमराखारी [संज्ञा पु.] (हिं.) खारी नमक।

चमरावत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमड़ा या मोट आदि बनाने की वह मजदूरी जो जमींदार या काश्तकार की ओर से चमारों को दी जाती है।

चमरिक [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार का पेड़।

चमरियासेम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सेम।

चमरी [ज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सुरागाय। २–चंवरी। ३–मंजीर।

चमरू [संज्ञा पु.] (देश.) चमड़ा। खाल।

चमरोर [संज्ञा पु.] (देश.) एक बड़ा वृक्ष जिसकी छाया घनी होती है।

चमरौट [संज्ञा पु.] (हिं.) चमारों को उनके काम के एवज में दिया जाने वाला उपज का भाग या अंश।

चमरौधा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चमौवा'।

चमला [संज्ञा पु.] (देश.) भिक्षापात्र। भीख मांगने का ठीकरा।

चमस [संज्ञा पु.] (सं.) १–चम्मच के आकार का एक यज्ञपात्र जो लकड़ी का होता है। २–कलछा। चम्मच। ३–लड्डू। ४–पापड़। ५–उर्द का आटा। ६–नौ योगीश्वरों में से एक।

चमसा [संज्ञा पु.] (हिं.) चमचा। चम्मच। [संज्ञा पु.] देखो 'चौमासा'।

चमसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्मच की आकृति का एक यज्ञपात्र जो लकड़ी का होता है।

चमाऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) चंवर। चमर। चामर। [संज्ञा पु.] देखो 'चमौवा'।

चमाकम [वि.] (हिं.) खूब चमकता हुआ।

चमार [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चमारिन, चमारी] चमड़े को सिझाने चमड़े की वस्तुएं बनाने या चमड़े का व्यवसाय करने वाली जाति।

चमारनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चमारी'।

चमारिन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'चमारी'।

चमारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चमार जाति की स्त्री। २–चमार का काम।

चमियारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पद्मकाठ।

चमीकर [संज्ञा पु.] (सं.) वह खान जिसमें से सोना निकलता है।

चमू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सेना। फौज। २–वह सेना जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते हैं।

चमूकन [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों के शरीर में चिपटी रहने वाली एक प्रकार की किलनी।

चमूकर [संज्ञा पु.] (सं.) १–सिपाही। २–सेनापति।

चमूरु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मृग।

चमूहर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

चमेलिया [वि.] (हिं.) चमेली के रंग का।

चमेली [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक झाड़ी या लता जिसमें सुगंधित सफेद रंग का फूल होता है। २–इसका फूल।

चमोई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक वृक्ष जिसकी छाल से कागज बनता है।

चमोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई उस्तरे की धार तेज करते हैं।

चमोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चाबुक। कोड़ा। २–पतली छड़ी। बेंत। कमची। ३–देखो 'चमोटा'। ४–खराद या सान घुमाने का चमड़े का तस्मा।

चमौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भद्दा जूता जिसका तला चमड़े से सिया गया हो।

चम्मच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चमचा'।

चम्मल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चमला'।

चम्मोरानी [संज्ञा पु.] (?) 'सात समुंदर' वाले खेल का एक नाम।

चम्रिष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्मच में रखा हुआ अन्न या खाद्य पदार्थ।

चम्रीष [वि.] (सं.) चम्मच में रखा हुआ।

चय [संज्ञा पु.] (सं.) १–समूह। ढेर। राशि। २–टीला। ढूह। ३–गढ़। किला। ४–कोट। चहारदीवारी। प्राकार। ५–नींव। ६–चबूतरा। ७–चौकी। ऊंचा आसन।

चयन [संज्ञा पु.] (सं.) १–संचय। संग्रह। २–चुनने का कार्य। ३–यज्ञ के निमित्त अग्नि का एक संस्कार। ४–क्रम से लगाने या चुनने की क्रिया। (हिं.) देखो 'चैन'।

चयनक [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ निर्वाचित व्यक्तियों का वह समूह, जिसके अन्तर्गत किसी कार्य विशेष के निमित्त कोई अथवा कुछ व्यक्ति पुनः चुने या किसी कार्य लिए नियुक्त किये जाते हैं। पैनेल।

चयनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चुनी हुई वस्तुओं या बातों का संग्रह। २–पत्र-पत्रिकाओं के अन्तर्गत वह विभाग जिसमें अन्य पत्रों या पुस्तकों की अच्छी सामग्री रखी जाती है।

चयना* [क्रि. स.] (हिं.) चयन करना। इकट्ठा करना।

चर [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी राजा अथवा राज्य की ओर से नियुक्त वह व्यक्ति जिसका कार्य प्रकाश अथवा गुप्तरूप से अपने राज्य की आंतरिक दशा का पता लगता हो। गुप्तचर। भेदिया। जासूस। २–किसी विशेष कार्य के निमित्त भेजा हुआ आदमी। ३–नदी के किनारे की भूमि। ४–नदियों के बीच का टापू। रेता। ५–खंजन पक्षी। ६–कौड़ी। ७–मंगल। भौम। ८–पासे द्वारा खेला जाने वाला जूआ।

[वि.] १–आप से आप चलने वाला। जंगम। जैसे–चराचर। जलचर। २–अस्थिर। ३–खाने वाला। आहार करने वाला।

[संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े या कागज के फटने का शब्द।

चरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह पक्का बना हुआ गड्ढा जिसमें चौपायों को चारा या पानी दिया जाता है।

चरक [संज्ञा पु.] (सं.) १–दूत। कासिद। चर। गुप्तचर। जासूस। ३–वैद्यक के एक प्रधान आचार्य जिनका रचा 'चरकसंहिता' वैद्यक का सर्वमान्य ग्रन्थ है। ४–पथिक। बटोही। मुसाफिर। ५–देखो 'चटक'। ६–बौद्धों का एक सम्प्रदाय। ७–भिक्षुक। भिखमंगा।

[संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की मछली।

[संज्ञा पु.] (हिं.) कुष्ट का दाग।

चरकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊंट या हाथी के लिए चारा काटने वाला व्यक्ति। २–तुच्छ मनुष्य। कम हैसियत का आदमी।

चरकना* [क्रि. अ.] देखो 'तड़कना'।

चरकसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चरकमुनि का बनाया हुआ प्रसिद्ध वैद्यक-ग्रन्थ।

चरका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हलका घाव। जख्म। गरम धातु के दागने का निशान। ३–हानि। नुकसान।

[संज्ञा पु.] (देश.) मडुवा नामक अन्न का एक भेद।

चरकाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–समय का विशेष अंश जिसका काम दिनमान स्थिर करने में पड़ता है (ज्योतिष)। ग्रह को एक अंश से दूसरे अंश पर जाने में लगने वाला समय।

चरख [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घूमने वाला गोल चक्र। २–खराद। ३–टेलावाँस। ४–वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है। ५–सूत कातने का चरखा। ६–कुम्हार का चाक।

चरखकश [वि.] (फा.) १–खराद का पट्टा खैंचने वाला। २–खराद चलाने वाला।

चरखपूजा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चैत्र संक्रान्ति को होने वाली एक प्रकार की पूजा।

चरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गोल घूमने वाला चक्कर। २–लकड़ी का बना हुआ यंत्र जिसकी सहायता से कपास, ऊन आदि कातकर सूत बनाते हैं। ३–कुएं से पानी निकालने का एक यंत्र। ४–गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोत कर नया घोड़ा निकाला जाता है। खड़खड़िया। ५–झंझट का काम। ६–वह स्त्री या पुरुष जिसके सारे अंग बुढ़ापे के कारण शिथिल हो गये हों। ७–कुश्ती का एक पेंच।

चरखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पहिए के आ घूमने वाली वस्तु। २–छोटा चरखा। ३ कपास ओटने का यंत्र। बेलनी। ओटनी। ४–कुएँ से पानी खैंचने की गड़ारी। ५–प्रकार की घूमने वाली आतिशबाजी।

चरग+ [संज्ञा पु.] (फा.) १–एक प्रकार शिकारी चिड़िया। २–लकड़बग्घा नामक

चरगृह, चरगेह [संज्ञा पु.] देखो 'चरागा

चरचना [क्रि. स.] (हिं.) १–शरीर में आदि का लेप करना। २–लेपना। पोतना। ३–भांपना। ४–पूजा करना।

चरचरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खाकी रंग की चिड़िया।

[वि.] (हिं.) १–देखो 'चिड़चिड़ा'। २–देखो 'चरपरा'।

चरचराना [क्रि. अ.] (हिं.) १–चर-चर सहित टूटना। २–शरीर के घाव आदि या रगड़ से दर्द करना। चर्राना।

[क्रि. स.] (हिं.) चर-चर शब्द करके तोड़ना।

चरचराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चर-चर भाव। २–किसी वस्तु का चर-चर सहित टूटने या फटने का भाव।

चरचा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चर्चा'।

चरचारी* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चर्चा करने २–निंदक।

चरचित [वि.] (हिं.) देखो 'चर्चित'।

चरज [संज्ञा पु.] चरख नामक पक्षी।

चरजना [क्रि. अ.] (हिं.) १–बहकाना। २–अनु मान करना।

चरट [संज्ञा पु.] (सं.) खंजन पक्षी।

चरण [संज्ञा पु.] (सं.) १–पग। पैर। पांव। २–किसी छंद या पद्य आदि का एक पद। ३–बड़ों की समीपता या संग। ४–किसी का चौथाई भाग। ५–मूल। जड़। ६–गोत्र। ७–आचार। ८–क्रम। ९–घूमने की जगह। १०–गमन। जाना। ११–चरने या करने का काम। १२–सूर्य आदि की किरण।

चरणगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसके कई भेद होते हैं।

चरणचिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) १–पैरों के तलुए की रेखा। २–कीचड़ धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का निशान। ३–पत्थर आदि पर बने आकार का चिह्न।

चरणतल [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का तलुआ।

चरणतल [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का तलवा।

चरणदासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पत्नी। स्त्री। २–जूती।

चरणपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) गुल्फ। एड़ी।

चरणपादुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–खड़ाऊँ। पावड़ी। २–पत्थर आदि पर बना

चरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह। २-वह नांद जिसमें पशुओं को चारा खिलाया जाता है। ३-पशुओं का आहार या चारा।

चरन्नी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चवन्नी'।

चरपट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चपत। थप्पड़। २-उचक्का। ३-एक प्रकार का छंद।

चरपनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वेश्या का गाना। मुजरा।

चरपर [वि.] (हिं.) चरपरा।

चरपरा [वि.] (हिं.) १-तीक्ष्ण स्वाद वाला। तीता। झालदार। २-चुस्त। तेज। फुरतीला।

चरपराना [क्रि. अ.] (हिं.) घाव से सूख जाने के कारण चर्राना या पीड़ा होना।

चरपराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्वाद की तीक्ष्णता। झाल। २-घाव आदि की जलन। ३-द्वेष। डाह। ईर्ष्या।

चरफरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'चरपरा'।

चरफराना+* [क्रि. अ.] (हिं.) तड़पना। तड़फड़ाना'।

चरब [वि.] (हिं.) तेज। तीखा।

चरबन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भुना हुआ अन्न। चबैना।

चरबाँक, चरबाक [वि.] (हिं.) १-चतुर। चालाक। २-निर्भय। निडर। ३-चंचल। शोख।

चरबा [संज्ञा पु.] (फा.) प्रतिमूर्त्ति। नकल। खाका।

चरबाना [क्रि. स.] (हिं.) ढोल पर चमड़ा मढ़ाना।

चरबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह चिकना, लसीला और सफेद पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में पाया जाता है। मेद। वसा।

चरबी चढ़ना या छाना–१-मोटा होना। २-मदान्ध होना।

चरभ [संज्ञा पु.] (सं.) चरराशि। चरगृह।

चरभवन [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में चरराशि।

चरम [वि.] (सं.) अन्तिम। पराकाष्ठा का। [संज्ञा पु.] १-पश्चिम। २-अन्त। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चर्म'।

चरमकाल [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु का समय। अन्तकाल।

चरमदृष्टि [संज्ञा स्त्री] देखो 'चर्मदृष्टि'।

चरमपंथ, चरमपन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) राजनीति आदि के अन्तर्गत यह सिद्धान्त कि सब सब प्रकार के दोष तुरन्त और चाहे जैसे हों उनका निराकरण किया जाना चाहिए। एकस्ट्रीमिज्म, रैडिकलिज्म–(उग्रता तथा आतुरतासूचक भाव)।

चरमपंथी, चरमपन्थी [वि.] (सं.) वह जो राजनीति आदि में सर्व प्रकार के दोषों का निराकरण करने का पक्षपाती हो। रैडिकल इक्स्ट्रीमिस्ट।

चरमर [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी तनी हुई वस्तु के दबने से उत्पन्न शब्द।

चरमरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक घास। [वि.] (हिं.) चरमर शब्द करने वाला।

चरमराना [क्रि. अ.] (हिं.) चरमर शब्द होना। [क्रि. स.] किसी वस्तु में चरमर शब्द उत्पन्न करना।

चरमवती+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चम्बल नदी।

चरराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेष, कर्क, तुला और मकर राशि।

चरलौता [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की काष्ठौषध।

चरवाँक [वि.] (हिं.) देखो 'चरबाँक'।

चरवा [संज्ञा पु.] (देश.) बढ़िया और नरम चारा जो खेत या खेत की भूमि में बारहो मास अधिकता से उत्पन्न होता है।

चरवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चराने का काम। २-चराने की उजरत।

चरवाना [क्रि. स.] (हिं.) चराने का काम कराना

चरवाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं को चराने वाला।

चरवाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पशु चराने का काम। २-पशु चराने की मजदूरी।

चरवी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कहारों का एक सांकेतिक शब्द।

चरवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चरने वाला। २-चराने वाला।

चरव्य [वि.] (सं.) चरु बनाने योग्य।

चरस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाय या बैल के चमड़े वह बड़ा डोल जो खेत सींचने के काम आता है। जिससे कुएं में पानी निकाला जाता है। २-भूमि का एक नाप जो २१०० हाथ की होती है। ३-गांजे के वृक्ष का गोंद या चेप जिसका धुआं तम्बाखू की तरह पीने से नशा हो जाता है।

चरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बैल, भैंस आदि का चमड़ा। २-चमड़े का बना बड़ा थैला। ३-चरस। मोट। पुर। ४-भूमि का एक परिमाण

चरसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चरसी'।

चरसी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चरस का नशा करने वाला। चरस से खेत सींचने वाला।

चरही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चरनी'।

चराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चरने का काम। २-चराने का काम। ३-चराने की उजरत।

चराऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) चरागाह। चरनी।

चराक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

चरागाह [संज्ञा पु.] (फा.) पशुओं के चरने का स्थान। चरनी। चरी।

चराचर [वि.] (सं.) १-चर और अचर। जड़ और चेतन। २-जगत। संसार। ५-कौड़ी।

चराचरगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्म। २-परमेश्वर।

चरान [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपायों के चरने की भूमि।

चराना [क्रि. सं.] (हिं.) १-चौपायों को चराने के लिए मैदान में छोड़ना। २-छलना। धोखा देना। बहकाना।

चराव [संज्ञा पु.] (हिं.) चरागाह। चरनी।

चरावना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चराना'।

चरावर*+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) व्यर्थ की बात। बकवाद।

चरिंदा [संज्ञा पु.] (फा.) चरने वाला। जीव।

चरि [संज्ञा पु.] (सं.) पशु।

चरित [संज्ञा पु.] (सं.) १-आचरण। २-कार्य। ३-किसी के जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन। जीवन-कथा। जीवनी।

चरितनायक [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का किसी काव्य नाटक आदि में वर्णन हो।

चरितवान् [वि.] (सं.) देखो 'चरित्रवान्'।

चरितव्य [वि.] (सं.) आचरण करने योग्य। करने योग्य।

चरितार्थ [वि.] (सं.) १-कृतार्थ। कृतकृत्य। २-ठीक उतारने वाला। सार्थक।

चरित्तर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरा चरित्र। २-छलपूर्ण आचरण। ३-नखरेबाजी।

चरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वभाव। २-जीवन में किये जाने वाले कार्य या आचरण। ३-इस प्रकार के कामों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है। ४-करनी। करतूत। ५-देखो 'चरित'

चरित्रनायक [संज्ञा पु.] देखो 'चरितनायक'।

चरित्रपंजी, पञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पंजी अथवा पुस्तिका जिसमें किसी कर्मचारी के आचरण या चरित्र कर्तव्य-पालन आदि का समय समय पर उल्लेख किया जाता हैं। कैरैक्टर रोल।

चरित्रवान् [वि.] (सं.) अच्छे चरित्र वाला। सदाचारी।

चरित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली का वृक्ष।

चरिष्णु [वि.] (सं.) चलने वाला। चलंतू। जंगम।

चरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चरागाह। २-चारे के लिए ज्वार के हरे पौधे। कड़वी। ३-दूती। संदेसा पहुँचाने वाली। ४-दासी। नौकरानी।

चरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवन के लिए पकाया हुआ अन्न। २-वह पात्र जिसमें यह पकाया जाता है। ३-बिना मांड़ निकाला हुआ भात। ४-पशुओं के चरने की भूमि। ५-यज्ञ। ६-मेघ।

चरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) चौड़े मुख का मिट्टी का बरतन।

चरुका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का धान। चरक।

चरुखला [संज्ञा पु.] (हिं.) सूत कातने का चरखा।

चरुचेली [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चरुपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) चरु पकाने या रखने का पात्र।

चरुव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पकवान।

चरुस्थाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चरु पकाने या रखने का पात्र।

चरू* [संज्ञा पु.] देखो 'चरु'।

([संज्ञा स्त्री.] देखो 'चरी'।

चरेर* [वि.] (हिं.) देखो 'चरेरा'।

चरेरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चरेरा] १-कड़ा और खुरदरा। २-कर्कश। रूखा।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

चरेरू* [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़िया। पक्षी।

चरेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ब्राह्मीबूटी।

चरैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चराने वाला। २-चरने वाला।

चरैला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक साथ चार पदार्थ पकाने का चूल्हा।

चरोखर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौपायों के चरने का स्थान। चरागाह।

चरोतर [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी मनुष्य को उसके जीवन भर के लिए दी हुई भूमि।

चरौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चरोखर'।

चर्क [संज्ञा पु.] (देश.) जहाज का मार्ग।

चर्ख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चरख'।

चर्खकश [संज्ञा पु.] (फा.) १-खराद की डोरी या तस्मा खींचने वाला। २-खराद चलाने वाला।

चर्खा [संज्ञा पु.] देखो 'चरखा'।

चर्खी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चरखी'।

चर्च [संज्ञा पु.] (अं.) गिरजाघर।

चर्चक [संज्ञा पु.] (सं.) चर्चा करने वाला।

चर्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चर्चा। २-लेपन।

चर्चर [वि.] (सं.) चलने वाला। गमनशील।

चर्चरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक में दो अंकों के मध्य के समय में गाया जाने वाला गायन। इस बीच में पात्र तैयार होते हैं और दर्शकों का मनोरंजन होता रहता है।

चर्चरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वसंतकाल में गाया जानेवाला गायन। २-होली का हुल्लड़। ३-करतलध्वनि। हथेली पीटने का शब्द। ४-आमोदप्रमोद। ५-गानाबजाना।
की धूम। ६-एक वर्ण वृत्त जिसमें (र+
ज+ज+भ+र) होता है।
मुख्य भेदों में से एक।

चर्चरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाकाल
२-सागभाजी। ३-केशविन्यास।
संवारने की क्रिया।

चर्चस [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर की नौ निधियों
से एक।

चर्चा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जिक्र। वर्णन।
२-वार्त्तालाप। बातचीत। किंवदन्ती।
वाह। ४-लेपन। पोतना। ५-दुर्गा।
गायत्री।

चर्चिक [वि.] (सं.) वेद आदि का ज्ञाता।

चर्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चर्चा।
दुर्गा। ३-एक प्रकार का सेम।

चर्चित [वि.] (सं.) १-लगाया या
२-जिसकी चर्चा हो।
[संज्ञा पु.] लेपन।

चर्नार*+ [संज्ञा पु.] देखो 'चरणादि'

चर्पट [संज्ञा पु.] (सं.) १-चपत। थप्पड़।
हाथ की खुली हुई हथेली।
[वि.] (सं.) अधिक।

चर्पटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों सुदी छठ।

चर्पटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की

चर्परा [वि.] (हिं.) देखो 'चरपरा'।

चर्बण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चर्वण'।

चर्बित [वि.] (हिं.) देखो 'चर्वित'।

चर्बी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चरबी'।

चर्मट [संज्ञा पु.] (सं.) ककड़ी।

चर्मटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चर्चरी गीत।
चर्चा। ३-क्रीड़ा। ४-आनन्द ध्वनि।

चर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-चमड़ा। २-ढाल।

चर्मकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोहिनी।
सुगंधित द्रव्य।

चर्मकशा, चर्मकषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
प्रकार का सुगंधित द्रव्य। चमरखा।
माँस रोहिणी नाम की लता। ३-एक
का थूहर।

चर्मकार [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री.
चमार।

चर्मकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) चर्मकार का काम।

चर्मकील [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बवासीर नामक

चर्मग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक

चर्मचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामान्य
मनुष्य। २-नेत्र। आंख।

चर्मचटका, चर्मचटी [संज्ञा स्त्री] (सं.)

चर्मचित्रक

चर्मचित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेतकुष्ट का रोग।

चर्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोम। रोआं। २-खून। लहू।

चर्मण्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चम्बल नदी। २-केले का पेड़।

चर्मतरंग, चर्मतरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े पर पड़ी हुई झुर्री।

चर्मदंड, चर्मदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े का बना चाबुक या कोड़ा।

चर्मदल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कोढ़।

चर्मदूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाद का रोग।

चर्मदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'चर्मचक्षु'।

चर्मचटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मसक के आकार का मुंह से बजाने का एक प्राचीन बाजा।

चर्मद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र का पेड़।

चर्मनालिका, चर्मनासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।

चर्मपत्रा, चर्मपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमगादड़।

चर्मपादुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूता।

चर्मपिटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शीतला रोग।

चर्मपुट, चर्मपुटक [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े का बना वह कुप्पा जिसमें घी, तेल आदि रखते हैं।

चर्मप्रभेदिका [संज्ञा स्त्री.]. (सं.) चमड़ा छेदने का औजार। सुतारी।

चर्मबंध, चर्मबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) चाबुक।

चर्ममसूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शीतला रोग।

चर्ममुंडा, चर्ममुण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

चर्ममुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तन्त्र में एक प्रकार की मुद्रा।

चर्मयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़े का बना चाबुक या कोड़ा।

चर्मरंग, चर्मरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौराणिक देश का नाम।

चर्मरंगा, चर्मरङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता।

चर्मरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता जिसका फल विषैला होता है।

चर्मवंश [संज्ञा पु.] (सं.) मुँह से फूंककर बजाने का एक बाजा।

चर्मवसन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

चर्मवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र का पेड़।

चर्मसंभवा, चर्मसम्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इलायची।

चर्मसार [संज्ञा पु.] (सं.) खाए हुए पदार्थों से बनने वाला रस जो चमड़े के भीतर रहता है।

चर्मांत [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का उपयंत्र जिसका उपयोग चीर फाड़ में होता था।

चर्मांभरु, चर्माम्भरु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चर्मसार'।

चर्माख्य [संज्ञा पु.] (सं.) कोढ़रोग का एक भेद।

चर्मानला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

चर्मार [संज्ञा पु.] (सं.) चमार। चर्मकार।

चर्मिक, चर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ में ढाल लेकर लड़ने वाला योद्धा।

चर्य्य [वि.] (सं.) १-करने योग्य। २-जिसका करना आवश्यक हो। कर्त्तव्य।

चर्य्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कार्य। २-आचरण। ३-रहन-सहन। प्रतिदिन का कार्यक्रम। ४-वृत्ति। जीविका। ५-सेवा। ६-चलना। गमन।

चर्य्यापरीषत [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्थान पर टिक कर न रहना, बल्कि निर्द्वन्द्वतापूर्वक चारों ओर विचरना।

चर्राना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लकड़ी का टूटते समय 'चर-चर' शब्द करना। २-शरीर में हलकी पीड़ा होना। ३-चमड़े का रूखा होने के कारण पड़पड़ाना। ३-तीव्र अभिलाषा होना।

चर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लगती हुई व्यंगपूर्ण बात।

चर्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाँतों से चबाने का कार्य। २-चबाई जाने वाली वस्तु। ३-भूना हुआ अन्न। चबैना। बहुरी।

चर्वित [वि.] (सं.) दाँतों से चबाया हुआ।

चर्वित, चर्वण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी किये हुए कार्य या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।

चर्व्य [वि.] (सं.) १-चबाने योग्य। २-जो चबाकर खाया जाय।

चर्षणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्यजाति।

चर्स [संज्ञा पु.] देखो 'चरस'।

चलंत [वि.] (हिं.) १-चलता हुआ। २-चलने वाला।

चलंत-सैन्यगुल्म [संज्ञा पु.] (हिं.) चलता फिरता फौजी दस्ता।

चलंता [वि.] (हिं.) १-चलने वाला। २-चलता हुआ।

चलंतू [वि.] (हिं.) देखो 'चरिष्णु'।

चल [वि.] (सं.) चंचल। अस्थिर। चलायमान। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा। २-शिव। ३-विष्णु। ४-कम्पन। ५-दोष। ऐब। ६-भूल। चूक। ७-छल। कपट। ८-नृत्य में शोक, चिन्तादि प्रकट करने के निमित्त गहरी सांस लेना। १०-एक प्रकार का दोहा जिसमें ११ गुरु और २६ लघु मात्राएं होती हैं।

चलअर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रचलन'।

चलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चमकना। २-चिलकना।

चलकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी से ग्रहों का स्वभाविक अंतर। २-वह जिसके कान सदा हिलते हों। ३-हाथी।

चलका [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार की साधारण नाव।

चलकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक विशेष केतु या पुच्छलतारा।

चलचंकु [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर।

चलचलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रस्थान। चलाचली। २-महाप्रस्थान। मृत्यु। मौत।

चलचाल [क्रि. वि.] (सं.) चंचल। अस्थिर।

चल-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वे चित्र जो परदे पर जीवित प्राणियों के समान काम करते दिखाये जाते हैं। सिनेमा।

चल-चित्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) नाट्यशाला के समान वह घर या भवन जिसमें चल-चित्र प्रदर्शित किये जाते हैं। सिनेमाघर।

चलचूक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छलकपट। धोखा।

चलता [वि.] (हिं.) [स्त्री. चलती] १-चलता हुआ। गतिवान्। २-बिना क्रम भंग के लगातार जारी रहनेवाला। चालू। जारी। *रनिंग*। ३-प्रचलित। करेन्ट। ४-काम चलाने या करने योग्य। ५-व्यवहार में निपुण चालाक। [संज्ञा पु.] (दे श.) १-एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार का वृक्ष जिसमें बेल के से गोल फल लगते हैं। २-कबच।

चलताखाता [संज्ञा पु.] (हिं.) बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेन-देन बराबर जारी रहे और जब चाहें तब रुपये निकाल या जमा कराये जा सकें। *करेन्ट* अकाउंट।

चलती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी की आज्ञा अथवा महत्त्व का सब जगह माना जाना। अधिकार अथवा प्रभुत्व चलना।

चलतू [वि.] (हिं.) १-देखो 'चलता'। २-बोई या जोती जाने वाली (भूमि) आबाद।

चलदंग, चलदङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) झींगा नामक मछली।

चलदल [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का वृक्ष।

चलद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) माल। असबाब। गुड्स।

चलन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चलने का भाव। गति। चाल। २-रस्म। रिवाज। ३-बराबर होता रहने वाला व्यवहार या आचरण। प्रचलन। प्रचार।

चलन से चलना-उचित रीति से व्यवहार करना।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) विघुदत् की उस समय

की गति जब रात दिन बराबर होते हैं।

चलनकलन [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिसके द्वारा पृथ्वी की गति के अनुसार दिन के घटने बढ़ने का हिसाब किया जाता है।

चलनसमीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) गणित की एक क्रिया।

चलनसार [वि.] (हिं.) १-व्यवहार में प्रचलित। चलता हुआ। २-अधिक दिनों तक चलने वाला। टिकाऊ.

चलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पैर उठाते या कदम बढ़ाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। गमन करना। २-हिलना-डोलना। ३-निभना। ४-प्रवाहित होना। ५-किसी काय में अग्रसर होना। ६-वृद्धि पर होना। ७-आरम्भ होना। छिड़ना। ८-जारी रहना। ९-बराबर काम देना। टिकना। १०-लेनदेन में काम आना। ११-प्रचलित होना। जारी होना। १२-उपयोग में आना। १३-तीर, गोली, लाठी आदि का प्रयोग या प्रहार करना। १४-बांचा या पढ़ा जाना। १५-उपाय या युक्ति लगना। १६-आचरण या व्यवहार होना।
पेट चलना-१-दस्त आना। २-निर्वाह होना। *बस चलना*-शक्ति का काम करना। *मन चलना*-इच्छा या लालसा होना। *चल बसना*-मर जाना। *अपने चलते*-भरसक। यथाशक्ति।
[क्रि. स.] (हिं.) शतरंज या चौसर आदि के खेलों में किसी मोहरे या गोटी को अपने स्थान बढ़ाना या हटाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी चलनी या छलनी। २-बड़ा कलछुला। हलवाइयों का एक औजार।

चलनि* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चन'।

चलनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घाघरा। २-रेशमी झालर।

चलनी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'छलनी'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'चलनिका'।

चलनौस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चोकर। चालन।

चलनौसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चलनौस'।

चलपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल का वृक्ष। २-सिक्के के स्थान पर नित्य चलने वाला वह धन जो कागज के रूप में हो। करेंसी नोट।

चलबाँक [वि.] (हिं.) १-देखो 'चर्बाक'। २-'चरबाँक'।
[वि.] तेज चलने वाला। शीघ्रगामी।

चलविचल [वि.] (हिं.) देखो 'चलविचल'।

चलवंत+* [संज्ञा पु.] (हिं.) पैदल सिपाही। प्यादा।

चलवाना [क्रि. स.] (हिं.) चलने का काम दूसरे से कराना।

चलविचल [वि.] (हिं.) १-अस्तव्यस्त। उखड़ा-पुखड़ा। बे ठिकाने। २-अस्थिर। डाँवाडोल।
[संज्ञा पु.] (हिं.) व्यतिक्रम। नियम या क्रम का भंग।

चलवैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) चलने वाला।

चला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। दामिनी। २-पृथ्वी। भूमि। ३-लक्ष्मी। ४-पीपल।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-रिवाज। व्यवहार। प्रचार। २-अधिकार। प्रभुत्व। स्वामित्व

चलाऊ [वि.] (हिं.) १-टिकाऊ। चिरस्थायी। २-बहुत घूमने फिरने या चलने वाले। ३-प्रचलित।

चलाँक [वि.] (हिं.) देखो 'चालाक'।

चलाँकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चालाकी'।

चलाका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली। तड़ित। दामिनी।

चलाचल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चलाचली। २-गति। चाल।
[वि.] (सं.) चंचल। चपल।

चलाचली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चलते समय की व्यग्रता, घबराहट। २-प्रस्थान। ३-अन्तकाल मरने का समय निकट होना।

चलांतक, चलान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वातरोग।

चलान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माल या सामान का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजे जाने का कार्य। २-अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय सम्मुख उपस्थित करना। ३-बाहर से आया हुआ माल। ४-वह कागज जिसमें किसी की सूचना के लिये भेजी हुई वस्तुओं की सूची या विवरण आदि हो। खन्ना।

चलानदार [संज्ञा पु.] (हिं.) माल के चलान के साथ उसकी रक्षा के लिए जाने वाला व्यक्ति।

चलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-चलने से लगाना या प्रेरित करना। २-गति देना। हिलाना डोलाना ३-व्यवहार या आचरण कराना। ४-प्रवाहित करना। ५-उन्नति करना। ६-कार्य आदि की ऐसी व्यवस्था करना कि वह भलीभांति बढ़ता रहे। कनूडवट। ७-अस्त्र-शस्त्र आदि व्यवहार में लाना।
किसी की चलाना-किसी की बात कहना। *मुँह चलाना*-खाना। *हाथ चलाना*-मारना।

चलायमान [वि.] (सं.) १-चलने वाला। २-चंचल। ३-विचलित।

चलार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रचलन'।

चलाव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चलने का भाव। प्रयाण। यात्रा। २-देखो 'चलावा'।

चलावणी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'प्रचलन'।

चलावना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चलाना'।

चलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रीति। रस्म। २-द्विरागमन। गौना।

चलासन [संज्ञा पु.] (सं.) चौद्धों के मत के प्रकार का दोष।

चलित [वि.] (सं.) १-चलता या चल जिसका प्रचलन या व्यवहार हो। मान। २-चलता हुआ। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की चेष्टा।

चलैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चलने वाला।

चलौना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूध करछा। २-चरखा चलाने का डंडा।

चलौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चलावा'।

चल्ली+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तकले पर हुआ सूत या ऊन। कुकड़ी।

चवकी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चौकी'।

चवन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चार आने का सिक्का।

चवपैया [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चौपाई'।

चवर [संज्ञा पु.] देखो 'चँवर'।

चवरा [संज्ञा पु.] (हिं.) लोबिया।

चवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) च से ञ तक के का समूह।

चवल [संज्ञा पु.] (सं.) लोबिया।

चवा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चारों ओर से वाली हवा।

चवाई [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चवाइन] बदनामी। फैलाने वाला। निंदक। २-चुगलखोर। ३-झूठा।

चवाउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चाव'।

चवालीस [संज्ञा पु.] (हिं.) चालीस और चार संख्या ४४।

चवाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चारों ओर चर्चा। अफवाह। प्रवाद। २-बदनामी। निंदा। चुगली।

चवि, चविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चव्य

चवैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चवाई'।

चव्य, चव्यका [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक औषधि। २-देखो 'चाव'।

चव्यजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गज पीपल।

चव्या [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चव्य'।

चशक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चसका'।

चशम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चश्म'।

चशमा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चश्मा'।

चश्म [संज्ञा स्त्री] (फा.) नयन। नेत्र। आँख।

चश्मक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मनमोटाव। नस्य। द्वेष। २-चश्मा। ऐनक। ३-आँख का इशारा।

चश्मदीद [वि.] (फा.) जो आँखों से देखा हुआ हो।

चश्मनुमाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आंख दिखाना धमकी या घुड़की।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) आंख चुराना । [illegible]

[illegible] [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–ऐनक । २–पानी का सोता । स्रोत ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख । नेत्र । नयन ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १–मद्य पीने का पात्र । २–मधु । शहद । ३–एक मदिरा विशेष ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख की पलक या परदा ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १–भोजन । भक्षण । २–वध करना । ३–क्षय करना ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ के यूप में लगी हुई पशु बांधने की गराड़ी ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (देश.) वस्त्र के किनारे पर लगी हुई रेशम या कलाबत्तू की डोरी ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–हलका दर्द । [illegible] । २–संजाफ के आगे लगाने की डोरी ।

[संज्ञा पु.] देखो 'चषक' ।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) टीसना । हलकी पीड़ा होना ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शौक । २–आदत । [illegible]

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) १–दो वस्तु का एक में सटना । लगना । चिपकना । २–मरना । प्राण त्यागना । ३–कपड़े का तनिका सा खिंच या दबकर फट जाना ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चश्म' ।

[संज्ञा पु.] (देश.) रेशम का खुज्जा ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चश्मा' ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चसका' ।

[illegible] [वि.] (फा.) चिपकाया हुआ ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) हथेली और तलवों की खुजली ।

चह [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नदी के कच्चे घाट पर बल्ले गाड़कर उस पर बनाया हुआ मचान जिसपर से मनुष्य नाव पर चढ़ते हैं । २–इस प्रकार का बना हुआ पुल । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गर्त्त । गड्ढा ।

चहक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पक्षियों का कलरव । चहचहा । [संज्ञा पु.] देखो 'चहला' ।

चहकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–पक्षियों का मधुर शब्द करना । २–उमंग या प्रसन्न होकर अधिक बोलना ।

चहका [संज्ञा पु.] (हिं.) ईंट या पत्थर का फर्श । २–कीचड़ । चहला । [संज्ञा पु.] (देश.) १–जलती हुई लकड़ी । २–बनेठी ।

चहकार संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चहक' ।

चहकारना* [क्रि. अ.] (हि.) चहकना ।

चहचहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चटक । २–हँसी दिल्लगी । ठट्ठा । [वि.] (हिं.) १–जिसमें चह-चह शब्द हो । २–आनन्द और उमंग करने वाला । ३–ताजा ।

चहचहाना [क्रि. अ.] (हिं.) चहकना । चहकारना ।

चहटा* [संज्ञा पु.] (हिं.) पंक । कीचड़ ।

चहता* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चहती] देखो 'चहेता' ।

चहनना+ [क्रि. स.] (हिं.) चहलना । दबाना । रौंदना ।

चहना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चाहना' ।

चहनि+* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चाह' ।

चहबच्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पानी जमा करने का छोटा गड्ढा या हौज । २–धन छिपा कर रखने का छोटा तहखाना ।

चहर+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चहल' ।

चहरना+* [क्रि. अ.] (हिं.) आनन्दित होना । प्रसन्न होना ।

चहराना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–देखो 'चहरना' ! २–'चर्राना' ।

चहल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १–आनन्दोत्सव । आनंद की धूम । २–कीचड़ । ३–कीचड़ मिली कड़ी चिकनी मिट्टी ।

चहल-कदमी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) धीरे-धीरे टहलना, घूमना या चलना ।

चहलपहल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूमधाम । आनंद की भीड़-भाड़ । २–रौनक ।

चहला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कीचड़ । पंक ।

चहली+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कुएं से पानी खींचने की चरखी । गराड़ी ।

चहलुम [संज्ञा पु.] देखो 'चहेलुम' ।

चहारदीवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चारों ओर की दीवार । कोट । प्राचीर ।

चहारुम [वि.] (फा.) चौथाई । चतुर्थांश ।

चहुँ* [वि.] (हिं.) चार । चारों ।

चहुँक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिहुंक' ।

चहुरा+ [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] १–देखो 'चौघरा' । २–'चौहरा' ।

चहुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पात्र या मान ।

चहुवान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौहान' ।

चहूँ [वि.] (हिं.) देखो 'चहुँ' ।

चहूटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) सटना । लगाना । मिलना ।

चहेटना [क्रि. स.] (?) १–दबाकर रस निचोड़ना २–देखो 'चपेटना' ।

चहेता [वि.] (हिं.) [स्त्री. चहेती] जिससे प्रेम हो । प्यारा ।

चहेती [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जिसे चाहा जाय । प्यारी ।

चहेल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कीचड़ । २–दलदली भूमि ।

चहोरना+ [क्रि. अ.] (देश.) १–पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर बैठाना या लगाना । २–सहेजना । सुरक्षित करना । [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चगोरना' !

चहोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) जड़हन धान ।

चाँई [वि.] (हिं.) छली । कपटी । [संज्ञा पु.] (देश.) १–ठग । उचक्का । २–चालाक । धूर्त । [संज्ञा स्त्री.] (?) सिर में फुंसियां होकर बाल झड़ने का रोग ।

चाँक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–काठ की वह थापी जिस पर अक्षर अथवा चिह्न खुदे रहते हैं । और जिससे खलियान में अन्न के ढेर पर ठप्पा लगाते हैं । २–खलियान के अन्न के ढेर लगाया हुआ चिह्न । ३–किसी स्थान के चारों ओर खींचा हुआ घेरा ।

चाँकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–खलियान में अनाज के ढेर पर चिह्न लगाना । २–सीमा बाँधने के लिए चिह्नित करना । हद बाँधना । ३–पहचानने के लिए किसी प्रकार का चिह्न लगाना ।

चाँका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चांक' ।

चाँगड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) तिब्बत देश का बकरा ।

चाँगला [वि.] (हि.) १–स्वस्थ । तंदुरुस्त । २–चतुर बालक ।

चाँगेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमलोनी जिसका साग होता है ।

चाँचर, चाँचरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक राग जिसे वसंत ऋतु में गाया जाता है । (देश.) १–परती छोड़ी हुई भूमि । २–एक प्रकार की मटियार भूमि । [संज्ञा पु.] किवाड़ के स्थान पर काम लाया जाने वाला परदा या टट्टी ।

चांचल्य, चाञ्चल्य [संज्ञा पु.] (सं.) चंचलता । चपलता ।

चाँचियागलवत, चाँचिया जहाज [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्री डाकुओं का जहाज ।

चाँचु* [संज्ञा पु.] (हिं.) चोंच । चंचु ।

चाँट [संज्ञा पु.] (हिं.) हवा में उड़ता हुआ जल कण ।

चाँटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चांटी] चींटा । चिउँटा । तमाचा । चपत ।

चाँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चींटी । २–तबले की संजाफदार मगजी । ३–तबले पर तर्जनी उंगली का आघात पड़ने का शब्द ।

चाँड़ [वि.] (हिं.) १–प्रबल । बलवान । २–उद्धत । उद्दंड । ३–श्रेष्ठ । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भार संभालने के लिए नीचे लगाया जाने वाला खम्भा । टेक । थूनी । २–अत्यन्त आवश्यकता । ३–संकट ।

४-प्रबलता।

चौंड सरना-इच्छा या आवश्यकता पूर्ण होना

चौंड़ना [क्रि. स.] (हि.) १-खोदकर गिराना। २-उखाड़ना। ३-उजाड़ना।

चांडाल, चाण्डाल [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. चांडाली, चांडालिन] १-एक जाति विशेष। डोम। श्वपच। २-पतित मनुष्य (गाली)।

चांडाल, चाण्डाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चांडाल जाति की स्त्री।

चांड़िला+* [वि.] (हि.) १-प्रचंड। प्रबल। २-शोख। नटखट। ३-बहुत अधिक।

चांडू [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'चंडू'।

चांढा [संज्ञा पु.] (हिं.) दो तख्तों के मिलने का स्थान (जहाज)।

चांद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा। २-द्वितीया के चन्द्रमा के आकार का एक गहना। ३-वह काला दाग जिस पर अभ्यास के लिये चिह्न लगाया जाता है।

चाँद का कुंडल या मंडल बैठना-चांद के चारों ओर सफेद घेरा सा होना।

चाँद का खेत करना-चन्द्रोदय का प्रकाश। *चाँद का टुकड़ा*-बहुत सुन्दर। *चाँद चढ़ना*-चन्द्रमा का ऊपर आना। *चाँद पर थूकना*-निर्दोष पर दोष लगाना। *चाँद पर धूल डालना* किसी निर्दोष पर कलंक लगाना। *चाँद सा मुखड़ा*-बहुत सुन्दर मुख।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-खोपड़ी का मध्य भाग २-खोपड़ी।

चाँद पर बाल न छोड़ना-१-सिर पर खूब जूते लगाना। २-सब कुछ ले लेना।

चांदतारा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार की बारीक मलमल। २-एक प्रकार की पतंग।

चांदना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रकाश। उजाला। २-चांदनी।

चांदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चन्द्रमा का प्रकाश। चन्द्रिका। ज्योत्सना। कौमदी। २-बिछाने की सफेद कपड़ा बड़ी चादर। ३-ऊपर तानने का सफेद कपड़ा। ४-गुलचांदनी। तगर।

चाँदनी खिलना या छिटकना-शुभ्रज्योत्सना का फैलना। *चाँदनी का खेत*-चारों ओर चन्द्रमा का फैला हुआ प्रकाश। *चार दिन की चाँदनी*-क्षणिक समृद्धि।

चांदबाला [संज्ञा पु.] (हिं.) कान में पहनने का अर्धचंद्राकार बाला।

चांदमारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंदूक से निशाना लगाने का अभ्यास।

चांदला+ [वि.] (हि.) १-वक्र। कुटिल। टेढ़ा। २-देखो 'चँदला'।

चांदसूरज [संज्ञा पु.] (हि.) चोटी में गूंधने का एक (स्त्री) का गहना।

चांदा [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह निर्धारित स्थान जहां से भूमि के नाम में पैमाइश की जाती है। २-छप्पर का पाखा। ३-वह स्थान जहां दुरबीन लगाई जाती है।

चांदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक नरम, सफेद और चमकीली धातु। इसके आभूषण और बरतन बनते हैं। २-आर्थिक लाभ। ३-खोपड़ी का मध्य भाग। चांद। चँदिया।

चाँदी का जूता-घूस। रिशवत। *चाँदी काटना*-खूब रुपया पैसा पैदा करना। *चाँदी होना*-१-बहुत लाभ होना। २-जल कर लाख होना

चांद्र, चान्द्र [वि.] (सं.) १-चन्द्रमा सम्बन्धी। २-जो चन्द्रमा के विचार से हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-अदरख। २-चन्द्रकान्त मणि। ३-मृगशिरा नक्षत्र।

चांद्रक, चान्द्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ।

चांद्रपुर, चान्द्रपुर [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के अनुसार एक नगर।

चांद्रमस, चान्द्रमस [वि.] (सं.) चन्द्रमा-संबंधी। [संज्ञा पु.] मृगशिरा नक्षत्र।

चांद्रमसायन, चान्द्रमसायन [संज्ञा पु.] (सं.) बुधग्रह।

चांद्रमाण, चान्द्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा की गति के अनुसार निर्धारित काल की गति का परिमाण।

चांद्रमास, चान्द्रमास [संज्ञा पु.] (सं.) उतना समय जितना चन्द्रमा को पृथ्वी की परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का महीना।

चांद्रवत्सर, चान्द्रवत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) वह वर्ष जो चन्द्रमा की गति के अनुसार हो।

चांद्रव्रतिक, चान्द्रव्रतिक [वि.] (सं.) चन्द्रायण व्रत करने वाला। [संज्ञा पु.] राजा।

चांद्रायण, चान्द्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-महीने भर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं। २-एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११ और १० के विराम से २१ मात्राएं होती हैं।

चांद्री, चान्द्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा की स्त्री। २-चांदनी। ज्योत्सना। ३-सफेद भटकटैया। [वि.] चन्द्रमासम्बन्धी।

चाँप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'चाप'। २-चम्पा का फूल। [संज्ञा स्त्री.] १-दबाव। २-पैर की आहट।

चाँपना [क्रि. स.] (हि.) दबाना। मीड़ना।

चाँयचाँय [संज्ञा स्त्री.] (हि.) व्यर्थ की बकवक।

चाँवचाँव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चाँयँचाँयँ'।

चाँसलर [संज्ञा पु.] (अं.) विद्यालय का प्रधान अधिकारी जो उपाधियां प्रदान करता है।

चा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चाय'।

चाउ+* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'चाव'।

चाउर+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'चावल'।

चाऊ [संज्ञा पु.] (देश.) ऊंट या बछड़े का

चाक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कील पर घूमने वाला वह गोलाकार पत्थर जिस पर कुम्हार बरतन घनाते हैं। कुलाल चक्र। २-पहिया। ३-गराड़ी। ४-मंडलाकार रेखा। ५-देखो 'चौक'।

[संज्ञा पु.] (फा.) दरार। चीर।

[वि.] (तु.) १-दृढ़। मजबूत। २-हृष्टपुष्ट।

[संज्ञा पु.] (अं.) खरिया मिट्टी की सलाई।

चाकचाक [वि.] (हि.) चारों ओर से सुरक्षित। दृढ़। मजबूत।

चाकचक्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमकदमक। उज्ज्वलता। २-शोभा। सुन्दरता।

चाकट+ [संज्ञा पु.] (देश.) हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा।

चाकदिल [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का बुलबुल।

चाकना [क्रि. स.] (हिं.) १-सीमाबद्ध करने के लिये चारों ओर रेखा खेंचना। हद बनाना। २-खलियान में अन्न-राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना। ३-पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न लगाना।

चाकर [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. चकरानी] नौकर। दास। सेवक।

चाकरनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चाकरानी'।

चाकरानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नौकरानी। दासी।

चाकरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नौकरी। सेवा। टहल।

चाकरी बजाना-सेवा करना।

चाकल+ [वि.] (हि.) देखो 'चकला'।

चाकसू [संज्ञा पु.] (हि.) १-वनकुलथी का पौधा। २-वनकुलथी का बीज।

चाका [संज्ञा पु.] (हिं.) आस्तीन का खुला हुआ मोहरा।

चाकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चक्की। आटा पीसने का यन्त्र। २-बिजली।

चाकू [संज्ञा पु.] (तु.) कलम छीलने या फल काटने की एक छुरी।

चाक्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारण। भाट। २-तेली। ३-गाड़ीवान। ४-कुम्हार। ५-अनुचर सहचर।

[वि.] (सं.) १-चक्राकार। २-चक्रसंबंधी।

चाक्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक फूल का नाम।

चाक्षुष [वि.] (सं.) १-चक्षुसंबंधी। २-आंख से देखने का।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-न्याय में ऐसा प्रमाण जिसका बोध आंखों में हो। २-छठे मनु का नाम।

चाख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चाष'।

चाखना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चखना'।

चाचपुट [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

चाचर, चाचरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-होली में गाया जाने वाला एक गीत। २-होली में होने वाले खेल तमाशे। होली की धमार। ३-उपद्रव। दंगा।

चाचरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) योग की एक मुद्रा।

चाचा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. चाची] पितृव्य। बाप का भाई।

चाची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चाचा की स्त्री। काकी

चाट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चटपटी वस्तु खाने की प्रबल इच्छा। २-एक बार किसी वस्तु को पाकर पुनः उसे पाने की कामना। लालसा चसका। ३-प्रबल कामना। ४-लत। आदत। ५-खान की चटपटी और नमकीन वस्तुएं।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वासघाती। चोर। २-[illegible]।

चाटंगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कुश्ती का एक पेंच।

चाटना [क्रि. स.] (हिं.) १-जीभ की रगड़ के साथ उठाना। २-पोंछ कर खा लेना। ३-किसी वस्तु पर (प्यार से) जीभ फेरना। ४-कागज, कपड़े आदि का कीड़ों द्वारा खाया जाना।

चूमना चाटना-प्यार करना। *चाट पोंछकर खाना*-सब कुछ खा जाना।

चाटपुट [संज्ञा पु.] (सं.) तबले का एक ताल।

चाटा [संज्ञा पु.] (देश.) वह बरतन जिसमें कोल्हू का पेरा हुआ रस इकट्ठा होता है। नांद।

चाटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मोटे दल की मिट्टी की मटकी।

चाटु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मीठी बात। प्रिय बात। २-खुशामद। चापलूसी।

चाटुकार [संज्ञा पु.] (सं.) खुशामदी। चापलूस

चाटुकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चापलूसी।

चाटुपटु [संज्ञा पु.] (सं.) भंड। भांड।

चाड़* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चांड़'।

चाड़िला [वि.] (हिं.) देखो 'चांड़िला'।

चाड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीठ पीछे की निंदा। चुगली।

चाढ़ा+* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. साढ़ी] १-प्रिय। प्रेमपात्र। २-प्रेमी चाहने वाला। आशिक।

चाणक्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजनीति के प्रसिद्ध आचार्य और सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री।

कौटिल्य।

चाणूर [संज्ञा पु.] (सं.) कंस का एक योद्धा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

चातक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. चातकी] वर्षा काल में बोलने वाला एक पक्षी। पपीहा।

चातकनंदन, चातकनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्षाकाल। २-मेघ।

चातर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मछली पकड़ने का बड़ा जाल। २-षड्यन्त्र। [वि.] देखो 'चातुर' या 'चतुर'।

चातुर [वि.] (सं.) १-नेत्रगोचर। २-चतुर। ३-खुशामदी। [संज्ञा पु.] १-गोल तकिया या मसनद। २-चार पहियों की गाड़ी।

चातुरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चतुरई'।

चातुरता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चतुरता'।

चातुराश्रम्य [संज्ञा पु.] (सं.) चार आश्रम।

चातुरिक [संज्ञा पु.] (सं.) सारथी। रथवान।

चातुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चतुरता। चतुराई। चालाकी। धूर्त्तता।

चातुर्जात, चातुर्जातक [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर, इलायची, तेजपात और दालचीनी नामक चार सुगंधद्रव्य (भावप्रकाश)।

चातुर्थक, चतुर्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) चौथिया बुखार। [वि.] चौथे दिन होने वाला।

चातुर्दश [संज्ञा पु.] (सं.) १-चतुर्दशी से उत्पन्न। २-एक राक्षस का नाम।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार पदार्थ (अर्थ, काम। धर्म और मोक्ष)। २-नागरमोथा, पीपल, अतीस और काकड़ासिंगी नामक चार औषध (वैद्यक)।

चतुर्भद्रावलेह [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक का एक प्रसिद्ध अवलेह।

चातुर्महाराजिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु भगवान। २-बुद्ध का एक नाम।

चातुर्मास [वि.] (सं.) चार मास का होने वाला।

चातुर्मासिक [वि.] (सं.) चार मास में होने वाला। (यज्ञादि कर्म)।

चातुर्मासी [संज्ञा स्त्री] (सं) पूर्णमासी।

चातुर्मास्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार मास में सम्पन्न होने वाला एक वैदिक यज्ञ। २-एक पौराणिक व्रत।

चातुर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) निपुणता। चतुराई।

चातुर्वर्ण्य [संज्ञा.पु.] (सं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चार वर्ण।

चातुर्होत्र [संज्ञा स्त्री.] (सं) चार होताओं द्वारा सम्पन्न होने वाला यज्ञ।

चात्र [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निमन्थन की खैर की लकड़ी।

चात्रिक*+ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चातक'।

चात्वाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवन-कुंड। २-उत्तरवेदी। ३-डाभ या कुश। ४-गड्ढा।

चादर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बिछाने या ओढ़ने का वस्त्र। २-हलका ओढ़ना। दुपट्टा। ३-देखो 'चद्दर'। ३-पहाड़ या अट्टान से गिरने वाली चौड़ी धार। पवित्र स्थान पर चढ़ाये जाने वाले फूल।

चादर उतारना-अपमानित करना। *चादर ओढ़ना या डालना*-किसी विधवा को रख लेना। *चादर रहना या लाज की चादर रहना*-कुल की मर्यादा रहना। *चादर से बाहर पैर फैलाना*-१-अपनी हद से बाहर जाना। २-अपने वित्त से अधिक खर्च करना।

चादरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी चादर।

चान* [संज्ञा पु.] देखो 'चन्द्रमा'।

चानक* [क्रि. वि.] (हिं.) अकस्मात्। अचानक। सहसा।

चानन* [संज्ञा पु.] देखो 'चन्दन'।

चानस [संज्ञा. पु.] (अं.) ताश के एक खेल का नाम।

चाना* [क्रि. अ.] (हिं.) चाव या उमंग में आना

चाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमान। धनुष। २-गणित में आधा वृत्त क्षेत्र। ३-वृत्त की परिधि का कोई भाग। ४-धनुराशि।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दबाव। २-पैर की आहट।

चापजरीब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत की लम्बाई की सीधी नाप।

चापट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आटे में से निकलने वाली भूसी। चोकर।

[वि.] (हिं.) देखो 'चापड़'।

चापड़ [वि.] (हिं.) १-दबकर चिपटा हो गया हुआ। २-बराबर। समतल। ३-चौपट। उजाड़।

चापदंड, चापदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह डंडा जिससे कोई वस्तु आगे की ओर ठेली जाय।

चापना [क्रि. स.] (हिं.) दबाना। मीड़ना।

चापर* [वि.] (हिं.) देखो 'चापड़'।

चापल [संज्ञा पु.] (सं.) चंचलता। अस्थिरता।

[वि.] (सं.) चंचल।

चापलता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चंचलता। ढिठाई

चापलूस [वि.] (फा.) खुशामदी। चाटुकार।

चापलूसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चाटुकारी। खुशामद।

चापल्य [संज्ञा पु.] (सं.) चपलता।

चापी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनुष धारण करने वाला। २-शिव। ३-धनुराशि।

चापू [संज्ञा पु.] (देश.) लम्बे और मुलायम बालों वाली एक प्रकार की छोटे कद की बकरी जो हिमालय प्रदेश के आसपास पाई जाती है।

चाफंद [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार का मछली पकड़ने का जाल।

चाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का पौधा। जिसकी जड़ और डाल औषधियों के काम आती है। २-इस पौधे का फल। ३-चार की संख्या। ४-कपड़ा। ५-चबाने वाले चौखूंटे दांत। डाढ़। चौभड़। ६-बच्चे के जन्मोत्सव की रीति।

चावना [क्रि. स.] (हिं.) १-दांतों से कुचलकर खाना। चबाना। २-खाना। खूब भोजन करना।

चावी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कुंजी। ताली। २-यंत्र के किसी भाग को दृढ़ बनाने की फन्नी। *चावी देना*-ताला बंद करना।

चावुक [संज्ञा पु.] (फा.) १-कोड़ा। हंटर। सांटा। २-तीव्र प्रेरणा।

चावुकसवार [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े को चाल सिखाने वाला।

चावुकसवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चाबुकसवार का काम या पेशा।

चाभ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चाव'।

चाभना (क्रि. स.) (हिं.) खाना।

चाभा [संज्ञा पु.] (हिं.) वैल की जीभ में काँटे उभड़ आने का रोग।

चाभी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चावी'।

चाम [संज्ञा पु.] (हि.) चमड़ा। खाल। *चाम के दाम चलाना*-मनमानी या अंधेर करना।

चामचोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुप्तरूप से पर-स्त्रीगमन।

चामड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'चामड़ी'।

चामर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौंर। चंवर। चौंरी। २-मोरछल। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (र+ज+र+ज+र) होते है।

चामरपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कांस। २-सुपारी का पेड़। ३-केतकी। ४-आम।

चावरिक [संज्ञा पु.] (सं.) चँवर डुलाने वाला।

चामरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुरागाय।

चामिल+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चंबल'।

चामीकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-धतूरा। [वि.] स्वर्णमय। सुनहरी।

चामुंडराज [संज्ञा पु.] (सं) गुजरात का एक राजा।

चामुंडा, चामुण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक देवी का नाम। भैरवी।

चाय [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-पौधा जिसकी पत्तियाँ उबाल कर और उसमें दूध तथा चीनी डाल कर पीते हैं। २-इस प्रकार बना हुआ पेय पदार्थ ! *चाय पानी*-जलपान। + [संज्ञा पु.] देखो 'चाव'।

चायक* [संज्ञा पु.] (हि.) प्रेमी। चाहने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) चयन करने या चुनने वाला।

चार [वि.] (हि.) दो का दुगना। *चार आंखें करना*-साक्षात्कार होना। *चार आंखें होना*-आंखें मिलना। *चार उँगलियों तक सिर पर न रखना*-आशीर्वाद तक भी न देना। *चार के कंधे पर चढ़ जाना, चलना या जाना*-१-मरजाना। २-पालकी में बैठकर जाना। *चार चांद लगना*-सौन्दर्य या प्रतिष्ठा चौगुनी होना। *चार दिन की चांदनी*-क्षणिक समृद्धि या आनन्द। *चार पांच करना या लाना*-१-हीला हवाला करना। २-हुज्जत या तकरार करना। ३-बातें बढ़ाना। *चार पैसे होना*-कुछ धन-सम्पत्ति होना। *चारों फूटना*-अंधा होना। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गति। चाल। २-बंधन। कारागार। ३-गुप्तचर। जासूस। ४-दास। सेवक। ५-रीति। रसम।

चारआइना [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का कवच या बख्तर जिसमें लोहे की चार पेटियाँ होती हैं।

चारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चरवाहा। २-चलाने वाला। ३-गति। चाल। ४-कारागार। ५-गुप्तचर। ६-साथी। ७-सवार। ८-घूमने वाला ब्राह्मण छात्र या ब्रह्मचारी।

चारकर्म [संज्ञा पु.] गुप्तचर या भेदिये का कार्य। जासूसी।

चारकाने [संज्ञा पु.] (हिं.) चौसर या पासे का एक दांव।

चारखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह कपड़ा जिसमें चौखूंटे घर बने होते हैं।

चारचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्तचरों द्वारा जानकारी प्राप्त करने वाला अधिकारी। राजा।

चारज [संज्ञा पु.] (अं.) १-कार्यभार। २-निगरानी। संरक्षा का भार।

चारजामा [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े की जीन।

चारटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नली नाम का गंध-द्रव्य।

चारटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पद्मचारिणी वृक्ष।

चारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वंश की कीर्ति गाने वाला। भाट। २-राजस्थान की एक जाति। ३-भ्रमणकारी।

चारणविद्या, चारणवैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्व वेद का एक अंश।

चारदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौपाया। २-गधा।

चारदीवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रक्षा के लिए चारों ओर से बनाई हुई दीवार। २-प्राचीर। कोट।

चारन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चारण'।

चारना+* [क्रि. स.] (हिं.) चराना।

चारनाचार [क्रि. वि.] (फ़ा.) विवश होकर। मजबूरन।

चारपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पलंग। खाट। माचा। मंजी। *चारपाई भरना, पकड़ना या चारपाई से लगना*-अधिक रोग ग्रस्त होने के कारण चारपाई से न उठ सकना।

चारपाया [संज्ञा पु.] (फा.) चौपाया। पशु। जान-वर।

चारबाग [संज्ञा पु.] (फा.) १-चौखूंटा बगीचा। २-भिन्न-भिन्न रंगों में चार बराबर के खानों में बटा रूमाल।

चारयारी [संज्ञा स्त्री.] (हि. + फा.) १-चार मित्रों की गोष्ठी या मंडली। २-मुसलमानों में सुन्नियों एक वर्ग।

चारवा* [संज्ञा पु.] (हि.) चौपाया। पशु।

चारवायु [संज्ञा स्त्री] (सं.) ग्रीष्म की गरम हवा। लू।

चारा [संज्ञा पु.] (हि.) १-पशुओं के खाने का घासपात। २-आटा या अन्य वस्तु जिसे कंटिया में लगाकर मछली फँसाते हैं। [संज्ञा पु.] (फा.) उपाय। इलाज। तदबीर।

चाराजोई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नालिश। फरियाद।

चारायण [संज्ञा पु.] (सं.) कामशास्त्र के एक आचार्य।

चारि** [वि.] (हिं.) देखो 'चार'।

चारिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] आचरण करने वाली। [संज्ञा स्त्री.] करुणी नामक वृक्ष।

चारित [वि.] (सं.) जो चलाया गया हो। २-भबके से खींचा या उतारा हुआ।

चारित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुल क्रमागत आचार। २-चाल-चलन। व्यवहार। स्वभाव। ३-संन्यास (जैन)। ४-मरुतगणों में से एक।

चारित्र-विनय [संज्ञा पु.] (सं.) शिष्टाचार। नम्रता।

चारित्र-मार्गणा [संज्ञा स्त्री.](सं.) चरित्र की खोज। चरित्र का अनुसरण।

चारित्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की समाधि।

चारित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

चारित्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) चरित्र।

चारिवाच् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासिंगी।

चारी [वि.] (हिं.) [स्त्री. चारिणी] १-चलने वाला। २-आचरण करने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैदल सिपाही। २-संचारीभाव। संज्ञा स्त्री.] (सं.) नृत्य का एक अंग।

चारु [वि.] (सं.) सुन्दर। मनोहर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंकुम। केसर। २-

बृहस्पति। ३-रुक्मणी से उत्पन्न श्रीकृष्ण का पुत्र।

चारुक [संज्ञा पु.] (सं.) सरपत का बीज।

चारुकेशरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवती का पुष्प।

चारुचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चारुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दरता। मनोहरता।

चारुधारा [संज्ञा स्त्री] (सं.) इन्द्र की पत्नी शची।

चारुधिष्ण्य [संज्ञा पु.] (सं.) ग्यारहवें मन्वांतर के सप्त ऋषियों में से एक।

चारुनालक [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त कमल। लाल-कमल।

चारुनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) हरिण। मृग। [वि.] सुन्दर नेत्र वाला।

चारुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारणी। गंधपसार।

चारुपुट [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

चारुफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंगूर की बेल।

चारुबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

चारुरावा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शची। इन्द्रायणी।

चारुविंद [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र।

चारुश्रवा [वि.] (सं) सुन्दर कान वाला।

चारुहासिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] मनोहर मुस्कान वाली। सुन्दर हँसी हँसने वाली। [संज्ञा स्त्री.] वैताली छन्द का एक भेद।

चारुहासी [वि.] (सं.) [स्त्री. चारुहासिनी] सुन्दर हंसी हंसने वाला।

चारोली+ [संज्ञा पु.] (देश.) गुठली।

चार्वाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक अनीश्वरवादी और नास्तिक कार्तिक। २-इसका चलाया हुआ मत या दर्शन।

चार्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुद्धि। २-ज्योत्सना। चाँदनी। ३-आभा। दीप्ति। ४-सुन्दर स्त्री। ५-कुबेर पत्नी। ६-दारु हल्दी।

चाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गति। गमन। चलने की क्रिया। २-चलने का ढंग। ३-आचरण। चलन। ४-आकार-प्रकार। ढब। बनावट। ५-रीति। रस्म। प्रथा। परिपाटी। ६-चलने की सायत या महूर्त। ७-धोखा देने की युक्ति या तदबीर। ८-कृतकार्य होने का उपाय। ९-ढंग। प्रकार। विधि। १०-हलचल। आन्दोलन। ११-आहट। खटका। १२-वह बड़ा मकान जिसमें बहुत से किरायेदार रहते हों।

चालक [वि.] (सं.) चलाने वाला। संचालक। जैसे-वायुयान-चालक।

चालकुंड [संज्ञा पु.] (सं.) उड़ीसा प्रांत की एक झील।

चालचलन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आचरण। व्यवहार। २-ढंग।

चालढाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आचरण। व्यवहार। २-रंग-ढंग।

चालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलाने की क्रिया। परिचालन। २-गति। चलने की क्रिया। ३-चलनी। छलनी। (हिं.) भूसी। चोकर।

चालनहार※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चलाने वाला। लेजाने वाला। २-चलने वाला।

चालना※+ [क्रि. स.] (हिं.) १-परिचालित करना। चलाना। २-एक स्थान से दूसरे स्थान को लेजाना। ३-विदा करके ले आना (बहू)। ४-हिलाना। डोलाना। ५-कार्य निर्वाह करना। ६-बात उठाना। प्रसंग छेड़ना। ७-छानाना [क्रि. अ.] १-चलना। २-(नववधू का) विदा होकर आना।

चालनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चलनी। छलनी।

चालबाज [वि.] (हिं.) छली। धूर्त।

चालबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छल। धोखेबाजी। धूर्त्तता।

चाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कूच। प्रस्थान। २-नववधू का पहलेपहल से माय के या माय के से सुसराल जाना। ३-यात्रा का महूर्त्त।

चालाक [वि.] (फा.) १-व्यवहारकुशल। चतुर। दक्ष। २-धूर्त्त। चालबाज।

चालाकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चतुराई। व्यवहार-कुशलता। दक्षता। २-धूर्त्तता। चालबाजी। ३-युक्ति। कौशल।

चालान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चलान'।

चालानदार [संज्ञा पु.] (हिं.) चालान के साथ भेजा जाने वाला जमादार।

चालिया [वि.] (हिं.) चालबाज। धूर्त्त। छलिया

चाली [वि.] (हिं.) १-धूर्त्त। चालिया। २-चंचल। नटखट।

चालीस [वि.] (हिं.) तीस और दस। ४०।

चालीसवाँ [वि.] (हिं.) उनतालीस के पीछे आने वाला। [संज्ञा पु.] मृतककर्म में चालीसवें दिन का कृत्य। चहलुम (मुसलमान)।

चालीसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चालीस वस्तुओं का समूह। २-चालीस दिन का समय। ३-चालीस पद्यों का ग्रंथ। जैसे-हनुमान चालीसा।

चालू [वि.] (हिं.) जो चल रहा हो। प्रचलित। जिसका चलन रुका न हो। चलता हुआ। करेंट।

चाल्ह [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चेल्हवा नामक मछली

चाल्ही [संज्ञा स्त्री.] (?) नाव में केवट के बैठने का स्थान।

चावँचावँ [संज्ञा पु.] देखो 'चाँयँचाँयँ'।

चाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रबल इच्छा। अभिलाषा। अरमान। २-प्रेमी। अनुराग। चाह। ३-उत्कण्ठा। ४-लाड़-प्यार। दुलार। नखरा। ५-उत्साह। उमंग। आनन्द।

चावड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पथिकों के उतरने का स्थान। पड़ाव।

चावण [संज्ञा पु.] (देश.) गुजरात देश का एक प्रसिद्ध और प्राचीन राजपूत वंश।

चावना※ [क्रि. स.] (हिं.) चाहना।

चावर+ [संज्ञा पु.] देखो 'चावल'।

चावल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध अन्न। भूसी। उतरा हुआ धान। तण्डुल। २-भात। ३-चावल के बराबर के दाने। ४-एक रत्ती के समान तोल।

चाशनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मिश्री, चीनी या गुड़ का आग पर पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस जिसमें डुबाकर मिठाइयां बनती हैं। २-चसका। मज़ा। ३-सोने का वह नमूना जो मिलान के लिए सुनार सोना देने वाले गाहक से लेकर अपने पास रखता है।

चाष [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलकण्ठ पक्षी। २-चाहा पक्षी।

चास+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोत। बाह।

चासना+ [क्रि. अ.] (हिं.) जोतना।

चासनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चाशनी'।

चासा [संज्ञा पु.] (देश.) १-उड़ीसा की एक जाति जो खेती का काम करती है। २-हल जोतने वाला। ३-कृपक। किसान। खेतिहर।

चाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-इच्छा। अभिलाषा। २-प्रेम। प्रीति। अनुराग। ३-पूछ। आदर। ४-आवश्यकता। माँग। ५-खबर। समाचार ६-मर्म। रहस्य। गुप्त भेद। ७-देखो 'चाय'।

चाहक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रेम करने वाला। चाहने वाला।

चाहत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रेम। चाह।

चाहना [क्रि. स.] (हिं.) १-इच्छा करना। अभिलाषा करना। प्रेम करना। स्नेह करना। ३-माँगना। ४-प्रयत्न करना। ५-ताकना। निहारना। ढूढ़ना। खोजना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चाह। जरूरत।

चाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जलपक्षी जो बगले के सदृश्य होता है।

चाहि+ [अव्य.] (हिं.) अपेक्षा। तुलना।

चाहिए [अव्य.] (हिं.) १-उचित है। २-आवश्यक है।

चाही [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] चहेती। प्यारी। [वि.] (हिं.) कुएं से सींची जाने वाली (भूमि)।

चाहे [अव्य.] (हिं.) १-यदि इच्छा हो। २-यदि उचित हो। ३-अथवा। या।

चिंआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) इमली का बीज।

चिश्रासा–छोटी-सी।

चिउँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक काले रंग का कीड़ा जो मीठे के पास पहुँच जाता है।

चिउँटिया-रेंगान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अत्यधिक धीमी चाल। २-सिर के बालों की बड़ी बारीक कटाई।

चिउँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चींटी। पिपीलिका। *चिंऊटी की चाल*–बहुत सुस्त चाल।

चिंगट, चिङ्गट [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. चिंगटी] एक प्रकार की मछली। झिंगा।

चिंगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) झींगा मछली।

चिंगना [संज्ञा पु.] (देश.) १-मुरगी का छोटा बच्चा। २-छोटा बच्चा।

चिंगारी, चिङ्गारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिनगारी'।

चिंगुरना* [क्रि. अ.] (हिं.) एक स्थिति बहुत देर तक रहने के कारण किसी अंग का संकुचित होना या जकड़ना।

चिंगुरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बगुला। [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी अंग का ऐसा संकोच कि वह फैलाने से जल्दी न फैले।

चिंगुला* [संज्ञा पु.] (देश.) १-बच्चा। बालक २-किसी पक्षी का छोटा बच्चा।

चिंघाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चीख मारने का का शब्द। किसी जंतु की चिल्लाहट। २-हाथी की बोली।

चिंघाड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चीखना। चिल्लाना २-हाथी का चिल्लाना।

चिंचा, चिञ्चा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इमली। २-इमली का चिंआ।

चिंचाटक, चिञ्चाटक [संज्ञा पु.] (सं.) चेंच नामक साग।

चिंचाम्ल, चिञ्चाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) चूका नामक साग।

चिंचिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-इमली का पेड़। २-इमली का फल।

चिंचीं, चिञ्ची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुञ्जा। घुँघची।

चिंचोटक, चिञ्चोटक [संज्ञा पु.] (सं.) चेंच साग

चिंजा, चिञ्जा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चिंजी] लड़का। पुत्र।

चिंजी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की। कन्या।

चिंड, चिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य का एक ढङ्ग

चिंत, चिन्त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिंता। ध्यान। याद। सोचफिक्र।

चिंतक, चिन्तक [वि.] (सं.) १-चिन्तन करने वाला ध्यान करने वाला। २-सोचने वाला।

चिंतन, चिन्तना [संज्ञा पु.] (सं.) १-ध्यान। बारबार स्मरण। २-विचार। विवेचना।

चिंतना, चिन्तना* [क्रि. स.] (हिं.) स्मरण करना। चिन्तन करना। २-सोचना। विचारना। समझना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ध्यान। स्मरण। भावना। २-चिन्ता। सोच।

चिंतनीय, चिन्तनीय [वि.] (सं.) १-चिन्तन करने योग्य। ध्यान करने योग्य। भावनीय। २-चिंता करने योग्य। ३-सोचने या विचारने योग्य।

चिंतवन, चिन्तवन [संज्ञा पु.] देखो 'चिंतन'।

चिंता, चिन्ता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ध्यान। भावना। २-किसी विषय या कार्य की सिद्धि के सम्बन्ध में मन में बार-बार होने वाला विचार। सोच।

चिंताकुल, चिन्ताकुल [वि.] (सं.) चिन्ता से व्यग्र।

चिंतातुर, चिन्तातुर [वि.] (सं.) चिन्ता से घबराया हुआ।

चिंतामणि, चिन्तामणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला रत्न। २-ब्रह्मा। ३-परमेश्वर। ४-सरस्वतीदेवी का मन्त्र जो लड़के की जीभ पर इसलिए लिखा जाता है कि उसे खूब विद्या आवे।

चिंतावेश्म, चिन्तावेश्म [संज्ञा पु.] (हिं.) मंत्रणा-गृह। गोष्ठीगृह।

चिंति, चिन्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश। २-उस देश का निवासी।

चिंतीड़ी, चिन्तीड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

चिंतित, चिन्तित [वि.] (सं.) जिसे चिंता हो। चिंतायुक्त।

चिंत्य, चिन्त्य [वि.] (सं.) विचार करने योग्य। चिंतनीय।

चिंदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) टुकड़ा। *हिन्दी की चिन्दी निकालना*–व्यर्थ के सूक्ष्म तर्क निकालना।

चिंपा [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल को नाश करने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

चिंपाजी [संज्ञा पु.] (अं.) अफरीका का एक बनमानुस जिसका आकार बहुत कुछ मनुष्य से मिलता जुलता है।

चिउड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) हरे धान को कूटकर बनाया हुआ चिपटा चावल। चिवड़ा। चूरा।

चिउरा+ [संज्ञा पु.] १-देखो 'चिउड़ा'। २-'चिउली'।

चिउली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-महुए की जाति के एक जंगली वृक्ष। २-एक प्रकार रंगीन का रेशमी कपड़ा। ३-चिकनी सुपारी।

चिक [संज्ञा स्त्री.] (तु.) बांस की तीलियों का बना हुआ परदा। २-बूचर। बकर कसाई। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वायु के विकार से उत्पन्न कमर का दर्द। चमक। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) चेक। हुंडी।

चिकट [वि.] (हिं.) १-तैल और मैल से गंदा और चिपचिपा। २-लसीला। चिपचिपा। [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

चिकटना [क्रि. अ.] (हिं.) जमी हुई मैल के कारण चिपचपा होना।

चिकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का छोटा पेड़।

चिकन [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार बारीक सूती कपड़ा जिसपर फूल कढ़े होते हैं।

चिकनकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चिकन बनाने का काम।

चिकनगर, चिकनदोज [संज्ञा पु.] (फा.) चिक काढ़ने वाला।

चिकना [वि.] (हिं.) [स्त्री. चिकनी] १-जो खुरदरा न हो। साफ और बराबर का। २-जिस में तेल गला या मिला हो। ३-कृत्रिम व्यवहार करने वाला। खुशामदी। ४-प्रेमी।

चिकना घड़ा होना–१-किसी की बात का असर न होना। २-पेट में बात न पचना। बु स्वभाव का। *चिकना देख फिसल पड़ना*–१-बाहरी सौन्दर्य पर मोहित होना। २-थोड़े लाभ या धन पर अपने को गिरा देना। *चिकना-चुपड़ा होना*–बनठन कर रहना। *चिकनी-चुपड़ी बातें करना*–बनावटी स्नेह से भरी या खुशामद की बातें। *चिकना मुँह*–१-सुन्दर और संवारा हुआ चेहरा। २-मीठा बोलने वाला मुख। *चिकने घड़े पर पानी पड़ना*–अच्छी बात या उपदेश का प्रभाव न पड़ना। *चिकने मुंह का ठग*–ऐसा धूर्त जो ऊपर सीधा और भला मालूम दे पर नीचे से काट करने वाला।

[संज्ञा पु.] (हिं.) तेल, घी, चर्बी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिकना होने का भाव। चिकनापन। २-स्निग्धता। सरसता। ३-तेल घी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाना (क्रि.स.) (हिं.) १-चिकना करना। २-खुरदुरा न रहने देना २-स्निग्ध करना। ३-सँवारना। मैल आदि साफ करके निखारना। (क्रि. अ.) (हिं.) १-चिकना होना। २-स्निग्ध होना। हृष्टपुष्ट होना।

चिकनापन [संज्ञा पु.] (हिं.) चिकनाहट। चिकना होने का भाव।

चिकनावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चिकनाहट'।

चिकनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिक्कणता। चिकनापन। चिकना होने का भाव।

चिकनिया [वि.] (हिं.) छैला। शौकीन। बाँका। बनाठना।

चिकनी [वि.] (हिं.) [स्त्री .प्र.] देखो 'चिकना'।

चिकनी-मिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लसदार काली

मिट्टी। करैली। मिट्टी।

चिकनी-सुपारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकरना [क्रि. अ.] (हिं.) चिंघाड़ना। चीखना। चीत्कार करना।

चिकवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बकरकसाव। कसाई। मांस बेचने वाला।

चिकार [संज्ञा पु.] (हिं.) चीत्कार। चिल्लाहट। चिंघाड़।

चिकारना [क्रि अ.] (हिं.) चीत्कार करना। चिंघाड़ना।

चिकारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री.चिकारी] १-सारंगी की तरह का बाजा। २-हिरन की जाति का एक जंगली जानवर।

चिकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा चिकारा। २-एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

चिकित्सक [संज्ञा पु.] (सं.) रोग की चिकित्सा करने वाला। रोग का इलाज करने वाला। वैद्य।

चिकित्सक-प्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) अस्वस्थता, स्वस्थता आदि सिद्ध करने के निमित्त किसी चिकित्सक से प्राप्त किया हुआ प्रमाण-पत्र। मेडीकल सर्टिफिकेट।

चिकित्सा-वैचारिक-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान अथवा शास्त्र जिसमें चिकित्सा के सम्बन्ध में मूल-सिद्धान्तों या तत्वों का विवेचन हो। मेडिकल-ज्यूरिसप्रूडेंस।

चिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोग दूर करने और शरीर को निरोग करने की विधि। प्रक्रिया। इलाज। २-चिकित्सक का व्यवसाय या काम।

चिकित्सालय [संज्ञा पु.] (सं.) रोगियों की भली प्रकार चिकित्सा करने का स्थान। अस्पताल। शफाखाना।

चिकित्सावकाश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के निमित्त मिलने वाली छुट्टी। मेडिकल-लीव।

चिकित्सित [वि.] (सं.) जिसकी चिकित्सा की गई हो। चिकित्सा किया हुआ।

चिकित्सु [संज्ञा पु.] (सं.) चिकित्सक।

चिकित्स्य [वि.] (सं.) चिकित्सा के योग्य। साध्य।

चिकिल [संज्ञा पु.] (सं.) कीचड़। पंक।

चिकीर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करने की इच्छा।

चिकुटी※ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चुटकी' 'चिकोटी'।

चिकुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-केश। सिर के बाल। २-पर्वत। रेंगने वाले जन्तु। सरीसृत। ४-एक वृक्ष का नाम। ५-छछूँदर। ६-गिलहरी। चिखुरा।

चिकुला [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़िया का बच्चा।

चिकूर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिकुर'।

चिकोटी※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुटकी'।

चिक्क [वि.] (सं.) चिपटी नाक वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) छछूँदर।

चिक्कट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिकट'।
[वि.] (हिं.) मैलाकुचेला। गंदा।

चिक्कण [वि.] (सं.) चिकना।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-सुपारी वृक्ष या फल। २-हड़। हर्रे।

चिक्कणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुपारी।

चिक्कणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुपारी। २-हड़।

चिक्कन+ [वि.] (हिं.) देखो 'चिकना' 'चिक्कण'।

चिक्करना [क्रि. अ.] (हिं.) चीत्कार करना। चिंघाड़ना। चीखना।

चिक्कस [संज्ञा पु.] (सं.) १-जौ का आटा। २-हलदी, तेल मिला हुआ जौ का आटा जो उबटन की तरह मला जाता है।

चिक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुपारी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिकार'।
[संज्ञा पु.] (सं.) चूहा। मूसा।

चिक्कार [संज्ञा पु.] देखो 'चिकार'।

चिक्कारा [संज्ञा पु.] हिरन की जाति का एक जंगली जानवर।

चिक्किर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का चूहा। २-चिखुरा। गिलहरी।

चिखर+ [संज्ञा पु.] (देश.) चने का छिलका।

चिखुरन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह घास जो खेत को साफ करने के लिये निकाली जाती है।

चिखुरना [क्रि. स.] (देश.) जोते हुए खेत में से घास निकालकर बाहर करना।

चिखुरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चिखुरी] गिलहरी।

चिखुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिखुरने का काम या भाव। २-चिखुरने की मजदूरी।

चिखुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गिलहरी।

चिखौनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चखने या स्वाद लेने की क्रिया। २-स्वाद लेने की वस्तु। चटपटे स्वाद की थोड़ी वस्तु।

चिचड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक जंगली पौधा जो दवा के काम आता है। अपामार्ग। लटजीरा। २-पशुओं के चिपटकर खून पीने वाला कीड़ा।

चिचड़ी [संज्ञा स्त्री.] (?) देखो 'किलनी'।

चिचान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) **बाज पक्षी।**

चिचिंगा [संज्ञा पु.] देखो 'चचीड़ा'।

चिचिंड, चिचिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) चचींड़ा। चिचीड़ा।

चिचिड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चचींड़ा'

चिचियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) **चीखना**

चिंचियाहट + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिल्लाहट।

चिचुकना [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'चुचुकना'।

चिचेंडा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चचींड़ा'।

चिचोड़ना※ [क्रि. स.] (हिं) देखो 'चचोड़ना'।

चिचोड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चचोड़वाना'

चिजारा [संज्ञा पु.] (?) कारीगर। मेमार।

चिट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कागज का लम्बा और कम चौड़ा टुकड़ा। स्लिप। २-कपड़े की ऐसी ही धज्जी।

चिटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रूक्षता या गरमी के कारण ऊपरी तल का तिड़कना। २-जगह-जगह से फटना। ३-गंठीली लकड़ी का जलते समय 'चिट-चिट' शब्द करना। ४-चिढ़ना। ५-कली का फूटकर खिलना।

चिटका※ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिता।

चिटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी सूखे पदार्थ को तड़काना। २-खिजलाना। चिढ़ाना। ३-जलती गंठीली लकड़ी से चिट-चिट शब्द उत्पन्न करना।

चिटनवीस [संज्ञा पु.] (हिं.) लेखक। मुहर्रिर। लिपिक।

चिटनीस [संज्ञा पु.] देखो 'चिटनवीस'।

चिटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक चांडाल योगिनी।

चिटुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुटकी।

चिट्ट [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिट',

चिट्टा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चिट्टी] सफेद। धवल।
[संज्ञा पु.] (?) झूठा बढ़ावा।
चिट्टा लड़ाना–झूठा बढ़ावा देना।

चिट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आय-व्यय का हिसाब लेखा। २-सालभर की हानि-लाभ का पत्रक। फर्द। ३-सिलसिलेवार सूची या विवरण। ४-मजदूरी या वेतन में बांटा जाने वाला धन।
कच्चा चिट्ठा–विस्तृत और गुप्त विवरण। *चिट्ठा बाँधना*–लेखा तैयार करना। *चिट्ठा खोलना*–गुप्त रहस्य उद्घाटित करना।

चिट्ठी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह कागज जिसके ऊपर किसी जानकारी के निमित्त कोई बात या समाचार लिखा हो। खत। पत्र। २-पुरजा। रुक्का। ३-वह कागज जिसके द्वारा कोई काम करने या माल प्राप्त करने, लाने या लेजाने का अधिकार मिले।

चिट्ठी-पत्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खत। पत्र। २-पत्र-व्यवहार।

चिट्ठीरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) डाकिया। हरकारा। चिट्ठी बाँटने वाला।

चिड़चिड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'चिचड़ा'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा भूरे रंग का पक्षी।

[वि.] (हिं.) जरा सी बात से चिढ़जाने या अप्रसन्न होने वाला।

चिड़चिड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जरा-जरा सी बातों पर बिगड़ पड़ना। झुंझलाना। चिढ़ना २-तेल और पानी की मिलावट के जलने से चिड़-चिड़ शब्द होना। ३-सूखकर जगह-जगह से फटना।

चिड़चिड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिढ़ने की क्रिया या भाव।

चिड़वा [संज्ञा पु.] (हिं.) हरे, भिगोए, या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ में भूनकर और फिर कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना। चिउड़।

चिड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) गौरैया का नर। गौरा पक्षी।

चिड़ारा [संज्ञा पु.] (देश.) नीची जमीन का खेत जिसमें जड़हन बोया जाता है।

चिड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-परों से उड़ने वाला दो पैर का पक्षी। पखेरू। पंछी। २-चिड़िया के आकार का गढ़ा हुआ लकड़ी का टुकड़ा जो कहारों की लकड़ी, लंगड़ों की बैशाखी, और मकानों के खंबों पर लगा रहता है। ३-ताश में एक रंग। ४-तराजू की डंडी में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।
चिड़िया का दूध-अप्राप्य वस्तु। *चिड़िया के छिनाले में पकड़ा जाना*-व्यर्थ के झंझट में फँसना। *चिड़िया नोचना*-चारों ओर का तकाजा।

चिड़ियाखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां नाना प्रकार के पशु-पक्षी देखने के लिए रखे जाते हैं।

चिड़ियावाला [संज्ञा पु.] (हिं.) मूर्ख। गावदी (बाजारू)।

चिड़िहार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़ीमार। व्याध।

चिड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'चिड़िया'। २-ताश का एक रंग।

चिड़ीमार [संज्ञा पु.] (हिं.) व्याध। चिड़िया पकड़ने वाला। बहेलिया।

चिढ़ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) क्रोधसहित अप्रसन्नता। कुढ़न।
चिढ़ निकालना-चिढ़ाने या खिझाने की युक्ति या ढंग।

चिढ़कना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चिढ़ना'।

चिढ़काना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चिढ़ाना'।

चिढ़ना [क्रि. अ] (हिं.) कुपित और खिन्न होना। अप्रसन्न होना। झल्लाना। खीजना।

चिढ़वाना [क्रि. स] (हिं.) दूसरे से चिढ़ाने का काम कराना।

चिढ़ाना [क्रि. स] (हिं.) १ अप्रसन्न करना। खिझाना। कुढ़ाना। २-किसी को खिझाने के लिए मुह बनाना। ३-उपहास करना।

चित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चैतन्य। चेतना। २-चित्तवृत्ति।
[संज्ञा पु.] १-चुनने वाला। बीनने वाला। २-अग्नि।

चित [वि.] (सं.) १-चुनकर ढेर किया हुआ। २-ढका हुआ। आच्छादित।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-चित्त। मन। २-चितवन। दृष्टि।
[वि.] (हिं.) मुंह के बल पड़ा हुआ।
[क्रि. वि.] (हिं.) पीठ के बल।
चित करना-कुश्ती में पछाड़ना। *चारों खाने चित*-१-पीठ के बल हाथ पैर फैलाये हुए। २-हक्काबक्का। स्तंभित। *चित होना*-बेहोश होना।

चितउन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चितवन'।

चितउर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चित्तौर'।

चितकबरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चितकबरी] भिन्न-भिन्न रंग के धब्बों वाला। रंगबिरंगा। चितला।

चितकूट* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चित्रकूट'।

चितगुपित* [संज्ञा पु.] (हिं.) चित्रगुप्त।

चितचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) चित्त को चुराने वाला। मनोहर। मनभावना। प्रिय।

चितपट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का खेल या बाजी जिसके द्वारा किसी फैंकी हुई वस्तु के चित्त पड़ने पर हार या जीत का निश्चय होता है। २-कुश्ती। मल्लयुद्ध।

चितबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार के ३२ हाथों में से एक।

चितभंग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ध्यान न लगना। उचाट। उदासी। २-मतिभ्रम। भौचक्कापन।

चितरना* [क्रि. स.] (हिं.) चित्रित करना। चित्र बनाना।

चितरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक लाल रंग की चिड़िया।

चितरोख [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया का नाम। चितरवा।

चितला [वि.] (हिं.) चितकबरा। रंगबिरंगा। कबरा। [संज्ञा पु.] (देश.) १-लखनऊ में होने वाला एक प्रकार का चित्तीदार खरबूजा। २-एक प्रकार की बड़ी मछली।

चितवना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताकने या देखने का ढंग। कटाक्ष। नजर। निगाह। दृष्टि।

चितवना+* [क्रि. स.] (हिं.) ताकना। देखना। अवलोकन करना।

चितवनि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चितवन'।

चितवाना+* [क्रि. स.] (हिं.) तकाना। दिखाना

चिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चुनी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदा जलाया जाता है। २-श्मशान। मरघट।
चिता चुनना-चिता के लिए लकड़ियां चुनना। *चिता में बैठना*-मृत पति के साथ सती होना।

चिताना [क्रि. स.] (हिं.) १-सचेत करना। सावधान करना। २-स्मरण कराना। याद दिलाना। ३-आत्मबोध कराना। ४-आग सुलगाना।

चिताभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमशान।

चितारी+ [संज्ञा पु.] देखो 'चितेरा'।

चितावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिताने या सावधान करने की क्रिया।

चितासाधन [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक अनुष्ठान जो शमशान में बैठकर किया जाता है।

चिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिता। २-समूह। ढेर। ३-चुनाई। ४-दुर्गा। ५-चैतन्य। ६-ईंटों की जोड़ाई।

चितिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-करधनी। [illegible] २-देखो 'चिति'।

चितिया-गुड़ [संज्ञा पु.] (हि.) खजूर की [illegible] से बना हुआ गुड़।

चितिव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) गणित के द्वारा घर में लगी हुई ईंटों की संख्या निकालने की विधि।

चितु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चित्त'।

चितेरा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. चितेरिन] चित्रकार। चित्र बनाने वाला।

चितेरिन, चितेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चित्र बनाने वाला स्त्री। २-चित्रकार की स्त्री।

चितेला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चितेरा'।

चितौन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चितवन'।

चितौना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चितवना'।

चितौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चितावनी'।

चित्कार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चीत्कार'।

चित्त [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःकरण की एक वृत्ति। मन। दिल।
चित्त उचटना-विरक्त होना। *चित्त चलना*-इच्छा होना। *चित्त चिहुटना*-दिल में कांटा सा चुभना। *चित्त चुराना*-मोहित करना। *चित्त धरना*-१-चित्त देना-मन लगाना। २-मन लगाना। ३-मन में याद रखना। *चित्त पर चढ़ना*-१-मन में बसना। लाना। २-याद आना। *चित्त बटना*-विचारशक्ति दो ओर हो जाना। *चित्त बंटाना*-किसी का ध्यान इधर-उधर कर देना। मन एकाग्र न होने देना। *चित्त में होना या चित्त होना*-इच्छा होना। जी चाहना। *चित्त लगना*-१-प्रेम होना। २-मन लगना। ३-बहुत देर तक स्थिर मन रहना। *चित्त से उतरना*-१-भूल जाना। २-निगाहों से गिर जाना। *चित्त से न टरना*-हृदय में याद बनी रहना।

चित्ताकर्ष

चित्ताकर्ष [वि.] (सं.) मनोहर। सुन्दर।

चित्तज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

चित्त-प्रसादकाल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मध्यावस्था'।

चित्त-प्रसादन [संज्ञा पु.] (सं.) योग में चित्त की अवस्थाएँ।

चित्तवान [वि.] (सं.) [स्त्री. चित्तवती] उदार चित्त वाला।

चित्तविक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) चित्त की चंचलता। चित्त की अस्थिरता।

चित्तविद [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्त की बात जानने वाला। २-चित्त के भेदों या रहस्यों को जानने वाला।

चित्तविप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) उन्माद।

चित्तविभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-भ्रम। भ्रांति। २-उन्माद।

चित्तवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्त की अवस्था या गति।

चित्तल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मृग। चीतल।

चित्तहारक [वि.] (सं.) मनोहर। सुन्दर।

चित्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा धब्बा। २-कुम्हार के चाक का वह गड्ढा जिसमें डालकर चाक घुमाया जाता है। ३-मादा लाल। मुनिया। ४-एक चित्तिदार साँप।

चित्तौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी था।

चित्य [वि.] (सं.) १-चिता-संबंधी। २-चुनने योग्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-चिता। २-अग्नि।

चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक पर चंदन आदि का चिन्ह। २-रेखाओं अथवा रंगों द्वारा बनी हुई किसी वस्तु की आकृति। तसवीर। ३-प्रतिकृति। फोटो। ४-सजीव और विस्तृत विवरण। ५-काव्य का एक भेद जिसमें व्यंग की प्रधानता नहीं रहती। अलंकार। ६-काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, कमल आदि बन जाते हैं। ७-आकाश। ८-एक प्रकार का कोढ़। ९-चित्रगुप्त। १०-अशोक का वृक्ष। [वि.] १-अद्भुत। विचित्र। आश्चर्यजनक। २-चितकबरा। ३-रंगबिरंगा। ४-अनेक प्रकार का।

चित्रकंठ, चित्रकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) कबूतर। कपोत।

चित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिलक। २-चित्रकार। ३-चीता। बाघ। ४-चीता नामक औषध। ५-चिरायता। ६-शूर। बलवान्।

चित्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रकार। २-तिनिश का वृक्ष।

चित्रकर्मी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चित्रकार। २-अद्भुत कार्य करने वाला।

चित्रकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकाय [संज्ञा पु.] (सं.) चीता।

चित्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) चित्र बनाने वाला। चितेरा।

चित्रकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चित्रविद्या। चित्र बनाने की कला। २-चित्रकार का काम या व्यवसाय। ३-बनाये हुए चित्र।

चित्रकाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का काव्य जिसके अक्षरों को क्रम विशेष से लिखने से कोई चित्र बन जाता है।

चित्रकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत जिस पर सीता और राम ने बनवास के समय बहुत समय तक निवास किया था। २-चितौर।

चित्रकृत [संज्ञा पु.] (सं.) तिनिश नामक पेड़।

चित्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम। २-सूरसेन देश का एक राजा।

चित्रकोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुटकी। २-काली कपास।

चित्रगंध, चित्रगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

चित्रगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह यमों में से एक जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रघंटा, चित्रघण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ दुर्गाओं में से एक का नाम।

चित्रचाप [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्र-जल्प [संज्ञा पु.] (सं.) वह अभिप्राय-गर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर एक दूसरे के प्रति कहते हैं।

चित्रजात [संज्ञा पु.] देखो 'चित्रयोग'।

चित्रण [संज्ञा पु.] (सं.) चित्र बनाना।

चित्रतंडुल, चित्रतण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) बायविडङ्ग।

चित्रताल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक प्रकार का चौताल।

चित्रतैल [संज्ञा पु.] (सं.) रेंड़ी का तेल।

चित्रत्वक, चित्रत्वच् [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

चित्रदंडक, चित्रदण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) सूरन।

चित्रदेव [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय का अनुचर।

चित्रदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महेंद्रवारुणी लता। २-शक्ति या देवी का एक भेद।

चित्रधर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतकालीन एक दैत्य।

चित्रधाम [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञादि में भूमि पर चित्रित किया हुआ एक चौखूंटा चक्र।

चित्रना+ [क्रि. स] (हिं.) १-चित्रित करना। २-रंग भरना। ३-बेलबूटे बनाना।

चित्रनेत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारिका। मैना।

चित्रपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) तीतरपक्षी।

चित्रपट [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. चित्रपटी] वह कपड़ा, कागज आदि जिसपर चित्र-चित्रित किये जाते हैं। चित्राधार।

चित्रपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की पुतली के पीछे का वह भाग जिसपर पदार्थों का प्रतिविम्ब पड़ता है।

चित्रपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपित्थपर्णी वृक्ष। द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्रपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपिप्पली।

चित्रपथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रभासतीर्थ के पास की एक मौसमी नदी।

चित्रपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो भगण और दो गुरु होते हैं। २-मैना। सारिका। चिड़िया। ३-छुईमुई। लजाधुर।

चित्रपर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मजीठ। २-कर्णस्फोटलता। ३-जलपिप्पली। ४-द्रोणपुष्पी। गूमा।

चित्रपादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारिका। मैना।

चित्रपिच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

चित्रपुंख [संज्ञा पु.] (सं.) बाण। तीर।

चित्रपुट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का छः ताल ताल।

चित्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास।

चित्रपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमड़ा।

चित्रपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) गौरापक्षी।

चित्रफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चितला नामक मछली। २-तरबूज।

चित्रफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ककड़ी। २-बैंगन भटकटैया। ४-लिंगनीलता। ५-फलूई मछली।

चित्रबर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

चित्रभानु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य। ३-चित्रक नामक वृक्ष। आक। मदार ५-भैरव। ६-अश्विनीकुमार। ७-एक युग का नाम।

चित्रभेषजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठगूलर।

चित्रमद [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी या पति का चित्र देखकर विरह भाव दिखलाना।

चित्रमृग [संज्ञा पु.] (सं.) चितकबरा हिरन। चीतल।

चित्रमेखल [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

चित्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) चौंसठ कलाओं में स एक जिसमें वृद्ध को युवा अथवा युवा को

वृद्ध या नपुंसक बनाने की कला।

चित्रयोधी [वि.] (सं.) भारी योद्धा। [संज्ञा पु.] (सं.) १–अर्जुन। २–अर्जुन नामक वृत्त।

चित्ररथ [संज्ञा पु] (सं.) १–सूर्य। २–एक गंधर्व का नाम। ३–श्रीकृष्ण के एक पैर का नाम। [वि.] (सं) विचित्र रथ वाला।

चित्ररश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) मरुतों में से एक।

चित्ररेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उषा की एक सहेली। देखो 'चित्रलेखा'।

चित्रल [वि.] (सं.) चितकबरा। रंगबिरंगा। चितला।

चित्रलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मंजीठ।

चित्रला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखइमली।

चित्रलिखन [संज्ञा पु.] (सं.) १–सुन्दर लिखावट। २–चित्र बनाने का कार्य।

चित्रलेखनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्र या तसवीर बनाने की कलम। कूंची।

चित्रलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बाणासुर की कन्या उषा की एक सखी। २–एक अप्सरा का नाम। ३–चित्र बनाने की कलम या कूंची। ४–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में (म + न + य + य + य) होते हैं।

चित्रलोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारिका। मैना।

चित्रवदल [संज्ञा पु.] (सं.) पहिना मछली।

चित्रवन [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराण-प्रसिद्ध वन।

चित्रवर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २–कलूत देश के एक राजा का नाम।

चित्रवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–विचित्रलता। २–महेंद्रवारुणी।

चित्रविचित्र [वि.] (सं.) १–रंगबिरंगा। २–बेलबूटेदार।

चित्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'चित्रकला'।

चित्रवीर्य [वि.] (सं.) विचित्र बली। [संज्ञा पु.] लाल रेंड या एरंड।

चित्रवेगिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

चित्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह घर जिस की दीवारों पर चित्र लगे या बने हों। २–चित्रों से सजा हुआ घर।

चित्रशिखंडिज [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

चित्रशिखंडी [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तऋषि।

चित्रशिर [संज्ञा पु.] (सं.) १–गंधर्व का नाम। २–गंदगी का जहर।

चित्रसंग, चित्रसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसमें १६ अक्षर होते हैं।

चित्रसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) चीतल साँप।

चित्रसारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चित्रशाला। २–रंगमहल। सजा हुआ सोने का कमरा। विलासभवन।

चित्रसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक गंधर्व का नाम। २–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

चित्रस्थ [वि.] (सं.) चित्र में अंकित। २–चित्र के समान निश्चल।

चित्रहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) हथियार चलाने का एक हाथ।

चित्रांग, चित्राङ्ग [वि.] (सं.) [स्त्री. चित्रांगी] जिसका अंग विचित्र हो। [संज्ञा पु.] १–चीता। २–एक प्रकार का सर्प। चीतल। ३–ईंगुर। ४–हरताल।

चित्रांगद, चित्राङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधर्व का नाम।

चित्रांगदा, चित्राङ्गदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चित्रवाहन की पुत्री जो अर्जुन को ब्याही थी। २–रावण की एक स्त्री का नाम।

चित्रांगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मजीठ। २–कनखजूरा।

चित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। २–ककड़ी या खीरा। ३–एक अप्सरा। ४–सुभद्रा। ५–एक रागिनी जो भैरव राग की पाँच स्त्रियों में मानी जाती है। ६–संगीत में एक मूर्छना का नाम। ७–एक वर्णवृत्त जिसमें तीन नगण और दो यगण होते हैं। ८–सोलह मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में एक गुरु होता है। ९–प्राचीन काल का एक बाजा। १०–चितकबरी गाय।

चित्राक्ष [वि.] (सं.) [स्त्री. चित्राक्षी] विचित्र या सुन्दर नेत्र वाला।

चित्राक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारिका। मैना।

चित्राटीर [संज्ञा पु.] (सं.) १–चन्द्रमा। २–घंटाकर्ण नामक शिव का अनुचर।

चित्रादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभासक्षेत्र में स्थापित सूर्य की मूर्त्ति।

चित्रान्न [संज्ञा पु.] (सं.) बकरी के दूध में पकाया और बकरी के कान के रक्त में रंगा हुआ जौ और चावल।

चित्रायस [संज्ञा पु.] (सं.) इस्पात। लोहा।

चित्रायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १–विलक्षण अस्त्र। २–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [वि.] विलक्षण अस्त्र युक्त।

चित्राल [संज्ञा पु.] (हिं.) काश्मीर के पश्चिम में एक पहाड़ी प्रदेश।

चित्रावसु [संज्ञा स्त्री] (सं.) नक्षत्रों से मंडित राशि।

चित्राश्व [संज्ञा पु.] (सं.) सत्यवान् का नाम।

चित्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) चैत का महीना।

चित्रिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

चित्रित [वि.] (सं.) १–चित्र में खींचा हुआ। २–बेल बूटों, चित्तियों या धारियों से युक्त। ३–वर्णित। ४–अंकित।

चित्रेश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

चित्रोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–आकाशवाणी। २–अलंकृत भाषा में कथन।

चित्रोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर हो या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर हो।

चित्रोत्पला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उड़ीसा की एक नदी।

चित्य [वि.] (सं.) १–पूज्य। २–चुनने या इकट्ठा करने योग्य।

चिथड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) फटा पुराना कपड़ा।
चिथड़ा लपेटना–फटे पुराने कपड़े पहनना।

चिथड़ाना [क्रि.स.] (हि.) १–चीरना। फाड़ना। २–धज्जियाँ उड़ाना। अपमानित करना। लज्जित करना।

चिदाकाश [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश के समान निर्लिप्त तथा सबका आधारभूत ब्रह्म। परब्रह्म।

चिदात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) चैतन्यस्वरूप परब्रह्म। ब्रह्म।

चिदानंद, चिदानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म।

चिदाभास [संज्ञा पु.] (सं.) चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिम्ब जो मनुष्य के अंतःकरण पर पड़ता है। जीवात्मा।

चिद्रूप [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञानमय परमात्मा।

चिद्विलास [संज्ञा पु.] (सं.) चैतन्यस्वरूप ईश्वर की माया।

चिन [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक सदाबहार वृक्ष। २–एक प्रकार की घास।

चिनक [संज्ञा पु.] (हिं.) जलन लिये हुये पीड़ा।

चिनग+ [संज्ञा पु.] देखो 'चिनक'।

चिनगारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आग का छोटा कण या टुकड़ा।
आँखों से चिनगारी छुटना-क्रोध से आंखें लाल-लाल होना।

चिनगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अग्निकण। देखो 'चिनगारी'। २– चुस्त और चालाक लड़का। ३–नटकला खेलने वाला लड़का।

चिनत्ती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चेना की रोटी।

चिनाना+* [क्रि. स.] (हिं.) १–चुनवाना। बिनवाना। २–ईंट आदि की जुड़ाई करना।

चिनाब [संज्ञा पु.] (हि.) पंजाब की एक नदी। चन्द्रभागा।

चिनिया [वि.] (हिं.) १–चीनी के रङ्ग का सफेद। २–चीन देश का। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का रेशा या नकली

चिपड़ी, चिपरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े।

चिपिट [वि.] (सं.) चिपटा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चिउड़ा। २–चिपटी नाक वाला मनुष्य।

चिपिट-नासिक [वि.] (सं.) चिपटी नाक वाला

चिपीटक [संज्ञा पु.] (सं.) चिउड़ा। चिड़वा।

चिपुआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) चेल्हवा मछली।

चिप्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाखून रोग

चिप्पड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) छिला या उखड़ा हुआ चिपटा टुकड़ा। चप्पड़।

चिप्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की चिड़िया।

चिप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा चिप्पड़। २–उपली। गोहँटी। ३–वह बटखरा जिससे सीधा तोला जाता है। ४–सीधा।

चिबिल्ला+ [वि.] (हिं.) देखो 'चिलबिला'।

चिबुक [संज्ञा पु.] (सं.) ठुड्डी। ठोड़ी।

चिमगादड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चमकादड़'

चिमटना [क्रि. अ.] (हिं.) १–चिपकना। सटना। २–लिपटना। ३–पीछा या पिंड न छोड़ना।

चिमटवाना [क्रि स.] (हिं.) दूसरे से चिमटाने का काम करना।

चिमटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक धातु की दो पट्टियों का बना औजार जिससे जलते अंगारे आदि उठाये जाते हैं।

चिमटाना [क्रि. स.] (हिं.) १–चिपटाना। चिपकाना। सटाना। २–लिपटाना।

चिमटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा चिमटा।

चिमड़ा [वि.] (हिं.) देखो 'चीमड़'।

चिमनी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १–बीच में से उभड़ी हुई शीशे की नली जिसमें से लैम्प का धुंआ निकलता है। २–किसी मकान के ऊपर का वह छेद जिससे धुंआ बाहर निकलता है।

चिमोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चमोटा'।

चिमोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चिमटी'।

चिरंजीव [वि.] (सं.) चिरजीवी।

चिरंजीवी [वि.] (हिं.) देखो 'चिरजीवी'।

चिरंटी, चिरण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पिता के घर रहने वाली अधिक वर्ष की कन्या। २–युवती।

चिरंतन, चिरन्तन [वि.] (सं.) पुरातन। पुराना।

चिरंभ, चिरम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) चील।

चिरंभण, चिरम्भण [संज्ञा पु.] (सं.) चील।

चिर [वि.] (सं.) बहुत दिनों का। दीर्घ कलावर्ती।
[क्रि. वि.] (सं.) बहुत दिन। अधिक समय तक।
[संज्ञा पु.] (सं.) तीन मात्राओं का गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो।

चिरई* [संज्ञा स्त्री.] चिड़िया। पक्षी।

चिरकटाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बराबर कोई न कोई रोग बने रहने की अवस्था। २–नित्य का रगड़ा, झगड़ा।

चिरकना [क्रि. अ.] (हिं.) थोड़ा-थोड़ा मल निकालना।

चिरकारी [वि.] (हिं.) [स्त्री. चिरकारिणी] काम में देर लगाने वाला।

चिरकाल [संज्ञा पु.] (सं.) दीर्घकाल। बहुत समय

चिरकालभुक्ताधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत समय का व्यवहार, सिद्ध अधिकार या स्वत्व *टाइटल बाई-प्रसक्रिप्शन।*

चिर-कालिक [वि.] (सं.) बहुत दिनों का। पुराना।

चिर-कालीन [वि.] (सं.) बहुत दिनों का। पुराना।

चिरकीन [वि.] (फा.) मैला। गंदा।

चिरकुट [संज्ञा पु.] (हिं.) फटा पुराना कपड़ा। चिथड़ा।

चिरक्रिय [वि.] (सं.) काम में देर लगाने वाला। दीर्घसूत्री।

चिरक्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीर्घसूत्रता।

चिरचिटा [संज्ञा पु.] (देश.) १–चिचड़ा। अपामार्ग। २–एक प्रकार की घास।

चिरचिरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'चिड़चिड़ा'।
[संज्ञा पु.] देखो 'चिचड़ा'।

चिरजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) जीवक नामक वृक्ष।

चिरजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) सदा बना रहने वाला जीवन। अमरजीवन।
[वि.] देखो 'चिरजीवी'।

चिरजीवी [वि.] (सं.) १–बहुत दिनों तक जीने वाला। दीर्घायु। २–अमर।

चिरतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

चिरत्न [वि.] (सं.) पुराना। पुरातत्व।

चिरना [क्रि. अ.] (हिं.) १–फटना। सीध में कटना। २–लकीर के रूप में घाव होना।
[संज्ञा पु.] चीरने का औजार।

चिर-निद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मौत। मृत्यु।

चिरपाकी [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ। कपित्थ।

चिरपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) बकुल। मौलसिरी।

चिरबत्ती [वि.] (हिं.) टुकड़ा-टुकड़ा। पुरजा-पुरजा।

चिरबिल्व [संज्ञा पु.] (सं.) करंजवृक्ष। कंजा।

चिरमिटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गुंजा। घुंघुची।

चिरवल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

चिरवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चिरवाने का भाव या कार्य। २–चिरवाने की उजरत।

३-प्रथम वर्षा के वाद की पहली जोताई।

चिरवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-चीरने का काम कराना। फड़वाना।

चिरवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रेंड का पेड़।

चिर-स्थायी [वि.] (सं.) बहुत समय तक रहने वाला।

चिरस्मरणीय [वि.] (सं.) १-बहुत दिनों तक याद रखने योग्य। २-पूजनीय। प्रशंसनीय।

चिरहँटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़ीमार। बहेलिया व्याध।

चिरांदा [वि.] (हिं.) चिड़चिड़ा।

चिराइता [संज्ञा पु.] देखो 'चिरायता'।

चिराइन+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिरायँध'।

चिराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चीरने की क्रिया या भाव। २-चीरने की मजदूरी।

चिराक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिराग'।

चिराग [संज्ञा पु.] (फ़ा.) दीपक। दीया।

चिराग का हंसना-दीपक की वत्ती जलकर झड़ना। *चिराग गुल पगड़ी गायव*-अवसर पाकर धन चुरा ले जाना। *चिराग गुल होना*-१-दीपक वुझना। २-उदासी छाना। ३-वंश खतम होना। *चिराग ठंडा करना*-किसी का वल समाप्त कर देना। २-दीपक वुझाना। *चिराग तले अंधेरा होना*-१-ऐसे स्थान पर अन्याय होना जहाँ पर उसके निवारण का पूरा प्रवन्ध हो। २-किसी ऐसे मनुष्य द्वारा वुराई होना जिससे उसकी सम्भावना न हो। *चिराग लेकर ढूंढना*-बड़ी छानवीन के साथ ढूंढना। *चिराग से चिराग जलना*-१-एक से दूसरे का काम निकलना। २-परस्पर लाभ पहुंचाना।

चिरागदान [संज्ञा पु.] (अ.) दीवट। शमादान।

चिरागी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चिराग जलाने का खर्च। २-किसी मज़ार पर चढ़ाई जाने वाली भेंट। ३-जुआरियों के अड्डे पर दीपक जलाने वाला।

चिराटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिरायता। २-सफेद पुनर्नवा।

चिराद् [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

चिरार [संज्ञा पु.] (हिं.) वत्तक जाति की एक चिड़िया।

चिराना [क्रि. स.] (हिं.) चीरने का काम कराना। [वि.] १-पुराना। पुरातन। २-जीर्ण।

चिरायँध [संज्ञा पु.] (हिं.) चर्वी, चमड़े, वाल, मांस आदि जीवों के अङ्गों के जलने से आने वाली दुर्गन्ध।

चिरायंध फैलाना-वदनामी फैलाना।

चिरायता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौधा जो दवा के काम में आता है। यह वहुत कड़वा होता है।

चिरायु [वि.] (सं.) वड़ी आयु वाला।

चिरारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिरौंजी।

चिराव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चीरने की क्रिया या भाव। २-चीरने से होने वाला घाव।

चिरिंटिका, चिरिंटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'चिरंटी'।

चिरिया+* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिड़िया'।

चिरी* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिड़िया'।

चिरु [संज्ञा पु.] (सं.) कंधे और वांह का जोड़। मोढ़ा।

चिरेंता+ [संज्ञा पु.] देखो 'चिरायता'।

चिरया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चिड़िया'।

चिरौंजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पयाल नामक वृक्ष के वीजों की गिरी।

चिर्भटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

चिर्री+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विजली। वज्र।

चिलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आभा। कांति। द्युति। चमक। २-टीस। चमक। ३-सहसा उठकर वन्द हो जाने वाला दर्द।

चिलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-झलकना। चमचमाना। २-चिलक (दर्द) होना।

चिलका [संज्ञा पु.] (हिं.) चमकता हुआ चांदी का सिक्का।

चिलका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमक। चमचमाहट।

चिलकाना [क्रि. स.] (हिं.) चमकना।

चिलगोजा [संज्ञा पु.] (फ़ा) एक मेवा जो चीड़ या सनोवर का फल होता है।

चिलचिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अवरक। भोंडल।

चिलड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पकवान। उलटा।

चिलता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कवच।

चिलचिल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक-प्रकार का जंगली वृक्ष।

चिलविला, चिलविल्ला [वि.] (हिं) [स्त्री. चिलविल्ली] चंचल। चपल।

चिलम [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) कटोरी के आकार का एक मिट्टी का पात्र।

चिलम पीना-हुक्का पीना। *चिलम चढ़ाना*-चिलम को पीने योग्य वनाना। *चिलम भरना*-१-दासता स्वीकार करना। २-हीन या तुच्छ कार्य करना।

चिलमगर्दा [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) देखो 'नैचावंद'।

चिलमचट [वि.](हिं.) १-अधिक तम्वाखू पीने वाला। २-इस जोर का सुट्टा लगाने वाला कि चिलम दूसरे के पीने योग्य न रहे।

चिलमची [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) देग के आकार का एक वरतन जिसमें हाथ धोये जाते हैं।

चिलमची वरदार-हाथ मुंह धुलाने वा नौकर।

चिलमन [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चिक। वांस की तीलियों का परदा।

चिलमपोश [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चिलम का ढक्

चिलम-वरदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) हुक्का भर पिलाने वाला खिदमतगार नौकर।

चिलमीलिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जुगनू। २-विजली।

चिलवांस [संज्ञा पु.] (?) चिड़ियों को फंसाने का फंदा।

चिलसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काश्मीर में होने वाला एक प्रकार का तम्वाखू।

चिलहुल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

चिलिम* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिलम'।

चिलिमिलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गले का आभूषण या माला। २-जुगनू। ३-विजली।

चिलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) चिलहुल मछली।

चिलुआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चेल्हवा'।

चिल्लड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) जूँ के आकार का एक कड़ा जो सफेद होता है।

चिल्लपों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शोरगुल। चिल्लाहट।

चिल्लभक्ष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नल नामक गंध द्रव्य।

चिल्लवाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमुवा रोग से वच्चों का चिल्लाना।

चिल्लवाना [क्रि. स.] (हिं.) चिल्लाने में प्रवृत्त करना।

चिल्ला [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-चालीस दिन का समय। २-चालीस दिन का व्रत (मुसल.)।

चिल्ले का जाड़ा-कड़ी सरदी जो प्रायः चालीस दिन तक रहती है।

[संज्ञा पु.] (देश.) १-जंगली वृक्ष। २-मूंग, चने आदि की घी में सिकी रोटी। चीला। उलटा। ३-धनुष की डोरी। (?) पगड़ी का छोर जिसमें कलावत्तू का काम रहता है।

चिल्लाना [क्रि. अ.] (हिं.) जोर से बोलना। शोर करना। हल्ला करना।

चिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिल्ली नामक एक कीड़ा। (हिं.) वज्र। विजली।

चिल्हवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़कों का एक खेल।

चिल्ही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चील।

चिवि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिवुक। ठोढ़ी।

चिविट [संज्ञा पु.] (सं.) चिउड़ा। चिड़वा।

चिवुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठोढ़ी। २-मुचकुं का पेड़।

चिहुँकना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) चौंकना।

चिहुँटना* [क्रि. स.] (हिं.) १-चुटकी काटना। २-चिपटना।
चित्त चिहुँटना-मर्मस्पर्श करना। चित्त में चुभना।

चिहुँटनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गुंजा। घुँघची। चिरमिटी।

चिहुँटी+ [संज्ञा स्त्री.] (?) १-चिकोटी। २-चींटी।

चिहुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) सिर के बाल। केश।

चिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लक्षण जिसके द्वारा कोई वस्तु पहचानी जा सके या किसी बात का कुछ प्रमाण मिले। निशान। मार्क। २-किसी वस्तु अथवा बात का पता देने वाला तत्व। ३-किसी वस्तु की पहचान के निमित्त उस पर लगाया हुआ अंक या निशान। ४-किसी वस्तु के सम्पर्क, संघर्ष अथवा दाब में पड़ा हुआ निशान। छाप। [illegible]। ५-झंडा। पताका।

चिह्नधारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्यामा नामक लता।

चिह्नित [वि.] (सं.) १-चिह्न किया हुआ। २-जिस पर चिह्न हो।

चीं, चीं-चीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पक्षियों के बच्चों का धीमा स्वर। २-बच्चों या पक्षियों का महीन और मधुर शब्द।
चीं बोलना-अयोग्यता, अकर्मण्यता या अधीनता स्वीकार करना।

चीं-चपड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी बड़े या सबल के विरोध में कुछ कहना या करना।

चींटवा* [संज्ञा पु.] देखो 'चींटा' या 'च्यूंटा'।

चींटा [संज्ञा पु.] (हिं.) च्यूंटा। चिउँटा।

चींटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिउँटी। च्यूंटी।

चींतना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चित्रना'।

चींतागोला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छींटागोला'।

चींथना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चीथना'।

चीक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कष्ट, पीड़ा आदि के कारण जोर से चिल्लाने का शब्द। चिल्लाहट।
[संज्ञा पु.] (हिं.) कसाई। बूचर।
[संज्ञा पु.] देखो 'कीच' 'कीचड़'।

चीकट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तैल की मैल। २-मटियार। लसदार मिट्टी।
[संज्ञा पु.] (देश.) वह कपड़े, आभूषण आदि जो कोई मनुष्य अपने भांजे या भानजी के विवाह में अपनी बहन को देता है।
[वि.] (हिं.) गंदा। बहुत मैला।

चीकड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कीचड़'।

चीकन* [वि] (हिं.) देखो 'चिकना'।

चीकना [क्रि. अ.] (हिं.) जोर से चिल्लाकर बोलना। चिल्लाना।
[वि.] (हिं.) चिकना।

चीकर [संज्ञा पु.] (देश.) कुए के पास का वह पानी का हौज जिसमें पानी भर जाता है।

चीख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चीक। चिल्लाहट।

चीखना [क्रि. स.] (हिं.) स्वाद लेने के लिए किसी पदार्थ को थोड़ा सा खाना या पीना।

चीख़ना [क्रि. अ.] (हिं.) जोर से चिल्लाना।

चीखर, चीखल [संज्ञा पु.] (हिं.) कीच। कीचड़।

चीखुर [संज्ञा पु.] (हिं.) गिलहरी।

चीज़ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २-अलङ्कार। गहना। ३-गीत। ४-विलक्षण बात। महत्वपूर्ण वस्तु या बात।

चीठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैल।

चीठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिट्ठा'।

चीठी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चिट्ठी'।

चीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृक्ष का नाम।

चीढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बहुत ऊंचा और लम्बा वृक्ष जिसके गोंद से गंधाविरोजा निकलता है। चीड़ा।

चीत* [संज्ञा पु.] (हिं.) मन। चित्त। दिल।

चीतकार+* [संज्ञा पु.] १-देखो 'चीत्कार'। २-देखो 'चित्रकार'।

चीतना [क्रि. स.] (हिं.) १-सोचना। विचारना। २-होश में आना। ३-स्मरण करना।
[क्रि. स.] चित्रित करना।

चीतर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चीतल'।

चीतल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का हिरन। २-अजगर की जाति का एक सांप। ३-एक प्रकार का सिक्का।

चीता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध हिंसक जंगल में रहने वाला पशु। २-औषध के प्रयोग में आने वाला एक वृक्ष।
[संज्ञा पु.] १-होश। संज्ञा। २-चित्त। हृदय। दिल।
[वि.] सोचा हुआ। विचारा हुआ।

चीतावती* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) यादगार। स्मारक चिह्न।

चीत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) चिल्लाहट। हल्ला। शोर। गुल।

चीथड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिथड़ा'।

चीथना [क्रि. स.] (हिं.) टुकड़े-टुकड़े करना। चोंथना। फाड़ना।

चीथरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चिथड़ा'।

चीद [वि.] (फा.) चुना हुआ। छांटा हुआ।

चीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-झंडी। पताका। २-तागा। ३-एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४-भारत के पूर्व का एक प्रसिद्ध देश।

चीनक [संज्ञा पु.] (सं.) चेना नाम का एक अन्न। कँगनी नामक एक अन्न। २-चीनीकपूर।

चीन-की-दीवार [संज्ञा पु.] (हिं.) संसार के सप्ताश्चर्यों में से एक। एक चीनी सम्राट की बनाई हुई १५०० मील लम्बी दीवार जो ईसा से २०० वर्ष पूर्व बनाई गई थी।

चीनज [संज्ञा पु.] (सं.) चीन में होने वाला एक प्रकार का इस्पात।

चीनना* [क्रि. स.] (हिं.) चीन्हना। पहचानना।

चीनपिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिन्दूर। २-इस्पात लोहा।

चीनवंग [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक धातु।

चीनांशुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीन देश की लाल बनात। २-एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जो पहले चीन से आता था।

चीना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चीन देश का निवासी २-एक प्रकार का सफेद कबूतर।

चीनाक [संज्ञा पु.] (सं.) चीनी कपूर।

चीना-ककड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी ककड़ी।

चीनाचंदन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी

चीना-बादाम [संज्ञा पु.] (हिं.) मूंगफली।

चीनिया [वि.] (देश.) १-चीनदेश का। २-चीनदेश-संबंधी

चीनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ईख या खजूर द्वारा बनाया मीठा सफेद चूर्ण। शक्कर।
[वि.] चीन देश का।

चीनी-कपूर [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का कपूर।

चीनीकबाब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कबाब-चीनी'।

चीनीचंपा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का उत्तम केला।

चीनी-मिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसके बरतन आदि बनाये जाते हैं।

चीनीमोर [संज्ञा पु.] (हिं.) सोहन चिड़िया की जाति का एक पक्षी।

चीन्ह+ [संज्ञा पु.] देखो 'चिह्न'।

चीन्हना+ [क्रि. स.] (हिं.) पहचानना।

चीन्हा+ [संज्ञा पु.] देखो 'चिह्न'।

चीप [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-जूते के कलबूत में सबसे पीछे भरी जाने वाली लकड़ी की पच्चड़। २-चेप।

चीपड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख का कीचड़।

चीफ [संज्ञा पु.] (अं.) बड़ा सरदार या राजा।
[वि.] प्रधान। श्रेष्ठ। बड़ा।

चीफकमिश्नर [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी सूबे या कमिश्नरियों का प्रधान अधिकारी।

चीफकोर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) किसी प्रांत का न्यायालय।

चीफ-जस्टिस [संज्ञा पु.] (अं. हाईकोर्ट का प्रधान जज।

चीमड़ [वि.] (हिं.) जो खींचने या मोड़ने से न टूटे। चिमड़ा। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का पौधा।

चीमर [संज्ञा पु. तथा वि.] देखो 'चीमड़'।

चीयाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चियाँ'।

चीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्त्र। कपड़ा। २-वृक्ष की छाल। ३-चिथड़ा। लत्ता। ४-मुनियों अथवा बौद्ध भिक्षुओं का वस्त्र। [संज्ञा स्त्री] १-चीरने की क्रिया या भाव। २-चीरने से बनी दरार।

चीरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिखित प्रमाण के दो भेदों में से एक। २-लेख्य। डाकुमेंट। ३-मुट्ठे की तरह लपेटा हुआ लम्बा कागज। गेल-स्कोल।

चीरघर [संज्ञा पु] (हिं.) वह स्थान जहाँ पर आकस्मिक दुर्घटनाओं से मरने वालों के शव चीर-फाड़कर के मृत्यु के कारणों की जांच की जाती है। *मॉट्युअरी*।

चीर-चरम*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मृगचर्म। मृगछाला।

चीरना [क्रि स.] (हिं.) १-तेज धार वाले हथियार से फाड़कर खंड या फांक करना। २-फाड़ना।

माल या रुपया चीरना-अनुचित रूप से धन प्राप्त करना।

चीरल्लि [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का पक्षी। (सुश्रुत)।

चीरपत्रिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) चेंच नामक साग।

चीरपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) साल का वृक्ष

चीर-फाड़ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-चीरने फाड़ने की क्रिया या भाव। अस्त्रचिकित्सा। आपरेशन।

चीरवासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिव। २-यक्ष।

चीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लहरियेदार रंगीन कपड़ा। २-वह पत्थर या खम्भा जो गांव की सीमा पर गाड़ा जाता है। ३-चीरा देने से बनने वाला घाव।

चीराबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) चीरा बांधने वाला। [वि.] [स्त्री. प्र.] कुमारी।

चीराबंदी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) चीरा बांधने का काम।

चीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झींगुर। झिल्ली।

चीरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-झींगुर। झिल्ली। २-एक प्रकार की छोटी मछली।

*+ [संज्ञा स्त्री.) (हिं.) चिड़िया। पक्षी।

चीरीवाक [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

चीरु+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'चीर'।

चीरुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का फल।

चीरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल रंग का सूत।

चीर्ण [वि.] (सं.) फाड़ा हुआ। चीरा हुआ।

चीर्णपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीम का पेड़। २-खजूर का पेड़।

चील [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गिद्धजाति की एक चिड़िया।

चील का मूत-वह वस्तु जिसका मिलना कठिन।

चीलड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चीलर'।

चीलर [संज्ञा पु.] (देश.) जूँ के आकार का एक सफेद कीड़ा।

चीलवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिलड़ा नामक एक पकवान। उलटा।

चीला [संज्ञा पु.] (हिं.) चिलड़ा। चिल्ला।

चीलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिल्ली। झींगुर।

चीलू [संज्ञा पु.] (सं.) एक पहाड़ी मेवा जो आड़ू के समान होता है।

चील्लक [संज्ञा पु.] (सं.) झिल्ली। झींगुर।

चील्ह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चील'।

चील्हड़, चील्हर [संज्ञा पु.] देखो 'चीलर'।

चील्ही+ [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार का तंत्रोपचार।

चीवर [संज्ञा पु] (सं.) १-योगियों, सन्यासियों या भिक्षुकों आदि का फटा पुराना वस्त्र। २-बौद्ध संन्यासियों के पहरने के वस्त्र का ऊपरी भाग।

चीवरी [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्धभिक्षुक २-भिक्षुक।

चीस [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टीस

चीह+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) चीत्कार। चिल्लाहट।

चुंगना [क्रि स] (हिं.) देखो 'चुगना'

चुंगल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुंगल'।

चुंगली [संज्ञा स्त्री] (देश) नाक का एक गहना

चुंगवाना [क्रि स] (हिं.) देखो 'चुगवाना'।

चुँगाना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'चुगाना'।

चुंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चुंगल या चुटकी भर वस्तु। २-वह महसूल जो बाहरी माल पर शहर में प्रवेश करने पर लिया जाता है। नगरशुल्क।

चुंगी-घर [संज्ञा पु.] (हिं.) नगर या शहर के बाहर बनी वह चौकी या स्थान जहां पर बाहर से आने वाले और शहर में प्रवेश करने वाले माल पर कर या महसूल लेते हैं।

चुंघाना [क्रि स] (हिं.) चुसाकर पिलाना। चुसना।

चुंच+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चोंच'।

चुंचु, चुञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) छछूँदर।

चुंचुक, चुञ्चुक [संज्ञा पु] (सं. एक दैत्य का नाम।

चुंचुरी, चुञ्चुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली के चिआँ से खेला जाने वाला जूआ।

चुंचुल, चुञ्चुल [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

चुंचुली, चुञ्चुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घुंघुची

चुंटली* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घुंघची

चुंटा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुंडा'

चुंडा [संज्ञा पु.] (सं.) कुआँ। कूप।

चुंडित [वि.] (हिं.) चुटियावाला

चुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुटनी। दूती

चुंदरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुनरी

चुंदी, चुन्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटनी। दूती। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिर की चुंदी (चोटी)।

चुंधलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) अधिक प्रकाश के कारण आंखों का चौंधना। चकाचौंध होना। आँखों का तिलमिलाना।

चुंधा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चुंधी] १-अंधा। २-छोटी छोटी आंखों वाला।

चुंधियाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चुंधलाना'।

चुंबक, चुम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जो चुम्बन करे। कामुक। कामी। ग्रंथों को इधर उधर उलटने वाला। ४-लोहे को अपनी ओर खैंचने वाला धातु या पत्थर।

चुंबकत्व, चुम्बकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-चुम्बक का गुण या भाव। २-आकर्षणशक्ति।

चुंबन, चुम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेम के आवेश में होठों में किसी दूसरे के गाल आदि को स्पर्श करने की क्रिया। २-चुम्मा। बोसा। ३-स्पर्श।

चुंबना* [क्रि स] (हिं.) १-चूमना चुम्बन देना। २-छूना। स्पर्श करना।

चुंबा, चुम्बा [संज्ञा पु.] देखो 'सुंबा'।

चुंबित, चुम्बित [वि.] (सं) १-चूमा हुआ। २-प्यार किया हुआ। ३-स्पर्श किया हुआ।

चुंबी, चुम्बी [वि] (सं) चूमने वाला। जो चूमे

चुंभना *+ [क्रि. अ] (हिं) देखो 'चुभना'

चुअना +* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चूना'

चुआ [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का पहाड़ी गेहूँ।

[संज्ञा पु.] देखो 'चोआ'

चुआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चुआने या टपकाने का काम। २-चुआने की मजदूरी।

चुआक [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छेद जिससे पानी टपके।

चुआन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-खाई। गड्ढा। २-नहर। ३-जल आने का स्थान। ४-सोता।

चुक्राम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १–चूक नाम की खटाई। २–चूका का साग।

चुक्राम्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमलोना का साग।

चुक्रिका, चुक्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नोनिया। अमलोनी का साग। २–इमली।

चुक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंसा।

चुखाना+ [क्रि. स.] (हिं.) गाय दूहने से पूर्व बछड़े को पिलाना। चखाना।

चुग़द [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–उल्लू पक्षी। २–मूर्ख। मूढ़।

चुगना [क्रि. स.] (हि.) चिड़ियों का चोंच से दाना उठाना। चोंच से दाना बीनकर खाना

चुगल [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–परोक्ष मे दूसरे की निंदा करने वाला। इधर की उधर लगाने वाला। लुतरा। २–चिलम के छेद पर रखने का कंकड़। गिट्टी।

चुगलखोर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) परोक्ष में निन्दा करने वाला। इधर की उधर लगाने वाला। पीठ पीछे बुराई करने वाला। लुतरा।

चुगलखोरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) चुगली खाने का काम।

चुगलस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की लकड़ी।

चुगलाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चुभलाना'।

चुगली [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पीठ पीछे की शिकायत या निंदा।

चुगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चिड़ियों के चुगने का चारा। २–देखो 'चोगा'।

चुगाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–चुगने की क्रिया। चुगने का भाव। २–चुगाने की क्रिया या भाव। ३–चुगाने की उजरत।

चुगाना [क्रि. स.] (हिं.) चिड़ियो को दाना खिलाना।

चुगुल*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुगल'।

चुगुलखोर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुगलखोर'।

चुगुलखोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुगलखोरी'।

चुगुली+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुगली'।

चुग्गा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुगा'।

चुग्घी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चखने की थोड़ी सी वस्तु। चाट।

चुचकारना [क्रि. स.] (हिं.) चुमकारना। पुचकारना। दुलारना।

चुचुकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुचकारने या पुचकारने की क्रिया या भाव।

चुचाना* [क्रि. अ.] (हिं.) चूना। रसना। टपकना।

चुचु [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का साग।

चुचुआना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चुचाना'।

चुचुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुच या स्तन का अग्र भाग। ढिपनी। २–दक्षिण भारत का एक देश। ३–उस देश का निवासी।

चुचुकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) सूखकर सिकुड़ जाना।

चुच्चु [संज्ञा पु.] (सं.) चौपतिया नामक एक साग।

चुटक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गलीचा। +[संज्ञा पु.] (हिं.) कोड़ा। चाबुक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुटकी।

चुटकना [क्रि. स.] (हिं.) १–कोड़ा मारना। चाबुक मारना। २–चुटकी से तोड़ना। ३–साँप का काटना।

चुटकला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुटकुला'।

चुटका [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी चुटकी।

चुटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पकड़ने के निमित्त अंगूठे और तर्जनी का योग। २–चुभती हुई बात कहना। ३–खाल नोचना।
चुटकी देना–चुटकी बजाना। *चुटकी बजाना*–अंगूठे से अंगुली का अग्रभाग घिसकर शब्द निकालना। *चुटकी बजाते में ही*–बहुत शीघ्र। बात की बात में। *चुटकी बैठना*–चुटकी से किये जाने वाले काम का अभ्यास होना। *चुटकिया लेना*–१–हंसी उड़ाना। २–चुभती हुई व्यंग भरी बात कहना। ३–चुटकी से नोचना। ४–चुटकी से खोदना। *चुटकियों में होना*–चटपट शीघ्र ही। *चुटकियों में उड़ाना*–१–कुछ न समझना। २–बात की बात में निबटना। *चुटकी भरना*–१–चुटकी से नोचना या काटना। २–चुभती बात कहना। ३–चुटकी लेना। *चुटकी भरे लोहू टपकना*–अत्यधिक कोमल या गोरा होना। *चुटकी लगाना*–१–रुपया बजाने के लिए उँगलियों पर अंगूठे से रख कर उछालना। २–जेब काटना। ३–कपड़े को किनारे पर से फाड़ना। *चुटकी लेना*–१–हसी उड़ाना। २–चुभती हुई बात कहना। ३–पैर की अंगुलियों में पहनने का गहना। ५–दरी के ताने का सूत। ६–पेंचकश। ७–बंदूक का घोड़ा।

चुटकुल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ऐसी विलक्षण बात जिससे हंसी आये। विनोदपूर्ण बात। २–दवा का छोटा पर गुणकारक नुसखा।
चुटकला छोड़ना–१–दिल्लगी की बात कहना। २–ऐसी बात कहना जिससे झगड़ा खड़ा हो।

चुटफुट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुटकर वस्तु।

चुटला+ [वि.] (हिं.) देखो 'चुटीला'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–सिर पर चोटी या वेणी के ऊपर पहना जाने वाला गहना। २–स्त्रियों की बंधी हुई वेणी या जूड़ा।

चुटाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–चोट खाना। घायल होना।

चुटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शिखा। चोटी। २-चोरों या ठगों का सरदार।

चुटियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-चोट पहुँचाना। घायल करना। २-डसना। काटना।

चुटिलना [क्रि. स.] (हिं.) चोट करना या पहुँचाना।

चुटीला [वि.] (हिं.) चोट खाया हुआ। [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी चोटी। अगल-बगल की चोटी। [वि.] चोटी का। सिरे का। सर्वश्रेष्ठ।

चुटैल [वि.] (हिं.) १-घायल। २-आक्रमण करने वाला।

चुट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुटला'।

चुड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुड्ड'।

चुड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चुटना'।

चुड़ाव [संज्ञा. पु.] (देश.) एक जंगली जाति।

चुड़िया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चूड़ी'।

चुड़िहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री.चुड़िहारिन] चूड़ी बनाने या बेचने वाला।

चुड़िहारिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूड़ी बनाने वाले (चुड़िहार) की स्त्री।

चुडुका [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल की तरह की एक चिड़िया।

चुड़ेलवाल [संज्ञा.स्त्री.] (देश.) बनियों की एक जाति।

चुड़ैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रेतनी। भूतनी। पिशाचिनी। २-कुरूपा तथा विकराल स्त्री। ३-क्रूर स्वभाव वाली स्त्री।

चुड्ड [संज्ञा. स्त्री] (हिं.) भग। योनि।

चुड्डो [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक गाली (स्त्रियों की) छिनाल।

चुत [संज्ञा पु.] (सं.) गुदद्वार।

चुत्थल [वि.] (हिं.) मसखरा। विनोद प्रिय। ठिठोलिया।

चुत्थलपना [संज्ञा पु.] (हिं.) मसखरापन। ठठोली।

चुत्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) बटेरों की लड़ाई में घायल बटेर।

चुदक्कड़ [वि.] (हिं.) अधिक स्त्री-प्रसंग करने वाला। अत्यन्त कामी।

चुदना [क्रि. अ.] (हिं.) स्त्री का पुरुष से संयुक्त होना।

चुदवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुदाई'। २-मैथुन करने अथवा कराने के बदले दिया जाने वाला धन।

चुदवाना [क्रि. अ, स.] (हिं.) देखो 'चुदाना'।

चुदवास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुदवाने या मैथुन कराने की इच्छा।

चुदवासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैथुन कराने की इच्छा रखने वाली स्त्री।

चुदवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) चोदने या स्त्री-प्रसंग करने वाला।

चुदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चोदने की क्रिया या भाव। २-चुदाने के बदले में प्राप्त होने वाला धन।

चुदाना [क्रि. अ.] (हिं.) (स्त्री का) पुरुष से प्रसंग कराना। [क्रि. स.] स्त्री को पुरुष से संयुक्त कराना।

चुदास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री-प्रसंग की इच्छा।

चुदास [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री-प्रसंग की कामना वाला पुरुष।

चुदैया [वि.] (हिं.) चोदने वाला।

चुदौवल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चोदने की क्रिया या भाव।

चुन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आटा। २-चूर्ण। चूर। बुकनी।

चुनचुना [संज्ञा पु.] (देश.) कसेरों का औजार। [वि.] १-जिसके छूने या खाने से चुनचुनाहट उत्पन्न हो। २-चिढ़ने वाला। रोने वाला (लड़का)। [संज्ञा पु.] बच्चों के पेट से मल के साथ निकलने वाले कीड़े।

चुनचुनाना [क्रि. अ.] (हिं.) कुछ जलन लिये हुए हलकी खुजली होना।

चुनट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिलवट। शिकन। चुनन।

चुनत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुनट'।

चुनन [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े या कागज की सिलवट या सिकुड़न।

चुननदार [वि.] (हिं.) जिसमें चुनन या सिकुड़न हो।

चुनना [क्रि. स.] (हिं.) १-छोटी छोटी वस्तुए हाथ से उठाकर इकट्ठी करना। २-बहुत सी वस्तुओं में से कुछ अच्छी वस्तुए पसन्द करके अलग करना। ३-कुछ लोगों में से किसी को अपना प्रतिनिधि बनाने को कहना। निर्वाचित करना। ४-अच्छी वस्तु में से खराब वस्तु छाँटकर अलगाना। ५-सजाकर या क्रमानुसार ठीक प्रकार से रखना। ६-चुटकी से नोचकर अलग करना। ७-सिकुड़न डालना।

चुना हुआ–उत्तम। श्रेष्ठ। दीवार में चुनना–चुनाई करवा कर दीवार में गड़वा देना।

चुनरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह कपड़ा जिसके बीच में बुंदकियां हों। २-चुन्नी नामक रत्न।

चुनवां [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़का। चेला। शागिर्द (सुनार)। [वि.] (हिं.) चुना हुआ। उत्तम।

चुनवाना [क्रि. स.] (हिं.) चुनने का काम कराना।

चुनाँचुनीं [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-ऐसीवैसी। २-इधर उधर की बात। ३-बनावटी बात।

चुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुनने की क्रिया या भाव। २-दीवार की जुड़ाई का ढंग। ३-चुनने की मजदूरी।

चुनाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) वृत्त बनाने का औजार। परकार।

चुनाना [क्रि. स.] (हिं.) १-इकट्ठा करवाना। २-छंटवाना या अलग करवाना। ३-सजवाना। ४-दीवार की जोड़ाई करना। ५-दीवार में गड़वाना। ६-चुनना या शिकन डलवाना।

चुनाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चुनने का काम। २-बहुतों में से किसी को किसी कार्य के लिए चुनना। निर्वाचन।

चुनावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुनन। चुनट।

चुनिंदा [वि.] (हिं.) १-चुना हुआ। २-छँटा हुआ। ३-पसंद किया हुआ। अच्छा। बढ़िया। ४-गण्य। प्रधान।

चुनिया-गोद [संज्ञा पु.] (हिं.) ढाक का गोंद।

चुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मानिक या किसी और रत्न का छोटा टुकड़ा। २-अन्न या दाल आदि का पिसा हुआ चूर्ण।

चुनी-भूसी–मोटे अन्न का पिसा हुआ चूर्ण।

चुनुयाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुनवां'।

चुनैटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुनौटी'।

चुनौटिया [रंग] [संज्ञा पु.] (हिं) कालापन लिये लाल रंग।

चुनौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पान पर चूना लगाने की चूनेदानी।

चुनौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रवृत्ति बढ़ाने वाली बात। उत्तेजना। बढ़ावा। २-शत्रु या प्रतिद्वंदी को दी जाने वाली ललकार। ३-देखो 'चुनौटी'।

चुन्नट [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चुनट'।

चुन्नत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चुनट'।

चुन्नन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चुनन'।

चुन्ना [संज्ञा पु.] १-देखो 'चुरना'। २-देखो 'चूना'। [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चुनना'।

चुन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मानिक आदि का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा रत्न। रत्न-कण। २-अन्न या लकड़ी का चूर। ३-चमकी। सितारा।

चुप [वि.] (हिं.) जो कुछ बोले न। मौन। अवाक्।

चुपचाप–१–मौन। २–चंचलता-रहित। ३–छिपे-छिपे। ४–निठल्ला। ५–निर्विरोध। चुप-छिनाल–१–छिपे-छिपे व्यभिचार करने वाली स्त्री। २–छिपा रुस्तम। चुप करना–१–बोलने न देना। २–मौन रहना। चुप नथना, लगाना, साधना–मौनावलम्बन करना। खामोश रहना।

[संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार की तलवार।

चुप [वि.] (हिं.) १-मौन। २-चुप्पा। घुन्ना।

चुपाना+ [क्रि. स.] (हिं.) मौन करना। बोलने न देना।

चुपकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मौन। खामोशी।

चुपचाप [क्रि. वि.] (हिं.) मौन रहकर। गुप्त रूप से।

चुपड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी गीली वस्तु को फैलाकर लगाना। २-दोष छिपाना। ३-चिकनी चुपड़ी बातें कहना।

चुपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कीचड़ से भरी आंख वाला।

चुपरी-आलु [संज्ञा पु.] (देश.) पिंडालु या रतालु।

चुपाना+* [क्रि. अ.] (हिं.) चुप हो रहना। मौन रहना।

चुप्पा [वि.] (हिं.) प्रायः चुप रहने या कम बोलने वाला। घुन्ना।

चुप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मौन। खामोशी।

चुबलाना [क्रि. स.] (हिं.) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को मुंह में रखकर जीभ से इधर उधर डुलाना।

चुभकना [क्रि. अ.] (हिं.) पानी में डूबना। उतराना। पानी में चुभ-चुभ शब्द करते हुए गोता खाना।

चुभकाना [क्रि. स.] (हिं.) पानी में गोता देना।

चुभकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डुब्बी। गोता।

चुभना [क्रि. स.] (हिं.) १-गड़ना। धंसना। २-हृदय में खटकना। ३-मन में बैठना। ४-मग्न। लीन। तन्मय।

चुभरचुभर [क्रि. वि.] (हिं.) बच्चों के दूध पीने का शब्द।

चुभलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चुबलाना'।

चुभवाना [क्रि. स.] (हिं.) चुभाने का काम अन्य से कराना।

चुभाना [क्रि. स.] (हिं.) धंसाना। गड़ाना।

चुभोना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चुभाना'।

चुमकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्यार प्रदर्शित करते समय चूमने का सा शब्द।

चुमकारना [क्रि. स.] (हिं.) चूमने का सा शब्द निकालना। पुचकारना। दुलारना।

चुमकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुमकार'।

चुमवाना [क्रि. स.] (हिं.) चूमने का कार्य अन्य से कराना।

चुमाना [क्रि. स.] (हिं.) चूमने के लिए प्रस्तुत करना।

चुम्मक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुंबक'।

चुम्मा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चुम्बन। बोसा।

चुर [संज्ञा पु.] (देश.) १-जंगली पशुओं के रहने का स्थान। मांद। विवर। २-चार-पाँच आदमियों के बैठने का स्थान।

[संज्ञा पु.] (हिं.) कागज, सूखे पत्ते आदि के मुड़ने या टूटने का शब्द।

* [वि.] (हिं.) प्रचुर। बहुत। अधिक।

चुरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बोलना। चहचहाना। २-चटकना। टूटना। चूर होना।

चुरकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुटिया। शिखा।

चुरकुट [क्रि. वि.] (हिं.) चकनाचूर। चूर्णित।

चुरकुस+* [संज्ञा पु.] (हिं.) चूर-चूर। चूर्ण।

चुरगना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चुरकना'।

चुरचुरा [वि.] (हिं.) जरा से दबाव के कारण 'चुरचुर' शब्द करके टूट जाने वाला।

चुरचुराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) बहुत थोड़े आघात से चूरचूर हो जाना। चुरचुर शब्द करना।

[क्रि. स.] १-खरी वस्तु को चूर-चूर करना। २-चुरचुर शब्द करना।

चुरट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुरुट'।

चुरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-पानी में उबलकर पकना। सीझना। २-गुप्त मन्त्रणा होना।

[संज्ञा पु.] चुनचुना।

चुरमुर [संज्ञा पु.] (हिं.) कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।

चुरमुरा [वि.] (हिं.) चुरचुर शब्द करके सहज में टूटने वाला।

चुरमुराना [क्रि. अ.] (हिं.) चुरचुर शब्द करके टूटना।

[क्रि. स.] चुरमुर शब्द करके तोड़ना।

चुरवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पकने का काम कराना। २-देखो 'चोरवाना'।

चुरस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कपड़े की सिकुड़न या सिलवट।

चुरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चूरा'।

चुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुरने या पकने की क्रिया या भाव।

चुराना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु को उसके स्वामी के परोक्ष अथवा अनजान में वापस न करने के अभिप्राय से ले लेना। अपहरण करना। चोरी करना। २-छिपाना लोगों की दृष्टि से बचाना। ३-देने या करने में कसर रखना। ४-पकाना।

चित्त चुराना–मनमोहित करना। *आँख चुराना*–नजर बचाना।

चुरिला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कांच का मोटा टुकड़ा। २-जुलाहे की नचनी के बीचोंबीच बांधने की लोहे की चूड़ी।

चुरिहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चूड़ीहारा'।

चुरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चूड़ी'।

चुरुट [संज्ञा पु.] (अ.) सिगार। तम्बाखू के पत्ते को लपेटकर बनाई हुई बत्ती जिसे जलाकर धूम्रपान करते हैं।

चुरू*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चुल्लू।

चुरैल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुड़ैल'।

चुर्ट [संज्ञा पु.] देखो 'चुरुट'।

चुर्स [संज्ञा पु.] देखो 'चुरुट'।

चुल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी अंग के मले या सहलाए जाने की प्रबल इच्छा। मस्ती। कामोद्वेग। २-किसी कार्य को करने की तीव्र आकांक्षा।

चुलचुलाना [क्रि. अ.] (हिं.) खुजलाहट होना। चुल होना।

चुलचुलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुल या खुजली उठने का भाव।

चुलचुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुल। खुजलाहट।

चुलबुल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चंचलता। चपलता। चुलबुलाहट।

चुलबुला [वि.] (हिं.) १-चपल। चंचल। २-नटखट।

चुलबुलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चंचल या चपल होना। २-चपलता करना।

चुलबुलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) चंचलता। चपलता।

चुलबुलिया+ [वि.] (हिं.) देखो 'चुलबुला'।

चुलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चुवाना'।

चुलाव [संज्ञा पु.] (देश.) बिना मांस का पुलाव।

[संज्ञा पु.] (हिं.) चुवाने का भाव या क्रिया।

चुलियाला [संज्ञा पु.] (?) एक मात्रिक छंद जिसमें १३ और १६ के विश्राम से २९ मात्राएं होती हैं।

चुलुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारी दलदल। गहरा कीचड़। २-चुल्लू। ३-नापने के काम का एक पात्र। ४-उर्द के डूबने भर का जल।

चुलुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

चुल्लकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूंस नामक जल जन्तु।

चुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) काँच का छोटा छल्ला।

[वि.] (हिं.) नटखट। पाजी।

चुल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चूल्हा। २-चिता।

[वि.] (हिं.) चिलबिला। नटखट।

चुल्लू [संज्ञा पु.] (हिं.) कुछ लेने अथवा पीने के लिए की हुई गहरी हथेली। अंजुली।

चुल्लू भर पानी में डूब मरना–लाज के मारे गड़जाना। *चुल्लू में उल्लू होना*–थोड़ी-सी भांग या शराब के नशे में चूर होना। *चुल्लुओं रोना*–बहुत रोना। *चुल्लुओं लहू पीना*–बहुत दुखी करना। *चुल्लू में समुद्र समाना*–छोटे में बड़ी वस्तु या बात न समाना।

चुल्हौना [संज्ञा पु.] (हिं.) चूल्हा।

चुवना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चूना'।

चुवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) मज्जा। भेजा। हड्डी

के भीतर का रस।

चुवाना [क्रि. स.] (हिं.) टपकाना। गिराना। बूंद-बूंद करके गिराना।

चुसकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मदिरा पीने का पात्र। प्याला। २-सुड़ककर पीने की क्रिया। ३-एक बार में सुड़का जाय जितना। घूँट। दम।

चुसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ओंठ से खिचकर पीया जाना। चूसा जाना। २-निगल जाना। ३-सारहीन होना। ४-धनरहित होना।

चुसनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बच्चों के चूसने का खिलौना। २-दूध पिलाने की शीशी।

चुसवाना [क्रि. स.] (हिं.) चूसने में प्रवृत्त करना।

चुसाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूसने की क्रिया या भाव।

चुसाना [क्रि. स.] (हिं.) चूसने का काम कराना।

चुसौअल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुसौवल'।

चुसौवल [संज्ञा स्त्री.) (हिं.) १-अधिकता से चूसने की क्रिया। २-बहुत से व्यक्तियों द्वारा चूसे जाने की क्रिया।

चुस्त [वि.] (फा.) १-कसा हुआ। तंग। २-फुरतीला। ३-दृढ़। मजबूत।

चुस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-फुरती। तेजी। २-कसावट। तंगी। ३-दृढ़ता। मजबूती।

चुहँटी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चुटकी।

चुहचाहट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिड़ियों का शब्द। चहकार।

चुहचुहा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चुहचुही] रसीला। चटकीला। शोख।

चुहचुहाता [वि.] (हिं.) रसभरा। रसीला। सरस।

चुहचुहाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रस टपकना। चटकीला लगना। २-चहचहाना। कलरव करना।

चुहचुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काले चमकीले रंग की एक चिड़िया।

चुहटना* [क्रि. स.] (देश.) कुचलना। रौंदना।

चुहटनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गुंजा। घुँघची।

चुहड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) भंगी।

चुहना+ [क्रि. स.] (हिं.) दाँतों से दबाकर रस चसना।

चुहल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हँसी। ठिठोली। मनोरंजन।

चुहलपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुहलबाजी'।

चुहलबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंसी। ठठोली। दिल्लगी। मसखरापन।

चुहादंती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चूहादंती'।

चुहिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-मादा चूहा। २-छोटा चूहा।

चुहिल+ [वि.] (हिं.) रमणीक (स्थान)।

चुहिली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चिकनी सुपारी।

चुहुकना [क्रि. स.] (हिं.) चूसना।

चुहुटना*+ [क्रि. स.] (हिं.) चिमटना।

चुहुटनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गुंजा। घुंघची।

चूँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द।

चूँ करना-१-कुछ कहना। २-प्रतिवाद करना।

चूँकि [क्रि. वि.] (फा.) क्योंकि। इस कारण से कि। इसलिए कि।

चूँचरा [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्रतिवाद। [illegible]। २-आपत्ति। उज्र। ३-मिस। बहान

चूँची+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चूची'।

चूँचूँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चिड़ियों के बोलने का शब्द। २-किसी प्रकार का 'चूँचूँ' शब्द। ३-एक प्रकार का खिलौना।

चूँदरी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चुनरी'।

चूँदी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चुँदी'।

चूअरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जरदालू। खूबानी।

चूऊ [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का बारीक ऊनी कपड़ा।

चूक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूल। गलती। २-दरार। दर्ज। [संज्ञा पु.] १-खट्टे फलों के रस को गाढ़ा बनाया हुआ एक अत्यन्त खट्टा पदार्थ। २-एक प्रकार का खट्टा साग। [वि.] बहुत अधिक खट्टा।

चूकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भूल या गलती करना। २-लक्ष्य से विचलित होना। ३-अवसर खो देना।

चूका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का खट्टा साग।

चूची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्तन का अग्रभाग। २-स्तन। कुच। स्त्री की छाती।

चूची पीता-बहुत छोटा (बच्चा) नासमझ।

चूचुक [संज्ञा पु.] (सं.) कुच का अग्रभाग।

चूजा [संज्ञा पु.] (फा.) मुरगी का बच्चा। [वि.] जो अधिक व्यय का न हो।

चूड़, चूड़क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोटी। शिखा। २-मोर के सिर के ऊपर की चोटी। ३-कुआं। ४-घुंघची। ५-मस्तक। ६-प्रधान नायक। ७-बांह में पहनने का एक गहना। ८-चूड़ाकरण नामक का संस्कार।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-कंकण। कड़ा। २-हाथ में पहनने की चूड़ियाँ। ३-देखो 'चूहड़ा'। ४-देखो 'चिउड़ा'।

चूड़ाकरण [संज्ञा पु.] (सं.) मुंडन संस्कार।

चूड़ाकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) चूड़ाकरण। मुंडन संस्कार।

चूड़ा-पाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालों का जूड़ा (स्त्रियों का)। २-प्राचीन काल की स्त्रियों का एक प्रकार का केश-विन्यास।

चूड़ा-मणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर का गहना। सीसफूल। २-सब से श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु।

चूड़ाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) इमली।

चूड़ाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद घुंघची। २-नागरमोथा। ३-एक प्रकार की घास।

चूड़िया [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

चूड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोई गोलाकार वस्तु। २-छल्ला। ३-स्त्रियों का मुख्यतः सुहागिनों का हाथ का एक गहना। ४-रेशम मांजने का एक औजार। ५-ग्रामोफोन का रिकार्ड।

चूड़िया टंडी करना-नई चूड़ियां पहनने के लिए पुरानी चूड़ियाँ तोड़ना। *चूड़ियाँ पहनना*-स्त्रियों के समान कायर बनना। *चूड़ियाँ बढ़ाना*-चूड़ियाँ उतारना।

चूड़ीदार [वि.] (हिं) जिसमें चूड़ियों के से घेरे पड़े हों।

चूड़ीदार पायजामा-एक प्रकार का तंग मोहरी की उरेबदार पायजामा।

चूड़ो* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चुहड़ा'।

चूत [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) योनि। भग।

चूतक [संज्ञा पु.] (सं.) आम का वृक्ष।

चूतड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) नितंब।

चूतर [संज्ञा पु.] (हिं.) चूतड़। नितंब।

चूतिया [वि.] (हिं.) मूर्ख। नासमझ।

चूतियाचक्कर [वि.] (हिं.) देखो 'चूतिया'।

चूतियापंथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्खता। नासमझी।

चून [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पिसान। आटा। २-देखो 'चूना'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पेड़।

चूनर, चूनरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चुनरी'।

चूना [संज्ञा पु] (हिं.) पत्थर, कंकड़, शंख, सीप आदि को फूंककर बनाया जाने वाला एक प्रकार का सफेद क्षार। [क्रि. अ.] १-बूंद-बूंद कर गिरना। २-किसी वस्तु में के छेद से द्रव पदार्थ टपकना। ३-गर्भपात होना।

चूना लगाना-धोखा देना। हानि पहुँचाना।

चूनादानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।

चूनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अन्न का छोटा टुकड़ा। २-रत्नकण। चुन्नी।

चूनेदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चूनादानी'।

चूमना [क्रि. स.] (हिं.) होठों के द्वारा किसी का कोई अङ्ग स्पर्श करना। चुम्मा लेना।

चूमा [संज्ञा पु.] (हिं.) चुम्बन। चुम्मा।

चूमाचाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूमचाट कर प्रेम प्रदर्शित करने की क्रिया।

चूर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी पदार्थ के छोटे-छोटे टुकड़े। २-कण। बुरादा। भूर।

[वि.] (हिं.) १-तन्मय। निमग्न। २-थका हुआ। शिथिल।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चूर्ण'।

चूरन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'चूर्ण'। २-बारीक पीसी हुई कई पाचक औषधों का चूर्ण।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की जंगली [illegible]।

चूरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-चूर करना। टुकड़े-टुकड़े करना।

चूरमा [संज्ञा पु.] (हिं.) रोटी या बाटी को कूट कर घी और चीनी मिलाया हुआ एक पदार्थ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) जौ या गेहूँ के कट जाने पर खेत में रहने वाली खूंटियां।

चूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चूर्ण। बुरादा। २-देखो 'चूड़ा'। ३-देखो 'चिउड़ा'।

[illegible]* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चूड़ामणि'।

चूरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चूड़ी'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चूर। चूरा। चूरमा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चरस।

चूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) २-किसी पदार्थ के टूटे या पिसे हुए बारीक टुकड़े। चूरा। बुकनी। २-पाचक दवा की बुकनी। चूरन। ६-अबीर ४-धूल। गर्द। ५-चूना। ६-कौड़ी।

[वि.] (सं.) १-चूर। २-टूटा-फूटा।

चूर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्तू। सतुआ। २-वह गद्य जिसमें छोटे छोटे सरल और भावपूर्ण शब्द हों। ३-एक प्रकार का वृक्ष। ४-एक प्रकार का शाली धान्य।

चूर्णकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूर्ण करने वाला। २-आटा बेचने वाला।

चूर्णकुंतल, चूर्णकुन्तल [संज्ञा पु.] (सं.) अलक। जुल्फ। लट।

चूर्णखंड, चूर्णखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) कंकड़।

चूर्णपारद [संज्ञा पु.] (सं.) शिंगरफ़।

चूर्णयोग [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत सारे सुगंधित पदार्थों का मिश्रण।

चूर्णहार [संज्ञा पु.](सं.) चूरनहार नामक लता।

चूर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्याछंद का दसवाँ भेद जिसमें १८ गुरु और २१ लघु होते हैं।

चूर्णि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौड़ी। कपर्दक।

चूर्णिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सतु। सतुआ। २-गद्य का एक भेद।

चूर्णिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि।

चूर्णित [वि.] (सं.) चूर्ण किया हुआ।

चूर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कर्षापण नामक प्राचीन सिक्का या कौड़ी। २-प्राचीन नदी। ३-पतंजलि-प्रणीत पाणिनि-व्याकरण का भाष्य।

चूर्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चूरमा'।

चूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोटी। शिखा। २-बाल। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में ठोंककर बैठाया जाता है।

चूलें ढीली होना-अधिक परिश्रम के कारण थकावट होना।

चूलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी की कनपटी। २-हाथी के कान का मैल। खम्भे का ऊपरी भाग। ४-किसी घटना के संबंध में परोक्ष में दी गई सूचना।

चूलदान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बावर्चीखाना। पाकशाला। २-बैठने या वस्तुएं आदि रखने के निमित्त सीढ़ीनुमा बनाहुआ स्थान। *गैलरी*

चूलिक [संज्ञा पु.] (सं.) मैदे की पतली पूरी।

चूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चूलक। २-नाटक का वह अंग जिसमें किसी घटना के होने की सूचना नेपथ्य से दी जाती है।

चूल्हा [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का या लोहे का बना वह पात्र जिस पर भोजन पकाते हैं। *चूल्हा जलना*-भोजन बनना। *चूल्हा न्यौतना*-घर के सब लोगों को निमन्त्रण देना। *चूल्हा फूँकना*-भोजन पकाना। *चूल्हे में डालना*-१-नष्टभ्रष्ट करना। २-दूर करना। *चूल्हे से निकलकर भाड़ या भट्टी में जाना*-छोटी विपत्ति से निकलकर भारी सकट में फंसना।

चूषण [संज्ञा पु.] (सं.) चूसने की क्रिया।

चूषणीय [वि.] (सं.) चूसने योग्य।

चूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पेटी या पट्टा जो हाथी की कमर में बांधी जाती है।

चूष्य [वि.] (सं.) चूसने योग्य।

चूसना [क्रि. स.] (हिं.) १-जीभ और होंठ को मिलाकर किसी वस्तु का रस खींचना। २-अनुचित रूप से धीरे-धीरे किसी से रुपये वसूल करना।

चूहड़ [संज्ञा पु.] देखो 'चूहड़ा'।

चूहड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री चूहड़ी] भंगी। मेहतर।

चूहर [संज्ञा पु.] देखो 'चूहड़ा';

चूहरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुड़िहारिन।

चूहा [संज्ञा प.] (हिं.) [स्त्री चुहिया, चूही] घरों और खेतों में बिल बनाकर रहने और अन्न खाने वाला एक जन्तु। मूसा। मूषक।

चूहादंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।

[वि.] (हिं.) चूहे के दाँत के आकार का।

चूहादान [संज्ञा पु.] (हिं.) चूहों को फंसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।

चूहेदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूहादान।

चें [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिड़ियों के बोलने का शब्द।

चेंगड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चेंगड़ी] बालक छोटा बच्चा।

चेंगा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चेंगड़ा'।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'चेनगा'।

चेंगी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चमड़े की गोल छेद की हुई चिकती जो गाड़ी के धुरे पर लगती है।

चेंघी* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चेंगी'।

चेंच [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का साग।

चेंचर* [वि.] (हिं.) बकवादी। चेंचें करने वाला।

चेंचुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) चातक का बच्चा।

चेंचुला* [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्वान्न।

चेंचें [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिड़ियों की बोली। २-व्यर्थ की बकबक।

चेंटुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़िया का बच्चा।

चेंटियारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का जलपक्षी।

चेंटीं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चिउंटी'।

चेंडा* [संज्ञा प.] (हिं.) 'चेंगड़ा'।

चेंधी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चेंगी'।

चेंपें [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिल्लाहट। २-व्यर्थ की बकवाद।

चेंफ [संज्ञा पु.] (देश.) ऊख का छिलका।

चेंबर, चेम्बर [संज्ञा पु.] (अं.) वह बड़ा कमरा जिसमें किसी विषय की मन्त्रणा हो। सभागृह।

चेंबर-आफ़-कामर्स [संज्ञा पु.] (अं.) किसी नगर के प्रमुख व्यापारियों की वह सभा जिसका संगठन उन व्यापारियों की व्यापार सम्बन्धी स्वत्वों के लिये हुआ हो।

चेअर [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कुरसी।

ईजीचेअर-आराम कुरसी।

चेअरमेन, चेअरमैन [संज्ञा पु.] (अं.) किसी सभा या बैठक का प्रधान। सभापति।

चेउरी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हार के चाक पर बने ताजा बरतन को काटने का डोरा।

चेक [संज्ञा पु.] (अं.) १-लम्बाई और चौड़ाई में पड़ी हुई धारियां चारखाना। २-कागज का वह पुरजा जिस पर किसी बैंक के नाम यह

लिखा रहता है कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते में से इतना धन दे दो। ३-यह देखना कि कोई कार्य ठीक तरह हुआ या नहीं।

चेकित [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम। [वि.] बहुत बड़ा ज्ञानी।

चेकितान [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-केकय देश के राजा धृष्टकेतु के पुत्र का नाम। [वि.] बहुत बड़ा ज्ञानी।

चेचक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शीतला या माता नामक एक रोग।

चेचकरू [संज्ञा पु.] (फा.) वह जिसके चेहरे पर चेचक के दाग हों।

चेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) सूराख। छेद। छिद्र।

चेट [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. चेटी, चेटका] १-दास। सेवक। नौकर। २-पति। ३-वह प्रवीण व्यक्ति जो नायक नायिका का मिलन कराये। ४-भाँड़। ५-एक प्रकार की मछली।

चेटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेवक। नौकर। २-दूत। ३-जादू। माया। ४-चटकमटक। ५-चाट। चसका। ६-जल्दी।

चेटकनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'चेटक' का स्त्री.।

चेटका* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-चिता। २-मरघट। श्मशान।

चेटकी [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रजाली। जादूगर। २-कौतुकी।

चेटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवा करने वाली। दासी।

चेटिकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चेटिका'।

चेटिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चेला। शिष्य। २-दास।

चेटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासी। लौंडी।

चेटुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़िया का बच्चा।

चेड़क [संज्ञा पु.] देखो 'चेटक'।

चेत् [अव्य.] (सं.) १-कदाचित्। शायद। २-यदि। अगर।

चेत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चेतना। होश। २-ज्ञान। बोध। ३-सावधानी। चौकसी। ४-स्मरण। सुध। ५-चित्त।

चेतक [वि.] (सं.) १-चेतना उत्पन्न करने वाला। २-सचेत करने वाला। चेताने वाला। [संज्ञा पु.] किसी सभा या समिति के सदस्यों को यह स्मरण कराने वाला वह अधिकारी कि अमुक कार्य में आपका उपस्थित होना आवश्यक है। व्हिप।

चेतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरीतकी। २-चमेली का पौधा। ३-एक रागिनी का नाम।

चेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आत्म। जीव। २-मनुष्य। ३-प्राणी। ४-परमेश्वर।

चेतनकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी। हड़।

चेतनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैतन्य। सज्ञानता। संज्ञा। होश।

चेतनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चेतनता'।

चेतना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुद्धि। २-मनोवृति। ३-ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। ४-स्मृति। सुधि। ५-चेतनता। संज्ञा। होश। [क्रि. स.] (हिं.) १-होश में आना। २-सावधान होना। [क्रि. स.] विचारना। समझना।

चेतनीय [वि.] (सं.) जानने योग्य।

चेतनीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋद्धि नामक लता।

चेतन्य [वि.] (हिं.) देखो 'चैतन्य'।

चेतवनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'चेतावनी'। २-देखो 'चितवन'।

चेतव्य [वि.] (सं.) इकट्ठा करने योग्य।

चेता [वि.] (सं.) चित्तवाला। जैसे—दृढ़ चेता।

चेताना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चिताना'।

चेतावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सतर्क या सावधान होने की सूचना।

चेतिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिता। २-श्मशान।

चेतुरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

चेतात्मजा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

चेतोजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

चेतौनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चेतावनी'।

चेत्य [वि.] (सं.) १-ज्ञातव्य। २-जो स्तुति करने योग्य हो।

चेदि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम २-इस देश का राजा। ३-इस देश का निवासी। ४-कौशिकमुनि के पुत्र का नाम।

चेदिक [संज्ञा पु.] देखो 'चेदि'।

चेदिराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिशुपाल नाम का एक राजा जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था। एक वसु का नाम।

चेन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) जंजीर। सिकरी।

चेनआ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चेनवा'।

चेनगा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

चेनाँ* [संज्ञा पु.] देखो 'चेना'।

चेना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कंगनी या सावा जाति का एक अन्न। २-चीनीकपूर।

चेप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चिपचिपा या लसदार कोई रस। २-चिड़ियों को फंसाने का लासा। ३-चाव। उत्साह।

चेपदार [वि.] (हिं.) चिपचिपा।

चेपना* [क्रि. स.] (हिं.) चिपकाना। सटाना।

चेपांग [संज्ञा पु.] (देश.) नैपाल में रहने वाली एक पहाड़ी।

चेबुला [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जिसकी छाल चमड़ा कमाने में और रंग बनाने में काम आती है।

चेय [वि.] (सं.) संग्रह करने योग्य। [संज्ञा पु., स्त्री.] (सं.) विधानपूर्व संस्कार की हुई अग्नि।

चेयर [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'चेअर'।

चेयरमैन [संज्ञा पु.] (अं.) सभापति। प्रधान।

चेर+* [संज्ञा पु.] (हिं.) दास। सेवक। गुलाम।

चेरना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की छेनी।

चेरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चेरी] १-नौकर। दास। २-चेला। शिष्य। [संज्ञा पु.] (देश.) मोटे ऊन का गलीचा।

चेराई+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दासत्व। नौकरी। सेवा।

चेरायता [संज्ञा पु.] देखो 'चिरायता'।

चेरि, चेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दासी। रानी।

चेरु [वि.] (सं.) संग्रह करने वाला।

चेरुआ+ [संज्ञा पु.] देश.) एक प्रकार का पदार्थ।

चेरुई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार मिट्टी का बना बड़ा घड़ा।

चेरू [संज्ञा स्त्री.] (?) मिरजापुर जिले दक्षिण भारत में रहने वाली एक वन जाति।

चेल [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़ा। वस्त्र।

चेलक [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन मुनि।

चेलकाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शिष्यवर्ग। चेलों का समूह।

चेलगंगा [संज्ञा स्त्री.] एक प्राचीन तीर्थ नाम।

चेलवा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चेल्हवा'।

चेलहाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शिष्यवर्ग। चेलों का समूह।

चेल्हाई करना-भेंट, पूजा आदि संग्रह करने के लिए चेलों में घूमना।

चेला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चेलिन, चेली] १-दीक्षा लिया हुआ शिष्य। २-वह जिसे कुछ सिखाया गया हो।

चेला मूंड़ना-शिष्य बनाना।

[संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का सांप। २-एक प्रकार की मछली।

चेलान, चलाल [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज लता।

चेलाशक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चलौसक'।

चेलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चेलिकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चेलाई'।

चेलिन, चेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शिष्या

२-शिक्षा ग्रहण करने वाली छात्रा।

चेलुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बौद्ध भिक्षुक।

चेल्हवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

चेवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी का नाम।

चेष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) चेष्टा करने वाला।

चेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर की वह स्थिति जिसके द्वारा चित्त का भाव प्रगट होता है। २-इच्छा। कामना। ३-श्रम। परिश्रम। ४-कार्य। ५-उद्योग। प्रयत्न। ६-नायक अथवा नायिका का वह प्रयत्न जो नायक या नायिका के प्रति प्रेम प्रकट करने के निमित्त हो।

चेष्टानाश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलय। सृष्टि का अन्त।

चेष्टाबल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में ग्रहों की विशेष गति या स्थिति के अनुसार अधिक बलवान हो जाना।

चेस [संज्ञा पु.] (अं.) १-लोहे का वह चौखटा जिसमें कम्पोज किये हुए टाइप कसकर प्रेस में रखे जाते हैं। २-शतरंज का खेल।

चेस-बोर्ड-शतरंज की बिसात।

चेहरई [वि.] (हिं.) १-हलका गुलाबी रंग। २-चित्र अथवा मूर्त्ति की बनावट में चेहरे की रंगत।

चेहरा [संज्ञा पु.] (फा.) १-गले के ऊपर के अंग का अगला भाग। मुख। बदन। २-किसी वस्तु का सामने का भाग। सामने का रुख। ३-मुख की आकृति का सांचा। जो स्वांग बनाने के लिए मुंह पर लगाया जाता है।

चेहरा उतरना-चेहरे का रंग फीका पड़ना। *चेहरा तमतमाना*-(क्रोध या गरमी से) मुख पर लाली होना। *चेहरा बिगड़ना*-मुँह का रंग फीका पड़ना। *चेहरा बिगाड़ना*-इतना मारना कि सूरत तक न पहचानी जाय। *चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना*-मुख पर उदासी छाना।

चेहलुम [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमान सम्प्रदाय में होने वाली एक रसम जो मुहर्रम से चालीसवें दिन होती है।

चेंटी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिऊँटी'।

चैंसलर [संज्ञा पु.] (अं.) विश्वविद्यालय का प्रमुख अधिकारी।

चैक [संज्ञा पु.] (हिं.) समूह। ढेर।

चैक [संज्ञा पु.] देखो 'चेक'।

चैकित [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम।

चैकितान [वि.] (सं.) जो चेकितान के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

चैकित्य [संज्ञा पु.] (सं.) चैकित ऋषि के गोत्र का।

चैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना। २-चैती या रब्बी की फसल।

चैतन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-चेतन आत्मा। ज्ञान। चेतना। ३-ब्रह्म। ४-ईश्वर। ५-बंगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा।

[वि.] (सं.) १-चेतनायुक्त। सचेत। २-होशियार। सावधान।

चैतन्यता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चेतनता'।

चैतन्यभैरवी [संज्ञा स्त्री.] तांत्रिकों की एक भैरवी का नाम।

चैता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक पक्षी जिसकी छाती और पीठ चितकबरी तथा सिर काला होता है २-देखो 'चैती'।

चैती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चैत में काटी जाने वाली फसल। २-एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

[वि.] (हिं.) चैत-संबन्धी। चैत का।

चैत्त [वि.] (सं.) चित्त-संबन्धी। चित्त का।

चैत्तक [वि.] देखो 'चैत्र'।

चैत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकान। घर। २-मंदिर देवालय। ३-यज्ञशाला। ४-वह चबूतरा जो किसी देवता के नाम पर बनाया गया हो। ५-बौद्ध सन्यासियों के रहने का मठ या विहार। ६-बुद्ध। ७-चिता। ८-बुद्ध की मूर्त्ति।

[वि.] (सं.) चिता-संबंधी। चिता का।

चैत्यक [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वत्थ। पीपल।

चैत्यतरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल। २-अशोक-वृक्ष।

चैत्यद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल। २-अशोक वृक्ष।

चैत्यपाल [संज्ञा पु.] (सं.) चैत्य का रक्षक या प्रधान अधिकारी।

चैत्यमुख [संज्ञा पु.] (सं.) कमंडलु।

चैत्ययज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

चैत्यवंदन, चैत्यवन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों अथवा बौद्धों की मूर्त्ति। २-बौद्ध या जैनियों का मंदिर। ३-चैत्य संबंधी धन की रक्षा।

चैत्यविहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्धों का मठ। २-जैनियों का मठ।

चैत्यवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) 'चैत्यतरु'।

चैत्यस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह मंदिर जहाँ बुद्धदेव की मूर्त्ति स्थापित हो। २-पवित्र स्थान।

चैत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-चैत का महिना। २-बौद्ध भिक्षु। ३-यज्ञभूमि। ४-मन्दिर।

चैत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) चैत्रमास। चैत।

चैत्रगौड़ी [संज्ञा त्री.] (सं.) ओड़व जाति की एक रागिनी जो रात्रि के प्रथम पहर में गाई जाती है।

चैत्रमख [संज्ञा पु.] (सं.) चैत्रमास के उत्सव।

चैत्ररथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर के बाग का नाम। २-एक प्राचीन मुनि का नाम।

चैत्ररथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर का बाग।

चैत्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

चैत्रसखा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

चैत्रावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चैतसुदी तेरस। २-चैत की पूर्णिमा।

चैत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत की पूर्णिमा।

चैदिक [वि.] (सं.) चेदिदेश-सम्बन्धी।

चैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुपाल।

चैन [संज्ञा पु.] (हिं.) आराम। सुख। आनंद।

चैन उड़ाना-आनन्द करना। *चैन पड़ना*-आनन्द करना। *चैन से कटना*-सुखपूर्वक समय बीतना।

चैपल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

चैयाँ+* [संज्ञा स्त्री.] (?) बाँह।

चैराही+ [वि.] (हिं.) देखो 'चेहरई (रंग)'।

चैल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्त्र। कपड़ा। २-पोशाक।

चैलक [संज्ञा. पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति।

चैला [संज्ञा पु.] (हिं.) चीरी हुई जलाने की लकड़ी।

चैलाशक [संज्ञा पु.] (सं.) एक छोटा कीड़ा जो कपड़ों को खाने वाले कीड़ों को खाता है।

चैलिक [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़े का टुकड़ा।

चैली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लकड़ी का छोटा टुकड़ा। पच्चर। २-नाक से निकलने वाले (गरमी से) खून का जमा हुआ टुकड़ा या लच्छा।

चैलेंज [संज्ञा पु.] (अं.) चुनौती।

चोंक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चूमने पर दाँत लगने का चिह्न।

चोंगा [संज्ञा पु.] (?) १-एक ओर से बंद बांस की खोखली नली जो औजार रखने के काम आती है। २-इसी आकार-प्रकार की कागज आदि की नली।

चोंथना*+ [क्रि. स.] (हिं) देखो 'चुगना'।

चोंच [संज्ञा. स्त्री] (हिं.) पक्षी के मुख का नोकीला अग्रभाग। चंचु।

दो-दो चोंच होना-साधारण सी कहा-सुनी होना।

चोंचला+ देखो 'चोचला'।

चोंटना [क्रि. स.] (हिं.) नोचना।

चोंटली [संज्ञा स्त्री.] (?) सफेद घुंघची।

चोंडा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) झोंटा।

चोंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खेत के पास का बड़ छोटा कच्चा कुंआ जो सिंचाई के उपयोग

में आता है। + २-सिर। माथा।

चोंथ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बार में गिरने वाला (गाय भैंस का) गोबर।

चोंथना [क्रि. स.] (हिं.) नोचना। खसोटना। चीथना।

चोंधर [वि.] (हिं.) १-बहुत छोटी आँख वाला। २-मूर्ख। गावदी।

चोंधरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'चोंधर'।

चोंप+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चोप'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चोब'।

चोआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो चंदन और देवदार के बुरादे तथा मरसे के फूलों को मिलाकर और गरम करके टपकाने बनता है। २-वह कंकड़ या पत्थर जो तोलने में किसी बाँट के अभाव में रखा जाता है। ३-देखो 'चोटा'।

चोई [संज्ञा स्त्री.] (?) भिगोकर मलने पर निकलने वाला दाल का छिलका।

चोक [संज्ञा पु.] (सं.) भड़भाड़ की जड़ जो दवा के काम में आती है।

चोकर [संज्ञा पु.] (हिं.) पिसे हुए अन्न को चालने से बचने वाला छिलका या भूसी।

चोका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चूसने की क्रिया। २-स्तन। छाती।

चोक्ष [वि.] (सं.) १-शुद्ध। पवित्र। २-दक्ष। होशियार। ३-तेज। तीक्ष्ण। ४-प्रशंसित।

चोख+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेजी। फुरती। वेग। [वि.] देखो 'धोखा'।

चोखना+ [क्रि. स.] (हिं.) चूसना। चूसकर पीना।

चोखरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चूहा। मूसा।

चोखा [वि.] (हिं.) १-शुद्ध। बे-मिलावट का। उत्तम। श्रेष्ठ। ३-धारदार। पैना।

[संज्ञा प.] (हिं.) १-बैंगन का भरता। २-आलू का भरता। ३-चावल।

चोखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चोखापन। २-चूसने की क्रिया या भाव। चुसाई।

चोगर [संज्ञा पु.] (हिं.) उल्लू के समान आँख वाला घोड़ा।

चोगा [संज्ञा पु.] (तु.) पैरों तक लटकता हुआ ढीला अंगा। लबादा।

चोच [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाल। केला। ३-नारियल। ४-दालचीनी। ५-तेजपात।

चोचलहाई [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] चोचला करने वाली। नखरेबाज।

चोचला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जवानी या उमङ्ग की चेष्टाएं। हावभाव। २-नखरा। नाज।

चोज [संज्ञा पु.] (?) १-दूसरों को हँसाने वाली चमत्कारपूर्ण मनोविनोद करने वाली उक्ति। २-व्यंगपूर्ण उपहास।

चोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु पर किसी अन्य वस्तु के वेगपूर्वक आकर गिरने से होने वाला परिणाम जो प्रायः अनिष्टकर होता है। आघात। २-इस क्रिया के द्वारा होने वाली हानि अथवा अनिष्ट। ३-इस क्रिया के द्वारा देह पर होने वाला चिह्न अथवा घाव। जख्म। इंजरी। ४-आक्रमण के समय होने वाला हथियार का वार। ५-किसी को हानि पहुँचाने के निमित्त चली जाने वाली चाल। ६-चुभती हुई बात। व्यंग। ताना। ७-बार। दफा।

चोट खाना-आघात या प्रहार सहना। *चोट उभरना*-चोट में फिर से पीड़ा होना।

चोट खाली जाना-वार का निशाने पर न बैठना। *चोट बचाना*-चोट न लगने देना।

चोटइल+ [वि.] (हिं.) देखो 'चुटैल'।

चोटहा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चोटही] जिस पर चोट का चिह्न हो।

चोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) राब का छाना हुआ पसेव। चोआ। माठ।

चोटाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) चोट खाना। घायल होना।

चोटार+ [वि.] (हिं.) १-चोट करने वाला। २-चोट खाया हुआ। चुटैल।

चोटारना+* [क्रि. अ.] (हिं.) चोट करना।

चोटिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चोटी'।

चोटिया+ [क्रि. स.] (हिं.) १-चोट लगाना। २-चोटी पकड़ना। ३-बल प्रयोग करना।

चोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खोपड़ी के मध्य के वह थोड़े से बाल जिन्हें हिन्दू लोग धार्मिक (या अपने सम्प्रदाय) का चिह्न समझते हैं। शिखा। चुंदी। २-एक में गुंथे हुए स्त्रियों के बाल। ३-चोटी में बांधने का डोरा या फीता। ४-जूड़े में खोंसने का एक गहना। पक्षियों के सिर के पर की कलगी। ५-शिखर। ऊपर उठा हुआ भाग।

चोटी का-सर्वोत्तम। चुना हुआ। *चोटी का पसीना एड़ी पर आना*-कड़ा परिश्रम करना। *चोटी दबाना या हाथ में होना*-बस में होना।

चोटीदार [वि.] (हिं.) जिसके चोटी हो। चोटी वाला।

चोटीपोटी+ [वि.] (देश.) [स्त्री. प्र.] १-चिकनी चुपड़ी (बात)। २-झूठी या बनावटी (बात)।

चोटीवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) भूत-प्रेत या पिशाच।

चोट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चोट्टी] चोर।

चोड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तरीय वस्त्र। २-चोल नामक एक प्राचीन देश।

चोड़क [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पहनने का वस्त्र।

चोड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी गोरखमुंडी।

चोड़ी [संज्ञा स्त्री] (सं) स्त्रियों के पहनने की साड़ी।

चोतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दालचीनी। २-छाल। वल्कल।

चोथ [संज्ञा पु.] देखो 'चोंथ'।

चोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाबुक। २-नुकीले सिरे की छड़ी।

चोदक [वि.] (सं.) प्रेरणा करने वाला। उकसाने वाला।

चोदक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) अत्यधिक कामी।

चोदन [संज्ञा पु.] (हिं.) चोदने या प्रसंग करने का भाव।

[संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चोदना'।

चोदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह वाक्य जिसमें कोई कार्य करने का विधान हो। २-प्रेरणा। ३-योग आदि के संबंध का प्रयत्न।

[क्रि. स.] (हिं.) स्त्री प्रसंग या संभोग करना।

चोदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चोदने की क्रिया या भाव।

चोदास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कामेच्छा।

चोदासा [वि.] (हिं.) [स्त्री. चोदासी] जिसे संभोग की प्रबल इच्छा।

चोदू [संज्ञा पु.] (हिं.) अत्यन्त कामी।

चोद्य [वि.] (सं.) प्रेरणा करने योग्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रश्न। सवाल। २-वादविवाद में पूर्व पक्ष।

चोप* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चाह। इच्छा। २-शौक। रुचि। ३-उत्साह। उमंग। ४-बढ़ावा। उत्तेजना। चोब। ६-चेप।

चोपदार [संज्ञा पु.] देखो 'चोबदार'।

चोपना* [क्रि. अ.] (हिं.) मुग्ध होना। मोहित हो जाना।

चोपी* [वि.] (हिं.) १-चाह रखने वाला। २-उत्साही।

चोब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-तम्बू या शामियाना खड़ा करने का खम्भा। २-नगाड़ा या तासा बजाने की लकड़ी। ३-सोने या चाँदी से मंढा हुआ डंडा। ४-छड़ी। सोंटा। डंडा।

चोबकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का जरदोज़ी का काम।

चोबचीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक काष्ठौषध।

चोबदार [संज्ञा पु.] (फा.) चोब या आसा लेकर चलने वाला नौकर।

चोबा [संज्ञा पु.] तम्बू या शामियाना खड़ा करने का डंडा।

चोभाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'चुभाना'।

चोभा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पोटली जिसमें दवायें बाँधकर शरीर के पीड़ित अंग को सेंकते हैं। (विशेषतः आँख)। लोथा।

[illegible]-औषध की पोटली में बांधकर उससे शरीर के किसी पीड़ित अंग को सेंकना।

[illegible] [संज्ञा पु.] देखो 'चोआ'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिपकर पराई वस्तु का हरण करने वाला। चुराने या चोरी करने वाला। तस्कर। २-मन में दुर्भाव आना। ३-घाव का अंदर ही अंदर बढ़ने वाला विकार। ४-संधि। दरज। ५-खेल में दूसरों को दाव देने वाला व्यक्ति, जिसे दंड स्वरूप [illegible] काम करना पड़े। ६-चोरक नामक एक गंधद्रव्य।

[illegible] पड़ना-चोर का आकार चुरा ले जाना। *[illegible] पर मोर पड़ना*-धूर्त्त के साथ धूर्त्तता होना। *मन में चोर बैठना*-मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना। *कामचोर*-काम में आलस्य करने वाला।

[illegible] [वि.] (सं.) आंतरिक भावों को छिपाने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) उरद का कड़ा दाना जो न तो पिसता है और न पकाने पर गलता है।

[illegible], चोरकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) चोरक नामक गंधद्रव्य।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गंधद्रव्य

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) चोर। उचक्का।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं.) संदूक आदि में लगा हुआ गुप्त खाना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा चोर दरवाजा।

[illegible] [संज्ञा पु] (सं.) तांत्रिकों का एक [illegible]।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-वह पतली गली जिसमें से बहुत कम लोग चलते हैं। २-पाजामे का वह भाग जो बीच में रहता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) चोर। उचक्का।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं) दो वस्तुओं के मध्य का अवकाश। संधि। दरज।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (हिं.) वह भूमि जो ऊपर से तो ठस जान पड़े पर नीचे से पोली हो।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं.) चोर। चोट्टा।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं.) वह ताला जिसका पता सबको न लग सके, या गुप्त विधि से खुल सके।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं) गाय या भैंस का वह थन जिसमें वह दूध चुरा लेती है।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं.) बत्तीस दांतों के अतिरिक्त निकलने वाला दांत।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं) मकान के पीछे का गुप्तद्वार।

चोर-द्वार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चोर-दरवाजा'

चोरना [क्रि. स.] (हिं.) चुराना।

चोर-पट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का विषैला पौधा।

चोर-पहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) गुप्तरूप से बैठाया हुआ पहरा।

चोर-पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चोरपुष्पी'।

चोर-पुष्पिका, चोर-पुष्पी [संज्ञा स्त्री] (सं.) शंखाहुली नामक पौधा।

चोर-पेट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह पेट जिसमें गर्भ का उभाड़ दिखाई न दे। २-किसी वस्तु के मध्य का गुप्त स्थान।

चोर-बजार [संज्ञा पु.] (हिं.) क्रय-विक्रय का वह स्थान या बाजार, जिसमें चोरी से वस्तुएं बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदी और बेची जायँ। ब्लैकमार्केट।

चोर-बजारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर चोरी से खरीदने या बेचने का भाव।

चोर-बदन [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मनुष्य जिसकी मोटाई प्रकट न हो।

चोरबालू [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रेत जिसके नीचे दलदल हो।

चोरमहल [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा या रईस की रखेली का महल।

चोरमिहीचिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आंखमिचौली का खेल।

चोरमूंग [संज्ञा पु.] (हिं.) मूंग का कड़ा दाना।

चोरसीढ़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गुप्त सीढ़ी।

चोरस्नायु [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा ठोंठी।

चोरहटिया॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) चोरी का माल खरीदने वाला दुकानदार।

चोरहुली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चोर पुष्पी'।

चोरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोर पुष्पी।

चोरा-चोरी [क्रि. वि.] छिपे-छिपे। चुपके-चुपके।

चोराख्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चोरपुष्पी'।

चोराना॰ [क्रि. स.] चुराना।

चोरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोरी। चुराने का काम।

चोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चुराने की क्रिया। २-चुराने का भाव। ३-किसी से कोई बात गुप्त रखना या छिपाना।

चोरी चोरी-गुप्त रूप से। छिपकर। *चोरी लगना*-चोरी के दोष का आरोपण होना। *चोरी लगाना*-चोरी लगने का दोष आरोपित करना।

चोरीठा॰ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'चौरेठा'।

चोरीला [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का चारा।

चोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के दक्षिण में है। २-इस देश का निवासी। ३-चोली। ४-ढीला कुरता चोला ५-कवच।

चोलक [संज्ञा पु.] देखो 'चोल'।

चोलकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाँस का कल्ला। २-नारंगी का वृक्ष। ३-हाथ की कलाई। ४-करील का पेड़।

चोलखंड [संज्ञा पु.] (हिं.) एक चोली का कपड़ा।

चोलन [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'चोलकी'।

चोलना॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चोला'।

चोलरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्का लाल रंग।

चोलसुपारी संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिकनी सुपारी।

चोला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह लम्बा और ढीला ढाला कुरता जिसे साधु और फकीर लोग पहनते हैं। २-नये जन्मे बालक को पहले-पहल कपड़ा पहनाने की रसम। ३-शरीर। देह। बदन। तन।

चोला छोड़ना-प्राण त्यागना। *चोला बदलना*-१-एक शरीर को त्याग कर दूसरा शरीर धारण करना। २-नया स्वरूप धारण करना।

चोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंगिया की तरह का स्त्रियों का एक पहनावा।

चोलीदामन का साथ-अधिक घनिष्ठता।

चोलीमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वाममार्ग का एक भेद।

चोल्ला+॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चोला'।

चोवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चोआ'।

चोष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग (भावप्रकाश)।

चोषक [वि.] (सं.) चूसने वाला।

चोषण [संज्ञा पु.] (सं.) चूसने की क्रिया।

चोष्य [वि.] (सं.) चूसने के योग्य। चूष्य।

चोसा [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी रेतने की रेती।

चोस्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम जाति का घोड़ा। २-सिंदुवर नामक वृक्ष।

चोहान [संज्ञा पु.] देखो 'चौहान'।

चौआलिस+ [वि.] (हिं.) चौवालिस।

चौंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भय, आश्चर्य, पीड़ा आदि के सहसा उपस्थित होने से शरीर का झटके से हिल उठना। झिझक। भड़क।

चौंकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भय, पीड़ा आदि के कारण सहसा काँप उठना। २-चौकन्ना या खबरदार होना। ३-चकित होना। भौचक्का होना। ४-शंकित होना। भड़काना।

चौंकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-सहसा भय उत्पन्न करके चौंका देना। भड़काना। २-चकित या विस्मित करना। ३-चौकन्ना करना। सतर्क करना।

चौंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंचाई के लिये भरा हुआ वह गड्ढा जिसमें से पानी ऊपर चढ़ाया जाता है।

चौंटली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेद घुंघची।

चौंडोल+ [संज्ञा पु.] देखो 'चंडोल'।

चौंढा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी गिराने की कुएं की ढाल। लिलारी। छिउलारा।

चौंतरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चबूतरा'।

चौंतिस [वि.] (हिं.) तीस और चार, ३४।

चौंतिसवाँ [वि.] (हिं.) तेंतीस के बाद वाला।

चौंतीस [वि.] (हिं.) चौंतिस, ३४।

चौंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमक।

चौंधना* [क्रि. अ.] (हिं.) इस प्रकार चमकना कि किसी की आंखों के आगे चकाचौंध हो।

चौंधियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अधिक प्रकाश या चमक के सामने आंखें झिलमिलाना। चकाचौंध होना। २-आँख से न सूझना।

चौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चकाचौंध। तिलमिलाहट।

चौंबक, चौम्बक [वि.] (सं.) १-जिसमें चुंबक या आकर्षण शक्ति हो। २-जिसमें चुम्बक मिला हो।

चौंर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चँवर। २-भंड़भाँड़ की जड़। ३-झालर। फुंदना। ४-पिंगल में गगण के पहले भेद (ऽ) की संज्ञा।

चौंरगाय, गाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुरागाय।

चौंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज रखने का गड्ढा। गाड़।

चौंराना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-चंवर डुलाना। २-बुहारना। झाड़ू देना।

चौंरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चँवर के समान घोड़े की पूंछ का गुच्छा जो मक्खी उड़ाने के काम आता है। २-चोटी बांधने की डोरी। ३-सफेद पूंछ वाली गाय।

चौंसठ [वि.] (हिं.) साठ और चार, ६४।

चौंसठवा [वि.] (हिं.) तिरेसठ के बाद वाला। '६४'।

चौंह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गलफड़ा।

चौंही+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) परिहारी नामक हल की एक लकड़ी।

चौ [वि.] (हिं.) चार (संख्या)। [संज्ञा पु.] (हिं.) मोती तोलने का एक मान।

चौअन [वि.] (हिं.) देखो 'चौवन'।

चौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौपाया। (गाय, बैल)। २-हाथ की चार उंगलियों का समूह। ३-हाथ की उंगलियों पर लपेटा हुआ तागा। ४-चार उंगल की नाप।

चौआई+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौवाई'।

चौआना+* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चकपकाना। चकित होना। २-चौकन्ना होना।

चौक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौकोर खुली भूमि। २-घर के बीच का चौकोर स्थान। आँगन। सहन। ३-चौखूटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४-मंगल अवसर पर पूजा के लिये आटे, अबीर आदि की लकीरों से बनाहुआ चौकोर चित्रण। ५-चौहट्टा। ६-चौसर की बिसात। ७-सामने के चार दंतों की पंक्ति।

चौक-गोभी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार का गोभी।

चौकठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौखट'।

चौकठा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चौखटा'।

चौकड़ [वि.] (हिं.) अच्छा। बढ़िया।

चौकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कान की बाली जिसमें दो-दो मोती होते हैं। २-फसल की वह बटाई जिसमें जमींदार का चौथा हिस्सा मिलता है।

चौकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हिरन की दौड़ जिसमें वह चारों पैर फेंकता है। चौफाल कुदान। २-चार आदमियों का गुट। ३-एक प्रकार का गहना। ४-चार युगों का समूह। ५-पलथी। ६-चार रस्सियों द्वारा एक साथ बुनाई करने की एक रीति। ७-चार घोड़ों की गाड़ी।
चौकड़ी भूल जाना-भौचक्का रह जाना। *चांडाल चौकड़ी*-उपद्रवी लोगों का समूह।

चौकनिकास [संज्ञा पु.] (हिं.) बाजार के चौक में बैठने वाले दुकानदारों से लिया जाने वाला महसूल।

चौकन्ना [वि.] (हिं.) १-सावधान। चौकस। सजग। २-आशंकित। चौंका हुआ।

चौकरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौकडी'।

चौकल [संज्ञा पु.] (सं.) चार मात्राओं का समूह।

चौकस [वि.] (हि.) १-सावधान। सचेत। चौकन्ना। २-पूरा। ठीक। दुरुस्त।

चौकसाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौकसी'।

चौकसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सावधानी। खबरदारी।

चौका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पत्थर का चौकोर टुकड़ा। २-रोटी बेलने का चकला। ३-आगले चार दाँतों की पंक्ति। ४-सीसफूल। ५-रसोई का स्थान (हिन्दु)। ६-धरती पर मिट्टी या गोबर का लेप। ७-एक ही तरह की चार चीजों का समूह।
चौका बरतन करना-बरतन मांजकर रसोई के स्थान को पोतना। *चौका लगाना*-चौपट करना।

चौकिया-सोहागा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा सुहागा।

चौकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काठ या पत्थर का चार पायों वाला आसन। छोटा तख्त। २-कुरसी। ३-खम्भे के ऊपर अथवा नीचे का चौकोर भाग। ४-पड़ाव का स्थान। अड्डा। सराय। ५-मंदिर में मंडप का प्रवेश द्वार। ६-वह स्थान जहाँ रक्षा के लिए थोड़े से सिपाही रहते हों। ७-रक्षा के लिए नियुक्त सिपाही का पहरा। ८-देवी-देवता आदि पर चढ़ाई जाने वाली भेंट। ९-जादू। टोना। १०-तेलियों के कोल्हू में लगी एक लकड़ी। ११-गले का एक गहना। १२-रोटी बेलने का छोटा चकला।
चौकी देना-पहरा देना। *चौकी बिठाना*-रक्षा या चौकी के लिए सिपाही तैनात करना। *चौकी बैठाना*-पहरा बैठाना।

चौकी-घर [संज्ञा पु.] (हिं.) चौकीदार के पहरा देने का वह स्थान या छोटा घर जिसमें एक आदमी के खड़े रहने भर को जगह होती है। स्टैंड-पोस्ट।

चौकीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहरा देने वाला। पहरेदार। २-गोंडैत।

चौकीदारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौकीदारी'।

चौकीदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चौकीदार का काम। २-चौकीदार का पद। ३-चौकीदार का मासिक चंदा।

चौकुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल की वह बंटाई जिसमें एक चौथाई जमींदार लेता है।

चौकोन, चौकोना [वि.] (हिं.) चार कोनों वाला। चौखूंटा।

चौकोर [वि.] (हिं.) १-जिसके चारों कोने व पार्श्व बराबर हों। २-क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।

चौखंड [संज्ञा पु.] (देश.) १-चार खंड या मंजिल वाला मकान। २-चार आंगन या चौकवाला मकान।

चौखट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चार लकड़ियों का वह ढांचा जिसमें किवाड़ लगे होते हैं। २-देहली। दहलीज।
चौखट लाँघना-घर के भीतर या बाहर जाना।

चौखटा [संज्ञा पु.] (हिं.) चित्र या शीशा जड़ने का चोकोर ढांचा।

चौखना [वि.] (हिं.) चौमंजिला (मकान)।

चौखा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां चार गांवों की सीमा मिलती है।

चौखानि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चार प्रकार के जीव (अंडज, पिंडज, स्वेदज और उद्भिज)।

चौखूँट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चारों दिशा। २-भूमंडल। [क्रि. वि.] चारों ओर।

चौखूँटा [वि.] (हिं.) चतुष्कोण। चौकोना।

चौगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खरहा। खरगोश। २-देखो 'चौघड़ा'।

चौगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौरवा । चौसिंहा । २-चार वस्तुओं का समूह ।

चौगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस की फट्टियों का बना ढांचा जिसमें जानवर फँसाते हैं ।

चौगान [संज्ञा पु.] (फा.) १-गेंदबल्ले का एक खेल । २-चौगान नामक खेल खेलने का मैदान । ३-चौगान खेलने का बल्ला । ४-नगाड़ा बजाने की लकड़ी ।

चौगानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) हुक्के की धुआं खींचने की सीधी नली । निगाली । सटक ।

चौगिर्द [क्रि. वि.] (हिं + फा) चारों ओर । चारों तरफ ।

चौगुन+ [वि.] (हिं) चौगुना । चतुर्गुण ।

चौगुना [वि.] (हिं.) [स्त्री. चौगुनी] जितना हो उसका चार बार और । चतुर्गुण । मु० चौगुना होना-उत्साह बढ़ना ।

चौगूना* [वि.] (हिं.) देखो 'चौगुना' ।

चौगोड़ा [वि.] (हिं) १-चार पैर वाला । २-बहा ।

चौगोड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की ऊंची चौकी जिसके ऊपर के लिए पायों में सीढ़ीनुमा डंडे लगे रहते हैं । टिकटी । २-चिड़िया फँसाने का ढांचा ।

चौघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिठाई आदि रखकर भेजने की चौखूंटी तशतरी ।

चौगोशिया [वि.] (फा.) चौकोर । [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की टोपी । [संज्ञा पु.] तुरकी घोड़ा ।

चौघड़ [संज्ञा पु.] (हिं) चौड़े-चिपटे चाबने वाले दांत । चौभर ।

चौघड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पान इलायची रखने का चार खानों का डब्बा । २-तरकारियां या मसाले रखने का चार खाने का बरतन । ३-पत्ते में बंधे चार पान के बीड़े । ४-दीवाली के दिनों में बिकनेवाला एक खिलौना जिसमें चार कुल्हिया होती हैं ।

चौघड़ी+ [वि] (हिं.) [स्त्री. प्र.] चार या परत वाली ।

चौघर+ [वि.] (देश.) घोड़ों की एक चाल । सरपट ।

चौघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पीतल की दीवट जिसके दीये में चार बत्तियां जलती हैं । २-देखो 'चौघड़ा' ।

चौघोड़ी*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चार घोड़ों की गाड़ी या रथ ।

चौचंद*+ [संज्ञा पु.] (हिं) बदनामी की चर्चा । निंदा । चौचंद पारना-बदनामी करना ।

चौचंदहाई [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] सब की निंदा करती फिरने वाली ।

चौज [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'चोज' ।

चौजुगी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) चार युगों का काल ।

चौड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) चूड़ाकरण संस्कार ।

चौड़ा [वि.] (हिं) १-लम्बाई से भिन्न दिशा में विस्तृत । जिसमें चौड़ाई हो । २- विस्तृत । [संज्ञा पु.] अनाज रखने का गड्ढा ।

चौड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लम्बाई से भिन्न दिशा का विस्तार । अर्ज । पनाह ।

चौड़ान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौड़ाई ।

चौड़ाना+ [क्रि. स] (हिं.) चौड़ा करना । फैलाना ।

चौड़ाव [संज्ञा प.] (हिं.) चोड़ान ।

चौड़ी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'चौड़ा' ।

चौडोल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'चंडोल' । २-एक प्रकार का बाजा ।

चौतग्गी [वि] (हिं) चार तागे मिलाया हुआ डोरा ।

चौतनियां [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-चौतनी । २-चोली । अंगिया ।

चौतनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बच्चों की टोपी जिसमें चार बंद लगे होते हैं ।

चौतरका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का खेमा ।

चौतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चबूतरा' ।

चौतही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चार तह करके बिछाने की मोटी चांदनी ।

चौतारा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा जिसमें चार तार लगे होते हैं ।

चौताल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मृदंग का एक ताल इसमें ६ दीर्घ या १२ लघु मात्राएं होती हैं । २-एक प्रकार का गीत ।

चौताला [वि.] (हिं.) चार ताल वाला ।

चौताली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कपास का डोडा जिसमें से रुई निकलती है ।

चौतुका [वि.] (हिं.) जिसमें चार तुक हों । [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छंद जिसकी चारों तुक मिलती हों ।

चौथ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रतिपदा की चौथी तिथि । २-चतुर्थांश । चौथाई भाग । ३-आमदनी का चतुर्थांश जो मराठे कर के रूप में लेते थे । *चौथ का चाँद-भाद्रशुक्ल-चतुर्थी का चन्द्रमा ।* +[वि.] (हिं.) चौथा ।

चौथपन* [संज्ञा पु.] (हिं.) मनुष्य के जीवन की चौथी अवस्था । बुढ़ापा ।

चौथा [वि.] (हिं.) [स्त्री.चौथी] तीसरे के बाद का ।

चौथाई [संज्ञा पु.] (हिं.) चतुर्थांश । चौथा भाग ।

चौथि+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौथ' ।

चौथिआई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौथाई' ।

चौथिया [संज्ञा पु.] (हिं) चौथे दिन आने वाला ज्वर । [वि.] (हिं.) चौथाई या चतुर्थांश का अधिकारी ।

चौथी [वि.] (हिं) [स्त्री. प्र] देखो 'चौथा' । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह के चौथे दिन होने वाली एक रस्म जिसमें वर और कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं । २-जमींदार को मिलने वाला फसल का चौथाई अंश ।

चौथैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चौथाई । चतुर्थांश । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी नाव ।

चौदंता [वि.] (हिं.) १-चार दांत वाला । बचपन और जवानी के बीच का (घोड़ा या बैल) । २-अल्हड़ । उग्र । स्यामदेश के हाथी की एक जाति ।

चौदंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अल्हड़पन । ढिठाई । उद्दंडता । [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'चौदंता' ।

चौदश [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौदस' ।

चौदस [संज्ञा स्त्री.] (हिं) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि ।

चौदह [वि.] (हिं.) दस और चार, १४ ।

चौदहवां [वि.] (हिं.) तेरह के बाद का ।

चौदाँत [संज्ञा पु.] (हिं.) दो हाथियों की लड़ाई ।

चौदाँवाँ [वि] (हिं.) चार दाँव वाला (जूए का खेल) ।

चौदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौना' ।

चौदानिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौदानी' ।

चौदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सोने की जड़ाऊ वह बाली जिसमें चार पत्तियाँ लगी होती हैं । २-कान की वह बाली जिसमें मोती के चार दाने लगे हों ।

चौदौआँ, चौदौवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'चौदाँवाँ'

चौधराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौधरी का काम या पद ।

चौधरात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौधराना ।

चौधराना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौधरी का काम या पद । २-चौधरी को उसके कामों के बदले में मिलने वाला धन ।

चौधरी [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी जाति अथवा समाज का मुखिया ।

चौना [संज्ञा पु.] (हिं.) कूएँ के जगत पर की ढाल । लिलारी ।

चौप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चोप' ।

चौपई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएं होती हैं और अन्त गुरु लघु होते हैं ।

चौपखा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चहारदिवारी ।

चौपग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपाया ।

चौपट [वि.] (हिं.) १–चारों ओर से खुला हुआ। २–नष्टभ्रष्ट। विध्वंस। बरबाद।
चौपट चरण–जिसके कहीं पहुँचते ही सब कुछ नष्टभ्रष्ट हो जाय।

चौपटहा [वि.] (हिं.) चौपट करने वाला। नष्ट करने वाला।

चौपटा [वि.] (हिं.) देखो 'चौपटहा'।

चौपड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चौसर का खेल। २–चौसर की बिसात। ३–चौसर की बुनावट।

चौपत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कपड़े की तह। २–देखो 'चौपतिया'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर का वह टुकड़ा जिसमें कील जड़ी होती है जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है।

चौपताना* [क्रि. स.] (हिं.) कपड़े की तह लगाना।

चौपतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार की घास। २–एक प्रकार का साग। ३–चार पत्तियों वाला कशीदेकारी का काम।

चौपथ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चौराहा। चौरास्ता। २–चौपत नाम का पत्थर जिसपर कुम्हार का चाक रहता है।

चौपद* [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपाया।

चौपया [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपाया।

चौपर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौपड़। चौसर।

चौ-परताना [क्रि. स.] (हिं.) कपड़े आदि की तह लगाना।

चौपल [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपत।

चौ-पहरा [वि.] (हिं.) चार पहर का।

चौ-पहल [वि.] (हिं.) चार पहल या पार्श्व का। वर्गात्मक।

चौ-पहला [वि.] (हिं.) देखो 'चौ-पहल'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का डोला।

चौ-पहलू [वि.] (हिं.) देखो 'चौ-पहल'।

चौ-पहिया [वि.] (हिं.) चार पहियों वाला।
[संज्ञा. स्त्री.] चार पहियों वाली गाड़ी।

चौ-पहिलू [वि.] (हिं.) देखो 'चौ-पहला'।

चौपा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौपाया'।

चौपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती हैं। २–चारपाई। खाट।

चौपाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौपाल'।

चौपायनि [संज्ञा पु.] (सं.) चुपऋषि के वंशज।

चौपाया [संज्ञा पु.] (हिं.) चार पैरों वाला (गाय भैंस, बैल आदि) पशु।

चौपार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौपाल'।

चौपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चारों ओर से खुली हुई बैठक। २–बैठक। ३–दालान। बरामदा। ४–घर के आगे का छायादार चबूतरा। ५–एक प्रकार की खुली पालकी।

चौपुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बड़ा कुआं जिस पर चार चरसे एक साथ चल सकें।

चौपैया [संज्ञा पु.](हिं.) १–चार चरणोंवाला एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १०, ८ और १२ के विश्राम से ३० मात्राएं होती हैं और अन्त में एक गुरु होता है। + २–चारपाई। खाट

चौफला [वि.] (हिं.) जिसमें चार फल या धार हों (चाकू)।

चौफेर [क्रि. वि.] (हिं.) चारों ओर। चारों तरफ।

चौफेरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चारों ओर घूमना। परिक्रमा। +[क्रि. वि.] चारों ओर।

चौबंदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार की छोटी चुस्त मिरजई। +२–राजस्व। कर। घोड़े की चारों सूम की नालबन्दी।

चौबंसा [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक यगण होता है।

चौबगला [संज्ञा पु.] (हिं.) कुरता, फतुही इत्यादि में बगल के नीचे तथा कली के ऊपर का भाग। [वि.] चारों ओर का। चारों तरफ का।

चौबगली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बगलबंदी।

चौबच्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चहबच्चा'।

चौ-बरदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चार बैलों की गाड़ी।

चौ-बरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी घटना के चौथे बरस होने वाला उत्सव या क्रिया। २–मरने के चौथे बरस किया जाने वाला श्राद्ध।

चौबरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जमींदार को चतुर्थांश दी जाने वाली फसल की बटाई।

चौबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा। २–मथुरा का पंडा।

चौबाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौबे की स्त्री।

चौबाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चारों ओर से बहने वाली हवा। २–अफवाह। किंवदंती। ३–धूमधाम की चर्चा।

चौबाछा [संज्ञा पु.] (हिं.) दिल्ली के बादशाहों के समय लिया जाने वाला एक कर।

चौबार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौबारा'।

चौबारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कोठे के ऊपर की कोठरी जिसके चारों ओर दरवाजे हों। बंगला। २–खुली हुई बैठक।
[क्रि.वि.] चौथी बार।

चौबिस, चौबीस [वि.] (हिं.) बीस और चार, २४।

चौबीसवाँ [वि.] (हिं.) तेईस के बाद का।

चौबे [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. चौबाइन] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा।

चौबोला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ और सात के विश्राम से १५ मात्राएं होती हैं।

चौभड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौघड़'।

चौमंजिला [वि.] (हिं.) चार खंड या मंजिल वाला (मकान)।

चौमसिया [वि.] (हिं.) वर्षाऋतु के चार महीने में होने वाला।
[संज्ञा पु.] १–चार माशे की बांट। २–चार महीने के लिये रहने वाला हलवाहा (नौकर)।

चौमहला [वि.] (हिं.) चौमंजिला।

चौमार्ग+* [संज्ञा पु.] (हिं.) चौरस्ता। चौमुहानी।

चौमास [संज्ञा पु.] देखो 'चौमासा'।

चौमासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वर्षा के चार महीने। चातुर्मास। २–खरीफ की फसल उगने का समय। ३–वर्षाऋतु-सम्बन्धी कविता या गीत।

चौमासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरसात में गाया जाने वाला एक प्रकार का चलता गाना।

चौमुख [क्रि. वि.](हिं.) चारों तरफ। चारों ओर।

चौमुखा [वि.] (हिं.) (स्त्री. चौमुखी) चार मुहों वाला।
चौमुखा दीया–चारों ओर बत्तियों वाला दीया। *चौमुखा दीया जलाना*–दिवाला निकलना।

चौमुहानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौराहा। चौरस्ता। चतुष्पथ।

चौमेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) चार सीमा मिलने का स्थान।

चौ-मेखा [वि.] (हिं.) चार मेख या कीलों वाला। [संज्ञा पु.] एक कठोर दंड जिसमें अपराधी को लिटाकर चार मेखें ठोक दी जाती हैं।

चौरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार चलाने का एक हाथ। [वि.] खंग या तलवार के आघात से खंड-खंड।

चौरंगा [वि.] (हिं.) चार रंगों वाला।

चौरंगिया [संज्ञा पु.] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत।

चौर [संज्ञा पु.] (सं.) १–चोर। दूसरों का माल चुराने वाला। तस्कर। २–चौरपुष्पी। ३–एक गंध-द्रव्य। (हिं.) वह ताल जिसमें बरसाती पानी रुका रहे। खादर।

चौरस [वि.] (हिं.) १–समतल। जो ऊंचा-नीचा न हो। २–चौपहल। वर्गात्मक। [संज्ञा पु.] १–ठठेरों का एक औजार। २–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक यगण होता है।

चौरसा [संज्ञा पु.] (हिं) १-ठाकुरजी की शय्या की चादर। २-चार रुपये भर का बाँट। [वि] जिसमें चार रस हों।

चौरसाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समतल करने या चौरसाने की क्रिया या भाव। २-चौरसाने की मजदूरी।

चौरसाना [क्रि. स.] (हिं.) चौरस या समतल करना।

चौरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का गहना। २-चौरस या समतल करने का औजार। ३-अन्न रखने का कोठा।

चौरस्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) चौराहा।

चौरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौराहा'।

चौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चबूतरा। वेदी। २-वह चबूतरा जो किसी देवी, देवता, सती, भूत महात्मा आदि के स्थान पर बना हो। ३-चौपाल। ४-लोबिया। ५-सफेद पूंछ वाला बैल।
[संज्ञा स्त्री] (सं.) गायत्री का एक नाम।

चौराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) (?) चौलाई नामक साग। २-एक प्रकार की चिड़िया। ३-अगरवाले बनियों की एक रीति।

चौरानबे [वि] (हिं.) नब्बे और चार, ९४।

चौरासी [वि] (हिं.) अस्सी और चार, ८४। [संज्ञा पु.] १-अस्सी और चार की संख्या। २-जीवों की चौरासी लक्ष योनियां। ३-वे घुंघरू जो नाचते समय पैरों में बांधते हैं। ४-एक प्रकार की टाँकी। एक प्रकार की रुखानी।
चौरासी में पड़ना या भरमना–बार-बार अनेक योनियों में जन्म लेना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं) प्रात गाया जाने वाला एक संकरराग।

चौराहा [संज्ञा पु.] (हिं) वह स्थान जहां चार रास्ते या सड़कें मिलती हों। चौरास्ता। चौमुहानी।

चौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोटा चबूतरा। वेदी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-हिमालय और रावी के जंगलों में होने वाला एक वृक्ष। २-एक वृक्ष जिसकी छाल से रङ्ग और चमड़ा पकाया जाता है। [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-चोरी। २-गायत्री का एक नाम।

चौरेठा [संज्ञा पु.] (हि.) पानी में पीसा हुआ चावल।

चौर्य [संज्ञा पु.] (सं.) चोरी। स्तेय।

चौल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'चोल'।

चौलकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) चूड़ाकर्म। मुंडन।

चौलड़ा [वि.] (हिं) जिसमे चार लड़े हों।

चौला [संज्ञा पु] (देश.) लोबिया। बोड़ा।

चौलाई [संज्ञा स्त्री] (हिं) एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।

चौलावा* [संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसा कुआँ जिसमें एक साथ चार मोट चल सकें।

चौलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

चौलुक्य* [संज्ञा पु.] (सं) चुलुकऋषि के वंशज।

चौली [संज्ञा पु.] (देश.) बोड़ा।

चौवन [वि.] (हिं.) पचास और चार, ५४।

चौवा [संज्ञा पु.](हिं.) १-देखो 'चौआ'। २-ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियां हों। ३-चौपाया।

चौवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौबाई'।

चौवालीस [वि.] (हिं.) चालीस और चार, ४४।

चौस [संज्ञा पु.] (हिं.) चार बार जोता हुआ खेत। [संज्ञा पु.] (देश.) बुकनी। चूर। चूर्ण।

चौसर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार-चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़। २-इस खेल की बिसात। ३-चार लड़वाला हार।
चौसर का बाजार–चौक बाजार।

चौसरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चौसर'।

चौसिंघा [वि.] (हिं.) चार सींगों वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौसिंहा'।

चौसिंहा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ चार गांवों की सीमाएँ मिलती हों।

चौहट* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौहट्टा'।

चौहट्ट* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौहट्टा'।

चौहट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह चौकोर बाजार जिसमें चारों ओर दूकानें हों। चौक। ३-चौमुहानी।

चौहड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चौभड़'।

चौहत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और चार, ७४।

चौहद्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चारों ओर की सीमा।

चौहरा [वि.] (हिं.) १-चार परतवाला। २-चौगुना। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पत्ता जिसमें पान के लपेटे हों।

चौहलका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की गलीचे की बुनावट।

चौहान [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

चौहैं [क्रि. वि.] (देश.) चारों ओर। चारों तरफ

च्यवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूना। टपकना। २-एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश [संज्ञा पु.] (सं.) आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध अवलेह।

च्युत [वि.] (सं.) १-टपका हुआ। गिरा हुआ। २-पतित। ३-भ्रष्ट। ४-अपने स्थान से हटा या गिरा हुआ। ५-विमुख। पराङ मुख।

च्युतमध्यम [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक विकृत स्वर।

च्युतषड्ज [संज्ञा पु.] (सं.) मंदा नामक श्रुति से आरम्भ होने वाला एक विकृत स्वर (संगीत)।

च्युतसंस्कारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काव्य का व्याकरण-संबंधी दोष।

च्युतसंस्कृति [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'च्युतसंस्कारता'।

च्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-पतन। स्खलन। झड़ना। २-गति। उपयुक्त स्थान से हटना। ३-विमुखता। ४-अभाव। कसर। ५-गुदद्वार। ६-भग।

च्यूँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) च्यूँटी की जाति का एक बड़ा कीड़ा।

च्यूँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा। चींटी। पिपीलिका।
च्यूँटी की चाल चलना–बहुत धीमी चाल से चलना। *च्यूँटी के पर निकलना*–मृत्यु या विनाश का समय निकट आना।

च्यूड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'चिउड़ा'।

च्यूत [संज्ञा पु] (सं.) १-आम का वृक्ष। २-आम नामक फल।

छ

छ हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसका उच्चारण तालु से होता है।

छंग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गोद। अंक।

छंगा [वि] (हिं.) छः अँगुलियों वाला। जिसके एक पंजे में छः अंगुलियां हों।

छंगुनिया*+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'छगुनी'।

छंगुलिया, छंगुली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'छगुनी'।

छंगू [वि.] (हिं.) देखो 'छंगा'।

छंछाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

छंछोरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) छाछ से बनाया जाने वाला एक पकवान।

छँटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कटकर अलग होना। २-अलग होना। दूर होना। ३-समूह से दूर होना। छितरा जाना। ४-साथ छोड़ना। ५-धुना जाना। ६-साफ होना। मैल निकलना। ७-क्षीण होना।
छटा हुआ–माना हुआ चालाक। प्रसिद्ध धूर्त या बदमाश। *छंटे छंटे फिरना*–अलग-अलग रहना।

छँटनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छांटने की क्रिया या भाव। छंटाई। २-हटाने या अलग करने (नौकरी से) के लिये छांटने का काम।

(विशेषतः कार्यालय के कर्मचारियों को)। *रिडक्शन*।

छँटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना। २-चुनवाना। ३-छिलवाना।

छँटा [वि.] (हिं.) (स्त्री. छंटी) जिसके पिछले पैर बांधकर चरने को छोड़ा गया हो (पशु)।

छँटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छांटने का काम। अलग करने का काम। २-चुनने की क्रिया। ३-साफ करने का काम। ४-छांटने की मजदूरी।

छँटाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छँटवाना'।

छँटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छांटने की क्रिया या भाव। २-छाँटना।

छँटैल [वि.] (हिं.) १-छांटा या चुना हुआ। २-धूर्त्त। चालाक।

छँड़ना* [क्रि. स.] (हिं.) १-त्यागना। २-अन्न कूटना। छाँटना।
[क्रि. अ.] कै करना।

छँड़रना [क्रि. अ.] (हिं.) छेद का फैलकर या दबाव से कट जाना। छिनकना।

छँड़ाना+* [क्रि. स.] (हिं.) १-छुड़ाना। २-छीन लेना।

छँडुआ+ [वि.] (हिं.) १-जो छोड़ा गया हो। २-अदंड्य। मुक्त।
[संज्ञा पु.] १-देवता को उत्सर्ग किया हुआ पशु। २-छोड़ा हुआ ब्याज, कर या ऋण।

छंद, छन्द [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वेद। २-वर्ण मात्रा आदि की गिनती के विचार से होने वाली वाक्य रचना। पद्य। ३-अभिलाषा। इच्छा। ४-मनमाना आचरण। ५-बंधन। गाँठ। ६-संघात। समूह। ७-छल। कपट। ८-युक्ति। चाल। ९-रंगढंग। १०-अभिप्राय। मतलब। ११-एकान्त। निर्जन। १२-विष। जहर। १३-ढक्कन। आवरण। १४-पत्ती।
+[संज्ञा पु.] चूड़ियों के बीच में पहना जाने वाला एक आभूषण।

छंदक, छन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृष्णजी का एक नाम। २-गुप्त-मतपत्र। शलाका। *बैलट*। ३-छल।
[वि.] १-रक्षक। २-छली।

छंदकदान, छन्दकदान [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन के सम्बन्ध में मत देने की क्रिया या भाव। मतदान।

छंदकपत्र, छन्दकपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिस पर निर्वाचित होने वाले व्यक्तियों के के नाम अथवा विशिष्ट चिह्न रहते हैं और जिस पर अपनी ओर से चिह्न लगाकर मतदाता किसी चुनाव में खड़े होने वाले उम्मेदवार के पक्ष में अपना (वोट) मत देता है। *बैलट पेपर*।

छंदकपेटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुनाव की पेटी। वह संदूक जिसमें मतपत्र डाले जाते हैं। *बैलट बॉक्स*।

छंदज, छन्दज [संज्ञा पु.] (सं.) वह देवता जिन की स्तुति वेदों में है।

छंदपातन, छन्दपातन [संज्ञा पु.] (सं.) साधु वेष धारी ठग। छली।

छंदबंद, छन्दबन्द [संज्ञा पु.] (हिं.) छल। कपट। धोखा।

छंदस्कृत, छन्दस्कृत [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. छंदस्कृता) १-वेदमन्त्र। २-वेद में गायत्री आदि छंद।

छंदस्तुभ, छन्दस्तुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैदिक देवता। २-वैदिक छन्दों से स्तुति करने वाले ऋषि। ३-सूर्य का सारथी।

छंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक आभूषण।
[वि.] कपटी। धोखेबाज।

छंदेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छंदी'।

छंदोग, छन्दोग [संज्ञा पु.] (सं.) सामगान करने वाला व्यक्ति।

छंदोगपरिशिष्ट, छन्दोगपरिशिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद के गोभिल-सूत्र का परिशिष्ट।

छंदोदेव, छन्दोदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मणत्व लाभ करने के लिये तपस्या करने वाला एक चांडाल।

छंदोबद्ध, छन्दोबद्ध [वि.] (सं.) छंद के नियमों से युक्त (पद्य) छंद के रूप में बंधा या रचा हुआ।

छंदोभंग, छन्दोभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) छन्द रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि की गणना या लघु गुरु आदि नियमाभाव के कारण होता है।

छंदोम, छन्दोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वादशाह योग के अन्तर्गत एक कृत्य। २-वे तीन स्तंभ जिनका गान छंदोम में होता है।

छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छादन। ढंकना। २-काटना। ३-घर। ४-खंड। टुकड़ा।
[वि.] (सं.) १-निर्मल। साफ। २-तरल चंचल।
[वि.] (हिं.) गिनती में पांच से अधिक।

छई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'क्षयी'।

छकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) बोझ लादने की बैलगाड़ी। [वि.] सिसके अंजरपंजर ढीले हों।

छकड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह पालकी जिसे कहार उठाते हैं।

छकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छः का समूह। २-वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हों। छकड़िया। ३-चारपाई बुनने का एक ढंग।
[वि.] जिसमें छः अवयव हों।

छकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-तृप्त होना। खा-पीकर अघाना। २-नशे में चूर होना। ३-चकराना। ४-हैरान होना। दिक होना।

छकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छकड़ी'।

छकाछक [वि.] (हिं.) १-तृप्त। अघाया हुआ। २-भरा हुआ। परिपूर्ण। ३-उन्मत्त। नशे में चूर।

छकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-खिला-पिलाकर तृप्त करना। २-नशे में चूर करना। ३-भ्रम में डालना। ४-हैरान करना। दिक करना।

छकीला [वि.] (हिं.) १-छका हुआ। तृप्त। २-मत्त। मस्त।

छकुर [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल की बंटाई जिसमें जमींदार छठा भाग पाता है।

छक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छः का समूह। २-छः अवयवों वाली वस्तु। ३-जुए का वह दाँव जिसमें छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें। ४-वह ताश जिसमें छः बूटियाँ हों। संज्ञा। ओसान। ५-पासे का वह जिसमें छः बिंदियाँ ऊपर पड़ें।
छक्का पंजा करना–छल करना। *छक्के भूलना*–किंकर्तव्यविमूढ़ होना। *छक्के छूटना*–१-होश उड़ना। २-साहस न रहना। *छक्के छुड़ाना*–१-चकित या विस्मित करना। २-साहस छुड़ाना। पस्त करना।

छग [संज्ञा पु.] (सं.) छाग। बकरा।

छगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छगड़ी] बकरा।

छगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकरी।

छगण [संज्ञा पु.] (सं.) सूखा गोबर। कंडा।

छगन [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा बच्चा। (प्यार का शब्द)।
छगन-मगन–छोटे-छोटे (प्यारे बच्चे)।

छगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी बकरी।

छगल [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाग। बकरा। २-विधारा वृक्ष। ३-नीले रंग का कपड़ा। ४-वह प्रदेश जहाँ बहुत सारे बकरे हों।

छगुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ के पंजे की सब से छोटी अंगुली। कनिष्ठिका।

छछिआ, छछिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र। २-छाछ। मट्ठा। तक्र।

छछुंदर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छछूंदर'।

छछूंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चूहे की जाति का एक जन्तु। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।
छछूंदर छोड़ना–ऐसी बात कहना जिससे लोगों में हलचल मच जाय।

छछेरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घी गरम करने पर निकलने वाला फेन या मैल (जिसमें छाछ भी होती है)।

छजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-शोभा देना। सजना। २-उपयुक्त जान पड़ना। ठीक जँचना।

छज्जा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोठे या पाटन का दीवार से निकलने वाला भाग। २-ओलती। ओरी।

छटंकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक छटांक का बटखरा। बहुत छोटा।

छटक [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

छटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भार या धक्के से किसी वस्तु का वेग-सहित दूर जाना। २-दूर अथवा अलग रहना। ३-बंधन से निकल जाना। ४-कूदना।

छटका [संज्ञा पु.] (हिं.) मछली फाँसने का गड्ढा।

छटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-छटकने देना। २-छुड़ाना। ३-बलपूर्वक अलग करना।

छटना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'छंटना'।

छटपट [संज्ञा पु.] (हिं.) पीड़ा या बंधन के कारण हाथ-पैर फटकारने की क्रिया या भाव।
[वि.] (हिं.) चंचल। चपल।

छटपटाना [क्रि. अ.] (हिं) १-पीड़ा से हाथ पैर पटकना या फेंकना। तड़फड़ाना। २-व्याकुल होना। बेचैन होना। ३-अधीरतापूर्वक उत्कंठित होना।

छटपटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घबराहट। व्याकुलता। अधीरता। २-गहरी उत्कंठा।

छटाँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सेर का सोलहवाँ भाग। पाव सेर का चौथाई।

छटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शोभा। सौन्दर्य। २-प्रकाश। प्रभा। झलक।

छटाफल [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का वृक्ष।

छटाभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। २-बिजली की चमक। ३-चेहरे की दमक।

छटैल [वि.] (हिं.) छंटा हुआ। चालक। धूर्त्त।

छट्ठ, छट्ठी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छठ', 'छठी'।

छठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रतिपक्ष की छठी तिथि।

छठई [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] देखो 'छठवाँ'।

छठवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'छठाँ'।

छठाँ [वि.] (हिं.) पाँच के उपरान्त आने वाला।
छठें छमासे-कभी-कभी। बहुत दिनों पर।

छठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जन्म से छठे दिन की पूजा। २-एक देवी जिसका पूजन छठी को होता है।
छठी का दूध निकालना-अधिक परिश्रम लेना। *छठी का दूध याद आना*-१-शेखी या हेंकड़ी भूल जाना। २-बहुत कष्ट या दुःख का अनुभव करना।

छड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु या लकड़ी का पतला और लम्बा टुकड़ा।

छड़ना [क्रि. स.] (हिं.) अनाज की भूसी अलग करने के लिए ओखली में रखकर मूसल से कूटना।

छड़बाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज के ऊपर लगने वाली झंडी।

छड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैर का एक आभूषण। २-मोतियों की लड़ों का गुच्छा।
[वि.] (हिं.) एकाकी। अकेला।

छड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) द्वारपाल।

छड़ियाल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का भाला या बरछा।

छड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीधी पतली लकड़ी। २-पीरों के मजार पर चढ़ने वाली झंडी। ३-पाजामें आदि की सीधी टँकाई।
[वि.] (हिं.) एकाकिनी। अकेली।
छड़ी छटाँक या छड़ी सवारी-१-एकाकी। २-बिना बोझ या सामान के।

छड़ीदार [वि.] (हिं.) १-जो छड़ी लिए हो। छड़ी वाला। २-जिसमें सीधी और पतली लकीरें हों।
[संज्ञा पु.] (हिं.) आसाबरदार। द्वारपालक।

छड़ीबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) चोबदार। द्वारपालक आसाबरदार।

छड़ीला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छरीला'।

छण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षण'।

छणदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षणदा'।

छत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चूना कंकड़ आदि डालकर बनाई हुई घर की छाजन। २-ऊपर का ढका भाग।
छत पटना या पड़ना-चूना आदि से छत बनाना। *छत बंधना*-बादलों का घेरकर छाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत। घाव। जख्म।
[क्रि. वि.] (हिं.) रहते हुए। अछत।

छतगीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छत पर तानी जाने वाली चांदनी।

छतगीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छतगीर'।

छतना* [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्तों का बना छाता।

छतनार [वि.] (हिं.) [स्त्री. छतनारी] जिसकी शाखाएं छाते के समान फैली हुई हों। विस्तृत।

छतरिया-विष [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की विषैली खुमी।

छतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाता। २-पत्तों का बना हुआ छाता। ३-मंडप। ४-राजाओं की चिता या साधुओं की समाधि के ऊपर बना हुआ मंडप। ५-खुमी। कुकुरमुत्ता। ६-कबूतरों के बैठने के लिये बांस की फट्टियों का बना हुआ टट्टर। ७-एक प्रकार का बड़ा छाता जिसके द्वारा सैनिक उड़ते हवाई जहाज से उतरते हैं। पैराशूट।
छतरी फौज-छतरियों द्वारा उड़ते हवाईजहाज से उतरने वाली सेना।

छतलोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कसरत।

छता+ [संज्ञा पु] (हिं.) छाता।

छतिया*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छाती। वक्षस्थल।

छतियाना [क्रि स] १-(हिं.) छाती के पास ले जाना। २-छाती से लगाना।

छतिवन [संज्ञा पु.] (हिं.) सप्तपर्णी नामक एक वृक्ष।

छतीसा [वि] (हिं.) [स्त्री. छतीसी] १-चतुर। सयाना। २-मक्कार। धूर्त्त।

छतीसापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मक्कारी। चालाकी। धूर्त्तता।

छतौना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छाता। खुमी।

छत्त+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छत'।

छत्तर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'छत्र'। २-देखो 'सत्र'।

छत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) +१-छाता। छतरी। २-रास्ते के ऊपर की छत या पटाव। ३-मधुमक्खियों आदि का घर। ४-छाते के समान दूर तक फैली हुई वस्तु। ५-कमल का बीजकोश।

छत्तीस [वि.] (हिं.) तीस और छः, ३६।

छत्तीसवां [वि.] (हिं.) जो क्रम में ३५ के बाद आये।

छत्तीसा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाई। हज्जाम।
[वि.] [स्त्री. छत्तीसी] धूर्त्त। चालाक।

छत्तीसी [वि.] (हिं.) १-छलछन्द करने वाली (स्त्री) २-छिनाल।

छत्तुर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छाता। २-कंडे के ढेर पर पोतने का गोबर। ३-वह छप्पर जो भूसे के ढेर पर रखा जाता है।

छत्तेदार [वि.] (हिं.) १-जिस पर पटाव या छत हो। २-मधुमक्खी के छत्ते के आकार का।

छत्र [संज्ञा पु.] (स) १-छाता। छतरी। २-राजचिह्न के रूप में राजाओं के ऊपर लगने वाला छाता। ३-खुमी। कुकुरमुत्ता। ४-एक पेड़। ५-छतरिया विष।
छत्र छाँह, छत्रछाया-रक्षा। शरण।

छत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खुमी। कुकुरमुत्ता। २-छाता। ३-तालमखाने की जाति का एक पौधा। ४-मन्दिर। ५-मंडप। ६-शहद की मक्खियों का छत्ता। ७-मिश्री का कूजा।

छत्रकदेही [संज्ञा पु.] (हिं.) रावणचाकी नामक जलजंतु।

छत्रचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष का एक चक्र जिससे शुभाशुभ का फल निकालते हैं।

छत्रधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-छत्र धारण करने वाला पुरुष। २-राजा। ३-राजाओं के ऊपर छत्र लगाने वाला सेवक।

छत्रधारी [वि.] (हिं.) छत्र धारण करने वाला। जैसे-छत्रधारी राजा।

छत्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

छत्रपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थलपद्म। २-भोजपत्र का वृक्ष। ३-मानपत्ता। ४-छतिवन।

छत्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) तिलकपुष्प।

छत्रबंधु [संज्ञा पु.] (सं.) नीच कुल का क्षत्रिय।

छत्रभंग, छत्रभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा का नाश। २-ज्योतिष का एक योग जिसमें राजा का नाश होता है। ३-वैधव्य। ४-स्वतंत्रता। ५-अराजकता। ६-हाथी का एक दोष।

छत्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांचालदेश के उत्तर का एक प्राचीन राज्य।

छत्रवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मुचकंद का पेड़।

छत्रांग, छत्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) गोदंती हरताल

छत्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-खुमी। २-धनियां। ३-सोवा। ४-मजीठ। ५-एक रसायन औषध।

छत्राक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खुमी। २-जलबबूल

छत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खुमी।

छत्री [वि.] (हिं.) छत्र धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] देखो 'क्षत्रिय'। २-नापित। नाई।

छत्वर [संज्ञा पु.] (सं) १-घर। २-कुंज।

छद [संज्ञा पु.] (सं) १-आवरण। २-चिड़िया का पंख। ३-पत्ता। ४-तमालवृक्ष। ५-तेज पत्ता।

छदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आच्छादन, ढकन। २-पत्ता। ३-चिड़ियों का पंख। ४-तमालपत्र ५-तेजपात।

छदपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेजपत्ता। २-भोजपत्र।

छद्म* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छद्म'।

छदाम [संज्ञा पु.] (हिं.) पैसे का चौथाई भाग।

छद्दर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उपद्रवी बालक। २-वह पशु जो छः दांत तोड़ चुका हो।

छद्म [संज्ञा पु.] (हिं) १-छिपाव। गोपन। २-व्याज। बहाना। ३-कपट। धोखा।

छद्मनाम [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक का बनावटी नाम। उपनाम। स्यूडॉनइम्।

छद्मवेश [संज्ञा पु.] (सं.) बदला हुआ कृत्रिम वेश

छद्मवेशी [वि.] (हिं.) रूप या वेश बदले हुए।

छद्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुडुच। गिलोय।

छद्मी [वि.] (हिं.) [स्त्री छद्मिनी] १-कृत्रिम वेश वाला। २-छली। कपटी।

छन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षण'।

छनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झनझनाहट। झनकार। २-जलती वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द। ३-भड़क। [संज्ञा पु.] एक क्षण।

छनकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छन्-छन् शब्द करना। २-देखो 'छनछनाना'। ३-भड़कना।

छनक-मनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गहनों की झनकार। २-सजधज। ३-ठसक। ४-नखरा। चोचला।

छनकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-छन-छन शब्द करना। २-चौकन्ना होना। भड़काना। ३-बलकाना।

छनछनाना [क्रि. अ.] (हिं.) तपी हुई कड़ाही या तवे पर अथवा खौलते हुए तेल या घी पर पानी पड़ने से छन-छन शब्द होना। २-छनछन बजना। ३-क्रोध से तिलमिलाना। [क्रि. स.] छन-छन शब्द उत्पन्न करना। २-झनकार करना।

छन-छवि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षणप्रभा। बिजली।

छनदा [संज्ञा स्त्री] (हिं.) रात। रात्रि।

छननमनन [संज्ञा पु.] (हिं.) खौलते घी या तेल में पानी या गीली वस्तु पड़ने का शब्द।

छनना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी चूर्ण अथवा तरल पदार्थ का कपड़े आदि में से इस प्रकार गिरना कि मैल या सीठी ऊपर रह जाय। २-किसी नशे का पीया जाना। ३-लड़ाई होना। ३-कड़ाही में से पूरी पकवान आदि निकलना।

गहरी छनना-प्रगाढ़ मैत्री होना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) छानने की वस्तु।

छनवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छनाना'।

छनाका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झनकार ठनाका। २-रुपयों के बजने का शब्द।

छनाना [क्रि. स] (हि.) १-किसी दूसरे से छानने का काम कराना। २-नशा आदि पिलाना। ३-कड़ाह में पकवान तलवाना।

छनिक* [वि] (हिं.) देखो 'क्षणिक'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) क्षणभर।

छन्न [वि.] (सं.) १-आवृत। आच्छादित। २-लुप्त। गायब।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्जन स्थान। २-गुप्त स्थान।
[संज्ञा पु.] (हिं.) छंदी नामक गहना। २-किसी तपी हुई वस्तु पर पानी पड़ने से उत्पन्न शब्द। ३-खौलते तेल में वस्तु डालने से उत्पन्न शब्द। ४-दो धातु पत्रों का परस्पर टकराने से उत्पन्न शब्द। छनकार। ५-छोटी-छोटी कंकड़ियां।

छन्न होना-सूख जाना। उड़जाना।

छन्न-मति [वि.] (सं.) मूर्ख। जड़।

छन्ना [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'छनना'।

छप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

छपछप-भरपूर।

छपकना* [क्रि. स.] (हिं) पतली कमची से किसी को मारना। २-छिन्न करना। से किसी वस्तु को काट डालना।

छपका [संज्ञा पु.] (हि.) १-सिर का एक गहना। २-पतली कमची। ३-खुर वाले पशुओं का एक रोग। ४-पानी का छींटा। ५-पानी में हाथ पैर मारने की क्रिया या भाव। तर फंसाने का जाल।

छपछपाना [क्रि. अ.] (हि) १-पानी से छपछप शब्द होना। २-साधारण तैर लेना। [क्रि. स.] (हि.) छपछप शब्द उत्पन्न करना।

छपटना* [क्रि. स.] (हिं.) १-चिपकना। आलिंगित करना।

छपटाना* [क्रि. स.] (हि.) १-चिपकाना। आलिंगन करना।

छपटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकड़ी से छिली हुई चैली।
[वि.] पतला। दुबला। कृश।

छपड़ी [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार का भुजंगा पक्षी।

छपद* (हिं.) भौंरा। भ्रमण।

छपन+ [वि.] (हिं.) गुप्त। गायब।
[संज्ञा पु.] विनाश। नाश। संहार।

छपना [क्रि. अ.] (हिं) १-छापा जाना। २-चिह्नित या अंकित होना। ३-मुद्रित होना। ४-शीतला का टीका लगाना। ५-देखो 'छिपना'।

छपरखट, छपरखाट [संज्ञा पु.] (हि) मसहरीदार पलङ्ग।

छपरबंद [वि.] (हिं.) १-जिनका घर बसा हो। २-छप्पर छाने वाला।

छपरबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छप्पर छाने का काम या मजदूरी।

छपरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पत्तों से मढ़ा हुआ पान रखने का टोकरा। २-देखो 'छप्पर'।

छपरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झोंपड़ी। छोटा छप्पर।

छपरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झोंपड़ी। मढ़ी।

छपवाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'छपाई'।

छपवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छपाना'।

छपवैया+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-छापने वाला। २-छपवाने वाला। ३-मुद्रित कराने वाला।

छपही* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) स्त्रियों के हाथ की अंगुलियों में पहनने का एक प्रकार का गहना।

छपा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्षपा। रात्रि। २-हल्दी।

छपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छापने का काम। मुद्रण। २-छापने का ढंग। ३-छापने की मजदूरी।

छपाकर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा । चाँद । २-कपूर ।

छपाका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी में किसी वस्तु के तेजी से गिरने का शब्द । २-वेग से फेंका हुआ पानी का छींटा ।

छपाना [क्रि स.] (हिं.) १-छापने का काम कराना । २-चिह्नित कराना । ३-मुद्रित कराना । ४-शीतला का टीका लगवाना । ५-देखो 'छिपाना' ।

छपानाथ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'क्षपानाथ' ।

छपाव*+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'छिपाव' ।

छप्पन [वि.] (हिं.) पचास और छः, ५६ । [संज्ञा पु.] पचास और छः की संख्या ।

छप्पय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ६ चरण वाला एक मात्रिक छंद । इस छंद में पहले रोला के चार पद फिर उल्लाला के दो पद ।

छप्पर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घर की फूस आदि की छाजन । छान । २-पोखर । तलैया । *छप्पर पर रखना*–१-दूर रखना । २-चर्चा न करना । *छप्पर पर फूस न होना*–कंगाल होना । *छप्पर फाड़कर देना*–अनायास, बिना परिश्रम प्रदान करना ।

छप्परबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) छप्पर छाने वाला । [वि.] जो घर बनाकर बस गया हो ।

छबि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छवि' ।

छबड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. छबड़ी] १-टोकरा । डला । झाबा । २-खांचा ।

छबतखती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर की सुंदर बनावट । सुंदरता ।

छबरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छबड़ा' ।

छबि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छवि' ।

छबीला [वि.] (हिं.) [स्त्री छबीली] शोभायुक्त । सुहावना । सुंदर ।

छबुंदकिया [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'छबुंदा' ।

छबुंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) गोबरैले की तरह का एक कीड़ा जिसकी पीठ पर बुंदियां होती हैं ।

छब्बी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पैसा ।

छब्बीस [वि.] (हिं.) बीस और छः, २६ ।

छब्बीसवाँ [वि.] (हिं.) पच्चीस के बाद का ।

छब्बीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छब्बीस वस्तुओं का समूह ।

छमंड [संज्ञा पु.] (सं.) पितृविहीन बालक ।

छम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घुँघुरु का शब्द । २-पानी बरसने का शब्द । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षम' ।

छमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठसक । ठाटबाट ।

छमकना [क्रि. अ.] (हिं) १-घुँघुरुओं या गहनों की झनकार होना । २-चमकना । ३-देखो 'छौंकना' ।

छमछम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नूपुर. पायल. घुँघुरु आदि के बजने का शब्द । २-मेह बरसने का शब्द । [क्रि. वि.] (हिं) छमछम शब्द सहित ।

छमछमाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छमछम शब्द करना । २-छमछम शब्द करते हुए चलना ।

छमता* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'क्षमता' ।

छमना* [क्रि. स.] (हिं.) क्षमा करना ।

छमा, छमाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'क्षमा' ।

छमाछम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गहनों के बजने का शब्द । २-पानी बरसने का शब्द । [क्रि. वि.] (हिं.) निरन्तर छमछम शब्द सहित ।

छमापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षमापन' ।

छमावान [वि.] (हिं.) देखो 'क्षमावान' ।

छमाशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छः माशे का बाट ।

छमाशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृत्यु के छः महीने बाद होने वाला श्राद्ध ।

छमिच्छा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समस्या । २-संकेत । इशारा ।

छमुख [संज्ञा पु.] (हिं.) षडानन । कार्त्तिकेय ।

छय [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षय । नाश । विनाश ।

छर [संज्ञा. पु.] (हिं.) देखो 'छल' । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छर्रों या कणों के वेग से निकलने का शब्द ।

छरई [संज्ञा.स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का ठप्पा ।

छरकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-छर-छर करके छिटकना या बिखरना । २-देखो 'छलकना' ।

छरछंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छलछंद' ।

छरछंदी+ [वि.] (हिं.) देखो 'छलछंदी' ।

छरछर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कणों या छर्रों के निकलने का शब्द । २-पतली लचीली छड़ी के लगने का शब्द ।

छरछराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घाव पर नमक आदि लगने से जलन या चुनचुनी होना । २-कणों का वेग से किसी वस्तु पर गिरना या बिखरना ।

छरछराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छर्रों या कणों के वेग से निकलने का भाव । २-घाव में नमक आदि लगने से उत्पन्न पीड़ा ।

छरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चूना । बहना । टपकना । २-चुचुवाना । ३-छँटना । दूर होना । ४-भूत-प्रेत आदि द्वारा मोहित होना । ॐ+[क्रि. स.] १-छलना । ठगना । मोहित करना । २-छड़ना ।

छरपुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छरीला । २-एक सुगंधित द्रव्य ।

छरभार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कार्याभार । २-झंझट । बखेड़ा ।

छरहरा [वि.] (हिं.) [स्त्री छरहरी] १-क्षीण अंग का । हलका । चुस्त । चालाक । फुरतीला । ३-बहुरूपिया ।

छरहरापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षीण अंग होने का भाव । हलकापन । २-चुस्ती । फुरती ।

छरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छड़ा । २-लर । लड़ी । ३-रस्सी । ४-नारा । इजारबंद ।

छरिंदा [वि.] (हिं.) देखो 'छरीदा' ।

छरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) छड़िया । चोबदार ।

छरिला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छरीला' ।

छरी+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छड़ी' । [वि.] १-देखो 'छड़ी ।' २-देखो 'छली' ।

छरीदा [वि.] (हिं.) १-अकेला । एकाकी । २-जिसके पास बोझ या सामान न हो । (यात्री)

छरीदार* [वि., संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छड़ीदार'

छरीला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा । पत्थर । फूल ।

छरोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खरोंच ।

छर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) वमन । कै करना ।

छर्दि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वमन । उलटी । २-एक रोग । (हिं.) १-घर । तेज । ३-उद्गार वमन ।

छर्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वमन । २-विष्णु-कान्ता ।

छर्दिकारिपु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची ।

छर्दिघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) बकाइन ।

छर्रा [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटी कंकड़ी । कण । २-बंदूक की छोटी गोली ।

छलंक, छलंग+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छलांग' ।

छल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपट का व्यवहार । धोखा । २-मिस । बहाना । ३-धूर्त्तता । ४-कपट । ५-युद्धनियम के विरुद्ध शत्रु पर प्रहार । (हिं.) जल के छींटों के गिरने का शब्द ।

छलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छलने की क्रिया या भाव । [संज्ञा पु.] (सं.) छल करने वाला ।

छलकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छलकने की क्रिया या भाव । २-उदार । स्फुरण ।

छलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बरतन हिलने से किसी तरल पदार्थ का उछलकर बाहर निकलना । २-भरे होने के कारण उभड़ना ।

छलकाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी भरे हुए पात्र के द्रव पदार्थ को हिलाकर बाहर गिराना ।

छलछंद [वि.] (हिं.) कपट का व्यवहार । धूर्त्तता

छलछंदी [वि.](हिं.) कपटी । धूर्त्त । धोखेबाज ।

छलछलाना [क्रि. अ.] (हिं.) छल-छल शब्द करना ।

छलछिद्र [संज्ञा. पु.] (सं.) कपट व्यवहार । धोखेबाजी ।

छलछिद्री [संज्ञा पु.] (हिं.) धोखेबाज। छली। कपटी।

छलन [संज्ञा पु.] (सं.) छलने का काम।

छलना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को धोखा देना। प्रतारित करना। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धोखा। छल। प्रतारणा।

छलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आटा आदि चालने या छानने का पात्र। चलनी।
छलनी कर डालना–१–बहुत स्थानों पर छेद कर देना। २–बहुत स्थानों को छेद देना। *छलनी में डाल छाज में उड़ाना*–थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। *छलनी हो जाना*–१–बहुत छेद हो जाना। २–बहुत स्थानों पर से घिस या फट जाना। *कलेजा छलनी होना*–१–निरन्तर कष्ट झेलते-झेलते जी ऊब जाना। २–दुःखदायी बातें सुनते-सुनते घबड़ा जाना।

छलहाई*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] छली। कपटी। चालबाज। धूर्त्त।
[संज्ञा स्त्री.] छल। कपट।

छलाँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुदान। फलांग। चौकड़ी।

छलाँगना+ [क्रि. अ.] (हिं.) चौकड़ी भरना। फलांग मारना।

छला*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छल्ला। उङ्गली में पहनने का गहना।
[संज्ञा स्त्री.] आभा। चमक। झलक।

छलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छल का भाव। कपट।

छलाना [क्रि. स.] (हिं.) धोखे में डलवाना। प्रतारित कराना।

छलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भूत-प्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २–दलदलों या जंगलों में रह-रह कर दीख पड़ने वाला प्रकाश। अगिया-बैताल। उल्कामुख-प्रेत। ३–जादू। इन्द्र-जाल।

छलित [वि.] (सं.) छला हुआ। प्रतारित।

छलितक [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक का एक भेद।

छलिया [वि.] (हिं.) छल करने वाला। कपटी। धोखेबाज।

छली [वि.] (हिं.) कपटी। धोखेबाज।

छलौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का अंगुलियों का रोग।

छल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मुंदरी। २–मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय। ३–एक प्रकार का पंजाबी गीत।

छल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छाल। २–लता। ३–संतति। ४–एक प्रकार का फूल।

छल्लेदार [वि.] (हिं.) १–जिसमें छल्ले लगे हों। २–जिसमें मण्डलाकार चिह्न हों।

छवना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री छवनी] १–बच्चा। २–सूअर का बच्चा।

छवा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बछड़ा। पशु का बच्चा।
[संज्ञा पु.] (देश.) एँड़ी।

छवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छाने का काम। २–छाने की मजदूरी।

छवाना [क्रि. स.] (हिं.) छाने का काम कराना।

छवि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–शोभा। सौन्दर्य। २–कान्ति। चमक।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चित्र। फोटो। प्रतिकृति।

छवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (?) एक प्रकार का बड़ा चाकू या छोटा कृपाण जिसे सिक्ख लोग अपने पास रखते हैं।

छवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) छप्पर छाने वाला।

छह+ [वि.] (हिं.) देखो 'छः'।

छहरना* [क्रि. अ.] (हिं) छितराना। बिखराना। छिटकाना।

छहरा+ [वि.] (हिं.) १–छः परत का। २–उपज का छठां (भाग)।

छहराना* [क्रि. अ.] (हिं.) छितराना। बिखरना।
[क्रि. स.] १–बिखराना। छितराना। २–भस्म करना।

छहरीला+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. छहरीली] १–छरहरा। हलका। २–फुरतीला। चुस्त।

छहियाँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छांह। छाया।

छाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छाँह'।

छाँउँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छाँह'।

छाँक [संज्ञा पु.] (हिं.) खंड। टुकड़ा।

छाँगना [क्रि. स.] (हिं.) काटना छांटना।

छाँगुर [संज्ञा पु.] (हिं.) छः उङ्गलियों वाला।

छांछ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'छाछ'।

छाँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छांटने की क्रिया या ढंग। २–छांटकर अलग की हुई वस्तु। ३–वमन। कै।

छाँटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अलग की हुई बे-काम वस्तु। कतरन।

छाँटना [क्रि. स.] (हिं.) १–काटकर अलग करना २–काटना या कतरना। ३–अनाज में से कन या भूसी कूट या फटक कर अलग करना। ४–चुनना बराना। ५–दूर या अलग करना। ६–साफ करना। ७–अनावश्यक रूपसे अपनी योग्यता दिखाना। जानकारी बघारना।

छाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–छाँटने की क्रिया या भाव। २–किसी को छल से अलग या दूर करना।
छाँटा देना–छल या कपट करके संग साथ से दूर करना।

छाँड़-चिट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खत्ता।

छाँड़ना* [क्रि स.] (हिं.) छोड़ना। त्यागना।

छाँद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पशुओं के पैर बाँधने की छोटी रस्सी। २–दूहते समय बछड़े के गाय के पैर से बाँधने की रस्सी। नोई।

छाँदना [क्रि. स.] (हिं.) १–बाँधना। कसना। २–पशु के पिछले पैर सटाकर बाँधना।

छाँदस [वि.] (सं.) १–वेदज्ञ। वेदपाठी। २–वेद सम्बन्धी। ३–रुद्र। ४–मूर्ख।

छाँदा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बखरा। हिस्सा। भाग। २–उत्तम भोजन। परोसा।

छाँदोग्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–सामवेद का एक ब्राह्मण। २–एक उपनिषद।

छाँवँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छाँह'।

छाँवँड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छाँवँड़ी] १–बालक। बच्चा। २–पशु का छोटा बच्चा।

छाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भूसी। २–कूड़ा करकट।

छाँह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह स्थान जहाँ धूप या प्रकाश का अभाव हो। ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३–रक्षा का स्थान। शरण। ४–परछाँई। ५–प्रतिबिम्ब। ६–भूत-प्रेत का प्रभाव।
छाँह में होना–छिपना। *छाँह न छूने देना*–पास में न आने देना। *छाँह बचाना*–दूर-दूर रहना। *छाँह छूना*–पास में आना।

छाँहगीर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–राजछत्र। २–दर्पण। ३–आइना।

छाँही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छाँह'।

छाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–राख। २–खाद।

छाक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–तृप्ति। इच्छापूर्ति। २–दोपहर का भोजन। ३–नशा। मद। मस्ती। ४–माठ।

छाकना* [क्रि. अ.](हिं.) १–खा-पीकर तृप्त होना। अघाना। २–मस्त होना। ३–चकित होना।

छाग [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. छागी] बकरा।

छागन [संज्ञा पु.] (सं) उपले की आग।

छागभोजी [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़िया।

छागमय [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय का आठवाँ मुख।

छागमित्र [संज्ञा पु.] (सं) एक देश का नाम।

छागमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १–कार्त्तिकेय का छठा मुख। २–कार्त्तिकेय का एक वनचर।

छागर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बकरी।

छागरथ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

छागल [संज्ञा पु.] (सं.) १–बकरा। २–बकरे की खाल की बनी वस्तु।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बकरे के चमड़े की बनी मशक। २–मिट्टी का करवा।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं) पैर का एक गहना।

छाछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया हो। मट्ठा। मही।

छाछठ [वि.] (हिं.) देखो 'छासठ'।

छाछि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छाछ'।

छाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सींकों का बना अनाज फटकने का एक उपकरण। सूप। २-छाजन। छप्पर। ३-देखो 'छज्जा'।

छाजों मेंह बरसना-मूसलाधार पानी बरसना।

छाजन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आच्छादन। वस्त्र। कपड़ा। २-छान। छप्पर। खपरैल। ३-छवाई। ४-एक रोग।

छाजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-शोभा देना। फबना। उपयुक्त जान पड़ना। २-सुशोभित होना। विराजना।

छाजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छज्जा।

छाजित [वि.] (हिं.) शोभित।

छाड़ना, छाँड़ना+ [क्रि. अ.] (हि.) कै करना। वमन करना। [क्रि. स.] देखो 'छाँड़ना' 'छोड़ना'।

छात [संज्ञा पु.] (हि.) १-छाता। छतरी। २-छप्पर। ३-आधार। आश्रय। [वि.] (सं.) छिन्न। २-दुर्बल। कृश। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'छत'।

छाता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धूप और वर्षा से बचने का एक उपकरण जो पत्तों या कपड़े का बना होता है। बड़ी छतरी। २-खुमी। ३-चौड़ी छाती। विशाल वक्षस्थल। ४-वक्षस्थल की चौड़ाई की नाप।

छाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कलेजे के ऊपर की ठठरियों का पल्ला। वक्षस्थल। सीना। २-कलेजा। हृदय। ३-मन। जी। ३-स्तन। कुच। ४-हिम्मत। साहस-। ५-एक प्रकार की इमारत।

छाती उड़ी जाना-१-जी मिचलाना। घबराना। २-दुःख या आशंका से व्याकुल होना। छाती उमड़ आना-छाती भर आना। छाती करना-साहस करना। छाती का जम-१-ढीठ। जिद्दी। २-दुःखदायक। ३-हर समय दुःखी करने वाला। छाती फूटना-१-शोक या दुःख में छाती पीटना। २-छाती ठोकना। छाती के किवाड़ खुलना-ज्ञान होना। २-बहुत आनन्द होना। ३-खुलकर बातें होना। ४-जोर से चीख उठना। ५-छाती फटना। छाती के किवाड़ खोलना-१-कलेजा टुकड़े-टुकड़े करना। २-अज्ञान का अंधकार दूर करना-हृदय की आंतरिक बातें स्पष्ट करना। ४-आनन्द देना। छाती खोलना-१-उदार चित्त होना। २-मन में मैल न होना। छाती छलनी होना-कष्ट सहते-सहते ऊब उठना। छाती जलना-१-ईर्ष्या होना। २-संताप होना। ३-कुढ़ना। ४-हृदय व्याकुल होना। छाती जुड़ना या ठंडी होना-इच्छा पूर्ण होना। मनोरथ सफल होना। छाती ठुकना-१-विश्वास होना। २-हिम्मत बंधना। छाती ठोकना-साहस बटोर कर कहना। छाती तले रखना-प्रेम-सहित अपने पास रखना। छाती तले रहना-१-आँखों के आगे रहना। २-बहुत प्यारा होकर रहना। छाती थामकर रह जाना-१-मन मसोसकर रह जाना। २-शोक से स्तब्ध हो जाना। छाती देना-स्तन पिलाना। छाती धड़कना-डर छा जाना। छाती पक जाना-१-देखो 'छाती छलनी होना'। २-स्तन का अग्रभाग पक जाना। ३-छाती पत्थर की करना। छाती पत्थर की करना-हृदय कठोर करना। २-कठोर दुःख के कारण मन कठोर करना। छाती पर झेलना-स्वयम् दुःख सहना। छाती पर चढ़कर ढाई चुल्लू लहू पीना-मारना। कठिन दण्ड देना। बदला लेना। छाती पर चढ़ना या सवार होना-कष्ट पहुँचाने के लिए आ उपस्थित होना। छाती पर धरकर ले जाना-मरकर भी अपने साथ ले जाना-छाती पर पत्थर रखना-१-दिल सख्त कर लेना। २-चुपचाप कष्ट सह लेना। छाती पर बाल होना-१-दयावान। उदार होना। २-हिम्मत या साहस होना। वीर होना। छाती पर साँप लोटना-मानसिक व्यवस्था होना। ईर्ष्या होना। छाती पर मूँग या कोदों दलना-बहुत कष्ट देना। किसी के चिढ़ाने या जलाने का काम करना। छाती पीटना-विलाप करना। छाती फटना या दरकना-१-बहुत दुःख उत्पन्न होना। २-छाती जलना। छाती पर फिरना-घड़ी-घड़ी याद आना। छाती पर बने रहना-हर समय ढीठ की तरह पास रहना। छाती फुलाना-१-घमंड करना। २-ऐंठ या अकड़कर चलना। छाती फोड़कर कमाना-घोर परिश्रम करना। कठिन परिश्रम से कमाना। छाती भर आना-१-दुःख से द्रवित हो जाना। प्रेम अथवा दया से गद्-गद् हो जाना। स्तनों में दूध भर आना। छाती मसोसना-मन ही मन दुखी होना। छाती में छेद होना-छाती छलनी होना। छाती में पत्थर टलना-१-पुत्री का ब्याह होना। २-किसी बड़े भारी खटके वाले काम को करके निश्चिन्त हो जाना। छाती से लगा कर रखना-स्नेहसहित अपने पास रखना। छाती से लगाना-गले लगाना। प्रेमसहित दोनों भुजाओं में आबद्ध करना।

छात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिष्य। चेला। २-विद्यार्थी। ३-मधु।

छात्रक [संज्ञा पु.] (सं.) विद्यार्थी।

छात्रगंड, छात्रगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) तीक्ष्ण बुद्धि वाला विद्यार्थी या शिष्य।

छात्रदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) ताजा मक्खन।

छात्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह धन या वृत्ति जो विद्याभ्यास करने के निमित्त विद्यार्थी को मिले।

छात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्यार्थिनी। २-शिष्या।

छात्रावास [संज्ञा पु.] (सं.) विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंग हाउस।

छात्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'छात्रावास।

छादक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाने वाला। २-खपरैल या छप्पर छाने वाला।

छादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाने अथवा ढकने का कार्य। २-आवरण। आच्छादन। ३-छिपाव। ४-नीलकोरैया।

छादित [वि.] (सं.) ढका या छाया हुआ। आच्छादित।

छादी [वि.] (सं.) [स्त्री. छादिनी] आच्छादन करने वाला।

छाद्मिक [वि.] (सं.) १-पाखंडी। मक्कार। २-बहुरूपिया। ३-वह जिसने भेस बदला हो।

छान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छप्पर। घास फूस की छाजन। २-वह रस्सी जिसके द्वारा किसी पशु के पैर बाँधे जायं। बंधन।

छानना [क्रि. स.] (हिं.) १-चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े आदि के पार निकालना। २-मिली हुई वस्तु को अलग करना। ३-जाँचना। परखना। अन्वीक्षण। ढूँढ़ना। अनुसंधान करना। ४-भेदकर पार निकालना। ६-नशा पीना।

[क्रि. स.] (हिं.) जकड़ना। रस्सी आदि से कसना।

छानबीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पूर्ण अनुसंधान अथवा अन्वेषण। गहरी खोज। २-पूर्ण विवेचना। पूर्ण विचार।

छाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ढकना। आच्छादित करना। २-छाया करने के निमित्त कोई वस्तु ऊपर तानना या फैलाना।

[क्रि. अ.] १-फैलना। बिछ जाना। २-डेरा डालना। बसना। रहना। टिकना।

छानबे [वि.] (हिं.) नब्बे और छः, ९६।

छानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छप्पर।

छाप [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-किसी उभरे या खुदे हुए ठप्पे का निशान। २-मुहर का चिह्न। मुद्रा। ३-वैष्णवों के अंगों पर गरम धातु से अंकित चिह्न (शंख, चक्र आदि के) मुद्रा। ४-ठप्पेदार अंगूठी। ५-कवि का उपनाम। ६-चिह्न। निशान। ७-लकड़ी का बोझ। ८-सिंचाई में पानी को उछालने की टोकरी।

छापना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु पर स्याही पोतकर उसको दूसरी वस्तु पर दबाकर उस की आकृति उतारना। २-ठप्पे से निशान डालना। ३-मोहर से अंकित करना। ४-छापे के यंत्र की सहायता से अक्षर या चित्र अंकित करना। मुद्रण। मुद्रित करना।

छापा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऐसा सांचा जिसपर

स्याही या रङ्ग पोतकर उस पर खुदे चिह्न अथवा आकार वस्तु पर छापते या उतारते हैं। ठप्पा। २-मोहर। मुद्रा। ठप्पे या मोहर से अंकित चिह्न या अक्षर। ४-मंगल अवसरों पर हल्दी आदि से अंकित पंजे का चिह्न। (दीवार या कपड़े पर)। ५-बेखबर लोगों पर होने वाला आक्रमण। ६-किसी वस्तु की ठीक-ठीक नकल। प्रतिकृति।

छापाखाना [संज्ञा पु.] (हिं.+फा.) वह स्थान जहाँ छपाई का काम होता है। मुद्रालय। प्रिन्टिंग प्रेस।

छापामार [संज्ञा पु.] (हिं.) अचानक आक्रमण करने वाला। सहसा छापा मारने वाला (विशेषतः सैनिक या हवाई जहाज)।

छाबड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-टोकरी। २-वह थाल या दौरी जिसमें रखकर वस्तुएँ बेची जाती हैं। खोनचा।

छाम* [वि.] (हिं.) क्षीण। पतला। कृष।

छामोदरी* [वि.] (हिं.) छोटे पेट वाला। कृषोदरी।

छायल [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों का एक पहिरावा

छायांक, छायाङ्क [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

छाया [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-प्रकाश का अभाव। छाँह। २-प्रतिकृति। अनुहार। ३-अनुकरण। ३-नकल। ४-कान्ति। दीप्ति। ५-अंधकार। ५-उत्कोच। घूस। ६-पंक्ति। ७-कत्यायनी। ८-अंधकार। ९-आर्याछंद का एक भेद जिसमें १७ गुरु और २३ लघु होते हैं। १०-एक रागिनी।

छायागणित [संज्ञा पु] (सं) गणित की एक क्रिया जिसमें छाया सहायता द्वारा ग्रहों की गति अयनांश का गमनागमन निरूपित किया जाता है।

छायाग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) दर्पण। आइना।

छायाग्राहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी का नाम जिसने हनुमान जी को समुद्र लांघते समय उनकी छाया द्वारा उनको पकड़कर खैंच लिया था।

छाया-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) छाया अथवा प्रतिविम्ब मात्र पड़ने पर एक विशेष शीशे की सहायता से उतारकर अन्य कागज आदि पर अंकित चित्र। फोटो।

छाया-चित्रण [संज्ञा पु.] (सं.) छाया चित्र उतारने की क्रिया। फोटोग्राफी।

छायातनय [संज्ञा पु.] (सं.) शनैश्चर।

छायातरु [संज्ञा पु.] (सं.) सुरपुन्नाग। छतिवन।

छायादान [संज्ञा पु.] (सं.) घी या तेल में अपने मुख की छाया देखकर इसमें कुछ दक्षिणा डालकर दान करने की विधि।

छायानट [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग जो संध्या के समय एक दंड से पांच दंड तक गाया जाता है।

छायान्वित [वि] (सं) छायायुक्ति। सायादार।

छायापथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश गंगा। २-देवपथ। ३-आकाश।

छायापद [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की छाया द्वारा समय जानने का एक यन्त्र। सूरजघड़ी।

छाया-परिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी परिषद या समिति में से ही कुछ सदस्यों की बनी हुई या बनाई हुई समिति जो विवादास्पद विषय पर सर्वसम्मत हल या समाधान खोजती है। इसमें मत-भेद रखने वाले सदस्यों को नहीं लिया जाता।

छायापुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो उसको स्थिर दृष्टि से आकाश की ओर अधिक काल तक देखने पर दृष्टिगोचर होती है।

छायाभ [वि.] (सं.) १-छायायुक्त। छायादार। २-जिस पर छाया पड़ी हो।

छायामान [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

छायामित्र [संज्ञा पु.] (सं.) छाता। छतरी।

छायायंत्र [यन्त्र] [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाया द्वारा समय का ज्ञान कराने वाला यन्त्र। धूपघड़ी।

छायावाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसमें अव्यक्त या अज्ञात को लक्ष्य बनाकर उसके प्रति प्रणय विरह आदि के भाव प्रगट करते हैं। अज्ञात के प्रति जिज्ञासा प्रगट करने वाला सिद्धान्त।

छायावादी [वि.] (सं.) १-छायावाद संबंधी। छायावाद का। २-छायावाद के सिद्धान्त को मानने वाला या उसके अनुसार कविता करने वाला।

छायावान् [वि.] (सं.) [स्त्री. छायावती] १-छायादार। छायायुक्त। २-शांतियुक्ति।

छायाविप्रतिपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आयुर्वेद का एक प्रकरण जिसमें चेहरे की आभा आदि देखकर अच्छा होने या न होने के सम्बन्ध बताया जाता है।

छार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वनस्पतियों को जला कर इनका निकाला हुआ नमक। क्षार। २-खारी नमक। नमक। ३-खारा पदार्थ। ४-भस्म। राख। ५-धूल। गर्द।

छार खार करना–नष्टभ्रष्ट करना।

छारकर्दम [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षारकर्दम नामक एक नरक।

छारछबीला [संज्ञा पु.] देखो 'छरीला'।

छाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेड़ों के धड़, शाखा आदि के ऊपर का आवरण। वृक्ष की त्वचा। २-एक प्रकार की मिठाई। ३-चीनी जो खूब साफ न की गई हो।

छालटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाल का बना वस्त्र। २-सन आदि का बना कपड़ा।

छालना [क्रि. स.] (हिं.) १-चालना। छानना। २-छेद करना।

छाला [संज्ञा पु] (हिं) १-ऊपरी चमड़ा। २-फलोला। आबला। लोहे या शीशे का उभड़ा हुआ दाग।

छालित* [त्रि] (हिं) धोया हुआ।

छालिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घी या तेल छायादान किया हुआ कांसे का प्याला। सुपारी।

छाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कटी हुई सुपारी चिपटा टुकड़ा। सुपारी का सुपारी।

छालो* [संज्ञा पु.] (हिं.) बकरा।

छावँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाया। छाह। शरण। ३-प्रतिबिम्ब। अक्स।

छावना+* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छाना'।

छावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाजन। छप्पर। २-डेरा। पड़ाव। ३-सैनिकों के सैनिकों के आसपास की व्यवस्था कुछ भिन्न नियमों के होती है। कैंटून्मेंट।

छावर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मछलियों के छोटे बच्चे।

छावरा+* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छावरी] जानवर का बच्चा। छौना।

छावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बच्चा। २-पुत्र। ३-१० से २० साल तक का हाथी।

छासठ [वि.] (हिं.) साठ और छः; ६६।

छाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छाछ'।

छिउँका [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छिउँकी] साधरण चिउँटे से छोटा, पतला और रंग का चींटा।

छिउँकहा* [वि.] (हिं.) जिसमें छिउँके लगे हों।

छिउँकी [संज्ञा स्त्री.] १-छोटी चींटी। २-छोटा उड़ने वाला कीड़ा। २-लोहे का औजार। ३-रस्सी का एक प्रकार का फंदा।

छिंकाना [क्रि. स.] (हिं.) छींक लाना।

छिंगुनी, छिंगुनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छिगुनी'।

छिंगुली, छिंगुलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छिगुनी'।

छिंछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छींटा। धार। बौछार।

छिंटुआ, छिंटुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बीज बोने की एक रीति।

छिंड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) छीनना।

छि [अव्य.] (हिं.) घृणा, तिरस्कार या अरुचि सूचक शब्द।

छिउल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छीउल'।

छिउला* [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा पेड़ या पौधा'।

छिकना [क्रि. अ.] (हिं.) छेंका जाना। घिरना। २-कटा या मिटाया जाना। नाम पड़ी हुई [illegible]।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास जिसके घुंडी के आकार के फूलों को सूंघने से छींकें आती हैं। नकछिकनी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरन की जाति का एक पशु।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छींक। २-देखो 'छींका'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) छिकरा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) छिकरा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिकनी। नकछिकनी

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छिगुनी'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कनिष्ठिका। सबसे छोटी उंगली।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छिगुनी'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बूंद। छींटा।

[illegible]+ [क्रि. स.] (हिं.) छिड़कना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छीछड़ा'।

[illegible]+ [क्रि. स.] (हिं.) निन्दा करना। [illegible] करना।

[illegible] [वि.] (हिं.) [स्त्री. छिछली] कम गहरा। उथला।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छिछला होने का भाव।

छिछली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'छिछला'।

छिछोरपन [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षुद्रता। ओछापन। नीचता।

छिछोरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. छिछोरी] क्षुद्र। ओछा। नीच प्रकृति का।

छिछोरापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छिछोरपन'।

छिछोरी [वि.] (हिं.)[स्त्री. प्र.] देखो 'छिछोरा'।

छिजना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'छीजना'।

छिजाना [क्रि. स.] (हिं.) छीजने या नष्ट होने देना।

छिटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चारों ओर फैलना। बिखरना। २-उजाला छाना।

छिटकनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'सिटकनी'।

छिटका [संज्ञा पु.] (हिं.) पालकी के ओहार का वह भाग जिसमें से घुसते, निकलते या देखते हैं।

छिटकाना [क्रि स.] (हिं.) चारों ओर फैलाना। बिखराना।

छिटकी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'छींट' 'छींटा'।

छिटकुनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पतली छड़ी। कमची।

छिटनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बाँस की छोटी टोकरी। झाँवा। डलिया।

छिटवा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छिटनी] बांस की फट्टियों का बना टोकरा।

छिटाका [संज्ञा पु.] (हिं.) धुनिये की मुंगरी।

छिट्टी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूक्ष्म जलकण। महीन छींटा।

छिड़कना [क्रि. स.] (हिं.) १-पानी आदि के छींटे डालना। २-न्योछावर करना।

छिड़कवाना [क्रि. स.] (हिं.) छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

छिड़का [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छिड़काव'।

छिड़काई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छिड़काव। छिड़कने की क्रिया या भाव। २-छिड़कने की मजदूरी।

छिड़काना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छिड़कवाना'।

छिड़काव [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी आदि छिड़कने की क्रिया।

छिड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) आरम्भ होना। चल पड़ना।

छिण*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षण'।

छितनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस की बनी छिछली टोकरी।

छितरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'छितराना'।

छितरबितर+ [वि.] (हिं.) देखो 'तितरबितर'।

छितराना [क्रि. अ.] (हिं.) तितरबितर होना। बिखरना। फैलना। [क्रि. स.] १-बिखराना। फैलाना। २-दूर-दूर करना। ३-तितरबितर करना।

छितराव [संज्ञा पु.] (हिं.) छितराने या बखेरने का भाव।

छिति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूमि। पृथ्वी। एक का अंक।

छितिकंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षितिकान्त। राजा

छितिज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षितिज'।

छितिपाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षितिपाल। राजा

छितिरुह* [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षितिरुह। वृक्ष। पेड़।

छितीस* [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा। क्षितीश।

छित्वर [वि.] (सं.) १-छेदक। २-धूर्त्त। ३-वैरी।

छिदना [क्रि. अ.] १-छेददार होना। भिदना। २-घायल होना। क्षतपूर्ण होना। +[क्रि. स.] सहारे के लिए पकड़ लेना। [संज्ञा पु.] बरच्छा। फलदान। मँगनी।

छिदरा [वि.] (हिं.) १-छितराया हुआ। जो घना न हो। २-छेददार। झंझरीदार। ३-फटा हुआ। जर्जर। ४-ओछा।

छिदवाना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'छेदना'।

छिदाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छेदना'।

छिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-छेद। सूराख। २-विवर। गड्ढा। बिल। ३-दोष। ऐब। ४-अवकाश। जगह। ५-लग्न से आठवां घर (फलित ज्योतिष)। ६-नौ की संख्या।

छिद्रदर्शी [वि.] (सं.) पराया दोष रखने वाला।

छिद्रवैदेही [संज्ञा स्त्री] (सं.) गजपिप्पली।

छिद्रात्मा [वि.] (हिं.) खलस्वभाव। खल। दुष्ट।

छिद्रान्वेषण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति अथवा बात के दोष को ढूंढना। खुचुर निकालना।

छिद्रान्वेषी [वि.] (सं.) (स्त्री. छिद्रान्वेषिणी) पराया दोष ढूंढने वाला।

छिद्राफल [संज्ञा पु.] (सं.) माजूफल।

छिद्रित [वि.] (सं.) १-छेदा या बेधा हुआ। २-जिसमें दोष लगा हो। दूषित।

छिद्रोदर [संज्ञा पु.] (सं.) पेट का एक रोग।

छिन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षण'।

छिनक* [क्रि. वि.] (हिं.) एक क्षण। दम भर। थोड़ी देर।

छिनकना [क्रि. स.] (हिं.) जोर से सांस निकाल कर नाक साफ करना।

[क्रि. अ.] १-भड़ककर भागना। चमकना। २-रंजक चाट जाना (बन्दूक)।

छिनछवि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली।

छिनदा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'क्षणदा'।

छिनना [क्रि. अ.] (हिं.) छीन लिया जाना। हरण होना।

[क्रि. स.] १-(छेनी या टाँकी के) आघात से कटना। २-कुटना।

छिनरा [वि.] (हिं.) (स्त्री. छिनार, छिनाल) पर-स्त्री-गामी पुरुष। लम्पट। वृषल।

छिनवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-छीनने का काम कराना। २-पत्थर को छेनी या टांकी से कटवाना। ३-कुटाना।

छिनाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छिनवाना'।

छिनार [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) देखो 'छिनाल'।

छिनाल [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) व्यभिचारिणी। कुलटा।

[संज्ञा स्त्री.] पर-पुरुषगामिनी स्त्री।

छिनालपन, छिनालपना [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यभिचार। छिनाला।

छिनाला [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री पुरुष का अनुचित सहवास। व्यभिचार।

छिन्न [वि.] (सं.) कटा हुआ। खंडित।

छिन्नभिन्न [वि.] (सं.) १-कटा हुआ। टूटा फूटा। २-तितर-बितर। ३-नष्टभ्रष्ट।

छिन्नपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठा। पाढा।

छिन्नपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) तिलकवृक्ष।

छिन्नमस्ता [वि.] (सं.) कटे हुए माथे का।
[संज्ञा स्त्री] एक देवी।

छिन्नरुह [संज्ञा पु.] (सं.) तिलकवृक्ष।

छिन्नरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिलोय।

छिन्नव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्र के कटने से बना घाव। २-शस्त्र से कटा हुआ घाव। आपरेशन किया हुआ फोड़ा।

छिन्नवेशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) पाठा।

छिन्नश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) श्वास रोग का एक भेद।

छिन्ना [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-गिलोय। २-पुंश्चली। छिनाल।

छिपकली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दीवारों पर रेंगने वाला एक जन्तु। बिस्तुइया। गृहगोधिका। २-कान का एक गहना।

छिपना [क्रि. अ] (हिं.) ओट में होना। दिखाई न पड़ना।

छिपाछिपी [क्रि. वि.] (हिं) चुपचाप। गुपचुप। गुप्त रीति से।

छिपाना [क्रि. स.] (हिं.) १-आंख से ओझल करना। २-प्रकट न करना। गुप्त रखना।

छिपारुस्तम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह व्यक्ति जो गुणों से पूर्ण हो परन्तु विख्यात न हो। गुप्त गुंडा।

छिपाव [संज्ञा पु.] (हिं.) भेद को छिपाने का भाव।

छिप्र* [क्रि वि.] (हिं.) देखो 'क्षिप्र'।
[संज्ञा पु.] पैर की अंगुलियों और अंगूठे के पास का मर्मस्थान।

छिबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छाबड़ा'।

छिबड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा टोकरा। २-खाँचा।

छिमा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'क्षमा'।

छिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-घृणित वस्तु। २-मल। मैला।
[वि.] (हिं.) मलिन। घृणित।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोकरी। लड़की।

छियाज [संज्ञा पु.] (हिं.) कटुआं व्याज।

छियानवे* [संज्ञा पु.] (हि.) नब्बे और छः की संख्या।

छियालिस [वि.] (हिं) देखो 'छियालीस'।

छियालीस [वि] (हिं) चालीस और छः, ४६।

छियासी [वि.] (हिं.) अस्सी और छः, ८६।

छिरकना* [क्रि स] (हिं.) छिड़कना।

छिरकाना [क्रि स] (हि) छिड़काना।

छिरहटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छिरेटा'।

छिरहा* [वि.] (हि) हठी। जिद्दी।

छिरेटा [संज्ञा पु] (हिं) एक प्रकार की लता जिसका रस जल में डाल देने से जम जाता है। छिलहिंड। महामूल।

छिलकना* [क्रि स.] देखो 'छिड़कना'।

छिलका [संज्ञा पु.] (हि.) १-फलादि का आवरण २-ऊपरी परत।

छिलछिला* [वि.] (हिं) देखो 'छिछला'

छिलन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छिलने की क्रिया। २-छिलने का भाव। शरीर के चमड़े का ऊपर से छिल जाना। खरोंच।

छिलना [क्रि अ.] (हिं.) १-छिलका अलग होना ऊपरी चमड़ा अलग होना। ३-गले के भीतर खुजली सी होना।

छिलवा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख की पत्तियों को छीलकर अलग करने वाला व्यक्ति।

छिलवाना [क्रि स.] (हि.) छीलने के लिए प्रेरित करना।

छिलहिंड, छिलहिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) छिरेटा।

छिलाना [क्रि. स.] (हिं.) छिलवाना।

छिलाव, छिलावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छीलने की क्रिया या भाव। छिलाई।

छिलौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा छाला। आबला।

छिल्लड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) छिलका। भूसी।

छिहत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और छः, ७६।

छिहाई* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-ढेर लगाने का काम। २-चिता। ३-मरघट।

छिहाना* [क्रि. स.] (हिं.) ढेर लगाना। गांजना

छिहानी [संज्ञा पु.] (हिं) श्मशान। मसान। मरघट।

छिहारना* [क्रि अ.] (हिं.) बिखरना। छितराना।

छींक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेगसहित नाक तथा मुँह से एकाएक निकलने वाला वायु का झोंका।
छींक होना–असगुन होना।

छींकना [क्रि. अ.] (हिं.) छींक निकालना।
छींकते नाक काटना–थोड़ी सी बात पर चिढ़कर दंड देना।

छींका [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'छीका'।

छींट [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-जलकण। सीकर। २-रंगीन बेलबूटे का छपा हुआ कपड़ा।

छींटना* [क्रि. स.] (हिं.) बिखराना। छितराना

छींटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जलकण। सीकर। द्रव पदार्थ की छिटकी हुई बूंदें। २-हलकी वृष्टि ३-बूंद जैसा चिह्न या दाग। ४-मदक या चंडू की एक मात्रा। ५-व्यंगपूर्ण उक्ति।

छींदा [संज्ञा स्त्री] (हिं) छीमी। फली।

छींबी [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-मटर की फली। २-गौ का स्तन।

छी [अव्य.] (सं.) घृणासूचक शब्द।
छी-छी करना–अरुचि या घृणा प्रकट करना।

[संज्ञा पु.] (हि.) कपड़ा पछाड़ते समय के मुख से निकलने वाला शब्द।

छीउल* [संज्ञा पु.] (देश.) पलाश।

छीका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वस्तुओं को वह गोल जाल जो रस्सियों का बना और छत से लटका रहता है। खिड़की या झरोखा। ३-बैलों के बाँधा जाने वाला जाल। ४-रस्सियों का झूलने वाला पुल। झूला।
छीका टूटना–अनायास कोई ऐसी जिससे किसी को कुछ लाभ हो।

छीछड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मास का लच्छा। २- पशुओं के पेट की थैली।

छीछल+ [वि.] (हि.) देखो 'छिछला'।

छीछालेदार [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दुर्दशा।

छीज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमी।

छीजना [क्रि. अ.] (हिं.) घटना। क्षीण होना।

छीट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'छींट'।

छीटा [संज्ञा पु.] (हि.) १-बांस का खांचा। २-चिलमन।

छीड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आदमियों की भीड़ का उलटा।

छीतना [क्रि. स.] (हि.) १-डंक मारना। मारना। कूटना।

छीतस्वामी [संज्ञा पु.] (हिं.) अष्टछाप के वैष्णवभक्त।

छीता [संज्ञा पु.] (देश.) बहू के ससुराल जाने का शुभ मुहूर्त।

छीति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हानि। २-बुराई।

छीतीछान [वि.] (हिं.) छिन्न-भिन्न।

छींदा [वि.] (हिं.) १-जिसकी बुनावट हो। झांझर। छिदरा। २-जो घना विरल।

छीन [वि.] (हिं.) १-पतला। दुबला। शिथिल। मंद। मलिन।

छीनचंद्र [चन्द्र] [संज्ञा पु] (हिं.) चन्द्रमा।

छीनता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'क्षीणता'।

छीनना [क्रि. स.] (हिं.) १-काटकर अलग २-जबरदस्ती लेना। हरण करना। चित रूप से अधिकार करना। रेहना। ५-देखो 'छेना'।

छीता+ [क्रि. स.] (हि.) छूना या स्पर्श

छीना-खसोटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो झपटी'।

छीनाछीनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो झपटी'।

[illegible]झपटी

[illegible]झपटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु को [illegible]कर लेने की क्रिया या भाव।

[illegible] [वि.] (हिं.) तेज। शीघ्र। वेगवान। [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'सीप'। २-छाप। चिह्न। ३-शरीर पर के छोटे दाग।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-मछली फंसाने की बंसी। २-एक पेड़ का नाम जिसके फल की तरकारी होती है।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) मछली को फंसाकर जल के बाहर फेंकना।

[illegible]+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूध रखने की मटकी। २-देखो 'छीपी'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. छीपिनी) छींट छापने वाला। वस्त्रों पर छपाई करने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) वह लम्बी छड़ी जिससे कबूतर उड़ाये जाते हैं।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोटी छींट।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मटर आदि की फली।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'क्षीर'। २-कपड़े का वह किनारा जहाँ उसकी लम्बाई समाप्त होती है। छोर। ३-कपड़े के फटने का चिह्न।

छीर डालना-धोती आदि में किनारे का तागा निकालकर झालर बनाना।

छीरज* [संज्ञा पु.] (हिं.) दधि। दही।

छीरधि* [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षीर का सागर। दूध का सागर।

छीरप* [संज्ञा पु.] (हिं.) दूध पीता बच्चा।

छीरफेन* [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षीरफेन। दूध की मलाई।

छीरसागर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षीर सागर'।

छीलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छिलका या छाल उतारना। २-खुरचकर अलग करना।

छीलर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छिछला। तिलारी। २-छोटा छिछला गड्ढा। तलैया।

छीव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षीव'।

छुँगली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुँघुरू लगी अंगीठी।

छुआना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छुलाना'।

छुआछूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अछूत को छूने की क्रिया। अस्पृश्य-स्पर्श। २-छूत-अछूत का विचार।

छुईमुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छोटा कटीला पौधा। लज्जाधुर। लज्जावंती।

[illegible]+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घुघुरू।

छुच्छा [वि.] (हिं.) देखो 'छूछा'।

छुच्छी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पतली पोली नली। २-[illegible]। नाक में पहनने का एक गहना। ४-वह पतली नली जिसका एक छोर गिलास के समान चौड़ा होता है। कीप।

छुछकारना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-कुत्ते को शिकार के पीछे लगाना। लहकारना। २-झिड़कना।

छुछुहँड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छूछी हाँड़ी।
छुछुहँड़ दिखाना-माँगने पर किसी वस्तु को देने से इनकार करना।

छुछुंदर [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. छुछुंदरी) छछूँदर।

छुछुआना [क्रि. अ.] (हिं.) व्यर्थ इधर-उधर घूमते फिरना।

छुट* [अव्य.] (हिं.) अतिरिक्त। सिवाय।

छुटकाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-छोड़ना। अलग करना। २-छोड़ना। साथ न लेना। ३-छुटकारा देना। छुड़ाना।

छुटकारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुक्ति। रिहाई। २-निस्तार। ३-किसी कार्यभार से मुक्ति।

छुटना+ [क्रि. स. (हिं.) देखो 'छूटना'।

छुटपन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटाई। लघुता। २-बचपन।

छुटवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छोड़वाना'।

छुटाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छोटाई'।

छुटाना [क्रि. स.] (हिं.) छुड़ाना।

छुटैयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाँडों और स्वांग करने वालों के चुटकले।

छुटौती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह ब्याज की रकम जो छोड़ी जाय।

छुट्टा [वि.] (हिं.) (स्त्री. छुट्टी) १-जो बँधा न हो। २-अकेला। एकाकी। ३-जिसके पास कोई सामान न हो।
छुट्टा पान-बिना लगा हुआ पान।
छुट्टा छरिंदा-एकाकी। अकेला। *छुट्टे हाथ*-खाली हाथ।

छुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छूटने अथवा छोड़े जाने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २-काम कर चुकने के उपरान्त मिलने वाला खाली समय। अवकाश। फुरसत। ३-नियमित रूप से कार्य बंद रहने का दिन। तातील। *हॉलिडे*। ४-प्रार्थना करने पर किसी काम से मिलने वाला अवकाश। *लीव*। कहीं से चलने या जाने की या इसी प्रकार के अन्य कार्य की अनुमति या आज्ञा। ५-भाँडों का चुटकला। *छुट्टी पाना*-जिम्मेदारी से अलग होना। *छुट्टी होना*-काम समाप्त होना। *छुट्टी मनाना*-अवकाश के दिन सानन्द बिताना।

छुड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) छोड़ने का काम कराना। छोड़ने के निमित्त प्रेरित या उद्यत करना।

छुड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोड़ने की क्रिया। २-छोड़ने के बदले में दिया या लिया जाने वाला धन। ३-पतंग को दूर लेजाकर उड़ाने के निमित्त ऊपर उछालना।
छोड़-छुड़ाई-माफी।

छुड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बन्धन या उलझन से निकलना। २-दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३-मिटाना (धब्बा)। साफ करना। ४-नौकरी से अलग करना। बरखास्त करना। ५-(आदत) दूर करना।

छुड़ौती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बंधन से मुक्त करने के निमित्त दिया जाने वाला धन। २-देनदार या आसामी से पावना छोड़ देने की क्रिया। ३-ऋण शेष जो छोड़ दिया जाय। छूट।

छुत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षुधा। भूख।

छुतिहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध घड़ा या बरतन। २-कुपात्र। नीच आदमी।

छुतिहा+ [वि.] (हिं.) १-छूत वाला। अस्पृश्य। २-कलंकित। दूषित। निकृष्ट। [संज्ञा पु.] नोनी मिट्टी से निकलने वाला शोरा नमक।

छुद्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षुद्र'।

छुद्रघंटिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'क्षुद्र घंटिका'।

छुधा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षुधा। भूख।

छुधित* [वि.] (हिं.) भूखा।

छुनछुनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-'छुन-छुन' शब्द करना। २-झनकार-रहित बजना।

छुनमुन, छुननमुनन [संज्ञा पु.](हिं.) बच्चों के पैर के आभूषण का शब्द।

छुप* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्पर्श। २-झाड़ी। क्षुप। ३-वायु। [वि.] (हिं.) चंचल।

छुपना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'छिपना'।

छुपाना [क्रि. स.] देखो 'छिपाना'।

छुबुक [संज्ञा पु.] (सं.) चिबुक। ठुड्डी।

छुभित* [वि.] (हिं.) १-विचलित। चंचल चित्त। २-घबराया हुआ।

छुभिराना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्षोभ को प्राप्त होना। क्षुब्ध होना।

छुरधार* [संज्ञा स्त्री.] छुरे की धार।

छुरहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाई की पेटी। किसबत।

छुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छुरी] १-बड़ी छुरी। २-उस्तरा।

छुरित [संज्ञा पु.] (सं.) १-लास्यनृत्य का एक भेद जिसमें नृत्य करने वाले नायक-नायिका दोनों रसपूर्ण हो परस्पर प्रेम-प्रदर्शनपूर्वक चुम्बनादि करते हुए नृत्य करते हैं। २-बिजली की चमक। [वि.] खुदा हुआ।

छुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काटने अथवा चीरने का एक छोटा औजार। चाकू।
छुरी चलना-१-छुरी से लड़ाई होना। २-

चीरने के लिए छुरी का प्रयोग करना। *छुरी देना*-मारना। गला काटना। *छुरी तेज करना*-हानि पहुँचाने की तैयारी करना। *छुरी फेरना*-किसी का अनिष्ट करना। *छुरी कटारी रहना*-लड़ाई-झगड़ा रहना।

छुरीधार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छुरे के आकार का एक हाथी दाँत का औजार।

छुलछुल [संज्ञा पु] (हिं.) थोड़ा-थोड़ा करके मूतने से होने वाला शब्द।

छुलछुलाना [क्रि अ.] (हिं.) थोड़ा-थोड़ा करके मूतना।

छुलाना [क्रि. स] स्पर्श करना।

छुवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छूना'।

छुवाछूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छुआछूत'।

छुवाना* [क्रि. स.] (हिं.) स्पर्श करना।

छुवाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) लगाव। संबंध। संसर्ग।

छुवारी-अजवायन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'छुहारी अजवायन'।

छुहना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-छूजाना। २-रंगा जाना। रंजित होना।
[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छूना'।

छुहारबेर [संज्ञा पु.] (हिं.) पका हुआ बेर।

छुहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का खजूर। पिंडखजूर। खुरमा। २-पिंडखजूर का फल।

छुहारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी और निकृष्ट जाति का छुहारा।

छुहारी-अजवायन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फारस देश से आने वाली आजमोदा।

छुही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खरिया। सफेद मिट्टी।

छूँछ [वि.] (हिं.) देखो 'छूँछा'।

छूँछा [वि.] (हिं.) [स्त्री. छूँछी] १-खाली। रीता। रिक्त। २-निःस्सार। ३-निर्धन। *छूँछा हाथ*-खाली हाथ (द्रव्य या हथियार)।

छूँछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छुच्छी'।

छू [संज्ञा पु.] (हिं.) मंत्र पढ़कर फूंक मारने का शब्द।
छू मंतर होना-गायब होना।

छूआछूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छुआछूत'।

छूईमूई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'छुईमुई'।

छूचक* [संज्ञा पु.] (हिं.) अशौच। सूतक।

छूछू [वि.] (हिं.) मूर्ख।

छूछा [वि.] (हिं.) देखो 'छूँछा'।

छूट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छूटने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २-असावधानता के कारण कार्य के किसी अंग पर ध्यान न जाने या उसके रह जाने की अवस्था। चूक। -*ओमिशन*। ३-वह अनुमति जो किसी को निज का कोई कार्य करने अथवा न करने के लिए मिले। *एग्जैम्पशन*। ४-किसी प्राप्य धन का पूरा अथवा कुछ अंश छोड़ दिया जाना। बाकी या पूरा रुपया वसूल न करना। *रेमिशन, रिबेट*। ५-किसी बात या कार्य की स्वतंत्रता। ६-गालीगलौज की या गंदी दिल्लगी। ७-तलाक। २-मालखंभ की एक कसरत।

छूटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी बंधी या फसी-हुई वस्तु का अलग होना। २-बंधन खुलना। ३-अलग होना या दूर होना। ४-साफ होना। मिटना। ५-मुक्त होना। बिछुड़ना। ६-प्रस्थान करना। रवाना होना। ७-पीछे रह जाना। ८-अस्त्र का चलना। ९-बंद होना। न रह जाना। १०-व्रत-नियम आदि भंग होना। ११-तेजी से निकलना। १२-रस रसकर (पानी) निकलना। १३-कण अथवा छींटे निकलकर फैलना। १४-मूल से रह जाना। १५-काम या नौकरी से हटाया जाना। *शरीर छूटना*-मृत्यु होना। *छूट पड़ना*-गिर पड़ना। *बंदूक छूटना*-बंदूक चलना। *नाड़ी छूटना*-नाड़ी की गति बंद होना।

छूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निषिद्ध संसर्ग। २-गंदी वस्तु का स्पर्श या संसर्ग। ३-अपवित्र वस्तु छूने का दोष। ४-अस्पृश्यता। ५-भूत-प्रेत का प्रभाव।
छूत उतारना-अशुचि स्पर्श का दोष दूर होना। *छूत का रोग*-रोगी के संसर्ग से फैलने वाला रोग।

छूना [क्रि. अ.] (हिं.) स्पर्श होना। आंशिक संयोग होना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-स्पर्श करना। २-उङ्गली या हाथ लगना। ३-दान के निमित्त कोई वस्तु स्पर्श करना। ४-दौड़ या खेल की बाजी में जा पकड़ना। ५-लेप करना। पोतना।
आकाश छूना-बहुत ऊँचा होना।

छूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छुरा'।

छूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छुरी'।

छेंकना [क्रि. स.] (हिं.) १-स्थान घेरना। २-जाने से रोकना। न जाने देना। ३-रेखा के भीतर डालना। ४-काटना। मिटाना।

छेंवर [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'घंटील'।

छेक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छेद। सूराख। २-कटाव। विभाग।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-घर के पालतू पशु या पक्षी। २-नागर। ३-छेकानुप्रास।

छेकानुप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दालङ्कार के अंतर्गत एक अनुप्रास जिसमें एक ही चरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेकापह्नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अलङ्कार जिसमें दूसरे के ठीक अनुमान या अटकल का खंडन अयथार्थ उक्ति से किया जाता है।

छेकोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लोकोक्ति जिससे दूसरे अर्थ की भी ध्वनि निकलती हो।

छेटा+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बाधा। रुकावट।

छेड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छेड़ने की क्रिया या भाव। २-किसी को कुढ़ाने या चिढ़ाने वाली बात। चुटकी। ३-रगड़ा-झगड़ा। ४-कोई कार्य आरम्भ करना। पहल।
+[संज्ञा पु.] छेद। सुराख।

छेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-खोद-खाद करना। खोंचना। २-तंग करना। ३-विरोधी को चिढ़ाना। ४-मजाक करना। चुटकी लेना। ५-(कोई काम या बात) आरम्भ करना। ६- ७-छेद करना। +८-नश्तर से फोड़ा चीरना।

छेड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) छेड़ने का काम कराना।

छेड़ा [संज्ञा पु.] (?) रस्सी।

छेत्र*+ [[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षेत्र'।

छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-छेदन। काटने का काम। २-नाश। ध्वंस। ३-छेदन करने वाला। ४-गणित में भाजक। ५-खंड। टुकड़ा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) छिद्र। सूराख। २-विवर। बिल। ३-दोष। दूषण।

छेदक [वि.] (सं.) १-छेदने वाला। काटने वाला। २-नाश करने वाला। ३-विभाजक। भाजक।

छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छेद अथवा काटकर अलग करना। २-नाश। ध्वंस। ३-कफ को निकालने वाली औषध।

छेदना [क्रि. स.] (हिं.) १-छेद करना। बेधना। भेदना। २-क्षत या घाव करना। ३-छिन्न करना। काटना।

छेदनहार+ [वि.] (हिं.) छेदने वाला।

छेदा [संज्ञा पु.] (हिं.) घुन नामक कीड़ा।

छेद्य [वि.] (सं.) छेदने योग्य। छेदनीय।
[संज्ञा पु.] १-परेवा। कबूतर। [illegible] रोगों की चिकित्सा का एक ढंग।

छेद्यकंठ [संज्ञा पु.] (हिं.) कबूतर। कपोत।

छेना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फाड़ा हुआ दूध जिसका पानी निकाल लिया गया हो। २-कंडा। उपला।
[क्रि. स.] (हिं.) १-काटना। घाव करना। २-देखो 'छैना'।

छेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक लोहे का औजार जिससे पत्थर आदि काटते हैं। टाँकी।

छेमंड [संज्ञा पु.] (सं.) अनाथ। यतीम।

छेम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'क्षेम'।

छेमकारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षेमकरी। सफेद चील।

छेरना* [क्रि. अ.] (हिं.) अपच के कारण बारबार पखाना फिरना।

छेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकरी।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकरी। अजा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षत। घाव। २-कपट-पूर्ण व्यवहार। ३-आपत्ति की आशंका। [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हार का वह डोरा जिससे बरतन काटकर उतारता है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताड़ी।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) १-काटना। २-चिह्न लगाना। ३-[illegible]। मिलाना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छाल। २-छिलका। ३-चमड़ा। त्वचा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छेवर'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) छीलने अथवा काटने का [illegible]। २-छीलने या काटने से बना चिह्न। [illegible]। ३-तीव्र। वेग से बहने वाला जल।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'छेव'। २-[illegible]। नाश।

[illegible] [संज्ञा पु.] (?) नृत्य का एक भेद।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी। राख। खेह।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छाया।

[illegible] [वि.] (हिं.) १-खंडित। २-न्यून। कम।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छाया। साया।

[illegible] [वि.] (हिं.) देखो 'छः'।

[illegible] [संज्ञा पु.] देखो 'क्षय'।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'है'।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) १-छीजना। कम होना। २-नष्ट होना।

[illegible]-छेद का फट जाना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) वत्स। बच्चा (प्यार से)।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'छैला'। २-देखो 'हठ'।

[illegible]-चिकनियाँ [संज्ञा पु.] (देश.) शौकीन। बनाठना आदमी।

[illegible]-छबीला [संज्ञा पु.] (देश.) सजावजा युवा पुरुष।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) सुंदर बनाठना आदमी। सजीला। बांका। रँगीला। शौकीन।

[illegible], छोंकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) शमी का वृक्ष। सफेद कीकर।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) मथानी।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मथानी। २-बड़ा बरतन।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रेम। प्रीति। चाह। २-दया। कृपा। ३-क्षोभ। क्रोध। कोप।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'खोई'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ईख की पत्तियां। २-रस निकालकर फेंकी हुई गंडेरी। सीठी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छोकड़ी] लड़का। बालक।

छोंकड़ापन [संज्ञा पु.] (देश.) १-लड़कपन। २-छिछोरापन।

छोकड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छोकड़ी'।

छोकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की। कन्या। बेटी।

छोकरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छोकड़ा'। देखो 'छोंकरा'।

छोकला+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छाल। छिलका। बकल।

छोट+ [वि.] (हिं.) देखो 'छोटा'।

छोटका [वि.] (हिं.) [स्त्री. छोटकी] छोटा।

छोटपन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटापन।

छोटफन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे मुँह की गगरी या मटकी।

छोटभैया [संज्ञा पु.] (हिं) पद या मान-मर्यादा में छोटा मनुष्य। कम हैसियत का आदमी।

छोटा [वि.] (हिं.) [स्त्री. छोटी] १-लम्बाई, विस्तार या डील-डौल में कम। २-अवस्था या उमर में कम ३-पद या प्रतिष्ठा में घटकर या कम। ४-तुच्छ। हीन। ५-ओछा। क्षुद्र।

छोटामोटा-साधारण।

छोटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटापन। लघुता। २-नीचता। क्षुद्रता।

छोटा-कुवाँर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का घीकुआर।

कोटा-कचूर [संज्ञा पु.] (हिं.) कपूर कचरी।

कोटा-कपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगिया। चोली।

छोटा-चाँद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक लता की जड़ जो सांप का विष उतारने में काम आती है।

छोटापन [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा होने का भाव। लघुता। छोटाई। २-बचपन। लड़कपन।

छोटा-पाट [संज्ञा पु.] (हिं.) रेशम का एक प्रकार का कीड़ा।

छोटा-पीलू [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

छोटीइलायची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेद गुजराती इलायची।

छोटीमैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक चिड़िया का नाम।

छोटीरकरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

छोटीसहेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी और सुन्दर चिड़िया।

छोटीहाजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भारत में रहने वाले अंगरेजों का प्रातःकाल का भोजन।

छोड़चिट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाता टूटने या संबंध त्यागने की चिट्ठी। फारखती।

छोड़छुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाता या संबन्ध का त्याग।

छोड़ना [क्रि. स.] (हिं) १-पकड़ से अलग करना। बंधन से मुक्त करना। २-चिपकी हुई वस्तु को पृथक करना। ३-अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। परित्याग करना। ४-ग्रहण न करना। न लेना। ५-अपराध क्षमा करना। ६-किसी स्थान से हटना या प्रस्थान करना। ७-पीछा करने के निमित्त किसी को लगाना। ८-किसी को पीछे रखकर आप अग्रसर होना या आगे बढ़ना। ९-वेग सहित बाहर निकलना। अथवा गिरना। १०-पद, कार्य अथवा कर्तव्य से अलग होना। ११-रोग या व्याधि का किसी के शरीर से हट जाना। १२-बचाकर रखना। शेष रखना। १३-अभियोग आदि से मुक्त करना। १४-कारागार या बंधन से मुक्त करना। १५-किसी कार्य को भूलवश न करना।

छोड़कर-अतिरिक्त। सिवा। *स्थान छोड़ना*-स्थान छोड़कर अन्यत्र चले जाना। *किसी के पीछे छोड़ना*-पकड़ने के निमित्त पीछे दौड़ाना।

छोड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) छोड़ने का काम कराना।

छोड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'छुड़वाना'।

छोनिप [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षोणिप। राजा।

छोनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षोणी। पृथ्वी। भूमि

छोप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी गीली वस्तु की मोटी परत जो किसी वस्तु पर चढ़ाई जाय। २-किसी की बात को छिपाना। ३-आक्रमण से रक्षा करना। ४-आघात। वार। प्रहार।

छोपछाप-१-मरम्मत। २-दोष आदि का छिपाव।

छोपना [क्रि. स.] (हिं.) १-अधिक मात्रा में गीली वस्तु दूसरी वस्तु पर चढ़ाना या रखना। गाढ़ा लेप करना। थोपना। २-धर दबाना। दबोचना। ३-ढकना। ४-किसी बात पर परदा डालना। आघात या आक्रमण से रक्षा करना।

छोपा [संज्ञा पु.] (हिं.) पाल के चारों कोनों पर बंधी हुई रस्सी जो ऊपर चढ़ाई जाती है।

छोपाई [संज्ञा स्त्री.] १-छोपने की क्रिया या भाव २-छोपने की मजदूरी।

छोभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षोभ। चित्त की खलबली। २-नदी, तालाब आदि का भरकर उमड़ना।

छोभना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्षुब्ध होना। [क्रि. स.] क्षुब्ध करना।

छोभित* [वि.] (हिं.) क्षोभित। चंचल। विचलित।

छोम* [वि.] (हिं.) चिकना। कोमल।

छोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चौड़ाई का अन्तिम भाग। सिरा। २-विस्तार की सीमा। हद ३-कोर। कोना। नोक।

ओरछोर-आदि-अन्त ।

छोरछुट्टी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'छोड़छुट्टी' ।

छोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-बंधन अलग करना । २-बंधन से मुक्त करना । ३-छीनना । हरण करना ।

छोरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. छोरी] लड़का । बालक । (दे.श.) एक नाव को दूसरी नाव के साथ बांधकर ले जाने का कार्य ।

छोराछोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छीना-झपटी । छीनाछीनी ।

छोरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की ।

छोल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छिल जाने का चिह्न या घाव । २-साँप के काटने का एक ढंग ।

छोलदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा खेमा या तंबू ।

छोलना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-छीलना । सतह का ऊपरी भाग काटना । २-खुरचना । [संज्ञा पु.] [स्त्री. छोलनी] सिकलीगर का एक औजार ।

छोलनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छीलने का औजार । ३-चिलम में छेद करने का औजार । ३-हलवाई की खुरचनी ।

छोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईख काटने या छीलने वाला व्यक्ति । २-चना ।

छोवन [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हार का चाक पर से बरतन काटने का डोरा ।

छोह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ममता । स्नेह । प्रेम । २-दया । कृपा । अनुग्रह ।

छोहगर+ [वि.] (हिं.) स्नेही । प्रेमी । ममता रखने वाला ।

छोहना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्षुब्ध होना । चंचल होना । विचलित होना ।

छोहरा+* [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. छोहरी) लड़का । बालक ।

छोहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की । बालिका ।

छोहाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रेम दिखाना । २-अनुग्रह करना । दया करना ।

छोहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छुहारा' ।

छोहिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अक्षौहिणी ।

छोही*+ [वि.] (हिं.) ममता रखने वाला । स्नेही । [संज्ञा स्त्री.] खोइया । चूसी हुई या पेरी हुई गंडेरी की सीठी ।

छौंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बघार । तड़का ।

छौंकना [क्रि. स.] (हिं.) १-हींग, जीरा, मिरचा आदि का बघार देना । २-तड़का देना ।

छौंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न रखने का खत्ता । गाड़ ।

छौंकना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी पशु का (बिल्ली शेर आदि) चारों पैर उठाकर किसी ओर को झपटना ।

छौना [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. छौनी) पशु का बच्चा ।

छौर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छौरा' । [संज्ञा पु.] देखो 'क्षौर' ।

छौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ज्वार या बाजरे का डंठल जो पशुओं को चराया जाता है । डंठल । २-कपास का डंठल ।

छौलदारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का छोटा तम्बू ।

ज

ज हिंदी भाषा का एक व्यञ्जन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है । इसका उच्चारण स्थान तालु है ।

जंग [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लड़ाई । समर । युद्ध । [संज्ञा पु.] लोहे का मोरचा ।

जंगआवर [वि.] (फा.) लड़ने वाला । वीर । योद्धा ।

जंगम, जङ्गम [वि.] (सं.) १-चलने-फिरने वाला । चर । जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाया अथवा पहुँचाया जा सके । जैसे-जंगम संपत्ति ।

जंगम-अधिवस्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अस्थावर सम्पत्ति ।

जंगम-गुल्म [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैदल सिपाहियों की सेना ।

जंगम-विष [संज्ञा पु.] (सं.) चर प्राणियों के देश आघात या विकार से उत्पन्न विष ।

जँगरा [संज्ञा पु.] (देश.) जेंगरा । दाना निकाल लेने के उपरान्त बचे हुए मूंग, मटर इत्यादि के डंठल ।

जँगरैत [वि.] (हिं.) [स्त्री. जंगरैतिन] १-जाँगर वाला । २-परिश्रमी । मेहनती ।

जंगल, जङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) वन । अरण्य । *जंगल में मंगल*-सुनसान स्थान में चहल-पहल । *जंगल जाना*-टट्टी फिरने जाना ।

जंगल-जलेबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गू । गू की घेरदार लेंडी ।

जंगला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह खिड़की या दरवाजा जिसमें लोहे के छड़ लगे हों । कटहस । २-छड़ लगी हुई चौखट ।

जंगली [वि.] (हिं.) १-जंगल में मिलने या होने वाला । जंगल-संबंधी । जंगल का । २-बिना बोए या लगाए आप से आप होने वाला । ३-जंगल में रहने वाला । बनैला । ४-जो घरेलू या पालतू न हो ।

जंगली-बादाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-
जाति का एक वृक्ष । २-हड़ की जाति
वृक्ष ।

जंगलीरेंड [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

जंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) घुंघुरू का

जंगार [संज्ञा पु.] (फा.) १-ताँबे
तूतिया । २-एक रंग ।

जंगारी [वि.] (फा.) नीला । नीले रंग

जंगाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जंगार' ।
[संज्ञा पु.] (सं.) पानी रोकने का

जंगाली [वि.] (हिं.) देखो 'जंगारी' ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का
रेशमी कपड़ा ।

जंगी [वि.] (फा.) १-लड़ाई से
वाला । २-सेना-संबंधी । फौजी ।
३-बहुत बड़ा । दीर्घकाय ।

जंगी-कानून [संज्ञा पु.] (हिं.)
कानून' ।

जंगी-जहाज [संज्ञा पु.] (हिं.)
आने वाला वह विशालकाय
पर बहुत-सी तोपें लगी रहती हैं ।

जंगी-लाट [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रधान सेना

जंगीहड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काली
हड़ ।

जंगुल [संज्ञा पु.] (सं.) विष । जहर ।

जंगै [संज्ञा स्त्री.] बड़ी, घुंघुरू लगी
जिसे अहीर और धोबी नाचते समय
बांधते हैं ।

जंघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जाँघ ।
पिंडली । ३-कैंची का दस्ता जिसमें
दस्ताने लगे रहते हैं ।

जंघाफार [संज्ञा पु.] (हिं.) खाई (
भाषा) ।

जंघामथानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.)
व्यभिचारिणी ।

जंघारा [संज्ञा पु.] (देश.) राजपूतों की

जंघारि [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के
नाम ।

जँचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जांचा जाना ।
भाला जाना । २-जांच में पूरा उतरना ।
जान पड़ना । निश्चय होना । मन में

जँचा [वि.] हिं.) १-जांचा हुआ ।
२-अचूक ।

जंजर*+ [वि.] (हिं.) देखो 'जंजल' ।

जंजल*+ [वि.] (हिं.) पुराना और
बेकाम ।

जंजाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झंझट । बखेड़ा ।
उलझन । ३-पानी का भंवर । ४-पुराने
की एक प्रकार की पलीतेदार बन्दूक ।
चौड़े मुंह की एक प्रकार की तोप ।
लियाँ पकड़ने का एक बहुत बड़ा जाल ।

जंजाल में पड़ना या फंसना–उलझन में पड़ना।

जंजालिया [वि.] (हिं.) जंजाल रचने वाला। बखेड़ा खड़ा करने वाला। झगड़ालू। बखेड़िया।

जंजाली [वि.] (हिं.) झगड़ालू। बखेड़िया।

जंजीर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–कड़ियों की लड़ी। सांकल। सिकड़ी। २–बेड़ी। ३–किवाड़ की कुंडी। सिकड़ी। जंजीर डालना–बंदी बनाना। जंजीर लगाना–कुंडी बन्द करना।

जंजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) जंजीर के समान सिलाई। लहरिया।

जंजीरी [वि.] (हिं.) जिसमें जंजीर लगी हो। जंजीरदार।

जंजीरेदार [वि.] (हिं.) जिसमें जंजीरा पड़ा हो।

जंट [संज्ञा पु.] (अं.) जिला मजिस्ट्रेट के आधीन अफसर।

जंटिलमैन [संज्ञा पु.] (अं.) १–भद्रपुरुष। भलामानुस। अंगरेजी चालढाल से रहने वाला आदमी।

जंड [संज्ञा पु.] (देश.) एक जंगली वृक्ष जिसे सांगर भी कहते हैं।

जंतर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–यंत्र। कल। औजार। २–तांत्रिक यन्त्र। ३–तावीज। कठुला। ४–वीणा। ५–पत्थर मिट्टी आदि का बड़ा ढोंका।

जंतर-मंतर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जादू-टोना। २–आकाशालोचन। वेधशाला।

जंतरा, जंत्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैलगाड़ी के ढांचे पर कसने की रस्सी।

जंतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा जंता जिससे सोनार तार खैंचते हैं। २–पंचांग। तिथिपत्र। ३–जादूगर। ४–बजाने वाला। वादक।

जंतसार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह गीत जो स्त्रियों के पीसते समय गाया जाता है।

जंतसार [संज्ञा स्त्री] (हिं.) वह स्थान जहां जांता या चक्की गड़ी रहती है।

जंता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. जंती, जंतरी] १–यंत्र। २–सोनारों और तारकशों का एक औजार। [वि.] यंत्रणा देने वाला। दंड देने वाला।

जंताना [क्रि. अ.] (हिं.) जांते में पिस जाना। चूर-चूर होना।

जंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा जंता। जंतरी। २–माता। मा।

जंतु, जन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १–जन्म लेने वाला। २–जीव। प्राणी। ३–पशु। जानवर।

जीव-जंतु-प्राणी। जानवर।

जंतुकंबु, जन्तुकम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) शंख का कीड़ा। शंख।

जंतुका, जन्तुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाख। लाचा।

जंतुघ्न, जन्तुघ्न [वि.] (सं.) प्राणिनाशक। कृमिघ्न। [संज्ञा पु.] १–वायविडंग। २–हींग। ३–बिजौरा नीबू। ४–कीड़े मारने वाली औषध।

जंतुघ्नी, जन्तुघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वायविडंग।

जंतुनाशक [जन्तु] [संज्ञा पु.] (सं.) हींग।

जंतुफल, जन्तुफल [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर। ऊमर।

जंतुमारी, जन्तुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीबू।

जंतुला, जन्तुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कांस नामक घास।

जंत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कल। २–यंत्र। ३–ताला।

जंत्रना [क्रि. स.] (हिं.) ताला लगाना। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'यंत्रणा'।

जंत्र-मंत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जंतर-मंतर'।

जंत्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जंतरा'।

जंत्रित [वि.] (हिं.) १–देखो 'यंत्रित'। २–बंद। बँधा।

जंत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) बाजा बजाने वाला। [वि.] जकड़बंद करने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) बाजा। [संज्ञा स्त्री.] पत्रा। तिथिपत्र।

जंद [संज्ञा पु.] (फा.) १–पारसियों का एक प्रसिद्ध धर्म-ग्रंथ। २–वह भाषा जिसमें यह धर्म-ग्रंथ है।

जंदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–यंत्र। कल। २–जाँता। + ३–ताला।

जंपना* [क्रि. स.] (हिं.) बोलना।

जंबाल, जम्बाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–पंक। कीचड़। २–सेवार। शैवाल। ३–काई। ४–केवड़ा।

जंबाला, जम्बाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी का वृक्ष।

जंबीर, जम्बीर [संज्ञा पु.] (सं.) १–जंबीरी नीबू। २–मरुवा। ३–बनतुलसी।

जंबु, जम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १–जामुन (वृक्ष)। २–जामुनफल।

जंबुक, जम्बुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़ा जामुन। २–श्योनाक वृक्ष। ३–केवड़ा। ४–शृगाल। गीदड़। ५–वरुण। ६–बहनवृक्ष। ७–टेंटू का पेड़।

जंबुखंड, जम्बुखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जंबुद्वीप'।

जंबुद्वीप, जम्बुद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक।

जंबुध्वज, जम्बुध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) जंबू द्वीप।

जंबुमत्, जम्बुमत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक बानर का नाम।

जंबुमति, जम्बुमति [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

जंबुमाली, जम्बुमाली [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

जंबुप्रस्थ, जम्बुप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) आजकल का जंबू या जम्मू जो काश्मीर राज्य के अंतर्गत है।

जंबुल, जम्बुल [संज्ञा पु.] (सं.) १–जामुन। २–केतकी का पेड़। ३–कर्णपाली नामक रोग।

जंबुस्वामी, जम्बुस्वामी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जैन स्थविर का नाम।

जंबू, जम्बू [संज्ञा पु.] (सं.) १–जामुन। २–जामुन का फल। ३–दौना। ४–काश्मीर का एक प्रमुख नगर। + बहुत बड़ा। बहुत ऊँचा।

जंबूका, जम्बूका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसमिस।

जंबूखंड, जम्बूखंड [संज्ञा पु.] देखो 'जंबुखंड'।

जंबूद्वीप, जम्बूद्वीप [संज्ञा पु.] देखो 'जंबुद्वीप'

जंबूर [संज्ञा पु.] (फा.) १–जंबूरा। २–तोप की चर्ख। ३–ऊँट पर चलने वाली पुरानी तोप।

जंबूरक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–ऊँट पर चलने वाली पुरानी तोप। २–तोप की चर्ख। ३–भँवरकली।

जंबूरची [संज्ञा पु.] (फा.) १–तोपची। २–सिपाही। २–बर्कंदाज।

जंबूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाती है। २–एक प्रकार की छोटी तोप। ३–भँवरकली। ४–एक प्रकार की बड़ी चिमटी।

जंबूल, जम्बूल [संज्ञा पु.] (सं.) १–जामुन का वृक्ष। २–केवड़े का पेड़।

जंबूनज, जम्बूनज [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद गुड़हल का फूल।

जंभ, जम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १–दाढ़। २–जबड़ा। ३–जंबीरी नीबू। कंधा और हंसली। ४–भक्षण। ५–जम्हाई।

जंभक, जम्भक [संज्ञा पु.] (सं.) १–जंबीरी नीबू। २–शिव। [वि.] १–जंभाई या नींद लाने वाला। २–हिंसक। भक्षक। ३–कामक।

जंभका, जम्भका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंभाई।

जंभन, जम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) १–भक्षण। २–रति। संभोग। ३–जंभाई।

जंभा, जम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंभाई।

जँभाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आलस्य या निद्रा के कारण मुख खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया। उबासी।

जँभाना [क्रि. अ.] (हिं.) जंभाई लेना।

जंभारि, जम्भारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-अग्नि। ३-वज्र। ४-विष्णु।

जंभी, जम्भीर [संज्ञा पु.] देखो 'जंबीरी'।

जंभीरी [संज्ञा पु.] देखो 'जंबीरी नीबू'।

जंभूरा [संज्ञा पु.] देखो 'जंबूरा'।

जंवालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृत्युञ्जय। २-जन्म। ३-पिता। ४-विष्णु। विष। ६-मुक्ति। ७-तेज। ८-पिशाच। ९-वेग। १०-छंद शास्त्रानुसार तीन अक्षरों का एक गण। [वि.] १-तेज। वेगवान। २-जीतने वाला। जेता। [प्रत्य.] उत्पन्न। जात। जैसे-देशज।

जई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जौ की जाति का एक अन्न। २-जौ का छोटा अंकुर। ३-अकुर। अंखुआ। ४-वह फूल जिसमें कली के रूप में फल का मूलरूप भी हो। जैसे-खीरे की जई।

[वि.] (हिं.) देखो 'जयी'।

जईफ [वि.] (अ.) वृद्ध। बुड्ढा।

जईफी [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वृद्धावस्था। बुढ़ापा।

जकंद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छलांग। उछाल। चौकड़ी।

जकंदना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-कूदना। उछलना। २-टूट पड़ना।

जक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यक्ष। २-कंजूस। आदमी।

[संज्ञा स्त्री.] १-जिद्द। हठ। अड़। २-धुन। रट। ३-हार। पराजय। ४-हानि। घाटा। ५-पराभव। लज्जा। ६-डर। खौफ।

जकड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) जकड़ने या कसकर बांधना।

जकड़बंद करना-१-खूब कसकर बांधना। २-पूरी तरह अधिकार में कर लेना।

जकड़ना [क्रि. स.] (हिं.) कसकर बांधना।

[क्रि. अ.] तनाव, सूजन आदि के कारण अंगों का हिलडुल न सकना।

जकड़बंद [वि.] (हिं.) चारों ओर से अच्छी प्रकार कसकर बंधा हुआ।

जकना+* [क्रि. अ.] (हिं) १-भौचक्का होना। २-व्यर्थ बकना।

जकात [संज्ञा पु.] (अ.) १-दान। खैरात। २-कर। महसूल।

जकाती [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जगाती'।

जकित+* [वि.] (हिं.) चकित। विस्मित।

जकुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलयाचल। २-कुत्ता। ३-बैंगन का फूल।

जक्की [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बुलबुल की एक जाति।

) [वि.] (हिं.) देखो 'झक्की'।

जक्त+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'जगत्'।

जख+ [संज्ञा पु.] (हिं.) यक्ष।

जक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) भक्षण। भोजन। खाना।

जक्ष्मा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यक्ष्मा'।

जखनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यक्षिणी'।

जखम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाव। २-मानसिक दुःख का आघात। सदमा।

जखम हरा हो आना-पिछला दुःख फिर याद आना।

जखमी [वि.] (हिं.) घायल। जखम लगा हुआ।

जखीरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-कोष। खजाना। २-समूह। ढेर। ३-वह स्थान जहां पेड़, पौधे और बीज बिकते हों।

जखेड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'जखीरा'। २-देखो 'बखेड़ा'। ३-जमाव। यूथ। समूह।

जखैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कल्पित भूत।

जख्म [संज्ञा पु.] देखो 'जखम'।

जग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विश्व। संसार। दुनिया। २-संसार के लोग। ३-देखो 'यज्ञ'।

जगच्चक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

जगजगा [संज्ञा पु.] (हिं.) पन्नी।

[वि.] चमकीला। प्रकाशित।

जगजगाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना। जगमगाना।

जगजगाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमकदमक। चमकीलापन।

जगजोनि [संज्ञा पु.] (हिं.) जगयोनि। ब्रह्मा।

जगण [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि तथा अंत के लघु होते हैं (।ऽ।) जैसे-रमेश।

जगत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्व। संसार। दुनिया। २-वायु। ३-शिव। ४-जंगम। ५-गोपीचन्दन।

जगत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कूएं के ऊपर का चबूतरा।

[संज्ञा पु.] विश्व। संसार। जग।

जगत-सेठ [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत बड़ा महाजन या सेठ जिसकी साख संसार में मानी जाय।

जगती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संसार। भुवन। २-पृथ्वी। ३-बारह अक्षरों वाला एक वैदिक छन्द।

जगती-तल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी। भूमि।

जगतीधर [संज्ञा पु.] (सं.) बोधिसत्व।

जगत्साक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

जगत्सेतु [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

जगदंतक, जगदन्तक, [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु।

जगदंबा, जगदम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

जगदंबिका, जगदम्बिका [संज्ञा पु.] (सं दुर्गा।

जगद [संज्ञा पु.] (सं.) पालक। रक्षक।

जगदादि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-परमेश्वर।

जगदाधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २- वायु। हवा।

जगदानंद, जगदानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

जगदायु [संज्ञा पु.] (सं.) वायु।

जगदीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २- विष्णु। ३-जगन्नाथ।

जगदीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

जगदीश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवती।

जगद्-गुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २- शिव। ३-नारद। ४-अनेक देशों में पू और मान्य व्यक्ति। ५-शंकराचार्य की ग पर के महंतों की उपाधि।

जगद्गौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २- देवी का नाम।

जगद्दीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २- देव।

जगद्धाता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जगद्धात्री] १- ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-महेश।

जगद्धात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा की ए मूर्त्ति। २-सरस्वती।

जगद्बल [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा।

जगद्योनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु ब्रह्मा। ४-पृथ्वी। ५-परमेश्वर।

जगद्वहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

जगद्विनाश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकाल।

जगनक [संज्ञा पु.] (देश.) महोबे के राजा के एक कवि।

जगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नींद त्याग कर उठ जागना। २-सचेत या सावधान होना। ३- देवी-देवता आदि का अपना प्रभाव दिखा ४-उत्तेजित होना। ५-(आग का) अ प्रकार जलना। ६-चमकना। जगमगाना।

जगन्नाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-विष्णु ३-पुरी के प्रसिद्ध देवता।

जगन्निवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। परमेश्वर। २-विष्णु।

जगन्नियंता [यन्ता] [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

जगन्नु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-जंतु।

जगन्मय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

जगन्मयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २- समस्त संसार को चलाने वाली शक्ति।

जगन्माता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

जगन्मोहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २- महामाया।

जगमग, जगमगा [वि.] (हिं.) प्रकाशित। २

जघन्यज [संज्ञा पु.] (सं.) १–क्षुद्र। २–अन्त्यज।

जघन्यभ [संज्ञा पु.] (सं.) आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, भरणी और शतभिषा ये नक्षत्र।

जघ्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १–वध करने वाला। २–वह अस्त्र जिसके द्वारा वध किया जाय।

जचना [क्रि. अ.] देखो 'जँचना'।

जच्चा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रसूता स्त्री। *जच्चा खाना*–सूतिकागृह।

जच्छ* [संज्ञा पु.] देखो 'यक्ष'।

जज [संज्ञा पु.] (अं.) १–किसी प्रकार का निर्णय करने वाला व्यक्ति। निर्णायक। २–न्याय विभाग का वह अधिकारी जो जिले के आये अभियोगों को सुनता या उनपर पुनर्विचार करता है।

जजमान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यजमान'।

जजिमान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यजमान'।

जजिया [संज्ञा पु.] (अ.) १–दंड। २–एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य के समय में दूसरे धर्म वालों पर लगता था।

जजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जज की कचहरी। २–जज का काम या पद।

जजीरा [संज्ञा पु.] (फा.) टापू। द्वीप।

जज्ज [संज्ञा पु.] देखो 'जज'।

जज्ञ* [संज्ञा पु.] देखो 'यज्ञ'।

जझर [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे की चद्दर का वह तिकोना टुकड़ा जो उसमें से तवे कटने के उपरान्त बच रहता है।

जट [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गोदना जो झाड़ी के आकार का होता है।
[संज्ञा पु.] देखो 'जाट'।

जटना [क्रि. स.] (हिं.) १–धोखा देकर अधिक मूल्य या कोई वस्तु लेना। ठगना। २–ठोंककर लगाना। जड़ना।

जटल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झूठमूठ की बात। गप। *जटल काफ़िया*–बेतुकी बात।

जटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लट के रूप में गुथे हुए सिर के बहुत बड़े-बड़े बाल। २–वृक्ष की के पतले सूत। झकरा। ३–एक में उलझे हुए बहुत से रेशे। ४–शाखा। ५–पटसन। जूट। ६–जटामासी। ७–वेदपाठ का एक भेद। ८–कौंछ। केंवाँच।

जटाचीर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

जटाजिनी [संज्ञा पु.] (सं.) जटा और मृगचर्म धारण करने माला।

जटाजूट [संज्ञा पु.] (सं.) १–जटा का समूह। २–शिव की जटा।

जटाटंक, जटाटङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

जटाटीर [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

जटाधर [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–जटाधारी।

जटाधारी [वि.] (सं.) जिसके जटा हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–मरसे की जाति एक का पौधा।

जटाना [क्रि. अ.] (हिं.) ठगा जाना।
[क्रि. स.] (हिं) जटने का प्रेरणार्थक रूप।

जटापटल [संज्ञा पु.] (सं.) वेदपाठ करने का एक ढंग।

जटामाली [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

जटामासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वनस्पति की सुगन्धित जड़। बालछड़।

जटायु [संज्ञा पु.] (सं.) १–रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध। २–गुग्गुल।
[वि.] (सं.) जटाधारी।

जटाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी।

जटाव [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काली मिट्टी।

जटावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी।

जटावल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–रुद्रजटा। २–एक प्रकार की जटामासी।

जटासुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक राक्षस जो भीम के हाथों से मारा गया था। २–एक देश का नाम।

जटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पाकर का पेड़। २–बरगद का वृक्ष। ३–जटा। ४–समूह। ५–जटामासी।

जटित [वि.] (सं.) जड़ा हुआ।

जटिल [वि.] (सं.) १–जटाधारी। २–जो जल्दी से समझ में न आवे। दुरूह। दुर्बोध। ३–क्रूर। दुष्ट। हिंसक।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–सिंह। २–ब्रह्मचारी। ३–जटामासी। ४–शिव।

जटिलक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्राचीन ऋषि का नाम। २–इस ऋषि के वंशज।

जटिला [संज्ञा स्त्री] (सं.) ब्रह्मचारिणी। जटामासी। ३–पीपल। ४–वच। ५–दमनक।

जटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पाकर। २–जटामासी।

जटु [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर पर का धब्बा जो जन्म से ही होता है। लच्छन या लक्षण।

जठर [संज्ञा पु.] (सं.) १–पेट। पेट का भीतरी भाग। २–एक देश का नाम। ३–शरीर। ४–उदर का एक रोग।
[वि.] (हिं.) १–वृद्ध। बूढ़ा। २–कठिन।

जठरगुत [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

जठराग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट की वह अग्नि या गरमी जिसमें अन्न पचता है।

जठरामय [संज्ञा पु.] (सं.) १–अतिसार रोग। २–जलोदर रोग।

जठल [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक काल का एक जल पात्र।

जठेरा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. जठेरी] जेठा। बड़ा।

जठेरी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. प.] जेठी। बड़ी।

जड़ [वि.] (सं.) १-चेतना रहित। जिसमें चेतना न हो। २-चेष्ठा रहित। स्तब्ध। ३-ना समझ मूर्ख। मूक। गूंगा। ६-अनभिज्ञ। ७-जो वेद पढ़ने में असमर्थ हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। पानी। २-सीसा नामक धातु।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वृक्ष का वह भाग जो भूमि में रहता है। २-वह जिसपर कोई वस्तु स्थित हो। नींव। बुनियाद। ३-हेतु। कारण। ४-जिस पर कोई वस्तु अवलम्बित हो। आधार।
जड़ उखाड़ना या खोदना–समूल नाश करना। *जड़ जमाना*–स्थायी होना। *जड़ पकड़ना*–जमना।

जड़आमला [संज्ञा पु.] (हिं.) भुईं आमला।

जड़क्रिया [वि.] (सं.) सुस्त। दीर्घसूत्री।

जड़ता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अचेतनता। २-मूर्खता। चित्त के विवेकशून्य होने की अवस्था में उत्पन्न एक संचारी भाव। ४-स्तब्धता।

जड़ताई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जड़ता'।

जड़त्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जड़ता'।

जड़ना [क्रि. स.] (हि.) १-एक वस्तु को दूसरी वस्तु में बैठाना। २-पच्ची करना। जैसे-थप्पड़ जड़ना। ४-चुगली खाना।

जड़भरत [संज्ञा पु.] (सं.) अंगीरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।

जड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) १-जड़ने का काम कराना। २-कील आदि गड़वाना।

जड़वी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धान का छोटा पौधा।

जड़हन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर रोपा जाता है। शालि।

जड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भुइं आमला। २-कौंछ। केवाँच।

जड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जड़ने का काम। पच्चीकारी। २-जड़ने का भाव। ३-जड़ने की मजदूरी।

जड़ाऊ [वि.] (हिं.) जिसपर नग या रत्न जड़े हों।

जड़ान+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जड़ने का काम। २-जड़ने का भाव।

जड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) जड़ने का काम दूसरे से कराना।
+[क्रि. अ.] जाड़ा सहना। शीत लगना।

जड़ाव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जड़ने का काम। २-जड़ने का भाव।

जड़ावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जड़ने का काम या भाव।

जड़ावर [संज्ञा पु.] (हिं.) जाड़े में पहनने के कपड़े।

जड़ावल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जड़ावर'।

जड़ित* [वि.] (हि.) १-अच्छी प्रकार बैठाया या जड़ा हुआ। २-जिसमें नगीने जड़े हों। ३-भलीभांति बंधा या जकड़ा हुआ।

जड़िमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जड़ता। २-एक भाव जिसमें मनुष्य को इष्ट-अनिष्ट का ज्ञान नहीं होता।

जड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नगों के जड़ने का काम करने वाला पुरुष। कुंदनसाज।

जड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वनस्पति की वह जड़ जो औषध में प्रयोग होती हो।
जड़ीबूटी–वनौषध।

जड़ीला [संज्ञा पु.] (हिं.) जड़वाली वनस्पति। जैसे—गाजर। मूली।
[वि.] (हिं.) जड़दार। जिसमें जड़ हो।

जड़ुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगूठे में पहनने का चाँदी का छल्ला।

जड़ुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जटुल'।

जड़ैया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जूड़ी।

जड्ड* [वि.] (हिं.) देखो 'जड़'।

जढ़ता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जड़ता'।

जढ़ाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-जड़ हो जाना। २-जिद करना।

जत* [वि.] (हिं.) जितना। जिस मात्रा का।
[संज्ञा पु.] (हिं.) वाद्य के बारह प्रबन्धों में से एक।

जतन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यत्न'।

जतनी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यत्न करने वाला। चालाक।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चर्खे की पंखुड़ियों में बंधने वाली डोरी।

जतलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जताना'।

जतसर [संज्ञा पु.] देखो 'जँतसर'।

जताना [क्रि. स.] (हिं.) १-ज्ञात कराना। बतलाना। २-पहले से सूचना देना।
[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'जँताना'।

जतारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) वंश। कुल। घराना।

जति* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यति'।

जती [संज्ञा पु.] (हि.) संन्यासी।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यति'।

जतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोंद। २-लाख। लाह। ३-देखो 'लच्छन'।

जतुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पपड़ी नामक लता। २-चमकादड़।

जतुकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पपड़ी नामक लता।

जतुरूह [संज्ञा पु.] (सं.) घास-फूस का बना घर जो जल्दी जल सके।

जतुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमगादड़।

जतुपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शतरंज का मो २-चौरस की गोटी।

जतुमणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जिसमें चमड़े पर दाग पड़ जाता है। जतुक।

जतुमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

जतुरस [संज्ञा पु.] (सं.) लाख का बना महावर।

जतू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक पक्षी का २-लाख का बना रंग।

जतूकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

जतूका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जतुका'।

जतेक+* [क्रि. वि.] (हिं.) जितना। जिस का।

जत्था [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत से समूह। झुंड।

जत्रानी [संज्ञा स्त्री.] (?) जाटों की एक

जत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंधे और बांह को वाली हड्डी। २-हँसिया। हँसुली।

जत्वश्मक [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

जथा [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'यथा'। स्त्री.] १-मंडली। समूह। टोली। धन।

जद+ [क्रि. वि.] (हिं.) जब। जब कभी। यदि। अगर।

जदपि [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'यद्यपि'।

जदवद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जद-बद'।

जदवर, जदवार [संज्ञा पु.] (हिं.) निर्विसी।

जदीद [वि.] (अ.) नया। नवीन।

जदु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यदु'।

जदुपति [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुपति। श्रीकृष्ण।

जदुपाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुपाल।

जदुपुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुपुर। का नगर, मथुरा।

जदुबंसी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यदुवंशी'।

जदुराइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुराज। श्रीकृष्ण।

जदुराज* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुराज।

जदुराम* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुराम। राम।

जदुराज* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुराज।

जदुवर* [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुवर। श्रीकृष्ण।

जदुवीर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) यदुवीर।

जद्द+* [वि.] (हिं.) १-अधिक। ज्यादा। प्रचण्ड। प्रबल।
[संज्ञा पु.] (अ.) दादा। पितामह।

जद्दपि+* [क्रि वि.] (हिं.) देखो 'यद्यपि'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं) अकथनीय बात। दुर्वचन।

जनंगम, जनङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) चांडाल।

जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोक। लोग। २-प्रजा। ३-अनुयायी। अनुचर। ४-समूह। समुदाय। ५-सात लोकों में से पांचवां लोक।

जन-अभिशंसक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका अभियोगी या अभियोक्ता सरकार हो। सरकार की ओर चलाया गया अभियोग। पब्लिक-प्रोसीक्युटर।

जनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्मदाता। उत्पादक। २-पिता। बाप। सीताजी के पिता।

जनकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्पन्न करने का भाव या काम। २-उत्पन्न करने की शक्ति।

जनकनंदिनी, नन्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता। जानकी।

जनकपुर [संज्ञा पु.] (सं.) मिथिला की प्राचीन राजधानी।

जनकरी [संज्ञा पु.] (हिं.) लाख का बना रंग।

जनकौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जनकपुर। २-राजा जनक के परिवार के लोग।

जनखा [वि.] (फा.) १-हीजड़ा। नपुंसक। २-स्त्रियों के समान हावभाव करने वाला।

जनगणना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी स्थान अथवा देश के निवासियों की होने वाली गणना या गिनती। सेन्सस।

जनगी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मछली।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) मंडप।

जनचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

जनचर्चा [संज्ञा स्त्री] (सं.) सर्वसाधारण में फैली हुई बात।

जनजाति [संज्ञा स्त्री.](सं.) कुछ विशिष्ट स्थानों में पाये जाने वाले व्यक्तियों का समूह जो प्रायः एक ही पूर्वज की सन्तान होते हैं तथा जो सभ्यता संस्कृति आदि की दृष्टि से आसपास के निवासियों से सवथा भिन्न और कुछ निम्न स्तर पर होते हैं। ट्राइब।

जनजाति-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां जनजाति के लोग निवास करते हैं। ट्राइबल एरिया।

जनजाति-परिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जनजाति के लोगों द्वारा चुने हुए या नियुक्त हुए सदस्यों की सभा या परिषद्। ट्राइबल कौन्सिल।

जनतंत्र, जनतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने (निर्वाचित) प्रतिनिधि और प्रधान शासक चुनती है। डेमोक्रेसी। प्रजासत्तात्मक राज्य।

जनतंत्रवाद, जनतन्त्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) जनतंत्री या प्रजातंत्री सिद्धान्त। प्रजातंत्रवाद। लोकतंत्रवाद। डेमोक्रेटिज्म।

जनतंत्रवादी, जनतन्त्रवादी [वि.] (सं.) १-जनतंत्र या लोकतंत्र-संबंधी। २-जनतंत्र के सिद्धान्तानुसार। ३-जनतंत्र का पक्षपाती। डेमोक्रेट।

जनतंत्रात्मक, जनतन्त्रात्मक [वि.] (सं.) देखो 'जनतन्त्रवादी'।

जनतंत्रीकरण, जनतन्त्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) जनतंत्री राज्य होने का भाव। जनतन्त्री सिद्धान्तों के अनुसार राज्य।

जनतांत्रिक, जनतान्त्रिक [वि.] (सं.) प्रजातंत्रवादी। जनतंत्रवादी।

जनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-'जन' का भाव। २-जनसमूह। ३-किसी देश या स्थान के सब निवासी। सर्वसाधारण। पब्लिक।

जनत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धूप और वर्षा से रक्षा करने वाली वस्तु। छाता।

जनथोरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कुकड़बेल।

जनदेव [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

जनधा [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

जनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पत्ति। उद्भव। २-जन्म। ३-आविर्भाव। ४-वंश। कुल। ५-पिता। ६-परमेश्वर।

जनना [क्रि. स.] (हिं.) १-जन्म देना। उत्पन्न करना। २-ब्याना।

जननाशौच [संज्ञा पु.] (सं.) जन्म होने पर अशुचि। वृद्धि अशौच।

जननि॰ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जननी'।

जननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्पन्न करने वाली। २-माता। मा। ३-जूही का पेड़। ४-जटमांसी। ५-मजीठ। ६-कुटकी। ७-चमगादड़। ८-कृपा। दया।

जनेंद्रिय, जनेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भग। योनि।

जनपद [संज्ञा पु.] (सं.) बसा हुआ स्थान। वस्ती। आबादी।

जनपाल, जनपालक [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों का पालन-पोषण करने वाला।

जनप्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकनिन्दा। २-अफवाह। किंवदंती।

जनप्रिय [वि.] (सं.) सब का प्यारा। सर्वप्रिय।

जनप्रिय-प्रभुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) लोकप्रिय शासक।

जनप्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब का प्रिय-पात्र होने का भाव।

जनपुरु [संज्ञा पु.] (सं.) लोकहित-रत व्यक्ति।

जनबगुल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बगुला

जनबल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेना के निमित्त प्राप्य व्यक्ति (जो किसी राष्ट्र का बल सूचित करते हैं)। मैन-पॉवर।

जनम [संज्ञा पु.] देखो 'जन्म'।

जनम-घूँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह घूँटी जो बच्चों को जन्मकाल से लेकर दो तीन वर्ष तक पिलाई जाती है।

(किसी बात का) जनम घूँटी में पड़ना-अभ्यास या चसका होना।

जनम-दिन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जन्म-दिन'।

जनम-धरती॰ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जन्मभूमि'।

जनमना [क्रि. अ.] (हिं.) जन्म लेना। उत्पन्न होना।

जनमनोभाव [संज्ञा पु.] (सं.) सर्व साधारण के मन में उत्पन्न होने वाला भाव या प्रकृति। लोकप्रकृति। मॉस मेंटेलेटी।

जनमपत्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जन्मपत्री'।

जनमरक [संज्ञा पु.] (सं.) महामारी।

जनमर्यादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लौकिक आचार या रीति।

जनमसंघाती॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसका साथ जन्म से ही हो। २-वह जिसका साथ जन्म से रहे।

जनमाना [क्रि. स.] (हिं.) प्रसव करवाना।

जनमेजय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जन्मेजय'।

जन-यात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'जलूस'।

जनयिता [संज्ञा पु.] (हिं.) जन्मदाता। पिता। बाप।

जनयित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्म देने वाली। माता। जननी।

जनरल [संज्ञा पु.] (अं.) फौज का वह अधिकारी जिसके अधीन कई रेजिमेंट होती है। [वि.] (अं.) साधारण। आम।

जन-रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अफवाह। किंवदंती २-बदनामी। ३-कोलाहल। शोर।

जनलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार चौदह लोकों में ऊपर के सात लोकों में पाँचवाँ लोक जिसमें ब्रह्मा के मानसपुत्र तथा बड़े बड़े योगीन्द्र रहते हैं।

जनवरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अंगरेजी साल का प्रथम मास जो ३१ दिन का होता है।

जनवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद रोहित का पेड़। २-जनप्रिय।

जनवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जनाई'।

जनवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार जनता अपने लिये अपना राज्य अपने मत का या वोटों से बनाती है।

जनवादी [वि.] (सं.) जनवाद सिद्धांत को मानने वाला।

जनवाना [क्रि. स.] (हि.) १-प्रसव कराना। २-किसी दूसरे के द्वारा सूचित करना।

जनवास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सर्व साधारण के ठहरने का स्थान। २-बरातियों के ठहरने का

स्थान। ३-सभा। समाज।

जनवासा [संज्ञा पु.] (हिं.) बरातियों के ठहरने का स्थान।

जन-वास्तु-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजकीय विभाग जिसके अधीन सार्वजनिक निर्माण कार्य होता है। *पबलिक-वर्कस-डिपार्टमेंट।*

जनश्रुत [वि.] (सं.) विख्यात। प्रसिद्ध।

जनश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अफवाह। किंवदंती

जन-संकट [संज्ञा पु.] (सं.) सार्वजनिक या सर्वसाधारण पर आया हुआ। किसी राष्ट्र या राज्य पर महामारी, अकाल, आदि का संकट। संकट।

जन-संख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी नगर या देश के लोगों की गिनती। आबादी। *पॉपुलेशन।*

जन-संज्ञाप्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) सार्वजनिक विज्ञापना। सर्व साधारण को सूचित करने का भाव। *पब्लिक नाटिफिकेशन।*

जन-संभरण-विभाग [संज्ञा पु.] (हिं.) सरकार या राज्य की ओर से संचालित वह विभाग जिसके द्वारा जनता की दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं के मूल्यों को निश्चय और वितरण का उचित प्रबन्ध किया जाता है। जन-पूर्ति-विभाग। *डिपाटमेंट आफ सिविल सप्लाइज।*

जनसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सार्वजनिक कार्यकर्ता। २-राजकर्मचारी। सरकारी नौकर।

जनसेवा [संज्ञा पु.] (सं.) १-सार्वजनिक सेवा २-सरकारी नौकरी।

जन-सेवा-समितक [संज्ञा पु.] (सं.) सार्वजनिक सेवा करने के लिये राज्य की ओर से मान्यता प्राप्त प्रतिनिधि या प्रतिनिधि अधिकारी। *पब्लिक सर्विस कमीशन।*

जन-स्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्यों का निवास स्थान। २-दण्डकारण्य का एक पुराना प्रदेश

जन-स्वास्थ्य-संचालक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वास्थ्य विभाग का वह अधिकारी जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये उचित निर्देश आदि देता रहता है।
डाइरैक्टर-आफ-पब्लिक हैल्थ।

जन-हरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक दंडकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ३० लघु और एक गुरु होता है।

जनांत,जनान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह प्रदेश जिसकी सीमा निश्चित हो। २-वह स्थान जहाँ मनुष्य रहते हों। ३-यम।
[वि.] (सं.) मनुष्यों का नाश करने वाला।

जनांतिक, जनान्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) दो व्यक्तियों में परस्पर वह सांकेतिक बातचीत जिसे दूसरे उपस्थित लोग न समझ सकें।

जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्पत्ति। पैदायश।
[संज्ञा पु.] देखो 'जिना'।

[वि.] (सं.) उत्पन्न किया हुआ। जन्माया हुआ।

जनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जनाने वाली दाई। २-जनाने की मज़दूरी।

जनाउ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जनाव'।

जनाचार [संज्ञा पु.] (सं.) देश या समाज की प्रचलित रीति। लोकाचार।

जनाज़ा [संज्ञा पु.] (अ.) १-मृतक शरीर। शव। लाश। २-वह अरथी या संदूक जिसमें शव को रखकर गाड़ने के लिए ले जाते हैं।

जनाधिनाथ [संज्ञा पु.] १-ईश्वर। २-राजा।

जनानखाना [संज्ञा पु.] (फा.) घर का वह भाग जिसमें स्त्रियां रहती हैं। अन्तःपुर।

जनाना [क्रि. स.] (हिं.) १-मालूम करना। जताना। २-जनने का काम कराना। उत्पन्न कराना।

ज़नाना [वि.] (फा.) [स्त्री. जनानी] १-स्त्रियों का। स्त्री-सम्बन्धी। २-नपुंसक। हीजड़ा। ३-निर्बल। डरपोक। [संज्ञा पु.] १-जनखा। २-अंतःपुर।
जनाना करना-पर्दा करना।

जनानापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मेहरापन। स्त्रीत्व।

जनाब [संज्ञा पु.] (अ.) महाशय। महोदय।

जनाबआली [संज्ञा पु.] (अ.) मान्यवर। महोदय।

जनार्दन [संज्ञा (सं.) विष्णु। [वि.] दुखदायी।

जनाव [संज्ञा पु.] (हिं.) जानने की क्रिया या भाव। सूचना। इत्तिला।

जनावर [संज्ञा पु.] देखो 'जानवर'।

जनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेड़िया। २-मनुष्यभक्षक।

जनाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्मशाला। २-सराय। ३-घर। मकान।

जनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जन्म। उत्पत्ति। २-नारी। स्त्री। ३-माता। ४-पुत्र-वधू। ५-भार्या। पत्नी। ६-जतुका। ८-जन्मभूमि।

जनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहेली। बुझौवल।

जनित [वि.] (सं.) १-उत्पन्न। जमा हुआ। २-उत्पन्न किया हुआ।

जनिता [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्पन्न करने वाला। पिता।

जनित्र [संज्ञा पु.] (सं.) जन्म-स्थान। जन्मभूमि।

जनित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्पन्न करने वाली। माता। मा।

जनिनीलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का बड़ा पेड़।

जनियाँ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रियतमा। प्राणप्यारी। प्रिया। प्रेयसी।

जनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दासी। सेविका। २-स्त्री। ३-उत्पन्न करने वाली। माता। कन्या। लड़की। [वि.] [स्त्री प्र.] उत्पन्न हुई। पैदा की हुई।

जनीपर [संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ का

जनु [क्रि. वि.] (हिं.) मानो। (उत्प्रेक्षावाचक)
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्म। उत्पत्ति।

जनेंद्र, जनेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

जनेऊ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यज्ञोपवीत। सूत्र। २-यज्ञोपवीत संस्कार।

जनेत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरात। बरयात्रा।

जनेता [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता। बाप।

जनेती [संज्ञा पु.] (हिं.) बराती। बरयात्री।

जनेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जिसके पौधे बहुत लम्बे होते हैं।

जनेव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जनेऊ'।

जनेवा [संज्ञा पु.](हिं.) १-लकड़ी हुई लकीर या धारी। २-एक प्रकार घास।

जनेश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नरेश।

जनेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हल्दी। का पेड़। ३-पपड़ी। ४-वृद्धि नामक

जनैया [वि.] (हिं.) जानने वाला। जानकार।

जनो [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जनेऊ'। [क्रि. वि.] मानो। गोया।

जन्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ से निकलकर धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश। अस्तित्व में आना। आविर्भाव। जीवन। जिंदगी। ४-आयु।
जन्म लेना-उत्पन्न होना। *जन्म बिगड़ना*-धर्म नष्ट होना। *जन्म-जन्म*-सदा। *जन्म में थूकना*-घृणापूर्वक धिक्कारना। *हारना*-१-व्यर्थ जन्म खोना। २-दूसरे के अधीन होकर रहना।

जन्म-अष्टमी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जन्माष्टमी'।

जन्मकील [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

जन्मकुंडली, जन्मकुण्डली [संज्ञा स्त्री.] फलित ज्योतिष के अनुसार वह चक्र किसी के जन्म समय के ग्रहों की लिखी रहती है।

जन्मकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पिता। जन्मदाता।

जन्मग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) उत्पत्ति।

जन्मज [वि.] (सं.) जन्मजात। जन्मसिद्ध।

जन्मज-रोग [संज्ञा पु.] (हिं.) पैतृक रोग।

जन्मजात [वि.] (हिं.) जन्म से ही प्राप्त कार आदि)।

जन्मतिथि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्म की जन्मदिन। २-वर्षगाँठ।

जन्मतुआ+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. नवोत्पन्न। दुधमुँहा।

जन्मदिन [संज्ञा पु.] (सं.) जन्म का दिन । वर्ष-गाँठ ।

जन्मनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जन्म समय का नक्षत्र ।

जन्मना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जन्म लेना । जन्म ग्रहण करना । २-अस्तित्व में आना । आविर्भूत होना ।

जन्मपंजी, जन्मपञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थानिक परिषदों की वह पंजी जिसमें कि क्षेत्र में जन्मने वाले बच्चों का जन्मकाल, पिता का नाम तथा जन्म स्थान आदि बातें लिखी जाती हैं । (बर्थ-रजिस्टर) ।

जन्मप [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्मलग्न का स्वामी (फ॰ ज्योतिष) । २-जन्मराशि का स्वामी (फ॰ ज्योतिष) ।

जन्मपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्मराशि का स्वामी (कुंडली) । २-जन्मलग्न का स्वामी ।

जन्मपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्मपत्री । २-जन्म का विवरण । २-किसी वस्तु का आदि से अंत तक का विस्तृत विवरण ।

जन्मपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्मपत्री ।

जन्मपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा तथा अन्तर्दशा आदि दिए हों ।

जन्मप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माता । मा । २-जन्म होने का स्थान ।

जन्मभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्म समय का लग्न । २-जन्मसमय का नक्षत्र । ३-जन्म की राशि । ४-जन्मनक्षत्र के सजातीय नक्षत्रादि ।

जन्मभाज [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणी । जीव । जानवर ।

जन्मभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जन्मस्थान । जिस स्थान पर किसी का जन्म हुआ हो । २-वह देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो ।

जन्मभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) जीव । प्राणी ।

जन्मराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह राशि जिसमें किसी का जन्म हुआ हो ।

जन्मवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) भग । योनि ।

जन्मविधवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पति उसके बचपन में ही मर गया हो ।

जन्मसिद्ध [वि.] (सं.) १-जिसकी सिद्धि जन्म से प्राप्त हो । २-जन्म-मात्र में प्राप्त । *जन्मसिद्ध अधिकार*-जन्म से ही प्राप्त अधिकार ।

जन्मस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्मभूमि । २-माता का गर्भ । ३-कुंडली में वह स्थान जिसमें जन्म समय के ग्रह रहते हैं ।

जन्मांतर, जन्मान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरा जन्म ।

जन्मांध, जन्मान्ध [वि.] (सं.) जन्म का अंधा ।

जन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका जन्म हुआ हो । [वि.] (सं.) उत्पन्न । जो पैदा हुआ हो ।

जन्माधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव का नाम । २-जन्म राशि का स्वामी ।

जन्माना [क्रि. स.] (हिं.) उत्पन्न करना । जन्म देना ।

जन्माष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म आधी रात के समय हुआ था ।

जन्मास्पद [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मभूमि । जन्मस्थान ।

जन्मी [संज्ञा पु.] (हिं.) प्राणी । जीव । [वि.] (हिं.) जो उत्पन्न हुआ हो ।

जन्मेजय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-कुरुवंश के प्रसिद्ध राजा परीक्षित के पुत्र का नाम ३-एक नाग का नाम ।

जन्मेश [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मराशि का स्वामी ।

जन्मोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के स्मरण या जन्मदिन का उत्सव ।

जन्य [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जन्या] १-जन साधारण । २-अफवाह । किंवदंती । ३-राष्ट्र । ४-पुत्र । बेटा । ५-पिता । ६-जन्म । वर । २-हाट । बाजार । ९-निन्दा । परिवाद । १०-जामाता । ११-बराती । १२-देह । १३-जाति । [वि.] (सं.) १-जनसंबंधी । २-राष्ट्रिय । जातीय । ३-जो किसी से उत्पन्न हुआ हो । उद्भूत ।

जन्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्म होने का भाव ।

जन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वधू की सहेली । २-वधू । ३-माता की सखी । ४-प्रीति । स्नेह ।

जन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि । २-विधाता । ३-प्राणी । ४-जन्म । उत्पत्ति ।

जन्हु [संज्ञा पु.] देखो 'जह्नु'।

जप [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी मंत्र नाम या वाक्य का बारबार किया जाने वाला उच्चारण । २-जपने वाला ।

जपजी [संज्ञा पु.] (हिं.) सिक्खों का एक पवित्र धर्मग्रंथ ।

जप-तप [संज्ञा पु.] (सं.) पूजापाठ ।

जपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जप करने का काम । जप करने का भाव ।

जपन [संज्ञा पु.] (सं.) जपने का काम । जप ।

जपना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वाक्य अथवा शब्द को धीरे धीरे देर तक दोहराना । जप करना । किसी मन्त्र का संख्यानुसार जप करना । ३-अनुचित रूप से दूसरे की वस्तु ले लेना ।

जपनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माला । २-गोमुखी

जपनीय [वि.] ((सं.) जप करने योग्य ।

जपपरायण [वि.] (सं.) जप करने में आसक्त।

जपमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जप करने की माला ।

जपयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) जप ।

जपहोम [संज्ञा पु.] (सं.) जप ।

जपा [संज्ञा पु.] (सं.) जवा । अड़हुल । [संज्ञा पु.] (हिं.) जपने वाला ।

जपाना* [क्रि. स.] (हिं.) जप कराना ।

जपिया [वि.] (हिं.) जपने या जप करने वाला ।

जपी [वि.] (हिं.) जप करने वाला ।

जप्त [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जब्त'।

जप्तव्य [वि.] (सं.) जो जपने योग्य हो। जपनीय ।

जप्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जब्ती'।

जप्य [वि.] (सं.) जपने योग्य । [संज्ञा पु.] (सं.) मंत्र का जप ।

जफा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अन्याय और अत्याचारपूर्ण व्यवहार । सख्ती ।

जफाकश [वि.] (फा.) १-सहिष्णु । सहनशील। २-मेहनती । परिश्रमी ।

जफीर [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जफील'।

जफील [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-सीटी का शब्द । २-वह जिससे सीटी बजाई जाय । सीटी ।

जफीलना* [क्रि. अ.] (हिं.) सीटी बजाना । सीटी देना ।

जब [क्रि. वि.] (हिं.) जिस समय । जिस वक्त । *जब-जब*-जिस-जिस समय । *जब-तब*-कभी-कभी । *जब देखो तब*-सदा । सर्वदा । प्रायः । अक्सर ।

जबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मुंह में ऊपर-नीचे की वह हड्डियां जिनमें दांत उगे होते हैं । कल्ला । *जबड़ा फाड़ना*-मुंह खोलना । *जबड़ा तोड़*-जबरदस्त । बलबान ।

जबदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का धान ।

जबर [वि.] (फा.) १-बलवान् । बली । २-दृढ । मजबूत ।

जबरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्याययुक्त अत्याचार । सख्ती ।

जबरजद [संज्ञा पु.] (अ.) पीले रंग का एक प्रकार का पन्ना नामक रत्न ।

जबरदस्त [वि.] (फा.) १-बलवान् । शक्तिशाली। २-दृढ । मजबूत ।

जबरदस्ती [संज्ञा स्त्री] (फा.) अत्याचार । प्रबलता । अन्याय । [क्रि. वि.] बलपूर्वक ।

जबरन् [वि.] (हिं.) बलात् । बलपूर्वक ।

जबरा [वि.] (हिं.) बलवान । प्रबल । [संज्ञा पु.] अनाज रखने का चौड़े मुंह का बरतन । (अं.) एक प्रकार का घोड़े के आकार का पशु जिसके शरीर पर काली-काली लम्बी धारियां होती हैं ।

ज़बह [संज्ञा पु.] (अ.) पशु अथवा पक्षी का गला काटकर प्राण लेने की क्रिया ।

जबाँ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज़बान'।

ज़बाँदराज [वि.] देखो 'ज़बानदराज'।

ज़बाँदराजी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज़बानदराजी'।

ज़बान [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-जीभ। जिह्वा। २-जबान से निकाला हुआ शब्द। बोल। ३-प्रतिज्ञा। वायदा। ४-भाषा।

जबान उलटना-१-मुँह से शब्द निकलना। २-कहकर मुकर जाना। *ज़बान काट कर देना*-१-प्रतिज्ञा करना।

जबान कटना-पछतावा होना। *जबान के नीचे जबान रखना या होना*-कहकर मुकर जाना। *जबान को मुँह में रखना*-१-चुप होना। २-वे मौके बात न कहना। *जबान खींचना*-अनुचित या धृष्टतापूर्ण बात के लिए कठोर दंड देना। *जबान खुलना*-मुख से बात निकलना। *जबान खोलना*-बोलना। *जबान घिसना या घिस जाना*-कहते कहते थक जाना। *जबान चलना*-१-खाते ही रहना। २-मुख से अनुचित शब्द निकलना। ३-जल्दी-जल्दी बोलना। *जबान चलाना*-१-बोलना। २-अनुचित शब्द कहना। *जबान चाटना*-होंठ चाटना। *जबान टूटना*-१-(बालक का) स्पष्ट बोलना। आरम्भ करना। *जबान डालना*-१-पूछना। प्रश्न करना। २-माँगना। *जबान थामना या पकड़ना* १-कहने या बोलने न देना। २-अशुद्ध उच्चारण या कथित शब्द पर तर्क करना। *जबान दबाकर कहना, दबी जबान से कहना*-१-धीरे से या चुपके से कहना। २-डरते, सहमते हुए कहा। *जबान देना या हारना*-प्रतिज्ञा करना। *जबान निकालना*-कुछ कहना। *जबान पर आना*-कहने की इच्छा होना। *जबान पर रखना*-स्वाद लेना।

जबान पर लाना-बोलना। *जबान पर होना, धरा होना*-एक दम याद होना। २-प्रसिद्ध होना। *जबान बंद करना*-१-विवाद या बहस में हारना। २-बोलने न देना। ३-चुप होना। *जबान बंद होना*-१-बहस में हार जाना। २-बोला न जाना। ३-बोलने का अधिकार या आज्ञा न होना। *जबान बदलना, बदल जाना*-कहकर मुकर जाना। *जबान बिगड़ना*-१-बुरे शब्द बोलने का अभ्यास होना। २-जबान चटोरी होना। ३-खाने की वस्तु अच्छी न लगना। *जबान में (पर) काँटे होना*-बहुत प्यास से जीभ सूखना। *जबान में लगाम न होना*-अनुचित बातें कहने का अभ्यास होना। *ज़बान में लगाम देना*-अनुचित बातें कहने से रोकना या सोच-समझकर बोलने को कहना। *जबान रोकना*-१-चुप करना। २-जबान पकड़ना। *जबान लड़ाना*-१-बातचीत करना। २-सवाल-जवाब करना। ३-कोई काम करने के लिए कहना। ४-कुछ मांगना। *जबान सँभालकर बोलना*-सोचसमझकर बोलना। *जबान सीना*-चुप रहना। *जबान से निकालना*-१-चाहते हुए भी कह देना। २-उच्चारण होना। *जबान से निकलना*-१-कहना। २-उच्चारण करना।

ज़बानदराज [वि.] (फा.) बढ़-बढ़कर अनुचित बातें करने वाला।

ज़बानदराजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) धृष्टतापूर्वक अनुचित बातें करने की क्रिया या भाव। ढिठाई।

ज़बानबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-लिखा जाने वाला इजहार। २-मौन। चुप्पी। ३-चुप रहने या बोलने की आज्ञा।

ज़बानी [वि.] (हिं.) १-जबान से कहा हुआ। मौखिक। २-जो कहा तो गया हो पर लिखित न हो।

ज़बून [वि.] (तु.) बुरा। खराब। निकृष्ट।

जब्त [संज्ञा पु.] (अं.) १-अधिकारी अथवा राज्य द्वारा दंडस्वरूप किसी अपराधी की सम्पत्ति का हरण। २-कोई वस्तु किसी अधिकार से लेना।

जब्ती [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जब्त।

जब्ती में आना-जब्त होजाना।

जब्भा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जबहा'।

जब्र [संज्ञा पु.] (अ.) कठोर व्यवहार। सख्ती।

जब्रन [क्रि. वि.] (अ.) बलात्। बलपूर्वक।

जभन [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

जम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यम'।

जमई [वि.] (फा.) जो जमा हो। नगदी।

जमक [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'यमक'।

जमकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना।

जमकात, जमकातर+* [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का भंवर। [संज्ञा स्त्री.] यम का छुरा या खाँडा।

जमकाना [क्रि. स.] (हिं.) चमकाना।

जमघंट [संज्ञा. पु.] (हिं.) देखो 'यमघंट'।

जमघट [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत से मनुष्यों की भीड़। ठट्ट। जमावड़ा।

जमघटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जमघट'।

जमघट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जमघट'।

जमघट्ट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जमघट'।

जमज [वि.] (हिं.) देखो 'यमज'।

जमजोहरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

जमडाढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कटारी की तरह का एक हथियार।

जमदग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन गोत्रकार वैदिक ऋषि।

जमधर [संज्ञा पु.] (हिं.) जमडाढ़ नामक हथियार।

जमन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यवन'।

जमना [क्रि. अ.] (हिं.) १-तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। २-एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ पर दृढ़तापूर्वक बैठ जाना। ३- होना। ४-स्थिर या निश्चल होना। ५- प्रहार या चोट पड़ना। ६-मानव-स सामने होने वाले कार्य का भलीभाँति होना। ७-काम का अच्छी तरह लायक होना। ८-उगना। फूटना। [संज्ञा पु.] (हिं.) पहली वर्षा के जमने वाली घास। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यमुना'।

जमनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जवनिका। २-काई।

जमनौता [संज्ञा पु.] (हिं.) जमानत दी जाने वाली रकम।

जमनौती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

जमरूद [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का लम्बोतरा फल।

जमवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काठ का जिसे कुएँ के तलपर रखकर की चिनाई करते हैं।

जमवार [संज्ञा पु.] (हिं.) यम का द्वार।

जमा [वि.] (अ.) १-एकत्र। इकट्ठा। हुआ। २-सब मिलाकर। ३-खाते के पक्ष में लिखित (धन या पदार्थ)। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मूलधन। पूँजी। धन। रुपया-पैसा। ३-भूमिकर। का वह अंग अथवा पक्ष जिसमें धन या माल लिखा जाता है।

कुल जमा या जमा कुल-सब मिलाकर। *जमा मारना*-अनुचितरूप से किसी ले लेना।

जमाई [संज्ञा पु.] (हिं.) जमाता। दामाद। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जमने या जमाने की क्रिया या भाव। २-जमाने की मजदूरी।

जमाखर्च [संज्ञा पु.] (हिं.) आय और

जमाजथा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धन-संपत्ति और माल।

जमात [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मनुष्यों का २-कक्षा। श्रेणी।

जमादार [संज्ञा पु.] (फा.) १-पुलिस का सिपाही जिसकी अधीनता में कई और रण सिपाही होते हैं। हैड-कांसटेबल। सिपाही अथवा पहरेदार।

जमादारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जमादार का २-जमादार का कार्य।

ज़मानत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) किसी व्यक्ति कार्य की वह जिम्मेदारी जो जबानी, लिखकर अथवा कुछ रुपये जमा करके ऊपर ली जाती है। जामिनी।

ज़मानतनामा [संज्ञा पु.] (अ. फा.) जमानत प्रमाणस्वरूप लिखा हुआ पत्र।

ज़मानती [संज्ञा पु.] (हिं.) जमानत करने वाला जामिन।

जमाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी द्रव पदार्थ को गाढ़ा करना। २-किसी एक पदार्थ पर दूसरे पदार्थ को दृढ़तापूर्वक बैठाना। ३-...र करना। ४-हाथ से होने वाले काम का अभ्यास करना। ५-मानव-समाज के सामने होने वाले कार्य को भलीभाँति सम्पन्न करना। ६-उपजाना। उत्पन्न करना। *दृष्टि जमाना*-दृष्टि को स्थिर करके किसी ओर ...ना। *रंग जमाना*-पूरा-पूरा प्रभाव डालना।

[संज्ञा पु.] देखो 'जमाना'।

जमाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-समय। काल। वक्त। २-बहुत अधिक समय। ३-संसार। दुनिया। ४-प्रताप या सौभाग्य का समय। *जमाना देखना*-अनुभव प्राप्त करना।

जमानासाज़ [वि.] (फा.) अपना मतलब गांठने के लिए दूसरों को प्रसन्न करने वाला।

जमानासाज़ी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अपना मतलब गांठने के लिए दूसरों को प्रसन्न करने का काम।

जमाबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पटवारी का वह कागज़ जिसमें आसामियों के नाम और उनकी लगान लिखी रहती है।

जमामार [वि.] (हिं.) अनुचित रूप से दूसरे का माल लेने वाला।

जमालगोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौधा जिसके बीज अत्यंत रेचक होते हैं।

जमाव [संज्ञा पु.] (हिं.) जमने या जमाने का भाव।

जमावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमने का भाव।

जमावड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत से लोगों का समूह। भीड़।

जमीकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) सूरन। ओल।

जमींदार [संज्ञा पु.] (फा.) वह जो जमीन का स्वामी हो और किसानों को लगान पर जोतने-बोने के निमित्त खेत देता हो।

जमींदारा+ [संज्ञा पु.] देखो 'जमींदारी'।

जमींदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-जमींदार की वह भूमि जिसका वह अधिकारी हो। २-जमींदार होने की अवस्था। ३-जमींदार-स्वत्व। ४-जमींदार का पद।

जमींदोज़ [वि.] (फा.) तोड़-फोड़ कर जमीन के बराबर किया हुआ।

ज़मीन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पृथ्वी (ग्रह)। २-पृथ्वी का वह ठोस भाग जिस पर हम रहते हैं। धरती। भूमि। ३-वह आधार जिस पर बेल-बूटे बने हों। ४-वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधाररूप से हुआ हो। ५-चित्र बनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल। ६-आधारपृष्ठ। ७-डौल। उपक्रम। भूमिका। आयोजन। *जमीन आसमान एक करना*-घोर प्रयत्न करना। कठिन परिश्रम करना। *जमीन आसमान के कुलाबे मिलाना*-१-बहुत शेखी बघारना। २-बहुत परिश्रम करना या उद्योग करना। *जमीन उठना*-१-किराये पर (भूमि) चढ़ना। २-खेत जोतने बोने लायक होना। *जमीन का पैवंद होना*-धूल में मिल जाना। *जमीन का पैरों तले से खिसकना*-भौचक्का रह जाना। होश-हवाश जाते रहना। *जमीन चूमने लगना*-१-नीचा देखना। २-पटक खाना। *जमीन देखना*-हार मानना। नीचा देखना। २-पटक खाना। *जमीन पकड़ना*-१-कुश्ती में औंधे गिरना। नीचे आकर ऊपर वाले पहलवान से उठाया न जाना। २-जमकर बैठना। *जमीन पर आ रहना*-१-किये पर बहुत पछताना। २-मुँह के बल गिरना। *जमीन पर चढ़ना*-१-किसी कार्य का अभ्यासी होना। २-घोड़ा तेज दौड़ने का अभ्यास होना। *जमीन पर पैर न रखना या पैर पड़ना*-बहुत इतराना या अभिमान करना। *जमीन बाँधना*-१-कार्यप्रणाली निश्चित करना। २-सुन्दर कल्पना करना। *जमीन में समाजाना*-लाज के मारे जमीन में गड़ना। *जमीन से पीठ न लगाना*-चैन न पड़ना।

जमीमा [संज्ञा पु.] (अ.) क्रोड़पत्र। पूरक। अतिरिक्त पत्र।

जमुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जामुन'।

जमुआर* [संज्ञा पु.] (हिं.) जामुन का वन।

जमुकना* [क्रि. अ.] (?) सटना। पास-पास होना।

जमुना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यमुना'।

जमुनियाँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जामुन का रंग।
[वि.] (हिं.) जामुन के रंग का।

जमुरका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुलाबा।

जमुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नालबंदों का एक औजार जो चिमटी के आकार का होता है। २-चिमटी। ३-सँड़ासी।

जमुर्रद [संज्ञा पु.] (?) पन्ना नामक रत्न।

जमुर्रदी [वि.] (फा.) नीलापन लिये हरे रंग का।

जमुवाँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जामुनी। जामुन का रंग।

जमुहाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'जम्हाना'।

जमूरक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एकप्रकार की छोटी तोप।

जमूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जमूरक'।

जमोग [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वीकार करने या कराने की क्रिया। २-समर्थन। तसदीक। ३-देहाती लेन-देन की एक रीति।

जमोगदार [संज्ञा पु.] (हिं.) जमोग की रीति से जमींदार को रुपया देने वाला।

जमोगना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-आय-व्यय की जांच करना। २-भार अथवा देन से मुक्ति पाने के लिये दूसरे को वह भार या देन सौंपना। सरेखना। एसाइनमेन्ट।

जमोगवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) जमोगने का कार्य अन्य से कराना। सरेखवाना।

जमौआ [वि.] (हिं.) जमा कर बनाया हुआ।

जम्मू [संज्ञा पु.] (हिं.) काश्मीर राज्य का एक जिला।

जम्हाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जँभाई'।

जम्हाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'जंभाना'।

जयंत, जयन्त [वि.] (सं.) [स्त्री. जयंती] १-विजयी। २-बहुरूपिया।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र के पुत्र का नाम। २-फलित ज्योतिष में यात्रा का एक योग। ३-संगीत में ध्रुवक जाति के एक ताल का नाम।

जयंतपुर, जयन्तपुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम।

जयंतिका, जयन्तिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जयंती'।

जयंती, जयन्ती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-विजयिनी। २-ध्वजा। ३-दुर्गा। ४-पार्वती। ५-किसी महापुरुष या संस्था की जन्मतिथि या किसी महत्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने की वार्षिक तिथि पर होने वाला उत्सव। जुबिली। ६-जैंत नामक वृक्ष। ७-ज्योतिष का एक योग। ८-जई।

जय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों की हार या पराभव। जीत।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु के एक पार्षद का नाम। २-वशीकरण। ३-महाभारत का पुराना नाम।
[वि.] (सं.) विजयी। जीतने वाला।

जयकंकण, जयकङ्कण [संज्ञा पु.] (सं.) विजयी वीर योद्धा का आदरार्थ प्रदान किया जाने वाला कंकण।

जयक [वि.] (सं.) जययुक्त।

जयकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौपाई नामक छंद का एक नाम।

जय-कोलाहल [संज्ञा पु.] (सं.) जयध्वनि। जय-जयकार।

जय-खाता [संज्ञा पु.] (हिं.) लाभ आदि लिखने की बही।

जय-जयकार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी की जय मानने का घोष।

जय-जयवंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी जो रात को ६ दंड से १० दंड तक गाई जाती है पर वर्षाऋतु में इसे सब समय में गाया जाता है।

जयजीव* [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अभि-

वादन जिसका अर्थ है जीते रहो तुम्हारी जय हो।

जयढक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक बड़ा ढोल।

जयताल [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

जयति, जयत् [संज्ञा पु.] (हिं.) एक संकर राग जो गौरी और ललित के मेल से बनता है। [अव्य.] (सं.) जय हो।

जयतिश्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) श्रीराग की एक रागिनी।

जयत्कल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) कल्याण और जयतिश्री के मेल से बनने वाला सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग।

जयदुर्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रानुसार दुर्गा की एक मूर्त्ति।

जयदेव [संज्ञा पु.] (सं.) संस्कृतकाव्य गीतगोविन्द के रचयिता का नाम।

जयद्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतकालीन एक राजा का नाम जो सिंधु-सौवीर या सौराष्ट्र देश में राज्य करता था। और दुर्योधन का बहनोई था।

जय-ध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) जयपताका। जयंती

जयना*+ [क्रि. स.] (हिं.) जीतना।

जयनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्र की कन्या।

जय-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पत्र जो पराजित व्यक्ति अपनी पराजय के प्रमाणस्वरूप लिख देता है। विजय-पत्र। २-वह पत्र जो किसी के किसी विवाद में विजय होने पर लिखा जाता है। डिगरी। डिक्री।

जय-पत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जावित्री।

जयपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमालगोटा। २-विष्णु। ३-राजा।

जयपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) जूआ खेलने का एक प्रकार का पासा।

जयप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा विराट् के भाई का नाम। २-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

जयफर* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जायफल'।

जयमंगल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह हाथी जिस पर राजा विजयी होकर निकले। २-राजा की सवारी का हाथी। ३-ताल के साठ भेदों में से एक।

जयमल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

जयमाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विजय प्राप्त करने पर विजयी को पहनाने की माला। २-वह माला जिसे कन्या अपने भावी-पति (जिसे वह पसन्द करती है) पहनाती है।

जययज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेध यज्ञ।

जय-लेख [संज्ञा पु.] (सं.) जयपत्र।

जयवाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्राणी। शची।

जय-शब्द [संज्ञा पु.] (सं.) जय-ध्वनि।

जयश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विजयलक्ष्मी। विजय। २-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। ३-संध्या के समय गाई जाने वाली देशकार राग से मिलती-जुलती सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

जयस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध में किसी विजय का स्मारक स्तम्भ।

जया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा का एक नाम। २-पार्वती। ३-हरी दूब। ४-ध्वज। पताका। [वि.] जय दिलाने वाली।

जयादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) काश्मीर के एक प्राचीन राजा का नाम।

जयाद्वय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जयंती और हड़।

जयानकी [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्रुपद नरेश के पुत्र का नाम। २-विराट नरेश के भाई का नाम।

जयापीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक काश्मीर नगर का नाम।

जयावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धवलश्री, बिलावल तथा सरस्वती के योग से बनने वाली एक संकर रागिनी।

जयावहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भद्रदंती नामक वृक्ष

जयाश्रया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जरडी घास।

जयाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) विराट नरेश के भाई का नाम।

जयाहा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जयावहा'।

जयिष्णु [वि.] (सं.) जयशील। विजयी।

जयी [वि.] (सं.) विजयी।

जयेंद्र, जयेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक काश्मीर नरेश।

जयेती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक संकर रागिनी।

जयेत् [संज्ञा पु.] (सं.) पूरिया और कल्याण मेल से बनने वाला षाडव जाति का एक राग।

जयेत्-गौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जयेत् तथा गौरी के योग से बनने वाला एक संकर राग।

जय्य [वि.] (सं.) जो विजय प्राप्त करने योग्य हो।

जर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जरा। वृद्धावस्था। २-ज्वर। (सं.) नाश अथवा जीर्ण होने की क्रिया। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का समुद्री सेवार। कचरा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जड़'।

ज़र [संज्ञा पु.] (फा.) १-स्वर्ण। सोना। २-धन। रुपया।

जरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धान के बीज जिनमें अंकुर फूटे हों। २-देखो 'जई'।

जरकटी [संज्ञा पु.] (देश.) एक शिकारी पक्षी।

जरकस, जरकसी* [वि.] (हिं.) जिस
के तार लगे हों।

जरखेज [वि.] (फा.) उपजाऊ। उर्वर
जरगह, जरगा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.)
की घास।

जरज [संज्ञा पु.] (देश.) एक कन्द जिसकी
कारी खाई जाती है।

जरजर [वि.] देखो 'जर्जर'।

जरछार+ [वि.] (हिं.) १-भस्मी भूत।

जरठ [वि.] (सं.) १-कठिन। कर्कश।
३-जीर्ण। पुराना। ४-पीलापन लिये
रंग का। [संज्ञा पु.] बुढ़ापा।

जरडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक घास
सुनाला।

जरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हींग।
काला नमक। ४-वृद्धावस्था।
दस प्रकार के ग्रहणों में से

जरणद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.)
२-सागौन का वृक्ष।

जरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काला
बुढ़ापा। ३-प्रशंसा। ४-मोक्ष।

जरता-बरता+ [संज्ञा पु.] देखो

जरतार* [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने चाँदी

जरतारा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. जरतारी]
काम का।

जरतुआ [वि.] (हिं.) जलने या
वाला।

जरतुश्त [संज्ञा पु.] देखो 'जरदुश्त'।

जरत् [वि.] (सं.) [स्त्री. जरती]
पुराना।

जरत्करण [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक
नाम।

जरत्कारु [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि

जरद [वि.] (फा.) जर्द। पीला।

जरदक [संज्ञा पु.] (फा.) जरदा या पीलू
पक्षी।

जरदष्टि [वि.] (सं.) १-वृद्ध।
[संज्ञा स्त्री.] १-वृद्धावस्था।

ज़रदा [संज्ञा पु.] (फा.) १-चावलों से
वाला एक व्यञ्जन। २-पान के साथ
सुगंधित सुरती। ३-पीले रंग का घोड़ा।

जरदालू [संज्ञा पु.] (फा.) खूबानी नामक

जरदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पीलापन।
के भीतर पीला चेप।

जरदुश्त [संज्ञा पु.] (फा.) पारसियों के
को बनाने वाले प्राचीन आचार्य।

जरदोज़ [संज्ञा पु.] (फा.) कपड़ों पर
का काम करने वाला।

जरदोजी [संज्ञा पु.] (फा.) कपड़ों पर
आदि से की जाने वाली हाथ की

[संज्ञा पु.] (सं.) बूढ़ा बैल। [वि.] ।प्राचीन।

[संज्ञा पु.] (सं.) जल।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जलन'।

[संज्ञा पु.] (अं.) सामयिक पत्र जिसमें नुसार घटनाओं का वर्णन होता है। सामयिक पत्र।

[क्रि. अ.] (हिं) जलना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जलन'।

[संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आघात। चोट। २-मृदंग आदि पर थाप या आघात। ३-(गणित)। कपड़े पर कढ़ी या छपी बेल।

[संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का रेशमी जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे बने होते हैं।

[संज्ञा पु.] (फा.) जरदोज।

[वि.] (फा.) जरबाफ के काम का।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'जरदोजी'

[वि.] (हिं.) भड़कीला और सुन्दर।

[संज्ञा पु.] (अं.) १-जरमनी देश का २-जरमनी देश की भाषा।
(अं.) जरमनी देश की भाषा।

[संज्ञा पु.] (अं.) जस्ते, तांबे और को मिलाकर बनाई हुई एक चमकीली धातु।

[संज्ञा पु.] (अं.) मध्य यूरोप का एक देश।

[वि.] (हिं.) [स्त्री. जरमुई] जल मरने वाला। ईर्ष्या करने वाला।

[संज्ञा पु.] (अ.) १-हानि। क्षति। नुकसान। २-आघात। चोट।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक बारहमासी घास।

[वि.] (हिं.) धनी।

[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की समुन्द्र में होने वाली घास।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की सुगंधित घास।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृद्धावस्था। बुढ़ापा।

[वि.] (अ.) थोड़ा। कम।
[क्रि. वि.] (अ.) थोड़ा। कम।

[संज्ञा पु.] (सं.) जरासंध।

[वि.] (सं.) वृद्ध। बुड्ढा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) वह शोरा जो चार बार उड़ाया गया हो।

[वि] (सं) जीर्ण। पुराना। बहुत दिनों का।

[संज्ञा पु] (सं.) टिड्डी।

[क्रि. स.] (हिं) जलाना।

जरापुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) जरासंध।

जराबोध [संज्ञा पु.] (सं.) स्तुति करके प्रज्वलित की हुई अग्नि।

जराबोधीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

जराभीस [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

जरायणि [संज्ञा पु.] (सं.) जरासंध का एक नाम।

जरायु [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भ की वह झिल्ली जिसमें बंधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है। आँवल। खेड़ी। उल्व। २-गर्भाशय। ३-योनि। ४-जटायु।

जरायुज [संज्ञा पु.] (सं.) जरायु में लिपटा हुआ हुआ गर्भ से उत्पन्न होने वाला प्राणी। पिंडज।

जरांव* [वि.] (हिं.) जड़ाऊ।

जराशोष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शोष रोग जो वृद्धावस्था में होता है।

जरासंध [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा जो बृहद्रथ का पुत्र और कंस का श्वसुर था।

जरासुत [संज्ञा पु.] (सं.) जरासंध।

जराह [संज्ञा पु.] देखो 'जर्राह'।

जरिमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुढ़ापा।

जरिया* [संज्ञा पु.] देखो 'जड़िया'।
[वि.] (हिं.) जो जलाकर बनाया गया हो।

ज़रिया [संज्ञा पु.] (अ.) १-संबंध। लगाव। २-हेतु। कारण। ३-साधन।

ज़रिश्क [संज्ञा पु.] (फा.) दारुहल्दी।

जरी [वि.] (हिं.) वृद्ध। बुड्ढा।

ज़री [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बादले से बुना हुआ 'ताश' नामक वस्त्र। २-सोने के वे तार जिन पर बेलबूटे बने होते हैं।

जरीब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) भूमि नापने की ६० गज लम्बी जंजीर। २-लाठी। छड़ी।

जरीबकश [संज्ञा पु.] (फा.) भूमि नापते समय जरीब खैंचने वाला।

जरीबाना, जरीमाना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुरमाना'।

जरूथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांस। २-कटुभाषी।

ज़रूर [क्रि. वि.] (अ.) अवश्य। निःसंदेह।

ज़रूरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) आवश्यकता। प्रयोजन।

ज़रूरी [वि.] (फा.) १-प्रयोजनीय। २-आवश्यक।

जरोल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

जरौट*+ [वि.] (हि.) जड़ाऊ।

जर्कबर्क [वि.] (फा.) तड़क। भड़कदार। चमकीला।

जर्जर [वि.] (सं.) १-जो बहुत पुराना होने के कारण बेकार हो गया हो। जीर्ण। २-टूटा-फूटा। खंडित। ३-वृद्ध। बुड्ढा।

[संज्ञा पु.] (सं.) छरीला। पत्थर फूल।

जर्जरित [वि.] (सं.) १-जीर्ण। पुराना। २-टूटा-फूटा खंडित।

जर्जरीक [वि.] (सं.) १-बहुत वृद्ध। २-जिसमें बहुत से छेद हो गए हों।

जर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-वृक्ष।
[वि.] (सं.) जीर्ण।

जर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-योनि।

जर्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम। २-उस देश का निवासी।

जर्तिल [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली तिल।

जर्तु [संज्ञा पु.] देखो 'जर्त'।

ज़र्द [वि.] (फा.) पीला।

ज़र्दा [संज्ञा पु.] देखो 'जरदा'।

ज़र्दालू [संज्ञा पु.] देखो 'जरदालू'।

ज़र्दी [संज्ञा पु.] (फा.) पीलापन।

ज़र्दोज [संज्ञा पु.] देखो 'जरदोज'।

ज़र्दोजी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जरदोजी'।

जर्नल [संज्ञा पु.] देखा 'जरनल'।

ज़र्रा [संज्ञा पु.] (अ.) १-अणु। २-बहुत छोटा खंड या टुकड़ा।
[वि.] देखो 'ज़रा'।

जर्रार [वि.] (अ.) १-बलिष्ठ। २-वीर।

जर्रारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वीरता। बहादुरी।

जर्राह [संज्ञा पु.] (अ.) फोड़ों को चीरकर चिकित्सा करने वाला। अस्त्र-चिकित्सक।

जर्राही [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चीर फाड़ का काम। अस्त्र-चिकित्सा।

जर्वर [संज्ञा पु.] (सं.) नागों के एक पुरोहित का नाम।

जर्हिल [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली तिल।

जलंग, जलङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) महाकाल नामक एक लता।

जलंधर, जलन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पौराणिक राक्षस। २-एक प्राचीन ऋषि। ३-योग का एक बंध।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जलोदर'।

जलंबल, जलम्बल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी। २-अंजन।

जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी। २-उशीर। खस। ३-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। ४-(ज्योतिष) जन्म-कुंडली में चौथा स्थान।

जल-अलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी का भँवर। २-जलभँवरा।

जलई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोनों ओर मुड़ा हुआ काँटा।

जलकंटक, जलकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-

सिंघाड़ा। २–कुंभी।

जलकंडु, जलकण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) लगातार पानी में रहने के कारण पैरों में उठने वाली खुजली।

जलकंद, जलकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १–केला। २–सिंघाड़ा।

जलकंदरा, जलकन्दरा [संज्ञा पु.] (हिं.) तालों के किनारे होने वाला कांदा नामक गुल्म।

जलक [संज्ञा पु.] (सं.) संख। २–कौड़ी।

जलकपि [संज्ञा पु.] (सं.) सूंस नामक जलजन्तु।

जलकपोत [संज्ञा पु.] (सं.) पानी के किनारे रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया।

जलकरंक [संज्ञा पु.] (सं.) १–नारियल। २–कमल। ३–शंख। ४–जल-लता।

जल-कर [संज्ञा पु.] (सं.) १–जलाशयों में होने वाले पदार्थ। २–ऐसे पदार्थों पर लगाने वाला कर।

जल-कल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नगर के सब भागों में नल अथवा कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करने वाला विभाग। २–पानी देने वाली कल। ३–आग बुझाने का दमकला।

जल-कल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १–सेवार। २–कीचड़ ३–काई।

जलकांच [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जलकांची] हाथी।

जलकांत, जलकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण।

जलकांदा [संज्ञा पु.] देखो ‘कांदा’।

जलकाक [संज्ञा पु.] (सं.) जलकौआ नामक पक्षी।

जलकामुक [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यमुखी।

जलकाय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमत के अनुसार वह शरीरधारी जिसका जल ही शरीर है।

जलकिनार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

जलकिराट [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राह या नाक नामक जलजन्तु।

जलकुंतल, जलकुन्तल [संज्ञा पु.] (सं.) सेवार।

जलकुंभी, जलकुम्भी [संज्ञा पु.] (हिं.) जल के तल पर होने वाली एक वनस्पति। कुंभी।

जलकुक्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) मुरगाबी। उहुकपक्षी

जलकुक्कुभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की जल चिड़िया। वनमुर्गी।

जलकुब्जक [संज्ञा पु.] (सं.) १–सेवार। २–काई

जलकूर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सूँस नामक जलजन्तु

जलकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम दिशा में उदय होने वाला एक पुच्छल तारा।

जलकेलि [संज्ञा पु.] (सं.) जलक्रीडा। जल-विहार।

जलकेश [संज्ञा पु.] (सं.) शैवाल। सेवार।

जलकौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जलपक्षी।

जलक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पितृ आदि का तर्पण

जलक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वे खेल या क्रीड़ाएँ जो जलाशय में किये जाते हैं।

जलखग [संज्ञा पु.] (सं.) पानी के तट पर रहने वाला एक प्रकार का पक्षी।

जलखर [संज्ञा पु.] (हिं.) जलखरी।

जलखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फल–तरकारी आदि लेजाने की जालीदार थैली।

जलखावा [संज्ञा पु.] (हिं.) जलपान। कलेवा।

जलगर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का सांप। डेड़हा।

जलगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध के प्रमुख शिष्य का पूर्वजन्म का नाम।

जलगुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–पानी का भँवर। २–कछुआ। ३–वह देश जिसमें जल की कमी हो।

जल-घड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समय का ज्ञान कराने वाला एक प्राचीन यंत्र जिसमें नांद में भरे हुए जल में एक बारीक छेद वाली कटोरी रहती थी और उस कटोरी में भरे हुए जल के परिमाण से समय-अनुमान लगाया जाता था।

जल-घुमर※ [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का भँवर। जलावर्त्त।

जल-चर [संज्ञा पु.] (सं.) जल में रहने वाला जन्तु।

जलचरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मछली।

जलचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जलचारिणी] जल भर।

जलचिकित्सा [संज्ञा स्त्री] (सं.) चिकित्सा की एक प्रणाली जिसमें जल की भाप, स्नान आदि के द्वारा चिकित्सा या इलाज किया जाता है। *हाइड्रोपैथी।*

जलचिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) नाक नामक जलजंतु।

जलचौलाई [संज्ञा स्त्री.] देखो ‘चौलाई’।

जलजंतु, जलजन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) जल में रहने वाले जीव या जन्तु।

जलजंतुका, जलजन्तुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

जलज [वि.] (सं.) जल में उत्पन्न होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १–कमल। २–शंख। ३–मछली। ४–सेवार। ५–जलजन्तु। ६–मोती।

जलजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

ज़लज़ला [संज्ञा पु.] (फ़ा.) भूकंप। भूडोल।

जलजात [वि.] (सं.) जलज। [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

जल-जान※ [संज्ञा पु.] देखो ‘जलयान’।

जलजामुन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार

जलजासन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

जल-डमरूमध्य [संज्ञा पु.] (सं.) दो को मिलाने वाला समुद्र का पतला

जलडिंब, जलडिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) घोंघा।

जलतरंग, जलतरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) का बाजा जो जल से भरी आघात करके बजाया जाता है।

जलतरोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मछली।

जलतापिक, जलतापी [संज्ञा पु.] नामक मछली।

जलताल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो

जलतिक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

जलत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटी जो एक स्थान से दूसरे जाती है।

जल-त्रास [संज्ञा पु.] (सं.) भय जो कुत्ते के काटने पर होने की अवस्था में होता है।

जलद [वि.] (सं.) जल देने वाला। १–मेघ। बादल। २–मोथा।

जलदकाल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाकाल।

जलदक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) शरदऋतु।

जलदतिताला [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसकी गति साधारण से कुछ तेज

जलदस्यु [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र में जहाजों और समुद्री यात्रियों को डाकू। समुद्री डाकू। पाइरेट।

जलदागम [संज्ञा पु.] (सं.) १–वर्षा आगमन या आरम्भ। आकाश में घिरना।

जलदाशन [संज्ञा पु.] (सं.) साखू

जलदुर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वह दुर्ग जो नदी या झील आदि से सुरक्षा घेरा गया हो।

जलदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १–पूर्वाषाढ़ा वरुण।

जलदेवता [संज्ञा पु.] (सं) वरुण।

जलदोदो [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार

जलद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) जल से उत्पन्न वाले शंख, मुक्तादि द्रव्य।

जलद्रोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रोन में पानी देते हैं।

जलधर [संज्ञा पु.] (सं.) १–मेघ। मुस्ता। ३–समुद्र।

जलधर-केदारा [संज्ञा पु.] (हिं.) केदारा के योग से बनने वाला राग।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बादलों की एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ... भ) होते हैं।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्धा जिसमें निरन्तर रहता है।

[संज्ञा पु.] (सं.) शाकद्वीप का एक

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'जलधारा'।

[वि] (सं.) जल-धारण करने वाला।

[संज्ञा पु.] बादल।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जल का प्रवाह। की धारा। २-जल की धारा के नीचे रहने की तपस्या।

[वि.] (हिं.) [स्त्री. जलधारिणी] जल करने वाला। जलधारक [संज्ञा पु.] मेघ। बादल।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-दस शंख की संख्या।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २- हरिया।

[संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक कल्पित धेनु।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जलने की पीड़ा या दाह। २-ईर्ष्या के कारण होने वाला मानसिक कष्ट।

निकलना-ईर्ष्या अथवा द्वेष से इच्छा की पूर्ति करना।

[संज्ञा पु.] (सं.) ऊदबिलाव।

[क्रि. अ.] (हिं.) १-आग की लपेट में उस जैसा ही होना। दग्ध होना। होना। २-अग्नि के कारण भाप बनना कोयला होना। ३-झुलसना। ४-ईर्ष्या द्वेष के कारण मन में कुढ़ना।

पर नमक छिड़कना-दुःखी को और दुःखाना। जली कटी सुनाना-डाह या क्रोध आदि के कारण मन में बहुत दुःखी होना।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-चार की संख्या।

[संज्ञा पु.] (सं.) पानी का निकास।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की जो कड़ुई होती है।

जलनीली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवार।

[संज्ञा पु.] (सं.) जल के आसपास रहने वाले पक्षी।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण। २-समुद्र। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-जल बहने का मार्ग।

जलपना [क्रि अ.] (हिं.) १-लम्बी-चौड़ी बातें करना। २-बकवाद करना।

जलपाई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रुद्राक्ष जाति का एक वृक्ष।

जलपाटल [संज्ञा पु.] (हिं.) काजल।

जलपान [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्ण भोजन से पहले किया जाने वाला हलका और थोड़ा भोजन। कलेवा। नाश्ता।

जलपारावत [संज्ञा पु.] (सं.) जल-कपोत नामक चिड़िया।

जलपिंड, जलपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

जलपिप्पलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल पीपल।

जलपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल पीपल नामक औषध।

जलपिप्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मछली।

जलपीपल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीपल के आकार की एक प्रकार की गंधहीन औषधि। मत्स्य-गंधा।

जलपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-लज्जावंती के समान दलदली भूमि में उत्पन्न होने वाला पौधा।

जलपूर [वि.](सं.) जल से परिपूर्ण। जल से भरा हुआ।

जलपृष्ठजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवार।

जलपोत [संज्ञा पु.] (सं.) पानी में चलने वाला बड़ा जहाज।

जलप्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेत-पितर आदि को तर्पण।

जलप्रपा [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वसाधारण को पानी पिलाने का स्थान। प्याऊ। सबील।

जलप्रपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी नदी आदि के स्रोत का ऊपर से नीचे गिरना। २-वह स्थान जहाँ किसी ऊंचे पहाड़ से जलस्रोत नीचे गिरता हो।

जलप्रवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी का बहाव। २-कोई वस्तु नदी में डाल कर बहाना।

जल-प्रांगण, जल-प्राङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश की सीमा पर का समुद्र का वह भाग जिस पर उस देश का अधिकार होता है।

जलप्रांत, जलप्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) जलाशय के आसपास का स्थान।

जलप्राय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ जल का आधिक्य हो।

जलप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली। २-चातक। पपीहा।

जलप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) ऊदबिलाव।

जलप्लावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी की बाढ़। २-एक प्रकार का प्रलय (पुराण)।

जलप्लावित [वि.] (सं.) जलमग्न। पानी में डूबा हुआ।

जलफल [संज्ञा पु.] (सं.) सिंघाड़ा।

जलबंध, जलबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मत्स्य। मछली।

जलबंधक, जलबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) जलाशय के पानी को रोकने के लिये बनाया गया बाँध।

जलबंधु, जलबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) मछली।

जलबालक [संज्ञा पु.] (सं.) विंध्याचल पर्वत।

जलबालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत। बिजली।

जलबिंदुज, जलबिन्दुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यावनाल शर्करा नामक रेचक औषध। शीरखिश्त।

जलबिंब, जलबिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का बुलबुला।

जलबिडाल [संज्ञा पु.] (सं.) ऊदबिलाव।

जलबिल्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह प्रदेश जहाँ जल कम हो। २-केकड़ा।

जलबुद्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का बुल बुला।

जलबेंत [संज्ञा पु.] (हिं.) जलाशय के पास उगने वाली एक प्रकार की बेंत।

जलब्रह्मी, जलब्राह्मी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिलमोची अथवा हुर-हुर का साग।

जलभँगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) जलाशयों के किनारे उगने वाला एक प्रकार का भंगरा।

जलभँवरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का काला कीड़ा जो पानी पर बड़ी शीघ्रता से दौड़ता है।

जलभालू [संज्ञा पु.] (हिं.) सीलजाति का एक जलजन्तु जो आठ नौ हाथ लम्बा होता है।

जलभू [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-कपूर। ३-जल-चौलाई।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलप्राय भूमि। कछ।

जलभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा।

जलभृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-कपूर। ३-जल रखने का पात्र।

जलमंडल, जलमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की बड़ी मकड़ी जिसके विष से मनुष्य मर जाता है।

जलमंडूक, जलमण्डूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

जलम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जन्म'।

जलमद्गु [संज्ञा पु.] (सं.) कौड़िल्ला।

जलमधूक [संज्ञा पु.] (सं.) जलमहुआ।

जलमय [वि.] (सं.) १-जल से परिपूर्ण। जल से भरा हुआ। २-जल के जैसा।

जलमल [संज्ञा पु.] (सं.) फेन। फाग।

जलमसि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-कपूर।

जलमहुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का महुआ जो जलाशयों के निकट होता है।

जलमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल में रहने वाली देवियाँ।

जलमापनयंत्र, यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) जल को नापने का यंत्र।

जल-मानुष [संज्ञा पु.] (सं.) एक कल्पित जल-जन्तु जिसकी नाभि से ऊपर का भाग मनुष्य जैसा और नीचे का मछली के समान होता है।

जलमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जलपथ। नदियों आदि के रूप में बना जलमार्ग। वाटर-वेज।

जलमार्जार [संज्ञा पु.] (सं.) उदबिलाव।

जलमुच [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल। २-कपूर।

जलमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

जलमूर्त्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ओला। करका।

जलमोद [संज्ञा पु.] (सं.) उशीर। खस।

जलयंत्र, जलयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुएँ आदि से जल खैंचने वाला यंत्र। २-जल को खैंचकर ऊपर की ओर उठाने वाला यन्त्र। फौआरा। ३-जलघड़ी। ४-देखो 'जलकल'।

जलयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभिषेक आदि के निमित्त पवित्र जल लाने के लिए की गई यात्रा। २-राजस्थान का एक उत्सव।

जलयान [संज्ञा पु.] (सं.) जल में चलने वाला यान या सवारी।

जलरंक, जलरङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) बगुला।

जलरंकु, जलरङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) बनमुर्गी।

जलरंज, जलरञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) बगुला।

जलरंड, जलरण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी का भंवर। २-जलकण। ३-सांप।

जलरस [संज्ञा पु.] (सं.) नमक।

जलराशि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्क, मकर, कुंभ और मीनराशि। २-समुद्र।

जलरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

जलरूप [संज्ञा पु.] (सं.) मकरराशि।

जललता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पानी की लहर।

जलवत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मेघ। २-देखो 'जलावर्त्त'।

जलवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंघाड़ा।

जलवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) जलकुंभी।

जलवाना [क्रि. स.] (हिं.) जलाने का काम दूसरे से कराना।

जलवानीर [संज्ञा पु.] (सं.) जलबेंत।

जलवायस [संज्ञा पु.] (सं.) कौडिल्ला पक्षी।

जलवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-खस। उशीर। २-विष्णुकंद।

जलवाह [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ।

जलवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) पानी ढोने या ले जाने वाला।

जलवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जलवाहक'।

जलविद्युत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलशक्ति से यंत्रों की सहायता द्वारा तैयार की गई बिजली, जिससे नगरों में प्रकाश और कल-कारखाने चलते हैं।

जलविमान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विमान या हवाई जहाज जो जल और नभ में समान रूप से विचरण करता है। जलचर-हवाई-जहाज। हाइड्रोप्लेन।

जलविषुव [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार एक योग।

जलविहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी तालाब आदि में नाव पर घूमकर सैर करना। २-देखो 'जल-क्रीड़ा'।

जलवृश्चिक [संज्ञा पु.] (सं.) झींगा नामक मछली।

जलवेतस [संज्ञा पु.] (सं.) जलबेंत।

जलवैकृत [संज्ञा पु.] (सं.) जलाशय अथवा पानी में सहसा कोई विकार या अद्भुत बात दिखाई पड़ना।

जलव्यथ, जलव्यध [संज्ञा पु.] (सं.) कौआ नामक मछली।

जलव्याघ्र [संज्ञा पु.] (सं.) सीलजाति का एक बड़ा क्रूर और हिंसक जलजन्तु।

जलव्याल [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का साँप।

जलशय, जलशयन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

जलशायी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

जलशुचि [संज्ञा पु.] (सं.) सिंघाड़ा।

जलशूचक [संज्ञा पु.] (सं.) सेवार।

जलशूकर [संज्ञा पु.] (सं.) नाक नामक जल-जन्तु।

जलसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-नहाना। स्नान करना। २-धोना। ३-शव को जल में प्रवाहित करना।

जलसमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक।

जलसर्पिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

जलसा [संज्ञा पु.] (अ.) १-खाने-पीने अथवा गाने-बजाने का समारोह। २-सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन। बैठक।

जलसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जलसिंही] सील जाति का एक जन्तु जो सात गज तक लम्बा होता है। उसकी गर्दन पर सिंह के समान लम्बे-लम्बे बाल होते हैं।

जलसिरस [संज्ञा पु.] (हिं.) जल के निकट उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का सिरस

जलसीप [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोतीवाली सी

जलसूचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूंस। २-बड़ा कछुवा। ३-जोंक। ४-कौआ। सिंघाड़ा।

जलसूत [संज्ञा पु.] (सं.) नहरुआ रोग।

जलसेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समुद्र में जलपोतों या जहाजों से लड़ने वाली

जलसेनी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की

जलस्तंभ, जलस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय का जल कुछ समय के लिए ऊपर स्तम्भ का रूप धारण कर लेता है। प्रायः अशुभ या हानिकारक समझी सूंड़ी।

जलस्तंभन, जलस्तम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) बल से जल की गति रोकना।

जस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंडदूर्वा।

जलहर [वि.] (हिं.) जलमय। हुआ। [संज्ञा पु.] जलाशय।

जलहरण [संज्ञा पु.] (सं.) बत्तीस वर्णों की वृत्ति या दंडक जिसके अन्त में दो लघु हैं। इसमें सोलहवें वर्ण पर यति होती

जलहरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जलधरी'।

जलहस्ती [संज्ञा पु.] (सं.) सीलजाति का गज लम्बा समुद्र में रहने वाला एक जिसकी चरबी की मोमबत्तियां बनाई है।

जलहार [संज्ञा पु.] (सं.) पनिहारा। पानी वाला।

जलहालम [संज्ञा पु.] (?) जलाशयों के होने वाला एक प्रकार का वृक्ष।

जलहास [संज्ञा पु.] (सं.) फेन। समुद्रफेन।

जलहोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जिसमें वैश्वदेवादि के उद्देश्य से वाली जल में आहुति।

जलांचल, जलाञ्चल [संज्ञा पु.] (सं.) नहर।

जलांजल, जलाञ्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १- २-सोता। स्रोत।

जलांजलि, जलाञ्जलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पानी भरी अंजुली। २-मृतक के दी जाने वाली जल की अंजुली।

जलांतक, जलान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १- समुद्रों में से एक समुद्र। २-कुत्ते के के उपरान्त जब विष चढ़ने लगता है रोगी को जल से भय मालूम देता है। हा फोबिया।

जलांबिका, जलाम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुआँ।

जलाक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेट की

[illegible] धूप की लपट । ३-लू ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र, नदी आदि [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपीपल ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) ऊदबिलाव ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) गोटे आदि की झालर

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) कंक नामक पक्षी ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

[illegible], जलातङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) जलत्रास [illegible] का एक रोग ।

[illegible] [वि.] (हिं.) २-क्रोधी । बिगड़ैल । २- [illegible]।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जोंक । २- [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) शरत्काल ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जल्लाद' ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण । २- [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण । २-वह [illegible] संवत्सर में जल का अधिपति हो ([illegible] ज्योतिष) ।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रज्वलित करना । [illegible]। २-आग पर रखकर भाप के रूप में [illegible] उड़ाना । किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना ।

[illegible] मारना-बहुत दुखी करना ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) ईर्ष्या या डाह के कारण होने वाली जलन ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (अं.) एक अंग्रेजी औषध जो [illegible] होती है ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) जलप्रपात । ऊंचे स्थान से पानी का गिरना ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाकाल । बरसात ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (अ.) १-तेज । प्रकाश । २- महिमा के कारण उत्पन्न प्रभाव । आतंक ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़ । भसींड़ ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खमीर उठना । २- खमीर से उठने वाला आटा । ३-क्रिवाम । पतला शीरा ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल में उतरना । २-नवीन जलपोत का तैयार होने के उपरान्त सर्वप्रथम जल अथवा समुद्र में उतारना या पहुँचना ।

[illegible] [वि.] (अ.) [स्त्री. जलावतनी] देश[illegible] पाया हुआ । निर्वासित ।

जलावतनी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देशनिकाला । निर्वासन ।

जलावन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईंधन । जलाने की लकड़ी आदि । २-जल जाने वाला किसी वस्तु का अंश । जलता । ३-मौसम में कोल्हू के पहले पहल चलने का उत्सव । भंडरव ।

जलावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का भंवर । नाल ।

जलाशय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ पानी जमा होकर ठहरता है ।

जलाशया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा ।

जलाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) दीर्घनाल या वृत्तगुंड नामक तृण ।

जलाश्रया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूली नामक घास ।

जलासुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

जलाद्रल [वि.] (हिं.) जलमय ।

जलाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल । २-कुमुद । कुई ।

जालका [संज्ञा स्त्री] (सं.) जोंक ।

जलीय [वि.] (सं.) १-जलसंबंधी । २-जल में होने वाला । ३-जिसमें जल या जल का कुछ अंश हो ।

जलील [वि.] (अ.) १-तुच्छ । बेकदर । २-अपमानित ।

जलुक, जलुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

जलूस [संज्ञा पु.] (अ.) बहुत से लोगों का किसी सवारी अथवा प्रदर्शन आदि के निमित्त निकलना । जन-यात्रा ।

जलेंद्र, जलेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण । २-महासागर ।

जलेंधन, जलेन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) बाड़वाग्नि ।

जलेचर [वि.] (सं.) जलचर ।

जलेच्छया [संज्ञा पु] (?) पानी में उत्पन्न होने वाला एक पौधा ।

जलेज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल ।

जलेजात [संज्ञा पु.] (सं.) कमल ।
[वि.] (सं.) पानी में उत्पन्न होने वाला ।

जलेतन [वि.] (हिं.) १-जल्दी क्रुद्ध होने वाला । चिड़-चिड़ा । २-ईर्ष्या, डाह आदि के कारण जलने वाला ।

जलेबा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी जलेबी ।

जलेबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घेरदार मिठाई । २-गोल घेरा । कुंडली ।
जलेबीदार-जिसमें कई घेरे हों ।

जलेभ [संज्ञा पु.] (सं.) जलहस्ती ।

जलेरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूरजमुखी नामक फूल का पौधा ।

जलेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

जलेवाह [संज्ञा पु.] (सं.) पानी में गोता लगाकर चीजें निकालने वाला । गोताखोर ।

जलेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण । २-समुद्र । ३-जलाधिप ।

जलेशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली । २-विष्णु ।

जलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र । २-वरुण ।

जलोका [संज्ञा पु.] (सं.) जोंक ।

जलोकिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

जलोच्छ्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलाशयों में उठने वाली लहरें । २-किसी स्थान से जल को बाहर निकालने या उसे किसी स्थान में प्रविष्ट करने के लिए लिया जाने वाला प्रयत्न ।

जलोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों के अनुसार ताल, कुआँ या बावली का विवाह ।

जलोदर [संज्ञा. पु.] (सं.) एक रोग जिसमें नाभि के पास पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होता है जिससे पेट फूल जाता है ।

जलोद्धतगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में (ज+स+ज+स) होते हैं ।

जलोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुंदला नामक घास । २-छोटी ब्राह्मी ।

जलोद्भूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुँदला नामक घास

जलोन्नाद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक अनुचर

जलोरगी [संज्ञा स्त्री] (सं.) जोंक ।

जलौका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक ।

जल्द [क्रि. वि.] (अ.) १-शीघ्र । २-तेजी से ।

जल्दबाज [वि.] (फ़ा.) हर काम में जल्दी मचाने वाला ।

जल्दी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शीघ्रता । फुरती ।
[क्रि. वि.] (अ.) देखो 'जल्द' ।

जल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथन । कहना । २-प्रलाप । बकवाद ।

जल्पक [वि.] (सं.) बकवादी । वाचाल ।

जल्पन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलाप । गपशप । बकवाद । २-डींग ।

जल्पना [क्रि. अ.] (हिं.) व्यर्थ बकवाद करना । डींग मारना ।

जल्पाक [वि.] (सं.) बकवादी । वाचाल ।

जल्पित [वि.] (सं.) १-मिथ्या । २-कथित । कहा हुआ ।

जल्ला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झील । २-ताल । हौज ।

जल्लाद [संज्ञा पु.] (अ.) प्राण दण्ड पाये हुए व्यक्तियों के प्राण लेने वाला व्यक्ति । घातक । वधिक । २-क्रूर व्यक्ति ।

जल्ह [संज्ञा पु.] (सं.) [illegible] ।

जव [संज्ञा पु.] (सं.) वेग।
[संज्ञा पु.] (हिं.) यव। जौ।

जवन [वि.] (सं.) वेगवान। तेज।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-वेग। २-घोड़ा।
[संज्ञा पु.] देखो 'यवन'।

जवनाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यवनाल'।

जवनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यवनिका'।

जवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अजवायन। २-तेजी। वेग।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यवनी। मुसलमानी।

जवस [संज्ञा पु.] (सं.) घास।

जवस् [संज्ञा पु.] (सं.) वेग।

जवाँमर्द [वि.] (फा.) १-शूरवीर। बहादुर। २-सिपाही।

जवाँमर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वीरता। बहादुरी।

जवा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जपा'। + [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की सिलाई। २-लहसुन का एक दाना।

जवाइन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अजवायन।

जवाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जाने की क्रिया। गमन। २-जाने का भाव। ३-जाने के बदले दिया जाने वाला धन।

जवाखार [संज्ञा पु.] (हिं.) जौ के क्षार से बनने वाला एक प्रकार का नमक।

जवादानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले का चंपाकली नामक गहना।

जवादि, जवादि-कस्तूरी [संज्ञा पु., स्त्री.] (हिं.) गौरासार नामक गंधद्रव्य जो गंधमार्जार से निकलता है।

जवाधिक [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत तेज दौड़ने वाला घोड़ा।

जवान [वि.] (फा.) १-तरुण। युवा। २-वीर। + [संज्ञा पु.] १-मनुष्य। पुरुष। २-सिपाही।

जवानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तरुणाई। युवावस्था। यौवन। *जवानी उठना या उभरना*-यौवन प्रारम्भ होना। जवानी आना। *जवानी उतरना या ढलना*-उमर ढलना। *जवानी चढ़ना*-१-यौवन का आगमन होना। २-मदमत्त होना। *उठती जवानी*-यौवनारम्भ। *उतरती जवानी*-यौवनावसान।

जवाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी प्रश्न के कहे जाने पर उसके समाधान के निमित्त कही जाने वाली बात। उत्तर। २-किसी काम का बदला चुकाने के निमित्त किया जाने वाला काम। ३-मुकाबले अथवा बराबरी की वस्तु। जोड़। ४-नौकरी से अलग किया जाना। *जवाब तलब करना*-(किसी घटना का) कारण पूछना। *जवाब देना*-इनकार करना।

जवाब-तलब [वि.] (फा.) जिसके संबंध में समाधान-कारक उत्तर मांगा गया हो।

जवाबदार [वि.] (फा.) उत्तरदाता। जिम्मेदार।

जवाबदावा [संज्ञा पु.] (अ.) वह उत्तर जो प्रतिवादी वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में लिखकर अदालत में देता है।

जवाबदेह [वि.] (फा.) उत्तरदाता। जिम्मेदार।

जवाबदेही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-उत्तर देने की क्रिया। २-उत्तरदायित्व। जिम्मेदारी।

जवाब-सवाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रश्नोत्तर। २-वादविवाद।

जवाबी [वि.] (फा.) १-जवाब का। जवाब-संबंधी। २-जिसका जवाब देना हो। ३-जो किसी के जवाब में हो।

जवार [संज्ञा पु.] (अ.) १-पड़ोस। २-आस-पास का प्रदेश। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जुआर'। + [संज्ञा पु.] १-अवनति। बुरे दिन। २-जंजाल। झंझट।

जवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) जौ के हरे अंकुर। जई।

जवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छुहारे, मोती, जौ आदि का बना हार जो विवाह में वधु को ससुर की ओर से पहनाया जाता है। १-सितार-सारंगी आदि में का वह लकड़ी का छोटा टुकड़ा जिस पर से तार खूंटी तक जाता है। २-तार वाले बाजों में षडज का तार।

जवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अवनति। उतार। २-जंजाल। आफत। बखेड़ा। *जवाल में पड़ना या फँसना*-आफत में फँसना। *जवाल में डालना*-आफत में फंसना।

जवाशीर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गंधाबिरोजा।

जवास, जवासा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का काँटेदार पौधा जो औषधि के काम में आता है। बालपत्र-अधिकंटक।

जवाह+ [संज्ञा पु.] (?) १-आँख का एक रोग। प्रवाल। परवल। २-बैलों की आँख का एक रोग, जिसमें आंख के नीचे मांस बढ़ जाता है।

जवाहड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत छोटी हड़।

जवाहर [संज्ञा पु.] (अ.) १-रत्न। मणि। २-देखो 'जवाहरलाल'।

जवाहर-खाना [संज्ञा पु.] (अ. फा.) वह स्थान जहां रत्न और आभूषण आदि रहते हैं। रत्नकोष। तोशाखाना।

जवाहरलाल [संज्ञा पु.] भारतदेश के प्रसिद्ध नेता जिनका जन्म १४ नवम्बर १८८९ को श्रीमती स्वरूपरानी के गर्भ से हुआ। इनके पिता का नाम मोतीलालजी नेहरू था। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख नायक थे। भारत के स्वतंत्र होने पर यह पहले प्रधान मंत्री बने। भारत के राजनैतिक क्षेत्र में गांधी जी के पश्चात् इनका ही नाम है।

जवाहरात [संज्ञा पु.] देखो 'जवाहिरात'।

जवाहरी* [संज्ञा पु.] देखो 'जौहरी'।

जवाहिर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जवाहर'।

जवाहिरात [संज्ञा पु.] (हिं.) हीरा, पन्ना, आदि रत्नसमूह।

जवाही [वि.] (हिं.) १-आंख के जवाह रो पीड़ित। २-जवाह-रोगयुक्त।

जवी [वि.] (हिं.) वेगयुक्त। वेगवान्।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोड़ा। ऊंट।

जवीय [वि.] (हिं.) अत्यन्त वेगवान। तेज।

जवैया+ [वि.] (हिं.) जाने वाला।

जशन [संज्ञा पु.] (फा.) नाच-रंग का रोह।

जस* [क्रि. वि.] (हिं.) जैसा।
[संज्ञा पु.] देखो 'यश'।

जसद [संज्ञा पु.] (सं.) जस्ता।

जसुरि [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

जसोदा, जसोवै [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दे 'यशोधा'।

जस्त [संज्ञा पु.] देखो 'जस्ता'।

जस्तई [वि] (हिं.) जस्ते के रंग का।

जस्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मटमैले रंग का दार प्रसिद्ध धातु।

जहँ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'जहाँ'।

जहँड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-हानि या उठाना। २-धोखे में आना। भ्रम में पड़

जहँड़ाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-हानि उठा २-धोखे में पड़ना।

जहक [संज्ञा पु.] (सं.) समय। काल।
[वि.] (सं.) निर्मोह।

जहकना [क्रि. स.] (हिं.) कुढ़ना। चिढ़ना।

जहतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) जगात या कर वाला।

जहत्स्वार्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार लक्षणा जिस के अंतर्गत पद या वाक्य वाच्यार्थ को छोड़कर अभिप्रेत अर्थ करता है।

जहदजहल्लक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्र की लक्षणा जिसमें वक्ता के शब्दों के अर्थों में से केवल एक अर्थ या भाव किया जाता है।

जहदना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कीचड़ होना। दल होना। २-शिथिल पड़ना। थक जाना। हाँफ जाना।

जहदा [संज्ञा पु.] (?) दलदल।

जहदम*+ [संज्ञा पु.] देखो 'जहन्नुम'।

जहना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-छोड़ना। २-नाश करना।

जहन्नुम [संज्ञा पु.] (अ.) १-नरक। दोज़ख।
जहन्नुम में जावे-१-चूल्हे में जावें। २-हम से कोई संबंध नहीं।

जहन्नुमरसीद [वि.] (फ़ा.) नरक में गया हुआ। दोज़खी।

जहन्नुमी [वि.] (फ़ा.) नारकिक। जहन्नुम में जाने वाला।

जहमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आपत्ति। मुसीबत। २-झंझट।
जहमत उठाना-दुःख भोगना। *जहमत में पड़ना*-झंझट में फंसना।

जहर [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-विष। गरल। २-अप्रिय बात या काम।
जहर उगलना-१-जलीकटी कहना। २-चुभती या मर्मभेदी बात कहना। *जहर कर देना*-१-भोजन कड़वा कर देना। २-खाने के समय झगड़ा आदि करके जी खट्टा करना। ३-असह्य कर देना। *जहर का घूंट पीना*-क्रोध प्रकट न होने देना। मन मसोस कर रह जाना। *जहर का बुझाया हुआ*-बहुत अनिष्टकारक या उपद्रवी। *जहर की गाँठ*-विष की गाँठ। (किसी पर) *जहर खाना*-किसी बात या आदमी के कारण ग्लानि, दुःख, ईर्ष्या लज्जा आदि से आत्महत्या पर उतारू होना। *जहर देना*-जहर या विष पिलाना या खिलाना। *जहर मालूम होना*-अप्रिय प्रतीत होना। *जहर मिलाना*-बात को अप्रिय कर देना। *जहर में बुझाया हुआ*-बहुत अनिष्टकारक या उपद्रवी। *जहर लगना*-अप्रिय प्रतीत होना।

जहरी [वि.] (फ़ा.) १-प्राण लेने वाला। घातक। २-बहुत हानिकारक।

जहर [संज्ञा पु.] देखो 'जौहर'।

जहरगत [संज्ञा स्त्री.](हिं.) घूँघट काढ़कर नाचने की एक गत।

ज़हरदार [वि.] (फ़ा.) जहरीला। विषाक्त।

ज़हरबाद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का जहरीला फोड़ा।

ज़हर-मोहरा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-एक प्रकार का काला पत्थर जिसमें साँप के काटे का विष खींच लेने की शक्ति होती है। २-विषों को खींचने या सोखने की शक्ति रखने वाला एक प्रकार का हरे रंग का पत्थर।

ज़हरी, ज़हरीला [वि.] (हिं.) विषाक्त। जिसमें जहर हो।

जहल्लक्षणा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'जहत्स्वार्था'।

जहाँ [क्रि. वि.] (हिं.) १-जिस स्थान पर। जिस जगह। २-सब जगह। सब स्थान पर।
जहाँ का तहाँ-अपने पहले के स्थान पर। *जहाँ तहाँ*-इधर उधर। इतस्ततः।

जहाँ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) संसार। लोक। जहान।

जहाँगीरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-हाथ में पहनने के एक जड़ाऊ गहना। २-एक प्रकार की लाख की चूड़ी।

जहाँदीद, जहाँदीदा [वि.] (फ़ा.) अनुभवी।

जहाँपनाह [संज्ञा पु.] (फ़ा.) संसार का रक्षक।

जहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

जहाज [संज्ञा पु.] (अ.) समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव। जलपोत।
जहाज का कौवा या काग-देखो 'जहाजी-कौआ'।

जहाजी [वि.] (अ.) जहाज से सम्बन्ध रखने वाला।
जहाजी इत्र-एक प्रकार का निकृष्ट इत्र। *जहाजी कौआ*-१-विवश। समुद्र में चलते जहाज पर बैठे कौए के लिए वह जहाज ही एक मात्र सहारा होता है। २-बड़ा धूर्त्त। भारी चालाक। *जहाजी डाकू*-वे डाकू जो समुद्रों में अपना जहाज लेकर घूमते रहते हैं और साधारण जहाज के यात्रियों को लूट लेते हैं।

जहान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) संसार। जगत।

जहानक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलय।

जहालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अज्ञान। मूर्खता।

जहिया*+ [क्रि. वि.] (हिं.) जब। जिस समय

जहीं* [अव्य.] (हिं.) जहाँ ही। +देखो 'ज्योंही'।

जहीन [वि.] (अ.) १-समझदार। बुद्धिमान्। २-जिसकी स्मरणशक्ति तीव्र हो।

जहु [संज्ञा पु.] (सं.) संतान।

ज़हूर [संज्ञा पु.] (अ.) प्रकाश।
ज़हूर में आना-प्रकट होना। *ज़हूर में लाना*-प्रकट करना।

ज़हूरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-दिखावा। दृश्य। २-ठाट। ३-लड़ाका।

जहेज [संज्ञा पु.] (अ.) दहेज।

जह्नु [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्णु। २-एक राजर्षि का नाम जिन्होंने गंगा को पीकर कान से निकाला था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।

जह्नुतनया, [नंदनी] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

जह्नुसप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जह्नु द्वारा गंगापान का दिन। वैशाखशुक्ला-सप्तमी।

जाँ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जा'। [वि.] देखो 'जा'।

जाँग [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों की एक जाति। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जाँघ'।

जाँगड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) यशगान करने वाला भाट।

जाँगर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शरीर। देह। २-हाथ। पैर।
जाँगर चोर-आलसी।

जाँगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जाँगड़ा'।

जांगल, जाङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीतर। २-मास। ३-ऊसर देश। [वि.] जंगल संबंधी। जंगली।

जांगलि, जांगलिक--जाङ्गलि, जाङ्गलिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सपेरा। सांप पकड़ने वाला। २-विष। वैद्य। सांप का विष उतारने वाला

जांगली, जाङ्गली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंछ। केंवाच।

जांगलू [वि.] (हिं.) गंवार। उजड्ड। अनाड़ी।

जाँगी [संज्ञा पु.] (?) नगारा।

जांगुल, जाङ्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोरई। २-विष। ३-देखो 'जंगुल'।

जांगुलि, जांगुलिक----जाङ्गुलि, जाङ्गुलिक [संज्ञा पु.] (सं.) सांप पकड़ने वाला। गारुड़ी। संपेरा।

जांगुली, जाङ्गुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्प का विष उतारने की विद्या।

जाँघ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमर और घुटने के बीच का अंग। उरु।

जाँघा [संज्ञा पु.] (देश.) १-हल। २-कुंए के ऊपर गड़ारी रखने का खंबा। ३-गड़ारी पहनाने का लोहे या लकड़ी का धुरा।

जांघिक, जाङ्घिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊंट। २-एक प्रकार का मृग। ३-वह जिसकी जीविका बहुत दौड़ने आदि से ही चलती हो। जैसे-हलकारा।

जाँघिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जांघों में पहनने का घुटनों तक का एक पहनावा। कच्छा। २-मालखंभ की एक कसरत।

जाँघिल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बैल जिसका पिछला पैर चलने में लचकता हो। +[वि.] जिसका पैर चलने में लचकता हो। (पशु)। [संज्ञा पु.] (देश.) खाकी रंग की एक चिड़िया।

जाँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जांचने की क्रिया या भाव। २-यह देखना कि कोई कार्य भलीभांति सम्पन्न हुआ है अथवा नहीं। चेक। ३-घटना आदि के कारणों या वास्तविक स्वरूप अथवा तथ्य का पता लगाना। अनुसंधान। *एन्क्वायरी*।
जाँच-पड़ताल-छानबीन।

जाँचक*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'याचक'। २-जाँच करने वाला।

जाँचकता*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'याचकता'।

जाँचना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी विषय की सत्यता या असत्यता अथवा योग्यता का निर्णय करना। २-प्रार्थना करना। ३-मांगना

जाँजर*+ [वि.] (हिं.) देखो 'जाजरा'।

जाँझ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

जाँट [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पेड़।

जाँत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जाँता। आटा पीसने

की बड़ी चक्की। २-सुनारों और तारकशों आदि का एक औजार।

जांतव, जान्तव [वि.] (सं.) १-जन्तु-संबधी। जीव-जतुओं का। २-जीव-जन्तुओं से उत्पन्न अथवा मिलने वाला।

जाँता [संज्ञा पु.] (हिं.) आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँद [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पेड़।

जाँपनाह [संज्ञा पु.] देखो 'जहाँपनाह'।

जाँव*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जामुन। जंबूफल।

जाँववंत [संज्ञा पु.] देखो 'जाँबवान्'।

जांबव [संज्ञा पु.] (सं.) १-जामुन का फल। २-जामुन का सिरका। ३-जामुन का बना मद्य। ४-सोना। स्वर्ण।

जांबवक [संज्ञा पु.] देखो 'जांबव'।

जांबवती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जांबवान की कन्या। २-नागमदनी।

जांबवान्, जाम्बवान् [संज्ञा पु.] (सं.) सुग्रीव के मन्त्री का नाम।

जांबवि, जाम्बवि [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

जांबवी, जाम्बवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'जांबवती'।

जांबवौष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक छोटा अस्त्र जिससे प्राचीनकाल में फोड़े आदि जलाए जाते थे।

जाँवत+ [अव्य.] देखो 'जावत' या 'यावत'।

जाँवर*+ [संज्ञा पु] (हिं.) गमन। जाना। प्रस्थान।

जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माता। मा। २-देवरानी।
[वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] उत्पन्न।
*+ [सर्व.] (हिं.) जो। जिस।
[वि.] (फा.) मुनासिब। उचित।

जाइंट, जाइन्ट [संज्ञा पु.] (अं.) १-जोड़। पैबंद। २-गिरह। गांठ।

जाइ*+ [वि.] (हिं.) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

जाइफर, जाइफल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जायफल'।

जाइस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जायस'।

जाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कन्या। लड़की। पुत्री। २-जाती। चमेली।

जाउँनि*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जामुन'।

जाउर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खीर।

जाएल* [संज्ञा पु.] (देश.) दो बार का जोता हुआ खेत।

जाएस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जायस'।

जाक** [संज्ञा पु.] (हिं.) यक्ष।

जाकट [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जाकेट'।

जाकड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दुकानदार से इस शर्त पर माल लाना कि पसंद न आने की अवस्था में वापस करना होगा। २-इस प्रकार लाया हुआ माल।

जाकड़बही [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जाकड़ दिये हुए माल का नाम और दाम लिखने का खाता।

जाकेट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) फतुही की तरह का एक अंग्रेजी पहनावा। सदरी।

जाखन* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पहिए के आकार का लकड़ी का गोल चक्कर जो कुओं की नीव में दिया जाता है। जमवट। नेवार।

जाखनी* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'यक्षणी'।

जाग [संज्ञा पु.] (हिं.) यज्ञ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जागरण।
+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जगह। स्थान।

जागत [संज्ञा पु.] (सं.) जगतीछंद।

जागती-कला, जागती-जोत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी देवी या देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार २-चिराग। दीपक।

जागना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सोकर उठना। निद्रा त्यागना। २-जाग्रत अवस्था में निद्रारहित रहना। ३-सजग या सावधान रहना। ४-उदित होना। ५-समृद्ध होना। ६-प्रसिद्ध या विख्यात होना। ७-जोरशोर से उठना। जैसे-लोकमत का जागना। ८-प्रज्वलित होना। जलना। ९-अस्तित्व प्राप्त करना। *जागता*-प्रत्यक्ष। साक्षात।

जागनौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का हथियार।

जागवलिक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'याज्ञवल्क्य'।

जागर [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागरण। जाग। जागने की क्रिया। २-कवच। मन, बुद्धि, अहंकार आदि अंतःकरण की वृत्तियों के जागृत होने का भाव या अवस्था।

जागरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निद्रा का अभाव। जागना। २-किसी उत्सव अथवा पर्व आदि पर सारी रात जागना। ३-किसी वर्ग अथवा जाति का गिरी हुई अवस्था से निकल कर कर उन्नत होने का प्रयत्न करना। अवेकिना।

जागरित [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागरण। नींद का न आना। २-सांख्य तथा वेदान्तमतानुसार वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इन्द्रियों द्वारा सब प्रकार के व्यवहार और कार्यों का अनुभव होता रहता है।

जागरित-स्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह आत्मा जो जागरित अवस्था में हो।

जागरितात, जागरितान्त [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जागरित-स्थान'।

जागरिता [वि.] (सं.) जागरणशील। जिसको निद्रा न आती हो।

जागरू+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-दँवाई के उपरांत अच्छा अन्न निकाल लेने के पश्चात भूसे आदि के साथ बचा हुआ खराब अन्न। २-भूसा।

जागरूक [संज्ञा पु] (सं.) १-जो जागृत अवस्था में हो। चैतन्य। २-रखवाला। पहरेदार।

जागरूकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतर्कता। सावधानता।

जागरूप [वि.] (हिं.) जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

जागर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जागरण। जागना। २-चेतना।

जागा* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जगह'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) किसी उत्सव अथवा पर्व पर सारी रात जागना। जागरण।

जागी* [संज्ञा पु.] (हिं.) भाट।

जागीर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश।

जागीरदार [संज्ञा पु.] (फा.) जागीरवाला। जागीर का मालिक।

जागीरी* [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-जागीरदार होने का भाव। २-अमीरी। रईसी।

जागुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-केसर। एक प्राचीन देश। २-उस देश का निवासी।

जाग्रवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-अग्नि।

जागृत [वि.] देखो 'जाग्रत'।

जाग्रत [वि.] (सं.) १-जो जाग रहा हो। जागा हुआ। २-(गुण, शक्ति आदि के द्वारा) जो अपना कार्य कर रहा हो, निष्क्रिय न हो। सुप्त का उलटा। डॉरमेंट।
[संज्ञा पु.] (सं.) वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान होता रहता है।

जाग्रति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जागने की क्रिया। जागरण।

जाघनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जाँघ। उरु। जंघा।

जाचक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'याचक'।

जाचकता* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मांगने की क्रिया या भाव। २-भिखमंगी।

जाचना* [क्रि. स.] (हिं.) मांगना।

जाजम [संज्ञा स्त्री.] (तु.) फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर।

जाज-मलार [संज्ञा पु.] (देश.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

जाजरा* [वि.] (देश.) जीर्ण। जर्जर।

जाजरी* [संज्ञा पु.] (देश.) चिड़ीमार।

जाज़रूर [संज्ञा पु.] (फा.) पाखाना। टट्टी।

जाजल [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्ववेद की एक शाखा का नाम।

जाजलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

जाजात [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जायदाद'।

जाजिम [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जाजम'।

जाज्वल्य [वि.] (सं.) १-प्रज्वलित। प्रकाशयुक्त। २-तेजस्वी।

[वि.] (सं.) १–प्रज्वलित। दीप्तिमान। २–तेजस्वी।

[संज्ञा पु.] (?) भारतदेश की एक प्रसिद्ध जाति।

[संज्ञा पु.] (?) चमारों की एक जाति।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) पलाश की जाति का एक पेड़। मोखा।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका।

[संज्ञा पु.] (सं.) अथर्ववेद के एक ऋषि का नाम।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह लट्ठा जो कोल्हू की कूंडी के बीच में लगा रहता है। २–तालाब के बीच में गड़ा हुआ। ऊँचा मोटा लट्ठा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–उदर। पेट। २–जठराग्नि। ३–भूख। क्षुधा।

[वि.] (हिं.) १–जठर। सम्बन्धी। २–जठर से उत्पन्न।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जठराग्नि'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जाठ'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जाड़ा'।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'दाढ़'।

[वि.] (हिं.) बहुत अधिक।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–शीतकाल। सरदी का मौसम। २–सरदी। शीत। पाला। ठंढ।

[संज्ञा पु.] (सं.) जड़ता। जड़ का भाव।

[संज्ञा पु.] (सं.) जंभीरी नीबू।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–जन्म। २–पुत्र। बेटा। ३–जीव। प्राणी। ४–वह पुत्र जिसमें अपनी माँ के से गुण हों।

[वि.] (सं.) १–उत्पन्न। जन्माहुआ। २–व्यक्त। प्रकट। ३–प्रशस्त। अच्छा।

[संज्ञा स्त्री.] (अ.) शरीर। देह। काया।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'जाति'।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–बच्चा। २–कारंडी। ३–भिक्षु। ४–फलित ज्योतिष का एक भेद। ५–महात्मा-बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएं।

जातकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) हिन्दुओं के दस संस्कारों में से चौथा।

जातक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'जातकर्म'।

जातकोप [वि.] (सं.) जो क्रुद्ध हो गया हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) वह रोग जो बच्चे को गर्भ ही से माता के कुपथ्य आदि के कारण होता है।

जातना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यातना'।

जातपाँत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जाति तथा उपजाति के विभाग।

जातरा+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'यात्रा'।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–सुवर्ण। सोना।

धतूरा।

जातवेद [संज्ञा पु.] (सं.) १–अग्नि। २–सूर्य। २–सूर्य। २–परमात्मा।

जातवेधस् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जातवेद'।

जातवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) वह घर जिसमें बालक जन्मा हो। सूतिकागार। सौरी।

जातश्रम [वि.] (सं.) विश्रान्त। थका हुआ।

जातस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जिसे स्नेह या प्रेम हुआ हो।

जाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या। पुत्री। [वि.] उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जांता'।

जातापत्य [संज्ञा पु.] (सं.) जिसको पुत्र हुआ हो।

जातापत्या [संज्ञा स्त्री.] प्रसूत स्त्री।

जाताश्रु [वि.] (सं.) जिसकी आंख में से आंसू टपकता हो।

जाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हिन्दुओं में मानव-समाज का वह विभाग जो सर्व-प्रथम क्रमानुसार किया गया था, पर अब जन्मानुसार माना जाता है। कास्ट। २–मानव समाज का वह विभाग जो निवासस्थान या वेश परम्परा की दृष्टि से किया गया हो। रेस। ३–गुण, धर्म, आकृति आदि की दृष्टि से पदार्थों या जीव-जन्तुओं का किया हुआ विभाग। कोटि। वर्ग। जेनस। ४–वर्ण। ६–कुल। वंश। ७–गोत्र। ८–जन्म। ६–सामान्य। साधारण। १०–मात्रिकछंद।

जातिकर्म [संज्ञा पु.] देखो 'जातकर्म'।

जातिकोश, जातिकोष [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातिकोशी, जातिकोषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जावित्री।

जातिच्युत [वि.] (सं.) जाति से गिरा या निकाला हुआ।

जातित्व [संज्ञा पु.] (सं.) जातीयता। जाति का भाव।

जातिधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–जाति या वर्ण का धर्म। २–जातियों का अलग-अलग कर्त्तव्य।

जातिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जावित्री।

जातिपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जावित्री।

जाति-पाँति [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'जात-पांत'।

जातिफल [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातिवैर [संज्ञा. पु.] (सं.) स्वभाविक शत्रुता। सहज वैर।

जाति-ब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं.) केवल जन्म से ब्राह्मण पर ब्राह्मण के कर्त्तव्य-कर्म से अनभिज्ञ।

जातिभ्रंशकर [संज्ञा पु] (सं.) नौ प्रकार के पापों में से एक। (मनु)।

जातिशस्य [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातिसंकर [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णसंकर। दोगला।

जातिसार [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातिसृत [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातिस्वभाव [संज्ञा पु.] (सं.) वह अलंकार जिसमें आकृति तथा गुण का वर्णन किया जाता है।

जाती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चमेली। २–छोटा आँवला। ३–मालती। ४–जायफल।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'जाति'।
[संज्ञा पु.] देखो 'हाथी'।

ज़ाती [वि.] (अ.) १–व्यक्तिगत। २–अपना। निजका।

जातीकोश, जातीकोष [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातीपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जावित्री।

जातीपूग [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातीफल [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

जातीय [वि.] (सं.) १–जाति-संबंधी। २–सारी जाति अथवा राष्ट्र का।

जातीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जाति का भाव। जातित्व। २–अपनी जाति, राष्ट्र अथवा देश की उन्नति, महत्व, कल्याण आदि की प्रबल कामना या आकांक्षा का भाव।

जातीरस [संज्ञा पु.] (सं.) बोल नाम का एक गंधद्रव्य।

जातु [अव्य.] (सं.) कदाचित्।

जातुक [संज्ञा पु.] (सं.) हींग।

जतुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृक्ष का नाम।

जातुज [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

जातुधान [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस। निशाचर।

जातू [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

जातूकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) उपस्मृति बनाने वाले एक ऋषि का नाम।

जातूकर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) महाकवि भवभूति के पिता का नाम।

जातेष्ठि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जातकर्म।

जातोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी अवस्था में बधिया किया हुआ बैल।

जात्य [वि.] (सं.) १–कुलीन। २–श्रेष्ठ। ३–सुन्दर।

जात्यत्रिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) एक समकोण वाला त्रिभुज।

जात्यन्ध [वि.] (सं.) जन्म का अन्धा।

जात्यारोह [संज्ञा पु.] (सं.) खगोल के अक्षांश की गिनती में वह दूरी जो मेष से पूर्व की ओर प्रथम अंश से लीजाती है।

जात्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों का एक आसन जिस के द्वारा पूर्वजन्म की बातें ज्ञात करते हैं।

जात्युत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में दूषित उत्तर ।

जात्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यात्रा' ।

जात्री [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यात्री' ।

जाथका*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढेरी । ढेर । राशि

जादव*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) यादव । यदुवंशी ।

जादवपति*+ [संज्ञा पु] (हिं.) यादवपति । श्रीकृष्ण ।

जादसपति, जादसपती*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जल-जंतुओं का स्वामी । वरुण ।

जादा*+ [वि.] देखो 'ज्यादा' ।

जादू [संज्ञा पु.] (फा.) वह आश्चर्यजनक तथा अद्भुत कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवीय समझें । तिलस्म । इन्द्रजाल । २-वह अनोखा या अद्भुत खेल या कृत्य जिसका रहस्य दर्शकों की समझ में न आवे । ३-टोना । टोटका । ४-मोहिनी-शक्ति ।

जादूगर [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. जादूगरनी] जादू जानने या जादू के कृत्य दिखाने वाला व्यक्ति ।

जादूगरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जादू करने की क्रिया या काम ।

जादू-नजर [संज्ञा पु.] (फा.) दृष्टिमात्र से मोहित करने वाला ।

जादौ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यदुवंशी । २-नीचकुलोत्पन्न ।

जादौराय*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण ।

जान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ज्ञान । जानकारी । परिचय । २-ख्याल । अनुमान ।

जान-पहचान-परिचय । *जानमें*-जानकारी में । [वि.] (हिं.) सुजान । चतुर । जानकार । [संज्ञा पु.] देखो 'जानु' । देखो 'यान' । [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-प्राण । जीव । प्राणवायु । २-बल । शक्ति । बूता । सामर्थ्य । ३-सर्वोत्तम अंश । सार । तत्व । ४-शोभा बढ़ाने वाली वस्तु । ५-स्वाद बढ़ाने वाली वस्तु ।

जान आना-१-जी ठिकाने होना । २-शोभा बढ़ना । महत्त्व बढ़ जाना । *जानकर अनजान बनना*-जानते हुए भी किसी को चिढ़ाना, धोखा देने अथवा अपना मतलब गांठने के लिए मूर्ख सा बनना । *जान का गाहक या जान का लागू बनना या होना*-१-बहुत दुःखी करना । पीछा न छोड़ना । २-प्राण लेने की की इच्छा होना । बड़ा शत्रु । *जान का जंजाल होना*-आफत होना । *जान का रोग*-१-मरने पर ही पीछा छोड़ने वाला रोग । २-बहुत दुःखी करने वाला । *जान के लाले पड़ना*-प्राण बचाना कठिन जान पड़ना । *जान को जान न समझना*-१-प्राणों की चिन्ता न करना । २-कठिन परिश्रम करना । *जान को जान न समझना (दूसरे की)* १-बहुत निष्ठुर व्यवहार करना । २-मार डालने या दुःख देने में कुछ संकोच न करना । *(किसी की) जान को रोना*-दुखी होकर बुरी बातें कहना । दुःख-दाता या दुःख को याद करना । *जान खाना*-१-बार-बार कहना । २-बार-बार घेरकर दिक करना । *जान खोना*-प्राण देना । *जान चुराना*-जी चुराना । *जान छुड़ाना*-१-प्राण बचाना । २-अप्रिय या दुःखदायक वस्तु से छुटकारा पाना । *जान छूटना*-झंझट से छुटकारा मिलना । *जान जाना*-मरना । *जान जोखों का काम*-प्राण जाने का भय ।

जान दूभर होना-१-कठिन या असंभव होना २-जीवन बोझ सा दीख पड़ना । ३-जान बचाना कठिन होना । *जान देना*-प्राण न्योछावर करना । *जान पर आ बनना या जान की नौबत आना*-१-प्राण जाने का भय होना । २-घोर विपत्ति आना । ३-व्यग्रता या नाक में दम होना । *जान पर खेलना*-प्राणों को संकट में डालना । *जान बचाना*-१-पीछा छुड़ाना । २-प्राणरक्षा करना । *जानबूझकर करना*-भूल से नहीं बल्कि संकल्प करके । *जान भारी होना*-जीने की इच्छा न होना । *जान मार कर काम करना*-बहुत परिश्रम करना । *जान मारना*-१-प्राणहत्या करना । २-सताना । दिक करना । ३-अधिक परिश्रम करना । *जान में जान आना*-चित्त स्थिर होना *जान लड़ाना*-अत्यधिक प्रयत्न करना । *जान लेवा*-शत्रु । *जान सी निकालने लगना*-बहुत दुःख या पीड़ा होना । *जान सूखना*-१-भय के मारे स्तब्ध होना । २-बहुत कष्ट होना । *जान से जाना*-प्राण खोना । मरना । *जान से मारना*-प्राण लेना । *जान से हाथ धोना या धो बैठना*-प्राण गँवाना । मरजाना । *जान हलका न करना*-सताना । तंग करना । *जान हलका न होना*-तंग होना । दिक होना । *जान होंटों पर आना*-१-प्राण निलकने को होना । २-घोर पीड़ा होना ।

जानकार [वि.] (हिं.) १-जानने वाला । २-विज्ञ । चतुर ।

जानकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अभिज्ञता । परिचय । विज्ञता । निपुणता ।

जानकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा जनक की पुत्री सीता ।

जानकी-जानि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र ।

जानकी-जीवन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र ।

जानकी-नाथ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीराम ।

जानकी-मंगल [संज्ञा पु.] (सं.) गोस्वामी तुलसीदास का बनाया हुआ ग्रन्थ ।

जानकीरमण [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीराम ।

जानकीरवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) जानकीरमण । श्रीराम ।

जानदार [वि.] (फा.) जीवधारी । सजीव । [संज्ञा पु.] (फा.) जानवर । प्राणी ।

जाननहार [संज्ञा पु.] (हिं.) जानने वाला ।

जानना [क्रि. स.] (हिं.) १-ज्ञान प्राप्त करना । अभिज्ञ होना । परिचित होना । अनुभव करना । मालूम करना । २-सूचना पाना । अवगत होना । ३-अनुमान करना । सोचना । *जान पड़ना*-१-मालूम पड़ना । २-अनुभव होना । संवेदना होना । *जानकर अनजान बनना*-मतलब निकालने के निमित्त अभिज्ञता प्रकट करना । *जान रखना*-समझ रखना ।

जानपद [वि.] (सं.) १-जनपद-संबंधी । जनपद का । २-सारे देश से सम्बन्ध रखने वाला, पर सैनिक या धार्मिक क्षेत्रों से भिन्न । सिविल ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-जनपद का निवासी । २-देश । ३-कर । मालगुजारी ।

जानपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृत्ति । २-एक अप्सरा ।

जान-पना* [संज्ञा पु.] (हिं.) जानकारी । विज्ञता । चतुराई ।

जान-पनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुद्धिमानी । जानकारी । चतुराई ।

जानबाज [संज्ञा पु.] (फा.) बल्लमटेर ।

जानमनि* [संज्ञा पु.] (हिं.) ज्ञानियों में श्रेष्ठ । बहुत बुद्धिमान पुरुष ।

जानमाज़ [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानों के नमाज पढ़ने का आसन या फर्श ।

जानराय [संज्ञा पु.] (हिं.) ज्ञानियों में श्रेष्ठ । बहुत बड़ा ज्ञान ।

जानवर [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्राणी । जीवधारी । २-पशु । जंतु । [वि.] मूर्ख । अहमक । उजड्ड ।

जानशीन [संज्ञा पु.] (फा.) उत्तराधिकारी । वह जो दूसरे के अधिकार पर हो ।

जानहार*+ [वि.] (हिं.) १-जानने वाला । २-खो जाने वाला । २-मरने वाला । ३-नष्ट होने वाला ।

जानहु*+ [अव्य.] (हिं.) मानो । जैसे ।

जाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने या पहुँचने के लिए चलना । गमन करना । २-प्रस्थान करना । ३-अलग होना । ४-किसी वस्तु का अधिकार से निकलना । ५-गायब या गुम होना । खोना । ६-बीतना । गुजरना । ७-नष्ट होना । बिगड़ना । ८-मरना । ९-बहना । जारी होना । *जाने दो*-१-क्षमा करो । २-त्याग करो । ३-चर्चा छोड़ो । *जा पड़ना*-किसी स्थान पर अकस्मात् जा पहुँचना । *जा रहना*-किसी स्थान पर जाकर रहना या ठहरना । *+ [क्रि. स.] (हिं.) उत्पन्न करना । जन्म देना ।

जानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री । भार्या । + [वि.] (हिं.) जानकार । जानने वाला ।

जानिब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) तरफ । ओर । दिशा ।

जानिबदार [वि.] (फा.) पक्षपाती। तरफदार।

जानिबदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पक्षपात। तरफदारी।

जानी [वि.] (फा.) १-जान से संबंध रखने वाला २-जान का।
जानी दुश्मन-प्राणों का गाहक शत्रु। *जानी दोस्त*-परम मित्र। प्रिय दोस्त।
[संज्ञा स्त्री] (हिं.) प्राणप्यारी।

जानु [संज्ञा पु.] (सं.) जाँघ और पिंडली के बीच का भाग। घुटना।
[संज्ञा पु.] (फा.) जाँघ। रान।
[अव्य] (हिं.) देखो 'जानो'।

जानुपाणि [क्रि. वि.] (सं.) घुटनों और हाथों के बल (चलना)।

जानुपानि [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'जानुपाणि'।

जानुहृतिक [संज्ञा पु] (सं) मल्लयुद्ध या कुश्ती का एक ढंग।

जानुसुँ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रोग जो हाथी के अगले पिछले पैर के जोड़ों में होता है।

जानुबंधु [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार के ३२ हाथों में से एक।

जानू [संज्ञा पु.] (फा.) जंघा। जांघ।

जानौ [अव्य.] (हिं.) मानो। जैसे।

जान्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

जाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन्त्र की विधिपूर्वक आवृत्ति। २-मन्त्र का जाप करने वाला। ३-जपने की माला अथवा गोमुखी।

जापक [संज्ञा पु.] (सं.) जपकर्त्ता।
[वि] (सं.) जप संबंधी। जप करने वाला।

जापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जप। २-निवर्त्तन। परिहार।

जापा [संज्ञा पु.] (हिं.) सूतिकागृह। सौरी।

जापान [संज्ञा पु.] एक द्वीप समूह जो एशिया महाद्वीप में चीन के पूर्व में है।

जापानी [संज्ञा पु.] (देश.) जापानद्वीप का निवासी।
[वि.] (देश.) जापान का। जापान का बना।

जापी [संज्ञा पु.] (सं.) जप करने वाला।

जाप्य [वि.] (सं.) जपने योग्य।

ज़ाफ़+ [संज्ञा पु.] (अ.) १-बेहोशी। २-मूर्छा। थकावट।

ज़ाफ़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) भोज। दावत।

ज़ाफ़रान [संज्ञा पु.] (अ.) १-केसूर। कुंकुम। २-अफ़गानिस्तान की एक तातारी ज़ाति।

ज़ाफ़रानी [वि.] (अ.) केसर के रंग का। केसरिया।

ज़ाफ़रानी-ताँबा [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तम प्रकार का वह ताँबा जो सोने चाँदी आदि की मिलावट के काम में आता है। यह पीलापन लिये हुए होता है।

जाबप्रेस [संज्ञा पु.] (अ.) छोटी मोटी चीजें छापने का मुद्रणयन्त्र।

जाबजा [क्रि. वि.] (फा.) जगह-जगह।

जाबड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जबड़ा'।

जाबता [संज्ञा पु.] देखो 'जाब्ता'।

जाबर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पकवान।
[वि.] (हिं.) वृद्ध। बुड्ढा।

जाबाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि का नाम इनकी माता का नाम जबाला था।

जाबालि [संज्ञा पु.] (सं.) कश्यपवंश के एक मुनि जो राजा दशरथ के गुरु थे।

जाबिर [वि.] (फा.) १-अत्याचारी। जबरदस्ती करने वाला। २-जबरदस्त। प्रचंड।

ज़ाब्ता [संज्ञा पु.] (अ.) १-नियम। कायदा। २-व्यवस्था। कानून।
जाब्ता दीवानी-सर्वसाधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से संबंध रखने वाला कानून या व्यवस्था। *जाब्ता-फौजदारी*-दंडनीय अपराधों से संबंध रखने वाला कानून।

जाम [संज्ञा पु.] (हिं.) पहर। प्रहर। ८ घड़ी तीन घंटे का समय।
[संज्ञा पु.] (फा.) १-प्याला। २-प्याले के आकार का।
[वि.] (हिं.) १-अधिक दबाव आदि के कारण रुका हुआ। २-जिसमें चलने के लिए अवकाश न हो। ३-मल आदि के कारण अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा, ठहरा या रुका हुआ। बना हुआ कटोरा। [संज्ञा पु.] जहाज की दौड़। (हिं.) जामुन।

जामागिरी [संज्ञा पु.] (?) बंदूक का फलीता।

जामगी [संज्ञा पु.] (?) बंदूक या तोप का फलीता

जामदग्न्य [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

जामदानी [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का फूलदार कपड़ा। २-कपड़े आदि रखने का संदूक।

जामन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूध को जमाने के लिए प्रयोग में आने वाला थोड़ी मात्रा में दही या अन्य खट्टा पदार्थ। २-देखो 'जामुन'। ३-आलूबुखारे की जाति का एक वृक्ष।

जामना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'जमना'।

जामनी [वि.] (हिं.) देखो 'यावनी'।

जामबेतुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बांस

जामल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तंत्र। जैसे रुद्रजामल।

जामवंत, जामवन्त [संज्ञा पु.] देखो 'जांबवान्'।

जामा [संज्ञा पु.] (फा.) १-पहरावा। पोशाक। २-एक प्रकार का पहनावा जिसके नीचे का चुनन पड़ा लहंगे के समान घेरदार होता है। पुराने समय में लोग दरबार आदि में इसे पहनकर जाते थे।
जामे से बाहर होना-आपे से बाहर होना। अत्यधिक क्रोध करना। *जामे में फूला न समाना*-अत्यन्त आनन्दित होना।

जामात [संज्ञा पु.] देखो 'जामाता'।

जामाता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दामाद। कन्या का पति। २-हुलहुल नामक पौधा।

जामातृ* [संज्ञा पु.] देखो 'जामाता'।

जामि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहिन। भगिनी। २-कन्या। लड़की। ३-पुत्र-वधू। बहू। ४-अपने गोत्र अथवा सम्बन्ध की स्त्री। ५-घर की बहू-बेटी।

जामिक* [संज्ञा पु.] (हिं.) पहरा देने वाला। रक्षक। पहरुआ। पहरेदार।

जामित्व [संज्ञा पु.] (सं.) रिश्ता। संबंध।

जामित्र [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह आदि शुभकर्म के काल के लग्न से सातवाँ स्थान।

जामित्रवेध [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष का एक योग जिसमें विवाह आदि शुभकर्म दूषित समझे जाते ह।

जामिन [संज्ञा पु.] (अ.) प्रतिभू। जिम्मेदार। जमानत करने वाला व्यक्ति।

जामिनदार [संज्ञा पु.] (फा.) जमानत करने वाला।

जामिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यामिनी'।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) जमानत। जिम्मेदारी।

जामी [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'यामी'। २-देखो 'जामि'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बाप। पिता।

जामुन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सदाबहार वृक्ष जिसके फल बैंगनी या काले होते हैं।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जामुन वृक्ष का फल।

जामुनी [वि.] (हिं.) जामुन के रंग का। बैंगनी।

जामेय [संज्ञा पु.] (सं.) भानजा। बहिन का लड़का।

जामेवार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का दुशाला जिसमें सब जगह बेलबूटे काढ़े होते हैं। इसी प्रकार की छींट जो दुशाले के समान दीख पड़े।

जाय* [अव्य.] (फा.) वृथा। बेफायदा।
[वि.] (फा.) उचित। वाजिब।

जायक [संज्ञा पु.] (सं.) पीला चन्दन।

जायका [संज्ञा पु.] (फा.) स्वाद। लज्जत।

जायकेदार [वि.] (फा.) स्वादिष्ट। खाने में मजेदार।

ज़ायचा [संज्ञा पु.] (फा.) जन्मपत्री।

जायज़ [वि.] (अ.) उचित। यथार्थ। मुनासिब।

जायजरूर [संज्ञा पु.] (अ.) टट्टी। पाखाना।

जायजा [संज्ञा पु.] (अ.) १-जाँच। पड़ताल। २-हाजिरी। गिनती।
जायजा देना-हिसाब समझना। *जायजा*

लेना-जाँचना।

ज़ायद [वि.] (फा.) अधिक। ज्यादा।

जायदाद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) भूमि, सामान या [illegible] आदि जिसका कुछ मूल्य हो। सम्पत्ति।

जायदाद-ग़ैरमनक़ूला [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अचल सम्पत्ति।

जायदाद-ज़ैजियत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह सम्पत्ति जिसपर स्त्री का अधिकार हो। स्त्री-धन।

जयदाद-मक़फूला [संज्ञा स्त्री.] (फा.+अ.) रेहन या बंधक सम्पत्ति।

जायदाद-मनक़ूला [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चल सम्पत्ति।

जायदाद-मुतनाज़िआ [संज्ञा पु.] (फा.) विवाद-ग्रस्त सम्पत्ति।

जायदाद-शौहरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पति से प्राप्त सम्पत्ति।

जायनमाज़ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बिछाकर नमाज़ पढ़ने की दरी या किसी प्रकार का बिछौना।

जायपत्री [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जावित्री'।

जायफर+ [संज्ञा पु.] देखो 'जायफल'।

जायफल [संज्ञा पु.] (हिं.) औषधि तथा मसाले के काम में आने वाला एक सुगंधित फल। जातीसार।

जायल [वि.] (फा.) जिसका नाश हो गया हो। विनिष्ट।

जाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाहिता स्त्री। पत्नी। सातवाँ उपजातिवृत्त जिसके प्रथम तीन चरणों में (ज+त+ज+ग+ग) और चौथे चरण में (त+त+ज+ग+ग) होते हैं। ३-जन्मकुण्डली में लग्न से सातवाँ स्थान।

ज़ाया [वि.] (फा.) नष्ट। खोया हुआ।

जायाघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष में ग्रहों का एक योग जिसमें उस मनुष्य की स्त्री नहीं जीती। २-जिसकी कुंडली में यह योग हो। ३-शरीर में का तिल।

जायाजीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बगला पक्षी। २-पत्नी की कमाई खाने वाला व्यक्ति। वेश्यापति।

जायानुजीवी [संज्ञा पु.] देखो 'जायाजीव'।

जायी [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुपद की जाति का एक ताल (संगीत)।

जायु [संज्ञा पु.] (सं.) औषध। दवा। [वि.] जीतने वाला। जेता।

जार [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराई स्त्री से अनुचित संबंध रखने वाला व्यक्ति। २-उपपति। यार [वि.] मारने वाला। नाश करने वाला।

ज़ार [संज्ञा पु.] (लै.) रूस के सम्राट की उपाधि

जारक [वि.] (सं.) पाचक।

जार-कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) व्यभिचार। छिनाला

जारज [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्त्री के उपपति से उत्पन्न संतान।

जारयोग [संज्ञा पु.] (सं.) बालक के जन्मकाल में पड़ने वाला एक योग जिसके द्वारा उत्पन्न बालक को जारज सिद्ध किया जाता है।

जारजात [संज्ञा पु.] (सं.) उपपति से उत्पन्न पुत्र। जारज।

जारजातक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जार-जात'।

जारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलाना। भस्म करना। २-पारे का ग्यारहवाँ संस्कार।

जारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ा सफेद जीरा।

जारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपपतित्व।

जारन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जलाने की क्रिया या भाव। २-जलाने की लकड़ी। ईंधन।

जारना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जलाना'।

जारा [संज्ञा पु.] (हिं.) सोनार की भट्टी का वह भाग जहाँ वस्तुएं गलाई या तपाई जाती हैं। [संज्ञा पु.] देखो 'जाला'।

जारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुश्चरित्रा स्त्री। पुंश्चली।

जारित [वि.] (सं.) १-शुद्ध किया हुआ। मारा हुआ।

जारी [वि.] (अ.) १-प्रवाहित। बहता हुआ। २-प्रचलित। चलता हुआ।

[संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का गीत। २-झरबेरी का पौधा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पर-स्त्री गमन। जार की क्रिया या भाव।

जारुधि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

जारुथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी का नाम।

जारुत्थ [संज्ञा पु.] देखो 'जारुथ्य'।

जारुथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह अश्वमेधयज्ञ जिसमें तिगुनी दक्षिणा दी जाय।

जारोब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) झाड़ू।

जारोबकश [संज्ञा पु.] (फा.) झाड़ू देने वाला।

जार्यक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मृग।

जालंधर, जालन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक दैत्य। २-एक ऋषि। ३-पंजाब का एक नगर

जालंधरी-विद्या, जालन्धरी-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मायिक विद्या। माया।

जाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक में बुने अथवा गुथे हुए बहुत से डोरों का समूह। २-चिड़िया, मछली आदि फँसाने के लिए तार सूत आदि का बना हुआ पट। ३-किसी को वश में करने या फंसाने का षडयन्त्र। ४-समूह। ५-एक प्रकार की तोप। ६-गवाक्ष। झरोखा। ७-क्षार। खार। ८-मकड़ी का जाला। ९-कदम का वृक्ष। १०-अहंकार। अभिमान। ११-फूल की कली। १२-देखो 'जाली'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) वह चाल या उपाय जो किसी को धोखा देने या ठगने अभिप्राय से हो। फरेब। धोखा।

जालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाल। २-कली। समूह। ४-गवाक्ष। झरोखा। ५-केला। चिड़ियों का घोंसला। ७-गर्व। अभिमान। ८-एक प्रकार का मोतियों का बना आभूषण।

जालकारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाल वाला। २-मकड़ा।

जालकि [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्रों से अपनी का चलाने वाला व्यक्ति।

जालकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भेड़ी।

जालकिरच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परतला हुई वह पेटी जिसके साथ तलवार बंधी हो।

जालकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकड़ा। के जाल में फंसा हुआ कीड़ा।

जालगर्दभ [संज्ञा पु.] (सं.) सूजन जिसमें ज्वर भी हो जाता है।

जालजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) धीवर। मछुआ।

जालदार [वि.] (हिं.) जिसमें जाल के समान छोटे छेद हों।

जालपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंस। ऋषि के एक शिष्य का नाम। ३-एक देश।

जालप्राया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कवच। तर।

जालबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जिसमें जाल की तरह बेल बनी रहती है।

जाल-बर्बुरक [संज्ञा पु.] (सं.) बबूल की का एक पेड़।

जालव [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

जाल-साज़ [संज्ञा पु.] (अ.) धोखा देने के किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करने व्यक्ति।

जाल-साजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) फरेब या करने का काम। दगाबाजी।

जाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मकड़ी का बुना जाल। २-आँख का एक रोग। ३-घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। ४-पानी रखने मिट्टी का बड़ा घड़ा। ५-देखो 'जाल'।

जालाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) झरोखा। गवाक्ष।

जालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाल बुनने वाला। २-धीवर। ३-मकड़ी। ४-मदारी। बाजीगर।

जालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाश। २-जाली। ३-कवच। ४-विधवा स्त्री। मकड़ी। ६-लोहा।

जालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तरोई। घिया। २-चित्रशाला। ३-परवल की लता। पिड़िका-रोग।

जालिनी-फल [संज्ञा पु.] (सं.) घिया। तरोई।

ज़ालिम [वि.] (अ.) जुल्म करने वाला। चारी।

जालिया [वि.] (हिं.) जालसाज । फरेबी । [संज्ञा पु.] (हिं.) जाल की सहायता से मछली फाँसने का वाला । धीमर ।

जाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तरोई । घिया । २-परवल । [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-किसी वस्तु में बने छोटे-छोटे छेदों का समूह। २-एक प्रकार का कपड़ा जिसमें छोटे-छोटे छेद बने होते हैं । ३-कच्चे आम के अन्दर का तंतु । [वि.] (अ.) नकली । बनावटी ।

जालीदार [वि.] (देश.) जिसमें जाली बनी हो ।

जाली-मत [संज्ञा पु.] (हिं.) सही आदमी या मतदाता के स्थान पर नकली या बनावटी आदमी द्वारा दिया जाने वाला मत या वोट । नकली वोट ।

जालीलेट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जाली वाला कपड़ा ।

जालीलोट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जालीलेट' ।

जाल्म [वि.] (सं.) १-नीच । पामर । २-मूर्ख । [illegible] ।

जाल्मक [संज्ञा पु.] (सं.) अपने गुरु, मित्र या [illegible] के साथ द्वेष करने वाला व्यक्ति ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

जावक [संज्ञा पु.] (हिं.) लाख का बना लाल रंग जिसे पैरों में लगाते हैं । महावर ।

जावत [अव्य.] (हिं.) देखो 'यावत्' ।

जावन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जामन' ।

जावित्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका ।

जासक [संज्ञा पु.] (सं.) पीला चन्दन ।

जासनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यक्षिणी' ।

जासु* [वि.] (हिं.) जिसका ।

जासू [संज्ञा पु.] (देश.) मदक बनाने के लिए अफीम में मिलाने के पान । [वि.] (हिं.) जिसका । जासु ।

जासूस [संज्ञा पु.] (अ.) गुप्तरूप से किसी बात का पता लगाने वाला । भेदिया । मुखबिर ।

जासूसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुप्तरूप से किसी बात का पता लगाने का काम ।

जास्पति [संज्ञा पु.] (सं.) जामाता । दामाद ।

जाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरगिट । २-जोंक । ३-बिस्तर । बिछौना । ४-घोंघा ।

जाहर* [वि.] देखो 'ज़ाहिर' ।

ज़ाहिर [वि.] (अ.) १-जो छिपा न हो । प्रकट । प्रकाशित । २-विदित । जाना हुआ ।

ज़ाहिरदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह काम जिसमें केवल बाहरी बनावट हो ।

ज़ाहिरा [क्रि. वि.] (अ.) प्रकट रूप में । प्रत्यक्ष रूप में ।

ज़ाहिरी [वि.] (अ.) जो जाहिर हो । प्रकट ।

ज़ाहिल [वि.] (अ.) मूर्ख । अनाड़ी । २-अनपढ़ अशिक्षित ।

जाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चमेली की जाति का एक सुगंधित पौधा या फूल । २-एक प्रकार की आतिशबाजी ।

जाह्नवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जह्नु ऋषि से उत्पन्न । गंगा ।

जिंक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) जस्ते का खार । सफेदा ।

जिंगनी, जिङ्गनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिगिन का पेड़ ।

जिंगिनी, जिङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिगिन का पेड़ ।

जिंद [संज्ञा पु.] (अ.) भूत । प्रेत । मुसलमान भूत ।

जिंदगानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जीवन । जिंदगी ।

जिंदगी [संज्ञा त्री.] (फा.) १-जीवन । २-आयु । जीवनकाल ।

जिंदगी से हाथ धोना–जीने से निराश होना ।

जिंदगी के दिन पूरा करना–१–मरने को होना । २–जीवन बिताना ।

जिंदा [वि.] (फा.) जीवित । जीताहुआ ।

जिंदादिल [वि.] (फा.) खुशमिजाज । विनोदप्रिय । हँसोड़ ।

जिंवाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जिमाना' ।

जिंस [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-किस्म । प्रकार । भाँति । २-वस्तु । द्रव्य । ३-सामान । सामग्री ४-अनाज ।

जिंसवार [संज्ञा पु.] (फा.) पटवारियों का वह कागज जिसमें वह अपने इलाके के प्रत्येक खेत में बोये हुए अन्न का नाम लिखता है ।

जिआना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जिलाना' ।

जिउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जीव ।

जिउका+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जीविका' ।

जिउकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जीविका करने वाला । रोजगारी । २-पहाड़ी लोग जो जंगलों से चीजें लाकर नगरों में बेचते हैं ।

जिउतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आश्विनमास की कृष्णाष्टमी को होने वाला एक व्रत ।

जिउलेवा+ [वि.] (हिं.) देखो 'जिवलेवा' ।

जिकिर [संज्ञा पु.] देखो 'जिक्र' ।

ज़िक्र [संज्ञा पु.] (अ.) चर्चा । प्रसंग ।

जिगतु [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणवायु । उच्छ्वास ।

जिगन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिगिन' ।

जिगमिषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गमन करने की इच्छा ।

जिगर [संज्ञा पु.] (फा.) १-कलेजा । २-चित्त । मन । जीव । ३-साहस । हिम्मत । ४-पुत्र (स्नेह में) ।

जिगरकीड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़ों का एक रोग

जिगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) साहस । हिम्मत । जीवट ।

जिगरी [वि.] (फा.) १-दिली । भीतरी । २-अभिन्न-हृदय । अत्यन्त घनिष्ट ।

जिगिन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष ।

जिगीष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विजय-प्राप्त करने की कामना । २-उद्यम । उद्योग ।

जिगीषु [वि.] (सं.) १-विजयकामना रखने वाला । २-परिश्रमी । मेहनती ।

जिगुरन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चोटीदार चकोर ।

जिघांसक [वि.] (सं.) हिंसक । हत्यारा ।

जिघांसी [वि.] (सं.) वध करने वाला ।

जिघांसु [वि.] (सं.) मारने वाला ।

जिच, जिच्च [संज्ञा स्त्री.] (?) १-बेबसी । मजबूरी । २-शतरंज के खेल में वह अवस्था या स्थिति जब शाह को चलने या अर्दब में कोई मोहरा चलने की जगह न हो । ३-पारस्परिक विवाद में वह अवस्था जब दोनों पक्ष अपनी बातों पर अड़े रहें और समझौते या निपटारे का कोई मार्ग न दीख पड़े । डेडलॉक । [वि.] विवश । मजबूर ।

जिजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहिन । [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'जजिया' ।

जिजीविषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीने की इच्छा ।

जिजीविषु [वि.] (सं.) जीने की इच्छा करने वाला ।

जिज्ञासन [संज्ञा पु.] (सं.) जानने की इच्छा से पूछना । पूछताछ ।

जिज्ञासमान [वि.] (सं.) जिज्ञासु । पूछ-ताछ करने वाला ।

जिज्ञासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जानने की इच्छा । २-पूछताछ । प्रश्न ।

जिज्ञासित [वि.] (सं.) जिससे जिज्ञासा प्रकट की गई हो ।

जिज्ञासु [वि.] (सं.) जानने की इच्छा रखने वाला ।

जिज्ञासू [वि.] देखो 'जिज्ञासु' ।

जिज्ञास्य [वि.] (सं.) जिसके संबंध में पूछताछ की जाय ।

जिज्ञास्यमान [वि.] (सं.) जो विषय पूछा जाता हो ।

जिठाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जेठाई' ।

जिठानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जेठानी' ।

जित् [वि.] (सं.) जीतने वाला । जेता ।

जित [वि.] (सं.) पराजित । जीता हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) विजय । जीत । [क्रि. वि.]

(हिं.) जिधर । जिस ओर ।

जितना [वि.] (हिं.) [स्त्री. जितनी] जिस मात्रा अथवा परिमाण का । [क्रि. वि.] जिस मात्रा में । जिस परिमाण में ।

जितनेमि [वि.] (सं.) क्रोधशून्य ।
[संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

जितरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मजदूरी के बदले में जोतने के लिए हल बैल लेने वाला हलवाहा

जितलोक [वि.] (सं.) पुण्यकर्म द्वारा स्वर्गादि लोक प्राप्त करने वाला ।

जितवना*+ [क्रि. स.] (हिं.) जताना । प्रकट करना ।

जितवाना [क्रि. स.] (हिं.) जीतने में समर्थ करना । जीतने देना ।

जितवार+ [वि.] (हिं.) विजयी । जीतने वाला ।

जितवैया+ [वि.] (हिं.) विजयी । जीतने वाला

जितशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु को पराजित करने वाला व्यक्ति । विजयी पुरुष ।

जिता+ [संज्ञा पु.] (हिं.) परस्पर जुताई, बोआई आदि की (किसानों की) सहायता । हूँड ।

जितात्मा [वि.] (सं.) जितेन्द्रिय ।

जिताना [क्रि. स.] (हिं.) जीतने में सहायता देना ।

जितार+ [वि.] (हि.) १-विजयी । जीतने वाला । २-बली । ३-भारी । वजनी । ४-अधिक ।

जितारि [वि.] १-शत्रुजित् । २-काम आदि शत्रु को जीतने वाला । [संज्ञा पु.] बुद्धदेव का नाम ।

जिताष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन कृष्णाष्टमी का एक व्रत जिसे पुत्रवती स्त्रियां करती हैं ।

जिताहव [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने लड़ाई जीती हो ।

जिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीत । विजय ।

जितुम [संज्ञा पु.] (यू.) मिथुनराशि ।

जितेंद्रिय, जितेन्द्रिय [वि.] (सं.) १-जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया हो । २-शांत । समवृत्ति वाला ।

जितेंद्रियता, जितेन्द्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जितेन्द्रिय होने का भाव ।

जिते* [वि.] (हिं.) जितने (संख्यासूचक) ।

जितै* [क्रि. वि.] (हिं.) जिधर । जिस ओर ।

जितो [वि.] (हिं.) जितना (परिमाणसूचक) ।
[क्रि. वि.] जिस मात्रा से । जितना ।

जित्तम [संज्ञा पु.] (हिं.) मिथुनराशि ।

जित्य [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जित्या] बड़ाहल ।

जित्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हींग ।

जित्वर [वि.] (सं.) विजयी । जेता ।

ज़िद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-उलटी बात या वस्तु । २-वैर । शत्रुता । ३-हठ । अड़ । दुराग्रह । *ज़िद पर आना*-हठ करना । *ज़िद चढ़ना*-हठ धरना । *ज़िद पकड़ना*-हठ करना ।

ज़िदियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) हठ करना ।

ज़िद्द+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जिद' ।

ज़िद्दी [वि.] (फ़ा.) जिद करने वाला । हठी । दुराग्रही ।

जिधर [क्रि. वि.] (हिं.) जिस ओर । जहाँ । *जिधर-तिधर*-१-जहां-तहां । इधर-उधर । २-विना ठौर-ठिकाने ।

जिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-सूर्य । ३-बुद्ध । ४-जैनों के तीर्थङ्कर ।
[वि.] (हि.) जिस का बहुवचन ।
[सर्व.] (हि.) 'जिस' का बहुवचन ।
[संज्ञा पु.] (अ.) (मुसलमान) भूत ।

ज़िना [संज्ञा पु.] (अ.) व्यभिचार ।

ज़िनाकार [वि.] (फ़ा.) व्यभिचारी ।

ज़िनाकारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पर-स्त्री गमन । व्यभिचार ।

ज़िनाबिज्जब्र [संज्ञा पु.] (अ.) किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा और सम्मति के विरुद्ध बालात्कार करना ।

जिनि+ [अव्य.] (हिं.) मत । नहीं

जिनिस [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिंस' ।

जिनिसवार [संज्ञा पु.] देखो 'जिंसवार' ।

जिन्ह*+ [सर्व.] देखो 'जिन' ।

जिब्भा* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिह्वा' ।

जिभला+ [वि.] (हिं.) चाट करने वाला । चटोरा ।

जिभ्या*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिह्वा' ।

जिमनास्टिक [संज्ञा पु.] (अं.) काठ के दोहरे छड़ों के ऊपर की जाने वाली एक प्रकार की कसरत ।

जिमाना [क्रि. स.] (हिं.) भोजन कराना । खिलाना ।

जिमि+ [क्रि. वि.] (हिं.) जैसे । यथा । ज्यों ।

जिमींदार [संज्ञा पु.] देखो 'जमींदार' ।

जिम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जभाई । उबासी ।

जिम्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम विषय अथवा बात का लिया जाने वाला भार । दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा । जवाब देही । २-सुपुर्दगी । देखरेख ।

जिम्मादार [संज्ञा पु.] देखो 'जिम्मावार' ।

जिम्मादारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिम्मावारी' ।

जिम्मावार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) उत्तरदाता । जवाब देह ।

जिम्मावारी [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-उत्तरदायित्व । जवाबदेही । २-सुपुर्दगी । संरक्षा ।

जिम्मेदार [संज्ञा पु.] देखो 'जिम्मावार' ।

जिम्मेदारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिम्मावारी' ।

जिम्मेवारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिम्मावारी' ।

जिय+ [संज्ञा पु.] (हि.) मन । चित्त । जी ।

जियन+ [संज्ञा पु.] (हि.) जीवन ।

जिय-वधा* [संज्ञा पु.] (हिं.) हत्यारा ।

जियरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जीव ।

जिया-जंतु+ [संज्ञा पु.] देखो 'जीव-जंतु' ।

जियादती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज्यादती' ।

जियादा [वि.] देखो 'ज्यादा' ।

जियान [संज्ञा पु.] (अ.) १-घाटा । टोटा । हानि ।

जियाना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १- पालना । पोसना ।

जियापोता [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ ।

ज़ियाफ़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १- भोज । दावत ।
ज़ियाफत करना-१-भोज देना । कराना । २-आदर-सत्कार करना ।

ज़ियारत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दर्शन । दर्शन ।
जियारत लगना-मेला लगना ।

ज़ियारतगाह [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-तीर्थ । गाह । ३-दर्शकों की भीड़ या जमघट ।

ज़ियारती [वि.] (फ़ा.) १-दर्शक । २-

ज़ियारी* [संज्ञा स्त्री.] (?) १-जीवन । जीविका । ३-जीवट । हृदय की साहस ।

जिरगा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-झुंड । गिरोह । मंडली । दल । ३-पठानों आदि में या दलों के लोगों की सभा ।

जिरह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हुज्जत । तकरार । किसी की कही हुई बातों की सत्यता के लिए किए जाने वाले फेरफार के प्रश्न

ज़िरह [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) लोहे की बना हुआ कवच । बकतर । वर्म ।
जिरहपोश-जो बखतर पहने हो ।

ज़िरही [वि.] कवचधारी ।

ज़िराअत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) खेती ।
जिराअतपेशा-खेतिहर । किसान ।

ज़िरायत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज़िराअत' ।

जिराफ [संज्ञा पु.] (अ.) अफ्रीका की पाया जाने वाला एक पशु जिसका धड़ पिछले से भारी होता है । इसकी ऊँट के समान लम्बी होती है । यह फुट ऊँचा होता है ।

जिरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) जीरे के समान

और लम्बा धान ।

जिला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-माँजकर या रोगन आदि चढ़ाने का काम । २-चमकदमक । ओप । पानी ।
जिला देना या करना-माँजकर चमकना ।
जिलाकार-सिकलीगर ।

जिला [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रान्त । प्रदेश । २-प्रान्त का वह भाग जो कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के आधीन हो । ३-किसी क्षेत्र या हलके का छोटा भाग ।

जिला-गण [संज्ञा पु.] (अ.,सं.) जिले के चुने हुये प्रतिनिधियों की सभा जो जिले की सफाई स्वास्थ्य आदि के संबन्ध में विचार करती है । डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड ।

जिलट [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक बाजा ।

जिलादार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-ज़मींदार की ओर से नियुक्त अफसर जो लगान वसूल करता है । २-किसी हलके में काम करने वाला छोटा अफसर ।

जिलादारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) जिलेदार का कार्य

जिलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-जीवित रहने में सहायता करना । २-पालना । पोसना । ३-रक्षा करना । ४-धातु के भस्म को फिर धातु के रूप में लाना ।

जिला-निधि [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा., सं.) जिले में सफाई, शिक्षा आदि कार्यों के लिये कर आदि के रूप इकट्ठा किया हुआ धन । डिस्ट्रिक्ट-फंड

जिला-न्यायालय [संज्ञा पु.] (फ़ा.,सं.) जिले के लोगों के झगड़ों आदि का निपटारा करने वाली अदालत । डिस्ट्रिक्ट-कोर्ट ।

जिला-परिषद [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.,सं.) जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा । जिला-विचार सभा । डिस्ट्रिक्ट-काउन्सिल ।

जिला-मंडली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जिला-गण' ।

जिलासाज* [संज्ञा पु.] (फ़ा.) हथियारों पर पालिश करने वाला, सिकलीगर ।

जिलाद [संज्ञा पु.] (हिं.) अत्याचारी । जल्लाद ।

जिलेदार [संज्ञा पु.] देखो 'जिलादार' ।

जिलेबी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जलेबी' ।

जिल्द [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-खाल । चमड़ा । २-त्वचा । ३-किताब की रक्षा के निमित्त चढ़ाई हुई दफ्ती ।

जिल्दगर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जिल्दबंद ।

जिल्दबंद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पुस्तकों की जिल्द बाँधने वाला । दफ्तरी ।

जिल्दबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) जिल्द बांधने का कार्य (पुस्तक) ।

जिल्दसाज [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जिल्दबंद ।

जिल्दसाजी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पुस्तकों पर जिल्द बांधने का कार्य ।

जिल्दी [वि.] (अ.) त्वचा-संबंधी ।

जिल्लत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अपमान । बेइज्जती । २-दुर्दशा । दुर्गति ।
जिल्लत उठाना-१-अपमानित होना । २-हेठा ठहरना । *जिल्लत देना*-१-अपमानित करना । २-लज्जित करना । *जिल्लत पाना*-अपमानित करना ।

जिल्ली [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बांस ।

जिल्होर [संज्ञा पु.] (देश.) अगहन में कटने वाला एक प्रकार का धान ।

जिव+ [संज्ञा पु.] देखो 'जीव' ।

जिवाजिव [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर नामक पक्षी ।

जिवाना* [क्रि. स.] (हि.) जिलाना ।

जिष्णु [वि.] (सं.) जीतने वाला । विजयी ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-इन्द्र । ३-अर्जुन । ४-सूर्य । ५-वसु ।

जिस [वि.] (हि.) 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति युक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है । जैसे जिस स्थान पर ।
[सर्व.] 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है ।

जिसिम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जिस्म' ।

जिस्ता [संज्ञा पुं.] (?) देखो 'जस्ता' । २-देखो 'दस्ता'

जिस्म [संज्ञा पु.] (फ़ा.) शरीर । देह ।

जिह* [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) धनुष की डोरी । चिल्ला । रोदा ।

ज़िहन [संज्ञा पु.] (अ.) समझ । बुद्धि । धारणा
जिहन खुलना-बुद्धि का विकास होना ।

जिहाद [संज्ञा पु.] (अ.) १-धर्म के निमित्त युद्ध । धार्मिक लड़ाई । २-वह युद्ध जो मुसलमान लोग दूसरे धर्म वालों से अपने धर्म के प्रचार के लिए करते हैं ।
जिहाद का झंडा करना-मजहब के नाम पर लड़ाई छेड़ना ।

जिहालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अज्ञानता । मूर्खता ।

जिहासा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) त्याग करने की इच्छा ।

जिहासु [वि.] (सं.) त्याग करने की इच्छा करने वाला ।

जिहीर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरने की इच्छा या कामना ।

जिहीर्षु [वि.] (सं.) हरण करने की कामना या इच्छा रखने वाला ।

जिह्म [वि.] (सं.) १-वक्र । टेढ़ा । २-दुष्ट । कुटिल । ३-अप्रसन्न । खिन्न । ४-मंद ।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-तगरपुष्प । २-अधम

जिह्मग [वि.] (सं.) १-टेढ़ी चाल चलने वाला । २-मंदगति । ३-कपटी । कुटिल ।
[संज्ञा पु.] (सं.) सर्प । सांप ।

जिह्मगति [वि.] (सं.) टेढ़ी चाल वाला ।
[संज्ञा पु.] (सं.) सांप ।

जिह्मगामी [वि.] (सं.) [स्त्री. जिह्मगामिनी] १-टेढ़ा चलने वाला । २-कुटिल । कपटी । ३-सुस्त । धीमा ।

जिह्मता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-टेढ़ापन । वक्रता । २-धीमापन । ३-कुटिलता । कपट ।

जिह्ममेहन [संज्ञा पु.] (सं.) मेढ़क ।

जिह्मशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) कत्था । खैर ।

जिह्मित [वि.] (सं.) घुमाया फिरा हुआ । चकित विस्मित ।

जिह्मीकृत [वि.] (सं.) झुकाया हुआ ।

जिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ । जिह्वा ।

जिह्वक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात रोग ।

जिह्वल [वि.] (सं.) चटोरा । चट्टू ।

जिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीभ । जबान ।

जिह्वाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ की नोक ।
जिह्वाग्र होना-कंठस्थ होना ।

जिह्वाजप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जप जिसमें जिह्वा हिलने का विधान है । (तंत्र) ।

जिह्वातल [संज्ञा पु.] (सं.) जिह्वा का पृष्ठभाग ।

जिह्वाप [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ से पानी पीने वाले पशु ।

जिह्वामल [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ के ऊपर जमा हुआ मल ।

जिह्वामूल [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ की जड़ । जीभ का पिछला भाग ।

जिह्वामूलीय [वि.] (सं.) जिह्वा के मूल से संबंधित ।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से होता है । जैसे-क, ख, ग, घ, ङ का उच्चारण ।

जिह्वारद [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी ।

जिह्वारोग [संज्ञा पु.] (सं.) जीभ का रोग ।

जिह्वालिह [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता ।

जिह्वालोल्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुक्खड़पन ।

जिह्वाशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) खैर । कत्था ।

जिह्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीभी ।

जींगन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जुगनू । खद्योत ।

जी [संज्ञा पु.] (हि) १-मन । दिल । चित्त । २-हिम्मत । जीवट । ३- संकल्प । विचार । चाह
जी अच्छा होना-चित्त स्वस्थ होना । *किसी-पर जी आना*-हृदय का किसी के प्रेम में अनुरक्त होना । *जी उकताना*-मन न लगाना । ६ *जी उचटना*-मन हटना । *जी उठना*-पुनर्जी-

चित होना। जी उड़जाना-भय या आशंका से चित्त सहसा व्यग्र होना।

जी उदास होना-चित्त चिन्ता से खिन्न होना। जी उलट जाना-१-मन बदल जाना। २-२-विक्षिप्त होना। होश-हवाश न रहना। जी ऊपर तले होना-उबकाई आना। जी करना-१-इच्छा होना। २-साहस। हौसला। जी काँपना-भय से हृदय धक-धक करना। जी का बुखार निकलना-हृदय का उद्वेग बाहर करना। दिल का गुब्बार निकालना। जी का बोझ हलका होना-चिन्ता मिटना। आशंका या खटका दूर होना। जी की अमान मागना-प्राणरक्षा के निमित्त प्रार्थना करना। जी की आ लगना-प्राणों पर आ बनना। जी की जी में रहना-मन चाही बात पूरी न होना। जी की निकालना-१-मनोरथ पूर्ण करना। २-हृदय के उद्गार निकालना। जी की पड़ना-प्राण बचाना अथवा पीछा छुड़ाना कठिन होना। जी को जी समझना-दूसरे जीव के कष्ट को कष्ट समझना। जी को न लगना-१-हृदय में संवेदना या सहानुभूति न होना। २-प्यारा लगना। जी खटकना-चित्त में खटका अथवा संदेह उत्पन्न होना। जी खट्टा करना-चित्त में घृणा अथवा विरक्ति उत्पन्न कर देना। जी खट्टा होना-मन फिर जाना। जी खपाना-१-जी तोड़कर किसी काम में लगना। २-जान लड़ा देना। जी खुलना-हिचक या संकोच न रहना। जी खोलकर-१-बेधड़क। २-जितना जी चाहे। यथेष्ट। जी गंवाना-प्राण खोना। जी गिर जाना-तबियत सुस्त होती जाना। जी घट जाना-चित्त में शिथिलता आना। जी घबराना-१-चित्त व्याकुल होना। २-मन न लगना। ३-घृणा होना। जी चलना-१-इच्छा होना। २-चित्त मोहित होना। जी चाहना-इच्छा होना जी चाहे-यदि मन में आवे। जी चुराना या छुपाना-१-मोहित कर लेना। २-काम से भागना। जी छूटना-निराश होना। जी छोटा करना-१-चित्त उदास, निराश या निरुत्साह करना। २-व्यय में संकोच अथवा कंजूसी करना। जी छोड़ना-१-हिम्मत हारना। २-प्राण त्यागना। जी छोड़कर भागना-१-एक दम भागना। २-हिम्मत हार कर काम से वापस हो जाना। जी जलना-१-ईर्ष्या होना। २-मन में संताप होना। कुढ़ना। क्रोध आना। जी जलाना-१-ईर्ष्या उत्पन्न करना। २-दुःख पहुँचाना। ३-चिढ़ाना या कुढ़ाना। जी जानता है-कहा नहीं जा सकता। जी जान लड़ाना-१-कठिन परिश्रम से करना। २-दत्त चित्त हो कर करना। जी जान से चाहना-हृदय से चाहना। जी जा से लगना-हृदय से प्रवृत्त होना। एकाग्रचित्त होकर तत्पर होना। जी टंगा रहना, होना-चिन्ता या खटका लगा रहना। जी टूट जाना-१-निराश या उत्साह भंग होना। पस्त हिम्मत होना। २-मन फीका पड़ना। जी ठंडा होना १-संतुष्ट अथवा शांत होना। २-मनोभिलाष पूर्ण होना।

जी ठुकना-१-मन को संतोष होना। २-विश्वास होना। ३-हिम्मत बंधना। जी डालना-१-जीवित करना। २-मरने से बचाना। जी डूबना-१-बेहोशी होना। व्यग्र होना। २-घबराहट या बेचैनी होना। जी ढहा जाना-देखो 'जी बैठा जाना'। जी तपना-देखो 'जी जलना'। जी तरसना-१-किसी वस्तु या बात के अभाव से चित्त व्याकुल होना। किसी वस्तु की प्राप्ति के निमित्त चित्त अधीर होना। २-इच्छा पूर्ण न होना। जी तोड़कर काम करना-कठिन परिश्रम करना। जी दहलना-भय अथवा आशंका के कारण चित्त डावाँडोल होना। अत्यधिक भय लगना। जी दान-प्राणदान। जीवनरक्षा। जीदार-साहसी। हिम्मतवार। जी दुखना-मन को कष्ट पहुँचना। जी दुखाना-मन को पीड़ा पहुँचना। जी देना-१-प्राण खोना। २-अत्यधिक प्रेम करना। जी दौड़ना-लालसा होना। मन चलना। जी धँसा जाना-देखो 'जी बैठा जाना'। जी धकधक करना-भय आदि के कारण कलेजा उछलना। जी धड़कना। जी धकधक होना-जी धड़कना। भय लगना। जी धड़कना-१-हिम्मत न पड़ना। २-डर के मारे घबराहट होना। जी निकलना-१-प्राण छूटना। २-भय से चित्त व्याकुल होना-३-प्राणान्त कष्ट होना। जी निढाल होना-चित्त स्थिर न रहना। जी पक जाना-किसी अप्रिय बात को नित्य देखते-देखते या सुनते चित्त दुखी हो जाना। जी पक्र लेना-असह्य दुख के वेग को दबाने के निमित्त छाती पर हाथ रखना। कलेजा थामना। जी पकड़ा जाना-मन में खटका या संदेह होना। जी पड़ना-मृतक में प्राण का संचार होना। जी पर आ बनना-प्राण बचाना कठिन होना। जी पर खेलना-प्राणों को संकट में डालना। जी पाना-किसी का स्वभाव समझ लेना। जी पानी करना-१-चित्त में दया उत्पन्न करना। २-प्राण देने अथवा लेने की नौबत आना। भारी विपत्ति खड़ी करना। जी पानी होना-दयार्द्र होना। जी पिघलना-१-दया से हृदय द्रवित होना। २-चित्त में स्नेह का संचार होना। जी पीछे पड़ना-चित्त बँटना। मन एक ओर लग जाने के कारण कुछ दुख भूल जाना। जी फट जाना-१-प्रेम में अन्तर पड़ना। २-चित्त खिन्न होना। जी फिरना-अरुचि ग्रहण या वैराग्य के कारण मन हट जाना। जी फिसलना-मन-मोहित या आकर्षित होना। जी फीका होना-जी खट्टा होना। जी बंटना-१-जी बहलना। २-ध्यान भंग होना। जी बद होना-नीयत खराब होना। जी बढ़ना-१-साहस बढ़ना। २-मन उत्साहित होना। जी बढ़ाना-१-उत्साह बढ़ाना। २-हिम्मत बंधाना। बढ़ाना। जी बहलना-१-मनोरंजन २-मन का किसी ओर लग जाने के चिन्ता आदि भूल जाना। जी बेहोशी अथवा मूर्छा होना। २-मन होना। जी बिगड़ना-जी मचलना। मालूम होना।

जी बुरा होना-१-उलटी होना। दुर्भाव या घृणा उत्पन्न होना। जी १-मूर्छा सी आना। २-मन मरना। कना-मन डाँवाँडोल होना। जी दया या दुःख से आँसू तक आना। १-तृप्त होना। २-अधिक इच्छा ३-अभिलाषा पूर्ण होने पर संतोष आदि होना। ४-रुचि के अनुकूल ५-आशंका दूर करना। जी भर कर-मन चाहा। यथेष्ट। उठना-हृदय के आवेग से जाना। जी भारी करना-चित्त खिन्न करना। जी भारी होना-न होना। जी भुरभुराना-चित्त होना। जी मतलाना या मिचलाना-करने की इच्छा होना। जी मारना-को मारना'। जी मिलना-चित्त के भाव दूसरे के समान होना। जी में आना-में इच्छा होना। २-विचार होना। गड़ना या चुभना-१-मन पर गहरा करना। २-हृदय में अंकित होना। करना-१-बराबर ध्यान बना रहना। में विश्वास, योग्यता आदि जमजाना। जलना-१-मन में कुढ़ना। ईर्ष्या या डाह करना। जी में जी आना-शांत होना। जी में जी डालना-दिलाना। २-खटका मिटाना। या रखना-१-शत्रुता रखना। जी में पैठना-देखो 'जी में गड़ना या जी में बैठना-१-निश्चय होना। प्रभाव पड़ना। ३-हृदय में जी में रखना-१-द्वेष रखना। २-गुप्त ३-ख्याल बनाए रहना। जी रखना-रखना। इच्छा करना। २-इच्छापूर्ति जी रुकना-१-हिचकना। २-घबराना। लगना-१-प्रेम होना। २-चित्त जी लगाना-१-तत्पर होना। (किसी से) जी लगाना-प्रेम करना। जना-मन काँपना। जी ललचाना। आकर्षित होना। २-लालसा होना। ललचाना-चित्त में लालच उत्पन्न करना। लुटना-मन मोहित अथवा मुग्ध होना। लुभाना-चित्त आकर्षित करना। मन मोहित करना। जी लेना-१-प्राण लेना। २-इच्छुक होना। ३-मन का भेद लेना। जी लोटना-जी छटपटाना। जी सनसनाना। जी साँय साँय करना-१-जी सन्न होना। २-भय, घृणा, आशंका आदि के कारण

ही गति क्षीण हो जाना। जी सन होना–भय, आशंका आदि के कारण चित्त स्तब्ध हो जाना। होश उड़ जाना। जी से उतर जाना–दृष्टि से गिर जाना। जी से-ध्यान देकर। तत्पर होकर। जी से जाना–प्राण खो बैठना। जी से जी मिलाना–१-स्वभाव से स्वभाव मिलना। २-मित्र होना। ३-चित्त में प्रेम होना। जी हट जाना–१-चित्त विरक्त होना। इच्छा न रहना। जी हाथ में रखना, जी हाथ में लेना–१-किसी के भाव अपने प्रति अच्छे रखना। २-दिलासा दिए रहना। जी हारना–१-दिल दे बैठना। २-साहस छोड़ना। ३-काम से ऊब या घबरा जाना। जी हिलना–१-भय से दिल कांपना। २-दया से चित द्रवित होना। जी ही जी में–अपने मन में। [अव्य.] (हिं) १-कुछ कहने अथवा बुलाने पर उत्तर में कहा जाने वाला। एक आदर-सूचक शब्द। २-एक सम्मानसूचक शब्द। ३-किसी के उत्तर में संक्षिप्त प्रति-सम्बोधन के रूप में कहा जाने वाला शब्द।

जीउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जी' 'जीव'।

जीउन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'जीवन'।

जीऊ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'जीव'।

जीगन [संज्ञा पु.] (हि.) जुगनूँ। खद्योत।

जीगा [संज्ञा पु.] (तु.) सिरपेच। तुर्रा। कलगी।

जीजा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. जीजी] बड़ी बहिन का पति।

जीजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ी बहिन।

जीजूराना [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

जीत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़ाई या युद्ध में विपक्षी या शत्रु के विरुद्ध सफलता। विजय फतह। २-ऐसे कार्य में सफलता जिसमें दो अथवा दो से अधिक विपक्षी हों। ३-लाभ। फायदा।

जीतना [क्रि. स.] (हिं.) १-लड़ाई में विपक्षी अथवा शत्रु के विरुद्ध सफल होना। विजय प्राप्त करना। २-प्रतियोगिता में सफलता मिलना।

जीता [वि.] (हिं.) १-जिसमें जीवन या प्राण हों। जीवित। २-तौल, नाप आदि में परिमाण से कुछ बढ़ा हुआ।

जीतालू [संज्ञा पु.] (हिं.) अरारोट।

जीता-लोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) चुम्बक। मेकनातीस।

जीति [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक लता का नाम।

जीन [संज्ञा पु.] (फा.) १-घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। काठी। २-पलान। कजावा। एक प्रकार का मोटा कपड़ा। [वि.] (हि.) १-पुराना। जर्जर। २-वृद्ध।

जीनत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शोभा। छवि। २-सजावट। शृंगार।

जीनपोश [संज्ञा पु.] (फा.) जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।

जीनसवारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घोड़े पर जीन रखकर चढ़ने का कार्य।

जीना [क्रि. अ.] (हिं.) जीवित रहना। सजीव रहना। २-जीवन के दिन बिताना। ३-प्रसन्न होना।

जीता जागता–जीवित और सक्रिय। भला। चंगा। जीती मक्खी निगलना–१-जानबूझ कर कोई अनुचित कर्म करना या स्वीकार करना। सरासर बेईमानी करना। २-जानबूझकर विपत्ति, संकट में पड़ना, धोखा खाना अथवा बुराई में फंसना। जीतेजी–१-जीवित अवस्था में। २-जीवनभर। जीते जी मरजाना–१-जीवन में ही मौत से बढ़कर दुःख पाना। २-जीवन का सारा सुख चला जाना। जब तक जीना तब तक सीना–जीवन भर (किसी कार्य में) लगे रहना। जीना भारी हो जाना–जीवन का सुख और आनन्द जाता रहना। अपनी खुशी जीना–अपने ही सुख के कारण आनन्द मग्न रहना।

जीभ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुख के भीतर का वह मांस-पिंड जिसके द्वारा रसों का आस्वादन और शब्दों का उच्चारण होता है। रसना। जिह्वा। कलम के अग्रभाग में लगने वाला धातु का टुकड़ा। निब। ३-जीभ के आकार की कोई वस्तु।

जीभ करना–बढ़कर बोलना या ढिठाई से उत्तर देना। जीभ के नीचे जीभ होना–कह कर बदल जाना। जीभ खोलना–शब्द निकालना। जीभ चलना, बढ़ाना–चटोरपन की आदत होना। जीभ चलाना–शेखी मारना। जीभ थोड़ी करना–कम बोलना। जीभ निकालना–१-जीभ बाहर करना। २-जीभ खींचना। जीभ पकड़ना–बोलने न देना। जीभ पर सरस्वती बसना–बड़ा पंडित होना। जीभ बंद करना–१-बोलना बंद करना। २-चुप रहना। जीभ हिलाना–मुख से कुछ बोलना।

जीभा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जीभ के आकार की कोई वस्तु। २-चौपायों का एक रोग। अवार ३-बैलों की आँख का एक रोग।

जीभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धातु की धनुषाकार पतली पत्तर जिससे खुरचकर जीभ साफ करते हैं। २-कलम के अग्रभाग में लगने वाला धातु का वह टुकड़ा जिसके द्वारा लिखा जाता है। निब। ३-छोटी जीभ। ४-चौपायों का एक रोग। ५-लगाम का एक भाग

जीभीचाभा [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपायों का एक रोग।

जीमट [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़-पौधों की शाखा धड़ आदि का गूदा।

जीमना [क्रि. स.] (हिं.) भोजन करना।

जीमूत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। २-बादल। ३-नागरमोथा। ४-इन्द्र। ५-सूर्य। ६-देवताड़ वृक्ष। ७-एक प्रकार का दंडकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं।

जीमूतमुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेघ से उत्पन्न मोती।

जीमूतवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इंद्र। २-शालिवाहन राजा का पुत्र।

जीमूतवाही [संज्ञा पु.] (हिं.) धुम। धुवाँ।

जीय+* [संज्ञा पु.] (हिं.) जीव। जी।

जीयट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जीवट'।

जीयति*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जीवन। जिन्दगी।

जीयदान [संज्ञा पु.] (हिं.) प्राणदान। जीवनदान।

जीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीरा। २-फूल का जीरा। केसर। ३-तलवार। ४-अणु। [वि.] तेज। क्षिप्र। जल्दी चलने वाला। * [संज्ञा पु.] (हिं.) कवच। [वि.] पुराना। जर्जर। जीर्ण।

जीरक [संज्ञा पु.] (सं.) जीरा।

जीरण [संज्ञा पु.] (सं.) जीरा। * [वि.] (हिं.) देखो 'जीर्ण'।

जीरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-जीर्ण या पुराना होना। २-कुम्हलाना। मुरझाना। ३-फटना।

जीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक पौधा जिसके सुगन्धित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं। २-इस प्रकार की कोई छोटी महीन, लम्बी वस्तु। ३-फूलों का केसर।

जीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशपत्री नामक घास।

जीरी [संज्ञा पु.] (हिं.) अगहन में पकने वाला एक प्रकार का धान।

जीरीपटन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का फूल।

जीर्ण [वि.] (सं.) १-बुढ़ापे से दुर्बल और क्षीण। २-टूटा-फूटा और पुराना। पेट में भली प्रकार पका हुआ। परिपक्व।

जीर्ण-शीर्ण–फटा-पुराना।

[संज्ञा पु.] जीरा।

जीर्णज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराना बुखार।

जीर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुढ़ापा। २-पुरानापन।

जीर्णदारु [संज्ञा पु.] (सं.) विधारा नामक वृक्ष।

जीर्णदेह [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्ध शरीर।

जीर्णपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पठानी लोध।

जीर्णपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) कदम्ब का पेड़।

जीर्णवज्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैकान्तमणि।

जीर्णसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत।

जीर्णा [वि.] (सं.) वृद्धा। बुढ़िया।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) कालीजीरी।

जीर्णास्थि-मृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड्डी को गला-सड़ाकर बनाई हुई मिट्टी।

जीर्णोद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) टूटी फूटी पुरानी वस्तु, मुख्यतः मकान या भवनादि का पुनरुद्धार, सुधार या मरम्मत।

जील [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धीमा शब्द। २-तबले या ढोल का बाँया।

जीला* [वि.] (हिं.) [स्त्री. झीली] १-झीना। पतला। २-महीन।

जीलानी [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का लाल रंग।

जीवंजीव, जीवञ्जीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकोर पक्षी। २-एक वृक्ष का नाम।

जीवंत, जीवन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राण। २-ओषधि। ३-जीवशाक।
[वि.] (सं.) जीता-जागता।

जीवंतिका, जीवन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की वनस्पति या पौधा। २-गुरुच। ३-जीवशाक। ४-जीवंती-लता। ५-शमी।

जीवंती, जीवन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक लता २-शमी। ३-गुडूची।

जीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राणियों का वह चेतन तत्व जिससे वह जीवित रहते हैं। जान। प्राण। २-आत्मा। ३-प्राणी। जीवधारी। ४-जीवन। ५-विष्णु। ६-बृहस्पति। ७-अश्लेषा नक्षत्र।
जीवजंतु-१-जानवर। प्राणी। २-कीड़ा-मकोड़ा।

जीवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राणधारण करने वाला। संपेरा। ३-क्षपणक। ४-सेवक। ५-ब्याज लेकर जीवन-निर्वाह करने वाला। सूदखोर। ६-पीतसाल वृक्ष। ७-चिरंजीवी। मँगला।

जीवग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दी। कैदी।

जीव-जीव [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर पक्षी।

जीवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साहस। हिम्मत। हृदय की दृढ़ता।

जीवत्तोका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसकी संतान जीवित हो।

जीवत्पति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौभाग्यवती स्त्री। सधवा स्त्री।

जीवत्पितृक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका पिता जीवित हो।

जीवत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जीव का भाव।

जीवथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राण। २-कूर्म। ३-मयूर। ४-मेघ। [वि.] १-धार्मिक। २-चिरजीवी।

जीवद [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवनदाता। २-वैद्य। ३-शत्रु। ४-जीवक नाम का पौधा। ५-जीवन्ती।

जीव-दान [संज्ञा पु.] (सं.) अपने वश में आये शत्रु को प्राणदान देना।

जीव-धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशुओं या जीवों के रूप में सम्पत्ति। २-जीवन-धन। प्राणप्रिय।

जीव-धातु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पारदर्शक स्वच्छ तत्व अथवा धातु जिसके अन्तर्गत जीवन शक्ति होती है जो कुछ विशिष्ट रसायनिक तत्वों द्वारा बनती है तथा जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि के भौतिक रूप का मूल आधार है। *प्रोटोप्लाज़्म*।

जीवधानी [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी।

जीवधारी [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणी। जानवर।

जीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवित रहने का भाव। प्राणधारण। ३-जन्म से मृत्यु तक का समय। जिंदगी। ३-जीवित रखने वाली वस्तु। ४-प्राणाधार। परमप्रिय। ५-वृत्ति। जीविका। ६-जल। पानी। ७-वायु। ८-मज्जा। ९-घी। १०-पुत्र। ११-परमेश्वर। १२-गंगा। १३-जीवक नाम की एक औषधि

जीवन-काल [संज्ञा पु.] (सं.) जन्म और मृत्यु के बीच का समय। *लाइफ-टाइम*।

जीवन-क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवन की प्रवृत्ति जीवनक्रम।

जीवन-चरित [संज्ञा पु.] (सं.) १-सारे जीवन में किये हुये कार्यों का विवरण या वृतान्त। २-वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन-भर का वृतान्त हो।

जीवन-चरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'जीवन-चरित'।

जीवन-धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवन का सर्वस्व। जीवन में सबसे अधिक प्रिय वस्तु। २-प्राणाधार। प्राणप्रिय।

जीवन-नौका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़े जहाजों या जलपोतों पर रहने वाली छोटी नाव जो जहाज डूबने की अवस्था में लोग उस पर सवार होकर प्राणरक्षा करते हैं : *लाइफ-बोट*

जीवनबूटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संजीवनी नामक पौधा जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि उससे मराहुआ भी जी उठता है।

जीवनमूरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-संजीवनी नामक बूटी। २-प्राणप्रिया। प्यारी।

जीवन-रक्षक-नौका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'जीवन-नौका'।

जीवनवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) जीवन-चरित। जीवनवृतांत।

जीवनवृत्तांत, जीवनवृत्तान्त [संज्ञा पु.]
जीवनचरित।

जीवन-वृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीवि
रोजी। २-जीवन-निर्वाह के निमित्त
या दी जाने वाली वृत्ति। लिविंग-अला

जीवन-साधन [संज्ञा पु.] (सं.) जीविका।

जीवनहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) जीवनरक्षा
जीविका।

जीवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महौषध। २-
लता।
[क्रि. अ.] देखो 'जीना'।

जीवनाघात [संज्ञा पु.] (सं.) विष। गरल।

जीवनावास [वि.] (सं.) जल में रहने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण। २-देह। शरीर।

जीवनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-संजीवनी बूटी।
२-प्राणाधार। ३-अत्यन्त प्रिय वस्तु।

जीवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-
औषध। २-तिक्त जीवंती। ३-
लूही।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'जीवन-चरित'।
२-जीवन। जिंदगी।
[वि.] (हिं.) १-जीवन से संबंध रखने वा
२-जीवन देने वाली।

जीवनीय [वि.] (सं.) १-जीवनप्रद। २-
करने योग्य। [संज्ञा पु.] १-जल। २-
नामक वृक्ष। ३-दूध।

जीवनीय-गण [संज्ञा पु.] (सं.)
औषधों का एक वर्ग।

जीवनीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवन्ती
लता।

जीवनेत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सैहली नामक

जीवनोपाय [संज्ञा पु.] (सं.) जीवन रक्षा
उपाय। जीविका। रोजी।

जीवनौषध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरते को जि
वाली औषध।

जीवन्मुक्त [वि.] (सं.) जो जीवन काल में
आत्मज्ञान होने के कारण, सांसारिक बन्ध
से छूट गया हो।

जीवन्मृत [वि.] (सं.) जो जीवित दशा में
मृतक के समान हो। जिसका जीना
मरना दोनों समान हों।

जीवन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्त्तियों की
प्रतिष्ठा का मन्त्र।

जीव-पति [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मराज।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौभाग्यवती स्त्री।

जीवपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सधवा स्त्री।

जीवपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवती।

जीवपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जियापोता
वृक्ष। २-इंगुदी का पेड़।

जीवपुत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका

जीवित हो।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) बड़ी जीवंती।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) हड़। हरीतकी।

जीवबन्धु [संज्ञा पु.] (*सं.*) गुल-दुपहरिया। बंधूक।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) जीवंती-लता।

जीव-मन्दिर [संज्ञा पु.] (*सं.*) शरीर देह।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) माता के समान जीवों का पालन करने वाली कुमारी, धनदा, विमला, मंगला, बला और पद्मा नाम की सात देवियाँ।

[संज्ञा पु.] (*सं.*) पशुओं से किया जाने वाला एक यज्ञ।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) जीवजन्तु। जानवर

[संज्ञा पु.] (*सं.*) स्त्रियों का रज।

[संज्ञा पु.] (*सं.*) पुष्पराग। पोखराज-मणि।

[संज्ञा पु.] (*हिं.*) जीव-प्राण।

[संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) प्राणधारण की शक्ति। जीवन।

[संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'जीवन'।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–सैंहली। २–सिंहलिनी।

[संज्ञा पु.] (*सं.*) भूलोक। पृथ्वीतल।

[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) क्षीरकाकोली।

जीवविज्ञान [संज्ञा पु.] (*सं.*) वह विज्ञान जिसमें जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास, वर्गों आदि का विवेचन होता है। बायोलोजी।

जीववृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–जीव का गुण या व्यापार। २–पशु पालने का व्यवसाय।

[संज्ञा पु.] (*सं.*) सुसना नामक एक शाक।

जीवशुक्ला [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) क्षीरकाकोली।

जीवशून्य [वि.] (*सं.*) जीवरहित। मराहुआ।

जीवसंक्रमण [संज्ञा पु.] (*सं.*) जीव का एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना।

जीवसाधन [संज्ञा पु.] (*सं.*) धान्य। धान।

जीवसुता [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) वह स्त्री जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवसू [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) वह स्त्री जिसकी संतान जीवित हो। जीवत्तोका।

जीवस्थान [संज्ञा पु.] (*सं.*) हृदय। मर्मस्थान।

जीवहत्या [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–प्राणियों का वध। २–प्राणियों के वध का दोष।

जीवहिंसा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) देखो 'जीवहत्या'।

जीवांतक, जीवान्तक [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–जीवों

की हत्या करने वाला। २–व्याध। बहेलिया।

जीवा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–ज्या। २–धनुष की डोरी। ३–जीवनोपाय। जीविका। ४–जीवन। ५–भूमि।

जीवाजून+ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) जीव-जन्तु। प्राणीमात्र।

जीवाणु [संज्ञा पु.](*सं.*) जीवयुक्त अणु या अणु के समान छोटे जीव जो प्राय: अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

जीवातुमत् [संज्ञा पु.] (*सं.*) आयुष्काम यज्ञ का एक देवता।

जीवात्मा [संज्ञा पु.] (*सं.*) प्राणियों की चेतन वृत्ति का कारण-स्वरूप पदार्थ। जीव। आत्मा

जीवाधार [संज्ञा पु.] (*सं.*) हृदय। आत्मा का स्थान।

जीवानुज [संज्ञा पु.] (*सं.*) गर्गाचार्य मुनि।

जीवावशेष [संज्ञा पु.] (*सं.*) भूमि खुदाई में निकलने वाले प्राचीन-काल के जीव-जन्तुओं के अवशिष्ट रूप। *फसिल।*

जीवास्तिकाय [संज्ञा पु.] (*सं.*) जैन दर्शनानुसार कर्म करने वाला।

जीविका [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) जीवन-निर्वाह के निमित्त किया जाने वाला काम। रोजी। वृति।
जीविका लगना–जीवन-निर्वाह का उपाय होना। *जीविका लगाना*–भरण-पोषण का उपाय करना।

जीवित [वि.] (*सं.*) जीता हुआ। जिन्दा।

जीवितघ्न [वि.] (*सं.*) प्राणनाशक।

जीवितांतक, जीवितान्तक [वि.] (*सं.*) जीवों का वध करने वाला।

जीवितेश [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–ईश्वर। २–स्वामी। पति। ३–प्राणों से बढ़कर प्रिय व्यक्ति। ४–इन्द्र। ५–सूर्य। ६–देह में स्थित इड़ा और पिंगला नाड़ी। ७–यम।

जीवी [वि.] (*सं.*) १–जीने वाला। प्राणधारी। २–किसी जीविका के द्वारा पेट भरने वाला।

जीवेश [संज्ञा पु.] (*सं.*) परमात्मा। ईश्वर।

जीवेष्टि [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) वृहस्पति के लिये किया जाने वाला यज्ञ।

जीवोपाधि [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत इन तीन अवस्थाओं को जीव की उपाधि बताते हैं।

जीह* [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) जीभ। जबान।

जीहि* [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) जीभ। जबान।

जुँई [संज्ञा स्त्री.] (*हि.*) देखो 'जुई'।

जुंग, जुङ्ग [संज्ञा पु.] (*सं.*) विधारा नामक वृक्ष।

जुंडी+ [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'जुन्हरी'। 'ज्वार'।

जुंदर [संज्ञा पु.] (?) बंदर का बच्चा।

जुंबली [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।

जुंबिश [संज्ञा स्त्री.] (*फा.*) चाल। गति। हरकत
जुंबिश खाना–हिलना डोलना।

जु+ [वि.] (*हिं.*) देखो 'जो'।
[क्रि. वि.] (*हिं.*) देखो 'जो'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'जू'।

जुआँ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) [स्त्री. जुईं] जूं। ढील।

जुआँरी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) छोटी जुआं या जूं।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज्वार'।

जु* [वि. क्रि. वि.] (*हिं.*) देखो 'जो'।

जुआ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १–बाजी लगा कर खेलने का हार-जीत का खेल। द्यूत। २–वह लकड़ी का ढांचा जो बैल के कंधे पर रखा जाता है। ३–जांते या चक्की की मूठ।

जुआचोर [संज्ञा पु.] (*हिं.*) दांव जीतकर खिसक जाने वाला जुआरी। २–धोखेबाज। धोखा। वंचक। ठग।

जुआचोरी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) धोखेबाजी। वंचकता। ठगी।

जुआठा [संज्ञा पु.] (*हिं.*) हल में लगने वाला वह लकड़ी का ढांचा जो बैलों के कंधे पर रखा जाता है।

जुआनी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जवानी'।

जुआर [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'ज्वार'।

जुआरदासी [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का फूलदार पौधा।

जुआरभाटा [संज्ञा पु.] देखो 'ज्वारभाटा'।

जुआरा [संज्ञा पु.] (*हिं.*) एक जोड़ी बैल से एक दिन में जोती जाने वाली भूमि।

जुआरी [संज्ञा पु.] (*हिं.*) जुआ खेलने वाला।

जुइना+ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) घास या फूस को बटकर बनाई हुई रस्सी।

जुईं [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १–छोटा जुआँ। २–सेम, मटर आदि की फलियों में का छोटा कीड़ा।

जुई [संज्ञा पु.] (*हि.*) करछी के आकार का हवन करने का एक पात्र।

जुकाम [संज्ञा पु.] (*हिं.*) एक रोग जिसमें छींकें आती हैं और नाक से कफ और पानी बहता है।
मेंढकी को जुकाम होना–छोटे आदमी का भी काम करने का साहस अथवा बड़ों की बराबरी करना।

जुग [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १–युग। २–जोड़ा। युग्म। ३–चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर या खाने में इकट्ठा होना।

जुगजुगाना [क्रि. अ.] (*हिं.*) १–टिमटिमाना। रहरहकर थोड़ा-थोड़ा चमकना। २–नया जीवन पाकर हीन दशा से कुछ अच्छी दशा

पें आना। उभरना।

जुगजुगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शकरखोरा नामक एक चिड़िया।

जुगत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-युक्ति। उपाय। २-चतुराई। हथकंडा। ३-चमत्कारपूर्ण उक्ति। चुटकुला।

जुगत लगाना–उपाय या तदबीर करना।

जुगती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने वाला व्यक्ति। २-चतुर। चलाक।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युक्ति। उपाय।

जुगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जुगुनू। खद्योत। २-एक प्रकार का पंजाब में गाया जाने वाला गीत।

जुगनू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक कीड़ा जिसका पिछला भाग बरसात के समय चमकता है। खद्योत। पटबीजना। ३-पान के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ गले में पहनती हैं।

जुगम* [वि.] (हिं.) देखो 'युग्म'।

जुगल [वि.] (हिं.) देखो 'युगल'।

जुगलिया [संज्ञा पु.] (?) जैन कथाओं में वर्णित वह व्यक्ति जिसका ४०९६ बाल मिलकर आजकल के मनुष्यों के एक बाल के बराबर हों।

जुगवना [क्रि. स.] (हिं.) १-संचित करना। २-यत्नपूर्वक सुरक्षित रखना।

जुगदारी [वि.] (हिं.) बहुत पुराना।

जुगाना+ [क्रि. स.] देखो 'जुगवना'।

जुगालना [क्रि. अ.] (हिं.) सींग वाले चौपायों का जुगाली या पागुर करना।

जुगाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सींग वाले पशुओं द्वारा निगले चारे को थोड़ा-थोड़ा निकालकर फिर से चबाना। पागुर।

जुगुत [संज्ञा स्त्री.] 'जुगत'।

जुगुप्सक [वि.] (सं.) व्यर्थ में दूसरे की निंदा करने वाला।

जुगुप्सन [संज्ञा पु.] (सं.) निन्दा करना।

जुगुप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निन्दा। बुराई। २-घृणा। ३-अश्रद्धा।

जुगुप्सित [वि.] (सं.) निन्दित। घृणित।

जुगुप्सु [वि.] (सं.) निन्दक। बुराई करने वाला।

जुज़ [संज्ञा. पु.] (फा.) १-अंग। अंश। २-कागज के आठ या सोलह पृष्ठों का समूह। एक फारम।

जुज़बंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) किताब की सिलाई जिसमें आठ-आठ पन्ने एक साथ सीए जाते हैं।

जुज़वी [वि.] (फा.) १-बहुतों में से कोई एक। २-बहुत छोटे अंश का।

जुजीठल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा युधिष्ठिर।

जुज्झ*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युद्ध। लड़ाई।

जुझवाना+* [क्रि. स.] (हिं.) १-लड़ने को प्रोत्साहित करना। २-लड़ाकर मरवा देना।

जुझाऊ [वि.] (हिं.) १-युद्ध-संबंधी। युद्ध में काम आने वाला। युद्ध के लिए उत्साहित करने वाला।

जुझार+* [वि.] (हिं.) १-लड़का। वीर। ३-युद्ध।

जुट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दो परस्पर मिली हुई वस्तुएं। जोड़ी। २-थोक। लाट। ३-गुट। दल। ४-बल और क़द में समान दो मनुष्य। ५-जोड़ का साथी या वस्तु।

जुटक [संज्ञा पु.] (सं.) सिर के उलझे हुए बाल।

जुटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि उनका कोई अंश अथवा तल अन्य वस्तु के किसी अंग या तल के साथ दृढ़तापूर्वक लग जाय। सम्बन्ध होना। जुड़ना। २-गुथना। लिपटना। चिपटना। ३-संभोग करना। ४-इकट्ठा होना। ५-किसी काम में दृढ़तापूर्वक लगना। ६-मिलना।

जुटली [वि.] (हिं.) जूड़े वाला। लम्बे बालों की जटा रखने वाला।

जुटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दो या अधिक वस्तुओं को दृढ़तापूर्वक जोड़ना। २-भिड़ाना। सटाना। ३-इकट्ठा करना।

जुटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) जुटने की क्रिया या भाव। २-जमावड़ा।

जुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिखा। चुटैया। २-लट। गुच्छा। ३-एक प्रकार का कपूर।

जुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घास, पुआल आदि का छोटा पूला। अँटिया। २-सूरन आदि के नये कल्ले। ३-ऊपर तले रखी हुई एक सी वस्तुओं का समूह। गड्डी। ४-एक पकवान

[वि.] (हिं.) जुटी या मिली हुई।

जुठारना [क्रि. स.] (हिं.) जूठा या उच्छिष्ट करना।

जुठिहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. जुठिहारा] जूठा खाने वाला।

जुड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-संबद्ध होना। संयुक्त होना। २-संभोग करना। ३-इकट्ठा होना। होना। ४-किसी काम में सहयोग देने के उपस्थित होना। ५-उपलब्ध होना। ६-जुतना।

जुड़पित्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीत और पित्त से उत्पन्न एक प्रकार की खुजली जिसमें सारे शरीर में बड़े-बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।

जुड़वाँ [वि.] (हिं.) जुड़े हुए। यमल। (शिशु)।

जुड़वाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोड़वाई'।

जुड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) १-शीतल करना। ठंढा करना। २-शांत करना। सुखी करना।

[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जोड़वाना'।

जुड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोड़ाई'।

जुड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-शीतल या ठंढा शांत होना।

[क्रि. स.] (हिं.) १-ठंढा या शीतल २-शांत और संतुष्ट करना।

जुड़ावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जुड़ाना'।

जुड़ीयाँ [वि., संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुड़वाँ'।

जुडीशल [वि.] (अं.) न्याय-संबंधी।

जुत* [वि.] (हिं.) देखो 'युक्त'।

जुतना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बैल, घोड़े गाड़ी या हल आदि में लगना। किसी कार्य में परिश्रमपूर्वक जुटना। ४-जोता जाना (खेत)।

जुतवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे से काम कराना। दूसरे से हल नधवाना (बैल, घोड़े)।

जुताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

जुताना [क्रि. स.] (हिं.) देखो

जुतियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-जूतों से जूते लगाना। २-अपमानित करना।

जुतियौअल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परस्पर मारना।

जुत्थ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यूथ'।

जुथौली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

जुदा [वि.] (फा.) [स्त्री. जुदी] १-पृथक्। अलग। २-भिन्न। निराला।

जुदा करना–नौकरी से अलग करना।

जुदाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वियोग। २-जुदा या अलग होने का भाव।

जुदी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'जुदा'।

जुद्ध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'युद्ध'।

जुनियर [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी ढंग का जो कई रंगों का होता है।

जुनून [संज्ञा पु.] (फा.) पागलपन। सनक।

जुन्हरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्वार नामक अन्न।

जुन्हाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चन्द्रिका। चाँदनी। २-चन्द्रमा।

जुन्हार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्वार नामक अन्न।

जुन्हैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चाँदनी। चन्द्रिका। २-चन्द्रमा।

जुपना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-जलना का)।

जुपवाना+ [क्रि. स.] (हिं) १-जलवाने का अन्य से करवाना। जलवाना।

जुपाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुपाने की या भाव।

जुपाना+ [क्रि. स.] (हिं.) जलाना। विशेष– उपरोक्त जुपना से जुपाना वह है

राजस्थान में जलने के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

जुबराज [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'युवराज'।

जुबली [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'जयंती'।

जुबान [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जवान'।

जुबानी [वि] देखो 'जबानी'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) खेत में पाँस या खाद देने का एक ढंग।

जुमला [वि.] (फ़ा.) सब। कुल। [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पूरा वाक्य।

जुमा [संज्ञा पु.] (अ.) शुक्रवार।

जुमामसजिद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जुमा या शुक्रवार को मुसलमानों द्वारा मसजिद में नमाज पढ़ने का स्थान।

[illegible] [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का घोड़ा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (?) कपड़े बुनने की लपेट का खूंटा जो बाँई ओर गड़ा रहता है।

जुमड़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-निकट या पास आ जाना। २-जुड़ना। इकट्ठा होना।

जुमेरात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बृहस्पतिवार। गुरुवार

जुम्मा [संज्ञा पु.] १-देखो 'जुमा'। २-देखो 'जिम्मा'।

जुरअत [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) साहस। हिम्मत।

जुरझुरी* [संज्ञा स्त्र.] (हिं) १-ज्वरांश। हरारत २-शीत कंप।

जुरना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जुड़ना'।

जुरवाना* [संज्ञा पु.] देखो 'जुरमाना'।

जुरमाना [संज्ञा पु.] (फ़ा) अर्थदण्ड। धन का दिया जाने वाला दण्ड।

जुराफा [संज्ञा पु.] (अ.) टाँगें और गरदन ऊँट की तथा हिरन के समान सिर रखने वाला एक अफ्रीकी पशु।

जुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धीमाज्वर। हरारत।

जुर्म [संज्ञा पु.] (अ.) अपराध।

जुर्रा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) नरबाज।

जुर्राब [संज्ञा स्त्री.] (तु.) मोजा। पायताबा।

जुल [संज्ञा पु.] (हिं.) झाँसी। धोखा।

जुलना [क्रि. स.] (हिं.) १-मिलना। सम्मिलित होना। २-मिलना। भेट करना।

जुलबाज [वि.] (हिं.) १-धोखेबाज। छली। २-धूर्त।

जुलबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-धोखेबाजी। २-धूर्तता।

जुलम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुल्म'।

जुलाई [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अंग्रेजी वर्ष का सातवां महीना जो ३१ दिन का होता है।

जुलाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-रेचन। दस्त। २-रेचक औषधि। दस्त लाने वाली दवा।

जुलाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़ा बुनने वाला। तंतुवाय। तंतुकार। २-एक पानी पर तैरने वाला कीड़ा। २-एक प्रकार बरसाती कीड़ा।

जुलुफ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जुल्फ'।

जुलुम [संज्ञा पु.] देखो 'जुल्म'।

जुलू [संज्ञा पु.] दक्षिण अफ्रीका की एक असभ्य जाति।

जुल्फ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सिर के लम्बे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं। पट्टा। कुल्ले।

जुल्फी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जुल्फ। पट्टा।

जुल्म [संज्ञा पु.] (अ.) अत्याचार। अन्याय।

जुल्म टूटना-विपत्ति आना। *जुल्म ढाना*-१-अन्याय करना। २-कोई विलक्षण काम करना।

जुल्मी [वि.] (अ.) अत्याचारी। अन्यायी।

जुलूस [संज्ञा पु.] देखो 'जलूस'।

जुल्लाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-दस्त। रेचन। २-रेचक औषध।

जुवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुआ'।

जुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुआ'।

जुवान+ [संज्ञा पु.] देखो 'जवान'।

जुवानी+ [संज्ञा पु.] देखो 'जवानी'।

जुवार* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज्वार'।

जुवारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुआरी'।

जुस्तजू [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खोज। तलाश।

जुहाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-संचित करना। एकत्र करना। २-इमार के काम में पत्थर आदि यथा स्थान बैठाना। ३-चित्र को प्रभावशाली बनाने के निमित्त आकृतियों यथा स्थान बैठाना। संयोजन।

जुहार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन। नमस्कार। प्रणाम।

जुहारना [क्रि. स.] (हिं.) किसी से किसी प्रकार की सहायता माँगना।

जुहावना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जुहाना'।

जुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छोटा, घना पौधा जिसमें वर्षाकाल में सफेद सुगंधित फूल आते हैं।

जुहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राची दिशा। पूर्व दिशा। २-पलाश की लकड़ी का बना एक यज्ञ पात्र जो अर्धचन्द्राकार होता है।

जुहुराण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। [वि.] कपट व्यवहार करने वाला।

जुहोता [संज्ञा पु.] (हिं.) यज्ञ में आहुति डालने या देने वाला।

जूँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिर के बालों पाया जाने वाला एक स्वेदज कीड़ा।

कानों पर जूँ रेंगना-स्थिति का ज्ञान होना। चेत होना। *कानों पर जूँ तक न रेंगना*-किसी प्रकार की घटना का कुछ भी प्रभाव न पड़ना। *जूँ की चाल*-धीमी चाल।

जूँठ [वि., संज्ञा पु.] देखो 'जूठा'।

जूँठन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जूठन'।

जूँड़िहा [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलों के झुंड के आगे चलने वाला बैल।

जूँदन [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. जूँदनी] बंदर।

जूँदनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बंदरिया।

जूँमुहाँ [वि.] (हिं.) देखने में सीधासाधा और भोला पर वास्तव में बड़ा धूर्त।

जू [अव्य.] (हिं.) एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, राजस्थान, बुंदेलखंड आदि स्थानों में बड़े लोगों के नाम के साथ लगाया जाता है। जी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वायुमंडल। २-सरस्वती। ३-बैल या घोड़े के मस्तक पर का टीका।

जूआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाड़ी के आगे की वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर धरी रहती है। २-चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसको पकड़कर पाट घुमाया जाता है। ३-वह खेल जिसमें हारने वाले की ओर से जीतने वाले को धन मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत।

जूआ-घर [संज्ञा पु.] (हिं.) जूआ खेलने का स्थान। द्यूतशाला। जूआ-खाना।

जूआचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) भारी धूर्त और ठग।

जूक [संज्ञा पु.] (यू.) तुलाराशि।

जूजू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक कल्पित जीव जिसके द्वारा बच्चों को डराते हैं। हौआ।

जूझ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युद्ध। लड़ाई।

जूझना+* [क्रि. अ.] (हिं.) १-लड़ना। २-लड़कर मर जाना।

जूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-जटा की गांठ। जूड़ा। २-जटा। लट। ३-शिव की जटा। ४-पटसन।

जूठ+ [वि.] (हिं.) १-देखो 'जूठन'। २-देखो 'जूठा'।

जूठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खाने-पीने से बची हुई वस्तु। उच्छिष्ट भोजन। २-एक-दो बार पहले काम में लाया जा चुका पदार्थ। भुक्त पदार्थ।

जूठा [वि.] (हिं.) [स्त्री. जूठी] १-किसी के खाने से बचा हुआ (भोजन)। उच्छिष्ठ। २-जिसका पहले किसी ने उपभोग कर लिया हो। भुक्त। ३-जिसका स्पर्श मुख या किसी जूठे पदार्थ से हुआ हो।

जूठे हाथ से कुत्ता न मारना-बहुत अधिक कंजूस होना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) जूठन। उच्छिष्ट भोजन।

जूठी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'जूठा'।

जूड़+ [वि.] (हिं.) ठंडा। शीतल। [संज्ञा पु.] देखो 'जूआ'।

जूड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिर के बालों की लपेट

कर बनाई हुई गांठ या ग्रन्थि। २-चोटी। कलंगी। ३-मूँज आदि का पूला। ४-पगड़ी का पिछला भाग। ५-घास की बनी गेंडुरी जिस पर घड़ा रखा जाता है।

जूड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जाड़ा देकर चढ़ने वाला बुखार।

जूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जूता। २-बड़ा जूता।

जूता [संज्ञा पु.] (हिं.) ठोकर, काँटों आदि से बचने के लिए चमड़े आदि का बना पैर से पहनने का एक उपकरण जो पैर के ढाँचे के समान होता है। जोड़ा। पादत्राण। उपानह। *जूता उठाना*-जूता मारने को होना। (*किसी का*) *जूता उठाना*-१-किसी का दासत्व करना। २-चापलूसी करना। *जूता चाटना*-खुशामद या चापलूसी करमा। *जूता बरसना*-जूतों की मार पड़ना। *जूते का आदमी, जूते का यार*-बिना जूते खाये या ताड़ना के काम न करने वाला। *जूते से खबर लेना*-जूते मारना। *जूतों दाल बटना*-आपस में लड़ाई-झगड़ा होना। *जूतों से आना, जूतों से बात करना*-जूता लगाना।

जूताखोर [वि.] (हिं.) १-जो जूता खाया करे। २-निर्लज्ज। बेहया।

जूति [संज्ञा पु.] (सं.) वेग। तेजी।

जूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों का जूता। २-जूता।
जूती की नोक पर मारना-तुच्छ समझना। कुछ परवाह न करना। *जूती की नोक से*-बला से। कुछ परवा नहीं। *जूती के बराबर न होना*-किसी की अपेक्षा बिलकुल नाचीज़ या तुच्छ होना। *जूतियाँ चटकाते फिरना*-१-व्यर्थ इधर उधर घूमना। २-दीन या दुर्दशा-ग्रस्त होकर, कुछ प्राप्ति की आशा में घूमना। *जूतियाँ तोड़ना*-व्यर्थ की दौड़धूप। *जूतियाँ सिर पर रखना*-बहुत चिरौरी करना। *जूतियाँ सीधी करना*-चिरौरी करना। *जूती पर रोटी देना*-निरादर के साथ खाना पीना देना या पालना-*जूती पैजार होना*-जूतों से मारपीट होना। *जूती बगल में दबाना*-जूतियां उतार कर भाग जाना।

जूतीकारी संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जूतों की मार।

जूतीखोर [वि.] (हिं.) देखो 'जूताखोर'।

जूती-छुपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों द्वारा विवाह में वर की जूतियाँ छिपाने की एक रसम। २-वर के जूते छुपाने के बदले में मिलने वाला नेग।

जूती-पैजार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जूतों की मार पीट। २-बहुत ही असभ्य लड़ाई।

जूथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यूथ'।

जून* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-समय। काल। बेला। २-तृण। घास। तिनका।
[संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी वर्ष का छटा महीना जो तीस दिन का होना है।

जूना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घास या फूस की बट-कर बनाई हुई रस्सी। २-बरतन मांजने का घास का लच्छा। उबसन। उसकन।

जूनियर [वि.] (अं.) कालक्रम से पिछला। छोटा

जूप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जूआ। द्यूत। २-विवाह की एक रसम जिसमें वर वधू परस्पर जूआ खेलते हैं। पासा।
[संज्ञा पु.] देखो 'यूप'।

जूमना* [क्रि. अ.] (हिं.) एकत्र होना। जुटना।

जूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) जोड़। संचय।

जूरना* [क्रि. स.] (हिं.) जोड़ना।

जूरा* [संज्ञा पु.] देखो 'जूड़ा'।

जूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घास या पत्तों का पूला। जुट्टी। २-एक प्रकार का पकवान। ३-सूरन आदि के नये कल्ले।
[संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार के परामर्श देने वाले जो अदालत में जज के साथ बैठकर अभियोगों के फैसलों के निर्णय में सहायता देते हैं।

जूरु [संज्ञा पु.] देखो 'जूर'।

जूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तृण। उलप।

जूर्णाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) देवधान्य।

जूर्णि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेग। २-आदित्य। ३-देह। ४-ब्रह्मा। ५-क्रोध। ६-स्त्रियों का एक रोग।
[वि.] (सं.) १-वेगवान। तेज। २-द्रवित। ३-ताप देने वाला। ४-स्तुति करने में कुशल।

जूर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्वर।

जूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी उबली या पकाई हुई वस्तु का पानी। झोल। २-पकाई हुई दाल का पानी।

जूस [संज्ञा पु.] (हिं.) पकी हुई दाल अथवा उबली हुई चीज का रस।
जूस देना-उबली दाल का पानी पिलाना। *जूस लेना*-१-उबली दाल का पानी पीना। २-रोगी के शक्ति संचार होना। खाने पीने लायक होना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) युग्म या सम संख्या। जैसे २, ४, ६।

जूसताक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का खेल जिससे लड़के जूआ खेलते हैं।

जूसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गाढ़ा लसदार रस जो ऊख के रस के पकते समय इसमें से अलग हो जाता है। खांड़ का पसेव।

जूह* [संज्ञा पु.] (हिं.) झुंड। समूह।

जूहर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जौहर'।

जूही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध पौधा जिसके सुगंधित फूल चमेली से मिलते हैं। २-एक प्रकार की आतिशबाजी। ३-सेम, मटर आदि की फलियों में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

जृंभ, जृम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जृंभा] १-जँभाई। २-आलस्य।

जृंभक, जृम्भक [वि.] (सं.) जभाँई लेने वाला
[संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा लाने वाला एक

जृंभण, जृम्भण [संज्ञा पु.] (सं.) जँभाई लेना

जृंभमान, जृम्भमान [वि.] (सं.) १-जँभाई लेता हुआ। २-प्रकाशमान।

जृंभा, जृम्भा [संज्ञा पु.] (सं.) १-जँभाई। २-आलस्य अथवा प्रमाद से उत्पन्न होने वाली जड़ता। ३-एक शक्ति का नाम।

जृंभिका, जृम्भिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आलस्य। २-जंभाई। ३-एक रोग जिसमें मनुष्य शिथिल पड़ जाता है।

जृंभिनी; जृम्भिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लता।

जृंभित, जृम्भित [वि.] (सं.) १-चेष्टित। २-प्रवृद्ध। ३-स्फुटित।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्रियों की स्फोटन।

जेंउ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'ज्यों'।

जेंगना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुगनूं'।

जेंगरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) दाना निकाल लेने के बाद बचे हुए मूंग, ज्वार, बाजरे आदि के डंठल।

जेंताक [संज्ञा पु.] (सं.) रोगी की देह में पसीना उत्पन्न कर दूषित अंश निकालने की क्रिया। भफारा।

जेंना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जेंवना'।

जेंवन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खाना। भोजन २-खाद्यपदार्थ। ३-ज्योंनार।

जेंवना [क्रि. स.] (हिं.) भोजन कराना। खिलाना

जेंवनार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जेंवार'।

जेंवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) भोजन कराना। जिमाना। खिलाना।

जे*+ [सर्व.] (हिं.) 'जो' का बहुवचन।

जेइ*+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'जो'।

जेउ, जेऊ*+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'जो'।

जेट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समूह। ढेर। २-रोटियों की तह। ३-मिट्टी के बरतनों का एक दूसरे के ऊपर रखने का भाव। ४-गोद।

जेटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह स्थान जहां जहाज पर माल चढ़ता या उतरता है।

जेठ [संज्ञा प.] (हिं.) १-वैशाख और आषाढ़ के बीच का महीना। ज्येष्ठ। २-[स्त्री. जेठानी] पति का बड़ा भाई। भसुर।
[वि.] (हिं.) अग्रज। बड़ा।

जेठरा [वि.] (हिं.) देखो 'जेठ'।

जेठरैयत [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव का मुखिया।

जेठवा [संज्ञा पु.] (हिं.) झबवा नामक कपास।

जेबी [वि.] (फ़ा.) १-जेब में रखने योग्य। २-बहुत छोटा।

जेब्रा [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'जबरा'।

जेमन [संज्ञा पु.] (सं.) जीमना। भोजन करना।

जेय [वि.] (सं.) जीतने योग्य।

जेर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह झिल्ली जिसमें गर्भ का बालक रहता और पुष्ट होता है। आँवल।
[वि.] (फ़ा.) १-परास्त। पराजित। २-जो बहुत दिक किया जाय।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ जो सुंदरबन में अधिकता से होता है।

जेरपाई [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-स्त्रियों की जूती। स्लीपर। २-साधारण जूता।

जेरबंद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) घोड़े की मोहरी में लगा हुआ वह चमड़े का तस्मा जो तंग में फंसाया जाता है।

ज़ेरबार [वि.] (फ़ा.) १-विपत्ति या दुःख के बोझ से दबा हुआ। २-क्षति-ग्रस्त।

ज़ेरबारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-तंगी। २-हैरानी। परेशानी।

जेरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'जेर'। २-देखो 'जेली'।

जेरी [संज्ञा स्त्री.] (?) १-देखो 'जेर'। २-जेली। ३-वह लाठी जिसे चरवाहे कंटीली झाड़ियां आदि हटाने या दबाने के लिए अपने पास रखते हैं।

जेल [संज्ञा पु.] (अं.) वह स्थान जहां दंडित अपराधियों को कुछ काल के लिए बंद रखते हैं। कारागार। बंदीगृह।
[संज्ञा पु.] (हिं.) जंजाल। हैरानी या परेशानी का काम।

जेलखाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जेल। कारागार।

जेलर [संज्ञा पु.] (अं.) जेल का अफसर।

जेलाटिन [संज्ञा पु.] (अं.) सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस हड्डी और खाल से निकाला जाता है।

जेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घास या भूसा एकत्रित करने का एक औजार। पांचा।

जेवड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जेवरी'।

जेवना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जीमना'।

जेवनार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'ज्योनार'। २-रसोई। भोजन।

ज़ेवर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) गहना। आभूषण।

जेवर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का महोख पक्षी जिसे जघी या सिंवमोनाल भी कहते हैं।

जेवरा [संज्ञा पु.] देखो 'ज्योरा'।

जेवरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी।

जेष्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जेठमास। २-जेठ।
[वि.] (हिं.) अग्रज। जेठा। बड़ा।

जेह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमान की डोरी में वह स्थान जो आंख के पास लगाया जाता है तथा जिसकी सीध में निशाना होता है। चिल्ला। २-दीवार पर दो-तीन हाथ तक की उंचाई का लेप या पलस्तर।

जेहड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी से भरे एक के ऊपर एक रखे हुए घड़े।

जेहन [संज्ञा पु.] (अं.) बुद्धि। धारणशक्ति।

जेहर+ [संज्ञा स्त्री.] (?) स्त्रियों के पैर में पहनने का एक आभूषण। पायजेब।

जेहरि*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जेहर'।

जेहल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हठ। जिद।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जेल'।

जेहलखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) जेलखाना। कारागार।

जेहली+ [वि.] (हिं.) हठी। जिद्दी।

जेहाद [संज्ञा पु.] देखो 'जहाद'।

जेहि+ [सर्व.] (हिं.) जिसको।

जैंता+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जैंत का पेड़।

जै [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जय'।
[वि.] (हिं.) जितने। जिस संख्या में।

जैकरी [संज्ञा पु.] देखो 'जयकरी'।

जैकार [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जयकार'।

जैगीषव्य [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्रवेत्ता एक मुनि का नाम।

जैजैकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जय-जयकार'

जैजैवंती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सबेरे के समय जाने वाली भैरव राग की एक रागिनी।

जैढक [संज्ञा पु.] (हिं.) विजय प्राप्ति या युद्ध के समय बजाया जाने वाला एक प्रकार का बड़ा ढोल।

जैत+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विजय। जीत।
[संज्ञा पु.] (अ.) जैतू का वृक्ष या लकड़ी।

जैत-पत्र* [संज्ञा पु.] (हिं.) जय-पत्र।

जैतवार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) विजेता। विजयी।

जैतश्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागनी।

जैती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

जैतून [संज्ञा पु.] (अ.) एक सदाबहार वृक्ष जिसको पश्चिम के प्राचीन लोग पवित्र मानते थे। इसका फल दवा में प्रयोग होता है और इसके बीजों से तेल निकाला जाता है।

जैत्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. जैत्री] १-विजेता। विजयी।

जैत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैंत का पेड़।

जैन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत का एक धर्म-सम्प्रदाय जिसमें अहिंसा को परम धर्म माना है। यह दिगम्बर और श्वेताम्बर दो श्रेणियों में विभक्त है। इस धर्म में कोई ईश्वर या सृष्टिकर्त्ता नहीं माना जाता। २-जैनी।

जैनी [संज्ञा पु.] (हिं) जैनमतावलम्बी।

जैनु** [संज्ञा पु.] (हिं.) आहार। भोजन।

जै-पत्र* [संज्ञा पु.] (हिं.) जय-पत्र।

जैबो* [क्रि. अ.] (हिं.) जाना।

जैमंगल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक वृक्ष। २-राजा की सवारी का हाथी।

जैमाल, जै-माल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जयमाला'।

जैमिनि [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वमीमांसा के प्रवर्त्तक एक ऋषि।

जैयट [संज्ञा पु.] कैयट के पिता का नाम।

ज़ैयद [वि.] (अ.) १-बड़ा भारी। घोर। बहुत बड़ा। २-बहुत धनी।

ज़ैल [संज्ञा पु.] (अ.) १-दामन। २-नीचे का भाग या स्थान। ३-पंक्ति। समूह। ४-इलाका।

ज़ैलदार [संज्ञा पु.] (अ.+फा.) वह राज्य कर्मचारी जिसके अधिकार में कई गाँवों का प्रबन्ध हो।

जैव [वि.] (सं.) जीव या जीवन से संबंध रखने वाली। २-जीवों अथवा उनके शारीरिक अंगों से सम्बन्ध रखने वाला। ३-जिसमें जीवनदायनी शक्ति तथा शारीरिक अवयव या इन्द्रियाँ हों। *ऑर्गेनिक*।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति के क्षेत्र में धनुराशि और मीनराशि। २-पुष्यनक्षत्र।

जैवातृक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपूर। २-चन्द्रमा। ३-औषध।

[वि.] दीर्घायु।

जैस [वि.] (हिं.) देखो 'जैसा'।

'जैसवार [संज्ञा पु.] (हिं.) कुरमियों और कलवारों का एक भेद।

जैसा [वि.] (हिं.) (स्त्री. जैसी) १-जिस प्रकार का। जिस तरह का। २-जितना। जिस परिमाण या मात्रा का। +३-समान। तुल्य। सदृश। तुल्य। बराबर।

जैसे का तैसा-ज्यों का त्यों। जैसा पहले था वैसा ही। *जैसे को तैसा*-जो जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करने वाला। *जैसा चाहिए*-उपयुक्त। जैसा उचित हो।

[क्रि. वि.] (हिं.) जितना। जिस परिमाण अथवा मात्रा में।

जैसी [वि.] (हिं.) 'जैसा' का स्त्रीलिंग।

जैसे [क्रि. वि.] (हिं.) जिस प्रकार। जिस तरह।

जैसे-जैसे-ज्यों-ज्यों। जिस क्रम से। *जैसे-तैसे*-किसी प्रकार। बड़ी कठिनता से। *जैसे हो*-जिस प्रकार सम्भव हो।

जैसो+ [वि.] (हिं.) देखो 'जैसा'।

[क्रि. वि.] देखो 'जैसा'।

जों+* [क्रि. वि.] (हिं.) ज्यों। जैसे। जिस प्रकार। जिस भाँति।

जोंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का पानी में रहने वाला लम्बा कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपककर उनका रक्त चूसता है। २-वह जो अपना मतलब गाँठने के लिए पीछे पड़ जाय।

जोंकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पशुओं के पेट में पानी के साथ जोंक उतर जाने के कारण होने वाली जलन। २-देखो 'जोंक'। ३-एक लाल रंग का कीड़ा जो पानी में होता है। ४-एक प्रकार का लोहे का काँटा जो तख्तों की जुड़ाई के काम आता है।

जोंग, जोंगक [संज्ञा पु.] (सं.) अगर। अगरू।

जोंजों [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'ज्यों-ज्यों'।

जोंताला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवधान्य। पुनेरा।

जोंतों [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'ज्यों-त्यों'।

जोंदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जोंधरी'।

जोंदरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जोंधरी'।

जोंधरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़े दानों वाली ज्वार।

जोंधरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी ज्वार। २-बाजरा। (क्वचित्)।

जोंधैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चन्द्रिका। चांदनी।

जो [सर्व.] (हिं.) एक सम्बन्धवाचक सर्वनाम जिससे कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है। जैसे-जो पत्र आपने भेजा था वह मिल गया।

[अव्य.] यदि। अगर।

जोअना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जोवना'।

जोइ*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोरू। पत्नी। भार्या।

+[सर्व.] देखो 'जो'।

जोउ [सर्व.] (हिं.) देखो 'जो'।

जोक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जोंक'।

जोख+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तौल।

जोखता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री। लुगाई।

जोखना [क्रि. स.] (हिं.) तौलना। वजन करना।

जोखम [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जोखिम'।

जोखा [संज्ञा पु.] (हिं.) लेखा। हिसाब।

+[संज्ञा स्त्री.] (स्त्री.) लुगाई।

जोखाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जोखने या तौलने का काम। २-जोखने या तौलने का भाव। ३-तौलने की मजदूरी।

जोखिउ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोखिम'।

जोखिता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'योषिता'।

जोखिम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशंका। २-वह पदार्थ अथवा काम जिससे भारी विपत्ति आ पड़ने ... जोखिम उठाना या सहना-ऐसा काम ... जिसमें भारी अनिष्ट की आशंका हो ... जोखिम होना-प्राण जाने का डर होना।

जोखुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) तौलने वाला।

जोखुवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) तौलने वाला।

जोखों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोखिम'।

जोगंधर [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु के ... अस्त्र से अपना बचाव करने की एक ...

जोग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'योग'।

[वि.] (हिं.) योग्य।

[अव्य.] (हिं.) को। के निकट। (... हिन्दी)।

जोगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) बना हुआ ... पाखंडी।

जोगता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो ...

जोगन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो ...

जोगनिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो ...

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोगिनी'।

जोगमाया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो ...

जोगवना [क्रि. स.] (हिं.) १-यत्न से ... २-संचित करना। बटोरना। ३-जाने ... ध्यान न देना। ४-आदर करना। ५- ... करना। ६-ध्यान रखना।

जोगसाधन* [संज्ञा पु.] (हिं.) तपस्या।

जोगा [संज्ञा पु.] (देश.) अफीम का ... मैल।

जोगानल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) योग से ... आग।

जोगिंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-योगीराज। ... महादेव।

जोगिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जोगी की ... २-साधुनी। ३-पिशाचिनी। ४- ... जो रण में कटे मरे मनुष्यों के रुंड ... देखकर प्रसन्न होती है। ५-देखो 'योगिनी'।

जोगिनिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार ... लाल रंग की ज्वार। २-एक प्रकार का ...

जोगिनी [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'योगिनी'। ... 'जोगिन'।

जोगिया [वि.] (हिं.) १-जोगी-संबन्धी। ... का। २-गेरु के रंग में रंगा हुआ। ... ३-गेरू के रंग का।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-जोगीड़ा। २-जोगी।

जोगींद्र* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-योगीराज। ... शिव। महादेव।

जोगी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-योगी। २-एक प्रकार के भिक्षुक जो सारंगी बजाकर ... गीत गाकर भिक्षा मांगते हैं।

जोगीड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वसंत ऋतु में ... का एक चलता गाना। २-गाने बजाने ...

की मंडली। ३-इस मंडली का कोई आदमी।

जोगेसर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'योगीश्वर'।

जोगू [वि.] (सं.) स्तुति करने वाला।

जोगेश्वर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-शिव। ३-देवहोत्र के पुत्र का नाम। ४-योग का ज्ञाता। सिद्ध योगी।

जोगेन्द्र* [वि.] (हिं.) जोगी।

जोग्य [वि.] (हिं.) देखो 'योग्य'।

जोजन [संज्ञा पु.] देखो 'योजन'।

जोजनगंधा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'योजनगंधा'।

जोट* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जोड़। जोड़ी। २-साथी। संघाती।
[वि.] (हिं.) समान। बराबरी का। मेल का।

जोटा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जोड़ा। युग। २-[illegible]। बुरजी।

जोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जोड़ने की क्रिया। २-वह संख्या जो कई संख्याओं को जोड़ने से निकले। योग। मीजान। टोटल। ३-दो या अधिक अंगों, पुरजों या पदार्थों के जुड़ने का स्थान। सन्धि। ४-वह टुकड़ा जो किसी चीज में जोड़ा जाय। ५-एक ही प्रकार की साथ-साथ उपयोग में आने वाली दो चीजें। जोड़ा। ६-बराबरी। समानता। ७-शरीर के दो अवयवों का सन्धि-स्थान। ८-वह जो किसी की बराबरी का हो। ९-पूरी पोशाक। १०-दावपेंच। ११-देखो 'जोड़ा'। *जोड़-तोड़* १-छल-कपट। २-किसी काम के लिए विशेष युक्ति। *जोड़ उखड़ना*-शरीर के किसी जोड़ का अपने स्थान से हटना। *जोड़ बाँधना*-१-कुश्ती के लिए दो पहलवानों को चुनना। २-काम पर अलग-अलग दो आदमी नियत करना। ३-चौपड़ में दो गोटी एक ही घर में रखना। *जोड़ बैठना*-शरीर के जोड़ का अपने स्थान पर आना।

जोड़ती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कई संख्याओं का योग। जोड़।

जोड़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जावन। जामन।

जोड़ना [क्रि.स.] (हिं.) १-दो वस्तुओं को सी-कर, मिलाकर, चिपकाकर या अन्य उपाय द्वारा एक करना। २-टूटे हुए पदार्थ के टुकड़ों को मिलाकर एक करना। ३-वस्तुएँ अथवा सामग्री क्रम से रखना या लगाना। ४-संचित या एकत्र करना। ५-संख्याओं का योगफल निकालना। जोड़ लगाना। ६-वाक्यों अथवा पदों की योजना करना। ७-प्रज्वलित करना। जलाना (आग या दीपक)।

जोड़ला* [वि.] (हिं.) एक ही समय में एक ही गर्भ से जन्मे हुए दो बच्चे। यमज।

जोड़वाँ [वि.] (हिं.) जोड़ला। यमज।

जोड़वाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जोड़वाने की क्रिया या भाव। २-जोड़वाने की मजदूरी।

जोड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरों को जोड़ने में प्रवृत्त करना।

जोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार के दो पदार्थ। २-पैरों के जूते। ३-एक साथ पहने जाने वाले दो कपड़े। ४-एक आकार की वस्तु। ५-स्त्री और पुरुष या नर और मादा का युग्म। ६-वह जो बराबर का हो।

जोड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दो या दो से अधिक वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया भाव। २-दीवार बनाने में ईंटों या पत्थरों के टुकड़ों को जोड़ने की क्रिया।

जोड़ा-संदेस [संज्ञा पु.] (देश.) छेने से बनने वाली एक बंगला मिठाई।

जोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दो समान पदार्थ। जोड़ा। २-घोड़ों या बैलों का युग्म। ३-एक साथ पहनने के सब कपड़े। ४-मंजीरा बाजा। *जोड़ीदार*-जोड़ वाला। *जोड़ीवाल*-गाने-बजाने वालों के साथ मंजीरा बजाने वाला।

जोडुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना जो पैरों में पहना जाता है।

जोड़ू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोरू'।

जोत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जोते जाने वाले पशुओं के गले की रस्सी जिसका एक छोर पशु के गले में बंधा रहता है और दूसरा उस वस्तु से बंधा होता है जिसमें पशु जोता जाता है। २-तराजू के पलड़े में बंधी हुई रस्सी। ३-उतनी भूमि जितनी किसी आसामी को जोतने-बोने के लिए दी गई हो। ४-देखो 'ज्योति'। ५-'ज्योति'।

जोतदार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह आसामी जिसे जोतने-बोने के निमित्त कुछ भूमि मिली हो।

जोतना [क्रि. स.] (हिं.) १-गाड़ी, कोल्हू आदि चलाने के लिए उसके आगे बैल आदि बांधना। २-हल चलाना। ३-किसी को किसी काम के लिए जबरदस्ती प्रवृत करना। ४-गाड़ी आदि में बैल आदि जोतकर उसे चलने के योग्य करना।

जोतनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुते हुए पशु के गले के नीचे दोनो ओर बंधी हुई छोटी रस्सी।

जोतसी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिषी'।

जोताँत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत की मिट्टी की ऊपरी तह।

जोता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'जोत'। २-बहुत बड़ा शहतीर। ३-वह जो हल जोतता हो। खेती करने वाला।

जोताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जोतने का काम या भाव। २-जोतने की मजदूरी।

जोतात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोताँत'।

जोति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देवी-देवता के सम्मुख जलाने का घी का दीपक। २-देखो 'ज्योति'।
[संज्ञा स्त्री] (हिं.) जोतने बोने योग्य भूमि।

जोतिखी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिषी'।

जोतिलिंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिर्लिंग'।

जोतिष [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिष'।

जोतिषटोम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिष्टोम'।

जोतिषी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिषी'।

जोतिस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिष'।

जोतिसी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिषी'।

जोतिहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जोतने वाला कृषक या किसान। जोता।

जोती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'ज्योति'। २-देखो 'जोति'। ३-तराजू के पल्लों की रस्सी। ४-घोड़े की लगाम।

जोत्स्ना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ज्योत्सना'।

जोधन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह रस्सी जिससे बैल के जुए की ऊपर नीचे की लकड़ियाँ बंधी रहती हैं।

जोधा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'योद्धा'। २-जोता नाम के रस्सी जो जुआठे में बंधती है।

जोधार [संज्ञा पु.] (हिं.) योद्धा। शूर।

जोन*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) योनि। भग।

जोनराज [संज्ञा पु.] (हिं.) राजतरंगणी के द्वितीय लेखक।

जोनरी* [संज्ञा स्त्री.] (?) ज्वार नाम का अन्न।

जोनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) योनि। भग।

जोन्ह*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चन्द्रिका। चाँदनी। ज्योत्स्ना। २-चन्द्रमा।

जोन्हरी + [संज्ञा पु.] (?) ज्वार नाम का अन्न।

जोन्हाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चन्द्रिका। चांदनी। २-चन्द्रमा।

जोन्हार+ [संज्ञा पु.] (?) ज्वार नामक अन्न।

जोप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यूप'।

जोपै* [अव्य.] (हिं.) १-यदि। अगर। २-यद्यपि। अगरचे।

जोफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-बुढ़पा। वृद्धावस्था। २-सुस्ती। निर्बलता। कमजोरी।

जोबन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यौवन। युवा होने का भाव। २-सुन्दरता। ३-रौनक। बहार। ४-कुच। स्तन। छाती। ५-एक प्रकार का फूल।
जोबन उतरना या ढलना-युवावस्था समाप्त होना।

जोबना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जोवना'।
[संज्ञा पु.] देखो 'जोबन'।

जोम [संज्ञा पु.] (अ.) १-उमंग। उत्साह। २-जोश। उद्वेग। आवेश। ३-अहंकार। अभिमान।

जोय*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोरू। पत्नी। स्त्री।
[सर्व.] १-जो। २-जिस।

जोयना*+ [क्रि. स.] (?) १-जलाना। बलाना। २-देखो 'जोवना'।

जोयसी+* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज्योतिषी'।

जोर [संज्ञा पु.] (फा.) १-बल। शक्ति। २-प्रबलता। तेजी। ३-वश। अधिकार। ४-वेग। आवेश। झोंक। ५-भरोसा। आसरा। सहारा। ६-परिश्रम। मेहनत। ७-व्यायाम। कसरत।
जोर करना-१-ताकत लगाना। २-कोशिश करना। *जोर चलना*-अधिकार होना।
जोर जताना-अधिकार दिखाना। *जोर टूटना*-ताकत घटना।
जोर टूटना-बल घटना। प्रभाव कम होना। *जोर डालना*-१-दबाव डालना। २-देखो 'जोर देना'। *जोर देना*-१-बल प्रयोग करना। २-महत्वपूर्ण या आवश्यक बताना। ४-आग्रह या हठ करना। *जोर पकड़ना या बांधना* १-प्रबल होना। २-तेज होना। ३-जोर में आना। ४-जोरों पर होना। *जोर मारना या लगाना*-१-बल प्रयोग करना। २-बहुत कोशिश करना। *जोर में आना*-ऐसी अवस्था जिसमें सहज ही में उन्नति तथा वृद्धि हो जाय। *जोरों पर*-१-पूरे बल पर। २-तेज होना। उन्नत अवस्था में।

ज़ोरशोर [संज्ञा पु.] (फा.) बहुत अधिक ज़ोर पर

ज़ोरदार [वि.] (फा.) जिसमें बहुत जोर हो। शक्तिशाली।

जोरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक साथ बँधे हुए लम्बे बांस जिनके किनारे पर मोटा रस्सा बँधा होता है, यह कोल्हू के जाठ को रोकने के काम आता है। २-फसल की डालियाँ और पत्ते खा जाने वाला एक प्रकार का हरे रंग का कीड़ा।

जोरन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जोड़न'।

जोरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-जोड़ना। २-जोतना।

जोरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जोड़ा'।

जोराजोरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जबरदस्ती। धींगाधींगी।
[क्रि. वि.] (हिं.) जबरदस्ती से। बलपूर्वक।

ज़ोरावर [वि.] (फा.) बलवान। ताकतवर। शक्तिशाली।

ज़ोरावरी संज्ञा स्त्री.] (फा.) जबरदस्ती। धींगाधींगी।

जोरिल्ला* [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गंधबिलाव।

जोरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जोड़ी। २-जबरदस्ती।

जोरू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्नी। स्त्री। घरवाली। भार्या।
जोरूजाँता-परिवार। गृहस्थी।

जोलहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जुलाहा'।

जोलाहल+* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) अग्नि। ज्वाला

जोलाहा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'जुलाहा'।

जोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोड़ी। बराबरी।

जोवना* [क्रि. स.] (हिं.) १-देखना। जोहना। २-ढूंढ़ना। ३-रास्ता देखना। आसरा देखना

जोवारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मैना जिसका रंग बहुत चमकीला होता है।

जोश [संज्ञा पु.] (फा.) १-उफान। उबाल। २-मनोवेग। आवेश।
जोश खाना-उबाल आना। *जोश देना*-१-उत्तेजित करना। २-किसी वस्तु को पानी के साथ उबालना। *खून का जोश*-अपने किसी आत्मीय के प्रति उत्कट प्रेम। *जोश-खरोश*-अधिक आवेश।

जोशन [संज्ञा पु.] (फा.) १-भुजाओं में पहनने का एक आभूषण। २-कवच। जिरहबख्तर।

जोशाँदा [संज्ञा पु.] (फा.) पानी में उबाली हुई औषधि। काढ़ा। क्वाथ।

जोशी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जोषी'।

जोशीला [वि.] (हिं.) जोश से भरा। आवेशपूर्ण। जोशवाला।

जोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेम। प्रीति। २-सुख। आराम। ३-सेवा।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्री। नारी। २-देखो 'जोख'।

जोषक [संज्ञा पु.] (सं.) सेवक।

जोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेम। प्रीति। सेवा।

जोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नारी। स्त्री। औरत।

जोषिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। नारी। औरत।

जोषी [संज्ञा पु.] (हिं.) १- गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २-महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक जाति। ३-पहाड़ी ब्राह्मणों की एक जाति। ४-ज्योतिषी। गणक। (क्वचित्)।

जोस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जोश'।

जोह+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खोज। तलाश। २-प्रतीक्षा। इन्तजार।

जोहड़ [संज्ञा पु.] (देश.) कच्चा तालाब।

जोहन+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रतिक्षा। इंतजार। २-खोज। तलाश। ३-देखने अथवा जोहने की क्रिया।

जोहना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-देखना। अवलोकन करना। २-खोजना। ढूँढना। ३-प्रतीक्षा करना। राह देखना।

जोहर+ (देश.) बावली। छोटा तालाब।

जोहार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अभिवादन। नमस्कार। प्रणाम।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जौहर'।

जोहारना+ [क्रि. अ.] (हिं.) अभिवादन करना।

जौं+ [अव्य.] (हिं.) यदि। जो। [क्रि. वि.] देखो 'ज्यों'।

जौंकना [क्रि. स.] (हिं.) डाँटना। क्रोध से चिल्लाकर बोलना।

जौंची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गेहूँ या जौ की फसल में होने वाला एक रोग।

जौंड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जौरा'।

जौंराभौंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) महल अथवा किले के भीतर का वह तहखाना जिसमें गुप्त खजाना रहता है।
[संज्ञा पु.] (हिं.) दो बालकों का जोड़ा। (प्यार का शब्द)।

जौंरे*+ [क्रि. वि.] (हिं.) पास। निकट। समीप।

जौ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गेहूँ की तरह का एक अन्न जिसके आटे में चोकर अधिक निकलता है। यव। २-छः राई के बराबर की एक तोल।
[अव्य.] (हिं.) यदि। अगर।
[क्रि. वि.] (हिं.) जब।
जौ-लौं, जौ-लगि. जौ-लहिं-जबतक।

जौक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झुंड। जत्था। २-सेना। फौज।

जौकेराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मटर मिला हुआ जौ।

जौख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झुंड। जत्था। २-सेना। फौज।

जौगढ़वा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान जिसका चावल सैकड़ों वर्ष तक रह सकता है।

जौचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जौ और चना मिला।

जौजा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जोरू। भार्या। पत्नी।

जौतुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यौतुक'।

जौधिक [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार के बत्तीस हाथों मेंसे एक।

जौन*+ [सर्व.] (हिं.) जो।
[वि.] (हिं.) जो।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यवन'।

जौनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जौ आदि रबी की फसल बोने का खेत। रबी का खेत।

जौन्ह*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जोन्ह'।

जौ-पै** [अव्य.] (हिं.) अगर। यदि।

जौबन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'योवन'।

जौबति* [संज्ञा स्त्र.] (हिं.) देखो 'युवती'।

जौम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जोम'।

जौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाऊ, बारी आदि को उनके काम के बदले में दिया जाने वाला अन्न।

जौलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जुलाई'।

जौलाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रति रुपया तौल

ज्ञातिभव [संज्ञा पु.] (सं.) संबंध। रिश्ता।

ज्ञातिभेद [संज्ञा पु.](सं.) आपस की फूट।

ज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्तुओं और विषयों की वह जानकारी जो मन या विवेक में होती है। जानकारी। बोध। २-यथार्थ बात या तत्व की पूर्ण जानकारी। तत्वज्ञान।

ज्ञानकांड, ज्ञानकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वेद के तीन विभागों में से एक जिससे ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है।

ज्ञानकृत [वि.] (सं.) जो (पाप) जानबूझकर किया गया हो।

ज्ञानकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान का चिह्न।

ज्ञानगम्य [संज्ञा पु.] (सं.) जो जाना जा सके।

ज्ञानगर्भ [वि.] (सं.) जिसमें ज्ञान हो। ज्ञानयुक्त।

ज्ञानगोचर [वि.] (सं.) ज्ञानेन्द्रियों से जानने योग्य।

ज्ञान-चक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) पंडित। विद्वान।

ज्ञानतः [क्रि. वि.] (सं.) जानबूझकर। जानकारी।

ज्ञानद [वि.] (सं.) ज्ञान देने वाला। ज्ञानदायक।

ज्ञानदग्धदेह [संज्ञा पु.] (सं.) सन्यासी।

ज्ञानदाता [संज्ञा पु.] (हिं.) ज्ञान देने वाला। गुरु।

ज्ञानदुर्बल [वि.] (सं) ज्ञानहीन। मूर्ख।

ज्ञानपति [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान का उपदेश करने वाला गुरु। परमेश्वर।

ज्ञानप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक तथागत का नाम।

ज्ञानमद [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञानी होने का गर्व। ज्ञान का अभिमान।

ज्ञानमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तन्त्रानुसार राम की पूजा की एक मुद्रा।

ज्ञानयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान द्वारा अपनी आत्मा और परमात्मा का संयोग या अभेद-ज्ञान। ब्रह्मज्ञान।

ज्ञानयोग [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का उपाय।

ज्ञानलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद।

ज्ञानवान् [वि.] (सं.) ज्ञानी।

ज्ञानवापी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काशी में वापीरूप का एक तीर्थ।

ज्ञानवृद्ध [वि.] (सं.) जिसकी जानकारी अधिक हो।

ज्ञानसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रिय। २-ज्ञान प्राप्ति का प्रयत्न।

ज्ञानहत [वि.] (सं.) जिसका ज्ञान भ्रष्ट हो गया हो।

ज्ञानाकर [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध।

ज्ञानापन्न [वि.] (सं.) ज्ञानी। बुद्धिमान्।

ज्ञानवरण [सज्ञा पु.] (सं.) १-ज्ञान पर पड़ाहुआ परदा। ज्ञान का बाधक। २-पापकर्म के कारण ज्ञान लाभ से वंचित जीव।

ज्ञानावरणीय-कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ज्ञानावरण'।

ज्ञानासन [संज्ञा पु.] (सं.) योग का एक आसन जिसके द्वारा योगाभ्यास में शीघ्र सिद्धि होती है।

ज्ञानी [वि.] (हिं.) १-जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान। २-आत्मज्ञानी।

ज्ञानेंद्रिय, ज्ञानेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री] (सं.) वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का ज्ञान होता है। ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच होती हैं यथा—१-दर्शनेन्द्रिय-आँख, २-श्रवणेन्द्रिय-कान, ३-घ्राणेन्द्रिय—नाक, ४-रसनेन्द्रिय—जीभ, और ५-स्पर्शेन्द्रिय-त्वचा।

ज्ञाप [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिस पर स्मृति के निमित्त अथवा सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो। मेमो।

ज्ञापक [वि.] (सं.) १-जताने वाला। सूचक। व्यंजक। २-स्मृति-पत्र भेजने वाला (व्यक्ति)। सूचित करने वाला।

ज्ञापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जताने या बताने का कार्य। २-वह पत्र पुस्तिका आदि जिसमें किसी विषय की कुछ मुख्य-मुख्य बातें स्मरण रखने अथवा कराने की दृष्टि से एकत्र की गई हों। ३-किसी संस्था आदि के प्रमुख नियमों आदि की पुस्तिका। मेमोरेन्डम।

ज्ञापनीय [वि.] (सं.) जो बतलाने के योग्य हो। सूचित करने योग्य।

ज्ञापित [वि.] (सं.) जताया हुआ। सूचित।

ज्ञाप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्ञापन। सूचित करने का कार्य।

ज्ञेय [वि.] (सं.) १-जाने योग्य। २-जो जाना जासके।

ज्ञेयज्ञ [वि.] (सं.) आत्मज्ञानी। सिद्ध। ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञेयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बोध।

ज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धनुष की डोरी। २-किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा। ३-पृथ्वी। ४-माता। ५-वह लम्ब रेखा जो किसी चाप के एक छोर से दूसरे छोर तक गये हुए व्यास पर गिरती है।

ज्याघोष [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष की टंकार।

ज्यादती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अधिकता। बहुतायत। २-अत्याचार। जबरदस्ती।

ज्यादा [क्रि. वि.] (फा.) अधिक। बहुत।

ज्यान+ [संज्ञा पु.] (सं.) हानि। नुकसान। घाटा।

ज्याना+ [क्रि. स.] देखो 'जिलाना'।

ज्याफ़त [संज्ञा स्त्री.] (अ) १-भोज। दावत।

२–आतिथ्य ।

ज्यामिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गणितशास्त्र का वह विभाग जिसके द्वारा भूमि के परिमाण, रेखा, कोण आदि का विवेचन होता है। रेखागणित।

ज्यारना** [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'जिलाना'।

ज्यावना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'जिलाना'।

ज्यूँ [अव्य.] (हिं.) देखो 'ज्यों'।

ज्येष्ठ [वि.] (सं.) १–जेठा। बड़ा। २–वृद्ध। बूढ़ा। ३–पद, मर्यादा, अवस्था या वय आदि में किसी से बड़ा या बढ़कर। *सीनियर*। ४–प्राण। ५–ईश्वर।

ज्येष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर का शासक। कुलिक। *ऑल्डर-मैन*।

ज्येष्ठक-पद–नगर शासक का पद या ओहदा।

ज्येष्ठता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–ज्येष्ठ होने का भाव। २–पद, मर्यादा, वय या अवस्था आदि में किसी से बड़े होने की क्रिया या भाव। *सीनियॉरिटी*।

ज्येष्ठतात [संज्ञा पु.] (सं) पिता के बड़े भाई।

ज्येष्ठत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ज्येष्ठता'।

ज्येष्ठवला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेई नामक जड़ी जो दवा के काम आती है।

ज्येष्ठसामग [संज्ञा पु.] (सं.) आरण्यक साम का पढ़ने वाला।

ज्येष्ठसामा [संज्ञा पु.] (सं.) ज्येष्ठ सामवेद का पढ़ने वाला।

ज्येष्ठांबु, ज्येष्ठाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) चावलों का धोवन।

ज्येष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से अठारहवां नक्षत्र जो तीन तारों का है। २–अपने पति के सब से अधिक प्यारी स्त्री। ३–मध्यमा उङ्गली। ४–छिपकली। ५–गंगा। ६–अलक्ष्मीदेवी जो समुद्र-मंथन के समय लक्ष्मी के पहले निकली थी।

[वि.] [स्त्री. प्र.] बड़ी।

ज्येष्ठामलक [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का पेड़।

ज्येष्ठाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) गृहस्थाश्रम। उत्तमाश्रम।

ज्येष्ठाश्रमी [संज्ञा पु.] (हिं.) गृहस्थ। गृही।

ज्येष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिपकली। गृहगोधा।

ज्यों* [क्रि. वि.] (हिं.) १–जैसे। जिस प्रकार। २–जिस क्षण। जिस समय।

ज्यों-त्यों–१–किसी न किसी प्रकार। २–अरुचि के साथ। ज्यों-त्यों करके–किसी न किसी प्रकार। २–कठिनाई के साथ।

ज्यों का त्यों–१–जैसे का तैसा। २–बिना फेर बदल किये। ज्यों-ज्यों–१–जिस क्रम से। २–जिस मात्रा से। जितना।

ज्योतिःशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष।

ज्योतिःशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लघु-गुरु वर्णों की गणना के अनुसार विषम वृत्तों का एक भेद जिसके पहले दल में बत्तीस लघु और दूसरे में सोलह गुरु होते हैं।

ज्योति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–प्रकाश। उजाला। द्युति। २–लपट। लौ। अग्निशिखा। ३–अग्नि। ४–सूर्य। ५–नक्षत्र। ६–मेथी। ७–आंख की पुतली के मध्यक बिन्दु जिससे देखा जाता है। ८–संगीत में अष्ट ताल का एक भेद। ९–दृष्टि। १०–विष्णु। ११–परमात्मा।

ज्योतिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ज्योतिषी'।

ज्योतित [वि.] (हिं.) प्रकाशमान। ज्योति से परिपूर्ण।

ज्योतिरिंग, ज्योतिरिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जुगनू। खद्योत।

ज्योतिरिंगण, ज्योतिरिङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) जुगनू।

ज्योतिमान [वि.] देखो 'ज्योतिर्मय'।

ज्योतिर्मय [वि.] (सं.) प्रकाशमय। जगमगाता या चमकता हुआ।

ज्योतिर्मान [वि.] देखो 'ज्योतिर्मय'।

ज्योतिर्लिंग [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।

ज्योतिर्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) १–ध्रुवलोक। २–परमेश्वर।

ज्योतिर्विद [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष जानने वाला ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष विद्या।

ज्योतिर्वीज [संज्ञा पु.] (सं.) जुगनू। खद्योत।

ज्योतिहस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

ज्योतिश्चक्र [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्र तथा राशियों का मंडल।

ज्योतिष [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह विद्या या शास्त्र जिसके द्वारा आकाशस्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है। २–अस्त्रों का एक रोक जिसके द्वारा चलाया अस्त्र निष्फल जाता है।

ज्योतिषिक [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन करने वाला।

[वि.] (सं.) ज्योतिष-संबंधी।

ज्योतिषी [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञाता। दैवज्ञ। गणक।

ज्योतिष्क [संज्ञा पु.] (सं.) १–ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। २–मेथी। ३–चीता। ४–गनियारी का पेड़।

ज्योतिष्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

ज्योतिष्टोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ।

ज्योतिष्पथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

ज्योतिष्पुंज, ज्योतिष्पुञ्ज [संज्ञा पु.] नक्षत्र समूह।

ज्योतिष्मती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मालकंगनी। २–एक प्रकार का वैदिक छन्द। ३– ४–एक प्राचीन बाजा जो सारंगी के होता था।

ज्योतिष्मान् [वि.] (सं.) प्रकाशयुक्त। [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

ज्योतिरथ [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुव नक्षत्र।

ज्योतिरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का

ज्योत्स्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चांदनी २–चन्द्रमा का प्रकाश। चन्द्रिका। चांदनी। ३–सफेद फूल की तरोई।

ज्योत्स्नाकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वरुण के पुष्कर की पत्नी।

ज्योत्स्नाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर।

ज्योत्स्नावृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दीपधार।

ज्योत्स्नका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चांदनी २–सफेद फूल वाली तरोई।

ज्योत्स्नी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज्योत्स्ना'।

ज्योत्स्नेश [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योत्सना के पति, सूर्य।

ज्योनार [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–पका हुआ भोजन। रसोई। २–बहुत लोगों के बैठकर होने वाला भोजन। भोज। दावत।

ज्योरा [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल तैयार हो पर गांव के नाई, धोबी, चमारों आदि दिया जाने वाला अन्न।

ज्योरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रस्सी। रज्जु।

ज्योहत+* [संज्ञा पु.] (हिं.) आत्मदाह जौहर।

ज्योहर+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'जौहर'।

ज्यौं [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'ज्यों'।

ज्यौ [अव्य.] (हिं.) यदि।

ज्यौतिष [वि.] (सं.) देखो 'ज्योतिष'

ज्यौतिषिक [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी।

ज्यौत्स्ना [वि.] (सं.) जगमगाता हुआ।

ज्यौत्स्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदनी रात।

ज्यौनार [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ज्योनार'।

ज्यौरा [संज्ञा पु.] देखो 'ज्योरा'।

ज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की अस्वस्थता सूचक वह ताप जो स्वाभाविक से अधिक ताप। बुखार।

ज्वरकुटुंब, ज्वरकुटुम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) श्वास, अरुचि, हिचकी आदि ज्वर के

ने वाले उपद्रव।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–गुडुच। २–बथुआ।
[संज्ञा पु.] (सं.) ज्वर या बुखार की
ज्वरहन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।
ज्वराङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) १–ज्वर की
का नाम। २–कुश के समान एक सुगंधि घास।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) भद्रदंती नाम का
ज्वरान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चिरा-
२–अमलतास।
[संज्ञा पु.] (?) मृत्यु। मौत।
[संज्ञा पु.] (सं.) ज्वररूपी अग्नि।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेलपत्री।
[वि.] (सं.) ज्वर से पीड़ित।
[वि.] (सं.) ज्वरयुक्त। जिसे ज्वर चढ़ा
(हिं.) जिसे ज्वर हो।
] (हिं.) देखो 'जुर्रा'।
] (सं.) १–जलता हुआ। प्रकाशमान।
२–प्रकाशित। अत्यन्त स्पष्ट।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–अग्नि। आग। २–
[संज्ञा स्त्री.] (सं) आग की लपट।
अग्निशिखा।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–जलने की क्रिया या
२–जलन। दाह। ३–अग्नि। आग।
–चित्रकवृक्ष।
[संज्ञा पु.] (सं.) दस हजार देवपुत्रों
नायक जिसने बौद्धमठ में प्रवेश करते
बोधिज्ञान प्राप्त कर लिया था।
[वि.] (सं.) १–जलता हुआ। २–चम-
हुआ। ३–उज्ज्वल। स्वच्छ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वालता। मुर्रा।
+ वि.] (हिं.) देखो 'जवान'।
+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जवानी'।
+ [संज्ञा पु.] देखो 'जवाव'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार का पौधा
जिसकी बाल में निकलने वाले दाने अन्न में
गिने जाते हैं।
२–समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव।
[संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र के जल की
तरंग का चढ़ाव-उतार जो चन्द्रमा के आक-
र्षण से होता है। इसके चढ़ाव को ज्वार
और उतार को भाटा कहते हैं।
+ [संज्ञा पु.] देखो 'जुआरी'।
[संज्ञा पु.] (सं.) अग्निशिखा। लौ।
लपट।

ज्वालक [वि.] (सं.) जलाने वाला। प्रज्वलित करने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) दीपक अथवा लैम्प का वह भाग जो बत्ती के जलने वाले अंश के नीचे रहता है और जिसके कारण दीपशिखा नीचे के तले वाले भाग तक नहीं पहुँच पाती। बर्नर।

ज्वालमाली [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

ज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लपट। लौ। अग्निशिखा। २–विष आदि की गरमी या ताप। ३–बहुत अधिक गरमी। ताप। ४–दग्धान्न।

ज्वालाजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–आग। अग्नि। २–एक प्रकार का चित्रकवृक्ष।

ज्वालादेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं) शारदापीठ में स्थिति देवी, इनका स्थान कांगड़े जिले के अंतर्गत देरा तहसील से विद्यमान है।

ज्वालामुखी-पर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) वह पर्वत जिसकी चोटी के गड्ढे में से धुआं, राख और पिघले या जले पदाथ बराबर या समय-समय पर निकला करते हैं।

ज्वालावक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

ज्वाला-हलेदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रंगने की हलदी

ज्वालिन् [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। महादेव। २–प्रभा। तेज। ३–दीप्ति। चमक।

ज्वालेश्वर [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

झ (झ)

झ हिन्दी वर्णमाला का नवां और चवर्ग का चौथा वर्ण इसका उच्चारण स्थान तालु है।

झं [संज्ञा पु.] (हिं.) १–धातुखंड के आपस में टकराने का शब्द। हथियारों का शब्द।

झंकना [कि. अ.] (हिं.) देखो 'झीकना'।

झंकाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झंखाड़'।

झंकार [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झनकार'।

झंकारना [क्रि. अ., कि. स.] (हिं.) देखो 'झनकारना'।

झंकिया* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–छोटी खिड़की। झरोखा। २–जाली। झंझरी।

झंकृत, झङ्कृत [वि.] (सं.) जिसमें झनकार हुई हो।

झंकृति, झङ्कृति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झनकार'।

झँकोर* [संज्ञा पु.] देखो 'झकोरा'।

झँकोरना* [क्रि. अ.] देखो 'झकोरना'।

झँकोलना* [क्रि. अ.] देखो 'झकोरना'।

झँकोला* [संज्ञा पु.] देखो 'झकोरा'।

झंखना [क्रि. अ.] (हि.) खीजना।

झंखाट* [वि] (हिं.) देखो 'झखाड़'।

झंखाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घनी और कांटेदार झाड़ी या पौधा। २–इस प्रकार के कांटेदार पौधों या झाड़ियों का घना समूह। ३–झड़े हुए पत्तों वाला वृक्ष। ४–व्यर्थ की और रद्दी वस्तुओं का ढेर।

झंगरा [संज्ञा पु.] (देश.) बास का बन। गोल टोकरा। झांपी।

झँगा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'झगा'।

झँगिया* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झँगुली'।

झँगुआ [संज्ञा पु.] (देश.) मठिया नाम के आभूषण में की कुहनी की ओर से तीसरी चूड़ी।

झँगुला* [संज्ञा पु.] देखो 'झगा'।

झँगुलिया, झँगुली* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटे बालकों के पहनने का झगे के समान ढीला कुरता।

झँगूली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झँगुली'।

झंझ [संज्ञा पु.] (हिं.) 'झांझ'।

झंझट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–व्यर्थ का झगड़ा। बखेड़ा।

झँझनाना [क्रि. अ.] (हि.) झनझन शब्द होना।
[क्रि. स.] (हिं.) झनझन शब्द उत्पन्न करना।

झँझर, झञ्झर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झज्झर'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'झंझरी'।

झँझरा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी का जालीदार ढकना।
[वि. स्त्री. झंझरी] जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों।

झँझरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–वह जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों। जाली। २–दिवार में बनी जालीदार खिड़की। झरोखा। ३–दमचूल्हे के पेंदे की जाली। ४–आटा चालने की छलनी।

झँझरीदार [वि.] (हिं.) जालीदार। जिसमें झंझरी या जाली हो।

झंझा, झञ्झा [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह तेज आंधी जिसके साथ वर्षा भी आये। २–तेज आंधी। अंधड़।
[वि.] (सं.) प्रचंड। तीव्र। तेज।

झंझानिल, झञ्झानिल [संज्ञा पु.] (सं.) १–आंधी। प्रचंडवायु। २–देखो झंझा।

झंझार [संज्ञा पु.] (हि.) वह आग की लपट जिसमें धुआं और चिनगारियों के साथ कुछ अव्यक्त शब्द भी निकले।

झंझावात, झञ्झावात [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह आंधी जिसके साथ वर्षा भी हो। २–प्रचंड वायु। आंधी।

झंझी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–फूटी कौड़ी। २–दलाली का धन।

झंझोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी वस्तु को बहुत वेग अथवा झटकेसहित हिलाना। २–किसी बड़े पशु का छोटे पशु को दांतों से पकड़कर मार डालने के निमित्त झटका देना। झकझोरना।

झँझोटी, झँझौटी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झिझौटी'।

झंड+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मुंडन से पहले के छोटे बालकों के केश। २–करील।

झंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े का तिकोना या चौकोर टुकड़ा जिसका एक छोर डंडों में लगा रहता है और दूसरा हवा में लहराता रहता है और जिसका व्यवहार सत्ता, संकेत अथवा उत्सव आदि सूचित करने के लिये होता है। पताका। निशान। ध्वज।

झंडा खड़ा करना–१–झंडा गाड़कर सैनिकों को इकट्ठे होने का संकेत करना। २–आडम्बर करना। *झंडा गाड़ना या फहराना*–किसी स्थान पर अपना अधिकार करके उसके चिह्न-स्वरूप वहां झंडा लगाना। *झंडे तले आना*–युद्ध आदि के निमित्त किसी के साथ होना। *झंडे तले की दोस्ती*–राह चलते की जान पहचान। *झंडे पर चढ़ना*–बहुत बदनामी लेना। *झंडे पर चढ़ाना*–बदनाम करना।

झंडा-अभिवादन [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी संस्था या राज्य की ओर से उनके अपने झंडे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए वंदना करने की रस्म।

झंडा-दिवस [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी संस्था या राज्य की ओर से झंडे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए निर्धारित किया हुआ दिन। फ्लैग-डे।

झंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा झंडा।

झंडीदार [वि.] (हिं.) जिसमें झंडी लगी हो। झंडी वाला।

झंडूलना+ [संज्ञा पु.] देखो 'झंडूला'।

झंडूला [वि.] (हिं.) १–जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों। जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो। (बालक)। ३–सघन। घनी पत्तियों वाला।

[संज्ञा पु.] १–वह बालक जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो। २–गर्भ का बाल जो मूंडा न गया हो। ३–सघन वृक्ष।

झंप [संज्ञा पु.] (सं.) उछाल। फलांग। कुदान। *झंप देना*–कूदना।

[संज्ञा. पु.] (देश.) घोड़े के गले का एक भूषण।

झँपकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झपकना'।

झँपकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झपकी'।

झँपताल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झपताल'।

झँपना [क्रि. अ.] (हिं.) १–छिपना। ओट में होना। २–उछलना। लपकना। ३–टूट पड़ना। ४–झेंपना। लज्जित होना।

झँपरिया, झँपरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पालकी को ढांकने की खोली। ओहार।

झँपाक [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दर।

झँपान [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली जिसमें दोनों ओर दो लम्बे बांस बंधे होते हैं। झप्पान।

झंपित* [वि.] (हिं.) ढंकाहुआ। छिपाहुआ।

झँपोला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. झंपोली, झंपोलिया] छोटा झांप या झाबा। टोकरी।

झंब* [संज्ञा पु.] (देश.) गुच्छा।

झँवकार* [वि.] (हिं.) झाँवले का रंग। कुछ-कुछ काला।

झँवराना [क्रि. अ.] (हिं.) १–कुछ-कुछ काला पड़ना। २–कुम्हलाना।

झंवा [संज्ञा पु.] देखो 'झाँवाँ'।

झँवाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–झाँवे के रंग का हो जाना। कुछ-कुछ काला पड़ जाना। २–आग का मंद पड़ जाना। ३–घट जाना। ४–कुम्हलाना। ५–झांवे से रगड़ा जाना।

[क्रि. स.] (हिं.) १–झाँवे के रंग का अथवा कुछ का लाकर देना। २–चमक या आभा कम होना या घटना। ३–झांवे से रगड़ना या रगड़वाना। ४–कुम्हला देना।

झँसना [क्रि. स.] (हिं.) १–सिर अथवा तलवे आदि पर कोई चिकना पदार्थ रगड़ना। २–धोखा करके धन आदि लेना।

झ [संज्ञा पु.] (सं.) १–झंझावात। २–वृहस्पति। ३–दैत्यराज। ४–ध्वनि। ५–तेज हवा। तीव्र वायु।

झइं*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झाईं'।

झईं*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झाईं'।

झउआ, झउवा [संज्ञा पु.] (हिं.) झाबा। टोकरा

झक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सनक। धुन। खब्त।

झककेतु* [संज्ञा पु.] देखो 'झषकेतु'।

झकझक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–व्यर्थ की हुज्जत या कहा-सुनी। तकरार। २–बकवाद।

झकझका [वि.] (हिं.) चमकीला। चमकदार।

झकझकाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जगमगाहट। चमक।

झकझेलना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झकझोरन'।

झकझोर [संज्ञा पु.] (हिं.) झटका। झोंका।
[वि.] (हिं.) झोंकेदार। तेज।

झकझोरना [क्रि. स.] (हिं.) झटका देना। झंझोरना।

झकझोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) झटका। झोका। धक्का।

झकझोलना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झकझोरना।

झकड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झक्कड़'।

झकड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दूध दोहने का पात्र।

झकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–बकवाद
२–क्रोध में अनुचित या बेहूदी बात

झकर+ [संज्ञा पु.] देखो 'झक्कड़'।

झका* [वि.] (हिं.) चमकीला।

झकाझक [वि.] (हिं.) चमकीला। उज्ज्वल।

झकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'झ' मात्रवर्ण।

झकुराना* [क्रि. अ.] (हिं.) झकोरा
झूमना।

झकोर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हवा का झोंका। पवन की हिलोर। २–झटका। झोंका।

झकोरना [क्रि. अ.] (हिं.) हवा का झोंका

झकोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) हवा का झोंका। वायु का वेग।

झकोल*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झकोर' या 'झकोरा'।

झक्क [वि.] (अ.) खूब साफ और चमकता हुआ
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'झक'।

झक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) तेज आंधी। तेज वायु। अंधड़।

झक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वायु का तीव्र झोंका। २–झक्कड़। आँधी।

झक्की [वि.] (हिं.) १–बहुत बकबक करनेवाला जिसे कुछ झक या सनक सवार हो।

झक्खना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खीजना'

झख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झीखने की क्रिया
झख मारना–व्यर्थ के कार्यों में समय

झखकेतु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झषकेतु'।

झखना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'खीजना'

झखनिकेत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झषनिकेत'

झखराज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झषराज'।

झखलगन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

झखी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मीन। मछली।

झगड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) झगड़ा करना।

झगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी बात पर
वाली कहासुनी या आवेशपूर्ण विवाद। लड़ाई। तकरार। हुज्जत।

झगड़ालू [वि.] (हिं.) बात-बात पर
वाला। कलह-प्रिय। लड़ाका।

झगड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपने नेग
कार) के लिए झगड़ा करने वाली।

झगर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की

झगरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झगड़ना'।

झगरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झगड़ा'।

झगराऊ+* [वि.] (हिं.) देखो 'झगड़ालू'।

झगरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झगड़ी'।

झगला*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झगा'।

झगा [संज्ञा प.] (?) बच्चों के पहनने का
प्रकार का कुरता।

लिया*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झगा।

ली*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झगा। झगुलिया।

[संज्ञा पु.] (हिं.) पानी रखने का मिट्टी का बरतन। इसका व्यवहार गरमी के दिनों में जल ठंडा रखने के लिए किया जाता है।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–फूटी कौड़ी। २–दलाली का धन।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भय की आशका से ने की क्रिया। २–झुँझलाहट। ३–रह-रह कर आने वाली दुर्गंध। ४–रह-रह कर होने वाला पागलपन का दौरा।
निकलना–भय की आशंका नष्ट होना।
निकालना–भय दूर करना।

*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झझकने का भाव।

[क्रि. अ.] (हिं.) १–डर या चौंककर सहसा रुक जाना। ठिठकना। भड़कना। २–झुंझलाना।

[क्रि. स.] (हिं.) १–भय की आशंका करके किसी काम से रोक देना। चम-ना। २–चौंका देना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झझकारने की क्रिया।

[क्रि. स.] (हिं.) १–डाँटना। डपटना गुरुराना। ३–अपने सामने कुछ न ना।

[क्रि. वि.] (हिं.) तुरन्त। तत्क्षण। उसी समय।
से–शीघ्रतापूर्वक।

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'झटका'।

[क्रि. स.] (हिं.) १–झटके से हलका धक्का देना। २–किसी वस्तु को जोर से हिलाना। झोंका या झटका देना। ३–दबाव डालकर चालाकी से किसी वस्तु को लेना। ऐंठना।
कर–झटके से। तेजी से। झटके का माल–छीना या चुराया हुआ माल।

[क्रि. अ.] (हिं.) रोग या चिन्ता से क्षीण होना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–झटकने की क्रिया या भाव। २–हलका धक्का। झोंका। ३–मांस के लिए पशु-पक्षी काटने का वह ढंग जिसमें उसे हथियार के एक ही प्रहार से काट डाला जाता है। ४–आपत्ति, रोग, शोक आदि का आघात। ५–कुश्ती का एक पेंच।

[क्रि. स.] (हिं.) झटकना।

[अव्य.] (हिं.) तत्क्षण। फौरन। तुरन्त ही।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूआंवला।

[क्रि. वि.] (हि.) देखो 'झड़ाका'।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बौछार।

झटिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झाटा'।

झटित+* [क्रि. वि.] (सं.) १–झट। तत्काल। तुरन्त। २–बिना समझेबूझे।

झट्ट [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'झट'।

झड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'झड़ी'। २–ताले के भीतर का खटका जो ताली द्वारा हटकर ताले को खोलता है।

झड़कना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झिड़कना'।

झड़का+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झड़ाका'।

झड़झड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १–देखो 'झड़कना। २–देखो' 'झंझोड़ना'।

झड़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–झड़ने की क्रिया या भाव। २–झड़ी हुई वस्तु।

झड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी वस्तु के से उसके छोटे-छोटे अंगों का कट या टूटकर गिरना। २–अधिक संख्या से गिरना। ३–झाड़ा या साफ किया जाना।

झड़प [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दो प्राणियों की सामान्य मुठभेड़। लड़ाई। २–क्रोध। गुस्सा ३–आवेश। ४–आग की लपट।

झड़पना [क्रि. अ.] (हिं.) १–आक्रमण करना। वेग से किसी पर टूट पड़ना। २–लड़ना। झगड़ना। ३–छीप लेना। ४–बलपूर्वक किसी से कुछ छीन लेना।

झड़पाझड़पी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हाथापाई।

झड़पाना [क्रि. स.] (हिं.) दो प्राणियों को लड़ाना।

झड़बेरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–जंगली बेर। २–जंगली बेर का पौधा।
झड़बेरी का काँटा–व्यर्थ झगड़ा करने वाला व्यक्ति।

झड़बैरी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झड़बेरी'।

झड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) झाड़ने का काम दूसरे से कराना।

झड़ाक [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'झड़ाका'।

झड़ाका (हि.) दो प्राणियों की परस्पर मुठभेड़।
[क्रि. वि.] (हिं.) जल्दी से। चटपट।

झड़ाझड़ [क्रि. वि.] (हिं.) १–लगातार। २–जल्दी-जल्दी।

झड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी वस्तु से लगातार कुछ झगड़ने की क्रिया। २–कुछ समय तक लगातार होने वाली वर्षा। ३–निरन्तर बहुत-सी बातें कहते जाना या चीजें रखते, देते या निकालते जाना। ४–ताले के भीतर का खटका।

झणत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) झनझन का शब्द।

झन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी धातुखंड से उत्पन्न शब्द।

झनक [संज्ञा स्त्री] (हिं.) झनकार या झनझन का शब्द।

झनकना [क्रि. अ.] (हि) १–झनकार का शब्द। २–क्रोध आदि में हाथ पैर पटकना। ३–चिड़चिड़ाना। ४–देखो 'खीझना'।

झनकमनक [संज्ञा स्त्री] (हिं.) आभूषण आदि से उत्पन्न मंद-मंद झनकार।

झनकवात [संज्ञा स्त्री] (हिं.) घोड़ों का एक रोग।

झनकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–झनझन शब्द। झनझनाहट। २–झींगुर आदि का बोलने का शब्द।

झनकारना [क्रि. अ., क्रि. स.] (हिं.) झनझन शब्द होना या करना।

झनझन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झनकार। झनझनाहट।

झनझना [संज्ञा पु.] (देश.) एक तमाखू का कीड़ा।
[वि.] (हिं.) जिसमें झनझन शब्द उत्पन्न होता हो।

झनझनाना [क्रि. अ.] (हिं.) झनझन शब्द होना।
[क्रि. स.] (हिं.) झनझन शब्द उत्पन्न करना।

झनझनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–झंकार। २–झुनझुनी।

झनझोरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

झननन [संज्ञा पु.] (हिं.) झनझन शब्द। झनकार।

झननाना [क्रि. अ., स.] (हिं.) झनझन शब्द होना या करना।

झनवाँ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

झनस [संज्ञा पु.] (?) एक प्राचीन बाजा जो चमड़े में मढ़ा होता था।

झनाझन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झंकार। झनझन शब्द।
[क्रि. वि.] (हिं.) झनझन शब्द सहित।

झनियाँ [वि.] (हिं.) देखो 'झीना'।

झन्नाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झनझनाहट। झनकार का शब्द।

झप क्रि. वि.] (हि.) तुरन्त। झट। जल्दी से।
झपखाना–पतंग का झट पेंदी के बल गिर पड़ना।

झपक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–पलक गिरने भर का समय। २–पलक का गिरना। ३–सामान्य या हलकी निद्रा। ४–लज्जा। हया। शर्म।

झपकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–पलक गिरना। २–झपकी लेना। ३–झपटना। ४–ढकेलना। ५–झेंपना। ६–डरना।

झपका [संज्ञा पु.] (हि.) हवा का झोंका।

झपकाना [क्रि. स.] (हिं.) पलक गिराना।

झपकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हल की निद्रा। ऊँघाई। २–आंख झपकने की क्रिया या भाव

३-अन्न ओसाने का वस्त्र । ४-चकमा । धोखा ।

झपकौंहाँ [वि.] (हिं.) नींद या नशे से झपकता हुआ (नेत्र) ।

झपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झपटने की क्रिया या भाव । २-झड़प ।
लपट-झपट–लपटने और झपटने की क्रिया या भाव । *झपट लेना*–तत्त्तण बढ़कर छीन लेना ।

झपटना [क्रि. अ.] (हिं.) आक्रमण करने अथवा चलने के निमित्त तेजी से आगे बढ़ना ।
किसी पर झपटना–किसी पर आक्रमण करना

झपटान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झपटने की क्रिया या भाव । झपट ।

झपटाना [क्रि. स.] (हिं.) आक्रमण करना । वार कराना । किसी को झपटने में प्रवृत्त करना ।

झपटानी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का लड़ाकू हवाईजहाज, जो झपटकर शत्रु की सेना या प्रदेश पर आक्रमण करता है ।

झपट्ट+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झपट' ।

झपट्टा+ [संज्ञा पु.] देखो 'झपट' ।

झपताल [संज्ञा पु.] (देश.) संगीत में पाँच मात्राओं का एक ताल ।

झपना [क्रि. अ.] (हिं.) १-(पलकों का) गिरना । आंखें झपकना । २-झुकना । ३-झेंपना ।

झपलैया+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झंपोला'

झपवाना [क्रि. स] (हिं.) किसी को झपाने में प्रवृत्त करना ।

झपस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुंजान होने की क्रिया या भाव ।

झपसना [क्रि. अ.] (हिं.) वृक्ष या लता की शाखाओं का सघन होकर फैलना ।

झपाका [संज्ञा पु.] (हिं.) शीघ्रता । जल्दी ।
[क्रि. वि.] (हिं.) जल्दी से । शीघ्रतापूर्वक ।

झपाट+ [क्रि. वि.] (हिं.) झटपट । तुरन्त ।

झपाटा [संज्ञा पु.] (हिं.) चपेट । आक्रमण ।

झपाना [क्रि. स.] (हिं.) १-मूँदना । बंद करना (पलकें) २-झुकाना । ३-देखो 'झिपाना' ।

झपाव [संज्ञा पु.] (देश.) एक घास काटने का औजार ।

झपित [वि.] (हिं) १-झपा हुआ । मुँदा हुआ । झपकौंहा । उनींदा । ३-लज्जित । लजालू ।

झपिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-हँसुली का सा गले का एक गहना । २-पेटारी । पच्छी ।

झपेट [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झपट' ।

झपेटना [क्रि. स.] (हिं.) दबोचना । आक्रमण करके दबा लेना ।

झपेटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आक्रमण । चपेट । २-भूत-प्रेत आदि की बाधा । ३-हवा का झोंका ।

झपोला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झँपोला' ।

झपोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झंपोला' ।

झप्पड़, झप्पर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) थप्पड़ ।

झप्पान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झंपान' ।

झप्पानी [संज्ञा पु.] (हिं.) झप्पान नामक सवारी उठाने का मजदूर ।

झबझबी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक कान का आभूषण ।

झबड़ा [वि.] (हिं.) देखो 'झबरा' ।

झबधरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गेहूँ को हानि पहुँचाने वाली एक घास ।

झबरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. झबरी] बहुत लम्बे और बिखरे हुए बालों वाला ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) नर-भालू (कलंदर) ।

झबरीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. झबरीली] लम्बा और बिखरा हुआ (बाल) ।

झबरैरा*+ [वि.] (हिं.) देखो 'झबरीला' ।

झबा [संज्ञा पु.] देखो 'झब्बा' ।

झबार, झबारि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झगड़ा ।

झबिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा झाबा ।

झबुआ+ [वि.] (हिं.) देखो 'झबरा' ।

झबुकना + [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना । झमकना

झब्बा [संज्ञा पु.] तारों या सूतों आदि का गुच्छा या फुंदना जो कपड़ों या आभूषणों में शोभा के निमित्त लगाते हैं ।

झमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-'चमक' का अनुकरण । २-प्रकाश । उजेला । ३-झमझम शब्द । ४-ठसक अथवा नखरे की चाल ।

झमकड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'झमक' ।

झमकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रहरहकर चमकना । २-झम शब्द अथवा झनकार होना । ३-युद्ध या लड़ाई में हथियारों का चमकना या खनकना ।

झमकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-चमकाना । २-चलने में गहने आदि बजाना और घमकाना । ३-युद्ध में हथियारों आदि को चमकाना और खनखनाना ।

झमकारा [वि.] (हिं.) झमाझम बरसने वाला (बादल) ।

झमझम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घुघरू आदि के बजने का शब्द । २-चमकदमक ।
[क्रि. वि.] १-झमझम-शब्दसहित । २-चमकदमक के साथ ।
[वि] चमकदार । आभायुक्त ।

झमना [क्रि. अ.] झुकना । नम्र होना । दबना ।

झमा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झाँवाँ' ।

झमाका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी बरसने या गहनों के बजने आदि का शब्द । २-ठसक । मटक । नखरा ।

झमाझम [क्रि वि] (हिं.) १-उज्ज्वल कांति सहित । २-झमझम-शब्दसहित ।

झमाट [संज्ञा पु.] (हिं.) झुरमुट ।

झमाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छाना । झपकना । २-देखो 'झँवाना' ।
[क्रि. स.] एकत्र करना ।

झमूरा [संज्ञा पु.] (?) १-घने बालों पशु । २-ढीलेढाले कपड़े पहनने बालक । ३-कोई प्यारा बच्चा ।

झमेल [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झमेला' ।

झमेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बखेड़ा । झंझट । २-भीड़भाड़ ।

झमेलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) झमेला करने वाला । झगड़ालू ।

झर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पानी गिरने का निर्झर । २-झरना । सोता । ३-समूह । तेजी । वेग । ५-झड़ी । लगातार वृष्टि । लपट । झाल । ताप । ७-ताले का किसी वस्तु की लगातार वर्षा ।

झरक** [संज्ञा स्त्री.] देखो

झरकना [क्रि. स.] (हिं.) १-झलकना । कना ।

झरझर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जल के बूंदे बरसने अथवा हवा के चलने का शब्द ।

झरझराना [क्रि. स.] १-झरझर-शब्द गिराना । २-देखो झड़झड़ाना ।

झरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झरने की २-वह जो झरा हो । ३-देखो 'झड़न' ।

झरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-झड़ना । २-ऊंचे स्थान से जल की धारा का गिरना ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऊंचे स्थान से गि वाला जलप्रवाह । २-लगातार बहने वा जल की छोटी धारा । सोता । चश्मा । ३-अनाज छानने की एक प्रकार की ४-लम्बी डंडी की छेद वाली चिपटी पौना ।
[वि.] (हिं.) झरने वाला ।

झरनि*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झरन' ।

झरनी+ [वि.] (हिं.) देखो 'झरना' ।

झरप*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झोंका । २-वेग । तेजी । ३-चाँड़ । टेक । ४-चिक । परदा । ५-देखो 'झड़प' ।

झरपना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-चौंकार २-देखो 'झड़पना' ।

झरपेटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झपट' ।

झरबेर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झड़बेरी' ।

झरबेरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

झरवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे को प्रवृत्त करना । २-देखो 'झड़वाना' ।

झरसना** [क्रि. अ.] (हिं) १-देखो २-मुरझाना । कुम्हलाना ।
[क्रि स.] (हिं.) १-झुलसाना । देना । सुखाना ।

[illegible]* [क्रि. अ.] (हिं.) झरझर शब्द करना।

[illegible]* [वि.] (हिं.) देखो 'झँझरा'।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना।
[क्रि. स.] (हिं.) १–झटकना। झाड़ना। २–पेड़ की डाल हिलाना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) पानी से भरे हुए खेत में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का धान।

[illegible] [क्रि. वि.] (हिं.) १–झरझर शब्दसहित। २–निरन्तर। लगातार। ३–वेगसहित।

[illegible] [संज्ञा पु.] [वि.] देखो 'झलाबोर'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झड़ी'।

[illegible] [वि.] (सं.) गलित। गला हुआ।

[illegible]+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिलमन। चिक।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पानी का झरना। २–थड़ी पर बैठने वाले दूकानदारों से किराये के रूप में लिया जाने वाला धन। [illegible] 'झड़ी'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

[illegible] [संज्ञा पु.] वायु और प्रकाश आने के लिए दीवारों आदि में बनी हुई झँझरी या जालीदार छोटी खिड़की या मोखा। गवाक्ष।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १–डमरू। २–कलियुग। ३–झाँझ। ४–पैर में पहनने का झांझर नामक गहना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) कलियुग।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वेश्या। रंडी। २–पानी का शब्द। [वि.] (हिं.) देखो 'झरझरा'

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गंगा। २–कटसरैया।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तारादेवी का एक नाम।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) झाँझ नामक बाजा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १–देश। २–शरीर। ३–चित्र।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) १–बया नामक पक्षी। २–एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) बया नामक पक्षी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दाह। जलन। आँच। २–कामना। उत्कट इच्छा। ३–संभोग की इच्छा। ४–क्रोध। गुस्सा। ५–समूह।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चमक। दमक। आभा। द्युति। प्रभा। प्रकाश। २–प्रतिबिम्ब। आकृति का आभास।

झलकदार [वि.] (हिं.) चमकने वाला। चमकीला

झलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–चमकना। दमकना। २–आभास होना। कुछ-कुछ प्रकट होना।

झलकनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झलक'।

झलका [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर पर पड़ा हुआ छाला या फफोला।

झलकाना [क्रि. स.] (हिं.) १–चमकाना। दमकाना। २–दरसाना। कुछ आभास देना।

झलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झलक'।

झलझल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमक। दमक।
[क्रि. वि.] (हिं.) रह-रहकर चमकते हुए प्रकाश या आभासहित।

झलझलाना [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना।
[क्रि. स.] (हिं.) चमकाना।

झलझलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमक। दमक।

झलना [क्रि. स.] (हिं.) १–हवा करने के लिए पंखा या अन्य वस्तु का हिलना। २–ढकेलना। ठेलना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी वस्तु के अग्रभाग का इधर-उधर हिलना। २–शेखी बघारना। ३–झेलना। ४–झालना का अकर्मक रूप।

झलमल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–अंधेरे में रह-रहकर होने वाला अल्प प्रकाश। २–चमकदमक। ३–अस्पष्ट प्रकाश।
[क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'झलझल'।

झलमला [वि.] (हिं.) चमकीला। चमकता हुआ।

झलमलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–रहरहकर चमकना। चमचमाना। प्रकाश का हिलना डोलना।
[क्रि. स.] प्रकाश को हिलाना डुलाना। चमकाना।

झलरा* [संज्ञा पु.] देखो 'झालर'।

झलराना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) फैलकर छाना। बढ़ना।

झलरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हुडुक नामक बाजा। २–बजाने की झांझ।

झलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–झलने का काम दूसरे से कराना। २–झालने का काम दूसरे से करवाना।

झलहाया [संज्ञा पु.] (हिं.) ईर्ष्या करने वाला व्यक्ति।

झला*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हलकी वर्षा। २–झालर। ३–पंखा। ४–समूह।
[संज्ञा स्त्री.] आतप। धूप।

झलाझल [वि.] (हिं.) चमकता हुआ।

झलाझली [वि.] (हिं) चमकीला। चमकदार।
[संज्ञा स्त्री.] झलाझल होने की क्रिया या भाव।

झलाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झलवाना'।

झलाबोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–साड़ी या दुपट्टे का चौड़ा आँचल जो कलाबत्तू का बना होता है। २–कारचोबी। ३–एक प्रकार की आतिशबाजी। +४–काँटा। झाड़ी। ५–चमक। दमक।
[वि.] चमकीला। चमकदमक वाला।

झलामल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमक। दमक।
[वि.] चमकीला। चमकदमक।

झल्ल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पागलपन।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–भांड़ या विदूषक। २–हुडुक नामक बाजा। ३–लपट। ज्वाला। ४–एक वर्णसंकर जाति।

झल्लकंठ [संज्ञा पु.] (सं.) परेवा।

झल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) १–काँसे का बना हुआ करताल। झाँझ। २–मँजीरा। जोड़ी।

झल्लना* [क्रि. अ.] (हिं.) बहुत झूठीमूठी बातें करना। बहुत डींग हाँकना।

झल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हुडुक नाम का बाजा। झांझ। ३–स्वेद। पसीना। ४–पसेव।

झल्ला [संज्ञा पु.] (देश.) १–खांचा। बड़ा टोकरा। २–वृष्टि। वर्षा। ३–बौछार। ४–तमाखू के पत्तों में पड़ जाने वाले दाने।
[वि.] (हिं.) १–जो गाढ़ा न हो। २–पागल। वज्रमूर्ख।

झल्लाना [क्रि. अ.] (हिं.) खिजलाना। किटकिटाना। बहुत चिढ़ना।
[क्रि. स.] (हिं.) झल्लाने या खिजलाने को प्रेरित करना।

झल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अंगोछा। बदन पोंछने का कपड़ा। २–पोंछने से आने वाली शरीर की मैल। ३–दीप्ति। प्रकाश। ४–सूर्य की किरणों का तेज।

झल्ली* [वि.] (हिं.) १–गप्पी। बातूनी। बकवादी। २–पगली।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुडुक के समान एक बाजा।

झल्लीपक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

झवर* [संज्ञा पु.] (हिं.) झगड़ा।

झष* [संज्ञा पु.] (सं.) १–मीन। मछली। २–मगर। मकर। ३–ताप। गरमी। ४–वन। ५–मीनराशि। ६–देखो 'झख'।

झषकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

झषनिकेत [संज्ञा पु.] (सं.) १–जलाशय। २–समुद्र।

झषराज [संज्ञा पु.] (सं.) मकर। मगर।

झषलग्न [संज्ञा पु.] (सं.) मीनलग्न।

झषांक [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

झषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागबला। गुलसकरी।

झषाशन [संज्ञा पु.] (सं.) सूंस नामक जल-जन्तु'

झषोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मत्स्यगंधा।

झहनना* [क्रि अ] (हिं.) १–झन्नाना। सन्नाटे में आना। २–रोएँ खड़े होना।

रोमांच होना । ३-झनझन शब्द होना ।

झहनाना [क्रि स.] (हिं.) १-'झहनना' का सकर्मक रूप । १-झनकारना ।

झहरना※+ [क्रि. अ] (हिं.) १-झरझर शब्द करना । (शरीर आदि का) शिथिल या ढीला पड़ना ।
[क्रि. स.] (हिं) झल्लाना । झिड़कना ।

झहराना※ [क्रि. अ.] (हि.) १-झरझर शब्द करना । २-शिथिल या ढीला होना । ३-झल्लाना । ४-हिलना ।
[क्रि. स.] (हिं.) 'झहरना' का सकर्मक रूप ।

झाँई [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-प्रतिबिम्ब । परछाईं । झलक । छाया । आभा । २-अंधकार । अंधेरा । ३-धोखा । छल । ४-प्रतिध्वनि । ५-रक्त विकार से शरीर पर पड़ने वाले काले धब्बे । ६-किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग़ ।
झाँई-झप्पा–धोखाधड़ी । *झाँई बताना*–छल या धोखा करना ।

झांईमांई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) बच्चों का एक प्रकार का खेल ।
झाँई-माँई होना–अदृश्य हो जाना ।

झांक [संज्ञा स्त्री.] (हिं) झांकने की क्रिया या भाव ।
ताक-झांक–रह-रहकर बारबार देखने की क्रिया ।

झांकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आड़ या बगल में से कुछ छिपकर देखना । २-इधर-उधर झुककर देखना ।

झाँकनी※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झांकी । दर्शन । २-कुआं (कहार) ।

झांकर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झंखाड़' ।

झाँका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जालीदार खांचा । २-झरोखा ।

झाँकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झांकने या देखने की क्रिया या भाव । अवलोकन । दर्शन । २-वह जो झांका या देखा जाय । दृश्य । ३-वह जिससे झांका जाय । झरोखा ।

झाँख [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का बड़ा जंगली हिरन ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेल आदि में उठने वाली तीव्र गंध ।

झाँखना※+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झींखना' ।

झाँखर [संज्ञा पु.] (हिं.) '-झंखाड़ । २-फसल काटने के उपरान्त खेत में खड़ी अरहर की खूंटियाँ ।

झाँगला [वि] (देश.) ढीलाढाला (कपड़ा) ।

झुँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झगा' ।

झाँजन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'झाँझन' ।

झाँझ [संज्ञा स्त्री] (हि) १-मंजीरे के समान वर्तुलाकार टुकड़ों का जोड़ा जो पूजन के समय बजाया जाता है । छैना । २-क्रोध । गुस्सा । ३-पाजीपन । शरारत । ४-किसी दुष्ट मनोविकार का आवेग । ५-सूखा हुआ कुआँ या तालाब । ६-भोग की कामना । ७-देखो 'झांझन' ।

झाँझड़ी※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'झाँझ' २-देखो 'झाँझन' ।

झाँझन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैर में पहनने का एक आभूषण । पायल । पैंजनी ।

झाँझर※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झाँझन । पायल । २-छलनी ।
[वि.] (हिं.) १-पुराना । जर्जर । २-खेवनहार ।

झाँझरि※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झाँझर' ।

झाँझरी※ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-झांझ नामक बाजा । २-झांझन नामक पैर का गहना ।

झाँझा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का कीड़ा । २-घी और चीनी मिलाकर भूनी हुई भांग की फंकी । ३-सेव छानने का पौना ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'झांझ' । २-झंझट । बखेड़ा ।

झाँझिया [संज्ञा पु.] (हिं.) झांझ बजाने वाला व्यक्ति ।

झाँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुरुष या स्त्री की मुत्रेन्द्रिय पर के बाल । पशम । शष्प । २-बहुत तुच्छ वस्तु ।

झाँटा+ [संज्ञा पु.] (देश.) झंझट ।

झाँटि※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झाँट' ।

झाँप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी चीज़ को ढाँपने की वस्तु । ऊपरी आवरण । २-झपकी । ३-कान का एक गहना । ४-चिक । पर्दा ।
[संज्ञा पु.] (हि.) उछलकूद ।

झाँपड़※ [संज्ञा पु.] (हिं.) थप्पड़ ।

झाँपना [क्रि. स.] (हिं.) १-ढकना । आवरण डालना । ओट या आड़ में करना । २-लजाना झेंपना ।

झाँपी※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढांपने की टोकरी । २-मूंज की बनी हुई पिटारी । ३-झपकी । ऊँघ ।

झाँपो [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-छिनाल स्त्री २-खंजनपक्षी ।

झाँवसाँव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बकवाद । बकबक । २-हुज्जत । तकरार ।

झाँवना※ [क्रि. स.] (हिं.) झाँवे से रगड़कर धोना ।

झाँवर [वि.] (हिं.) १-झाँवे के रंग का । कुछ-कुछ काला । २-मुरझाया या कुम्हलाया हुआ । ३-धीमा । मन्द ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह नीची भूमि जहां जल ठहरता हो । डाबर ।

झाँवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झलक । २-[illegible] से किया हुआ संकेत । कनखी ।
झाँवली देना–आँख से संकेत करना ।

झांवां [संज्ञा पु.] (हिं.) जली हुई ईंट । [illegible] काली पड़ी हुई ईंट ।

झांसना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठगना । धोखा देना । २-किसी स्त्री को व्यभिचार में प्रवृत्त करना ।

झांसा [संज्ञा पु.] (हिं.) धोखाधड़ी । छल । [illegible]काने की चाल ।
झाँसापट्टी–धोखाधड़ी ।
झाँसे में आना–धोखे में आना ।

झाँसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देने वाला व्यक्ति । धोखेबाज ।

झाँसी [संज्ञा पु.] (देश.) फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का गोबरैला ।

झाँसू [संज्ञा पु.] (हिं.) झाँसा देने वाला । धोखेबाज ।

झा [संज्ञा पु.] (हिं.) मैथिल ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

झाईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झाँईं' ।

झाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा झाड़ जिसकी टहनियों की टोकरियां और रस्सियाँ बनती हैं और सूखी लकड़ी जलाने के काम आती है । पिचुल । अफल ।

झाग [संज्ञा पु.] (हिं.) फेन । गाज ।

झागड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) झगड़ा । तकरार ।

झागना+ [क्रि. अ.] (हिं.) झाग उत्पन्न होना । फेन निकलना ।
[क्रि. स.] (हिं.) झाग उत्पन्न करना । फेन निकालना ।

झाझ +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झांझ' ।

झाट [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा स्थान जो लता-लताओं से आच्छादित हो । लतागृह ।

झाटकपट [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार की [illegible] या सम्मान प्रदर्शन ।

झाटल [संज्ञा पु.] (सं.) मोखा नाम का वृक्ष ।

झाटा+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूही । २-भुइँ आँवला ।

झाटिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुइँआँवला ।

झाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह छोटा वृक्ष जिसकी डालियां भूमि के बहुत पास से निकलकर चारों ओर फैली रहती हैं । २-इस आकार का रोशनी करने का वह उपकरण जो छत पर लटकाया या जमीन में रखा जाता है । ३-एक प्रकार की आतिशबाजी । ४-छींटों का एक प्रकार का छापा ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झाड़ने की क्रिया या भाव । २-डाँटडपट । फटकार । ३-मन्त्र पढ़कर झाड़ने या फूँकने की क्रिया ।
झाड़-पोंछ–झाड़ और पोंछ कर साफ करने का काम ।

[संज्ञा पु.] (हिं) झटका (कुश्ती)।
[संज्ञा पु.] (हिं.) जंगल। वन।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–कांटेदार
ड़ियों का समूह। २–निकम्मा और टूटी-
वस्तुओं का समूह।
[वि.] (हिं.) १–सघन। घना। २–
। ३–जिसपर झाड़ या बेलबूटे आदि
हों।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का कसीदा
जिसमें बड़े-बड़े बेलबूटे होते हैं। २–बड़े-बड़े
बेलबूटों वाला गलीचा।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं) १–वह जो झाड़ने के
निकले। २–वह कपड़ा जिसके द्वारा
झाड़ी अथवा साफ की जाती है।
[क्रि. स.] (हिं.) १–ऊपर पड़ी हुई वस्तु
से हटाना या गिराना। २–दूर करना।
। ३–अपनी योग्यता प्रदर्शित करने के
गढ़कर बातें करना। ४–किसी वस्तु
हुई धूल आदि हटाने के लिए उसे
झटका देना या झाड़ू देना। ५–किसी
पड़ी अथवा लगी वस्तु पर झटके
गिराना। झटकारना। ६–किसी से धन
। झटकना। ७–रोग अथवा प्रेत-बाधा
करने के निमित्त मंत्र आदि पढ़ कर
ना। ८–डांटना। फटकारना।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं) रोग या प्रेत आदि
बाधाओं के निवारण के लिए मंत्र पढ़कर
ना।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं) झाड़ने या
बुहारने की क्रिया। सफाई।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–झाड़फूंक। २–
। ३–मल। ४–सितार के सब
तारों का एक साथ बजना। ५–पाखाना। टट्टी
मलोत्सर्ग का स्थान।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छोटा झाड़ या
पौधा। २–छोटे-छोटे पेड़ों का समूह। ३–
सूअर के बालों की कूंची।
[वि.] (हिं.) १–झाड़ी के समान।
छोटे झाड़ का-सा। २–कंटीला। कँटेदार।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लम्बी-लम्बी सींकों
आदि का समूह जिससे बुहारा जाता है।
। कूंचा। २–पुच्छलतारा। केतु।
देना–सफाई करना। झाड़ू फिरना–
सफाया हो जाना। कुछ न रहना। झाड़ू
–बिलकुल नष्ट कर देना। झाड़ू मारना–
–घृणा करना। २–निरादर करना।
[संज्ञा पु.] (हिं) झाड़ू के समान फैली
हुई दुमवाला हाथी।
[संज्ञा पु] (हिं.) १–झाड़ू देने वाला
। महतर।

झाड़ूवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झाड़ूबरदार'।

झापड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) थप्पड़। तमाचा।
झापड़ कसना, देना–थप्पड़ मारना।

झाबर [संज्ञा पु.] (?) दलदली भूमि।
[संज्ञा पु.] (हि.) झाबा। टोकरा।

झाबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–टोकरा। खाँचा। २–देखो 'झब्बा'।

झाबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोटा झाबा। टोकरी।

झाम*+ [संज्ञा पु.](देश.) १–झब्बा। गुच्छा २–एक प्रकार की बड़ी कुदाल। ३–घुड़की। डाँट। डपट ४–छल। धोखा। कपट।

झामक [संज्ञा पु.] (सं.) जली हुई ईंट। झांवा।

झामर [संज्ञा पु.] (सं.) १–टेकुआ रगड़ने की सान। सिल्ली। २–पैर में पहनने का एक गहना।

झामरा* [वि.] (हिं.) मैला।

झामी [संज्ञा पु.] (हिं.) धोखेबाज। चालाक। धूर्त्त।

झायँझायँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बकवाद। बकबक। २–हुज्जत। तकरार।

झार [वि.] (हिं.) १–केवल। एकमात्र। निपट। २–कुल। सब। संपूर्ण। ३–झुंड।
[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–दाह। डाह। जलन। ईर्ष्या। २–आंच। लपट। ३–झाल।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–झरना। पौना। २–एक पेड़ का नाम।

झारखंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वैद्यनाथ से जगन्नाथपुरी तक का एक प्राचीन प्रदेश। २–जंगल।

झारन [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झाड़न'।

झारना [क्रि. स.] (हि.) १–बालों में कंघी करना। २–छांटना। अलग करना। ३–देखो 'झाड़न'

झारफूंक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झाड़फूंक'।

झारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पतली छनी हुई भांग। २–अन्न को साफ करने का एक प्रकार का सूप। झरना।

झारि*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'झार'।

झारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पानी रखने का एक प्रकार का टोंटीदार बरतन। २–वह पानी जिसमें अमचूर, जीरा नमक आदि घुला हो। ३–देखो 'झाड़ी'।

झारू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झाड़ू'।

झारेवाला+ [वि.] (?) पटा खेलने वाला।

झाल [संज्ञा पु.] (हिं.) झांझ (बाजा)।
[संज्ञा पु.] (देश.) १–रद्दे का बड़ा खांचा। २–झालने की क्रिया या भाव।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चरपराहट। तीतापन। २–तरंग। लहर। ३–ज्वाला। ताप। ईर्षा। बाढ़। ४–कामेच्छा। चुल। ६–विरन्वर दो-तीन दिन की वर्षा की झड़ी।
[वि.] (हिं.) देखो 'झार'।

झालड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पूजा मे बजाया जाने वाला घड़ियाल। २–देखो 'झालर'।

झालना [क्रि. स.] (?) १–धातु की वस्तुओं को टांका लगाकर जोड़ना। २–पीने की वस्तु को ठंडा करने के निमित्त बरफ में दबाना।

झालर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी वस्तु के छोर पर लटकता हुआ किनारा जो शोभा के निमित्त लगाया जाता है। २–इस आकार की कोई लटकती हुई वस्तु। ३–झांझ। ४–पूजा के समय बजने वाला घड़ियाल।

झालरदार [वि.] (हिं.) जिसमें झालर लगी हो।

झालरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झलराना'।

झलरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हुमेल नामक आभूषण। २–बावली। चौड़ा कुआं। ३–कुंड।

झाला [संज्ञा पु.] (देश.) १–राजपूतों की एक जाति। २–मकड़ी का जाला।

झालि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी की झड़ी।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की कांजी।

झावर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झाबर'।

झावुक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'झाऊ'।

झिंग* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तरोई। तोरी।

झिंगन [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक प्रकार का पेड़। २–सारस्वत ब्राह्मणों की एक जाति।

झिंगवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

झिंगाक, झिङ्गाक [संज्ञा पु.] (सं.) तोरई। तरोई।

झिंगिनी, झिङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष।

झिंगी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झिंगिनी'।

झिंगुली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे बच्चों के पहनने का कुरता। झगा।

झिंझिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे-छोटे छेदों वाला छोटा घड़ा जिसमें दीवा जलाकर लड़कियां कुआर के महीने में घुमाती हैं।

झिंझिरिष्टा, झिञ्झिरिष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिंझरीटा नामक पौधा।

झिंझिरीटा [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

झिंझी, झिञ्झी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिल्ली। झींगुर।

झिंझोटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दिन के चौथे पहर में गाई जाने वाली सम्पूर्ण राग की एक रागिनी।

झिंटी, झिण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठसरैया। पियाबासा।

झिगड़ा+ [संज्ञा पु.] देखो 'झगड़ा'।

झिझक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झझक'।

झिझकना [क्रि अ.] (हिं) देखो 'झझकना'।

झिझकार [संज्ञा स्त्री] देखो 'झझकार'।

झिझकारना [क्रि स.] (हिं.) १-देखो 'झझकारना'। २-देखो 'झटकना'।

झिटकरना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झटकारना' या 'झटकना'।

झिड़क+ [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'झिड़की'।

झिड़कना [क्रि स] (हिं.) अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कड़ी बात कहना।

झिड़की [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-झिड़कने की क्रिया या भाव। २-झिड़ककर कही हुई बात। डाँट। फटकार।

झिड़झिड़ना [क्रि. अ] (हिं.) भलाबुरा कहना। कटुवचन कहना।

झिड़झिड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झिड़झिड़ाने की क्रिया या भाव।

झिनवा [संज्ञा पु.] (देश) महीन चावल का धान।
[वि.] (हिं.) देखो 'झीना'।

झिपना [क्रि. अ] (हिं.) देखो 'झेंपना'।

झिपाना [क्रि. स.] (हिं.) लज्जित करना।

झिमकना+ [क्रि. अ] (हिं.) देखो 'झमकना'।

झिर [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'झिरी'।

झिरकना [क्रि. स.] (हिं.) झिड़कना।

झिरझिर [क्रि. वि] (हिं.) १-धीरे-धीरे। २-झिरझिर-शब्दसहित।

झिरझिरा [वि.] (हिं.) बहुत पतला या बारीक (कपड़ा)। झीना।

झिरझिराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झिड़झिड़ाना'।

झिरना [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'झरना'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-छेद। छिद्र। २-देखो 'झरन'।

झिरा+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) आय। आमदनी।

झिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह छोटा सा छेद जिसमें कोई चीज निकलती या टपकती रहे। २-पानी का छोटा सोता। ३-तुषार। पाला। ४-पाला मारी हुई फसल। ५-पानी का छोटा सोता।

झिर्री* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गड्ढा जो नाली आदि में पानी रोकने के लिए खोदा जाय।

झिलँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टूटी हुई खटिया का बाध। २-ऐसी खटिया जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो। ३-देखो 'झींगा'।

झिलना [क्रि अ.] (?) १-यत्नपूर्वक भीतर घुसना या धसना। २-तृप्त होना। ३-मग्न या तल्लीन होना। ४-(कष्ट-आपत्ति आदि) झेला जाना। सहाजाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) झींगुर।

झिलम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे की वह टोपी जिसे युद्ध के समय सिर और मुँह पर पहनी जाती थी। खोद।

झिलम-टोप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झिलम'।

झिलमा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान

झिलमिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-झलमलाती या कांपती हुई रोशनी। २-ज्योति की अस्थिरता। ३-एक प्रकार का बारीक मुलायम कपड़ा।
[वि.] (हिं.) रह-रहकर चमकता या झलझला हुआ।

झिलमिला [वि.] (हिं.) १-जो गफ या गाढ़ा न हो। २-झीना। झंझरा। ३-झलमलाता हुआ। ४-जो बहुत स्पष्ट न हो।

झिलमिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रह-रहकर चमकना। २-ज्योति का अस्थिर होना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को हिलाकर बार-बार चमकाना। २-हिलाना। कंपाना।

झिलमिलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झिलमिलाने की क्रिया या भाव।

झिलमिली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनेक पतली आड़ी पटरियों का ढांचा जो किवाड़ों में प्रकाश धूल आदि रोकने के लिए जड़ा होता है और सरकाने पर हवा और प्रकाश आता है। २-चिक। चिलमन। ३-एक कान का गहना।

झिल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) नील की जाति का एक प्रकार का पौधा।

झिल्लड़ [वि.] (हिं.) पतला और झझरा (कपड़ा) गफ का उलटा।

झिल्लन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दरी बुनने के करघे की मजबूत लकड़ी।

झिल्ला* [वि.] (हिं.) [स्त्री. झिल्ली] १-पतला बारीक। २-झंझरा।

झिल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झींगुर। झिल्ली।

झिल्ली [संज्ञा पु.] (सं) झींगुर।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु की पतली तह। २-बहुत बारीक छिलका। ३-आंख का जाला।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] बहुत पतली। बारीक

झिल्लीकंठ, झिल्लीकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) पालतू कबूतर।

झिल्लीक [संज्ञा पु.] (सं) झींगुर।

झिल्लीदार [वि.] (हिं.) जिसके ऊपर की तह बहुत पतली हो। जिस पर झिल्ली हो।

झींक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झींखना'।

झींकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झींखना'।
[क्रि. स] (देश.) फेंकना। पटकना।

झींका [संज्ञा पु.] (देश.) अन्न का वह परिणाम जो पीसने के लिए चक्की में एक बार डाला जाता है।

झींखना [क्रि अ.] (हिं) १-खीजना। २-दुःख रोना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-झींखने की क्रिया या भाव। दुःख का वर्णन।

झींगट [संज्ञा पु.] (देश) पतवार थामने वाला मल्लाह।

झींगा [संज्ञा] (हिं.) १-एक प्रकार की मछली। २-कपास की फसल को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा।

झींगुर [संज्ञा पु] (हिं.) एक छोटा बरसाती कीड़ा जो झींझीं शब्द करता है। झिल्ली। घुरघुरा।

झींझना+ [क्रि. अ.] (हिं.) खिझना। झुंझलाना।

झींझो [संज्ञा पु.] (देश.) आश्विन शुक्ल चतुर्दशी को कुमारी कन्याओं द्वारा मनाई जाने वाली एक रसम।

झींटना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झींखना'।

झींपना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'झेंपना'। २-ढंपना।

झींसा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झींसी'।

झींसी [संज्ञा पु.] (हिं) फुहार। छोटी-छोटी बूंदों की वर्षा।

झींखना [क्रि. अ.] (हिं) १-पछताना और कुढ़ना। २-अपना दुखड़ा रोना।

झीत [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज के पाल का [illegible]

झीन [वि.] (हिं.) देखो 'झीना'।

झीना [वि.] (हिं.) १-बहुत बारीक। महीन। २-झंझरा। ३-दुर्बल। दुबला। ४-मंद। धीमा।

झीमर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झीवर'।

झील [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-पानी के उस प्राकृतिक बड़े तालाब को कहते हैं, जो कभी नहीं सूखता। २-ताल। सर।

झीलर [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी झील।

झीली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मलाई। २-देखो 'झिल्ली'।

झीवर [संज्ञा पु.] (हिं.) मांझी। मल्लाह। मछुआ।

झुंकवाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'झोंकवाई'।

झुंकवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झोंकवाना'।

झुंकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झोंकाई'।

झुंगरा [संज्ञा पु.] (देश.) साँवाँ नामक अन्न।

झुंझलाना [क्रि. वि.] (हिं.) खिसियाना। चिड़चिड़ाना। बहुत दुःखी और क्रुद्ध होकर कोई बात करना।

झुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत से मनुष्यों पशुओं आदि का समूह। वृन्द। गरोह। प्राणियों का समुदाय।
€ झुण्ड के झुण्ड-संख्या में बहुत अधिक।

झुंडी [संज्ञा स्त्री.] (?) पौधों को छाट छेने के [illegible]

नी हुई खूटी।

ना [क्रि स] (हिं.) देखो 'झकझोरना'।

[क्रि अ] (हिं.) १-ऊपरी भाग का नीचे ओर लटक आना। नवना। २-किसी के एक अथवा दोनों छोरों का किसी प्रवृत्त होना। नम्र या विनीत होना। मानना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) संध्या या प्रातः का ऐसा अन्धकार जब कोई वस्तु स्पष्ट दीख पड़े।

+ [क्रि अ] (हिं) खिजलाना। ल्लाना।

ना [क्रि अ] (हिं) झोंखा खाना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झुकवाने की क्रिया भाव। २-झुकवाने की उजरत।

ना [क्रि स] (हिं.) झुकाने का काम अन्य कराना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झुकाने की क्रिया भाव। २-झुकाने की उजरत।

[क्रि स] (हिं) १-किसी खड़ी वस्तु झुकने में प्रवृत्त करना। नवाना। २-रजू ३-प्रवृत्त करना। ४-नम्र करना। बनाना। ५-हार मनवाना।

[संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'झुकमुख'।

+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हवा का झोंका। कोरा।

[संज्ञा पु.] (हिं) १-झुकने या प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव। २-ढाल। उतार। ३-मन का किसी ओर लगना।

[संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-झुकने या नम्र होने की क्रिया या भाव। २-चाह। झुकाव। प्रवृत्ति।

[संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसा समय जब कुछ उजाला और कुछ अन्धेरा हो।

[वि.] (हिं.) जटावाला। झोंटेवाला।

+ [वि.] (हिं.) देखो 'झूठा'।

ना [क्रि. स] (हिं.) १-झूठी बात द्वारा दूसरे को धोखा देना। २-देखो 'झुठलाना'।

ना [क्रि स] (हिं.) १-सच्चे को झूठा बनाना। झूठा प्रमाणित करना। २-झूठ कह कर धोखा देना।

+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झूठापन। असत्यता

ना [क्रि स.] (हिं.) झूठा ठहराना। झूठा प्रमाणित करना।

[क्रि. वि] (हिं.) देखो 'झूठमूठ'।

ना [क्रि स] (हिं.) देखो 'झुठलाना'।

[संज्ञा स्त्री] (देश.) १-एक प्रकार की चिड़िया। २-देखो 'झुनझुनी'।

[संज्ञा पु] (हिं.) नूपुर शब्द।

[क्रि अ.] (हिं.) झुन-झुन शब्द होना

या बजना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झुन-झुना'।

झुनका [संज्ञा पु.] (?) छल। धोखा।

झुनकार [वि.] (हिं.) [स्त्री. झुनकारी] पतला। महीन। झीना।

झुनझुन [संज्ञा पु.] (हिं.) नूपुर आदि के बजने का शब्द।

झुनझुना [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों का वह खिलौना जो झुन-झुन बजता या शब्द करता है। घुनघुना।

झुनझुनाना [क्रि. अ.] (हिं.) झुनझुन शब्द होना।
[क्रि. स.] (हिं) झुनझुन शब्द उत्पन्न करना।

झुनझुनियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सनई का पौधा। २-पैर का आभूषण जो झुनझुन शब्द करता हो। ३-बेड़ी। निगड़।

झुनझुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर के किसी अंग में उत्पन्न एक प्रकार की सनसनाहट।

झुनी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश) जलाने की पतली लकड़ी।

झुपझुपी [संज्ञा स्त्री] देखो 'झुबझुबी'।

झुपरी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'झोंपड़ी'।

झुप्पा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-झब्बा। २-झुण्ड।

झुबझुबी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक कान का गहना जिसे देहाती स्त्रियाँ पहनती हैं।

झुमका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कान में पहनने का एक गहना। २-एक प्रकार का पौधा। २-इस पौधे का फूल।

झुमना+ [वि.] (हिं.) झूमने वाला। हिलने वाला

झुमरा [संज्ञा पु.] (देश.) लुहारों का एक प्रकार का घन या बड़ा हथौड़ा।

झुमरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की रागिनी

झुमरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-काठ की मुंगरी। २-गच पीटने का औजार।

झुमाऊ [वि.] (हि.) झूमने वाला।

झुमाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।

झुरकुट [वि.] (हि.) १-मुरझाया हुआ। सूखा हुआ। दुबला। पतला। कृश।

झुरकुटिया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्का लोहा।
वि.] (हिं.) दुबला। पतला। कृश।

झुरकुन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े।

झुरझुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कंपकंपी।

झुरना [क्रि. अ.] (हि.) १-सूखना। खुश्क होना। २-बहुत अधिक दुखी होना या शोक करना। ३-घुलना।

झुरमुट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पास-पास उगे कई झाड़ या क्षुप। २-बहुत से लोगों का समूह। झुंड। गरोह। ३-कपड़े से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।

झुरवन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह अंश जो किसी वस्तु के सूखने के कारण उसमें से निकल जाता है।

झुरवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-सुखाने का काम दूसरे से कराना। + २-झुराना। सुखाना।

झुरसना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झुलसना'।

झुरसाना [क्रि.स.] (हिं.) देखो 'झुलसाना'।

झुरहुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झुरझुरी'।

झुराना+ [क्रि. स.] (हिं.) सुखाना। खुश्क करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-सूखना। २-दुःख से स्तब्ध होना। ३-दुबला होना।

झुरावन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह अंश जो किसी वस्तु को सुखाने के कारण उसमें से निकल जाता है।

झुर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह चिह्न जो किसी वस्तु के सूख जाने अथवा मुड़ जाने पर पड़ जाता है। सिकुड़न। सिलवट। शिकन।

झुलका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झुनझुना'।

झुलना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रियों के पहनने का ढीला-ढाला कुरता। २-झूला।
[वि.] (हिं.) झूलने वाला। जो झूलता हो।

झुलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोतियों का वह गुच्छा जो स्त्रियाँ नथ में लगाती हैं।

झुलनीचोट [संज्ञा पु.] (देश) धान का बाल।

झुलमुला+ [वि.] (हिं) देखो 'झिलमिला'।

झुलवा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार की कपास। + २-झूला।

झुलवाना [क्रि स] (हिं) दूसरे को झुलाने में प्रवृत्त करना।

झुलसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-झुलसने की क्रिया या भाव। २-शरीर झुलसाने वाली गरमी।

झुलसना [क्रि अ.] (हिं) किसी वस्तु के ऊपरी भाग का अधिक गरमी अथवा जलने के कारण सूख या जलकर काला पड़ना।
[क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु के ऊपरी भाग या तल को इस प्रकार थोड़ा जलाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। अधजला करना।

झुलसवाना [क्रि. स] (हिं.) झुलसने का काम दूसरे से कराना।

झुलसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'झुलसन'। २-'झुलसवाना'।

झुलाना [क्रि. स] (हि.) १-हिंडोले या झूले में बैठकर हिलना। किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। २-अधर में लटकाकर इधर-उधर हिलाना। ३-कुछ देने अथवा करने के लिए

किसी को असरे में रखना या दौड़ना।

झुलावना*+ [क्रि स.] (हिं.) देखो 'झुलाना'।

झुलावनि*+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झुलाने की क्रिया या भाव।

झुलुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झूला'।

झुलौवा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जनाना कुरता।
[वि.] (हिं.) झूलने अथवा झूल सकने वाला।

झुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झूला'।
[संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का कुरता।

झुहिराना* [क्रि. स.] (हिं.) लादना। बोझा रखना।

झूँक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झोंका'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'झोंक'।

झूँकना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'झोंकना'। २-देखो 'झखना'।

झूँख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खुजली। (राजस्थानी)।

झूँखना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झीखना'।

झूँझल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झुँझलाहट'।

झूँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) पेंग।
[वि.] (हिं.) देखो 'झूठा'।

झूँठ [वि., संज्ञा पु.] देखो 'झूठ'।

झूँठा* [वि.] (हिं.) देखो 'झूठा'।

झूँठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह डंठल जो नील को सड़ाने पर बच रहता है।

झूँपड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झोंपड़ा'।

झूँसना* [क्रि. अ., क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झुलसना'।

झूँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

झूकटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी झाड़ी।

झूझना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'जूझना'।

झूट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झूठ'।

झूठ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कथन जो वास्तविक स्थिति के विपरीत हो। सच का उलटा।
झूठमूठ–बिना किसी वास्तविक आधार के।
झूठ सच कहना या लगाना–निन्दा करना।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जूठन'।

झूठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'जूठन'।

झूठमूठ [क्रि. वि.] (हिं.) असत्य रूप में। निष्प्रयोजन। व्यथ।

झूठा [वि.] (हिं.) १–जो सच्चा, ठीक या वास्तविक न हो। मिथ्या। असत्य। २–झूठ बोलने वाला। मिथ्यावादी। ३–केवल रूप रंग आदि में असल वस्तु के समान। नकली। बनावटी। ४–बिगड़ जाने के कारण ठीक काम न करने वाला। (पुरजा अथवा अंग आदि)।
[वि.] (हिं.) देखो 'जूठा'।

झूठों [क्रि. वि.] (हिं.) १–बिना किसी आधार के। झूठमूठ। २–यों ही। व्यर्थ।

झूणि [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार की सुपारी। २–एक प्रकार का अशकुन।

झूना+ [वि.] (हिं.) देखो 'झीना'।

झूम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–झूमने की क्रिया या भाव। २–ऊँघ। झपकी।

झूमक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का देहाती गीत। झूमर। २–इस गीत के साथ होने वाला नृत्य। ३–मंगल अवसरों पर गाया जाने वाला एक गीत। ४–गुच्छा। ५–छोटे झूमकों या गुच्छों की वह पंक्ति जो साड़ी आदि के छोर वाले भाग में लगा रहता है। ६–झुमका।

झूमक-साड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि की झालर टंगी हो।

झूमका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'झुमका'। २–देखो 'झूमक'।

झूमड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झूमर'।

झूमड़ा [संज्ञा पु.]) (हिं.) देखो 'झूमरा'।

झूमड़झामड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) ढकोसला। झूठा प्रपंच।

झूमना [क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी वस्तु का बार-बार उधर-उधर हिलना या झोंके खाना। २–लहराना। सिर और धड़ को बार-बार आगे पीछे और नीचे ऊपर हिलाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बैलों का एक ऐब जिसमें इधर-उधर सिर हिलाया करते हैं।

झूमर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का सिर पर पहनने का गहना। २–झुमका। ३–झूमक नामक गीत और नाच। ४–एक प्रकार का काठ का खिलौना। ५–एक जैसी कई वस्तुओं का एक स्थान पर एकत्र होना। ६–गाड़ीवानों की मोंगरी। ७–एक प्रकार का ताल।

झूमरा [संज्ञा पु.] (हिं.) चौदह मात्राओं का ताल।

झूमरि*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झूमर'।

झूमरी [संज्ञा स्त्री.] (दे श.) शालकराग का एक भेद।

झूर [वि.] (हिं.) सूखा। शुष्क।
[वि.] (हिं.) १–खाली। रीता। २–व्यर्थ। ३–जूठा। उच्छिष्ट।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जलन। दाह। २–परिताप।

झूरना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'झुराना'।

झूरा [वि.] (हि.) १–सूखा। शुष्क। २–खाली।
[संज्ञा पु.] (हि.) १–जलवृष्टि का अभाव। अ-वर्षण। २–सूखा स्थान। ३–न्यूनता। कमी

झूरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झूर'।

झूरैं [क्रि. वि.] (हिं.) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

झूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चौपायों की पीठ पर शोभा के लिए डालने का चौकोर वस्त्र। २–वह कपड़ा जो पहना जाने पर भद्दा जान प
३–देखो 'झूला'।

झूलदंड [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झलदंड'।

झूलदंड [संज्ञा पु.] (हिं.) झूलते हुए दं
बैठक लगाने की एक कसरत।

झूलन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वर्षाऋतु का
उत्सव जिसमें मूर्तियाँ झूले पर बै
झुलाई जाती हैं। हिंडोला। २–एक प्रकार
चलता गाना।

झूलना [क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी आधार
सहारे लटककर बार-बार आगे पीछे या इध
उधर झोंके से इधर उधर हिलना। २–झूले
पर बैठकर पेंग लेना। ३–किसी बात
कार्य की आशा में बार-बार
रहना।
[वि.] झूलने वाला। जो झूलता हो।
[संज्ञा पु.] १–एक छंद जिसके
में ७, ७, ७ और ५ के विराम
और अन्त में गुरु लघु होते हैं।
का दूसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण
१०, १० और ७ के विराम से मात्राएं होती
और अन्त में यगण होता है। ३–झूला।

झूलनी-बगली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मुगदर
एक प्रकार की कसरत।

झूलनी-बैठक [संज्ञा स्त्री.] कसरत में एक
की बैठक।

झूलरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झूलता हुआ छो
गुच्छा या झुमका।

झूला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पेड़ या छत आदि
लटकाई रस्सियां जिन पर बैठकर झूलते
पेंग लगाते हैं। हिंडोला। २–एक प्रकार
झूलने वाला पुल जो मजबूत रस्सों
या तारों का बना होता है। ३–पशुओं
पीठ पर डालने की झूल। ४–एक प्रकार
बिस्तर जिसके चारों कोनों से रस्सियां
कर अधर झूलने देते हैं। ५–ग्रामीण
के पहनने का ढीला कुरता। ६–झोंका।

झूलि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झूली'।

झूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह कपड़ा जिस
हवा करके अन्न ओसाया जाता है। २–र
सियों का अधर झूलने वाला बिस
(जहाज)। ३–देखो 'झूला'।

झेंपना [क्रि. अ.] (हिं.) लज्जित होना। लजा
शरमाना।

झेपना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'झेंपना'।

झेर*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देर। विलम्ब।
२–बखेड़ा। झगड़ा।

झेरना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १–झेलना। सहना।
२–छेड़ना। आरम्भ करना। ३–तैरने में हा
पैर से पानी हटाना।

झेरा [संज्ञा पु.] (?) झंझट। बखेड़ा।

झेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह क्रिया जो बैठे

हाथ पैर से पानी हटाने के लिये की जाती है। २-हलका धक्का या हिलोरा। ३-झेलने की क्रिया या भाव।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विलम्ब। देर।

[क्रि. स.] (हिं.) १-ऊपर लेना। सहारना। तैरने में पानी को हाथ-पैर से ३-पानी में उतरना। हेलना। ४- ५-पचाना। हजम करना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चा जनने के समय विशेष प्रकार से हिलाने-डुलाने की क्रिया।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झुकाव। प्रवृत्ति। २- किसी पलड़े का किसी ओर अधिक होना। ३-बोझ। भार। ४-वेग। तेजी। ५-किसी काम का धूमधाम ६-ठाट। सजावट। चाल। अंदाज पानी का हिलोरा।

-ठाट-बाट। धूमधाम। *झोंक मारना* मारना। कम तौलना।

[क्रि. स.] (हिं.) १-कोई वस्तु जलाने आग में फेंकना। २-जबरदस्ती आगे या संकट की स्थिति में ढकेलना। की ओर धक्का देकर बढ़ाना। किसी काम में अंधाधुंध खर्च करना। *झोंकना*-व्यर्थ के और निकम्मे काम करना।

[संज्ञा पु.] (देश.) भट्ठी या भाड़ में ईंधन फेंकने वाला मनुष्य।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झोंकने की क्रिया या भाव। २-झोंकवाने की क्रिया या भाव।

[क्रि. स.] (हिं.) १-झोंकने का काम कराना। २-किसी को आगे की ओर जोर से या धकेलना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-झटका। धक्का। रेला। पानी का हिलोरा। ३-इधर से उधर हिलने झुकने की क्रिया। ३-वायु का प्रवाह। सजावट।

आना-ऊँघ लगना। *झोंका खाना*-किसी आघात आदि के कारण किसी ओर झुकना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झोंकने की क्रिया या भाव। २-झोंकने की मजदूरी।

[संज्ञा पु.] (हिं.) झोंकवा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उत्तरदायित्व। जवाबदेही। २-जोखिम।

+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-खोंता। घोंसला। कुछ पक्षियों के गले का नीचे लटकता हुआ मांस। ३-खुजली। *मारना*-खुजली होना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) झुंझलाहट। क्रोध।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-झाड़ी। २-आड़। समूह। ४-देखो 'झोंटा'।

झोंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिर के बड़े-बड़े बालों का समूह। २-जुट्टा। ३-झूले की पेंग। ४-भैंसा का बच्चा। पड़वा। २- भैंसा। महिष

झोंटी※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झोंटा। २-देखो 'झोका'।

झोंपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. झोंपड़ी] कच्ची मिट्टी की दीवार बनाकर घास-फूस से छाया हुआ घर। पर्णशाला।
अंधा झोंपड़ा-उदर। पेट। (फकीर) *अंधे झोंपड़े में आग लगना*-भूख लगना।

झोंपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा झोंपड़ा। कुटिया।

झोंपा [संज्ञा पु.] (हिं.) भब्बा। गुच्छा।

झोझर, झोझा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ओझर'

झोटिंग [वि.] (हिं.) जिसके सिर पर बड़े-बड़े बाल हों। झोंटे वाला।

झोड़ [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का वृक्ष।

झोपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झोंपड़ा'।

झोपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'झोंपड़ी'।

झोर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झोल'।

झोरई+ [वि.] (हिं.) झोलदार। रसेदार।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झोलदार या रसेदार तरकारी।

झोरना [क्रि. स.] (हिं.) १-झटका देकर काँपना या हिलाना। २-किस वस्तु को इस तरह झटका देकर बार-बार हिलाना जिसमें उसके साथ लगी हुई अन्य वस्तुऐं गिर पड़ें।

झोरा+ [संज्ञा प.] (?) गुच्छा। झब्बा।

झोरि※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'झोली'। २-पेट। ३-एक प्रकार की रोटी।

झोल [संज्ञा पु.] (हिं) १-तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। शोरबा। २-चावलों का मांड़। पीच। ३-धातु पर का मुलम्मा। ४-झंझट-बखेडा यां धोखे की बात। ५-कपड़े का वह अंश जो ढीला होने के कारण झूला या लटक जाय। तनाव या कसाव का उलटा। ६-आंचल। पल्ला। ७-परदा। ८-आड़। भूल। गलती। १०-वह झिल्ली या थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे या अडे रहते हैं। ११-गर्भ। १२-राख। भस्म। १३-दाह। जलन।
[वि.] (हिं.) १-ढीला। निकम्मा। खराब। बुरा।

झोलदार [वि.] (हिं.) १-रसेदार। जिसमें रसा हो। २-जिस पर मुलम्मा किया हो। ३-झोल सम्बन्धी। ४-जिसमें झोल पड़ता हो। ढीला ढाला।

झोलना [क्रि. स.] (हिं.) जलाना।

झोला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. झोली] १-कपड़े की बड़ी थैली। २-ढीला ढाला गिलाफ। खोली। २-साधुओं का ढीला कुरता। चोला ३-एक वात रोग जिसमें अंग शिथिल पड़ जाते हैं। पक्षाघात या लकवा। ४-पाले, लू आदि के कारण पेड़ों का कुम्हला जाने का एक रोग। झटका। झोंका।

झोलिहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झोली लटकाने वाला। २-कहार।

झोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़े को मोड़कर बनाई हुई थैली। २-घास बाँधने का जाल। ३-मोट। चरसा। पुर। ४-ओसाने के काम आने वाला कपड़ा। ५-कुश्ती का एक पेंच। बोरा। ६-वह सफरी बिस्तर जिसके चारों कोनों पर रस्सी बंधी रहती है। ७-भारी वस्तु को उठाने का फंदा। ८-राख। भस्म।
झोली छोड़ना-बुढ़ापे के कारण शरीर के चमड़े का लटक या झूल जाना। *झोली डालना*-भिक्षा के निमित्त झोली उठाना। *झोली भरना*-साधु को पूरी भिक्षा मिलना। *झोली बुझाना*-१-सारा काम समाप्त होने पर पीछे उसे करने चलना। २-निराश होकर या व्यर्थ बैठना।

झौंझट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झंझट'।

झौंद [संज्ञा पु.] (हिं.) पेट। उदर।

झौंर※ [संज्ञा पु.] (हिं) १-झुंड। समूह। २-फूलों, पत्तियों या छोटे-छोटे फलों का गुच्छा ३-एक प्रकार का आभूषण। झब्बा। ४-कुंज। पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह।

झौंरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गूँजना। गुँजारना। २-झौरना।

झौंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'झौंर'।

झौंराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-झाँवरे का रंग हो जाना। बदरंग या काला पड़ जाना। २-मुरझाना। कुम्हलाना। ३-इधर-उधर हिलना या झूलना।

झौंसना [क्रि. स.] (हिं.) झुलसना।

झौनी※ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) टोकरी। दौरी।

झौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झौंझट। विवाद। तकरार। २-डाँट। फटकार।

झौरना [क्रि. स.] (हिं.) दबाने के लिए झपटकर पकड़ना। छोप लेना।

झौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाद। तकरार। हुज्जत

झौरे [क्रि. वि.] (हिं.) १-पास। निकट। समीप। २-संग। साथ।

झौलना※ [क्रि. स.] (हिं.) जलाना।

झौवा※ [संज्ञा पु.] रहठे की बनी हुई छोटी दौरी या टोकरी। खँचिया।

झौहाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गुर्राना। २-जोर से चिड़चिड़ाना।

ञ

ञ हिन्दी वर्णमाला का दसवाँ व्यञ्जन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है।
[संज्ञा पु.] (*सं.*) १–गायन गाने वाला। २–घर-घर शब्द। ३–धर्मच्युत। अधर्मी। ४–शुक्र।

ञकार [संज्ञा पु.] (*सं.*) 'ञ' स्वरूप वर्ण।

ट

ट हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यञ्जन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण में तालु से जीभ लगानी पड़ती है।

टंक, टङ्क [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–चार माशे के बराबर की एक पुरानी तोल। २–धातु की नियतमान जिसके टकसाल में सिक्के ढलते या बनते हैं। ३–सिक्का। ४–मोती की तोल जो २१। रत्ती की मानी जाती है। ५–टाँकी। छेनी। ६–कुल्हाड़ी। पशु। फरसा। ७–कुदाल। ८–तलवार। ९–टाँकी से कटा हुआ पत्थर का टुकड़ा। १०–टाँग। ११–नीला कैथ। १२–क्रोध। १३–अभिमान। १४–पर्वत का खड्ड। १५–सुहागा। १६–खजाना। १७–संपूर्ण जाति का एक राग। १८–म्यान। १९–एक कांटेदार वृक्ष।
[संज्ञा पु.] (*अं.*) १–तालाब। २–पानी रखने का बड़ा हौज या खजाना। ३–एक प्रकार की लोहे की बनी गाड़ी जो ऊबड़-खाबड़ भूमि और पहाड़ों पर चल या चढ़ और उतर सकती है।

टंकक, टङ्कक [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–चाँदी का सिक्का या रुपया। २–वह जो टंकण-यंत्र पर टंकण का काम करता हो। *टाइपिस्ट*।

टंकक-शाला, टङ्कक-शाला [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–टकसालघर। २–वह स्थान जहाँ टंकण-यंत्र पर टंकण कार्य सीखने के इच्छुक आते और टंकण-यंत्र चालन सीखते हों।

टंकटीक, टङ्कटीक [संज्ञा पु] (*सं*) शिव।

टंकण, टङ्कण [संज्ञा पु.] (*सं*) १–सुहागा। २–धातु की वस्तु में टाँका अथवा जोड़ लगाना। ३–घोड़े की एक जाति।
४–टंकण-यंत्र पर उसकी सहायता से कागज पर कुछ लिखने, मुद्रित करने या अक्षर अंकित करने का कार्य। *टाइप राइटिंग*। ५–धातु खंडों पर यंत्र या ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने का कार्य। *कॉयनेज*।

टंकण-यंत्र, टङ्कण-यन्त्र [संज्ञा पु.] (*सं.*) एक यन्त्र जिसके द्वारा पत्र आदि छापे की कल के समान लिखे, मुद्रित या अङ्कित किये जाते हैं। *टाइप-राइटर*।

टँकना [क्रि. अ.] (*हिं.*) १–टाँका जाना। कील आदि जड़कर जोड़ा जाना। २–सिलाई के द्वारा जुड़ना। ३–सी-कर अटकाया जाना। ४–रेती के दांतों का तेज होना। ५–अङ्कित होना। लिखा जाना। ६–सिल, चक्की आदि का रेहा जाना। कुटना।

टंकपति, टङ्कपति [संज्ञा पु.] (*सं.*) टकसाल का अधिपति।

टंकवान्, टङ्कवान् (*सं.*) रामायणकालीन एक पर्वत का नाम।

टँकवाना [क्रि. स.] (*हिं.*) देखो 'टँकाना'।

टंकविज्ञान, टङ्कविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) भिन्न देशों की प्राचीन मुद्राओं या सिक्कों के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की विद्या।

टंकशाला, टङ्कशाला [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) टकसाल

टंका, टङ्का [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १–एक तोले की तोल। २–तांबे का एक पुराना सिक्का।
[संज्ञा पु.] (*देश.*) एक प्रकार का गन्ना।
[संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–जंघा। २–तारादेवी ३–सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

टँकाई [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १–टांकने की क्रिया या भाव। २–टांकने की मजदूरी।

टंकानक, टङ्कानक [संज्ञा पु.] (*सं.*) ब्रह्मदारु। शहतूत।

टँकाना [क्रि. स.] (*हिं.*) १–टांकों से सिलवाना या जुड़वाना। २–सिलाकर लगवाना। ३–सिल आदि को खुरदरा कराना। कुटाना।

टंकाना, टङ्काना [क्रि. स.] (*हिं.*) सिक्कों का परखवाना।

टंकार, टङ्कार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह टनटन का शब्द जो कसे हुए डोरे या तार आदि पर उँगली आदि का आघात करने से होता है। २–धनुष की डोरी खेंचने से उत्पन्न ध्वनि। ३–झनकार। ठनाके का शब्द। ४–विस्मय। ५–कीर्ति। नाम। प्रसिद्धि।

टंकारना [क्रि. स] (*हिं.*) धनुष की डोरी तानकर शब्द उत्पन्न करना। चिल्ला खींचकर बजाना।

टंकारी, टङ्कारी [संज्ञा स्त्री] (*सं.*) एक जंगली क्षुप।

टंकिका [संज्ञा स्त्री.] (*सं*) पत्थर काटने का औजार। टाँकी। छेनी।

टंकी [संज्ञा स्त्री] (*हिं.*) १–चौबच्चा। टांका। २–पानी भरने का बड़ा बरतन। टब।

[संज्ञा स्त्री.] (?) श्रीराग की रागिनी।

टंकोर, टङ्कोर [संज्ञा पु.] देखो 'टंकार'।

टंकोरना [क्रि. स.] (*हिं.*) १–टंकारना। धनु का चिल्ला चढ़ाकर शब्द उत्पन्न करना। २–ठोकर के आघात से शब्द उत्पन्न करना।

टँकौरी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) छोटा कांटा या तराजू।

टंग, टङ्ग [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–टांग। टंगड़ी। २–कुल्हाड़ी। ३–कुदाल। परशु। फरसा। ४–सुहागा। ५–चार माशे की एक तौल।

टँगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) घुटने से लेकर तक का भाग। टांग।
टंगड़ी पर उड़ाना–पैर से पैर फँसाकर गिराना। अड़ंगा मारना।

टंगण, टङ्गण [संज्ञा पु.] (*सं.*) सोहागा।

टँगना [क्रि. अ.] (*हिं.*) १–लटकना। २–पर चढ़ना। [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १–की अलगनी। २–जुलाहों की वह जिसमें उठौनी टाँगी जाती है।

टँगरी+ [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'टंगड़ी'।

टंगिनी, टङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) पाठा।

टंच [वि.] (*हिं.*) १–कृपण। कंजूस। २–निठुर।
[वि.] (*हिं.*) तैयार। मुस्तैद।

टंटघंट [संज्ञा पु.] (*हिं.*) शंख, घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या आडम्बर। काठ-कबार।

टंटा [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १–आडम्बर। प्रपंच। २–उपद्रव। दंगा। फसाद। ३–झगड़ा। तकरार।
टंटा खड़ा करना–उपद्रव उठाना।

टंडर [संज्ञा पु.] (*अं.*) १–वह कागज जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से कुछ काम करने अथवा कोई माल किसी नियत दाम पर बेचने अथवा खरीदने का इक़रार करता है। २–अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी के प्रति अपना देना अदालत में दाखिल करे।

टंडल [संज्ञा पु.] (*हिं.*) मजदूरों का मेठ या जमादार।
[संज्ञा पु.] देखो 'टंडर'।

टंड़िया [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) बांह में पहनने का एक गहना।

टंडुलिया [संज्ञा स्त्री.] (*देश.*) बनचौलाई जो कांटेदार होती है।

टंडैल [संज्ञा पु.] (*हिं.*) मजदूरों का मेठ या जमादार।

टंसरी [संत्री.] (*हिं.*) (?) एक वीणा।

टँसहा+ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) वह बैल जो नसों के सुकड़ जाने के कारण लंगड़ा हो गया हो।

ट [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–नारियल का खोपड़ा। २–वामन। ३–चौथाई भाग। ४–शब्द।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दही'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्थिर दृष्टि। गड़ी नजर। २-घास आदि तौलने की तराजू का [illegible] पलड़ा।
[illegible] बंधना-स्थिर दृष्टि होना। टक-टक [illegible]-बिना पलक गिराए कुछ काल तक [illegible] रहना। टक लगाना-प्रतीक्षा में रहना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टकटकी] [illegible] दृष्टि। टकटकी।

[illegible] [वि.] (हिं.) स्थिर या बंधी हुई (दृष्टि)।

[illegible]+ [क्रि. स.] (हिं.) १-एकटक ताकना [illegible] देखना। २-एकटक शब्द उत्पन्न करना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्थिर दृष्टि। अनि-[illegible] दृष्टि। गड़ी हुई नजर।
[illegible] बांधना-स्थिर दृष्टि से देखना।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) टकटोलना।

[illegible]+ [क्रि. स.] (हिं.) १-टटोलना। २-[illegible]। तलाश करना।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) हाथ से छूकर पता [illegible] या जाँचना। टटोलना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) टटोलकर देखने का [illegible]। स्पर्श।

[illegible]* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टकटोलना'।

[illegible], टकतन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सितार के ढंग का एक प्राचीन बाजा।

[illegible]+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घुटना।
[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टँकना'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भेंट जो किसान विवाह आदि के अवसर पर जमींदार को देता है।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) १-जोर से भिड़ना। टक्कर खाना। २-मारे मारे फिरना। व्यर्थ घूमना। [क्रि. स.] एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर जोर से मारना। जोर से भिड़ाना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पेड़।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस

[illegible]+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टकसाल'।

टकसाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्थान जहाँ सिक्के बनाये या ढाले जाते हैं। २-जंची या प्रामाणिक वस्तु। असली और निर्दोष वस्तु। टकसाल का खोटा-नीच। दुष्ट। टकसाल चढ़ना-१-टकसाल में परखा जाना। २-किसी विद्या या कलाकौशल में दक्ष माना जाना। ३-निर्लज्ज होना। ४-बदमाशी में पक्का होना। टकसाल बाहर-१-खोटा या अप्रचलित सिक्का। २-(वाक्य या शब्द) जो प्रमाणित न माना जाय।

टकसाली [वि.] (हिं.) १-टकसाल-संबंधी। टकसाल का। २-खरा। चोखा। ३-सर्वसम्मत। [illegible] हुआ। ४-जंचा हुआ। प्रामाणिक। परीक्षित। टकसाली बात-जंची तुली बात। टकसाली बोली-विज्ञों द्वारा अनुमोदित भाषा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) टकसाल का अधिकारी। टकसाल का अध्यक्ष।

टकहाई [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] टके-टके में व्यभिचार कराने वाली। जो वेश्याओं में निकृष्ट हो।

टका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चाँदी का एक पुराना सिक्का। रुपया। २-दो पैसे का सिक्का। अधन्ना। ३-धन। द्रव्य।
टका पास न होना-निर्धन होना। *टका भर-टका सा*-१-जरा सा। थोड़ा सा। दो या एक तोले। *टका-सा जवाब*-१-तुरन्त अस्वीकार करना। २-साफ निकल जाना। *टका-सा मुँह लेकर रह जाना*-खिसियाजाना। लज्जित होना। *टका सी जबान हिलाना*-किसी कार्य के न करने का सामर्थ्य रखते हुए भी दूसरे के सामने उस काम को साधारण बताना। *टके-गज की चाल*-१-पुरानी और भद्दी चाल। २-थोड़े खर्च में गुजर। *टके गिनना*-१-हुक्के का गुड़गुड़ बोलना। २-रोजी का हिसाब लगाना। *टके-सी जान*-अकेला दम। एकाकी जीव।

टकाई [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'टकहाई'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'टकासी'।

टकाटकी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टकाटकी'।

टका-तोप [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की तोप जो जहाजों पर रहती है।

टकाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टंकाना'।

टकानी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैलगाड़ी का जूआ।

टकासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टके रुपये का व्याज २-प्रति व्यक्ति टके के हिसाब से लिया गया कर या चंदा।

टकाही [वि,] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'टकहाई'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो टकासी।

टकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टकटकी'।

टकुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चरखे का सुआ जिसपर सूत काता और लपेटा जाता है। तकला। २-बिनौला निकालने की तरखी। ३-वह तार जो छोटे तराजू या काँटे में बाँधा जाता है।

टकुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पत्ती झड़ने वाला एक वृक्ष जो हिमालय की तराई में पाया जाता है। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्थर काटने की टाँकी। २-नक़ाशी करने की छैनी।

टकूचना [क्रि. स.] (?) खाना। (दलाल)

टकैट [वि.] (हिं.) देखो 'टकैत'।

टकैत [वि.] (हिं.) टके वाला। धनी। रुपये-पैसे वाला।

टकोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हलकी चोट। प्रहार आघात। २-डंके की चोट। ३-डंके का शब्द। ४-धनुष की टंकार। ५-दवा की गरम पोटली द्वारा किसी अंग पर किया जाने वाला सेंक। ६-चरपराहट। ७-दाँतों की वह टीस जो किसी खट्टी वस्तु के खाने से होता है। दाँतों का गुठला होने का भाव।

टकोरना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठोकर लगना। हलकी चोट देना। २-चोट लगाना (डंके आदि पर)। बजाना। ३-टकोरना।

टकोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) डंके की चोट। नगाड़े की आवाज।

टकौना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टका'।

टकौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चांदी। सोना तौलने का छोटा तराजू या कांटा। २-देखो 'टकासी'।

टक्क-देश [संज्ञा पु.] (सं.) चनाव और व्यास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

टक्क-देशीय [वि.] (सं.) टक्कदेश का। टक्कदेश में उत्पन्न।
[संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ नामक साग।

टक्कर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दो वस्तुओं के वेग पूर्वक परस्पर भिड़ने से होने वाला आघात। ठोकर। २-मुठभेड़। भिड़ंत। ३-जोर से सिर मारने का धक्का। ४-घाटा। हानि। नुकसान। धक्का।
टक्कर का-बराबरी का सामान। *टक्कर खाना* १-किसी कड़ी वस्तु के साथ धक्का खाना। २-मारा-मारा फिरना। ३-प्रयत्न करना। *टक्कर झेलना*-१-हानि उठाना। २-संकट या आपत्ति सहना। *टक्कर मारना*-१-आघात पहुँचाने के लिए जोर से सिर मारना। २-माथा मारना। ३-उद्योग करना। *टक्कर लड़ाना*-दूसरे के सिरपर सिर मारकर लड़ाना। *टक्कर लगाना*-मुकाबिला करना। *टक्कर लड़ाना*-सिर से धक्का मारना। *टक्कर लेना*-१-मुकाबिला करना। लड़ना भिड़ना। २-समान होना। ३-चोट या वार सहना। *पहाड़ से टक्कर लेना*-भारी शत्रु से सामना करना।

टखना [संज्ञा पु.] (हिं.) एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गांठ। गुल्फ। पैर का गट्टा।

टगटगाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टकटकाना'

टगण [संज्ञा पु.] (सं.) मात्रिक गणों में से एक। यह छः मात्राओं का होता है और इसके तेरह उपभेद हैं।

टगर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोहागा। २-विलास। क्रीड़ा। ३-तगर का वृक्ष।

टगरगोड़ा [संज्ञा पु.] (?) लड़कों का एक खेल।

टगरा+ [वि.] (हिं.) ऐंचाताना। भेंगा।

टघरना [क्रि. स.] (हिं.) १-पिघलना। द्रवित होना। २-हृदय का द्रवीभूत होना।

टघराना [क्रि. स.] (हिं.) पिघलाना।

टचटच [क्रि. वि.] (हिं.) धाँय-धाँय। धक-

घक। (आग की लपट से उत्पन्न शब्द)।

टचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक औजार जिसके द्वारा कसेरे बरतनों पर नक्काशी करते हैं। टाँकी।

टटका [वि.] (हिं.) (स्त्री. टटकी) १-तत्काल का। ताजा। २-नया। कोरा।

टटकाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताजापन।

टटड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (पंजाबी) १-खोपड़ी। २-देखो 'ठठरी'। ३-देखो 'टट्टी'।

टटाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) सूख जाना।

टटलबटल+ [वि.] (हिं.) अंडबंड। ऊटपटाँग।

टटावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टिटिहरी नामक चिड़िया।

टटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टट्टी'।

टटियाना [क्रि. अ.] (हिं.) सूख जाना।

टटीबा [संज्ञा पु.] (हिं.) घिरनी। चक्कर।

टटीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिटिहरी'।

टटुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टट्टू'।

टटुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मादा टट्टू।

टटोना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टटोलना'।

टटोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टटोलना'।

टटोल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टटोलने का भाव। उँगलियों से छूकर मालूम करने की क्रिया।

टटोलना [क्रि. स.] (हिं.) १-मालूम करने के निमित्त उँगलियां स्पर्श करना या दबाना। २-ढूंढने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना। ३-बोल-चाल से ही किसी के मन के भाव जानना। थाह लेना। ४-परखना। आजमाना *मन टटोलना*-हृदय के भाव का पता लगाना।

टट्टड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'टक्कर' २-देखो 'टट्टर'।

टट्टनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छिपकली।

टट्टर [संज्ञा पु.] (हिं.) बांस की फट्टियों, सरकंडों आदि का बना हुआ ढांचा या पल्ला जो ओट या रक्षा के काम आता है।
टट्टर देना या लगाना-टट्टरबंद करना।

टट्टरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ढोल का शब्द। २-लम्बी चौड़ी बात। ३-चुहलबाजी। ठट्ठा।

टट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टट्टर। २-लकड़ी का पल्ला। ३-अंडकोश (पंजाबी)।

टट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बांस की फट्टियों का बना पल्ला या परदा। २-चिक। चिलमन। ३-परदे या आड़ के लिए खड़ी की गई पतली दीवार। ४-पाखाना। ५-बांस की फट्टियों का वह परदा या छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती हैं।
टट्टी का शीशा-पतला शीशा। *टट्टी की आड़ या ओट में शिकार खेलना*-१-छिपकर किसी के विरुद्ध चाल चलना। २-लोगो की निगाह बचाकर छिपाकर कोई अनुचित कार्य करना। *टट्टी में छेद करना*-खुलकर खेलना। प्रकट कुकर्म करना। लोकलाज को तिलांजली दे देना। *टट्टी लगाना*-१-परदा या ओट करना। २-किसी के सामने भीड़ लगाना। *धोखे की टट्टी*-१-वह टट्टी जिसकी आड़ में शिकारी शिकार पर वार करता है। २-बाहर से धुराई या वास्तविकता का पता न लगे। ३-देखने में सुन्दर पर जल्दी टूट या बिगड़ जाने वाली वस्तु।

टट्टुर [संज्ञा पु.] (सं.) भेरी का शब्द।

टट्टू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटे आकार का घोड़ा। टाँगन। २-लिंगेन्द्रिय। (बाजारू)।
टट्टू पार करना-प्रयोजन सिद्ध होजाना। *भाड़े का टट्टू*-धन लेकर किसी का काम करने वाला व्यक्ति।

टठिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टाठी'।

टड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाँह में पहनने का एक गहना। टांड़।

टण [संज्ञा पु.] देखो 'टना'।

टन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घंटा बजने का शब्द। झनकार।
टन हो जाना-चटपट मर जाना।
[संज्ञा पु.] (अं.) एक अंगरेजी तौल जो अट्ठाईस मन के लगभग होता है।

टनकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-टनटन बजना। २-गरमी से मस्तक में पीड़ा होना।

टनटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घंटा बजने का शब्द।

टनटनाना [क्रि. स.] (हिं.) घंटा बजाना।
[क्रि. अ.] (हिं.) टनटन बजना।

टनमन [संज्ञा पु.] (हिं.) तंत्रमंत्र। जादू। टोना।
[वि.] (हिं.) देखो 'टनमना'।

टनमना [वि.] (हिं.) स्वस्थ। चंगा। 'अनमना' का उलटा।

टना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टनी] १-स्त्रियों की योनि के बीच की उभड़ी हुई मांस की ग्रन्थि। २-भग। योनि।

टनाका* [संज्ञा पु.] (हिं.) घंटा बजने का शब्द।
[वि.] (हिं.) बहुत कड़ा (घाम)।

टनाटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लगातार घंटा बजने का शब्द।
[वि.] (हिं.) बिलकुल ठीक दशा में।
[क्रि.वि.] (हिं.) टनटन शब्द सहित।

टनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टना'।

टनेल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पहाड़ आदि में सुरंग खोदकर बनाया हुआ मार्ग।

टप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फिटन, टमटम आदि गाड़ियों में लगा हुआ चमड़े या कपड़े का ओहार या छाजन। २-पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। टांका। ३-कान में पहनने का फूल।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बूंद-बूंद करके गिरने या टपकने का शब्द। २-ऊपर से गिरने का शब्द।
टप से-झट से। तुरन्त।

टपक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टपकने की क्रि या भाव। २-बूंद-बूंद गिरने का शब्द। रहकर होने वाली पीड़ा।

टपकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बूंद-बूंद गिरना। चूना। रसना। २-ऊपर से गिरना या पड़ना। ३-कोई भाव प्रकट जाहिर होना। झलकना। ४-रह-रह कर करना। चिलकना। टीस मारना।

टपका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बूंद-बूंद गिरने का भाव। २-टपकी हुई वस्तु। रसाव। पककर आप से आप गिरा हुआ फल। रह-रहकर उठने वाला दर्द। टीस। घोड़े के खुर का एक रोग। खुरपका।

टपकाटपकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुहार। २-फलों का निरन्तर एक-एक गिरना। ३-किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए मनुष्यों का एक पर टूटना। पीछे दूसरे की मृत्यु। [वि] भूला-भटका इक्कादुक्का। बहुत कम।

टपकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बूंद-बूंद गिराना। चुआना। २-भभके से खींचना। चुआना।

टपकाव [संज्ञा पु.] (हिं.) टपकाने का भाव।

टपना [क्रि. अ.] (हि.) १-बिना खाये रहना। निराहार रहना। २-व्यर्थ आसरे में रहकर कष्ट उठाना। [क्रि. स.] १-किसी वस्तु को पार करके आगे बढ़ना। लांघना कूदना। फांदना।

टपमाल [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाजों पर काम आने वाला लोहे का एक बड़ा घन।

टपरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टपरी, टपरिया] १-छप्पर। २-झोंपड़ा।

टपाटप [क्रि. वि.] (हिं.) १-निरन्तर टपटप शब्दसहित (गिरना)। बराबर बूंद-बूंद करके (गिरना)। २-जल्दी-जल्दी।

टपना [क्रि. स.] (हिं.) १-निराहार पड़े रहने देना। २-व्यर्थ आसरे में रखना। कुदाना। फँदाना।

टप्पर [संज्ञा पु.] (हिं.) छप्पर। छाजन।
टप्पर उलटना-दिवाला निकलना।

टप्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दो स्थानों के बीच की विस्तृत भूमि। २-उछाल। फलाँग। उतनी दूर जितनी कोई फैंकी हुई वस्तु करे। ४-भूमि का छोटा भाग। ५-अंतर। फरक। ६-दूर-दूर की सिलाई। ७-पाल वेग से चलने वाला नाव का बेड़ा। ८-एक प्रकार का हुक या काँटा। ९-वह ठहराव जहाँ पालकी के कहार बदले जाते हैं। नियत दरी। ११-रहरह-रहकर

वस्तु का बीच-बीच में टिकान। १२-एक का ठेका जो तिलवाड़ा ताल पर बजाया जाता है। १३-एक प्रकार का चलता पंजाबी गाना।

देना-१-कूदना। २-अंतर डालना। डालना, भरना, मारना-दूर-दूर बखिया करना।

[वि.] (हिं.) १-टप्पे (गाने) से संबंधित। टप्पा गाने वाला।

[संज्ञा पु.] (अ.) पानी का एक खुला बरतन जो नांद के आकार का होता है।

[संज्ञा पु.] (हिं.) छत से लटकाने वाला

[संज्ञा पु.] (हिं.) कुटम्ब। परिवार

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा नगाड़ा। डुगडुगिया।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊँचे पहियों की एक घोड़ागाड़ी।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बरतन

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टौंस नदी। तमसा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का विलायती खट्टा होता है।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टमकी'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कर्कश या कर्ण-कटु शब्द। कड़ुवी बोली। २-मेंढक की बोली। ऐंठ। अकड़। ४-हठ। जिद। अड़। तुच्छ बात। ६-ईद के बाद का एक मेला।

टरटर करना-१-जबानदराजी करना। २-बकवाद करना। *टरटर लगाना*-व्यर्थ बकवाद करना।

[क्रि. अ.] (हिं.) १-चलाजाना। खिसक जाना। २-टरटर करना। कर्कश स्वर से बोलना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ईख अथवा गन्ने की दूसरी बार की सिंचाई।

[क्रि. स.] (हिं.) १-एक स्थान से दूसरे पर कर देना। हटाना। २-टाल देना। धता बता देना। चलता करना।

[संज्ञा पु.] (तु.) एक प्रकार का मुर्गा जिसे भी कहते हैं।

[संज्ञा पु.] (देश.) चारे के काम आने वाली एक घास।

[क्रि. स.] (हिं.) १-बकबक करना। २-ऐंठ से बोलना। टरटर करना।

[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टलना'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टरने का भाव।

[वि.] (हिं.) १-ऐंठकर बात करने वाला। सीधे न बोलने वाला। २-धृष्ट। कटुवादी।

[क्रि. अ.] (हिं.) ऐंठकर बातें करना।

टर्रापन [संज्ञा पु.] (हिं.) कटुवादिता। बात करने में कठोरता।

टर्रू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अविनीत और कठोर शब्द बोलने वाला व्यक्ति। मेढ़क। ३-टर्र-टर्र की ध्वनि सहित बोलने वाला एक खिलौना।

टलन [संज्ञा पु.] (सं.) परेशानी। व्यग्रता। विकलता।

टलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अपने स्थान से अलग होना। खिसकना। सरकना। २-अनुपस्थित होना। ३-दूर होना। मिटना। ४-(किसी काम के लिए) निश्चित समय से अपने आगे का समय नियत करना। ५-अन्यथा होना। ठीक न रहना। ६-उल्लंघित होना या पूरा न किया जाना। ७-समय बीतना।

टलहा+ [वि.] (देश.) [स्त्री. टलही] खोटा। खराब। दूषित।

टलाटली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टालटूल'।

टलित [वि.] (सं.) विचलित। अधीर।

टल्ला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धक्का। आघात। ठोकर।

टल्ले मारना-इधर से उधर व्यर्थ घूमना।

टल्ली [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाँस।

टल्लेनवीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिल्लेनवीस'।

टल्लो+ [संज्ञा स्त्री.] (?) छोटी टहनी।

टवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) ट, ठ, ड, ढ, ण इन पाँच वर्णों का समूह।

टवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यर्थ घूमना। आवारगी।

टस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी भारी वस्तु के सरकने का शब्द। २-कपड़े आदि के फटने का शब्द।

टस से मस न होना-१-भारी वस्तु का अपने स्थान से न हिलना। २-अपना **हठ न** छोड़ना।

टसक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कसक। टीस। चसक।

टसकना [क्रि. स.] (हिं.) १-खिसकना। जगह से हिलना। २-टीस मारना। कसकना। ३-प्रभावित होना। ४-पक कर गदराना। ५-रोनाधोना। आँसू बहाना।

टसकाना [क्रि. अ.] (हिं.) खिसकना। सरकना।

टसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) कपड़े आदि का फटना मसक जाना। दरकना।

टसर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का घटिया कड़ा और मोटा रेशम जो बंगाल के जंगलों में होता है।

टसुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आँसू। अश्रु।

टसुए बहाना-झूठमूठ आँसू गिराना।

टहक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रह-रहकर उठने वाली पीड़ा। चसक।

टहकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-रह-रहकर दर्द करना। चसकना। २-पिघलना।

टहकाना* [क्रि. स.] (हिं.) आँच से पिघलाना।

टहटहा* [वि.] (हिं.) टटका। ताजा।

टहना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टहनी] वृक्ष की शाखा या डाल।

टहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृक्ष की पतली शाखा या डाली। टहनी।

टहरकट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह काठ का टुकड़ा जिस पर तकली से सूत उतारा हुआ सूत लपेटा जाता है।

टहरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टहलना'।

टहल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सेवाशुश्रुषा। २-नौकरीचाकरी।

टहल टई-सेवा शुश्रूशा। *टहलटकोरी*-सेवा शुश्रूषा। *टहल बजाना*-सेवा करना।

टहलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मन्दगति से भ्रमण करना। २-व्यायाम या मन बहलाव की दृष्टि से इधर उधर चलना या घूमना। ३-मर जाना।

टहल जाना-धीरे से खिसक जाना।

टहलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टहल करने वाली दासी। मजदूरनी। २-बत्ती उकसाने के लिए चिराग में पड़ी हुई छोटी लकड़ी।

टहलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-धीरे धीरे चलाना। घुमाना। फिराना। २-सैर कराना। हवा खिलाना।

टहलुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टहलुई, टहलनी] टहल करने वाला। सेवक। नौकर। खिद्मतगार।

टहलुई [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टहलनी'।

टहलुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टहलुआ'।

टहलू [संज्ञा पु.] (हिं.) नौकर। चाकर। सेवक।

टही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोड़तोड़। युक्ति। प्रयोजन सिद्धि का ढंग।

टही लगाना-जोड़तोड़ लगाना। *टही में रहना* काम निकालने की ताक में रहना।

टहुआटारी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चुगलखोरी। इधर उधर की लगाना।

टहूका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहेली। २-चमत्कारपूर्ण उक्ति। चुटकला।

टहोका [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

टहोका देना-ढकेलना। *टहोका खाना*-धक्का खाना।

टांक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तीन या चार माशे की एक तोल (जौहरी)। २-कूंत। अंदाज। आँक। ३-हिस्सेदारों का हिस्सा। ४-टाँके जाने की क्रिया या भाव। ५-लिखावट। लिखन। ६-कलम की नोक।

टाँकना [क्रि. स.] (हिं.) १-कीलकांटे ठोक कर एक वस्तु से मिलाना या बैठाना। २-सूई के सहारे टांके लगाकर जोड़ना। सीना। ३-

सी-कर अटकाना । ४–सिल, चक्की आदि में टाँकी से खुरदरा करना । रेहाना । ५–रेती के दाँतों को नुकीला या तेज करना । ६–खाते आदि में लिखना या चढ़ाना । दर्ज करना । + ७–लिखकर पेश करना । ८–खाना । चटकर लाना । ९–अनुचित रूप से धन हरण करना ।
मन में टाँक रखना–याद रखना ।

टाँकली [संज्ञा स्त्री.] (?) पाल लपेटने की घिरनी या गड़ारी ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पुराना बाजा ।

टाँका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह वस्तु जो दो वस्तुओं को जोड़कर एक करती हो । २–धातु जोड़ने का मसाला । ३–सिलाई । सीवन । ४–टांकी हुई चकती या टुकड़ा । थिगली । चिप्पी । ५–जोड़ । पत्थर काटने की चौड़ी छेनी । ७–हौज । कुंडी । चहबच्चा । ८–पानी रखने का बड़ा बरतन । कंडाल ।

टाँकटूक [वि.] (हिं.) ठीक तुला हुआ । वजन में पूरा-पूरा ।

टाँकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पत्थर गढ़ने की छेनी । २–तरबूज आदि में काटकर बनाया चौखूंटा कटाव । ३–काटकर बनाया हुआ छेद । ४–एक प्रकार का फोड़ा । ५–आरी का दांता । ६–छोटा हौज । ७–पानी रखने का बड़ा बरतन । कंडाल ।

टाँकीबंद [वि.] (हिं.) वह इमारत या दीवार जिसमें लगे हुए पत्थर दोनों ओर गड़ने वाली कीलों के द्वारा एक दूसरे से खूब जुड़े हों ।

टाँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमर के नीचे वाले दोनों अंग जिनसे प्राणी चलते या दौड़ते हैं । जीवों के चलने फिरने का अवयव । २–कुश्ती का एक पेंच । ३–चतुर्थांश । चौथाई भाग । *टाँग अड़ाना*–१–फिजूल दखल देना । २–विघ्न डालना । ३–जिसका ज्ञान न हो उसके संबन्ध में कहना । *टाँग तले से निकलना*–हार मानना । *टाँग तले से निकालना*–१–नीचा दिखाना । हराना । २–सिखाना । *टाँग तोड़ना*–१–अङ्ग भङ्ग करना । २–चलते-चलते पैर थकना । ३–किसी काम का न रखना । *टाँग पसार कर सोना*–१–निश्चिंत । निर्द्वन्द सोना । २–चैन से दिन बिताना । *टाँग से टाँग बाँधकर बैठना*–सदा पास बैठे रहना । *टाँगें रह जाना*–१–लकुआ या गठिया से पैर बेकार होना । २–चलते-चलते पैर दर्द करना । *टाँगें लेना*–१–टाँग पकड़ना । २–कुत्ते के समान काटना ।

टाँगन [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घोड़ा जो बहुत कम ऊंचा हो ।

टाँगना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी वस्तु को दूसरी पर लटकाना । २–फांसी चढ़ाना या लटकाना ।

टाँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार की दुपहिया गाड़ी । २–बड़ी कुल्हाड़ी ।

टाँगानोचन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खींचातानी । खींचखसोट ।

टाँगी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुल्हाड़ी ।

टाँगुन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बाजरे या कंगनी की तरह का एक अन्न ।

टाँघन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टाँगन' ।

टाँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दूसरे का काम बिगाड़ने की बात । भाँजी । २–टाँका । सिलाई । ३–टकी हुई चकती । थिगली ।

टाँचना [क्रि. स.] (हिं.) १–टाँकना । सीना । २–काटना । तराशना ।
[क्रि. अ.] (हिं.) फूलाफूला फिरना ।

टाँची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–न्योली । बसनी । न्यौजी । २–भाँजी ।

टाँचु+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टाँच' ।

टाँट* [संज्ञा पु.] (हिं.) खोपड़ी । कपाल ।
टाँट के बाल उड़ना–१–खूब मार पड़ना । २–सर्वस्व निकल जाना । ३–सिर के बाल झड़ना । *टाँट के बाल उड़ाना*–सिर पर खूब जूते लगाना । *टाँट खुजाना*–मार खाने को जी चाहना । *टाँट गंजी कर देना*–१–मारते-मारते सिर गंज करना । २–खूब खर्च करवाना । *टाँट गंजी होना*–खूब मार पड़ना ।

टाँटर* [संज्ञा पु.] (हिं.) खोपड़ी । कपाल ।

टाँठ* [वि.] (हिं.) १–करारा । कड़ा । कठोर । २–दृढ़ । बली । तगड़ा ।

टाँड़ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–लकड़ी के खंभों पर या दो दीवारों के बीच लकड़ी की पटरियां या बांस के लट्ठे ठहरा कर बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं । २–मचान । ३–गुल्ली पर डंडे का आघात । टोला । ४–स्त्रियों का एक गहना जिसे बाहु में पहनती हैं । टँड़िया ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढेर । अटाला । २–समूह पंक्ति । ३–घरों की पंक्ति । ४–देखो 'टांड़ा' ।
[संज्ञा. स्त्री.] (देश.) कंकरीली मिट्टी ।

टाँडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बनजारों के बैलों का झुंड जिन पर वस्तुएं लदी रहती हैं । ३–बिक्री के माल का खेप । ३–व्यापारियों का चलता समूह । ४–नाव पर से चढ़कर इस पार से उस पार जाने वाले पथिकों और व्यापारियों का समूह । ५–कुटुम्ब । परिवार । ६–एक प्रकार का हरा कीड़ा ।

टाँड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टिड्डी ।

टाँयटाँय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कर्कश शब्द । २–बकबक ।
टाँय-टाँय फिस–१–बकवाद बहुत पर फल कुछ नहीं । २–कार्य का आरम्भ तो बड़ी [illegible] के साथ पर अंत में होना-जाना कुछ [illegible]

टाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ-पैर के नसों [illegible] सिकुड़न ।

टाँसना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टांकना' ।

टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूमि । पृथ्वी । [illegible]

टाइटिल [संज्ञा पु.] (अं.) उपाधि । खिताब ।

टाइटिल-पेज [संज्ञा पु.] (अं.) आवरण पृष्ठ ।

टाइप [संज्ञा पु.] (अं.) सीसे के ढले हुए [illegible] जिनसे छपाई होती है ।

टाइपकास्टिंग-मशीन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) [illegible] के अक्षर ढालने का यन्त्र ।

टाइप-मोल्ड [संज्ञा पु.] (अं.) [illegible] ढालने का सांचा ।

टाइप-राइटर [संज्ञा प.] (अं.) वह यन्त्र [illegible] कागज रखकर टाइप के अक्षर छापे जाते हैं ।

टाइफाइड [संज्ञा पु.] (अं.) [illegible] आन्त्रिक ज्वर ।

टाइफोन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का तूफान ।

टाइम [संज्ञा पु.] (अं.) समय । वक्त ।

टाइम-टेबुल [संज्ञा पु.] (अं.) १–वह [illegible] पत्र या सारिणी जिसमें भिन्न-भिन्न कामों के लिए निर्धारित समय लिखा रहता है । २–वह पुस्तक जिसमें रेल के पहुँचने [illegible] का समय छपा होता है ।

टाइमपीस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मेज पर रखने की लंगर की घड़ी ।

टाई [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कपड़े की वह [illegible] जो कालर के नीचे फंदा लगाकर पहनी [illegible] है ।

टाउन [संज्ञा पु.] (अं.) शहर । कसबा ।

टाउन-ड्यूटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) चुंगी ।

टाकू [संज्ञा पु.] (हिं.) टकुआ । तकला ।

टाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सन या पटुए की [illegible] का बुना हुआ मोटा कपड़ा । २–बिरादरी [illegible] कुल । ३–महाजन के बैठने की गद्दी । *टाट उलटना*–दिवाला निकलना । *टाट में [illegible] का बखिया*–भद्दी चीज में बढ़िया साज । *टाट में पाट का बखिया*–बे मेल का साज । *एक ही टाट के*–एक ही बिरादरी या दल के ।
[वि.] (हिं.) कसा हुआ ।
टाट करना–मस्तूल खड़ा करना ।

टाटक* [वि.] (हि.) देखो 'टटका' ।

टाटबाफी-जूता [संज्ञा पु.] (हिं.) कामदार जूता ।

टाटर [संज्ञा पु.] (हि.) टट्टर । टट्टी । २–खोपड़ी । कपाल ।

टाटरिकऐसिड [संज्ञा पु.] (अं.) इमली का [illegible]

टाटिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टट्टी ।

टाटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टट्टी । छोटा टट्टर ।

टाठी# [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थाली।

टाड़ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भुजा पर पहनने का एक गहना। टाँड़।

टाडर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

टान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तनाव। खिंचाव। २-खींचने की क्रिया। ३-सितार के परदे पर उँगली रखकर इस प्रकार खींचने की क्रिया जिससे बीच के सब स्वर निकल आवें। ४-साँप के दाँतों की खरोंच।

[संज्ञा पु.] (हिं.) टाँड़। मचान।

टानना [क्रि. स.] (हिं.) १-तानना। २-खींचना। ३-छापना।

टाप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोड़े के पैर का वह भाग जो भूमि पर पड़ता है। सुम। खुर। २-घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द। ३-देखो 'टापा'।

टापड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊसर मैदान।

टापदार [वि.] (हिं.) जिसका ऊपरी या नीचे का भाग फैला हो।

टापना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घोड़ों का खड़े-खड़े पैर पटकना। खूंद करना। २-इधर उधर व्यर्थ घूमना। ३-उछलना। कूदना। ४-टक्कर मारना। ५-निराहार पड़े रहना। व्यर्थ प्रतीक्षा करना। ६-पछताना।

टापा+ [संज्ञा पु.] (देश.) ओढ़ने का मोटा कपड़ा। चद्दर।

[संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी मोटी सवारी।

टापा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लम्बा-चौड़ा मैदान। टप्पा। २-उजाड़ मैदान। ऊसर मैदान। ३-उछाल। ४-झावा।

टापा देना-फलांग मारना।

टापू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह भूखंड जो चारों ओर पानी से घिरा हो। द्वीप। +२-टप्पा। टापा।

टाबर [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चा। बालक।

टामू [संज्ञा पु.] (देश.) बैलों के मुख पर बांधने की कटोरे के आकार की जाली।

टामक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टिमटिमी। डिमडिमी। डुगडुगी।

टामन [संज्ञा पु.] (हिं.) टोटका। तन्त्रविधि।

टार [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-दलाल। ३-लौंडा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) ढेर। राशि। देखो 'टाल'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टालटूल। देखो 'टाल'।

टारन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सरकाने की वस्तु। २-कोल्हू में पड़ा हुआ लकड़ी का डंडा।

टारना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टालना'।

टारपीडो [संज्ञा पु.] (अं.) पानी के भीतर चलने वाला जंगी जहाज जो शत्रु के जहाजों का नाश करता है।

टाल [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-ऊँचा ढेर। अटाला। राशि। २-लकड़ी भूसे आदि की दुकान। ३-बैलगाड़ी के पहिये का किनारा। ४-टालने का भाव। ५-झूठा वायदा।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) गाय, बैल के गले में बांधने का घंटा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री-पुरुष का समागम कराने वाला दलाल। कुटना। भँडुआ।

टालटूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टालमटूल'।

टालना [क्रि. स.] (हिं.) १-हटाना। दूर करना। २-न रहने देना। मिटाना। ३-किसी काम के लिए आगे का सम स्थिर करना। स्थगित या मुलतवी करना। ४-आदेश या अनुरोध न मानना। ५-बहाना करके पीछा छुड़ाना। ६-हिलाना।

टाल-मटाल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'टालमटूल'।

टालम-टाल [क्रि. वि.] (हिं.) आधेआध।

टालमटूल [संज्ञा पु.] (हिं.) बहाना।

टाला [वि.] (हिं.) [स्त्री. टाली] आधा। अर्द्ध।

टाली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-गाय बैल आदि के गले में बांधने की घंटी। २-जवान गाय या बछिया। ३-एक प्रकार का बाजा। ४-अठन्नी। धेली।

टाल्ही [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का शीशम

टाहली+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टहलुआ। सेवक। दास।

टिंचर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक औषध जो तरल होती है और स्पिरिट के योग से बनती है।

टिंचर-ओपियाई [संज्ञा पु.] (अं.) अफीम का अर्क।

टिंचर-कार्डिमम [संज्ञा पु.] (अं.) अफीम का अर्क।

टिंचर-स्टील [संज्ञा पु.] (अं.) फौलाद के सार का अर्क।

टिंटिनिका, टिण्टिनिका. [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलसिरिस का पेड़। २-जौंक।

टिंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ककड़ी की जाति की बेल जिसमें गोल-गोल फल लगते हैं। इन फलों की तरकारी पकाई जाती है। २-रेंहट में लगा बरतन। डब्बू।

टिंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) ककड़ी की जाति की एक बेल या उसका गोल फल जिसकी तरकारी बनती है। डेंड़सी। ढेंड़सी।

टिंडर [संज्ञा पु.] (हिं.) रहट में लगी हुई हँड़िया

टिंडसी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) टिंडा नामक तरकारी।

टिंडिश [संज्ञा पु.] (सं.) टिंडा।

टिंडी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-हल को पकड़कर दबाने वाली मुठिया। २-जांता घुमाने का खूंटा।

टिक [संज्ञा पु.] (?) टिक्कर। लिट्ट। ठोंकना। पूआ।

टिकई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह गाय जिसके माथे पर टीका हो।

टिकट [संज्ञा पु.] (अं.) १-कागज, गत्ते आदि का छोटा टुकड़ा जो किसी कार्य विशेष का अधिकार पाने के लिये मूल्य से मिलता है। जैसे-रेल का टिकट, डाक का टिकट आदि। २-कागज का वह छोटा टुकड़ा जो किसी वस्तु पर उसके परिचय के लिए लगाया जाता है। चिप्पी। ३-कर महसूल।

टिकट लगाना-कर नियत करना।

टिकटिक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोड़ा हाँकने के लिए मुख से किया शब्द। २-घड़ी के चलने से उत्पन्न शब्द।

टिकटिकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'टिकटी'। २-ऊँची तिपाई।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया जिसका रंग भूरा और पैर कुछ लाली लिए होते हैं।

टिकठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ पैर बाँधकर बेत या कोड़े लगाये जाते हैं। २-ऊँची तिपाई जिसपर अपराधी को खड़ा करके गले में फांसी का फंदा लगाया जाता है। ३-तिपाई। ४-बुना हुआ कपड़ा फैलाने का लकड़ियों का बना हुआ ढांचा।

टिकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टिकड़ी] १-गोल चिपटा टुकड़ा। २-आंच पर सेंकी हुई मोटी छोटी रोटी। बाटी। ३-टप्पे के गहनों में कई नगों को जड़कर बनाया हुआ विभाग।

टिकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा टिकड़ा।

टिकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ठहरना। २-कुछ दिनों तक काम देना। ३-स्थित रहना। बना या अड़ा रहना। ४-किसी घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना।

टिकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टिकिया। २-एक प्रकार का नमकीन पकवान। ३-सिर पर पहनने का एक गहना।

टिकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी टिकिया। २-पन्नी, कांच, धातु आदि की बिंदी जिसे स्त्रियां माथे पर चिपकाती हैं। ३-छोटा टीका। ४-सूत बटने की फिरकी।

टिकस [संज्ञा पु.] (अं. *टैक्स*) कर। महसूल।

टिकसार# [वि.] (हिं.) देखो 'टिकाऊ'।

टिकाई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) युवराज। उत्तराधिकारी राजकुमार।

टिकाऊ [वि.] (हिं.) टिकने वाला। कुछ दिनों तक काम देने वाला। पायदार।

टिकान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टिकने या ठहरने की क्रिया या भाव। टिकने का स्थान। पड़ाव चट्टी।

टिकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठहराना। रहने को स्थान देना। २-अड़ाना। जमाना। स्थित करना। ३-सहारा देना।

टिकानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छकड़ा गाड़ी की वे दोनों लकड़ियाँ जिसमें पैंजनी डाल कर रस्सी से बाँधते हैं।

टिकाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ठहराव। २-स्थायित्व। स्थिरता। ३-पड़ाव। चट्टी।

टिकिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिपटा, गोल और छोटा टुकड़ा। गोलाकार छोटी वस्तु। कोयले की बुकनी से बना हुआ गोल टुकड़ा जिसे सुलगाकर तमाकू पीते हैं। इस प्रकार की एक मिठाई। ४-बाटी। लिट्टी। ५-माथे पर लगी हुई बिन्दी। ६-माथा। ललाट।

टिकुरा [संज्ञा पु.] (देश.) टीला। भीटा।

टिकुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टिकली। सूत कातने की फिरकी।
[संज्ञा पु.] (देश.) निसोथ। तुवुर्द।

टिकुला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टिकोरा'।

टिकुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिकली'।

टिकुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टकुआ' 'टेकुआ'।

टिकैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-युवराज। राजा का उत्तराधिकारी राजकुमार। २-अधिष्ठाता। सरदार।

टिकोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टकोर'।

टिकोरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आम का वह फल (कच्चा) जिसमें जाली न पड़ी हो।

टिकोला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टिकोरा'।

टिक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी टिकिया। २-बाटी। अंगाकड़ी। ३-मालपुआ।

टिक्का [संज्ञा पु.] (देश.) मूंगफली के पौधे का एक रोग।
+[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टिक्की] १-टीका। तिलक। बिंदी। २-खड़ा चिह्न। ३-सुध। स्मरण। याद।

टिक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टिकिया। २-बाटी। अंगाकड़ी। ३-माथे पर की बिंदी। गोल टीका। ४-ताश की बूटी। ५-चिह्न।

टिखटिख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिकटिक'।

टिघलना [क्रि. अ.] (हिं.) पिघलना।

टिघलाना [क्रि. स.] (हिं.) पिघलाना।

टिन्नन [वि.] (हिं.) १-तैयार। प्रस्तुत। २-उद्यत। मुस्तैद। ३-ठीक। दुरुस्त।

टिटकारना [क्रि. स.] (हिं.) टिकटिक करके किसी जानवर को हांकना।
टिटकारी पर लगाना-संकेत या बोली पहचान कर (पशु का) पास चला आना।

टिटिह, टिटिहा [संज्ञा पु.] (हिं.) टिटिहरी नामक चिड़िया का नर।

टिटिहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टीटी बोलने वाली एक छोटी चिड़िया जिसका रंग लाल, गरदन सफेद, पीठ खैरे रंग की, दुम मिलेजुले रंगों और चोंच काली होती है। यह पानी के किनारे पाई जाती है। कुररी।

टिटिहारोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चिल्लाहट। शोरगुल। २-रोना पीटना। क्रन्दन।

टिट्टिभ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. टिट्टिभी] १-टिटहरी। कुररी। २-टिड्डी।

टिट्टिभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टिट्टिभ की मादा।

टिट्टिभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टिट्टिभ की मादा।

टिड्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) पौधों पर फुदक कर उड़ने वाला कीड़ा जो कई रंगों का पाया जाता है।

टिड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मादा टिड्डा जो दल बांधकर उड़ते हैं और फसलों आदि को चौपट कर देते हैं।
टिड्डी दल-बहुत बड़ा झुंड।

टिढ़बिंगा [वि.] (हिं.) टेढ़मेढ़ा।

टिप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सांप का वह दंश जिसमें दांत चुभ गये हों और रक्त में विष का संचार हो गया हो।

टिपकना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टपकना'।

टिपका*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बूंद। कतरा।

टिपटिप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टपकने का शब्द। बूंद-बूंद गिरने का शब्द।
टिपटिप करना-बूंद-बूंद गिरना या बरसना।

टिपवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दबवाना। चँपवाना। २-पिटवाना। धीरे-धीरे प्रहार करवाना।

टिपारा [संज्ञा पु.] (हिं.) मुकुट के आकार की एक प्रकार की तिकोनी टोपी।

टिपुर [संज्ञा पु.] (देश.) १-अभिमान। घमंड। २-पाखंड। आडम्बर।

टिप्पणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह छोटा लेख जिसके द्वारा गूढ़ वाक्य आदि का विस्तृत अर्थ बताया जाय। २-समाचार आदि में प्रकाशित घटना आदि का संक्षिप्त विवरण या उसके सम्बन्ध में सम्पादक का विचार। नोट। ३-किसी व्यक्ति, विषय अथवा कार्य के सम्बन्ध में किया जाने वाला विचार। रिमार्क। ४-स्मरण रखने के निमित्त संक्षिप्त रूप में लिखी गई बात। नोट।

टिप्पन [संज्ञा पु.] (सं.) १-टीका। व्याख्या। २-जन्मपत्री। ३-जन्मकुंडली।
टिप्पन का मिलान-विवाह-संबंध स्थिर करने के लिए वर-कन्या की जन्म कुंडलियों का मिलान।

टिप्पनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टीका। व्याख्या।

टिप्पस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अभिप्राय साधन की युक्ति।

टिप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उँगली से रंग कर बनाया हुआ चिह्न। २-ताश की बूटी

टिफ़न [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दोपहर बाद का पान।

टिबरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-छोटी चोटी। २-रेगिस्तान में मिट्टी का

टिमकी+ [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-छोटा बरतन। २-बच्चों का पेट।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-छोटा टीका। गोल छोटी चिड़िया। ३-चिह्न। निशान।

टिमटिमाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-धीमे मंद-मंद जलना। २-झिलमिलाना। बुझने पर हो-होकर जलना। ३-मरणासन्न
आँख टिमटिमाना-आँख को थोड़ा-थोड़ा खोल कर बंद कर लेना।

टिमाक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बनाव, सिंगार ठसक। नखरा।

टिमिला [संज्ञा पुं.] (देश.) [स्त्री. टिमिली] छोकरा। लड़का।

टिमिली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) लड़की। छोकरी।

टिम्मा+ [वि.] (देश.) बौना। नाटा। ठिंगना

टिर [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टर'।

टिरफिस [संज्ञा स्त्री.] (हिं) विरोध। वाद। चीं-चपड़।

टिर्रा+ [वि.] (हिं.) देखो 'टर्रा'।

टिर्राना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टर्राना'।

टिलटिलाना+ [क्रि. अ] (हिं.) दस्त आना पतला दस्त फिरना।

टिलटिली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पतला दस्त हगने की क्रिया या भाव।

टिलवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी का टेढ़ा गठीला टुकड़ा। २-नाटा आदमी। ३- लूस व्यक्ति।

टिलिया+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-छोटी मुर्गी। २-मुर्गी का बच्चा।

टिलीलिली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बीच की उँगली नचाकर चिढ़ाने का शब्द।

टिलेहू [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का नेवला जिसके शरीर से दुर्गन्ध निकलती है।

टिलोरिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मुरगी का बच्चा

टिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) धक्का। ठोकर। चोट

टिल्लेनवीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निठल्ले सेवा। २-व्यर्थ का काम। ३-टालमटूल।

टिसुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आँसू। अश्रु।

टिहुकना+ [क्रि. अ.] (देश.) १-ठिठकना चौंकना।

टिहुनी+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-घुटना। कोहनी।

+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चौंकने की क्रिया या भाव।

+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टिहुकना'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) रहट में बाँधी जाने वाली हँडिया।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक लता जिसके फलों की तरकारी खाई जाती है। टिंडा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) जाँता घुमाने का खूंटा।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिड्डी'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गले में पहनने का एक सोने का आभूषण। २-माथे पर पहनने का एक आभूषण।

+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रीढ़ की हड्डी।

[संज्ञा पु.] (हिं.) थूनी। चाँड़।
देना-पौधों को सीधा रखने के लिए थूनी लगाना।

+ [क्रि. स.] (हिं.) १-टीका लगाना। देना। २-उंगली में रंग आदि पोत चिह्न या रेखा बनाना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-केसर, चन्दन आदि मस्तक, बाहु आदि पर सम्प्रदायसूचक के लिये लगाया जाने वाला चिह्न। २-कन्या पक्ष वालों का वर के मस्तक पर तिलक लगाकर विवाह निश्चित करना। तिलक। ३-श्रेष्ठ पुरुष। शिरोमणि। ४-राजसिंहासन अथवा गद्दी पर बैठने के समय होने वाला धार्मिक कृत्य। राजतिलक। ५-युवराज। राज्य का उत्तराधिकारी। किसी रोग को रोकने के निमित्त उस रोग का चेप अथवा रस सूई के द्वारा प्रविष्ट करने की क्रिया। ७-सोने का एक गहना जिसे स्त्रियां माथे पर पहनती हैं। ८-दाग। धब्बा। चिह्न। ९-घोड़े के माथे के बीच का वह भाग जहां भंवरी होती है। १०-वह भेंट जो आसामी राजा को देता है।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वाक्य, पद अथवा ग्रंथ का अर्थ स्पष्ट करने वाला वाक्य या ग्रंथ। अर्थ का विवरण। व्याख्या।

टीकाकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी ग्रंथ का अर्थ या आशय बताने के निमित्त उसकी टीका लिखने वाला व्यक्ति। व्याख्याकार।

टीकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टिकुटी। २-टिकिया। टिकी।

टीकुर [संज्ञा पु.] (देश.) १-ऊँची पृथ्वी। २-जंगल। वन।

टीटा [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'टना'।

टीड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिड्डी'।

टीन [संज्ञा पु.] (अं.) १-रांगा। २-रांगे की कलई की हुई पतली चद्दर। ३-ऐसी चद्दर का बना हुआ डब्बा या बरतन।

टीप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दबाव। दाब। २-हलके-हलके ठोंकने की क्रिया या भाव। ३-गच कूटने का काम। ४-वह लकीर जो पलास्तर घोटने से पूर्व उस पर डाली जाती है। ५-धनुष की टंकार। ६-गाने में खैंची हुई लम्बी तान। ७-हाथी के शरीर पर लेप करने की औषध। ८-दूध और पानी का शीरा। ९-जन्मपत्री। १०-हुण्डी। चेक। ११-सेना का एक भाग। १२-दस्तावेज। १३-सूचना, व्याख्या आलोचना आदि के रूप में लिखी हुई कोई बात। नोट। १४-दस्तावेज।
[वि.] (हिं.) सब से अच्छा। चुना हुआ। चोटी का।

टीप-टाप [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ठाटबाट। सजावट तड़क-भड़क।

टीपन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गांठ। टाँका। घट्टा। २-जन्मपत्री।

टीपना [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाना। चाँपना। २-धीरे-धीरे ठोंकना या दबाना। ३-ऊँचे स्वर में गाना। ४-अनुचित रूप से नकल करना। ५-चित्र बनाने से पूर्व रेखाएँ खींचना। रेखा कर्म। स्केचिंग।

टीबा [संज्ञा पु.] (हिं.) टीला। भीटा। ढूह।

टीम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) खेलने वालों का दल।

टीमटाम [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-बनाव का सिंगार। सजावट। २-तड़क-भड़क।

टीमोली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) व्यर्थ का अडंगा।

टीला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी, पत्थर आदि का उभरा हुआ भू भाग। २-मिट्टी या बालू का ढेर। धुस। ३-छोटी पहाड़ी।

टीस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रह-रहकर उठने वाला दर्द। चसक। हूल।
टीस उठना-रह-रहकर पीड़ा होना। *टीस मरना*-रह-रहकर दर्द होना।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किताब की सिलाई।

टीसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रह-रहकर दर्द उठना कसक होना। २-घाव फोड़े आदि का दर्द करना।

टुँगना [क्रि. स.] (हिं.) १-(चौपायों का) कोमल पत्तियों को दाँत से कुतर कर खाना। २-थोड़ा-सा काट या कुतर कर खाना।

टुंच [वि.] (हिं.) क्षुद्र। तुच्छ। टुचा।
टुंच भिड़ना-थोड़ी पूँजी से काम करना। *टुंच लड़ाना*-१-धीरे-धीरे जीतना (जूआ)। २-थोड़ी पुंजी से काम शुरू करना।

टुंटा [वि.] (हिं.) जिसका हाथ कटा हो। बिना हाथ का।

टुंटुक, टुण्टुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्योनाक। आलू। २-काला खैर।

टुंटुका, टुण्टुका [संज्ञा स्त्री.] पाठा।

टुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डाल टहनी आदि कटा वृक्ष। ठूंठ। २-हाथ कटा व्यक्ति। ३-बिना पत्तियों वाला पेड़। ४-एक प्रकार का प्रेत।

टुंडा [वि.] (हिं.) [स्त्री. टुंडी] १-वृक्ष। जिसकी डाल या टहनी कट गई हो। २-बिना हाथ का लुंजा। ३-एक सींग का (बैल) डूँडा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ कटा व्यक्ति। २-एक सींग टूटा बैल।

टुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाभि। ढोढी। २-बाहुदंड। भुजा।
टुंडियाँ बंधना या कसना-मुश्कें बंधना। *टुंडियाँ खिचना*-हथकड़ियाँ पड़ना।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] कटे हाथ की।

टुइयाँ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी जाति का तोता। सुग्गी।
[वि.] (हिं.) नाटा। बौना। ठिंगना।

टुइल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार का कपड़ा।

टुक [वि.] (हिं.) थोड़ा। तनिक। किंचित्।
टुक-सा-तनिक-सा। जरा-सा।
[क्रि. वि.] (हिं.) थोड़ा। तनिक। जरा।

टुकड़गदा [संज्ञा पु.] (हिं.) घर-घर रोटी का टुकड़ा मांगने वाला भिखारी। भिक्षुक।
[वि.] (हिं.) १-तुच्छ। २-अत्यन्त निर्धन।

टुकड़गदाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भिखारी। भिखमंगा। २-टुकड़े या भीख मांगने का काम।
[वि.] (हिं.) १-तुच्छ। दरिद्र। कंगाल।

टुकड़तोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) दुसरे का दिया खाकर निर्वाह करने वाला व्यक्ति (तुच्छ)। दूसरे का आश्रित मनुष्य।

टुकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटा हुआ अंश। खंड। छिन्न अंश। २-चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३-रोटी का तोड़ा हुआ अंश। ग्रास। कौर।
टुकड़ा तोड़ना-दूसरे के लिये भोजन पर गुजर करना। *टुकड़ा तोड़कर जवाब देना*-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। *टुकड़ा देना*-भिखारी को रोटी या भोजन देना। *टकड़ा मागना*-भीख मांगना। *टुकड़ा सा जवाब देना या टुकड़ा तोड़कर हाथ में देना*-लाग लपेट न रखना। कोरा जवाब देना। *टुकड़े-टुकड़े उड़ाना*-काट कर खंड खंड करना। *टुकड़ों पर पड़ना, रहना*-पराई कमाई से निर्वाह करना।

टुकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा टुकड़ा। २-दल। जत्था। ३-सेना का एक छोटा विभाग सैनिक-दल। ४-समुदाय। मंडली। ५-पशु-पक्षियों का दल। गोल। झुंड। ६-स्त्रियों का लहंगा। ७-कार्तिक-स्नान का मेला।

टुकनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टोकनी'।

टुकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का कपड़ा २-टुकड़ी।

टुका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टुकड़ा। खंड। २-किसी वस्तु का बहुत थोड़ा अंश।

टुका सा जवाब देना-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। कोरा जवाब देना। *टुका सा मुँह लेकर रह जाना*-लज्जित होकर रह जाना।

टुघलाना [क्रि. अ.] (देश.) १-मुखमें रखकर धीरे-धीरे कुचलना। चुभलाना। २-पागुराना। जुगाली करना।

टुचा [वि.] (हिं.) ओछा। नीचाशय। तुच्छ। छिछोरा।

टुटका [संज्ञा पु.] देखो 'टोटका'।

टुटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झारी गडवे आदि की पतली नली। छोटी टोंटी।

टुट-पुँजिया [वि.] (हिं.) जिसके पास थोडी पूँजी हो। बहुत थोड़ी पूंजी वाला।

टुटरूँ [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी पंडुकी या फाख्ता। *टुटरूँसा*-अकेला। एकाकी।

टुटरूँ-टूँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पंडुकी या फाख्ता की बोली। [वि.] १-एकाकी। अकेला। २-दुबला-पतला। कमजोर।

टुटुका [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बाजा जिसपर चमडा मढ़ा होता है।

टुटुहा+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिडिया का नाम।

टुटेला* [वि.] (हिं.) टूटा हुआ।

टुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाभि २-ठोडी। ३-टुकड़ी। डली।

टुनका+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक मूत्ररोग जिसमें मूत्रस्राव के साथ धातु भी गिरता है।

टुनकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पर वाला कीड़ा जो धान की फसल को हानि पहुँचाता है।

टुनगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टुनगी] टहनी का अगला भाग।

टुनगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टहनी का अगला भाग।

टुनटुना+ [संज्ञा पु.] (देश.) मैदे का बना एक नमकीन पकवान।

टुनहाया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोनटाया'।

टुनाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालमूली। मुसली।

टुनियाँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टोंटीदार मिट्टी का बरतन।

टुनिहाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टोनहाई'।

टुन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्ष की वह नाल जिसमें फल लगते और लटकते हैं।

टुपकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-धीरे से काटना या डंक मारना। २-चुगली खाना।

टुबी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोता। डुब्बी।

टुम्मा [संज्ञा पु.] (देश.) रुपया प्राप्त करने के उपरांत लिखी जाने वाली रसीद।

टुर्रा [संज्ञा पु.] (?) १-टुकड़ा। कण। २-डली। ३-ज्वार बाजरे आदि का दाना।

टुलकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ढुलकना'।

टुलड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस।

टुसकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टसकना'।

टूँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पादने का शब्द।

टूँक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टूक'।

टूँगना [क्रि. स.] (हिं.) १-वृक्ष की। कोमल पत्तियों को दाँत से काटना। कुतरना। २-कुतरकर चबाना। ३-देख-देखकर जी ललचाना।

टूँड़ [संज्ञा पु.] [स्त्री. टूँड़ी] १-कीड़ों के मुँह पर की वह पतली नलियाँ जिन्हें गड़ाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २-जौ, गेहूँ, धान आदि की बालों के सिरे पर निकला हुआ नोंकदार अवयव। सींग। सीगुर।

टूँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अनाज की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अंश। २-बाल के समान पतली नोक। ३-ढोंढी। नाभि। ३-गजरा, मूली आदि की नोक। ४-किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

टूक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टुकड़ा। खंड।

टूकर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टुकड़ा। खंड।

टूका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टुकड़ा। खंड। २-रोटी का टुकड़ा। ३-रोटी का चौथाई भाग। ४-भिक्षा भीख।

टूकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टुकड़ा। खंड। टूक। २-अंगिया के मुलकट के ऊपर की चकती।

टूक्यो* [संज्ञा पु.] (?.) भालू।

टूट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टूटकर अलग हो गया हुआ अंश। खंड। टूटन। २-टूटने का भाव। ३-भूल से छूटा हुआ वह शब्द अथवा वाक्य जो पुस्तक के किनारे पर पीछे से लिखा जाता है।
[संज्ञा पु.] (हिं.) टोटा। घाटा। कमी।

टूटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-टुकड़े-टुकड़े होना। खंडित होना। भग्न होना। २-चलते हुए क्रमभंग होना। ३-किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ४-किसी वस्तु पर सहसा झपटना। झुकना। ५-एक बारगी बहुत सा आ पड़ना। ६-अचानक धावा करना। ७-अकस्मात् प्राप्त होना। ८-पृथक होना। मेल में न रहना। ९-सम्बन्ध छूटना। १०-कम होना। क्षीण होना। कंगाल होना। १२-चलता न रहना। १३-युद्ध में किले का शत्रु के हाथ में जाना। १४-शरीर में ऐंठन या तनाव लिये पीड़ा होना। १५-टोटा या घाटा होना। १६-पूरे वसूल न होना। १७-फल उतरना।

टूटा [वि.] (हिं.) [स्त्री. टूटी] १-टुकड़े किया हुआ। भग्न। २-दुबला। कमजोर। शिथिल २-निर्धन। दीन।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोटा'।

टूटना* [क्रि. अ.] (हिं.) तुष्ट होना। होना।

टूठनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रसन्नता। संतोष।

टूनरोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुंगी।

टूना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोना'।

टूम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आभूषण। गहना। २-सुन्दर स्त्री। ३-धनी स्त्री। ४- और चतुर व्यक्ति। ५-उकसाने या की क्रिया। ७-ताना। व्यंग। *टूमटाम*-१-गहना-पाता। वस्त्राभूषण। बनाव-सिंगार। *टूम* गहना।

टूमना [क्रि. स.] (हिं.) १-धक्का देना। ताना मारना।
टूम झारना-ताना मारना।

टूरनामेंट [संज्ञा पु.] (अं.) वह खेल जिसमें प्राप्त या योग्यता दिखाने वालों को तोषिक दिया जाता है।

टूसा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मंदार डोडा। २-सूत। रेशा। ३-थाकर का
[संज्ञा पु.] (देश.) टुकड़ा। खंड।

टूसी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कली। फूल।

टें [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तोते की बोली।
टेंटें-व्यर्थ के बकवाद।
टें होना या बोलना-चटपट मर जाना।

टेंकिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताल के भेदों में से एक।

टेंकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुद्धराग का भेद। २-एक प्रकार का नृत्य।

टेंगड़ा, टेंगना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टेंगरा मछली।

टेंगर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की

टेंगरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की जिसके शरीर में तीन काटे होते हैं।

टेंघुना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टेंघुनी]

टेंघुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुटने पर की

टेंचन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टेक। खंभा।

टेंट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमर में लिपटी धोती की ऐंठन जिसमें कभी-कभी पैसा भी रखते हैं। २-कपास की ढोंढ। करील का फल। ४-करील। ५-पशुओं का प्रकार का घाव। ६-देखो 'टेंटर'। *टेंट में कुछ होना*-पास में कुछ होना।

टेंटड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टेंटर'।

टेंटर [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख के ढेले पर चोट के कारण उभड़ा हुआ माँस। ढेंढर।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक लम्बी चोंच वाला [illegible]ची।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टेटा'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-करील। २-करील का [illegible]ल।

[illegible] [संज्ञा पु.] देखो 'टर्रा'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) सोना। पाठा। श्योनाक।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) १-गला। घेंटू। २-[illegible]ठा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तोते की बोली। २-[illegible] की बकवाद। धृष्टतापूर्ण बात।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'टिड'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिडसी'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'टेव'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टेकन'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु को [illegible] या गिरने से बचाने के लिए उसके [illegible] लगाई वस्तु। २-जुलाहों की वह लकड़ी [illegible] की डांड़ी में लगाई जाती है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-भारी वस्तु को [illegible] रखने के लिए उसके नीचे लगाई हुई [illegible] या रोक। थूनी। थम। २-सहारा। [illegible]। ३-आश्रय। अवलम्ब। ४-बैठने का [illegible]। ५-ऊँचा टीला। ६-मन में ठानी-[illegible] बात। दृढ़ संकल्प। अड़। हठ। जिद। [illegible]-आदत। संस्कार। ८-गीत या पट का वह [illegible] जो बारम्बार गाया जाता है। स्थायी। [illegible]-पृथ्वी का नुकीला भाग जो पानी में कुछ दूर तक चला गया हो।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टीला। २-छोटी पहाड़ी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. टेकनी] अटुकन। टेक। चाँड़।

[illegible] [क्रि. स.] (हि.) १-सहारे के लिए की गई वस्तु पर भार रखना। २-सहारा लेना। [illegible] लगा देना। ३-ठहराना या रखना। [illegible]-सहारे के लिए थामना या पकड़ना। ४-हाथ का सहारा लेना। +* ५-टेक करना। हठ करना। ठानना।

माथा टेकना-प्रणाम करना।

[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जंगली धान। चनाव।

टेकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टेकन'।

टेकर, टेकरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (स्त्री. टेकरी) १-टीला। २-छोटी पहाड़ी।

टेकरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'टेकर, टेकरा'।

टेकला+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धुन। रट।

टेकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा कोई भारी वस्तु उठाई या गिराई जाती है।

टेकान [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ऊपर की वस्तु संभालने के लिए उसके नीचे टिकाई हुई लकड़ी। टेंक। चाँड़। २-वह ऊँचा स्थान जहाँ बोझ रखने वाले बोझ रखकर सुस्ताते हैं। ३-वह स्थान जहाँ से जुआरियों के जूए के अड्डे का पता मिलता है।

टेकाना+ [क्रि. स.] (हि.) १-उठाकर लेजाने में सहारा देने के लिए थामना। २-सहारा देने के लिए थामना या पकड़ना।

टेकानी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पहिये को रोकने की लोहे की कील। किल्ली।

टेकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला। २-हठी। जिद्दी। दुराग्रही।

टेकुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चरखे का तकला। २-टिकाने या अड़ाने की वस्तु। ३-गाड़ी को ऊपर ठहराए रखने की कड़ी।

टेकुरा [संज्ञा पु.] (देश.) पान।

टेकुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सूत कातने की तकली। २-रस्सी बटने का तकला। ३-गोप नामक गहना। ४-चमारों का सूआ। ५-मूर्ति बनाने वालों का एक औजार। ६-जुलाहों की फिरकी जिसकी नोक में रेशम फँसाया होता है।

टेघरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टिघलना'।

टेचिन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का ढिबरीदार पेंच।

टेटका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक कान का गहना।

टेढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टेढ़ापन। वक्रता। २-अकड़। ऐंठ। ३-उजड्डपन।

टेढ़ की लेना-उजड्डपन करना।

+ [वि.] (हि.) देखो 'टेढ़ा'।

टेढ़विडंगा [वि.] (हिं.) टेढ़ामेढ़ा। बेडौल।

टेढ़ा [वि.] (हिं.) (स्त्री. टेढ़ी) १-जो बीच में से इधर-उधर मुड़ा हुआ हो। वक्र। कुटिल। जो सामानांतर या सीधा न गया हो। तिरछा। ३-जो सुगम या सहज न हो। पेचीला। कठिन। ४-जो शिष्ट या नम्र न हो। उद्धत। उग्र। उजड्ड।

टेढ़ामेढ़ा-जो सीधा और सुडौल न हो।

टेढ़ाबाँका-छैलचिकनिया।

टेढ़ा पड़ना या होना-१-ऐंठना। अकड़ना। २-कठोर व्यवहार करना। *टेढ़ामेढ़ा करना*-किसी प्रकार काम कर लेना। *टेढ़ी अंगुली से घी निकालना*-धूर्त्तता से काम निकालना। *टेढ़ी आँखें करना*-कुपित दृष्टि करना। *टेढ़ी आँखों से देखना*-क्रूर दृष्टि करना। *टेढ़ी खीर*-दुष्कर कार्य। *टेढ़ी चितवन*-तिरछी नजर। *टेढ़ी सीधी सुनाना या टेढ़ी सुनाना*-खरी खोटी सुनाना।

टेढ़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) टेढ़ापन। टेढ़ा होने का भाव।

टेढ़ापन [संज्ञा पु.] (हिं.) टेढ़ा होने का भाव।

टेढ़े [क्रि. वि.] (हिं.) घुमाव-फिराव के साथ। सीधे नहीं।

टेढ़े-टेढ़े जाना-घमंड करना।

टेना [क्रि. स.] (हिं.) १-तेज करने के लिए पत्थर आदि पर हथियारों में धार लगाकर तेज करना। २-मूछ के बालों को उमेड़ कर खड़ा करना।

टेनिस [संज्ञा पु.] (अं.) रबड़ के गेंद और जालीदार बेट से खेलने का एक खेल।

टेनी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी उँगली।

टेनी मारना-डँडी मार कर सौदा कम तौलना।

टेपारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टिपारा'।

टेबुल [संज्ञा पु.] (अं.) १-मेज। २-सारिणी। जैसे—टाइम-टेबुल।

टेम [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दीपशिखा। दीपक की लौ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) समय। वक्त।

टेमन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का साँप।

टेमा [संज्ञा पु.] (देश.) कटे हुए चारे की छोटी अंटिया।

टेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गाने में ऊंचा स्वर। तान। टीप। २-बुलाने का ऊंचा शब्द। पुकारने की आवाज। पुकार। ३-निर्वाह। गुज़र।

टेर करना-गुजारना। बिताना।

टेरना [क्रि. स.] (हि.) १-ऊँचे स्वर से गाना। २-पुकारना। बुलाना। ३-निबाहना। तै करना। ४-बिताना। गुजारना।

टेरवा [संज्ञा पु.] (देश.) हुक्के की नली का वह भाग जिस पर चिलम रखी रहती है।

टेरा [संज्ञा पु.] (?) १-अंकोल का पेड़। २-तना। वृक्ष-स्तम्भ। ३-शाखा।

टेराकोटा [संज्ञा पु.] (अं.) पकी हुई मिट्टी के समान रंग जिससे मकानों में बेलबूटे बनाये जाते हैं।

टेरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-पतली शाखा। टहनी। २-एक पौधा जिसकी कलियों से रंग निकलता है। ३-बबूल की फली।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दरी बुनने का सूजा।

टेरो [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सरसों का एक भेद। उलटी।

टेलिग्राफ [संज्ञा पु.] (अं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा सांकेतिक ध्वनि से दूर देश में समाचार भेजा जाता है।

टेलिग्राम [संज्ञा पु.] (अं.) तार द्वारा भेजी हुई खबर।

टेलीफोन [संज्ञा पु.] (अं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा एक स्थान से कही हुई बात दूसरे स्थान पर सुनाई पड़ती है। दूरभाष।

टेली [संज्ञा पु.] (देश.) मझले आकार का एक वृक्ष।

टेव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अभ्यास। आदत। प्रकृति।

बान। स्वभाव।

टेव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाव की सब से ऊपर की छोटी पाल। २-जुलाहों की बांस की एक चिरी लकड़ी।

टेवना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टेना'।

टेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जन्मपत्री। २-वह लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, दिन, घड़ी आदि लिखी रहती है।

टेवैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टेने वाला। हथियार पर धार लगाने वाला।

टेसुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टेसू'।

टेसू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पलाश का फूल। ढाक का फूल। २-पलाश का पेड़। ३-मनुष्य की आकृति का एक खिलौना जिसे लड़के शारदीय नवरात्र के दिनों में लेकर गाते हुए घूमते हैं। ४-इस उत्सव में गाया जाने वाला गीत।

टेहला [संज्ञा पु.] (देश.) विवाह की रीति या रस्म।

टैंक [संज्ञा पु.] (अं.) थलयुद्ध में लड़ने वाली एक प्रकार की गाड़ी।

टैयाँ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार छोटी और चिपटी कौड़ी।

टैक्स [संज्ञा पु.] (अं.) कर। महसूल।
इनकमटैक्स-आय-कर।

टैन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जिससे चमड़ा कमाया जाता है।

टैना + [संज्ञा पु.] (देश.) खेत में पक्षियों को डराने के लिए खड़ा किया हुआ घास का पुतला या डंडे पर रखी हुई काली हाँड़ी।

टैनी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भेड़ों का झुण्ड।

टैरा [संज्ञा पु.] देखो 'टेरा'।

टैरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टेरी'।

टोंक+ [संज्ञा पु.] देखो 'टोंका'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'टोक'।

टोंका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोर। सिरा। २-नोक। कोना। ३-वह जमीन जो नदी में कुछ दूर तक चली गई हो।

टोंगा [संज्ञा पु.] देखो 'टाँगा'।

टोंगू [संज्ञा पु.] (देश.) फैलने वाली एक झाड़ी।

टोंचना [क्रि. स.] (हिं.) चुभाना। गड़ाना। धंसाना।

टोंट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चोंच। ठोर।

टोंटरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टोंटी'।

टोंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टोंटी] १-पक्षी की चोंच के समान पानी गिराने की लोटे आदि बरतन में लगी नली। २-करतूस।

टोंटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पानी ढालने की झारी में लगी नली। तुलतुली। २-पशुओं का थूथन।

टोंस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टौंस'।

टोआ [संज्ञा पु.] (हिं.) गड्ढा।

टोइयाँ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी जाति का सुग्गा जिसकी चोंच पीली होती है।

टोइ+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पोर।

टोक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बार मुख से निकला हुआ शब्द। उच्चारण किया हुआ अक्षर।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टोकने की क्रिया या भाव। २-नजर। बुरी दृष्टि का प्रभाव। (स्त्री.)।
टोकटाक-पूछताछ। *रोकटोक*-किसी को रोकर उससे कुछ पूछना या उसे मना करना।
टोक में आना-नजर लगाने वाले के सामने जाना।

टोकना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को कोई काम करते देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछताछ करना। २-नजर लगाना। ३-एक पहलवान का दूसरे पहलवान को कुश्ती के लिए आमन्त्रित करना।
[संज्ञा पु.] [स्त्री. टोकनी] १-टोकरा। २-पानी रखने का धातु का बड़ा बरतन।

टोकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टोकरी। डलिया। २-पानी रखने का धातु का बना हंडा। ३-बटलोई।

टोकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. टोकरी) खांचा। झाबा। डला।

टोकरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टोकरी'।

टोकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा टोकरा। झांपी। झपोली। २-देगची। बटलोई।

टोकवा +[संज्ञा पु.] (देश.) उत्पाती लड़का।

टोकसी + [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नारियल की आधी खोपड़ी।

टोका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कीड़ा जो उर्द की फसल को हानि पहुँचाता है।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोंका'।

टोकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) स्मरण कराने के लिए कही हुई कोई बात या सांकेतिक शब्द।

टोट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोटा'।

टोटका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दैवी बाधा दूर करने के लिए वह प्रयोग जो किसी अलौकिक शक्ति अथवा भूत-प्रेत पर विश्वास करके किया जाय। टोना। २-नज़र से बचाने के लिए खेतों में रखी काली हाँड़ी।
टोटका करने आना-थोड़ी देर भी न बैठाना।
टोटका होना-किसी बात का तुरन्त हो जाना

टोटकेहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जादू-टोना या टोटका करने वाली।

टोटल [संज्ञा पु.] (अं.) जोड़। सभा।
टोटल मिलाना-जोड़ ठीक करना।

टोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाँस आदि का कटा हुआ टुकड़ा। २-बचा या कटा हुआ टुकड़ा। ३-कारतूस। ४-
आतिशबाजी। ५-घाटा। हानि।
अभाव।
टोटा देना या मारना-नुकसान

टोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ का गढ़ा
के आकार का लगभग दो फुट
टुकड़ा जो घर की दीवार के बाहर
छाजन को सहारा देने के लिए
है। टोंटा।

टोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चार
एक ताल। २-एक रागिनी जिसके
समय १० दंड से १६ दंड तक है।
[संज्ञा पु.] (अं.) नीच और तुच्छ
व्यक्ति। कमीना और
बच्चा-सरकारी अफसरों का
चापलूस।

टोनहा* [वि.] (हिं.) [स्त्री.
वाला। जादू करने या मारने वाला।

टोनहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टोना
जादू मारने वाली। नजर लगाने
तंत्रमंत्र द्वारा झाड़ फूंक करने वाली।

टोनहाया [संज्ञा पु.] (हिं.) जादू।
वाला व्यक्ति।

टोना [संज्ञा पु.] (हि.) १-मन्त्रतंत्र का
टोटका। जादू। विवाह में गाया
एक गीत।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक शिकारी चिड़िया
[क्रि. स.] (हि.) छूना। टटोलना।

टोनाहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

टोप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी टोपी।
त्रास। खोद। ३-खोल। गिलाफ।
श्ताना।
[संज्ञा पु.] (हि.) बूंद। जलकण।

टोपन [संज्ञा पु.] (देश.) टोकरा।

टोपरा* [संज्ञा पु.] देखो 'टोकरा'।

टोपरी* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टोकरी'।

टोपही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरतन के
ऊपरी भाग जो कटोरे के आकार
है।

टोपा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी टोपी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-टोकरा।
सीवन।
टोपा भरना-तागा भरना। सीना।

टोपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिर के
सिला हुआ पहरावा। २-ताज।
३-टोपी के आकार की कोई गोल
वस्तु। ४-इस आकार का धातु का
ढक्कन जिसे बन्दूक पर चढ़ाकर
से आग उत्पन्न होती है। ५-वह
शिकारी जानवर के मुख पर बाँधी
जाती है।

[illegible] टोपी उछालना-निरादर करना। टोपी बद-[illegible]-भाई भाई का संबंध जोड़ना। टोपीबदल [illegible]-टोपी बदल कर जोड़ा हुआ भाई का [illegible]। टोपी बदलना-राज्य बदलना।

[illegible] [वि.] (हिं.) जिस पर टोपी लगी हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टोपी पहनने [illegible] व्यक्ति। २-टोपियाँ बनाने वाला दरजी। [illegible] या युरेपियन।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) टांका। तोपा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) गड्ढा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-कटार। कटारी। [illegible] की मिट्टी का पानी।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) तोड़ना। [illegible] टोरना-लाज से निगाह नीची करना या [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) जुलाहों का सूत तौलने [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] देखो 'टोड़ा'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. टोरी] लड़का। [illegible]।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टोड़ी'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) छिलके सहित अरहर का [illegible] जो दाल में रह जाता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोर्रा'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मंडली। समूह। [illegible]। २-चटसार। पाठशाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग [illegible] दंड से २८ दंड तक के समय में गाया [illegible] है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (अं.) मार्ग कर। सड़क का मह-[illegible]। चुंगी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) १-बड़ी कौड़ी। टग्घा। [illegible]-गुल्ली पर डंडे की चोट। ३-रोड़ा। ४-[illegible] आघात। ५-ढंग।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) आदमियों की बड़ी बस्ती [illegible] एक भाग। मल्लाह। पाड़ा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा महल्ला।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नगर या बस्ती [illegible] छोटा भाग। २-समूह। झुंड। मंडली। [illegible]-पत्थर की चौकोर पटिया या सिल। ४-[illegible] प्रकार का बांस।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) धान की तरह की [illegible] घास।

[illegible]* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टोना'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) वह माँझी जो पानी की [illegible] जाँचता है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) -खोज। टटोल। [illegible]। २-खबर। ३-देखभाल। [illegible] मिलना-पता लगना। ठोह में रहना-[illegible] लगाना, लेना-पता लगाना। टोह रखना [illegible] भाल रखना।

टोहना [क्रि. स.] (हिं.) १-खोजना। ढूंढ़ना। २-टटोलना। हाथ लगाना।

टोहाटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-छान बीन। ढूंढ़ तलाश। २-देखभाल।

टोहिया [वि.] (हिं) १-टोह लगाने वाला। २-जासूस।

टोहियाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'टोहना'।

टोही [वि.] (हिं.) तलाश करने वाला।

टौंस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अयोध्या के पश्चिम से निकल कर बलिया के पास गंगा के मिलने वाली एक नदी। २-एक नदी जो मैहर के पास कैमोर पहाड़ से निकलती है।

टौनहाल [संज्ञा पु.] देखो 'टाउन हाल'।

टौरना [क्रि. स.] (हिं.) १-परखना। जाँचना। २-पता लगाना।

ट्रंक [संज्ञा पु.] (अं.) लोहे का सफरी संदूक।

ट्रंक-काल [संज्ञा पु.] (अं.) टेलीफोन द्वारा एक नगर से दूसरे नगर में बातचीत का काम

ट्रक [संज्ञा पु.] (अं) बिना छत की वह गाड़ी जो माल, सामान आदि ढोती है और गैस या पैट्रोल की सहायता से चलती हैं। खुली लारी।

ट्रम्प [संज्ञा पु.] (अं.) ताश के खेल का एक रंग।

ट्राम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) बड़े-बड़े नगरों में बिजली की सहायता से सड़कों पर बिछी लाइनों पर चलने वाली गाड़ी।

ट्रामगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ट्राम'।

ट्रालर [संज्ञा पु.] (अं.) सुरंग समेटने वाला छोटा जहाज।

ट्रेडमार्क [संज्ञा पु.] (अं.) बने हुए माल पर लगाये जाने का चिह्न।

ट्रेडल मशीन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पैर से चलने वाली मशीन।

ट्रेन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-रेलगाड़ी में लगी हुई गाड़ियों की पंक्ति। २-रेलगाड़ी। *ट्रेन छूटना*-रेलगाड़ी का स्टेशन पर से चल देना।

ठ

ठ हिन्दी वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का दूसरा वर्ण है इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है

ठंठ [वि.] (हिं.) ठूंठा। सूखा (वृक्ष)।

ठंठनाना [क्रि. अ., क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठनठनाना'।

ठंठस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढेंढस। ढेंढसी।

ठंठार [वि.] (हिं.) खाली। रीता। छूंछा।

ठंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दाना पीटने के बाद बालों में लगा अन्न। [वि.] जिसके बच्चा या दूध देने की संभावना न हो। (बूढ़ी गाय या भैंस)

ठंड [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठंढ'।

ठंडक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठंढक'।

ठंडा [वि.] (हिं.) देखो 'ठंढा'।

ठंडाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठंढाई'।

ठंढ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) शीत। जाड़ा। सरदी। *ठंड पड़ना*-सरदी फैलना। *ठंड लगना*-शीत का अनुभव होना।

ठंढई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठंढाई'।

ठंढक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शीत। सरदी। २-ताप अथवा जलन की कमी। तरी। ३-इच्छा पूर्ण होने से उत्पन्न संतोष। प्रसन्नता। तसल्ली। तृप्ति। ४-उपद्रव की शान्ति। *ठंडक पड़ना*-सरदी फैलना। *ठंडक लगना*-सरदी का अनुभव होना।

ठंढा [वि.] (हिं.) १-शीतल। सर्द। जिसमें ठंडक हो। २-बुझा हुआ। जो जलता या दहकता न हो। ३-जो उद्दीप्त न हो। जिसमें आवेश न हो। शांत। ४-नामर्द। नपुंसक। ५-शांत। धीर। गम्भीर। ६-सुस्त। मन्द। धीमा। उदासीन। ७-जो अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई बात होते देखकर न बोले। चुपचाप रहने वाला। *ठंडा करना*-१-दफन करना। २-तोड़ना। फेंकना। ३-बुझाना। ४-जल में विसर्जन करना। ५-क्रोध शांत करना। ६-तसल्ली देना। ७-हारना। ८-जोश मिटाना। *ठंडा पड़ जाना होना*-१-बे रोनक हो जाना। २-मरने के समीप होना। ३-मर जाना। ४-उदास होना। ५-खुश होना। ६-क्रोध शांत होना। *ठंढी आग*-१-पाला। तुषार। २-बरफ। हिम। *ठंढी आना*-१-शीत काल आना २-ज्वर से पहले ठंड लगना। *ठंढी गरमी*-बनावटी प्रेमावेश। *ठंढी साँस*-दुःख की लंबी सांस। आह भरना। *ठंढे ठंढे*-१-हंसी खुशी से। २-बिना विरोध। ३-सवेरे धूप से पहले *ठंढी कढ़ाई*-कढ़ाई में पीछे हलवा बनाकर बांटने की रीति। *ठंढी मार*-ऊपर दिखाई न दे भीतर चोट आवे। भीतर चोट आवे। भीतरी मार। *ठंढी मिट्टी*-१-ऐसा शरीर जिसमें जवानी जल्दी न मालूम दे। २-ऐसा शरीर जिसमें कामोद्दीपन न हो।

ठंढाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह दवा या मसाला जिससे शरीर में ठंडक पहुँचा कर गरमी शान्त करती है। २-भांग।

ठंढामुलम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) बिना आंच के सोना चांदी चढ़ाने का एक ढंग।

ठंढी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठंढा'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीतला। चेचक।

ठंढी करना–चेचक की अन्तिम पूजा करना। *ठंढी ढलना*–शीतला के दानों का मुरझाना। *ठंढी निकलना*–शीतल या चेचक का रोग होना।

ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–महाध्वनि। ३–चन्द्रमंडल। ४–मंडल। ५–शून्य। ६–गोचर।

ठउर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठौर'।

ठक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठोंकने का शब्द।
[वि.] (हिं.) स्तब्ध। भौचक्का। सन्नाटे में आया हुआ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) वह सलाई का सूजा जिसमें अफीम का किवाम लगाकर सेंकते हैं (चंडू-बाज)।

ठकठक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कहासुनी। झगड़ा। टंटा।

ठकठकाना [क्रि. स.] (हिं.) १–खटखटाना। २–ठोंकना। पीटना।

ठकठकिया [वि.] (हिं.) थोड़ी-सी बात के लिए दलील करने वाला। हुज्जती। बखेड़िया।

ठकठौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार की करताल। २–करताल बजा कर भिक्षा माँगने वाला। ३–एक प्रकार की छोटी नाव।

ठकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'ठ' अक्षर।

ठकुरई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठकुराई'।

ठकुरसुहाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लल्लोचप्पो। तोपामोद। खुशामद।

ठकुराइत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठकुरयात'।

ठकुराइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठाकुर की स्त्री। २–स्वामिनी। मालकिन। ३–क्षत्री की स्त्री। ४–नाइन। नाई की स्त्री।

ठकुराइस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठकुरायत'।

ठकुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठाकुर का अधिकार, पद या भाव। २–सरदारी। प्रधानता। ३–वह प्रदेश या क्षेत्र जो किसी ठाकुर के अधिकार में हो। राज्य। रियासत। ४–उच्चता। बड़प्पन। महत्व।

ठकुरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठाकुर की स्त्री। जमीदार की स्त्री। २–रानी। ३–मालकिन। स्वामिनी। ४–क्षत्रिय की स्त्री। क्षत्राणी।

ठकुराय [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रियों का एक भेद।

ठकुरायत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–आधिपत्य। प्रभुत्व। २–वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो।

ठकोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहारा लेने की लकड़ी। बैरागिन।

ठक्कर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टक्कर'।

ठक्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) देवता। ठाकुर। पूज्य प्रतिमा।

ठग [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. ठगनी, ठगिन] १–धोखा देकर लोगों का धन हर लेने वाला। २–छली। धूर्त्त।
ठग लगना–ठगों का पीछे पड़ना।

ठगई+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठग का काम। ठगपना। २–धोखा। छल।

ठगण [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगल में पाँच मात्राओं का एक गण।

ठगना [क्रि. स.] (हिं.) १–धोखा देकर किसी का धन हर लेना। २–छल करना। भुलावे या धोखे में डालना। ३–उचित मूल्य से अधिक लेना।
ठगासा–आश्चर्य से स्तब्ध। चकित।
+ [क्रि. अ.] १–धोखे में लुटना। ठगा जाना। २–धोखे में आना। ३–चक्कर में आना। चकित होना।

ठगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठग की स्त्री। २–ठगने वाली स्त्री। ३–धूर्त्त या छलने वाली स्त्री। ४–कुटनी।

ठगपन, ठगपना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ठगने का भाव या काम। २–धूर्त्तता। छल। चालाकी।

ठगमूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार नशीली जड़ी-बूटी जिससे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटते हैं।
ठगमूरी खाना–मतवाला होना।

ठगमोदक [संज्ञा पु.] (हिं.) ठगलाडू।

ठगलाडू [संज्ञा पु.] (हिं.) नशीली वस्तु मिला विषैला लड्डू जिसे खिलाकर पथिकों को बेहोश करते थे।
ठग लाडू खाना–मतवाला होना।

ठगवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे से धोखा कराना या दिलवाना।

ठगविद्या [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोखेबाजी। वंचकता। धूर्त्तता।

ठगहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठगपना।

ठगहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठगपना।

ठगाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठगपना।

ठगाठगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोखेबाजी। वंचकता। धोखाधड़ी।

ठगाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–ठगाजाना। २–किसी वस्तु का अधिक मूल्य देना।

ठगाही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठगाई' 'ठगहाई'।

ठगिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–धोखा देकर लूटने वाली। लुटेरिन। २–ठग की स्त्री। ३–चालबाज स्त्री।

ठगिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठगिन'।

ठगिया [संज्ञा पु.] देखो 'ठग'।

ठगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठग का काम। २–ठगने का भाव। ३–धोखेबाजी। चालबाजी।

ठगोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठगों की माया जिससे सुध-बुध भुला देते हैं। मोहिनी।
[वि.] (हिं.) ठगने वाली।

ठट [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बहुत-सी
समूह। २–झुंड। पंक्ति। जमाव।
ठट के ठट–झुंड के झुंड।
लगाना–१–भीड़ लगाना। २–ढेर

ठटकीला [वि.] (हिं.) सजा हुआ।
तड़क-भड़क वाला।

ठटना [क्रि. स.] (हिं.) १–ठहराना।
करना। २–सजाना। ३–छेड़ना।
करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १–खड़ा रहना।
सजना। तैयार होना।
ठटकर बोलना–प्रत्येक शब्द पर
बोलना।

ठटनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनाव। रचना।
वट।

ठटया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार
जानवर।

ठटरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अस्थिपंजर।
का ढाँचा। २–किसी वस्तु का
मुरदा ले चलने की अरथी।
बाँधने का जाल। खरिया।
ठटरी होना–दुबला होना।

ठटु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बनाव। रचना।
वट।

ठट्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठट'।

ठट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठटरी। अस्थि

ठठ्ठई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठट्ठा। हंसी।

ठट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) हँसी। उपहास।
परिहास।
ठट्ठेबाज–दिल्लगी बाज।
ठट्ठेबाजी–दिल्लगी। *ठट्ठा उड़ाना*–
करना। दिल्लगी करना। *ठट्ठा मारना*–
खिलाना। अट्टहास करना।
खिलखिलाकर हँसना।

ठठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'ठट'।
'ठाठ'।

ठठई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हँसी ठट्ठा।

ठठकना+* [क्रि. अ.] (हिं.) १–ठिठकना।
स्तंभित हो जाना।

ठठकान+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठठकने का

ठठना+ [क्रि. स., क्रि. अ.] (हिं.)
'ठटना'।

ठठरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अस्थिपंजर।
का ढाँचा। २–मुरदा ले चलने की
रथी। ३–किसी वस्तु का ढाँचा।

ठठवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार
कपड़ा।

ठठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठट्ठा'।

ठठाना [क्रि. स.] (हिं.) मारना।
ठोंकना।
[क्रि. अ.] खिलखिलाना। जोर से हँसना

ठठियार+ [संज्ञा पु.] (देश.) बरवाह।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठठेरे की स्त्री। ठठेरिन।

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ठठकना' 'ठिठकना'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठठेरे की बिल्ली।

[संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. ठठेरिन, ठठेरी) धातु पीटकर बरतन बनाने वाला। कसेरा। ठठेरे ठठेरे बदलाई–जैसे का तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली–ऐसा आदमी जो कोई अरुचिकर काम या बात देखते-देखते या सुनते-सुनते अभ्यस्त हो गया हो। खटके की आवाज का अभ्यस्त।

[संज्ञा पु.] (हिं.) ज्वार बाजरे का डंठल।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठठेरे की स्त्री। २–ठठेरा जाति की स्त्री। ३–ठठेरे का काम। ठठेरी बाजार।

[संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. ठठोलिन) १–विनोदप्रिय। मसखरा। दिल्लगीबाज। २–हंसी। ठठोली।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंसी। मसखरापन।

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ठठकना' 'ठिठकना'।

[वि.] (हिं.) खड़ा। दंडायमान।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का नैचा जो मिट्टी के हुक्के में लगता है।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–रीढ़। पीठ की खड़ी हड्डी। २–पतंग में चिपकी खड़ी कमची। ठड्ढा टूटी–कुबड़ी (स्त्री)।

[वि.] (हिं.) खड़ा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काठ की ऊँची ओखली जिसमें धान खड़े होकर कूटा जाता है।

[क्रि. स.] (हिं.) खड़ा करना।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'ठढिया'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातुखंड पर आघात का शब्द।

ठनठन–चमड़े से मढ़े बाजे का शब्द।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–मृदङ्ग आदि की ध्वनि। २–रहरह कर चोट लगने के समान पीड़ा। टीस। चसक।

[क्रि. अ.] (हि.) १–ठनठन शब्द होना। २–ठहर-ठहर कर पीड़ा होना। टीस मारना। माथा ठनकना–कुछ खटका या सन्देह होना। किसी बुरे लक्षण को देखकर चित्त में घोर आशंका उत्पन्न होना। तबला ठनकना–नाच-गाना होना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–धातु पर आघात पड़ने या बजने का शब्द। २–आघात। ठोकर। ३–हलकी पीड़ा होना।

ठनकाना [क्रि. स.] (हिं.) आघात करके शब्द निकालना। बजाना।
रुपया ठनका लेना–रुपया बजाकर ले लेना।

ठनकार [संज्ञा पु.] (हिं.) ठनठन शब्द।

ठन-गन [संज्ञा पु.] (हिं.) मंगल अवसरों नेगियों या पुरस्कार पाने वालों का अधिक पाने के लिए हठ या अड़।

ठनठन [क्रि. वि.] (हिं.) धातुखंड के बजने का शब्द।

ठनठनगोपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निःसार वस्तु। २–निर्धन व्यक्ति।

ठनठनाना [क्रि. स.] (हिं.) ठनठन शब्द उत्पन्न करना। बजाना।
[क्रि. अ.] (हिं.) ठनठन बजना।

ठनना [क्रि. अ.] (हिं.) १–(किसी कार्य का) तत्परता या दृढ़ संकल्प से किसी कार्य को आरम्भ करना। छिड़ना। २–(मन में) स्थिर होना। ठहरना। दृढ़ होना। ३–जमना। लगना। धारण किया जाना। ४–उद्यत होना। सन्नद्ध या मुस्तैद होना।
किसी बात पर ठनना–किसी कार्य के लिए उद्यत होना।

ठनमनना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ठनमना'।

ठनाक [संज्ञा पु.] (हिं.) ठनठन शब्द। ठनकार।

ठनाठन [क्रि. वि.] (हिं.) ठनठन शब्दसहित।

ठप [वि.] (हिं.) बंद या रुका हुआ।

ठपका+ [संज्ञा पु.] (देश.) धक्का। ठोकर। ठेस।

ठपना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–ठप्पा लगाना। २–प्रयुक्त करना। लगाना। ३–मन में दृढ़ होना। ठहराना।

ठप्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) बेलबूटा खुदा या बना लकड़ी या धातु का टुकड़ा जिसके रंग लगाकर किसी वस्तु पर छापा जाता है। २–साँचे के द्वारा बनाये हुए बेल-बूटे आदि छापा।

ठभोली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठठोली'।

ठमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चलते-चलते रुक जाने का भाव। रुकावट। २–चलने की ठसक। चलने में हावभाव। लचक।

ठमकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–चलते-चलते ठहर जाना। ठिठकना। २–अंग मरोड़ते या मटकते हुए लचक के साथ। चलना।

ठमकाना [क्रि. स.] (हिं.) चलते-चलते रोकना। ठहराना।

ठमकारना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठमकना'।

ठयना* [क्रि. स.] (हिं.) १–ठानना। २–पूरी तरह से करना। ३–निश्चित करना। ४–स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। ५–लगाना। नियोजित करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १–दृढ़ संकल्पसहित आरम्भ करना। २–मन में दृढ़ होना। ३–ठहरना। जमना। ४–प्रयुक्त होना।

ठरना [क्रि. अ.] (हिं.) १–शीत से ठिठुरना या सुन्न होना। २–बहुत अधिक ठंड पड़ना।

ठरमरुआ+ [वि.] (हि.) जिसे पाला मार गया हो (फसल)।

ठरुआ+ [वि.] (हि.) जिसे पाला मार गया हो (फसल)।

ठर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मोटा सूत। २–बड़ी अधपकी ईंट। ३–महुए की निकृष्ट शराब। ४–अंगिया का बंद या तनी। ५–भद्दा और बेडौल मोती।

ठर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिना अंखुआ निकले धान की बुवाई।

ठवन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठवनि'।

ठवना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठयना'।

ठवनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बैठक। स्थिति। २–बैठने या खड़े होने का ढंग। मुद्रा। पोज़।

ठवर+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ठौर'।

ठस [वि.] (हिं.) १–ठोस। कड़ा। २–जो भीतर से पोला या खाली न हो। ३–घनी या गफ बुनावट (कपड़ा)। ४–दृढ़। मजबूत। ५–भारी। वजनी। गुरु। ६–निष्क्रय। सुस्त। मट्ठर। ७–(रुपया) जिसमें झनकार ठीक न हो। ८–सम्पन्न। धनाढ्य। ९–कृपण। कंजूस। १०–हठी। जिद्दी।

ठसक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नखरा। अभिमानपूर्ण भाव। २–दर्प। शान। अभिमान।

ठसकदार [वि.] (हिं.) १–घमंडी। अभिमानी। २–शानदार। तड़क-भड़क वाला।

ठसकना [क्रि. अ.] (हिं.) पटकना। टूटना।

ठसका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सूखी खांसी जिसमें कफ नहीं आता। २–धक्का। ठोकर।

ठसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठूसने का गज। ठूसने की छड़।

ठसमस, ठसाठस [वि.] (हिं.) ठूंस कर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा [संज्ञा पु.] (देश.) १–नक्काशी करने की छोटी रुखानी। २–ठसक। गर्व पूर्ण हाव भाव। ३–घमंड। अहंकार। ४–ठाट-बाट। शान। ५–मुद्रा। अंदाज। ठवनि।

ठहक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नगाड़े का शब्द।
ठहक कर वर्षा–गर्जनासहित वर्षा।

ठहना [क्रि. अ.] (हिं.) १–हिन-हिनाना। घोड़ों का बोलना। २–घंटे का बजना। घन-घनाना। ३–बनाना। संवारना।
ठहठह कर बोलना–एक एक शब्द पर जोर दे देकर बोलना। मठार मठार कर बोलना।
ठह कर–भलीभाँति जमकर।

ठहर* [संज्ञा पु.] (हि.) १–स्थान। जगह। २–मिट्टी से लीपा हुआ रसोई का स्थान। चौका। ३–रसोई घर में मिट्टी से लीपने पोतने का कार्य। चौका।

ठहर देना-चौका लगाना ।

ठहरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रुकना । थमना । २-विश्राम करना । डेरा डालना । टिकना । ३-स्थिर रहना । ४-अड़ा या टिका रहना । ५-दूर न होना । बना रहना । ६-नियत समय से पूर्व नष्ट न होना । ७-घिराना । ८-धैर्य धारण करना । ९-प्रतीक्षा करना । आसरा देखना । १०-निश्चित या पक्का होना । ११-निरंतर होने वाले काम का रुकना ।
मन ठहरना-चित्त स्थिर और शांत होना । *किसी बात का ठहरना*-किसी बात का पक्का होना । विचार स्थिर होना । ठनना । *ठहरा-है* । जैसे-वह तुम्हारा प्रेमी ठहरा । (बोलचाल) ।

ठहराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठहराने की क्रिया या मजदूरी । ३-कब्जा । अधिकार ।

ठहराउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठहराव' ।

ठहराऊ [वि.] (हिं.) १-ठहरने वाला । २-टिकाऊ । दृढ़ । मजबूत ।

ठहराना [क्रि. स.] (हिं.) १-चलने से रोकना । गति बन्द करना । २-डेरा देना । टिकाना । विश्राम करना । ३-टिकाना । अड़ना । ४-स्थिर रखना । ५-किसी होते हुए काम को रोकना । ६-निश्चित करना । तै करना ।

ठहराव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ठहरने की क्रिया या भाव । २-गति का अभाव । स्थिरता । ३-कोई बात ठहरने या निश्चित होने का भाव एग्रिमेंट ।

ठहरु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठहर' ।

ठहरौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन-देन का निश्चय या करार ।

ठहाका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अट्टहास । जोर की हंसी । कहकहा ।
[वि.] (हि.) चटपट । तुरन्त ।

ठहियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठाँव । जगह । ठिकाना स्थान ।

ठाँ [संज्ञा स्त्री. पु.] (हिं.) देखो 'ठाँव' ।
[संज्ञा पु.] (हि.) बंदूक की आवाज ।

ठाँई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्थान । जगह । २-प्रति । तईं । ३-पास । निकट । समीप ।

ठाँउँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ठौर । ठाँव । स्थान । ठिकाना । २-पास । समीप ।

ठाँठ [वि.] (हिं.) १-नीरस । २-(गाय या भैंस) जो दूध न देती हो ।

ठाँयँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्थान । जगह । २-समीप । निकट । पास । ३-बंदूक छूटने का शब्द ।

ठाँयँठाँय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बंदूक छूटने का शब्द । २-वाक्ययुद्ध । झगड़ा । कलह ।

ठाँव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्थान । जगह । ठिकाना

ठाँसना [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाकर प्रविष्ट करना । २-कस कर घुसेड़ना । + ३-रोकना । मना करना । [क्रि. अ.] ठनठन शब्द करते हुए खाँसना ।

ठाहीं+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो **'ठाँई'** ।

ठाकुर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ठकुराइन, ठकुरानी] १-देवता । देवमूर्त्ति । २-ईश्वर । भगवान । ३-पूज्य व्यक्ति । ४-किसी प्रदेश का नायक या अधिपति । सरदार । ५-जमींदार । ६-क्षत्रियों की उपाधि । ७-स्वामी । मालिक । ८-नाइयों की उपाधि ।

ठाकुरद्वारा [संज्ञा पु.] (हिं.) मंदिर । देवालय । देवस्थान ।

ठाकुरप्रसाद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देवता की नवेदित वस्तु । नैवेद्य । २-एक प्रकार का धान ।

ठाकुरबाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देवालय । मंदिर ।

ठाकुरसेवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देवता का पूजन । २-किसी मन्दिर के नाम उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति ।

ठाकुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठकुराई । स्वामित्व । आधिपत्य ।

ठाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फूस और बांस की फट्टियों का बना हुआ ढाँचा जो आड़ करने या छाने के काम आता है । २-ढाँचा पजर । ३-रचना । बनावट । सजावट । ४-आडबर । तड़क-भड़क । ५-मजा । आराम । ६-ढंग । शैली । ७-आयोजन । सामान । समारम्भ । अनुष्ठान । ८-माल । सामान । सामग्री । ९-उपाय । युक्ति । ढंग । १०-कुश्ती या पटेबाजी का पैतरा । ११-प्रसन्नता पूर्वक पर फड़फड़ाने या झाड़ने का ढंग (कबूतर या मुरगा) । १२-सितार का तार ।
ठाट खड़ा करना-ढाँचा तैयार करना । *ठाट खड़ा होना*-ढाँचा तैयार होना । *ठाट पड़ा रह जाना*-दुनिया की सुख सम्पत्ति यहीं रह जाना । *ठाट बदलना*-१-वेश या रूप रंग नया दिखलाना । २-काम निकालने या श्रेष्टता प्रकट करने के लिये झूठे लक्षण दिखाना ३-बड़प्पन जताना । *ठाट बाँधना*-वार करने की मुद्रा से खड़ा होना । *ठाट बाट से रहना*-सजधज कर शान से रहना । *ठाट बिगड़ जाना*-बात बिगड़ जाना । *ठठ माँजना*-देखो 'ठाट बदलना' । *ठाट से कटना*-मजेसे दिन बीतना ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ठाटी] १-समूह । झुण्ड । २-प्रचुरता । अधिकता । बहुतायत । ३-बैल या साँड़ की गरदन के ऊपर का ढिल्ला । कूबड़ ।

ठाटना [क्रि. स.] (हिं.) १-रचना । बनाना । निर्मित करना । २-अनुष्ठान करना । ठानना । ३-संयोजित करना । ४-सजाना । संवारना ।

ठाटबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खपरैल आदि छाने के लिए बाँस का ढाँचा बनाना । २-इस प्रकार का ढाँचा ।

ठाटबाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सजावट । सजधज । २-तड़क-भड़क । आडम्बर ।

ठाटर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढाँचा । टट्टर । २-ठठरी । पंजर । ३-कबूतर आदि के की छतरी । ४-बनाव । सिंगार । सजावट ।

ठाटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठट । समूह ।

ठाटु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठाट' ।

ठाट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठाट' ।

ठाटना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठटना' ।

ठाट-बाट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठाटबाट' ।

ठाटर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठाटर' ।
[संज्ञा पु.] (देश.) नदी की वह गहरी जहाँ माँझी की लग्गी नहीं पहुँचती ।

ठाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत की वह जोताई एक बल जोत कर फिर दूसरे बल जोते हैं ।
[वि.] (हिं.) ठाड़ा । खड़ा ।

ठाढ़ा+* [वि.] (हिं.) १-खड़ा । २-समूचा । साबित । ३-उत्पन्न । पैदा । हृष्ट-पुष्ट । हट्टा-कट्टा ।
ठाढ़ा देना-ठहरना । स्थिर रखना ।

ठाढ़ेश्वरी [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार के साधु अहोरात्र (रात दिन) खड़े रहने का व्रत करते हैं ।

ठादर + [संज्ञा पु.] (देश.) झगड़ा । रार ।

ठान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कार्य का आयोजन । समारम्भ । अनुष्ठान । २-छेड़ा हुआ काम । ३-दृढ़ निश्चय । पक्का इरादा । ४-चेष्टा । मुद्रा । अंदाज ।

ठानना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-(कार्य) दृढ़ता के साथ आरम्भ करना । अनुष्ठित करना । छेड़ना । २-पक्का करना । ठहराना । ३-संकल्प करना ।

ठाना+* [क्रि. स.] (हिं.) १-ठानना । छेड़ना । करना । २-मन में ठहराना । निश्चित करना । ३-स्थापित करना । रखना । धरना ।

ठाम+* [संज्ञा पु., स्त्री.] १-स्थान । जगह । मुद्रा । अन्दाज । ३-अंगेट । अंगलेट ।

ठायँ [संज्ञा पु., स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठाँव' ।

ठार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कड़ा जाड़ा । सरदी । २-पाला । हिम ।

ठाल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्यवसाय या काम-धन्धे का न होना । जीविका का अभाव । बेकारी । बेरोजगारी । २-अवकाश । फुरसत । खाली समय । [वि.] खाली । विठल्ला ।

ठाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-व्यवसाय या धंधे का अभाव । बेकारी । २-जीविका का अभाव । *ठला बताना*-धता बताना । *बैठे ठाले*-खाली बैठे हुए ।

ठाली [वि.] (हिं.) १-विठल्ला । बेकाम । रिक्त । खाली ।

ठाँव [संज्ञा पु., स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठाँव'।

ठाँवना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठाना'।

ठासा [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहारों का एक औजार। धातु की चद्दर मोड़ने का औजार।

ठाहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्थान। जगह। २-निवास-स्थान। डेरा।

ठाहरू* [संज्ञा पु.] देखो 'ठाहर'।

ठाहलक [संज्ञा पु.] (हिं.) सात मात्राओं का एक मृदङ्ग का ताल।

ठाहीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठाँही'।

ठिगना [वि.] (हिं.) [स्त्री. ठिंगनी] छोटे कद का। नाटा।

ठिक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु की चद्दर का छोटा टुकड़ा। थिगली। चिकती।

ठिकठैन+* [संज्ञा पु.] (हिं.) ठीकठाक। आयोजन। प्रबंध।

ठिकड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठीकरा'।

ठिकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) ठिठकना। ठहरना। अड़ना। रुकना।

ठिकरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठीकरा'।

ठिकरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठीकरी'।

ठिकरौर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह भूमि जहाँ खपड़े आदि बहुत से पड़े हों।

ठिकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाल के ठीक-ठीक जमकर बैठने का भाव।

ठिकान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठिकाना'।

ठिकाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्थान। जगह। ठौर। २-निवास स्थान। ३-आश्रय स्थान। निर्वाह करने का स्थान। जीविका का स्थान। ४-यथार्थता की संभावना। प्रमाण। ५-आयोजन। प्रबन्ध। ६-पारावार। अन्त।
ठिकाना करना-१-जगह निश्चित करना। २-टिकाना। ठहराना। ३-नौकरी या काम-धंधा ठीक करना। ४-ब्याह ठीक करना।
ठिकाना ढूंढना-१-स्थान ढूंढना। २-रहने के लिए जगह ढूंढना। ३-नौकरी या कामधंधा खोजना। ४-कन्या के विवाह के लिए वर खोजना। *ठिकाना लगना*१-ठहरने को जगह मिलना। २-नौकरी या जीविका का प्रवन्ध होना। ३-पता लगना। *ठिकाना लगाना*-१-पता लगाना। २-आश्रय, जीविका या नौकरी देना। *ठिकाने आना*-१-मतलब की या असली बात पर आना। २-ठीक विचार या बहुत सोचने के उपरान्त यथार्थ बात समझना। *ठिकाने की बात*-१-ठीक, सच्ची बात। २-समझदारी या युक्तियुक्त बात। ३-पते की बात। ४-होश से बात करना। *ठिकाने न रहना*-चंचल हो जाना। *ठिकाने पहुँचाना*-१-ठीक जगह पहुँचाना। २-मार डालना। ३-चीज लुप्त अथवा नष्ट कर देना। *ठिकाने लगना*-१-ठीक स्थान पर पहुँचना। २-काम या उपयोग में आना। ३-सफल होना। *ठिकाने लगाना*-१-मार डालना। २-काम का अंत तक पहुँचाना। ३-गायब करना। ४-आश्रय, जीविका, नौकरी आदि लगाना। ५-खर्च कराना। ६-सार्थक या सफल करना। ७-काम या उपयोग में लाना। ८-भली-भाँति खर्च करना। ९-ठीक स्थान पर पहुंचना। १०-खो देना। ११-खर्च कर डालना।
+[क्रि. स.] (हिं.) ठहराना। अड़ाना। स्थित करना।

ठिठकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चलते-चलते अचानक रुक जाना। २-ठक रह जाना। स्तम्भित होना।

ठिठुर, ठिठुरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अधिक सरदी के कारण अकड़ या सिकुड़न।

ठिठरना [क्रि. अ.] (हिं.) अधिक शीत के कारण संकुचित होना। जाड़े से ऐंठना या सिकुड़ना

ठिठुरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ठिठरना'।

ठिठोलिया [वि.] हिं.) मसखरा। दिल्लगीबाज।

ठिठोलियापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मसखरी। दिल्लगी।

ठिठोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंसी। दिल्लगी। परिहास।

ठिनकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छोटे बालकों का ठहर-ठहर कर रोना। २-ठसक से रोना। रोने का नखरा करना।

ठिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गांव की सीमा का चिह्न। हद का पत्थर। २-चाँड़। थूनी। ३-देखो 'ठीहा'।

ठिर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कठिन सरदी या शीत। गहरी ठंड।

ठिरना [क्रि. स.] (हिं.) सरदी से ठिठुरना। जाड़े से अकड़ना। [क्रि. अ.] अत्यंत ठण्ड पड़ना

ठिलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ठेला या ढकेला जाना। २-बलपूर्वक बढ़ना। ३-बैठना।

ठिलवा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी का घड़ा। ठिल्ला।

ठिलाठिल * [क्रि. वि.] (हिं.) एक पर एक एक गिरते हुए। एक दूसरे पर धक्का देते हुए।

ठिलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा घड़ा। गगरी

ठिलुआ [वि.] (हिं.) निकम्मा। बेकाम। निठल्ला

ठिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ठिलिया, ठिल्ली] मिट्टी का घड़ा।

ठिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी का छोटा घड़ा। गगरी।

ठिल्ही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठिल्ली'।

ठिहार [वि.] (हिं.) विश्वास करने योग्य।

ठिहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठहराव। निश्चय। इकरार।

ठीक [वि.] (हिं.) १-जैसा हो वैसा। यथार्थ। प्रामाणिक। २-उपयुक्त। उचित। अच्छा। भला। योग्य। ३-शुद्ध। सही। ४-जो अच्छी दशा में हो। अच्छा। दुरुस्त। ५-जो किसी स्थान पर अच्छी प्रकार बैठे या जमे। ६-सीधे रास्ते पर आया हुआ। ७-ठहराया अथवा निश्चित किया हुआ। स्थिर। पक्का।
ठीक आना-ढीला या कसा न होना। *ठीक उतरना*-जितना चाहिए उतना ही होना।
ठीक बनाना-१-दंड देकर सीधा करना। २-दुर्गति करना।
[क्रि. वि.] (हि.) जैसा चाहिए वैसा। उचित रीति से।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-निश्चय। ठिकाना। स्थिर और असंदिग्ध बात। २-पक्का आयोजन। स्थिर प्रबन्ध। नियति। ठहराव। ३-योग। जोड़। मीजान।
ठीक देना-१-दृढ़ निश्चय करना। २-जोड़ निकालना। योगफल। *ठीक लगाना*-निश्चित करना।

ठीकठाक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निश्चित प्रबंध। आयोजन। २-जीविका का प्रबन्ध। ३-ठौर ठिकाना। आश्रय। ४-निश्चय। ठहराव।
[वि.] अच्छी तरह दुरुस्त। प्रस्तुत। काम लायक।

ठीकमटीक [अव्य.] (हिं.) पूरी तरह से दुरुस्त।

ठीकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठीकरा'।

ठीकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ठीकरी] १-मिट्टी के बरतन का टूटा-फूटा टुकड़ा। खपरैल आदि का टुकड़ा। २-बहुत पुराना बरतन। ३-भीख मांगने का बरतन। भिक्षा-पात्र।
ठीकरा फोड़ना-दोष लगाना। *ठीकरा समझना*-कुछ भी मूल्य न समझना। *किसी वस्तु का ठीकरा होना*-अंधाधुन्ध खर्च होना।

ठीकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिट्टी के बरतन का छोटा फूटा टुकड़ा। २-तुच्छ वस्तु। ३-स्त्रियों की योनि का उभरा हुआ तल। उपस्थ। ४-चिलम पर रखने का मिट्टी का तवा।

ठीका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुछ धन आदि के बदले में किसी का कोई काम निर्धारित समय में पूरा करने का जिम्मा लेना। कन्ट्रैक्ट। २-कुछ समय के लिए किसी वस्तु को इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता रहेगा। पट्टा। इजारा।

ठीका-पत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पत्र अथवा लेख्य जिसमें किसी ठीके से संबन्धित ऐसी बातें अथवा शर्तें लिखी हों जिनका पालन दोनों ओर (पक्षों) के लिए आवश्यक हो। संविदा-पत्र। कन्ट्रैक्ट-डीड।

ठीकेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ठीकेदारिन] ठीका लेने वाला व्यक्ति। कन्ट्रैक्टर।

ठीकेदारिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठीकेदार की स्त्री

ठीकेदारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ठीकेदार का काम।

ठीठा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ठेंठा'।

ठीठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हंसी का शब्द।

ठीप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आघात। ठोकर।

ठीलना+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'ठेलना'।

ठीवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) थूक। खखार। श्लेष्मा। कफ।

ठीहँ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घोड़े की हिनहिनाहट का शब्द।

ठीहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूमि में वह गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिसपर रखकर लोहार, बढ़ई आदि कोई चीज पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २-बैठने के लिए कुछ ऊंचा किया हुआ स्थान। दुकानदार के बैठने का स्थान। ३-हद। सीमा।

ठुंठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूखा, डाल-पत्तियों-विहीन वृक्ष। २-कटा हुआ हाथ।

ठुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठुंठ'।

ठुकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ठोका जाना। पिटना। २-आघात पाकर धँसना। गड़ना। ३-मार खाना। ४-कुश्ती आदि में हारना या पस्त होना। ५-हानि होना। ६-काठ में ठोका जाना। ७-दाखिल होना।

ठुकराना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठोकर मारना। लात मारना। २-पैर से मारकर किनारे करना।

ठुकवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठोकने का काम कराना। पिटवाना। २-गड़वाना। धँसवाना। ३-संभोग कराना (अशिष्ट)।

ठुड्डी, ठुड्ढी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चेहरे में होट के नीचे का भाग। चिबुक। ठोड़ी। २-भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। ठोर्री।

ठुनकना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'ठिनकना'। +[क्रि. स.] (हिं.) उँगली से ठोंक लगाना।

ठुनका [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सुसकी।

ठुनकाना+ [क्रि. स.] (हि.) उँगली से हलकी चोट पहुँचाना।

ठुनठुन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बच्चों के रुक-रुक कर रोने का शब्द। २-धातु के टुकड़ों या बरतनों के बजने का शब्द।

ठुनठुन लगाए रहना–बराबर रोया करना।

ठुमक [वि.] (हिं.) १-(चाल) उमंग के कारण जल्दी-जल्दी थोड़ी-थोड़ी दूर पर पटकते चलते हैं। बच्चों के समान कुछ-कुछ उछल-कूद या ठिठक लिए हुए (चाल)। २-ठसक भरी (चाल)।

ठुमकठुमक [क्रि. वि.] (हिं.) रह-रह कर कूदते हुए या फुदकते हुए (चलना)।

ठुमकना [क्रि. अ.] (हि.) १-बच्चों का उमंग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २-नाचने में पैर पटक कर चलना जिसमें घुंघरू बजें।

ठुमका+ [वि.] (देश.) [स्त्री. ठुमकी] छोटे डील-डौल का। नाटा। [संज्ञा पु.] (हिं.) झटका। थपका। (पतंग)।

ठुमकारना [क्रि. स.] (हिं.) पतंग की डोर में झटका देना।

ठुमकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-हाथ या उंगली से खींचकर दिया हुआ झटका। (पतंग)। २-ठिठक। रुकावट। ३-छोटी खरी पूरी। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] नाटी। छोटे डील की।

ठुमरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का चलता गाना जिसमें एक स्थायी और एक अन्तरा होता है। दो बोल का गीत। *सिर परदा ठुमरी*–'अद्धा' ताल पर बजाई जाने वाली एक प्रकार की ठुमरी।

ठुरियाना [क्रि. अ.] (हिं.) सिकुड़ जाना। ठिठुर जाना।

ठुर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूनने पर न खिलने वाला दाना।

ठुसकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'ठिनकना'। २-ठुस-शब्दसहित पादना।

ठुसकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) धीरे से पादने की क्रिया।

ठुसना [क्रि. अ.] (हि.) १-कसकर भरा जाना। २-कठिनता से घुसना।

ठुसवाना [क्रि. स.] (हि.) १-कसकर भरवाना। २-जोर से घुसवाना।

ठुसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-कसकर भरवाना। २-जोर से घुसवाना। ३-खूब पेट भर खिलाना।

ठुस्सी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का गले का आभूषण।

ठूँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) -चोंच। ठोर। २-चोंच से मारने या प्रहार करने की क्रिया।

ठूँगा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ठूंग'।

ठूँठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह पेड़ जिसकी डाल पत्तियाँ टूट या कट गई हों। सूखा पेड़। २-कटा हुआ हाथ। ठुंड। ३-एक प्रकार का कीड़ा।

ठूँठा [वि.] (हिं.) १-टहनियों और पत्तियों-रहित (पेड़)। सूखा (पेड़)। २-कटे हाथ का। बिना हाथ का।

ठूँठिया* [वि.] (हि.) १-लूला-लंगड़ा। २-हिजड़ा। नपुंसक।

ठूँठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्वार, बाजरे, अरहर आदि का जड़ के पास का डंठल जो खेत कटने पर रह जाता है।

ठूँसना [क्रि. स.] (हिं.) १-कसकर भरना। २-घुसेड़ना। बलपूर्वक घुसाना। ३-खूब पेट भर कर खाना।

ठेंउना [संज्ञा पु.] (हि.) घुटना। ठेहुना।

ठेंगना [वि.] (हि.) [स्त्री. ठेंगनी] छोटे डील का। नाटा।

ठेंगा [संज्ञा पु.] (हि.) १-अंगूठा। ठोसा। २-सोंटा। डंडा। ३-चुंगी का महसूल। *ठेंगा दिखाना*–१-अंगूठा दिखाना। २-चिढ़ाना। *ठेंगे से*–बला से। *ठेंगा बजना*–१-मारपीट होना। २-व्यर्थ की खट-खट होना।

ठेंगुर [संज्ञा पु.] (हि.) नटखट चौपायों के गले में डालने का लकड़ी का कुन्दा।

ठेंघा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठेंघा'।

ठेंठ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ठेंठी'। [वि.] (हिं.) देखो 'ठेठ'।

ठेंठी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-कान का मैल। २-कान के छेद पर रखने की रुई आदि वस्तु। ३-शीशी बोतल आदि की डाट। काग। *कान में ठेंठी लगाना*–न सुनना।

ठेंपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढपनी। ढेंपी।

ठेक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सहारे के लिये लगाई जाने वाली वस्तु। टेक। चांड़। २-बल देकर टिकाने की वस्तु। सहारा। ३-पच्चड़। ४-पेंदा। तला। ५-टट्टियों से घिरा अन्न रखने का स्थान। ६-घोड़ों की एक चाल। ७-छड़ी या लाठी की सामी। ८-धातु के बरतन में लगी हुई चकती। ९-एक प्रकार की छोटी महताबी।

ठेकना [क्रि. स.] (हि.) १-सहारा लेना। टेकना। २-ठहरना या टिकना। आश्रय लेना।

ठेकवा-बाँस [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का बाँस जो बंगाल और आसाम में होता है।

ठेका [संज्ञा पु.] (हि.) १-ठेक। सहारे की वस्तु। २-ठहरने या रुकने का स्थान। बैठक। ३-तबला या ढोल बजाने की क्रिया का वह प्रकार जिसमें केवल ताल दिया जाता है। ४-तबले के साथ बजाया जाने वाला बाँयाँ। ५-ठोकर। धक्का। ६-देखो 'ठीका'।

ठेकाई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कपड़े छापने में हाशिये की छपाई।

ठेकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टेक या सहारा। २-विश्राम स्थान।

ठेगड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कुच्चा।

ठेगना* [क्रि. स.] (हिं.) १-टेकना। सहारा लेना। २-रोकना। मना करना।

ठेगनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सहारा देने की लकड़ी।

ठेघना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठेगना'।

ठेघनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टेकने की लकड़ी।

ठेघा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) टेक। चाँड़।

ठेघुन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठेहुना'।

ठेठ [वि.] (देश.) १-निपट। निरा। बिलकुल। २-शुद्ध। निर्मल। ३-खालिस। आरम्भ। शुरू।

ठेठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सीधी सादी बोली। वह बोली जिसमें साहित्यिक शब्दों का समावेश न हो, केवल बोलचाल के शब्द हों।

ठेप [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अंटी में आ सकने वाला चाँदी का टुकड़ा। (सुनार)।
+[संज्ञा पु.] (हिं.) दीपक। चिराग।

ठेपी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) डाट। काग।

ठेलना [क्रि. स.] (हिं.) धक्का देकर आगे बढ़ाना। ढकेलना।
ठेलमठेल–एक-पर-एक आगे बढ़ते हुए।
ठेलाठेली–धक्कमधक्का।

ठेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ठेलने की क्रिया या भाव। २–आघात। टक्कर। ३–एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी (बैल आदि भी) ठेल या ढकेल कर चलाते हैं। ४–धक्कमधक्का।

ठेलाठेल, ठेलाठेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत से व्यक्तियों का एक के ऊपर एक गिरना-पड़ना। धक्कम-धक्का। रेलापेल।

ठेका [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत सींचने के लिए पानी गिराने का स्थान।

ठेकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी लुढ़कने वाली वस्तु को अड़ाने या टिकाने वाली वस्तु।

ठेना [संज्ञा पु.] (हिं.) जानु। घुटना।

ठेस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलका धक्का या आघात। साधारण धक्के की चोट। ठोकर।

ठेसना [क्रि. स.] (हिं.) ठूसना। दबाकर भरना।

ठेसमठेस [क्रि. वि.] (हिं.) सब पालों को एक बारगी खोले हुए।

ठेसरा [वि.] (हिं.) अभिमानी। घमंडी।

ठेहरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दरवाजे के नीचे की लकड़ी जिस पर पल्ले की चूल घूमती है।

ठेंठी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मारी हुई ईख।

ठेहुका [संज्ञा पु.] (हिं.) वह चौपाया जिसके चलते समय पिछले घुटने परस्पर रगड़ खाते हों।

ठेहुना* [संज्ञा पु.] (हिं.) घुटना।

ठैकर [संज्ञा पु.] (हिं.) नीबू की जाति का एक खट्टा फल जिसे हलदी के साथ उबाल कर हलका पीला रंग बनाते हैं।

ठैन*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्थान। जगह।

ठैयाँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठाई'।

ठैरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ठहरना'।

ठैराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठहराई'।

ठैराना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठहराना'।

ठोंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठोंकने की क्रिया था भाव। २–आघात। प्रहार। २–वह औजार जिससे दरी बुनने वाले सूत को ठोंककर ठस करते हैं।

ठोंकना [क्रि. स.] (हिं.) १–जोर से चोट मारना। आघात पहुँचाना। पीटना। २–मारना पीटना ३–धँसाना या गड़ाना। ४–(नालिश अरजी आदि) दाखिल करना। दायर करना। ५–काठ में डालना। बेड़ियों से जकड़ना। ६–थपथपाना। ७–हाथ से मारकर बजाना। ८–कसकर लगाना। जड़ना। ६–खटखटाना।
ठोंक-ठोंककर लड़ना–ताल ठोंककर लड़ना। जबरदस्ती झगड़ा करना। *ठोंकना बजाना*–जाँचना। परखना।

ठोंकवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटी मीठी पूड़ी। गुना।

ठोंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चोंच। २–चोंच की मार। ३–उंगली की ठोकर। खुदका।

ठोंचना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठोंगना'।

ठोंठा [संज्ञा पु.] (देश.) ज्वार, बाजरा तथा ऊख को हानि पहुँचाने वाला कीड़ा।

ठोंठी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चने के दाने का कोश। २–पोस्ते की ढोंढी।

ठो+ [अव्य.] (हिं.) संख्या। अदद। यह शब्द संख्यावाचक शब्दों के साथ लगता है—(पूरबी)। जैसे–एक ठो रुपया और दो।

ठोकचा [संज्ञा पु.] (हिं.) आम की गुठली के ऊपर का कड़ा छिलका।

ठोकना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ठोंकना'।

ठोकर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह चोट या आघात जो किसी अंग विशेषतः पैर में किसी कड़ी वस्तु के जोर से टकराने से लगे। २–रास्ते में पड़ा हुआ उभरा पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता है। ३–पैर या जूते के पंजे से किया जाने वाला आघात। ४–कड़ा आघात। धक्का। ५–जूते का अगला भाग। ६–कुश्ती का एक पेंच।
ठोकर उठाना–हानि, आघात या दुख सहना। *ठोकर खाता फिरना*–इधर-उधर मारा फिरना। *ठोकर या ठोकरें खाना*–१–रास्ते के कंकड़ आदि की चोट पैर में सहना। २–असावधानी या भूल के कारण हानि सहना। ३–धोखे में आना। ४–दुर्गति सहना। ५–पैर का आघात या ताल सहना। *ठोकर लगना*–भूल चूक के कारण नुकसान होना। *ठोकर लेना*–ठेस या पैर में चोट खाना। *ठोकर देना, जड़ना*–पैर से आघात देना। लात या ठोकर मारना। *ठोकरों में पड़ रहना*–अपमानित या तिरस्कृत होकर गुजारना।

ठोकरा [वि.] (हिं.) कठिन। कड़ा। सख्त।

ठोकराना [क्रि. स.] (हिं.) १–जूते की नोक से प्रहार करना। २–स्वयं ठोकर खाजाना।

ठोकरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कई महीनों की ब्याई होने के कारण जिस गाय का दूध गाढ़ा हो गया हो।

ठोकवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठोंकवा'।

ठोका+ [संज्ञा पु.] (देश.) स्त्रियों के हाथ का एक गहना जो चूड़ियों के साथ पहना जाता है।

ठोट [वि.] (हिं.) जड़। मूर्ख। गावदी। अनाड़ी। निःसत्व।

ठोठरा+ [वि.] (हि.) [स्त्री ठोठरी] खाली। पोपला। पोला। रिक्त।

ठोड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) होंठों के नीचे का गुलाई लिए हुए भाग। ठुड्डी। चिबुक दाढ़ी।
ठोड़ी पर हाथ धर कर बैठना–चिंता में मग्न होकर बैठना। *ठोड़ी पकड़ना, ठोड़ी में हाथ देना*–१–प्यार करना। २–किसी चिढ़े हुए आदमी को स्नेह का भाव दिखाकर मनाना। *ठोड़ी तारा*–सुन्दर स्त्री की ठुड्डी पर का तिल या गोदना।

ठोढ़ी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ठोड़ी'

ठोप+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बूंद। बिन्दू।

ठोर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मिठाई।
+[संज्ञा पु.] (हि.) चोंच। चञ्चु।

ठोला [संज्ञा पु.] (देश.) १–रेशम फेरने वालों का एक औजार।
[संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. ठोली] मनुष्य। आदमी।

ठोली [संज्ञा स्त्री] देखो 'ठठोली'।

ठोस [वि.] (हिं.) १–खाली, पोला या खोखला न हो। २–दृढ़। मजबूत।
[संज्ञा पु.] (देश.) धसक। कुढ़न। डाह। ईर्ष्या।

ठोसा [संज्ञा पु.] (देश.) अँगूठा। (हाथ का) ठेंगा।
ठोसा दिखाना–१–इनकार करना। २–अंगूठा दिखाना। *ठोसे से*–बला से। कुछ चिन्ता नहीं।

ठोहना*+ [क्रि. स.] (हिं.) पता लगाना। ठिकाना खोजना।

ठोहर+ [संज्ञा पु.] (हि.) १–अकाल। २–मँहगी।

ठौंका [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ सिंचाई के लिये तालाब या गड्ढे का पानी दौरी से ऊपर उलीचकर गिराते हैं।

ठौनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ठवनि'।

ठौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–स्थान। जगह। ठिकाना। २–अवसर। मौका। घात।
ठौर ठिकाना–१–पता ठिकाना। २–रहने का स्थान। *ठौर-कुठौर*–१–अच्छी जगह, बुरी जगह। अनुपयुक्त स्थान पर। २–बेमौका। बिना अवसर।
ठौर न आना–पास न फटकना। *ठौर रखना*–मार डालना। *ठौर रहना*–१–जहाँ के तहाँ रह जाना। २–मारे जाना। *किसी के ठौर*–किसी के स्थानापन्न।

ठ्यापा+ [वि.] (देश.) उपद्रवी। ऊत्पाती। शरारती।

ड

ड हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यजन और टवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप और दो उच्चारण हैं-(प्रथम) जैसे—डगण का 'ड' और (दूसरा) जैसे-लड़का का 'ड़'।

डंक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह विषैला कांटा जो भिड़, मधुमक्खी के पीछे रहता है जिसे धंसाकर जीवों के शरीर में जहर पहुँचाते हैं। २-कलम की जीभ। ३-डंक मारा हुआ स्थान। निश।

डंकदार [वि.] (हिं) जिसमें डंक हो। डंक वाला।

डकना+ [क्रि अ] (हिं.) गरजना। भयानक शब्द करना।

डंका [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा।
डंके की चोट कहना-खुल्लमखुल्ला कहना। *डंका डालना*-१-मुरगे का चोंच मारना। २-मुरगे से मुरगे को लड़ाना।
डंका बजना-शासन। अधिकार होना।
डंका बजाना-१-खुशी मनाना। २-हल्ला करके सबको सुनाना। घोषित करना। ३-प्रसिद्ध करना। ४-राज्य होना।
[संज्ञा पु] (देश.) जहाजों के ठहरने का पक्का घाट।

डकिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डाकिनी'।

डकियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) डंक मारना।

डकी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-मालखंभ की एक कसरत। २-कुश्ती का एक पेंच।
+ [वि.] (हिं.) डंक वाला।

डंकीला+ [वि] (हिं.) डंक वाला।

डंकुर [संज्ञा पु] (हिं.) प्राचीन काल का एक बाजा।

डंकौरी+ [संज्ञा स्त्री.] भिड़। ततैया। बर्रे।

डंग [संज्ञा पु.] (देश.) अधपका छुहारा।

डंगम [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष

डंगर [संज्ञा पु.] (देश.) चौपाया। जैसे—गाय, भैंस आदि।

डंगारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खरबूजा।

डँगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लम्बी ककड़ी। डाँगरी। २-एक प्रकार की चुड़ैल। डाइन।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का मोटा बेंत।

डँगवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) हल-बैल आदि की वह सहायता जिसे किसान लोग आपस में एक दूसरे को देते हैं।

डँगूज्वर [संज्ञा पु.] (अं) एक प्रकार का बुखार जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

डँगोरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी मजबूत और चमकदार होती है।

डंटैया+* [संज्ञा पु.] (हिं.) डांटने वाला। घुड़कने वाला। धमकाने वाला।

डँठरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डठल'।

डँठल [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंठी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डंठल।

डंड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डंडा। सोंटा। २-बाहु दंड। बाँह। ३-हाथ-पैर के पंजों से की जाने वाली एक प्रकार की व्यायाम। ३-दंड। सजा। ५-अर्थदंड। जुरमाना। ६-घाटा। हानि। ७-घड़ी। दंड।
डंड पड़ना-नुकसान होना।

डँड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ-पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जाने वाली एक कसरत।

डंडक*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दंडक'।

डँड़का+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सीढ़ी का डंडा।

डंड़पेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खूब डंड लगाने वाला। कसरती। पहलवान। २-बलवान।

डंडल [संज्ञा स्त्री] (हिं) एक प्रकार की मछली जो १॥ फुट तक लम्बी होती है।

डंडवत्+* [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'दंडवत्'।

डंडवारा [संज्ञा पु] (हिं) [स्त्री. डडवारी] १-खुली हुई नीची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिये बनाई जाती है। २-दक्षिण की वायु।
डँड़वारा खींचना-चारों ओर दीवार उठाना।

डँड़वारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी स्थान को के लिये उठाई हुई नीची दीवार।
डँड़वारी खींचना-चार दीवारी उठाना।

डँड़वीं+* [संज्ञा पु.] (देश.) दंड या जुरमाना देने वाला।

डँड़हरा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

डँड़हरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

डँड़हिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह डंडा जिससे बैल की पीठ पर दोनों ओर लटके हुए बोरे फँसाये जाते हैं।

डँडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी या बाँस का सीधा लम्बा टुकड़ा। २-मोटी और बड़ी छड़ी। सोंटा। लाठी। ३-चार-दीवारी। डाँड़।
डंडा खाना-डंडे की मार सहना। *डंडा चलाना*-डंडे से प्रहार करना। *डंडे खेलना*-डंडों की लड़ाई का खेलना। *डंडे देना*-विवाह की एक रीति। *डंडा बजाते फिरना*-मारा-मारा फिरना। *डंडा खींचना*-चारदिवारी उठाना।

डंडाकरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) दंडकवन।

डंडाबेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बेड़ी जो अपराधी के पैरों में डाली जाती है।

डंडाडोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं) लड़कों का एक खेल।

डंडाल [संज्ञा पु.] (हिं.) नगारा। दुंदुभी।

डंड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धड़ीदार साड़ी। एक प्रकार की साड़ी जिसमें फीता या गोट सिलकर लम्बी लकीरें बनाई गई हों। २-गेहूँ के पौधे की लम्बी सींक जिसमें बाल लगती है।
[संज्ञा पु.] कर वसूल करने वाला व्यक्ति।

डंड़ियाना [क्रि स.] (हिं.) किसी कपड़े के दो या अधिक पाटों को सीकर जोड़ना।

डंड़ियारा-गोला [संज्ञा पु.] (हिं.) (तोप का) दोहरे सिरे का लम्बा गोला। लठिया।

डंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी लम्बी पतली लकड़ी। २-किसी वस्तु का वह लम्बा पतला अंग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। हत्था। मुठिया। ३-तराजू की वह लकड़ी जिसमें पलड़े बंधे रहते हैं। डांडी। ४-लम्बा डंठल जिसमें फूल या फल लगते हैं, नाल। ५-झप्पान नामक पहाड़ी सवारी। ६-हारसिंगार का फूल। ७-दंड धारण करने वाला संन्यासी।
डंडी मारना-कम तौलना।
*[वि.] (हिं) चुगलखोर। झगड़ा लगाने वाला।

डंडीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सीधी लकीर।

डंडोरना [क्रि. स.] (हिं.) ढूंढ़ना। उलट-पुलट कर खोजना।

डंडौत [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दंडवत्'।

डंवर, डम्बर [संज्ञा पु] (सं) १-आयोजन आडम्बर। ढकोसला। २-विस्तार। ३-विलास। ४-एक प्रकार का चँदोवा।
मेघाडम्बर-बहुत बड़ा शामियाना। *अंबर डंवर*-संध्या समय आकाश में दीख पड़ने वाली लाली।

डंबेल [संज्ञा पु.] (अं) १-लोहे या लकड़ी की गुल्ली जिसके दोनों ओर लट्टू लगे रहते हैं। २-वह कसरत जो इस प्रकार के लट्टू से की जाती है।

डंवरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वातरोग जिसमें शरीर के जोड़ जकड़ जाते हैं। गठिया।

डंवरुआसाल [संज्ञा पु.] (हिं.) धातु या लकड़ी के दो टुकड़ों को मिलाने वाला एक प्रकार का जोड़।

डाँवाडोल [वि.] (हिं.) चंचल। विचलित। घबराया हुआ।

डस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का बड़ा मच्छर। डांस। वह स्थान जहां डङ्क चुभा या सांप के विषैले दांत गड़े यों।

डँसना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डसना'।

डक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पतला

सफेद टाट। २–एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

डकइत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डकैत'।

डकई [संज्ञा पु.] (हिं.) केले की एक जाति।

डकरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की काली मिट्टी।

डकराना [क्रि. अ.] (हिं.) बैल या भैंस का बोलना।

डकवाहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) डाकिया।

डकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पेट भरे होने का सूचक वह शारीरिक व्यापार जिसमें पेट की वायु कुछ शब्द करती हुई गले से निकलती है। मुख से निकला हुआ वायु का उद्गार। २–बाघ सिंह आदि की गरज।
डकार न लेना–१–चुपचाप हजम कर जाना। २–कोई काम करके उसका पता न देना।

डकैत [संज्ञा पु.] (हिं.) डाका डालने वाला। लुटेरा। डाकू।

डकैती [संज्ञा स्त्री] (हिं.) डाका डालने का कार्य। छापा।

डकोटा [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का हवाई जहाज।

डकोत [संज्ञा पु.] (देश.) ढोंगी ज्योतिषी।

डक्कारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा ढोल।

डग [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह रखना। फाल। कदम। २–चलने में उतनी दूरी जितनी कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर पड़ता है।
डग देना–चलने में आगे पैर रखना। *डग भरना*–कदम बढ़ाना। *डग मारना*–कदम रखना।

डगडगाना [क्रि. अ.] (हिं.) हिलना।
डगडगा कर पानी पीना–एक साथ बहुत सा पानी पीना।

डगडोलना+ [क्रि. अ.] (हिं.) डगमगाना। हिलना। काँपना।

डगडौर [वि.] (हिं.) डाँवाडोल। चलायमान। हिलनेवाला।

डगण [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–हिलना। खसकना। टसकना। २–चूकना। भूल करना।

डगमगाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–इधर उधर हिलना–डोलना। २–विचलित होना। किसी बात पर जमा न रहना।

डगर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मार्ग। रास्ता। पथ।
डगर बताना–१–रास्ता बताना। २–उपाय बताना।

डगरना+* [क्रि. स.] (हिं.) चलना। रास्ता लेना। धीरे-धीरे चलना।'

डगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) मार्ग। रास्ता।
[संज्ञा पु.] (देश.) डलरा। छाबड़ा। छिछला डला।

डगराना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–रास्ते पर ले जाना। चलाना। २–हाँकना।

डगरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डगर'।

डगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डगर'।

डगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) डागा। डुग्गी बजाने की लकड़ी।

डगाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डिगाना'।

डग्गर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कुत्ते या भेड़िये के समान एक प्रकार का हिंसक पशु। २–लम्बी टांगों वाला दुबला घोड़ा।

डग्गा [संज्ञा पु.] (हिं.) लम्बी टाँगों वाला दुबला घोड़ा।

डट [संज्ञा पु.] (देश.) निशाना।

डटना [क्रि. अ.] (हिं.) १–अड़ना। जमकर खड़ा होना। २–भिड़ना। लग जाना। छु जाना।
*+ [क्रि. स.] (हिं.) ताकना। देखना।
डटा रहना–मुँह न मोड़ना। *डटकर खाना*–खूब पेट भर खाना।

डटाना [क्रि. स.] (हिं.) १–सटाना। भिड़ाना। २–जोर से भिड़ाना। ३–जमाना। खड़ा करना।

डटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–डटाने का काम। २–डटाने की मजदूरी।

डट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हुक्के का नेचा। टेरुआ। २–डाट। काग। गट्टा। ३–बड़ी मेख। ४–छींट छापने का ठप्पा। साँचा।

डड़ही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

डढ़ार*+ [वि.] (हिं.) बड़ी डाढ़ी रखने वाला।
[वि.] (हिं.) दृढ़ हृदय का। साहसी।

डढ़न+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जलन। ताप।

डढ़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) जलना। सुलगना। बलना।

डढ़ार+ [वि.] (हिं.) १–डाढ़वाला। जिसे डाढ़ हो। २–डाढ़ी वाला।

डढ़ारा+ [वि.] (हिं.) १–डाढ़वाला। दाँत वाला। २–वह जिसे डाढ़ी हो।

डढ़ियल [वि.] (हिं.) डाढ़ी वाला। जिसके बड़ी डाढ़ी हो।

डढ़ना [क्रि. स.] (हिं.) जलाना।

डढ्योरा* [वि.] (हिं.) डाढ़ी वाला।

डपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–डाँट। झिड़की। घुड़की। २–घोड़े की तेज चाल। सरपट चाल।

डपटना [क्रि. स.] (हिं.) १–डाँटना। क्रोध में जोर से बोलना। २–तेज दौड़ना। वेग से जाना।

डपोरशंख, डपोरसंख [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी न। डींग मारने वाला। २–बड़े डीलडौल वाला, पर मूर्ख। देखने में स्याना पर बच्चों की सी समझ वाला।

डप्पू [वि.] (देश.) बहुत बड़ा। बहुत मोटा।

डफ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चमड़ा मढ़ा एक प्रकार का बाजा। डफला। २–चंग बाजा जिसे बजाकर लावनी गाते हैं। चंग।

डफर [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज का एक ओर का पाल।

डफला [संज्ञा पु.] (हिं.) डफ नामक बाजा।

डफली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा डफ। खंजरी।
अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग–जितने लोग उतनी राय।

डफार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोर से चिल्लाने या रोने का शब्द। चिग्घाड़।

डफारना+ [क्रि. अ.] (हिं.) जोर से चिल्लाना या रोना।

डफालची [संज्ञा पु.] देखो 'डफाली'।

डफाली [संज्ञा पु.] (हिं.) डफला बजाने वाला।

डफोरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) चिल्लाना। ललकारना। गरजना।

डब [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जेब। थैला। २–कुप्पा बनाने का चमड़ा।
डब पकड़ कर कुछ कराना–गरदन पकड़कर कुछ कराना। *डब में आना*–वश में होना। काबू में आना।

डबकना [क्रि. स.] (हिं.) धातु की चद्दर को कटोरी के आकार का बनाना।
[क्रि. अ.] १–पीड़ा करना। टीस मारना। २–आंखों में आंसू आना। ३–लंगड़ा कर चलना।

डबकौहाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. डबकौंहीं] डबडबाया हुआ। गीला। आँसू भरा हुआ।

डबडबाना [क्रि. अ.] (हिं.) (आंखें) अश्रुपूर्ण होना। आंसुओं से भर आना।

डबरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डबरी] १–कुंड। हौज। छिछला लम्बा गड्ढा। २–जोतने से खेत का छूटा हुआ कोना। ३–वह नीची भूमि का भाग जिसमें पानी लगता हो और जिसमें जड़हन के कई खेत हों।

डबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा गड्ढा या ताल।

डबल [वि.] (अं.) १–दोहरा। २–मोटा। भारी बदन का।
[संज्ञा पु.] (हिं.) पैसा।

डबलरोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाव रोटी।

डबलविक [वि.] (अं.) दोहरी बत्ती।

डबला [संज्ञा पु.] (देश.) कुल्हड़। मिट्टी का पुरवा।

डबा+ [संज्ञा पु.] देखो 'डब्बा' 'डिब्बा'।

डबिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा डिब्बा।

डबिरना+ [क्रि. स.] (देश.) खेत में भेड़ों को

निकाल लाना।

डबी+* [संज्ञा स्त्री] (हि) देखो 'डब्बी' 'डिब्बी'

डबुलिया+ [सज्ञा स्त्री] (दश) कुल्हिया। छोटा पुरवा।

डबोना [क्रि स.].(हि.) १-डबाना। गोता देना। बोरना। २-नष्ट करना। चौपट करना। बिगाड़ना।

नाम डबोना–ख्याति नष्ट करना। *वंश डबोना* कुल में कलंक लगाना। *लुटिया डबोना*–मर्यादा नष्ट करना। प्रतिष्ठा खोना।

डब्बल [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'डबल'।

डब्बा [संज्ञा पु.] (हि.) १-ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २-रेलगाड़ी में का एक भाग या गाडी।

डब्बू [संज्ञा पु.] (हि.) खाने की चीजें रखने का एक प्रकार का डब्बा।

डभकना+ [क्रि. वि] (हिं.) पानी में डूबना। उतराना। चुभकी लेना।

डभका [संज्ञा पु.] (हि.) कुएँ से ताजा निकला हुआ पानी। २-ताजा।

+[संज्ञा पु.] (देश.) भूना हुआ मटर या चना जो फूटा न हो। कोंहरा।

डभकौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उड़द की पीठी की बड़ी।

डभकौहाँ [वि.] (हिं.) देखो 'डबकौंहाँ'।

डम [संज्ञा पु.] (सं.) डोम।

डमर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भगेड़। २-हलचल। उपद्रव।

डमरुआ [संज्ञा पु.] (हि.) एक वात रोग जिससे जोड़ों में दर्द होता है। गठिया।

डमरु [संज्ञा पु.] (हिं) १-एक छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है। इस पर चमड़ा मढ़ा होता है। २-एक प्रकार का दंडकवृत्त।

डमरूमध्य [संज्ञा पु.] (हिं.) भूमि का वह तंग पतला भाग जो दो बड़े भू-खंडों को मिलाता है

डमरूयंत्र, यन्त्र [संज्ञा प.] (सं.) एक प्रकार का यंत्र या पत्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर, नौसादर आदि उड़ाए जाते हैं।

डयन [संज्ञा पु.] (सं.) उड़ान। उड़ने की क्रिया।

डर [संज्ञा पु.] (हि) १-अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होने वाला भाव। भय। भीति। खौफ। २-अनिष्ट की संभावना की मन में होने वाली कल्पना। आशंक।

डर के मारे–भय के कारण।

डरना [क्रि. अ.] (हि:) १-अनिष्ट अथवा हानि की आशंका से व्याकुल होना। भयभीत होना। २-आशंका करना।

डरपना* [क्रि अ] (हि) डरना। भयभीत होना।

डरपाना* [क्रि स] (हि.) डराना। भयभीत करना।

डरपोक [वि.] (हि.) बहुत डरने वाला। भीरु। कायर।

डरपोकना* [वि.] (हिं.) देखो 'डरपोक'।

डरवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'डराना'। २-देखो 'डलवाना'।

डराडरी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) डर। भय। आशंका

डरा* [संज्ञा पु.] (हि.) डला।

डराना [क्रि. स.] (हिं.) डर दिखाना। भयभीत करना।

डरावना [वि.] (हि.) [स्त्री डरावनी] जिससे डर लगे। भयानक। भयंकर।

डरावा [संज्ञा पु.] (हि.) डराने के निमित्त कही हुई बात। धड़का। खटका।

डराहुक* [वि.] (हि.) डरपोक।

डरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डार। डाल।

डरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'डली'।

डरीला* [वि.] [हिं.) डाल या शाखा वाला। टहनीदार।

डरेला* [वि.] (हि.) डरावना। भयानक।

डल [संज्ञा पु.] (हिं.) टुकड़ा। खंड।

डल का डल–ढेर का ढेर। बहुत सा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झील। २-काश्मीर की एक झील।

डलई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डलिया'।

डलना [क्रि. अ.] (हि.) डालाजाना। पड़ना।

डलवा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'डला'।

डलवाना [क्रि. स.] (हि.) डालने का काम कराना

डला [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. डली] टुकड़ा। खंड। ढोंका।

[संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. डलिया] बड़ी डलिया टोकरा। दौरा।

डलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा डला। टोकरी। दौरी। २-एक प्रकार की तश्तरी।

डली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटा टुकड़ा। खंड। २-कटी हुई सुपारी। ३-देखो 'डलिया'।

डल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) डला। दौरा। टोकरा।

डवँरू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डमरू'।

डवरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वात रोग। गठिया।

डवित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) काठ का बना हुआ मृग

डस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार की शराब। २-तराजू की डोरी जिसमें पलड़े बंधे रहते हैं। जोती। ३-कपड़े के थान का छोर। छोर। रम।

डसन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-डसने की क्रिया या भाव। २-डसने या काटने का ढंग।

डसना [क्रि. स.] (हिं.) १-विषैले कीड़े का दांत से काटना। २-डंक मारना।

[संज्ञा पु.] (हि) देखो 'डासन' 'डसना'।

डसवाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'डसाना'।

डसा+ [संज्ञा पु.] (हि.) डाढ़। चौभड़।

डसाना+ [क्रि. स.] (हिं.) दाँत से कटवाना।

डसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'दसी'। २- पहचान या परिचय की वस्तु। निशानी।

डहक [वि.] (?) संख्या में छः।

डहकना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठगना। धोखा देना। छल करना। २-ललचाकर न देना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-बिलखना। विलाप करना। २-गरजना। हुँकारना। दहाड़ मारना। [क्रि. अ.] (देश.) छितराना। छिटकना। फैलना।

डहकलाय [वि.] (?) सोलह। १६।

डहकाना [क्रि. स.] (हिं.) खोना। गँवाना। नष्ट करना। [क्रि. अ.] (हि.) धोखे में आना। ठगा जाना। [क्रि. स.] १-ललचाकर न देना। २-ठगना। धोखा देना।

डहडहा [वि.] (हिं.) [स्त्री. डहडही] १-हरा ताजा। २-प्रसन्न। प्रफुल्लित। तुरन्त का।

डहडहाट+* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) हरापन। ताजगी। प्रफुल्लता।

डहडहाव [संज्ञा पु.] (हिं.) हराभरा होने का भाव। ताजगी।

डहन [संज्ञा पु.] (हिं.) डैना। पर। पंख। [संज्ञा स्त्री.] दहन। जलन। दाह।

डहना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जलना। भस्म होना। २-बुरा मानना। द्वेष करना। [क्रि. स.] (हि.) १-जलाना। भस्म करना। २-संतप्त करना। कष्ट पहुँचाना। [संज्ञा पु.] देखो 'डैना'।

डहर+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मार्ग। रास्ता। पथ। २-आकाशगंगा।

डहरना [क्रि. अ.] (हि.) चलना। फिरना। टहलना।

डहराना+ [क्रि. स.] (हि.) चलाना। फिराना। दौड़ाना।

डहु, डहू [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का वृक्ष। २-बड़हर।

डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डाकिनी। डाइन। [संज्ञा पु.] (हि.) सितार की गत का एक बोल।

डाँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तांबे या चांदी का महीन पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाया जाता है। २-वमन। कै।

डाँकना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-लांघना। फाँदना। २-वमन करना।

डाँग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहाड़ी। जंगल। २-पहाड़ की ऊंची चोटी। ३-मोटे बाँस का डंडा। लट्ठा। ४-कूद। फलाँग।

डाँगर [वि.] (देश.) १-चौपाया। ढोर। +२-मरा हुआ चौपाया। ३-एक जाति विशेष।

डांगर घसीटना–मरा हुआ चौपाया खैंचकर

ले आना। अशुचि कर्म करना

[वि.] (हिं.) १-दुबला-पतला। २-मूर्ख। जड़। गावदी।

डाँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज के मस्तूल में रस्सियों को फैलाने के निमित्त आड़ी लगी हुई धरन। २-लंगड़ के बीच का मोटा डंडा।

डाँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वश। दाब। दबाव। २-घुड़की। डपट।

डाँट में रखना-शासन में रखना। वश में रखना। *किसी पर डाँट रखना*-किसी पर दबाव रखना। *डाँट रखना*-पालकी के कहारों की बोली। (तंग और ऊँचा नीचा रास्ता)।

डाँटना [क्रि. स.] (हि.) घुड़कना। डपटना।

डाँठ [संज्ञा पु.] (हिं.) डंठल।

डाँड़ [संज्ञा पु.] (हि.) १-डंडा। २-गदका। ३-नाव खेने का चप्पू। ४-अंकुश का हत्था। ५-जुलाहों की वह पोली लकड़ी जिसमें ढरई रहती है। +६-सीधी लकीर। ७-रीढ़ की हड्डी। ८-ऊँची मेंड़। ९-आड़, रोक आदि के लिए उठाई हुई दीवार। १०-ऊँचा स्थान। छोटा टीला। ११-दो खेतों के बीच की मेड़। १२-समुद्र का ढालुआं रेतीला किनारा। १३-सीमा। हद। १४-जंगल काट कर बनाया हुआ मैदान। १५-अर्थदंड। जुरमाना। १६-लम्बाई नापने का बांस। १७-कर्तव्य, प्रतिज्ञा या निश्चय का पालन न कर सकने के फलस्वरूप दिया जाने वाला धन। नुकसान का बदला। हरजाना। पेनैल्टी।

डाँड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-जुरमाना करना। अर्थ दंड देना। २-डाँड़ या हरजाना लेना। ३-दंड देना। ४-देखो 'डांटना'।

डाँड़र [संज्ञा पु.] (हिं.) बाजरे आदि की खूंटी जो फसल काट लेने पर खड़ी रह जाती है।

डाँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डंडा। छड़। २-गदका। ३-नाव खेने का डांड़। चप्पू। ४-हद। सीमा। ५-समुद्र का ढालुवां रेतीला किनारा।

होली का डांड-होली जलाने के लिए गाड़ा हुआ किसी झाड़ी आदि का चिह्न।

डाँड़ामेंड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) १-आपस की अति समीपता या लगाव। २-झगड़ा। अनबन।

डाँड़ामेंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डाँड़ामेंड़ा'।

डाँड़ाशहेल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का साँप।

डाँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लम्बी पतली लकड़ी। २-लम्बा हत्था या दस्ता। ३-तराज की डंडी जिसमें पलड़े बँधते हैं। ४-टहनी। पतली शाखा। ५-वह लम्बा डंठल जिसमें फूल या फल लगा होता है। नाल। ६-डाँड़ खेने वाला आदमी। ७-सीधी लकीर। लकीर। रेखा। ८-लीक। मर्यादा। ९-चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०-पालकी। ११-झप्पन। १२-हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिन पर बैठने की पटरी रखी जाती है।

डाँढ़री* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भूनी हुई मटर की फली।

डाँबू [संज्ञा पु.] (देश.) दलदल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का नरकट।

डाँवरा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डाँवरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की। बेटी।

डाँवरू* [संज्ञा पु.] (हिं.) बाघ का बच्चा।

डाँवाडोल [वि.] (हिं.) चचल। विचलित।

डाँशपाहिड़ [संज्ञा पु.] (देश.) संगीत में रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

डाँस [संज्ञा पु.] (हि.) १-बड़ा मच्छड़। २-एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं को दुःखी करती है। ३-कुकरौंछी।

डाँसर* [संज्ञा पु.] (देश.) इमली का बीज। चिआं।

डा [संज्ञा पु.] (हिं.) सितार की गति का एक बोल

डाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूतनी। चुड़ैल। २-टोनहाई। ३-कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाइरेक्टर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी कार्य का संचालक या प्रबन्ध करने वाला।

डाइरेक्टरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह पुस्तक जिसमें किसी देश या नगर के प्रधान व्यक्तियों की सूची अकारादि क्रम से छपी हो।

डाई [संज्ञा पु.] (अं.) १-पांसा। २-ठप्पा। सांचा। ३-रंग।

डाक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान आदि बदले जाते हैं। २-राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था के अनुसार भेजे जाने वाले कागज पत्र।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वमन। उलटी। कै।
[संज्ञा पु.] (अं.) समुद्र के किनारे का वह स्थान जहां पर जहाज आकर ठहरते हैं।
[संज्ञा पु.] (बं.) नीलाम की बोली।
डाक चौकी-रास्ते में पड़ने वाला वह स्थान जहां यात्रा के घोड़े, हरकारे या सवारियां बदली जाती हैं। *डाक बैठना या लगाना*-शीघ्र यात्रा पूरी करने के लिए स्थान-स्थान पर सवारी बदलने की व्यवस्था करना।

डाकखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह सरकारी दफ्तर जहां से लोग चिट्ठी पत्री आदि भेजते हैं और जहां चिट्ठियां वितरित की जाती हैं। डाक घर। पोस्ट-ऑफिस।

डाकगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह रेलगाडी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

डाकघर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डाकखाना'।

डाकना [क्रि. स.] (हिं.) कै करना। वमन करना।
[क्रि. स.] (हिं.) फांदना। लांघना।

डाकबँगला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बंगला या मकान जो सरकार की ओर से परदेशियों या राज्य के अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

डाकमहसूल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खर्च जो चीज को डाक द्वारा भेजने या मंगाने में लगे।

डाकमुंशी [संज्ञा पु.] (हिं.) डाकघर का अधिकारी। पोस्टमास्टर।

डाकर [संज्ञा पु.] (देश.) सूखे हुए तालाब की मिट्टी जो धूप से फट जाती है।

डाकव्यय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डाक का खर्च। डाक महसूल।

डाका [संज्ञा पु.] (हिं.) माल-असबाब लूटने के लिए निमित्त दल बांधकर किया जाने वाला धावा। बट-मारी।
डाका डालना-लूटने के लिए धावा करना।
डाका पड़ना-लूट के लिए आक्रमण होना।
डाका मालना-बलपूर्वक धन हरण करना।

डाकाज़नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डाका मारने का काम। बटमारी।

डाकिन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'डाकिनी'।

डाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डाइन। चुड़ैल।

डाकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वमन। कै। उलटी।
[संज्ञा पु.] बहुत खाने वाला व्यक्ति। पेटू।
[वि.] सबल। प्रचंड।

डाकू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डाका डालने वाला। लुटेरा। बटमार। २-अधिक खाने वाला। पेटू।

डाकेट [संज्ञा पु.] (अं.) चिट्ठी का खुलासा। किसी पत्र आदि का सारांश।

डाकोर [संज्ञा पु.] (हिं.) ठाकुर। विष्णु भगवान।

डाक्टर [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान या पंडित। २-अंगरेजी ढंग का चिकित्सक। ३-एक प्रकार की उपाधि जो बहुत बड़े विद्वानों को कोई उच्च परीक्षा पारित करने पर या योंही उनके सम्मानार्थ प्रदान की जाती है।

डाक्टरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र। २-डाक्टर का काम, पद, भाव अथवा उपाधि।

डाक्तर [संज्ञा पु.] देखो 'डाक्टर'।

डाख* [संज्ञा पु.] (हिं.) ढाक। पलाश।

डाखिपो* [संज्ञा पु.] (हिं.) भूखा सिंह।

डागरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डगर'।

डागा [संज्ञा पु.] (हि.) नगारा बजाने का डंडा। चोब।

डागुर [संज्ञा पु.] (देश.) जाटों की एक जाति।

डाट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बोझ सम्भालने के लिए नीचे लगाई जाने वाली वस्तु। टेक। चाँड़। २-छेद बंद करने की वस्तु। ३-बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। काग। डट्टा। ४-मेहराब को रोके रखने के लिए ईंटों की जोडाई।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डाँट'।

डाटना [क्रि. स.] (हिं.) १-एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर बैठाना। २-टेक या चाँड़ लगाना। ३-छेद या मुँह बंद करना। ४-कसकर या ठूंसकर भरना। ५-खूब पेट भर-खाना। ६-ठाट से वस्त्राभूषण आदि पहनना ७-डटाना। भिड़ाना। मिलाना।

डाड़ना [क्रि. अ.) (हिं.) देखो 'ढाड़ना' 'धाड़ना'।
[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डाँढ़ना'।

डाढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चबाने के चौड़े दांत। दाढ़। चौभड़। २-वट आदि वृक्षों की जटा। बरोह।

डाढ़ना※ [क्रि. स.] (हिं.) जलाना। भस्म करना।

डाढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दावानल। वन की आग। २-आग। ३-ताप। दाह। जलन।

डाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ठोडी। चिबुक। २-चिबुक और गंडस्थल पर के बाल। दाढ़ी।
डाढ़ी छोड़ना-डाढ़ी बढ़ाना। *डाढ़ी का एक-एक बाल करना*-अपमानित करना। *डाढ़ी को कलप लगाना*-श्रेष्ठ और वृद्ध को दोषी ठहराना। *पेट में डाढ़ी होना*-छोटी उमर में ही बूढ़ों या जानकारी की सी बातें करना।
पेशाब से डाढ़ी मुड़वाना-दुर्गति करना। *डाढ़ी फटकारना*-१-हाथ से दाढ़ी के बालों को झटकना। २-संतोष और उत्साह प्रकट करना। *डाढ़ी रखना*-डाढ़ी के बाल न मुड़वाना।

डाब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डाभ नामक घास। २-कच्चा नारियल। ३-परतला।

डाबक [वि.] (हिं.) देखो 'डाभक'।

डाबर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नीची जमीन। २-गड़ही। पोखरी। ३-हाथ धोने का पात्र। चिलमची। ४-मैला पानी।
[वि.] मटमैला। गदला। कीचड़ मिला।

डाबा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डब्बा'।

डाबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कटी हुई घास अथवा फसल का पूला।

डाभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुश जाति की घास। २-कुश। ३-आम की मंजरी। ४-कच्चा नारियल।

डाभक [वि.] (हिं.) ताजा (पानी)।

डामचा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत में रखवाली करने के लिए बनाया हुआ मचान। मैड़ा। माचा।

डामर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव प्रणीत माने जाने वाला एक तंत्र जिसके छः भेद किए गए हैं-योगडामर, शिवडामर, दुर्गाडामर, सारस्वतडामर, ब्रह्मडामर और गन्धर्वडामर। २-हलचल। धूम। ३-आडम्बर। ४-चमत्कार।
[संज्ञा पु.] (देश.) १-साल वृक्ष का गोंद। राल। २-एक प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है।

डामल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जीवन पर्यन्त कारागार। उमरकैद। २-देश निकाले का दंड

डामाडोल [वि.] देखो 'डावाँडोल'।

डामिल※ देखो 'डामल'।

डायँडायँ [क्रि. वि.] (हिं.) व्यर्थ इधर से उधर (घूमना)।

डायन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डाकिनी। पिशाचिनी। भूतिन। २-कुरूपा स्त्री।

डायनामो [संज्ञा पु.] (अं.) बिजली की शक्ति उत्पन्न करने का एक प्रकार का यन्त्र।

डायरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दिनचर्या लिखने की पुस्तक। रोजनामचा। दैनिकी।

डायल [संज्ञा पु.] (अं.) घड़ी के सामने का गोल भाग जिसके ऊपर अंक बने होते हैं।

डायस [संज्ञा पु.] (अं.) वह ऊँचा स्थान जिस पर किसी सभा के सभापति का आसन रखा जाता है।

डायमंड-कट [संज्ञा पु.] (अं.) हीरे की सी काट।

डार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डाल। शाखा। २-एक प्रकार की खूंटी जो फानूस जलाने के लिए दीवार में लगाई जाती है। ३-डलिया। चंगेर। डाली।

डारना※+ [क्रि. स.] (हिं.) 'डालना'।

डारियास [संज्ञा पु.] (देश.) बाबून बंदर की एक जाति।

डारी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'डार' 'डाल'।

डाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेड़ के धड़ में की वह लम्बी लकड़ी जिसमें पत्तियां और कल्ले निकलते हैं। शाख। २-शीशे के गिलास लगाने के लिए लगी हुई एक प्रकार की खूंटी ३-तलवार का फल। ४-डँडी। डांड़ी। ५-डलिया। चंगेरी। ६-वे कपड़े और गहने जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिये जाते हैं।
डाल का टूटा-डाल से पक कर गिरा हुआ। फल)। २-बढ़िया। अनोखा। ३-नवागंतुक। *डालवाला*-बंदर। शाखामृग।

डालना [क्रि. स.] (हिं.) १-नीचे गिराना। छोड़ना। २-पात्र आदि में ऊपर से कोई वस्तु गिराना। छोड़ना। ३-मिलाना। ४-प्रविष्ट करना। घुसाना। ५-फैलना। बिछाना। ६-शरीर पर धारण करना। पहनना। ७-गर्भ गिराना (चौपायों के लिए)। ८-कै करना। वमन करना। ९-(किसी स्त्री को) पत्नी बना कर रखना। १०-बिछाना।
डाल रखना-१-किसी वस्तु को रख छोड़ना। २-रोक रखना।

डालफिन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की मछली।

डालर [संज्ञा पु.] (अं.) अमेरिका का सिक्का।

डाला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डला'।

डाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डलिया। चंगेरी। २-फल, फूल और मेवे जो डलिया में भर कर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाते हैं। ३-देखो 'डाल'।
डाली लगाना-डलिया में मेवे आदि सजाकर भेजना।

डावड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) पिठवन।
※+[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डावरा'।

डावड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डावरी'।

डावरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डावरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

डावरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की। कन्या। बेटी।

डास [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़ा साफ करने का औजार जिससे भीतर का रुख साफ करते हैं।

डासन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) बिछावन। बिछौना। बिस्तर।

डासना [क्रि. स.] (हिं.) बिछाना। फैलाना।
+※ [क्रि. स.] (हिं.) डसना। काटना।

डासनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खाट। पलंग। चारपाई।

डाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जलन। ईर्ष्या।

डाहना [क्रि. स.] (हिं.) जलाना। सताना। दिक करना।

डाही [वि.] (हिं.) जलन या ईर्ष्या रखने वाला।

डाहुक [संज्ञा पु.] (देश.) जलाशयों के निकट पाया जाने वाला टिटिहरी के आकार का पक्षी।

डिंगर, डिङ्गर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोटा आदमी। २-दुष्ट। बदमाश। ३-दास। गुलाम।
[संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'ठिंगुरा'।

डिंगल [वि.] (हिं.) नीच। बुरा। दूषित।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राजस्थान की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावलियाँ लिखते हैं।

डिंगसा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का नामक वृक्ष।

डिंड़स [संज्ञा पु.] (हिं.) डिंड या टिंडा नामक तरकारी।

डिंड़सी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) टिंड या टिंडसी नामक तरकारी।

डिंडिम, डिण्डिम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा। डिमडिमी। डुगडुगिया। २-करौंदा। कृष्णपाक फल।

डिंडिमी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'डिंडिम'।

डिंडिर, डिण्डिर

डिंडीर, डिण्डीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्रफेन। २-पानी का झाग।

डिंडीरमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाजर। गृंजन। २-लहसुन।

डिंडिश, डिण्डिश [संज्ञा पु.] (सं.) टिंड। टिंडसी।

डिंब, डिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-हलचल। पुकार। २-दंगा। लड़ाई। ३-अंडा। ४-फेफड़ा। ५-प्लीहा। ६-कीड़े का छोटा बच्चा। ७-जीवजन्तुओं में स्त्री-जाति का वह जीवाणु जो पुरुष जाति के वीर्य के संयोग से अथवा यों ही आप से आप बन और बढ़कर नये जीव या प्राणी का रूप धारण करता है। ओवम।

डिंबाशय, डिम्बाशय [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री जाति के जीवों का वह भीतरी अंग जिसमें डिंब रहता अथवा उत्पन्न होता है।

डिंबाहव, डिम्बाहव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मदनी स्त्री। २-सोनापाठा। श्योनाक।

डिंभ, डिम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा बच्चा। २-मूर्ख व्यक्ति। जड़ मनुष्य।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-आडंबर। पाखंड। २-अभिमान। घमंड।

डिंभक, डिम्भक [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चा। छोटा बच्चा।

डिंभिया [वि.] (हिं.) १-पाखंडी। २-अभिमानी। घमंडी।

डिकामाली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक वृक्ष विशेष

डिक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सींगों का धक्का। २-झपट। वार। आक्रमण।

डिक्टेशन [संज्ञा पु.] (अं.) लिखने के लिए बोला हुआ वाक्य।

डिक्री [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-आज्ञा। हुक्म। २-न्यायालय की वह आज्ञा जिसके द्वारा लड़ने वाले पक्षों में से किसी पक्ष को किसी संपत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिक्शनरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) शब्दकोश।

डिगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हिलना। टलना। खसकना। २-किसी बात पर स्थिर न रहना।

डिगरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विश्वविद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की पदवी। २-अंश। कला। समकोण का ९० वां भाग। ३-दीवानी अदालत का वह फैसला जिसमें वादी को कोई अधिकार मिलता है। जयपत्र। डिक्री।

डिगरीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) यह जिसमें अदालत की डिगरी हुई हो।

डिगरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

डिगाना [क्रि. स.] (हिं.) १-हटाना। खसकाना। सरकाना। २-विचलित करना। बात पर जमा न रहना।

डिग्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलाव। पोखरा।

+[संज्ञा स्त्री] (देश.) हिम्मत। साहस।

डिटेक्टिव [संज्ञा पु.] (अं.) जासूस। मुखबिर। गुप्तचर।
डिटेक्टिव-पुलिस-खुफिया पुलिस।

डिठार+ [वि.] (हिं.) आंख वाला। जिसे सुझाई दे।

डिठियारा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. डिठियारी] दृष्टि वाला। आंखवाला।

डिठोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौलमुग्रा नामक औषधि।

डिठाहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक जंगली पेड़ के फल का बीज जिसे तागे में पिरोकर बच्चों के गले में उन्हें नजर से बचाने के लिए पहनाते हैं।

डिठौना, डिठौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) काजल का टीका जिसको स्त्रियाँ दृष्टि न लगने के लिए बच्चों के सिरपर लगाती हैं।

डिडका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुहाँसा।

डिड़ई [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का अगहनिया धान।

डिड़वा [संज्ञा पु.] (देश.) डिड़ई नामक धान।

डिढ़* [वि.] (हिं.) पक्का। मजबूत।

डिढ़ाना+* [क्रि. स.] (हिं.) १-पक्का करना। २-मन में दृढ़ विचार करना।

डिढ़्या [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अत्यन्त लालच। लालसा।

डित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-काठ का बना हाथी। २-विशेष लक्षणों वाला पुरुष।

डिपटी [संज्ञा पु.] (अं.) नायब। सहायक। सहकारी।

डिपाजिट [संज्ञा पु.] (अं.) धरोहर। अमानत। तहवील।

डिपार्टमेंट [संज्ञा पु.] (अं.) विभाग। महकमा।

डिपो [संज्ञा स्त्री.] (अं.) भंडार। गुदाम।

डिप्लोमा [संज्ञा पु.] (अं.) विद्या सम्बन्धी योग्यता का प्रमाणपत्र।

डिबिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा डिब्बा या संपुट।

डिबियाटंगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

डिबेंचर [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह कागज या दस्तावेज जिसमें कोई अधिकारी किसी कम्पनी या नगरपालिका आदि के लिए हुए ऋण को स्वीकार करता है। २-माल भेजने के कर का रवन्ना। वहती।

डिब्बा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डब्बा'।

डिभगना* [क्रि. स.] (देश.) मोहित करना। मोहना। छलना।

डिम [संज्ञा पु.] (सं.) वह नाटक या दृश्यकाव्य जिसमें माया, इन्द्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश विशेषरूप से होता है।

डिमडिमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डुगडुगिया। डुग्गी

डिमरेज [संज्ञा पु.] (अं.) वह हर्जाना जो बंदरगाह या स्टेशन पर आये हुए माल के अधिक दिन पड़े रहने के कारण देना होता है।

डिमाई [संज्ञा स्त्री.] (अं.) बाईस इञ्च लम्बे और अट्ठारह इञ्च चौड़े कागज की एक नाप

डिला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास जो गीली भूमि में उत्पन्न होती है। मोथा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) ऊन का लच्छा।

डिलिवरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) डाकखाने में आई हुई चिट्ठी, मनिआर्डर, पारसल आदि का वितरण।

डिल्ला [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अन्त में भगण होता है। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बैल के कंधे पर उठा हुआ कूबड़। कूजा। ककुत्थ।

डिस्ट्रिब्यूट-करना [क्रि. स.] (अं.) कम्पोज किये हुए अक्षरों को अपने-अपने खाने में अलग-अलग करके भरना।

डिसमिस [वि.] (अं.) १-बरखास्त। २-खारिज

डिहरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छः हजार गाँठों का मान जिसके अनुसार गलीचों के दाम लगाया जाता है।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न भरने की कच्ची मिट्टी का ऊँचा बरतन।

डींग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लम्बी-चौड़ी बात। शेखी। सिट्ट।
डींग की लेना-शेखी बघारना।

डीक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जाला। मोतियाबिंद।

डीकरी+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कन्या। बेटी।

डीठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दृष्टि। नजर। निगाह। २-देखने की शक्ति। ३-ज्ञान। सूझ

डीठना+* [क्रि. अ.] (हिं.) दिखाई देना। दृष्टि में आना।

डीठबंध [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नजरबंदी। इन्द्रजाल। २-इन्द्रजाल करने वाला। जादूगर।

डीठि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डीठ'।

डीठिमूठि+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नजर। टोना। जादू।

डीन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उड़ान। पक्षियों की गति।

डीवुआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) पैसा।

डीमडाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अहंकार। ठसक। ऐंठ। २-धूमधाम। ठाठबाट। आडंबर।

डील [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शरीर का विस्तार। कद। उठान। २-शरीर। देह। ३-प्राणी। व्यक्ति।

डीलडौल–१–देह की लम्बाई-चौड़ाई। २–शरीर का ढांचा। आकार। आकृति।

डीला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का नरकट।

डीह [संज्ञा पु.] (हिं.) १–छोटा गांव। २–उजड़े हुए गांव का टीला। ३–ग्राम देवता।

डीहदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमींदारों का एक प्रकार का हक़।

डुंग [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढेर। अटाला। २–टीला। भीटा। पहाड़ी।

डुंड+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ठूंठ। पेड़ की सूखी हुई शाखा।

डुंडु, डुण्डु [संज्ञा पु.] देखो 'डुंडुभ'।

डुंडुभ, डुण्डुभ [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का सांप जिसमें बहुत कम विष होता है। डेड़हा सांप।

डुंडुल, डुण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा उल्लू।

डुक [संज्ञा पु.] (हिं.) घूसा। मुक्का।

डुकिया [संज्ञा स्त्री.] देखो 'डोकिया'।

डुकियाना [क्रि. स.] (हिं.) घूंसों से मारना। घूंसा लगाना।

डुगडुगाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी चमड़ा मढ़े बाजे को लकड़ी से बजाना।

डुगडुगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा। डुग्गी।

डुगडुगी पीटना–डौंड़ी बजाकर घोषित करना।

डुग्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डुगडुगी'।

डुड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मेंढक।

डुड़का [संज्ञा पु.] (देश.) धान के पौधे का एक रोग।

डुड़हा+ [संज्ञा पु.]) (हिं.) खेत में दो नालियों के बीच की मेंड़।

डुपटना+ [क्रि. स.] (हिं.) चुनना। चुनियाना।

डुपट्टा॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुपट्टा'।

डुबकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जल में डूबने की क्रिया या भाव। गोता। २–पीठी की बनी हुई बिना तली बरी। ३–एक प्रकार का बटेर।

डुबकी मारना या लगाना–गायब हो जाना।

डुबवाना [क्रि. स.] (हिं.) डुबाने का काम कराना

डुबाना [क्रि. स.] (हिं.) १–पानी या किसी द्रव पदार्थ में समूचा डालना। गोता देना। २–चौपट या नष्ट करना।

नाम डुबाना–नाम को कलंकित करना। *लुटिया डुबाना*–महत्व या प्रतिष्ठा खोना। *वंश डुबाना*–वंश की मर्यादा नष्ट करना।

डुबाव [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी में डूबने भर की गहराई।

डुबोना॰ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डबोना'।

डुब्बा [संज्ञा पु.] देखो 'पनडुब्बा'।

डुब्बी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'डुबकी'। २–देखो 'डुबकनी'।

डुभकौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीठी की बिना तली बरी।

डुमई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कछार में उगने वाला एक प्रकार का चावल।

डुलना॰ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'डोलना'।

डुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १–हिलाना। चलाना। चलायमान करना। २–हटाना। भगाना। ३–चलाना। फिराना।

डुलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमठी। कछुई। कच्छपी

डुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल पत्ती का बथुआ।

डूँगर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पहाड़ी। २–टीला। भीटा।

डूँगरफल [संज्ञा पु.] (हिं.) बेदाल का फल। देवदाली का फल।

डूँगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी पहाड़ी।

डूँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चम्मच। चमचा। २–एक प्रकार की लकड़ी की नाव। डोंगा। ३–रस्से का गोल लपेटा हुआ लच्छा।

[संज्ञा पु.] (देश.) संगीत की २४ शोभाओं में से एक।

डूँज॰ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आँधी। तीव्र वायु।

डूंडा [वि.] (हिं.) जिसका एक सींग टूट गया हो। (बैल)।

डूक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पशुओं के फेफड़ों की एक बीमारी।

डूकना+ [क्रि. स.] (हिं.) चूकना। त्रुटि करना।

डूबना [क्रि. स.] (हिं.) १–पानी या किसी तरल पदार्थ में पूरा समाना। गोता खाना। २–सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों या नक्षत्रों आदि का अस्त होना। ३–चौपट होना। नष्ट होना। ४–ऋण दिया हुआ या व्यापार में लगा हुआ धन घटना या नष्ट होना।

डूब मरना–लाज के मारे मर जाना। *चुल्लू भर पानी में डूब मरना*–लाज के मारे मुख दिखाने योग्य न रहना। *डूबा नाम उछालना*–१–फिर से प्रतिष्ठा प्राप्त करना। २–अप्रसिद्ध से प्रसिद्धि प्राप्त करना। *डूबना-उतराना*–१–सोच में पड़ जाना। २–चिन्ताकुल होना। *जी डूबना*–१–जी घबराना। २–मूर्छा आना।

डूमा [संज्ञा पु.] (रूसी.) रूस की राजसभा का नाम।

डेडसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ककड़ी के समान एक तरकारी।

डेउढ़ा+ [वि., संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डेवढ़ा'। 'ड्योढ़ा'।

डेउढ़ी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ड्योढ़ी'।

डेग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'देग'।

डेगची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'देगची'।

डेड़हा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी में रहने वाला साँप जिसमें विष नहीं होता।

डेढ़ [वि.] (हिं.) एक और आधा, (प्र.। डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना–अपने औ में सब से अलग रहना। डेढ़ चाव खिचड़ी अलग पकाना–अपनी राय अलग रखना। डेढ़ चुल्लू–थोड़ा-सा। चुल्लू लहू पीना–मार डालना।

डेढ़खम्मन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक गोल रुखानी।

डेढ़खम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) तम्बाकू बिना कुलफी का नैचा।

डेढ़गोशी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मजबूत जहाज।

डेढ़ [वि.] (हि.) डेढ़ गुना। डेवढ़ा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी बताई जाती है।

डेढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बोआई के लेने की शर्त जिसमें लिये हुए ड्योढ़ा देना होता है।

डेढ़ीया [संज्ञा पु.] (देश.) दारजिलिंग, और भूटान में पाया जाने वाला एक ऊँचा वृक्ष।

डेपूटेशन [संज्ञा पु.] (अं.) प्रसिद्ध व्यक्तियों वह मंडली जो किसी संस्था सभा की ओर से किसी अधिकारी के पास किसी विषय में प्रार्थना निमित्त जाते हैं।

डेबरा+ [वि.] (देश.) बाएँ हाथ से काम वाला।

डेबरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खेत का वह जो जोतने से छूट जाता है।

डेमरेज [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'डिमरेज'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डिब्बी के आकार टीन शीशे आदि का बरतन।

डेर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डर'।

डेरा [संज्ञा पु.] (हि.) १–टिकान। ठहराव। खेमा। तम्बू। ३–ठहरने का स्थान। ४–नाचने-गाने वालों का दल या ५–ठहराव का आयोजन। सामान जो या रहने के लिए फैलाया हुआ हो।

डेरा डंडा–टिकने का सामान। *डेरा* कहीं पर टिकने के लिए सामान *डेरा पड़ना*–छावनी पड़ना। टिकान *डेरा डंडा उखाड़ना*–टिकने का सामान कर चला जाना।

॰+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. डेरी] बायां।

[संज्ञा पु.] (देश.) एक छोटा जंगली पेड़।

डेराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'डरना'।

[क्रि. स.] देखो 'डराना'।

डेल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–खी की लिये जोती हुई जमीन। परेल। २–

वरह एक बड़ा और ऊंचा पेड़।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढेला। रोड़ा। २–उल्लू [illegible]।

डेल्टा [संज्ञा पु.] (अं.) नदियों के मुहाने या संगम स्थान पर उनके द्वारा लाये हुए कीचड़ और बालू के जमने के कारण बनी हुई वह भूमि जो धारा के कई शाखाओं में विभक्त होने के कारण तिकोनी होती है।

डेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–आंख का कोया। २–[illegible]। ३–ढेला। ४–काठ का वह कुंदा जो नटखट चौपायों के गले में लटकाया जाता है। ठेंगुर।

डेलिगेट [संज्ञा पु.] (अं.) किसी स्थान के लोगों की ओर से किसी सभा में सम्मति देने के लिये भेजा हुआ प्रतिनिधि।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक फूलदार पौधा।

डेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डलिया। बांस की [illegible] झांपी।

[illegible] [वि.] (हिं.) डेढ़ गुना। डेवढ़ा।

[illegible] [संज्ञा पु.] १–क्रम। सिलसिला। २–विकट [illegible] में भी काम निकालने या ठीक करने [illegible] व्यवस्था।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) १–आंच पर रोटी का [illegible]ना। २–कपड़े को मोड़ना या तह लगाना

[illegible] [वि.] (हिं.) एक और आधा डेढ़ गुना।

[illegible] [संज्ञा पु.] १–गाने में वह स्वर जो साधा[illegible] में कुछ ऊंचा हो। २–डेढ़े का पहाड़ा।

डेवढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ड्योढ़ी'।

डेस्क [संज्ञा पु.] (अं.) लिखने का ढालुवाँ मेज।

डेहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दहलीज।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न रखने के लिए कच्ची मिट्टी का ऊँचा बरतन।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देहली। दहलीज।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) नटखट चौपायों के गले में डालने की लकड़ी का लम्बा टुकड़ा। ठेंगुर। लंगर।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) डैना। पक्ष। बाजू।

डैना [संज्ञा पु.] (हिं.) चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह। पक्ष।

डैम [संज्ञा पु.] (अं.) सत्यानाशी। अभागा। (अंगरेजी गाली)।

डैश [संज्ञा पु.] (अं.) एक अंग्रेजी विराम चिह्न (–) जिस का आकार छोटी आड़ी रेखा का होता है।

डोंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डोंगरी] पहाड़ी। टीला। भीटा।

डोंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डोंगी] १–बिना पाल की नाव। २–पात्र।

डोंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बिना पाल की छोटी नाव। २–छोटी नाव। ३–लोहा लाल करके बुझाने का लोहार का पात्र।

डोडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बड़ी इलायची। २–[illegible]। कारतूस।

डोंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २–उभरा हुआ मुह। टोंटी। ३–डोंगी। छोटी नाव। ४–देखो 'डौंड़ी'।

डोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काठ की डाँड़ी की बड़ी करछी।

डोक [संज्ञा पु.] (देश.) पका हुआ छुहारा। पकी हुई खजूर।

डोकर [संज्ञा पु.] देखो 'डोकरा'।

डोकरड़ो* [संज्ञा पु.] देखो 'डोकरा'।

डोकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डोकरी] १–बूढ़ा आदमी। वृद्ध। २–पिता। बाप।

डोकरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डोकरी'।

डोकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुड्ढी स्त्री। वृद्धा।

डोकरो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डोकरा'।

डोका [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ का छोटा कटोरा।

डोकिया, डोकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेल, घी आदि रखने का काठ का छोटा बरतन या कटोरा।

डोगर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डोंगर'।

डोज़ [संज्ञा स्त्री.] (अं.) खुराक। मात्रा।

डोड़हथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलवार।

डोड़हा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का साँप।

डोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जीवंती नामक लता जो औषध के काम में आती है। २–मटर सेम आदि की कच्ची फली।

डोडो [संज्ञा पु.] (अं.) बत्तक के समान एक पक्षी।

डोब [संज्ञा पु.] (हिं.) डुबाने का भाव। डुबकी। गोता।
डोब देना–डुबाना। गोता देना।

डोबा [संज्ञा पु.] (हिं.) गोता। डुबकी।
डोबा देना या भरना–डुबाना। गोता देना।

डोभरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ताजा महुआ।

डोम [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डोमिनी, डोमनी] १–एक जाति विशेष। २–मंगल अवसरों पर लोगों के गाने-बजाने वाली एक जाति। ढाढ़ी। मीरासी।

डोमकौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा कौआ जिसका सारा शरीर काला होता है।

डोमड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'डोम'।

डोमतमौटा [संज्ञा पु.] (देश.) एक पहाड़ी जाति जो पीतल तांबे आदि का काम करती है।

डोमनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–डोम-पत्नी। २–डोम जाति की स्त्री।

डोमा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सांप।

डोमिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डोमनी'।

डोर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतला तागा। डोरा। धागा।
डोर लगाना–रास्ते पर लाना। *डोर भरना*–तागा दिये मुड़े कपड़े को सीना। *डोर मजबूत होना*–जीवन का सूत्र दृढ़ होना।
डोर होना–मोहित होना।

डोरक [संज्ञा पु.] (सं.) डोरा। तागा। धागा।

डोरही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बड़ी भटकटैया।

डोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–रूई, रेशम आदि को बटकर बनाया हुआ मोटा सूत या तागा। धागा। २–धारी। लकीर। ३–आँख की वह पतली लाल नसें जो नशे अथवा यौवन की उमंग में दिखाई देने लगती हैं। ४–तलवार की धार। ५–तपे हुए घी की धार। ७–प्रेम का बंधन। स्नेह सूत्र। ७–काजल या सुरमे की रेखा। ८–नाचने में ग्रीवा संचालन का भाव। ९–अनुसंधान सूत्र। सुराग। १०–एक प्रकार की करछी। ११–पोस्ते का डोडा।
डोरा डालना–प्रेम में फँसाना। *डोरा देना*–तपाये हुए घी को ऊपर से डालना। *डोरा लगना*–स्नेह का बंधन होना।

डोरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह कपड़ा जिसमें लम्बी धारियां हों। २–एक प्रकार का बगला। ३–जुलाहों के तागा उठाने वाला लड़का। ४–एक जाति जो राजाओं के कुत्तों को शिकार के लिए तैयार करते थे।

डोरियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) गले में रस्सी बाँध कर पशुओं को ले जाना।

डोरिहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डोरिहारिन] पटवा।

डोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–रस्सी। रज्जू। २–पाश। बंधन। ३–डंडीदार कटोरा। डोई।
डोरी खीचना–पास बुलाने के लिए याद करना। *डोरी लगना*–किसी का निरन्तर ध्यान बना रहना। *डोरी ढीली छोड़ना*–देख-रेख में कमी करना।

डोरे* [क्रि. वि.] (हिं.) साथ-साथ। संग-संग।

डोल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–लोहे का गोल बरतन जिससे कुएँ से पानी आदि निकालते हैं। २–हिंडोला। झूला। ३–डोल। पालकी। ४–हलचल।
* [वि.] (हिं.) चंचल।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की उपजाऊ काली मिट्टी।

डोलक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन समय में ताल देने का एक बाजा।

डोलची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा डोल।

डोलडाल [संज्ञा पु.] (देश.) १–चलना-फिरना। २–टट्टी जाना।

डोलना [क्रि. स.] (हिं.) १–हिलना। चलायमान होना। २–चलना। फिरना। टहलना। ३–हटना। चला जाना। ४–(चित्त विचलित होना।
[संज्ञा पु.] देखो 'डोला'।

डोलरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पलंग। खाट।

डोला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. डोली] १-स्त्रियों के बैठने को बंद पालकी जिसे कहार ढोते हैं। २-झूले का झोंका। पेंग।
डोला देना-१-किसी राजा अथवा सरदार को भेंट की तरह अपनी कन्या देना। २-अपनी बेटी को वर के घर ले जाकर विवाह करना। *डोला निकालना*-दुलहिन को विदा करना। *डोला लेना*-भेंट में कन्या लेना।

डोलना [क्रि. स.] (हिं.) १-हिलाना। चलाना। २-हटाना। दूर करना।

डोलायंत्र [संज्ञा पु.] हिं.) देखो 'दोलायन्त्र'।

डोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधों पर उठाकर चलते हैं।

डोली-करना [क्रि. स.] (हिं.) टालना। धता बताना।

डोलू [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-हिंदी रेवंद चीनी। २-एक प्रकार का बाँस।

डोहरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) काठ का एक बरतन जिसमें कोल्हू से गिरा हुआ रस निकाला जाता है।

डोही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डोई'।

डौंडाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) डाँवाँडोल रहना। विचलित होना। घबराना।

डौंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का ढोल जिसे बजाकर घोषणा या मुनादी की जाती है। ढिंढोरा। डुगडुगिया। २-घोषणा। मुनादी। *डौंड़ी देना*-१-ढिंढोरा पीटना। मुनादी करना *डौंड़ी बजना*-१-घोषणा या मुनादी होना। २-जयजयकार होना।

डौंरा [संज्ञा पु.] (देश.) खेत में उगने वाली एक प्रकार की घास।

डौंरू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डमरू'।

डौआ [संज्ञा पु.] (देश.) काठ का बना बड़ा चम्मच या करछी।

डौल [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी रचना का प्रारम्भिक रूप। ढाँचा। ठाठ। २-बनावट का ढंग। रचना। प्रकार। ३-तरह। भाँति। ४-उपाय साधन की युक्ति। उपाय। आयोजन। तदबीर। ५-रंगढंग। लक्षण।
डौल-डाल होना-आशा या स्वरूप होना। *डौल डालना*-ढाँचा खड़ा करना। रचना का आरम्भ करना। *डौल पर लाना*-१-काँट-छाँट का सुडौल या दुरुस्त करना। २-ऐसा करना जिससे कुछ मतलब निकले। *डौल बाँधना, लगाना*-उपाय या युक्ति करना। *डौल से लगाना*-क्रम से या इस प्रकार लगाना जो देखने में भला लगे।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेतों की मेंड़।

डौलडाल [संज्ञा पु.] (हिं.) उपाय। प्रयत्न। युक्ति।

डौलदार [वि.] (हिं.) सुडौल। सुन्दर।

डौलना* [क्रि. स.] (हिं.) गढ़ना। दुरुस्त करना

डौलियाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-ढंग पर लाना। २-गढ़ कर ठीक आकार का बनाना।

डौवर [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया जिसकी छाती और पीठ सफेद होती है।

डौवा [संज्ञा पु.] देखो 'डौआ'।

ड्योढ़ा [वि.] (हिं.) जितना हो, उसका आधा और। डेढ़ गुना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-अंकों की डेढ़ गुनी संख्या का पहाड़ा। २-गाने में साधारण से कुछ ऊँचा स्वर।

ड्योढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-द्वार के पास की भूमि। चौखट। दरवाजा। फाटक। २-मकान में घुसने का स्थान। द्वार।
(किसी की) ड्योढ़ी खुलना-आने जाने की आज्ञा मिलना। *ड्योढ़ी लगना*-द्वार पर द्वारपाल बैठना।

ड्योढ़ीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ड्योढ़ीवान'।

ड्योढ़ीवान [संज्ञा पु.] (हिं.) ड्योढ़ी पर रहने वाला सिपाही। द्वारपाल। दरवान।

ड्राइंग [संज्ञा पु.] (अं.) रेखाओं द्वारा चित्र अथवा आकृति बनाने की कला या विद्या।

ड्राइवर [संज्ञा पु.] (अं.) गाड़ी हाँकने या चलाने वाला।

ड्राम [संज्ञा पु.] (अं.) एक द्रव पदार्थों को नापने का अंगरेजी मान जो तीन माशे के बराबर होता है।

ड्रिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'कवायद'।

ड्रेस-करना [क्रि. स.] (हिं.) १-मरहम पट्टी करना। २-पत्थर आदि को चिकना और सुडौल करना।

ड्रैगून [संज्ञा पु.] (अं.) सवार सिपाही।

ढ

ढ हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यञ्जन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप होते हैं (प्रथम) जैसे-'ढगण' का 'ढ'। और (दूसरा) चढ़ना में का 'ढ़'।

ढँकन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढकना' 'ढक्कन'।

ढँकना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढकना'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढकना'।

ढँकुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ढेंकली'।

ढंख*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ढाक। पलाश।

ढंग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्रिया। प्रणाली। शैली। रीति। पद्धति। ढब। २-प्रकार। भांति। तरह। ३-रचना। बनावट। गढ़न। ढांचा। ४-युक्ति। उपाय। डौल। तदबीर। ५-आचरण। व्यवहार। चालढाल। ६-धोखा देने की युक्ति। हीला। बहाना। [illegible] आसार। ८-स्थिति। दशा। अवस्था। *ढंग का होना*-१-खूबसूरत। [illegible] चतुर कार्य कुशल। *ढंग पर* [illegible] निकालने के अनुकूल होना। *ढंग पर* [illegible] अभिप्राय साधन के अनुकूल करना। [illegible] *वर्त्तना*-दिखाऊ व्यवहार करना। [illegible] *बर्तना*-किफ़ायत से खर्च करना। *ढंग* [illegible] आशा या स्वरूप होना। *रंग-ढंग*-[illegible] आसार।

ढंगलाना+ [क्रि. स.] (हिं.) लढ़काना।

ढँगिया [वि.] (हिं.) देखो 'ढंगी'।

ढंगी [वि.] (हिं.) १-चालबाज। [illegible] चालाक। ३-देखो 'ढोंगी'।

ढँढरच+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धोखा [illegible] जन। बहाना।

ढंढस [संज्ञा पु.] देखो 'ढँढरच'।

ढंढार [वि.] (हिं.) १-अत्यन्त [illegible] बड़ा और बेढंगा।

ढँढोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आग की [illegible] ज्वाला। लौ। २-काले मुंह वाला [illegible] लंगूर।

ढँढोरची [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढिंढोरा [illegible] वाला। मुनादी फेरने वाला। २-[illegible] के समर्थन में बहुत सी बात कहने वाला।

ढँढोरना* [क्रि. अ.] (हिं.) टटोलकर [illegible]

ढँढोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोषणा करने [illegible] डुगडुगी। डौंड़ी। २-ढोल बजाकर [illegible] वाली घोषणा। मुनादी।
ढँढोरा पीटना, फेरना-मुनादी करना।

ढँढोरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) ढँढोरा पीटने [illegible] मुनादी करने वाला। डुगडुगी बजाकर [illegible] करने वाला।

ढँपना [क्रि. अ.] (हिं.) ढँकजाना। ढकना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) ढाकने की वस्तु। ढक्कन।

ढ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा ढोल। २-[illegible] कुत्ते की पूंछ। ४-ध्वनि। नाद। ५-[illegible]

ढई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी के घर पर [illegible] जबतक अपना इच्छित कार्य न हो [illegible] धरना देने का काम।

ढई-देना [क्रि. अ.] (हिं.) इच्छा पूरी [illegible] निमित्त धरना देना।

ढकई [वि.] (हिं.) ढाके का।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का [illegible] ढाके (पाकिस्तान) की ओर होता है।

ढकना [संज्ञा पु.] (हिं.) ढांकने की वस्तु। [illegible]
[क्रि. अ.] (हिं.) छिपना। किसी [illegible] नीचे पड़कर दिखाई देना।
[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढांकना'।

ढकनिया [संज्ञा स्त्री] देखो 'ढकनी'।

ढकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढकने की [illegible] ढक्कन। २-हथेली के पीछे का [illegible]

ढपना [संज्ञा पु.] (हिं.) ढकने की वस्तु। ढक्कन।

ढपरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूड़ी वालों की अंगीठी का ढकना।

ढपला* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डफला'।

ढपली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डफली'।

ढप्पू [वि.] (देश.) बहुत बड़ा। बुड्ढा।

ढफ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डफ'।

ढब [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्रिया प्रणाली। ढंग। रीति। २-प्रकार। भाँति। तरह। ३-रचना-प्रकार। बनावट। ४-युक्ति। उपाय। तदबीर। ५-प्रकृति। आदत। बान।

ढब पर चढ़ना-अभिप्राय साधन के अनुकूल होना। *ढब पर लगाना या लाना*-अभिप्राय साधन के अनुकूल करना। *ढब डालना*-१-आदत डालना। २-आचार-व्यवहार की शिक्षा देना।

ढबरा* [वि.] (हिं.) देखो 'ढाबर'।

ढबीला* [वि.] (हिं.) ढबवाला। ढबका। चतुर।

ढबुआ* [संज्ञा पु.] (देश.) १-खेतों के मचान के ऊपर का छप्पर। २-पैसा।

ढबैला [वि.] (हिं.) मटमैला। गदला (पानी)।

ढमढम [संज्ञा पु] (हिं.) नगाड़े या ढोल का शब्द।

ढमलाना+ [क्रि. स.] (देश.) लुढ़काना।

ढयना [क्रि. अ.] (हिं.) मकान या दीवार आदि का गिरना।

ढय पड़ना-सहसा आकर डेरा डाल देना।

ढरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ढलना। गिरकर बहना। २-नीचे की ओर जाना।

दिन ढरकना-सूर्यास्त होना।

ढरका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आँख का एक रोग जिसमें आँसू बहता रहता है। २-चौपायों को दवा पिलाने की नोकीली नली।

ढरकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) पानी आदि को नीचे के तल में गिरना। गिरा कर बहाना।

ढरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाने का सूत फेंकने का जुलाहे का एक औजार।

ढरना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ढलना'।

ढरनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गिरने की क्रिया। पतन। २-हिलने-डोलने की क्रिया। गति। स्पन्दन। ३-चित्त की प्रवृत्ति। झुकाव। ४-दयाशीलता। सहज कृपालुता।

ढरहरना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) सरकना। खसकना।

ढरहरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. ढरहरी] ढालुवाँ। ढालू।

ढरहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पकौड़ी।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] ढालू। ढालुवाँ।

ढराई+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ढलाई'।

ढराना+ [क्र. स.] (हिं.) १-देखो 'ढलाना'। २-देखो 'ढरकाना'।

ढरारा [वि.] (हिं.) [स्त्री. ढरारी] १-गिरकर बह जाने वाला। ढलने वाला। २-लुढकने वाला। ३-चलायमान होने वाला। झुक पड़ने या प्रवृत्त होने वाला।

ढरारा रवा-लुढ़कने वाला सोने चांदी का दाना।

ढरैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ढालने वाला।

ढर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कार्य करने की बंधी हुई शैली। ढंग। तरीका। २-आचरण-पद्धति। चाल-चलन। ३-पथ। रास्ता। ४-युक्ति। उपाय।

ढलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-द्रव या तरल पदार्थ का आधार से नीचे की ओर जाना। ढलना। २-लढ़कना। ३-किसी पर अनुरक्त अथवा कृपालु होना। ४-लुढ़कना।

ढलका [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख से निरन्तर पानी बहने का एक रोग।

ढलकाना [क्रि. स.] (हिं.) ढलकने में प्रवृत्त करना। लुढ़काना।

ढलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ढरकी'।

ढलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ढरकना। गिरकर बहना। २-बीतना। गुजरना। ३-उंडेला या लुढ़काया जाना। ४-किसी ओर आकृष्ट होकर प्रवृत्त होना। ५-किसी पर प्रसन्न होना। रीझना। ६-सांचे में ढाला जाना। ७-लहराना।

बोतल ढलना-खूब शराब पीया जाना। *जवानी ढलना*-यौवन का उतार। *जोबन ढलना*-युवावस्था के चिह्न विलीन होना। *दिन ढलना*-सूर्यास्त होना। *दिन ढले*-संध्या को। *साँचे में ढला हुआ*-बहुत सुन्दर और सुडौल।

ढलवाँ [वि.] (हिं.) साँचे में ढालकर बनाया हुआ।

ढलवाना [क्रि. स.] (हिं.) ढ़ालने का काम कराना।

ढलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढालने का काम। २-ढालने की मजदूरी।

ढलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढलवाना'।

ढलुवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'ढलवाँ'।

ढलैत [संज्ञा पु.] (हिं.) सिपाही। ढाल बाँधने वाला।

ढवरी** [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धुन। लौ। लगन। रट।

ढहना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मकान की दीवार गिरना। ध्वस्त होना। २-नष्ट होना। मिटनाना।

ढहराना* [क्रि. स.] (हिं.) १-लुढ़काना। २-लुढ़का कर सूप के अन्न में से गोल दानेकी कंकड़ी आदि अलग करना।

ढहरी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देहली। देहलीज।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिट्टी का बरतन । मटका ।

ढहवाना [क्रि स.] (हिं.) ढहाने का काम अन्य से कराना । गिरवाना ।

ढहाना [क्रि. स.] (हिं.) दीवार मकान आदि गिराना । ध्वस्त कराना ।

ढाँक [संज्ञा प.] (देश.) कुश्ती का एक पेंच ।

ढाँकना [क्रि. स.] (हिं.) १-ऊपर से कोई वस्तु रख कर (किसी वस्तु को) ओट में करना । ढकना । २-इस प्रकार ऊपर डालना या फैलाना जिसमें नीचे कोई वस्तु छिप जाय ।

ढाँख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढाक' ।

ढाँग [वि.] (देश.) क्रम से एक पर एक लगी गड्डियां

ढाँच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढाँचा' ।

ढाँचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु को बनाने से पूर्व उसके अंगों को जोड़ कर तैयार किया हुआ पूर्व रूप । ठाठ । डौल । २-इस प्रकार जोड़े हुए खंड की उसके बीच में कोई वस्तु जमाई अथवा लगाई जा सके । फ्रेम । ३-पंजर । ठठरी । ४-गढ़न बनावट । ५-प्रकार । भांति । तरह ।

ढाँपना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढांकना' ।

ढाँस [संज्ञ स्त्री.] (हिं.) गले का वह शब्द जो सूखी खांसी के साथ निकलता है ।

ढाँसना [क्रि. अ.] (हिं.) सूखी खांसी खांसना ।

ढाई [वि.] (हिं.) दो और आधा ।
ढाई घडी की आना-चट पट मौत आना ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़कों का कौड़ियों का एक खेल । २-इस खेल में काम आने वाली कौड़ियां ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) लड़ाई का बड़ा ढोल ।

ढाकन* [संज्ञा पु.] देखो 'ढकन' ।

ढाका [संज्ञा पु.] (हिं.) पूर्वी बंगाल का एक नगर जो पाकिस्तान में है ।

ढाकापाटन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा ।

ढाकेवालपटेल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की पूर्वी नाव ।

ढाटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े की वह पट्टी जिससे डाढ़ी बाँधी जाती है । २-वह साफा जिसका एक फेंट डाढ़ी और गाल से होता हुआ जाता है ।

ढाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चीख । गरज । २-चिल्लाहट ।
ढाड़ मारना-चिल्लाकर रोना ।

ढाड़ना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डाढ़ना' ।

ढाढ़स [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धीरज । धैर्य । सांत्वना । आश्वासन । २-दृढ़ता । साहस । हिम्मत ।
ढाढस देना या बंधाना-१-साहस उत्पन्न करना २-तसल्ली देना ।

ढाढ़िन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढाढ़ी की स्त्री ।

ढाढ़ी [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. ढाढ़िन] मंगल अवसरों पर बधाई के गीत गाने वाली एक जाति ।

ढाढ़ौन [संज्ञा पु.] (हिं.) जलसिरिस का पेड़ ।

ढाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दीवार, मकान आदि गिराना । ध्वस्त करना । २-गिराना । गिराकर जमीन पर डालना ।

ढापना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढाँपना' ।

ढाबर* [वि.] (हिं.) मटमैला । गदला (पानी) ।

ढाबा [संज्ञा पु.] (देश.) १-ओलती । २-जाल । ३-परछत्ती । ४-रोटी की दुकान ।

ढामक [संज्ञा पु.] (हिं.) नगाड़े ढोल आदि का शब्द ।

ढामना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का साँप ।

ढार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढाल । उतार । २-पथ मार्ग । ३-ढाँचा । ४-रचना । बनावट ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक कान का गहना । २-पछेली नामक गहना ।

ढारना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढालना' ।

ढारस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढाढ़स' ।

ढाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-थाली की तरह का एक अस्त्र जिसे तलवार आदि का वार रोकने का काम लिया जाता है । चर्म । फलक । २-वह जगह जो बराबर नीची होती चली गई हो । उतार । ३-ढंग । तरीका । प्रकार । +४-उगाही । चंदा । ५-ढालने की क्रिया या भाव ।

ढालना [क्रि. स.] (हिं.) १-पानी या कोई तरल पदार्थ नीचे गिराना । उड़ेलना । २-मद्यपान करना । ३-बेचना । ४-सस्ता बेंचना । लुटाना । ५-ताना देना । व्यंग छोड़ना । ६-उगाही करना (पंजाब) । ७-कोई वस्तु बनाने के लिये उसकी सामग्री सांचे में डालना ।
बोतल ढालना-मदिरापान करना ।

ढालवाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. ढालवीं] जो बराबर नीचा होता गया हो । ढालू । ढालदार ।

ढालिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पिघली धातुओं को सांचे में ढालकर बरतन गहने आदि बनाने वाला । भरिया । साँचिया ।

ढालुआँ [वि.] (हिं.) देखो 'ढालवाँ' ।

ढालू [वि.] (हिं.) देखो 'ढालवाँ' ।

ढावना+ [क्रि. स.] (देश.) गिराना ।

ढास+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ठग । लुटेरा । डाकू ।

ढासना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सहारा । टेक । २-तकिया ।

ढाहना+ [क्रि. स.] (हिं.) दीवार मकान आदि को गिराना । ढाना ।

ढाहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नदी का ऊँचा किनारा ।

ढिंढोरना [क्रि. स.] (हिं.) १-विलोड़ना । मथना । २-खोजना । तलाश करना ।

ढिंढोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है । डुग्गी । डुगडुगिया । २-ढोल बजाकर सर्व साधारण को दी जाने वाली सूचना । घोषणा । मुनादी ।
ढिंढोरा पीटना या बजाना-चारों ओर घोषणा करना । मुनादी करना ।

ढिकचन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का

ढिकुली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ढेकुली' ।

ढिग [क्रि. वि.] (हिं.) समीप । पास । निकट ।
[संज्ञा स्त्री.] १-पास । सामीप्य । २-किनारा । छोर । ३-कपड़े का किनारा । हाशिया ।

ढिठाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढीठ होने की क्रिया या भाव । धृष्टता । २-अनुचित साहस । निर्लज्जता ।

ढिपुनी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-वह अंश पत्तों के साथ लगा हुआ और नरम भाग । २-ठोंठी । भाग । बोंडी ।

ढिबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टीन की डिबिया जिसमें वत्ती डालकर मिट्टी का तेल जलाते हैं । २-साँचे की पेंदी का भाग । लोहे का पहलदार टुकड़ा जो पेंच के ऊपर चढ़ाकर कसा जाता है । ४-चरखे में की चमड़े या मूज की गोल चिकती ।

ढिमका [सर्व.] (हिं.) [स्त्री. ढिमकी] फलाँ । फलाना ।
फलाना ढिमका-अमुक-अमुक व्यक्ति ।

ढिलढिला [वि.] (हिं.) १-ढीलाढाला । के समान पतला ।

ढिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढीला होने का भाव । २-शिथिलता । आलस्य । करने का काम ।

ढिलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ढीलने का कराना । २-ढीला कराना ।
+ * (हिं.) १-ढीला करना । बंधी हुई वस्तु का खोलना ।

ढिल्लड़ [वि.] (हिं.) ढील करने वाला । सुस्त ।

ढिसरना *+ [क्रि. अ.] (हिं.) पड़ना । सरक पड़ना । २-प्रवृत्त होना । झुकना । ३-फलों का कुछ-कुछ पकना ।

ढींगर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोटा आदमी । २-पति या उपपति ।

ढींढ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निकला हुआ पेट । गर्भ । हमल ।
ढीढ़ गिरना-गर्भपात होना ।

ढींड़स [संज्ञा पु.] (हिं.) डिंड़सी नामक

ढींगे*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'ढिग' ।

ढींट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रेखा । लकीर ।

ढीठ [वि.] (हिं.) १-बड़ों का आदर या

न करने वाला। धृष्ट। २-अनुचित साहस करने वाला। ३-साहसी। हिम्मतवर।

ढीठताई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ढिठाई।

ढीठ्याई [वि.] (हिं.) देखो 'ढिठाई'।

ढीठो [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढीठा'।

ढीढ+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-पत्थर का बड़ा टुकड़ा। २-मिट्टी की पिंडी।

ढीमड़ा+ [संज्ञा पु.] (देश.) कूप। कुंवा। ([illegible])।

ढीम [संज्ञा पु.] (देश.) ढेला। ढोका।

ढील [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-शिथिलता। अतत्परता। सुस्ती। अनुचित विलम्ब। २-बन्धन को ढीला करने का भाव। ढील देना-१-ध्यान न देना। २-पतंग की डोर बढ़ाना। ३-मनमाना करने का अवसर देना।

ढील+ [वि.] (हि.) देखो 'ढीला'।

ढील+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वालों का कीड़ा। जू।

ढीलना [क्रि. स.] (हि.) १-ढीला करना। २-बन्धनमुक्त करना। ३-पतला करने के लिये जल आदि डालना। ४-डोरी आदि को [illegible] या डालना।

ढीला [वि.] (हिं.) १-जो कसा या तना न हो। २-दृढ़ता से वंधा, जकड़ा या लगा न हो। ३-जो बहुत गाढ़ा न हो। गीला। ४-जो अपने संकल्प अथवा कर्तव्य पर स्थिर न रहे। धीमा। मन्द। ६-सुस्त। आलसी। ७-शान्त। नरम। ८-नपुंसक। ढीली आँख-अधखुली आँख। ढीली छोड़ना या देना-अंकुश न रखना।

ढीलापन [संज्ञा पु.] (हि.) शिथिलता।

ढुह [संज्ञा पु.] (हि.) ऊंचा टीला। ढूह।

ढुंढ+ [संज्ञा पु.] (हि.) चाईं। उचक्का। ठग।

ढुंढपाणि+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-शिव का एक गण। २-दंडपाणि भैरव।

ढुंढवाना [क्रि. स.] (हि.) खोजवाना। तलाश कराना।

ढुंढा, ढुण्ढा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की बहिन थी।

ढुंढि, ढुण्ढि [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश का एक नाम।

ढुंढी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-बाँह। बाहु। मुसुक २-देखो 'ढोंढी'। ढुंढिया चढ़ाना-मुसके बांधना।

ढुकना [क्रि अ] (देश.) १-घुसना। प्रवेश करना। २-टूट पड़ना। पिल पड़ना। ३-छिपकर कोई बात सुनना।

ढुकास+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी पीने की अधिक इच्छा। अधिक प्यास।

ढुक्का [संज्ञा पु] (हि) देखो 'ढूका'

ढुच्च* [संज्ञा पु.] (देश.) घूसा। मुक्का।

ढुटौना [संज्ञा पु.] देखो 'ढोटा'।

ढुनमुनिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-लुढ़कने की क्रिया या भाव। २-सावन में कजली गाने का एक ढंग।

ढुरकना+* [क्रि. अ.] (हिं.) १-लुढ़क। फिसलकर गिरना। २-झुकना।

ढुरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ढलना। गिरकर बहना टपकना। २-इधर-उधर डोलना। ३-लहराना ४-लुढ़कना। फिसल पड़ना। ५-झुकना। प्रवृत्त होना। ६-प्रसन्न होना। कृपालु होना।

ढुरहुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लुढ़कने की क्रिया या भाव। २-पगडंडी। पतला रास्ता। ३-नथ में लगी सोने की गोल दानों की पंक्ति।

ढुराना [क्रि. स.] (हिं.) १-गिराकर बहाना। ढुलकाना। २-इधर-उधर हिलाना। ३-लुढ़कना। फिसलकर गिरना।

ढुरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) गोल मटर।

ढुर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पगडंडी।

ढुलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-निरन्तर। ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना। लुढकना २-किसी पर अनुरक्त या प्रसन्न होना।

ढुलकाना [क्रि. स.] (हिं.) लुढ़काना। ढँगलाना।

ढुलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गिरकर बहना। ढरकना। २-लुढ़कना। फिसल पड़ना। ३-प्रवृत्त होना। झुकना। ४-अनुकूल या प्रसन्न होना। कृपालु होना। ५-इधर से उधर डोलना। ६-लहराना।

ढुलवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढोने का काम। २-ढोने की मजदूरी। ३-ढुलाने की क्रिया या मजदूरी।

ढुलवाना [क्रि. स.] (हि.) ढोने का काम कराना। २-ढुलाने का काम कराना।

ढुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-गिराकर बहाना। ढालना। २-नीचे ढालना। गिराना। ३-लुढ़काना। ४-प्रवृत्त करना। झुकाना। ५-अनुकूल या प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६-इधर-उधर घुमाना। ७-चलाना-फिराना। ८-फेरना। पोतना। ९-ढोने का काम कराना

ढुलुआ, ढुलुवा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खजूर द्वारा बनी हुई चीनी।

ढुवारा+ [संज्ञा पु.] (देश.) घुन नामक कीड़ा।

ढूँकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ढुकना'।

ढूँका [संज्ञा पु.] (हिं.) गुप्त रूप से किसी वस्तु या बात के संबंध देखने या मालूम करने के लिए ओट में छिपने का काम।

ढूँढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खोज। तलाश। अन्वेषण।
ढूँढ़-ढाँढ़-खोज। तलाश।

ढूँढ़ना [क्रि. स.] (हि.) खोजना। तलाश करना। पता लगाना।
ढूँढ़ना-ढाँढ़ना-खोजना।

ढूँढला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढुंढा नामक राक्षसी।

ढूँका [संज्ञा पु.] (देश.) घास-पात के बोझ का एक मान।

ढूँढ़िया [संज्ञा पु.] (देश.) श्वेताम्बर जैनों का एक भेद।

ढूसर [संज्ञा पु.] (देश.) बनियों की एक जाति।

ढूसा [संज्ञा पु.] (देश.) कुश्ती का एक पेंच।

ढूह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढेर। अटाला। २-टीला। भीटा।

ढूहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढूह'।

ढेंक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-लम्बी चोंच और गरदन वाली एक चिड़िया जो पानी के किनारे रहती है।

ढेंकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिंचाई के निमित्त पानी निकालने का एक यन्त्र। २-आड़े डोभ की सिलाई। ३-धान कूटने का एक प्रकार का यन्त्र। ४-कलाबाजी।

ढेंका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोल्हू में लगा हुआ बाँस। २-बड़ी ढेंकी।

ढेंकिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

ढेंकिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डेढ़ पटी चद्दर की एक विशेष प्रकार की काट।

ढेंकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न कूटने का एक यन्त्र। ढेंकली।

ढेंकुर+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ढेंकली'।

ढेंकुली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ढेंकली'।

ढेंढ़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कौवा। २-एक जाति विशेष। ३-मूर्ख। जड़। मूढ़।
[संज्ञा पु.] (देश.) कपास आदि का डोडा।

ढेंढर [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख ढेले के ऊपर का उभरा या निकला हुआ माँस। टेंटर।

ढेंढवा [संज्ञा पु.] (देश.) काले मुँह का बंदर। लंगूर।

ढेंना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढेंढ'।

ढेंढी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपास का डोडा। २-पोस्ते का डोडा। ३-कान का एक गहना।

ढेंप [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-टहनी से लगा फल या पत्ते के छोर का भाग। २-कुच का अग्र भाग।

ढेंपी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ढेंप'।

ढेउआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) पैसा।

ढेउ+ [संज्ञा पु.] (देश.) पानी की लहर।

ढेड़स [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ढेंड़सी'।

ढेपनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्ते या फल का वह भाग जिससे वह टहनी से जुड़ा रहता है। ढेपी। २-कुचाग्रभाग जो काला दाग-सा होता है।

ढेबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ढिबरी'।

ढेबुक+ [संज्ञा पु.] (देश.) पैसा।

ढेबुवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) पैस।

ढेममौज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समुद्र की ऊंची लहर।

ढेर [संज्ञा पु.] (हिं.) राशि। अटाला। अंबार। *ढेर करना*–मारकर गिरा देना। *ढेर हो जाना*–१–गिरकर मर जाना। २–ध्वस्त हो जाना। +[वि.] (हिं) बहुत। ज्यादा। अधिक।

ढेरना [संज्ञा पु.] (देश.) सूत या रस्सी बटने की फिरकी।

ढेरा [संज्ञा पु.] (देश.) १–सुतली बटने की फिरकी। २–मोर के मुँह पर लगा हुआ घेरा। ३–अंकोल नामक पेड़। (वैद्यक)

ढेरानोंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली।

ढेरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) ढेर। समूह। राशि। अटाला।

ढेल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढेल'।

ढेलवाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं) वह एक रस्सी का बना हुआ फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं। गोफना।

ढेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ईंट, कंकड़, मिट्टी, पत्थर आदि का टुकड़ा। चक्का। खंड। टुकड़ा। ३–एक प्रकार का धान।

ढेलाचौथ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भादों सुदी चौथ। इस दिन चन्द्रमा देखने से कलंक लगता है ऐसा प्रवाद है। यदि इस दिन कोई चन्द्रमा देखले तो उसे कुछ लोगों की गालियाँ सुन लेनी चाहिएं। गालियां सुनने सीधा उपाय दूसरों के घरों पर ढेला फेंकना है। इसी कारण इस दिन लोग दूसरों के घरों पर ढेला फेंकते हैं।

ढैंकली [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'ढेंकली'।

ढैंचा [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक पेड़ जिसकी छाल से रसियाँ बनाई जाती हैं। जयंती। २–पान के भीटे परकी छाजन के लिए सन का ढंठल।

ढैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढाई सेर का बाट। २–ढाई गुने का पहाड़ा। ३–शनैश्चर के एक राशि पर रहने का ढाई वर्ष का काल।

ढोंकना [क्रि. स.] (हिं.) पीना या पी जाना।

ढोंका [संज्ञा पु.] (देश.) १–पत्थर आदि का अनगढ़ा टुकड़ा। २–कोल्हू का बांस। ३–दो ढौली या चारसौ पान। (तमोली)

ढोंग [संज्ञा पु.] (हिं.) ढकोसला। पाखंड।

ढोंगधतूरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धूर्त्तता। पाखंड।

ढोंगबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाखंड। आडम्बर।

ढोंगी [वि.] (हिं.) ढोंग करने वाला। पाखंडी।

ढोंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पुत्र। २–बालक। लड़का।

ढोंढ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कपास, पोस्त आदि का ढोड़ा। २–कली।

ढोंढी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाभि।

ढोक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–एक प्रकार की मछली। २–हाथ जोड़े हुए भूमि पर सिर टेकने का भाव।

ढोकना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–हाथ जोड़े हुए भूमि पर सिर टेकना। पूजा करना। (राजधानी)।

ढोका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढोंका'।

ढोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ढोटी] १–पुत्र। बेटा। २–लड़का। बालक।

ढोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की।

ढोटौना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पुत्र। बेटा। २–लड़का। बालक।

ढोड़+ [संज्ञा पु.] (देश.) ऊँट।

ढोना [क्रि. स.] (हिं.) १–बोझ लादकर ले जाना। २–उठा ले जाना। ३–विपत्ति कष्ट आदि में निर्वाह करना।

ढोर [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय, बैल, भैंस आदि पशु। मवेशी। चौपाया।

ढोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढोर'।

ढोरना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १–ढालना। ढरकाना। २–लुढ़काना। ३–(चँवर आदि) डुलाना।

ढोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ढालने या ढरकाने की किया या भाव। २–रट। धुन। बान। लौ। लगन।

ढोल [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार का लम्बोतरा बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा रहता है। २–कान का परदा। *ढोल ढमक्का*–धूम-धाम। बाजा-गाजा। *ढोल पीटना या बजाना*–घोषणा करना।

ढोलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा ढोल। ढोलकी।

ढोलकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) ढोलक बजाने वाला

ढोलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा ढोलक।

ढोलन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ढोलना'।

ढोलना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढोलक के आकार का छोटा जन्तर। २–सड़क के कंकर दाबने का ढोल के आकार का बड़ा बेलन। ३–पालना। ४–पलंग। + [क्रि. स.] (हिं.) १–ढालना। ढरकाना। २–डुलाना।

ढोलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों का भूला। पालना।

ढोलवाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ढुलवाई'।

ढोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सड़े हुए फल आदि में होने वाला एक प्रकार का कीड़ा। २–हद का निशान। ३–गोल महराब बनाने की डाट लदाव। ४–पिंड। शरीर। देह। ५–पति। प्रियतम। ६–एक प्रकार का गीत। ७–मूर्ख व्यक्ति।

ढोलिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढोल बजाने वाली।

ढोलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) ढोल बजाने वाला।

ढोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दो सौ पानों गड्डी। २–हँसी। दिल्लगी।

ढोव [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पदार्थ जो मंगल सर पर राजा, सरदार आदि को भेंट जाता है। डाली।

ढोवना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ढोना'।

ढौंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) साढ़ेचार का पहाड़ा।

ढौंसना [क्रि. अ.] (हिं.) आनन्द ध्वनि करना।

ढौकन [संज्ञा पु.] (सं.) घूस। रिशवत।

ढौकना [क्रि. स.] (देश.) पीना (अशिष्ट)।

ढौरना+* [क्रि. स] (हिं.) इधर-उधर घुमाना।

ढौरी+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रट। धुन। लगन।

ण (ण)

ण हिन्दी या संस्कृत वर्णमाला का व्यंजन और टवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

ण [संज्ञा पु.] (सं.) १–बिन्दुदेव। एक बुद्ध नाम। २–आभूषण। ३–निर्णय। ४– ५–शिव का नाम। ६–पानी का घर। ८–पिंगल में एक गण का नाम। [वि.] (सं.) गुणरहित। गुणशून्य।

णकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'ण' स्वरूप वर्ण।

णगण [संज्ञा पु.] (सं.) दो मात्राओं का मात्रिक गण।

णमोकार-मन्त्र [संज्ञा पु.] (हिं.) जैनों का प्रधान मन्त्र।

णय [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मलोक के एक सरोवर नाम।

त

त हिन्दी वर्ण का सोलहवां व्यंजन तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दन्त है।

तं [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नाव। नौका। २– पवित्र।

तँई [प्रत्य.] देखो 'तई'।

तंक, तङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १–भय। डर। वह दुख जो किसी के वियोग में हो। पत्थर काटने की टांकी। पहनने का वस्त्र।

तँकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'टंकारी'।

तंग [संज्ञा पु.] (फ़ा.) घोड़ों की ज़ीन कसने

ठी। कसन।
[वि.] (फ़ा.) कसा। दृढ़। २-दुखी। विकल। हैरान। ३-संकुचित। सकरा। संकीर्ण।
तंग आना, होना-घबरा जाना। थक जाना। तंग करना-सताना। हाथ तंग होना-पास पैसा न होना।
तंगदस्त [वि.] (फ़ा.) ४-कृपण। कंजूस। धन हीन। गरीब।
तंगदस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-कृपणता। कंजूसी। २-दरिद्रता। गरीबी।
तंगहाल [वि.] (फ़ा.) १-निर्धन। गरीब। २-कष्ट में पड़ा हुआ। संकटग्रस्त। ३-बीमार। रोगग्रस्त। मरणासन्न।
[संज्ञा पु.] (हिं) १-एक प्रकार का वृक्ष। २-अधन्ना। आध आना।
[संज्ञा स्त्री.] (फ़ा) १-संकीर्णता। संकोच। २-दुःख। क्लेश। ३-निर्धनता। गरीबी। कमी।
[संज्ञा स्त्री.] (फ़ा) एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।
[संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य। नाच।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-खंजन पक्षी ३-पेड़ का तना। ४-वह वाक्य जिसमें बहुत से समास हों। ५-बहुरूपिया।
तण्डव [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का
तण्डि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
[संज्ञा पु.] (सं.) महादेव जी के नंदिकेश्वर।
तण्डुरण [संज्ञा पु.] (सं) १-चावल का पानी। २-कीड़ा मकोड़ा।
तण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चावल। २-बायविडंग। ३-चौलाई का साग। ४-आठ सरसों के बराबर का एक प्राचीन तौल।
तण्डुल-जल [संज्ञा पु.] (सं.) चावल का पानी।
तण्डुलाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-तंडुल जल। २-मांड। पीच।
तण्डुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बायविडंग। २-ककही नामक पौधा।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौलाई।
तण्डुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की ककड़ी। २-चौलाई का साग। ३-यवतिक्ता नामक लता।
तण्डुलीक [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।
तण्डुलीय [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।
तण्डुलीयक [संज्ञा पु.] (सं) १-बायविडंग। २-चौलाई का साग।

तंडुलीयिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बायविडङ्ग।

तंडुलू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बायविडङ्ग।

तंडुलेर, तण्डुलेर [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।

तंडुलेरक, तण्डुलेरक [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।

तंडुलोत्थ, तण्डुलोत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) चावल का पानी।

तंडुलोदक, तण्डुलोदक [संज्ञा पु.] (सं.) चावल का पानी।

तंडुलौघ, तण्डुलौघ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाँस।

तंत* + [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'तंतु'। २-देखो 'तत्व'। ३-देखो 'तंत्र'। [संज्ञा स्त्री.] आतुरता। उतावली। [वि.] जो तोल में ठीक हो।

तंतमंत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तंत्र-मंत्र'।

तंतरी*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तार वाले बाजे बजाने वाला व्यक्ति।

तंति, तन्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौ। गाय।

तंतिपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गायों की रक्षा या पाल करने वाला व्यक्ति। २-सहदेव का अज्ञातवास का नाम।

तंतु [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूत। डोरा। तागा। २-ग्राह। ३-संतान। बाल बच्चे। ४-विस्तार फैलाव। ५-यज्ञ की परम्परा। ६-वंश परम्परा ७-ताँत। ८-मकड़ी का जाला।

तंतुक, तन्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) सरसों। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाड़ी।

तंतुकाष्ठ, तन्तुकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक लकड़ी जिसे जुलाहे तूली कहते हैं।

तंतुकी, तन्तुकी [संज्ञा पु.] (सं.) नाड़ी।

तंतुकीट, तन्तुकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकड़ी। २-रेशम का कीड़ा।

तंतुजाल, तन्तुजाल [संज्ञा पु.] (सं.) नसों का समूह।

तंतुनाग, तन्तुनाग [संज्ञा पु.] (सं.) मगर।

तंतुनाभ, तन्तुनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) मकड़ी।

तंतुनिर्यास, तन्तुनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

तंतुपर्व, तन्तुपर्व [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रावण पूर्णिमा जिसदिन राखी बाँधी जाती है। रक्षा-बंधन।

तंतुभ, तन्तुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरसों। २-बछड़ा।

तंतुमत्, ततुमत् [संज्ञा पु.] (सं.) आग।

तंतुर, तन्तुर [संज्ञा पु.] (सं.) मृणाल। मुरार। कमल की जड़।

तंतुरचना, तन्तुरचना [संज्ञा पु.] (सं.) बुनावट

तंतुल, तन्तुल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृणाल। कमल-नाल।

तंतुवादक, तन्तुवादक [संज्ञा पु.] (सं.) बीन आदि के तार बजाने वाला। तंत्री।

तंतुवाप, तन्तुवाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांत। ताँती। देखो 'तंतुवाय'।

तंतुवाय, तन्तुवाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपड़े बुनने वाला। ताँती। २-मकड़ी।

तंतुविग्रह, तन्तुविग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) केले का पेड़।

तंतुसार, तन्तुसार [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का पेड़।

तंत्र, तन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तंतु। तांत। २-सूत। ३-जुलाहा। ४-कपड़ा बुनने का सामान ५-वस्त्र। कपड़ा। ६-कुटुम्ब का भरणपोषण ७-निश्चित सिद्धान्त। ८-प्रमाण। ९-औषध। १०-झाड़ने फूँकने का मन्त्र। ११-काम। १२-कारण। १३-उपाय। १४-राज्य कर्मचारी १५-राज्य। १६-राज्य या किसी अन्य कार्य का प्रबन्ध। १७-सेना। १८-पद या कार्य करने का स्थान। १९-अधिकार। २०-घर। २१-प्रसन्नता। २२-समूह। २३-धन। सम्पत्ति। २४-दल। २५-अधीनता। २६-श्रेणी। वर्ग। कोटि। २७-उद्देश्य। २८-कुल। २९-शपथ। कसम। ३०-हिन्दुओं का उपासना संबंधी एक शास्त्र जो शिव का चलाया हुआ माना जाता है और जिसके सिद्धान्त गुप्त रखे जाते हैं।

तंत्रक, तन्त्रक [संज्ञा पु.] (सं.) नया कपड़ा।

तंत्रकार, तन्त्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) बाजा बजाने वाला।

तंत्रण, तन्त्रण [संज्ञा पु.] (सं.) शासन अथवा प्रबन्ध आदि का कार्य।

तंत्रता, तन्त्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई ऐसा काम करना जिसके द्वारा अनेक उद्देश्य सिद्ध हों।

तंत्रधारक, तन्त्रधारक [संज्ञा पु.] (सं.) याज्ञिक आदि के साथ कर्मकांड आदि की पुस्तक लेकर बैठने वाला व्यक्ति।

तंत्रयुक्ति, तन्त्रयुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह युक्ति जिसकी सहायता से किसी वाक्य का अर्थ आदि निकालने की सहायता ली जाय

तंत्रवाप, तन्त्रवाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-तंतुवाय। जुलाहा। २-मकड़ी।

तंत्रवाय, तन्त्रवाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-तंतुवाय। जुलाहा। २-मकड़ी। ३-तांत।

तंत्रसंस्था, तन्त्रसंस्था [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का शासन अथवा प्रबन्ध करने वाली संस्था। गवर्मेंट।

तंत्रसंस्थिति, तन्त्रसंस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य के शासन की प्रणाली।

तंत्रस्कंद, तन्त्रस्कंद [संज्ञा पु.] (सं.) गणित

ज्योतिष।

तंत्रहोम, तन्त्रहोम [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र शास्त्र के मतानुसार होने वाला होम या हवन।

तंत्रा, तन्त्रा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तन्द्रा'।

तंत्रि, तन्त्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तन्त्री। २-तन्द्रा।

तंत्रिका, तन्त्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुरुच। २-तांत।

तंत्रिपाल, तन्त्रिपाल [संज्ञा पु.] देखो 'तंतिपाल'

तंत्रिपालक, तन्त्रिपालक [संज्ञा पु.] (सं.) जयद्रथ का एक नाम।

तंत्री, तन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २-तारों की सहायता से बजने वाला बाजा। ३-शरीर की नस। ४-रस्सी। ५-वीणा।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो बाजा बजाता हो। २-गवैया।
[वि.] (सं.) १-आलसी। २-आधीन।

तंत्रीमुख, तन्त्रीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ की एक मुद्रा।

तंदरा*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तन्द्रा'।

तंदान [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बढ़िया अंगूर।

तंदिही [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तंदेही'।

तंदुआ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बारहमासी घास।

तंदुरुस्त [वि.] (फा.) स्वस्थ। निरोग।

तंदुरुस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शरीर की आरोग्यता। स्वास्थ्य।

तंदुल+* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तंदुल। चावल। २-आठ सरसों के बराबर का एक प्राचीन तोल जिसे हीरे तोले जाते हैं।

तंदुलीयक, तन्दुलीयक [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।

तंदूर [संज्ञा पु.] (फा.) मिट्टी की एक प्रकार की बड़ी भट्टी जिसमें रोटियां पकाई जाती हैं।

तंदूरी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का रेशम जो बारीक और मुलायम होता है।
[वि.] (हिं.) तंदूर-सम्बन्धी।

तंदेही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-परिश्रम। मेहनत। २-प्रयत्न। कोशिश। ३-ताकीद। ४-चेतावनी।

तंद्रवाप, तन्द्रवाय [संज्ञा पु.] देखो 'तंतुवाय'।

तंद्रा, तन्द्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह अवस्था जो पूरी नींद आने के आरम्भ में होती है। ऊँघ। ऊँघाई। २-हलकी बेहोशी।

तंद्रालस, तन्द्रालस [संज्ञा पु.] (हिं.) तन्द्रा या ऊंघ के कारण होने वाला आलस्य।

तंद्रालु, तन्द्रालु [वि.] (सं.) जिसे तन्द्रा या ऊंघ आती हो।

तंद्रि, तन्द्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तन्द्रा'।

तंद्रिकसन्निपात, तन्द्रिकसन्निपात [संज्ञा पु.] (सं.) वह सन्निपात ज्वर जिसमें उंघाई आवे।

तंद्रिका, तन्द्रिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तंद्रा'।

तंद्रिता, तन्द्रिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंद्रा या उंघाई में होने का भाव।

तंद्रिल, तन्द्रिल [वि.] (सं.) जिसे तंद्रा या उंघाई आती हो।

तंद्री, तन्द्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तंद्रा। २-भृकुटी। भौंह।

तंपा, तम्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौ। गाय।

तंबा, तम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौ। गाय।
[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चौड़ी मोहरी का पायजामा।

तंबाकू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तमाखू'।

तंबाकूगर [संज्ञा पु.] (हिं.) तमाखू बनाने वाला व्यक्ति।

तंबिका, तम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौ। गाय।

तँबिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तांबे का बनी हुआ छोटा तसला। २-किसी प्रकार का तसला।

तँबियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-तांबे के रंग का होना। २-तांबे के पात्र में किसी पदार्थ को रखने के कारण इसमें तांबे का स्वाद या गंध आजाना।

तंबीर, तम्बीर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष का एक योग।

तंबीह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-नसीहत। शिक्षा। २-दंड। सजा।

तंबू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े टाट आदि का बना हुआ खेमा। शामियाना। २-ब्रांब की तरह की एक मछली।

तंबूर [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का छोटा ढोल
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तंबूरा'।

तंबूरची [संज्ञा पु.] (फा.) तंबूरा बजाने वाला।

तंबूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) सितार के समान पर उससे कुछ बड़ा एक बाजा। तानपूरा।

तंबूरातोप [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ी तोप।

तंबूल* [संज्ञा पु.] (हिं.) पान। तांबूल।

तंबेरम [संज्ञा पु.] (डिं.) हाथी।

तंबोरा [संज्ञा पु.] देखो 'तमोरा'।

तंबोल* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'तांबूल'। २-एक प्रकार का पेड़। ३-बरात के समय वर को दिया जाने वाला टीका।

तँबोलिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पान बेचने वाली स्त्री। तमोलिन।

तँबोलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पान के आकार की एक प्रकार की मछली। यह प्रायः गंगा या जमुना में पाई जाती है।

तँबोली [संज्ञा पु.] (हिं.) पान बेचने वाला वरई। तमोली।

तँभ* [संज्ञा पु.] (हिं.) स्तम्भ। शृंगार रस के १० सात्विक भावों में से एक।

तँभन [संज्ञा पु.] (हिं.) स्तम्भन। शृंगार रस के १० सात्विक भावों में से एक।

तँभावती, तम्भावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जाति की एक रागिनी जो रात को दूसरे पहर में गाई जाती है।

तँवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिर में आने वाला चक्कर। घुमेर। २-हरारत। ज्वरांश।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्यौहार'।

तँवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'तँवार'। २-त्यौहार पर मिलने वाला नेग या पुरस्कार।

त [संज्ञा पु.] (सं.) १-नौका। नाव। ३-चोर। ४-झूठ। ५-पूँछ। म्लेच्छ। ८-गर्भ। ९-शठ। अमृत। १२-बुद्ध।
*+ [क्रि. वि.] (हिं.) तो।

तः [प्रत्य.] (सं.) एक संस्कृत प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लग कर ये अर्थ बढ़ाता है। (१) रूप अथवा प्रकार से, जैसे-साधारणतः। (२) के अनुसार जैसे-नियमतः।

तअज्जुब [संज्ञा पु.] (अ.) विस्मय। आश्चर्य।

तअम्मुल [संज्ञा पु.] (अ.) १-सोच। विचार। २-देर।। अरसा। ३-सब्र। धैर्य।

तअल्लुक [संज्ञा पु.] (अ.) इलाका। संबंध। लगाव।

तअल्लुकः [संज्ञा पु.] (अ.) बड़ा इलाका। बहुत से मौजों की जमींदारी।

तअल्लुकःदार [संज्ञा पु.] (अ.) तअल्लुके का मालिक।
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) तअल्लुकःदार का पद।

तअल्लुका [संज्ञा पु.] देखो 'तअल्लुकः'।

तअल्लुकादार, ताल्लुकेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तअल्लुकःदार'।

तअल्लुकेदारी [संज्ञा स्त्री.] तअल्लुकेदार का पद।

तअस्सुब [संज्ञा पु.] (अ.) पक्षपात। तरफदारी।

तइक [संज्ञा पु.] (हिं.) मोची। चमार।

तइनात [संज्ञा पु.] देखो 'तैनात'।

तइसा+ [वि.] (हिं.) देखो 'तैसा' या 'वैसा'।

तइँ* [प्रत्य.] (हिं.) १-से। २-प्रति। को।
[अव्य.] (हिं.) लिए। वास्ते।

तई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छिछली कड़ाही।

तउ*+ [अव्य.] (हिं.) १-देखो 'तव'। २-देखो 'त्यों'।

तऊ*+ [अव्य.] (हिं.) तब भी। तथापि। फिर भी।

तक [अव्य] (हिं.) किसी वस्तु या व्यापार की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति। पर्यन्त।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तराजू। २-तराजू का पल्ला।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टक'।

[illegible] [वि.] (सं.) १-निन्दित। दूषित। २-सहनशील।

तकड़ा [वि.] (हिं.) देखो 'तगड़ा'।

तकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

[illegible]+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तराजू।

तकदमा [संज्ञा पु.] (हिं.) तखमीना।

तकदीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। नसीब।

तकदीरवर [वि.] (अ., फा.) भाग्यवान्।

तकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताकने की क्रिया या भाव। देखना। दृष्टि।

तकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखना। निहारना। २-शरण लेना। आश्रय लेना।

तकमा [संज्ञा पु.] १-देखो 'तमगा'। २-देखो 'तुकमा'।

तकमील [संज्ञा स्त्री] (अ.) पूर्णता।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भेड़ों के ऊपर से ऊन काटने का औजार।

तकरार [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-हुज्जत। विवाद। २-लड़ाई। झगड़ा। ३-कविता में किसी वर्णन को दोहराना। ४-वह खेत जिसमें कई प्रकार के अन्न बोये गये हों।

तकरीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बातचीत। २-वक्तृता। भाषण।

तकरीब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) उत्सव। जलसा।

तकर्रुरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) नियुक्ति।

तकला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तकली] १-चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर कता हुआ सूत लपेटते हैं। टेकुआ। २-रस्सी बटने का एक औजार। ३-सुनारों की सिकरी बनाने की सलाई।

किसी के तकले से बल निकालना-अच्छी तरह दुरुस्त या ठीक करना।

तकली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा तकला। टेकुरी।

तकलीफ [संज्ञा स्त्री.] (अ) १-कष्ट। क्लेश। २-विपत्ति। मुसीबत।

तकल्लुफ [संज्ञा पु.] (अ.) शिष्टाचार (दिखावटी)।

तकल्लुफ का-बहुत अच्छा।

तकवाना [क्रि. स] (हिं.) दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना।

तकवाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तकाई'।

[illegible]※ [संज्ञा स्त्री.] (?) नाश। दुर्दशा।

तकसीम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। २-भाग (गणित)।

तकसीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दोष। अपराध। २-भूल। चूक।

तकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताकने की क्रिया या भाव। २-ताकने के फलस्वरूप प्राप्त धन।

तक़ाजा [संज्ञा पु.] (अ.) १-ऐसी वस्तु माँगना जिसके प्राप्त करने का अधिकार हो। तगादा। २-ऐसा काम करने के निमित किसी से कहना जिसके लिए वचन मिल गया हो। ३-किसी प्रकार की उत्तेजना अथवा प्रेरणा।

तकान [संज्ञा स्त्री] देखो 'थकान' या 'थकावट'।

तकाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

तकावी [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-वह धन जो किसानों को बीज, चारा आदि खरीदने के लिए सरकार की ओर से उधार दिया जाता है। इस प्रकार उधार देने का काम।

तकिया [संज्ञा पु.] (फा.) १-सिर को आराम पहुचाने के लिए रुई आदि का भरा वह थैला जो लेटने या सोने के समय (सिर के) नीचे रखते हैं। २-रोक या सहारे के लिए प्रयुक्त होने वाली पत्थर की पटिया। ३-विश्राम करने का स्थान। ४-आश्रय। सहारा। आसरा ५-मुसलमान फकीर या पीर का निवास स्थान जो प्रायः कब्रिस्तान के पास होता है। ६-चारजामा।

तकिया-कलाम [संज्ञा पु.] देखो 'सखुन-तकिया'

तकियादार [संज्ञा पु.] (फा.) मजार पर रहने वाला मुसलमान फकीर।

तकिल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-औषध। २-धूर्त।

तकिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) औषध। दवा।

तकुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'तकला'। २-ताकने वाला। देखने वाला।

तकैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ताकने या देखने वाला व्यक्ति।

तक्कोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पेड़।

तक्मा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वसंत नामक चर्म-रोग। २-शीतलादेवी।

तक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मट्ठा। छाछ। मठा। २-शहतूत के पेड़ का एक रोग।

तक्रकूर्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फटा हुआ दूध। छेना।

तक्रपिंड, तक्रपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) फटा हुआ दूध। छेना।

तक्रभिद [संज्ञा. पु.] (सं.) कैथ।

तक्रप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेह रोग का एक भेद।

तक्रमांस [संज्ञा पु.] (सं.) मांस कारसा। अखनी।

तक्रवामन [संज्ञा पु.] (सं) नागरंग।

तक्रसंधान, तक्रसन्धान [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार की कांजी।

तक्रसार [संज्ञा पु] (सं.) मक्खन।

तक्राट [संज्ञा पु] (सं.) मथानी।

तक्रार [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तकरार'।

तक्रारिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) छाछ में हड़ और आंवले का चूर्ण मिलाकर बनाया हुआ अरिष्ट।

तक्राह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का क्षुप।

तक्व [वि.] (सं.) जल्दी जाने वाला।

तक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पतला करने की क्रिया।

तक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा परीक्षित को काटने वाला एक नाग। २-भारत की एक प्राचीन अनार्य जाति। ३-सर्प। सांप। ४-बढ़ई। ५-सूत्रधार।

[वि.] (सं.) छेदने वाला। छेदक।

तक्षकीय [वि.] (सं.) तक्षक सम्बन्धी।

तक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लकड़ी को रेद कर साफ करने का काम। २-बढ़ई। ३-पत्थर, लकड़ी आदि खोदकर मूर्त्तियां और बेलबूटे बनाने का काम।

तक्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बढ़इयों का लकड़ी साफ करने का रंदा।

तक्षशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी का नाम। यह प्राचीन नगर रावलपिंडी (जो पाकिस्तान देश के अंतर्गत है) के पास था। यहीं पर राजा जनमेजय ने सर्पयज्ञ किया था।

तक्षा [संज्ञा पु.] (हिं.) बढ़ई।

तख़फ़ीफ़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कमी। न्यूनता।

तख़मीनन् [क्रि. वि.] (अ.) अंदाज या अटकल से। अनुमान से।

तखमीना [संज्ञा पु.] (अ.) अनुमान। अटकल।

तखरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तकड़ी'।

तखलिया [संज्ञा पु.] (अ.) एकांत स्थान। निर्जन स्थान।

तखान※ [संज्ञा पु.] (हिं.) बढई।

तखिहा※ [वि.] (अ.) वह बैल जिसकी दोनों आँखें अलग-अलग रंग की हों।

तखीत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-तलाशी। २-तहकीकात।

तख्त [संज्ञा पु.] (फा.) १-राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २-तख्तों की बनी बड़ी चौकी।

तख्त की रात-सोहागरात (मुसलमान)।

तख्तरवाँ [संज्ञा पु.] (फा.) वह तख्त जिस पर सवार होकर राजा निकलते हैं।

तख्त-ताऊस [संज्ञा पु.] (फा.+अ.) छः करोड़ रुपए की लागत से बना हुआ एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया।

था। इसके ऊपर एक जड़ाऊ मोर पंख फैलाए खड़ा था।

तख्तनशीन [वि.] (फ़ा.) सिंहासनारूढ़।

तख्तपोश [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-तख्त पर बिछाने की चादर। २-चौकी। तख्त।

तख्तबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-तख्तों की बनी हुई दीवार। २-तख्तों की दीवार बनाने की क्रिया।

तख्ता [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-लकड़ी का चिरा हुआ लम्बा और कम चौड़ा पल्ला। २-लकड़ी की बड़ी चौकी। ३-अरथी। ४-कागज का ताव। ५-खेत में बनी क्यारी।
तख्ता उलटना-१-किसी प्रबंध का नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। *तख्ता हो जाना*-ऐंठ या अकड़ जाना।

तख्तापुल [संज्ञा पु.] (फ़ा.) तख्तों का किले की खन्दक पर बनाया हुआ पुल।

तख्ती [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-छोटा तख्ता। २-लिखने की पट्टी या पटिया। ३-किसी वस्तु की छोटी पटरी।

तगड़ा [वि.] (हिं.) [स्त्री. तगड़ी] १-सबल। बलवान। मजबूत। २-अच्छा और बड़ा।

तगड़ी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १-बलवान (स्त्री)। २-अच्छी और बड़ी।
+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तागड़ी'।

तगण [संज्ञा पु.] (सं.) वह गण जिसमें पहले दो गुरु और अन्तिम लघु (ऽऽ।) वर्ण होता है। (पिंगल)।

तगदमा, तगदम्मा [संज्ञा पु.] (अ.) अनुमान। तखमीना।

तगना [क्रि. अ.] (हिं.) तागा जाना। सिला जाना।

तगपहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहों का एक औजार जिससे टूटा हुआ सूत जोड़ते हैं।

तगमा [संज्ञा पु.] देखो 'तमगा'।

तगर [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंधित लकड़ी वाला एक वृक्ष।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की शहद की मक्खी।

तगला [संज्ञा पु.] (हि.) १-तकला। २-सरकंडे की दो हाथ लम्बी छड़ जिससे जुलाहे साथी मिलाते हैं।

तगसा [संज्ञा पु.] (देश.) वह लकड़ी जिससे पीटकर ऊन साफ करते हैं।

तगा*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तागा'।
[संज्ञा पु.] एक जाति विशेष।

तगाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तगाने का काम। २-तागने का भाव। ३-तागने की मजदूरी।

तगाड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री तगाड़ी] मसाला या चूना पहुँचाने का तसला जो चिनाई के काम में आता है।

तगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा तगाड़ा या तसला।

तगादा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तकाजा'।

तगाना [क्रि. स.] (हिं.) तागने का काम कराना।

तागार, तागारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-उखली गाड़ने का गड्ढा। २-वह स्थान जहाँ इमारत के लिए चूना गारा आदि साना जाता है। ३-हलवाइयों का मिठाई बनाने का मिट्टी का बरतन।

तगियाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तगाना'।

तगीर* [संज्ञा पु.] (हिं.) परिवर्त्तन।

तगीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परिवर्त्तन। बदली।

तघार, तघारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तगार'।

तचना+ [क्रि. अ.] (हिं.) तपना। तप्त होना।

तचा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) त्वचा। चमड़ा। खाल।

तचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-तपाना। जलाना। २-संतप्त या दुःखी करना।

तचित* [सर्व.] (हिं.) १-तपा हुआ। तप्त। २-दुखी। संतप्त।

तच्छ [संज्ञा पु.] देखो 'तक्ष'।

तच्छक* [संज्ञा पु.] देखो 'तक्षक'।

तच्छिन* [क्रि. वि.] (हिं.) उसी समय। तत्क्षण। तत्काल।

तच्छील [वि.] (सं.) स्वभाव से ही काम करने वाला।

तज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दारचीनी की जाति का एक सदाबहार वृक्ष जिसके पत्ते 'तेजपत्ता' कहलाते हैं। २-इस वृक्ष की सुगंधित छाल अथवा लकड़ी।

तज़किरा [संज्ञा पु.] (अ.) चर्चा। जिक्र।

तज़गरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) रन्दा तेज करने की पटरी।

तजन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तजने की क्रिया या भाव। परित्याग। २-कोड़ा या चाबुक।

तजना [क्रि. स.] (हिं.) त्यागना। छोड़ना।

तजरबा [संज्ञा पु.] (अ.) १-अनुभव। २-प्रयोग
तजरबेकार-अनुभवी।

तजरबाकार [संज्ञा पु.] (अ.+फ़ा.) 'जिसने तजरबा किया हो। अनुभवी।

तजरबाकारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फ़ा.) अनुभव।

तजरुबाकार [संज्ञा पु.] देखो 'तजरबाकार'।

तजरुबाकारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तजरबाकारी'।

तजवीज [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सम्मति। राय। २-फैसला। निर्णय। ३-बंदोबस्त। प्रबंध।

तजवीज़सानी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक ही हाकिम से पुनर्विचार करने के लिए प्रार्थनापत्र देना

तजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत छोटा तराजू। काँटा।

तज्जन्य [वि.] (सं.) उसी से उत्पन्न। उसी से लगा हुआ।

तज्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंगुपत्री।

तज्ञ [वि.] (सं.) १-तत्व का जानकार। तत्वज्ञ। २-ज्ञानी।

तटंक [संज्ञा पु.] (हि.) एक कान का गहना जिसे कर्णफूल या कनफूल कहते हैं।

तट [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षेत्र। खेत। २-प्रदेश। ३-किनारा। कूल। ४-शिव। महादेव।
[क्रि. वि.] (सं.) समीप। पास। निकट।

तटका [वि.] (हिं.) टटका। ताजा।

तटग [संज्ञा पु.] (सं.) तड़ाग।

तटनी* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) तटिनी। नदी। सरिता। दरिया।

तट-पाल [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र के तटवर्ती प्रदेश या बंदरगाह क्षेत्र का रक्षक। कोस्ट-गार्ड।

तट-पाल-पोतल [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र के तट-वर्त्ती प्रदेश का रक्षक जंगी जहाज या युद्ध-पोत। कोस्टगार्ड-मॉनइटर।

तटरक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) तटवर्त्ती प्रदेश या बंदरगाह की रक्षा। कोस्ट-डिफेंस।

तटरक्षा-वाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तटवर्त्ती प्रदेश की रक्षा करने वाली सेना। कोस्टल कमांड।

तटवर्त्ती [वि.] (सं.) किनारे का। तट के पास वाला। कोस्टल।

तटस्थ [वि.] (सं.) १-तट या किनारे रहने वाला। २-पास रहने वाला। ३-परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहने वाला। उदासीन। निष्पक्ष। न्यूट्रल।
[संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का वह लक्षण जो उसके स्वरूप को लेकर नहीं बल्कि उसके गुण और धर्मादि को लेकर बतलाया जाय।

तटस्थ-उदतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह बंदरगाह जो किसी भी राष्ट्र से कोई अपेक्षा या कामना न रखे। निरपेक्ष-बंदरगाह। न्यूट्रल पोर्ट।

तटस्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तटस्थ या निरपेक्ष रहने का भाव। निरपेक्षता। उदासीनता। न्यूट्रलेटी।

तटस्थ-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) तटस्थ या निरपेक्ष भाव से रहने वाला राज्य या देश। न्यूट्रल स्टेट।

तटस्थीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) सब ओर से उदासीन या निरपेक्ष। न्यूट्रलाइजेशन।

तटाक [संज्ञा पु.] (सं.) तड़ाग। तालाब।

तटाघात [संज्ञा पु.) (सं.) पशुओं का अपने सींगों या दाँतों से जमीन खोदना।

तटिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी। सरिता। दरिया।

तटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तीर। कूल। किनारा।

तड़ाका [संज्ञा पु.] (हिं.) 'तड़तड़' शब्द ।
[क्रि. वि.] (हिं.) जल्दी से । तुरन्त । चटपट ।

तड़ाग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालाव । सरोवर । ताल । पुष्कर । पोखर

तड़ागना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-डींग हाँकना । हाथ-पैर हिलाना । प्रयत्न करना ।

तड़ातड़ [क्रि. वि.] (हिं.) तड़तड़-शब्दसहित ।

तड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) अनजान बनकर इस प्रकार कोई काम करना जिसमें लोग ताड़ें अथवा देखें । ताड़ने में प्रवृत्त करना । झेंपाना

तड़ावा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊपरी तड़क-भड़क । २-धोखा ।

तड़ित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत । बिजली ।

तड़ित्कुमार [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के एक देवता का नाम ।

तड़ित्पति [संज्ञा पु.] (सं.) बादल । मेघ ।

तड़ित्प्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली की चमक । २-कार्त्तिकेय की मातृका का नाम ।

तड़ित्वत [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ । बादल । २-नागरमोथा ।

तड़ित्वती [वि.] (सं.) जिसमें बिजली के सदृश चमक हो ।

तड़ित्वान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल । २-नागरमोथा ।

तड़िता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तड़ित्' ।

तड़िद्गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) बादल ।

तड़िन्मय [वि.] (सं.) बिजली के स्वरूप का ।

तड़िया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) समुद्र के किनारे की हवा ।

तड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चपत । धौल । २-धोखा । छल । ३-बहाना । हीला ।

तणमीट [संज्ञा पु.] (डिं.) मुसलमान ।

तत् [संज्ञा पु.] (सं) १-परब्रह्म या परमात्मा का एक नाम । २-वायु । हवा ।
[सर्व.] (सं.) उस ।

तत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु । २-विस्तार । ३-पिता । ४-पुत्र । ५-वह बाजा जिसमें तार लगे हों ।
+* [वि.] (हिं.) तप्प । तपा हुआ । गरम
*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तत्व' ।

ततखन* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'तत्क्षण' ।

तततार्थेई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाच के बोल ।

ततपर [वि.] (हिं.) देखो 'तत्पर' ।

ततपत्री [संज्ञा पु.] (सं.) केले का वृक्ष ।

ततबाउ*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तंतुवाय' ।

ततबीर*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तदबीर' ।

ततरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का फलदार वृक्ष ।

ततसार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तप्तशाला । तपाने का स्थान । तापने की जगह ।

ततहड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ततहड़ी] मिट्टी का पानी गरम करने का बरतन ।

ततःप्रभृति [अव्य.] (सं.) तब से ।

तताई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तप्त होने की क्रिया या भाव ।

ततामह [संज्ञा पु.] (सं.) पितामह । दादा ।

ततारना [क्रि. स.] (हिं.) १-गरम जल से धोना । २-धार देकर धोना ।

तति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रेणी । पंक्ति । २-समूह । ३-विस्तार ।

ततबाऊ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तंतुवायु'

ततरि [वि.] (सं.) १-हिंसा करने वाला । २-तारने वाला ।

ततैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बर्रे । भिड़ । हड्डा । २-जवा मिर्च ।
[वि.] १-तेज । फुरतीला । २-चालाक । चतुर ।

ततोधिक [वि.] (सं.) उनसे बढ़कर ।

तत्काल [क्रि. वि.] (सं.) तुरन्त । फौरन । उसी समय ।

तत्कालधी [वि.] (सं.) प्रत्युतपन्न मति । उपस्थित बुद्धि वाला ।

तत्कालसंभूत [सम्भूत] [वि.] (सं.) उसी समय होने वाला ।

तत्कालिक [वि.] देखो 'तात्कालिक' ।

तत्कालीन [क्रि. वि.] (सं.) उसी समय का ।

तत्क्षण [क्रि. वि.] (सं.) उसी समय । तत्काल । उसी दम ।

तत्त*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तत्व' ।

तत्ता* [वि.] (हिं.) गरम । उष्ण । तपता हुआ ।
तत्ता तवा–बात-बात पर लड़ने वाला ।

तत्ताथेई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाचते समय पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द ।

तत्तो-थंबो [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दम दिलासा । बहलावा । २-बीचबचाव ।

तत्त्व, तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-वास्तविक स्थिति । यथार्थता । वास्तविकता । असलियत । २-जगत का मूल कारण (संख्या में २५ तत्व माने गये हैं—पुरुष, प्रकृति, बुद्ध, अहंकार, चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा, त्वक्, वाक्, पाणि, पायु, पाद, उपस्थ, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) । ३-पंचभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) । ४-परमात्मा । ब्रह्म । ५-सार वस्तु । सारांश ।

तत्त्वज्ञ, तत्वज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-तत्व या यथार्थता जानने वाला । तत्वज्ञानी । २-ब्रह्मज्ञानी । ३-दर्शनशास्त्र का ज्ञाता । दार्शनिक ।

तत्वज्ञान, तत्त्वज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्म, आत्मा और ईश्वर आदि के सम्बन्ध का सच्चा और यथार्थ ज्ञान। २-ब्रह्मज्ञान।

तत्वज्ञानी, तत्त्वज्ञानी [संज्ञा पु.] (सं.) १-तत्वज्ञ। २-दार्शनिक।

तत्वतः, तत्त्वतः [अव्य.] (सं.) वस्तुतः। यथार्थ रूप से।

तत्वता, तत्त्वता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तत्व होने का भाव या गुण। २-यथार्थता। वास्तविकता।

तत्वदर्श, तत्त्वदर्श [संज्ञा पु.] (सं.) तत्वज्ञानी।

तत्त्वदर्शिता [तत्त्व] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तत्वज्ञ'।

तत्वदर्शी, तत्त्वदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तत्वज्ञ'।

तत्वदीपन, तत्त्वदीपन [संज्ञा पु.] (सं.) तत्वज्ञान की आभा।

तत्वदृष्टि, तत्त्वदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दृष्टि जो तत्व का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक हो। ज्ञानचक्षु। दिव्यदृष्टि।

तत्वनिरूपण, तत्त्वनिरूपण [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मनिर्णय।

तत्वन्यास, तत्त्वन्यास [संज्ञा प.] (सं.) तंत्र के मतानुसार एक विष्णु पूजा में एक अंगन्यास जो सिद्धि प्राप्त करन के लिए किया जाता है

तत्वप्रकाश, तत्त्वप्रकाश [संज्ञा पु.] तत्वज्ञान की आभा।

तत्वबोधिनी, तत्त्वबोधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिसके द्वारा तत्वज्ञान प्राप्त हो।

तत्वभाव, तत्त्वभाव [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृति। स्वभाव।

तत्वभाषी, तत्त्वभाषी [संज्ञा पु.] (सं.) जो स्पष्ट रूप से यथार्थ बात कहता हो।

तत्वरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के मतानुसार स्त्री-देवता का बीज। वधूबीज।

तत्ववत्, तत्त्ववत् [वि.] (सं.) तत्वज्ञान से परिपूर्ण।

तत्ववाद, तत्त्ववाद [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शनशास्त्र-सम्बन्धी विचार।

तत्ववादी, तत्त्ववादी [संज्ञा पु.] (सं.) १-तत्ववाद का ज्ञाता और समर्थक हो। २-जो यथार्थ और स्पष्ट बात कहता हो।

तत्वविद्, तत्त्वविद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-तत्ववेता। २-परमेश्वर।

तत्वविद्या, तत्त्वविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दर्शनशास्त्र।

तत्ववेता, तत्त्ववेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसे तत्व का ज्ञान हो। तत्वज्ञ। २-दर्शनशास्त्र का ज्ञाता। दार्शनिक। फिलोसफर।

तत्व-शास्त्र, तत्त्व-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शनशास्त्र।

तत्वावधान, तत्त्वावधान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य की ऊपर से होने वाली देख-रेख।

तत्वावधानक, तत्त्वावधानक [संज्ञा पु.] (सं.) देखरेख करने वाला। निरीक्षक।

तत्थ+ [वि.] (हिं.) मुख्य। प्रधान।
[संज्ञा पु.] (हिं.) शक्ति। बल। ताकत।

तत्पत्री (सं.) १-केले का पेड़। २-वंशपत्री नामक घास।

तत्पद [संज्ञा पु.] (सं.) परमपद। निर्वाण।

तत्पदार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा। सृष्टिकर्त्ता।

तत्पर [वि.] (सं.) १-जो कोई काम करने के लिए तैयार हो। उद्यत। सन्नद्ध। मुस्तैद। २-दक्ष। निपुण। ३-चतुर। होशियार।

तत्परता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तत्पर होने की क्रिया या भाव। सन्नद्धता। मुस्तैदी। २-दक्षता। निपुणता। ३-होशियारी।

तत्पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। परमेश्वर। २-एक कल्प का नाम (काल-विभाग) ३-व्याकरण में एक समास जिसमें पहले पद में कर्त्ताकारक तो होता ही नहीं, और शेष कारकों की विभक्तियां लुप्त होती हैं और अन्तिम पद का अर्थ प्रधान होता है। जैसे—जलचर।

तत्पूर्व [वि.] (सं.) सर्वप्रथम। सबसे पहला।

तत्प्रकार [वि.] (सं.) उसी प्रकार।

तत्प्रतिरूपक-व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) जैन मतानुसार एक अतिचार जो बेचने के खरे पदार्थों में खोटे पदार्थ की मिलावट करने से होता है।

तत्फल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कूट नामक औषधि। २-बेर का फल। ३-कुवलय। नील कमल। ४-चोर नामक गंधद्रव्य।

तत्र [क्रि. वि.] (सं.) वहाँ। उस जगह या स्थान पर।

तत्रक [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष विशेष जो योरप, अरब, फारस से लेकर पूर्व में अफगानिस्तान तक होता है। इसके डंठल और पत्तियों से चमड़ा कमाया या सिझाया जाता है। इसके बीज हकीमी दवा में काम आते हैं

तत्र-भगवान् [संज्ञा पु.] (सं.) परम पूज्य (धार्मिक गुरु)। *हिज़-होलीनैस।*

तत्र-भवती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माननीय। पूज्यनीया। माननीय महारानी। *हर-हाईनैस।*

तत्रभवान [संज्ञा पु.] (सं.) १-माननीय। पूज्य। श्रेष्ठ। माननीय महाराज। *हिज-हाईनैस।*

तत्र-महती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परमभट्टारिका। राज्यराजेश्वरी (सम्राट-पत्नी)। *हर-मैजेस्टी।*

तत्र-महान् [संज्ञा पु.] (सं.) परमभट्टारक। राज्यराजेश्वर। *हिज़-मैजेस्टी।*

तत्र-श्रीमान् [संज्ञा पु.] (सं.) महामहिम। शुभमूर्त्ति। हिज़-एक्सलैंसी।

तत्रापि [अव्य.] (सं.) तथापि। तौभी।

तत्संवादी [वि.] (सं.) देखो 'तत्स्थानीय'।

तत्सदृश [वि.] (सं.) उसके समान। तथा

तत्सम [संज्ञा पु.] (सं.) किसी भाषा का संस्कृत का वह शब्द जिसका प्रयोग व्यवहार दूसरी या देशी भाषाओं में मूलरूप में या ज्यों का त्यों हों।

तत्समय (सं.) उस समय।

तत्समानंतर, तत्समानन्तर [अव्य.] (सं.) न्तर। उसके बाद।

तत्सामयिक [वि.] (सं.) उस समय का।

तत्स्थानीय [वि.] (सं.) मेल मिलने खाने वाला। तदनुरूप।

तत्स्वरूप [वि.] (सं.) उसके समान। सदृश।

तथा [अव्य.] (सं.) १-और। व। ऐसे ही।
तथास्तु-ऐसे ही हो। इसी प्रकार हो।
[संज्ञा पु.] १-सत्य। २-सीमा। निश्चय। ४-समानता।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'तथ्य'।

तथा-कथित [वि.] (सं.) जो कोई कार्य अथवा कुछ होने वाला कहा तो जाय, जिसके सम्बन्ध में उस कार्य के या स्वयम् उसके वैसे होने का दृढ़ प्रमाण न हो अथवा जिसके वास्तविक आदि होने में किसी तरह का संदेह आपत्ति हो। यों ही या केवल अथवा कहलाने वाला।

तथा-कथ्य [वि.] (सं.) देखो 'तथा-कथित'।

तथागत [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध।

तथापि [अव्य.] (सं.) तौ भी। तब भी। पर भी।

तथाराज [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध।

तथैव [अव्य.] (सं.) १-वैसा ही। उसी का। २-जो ऊपर या पहले है, वही भी। डिट्टो।

तथोक्त [वि.] (सं.) देखो 'तथा-कथित'।

तथ्य [वि.] (सं.) सत्य। सचाई। यथार्थता।

तथ्यज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) यथार्थ ज्ञान। ज्ञान।

तथ्यतः [वि.] (सं.) वास्तविक।

तथ्यबोध [संज्ञा पु.] (सं.) तथ्यज्ञान। तत्वज्ञान।

तथ्यभाषी [वि.] (सं.) देखो 'तथ्यवादी'।

तथ्यवादी [वि.] (सं.) साफ और सच्ची कहने वाला।

तद् [वि.] (सं.) वह।
⁂[क्रि. वि.] (हिं.) तब। उस समय।

तदंतर, तदन्तर [क्रि. वि.] (सं.) इसके बाद।

इसके उपरान्त।

तदंश [संज्ञा पु.] (सं.) उसका भाग या हिस्सा।

तदनंतर, तदनन्तर [क्रि. वि.] (सं.) उसके पीछे। उसके उपरान्त।

तदनन्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) कार्य और कारण की एकता (वेदान्त)।

तदनु [क्रि. वि.] (सं.) इसके बाद। इसके उपरांत

तदनुकूल [वि.] (सं.) देखो 'तदनुसार'।

तदनुरूप [वि.](सं.) १-उसी के समान। उसी के रूप का। २-मेल मिलाने अथवा मेल खाने वाला। कारेस्पांडिंग।

तदनुसार [वि.] (सं.) जो हो अथवा हुआ हो, उसके अनुसार। पहले वाले के मुताबिक।

तदन्यबाधितार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) नव्य न्याय में तर्क के पाँच भेदों में से एक।

तदपि [अव्य.] (सं.) तथापि। तौभी। तिसपर भी

तदबीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अभीष्ट सिद्धि करने का साधन। उपाय। युक्ति। तरकीब। यत्न।

तदर्थ [अव्य.] (सं.) १-उसके लिए। २-उस या किसी विशेष काम के लिए। एडहॉक।

तदर्थसमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई समिति। एडहॉक-कमेटी।

तदर्थीय [वि.] (सं.) (शब्द या पद) जो किसी दूसरी भाषा अथवा पद का अर्थ सूचित करने के लिए उसके अनुकरण पर बना हो। जैसे—रजत-जयन्ती अंग्रेजी के सिलवर जुबली का तदर्थीय है।

तदाकार [वि.] (सं.) १-उसी के आकार या रूप का। तद्रूप। २-तन्मय। तल्लीन।

तदात्मा [वि.] (सं.) उसी के तुल्य। तत्वस्वरूप।

तदानी [अव्य.] (सं.) तब। उसी समय।

तदामुख [संज्ञा पु.] (सं.) आरम्भ। शुरू।

तदारुक [संज्ञा पु.] (अ.) १-अभियुक्त या खोई हुई वस्तु की खोज। २-दुर्घटना की जाँच। ३-दुर्घटना रोकने के निमित्त पहले से किया जाने वाला प्रबन्ध या उपाय।

तदीय [वि.] (सं.) उससे सम्बन्ध रखने वाला। उसका।

तदुपरांत, तदुपरान्त [क्रि. वि.] (सं.) उसके पीछे। उसके बाद।

तदुपरि [क्रि. वि.] (सं.) उसके ऊपर।

तदेक [वि.] (सं.) उसके समान। तत्स्वरूप।

तदेकात्मा [वि.] (सं.) उसके समान। उसके जैसा।

तदोजस [वि.] (सं.) उसके समान शक्तिशाली। उस जैसा बलवान्।

तद्गुण [संज्ञा पु.] (सं.) वह अर्थालङ्कार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग कर निकटवर्ती किसी अन्य उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण करने का वर्णन हो।

तद्दिन [संज्ञा पु.] (सं.) उस समय। उस दिन।

तद्धन [वि.] (सं.) कृपण। कंजूस।

तद्धित [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याकरण में वह प्रत्य जिसे संज्ञा के अन्त में लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ या विशेषण बनाते हैं। जैसे—मित्रता का 'ता'। २-वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्य लगाकर बनाया जाय।

तद्बल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाण।

तद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) भाषा में प्रयुक्त होने वाला संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप कुछ विकृत अथवा परिवर्तित हो गया हो। जैसे—अश्रु का आँसू। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप।

तद्भिन्न [वि.] (सं.) उससे भिन्न। उससे अलग।

तद्यपि [अव्य.] (सं.) तथापि। तौ भी।

तद्रूप [वि.] (सं.) किसी के रूप के समान। सदृश।

तद्रूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सादृशय। समानता।

तद्वत् [वि.] (सं.) उसी के जैसा। उसी के समान

तद्वत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समानता। सादृश्य।

तद्विध [वि.] (सं.) उसी तरह का। तथाविध।

तद्व्यतिरिक्त [वि.] (सं.) उसके सिवाय।

तधीं+ [क्रि. अ.] (हिं.) तभी।

तन [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर। देह। *तन को लगना*–१-हृदय पर प्रभाव पड़ना। २-(खाद्य पदार्थ का) पत्र कर शरीर को पुष्ट करना। *तन तोड़ना*–अंगड़ाई लेना। *तन देना* ध्यान देना। *तन मन मारना*–इंन्द्रियों को वश में रखना। [क्रि. वि.] तरफ। ओर। [वि.] (हिं.) देखो 'तनिक'।

तनक [संज्ञा स्त्री.] (दश.) एक रागिनी का नाम। [वि.] (हिं.) देखो 'तनिक'।

तनकीह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-खोज। जाँच। २-किसी अभियोग की वे मूल बातें जिन का विचार और निर्णय करना आवश्यक हो।

तनखाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वेतन। तलब।

तनखाहदार [संज्ञा पु.] (फा.) वेतन भोगी या तलब पाने वाला नौकर।

तनख्वाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वेतन।

तनख्वाहदार [संज्ञा पु.] (फा.) वेतन भोगी।

तनगना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तिनकना'।

तनजेब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) महीन चिकनी मलमल।

तनज्जुल [वि.] (अ.) अवनत।

तनज्जुली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अवनती।

तनतना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रोब दाब। २-क्रोध

तनतनाना [क्रि. अ.] (हिं.) दबदबा दिखलाना। २-क्रोध करना।

तनत्राण* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो। २-कवच। बखतर।

तनदिही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तंदेही'।

तनधर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनुधारी'।

तनना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खिचाव आदि के कारण अपने पूरे विस्तार पर पहुँचना। २-ताना जाना। अकड़ कर सीधा खड़ा होना। ४-अभिमान पूर्वक रुष्ट होना।

तनपात [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनुपात'।

तनपोषक [वि.] (हि.) केवल अपने ही शरीर अथवा लाभ का ध्यान रखने वाला। स्वार्थ परायण। स्वार्थी।

तनबाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-उस देश का निवासी।

तनमय [वि.] (हिं.) देखो 'तन्मय'।

तनमात्रा* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तन्मात्र'।

तनमानसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्ञान की सात भूमिकाओं में से तीसरी।

तनय [संज्ञा पु.] (सं.) बेटा। पुत्र।

तनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कन्या। पुत्री। २-घृतकुमारी। ३-काली तुलसी।

तनराग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनुराग'।

तनरुह*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनूरुह'।

तनवाल [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति विशेष।

तनवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को तानने में प्रवृत्त करना। तनाना।

तनसल [संज्ञा पु.] (देश.) स्फटिक। बिल्लौर।

तनसीख [संज्ञा स्त्री.] (अ.) रद्द करना। मंसूखी

तनसुख [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।

तनहा [वि.] (फा.) एकाकी। अकेला। क्रि. वि.] (फा.) बिना किसी संगी साथी के। अकेले।

तनहाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-तनहा होने की अवस्था या भाव। २-एकांत।

तना [संज्ञा पु.] (फा.) वृक्ष का नीचे वाला वह भाग जिसमें डालियाँ नहीं होतीं। पेड़ का धड़। [क्रि. वि.] (हिं.) ओर। तरफ।

तनाई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तनाव'।

तनाउ*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तनाव'।

तनाकु*+ [क्रि. वि.] देखो तनिक।

तनाजा [संज्ञा पु.] (अ.) १-बखेड़ा। झगड़ा। दंगा। २-अदावत। शत्रुता। वैर।

तनाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को तानने में प्रवृत्त करना।

तनाव+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेमे की रस्सी। २-बाजीगरों का रस्सा।

तनाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तानने की क्रिया या भाव। २-वह रस्सी जिसपर धोबी कपड़े

सुखाते हैं। ३-रस्सी। रज्जु। जेवरी।

तनि+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'तनिक'।

तनिक [वि.] (हिं.) १-थोड़ा। कम। २-छोटा। [क्रि. वि.] (हिं.) जरा। टुक।

तनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह रस्सी जिससे कोई वस्तु बांधी जाय।

तनिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लँगोट। लँगोटी। कौपीन। २-कछनी। जाँघिया। ३-चोली।

तनिष्ठ [वि.] (सं.) जो बहुत ही दुबला, पतला, छोटा या कमजोर हो।

तनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डोरी के समान बटा हुआ वह कपड़ा जो पहनने के कपड़ों में उनके पल्ले बाँधने के लिए लगाया जाता है। बंद। बंधन। २-देखो 'तनिया'। [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'तनिक'। [वि.] (हिं.) देखो 'तनु'।

तनु [वि.] (सं.) १-दुबला पतला। कृश। २-अल्प। थोड़ा। कम। ३-कोमल। ४-सुन्दर। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर। देह। २-चमड़ा खाल। ३-स्त्री। औरत। ४-केंचुली। ५-जन्मकुंडली में लग्न का स्थान।

तनुक* [वि.] (हिं.) देखो 'तनिक'। [क्रि. वि.] देखो 'तनिक'। [संज्ञा पु.] देखो 'तनु'।

तनुकूप [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का रोमकूप।

तनुक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) आमड़े का पेड़।

तनुगृह [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष शास्त्रानुसार एक प्रकार का घर।

तनुच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) कवच। बखतर।

तनुच्छाय [संज्ञा पु.] (सं.) जाल बबूल का पेड़।

तनुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-जन्मकुंडली में लग्न से पाँचवाँ स्थान।

तनुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्री। बेटी।

तनुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लघुता। छोटाई। २-दुर्बलता। दुबलापन।

तनुत्यज [वि.] (सं.) शरीर का त्याग करने वाला

तनुत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) देहत्याग।

तनुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तनुत्राण'।

तनुत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो। २-कवच। बखतर।

तनुत्रान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनुत्राण'।

तनुत्वचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी अरणी। २-जिसकी छाल पतली हो।

तनुधारी [वि.] (सं.) शरीरधारी। देहधारी।

तनुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) इंगुदी वृक्ष। [वि.] (सं.) जिसमें बहुत कम पत्ते हों।

तनुपात [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मौत।

तनुबीज [संज्ञा पु.] (सं.) राजबेर। [वि.] जिसके बीज छोटे हों।

तनुभव [संज्ञा पु.] (सं) पुत्र। बेटा। लड़का।

तनुभस्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नासिका। नाक।

तनुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्बल मनुष्य।

तनुभृत् [वि.] (सं.) देहधारी। शरीर धारण करने वाला।

तनुमध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक यगण होता है।

तनुरस [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। स्वेद।

तनुराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-केसर, कस्तूरी, चन्दन, कपूर, अगर आदि को मिलाकर बनाया हुआ सुगंधित उबटन। २-वे सुगंधित पदार्थ जिनसे उबटन बनाया जाता है।

तनुरुह [संज्ञा पु.] (सं.) रोम। रोंआ।

तनुल [वि.] (सं.) विस्तृत। फैला हुआ।

तनुवात [संज्ञा पु.] (सं.) १-कम हवा वाला स्थान। २-एक नरक का नाम।

तनुवार [संज्ञा पु.] (सं.) कवच। बखतर।

तनुवीज [संज्ञा पु.] (सं.) राजबेर। [वि.] जिसके बीज छोटे हों।

तनुव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) बल्मीक रोग।

तनुसर [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। स्वेद।

तनुह्रद [संज्ञा पु.] (सं.) मलद्वार। गुदा।

तनू [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-शरीर। ३-प्रजापति। ४-गाय।

तनूकृत [वि.] (सं.) छीला हुआ।

तनूज* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तनुज'।

तनूजा* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तनूजा'।

तनूत्यज [वि.] (सं.) शरीर छोड़ने वाला।

तनूदेश [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का अङ्ग प्रत्यंग।

तनूद्भव [संज्ञा प.] (सं.) पुत्र। बेटा। [संज्ञा स्त्री.] पुत्री। बेटी।

तनूनप [संज्ञा पु.] (सं.) घृत। घी।

तनूपा [संज्ञा पु.] (सं.) खाये हुए अन्न को पचाने वाली अग्नि। जठराग्नि। [वि.] (सं.) शरीर का पालन-पोषण करने वाला।

तनूपान [संज्ञा पु.] (सं.) अंग रक्षक।

तनूनपात्, तनूनपाद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रक नामक वृक्ष। २-आग। अग्नि। ३-घृत। घी। ४-मक्खन।

तनूपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सोमयोग

तनूर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तंदूर'।

तनूरुह [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोम। रोआँ। २-पंख। पर। ३-पुत्र। बेटा।

तनेना [वि.] (हिं.) [स्त्री. तनेनी] १-तानने वाला। २-टेढ़ा। तिरछा। ३-क्रुद्ध। नाराज।

तनेनी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'तनेना'।

तनै* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनय'।

तनैना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तनेना'।

तनैया+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुत्री। बेटी। २-कन्या। लड़की।

तनैला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा सुगंधित फूलों का पौधा।

तनौज* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रोम। रोआँ। २-लड़का। बेटा।

तनोरुह* [संज्ञा पु.] देखो 'तनूरुह'।

तन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुनाई में ताने का सूत। २-वह जिस पर कोई वस्तु तानी जाय।

तन्नाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) अकड़ना। ऐंठना। बिगड़ना।

तन्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिठवन। २-काश्मीर की चंद्रतुल्य नामक नदी।

तन्निमित्त [क्रि. वि.] (सं.) तदर्थ। उसी लिए।

तन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तराजू की डोरी की रस्सी। २-लोहे का मैल छुड़ाने की एक प्रकार की अँकुसी। ३-जहाज के लंगर की जड़ में बँधा हुआ रस्सा।

तन्मध्यस्थ [वि.] (सं.) उसके मध्य या बीच का।

तन्मय [वि.] (सं.) [स्त्री. तन्मयी] जो किसी काम में बहुत मग्न हो। लवलीन। दत्तचित्त।

तन्मयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एकाग्रता। लिप्तता। लीनता। लगन। तदाकारता।

तन्मयासक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवान में तन्मय हो जाना।

तन्मात्र [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्य के अनुसार पंचभूत अर्थात्, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गंध का सूक्ष्म अमिश्र रूप।

तन्मात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तन्मात्र'।

तन्मात्रिक [वि.] (सं.) तन्मात्र सम्बन्धी।

तन्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धातुओं आदि का वह गुण विशेष जिससे उनके तार खींचे जाते

तन्यतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा। २-रात्रि। रात। ३-गरजना। ४-एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

तन्वंग, तन्वङ्ग [वि.] (हिं.) [स्त्री. तन्वंगी] दुबले पतले अंगों वाला।

तन्वंगी, तन्वङ्गी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] दुबले पतले अंगों वाली।

तन्वि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रतुल्या नामक नदी जो काश्मीर राज्य में है।

तन्विनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तन्वि'।

तन्वी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दुबली या कोमल अंगों वाली (स्त्री)। संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से (भ+त+न+स+भ+भ+न+य) होते हैं। इसमें ५ वें, १२ वें और २४ वें अक्षर पर यति होती है।

तपःकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तपस्वी। २-नामक मछली।

तपःकृश [वि.] (सं.) जिसकी देह तप करने

या दुर्बल हो गई हो।
पु.] (सं.) १-शरीर को कष्ट देने वाले
धार्मिक व्रत और नियमादि कृत्य जो चित्त
भोगविलास से हटाने के लिए किये जाएँ
। २-शरीर अथवा इन्द्रिय को वश में
। ३-नियम। ४-माघमास। ५-ज्यो-
में लग्न से नवां स्थान। ६-एक लोक का
। ७-एक कल्प का नाम।
पु.] (सं.) १-ताप। गरमी। २-ग्रीष्म
। ज्वर। बुखार।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-धड़कना। उछलना
देखो 'टपकना'।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का तुर्की
।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-छोटा टीला। २-
का एक फल विशेष।
स्त्री.] (सं.) सूर्य की कन्या का नाम।
पु.] (सं.) १-तपने की क्रिया या भाव
। ताप। दाह। २-सूर्य। आदित्य।
कांतमणि। ४-गरमी। ५-एक अग्नि
६-एक नरक जिसमें शरीर
जाता है। ७-धूप। ८-भिलावें
९-आक। मदार। १०-अरनी नामक
११-नायक वियोग में नायिका द्वारा
वाले हावभाव।
स्त्री.] (हिं.) तपने की क्रिया या भाव।
। जलन। गरमी।
महीना-गरमी।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।
[संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की किरण।
[संज्ञा पु.] (सं) मदार का पेड़।
[संज्ञा पु.] (सं.) यम, कर्ण, शनि,
आदि सूर्य के पुत्र।
संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शमी नामक वृक्ष
यमुना नदी।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्यकान्तमणि।
[संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की किरण।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-अधिक या तेज गरमी
के कारण खूब गरम होना। तप्त होना। २-
प्रभुत्व या अधिकार दिखाना। ३-बुरे कामों में
बहुत अधिक खर्च करना। ४-तपस्या करना।
देखो 'तपन'।
+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्थान जहाँ
सर्दी के दिनों में लोग बैठकर आग तापते
हैं। अलाव। २-तपस्या। तप।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोदावरी नदी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। सुवर्ण। २-
धतूरा।
[संज्ञा पु.] देखो 'तपनीय'।
[संज्ञा पु.] (सं.) तांबा।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शमी-वृक्ष।

तपनोपल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकान्तमणि।

तप-भूमि [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तपोभूमि'।

तप-राशि [संज्ञा पु.] देखो 'तपोराशि'।

तप-रितु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी की ऋतु या मौसम।

तप-लोक [संज्ञा पु.] देखो 'तपोलोक'।

तपवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-गरम करवाना। २-अनावश्यक व्यय करना।

तप-वृद्ध [वि.] (हिं.) देखो 'तपोवृद्ध'।

तपश्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) तप। तपस्या।

तपश्चर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तपस्या। तप।

तपस [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-सूर्य। ३-पक्षी। ४-देखो 'तपस्या'।

तपसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तपस्या। तप। २-तापती नदी।

तपसाली [संज्ञा पु.] (हिं.) तपस्वी। तपस्या करने वाला।

तपसी [संज्ञा पु.] (हिं.) तपस्या करने वाला। तपस्वी।

तपसी-मछली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंगाल की खाड़ी में पाई जाने वाली एक प्रकार की मछली।

तपसोमूर्त्ति [संज्ञा पु.](सं.) सप्तर्षियों में से एक

तपस्तक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

तपस्पनि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

तपस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-तप। तपस्या। २-कुंद पुष्प। ३-फागुन का महीना। ४-अर्जुन।

तपस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तप। व्रतचर्या। २-फागुन मास। ३-देखो 'तपसी' नामक मछली।

तपस्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी।

तपस्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तपस्वी होने की अवस्था या भाव।

तपस्वनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तपस्या करने वाली स्त्री। २-तपस्वी की स्त्री। ३-पतिव्रता। सती स्त्री। ४-जटामासी। ५-पति के मर जाने के उपरान्त केवल अपनी संतान के पालन के निमित सती न होने वाली स्त्री। ६-कुटकी। ७-बड़ी गोरखमुंडी।

तपस्वि-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दमनक वृक्ष।

तपस्वी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. तपस्विनी] १-तपस्या करने वाला। २-दीन। ३-दया करने योग्य। ४-घीकुआर। ५-तपसी नामक मछली।

तपा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तपस्वी।
[वि.] (हिं.) जो तपस्या में मग्न हो।

तपाक [संज्ञा पु.] (फा.) १-आवेश। जोश। २-वेग। तेजी। *तापास बदलना*-नाराज होना।

तपाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-बहुत बड़ा तपस्वी।

तपात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाकाल। बरसात।

तपानल [संज्ञा पु.] (सं.) तप से उत्पन्न तेज।

तपाना [क्रि. स.] (हिं.) १-गरम करना। तप्त करना। २-दुःख देना। क्लेश देना।

तपावंत [संज्ञा पु.] (हिं.) तपस्वी।

तपाव [संज्ञा पु.] (हिं.) गरमाहट। गरम। तप्त।

तपित※ [वि.] (सं.) तपा हुआ। गरम। तप्त।

तपिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तपन। गरमी। ताव।

तपी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तपस्वी। तापस। ऋषि २-सूर्य।

तपु [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अग्नि। आग। २-सूर्य। ३-शत्रु।
[वि.] (हिं.) १-तप्त। उष्ण। गरम। २-तपाने वाला।

तपुर्जम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

तपुषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रोध। रोष।

तपेदक [संज्ञा पु.] (फा.) राजयक्ष्मा रोग।

तपोज [वि.] (सं.) १-जो तपस्या से उत्पन्न हुआ जो अग्नि से उत्पन्न हुआ हो।

तपोजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल। पानी।

तपोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काठ का एक प्रकार का बरतन।

तपोदान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन पुण्यतीर्थ।

तपोधन [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी।

तपोधना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

तपोधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी।

तपोधृति [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तऋषियों में से एक।

तपोनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी। तपोनिष्ठ।

तपोनिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी।

तपोवन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तपोवन'।

तपोबल [संज्ञा पु.] (सं.) तप का प्रभाव या शक्ति।

तपोभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तप करने का स्थान। तपोवन।

तपोमय [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २-प्रचुर तपस्या।

तपोमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-तपस्वी। २-परमेश्वर। ३-बारहवें मन्वंतर के चौथे सावर्णि के सप्तऋषियों में से एक।

तपोमूल [संज्ञा पु.] (सं.) तापसमनु के एक पुत्र का नाम।

तपोयुक्त [वि.] (सं.) तपस्या से पूर्ण।

तपोरति [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी। जो तपस्या में लीन हो।

तपोरवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बारहवें मन्वंतर के चौथे सावर्णि के समय के सप्तऋषियों में

से एक। २-जो सूर्य के समान तेजयुक्त हो।

तपोराशि [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा तपस्वी। ऋषि।

तपोलोक [संज्ञा पु.] (सं.) उर्ध्व स्थित सात लोकों में से छठा लोक।

तपोवट [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मावर्त्त नामक देश।

तपोवन [संज्ञा पु.] (सं.) वह वन जो तपस्वियों के रहने अथवा तपस्या करने के योग्य हो।

तपोवल [संज्ञा पु.] (सं.) तप की शक्ति या प्रभाव

तपोवृद्ध [वि.] (सं.) जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।

तपोहशन [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्तोमूर्त्ति का एक नाम।

तपौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'तपनी'। २-ठगों की एक रसम।

तप्त [वि.] (सं.) १-तपाया या तपा हुआ। जलता हुआ। गरम। २-दुःखित। पीड़ित।

तप्तकुंड, तप्तकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गरम पानी का सोता या कुंड (प्राकृतिक)।

तप्तकुंभ, तप्तकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक भयानक नरक जिसमें तेल के खौलते हुए कड़ाहे में पापियों को यमदूत फेंक देते हैं।

तप्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। २-चाँदी। ३-सुवर्णमाक्षिक।

तप्तकांचन, तप्तकाञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि के संयोग से साफ किया हुआ सोना।

तप्तकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) बारह दिनों में समाप्त होने वाला एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित रूप में किया जाता है।

तप्तखल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) औषध कूटने का गरम किया हुआ खरल।

तप्तपाषाण [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

तप्तवालुक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक नरक का नाम।

तप्तमाष [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन समय की एक परीक्षा जो किसी व्यक्ति को अपराधी या निरपराधी सिद्धि करने के लिए की जाती थी।

तप्तमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंख, चक्र आदि के लोहे या पीतल के छापे जिनको तपाकर वैष्णव गण लोग अपने शरीर पर दागते हैं।

तप्तरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) तपाकर साफ की हुई चाँदी।

तप्तलोमश [संज्ञा पु.] (सं.) कसीस नामक धातु।

तप्तलोह [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

तप्तशूर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक नरक का नाम।

तप्तसुराकुंड, तप्तसुराकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

तप्तांभ, तप्ताम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) गरम जल।

तप्तांन, तप्तान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वप्र या गरम भाग। २-गरम या तप्त अन्न। भुना हुआ अन्न (भाड़)।

तप्तायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीन-दुखियों को सताकर प्राप्त की हुई भूमि।

तप्प*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तप'।

तप्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।
[वि.] जो तपने अथवा तापने योग्य हो।

तफ़रीक़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-जुदाई। भिन्नता। २-घटाना। बाकी निकालने का काम। (गणित)। ३-फरक। अंतर। ४-बंटवारा।

तफ़रीह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-खुशी। प्रसन्नता। २-दिलबहलाव। हंसी। दिल्लगी। ३-हवाखोरी। सैर। ४-ताजापन। ताजगी।

तफ़सील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-विस्तृत वर्णन। २-टीका। ३-सूची। ४-विवरण। ब्योरा।

तफ़ावत [संज्ञा पु.] (अ.) १-अन्तर। फर्क। २-दूरी। फासला।

तब [अव्य.] (हिं.) १-उस समय। उस वक्त। २-इस कारण। इस वजह से।

तबक [संज्ञा पु.] (अ.) १-लोक। तल। २-परत। तह। ३-सोने, चाँदी आदि धातुओं के पत्तरों को पीटकर कागज के समान बनाया हुआ पतला वरक। ४-चौड़ी और छिछली थाली। ५-परियों की नमज। ६-घोड़ों का रोग। ७-शरीर पर रक्तविकार के कारण पड़ा हुआ दाग या चकत्ता।

तबकगर [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने, चाँदी आदि पत्तर बनाने वाला व्यक्ति। तबकिया।

तबकड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (उर्दू.) छोटी रकाबी।

तबकफाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

तबक़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विभाग। खण्ड। २-तह। परत। ३-लोक। तल। ४-आदमियों का गरोह। ५-पद। रुतबा।

तबकिया [संज्ञा पु.] देखो 'तबकगर'।
[वि.] (उर्दू.) तबक-संबंधी। जिसमें तबक या परत हों।

तबकिया-हरताल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की हरताल।

तबदील [वि.] (अ.) जो बदला गया हो। परिवर्त्तित।

तबदीली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बदली।

तबद्दल [संज्ञा पु.] देखो 'तबदीली'।

तबर [संज्ञा पु.] (फा.) १-कुल्हाड़ी। २-कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।

तबरदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कुल्हाड़ी या फरसा चलाने का काम।

तबल [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक बड़ा ढोल। २-नगाड़ा। डंका।

तबलची [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो तबला बजाता हो।

तबला [संज्ञा पु.] (अ.) ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा जो काठ के खोखले कूँड़ पर ... होता है।
तबला खनकना, ठनकना-१-नाचरंग ... २-तबला बजाना। *तबला मिलाना*-तबले ... तनाव बजाने योग्य करना।

तबलिया [संज्ञा पु.] देखो 'तबलची'।

तबाक [संज्ञा पु.] (अ.) परात। बड़ा थाल। *तबाकी कुत्ता*-सुख का साथी। ... का साथी।

तबादला [संज्ञा पु.] (अ.) १-बदला ... परिवर्त्तन। २-किसी कर्मचारी आदि का ... स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जा... अन्तरण।

तबाबत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चिकित्सा। हकी...

तबाशीर [संज्ञा पु.] (हिं.) वंशलोचन।

तबाह [वि.] (फा.) नष्ट। बरबाद। चौपट।

तबाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नाश। बरबादी।

तबिअत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तबीअत'।

तबीअत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चित्त। मन। जी। २-बुद्धि। ज्ञान। समझ।
(किसी पर) *तबीअत आना*-(किसी पर प्रेम) होना। आसक्त होना। (किसी चीज़ पर) *तबीअत आना*-(किसी वस्तु को) प्राप्त करने की इच्छा होना। *तबीअत उलझना*-जी घब-ड़ाना। *तबीअत खराब होना*-१-जी मिच-लाना। २-बीमार होना। *तबीअत खिल उठना, जाना*-चित्त उमंग और उत्साह के कारण प्रसन्न हो जाना। *तबीअत फिरना*-... हटना। *तबीअत भरना*-१-संतोष होना ... करना। २-मन भरना। *तबीअत लगना*-१-मन में प्रेम उत्पन्न होना। २-ध्यान ... रहना। *तबीअत लगाना*-१-प्रेम करना। ... चित्त को किसी काम में प्रवृत्त करना। ... *अत होना*-जी चाहना।
तबीअत पर जोर डालना-विशेष ध्यान दे...

तबीअतदार [वि.] (हिं.) १-समझदार। ... भावुक। रसिक।

तबीअतदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) १-... दारी। २-रसज्ञता। भावुकता।

तबीब [संज्ञा पु.] (अ.) वैद्य। चिकित्सक।

तबीयत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तबीअत'।

तबेला [संज्ञा पु.] (हिं.) अस्तबल।
तबेले में लत्ती चलना-आपस में लड़ाई ... होना।

तब्बर* [संज्ञा पु.] (हिं.) टाबर। बच्चा।

तभ [संज्ञा पु.] (सं.) छाग। बकरा।

तभी [अव्य.] (हिं.) १-उसी समय। उसी ... २-इसी कारण।

तमंचा [संज्ञा पु.] (फा.) १-छोटी ... पिस्तौल। २-वह लम्बा खड़ा पत्थर जो ... बाज़े के बगल में लगाया जाता है।

Collection Chennai and eGangotri

तमस [संज्ञा पु.] (सं.) १–अन्धकार । २–अज्ञान का अन्धकार । ३–पाप । ४–नगर । ५–कूप । ६–तमसा या टौंस नाम की नदी ।

तमसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टौंस नामक नदी ।

तमसाकृत [वि.] (सं.) अन्धकार से घिरा हुआ ।

तमस्क [वि] (सं.) तम या अन्धकार का स्वरूप ।

तमस्कांत, तमस्कान्त [संज्ञा पु.] (सं.) घोर अन्धकार ।

तमस्तति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्धकार ।

तमस्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तमस्विनी' ।

तमस्विनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–रात्रि । रात । रजनी । २–हल्दी ।

तमस्त्री [वि.] (सं.) अन्धकार से परिपूर्ण ।

तमस्सुक [संज्ञा पु.] (अ.) वह प्रमाणपत्र जो ऋण लेने वाला महाजन को लिखकर देता है । दस्तावेज ।

तमहँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक ताँबे का बरतन जो हाँडी के आकार का होता है ।

तमहर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'तमोहर' ।

तमहाया* [वि.] (हि.) १–तम या अन्धकार से परिपूर्ण । अन्धेरा । २–तमोगुण से युक्त ।

तमहीद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) भूमिका । दीबाचा ।

तमाँचा [संज्ञा पु.] देखो 'तमाचा' ।

तमा [संज्ञा पु.] (सं.) राहु ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात । रात्रि । रजनी ।
* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तमश्र' ।

तमाई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेत जोतने से पहले उसमें की घास आदि निकालने की क्रिया ।

तमाकू [संज्ञा स्त्री.] (पुर्त्त.) १–एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक प्रकार से हलके नशे के लिए प्रयोग में आते हैं । सुरती । २–इन पत्तों से बना एक विशेष पदार्थ जिसे चिलम में भरकर (जलाकर) धूम्रपान करते हैं ।
तमाकू चढ़ाना–चिलम में तमाकू रखकर पीने योग्य करना ।

तमाखू+ [संज्ञा पु.] देखो 'तमाकू' ।

तमाचा [संज्ञा पु.] (फा.) हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार । झापड़ । थप्पड़ ।

तमाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर । राक्षस ।

तमाच्छन्न [वि] (सं.) तम या अन्धकार से घिरा हुआ ।

तमाच्छादित [वि.] (सं.) देखो 'तमाच्छन्न' ।

तमादी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–अवधि बीत जाना । मियाद खतम हो जाना । २–उस अवधि का समाप्त हो जाना जिसमें कोई कानूनी कार्रवाई हो सकती हो ।

तमाम [वि.] (अ.) १–सम्पूर्ण । पूरा । कुल । सारा २–समाप्त । खतम ।
तमाम होना–१–समाप्त होना । २–मरजाना ।

तमामी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र । जिस पर कलाबत्त की धारियाँ बनी होती हैं ।

तमारि [संज्ञा पु.] (हि.) सूर्य । रवि ।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'तँवार' ।

तमाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक बहुत ऊँचा सदाबहार वृक्ष जो पहाड़ों पर अधिकता से और जमुना के किनारे कहीं-कहीं होता है । असित द्रुम । २–तेजपात । ३–एक प्रकार की तलवार । ४–तमाकू ।

तमालक [संज्ञा पु.] (सं.) १–तमाल वृक्ष । २–तेजपात । ३–बाँस की छाल । ४–चौपतिया साग ।

तमालच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपत्र । तेजपात ।

तमालपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दारचीनी ।

तमालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–भूम्यामलकी । भुईं आमला । २–ताम्रवल्ली लता ।

तमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–भूम्यामलकी । भुईं आमला । २–ताम्रलिप्त नामक एक देश ।

तमाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वरुणवृक्ष । मजीठ ।

तमाशगीर* [संज्ञा पु.] देखो 'तमाशबीन' ।

तमाशबीन [संज्ञा पु.] (अ.+फा.) १–तमाशा देखने वाला । सैलानी । २–वेश्यागामी । ऐयाश

तमाशबीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रंडीबाजी । ऐयाशी

तमाशा [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह दृश्य अथवा कार्य जिसके देखने से मनोरंजन हो । २–अद्भुत व्यापार । विलक्षण कार्य ।
तमाशे की बात–आश्चर्य चकित होने वाली अनोखी बात ।

तमाशाई [संज्ञा पु.] (अ.) तमाशा देखने वाला ।

तमि [संज्ञा पु.] (सं.) १–रात । २–मोह ।

तमिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

तमिस्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–अंधकार । अंधेरा । २–क्रोध । ३–एक नरक का नाम (पुराण) ।

तमिस्रपक्ष [संज्ञा पुं.] (सं.) कृष्णपक्ष । अंधेरापक्ष ।

तमिस्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंधेरी रात ।

तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–रात्रि । रात । निशा २–हलदी ।

तमीचर [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस । निशाचर ।

तमीज़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–भले और बुरे की परख करने की शक्ति । विवेक । २–पहचान । ३–ज्ञान । ४–अदब । कायदा ।
तमीजदार–१–बुद्धिमान । २–शिष्ट । सभ्य ।

तमीपति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा ।

तमीश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

तमु*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तम' ।

तमूरा+ [संज्ञा पु.] देखो 'तंबूरा' ।

तमूल+ [संज्ञा पु.] देखो 'तांबूल'।

तमेरु [वि.] (सं.) ग्लानियुक्त। जिसे लज्जा अनुभव होती या आती हो।

तमोंत्य, तमोन्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य और चन्द्रग्रहण के दश प्रकारों में से एक।

तमोंध, तमोन्ध [वि.] (सं.) १-अज्ञानी। २-क्रोधी।

तमोगा [वि.] (सं.) अंधकार में जाने वाला।

तमोगु [संज्ञा पु.] (सं.) राहु नामक ग्रह।

तमोगुण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृति के तीन गुणों में से अंतिम इसके प्राधान्य से मनुष्य बुरे से बुरा कार्य करता है।

तमोगुणी [वि.] (सं.) जिस वृत्ति में तमोगुण हो। अधम या निकृष्ट वृत्ति वाला।

तमोघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-चन्द्रमा। ३-सूर्य। ४-बुद्ध। ५-बौद्धमत के नियमादि। ६-विष्णु। ७-शिव। ८-ज्ञान। ९-दीपक। चिराग। [वि.] जिससे अंधेरा दूर हो।

तमोज्योति [संज्ञा पु.] (सं.) जुगनू। खद्योत।

तमोदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।

तमोनुद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। आग।

तमोभिद [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत। जुगनू।
[वि.] (सं.) अंधकार दूर करने वाला।

तमोभूत [वि.] (सं.) १-अज्ञानी। मूर्ख। २-अंधेरा किया हुआ।

तमोमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुगनू। खद्योत। २-गोमेदक मणि।

तमोमय [वि.] (सं.) १-अंधकार से परिपूर्ण। २-तमोगुणयुक्त। ३-अज्ञानी। ४-क्रोधी।
[संज्ञा पु.] (सं.) राहुग्रह।

तमोर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तांबूल। पान।

तमोरि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

तमोरी*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तँबोली'।

तमोल*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पान का बीड़ा। २-देखो 'तंबोल'।

तमोलिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तमोली की स्त्री।

तमोली [संज्ञा पु.] (हिं.) सादे पान या पान लगे हुए बीड़े बेचने वाला। पनवाड़ी।

तमोविकार [संज्ञा पु.] (सं.) तमोगुण से उत्पन्न होने वाला (नींद, आलस्य आदि का) विकार

तमोव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) वल्मीक नामक रोग।

तमोहंत, तमोहन्त [संज्ञा पु.] (सं.) दस प्रकार के ग्रहणों में से एक।

तमोहपह [संज्ञा पु.] (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-दीपक।
[वि.] (सं.) १-मोहनाशक। २-अंधकार दूर करने वाला।

तमोहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-ज्ञान।
[वि.] (सं.) १-अन्धकार दूर करने वाला। २-अज्ञान दूर करने वाला।

तमोहरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-ज्ञान।

तम्र [वि.] (सं.) ग्लानि उत्पन्न करने वाला।

तय [वि.] (अ.) १-पूरा किया हुआ। समाप्त। २-निश्चित। ठहराया हुआ। ३-निर्णीत। निबटाया हुआ।

तयना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-तपना। बहुत गरम होना। २-दुखी होना। संतप्त होना।

तया+ [संज्ञा पु.] देखो 'तवा'।

तयार+* [वि.] (हिं.) देखो 'तैयार'।

तयारी+* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तैयारी'।

तरंग, तरङ्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पानी की हिलोर। लहर। मौज। २-प्राकृतिक अथवा कृत्रिम कारणों द्वारा उत्पन्न होने वाली किसी वस्तु की लहर जो किसी शरीर अथवा वातावरण में दौड़ती है। वेव। जैसे—बिजली, शीत या ताप की लहर। ३-संगीत स्वरों का उतार। चढ़ाव। स्वरलहरी। ४-चित्त की उमंग। ५-घोड़े की फलांग। ६-सोने के तारों को उमेठकर बनाई हुई हाथ की चूड़ी।

तरंगक, तरङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. तरंगिका] १-पानी की लहर। हिलोर। २-स्वरलहरी।

तरंगभीरु, तरङ्गभीरु [संज्ञा पु.] (सं.) चौदहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

तरंगवती, तरङ्गवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी। तरंगिणी।

तरंगालि, तरङ्गालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

तरंगायित, तरङ्गायित [वि.] (सं.) १-जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। २-तरंगों की तरह का। लहरदार।

तरंगिणी, तरङ्गिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी। सरिता। [वि.] तरंग वाली। जिसमें तरंगे हों।

तरंगित, तरङ्गित [वि] (सं.) १-हिलोरें मारता या लहराता हुआ। जिसमें तरंगे उठ रही हों। २-नीचे ऊपर उठता हुआ।

तरंगी, तरङ्गी [वि.] (सं.) [स्त्री. तरंगिणी] १-जिसमें लहरें या तरंगें हों। २-मनमौजी।

तरंड, तरण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाव। नौका। २-मछली मारने की डोरी में बँधी हुई वह छोटी लकड़ी जो ऊपर तैरती रहती है। ३-नाव खेने की डाँड़।

तरंत, तरन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-मेढक। ३-राक्षस।

तरंती, तरन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाव। नौका।

तरंतुक, तरन्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) कुरुक्षेत्र में एक स्थान का नाम।

तरंबुज, तरम्बुज [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

तर [वि.] (फा.) १-गीला। भीगा हुआ। २-ठंढा। शीतल। ३-हरा। ४-
मालदार। [संज्ञा पु.] (सं) १-पार करने की क्रिया। २-अग्नि। ३-वृक्ष। ४-पथ। ५-
६-नाव की उतराई।
*[क्रि. वि.] (हिं.) तले। नीचे।
[प्रत्य.] (सं.) एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों के अंत में लगाकर दूसरों की अपेक्षा आधिक्य या विशेषता सूचित करता है। जैसे—उन्नततर, कोमलतर आदि।

तरई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नक्षत्र।

तरक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तड़क'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-सोच-विचार। उधेड़-बुन। ऊहापोह। २-चतुराई का
वचन। उक्ति। तर्क। ३-अड़चन। बाधा।
भूलचूक। व्यतिक्रम।
[संज्ञा स्त्री.] पृष्ठ या पन्ना समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरम्भ का अक्षर अथवा शब्द सूचित करने के निमित्त लिखा जाने वाला अक्षर या शब्द

तरकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'तड़कना'। २-तर्क करना। ३-अनुमान करना। ४-उछलना। कूदना। झपटना।

तरकश [संज्ञा पु.] (फा.) तूणीर। तीर रखने का चोंगा। माथा।

तरकस [संज्ञा पु.] देखो 'तरकश'।

तरकसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) छोटा तूणीर। तरकश।

तरका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तड़का'।
[संज्ञा पु.] (अ.) वह जायदाद जो किसी मरे हुए व्यक्ति के वारिसों को मिले।
व्यक्ति की संपत्ति।

तरकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) किसी पौधे
(खाद्य) वह पत्ती, जड़, डंठल, फल, फूल आदि जिन्हें पकाकर रोटी, चावल आदि के साथ खाते हैं। भाजी। सब्जी। साग।
२-खाने के योग्य मांस। पकाया हुआ मांस।

तरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार के फूल के आकार का कान का गहना।

तरकीब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-रचना। बनावट। २-युक्ति। उपाय। ढंग। ढब। ३-
प्रणाली। ४-संयोग। मिलान। मेल।

तरकुल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ताड़ का वृक्ष।

तरकुला [संज्ञा पु.] (हिं.) तरकी नामक कान में पहनने का गहना जो फूल से आकार में
होता है।

तरकुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तरकी नामक कान का गहना।

तरक्की [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वृद्धि। बढ़ती।

तरक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) लकड़बग्घा।

का बाव।

तरखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नदी या जल का तेज बहाव। २-तृष्णा (राजस्थान)।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तरखान'।

तरखान [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी का काम करने वाला। बढ़ई।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) अक्षत रखने का एक छिछला बरतन।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) सजावट के लिए क्यारियों में लगाया जाने वाला एक पौधा।

तरछट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तलछट'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तलछट'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ तेली तेल को जमा या इकट्ठा करते हैं।

[क्रि. अ.] (हिं.) १-तिरछी आँख से इशारा करना। इंगित करना। २-तिरछी निगाह से देखना।

तरज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तर्ज'।

तरजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-डाँटना। डपटना। २-बुरा कहना। बिगड़ना।

तरजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अँगूठे के पास की अँगुली। २-भय। डर।

[वि.] (हिं.) १-क्रोधपूर्ण। गुस्सैल। २-उग्र। प्रचंड।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी तराजू।

तरजुमा [संज्ञा पु.] (अ.) भाषान्तर। उल्था। अनुवाद।

[वि.] (हिं.) १-गुस्सैल। क्रोधपूर्ण। २-उग्र। प्रचंड।

तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी आदि को पार करने का कार्य। पार जाना। २-तरना। ३-तारना। ४-निस्तार। उद्धार। ५-स्वर्ग।

तरणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-मदार। आक। ३-किरन। ४-नौका। नाव।

तरणिकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य का पुत्र। २-यम। ३-शनि। ४-कर्ण।

तरणिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की कन्या, यमुना। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है। इसे 'नंदी' भी कहते हैं।

तरणि-तनय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य का पुत्र। २-यम। ३-शनि। कर्ण।

तरणि-तनूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की पुत्री। यमुना।

तरणि-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य का पुत्र। २-यम। ३-शनि। ४-कर्ण।

तरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नौका। नाव। २-घीकुआर।

तरणीय [वि.] (सं.) पार करने योग्य।

तरतम [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा-बहुत। न्यूनाधिक।

तरतराना* [क्रि. अ.] (हिं.) तड़तड़ाना। तड़तड़ शब्द करना। तोड़ने के समान शब्द करना। २-घी आदि में बिलकुल तर करना।

तरतीब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वस्तुओं का उपयुक्त स्थानों पर लगाया हुआ क्रम। यथा स्थान रखा अथवा लगाया जाना।
तरतीब देना–क्रम से रखना या लगाना।

तरत्समंदीय, तरत्समन्दीय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद के पावमान सूक्त के अन्तर्गत एक सूक्त।

तरदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष।

तरदीद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मंसूखी। २-खण्डन। ३-प्रत्युत्तर।

तरद्दुत [संज्ञा पु.] (अ.) सोच। चिन्ता। खटका अन्देशा। फिक्र।
तरद्दुद में पड़ना।

तरद्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घी और दही के साथ माड़े हुए आटे की गोलियों के पकाने से बना हुआ पकवान।

तरन* [संज्ञा पु.] १-देखो 'तरण'। २-देखो 'तरौना'।

तरनतार [संज्ञा पु.] (हिं.) निस्तार। मोक्ष। मुक्ति।

तरनतारन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उद्धार। मोक्ष। निस्तार। २-उद्धार करने वाला। भवसागर से पार करने वाला।

तरना [क्रि. स.] (हिं.) १-पार करना। २-तलना
[क्रि. अ.] (हिं.) भवसागर से पार होना। मुक्ति या सद्गति प्राप्त होना।
[संज्ञा पु.] (?) व्यापारी जहाज के व्यापार सम्बन्धी कार्यों का निरीक्षण करने वाला अधिकारी।

तरनाग [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

तरनाल [संज्ञा पु.] (?) पाल बाँधने का रस्सा।

तरनि [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तरणि'।

तरनिजा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तरणिजा'।

तरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाव। नौका। २-देखो 'तन्नी'।

तरप* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तड़प'।

तरपत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुबीता। सुविधा। २-आराम। सुख। चैन।

तरतन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तर्पण'।

तरपना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तड़पना'।

तरपर [क्रि. वि.] (हिं.) १-नीचे-ऊपर। २-एक पीछे दूसरा।

तरपीला* [वि.] (हिं.) चमकदार। भड़कीला।

तरपू [संज्ञा पु.] (देश.) मालाबार और पच्छिमी घाट के पहाड़ों में पाया जाने वाला ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी मजबूत और भूरे रंग की होती है।

तरफ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दिशा। ओर। २-पार्श्व। किनारा। बगल। ३-पक्ष। पासदारी।

तरफदार [वि.] (अ., +फा.) पक्षपाती। हिमायती समर्थक।

तरफदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.,फा.) पक्षपात।

तरफराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तड़फड़ाना'।

तरब [संज्ञा पु.] (हिं.) सारंगी के वह तार जो तांत के नीचे लगे रहते हैं और सब स्वरों के साथ गूंजते हैं।

तर-बतर [वि.] (फा.) सराबोर। भीगा हुआ। आर्द्र।

तरबहना [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी देवी-देवता को स्नान कराने का थाली के आकार का तांबे या पीतल का पात्र।

तरबालिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी कटार।

तरबूज [संज्ञा पु.] (फा.) कुम्हड़े की तरह का मोटा और गोल फल जिसके भीतर जल का अंश अधिक होता है। यह फल खाने के काम आता है। काटने पर भीतर से इसका गूदा लाल और बीज काले या लाल निकलते हैं।

तरबूजिया [वि.] (हिं.) तरबूज के छिलके के रंग का। गहरा।

तरबोना* [क्रि. अ.] (हिं.) तर करना। भिगोना

तरमाची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तरवाँची'।

तरमानी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह तरी जो जोती हुई जमीन में आती है।

तरमीम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) संशोधन। दुरुस्ती।

तरराना+ [क्रि. श.] (हिं.) ऐंठना।

तरल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हार के बीच की मणि। २-हार। ३-हीरा। ४-लोहा। ५-तल। पेंदा। ६-घोड़ा।
[वि.] (सं.) १-चंचल। चलायमान। २-(पानी के समान) बहने वाला। द्रव। ३-चमकीला। कांतिवान्। ४-अस्थिर। क्षणभंगुर। ५-खोखला। पोला। ६-कोमल। मंद

तरलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चंचलता। चपलता। २-द्रवत्व।

तरलनयन [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण होते हैं।

तरलभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंचलता। चपलता। २-पतलापन।

तरल-लोचन [वि.] (सं.) चंचल नेत्र वाला।

तरल-लोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंचल नयन वाली स्त्री।

तरला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जौ का माँड़। २-मदिरा। ३-मधुमक्षिका। शहद की मक्खी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) छप्पर के नीचे का बाँस।
+[वि.] (हिं.) नीचे का।

तरलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चंचलता। चप-

लता। २-द्रवत्व।

तरलित [वि.] (सं.) काँपता हुआ। थरथराता हुआ।

तरवँछ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुए के नीचे की लकड़ी। तरवाँची।

तरवट [संज्ञा पु.] (सं) एक वृक्ष विशेष।

तरवड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी तराजू का पलड़ा।

तरवन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तरकी नामक कान का गहना। २-कर्णफूल।

तरवर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तरुवर। बड़ा पेड़। वृक्ष। २-एक लम्बा वृक्ष जिसकी छाल से चमड़ा कमाया जाता है। यह मध्यभारत और दक्षिण में बहुतायत से होता है। इसे 'तरोला' भी कहते हैं।

तरवरिया, तरवरिहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार चलाने वाला।

तरवाँची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जूए के नीचे की लकड़ी। मचेरी।

तरवाँसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तरवाँची'।

तरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवा।

तरवाई-सिरवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊँची-नीची जमीन। पहाड़ और घाटी।

तरवाना [क्रि. अ.] (?) १-बैलों के तलवों का चलने के कारण घिस जाना जिससे वह लगड़ाते हैं। २-बैलों का लंगड़ाना।
[क्रि. स.] (हिं.) तारने की प्रेरणा देना या करना।

तरवार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खंग। तलवार। २-देखो 'तरवर'।

तरवारि [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार। खड्ग का एक भेद।

तरवारी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार चलाने वाला व्यक्ति।

तरस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-बल। २-वेग। ३-वानर। ४-रोग। ५-तीर। तट।

तरस [संज्ञा पु.] (हिं.) दया। करुणा। रहम। *(किसी पर) तरस खाना*-दयाई होना। दया या रहम करना।

तरसना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी पदार्थ के अभाव का दुःख सहना।

तरसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-अभाव का दुःख देना। २-किसी वस्तु की इच्छा और आशा उत्पन्न करके उससे वंचित रखना। व्यर्थ ललचाना।

तरसौहाँ* [वि.] (हिं.) तरसने वाला।

तरस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) नाव से उतरने चढ़ने का स्थान। घाट।

तरस्वत् [वि.] (सं.) १-शूरवीर। बहादुर। २-वेगयुक्त।

तरस्वी [वि.] (सं.) शूरवीर। बहादुर।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। वायु।

तरह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-प्रकार। भाँति। किस्म। २-रचना-प्रकार। ढाँचा। बनावट। डौल। ३-ढब। तर्ज। प्रणाली। ४-युक्ति। ढँग। उपाय। ५-हाल। अवस्था। दशा।
तरह उड़ाना-ढंग की नकल करना। *तरह देना* १-टालमटूल करना। चकमा देना। २-जाने देना। ख्याल न करना। ३-पूर्त्ति के लिए समस्या देना।

तरहटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नीची भूमि। २-पहाड़ की तराई।

तरहदार [वि.] (फा.) १-सुन्दर बनावट का। अच्छी चाल या ढाँचे का। २-सजधज वाला शौकीन।

तरहदारी [संज्ञा स्त्री.] (उर्दू.) वजादारी। सजधज का ढंग।

तरहर* [क्रि. वि.] (हिं.) तले। नीचे।
[वि.] (हिं.) नीचा। तले का। नीचे का। निकृष्ट। बुरी।

तरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक हाथ के लगभग की नाप जो कुआँ खोदने में प्रयोग होती है। २-वह कपड़ा जिस पर मिट्टी फैलाकर कड़ा ढालने का सांचा बनाते हैं।

तरहारि+ [क्रि. वि.] (हिं.) तले। नीचे।
[वि.] (हिं.) १-नीचे का। २-निकृष्ट। बुरा।

तरहुँड़* [क्रि. वि.] (हिं.) तले। नीचे। तरहर।

तरहेल [वि.] (हिं.) १-निम्नस्थ। अधीन। २-वश में आया हुआ। पराजित।

तरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) पटसन।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'तला'। 'तलवा'।

तराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पहाड़ के नीचे की भूमि। पहाड़ के नीचे का वह मैदान जहाँ तरी रहती है। २-पहाड़ की घाटी। ३-मूज का मुट्ठा जो छाजन में खपरैल के नीचे लगाया जाता है।

तराजू [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-तोलने का एक यंत्र जिसमें रस्सियों के द्वारा एक सीधी डाँड़ी के छोरों से दो पलड़े बँधे होते हैं। तुला। तकड़ी। २-देखो 'काँटा'।

तराटक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्राटक'।

तराना [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का चलता गाना। जिसमें सितार नाच आदि के बोल होते हैं। जैसे-ता नूभ त ना ना दे रा ना। २-गीत। गान।

तराप+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बन्दूक, तोप आदि का 'तड़ाक' शब्द।

तरापा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाहाकार। कुहराम। त्राहि-त्राहि। २-पानी में तैरता हुआ शहतीर। बेड़ा।

तराबोर [वि.] (फा.) पूरी तरह से भीगा हुआ। सराबोर।

तराभर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जल्दी-जल्दी वाली कार्रवाई। २-धूम।

तरामल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मूँज के जो छाजन में खपरैल के नीचे दिये हैं। २-जूए के नीचे की लकड़ी।

तरामीरा [संज्ञा पु.] (देश.) उत्तर भारत में की फसल के साथ पकने वाला की तरह का पौधा जिसके बीजों से तेल लता है। इसे दुआँ भी कहते हैं।

तरायला [वि.] (हिं.) १-तरल। २-चंचल।

तरारा [संज्ञा पु.] (?) १-उछाल। छलांग। कुछ देर तक निरन्तर गिरती पतली धार।
तरारा भरना-फर्राटे के साथ काम करना। *तरारा मारना*-करना।

तरालु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार

तरावट [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गीलापन। २-ठंडक। शीतलता। ३-शरीर क्लांकित आदि शान्त करने वाले ४-स्निग्ध भोजन। जैसे-घी, दूध आदि।

तराश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-काटने का भाव। काट। २-रचना प्रकार। काटछाँट। ३-ढंग। तर्ज। ४-ताश पत्ता जो काटने के बाद हाथ में आवे।

तराश-खराश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बनावट। रचना प्रकार। कतरब्योंत।

तराशना [क्रि. स.] (फा.) काटना। कलम करना।

तुरास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्रास'।

तरासन* [क्रि. स.] (हिं.) १-त्रास या २-देखो 'तराशना'।

तराहि [अव्य.] (हिं.) देखो 'त्राही'।

तराही* [क्रि. वि.] (हिं.) तले। नीचे।

तरिंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पीपा जो किसी स्थान पर लंगर के द्वारा बाँध जाता है और लहरों के ऊपर उतराता है।

तरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नौका। नाव। कपड़े का किनारा दामन। ३-पिटारा।

तरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाव में लकड़ी। बेड़ा। २-नाव की उतराई लेने वाला। ३-माँझी। केवट। मल्लाह।

तरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरकी का एक गहना जो फूल के आकार का

तरित [वि.] (सं.) पार किया हुआ। उत्तीर्ण।

तरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तर्जनी उंगली। भांग। गांजा।

* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वढ़िव।

तरुण-तरणि [संज्ञा पु.] (सं.) तरुण सूर्य । मध्याह्नकाल या दोपहर के समय का सूर्य ।

तरुणदधि [संज्ञा पु.] (सं.) पाँच दिन का दही। (हानिकर) ।

तरुणदारु [संज्ञा पु.] (सं.) विधार का वृक्ष ।

तरुणपीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनःशिला । मैनसिल ।

तरुणसूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) मध्याह्न का सूर्य ।

तरुणाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युवावस्था । जवानी

तरुणाना* [क्रि. अ.] (हिं.) तरुण होना । युवावस्था में प्रवेश करना ।

तरुणास्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतली लचीली हड्डी ।

तरुणी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) युवती । जवान स्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जवान स्त्री । युवती । २-ग्वारपाठा । घीकुवार । ३-जमालगोटा । ४-चीड़ी नामक गंधद्रव्य । ५-कूजा का फूल। मोतिया। ६-मेघराग की एक रागिनी ।

तरुणीकटाक्षमाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिलकवृक्ष

तरुतूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमगादड़ ।

तरुत्र [वि.] (सं.) तारक । तारने वाला ।

तरुन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तरुण' ।

तरुनई* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तरुणाई' ।

तरुनख [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष का काँटा ।

तरुनाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तरुणाई । तरुणावस्था । जवानी ।

तरुनापा [संज्ञा पु.] (हिं.) युवावस्था । जवानी ।

तरुपंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृक्षों की कतार ।

तरुबाँही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शाखा । डाल । पेड़ की भुजा ।

तरुभुक् [संज्ञा पु.] (सं.) वंदाक । बाँदा ।

तरुभुज [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष पर उगने वाला बंडा ।

तरुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष की जड़ ।

तरुमृग [संज्ञा पु.] (सं.) शाखामृग । बंदर ।

तरुराग [संज्ञा पु.] (सं.) किसलय । नया कोमल पत्ता ।

तरुराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्पवृक्ष । २-ताड़का वृक्ष ।

तरुरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँदा ।

तरु-रोपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष लगाने की क्रिया । २-वह विद्या जिसमें वृक्ष लगाने, बढ़ाने और उनकी रक्षा करने की कला सिखाई जाती है । आरबोरी-कलचर ।

तरुरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँदा ।

तरुवर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष ।

तरुवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जतुका नामक लता । पानड़ी ।

तरुविलासनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवमल्लिका । चमेली ।

तरुश [वि.] (सं.) वृक्षों से घिराहुआ ।

तरुशायी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पक्षी चिड़िया ।

तरुसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपूर । गोंद ।

तरुस्थ [वि.] (सं.) वृक्ष पर टिकाहुआ ।

तरुस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँदा ।

तरूट [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़ । मुरार । भँसीड़ ।

तरेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी में तैरता हुआ काठ । बेड़ा । २-पानी पर तैरने वाली वस्तु जिसकी सहायता से पार हो सकें ।

तरे+ [क्रि. वि.] (हि.) नीचे । तले ।
(*किसी के) तरे बैठना*-किसी को पति बनाना ।

तरेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलहटी । तराई । घाटी । पर्वत के नीचे की भूमि ।

तरेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तदेरा', 'तरारा' ।

तरेरना [क्रि. स.] (हिं.) क्रोध या असंतोष की दृष्टि से देखना । दृष्टि कुपित करना । आंख के इशारे से फाँट बताना ।

तरैनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) हल और हरिस मिलाने के लिए दिए जाने वाले पच्चर ।

तरैला [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके दूसरे पति से उत्पन्न हो ।

तरैली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हल में हिरस लगाने की पच्चर ।

तरैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तारा । नक्षत्र ।
[वि.] (हिं.) १-उतरने वाला । २-तारनेवाला

तरोंच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कंघी मे दाँतों के नीचे का भाग । २-तरौंछ । तल-छट ।

तरोंचा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जुए के नीचे की लकड़ी ।

तरोंडा [संज्ञा पु.] (देश.) हलवाहे आदि मजदूरों को देने के लिए निकाला हुआ अन्न ।

तरोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तुरई नामक एक तरकारी

तरोता [संज्ञा पु.] (हिं.) तरवर नामक एक लम्बा वृक्ष जो मध्यभारत और दक्षिण भारत में पाया जाता है । इसकी छाल चमड़ा सिझाने या कमाने के काम आती है ।

तरोवर, तरोवर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तरुवर'

तरोंछ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तल-छट' ।

तरोंछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जुलाहे की वह लकड़ी जो हत्थे में नीचे की तरफ लगी रहती है । २-बैलगाड़ियों में सुजावा के नीचे लगने वाली लकड़ी ।

तरोंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) आटा पीसने की चक्की के नीचे वाला पाट या पल्ला ।

तरौंता [संज्ञा पु.] (हि.) छाजन के ठाट के नीचे लगाने की लकड़ी ।

तरौंस+* [संज्ञा पु.] (हिं.) तट । तीर । किनारा ।

तरौना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तरकी नामक कान में

पहनने का एक प्रकार का गहना। २- कर्ण-फूल नामक आभूषण। ३-मिठाई का खोमचा रखने का मोढा।

तर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु के विषय में अज्ञात तत्व के कारण अथवा उपपत्ति की दृष्टि से निश्चित करने की क्रिया। हेतुपूर्ण युक्ति। विवेचना। दलील। जब किसी वस्तु के सम्बन्ध में वास्तविक तत्व ज्ञात नहीं होता तब उस तत्वज्ञानार्थ (किसी निगम के पक्ष में) कुछ हेतुपूर्ण युक्ति दी जाती है जिसमें विरुद्ध निगमन की अनुपपत्ति भी प्रदर्शित की जाती है। ऐसी युक्ति को तक कहते हैं। २-चमत्कारपूर्ण उक्ति। चतुराई से भरी बात। ३-व्यंग। ताना।

[संज्ञा पु.] (अ.) त्याग। छोड़ना।

तर्कक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तर्क करने वाला। २-याचक। मँगता।

तर्कण [संज्ञा पु.] (सं) तक या बहस करने की क्रिया।

तर्कणा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-विवेचना। विचार। २-युक्ति। दलील।

तर्कणीय [वि.] (सं.) विचार करने योग्य। चिंतनीय।

तर्कना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवेचना। विचार। २-युक्ति। दलील। [क्रि. अ.] तर्क करना। बहस करना।

तर्कमुद्रा [संज्ञा पु.] तंत्र की एक मुद्रा।

तर्कवागीश [संज्ञा पु.] (सं.) तर्कशास्त्र का भली प्रकार से जानने वाला व्यक्ति।

तर्कवितर्क [संज्ञा पु.] (सं.) इस प्रकार सोचना कि यह होगा, यह नहीं होगा। ऊहापोह। विवेचना। २-बहस। वादविवाद।

तर्क-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह विद्या जिसमें ठीक तक या विवेचना करने के नियम आदि निरूपित हों। सिद्धांतों के खंडनमंडन की शैली बतलाने वाली विद्या। २-न्याय-शास्त्र।

तर्कश [संज्ञा पु.] (फा.) तीर रखने का चोंगा। तूणीर। माथा।

तर्क-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तर्क या विवेचना करने के नियम और सिद्धान्तों के खंडन-मंडन का ढंग बताने वाला शास्त्र। २-न्याय-शास्त्र।

तर्कसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) छोटा तरकश।

तर्काभास [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा तर्क जो वस्तुतः ठीक न हो, यों ही देखने पर ठीक सा जान पड़े।

तर्कारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अरणी नामक वृक्ष। २-जैंत का पेड़। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तरकारी'।

तर्किण [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड का वृक्ष। पँवार

तर्कित [वि.] (सं.) १-आलोचित। विचारा हुआ। २-संभावित। ३-अनुमान किया हुआ।

तर्किनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) तर्क करने वाली।

तर्किल [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड़ नामक वृक्ष।

तर्की [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. तर्किनी] तर्क करने वाला।

तर्कीब [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तरकीब'।

तर्कु [संज्ञा पु.] (सं.) तकला। टेकुआ।

तर्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) कातने का कार्य।

तर्कुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तकला। टेकुआ।

तर्कु पिंड, तर्कुपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) तकले की फिरकी।

तर्कुल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ताड़ का वृक्ष। २-ताड़ का फल।

तर्क्य [वि.] (सं.) जिस पर कुछ सोच विचार करना आवश्यक हो। विचारणीय। चिंतनीय

तर्क्षु [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदुआ या चीता।

तर्क्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार नमक।

तर्ज [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रकार। तरह। २-शैली। ढंग। ३-रचना। प्रकार। बनावट।

तर्जन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भय-प्रदर्शन। धमकना २-क्रोध। ३-तिरस्कार। फटकार। डाँटडपट। *तर्जन गर्जन*-डाँट-फटकार।

तर्जना [क्रि. अ.] (हिं.) १-धमकाना। २-डाँटना। डपटना।

तर्जनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अँगूठे के पास की अँगुली प्रदेशिनी। अँगूठे और मध्यमा के बीच की अंगुली।

तर्जनी-मुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेज के अनुसार एक मुद्रा जिसमें बांए हाथ की मुट्ठी को बांध तजनी और मध्यमा को फैलाते हैं।

तर्जिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम

तर्जित [वि.] (सं.) अपमान किया हुआ। अनाहत

तर्जुमा [संज्ञा पु.] (अ.) भाषांतर। उल्था। अनुवाद।

तर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का बछड़ा।

तर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुरत का जन्मा हुआ गाय का बछड़ा। २-शिशु। बच्चा।

तर्णि [संज्ञा पु.] देखो 'तरणि'।

तर्त्तरीक [संज्ञा पु.] (सं.) नौका। नाव।

[वि.] (सं.) पार जाने वाला।

तर्तव्य [वि.] (सं.) पार जाने योग्य।

तर्दू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथियार की मुठिया।

तर्मन् [संज्ञा पु.] (सं.) छेद। सूराख।

तर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-तृप्त करने की क्रिया। संतुष्ट करने की क्रिया। २-हिन्दुओं में होने वाले कर्म कांड का वह कृत्य जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तृप्त करने के लिए उनके नाम से जला दिया जाता है।

तर्पणा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-खिरनी का वृक्ष। २-गंगा नदी। [वि] तृप्ति देने वाली

तर्पणीय [वि.] (सं) तर्पण करने योग्य।

तर्पिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्थल स्थलपद्म।

तर्पित [वि.] (सं) तृप्त या संतुष्ट किया हुआ

तर्पितव्य [वि.] (सं.) तृप्त या संतुष्ट होने

तर्पी [वि.] (हिं.) [स्त्री तर्पिणी] संतुष्ट करने वाला। २-तर्पण करने वाला

तर्बट [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकवँड़। वत्सर। वर्ष।

तर्बूज [संज्ञा पु.] देखो 'तरबूज'।

तर्यौना*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तरौना'।

तर्रा [संज्ञा पु.] (देश.) चारपाई बांधने वाली डोरी।

तर्राना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गाना। + [क्रि. अ.] देखो 'चर्राना'।

तर्री [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जो भैंसों को बड़ी प्रिय होती है। यह में होती है।

तर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिलाषा। असंतोष। ३-बेड़ा। ४-समुद्र। ५-

तर्षण [संज्ञा प.] (सं.) १-अभिलाषा। २-पिपासा। प्यास।

तर्षित [वि.] (सं.) १-प्यासा। २-अभिलाषा रखता हो।

तल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीचे का भाग। तला। २-जलाशय के नीचे की किसी के नीचे पड़ने वाला स्थान का तलवा। ५-हथेली। ६-किसी ऊपरी अथवा बाहरी फैलाव। चपत। ८-घर की छत। ९-मुठिया दस्ता। १०-बाएँ हाथ से वीणा क्रिया। ११-कलाई। पहुँचा। सहारा। १३-सात पातालों में से १४-आधार। सहारा। १५-जंगल। १६-धनुष की डोरी की बचने के लिए बाईं बाँह में पहने चमड़े का बल्ला। १७-बाएं हाथ बजाने की क्रिया। १८-एक नरक *तल करना*-नीचे दबा या (जुआरी)।

तलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताल। एक फल का नाम।

[अव्य.] तक। पर्यन्त।

तलकर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कर या ताल या तालाब में होने वाली लगता हैं।

तलकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पंजाब, बंगाल, मध्यप्रदेश और मद्रास में एक पेड़ जिसकी लकड़ी ललाई लिए

की होती है।

तलगू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तैलंग देश की भाषा।

तलगृह [संज्ञा पु.] (सं.) जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। तहखाना। भुईंधरा।

तलघर [संज्ञा पु.] (हिं.) तहखाना।

तलघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) तहखाना। भुईंधरा।

तलछट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी या और किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। गाद। तलौंछ।

तलताल [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली से बजाने का एक प्रकार का बाजा।

तलत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े का बना हुआ दस्ताना।

तलत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े का दस्ताना। तलत्र।

तलध्वनि [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली या ताली बजाने का शब्द।

तलना [क्रि. स.] (हिं.) कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।

तलप [संज्ञा पु.] देखो 'तल्प'।

तलपट [वि.] (देश.) नाश। बरबाद। चौपट।

तलपट [संज्ञा पु.](सं.) वह पट अथवा फलक जिसमें आय तथा व्यय का संक्षिप्त विवरण रहता है।

तलप्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) थप्पड़। तमाचा।

तलफ़ [वि.] (अ.) नष्ट। बर्बाद।

तलफना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कष्ट या पीड़ा से तड़पना या अंग पटकना। छटपटाना २-व्याकुल या बेचैन होना। विकल होना।

तलफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-खराबी। बरबादी। नाश। २-हानि।

हक़ तलफ़ी-स्वत्व का मारा जाना।

तलब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पाने की अभिलाषा या कामना। चाह। इच्छा। २-खोज। तलाश ३-माँग। आवश्यकता। ४-बुलावा। बुलाहट ५-वेतन।

तलब करना-१-माँगना। मँगाना। २-पास बुलाना। बुला भेजना।

तलबगार [वि.] (फ़ा.) चाहने वाला। माँगने वाला।

तलबाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह खर्चा जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जाता है। २-मालगुजारी समय पर न जमा करने पर जमींदार से दंडस्वरूप लिया जाने वाला खर्चा।

तलबी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) माँग। बुलाहट।

तलबेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अत्यधिक उत्कंठा। छटपटी।

तलभेद [संज्ञा पु.] (सं.) जिसकी पेंदी में छेद हो गया हो।

तलमल [संज्ञा पु.] (सं.) तल-छट। गाद। तलौंछ

तलमलाना [क्रि. अ.] (देश.) तड़फड़ाना। तलफना। बेचैन होना।

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तिलमिलाना'।

तलमलाहट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) व्याकुलता। बेचैनी। (हिं.) देखो 'तिलमिलाहट'।

तलमीन [संज्ञा पु.] (सं.) झींगा। मछली।

तलयुद्ध [संज्ञा. पु.] (सं.) १-मुक्के से लड़ाई लड़ने की क्रिया। २-वह कृत्रिम लड़ाई जो मुक्के द्वारा लड़ी जाती है। बॉक्सिंग।

तल-लोक [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल लोक।

तलव [संज्ञा पु.] (सं.) गानेवाला।

तलवकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामवेद की एक शाखा। २-एक उपनिषद का नाम।

तलवा [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर के नीचे का वह भाग जो चलने अथवा खड़े होने के समय जमीन पर पड़ता है।

तलवा खुजलाना-यात्रा का अभ्यास होना। यात्रा करना। *तलवा न टिकना, तलवा न भरना*-जम कर न बैठना। पैर न टिकना। *तलवे छलनी होना*-चलते-पैर घिस जाना। बहुत दौड़-धूप करनी पड़ना।

तलवे चाटना-बहुत ही खुशामद करना। *तलवे तले आँखें मलना*-१-बहुत ही खुशामद करना। २-बहुत प्रेम प्रकट करना। बड़ी दीनता या आधीनता दिखाना। *तलवे तले मेटना*-रौंद डालना। कुचलकर नष्ट करना। *तलवे तले हाथ धरना*-खुशामद करना। *तलवे धो-धोकर पीना*-बड़ी श्रद्धा-भक्ति, प्रेम, सेवा-भाव प्रकट करना। *तलवे सहलाना*-१-बहुत सेवा करना। २- बहुत खुशामद करना। *तलवों में से तेल निकालना*-१-बहुत किफ़ायत करना। २-बहुत दूर जाने के लिए किराये पर सवारी करना। *तलवों से आँखें मलना*-१-बहुत खुशामद करना। २-बहुत प्रेम प्रकट करना। ३-बड़ी दीनता दिखाना। *तलवों से आग लगना*-बहुत क्रोध चढ़ना। *तलवों से मलना*-रौंदना। कुचल देना। *तलवों से लगना*-१-बुरा लगना। २-क्रोध चढ़ना। *तलवों से लगना सिर में जाकर बुझना*-सिर से पैर तक क्रोध चढ़ना। क्रोध से सारा शरीर कांपना।

तलवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक लम्बा धारदार लोहे का हथियार जिसके आघात से वस्तुएं कट जाती हैं। खंग। असि। कृपाण।

तलवार करना-तलवार का प्रहार करना। *तलवार कसाना*-तलवार झुकाना। *तलवार का खेत*-लड़ाई का मैदान। *तलवार का डोरा*—बाढ़। धार। *तलवार का बल*-१-तलवार का टेढ़ापन। २-चलाने की शक्ति।

तलवार का मुँह-धार।

तलवार का हाथ-१-तलवार चलाने का ढंग। तलवार का प्रहार या वार। *तलवार की आँच या भाग*-तलवार के प्रहार या चोट का सामना करना। *तलवार के घाट उतारना*-तलवार से मारना। *तलवार खींचना*-म्यान से तलवार निकालना। *तलवार जड़ना*-तलवार मारना। *तलवार तोलना*-तलवार सँभालना। *तलवार पर हाथ रखना*-१-तलवार की शपथ खाना। २-तलवार निकालने के लिए मूठ पकड़ना। *तलवार बरसना*-खूब तलवार चलना। *तलवार बाँधना*-तलवार साथ रखना या कमर में बाँधना। *तलवार म्यान में करना*-मारने की इच्छा न रहना। *तलवार सूँतना, तलवार सौंतना*-तलवार म्यान से निकालना। *तलवारों की छाँह में*-१-रणक्षेत्र में। २-तलवार लिये हुए वीरों की रक्षा में।

तलवारण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खड्ग। तलवार।

तलवाही-पोत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समुद्र की सतह या तल पर चलने वाला पोत या जहाज। सरफ़ेस् क्राफ़्ट।

तलासारक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की छाती में बंधी हुई रस्सी।

तलास्थिता [वि.] (सं.) नीचे की ओर रहने वाला।

तलहटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहाड़ के नीचे की भूमि। पहाड़ की तराई।

तलहा+ [वि.] (हिं.) ताल का अथवा ताल में होने वाला। ताल-सम्बन्धी।

तलहृदय [संज्ञा पु.] (सं.) पैर के तलवे का मध्य-भाग।

तला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नीचे का भाग। पेंदा। जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा ताल। तलैया।

तलाउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तलाव'।

तलाक़ [संज्ञा पु.] (अ.) विधि या नियम के अनुसार पति-पत्नी का संबंध त्याग या सम्बन्धविच्छेद।

तलाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चटाई।

तलातल [संज्ञा पु.] (सं.) सात पतालों में से एक पाताल का नाम।

तलाबेली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तलबेली'।

तलाभिघात [संज्ञा पु.] (सं.) करतल का प्रहार। तमाचा। थप्पड़।

तलामणि [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवाल। मूंगा।

तलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) वह लम्बा चौड़ा गड्ढा जिसमें बरसाती पानी जमा रहता है। ताल। तालाब। पोखरा।

+तलाव जाना-शौच जाना।

तलाश [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-खोज। ढूँढ-ढाँढ। अन्वेषण। अनुसंधान। २-आवश्यकता। चाह।

तलाशना+ [क्रि. स.] (हिं.) खोजना। ढूंढना।

तलाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृक्ष का नाम।

तलाशी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) गुम की हुई अथवा छिपाई हुई वस्तु को प्राप्त करने के लिए किसी के शरीर या घर द्वार की देखभाल।

तलाशी देना–गुम या छिपाई हुई चीज को निकालने लिए संदेह करने वाले को अपने कपड़े लत्ते और घर आदि को ढूंढ़ने देना। *तलाशी लेना*–खोई या छिपाई हुई चीज को तलाश करने के लिए संदिग्ध व्यक्ति के घर-बार की देखभाल करना।

तलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़े की छाती में बँधी हुई रस्सी।

तलित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तड़ित। बिजली।

तलित [वि.] (सं.) तलाहुआ। भुनाहुआ।
[संज्ञा पु.] तलाहुआ मांस।

तलिन [वि.] (सं.) १–दुबला। क्षीण। दुर्बल। २–छितराया हुआ। अलग-अलग। ३–थोड़ा। कम। ४–साफ। स्वच्छ। शुद्ध।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) शय्या। सेज। पलंग।

तलिम [संज्ञा पु.] (सं.) १–छत। पाटन। २–शय्या। पलंग। ३–खड्ग। ४–चँदवा।

तलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समुद्र की थाह।

तली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नीचे की जगह या भाग। पेंदी। २–तलछट। तलौंछ। गाद। ३–हाथ की हथेली। ❀ ४–तलवार। + ५–पैर की एड़ी। ६–विवाह के समय वरवधू के आसन के नीचे रखा हुआ रुपया-पैसा।

तलीय [वि.] (सं.) १–तल या पेंदे से संबंध रखने वाला। नीचे के भाग से संबंध रखने वाला। २–ऊपर वाले अंश निकाल लेने, हटा देने या बाँट देने के पश्चात् या नीचे बच रहने वाला। रेसिडुअरी।
तलीय अधिकार–वह स्वत्व या अधिकार जो प्रांतीय शासनों को बाँट देने के उपरान्त सुरक्षा, कार्य-संचालन के सुभीते आदि की दृष्टि से बाँटने वाला या केन्द्रीय शासन अपने हाथ में बचा रखता है। रेसीडुअरी पॉवर।

तलुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'तलवा'। २–देखो 'तालू'।

तलुन [संज्ञा पु.] (सं.) १–वायु। २–युवा पुरुष।

तलुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युवती स्त्री।

तले [क्रि. वि.] (हिं.) ऊपर का उलटा। नीचे।
तले ऊपर–उलट-पुलट। गड्डमगड्ड। ऊपर के नीचे, नीचे के ऊपर। २–एक ऊपर दूसरा। *तले ऊपर के*–आगे-पीछे के। एक के बाद झट दूसरा। *तले ऊपर जी होना*–१–जी मचलना। २–जी ऊबना या घबराना।
तले ऊपर होना–१–उलटपलट हो जाना। २–संभोग में लगना। *तले की दुनिया ऊपर होना* १–उलट फेर हो जाना। बहुत बदल जाना। २–जो चाहे सो हो जाना। *तले की साँस तले और ऊपर की ऊपर रह जाना*–१–भौचक्का रह जाना। २–डर से स्तब्ध रह जाना। *तले बच्चा होना*–पशु के साथ बच्चा होना।

तलेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

तलेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पेंदी। २–तलहटी। पहाड़ के नीचे की भूमि।

तलैचा [संज्ञा पु.] (हिं.) मेहराव से ऊपर का और छत के नीचे का भाग (इमारत)।

तलैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा ताल।

तलोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। भार्या।

तलोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दरिया।

तलौंछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीचे जमी हुई गाद या मैल। तलछट।

तल्क [संज्ञा पु.] (सं.) वन।

तल्ख [वि.] (फा.) १–कड़ुवा। कटु। २–बदमज़ा। बुरे स्वाद का।

तल्खी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कड़ुवापन। कड़ुवाहट।

तल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १–शय्या। पलंग। सेज। २–अटारी। अट्टालिका।

तल्पक [संज्ञा पु.] (सं.) बिछौना करने वाला या शय्या सजाने वाला नौकर।

तल्पकीट [संज्ञा पु.] (सं.) खटमल। मत्कुण।

तल्पज [संज्ञा पु.] (सं.) क्षेत्रज पुत्र। वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की स्त्री ने दूसरे पुरुष के संभोग से उत्पन्न किया हो।

तल्पन [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ की हड्डी के ऊपर का मांस।

तल्पशीवन् [वि.] (सं.) सर्वदा पलंग या शय्या पर पड़ा रहने वाला।

तल्प्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक रुद्र का नाम।

तल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १–बिल। गड्ढा। २–ताल पोखरा।

तल्लज [संज्ञा पु.] (सं.) सम्मानसूचक शब्द।

तल्लद [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता। कुक्कुर।

तल्ला [संज्ञा पु.] (हि.) १–पहनने के कपड़े के नीचे का अस्तर। भितल्ला। २–ऊपर नीचे के विचार से मकान का खंड। मंजिल। ३–जूते के नीचे का चमड़ा। ४–निकटता। सामीप्य।

तल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ताली। कुंजी।

तल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जूते का तला। २–नीचे की तलछट। ३–तरुणी। युवती। ४–नौका। नाव। ५–वरुण की पत्नी।

तल्लीट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जूते का ताला। २–तलछट। तलौंछ।

तल्लीन [विं.] (सं.) किसी विषय अथवा कार्य में लीन। निमग्न।

तल्लीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तल्लीन या निमग्न होने का भाव।

तल्लुआ [संज्ञा पु.] (देश.) गाढ़े के ऐसा एक कपड़ा। सल्लम। महमूदी। तुरकी।

तल्लो+ [संज्ञा पु.] (हि.) जाँते या चक्की के नीचे का पाट।

तल्व [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पदार्थ की रगड़ से उत्पन्न होने वाली सुगंध।

तल्वकार [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद की एक शाखा

तव [सर्व.] (सं.) तुम्हारा।

तवक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) तवाखीर। तिखुर।

तवक्षीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कनकचूर जिसकी जड़ से एक प्रकार का तिखुर बनता है।

तवज्जह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–ध्यान। रुख। २–कृपादृष्टि।

तवना❀+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–तपना। गरम होना। २–तप से पीड़ित होना। दुःख से पीड़ित होना। ३–तेज पसारना। ४–क्रोध से जलना। कुढ़ जाना।

तवनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलका तवा। छोटा तवा।

तवरक [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र तथा नदियों के किनारे होने वाला एक वृक्ष जिसमें इमली के-से फल लगते हैं।

तवराज [संज्ञा पु.] (सं.) तुरंजबीन। शर्करा।

तवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) त, थ, द, ध, न यह पाँच अक्षर।

तवर्गीय [वि.] (सं.) तवर्ग से उत्पन्न वर्ण।

तवस् [वि.] (सं.) अधिक वय या अवस्था वाला। वृद्ध। बुड्ढा।

तवस्वत् [वि.] (सं.) ताकतवर। बलयुक्त।

तवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–लोहे की मोटी चादर का बना हुआ गोल छिछला बरतन जिसपर रोटी सेंकते हैं। २–चिलम में तमाकू पर रखने का मिट्टी या खपड़े का गोल ठीकरा। ३–एक प्रकार की लाल मिट्टी हींग में मिलाने के काम में आती है।
तवा सा मुंह होना–काला मुंह होना। *तवा सिर से बाँधना*–सिर पर प्रहार सहने के लिए तैयार होना। *तवे का हंसना*–तवे के नीचे लगी कालिख का बहुत जलते-जलते लाल हो जाना जो घर में विवाद होने का शकुन समझा जाता है। *तवे की बूंद*–१–थोड़ी देर तक न टिकने वाली। क्षणस्थायी। नश्वर। २–जिससे कुछ तृप्त न हो। ३–कुछ असर न होना।

तवाखीर [संज्ञा पु.] (हिं.) वंशलोचन।

तवाजा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–आदर। खातिर। आवभगत। २–दावत। मेहमानदारी।

तवाना [वि.] (फा.) मोटाताजा। बली। मुस्टंडा।
[क्रि. स.] (हिं.) गरम या तप्त कराना।
+[क्रि. स.] (हिं.) ढक्कन को चिपकाकर बरतन का मुँह बन्द कराना।

तवायफ़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वेश्या। रंडी।

तवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) जलन। दाह। ताप।

तवारीख [संज्ञा स्त्री.] (अ.) इतिहास।

तवालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–लम्बाई। दीर्घता।

२-अधिकता। आधिक्य। ज्यादती। ३-बखेड़ा। झंझट।

तविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विपला नामक छंद का एक भेद।

तविष [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-समुद्र। ३-व्यवसाय। ४-शक्ति।

तविषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवकन्या। २-भूमि। ३-नदी।

तविषीवत् [वि.] (सं.) साहसी। पराक्रमी।

तशखीस [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ठहराव। २-मर्ज की पहचान। ३-रोग का निश्चय। निदान।

तशरीफ़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) इज्जत। महत्व। बड़प्पन। *तशरीफ़ रखना*-विराजना। बैठना। (आदर) *तशरीफ़ लाना*-पदार्पण करना। आना। *तशरीफ़ ले जाना*-प्रस्थान करना।

तश्त [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-थाली के आकार का एक हलका और छिछला बरतन। परात। [illegible]। ३-पखाना रखने का बड़ा बरतन। [illegible]।

तश्तरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) थाली के आकार का हलका और छिछला बरतन। रिकाबी।

तष्ट [वि.] (सं.) १-छिला हुआ। २-कुटा या पिसा हुआ। ३-पीसकर दो दालों में किया हुआ। ४-पीटा हुआ।

तष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) १-छीलने वाला। २-छीलकर गढ़ने वाला। ३-विश्वकर्मा। ४-एक आदित्य का नाम।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की तावे की तश्तरी जिसमें मूर्त्तियां नहलाई जाती ह।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रन्दने का काम। तक्षण।

तस [वि.] (हिं.) तैसा। वैसा।
[क्रि. वि.] (हिं.) तैसा। वैसा।

तसकीन [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दिलासा। तसल्ली।

तसगर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की लकड़ी जो जुलाहे के ताने में नौलक्खी के पास लगती है।

तसदीक़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सचाई। २-सचाई की परीक्षा या निश्चय। प्रमाणों द्वारा पुष्टि ३-साक्ष्य। गवाही।

तसदीह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिर का दर्द। २-तकलीफ। दुःख। क्लेश।

तसद्दुक़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-निछावर। सदका। २-कुरबानी।

तसनीफ़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) ग्रंथरचना।

तसबीह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सुमिरनी। जपमाला। माला। *तसबीह फेरना*-ईश्वर के नामोच्चारणसहित माला फेरना।

तसमा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चमड़े या कपड़े का फीता जो बांधने के काम आता है। *तसमा खींचना*-गले में फंदा डालकर मारना। गला घोटना। *तसमा लगा न रखना*-गरदन साफ उड़ा देना।

तसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुलाहों की ढरकी। २-एक प्रकार का घटिया रेशम। देखो 'टसर'

तसला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा और गहरा बरतन।

तसली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटा तसला।

तसलीम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-प्रणाम। सलाम। २-किसी बात की स्वीकृति। मान्यता।

तसल्ली [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-सांत्वना। आश्वासन। ढाढ़स। ३-धैर्य। धीरज।
तसल्ली दिलाना-धैर्य धारण करना।

तसवीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चित्र।
तसवीर उतारना-चित्र बनाना। *तसवीर निकलना*-चित्र बनाना।
[वि.] चित्र सा सुन्दर। मनोहर।

तसी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तीन बार जोता हुआ खेत।

तसू [संज्ञा पु.] (हिं.) इमारती गज का २४वाँ अंश जो १। इंच के लगभग होता है।

तस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। २-कान। श्रवण। ३-मैनफल। मदनवृक्ष। ४-चोर नामकगंध द्रव्य। ५-एक प्रकार के केतु जो लम्बे और सफेद होते हैं।

तस्करता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोरी। चोरी का काम।

तस्करस्नायु [संज्ञा पु.] (सं.) काकनासा नामक लता।

तस्करी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चोरी। चोर का काम। २-चोर की स्त्री।

तस्थु [वि.] (सं.) एक ही जगह पर रहने वाला। स्थावर। अचल।

तस्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तसमा'।

तस्मात् [अव्य.] (सं.) इसलिए।

तस्य [सर्व.] (सं.) उसका।

तस्सू [संज्ञा पु.] (हिं.) लम्बाई की एक नाप। तसू।

तहँ [क्रि. वि.] (हिं.) तहाँ। वहाँ। उस स्थान पर।

तहँवाँ [क्रि. वि.] (हिं.) तहाँ। वहाँ। उस स्थान पर।

तह [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-किसी वस्तु पर पड़ा अन्य वस्तु का मोटा फैलाव। परत। २-किसी वस्तु के नीचे का फैलाव या विस्तार। तल। पेंदा। ३-पानी के नीचे की जमीन। तल। थाह। ४-महीन पटल। वरक। झिल्ली।
तहदार-जिसमें कई परत हों। परत वाला। *तह करना*-परत करना। कोई वस्तु एकसी मोड़ना। *तह करके रखना*-रहने देना। आवश्यकता न होना। *तह का सच्चा होना*-१-वह कबूतर जो भूले नहीं और घर आजाय। २-दिलका सच्चा आदमी। *तह की बात*-छिपी हुई असली बात। *तह तक पहुँचना*-किसी बात के गुप्त अभिप्राय का पता पाना। असली बात समझ जाना।

तहक़ीक़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सत्य। यथार्थता। २-सचाई की जांच। खोज। अनुसंधान। ३-जिज्ञासा। पूछताछ।

तहक़ीकात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) किसी विषय अथवा घटना की मूल बातों का पता लगाना। जांच। अनुसंधान।
तहक़ीकात आना-किसी घटना या मामले के संबंध में पुलिस अधिकारी का पता लगाने के लिये आना।

तहखाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) तलगृह। मुइंहरा। तलघर।

तहज़ीब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शिष्ट। व्यवहार। शिष्टता। सभ्यता।

तहदरज़ [वि.] (फ़ा.) (वह कपड़ा आदि) जिसकी तह तक न खोली गई हो। बिलकुल नया।

तहनिशाँ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) लोहे पर सोने-चांदी की पच्चीकारी।

तहपेंच [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पगड़ी के नीचे का कपड़ा।

तहबाज़ारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) भूरी। वह महसूल जो बाजार के चौक या पटरी पर सौदा बेचने वालों से लिया जाता है।

तहमत [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कमर में लपेटा जाने वाला एक प्रकार का बड़ा कपड़ा।

तहमद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तहमत'।

तहरा+ [संज्ञा पु.] देखो 'ततहँड़ा'।

तहरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ६-पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। २-मटर की खिचड़ी। ४-कालीन बुनने वालों की ढरकी।

तहरीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लेख। लिखावट। २-लेखशैली। ३-लिखी हुई बात। ४-लिखा हुआ प्रमाणपत्र। ५-लिखने की उजरत। लिखाई। ६-कपड़ों पर की जाने वाली गेरू की कच्ची छपाई।

तहरीरी [वि.] (फ़ा.) लिखा हुआ। लिखित। लेखबद्ध।

तहलका [संज्ञा पु.] (अ.) १-मौत। मृत्यु। २-बरबादी। नाश। ३-खलबली। धूम। हलचल।

तहवील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सपुर्दगी। २-अमानत। धरोहर। २-किसी मद की आय का रुपया जो किसी के पास जमा हो।

तहवीलदार [संज्ञा पु.] (अ.) वह व्यक्ति जिसके पास किसी मद्द की आय का रुपया जमा होता है। खज़ानची।

तहसनहस [वि.] (देश.) पूर्णतया नष्टभ्रष्ट । ध्वस्त । वरवाद ।

तहसील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया या भाव । वसूली । उगाही । २-वह धन जो वसूल करने से इकट्ठा हो । ३-वह कार्यालय अथवा कचहरी जहां जर्मीदार सरकारी मालगुजारी जमा करते हैं । तहसीलदार की कचहरी । माल की छोटी कचहरी ।

तहसीलदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कर वसूल करने वाला । २-वह अधिकारी जो जर्मीदारों से सरकारी मालगुजारी वसूल करता है और माल के छोटे मुकदमों का फैसला करता है ।

तहसीलदारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कर अथवा महसूल वसूल करने का कार्य । तहसीलदार का काम । २-तहसीलदार का पद ।

तहसीलना [क्रि. स.] (हिं.) कर, लगान, चन्दा आदि वसूल करना । उगाहना ।

तहाँ [क्रि. वि.] (हिं.) उस स्थान पर ।

तहाना [क्रि. स.] (हिं.) तह करना । लपेटना । धरी करना ।

तहियाँ+ [क्रि. वि.] (हिं.) तब । उस समय ।

तहियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) तह लगाकर लपेटना ।

तहीं+ [क्रि. वि.] (हिं.) वहीं । उस जगह । उसी स्थान पर ।

तहोबाला [वि.] (फा.) नीचे का ऊपर, ऊपर का नीचे । उलटपलट । भग्न-क्रम ।

ताँई [क्रि. वि.] देखो 'ताईं' ।

ताँगा [संज्ञा पु.] देखो 'टांगा' ।

तांडव, ताण्डव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरुषों का नृत्य (पुरुषों के नृत्य को तांडव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते है) । २-शिव का नृत्य । ३-वह नाच जिसमें बहुत उछल-कूद हो ।

तांडवी, ताण्डवी [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत के चौदह तालों में से एक ।

तांडि, ताण्डि [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य-शास्त्र ।

तांडी, ताण्डी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामवेद की तांड्यशाखा का अध्ययन करने वाला । २-यजुर्वेद का एक कल्प सूत्रकार ।

तांड्य, ताण्ड्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-तंडीमुनि के वंशज । २-सामवेद के एक ब्राह्मण का नाम ।

तांत, तान्त [वि.] (सं.) १-श्रान्त । थका हुआ । २-जिसके अंत में 'त्' हो ।

ताँत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चमड़े या पशुओं की नसों से वनी हुई डोरी । २-धनुष की डोरी । ३-सारंगी आदि का तार । ४-जुलाहों का राछ । ५-डोरी । सूत ।

ताँतड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताँत । *ताँतड़ी सा*-ताँत के समान दुबला-पतला ।

ताँतव, तान्तव [वि.] (सं.) जिसमें तंतु या तार हो । जिसमें से तार निकल सके ।

ताँतवा [संज्ञा पु.] (हिं.) आँत उतारने का रोग

ताँता [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रेणी । पंक्ति । कतार । *ताँत बाँधना*-पंक्ति में खड़ा होना । *ताँत लगना* एक पर एक बरावर चला आना । तार न टूटना ।

ताँति+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ताँत' ।

ताँतिया [वि.] (हिं.) ताँत के समान दुबला-पतला ।

ताँती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पंक्ति । कतार । २-वालवच्चे । औलाद ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा बुनने वाला । जुलाहा

तांत्रिक, तान्त्रिक [वि.] (सं.) [स्त्री. तांत्रिकी] तंत्र-संबंधी ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-तंत्रशास्त्र का जानने वाला । २-एक प्रकार का सन्निपात ।

ताँबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक धातु जो खानों में गंधक, लोहे और अन्य द्रव्यों के साथ मिली हुई मिलती है । इसका रंग लाल होता है । यह पीटने से बढ़ सकती है और इसका तार भी खींचा जा सकता है । इसके तारों का व्यवहार विद्युत संचार के लिए होता है । भारत में ताँबा सिंहभूमि, हजारीबाग, जयपुर, अजमेर, कच्छ, नेल्लोर, नागपुर आदि स्थानों में निकलता है । तम्रक । २-मांस का टुकड़ा जो बाज आदि शिकारी पक्षियों के आगे डाला जाता है ।

ताँबिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ताँबी' ।

ताँबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौड़े मुँह का तांबे का एक छोटा बरतन । २-तांबे की वनी करछी ।

तांबूल, ताम्बूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पान । २-पान का बीड़ा । ३-सुपारी ।

तांबूलकरंक, ताम्बूलकरङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-पान रखने का बरतन । २-पान के बीड़े रखने का डिब्बा ।

तांबूल-नियम, ताम्बूल-नियम [संज्ञा पु.] (सं.) पान, सुपारी, लवंग, इलायची आदि खाने का नियम (जैन) ।

तांबूल-पत्र, ताम्बूल-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पान का पत्ता । २-पिंडालू ।

तांबूल-बीटिका, ताम्बूल-वाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान का बीड़ा ।

तांबूल-राग, ताम्बूल-राग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पान की पीक । २-मसूर ।

तांबूल-वल्ली, ताम्बूल-वल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान की बेल । नागवल्ली ।

तांबूल-वाहक, ताम्बूल-वाहक [संज्ञा पु.] (सं.) वह नौकर जो पान का बीड़ा लगाकर लाये । पान खिलाने वाला सेवक ।

तांबूलिक, ताम्बूलिक [संज्ञा पु.] (सं.) पान बेचने वाला । तमोली ।

तांबूली [संज्ञा पु.] (हिं.) तमोली ।

ताँबेकारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार लाल रंग ।

तांबेल [संज्ञा प.] (?) कच्छप । कछुआ ।

ताँवर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताप । ज्वर । हरारत । २-जूड़ी । ३-मूर्छा । घुमटा ।

ताँवरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ताँवर' ।

ताँवरो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ताप । ज्वर । हरारत । २-जाड़े से आने वाला बुखार । जूड़ी । ३-मूर्च्छा । चक्कर ।

ताँसना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-डाँटना । धमकाना । २-कुव्यवहार करना । सताना ।

ता [प्रत्य.] (सं.) एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा के अन्त में लगता है, जैसे-उत्तम, उत्तमता, शत्रु, शत्रुता । [अव्य] (फा.) तक । पर्यंत । + [वि.] (हिं.) १-उस । २-उसे ।

ताईं [अव्य] (हिं.) १-तक । पर्यंत । [illegible] तक । समीप । २-(किसी के) प्रति । को । लिए । वास्ते । निमित्त । विषय में । संबंध में । *अपने ताईं*-अपने को ।

ताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाप के बड़े भाई की पत्नी । जेठी चाची । २-ताप । हलका ज्वर । ३-जाड़ा देकर आने वाला बुखार । जूड़ी । ४-एक प्रकार की छिछली कड़ाही जिसमें जलेबी आदि उतारते हैं ।

ताईत [संज्ञा पु.] (हिं.) तावीज । जंतर ।

ताईद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पक्षपात । तरफदारी । २-पुष्टि । अनुमोदन । समर्थन ।

ताउ [संज्ञा पु.] देखो 'ताव' ।

ताऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) बाप का बड़ा भाई । *वछिया का ताऊ*-मूर्ख । जड़ ।

तऊन [संज्ञ पु.] (अ.) एक संक्रामक रोग जिसमें गिलटी निकलती और बुखार आता है ।

ताऊस [संज्ञा पु.] (अ.) १-मोर । मयूर । २-सारंगी तथा सितार से मिलता-जुलता एक बाजा जिस पर मोर का आकार बना होता है ।

ताऊसी [वि.] (अ.) १-मोर का सा । मोर के रंग का । २-गहरा ऊदा । हरा बैंगनी ।

ताक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताकने की क्रिया । अवलोकन । २-स्थिर दृष्टि । टकटकी । ३-किसी अवसर या मौके की प्रतीक्षा । ४-खोज । तलाश । फिराक । *ताक रखना*-निगाह रखना । निरीक्षण करते रहना । *ताक बाँधना*-टकटकी लगाना । दृष्टि स्थिर करना । *ताक में रहना*-उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करते रहना । *ताक रहना*-घात में रहना । *ताक लगाना*-घात लगाना । [illegible] देखते रहना ।

ताक़ [संज्ञा पु.] (अ.) दीवार में बनी हुई जगह ज़िसमें वस्तुएँ आदि रखते हैं ।

ताक पर धरना या रखना–उपयोग न करना। काम में न लाना। *ताक पर होना या रखना*–बेकाम पड़ा रहना। व्यर्थ जाना। *ताक भरना*–किसी देवस्थान पर मनौती की पूजा चढ़ाना। (मुसलमान)। [वि.] (अ.) १–जो बिना टुकड़े हुए दो बराबर भागों में न बँट सके। विषम। जो संख्या में सम न हो। २–जिसके जोड़ का दूसरा न हो। अद्वितीय। अनुपम।

ताक-जुफ्त [संज्ञा पु.] (फ़ा.) मुट्ठी में सम या विषम कौड़ियाँ या अन्य वस्तु लेकर बूझना। यदि बूझने वाला ठीक बता देता है तो वह जीत जाता है (जूआ)।

ताक-झाँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुछ जानने के लिए बार-बार ताकने या झाँकने की क्रिया। २-छिपकर देखने की क्रिया। ३–निरीक्षण। देखभाल। निगरानी। ४–खोज। अन्वेषण।

ताकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–जोर। बल। शक्ति। २–सामर्थ्य।

ताकतवर [वि.] (फ़ा.) १–बलवान। बलिष्ठ। २–सामर्थ्यवान्। शक्तिवान।

ताकना [क्रि. स.] (हिं.) १–अवलोकन करना। देखना। २–मन में सोचना। ३–समझ जाना। ताड़ना। ४–पहले से देखकर स्थिर करना। तजवीज करना। ५–देखरेख या रखवाली करना। अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना।

ताकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नागरी से मिलती-जुलती एक लिपि जिसका प्रचार अटक के उस पार से लेकर सतलज और जमुना नदी के किनारे तक है। इसके अक्षरों के मुंडे या टुंडे भी कहते हैं।

ताकि [अव्य] (फ़ा.) इसलिए कि। जिससे। जिसमें।

ताकीद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जोर के साथ किसी बात की आज्ञा या अनुरोध। ऐसा अनुरोध या आदेश जिसके पालन के लिए बारंबार कहा गया हो।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पौधे का नाम

[संज्ञा पु.] (सं.) बढ़ई की संतान।

ताख [संज्ञा पु.] (हि.) दिवार की ताक।

तागड़ा+ [वि] (हि.) देखो 'तगड़ा'।

तागड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तराजू। काँटा।

[वि.] (हि.) जिसकी दोनों आँखें एक प्रकार की न हों। (रंग या ढंग में)।

ताग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तागा'।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) तख्ते की बनी हुई मोरी जो जहाज पर लगी होती है।

तागड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कमर में पहनने का एक आभूषण। किंकणी। करधनी। क्षुद्रघंटिका। २–कमर में पहनने का रंगीन डोरा। कटिसूत्र। करगता।

तागना [क्रि. स.] (हिं.) तागे से दूर-दूर की मोटी सिलाई करना। जैसे–रजाई तागना।

तागपहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लकड़ी जिसका एक सिरा छोर नुकीला और दूसरा चिपटा होता है। (जुलाहे)।

तागपाट [संज्ञा पु.] (हिं.) रेशम के तागे में सोने के तीन टासे अथवा जंतर डालकर बनाया हुआ एक गहना जो विवाह में काम आता है

तागा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–रूई, रेशम, ऊन आदि का वह लंबा रूप जो तकले आदि पर बटने से निकलता है। सूत। धागा। २–प्रति व्यक्ति के हिसाब से लिया जाने वाला कर या महसूल।

ताज [संज्ञा पु.] (अ.) १–राजमुकुट। बादशाह की टोपी। २–कलगी। तुर्रा। ३–मोर, मुर्गे आदि पक्षियों के सिर पर की चोटी। शिखा ४–दीवार का छज्जा या कंगनी। ५–मकान के सिरे पर शोभा के लिए बनी हुई बुर्जी। ६–आगरे का ताजमहल।

ताजक (फ़ा.) १–ईरानी जाति। यवनाचार्यकृत ज्योतिष का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

ताज़गी (फ़ा.) १–हरापन। ताजापन। २–प्रफुल्लता। स्वस्थता। ३–सद्यः प्रस्तुत होने का भाव। नयापन।

ताजदार [वि.] (फ़ा.) ताज के ढंग का।
[संज्ञा पु.] (फ़ा.) ताज धारण करने वाला बादशाह।

ताजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) कोड़ा। चाबुक।

ताजना [संज्ञा पु.] (हिं.) कोड़ा। चाबुक।

ताजपोशी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) राजसिंहासनारूढ़ होकर राजमुकुट धारण करने की रीति या उत्सव।

ताजबीबी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) शाहजहां की प्रिय बेगम मुमताजमहल जिसकी स्मृति में आगरे के ताजमहल का निर्माण किया गया।

ताजमहल [संज्ञा पु.] (अ.) आगरे का प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्रिय बेगम मुमताजमहल की स्मृति में बनवाया था। इस मकबरे को बनाने में तीस वर्ष तक हजारों मजदूर और देशी-विदेशी कारीगर लगे रहे। मसाला, मजदूरी आदि आज-कल की अपेक्षा बहुत सस्ती होने पर भी इस इमारत में उस समय ३१७३८०२४ रुपये लगे। यह मकबरा बिलकुल संगमरमर का बना हुआ है।

ताजा [वि.] (फ़ा.) [स्त्री. ताजी] १–जो बिलकुल अभी बनकर तैयार हुआ हो। सर्वथा नवीन। २–जो सूखा अथवा कुम्हलाया हुआ न हो। हराभरा। ३–जो अभी पेड़ से तोड़ा गया हो। (फलफूल आदि)। ४–जो थकामांदा न हो। स्वस्थ और प्रसन्न। ५–जो व्यवहार में आने को हो। बिलकुल नया।
(किसी बात का) ताजा करना–१–नये सिरे से उठाना या छेड़ना। २–स्मरण दिलाना। याद दिलाना। *(किसी बात का) ताजा होना*–१–नये सिरे से उठाना। २–स्मरण आना। *मोटाताजा*–हृष्टपुष्ट।

ताजिया [संज्ञा पु.] (अ.) मकबरे के आकार का कमचियों पर और रंगबिरंगे कागज, पन्नी आदि चिपकाकर बनाया हुआ मंडप जिसमें इमामहुसेन की कब्र बनी होती है। इसे मुहर्रम में शिया मुसलमान दस दिन तक रख कर गाड़ते हैं।
ताजिया ठंडा होना–१–ताजिया दफन होना। २–किसी बड़े आदमी का सर जाना।

ताज़ी [वि.] (फ़ा.) अरब देश का। अरब सम्बन्धी।
[संज्ञा पु.] १–अरब का घोड़ा। २–शिकारी कुत्ता। [संज्ञा स्त्री.] अरब देश की भाषा।

ताज़ीम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) किसी बड़े के सामने आदर के लिए खड़ा होना और झुककर अभिवादन करना। सम्मान-प्रदर्शन।

ताजीमीसरदार [संज्ञा पु.] (फ़ा., अ.) वह सरदार जिसके प्रति सम्मान-प्रदर्शन किया जाय।

ताजीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दंड। जुर्माना।

ताजीरात [संज्ञा पु.] (अ.) अपराधिक दंडों से संबंध रखने वाले कानूनों का संग्रह।

ताजीरी [वि.] (अं.) दंडस्वरूप लगाया अथवा बैठाया हुआ।

ताजीरीकर [संज्ञा पु.] (अ.+सं.) किसी स्थान पर दण्डस्वरूप पुलिस नियत होने पर उसका खर्चा निकालने के लिए लगाया हुआ कर।

ताजीरीपुलिस [संज्ञा स्त्री.] (अ., अं.) उपद्रव ग्रस्त क्षेत्र में रखे हुए पुलिस के दस्ते जिनका खर्चा वहां के लोगों से दंडस्वरूप लिया जाता है।

ताज्जुब [संज्ञा पु.] (अ.) आश्चर्य। विस्मय। अचम्भा।

ताटक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक कान का गहना। तरकी। करन फूल। २–छप्पय के २४वें भेद का नाम। २–एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ और १४ के विराम से ३० मात्राएँ होती है और अन्त में मगण होता है।

ताटस्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) तटस्थ या निरपेक्ष होने का भाव। समीपता। उदासीनता।

ताडंक, ताडङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक गहना। तरकी। करनफूल।

ताड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक पेड़ जिसके शाखा नहीं होती जो खंभे के रूप में ऊपर की ओर सीधा बढ़ता चला जाता है। और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। आजकल ताड़ के रस का गुड़ भी बनने लगा है जो उसके ऊपरी कोमल भाग में लोहे की नाली चुभाने से निकलता है। इस रस का नीरा और ताड़ी भी बनती है। २–ताड़न। प्रहार। ३–शब्द। ध्वनि। ४–हाथ का एक गहना। ६–मूर्त्तिनिर्माण विद्या में मूर्त्ति के ऊपरी भाग का नाम।

ताड़का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रामायण में वर्णित एक राक्षसी।

ताड़काफल [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी इलायची।

ताड़कायन [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि [संज्ञा पु.] (सं.) रामचन्द्रजी।

ताड़केय [संज्ञा पु.] (सं.) (ताड़का का पुत्र) मारीच।

ताड़घ [संज्ञा पु.] (सं.) कोड़ा या बेत मारने वाला। जल्लाद।

ताड़धात [संज्ञा पु.] (सं.) हथौड़े आदि से पीटकर काम करने वाला।

ताड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार। प्रहार। आघात २-डाँटडपट। घुड़की। ३-शासन। दंड। ४-गुणन। ५-मंत्र को चंदन से लिखकर प्रत्येक मन्त्र को जल से वायु बीज पढ़कर मारने का विधान।

ताड़ना [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मार। प्रहार। २-डांटडपट। दंड शासन। धमकी। ३-उत्पीड़न। कष्ट। [क्रि. स.] (हिं.) १-लक्षण से जान लेना। भांपना। लख लेना। अन्दाज से मालूम कर लेना। २-मारपीट कर भगाना। ३-डांटना। डपटना। ३-कष्ट पहुँचाना।

ताड़नीय [वि.] (सं.) दंडनीय। दंड देने योग्य।

ताड़पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) ताडंक।

ताड़बाज [वि.] (हिं.) ताड़ने वाला। भांपने वाला। समझ जाने वाला।

ताड़ित [वि.] (सं.) १-मारा हुआ। जो डांटा गया हो। जिसने घुड़की खाई हो। ३-दंडित शासित। ४-मारकर भगाया हुआ। निकाला हुआ।

ताड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का छोटा ताड़। २-एक आभूषण।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताड़ के डंठलों या अंकुरों में लोहे की नाली चुभाकर निकाला हुआ रस जो खटा जाने की अवस्था में नशीला हो जाता है।

ताड्य [वि.] (हिं.) १-ताडने के योग्य। २-डांटने-डपटने लायक। ३-दंड्य।

ताड्यमान [वि.] (सं.) १-जो पीटा जाता हो। २-डाँटा जाता हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) ढोल। ढक्का।

तात [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिता। बाप। २-पूज्य व्यक्ति। गुरु। ३-एक प्रेमपूर्ण संबोधन जो भाई, बंधु, इष्ट मित्र, विशेषतः अपने से छोटे के लिए व्यहृत होता है। +[वि.] (हिं.) तपा हुआ। गरम।

तातगु [संज्ञा पु.] (सं.) चाचा।

तातन [संज्ञा पु.] (सं) खंजनपक्षी।

तातरी [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक पेड़ का नाम।

तातल [संज्ञा पु] (सं) १-पिता के तुल्य संबंधी। २-रोग। ३-लोहे का कांटा। ४-पाक। पक्वता।
[वि.] (सं.) तप्त। गरम।

ताता+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. ताती] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

ताताथेई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नृत्य मे एक प्रकार का बोल। २-नाचने में पैर के गिरने आदि का अनुकरण शब्द।

तातार [संज्ञा पु.] (फा.) मध्य एशिया का एक देश।

तातारी [वि.] (फा.) तातार देश का। तातार देश-सम्बन्धी।
[संज्ञा पु.] (फा.) तातार देश का निवासी।

ताति [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। लड़का।

तातील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) छुट्टी का दिन। छुट्टी। *तातील मनाना*-छुट्टी के दिन विश्राम लेना।

तात्कालिक [वि.] (सं.) १-तत्काल या तुरंत का। २-उसी समय का। इमिजियट। *तात्कालिक अर्पण-तुरंत का होने वाला वितरण। इमिजियट-डिलीवरी। तात्कालिक अवतार-तुरन्त का उत्पन्न। इमिजियट-डिसैन्ट। तात्कालिक आशंका-आसन्न आशंका। इमिजियट-डेंजर।*

तात्पर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिप्राय। अर्थ। आशय। मतलब। २-तत्परता।

तात्पर्यक [वि.] (सं.) अर्थ या अभिप्राय बोधक।

तात्विक [वि.] (सं.) १-तत्त्व-संबंधी। तत्त्वज्ञान युक्त। ३-यथार्थ। वास्तविक।

तात्विकविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) विज्ञान की दो शाखाओं में से एक जिसमें कार्यों और कारणों के पारस्परिक संबंध बताने बाले तथा कार्यों का यथार्थ स्वरूप या तत्वों का विवेचन करने वाले विज्ञान आते हैं। पॉजिटिव-साइंस।

तात्स्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वस्तु के बीच दूसरी वस्तु रहने का भाव। २-एक व्यंजनात्मक उपाधि जिसमें जिस वस्तु का कथन होता है उस वस्तु में रहने वाली वस्तु का ग्रहण होता है। जैसे—सारी पाठशाला भ्रमणार्थ गई है से अभिप्राय पाठशाला के छात्रों से है।

ताथेई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ताताथेई'।

तादर्थिक [वि.] (सं.) उसी अर्थ का। उसी प्रकार का।

तादर्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) तदर्थता। तन्निमित्त।

तादात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर उसी के रूप का हो जाना। तत्स्वरूपता। २-देख समझ कर यह कहना कि यह वही है। पहचानना। आईडेन्टिफिकेशन।

तादाद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) संख्या। गिनती।

तादुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेंढक।

तादृक्ष [वि.] (सं.) उसी प्रकार का। उसी के समान।

तादृग्विध [वि] (सं.) उसी प्रकार का।

तादृश [वि.] (सं.) [स्त्री. तादृशी] उसके समान। वैसा।

तादृशी [वि.] (सं.) [स्त्री प्र.] उसी के समान। वैसी।

ताधर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक धर्म। एकनिष्ठता।

ताधा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'ताताथेई'।

तान [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तानने की क्रिया या भाव। खींच। फैलाव। विस्तार। २-संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार। ३-ज्ञान का विषय। ४-कंबल का ताना। ५-लहर। तरंग। *तान उड़ाना*-अलापना। गीत गाना। *तान तोड़ना*-लय को खींचकर झटके सहित स्वर पर विराम देना। *किसी पर तान तोड़ना*-किसी को लक्ष्य करके खेद अथवा क्रोधपूर्वक बात कहना। *तान भरना*, तानना, तान-अलापना। *तान की जान*-सौ बात की बात। सारांश।

तानतरंग, तानतरङ्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तान की लहर। अलापचारी।

तानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गुण अथवा शक्ति जिसके द्वारा वस्तुएँ अथवा उनके अंश आपस में दृढ़तापूर्वक जुड़े, सटे या मिले रहते हैं। टेनैसिटी।

तानना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु को उसकी पूरी लम्बाई या चौड़ाई तक बढ़ा ले जाना। फैलाने के निमित्त जोर से खींचना। २-बलपूर्वक बढ़ाकर पसारना। किसी सिकुड़ी अथवा लिपटी वस्तु को खींचकर फैलाना। ३-ऊपर फैलाकर बांधना। ४-मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना। ५-जेलखाने भेजना।
तानकर-जोर से बलपूर्वक। *तानकर सोना*-खूब हाथ-पैर फैलाकर निश्चिन्त सोना। आराम से सोना।

तानपूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) सितार के आकार का एक बाजा जिसे गवैये कान के पास लगाकर गाने के समय छेड़ते जाते हैं।

तानवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तानाबाना'।

तानसेन [संज्ञा पु.] अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध गायक जिसकी जोड़ का आजतक कोई नहीं हुआ।

ताना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लम्बाई के बल होता है। २-दरी कालीन बुनने का करघा।
[क्रि. स.] (हिं.) १-ताव देना। तपाना। गरम करना। २-पिघलाना। ३-तपाकर परीक्षा करना। ४-जांचना। आजमाना। ५-मूंदना।
[संज्ञा पु.] (अ.) व्यंग्य। आक्षेप वाक्य। बोलीठोली।

तानापाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यर्थ बारबार

आनाजाना।

नाबाना [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े की बुनावट में लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत।

गीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सामान्य गाना। साधारण गायन।

शाह [संज्ञा पु.] [संज्ञा पु.] (फा.) अपने अधिकारों का मनमाना दुरुपयोग करने वाला व्यक्ति।

शाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अधिकारों का मनमाना उपयोग। २-राज्य-प्रबन्ध की वह व्यवस्था जिसमें समस्त अधिकार एक ही व्यक्ति के अधिकार में हो।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लम्बाई के बल हो।

क [संज्ञा पु.] (सं.) भुट्टे का पौधा।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी का भँवर। २-वायु का भँवर।

+ (देश.) वह जमीन का टुकड़ा जिसमें खेत हों। चक।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-तनुज। पुत्र। २-एक का नाम।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-वह प्राकृतिक शक्ति जिसके प्रभाव से वस्तुएं गरम होकर पिघल अथवा भाप के रूप में हो जाती है और जिसका अनुभव गरमी या जलन के रूप में होता है। उष्णता। गरमी। २-आँच। लपट। ३-ज्वर। बुखार। ४-कष्ट। दुःख। ताप तीन प्रकार का माना गया है-आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ५-मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख।

[वि.](सं.) १-ताप उत्पन्न करने वाला। २-रजोगुण। ३-ज्वर। बुखार।

क्रम [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी स्थान विशेष या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अवस्थाओं में घटता-बढ़ता रहता है।

क्रमयंत्र, तापक्रमयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी स्थान अथवा पदार्थ के घटने या बढ़ने वाले तापक्रम का पता चलता है। बैरोमीटर।

चालक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पदार्थ जिसमें ताप एक छोर से दूसरे छोर व्याप्त हो जाता जैसे—धातु।

चालकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पदार्थों का वह गुण जिसके द्वारा गरमी या ताप उनके एक छोर से चलकर दूसरे छोर तक पहुँचता या उसमें व्याप्त होता है।

तरंग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रीष्मऋतु में गरमी की वह तरंग जो कुछ विशिष्ट प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होकर किसी दिशा में बढ़ती है और जिस कारण दो-चार दिनों के लिए गरमी साधारण से बहुत अधिक हो जाती है। हीटवेव।

तिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिल्ली या पिलही बढ़ने और सूजने का रोग।

तापती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य की कन्या तापी सत्पुड़ा पहाड़ से निकलने वाली एक पवित्र नदी।

तापत्य [संज्ञा पु.] (सं.) तापती के वंशज कुरु।

ताप-त्रय [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रकार के ताप या दुःख—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

तापदुःख [संज्ञा पु.] (सं.) पातंजलदर्शन के अनुसार एक प्रकार का दुःख।

तापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताप देने वाला। २-सूर्य। ३-कामदेव के पांच बाणों में से एक। ४-सूर्यकान्तमणि। ५-आक। मदार। ६-ढोल (बाजा)। ७-तंत्र के अनुसार एक प्रयोग जिससे शत्रु को पीड़ा होती है

तापना [क्रि. अ.] (हिं.) आग की आँच से अपने को गरम करना। अपने को आग के सम्मुख गरमाना। [क्रि. स.] १-तपाना। गरम करना २-फूंकना। ३-उड़ाना। नष्ट करना।

तापनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम [वि.] (सं.) १-गरम होने योग्य। २-सुवर्णमय।

तापनीय [वि.] (सं.) तापने योग्य।

ताप-मान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या शरीर की गरमी अथवा सरदी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है।

ताप-मान-यंत्र [यन्त्र] [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ताप-मापक-यंत्र'।

ताप-मापक-यंत्र, ताप-मापक-यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक यन्त्र जिसके द्वारा ज्वर के समय शरीर का ताप नापकर देखा जाता है।

तापयिष्णु [वि.] (सं.) तापने के योग्य। तापनीय

तापल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) क्रोध।

तापश्चित [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ का नाम।

तापस [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. तापसी] १-तपस्वी। तप करने वाला। २-तमाल। तेजपात। ३-दमनक। ४-एक प्रकार की ईख। ५-बक। बगला।

तापसक [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण या छोटा तपस्वी। वह तपस्वी जिसकी तपस्या कम हो

तापसज [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपत्ता।

तापसतरु [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगोटवृक्ष।

तापसद्रु म [संज्ञा पु.] (सं.) इंगुदीवृक्ष।

तापसप्रिय [वि.] (सं.) १-जो तपस्वियों को प्रिय हो। १-जिसे तपस्वी प्रिय हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-इंगुदीवृक्ष। २-चिरोंजी का पेड़।

तापसप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाख। अंगूर या मुनक्का।

तापसवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगोट का पेड़। इंगुदीवृक्ष।

तापसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुनक्का। दाख। द्राक्षा।

तापसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तपस्या करने वाली स्त्री। २-तपस्वी की स्त्री।

तापसेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की ईख या गन्ना।

तापस्य [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी का धर्म।

तापस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी प्रकार की उष्णता पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना। २-गरम बालू, नमक, वस्त्र, हाथ, आग की आँच आदि से सेंककर पसीना निकालने की क्रिया।

तापहर [वि.] (सं.) तापनाशक। ज्वर को दूर करने वाला।

तापहरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उड़द की बनी हुई बड़ी और चावल की बनी हुई खिचड़ी। (भावप्रकाश)।

तापा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मछली मारने का तख्ता। २-मुरगी का दरबा।

तापायन [संज्ञा पु.] (सं.) वाजसनेयी शाखा का एक भेद।

तापिंछ [संज्ञा पु.] देखो 'तापिंज'।

तापिंज, तापिञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोनामक्खी २-श्यामताल।

तापिच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) तमालवृक्ष।

तापित [वि.] (सं.) १-जो तपाया गया हो। तापयुक्त। २-दुखित। पीड़ित।

तापी [वि.] (सं.) १-ताप देने वाला। २-जिसमें ताप हो। [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य की एक कन्या। २-तापती नामक नदी। ३-जमुना नदी।

तापीज [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामक्खी नामक एक धातु।

तापेंद्र, तापेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सूय।

तापेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-एक तीर्थ का नाम।

ताप्य [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामक्खी नामक एक धातु।

ताप्यक [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामक्खी (धातु)।

ताफ्ता [संज्ञा पु.] (फा.) एक चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-ताप। गरमी। २-चमक। आभा। दीप्ति। ३-सामर्थ्य। शक्ति। मजाल। ४-सहन करने की शक्ति।

ताबड़तोड़ [क्रि. वि.] (हिं.) लगातार। निरन्तर। बारबार।

ताबा [वि.] (हिं.) देखो 'ताबे'।

ताबूत [संज्ञा पु.] (अ.) वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़ी जाती है।

ताबे [वि.] (अ.) १-वशीभूत। अधीन। मात-

हत । २-आज्ञानुवर्ती । हुकम का पाबन्द ।

ताबेदार [वि] (अ) आज्ञाकारी । हुकम का पाबन्द ।
[संज्ञा पु] नौकर । सेवक । अनुचर ।

ताबेदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सेवकाई । नौकरी । २-सेवा । टहल ।

ताम [संज्ञा पु.] (सं.) १-दोष । विकार । २-मनोविकार । चित्त का उद्वेग । व्याकुलता । बेचैनी । ३-दुःख । क्लेश । व्यथा । कष्ट । ४-ग्लानि ।
[वि] १-भीषण । डरावना । भयंकर । २-व्याकुल । हैरान । दुःखी ।
[संज्ञा पु.] (हि.) १-क्रोध । रोष । गुस्सा । २-अन्धकार । अंधेरा ।

तामजान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी खुली पालकी जो लम्बी कुरसी के आकार की होती है और जिसे कहार उठाकर चलते हैं ।

तामजाम [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ की बनी खुली पालकी जो लम्बी कुरसी के आकार की होती है । तामजान ।

तामड़ा [वि.] (हिं.) तांबे के रंग का । ललाई लिये हुए भूरा ।
[संज्ञा पु.] १-ऊदे रंग का एक प्रकार का पत्थर या नगीना । २-एक प्रकार का कागज । ३-गंजे की खोपड़ी । +४-स्वच्छ आकाश ।

तामना+ [क्रि. स.] (देश.) खेत जोतने से पहले खेत की घास उखाड़ना ।

तामर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी । २-घी ।

तामरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल । २-सोना । ३-तांबा । ४-धतूरा । ५-सारस । ६-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो जगण और एक यगण होता है ।

तमरसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमलिनी । पद्मिनी ।

तामलकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूआँवला । भूम्यामलकी ।

तामलिंग [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम ।

तामलूक [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाल के एक प्रदेश का नाम ।

तामलेट [संज्ञा पु.] (हिं.) टीन का गिलास ।

तामलोट [संज्ञा पु.] (हिं.) टीन का बना गिलास

तामस [वि.] (सं.) [स्त्री. तामसी] तमोगुण वाला । तमोगुण युक्त । [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प । सांप । २-खल । ३-उल्लू । ४-क्रोध । गुस्सा । ५-अंधकार । अन्धेरा । ६-अज्ञान । मोह । ७-चौथे मनु का नाम । ८-एक प्रकार का अस्त्र । ९-तेतीस प्रकार के केतु जो सूर्य और चन्द्रमा में दीख पड़ते हैं ।

तामसकीलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के केतु जो राहु के पुत्र माने जाते हैं जो संख्या में तेंतीस हैं । यदि यह सूर्यमंडल में दृष्टिगत होते हैं तो इनका फल अशुभ और चन्द्रमंडल में दिखाई पड़ने की अवस्था में शुभ माने जाते हैं ।

तामसमद्य [संज्ञा पु.] (सं.) कई बार की खींची या चुआई हुई शराब ।

तामसवाण [संज्ञा पु.] (सं.) एक शास्त्र का नाम ।

तामस-सन्यासी [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष की कामना से गृहस्थाश्रम त्याग कर जंगल-जंगल घूमकर तपस्या करने वाला व्यक्ति ।

तामसिक [संज्ञा पु.] तमोगुण का कार्य ।

तामसी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] तमोगुण वाली ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अन्धेरी रात । २-महाकाली । ३-जटामांसी । बालछड़ । ४-एक प्रकार की माया ।

तामा+ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तांबा' ।

तामिल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भारत की दक्षिण प्रांत की एक जाति जो आधुनिक मद्रास प्रान्त के अधिकांश भाग में निवास करती है । यह द्रविड़ जाति की ही एक शाखा है । २-तामिल लोगों की भाषा । द्रविड़भाषा ।

तामिस्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नरक का नाम जिसमें सदा घोर अन्धकार छाया रहता है । २-क्रोध । ३-द्वेष । ४-भोग की इच्छापूर्त्ति में बाधा पड़ने से जो क्रोध उत्पन्न होता है उसे तामिस्र कहते हैं (भागवत) ।

तामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तांबे का बना तसला । द्रव पदार्थों को नापने का एक पात्र ।

तामील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-(आज्ञा का) पालन । २-(सूचना आदि का) अभीष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना ।

तामीली (अ.) देखो 'तामील' ।

तामेसरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का तामड़ा रंग जो गेरू के मेल से बनता है ।

तामोर* [संज्ञा पु.] देखो 'तांबूल' ।

ताम्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांबा । २-एक प्रकार का कोढ़ ।

ताम्रकंटक [कण्टक] [संज्ञा पु.] (सं.) लाल खैर का पेड़ ।

ताम्रक [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा ।

ताम्रकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तमेरा । तांबे के बरतन बनाने वाली ।

ताम्रकार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कसेरा-जाति ।

ताम्रकिलि [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी नामक कीड़ा ।

ताम्रकुंड, ताम्रकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह तांबे का पात्र जिसमें पूजा का जल गिराया जाता है ।

ताम्रकुट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) तमाकू का पेड़ ।

ताम्रकूट [संज्ञा पु.] (सं.) तमाकू का पेड़ ।

ताम्रक्रमि [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी नामक कीड़ा ।

ताम्रगर्भ [संज्ञा पु] (सं) तूतिया ।

ताम्रचक्षु [संज्ञा पु] (सं.) कपोत । कबूतर ।
[वि.] (सं.) लाल नेत्रों वाला ।

ताम्रचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुर्गा । २-कुकरौंधा नामक पौधा ।

ताम्रजाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सत्यभामा से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

ताम्रतनु [वि.] (सं.) जिसके शरीर का रंग तांबे के समान हो ।

ताम्रत्रपुज [संज्ञा पु.] (सं.) कांस्य । कांसा ।

ताम्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) लाल वर्ण । लाली ।

ताम्रदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखदुद्धि । अमर संजीवनी ।

ताम्रधातु [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा ।

ताम्रधूम्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तामड़ा । लाल रंग ।

ताम्रध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) मयूरध्वज के पुत्र का नाम जिन्होंने श्रीकृष्ण और अर्जुन को युद्ध में हराया था ।

ताम्रपक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम ।

ताम्रपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

ताम्रपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) ताम्रपत्र ।

ताम्रपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांबे की चादर का टुकड़ा जिसपर प्राचीनकाल में अक्षर खुदवा कर दानपत्र आदि लिखते थे । २-तांबे की चद्दर या तत्तर ।

ताम्रपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ताम्रपत्र' ।

ताम्रपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सिंहलद्वीप का प्राचीन नाम ।

ताम्रपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बावली । तालाब । २-दक्षिण देश की एक छोटी नदी जो मद्रास प्रांत के तिनवल्ली जिले से होकर बहती है ।

ताम्रपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) अशोकवृक्ष ।

ताम्रपाकी [संज्ञा पु.] (सं.) पाकर का पेड़ ।

ताम्रपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) तर्पण आदि करने का तांबे का पात्र या बरतन ।

ताम्रपादी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंसपदी नामक लता ।

ताम्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लाल फूल का कचनार ।

ताम्रपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल फूल का निसोत ।

ताम्रपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धातकी । का पेड़ । २-पाटल । पाडर का पेड़ ।

ताम्रफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंकोल वृक्ष । २-लाल रंग का फल ।

ताम्रमूला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जवासा । २-छुईमुई । लज्जालु । ३-किवाँच । कौंच ।

ताम्रयुग [संज्ञा प.] (सं.) १-पुरातत्व के

किसी देश अथवा जाति के इतिहास का समय जब वह पहले पहल ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। यह प्रस्तर युग के पश्चात तथा लोहयुग से पहले पड़ता है। ब्राजएज।

[संज्ञा पु.] (सं.) मेदनीपुर (बंगाल) जिले के तामलूक या तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।

[संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ताम्रपत्र'।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल रंग। २-

[संज्ञा पु.] (सं.) ...के अनुसार शरीर पर की चौथी त्वचा। २-पुराण के अनुसार भारतवर्ष के ...एक द्वीप। सिंहलद्वीप। सीलोन।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुड़हर का पेड़।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

[संज्ञा पु.] (सं.) कुलथी।

ताम्रवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) कुलथी।

ताम्रवृन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) कुलथी।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-कुलथी। २-लाल ...

[संज्ञा पु.] (सं.) मुरगा। कुक्कुट।

[संज्ञा पु.] (सं.) लालचन्दन का वृक्ष।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल खैर। लाल-चन्दन का पेड़।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिहैली पीपल। ...दक्षप्रजापति की कन्या।

[संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

[वि.] (सं.) जिसकी आँखें लाल हों।

[संज्ञा पु.] (सं.) लालचन्दन।

[वि.] (सं.) जिसमें लाल रंग की आभा हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) काँसा।

[संज्ञा पु.] (सं.) कसेरा। [वि.] ताँबे का बना हुआ।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुंजा। घुँघची।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का बाजा।

[संज्ञा पु.](सं.) पारद के योग से बनी ताँबे की भस्म।

[संज्ञा पु.] (सं.) काँस्यकार। कसेरा।

[संज्ञा पु.](सं.) जिसके ओंठ लाल रंग के हों।

[संज्ञा पु.](हिं.) १-ताप। गरमी। २-... ३-धूप।

[सर्व.] देखो 'ताहि'।

[संज्ञा पु.] देखो 'तादाद'।

(फा.) १-नाचने गाने वाली वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २-वेश्या। रंडी

[संज्ञा पु.] (सं.) छत्रछाया। रक्षा। शरण

[क्रि. स.] (हिं.) तपाना। गरम करना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. ताई] बाप का बड़ा भाई।

तार [संज्ञा पु.] (सं.) १-रूपा। चांदी। २-तपी धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। ३-धातु का वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है। टेलिग्राफ। ४-इस प्रकार भेजा या आया हुआ समाचार *टेलिग्राम*। ६-सूत। तागा। तंतु। सूत्र। ६-सुतड़ी। ७-अखंड परम्परा। सिलसिला। ८-कार्य-सिद्धि का योग या सुभीता। युक्ति। ढब। प्रणव। ओंकार। १०-शुद्ध मोती। ११-तारा। नक्षत्र। १२-गुरु से विधिपूर्वक वेदाध्ययन द्वारा प्राप्त सिद्धि। १३-शिव। १४-विष्णु। १५-संगीत में एक सप्तक। (सात स्वरों का समूह)। जिसके स्वरों का उच्चारण कंठ से उठकर कपाल के अभ्यंतर स्थानों तक होता है। १६-आंख की पुतली। १७-अट्ठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

*[संज्ञा पु.] (हिं.) १-ताल। मजीरा। २-करताल नाम का बाजा। ३-कान का एक गहना। तरौना। ४-तल। सतह।

तार टूटना-लगातार, चलता हुआ काम बन्द होना। *तार-तार करना*-धज्जियाँ-धज्जियाँ या सूत-सूत अलग करना। *तार देखना*-पक्की चाशनी का चुटकी पर तार बनाकर देखना। *तार देना*-तार या टेलिग्राम द्वारा संवाद भेजना। *तार बंधना*-सिलसिला या क्रम जारी होना। *तार बाधना*-निरन्तर करते जाना।

तार बैठना, जमना-काम बनाने में सुभीता होना। *तार लगना*-क्रम बँधना, जारी होना। *तार लगाना*-सिलसिला या क्रम जारी होना। [वि.] (सं.) १-जिसमें किरणें फूटी हों। २-निर्मल। स्वच्छ।

तारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तारा। नक्षत्र। आंख ३-आंख की पुतली। ४-तारने वाला। भवसागर से पार करने वाला। ५-कर्णधार। मल्लाह। ६-वह जो पार उतरे। ७-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण और एक गुरु होता है। ८-राम का षडक्षर मन्त्र जिसे गुरु शिष्य के कान में कहता है (ओं रामायनमः)।

तारकजित [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

तारकटोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक राग जिसमें ऋषभ तथा कोमल स्वर लगाते हैं।

तारकतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) गयातीर्थ।

तारकब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) 'ओंरामायनमः' यह मन्त्र।

तारकमानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धनुष के आकार का लोहे का तार लगाकर एक औजार जिससे नगीने काटे जाते हैं। २-जेबीघड़ी की महीन कमानी।

तारकश [संज्ञा पु.] (हिं.) धातु का तार खैंचने वाला।

तारकशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तार खींचने का काम।

तारका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नक्षत्र। तारा। २-आंख की पुतली। ३-इन्द्रवारुणी। ४-बाली की स्त्री तारा। ५-नाराच नामक छंद का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो ताड़का।

तारकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) ताराकासुर का बड़ा लड़का।

तारकामय [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

तारकायण [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

तारकासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम जो शिव के पुत्र कार्त्तिकेय के हाथों मारा गया था।

तारकिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] तारों से भरी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात्रि। रात।

तारकित [वि.] (सं.) तारायुक्त। तारों से भरा हुआ।

तारकिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) तारों से परिपूर्ण रात्रि

तारकी [वि.] (सं.) [स्त्री. तारकिणी] तारकित। तारायुक्त।

तारकूट [संज्ञा पु.] (हिं.) चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु।

तारकेश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तारकेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक रसौषध।

तारकोल [संज्ञा पु.] देखो 'अलकतरा'।

तारक्षिति [संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता के अनुसार पश्चिम दिशा में एक देश जहाँ म्लेच्छों का निवास है।

तारख* [संज्ञा पु.] (हिं.) गरुड़।

तारखी* [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा।

तारघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ से तार के द्वारा संवाद भेजे जाते हैं।

तारघाट [संज्ञा पु.] (हिं.) कार्यसिद्धि का योग। मतलब निकालने का सुबीता। आयोजन।

तारचरबी [संज्ञा पु.] (देश.) मोमचीना का पेड़

तारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-(दूसरे को) पार उतारने की क्रिया। २-उद्धार। निस्तार। ३-तारने वाला। उद्धार करने वाला। ४-विष्णु। ५-साठ संवत्सरों में से एक।

तारणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौका। नाव।

तारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कश्यप की एक पत्नी

तारतंडुल, तारतण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद ज्वार।

तारतम्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-न्यूनाधिक्य। एक दूसरे की तुलना में कमीबेशी का विचार। २-कमीबेशी या ऊँच-नीच के विचार से क्रम। उत्तरोत्तर न्यूनाधिक्य के अनुसार व्यवस्था। ३-गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तारतम्यबोध [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक वस्तुओं में से अच्छे-बुरे की पहिचान। सापेक्ष सम्बन्ध ज्ञान।

तारतार [वि.] (हिं.) जिसकी धज्जियां अलग-अलग हो गई हों।

[संज्ञा पु.] (सं.) सांख्य के अनुसार एक गौण सिद्धि।

तारतोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कारचोबी का काम।

तारदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष।

तारन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'तारण'। २-छत या छाजन का ढालुआं भाग। ३-छप्पर का वह बांस जो काँड़ियों के नीचे रहता है।

तारना [क्रि. स.] (हिं.) १-पार लगाना। पार करना। २-भवबाधा दूर करना। उद्धार करना। निस्तार करना।

तारनाद [संज्ञा पु.] (सं.) जोर की आवाज। उच्चनाद।

तारपीन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।

तारपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कुंद का पेड़।

तारबर्क़ी [संज्ञा पु.] (उर्दू.) बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने वाला तार।

तारमाक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) रूपामक्खी नाम की उपधातु।

तारयिता [संज्ञा पु.] (हिं.) [तारयित्री] तारने वाला। उद्धार करने वाला।

तारयित्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तारने वाली। उद्धार करने वाली।

तारल [वि.] (सं.) १-सन्तुष्ट। २-तरल।

तारल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-तरलता। द्रवत्व। २-चंचलता। चपलता।

तारवायु [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत जोर से बहने वाली हवा।

तारविमला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रूपामक्खी नामक उपधातु।

तारशुद्धिकर [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक धातु जिससे चाँदी साफ की जाती है।

तारसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

तारहार [संज्ञा पु.] (सं.) बड़े-बड़े मोतियों का हार।

तारा [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्षत्र। सितारा। २-आँख की पुतली। ३-सितारा। भाग्य। *तारे गिनना*-बेचैनी से रात काटना। *तारे खिलना*-तारे निकालना या टिम-टिमाना। *तारे छिटकना*-स्वच्छ आकाश में तारे टिमटिमाना। *तारे तोड़ लाना*-१-बड़ी कठिनाई का कार्य करना। २-चालाकी का काम करना। *तारे दिखाना*-१-छठी के दिन जच्चा को बाहर लाकर तारे दिखाना। *तारे दिखाई दे जाना*-दुर्बलता के कारण आंखों के आगे तिरमिरे छा जाना। *तारे सी आँखें हो जाना*-स्वच्छ चमकती आँखें होना। *तारों की छाँह*-बहुत सबेरे। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार दस महाविद्याओं में से एक। २-जैनों की एक शक्ति। ३-बालि की पत्नी (रामायण)। ४-सिर में बांधने का चीरा। ५-बृहस्पति की पत्नी जिसे चन्द्रमा ने रख लिया था। +[संज्ञा पु.] देखो 'ताला'।

ताराकूट [संज्ञा पु.] (सं.) वर कन्या के शुभाशुभ फल को सूचित करने वाला एक कूट (फलित ज्योतिष)।

ताराक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) तारकाक्ष नामक दैत्य।

ताराग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पांच ग्रहों का समूह।

ताराचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक प्रकार का चक्र।

ताराज [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-लूटपाट। २-नाश। ध्वंस। बरबादी।

तारात्मक-नक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश में क्रांतिवृत के उत्तर और दक्षिण ओर के तारों का समूह जिनमें भरणी, अश्विनी आदि हैं।

तारादेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक महाविद्या का नाम।

ताराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-शिव। ३-बृहस्पति। ४-बालि और सुग्रीव।

ताराधीश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ताराधिप'।

तारानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-बृहस्पति। ३-बालि। ४-सुग्रीव।

तारापति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तारानाथ'।

तारापथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

तारापीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) २-चन्द्रमा। २-अयोध्या के एक राजा का नाम। ३-एक काश्मीर नरेश का नाम।

ताराभ [संज्ञा पु.] (सं.) नारद।

ताराभूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

ताराभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

तारामंडल, तारामण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्षत्रों का समूह या घेरा। २-एक प्रकार की आतशबाजी।

तारामंडूर, तारामण्डूर [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक द्रव्यों के योग से बनने वाला एक विशेष प्रकार का मंडूर। (वैद्यक)।

तारामयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तारास्वरूप।

तारामृग [संज्ञा पु.] (सं.) मृगशिरानक्षत्र।

तारायण [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

तरारि [संज्ञा पु.] (सं.) विटमाक्षिक नामक उपधातु।

तारावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इक्ष्वाकुवंशी राजा चन्द्रशेखर की पत्नी का नाम।

तारावर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) ताराओं का
उल्कापात।

तारावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
कन्या का नाम।

तारिक [संज्ञा पु.] (सं.) नदी पार करने का
या महसूल। उतराई।

तारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ताड़ी नामक
२-तारा का स्त्री-रूप। जैसे-चलचित्र
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तारका'।

तारिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. अ.] तारने
उद्धार करने वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
देवी।

तारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार
चिड़िया। २-निद्रा। समाधि। ध्यान।
*+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो
२-देखो 'ताड़ी'।

तारीक [वि.] (फ़ा.) १-काला। स्याह।
धुँधला। अँधेरा।

तारीकी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-स्याही।
कार।

तारीख [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-महीने का
दिन (२४ घंटे का)। तिथि।
वह तिथि जिसमें कोई विशेष घटना
नियत। तिथि। ४-तवारीख। इतिहास।
तारीख डालना-१-तिथि-वार आदि
२-दिन नियत करना। *तारीख*
कार्य के लिए पहले से नियत दिन
आगे कोई दिन नियत होना।
तिथि नियत होना।

तारीफ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लक्षण।
२-विवरण। वर्णन। ३-बखान।
४-प्रशंसा की बात।।

तारुण [वि.] (सं.) छोटी अवस्था का।

तारुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) यौवन। जवानी।

तारू+ [संज्ञा पु.] देखो 'तालू'।

तारेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-तारा या
पुत्र अंगद। २-बृहस्पति की स्त्री तारा
बुध।

तार्किक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तर्कशास्त्र
वाला। २-दार्शनिक। तत्ववेत्ता।

तार्क्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कश्यप।
पुत्र गरुड़।

तार्क्षज [संज्ञा पु.] (सं.) रसांजन।

तार्क्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पातालगरुड़ी

तार्क्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृत्तसुर के
२-गरुड़। ३-गरुड़ के बड़े भाई
घोड़ा। ५-रसांजन। ६-सर्प।
का शालवृक्ष। ८-एक पर्वत का
महादेव। १०-सोना। स्वर्ण। ११-

तार्क्ष्यकेतन [संज्ञा पु.] (सं.)
विष्णु।

[संज्ञा पु.](सं.) रसोत। रसांजन।

[संज्ञा पु.](सं) गरुड़ध्वज। २-विष्णु

[संज्ञा पु.](सं) एक प्रकार का साल

[संज्ञा पु](सं.) रसांजन। रसोत।

[संज्ञा स्त्री](सं) एक वनलता का नाम।

[वि](सं) घास से सम्बन्ध रखने वाला। का बना हुआ। घास से उत्पन्न।

[वि](सं) तृतीय। तीसरा।

संज्ञा पु.] (सं) तृपा नामक लता से हुआ वस्त्र।

पु](सं) १-हाथ का तल। करतल। २-करतलध्वनि। ताली। ३-नृत्य में उसके काल और क्रिया का परि- बीच बीच में हाथ पर हाथ मार करते जाते हैं। ४-जांघ या बाहु हथेली मारकर उत्पन्न किया हुआ के पत्थर या कांच का एक मंजीरा या झांझ नाम का बाजा। ८-ताड़ का पेड़ या फल। ९- १०-बेल। बिल्वफल। ११- कान फटफटाने का शब्द। १२- एक नाप। १३-ताला। १४-तल- की मूठ। १५-दुर्गा के सिंहासन का १६-महादेव। १७-एक नरक का १८-डगण के दूसरे भेद का नाम एक गुरु और एक लघु का होता है)।

बेताल-१-जिसका ताल ठिकाने न हो। २-अवसर या बिना अवसर के। मौके बे ताल से बेताल होना-ताल के नियम विरुद्ध जाना। ताल ठोंकना-लड़ने के ललकारना।

पु.](हिं.) जलाशय। तालाब।

[संज्ञा पु.](सं.) तालमूली। मुसली।

[संज्ञा पु] देखो 'तअल्लुक'।

पु.](सं.) १-हरताल। २-ताला। ३- चन्दन।

[संज्ञा पु.](सं.) बीजापुर के पास का प्रदेश जिसे आजकल तालीकोट कहते हैं।

[संज्ञा पु.](सं.) ताड़ का कोमल पत्ता।

[संज्ञा पु.](सं.) हलदी का पीला रंग।

[संज्ञा स्त्री.](सं) ताड़ी। तालरस।

[संज्ञा पु.](हिं) झाँझ बजाकर भजन वाला।

[संज्ञा पु.](सं) १-वह जिसकी पताका पर ताड़ के पेड़ का चिह्न हो। २-भीष्म। ३-

[संज्ञा पु.](सं) एक औषध जो कुष्ट आदि में दी जाती है।

तालक्रोस [संज्ञा पु](सं.) एक वृक्ष का नाम।

तालक्षीर [संज्ञा पु.](सं.) खजूर या ताड़ के रस की बनी हुई चीनी।

तालगर्भ [संज्ञा पु.](सं.) ताड़ का गूदा।

तालचर [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रदेश का नाम। २-उक्त देश का निवासी।

तालजटा [संज्ञा स्त्री](सं.) तालवृक्ष की जटा।

तालजंघा, तालजङ्घा [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-उस देश का निवासी। ३-एक यदुवंशी राजा।

तालरंग, तालरङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का बाजा जिससे ताल दिया जाता है।

तालध्वज [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जिसकी ध्वजा या पताका पर ताड़ के पेड़ का चिह्न हो। २-भीष्म। ३-बलराम। ४-एक पर्वत का नाम।

तालनवमी [संज्ञा स्त्री.](सं.) भाद्रशुक्ला नवमी

ताल-पत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-ताड़वृक्ष का पत्ता जिसका व्यवहार प्राचीन काल में ग्रंथ आदि लिखने के लिए कागज के समान होता था। २-कान में पहनने का गहना। तरकी।

तालपत्रिका [संज्ञा स्त्री.](सं) तालमूली। मुसली।

तालपत्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) मूसाकर्णी। मूसाकानी बूटी।

तालपर्ण [संज्ञा पु.](सं.) कपूरकचरी।

तालपर्णी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सोंफ। २-कपूरकचरी। तालमूली। मुसली। सोया नामक साग।

तालपुष्प [संज्ञा पु.](सं.) ताड़ के पेड़ की जटा।

तालपुष्पक [संज्ञा पु.](सं.) पुंडरिया। प्रपौंडरीक

तालबंद [संज्ञा पु.](हिं.) वह हिसाब जिसमें आय का प्रत्येक मद अलग-अलग दिखलाया जाता है।

तालबेन [संज्ञा पु.](हिं.) एक बाजा।

तालबैताल [संज्ञा पु.](हिं.) दो यक्ष या देवता जिनको राजा विक्रमादित्य ने वश में कर लिया था और वे सर्वदा इनकी सेवा में रहा करते थे।

तालभृत [संज्ञा पु.](सं.) बलराम।

तालमखाना [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का छोटा काँटेदार वृक्ष जिसके बीज औषधि में प्रयोग होते हैं। २-देखो 'मखाना'।

तालमर्दक [संज्ञा प.](सं.) एक प्रकार का बाजा।

तालमूलिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तालमूली'।

तालमूली [संज्ञा स्त्री.](सं.) मुसली।

तालमेली [संज्ञा पु.](हिं.) १-ताल और स्वर का सामंजस्य। २-उपयुक्त और ठीक संयोग या मेल। ३-उपयुक्त अवसर। अनुकूल संयोग *ताल मेल खाना या बैठना*-ठीक-ठीक संभोग होना।

तालयंत्र, तालयन्त्र [संज्ञा पु](सं.) एक प्रकार का यन्त्र जो नाक, कान और नाड़ी के शल्य निकालने में प्रयोग होता है।

तालरस [संज्ञा पु.](सं) ताड़ी। ताड़ के पेड़ का मद्य।

ताललक्षण [संज्ञा पु](सं.) तालध्वजा। बलराम

तालवन [संज्ञा पु.](सं.) १-ताड़ के पेड़ों का जंगल। व्रजमंडल के अन्तर्गत एक वन।

तालवही [वि.](सं.) वह बाजा जिससे ताल दिया जाय।

तालवृंत, तालवृन्त [संज्ञा पु.](सं.) १-ताड़ के पत्ते का पंखा। २-एक प्रकार का सोम।

तालवेणु [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का बाजा।

तालव्य [वि.](सं.) तालू-संबंधी।

[संज्ञा पु.](सं.) तालू से उच्चारण किया जाने वाला। जैसे-इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श आदि।

तालशस्य [संज्ञा पु.](सं.) ताड़ के फल के भीतर का गूदा।

तालसत्व [संज्ञा पु.](सं.) हरताल की भस्म।

तालमांस [संज्ञा पु.](हिं.) ताल के फल के भीतर का गूदा।

तालस्कंध, तालस्कन्ध [संज्ञा पु.](सं.) एक अस्त्र जिसका नाम वाल्मीकि रामायण में आया है।

तालांक, तालाङ्क [संज्ञा पु.](सं) १-वह जिसका चिह्न ताड़ हो। २-बलराम। ३-एक साग विशेष। ४-आरा। ५-शुभ लक्षण वाला मनुष्य। ६-पुस्तक। ७-महादेव। शिव।

तालांकुर, तालाङ्कुर [संज्ञा पु.](सं.) मैनसिल।

ताला [संज्ञा पु.](हि.) १-लोहे, पीतल आदि का बना वह यन्त्र जो किवाड़, संदूक आदि बंद करने के लिए कुंडी में लगाया जाता है। २-लोहे का वह तवा जो योद्धा लोग युद्ध के समय छाती पर पहनते थे।

ताला जकड़ना-ताला लगाकर बंद करना। *ताला तोड़ना*-ताले में बंद माल लेने के लिए ताले को तोड़कर अलग करना। *ताला भिड़ना*-ताला बंद होना। *ताला भेड़ना*-ताला लगाना

तालाकुंजी [संज्ञा स्त्री](हि.) १-किवाड़ संदूक आदि बंद करने का यन्त्र। २-लड़कों का एक खेल।

तालाख्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) कपूरकचरी।

तालाब [संज्ञा पु.](हिं.) जल के उस चौड़े और गहरे भाग को कहते हैं जिसमें वर्षा का जल इकट्ठा होता है। जलाशय। सरोवर। पोखरा

तालि [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुनने की रुकावट। आघात।

तालिक [संज्ञा पु.](सं.) १-फैली हुई हथेली। २-चपत। तमाचा। ३-नत्थी या बाग

(फाइल) जिससे भिन्न विषयों के तालपत्र अथवा कागज बंधे हो। ४-तालपत्र या कागज का पुलिंदा।

तालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ताली। कुंजी। २-नीचे ऊपर लिखी हुई वस्तुओं का क्रम। सूची। फ़िहरिस्त। लिस्ट। ३-चपत। तमाचा। ४-तालमूली। ५-मजीठ।

तालित [संज्ञा पु.] (सं.) १-रंगा हुआ वस्त्र। २-डोरी। ३-रस्सी।

तालिब [संज्ञा पु.] (अ.) ढूँढ़ने वाला। तलाश करने वाला। चाहने वाला।

तालिबइल्म [संज्ञा पु.] (अ.) विद्यार्थी।

तालिम*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शय्या। बिस्तर। बिछौना।

तालियामार [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज या नाव का अगला पानी काटने वाला भाग। गलही।

तालिश [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़।

ताली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ताला खोलने और बंद करने का उपकरण। कुंजी। चाबी। २-ताड़ी। ३-तालमूली। ४-भूआँवला। ५-अरहर। ६-ताम्रवल्ली लता। ७-एक प्रकार का छोटा ताड़। ८-एक वर्णवृत्त। ९-मेहराव के बीचोंबीच का पत्थर।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोनों फैली हुई हथेलियों को परस्पर पीटने की क्रिया। २-दोनों फैली हुई हथेलियों को परस्पर पीटने से उत्पन्न शब्द। करतल-ध्वनि।

ताली पीटना या बजाना-उपहास या हँसी करना। *ताली बज जाना*-उपहास या निरादर होना। *एक हाथ से ताली नहीं बजती*-वैर या प्रीति एक ओर से नहीं होती।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा ताल। तलैया।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) पैर की बिचली ऊंगली का पोर अथवा ऊपरी भाग।

तालीका [संज्ञा पु.] (अ.) १-माल असबाब की जप्ती। मकान की कुर्की। २-कुर्क किये हुए असबाब की सूची।

तालीपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तालीशपत्र।

तालीम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शिक्षा।

तालीशपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तमाल या तेज पत्ते की जाति का एक वृक्ष। इसके पत्ते एक लम्बे डंठल के दोनों ओर लगते हैं। २-दो ढाई हाथ ऊँचा एक पौधा जो उत्तरीय भारत वङ्गाल और समुद्र के तटवर्ती प्रदेश में होता है।

तालीशपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) तलीशपत्र।

तालु [संज्ञा पु.] (सं.) तालू।

तालुकंटक, तालुकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चों के तालु में कांटे पड़ जाने का एक रोग।

तालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालू की नाड़ी।

तालुजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) घड़ियाल।

तालुपाक [संज्ञा पु.] (सं.) तालू पक जाने का एक रोग जो गरमी के कारण होता है।

तालुपात [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चों के तालू का एक रोग।

तालुपुप्ट [संज्ञा पु.] (सं.) तालुपाक रोग।

तालुयंत्र, तालुयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'तालुयन्त्र'।

तालुशाष [संज्ञा पु.] (सं.) तालु सूखने का एक रोग।

तालू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुख की भीतर की ऊपरी छत या भाग। २-खोपड़ी के नीचे का भाग। ३-घोड़ों का एक ऐब।

तालू उठाना-तुरंत के जन्मे बालक के तालू को दबाकर ठीक करना। *तालू में दाँत जमना*-बुरे दिन आना। *तालू से जीभ न लगना*-चुप न रहा जाना, कुछ न कुछ बोलते रहना। *तालू चटकना*-१-प्यास से मुंह सूखना। २-सिर में अधिक गरमी अनुभव होना।

तालूफाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों के तालु में होने वाला एक रोग।

तालूर [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का भंवर।

तालेवर [वि.] (हिं.) धनाढ्य। धनी।

ताल्लुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तअल्लुक'।

ताल्लुका [संज्ञा पु.] (अ.) बहुत से गांवों का समूह। बड़ा इलाका।

ताल्लुकेदार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-किसी ताल्लुके का जमींदार। अवध में एक विशेष प्रकार के जमींदार जिन्हें कुछ विशिष्ट अधिकार होते हैं।

ताल्लुकेदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) ताल्लुकेदार का पद।

ताल्वर्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) तालू में कांटा या अंकुर निकल आने का एक रोग।

ताव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु को तपाने या पकाने के निमित्त पहुँचाई जाने वाली गरमी। २-अधिकारमिश्रित क्रोध का आवेश। ३-शेखी या ऐंठ की झोंक। ४-किसी वस्तु के तत्काल होने की प्रबल कामना या इच्छा। ऐसी उत्कंठा जिसमें उतावलापन हो।

ताव आना-१-उचित गरम होना। २-गुस्सा आना। *ताव खाना*-१-आंच में गरम होना। २-क्रोध करना। *ताव खा जाना*-१-आंच के कारण अधिक गरम होना या जल जाना। २-खौलाई, तपाई या पिघलाई वस्तु का बहुत ठंडा होना। ३-कई बार गरम करना पड़ना। ४-क्रोध में आ जाना। *ताव चढ़ना*-१-ऐसी इच्छा होना कि काम तुरन्त हो जाय। २-कामोद्दीपन होना। *ताव दिखाना*-अभिमान भरा क्रोध दिखाना। *ताव देना*-१-आग पर गरम करना। २-अभिमान से मूँछें ऐंठना। *ताव पर*-इच्छा हो उसी समय। *ताव में आना*-घमड भरे क्रोध में आना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) कागज का एक तख्ता।

तावत् [क्रि. वि.] (सं.) १-उतनी देर तक। उस समय तक। २-वहां तक। उतनी दूर तक। ३-उतने परिमाण तक।

तावचंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की औषधि जिसका प्रयोग तब किया जाता है जब आग पर भी चाँदी के खोटेपन का पता नहीं

तावभाव [संज्ञा पु.] (हिं.) परिस्थिति। अवसर। मौका। [वि.] थोड़ा-सा। ज़रा-सा। हलका सा।

तावर*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तावरी'।

तावरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-ताप। दाह। जलन। २-धूप। घाम। बुखार। ज्वर। हरारत। मूर्च्छा। गरमी से आया हुआ चक्कर।

तावरो*+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-ताप। दाह। जलन। २-धूप। घाम। चक्कर। मूर्च्छा। गरमी।

तावल+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जल्दी। उतावलापन। हड़बड़ी।

तावला+ [वि] (हिं) जल्दीबाज।

तावलो+ [वि.] (हिं.) जल्दबाज।

तावा+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-देखो 'तवा'। वह कच्चा खपड़ा जिसके किनारे अभी न गए हों।

तावान [संज्ञा पु.] (फा) दंड। डांड़। हरजाना जो हानि को पूरा करने के लिये लिया जाय।

ताविष [संज्ञा पु.] देखो 'तावीष'।

ताविषी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देव कन्या। २-नदी। ३-पृथ्वी।

तावीज़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यंत्र, मंत्र या कवच जो किसी संपुट आदि के अन्दर रखकर गले में या बांह पर पहना जाय। २-धातु का संपुट जिसमें लिखित यंत्र आदि भरकर गले में या बांह पर पहनते हैं। जंतर।

तावीष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। २-स्वर्ग। ३-समुद्र।

तावीषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्र की कन्या।

तावुरि [संज्ञा पु.] (हिं.) वृषराशि।

ताश [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खेलने के लिए कार कागज का मोटा टुकड़ा जिस पर या काले रंग की बूटियां या तसवीरें रहती हैं। यह एक जोड़ी में ५२ होते हैं। एक प्रकार का ज़रदोज़ी का कपड़ा। छोटे-मोटे कागज़ की दफ्ती जिस पर सीने का तागा लपेटा हुआ होता है।

ताशा [संज्ञा पु.] (अ.) चमड़ा मढ़ा हुआ प्रकार का बाजा जो गले में लटका पतली कमचियों या लकड़ियों से बजाया जाता है।

[संज्ञा पु.] (देश.) भालू के गले में बंधी रस्सी जिसे पकड़कर कलन्दर उसको नचाते हैं।

[संज्ञा पु.] देखो 'ताशा'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीन बार की जोती हुई भूमि।

[संज्ञा स्त्री.] (अ.) असर। प्रभाव।

[सर्व.] (हिं.) उसका।

[सर्व.] (हिं.) उससे। तासों।

[सर्व.] (हिं.) उससे।

[संज्ञा पु.] (सं.) तस्करता। चौरी।

[वि.] (हिं.) उससे। तासों।

[अव्य.] (फा.) तिस पर भी। तौ भी।

[सर्व.] (हिं.) उसको। उसे।

[अव्य.] (हिं.) ताईं। तईं।

तिन्तिड़ [संज्ञा पु.] (सं.) इमली।

तिन्तिड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

तिन्तिड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

तिन्तिड़ीक [संज्ञा पु.] (सं.) इमली।

तिन्तिड़ीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

तिन्तिराङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) इस्पात।

तिन्तिलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

तिन्तिली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

तिन्दिश [संज्ञा पु.] (सं.) टिंडसी नामक तरकारी। टिंडा।

तिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदू का पेड़।

तिन्दुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेंदू का पेड़ २-कर्ष-प्रमाण। दो तोला।

तिन्दुकतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रज-मंडल के अन्तर्गत एक तीर्थ।

तिन्दुकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवतवल्ली।

तिन्दुकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेंदू का पेड़।

तिन्दुल [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदू का पेड़।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'तिया'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीसरा विवाह। २-वह पुरुष जिसका तीसरा विवाह हो रहा हो।

[संज्ञा पु.] (देश.) खेसारी नामक अन्न। केसारी।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेसारी। केसारी

[संज्ञा पु.] (हिं.) गहरी और गुप्तयुक्ति या चाल।

तिकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह जिसमें तीन कड़ियाँ हों। २-चारपाई आदि की वह बुनावट जिसमें एक साथ तीन-तीन रस्सियाँ हों।

तिकानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहियों को रोकने के लिए बैलगाड़ी में लगी हुई तिकोनी लकड़ी।

तिकार* [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत की तीसरी जुताई

तिकुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल या उपज की तीन बराबर राशि जिसमें एक अमींदार लेता है।

तिकोन* [वि.] (हिं.) देखो 'तिकोना'।
[संज्ञा पु.] देखो 'त्रिकोण'।

तिकोना [वि.] (हिं.) [स्त्री. तिकोनी] जिसमें तीन कोने हों। तीन कोनों का। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक नमकीन पकवान। समोसा। २-तिकोनी नक्काशी बनाने की छेनी।

तिकोनियाँ [वि.] (हिं.) तीन कोनों का। जिसमें तीन कोने हों।

तिक्का* [संज्ञा पु.] (हिं.) मांस की बोटी। लोथ *तिक्का बोटी करना*–टुकड़े-टुकड़े करना।

तिक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तीन बूटियों वाला ताश का पत्ता। २-गंजीफे का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हों।

तिक्ख* [वि.] (हिं.) १-तीखा। चोखा। तेज। २-तीव्रबुद्धि। तेज। चालाक।

तिक्त [वि.] (सं.) तीता। कड़ुवा। नीम या चिरायते के से स्वाद वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-पित्तपापड़ा। २-सुगंध। ३-कुटज। वरुणवृक्ष।

तिक्तकंदिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनकचूर। गंधपत्रा।

तिक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-परवल। पटोल। २-चिरायता। ३-काला खैर। ४-इंगुदी। ५-नीम। ६-कुटज।

तिक्तकांड, तिक्तकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

तिक्तका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुवा कद्दू। काकजंघा।

तिक्तगंधा, तिक्तगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वराहक्रांता। वाराहीकंद।

तिक्तगंधिका, तिक्तगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वराहक्रांता।

तिक्तगुंजा, तिक्तगुञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंजा। कररंज। करंजुआ।

तिक्तघृत [संज्ञा पु.] (सं.) कई तिक्त औषधियों के योग से बना हुआ एक घृत। (सुश्रुत)।

तिक्ततंडुला, तिक्ततण्डुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली। पीपर।

तिक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिताई। कड़ुआपन।

तिक्ततुंडी, तिक्ततुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुई तरई।

तिक्ततुंबी, तिक्ततुम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिक्तलौकी। कड़ुआ कद्दू।

तिक्तदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खिरनी। २-मेढ़ासिंघी।

तिक्तधातु [संज्ञा पु.] (सं.) (शरीर की भीतर की कड़ुवी धातु) पित्त।

तिक्तपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) ककोड़ा। खेखसा।

तिक्तपर्णिका, तिक्तपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कचरी। पेंहटा।

तिक्तपर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दूब। २-गिलोय। गुर्च। ३-हुलहुल। हुरहुर। ४-मुलेठी। जेठी मधु।

तिक्तपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठा।

तिक्तफल [संज्ञा पु.] (सं.) रीठा। निर्मल फल।

तिक्तफला [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-भटकटैया। २-कचरी। ३-खरबूजा।

तिक्तभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) परवल। पटोल।

तिक्तयवा [संज्ञा पु.] (सं.) शंखिनी।

तिक्तरोहिणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

तिक्तरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

तिक्तवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वालता। मूर्रा। चुरनहार।

तिक्तबीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुआ कद्दू। तितलौकी।

तिक्तशाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैर का पेड़। २-वरुण वृक्ष। ३-पत्र सुन्दर नामक शाक।

तिक्तसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोहित नामक घास। २-खैर का पेड़।

तिक्तांगा, तिक्ताङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पातालगारुड़ीलता। छिरेंटा।

तिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटकी। कटुका। २-पाठा। ३-यवतिक्तालता। ४-खरबूजा। ५-छिकनी या नकछिकनी नामक पौधा।

तिक्ताख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तितलौकी। कड़ुआ कद्दू।

तिक्तका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तितलौकी। कड़ुआ कद्दू। २-कुटकी। ३-काकमाची।

तिक्तिरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तूमड़ी नामक बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं।

तिच्छ*+ [वि.] (हिं.) १-तीक्ष्ण। तेज। २-चोखा। पैना।

तिच्छता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीक्ष्णता। तेजी।

तिख [वि.] (हिं.) तीन बार का जोता हुआ (खेत)।

तिखटी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'टिकठी'।

तिखरा [वि.] (हिं.) तीनबार का जोता हुआ। तिबाहा। (खेत)।

तिखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीक्ष्णता। तीखापन। तेजी।

तिखारना+ [क्रि स.] (हिं.) किसी बात को दृढ़ या पक्का करने के लिए तीन बार पूछना। पक्का करने के निमित्त कई बार कहलाना।

तिखूँटा [वि.] (हिं.) तीन कोने का। जिसमें तीन कोने हों। तिकोना।

तिगना [क्रि. स.] (देश.) देखना। दृष्टि डालना भांपना।

तिगित [वि.] (सं.) तेज।

तिगुना [वि.] (हिं.) [स्त्री. तिगुनी] तीनगुना। जितना हो उसका दो बार और अधिक।

तिगुनचा [वि.] (हिं.) देखो 'तिगना'।

तिग्म [वि.] (सं.) तीक्ष्ण। तेज। खरा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वज्र। २-पिप्पली। ३-पुरुवंशीय एक क्षत्रिय।

तिग्मकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

तिग्मकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुववंशीय एक राजा का नाम (भागवत)।

तिग्मजंभ, तिग्मजम्भ [वि.] (सं.) तेज मुंह वाला।

तिग्मता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीक्ष्णता।

तिग्मदीधिति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

तिग्ममन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

तिग्मरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

तिग्महेति [वि.] (सं.) तीक्ष्ण ज्वाला।

तिग्मांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

तिग्मायुध [संज्ञा पु.] (सं.) तेज हथियार।

तिघरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चौड़े मुंह का मिट्टी का बरतन जिसमें दूध-दही रखा जाता है।

तिचिया [संज्ञा पु.] (?) जहाज पर के वे आदमी जो आकाश में नक्षत्रों को देखते हैं।

तिच्छ* [वि.] (हिं.) देखो 'तीक्ष्ण'।

तिच्छन* [वि] (हिं.) देखो 'तीक्ष्ण'।

तिजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।

तिजवांसा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह उत्सव जो किसी स्त्री को तीन महीने का गर्भ होने पर उसके कुटुम्ब के लोगों द्वारा किया जाता है।

तिजहरिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तीसरा पहर। अपराह्न।

तिजहरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दिन का तीसरा पहर। अपराह्न।

तिजार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तीसरे दिन चढ़ने वाला ज्वर।

तिजारत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वाणिज्य। व्यापार। रोजगार। बनिज।

तिजारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीसरे दिन जाड़े से चढ़ने वाला ज्वर।

तिजिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पुरुष जिसका तीसरा विवाह हो।

तिजिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-राक्षस।

तिजोरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) लोहे का वह सुदृढ़ मोटी चद्दर का बना संदूक या छोटी अलमारी जिसमें रुपये आदि रखे जाते हैं। सेफ।

तिड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ताश का वह पत्ता जिसमें तीन बूटियां हों।

तिड़ीबिड़ी [वि.] (हिं.) अस्तव्यस्त। छितराया हुआ। तितरबितर।

तित* [क्रि. वि.] (हिं.) १-वहाँ। उस स्थान पर। २-उधर। उस ओर।

तितउ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलनी। छलनी। २-छाता।

तितना* [क्रि. वि.] (हिं.) उतना। उसके बराबर

तितरबितर [वि.] (हिं.) १-जो इधर उधर हो हो गया हो। छितराया या बिखरा हुआ। २-अव्यवस्थित। अस्तव्यस्त।

तितरोखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छोटी चिड़िया

तितली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक सुन्दर रंग-बिरंगे परों वाला उड़ना कीड़ा या फतिंगा जो फूलों पर मँडराता है। २-गेहूं आदि के खेतों में उगने वाली एक घास जिसकी पत्तियाँ पतली-पतली होती हैं। ३-रंग-बिरंगे और चमकीले वस्त्र धारण करने वाली चपल तरुणी।

तितलौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़ुवा कद्दू।

तितलौकी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कड़ुवा कद्दू। कटुतुंबी।

तितारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सितारे के प्रकार का बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं। २-फसल की तीसरी बार की सिंचाई। [वि.] (हिं.) तीन तार वाला। जिसमें तीन तार हों।

तितिंबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढकोसला। २-शेष। ३-परिशिष्ट। उपसंहार।

तितिक्ष [वि.] (सं.) सहनशील। क्षमाशील। [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

तितिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरदी गरमी या शारीरिक कष्ट सहने की शक्ति। सहिष्णुता। २-क्षमा। क्षान्ति।

तितिक्षित [वि.] (सं.) क्षमाशील। सहिष्णु। क्षान्त।

तितिक्षु [वि.] (सं.) क्षमाशील। सहिष्णु। क्षांत।

तितिभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रगोप। बीरबहूटी २-जुगनू।

तितिम्मा [संज्ञा पु.] (अ.) १-अवशिष्ट अंश। बचा हुआ भाग। २-परिशिष्ट। उपसंहार।

तितिर [संज्ञा पु.] (सं.) तीतर नामक पक्षी।

तितिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष में सात करणों में से एक। २-नांद नामक मिट्टी का बरतन।

तितीर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तैरने की अभिलाषा या कामना। २-तर जाने की इच्छा।

तितीर्षु [वि.] (सं.) १-तैरने का अभिलाषी। २-तैरने की इच्छा करने वाला।

तितुला+ [संज्ञा पु.] (देश.) गाड़ी के पहिये का आरा।

तित्तिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीतर नामक पक्षी। २-तितली नामक घास।

तित्तिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीतर नामक पक्षी। २-आयुर्वेद की एक शाखा।

तित्तिरीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अंजन जो तीतर के परों को जलाकर बनाया जाता है।

तिते*+ [व.] (हिं.) उतने (संख्यावाचक)।

तितेक*+ [वि.] (हिं.) उतना। उस मात्रा या परिमाण का।

तितै*+ [क्रि. वि.](हिं.) १-वहीं। वहां ही। २-वहां। ३-उधर।

तितो*+ [वि.] (हिं.) उतना। उस मात्रा या परिमाण का। [क्रि. वि.] उतना।

तिथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-कामदेव। ३-वर्षाकाल। ४-काल।

तिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चांद्रमास के किसी पक्ष का कोई दिन, जिसका नाम संख्या के विचार से होता है। तिमि (अमावस्या से पूर्णिमा तक और पूर्णिमा से अमावस्या तक की चन्द्रमा की कलायें। २-पन्द्रह की संख्या।

तिथिक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी तिथि का गिनती में न आना। (ऐसा उस अवस्था में होता है जब एक ही दिन में अर्थात् दो सूर्योदयों के बीच तीन तिथियां पड़ जाती हैं, तब जो तिथि सूर्योदयकाल में नहीं पड़ती उसका क्षय माना जाता हैं)।

तिथिपति [संज्ञा पु.] (सं.) तिथियों के अधिपति या स्वामी देवता।

तिथिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पंचांग। पत्रा। जंत्री।

तिथिप्रणी [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तिथियुग्म [संज्ञा पु.](सं.) दो तिथि। तिथि का जोड़।

तिथिसंधि, तिथिसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) दो तिथियों का एक में मिलना।

तिथ्यर्ध [संज्ञा पु.] (सं.) करण।

तिदरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियां हों।

तिदारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बत्तक के प्रकार का एक पक्षी जो जमीन पर सूखी घास का घोंसला बनाता है।

तिद्वारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।

तिधर+ [क्रि. वि.] (हिं.) उधर। उस ओर।

तिधारा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का थूहर जिसमें पत्ते नहीं होते।

तिधारीकांडवेल, तिधारीकाण्डवेल [संज्ञा स्त्री.]

(सं.) हड़जोड़।

[illegible] [सर्व.] (हिं.) 'तिस' शब्द का बहुवचन।

[illegible] [संज्ञा पु.] तिनका। तृण। घास-फूस।

[illegible]* [संज्ञा पु.] (हिं.) तिनका का ढेर। तिनकों का समूह।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। बिगड़ना। झल्लाना। नाराज होना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) तृण। तृण का टुकड़ा। तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना–क्षमा या कृपा के लिए दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना–१–संबंध तोड़ना। २–बलैया लेना। तिनके चुनना–पागल होना। तिनके चुनवाना–१–पागल बना देना। २–मोहित करना। तिनके का सहारा–१–तनिक सा सहारा। २–ऐसी बात जिससे ढाढस बँधे। तिनके को पहाड़ करना–छोटी बात को बड़ी कर डालना। तिनके की ओट पहाड़–छोटी-सी बात में किसी बड़ी बात का छिपा [illegible]ना।

[illegible] से तिनका उतारना–थोड़ा-सा अहसान [illegible]। २–थोड़ा बहुत काम करके उपकार का [illegible]रना।

[illegible] [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तिनकना'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पकवान।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) मनुवा कपास।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की [illegible] रेती जिससे आरी के दांते तेज किए जाते हैं।

[illegible] [वि.] (हिं.) देखो 'तिनपहला'।

[illegible] [वि.] (हिं.) [स्त्री. तिनपहली] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

[illegible] [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] तीन पहल या पार्श्व वाली।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) माला जिसके बीच में [illegible] का या जड़ाऊ जुगनू हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) बरमा, आसाम और छोटा नागपुर में पाया जाने वाला एक प्रकार का बांस जिसकी चटाइयाँ आदि बनाई जाती हैं।

[illegible] [संज्ञा पु.] देखो 'तिनिश'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) तिनिश नामक पेड़।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) तिनिश नामक वृक्ष।

[illegible] [संज्ञा पु.] देखो 'तिनिश'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) सीसम की जाति का एक वृक्ष जिसकी पत्तियां शमी या खैर के समान होती हैं। इसकी लकड़ी मजबूत होने के कारण किवाड़ गाड़ी आदि बनाने के उपयोग में आती है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) तृण। तिनका।

[illegible]*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तृण। तिनका।

तिन्ना [संज्ञा पु.] (सं.) १–सती नाम का एक वर्ण-वृत्त। २–रोटी के साथ खाने की रसदार वस्तु। ३–तिन्नी के धान का पौधा।

तिन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तालों में आप से आप होने वाला एक प्रकार का जंगली धान।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) नीवी। फुफुंदी।

तिन्ह* [सर्व.) देखो 'तिन'।

तिपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) किमखाब बुनने वालों के काम आने वाली एक प्रकार की लकड़ी जिसमें तागा लपेटा रहता है।

तिपति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तृप्ति।

तिपल्ला [वि.] (हिं.) १–तीन पल्लों वाला। जिसमें तीन पत्त या पार्श्व हो। ३–जिसमें तीन तागे हो।

तिपाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १–तीन पायों की छोटी ऊँची बैठने की चौकी। स्टूल। २–पानी के घड़े रखने की तीन पायों वाली टिकटी। तिगोड़िया। ३–रंगरेजों के काम में आने वाला एक लकड़ी का बना चौखटा।

तिपाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–तीन पाटों को जोड़ कर बनाया हुआ। २–जिसमें तीन पल्ले हों। ३–तीन किनारों वाला।

तिपारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बरसाती झाड़ या पौधा जिसमें गुच्छेदार सफेद फूल लगते हैं और पत्तियां छोटी और छोर पर से नुकीली होती हैं। मकोय। परपोटा।

तिपैरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बड़ा कुआँ जिसमें तीन चरसे सुगमतापूर्वक चल सकें।

तिबद्धी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] एक बार में तीन बाध या रस्सियाँ खींची जाने वाली (चारपाई की बुनावट)।

तिबाई* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आटा माड़ने का बड़ा और छिछला बरतन।

तिबारा [वि.] (हिं.) तीसरी बार। [संज्ञा पु.] (हिं.) तीन बार का उतारा हुआ मद्य। [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तिबारी] वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।

तिबारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीन दरवाजों वाली कोठरी।

तिबासी [वि.] (हिं.) तीन दिन का बासी। (खाद्य पदार्थ।

तिबी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेसारी।

तिब्बत [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति जो हिमालय के उत्तर में है।

तिब्बती [वि.] (हिं.) तिब्बत-संबंधी। तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न।
[संज्ञा स्त्री.] तिब्बत की भाषा।
[संज्ञा पु.] तिब्बत देश का निवासी।

तिमंजिला [वि.] (हिं.) [स्त्री. तिमंजिली] तीन मरातिब का।

तिमंजिली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] तीन खंडों वाली।

तिम [संज्ञा पु.] (हिं.) नगारा। दुन्दुभी। डंका।

तिमाना* [क्रि. स.] (देश.) भिगोना। तर करना।

तिमाशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–तीन माशे की एक तौल। चालीस जौ की एक पहाड़ी तौल।

तिमिंगिल, तिमिङ्गिल [संज्ञा. पु.] (सं.) १–एक बड़ा भारी जल-जन्तु जो समुद्रों में रहता है। बड़ी ह्वेल। २–एक द्वीप। ३–इस द्वीप का निवासी।

तिमिंगिलाशन, तिमिङ्गिलाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १–दक्षिण का एक देश। २–उक्त देश का निवासी।

तिमि* [अव्य.] (हिं.) उस प्रकार। वैसे।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–समुद्र में रहने वाली मछली के आकार का बड़ा जल-जन्तु। २–रतौंधी नामक एक आंख का रोग जिसमें रात को सुझाई नहीं पड़ता।

तिमिकोश [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

तिमिज [संज्ञा पु.] (सं.) तिमि नाम के मत्स्य से निकलने वाला मोती।

तिमित [वि.] (सं.) १–अचल। स्थिर। निश्चल। २–आर्द्र। भीगा।

तिमिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) शंबर नामक दैत्य जिसका वध करके रामचन्द्र ने दिव्य अस्त्र प्राप्त किया था।

तिमिर [संज्ञा पु.] (सं.) १–अंधकार। अन्धेरा। २–आँख से धुंधला दिखाई देना (रोग)।

तिमिरनुद [वि.] (सं.) अंधकार का नाश करने वाला।
[संज्ञा पु.] सूर्य।

तिमिरभिद् [वि.] (सं.) अंधकार का नाश करने वाला।
[संज्ञा पु.] सूर्य।

तिमिररिपु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। भास्कर।

तिमिरहर [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य। २–दीपक।

तिमिरारि [संज्ञा पु.] (सं.) १–अन्धकार का शत्रु २–सूर्य।

तिमिरारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्धकार का समूह। अंधेरा।

तिमिराली, तिमिरावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्धकार। अन्धकार का समूह।

तिमिरि [संज्ञा पु.] (सं.) तिमि नामक मछली।

तिमिरी [संज्ञा पु.] (सं.) १–अन्धकार करने वाला। २–जुगनू। खद्योत। ३–इन्द्रगोप। बीरबहूटी।

तिमिष [संज्ञा पु.] (सं.) १–ककड़ी। फूट। २– २–पेटा। सफेद कुम्हड़ा। ३–तरबूज।

तिमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–तिमि नामक मत्स्य।

२-दक्ष की एक कन्या।

तिमीर [संज्ञा पु.] (सं.) एक पेड़ का नाम।

तिमुहानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने के लिये मार्ग या फाटक हों। २-वह स्थान जहां तीन ओर से नदियां आ कर मिली हों।

तिय* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। औरत। २-पत्नी। भार्या। जोरू।

तियतरा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. तियतरी] तीन कन्याओं के बाद जन्म लेने वाला (बेटा)।

तियला [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों का एक प्रकार का पहिरावा।

तिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीन बूटियों वाला ताश का पत्ता। २-नक्कीपूर के खेल में वह दाव जिसमें पूरे-पूरे गंडे गिन लेने के उपरांत तीन कौड़ियां बचें।

* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तिय'।

तिरंगा [वि.] (हिं.) तीन रंगों वाला जिसमें तीन रंग हों।

तिरंगाझंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीन रंग वाला झंडा। २-भारत की राष्ट्रपताका। ३-भारतीय कांग्रेस पार्टी का झंडा।

तिरकट [संज्ञा पु.] (?) आगे का पाल।

तिरकटगावासवाई [संज्ञा पु.] (?) आगे का और सब से ऊपर का पाल।

तिरकटडोल [संज्ञा पु.] (?) आगे का मस्तूल।

तिरकटतवर [संज्ञा पु.] (?) वह छोटा चौकोर आगे का पाल जो उस रस्से में बंधा रहता है जो मस्तूल के सहारे के लिए लगाया जाता है

तिरकटसवर [संज्ञा पु.] (?) सब से ऊपर का पाल।

तिरकटसवाई [संज्ञा पु.] (?) आगे का वह पाल जो उस रस्से में बंधा रहता है जो मस्तूल के सहारे के लिए लगाया जाता है।

तिरकना [क्रि. अ.] (?) बाल सफेद होना। [क्रि. अ.] (हिं.) तड़कना। चटखना। फटजाना।

तिरकस* [वि.] (हिं.) टेढ़ा।

तिरकाना [क्रि. स.] (?) ढीला छोड़ना। २-रस्सा ढीला करना।

तिरकुटा [संज्ञा पु.] (हिं.) सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीन औषधों का समूह।

तिरखा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तृषा'।

तिरखित* [वि.] (हिं.) देखो 'तृषित'।

तिरखूंटा [वि.] (हिं.) देखो 'तिकोना'।

तिरच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) तिनिशवृक्ष।

तिरछई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिरछापन।

तिरछउड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखम्भ की एक कसरत।

तिरछा [वि.] (हिं.) [स्त्री. तिरछी] १-जो सीधा नहीं बल्कि इधर-उधर हटकर बढ़ गया हो। २-जिसमें वक्रता या टेढ़ापन हो। टेढ़ा। वक्र ३-अस्तर का एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। *बाँका तिरछा*-छबीला। *तिरछी टोपी*-बगल में कुछ झुकाकर सिर पर रखी हुई टोपी। *तिरछी चितवन*-बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर से देखना। *तिरछी नजर*-देखो 'तिरछी-चितवन' *तिरछा वचन*-कटुवाक्य।

तिरछाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिरछापन।

तिरछाना [क्रि. अ.] (हिं.) तिरछा होना।

तिरछापन [संज्ञा पु.] (हिं.) तिरछा होने का भाव

तिरछीबैठक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत।

तिरछौंहाँ+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. तिरछौंहीं] जो कुछ तिरछापन लिये हो।

तिरछौंही [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जो कुछ तिरछी हो।

तिरछौंहैं [क्रि. वि.] (हिं.) तिरछेपन सहित। तिरछापन लिए हुए।

तिरतालीस+ [वि.] (हिं.) देखो 'तैंतालीस'।

तिरतिराना+ [क्रि. वि.] (हिं.) बूँद-बूँद करके टपकना।

तिरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पानी के ऊपर ठहरना पानी की सतह पर रहना। २-पानी पर तैरना या उतराना। ३-पार होना। ४-भवसागर से पार या आवगमन से मुक्त होना।

तिरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घाघरा बाँधने की डोरी। नीवी। तिन्नी। २-घाघरा या धोती का नाभि के नीचे लटकता हुआ भाग।

तिरप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नृत्य में एक ताल विशेष जिसे त्रिसम या तिहाई भी कहते हैं।

तिरपट+ [वि.] (देश.) १-तिरछा। टेढ़ा। २-मुश्किल। कठिन। विकट।

तिरपटा [वि.] (देश.) तिरछा ताकने या देखने वाला। भेंगा।

तिरपन [वि.] (हिं.) पचास और तीन, ५३।

तिरपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीन पायों वाली ऊँची चौकी। स्टूल।

तिरपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) रोगन फेरा हुआ एक प्रकार का टाट जो वर्षा और धूप से बचाने के लिए वस्तुओं पर डाला या ताना जाता है।

तिरपित* [वि.] (हिं.) देखो 'तृप्त'।

तिरपौलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बड़ा स्थान जहाँ बराबर के ऐसे तीन बड़े फाटक हों जिन से होकर हाथी घोड़े ऊंट आदि सवारियां भली प्रकार जा सकें।

तिरफला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्रिफला'।

तिरबेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'त्रिवेणी'।

तिरमो [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सिंधु में एक नाव का नाम।

तिरमिरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दुर्बलता के कारण होने वाला आँखों का वह रोग या दोष जिसमें कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देता है। २-तीक्ष्ण प्रकाश या तेज रोशनी में नजर का न ठहरना। चकाचौंध। ३-चिकनाई के छींटे जो पानी दूध आदि द्रव पदार्थों के ऊपर तैरते दिखाई देते हैं।

तिरमिराना [क्रि. अ.] (हिं.) प्रकाश या चमक के सामने (आँखों) का चौंधियाना।

तिरमुहानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिलते हों।

तिरलोक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्रिलोक'।

तिरलोकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'त्रिलोकी'।

तिरवट [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का राग।

तिरवराना [क्रि. अ.] (हिं.) तिरमिराना।

तिरवा [संज्ञा पु.] (फा.) इतनी दूरी जहां तक एक तीर जा सके।

तिरवाह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नदी के तीर या तट की भूमि।

[क्रि. वि.] (हिं.) किनारे-किनारे। तट से।

तिरशूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्रिशूल'।

तिरश्च [संज्ञा पु.] (सं.) चारपाई के तिरछे रस्से।

तिरश्चता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिरछापन।

तिरश्ची [संज्ञा पु.] (सं.) अंगरीस वंश के ऋषि का नाम।

तिरश्चीन [वि.] (सं.) १-तिरछा। २-कुटिल। टेढ़ा।

तिरश्चीन-गति [संज्ञा पु.] (सं.) मल्लयुद्ध या कुश्ती का एक पेंच।

तिरसठ [वि.] (हिं.) साठ और तीन, ६३।

तिरसा [संज्ञा पु.] (?) वह पाल जिसका [illegible] संकरा और चौड़ा होता है।

तिरसूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्रिशूल'।

तिरस्कर [वि.] (सं.) परदा करने वाला। आच्छादक।

तिरस्करिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ओट। आड़। २-परदा। चिक। कनात। ३-वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य अदृश्य हो सकता है।

तिरस्करी [वि.] (सं.) आच्छादक। परदा करने वाला।

तिरस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपमान। अनादर। २-भर्त्सना। फटकार। ३-अनादर या उपेक्षा पूर्वक त्याग।

तिरस्कारी [वि.] (सं.) अपमान करने वाला।

तिरस्कृत [वि.] (सं.) १-जिसका तिरस्कार हुआ हो। अनादृत। २-अनादरपूर्वक त्याग किया हुआ। ३-आच्छादित। परदे में छिपा हुआ। [संज्ञा पु.] तंत्र के अनुसार एक मन्त्र।

तिरस्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] १-तिरस्कार। अनादर। २-आच्छादन। ३-वस्त्र। कपड़ा।

तिरहा+ [संज्ञा पु.] (देश.) धान के फूलों को नष्ट करने वाला एक फतिङ्गा।

तिरहुत [संज्ञा पु.] (हिं.) मिथला प्रदेश जिसका प्राचीन नाम तीरभुक्ति था।

तिरहुतिया [वि.] (हिं.) तिरहुत का। तिरहुत संबंधी। [संज्ञा पु.] तिरहुत का रहने वाला। [संज्ञा पु.] तिरहुत की बोली।

तिरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक पौधा जिसके बीजों में से तेल निकाला जाता है।

तिराही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोत।

तिरानबे [वि.] (हिं.) नब्बे और तीन, ६३।

तिराना [क्रि. स.] (हिं.) पानी के ऊपर तैरना। २-पार करना। ३-उबारना। उद्धार करना।

तिराहा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ से तीन ओर को तीन रास्ते गये हों। तिरमुहानी।

तिराही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कटार या तलवार।

तिरिनिहक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष का नाम।

तिरिन * [संज्ञा पु.] तृण। तिनका।

तिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

तिरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री। औरत।
तिरिया चरित्तर–स्त्रियों का रहस्य।
[संज्ञा पु.] (देश.) नैपाल प्रदेश में होने वाला एक प्रकार का बांस। इसे ओला भी कहते हैं।

तिरीछा* [वि.] देखो 'तिरछा'।

तिरीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोध्र। लोध। २-किरीट।

तिरीफल [संज्ञा पु.] (हिं.) दंती नामक एक वृक्ष

तिरीबिरी [वि.] (हिं.) देखो 'तिड़ीबिड़ी'।

तिरीपशालि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान जो तीन महीने में तैयार होता है।

तिरेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिए छिछले पानी या चट्टान पर रखा रहता है। २-मछली मारने की बंसी में बंधी हुई वह छोटी लकड़ी जिसके डूबने से मछली के फँस जाने का पता लग जाता है।

तिरोगत [वि.] (सं.) अदृश्य। गायब।

तिरोध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्तर्धान। गायब।

तिरोधातव्य [वि.] (सं.) आच्छादन के योग्य। ढाँपने के योग्य।

तिरोधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्तर्द्धान। अदर्शन। २-छिपाव। गोपन।

तिरोधायक [संज्ञा पु.] (सं.) आड़ करने वाला। छिपाने वाला।

तिरोभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्तर्द्धान। अदर्शन। २-छिपाव। गोपन।

तिरोभूत [वि.] (सं.) गुप्त। छिपाहुआ। अदृष्ट

तिरोवर्ष [वि.] (सं.) वृष्टि से सुरक्षित।

तिरोहित [वि.] (सं.) १-ढकाहुआ। आच्छादित २-छिपाहुआ। अदृष्ट। अन्तर्हित।

तिरौंछा* [वि.] (हिं.) देखो 'तिरछा'।

तिरौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तिरेंदा'।

निर्यंचानुपूर्वी, तिर्यञ्चानुपूर्वी [संज्ञा स्त्री.](सं.) जीव की वह गति जिससे उसे तिर्यग्योनि में जाते हुए कुछ समय तक रहना पड़ता है। (जैनशास्त्र)।

तिर्यंची, तिर्यञ्ची [संज्ञा स्त्री.](सं.) पशु-पक्षियों की मादा।

तिर्य [वि.] (सं.) तिल का बना हुआ।

तिर्यक् [वि.] (सं.) तिरछा। आड़ा। टेढ़ा।

तिर्यक्क्षिप्त [वि.] (सं.) तिरछा फेंका हुआ।

तिर्यक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिरछापन। टेढ़ापन

तिर्यक्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) तिरछापन। आड़ापन

तिर्यपाती [वि.] (सं) [स्त्री. तिर्यक्पातिनी] आड़ा रखा हुआ।

तिर्यक्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) दो सहारों पर टिकी हुई वस्तु का बीच में दबाव पड़ने पर टूटना

तिर्यक्स्रोतस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसका फैलाव आड़ा हो। २-पशु। पक्षी। वह जीव जिसका आहार निगलने का नल खड़ा न हो (मनुष्य के समान)।

तिर्यगयन [संज्ञा पु.] (सं.) वक्रगति। टेढ़ी चाल।

तिर्यगीक्ष [वि.] (सं.) तिरछी नजर से देखने वाला।

तिर्यगीश [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण का एक नाम

तिर्यग्गति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तिरछी या टेढ़ी चाल। २-पशुयोनि में जन्म लेना।

तिर्यग्गमन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तिर्यग्गति'।

तिर्यग्ज [वि.] (सं.) पशुपक्षी आदि से उत्पन्न।

तिर्यग्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कुटिल या कपटी मनुष्य।

तिर्यग्जाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पशु और पक्षियों की जाति।

तिर्यग्दिश् [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तरदिशा।

तिर्यग्धार [संज्ञा पु.] (सं.) तेज धारवाला।

तिर्यग्नासा [वि.] (सं.) टेढ़ी नाकवाला।

तिर्यग्यान [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

तिर्यग्योनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पशु-पक्षी आदि जीव या उनकी जीवन दशा।

तिर्यच् [संज्ञा पु.] देखो 'तिर्यक्'।

तिलंगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चीनी में तिल पाग कर बनाई हुई मिठाई।

तिगंगसा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बबूल (वृक्ष) जो हिमालय पर नैपाल से लेकर पंजाब तक होता है।

तिलंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भारतीय सैनिक। देशी सिपाही। २-एक प्रकार का कनकौवा।

तिलंगाना [संज्ञा पु.] (हिं.) तैलंगदेश।

तिलंगी [वि.] (हिं.) तिलंगाने का निवासी। तैलंग।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की पतंग या गुड्डी।

तिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्ष में एक बार बोया जाने वाला हाथ-डेढ़ हाथ ऊंचा पौधा जिसकी फलियों में से काले या सफेद बीज होते हैं इनको पेरकर तेल निकाला जाता है जिसे 'मीठा तेल' कहते हैं। २-शरीर पर का काले रंग का छोटा दाग। ३-काली बिंदी के आकार का गोदना जिसे स्त्रियाँ दिखाव के लिए गाल. ठुड्डी आदि गोदाती हैं। ४-आंख की पुतली के बीच की बिंदी।
तिल का ताड़ करना–बात का बतंगड़ बनाना। तिनके को पहाड़ करना। *तिल की ओभल, ओट पहाड़ होना*–किसी छोटी-सी बात के भीतर बड़ी भारी बात। *तिल चाटना*–मुसलमानों में विदा के समय वर-वधू के हाथ पर रखे हुए काले तिल चाटना है जिससे वर सदा वश में रहे। *तिल चावले बाल होना*–कुछ काले और कुछ सफेद बाल। खिचड़ी बाल। *तिल-तिल*–१-थोड़ा-थोड़ा। २-जरा-जरा-सा भी। *तिल-तिल का हिसाब*–कौड़ी-कौड़ी का हिसाब। *तिल धरने को जगह न होना*–तनिक भी खाली स्थान न रहना। *तिल भर*–१-जरा-सा। थोड़ा-सा। +२-क्षणभर। थोड़ी देर।

तिलकंठी, तिलकण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली कौवाठोंठी। विष्णुकांची।

तिलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्दन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर अंकित किया जाने वाला साम्प्रदायिक चिह्न। टीका। २-राज्याभिषेक। राजसिंहासन पर प्रतिष्ठा। गद्दी। ३-विवाह-सम्बन्ध स्थिर करने की एक रीति जिसमें कन्यापक्ष के लोग वर के माथे में दही अक्षत आदि का टीका और कुछ द्रव्य उसके साथ देते हैं। टीका। ४-स्त्रियों का माथे पर पहनने का एक गहना। टीका। ५-श्रेष्ठ व्यक्ति। शिरोमणि। ६-पुन्नाग जाति का एक पेड़। ७-मूंज का फूल। घूआ। ८-लोध का वृक्ष। ६-मरुवा। मरुवक। १०-एक अश्वत्थ विशेष। ११-एक जाति का घोड़ा। १२-पेट की तिल्ली। १३-सोंचर नमक। १४-किसी ग्रन्थ की अर्थसूचक व्याख्या। टीका। १५-संगीत में ध्रुवक का एक भेद।
तिलक देना–तिलक के साथ (धन) देना। *तिलक भेजना*–तिलक की सामग्री के साथ वर के घर तिलक चढ़ाने लोगों को भेजना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का ढीला-

ढाला जनाना कुरता। २-खिलअत।
[संज्ञा पु.] सुप्रसिद्ध लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जिनका जन्म सन् १८६६ में हुआ और मृत्यु सन् १६२० में हुई।

तिलककामोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक रागिनी जो कामोद और विचित्र या कान्हड़ाकामोद और षड् के योग से मिलकर बनी है।

तिलकट [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का चूर्ण।

तिलकाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) ताल आदि की मिट्टी का सूखकर फट जाना।

तिलकमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्दन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि का छाप जिसे लोग लगाते हैं।

तिलकराज [संज्ञा पु.] (सं.) काश्मीर के एक राजा का नाम

तिलकल्क [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का चूर्ण। तिलकुट।

तिलकहरू+ [संज्ञा पु.] देखो 'तिलकहार'।

तिलकहार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जो कन्या की ओर से वर को तिलक चढ़ाने के लिये ले जाता है।

तिलका [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। २-कंठ में पहनने का एक आभूषण।

तिलकालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर पर का तिल के आकार का काला चिह्न। २-सुश्रुत के अनुसार एक व्याधि।

तिलकाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) ललाट। माथा।

तिलकिट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) तिल की खली। पीना।

तिलकित [वि.] (सं.) अंकित। छापा हुआ।

तिलकी [वि.] (सं.) तिलक लगाये हुए।

तिलकुट [संज्ञा पु.] (हिं.) तिल को कूटकर चीनी मिलाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई।

तिलखलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिल की खली।

तिलखा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

तिलचटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का झींगुर। चपड़ा।

तिलचावला [वि.] (हिं.) काला और सफेद मिला हुआ।

तिलचावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिल और चावल की खिचड़ी।
[वि.] [स्त्री. प्र.] जिसका कुछ अंश सफेद और कुछ अंश काला हो।

तिलचित्रकपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) तैलकंद।

तिलचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) तिलकुट।

तिलच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़िया।

तिलछना [क्रि. अ.] (हिं.) विकल रहना। छटपटाना।

तिलज [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का तैल।

तिलजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिल की मंजरी।

तिलड़ा [वि.] (हिं.) जिसमें तीन लड़ हों। तीन लड़ों वाला। [संज्ञा पु.] (देश.) पत्थर गढ़ने वालों की छेनी।

तिलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीन लड़ों वाली माला जिस के बीच में एक जुगनी लटकती है

तिलतेजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता।

तिलतैल [संज्ञा पु.] (सं.) तिल्ली का तेल।

तिलदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़े की वह थैली जिसमें दरजी सूई, तागा, अंगुश्ताना आदि रखते हैं।

तिलधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का दान जिसमें तिलों की गाय बना कर देते हैं।

तिलनामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का धान

तिलनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का धान।

तिलपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खांड या गुड़ में पगे हुए तिलों की गपड़ी।

तिलपपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिलपट्टी।

तिलपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंदन। २-सरल का गोंद।

तिलपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लालचंदन।

तिलपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्तचंदन।

तिलपिंज, तिलपिञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का वह पौधा जिसमें फूल-फल नहीं लगते।

तिलपिच्चट [संज्ञा पु.] (सं.) तिलों की पीठी। तिलकुटा।

तिलपिष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) तिलों की पीठी। तिलकुटा।

तिलपीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) (तिलों को पेलने वाला) तेली।

तिलपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिल का फूल। २-व्याघ्रनख।

तिलपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहेड़ा। २-तिल का फूल। ३-नाक।

तिलबढ़ा [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों का एक रोग

तिलबर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

तिलभार [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम। (महाभारत)।

तिलभाविनी [संज्ञा पु.] (सं.) चमेली का पौधा।

तिलभुंजा, तिलभुञ्जा [संज्ञा पु.] (हिं.) तिलकट।

तिलभुग्गा [संज्ञा प.] (हिं.) तिलकुट।

तिलभृष्ट [वि.] (सं.) तिल के साथ भूना या पकाया हुआ।

तिलभेद [संज्ञा पु.] (सं) पोस्त का दाना।

तिलमयूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी जिसके शरीर पर तिल के समान काले दाग होते हैं।

तिलमापट्टी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दक्षिण भारत में होने वाली एक प्रकार की कपास।

तिलमिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिलमिलाहट। चकाचौंध।

तिलमिलाना [क्रि. अ.] (हि.) अचानक कष्ट या पीड़ा होने से पीड़ा होना।

तिलमिलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चकाचौंध। तिरमराहट।

तिलमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का बना हुआ लड्डू।

तिलरस [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का तेल।

तिलरा [संज्ञा पु.] (देश.) टेढ़ी लकीर बनाने की कसेरे की छेनी।
+ [वि., संज्ञा पु.] देखो 'तिलड़ा'।

तिलरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तिलड़ी'।

तिलवट [संज्ञा पु.] (हिं.) तिलकुटी। तिलपपड़ी।

तिलवन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का जंगली पौधा जिसमें सफेद या नीले फूल आते हैं।

तिलवा [संज्ञा पु.] (हिं.) तिलों का लड्डू।

तिलवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का धान।

तिलशकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिलपपड़ी। तिलपट्टी।

तिलशालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का सुगंधित धान।

तिलस्तुद [संज्ञा पु.] (सं.) (तिल का तेल पेरने वाला) तेली।

तिलस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का तेल।

तिलस्म [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जादू। इन्द्रजाल। २-करामात। चमत्कार।

तिलस्मी [वि.] (हिं.) जादू का। इन्द्रजाल सम्बन्धी।

तिलहन [संज्ञा पु.] (हिं.) वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।

तिलांकितदल [संज्ञा पु.] (सं.) तैलकंद।

तिलांजली, तिलाञ्जली [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के मरने पर अंजुली में जल और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ना। २-सर्वदा के लिए परित्याग करने का संकल्प।
तिलांजली देना-बिलकुल त्याग देना।

तिलांबु, तिलाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) तिलांजली।

तिला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह तेल जो लिंगेन्द्रिय की शिथिलता दूर करने के लिए लगाया जाता है। २-देखो 'तिल्ला'।

तिलाक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री पुरुष या पति पत्नी के सम्बन्ध का टूटना।

तिलादानी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तिलदानी'।

तिलान्न [संज्ञा पु.] (सं.) तिल की खिचड़ी।

तिलापत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला जीरा।

तिलार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का आधा भाग। बहुत छोटा परिमाण।

तिलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ा कुआं। २-रात के समय कोतवाल आदि का शहर में गश्त लगाना।

तिलिंगा [संज्ञा पु.] देखो 'तिलंगा'।

तिलित्स [संज्ञा पु.] (सं.) गोनस नामक एक सर्प।

तिलिया [संज्ञा पु.] (देश.) १-सरपत। सरकंडा। २-देखो 'तेलिया'।

तिली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'तिल'। २-देखो 'तिल्ली'।

तिलैनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेलहन के पौधों को काट लेने पर बचा हुआ भाग।

तिलैदानी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तिलदानी'।

तिलंगू [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तेलगू'।

तिलोक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्रिलोक'।

तिलोकपति [संज्ञा पु.] (हिं.) त्रिलोकपति। विष्णु।

तिलोकी [संज्ञा पु.] (हिं.) इक्कीस मात्राओं का एक उपजाति छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में लघु गुरु होता है।

तिलोचन [संज्ञा पु:] (हिं.) त्रिलोचन। महादेव। शिव।

तिलोत्तमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक परम रूपवती अप्सरा जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि ब्रह्मा ने संसार के सब उत्तम पदार्थों में से एक-एक तिल अंश लेकर इसे बनाया था। (पुराण)।

तिलोदक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तिलांजली'।

तिलौरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार की मैना। २-तिलमिलाकर बनाई हुई बरी।

तिलोहरा [संज्ञा पु.] (देश.) पटसन का रेशा।

तिलौंछना [क्रि. स.] (हिं.) थोड़ा तेल लगाकर चिकनाना।

तिलौंछा [वि.] (हिं.) जो स्वाद, गंध या रंग में तेल के समान हों।

तिलौरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिल मिली उर्दू या मूंग की बरी।

तिल्य [वि.] (सं.) तिल उत्पन्न करने वाला।

तिल्लना [संज्ञा पु.] (हिं.) तिलका नामक वर्णवृत्त।

तिल्लर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की सोहन-चिड़िया जिसे होवर भी कहते हैं।

[वि.] (हिं.) देखो 'तिलड़ा'।

तिल्ला [संज्ञा पु.] (अ.) १-कलाबत्तू आदि का काम। २-पगड़ी दुपट्टे या साड़ी आदि का वह अंचल जिसपर कलाबत्तू का काम हो। [संज्ञा पु.] देखो 'तिलका' (वर्णवृत्त)।

तिल्लाना [संज्ञा पु.](हिं.) पानी के ऊपर ठहराना तराना।

तिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेट के भीतरी भाग का वह छोटा अवयव जो मांस की पोली गुठली के आकार का होता है। यह पसलियों के नीचे बाँई ओर होता है। प्लीहा। २-इस अंग के सूजने या बढ़ने का एक रोग। ३-तिलनामक अन्न या तेलहन। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आसाम और बरमा की ऊँची पहाड़ियों पर होने वाला एक प्रकार का बाँस।

तिल्लेदार [वि.] (हिं.) बदले या कलाबत्तू के अंचल वाला (कपड़ा)।

तिल्व [संज्ञा पु.] (सं.) लोध्र। लोध (वृक्ष)।

तिल्वक [[संज्ञा पु.] (सं.) १-लोध नामक वृक्ष। २-तिनिश।

तिल्विल [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ पर देवता का पूजन किया जाता है।

तिवाड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तिवारी'।

तिवारी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तिवराइन] त्रिपाठी।

तिवास+ [संज्ञा पु.](हिं.) तीस दिन का समय।

तिवासी [वि.] (हिं.) तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

तिवी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेसारी।

तिशना [संज्ञा पु.] (फा.) ताना। मेहना।

तिष्टना* [क्रि. स.] (हिं.) बनाना। रचना।

तिष्ठद्गु [संज्ञा पु.] (सं.) गोधूली। संध्या। सायंकाल।

तिष्ठना* [क्रि. अ.] (हिं.) ठहरना।

तिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जो जो हिमालय से निकलकर गंगा में मिलती है

तिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्यनक्षत्र। २-पौषमास। ३-कलियुग। ४-मांगल्य। कल्याणकारी।

तिष्यक [संज्ञा पु.] (सं.) पौषमास।

तिष्यपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमलकी।

तिष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमलकी।

तिष्षन* [वि.] (हिं.) देखो 'तीक्ष्ण'।

तिस+ [सर्व.] 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है।

तिस पर-१-उसके पीछे। उसके उपरान्त। २-ऐसी अवस्था में भी।

तिसखुट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीसी के पौधों के छोटे-छोटे डंठल जो फसल कटने के उपरान्त खड़े रहते हैं।

तिसखुर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तिसखट'।

तिसना* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तृष्णा'।

तिसरा* [वि.] (हिं.) देखो 'तीसरा'।

तिसराय* [क्रि. वि.] (हिं.) तीसरी बार।

तिसरायत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीसरा होने का भाव। गैर होने का भाव।

तिसरैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दो मनुष्यों के झगड़े से अलग एक तीसरा व्यक्ति। तटस्थ। मध्यस्थ। २-तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्यासा होना।

तिसूत [संज्ञा पु.] (?) एक दवा का नाम।

तिस्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी।

तिस्स [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा अशोक के सगे भाई का नाम।

तिहत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और तीन, ७३।

तिहद्दा [संज्ञा पु.] (देश.) वह स्थान जहां तीन हद या सीमाएँ मिलती हों।

तिहरा [वि.] (हिं.) देखो 'तेहरा'
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) दही जमाने या दूध दूहने का मिट्टी का पात्र।

तिहराना [क्रि. स.] (हिं.) तीसरी बार (किसी बात या काम) को करना।

तिहरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'तेहरी'।
[संज्ञा स्त्री.] तीन लड़ों वाली माला।
[संज्ञा स्त्री.] दूध दूहने या दही जमाने का मिट्टी का छोटा पात्र।

तिहवार [संज्ञा पु.] (हिं.) त्यौहार। पर्व या उत्सव का दिन।

तिहवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'त्योहारी'।

तिहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तृतीयांश। तीसरा भाग। २-खेत की उपज। फसल। ३-संगीत में सम पर का और उसके ठीक पहले वाले दो ताल या उनके खंड।

तिहाउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तिहाव'।

तिहानी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह लकड़ी जिस पर चुड़िहारे चूड़ियाँ बनाते हैं।

तिहायत* [संज्ञा पु.] (हिं.) दो आदमियों के झगड़े से अलग एक तीसरा व्यक्ति। तिसरैत। तटस्थ। मध्यस्थ।

तिहारा+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हारा'।

तिहारो+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हारा'।

तिहाली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कपास की बौंड़ी।

तिहाव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्रोध। कोप। २-बिगाड़।

तिहि [सर्व.] (हिं.) देखो 'तेहि'।

तिहूँ+ [वि.] (हिं.) तीनों।

तिहैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तृतीयांश। तीसरा भाग। २-तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से प्रत्येक थाप समवाले ताल को तीन भागों में बांटकर प्रत्येक भाग पर दी जाती है और जिसकी अंतिम थाप ठीक सम,

पर पड़ती है।

ती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्री। औरत। २-जोरू। पत्नी। ३-मनोहरण नामक छंद।

तीअन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शाक। भाजी। तरकारी।

तीकरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) बीज से फूटकर निकला हुआ अंकुर। अँखुआ।

तीकुर [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल की तीसरे भाग की बंटाई जिसे जमीदार लेता है। तिहाई।

तीछण* [वि.] (हिं.) देखो 'तीक्ष्ण'।

तीछन* [वि.] (हिं.) देखो 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण [वि.] (सं.) १-तेज नोक वाला। तेज धार वाला। २-तेज। प्रखर। तीव्र। ३-उग्र। प्रचंड। तीखा। ४-तेज या तीखे स्वाद वाला ५-सुनने में अप्रिय कर्णकटु। ६-आत्मत्यागी ७-निरालस्य। ८-जो सहन न हो सके। असह्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरमी। उत्ताप। २-विष। जहर। ३-इस्पात नामक लोहा। ४-युद्ध। लड़ाई। ५-मरण। मृत्यु। ६-शास्त्र। ७-समुद्री नमक। ८-मोखा। ९-वत्स्य नाम। बछ नाग। १०-चव्य। चाव। ११-महामारी। १२-जवाखार। १३-सफेद कुशा। १४-कुंदुरगोंद। १५-योगी। १६-मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र। १७-नक्षत्रों में बुध की गति।

तीक्ष्णकंटक, तीक्ष्णकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धतूरा। २-बबूल का वृक्ष। ३-इंगुदी का पेड़। ४-करील।

तीक्ष्णकंटका, तीक्ष्णकण्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंकारी नामक एक वृक्ष विशेष।

तीक्ष्णकंद, तीक्ष्णकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज। पलांडु।

तीक्ष्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद सरसों। २-मोखावृक्ष।

तीक्ष्णकल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुंबरूवृक्ष। २-धंनिया।

तीक्ष्णकांता, तीक्ष्णकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तारादेवी।

तीक्ष्णकी [संज्ञा पु.] (सं.) अकरकरा।

तीक्ष्णक्षीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंसलोचन।

तीक्ष्णगंध, तीक्ष्णगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सँहजन का वृक्ष। २-लाल तुलसी। ३-लोबान। ४-छोटी इलायची। ५-कुन्दरू गंध द्रव्य। ६-सफेद तुलसी।

तीक्ष्णगंधक, तीक्ष्णगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) सँहजन।

तीक्ष्णगंधा, तीक्ष्णगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्वेत बच। २-कंथारी नामक वृक्ष। ३-राई। ४-जीवंती। ५-छोटी इलायची।

तीक्ष्णतंडुला, तीक्ष्णतण्डुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली। पीपल।

तीक्ष्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीक्ष्ण होने का भाव। तेजी।

तीक्ष्णताप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

तीक्ष्णतेल [संज्ञा पु.] देखो 'तीक्ष्णतैल'।

तीक्ष्णतैल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरसों का तेल। २-मदिरा। ३-राल। ४-सेहुँड़ का दूध।

तीक्ष्णत्वक [संज्ञा पु.] (सं.) धनिया।

तीक्ष्णदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) बाघ।
[वि.] (सं.) जिसके दात तेज हों। तेज दाँतों वाला।

तीक्ष्णदंत, तीक्ष्णदन्त [वि.] (सं.) देखो 'तीक्ष्णदंष्ट्र'।

तीक्ष्णदृष्टि [वि.] (सं.) जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर पड़ती हो। सूक्ष्मदृष्टि।

तीक्ष्णधार [संज्ञा पु.] (सं.) खड्ग। तलवार।
[वि.] (सं.) जिसकी धार बहुत तेज हो।

तीक्ष्णपत्र [संज्ञा पु.) (सं.) १-तुंबुरू। धनिया। २-एक प्रकार का गन्ना। [वि.] जिसके पत्तों में तेजधार हो।

तीक्ष्णपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लवंग। लौंग।

तीक्ष्णपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी।

तीक्ष्णप्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जौ।

तीक्ष्णफल [संज्ञा पु.] धनिया। तुंबरू।

तीक्ष्णफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राई।

तीक्ष्णबुद्धि [वि.] (सं.) कुशाग्रबुद्धि वाला। बुद्धिमान्।

तीक्ष्णमंजरी, तीक्ष्णमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान का पौधा।

तीक्ष्णमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुलंजन। २-सहँजन।
[वि.] जिसकी जड़ में बहुत तेज गंध हो।

तीक्ष्णरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।
[वि.] जिसकी किरणें तेज हों।

तीक्ष्णरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-जवाखार। २-शोरा।

तीक्ष्णलौह [संज्ञा पु.] (सं.) इस्पात।

तीक्ष्णशूक [संज्ञा पु.] (सं.) यव। जौ।

तीक्ष्णसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीशम का पेड़।

तीक्ष्णांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

तीक्ष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बच। २-केवाँच। ३-सर्पकंकाली नामक वृक्ष। ४-बड़ी माल कंगनी। ५-मिर्च। ६-जोंक। ७-तारादेवी का एक नाम।

तीक्ष्णाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रबल जठराग्नि। २-अजीर्ण रोग।

तीक्ष्णाग्र [वि.] (सं.) पैनी नोक वाला।

तीक्ष्णायस [संज्ञा पु.] (सं.) इस्पात लोहा।

तीख*+ [वि.] (हिं.) देखो 'तीखा'।

तीखन*+ [वि.] (हिं.) देखो 'तीक्ष्ण'।

तीखर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तीखुर'।

तीखल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तीखुर'।

तीखा [वि.] (हिं.) [स्त्री. तीखी] १-तेज धार वाला। तीक्ष्ण। २-तेज। तीव्र। प्रखर। ३-उग्र। प्रचंड। ४-उग्र स्वभाव वाला। ५-जिसका स्वाद तीखा या चरपरा हो। ६-सुनने में अप्रिय। कटु। ७-अच्छा। बढ़िया।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

तीखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रेशम फेरने वालों का एक औजार।

तीखुर [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ से आरारूट तैयार किया जाता है। इसकी जड़ के सत्त का व्यवहार कई प्रकार की मिठाइयाँ बनाने में होता है।

तीखुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तीखुर'।

तीछन*+ [वि.] (हिं.) देखो 'तीखा'।

तीछनता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तीक्ष्णता'।

तीज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। २-हरतालिका तृतीया। भादों सुदी तीज। ३-श्रावणसुदी तीज को होने वाला कन्याओं का एक त्योहार।

तीजा [संज्ञा पु.] (हिं.) मुसलमानों में किसी के मरने का तीसरे दिन का कृत्य।
[वि.] (हिं.) [स्त्री. तीजी] तीसरा। तृतीय।

तीजी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] तीसरी। तृतीया।

तीत*+ [वि.] (हिं.) देखो 'तीता'।

तीतर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी जिसे लोग लड़ाने के लिये पालते हैं। यह चितकबरा और काला दो प्रकार का होता है।

तीता [वि.] (हिं.) १-तीखे और चरपरे स्वाद वाला। तिक्त। मिर्च आदि के स्वाद का। २-कड़ुवा। कटु। ३-नम। गीला। भीगा हुआ।
[संज्ञा पु.] (देश.) १-जोतने बोने वाली जमीन का गीलापन। २-ऊसर भूमि। ३-ढेंकी या रहट का अगला भाग। ४-ममीरें झाड़ का एक नाम।

तीतुरी*+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तितली'।

तीतुल* [संज्ञा पु.] देखो 'तीतर'।

तीन [वि.] (हिं.) दो और एक, '३'।
तीन पाँच करना-घुमाव फिराव या हुज्जतबाजी की बात करना। *तीन तेहरा करना*-तितरबितर करना। *न तीन में न तेहरा में*-जो किसी गिनती में न हो।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिन्नी का चावल।

तीनपान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत मोटा रस्सा।

तीनपाम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत मोटा रस्सा। तीनपान।

तिलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की तीन लड़वाली माला । तिलड़ी ।

तीनि [वि.] (हिं.) देखो 'तीन' ।

तीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिन्नी का चावल ।

तीमड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) रेशमी कपड़ा बुनने वालों का एक प्रकार का औजार ।

तीमारदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रोगियों की सेवा शुश्रूषा का कार्य ।

तीय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री । औरत ।

तीया‡ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीय । स्त्री । औरत । [संज्ञा पु.] (हिं.) ताश का तिक्का या तिड़ी । [वि.] (हिं.) तीसरा ।

तीरंदाज [संज्ञा पु.] (फा.) तीर चलाने वाला ।

तीरंदाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तीर चलाने की विद्या या क्रिया ।

तीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी का किनारा । कूल । तट । २-पास । निकट । समीप । ३-सीसा धातु । ४-राँगा । [संज्ञा पु.] (फा.) बाण । शर । तीर चलाना-युक्ति भिड़ाना । तीर फेंकना-रंग ढंग लगाना । [संज्ञा पु.] (?) जहाज का मस्तूल ।

तीरगर [संज्ञा पु.] (फा.) तीर बनाने वाला व्यक्ति

तीरण [संज्ञा पु.] (सं.) करंज ।

तीरथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तीर्थ' ।

तीरभुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा, गंडकी और कौशिकी इन तीन नदियों से घिरा हुआ तिरहुत प्रदेश ।

तीरवर्ती [वि.] (सं.) १-तट पर रहने वाला । २-किनारे पर रहने वाला । पड़ोसी । समीप रहने वाला ।

तीरस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के तीर पर पहुँचा हुआ या मरणासन्न व्यक्ति । [वि.] (सं.) तीर या किनारे पर रहने वाला ।

तीरांतर, तीरान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे पार ।

तीरा‡+ [संज्ञा पु.] देखो 'तीर' ।

तीरीट [संज्ञा पु.] (सं.) लोध ।

तीरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । महादेव । २-शिव की स्तुति ।

तीर्ण [वि.] (सं.) १-जो पार हो गया हो । उत्तीर्ण । २-जो सीमा का उल्लंघन कर चुका हो । ३-जो भीगा हुआ हो ।

तीर्णपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालमूल । मूसली ।

तीर्णपदी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तीर्णपदा' ।

तीर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है ।

तीर्थंकर, तीर्थङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के उपास्य देव जो देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से सर्वथा रहित, मुक्त तथा मुक्तिदाता माने जाते हैं । गत उत्सर्पिणी में चौबीस तीर्थङ्कर हुए थे उनके नाम इस प्रकार हैं-१-केवलज्ञानी । २-निर्वाणी । ३-सागर । ४-महाशय । ५-विमलनाथ । ६-सर्वानुभूति । ७-श्रीधर । ८-दत्त । ९-दामोदर । १०-सुतेज । ११-स्वामी । १२-मुनिसुव्रत । १३-सुमति । १४-शिवगति । १५-अगस्त । १६-नेमीश्वर । १७-अनल । १८-यशोधर । १९-कृतार्थ । २०-जिनेश्वर । २१-शुद्धमति । २२-शिवकर । २३-स्यंदन और २४-संप्रति । वर्त्तमान अवसर्पिणी के आरम्भ में जो २४ तीर्थंकर हुए हैं उनके नाम इस प्रकार हैं । १-ऋषभदेव । २-अजितनाथ । ३-संभवनाथ । ४-सुभवनाथ । ४-अभिनंदन ५-सुमितनाथ । ६-पद्मप्रभ । ७-सुपार्श्वनाथ । ८-चंद्रप्रभ । ९-सुबुधिनाथ । १०-शीतलनाथ ११-श्रेयांसनाथ । १२-वासुपूज्य स्वामी । १३-विमलनाथ । १४-अनंतनाथ । १५-धर्मनाथ । १६-शांतिनाथ । १७-कुंतुनाथ । १८-अमरनाथ । १९-मल्लिनाथ । २०-मुनिसुव्रत २१-नेमिनाथ । २२-नेमिनाथ । २३-पार्श्वनाथ । २४-महावीर स्वामी । इनमें से ऋषभ वासुपूज्य तथा नेमिनाथ की मूर्त्तियाँ योगाभ्यास में बैठी हुई और बाकी सब की मूर्त्तियाँ खड़ी बनाई जाती हैं ।

तीर्थंकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-जैनियों के देवता । जिन । २-शास्त्रकार ।

तीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्मभाव से श्रद्धासहित लोग यात्रा, पूजा या स्नान के लिए जाते हैं । हिंदू शास्त्र में तीथ तीन पकार के माने गये हैं-(क) जंगम, जैसे-साधु और ब्राह्मणादि । (ख) मानस, जैसे-सत्य, क्षमा, दया, दान, संतोष, ब्रह्मचर्य, ज्ञान, धैर्य, मधुर-भाषण आदि और (ग) स्थावर । जैसे-काशि, प्रयाग, गया आदि । २-कोई पवित्र स्थान । ३-शास्त्र । ४-यज्ञ । ५-संन्यासियों का एक भेद । ६-स्थान । स्थल । ७-उपाय । ८-अवसर । ९-रजस्वला का रक्त । १०-अवतार । ११-चरणामृत । १२-गुरु । उपाध्याय । १३-मंत्री । १४-योनि । १५-दर्शन । १६-घाट । १७-ब्राह्मण । विप्र । १८-कारण । निदान । १९-अग्नि । '२०-पुण्यकाल । २१-तारने वाला । २२-वैर भाव को त्याग कर परस्पर उचित व्यवहार । २४-ईश्वर । २५-माता-पिता । २६-अतिथि । २७-राष्ट्र की १८ सम्पत्तियाँ जिनके नाम इस प्रकार हैं । १-मंत्री, २-पुरोहित, ३-युवराज, ४-भूपति, द्वारपाल, ६-अंतर्वेशिक, ७-कारागाराध्यक्ष, ८-द्रव्य संचयकारक, ९-कृत्याकृत्य अर्थ का विनियोजक, १०-प्रदेष्टा, ११-नगराध्यक्ष, १२-कार्य-निर्माणकारक, १३-धर्माध्यक्ष, १४-सभाध्यक्ष, १५-दंडपाल, १६-दुर्गपाल, १७-राष्ट्रांतपाल और अटवीपाल ।

तीर्थक [वि.] (सं.) १-ब्राह्मण । २-तीर्थों की यात्रा करने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) तीर्थङ्कर ।

तीर्थकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-जिन ।

तीर्थकरण [वि.] (सं.) पवित्रीकरण ।

तीर्थदेव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

तीर्थपति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तीर्थराज' ।

तीर्थपाद [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

तीर्थपादीय [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णव ।

तीर्थयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पवित्र स्थानों में दर्शन-स्नानादि के निमित्त जाना । तीर्थाटन ।

तीर्थराज [संज्ञा पु.] (सं.) प्रयाग । वह स्थान जहां विश्ववंद्य महात्मा गांधी का अस्थि-प्रवाह किया गया था ।

तीर्थराजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काशी ।

तीर्थसेनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

तीर्थसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीर्थाटन । तीर्थयात्रा

तीर्थसेवी [वि.] (सं.) तीर्थयात्रा करने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) बगला । बकपक्षी ।

तीर्थाटन [संज्ञा पु.] (सं.) तीर्थयात्रा ।

तीर्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर्थ का ब्राह्मण । पंडा । २-बौद्ध-धर्म से द्वेष करने वाला ब्राह्मण । ३-तीर्थंकर ।

तीर्थिया [संज्ञा पु.] (हिं.) तीर्थंकरों को मानने वाला । जैनी ।

तीर्थीभूत [वि.] (सं.) तीर्थस्वरूप । पवित्री ।

तीर्थ्य [संज्ञा. पु.] (सं.) १-रुद्र का नाम । २-सहपाठी ।

तीर्न [संज्ञा पु.] देखो 'तीर्ण' ।

तीर्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्धारण' ।

तीलखा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया

तीला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तीली] बड़ा तिनका । सींक ।

तीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सींक । बड़ा तिनका । २-धातु का पतला पर कड़ा तार । ३-रेशम लपेटने की पतली गड़ारी । ४-सूत साफ करने की जुलाहे की कूंची ।

तीव‡ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री । औरत ।

तीवन‡ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पकवान । २-रसेदार तरकारी ।

तीवर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. तीवरी] १-समुद्र । २-व्याध । शिकारी । ३-मछुआ । ४-एक वर्णसंकर जाति ।

तीवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तीवरजाति की स्त्री । २-व्याधपत्नी ।

तीव्र [वि.] (सं.) १-अतिशय । अत्यंत । २-तीक्ष्ण । तेज । ३-बहुत गरम । ४-नितांत ।

बेहद । ५-कटु । कड़ुवा । ६-न सहने योग्य । दुःसह । ७-प्रचंड । ८-तीखा । ९-वेगयुक्त । तेज । १९-कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा या चढ़ा (स्वर) ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहा । २-इस्पात । ३-नदी का किनारा । ४-शिव । महादेव ।

तीव्रकंठ, तीव्रकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) जमींकंद । सूरन ।

तीव्रगंधा, तीव्रगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन । यवानी ।

तीव्रगंधिका, तीव्रगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तीव्रगंधा' ।

तीव्रगात [संज्ञा स्त्री., पु.] (सं.) वायु । हवा ।

तीव्रज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धव का फूल जिसके छूने से घाव हो जाता है ।

तीव्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीक्ष्णता । तेजी । प्रखरता । तीखापन ।

तीव्रबंध, तीव्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) तमोगुण । तामसगुण ।

तीव्रवेदना [संज्ञा स्त्री.] (सं) अत्यन्त पीड़ा । बड़ी तकलीफ ।

तीव्रसंवेग [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा वैराग्य ।

तीव्रसंताप, तीव्रसन्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्येनपक्षी । २-बहुत भारी कष्ट ।

तीव्रसव [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही दिन में संपन्न होने वाला एक यज्ञ विशेष ।

तीव्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-षडज स्वर की चार श्रुतियों में से प्रथम श्रुति । २-खुरासानी अजवायन । ३-राई । ४-गाँडर दूब । ५-तुलसी । ६-कुटकी । बड़ी मालकंगनी । ७-कुटकी । ८-तरवीवृक्ष ।

तीव्रानंद, तीव्रानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

तीव्रानुराग [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार एक प्रकार का अतिचार ।

तीस [वि.] (हिं.) गिनती में उनतीस के बाद आने वाला ।

तीसो दिन-हमेशा । सर्वदा । *तीसमारखाँ*-बड़ा बहादुर । (व्यंग्य) ।

तीसर* [वि.] (हिं.) देखो 'तीसरा' ।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत की तीसरी जुताई ।

तीसरा [वि.] (हिं.) १-गिनती अथवा क्रम में तीन के स्थान पर पड़ने वाला । २-जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई संबंध न हो । तटस्थ ।

तीसरा पहर-दो पहर के बाद का समय । अपराह्न ।

तीसवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसके पहले उन्तीस और हों । क्रम में तीस के स्थान पर पड़ने वाला ।

तीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अलसी नामक तेलहन । २-एक प्रकार की छेनी । ३-फल आदि गिनने का एक मान जो एक सौ पचास का होता है ।

तीहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तसल्ली । आश्वासन । २-तिहाई ।

तुंग, तुङ्ग [वि.] (सं.) १-उन्नत । ऊँचा । २-उग्र । प्रचंड । ३-प्रधान । मुख्य । [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुन्नाग । २-पर्वत । ३-नारियल । ४-कमल का केसर । किंजल्क । ५-शिव । ६-बुधग्रह । ७-ग्रहों की उच्चराशि । ८-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और दो गुरु होते हैं । ९-एक छोटा झाड़ या पेड़ जिसकी छाल से चमड़ा कमाया जाता है ।

तुंगक, तुङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) पुन्नागवृक्ष । नागकेसर । २-महाभारत के अनुसार एक तीर्थ ।

तुंगता, तुङ्गता [संज्ञा स्त्री.] (सं) ऊँचाई ।

तुंगनाथ, तुङ्गनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थ स्थान ।

तुंगनाभ, तुङ्गनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक विषैला कीड़ा जो जंतुओं में गिना जाता है (सुश्रुत) ।

तुंगभद्र, तुङ्गभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) मतवाला हाथी ।

तुंगभद्रा, तुङ्गभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण की एक नदी जो सह्याद्रि पर्वत से निकलकर कृष्णानदी में जा मिलती है ।

तुंगबाहु, तुङ्गबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार के ३२ हाथों में से एक ।

तुंगवृक्ष, तुङ्गवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का पेड़ ।

तुंगवेणा, तुङ्गवेणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम ।

तुंगशेखर, तुङ्गशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत की ऊँची चोटी ।

तुंगा, तुङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वंशलोचन । २-शमीवृक्ष । ३-'तुंग' नामक वर्णवृत्त ।

तुंगारण्य, तुङ्गारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) बेतवा तट के पास का वन प्रदेश ।

तुंगारन्न*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तुगारण्य'

तुंगारि, तुङ्गारि [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कनेर का वृक्ष ।

तुंगिनी, तुङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी सतावर ।

तुंगी, तुङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हलदी । २ रात्रि । ३-वनतुलसी ।

तुंगीनास, तुङ्गीनास [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा ।

तुंगीपति, तुङ्गीपति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

तुंगीश, तुङ्गीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-कृष्ण । ३-सूर्य । ४-चन्द्रमा ।

तुंज, तुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र ।

तुंजाल [संज्ञा पु.] (हिं.) मक्खियों आदि से बचाने के लिये घोड़ों पर डालने का जाल जिसके नीचे फुंदने लगे रहते हैं ।

तुंजीन, तुञ्जीन [संज्ञा पु.] (सं.) काश्मीर के कई प्राचीन राजाओं का नाम ।

तुंड, तुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख । मुँह । २-चंचु । चोंच । ३-थूथन । निकला हुआ मुँह । ४-तलवार का अगला हिस्सा । ५-शिव । महादेव । ६-एक राक्षस का नाम ।

तुंडकेरिका, तुण्डकेरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपास का पौधा

तुंडकेरी, तुण्डकेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपास । २-विबाफल ।

तुंडकेशरी, तुण्डकेशरी [संज्ञा पु.] (सं.) तालु की जड़ में सूजन होने का एक रोग ।

तुंडि, तुण्डि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुख । २-चोंच । ३-बिबाफल ।

तुंडिका, तुण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चोंच । २-विबाफल । ३-ढोंढी । नाभी ।

तुंडिकेशी, तुण्डिकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुँदरू । विम्बफल ।

तुंडिभ, तुण्डिभ [वि.] (सं.) जिसकी नाभी निकली हो ।

तुंडिल, तुण्डिल [वि.] (सं.) १-तोंद वाला । निकले हुए पेट वाला । २-जिसकी नाभि निकली हो । ३-बकवादी । मुँहजोर ।

तुंडी, तुण्डी [वि.] (सं.) १-मुखवाला । २-चोंचवाला ।

[संज्ञा पु.] (सं.) गणेश ।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभि । ढोंढी ।

तुंडीगुदपाक [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चों की गुदा पकने का एक रोग जिससे नाभि में पीड़ा होती है ।

तुंडीरमंडल, तुण्डीरमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण के एक देश का नाम ।

तुंद, तुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) पेट । उदर ।

[वि.] (फ़ा.) तेज । प्रचंड । घोर ।

तुंदकूपिका, तुन्दकूपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभी । ढोंढी ।

तुंदकूपी, तुन्दकूपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभी । ढोंढी ।

तुंदवत, तुन्दवत [वि.] (सं.) तोंद वाला । तोंद निकला हुआ ।

तुंदि, तुन्दि [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाभि । २-एक गंधर्व का नाम ।

तुंदिक, [र] तुन्दिक [र] [वि.] (सं.) तोंद वाला । बड़े पेट वाला ।

तुंदिकफला, तुन्दिकफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खीरे की बेल ।

तुंदिका, तुन्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभि ।

तुंदिन, तुन्दिन [वि.] (सं.) उभड़े हुए पेट वाला

तुंदिभ, तुन्दिभ [वि.] (सं.) तोंद वाला । निकले

दिल, तुन्दिल हुए पेट वाला।

ल, **तुन्दिल** [वि.] (सं) घड़े पेट वाला। तोंदीला।

ी, **तुन्दी** [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभि।

ल [वि.] (हिं) लंबोदर। तोंदवाला।

ला [वि.] (हिं.) तोंदीला। उभड़े हुए पेट वाला।

, **तुम्ब** [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोल लौकी। लौवा। २-तूंबा। लौवे का सूखा फल।

, **तुम्बक** [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौकी। २-धनिया।

ड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'तूंबड़ी'।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी भीतर सं स द, नर्म और चिकनी होती है। इसकी पत्तियां चारे के काम में आती हैं।

+ [संज्ञा पु.] देखो 'तुँबुरु'।

, **तुम्बरु** [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधर्व का नाम।

तुम्बवन [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के अनुसार एक देश जो दक्षिण दिशा में है।

तुम्बा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कडुआ कद्दू। २-कडुए कद्दू की खोपड़ी का पत्र। ३-एक प्रकार का जंगली धान।

, **तुम्बिका** [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुंबी'।

, **तुम्बी** [संज्ञा स्त्री.] (सं.] १-छोटा कडुवा कद्दू। २-गोल कद्दू का खोपड़ा।

, **तुम्बुक** [संज्ञा पु.] (सं.) कद्दू का फल। घीया।

, **तुम्बुरी** [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-धनिया। २-कुतिया।

, **तुम्बुरु** [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनिया। २-एक प्रकार के पौधे का कुछ फटा हुआ धनिये के आकार का बीज। ३-एक जिन उपासक का नाम। ४-एक गंधर्व का नाम।

वीणा, **तुम्बरुवीणा** [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तानपूरा।

[अव्य.] (सं.) १-निरर्थक। २-पादपूरक शब्द तो।

[सर्व.] (हिं.) देखो 'तव',।

ना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-चूना। टपकना। २-गिर पड़ना। ३-गर्भपात होना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) अरहर। अटकी।

[सर्व.] (हिं.) देखो 'तू'।

[संज्ञा स्त्री.] (?) कपड़े पर बुनी एक बेल विशेष जिसे स्त्रियां दुपट्टों पर लगाती हैं।

[सर्व.] (हिं.) देखो 'तू'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी पद्य या गीत का कोई खण्ड। कड़ी। २-पद्य के चरण का अंतिम अक्षर। ३-पद्य या कविता के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों का परस्पर मेल। अंत्यानुप्रास। काफिया। किसी बात की उपयुक्तिता से गति। ५-दो बातों या कामों का पारस्परिक सामंजस्य।

तुक जोड़ना–भद्दी या साधारण कविता करना।

तुकना [क्रि. स.] (हिं.) 'तकना' का अनुकरण शब्द।

तुकबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काव्य के गुणों से रहित और केवल तुक जोड़कर साधारण कविता या पद्य, जिसमें काव्य के गुण न हों। भद्दी कविता।

तुकमा [संज्ञा पु.] (फा.) वह फंदा जिसमें पहनने के कपड़ों की घुंडी फंसाई जाती है।

तुकांत, तकान्त [संज्ञा पु.] (हिं.) कविता या पद्य के चरणों के अन्तिम अक्षरों या तुक का मेल। अंत्यानुप्रास। काफिया।

तुका [संज्ञा पु.] (फा.) वह तीर जिसमें गांसी के स्थान पर घुंडी बनी हो।

तुकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अशिष्ट संबोधन। 'तू', 'तू' करके बोलने की रीति जो अशिष्टिता की द्योतक है।

तू-तुकार करना–अशिष्ट शब्द से सम्बोधन करना।

तुकारना [क्रि. स.] (हिं.) तू-तू करके सम्बोधन करना। अशिष्ट सम्बोधन करना।

तुकड़ [संज्ञा पु.] (हिं .) तुकबन्दी करने वाला। तुक जोड़ने वाला। भद्दी काव्य के गुणों से रहित कविता करने वाला।

तुक्कल [संज्ञा स्त्री.] बड़ी पतंग। मोटी डोर से उड़ाई जाने वाली एक प्रकार की पतंग।

तुक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह तीर जिसमें गांसी या फल के स्थान पर घुंडी बनी होती है। २-टीला। छोटी पहाड़ी। ३-सीधी खड़ी वस्तु।

तुक्का-सा--ऊपर उठा हुआ।

तुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूसी। छिलका। २-अंडे के ऊपर का छिलका।

तुखार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिमालय के उत्तर-पश्चिम का एक देश। यहां प्राचीन काल में घोड़े बहुत अच्छे होते थे। २-इस देश का निवासी। ३-इस देश का घोड़ा।

❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तुषार'।

तुख्म [संज्ञा पु.] [संज्ञा पु.] (अ.) बीज।

तुगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशलोचन।

तुगाक्षीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशलोचन।

तुग्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक काल के राजर्षि का नाम जो अश्विनीकुमारों के उपासक थे

तुग्र्य, तग्र्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल। पानी।

[संज्ञा पु.] (सं.)१-तुग्र के वंश का पुरुष। २-तुग्र का पुत्र भुज्यु।

तुच+ [संज्ञा पु.] (हिं.) त्वच्। चमड़ा। छाल।

तुचा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'त्वचा'।

तुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सारहीन छिलका। भूसी। २-तूतिया। ३-नील का पौधा। [वि.] (सं.) १-हीन। क्षुद्र। नाचीज। २-ओछा। खोटा। नीच। ३-अल्प। थोड़ा। ४-खोखला। निःसार। भीतर से खाली।

तुच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) काले और हरे रंग का मरकत या पन्ना जो निम्न कोटि का माना जाता है।

तुच्छज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण ज्ञान। सामान्य बोध।

तुच्छता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीचता। हीनता। २-ओछापन। क्षुद्रता। ३-अल्पता।

तुच्छत्व [संज्ञा पु.] (सं.) क्षुद्रता। ओछापन। २-२-हीनता।

तुच्छद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) रेंड का पेड़।

तुच्छधान्यक [संज्ञा पु.] (सं.) भूसी। तुस।

तुच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पौधा। २-तूतिया। ३-छोटी इलायची।

तुच्छातितुच्छ [वि.] (सं.) छोटे से छोटा। अत्यन्त क्षुद्र। बहुत ही तुच्छ।

तुच्छीकृत [वि.] (सं.) अपमानित। तिरस्कार किया हुआ।

तुज् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जो रक्षा करने में समर्थ हो।

तुजीह [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) धनुष। कमान।

तुज्य [वि.] (सं.) वध करने योग्य।

तुझ [सर्व.] (हिं.) 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के सिवा दूसरी विभक्तियाँ लगने से पूर्व प्राप्त होता है।

तुझे [सर्व.] (हिं.) 'तू' का कर्म और संप्रदानरूप। तुझको।

तुट* [वि.] (हिं.) टुकड़ा। लेशमात्र। तनिकसा।

तुटिनट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

तुट्ठना* [क्रि. स.] (हिं.) तुष्ट या प्रसन्न करना। राजी करना। [क्रि. स.] तुष्ट या प्रसन्न होना। राजी होना।

तुटुम [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा। इन्दूर।

तुड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) तोड़ने में प्रवृत्त करना। तोड़ने देना।

तुड़वाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तुड़ाने की क्रिया या भाव। २-तोड़ने की क्रिया या भाव। ३-तोड़ने की मजदूरी।

तुड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तुड़ाने की क्रिया या भाव। २-तोड़ने की क्रिया या भाव। ३-तोड़ने की मजदूरी।

तुड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे से तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २-सम्बन्ध त्यागकर या छोड़कर अलग होना। ३-बड़े सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे-छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना। ४-बंधन छुड़ाना। ५-दाम

कम कराना । मूल्य घटवाना ।

तुड़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तोड़ने की क्रिया ।

तुडुम [संज्ञा पु.] (हिं.) तरुही । बिगुल ।

तुणि, तुणिक [संज्ञा पु.] (सं.) तुन का पेड़ ।

तुतरा*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. तुतरी] देखो 'तोतली'।

तुतराना+* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तुतलाना'।

तुतरौंहा [वि.] (हिं.) देखो 'तोतला'।

तुतलाना [क्रि. अ.] (हिं.) शब्दों और वर्णों का रुक-रुककर या अस्पष्ट उच्चारण करना । साफ न बोलना ।

तुतली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'तोतली'।

तुतरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सींघाबाजा । शृङ्गी ।

तुतुई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तुतुही'।

तुतुही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टोंटीदार छोटी घंटी या झारी ।

तुत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्थर । २-अग्नि । आग । ३-नील का पौधा । ४-तूतिया नामक उपधातु । नीलाथोथा ।

तुत्थक [संज्ञा पु.] (सं.) तूतिया । नीलाथोथा ।

तुत्थांजन, तुत्थाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) तूतिया । नीलाथोथा ।

तुत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पौधा । २-छोटी इलायची ।

तुदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यथा या पीड़ा देने की क्रिया । २-व्यथा । पीड़ा । ३-चुभाने या गड़ाने की क्रिया ।

तुन [संज्ञा पु.] (हिं.) साधारणतः सारे उत्तरीय भारत और सिकिम और भूटान तक पाया जाने वाला एक बहुत बड़ा पेड़ । इसकी ऊँचाई अस्सी से सौ फुट तक और लपेट चौबीस-पच्चीस फुट तक होती है । इसकी लकड़ी में घुन नहीं लगती ।

तुनक [वि.] (फा.) १-दुर्बल । कमजोर । २-कोमल । नाजुक ।

तुनकमिजाज-बात-बात पर रूठने या बिगड़ने वाला ।

तुनकामौज [संज्ञा पु.] (?) छोटा समुद्र ।

तुनकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की खस्ता रोटी ।

[वि.] (हिं.) बात-बात पर रूठने या बिगड़ने वाला ।

तुनतुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह बाजा जिसमें तुनतुन शब्द निकले । २-सारङ्गी ।

तुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तुननायक वृत्त ।

तुनीर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तूणीर'।

तुन्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुन का वृत्त । २-फटे हुए कपड़े का टुकड़ा । [वि.] (सं.) कटा या फटा हुआ । छिन्न ।

तुन्नवाय [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़ा सीने वाला । दरजी ।

तुपक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी तोप । २-बन्दूक । कड़ाबीन ।

तुफंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हवाई बन्दूक । २-वह लम्बी नली जिसमें मिट्टी या आटे की गोलियाँ भरकर फूँक के जोर से चलाते हैं ।

तुफान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तूफान'।

तुभाना [क्रि. अ.] (हिं.) स्तब्ध होना । चकित रह जाना ।

तुम [सर्व.] (हिं.) 'तू' शब्द का बहुवचन । वह सर्वनाम जिसका प्रयोग उस पुरुष के लिए होता है । जिससे कुछ कहा जाता है ।

तुमड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कडुए गोल कद्दू का सूखा हुआ फल । इस फल का बना हुआ पात्र जिसमें प्रायः साधु पानी पीते हैं । ३-इस फल का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूंककर बजाया जाता है । महुवर

तुमतड़ाक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तृमतड़ाक'।

तुमरा [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हारा'।

तुमरी* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुमड़ी'।

तुमरू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तुंबुरु'।

तुमरो [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हारा'।

तुमल* [संज्ञा पु. वि.] (हिं.) देखो 'तुमुल'।

तुमाना [क्रि. स.] (हिं.) रूई के तुमने का काम दूसरे से कराना ।

तुमुती [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की चिड़िया

तुमुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तुमुल'।

[संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों की एक जाति ।

तुमुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना या युद्ध का कोलाहल या धूम । लड़ाई की हलचल । २-सेना की गहरी भिडंत या मुठभेड़ । ३-बहेड़े का पेड़ ।

तुम्र [वि.] (सं.) हिंसक । मारने वाला ।

तुम्ह [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम'।

तुम्हरा* [सर्व.] (हिं.) [स्त्री तुम्हरी] देखो 'तुम्हारा'।

तुम्हारा [सर्व.] (हिं.) 'तुम' का संबंधकारक रूप

तुम्हें [सर्व.] (हिं.) कर्म और सम्प्रदान में तुम का विभक्तियुक्त रूप । तुमको ।

तुरंग, तुरङ्ग [वि.] (सं.) जल्दी चलने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा । २-चित्त । ३-सात की संख्या ।

तुरंगक, तुरङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी तरोई ।

तुरंगगौड़, तुरङ्गगौड़ [संज्ञा पु.] (सं.) गौड़ राग का एक भेद ।

तुरंगद्वेषिणी, तुरङ्गद्वेषिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भैंस । महिषी ।

तुरंगप्रिय, तुरङ्गप्रिय [संज्ञा पु.](सं.) जौ । यव

तुरंगम, तुरङ्गम [वि.] (सं.) जल्दी चलने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा । २-चित्त । ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और दो गुरु होते हैं ।

तुरंगमशाला, तुरङ्गमशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वशाला । घुड़साल ।

तुरंगमेध, तुरङ्गमेध [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेध (यज्ञ) ।

तुरंगवक्त्र, तुरङ्गवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) (घोड़े के समान मुख वाला) किन्नर ।

तुरंगवदन, तुरङ्गवदन [संज्ञा पु.] (सं.) (घोड़े के समान मुख वाला) किन्नर ।

तुरंगशाला, तुरङ्गशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुड़साल । अस्तबल ।

तुरंगारि, तुरङ्गारि [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर । करवीर ।

तुरंगिका, तुरङ्गिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) देवदाली । घघरबेल ।

तुरंगी, तुरङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वगंधा । असगंध ।

तुरंज [संज्ञा पु.] (फा.) १-चकोतरा नीबू । २-बिजौरा नीबू । ३-पान या कलगी के आकार का बूटा जो वस्त्रों के किनारों पर बनाया जाता है ।

तुरंजबीन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खुरासानदेश में होने वाली एक प्रकार की चीनी जो ऊंटकटारे के पौधों पर ओस के साथ जमती है ।

तुरंत [क्रि. वि.] (हिं.) जल्दी से । अत्यंत शीघ्र । तत्क्षण । झटपट । फौरन ।

तुरंता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (जिसकी पीते ही तुरंत नशा चढ़ता है) गाँजा ।

तुर [क्रि. वि.] (सं.) शीघ्र । जल्द । [वि.] (सं.) वेगवान । शीघ्रगामी । जल्दी-जल्दी चलने वाला । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहे की वह लकड़ी जिसपर वे कपड़ा बुनकर लपेटते जाते हैं । २-वह बेलन जिसपर गोटा बुनकर लपेटा जाता है ।

तुरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है ।

तुरई का फूल सा-हलकी या छोटी-मोटी वस्तु के समान शीघ्र समाप्त या खर्च हो जाने वाला । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुरही'।

तुरक [संज्ञा पु.] देखो 'तुर्क'।

तुरकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) मुसलमान ।

तुरकड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तुरकड़ी] मुसलमान ।

तुरकड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुसलमानी । मुसलमान जाति की स्त्री ।

तुरकड़ो* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तुरकड़ी] मुसलमान ।

तुरकान* [संज्ञा पु.] (हिं.) तुर्कों या मुसलमानों की बस्ती ।

तुरकाना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तुरकानी] १-

तुर्कों का सा। तुर्कों के ऐसा। २-तुर्कों का देश या बस्ती।

तुरकानी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र] तुर्कों की सी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तुर्क की स्त्री।

तुरकिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तुर्क की स्त्री। २-तुर्क जाति की स्त्री। ३-मुसलमानिन। मुसलमान-स्त्री।

तुरकिस्तान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तुर्किस्तान'।

तुरकी [वि.] (फा.) १-तुर्कदेश का। २-तुर्कदेश संबंधी। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तुर्किस्तान की भाषा।

तुरग [वि.] (सं.) तेज चलने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. तुरगी] १-घोड़ा। २-चित्त।

तुरगगंधा, तुरगगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वगंधा। असगन्ध।

तुरगदानव [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े का रूप धारण करने वाला एक केशी नामक दैत्य जो कंस की आज्ञा से श्रीकृष्ण को मारने के लिए गया था।

तुरगब्रह्मचर्य [संज्ञा पु.] (सं.) केवल स्त्री न मिलने के कारण होने वाला ब्रह्मचर्य।

तुरगरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की देखभाल करने वाला। साईस।

तुरगलीलक [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताल का नाम।

तुरगातु [वि.] (सं.) शीघ्र चलने वाला। तेज चलने वाला।

तुरगानन [संज्ञा पु.] (सं.) एक किन्नर जाति जिनका मुख घोड़े समान और शेष अङ्ग मनुष्य के समान हो।

तुरगारोह [संज्ञा पु.] (सं.) घुड़सवार। अश्वारोही।

तुरगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घोड़ी। २-अश्वगन्धा। ३-असगन्ध।

तुरगीय [वि.] (सं.) अश्व या घोड़े-सम्बन्धी। घोड़े का।

तुरगुला [संज्ञा पु.] (देश.) कर्णफूल नामक कान का गहना। झुमका। लोलक। कर्णफूल।

तुरत [अव्य.] (हिं.) शीघ्र। तत्क्षण। चटपट। तुरतफुरत-चटपट।

तुरतुरा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. तुरतुरी] १-तेज। जल्दबाज। २-बहुत जल्दी २ बोलने वाला।

तुरतुरिया [वि.] (हिं.) देखो 'तुरतुरी'।

तुरतुरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १-तेज। जल्दबाज। बहुत जल्दी-जल्दी बोलने वाली।

तुरपन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तुरपे या सीये जाने की क्रिया या भाव। २-एक प्रकार की सिलाई जिसमें जोड़ों को पहले लम्बाई के बल सीधे टांके डालकर मिला लेते हैं। फिर निकले हुए छोर को मोड़कर फिर तिरछी सिलाई के द्वारा जमा देते हैं। ३-सीवन।

तुरपना [क्रि. स.] (हिं.) तुरपने के समान सीना या सिलाई करना। लुढ़िआना।

तुरपवाना [क्रि. स.] (हिं.) तुरपाने में किसी को प्रवृत्त करना। तुरपन की सिलाई कराना।

तुरपाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तुरपवाना'।

तुरम [संज्ञा पु.] (हिं.) तुरही।

तुरमती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की शिकारी चिड़िया जो बाज से छोटी होती है।

तुरमनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नारियल रेतने की रेती।

तुरय* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तुरी] घोड़ा।

तुरया [क्रि. वि.] (सं.) शीघ्रता से जल्दी से।

तुरही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा जो फूंककर बनाया जाता है, यह आगे से चौड़ा और मुख के पास से पतला होता है।

तुरा* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्वरा'। [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा। अश्व।

तुराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गद्दा। २-दुलाई

तुराट* [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा।

तुराना* [क्रि. अ.] (हिं.) घबराना। आतुर होना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तुड़ाना'।

तुरायण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ। [वि.] (सं.) लीन। आसक्त।

तुरावत् [वि.] (हिं.) वेगयुक्त। वेगवाला।

तुरावती [वि.] (हिं.) वेग से बहने वाली। वेगवाली।

तुरावान् [वि.] देखो 'तुरावत्'।

तुराषाट् [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

तुरासाह [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

तुरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तोड़िया नामक जुलाहे का औजार।

तुरिया* [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'तुरीय'। २-देखो 'तोरिया'।

तुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जुलाहों का तोड़िया नाम औजार। २-जुलाहों की कूँची। [वि.] (सं.) वेगवाली। वेगयुक्त। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोड़ी। २-लगाम। तुरही (बाजा)। ३-फूलों का गुच्छा। ४-मोती की लड़ों का झब्बा। [संज्ञा पु.] (हिं.) अश्वारोही। सवार।

तुरीय [वि.] (सं.) चौथा। चतुर्थ। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुख में आकर उच्चरित होती है। वैखरी २-प्राणियों की अन्तिम अवस्था जो मोक्ष है। (वेदान्त)।

तुरीयक [वि.] (सं.) चतुर्थ। चौथा।

तुरी-यंत्र, तरी-यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिसके द्वारा सूर्य की गति जानी जाती है।

तुरीयवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) चौथेवर्ण का पुरुष। शूद्र।

तुरुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तुर्क'।

तुरुप [संज्ञा पु.] (हिं.) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रंग प्रधान माना जाता है।

तुरुपना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तुरपना'।

तुरुष्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुर्कजाति। तुर्किस्तान का रहने वाला मनुष्य। २-तुर्किस्तान देश। ३-इस देश का घोड़ा।

तुरुष्कगौड़ [संज्ञा पु.] (सं.) गौड़राग का एक भेद।

तुरुही [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'तुरही'।

तुरैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तुरई'।

तुर्क [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तुर्किस्तान का निवासी। २-मुसलमान। ३-टर्की या रूम का रहने वाला।

तुर्कमान [संज्ञा पु.] (फा.) १-तुर्कजाति का मनुष्य। २-तुर्कीघोड़ा।

तुर्कसवार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक विशेष प्रकार का सवार जो सब तुर्की पहरावा पहनता है।

तुर्किन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-तुर्कजाति की स्त्री। २-तुर्क की स्त्री।

तुर्किनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुर्किन'।

तुर्की [वि.] (फा.) तुर्किस्तान का। [संज्ञा स्त्री.] १-तुर्किस्तान की भाषा। २-तुर्किस्तान का घोड़ा। ३-तुर्कों का सा अभिमान या अक्खड़पन।

तुर्की तमाम होना-घमंड जाता रहना।

तुर्फरी [संज्ञा पु.] (सं.) अंकुश मारने का भाला जिसकी नोक सीधी होती है। हंता।

जर्फरी तुर्फरी-बात का बतङ्गड़।

तुर्य [वि.] (सं.) चौथा। चतुर्थ।

तुर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह ज्ञान जिससे मुक्ति हो जाती है।

तुर्याश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर्थाश्रम। संन्यासाश्रम।

तुर्रा [संज्ञा पु.] (अ.) १-माथे पर की घुंघराले बालों की लट। काकुल। २-कलगी। गोशावारा। पगड़ी के ऊपर लगाने का बादले का गुच्छा। ४-फूलों का वह गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ५-टोपी आदि में लगाहुआ फुंदना। ६-पक्षियों की शिखा। ७-हाशिया। किनारा। ८-मकान का छज्जा। ९-जटाधारी नामक पुष्प। १०-कोड़ा। चाबुक। ११-एक प्रकार की बुलबुल या बटेर। १२-मुंहासे का वह पल्ला जो उसके ऊपर निकला होता है।

तुर्रा-तरार-सुन्दर बालों की लट।

तुर्रा यह है कि-सब के उपरान्त या बाद इतना यह भी। *किसी बात दर तुर्रा होना*-१-किसी बात में कोई और दूसरी बात भी

मिलाई जाना। २-यथार्थ बात के अलावा और दूसरी बात भी मिलाई जाना। *तुर्रा करना*-१-कोड़ा मारना। २-कोड़ा मारकर घोड़े को बढ़ाना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) माँग आदि की घूंट या चुस्की।
तुर्रा चढ़ाना या जमाना-भांग पीना।
[वि.] (फा.) अनोखा। अद्भुत।

तुर्वन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रु की हत्या।

तुर्वश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ययाति के पुत्र का नाम।

तुर्वसु [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ययाति के एक पुत्र का नाम जो देवयानी गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

तुर्श [वि.] (फा.) खट्टा।

तुर्शरू [वि.] (फा.) तीखे मिजाज वाला। बदमिजाज।

तुर्शाई+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुर्शी'।

तुर्शाना [क्रि. अ.] (फा.) खट्टा हो जाना।

तुर्शी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खटाई। अम्लता।

तुर्शीदंदाँ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) घोड़े के दांतों में मैल जमने का रोग।

तुल [वि.] (हिं.) देखो 'तुल्य'।

तुलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-तराजू पर तोला जाना। २-तौल या मान में बराबर उतरना। ३-आधार पर इस प्रकार जमकर खड़ा होना या ठहरना कि कोई भाग किसी ओर झुका न रहे। ४-नियमित होना। बँधना। ५-गाड़ी के पहिये का औंगा जाना। ६-उद्यत होना।
किसी काम या बात पर तुलना-कोई काम करने के लिए उद्यत होना।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दो या दो से अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरे से कम या अधिक अथवा अच्छी या बुरी होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २-सादृश्य। समानता। ३-उपमा।

तुलनात्मक [वि.] (सं.) जिसमें अन्य प्रकार के विवेचनों अथवा विचारों के अतिरिक्त किसी के साथ हो सकने वाली तुलना का भी विचार हो। कम्पेरेटिव।

तुलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लोहा जो तराजू के कांटे के दोनों ओर लगा रहता है।

तुलबुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जल्दबाजी।

तुलवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तौलने की मजदूरी २-पहिये को ओंघने या तेल देने की मजदूरी।

तुलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-तौल या वजन कराना। २-गाड़ी के पहिये में तेल दिलाना। औंगवाना।

तुलसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तृण। घास।

तुलसी [संज्ञा स्त्री.] एक छोटा पौधा जिसके पत्तों से तीक्ष्ण गंध निकलती है। हिन्दू लोग इसको पवित्र मानते हैं। शालग्राम-ठाकुर की पूजा तुलसीदल के बिना नहीं होती। चरणामृत आदि में भी तुलसीदल डाला जाता है।

तुलसीदल [संज्ञा पु.] (सं.) तुलसी-पत्र। तुलसी के पौधे का पत्ता।

तुलसीदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना।

तुलसीदास [संज्ञा पु.] भारत के सर्वप्रधान भक्त-कवि जो कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे इनके 'रामचरितमानस' को भारत में बड़े श्रद्धासहित पढ़ा जाता है इसका प्रचार भारत के घर-घर में है। इनका जन्म संवत् १५८६ में हुआ था। चैत्रशुक्ल ६ (रामनवमी) संवत् १६३१ में रामचरितमानस लिखना आरम्भ किया। संवत् १६८० में काशी के असीघाट पर इनका शरीरान्त हुआ। रामचरितमानस के अतिरिक्त गोस्वामी जी की लिखी अन्य पुस्तकें ये हैं-दोहावली, गीतावली, कवित्तरामायण, विनयपत्रिका, रामाज्ञा, रामललानहछू, बरवैरामायण, जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, वैराग्यसंदीपनी और कृष्णगीतावली।

तुलसीद्वेषा [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) बनतुलसी। बर्वरी।

तुलसीपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तुलसी की पत्ती।

तुलसीवास [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अगहनिया धान जिसका चावल सुगंधित और बहुत दिन तक रह सकता है।

तुलसीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ तुलसी के बहुत से पौधे हों। तुलसी का जंगल। २-वृंदावन।

तुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तुलना। मिलाना। २-गुरुत्व या भार नापने का यन्त्र। तराजू। काँटा। ३-मान। तौल। ४-ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि। ७-सत्यासत्य के निर्णय की एक परीक्षा जो प्राचीनकाल में प्रचलित थी। ८-वास्तुविद्या में स्तंभ के विभागों में से चौथा।

तुलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तौलने का काम या भाव। २-तौलने की मजदूरी। २-तूलने या ओंघने (गाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देने) का काम या मजदूरी। ३-वह दोहरा कपड़ा जिसमें रूई भरी हो। दुलाई।

तुलाकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-तौल में कसर या कमी। २-तौलने में कसर करने वाला। डाँड़ी मारने वाला व्यक्ति।

तुलाकोटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तराजू की डंडी के दोनों छोर जिसमें पलड़े की रस्सी बंधी रहती है।

तुलाकोश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलापरीक्षा।

तुलाघट [संज्ञा पु.] (सं.) तराजू की डंडी।

तुलादान [संज्ञा पु.] (सं.) एक दान विशेष जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है। यह सोलह महादानों में से है।

तुलाधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुलाराशि। २-तराजू की डोरी। [वि.] तराजू पकड़ने वाला।

तुलाधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुलाराशि। २-तराजू की डोरी। ३-बनियां। वणिक्। ४-वाराणसी निवासी एक व्याध जो सर्वदा माता-पिता की सेवा में तत्पर रहता था। ५-वाराणसी निवासी एक बनिया जिसने जाजलि को मोक्षधर्म का उपदेश दिया था।
[वि.] (सं.) तुला को धारण करने वाला।

तुलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-आपहुँचना। समीप आना। २-बराबर होना पूरा उतरना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-तोल कराना। वजन कराना। २-गाड़ी के पहियों की धुरी में चिकना पदार्थ दिलाना। औंगाना।

तुलापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें आय, व्यय, बचत और लाभ आदि का लेखा रहता है।

तुलापरीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल में अभियुक्त की एक परीक्षा जिसमें उसको तराजू के पलड़े पर बैठाकर तोलते थे फिर उतारकर दुबारा तोलते थे। यदि पलड़ा कुछ झुक जाता था तो अभियुक्त को दोषी समझते थे।

तुलाग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) तराजू में बंधी हुई डोरी।

तुलापुरुषकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक पंद्रह दिन का व्रत जिसमें भात, मट्ठा, जल और सत्तू इनमें से प्रत्येक को तीन-तीन दिन खाना पड़ता था।

तुलापुरुषदान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तुलादान'।

तुलाबीज [संज्ञा पु.] (सं.) घुंघची के बीज जो तोल के काम में आते हैं।

तुलाभवानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंकर दिग्विजय के अनुसार एक नदी और नगरी का नाम।

तुलामान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अंदाज या मान जो तोलकर किया जाय। २-बाट। बटखरा।

तुलायंत्र, तुलायन्त्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तराजू।

तुलायिष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तराजू में बंधी हुई डोरी।

तुलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह लकड़ी जिसके सहारे गाड़ी उठाकर पहिया निकालकर धुरी में चिकनाई लगाई जाती है।

तुलासूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तराजू की डोरी जिसमें पलड़े बंधे रहते हैं।

तुलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जुलाहों की कूंची।

२-चित्र बनाने की कूँची।

तूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खंजन के समान एक छोटी चिड़िया। २-कूँची।

तुलित [वि.] (सं.) १-तुला हुआ। २-बराबर। समान।

तूलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड़।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमर का वृक्ष।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तूली'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी तराजू। काँटा।

+ [संज्ञा स्त्री.] (?) तम्बाकू। सुरती।

तुलुव [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुछ दूर पर जाकर पड़ने वाली बंधी हुई धार। (जैसे-पेशाब की)

तुल्य [वि.] (सं.) १-समान। बराबर। २-सदृश।

तुल्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बराबरी। समता। २-सादृश्य।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) स्वजाति के लोगों के साथ मिलजुलकर खाना-पीना।

[illegible]व्यंग्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यंग्य जिसमें वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ बराबर हों।

[illegible] [वि.] (सं.) बराबर की शक्ति या ताकत का।

[illegible] [वि.] (सं.) बराबर की कीमत या दाम का।

[illegible]योगिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अलंकार जिसमें कई या बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही समान धर्म बतलाया जाता है।

[illegible]योगी [वि.] (सं.) समान-सम्बन्ध रखने वाला।

[illegible] [वि.] (सं.) एकरूप। सदृश।

[illegible] [वि.] (सं.) एक व्यवसाय का।

[illegible] [वि.] (सं.) जो देखने में समान आकृति का हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

[illegible] [सर्व.] (हि.) देखो 'तव'।

[illegible] [वि.] (सं.) १-कसैला। २-बिना दाढ़ी-मूंछ का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसैला। कषायरस २-अरहर। ३-एक पौधा जो नदियों और समुद्र के तट पर होता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) लालज्वर।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोपीचंदन। २-आढ़की। अरहर।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तुवरिका'।

[illegible] [शिम्ब] [संज्ञा पु.] (सं.) चकवड़ का पेड़।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तूँबी।

[illegible] [वि.] (सं.) बहुत जोर का शब्द करने वाला।

तुविग्रीव [वि.] (सं.) जिसका कंधा चौड़ा और मजबूत हो।

तुविजात [वि.] (सं.) पराक्रमी। ओजस्वी।

तुविप्रति [वि.] (सं.) बहुत से मनुष्यों से भेंट करने वाला।

तुविमन्यु [वि.] (सं.) जिसका विचार पक्का हो। स्थिर सिद्धान्त वाला।

तुविरव [वि.] (सं.) बहु-शब्दयुक्त। शोरोगुल से परिपूर्ण।

तुशियार [संज्ञा पु.] (देश.) पश्चिम हिमालय में पाया जाने वाला एक झाड़ जिसकी छाल की रस्सियाँ बनाई जाती हैं।

तुष [संज्ञा प.] (सं.) १-अन्न के ऊपर का छिलका भूसी। २-अंडे के ऊपर का छिलका। ३-बहेड़े का पेड़।

तुषग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

तुषज [वि.] (सं.) भूसी में निकलने वाली आग।

तुषधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) छिलकासहित धान्य।

तुषांबु, तषाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की काँजी जो भूसी सहित कूटे हुए जौ को सड़ा कर बनती है। (वैद्यक)।

तुषानल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूसी की आग। घासफूस की आग। २-भूसी या घासफूस की आग में जल मरने की क्रिया जो प्रायश्चित के लिए की जाती है।

तुषार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवा में मिली भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती है। पाला। २-हिम। बरफ। ३-एक प्रकार का कपूर। ४-हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ५-इस देश में बसने वाली जाति। [वि.] (सं.) छूने में बरफ के समान ठंडा।

तुषारकण [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकण।

तुषारकर [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकर। चन्द्रमा।

तुषारकाल [संज्ञा पु.] (सं.) शीतकाल। शरद-ऋतु।

तुषारकिरण [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकर। चन्द्रमा।

तुषारगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

तुषारगौर [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

तुषारपाषाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बरफ। २-ओला।

तुषारमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकर। चन्द्रमा।

तुषाररश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकर। चन्द्रमा।

तुषाररेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा, जिसके ऊपरी भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है तथा नीचे के भाग का बरफ ग्रीष्मकाल में गल जाता है। स्नोलाइन।

तुषारांशु [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकर। चन्द्रमा।

तुषाराद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

तुषित [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के गण देवता जो बारह हैं। २-विष्णु। ३-एक स्वर्ग का नाम।

तुषोत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिलके सहित कूटे हुए जौ को पानी में सड़ाकर खट्टा किया हुआ जल।

तुषोदक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तुषोत्थ'।

तुष्ट [वि.] (सं.) १-तोष-प्राप्त। तृप्त। २-राजी। प्रसन्न। खुश।

तुष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सन्तोष। प्रसन्नता।

तुष्टना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रसन्न होना।

तुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सन्तोष। तृप्ति। २-प्रसन्नता। ३-कंस के आठ भाइयों में से एक।

तुष्टिकर [वि.] (सं.) संतोष देने वाला।

तुष्टु [संज्ञा पु.] कान में पहनने का मणि।

तुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

तुस [संज्ञा पु.] देखो 'तुष'।

तुसार [संज्ञा पु.] देखो 'तुषार'।

तुसी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) अन्न के ऊपर का छिलका भूसी।

तुस्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धूल। गर्द।

तुहफा [संज्ञा पु.] देखो 'तोहफा'।

तुहमत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तोहमत'।

तुहर [संज्ञा पु.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

तुहार+ [सर्व.] देखो 'तुम्हारा'।

तुहिं [सर्व.] (हिं.) तुझको।

तुहिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाला। कुहरा। तुषार। २-हिम। बरफ। ३-चांदनी। ४-शीतलता। ठंढक।

तुहिनकण [संज्ञा पु.] (सं.) हिमकण। बरफ का छोटा टुकड़ा।

तुहिनकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तुहिनकिरण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तुहिनगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत।

तुहिनदीधित [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तुहिनद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तुहिनरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तुहिनशैल [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत।

तुहिनांशु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

तुहिनाचल [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत।

तुहिनाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत।

तुहिनाशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

तुहुंड, तुहुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

तुहें+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हें'।

तूँ [सर्व.] (हिं.) देखो 'तू'।

तूँगी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश) १-पृथ्वी। भूमि।

२-नाव। नौका।

तूँबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तूंबा'।

तूँबना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तूमना'।

तूँबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कडुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २-कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ पात्र जिसे साधू लोग पानी के लिए पास रखते हैं। तुंबा।

तूँबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कडुआ गोले कद्दू। २-कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ जल-पात्र।

तू [सर्व.] (हिं.) मध्यमपुरुष एकवचन सर्वनाम (अशिष्ट)।

तू-तड़ाक, तू-तुकार या तू-तू-मैं-मैं करना-कहा-सुनी करना। अशिष्ट शब्दों में विवाद करना। गालीगलौज करना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुत्तों को बुलाने का शब्द।

तूख [संज्ञा पु.] (हिं.) तिनके का वह टुकड़ा जिसे गोदकर दोना बनाते हैं। सींक। खरका।

तूटना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'टूटना'।

तूठना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-तुष्ट या संतुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। २-प्रसन्न होना।

तूण [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर रखने का चोंगा। तरकश। २-चामर नामक वृत्त का एक नाम।

तूणक [संज्ञा पु.] (सं.) एक छन्द विशेष।

तूणक्ष्वेड़ [संज्ञा पु.] (सं.) बाण। तीर।

तूणधार [संज्ञा पु.] (सं.) तीर धारण करने वाला। तूणधारी।

तूणव [संज्ञा पु.] (सं.) तरकश के आकार का एक प्राचीन बाजा।

तूणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तरकश। निषंग। २-नील का पौधा। ३-एक प्रकार का वातरोग जिसका दर्द मूत्राशय से उठकर गुदा और पेड़ू तक फैलता है।

[वि.] (हिं.) तूणधारी। जो तरकश लिये हो

[संज्ञा पु.] (?) तुन का पेड़।

तूणीक [संज्ञा पु.] (सं.) तुन का पेड़।

तूणीर [संज्ञा पु.] (सं.) तीर रखने का चौगा। निषंग। तरकश।

तूत [संज्ञा पु.] (फा.) एक वृक्ष जिसके फल कीड़ों के समान लम्बे-लम्बे होते हैं यह खाये जाते हैं। मीठी जाति के तूत को शहतूत कहते हैं। इसकी पत्तियों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।

तूत्थक [संज्ञा पु.] (सं.) तूतिया। नीलाथोथा।

तूतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नीलाथोथा'।

तूती [संज्ञा स्त्री.] फा.) १-छोटी जाति का शुक या तोता जिसकी चोंच पीली, गरदन बैंगनी और पर हरे होते हैं। २-कनेरी नामक छोटी पीले रंग की चिड़िया जिसकी बोली बड़ी मधुर होती है। ३-एक प्रकार का छोटा बाजा

किसी की तूती बोलना-अधिक प्रभावशाली होना। *नक्कार खाने में तूती की आवाज*-नक्कारखाने में तूती की आवाज।

तूद [संज्ञा पु.] देखो 'तूत'।

तूदा [संज्ञा पु.] (फा.) १-ढेर। ढेरी। राशि। २-सीमा का चिह्न। हद बंदी। ३-मिट्टी का टीला जिसपर बन्दूक आदि का निशान लगाना सीखा जाता है।

तूदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देश का नाम।

तून [संज्ञा पुं.] (हिं.) १-तुन का वृक्ष। २-एक प्रकार का मोटा लाल कपड़ा। [संज्ञा पु.] देखो 'तूण'।

तूना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चूना। टपकना। २-गिरना। खड़ा न रह सकना। गिरना। ३-गर्भपात होना।

तूनीर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तूणीर'।

तूफ़ान [संज्ञा पु.] (अ.) १-समुद्र तल पर चलने वाली बहुत तेज आँधी। २-वह तेज आँधी जिसमें खूब धूल उड़े और पानी बरसे। ३-अपत्ति। ईति। प्रलय। आफत। ४-हल्ला। गुल्ला। बाबैल। ५-झगड़ा। बखेड़ा। ६-झूठा दोषारोपण। तोहमत।

तूफान जोड़ना, बांधना या बनाना-झूठा कलंक लगाना। झूठमूठ दोषारोपण करना।

तूफ़ानी [वि.] (फा.) १-तूफान खड़ा करने वाला। उपद्रवी। २-झूठा कलंक लगाने वाला। ३-उग्र। प्रचंड। ४-तूफान के समान तेज।

तूमड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तूंबी। २-एक प्रकार का तूंबी का बाजा जिसे संपेरे बजाया करते हैं।

तूमतड़ाक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-तड़क-भड़क। शान-शौकत। २-ठसक। ३-झगड़ा। विवाद (क्वचित)।

तूमना [क्रि. स.] (हिं.) १-रूई के रेशे या पहल को नोंचकर छुड़ाना या अलग-अलग करना उधेड़ना। बिथूरना। २-धज्जी-धज्जी करना। ३-हाथ से मसलना। ४-बात को उधेड़ना। रहस्य खोलना या भेद प्रकट करना।

तूमरी+* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तूमड़ी'।

तूमार [संज्ञा पु.] (अ.) बात का बतङ्गड़। बात का व्यर्थ विस्तार।

तूमारियासूत [संज्ञा पु.] (हिं.) कता हुआ महीन सूत।

तूय [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। पानी। २-शीघ्रता। जल्दी।

तूया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काली सरसों।

तूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का बाजा। नगाड़ा। २-तुरही नामक बाजा। सिंघा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गज, डेढ़ गज लम्बी लकड़ी जो जुलाहों के करघे में लगी रहती है। लपेटनी। फनियाला। २-वह रस्सी जिसे जनानी पालकी के चारों ओर परदे को उड़ने से बचाने के लिये बांधते हैं। ३-आ-हर।

तूरज* [संज्ञा पु.] देखो 'तूर्य'।

तूरण* [क्रि. वि.] देखो 'तूर्ण'।

तूरंत [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

तूरन* [संज्ञा पु.] देखो 'तूर्ण'।

तूरना [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

[क्रि. स.] (हिं.) तोड़ना।

❀+ [संज्ञा पु.] (हिं.) तुरही।

तूरा [संज्ञा पु.] देखो 'तुरही'।

तूरान [संज्ञा पु.] (फा.) मध्य एशिया महाद्वीप का फारस के उत्तर का सारा भाग। यह तुर्क तातारी, मुगल आदि जातियों का निवास स्थान है।

तूरानी [वि.] (फा.) तूरान देश का। तूरान-सम्बन्धी।

[संज्ञा पु.] तूरान देश का निवासी।

तूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धतूरे का पेड़।

तूर्ण [क्रि. वि.] (सं.) शीघ्र। जल्दी। तुरन्त।

तूर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चावल। (सुश्रुत)।

तूर्णाश [संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी। उदक।

तूर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मल। विष्टा। २-शीघ्रता। त्वरा।

[वि.] (सं.) तेज चलने वाला। शीघ्रगामी।

तूर्त [क्रि. वि.] (सं.) तत्काल। शीघ्र। तुरन्त।

तूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) तुरही नामक बाजा। सिं

तूर्यखंड, तूर्यखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा।

तूर्यजीव [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बाजा बजाकर जीवन निर्वाह करता हो।

तूर्याचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बाजा बजाने की शिक्षा देता हो।

तूर्व [क्रि. वि.] (हिं.) तुरन्त। शीघ्र। जल्द।

तूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-तूत या शहतूत। ३-कपास, सेमल आदि के डोडों के अन्दर का घूआ। ४-रूई।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २-गहरा लाल रंग।

❀ [वि.] (हिं.) तुल्य। समान।

[संज्ञा पु.] (अ.) लम्बाई। विस्तार।

तूल खींचना या पकड़ना-किसी बात का बहुत बढ़ जाना। *तूल-कलाम*-१-लम्बी चौड़ी बातें। २-कहा-सुनी। *तूल-तवील*-लम्बा चौड़ा।

तूलक [संज्ञा पु.] (सं.) तूल। कपास।

तूलकार्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) रूई धुनने का यन्त्र। धुनकी।

तूलचाप [संज्ञा पु.] (सं.) रूई धुनने का यन्त्र। धुनकी।

तूला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जहाज के रेलिंग या कटहरे की छड़ में लगी हुई एक खूंटी।

तुलता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समता। बराबरी।

तूलना [क्रि. स.] (हिं.) १–पहिये की धुरी में तेल या चिकना देना। २–धूरी में तेल देने के लिये पहिये को निकालकर गाड़ी को किसी लकड़ी के सहारे पर ठहराना।

तूलनालिका [संज्ञा स्त्री.] रूई की पोली मोटी बत्ती जिसमें से कातकर सूत निकाला जाता है। पिंजिका। पूनी।

तूलनाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तूलनालिका'

तूलपिचु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपास का पौधा।

तूलफल [संज्ञा पु.] (सं.) अर्कवृक्ष। अकवन का पेड़।

तूलफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शाल्मली। सेम्हर का पेड़।

तूलवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील।

तूलवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मली वृक्ष। सेमर का पेड़।

तूलशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपास का बीज। बिनौला।

तूलसेचन [संज्ञा पु.] (सं.) रूई से सूत कातने का काम।

तूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपास।

तूलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्रकार के रंग भरने की कूंची।

तूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्र अंकित करने या रंग भरने की कलम या कूंची।

तूलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लक्ष्मणकंद। २–सेमर का पेड़।

तूलिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमर का पेड़।

तूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–देखो 'तूलिका'। २–नीलवृक्ष। ३–जुलाहे की कूंची।

तूवर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तूवरक'।

तूवरक [संज्ञा पु.] (सं.) १–हूँड़ा बैल। सींगरहित बैल। २–बिना दाढ़ी-मूंछ का आदमी। ३–कषाय या कसैला रस। ४–अरहर।

तूवरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अरहर। २–गोपीचंदन।

तूवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ अरहर। २-गोपीचंदन

तूष्णी [वि.] (हिं.) मौन। चुप।

तूष्णीं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मौन। खामोशी। चुप्पी।

तूष्णीक [वि.] (सं.) मौन साधने वाला। मौनावलंबी।

तूष्णीभूत [वि.] (सं.) मौन। चुपचाप।

तूस [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भूसी। भूसा। २–एक उत्तम प्रकार का ऊन जो पहाड़ी बकरी के शरीर पर होता है। ३–इस ऊन की बनी चादर।

तूसदान [संज्ञा पु.] (हिं.) कारतूस।

तूसना* [क्रि. स.] (हिं.) १–संतुष्ट करना। तृप्त करना। २–प्रसन्न करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) संतुष्ट होना।

तूसा [संज्ञा पु.] (हिं.) चोकर। भूसी।

तूसी [वि.] (हिं.) तूस के रंग का। स्लेट या करंज के रंग का। करंजई। [संज्ञा पु.] एक रंग जो करंज या स्लेट के रंग के समान होता है।

तूस्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–धूल। रेणु। रज। २–अणु। कणिका। ३–जटा। ४–चाप। धनुष।

तृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कश्यपऋषि।

तृक्षाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

तृख [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

तृखा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तृषा'।

तृजग* [वि.] (हि.) देखो 'तिर्यक'।

तृण [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह उद्भिज जिसमें हीर या काठ नहीं होता। जैसे–घास, सरपत कुश, दूब आदि। २–एक प्रकार का कपूर। *तृण गहना या पकड़ना*–तिनका दाँतों से पकड़ना। हीनता प्रकट करना। *तृण गहाना, पकड़ाना*–नम्र करना। वशीभूत करना। *तृण टूटना*–बहुत सुन्दर होना। *तृण तोड़ना*–१–सम्बन्ध या नाता छोड़ना। २–सुन्दर वस्तु को नजर न लगने के उपाय करना। *तृणवत्*–तिनके के बराबर। अत्यन्त तुच्छ।

तृणक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चेना धान। २–थोड़ा सा तृण।

तृणकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

तृणकांड, तृणकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) घास का ढेर।

तृणकीय [वि.] (सं.) घास से उत्पन्न होने वाला। घास का। घास या तृणसम्बन्धी।

तृणकुंकुम, तृणकुङ्कुम [संज्ञा पु.] (सं.) एक घास। रोहिस घास।

तृणकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तृणों से छाई या बनाई मड़ई। झोंपड़ी।

तृणकूट [संज्ञा पु.] (सं.) घास का ढेर।

तृणकूर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद लौकी। गोल कद्दू।

तृणकेतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का तीखुर।

तृणकेतु [संज्ञा पु.] देखो 'तृणकेतकी'।

तृणकेतुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाँस। २–ताड़ का पेड़।

तृणकेसर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सुगंधित घास।

तृणगंधा, तृणगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णीलता।

तृणगोधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छिपकली। २–एक प्रकार की जोंक।

तृणगौर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सुगंधित घास।

तृणग्रंथी, तृणग्रन्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णजीवंती।

तृणग्राही [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रत्न का नाम। नीलमणि।

तृणचर [वि.] (सं.) तृण या घास चरने वाला (पशु)।

तृणजंभन्, तृणजम्भन् [वि.] (सं.) तृण या घास चरने वाला (पशु)।

तृणजलायुका [संज्ञा पु.] देखो 'तृणजलौका'।

तृणजलौका [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की जोंक

तृणजलौकन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) नैयायिक लोग इस वाक्य का प्रयोग उस अवस्था में करते हैं जब उन्हें आत्मा के एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में जाने का दृष्टान्त देना होता है। मतलब यह है कि जिस तरह जोंक जल में बहते तिनके के अन्त तक पहुँच जब दूसरा तिनका लेती है तब पहले को छोड़ देती है इसी तरह आत्मा जब दूसरे शरीर में जाती है तो पहले का परित्याग कर देती है। तृणजलौका के समान।

तृणजीवन [वि.] (सं.) घास खाकर जीने वाले (पशु)।

तृणज्योतिस् [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष्मती लता।

तृणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–धनुष। कमान। तृण या तृण के समान तुच्छ होने का भाव। हीनता।

तृणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) तृण के समान तुच्छ होने का भाव। तृणता। हीनता।

तृणदुह [संज्ञा पु.] (सं.) वड़वानल।

तृणद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १–ताड़ का वृक्ष। २–सुपारी का पेड़। ३–खजूर का पेड़। ४–केतकी का पेड़। ५–नारियल का पेड़। ६–हिंताल।

तृणधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–तिन्नी का चावल या धान। २–सावा।

तृणध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाँस। २–ताड़ का पेड़।

तृणनिंब, तृणनिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

तृणप [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधर्व का नाम।

तृणपति [संज्ञा पु.] (सं.) काला कपूर।

तृणपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इक्षुदर्भ नाम की एक घास।

तृणपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तृणपत्रिका'।

तृणपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घास के समान जड़वाली लता।

तृणपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

तृणपीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की लड़ाई। लड़ाई का एक ढंग।

तृणपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-तृणकेशर। २-ग्रंथिपर्णी। गठिवन।

तृणपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) सिन्दूरपुष्पी नामक घास।

तृणपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तृणपुष्पिका'।

तृणपूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घास की बनी हुई चटाई।

तृणप्राय [वि.] (सं.) निकृष्ट। निकम्मा। बुरा।

तृणमणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक रत्न का नाम।

तृणमत्कुण [संज्ञा पु.] (सं.) जमानतदार। प्रतिभू

तृणमय [वि.] (सं.) [स्त्री. तृणमयी] घास का बना हुआ।

तृणमयी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] घास की बनी हुई।

तृणमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का चमेली का फूल।

तृणमुद्‍ग [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का काला धान।

तृणमुस्तिका [संज्ञा स्त्री.]·(सं.) मोथा नामक घास।

तृणमेरु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुद्राक्ष का पेड़।

तृणराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-खजूर का पेड़। २-नारियल का वृक्ष। ३-ताड़वृक्ष।

तृणविंदु, तृणविन्दु [संज्ञा पु.](सं.) एक ऋषि का नाम।

तृणवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारियल का पेड़। २-ताड़वृक्ष। सुपारी का पेड़। ४-केतकी। ५-खजूर का पेड़।

तृणशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घास का बिछौना। चटाई। साथरी।

तृणशीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोहित घास जिसमें नीबू की गंध आती है। २-जलपिप्पली।

तृणशीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपिप्पली।

तृणशून्य [वि.] (सं.) बिना तृण का। तृण से रहित। [संज्ञा पु.] १-मल्लिका। २-केतकी।

तृणशूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लता का नाम।

तृणशोणित [संज्ञा पु.] (सं.) रोहित नामक घास।

तृणशोषक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

तृणषट्पद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा

तृणसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केले का पेड़।

तृणसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) कुठार। कुल्हाड़ी।

तृणस्कंद, तृणस्कन्द [वि.] (सं.) चंचल स्वभाव का।

तृणस्पर्शपीरषह [संज्ञा पु.] (सं.) दर्भादि कठोर तृणों को बिछाकर लेटने और उनके चुभने या गड़ने की पीड़ा को सहन करने की क्रिया। (जैन)।

तृणहर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह अटारी जिसपर फूस का छप्पर हो।

तृणांजन, तृणाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कृकलास गिरगिट।

तृणाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) घासफूस की आग।

तृणाढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत पर उगने वाली घास।

तृणान्न [संज्ञा पु.] (सं.) तिन्नी नामक चावल।

तृणाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) नोनिया। अमलोनी। लवणतृण। नोनिया नामक घास।

तृणारणिन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का न्याय। तृण और अरणि से अग्नि उत्पन्न होने के समान अलग-अलग कारणों की व्यवस्था। अग्नि उत्पन्न होने में तृण और अरणि दोनों कारण हैं परन्तु ये परस्पर निरपेक्ष हैं।

तृणावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्रवात। बवंडर। घूर्णवायु। २-एक दैत्य का नाम जो श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था।

तृणासृज [संज्ञा पु.] (सं.) एक सुगन्धित घास।

तृणेंद्र, तृणेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

तृणेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) वल्वजा। सागेवागे।

तृणोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) ऊखलतृण। ऊखर्वल।

तृणोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) तिन्नी का धान। पसही। [वि.] जो केवल घास से उत्पन्न हुआ हो।

तृणोल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घास-फूस की मशाल

तृणौषध [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधद्रव्य। एलुवा

तृण्यमान [वि.] (सं.) तृणयुक्त। तृण से परिपूर्ण।

तृण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घास-फूस की ढेरी।

तृतीय [वि.] (सं.) तीसरा।

तृतीयक [संज्ञा पु.] (सं.) तीसरे दिन आने वाला ज्वर। तिजार।

तृतीयप्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुरुष और स्त्री के अतिरिक्त प्रकृति वाला। हिजड़ा। नपुंसक। क्लीव।

तृतीयसवन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निष्टोम आदि यज्ञों का तीसरा सवन।

तृतीयांश [संज्ञा पु.] (सं.) तीसरा भाग।

तृतीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १--चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि। तीज। २-व्याकरण में करणकारक।

तृतीयाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) तीसरा आश्रम। वानप्रस्थ।

तृतीयी [वि.] (सं.) जिसे किसी सम्पत्ति के तीसरे हिस्से के पाने का हक हो।

तृन* [संज्ञा पु.] देखो 'तृण'।

तृदिल [वि.] (सं.) फूट या विग्रह कराने वाला।

भेदक।

तृपत् [संज्ञा पु.] (सं) १-इन्द्र। २-चन्द्रमा। ३- छत्र।

तृपति*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तृप्ति'।

तृपल [वि.] (सं.) चंचल। तेज।

तृपला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लता। २-त्रिफला।

तृपित+* [वि.] (हि.) देखो 'तृप्त'।

तृप्त [वि.] (सं.) १-जिसकी इच्छा या वासना पूर्ण हो चुकी हो। २-प्रसन्न। खुश।

तृप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इच्छा या वासना पूरी होने पर मिलने वाली शान्ति, आनन्द और संतोष। २-प्रसन्नता। खुशी।

तृप्तिकर [वि.] (सं.) १-शान्ति, आनन्द और सन्तोष देने वाला। २-प्रसन्न करने वाला।

तृप्तिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री का एक भेद।

तृप्तिमत् [वि.] (सं.) तृप्तियुक्त। [संज्ञा पु.] जल।

तृप्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-घृत। घी। २-पुरोडाश। ३-तर्पक। तृप्त करने वाला।

तृफला [संज्ञा स्त्री] (सं.) हड़, बहेड़ा और आमला इन तीन फलों का समूह।

तृफू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का सर्प।

तृमा [संज्ञा पु.] (हिं.) भूसी। चोंकर।

तृषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्यास। २-इच्छा। अभिलाषा। ३-लोभ। लालच।

तृषाभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट में का वह स्थान जहाँ जल रहता है। क्लोम।

तृषालु [वि.] (सं.) प्यासा। तृषित। पिपासित।

तृषावंत, तृषावन्त [वि.] (सं.) प्यासा। तृषित।

तृषावान् [वि.] (सं.) प्यासा। पिपासित।

तृषास्थान [संज्ञा पु.] (सं.) क्लोम। तृषाभू।

तृषाह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

तृषित [वि.] (सं.) १-प्यासा। पिपासित। २-इच्छुक। अभिलाषी। ३-ललचाया हुआ।

तृषितोत्तरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असनपर्णी। पटसन।

तृष्ट [वि.] (सं.) तृषित। प्यासा।

तृष्णज् [वि.] (सं.) १-प्यासा। २-ललचाया हुआ। लोभी।

तृष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोई वस्तु पाने के लिये आकुल करने वाली इच्छा। २-लोभ। लालच। ३-प्यास।

तृष्णाक्षय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शान्ति।

तृष्णाघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) तृष्णानाशक। जल।

तृष्णार्त [वि.] (सं.) प्यास के मारे छटपटाता हुआ।

तृष्णारि [संज्ञा पु.] (सं.) पितपापड़ा।

तृष्णातुर [वि.] (सं.) प्यासा। पिपासित।

तृष्णालु [वि.] (सं.) १-प्यासा। पिपासित। २-

लोभी । लालची ।

तें॰ [प्रत्य] (हिं.) १–से । द्वारा । २–से (अधिक) । ३–(किसी काल या स्थान) से ।

तेंगा [संज्ञा पु.] (देश.) बैलगाड़ी में फड़ के नीचे लगी हुई लकड़ी ।

तेंतालिस [वि] (हिं) देखो 'तेंतालीस' ।

तेंतालिसवाँ [वि.] (हिं) देखो 'तेंतालीसवाँ' ।

तेंतालीस [वि.] (हिं.) चालीस और तीन, ४३ ।

तेंतालीसवाँ [वि.] (हिं.) बयालीस के बाद आने वाला ।

तेंतिस [वि.] (हिं.) देखो 'तेंतीस' ।

तेंतिसवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'तेतीसवाँ' ।

तेंतीस [वि.] (हिं.) तीस और तीन, ३३ ।

तेंतीसवाँ [वि] (हिं.) बत्तीस के बाद आने वाला ।

तेंदुआ [संज्ञा पु.] (देश.) बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु जो एशिया और अफ्रीका के घने जंगलों में मिलता है । इसका रंग कुछ पीलापन लिये हुए भूरा होता है । इसके सारे शरीर पर काली गोल चित्तियां होती हैं । यह लगभग चार फुट लम्बा होता है ।

तेंदू [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भारत, लंका, बरमा और पूर्वी बंगाल के जंगलों में पाया जाने वाला एक मझोले आकार का वृक्ष । इस वृक्ष की काली लकड़ी को आबनूस कहते हैं । २–इस वृक्ष का खाया जाने वाला फल जो नीबू के समान हरे रंग का होता है और पकने पर पीला हो जाता है ।

ते [अव्य.] देखो 'तें' । [सर्व.](हिं) वे । वे लोग

तेइस [वि.] (हिं.) देखो 'तेईस' ।

तेइसवाँ [वि] (हिं) देखो 'तेईसवाँ' ।

तेईस [वि.] (हिं.) बीस और तीन २३ ।

तेईसवाँ [वि.] (हिं) बाईस के बाद आने वाला ।

तेखना* [क्रि. अ.] (हिं.) बिगड़ना । क्रुद्ध होना ।

तेग [संज्ञा स्त्री.] (अ.) तलवार । खड्ग ।

तेगा [संज्ञा पु.] (अ.) १–खाँडा । खड्ग (अस्त्र) । २–कुश्ती का एक पेंच ।

तेज [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दीप्ति । कांति । चमक । आभा । २–पराक्रम । जोर । बल । ३–वीर्य । ४–किसी वस्तु का सार भाग । तत्व । ५–ताप गर्मी । ६–पित्त । ७–सोना । ८–तेजी । प्रचंडता । ९–प्रताप । रोबदाब । १०–मक्खन । ११–सत्वगुण से उत्पन्न लिंगशरीर । १२–मज्जा । १३–पाँच महाभूतों में से तीसरा जिसमें ताप और प्रकाश होता है । १४–घोड़े का वेग या चलने की तेजी ।

तेज [वि.] (फ़ा.) १–तीक्ष्ण या पैनी धारवाला । २–चलने में शीघ्रगामी । ३–फुरतीला । ४–तीक्ष्ण तीखा । झालदार । ५–भाव या दर में बढ़ा

हुआ । महँगा । ६–तुरन्त अधिक प्रभाव दिखलाने वाला । ७–प्रखर या तीव्र बुद्धि वाला । ८–बहुत अधिक चंचल या चपल ।

तेजःपुंज, तेजःपुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) आभा या चमक का समूह ।

तेजधारी [वि.] (हिं.) तेजस्वी । जिसके मुखमंडल पर तेज हो । प्रतापी ।

तेजन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाँस । २–मूँज । ३–दीप्त या तेज करने की क्रिया या भाव । ४–शर । सरपत ।

तेजनक [संज्ञा पु.] (सं.) शर । सरपत ।

तेजना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तजना' ।

तेजनाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) मूँज ।

तेजनी [संज्ञा पु.] (सं.) १–मूर्ख । तेजबल ।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मलकंगनी । २–चव्य । चाव ।

तेजपत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) दारचीनी की जाति का एक पेड़ जो लंका, दारजिलिंग, कांगड़ा आदि की पहाड़ियों पर होता है । इसकी पत्तियाँ दाल, तरकारी आदि में मसाले के समान व्यवहार में लाई जाती हैं । इसकी छाल से एक प्रकार का तेल भी निकलता है जिससे साबुन बनाया जाता है । पत्तियों और छाल का व्यवहार औषध में भी होता है । गंधजात । तमालपत्र । पत्र ।

तेजपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपत्ता ।

तेजपात [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तेजपत्ता' ।

तेजबल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक कांटेदार जंगली वृक्ष जो हरिद्वार के आसपास के प्रदेश में अधिकता से होता है । इसकी छाल लाल मिर्च के समान बहुत चरपरी होती है । दाँत के दर्द में इसकी छाल या जड़ चबाई जाती है । तेजवती । पारिजाता ।

तेजल [संज्ञा पु.] (सं.) चातक । पपीहा ।

तेजमान [वि.] (हिं.) देखो 'तेजवान्' ।

तेजवंत [वि.] (हिं.) देखो 'तेजवान' ।

तेजवती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तेजबल' ।

तेजवान् [वि.] (सं.) १–जिसमें तेज हो । तेजस्वी । २–वीर्यवान् । ३–बली । ताकत वाला । ४–कांतिमान । चमकीला ।

तेजस् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तेज' ।

तेजसी* [वि.] (हिं.) तेजयुक्त । तेजस्वी ।

तेजस्कर [वि.] (सं.) तेज बढ़ाने वाला । जिससे तेज की वृद्धि हो ।

तेजस्व. तेजस्व [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव

तेजस्वत् [वि.] (सं.) तेजस्वी । तेजयुक्त ।

तेजस्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं) तेजस्वी होने का भाव ।

तेजस्वित्व [संज्ञा पु.] (सं.) बलवान होने का भाव । बलत्व ।

तेजस्विनी [संज्ञा स्त्री.] मालकंगनी ।

तेजस्वी [वि.] (सं.) (स्त्री. तेजस्विनी) १–कांतिमान् । तेजयुक्त । जिसमें तेज हो । २–प्रतापी । प्रभावशाली ।
[संज्ञा पु.] (सं.) इंद्र के एक पुत्र का नाम ।

तेजा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–चूने आदि से बना हुआ एक प्रकार का काला रंग । २–+ महँगी । तेजी ।

तेजाब [संज्ञा पु.] (फ़ा.) क्षार का वह तरल और अम्लसार जो द्रावक होता है ।

तेजाबी [वि.] (फ़ा.) १–तेजाब-सम्बन्धी । २–तेजाब की सहायता से बनाया अथवा ठीक किया हुआ ।
तेजाबी सोना—वह सोना जो पुराने गहनों को गलाकर और तेजाब की सहायता से अच्छी प्रकार साफ करने तैयार किया जाता है ।

तेजारत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तिजारत' ।

तेजारती+ [वि.] (हिं.) देखो 'तिजारती' ।

तेजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी ।

तेजित [वि.] (सं.) सान पर चढ़ाकर तेज किया हुआ हो

तेजिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेजबल ।

तेजिष्ठ [वि.] (सं.) तेजस्वी ।

तेजी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–तेज होने का भाव । २–तीव्रता । प्रबलता । ३–उग्रता । प्रचंडता । ४–शीघ्रता । जल्दी । ५–भाव या दर का तेज होना । महँगी । 'मंदी' का उलटा ।

तेजेयु [संज्ञा पु.] (सं.) रौद्राश्व राजा के पुत्र का नाम ।

तेजीयस् [वि.] (सं.) तेजस्वी । तेजयुक्त ।

तेजोद्वेष [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त के विकार से उत्पन्न रोग ।

तेजोधातु [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त ।

तेजोमंडल, तेजोमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य चन्द्रमा आदि आकाश में स्थित पिंडों के चारों ओर का मंडल ।

तेजोमंथ, तेजोमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) गनियारी का पेड़ ।

तेजोमय [वि.] (सं.) तेज से पूर्ण । तेज या ज्योति वाला ।

तेजोमात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमकीला भाग ।

तेजोमूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।
[वि.] (सं.) तेज से परिपूर्ण । जिसमें अधिक तेज हो ।

तेजोराशि [संज्ञा पु.] (सं.) तेज का समूह ।

तेजोरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्म । २–जो अग्नि या तेजरूप हो ।

तेजोवती [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–गजपिप्पली । २–

चव्य । ३–मालकँगनी । ४–तेजबल ।

तेजोवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. तजोवती] तेज वाला

तेजोविंद, तेजोबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं) एक उपनिषद् का नाम ।

तेजोबीज [संज्ञा पु.] (सं.) मज्जा ।

तेजोवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी अरणी का वृक्ष ।

तेजोहत [वि] (सं.) जिस का तेज नष्ट हो गया हो । श्रीहत ।

तेजोह्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–तेजबल । २–चव्य ।

तेतना+ [वि.] (हिं.) देखो 'तितना' ।

तेता* [वि.] (हिं.) [स्त्री. तेती] उतना । उसी कदर । उसी प्रमाण का ।

तेतालीस [वि.] (हिं.) देखो 'तेंतालीस' ।

तेतिक* [वि.] (हिं.) उतना ।

तेती [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] उतनी । उसी प्रमाणकी

तेतीस [वि.] (हिं.) तीस और तीन, ३३ ।

तेतो*+ [वि.] (हिं.) देखो 'तेता' ।

तेन [संज्ञा पु.] (सं.) गान का एक अंग ।

तेम [संज्ञा पु.] (सं.) आर्द्रता । गीलापन ।

तेमन [संज्ञा पु.] (सं.) पका हुआ भोजन । व्यंजन ।

तेमरू [संज्ञा पु] (देश.) तेंदू या आबनूस का पेड़ ।

तेरज [संज्ञा पु.] (देश.) खतियौनि का गोशवारा

तेरवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'तेरहवाँ' ।

तेरस [संज्ञा स्त्री] (हिं.) किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि । त्रयोदशी ।

तेरह [वि.] (हिं.) दस और तीन, १३ ।

तेरहवाँ [वि.] (हिं.) बारह के बाद आने वाला ।

तेरहीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी के मरने के दिन से तेरहवां दिन जिसमें पिंडदान होता है । और ब्राह्मणादि को भोजन कराके घर के लोग शुद्ध होते हैं ।

तेरा [सर्व.] (हिं.) [स्त्री. तेरी.] मध्यमपुरुष एकवचन सर्वनाम जो 'तू' का संबंधकारक रूप है

तेरी [सर्व.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'तेरा' ।
तेरी-सी–तेरे अनुकूल बात ।

तेरुस*+ [संज्ञा पु.] देखो 'त्यौरस' ।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'तेरस' ।

तेरे+ [अव्य.] (हिं.) से ।

तेरो* [सर्व.] (हिं.) देखो 'तेरा' ।

तेलंग [संज्ञा पु.] देखो 'तैलंग' ।

तेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बीजों आदि से निकाला जाने वाला या आप से आप निकलने वाला प्रसिद्ध चिकना तरल पदार्थ । चिकना । रोगन । २–विवाह से पहले की एक रीति जिसमें वर और वधू को हल्दी मिलाकर तेल लगाया जाता है । *तेल उठना या चढ़ना*–तेल की रस्म पूरी होना । *तेल चढ़ाना*–तेल की रस्म पूरी करना । *तेल निकालना*–बहुत शारीरिक परिश्रम कराना । *तेल में हाथ डालना*–विकट शपथ खाना ।

तेलगू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तैलंग देश की भाषा

तेलपोत [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पोत या जहाज जिसमें तेल की टंकियाँ बनी होती हैं उन टंकियों में भरकर तेल एक देश से दूसरे देश को भेजा जाता है । आयलटैंकर ।

तेलबाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १–तेल लगाना । २–तेल लगाना । विवाह की एक रस्म जिसमें वधू पक्ष बाले जनवासे में वर पक्ष वालों के लगाने के लिए तेल भेजते हैं ।

तेलसुर [संज्ञा पु.] (?) एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी की नावें बनती हैं ।

तेलहँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. तेलहँड़ी] तेल रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन ।

तेलहँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेल रखने का मिट्टी का छोटा बरतन ।

तेलहन [संज्ञा पु.] (हिं.) वे बीज जिनसे तेल निकलता है । जैसे––सरसों, तिल, अलसी आदि ।

तेलहा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. तेलही] १–जिसमें तेल हो । जिसमें से तेल निकल सकता हो । २–तेल वाला । तेल-संबंधी । ३–जिसमें चिकनाई हो ।

तेलही [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'तेलहा' ।

तेला [संज्ञा पु.] (?) तीन दिन-रात का उपवास ।

तेलिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–तेली की स्त्री । २–तेली जाति की स्त्री । २–एक बरसाती कीड़ा ।

तेलियर [संज्ञा पु.] (देश.) काले रंग का एक पक्षी जिसकी सारी देह पर सफेद बुंदकियाँ या चित्तियाँ होती हैं ।

तेलिया [वि.] (हिं.) तेल के समान चिकना और चमकीला । [संज्ञा पु.] (हिं.) १–काला रंग । २–इस रंग का घोड़ा । ३–एक प्रकार का बबूल । ४–एक प्रकार की छोटी मछली । ५–सींगिया नामक विष ।

तेलियाकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कंद ।

तेलियाकत्था [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कत्था जो भीतर से काले रंग का होता है ।

तेलियाकाकरेजी [संज्ञा पु.] (हिं.) कालापन लिए गहरा ऊदा रंग ।

तेलियाकुमैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कालापन लिये लाल रंग का घोड़ा । २–घोड़े का सा रंग ।

तेलियागर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'गर्जन' ।

तेलियापखान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चिकना पत्थर ।

तेलियापानी [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत खारा और स्वाद में बुरा होने वाला पानी ।

तेलियासुरंग [संज्ञा पु.] देखो 'तेलियाकुमैत' ।

तेलियासुहाग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सुहागा जो देखने में बहुत चिकना होता है ।

तेली [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. तेलिन) १–एक जाति जो तिल, सरसों आदि पेर कर तेल निकालने का काम करती है ।
तेली का बैल–हर समय काम में जुता या लगा रहने वाला व्यक्ति ।

तेलौंची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्थर, कांच या लकड़ी आदि की वह छोटी प्याली जिसमें शरीर पर मलने के लिये तेल रखते हैं । मलिया ।

तेवट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक ताल जिसमें सात दीर्घ या चौदह लघु मात्राओं में तीन आघात और एक खाली रहता है ।

तेवन+* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नजर बाग । पाईं बाग । २–वह स्थान विशेषतः वन आदि जहां आमोद-प्रमोद और क्रीड़ा हो । ३–क्रीड़ा ।

तेवर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखने का ढंग । दृष्टि । चितवन । २–कुपित दृष्टि । क्रोध भरी चितवन । ३–भौंह । भृकुटी ।
तेवर चढ़ना–दृष्टि का क्रोधपूर्ण होना । *तेवर बदलना या बिगड़ना*–१–बेमुरौवत हो जाना । २–खफा हो जाना । ३–मृत्यु चिह्न प्रकट होना । *तेवर बुरे नजर आना या दिखाई देना*–प्रेमभाव में अन्तर आ जाना । *तेवर मैले होना*–दृष्टि से खेद क्रोध या उदासीनता प्रकट होना ।

तेवरसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–ककड़ी । २–खीरा । ३–फूट ।

तेवरा [संज्ञा पु.] (देश.) दून में बजाया हुआ रूपक ताल । (संगीत) ।

तेवराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–भ्रम में पड़ना । २–विस्मित होना । आश्चर्य करना । ३–मूर्च्छित या बेहोश हो जाना ।

तेवरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्योरी' ।

तेवहार [संज्ञा पु.] देखो 'त्योहार' ।

तेवना+* [क्रि. अ.] (देश.) सोचना । चिंता करना ।

तेह*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–क्रोध । गुस्सा । २–अहँकार । घमंड । ताव । ३–तेजी । प्रचंडता

तेहर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के कमर में पहनने की तीन लड़ की सिकरी, करधनी या जंजीर ।

तेहरा [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] १–तीन परत या लपेट का । २–जिसकी एक साथ तीन प्रतियाँ हों । ३–जो दो बार होकर फिर तीसरी बार किया गया हो । ४–तिगुना । (क्वचित)

तेहराना [क्रि. स.] (हिं.) १–तीन लपेट या परत का करना । २–कोई काम दोहराने के बाद तीसरा बार करना, देखना या जाँचना ।

तेहवार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्योहार' ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्रोध। गुस्सा। २-अहंकार। घमंड। ३-उग्रता। तेजी।

[सर्व.] (हिं.) उसको। उसे।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुस्सा करने वाला। क्रोधी। २-घमंडी। अभिमानी।

[संज्ञा पु.] देखो 'तेही'।

[संज्ञा पु] देखो 'तेही'।

[क्रि वि.] (हिं.) से। [सर्व.] (हिं.) तू।

[वि.] (सं.) देखो 'तेंतीस'।

[क्रि. वि.] (हिं.) उतना। उस मात्रा का। उस

[संज्ञा पु.] (अ.) १-निबटेरा। फैसला। २-पूर्ति। पूरा करना। ३-देखो 'तह'।

समाप्त-अंत। समाप्ति।

[वि.] (अ.) १-जिसका निबटारा या फैसला हो चुका हो। २-जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

[संज्ञा पु.] (सं.) तिकऋषि के वंशज या शिष्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) तीतापन। चरपराहट। तिताई।

[संज्ञा पु.] (सं.) तीक्ष्णता। तीक्ष्ण होने का भाव।

[संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'तहखाना'।

[संज्ञा पु.] (सं.) तिग्मता। तीक्ष्णता।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-धातु, मणि या इसी प्रकार का कोई चमकीला पदार्थ। २-घी। ३-पराक्रम। ४-बहुत तेज चलने वाला घोड़ा। ६-भगवान। ७-वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस तथा रस को धातु में परिणत करती है। ८-एक तीर्थ का नाम। ९-राजस अवस्था में प्राप्त अहंकार जो एकादश इन्द्रियों तथा पंच तन्मात्राओं की उत्पत्ति में सहायक होता है और जिसकी सहायता के बिना अहंकार कभी सात्विक या तामसी अवस्था प्राप्त नहीं कर सकता। [वि.] तेज से उत्पन्न। तेजसम्बन्धी।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोना चाँदी गलाने की घरिया। मूषा।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पली।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

[वि] (सं.) क्षमाशील।

[संज्ञा पु.] (सं.) तीतर।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-फलितज्योतिष के ग्यारह करणों में से चौथा करण। २-देवता। गैंड़ा।

[संज्ञा पु.] (सं) १-तीतरों का समूह। २-तीतर। गैंड़ा।

[संज्ञा पु] (सं.) कृष्णयजुर्वेद के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम।

तैत्तिरीय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कृष्णयजुर्वेद की एक शाखा। २-इस शाखा का उपनिषद्।

तैत्तिरीयक [संज्ञा पु.] (सं.) तैत्तिरीय शाखा का अनुयायी या पढ़ने वाला।

तैत्तिरीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यजुर्वेद की एक शाखा।

तैत्तिरीयारण्यक [संज्ञा पु.] (सं.) तैत्तिरीय शाखा का अरण्य अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिए उपदेशों का वर्णन है।

तैत्तिल [संज्ञा पु.] देखो 'तैतिल'।

तैनात [वि.] (अ.) किसी काम पर लगाया अथवा नियत किया हुआ। नियुक्त। निश्चित। मुकर्रर

तैनाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी काम पर लगने की क्रिया या भाव। नियुक्ति। मुकर्ररी।

तैया [संज्ञा पु.] (देश.) मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें छीपी रंग रखते हैं।

तैयार [वि.] (अ.) १-जो काम में आने के लिए बिलकुल ठीक या उपयुक्त हो गया हो। २-उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३-प्रस्तुत। उपस्थित मौजूद। ४-हृष्टपुष्ट। मोटा-ताजा। *गला तैयार होना*–गले का बहुत सरीला और रस-युक्त होना। *हाथ तैयार होना*–किसी काम में हाथ का अभ्यस्त और कुशल होना।

तैयारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २-तत्परता। मुस्तैदी। शरीर की पुष्टता। मोटाई। ४-किसी कड़े काम के लिए प्रबन्ध आदि के रूप में पहले से होने वाले काम। धूमधाम। ५-सजावट।

तैयो* [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'तऊ'।

तैर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलत्थ। कुलथी।

तैरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का क्षुप। कुनीला। रागद।

तैरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पानी के ऊपर ठहरना। उतराना। २-हाथ-पैर या कोई अंग हिला-कर पानी पर चलना। पैरना। तारना।

तैराई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-तैरने की क्रिया या भाव। २-तैरने के बदले में मिलने वाला धन।

तैराक [व.] (हिं.) अच्छी प्रकार तैरने वाला। जो तैरना जानता हो।

तैराना [क्रि. स.] (हि.) १-दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २-धुसाना। धँसाना।

तैर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह कृत्य जो तीर्थ में किया जाय। [वि.] तीर्थ-सम्बन्धी।

तैर्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रकार।
[वि.] तीर्थ में उत्पन्न होने वाला।

तैर्थ्य [वि.] (सं.) तीर्थ के पास का।

तैर्थ्यगवनिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ

तैलंग [संज्ञा पु.] (हि.) दक्षिण भारत का एक देश जहाँ की भाषा तैलगू कहलाती है।

तैलंगा [संज्ञा पु.] देखो 'तिलंगा'।

तैलंगाना [संज्ञा पु.] (हिं.) तैलंगदेश।

तैलंगी [संज्ञा पु.] (हि.) तैलंगदेश का निवासी।
[संज्ञा स्त्री.] तैलंगदेश की भाषा।
[वि.] तैलंगदेश-संबंधी।

तैल [संज्ञा पु.] (सं.) तेल।

तैलकंद, तलकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) तेलियाकंद।

तैलक [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़े परिमाण का तेल।

तैलकल्कज [संज्ञा पु.] (सं.) खली।

तैलकार [संज्ञा पु.] (सं.) तेल पेरने वाला। तेली।

तैलकिट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) खली।

तैलकीट [संज्ञा पु.] (सं.) तेलिन नामक बरसाती कीड़ा।

तैलचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) मोटे कपड़े पर तेल लगे हुए रंगों की सहायता से बना हुआ चित्र। *ऑयलपेंटिंग*।

तैलचोरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेल का कीड़ा।

तैलचौरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तैलकीट। तेल का कीड़ा।

तैलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) तेल का भाव या गुण।

तैलद्रोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का काठ का बड़ा पात्र जिसमें प्राचीन काल में चिकित्सा के लिए रोगी लिटा दिये जाते थे और इसमें औषधि का तेल भर दिया जाता था। सड़ने से बचाने के लिए भी इसमें शव रखते हैं।

तैलधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) सरसों, राई, खसखस और कुसुम के बीज।

तैलनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) गंधराज।

तैलनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खली।

तैलपक [संज्ञा पु.] (सं.) तेलिन नामक कीड़ा।

तैलपर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रन्थिपर्ण। गठिवन।

तैलपर्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लालचन्दन। २-२-एक प्रकार का वृक्ष।

तैलपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सलई का गोंद। २-चन्दन। ३-तुरुष्क नामक गंधद्रव्य।

तैलपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेल का कीड़ा।

तैलपायिका [संज्ञा पु.] (सं.) झींगुर। चपड़ा (कीड़ा)।

तैलपायी [संज्ञा पु.] (सं.) झींगुर। चपड़ा (कीड़ा)

तैलपिंज, तैलपिञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का वह पौधा जिसमें फूल और बीज-की फलियाँ नहीं आती।

तैलपिष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) खली।

तैलफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-इंगुदी। बहेड़ा।

तैलभाविनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली का पेड़।

तैलमर्दन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (शरीर में) तेल की

मालिश।

तैलमाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेल की बत्ती। पलीता।

तैलयंत्र, तैलयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) तेल पेरने का कोल्हू।

तैलवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावरी। शतमूली।

तैलामधन [संज्ञा पु.] (सं.) शीतलचीनी। कवाबचीनी।

तैलस्फटिक [संज्ञा पु.] (सं.) १–अंबर नामक गंध द्रव्य। २–कहरुआ। तृणमणि।

तैलस्यंदा, तैलस्यन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गोकर्णी नामकी लता। मुरहटी। २–काकोली नाम की औषधि।

तैलांबु, तैलाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) झींगुर। चपड़ा

तैलाक्त [वि.] (सं.) जिसमें तेल लगा या पोता हो। तैलयुक्त।

तैलाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) तुरुष्क नामक गंध द्रव्य।

तैलागुरु [संज्ञा पु.] (सं.) अगर की लकड़ी।

तैलाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बर्रे। भिड़।

तैलाधार [संज्ञा पु.] (सं.) तैल रखने का पात्र।

तैलाभ्यंग [संज्ञा पु.] (सं) शरीर में तेल की मालिश।

तैलिक [संज्ञा पु.] (सं.) तिलों से तेल निकालने वाला। तेली। [वि] (सं.) तेल-संबंधी।

तैलिकयंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तेल पेरने का कोल्हू।

तैलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बत्ती।

तैलिशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां तेल पेरने का कोल्हू चलता है।

तैली [संज्ञा पु.] (सं.) तेली।

तैलीन [संज्ञा पु.] (सं) तिल का तेल।

तैल्वक [वि] (सं.) लोध की लकड़ी से बना हुआ।
[संज्ञा पु.] लोध।

तैश [संज्ञा पु.] (अ) आवेशयुक्त क्रोध। गुस्सा।
तैश दिखाना–ऐसा काम करना जिससे कोई क्रुद्ध हो।
तैश में आना–क्रुद्ध या कुपित होना।

तैष [संज्ञा पु.] [संज्ञा पु.] (सं.) चांद्र पौषमास। पूस का महीना।

तैषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्यनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी। पूस की पूर्णिमा।

तैस+ [वि] (हिं.) देखो 'तैसा'।

तैसा [वि.] (हिं.) उस प्रकार का। वैसा।

तैसे [क्रि. वि.] (हिं.) उस प्रकार से। वैसे।

तों*+ [क्रि. वि.] (हिं) देखो त्यों'।

तोंअर*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तेमर'।

तोंद [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पेट के आगे का बढ़ा, फूला या निकला हुआ भाग।
तोंद फटना–१–मोटाई दूर होना। २–शेखी निकल जाना।

तोंदल [वि.] (हिं.) तोंद वाला। जिसका पेट आगे की ओर निकला हो।

तोंदा [संज्ञा पु.] (देश.) तालाब से तानी निकालने का मार्ग।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–मिट्टी का टीला या दीवार जिसपर तीर या बन्दूक चलाने का अभ्यास साधते हैं। २–राशि ढेर। (क्वचित)।

तोंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाभि। ढोंढी।

तोंदीला [वि.] (हिं.) तोंदवाला। तोंदल।

तोंदेल [वि.] (हिं.) तोंदवाला। तोंदल।

तोंबा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तूँबा'।

तोंबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तूँबी'।

तो* [अव्य.] (हिं.) १–एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी शब्द या बात को जोर देने के लिए या कभी-कभी यों ही होता है। २–उस दशा में। तब। [सर्व.] १–तुझ (ब्रज) २–तेरा।
[क्रि. अ.] (हिं.) था (क्वचित)।

तोइ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी। जल।

तोई [संज्ञा स्त्री] (देश.) वह पट्टी जो कुरते आदि के कमर वाले भाग में लगाई जाती है। २–लहंगे का नेफा। ३–चादर आदि में लगाने की गोट।

तोक [संज्ञा पु] (सं.) १–श्रीकृष्ण के सखाओं में से एक। २–शिशु। अपत्य। लड़का या लड़की

तोकक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलकंठ पक्षी।

तोकरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लता।

तोक्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–अंकुर। २–जौ का नया अंकुर। ३–हरा और कच्चा जौ। ४–हरा रंग। ५–मेघ। बादल। ६–कान की मैल।

तोख*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोष' या 'संतोष'।

तोखार [संज्ञा पु.] देखो 'तुखार'।

तोटक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं। २–शंकराचार्य के एक शिष्य का नाम।

तोटका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'टोटका'।

तोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–तोड़ने की क्रिया या भाव। नदी आदि के जल का तेज बहाव। तरखा। ३–किले की दीवार आदि का वह भाग जो गोले की मार आदि से टूट गया हो। ४–कुश्ती का वह पेंच जिससे कोई दूसरा पेंच रद हो। ५–किसी प्रभाव आदि को नष्ट करने वाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। मारक। ६–दही का पानी। ७–बार दफा।

तोड़क [वि.] (हिं.) तोड़ने वाला।

तोड़जोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दाँवपेंच। चाल। युक्ति। २–अपना मतलब गाँठने के निमित्त किसी को मिलाने और किसी को अलग करने का कार्य।

तोड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १–छेद करने की क्रिया। २–चीरने का कार्य। ३–मारने का काम।

तोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १–आघात या झटके से किसी वस्तु के टुकड़े करना। अंगों को मूल वस्तु से जुदा करना। २–किसी वस्तु के अंग खंडित, भग्न या बेकाम करना। ३–खेत में पहले-पहल हल चलाना। ४–सेंध लगाना। ६–किसी का कुमारित्व भंग करना। ७–बल, प्रभाव, महत्व, विस्तार आदि घटाना या नष्ट करना। दुर्बल या असक्त करना। ८–खरीदने के लिए किसी वस्तु का दाम घटाकर निश्चित करना। ९–किसी संगठन व्यवस्था अथवा कार्यक्षेत्र आदि को न रहने देना या भंग कर देना। चलते काम या कार्यालय को बिलकुल बंद कर देना। १०–किसी बात पर स्थिर न रहना। ११–दूर करना। अलग करना। १२–स्थिर या दृढ़ न रहने देना।

तोड़र* [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर में पहनने का एक तोड़ा (गहना)।

तोडल [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्र का एक भेद।

तोड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तुड़वाना'।

तोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सोने या चांदी की चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथों या पैरों में (पैरों में केवल चांदी की बनी) पहनी जाती है। २–रुपया रखने की टाट की थैली। ३–नदी का किनारा। तट। ४–नदी के संगम पर बना हुआ वह मैदान जो बालू मिट्टी जमा होने के कारण बन जाता है। ५–घाटा। टोटा। कमी। ६–रस्सी का टुकड़ा। ७–उतना नाच जितना एक बार में नाचा जाय। ८–हल की वह लम्बी लकड़ी जिसमें जुआ लगा रहता है। हरिस। ९–तोड़ेदार बन्दूक छोड़ने की नारियल की जटा की रस्सी। पलीता। पलीता।
तोड़ेदार बंदूक–पुरानी चाल की वह बन्दूक जिसमें पलीता या तोड़ा लगाकर छोड़ते हैं।
तोड़े उलटना या गिनना–बहुत धन देना।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की सींग जिसके झोले बनते हैं। कंद। २–वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है। ३–तीन बार तक की ब्याई हुई भैंस।

तोड़ाई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुड़ाई'।

तोड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तुड़ाना'।

तोड़िया+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तोड़ी'।

तोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की सरसों।

तोण*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) निषंग। तरकश।

तोत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढेर। समूह। २–खेल (क्वचित)।

तोतई [वि.] (हिं.) तोते के से रंग का। धानी।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं.) पपीहा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया।

[illegible]+ [वि.] (हिं.) देखो 'तोतला'।

[illegible] [वि.] (हिं.) देखो 'तोतला'।

[illegible]* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'तुतलाना'।

[illegible] [वि.] (हिं.) १-तुतलाकर या अस्पष्ट बोलने वाला। जिसमें उच्चारण स्पष्ट न हो।

[illegible] [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'तुतलाना'।

तोता [संज्ञा पु.] (फ़ा.) हरे रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी चोंच लाल होती है। यह आदमियों की बोली की भलीभांति नकल कर लेता है। तोतों की बे-मुरौवती प्रसिद्ध है क्योंकि पिंजड़े से निकल जाने के पश्चात् और पालतू पक्षियों के समान यह लौटकर नहीं आता। सूआ। कीर। २-बन्दूक का घोड़ा। हाथों के तोते उड़ जाना–बहुत घबरा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना–बहुत बेमुरौवत होना। तोता पालना–जान-बूझकर कोई दुर्व्यसन या रोग अपने पीछे लगाना या पालना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (फ़ा.) तोते के समान आँखें फेर लेने वाला व्यक्ति। बेमुरौवत।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (फ़ा) बेमुरौवती। बेवफाई।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तोते की मादा। २-उपपत्नी। रखनी। रखी हुई स्त्री।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) वह छड़ी या चाबुक जिससे जानवर हाँके जाते हैं।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु के हाथ का दंड।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ा। व्यथा।
[वि.] पीड़ा पहुँचाने वाला। कष्टदायक।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं) १-चाबुक। कोड़ा। २-व्यथा। पीड़ा। ३-एक प्रकार का फलदार पेड़

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का खराब धान।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) फारस देश में होने वाला एक कँटीला पेड़ जिसमें पतले छिलके वाले फूल लगते हैं।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ख्याल (संगीत)।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (तु.) एक प्रकार का बड़ा अग्न्यस्त्र जो पहियों पर टिका रहता है। इसके ऊपर की ओर चौड़ी नली लगी रहती है जिसमें गोला रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर छोड़ा जाता है। तोप कीलना–तोप के मुँह में लकड़ी का डट्टा लगा देना। तोप की सलामी उतारना–किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के आगमन पर बारूद तोप में भरकर शब्द करना। *तोप के मुंह पर रखकर उड़ाना*–बहुत कठिन या प्राणदंड देना। *तोपदम करना*–देखो 'तोप के मुंह पर रखकर उड़ाना'।

तोपखाना [संज्ञा पु.] (अ., फ़ा.) १-वह स्थान जहां तोपें रहती हैं। २-युद्ध के लिये प्रस्तुत चार से आठ तोपों तक का समूह।

तोपकला [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गोली दागने की कला या विद्या। आग्न्यास्त्र विद्या। *गनूनरई*।

तोपगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) तोप को खींचकर ले जाने वाली गाड़ी। *गनकैरेज*।

तोपची [संज्ञा पु.] (हिं) तोप चलाने वाला। तोप चलाने पर नियुक्त व्यक्ति। *गनूनर*।

तोपचीनी [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'चोबचीनी'।

तोपड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का कबूतर। २-एक प्रकार की मक्खी।

तोपना+ [क्रि. स.] (हिं) नीचे दबाना। ढांकना। छिपाना।

तोपवाना+ [क्रि. स] (हिं) ढँकवाना। छिपवाना।

तोपवाहीनौका [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक या एक से अधिक तोप वाला छोटा जहाज। *गनबोट*।

तोपसैनिक [संज्ञा पु.] (हिं.) गोलंदाज। तोपची। तोप चलाने पर नियुक्त सैनिक। *आर्टिलरीमैन*।

तोपा [संज्ञा पु.] (देश.) एक टांके में होने वाली या एक टांके भर की सिलाई।
तोपा भरना–टांके लगाना।

तोपाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-तोपने की क्रिया या भाव। तोपने की मजदूरी।

तोपाना [क्रि. स] (हिं.) तोपवाना। ढँकवाना। छिपवाना।

तोपास [संज्ञा पु.] (देश.) झाड़ू देने वाला।

तोपी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'टोपी'।

तोफगी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) अच्छापन। खूबी।

तोफा+ [वि.] (हिं.) बढ़िया।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'तोहफा'।

तोबड़ा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चमड़े या टाट की वह थैला जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाने के लिए उसके मुंह पर बांधते हैं।
(*किसी के मुंह पर*) *तोबड़ा चढ़ाना*–बोलने से रोकना। मुंह बन्द करना।

तोबा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) भविष्य में अनुचित कार्य करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।
तोबा करना–न करने की प्रतिज्ञा करना।
तोबा तिल्ला करना या मचाना–रोते चिल्लाते या दीनता दिखाते हुए तोबा करना।
तोबा तोड़ना–न करने की प्रतिज्ञा करके भी फिर वही काम करना। *तोबा बुलवाना*–इतना तंग या विवश करना कि उसे तोबा करनी पड़े। *बुलवाना*।

तोम [संज्ञा पु.] (हिं) समूह। ढेर।

तोमड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'तूँबड़ी'।

तोमर [संज्ञा पु.] (सं) १-भाले की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। २-एक देश का नाम जिसका वर्णन पुराणों में है। ३-उस देश का निवासी। ४-राजपूत क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश। ५-बारह मात्राओं का एक छन्द जिसके अन्त में एक गुरु और एक लघु होता है।

तोमरधर [संज्ञा पु.] (सं.) तोमरधारी योद्धा।

तोमरिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तुवरिका'।

तोमरी* [संज्ञा स्त्री] देखो 'तूँबड़ी'।

तोय [संज्ञा पु.] (सं) १-जल। पानी। २-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

तोयकर्म [संज्ञा पु.] (सं) तर्पण।

तोयकाम [संज्ञा पु.] (सं.) जल के पास उगने वाला एक प्रकार का बेंत।

तोयकुंभ, तोयकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं) सेवार।

तोयकृच्छ् [संज्ञा पु.] (सं) एक मास का एक व्रत जिसमें जल के सिवा कुछ ग्रहण नहीं किया जाता।

तोयक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री] (सं) जलक्रीड़ा। जल विहार।

तोयचर [संज्ञा पु.] (सं) जलचर प्राणी। जल में रहने वाले जीव।

तोयज [वि.] (सं.) जल से उत्पन्न।

तोयडिंब, तोयडिम्ब [संज्ञा पु.] (सं) ओला। करका।

तोयद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-नागरमोथा। ३-घी। ४-वह जो जलदान करता हो। [वि.] (सं.) जल देने वाला।

तोयदागम [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाकाल। बरसात।

तोयधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-मोथा।

तोयधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-मोथा।

तोयधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल की धारा।

तोयधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

तोयधिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग।

तोयनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र।

तोयनीवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

तोयपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेला।

तोयपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपिप्पली।

तोयपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलकुम्भी।

तोयप्रसादन [संज्ञा पु.] (सं.) निर्मली। कतकफल

तोयप्रसादनफल [संज्ञा पु.] (सं.) निर्मली।

तोयफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरबूज या ककड़ी

आदि की बेल ।

तोयमल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समुद्र का फेन ।

तोयमुच [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ । बादल । २-मोथा ।

तोययंत्र, तोययन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलघड़ी । २-फौवारा ।

तोयराज [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

तोयराशि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

तोयवल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेले की बेल ।

तोयवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेले की बेल ।

तोयवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सेवार ।

तोयशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पौसरा । प्याऊ । सबील ।

तोयशूका [संज्ञा पु.] (सं.) सेवार । शैवाल ।

तोयसर्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांप के समान एक जलजंतु ।

तोयसूचक [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष का योग जिससे वर्षा की सूचना मिले ।

तोयात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर ।

तोयाधार [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करिणी । तालाब ।

तोयाधिवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाटला वृक्ष ।

तोयालय [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

तोयेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण । २-शतभिषा । नक्षत्र । ३-पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र ।

तोर [संज्ञा पु.] (हिं.) अरहर ।
*+ [संज्ञा पु.] देखो 'तोड़' । *+ [वि.] देखो 'तेरा' ।

तोरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तुराई' ।

तोरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी घर या नगर का बाहरी फाटक । २-सजावट के लिए लटकाई जाने वाली मालाएँ, पत्तियाँ आदि । वंदनवार । ३-ग्रीवा । गला । ४-शिव ।

तोरणसाल [संज्ञा पु.] (सं.) अवन्तिकापुरी ।

तोरणस्फटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्योधन की की सभा का नाम ।

तोरन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोरण' ।

तोरना+ [क्रि स.] (हिं.) देखो 'तोड़ना' ।

तोरश्रवा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगिराऋषि का एक नाम ।

तोरा*+ [सर्व.] देखो 'तेरा' ।

तोराना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तुड़ाना' ।

तोरावान्*+ [वि] (हिं.) [स्त्री. तोरावती] वेगवान । तेज ।

तोरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोटा बनाने वालों का बेलन जिस पर वे किनारी गोटा आदि लपेटते हैं ।
[संज्ञा स्त्री] (देश) १-वह गाय या भैंस जिसका बच्चा मर गया हो । २-एक प्रकार की सरसों ।

तोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है ।

तोल [संज्ञा पु.] (सं.) तोला (तोल) ।
+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तोल' ।
[संज्ञा पु.] (देश.) नाव का डांड़ ।

तोलक [संज्ञा पु.] (सं.) तोला । बारह माशे का वजन ।

तोलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोलने की क्रिया । २-उठाने की क्रिया ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चांड़ जो छत के नीचे सहारे के लिए लगाई जाती है ।

तोलना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तौलना' ।

तोलवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तौलवाना' ।

तोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बारह माशे या छानबे रत्ती की एक तौल । २-इस तोल का बाट ।

तोलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तौलाना' ।

तोलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तौलिया' ।

तोल्य [वि.] (सं.) तोलनीय । तोलने योग्य ।

तोश [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंसा । २-हिंसक ।

तोशक [संज्ञा स्त्री.] (तु.) बिछाने का हलका रूईदार गद्दा ।

तोशकखाना [संज्ञा पु.] देखो 'तोशाखाना' ।

तोशखदान [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह थैली जिसमें यात्रा के समय जलपान आदि आवश्य वस्तुएँ रहती हैं । २-कारतूस रखने की सैनिकों की थैली ।

तोशल [संज्ञा पु.] देखो 'तोषल' ।

तोशा [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह खाद्यपदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रखता है पाथेय । २-खाने-पीने की साधारण वस्तु ।
[संज्ञा पु.] (देश.) बाँह पर पहनने का एक गहना जिसे ग्रामीण स्त्रियां पहनती हैं ।

तोशाखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह बड़ा कमरा या स्थान जहां राजाओं और अमीरों के कपड़े और गहने रहते हैं ।

तोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अघाने अथवा मन भरने का भाव । तुष्टि । संतोष । तृप्ति । २-प्रसन्नता । आनन्द । ३-स्वांभुव मन्वन्तर के एक देवता का नाम । ४-श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम । [वि.] (सं.) अल्प । थोड़ा ।

तोषक [वि.] (सं) संतुष्ट करने वाला ।

तोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-तृप्ति । संतोष । २-संतुष्ट करने की क्रिया या भाव ।

तोषणिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को तुष्ट करने के निमित्त दिया जाने वाला धन । [वि.] (सं.) तोष-संबंधी ।

तोषना* [क्रि स.] (हिं.) संतुष्ट या तृप्त करना ।
[क्रि. अ.] (हिं.) संतुष्ट या तृप्त होना ।

तोषयितव्य [वि] (सं) संतुष्ट या तृप्त करने योग्य ।

तोषल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंस के एक असुर का नाम । २-मूसल ।

तोषित [वि.] (सं.) तृप्त । संतुष्ट ।

तोस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोष' ।

तोसक* [संज्ञा पु.] देखो 'तोशक' ।

तोसल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोषल' ।

तोसा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोशा' ।

तोसाखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोशाखाना' ।

तोसागार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तोशाखाना' ।

तोहफगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) उत्तमता । अच्छापन

तोहफा [संज्ञा पु.] (अ.) सौगात । उपहार । भेंट उपायन । [वि.] (अ.) अच्छा । उत्तम । बढ़िया

तोहमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मिथ्या अभियोग । वृथा लगाया हुआ दोष या कलंक । तोहमत का घर या टट्टी-वह काम या स्थान जिसमें वृथा कलंक लगने की संभावना हो ।

तोहमती [वि.] (अ.) झूठा अभियोग या कलंक लगाने वाला ।

तोहरा+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हरा' ।

तोहार [सर्व.] (हिं.) देखो 'तुम्हारा' ।

तोहि+ [सर्व.] (हिं.) तुझको । तुझे ।

तोहीं* [सर्व.] (हिं.) तुझको । तुझे ।

तौंकना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तौंसना' ।

तौंस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गरमी । ताप । २-ऊमस ।

तौंसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गरमी से झुलस जाना । २-गरमी या ऊमस होना ।

तौंसा [संज्ञा पु.] (हिं.) अधिक ताप । कड़ी गरमी

तौ*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'तो' ।
*[क्रि. अ.] (हिं.) था ।

तौक [संज्ञा पु.] (अ.) १-हँसुली के आकार की वह भारी गोल पटरी जो अपराधी या पागल के गले में उसे कहीं भागने से रोकने के लिए पहनाई जाती थी । २-इस तरह का गले में पहनने का एक गहना । ३-इस प्रकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो कुछ पक्षियों के गले में होता है । ४-चपरास । पट्टा ।

तौक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) धनुराशि ।

तौचा [संज्ञा पु.] (देश.) देहाती स्त्रियों के सिर का एक गहना ।

तौजा [संज्ञा पु.] (अ.) खेतिहारों को बिया आदि के लिए दिया जाने वाला द्रव्य बियाही । [वि.] हाथ-उधार ।

तौतातित [संज्ञा पु.] (सं.) १-जैनियों का भेद २-कुमारिलभट्ट का एक नाम ।

तौतिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुक्ता । मोती । २-मोती का सीप । शक्ति ।

तौंदी [संज्ञा स्त्री] (सं.) घृतकुमारी । घीकुआर

तौन [सर्व.] (हिं.) वह । सो ।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह रस्सी जिससे गाय दुहते समय उसका बछड़ा गाय के पैर में बाँध दिया जाता है।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।

[सर्व.] (हिं.) देखो 'तौन'।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'तौन'।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'तोवा'।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

[संज्ञा पु.] (अ.) १-चालढाल। चालचलन। -अवस्था। दशा। हालत। २-तरीका। तर्ज। ढंग। ४-प्रकार। भांति। तरह। *तौर-तरीका*-१-चालचलन। रंगढंग।

[संज्ञा पु.] (देश.) मथानी मथने की रस्सी।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम (गान)।

[संज्ञा पु.] देखो 'तौरेत'।

[संज्ञा पु.] (सं.) वह जो तूरायण करता हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) तेज चलने वाला।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुमेर। घुमेरी। चक्कर।

[संज्ञा पु.] देखो 'तौरेत'।

[संज्ञा पु.] (इब्रा.) यहूदियों का प्रधान धर्मग्रन्थ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-ढोल-मजीरा आदि बाजे। २-ढोल-मजीरा आदि बजाने का काम

[संज्ञा पु.] (सं.) नाचना, गाना, और बाजे-बजाने आदि का काम।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-तराजू। २-तुलाराशि।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी पदार्थ का गुरुत्व या भारीपन का परिमाण। भार का मान। वजन। २-तोलने की क्रिया या भाव। ३-बटखरों के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक।

तौलना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण जानने के लिए कांटे तराजू आदि पर रखना। वजन करना। तोलना। २-अस्त्र आदि चलाने के लिए हाथ में लेकर ठीक स्थिति में लाना। साधना। ३-तुलना करके कमी और अधिकता जानना। मिलान करना। ४-गाड़ी के पहिये में तेल देना।

तौलवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तौलाई'।

तौलवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को तोलने में प्रवृत्त करना। तौलाना।

तौला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूध नापने का मिट्टी का बरतन। २-अन्न तौलने वाला आदमी। बया। ३-तैविया। ४-मिट्टी का कसोरा। ५-महुए की शराब।

तौलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तौलने की क्रिया

या भाव। २-तोलने की मजदूरी।

तौलाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को तौलने में प्रवृत्त करना।

तौलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर पोंछने के काम आने वाला एक विशेष प्रकार का मोटा अंगोछा।

तौली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार की मिट्टी की छोटी प्याली गुड़ आदि रखने का चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन।

तौलैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न तौलने वाला मनुष्य। बया।

तौषार [संज्ञा पु.] (सं.) तुषार का जल। पाले का पानी।

तौसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) गरमी से बहुत व्याकुल होना।

[क्रि. स.] (हिं.) गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।

तौहीन [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

तौहीनी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तौहीन'।

त्यक्त [वि.] (सं.) त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ।

त्यक्तव्य [वि.] (सं.) जो छोड़ने योग्य हो। त्यागने योग्य।

त्यक्ता [वि.] (सं.) त्यागने वाला। जिसने त्याग किया हो।

त्यगल [संज्ञा पु.] (सं.) पुस्तक लिखने वाला।

त्यग्नायि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

त्यजन [संज्ञा पु.] (सं.) छोड़ने का काम। त्याग।

त्यजनीय [वि.] (सं.) जो त्यागने योग्य हो। त्याज्य।

त्यज्यमान [वि.] (सं.) जो छोड़ दिया गया हो।

त्याग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु पर से अपना स्वत्व हटा लेने या उसे अपने अधिकार से निकालने की क्रिया या भाव। उत्सर्ग। २-किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३-वैराग्य आदि के कारण सांसारिक भोगों और वस्तुओं या पदार्थ को छोड़ने की क्रिया या भाव। ४-किसी शुभ कार्य के लिए अपना सुख, लाभ आदि छोड़ने की क्रिया या भाव। *सैक्रिफाइस*। ५-दान। ६-कन्यादान।

त्यागना [क्रि. स.] (हिं.) छोड़ना। तजना। पृथक् करना।

त्यागपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो अपने कार्य या पद से अलग होते समय उसके त्याग प्रमाण स्वरूप लिखकर दिया गया हो। इस्तीफा। *रेज़िग्नेशन*।

त्यागवान् [वि.] (सं.) जिसने त्याग किया हो या जिसमें त्याग करने की शक्ति हो। त्यागी।

त्यागशील [वि.] (सं.) दानशील। उदार। दानी।

त्यागी [वि.] (हिं.) १-सांसारिक सुखों को छोड़ने वाला। विरक्त। २-अपने स्वार्थ या हित का त्याग करने वाला। विशेषतः किसी अच्छे कार्य के निमित्त।

त्याजना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'त्यागना'।

त्याज्य [वि.] (सं.) त्यागने योग्य। जो छोड़ देने योग्य हो।

त्यादृश [वि.] (सं.) उसके समान। वैसा।

त्यार+ [वि.] (हिं.) देखो 'तैयार'।

त्यूँ+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'त्यों'।

त्यूरस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्योरुस'।

त्यों [क्रि. वि.] (हिं.) १-उस प्रकार। उस तरह। २-उसी समय।

त्योराना* [क्रि. अ.] (?) सिर में चक्कर आना।

त्योरुस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पिछला तीसरा वर्ष। २-आगामी तीसरा वर्ष।

त्योरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अवलोकन। चितवन। निगाह। दृष्टि। *त्योरी चढ़ना या बदलना*-क्रोध से आंखें चढ़ाना। *त्योरी में बल पड़ना*-त्योरी चढ़ना। *त्योरी चढ़ाना या बदलना*-भौंहें चढ़ाना। आंखों से क्रोध और अप्रसन्नता प्रकट करना। *त्योरी में बल डालना*-त्योरी चढ़ाना।

त्योहार [संज्ञा पु.] (हिं.) कोई बड़ा धार्मिक अथवा जातीय उत्सव मनाने का दिन। पर्व दिन। *त्योहार मनाना*-पर्व या उत्सव के दिन आमोद-प्रमोद करना।

त्योहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) त्योहार के दिन छोटों और आश्रितों को दिया जाने वाला धन।

त्यौं [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'त्यों'।

त्यौनार [संज्ञा पु.] (हिं.) ढंग। तर्ज।

त्यौर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'त्योरी'।

त्यौराना [क्रि. अ.] (हिं.) माथा घूमना। सिर में चक्कर आना।

त्यौरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्योरी'।

त्यौरुस [संज्ञा पु.] देखो 'त्योरुस'।

त्यौहार [संज्ञा पु.] देखो 'त्योहार'।

त्यौहारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्योहारी'।

त्रंग, त्रङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम।

त्र 'त' और 'र' के प्रयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर या वर्ण। कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर यह 'एक स्थान पर' (क्रिया या लाया हुआ आदि) का अर्थ देता है। जैसे-एकत्र।

त्रपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लज्जा। लाज। हया। २-छिनाल स्त्री। पुंश्चली। ३-कीर्त्ति। यश। *त्रपारंडा*-१-छिनाल स्त्री। २-वेश्या। रंडी।

[वि.] (सं.) लज्जित । शरमिंदा ।

त्रपाक [संज्ञा पु.] (सं.) नीच । म्लेच्छ जाति ।

त्रपानिरस्त [वि.] (सं.) लज्जाहीन । बेशरम ।

त्रपान्वित [वि.] (सं.) लज्जायुक्त । शरमिंदा ।

त्रपावत [वि.] (सं.) लज्जाशील । शरमीला ।

त्रपित [वि.] (सं.) लज्जित । शरमिंदा ।

त्रपिष्ट [वि.] (सं.) अत्यन्त लज्जित ।

त्रपु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीसा । २-रांगा ।

त्रपुकर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खीरा । २-ककड़ी ।

त्रपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची ।

त्रपुल [संज्ञा पु.] (सं.) रांगा ।

त्रपुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-राँगा । २-खीरा ।

त्रपुस [संज्ञा पु.] (सं.) १-राँगा । २-ककड़ी ।

त्रपुसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ककड़ी । खीरा । ३-बड़ा इंद्रायन ।

त्रप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमा हुआ कफ ।

त्रय [वि.] (सं.) १-तीन । २-तीसरा ।

त्रयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीन वस्तुओं का समूह । २-सोमराजी लता । ३-दुर्गा ।

त्रयीतन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

त्रयीधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिकधर्म ।

त्रयीमय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-परमेश्वर

त्रयीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण ।

त्रयोदशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं तिथि ।

त्रयारुण [संज्ञा पु.] (सं.) पन्द्रहवें द्वापर के एक व्यास का नाम ।

त्रयारुणि [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

त्रष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) तष्टा । तश्तरी ।

त्रस [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन । जंगल । २-जंगम । ३-त्रसरेणु । ४-जैनमतानुसार एक प्रकार के जीव ।

त्रसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्वेग । २-भय । डर ।

त्रसना*+ [क्रि स.] (हिं.) डरना । भय से काँप उठना ।

त्रसर [संज्ञा पु.] (सं.) जुलाहों की ढरकी । तसर ।

त्रसरेणु [संज्ञा पु.] (सं.) वह चमकता सूक्ष्म कण जो छेद में से आती हुई धूप में दिखाई देता है । सूक्ष्मकण ।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की एक स्त्री का नाम

त्रसाना*+ [क्रि. स.] (हिं.) डरवाना । धमकाना । भय दिखाना ।

त्रसित [वि.] (हिं.) १-भयभीत । डराहुआ । २-पीड़ित । सताया हुआ ।

त्रसुर [वि.] (सं.) भीरु । डरपोक ।

त्रस्त [वि.] (सं.) १-भयभीत । डरा हुआ । २-पीड़ित । दुःखित । ३-चकित । जिसे आश्चर्य हुआ हो ।

त्रस्नु [वि.] (सं.) त्रासयुक्त । डराहुआ ।

त्राटक [संज्ञा पु.] (सं.) योग के षट्कर्मों में से छटा कर्म या साधन ।

त्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षा । बचाव । २-वह वस्तु जो रक्षा का साधन हो । कवच । बकतर ।

त्राणक, त्राणकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षक ।

त्राणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाण लता ।

त्रात [वि.] (सं.) रक्षित । रक्षा किया हुआ ।

त्रातव्य [वि.] (सं.) रक्षा करने योग्य ।

त्राता [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षक । बचाने वाला ।

त्रातार [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षक ।

त्रापुष [संज्ञा पु.] (सं.) राँगे का बना पात्र या और कोई पदार्थ ।

त्रायंती, त्रायन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं) त्रायमाणा लता ।

त्रायमाण [संज्ञा पु.] (सं.) बलभद्रा नामक लता जिसके बीज औषध के काम में आते हैं । यह शीतल, दस्तावर और त्रिदोषनाशक होते हैं । (वैद्यक) ।

त्रायमाणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाणलता ।

त्रायमाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाणलता ।

त्रायवृंत, त्रायवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) गुंडिरी नामक शाक ।

त्रास [संज्ञा पु.] (सं.) १-डर । भय । २-कष्ट । तकलीफ ।

त्रासक [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. त्रासिका] १-डराने वाला । २-कष्ट देने वाला । ३-हटाने या दूर करने वाला । निवारक ।

त्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-डराने का कार्य । २-डराने वाला । भय दिखाने वाला ।

त्रासना [क्रि. अ.] (हिं.) डराना । भय दिखाना । त्रास देना ।

त्रासनीय [वि.] (सं.) ताड़ने या दंड देने योग्य ।

त्रासमान* [वि.] (हिं.) डराहुआ । भयभीत ।

त्रासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-डराने वाली । २-कष्ट देने वाली । ३-हटाने या दूर करने वाली ।

त्रासित [वि.] (सं.) १-भयभीत । डरायाहुआ । २-जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो । त्रस्त ।

त्राहि [अव्य.] (सं.) बचाओ । रक्षा करो ।

त्राहि त्राहि करना-दया या रक्षा के लिए प्रार्थना करना ।

त्रिंबक, त्रिम्बक* [संज्ञा पु.] देखो 'त्र्यंबक' ।

त्रिंश [वि.] (सं.) तीसवाँ ।

त्रिंशत् [वि.] (सं.) तीस ।

त्रिंशत्पत्र [संज्ञा पु.](सं.) कोई का फूल । कुमुदिनी

त्रिंशांश [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का तीसवाँ भाग । २-एक राशि का तीसवाँ भाग जिसका विचार फलित ज्योतिष में किसी बालक का जन्मफल निकालने के लिए होता है ।

त्रि [वि.] (सं.) तीन ।

त्रिकंट, त्रिकण्ट [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिकंटक' ।

त्रिकंटक, त्रिकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोखरू । २-त्रिशूल । ३-तिधारा थूहर । ४-जवासा । टेंगरा मछली ।

[वि.] (सं.) तीन कांटे या नोंक वाला ।

त्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन का समूह । २-रीढ़ के नीचे का भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं । ३-कमर । ४-त्रिफला । ५-त्रिकु ६-त्रिमद । ७-त्रिमुहानी । ८-तीन रुप सैकड़े का सूद या लाभ । (मनु) ।

त्रिककुद [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्रिकूट पर्वत । २-विष्णु । ३-दस दिनों में सम्पन्न होने वाला एक प्रकार का यज्ञ ।

[वि.] (सं.) तीन सींग वाला ।

त्रिककुभ् [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदान वायु जिससे डकार और छींक आती है । २-नौ दिन में सम्पन्न होने वाला एक यज्ञ ।

त्रिकट [संज्ञ पु.] देखो 'त्रिकंट' ।

त्रिकटु [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ, मिर्च और पीपल ये तीन कटु पदार्थ ।

त्रिकटुक [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिकटु' ।

त्रिकत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिफला, त्रिकुटा और त्रिमेद ।

त्रिकर्मा [वि.] (सं.) द्विज ।

त्रिकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन मात्राओं का शब्द । प्लुत । २-दोहे का एक भेद जिसमें नौ गुरु और तीस लघु अक्षर होते हैं । [वि] (सं.) जिसमें तीन कलाएँ हों ।

त्रिकलिंग, त्रिकलिङ्ग [संज्ञा पु.] देखो 'तैलंग' ।

त्रिकशूल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वातरो

त्रिकांड, त्रिकाण्ड [संज्ञा पु.] १-अमरकोष का दूसरा नाम । २-निरुक्त का दूसरा नाम ।

[वि.] (सं.) जिसमें तीन कांड हों ।

त्रिकांडी, त्रिकाण्डी [वि.] (सं.) तीन कांड वाला । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह ग्रंथ जिसमें कर्म, ज्ञान और उपासना तीनों का वर्णन हो । वेद ।

त्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुएँ पर का वह चौखटा जिसमें गराड़ी लगाई जाती ।

त्रिकाम [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

त्रिकाय [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

त्रिकार्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ, अतीस और मोथा इन तीनों का समूह ।

त्रिकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूत, वर्त्तमान और भविष्य यह तीनों काल । २-प्रातः मध्याह्न

और सायं ये तीनों काल।

त्रिकालज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) भूत, वर्त्तमान और भविष्य तीनों की बातें जानने वाला व्यक्ति। सर्वज्ञ।

त्रिकालज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीनों कालों के संबंध में जानने की शक्ति या भाव।

त्रिकालदर्शक [वि.] (सं.) तीनों कालों की बातों को जानने वाला। त्रिकालज्ञ।

त्रिकालदर्शिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीनों कालों की बातों को जानने की शक्ति या भाव। त्रिकालज्ञता।

त्रिकालदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) तीनों कालों की बातों को देखने या जानने वाला मनुष्य। त्रिकालज्ञ।

त्रिकुट [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिकूट'।

त्रिकटु [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ, मिर्च और पीपल इन तीनों वस्तुओं का समूह।

त्रिकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दोनों भौंहों के बीच का स्थान।

त्रिकुल [संज्ञा पु.] (सं.) पितृकुल, मातृकुल और श्वशुरकुल।

त्रिकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन शृङ्गों या चोटियों वाला पर्वत। २-वह पर्वत जिस पर लंका स्थित और बसी हुई है। ३-सेंधानमक। ४-योग में मस्तक के छः कल्पित चक्रों में से पहला जो दोनों भौंहों के मध्य में ऊपर की ओर माना जाता है।

त्रिकूटा [संज्ञा स्त्री] (सं) तान्त्रिकों की एक भैरवी।

त्रिकूटलवण [संज्ञा पु.] (सं.) काला नमक।

त्रिकूर्चक [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रचिकित्सा के एक प्राचीन अस्त्र का नाम।

त्रिकोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा क्षेत्र जिसके तीन भुज हों। त्रिभुजक्षेत्र। २-तीन कोनों वाली कोई वस्तु। ३-जन्मकुण्डली में लग्न स्थान-स्थान से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

त्रिकोणक [संज्ञा पु.] (सं.) तीन कोण का पिंड। तिकोना पिंड।

त्रिकोणघंटा, त्रिकोणघण्टा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तिकोना बाजा जिस पर लोहे के और टुकड़े से आघात करके ताल देते हैं।

त्रिकोणफल [संज्ञा पु.] (सं.) सिघाड़ा। पानीफल

त्रिकोणभवन [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मकुण्डली में लग्न से पांचवां और नवां स्थान।

त्रिकोणमंडलभूमि, त्रिकोणमण्डलभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी के मुहाने पर बालू मिट्टी आदि के जमने से बनी हुई भूमि।

त्रिकोणमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गणितशास्त्र जिसमें त्रिकोण, बाहु, वर्ग विस्तार आदि का मान निकाला जाता है। ट्रिग्नोमैट्री।

त्रिकोणा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-शृंगाटक वृक्ष। २-सिंघाड़े की लता। ३-भग। योनि।

त्रिक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार, सज्जी और सुहागा इन तीनों खारों का समूह।

त्रिक्षुर [संज्ञा पु.] (सं.) तालमखाना।

त्रिख [संज्ञा पु.] (सं.) खीरा।

त्रिखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तृषा'।

त्रिगंग, त्रिगङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

त्रिगंधक, त्रिगन्धक [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिजातक'

त्रिगंभीर, त्रिगम्भीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका सत्व (आचरण) स्वर और नाभि गंभीर हो।

त्रिगण [संज्ञा पु] देखो 'त्रिवर्ग'।

त्रिगर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक जालंधर का प्राचीन नाम।

त्रिगर्त्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिनाल स्त्री। पुंश्चली। कामुक स्त्री।

त्रिगर्त्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) तिगर्त्त नामक देश।

त्रिगुण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्व, रज और तम इन तीन गुणों का समूह।

त्रिगुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-माया। ३-तंत्र में एक प्रसिद्ध बीज।
[वि.] (सं.) तिगुना। तीन गुना।

त्रिगुणाकृत [वि.] (सं) तीन बार का जोता हुआ (खेत)।

त्रिगुणात्मक [वि.] (सं.) [स्त्री. त्रिगुणात्मिका] सत्व, रज और तम इन तीन गुणों वाला।

त्रिगुणात्मिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र] तीनों गुणों से युक्त। तीनों गुणों वाली।

त्रिगुणित [वि] (सं) तिगुना किया हुआ। त्रिरावृत्त।

त्रिगुणी [संज्ञा स्त्री] (सं) बिल्ववृक्ष। बेल का पेड़।

त्रिगूढ़ [संज्ञा पु.] (सं) स्त्रियों के वेश में पुरुषों का नृत्य।

त्रिघंटा, त्रिघण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक कल्पित नगर जो हिमालय की चोटी पर अवस्थित माना जाता है।

त्रिचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमारों का रथ

त्रिचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। त्रिनेत्र।

त्रिचित [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की गार्हपत्याग्नि।

त्रिजग* [संज्ञा पु.] (सं.) १-आड़ा चलने वाला जन्तु। पशु और कीड़े मकोड़े। तिर्यक। २-तीनों लोक (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल)।

त्रिजगत् [संज्ञा पु.] (सं) तीनों लोक स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

त्रिजट [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-एक ब्राह्मण का नाम।

त्रिजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-राक्षसी जो विभीषण की बहिन थी। यह अशोक वाटिका में सीता जी के पास रहती थी। २-बेल का पेड़

त्रिजटी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।
[संज्ञा स्त्री.] देखो त्रिजटा'।

त्रिजड़ [संज्ञा पु.] (डिं.) १-कटारी। २-तलवार।

त्रिजात [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिजातक'।

त्रिजातक [संज्ञा पु.] (सं.) इलायची (फल) दारचीनी (छाल) और तेजपत्ता (पत्ता) इन तीन प्रकार के पदार्थों का समूह।

त्रिजामा** [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) त्रियामा। रात्रि। रजनी।

त्रिजीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाप की ज्या जो नब्बे अंशों तक फैली हो

त्रिज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृत्त के केन्द्र से परिधि तक की रेखा जो व्यास की आधी होती है

त्रिण* [संज्ञा पु.] देखो 'तृण'।

त्रिणता [संज्ञा स्त्री.] (सं) धनुष।

त्रिणत्व [संज्ञा पु] (सं) तृण का भाव। तिनका होने का भाव।

त्रिणयन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

त्रिणव [संज्ञा पु.] (सं) सामगान की एक विशेष प्रणाली।

त्रितंत्री, त्रितन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कच्छपी वीणा के समान एक तीन तार वाली वीणा जो प्राचीनकाल में होती थी।

त्रित [संज्ञा पु] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-गौतममुनि के तीन पुत्रों में से एक।

त्रितय [संज्ञा पु] (सं) धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का समूह।

त्रितल [वि] (सं) तीन खंड या मंजिल वाला (घर)।

त्रिताप [संज्ञा पु.] (सं.) दैहिक, दैविक और भौतिक इन तीन प्रकार का ताप या कष्ट।

त्रिदंड, त्रिदण्ड [संज्ञा पु.](सं.) संन्यास आश्रम का चिह्न, बांस का एक डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी-छोटी लकड़ियां बंधी होती हैं।

त्रिदंडक, त्रिदण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिदंड'।

त्रिदल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेल का वृक्ष। २-तीन दल, गुट्ट या पार्टी।

त्रिदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोधापदी। हँसपदी।
[वि.] (हिं.) तीन दल (पत्ता) वाला।

त्रिदलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का थूहर।

त्रिदलीय [वि.] (सं.) तीन दलों संबंधी। तीन दलों की।

त्रिदश [संज्ञा पु] (सं.) १-देवता। २-जीभ।

त्रिदशगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के गुरु,

बृहस्पति ।

त्रिदशगोप [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी नामक बरसाती कीड़ा ।

त्रिदशत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देवत्व । देवतापन ।

त्रिदशदीर्घिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा । स्वर्ग गंगा ।

त्रिदशपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

त्रिदशपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग ।

त्रिदशमंजरी, त्रिदशमञ्जरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) तुलसी ।

त्रिदशवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा ।

त्रिदशवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं) नभ । आकाश ।

त्रिदशसर्षप [[संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार की सरसों । देवसर्षप ।

त्रिदशांकुश,त्रिदशाङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र ।

त्रिदशाचार्य [संज्ञा पु] (सं.) देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।

त्रिदशाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के राजा, इन्द्र ।

त्रिदशाध्यक्ष, त्रिदशायन [संज्ञा पु] (सं.) विष्णु

त्रिदशायुध [संज्ञा पु.] (सं) वज्र ।

त्रिदशारि [संज्ञा पु.] (सं) देवताओं के शत्रु. असुर ।

त्रिदशालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग । २-सुमेरु पर्वत ।

त्रिदशावास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिदशालय' ।

त्रिदशाहार [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत । सुधा ।

त्रिदशेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

त्रिदशेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

त्रिदालिका [संज्ञा स्त्री](सं.) चामरकषा । सातला

त्रिदिनस्पृश् [संज्ञा पु.] (सं.) वह तिथि जो तीन दिनों को स्पर्श करती हो, अर्थात् जिसका थोड़ा बहुत अंश तीन दिनों में पड़ता हो ।

त्रिदिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग । २-आकाश । ३-सुख ।

त्रिदिवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इलायची ।

त्रिदिवाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

त्रिदिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) देवता ।

त्रिदिवोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी इलायची । २-गंगा ।

त्रिदिवौकस [संज्ञा पु.] (सं.) देवता ।

त्रिदृश् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

त्रिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता ।

त्रिदोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष । २-वात, पित्त और कफ जनित रोग, सन्निपात ।

त्रिदोषघ्न [वि.] (सं.) त्रिदोषनाशक ।

त्रिदोषज [वि.) वात, पित्त और कफ इन तीनों से उत्पन्न । [संज्ञा पु.] (सं.) सन्निपात रोग ।

त्रिदोषना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-वात, पित्त और कफ के प्रकोप में पड़ना । २-काम-क्रोध और लोभ के फंदे में फँसना ।

त्रिदोषसंभव, त्रिदोषसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) सन्निपात रोग ।

त्रिधनी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की रागिनी

त्रिधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) हरिवंश के अनुसार सुधन्वा राजा के एक पुत्र का नाम ।

त्रिधर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

त्रिधा [क्रि. वि.] (सं.) तीन प्रकार से । तीन तरह से । [वि.] (सं.) तीन प्रकार का ।

त्रिधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश । २-सोना, चांदी और तांबा ।

त्रिधात्व [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रकार का भाव ।

त्रिधाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-शिव । ३-अग्नि । ४-मृत्यु । ५-स्वर्ग ।

त्रिधामन् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिधाम' ।

त्रिधामूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर जिसके अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु, और महेश तीनों हैं ।

त्रिधारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा नागरमोथा । गुँदला । २-कसेरू का पेड़ ।

त्रिधारस्नुही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रिधारा सेंहुड़ ।

त्रिधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोकों में बहने वाली, गंगा । २-तीन धार वाला सेंहुड़ ।

[वि.] (सं.) तीन धार वाला ।

त्रिधाविशेष [संज्ञा पु.] (सं.) सूक्ष्म, मातृपितृज और महाभूत तीनों प्रकार के रूप धारण करने वाला, शरीर (सांख्य) ।

त्रिधासर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दैव, तिर्यग् और मानुष ये तीनों सर्ग जिसमें सारी सृष्टि आजाती है ।

त्रिन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तृण' ।

त्रिनयन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

[वि.] (सं.) तीन आंखों वाला । तीन नेत्रों वाला ।

त्रिनयना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

त्रिनाक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग ।

त्रिनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

त्रिनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । महादेव । २-सोना । स्वर्ण ।

त्रिनेत्रचूड़ामणि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्र । चन्द्रमा ।

त्रिनेत्ररस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रस जो शोधे हुए पारे, गंधक और तांबे की भस्म को सम भागों में एक विशेष क्रिया द्वारा तैयार किया जाता है और सन्निपात रोग में दिया जाता है ।

त्रिनेत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाराहीकंद ।

त्रिपटु [संज्ञा पु.] (सं.) कांच । शीशा ।

त्रिपताक [संज्ञा पु.] (सं.) वह माथा या ललाट जिसमें तीन बल पड़े हों ।

त्रिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पेड़ ।

त्रिपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) पलाश का वृक्ष ।

त्रिपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरहर का पेड़ । २-त्रिपतिया घास ।

त्रिपथ [संज्ञा पु.] (सं.) कर्म, ज्ञान और उपासना इन मार्गों का समूह ।

त्रिपथगा [संज्ञा स्त्री.] (सं) गंगा । (स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनों लोकों में बहने के कारण गंगा को त्रिपथगा कहते हैं । ऐसा हिन्दुओं का विश्वास है) ।

त्रिपथगामिनी [संज्ञा स्त्री] (सं) गंगा ।

त्रिपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिपाई । २-त्रिभुज । ३-वह जिसके तीन पद या चरण हों । ४-यज्ञों की वेदी नापने की प्राचीनकाल की नाप

त्रिपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-गायत्री । २-हंसपदी ।

त्रिपदिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवपूजन के समय शंख रखने का तिपाई के आकार का पीतल का चौखटा । २-तिपाई । ३-संगीत में संकीर्णराग का एक भेद ।

त्रिपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हंसपदी । २-तिपाई । ३-हाथी की पालन बाँधने का रस्सा । गायत्री । ५-पूजा में शंख रखने की तिपाई ।

त्रिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक ।

त्रिपरिक्रांत, त्रिपरिक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने, पढ़ने, पढ़ाने और दान देने वाला ब्राह्मण ।

त्रिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) पलास का पेड़ ।

त्रिपर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पलास का पेड़ ।

त्रिपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालपर्णी । २-बन कपास । ३-एक प्रकार की पिठवनलता ।

त्रिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालपर्णी । २-बन कपास । ३-एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद औषध रूप में प्रयोग होता है ।

त्रिपर्याय [वि.] (सं.) तीन तह या परत वाला ।

त्रिपला [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'त्रिफला' ।

त्रिपाठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तीन वेदों का जानने वाला पुरुष । त्रिवेदी । ब्राह्मणों की एक जाति । त्रिवेदी । तिवारी ।

त्रिपाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन बार भिगोया हुआ सूत (कर्मकांड) । २-छाल । वल्कल ।

त्रिपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्वर । बुखार । २-परमेश्वर ।

त्रिपादिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-तिपाई । २-

त्रिपुरारिरस [संज्ञा पु.] (सं) वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पेट के रोगों में दिया जाता है।

त्रिपुरासुर [संज्ञा पु.] (सं.) बाणासुर का एक नाम।

त्रिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) पिता, पितामह और प्रपितामह।
[वि.] तीन पीढ़ियों से चला आने वाला।

त्रिपुष [संज्ञा पु.] (सं.) १–ककड़ी। खीरा। २–गेहूँ।

त्रिपुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला निसोथ।

त्रिपुष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में एक योग।

त्रिपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के मतानुसार पहले वासुदेव।

त्रिपौरुष [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिपुरुष'।

त्रिपौलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'तिरपोलिया'।

त्रिप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) दिशा, देश और काल सम्बन्धी प्रश्न। (फलित ज्योतिष)।

त्रिप्रस्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) वह हाथी जिसके मस्तक कपोल और नेत्र इन तीनों स्थानों से मद झड़ता हो।

त्रिप्लक्ष [संज्ञा पु] (सं) एक प्राचीन देश का नाम।

त्रिफला [संज्ञा पु.] (सं.) १–आंवले हड़ और बहेड़े का समूह। २–इन तीनों फलों का चूर्ण।

त्रिफलीकृत [संज्ञा पु.] (सं.) वह चावल जैसी भूसी जो तीन बार निकाली गई हो।

त्रिबलि [संज्ञा स्त्री] देखो 'त्रिबली'।

त्रिबली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट के ऊपर दिखाई देने वाले तीन बल या रेखा रेखाएं (सौंदर्य-सूचक)।

त्रिबलीक [संज्ञा पु.] (सं.) १–वायु। २–मलद्वार। गुदा।

त्रिबाहु [संज्ञा पु.) (सं.) १–रुद्र के एक अनुचर का नाम। २–तलवार का एक हाथ।

त्रिबेनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिवेणी'।

त्रिभंग, त्रिभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें टाँग कमर और गरदन तीनों अंग कुछ-कुछ टेढ़े रहते हैं।
[वि.] तीन जगह से टेढ़ा।

त्रिभंगी [वि.] (सं) तीन जगह से टेढ़ा। तीन मोड़ का।
[संज्ञा पु.] १–ताल के साठ मुख्य भेदों में एक। २–शुद्ध राग का एक भेद। ३–एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएं होती हैं और १०, ८, ८, ६ मात्राओं पर यति होती है। ४–दंडक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ६ नगण, २ सगण, भगण, मगण, सगण और अन्त में एक गुरु होता है ५–देखो 'त्रिभंग'।

त्रिभंडी, त्रिभण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

त्रिभ [वि.] (सं.) तीन नक्षत्रों से युक्त। तीन नक्षत्र वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) तीन राशियों का समुदाय। लग्नादि तीनों राशियाँ।

त्रिभजीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यास की अधि-रेखा। त्रिज्या।

त्रिभज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रिभजीया। त्रिज्या

त्रिभुक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) तिरहुत का नाम। मिथिला देश।

त्रिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) तीन भुजाओं का क्षेत्र। तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हुआ धरा-तल।

त्रिभुवन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिभुवनसुंदरी, त्रिभुवनसुन्दरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–दुर्गा। २–पार्वती।

त्रिभूम [संज्ञा पु.] (सं.) तीन खंडों वाला मकान। तिमला घर।

त्रिभोलग्न [संज्ञा पु.] (सं.) क्षितिवृत्त पर पड़ने वाले क्रांतिवृत्त का ऊपरी मध्य भाग।

त्रिमंडला, त्रिमण्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की जहरीली मकड़ी।

त्रिमद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–परिवार, विद्या और धन इन तीन कारणों से उत्पन्न अभिमान। २–मोथा, चीता और बायबिडंग इन चीजों का समूह।

त्रिमधु [संज्ञा पु.] (सं.) १–ऋग्वेद के एक अंश का नाम। २–वह व्यक्ति जो विधि पूर्वक उपरोक्त अंश पढ़े। ३–ऋग्वेद का एक यज्ञ ४–घी, शहद और चीनी इन तीनों का समूह

त्रिमात [वि.] देखो 'त्रिमासिक'।

त्रिमात्रिक [वि.] (सं.) तीन मात्राओं का। तीन मात्राओं वाला। प्लुत।

त्रिमार्गगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

त्रिमार्ग गामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

त्रिमार्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

त्रिमार्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गंगा। २–तिरमुहानी।

त्रिमुंड, त्रिमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वर। बुखार। २–त्रिशिरा राक्षस।

त्रिमुकुट [संज्ञा पु.] (सं.) वह पहाड़ जिसके तीन चोटियाँ हों। त्रिकूट।

त्रिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १–शाक्य मुनि। २–गायत्री जपने की चौबीस मुद्राओं में से एक।

त्रिमुखा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिमुखी'।

त्रिमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्ध की माता।

मायादेवी।

त्रिमुनि [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिनि, कात्यायन और पातंजलि ये तीनों मुनि।

त्रिमुहानी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तिरमुहानी'।

त्रिमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता। २-सूर्य। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्रह्मा की एक शक्ति। २-बौद्धों की एक देवी।

त्रिमृत [संज्ञा पु.] (सं.) निसोथ।

त्रिमृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

त्रिय* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिया'।

त्रियव [संज्ञा पु.] (सं.) तीन यव या जौ के बराबर का परिमाण।

त्रियष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तपापड़ा। शाहतरा।

त्रिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री। औरत।
त्रिया चरित्र-स्त्रियों का छल कपट जिसे पुरुष सहज में नहीं समझ सकते।

त्रियान [संज्ञा पु.] (सं.) महायान, हीनयान, मध्यमयान ये बौद्धों के तीन प्रधान यान या भेद।

त्रियामक [संज्ञा पु.] (सं.) पाप।

त्रियामा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-रात्रि। २-यमुना नदी। ३-हल्दी। ४-नील का पेड़। ५-काला निसोथ।

त्रियुग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सतयुग, द्वापर और त्रेता ये तीन युग। २-विष्णु। ३-वसन्त, वर्षा और शरद ये तीन ऋतुएँ।

त्रियूह [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद रंग का घोड़ा।

त्रिरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध, धर्म और संघ का समूह। (बौद्ध)।

त्रिरश्मि [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिकोण'।

त्रिरसक [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रकार के रस या स्वाद वाली मदिरा।

त्रिरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक व्रत जिसमें तीन दिन तक उपवास करना पड़ता है।

त्रिरात्रि [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन रात्रियों (और दिनों) का समय। २-एक व्रत जिसमें तीन दिन तक उपवास करना पड़ता है। ३-गर्गत्रिरात्र नामक योग।

त्रिरूप [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेध का घोड़ा।

त्रिरेख [संज्ञा पु.] (सं.) शंख। [वि.] तीन रेखाओं वाला।

त्रिल [संज्ञा पु.] (सं.) जिसमें तीन लघुवर्ण हों, नगण।

त्रिलघु [संज्ञा पु.] (सं) १-नगण जिसमें तीनों वर्ण लघु हों। २-वह पुरुष जिसकी गरदन जाँघ और मूत्रेन्द्रिय छोटी हो (शुभ लक्षण)

त्रिलवण [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधानमक, साँभर और कालानमक।

त्रिलिंग, त्रिलिङ्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अहङ्कार। गर्व। २-'तैलंग'। शब्द का बनावटी संस्कृत रूप।

त्रिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग, पृथ्वी (मर्त्य) और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिलोकनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीनों लोकों का नाथ या मालिक। परमेश्वर। २-राम। ३-कृष्ण। ४-सूर्य। ५-विष्णु का कोई अवतार।

त्रिलोकपति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिलोकनाथ'।

त्रिलोकी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिलोक'।

त्रिलोकीनाथ [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिलोकनाथ'।

त्रिलोकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-सूर्य।

त्रिलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

त्रिलोचना, त्रिलोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

त्रिलोह [संज्ञा पु.] (सं.) सोना, चांदी और तांबा

त्रिलौही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन मुद्रा जो सोने चाँदी और तांबे के मेल से बनाई जाती थी।

त्रिवट [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिवण'।

त्रिवण [संज्ञा पु.] (सं.) संपूर्ण जाति का एक राग जो दोपहर के समय गाया जाता है।

त्रिवणी [संज्ञा स्त्री.] (?) शंकराभरण, जयश्री और नरनारायण के मेल से बनने वाली एक संकर रागिनी।

त्रिवत्स [संज्ञा पु.] (सं.) तीन वर्ष का बालक।

त्रिवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्थ, धर्म और काम का वर्ग या समूह। २-सत्व, रज और तम यह तीनों गुण। ३-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन जातियां या वर्ण।

त्रिवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल, काला और पीला ये तीन प्रधान रंग। २-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये जातियां या वर्ण।

त्रिवर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोखरू। २-त्रिफला ३-त्रिकुटा। ४-लाल, काला और पीला रंग। ५-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन प्रधान जातियां।

त्रिवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली कपास।

त्रिवर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मोती।

त्रिवलि, त्रिवलिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिबली'।

त्रिवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलकमल।

त्रिवल्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता है।

त्रिवार [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम

त्रिवार्षिक [वि.] (सं.) तीन साल का। तीन साला

त्रिवाहु [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।

त्रिविक्रम [संज्ञा पु.] (सं) १-वामन अवतार। २-विष्णु।

त्रिविद् [वि.] (सं.) तीनों वेदों को जानने वाला

त्रिविद्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीनों वेदों को जानने वाला द्विज।

त्रिविध [वि.] (सं.) तीन तरह का। तीन प्रकार का। [क्रि. वि.] तीन प्रकार से।

त्रिविनत [संज्ञा पु.] (सं.) देवता, ब्राह्मण और गुरु के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखने वाला मनुष्य।

त्रिविष्टप [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। तिब्बत देश

त्रि विस्तीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) जिसका ललाट कमर और छाती ये तीनों अंग चौड़े हों।

त्रिवीज [संज्ञा पु.] (सं.) सावाँ।

त्रिवृंत, त्रिवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) पलाश का वृक्ष

त्रिवृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का यज्ञ। २-निसोथ।

त्रिवृता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिवृत'।

त्रिवृत्करण [संज्ञा पु.] (सं.) तेज, जल और अन्न का त्र्यात्मक करण। पृथ्वी, जल और तेज का मिश्रण।

त्रिवृत्त [वि.] (सं.) तिगुना।

त्रिवृत्ता [संज्ञा स्त्री] देखो 'त्रिवृत्ति'

त्रिवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

त्रिवृत्पर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुरहुर का वृक्ष या फूल।

त्रिवृद्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋक्, यजु और साम ये तीनों वेद। २-प्रणव।

त्रिवृष [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार ग्यारहवें द्वापर के एक व्यास का नाम।

त्रिवेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तीन नदियों का संगम। २-तीन नदियों की मिली हुई धारा। ३-गङ्गा, यमुना और सरस्वती का संगमस्थान जो प्रयाग में है। २-हठयोगानुसार इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीन नाड़ियों का संगम स्थान।

त्रिवेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋक्, यजु और साम यह तीनों वेद। २-इन तीनों का ज्ञाता हो।

त्रिवेदी [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋक्, यजु और साम तीन वेदों का ज्ञाता। २-ब्राह्मणों का एक भेद

त्रिवेनी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रिवेणी'।

त्रिवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

त्रिशंकु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्ली। २-जुगनू। ३-एक पर्वत का नाम। ४-पपीहा। ५-एक सूर्यवंशी राजा जिन्होंने सदेह स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था पर देवताओं के विरोध के कारण बीच आकाश में ही रोक दिये गये थे। ६-एक तारा, जिसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु है जो इन्द्र के ढकेलने पर आकाश से गिर रहे थे और जिन्हें मार्ग में ही विश्वामित्र ने अपने योग

है। २-वह जिसे दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार का दुख हो।

त्रिशूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं। २-दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख। ३-तंत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा।

त्रिशूलघात [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थस्थान जहां स्नान करने से गाणपत्यदेह प्राप्त होती है। (महाभारत)।

त्रिशूली [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिशूल का धारण करने वाले, महादेव। [संज्ञा स्त्री.] दुर्गा।

त्रिभृंग, त्रिभृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्रिकूट पर्वत। त्रिकोण।

त्रिभृंगी, त्रिभृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टेंगना मछली जिसके सिर पर तीन कांटे होते हैं।

त्रिशोक [संज्ञा पु.] (सं.) जीव, जिसे दैविक, भौतिक आध्यात्मिक यह तीन प्रकार के शोक होते हैं। २-कण्व ऋषि के एक पुत्र का नाम।

त्रिश्रुतिमध्यम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विकृत स्वर जो संदीपन नामक श्रुति से आरम्भ होता है।

त्रिषरण [संज्ञा पु.](सं.), प्रातः मध्याह्न और सायंकाल। त्रिकाल।

त्रिषष्ठ [वि.] (सं.) तिरसठवाँ।

त्रिषष्ठि [वि.] (सं.) तिरेसठ। साठ और तीन।

त्रिषा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'तृषा'।

त्रिषित* [वि.] (हिं.) देखो 'तृषित'।

त्रिषुपर्ण [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिसुपर्ण'।

त्रिष्टुप [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिष्टुभ'।

त्रिष्टुभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।

त्रिष्टोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

त्रिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) तीन पहियों वाला रथ या गाड़ी।

त्रिसंगम, त्रिसङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन नदियों के मिलने का स्थान। २-तीन वस्तुओं का मेल।

त्रिसंधि, त्रिसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का फूल जो सफेद, लाल और काले रंग का होता है।

त्रिसंध्य, त्रिसन्ध्य [संज्ञा पु.](सं.) प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

त्रिसंध्यकुसुम, त्रिसन्ध्यकुसुम [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'त्रिसंधि'।

त्रिसंध्याव्यापिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह तिथि जो सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहती है।

त्रिसंध्या, त्रिसन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रातः मध्याह्न और सायं ये तीनों संधिकाल।

त्रिसप्तति [वि.] (सं.) तिहत्तर।

त्रिसप्ततितम [वि.] (सं.) तिहत्तरवाँ।

त्रिसम [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ, गुड़ और हड़ इन तीनों का समूह।

त्रिसर [संज्ञा पु.] (सं.) खसारी।

त्रिसरी [संज्ञा पु.] (सं.) वह काले सिर वाला घोड़ा जिसके और सब अंग भिन्न वर्णों के हों

त्रिसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सत्व, रज और तम तीनों गुणों का सर्ग। सृष्टि।

त्रिसामा [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर। [संज्ञा स्त्री.] महेन्द्रपर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। (भागवत)।

त्रिसिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'त्रिशर्करा'।

त्रिसुगंधि, त्रिसुगन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दालचीनी, इलायची और तेजपात इन तीन पदार्थों का समूह।

त्रिसुपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋग्वेद के तीन विशिष्ट मंत्रों का नाम। २-यजुर्वेद के तीन विशिष्ट मंत्रों का नाम।

त्रिसुपर्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिसुपर्ण का ज्ञाता पुरुष।

त्रिसौपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्रिसुपर्णिक। २-परमेश्वर। परमात्मा।

त्रिस्कंध, त्रिस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषशास्त्र जिसके संहिता, तंत्र और होरा ये तीन स्कंध हैं।

त्रिस्तानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गायत्री। २-तीन स्तन वाली एक राक्षसी। (महाभारत)।

त्रिस्तवन [संज्ञा पु.] (सं.) तीन दिन में सम्पूर्ण होने वाला यज्ञ।

त्रिस्तवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वमेध यज्ञ की वेदी जो साधारण यज्ञ से आकार में तीन गुनी होती है।

त्रिस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काशी, गया और प्रयाग ये तीन पुण्य स्थान।

त्रिस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) तीनों लोकों में रहने वाला परमात्मा।

त्रिस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) सवेरे, दोपहर और सायं तीनों समय का स्थान।

त्रिस्रोता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा। २-उत्तर बङ्गाल की एक बड़ी नदी।

त्रिस्पृशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की एकादशी।

त्रिहल्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह खेत जो तीन बार जोता गया हो।

त्रिहायण [संज्ञा पु.] (सं.) तीन वर्ष का बछड़ा।

त्रिहायणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रौपदी, जो सतयुग में वेदवती, त्रेता में जनकात्मकजा और द्वापर में द्रौपदी नाम से कहलाई।

त्रिहूत [संज्ञा पु.] देखो 'तिरहुत'।

त्रीषु [संज्ञा पु.] (सं.) तीन बाणों तक की दूरी का

स्थान।

त्रीषुक [संज्ञा पु.] (सं.) तीन बाणों वाला धनुष।

त्रीष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की वैदिक अग्नि।

त्रुटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमी। न्यूनता। २-अभाव। ३-भूल। चूक। वचनभंग। ४-संशय। सन्देह। ६-छोटी इलायची। ७-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। ८-समय का एक अत्यन्त सूक्ष्म विभाग जो दो क्षण के बराबर होता है।

त्रुटित [वि.] (सं.) १-कटा या टूटा हुआ। २-आहत। घायल। ३-त्रुटिपूर्ण।

त्रुटिपूर्ण [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई त्रुटि हो। २-त्रुटियों से भरा हुआ।

त्रुटिबीज [संज्ञा पु.] (सं.) अरुई। घुइंया।

त्रुटिस्वीकार [संज्ञा पु.] (सं.) दोष या भूल की स्वीकृति।

त्रुटी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्रुटि'।

त्रेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार युगों में दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का माना गया है। २-दक्षिण, गार्हपत्य और आह्नवनीय ये तीनों प्रकार की अग्नियाँ। ३-तीन कौड़ियों से खेला जाने वाला जूआ।

त्रेताग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय ये तीन प्रकार की अग्नियां।

त्रेतायुग [संज्ञा पु.] (सं) चार युगों में दूसरा जो कातिक शुक्ला नवमी से आरम्भ हुआ था। यह १२९६००० वर्ष का माना गया है।

त्रेतायुगाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिक शुक्ला नवमी जिस दिन त्रेता युग का आरम्भ हुआ था।

त्रेतिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह क्रिया जो दक्षिण गार्हपत्य और आहवनीय तीनों प्रकार की अग्नियों से हो।

त्रेधा [अव्य.] तीन प्रकार से।

त्रै [वि.] (हिं.) तीन।

त्रैकंटक, त्रैकण्टक [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिकंटक'।

त्रैककुद [संज्ञा पु.] (सं.) काजल। सुरमा।

त्रैककुभ [संज्ञा पु.] देखो 'त्रिककुभ'।

त्रैकटु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिकटु'।

त्रैकालज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिकालज्ञ'।

त्रैकालिक [वि.] (सं.) १-भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों कालों में या सदा होने वाला २-प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों कालों में होने वाला।

त्रैकूटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन राजवंश।

त्रैकोणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसमें तीन कोण हों। २-तिपहला।

त्रैगर्त्त [संज्ञा पु.] (सं) १-त्रिगर्त देश का निवासी। त्रिगर्त्त देश का राजा।

त्रैगुणिक [वि.] (सं.) तीन बार गुणा किया हुआ

त्रैगुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) सत्व, रज और तम इन तीन गुणों का धर्म या भाव।

त्रैदेशिक [संज्ञा पु.] (सं.) अंगुली का अग्रभाग जो तीर्थ कहलाता है

त्रैध [अव्य.] (सं.) तीन प्रकार से।

त्रैधावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक यज्ञ विशेष।

त्रैपुर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रिपुर'।

त्रैफल [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिफला आदि के संयोग से बनाया जाने वाला घृत (चक्रदत्त)।

त्रैबलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम। (महाभारत)

त्रैमातुर [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मण।

त्रैमासिक [वि.] (सं.) हर तीन महीनों पर या हर तीसरे महीने होने वाला।

त्रैयंबक, त्रैयम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का होम। [वि.] त्र्यंबक-संबंधी।

त्रैयंबिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री।

त्रैराशिक [संज्ञा पु.] (सं.) गणित की वह प्रक्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

त्रैरूप्य [संज्ञा पु.] (सं.) जिसका आकार तीन प्रकार का हो।

त्रैलोक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'त्रैलोक्य'।

त्रैलोक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग, पृथ्वी (मर्त्य) और पाताल यह तीनों लोक। २-इक्कीस मात्राओं का एक छंद।

त्रैलोक्यचिंतामणि, त्रैलोक्यचिन्तामणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने, चांदी और अभ्रक के मेल से बनाया जाने वाला एक रस। २-एक रस जो हीरे, सोने और मोती के संयोग से बनाया जाता है। (वैद्यक)।

त्रैलोक्यविजया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भंग।

त्रैवर्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्म जिससे धर्म अर्थ और काम इन तीनों की साधना हो।

त्रैवर्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों जातियों का धर्म। [वि.] (सं.) तीन वर्ण-संबंधी।

त्रैवार्षिक [वि.] (सं.) १-जो तीन वर्षों में या हर तीसरे वर्ष हो। तीनसाला। तीन वर्ष का।

त्रैविक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

त्रैविद्य [संज्ञा पु.] (सं.) तीनों वेदों का ज्ञाता।

त्रैविष्टप [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग में रहने वाला देवता।

त्रैष्टभ [वि.] (सं.) त्रिष्टुभ संबंधी।

त्रैसाणु [संज्ञा पु.] (सं) तुर्वसु वंश के राजा गोभानु के पुत्र का नाम। (हरिवंश)।

त्रैस्वर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीनों प्रकार का स्वर।

त्रैहायण [वि.] (सं.) तीन वर्ष में होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) तीन वर्ष का समय।

त्रोटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाटक का एक भेद जिसके अन्तर्गत ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं। इसके प्रत्येक अंक में विदूषक रहता है। इसमें शृंगार रस प्रधान होता है और इसका नायक कोई दिव्य मनुष्य होता है। २-संगीत में एक राग का नाम।

त्रोटकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागनी का नाम।

त्रोटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कायफल। २-चोंच। ३-एक प्रकार की चिड़िया। ४-एक प्रकार की मछली।

त्रोटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-टोंटी। टूँटी। २-चिड़िया की चोंच।

त्रोण [संज्ञा पु.] (सं.) तरकस।

त्रोतल [वि.](सं.) तोतला। तुतलाकर बोलने वाला।

त्रोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अस्त्र। २-चाबुक। ३-एक प्रकार का रोग।

त्र्यंगट, त्र्यङ्गट [संज्ञा पु.](सं.) १- २-चन्द्रमा। ३-छींका। सिकहर।

त्र्यंजन, त्र्यञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कालांजन, रसांजन और पुष्पांजन ये तीनों अंजन।

त्र्यंबक, त्र्यम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव। २-ग्यारह रुद्रों में से एक।

त्र्यंबकसख, त्र्यम्बकसख [संज्ञा पु.] (सं.) कुबे

त्र्यंबका, त्र्यम्बका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा, जिसके सोम, सूर्य और अनल ये तीनों ने माने जाते हैं।

त्र्यंश [संज्ञा पु.] (सं.) तिगुना अंश या भाग।

त्र्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-एक दैत्य का उल्लेख भागवत में है।

त्र्यक्षर [वि.] (सं.) 'त्र्यक्षरक'।

त्र्यक्षरक [वि.] (अ.) तीन अक्षरों वाला। जिसमें तीन अक्षर हों। [संज्ञा पु.] १-प्रणव। २-तंत्र में तीन अक्षर वाला। मन्त्र। ३-एक प्रकार का वैदिक छंद।

त्र्यक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी का नाम।

त्र्यधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) तीनों लोकों के पति या स्वामी, विष्णु।

त्र्यध्वगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

त्र्यब्द [संज्ञा पु.] (सं.) तीन वर्ष का काल।

त्र्यमृतयोग [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग।

त्र्यवि [संज्ञा पु.] (सं) अठारह महीने का पशु।

त्र्यशीत [वि.] (सं.) तिरासिवाँ।

त्र्यशीति [वि.] (सं.) तिरासी।

त्र्यष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर में का वह स्थान

शरीर में फुंसियाँ निकल आती हैं।

त्वक्पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेहुआँ रोग। २-रोमांच।

त्वक्पुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'त्वक्पुष्प'।

त्वक्सार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस। २-दालचीनी। ३-सन का पौधा।

त्वक्सारमेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा चेंच।

त्वक्सारा [संज्ञा स्त्री.] (सं) बंसलोचन।

त्वक्सुगंधा, त्वक्सुगन्धा [संज्ञा पु.] (सं.) १-एलुवा। २-छोटी इलायची।

त्वक्स्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) फलोला। छाला।

त्वगंकुर, त्वगङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) रोमांच।

त्वगाक्षीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंसलोचन।

त्वग्गंध, त्वग्गन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी का पेड़।

त्वग्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोम। रोआं। २-रक्त। लहू।

त्वग्दोष [संज्ञा पु.] (सं.) कोढ़। कुष्ट।

त्वग्दोषापहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकुची। बाबची।

त्वग्दोषारि [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिकंद।

त्वग्दोषी [संज्ञा पु.] (सं.) कोढ़ी।

त्वच [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमड़ा। २-छाल। वेल्कल। ३-दालचीनी। ४-साँप की केंचुली। ५-त्वक्इन्द्रिय।

त्वच [संज्ञा पु.] (सं.) १-दालचीनी। २-तेजपत्ता

त्वचकना* [क्रि. अ.] (हिं.) वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमड़ा झूलना।

त्वचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्वक्। चर्म। चमड़ा।

त्वचापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दालचीनी। २-तेजपात।

त्वचिसार [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस

त्वचिसुगंधा, त्वचिसुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची।

त्वदीय [सर्व.] (सं.) तुम्हारा।

त्वरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीघ्रता। जल्दी।

त्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीघ्रता। जल्दी।

त्वराक्षेपी-तोप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह तोप जिसमें जल्दी-जल्दी छोड़ने के लिए यन्त्र लगे होते हैं। क्विकफायर् अर।

त्वरारोह [संज्ञा पु.] (सं.) पारावत। कबूतर।

त्वरावान् [वि.] (सं.) शीघ्रता करने वाला। जल्दबाज।

त्वरि [संज्ञा स्त्री.] देखो 'त्वरा'।

त्वरित [वि.] (सं.) १-जल्दी चलने जाने या पहुँचने वाला। २-जिसका जल्दी पहुँचना या जिसके सम्बन्ध में जल्दी कार्रवाई होना आवश्यक हो। एक्सप्रेस।
[क्रि. वि.] (हिं.) शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

त्वरितक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चावल। सुश्रुत।

त्वरितगति [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, नगण और एक गुरु होता है।

त्वरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्ध में विजय प्राप्त कराने वाली तांत्रिकों की एक अधिष्ठात्री देवी।

त्वलग [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का साँप।

त्वष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वकर्मा। २-शिव। महादेव। ३-एक प्रजापति का नाम। ४-बढ़ई। ५-वृत्रासुर के पिता का नाम। ७-एक वैदिक देवता। ८-सूत्रधार नामक एक वर्णसंकर जाति। ९-चित्रानक्षत्र के अधिष्ठाता देवता नाम।

त्वष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) एक संकरजाति। मनु।

त्वाष्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

त्वाष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्वष्टा (विश्वकर्मा) का बनाया हुआ हथियार, वज्र। २-वृत्रासुर ३-चित्रानक्षत्र।

त्वाष्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विश्वकर्मा की कन्या संज्ञा का एक नाम। २-चित्रानक्षत्र।

त्विषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रभा। दीप्ति।

त्विषामीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक का पेड़।

त्विषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किरण।

त्वेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्साह। उमंग। २-आवेश। भाव का आवेग।

त्सरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार की मूठि। २-सर्प।

त्सारुक [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार चलाने में निपुण व्यक्ति।

थ

थ हिन्दी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजनवर्ण और तवर्ग का दूसरा अक्षर जिसका उच्चारण स्थान दन्त है।

थंक [संज्ञा पु.] (?) विलमुकता।

थंडिल* [संज्ञा पु.] (हिं.) यज्ञ की वेदी।

थंब [संज्ञा पु.] हिं.) १-खंभा। २-सहारा। ३-राजपूतों का एक भेद।

थंबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खड़ी लकड़ी। २-चाँड़। थूनी। सहारे की बल्ली।

थंभ [संज्ञा पु.] (हिं.) खंभा।

थंभन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्तम्भन। रुकावट। ठहराव। २-तंत्र के ६ प्रयोगों में से एक। ३-वह औषध जो शरीर से निकलने वाली वस्तु

(मल, मूत्र, वीर्य आदि) को रोके रहे । *जल-थंभन–जल प्रवाह या बरसना आदि को रोकने का मन्त्र प्रयोग ।*

थँभना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'थमना' ।

थँभवाना [क्रि. स.] देखो (हिं.) देखो 'थमवाना'

थँभाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'थमाना' ।

थंभित* [वि.] (हिं.) १–रुका या ठहरा हुआ । अड़ा हुआ । २–अचल । स्थिर । ३–भय या आश्चर्य से निश्चल । ठक ।

थ [संज्ञा पु.] (सं.) १–रक्षण । २–मंगल । ३–भय । ४–पर्वत । ५–भयरक्षक । ६–एक व्याधि । ७–भक्षण । आहार ।

थइँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ठावँ । जगह । २–ढेर ।

थइली+ [संज्ञा स्त्री.] 'थैली' ।

थक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थाक' ।

थकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकावट ।

थकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–परिश्रम करते-करते इतना शिथिल होना कि फिर और परिश्रम न हो सके । क्लान्त होना । २–ऊबना । ३–बुढ़ापे के कारण काम करने योग्य न होना । ४–मंदा या धीमा होना । ५–मोहित होकर अचल होना ।

थकर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकावट ।

थकरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) स्त्रियों के बाल झाड़ने की खस की कूची ।

थकान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकने का भाव । थकावट । शिथिलता ।

थकाना [क्रि. स.] (हिं.) श्रांत कराना । शिथिल करना । हराना ।

थकामाँदा [वि.] (हिं.) परिश्रम करते-करते अशक्त । श्रमित । श्रांत । जो थककर चूर हो गया हो ।

थकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'थ' अक्षर या वर्ण ।

थकारादि [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके आदि में 'थ' अक्षर हो ।

थकारांत, थकारान्त [वि.] (सं.) जिसके अन्त में 'थ' अक्षर हो ।

थकाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शिथिलता । थकने का भाव ।

थकावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकने का शारीरिक परिणाम या भाव । शिथिलता । थकान ।

थकाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थकावट' ।

थकित [वि.] (हिं.) १–थका हुआ । श्रान्त । शिथिल । २–मोहित । मुग्ध ।

थकिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह मोटी तह जो किसी गाढ़ी वस्तु के जमने से बन जाती है । २–गली हुई धातु का जमा हुआ लोंदा । *थकिया की चाँदी–गलाकर साफ की हुई चांदी ।*

थकैनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थकावट' ।

थकौहाँ [वि.] (हिं.) (स्त्री. थकौंहीं) थकामाँदा । शिथिल ।

थकौंहीं [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) थकीमाँदी । शिथिल ।

थक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. थक्की, थकिया) १–जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह या दल । २–गली हुई धातु का जमा हुआ कतरा ।

थक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थक्का' ।

थगित [वि.] (हिं.) १–ठहरा या रुका हुआ । २–शिथिल । ढीला । ३–मन्द । धीमा ।

थड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. थड़ी] १–बैठने की जगह । बैठक । २–दुकान की गद्दी ।

थड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थड़ा' ।

थति+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थाती' ।

थतिहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसके पास थाती रखी हो ।

थत्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) ढेर । राशि । अटाला ।

थन [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय, भैंस, बकरी आदि चौपायों का स्तन ।

थनकुदी [संज्ञा पु.] (देश.) कीड़े-मकोड़े खाने वाली एक छोटी चमकीले रंग की चिड़िया ।

थनगन [संज्ञा पु.] (बरमी) एक वृक्ष विशेष जिसकी मजबूत लकड़ी इमारतों में काम लाई जाती है । यह बरमा, बरार और मालाबार में बहुत होता है ।

थनटुट्टू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्त्री जिसके स्तन में दूध आना बंद हो गया हो ।

थनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बकरी के गले के नीचे लटकती हुई स्तन के आकार की मांस की दो थैलियाँ । गलथना । २–थन के आकार का लटकता हुआ मांस का पिंड ।

थनु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थन' ।

थनेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का फोड़ा जो स्त्रियों के स्तन पर होता है । २–गुबरेले की जाति का कीड़ा जो गाय भैंस आदि के थन में डंक मार देता है जिससे दूध सूख जाता है ।

थनैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गांव का मुखिया । २–गांव का लगान वसूल करने वाला कर्मचारी । ३–देखो 'थाँगी' ।

थपक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'थपकी' ।

थपकन [संज्ञा पु.] (हिं.) वह आघात जो प्रेम से किसी के शरीर पर किया जाय । थपकी ।

थपक [क्रि. स.] (हिं.) १–प्यार से या आराम पहुँचाने के लिए किसी के शरीर पर धीरे-धीरे हथेली से आघात करना । २–धीरे-धीरे ठोंकना । ३–पुचकारना या दिलासा देना । ४–शांत करना ।

थपका* [संज्ञा पु.] १–देखो 'थक्का' । २–देखो 'थपकी' ।

थपकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–थपकने की क्रिया या भाव । २–वह आघात जो प्रेमवश कि के शरीर पर हथेली से धीरे-धीरे पहुँ जाय । ३–हाथ से धीरे-धीरे ठोकने की क्रि ४–हाथ के झटके से पहुँचाया हुआ आघा ४–जमीन को पीटने की चौरस मुँगरी । ५–धोबी का मुंगरा या डंडा ।

थपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हथेलियों ध्वनि उत्पन्न करने की क्रिया । ताली । ताली बजने का शब्द । ३–बेसन की पूरी । *थपड़ी पीटना या बजाना–उपहास या दि उड़ाना ।*

थपथपी [संज्ञास्त्री.] (हिं.) देखो 'थपकी' ।

थपन* [संज्ञा पु.] (हिं.) स्थापन । ठहराने जमाने का काम ।

थपना* [क्रि. स.](हिं.) स्थापित करना । बैठाना । जमाना । २–प्रतिष्ठित करना । ३–धीरे-धीरे पीटना । [क्रि. अ.] (हिं.) १–स्थापित होना । जमना । ठहरना । २–प्रतिष्ठित होना । [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पत्थर या लकड़ी का पीटने का औजार । पिटना । २–थापी ।

थपरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थप्पड़' ।

थपाना* [क्रि. स.] (हिं.) स्थापित करना ।

थपुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) चौरस चौड़ा छाजन खपड़ा जिसके दोनों ओर नरिया बैठाई है ।

थपेटा* [संज्ञा पु.] देखो 'थपेड़ा' ।

थपेड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चपेट' ।

थपेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) थपेड़ा लगाना ।

थपेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–थप्पड़ । २–आघात । ३–धक्का । टक्कर ।

थपोड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थपड़ी' ।

थप्पड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हथेली से किया हुआ आघात । तमाचा । झापड़ । चपेट । २–आघात । गहरा आघात । धक्का । ३–दाद फुंसियों का छत्ता या चकत्ता । *थप्पड़ कसना, देना, लगाना–तमाचा मारना ।*

थप्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जहाज ।

थम [संज्ञा पु.](हिं.) १–खम्भा । लाट । थूनी । स्तम्भ । २–केलों की पेड़ी । ३–देवी चढ़ाने के लिए बनाई हुई छोटी पूरियाँ और हलुवा ।

थमकारी* [वि.] (हिं.) स्तम्भन करने वाला । रोकने वाला ।

थमना [क्रि. अ.] (हिं.) १–रुकना । ठहरना । २–प्रचलित या चलता न रहना । बन्द हो जा ३–धीरज धरना । उतावला न होना । रहना ।

थमुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव के डांड का हत्था ।

थर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परत । तह । [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'थल' । २– की माँद ।

+ [क्रि. स.] (हिं.) थर्राना। डर से

[क्रि. स.] (हिं.) डर या भय से कँपाना।

[वि.] (हिं.) काँपता या हिलता हुआ।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डर से काँपने का

डर से कांपना।

[क्रि. वि.] (हिं.) डर से कांपते हुए।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया जो बैठने पर कांपती हुई सी पड़ती है।

[क्रि. अ.] (हिं.) १–डर के मारे काँपना

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भय से उत्पन्न

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भय के कारण होने

(हिं.) धातु पर हथौड़ी आदि से

(हिं.) नक्काशी करने का सुनारों

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'थरथराना'।

(हिं.) भय से उत्पन्न कंप-

(देश.) एहसान। निहोरा।

(हिं.) बाघ आदि की माँद।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'थाली'।

(हिं.) १–बाघ या शेरों आदि २–गुफा।

[संज्ञा पु.] देखो 'थल'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी थाली।

[संज्ञा पु.] (देश.) थारुओं की बस्ती।

[संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'तापमापक'।

[क्रि. अ.] (हिं.) १–डर से कांपना। २– होना। दहलना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १–स्थान। जगह। २–सूखी धरती। ३–थलमार्ग। ४– रेगिस्तान। ५–शेर, चीते आदि पशुओं की माँद। ६–फोड़े का लाल हुआ गोल घेरा।

[क्रि. अ.] (हिं.) १–झोल होने के कारण नीचे हिलना। २–मोटेपन से शरीर हिलना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) पृथ्वी पर रहने वाले

[वि.] (हिं.) भूमि पर चलने वाले।

[संज्ञा पु.] (हिं.) गुलाब।

[वि.] (हिं.) मोटाई या स्थूलता के या हिलता हुआ।

–मोटाई या स्थूलता के कारण

किसी अंग का झूल-झूलकर हिलना।

थलथलाना [क्रि. अ.] (हिं.) मोटे शरीर के स्थूल मांस का झूलकर हिलना।

थलपति [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा।

थलपद्म [संज्ञा पु.] (हिं.) गुलाब।

थलबेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव या जहाज के ठहरने का स्थान।

थलभारी [संज्ञा पु.] (हिं.) पालकी के कहारों की बोली में रेतीला मार्ग। या स्थान।

थलरुह※ [वि.] (हिं.) धरती या थल पर उत्पन्न होने वाले जीव, वृक्ष आदि।

थलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थाली। टाठी।

थली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–स्थान। जगह। २–जल के नीचे का तल। ३–ठहरने अथवा बैठने की जगह। बैठक। ४–परती भूमि। ५–रेतीली जमीन।

थवई [संज्ञा पु.] (हिं.) मेमार। राजगीरी।

थवन [संज्ञा पु.] (देश.) बधू के पति के घर की तीसरी बार की यात्रा।

थवना [संज्ञा पु.] (हिं.) कच्ची मिट्टी का बनाया हुआ गोला जिसमें चरखी चलाने के लिए बांस की पोली नली धँसाई जाती है (जुलाहे)

थहना※ [क्रि. स.] (हिं.) थाह लेना। पता लगाना।

थहरका [क्रि. अ.] (हिं.) १–दुर्बलता, भय आदि से कांपना। २–थर्राना।

थहाना [क्रि. स.] (हिं.) १–गहराई का पता लगाना। थाह लेना। २–किसी के गुण, विद्या, बुद्धि आदि का पता लगाना।

थहारना [क्रि. स.] (हिं.) जहाज को ठहराना।

थाँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चोरों या डाकुओं के छिपकर रहने का गुप्त स्थान। २–खोज। पता। सुराग। ३–गुप्तरूप से किसी बात का लगा हुआ पता।

थाँगी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चोरी का माल खरीदने या अपने पास छुपाकर रखने वाला आदमी। २–चोरों का सरदार। २–जासूस। भेदिया।

थाँगीदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थांगी का काम।

थाँभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–स्तम्भ। खंभा। २–थूनी। चांड़।

थाँमना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'थामना'।

थाँवला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घेरा या गड्ढा जो किसी पेड़ के चारों ओर बनाया जाता है। थाला। आलबाल।

था [क्रि. अ.] (हिं.) होना क्रिया का भूतकालिक रूप।

थाई [वि.] (हिं.) बना रहने वाला। स्थिर रहने वाला। [संज्ञा पु.] १–बैठने की जगह। बैठक। अथाई। २–गीत का प्रथम पद जो गाने में बराबर कहा जाता है। ध्रुवपद। स्थायी।

थाक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गांव की सीमा या सरहद। २–थोक। समूह। ढेर।
+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकावट।

थाकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'थकना'।

थाकु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थाक'।

थाट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ठाट'।

थात※ [वि.] (हिं.) जो बैठा या ठहरा हो। स्थित

थाति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–स्थिरता। ठहराव। टिकान। रहन। २–देखो 'थाती'।

थाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कठिन समय के लिए बचाकर रखी हुई पूँजी या धन। २–जमा। पूँजी। ३–धरोहर। अमानत।

थान [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जगह। ठौर। ठिकाना। २–निवासस्थान। ३–किसी देवी-देवता का स्थान। ४–घोड़े या चौपायों के बांधने का स्थान। ५–कुछ निश्चित लम्बाई का कपड़े, गोटा आदि का पूरा टुकड़ा। ६–संख्या। अदद। ७–घोड़े के नीचे बिछाई जाने वाली घास।

थान का टर्रा–१–अस्तबल में उपद्रव करने वाला घोड़ा। २–अपनी गली में ही शेर बनने वाला। *थान का सच्चा*–सीधा घोड़ा। *थान में आना*–(घोड़े का) धूल में लेटना। *अच्छे थान का घोड़ा*–अच्छी जाति का घोड़ा।

थानक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–स्थान। जगह। २–नगर। ३–थांवला। थाला। आलबाल। ४–फेन। झाग।

थाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ठहरने का स्थान। अड्डा। २–पुलिस विभाग का वह भवन जिसमें वहां के इलाके या क्षेत्र की सुरक्षा के लिए पुलिस के सिपाही रहते हैं और जहां अपराधों की सूचना दी जाती है। ३–बांसों का समूह। बांस की कोठी।

थाने चढ़ना–थाने में किसी के विरुद्ध सूचना देना या लिखना। *थाना बिठाना*–पहरा बिठाना।

थानापति [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रामदेवता। स्थान रक्षक देवता।

थानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–स्थान का स्वामी। जिसका स्थान हो। २–दिक्पाल। लोकपाल।

थानुसुत※ [संज्ञा पु.] (हिं.) गणेशजी।

थानेत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थानैत'।

थानेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) थाने का वह प्रधान अधिकारी जो किसी स्थान में शांति बनाए रखने और अपराधों की छानबीन करने के लिए नियुक्त रहता है।

थानेदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थानेदार का पद या कार्य।

थानेश्वर [संज्ञा पु.] (हिं.) पंजाब में स्थित एक हिन्दू तीर्थ।

थानैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १–किसी स्थान का

अधिपति । किसी चौकी या अड्डे का मालिक २-किसी स्थान का देवता या ग्राम देवता ।

थाप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे से किया जाने वाला आघात । २-थप्पड़ । ३-छाप । ४-गुण, प्रधानता आदि की धाक । ५-कसम । शपथ । ६-पंचायत । ७-प्रमाण । कद्र । मान ।

किसी की थाप देना-किसी की कसम खाना ।

थापना* [संज्ञा पु.] (हिं) १-स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया । २-किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करने का कार्य ।

थापना [क्रि स] (हिं.) १-स्थापित करना । जमाना । २-किसी गीली वस्तु को हाथ या सांचे से पीट या दबाकर बनाना । जैसे-उपले थापना, ईंटें थापना ।

[संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-स्थापन । प्रतिष्ठा । २-नवरात्र में दुर्गापूजा के लिए घट स्थापना । ३-मूर्त्ति की स्थापना या प्रतिष्ठा ।

थापर* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'थप्पड़' ।

थापरा [संज्ञा पु.] (देश.) छोटी नाव । डोंगी ।

थापा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दीवारों आदि पर लगाया जाने वाला छापा । २-खलियान में अनाज के ढेर पर मिट्टी आदि से लगाया हुआ चिह्न । ३-वह साँचा जिससे कोई चिह्न अंकित किया जाय । छापा । ४-ढेर । राशि । ५-वह चन्दा जो गाँव में किसी देवी-देवता की पूजा के लिए इकट्ठा किया जाता है । पुजौरा । ६-नैपालियों की एक जाति ।

थापिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'थापी' ।

[संज्ञा पु] (हिं) थापने वाला व्यक्ति ।

थापी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-वह चिपटी मुंगरी जिससे गच पीटकर जमाते हैं । २-कुम्हार का कच्चा घड़ा पीटने का चिपटे और चौड़े सिरे का काठ का डंडा ।

थाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खंभा । स्तंभ । २-मस्तूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थामने की क्रिया या ढंग । पकड़ ।

थामना [क्रि. स.] (हि.) १-पकड़ना । २-गिरती अथवा चलती हुई वस्तु रोकना । ३-सहारा देना । संभालना । ४-गिरने पड़ने से बचाना । ५-अपने ऊपर कार्य का भार लेना । ६-हिरासत या पहरे में रखना ।

थाम्हना* [क्रि स.] (हिं) देखो 'थामना' ।

थायी* [वि.] (हिं.) देखो 'स्थायी' ।

थार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थाल' ।

थारा+ [सर्व.] (हिं) तुम्हारा ।

थारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'थाल' ।

थारू [संज्ञा पु.] (देश.) नैपाल की तराई में पाई जाने वाली एक जंगली जाति ।

थारो+ [सर्व.] (हिं.) तुम्हारा ।

थाल [संज्ञा पु.] (हिं) बड़ी थाली ।

थाला [संज्ञा पु.] (हिं) पेड़ पौधों के चारों बनाया हुआ घेरा या गड्ढा । थांवला । आलबाल ।

थाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भोजन करने का एक प्रसिद्ध गोल छिछला बरतन । बड़ी गोल तश्तरी । २-नाच की एक गत जिसमें थोड़े से घेरे के बीच नाचा जाता है ।

थाली का बैंगन-लाभ और हानि देखकर कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में होने वाला व्यक्ति । अस्थिर सिद्धांत या विचार का । *थाली जोड़*-कटोरे सहित थाली ।

थाली फिरना-भीड़ का अधिक होना । *थाली बजना*-किसी के घर पुत्र उत्पन्न होना ।

थाली बजाना-१-सांप का विष उतारने का मंत्र पढ़ा जाना । २-किसी के घर पुत्र उत्पन्न होना । *थाली कटोरा*-नाच की एक गत ।

थाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'थाह' ।

थावर* [वि] (हिं.) देखो 'स्थावर' ।

+[संज्ञा पु.] शनिवार । शनिश्चर ।

थाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गहराई, ज्ञान, महत्व आदि का अन्त या सीमा । २-गहराई, ज्ञान, महत्व आदि का पता या परिचय । ३-सीमा । हद । परिमिति ।

थाह डूबते को मिलना-विपत्ति में सहारा मिलना ।

थाह मिलना-१-गहराई का पता चलना । २-मन के विचार या धन संपत्ति की तादाद का पता चलना । ३-जल में जमीन तक पहुँचना । *थाह लगना*-देखो 'थाह मिलना' । *थाह लेना*-१-गहराई का पता लगाना । २-कोई वस्तु कितनी और कहां तक है इस बात का पता चलाना । *मन की थाह*-अन्तःकरण के गुप्त अभिप्राय की जानकारी ।

थाहना [क्रि. स.] (हिं) १-थाह लेना । गहराई का पता चलाना । २-अंदाज या पता लेना ।

थाहरा+ [वि.] (हिं) छिछला । जो गहरा न हो ।

थिएटर [संज्ञा पु.] (अ.) १-रंगभूमि । रंगशाला । २-नाटक का अभिनय या तमाशा ।

थिगली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) किसी फटे हुए वस्त्र के छेद पर लगाने की चकती । पैबंद ।

थिगली लगाना-जोड़तोड़ भिड़ाना । युक्ति लगाना । *बादल में थिगली लगाना*-१-अत्यंत कठिन काम करना । २-ऐसी बात कहना जिसका होना असम्भव हो ।

थित* [वि] (हिं.) १-ठहरा हुआ । २-स्थापित । रखाहुआ ।

थिति* [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-ठहराव । स्थायित्व । २-विश्राम करने अथवा टिकने का स्थान । ३-रहाइस । रहन । ४-बने रहने का भाव । रक्षा । ५-दशा । अवस्था ।

थितिभाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्थायीभाव' ।

थिवाऊ [संज्ञा पु] (देश) दहिने अङ्ग का फड़कना ।

थिर* [वि] (हिं) १-स्थिर । अचल । ठ हुआ । २-जो चंचल न हो । शांत । धी ३-स्थायी । दृढ़ । टिकाऊ ।

थिरक [संज्ञा पु.] (हिं.) नृत्य में चरणों की चंचल गति । नाचने में पैरों का हिलना डोलना ।

थिरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाचने के समय पैरों को क्षण-क्षण में उठाना और पटकना । नृत्य में अंग संचालन करना ।

थिरकौहाँ* [वि.] (हिं.) १-थिरकने या का हिलने वाला । २-ठहरा हुआ । स्थिर ।

थिरजीह* [संज्ञा पु.] (सं.) मछली ।

थिरता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ठहराव । अचलत्व । २-स्थायित्व । ३-अचंचलता । शांति । धीरता ।

थिरताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ठहराव । २-स्थायित्व । ३-शांति ।

थिरथानी* [वि] (हिं.) एक जगह जमकर रहने वाला ।

थिरथिरा [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का बुलबुल जो भारत में जाड़े के दिनों में दिखाई देता है ।

थिरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पानी या किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना बंद होना । २-जल या द्रव के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना । ३-मैल, धूल आदि तल में बैठ जाने के कारण जल का स्वच्छ हो जाना । ४-मैल, धूल आदि के तल में बैठ जाने के कारण साफ वस्तु का ऊपर रह जाना । निथरना ।

थिरा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी ।

थिराना [क्रि. स.] (हिं.) १-हिलते-डोलते जल को स्थिर होने देना । २-स्थिर करना । ३-निथारना । [क्रि. अ.] देखो 'थिरना' ।

थी [क्रि. अ.] (हिं.) 'है' शब्द के भूतकाल का स्त्रीलिंगरूप ।

थीकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव के प्रत्येक व्यक्ति का बारी-बारी से अपने ऊपर लिया हुआ वह काम जो आपत्ति के समय रक्षा सहायता करता है ।

थीता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्थिरता । २-शांति । ३-आराम । चैन । सुख ।

थीथी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-स्थिरता । २-अवस्था । स्थिति । ३-धैर्य । धीरज ।

थीर* [वि.] (हिं.) देखो 'थिर' ।

थुकवाना [क्रि. स.] देखो 'थुकाना' ।

थुकहाई [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] (ऐसी स्त्री) जिसे सब थूकें या निंदा करें ।

थुकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थूकने का काम ।

थुकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-थूकने का कार्य किसी से कराना २-मुख में ली हुई वस्तु को गि

गाना। २–निंदा या तिरस्कार कराना।

थुकायल+ [वि.] (हिं.) जिसे सब लोग थूकें। तिरस्कृत। निंद्य।

थुकैल+ [वि.] (हिं.) देखो 'थुकायल'।

थुक्काफजीहत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निन्दा और तिरस्कार। लज्जाजनक अपमान। बहुत निकृष्ट कोटि का लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रेशम के रेशे लगाने के लिए उसमें थूक लगाना (जुलाहे)।

थुड़ी [संज्ञा स्त्री.] घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द। धिक्कार। लानत। *थुड़ी-थुड़ी करना*–धिक्कारना।

थुत्कार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थूकने का शब्द।

थुथकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थूकने की क्रिया, भाव या शब्द।

थुथकारना [क्रि. स.] (हिं.) थुड़ीथुड़ी करना। बहुत घृणा प्रकट करना।

थुथना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थूथना'।

थुथाना [क्रि. अ.] (हिं.) थूथन फुलाना। नाराज होना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'थुथकार'।

थुनेर [संज्ञा पु.] (हिं.) गठिवन का एक भेद।

थुन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थूनी। खंभा। चाँड़।

थुपना [क्रि. स.] (हिं.) महुवे के फलों को इकट्ठा करके दबाकर रखना।

थुपा [संज्ञा पु.] (हिं.) महुवे के फलों का ढेर।

थुरना [क्रि. स.] (हिं.) १–कूटना। २–मारना। पीटना।

थुरहथा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. थुरहथी] १–हाथ छोटे होने के कारण जिसकी हथेली में कम चीज आवे। २–कम खर्च करने वाला। मितव्ययी।

थुर्वण [संज्ञा पु.] (सं.) हत्या। कत्ल।

थुलमा [संज्ञा पु.] (देश.) पहाड़ी मोटा कम्बल।

थुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दलिया। अन्न के मोटे कण।

थुहा [संज्ञा पु.] देखो 'थुवा'।

थूँक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थूकना'।

थूँकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'थूकना'।

थू [अव्य.] (हिं.) १–थूकने का शब्द। २–घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द। धिक्। छिः। *थू-थू करना*–घृणा प्रकट करना। *थू-थू होना*–चारों ओर से छीः छीः होना। निंदा होना।

थूक [संज्ञा पु.] (हिं.) वह गाढ़ा लसीला पदार्थ जो मुख से निकलता है। ष्ठीवन। खखार। *थूक उछालना*–व्यर्थ की बकवाद करना। *थूक बिलोना*–अनुचित प्रलाप करना। *थूक लगाना*–चूना लगाना। *थूक लगाकर छोड़ना*–(विरोधी को) तंग और लज्जित करके छोड़ना। *थूका भी नहीं*–ध्यान तक न करना। पसन्द ही न करना। *थूकों सत्तू सानना*–कंजूसी या किफायत से काम करना।

थूकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–मुख से थूक निकालना। *किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना*–अत्यन्त घृणा करना। *थूक कर चाटना*–१–कहकर मुकर जाना या देकर लौटा लेना। २–भविष्य में कोई कार्य करने की प्रतिज्ञा न करना। [क्रि. स.] १–मुँह में ली हुई वस्तु को गिराना। २–बुरा कहना। धिक्कारना। निंदा करना। तिरस्कृत करना। *थूक देना*–घृणापूर्वक त्याग देना।

थूथन [संज्ञा पु.] (देश.) कुछ लम्बा और मोटा आगे निकला हुआ मुँह।

थूथनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–लम्बा निकला हुआ मुँह। २–हाथी के मुख का एक रोग। *थूथनी फैलाना*–नाक भौं चढ़ाना।

थूथरा [वि.] (देश.) थूथ के सा निकला हुआ मुँह। भद्दा चेहरा।

थूथुन+ [संज्ञा पु.] देखो 'थूथन'।

थून [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थूनी। चांड़। खंभा। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का मोटा गन्ना जो मदरास में होता है।

थूना [संज्ञा पु.] (देश.) मिट्टी का लोंदा जिसमें परेता खोंसकर सूत या रेशम फेरते हैं।

थूनि+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'थूनी'।

थूनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी बोझ को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाया जाने वाला खंभा। चाँड़। टेक। २–खम्भा। स्तम्भ ३–वह गड़ी लकड़ी जिसमें रस्सी का फंदा लगाकर मथानी का डंडा अटकाते हैं।

थूबी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सर्प का विष दूर करने के लिए डसे हुए स्थान को तपे हुए लोहे से दागने की विधि।

थूरना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–कूटना। २–मारना। पीटना। ३–ठूंसना। कसकर मारना। ४–ठूंस-ठूंस कर खाना।

थूल* [वि.] (हिं.) १–मोटा। भारी। २–भद्दा।

थूला [वि.] (हिं.) मोटा। मोटाताजा।

थूली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–किसी अनाज का मोटा दला हुआ कण। दलिया। २–सूजी। ३–पकाया हुआ दलिया।

थूवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ऊंची भूमि। टीला। ढूह। २–गीली मिट्टी का पिंडा। ढीमा। मेली ३–सीमसूचक स्तूप। ४–वह बोझ जो राब की जूसी निकालकर बहाने के लिए रखा जाता है। ५–ढेंकली की आड़ी लकड़ी के छोर पर बोझ के लिये थोपा हुआ मिट्टी का लोंदा। +[संज्ञा स्त्री.] धिक्कार का शब्द।

थूहड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थूहर'।

थूहर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा पौधा जिसकी गांठों पर से गुल्ली या डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं इसी डंठलों और पत्तों में से विषैला दूध निकलता है जिसे दवा के काम में लाते हैं। सेंहुड़। कांडशाख। स्नुषा।

थूहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढूह। टीला। २–अटाला। राशि।

थूही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–मिट्टी की ढेरी। २–मिट्टी का खंभा जो कुएँ पर बनाया जाता है जिसपर लकड़ी रखकर पानी खैंचने के लिये गड़ारी लगाई जाती है।

थैंथर [वि.] (देश.) थकाहुआ। श्रांत। सुस्त। हैरान।

थेईथेई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–थिरक-थिरककर नाचने की मुद्रा। २–नाच का बोल।

थेगली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'थिगली'।

थेथर [वि.] (देश.) १–लस्तपस्त। बहुत थका हुआ। २–परेशान।

थेवा [संज्ञा पु.] (देश.) १–अँगूठी का नगीना। २–किसी धातु का वह पत्र जिस पर मुहर खोदी जाती है। ३–अँगूठी का वह घर जिसमें नगीना जड़ा जाता है।

थैचा [संज्ञा पु.] (देश.) खेत में मचान के ऊपर का छप्पर।

थैला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. थैली] कपड़े आदि का एक प्रकार का झोला जिसमें चीजें रखी जाती हैं। बड़ा बटुआ। झोला। २–पाजामें का वह भाग जो जंघे से घुटने तक होता है। ३–तोड़ा (जिसमें रुपये भरे जाते हैं)। *थैला करना*–मारते-मारते ढीला करना।

थैली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा थैला। कीसा। बटुआ। तोड़ा। *थैली खोलना*–थैली में से रुपया निकाल कर रुपया देना।

थैलीदार [संज्ञा पुं.] (हिं.) १–वह आदमी जो खजाने में रुपए उठाता है। २–रोकड़िया। तहवीलदार।

थैलीबरदारी [संज्ञा स्त्री.] (उर्दू) थैली उठाकर पहुँचाने का काम।

थोक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ढेर। राशि। अटाला। २–समूह। झुंड। जत्था। ३–एक साथ बहुत सा या इकट्ठा माल खरीदने या बेचने का कार्य। ४–जमीन का टुकड़ा जो किसी एक आदमी का हिस्सा हो। चक। ५–इकट्ठी वस्तु ६–वह स्थान जहाँ कई गांवों की सीमाएँ मिलती हों।

थोकदार [संज्ञा पु.] (हिं.) इकट्ठा माल बेचने वाला व्यापारी।

थोकबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थोकदार'।

थोकबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थोक का काम।

थोड़न [संज्ञा पु.] (सं.) आच्छादन। ढपना।

थोड़ा [वि.] (हि.) [स्त्री. थोड़ी] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो। न्यून। अल्प। कम। तनिक।

थोड़ा बहुत–कुछ कुछ। किसी कदर। *थोड़ा थोड़ा होना*–लज्जित या सकुंचित होना।
[क्रि. वि] (हिं.) जरा। तनिक।
थोड़ा ही–बिलकुल नहीं।

थोती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चौपायों के मुख का अग्रभाग। थूथन।

थोथ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–खोखलापन। निःसारता। २–तोंद। पेटी।

थोथरा [वि.] (हिं.) १–घुन और कीड़ों का खाया हुआ। खोखला। खाली। २–निःसार। ३–निकम्मा। व्यर्थ का।

थोथा [वि.] (देश.) [स्त्री. थोथी] १–जिसके भीतर कुछ सार न हो। खोखला। खाली। पोला। २–जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। गुठला। ३–बाँडा। बे-दुम का (सांप)। ४–भद्दा। बेढंगा। निकम्मा।
थोथी बात–व्यर्थ की बात।
[संज्ञा पु.] बरतन ढालने का मिट्टी का सांचा

थोथी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

थोपड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) चपत। धौल।

थोपना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी गीली वस्तु की मोटी तह ऊपर से जमाना या रखना। २–तवे पर रोटी बनाने के लिए यों ही बिना गढ़े हुए गीला आटा फैला देना। ३–मोटा लेप चढ़ाना। ४–आरोपित करना। मत्थे मढ़ना। लगाना। (दोष)। ५–आक्रमण आदि से रक्षा करना। बचाना।

थोपी + [संज्ञा स्त्री] (हिं.) चपत। धौल। चपेट

थोबड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं का थूथन।

थोबड़ा [संज्ञा पु.] (हि) १–पशुओं का थूथन। २–भद्दा चेहरा।

थोबरखना [क्रि. स] (लश.) जहाज को धार पर चढ़ाना।

थोर + [संज्ञा पु] (देश) १–केले की पेड़ी के बीच का भाग। २–थूहर का पेड़।
[वि.] (देश) देखो 'थोड़ा'।

थोरा*+ [वि] (हिं.) देखो 'थोड़ा'।

थोरिक*+ [वि] (हि) थोड़ा-सा। तनिक-सा।

थोरी [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक हीन अनार्य जति
[वि] (हिं) [स्त्री. प्र.] देखो 'थोड़ा'।

थोनेयक [संज्ञा पु.] (सं.) गठिवन का वृक्ष।

थौंद* [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'तोंद'।

थ्यावस+* [संज्ञा पु.] (हि.) १–स्थिरता। ठहराव। २–धीरता। धैर्य।

द

द संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का अठारहवां व्यंजन जो तवर्ग तीसरा वर्ण है। १ इसका उच्चारण-स्थान दंतमुल में जिह्वा के अग्रभाग के स्पर्श से होता है। शब्दों के अंत में लगकर यह 'देने वाला' का अर्थ देता है। जैसे–करद, जलद आदि।

दंग [वि] (फा.) विस्मित। चकित। स्तब्ध। आश्चर्यान्वित। [संज्ञा पु.] १–भय। डर। घबराहट। २–देखो 'दंगा'।

दंगई [वि.] (हि.) १–दंगा करने वाला। उपद्रवी। लड़ाका। झगड़ालू। २–प्रचंड। उग्र। ३–बहुत बड़ा। लम्बा-चौड़ा। भारी।
+ [संज्ञा स्त्री] देखो 'दंगा'।

दंगल [संज्ञा पु.] (फा.) १–बराबर की जोड़ के पहलवानों की कुश्ती जिसमें जीतने वाले को इनाम मिले। २–अखाड़ा। मल्लयुद्ध का स्थान। ३–समाज। समूह। जमावड़ा। दल। ४–बहुत मोटा गद्दा या तोशक। *दंगल में उतरना*–कुश्ती लड़ने के लिए अखाड़े में आना

दंगली [वि.] (हिं.) १–दंगल-संबन्धी। बहुत बड़ा

दंगवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसानों का परस्पर हल-बैल की सहायत्ता करना।

दंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बहुत से लोगों का ऐसा झगड़ा या लड़ाई जिसमें मारधाड़ भी हो। उपद्रव। २–गुलगपाड़ा। हुल्लड़। शोरगुल।

दंगैत [वि] (हि) १–दंगा करने वाला। उपद्रवी २–बागी। बलवाई।

दंड, दण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १–डंडा। सोंटा। लाठी। २–डंडे के आकार की कोई वस्तु। ३–एक प्रकार की कसरत। ४–दंडवत्। ५–किसी अपराध के प्रतिकार में अपराधी को पहुँचाई या दी जाने वाली पीड़ा या हानि। सजा। तदारुक। ६–वह धन जो अपराधी से किसी अपराध के कारण लिया जाय। अर्थदंड। जुर्माना। ७–हरजाने के रूप में दिया जाने वाला धन। हरजाना। पेनैलिटी। ८–दमन। शासन। शमन। ९–ध्वजा या पताका का बाँस। १०–तराजू की डंडी। डाँड़ी। ११–मथानी। १२–किसी वस्तु की डंडी। १३–हल की लम्बी लकड़ी। १४–जहाज या नाव का मस्तूल। १५–एक योग का नाम। १६–चार हाथ के बराबर की लम्बाई की एक माप। १७–(दंड देने वाले) यम। १७–विष्णु। १९–शिव। २०–सेना। फौज। २१–घोड़ा। २२–साठ पल का काल। घड़ी। २४ मिनट का समय। २३–वह आँगन या सहन जिसके पूर्व और उत्तर में कोठरियां हों।
दंड ग्रहण करना–संन्यास लेना। *दंड डालना*–१–जुरमाना करना। २–कर या महसूल लगाना। *दंड पड़ना*–नुकसान उठाना। *दंड भरना*–१–जुरमाने की रकम देना। २–दूसरे का नुकसान पूरा करना। *दंड भुगताना या भोगना*–१–सजा सहना। २–नुकसान उठाना। *दंड सहना*–नुकसान या घाटा सहना।

दंडकंदक, दण्डकन्दक [संज्ञा पु] (सं) धरणी कंद। सेमर का मुसला।

दंडक, दण्डक [संज्ञा पु] (सं) १–डंडा। २–दंड देने वाला पुरुष। शासक। ३–छंदों का एक वर्ग। वह छंद जिनमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। ४–दंडकारण्य। ५–एक प्रकार का वातरोग। ६–शुद्धराग का एक भेद। ७–इक्ष्वाकु राजा के एक पुत्र का नाम।

दंडकर, दण्डकर [संज्ञा पु.] (सं) दंड या सजा के रूप में लगाया जाने वाला कर या महसूल। प्यूनिटिवटैक्स।

दंडकर्ता, दण्डकर्ता [वि.] (सं) दंड या सजा करने वाला।

दंडकला, दण्डकला [संज्ञा स्त्री] (सं) एक छंद जिसमें १०, ८ और १४ के विराम से ३२ मात्राएं होती हैं।

दंडकवन, दण्डकवन [संज्ञा पु.] देखो 'दंडकारण्य'।

दंडकाक, दण्डकाक [संज्ञा पु.] (सं) डोमकौवा। काला कौवा।

दंडकारण्य, दण्डकारण्य [संज्ञा पु.] (सं) विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला हुआ एक प्राचीन वन।

दंडकी, दण्डकी [संज्ञा स्त्री] (सं) ढोलक।

दंडगौरी, दण्डगौरी [संज्ञा स्त्री] (सं) एक अप्सरा का नाम।

दंडग्रहण, दण्डग्रहण [संज्ञा पु] (सं) संन्यास आश्रम में प्रवेश करना।

दंडग्राह, दण्डग्राह [वि] (सं) दंड धारण करने वाला।

दंडघ्न, दण्डघ्न [संज्ञा पु.] (सं) १–डंडे से मारने वाला। २–राजा के दिये हुए दंड को न मानने वाला।

दंडचक्र, दण्डचक्र [संज्ञा पु] (सं) सेना विभाग का एक क्रम।

दंडढक्का, दण्डढक्का [संज्ञा पु.] (सं) दमामा। नगाड़ा। धौंसा।

दंडताम्री, दण्डताम्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह जलतरंग बाजा जिसमें तांबे की कटोरियाँ काम में लाई जाती हैं।

दंडता, दण्डता [संज्ञा स्त्री] (सं.) दंड का भाव।

दंडत्व, दण्डत्व [संज्ञा पु] (सं) देखो 'दंडता'।

दंडदास, दण्डदास [संज्ञा पु] (सं) वह जो दंड या जुर्माने का रुपया न देने के कारण दास बना हो।

दंडदेव-कुल [संज्ञा पु.] (सं) १–पुलिस विभाग। २–अदालत।

दंडधर, दण्डधर [संज्ञा पु.] (सं) १–यमराज। २–शासनकर्त्ता। ३–संन्यासी। ४–पुलिस का सिपाही। कान्स्टेबल।

[वि.] डंडा रखने वाला।

दंडधर-गण [संज्ञा पु.] (सं.) पुलिस के सिपाहियों का समूह। कॉन्स्टेबुलारी।

दंडधार [वि.] (सं.) डंडा रखने वाला। [संज्ञा पु.] १-यमराज। २-राजा। ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दंडधारक [वि.] (सं.) शासन करने वाला।

दंडधारण [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यास-आश्रम में प्रवेश करना।

दंडधारी, दण्डधारी [वि.] (सं.) दंड धारण करने वाला। (सन्यासी)।

दंडन, दण्डन [संज्ञा पु.](सं.) दंड देने की क्रिया शासन।

दंडना* [क्रि. स.] (हिं.) दंड देना। सजा देना।

दंडनायक, दण्डनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेनापति। २-दंड-विधान करने या अपराधियों को सजा देने वाला राजा या अधिकारी। ३-सूर्य के एक अनुचर का नाम। ४-राज्य की ओर से नियुक्त वह अधिकारी जिसके अधिकार में शासन विभाग हो और जो अपराधियों को दंड या सजा आदि दे सके। मजिस्ट्रेट।

दंडनिगड़, दण्डनिगड़ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डंडा-बेड़ी।

दंडनिपातन, दण्डनिपातन [संज्ञा पु.] (सं.) शासनपद्धति।

दंडनीति, दण्डनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दंड देकर शासन या वश में रखने की नीति।

दंडनीय, दण्डनीय [वि.] (सं.) १-(व्यक्ति) दंडित होने के योग्य हो। जिसे दंड देना उचित हो। २-(कार्य या अपराध) जिसके लिए किसी को दंड दिया जाना उचित हो।

दंडनेता, दण्डनेता [वि.] (सं.) दंड या सजा देने वाला।

दंडन्यायालय [संज्ञा पु.] (सं) फौजदारी अदालत।

दंडप, दण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) दंड द्वारा शासन करने वाला राजा या अधिकारी।

दंडपांशुल, दण्डपांशुल [संज्ञा पु.](सं.) द्वारपाल। दरबान।

दंडपाणि, दण्डपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमराज २-काशी में भैरव की एक मूर्त्ति।

दंडपात, दण्डपात [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का सन्निपात रोग।

दंडपारुष्य, दण्डपारुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मारपीट। २-राजाओं के सात व्यसनों में से एक

दंडपाल, दण्डपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल दरबान। २-एक प्रकार की मछली।

दंडपालक, दण्डपालक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दंडपाल'।

दंडपाशक, दण्डपाशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दंड देने वाला प्रधान कर्मचारी। २-घातक। जल्लाद।

दंडपाशिक, दण्डपाशिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दंडपाशक'।

दंडप्रणाम् [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि पर डंडे के समान पड़कर प्रणाम करना। दंडवत्। सादर अभिवादन।

दंडवध, दण्डवध [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणदंड की सजा।

दंडवालधि, दण्डवालधि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

दंडबाहु, दण्डबाहु [वि.] (सं.) जिसकी बाँह डंडे के समान हों।

दंडभीति, दण्डभीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सजा पाने का भय।

दंडभृत्, दण्डभृत [वि.] (सं.) डंडा चलाने या घुमाने वाला। [संज्ञा पु.] कुम्हार। कुम्भकार

दंडमत्स्य, दण्डमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) डंडे या साँप के आकार की एक मछली। बाम मछली

दंडमाथ [संज्ञा पु.] (सं.) सीधा रास्ता। प्रधान पथ।

दंडमान* [वि.] 'दंडनीय'।

दंडमायिक, दण्डमायिक [संज्ञा पु.] (सं.) सीधे रास्ते से चलने वाला।

दंडमानव, दण्डमानव [संज्ञा पु.] (सं.) लड़का। बालक। (जिसे दंड देने की आवश्यकता होती है)।

दंडमुद्रा, दण्डमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तंत्र की एक मुद्रा। २-साधुओं के दो चिह्न, दंड और मुद्रा।

दंडयंत्र, दण्डयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यन्त्र जिससे अपराधी के अंगों को जकड़कर सजा दी जाती है। *मशीनरी-आफ-पनिश्मेंट*।

दंडयात्रा, दण्डयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-सेना की चढ़ाई। २-दिग्विजय के लिए प्रस्थान। ३-बरात। बरयात्रा।

दंडयाम, दण्डयाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम। २-दिन। ३-अगस्त्यमुनि।

दंडरी, दण्डरी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की ककड़ी।

दंडवत्, दण्डवत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-दंड के समान सीधे पृथ्वी पर लेटकर किया जाने वाला प्रणाम। २-प्रणाम्।

दंडवासी, दण्डवासी [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल। दरवान। २-गाँव का हाकिम या मुखिया।

दंडविचार, दण्डविचार [संज्ञा पु.] (सं.) आपराधिक या फौजदारी अभियोगों के सम्बन्ध में विचार।

दंडविज्ञान, दण्डविज्ञान [संज्ञा पु.](सं.) १-वह विज्ञान जिसके द्वारा अपराधियों या सजा पाये हुए व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारी की जाती है। २-बन्दीगृहों के प्रबंध का अध्ययन। *पेनोलॉजी*।

दंडविधि, दण्डविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नियम या विधान जिसमें अपराधों के लिए दंडों का विवेचन या विधान होता है। जुर्म और सजा का कानून।

दंडविधिसंग्रह, दण्डविधिसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) आपराधिक दंडों से सम्बन्ध रखने वाले कानूनों का संग्रह। *क्रीमनल-प्रोसीडयूर-कोड*।

दंड-विधान, दण्डविधान [संज्ञा पु.] (सं.) वह नियम या विधान जिसमें अपराधों के लिए दंडों का विवेचन होता है। *क्रीमनललॉ*। दंड की नियमावली। *पीनललॉ*।

दंडविधायक, दण्डविधायक [वि.] (सं.) दंड। विषयक। दंडनीय।

दंडवृक्ष, दण्डवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सेंहुड़। थूहर

दंडव्यूह, दण्डव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) सेना के डंडे के आकार की स्थिति जिसमें आगे बलाध्यक्ष, बीच में राजा, पीछे सेनापति, दोनों ओर हाथी, हाथियों के बगल में घोड़े तथा घोड़ों के बगल में पैदल सिपाही रहते थे (मनुस्मृति)।

दंडसंग्रह, दण्डसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) अपराधों के दंड से सम्बन्ध रखने वाले नियमों का संग्रह। *पेनलकोड*।

दंडसंहिता, दण्डसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'दंडविधि'।

दंडसेन, दण्डसेन [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुवंश के एक राजा का नाम।

दंडस्थान, दण्डस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ पर दंड पहुँचाया जा सकता है।

दंडहस्त, दण्डहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) तगर का फूल।

दंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डंडा'।

दंडाकरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दंडकारण्य'

दंडाक्ष, दण्डाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) चंपानदी के किनारे का एक तीर्थ।

दंडाघात, दण्डाघात [संज्ञा पु.] (सं.) डंडे की मार।

दंडाज्ञा, दण्डाज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सजा देने का हुक्म।

दंडाजिन, दण्डाजिन [संज्ञा पु.] (सं.) साधु संन्यासियों के धारण करने का दंड और मृगचर्म। २-झूठमूठ का आडम्बर। कपटवेश।

दंडात्मक, दण्डात्मक [वि.] (सं.) दंड देने वाली।

दंडादंडि, दण्डादण्डि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डंडों की मारपीट।

दंडादेश, दण्डादेश [संज्ञा पु.] (सं.) दंड की आज्ञा। सजा। *सैनटेंस*।

दंडाधिकारी, दण्डाधिकारी [संज्ञा पु] (सं.) वह राजकीय या सरकारी अधिकारी जिसे आपराधिक अभियोगों का विचार करने तथा अपराधियों को दंड या सजा देने का अधिकार हो। *मजिस्ट्रेट*।

दंडाधिकारीक्षेत्र, दण्डाधिकारक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायप्रभुत्व सम्बन्धी सीमा।

दंडाधिकारी-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) अपराधियों को दंड देने वाले अधिकारी या न्यायकर्ता का न्यायालय। *मजिस्ट्रेटस् कोर्ट*।

दंडाधिप, दण्डाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा २-दंड देने वाला अधिकारी।

दंडाधिपति, दण्डाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-दंड देने वाला अधिकारी।

दंडानुयोग, दण्डानुयोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह अभियोग जिसमें अपराधी को अवश्य दंड मिले। वह अपराध जिसमें दंडमुक्त होने की कोई सम्भावना न हो।

दंडापतानक, दण्डापतानक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की वात व्याधि।

दंडापूपन्याय दण्डापूपन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का न्याय या दृष्टान्त कथन जिस से यह सूचित किया जाता है कि जब किसी से कठिन काम हो गया तो उससे सहज काम अवश्य हो गया होगा।

दंडायमान, दण्डायमान [वि.] (सं.) डंडे के समान सीधा खड़ा। खड़ा।

दंडार, दण्डार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मतवाला हाथी। २-एक प्रकार का धनुष।

दंडालय, दण्डालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह न्यायालय जहां दंड देने का विधान हो। २-वह स्थान जहां दंड दिया जाय। ३-दंडकला नामक एक छंद।

दंडासन, दण्डासन [संज्ञा पु.] (सं.) हठयोग का एक आसन।

दंडाहत, दण्डाहत [वि.] (सं.) डंडे से मारा हुआ। [संज्ञा पु.] छाछ। मट्ठा।

दंडिका, दण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीस अक्षरों का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण के बाद एक जगण इस प्रकार गणों का जोड़ तीन बार आता है और अन्त में लघु होता है।

दंडित [वि.] (सं.) [पु. प्र.] दंड पाया हुआ। जिसे दंड मिला हो। सजायाफ्ता।

दंडित-उपदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) दंड पाये हुए अपराधियों की देखभाल करने वाला (जेल) अधिकारी। *कान्विक्ट-ओवरसियर*।

दंडिनी, दण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दंडोत्पला। एक प्रकार का साग।

दंडी, दण्डी [संज्ञा पु.] (सं.) १-दंड धारण करने वाला व्यक्ति। २-यमराज। ३-राजा। ४-द्वारपाल। ५-दंड और कमंडलु धारण करने वाला संन्यासी। ६-सूर्य के एक पार्श्वचर का नाम। ७-जिनदेव। ८-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ९-दमनकवृक्ष। १०-मंजुश्री। ११-शिव। महादेव। १२-एक संस्कृत के प्रसिद्ध कवि।

दंडोत्पल, दण्डोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) कुकरौंधा या गुमा नामक एक पौधा।

दंडोत्पला, दण्डोत्पला [संज्ञा पु.] (सं.) दंडोत्पल।

दंड्य, दण्ड्य [वि.] (सं.) दंड पाने योग्य। जिसे दंड देना उचित हो।

दंड्यत्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) धमकाने या भय दिखाने की अवस्था में मिलने वाली सजा।

दंड्यदुर्विनियोग, दण्ड्यदुर्विनियोग [संज्ञा पु.] (सं.) अनधिकृतरूप से किया हुआ कब्जा।

दंड्यन्यासभंग, दण्ड्यन्यासभंग [संज्ञा पु.] (सं.) अमानत में खयानत करने की अवस्था में प्रदत्त दण्ड या सजा।

दंत, दन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाँत। २-बत्तीस की संख्या। ३-पहाड़ की चोटी। ४-कुंज। ५-गाँव के हिस्सों में बहुत ही छोटा हिस्सा।

दंतक, दन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाँत। २-पहाड़ की चोटी। ३-एक प्रकार का पहाड़ से निकलने वाला पत्थर।

दंतकथा, दन्तकथा [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी बात जो परम्परा से लोग सुनते चले आये हों, पर जिसके ठीक होने का कोई पुष्ट प्रमाण न हो

दंतकराल, दन्तकराल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दाँत का रोग।

दंतकर्षण, दन्तकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) जंभीरी नीबू।

दंताकाष्ठ, दन्तकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) दतुवन। दातुन।

दंतकाष्ठक, दन्तकाष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) तरवट का पेड़।

दंतकूर, दन्तकूर [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। संग्राम

दंतकेतु, दन्तकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) छोटे नीबू का पेड़।

दंतग्राही, दन्तग्राही [वि.] (सं.) दाँतों को नष्ट करने वाला।

दंतघर्ष, दन्तघर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दांत पर दांत दबाकर घिसने की क्रिया। दांत किरकिराना।

दंतघात, दन्तघात [संज्ञा. पु.] (सं.) दांत से काटने की क्रिया।

दंतचाल, दन्तचाल [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का हिलना।

दंतच्छद, दन्तच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) ओष्ठ। ओंठ।

दंतच्छदी, दन्तच्छदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिम्बाफल। कुंदरू।

दंतच्छदोपमा, दन्तच्छदोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिम्बाफल। कुंदरू।

दंतजात, दन्तजात [वि.] (सं.) १-(बच्चा) जिसके दांत निकल आये हों। २-दांत निकलने के योग्य (काल)।

दंतजाह, दन्तजाह [संज्ञा पु.] (सं.) दांत की जड़ या दंतमूल।

दंतताल, दन्तताल [संज्ञा पु.] (सं.) ताल से बजने वाला एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

दंतदर्शन, दन्तदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़चिड़ाहट अथवा क्रोध में दांत दिखलाने की क्रिया।

दंतधावन, दन्तधावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दांत धोने या साफ करने की क्रिया। २-दतौन। दातुन।

दंतपत्र, दन्तपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक गहना।

दंतपत्रक, दन्तपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) कुंदपुष्प।

दंतपवन, दन्तपवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दांत साफ करने की क्रिया। २-दतौन। दातुन।

दंतपात, दन्तपात [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का गिर जाना।

दंतपार, दन्तपार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दांत की पीड़ा या दर्द।

दंतपाली, दन्तपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दांत का अगला भाग।

दंतपीठक, दन्तपीठक [संज्ञा पु.] (सं.) दांत की जड़ के ऊपर का मांस। मसूढ़ा।

दंतपुप्पुट, दन्तपुप्पुट [संज्ञा पु.] (सं.) मसूढ़ों के सूजने और दर्द करने का एक रोग।

दंतपुर, दन्तपुर [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन कलिंग-राज्य का एक नगर।

दंतपुष्प, दन्तपुष्प [संज्ञा पुं.] (सं.) १-निर्मली। २-कुंद का फूल।

दंतप्रक्षालन, दन्तप्रक्षालन [संज्ञा पु.] (सं.) दांत साफ करने का काम।

दंतफल, दन्तफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनकफल। निर्मली। २-कैथ। कपित्थ।

दंतफला, दन्तफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली

दंतभंग, दन्तभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का टूटना।

दंतमय, दन्तमय [वि.] (सं.) दांतों के समान।

दंतमल, दन्तमल [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का मैल या मढ।

दंतमांस, दन्तमांस [संज्ञा पु.] (सं.) मसूढ़ा।

दंतमूल, दन्तमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दांत की जड़। २-दांत का एक रोग।

दंतमूलिका, दन्तमूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमालगोटे का वृक्ष।

दंतमूलीय दन्तमूलीय [वि.] (सं.) दांतों के मूल

से उच्चारण किया जाने वाला।

दंतरंजन, दन्तरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कौशीष। कौशीस।

दंतरोगी, दन्तरोगी [वि.] (सं.) जिसे दांत का रोग हुआ हो।

दंतलेखन, दन्तलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) एक अस्त्र जिसकी सहायता से दांत की जड़ के पास मसूड़े को चीरकर मवाद आदि निकालते हैं जिससे दांत का दर्द शान्त हो जाता है।

दंतवक्र, दन्तवक्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुपाल के भाई का नाम जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था।

दंतवल, दन्तवल [संज्ञा पु] (सं.) हाथ।

दंतवल्क, दन्तवल्क [संज्ञा पु.] (सं.) मसूढ़ा।

दंतवस्त्र, दन्तवस्त्र [संज्ञा पु] (सं) ओष्ठ। ओंठ।

दंतवासस, दन्तवासस [संज्ञा पु.] (सं.) ओष्ठ। ओंठ।

दंतविघ्रति, दन्तविघ्रति [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत का रोग।

दंतवीज, दन्तवीज [संज्ञा पु.] (सं.) अनार।

दंतवीणा, दन्तवीणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वीणा जो दाँत लगाकर बजाई जाती है।

दंतवेदना, दन्तवेदना [संज्ञा स्त्री] (सं) दाँत का दर्द। दाँत की पीड़ा।

दंतवेष्ट, दन्तवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का एक रोग।

दंतवैदर्भ, दन्तवैदर्भ [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'दंतवेष्ट'।

दंतव्यसन, दन्तव्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का नष्ट होना।

दंतशंकु, दन्तशङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिससे चीरफाड़ की जाती थी।

दंतशठ, दन्तशठ [संज्ञा पु.](सं.) वे वृत्त जिसके फल खाने से खटाई के कारण दाँत गुठले हो जायँ।

दंतशठा, दन्तशठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खट्टी-लोनिया। अमलोनी। २-चूक। चुक।

दंतशर्करा, दन्तशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दांतों में मैल जम जाने से उत्पन्न एक रोग।

दंतशाण, दन्तशाण [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों की मिस्सी।

दंतशिरा, दन्तशिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मसूढा।

दंतशुद्धि, दन्तशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दांतों की सफाई।

दंतशूल दन्तशूल [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों का दर्द।

दंतशोफ, दन्तशोफ [संज्ञा पु.] (सं) दांत के मसूड़े में होने वाला एक फोड़ा।

दंतसंघर्ष, दन्तसङ्घर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दांत किरकिराना।

दंतहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों की वह टीस जो अधिक ठंडी या खट्टी वस्तु लगने से होती है।

दंतहर्षक, दन्तहर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) जंभीरी नीबू

दंतांतर, दन्तान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत का मध्यभाग।

दंताग्र, दन्ताग्र [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत का अग्र भाग जिससे कुतरा या काटा जाता है।

दंताघात, दन्ताघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाँत का आघात। बुड़का। नीबू।

दंताज, दन्ताज [संज्ञा पु.] (सं.) दाँतों में कीड़ी पड़ने का रोग।

दंतादंति, दन्तादन्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक दूसरे को दाँत से काटने की क्रिया या लड़ाई

दंतायुध, दन्तायुध [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। जंगली सूअर।

दंतार [वि.] (हिं.) बड़े दाँतों वाला।
[संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

दंतार्बुद, दन्तार्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) मसूड़ों में होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।

दंताल [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी। हस्ती।

दंतालिका, दन्तालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लगाम।

दंताली, दन्ताली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लगाम।

दंतावल, दन्तावल [संज्ञा पु.] (सं.) हस्ती। हाथी।

दंताहल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी। हस्ती।

दंतिका, दन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) दंती। जमालगोटा।

दंतिजा, दन्तिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमालगोटा। दंतीवृत्त।

दंतिदत, दन्तिदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के दाँत।

दंतिनी, दन्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमालगोटा।

दंतिवीज, दन्तिवीज [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

दंतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे-छोटे दांत।

दंती, दन्ती [संज्ञा स्त्री] (सं.) अंडी की जाति का एक पेड़।

दंतीफल, दन्तीफल [संज्ञा पु.] (सं.) पिप्पली। छोटी पीपल।

दंतुर, दन्तुर [वि.] (सं.) जिसके दांत आगे की ओर निकले हों। दंतुला। बड़े-बड़े दांतवाला। [संज्ञा पु.] १-हाथी। २-सूअर।

दंतुरच्छद, दन्तुरच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरा नीबू।

दँतुरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों के छोटे-छोटे दांत।

दँतुला [वि.] (हिं.) [स्त्री. दँतुली] जिसके दांत आगे निकले हों। बड़े-बड़े दांतों वाला।

दतोच्छिष्ट, दन्तोच्छिष्ट [वि.] (सं.) दांत से झूठा किया हुआ।

दतोत्पाटन, दन्तोत्पाटन [संज्ञा पु] (सं) दांत उखाड़ना।

दतोद्भेद, दन्तोद्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) दांत का निकालना।

दतोलूखलिक, दन्तोलूखलिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के सन्यासी जो ओखली आदि में कूटा हुआ अन्न नहीं खाते। वे छिलके-सहित अन्न या फल खाते हैं।

दतोष्ठ्य, दन्तोष्ठ्य [वि.] (सं.) (वर्ण) जिसका उच्चारण दांत और ओंठ की से हो।

दत्य, दन्त्य [वि.] (सं.) १-दंत-संबंधी। २-(वर्ण) जिसका उच्चारण दांतों की सहायता से हो। जैसे-त, थ, द, ध आदि। ३-दांतों की हितकारी (औषध)।

दद, दन्द [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी पदार्थ से निकली हुई गरमी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-लड़ाई-झगड़ा। उपद्रव। हलचल। २-हल्लागुल्ला। शोर-गुल।

ददन* [वि.] (हिं.) [स्त्री. दंदनी] दमन करने वाला।

ददशूक, दन्दशूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प। सांप। २-एक राक्षस।

ददह्यमान, दन्दह्यमान [वि.] (सं.) दहकता हुआ

ददा [संज्ञा पु.] (देश.) ताल देने का एक प्राचीन बाजा।

ददाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-गरम लगना। २-किसी गरम वस्तु के आसपास होने से गरम होना। [संज्ञा पु.] (फा.) दांत के समान उभरी हुई सीकों या दानों की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे आदि में होती है।

ददानेदार [वि.] (फा.) जिसमें दांतु के समान निकले हुए कंगुरों की पंक्ति हो।

ददारू [संज्ञा पु.] (हिं.) छाला। फफोला।

ददी [वि.] (हिं.) झगड़ालू उपद्रवी।

दपति, दम्पति [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री-पुरुष या पति-पत्नी का जोड़ा।

दपती, दम्पती [संज्ञा पु.] (सं.) पति और पत्नी का जोड़ा।

दपा* (हिं.) बिजली।

दभ, दम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के निमित्त झूठा आडम्बर। धोखे में डालने के लिए ऊपरी दिखावट। पाखंड। २-झूठी ठसक। अभिमान। घमंड।

दभक, दम्भक [संज्ञा पु.] (सं) पाखंडी। ढकोसलेबाज। प्रतारक।

दभचर्या, दम्भचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुष्टता। शठता। ठगी।

दभन, दम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) दंभ। पाखंड।

दंभान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दंभ'।

दंभी, दम्भी [वि.] (सं.) १-पाखंडी। ढकोसलेबाज। २-झूठी ठसक वाला। अभिमानी। घमंडी।

दंभोद्भव, दम्भोद्भव [वि.] (सं.) अभिमान से किया हुआ।

दंभोलि, दम्भोलि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रास्त्र। वज्र।

दंवरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) फसल की बालों में से दाने निकलवाने का काम जो प्रायः बैलों से रौंदवाकर कर लिया जाता है।

दंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह घाव जो दांत काटने से हुआ हो। २-दांत से काटने की क्रिया। दंशन। ३-सांप आदि विषैले जंतुओं के काटने का घाव। ४-विषैले जंतुओं का डंक। ५-आक्षेप वचन। कटूक्ति। ६-द्वेष। वैर। ७-दांत। ८-विषैले जंतुओं का डङ्क। डांस।

दंशक [संज्ञा पु.] (सं) १-दांत से काटने वाला। २-डसने वाला।

दंशन [संज्ञा पु.] १-दांत से काटना। २-डसना। डंक मारना।

दंशना* [क्रि. स.] (हिं.) १-दांत से काटना। २-डसना। डंक मारना।

दंशभीरु [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा। महिष।

दंशमूल [संज्ञा पु.] (सं) सहँजन का पेड़। शोभांजन।

दंशित [वि.] (सं.) २-दांत से काटा हुआ। २-डसा हुआ। डंक मारा हुआ।

दंशिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-दांत से काटने वाली। २-डसने वाली। ३-आक्षेप या कटूक्ति कहने वाली।

दंशी [वि.] (सं.) [स्त्री. दंशिनी] १-दांत से काटने वाला। २-डसने वाला। ३-आक्षेप वचन या कटूक्ति कहने वाला। ३-द्वेपी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा डांस।

दंशूक [वि.] (सं.) १-दांत से काटने योग्य। २-डसने योग्य। डंक मारने योग्य।

दंशेर [वि.] (सं.) अपकार करने वाला।

दंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) दांत।

दंष्ट्रा [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोटे दांत। दाढ़। चौभर। २-वृश्चिकाली या बिछुआ नामक पौधा।

दंष्ट्रानरविष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जंतु जिसके नख और दांत में विष हो।

दंष्ट्रायुध [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

दंष्ट्राल [वि.] (सं.) बड़े-बड़े दांतों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

दंष्ट्राविष [संज्ञा पु.] (सं.) वह सर्प जिसके दांत में विष रहता है।

दंष्ट्रास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। शूकर।

दंष्ट्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाढ़।

दंष्ट्री [वि.] (सं.) बड़े-बड़े दांतों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। शूअर। वराह।

दंस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दंश'।

दंसना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कर्म। काम।

दंसु [संज्ञा पु.] (सं.) अलौकिक शक्ति।

द [संज्ञा पु.] (सं) १-पर्वत। पहाड़। २-दांत। ३-दाता। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भार्या। स्त्री। २-रक्षा ३-खंडन।

दइउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दैव'।

दइजा [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'दायजा'।

दइत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दैत्य'।

दइमारा* [वि.] (हिं.) देखो 'दईमारा'।

दई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईश्वर। विधाता। २-दैव संयोग। ३-अदृष्ट। प्रारब्ध। भाग्य। *दई का घाला*-ईश्वर या दैव का मारा हुआ। *दई का मारा*-जिस पर ईश्वर का प्रकोप हो। अभागा। कम्बख्त। दई-दई-हे देव! हे देव। (रक्षा के निमित्त परमेश्वर से की जाने वाली पुकार)।

दईमारा [वि.] (हिं.) [स्त्री. दईमारी] १-जिस पर देव या ईश्वर का कोप हो। २-अभागा। मन्दभाग्य। कम्बख्त।

दईमारी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'दईमारा'।

दईमारो+* [वि.] (हिं.) देखो 'दईमारा'।

दउरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'दौड़ना'।

दउरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दौरा'।

दक [संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी।

दकन [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण भारत।

दकनी [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण भारत का निवासी। [संज्ञा स्त्री] १-दक्षिण भारत की भाषा। २-उर्दू भाषा का प्राचीन नाम। [वि.] (हिं.) दक्षिण भारत का।

दकार [संज्ञा पु.] (सं.) तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'।

दकारांत, दकारान्त [वि.] (सं.) जिसके अन्त में 'द' हो।

दकारादि [वि.] (सं.) जिसके आदि में 'द' हो।

दकियानूस [संज्ञा पु.] (अ.) पुराने विचारधारा का रूढ़िवादी व्यक्ति (प्रायः निकम्मा)।

दकियानूसी [वि.] (अ.) बहुत ही पुराना और प्रायः निकम्मा।

दक़ीक़ा [संज्ञा पु.] (अ.) १-कोई बारीक बात। २-युक्ति उपाय। ३-क्षण। लहजा। *कोई दकीका बाकी न रखना*-सब उपाय कर चुकाना।

दक्खिन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उत्तर के सामने की दिशा। २-दक्षिण दिशा में पड़ने वाला प्रदेश। ३-दक्षिण भारत। [क्रि. वि] दक्षिण दिशा में। दक्खिन की ओर।

दक्खिनी [वि] (हिं.) १-दक्खिन का। २-दक्षिण भारत का। [संज्ञा पु] दक्षिणदेश का निवासी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दक्षिण भारत की भाषा।

दक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। २-विष्णु। ३-बल। ४-वीर्य। ५-मुरगा। ६-महेश्वर। [वि.] १-जिसमें किसी कार्य को सुगमता पूर्वक चटपट करने की शक्ति हो। निपुण। कुशल। २-चतुर। होशियार। ३-दक्षिण। दाहिना।

दक्ष-कन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिवजी की पहली पत्नी। सती।

दक्षक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) दक्ष का वह यज्ञ जिसमें शिवजी को नहीं बुलाया गया था।

दक्षक्रतुध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-(दक्ष का यज्ञ ध्वंस करने के लिए) महादेव के अंश से उत्पन्न वीरभद्र।

दक्षजा [संज्ञा स्त्री.] (सं) दक्ष की सती आदि कन्या।

दक्षजापति [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

दक्षतनया [संज्ञा स्त्री.] (सं) दक्ष प्रजापति की कन्या दुर्गा, अश्विनी आदि।

दक्षता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-निपुणता। २-योग्यता।

दक्षपति [संज्ञा पु.] (सं.) जिसमें सबसे अधिक बल हो।

दक्षयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) दक्ष प्रजापति द्वारा किया हुआ यज्ञ।

दक्षविहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का गीत

दक्षसावर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) नवें मनु का नाम।

दक्षसुत [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

दक्षा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] निपुणा। कुशला। [संज्ञा स्त्री.] पृथ्वी।

दक्षाय्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़-पक्षी। २-गृध। गीध।

दक्षिण [वि.] (सं.) १-दाहिना। दहना। अपसव्य। २-जो किसी कार्य सिद्धि में अनुकूल या सहायक हो। ३-निपुण। दक्ष। ४-चतुर। [संज्ञा पु.] १-उत्तर के सामने की दिशा। २-काव्य या साहित्य में वह नायक जिसका अपनी सब नायिकाओं पर एक सा प्रेम हो। ३-प्रदक्षिणा। ४-एक तंत्रोक्त आचार विशेष। ५-विष्णु।

दक्षिणकालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कालिका का एक रूप।

दक्षिणगोल [संज्ञा पु.] (सं.) वे छः राशियाँ जो विषुवत रेखा के दक्षिण में हैं।

दक्षिणतार [संज्ञा पु.] (सं.) दाहिना किनारा।

दक्षिणतीर [संज्ञा पु.] (सं.) दाहिना तट या किनारा।

दक्षिणदिक् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण दिशा।

दक्षिणधुरीण [संज्ञा पु.] (सं.) बैलगाड़ी के दाहिने ओर का धुरा।

दक्षिणपश्चात् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नैर्ऋत्यकोण। दक्षिण और पश्चिम के बीच का कोना।

दक्षिण-पश्चिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण और पश्चिम के बीच का कोना।

दक्षिणपूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्निकोण।

दक्षिण-मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधुनिक राजनीति वह मार्ग अथवा पक्ष जो साधारण और वैधानिक रीति से विकास चाहता हो तथा उग्र उपायों द्वारा क्रान्ति करने का विरोधी हो। राइटविंग। २-तंत्र के अनुसार एक प्रकार का आचार। 'वामभाग' का उलटा।

दक्षिणमानस [संज्ञा पु.] (सं.) गया के दक्षिण का एक तीर्थ का नाम।

दक्षिणमेरु [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण केन्द्र या ध्रुव

दक्षिणसमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) लवणसागर।

दक्षिणस्थ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सारथी जो रथिक के दाहिनी ओर खड़ा हो। [वि.] (सं.) जो दाहिनी ओर पड़ा हो।

दक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्षिण दिशा। २-वह दान जो ब्राह्मणों आदि का शुभकार्य के समय दिया जाता है। ३-पुरस्कार। भेंट। ४-वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों पर आसक्त होने की अवस्था में भी उससे बराबर वैसी ही प्रेम रखती हो।

दक्षिणाकर्पद [संज्ञा पु.] (सं.) वसिष्ठऋषि का एक नाम।

दक्षिणाकाल [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिणा देने का समय।

दक्षिणाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) वह अग्नि जो यज्ञ के दक्षिण की ओर स्थापित की जाती है।

दक्षिणाचल [संज्ञा पु.] (सं.) मलियाचल। मलयगिरि पर्वत।

दक्षिणाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुद्ध और उत्तम आचरण। सदाचार। २-तांत्रिकों में एक प्रकार का आचरण जिसमें अपने आपको शिव मानकर पंचतत्वों से शिव का पूजन किया जाता है।

दक्षिणाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) सदाचारी।

दक्षिणान्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का वैतालीय छंद।

दक्षिणापथ [संज्ञा पु.] (सं.) विन्ध्यापर्वत के दक्षिण की ओर का प्रदेश।

दक्षिणापरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नैर्ऋत्यकोण। दक्षिण-पश्चिम के बीच का कोना।

दक्षिणाप्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जो उत्तर की अपेक्षा दक्षिण ओर अधिक ढालुवां हो।

दक्षिणामुख [वि.] (सं.) जिसका मुख दक्षिण की ओर हो।

दक्षिणामूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार शिव की एक मूर्ति।

दक्षिणायन [वि.] (सं.) भूमध्यरेखा से दक्षिण की ओर। जैसे-दक्षिणायन सूर्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य की कर्करेखा से दक्षिण मकररेखा की ओर गति। २-वह छः मास का समय जिसमें सूर्य कर्करेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।

दक्षिणारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक वन का नाम जो दक्षिण में है।

दक्षिणार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दक्षिणा के योग्य या उपयुक्त हो।

दक्षिणावर्त [वि.] (सं.) जिसका घुमाव दाहिनी ओर को हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक शंख विशेष जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।

दक्षिणावर्त्तकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'दक्षिणावर्तवती'।

दक्षिणावर्त्तवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृश्चिकाली नामक पौधा।

दक्षिणावह [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण से आने वाली हवा।

दक्षिणाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण दिशा।

दक्षिणाशापति [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम। २-मंगलग्रह।

दक्षिणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दक्षिण देश की भाषा।
[संज्ञा पु.] दक्षिणदेश का निवासी। [वि.] दक्षिण देश का। दक्षिणदेश-सम्बन्धी।

दक्षिणीय [वि.] (सं.) १-दक्षिण का। दक्षिण-संबंधी। दक्षिणदेश का। २-जो दक्षिणा का पात्र हो।

दक्षिणेतर [वि.] (सं.) दाहिने से इतर। बाँया।

दक्षिण्य [वि.] (सं.) जो दक्षिणा का पात्र हो।

दक्षिन [संज्ञा पु.] देखो 'दक्षिण'।

दक्षिनी (वि., संज्ञा पु.] देखो 'दक्षिणी'।

दखन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दक्षिण'।

दखमा [संज्ञा पु.] (?) वह स्थान जहां पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

दखल [संज्ञा पु.] (अ.) १-अधिकार। कब्जा। २-हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३-पहुँच। प्रवेश

दखलदिहानी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) अदालत से किसी को किसी सम्पत्ति पर दखल या अधिकार दिलाने का कार्य।

दखलनाम [संज्ञा पु.] (अ.) दखलदिहानी का सरकारी आज्ञापत्र।

दखिन [संज्ञा पु.] देखो 'दक्षिण'।

दखिनहरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण की ओर से आने वाली हवा।

दखिनहा+ [वि.] (हिं.) दक्षिण का। दक्षिणी।

दखिना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण से आने वाली हवा।

दखील [वि.] (अ.) जिसका दखल या अधिकार हो।

दखीलकार [संज्ञा पु.] (अ. फा.) वह आसामी जिसने खेत लेकर बारह वर्ष तक अपने अधिकार में रखा हो।

दखीलकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दखीलकार का पद या अवस्था। २-वह भूमि जिसपर दखिलकार का अधिकार हो।

दगइल+ [वि.] (हिं.) 'दगैल'।

दगड़ [संज्ञा पु.] (?) युद्ध में बजाया जाने वाला बड़ा ढोल। जंगी ढोल।

दगड़ना [क्रि. अ.] (?) सच्ची बात का विश्वास न करना।

दगड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'दगड़'।

दगदगा [संज्ञा पु.] (अ.) १-डर। भय। २-संदेह। शक। ३-एक प्रकार का कंडील।

दगदगाना [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना। दमदमाना। [क्रि. अ.] (हिं.) चमक उत्पन्न करना

दगदगाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमक। दमक।

दगदगी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दगदगा'।

दगध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दाह'।
[वि.] (हिं.) देखो 'दग्ध'।

दगधना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) जलना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-जलाना। २-दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।

दगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-(बंदूक या तोप आदि का) छुटना। चलना। २-दग्ध किया जाना। ३-झुलस जाना। ४-अंकित होना। किसी नये या विशेष नाम से प्रसिद्ध होना।
[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दागना'।

दगर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दगरा'।

दगरा* [संज्ञा पु.](?) देर। विलम्ब। २-डगर। रास्ता।

दगरी [संज्ञा स्त्री.] (?) बिना मलाई की दही।

दगल [संज्ञा पु.] (?) देखो 'दगला'।

दगलफसल [संज्ञा पु.] (हिं.) धोखा। फरेब।

दगला [संज्ञा पु.] (?) १-रूईदार या मोटे कपड़े का बना हुआ अंगरखा। २-मोटा और भारी वस्त्र।

दगवाना [क्रि. स.] (हिं.) दागने का काम दूसरे से कराना।

दगहा [वि.](हिं.) १-जिसके दाग लगा हो। दाग वाला। २-जिसके सफेद दाग हों। [वि.] (हिं.) १-जिसने प्रेतक्रिया की हो। २-जो दागा हुआ हो। ३-दागा या चिह्न लगाया

हुआ।

दगा [संज्ञा स्त्री] (अ) छल। कपट। धोखा।

दगादार [वि] (हिं.) धोखेबाज। छली।

दगाबाज [वि.] (फा.) छली। कपटी। धोखा देने वाला।
[संज्ञा पु.] (फा) छली मनुष्य। धोखा देने वाला आदमी।

दगाबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा) छल। कपट। धोखा।

दगार्गल [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि के ऊपर के लक्षण देखकर भूमि के नीचे पानी होने या न होने का ज्ञान।

दगैल [वि.] (हिं.) १-दागदार। जिसमें दाग हो २-जिसमें कुछ खोट या दोष हो।
[संज्ञा पु.] दगाबाज। छली।

दग्ध [वि.] (सं.) १-जला या जलाया हुआ। २-दुःखित। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की घास।

दग्धकाक [संज्ञा पु.] (सं.) डौम कौवा।

दग्धमंत्र, दग्धमन्त्र (सं.) तंत्र के अनुसार वह मन्त्र जिसके मूर्द्धा प्रदेश में वह्नि और वायुयुक्त वर्ण हों।

दग्धरथ [संज्ञा पु] (सं.) इन्द्र के सारथी चित्ररथ नामक गंधर्व का नाम।

दग्धरुह [संज्ञा पु.] (सं.) तिलकवृक्ष।

दग्धरुहा [संज्ञा स्त्री.] कुरुह नामक वृक्ष।

दग्धवर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) राहिषनामक घास।

दग्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सूर्य के अस्त होने की दिशा। पश्चिम। २-कुरु नामक एक वृक्ष ३-कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियाँ।

दग्धाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) छंद शास्त्र में झ, ह, र, भ और ष ये पांच अक्षर जिनका छंद के आरम्भ में रखना अशुभ माना जाता है।

दग्धास्य [संज्ञा पु.] (सं.) लाल मिर्च का पौधा।

दग्धाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष।

दग्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियां।

दग्धित* [वि.] देखो 'दग्ध'।

दग्धेष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) जली हुई ईंट। झाँवा।

दग्धोदर [संज्ञा पु.] (सं.) जला हुआ पेट।

दचक [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-झटके या दबाव से लगी हुई चोट। २-धक्का। ठोकर। ३-दबाव।

दचकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ठोकर या धक्का खाना। २-दबजाना। ३-झटका खाना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-ठोकर या धक्का लगना। २-दबाना। झटका देना।

दचका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दचक'।

दचकाना [क्रि स.] (हिं) दचकाने में प्रवृत्त करना।

दचना [क्रि. अ.] (हिं.) गिरना। पड़ना।

दच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दक्ष'।

दच्छकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'दक्षकन्या'

दच्छना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'दक्षिण'।

दच्छसुता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन [वि.] (हिं.) देखो 'दक्षिण'।

दच्छिननायक* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दक्षिणनायक'।

दज्ज़ाल [संज्ञा पु.] (सं.) झूठा। बेईमान। अत्याचारी।

दडघल [संज्ञा पु.] (हिं.) सहदेई नामक पौधा।

दड़ोकना [क्रि अ.] (हिं.) दहाड़ना। गरजना।

दढ़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) जलाना।

दढ़ियल [वि.] (हिं.) दाढ़ी वाला। दाढ़ी रखने वाला।

दणियर [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

दतना+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डटना'।

दतवन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दतुअन'।

दतारा [वि] (हिं.) दांत वाला।

दतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा दांत।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार सुंदर पहाड़ी तीतर।

दतिसुत [संज्ञा पु.] (हिं.) दैत्य। राक्षस।

दतुअन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दतुवन'।

दतुवन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नीम या बबूल आदि की कटी हुई छोटी टहनी जिसे दांतों से कुचलकर कूची के समान बनाकर उससे दांत साफ करते हैं। २-दाँत साफ करने तथा मुँह धोने की क्रिया।
दतुअन कुल्ला–दाँत साफ करके मुँह धोने की क्रिया।

दतून [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दतुअन'।

दतौन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दतुअन'।

दत्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-दत्तात्रेय। २-जैनियों के नौ वसुदेवों में से एक। ३-बंगाली कायस्थों की उपाधि। ४-दान। ५-दत्तक।
[वि.] (सं.) १-दिया हुआ। २-चुकता किया हुआ। जिसका कर, देन, परिव्यय आदि चुका दिया गया हो। पेड।

दत्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपना पुत्र न होने की अवस्था में भी शास्त्र या विधि के अनुसार जिसे अपना पुत्र लिया हो। गोद लिया हुआ लड़का। एडॉप्टेड-सन।

दत्तकग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी दूसरे के पुत्र को गोद में लेकर अपना पुत्र बनाना, ग्रहण करना या स्वीकार करना। एडॉप्शन।

दत्तकविधान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के पुत्र को दत्तक के रूप में अपना लड़का बनाना। गोद लेना। एडॉपशन।

दत्तक-स्वीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दत्तकविधान'।

दत्तकादान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दत्तकग्रहण'।

दत्तकादेय [वि.] (सं.) अपनाने या ग्रहण करने योग्य। एडॉप्टेबल।

दत्तकादेयता [संज्ञा पु.] (सं.) दत्तक लेने की योग्यता। एडॉप्टेबिलिटी।

दत्तकीय [वि.] (सं.) गोद लिया हुआ। एडॉप्टिड

दत्तचित [वि.] (सं.) जिसका किसी काम में खूब जी लगा हो।

दत्ततीर्थकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) गत उत्सर्पिणी के आठवें अर्हत। (जैन)

दत्तप्राण [वि.] (सं.) जिसने अपना प्राण उत्सर्ग किया हो।

दत्तमार्ग [वि.] (सं.) मार्ग से अलग हो जाना।

दत्तवर [वि.] (सं.) जिसको वरण दिया गया हो

दत्तशुल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कन्या जिसको पर्ण दिया गया हो।

दत्तहस्त [वि.] (सं) रक्षित।

दत्ता [संज्ञा पु.] देखो 'दतात्रेय'।

दत्तात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) अनाथ या माता पिता से त्यागा हुआ पुत्र जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बन गया हो।

दत्तात्रेय [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो विष्णु के एक अवतार माने जाते हैं। (पुराण)।

दत्ताप्रदानिक [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार में अट्ठारह प्रकार के विवाद-पदों में से पांचवां।

दत्तावधान [वि.] (सं.) सावधान। एकाग्रचित्त।

दत्तासन [वि.] (सं.) जिसको आसन दिया गया हो।

दत्तिक [वि.] (सं.) अल्पदत्त। थोड़ा दिया हुआ।

दत्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सगाई का पक्का होना।

दत्तेय [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

दत्तोपनिषद् [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

दत्तोलि [संज्ञा पु.] (सं.) पुलस्त्यमुनि का एक नाम।

दत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन। २-सोना।

दत्रिम [संज्ञा पु.] (सं.) दत्तकपुत्र।

ददन [संज्ञा पु.] (सं.) दान देने की क्रिया।

ददमर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पेड़।

ददरा [संज्ञा पु.] (देश.) छानने का कपड़ा। छन्ना। साफी।

ददरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-तमाखू के पत्ते पर पड़ा हुआ दाग। २-देखो 'भरवन'।

ददा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दादा'।

दधिपूप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्वान्न।

दधिफल [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ। कपित्थ।

दधिमंड, दधिमण्ड [संज्ञा .पु.] (सं.) दही का पानी।

दधिमंडोद, दधिमण्डोद [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार दही का समुद्र।

दधिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) रामचन्द्र की सेना का एक बन्दर जो सुग्रीव का मामा था।

दधियार [संज्ञा पु.] (देश.) जीवंतिका की जाति की एक लता जिसके पत्ते लम्बे तथा पान के आकार के होते हैं अर्कपुष्पी। अंधाहुली।

दधिलेह [संज्ञा पु.] (सं.) दही के ऊपर की मलाई

दधिवत् [वि.] (सं.) दही मिलाया हुआ।

दधिवारि [संज्ञा पु.] (सं.) दही का पान या तोड़

दधिवातुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोदंती हरताल। जवासा।

दधिवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा अंग के पुत्र का नाम।

दधिशोण [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद बंदर।

दधिसक्त [संज्ञा पु.] (सं.) दही मिला हुआ सत्तू

दधिसागर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों के अनुसार दही का समुद्र।

दधिसार [संज्ञा पु.] (सं.) नवनीत। मक्खन।

दधिसुत [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कमल। २–मोती। मुक्ता। ३–चन्द्रमा। ४–जालंधर नामक। दैत्य। ५–विष। जहर।
[संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन। नवनीत।
दधिसुत-*सुत*–विद्वान। पंडित।

दधिसुता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सीप।

दधिस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) दही की मलाई।

दधिस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) तक्र। छाछ। मट्ठा।

दधीच [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दधीचि'।

दधीचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिकऋषि जो अथर्व के पुत्र थे और इसीलिए दधीचि कहलाते थे।

दधीच्यस्थि [संज्ञा पु.] (सं.) १–वज्र। २–हीरा। हीरक।

दधीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक वंदर का नाम।

दध्न [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह यमों में से एक।

दध्यंक, दध्यङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) लोहबान।

दध्यग्र [संज्ञा पु.] (सं.) दही के ऊपर की मलाई।

दध्यन्न [संज्ञा पु.] (सं.) दही मिला हुआ अन्न।

दध्यानी [संज्ञा पु.] (सं.) सुदर्शन का पौधा।

दध्युत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दही की मलाई।

दध्योदन [संज्ञा पु.] (सं.) दही मिला हुआ भात।

दन [संज्ञा पु.] (हि.) दिन।

दनकर [संज्ञा पु.] (हि.) दिनकर। सूर्य।

दनगा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत का छोटा टुकड़ा।

दनदनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–दनदन-शब्द करना। २–आनन्द करना। खुशी मनाना। ३– निःशंक भाव से कोई काम करना।

दनमणि [संज्ञा पु.] (हिं.) दिनमणि। सूर्य।

दनादन [क्रि. वि.] (हिं.) १–दनदन-शब्द सहित। निरन्तर। लगातार।

दनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष की एक कन्या जिसका विवाह कश्यप के साथ हुआ था।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

दनुज [संज्ञा पु.] (सं.) दनु से उत्पन्न। असुर। राक्षस।

दनुजदलनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

दनुजद्विष् [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

दनुजराय [संज्ञा पु.] (हि.) हिरण्यकश्यप।

दनुजारि [संज्ञा पु.] (सं.) दानवों के शत्रु, देवता।

दनुजेंद्र, दनुजेन्द्र [संज्ञा पु:] (सं.] दानवों का राजा, रावण।

दनुजेश [संज्ञा पु.] (सं.) १–हिरण्यकश्यप। २–रावण।

दनुष [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दनुसंभव, दनुसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) दनु से उत्पन्न, दानव।

दनुसूनु [संज्ञा पु.] (सं.] दनु के पुत्र। राक्षस।

दनू [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दनु'।

दन्न [संज्ञा पु] (हिं.) तोप आदि के छुटने का 'दन' शब्द।

दपट [संज्ञा स्त्री.] हिं.) घुड़की। डपट। डपेट। डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव।

दपटना [क्रि. अ.] (हिं.) डाँटना। घुड़कना।

दपु* [संज्ञा पु.] (हिं.) दर्प। अहंकार। अभिमान। शेखी। घमंड।

दपेट [संज्ञा स्त्री.] हिं.) देखो 'दपट'।

दपेटना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दपटना'।

दफतर [संज्ञा पु.] देखो 'दफ्तर'।

दफतरी [संज्ञा पु.] देखो 'दफ्तरी'।

दफतरीखाना [संज्ञा पु.] देखो 'दफ्तरीखाना'।

दफ़ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कागज के अनेक तख्तों को चिपका कर बनाया हुआ गत्ता। कुट। वसली।

दफदर* [संज्ञा पु.] देखो 'दफ्तर'।

दफन [संज्ञा पु.](अ.) १-जमीन में किसी वस्तु को गाड़ने की क्रिया। २–मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दफनाना [क्रि. स.] जमीन में दबाना। गाड़ना।

दफरा [संज्ञा प.] (देश.) काठ का वह टुकड़ा जो नाव के दोनों ओर धक्का बचाने के लिए लगाया जाता है।

दफराना [क्रि. स.] (देश.) १-किसी एक नाव को किसी दूसरी नाव के साथ टक्कर लगने से बचाना। २- (पाल) खड़ा करना। ३-बचाना। रक्षा करना।

दफा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बार । मरतबा। २-किसी विधान या कानूनी पुस्तक का वह अंश जिसमें किसी एक अपराध विषय या कार्य के सम्बन्ध में कोई बात कही गई या कोई विधान किया गया हो। धारा।
दफा लगाना-किसी अपराधी पर कानून की किसी धारा को घटाना। [वि. अ.] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफादार [संज्ञा पु.] (अ. फा.) सेना का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में थोड़े सिपाही हों।

दफादारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दफादार के पद या काम।

दफीना [संज्ञा पु.] (अ) गड़ा हुआ धन या खजाना।

दफ्तर [संज्ञा पु.] (फा.) १-कार्यालय। ऑफिस २-लम्बी चौड़ी चिट्ठी। ३- विस्तार वृत्तान्त चिट्ठा।
दफ्तर खोलना-सविस्तार वृत्तान्त कह सुनाना।

दफ्तरी [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसी दफ्तर या कार्यालय के कागज आदि संभालकर रखने वाला कर्मचारी। २-किताबों की जिल्द बांधने वाला। जिल्दसाज। जिल्दबंद।

दफ्तरीखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह स्थान जहां किताबों की जिल्द बांधी जाती हो या दफ्तरी बैठकर अपना काम करते हों।

दफ्ती [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'दफती'।

दबंग [वि.] (हिं.) १-प्रभावशाली । दबाव-वाला। २-उद्दंड।

दबक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २-शिकन । सिकुड़न। ३-धातु को लम्बा करने के लिए पीटने की क्रिया।

दबकगर [संज्ञा पु.] (हिं.) दबका (तार) बनाने वाला। २-धातु को पीटकर पत्तर बनाना।

दबकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भय, संकोच, लाज आदि के कारण छिपना। २-लुकना। छिपना [क्रि. स.] १-धातु के पत्तर को पीटकर बढ़ाना। २-डाँटना। घुड़कना।

दबकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाती का वह छेद या भाग जिसके द्वारा उसमें हवा जाती है।

दबकवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को दबकाने में प्रवृत्त करना।

दबका [संज्ञा पु.] (हिं.) कामदानी का सुनहला अथवा रुपहला तार।

दबकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-छिपाना। ढांकना। आड़ में करना। २-डांट बताना। (क्वचित्)।

दबकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दबकगर'।

दबकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सुराही के समान मिट्टी का पात्र जिसे खेतिहर और चरवाहे अपने साथ पानी भरकर खेत ले जाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दबकने या छिपने की क्रिया या भाव।

दबके-का-सलमा [संज्ञा पु.] (हिं.) दबके का बना सलमा जो बहुत चमकीला होता है।

दबकैया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दबकगर'।

दबगर [संज्ञा पु.] (देश.) ५-ढाल बनाने वाला। २-चमड़े के कुप्पे बनाने वाला।

दबदबा [संज्ञा पु.] (अ.) रोबदाब। आतंक।

दबना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भारी वस्तु या बोझ के नीचे आना या होना। २-दाव में आना। ३-ऊपरी तल का कुछ नीचा हो जाना। ४-किसी के दबाव में पड़कर उसके इच्छानुसार कार्य करने के लिए विवश होना। ५-किसी के सामने हलका ठहरना। ६-किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना तथा उसपर कोई कार्रवाई न होना। ७-अपनी वस्तु अथवा प्राप्य धन का किसी अन्य के अधिकार में चला जाना या रह जाना। ८-बातचीत अथवा झगड़े में धीमा या मन्द पड़ना। ९-संकोच करना। झंपना।
दबी आवाज से कहना-वह आवाज जिसमें किसी प्रकार का बल न हो। *दबी जबान*-अस्पष्ट रूप से डरते हुए कहना। *दबे-दबाये रहना*-शान्तिपूर्वक अथवा चुपचाप रहना। *दबे पाँव या पैर* (*चलना*)-इस प्रकार (चलना) जिसमें किसी को कुछ आहट न लगे।

दबमो [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय की ओर पाया जाने वाला एक प्रकार का बकरा।

दबवाना [क्रि. स.] (हिं.) दबाने का कार्य अन्य से कराना। दूसरे को दबाने में प्रवृत्त करना।

दबस [संज्ञा पु.] (?) जहाजी गोदाम का माल।

दबाईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न की बालों या डंठलों को बैलों के पैरों से रौंदवाने का कार्य

दबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दबाने की क्रिया या भाव। २-दबाने की उजरत या मजदूरी।

दबाऊ [वि.] (हिं.) १-दबाने वाला। २-जिसका पिछला भाग आगे के भाग से भारी हो।

दबाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ऊपर से भार रखना। बोझ के नीचे लाना। २-किसी वस्तु पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचना। ३-पीछे हटाना। ४-जमीन के नीचे गाड़ना या दफन करना। ५-किसी व्यक्ति पर इतना प्रभाव डालना अथवा आतंक जमाना कि जिसमें वह कुछ कह न सके या विपरीत आचरण न कर सके। जोर डालकर विवश करना। ६-अपने गुणों अथवा महत्व के कारण दूसरे को मंद या मात कर देना। ७-किसी बात को उठने या फैलने न देना। जहाँ का तहाँ रहने देना। ८-दमन करना। उभड़ने से रोकना। ९-किसी दूसरे की वस्तु पर अनुचित अधिकार करना। १०-झोंक के साथ बढ़कर किसी वस्तु को पकड़ लेना। ११-ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मनुष्य असहाय दीन अथवा विवश हो जाय।

दबाचा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का संदूक जिसमें युद्धकाल में कुछ आदमियों को बैठा कर गुप्त रूप से सुरंग खोदने या इसी प्रकार का अन्य उपद्रव करने के लिए शत्रु के किले में उतार देते थे।

दबाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दाबने की क्रिया। चाँप। दाबने का भाव। २-रोब।

दबावक [वि.] (हिं.) दबाव डालने वाला।

दबिला [संज्ञा पु.] (देश.) हलवाइयों का खुरपी या खुरचनी के आकार का एक लकड़ी का औजार।

दबीज [वि.] (फा.) जिसका दल मोटा हो। गाढ़ा। संगीन।

दबीर [संज्ञा पु.] (फा.) १-लिखने का काम करने वाला। मुंशी। एक प्रकार के महापुरुषों की उपाधि।

दबूसा [संज्ञा पु.] (देश) १-बड़ी नाव का पिछला भाग जहाँ पतवार लगी रहती है। २-जहाज का पिछला भाग। ३-जहाज का कमरा।

दबेल+ [वि.] (हिं.) दबा हुआ। जिस पर दबाव पड़ा हो। जिस पर किसी का दबाव या प्रभाव हो।

दबेला [वि.] (हिं.) १-दबा हुआ। २-जल्दी-जल्दी होने वाला (काम)।

दबैल [वि.] (हिं.) १-जिस पर किसी का दबाव या प्रभाव हो। २-जो बहुत दबता या डरता हो। दब्बू।

दबोचना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। धर दबाना। २-छिपाना।

दबोरना+* [क्रि स.] (हिं.) अपने सामने उभरने न देना। दबाना।

दबोस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चकमक पत्थर।

दबोसना+ [क्रि. स.] (देश.) शराब पीना।

दबौता [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी का वह कुंदा जिससे नील के डंठल दबाये जाते हैं।

दबौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फूलपत्ते उभाड़ने का नक्काशी का एक कसेरों का औजार। २-भँजनी के ऊपर लगी हुई लकड़ी (जुलाहे)।

दब्बू [वि.] (हिं.) जो बहुत दबता या डरता हो। किसी से दबने वाला।

दभ्य [वि.] (सं.) मारने योग्य।

दभ्र [वि.] (सं.) अल्प। थोड़ा। कम।

दमंकना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो दमकना।

दमंस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मोल ली हुई जायदाद

दम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दंड जो दमन करने के निमित्त दिया जाता है। सजा। २-इन्द्रियों

(मुहावरे)

को वश में रखना तथा चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। ३-कीचड़। ४-घर। ५-बुद्ध का एक नाम। ६-विष्णु। ७-दबाव। [संज्ञा पु.] (फा.) १-सांस। श्वास। २-नशा करने के लिए सांस के साथ धुआँ खैंचने की क्रिया। ३-एक बार सांस लेने का समय। ४-सांस खैंचकर बाहर फैंकने की क्रिया। ५-प्राण। जान। ६-जीवनशक्ति। वह शक्ति जिसके द्वारा कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम देता है। ७-व्यक्तित्व। ८-संगीत में किसी स्वर का देर तक उच्चारण। ९-किसी बरतन में कोई वस्तु रखकर और उसका मुँह बंद करके उसे आग पर पकाना। १०-धोखा। छल। फरेब। ११-तलवार या छुरी की धार।

दम अटकना-सांस रुकना (मरने के समय का)। *दम उखड़ना*-१-सांस रुकना। २-दमे या खाँसी दौरा उठना या होना। *दम उलझना*-जी घबराना। व्याकुल होना। *दम उलटना*-१-जी घबराना। २-दम घुटना। *दम के दम*-क्षण भर। *दम के दम में*-अति शीघ्र। *दम खाना*-१-दिक या तंग करना। २-किसी पदार्थ का मुँह बंद करके बरतन में भाप द्वारा पकाया जाना। ३-ठहरना। विश्राम लेना। ४-छल-फरेब में फँस जाना। *दम खिंचना*-सांस रुकना। *दम खींचना*-१-न बोलना। चुप रह जाना। २-सांस ऊपर चढ़ाना या खींचना। *दम खुश्क होना*-बहुत भय के कारण चुप हो जाना सांस तक न लेना। स्तब्ध रह जाना। *दम गनीमत होना*-अस्तित्व या जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ उपयोगिता या लाभ होता रहना। *दम घुटना*-हवा की कमी के कारण साँस लेने में कष्ट होना। *दम घुट-घुटकर रहना*-अपनी इच्छा के विरुद्ध रहना। *दम घोंटना*-१-बहुत कष्ट देना। २-सांस न लेने देना। *दम घोंटकर मारना*-१-बहुत कष्ट देना। २-गला दबाकर अथवा हवा न पहुँचने देकर मारना। *दम चढ़ना*-१-बहुत परिश्रम करने के कारण जल्दी-जल्दी सांस चलना। *दम चुराना*-१-जान बूझकर सांस रोकना। २-जी चुराना। *दम छोड़ना*-१-प्राण निकलना। २-हिम्मत हारना साहस छोड़ना। *दम झांसा देना या दम पट्टी दिलाना*-धोखा या फरेब करना। *दम टूटना, उखड़ना*-१-सांस बंद होना। प्राण निकलना। २-सांस शीघ्र चलने के कारण काम न कर सकना। *दम तोड़ना*-अंतिम सांस लेना अथवा झटके सहित प्राणत्याग करना। *दम दिलासा देना*-झूठी आशा देना। *दम पट्टी देना*। बहकाना। फुसलाना। *दम देना*-मारना-१-कुछ न बोलना। *दम न* मारना-१-कुछ न बोलना। २-तनिक विश्राम न करना। *नाक में दम आना*-बहुत तंग या परेशान होना। *दम निकलना*-मृत्यु होना। मरना। *दम पचना*-परिश्रम करने में सांस न फूलने का अभ्यास होना। *दम पर आ बनना*-१-प्राण जाने का भय होना। २-आफत आना। ३-व्यग्रता या हैरानी होना। *दम पर दम*-किसी वस्तु मे मुँह से हवा भरना। *दम फूँकना*-१-अधिक परिश्रम के कारण सांस का जल्दी जल्दी चलना। २-दमे के रोग का दौरा होना। *दम फड़क उठना या जाना*-सुन्दरता गुण आदि देखकर हृदय प्रसन्न होना। *दम फ़ना होना*-प्राण सूखना। भय के मारे स्तब्ध होना। *दम बंद करना*-जबरदस्ती बोलने से रोकना। *दम बंद होना*-भय या आतंक आदि के कारण बिलकुल चुप रह जाना। *दम बदम*-१-बराबर। निरन्तर। २-थोड़ी-थोड़ी देर पर। *दम बाधना*-चुपकी लगाना। *दम भरना*-१-किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और समय-समय पर अभिमान पूर्वक उसका वर्णन करना। २-परिश्रम के कारण थक जाना और सांस फूलने लगना। ३-कुश्ती लड़ाकर थकाना। साँस फूलना। ४-भालू का हाथ या लकड़ी मुंह पर रख कर सांस खैंचना। ५- किसी स्वर का देर तक उच्चारण करना। ६-कबूतर का पेट में हवा भरना।

दम भरना-१-तनिक सस्ताना। विश्राम करना। २-दखल देना। ३-कुछ कहना, चू करना। ४-मन्त्र आदि द्वारा झाड़ फूंक करना। *दम मारने की फुरसत न होना*-तनिक भी समय न होना। *दम में आना*-धोखे या जाल में फंसना। *दम में दम आना*-घबराहट दूर होना। चित्त स्थिर होना। *दम में लाना*-धोखा या फरेब करना। *दम में दम होना या रहना*-प्राण रहना। *दम लगना*-गाँजे, चरस आदि नशीली वस्तुओं का धुआँ खींचना। *दम लगाना या मारना*- गाँजे तम्बाकू आदि का धुआँ खींचना। *दम लेना*-विश्राम करना। ठहरना। सुस्ताना। *दम रोकना*-साँस न लेना। *दम ल रहना या लेकर बैठना*-चुप होना या टाल जाना। *दम साधना*-१-श्वास की गति को रोकना। सांस रोकने का अभ्यास करना। २-चुप होना। मौन होना। *दम सूखना*-बहुत अधिक भय के कारण बिलकुल चुप हो जाना। प्राण सूखना। भय के मारे स्तब्ध होना। *दम ही दम में रखना* झूठी आशा बँधाये रहना।

दमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमचमाहट। चमक। आभा। द्युति। [संज्ञा पु.] (सं.) दमनकर्त्ता।

दमकना [क्रि. अ.] (हि.) चमकना। चमचमाना।

दमकल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह यन्त्र जिसकी सहायता से कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से ऊपर या और किसी ओर झोंक से फेंका जाता है। पंप। २-वह यन्त्र जिसकी सहायता से तीव्र गति से पानी फेंक कर लगी हुई आग बुझाई जाती है। पंप। ३-कुएं से पानी खैंचने का एक प्रकार का यन्त्र। पंप। ४-देखो 'दमकला।'

दमकला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक प्रकार का बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी द्वारा जन समूह गुलाबजल या रंग छिड़का जाता है। २-जहाज में वह यंत्र जिसकी सहायता से पाल खड़ा करते हैं। ३-देखो 'दमकल'।

दमखम [संज्ञा पु.] (फा.) १-दृढ़ता। मजबूती। २-जीवनी-शक्ति। प्राण। तलवार की धार और उसका झुकाव। ४-मूर्त्ति की सुन्दर और सुडौल गढ़न।

दमघोष [संज्ञा पु.] (सं.) चेदि नरेश शिशुपाल के पिता का नाम।

दमचा [संज्ञा पु.] (हि.) खेत के कोने पर बनी हुई मचान जिसपर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करता है।

दमचूल्हा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा जिसके बीच में जाली लगी होती है।

दमजोड़ा [संज्ञा पु.] (?) तलवार।

दमड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) रुपया। धन। दाम। *दाम दमड़े*-रुपया पैसा। *दमड़े करना*-बेच कर दाम खड़े करना।

दमड़ी [संज्ञार त्री.] (हिं.) १-पैसे का आठवां भाग। २-चिलचिल पक्षी।
दमड़ी के तीन होना-बहुत सस्ता होना।

दमथ [संज्ञा पु.] (फा.) दण्ड। सजा।

दमदमा [संज्ञा पु.] (फा.) मोरचा। धुस।

दमदार [वि.] (फा.) १-जिसमें जीवनी जान शक्ति यथेष्ट हो। २-दृढ़। मजबूत। ३-जिसमें अथवा सांस अधिक समय तक रह सके। ४-जिसकी धार बहुत तेज हो। चोखा। पैना।

दमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दबाने या रोकने की क्रिया। २-विरोध, उपद्रव, विद्रोह आदि को बलपूर्वक दबाना। *रिप्रेशन*। ३-इन्द्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। ४-विष्णु। ५-शिव। ६-एक ऋषि का नाम (दमयन्ती इन्हीं के यहां उत्पन्न हुई थी)। ७-दौना। ८-कुंद

दमनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का पौधा। दौना। २-एक छंद जिसमें तीन नगण, एक लघु और एक गुरु होता है।
[वि.] (सं.) दमन करने वाला। दमनशील।

दमनकारी [वि.] (सं.) दमन करने या दबाने वाला। उत्पीड़क। अत्याचारी। *रिप्रसिव्*।

दमनशील [वि.] (सं.) जिसकी प्रकृति दमन करने की हो।

दमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का क्षुप जिसे अग्निदमनी कहते हैं। २-संकोच। लज्जा।

दमनीय [वि.] (सं.) १-दमन होने के योग्य। जो दमन किया जा सके। २-जो दबाया जा सके

दमपुख्त [वि.] (फा.) (वह खाद्यपदार्थ) जो दम देकर पकाया गया हो।

दमबाज [वि.] (फा.) १-फुसलाने वाला। दम देने या बहाना करने वाला। २-गाँजा चरस

आदि फूँकने वाला।

दमबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा) बहाना करने का काम। बहानेबाजी।

दमयंतिका, दमयन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदनवान वृत्त।

दमयंती, दमयन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–राजा नल की स्त्री। २–एक प्रकार का बेला।

दमरक [संज्ञा स्त्री] देखो 'चमरख'।

दमरी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दमड़ी'।

दमसाज [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो किसी गायक के गाने के समय उसकी सहायता के लिए केवल स्वर भरता है।

दमा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रसिद्ध रोग जिसमें श्वासवाहिनी नाली के अन्तिम भाग में, जो फेफड़ों के पास होता है आकुंचन और ऐंठन के कारण सांस लेने में बहुत कष्ट होता है, खांसी आती है तथा कफ रुककर बड़ी कठिनता से धीरे-धीरे निकलता है। श्वास।

दमाद [संज्ञा पु.] (हिं.) कन्या का पति। जमाता। जंवाई।

दमादम [क्रि. वि.] (हिं.) १–दमदम-शब्दसहित। २–लगातार। बराबर। निरन्तर।

दमान [संज्ञा पु.] (देश.) दामन। पलकी की चादर।

दमानक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तोपों की बाढ़।

दमाम [संज्ञा पु.] देखो 'दमामा'।

दमामा [संज्ञा पु.] (फा.) नक्कारा। नगारा। डंका। धौंसा।

दमारि*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगल की आग। बन की आग।

दमावति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दमयंती'।

दमाह- [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलों का एक रोग जिसमें वे हांफने लग जाते हैं।

दमी [वि.] (सं.) दमनशील।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का जेबी या सफरी नैचा। दम लगाने का नैचा। [वि.] (फा.) १–दम लगाने वाला। कश खींचने वाला। सुट्टेबाज। २–गाँजा पीने वाला। गँजेड़ी। [वि.] (हिं.) दमे के रोग वाला।

दमुना+ [संज्ञा पु.] (?) अग्नि। आग।

दमैया*+ [वि.] (हिं.) दमन करने बाला।

दमोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मूल्य। कीमत। २–दाम।

दमोदर [संज्ञा पु.] देखो 'दामोदर'।

दम्य [वि.] (सं.) १–दमन करने योग्य। जो दमन किया जा सके। २–वह बैल जो बधिया करने के योग्य हो।

दयंत* [संज्ञा पु.] देखो 'दैत्य'।

दय [संज्ञा पु.] (सं.) दया। कृपा। करुणा।

दयनीय [वि.] (सं.) दया के योग्य। शोचनीय।

दया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मनोवेग जो दूसरे का दुःख देखकर वह दुःख या कष्ट दूर करने की प्रेरणा करता है। सहानुभूति का भाव। करुणा। रहम। २–दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम। ३–अलंकार में शांतिरस का व्यभिचार।

दयाकूर्च [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

दयादृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दया या अनुग्रह की दृष्टि। रहम या मेहरबानी की नजर।

दयानत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सत्यनिष्ठा। ईमान

दयानतदार [वि.] (अ., फा.) ईमानदार। सच्चा।

दयानतदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) ईमानदारी। सचाई।

दयाना* [क्रि. अं.] (हिं.) दयालु होना। कृपालु होना।

दयानिधान [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें बहुत अधिक दया हो। बहुत दयालु पुरुष। दया का खजाना।

दयानिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १–दया का ख़जाना। बहुत दयालु पुरुष। २–ईश्वर का एक नाम।

दयापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पर दया करना उचित हो।

दयामय [वि.] (सं.) दया से पूर्ण। दयालु।
[संज्ञा पु.] ईश्वर का एक नाम।

दयार [संज्ञा पु.] (अ.) १–प्रान्त। प्रदेश। २–आसपास का स्थान। [संज्ञा पु.] (हिं.) देवदार का वृक्ष।

दयार्द्र [वि.] (सं.) दया से भीगा हुआ। दयापूर्ण। दयालु।

दयाल [वि.] (हिं.) देखो 'दयालु'।
[संज्ञा पु.] (देश.) मीठे स्वर में बोलने वाली एक चिड़िया।

दयालु [वि.] (सं.) जिसमें दया का भाव अधिक हो। दयावान्।

दयालुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दयालु होने का भाव। दया करने की प्रवृत्ति।

दयावंत* [वि.] (हिं.) दयायुक्त। दयालु।

दयावती [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) दया करने वाली।
[संज्ञा स्त्री.] ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियों में से प्रथम।

दयावना* [वि.] (हिं.) (पुं. प्र.) (स्त्री. दयावनी) दया योग्य। दीन। दयापात्र।

दयावनी* [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) देखो 'दयावना'।

दयावान् [वि. सं.] (स्त्री दयावती) जिसके मन में दया हो। दयालु।

दयावीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दूसरे का दुःख दूर करने के लिये प्राण तक दे सकता हो।

दयाशील [वि. सं.] दयावान्। दयालु।

दयासागर [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके चित्त में अगाध दया हो। अत्यधिक दयालु मनुष्य।

दयित [वि. सं.] प्यारा। प्रिय। [संज्ञा पु.] (सं.) पति।

दयिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियतम। पत्नी। स्त्री। दयिताधीन–जोरू का गुलाम।

दयिलु [वि. सं.] दयाशील। दयावान्। दयालु।

दर [संज्ञा पु.] (सं.) १–शंख। २–गड्ढा। दरार। ३–गुफा। कंदरा। ४–विदारण। फाड़ने की क्रिया। ५ डर। भय। खौफ। [संज्ञा पु.] (हिं) १–दल। सेना। समूह। २–जगह। स्थान। ३–जुलाहे की ताने की डंडियां गाड़ने का स्थान। [संज्ञा पु.] (फा.) द्वार। दरवाजा।
दरदर मारा मारा फिरना–कार्य सिद्ध अथवा पेट पालनें के लिये एक घर से दूसरे घर फिरना।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भाव। निर्ख। २–प्रमाण। ठीक। ठिकाना। ३–कदर। प्रतिष्ठा। महत्व। महिमा। ४–ईख। ऊख। [वि. सं.] किंचित्। थोड़ा। जरासा।

दरकंठिका, दरकण्ठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावरी।

दरक [वि. सं.] डरपोक। डरने वाला। भीरु। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) दरकने की क्रिया या भाव। २–दरज। सन्धि।

दरकच [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १–जोर से रगड़ या ठोकर खाने से आने वाली चोट। कुचल जाने से आने वाली चोट।

दरकचाना* [क्रि. स.] (हिं) थोड़ा कुचलना।

दरकटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाव का ठहराव। दर की मुकररी।

दरकना [क्रि. अ.] (हिं.) दबाव पड़ने या आघात लगने के कारण फटना। चिरना। विदीर्ण होना।

दरका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दरक। दरार। फटने का चिह्न। २–वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।

दरकाना [क्रि. स.] (हिं.) फाड़ना।
[क्रि. अ.] (हिं.) फटना।

दरकार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आवश्यकता।

दरकारी [वि.] (फा.) १–आवश्यक। २–अपेक्षित।

दरकिनार [क्रि. वि.] (हिं.) अलग। अलहदा। एक ओर। दूर।

दरकूच [क्रि. वि.] (फा.) बराबर यात्रा करते हुआ। मंजिल-दर-मंजिल।

दरखत* [संज्ञा पु.] देखो 'दरख्त'।

दरखास्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–निवेदन। किसी बात के निमित्त प्रार्थना। २–प्रार्थना-पत्र। निवेदन-पत्र।
दरखास्त देना–प्रार्थना-पत्र उपस्थित करना।
दरखास्त गुजरना या पड़ना–प्रार्थना पत्र उपस्थित किया जाना।

दरख्त [संज्ञा पु.] (फा.) पेड़। वृक्ष।

दरगाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चौखट। देहली। २-दरबार। कचहरी। ३-किसी सिद्ध पुरुष का समाधि स्थान। मकबरा। (मुसलमान)

दरगुजर [वि.] (फा.) १-अलग। बाज। वंचित। मुआफ। क्षमा प्राप्त।

दरगुजर करना–१-टालना। हटाना। २-छोड़देना। मुआफ करना।

दरगुजरना [क्रि. अ.] (फा.) १-छोड़ना। त्यागना। २-जाने देना। क्षमा करना। मुआफ करना।

दरज [संज्ञा स्त्री.] (हि) दरार। दराज। शिगाफ। दरजबंदी–दीवार की दरारों में चूना गारा भरकर बंद करने का काम।

दरजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दर्जन'।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दर्जी की स्त्री। २-कपड़ा सीने का काम करने वाली स्त्री। दर्जिन।

दरजा [संज्ञा पु.] देखो 'दर्जा'। [संज्ञा पु.] (हि.) लोहा ढालने का एक औजार

दरजिन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दर्जिन'।

दरजी [संज्ञा पु.] 'दर्जी'।

दरण [संज्ञा पु] (सं.) १-दलने या पीसने की क्रिया या भाव। २-ध्वंस। विनाश।

दर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रसारण। फैलाव। २-गर्त। गड्ढा।

दरद् [संज्ञा स्त्री] (सं) १-पर्वत। पहाड़। २-किनारा।

दरद [संज्ञा पु.] (सं.) १-काश्मीर के पश्चिम का एक प्राचीन प्रदेश। २-एक प्राचीन म्लेच्छ जाति जो उक्त देश में रहती थी। ईंगुर। सिंगरफ। हिंगुल।

[वि.] (सं.) भयदायक। भयंकर।

[संज्ञा पु.] (फा.) १-पीड़ा। व्यास। २-दया। करुणा।

दरदर [क्रि. वि.] (फा.) द्वार-द्वार। दरवाजे-दरवाजे। स्थान-स्थान पर। * [वि.] देखो 'दरदरा'।

दरदरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. दरदरी] जिसके कण मोटे हों। जिसके कण टटोलने से मालूम हों।

दरदराना [क्रि. स.] (हि.) १-बहुत महीन न पीसना। थोड़ा पीसना। २-जोर से दाँत काटना। ३-दरदरापन मालूम होना।

दरदरापन [संज्ञा पु.] (हि.) दरदरा होने का भाव या अवस्था।

दरदराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दरदरापन'।

दरदरी [वि.] (हि.) [स्त्री प्र.] मोटे रवे की। जिसके रवे मोटे हों।

* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी। जमीन। धरती

दरदवंत [वि.] (हि.) १-दयालु। कृपालु। २-दुखी। पीड़ित।

दरदमंद* [वि.] (फा) १-व्यथित। पीड़ित। २-दुखी। खिन्न।

दरदालान [संज्ञा पु.] (फा.) दालान के बाहर का का दालान।

दरद [संज्ञा पु.] देखो 'दर्द'।

दरना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दलना। पीसना। चूर्ण करना। २-नष्ट करना। ध्वस्त करना।

दरप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दर्प'।

दरपक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दर्पक'।

दरपन [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. दरपनी] मुंह देखने का शीशा। दपण। आरसी। मुकुर।

दरपना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-ताव में आना। क्रोध करना। २-घमंड करना। गर्व करना।

दरपनी [संज्ञा स्त्री] (हि.) मुंह देखने का छोटा दर्पण या शीशा।

दरपरदा [क्रि. वि.] (फा.) चुपके-चुपके। आड़ में। छिपाकर।

दरपेश [क्रि. वि.] (फा.) आगे। सामने। *दरपेश होना*–उपस्थित होना।

दरब+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्रव्य। धन। दौलत। २-धातु। ३-मोटी किनारीदार चादर।

दरबर+ [वि.] (हि.) १-दरदरा। २-कंकरीला रास्ता (कहार)।

दरबराना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दरदरा करना। थोड़ा पीसना। २-घबरा देना। ३-दबाना। दबाव डालना।

दरबहरा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की शराब जो सड़ी हुई बनस्पतियों से बनती है।

दरबा [संज्ञा पु.] (फा.) काठ का खानेदार संदूक जिसमें कबूतर मुरगियाँ आदि रखते हैं। २-दीवार पेड़ आदि की वह कोटर जिसमें पक्षी या जीव रहता है।

दरबान [संज्ञा पु.] (फा.) द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

दरबार [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह स्थान जहाँ राजा-महाराजा अपने सरदारों या मुसाहिबों के साथ बैठते हैं। २-राजसभा। ३-महाराज। राजा (रियासतों में)। ४-अमृतसर का सिक्खों का स्वर्ण मन्दिर।

दरबार करना–राजसभा में बैठना। *दरबार खुलना*–दरबार में जाने की आज्ञा मिलना। *दरबार बाँधना*–घूस या रिश्वत बांधना। *दरबार लगना*–राजसभा के सभासदों का इकट्ठा होना।

दरबारदारी [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-राजसभा में उपस्थिति या हाजरी। २-किसी के यहां बार-बार और खुशामंद करने का कार्य।

दरबारविलासी* [संज्ञा पु.] (फा.) द्वारपाल। दरबान।

दरबारी [संज्ञा पु.] (फा.) राजसभा का सभासद। दरबार में बैठने वाला। व्यक्ति।

[वि.] (फा.) दरबार का। दरबार से संबंध रखने वाला।

दरबारीकान्हड़ा [संज्ञा पु.] (फा.) एक राग जिसमें शुद्ध ऋषभ के अतिरिक्त बाकी सब कोमल स्वर लगते हैं।

दरभ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दर्भ'। [संज्ञा पु.] (?) बन्दर।

दरमन [संज्ञा पु.] (फा.) १-इलाज। २-औषध। *दवादरमन*-उपचार।

दरमा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बांस की वह चटाई जो झोंपड़ियां बनाने के काम आती हैं। + [संज्ञा पु.] (हिं.) दाड़िम। अनार।

दरमाहा [संज्ञा पु.] (फा.) मासिक वेतन।

दरमियान [संज्ञा पु.] (फा.) मध्य। बीच। [क्रि. वि.] (हि.) बीच या मध्य में।

दरमियानी [वि.] (फा.) बीच या मध्य का। [संज्ञा पु.] (फा.) १-मध्यस्थ। बीच में पड़ने वाला व्यक्ति। २-दलाल।

दररना [क्रि. स.] (हि.) १-देखो 'दरना'। २-देखो 'दरेरना'।

दरवाजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-द्वार। मुहाना। २-किवाड़। कपाट। *दरवाजे की मिट्टी खोद डालना या ले डालना*–बारबार दरवाजे पर आना।

दरवी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सांप का फन। २-करछुला। पौना। ३-संडासी। दस्तपनाह। दस्तपना। *दरवीकर*–सांप।

दरवेश [संज्ञा पु.] (फा.) फकीर। साधू।

दरश [संज्ञा पु.] देखो 'दर्श'।

दरशन [संज्ञा पु.] देखो 'दर्शन'।

दरशाना [क्रि. अ., क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दरसाना'।

दरस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दर्शन। देखादेखी। दीदार। २-भेंट। मुलाकात। ३-रूप। छवि। सुन्दरता।

दरसन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दर्शन'।

दरसना* [क्रि. अ.] (हि.) दिखाई पड़ना। देख पड़ना। दृष्टिगोचर होना। [क्रि. स.] देखना लखना।

दरसनी [संज्ञा स्त्री.] हि.) १-दर्शन। २-दर्पण। आइना।

दरसनी-हुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार हुँडी की जिसका भुगतान तुरन्त किया जाता है या उसमें लिखित रुपया तुरन्त चुकाया जाता है। २-कोई ऐसी वस्तु जिसे देखते ही कोई वस्तु प्राप्त हो जाय।।

दरसनीय* [वि.] (हिं.) देखो 'दर्शनीय'।

दरसाना [क्रि. स.] (हि.) १-दिखलाना। दृष्टिगोचर कराना। २ प्रकट करना। समझाना। *+ [क्रि. अ.] (हि.) दिखाई पड़ना। दृष्टिगोचर होना।

दरसावना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'दरसाना'।

दराँती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-हँसिया। घास का फसल काटने का औजार। २-देखो 'दरेंती'।

दरौंती पड़ना–कटाई आरम्भ होना।

दराईं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दलने की मजदूरी दलने का काम।

दराज [वि.] (फ़ा.) बड़ा। भारी। लंबा। दीर्घ। [क्रि. वि.] (फ़ा.) बहुत। अधिक। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मेज या टेबिल में लगा हुआ वह खाना जो बाहर खींचा या खोला जा सकता हो।

दरार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु के फटने पर बीच में पड़ने वाली खाली जगह। दरज। सन्धि।

दरारना [क्रि. अ.] (हिं.) फटना। विदीर्ण होना।

दरारा [संज्ञा पु.] (हिं.) दरेरा। धक्का। रगड़ा।

दरिंदा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) फाड़ खाने वाला जंतु। मांस खाने वाला जंगली जानवर।

दरि [संज्ञा स्त्री] (सं.) गुफा। कंदरा।

दरित [वि.] (सं.) भयभीत। डरपोक।

दरिद+ [संज्ञा पु.] (हि.) १–कंगाली। निर्धनता। गरीबी। २–कंगाल। निर्धन।

दरिद्दर+ [वि., संज्ञा पु.] देखो 'दरिद्र'।

दरिद्र [वि.] (सं) (स्त्री. दरिद्रा) जिसके पास निर्वाह के योग्य यथेष्ट धन न हो। निर्धन। कंगाल।
[संज्ञा पु.] निर्धन मनुष्य। कंगाल आदमी।

दरिद्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्धनता। गरीबी। कंगाली।

दरिद्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) निर्धनता। गरीबी।

दरिद्र-नारायण [संज्ञा पु.] (सं.) दरिद्रों और दीन दुःखियों के रूप में रहने अथवा माने जाने वाले नारायण या ईश्वर।

दरिद्रा [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) देखो 'दरिद्र'।

दरिद्राण [संज्ञा पु.] (सं.) निर्धनता। गरीबी।

दरिद्रायण [वि.] (सं.) देखो 'दरिद्र'।

दरिद्री [वि.] देखो 'दरिद्र'।

दरिया [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–नदी। २–समुद्र। सिंधु। (क्वचित्)।
दरियादिल–उदार।

दरियाई [वि.] (फ़ा.) १–नदी या दरिया-संबंधी २–नदी के पास या किनारे का। ३–समुद्र संबंधी। [संज्ञा स्त्री.] १–पतंग दूर ले जाकर हवा में ऊपर की ओर उछालने की क्रिया। २–एक प्रकार का पतला रेशमी वस्त्र।

दरियाई-घोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) गैंडे की तरह का एक जन्तु जो अफ्रीका की नदियों के तटवर्ती दलदल या झाड़ियों में पाया जाता है।

दरियाई-नारियल [संज्ञा पु.] (हिं.) अफ्रीका आदि के समुद्र के किनारे होने वाला एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र या कमंडल बनता है।

दरियादासी [संज्ञा पु.] (हिं.) दरियासाहब नामक एक व्यक्ति का चलाया हुआ निर्गुण सम्प्रदाय।

दरियादिल [वि.] (फ़ा.) [स्त्री. दरियादिली] उदार। दानी।

दरियादिली [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) उदारता।

दरियाफ्त [वि.] (फ़ा.) जिसके संबंध की बातें जान ली गई हों। ज्ञात। मालूम।
[संज्ञा पु.] (फ़ा.) पूछकर कुछ जानने की क्रिया या भाव।

दरियाबरामद [संज्ञा पु.] देखो 'दरियाबरार'।

दरियाबरार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकल जाती है।

दरियाबुर्द [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर ले गई हो।

दरियाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दरिया'।

दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गुफा। खोह। २–वह पहाड़ी नीचा स्थान जहां कोई नदी या नाला गिरता हो।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोटे सूतों का बुना हुआ एक प्रकार का बिछौना। शतरंजी।
[वि.] (हिं.) १–फाड़ने वाला। विदीर्ण करने वाला। २–डरने वाला। डरपोक।

दरीखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।

दरीचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) [स्त्री. दरीची] १–खिड़की। झरोखा। २–चोर दरवाजा। छोटा द्वार। ३–खिड़की के पास बैठने का स्थान।

दरीची [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–झरोखा। खिड़की। २–खिड़की के पास बैठने का स्थान।

दरीबा [संज्ञा पु.] (?) वह बाजार जिसमें पान बिकते हों।

दरीभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़।

दरीमुख [संज्ञा पु] (सं.) १–गुफा का मुंह। २–२–राम की सेना का एक बन्दर।

दरीवत् [वि.] (सं.) बहुत-सी गुफाओं वाला पर्वत।

दरेंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न दलने का छोटा यंत्र। चक्की।

दरेक [संज्ञा पु.] (हिं.) बकाइन का पेड़।

दरेग [संज्ञा पु.] (अ.) कमी। कसर।

दरेरना [क्रि. स.] (हिं.) १–रगड़ना। पीसना। २–रगड़ते हुए धक्का देना।

दरेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–धक्का। रगड़। २–बहाव का जोर। पानी का तोड़। तरखा। ३–मेंह का झाला।

दरेस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार का छपा हुआ फूलदार कपड़ा। छींट। २–पोशाक।
[वि.] (हि.) बना बनाया। तैयार।

दरेसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ऊबड़ खाबड़ भूमि को समतल या बराबर करना।

दरैया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दलने वाला। ३–घातक। विनाशक।

दरोग [संज्ञा पु.] (अ.) असत्य। झूठ।

दरोगहलफी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–न्यायालय आदि में सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना। २–झूठी गवाही देने का जुर्म।

दरोगा [संज्ञा पु.] देखो 'दारोगा'।

दरोदर [संज्ञा पु.] (सं.) पासे द्वारा खेला जाने वाला जुआ।

दर्कार [क्रि. वि.] देखो 'दरकार'।

दर्गाह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दरगाह'।

दर्ज [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दरज'। [वि.] (फ़ा.) कागज अथवा अपने स्थान पर लिखा या चढ़ा हुआ।

दर्जन [संज्ञा पु.] (हिं.) बारह का समूह। इकट्ठी बारह वस्तुएँ।

दर्जा [संज्ञा पु.] (अ.) १–ऊँचाई निचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान। श्रेणी। कोटि। वर्ग। २–पढ़ाई के क्रम से ऊँचा नीचा स्थान ४–वस्तु विभाग को ऊँचे नीचे क्रम से हों।
दर्जा उतारना–ऊँचे दर्जे में से नीचे दर्जे में कर देना। *दर्जा चढ़ाना*–नीचे दर्जे से ऊँचे दर्जे में जाना। *दर्जा चढ़ाना*–नीचे दर्जे में से ऊँचे दर्जे में करना।
[क्रि. वि.] (हिं.) गुणित। गुना।

दर्जिन [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) १–दर्जी जाति की स्त्री। २–कपड़े सीने का काम करने वाली स्त्री।

दर्जी [संज्ञा पु.] (फ़ा) १–कपड़ा सीने या कपड़ा सीने का व्यवसाय करने वाला। २–कपड़ा सीने वाली जाति का पुरुष।
दर्जी की सूई–हर काम का आदमी।

दर्द [संज्ञा पु.] (फ़ा) १–पीड़ा। व्यथा। २–दुःख। तकलीफ। ३–सहानुभूति। करुणा। दया। तर्स। रहम। ४–खो जाने या हाथ से निकल जाने का कष्ट।
दर्द आना–तकलीफ या पीड़ा अनुभव होना।
दर्द खाना–तरस खाना।

दर्दमंद [वि.] (फ़ा.) १–जिसे दर्द हो। पीड़ित। दुःखी। २–जिसे सहानुभति हो। दयावान।

दर्दी [वि.] (हिं.) देखो 'दर्दमंद।

दर्दुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–मेढ़क। २–बादल। ३–अभ्रक। ४–मलय पर्वत से लगा हुआ एक पर्वत। ५–उक्त पर्वत के पास का एक देश। ६–एक प्राचीन बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

दर्दुरक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दर्दुरक'।

दर्दुरच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मी बूटी।

दर्दुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंडिका। दुर्गा।

दर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १–घमंड। अहंकार। गर्व। अभिमान। २–उद्दंडता। अक्खड़पन। ३–अहंकार मिला हुआ क्रोध। मान। ४–आतंक।

देव। ४-कस्तूरी।

दर्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्प करने वाला व्यक्ति। २-कामदेव। मनोज।

दर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आइना। आरसी। मुख देखने का शीशा। मुकुट। २-चक्षु। आंख। ३-उद्दीपन। उत्तेजन। ४-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

दर्पद [वि.] (सं.) अभिमान उत्पन्न करने वाला। गर्वदायक।

दर्पन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दर्पण'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) कुश।

दर्पहर [वि.] (सं.) अभिमान दूर करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

दर्पारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) अहंकार या गर्व का आरम्भ।

दर्पित [वि.] (सं.) अहंकार से भरा हुआ। गर्वित।

दर्पी [वि.] (सं.) अहंकारी। घमंडी।

दर्ब [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्रव्य। धन। धातु। (सोना, चांदी) आदि।

दर्बान [संज्ञा पु.] देखो 'दरबान'।

दर्बार [संज्ञा पु.] देखो 'दरबार'।

दर्बारी [संज्ञा पु.] देखो 'दरबारी'

दर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कुश। दाभ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े के खुर या टाप में होने वाला एक प्रकार का रोग।

दर्भकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) राज जनक के भाई कुशध्वज का एक नाम।

[illegible] [संज्ञा पु.] घर के भीतर की कोठरी। गुप्त गृह।

दर्भपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कांस।

दर्भपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

दर्भमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुश की जड़।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) लवा नामक पक्षी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दुभट।

दर्भासन [संज्ञा पु.] (सं) कुश का बना हुआ आसन।

दर्भाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) गूंज।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

[illegible] [वि.] (सं.) विदारक। फाड़ने वाला।

दर्मियान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दरमियान'।

दर्मियानी [वि] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दरमियानी'।

दर्रा [संज्ञा पु.] (फा.) पहाड़ी रास्ता। घाटी। [संज्ञा पु.] (फा.) दो पहाड़ी के बीच का तंग या संकरा रास्ता। घाटी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोटा आटा। २-सड़क पर बिछाने की कंकरीली मिट्टी। ३-दरार। दरज। शिगाफ।

दर्राज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक लकड़ी का औजार जिससे लकड़ी सीधी करने का काम लिया जाता है।

दर्राना [क्रि. अ.] (हिं.) बेधड़क, बिना रुकावट या डर के चला जाना।

दर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिसाब करने वाला व्यक्ति। २-राक्षस। ३-पंजाब के उत्तर प्रदेश में रहने वाली एक प्राचीन जाति।

दर्वट [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल। दरबान।

दर्वरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-वायु। ३-एक प्रकार का बाजा।

दर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा उशीनर की एक पत्नी का नाम।

दर्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीपक में घी भरकर बत्ती जलाकर तैयार किया हुआ काजल। २-वनगोभी।

दर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-करछी। चमचा। डौवा। २-साँप का फन।

दर्वीकर [संज्ञा पु.] (सं.) फन वाला साँप।

दर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन। २-अमावस्या तिथि। ३-अमावस्या के दिन होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

दर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जो देखे। देखने वाला। दर्शन करने वाला। बताने वाला। ३-निरीक्षक। निगरानी रखने वाला।

दर्शत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-चन्द्रमा। [वि.] (सं.) देखने योग्य। दर्शनीय।

दर्शतश्री [संज्ञा पु.] (सं.) देखने योग्य सौन्दर्य।

दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नेत्रों के द्वारा होने वाला बोध या ज्ञान। साक्षात्कार। २-किसी देवता, देवमूर्ति अथवा बड़े से होने वाला साक्षात्कार। ३-भेंट। मुलाकात। ४-वह शास्त्र या विद्या जिससे पदार्थों के धर्म, कार्य, कारण, संबंध आदि का बोध हो। वह शास्त्र जिससे तत्वज्ञान हो। ५-नेत्र। आंख। ६-स्वप्न। ७-बुद्धि। ८-धर्म। ९-दर्पण। १०-वर्ण। रंग।

दर्शनप्रतिभू [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रतिभू या जामिन जो किसी को समय पर उपस्थित कर देने का भार अपने ऊपर ले। श्योरिटी-फॉर-एपीएरेन्स।

दर्शनशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र या विद्या जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत के नियामक धर्म और जीवन के अन्तिम लक्ष्य-आदि का निरूपण होता है। फिलॉसफी।

दर्शनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेलिन नामक बरसाती कीड़ा।

दर्शनीय [वि] (सं.)१-देखने योग्य। २-सुन्दर। मनोहर।

दर्शनहुँडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह हुँडी जिसे देखते ही उसमें लिखित धन का भुगतान करना पड़े।

दर्शनोज्ज्वला [संज्ञा स्त्री.] (सं) सफेद जायफल का पेड़।

दर्शनोपनषिद् [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक उपनिषद् का का नाम।

दर्शयामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) अमावस्या की रात।

दर्शयिता [वि.] (सं.) दर्शक। दिखलाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल।

दर्शविपद् [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

दर्शाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दरसाना'।

दर्शित [वि.] (सं.) दिखलाया हुआ। [संज्ञा पु.] वे पत्र, लेख्य या वस्तुएँ जो किसी पक्ष की ओर से प्रमाणस्वरूप न्यायालय में उपस्थित की जायँ। एग्ज़िबिट।

दर्शी [वि.] (सं.) १-देखने वाला। २-विचार करने वाला।

दल [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु के उन दो समखंडों में से एक जो परस्पर जुड़े हों, पर जरा-सा दबाव पड़ने से अलग हो जाय। जैसे-चने के दो दल। २-पौधों का पत्ता। पत्र। ३-तमालपत्र। ४-फूल की पंखड़ी। ५-समूह। झुंड। गिरोह। गुट्ट। किसी एक कार्य का उद्देश्य की सिद्ध के लिए बना हुआ लोगों का गुट। पार्टी। ६-सेना। फौज। ७-परत की तरह फैली हुई की सी लम्बी चीज की मोटाई। ८-कोप। म्यान। ९-धन। १०-जल में होने वाला तृण।

दलइलामा [संज्ञा पु.](हिं.) वह जो तिब्बत की राजधानी लासा के बाहर वाले मन्दिरों में वास करने वाले लोग जिन्हें बुद्धधर्म के अनुयायी बुद्धदेव का साक्षात अवतार मानते हैं।

दलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुदड़ी। २-राजगीरों का एक औजार। ३-दलकने की क्रिया या भाव। ४-आघात। ५-थरथराहट। धमक। ६-रह-रहकर होने वाली पीड़ा। टीस। चमक।

दलकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दलकने की क्रिया या भाव। २-आघात। ३-थरथराहट। धमक। ४-पीड़ा। टीस। चमक।

दलकना [क्रि. अ.] (हिं.) फटना। चिरना। २-थर्राना। काँपना। ३-चौंकना। उद्विग्न या विकल होना। [क्रि.स.] डराना। भय से कंपा देना।

दलकपाट [संज्ञा पु.] (सं.) फूल का वह कोश जिसके भीतर कली रहती है।

दलकोमल [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

दलकोश [संज्ञा पु] (सं.) कुंद का पौधा।

दलगंजन, दलगञ्जन [वि.] (सं.) सेना को मारने वाला। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का धान।

दलगंध, दलगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन।

दलघुसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की रोटी जिसमें पिसी हुई दाल नमक मसाले के साथ भरी रहती है।

दलथंभन, दलथम्भन [संज्ञा पु.] (हिं.) कमखाब बुनने वालों का एक बांस का बना औजार।

दलदल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-वह भूमि जो बहुत गहराई तक गीली और मुलायम हो। कीचड़। पंक। २-वह जमीन जिसपर चलने से पैर धँस जाता हो। *दलदल में फंसना*-१-कीचड़ में फंसना। २-ऐसी कठिनाई में फंसना जिससे निकलना कठिन हो। ३-अनिर्णीत रहना। खटाई में पड़ना।

दलदला [वि.] (हिं.) (स्त्री. दलदली) दलदल वाला। जिसमें दलदल हो।

दलदली [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) दलदल वाली।

दलदार [वि.] (हिं.) जिसका दल मोटा हो जिसकी तह या परत मोटी हो।

दलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दलने की क्रिया या भाव। २-पीसकर टुकड़े-टुकड़े करने की क्रिया। ३-विनाश। संहार। [वि.] संहार या नाश करने वाला।

दलना [क्रि. स.] (हिं.) १-चक्की आदि में पीस कर छोटे-छोटे टुकड़े करना। मोटा चूर्ण करना। २-रौंदना। कुचलना। ३-मसलना। मींडना। ४-नष्ट या ध्वस्त करना। ५-तोड़ना। झटके से खंडित करना।

दलनि+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दलने की क्रिया या ढंग।

दलनिर्मोक [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र का पेड़।

दलप [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंडली या समुदाय का नायक। दलपति। २-सोना। स्वर्ण।

दलपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुखिया। सरदार। २-सेनापति।

दलपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी। केवड़ा।

दलबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये लोगों का अपने अलग-अलग दल बनाना।

दलबल [संज्ञा पु] (सं.) १-फौज। लावलश्कर। २-संगी साथी, नौकर-चाकर और अनुयायी आदि।

दलबा [संज्ञा पु.] (हिं.) तीतरबाजों, बटेरबाजों आदि का वह निर्बल पक्षी जिसे वे अन्य पक्षियों से लड़ाकर और मार खिलाकर उन पक्षियों का साहस बढ़ाते हैं।

दल-बादल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भारी सेना। २-बहुत बड़ा शामियाना। २-भारी सेना *दल-बादल खड़ा होना*-बड़ा भारी शामियाना या खेमा गड़ना।

दलमलना [क्रि. स.] (हिं.) १-मसल या मीड़ डालना। २-रौंदना। कुचलना। ४-मार डालना।

दलमलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-मलना। २-कुचलना। ३-नष्ट करना।

दलवाद [संज्ञा पु.] (सं.) किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये दल या गुट्ट बनाने की प्रणाली या ढंग। *पार्टी-इज्म*।

दलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दलने का काम करवाना। मोटा-मोटा पिसवाना। २-रौंदवाना। मलवाना। ३-नष्ट कराना।

दलवाल ※+ [संज्ञा पु.] हिं.) सेनापति। फौज का सरदार।

दलवैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दलनेवाला।

दलसायसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद तुलसी का पौधा।

दलसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.). केमुआ। बंडा। कच्चू।

दलसूचि [संज्ञा पु.] (सं.) काँटा। वह पौधा जिसके पत्तों में काँटे हों।

दलस्थ [वि. सं] जिसमें दल हों। दलयुक्त।

दलस्नसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्ते की नस।

दलहन [संज्ञा पु.] हिं.) वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है। जैसे-चना, अरहर, मूंग आदि।

दलहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) दाल बेचने वाला।

दलहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) थाला। आलबाल।

दलहीन-फला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का खजूर।

दलाक्रांत, दलाक्रान्त [वि. सं.] जिसमें दल हों। दलस्थ।

दलाढक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंगली तिल। गेरू। ३-नागकेसर। ४-सिरिस। ५-कुन्द। ६-गजकर्णी।

दलाधिनायकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी दल य गुट्ट की सरदारी या अधिनायिकी। *पार्टी-डिक्टेटरशिप*।

दलान+ [संज्ञा पु.] देखो 'दालान'।

दलाना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'दलवाना'।

दलामल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दौने का पौधा। २-मरुवे का पौधा। ३-मैनफल का पेड़।

दलाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) लोनिया साग। अमलोनी।

दलारा [संज्ञा पु.] (देश.) जहाज पर का झूले का बिस्तरा।

दलाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे। मध्यस्थ। २-स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध स्थापित करने वाला व्यक्ति। कुटना। ३-जाटों की एक जाति।

दलाली [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-दलाल का काम। दलाल का पारिश्रमिक।

दलाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपत्ता।

दलि [संज्ञा पु.] (सं.) ढेला।

दलिक [संज्ञा पु.] (सं.) काठ। काष्ठ।

दलित [वि.] (सं.) [स्त्री. दलिता] १-मसला, रौंदा या कुचला हुआ। २-नष्ट किया हुआ।

दलितवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) समाज का वह वर्ग जो सबसे नीचा माना गया हो अथवा दुःखी हो और जिसे उच्चवर्ग के लोग उठने न देते हों। *डिप्रेस्ड-क्लास*।

दलिद्र※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दरिद्र'।

दलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटा या दरदरा पीसा हुआ अनाज।

दली [वि.] (हिं.) १-जिसमें दल अथवा मोटाई हो। पत्तेवाला।

दलीप+ [संज्ञा पु.] देखो 'दिलीप'।

दलीय [वि.] (सं.) दल या गुट्ट-सम्बन्धी।

दलील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-तर्क-युक्ति। २-बहस। वादविवाद।

दलेगंधि, दलेगन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तपर्ण वृक्ष।

दलेपंज, दलेपञ्ज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसकी उमर ढल गई हो। २-ढली हुई उमर का आदमी।

दलेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिपाहियों की वह कवायद या कठिन कार्य जो उन्हें नियम के दण्ड या सजा के रूप में करना पड़े।

दलैं मुंह बाओ। खाओ (महावतों की बोली) दलैं छत्र दलैं-पानी पीओ (महावतों की बोली)।

दलैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दलने या पीसने वाला। २-नाश करने वाला। मारने वाला।

दलोद्भव [वि.] (सं.) वह शहद जो पत्तों से उत्पन्न होती है।

दल्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतारण। धोखा। २-पाप। ३-चक्र।

दल्भि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-इन्द्र का वज्र।

दल्लाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दलाल'।

दल्लाला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कुटनी। दूती।

दल्लाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दलाली'।

दवँरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दँवरी'।

दवँगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वर्षा की झड़ी।

दव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन। जंगल। २-वन की अग्नि। वन में आप से आप लगने वाली अग्नि। दवारि। दावानल। ३-अग्नि। आग।

दवथु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाह। जलन। परिताप। दुःख।

दवदग्धक [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिस नामक घास।

दवदहन [संज्ञा पु.] (सं.) दावाग्नि। दावानल।

दवना* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाश। २-दौने का पौधा।

दवनापापड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पितपापड़ा।

दवना* [संज्ञा पु.] देखो 'दौना'। [क्रि. स.] (हिं.) जलाना।

दवनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फसल के सूखे डंठलों को बैलों द्वारा रौंदवाकर उसमें से दाने निकालने का काम। दंवरी।

दवरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दवारि'।

दवा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रोग दूर करने वाली वस्तु। औषध या औषधि। २-रोग दूर करने का उपाय। इलाज। चिकित्सा। ३-ठीक या दुरुस्त करने का उपाय। ४-अवरोध या प्रतिकार का उपाय। दवा को न मिलना-अप्राप्य या दुर्लभ होना। दवा देना-दवा पिलाना। +* (हिं.) १-दावानल। वन में लगने वाली आग। २-अग्नि। आग।

दवाई+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दावा'।

दवाखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) 'दवाखाना'।

दवाखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह स्थान जहाँ दवा बिकती है। औषधालय।

दवागि, दवागी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दवाग्नि। दावानल। वनाग्नि।

दवागिन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दवाग्नि'।

दवाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दावानल। वन में आप से आप लगने वाली आग।

दवात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह छोटा पात्र जिसमें लिखने की स्याही रहती है। मसि-पात्र।

दवानल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दावानल'।

दवामी [वि.] (अ.) जो सदा के लिए हो। स्थायी।

दवामीबंदोबस्त [संज्ञा पु.] (फा.) खेती की जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें कुछ दिन पहले सरकारी मालगुजारी सदा के लिए स्थिर करदी जाय।

दवारि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दावानल। वन में लगने वाली आग।

दवारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दवारि'।

दविष्ठ [वि.] (सं.) दूर देश का। दूरवर्ती।

दश [वि.] (सं.) दस।

दशकंठ, दशकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) (दस सिर या कंठ वाला) रावण।

दशकंठजहा, दशकण्ठजहा [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के संहारक, श्रीरामचन्द्र।

दशकंठजित्, दशकण्ठजित् [संज्ञा पु.] (सं.) श्री रामचन्द्र।

दशकंठारि, दशकण्ठारि [संज्ञा पु] (सं) श्री रामचन्द्र।

दशकंध, दशकन्ध [संज्ञा पु.] (सं) रावण।

दशकंधर, दशकन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दस वस्तुओं या वर्षों का समूह। २-सन् संवत् आदि में हरएक इकाई में दहाई तक के दस-दस वर्षों के समूह। डिकेड।

दशकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) द्विजों के गर्भाधान से लेकर विवाह तक दस संस्कार। तथा-गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकरण, निष्क्रामण, नाम करण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह।

दशकाम-व्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम से उत्पन्न दस प्रकार के व्यसन जो इस प्रकार हैं— मृगया, द्यूत, दिवानिद्रा, पर निन्दा, प्रमाद शक्ति, नृत्य, गीत, क्रीड़ा, वृत्त भ्रमण और मद्यपान।

दशकुलवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार दस वृत्त यथा-लिसोड़ा, करज, बेल, पीपल, नीम, कदंब, गूलर, बरगद, इमली और आँवला।

दशकोपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

दशक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार इन दस जन्तुओं का दूध-गाय, बकरी, ऊंटनी, भेड़, भैंस, घोड़ी, स्त्री, हथनी, हिरनी और गदही।

दशगाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के दस प्रधान अंग।

दशग्रामपति [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो राजा की ओर से दस ग्रामों का अधिपति या शासक बनाया जाता है।

दशग्रामिकग्रा [संज्ञा पु.] (सं.) दस गाँव का मालिक।

दशग्रामी [संज्ञा पु.] (सं.) दस गाँव का मालिक।

दशग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दशमूल।

दशतय [वि.] (सं.) दस संख्या वाला।

दशति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौ। शत।

दशदशी [वि.] (सं.) सौगुना।

दशदिक् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दसों दिशा यथा-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, अग्नि, नैऋत्य, वायु, ईशान, अधः और ऊर्ध्व।

दशदिक्पाल [संज्ञा पु.] (सं.) दसों दिशा के रक्षा करने वाले दस देवता। जैसे-पूर्व दिशा के इन्द्र, अग्निकोण के अग्नि, दक्षिण दिशा के यम, नैर्ऋत्यकोण के नैर्ऋत्य, पश्चिम दिशा के वरुण, वायुकोण के मरुत, उत्तरदिशा के कुबेर, ईशानकोण के ईश, ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधः दिशा के रक्षक अनन्त हैं।

दशद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के दस छिद्र-२ कान, २ आंख, २ नाक, १ मुख, १ गुद, १-लिंग, १ ब्रह्मांड।

दशधा [वि.] (सं.) दस प्रकार का। [क्रि. वि.] दस प्रकार।

दशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाँत। २-कवच। ३-शिखर।

दशनच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) ओष्ठ। ओंठ।

दशनपद [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत से कटा हुआ स्थान।

दशनबीज [संज्ञा पु.] (सं.) अनार।

दशनवास [संज्ञा पु.] (सं.) ओष्ठ। ओंठ।

दशनांग, दशनाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत से काटा हुआ अंग या स्थान।

दशनांशु [संज्ञा पु.] (सं.) दाँतों की चमक।

दशना [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दशन या दाँतों वाली।

दशनाढ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोनिया शाक।

दशनाम [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यासियों के दस भेद यथा-तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती, और पुरी।

दशनामी [संज्ञा पु.] (हिं.) संन्यासियों का दश नाम वर्ग, जो शंकराचार्य के शिष्यों से चालू है। [वि.] (हि.) दशानन-सम्बन्धी।

दशनावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाँतों की पंक्ति।

दशनोच्छिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाक या मुख से निकला हुआ श्वास। २-होंठों का चुम्बन।

दशप [संज्ञा पु.] देखो 'दशग्रामपति'।

दशपारमिताधर [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

दशपिंड, दशपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु के बाद दिया जाने वाला दसपिंड।

दशपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-केवटीमोथा। २-मालवे का एक प्राचीन विभाग जिसमें दस नगर थे (मेघदूत)।

दशपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) अपने से लेकर दस पीढ़ी।

दशपूर्वरथ [संज्ञा पु.] (सं.) दशरथ।

दशपेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

दशबल [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव। (बुद्ध को दस बल प्राप्त थे यथा-दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, बल, उपाय, प्रणिधि और ज्ञान)

दशबाहु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दस भुजा वाली, दुर्गा [वि.] (सं.) जिसके दस बाहु (भुजा) हों।

दशभुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

दशभूमिग [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

दशभूमीश [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

दशम [वि.] (सं.) दसवां।

दशमदशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य के रस निरूपण में वियोगी की वह अवस्था जिसमें वह प्राण त्याग देता है।

दशमभाव [संज्ञा पु.] (सं.) कुंडली में लग्न से दसवाँ घर। (फलित ज्योतिष)।

दशमलव [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणित में इकाई

से कम मान अथवा इकाई का कोई अंश सूचित करने वाले वे अंक (भिन्न) जिनको भाग देने वाला अंक (हर) १० अथवा उसका दस गुना, सौगुना, हजार गुना आदि (कोई अंक) हो। डेसिमल। २-सिक्के तौल आदि के मान स्थिर करने की वह प्रणाली जिसमें हर मान या तो दूसरे का दसवां भाग या दस गुना होता है। जैसे-यदि दस पाई का एक आना और दस आने का एक रुपया या दस मासे का एक तौला और दस तौले की एक छटांक मान लिया जाय तो यह दशमलव प्रणाली के अनुसार होगा। डेसमिल।

दशमहाविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वे दस देवमूर्त्तियां जिसकी उपासना शाक्त करते हैं। जैसे-काली, तारा, षोडसी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्न मस्ता, धूमावती, बगला, मातंगी और कमला। इनको सिद्धविद्या भी कहते हैं।

दशमांश [संज्ञा पु.] (सं.) दसवां हिस्सा या भाग।

दशमाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रदेश का प्राचीन नाम।

दशमालिक [संज्ञा पु.] (सं.) दशमाल नामक देश

दशमिकभग्नांश [संज्ञा पु.] (सं.) दशमलव।

दशमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चाँद्रमास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि। २-विमुक्तावस्था। ३-मरणावस्था।

दशमुख [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशमुखरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

दशमुखांतक, दशमुखान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) रामचन्द्र।

दशमूत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) इन दस प्राणियों का मूत्र जो वैद्यक में काम आता है। हाथी, भैंस, ऊंट, गाय, बकरा, मेढ़ा, घोड़ा, गदहा, मनुष्य और स्त्री।

दशमूल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में कहे हुए दस वनस्पतियों की जड़ जो इस प्रकार है। सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, बड़ी कटाई, गोखरू, बेल, पाठा, गंभारी, ननियारी और सोनापाठा है।

दशमौलि [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशयोगभंग, दशयोगभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष के अनुसार एक नक्षत्र वेध जिसमें विवाह आदि शुभ कर्म नहीं किये जाते।

दशरथ [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्या के एक प्राचीन राजा जिनके पुत्र श्रीरामचन्द्रजी थे।

दशरथसुत [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

दशरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दस रात्रियों में समाप्त होने वाला एक यज्ञ। २-दस रातें।

दशलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म के दस लक्षण यथा धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी. विद्या, सत्य और अक्रोध।

दशवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशवाजी [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

दशवार्षिक [वि.] (सं.) दस वर्ष में होने वाला। दस-साला।

दशवाहु [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

दशविधि [वि.] (सं.) दस तरह का। दस प्रकार का।

दशवीर [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ का नाम।

दशशिर [संज्ञा पु.] (हिं.) रावण।

दशशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण। २-चलाए हुए अस्त्रों को निष्फल करने का एक अस्त्र।

दशशीश* [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशस्यंदन, दशस्यन्दन* [संज्ञा पु.] (सं.) दशरथ नाम का राजा।

दशहरा [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। २-विजयादशमी।

दशांग, दशाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दस सुगंध के मेल से बनने वाला एक धूप जो पूजा में जलाया जाता है। वे दस द्रव्य यह हैं। शिलारस, गुग्गुल, चन्दन, जटामासी, लोबान, राल, खस, नख, भीमसैनी कपूर और कस्तूरी।

दशांगक्वाथ, दशाङ्गक्वाथ [संज्ञा पु.] (सं.) दस औषधियां जो काढ़े के काम आती हैं वे यह हैं-अडूसा, गुर्च, पितपापड़ा, चिरायता, नीम की छाल, जलभंग, हड़, बहेड़ा, आंवला और कुलथी।

दशांगुल [संज्ञा पु.] (सं.) खरबूजा। डंगरा।

दशांत, दशान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुढ़ापा। २-बत्ती का पिछला भाग।

दशा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-अवस्था। हालत। स्थिति का प्रकार। २-मनुष्य के जीवन की अवस्था जो दस मानी गई हैं-गर्भवास, जन्म, बाल्य, कौमार, पोगंड, यौवन, स्थाविर्य, जरा, प्राणरोध और नाश। ३-साहित्य के अनुसार विरही की ये दस अवस्थाएं होती हैं-अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण। ४-फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों के अपने-अपने भोगकाल की अवस्था। ५-दीपक की बत्ती। ६-चित्त। ७-कपड़े का छोर। वस्त्रांत।

दशाकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीपक। दीया। २-कपड़े का छोर या अन्त।

दशाकर्षी [संज्ञा पु.] (सं.) प्रदीप। दीपक। चिराग।

दशाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) पंक्ति नामक छंद।

दशाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष में दशा का स्वामी या अधिपतिग्रह। २-दस सैनिकों या सिपाहियों का अफसर (महाभारत)।

दशानन [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशानिक [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

दशापवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध आदि में दान दिए जाने वाले वस्त्र खंड।

दशामय [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्र।

दशारुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कैवर्त्तिका नामक लता जो मालवा में होती है, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं।

दशार्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विन्ध्य पर्वत के पूर्व दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश २-उक्त देश का निवासी।

दशार्णक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दशार्ण'।

दशार्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धसान नामक नदी जो कालपी के पास यमुना में आ मिली है।

दशार्द्ध, दशार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-दस का आधा पांच। दस बलों से युक्त बुद्धदेव।

दशार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोष्टुवंशीय धृष्ट नामक राजा का पुत्र। २-राजवृष्णि का पौत्र। वृष्णिवंशियों का अधिकृत प्रदेश।

दशावतार [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु के मुख्य दस अवतार जो मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन परशुराम, दशरथी-राम, बलराम, बुद्ध और कल्की हैं।

दशाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) (जिसके रथ में दस घोड़े हों।) चन्द्रमा।

दशाश्वमेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-काशी के अन्तर्गत एक तीर्थ। प्रयाग के अन्तर्गत त्रिवेणी के पास वह घाट या तीर्थ-स्थान जहां यात्री जल भरते हैं।

दशास्य [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

दशास्यजित् [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

दशाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-दस दिन। २-मृतक कृत्य का दसवां दिन।

दशेंधन, दशेन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रदीप। चिराग।

दशेर [संज्ञा पु.] (सं.) हिंसक जीव।

दशेरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्त्तमान मारवाड़ का प्राचीन नाम। २-मरुभूमि।

दशेश [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में दशा का अधिपति या स्वामी।

दष्ट [वि.] (सं.) दाँत से काटा हुआ।

दस [वि.] (हि.) १-पाँच का दूना। २-कई।

दसखत [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दस्तखत'।

दसठौन [संज्ञा पु] (हि.) बच्चा जनने के समय की एक रीति जिसके अनुसार प्रसूता स्त्री दसवें दिन नहाकर सौरी के घर से अपने घर में जाती है।

दसन* [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'दशन'।

दसना [क्रि. अ.] (हिं.) बिछाना। बिछाया जाना

[illegible] । [क्रि स] १-बिछाना । विस्तार [illegible] । २-देखो 'डराना'

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं) बिछौना । विस्तर ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ी [illegible] जो बरसात के दिनों में चलाई जाती है ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) रावण ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'दशमी' ।

[illegible] [संज्ञा पु] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत

[illegible] [संज्ञा पु] देखो 'दशार्ण' ।

[illegible] [वि] (हिं.) नौ के बाद वाला ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी की मृत्यु के दसवें दिन होने वाला कृत्य ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दशांग' ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'दशा' ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्रवाल वैश्यों के दो [illegible] भेदों में से एक ।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) बिछाना ।

[illegible] [संज्ञा. पु.] (हिं.) देखो 'दशार्ण' ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पानी के किनारे [illegible] वाली एक चिड़िया ।

[illegible] स्त्री] (हिं.) १-कपड़े के छोर पर का [illegible] २-कपड़े का पल्ला । बैलगाड़ी की [illegible] । ४-चमड़ा छीलने का एक औज़ार । [illegible] । +५-पता । निशान ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) तेंदू का पेड़ ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-गदहा । गर्दभ । २-[illegible] ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) दशमी तिथि ।

[illegible] [वि.] (हिं.) दस ऊपर । दस अधिक । [illegible]-दसोतरा सौ अर्थात् एक सौ दस । [संज्ञा पु.] (हिं.) सौ में दस । सैकड़ा पीछे दस का [illegible] ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) भाटों या चारणों की [illegible] जाति जो अपने को ब्राह्मण बताते हैं । [illegible] ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) हस्तक्षेप ।दखल ।

[illegible] [संज्ञा पु.](फा.)१-हाथ । २-पतला पाखाना [illegible] ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बुलाने के निमित्त हाथ से कुंडा खटखटाने की क्रिया । २-मालगुजारी वसूल करने या माल ले जाने का परवाना । ३-कर । ४-महसूल । दस्तक देना-बुलाने के वास्ते किवाड़ खटखटाना । दस्तक सिपाही-वह सिपाही या कर्मचारी जो किसी से मालगुजारी आदि वसूल करने या किसी को पकड़ने के लिए तैनात हो ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (फा.) कारीगर । शिल्पी ।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (फा) हाथ की कारीगरी । [illegible] ।

[illegible] [संज्ञा पु] (फा.) अपने हाथ से लिखा हुआ नाम । हस्ताक्षर । *दस्तखत लेना*-हस्ताक्षर कराना ।

दस्तखती [वि.] (फा.) दस्तखत किया हुआ ।

दस्तगीर [संज्ञा पु.] (फा.) हाथ पकड़ने वाला । सहारा देने वाला सहायक ।

दस्तपनाह [संज्ञा पु.] (फा.) चिमटा ।

दस्तबरदार [वि.] (फा.) जिसने किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या स्वत्व छोड़ दिया हो

दस्तबरदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) त्याग । २-त्यागपत्र ।

दस्तयाब [वि.] (फा.) प्राप्त । हस्तगत ।

दस्तरखान [संज्ञा पु.] (फा.) चौकी पर बिछाई हुई वह चादर जिस पर थाली रख कर मुसलमान लोग भोजन करते हैं ।

दस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) १-औज़ार, हथियार आदि का वह अंग जो हाथ में पकड़ा जाता है । मूठ । बेंत । २-सिपाहियों का छोटा दल । गारद । ३-कागज के चौबीस या पच्चीस तावों की गड्डी । ४-सोंटा । डंडा । गदका । ५-किसी वस्तु का उतना ही गड्डा या पूला जितना हाथ में आ सके । [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बगला । हरगिला । [संज्ञा पु.] देखो जस्ता ।

दस्ताना [संज्ञा पु.] (फा.) १-हाथ की अंगुलियों या हथेली में पहनने का मोजा । २-एक प्रकार की सीधी तलवार ।

दस्तावर [वि.] (फा.) जिसके खाने अथवा पीने से दस्त आवे । दस्त लाने वाला । विरेचक ।

दस्तावेज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) व्यवहार सम्बन्धी लेख । वह पत्र जिसे लिखकर किसी ने कोई प्रतिज्ञा की हो, किसी प्रकार का ऋण या देना स्वीकार किया हो या द्रव्य संपत्ति आदि का लेन-देन किया हो । वह कागज जिसमें दो या कई आदमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करने वालों के हस्ताक्षर हों । डॉकूमैंट ।

दस्तावेजी [वि,] (फा.] दस्तावेज सम्बन्धी । दस्तावेज का ।

दस्ती [वि.] (फा.) १-हाथ में रहने वाला । किसी व्यक्ति के हाथ आने अथवा जाने वाला । [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-हाथ में लेकर चलने की बत्ती । मशाल । २-छोटी मूंठ । ३-छोटा कलमदान । ४-कुश्ती का एक पेंच । ५-वह सौगात जिसे विजयदशमी के दिन राजा लोग अपके हाथ से अधिकारियों और कर्मचारियों को बांटते हैं ।

दस्तूर [संज्ञा पु.](फा.) १-चाल । रिवाज । रीति । २-नियम । विधि । कायदा । ३-पारसियों का पुरोहित ।

दस्तूरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह धन जो मालिक का सौदा खरीदने पर नौकर को दुकानदार की ओर से पुरस्कार के रूप में मिले ।

दस्पना [संज्ञा पु.] (फा.) चिमटा ।

दस्म [वि.] (सं.) १-आक्षेप करने वाला । २-देखने योग्य । [संज्ञा पु.] (सं.) १-यजमान । २-अग्नि । ३-चोर । ४-दुष्ट व्यक्ति ।

दस्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-डाकू । चोर । २-असुर राक्षस । ३-अनार्य । म्लेच्छ । ४-दास । गुलाम ।

दस्युजूत [संज्ञा पु.] (सं.) डकैती करने वाला ।

दस्युता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लुटेरापन । डकैती २-राक्षसपन । दुष्टता । क्रूर स्वभाव ।

दस्युभय [संज्ञा पु.] (सं.) चोर अथवा डाकू का भय या डर ।

दस्युवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-डकैती । लुटेरापन । २-चोरी ।

दस्युहन् [संज्ञा पु.] (सं.) (असुरों को मारने वाला) इन्द्र ।

दस्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिशिर । २-गदहा । ३-अश्विनी कुमार । ४-दो का समूह । जोड़ा । [वि.] (सं.) १-दोहरा । २-हिंसक ।

दस्रदेवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्विनी नक्षत्र ।

दह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नदी का वह स्थान जहाँ आस पास की अपेक्षा पानी बहुत अधिक गहरा हो । पाला । २-कुंड । हौज । +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्वाला । लपट । [वि] (फा.) दस ।

दहक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग दहकने की क्रिया । धधक । दाह । ज्वाला । लपट । ३-शर्म । हया । लज्जा ।

दहकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दहकने की क्रिया या भाव ।

दहकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लपट फैंकते हुए जलना धधकना । २-तपना ।

दहकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-अच्छी प्रकार से आग सुलगाना । धधकाना । २-क्रोध दिलाना । भड़काना ।

दहग्गी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी । ताप ।

दहड़दहड़ [क्रि. वि.] (हिं.) लपटें फैंकते हुए । धायँ-धायँ ।

दहदल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दलदल ।

दहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलने की क्रिया या भाव । दाह । आग । अग्नि । ३-कृत्तिका नक्षत्र । ४-तीन की संख्या । ५-भिलावाँ । भल्लातक । ६-चित्रक । चीता । ७-दुष्ट या क्रोधी मनुष्य । ८-कपोत । कबूतर । ९-ज्योतिष में एक योग । १०-ज्योतिष में एक वीथी जो पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्रों में शुक्र के होने पर होती है ।

दहनकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) धूम । धुवाँ ।

दहनबकुल [संज्ञा पु.] (सं) अग्नि । आग ।

दहनर्क्ष [संज्ञा पु.] (सं) कृत्तिका नक्षत्र ।

दहनशील [वि] (सं.) जलने वाला ।

दहनसारथि [संज्ञा पु] (सं.) वायु । हवा ।

दहना [क्रि. अ.] (हिं) १-जलना । बलना । भस्म होना । २-क्रोध से संतप्त होना । कुढ़ना । ३-धँसना । नीचे बैठना । [क्रि. स.] १-जलाना । भस्म करना । २-संतप्त या दुःखी करना । कष्ट पहुँचाना । ३-क्रोध दिलाना । कुढ़ाना । [वि.] देखो 'दहिना' ।

दहनाराति [संज्ञा पु.] (सं.) जल । पानी ।

दहनि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जलने की क्रिया । जलन ।

दहनीय [वि.] (सं.) जलने या जलाये जाने योग्य

दहनोपल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकान्त मणि । सूर्यमुखी ।

दहनोल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आग की चिनगारी

दहपट [वि.] (हिं.) १-गिराकर जमीन के बराबर किया हुआ । ढाया हुआ । ध्वस्त । चौपट । नष्ट । २-रौंदा हुआ कुचला हुआ । दलित ।

दहपटना [क्रि. स.] (हिं.) १-ढाना । ध्वस्त करना । २-रौंदना । कुचलना । दलित करना ।

दहबासी [संज्ञा पु.] (फा.) दस सिपाहियों का सरदार ।

दहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा चूहा । चुहिया । २-छछूंदर । ३-भ्राता । भाई । ४-बालक । ५-नरक । ६-वरुण । [वि.] १-स्वल्प । छोटा । सूक्ष्म । दुर्बोध । [संज्ञा पु.] (हि.) १-नदी में का गहरा स्थान । दह । २-कुंड । हौज गड्ढा । पाल ।

दहर-दहर [क्रि. वि.] (हिं.) लपट फेंकते हुए । धधकते हुए । धायँ-धायँ ।

दहरसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धधर्म का एक ग्रन्थ

दहरना* [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'दहलाना' । [क्रि. स.] देखो 'दहलना' ।

दहराकाश [संज्ञा पु.] (सं.) चिदाकाश । ईश्वर ।

दहरौरा* [संज्ञा पु.] (हि.) १-दही में पड़ा हुआ बड़ा । २-एक प्रकार का गुलगुला ।

दहल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डर या भय से एक से एकबारगी कांप उठने की क्रिया ।

दहलना [क्रि. अ.] (हिं.) डरकर थम जाना । भय से एकबारगी काँप उठना । डर से चौंकना या स्तम्भित होना । *जी का कलेजा दहलना*-डर के मारे हृदय कांपना ।

दहला [संज्ञा पु.] (फा.) दस बूटियों या चिह्नों वाला ताश का पत्ता । [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ का थाला या थावला ।

दहलाना [क्रि. स.] (हि.) डर से काँपना । भय से चौंकाना या भयभीत करना ।

दहलीज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) द्वार की चौखट में नीचे वाली लकड़ी या पत्थर देहली । *दहलीज का कुत्ता*-पिछलग्गू । *दहलीज न झांकना*-दरवाजे पर न आना । *दहलीज की मट्टी ले डालना*-बार-बार द्वार आना ।

दहशत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) डर । भय । खौफ ।

दहसनी [संज्ञा स्त्री] (फा.) दस साल के खाते बही ।

दहा [संज्ञा पु.] (फा.) १-मुहर्रम का महीना । २-मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय । ३-ताजिया ।

दहाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दस का मान या भाव । २-अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान जिसमें दस गुणित का बोध होता है यथा ४० में दहाई के स्थान पर ४ है जिसका मतलब है कि चार गुना दस ।

दहाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी भयंकर जन्तु शेर आदि) का घोर शब्द । गरज । चिल्लाकर रोने की आवाज । आर्त्तनाद । *दहाड़ मारना या दहाड़ मारकर रोना*-जोर से चिल्ला-चिल्ला कर रोना ।

दहाड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी भयंकर जन्तु का घोर शब्द करना । गरजना । २-ज़ोर से डराने वाली आवाज में बोलना । ३-चिल्ला-चिल्ला कर रोना ।

दहाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-चौड़ा मुंह । द्वार । २-मशक का मुंह । ३-वह स्थान जहां एक नदी दूसरी में या समुद्र में गिरती है । मुहाना ४-मोरी । नाली । ५-लगाम ।

दहार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रान्त । प्रदेश । २-आस पास का प्रदेश ।

दहिंगल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया जिसके पैरों में सफेद और काली लकीरें होती हैं ।

दहिजार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दाढ़ीजार' ।

दहिना [वि.] (हिं.) [स्त्रीदाहिनी] देखो 'दाहिना'

दहिनावर्त्त [वि.] (हिं.) देखो 'दक्षिणावर्त्त' ।

दहिने [क्रि. वि.] (हिं.) दाहिनी ओर को । यौ० *दहिने होना*-अनुकूल होना । *दहिने-बाएँ*-इधर-उधर ।

दहियक [संज्ञा पु.] (हिं.) दशमांश । दशवां हिस्सा ।

दहियल [संज्ञा पु.] देखो 'दहला' ।

दही [संज्ञा पु.] (हिं.) खटाई के योग से जमाया हुआ दूध । *दही का तोड़*-दही का पानी । दही-दही-दहिंगल नामक चिड़िया । *दही-दही करना*-किसी वस्तु को मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना ।

दहुँ+ (अव्य] (हिं.) १-अथवा । या । किंवा । २-स्यात् । कदाचित् ।

दहेंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) दही का घड़ा ।

दहेंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दही जमाने की मिट्टी की हाँड़ी या बरतन ।

दहेज [संज्ञा पु.] (अ) वह धन, वस्त्र और गहने आदि जो विवाह में कन्यापक्ष की ओर से वर पक्ष या लड़कों वालों को मिलते हैं ।

दहेला [वि.] (हि.) [स्त्री. दहेली] १-जला हु दग्ध । २-दुःखी । संतप्त । ३-भीगा हु गीला ।

दहोतरसौ [संज्ञा पु.] (हिं) एक-सौ-दस ।

दह्य [वि.] (सं.) जल सकने वाला । जलने यो कंबसचिबुल ।

दह्यमान [वि.] (सं.) जो जल रहा हो ।

दह्यो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दही' ।

दह्र [संज्ञा पु.] (सं.) दावानल । दावा ।

दह्राग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) जठराग्नि ।

दाँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) दफा । बार । बारी । [सं पु.] (फा.) ज्ञाता । जानने वाला ।

दाँई [वि.] (हिं) [स्त्री. प्र.] देखो 'दाँई' । [स्त्री.] (हिं) देखो 'दाइँ' ।

दाँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं) दहाड़ । गरज ।

दाँकना [क्रि. अ.] (हिं.) गरजना । दहाड़ना ।

दाँग [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-छः रत्ती का तोला । दिशा । तरफ । ओर । ३-छठा भाग । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नगाड़ा । डंका । २-टीला । छोटी पहाड़ी । ३-पहाड़ी की चोटी

दाँगर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डाँगर' ।

दाँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लकड़ी जो जु की कंघी में लगी रहती है ।

दाँज+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समता । बरा तुलना ।

दाँड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-दंड देना । सजा दे २-जुरमाना करना ।

दांडाजिनिक, दाण्डाजिनिक [संज्ञा पु.] साधु के वेष में लोगों को धोखा देने वा व्यक्ति ।

दाँड़ामेंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डांड़ामे

दांडिक, दाण्डिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो या सजा देने के लिए नियुक्त हो ।

दाँड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'डाँड़ी' । [स्त्री.] (हिं.) देखो 'डाँड़ी' ।

दाँत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुख में की वह हड्डी जो आहार चबाने के काम में दंत । दांत तीन प्रकार के होते हैं- राज दंत वर्ग, कुकरदंत या शूलदंत और नुकीले होते हैं, चौभड़ जिनका चौड़ा और चौकोर होता है । २- आकार की निकली हुई वस्तु । *दाँत का चौका*-सामने के चार दाँतों की *दाँत उखाड़ना*-१-मसूड़े से दांत २-मुँह तोड़ना । ३-कठिन दंड देना काटी रोटी-अत्यन्त घनिष्ट मित्रता काढ़ना-देखो 'दांत निकालना' । किटाना या किच किचाना-१-दांत २-अत्यंत क्रोध से दांत पीसना । किराना-१-रेत कंकड़ी आदि के किसकिसाना । २-खाली दांत

[illegible] होना–हार मानना। हैरान हो जाना। दाँत कुरेदने को तिनका न रहना–सब कुछ चला जाना। दाँत खट्टे करना–१–लड़ाई में परास्त करना। २–खूब हैरान करना। दाँत खट्टे होना–१–परास्त होना। हार जाना। २–[illegible] होना। दाँत गड़ना–देखो 'दांत लगना'। दाँत घिसना–क्रोध से दांत पीसना। दाँत जमना–दांत निकलना। दाँत झाड़ देना–दांत तोड़ डालना। २–कठिन दंड देना। दाँत तले उँगली दबाना–१–दंग या चकित होना। २–(इस) इशारे से मना करना। ३–दुःख प्रकट करना। दाँत तालु में जमना–बुरे दिन या शामत आना। दाँत तोड़ना–१–हैरान करना। २–कठोर दंड देना। ३–परास्त करना। दाँत दिखाना–१–हँसना। २–डराना। घुड़कना। ३–अपना बड़प्पन दिखाना। दाँत देखना–घोड़े बैल आदि की उमर अंदाजा करने के लिए दांत गिनना। दाँतों धरती पकड़कर–अत्यन्त कठिनता और कष्ट से। दाँत न लगाना–दांत से न कुचलना। दाँत निकालना–१–दांत उखाड़ना। २–ओठों को कुछ हटाकर दांत निकालना। ३–व्यर्थ हँसना। ४–दीनता दिखाना। गिड़गिड़ाना। ५–टें बोलना। ६–फट जाना। फटना। दाँत निकोसना, निपोरना–१–दांत निकालना। दाँत पर न रखा जाना–अत्यन्त खट्टा होना। २–दांत में पीड़ा के कारण न चबाया जाना। दाँत पर मैल न होना–अत्यन्त निर्धन होना। दाँतों पर रखना–चखना। मुंह में डालना। दाँत पीसना–अत्यन्त क्रोध से दांत पर दांत रखकर हिलना। दाँत बंधवाना–हिलते दांत तार से कसवाना। दाँत बजना–सरदी के कारण दांत हिलने से खट-खट शब्द होना। सरदी लगना। दाँत बनवाना–मसूड़ों में बनावटी दांत लगवाना। दाँत बैठ जाना–नीचे-ऊपर के जबड़ों का सट जाना। दाँत कसमसाना–दांत पीसना। दाँत रखना–१–लेने की चाह रखना। २–वैर लेने का विचार रखना। दाँत रहना–प्राप्ति की इच्छा। दाँत लगना–१–दांत चुभने से घाव होना। २–लेने की गहरी चाह होना। दाँत लगाना–१–दांत धंसना या चुभना। २–प्राप्ति के प्रयत्न में रहना। दाँत से दाँत बजाना–कांपने में दांत पर दांत पड़ना। दाँत होना–१–प्राप्ति की इच्छा होना। २–क्रोध द्वेष आदि भाव होना। दाँतों उँगली काटना–देखो 'दांत तले उंगली दबाना'। दाँतों चढ़ना–१–बुरी नजर डलना। २–पीछे पड़ा रहना। ३–आक्षेप करते रहना। दाँतों पर होना–दांत निकलने की अवस्था होना। दाँतों में जीभ-का होना–शत्रुओं से घिरा रहना। दाँतों में तिनका लेना–गिड़गिड़ाना। हा-हा करना। दाँनों में पसीना आना–बहुत मेहनत पड़ना। दाँतों से उठाना–बड़ी कंजूसी से जोड़ना। दाँतों से हाथ काटना–१–गुस्सा उतारना। २–बहुत पछताना।

दांत, दान्त [वि.] (सं) १–जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। वशीभूत। २–जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो। ३–जो दांत का बना हो। ४–दाँत संबंधी। [संज्ञा पु.] (सं.) १–मैनफल। २–पहाड़ पर की बावली। ३–विदर्भ के एक राजा।

दाँतघुंघुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पोस्त के दाने की घुंघनी।

दाँतना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–दांत वाला होना। जवान होना (पशु)। २–हथियार की धार कुंठित होना।

दाँतली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डाट। काग।

दाँता [संज्ञा पु.] (हिं.) दांत के आकार का कंगूरा। रवा। दंदाना। *दाँता पड़ना*–किसी हथियार की धार में गुठले होने के कारण उभार तथा गड्ढे होना।

दाँताकिटकिट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–रोज-रोज का लड़ाई झगड़ा और कहा-सुनी। २–गाली-गलौज।

दाँताकिलकिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'दाँता-किटकिट'।

दांति, दान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–इन्द्रिय-निग्रह। इन्द्रियों का दमन। २–आधीनता। वश्यता। ३–विनय। नम्रता।

दाँतिया [संज्ञा पु.] (?) रेह का नमक।

दाँती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हँसिया जिससे घास या फसल काटते हैं। २–घाट पर गड़ा हुआ वह बड़ा खूंटा जिससे नाव बाँधी जाती है। ३–भिड़ की जाति का एक कीड़ा। काली भिड़। ४–दांतों की पंक्ति। दंतावलि। बत्तीसी। ५–दो पहाड़ों की संकरी या तंग जगह। दर्रा। *दाँती बैठना या लगना*–जबड़ों का परस्पर सट जाना।

दाना [क्रि स.] (हिं.) पकी हुई फसल के डंठलों में से दाना अलगाने के लिए बैलों से रौंदवाना।

दांपत्य, दाम्पत्य [[वि.] (सं.) दंपति या पति-पत्नी से सम्बन्ध रखने वाला। [संज्ञा पु.] १–स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार। दंपती से सम्बन्ध रखने वाले अग्निहोत्र आदि कर्म।

दांभिक [वि.] (सं.) १–पाखंडी। धोखेबाज। २–अहंकारी। घमंडी। [संज्ञा पु] वक। बगला।

दाँयँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दँवरी'।

दाँयाँ [वि.] (हिं.) देखो 'दायाँ'।

दाँवँ [संज्ञा पु.] देखो 'दांव'।

दाँव [संज्ञा पु.] (हि.) १–बार। दफा। मरतबा। २–कोई काम करने या खेल खेलने का वह अवसर या पारी जो सब खिलाड़ियों को बारी-बारी से मिलती है। पारी। ३–उपयुक्त अवसर। मौका। ४–कुश्ती में विपक्षी को हराने अथवा दबाने के लिये काम में लाई वाली युक्ति। चाल। पेंच। ५–पांसे, जुए की कौड़ियों का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो। ६–वह धन जो ऐसे समय के लिए खिलाड़ी सामने रखते हैं। ७–स्थान। ठौर। जगह। ८–कार्य साधन की युक्ति। चाल। *दाँव करना*–घात में लगना। मौका ताकना। *दाँव खेलना*–धोखा देना। चाल चलना। *दाँव चलना*–१–शतरंज की गोटी या ताश के पत्ते आदि रखना। २–चाल चलना। *दाँवचूकना*–मौका खोना। *दाँव ताकना*–अवसर या मौका ढूँढ़ना। *दाँव देना*–१–खेल में हारने पर नियत दंड देना। २–धोखा देना। चाल चलना। *दाँव पर चढ़ना*–१–वश में होना। अनुकूल झुकाव होना। *दाँव पर चढ़ाना*–कार्य साधन के अनुकूल करना। मतलब के मुआफिक करना। *दाँव पर रखना*–बाजी पर लगाना *दाँव पर लाना*–कार्य साधन के अनुकूल या मतलब के मुवाफिक करना। *दाँव फेंकना*–जूए की कौड़ी आदि डालना। *दाँव में आना*–कार्य साधन के अनुकूल करना। *दाँव लगना*–अनुकूल अवसर मिलना। *दाँव लगाना*–१–बाजी पर लगाना। २–अवसर या मौका ढूँढ़ना। *दाँव लेना*–१–खेल में हारने वाले से नियत दंड लेना। २–बदला लेना।

दाँवनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दामिनी नामक गहना।

दाँवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी। रज्जु। डोरी।

दा [संज्ञा पु.] (हिं.) सितार का एक बोल।

दाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दांव'।

दाइज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दायजा'।

दाइजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दायजा'।

दाईं [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) दाहिनी। [संज्ञा स्त्री.] दफा। बारी।

दाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने वाली। २–बच्चे की देख-भाल रखने और खेलाने वाली दासी ३–बच्चा जनाने में सहायता देने वाली स्त्री। ४–दासी। मजदूरनी। ५–पिता की माता। दादी। ६–बूढ़ी स्त्री। *दाई से पेट छुपाना*–जानकार से कोई बात छिपाना। * [वि.] (हिं) देखो 'दायी'।

दाउँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दाँव'।

दाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बड़ा भाई। २–बलदेव। श्रीकृष्ण के बड़े भाई। बलराम।

दाऊदखानी [संज्ञा पु.] (फा.) १–एक प्रकार का चावल। २–उत्तम प्रकार का सफेद गेहूँ।

दाऊदिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का गेहूँ २–गुलदावदी फूल। ३–एक प्रकार की आतिशबाजी। ४–एक प्रकार का कवच।

दाक [संज्ञा पु.] (सं.) दाता। यजमान।

दाक्षायण [वि.] (सं.) १–दक्ष के उत्पन्न। २–दक्ष के गोत्र का ३–दक्ष का। दक्ष सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] १–सोना। स्वर्ण। २–आभूषण

आदि सुनहरी चीजें। ३-स्वर्ण-मुद्रा। अशरफी। मोहर। ४-दक्ष द्वारा किया एक यज्ञ।

दाक्षायणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-दक्ष की कन्या॥ २-अश्विनी आदि नक्षत्र। ३-रोहिणी नक्षत्र ४-दंती वृक्ष। ५-दुर्गा। ६-कश्यप की पत्नी। [वि.] सोने का। सुवर्णयुक्त।

दाक्षायणीपतिरमण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

दाक्षायण्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दाक्षि [संज्ञा पु.] (सं.) दक्ष की संतान।

दाक्षिकंथा, दाक्षिकन्था [संज्ञा स्त्री] (सं.) वाह्लीक देश।

दाक्षिण [वि.] (सं.) १-दक्षिण-सम्बंधी। २-दक्षिणा-संबंधी। [संज्ञा पु.] एक होम का नाम।

दाक्षिणिक [वि.] (सं.) चन्द्रलोकगामी।

दाक्षिणशाल [संज्ञा पु.] (सं.) वह मकान जिस का द्वार दक्षिण की ओर हो।

दाक्षिणात्य [वि] (सं.) १-जो दक्षिण में उत्पन्न हो। २-दक्षिणदेश-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] भारत का विंध्यपर्वत के दक्षिण का देश।

दाक्षिण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण (अनुकूल, कुशल, प्रसन्न आदि) होने का भाव। २-दूसरे को अनुकूल अथवा प्रसन्न करने की शक्ति। ३-कौशल। दक्षता। ४-साहित्य में नाटक का एक अंग। [वि.] १-दक्षिण का। दक्षिण-सम्बन्धी। २-दक्षिणा-सम्बन्धी।

दाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्ष की कन्या। २-पाणिनि की माता का नाम।

दाक्षीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिनि नामक ऋषि।

दाक्षेय [संज्ञा पु.] (सं) पाणिनिऋषि।

दाक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षता। निपुणता। पटुता

दाख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-द्राक्षा। अंगूर। २-मुनक्का। ३-किशमिश।

दाखिल [वि.] (फा.) १-घुसा अथवा पैठा हुआ। प्रविष्ट। दिया हुआ। जमा किया हुआ। ३-पहुँचा या आया हुआ।

दाखिलखारिज [संज्ञा प.] (फा.) सरकारी कागज पर से किसी संपत्ति के अधिकारी का नाम काटकर उसके उत्तराधिकारी या किसी अन्य अधिकारी का नाम लिखा जाना।

दाखिलदफतर [वि.] (फा.) बिना विचार के दफतर में डाल रखा हुआ (कागज)।

दाखिला [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्रवेश। पैठ। २-किसी संस्था, कार्यालय आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य। ३-किसी वस्तु के दाखिल या जमा करने का कागज।

दाखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दाक्षी'।

दाग [संज्ञा पु] (हिं) १-जलाने का काम। दाह। २-मृतक का दाह कर्म। मुर्दा जलाने की क्रिया। ३-डाह। जलन। ४-जले होने का चिह्न। *दाग देना*-मृतक का दाहकर्म।

दाग़ [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसी वस्तु के तल पर रंग का वह भेद जो थोड़े स्थान पर दिखाई देता है। धब्बा। २-निशान। चिह्न। अंक। ३-फलों आदि पर पड़ा हुआ सड़ने या दबने का चिह्न। ४-ऐब। दोष। कलंक। ५-जलने का चिह्न। *सफेद दाग*-एक कोढ़ विशेष जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। धब्बा।

दागदार [वि.] (फा.) १-जिस पर या जिसमें दाग लगा हो। २-धब्बेदार।

दागना [क्रि. स.] (हिं.) १-जलाना। दग्ध करना २-तपे हुए लोहे, तेजाब या दवा आदि से किसी का अंग इतना जलाना कि उस पर दाग या धब्बा पड़ जाय। ३-तोप, बन्दूक आदि का छोड़ना। रंग आदि से चिह्न अथवा धब्बा लगाना। अंकित करना।

दागबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि पर फावड़े, कुदाल आदि से साधारण खुदाई करके बनाये हुये चिह्न जो सड़क बनाने, आदि के लिए एक सीध में डाले जाते हैं।

दागी [वि.] (फा.) १-जिस पर चिह्न या दाग लगा हो। २-जिस पर सड़ने या दबने का दाग हो। ३-कलंकित। दोषयुक्त। लांछित। ४-दंडित। जिसको सजा मिल चुकी हो।

दाघ [संज्ञा पु.] (सं.) गरमी। ताप। दाह। जलन

दाज+ [संज्ञा पु.] (?) १-अंधेरी रात। २-अंधेरा

दाजन+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दाझन'।

दाजना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-जलना। २-डाह या ईर्षा करना। [क्रि. स.] (हिं.) १-जलाना। २-बहुत कष्ट देना।

दाझन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जलन।

दाझना* [क्रि. अ.] (हिं.) जलाना। संतप्त होना

दाटना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डाँटना'।

दाड़क+ [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाढ़। डाढ़। २-दांत।

दाड़व [संज्ञा पु.] (?) भविष्य ब्रह्मखंड के अनुसार काशी से दो योजन पश्चिम में एक ग्राम जिसमें कल्कि भगवान दुष्ट, म्लेच्छों और अधर्मियों का नाश करके शान्ति से निवास करेंगे।

दाड़स [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सांप।

दाड़िम [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनार। २-इलायची *दाड़िम प्रिय*-तोता। सुग्गा।

दाड़िमपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) रोहितक वृक्ष।

दाड़िमपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोहितक वृक्ष। २-अनार का फूल।

दाड़िमप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) तोता। सुग्गा।

दाड़िमभक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) शुक। तोता। सुग्गा

दाड़िमाष्टक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक चूर्ण जिसमें अनार का छिलका डाला जाता है (वैद्यक

दाड़िमी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अनार का पेड़।

दाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनार का फल।

दाढ़ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जबड़े के भीतर के चौड़े दांत। चौभर। *दाढ़ न लगना*-दाँतों से न कुचलना। *दाढ़ गरम होना*-खाना खा जाना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दहाड़। गरज। २-चिल्लाहट। *दाढ़ मारकर रोना*-खूब चिल्लाकर रोना।

दाढ़ना* [क्रि. स.] (हिं.) १-जलना। आग से भस्म होना। २-संतप्त करना।

दाढ़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दाढ़'। १-वन की आग। दावानल। २-आग। अग्नि। ३-दाह। जलन। ४-लम्बी दाढ़ी। *दाढ़ा फूंकना*-दाह उत्पन्न करना।

दाढ़िका* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाढ़ी।

दाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ओठ के नीचे उभरा हुआ गोल भाग। चिबुक। ठोड़ी २-इस स्थान पर उगने वाले बाल। श्मश्रु।

दाढ़ीजार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसकी दाढ़ी जल गई हो। २-एक प्रकार की गाली जिसे स्त्रियां पुरुषों को देती हैं।

दात* [संज्ञा पु.] (हिं.) दान। देखो 'दान'। [वि.] (सं.) १-कटा हुआ। छिन्न। २-शुद्ध। पवित्र।

दातव्य [वि.] (सं.) देने योग्य। [संज्ञा पु.] १-देने का काम। दान। २-दानशीलता। उदारता। ३-वह धन जिसका देना अनिवार्य हो। ड्यू।

दातव्य-चिकित्सालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह औषधालय जहां बिना मूल्य दिये दवा मिलती है। फ्रीडिस्पेंसरी।

दाता [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो दान दे। दानशील। २-देने वाला।

दातापन [संज्ञा पु.] (हिं.) दानशीलता।

दातार [संज्ञा पु.] (हिं.) दाता। देने वाला।

दाती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देनेवाली।

दातु [संज्ञा पु.] (सं.) दान।

दातुन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दतुअन'।

दातून [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दती नामक पेड़। २-जमालगोटे की जड़। ३-देखो 'दतुअन'।

दातृ [वि.] (सं.) दानशील। दान देने वाला।

दातृता [संज्ञा स्त्री.] (सं) दानशीलता। दान देने की प्रवृत्ति।

दातृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) दानशीलता।

दातौन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'दतुअन'।

दात्यूह [संज्ञा पु.] (सं) १-चातक। पपीहा। २-मेघ। बादल।

दात्यूहक [संज्ञा पु.] (सं) १-चातक २-मेघ।

दात्र [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री दात्री] दाँती

हँसिया।

ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देने वाली। २-दाँती। हँसिया।

द [संज्ञा पु.] (सं.) दान। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का चर्म रोग। जिसमें उभरे हुए चकते पड़ जाते हैं, जिनमें बहुत खुजली होती है। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) न्याय। इन्साफ। *द चाहना*-किसी अत्याचार के प्रतिकार की प्रार्थना करना। *दाद देना*-१-किसी अच्छे कार्य की न्याय की दृष्टि से प्रशंसा करना। २-सराहना करना। वाह-वाह करना।

दनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह रकम जो चुकानी हो। दातव्य। देना। २-वह रकम जो पेशगी दी जाय। अप्रिय।

दर्दन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चकवँड

दरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का चलता गाना। २-दो अर्ध मात्राओं का ताल जिसमें केवल एक आघात होता है।

स [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ददियासास। अजियासास। सास की सास।

[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. दादी] १-पितामह। पिता का पिता। आजा। २-बड़ा भाई। बड़े बूढ़े आदमियों के लिए आदरसूचक शब्द।

भाईनौरोजी [संज्ञा पु.] भारत के एक राजनैतिक नेता। जिनका जन्म ४ सितम्बर १८२५ बम्बई में हुआ मृत्यु सन् १९१६ ई० में हुई।

दि+ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) न्याय। इन्साफ।

दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिता की माता। दादा की पत्नी। [संज्ञा पु.] (फा.) दाद या न्याय चाहने वाला। फरयादी।

दु+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दाद नामक रोग।

दुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) मेढक। मंडूक।

दू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दादा के लिए प्यार का संबोधन। २-भाई आदि के लिए एक साधारण संबोधन शब्द। ३-अहमदाबाद के एक साधु जो अकबर के समय में हुए थे और जिसके नाम से एक पंथ चला है। इन्होंने बहुत कवितायें बनाई हैं।

दयाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दूदू' (३)।

पंथी [संज्ञा पु.] (हिं.) दादू नामक साधु के चलाए हुए पंथ का अनुयायी।

धक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जलन। दाह। ताप।

धना* [क्रि. स.] (हिं.) जलाना। भस्म करना।

धिक [वि.] (सं.) दही में बना हुआ।

धीचि [संज्ञा पु.] (सं.) दधीचि के वंश का मनुष्य।

न [संज्ञा पु.] (सं.) १-देने का कार्य। देना। २-वह धर्मार्थ कृत्य जिसमें श्रद्धा या दयापूर्वक किसी को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३-वह वस्तु जो इस प्रकार अथवा और अन्य रूप में किसी को सदा के लिए दी जाय। ४-कर, महसूल, चुङ्गी आदि। ५-राजनीति में धन-सम्पत्ति आदि देकर शत्रु अथवा विरोधी को दबाने तथा अपना कार्य साधन करने की नीति। ६-हाथी का मद। ७-छेदन। ८-शुद्धि। ९-एक प्रकार का मधु। गिफ्ट।

दानक [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्सित दान। बुरा दान

दानकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) दान देने की क्रिया या काम।

दानकाम [वि.] (सं.) देने वाला।

दानकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी का मद।

दानघाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोवर्धन (उत्तरप्रदेश) में श्रीकृष्ण की लीला का एक स्थान।

दानधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) दान देने का धर्म। दान-पुण्य।

दानपति [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वदा दान देने वाला

दान-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई संपत्ति किसी को सदा के लिए दान रूप में दी जावे।

दानपद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान देने का ढंग या प्रणाली।

दान-पात्र [संज्ञा पु.] (सं.) दान पाने के उपयुक्त व्यक्ति।

दान-प्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'दक्षिणा'।

दान-फल [संज्ञा पु.] (सं.) दान देने का फल।

दानलीला [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-श्रीकृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर लिया था। २-वह ग्रंथ जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दान-लेख [संज्ञा पु.] (सं.) वह लेख जिसमें किसी किये हुए दान का उल्लेख हो।

दानव [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. दानवी] कश्यप के पुत्र जो उनकी 'दनु' नामक पत्नी से उत्पन्न हुए थे और जो देवताओं के घोर शत्रु थे। असुर। राक्षस।

दानवगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्राचार्य।

दानवज्र [संज्ञापु] (सं.) एक प्रकार का अश्व जो देवताओं और गंधर्वों की संवारी में रहता था।

दानवप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्लीलता। पान की बेल।

दानवारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-देवता। ३-इन्द्र।

दानवारि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का मद।

दानवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक दानव की स्त्री। २-दानवजाति की स्त्री। राक्षसी। [वि.] (हिं.) दानवों की। दानव-सम्बन्धी।

दानवीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो प्रायः बहुत अधिक दान देता हो। बहुत बड़ा दानी।

दानवेंद्र, दानवेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) राजा बलि।

दानशील [वि.] (सं.) दानी। दान करने वाला।

दानशीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान करने की प्रवृत्ति। उदारता।

दानशूर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दानवीर'।

दानशौंड, दानशौण्ड [वि.] (सं.) बहुत दान देने वाला।

दानसागर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का महादान जिसमें भूमि आसन आदि सोलह पदार्थों का दान किया जाता है।

दानांतराय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वह अन्तराय या पापकर्म जिसके उदय से दान के योग्य द्रव्य और पात्र पाकर भी मनुष्य को दान करने में विघ्न होते हैं और वह दान नहीं कर पाता।

दाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-अन्न कण। कन। २-अनाज। अन्न। ३-सूखा भुना हुआ अन्न चर्वण। चबेना। ४-छोटा बीज जो गुच्छे, बाल या फली में लगा हो। ५-छोटा फल या बीज। ६-कोई छोटी गोल वस्तु, जैसे-मोती घुंघरू का दाना। कोई गोल वस्तु जो डोरी या तागे में पिरोई हुई हो। जैसे-माला की गुरिया। ८-उक्त प्रकार की वस्तुओं की संख्या का सूचक शब्द। अदद। जैसे चार दाना सेव। ९-रवा। कण। १०-कोई छोटा गोल उभार। ११-शरीर में उभड़ा छोटा गुल्म १२-गाने विशेषतः टप्पा गाने के समय किसी का बहुत ही छोटे-छोटे खंडों में गले से निकलने वाला रूप। १३-बरतन की नक्काशी में गोल उभार। *दाना-दुनका*-अन्न के दो चार कण या थोड़ा सा अन्न। *दाने दाने को तरसना*-अन्न का कष्ट सहना। भोजन न पाना। *दाने को मुहताज होना*-अत्यन्त दरिद्र या गरीब होना। *दाना बदलना*-एक पक्षी का दूसरे पक्षी के मुख में दाना डालना। *दाना भरना*-चिड़ियों का अपने बच्चे के मुंह में दाना डालना। *दाने का माल*-उभरी हुई नक्काशी के बरतन। [वि.] (फा.) बुद्धिमान। अक्लमंद।

दानाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अक्लमन्दी। बुद्धिमत्ता।

दानाकेश [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जरदोजी किया हुआ कपड़ा जिसके चोगे बनते हैं।

दानाचारा [संज्ञा पु.] (हिं.) खानापीना। भोजन आहार।

दानादेश [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र या आदेश जिसके अनुसार किसी को कुछ दिया या कुछ देन भुगताया जाता है। पेमेंट आर्डर।

दानाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्मचारी जो (राजाओं और धनिकों के) दान दिये हुए धन को बाँटता है।

दानापानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खानपान।

अन्नजल । २-जीविका भरण-पोषण का आयोजन । ३-रहने का संयोग । *दाना पानी उठना*-दूसरी जगह जाने का संयोग होना । *दाना पानी छूटना*-रोग के कारण कुछ खाया न जाना । *दाना पानी छोड़ना*-अन्न जल ग्रहण न करना । उपवास करना ।

दानाबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) खड़ी फसल की उपज का अनुमान या तखमीना ।

दानिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान करने वाली स्त्री ।

दानिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दानी' ।

दानिस, दानिस्त [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-बुद्धि । समझ । २-राय । सम्मति ।

दानी [वि.] (हिं.) [स्त्री. दानिनी] दान करने वाला । उदार । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दान करने वाला व्यक्ति । दाता । २-कर संग्रह करने वाला । ३-पर्वतिया नैपालियों की एक जाति ।

दानीय [वि.] (सं.) दान करने योग्य ।

दानु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाता । २-राक्षस । ३-देने योग्य धन ।

दनुद [वि.] (सं.) धन देनेवाला ।

दानेदार [वि.](फ़ा.] जिसमें दाने हों । रवादार ।

दानो*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दानव' ।

दानौ* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दानव' ।

दाप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अहंकार । घमंड । गर्व । शेखी । २-शक्ति । बल । जोर । ३-उत्साह । उमंग । ४-रोब । दबदबा । आतंक । ५-क्रोध ६-जलन । ताप । दुःख ।

दापक [संज्ञा पु.] (हिं.) दबाने वाला ।

दापना* [क्रि. स.] (हिं.) १-दबना । दबाना । २-मना करना । रोकना ।

दापनीय [वि.] (सं) १-दबाने योग्य । २-दण्ड देने योग्य ।

दापित [वि.] (सं.) १-दंडित । जिसको सजा मिली हो । २-धन आदि देकर वश में किया हुआ ।

दाब [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दाबने या दबाने की क्रिया या भाव । २-वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के ऊपर रहकर उस पर दबाये रखती हो । भार । ३-पत्थर या शीशे आदि का वह वह छोटा टुकड़ा जो कागजों को उड़ने से बचाने के लिए उन पर रख दिया जाता है । पेपरवेट । ४-आतंक । अधिकार । रोब । *किसी की दाब तले होना*-किसी के वश में या आधीन होना । *दाब दिखाना*-अधिकार जताना *दाब मानना*-किसी बड़े से डरना या सहमना । वश में रहना ।

दाबकस [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहारों के छेदने के औजारों का एक भाग ।

दाबदार [वि.] (हिं.) रोबदार । आतंक रखने वाला । प्रभावशाली । प्रतापी ।

दाबना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दबाना' ।

दाबा [संज्ञा पु.] (हिं.) कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी जमीन में गाड़ना । [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली ।

दाबिल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की सफेद चिड़िया जिसकी चोंच दस बारह अंगुल लम्बी तथा छोर गोर और चिपटी होती है ।

दाबी [संज्ञा स्त्री.] हिं.) कटी हुई फसल के बंधे हुए पूले ।

दाभ [संज्ञा पु.] (सं.) कुश । डाभ ।

दाभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनिष्टकारक । हानि पहुँचाने वाला ।

दाभ्य [वि.] (सं.) १-शासन के योग्य । जो शासन में आसके । २-बाधा देने योग्य ।

दाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-रस्सी । रज्जु । २-माला हार । लड़ी । ३-समूह । राशि । ४-लोक । विश्व । [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जाल । पाश । फंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैसे के चौबीसवें या एक दमड़ी के तीसरे अंश का एक प्राचीन सिक्का । २-वह धन जो किसी वस्तु के बदले में दिया जाय । मूल्य । कीमत । *प्राइस* । ३-धन । रुपया । पैसा । *दाम उठना*-कीमत मिलना । बिक जाना । *दाम करना*-१-मोल ठहराना । २-सौदा करना । *दाम खड़ा करना*-किसी भाव भी बेच कर कीमत वसूल करना । *दाम चुकाना*-१-कीमत देना । २-कीमत ठहराना । *दाम-दाम भर देना*-कुछ (ऋण में) बाकी न रखना, कौड़ी-कौड़ी चुका देना । *दाम देने आना*-मूल्य देने के लिए विवश होना । *दाम भरना*-नुकसान के रूप में कीमत देना । *दाम भर पाना*-सारा मूल्य पा जाना । *चाम के दाम चलाना*-अधिकार पाकर उसका अनुचित और मनमाना उपयोग करना । [वि.] (सं.) देने वाला । दाता ।

दामकंठ, दामकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि का नाम ।

दामक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाड़ी के जुए की रस्सी २-लगाम । बागडोर ।

दामग्रंथि, दामग्रन्थि [संज्ञा पु.] (सं.) विराट नरेश का सेनापति (महाभारत) ।

दामचंद्र, दामचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) द्रुपद राजा का एक पुत्र ।

दामन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-रस्सी । २-माला ।

दामन [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-गले में या वक्षःस्थल पर धारण किये जाने वाले कपड़ों में कमर से नीचे का भाग । पल्ला । २-पहाड़ के नीचे की भूमि ।

दामनगीर [वि] (फ़ा) १-पल्ले पड़ने वाला । पीछे पड़ने वाला । २-दावा करने वाला । दावेदार । *दामनगीर होना*-पीछे लगना । ऊपर आ पड़ना ।

दामनपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) चैतसुदी चतुर्दशी का पर्व ।

दामनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रस्सी । रज्जु । (फ़ा.) घोड़े की पीठ पर डालने का चौड़ा वस्त्र ।

दामर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-नाव की पेंदी में लगाने का मसाला । २-देखो 'डामर' । [संज्ञा स्त्री.] (?) छोटे कान की भेड़ । (हिं.) रस्सी । रज्जु ।

दामरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी । रज्जु ।

दामरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी । रज्जु ।

दामलिप्त [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ताम्रलिप्त' ।

दामा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दावानल । दावाग्नि ।

दामाद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पुत्री का पति । जमाता । जमाई ।

दामासाह [संज्ञा पु.] (हिं.) वह दिवालिया महाजन जिसकी संपत्ति उसके लहनेदारों की बीच हिस्से के अनुसार बट जाय ।

दामासाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दिवालिये महाजन की संपत्ति का वह अंश जो लहनेदारों में बांटा जावे ।

दामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली । विद्युत (आकाश में चमकने वाली) । २-स्त्रियों का एक सिक्का आभूषण । बेंदी । बिंदिया ।

दामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कर । मालगुजारी ।

दामोद [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्ववेद की एक शाखा का नाम ।

दामोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण । २-विष्णु । ३-एक जैन तीर्थङ्कर का नाम । ४-बंगाल की एक नदी जो छोटे नागपुर के पहाड़ों से निकलती है ।

दायँ* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दाँव' । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दाई' । कटीहुई फसल के डंठलों को अनाज अलग करने के लिए बैलों से रौंदवाने का काम । दवँरी । (?) बराबरी । तुल्यता । देखो 'दाँज' ।

दाय [संज्ञा. पु.] (सं.) १-देने योग्य धन । दातव्य । २-दान, दहेज आदि के रूप में दिया जाने वाला धन । ३-वह पैतृक या संबंधी का धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके । दान । +(हिं.) देखो 'दाँव' ।

दायक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. दायिका] देने वाला । दाता ।

दायकर [संज्ञा पु.] (सं.) दाय धन अथवा पैतृक संपत्ति पर लगने वाला कर ।

दायज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दायजा' ।

दायजा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह धन जो विवाह में कन्यापक्ष की ओर से वर पक्ष वालों को दिया जाय । दहेज । यौतुक ।

दायभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैतृक धन का विभाग । २-बाप दादे या संबंधी की संपत्ति का पुत्रों या संबंधियों में बांटे जाने की

ना।

दायमुलहब्स [संज्ञा पु.] (अ.) जन्मभर कैद रहने की सज़ा। आजन्म कैद। काला पानी।

दायनीय [वि.] (सं.) वंश परम्परा से प्राप्त होने योग्य। हेरिडिटेबल।

दायर [वि.] (फ़ा.) १-फिरता हुआ। चलता हुआ। २-जारी। चलता हुआ। दायर करना-(व्यवहार या अभियोग) उपस्थित करना। दायर होना-पेश या उपस्थित किया जाना।

दायरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-गोल घेरा। कुंडल। २-वृत्त। ३-कक्षा। ४-मंडली। खंजड़ी। डफली।

दायविधान [संज्ञा पु.] (सं.) बपौती या वरासत (पैतृक संपत्ति) की मिलकियत को वारिसों या उत्तराधिकारियों में बाँटने का कायदा कानून।

दायशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तराधिकार-कर।

दायाँ [वि.] (हिं) दाहिना। दायाँ बोलना-दाहिने हाथ की ओर तीतर का बोलना जो चोरों के लिये शुभ शकुन समझा जाता है।

दाया [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दया'।

दायागत [वि.] (सं.) बाँट या हिस्से में आया हुआ। [संज्ञा पु.] पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक। वह दास जो दाय या वरासत के रूप में प्राप्त हुआ हो।

दायागी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) दाई का पेशा या धन्धा।

दायाद [वि.] (सं.) (स्त्री. दायदा) जो दाय या पैतृक संपत्ति का अधिकारी हो। [संज्ञा पु.] वह जो दायभाग के नियमों के अनुसार किसी की सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी हो।

दायादवत् [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। बेटा।

दायादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या।

दायादी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या।

दायिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देनदार होने का भाव।

दायाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकार जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सम्पत्ति या उसके हटने पर उसका पद अथवा स्थान पाता है। सक्सेशन।

दायाधिकार-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य जिसके राजा के मरने, किन्हीं कारणों से हटाये जाने अथवा पद त्याग करने पर उसके उत्तराधिकारी को राज्य मिले। सक्सेशन-स्टेट।

दायाधिकार-विधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह विधान अथवा कानून जिसके द्वारा किसी को उसके अधिकार दिलाये जायें। पैतृक सम्पत्ति को वारिसों या उत्तराधिकारियों में वितरण करने के कायदे कानून। लॉ-आफ-सक्सेशन।

दायाधिकार-व्यवस्था [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दायाधिकार-विधान'।

दायाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी के हट जाने अथवा न रहने पर उसके पद या स्थान का अधिकारी हो। सक्सेसर।

दायापवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी जायदाद में मिलने वाले हिस्से की जब्ती।

दायित [वि.] (सं) दिया हुआ। दान किया हुआ।

दायित्व [संज्ञा पु.] (सं.) देनदार होने का भाव। २-जवाबदेही। जिम्मेदारी।

दायिनी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) देने वाली।

दायी [वि.] (हिं.) (स्त्री. दायिनी) १-दायक। देने वाला। २-जिस पर किसी प्रकार का दायित्व या भार हो। लायबल।

दायें [क्रि. वि.] (हिं.) दाहिनी ओर को। दायें होना-अनुकूल या प्रसन्न होना।

दार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। पत्नी। भार्या। ※ [संज्ञा पु.] देखो 'दारु'।

दारक [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. दारिका) १-लड़का। छोकरा। २-पुत्र। बेटा। [वि.] विदीर्ण करने वाला। फाड़ने वाला।

दारकर्म [संज्ञा पु.] (सं) विवाह। शादी।

दारकाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध के गुरु का नाम।

दारक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह। भार्या-ग्रहण।

दारग्रहण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह। भार्या-ग्रहण

दारचीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है। २-उक्त वृक्ष की छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।

दारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीरने-फाड़ने का काम २-फोड़े आदि चीरने का काम। शस्त्र-चिकित्सा। ३-इस काम में आने वाले औजार। ४-वह औषधि जिसके लगाने से फोड़ा आप से आप फूट जाय। ५-निर्मली का पौधा।

दारद [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का विष। २-पारा। ३-ईंगुर।

दारना※ [क्रि. स.] (हि.) १-फाड़ना। विदीर्ण करना। २-नष्ट करना। ध्वस्त होना।

दार-परिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष का विवाह। पाणिग्रहण। विवाह।

दार-परिग्रही [वि.] (सं) जिसने विवाह किया हो

दारबलिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) बगुला पक्षी।

दारमदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-आश्रय। ठहराव। २-कार्य का भार।

दारव [वि.] (सं.) १-दारु या लकड़ी का। लकड़ी या काठ का बना हुआ। २-काष्ठ-संबन्धी।

दारसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) भार्याग्रहण। विवाह।

दारा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पत्नी। स्त्री। भार्या। [संज्ञा पु.] (?) किनारा। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की भारी मछली।

दाराई [संज्ञा स्त्री] (फ़ा) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

दाराधिगमन [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह। शादी।

दाराधीन [वि.] (स) जो स्त्री के वशीभूत हो।

दारि [वि.] (सं.) दारक। फाड़ने वाला। ※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दाल'।

दारिउँ※ [संज्ञा पु.] देखो 'दाड़िम'।

दारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बालिका। २-पुत्री। बेटी। कन्या।

दारित [वि.] (सं.) चीरा या फाड़ा हुआ। विदीर्ण किया हुआ।

दारिद※ [संज्ञा पु.] (हिं) दरिद्रता। निर्धनता।

दारिद्र※ [संज्ञा पु.] देखो 'दारिद्र्य'।

दारिद्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी।

दारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें पैर के तलवे फट जाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दासी। लड़ाई में जीतकर लाई हुई दासी। लौंडी।

दारीजार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लौंडी का पति। (गाली)। २-दासी-पुत्र। गुलाम। लौंडी से उत्पन्न पुत्र।

दारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-काष्ठ। काठ। लकड़ी। २-देवदारु। ३-बढ़ई। कारीगर। ४-पीतल। [वि.] (सं) १-दानशील। देने वाला। २-खंडनशील। टूटने-फटने वाला।

दारुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदारु। २-श्रीकृष्ण के सारथी का नाम। ३-काठ का पुतला। ४-एक योगाचार्य जो शिव के अवतार कहे जाते हैं।

दारुकदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली केला।

दारुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठपुतली।

दारुकावन [संज्ञा पु.] (सं.) एक वन का नाम जिसे तीर्थ समझा जाता है।

दारुगंध, दारुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीड़ के वृक्ष से निकलने वाला द्रव्य। बिरोजा।

दारुचीनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का तज। दारचीनी।

दारुज [वि.] (सं.) १-काष्ठ से उत्पन्न। काठ में पैदा होने वाला। २-लकड़ी का बना हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा।

दारुजोषित※ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दारुयोषित'।

दारुण [वि.] (सं.) १-भयङ्कर। भीषण। घोर। २-कठिन। ३-विदारक फाड़ने वाला। [संज्ञा पु.] १-चित्रक वृक्ष। २-भयानक रस ३-रौद्रनामक नक्षत्र। ४-विष्णु। ५-शिव। ६-एक नरक का नाम। ७-राक्षस।

दारुणक [संज्ञा पु.] (सं.) सिर में होने वाला एक रोग।

दारुणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठिनता। कठोरता।

दारुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नर्मदाखंड की अधिष्ठात्री देवी। २-अक्षयतृतीया।

दारुणारि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

दारुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) कठोरता। भीषणता। उग्रता।

दारुन* [वि.] (हिं.) देखो 'दारुण'

दारुनटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठपुतली।

दारुनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठपुतली।

दारुनिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

दारुपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंगुपत्री।

दारुपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) काष्ठपात्र। काठ का बरतन।

दारुपीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

दारुपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठपुतली।

दारुफल [संज्ञा पु.] (सं.) पिस्ता।

दारुब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) जगन्नाथ।

दारुमय [वि.] (सं.) [स्त्री. दारुमयी] काठ का। काठ का बना हुआ।

दारुमुखाह्वया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोह नामक जलजन्तु।

दारुमुच [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्थावर विष का नाम

दारुमूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषध का नाम

दारुयंत्र, दारुयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) काठ का बना हुआ एक प्रकार का यंत्र।

दारुयोषित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठपुतली।

दारुवह [वि.] (सं.) लकड़ी ढोने वाला।

दारुसार [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

दारुसिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारचीनी।

दारुहरिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

दारुहलदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी डंठल और जड़ औषधियों में प्रयोग होती हैं।

दारुहस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) काठ का बना हुआ हाथ।

दारू [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-दवा। औषध। २-मद्य। शराब। ३-बारूद।

दारूकार [संज्ञा पु.] (फ़ा.+हिं.) शराब बनाने वाला। कलवार।

दारूड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. दारूड़ी] मदिरा। शराब।

दारूड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मदिरा। शराब। मद्य।

दारों* [संज्ञा पु.] देखो 'दाड़िम'।

दारोगा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-किसी काम की ऊपर से देखभाल रखने अथवा प्रबन्ध करने वाला व्यक्ति। पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी। थानेदार।

दारोगाई [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) दारोगा का काम या पद।

दार्यों* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दाड़िम'।

दार्ढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ता।

दार्दुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शंख। [वि.] दर्दुर-संबंधी।

दार्दुरिक [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हार।

दार्भ [वि.] (सं.) कुश या दर्भ-संबंधी।

दार्वंड, दार्वण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. दार्वंडी] मोर। मयूर।

दार्वंडी, दार्वण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मादा मोर। मोरनी।

दार्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम। जो आजकल के काश्मीर देश के अंतर्गत पड़ता है।

दार्वाघाट, दार्वाघात [संज्ञा पु.] (सं.) कठफोड़वा नामक पक्षी।

दार्वाट [संज्ञा पु.] (सं.) वह कोठरी जहाँ एकान्त में बैठकर विचार किया जाय। मन्त्रणागृह।

दार्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दारुहल्दी। २-बनगोभी।

दार्विपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनगोभी। गोजिया।

दार्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारूहलदी।

दार्श [वि.] (सं.) १-जो देखने से उत्पन्न हो। २-जो आँख से उत्पन्न हो।

दार्शनिक [वि.] (सं.) १-दर्शनशास्त्र का जानकार। तत्वज्ञानी। २-दर्शनशास्त्र का। दर्शनशास्त्र-संबंधी। [संज्ञा पु.] दर्शनशास्त्र का जानने वाला मनुष्य। तत्वज्ञानी। तत्ववेत्ता।

दार्षद [वि.] (सं.) पत्थर का बना हुआ।

दार्षद्वत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जो नदी के किनारे किया जाता है। (कात्यायन-श्रौत-सूत्र)

दार्ष्टांतिक, दार्ष्टान्तिक [वि.] (सं.) दृष्टांत-संबंधी।

दाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दले हुए अरहर, मूंग आदि अन्न जो सालन के समान पकाकर खाए जाते हैं। २-रोटी, भात आदि के साथ खाने के लिए उक्त अन्नों का मिर्च-मसाले आदि को साथ पकाया हुआ रूप। ३-दाल के आकार की कोई वस्तु। ४-वह पपड़ी जो चेचक, फुड़िया आदि के सूखने पर पड़ जाती है। ५-अंडे की जरदी। *दाल गलना*-दाल का पक जाना। २-मतलब निकलना। युक्ति चलना। *दालचपाती*-१-दाल रोटी। २-छोटे बच्चों को डराने का एक नाम *दाल चपु होना*-गुत्थमगुत्था होना। लिपट कर एक हो जाना। *दाल छूटना*-खुरंट या पपड़ी लगा होना। *दाल जूतियों बटना*-खूब लड़ाईझगड़ा होना। *दाल दलिया*-१-रूखा सूखा भोजन। २-अन्तिम फैसला या निर्णय। *दाल न गलना*-वश न चलना। *दाल बंधना*-खुरंट पड़ना। *दाल भात का कौर समझना*-सरल या आसान जानना। *दाल में कुछ काला होना*—खटका या सन्देह होना। २-किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई न पड़ना। *दाल रोटी*-सामान्य भोजन। आहार। *दाल रोटी चलना*-जीविका निर्वाह होना। गुजर होना। *दाल रोटी से खुश*- खानेपीने से सुखी। [संज्ञा पु.] (हिं.) तुनकी जाति का एक वृक्ष जो हिमालय के आसपास के प्रदेश में होता है। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मधु। २-कोदो नामक अन्न।

दालचीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दारचीनी'

दालन [संज्ञा पु.] (सं) दाँत का एक रोग।

दालभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि का नाम।

दालमोठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घी या तेल आदि में तली हुई दाल या उसके साथ मिले हुए कुछ अन्य पदार्थ।

दालव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का स्थावर विष।

दाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाकाल नामक ल

दालान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) मकान का वह आगे का भाग जो ऊपर से छाया हुआ हो और आगे खुला हो। वरामदा। ओसारा।

दालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दाड़िम। अनार। २-दाल। ३-देवदाली नामक लता।

दालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाकाल नामक लता।

दालिम* [संज्ञा पु.] देखो 'दाड़िम'।

दाल्भ्य [संज्ञा पु.] (सं) १-दल्भऋषि के गो का मनुष्य। २-वृक नामक मुनि।

दाल्मि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

दावँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दाँव'।

दावँना [क्रि. स.] (हिं.) सूखे हुए अन्न के डंठलों को भूसा अलग होने के लिये बैलों से रौं वाना।

दावँनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माथे पर का स्त्रियों का एक आभूषण। बिंदी।

दावँरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी। रज्जु।

दाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन। जंगल। २-वन की आग। दावानल। ३-अग्नि। आग। ४-जलन। ताप। [संज्ञा पु.] (देश.) १-अ डंठल आदि काटने का एक प्रकार का औज़ा २-एक वृक्ष का नाम।

दावत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ज्योनार। भोज। खाने का बुलावा या न्योता। निमंत्रण।

दावदी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'गुलदावदी'।

दावन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दमन। नाश। २- हंसिया। ३-एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। खुखरी

दावन [संज्ञा पु.] देखो 'दामन'।

दावना [क्रि. स.] (हि.) १-देखो 'दावँना' २-दमन करना। नष्ट करना।

दावनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दावँनी'।

दावरा [संज्ञा पु.] (देश.) धावरा नामक एक पेड़।

दावा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वन में लगने वाली आग जो बाँस या अन्य पेड़ों की डालियों के एक दूसरे से रगड़ खाने से उत्पन्न होती है।

दावा [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी वस्तु पर अपना अधिकार जतलाना। किसी वस्तु पर अपना हक बतलाना। २-स्वत्व। हक। ३-सम्पत्ति अथवा अधिकार की रक्षा अथवा प्राप्ति के निमित्त चलाया हुआ अभियोग या मुकदमा। नालिश। अभियोग। ५-वश। जोर। ६-किसी बात को कहने में वह साहस जो उस की यथार्थता के निश्चय से उत्पन्न होता है। ७-दृढ़तापूर्वक कथन। दावा जमाना मुकदमा ठीक करना। दावा खारिज होना-मुकदमा हारना।

दावागीर [संज्ञा पु.] (अ.+फा.) दावा करने वाला। हक जताने वाला।

दावाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वन में आप-से-आप बांस आदि की रगड़ से उत्पन्न होने वाली आग। दावानल।

दावात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मसि-पात्र। स्याही रखने का बरतन।

दावादार [संज्ञा पु.] (अ.) दावा करने वाला। अपना हक जताने वाला।

दावानल [संज्ञा पु.] (सं.) वन में वृक्षों की परस्पर रगड़ से आप से आप उत्पन्न होने वाली आग।

दाविनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बिजली। विद्युत्। २-स्त्रियों के माथे पर का एक गहना। बेंदी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हि.) धव का पेड़।

दावेदार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) दावा करने वाला। हक जताने वाला।

दाश [संज्ञा पु.] (सं.) धीवर। केवट। मल्लाह। २-भृत्य। नौकर।

दाशपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-धीवरों की बस्ती। २-एक प्रकार का मोथा। कैवर्त्तमुस्तक।

दाशमिक [वि.] (सं.) १-दशम-सम्बन्धी। दशम का। २-जिसका सम्बन्ध प्रत्येक दस या उसके घात से हो। ३-दशमलव के अनुसार दस अथवा उसके घात से सम्बन्ध रखने वाला। देखो 'दशमलव'।

दाशरथ [वि.] (सं.) दशरथ-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

दाशरथि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र आदि दशरथ के पुत्र।

दाशरात्रिक [वि.] (सं.) दशरात्र-सम्बन्धी।

दाशार्ण [संज्ञा पु.] (सं) १-दशार्णदेश। २-दशार्ण देश का निवासी।

दाशार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) यदुवंशी।

दाशु [वि.] (सं.) देनेवाला। दाता। दिया हुआ।

दाशेय [वि.] (सं.) दाश से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) दाश का पुत्र।

दाशेर [संज्ञा पु.] (सं.) धीवर की संतान।

दाशेरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरुदेश। मारवाड़। २-मारवाड़ का निवासी।

दाशौदनिक [वि.] (सं.) दशोदनयज्ञ-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) दशोदनयज्ञ की दक्षिणा।

दाश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पालनपोषण। परवरिश

दाश्व [वि.] (सं.) देनेवाला। दाता। दानी।

दास [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. दासी] १-दूसरे की सेवा करने वाला। सेवक। चाकर। नौकर। २-दूसरे के आधीन या वश में रहने वाला। ३-शूद्र। ४-धीवर। ५-एक उपाधि जो शूद्रों के नाम के पीछे लगाई जाती है। ६-दस्यु। वृत्रासुर। ज्ञातात्मा। आत्मज्ञानी। +[संज्ञा पु.] देखो 'दासन' 'डासन'।

दासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दास। सेवक। २-एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

दासता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दास का कर्म। सेवावृत्ति।

दासत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-दास होने का भाव। २-दास का काम। सेवावृत्ति।

दासनंदनी, दासनन्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धीवर की कन्या सत्यवती जो व्यास की माता थी।

दासन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'डासन'।

दासपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दास की स्त्री।

दासपन [संज्ञा पु.] (हिं.) सेवाकर्म। दासता।

दासपुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मोथा।

दासमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) दास का मित्र।

दासमीय [वि.] (सं.) दसमदेश में उत्पन्न। [संज्ञा पु.] दसमदेश का निवासी।

दासमेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद।

दासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दीवार से सटाकर बनाया हुआ पुश्ता या चबूतरा। २-वह तख्ता या पत्थर जो दरवाजे के चौखटे पर रहता है। ३-दीवार की कुरसी पर बैठाया हुआ पत्थर जो दरवाजे के चौखटे पर रहता है। ३-दीवार की कुरसी पर बैठाया हुआ पत्थर ४-वह चबूतरा जो आंगन के चारों ओर दीवार से सटाकर उठाया जाता है। [संज्ञा पु.] देखो 'हँसिया'।

दासानुदास [संज्ञा पु.] (सं.) सेवक का सेवक। अत्यन्त तुच्छ सेवक (शिष्टता और नम्रता)।

दासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासी।

दासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेवा करने वाली स्त्री। टहलनी। लौंडी। २-धीवर या शूद्र की स्त्री। ३-कटसरैया। ४-कालाकारोटक नामक पौधा। ५-काकजंघा।

दासीत्व [संज्ञा पु.] (सं.) दासी का काम। सेवावृत्ति।

दासीपाद [वि.] (सं.) दासी के पैरों वाली।

दासीसभ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासियों की मंडली।

दासेय [वि.] (सं.) (स्त्री. दासेयी) दास से उत्पन्न [संज्ञा पु.] १-दासपुत्र। २-धीवर।

दासेयी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) दासी से उत्पन्न। [संज्ञा स्त्री.] व्यास की माता सत्यवती।

दासेर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दास। २-धीवर। कैवर्त्त। ३-ऊँट।

दासेरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दासीपुत्र। २-ऊँट

दास्तान् [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वृत्तांत। हाल। २-कहानी। किस्सा। ३-वर्णन।

दास्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दासता। सेवा। २-भक्ति के नौ भेदों में से एक, जिसमें उपासना करने वाला अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उसका दास मानता है.

दास्यमान् [वि.] (सं.) जो दिया जाने वाला हो। जिसे दूसरे को देना हो।

दास्र [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीनक्षत्र।

दाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलाने की क्रिया या भाव। २-शव को जलाने या मुर्दा फूँकने का काम। ३-जलन। ताप। ४-अत्यन्त दुःख। संताप। ५-डाह। ईर्ष्या। ६-एक रोग विशेष जिससे शरीर में जलन मालूम होती है.

दाहक [वि.] (सं.) जलाने वाला। [संज्ञा पु.] १-चित्रकवृक्ष। चीता। लाल चीता। २-अग्नि। आग।

दाहकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलाने का गुण या भाव।

दाहकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जलने का भाव या गुण।

दाहकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्दा फूँकने का काम।

दाहकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) अगर की लकड़ी।

दाहक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृतक को जलाने का संस्कार। शवदाह-कर्म।

दाहघ्न [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर का जलन या दाह मिटाने वाली औषध।

दाहज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्वर जिसमें शरीर में बहुत अधिक जलन मालूम हो।

दाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलाने का काम। २-जलवाने या भस्म करवाने की क्रिया।

दाहना [क्रि. स.] (हिं.) १-जलाना। भस्म करना २-सताना। संतप्त करना। [वि.] देखो 'दाहिना'।

दाहनागुरु [संज्ञा पु.] (सं.) अगर नाम का गंध-द्रव्य।

दाहमय [वि.] (सं.) दाहपूर्ण।

दाहसर [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान। मुर्दा फूंकने

का सामान।

दाहहरण [संज्ञा पु.] (सं.) खस।

दाहा [संज्ञा पु.] (फा.) १-मुहर्रम के दस दिन २-ताजिया।

दाहागुरु [संज्ञा पु.] (सं.) जलाने का अगर।

दाहिक [वि.] (सं.) जलाने वाला।

दाहिकाशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलाने की शक्ति।

दाहिन+ [वि.] (हि.) देखो 'दाहिना'।

दाहिना [वि.] (हिं.) [स्त्री. दाहिनी] १-शरीर के उस पार्श्व का जिसके अंगों में अपेक्षाकृत अधिक शक्ति होती है और जिससे मनुष्य अधिकतर काम लेता है। दक्षिण। बायाँ का उलटा। २-दाहिने हाथ की ओर पड़ने वाला ३-अनुकूल। प्रसन्न। *दाहिनी देना*-प्रदक्षिणा या दक्षिणावर्त परिक्रमा करना। *दाहिनी लाना*-प्रदक्षिणा करना। *(किसी का) दाहिना हाथ होना*-बड़ा भारी सहायक होना।

दाहिनावर्त्त* [वि.] (हिं.) देखो 'दक्षिणावर्त्त'।

दाहिने [क्रि. वि.] (हिं.) दाहिने हाथ की तरफ। दाहिनी ओर। *दाहिने होना*-अनुकूल होना। प्रसन्न होना। *दाहिने बाएँ*-इधर-उधर।

दाही [वि.] (हिं.) [स्त्री. दाहिनी जलाने] या भस्म करने वाला।

दाहुक [वि.] (सं.) जलाने वाला। दाहक।

दाह्य [वि.] (सं.) जलाने योग्य।

दिंक, दिङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) सिर के बालों में पड़ने वाला छोटा कीड़ा। जूँ।

दिंड, दिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाच।

दिंडि, दिण्डि [संज्ञा पु.] देखो 'दिंडिर'।

दिंडिर, दिण्डिर [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक बाजा।

दिंडी, दिण्डी [संज्ञा पु.] (सं.) उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अन्त में दो गुरु होते हैं। और जिसमें नौ और दस पर विश्राम होता है।

दिंडीर, दिण्डीर [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन।

दिअना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दीया'।

दिअरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी का बहुत छोटा दीया।

दिअली* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मिट्टी का बहुत छोटा दीया।

दिआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दीया'।

दिआना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिलाना'।

दिआबत्ती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दियाबत्ती'।

दिआर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दयार'।

दिआरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'दयार'। २-'दियारा'।

दिआसलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दियासलाई'।

दिउला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिउली'।

दिउली+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड। २-मिट्टी का बहुत छोटा दीया। ३-मछली के ऊपर से छूटने वाला छिलका। सेहरा।

दिक् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिशा। ओर। तरफ।

दिक [वि.] (अ.) १-जिससे बहुत कष्ट पहुँचा हो। तंग। पीड़ित। २-हैरान। परेशान। ३-अस्वस्थ। बीमार। [संज्ञा पु.] क्षयी रोग। तपेदिक।

दिकचन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ऊख जिसका गुड़ बहुत अच्छा होता है।

दिकदाह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिग्दाह'।

दिकाक [संज्ञा पु.] (हि.) किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा। कतरन। धज्जी। [वि.] बहुत भारी चालाक। खुर्राट।

दिकोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बर्रे। हड्डा।

दिक्क [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का बच्चा। [वि.] देखो 'दिक'।

दिक्कत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दिक का भाव। परेशानी। २-तकलीफ। ३-कठिनता।

दिक्कन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिशारूपी कन्या। सब दिशायें ब्रह्मा की कन्या मानी जाती हैं।

दिक्कर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव। [वि.] (सं.) [स्त्री. दिक्करिका] युवक। जवान।

दिक्करवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिक्कर या महादेव में निवास करने वाली एक देवी। (पुराण)।

दिक्करि [संज्ञा पु.] देखो 'दिक्करी'।

दिक्करिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी जो मानसरोवर के पश्चिम में बहती है। यह नदी दिग्गजों के क्षेत्र से निकलने के कारण दिक्करिका कहलाती है। (पुराण)

दिक्करी [संज्ञा पु.] (सं.) आठों दिशाओं के ऐरावत आदि आठ हाथी। दिग्गज।

दिक्कांता, दिक्कान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिक्कन्या।

दिक्कामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिशारूपी स्त्री

दिक्कुमार [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार भवनपति देवताओं में से एक।

दिक्चक्र [संज्ञा पु.] (सं.) आठों दिशाओं का समूह।

दिक्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दिशाओं के स्वामी ग्रह। २-देखो 'दिक्पाल'।

दिक्पाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार दसों दिशाओं के पालन करने वाले देवता। २-चौबीस मात्राओं का एक छंद जिसमें बारह मात्राओं पर विराम होता है।

दिक्शूल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास जो यात्रा के लिए अशुभ माना जाता है। शुक्र और रविवार को पश्चिम में, मंगल और बुद्ध को उत्तर, सोम और शनि को पूरब और बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में दिक्शूल माना जाता है।

दिक्साधन [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपाय जिसके द्वारा दिशाओं का ज्ञान होता है।

दिक्सुंदरी, दिक्सुन्दरी देखो 'दिक्कन्या'।

दिक्स्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिक्पति'।

दिक्षा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दीक्षा'।

दिक्षागुरु+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दीक्षागुरु'।

दिक्षित+ [वि.] (हिं.) देखो 'दीक्षित'।

दिखना+ [क्रि. अ.] (हिं.) दिखाई देना।

दिखरा-देना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'दिखलाना'।

दिखराना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'दिखलाना'।

दिखरावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिखलाना'।

दिखरावनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दिखाने की क्रिया या भाव।

दिखलवाई [संज्ञा स्त्री.] (हि) १-दिखलवाने के बदले में दिया जाने वाला धन। २-देखो 'दिखलाई'।

दिखलवाना [क्रि. स.] (हि.) दूसरे को दिखलाने में प्रवृत्त करना।

दिखलाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दिखलाने की क्रिया या भाव। २-दिखलाने के बदले में दिया हुआ धन।

दिखलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दिखाना। दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। २-अनुभव कराना। जताना।

दिखलावा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिखावा'।

दिखवैया+ [संज्ञा पु.] (हि.) दिखलाने वाला। २-देखने वाला।

दिखहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखने वाला।

दिखाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दिखाने की क्रिया या भाव। २-वह धन जो दिखाने में दिया जाय। ३-देखने की क्रिया या भाव। ४-देखने के बदले में दिया जाने वाला धन।

दिखाऊ+ [वि.] (हिं.) १-देखने योग्य। दर्शनीय। २-दिखाने योग्य। ३-वह जो केवल देखने भर को हो, पर काम या सारयुक्त हो। ४-दिखौआ। बनावटी।

दिखा-दिखी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'देखा-देखी'।

दिखाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिखलाना'।

दिखाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखने की क्रिया या

भाव। २-दृश्य।

दिखावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दिखलाने का भाव या ढंग। ऊपरी तड़भड़क। बनावट।

दिखावटी [वि.] जो केवल देखने भर को हो पर काम में न आ सके। दिखौवा।

दिखावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-केवल ऊपर से दिखलाने के लिए किया हुआ काम। २-ऊपरी तड़क-भड़क। आडम्बर।

दिखैया+* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखने या दिखलाने वाला।

दिखौआ [वि.] (हिं.) वह जो केवल देखने योग्य हो पर काम में न आ सके।

दिखौवा [वि.] (हिं.) देखो 'दिखौआ'।

दिगंगना, दिगङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिशारूपिणी स्त्री।

दिगंत, दिगन्त [संज्ञा पु.] (सं.) दिशा का छोर या अन्त। २-आकाश का छोर। क्षितिज। ३-चारों दिशाएँ। दसों दिशाएँ। [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख का कोना।

दिगंतर, दिगन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

दिगंबर, दिगम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-नंगा रहने वाला। जैन यती। क्षपणक। ३-दिशाओं का वस्त्र, अंधकार। अंधेरा। [वि.] (सं.) दिशाएँ ही जिसका वस्त्र हो, अर्थात् नङ्गा। नग्न।

दिगंबरता, दिगम्बरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नग्नता। नंगापन।

दिगंबरी, दिगम्बरी [संज्ञा स्त्री] (सं) दुर्गा। [वि.] [स्त्री प्र.] नंगी।

दिगंश [संज्ञा पु.] (सं.) क्षितिजवृत्त का तीन सौ साठवाँ भाग या अंश।

दिगंशयंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिसके द्वारा किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगंश जाना जाय।

दिग् [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दिक्'।

दिग्दंति* [संज्ञा पु.] देखो 'दिग्गज'।

दिग्द्विप [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज।

दिगीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आठों दिक्पाल। २-सूर्य। चन्द्रमा आदि ग्रह।

दिगीश [संज्ञा पु.] (सं.) दिक्पाल।

दिग्गज [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार आठों दिशाओं के आठ हाथी जो पृथ्वी को दबाये रखते और उनकी रक्षा करते हैं। इन आठों हाथियों के यह नाम हैं पूर्व में ऐरावत पूर्व-दक्षिण कोण में पुंडरीक, दक्षिण में वामन, दक्षिण-पश्चिम में कुमुद, पश्चिम में अञ्जन, पश्चिमोत्तर कोण में पुष्पदन्त, उत्तर में सर्वभौम और उत्तर-पूर्व के कोण में सुप्रतीक। [वि.] (सं.) बहुत बड़ा या भारी।

दिग्गयंद, दिग्गयन्द [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज।

दिग्गी [संज्ञा स्त्री] देखो 'डिग्गी'।

दिग्घ* [वि] (हिं.) १-लम्बा। २-बड़ा।

दिग्ज्ञान [संज्ञा पु.] (सं) वह ज्ञान साधन जिससे सभी दिशाओं का ज्ञान हो।

दिग्जय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिग्विजय।

दिग्ज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिगंश। दिशा का छोर।

दिग्दर्शक [संज्ञा प.] (सं.) १-दिशाओं का ज्ञान कराने वाला। २-जानकारी कराने वाला।

दिग्दर्शक-यंत्र, दिग्दर्शक-यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) घड़ी के आकार का वह यंत्र जिसके द्वारा दिशा का पता चलता है। कुतुबनुमा।

दिग्दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो उदाहरण स्वरूप उपस्थित किया जाय। नमूना। २-नमूना दिखाने या स्वरूप का साधारण परिचय कराने का काम। ३-अभिज्ञाता। जानकारी।

दिग्दर्शनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दिग्दर्शक यन्त्र।'

दिग्दाह [संज्ञा पु.] (सं.) एक अशुभ दैवी घटना जिसमें संध्या समय दिशाएं लाल हो जाती और जलती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

दिग्देवता [संज्ञा पु.] (सं.) दिक्पाल।

दिग्ध [संज्ञा पु.] (सं) १-विषाक्त बाण। जहर में बुझाया हुआ बाण। २-तेल। ३-अग्नि। ४-प्रबंध। निबंध। [वि.] १-विषाक्त। जहर में बुझाया हुआ। २-लिप्त। [वि.] (हिं) दीर्घ लम्बा। बड़ा।

दिग्पट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दिशारूपी वस्त्र। २-दिशारूपी वस्त्र धारण करने वाला। नंगा दिगंबर।

दिग्पति [संज्ञा पु.] (हिं.) दिक्पाल।

दिग्दपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) दिक्पाल।

दिग्बल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न आदि पर स्थित ग्रहों का बल।

दिग्बली [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह ग्रह जो किसी दिशा के लिए बली हो (फलित ज्योतिष)। २-वह राशि जिस पर किसी ग्रह का बल हो।

दिग्भाग [सञ्ज्ञा पु.] (सं.) दिशा का विभाग।

दिग्भ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) दिशाओं के सम्बन्ध में भ्रम होना। दिशा भूल जाना।

दिग्मंडल, दिग्मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) सब दिशाओं का समूह।

दिग्राज [संज्ञा पु.] देखो 'दिक्पाल'।

दिग्वदन [संज्ञा पु.] (सं.) सब दिशाओं में स्थित राशि मेद।

दिग्वसन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिग्वस्त्र'

दिग्वस्त्र [संज्ञा पु] (सं.) १-शिव। महादेव। २-नग्न रहने वाला जैनयती। क्षपणक। ३-लग्न। [वि.] नग्न। नंगा।

दिग्वान् [संज्ञा पु.] (सं.) पहरेदार। चौकीदार।

दिग्वारण [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज।

दिग्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-नग्न रहने वाला जैनयती। क्षपणक। [वि.] (सं.) नग्न। नंगा।

दिग्विजय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्राचीन काल के राजाओं का अपना महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए अन्य देशों में अपनी सेनाएँ लेजाकर युद्ध करना और उनपर विजय प्राप्त करना। २-अपने गुणों के द्वारा आसपास के देशों में अपना महत्व स्थापित करना।

दिग्विजयी [वि.] (सं.) जिसने दिग्विजय किया हो। दिग्विजय करने वाला।

दिग्विदिक् [संज्ञा पु.] (सं.) सब दिशाएं।

दिग्विभाग [संज्ञा पु.] (सं) दिशा। ओर। तरफ।

दिग्विलोकन [संज्ञा पु.] (सं) शून्यदृष्टि।

दिग्व्यापी [वि] (सं.) जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।

दिग्व्रत [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों का एक व्रत विशेष जिसमें कुछ निश्चित समय के लिये यह प्रण लेते हैं कि अमुक दिशा अथवा दिशाओं में इतनी दूर से अधिक न जायंगे।

दिग्शिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वदिशा।

दिग्शूल [संज्ञा प.] (सं.) देखो 'दिक्शूल'।

दिग्सिंधुर, दिग्सिन्धुर [संज्ञा पु.] (स) दिग्गज

दिघी [सञ्ज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'डिग्गी'।

दिघोंच [संज्ञा पु.] (देश.) सफेद छाती, काले डैने और सुनहले पर वाला एक पक्षी।

दिङ्नक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दिशाओ में अवस्थित नक्षत्र (फलित ज्योतिष)।

दिङ्नाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिग्गज। २-एक प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थकार का नाम।

दिङ्नारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेश्या। रंडी। २-बहुत से पुरुषों से प्रेम करने वाली स्त्री। कुटिला।

दिङ्मंडल, दिक्मण्डल [संज्ञा स्त्री] (सं.) दिशाओं का समूह।

दिङ्मातंग, दिङ्मातङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज

दिङ्मात्र [संज्ञा पु.] (सं.) उदाहरणमात्र। केवल नमूना।

दिङ्मूढ [वि.] (सं.) १-जिसे दिग्भ्रम हुआ हो। जो दिशाएं भूल गया हो। २-मूर्ख। बेवकूफ।

दिङ्मोह [संज्ञा पु.] देखो 'दिग्भ्रम'।

दिच्छित*+ [संज्ञा पु., वि] (हिं.) देखो 'दीक्षित'।

दिजराज*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'द्विजराज'

दिजोत्तम*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विजोत्तम'

दिठवन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'देवोत्थान'।

दिठादिठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'देखा-देखी'।

दिठाना* [क्रि. अ.] (हिं.) बुरी दृष्टि या नजर लगना। [क्रि. स.] बुरी दृष्टि या नजर लगना।

दिठौना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों के माथे या गाल आदि पर नजर से बचाने के लिए लगाई हुई काली बिंदी।

दिढ़* [वि.] (हिं.) देखो 'दृढ़ता'।

दिढ़ता*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दृढ़ता'।

दिढ़ाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दृढ़ता'।

देढ़ाना*+ [क्रि. सं.] (हिं.) १-पक्का करना। दृढ़ करना। मजबूत करना। २-निश्चित करना। [क्रि. अ.] दृढ़ या पक्का होना।

दिढ़ाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दृढ़ता'।

दित [वि.] (सं.) चीरा या फाड़ा हुआ।

दितवार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आदित्यवार।

दिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कश्यप ऋषि की एक पत्नी जिससे दैत्य उत्पन्न हुए थे। २-तोड़ने या काटने की क्रिया। खंडन। ३-दाता। वह जो देता हो।

दितिकुल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दैत्यवंश।

दितिज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. दितिजा] दिति से उत्पन्न दैत्य। दिति के पुत्र।

दितितनय [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्य। राक्षस। असुर

दितिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्य। राक्षस। असुर।

दित्य [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्य। [वि.] जो छेदने या काटने योग्य हो।

दित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देने की इच्छा। २-वह व्यवस्था जिसके अनुसार कोई व्यक्ति यह निश्चय करता है कि मेरे मरने पर मेरी संपत्ति अमुक-अमुक व्यक्तियों को दी या बाँटी जाय। वसियत। विल।

दित्सा-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र या लेख जिसमें कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी सम्पत्ति अमुक-अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार मिले। वसीयतनामा। विल।

दित्सु [वि.] (सं.) दान करने की इच्छा रखने वाला। जो दान करना चाहता हो।

दित्स्य [वि.] (सं.) दान करने के योग्य।

दिदार* [संज्ञा पु.] देखो 'दीदार'।

दिदृक्षमान [वि.] (सं.) जो देखने की इच्छा रखता हो।

दिदृक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखने की अभिलाषा।

दिदृक्षु [वि.] (सं.) जो देखना चाहता हो।

दिदृक्षेय [वि.] (सं.) दर्शनीय। जो देखने योग्य हो।

दिद्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वज्र। २-वाण।

दिधक्षमाण [वि.] (सं.) जिसको जलाने की इच्छा हो।

दिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-धैर्य। २-धारण करने की क्रिया।

दिधिषु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो बार विवाह की हुई स्त्री का दूसरा पति। २-गर्भाधान करने वाला मनुष्य।

दिधिषू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जिसके दो विवाह हुए हों। द्विरूढ़ा। २-वह स्त्री या कन्या जिसका विवाह उसकी बड़ी बहन से पहले हुआ हो।

दिधिषूपति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिधिषु'।

दिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २-एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। आठ पहर या चौबीस घंटे का समय। ३-समय। काल। वक्त। ४-निश्चित या उचित समय। ५-वह समय जिसके बीच कोई विशेष बात हो। जैसे-जवानी के दिन। *दिन आना*-१-समय पूरा होना। २-अन्त समय आना। *दिन काटना*-जैसे-तैसे समय बिताना। *दिन को तारे दिखाई देना*-दुःख से बुद्धि ठिकाने न रहना।

दिन को दिन रात को रात न समझना-अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। दिन रात काम में लगे रहना। *दिन गँवाना*-व्यर्थ समय खोना। *दिन चढ़ना*-१-गर्भ के दिन होना। २-सूर्य निकलने के उपरांत कुछ और समय बीतना। *दिन छिपना*-सूर्यास्त होना। *दिन डूबना*-सूर्य डूबना। संध्या होना। *दिन जाना*-३-आनन्द में समय बीतना। २-समय बीतना या गुजरना। *दिन टलना*-१-मरणासन्न व्यक्ति का समय बीतना २-गर्भ के चिह्न प्रकट होना। *दिन ढलना*-तीसरा पहर। सूर्यास्त होने को होना। *दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े*-ऐसे समय जब सब लोग जागते और देखते हों। *दिन दोपहर या दिन धौले*-देखो 'दिन दहाड़े'। *दिन दिन, दिन पर दिन*-हर समय। प्रतिदिन। *दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना*-बहुत जल्दी-और बहुत अधिक बढ़ना। खूब उन्नत पर होना। *दिन धरना या धराना*-दिन निश्चित करना या कराना। *दिन निकलना*—-सूर्योदय होना। २-समय न रहना। *दिन पड़ना*-संकट आना। *दिन पूरे करना*-जैसे तैसे गुजारा करना। *दिन पूरे होना*-१-गर्भ का नवां महीना पूरा होना। २-मर जाना। जीवन लीला समाप्त होना। *दिन बिगड़ना*-बुरे दिन आना। *दिन बहुरना, फिरना*-अच्छे दिन फिर आना। *दिन भरना*-देखो 'दिन पूरे करना'। *दिन भारी होना, रहना*-कठिन समय आना। *दिन भुगताना*-जैसे तैसे गुजारा करना। *दिन मूँदना*-सूर्यास्त होना। *दिन रो-रोकर काटना*-दुख से दिन बिताना। *दिन होना*-सूर्य आकाश में होना। दिनों क के फेर होना-दशा बदलना। दिनों को धक्के देना-बहुत कष्ट से जीवन बिताना। दिनों से उतरना-जवानी ढलना। दिन-रात-सर्वदा। सदा। पतले दिन-नाजुक वक्त। बुरे या खोटे दिन। [क्रि. वि.] (हिं.) सदा। सर्वदा। हमेशा।

दिनअर* [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

दिनकंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

दिनकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिनकर-कन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

दिनकर-तनय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनि। २-यम ३-कर्ण। ४-सुग्रीव।

दिनकर-तनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

दिनकर-देव [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यनारायण।

दिनकर-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम। २-शनि। ३-सुग्रीव। ४-कर्ण। ५-अश्विनीकुमार।

दिनकरात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिनकर-सु

दिनकरात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य की कन्या। २-यमुना। ३-तापती।

दिनकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिनकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिनकर'।

दिनकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार। अंधेरी।

दिनक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी तिथि का क्षय।

दिनचर्य्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नित्य दिन भर में किया जाने वाला कामधंधा। दिन भर का कर्म।

दिनचारी [संज्ञा पु.] (सं.) दिन को चलाने वाला सूर्य।

दिनज्योति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दिन का उजेला २-धूप। [संज्ञा पु.] सूर्य।

दिनदानी* [संज्ञा पु.] (हिं.) नित्य बहुत सारा दान करने वाला। बहुत बड़ा दानी। गरीब परवर।

दिनदीप [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दिन-दुःखित [संज्ञा पु.] (सं.) चकवा पक्षी।

दिननाथ [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दिननायक [संज्ञा पु.] (सं.) दिन का स्वामी, सूर्य।

दिननाह [संज्ञा पु.] (सं.) दिननाथ। सूर्य।

दिनप [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिन-पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य २-आक। मंदार। ३-दिन या वार के पति।

दिन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र अथवा पत्र

समूह जिसमें दिन या वार, तिथियाँ और तारीखें (दिनांक) दी जाती हैं। कैलेंडर।

दिनपाकी-अजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का अजीर्ण।

दिनपात [संज्ञा पु.] (सं.) तिथि का क्षय।

दिनपाल [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य।

दिनप्रणी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिनबंधु, दिनबन्धु [संज्ञा पु] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिनबल [संज्ञा पु.] (सं.) वह राशि जो दिन के समय बली हो। (फलित ज्योतिष)।

दिनमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। रवि। २-आक। मंदार।

दिनमनि*+ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'दिनमणि'

दिनमयूख [संज्ञा प.] (सं.) सूर्य। २-आक मंदार।

दिनमल [संज्ञा पु.] (सं.) मास। महीना।

दिनमान [संज्ञा पु.] (सं) सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय का मान। दिन की अवधि।

दिनमाली [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य।

दिनमुख [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। सवेरा।

दिनयौवन [संज्ञा पु.] (सं.) दो पहर का समय मध्याह्न।

दिनरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। २-आक। मदार

दिनराइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिनराज'।

दिनराज [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य।

दिनशेष [संज्ञा पु.] (सं) दिनान्त। सायंकाल। संध्या।

दिनांक, दिनाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) गिनती के विचार से महीने का कोई दिन। तारीख।

दिनांड, दिनाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार। अंधेरा।

दिनांत, दिनान्त [संज्ञा पु.] (सं.) सायंकाल। संध्या। शाम।

दिनांतक, दिनान्तक [संज्ञा पु.] (सं) अंधकार अंधियारा।

दिनांध, दिनान्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे दिन को दिखाई न दे। जैसे-उल्लू, चमगादड़ आदि।

दिनांश [संज्ञा पु] (सं.) १-दिन के तीन अंश या विभाग (प्रात, मध्याह्न और सायं)। २-दिन के पाँच अंश या विभाग जो इस प्रकार हैं-प्रातःकाल, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, और सायंकाल।

दिनाई+ [संज्ञा पु.] (देश.) दाद।

दिनाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह विषैली वस्तु जिसके खाने से तुरन्त मृत्यु हो जाय।

दिनागम [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। तड़का।

दिनाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मजदूरों की एक दिन की मजदूरी। २-मजदूरों का एक दिन का काम।

दिनातीत [वि.] (सं.) आजकल रुचि अथवा प्रचलन के विचार से पिछड़ा हुआ। जिसका अब प्रचलन या उपयोगिता न रह गई हो। आउट-आफ-डेट।

दिनादि [संज्ञा पु.] देखो 'दिनागम'।

दिनाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिनाप्त [वि.] (सं.) आजकल की रुचि, उपयोगिता या प्रचलन के अनुसार ठीक। अप-टु-डेट।

दिनार* [संज्ञा पु.] देखो 'दीनार'।

दिनारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल। सवेरा।

दिनारु+ [वि.] (हिं.) बहुत दिनों का पुराना।

दिनार्द्ध [संज्ञपु] (सं.) मध्याह्न। दोपहर।

दिनावसान [संज्ञा पु.] (सं.) संध्या। शाम।

दिनावा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली जो लगभग एक हाथ लम्बी होती है और हिमालय तथा आसाम की नदियों में पाई जाती है।

दिनास्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यास्त। संध्या।

दिनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक दिन की मजदूरी

दिनियर* [संज्ञा पु.] (हिं.) दिनकर। सूर्य।

दिनी [वि.] (हिं.) बहुत दिनों का। पुराना।

दिनेर [संज्ञा पु.] (हिं.) दिनकर। सूर्य।

दिनेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार। ३-दिन के अधिपति ग्रह।

दिनेशपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कुमुदनामक पुष्प।

दिनेशात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनि। २-यम। ३-सुग्रीव। ४-कर्ण।

दिनेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिनेश'।

दिनेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिनेश'।

दिनौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दिन के समय दिखाई देने का रोग।

दिपति+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीप्ति'।

दिपना* [क्रि. अ.] (हिं) चमकना। प्रकाशमान होना।

दिपाना* [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना। [क्रि स] (हिं.) चमकाना दीप्त करना।

दिप्सु [वि.] (हिं.) हानि पहुँचाने वाला।

दिव* [वि] देखो 'दिव्य'। [संज्ञा पु.] सत्यता प्रमाणित करने की परीक्षा।

दिमंकरसो [वि.] (हिं.) सौ और दो। एक सौ दो

दिमाक* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दिमाग'।

दिमाकदर [वि.] (हिं) देखो 'दिमागदार'।

दिमाग [संज्ञा पु.] (अ.) १-सिर के अन्दर का गूदा या भेजा। २-मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ। ३-अभिमान। शेखी। घमंड।

दिमाग आसमान पर चढ़ना, होना–बहुत गर्व होना। ऐंठे रहना। *दिमाग ऊँचा होना*–१-देखो 'दिमाग आसमान पर होना'। २-बहुत बुद्धिमान होना। *दिमाग का अर्क निचोड़ना*–बुद्धि से बहुत काम लेना।

दिमाग खाना या चाटना–व्यर्थ की बातें करके तंग करना। *दिमाग खाली करना*–ऐसा काम करना जिसमें मानसिक शक्ति क्षीण हो। माथा-पच्ची करना। *दिमाग चढ़ना*–देखो 'दिमाग आसमान पर चढ़ना'। *दिमाग झड़ना*–घमंड दूर होना। *दिमाग न पाया जाना या दिमाग न मिलना*–देखो 'दिमाग चढ़ना'। *दिमाग परेशान करना*–देखो 'दिमाग खाली करना'। *दिमाग में खलल होना*–पागल होना। *दिमाग में रहना*–ऐंठ में रहना। *दिमाग लड़ाना*–बहुत विचार करना।

दिमाग-चट [वि.] (अ., हिं) बहुत बकबक करके दूसरों का सिर खाने वाला। बकवादी।

दिमागदार [वि.] (अ., फा.) १-अच्छा मानसिक शक्ति वाला। बहुत भारी समझदार। २-अभिमानी। घमंडी।

दिमाग-रौशन [संज्ञा पु.] (अ.,फा.) मगज रौशन नास। सुँघनी।

दिमागी [वि] देखो 'दिमागदार'।

दिमात* [वि.] (हिं.) १-जिसकी दो माताएँ हों। २-जिसमें दो मात्राए हों।

दिमाना* [वि.] (हिं.) देखो 'दिवाना'।

दिम्मस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घास वाले ढेलों को जमाकर दुरमट से पीटने का काम।

दियट [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'दीअट'।

दियत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मार डालने या अंग-भंग करने के बदले में दिया जाने वाला धन

दियना [संज्ञा पु.] देखो 'दीआ'। [क्रि अ.] (हिं.) चमकना।

दियरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पकवान। २-देखो 'दीया'।

दियला* [संज्ञा पु.] देखो 'दीया'।

दियवा [संज्ञा पु.] देखो 'दीया'।

दियाँर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीमक'।

दिया [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दीया'।

दियानत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दयानत'।

दियानतदार [वि.] (हिं.) देखो 'दयानतदार'।

दियानतदारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दयानतदारी'।

दियाबत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) (संध्या के समय) दीपक जलाने का काम।

दियारा [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह भूमि जो नदी

के हट जाने से निकल आती है। कछार। खादर। २-प्रदेश। छोटा भू भाग।

दियासलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लकड़ी की तीली या सलाई जो रगड़ने से जल उठती है *दियासलाई लगाना*-आग लगाना। जलाना।

दिर [संज्ञा पु.] (हिं.) सितार का एक बोल।

दिरद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विरद'।

दिरम [संज्ञा पु.] (अ.) १-मिश्र देश का एक चांदी का सिक्का। २-साढ़े तीन माशे की एक तौल।

दिरमान* [संज्ञा पु.] (हिं.) चिकित्सा। इलाज।

दिरमानी [संज्ञा पु.] (हिं.) वैद्य। चिकित्सक। इलाज करने वाला।

दिरहम [संज्ञा पु.] (फा.) दिरम नामक मिश्रदेश का सिक्का।

दिरानी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'देवरानी'।

दिरिपक [संज्ञा पु.] (सं.) गेंद। कंदुक।

दिरिस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दृश्य'।

दिरेस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छपा हुआ कपड़ा। छींट। दरेस। २-संवारने या ठीक करने की क्रिया। [वि.] संवारा या ठीक किया हुआ। लैस। दुरुस्त।

दिर्हम [संज्ञा पु.] देखो 'दिरम'।

दिल [संज्ञा पु.] (फा.) १-कलेजा। हृदय। २-मन। चित्त। ३-साहस। दम। जियट। ४-प्रवृत्ति। इच्छा। *दिल अटकना*-१-प्रेम होना। आसक्त होना। २-चित्त प्रवृत्त होना। *दिल अटकाना*-१-तत्पर होना। २-चिन्ता होना। दिल आना-१-प्रेम या आसक्त होना। २-प्राप्ति की इच्छा होना। दिल उकताना-मन लगाना। उचाट होना। दिल उचटना-मन हटना। दिल उचाट होना। चित्त खिन्न होना दिल उमड़ना-दया अथवा दुःख से आँसू तक आना। दिल उलटना-१-चित्त व्याकुल या व्यग्र होना। २-मन न लगना। जी ऊबना। ३-घृणा होना। दिल कड़ा करना या कड़वा करना-हिम्मत बाँधना। साहस करना दिल का कँवल खिलना-चित्त प्रसन्न होना। दिल का गवाही देना-१-मन को किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना। २-उचित अनुचित होना न होना मानना। दिल का बादशाह-१-बहुत उदार। २-मन मौजी, लहरी। दिल का बुखार निकालना-कुछ कह कर मन की जलन मिटाना। दिल की आग खुलना-मन के बुखार निकलना। दिल की कली खिलना-जी खूब खुश होना। दिल की गाँठ खोलना-मन मुटाव या ईर्ष्या दूर करना। दिल का भर जाना-१-तृप्त होना। २-अधिक इच्छा न रहना। ३-अभिलाषा पूर्ण होने पर संतोष प्रसन्नता आदि होना। दिल की दिल में रहना-इच्छापूर्ण न होना। सोची या चाही हुई बात न कर पाना या न होना। दिल की फाँस-मन की पीड़ा या दुःख दिल की लगी बुझाना-हृदय के दुख को दूर करना।

दिल कुढ़ना-चित्त दुखी होना। दिल कुम्हिलाना-मन दुखी या शोकाकुल होना। दिल के दरवाजे खुलना-जी का हाल मालूम होना। दिल के फफोले फूटना-हृदय के उद्गार निकलना। दिल के फफोले फोड़ना-भली-बुरी बातें कहकर मन का क्रोध या दुःख कम करना। दिल (को) करार होना-हृदय में शांति, धैर्य या संतुष्टि होना। दिल को मसोसना-शोक, क्रोध आदि को दबा रखना। दिल को लगना-दिल पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। दिल खटकना-१-चित्त में खटका या सन्देह उत्पन्न होना। २-हानि आदि की आशंका से (किसी काम के करने से) जी हिचकना। दिल खट्टा होना-मन फिर जाना। घृणा वैराग्य आदि होना। दिल खिलना-चित्त प्रसन्न होना। दिल खुलना-जी खुलना। हिचक या संकोच न रहना। दिल खोलकर-१-जितनी इच्छा हो। मनमाना। २-बेधड़क। बिना सङ्कोच या हिचक के। दिल चलना-१-चाहना। इच्छा होना। २-मनमोहित होना। दिल चीर कर देखना-भीतरी हाल मालूम करना। दिल चुराना-१-मोहित करना। हृदय लेना। २-काम से भागना। काम न करने की इच्छा होना। दिल जमना-१-किसी काम में ध्यान या जी लगना। २-सन्तोष होना। जी भरना। दिल जमई करना-सान्त्वना देना। दिल जमाना-ध्यान देना। चित्त लगाना। दिल जलना-१-ईर्षा होना। २-कुढ़ना। मन में सन्ताप होना।

दिल जलाना-१-ईर्ष्या उत्पन्न करना। २-दुखी करना। ३-कुढ़ाना। दिल-जान से लगना सारा ध्यान लगा देना। तत्पर होकर करना। २-एक ही चिंता होना। दिल टूट जाना-उत्साह भंग हो जाना। दिल ठिकाने लगना-मन को सहारा देना। व्याकुलता। दूर करना। दिल ठिकाने होना-धैर्य, संतोष स्थिरता होना। दिल ठुकना-१-चित्त स्थिर होना। मन को संतोष होना। २-चित्त में दृढ़ता होना। साहस होना।

दिल ठोकना-मन को पक्का या दृढ़ करना। दिल डूबना-१-बेहोशी होना। मूर्छा आना। २-चित्त स्थिर न रहना। चित्त व्याकुल होना। दिल-ढूँढना-मन की बातों का पता लगाना दिल तड़पना-प्रेम की व्याकुलता, बेचैनी या घबराहट होना। दिल तोड़ना-हिम्मत या उत्साह भंग करना। दिल थामना- धैर्य या संतोष धारण करना। दिल दहलना-भय या आशंका से चित्त डाँवाडोल होना। डर से हृदय काँपना। दिल दुखना-चित्त को कष्ट पहुँचना। सताना। दिल देखना-मन के भेद का पता लगाना। दिल दौड़ना-मन मचलाना इच्छा होना। दिल धकधक करना-भय से व्याकुल होना। दिल धड़कना-कलेजा धक् धक् काँपना। दिल धुकड़-पुकड़ होना-घबराहट होना। दिल पक जाना-कष्ट से जी ऊब जाना दिल पकड़ लेना, दिल पकड़ कर बैठ जाना-दुखों के लिए जी कड़ा कर लेना। दिल पकड़ा जाना-जी पकड़ा जाना। भारी आशंका चित्त में उठना। दिल पर फिरना-ममता मुहब्बत से विकल होकर घूमना। दिल पर नक्श होना-जी में बैठ जाना या जम जाना। दिल पर मैल आना-प्रीति भंग होना। मनमुटाव होना। दिल पर सांप लोटना-किसी बात का ध्यान आने शोक, दुख या जलन होना। दिल पर हाथ रखना-१-संतोष देना। सत्य, जो दिल में है दिल पर हाथ रखे फिरना-ममता प्रेम और से विकल होकर घूमना। दिल पसीजना-१-दया से हृदय द्रवित होना। २-चित्त में स्नेह का संचार होना। दिल पाना-मन की थाह पाना। दिल पीछे पड़ना-चित्त बंटना। का किसी ओर लग जाना जिसमें दुख या कुछ बात भूल जाय। दिल फिरना, दिल फिर जाना-मन हट जाना। हृदय में घृणा या अरुचि उत्पन्न हो जाना। चित्त विरक्त होना। दिल बढ़ना-१-चित्त प्रसन्न या उत्साहित होना। २-हौसला बढ़ना। साहस बढ़ना। दिल बढ़ाना-१-उत्साह बढ़ना। २-साहस दिलाना। हिम्मत बंधाना। दिल बाग-बाग होना-बहुत प्रसन्न होना। दिल बुझना-मन में उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल बुरा होना, दिल बेकल होना-१-कै होना। उल्टी होना। २-चित्त में दुर्भाव या घृणा उत्पन्न होना। दिल बैठा जाना-१-चित्त ठिकाने न रहना। २-मन मरना। उदासी होना।

दिल भटकना-चित्त चंचल या व्यग्र होना। दिल भर आना-चित्त में दुःख या करुणा का उद्रेक होना। दिल भरना-१-चित्त सन्तुष्ट होना। मन अघाना। २-मन की अभिलाषा पूर्ण होने से आनन्द और सन्तोष होना। दिल भारी करना-चित्त खिन्न या दुखी करना। दिल मर जाना-मन का जोश, हिम्मत इच्छा, उमंगें आदि जाती रहना। दिल मसोस कर रह जाना-१-मन मसोस कर रह जाना। २-संतोष करना। दिल मसोसना-क्रोध शोक आदि को दबाकर रखना। दिल मारना-१-चित्त उदास या दुखी होना। २-इच्छा दबाना। दिल मिलना-समान प्रवृत्ति होना। एक मनुष्य के भावों का दूसरे मनुष्य के भावों के अनुकूल होना। दिल में आग लगाना-मन को जलाना।

दिल में आना-१-चित्त या मन में विचार उत्पन्न होना। २-मन में इच्छा होना। दिल में काँटा सा खटकना-बुरा लगना। दिल में खुभना, गड़ना-१-चित्त में जम जाना। हृदय पर गहरा प्रभाव करना। २-हृदय में अङ्कित हो जाना। दिल में गांठ, गिरह पड़ना-

'मन में गाँठ पड़ना'। दिल में घर करना-१-बराबर ध्यान बना रहना। हृदय में विश्वास योग्यता आदि जम जाना। दिल चुटकियाँ, चुटकी लेना-१-दिल्लगी उड़ाना। २-चुभती या व्यंगभरी या लगती बातें कहना। दिल में चुभना-चित्त में जम जाना, मर्म भेदना, गहरा प्रभाव करना। २-हृदय में अङ्कित होना। दिल में चोर बैठना-मन में चोर बैठना। दिल में जगह करना-१-हृदय में विश्वास योग्यता आदि जम जाना। २-बराबर ध्यान बना रहना। दिल में दिल डालना-१-अपना सा दूसरे का दिल बनाना। २-किसी के मन पर अपना प्रभाव डालना। दिल में फफोले पड़ना-चित्त को कष्ट दुःख पहुँचाना। दिल में फरक आना, दिल में बल पड़ना-सद्भाव में अन्तर आना, मनमुटाव होना। दिल में रखना-१-द्वेष रखना। बुरा मानना। २-गुप्त रखना। दिल मैला करना-मन मैला करना। दिल रखना-१-इच्छा करना। २-इच्छा पूरी करना। दिल रुकना-१-हिचकना। २-घबराना। दिल लगना-१-प्रेम होना। २-चित्त प्रवृत्त होना। दिल लगाना-१-तत्पर होना। २-प्रेम करना। दिल ललचना-१-चित्त आकर्षित होना। २-लालसा होना। दिल लेना-१-प्रेम में फँसाना। २-मन की असली बात जानना। दिल लोटना-जी छटपटाना। दिल सम्हालना-मन को वश में रखना। दिल से उठना-करने की इच्छा स्वयं उत्पन्न होना। दिल से उतरना, गिरना-१-आंखों से गिरना। मान न रहना। २-अच्छी न लगना। दिल से उतारना-भुलाना, चाह न रखना। दिल से दूर करना-भुला देना। ध्यान छोड़ देना। दिल से धुआं उठना-आह निकलना। दिल हट जाना-मन हट जाना। अरुचि घृणा या वैराग्य होना।

दिल हाथ में रखना-प्रसन्न या वश में रखना। दिल हाथ में लेना-किसी को प्रसन्न कर अधिकार में वशीभूत करना। दिल हिलना-आशंका या भय से दिल कांपना। ठिकाने न रहना। दिल ही दिल में-मन ही मन। चुपके से।

दिलगीर [वि.] (फा.) १-उदास। २-दुखी। शोकाकुल।

दिलगीरी [संज्ञा पु.] (फा.) १-उदासी। २-रंज। दुःख।

दिलगुरदा [संज्ञा पु.] (फा.) हिम्मत। साहस। बहादुरी।

दिलचला [वि] (फा, हिं.) १-साहसी। दिलेर २-रसिक।

दिलचस्प [वि.] (फा) मनोहर। चित्ताकर्षक।

दिलचस्पी [संज्ञा स्त्री] (फा) १-दिल का लगाना २-मनोरंजन।

दिलचोर [वि] (फा., हिं) काम करने से जी चुराने वाला। कामचोर।

दिलजमई [संज्ञा स्त्री] (अ.) तसल्ली। संतोष।

दिलजला [वि] (फा हिं.) जिसे बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा हो।

दिलदरिया [संज्ञा पु.] देखो 'दरियादिल'।

दिलदरियाव [संज्ञा पु.] देखो 'दरियादिल'।

दिलदार [वि.] (फा.) १-उदार। दाता। २-रसिक ३-प्रेमी। ४-प्रिय।

दिलदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-उदारता। २-रसिकता ३-प्रेमिकता।

दिलपसंद [वि.] (फा.) मनोहर। भला मालूम होने वाला। [संज्ञा पु.] १-एक प्रकार का कपड़ा। २-एक प्रकार का आम।

दिलवर [वि.] (फा.) प्यारा। प्रिय।

दिलबहार [संज्ञा पु.] (फा) एक प्रकार का सुन्दर रंग।

दिलरुबा [संज्ञा पु.] (फा.) जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा।

दिलवल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

दिलवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिलाना'।

दिलवाला [वि.] (फा.) १-उदार। दाता। २-साहसी। दिलेर।

दिलवैया [वि.] (हिं.) दिलवाने वाला। दूसरे को दिलाता हो।

दिलहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिल्ला'।

दिलहेदार [वि.] (हिं.) देखो 'दिल्लेदार'।

दिलाना [क्रि. स.] (हिं.) २-दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना। २-प्राप्त कराना।

दिलावर [वि.] (फा.) १-शूर। बहादुर २-उत्साही। साहसी।

दिलावरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बहादुरी। शूरता २-साहस।

दिलासा [संज्ञा पु.] (हिं.) आश्वासन। ढारस। तसल्ली

दम दिलासा-१-धैर्य। तसल्ली। २-धोखा। फरेब।

दिली [वि.] (हिं.) १-हृदय या दिल सम्बन्धी। हार्दिक। बहुत घनिष्ट।

दिलीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-इक्ष्वाकुवंशी राजा जो वाल्मीक के अनुसार राजा सगर के परपोते भागीरथ के पिता और रघु के परदादा थे। २-चन्द्रवंशी राजा कुरु के वंशज एक राजा का नाम।

दिलीर [संज्ञा पु.] (सं) भुइँफोड़। ढिंगरी।

दिलेर [वि.] (फा.) १-शूर। वीर। २-साहसी। हिम्मती।

दिलेरी [संज्ञा स्त्री.] (फा) १-बहादुरी। वीरता। २-साहस। हिम्मत।

दिल्लगी [संज्ञा स्त्री] (फा) १-दिल लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २-केवल मन बहलाने या हँसने-हँसाने की बात। परिहास। ठट्ठा। मजाक। *दिल्लगी उड़ाना*-(किसी को) अमान्य या तुच्छ ठहराने के लिए (उसके सम्बन्ध में) हँसी की बातें कहना। उपहास करना। *दिल्लगी में*-केवल दिल्लगी के विचार से। यों ही। हंसी में।

दिल्लगीबाज [संज्ञा पु.] (फा.) हँसी-दिल्लगी करने वाला। ठिठोलिया।

दिल्लगीबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मसखरापन। दिल्लगी करने का काम।

दिल्ला [संज्ञा पु.] (देश.) किवाड़ के पल्ले में वे चौकोर टुकड़े जो शोभा के लिए लगाये जाते हैं।

दिल्ली [संज्ञा स्त्री.] जमुनानदी के किनारे बसा हुआ उत्तर पश्चिम भारत का एक बहुत प्रसिद्ध नगर जो बहुत समय से हिन्दू राजाओं तथा मुसलमानों की राजधानी था और पुनः सन् १६१२ में अंगरेजों ने भी इसे राजधानी बनाया। और अब सन् १६४७ से स्वतन्त्र भारत की भी यही राजधानी है।

दिल्लीवाल [वि.] (हिं.) दिल्ली-सम्बन्धी। दिल्ली का। २-दिल्ली का रहने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का दिल्ली का बना हुआ देशी जूता।

दिल्लेदार [वि.] (हिं) दिले वाला (किवाड़)। जिसमें दिल्ला लगा हो।

दिवंगत, दिवङ्गत [वि.] (सं.) (स्त्री दिवंगता) १-मरा हुआ। २-जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।

दिवंगता, दिवङ्गता [वि.] (सं.) (स्त्री प्र.) १-मरी हुई। मृत। २-जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।

दिवंगम, दिवङ्गम [वि.] (सं) आकाशगामी। स्वर्गगामी।

दिव् [संज्ञा पु.] देखो 'दिव'।

दिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। आकाश। ३-वन ४-दिन।

दिवस्त [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्र। [वि.] (सं.) स्वर्गीय।

दिवगृह [संज्ञा पु.] देखो 'देवगृह'।

दिवराज [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग के राजा। इन्द्र।

दिवरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'देवरानी'।

दिवला* [संज्ञा पु.] (हिं) दीपक। दीया।

दिवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'दिउली'।

दिवस [संज्ञा पु.] (सं.) दिन। वासर। रोज।

दिवस-अंध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिवांध'।

दिवसकर [संज्ञा पु.] (सं) १ सूर्य। दिनकर। २-आक। मंदार।

दिवसकृत [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दिवसनाथ [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य।

दिवसभर्ता [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य। दिनकर।

दिवसमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। दिवाकर।

दिवसमुख [संज्ञा पु.] (सं.) सवेरा। प्रातःकाल।

दिवसमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक दिन का वेतन या मजदूरी।

दिवसविगम [संज्ञा पु.] (सं) संध्याकाल। शाम।

दिवसांतर, दिवसान्तर [संज्ञा पु.] (सं) दूसरा दिन।

दिवसेश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दिवसेश्वर'।

दिवसेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। दिनकर।

दिवस्पति [संज्ञा पु.] (सं) १-सूर्य। २-तेरहवें मन्वंतर के इन्द्र का नाम।

दिवस्पृश [संज्ञा पु.] (सं) (वामनावतार में) पैर द्वारा स्वर्ग को छूने वाले, विष्णु।

दिवांध, दिवान्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिनौंधी नाम का रोग। २-उल्लू। [वि.](सं.) जिसको दिन में सूझता हो। जिसे दिनौंधी हो।

दिवांधकी, दिवाधकी [संज्ञा स्त्री] (सं) छुछूँदर।

दिवा [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन। दिवस। २-बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ७ नगण और एक गुरु होता है।

दिवाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। रवि। २-आक। मंदार। ३-काक। कौवा। ४-एक प्रकार का फूल।

दिवाकरसुत [संज्ञा पु.] (सं). १-शनि। २-यम। ३-कर्ण। ४-सुग्रीव।

दिवाकीर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-नापित। नाई। हज्जाम। २-चांडाल। ३-उल्लू।

दिवाकीर्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह सामगान जो पूरे साल में होने वाले गवानयन यज्ञ में विष्णु संक्रान्त के दिन गाया जाता है।

दिवाचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। चिड़िया। चांडाल।

दिवाचारी [वि.] (सं.) दिन में चलने वाला।

दिवाटन [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौवा।

दिवातन+ [संज्ञा पु.] (सं.) एक दिन की मजदूरी [वि.] (हिं.) रोजाना। दिनभर का। प्रतिदिन का।

दिवानर [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत प्रकाश का दिन। जिस दिन बहुत उजाला हो।

दिवान [संज्ञा पु.] देखो 'दीवान'।

दिवाना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दीवाना'।*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिलाना'।

दिवानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। रवि।

दिवानिश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात दिन।

दिवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीवानी'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक वृक्ष विशेष जो बरमो में अधिकता से होता है।

दिवापृष्ट [संज्ञा पु.] सूर्य।

दियाप्रदीप [संज्ञा पु.] (सं.) नीच व्यक्ति।

दिवाभिसारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो शृंगार करके दिन में अपने प्रेमी से मिलने के निर्दिष्ट स्थान में जावे।

दिवाभीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। तस्कर। ३-उल्लू।

दिवाभीति [वि.] (सं.) जिसको दिन में बाहर निकलने से भय हो।

दिवामणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिवामध्य [संज्ञा पु.] (सं.) मध्याह्न। दोपहर।

दिवार+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दीवार'।

दिवारी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दीवाली'।

दिवाल [वि.] (हिं.) देने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीवार'।

दिवालय+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'देवालय'।

दिवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मनुष्य की वह आर्थिक हीन अवस्था जिसमें ऋण चुकाने के लिए पास में कुछ भी न रह जाय। २-किसी वस्तु या गुण का सर्वथा अभाव। जैसे-बुद्धि का दिवाला। *दिवाला निकलना*-दिवाला होना *दिवाला निकालना या मारना*-दिवालिया बन जाना।

दिवालिया [वि] (हिं.) जिसने दिवाला निकाला हो।

दिवालियापन [संज्ञा पु.] (सं.) दिवालिया होने का भाव।

दिवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीवाली'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खराद या सान में लपेटने का तस्मा। दयाली।

दिवावसान [संज्ञा पु.] (सं.) सन्ध्या। शाम।

दिवावसु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मंदार।

दिवाशय [संज्ञा पु.] (सं.) बादल से घिरा हुआ दिन। अँधेरा दिन।

दिवासंचार, दिवासञ्चार [संज्ञा पु.] दिन में घूमने वाला प्राणी।

दिवास्वप्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन में निद्रा लेना। २-दिन के समय जागते रहने पर भी, स्वप्न देखने के समान तरह-तरह की असंभव कल्पनाएँ करना। हवाई किले बनाना। मन के लड्डू खाना। डे-ड्रीम।

दिवास्वाप [संज्ञा पु.] (सं.) दिवानिद्रा। दिन में सोना।

दिवास्वापा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बगलापक्षी।

दिवि [संज्ञा पु.] देखो 'दिव'। [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकंठ नामक पक्षी।

दिविक्षया [वि.] (सं.) स्वर्गवासी।

दिविगत [वि] (सं.) जो स्वर्ग में गया हो।

दिविचर [वि.] (सं.) आकाश में घूमने वाला। आकाशगामी।

दिविचारी [वि.] (सं.) आकाशगामी। आकाश में घूमने वाला।

दिविज [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो स्वर्ग में उत्पन्न हो।

दिविजात [वि.] (सं.) स्वर्ग में उत्पन्न।

दिविता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीप्ति। चमक।

दिविदिवि [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसे दक्षिण अमेरिका से भारत में लाया गया।

दिवियोनि [वि.] (सं.) जिसका जन्म स्वर्ग में हुआ हो।

दिविषद् [संज्ञा पु.] (सं.) देव। देवता। [वि.] स्वर्गवासी। मृत।

दिविष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ।

दिविष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग में रहने वाले, देवता। २-ईषान कोण के एक देश का नाम।

दिविस्पृश [वि.] (सं.) स्वर्ग को स्पर्श करने वाला।

दिवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

दिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) दिक्पाल।

दिवैया* [वि.] (हिं.) देनेवाला।

दिवोका [संज्ञा पु.] देखो 'दिवौक'।

दिवोदास [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र का नाम। २-[illegible] इन्द्रसेन के पौत्र और वध्रश्व के पुत्र का नाम।

दिवोद्भवा [संज्ञा स्त्री] (सं.) इलायची।

दिवोल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं) दिनके समय आकाश से गिरने वाली उल्का या चमकीला पिंड।

दिवौका [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो स्वर्ग में रहता हो। २-देवता। ३-चातक पक्षी।

दिव्य [वि.] (सं.) १-स्वर्ग से संबंध रखने वाला। स्वर्गीय। २-आकाश से संबंध रखने वाला। अलौकिक। ३-प्रकाशमान्। चमकीला। ४-बहुत बढ़िया या अच्छा। [संज्ञा पु.] १-यव। जौ। २-गुग्गुल। ३-आंवला। ४-शतावर। ५-ब्राह्मी। ६-सफेद दूब। ७-हड़। ८-लौंग। ९-सूअर। १०-तत्ववेत्ता। ११-हरिचन्दन। १२-महामेदा नामक औषध (अष्ट वर्ग में)। १३-कपूरकचरी। १४-चमेली। १५-जीरा। १६-तीन प्रकार के केतुओं में से एक। १७-तांत्रिकों के आचार के तीन भावों में से एक। १८-धूप में बरसते हुए पानी में स्नान। १९-आकाश में होने वाला एक प्रकार का उत्पात। २०-तीन प्रकार के नायकों में से वह जो स्वर्ग में रहने वाला या अलौकिक हो। जैसे-राम, कृष्ण आदि। २१-एक प्रकार की पुरानी परीक्षा जिससे किसी मनुष्य के दोषी या निर्दोष होने का

निर्णय किया जाता था। २२-शपथ विशेषतः देवताओं आदि की शपथ। सौगन्द।

दिव्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का सांप। २-एक प्रकार का जन्तु।

दिव्यकट [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीनकाल का देश जो पश्चिम दिशा में था। (महाभारत)।

दिव्यकवच [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का दिया हुआ कवच या तनुत्राण। २-वह स्तोत्र जिसका पाठ करने से अंग रक्षा हो।

दिव्यक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिव्य के द्वारा परीक्षा लेने की क्रिया।

दिव्यगंध, दिव्यगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौंग। २-गंधक।

दिव्यगंधा, दिव्यगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी इलायची। २-बड़ी चेंच का साग।

दिव्यगायक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग में गाने वाले, गंधर्व।

दिव्यगायन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्गीय संगीत।

दिव्यचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्ञानचक्षु। २-अंधा। ३-उपनेत्र। चश्मा। ऐनक। ४-बंदर। ५-एक प्रकार का गंधद्रव्य।

दिव्यचंदन, दिव्यचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) हरिचन्दन।

दिव्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दिव्य का भाव। २-देवभाव। ३-सुन्दरता। उत्तमता।

दिव्यतेज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मीबूटी।

दिव्यदर्शी [वि.] (सं.) अलौकिक पदार्थों के देखने वाला।

दिव्यदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक देवी का नाम।

दिव्यदोहद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अभीष्ट सिद्धि के निमित्त देवता को अर्पण किया हुआ पदार्थ।

दिव्यदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त पदार्थ दिखाई दें। २-ज्ञान दृष्टि। ३-बहुत दूर के या छिपे हुए पदार्थों या बातों को देखने और समझने की शक्ति जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओं या कुछ विशिष्ट व्यक्तियों में होने वाली मानी जाती है। क्लेयरवाएंस।

दिव्यधर्मी [वि.] (सं.) सुशील। अच्छा।

दिव्यनगर [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावती नगरी।

दिव्यनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आकाशगंगा। २-एक नदी का नाम (शिवपुराण)।

दिव्यनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

दिव्यपंचामृत, दिव्यपञ्चामृत [संज्ञा पु.] (सं.) घी, दूध, दही, मक्खन और चीनी इन पांच वस्तुओं को मिलाकर बनाया हुआ पंचामृत।

दिव्यपुरुष [संज्ञा पु.] ((सं.) वह व्यक्ति जो लौकिक न हो, बल्कि जिसके स्वर्गीय होने की कल्पना की गई हो।

दिव्यपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) करवीर। कनेर।

दिव्यपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पेड़ जिसके लाल फूल लगते हैं।

दिव्यपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल रंग का आक या मदार।

दिव्ययमुना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामरूप देश की एक नदी का नाम जो परम पवित्र मानी जाती जाती है।

दिव्यरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) चिन्तामणि नामक एक कल्पित रत्न जो सब कामनाओं को पूर्ण करता है।

दिव्यरथ [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का विमान।

दिव्यरस [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

दिव्यलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वालता। मूरहरी

दिव्यवस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का प्रकाश।

दिव्यवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलौकिकवाणी। आकाशवाणी।

दिव्यवाह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृषभानु नामक गोप की छः कन्याओं में से एक।

दिव्यश्रोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह कान जिससे सब कुछ सुना जाय।

दिव्यसरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

दिव्यसार [संज्ञा पु.] (सं.) साखू का पेड़।

दिव्यसूरि [संज्ञा पु.] (सं.) रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम यह हैं-कासार, भूत, महत, भक्तसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविंद्र, रामानुज और गौदादेवा या मधुकर कवि।

दिव्यस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिव्यांगना। अप्सरा।

दिव्यांगना, दिव्याङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी देवता की स्त्री। २-अप्सरा।

दिव्यांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दिव्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह जो स्वर्ग में रहने वाली या अलौकिक हो। २-आंवला। महामेदा। ४-ब्राह्मी जड़ी। ५-बड़ा जीरा। ६-सफेद दूब। ७-हड़। ८-कपूरकचरी। ९-शतावर। १०-बाँझककोड़ा।

दिव्यादिव्य [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रकार के नायकों में से वह व्यक्ति जो लौकिक न हो, बल्कि जिसमें देवताओं के भी गुण हों।

दिव्यादिव्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह नायिका स्त्री जो लौकिक न हो बल्कि जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों।

दिव्याश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्य-आश्रम। पवित्र आश्रम।

दिव्याश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन पुण्यक्षेत्र जहाँ पूर्वकाल में भगवान् विष्णु ने तपस्या की थी।

दिव्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक प्रकार का आसन।

दिव्यास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का दिया हुआ हथियार। २-मंत्रों द्वारा चलने वाला हथियार।

दिव्येलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

दिव्योदक [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा का पानी। बरसा हुआ जल।

दिव्योपपादक [संज्ञा पु.] (सं.) बिना माता-पिता के उत्पन्न देवता।

दिव्यौषधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैंनसिल।

दिश् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिशा। दिक्। [संज्ञा पु.] कान के अधिष्ठाता देवता का नाम।

दिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नियत स्थान के इधर-उधर का शेष विस्तार। ओर। तरफ। २-क्षितिज वृत्त के चार कल्पित (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) विभागों में से किसी ओर का विस्तार। (प्रत्येक दो दिशाओं के मध्य के चारों कोणों की भी चार दिशायें और इनके अतिरिक्त, सिर के ऊपर की और पैर के नीचे की ये दो दिशायें और मानी जाती हैं। ३-दस की संख्या। ४-रुद्र की एक स्त्री का नाम

दिशागज [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज।

दिशाचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

दिशाजय [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्विजय।

दिशापाल [संज्ञा पु.] (सं.) दिक्पाल।

दिशाभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) दिशा के संबंध में भ्रम होना। दिक्भ्रम।

दिशावकाशकव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जैनियों का व्रत जिसमें वे प्रातःकाल यह निश्चय कर लेते हैं कि आज अमुक दिशा में इतनी दूर तक जायेंगे।

दिशाशूल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो दिक्शूल।

दिशासूल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिक्शूल'।

दिशि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दिशा'।

दिशिनियम [संज्ञा पु.] देखो 'दिशावकाशकव्रत'।

दिशेभ [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज।

दिशोदंड, दिशोदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) अनादर द्वारा दंड।

दिश्य [वि.] (सं.) १-दिशा-सम्बन्धी। २-निर्दिष्ट

दिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाग्य। २-उपदेश। ३-दारुहल्दी। ४-काल। ५-वैवस्यत मनु के एक पुत्र का नाम।।

दिष्ट-बंधक, दिष्टबन्धक [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बंधक या रेहन जिसमें महाजन को केवल रुपये का सूद मिलता है और रेहन की हुई

वस्तु पर कोई अधिकार नहीं होता।

दिष्टांत, दिष्टान्त [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मौत।

दिष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-भाग्य। २-उपदेश। ३-उत्सव। ४-प्रसन्नता। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दृष्टि'।

दिष्णु [वि.] (सं.) देनेवाला। दाता।

दिसंतर※+ [संज्ञा पु.] (हि.) देशान्तर। विदेश। परदेस। [क्रि. वि.] दिशाओं के अन्त तक। बहुत दूर तक।

दिसंबर [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी साल का बारहवाँ या अन्तिम महीना जो इकतीस दिनों का होता है।

दिस+※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दशा'।

दिसना※ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'दिखना'।

दिसा [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'दिशा'। २-देखो 'दशा'। +[संज्ञा स्त्री.] (हि.) मलत्याग करने की क्रिया। झाड़ा फिरना।

दिसादाह※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दिक्‌दाह'

दिसावल [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति

दिसावर [संज्ञा पु.] (हि.) दूसरा देश। देशान्तर। परदेश। विदेश। *दिसावर उतरना*-विदेश में भाव गिरना।

दिसावरी [वि.] (हि.) विदेश से आया हुआ। बाहरी।

दिसाशूल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिक्‌शूल'।

दिसासूल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिक्‌शूल'।

दिसि※+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दिशा'।

दिसिटि※+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दृष्टि'।

दिसिदुरद※+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिग्गज'।

दिसिनायक※+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिक्‌पाल'।

दिसिप※ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिक्‌पाल'।

दिसिराज※ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दिक्‌पाल'।

दिसैया※ [वि.] (हि.) १-देखने वाला। २-दिखाने वाला।

दिस्टी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दृष्टि'।

दिस्टीबंध, दिस्टीबन्ध [संज्ञा पु.] (हि.) १-नजरबंद। २-इन्द्रजाल। जादू।

दिस्ता [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दस्ता'।

दिस्सा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ओर। तरफ।

दिहंदा [वि.] (फा.) दातादेने वाला।

दिहरा※ [संज्ञा पु.] (हि.) देवालय। देवमंदिर।

दिहली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दहलीज'।

दिहाड़ा [संज्ञा पु.] १-दुर्गत। बुरी हालत। २-दिन।

दिहाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दिन। २-दिन भर की मजदूरी

दिहात [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'देहात'।

दिहाती [वि.] (हि.) देखो 'देहाती'।

दिहातीपन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'देहातीपन'।

दिहुड़ी, दिहुढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ड्योढ़ी'।

दिहुला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

दिहेज [संज्ञा पु.] देखो 'दहेज'।

दीं [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दीमक'।

दीअट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दीयट'।

दीआ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दीया'।

दीक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का तेल जो काढ़ू या हिजली के पेड़ की छाल से निकलता है।

दीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीक्षा देने वाला। गुरु २-शिक्षक।

दीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) दीक्षा देने की क्रिया।

दीक्षांत, दीक्षान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह अवभृथ यज्ञ या स्नान जो किसी यज्ञ के अन्त में उस की त्रुटियों या दोषों की शांति के लिए हो। २-किसी महाविद्यालय की पढ़ाई का सफलतापूर्वक अन्त।

दीक्षांत-भाषण, दीक्षान्त-भाषण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बड़े विद्वान का वह भाषण जो किसी विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों के समक्ष उन्हें उपाधि अथवा प्रमाण-पत्र आदि देने का समय होता है। *कॉन्वोकेशन-एड्रेस*।

दीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यजन। यज्ञकर्म। २-गुरु या आचार्य का नियमपूर्वक मन्त्रोपदेश। ३-उपनयन संस्कार जिसमें आचार्य गायत्री मन्त्र का उपदेश देता है। ४-गुरुमंत्र। ५-पूजन।

दीक्षा-गुरु [संज्ञा पु.] (सं.) वह गुरु जिससे किसी मंत्र का उपदेश या दीक्षा मिली हो।

दीक्षापति [संज्ञा पु.] (सं.) दीक्षा अथवा यज्ञ का रक्षक, सोम।

दीक्षापाल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दीक्षापति'।

दीक्षायूप [संज्ञा पु.] (सं.) काठ का वह हथियार जिससे यज्ञ का पशु मारा जाता है।

दीक्षित [वि.] (सं.) १-जिसने संकल्प करके यज्ञ किया हो। २-जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो।

दीक्षितायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीक्षित की स्त्री। २-दीक्षित जाति की ब्राह्मण स्त्री।

दीखना [क्रि. अ.] (हिं.) दिखाई देना। देखने में आना। दृष्टिगोचर होना।

दीघी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दीर्घिका। बावली। २-पोखरा। तालाब।

दीच्छा※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दीक्षा'।

दीठ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखने की वृत्ति अथवा शक्ति। नयनज्योति। दृष्टि। २-किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी बुरी नजर लगना जिसका बुरा प्रभाव पड़े। ३-देख-भाल। ४-परख। पहचान। ५-कृपादृष्टि। ७-देखने के लिए नेत्रों की प्रवृत्ति। दृक्‌पात। अवलोकन। चितवन। नजर। निगाह। ७-आशा की भावना। ८-आँख की ज्योति का प्रसार जिससे रंग-रूप का बोध होता है। दृक्‌पथ। ९-ध्यान। विचार। संकल्प। १०-देखने में प्रवृत्त नेत्र। देखने में खुली हुई आंख। *दीठ उठाना*-ताकने के लिए आंख ऊपर करना *दीठ उतारना, झाड़ना*-मंत्र द्वारा नजर दूर करना। *दीठ करना*-ताकना। देखना। *दीठ खा जाना*-बुरी दृष्टि से शारीरिक हानि। *दीठ गड़ाना, जमाना*-एक टक देखना। *दीठ चुराना*-(लाज या भय से) सामने न आना। *दीठ चूकना*-नजर पड़ना। *दीठ जुड़ना*-देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। *दीठ जोड़ना*-आंख मिलाना। देखादेखी करना। *दीठ पर चढ़ना*-१-निगाह से जचना। पसंद आना। २-खटकना। ३-बुरी दृष्टि से शारीरिक अहित होना *दीठ फिरना*-१-आंखों का दूसरी ओर देखने में लगना। २-प्रेम या ध्यान न रहना। *दीठ फिसलना*-चमक-दमक के कारण नजर न ठहरना। आंख में चकाचौंध होना। *दीठ फेंकना*-दूरी पर नजर डालना। ताकना। *दीठ फेरना*-१-नजर हटा लेना। दूसरी ओर देखना। २-कृपादृष्टि न रखना। *दीठ बचाना*-१-लाज के कारण सामने न आना। २-न दिखाना। छिपाना। *दीठ बांधना*-जादू से नजर को बांधना। *दीठ बिछाना*-१-बड़ी श्रद्धा से स्वागत करना। २-उत्सुकता से आने की प्रतीक्षा करना। *दीठ भर देखना*-जी भरकर देखना। *दीठ मारना*-१-आंख से इशारा करना। आंख के इशारे से रोकना। *दीठ मारी जाना*-देखने की शक्ति न रहना। *दीठ मिलना मिलाना*-आंख मिलाना। देखा-देखी करना। *दीठ में आना, दीठ में पड़ना*-दिखाई पड़ना। *दीठ में समाना*-हृदय में ध्यान बना रहना। *दीठ लगाना*-१-देखा-देखी से प्रेम होना। २-नजर लगना। *दीठ लगाना*-ताकना। *दीठ लड़ना*-घूरा-घूरी होना *दीठ लड़ाना*-घूरना। आंखें, आंखों के सामने किये रहना। *दीट से उतरना या गिरना*-भाव, विश्वास या प्रेम पात्र न रहना। *दीठ होना*-इच्छा होना।

दीठबंद [संज्ञा पु.] (हि.) इन्द्रजाल की ऐसी माया जिसमें कुछ का कुछ दिखाई दे। जादू।

दीठबंदी※ [संजा स्त्री.] (हि.) नजरबंदी। जादू।

दीठवंत [वि.] (हि) १-जिसको दिखलाई पड़े। सुझाका।

दीत※ [संज्ञा पु.] (डि.) सूर्य।

दीति [संज्ञा स्त्री] (सं.) दीप्ति। प्रकाश। रोशनी

दीदा [संज्ञा पु.] (फा.) १-दृष्टि। नजर। २-दर्शन। देखा-देखी। ३-आंख। नेत्र। ४-

दिठाई। अनुचित साहस। दीदा लगाना–जी लगाना। ध्यान जमाना। दीदे का पानी ढल जाना–निर्लज्ज हो जाना। दीदा धोई–जिसकी आंखों में शर्म न हो (स्त्री)। निर्लज्ज दीदे पटम होना–आंखों का फूट जाना (स्त्री) दीदा फटी–जिसकी आंखों में शर्म न हो। निर्लज्ज (स्त्री)। दीदा फूटना–आँखें अंधी होना। दीदे फाड़कर देखना–ध्यानपूर्वक देखना। टकटकी बांधकर देखना। दीदे मटकाना–हावभाव सहित आँखों की पुतली चमकाना।

दीदार [संज्ञा पु.] (फा.) देखादेखी। दर्शन। साक्षात्कार।

दीदारू+ [वि.] (हिं.) दर्शनीय। देखने योग्य।

दीदिवि [संज्ञा प.] (सं.) १–स्वर्ग। २–बृहस्पति। ३–अन्न। ४–खाद्यपदार्थ। [वि.] फिर-फिर बारंबार।

दीदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ी बहन।

दीधिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सूर्य चन्द्रमा आदि

दीधितिमान् [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दीन [वि.] (सं.) १–दरिद्र। गरीब। २–दुःखी। संतप्त। ४–नम्र। विनीत। [संज्ञा पु.] (अ.) मत। मजहब। दीन दुनिया–लोक परलोक। [संज्ञा पु.] (सं.) तगर का फूल।

दीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दरिद्रता। गरीबी। २–कातरता। ३–उदासी। खिन्नता। ४–विनीत भाव। नम्रता।

दीनताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीनता'।

दीनत्व* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दीनता'।

दीनदयाल [वि.] (हिं.) देखो 'दीनदयालु'।

दीनदयालु [वि.] (सं.) दीनों पर दया करने वाला। [संज्ञा पु.] ईश्वर का एक नाम।

दीनदार [वि.] (अ., फा.) अपने धर्म पर विश्वास रखने वाला। धार्मिक।

दीनदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) धर्माचरण।

दीनदुनी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) लोकपरलोक।

दीनबंधु, दीनबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीनदुखियों का सहायक और मित्र। २–ईश्वर।

दीनसाधक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

दीना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुहिया। मूषिका। [वि.] (स्त्री. प्र.) दरिद्रा।

दीनानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीनों का नाथ या रक्षक। २–ईश्वर का नाम।

दीनार [संज्ञा पु.] (सं.) १–सोने का गहना। २–निष्क की तौल। ३–स्वर्णमुद्रा। मोहर।

दीनारी [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहारों का ठप्पा।

दीपंकर, दीपङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध के अवतारों में से एक।

दीप [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीया। चिराग। जलती हुई बत्ती। २–दस मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में तीन लघु एक गुरु और फिर एक लघु होता है। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्वीप'।

दीपक [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीया। चिराग। २–एक अर्थालङ्कार जिसमें प्रस्तुत (जो वर्णन का विषय हो) और अप्रस्तुत (जो वर्णन का उपस्थित विषय न हो और उपमान आदि हो) का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक कहा जाता है। ३-संगीत में ६ रागों में से एक। ४-एक ताल का नाम जिसमें प्लुत, लघु और प्लुत होते हैं। ५-अजवायन। ६-कुकुंम। केसर। ७-बाज पक्षी। ८–मयूर शिखा। ९–एक प्रकार की आतिशबाजी। [वि.] १–प्रकाश करने वाला। उजाला फैलाने वाला। २–जठराग्नि को दीप्त करने वाला। ३–शरीर में वेग या उमंग लाने वाला। उत्तेजक।

दीपकमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण, जगण, और गुरु होता है। २–दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एकावली और दीपक का मेल होता है।

दीपकर [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक जलाने का काम करने वाला। दीया जलाने वाला।

दीपकलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीपक या चिराग की लौ।

दीपकली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीपशिखा। दीपक की लौ।

दीपकवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार का बड़ा दीपक जिसमें दिया रखने के लिये अनेक शाखायें होती हैं। २–झाड़।

दीपकसुत [संज्ञा पु.] (सं.) कज्जल। काजल।

दीपकाला [संज्ञा पु.] (सं.) दीया जलाने का समय। संध्याकाल।

दीपकावृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीपक अलंकार का एक भेद। जिसमें या तो एक ही क्रिया पद भिन्न-भिन्न अर्थों में बार-बार आता है या एक ही अर्थ में भिन्न-भिन्न पद आते हैं। २–एक साखा।

दीपकिट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कज्जल। काजल।

दीपकूपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीए की बत्ती।

दीपखोरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीए की बत्ती।

दीप-ज्वालक [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक जलाने का काम करने वाला।

दीपत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कान्ति। चमक। २–ज्योति। शोभा। छटा। ३–यश। कीर्ति।

दीपति* [संज्ञा स्त्री (हिं.) १–जलता हुआ। २–चमकता हुआ। चमकीला।

दीप-दर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) मसालची। मशाल दिखाने वाला।

दीप-दान [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी देवता के सामने दीपक जलाने का काम। २–कार्तिक के महीने में राधा-दामोदर के सम्मुख अनेक दीपक जलाने का काम। ३–मरते हुए व्यक्ति से आटे के जलते हुए दीये का दान या संकल्प करना।

दीपदानी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह डिबिया जिसमें घी, बत्ती आदि दीया जलाने की सामिग्री रखी जाती है।

दीपध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) काजल।

दीपन [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रकाश करने के निमित्त जलाना। प्रकाशक। २–भूख तेज करना। ३–मन में आवेग उत्पन्न करना। उत्तेजन। ४–केसर। ५–प्याज। ६–तगरमूल। ७–पारे का सातवाँ संस्कार। ८–कसौंदा। [वि.] १–पाचनशक्ति बढ़ाने वाला।

दीपनगण [संज्ञा पु.] (सं.) भूख लगाने वाली औषधियों का वर्ग।

दीपना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना। [क्रि. स] प्रकाशित करना। चमकाना।

दीपनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मेथी। २–अजवायन। ३–पाठा।

दीपनीय [वि.] (सं.) १–प्रकाशन के योग्य। २–उत्तेजन के योग्य।

दीपनीयवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषधि वर्ग जिसमें पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चीत। और नागर हैं (चक्रदत्त)।

दीपनीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवाइन।

दीपपादप [संज्ञा पु.] (सं.) १–दीपवृक्ष। २–दीवट।

दीपपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) चंपकवृक्ष। चंपा।

दीपभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) दीपपात्र। दीवट।

दीपमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जलते हुए दीयों की पंक्ति। २–दीपदान या आरती के लिए जलाई हुई बत्तियों का समूह।

दीपमालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जलते हुए दीपकों की पंक्ति। २–दीवाली। ३–दीपदान या आरती के लिए जलाई हुई बत्तियों का समूह।

दीपमाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दीवाली।

दीपयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पोला धातु का बना डंडा जिसके मुख पर बिजली की बत्ती लगी रहती है और पोले स्थान में मसाला भरा जाता है जो एक बटन के दबाने से जल उठता है। यह अँधेरे में राह दिखाने का काम करती है। टार्च।

दीपवत [वि.] (सं.) जिसके घर में दीपक जलते हों।

दीपवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम। (कालिका पुराण)।

दीपवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दीवट। दीयट।

दीपशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) फतिंगा। पतंग।

दीपशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीये की लौ।

दीपशृंखला, दीपशृङ्खला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलते हुए दीपकों की पंक्ति।

दीपसुत [संज्ञा पु.] (सं.) काजल।

दीपस्तंभ, दीपस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्तंभ जिसके ऊपर अथवा चारों ओर रखकर दीपक जलाये जाते हों। २-समुद्र में जहाजों को रात के समय रास्ता दिखाने या उन्हें चट्टानों आदि से बचाने के निमित्त बना उक्त प्रकार का स्तंभ। *लाइट-हाउस*।

दीपाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक की लौ की अग्नि

दीपान्वित [वि.] (सं.) दीपयुक्त।

दीपान्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकमास की अमावस्या जिसके प्रदोषकाल में लक्ष्मीपूजन तथा दीपदान आदि होता है। दीवाली।

दीपावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीपक और सरस्वती के योग से उत्पन्न एक रागिनी।

दीपावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीयों की पंक्ति। २-दीवाली।

दीपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा दीया। २-प्रदोषकाल में गाई जाने वाली एक रागिनी जो हिंडोल राग की पत्नी मानी जाती है। ३-किसी ग्रन्थ का अर्थ बताने वाली पुस्तक। ४-बिजली की बत्ती लगा वह हाथ में लेकर चलने का छोटा डंडा जो मसाले की सहायता से जलता और अंधेरे में राह आदि दिखाता है। टार्च। [वि.] प्रकाश करने वाली। उजाला फैलाने वाली।

दीपिकातैल [संज्ञा पु.] (सं.) एक आयुर्वेदोक्त तेल जिससे कान का दर्द दूर होता है।

दीपित [वि.] (सं.) १-प्रकाशित। प्रज्वलित। २-चमकता या जगमगाता हुआ। उत्तेजित।

दीपोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) दीवाली।

दीप्त [वि.] (सं.) १-प्रज्वलित। जलता हुआ। २-प्रकाशित। जगमगाता हुआ। [संज्ञा पु.] १-स्वर्ण। सोना। २-हींग। ३-नीबू। ४-सिंह। ५-नाक का एक रोग।

दीप्तकंस [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुद्ध कांसा धातु।

दीप्तक [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। सुवर्ण।

दीप्तकिरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-मदार। आक।

दीप्तकीर्त्ति [वि.] (सं.) जिसका यश दूर तक फैला हो। [संज्ञा पु.] कार्त्तिकेय।

दीप्तकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षसावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम। २-एक राजा का नाम। (महाभारत)

दीप्तजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उल्कामुखी। सियारनी। मादा गीदड़।

दीप्तपिंगल, दीप्तपिङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

दीप्तमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) जो मूर्त्ति बहुत सफेद हो। विष्णु।

दीप्तरस [संज्ञा पु.] (सं.) केंचुआ।

दीप्तरोमा [संज्ञा पु.] एक विश्वदेव का नाम। (महाभारत)

दीप्तलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) बिलाव। बिडाल।

दीप्तलौह [संज्ञा पु.] (सं.) १-तपाया हुआ लाल लोहा। २-काँसा।

दीप्तवर्ण [वि.] (सं.) जिसका शरीर कुंदन के समान दमकता हुआ हो। [संज्ञा पु.] कार्त्तिकेय।

दीप्तशक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

दीप्तांग, दीप्ताङ्ग [वि.] (सं.) जिसका शरीर चमकता हो। [संज्ञा पु.] मोर। मयूर।

दीप्तांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-मदार। आक।

दीप्ता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-प्रकाशित। चमकती हुई। २-सूर्य से प्रकाशित। [संज्ञा पु.] १-कलियारी। २-ज्योतिष्मती। ३-सतलानामक थूहर।

दीप्ताक्ष [वि.] (सं.) जिसकी आँखें चमकीली हों [संज्ञा पु.] (सं.) बिडाल। बिलाव।

दीप्ताग्नि [वि.] (सं.) १-प्रबल पाचन शक्तिवाला २-जिसकी भूख जगी हो। भूखा। [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्य मुनि।

दीप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकाश। उजाला। २-प्रभा। आभा। चमक। ३-क्रान्ति। शोभा। छवि। ४-ज्ञान का प्रकाश जिससे विवेक उत्पन्न होता है और अज्ञानांधकार दूर होता है। ५-लाक्षा। लाख। ६-काँसा। थूहर। ७-एक विश्वदेव का नाम।

दीप्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) दुग्धपाषाण नामक वृक्ष

दीप्तिमान् [वि.] (सं.) [स्त्री. दीप्तिमती] १-प्रकाशित। चमकता हुआ। २-कांतियुक्त। शोभायुक्त। [संज्ञा पु.] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

दीप्तोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ जिसमें बधूसर नामक एक नदी है। (महाभारत)

दीप्तोपल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकांतमणि।

दीप्य [वि.] (सं.) १-जलाया या प्रज्वलित किया जाने वाला। २-जो जलाने योग्य हो। [संज्ञा पु.] १-अजवायन। २-जीर। ३-मयूरशिखा ४-रुद्रजटा।

दीप्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अजवायन। २-अजमोदा। ३-मयूरशिखा। ४-रुद्रजटा।

दीप्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन।

दीप्यमान [वि.] (सं.) चमकता हुआ।

दीप्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंडखजूर।

दीप्र [वि.] (सं.) दीप्तिवान। प्रकाशयुक्त।

दीबो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देने की क्रिया या भाव।

दीमक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) च्यूँटी के समान एक सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि खा जाता है। बल्मीक।
दीमक खाया-जिसे दीमकों ने खाकर नष्ट कर दिया हो। २-दीमकों के खाये के समान खुट्टी या गड्ढेदार वस्तु *दीमक का चाटना*-दीमक का किसी वस्तु को खाकर नष्ट करना।

दीयट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकड़ी अथवा धातु का वह आधार जिस पर रखकर दिया जलाते है।

दीयमान [वि.] (सं.) जो देने योग्य हो।

दीया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बत्ती जो प्रकाश के लिये किसी आधार में रखकर जलाई जाती है। २-छोटा कसोरा।
दीये का हँसना-दिये की बत्ती से फूल या गुल झड़ना। *दीया जलना*-दीपक जलने का समय होना- संध्या होना। *दीया जलाना*-दीवाला निकलना। *दीया जलाने के समय*-संध्या को। शाम को। *दीया ठंडा करना*-दीया बुझाना। *दीया ठंडा होना*-घर में कोई न रहना। (मृत्यु का कारण)। *दीया दिखाना*-सामने उजेला करना। *दीया बढ़ाना*-दीया बुझना। *दीया बत्ती करना*-दीपक जलाने का सामान करना। *दीया बत्ती का समय*-सूर्यास्त का समय। *दीया लेकर ढूंढ़ना*-छानबीन करना *दीये बत्ती में पड़ना*-दीपक जलाने का समय होना। संध्या का समय होना। *दीये से फूल झड़ना*-गुल या फूल झड़ना।

दीया-सलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकड़ी की छोटी और पतली तीली जिसका एक सिरे में गंधक लगा होता है। जो मसाले के साथ रगड़ कर जलाई जाती है।

दीरघ* [वि.] (हिं.) देखो 'दीर्घ'।

दीर्घ [वि.] (सं.) १-आयत। लम्बा। २-बड़ा। विशाल। [संज्ञा पु.] (सं.) १-लताशाल वृक्ष। २-माडवृक्ष। ३-नरकट। ऊंट। ५-ताड़ का पेड़। ६-गुरु या द्विमात्र वर्ण हो। वह वर्ण जिसका उच्चारण खींचकर हो जैसे-अ का दीर्घ आ अथवा उ का ऊ है। २-सिंह, कन्या तुला और वृश्चिकराशि को दीर्घ राशि कहते हैं।

दीर्घकंटक, दीर्घकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) बबूल का पेड़।

दीर्घकंठ, दीर्घकण्ठ [वि.] (सं.) (स्त्री. दीर्घकंठी) जिसकी गरदन लम्बी हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बगुला। बक। २-एक दानव का नाम।

दीर्घकंद, दीर्घकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) मूली।

दीर्घकंदिका, दीर्घकन्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुसली। ताल मूली।

दीर्घकर्ण [वि.] (सं.) बड़े-बड़े कानों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति विशेष जिसका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में है।

दीर्घकांड, दीर्घकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गुंडतृण। गोंदला।

दीर्घकांडा, दीर्घकाण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाताल। गारुड़ी लता।

दीर्घकाय [वि.] (सं.) बड़े डीलडौल वाला। लम्बे-चौड़े शरीर वाला।

दीर्घकील [संज्ञा पु.] (सं.) अंकोल नामक वृक्ष।

दीर्घकीलक [संज्ञा पु.] (सं.) अंकोल नाम का वृक्ष।

दीर्घकृन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पली।

दीर्घकूरक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान जो आंध्रदेश में होता है।

दीर्घकेश [वि.] (सं.) (स्त्री दीर्घकेशी) लम्बे-लम्बे बालों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) भालू।

दीर्घकोशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुक्त नामक जलजन्तु।

दीर्घकेशी [वि.] (सं.) लम्बे-लम्बे केशों या बालों वाली।

दीर्घगति [वि.] (सं.) लम्बे-लम्बे डग रखने वाला लम्बे कदम बढ़ाकर चलनेवाला। [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

दीर्घगमन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेज चाल।

दीर्घग्रंथि, दीर्घग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पली।

दीर्घग्रंथिका, दीर्घग्रन्थिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पली।

दीर्घग्रीव [वि.] (सं.) [स्त्री. दीर्घग्रीवी] लम्बी गरदन वाला। [संज्ञा पु.] कौंच पक्षी। सारस।

दीर्घग्रीवी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] लम्बी। सुराही के समान गरदन वाली।

दीर्घघाटिक [वि.] (सं.) लम्बी गरदन वाला। [संज्ञा पु.] ऊँट।

दीर्घच्छद [वि.] (सं.) लम्बे पत्तों वाला। [संज्ञा पु.] ईख। ऊख।

दीर्घजंगल, दीर्घजङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

दीर्घजंघ, दीर्घजङ्घ [वि.] (सं.) लम्बी-लम्बी टांगों वाला। [संज्ञा पु.] १-ऊंट। २-बगुला।

दीर्घजिह्व [वि.] (सं.) लम्बी जीभ वाला। [संज्ञा पु.] १-सर्प। सांप। २-एक राक्षस का नाम।

दीर्घजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक राक्षसी जिसे इन्द्र ने मारा था। २-कार्तिकेय की अनुचरी।

दीर्घजिह्वी [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

दीर्घ-जीवी [वि.] (सं.) जो बहुत दिनों तक जीता रहे।

दीर्घतंतु, दीर्घतन्तु [वि.] (सं.) लम्बे रेशे या तंतु वाला।

दीर्घतपा [वि.] (सं.) बहुत दिनों तक तपस्या करने वाला। [संज्ञा पु.] आयुवंशीय एक राजा जिन्होंने बहुत काल तक तप किया।

दीर्घतमा [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि जो उतथ्य के पुत्र थे।

दीर्घतरु [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

दीर्घता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लम्बाई। २-बड़ाई।

दीर्घतिमिषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी। कर्कटी।

दीर्घतुंडा, दीर्घतुण्डा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] लम्बे मुँह वाली। [संज्ञा स्त्री.] छछूंदर।

दीर्घतृण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास। ताम्रपर्णी।

दीर्घदंड, दीर्घदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेंड़ का वृक्ष। २-ताड़वृक्ष।

दीर्घदंडक, दीर्घदण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) अंडी का पेड़।

दीर्घदंडी, दीर्घदण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरख इमली। गोरखी।

दीर्घदर्शिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत दूर तक की बात का विचार। दूरदर्शिता।

दीर्घदर्शी [वि.] (सं.) १-दूर तक की बात सोचने वाला। दूरदर्शी। २-विचारवान। [संज्ञा पु.] १-पंडित। २-भालू। ३-गीध।

दीर्घद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

दीर्घद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) सेमर का पेड़।

दीर्घ-दृष्टि [वि.] (सं.) १-जिसकी दृष्टि दूर तक जाय। २-दूर तक की बात सोचने वाला [संज्ञा पु.] १-पंडित। २-गीध। ३-दूरबीन नामक यंत्र।

दीर्घद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद जो गंडकनदी के किनारे माना जाता था।

दीर्घनाद [वि.] (सं.) जिससे भारी शब्द निकले। [संज्ञा पु.] शंख।

दीर्घनाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोंहिस नामक घास। २-गोंदला घास। ३-ज्वर। यवनाल।

दीर्घनास [वि.] (सं.) लम्बी नाक वाला।

दीर्घनिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृत्यु। मौत। मरण

दीर्घ निश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख शोक आदि के आवेग के कारण आने वाली लम्बी सांस

दीर्घनिस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) शंख।

दीर्घपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कलिंग नामक पक्षी। [वि.] जिसके डैने लम्बे हों।

दीर्घपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल प्याज। २-विष्णुकंद। ३-एक प्रकार की कुश। ४-कुचला। ५-एक प्रकार की ईख (सुश्रुत)।

दीर्घपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल लहसुन। २-एरंड। रेंड़। ३-बेत। बेतस। ४-हिज्जल। समुद्र फल। ५-करील। ६-जलमधूक। जल-महुआ।

दीर्घपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केतकी। २-जंमली जामुन। ३-चित्रपर्णी।

दीर्घपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद वच। २-घृतकुमारी। घीकुआर। ३-शालपर्णी। ४-श्वेतपुनर्नवा। सफेद गदहपुरना।

दीर्घपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह पलाश जो लता के रूप में फैलता है। २-महाचंचु। शाक

दीर्घपर्ण [वि.] (सं.) जिसके लम्बे पत्ते हों।

दीर्घपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

दीर्घपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) सन का पेड़।

दीर्घपाद [वि.] (सं.) लंबी टागों वाला। [संज्ञा पु.] १-कंकपक्षी। २-सारस।

दीर्घपादप [संज्ञा पु.] (सं) १-ताड़ का वृक्ष। २-सुपारी का पेड़।

दीर्घपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

दीर्घप्रज्ञ [वि.] (सं.) दूरदर्शी। [संज्ञा पु.] द्वापर के एक राजा का नाम।

दीर्घफल [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

दीर्घफलक [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त का पेड़।

दीर्घफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जतुका-लता। २-लम्बा अंगूर।

दीर्घफलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपिलद्राक्षा। २-जतुका-लता।

दीर्घबाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमरी। सुरागाय।

दीर्घबाहु [वि.] (सं.) लम्बी भुजावाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरिवंश के अनुसार शिव के एक अनुचर का नाम। २-इस नाम का धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दीर्घभुज [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दीर्घबाहु'।

दीर्घमारुत [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

दीर्घमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ का नाम।

दीर्घमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की बेल। २-बेना के समान पीली घास। ३-विल्वांतर वृक्ष।

दीर्घमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) मूलक। मूली।

दीर्घमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालिपर्णी। २-श्यामालता।

दीर्घमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धमासा।

दीर्घयज्ञ [वि.] (सं.) बहुत समय तक यज्ञ करने वाला। [संज्ञा पु.] द्वापरकालीन एक अयो-

ब्या नरेश ।

दीर्घरत [वि.] (सं.) बहुत देर तक मैथुन में रत रहने वाला । [संज्ञा पु.] कुत्ता ।

दीर्घरद [वि.] (सं.) लम्बे दाँतों वाला । [संज्ञा पु.] सूअर । शूकर ।

दीर्घरसन [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प । सांप ।

दीर्घरागा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरिद्रा । हलदी ।

दीर्घरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक समय । चिरकाल ।

दीर्घराव [वि.] (सं.) जोर से चिल्लाने वाला ।

दीर्घरोगी [वि.] (सं.) बहुत दिनों का रोगी ।

दीर्घरोम [वि.] (सं.) बड़े-बड़े बालों वाला । [संज्ञा पु.] भालू ।

दीर्घलोचन [वि.] (सं.) बड़ी आंख वाला । [संज्ञा पु.] १-शिव के एक अनुचर का नाम । २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

दीर्घवंश [संज्ञा पु.] (सं.) नरसल । नरकट ।

दीर्घवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी । हस्ती । [वि.] लम्बे मुख वाला ।

दीर्घवर्च्छिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घड़ियाल ।

दीर्घवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ा इन्द्रायन । २-पाताल-गरुड़ीलता । ३-पलाशीलता ।

दीर्घवृंत, दीर्घवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोनापाठा । २-लताशील ।

दीर्घवृंता, दीर्घवृन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रचिमिटी नामक लता ।

दीर्घवृंतिका, दीर्घवृन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एलापर्णी ।

दीर्घवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) साखू का पेड़ । ताड़ का पेड़ ।

दीर्घशर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वार । जोधरी ।

दीर्घशाख [संज्ञा पु.] (सं.) १-सन का पेड़ । साखू का पेड़ ।

दीर्घशिंबिक, दीर्घशिम्बिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की राई ।

दीर्घशूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान ।

दीर्घश्मश्रु [वि.] (सं.) लम्बी दाढ़ी वाला ।

दीर्घश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) दीर्घतमा ऋषि के एक पुत्र का नाम ।

दीर्घश्रुत [वि.] (सं.) १-दूर तक सुनाई पड़ने वाला । २-जिसका नाम दूर तक विख्यात हो

दीर्घसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का यज्ञ जो बहुत दिनों में समाप्त होता था । २-एक तीर्थ का नाम । [वि.] दीर्घसत्र नामक यज्ञ करने वाला ।

दीर्घ-सु-रत [वि.] (सं.) देर तक रति करने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता ।

दीर्घसूक्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम का एक भेद ।

दीर्घसूत्र [वि.] (हिं.) देखो 'दीर्घसूत्री' ।

दीर्घसूत्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रत्येक कार्य में विलम्ब करने का स्वभाव । हर एक काम में देर लगाने की आदत ।

दीर्घसूत्री [वि.] (सं.) प्रत्येक कार्य में आवश्यकता से अधिक देर या विलम्ब करने वाला ।

दीर्घस्कंध, दीर्घस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़वृक्ष

दीर्घस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) द्विमात्रिक स्वर । वह स्वर जिसमें दो मात्रा हों ।

दीर्घा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिठवन । पृश्निपर्णी । २-आने जाने के लिए कोई लम्बा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग । बरामदा । ३-किसी भवन के ऊपर कुछ दर्शकों के लिए बैठने का छायादार स्थान । *गैलरी* ।

दीर्घायु [वि.] (सं.) जिसकी आयु बड़ी हो । बहुत दिनों तक जीने वाला । दीर्घजीवी ।

दीर्घायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंभास्त्र । २-सूअर शूकर ।

दीर्घारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) घना जंगल । निबिड़ वन ।

दीर्घालर्क [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद मदार ।

दीर्घास्य [वि.] (सं.) बड़े मुख वाला । [संज्ञा पु.] १-शिव के एक अनुचर का नाम । २-पश्चिमोत्तर प्रदेश । २-हाथी ।

दीर्घाहन [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रीष्मकाल (जिसमें दिन बड़ा होता है) ।

दीर्घिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा तालाब ।

दीर्घेर्वारु [संज्ञा पु.] (सं.) लम्बी ककड़ी ।

दीर्घोच्चारण [संज्ञा पु.] (सं.) गुरु उच्चारण ।

दीर्ण [वि.] (सं.) १-फटा हुआ । विदीर्ण । २-टूटा हुआ । भग्न ।

दीवँक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीमक' ।

दीवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु या लकड़ी का बना हुआ धार जिसपर दीया रखा जाता है । दीवाधार । चिरागदान ।

दीवला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. दिवली, दियली) दीया ।

दीवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दीपक । दीया । [संज्ञा पु.] देखो 'धव' ।

दीवान [संज्ञा पु.] (अ.) १-राजा अथवा बादशाह के बैठने का स्थान । राजसभा । कचहरी २-राज्य का मंत्री । वजीर । ३-किसी शायर की सब गजलों का संग्रह ।

दीवान-आम [संज्ञा. पु.] (अ.) वह दरबार जिसमें साधारणतः सब लोग राजा के सामने जा सकते हों ।

दीवानखाना [संज्ञा पु.] (फा.) घर के बाहरी भाग का वह कमरा जहां बड़े आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं । बैठक ।

दीवान-खालसा [संज्ञा पु.] (अ., [illegible]) वह अधिकारी जिसके पास राजा अथवा बादशाह की मुहर रहती है ।

दीवानखास [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह दरबार या राजसभा जिसमें राजा अपने मंत्रियों अथवा मुख्य सरदारों सहित बैठकर परामर्श करता है । खास दरबार ।

दीवाना [वि.] (फा.) (स्त्री दीवानी) पागल । विक्षिप्त ।

किसी के पीछे दीवाना होना-किसी (वस्तु या व्यक्ति) के लिए व्यग्र होना ।

दीवानापन [संज्ञा पु.] (फा.) पागलपन । विक्षिप्तता ।

दीवानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दीवान का पद या ओहदा । २-वह न्यायालय जिसमें सम्पत्ति या अर्थ-सम्बन्धी मुकदमों का विचार होता है । व्यवहार संबंधी न्यायालय ।

[वि.] (फा.) [स्त्री. प्र.] पगली । बावली ।

दीवार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि के द्वारा खड़ा किया हुआ वह परदा जिससे कोई स्थान घेरकर कोठरी या मकान आदि बनाते हैं । भीत । २-किसी वस्तु का कुछ ऊपर उठा हुआ घेरा । दीवार उठाना-दीवार बनाना । दीवार खड़ी करना-दीवार बनाना ।

दीवारगीर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दीवा आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है ।

दीवारगीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दीवार पर लगाने का एक प्रकार का छापा हुआ कपड़ा । चित्रवाई ।

दीवाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीवार' ।

दीवालदंड, दीवालदण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की कसरत या दंड जो दीवार पर हाथ टिकाकर करते हैं ।

दीवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिवाला' ।

दीवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कार्तिक की अमावस्या का एक प्रसिद्ध उत्सव जिसमें रात को बहुत से दीपक जलाकर लक्ष्मी का पूजन किया जाता है और प्रायः जूआ खेला जाता है ।

दीवि [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकंठ नामक पक्षी ।

दीवी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दीवट । चिरागदान ।

दीसना [क्रि. अ.] (हिं.) दिखाई देना । दृष्टिगोचर होना ।

दीह* [वि.] (हिं.) लंबा । बड़ा ।

दुंका [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न का छोटा कण । दाना ।

दुंगरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।

दुंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दो व्यक्तियों के बीच

वाला युद्ध या झगड़ा। २-उधम। उप-
उत्पात। ३-जोड़ा। युग्म। ४-नगाड़ा।
[संज्ञा पु.] (देश.) गन्ना पेलने का

दुंदुभ [संज्ञा पु.] (सं.) नगारा। धौंसा।
बारबार जन्म लेने का कष्ट।
दुंदुभि [संज्ञा पु.] (सं.) नगाड़ा।

दुंदुभिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार
दुन्दुभिस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत
लिखी हुई एक प्रकार की विष-चिकित्सा।
[संज्ञा स्त्री] देखो 'दुंदुभ'।
[संज्ञा पु.] देखो 'धुंधुमार'।
[संज्ञा पु.] (हिं) पानी का सांप। डेड़हा।
[संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का मेढ़ा जिस-
चक्की के पाट के समान गोल और
होता है।
[संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-चौड़ी पूँछ। २-नाव
पतवार। ३-जहाज का पिछला भाग।
[संज्ञा पु.](हिं.) गूलर की जाति का एक वृक्ष
[संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दुष्यंत'।
[संज्ञा पु.](सं) १-मन की ऐसी कष्ट देने
अवस्था जिससे छुटकारा पाने की
प्राणियों में स्वाभाविक हो। सुख का
भाव। कष्ट। क्लेश। २-संकट।
३-मानसिक खेद। रंज। ४-पीड़ा
५-व्याधि। रोग। बीमारी। दुःख
कष्ट सहना। दुःख देना-कष्ट पहुँ-
दुःख पड़ना-संकट या विपत्ति आना
पहुँचना-दुःख होना। दुःख पहुँचाना-
करना। दुःख पाना-आपत्ति, संकट,
सहना। दुःख बटाना-कष्ट या संकट
साथ देना। दुःख बिसराना-१-चित्त
निकालना। २-जी बहलाना। दुःख
कष्ट या संकट के दिन गुजारना।
भुगतना, भोगना-दुःख उठाना। दुःख
खेद या रंज होना।
[वि.] (सं.) दुःख या कष्ट देने वाला।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की
[संज्ञा पु.] (सं.) संसार (जो दुःखों से
[वि.] (सं.) कष्ट से जीवन बिताने
[संज्ञा पु.] (सं.) आध्यात्मिक, आधि-
और आधिदैविक, ये तीन प्रकार के
[वि] (सं.) [स्त्री. दुःखदा] कष्ट पहुँचाने
[वि.] (सं.) कष्ट में पड़ा हुआ। संतप्त

क्लेशित।

दुःखदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) गृध्र। गिद्ध।

दुःखदाता [वि.] (सं.) दुःख या पीड़ा पहुँचाने वाला।

दुःखदायक [वि.] (सं.) [स्त्री. दुःखदायिका] दुःख या कष्ट पहुँचाने वाला।

दुःखदायिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दुःख देने वाली।

दुःखदायिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दुःख देने वाली।

दुःखदायी [वि.] (सं.) [स्त्री. दुःखदायिनी] दुःख देने वाला।

दुःखदिर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का खैर का कत्था।

दुःखदोह्या [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] कठिनता से दुही जाने वाली (गाय)।

दुःखनिवह [वि.] (सं.) दुःसह। अत्यन्त कष्ट-कारक।

दुःखपूर्ण [वि.] (सं.) दुःखमय। दुःख या कष्टों भरा हुआ।

दुःखप्रद [संज्ञा पु.] (सं.) कष्ट देने वाला। दुःखद

दुःखबहुल [संज्ञा पु.] (सं.) दुःखपूर्ण। क्लेश से भरा हुआ।

दुःखभाग [वि] (सं.) दुःख भोगने वाला।

दुःखभाषित [वि.] (सं.) कष्ट से उच्चारण किया हुआ।

दुःखभोग [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख या कष्टों का सहना।

दुःखमय [वि.] (सं.) दुःखपूर्ण। दुःख या कष्टों से भरा हुआ।

दुःखयाम [वि.] (सं.) दुःख से उत्पन्न।

दुःखलभ्य [वि.] (सं.) जो दुःख या कष्ट से प्राप्त हो सके। कठिनता से मिलने वाला।

दुःखलोक [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। (वह लोक जहां दुःख भोगना पड़े।

दुःखवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) कान की लर में होने वाला एक प्रकार का रोग।

दुःखवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसमें यह समस्त संसार तथा इसकी सब बातें दुःख पूर्ण समझी जाती है। *पेसिमिज्म*।

दुःखवादी [वि.] (सं.) दुःखवाद सिद्धान्त को मानने वाला।

दुःखशील [वि.] (सं.) जो सदा दुःख भोगता हो

दुःखसंचार, दुःखसञ्चार [संज्ञा पु.] (सं.) कष्ट से समय बिताना।

दुःखसागर [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख का समुद्र। अत्यधिक क्लेश।

दुःखसाध्य [वि.] (सं.) दुःख से होने योग्य। जिसका करन कठिना हो।

दुःखहर [वि.] (सं.) दुःख या कष्टों का हरण करने वाला। [संज्ञा पु.] ईश्वर।

दुःखहरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुःखों का नाश करने वाली दुर्गा।

दुःखांत, दुःखान्त [वि.] (सं.) १-जिसका अन्त दुःखपूर्ण हो। २-जिसके अन्त का वर्णन दुःखपूर्ण हो। [संज्ञा पु.] १-दुःख की हद या पराकाष्ठा। अत्यधिक कष्ट। २-दुःख का अन्त।

दुःखाकर [वि.] (सं.) कष्ट पहुँचाने वाला। [संज्ञा पु.] संसार (जो दुःखों की खान हैं)।

दुःखाचार [वि.] (सं.) १-दुःस्वभाव। दुष्ट स्वभाव का। २-दुःशासन। जो किसी का दबाव न माने।

दुःखानिवत [वि.] (सं.) जिसको दुःख या कष्ट हो।

दुःखायतन [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। जगत्।

दुःखार्त्त [वि.] (सं.) दुःख या कष्ट से व्याकुल।

दुःखित [वि.] (सं.) जिसे दुःख पहुँचा हो। दुःखी। पीड़ित।

दुःखिनी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) जिस पर दुःख पड़ा हो। दुखिया।

दुःखी [वि.] (सं.) (स्त्री. दुखिनी) जिसे दुःख या कष्ट हो।

दुःशकुन [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा शकुन।

दुःशला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की एकमात्र कन्या जो सिंधु नरेश जयद्रथ को व्याही गई थी।

दुःशासन [वि.] (सं.) १-जिस पर शासन करना कठिन हो। जो किसी की बात को न माने। २-निकम्मा शासन। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में एक जो दुर्योधन का प्रेमपात्र और मन्त्री था।

दुःशील [वि.] (सं.) बुरे स्वभाव वाला।

दुःशीलता [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुष्टता। दुःस्वभाव

दुःशोध [वि.] (सं.) १-जिसका सुधार कठिन हो २-(धातु) जिसका शोधना कठिन हो।

दुःश्रव [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य का वह दोष जो कानों को कर्कश लगने वाले वर्णों के आने से होता है। [वि.] (सं) जिसके सुनने से दुःख उत्पन्न हो।

दुःषम [वि.] (सं.) निंदनीय।

दुःषेध [वि.] (सं.) जिसका निवारण कठिन हो।

दुःसंकल्प, दुःसङ्कल्प [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा इरादा विचार। [वि.] (सं.) बुरा संकल्प या इरादा रखने वाला। खोटी नीयत का।

दुःसंग, दुःसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) बुरा साथ। कुसंग।

दुःसंधान, दुःसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य में एक रस जिसमें एक तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल या एक तो मेल की बात करता है और दूसरा बिगाड़ की (केशवदास)।

दुःसंयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) अयुक्त समावेश। अनुचित मेल।

दुःसह [वि.] (सं.) जिसका सहन करना कठिन हो। अत्यन्त कष्टदायक।

दुःसहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदमनी नामक पता।

दुःसाध्य [वि.] (सं.) १–जिसका साधन कठिन हो। जिसका करना कठिन हो। २–जिसका उपाय कठिन हो।

दुःसाधी [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल। [वि.] (सं.) दुष्ट साधक।

दुःसाहस [संज्ञा पु.] (सं.) १–व्यर्थ का साहस २–अनुचित साहस।

दुःसाहसिक [वि.] (सं.) जिसे करने का साहस करना अनुचित या निष्फल हो।

दुःसाहसी [वि.] (सं.) बुरा साहस करने वाला

दुःसुप्त [वि.] (सं.) बुरे सपने से युक्त।

दुःस्थ [वि.] (सं.) १–दुर्दशाग्रस्त। २–दरिद्र। ३–मूर्ख।

दुःस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुरवस्था। दुर्दशा।

दुःस्पर्श [वि.] (सं.) १–न छूने योग्य। २–जिसे पाना कठिन हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १–कपिकच्छ। केंवाच। २–लताकरंज। ३–कंटकारी। ४–आकाशगंगा।

दुःस्पर्शा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कांटेदार मकोय।

दुःस्वप्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह सपना जिसका फल बुरा माना जाता है।

दुःस्वभाव [संज्ञा पु.] (सं). बुरा स्वभाव। दुःशीलता। [वि.] दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।

दुःस्वरनाम [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वह पापकर्म जिसके उदय से प्राणियों के कठोर और हीन स्वर होते हैं।

दु [वि.] (हिं.) दो शब्दों का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने में शब्द के पहले लगता है। [उप.] देखो 'दुर'।

दुअन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुवन'।

दुअन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो आने का मूल्य का सिक्का।

दुअरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुआर'।

दुअरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुआरी। छोटा दरवाजा।

दुआ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–प्रार्थना। विनती। याचना। २–आशीर्वाद। असीस। *दुआ माँगना*–प्रार्थना करना। *दुआ लगना*–आशीर्वाद का फलीभूत होना।

दुआदस* [वि.] (हिं.) देखो 'द्वादश'।

दुआब [संज्ञा पु.] (फा.) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दुआबा [संज्ञा पु.] (फा.) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दुआर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. दुआरी] द्वार। दरवाजा।

दुआरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा दरवाजा।

दुआल [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–चमड़ा। २–चमड़े का तस्मा। ३–रिकाब का तस्मा।

दुआला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की छींट छापने का बेलन।

दुआली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खराद घुमाने का तस्मा। (हिं.) वह आरा जिसको दो आदमी चलाते हैं।

दुआह [संज्ञा पु.] (हिं.) पहली पत्नी के मर जाने के उपरान्त पुरुष का होने वाला दूसरा विवाह।

दुइ+ [वि.] (हिं.) दो संख्या का। दो।

दुइज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाख की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज। [संज्ञा पु.] दूज का चाँद।

दुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी।

दुऊ* [वि.] (हिं.) दोनो।

दुऔ* [वि.] (हिं.) दोनो।

दुकड़हा [वि.] (हिं.) (स्त्री. दुकड़ही) १–जिसका मूल्य एक दुकड़ा (दो दमड़ी या एक छदाम) हो। २–तुच्छ। नाचीज। ३–नीच। अनादृत। कमीना।

दुकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. दुकड़ी) १–एक साथ या एक में लगी हुई दो वस्तुएं। जोड़ा। २–एक पैसे का चौथाई भाग। छदाम। दो दमड़ी।

दुकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो-दो बाध एक साथ बुने जाते हैं। २–दो बूटियों वाला ताश का पत्ता। ३–दो घोड़ों वाली बग्घी। घोड़ों का वह सामान जो दोहरा हो। ४–वह लगाम जिस में दो कड़ियां हों। ५–दो रुपये। ६–धोतियों आदि का जोड़ा। [वि.] (स्त्री. प्र.) जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो।

दुकना* [क्रि. अ.] (देश.) लुकना। छिपना।

दुकान [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–वह स्थान जहाँ बिक्री की वस्तुएं रहती और बिकती हैं। माल या सौदा बिकने का स्थान। इधर-उधर फैल हुई बहुत सी वस्तुएं। *दुकान उठाना*–१–कारबार बंद करके दुकान छोड़ देना। २–दुकान बंद करना। ३–दुकान किराये पर चढ़ाना। *दुकान करना*–दुकान लेकर किसी वस्तु की बिक्री आरम्भ करना। *दुकान खोलना*–दुकान जारी करना। *दुकान चलना*–दुकान के कारोबार में वृद्ध होना। *दुकान बढ़ाना*–दुकान बंद करना। *दुकान लगना*–दुकान का सामान सजाकर बिक्री के लिये रखना।

दुकानदार [संज्ञा पु.](फा.)१–दुकान का मालिक। दुकान पर बैठकर सौदा करने वाला। वह जिसने धन कमाने के लिये होने का ढोंग रच रखा हो।

दुकानदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–दुकान भाव। २–वस्तुओं का दाम उचित अधिक कहना। ३–किसी को अपने फँसाने या ठगने के लिये तरह-तरह की करना।

दुकाल [संज्ञा पु.] (हिं.) अकाल। दुष्काल।

दुकुल्ली [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार का चमड़ा प्राचीन बाजा।

दुकूल [संज्ञा पु.] (सं.) १–वस्त्र। कपड़ा। सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा। महीन कपड़ा।

दुकूलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

दुकेला [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. दुकेली) जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो। यौ०–*अकेलादुकेला*–जो अकेला हो या जिसके साथ कोई एक साथी हो।

दुकेले [क्रि. वि.] (हिं.) किसी के साथ। आदमी को साथ लिये हुये। यौ०–*अकेलेदुकेले*–बिना किसी को या एक ही दो आदमियों के साथ।

दुक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का जो तबले के समान होता है और शहनाई के साथ बजाया जाता है। २–एक में बंधी दो बड़ी नावों का जोड़ा।

दुक्का [वि.] (हिं.) १–जो एक साथ दो हों। अकेला न हो (व्यक्ति)। २–जो जोड़े में जो एक साथ दो हों (वस्तु)। जिसमें एक साथ दो हों। यौ० इक्कादुक्का अकेला-दुकेला। [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री दुक्की) दो बूटियों वाला ताश का पत्ता। *इक्कादुक्का*–अकेला-दुकेला। [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. दुक्की] दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

दुक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

दुखंडा [वि.] (हिं.) दो तल्ला। जिसमें दो या मंजिल हों। (मकान)

दुखंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुष्यंत'।

दुख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुःख'।

दुखड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–किसी के दुःख कष्ट का वर्णन। २–विपत्ति। संकट। कष्ट। मुसीबत। (*किसी स्त्री पर*) *दुखड़ा पड़ना*–(किसी स्त्री का) रांड या विधवा हो जाना। *दुखड़ा पीटना*–बहुत परिश्रम और कष्ट से जीवन-यापन करना। (स्त्री.) *दुखड़ा रोना*–देखो 'दुखड़ा पीटना'। *दुखड़ा रोना*–दुःख दीनतापूर्वक किसी से कहना।

दुखद* [वि.] (हिं.) देखो 'दुःखद'।

[वि.] (हिं.) देखो 'दुःखदायी'।

[वि.] (हिं.) देखो 'दुःखद'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) दुःख और आपत्ति अथवा उनसे होने वाला संताप। दुख का द्वंद्व।

[क्रि. अ.] (हिं.) (शरीर के किसी अंग का) पीड़ा होना। दर्द करना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुखड़ा'।

+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दुखाना'।

* [वि.] (हिं.) देखो 'दुःखित'।

[क्रि. स.] (हिं.) १-पीड़ा देना। कष्ट पहुँचाना। २-किसी के मर्म स्थान या पके घाव आदि को छू देना।

जी दुखना-मन में दुख उत्पन्न करना * [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'दुखना'।

[वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) १-दुखिया। २-रोगी

[वि.] (हिं.) दुखी। खिन्न। पीड़ित।

[वि.] (हिं.) दुखी। पीड़ित।

[वि.] (हिं.) देखो 'दुखित'।

[वि.] (हिं.) जो दुख या कष्ट में पड़ा हो। दुःखित।

[वि.] (हिं.) (स्त्री. दुखियारी) जिसे किसी प्रकार का दुख हो। दुखिया। २-जिसे किसी प्रकार की शारीरिक पीड़ा हो। रोगी।

[वि] (हिं.) (स्त्री. प्र.) १-दुखिया २-रोगी।

[वि.] (हिं) १-जो कष्ट या दुःख में हो। २-जिसे मानसिक कष्ट पहुंचा हो। जिसके मन में खेद हुआ हो। खिन्न। ३-रोगी। बीमार।

* [वि.] (हिं.) दुःख अनुभव करने वाला।

+ [वि.] (हिं.) (स्त्री. दुखौहीं) दुख देने वाला।

* [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.] दुख देने वाली

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुक'।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) ओसारा। बरामदा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गरदन के नीचे और छाती के ऊपर का गहरा भाग। धुकधुकी। २-गले में पहनने का एक गहना। दुगदुगी में दम होना-प्राण का कंठगत होना।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुगना'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाजे की दूनी तेज आवाज दून।

[वि.] (हिं.) (स्त्री. दुगनी) किसी वस्तु से उतना और अधिक जितना कि वह हो। द्विगुण। दूना।

[वि.] (हिं) (स्त्री प्र.) देखो 'दुगना'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

दुगाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दोनाली बंदूक। २-दोहरी गोली।

दुगासरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह गाँव जो किसी किले के किनारे बसा हो।

दुगुण* [वि.] (हिं.) देखो 'द्विगुण'। 'दूना'।

दुगुन* [वि.] (हिं.) देखो 'दुगना'।

दुगूल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुकूल'।

दुग्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुर्ग'।

दुग्ध [वि.] (सं.) १-दूहा हुआ। भरा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) दूध। पय।

दुग्धकूपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पकवान जो पिसे हुए चावल और दूध के छेने से बनता है (भावप्रकाश)।

दुग्धतालीय [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध का फेन। २-मलाई।

दुग्धतुंबी [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद कद्दू।

दुग्धत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) गाय, भैंस और बकरी इन तीनों का दूध।

दुग्धदा [वि.] (सं.) दूध देने वाली।

दुग्ध-परिमापक-यंत्र, यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) दूध में कितना पानी है यह बताने वाला यंत्र।

दुग्धपाचन [संज्ञा पु.] (सं.) दूध गरम करने का बरतन।

दुग्धपाषण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष।

दुग्धपुच्छी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवाकालु नामक एक वृक्ष।

दुग्धपोष्य [वि.] (सं.) जो केवल दूध पिलाकर पाला जाता हो। [संज्ञा पु.] शिशु। बच्चा

दुग्धफेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध का फेन या झाग। २-एक प्रकार का पौधा जिसे क्षीर हिंडीर भी कहते हैं।

दुग्धफेनी [संज्ञा पु.] (सं.) एक छोटा पौधा। पयस्विनी।

दुग्धबंधन, दुग्धबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) दूध दुहने के लिए गाय को बांधने का काम।

दुग्धबीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्वर। जुन्हरी।

दुग्धसमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक।

दुग्धांबुधि, दुग्धाम्बुधि [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीर-समुद्र।

दुग्धाच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नग या पत्थर जिसपर सफेद-सफेद छींटे होते हैं।

दुग्धाब्धि [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीर समुद्र।

दुग्धाब्धितनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

दुग्धाभ्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.)-दूध के ऊपर की मलाई।

दुग्धाश्मन् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष।

दुग्धाश्मा [संज्ञा पु.] (सं.) दुग्धपाषाण नामक वृक्ष।

दुग्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुद्धी नामक एक घास या बूटी। २-गंधिका नामक घास।

दुग्धिनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लालचिचड़ा। रक्तापामार्ग।

दुग्धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूधिया नामक घास। दुद्धी। [वि.] दूध वाला। जिसमें दूध हो। [संज्ञा पु.] क्षीरवृक्ष।

दुध [वि.] (सं.) दूहने वाला। जो दूहता हो।

दुघड़िया [वि.] (हिं.) दो घड़ी का (मुहूर्त्त)।

दुघड़िया-मुहूर्त्त [संज्ञा पु.] (हिं.) दो-दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त्त जो तुरन्त की आवश्यकता के लिए स्थिर किया जाता है

दुघरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो घड़िया मुहूर्त्त।

दुचंद [वि.] (फा.) दूना। दुगना। द्विगुण।

दुचल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छत जिसके दोनो ओर ढाल हो

दुचित* [त्रि.] (हिं.) १-जिसका चित्त या मन एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर चित्त। २-चिंतित। फिक्रमंद।

दुचितई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चित्त की अस्थिरता। दुविधा। २-खटका। आशंका। चिन्ता।

दुचिताई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चित्त की अस्थिरता। दुबधा। संदेह। २-खटका। आशंका। चिन्ता।

दुचित्ता [वि.] (हिं.) [स्त्री. दुचित्ती] १-अस्थिर चित्त वाला। जो दुविधा में हो। अव्यवस्थित चित्त। २-संदेह में पड़ा हुआ। ३-जिसके चित्त में खटका या आशंका हो। चिंतित।

दुच्छक [संज्ञा पु.] (सं) कपूरकचरी।

दुछण [संज्ञा पु.] (डिं) सिंह।

दुज* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विज'।

दुजड़* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तलवार।

दुजड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कटारी।

दुजन्मा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विजन्मा'।

दुजपति* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विजपति'।

दुजराज* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो द्विजराज'।

दुजाति* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विजाति'।

दुजानू [क्रि. वि.] (फा.) दोनों घुटनों के बल।

दुजायगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपने को दूसरे से अलग समझना दुई।

दुजीह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विजिह्व'।

दुजेश [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'द्विजेश'।

दुटूक [वि.] (हि.) दो टुकड़ों या खंडों में बटा हुआ। खंडित। दु टूक बात-थोड़े में कही हुई स्पष्ट या साफ बात।

दुड़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कच्छपी। दुलि।

दुड़ियंद [संज्ञा पु.] (डिं.) सूर्य।

दुत [अव्य.] (हिं.) १–एक शब्द जो तिरस्कार-पूर्वक हटाने के समय बोला जाता है। २–घृणा या तिरस्कारसूचक शब्द।

दुतकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिरस्कार। धिक्कार। वचन द्वारा किया हुआ अपमान।

दुतकारना [क्रि. स.] (हिं.) १–दुत्-दुत् शब्द कहकर किसी को अपने पास से तिरस्कार-पूर्वक हटाना। २–धिक्कारना।

दुतर्फा [वि.] (अ. फा.) (स्त्री. दुतर्फी) दोनों पक्ष का। दोनों ओर का।

दुतारा [संज्ञा पु.] (हिं.) सितार के समान बजाया जाने वाला एक प्रकार का दो तार का बाजा।

दुति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) द्युति। आभा। चमक

दुतिमान* [वि.] (हिं.) देखो 'द्युतिमान्'।

दुतिय* [वि.] (हिं.) देखो 'द्वितीय'।

दुतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

दुतिवंत* [वि.] (हिं.) १–आभायुक्त। चमकीला। २–सुन्दर।

दुतीय* [वि.] (हिं.) देखो 'द्वितीय'।

दुतीया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'द्वितीया'।

दुत्थोत्थदवीय [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकंठताजिक के मतानुसार वर्ष प्रवेश में एक योग।

दुथन* [संज्ञा पु.] (देश.) पत्नी। जोरू।

दुथरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली

दुदल [वि.] (हिं.) जिसके टूटने पर दो बराबर टुकड़े हो जावें। द्विदल। [संज्ञा पु.] (सं.) १–दाल। २–एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

दुदलाना [क्रि. स.] (हिं.) दुतकारना।

दुदहँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दूधहँडी'।

दुदामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सूती कपड़ा।

दुदिला [वि.] (हिं.) १–दुविधा में पड़ा हुआ। दुचित्ता। २–खटके या आशंका में पड़ा हुआ। व्यग्र। चिंतित।

दुदुकारना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दुतकारना'।

दुदुह [संज्ञा पु.] (सं.) अनुवंशीय एक राजा का नाम।

दुद्धी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भूमि पर फैलने वाली एक प्रकार की घास। २–थूहर की जाति का एक छोटा पौधा जो पंजाब और राजस्थान में पाया जाता है। ३–खड़िया मिट्टी। ४–सारिवालता। ५–जंगली नील। ६–एक वृक्ष जो मद्रास, मध्यप्रदेश और राजस्थान में होता है। ७–एक प्रकार का सफेद धान।

दुद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) हरा प्याज का पौधा।

दुधपिठवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पकवान

दुधमुँहाँ [वि.] (हिं.) १–जिसके दूध के दांत न टूटे हों। २–जो अभी माता के दूध से ही पलता हो। बहुत छोटा (बच्चा)।

दुधमुख [वि.] (हिं.) दूध पीता। दूधमुहाँ।

दुधहँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध रखने या गरम करने का मिट्टी का छोटा पात्र।

दुधहाँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दूधहँड़ी'।

दुधाँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूधहँड़ी'।

दुधार [वि.] (हिं.) १–दूध देने वाली। जो दूध देती हो (गाय या भैंस आदि)। २–जिसमें दूध हो। [वि.] देखो 'दुधारा'। [संज्ञा पु.] देखो 'दुधारा'।

दुधारा [वि.] (हिं.) जिसमें दोनों ओर धारें हों। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का चौड़ा खांडा जिस के दोनों ओर तेज धार होती है।

दुधारी [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) १–दूध देने वाली २–जिसमें दोनों ओर धारें हों। [संज्ञा स्त्री.] वह कटारी जिसमें दोनों ओर तेज धार हो।

दुधारू [वि.] (हिं.) देखो 'दुधार', 'दुधारी'।

दुधिया [वि.] (हिं.) १–दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २–जिसमें दूध होता हो। ३–दूध के समान सफेद। [संज्ञा स्त्री.] १–दुद्धि नामक घास। २–एक प्रकार की ज्वार। ३–खड़िया मिट्टी। ४–कलियारी की जाति का एक विष। ५–एक चिड़िया।

दुधियाकंजई [वि.] (हिं.) सफेदी लिये हुए कंजे रंग का। नीलापन लिये भूरा।

दुधियापत्थर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का सफेद और मुलायम पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २–एक नग या रत्न।

दुधियाविष [संज्ञा पु.] (हिं.) कलियारी की जाति का एक विष।

दुधेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुद्धी'।

दुधैल [वि.] (हिं.) बहुत दूध देने वाली। दुधार।

दुध्र [वि.] (सं.) १–हिंसक। मारने वाला। २–प्रबल। जिसका दबना कठिन हो।

दुध्रकृत [वि.] (सं.) खराब काम करने वाला।

दुनना*+ [क्रि. स.] (?) १–कुचलना। २–नष्ट करना।

दुनया [संज्ञा पु.] (हिं.) दो नदियों का संगम स्थान।

दुनरना* [क्रि अ.] (हिं.) लचककर दोहरा-सा हो जाना। [क्रि. स.] लचकाकर दोहरा-सा करना।

दुनरवना* [क्रि. अ.] (हिं.) लचककर दोहरा-सा हो जाना। [क्रि. स.] (हिं.) लचकाकर दोहरा सा करना।

दुनाली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] दोनालों वाली। [संज्ञा स्त्री.] दोनाली बंदूक। वह बंदूक जिस में दो-दो गोलियाँ एक साथ दागी जावें।

दुनियाँ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–संसार। जगत्। २–संसार के लोग। जनता। ३–जगत् का प्रपंच या जाल। दीन दुनिया-लोक परलोक। दुनिया के परदे पर-संपूर्ण संसार में। दुनिया की हवा लगना-१–सांसारिक अनुभव या ज्ञान होना। २–सांसारिक छल-कपट या दुर्व्यसनों में लगना। दुनिया भर का-बहुतमा। अत्यधिक। दुनिया से चल बसना-मर जाना।

दुनियाई [वि.] (हिं.) सांसारिक। दुनियावी। [संज्ञा स्त्री.] संसार। जगत्।

दुनियादार [संज्ञा पु.] (फा.) १–सांसारिक झगड़ों में पड़ा हुआ मनुष्य। गृहस्थ। २–युक्ति से अपना काम निकालने वाला मनुष्य। ३–व्यवहारकुशल। [वि.] (फा.) ढंग रचकर अपना काम निकालने वाला।

दुनियादारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–दुनियाँ का कारबार। गृहस्थी का जंजाल। २–संसार में अपनी कार्यसिद्धि का ढंग। स्वार्थसाधन। ३–दिखाऊ अथवा बनावटी व्यवहार। दुनियादारी की बात–बनावटी बात। लल्लो-चप्पो।

दुनियासाज [वि.] (फा.) १–ढंग रचकर अपना प्रयोजन सिद्ध करने वाला। स्वार्थसाधक। २–अवसर देखकर सुहाने वाली बात करने वाला। चापलूस।

दुनियासाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–अपना मतलब निकालने का ढंग। २–चापलूसी। बात बनाने का ढंग।

दुनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संसार। दुनियां

दुपटा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुपट्टा'। + [वि.] दो फुट का।

दुपटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चादर। दुपट्टा।

दुपट्टा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) [स्त्री. दुपट्टी] १–ओढ़ने का कपड़ा। चादर। २–कंधे पर रखने का कपड़ा। दुपट्टा तान कर सोना-निश्चिन्त होकर सोना। दुपट्टा बदलना-सहेली बनना।

दुपट्टी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चादर। दुपट्टा।

दुपद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विपद'। [वि.] देखो 'द्विपद'।

दुपदीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह मिरजई, फतुही या नीमस्ती न जिसमें दोनों ओर परदे हों।

दुपहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोपहर'।

दुपहरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–मध्याह्न का समय। दोपहर। २–एक छोटा फूलदार पौधा जो शोभा के लिए लगाया जाता है। ३–वह जिसका गर्भाधान दोपहर को हुआ हो। हरामजादा (बाजारू)।

दुपहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोपहर। मध्याह्न।

दुपी* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

दुफसली [वि.] रबी और खरीफ दोनों फसलों

उत्पन्न होने वाला। [वि.] [स्त्री. प्र.] अनिश्चित संदिग्ध।

दुबकना+ [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'दबकना'।

दुबगली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मालखंभ की एक कसरत।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हि.) गले में पहनने का गहना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हि.) चारे के काम में आने वाली एक प्रकार की घास।

दुबधा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उपस्थित दो बातों में से कोई बात स्थिर न कर सकने की क्रिया या भाव। मन का निश्चय या अस्थिरता। २-संशय। संदेह। ३-असमंजस। आगा-पीछा। ४-खटका। चिन्ता।

दुबरा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. दुबरी] दुबला। शरीर से क्षीण।

दुबराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुर्बलता। क्षीणता। २-कमजोरी। अशक्तता।

दुबराना* [क्रि. अ.] (हि.) दुबला होना।

दुबलागोला [संज्ञा पु.] (हि.) तोप का लंम्बो- गोला।

दुबलंग [संज्ञा पु.] (हिं.) पाल में लगाने की डोरी।

दुबला [वि.] (हि.) [स्त्री. दुबली] १-हलके और पतले बदन या शरीर वाला। कृश। २-अशक्त। कमजोर।

दुबलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) कृशता। क्षीणता।

दुबाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूबे की स्त्री।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हि.) सन की मोटी रस्सी।

दुबारा [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'दोबारा'।

दुबाला [वि.] (हि.) देखो 'दोबाला'।

दुबाहिया [संज्ञा पु.] (हि.) दोनों हाथों से तलवार चलाने वाला योद्धा।

दुबिद* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'द्विविद'।

दुबिध [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दुबिधा'।

दुबिधा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मन का निश्चय या अस्थिरता। २-संशय। संदेह। ३-असमंजस। आगा-पीछा। ४-खटका। चिन्ता।

दुबिसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बीस रुपए के लगान पर सरकार की ओर से दी हुई दो रुपए की छूट।

दुबीचा+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-दो बातों के बीच किसी एक बात का निश्चय होना। दुबधा। २-संशय। संदेह। ३-असमंजस। आगा-पीछा। ४-खटका। चिन्ता।

दुबे [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. दुबाइन] ब्राह्मणों का एक भेद।

दुभाखी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दुभाषी'।

दुभाषिया [संज्ञा पु.] (हि.) दो भाषाएँ जानने वाला वह मनुष्य जो उन दो भाषाओं में बातचीत करने वाले दो मनुष्यों को एक दूसरे का अभिप्राय समझाता है।

दुभाषी [संज्ञा पु.] (हिं.) दुभाषिया।

दुमंजिला [वि.] (फा.) [स्त्री. दुमंजिली] दोमरातिब या खंड का दो तल्ला (मकान)।

दुम [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पूँछ। पुच्छ। २-दुम के समान पीछे लगी या बंधी वस्तु। ३-किसी कार्य का अन्तिम और सूक्ष्म अंश। ४-पीछे-पीछे लगा रहने वाला व्यक्ति। पिछलग्गू। *दुम के पीछे फिरना*-साथ-साथ लगा रहना। *दुम दबा कर भागना या चल देना*-कुत्ते के समान (डर या भय से) चल देना। *दुम दबाजाना*-१-डर से भाग जाना। २-भय से कोई काम या इरादा छोड़ना। *दुम में घुसना*-गायब हो जाना। *दुम में घुसा रहना*-खुशामद के मारे साथ-साथ लगे रहना। *दुम में रस्सा बाँधूँ*-नटखट चौपाए के समान बाँधू। (विनोद) में *दुम हिला कर बैठना*-साफ करके बैठना। *दुम हिलाना*-दीनतापूर्वक प्रसन्नता या अधीनता प्रकट करना।

दुमची [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-घोड़े के साज का वह चमड़े का तस्मा जो उसकी दुम के नीचे दबा रहता है। २-दोनों नितंबों के बीच की हड्डी।

दुमदार [वि.] (फा.) १-पूँछ वाला। २-जिसके पीछे पूंछ की सी कोई चीज लगी हो।

दुमन [वि.] (हिं.) अनमना। अप्रसन्न। खिन्न।

दुमना [वि.] (हिं.) देखो 'दुचिता'।

दुमाता [वि.] (हिं.) १-बुरी या दुष्ट माता। २-विमाता। सौतेली माता।

दुमाला [संज्ञा पु.] (हिं.) पाश। फंदा।

दुमाहा [वि.] (हि.) हर दो महीने में होने वाला

दुमुँहाँ [वि.] (हिं.) देखो 'दो मुँहाँ'।

दुरंग* [वि.] (हिं.) देखो 'दुरंगा'।

दुरंगा [वि.] (हि.) (स्त्री. दुरंगी) १-जिसमें दो रंग हों। २-दो प्रकार का। ३-दोहरी चाल चलने वाला।

दुरंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कभी इस पक्ष में कभी उस पक्ष में हो जाना। दोनों ओर रहना या चलना। [वि.] (हिं.) (स्त्री. प्र.) देखो 'दुरंगा'

दुरंत, दुरन्त [वि.] (सं.) १-बहुत भारी। २-दुस्तर। कठिन। ३-घोर। भीषण। ४-जिसका अन्त या परिणाम बुरा हो। ५-दुष्ट। खल। पाजी।

दुरंतक, दुरन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

दुरंधा* [वि.] (हिं.) १-दो छेदों वाला। २-आरपार छेदा हुआ।

दुर् [उप.] दूषण या निषेध का सूचक। एक उपसर्ग।

दुर [अव्य.] (हि.) १-तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये इस शब्दका व्यवहार होता है। **'दूर हो'** का संक्षिप्त रूप। *दुरदुर करना*-तिरस्कार पूवक कुत्ते के सामने हटाना या भगाना। *दुरदुर फिट फिट*-तिरस्कार। [संज्ञा पु.] (फा.) १-मोती। मुक्त। २-मोती का वह लटकन जो नाक में पहना जाता है। लोलक। ३-छोटी बाली।

दुरक्ष [संज्ञा पु.] १-पासा। २-चौपड़। ३-बुरी दृष्टि।

दुरखा [संज्ञा पु.] (देश.) (स्त्री.) दुरखी) फसल को हानि पहुंचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

दुरमुच [संज्ञा पु.] (हिं.) दरी के तानों को दो-दो को एक में बाँधना।

दुरजन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुर्जन'।

दुरजोधन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुर्योधन'।

दुरतिक्रम [वि.] (सं.) १-जिसका अतिक्रमण न हो सके। जिसका उल्लंघन न हो सके। २-जिसका पार पाना कठिन हो।

दुरत्यय [वि.] (सं.) १-जिसका पार पाना कठिन हो। अपार। २-जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके। दुस्तर।

दुरथल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बुरी जगह।

दुरद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्वरद'।

दुरदाम*[वि.] (हि.) कठिन। कष्टसाध्य।

दुरदाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

दुरदुराना [क्रि. स.] (हिं.) तिरस्कारपूर्वक दूर करना।

दुरदृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुर्भाग्य। अभाग्य। २-अभागा। ३-पाप। दुष्कर्म।

दुरन्नी [ज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा भोजन।

दुरधिगम [वि.] (सं.) जो पहुँच के बाहर हो। दुष्प्राप्य। २-जो समझ के बाहर हो। दुर्बोध।

दुरधिष्ठित [वि.] (सं.) जो धीरे धीरे किया जाय

दुरधीत [वि.] (सं.) बुरी तरह से अध्ययन किया हुआ। जो पढ़ा तो गया हो परन्तु उसका मर्म न समझा गया हो।

दुरध्यय [वि.] (सं.) पढ़ने या अध्ययन करने में अशक्य।

दुरध्यवसाय [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा काम करने की चेष्टा।

दुरध्व [संज्ञा पु.] (सं.) कुपथ। कुमार्ग। बुरा रास्ता।

दुरना*+ [क्रि. अ.] (हि.) आँखों के आगे से दूर होना। ओट में होना। २-न प्रकट होना छिपना।

दुरनुपालन [वि.] (सं.) जिसका पालन करना कठिन हो।

दुरनुबोध [वि.] (सं.) जिसका याद करना कठिन हो।

दुरनुष्ठित [वि.] (सं.) जो दुःख से किया जावे।

दुरन्वय [वि.] (सं.) जो कठिनता से अनुसरण किया जाय।

दुरन्वेष्य [वि.] (सं.) जिसका अनुसंधान कठिनता से हो।

दुरपदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'द्रौपदी'।

दुरबचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का मोती। २-छोटी बाली जिसमें केवल एक मोती हो।

दुरबल [वि.] (हिं.) देखो 'दुर्बल'।

दुरबास [संज्ञा पु.](हिं) दुर्गन्ध। बुरी गंध।

दुरबासा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुर्वासा'।

दुरबीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दूरबीन'।

दुरभिग्रह [वि.] (सं.) कठिनता से पकड़ में आने वाला। [संज्ञा पु.] अपामार्ग। चिचिड़ा।

दुरभिग्रहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केवाँच। २-धमासा।

दुरभिसंधि, दरभिसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरे या दुष्ट अभिप्राय से गुट बांधकर की हुई सलाह।

दुरमेव+ [संज्ञा पु.] (हिं) मनोमालिन्य। मनमोटाव।

दुरमुट [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'दुरमुस'।

दुरमुस [संज्ञा पु.] (हिं.) गदा के आकार का एक उपकरण जो कंकड़ या मिट्टी पीटकर सड़क बनाने के काम आता है।

दुरलभ [वि.] (हिं.) देखो 'दुर्लभ'।

दुरवगत [वि.] (सं.) जो कठिनता से जाना जा सके।

दुरवगम [वि.] (सं.) जिसका नाम कठिन हो। दुर्ज्ञेय।

दुरवग्राह्य [वि.] (सं.) जो कठिनता से ग्रहण किया जा सके।

दुरवबोध [वि.] (सं.) जो कठिनता से जाना जा सके। दुर्बोध।

दुरवरोह [वि.] (सं.) जो कठिनता से चढ़ा जा सके।

दुरववद [वि.] (सं.) जिससे सहज में कटुवाक्य बोला न जावे।

दुरवस्थ [वि.] (सं.) जो अच्छी दशा में न हो।

दुरवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुरी दशा। बुरा हाल। २-दुःख कष्ट आदि की दशा।

दुरवाप [वि.] (सं.) जो कठिनता से प्राप्त हो सके। दुष्प्राप्य।

दुरवेक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी निगाह। मन्द दृष्टि।

दुरस [संज्ञा पु.] (हिं.) सहोदर भाई। सगा भाई

दुरह्न [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा दिन। दुर्दिन।

दुराउ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुराव'।

दुराक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक म्लेच्छ जाति का नाम। २-एक देश का नाम।

दुराकांक्ष, दुराकाङ्क्ष [वि.] (सं.) जो बुरे विषय की आशा रखता हो।

दुराकांक्षा, दुराकाङ्क्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरे विषय की आकांक्षा या अभिलाषा।

दुराकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी आकृति। बुरा स्वरूप।

दुराक्रंद, दुराक्रन्द [वि.] (सं.) बड़े दुःख से रोना।

दुराक्रम [वि.] (सं.) जो बड़ी कठिनता से आक्रमण किया जावे।

दुराक्रम्या [वि.] (सं.) जिस पर सरलता से चढ़ाई की जा सके।

दुराक्रोश [संज्ञा पु.] (हिं.) दुःखपूर्ण विलाप।

दुरागत [वि.] (सं.) जो बड़े कष्ट में हो। दुःखित

दुरागम [संज्ञा पु.] (सं.) बुरे ढंग से प्राप्त करने का भाव।

दुरागमन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विरागमन'।

दुरागौन [संज्ञा पु.] (हिं.) वधू का दूसरी बार अपनी ससुराल जाना। *दुरागौन देना*-लड़की को दूसरी बार अपनी ससुराल भेजना। *दुरागौन लाना*-बहू को दूसरी बार उसके पिता के घर से लाना।

दुराग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १- किसी व्यर्थ की या अनुचित बात के लिए अड़ना। अनुचित हठ २-अपने मत के ठीक सिद्ध न होने पर भी उस पर अड़े रहना।

दुराग्रही [वि.] (सं.) १-बिना उचित अनुचित विचार के अपनी बात पर अड़ने वाला। हठी। जिद्दी। २-अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उस पर अड़ा रहने वाला।

दुराचरण [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा चालचलन। खोटा व्यवहार।

दुराचार [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा चालचलन। दुष्ट आचरण।

दुराचारी [वि.] (सं.) (स्त्री. दुराचारिणी) बुरे चाल चलन वाला। दुष्टाचरण करने वाला।

दुराज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरा या खराब राज्य अथवा शासन। २-एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन। ३-वह स्थान जिस पर दो राजाओं का राज्य हो।

दुराजी [वि.] (हिं.) दो राजाओं का। जिसमें दो राजा हों।

दुराढ्यसंभव, दुराढ्यसम्भव [संज्ञा पु.](सं.) जो बहुत कष्ट झेलकर बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में पहुँचा हो।

दुरात्मता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुरात्मा या दुष्टात्मा का कार्य या भाव।

दुरात्मा [वि.] (सं.) दुष्ट और नीच प्रकृति का। नीचाशय।

दुरादुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छिपाव। गोपन। *दुरादुरी करके*-गुप्तरूप से छिपे-छिपे।

दुराधन [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र नाम।

दुराधर [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र नाम।

दुराधर्ष [वि.] (सं.) १-जिसका दमन करना कठि हो। २-उग्र। प्रचंड। [संज्ञा पु.] १- सरसों। विष्णु।

दुराधर्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचंडता।

दुराधर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटुंबिनी का पौधा।

दुराधार [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

दुराधि [वि.] (सं.) कष्टदायक। क्लेशजनक।

दुराधी [वि.] (सं.) दुष्ट प्रकृति या आचरण का।

दुरानम [वि.] (सं.) जो बड़ी कठिनता से संतु किया जा सके।

दुराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दूर होना। टलना। २-छिपना। आड़ में होना। [क्रि. स.] १-दूर करना। हटाना। २-छोड़ना। त्यागना। ३-छिपाना।

दुराप [वि.] (सं.) कठिनता से मिलने वाला। दुष्प्राप्य। दुर्लभ।

दुरापन [वि.] (सं.) दुष्प्राप्य। दुर्लभ।

दुरापाक्षान [वि.] (सं.) जो कठिनता से जा

दुरापूर [वि.] (सं.) जो कठिनता से पूरा किया जा सके।

दुराबाध [वि.] (सं.) जो पीड़ा देने योग्य न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

दुराम्नाय [वि.] (सं.) जो बड़ी कठिनता से व में लाया जा सके।

दुराय्य [वि.] (सं.) जो कठिनता से प्राप्त हो सके। दुष्प्राप्य।

दुरारक्ष्य [वि.] (सं.) जो कठिनता से बचाया जा सके।

दुराराध्य [वि.] (सं.) १-कठिनता से आराध करने योग्य। जिसको पूजना या संतुष्ट करना कठिन हो। २-असंगत। बेमेल। [संज्ञा पु.] विष्णु।

दुरारुह [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेल का वृक्ष। २- नारियल का पेड़।

दुरारुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खजूर का पेड़।

दुरारोह [वि.] (सं.) जिस पर चढ़ना कठिन हो। [संज्ञा पु.] ताड़ का पेड़।

दुरारोहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेमर का पेड़। २- खजूर का पेड़।

दुरालक्ष्य [वि.] (सं.) जो कठिनता से देख पड़े।

दुरालंभ, दुरालम्भ [वि.] (सं.) जिसका मिल कठिन हो। दुष्प्राप्य।

दुरालभ [वि.] (सं.) दुर्लभ। दुष्प्राप्य।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जवासा। धमासा। २-कपास।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटुवचन। बुरी बात। २-गालीगलौज। [वि] कटुभाषी। दुर्वचन करने वाला।

[illegible] [वि.] (सं.) बहुत सफेद। [संज्ञा पु.] [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी से कोई बात दुराव रखने या छिपाने का भाव। २-छल। कपट।

[illegible] [वि.] (सं.) जो कठिनता से घुमाया जा सके।

[illegible] [वि.] (सं.) जिसका लाना कठिन हो।

[illegible] [संज्ञा पु] (सं.) दुष्ट विचार।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं) जिसे अच्छी आशा या [illegible] न हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट आशय। बुरी नीयत। [वि] बुरी नीयत वाला। जिसका आशय बुरा हो। खोटा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (सं.) ऐसी आशा जो पूरी होने वाली न हो। व्यर्थ की आशा। झूठी उम्मेद।

[illegible] [वि] (सं.) जिसको कोई जीत न सके। प्रबल।

[illegible] [वि] (सं) १-दुष्प्राप्य। २-कठिन। दुःसाध्य।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं) वह स्थान जो रहने योग्य न हो।

[illegible] [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो (हिं) देखो 'दुराशा'।

[illegible] [वि] (सं) जिसके खाने में कष्ट हो।

[illegible] [वि] (सं.) अभागा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं) १-पाप। पातक। २-छोटा पाप। उपपातक। [वि.] (सं) पापी पातकी।

[illegible] [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) पाप का नाश करने वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं) शमी का वृक्ष।

[illegible] [वि.] (सं.) पाप का नाश करने वाला।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) १-दूर करना। हटाना २-दुरदुराना। तिरस्कारसहित भगाना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। पातक। २-वह यज्ञ जो मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अभिचारों के लिये किया जाय।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुरिष्ट यज्ञ। अभिचार के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ।

[illegible] [वि.] (सं.) खोटा। खराब।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) निन्दित स्वामी या मालिक।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अहित कामना। २-शाप। बददुआ।

दुरुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) कटुवचन। अपशब्द।

दुरुक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) कटुवाक्य। कठोर वचन।

दुरुखा [वि.] (फा.) १-जिसके दोनों ओर मुंह हो जिसके दोनों ओर कोई चिह्न या विशेष वस्तु हो। ३-जिसके दोनों ओर दो रंग हों।

दुरुच्चाय [वि.] (सं.) जो सहज में उच्चारण न किया जा सके।

दुरुच्चार [वि] (सं.) अश्लील। लज्जाजनक। शर्मनाक।

दुरुच्छेद [वि.] (सं.) जो कठिनता से उखाड़ा जा सके।

दुरुच्छेद्य [वि.] (सं.) जो सहज में न उखड़ सके।

दुरुत्तर [वि.] (सं.) जिसका पार पाना कठिन हो दुस्तर। [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट उत्तर। बुरा जवाब।

दुरुत्तोल्य [वि.] (सं) जो कठिनता से उठाया जा सके।

दुरुत्सह [वि.] (सं) सहन न करने योग्य। दुःसह।

दुरुदय [वि] (सं.) जो भलीभांति न दीख पड़े। भयंकर।

दुरुदाहर [वि.] (सं.) जिसका उदाहरण सहज में न दिया जा सके।

दुरुद्वह [वि.] (सं.) जो सहने योग्य न हो। दुःसह।

दुरुधुरा [संज्ञा स्त्री.] (?) बृहज्जातक के अनुसार जन्मकुंडली का एक योग।

दुरुपचार [वि.] (सं.) बुरा व्यवहार।

दुरुपयोग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का अनुचित या बुरे ढंग से किया जाने वाला उपयोग। वह उपयोग ठीक या अच्छा न हो। एब्यूज।

दुरुपलक्ष [वि.] (सं.) जिसको देखते न बने।

दुरुपसर्पी [वि.] (सं.) अकस्मात् आजाने वाला।

दुरुपस्थान [वि.] (सं.) जिसका मिलना कठिन हो। दुष्प्राप्य।

दुरुपाय [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा विचार।

दुरुफ [संज्ञा पु.] (?) नीलकंठताजिक के मतानुसार फलित ज्योतिष का एक योग।

दुरुम्म [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गेहूँ जो पतला और लम्बा होता है।

दुरुस्त [वि.] (फा.) १-जो अच्छी या ठीक दशा में हो। जो टूटा फूटा या खराब न हो। ठीक २-जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३-उचित। ४-वास्तविक। यथार्थ। *किसी को दुरुस्त करना* १-किसी की चाल सुधारना। २-किसी को दंड देना।

दुरुस्ती [संज्ञा स्त्री] (फा.) सुधार। संशोधन।

दुरूह [वि.] (सं) जल्दी समझ में न आने वाला कठिन।

दुरेफ [संज्ञा पु.] (हि.) 'द्विरेफ'।

दुरोक [वि.] (सं.) जो स्थान रहने योग्य न हो।

दुरोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुआरी। २-जूआ। ३-पासा।

दुरोह [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेशर का वृक्ष।

दुर्गंधा [संज्ञा पु.] (हिं) दरवाजे के ऊपर की लकड़ी भरेठा।

दुर्कुल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुष्कुल'।

दुर्गंध, दुर्गन्ध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी गंध। बुरी महक। बदबू।

दुर्गंधत, दुर्गन्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गन्ध का भाव।

दुर्ग [वि.] (सं.) जहां जाना सहज न हो। दुर्गम [संज्ञा पु.] १-वह बड़ा और दृढ़, चौड़ी और पुष्ट दीवारों से घिरा भवन जिसमें राजा और सिपाही आदि रहते हैं। गढ़। कोट। किला। २-एक असुर का नाम।

दुर्गकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) कोट या गढ़ बनाने का का काम।

दुर्गकारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुर्ग बनाने वाला मनुष्य। २-एक वृक्ष का नाम।

दुर्गच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनदर्शन के मतानुसार एक प्रकार का मोहनीय कर्म जिसके उदय से मलिन पदार्थों में ग्लानि उत्पन्न होती है।

दुर्गत [वि.] (सं.) १-दुर्दशाग्रस्त। जिसकी बुरी गति हुई हो। २-दरिद्र।

दुर्गतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्दशाग्रस्त होने का भाव। २-दरिद्रता। गरीबी।

दुर्गतरणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक देवी का नाम

दुर्गति [वि.] (सं.) १-बुरी गति। दुर्दशा। २-वह दुर्दशा जो परलोक में हो हो। नरक।

दुर्गपति [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी जिस पर किसी किले या गढ़ की रक्षा का भार सौंपा गया हो।

दुर्गपाल [संज्ञा पु.] (सं.) गढ़रक्षक। किलेदार।

दुर्गपुष्पी [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष का नाम। केशपुष्पा।

दुर्गम [वि.] (सं.) १-जहाँ जाना या पहुँचना कठिन हो। औघट। २-जिसे जानना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३-दुस्तर। विकट। कठिन। [संज्ञा पु.] १-गढ़। दुर्ग। किला। २-विष्णु ३-वन। ४-संकट का स्थान। ५-एक असुर का नाम।

दुर्गमणीय [वि.] (सं.) जहाँ पर पहुँचना कठिन हो।

दुर्गमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गम होने का भाव

दुर्गमनीय [वि.] (सं.) जहां जाना कठिन हो।

दुर्गरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) किलेदार। गढ़पति।

दुर्गलंघन [संज्ञा पु.] (सं.) (रेतीले दुर्गम स्थानों को पार करने वाला) ऊंट।

दुर्गल [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम।

दुर्गसंचर, दुर्गसञ्चर [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गम स्थानों तक पहुंचने का साधन।

दुर्गसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) किले की मरम्मत।

दुर्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवी का आदिरूप (जो आदिशक्ति मानी जाती है। २-अनेक असुरों को मारने वाली एक प्रसिद्ध देवी (जिसके काली, भवानी, चंडिका) आदि अनेक रूप हैं)। ३-नौ वर्ष की कन्या ४-नील का पौधा। ५-कौवाठोठी। ६-श्यामापक्षी। ७-गौरी, मालश्री, सारंग और लीलावती के योग से बनने वाली एक रागिनी।

दुर्गाधिकारी [संज्ञा. पु.] (सं.) गढ़ का अधिपति किलेदार।

दुर्गाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गढ़ का प्रधान। किलेदार।

दुर्गानवमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कार्तिक शुक्ल नवमी। इस दिन जगद्धात्री का पूजन होता है। २-चैत्रशुक्ल नवमी। ३-अश्विन शुक्ल नवमी।

दुर्गामहात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) भगवती की महिमा

दुर्गावती [संज्ञा पु.] चित्तौड़ के राना सांगा की कन्या का नाम।

दुर्गाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन और चैत्र के शुक्लपक्ष की अष्टमी।

दुर्गास्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गा के नाम का जप।

दुर्गाह्य [वि.] (सं.) जिसका अवगाहन करना कठिन हो।

दुर्गाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) भूमिगूगल।

दुर्गीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किलाबंदी।

दुर्गुण [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा गुण। दोष। ऐब। बुराई।

दुर्गेश [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गाध्यक्ष। किलेदार।

दुर्गोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गापूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है।

दुर्ग्रह [वि.] (सं.) १-जल्दी पकड़ में न आने वाला। २-जो सहज में न समझा जा सके। दुर्ज्ञेय। [संज्ञा पु.] अपामार्ग। चिचड़ी।

दुर्ग्राह्य [वि.] (सं.) कठिनता से पकड़े जाने योग्य।

दुर्घट [वि.] (सं.) जिसका होना कठिन हो। कष्टसाध्य।

दुर्घटना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऐसी आकस्मिक बात जिसमें कष्ट या शोक हो। अशुभ और बुरी घटना। वारदात। ऐक्सिडेंट।

दुर्घात [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरी तरह से किया जाने वाला घात या प्रहार। २-बुरी तरह से किया जाने वाला छल या कपट। धोखेबाजी

दुर्घोष (सं.) जो कटु या कर्कश ध्वनि करे। [संज्ञा पु.] भालू।

दुर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्टजन। खल। खोटा आदमी।

दुर्जनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोटापन। दुष्टता।

दुर्जयंत, दुर्जयन्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

दुर्जय [वि.] (सं.) जो जल्दी जीता न जाय। [संज्ञा पु.] विष्णु।

दुर्जर [वि.] (सं.) जल्दी न पचने या पकने वाला जिसका परिपाक करना कठिन हो।

दुर्जरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष्मती नामक लता।

दुर्जात [वि.] (सं.) १-जिसका जन्म बुरी रीति से हुआ हो। २-जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो। ३-कमीना। नीच। ४-अभागा। [संज्ञा पु.] १-व्यसन। २-असमंजस। कठिनता।

दुर्जाति [वि.] (सं.) नीच जाति का।

दुर्जीव [वि.] (सं.) दूसरे के दिये हुए अन्न पर निर्भर रहने वाला [संज्ञा पु.] बुरा जीवन। दूसरे के आधीन जीवन।

दुर्जेय [वि.] (सं.) जिसका जीतना अत्यन्त कठिन हो।

दुर्ज्ञेय [वि.] (सं.) जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।

दुर्णय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी चाल वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी नीति या चाल।

दुर्णश [वि.] (सं.) जो कठिनता से नष्ट हो सके

दुर्णीत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'दुर्नीति'।

दुर्दम [वि.] (सं.) १-जिसका दमन करना या जिसे दबाना बहुत कठिन हो २-प्रचंड। प्रबल। [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न वासुदेव के एक पुत्र का नाम।

दुर्दमन [वि.] (सं.) जिसका दमन करना कठिन हो [संज्ञा पु.] (सं.) राजा जनमेजय के वंश के एक राजा का नाम।

दुर्दमनीय [वि.] (सं.) १-जिसका दमन करना, दबाया या जीता जाना बहुत कठिन हो। २-प्रचंड। प्रबल।

दुर्दम्य [वि.] (सं.) जो शीघ्र जीता न जा सके। [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का बछड़ा।

दुर्दर्प [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा गर्व या घमंड।

दुर्दर्श [वि.] (सं.) जो जल्दी दिखाई न पड़े। जो देखने में भयंकर हो।

दुर्दर्शन [वि.] (सं.) देखो 'दुर्दर्श' [संज्ञा पु.] (सं.) कौरवों के एक सेनापति का नाम।

दुर्दशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी दशा या अवस्था दुर्गति।

दुर्दांत, दुर्दान्त [वि.] (सं.) जिसे दबाना कठिन हो। दुर्दमनीय [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का बछड़ा। २-शिव। कलह।

दुर्दान [संज्ञा पु.] १-रूपा। चांदी।

दुर्दिन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरे दिन। २-ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों, पानी बरसता हो घर से निकलना कठिन हो। मेघाछन्न दिन। दुर्दशा, दुःख और कष्ट के दिन। बुरा वक्त।

दुर्दिवस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दुर्दिन'।

दुर्दुरूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) नास्तिक।

दुर्दुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिसके दुहने में कठिनाई हो।

दुर्द्यूत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छल या कपट से जूआ खेलना।

दुर्दृष्ट [वि.] (व्यवहार) जिसका राग, लोभ आदि के कारण सम्यक् निर्णय न हुआ हो। (मुकदमा) जिसका घूस अदावत आदि के कारण ठीक निर्णय या फैसला न हुआ हो।

दुर्दैव [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुर्भाग्य। अभाग्य। २-बुरे दिनों का फेर।

दुर्दैववत् [वि.] (सं.) अभागा। बदकिस्मत।

दुर्द्धर [वि.] (सं.) १-जिसे पकड़ना कठिन हो। २-प्रबल। प्रचंड। ३-जो कठिनता से समझ में आवे। [संज्ञा पु.] १-एक नरक का नाम। २-पारा। ३-भल्लातक। भिलावां। ४-महिषासुर का एक सेनापति। ५-शंबरासुर के एक मन्त्री का नाम। ६-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ७-रावण का एक सैनिक। ८-विष्णु।

दुर्द्धर्तु [वि.] (सं.) देखो 'दुर्द्धर'।

दुर्द्धर्म [वि.] (सं.) दुष्ट धर्मयुक्त।

दुर्द्धर्ष [वि.] (सं.) १-जिसका दमन या वश में करना कठिन हो। २-प्रबल। प्रचंड। [संज्ञा पु.] १-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २-रावण के दल का एक राक्षस।

दुर्द्धर्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्द्धर्ष का भाव।

दुर्द्धर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाग दौना। २-कंथारी का पेड़।

दुर्द्धार्य [वि.] (सं.) जो जल्दी से समझ में न आ सके।

दुर्द्धाव [वि.] (सं.) जिसका संसोधन करना कठिन हो।

दुर्द्धी [वि.] (सं.) बुरी बुद्धि का। मंदबुद्धि।

दुर्द्धुरूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) वह शिष्य जो गुरु की बात जल्दी न माने।

दुर्नय [संज्ञा पु.] (सं.) १–नीति विरुद्ध आचरण। कुनीति। २–अन्याय।

दुर्नाद [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा शब्द। अप्रिय ध्वनि [वि.] कर्कश ध्वनि करने वाला।

दुर्नाम [संज्ञा पु.] (सं) १–बदनामी। कुख्याति। २–गाली। बुरा वचन। ३–बवासीर। ४–शुक्ति। सीप।

दुर्नामक [संज्ञा पु.] (सं.) अर्शरोग। बवासीर।

दुर्नामारि [संज्ञा पु.] (सं) (अर्शरोग को दूर करने वाला) सूरन। जिमीकंद।

दुर्नाम्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुक्ति। सीप।

दुर्निग्रह [वि.] (सं.) जो जल्दी से वश में न आ सके।

दुर्निमित्त [संज्ञा पु.] (सं.) अपशकुन। बुरा शगुन।

दुर्नियंता, दुर्नियन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) जो बड़ी कठिनता से आधीन किया जा सके।

दुर्निरीक्ष [वि.] (सं.) १–जिसे देखते न बने। २–भयंकर। ३–कुरूप।

दुर्निरीक्ष्य [वि.] (सं.) १–जिसे देखते न बने। २–भयंकर। ३–कुरूप।

[illegible] [वि.] (सं.) जो कठिनता से किया जा सके।

दुर्निवार [वि.] (सं.) १–जो जल्दी रोका या हटाया न जा सके। २–जिसका होना प्रायः निश्चित हो।

दुर्निवार्य [वि.] (सं.) १–जिसका निवारण करना कठिन हो। जो जल्दी से रोका न जासके। २–जो जल्दी हटाया न जा सके। ३–जिसका होना प्राय: निश्चित हो।

दुर्नीत [वि.] (सं.) बुरी चाल वाला। [संज्ञा पु.] बुरी नीति। कुचाल।

दुर्नीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुनीति। कुचाल। अन्याय। अयुक्त आचरण। बुरी नीति।

दुर्नृप [संज्ञा पु.] (सं.) अन्यायी राजा।

दुर्बचन [संज्ञा पु.] (हि.) दुर्वचन। कुवाक्य। गाली।

दुर्बद्ध [वि.] (सं.) बुरी तरह से बंधा हुआ।

दुर्बल [वि.] (सं.) १–जिसमें बल न हो। कमज़ोर। २–दुबला-पतला। कृश।

दुर्बलता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १–बल की कमी। कमज़ोरी। २–कृशता। दुबलापन। ३–कोई ऐसा दोष जो किसी व्यक्ति विशेषरूप से और प्राय: स्वभाविक हो।

दुर्बला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलसिरीस का पेड़।

दुर्बाल [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके चमड़े पर रोग हो और उसके कारण बाल झड़ गये हों। गंजा।

दुर्बुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्मति। खराब बुद्धि। [वि.] १–मन्द बुद्धि वाला। २–दुष्ट।

दुर्बुध [वि.] (सं) बुरे चित्त का। दुष्ट।

दुर्बोध [वि] (सं.) जो जल्दी समझ में न आवे। जिसका बोध कठिनता से हो। कठिन। गूढ़। क्लिष्ट।

दुर्बोध्य [वि.] (सं.) जिसका बोध कठिनता से हो सके।

दुर्ब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं) जिसके तीन पुरुष से ब्राह्मणत्व का लोप हो गया हो। निन्दित ब्राह्मण।

दुर्भक्ष [वि.] (सं.) १–जो जल्दी न खाया जा सके २–खाने में बुरा। जो खाने में अच्छा न लगे [संज्ञा पु.] दुर्भिक्ष का समय। अकाल के दिन।

दुर्भक्ष्य [वि.] (सं.) जिसका खाना कठिन हो।

दुर्भग [वि.] (सं.) (स्त्री. दुर्भगा) खोटे भाग्य या प्रारब्ध वाला। अभागा।

दुर्भगत्व [संज्ञा पु.] (सं) अभाग्य।

दुर्भगा [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) मन्द भाग्य वाली। अभागिन। [संज्ञा स्त्री.] अपने पति के प्रेम से वंचित स्त्री।

दुर्भग्न [वि.] (सं.) जो सहज में न टूट सके।

दुर्भर [वि.] (सं.) १–जिसे उठाना कठिन हो। २–भारी। वजनी।

दुर्भाग [संज्ञा पु.] देखो 'दुर्भाग्य'।

दुर्भागी [वि.] (सं.) मन्दभाग्य का। अभागा।

दुर्भाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) मंदभाग्य। बुरा अदृष्ट। खोटी किस्मत।

दुर्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १–बुरा भाव। २–द्वेष। मनमोटाव। मनोमालिन्य। ३–भीतरी वैर या द्वेष।

दुर्भावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बुरी भावना। २–खटका। चिन्ता। अन्देशा।

दुर्भाव्य [वि.] (सं.) जो जल्दी ध्यान में न आ सके। जिसकी भावना सहज में न हो सके।

दुर्भाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बुरी बातें। २–गाली-गलौज। दुर्वाच्य।

दुर्भाषित [संज्ञा पु.] (सं.) खराब वचन। दुर्वाच्य [वि.] कटुवचन बोलने वाला।

दुर्भाषी [वि.] (सं.) कटुवचन बोलने वाला।

दुर्भिक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा समय जिसमें अन्न बहुत कठिनता से मिले। अकाल।

दुर्भिच्छ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'दुर्भिक्ष'।

दुर्भिद [वि.] (सं.) जो जल्दी से भेदा न जा सके। जिसका पार जाना कठिन हो।

दुर्भिषज्य [वि.] (सं.) जिसकी चिकित्सा सहज न हो सके।

दुर्भृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट भृत्य। खराब नौकर।

दुर्भेद [वि.] (सं.) १–जो जल्दी भेदा न जा सके। २–जिसे पार करना बहुत कठिन हो।

दुर्भेद्य [वि.] (सं.) १–जो सहज में भेदा या छेदा जा सके। जिसे पार करना बहुत कठिन हो।

दुर्भ्रातृ [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट भ्राता। कपटी भाई

दुर्मंगल दुर्मङ्गल [वि.] (सं.) अशुभ। बुरा।

दुर्मंतु, दुर्मन्तु [वि.] (सं.) जो दुष्ट समझा जाता हो।

दुर्मंत्र, दुर्मन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी सलाह।

दुर्मंत्रणा, दुर्मन्त्रणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी सलाह।

दुर्मंत्रित, दुर्मन्त्रित [वि.] (सं.) बुरी सलाह देने वाला।

दुर्मंत्री, दुर्मन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) राजा को बुरी सलाह देने वाला मन्त्री। दुष्ट मन्त्री।

दुर्मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्बुद्धि। नासमझी। [वि.] १–जिसकी समझ ठीक न हो। २–दुष्ट। नीच। [संज्ञा स्त्री.] बुरी बुद्धि। नासमझी। [संज्ञा पु.] साठ संवत्सरों में से एक।

दुर्मद [वि.] (सं.) १–घमंडी। अभिमान में चूर। २–नशे आदि में चूर। मदमत्त।

दुर्मनस् [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा मन या चित्त। [वि.] १–खिन्न। उदास। २–बुरे चित्त वाला। दुष्ट।

दुर्मना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बुरे चित्त वाला। दुष्ट। २–खिन्न। उदास।

दुर्मनायमान [वि.] (सं.) चिन्तित। उदास।

दुर्मनुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) खोटा या दुष्ट आदमी

दुर्मर [वि.] (सं.) १–जिसकी मृत्यु बड़े कष्ट से हो। २–जो उन्नति, सुधार या उदार विचारों का घोर विरोधी हो। डाईहार्ड।

दुर्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी तरह से होने वाली मृत्यु।

दुर्मरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूर्वा। दूब।

दुर्मर्ष [वि.] (सं.) जिसे सहन करना कठिन हो। दुःसह।

दुर्मर्षण [वि.] (सं.) जो कठिनता से सहन किया जावे। [संज्ञा पु.] १–विष्णु। २–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुर्मर्षित [वि.] (सं) जो बैर का बदला लेने के उद्योग में हो।

दुर्मल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दृश्यकाव्य में उपरूपकों में से एक जिसमें हास्यरस प्रधान होता है और जो चार अंकों में समाप्त होता है।

दुर्मल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'दुर्मल्लिका'।

दुर्मात्सर्य [संज्ञा पु.] (सं.) ईर्षा। डाह। हसद।

दुर्मायुध [वि.] (सं.) बुरा शस्त्र फेंकने वाला।

दुर्मित्र [संज्ञा पु.] (सं.) अमित्र। शत्रु। [वि.] जिसके दुष्ट मित्र हों।

दुर्मिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भरत के सातवें पुत्र का नाम। २-एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १०, ८, और १४ के विराम से ३२ मात्राएँ होती हैं। अन्त में एक सगण और दो गुरु होते हैं। इसमें जगण का निषेध है। ३-एक वर्णवृत्त जिसके चरण में आठ सगण होते हैं।

दुर्मिलका [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तेईस वर्ण होते हैं।

दुर्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-राम की सेना के एक बंदर का नाम। ३-महिषासुर का एक सेनापति। ४-रामचन्द्रजी के एक गुप्तचर का नाम। ५-एक नाग का नाम। ६-शिव। धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ८-वह घर जिसका द्वार उत्तर की ओर हो। ९-साठ संवत्सरों में से एक का नाम। १०-एक यक्ष का नाम। ११-गणेशजी का एक गण। [वि.] (सं.) [स्त्री. दुर्मुखी] १-जिसका मुख बुरा हो। बुरे वचन बोलने वाला। कटुभाषी

दुर्मुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी का नाम (रामायण) [वि.] (सं.) बुरे मुंहवाली।

दुर्मुट [संज्ञा पु.] देखो 'दुर्मुस'।

दुर्मुस [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे या पत्थर का डंडा लगा हुआ गदा के आकार का एक उपकरण जो मिट्टी या कंकड़ पीटने के काम आता है।

दुर्मूल्य [वि.] (सं.) जिसका दाम अधिक हो। महँगा।

दुर्मेध [वि.] (सं.) मंदबुद्धि। नासमझ।

दुर्मेधत्व [संज्ञा पु.] (सं.) ना समझी का काम।

दुर्मेधावी [वि.] (सं.) देखो 'दुर्मेध'।

दुर्मैत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा मित्र। दुष्ट मित्र।

दुर्मोका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेतगुञ्जा। सफेद घुंमची।

दुर्मोह [संज्ञा पु.] कौवाठोंठी। काकतुंडी।

दुर्मोहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कौवाठोंठी। सफेद घुंघची।

दुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। २-दरवाजे का खंभा।

दुर्यश [संज्ञा पु.] (सं.) अपयश। अपकीर्ति।

दुर्योग [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्भाग्यसूचक योग। अशुभ और बुरी घटना। दुर्घटना। एक्सिडेन्ट।

दुर्योगिक [वि.] (सं.) आकस्मिक। अचानक होने वाली।

दुर्योध [वि.] (सं.) युद्ध में स्थिर रहने वाला। विकट लड़ाका।

दुर्योधन [संज्ञा पु.] (सं.) कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र।

दुर्योनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) म्लेच्छ या नीच जाति।

दुर्रा [संज्ञा पु.] (फा.) कोड़ा। चाबुक।

दुर्रानी [संज्ञा पु.] (फा.) अफगानों की एक जाति

दुर्लक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) अशुभ लक्षण।

दुर्लक्ष्य [वि.] (सं.) अदृश्य जो कठिनता से देख पड़े। [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा उद्देश्य। बुरी नीयत।

दुर्लंघन, दुर्लङ्घन [वि.] (सं.) जो सहज में लांघा न जा सके।

दुर्लंघ्य, दुर्लङ्घ्य [वि.] (सं.) जिसे जल्दी लांघ न सके।

दुर्लतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छन्द

दुर्लभ [वि.] (सं.) १-जो कठिनता से मिल सके। दुष्प्राप्य। २-अनोखा। बहुत विलक्षण और बढ़िया। ३-प्रिय। [संज्ञा पु.] १-कचूर। २-विष्णु।

दुर्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद भटकटैया। २-लाल जवासा।

दुर्ललित [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्कर्म। पाप। [वि.] १-जिसका रंग-ढंग अच्छा न हो। बुरा। खराब।

दुर्लसित [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी चेष्टा। बुरा काम

दुर्लाभ [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख द्वारा लाभ।

दुर्लेख्य [वि.] (सं.) जिसकी लिखावट बुरी हो। [संज्ञा पु.] वह लेख अथवा विलेख जो विधिक व्यवहार में नियम के विरुद्ध या अप्रमाणिक माना जावे। इनवैलिड-डीड।

दुर्वच [वि.] (सं.) १-जिसके कहने में कष्ट हो। २-जो कठिनता से कहा जा सके। [संज्ञा पु.] दुर्वचन। गाली।

दुर्वचन [संज्ञा पु.] (सं.) कटुवचन। गाली।

दुर्वराह [संज्ञा पु.] (सं.) पालतू सूअर। पाला हुआ शूकर।

दुर्वर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चाँदी। २-एलुवा।

दुर्वर्तु [वि.] (सं.) जिसका हटाना कठिन हो।

दुर्वस [संज्ञा पु.] (सं.) जहां रहने में बड़ा कष्ट हो।

दुर्वसति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जहां रहने में बड़ा कष्ट हो।

दुर्वह [वि.] (सं.) जिसे उठाकर ले चलना कठिन हो।

दुर्वहदान [संज्ञा पु.] (सं.) भारी दान। ऐसा दान जिसे उठाकर ले चलना कठिन हो।

दुर्वाच् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा वचन। निन्दित वाक्य।

दुर्वाच्य [संज्ञा पु.] (सं.) अपकीर्ति। निन्दा।

दुर्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपवाद। निन्दा। बदनामी। २-स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य या वचन। ३-अनुचित अयुक्त या निन्दित विवाद।

दुर्वादी [वि.] (सं.) कुतर्की। हुज्जती।

दुर्वार [वि.] (सं.) जिसका निवारण कठिन हो।

दुर्वारण [वि.] (सं.) जो सहज में न रोका जा सके। [संज्ञा पु.] शिव। महादेव।

दुर्वारि [संज्ञा पु.] (सं.) कम्बोज देश के एक वीर का नाम।

दुर्वारित [वि.] (सं) धीरे से हटाया हुआ।

दुर्वार्त्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा समाचार या खबर।

दुर्वार्य [वि.] (सं.) जो जल्दी न रोका जा सके। जिसका निवारण कठिन हो।

दुर्वासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुरी इच्छा या आकांक्षा। दुष्ट कामना। २-ऐसी कामना जो कभी पूर्ण न हो।

दुर्वासा [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसका धर्म में दृढ़ निश्चय हो उसे दुर्वासा कहते हैं। २-अत्रि के पुत्र एक मुनि जो अत्यन्त क्रोधी थे। (महाभारत)।

दुर्वाहित [संज्ञा पु.] (सं.) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।

दुर्विकत्थन [वि.] (सं.) बड़े अभिमान से कहा हुआ।

दुर्विगाह [वि.] (सं.) जिसकी जल्दी थाह न लग सके।

दुर्विगाह्य [वि.] (सं.) जिसका थाह लगाना कठिन हो।

दुर्विचिंत्य, दर्विचिन्त्य [वि.] (सं.) जो जल्दी से सोचा न जा सके।

दुर्विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) जो कठिनता से जाना जा सके।

दुर्विज्ञेय [वि.] (सं.) जो जल्दी जाना न जा सके

दुर्वितर्क्य [वि.] (सं.) जिसके निश्चय करने में कठिनता हो। जो सोच कर सहज में स्थिर न किया जा सके।

दुर्विद [वि.] (सं.) जिसे जानना कठिन हो। जो जल्दी जाना न जा सके।

दुर्विदग्ध [वि.] (सं.) १-अधजला। जो पूरे तौर पर न जला हो। २-जो पूर्ण परिपक्व न हो। ३-अहंकारी। घमंडी।

दुर्विदग्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूरी निपुणता का अभाव। अधकचरापन।

दुर्विद्य [वि.] (सं.) अशिक्षित। मूर्ख।

दुर्विध [वि.] (सं.) १-दरिद्र। २-खल। मूर्ख। अनाड़ी।

दुर्विधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी विधि। कुनियम [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्भाग्य।

दुर्विनय [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा शिष्टाचार।

दुर्विनीत [वि.] (सं.) जो विनीत या नम्र न हो। अशिष्ट। उद्धत। अक्खड़।

दुर्विपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अशुभ और दुःखद घटना। ट्रेजेडी। २-बुरा परिणाम या फल।

दुर्विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका विभाग या बटवारा जल्दी से न हो सके।

दुर्विभाव्य [वि.] (सं.) जिसका अनुमान न हो सके।

दुर्विभाष [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा वचन। दुर्वाच्य।

दुर्विमोचन [वि.] (सं.) जिससे छुटकारा पाना कठिन हो। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुर्विलसित [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्कार्य। बुरा काम।

दुर्विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा ब्याह। निन्दित विवाह।

दुर्विष [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव (जिन पर विष का कुछ प्रभाव न हुआ हो।)

दुर्विषह [वि.] (सं.) जिसे सहना कठिन हो। दुःसह। [संज्ञा पु.] १-शिव। महादेव। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुर्विषह्य [वि.] अत्यन्त दुःख से सहने योग्य।

दुर्वृत्त [वि.] (सं.) जिसका आचरण बुरा हो। दुराचारी। दुश्चरित्र। [संज्ञा पु.] बुरा आचरण। बुरा व्यवहार।

दुर्वृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी वृत्ति। बुरा पेशा।

दुर्वेद [वि.] (सं.) दुष्प्राप्य। दुर्लभ।

दुर्व्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुप्रबंध। बद इन्तजामी।

दुर्व्यवस्थापक [संज्ञा पु.] (सं.) कुप्रबन्ध या बद-इन्तजामी करने वाला।

दुर्व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरा व्यवहार। अनुचित या बुरा बर्ताव। २-दुष्ट आचरण।

दुर्व्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी लत। खराब आदत। किसी बुरी और हानिकारक बात की आदत या लत।

दुर्व्यसनी [वि.] (सं.) जिसको बुरी और हानिकारक लत या आदत लगी हो।

दुर्व्याहृत [वि.] (सं.) बुरे शब्दों का व्यवहार।

दुर्व्रत [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट मनोरथ। नीच आशय। [वि.] बुरे मनोरथों वाला।

दुर्हण [वि.] (सं.) जिसको मारना कठिन हो।

दुर्हल [वि.] (सं.) खराब हल वाला।

दुर्हित [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु। वैरी।

दुर्हुत [संज्ञा पु.] (सं.) निन्दित होम।

दुर्हृद [संज्ञा पु.] (सं.) जो सुहृद न हो। अमित्र। शत्रु।

दुर्हृदय [वि.] (सं.) दुष्ट अन्तःकरण का खोटा।

दुलकना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'दुलखना'।

दुलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े की एक चाल जिसमें वह हर पैर अलग उठाकर उछालता हुआ दौड़ता है।

दुलखना+ [क्रि. स.] (हिं.) बार-बार बतलाना। कोई बात दो बार कहना या बतलाना। [क्रि. अ.] कहकर मुकरना।

दुलखी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

दुलड़ा [वि.] (हिं.) [स्त्री. दुलड़ी] दो लड़ों का। [संज्ञा पु.] दो लड़ों वाली माला।

दुलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो लड़ों वाली माला।

दुलत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना। २-मालखंभ की एक कसरत। दुलत्ती *छाँटना या झाड़ना*-दोनों लातों को चलाना। दुलत्ती *फेंकना*-दोनों लात चलाना।

दुलदुल [संज्ञा पु.] (अ.) वह खच्चरी जिसे असकन्दरिया (मिस्र) के हाकिम ने मोहम्मद साहब को भेंट में दी थी। साधारण मुसलमान लोग इसे घोड़ा समझते हैं और इसकी नकल मुहर्रम के दिनों में निकालते हैं।

दुलन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दोलन'।

दुलना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'डुलना'।

दुलभ* [वि.] (हिं.) देखो 'दुर्लभ'।

दुलरा* [वि.] (हिं.) देखो 'दुलारा'।

दुलराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बच्चों को बहलाकर प्यार करना। बच्चों को दुलार या लाड़ करना। २-दुलारे बच्चों का-सा व्यवहार या आचरण करना। [क्रि. स.] लाड़-प्यार का-सा व्यवहार करना।

दुलरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुलड़ी'।

दुलरुवा+ [वि.] (हिं.) देखो 'दुलारा'।

दुलहन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नवविवाहिता वधू या बहू। नई बहू।

दुलहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसका विवाह अभी होने को हो या हुआ हो। वर। २-पति। स्वामी।

दुलहिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नई ब्याही हुई स्त्री। नव-वधू।

दुलहिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुलही'।

दुलही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुलहन'।

दुलहेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लाड़ला या दुलारा बेटा या लड़का। २-दुलहा।

दुलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओढ़ने की हलकी रूईदार रजाई। ओढ़ने की रूईदार चादर।

दुलाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'डुलाना'।

दुलार [संज्ञा पु.] हिं.) बच्चों को प्रसन्न करने की स्नेहपूर्ण चेष्टा। लाड़।

दुलारना [क्रि. स.] (हिं.) लाड़ करना। बच्चों को प्रसन्न करने की प्रेमपूर्ण चेष्टा करना।

दुलारा [वि.] (हिं.) [स्त्री. दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो। लाड़ला। [संज्ञा पु.] लाड़ला बेटा। प्रिय पुत्र।

दुलारी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] अधिक लाड़ प्यार वाली। लाड़ली। [संज्ञा स्त्री.] १-लाड़ली बेटी। २-एक प्रकार की माता या चेचक। (रोग)।

दुलीचा* [संज्ञा पु.] (देश.) गलीचा। कालीन।

दुलेहटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुलहेटा'।

दुलैच* [संज्ञा पु.] (देश.) गलीचा। कालीन।

दुलोही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे के दो टुकड़ों को जोड़ कर बनाई जाने वाली एक प्रकार की तलवार।

दुल्लल [संज्ञा पु.] (सं.) रेशम।

दुल्लभ*[वि.] (हिं.) देखो 'दुर्लभ'।

दुल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुल्लीं'।

दुल्लीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोली के खेल में दूसरे नम्बर की गोली।

दुल्हैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुलहन'।

दुव+ [वि.] (हिं.) दो।

दुवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दुष्ट। दुर्जन। शत्रु। ३-राक्षस।

दुवस [संज्ञा पु.] (सं.) टहल। खिदमत।

दुवस्य [वि.] (सं.) सेवा करने योग्य।

दुवाज [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादस* [वि.] (हि.) देखो 'द्वादश'।

दुवादसबानी* [वि.] (हिं.) बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभायुक्त। खरा। (विशेषतः स्वर्ण या सोना)

दुवादसी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'द्वादशी'।

दुवाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अर्चना। पूजा।

दुवार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्वार'।

दुवारिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'द्वारका'।

दुवाल [संज्ञा स्त्री.] (फा) १-चमड़े का तसमा। २-रिकाब में लगाने का तस्मा।

दुवालबंद [संज्ञा पु.] (फा.) चपरास या पेटी का तस्मा जो कमर में लपेटा जाता है।

दुवाली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रंगे या छपे हुए कपड़ों पर घोंटा फेरने का औजार जिससे चमक आती है।

दुवालीबंद [संज्ञा पु.] (फा.) वह सिपाही जो परतला लगाये रहता है।

दुविद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्विविद'।

दुविधा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुबधा'।

दुवो*+ [वि.] (हिं.) दोनों।

दुशवार [वि.] (फा.) १-कठिन। दुरूह। २-दुःसह।

दुशवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कठिनता।

दुशाला [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार की ऊनी (दोहरी) चादर जिसके किनारों पर बेल-बूटे बने रहते हैं।

दुशाले में लपेट कर मारना या लगाना–छिपे-छिपे आक्षेप करना।

दुशालापोश [वि.] (फा) १-जो दुशाला ओढ़े हो। २-जो अच्छा कपड़ा पहने हुए हो। अमीर।

दुशाला-फरोश [संज्ञा पु.] (फा) दुशाला बेचने वाला।

दुशासन* [संज्ञा पु.] देखो 'दुःशासन'।

दुश्चक्रम [संज्ञा पु.] (सं) गोखरू। गोत्तुर।

दुश्चर [वि.] (सं.) जिसका काटना कठिन हो। दुष्कर। कठिन।

दुश्चरित [वि.] (सं.) १-बुरे आचरण का। बदचलन। २-कठिन। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरा आचरण। बदचलनी। २-पाप।

दुश्चरित्र [वि.] (सं.) [स्त्री. दुश्चरित्रा] बुरे चरित्र वाला। बदचलन [संज्ञा पु.] (सं.) कुचाल। दुराचार।

दुश्चर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वह मनुष्य जिसके लिंगेन्द्रिय के मुख पर ढकने वाला चमड़ा न हो।

दुश्चलन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुराचरण। खोटी चाल।

दुश्चारित्र [संज्ञा प.] (सं.) पाप। दुष्ट चरित्र। [वि.] (सं.) बुरे चरित्र का। बदचलन।

दुश्चिंता, दुश्चिन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी चिन्ता। भारी फिक्र।

दुश्चित्य [वि.] (सं.) जो कठिनता से समझा जा सके।

दुश्चिकित्स [वि.] (सं.) जिसकी चिकित्सा कठिन हो।

दुश्चिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिकित्सा के नियमों के विरुद्ध चिकित्सा करना।

दुश्चिकित्सित [वि.] (सं.) जिसकी चिकित्सा या इलाज कठिनाई से हो सके। दुःसाध्य रोग।

दुश्चिकित्स्य [वि.] (सं.) जिसकी चिकित्सा बड़ी कठिनाई से हो सके। दुःसाध्य।

दुश्चिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार जन्म से तीसरा स्थान।

दुश्चित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-खटका। चिन्ता। आशंका। २-घबराहट।

दुश्चेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा काम। कुचेष्टा

दुश्चेष्टित [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। दुष्कर्म। २-नीच या खोटा काम।

दुश्च्यवन [वि.] (सं.) जो जल्दी च्युत या विचलित न हो सके। [संज्ञा पु.] इन्द्र।

दुश्च्याव [वि.] (सं.) जो जल्दी च्युत न किया जा सके। [संज्ञा पु.] शिव। महादेव।

दुश्मन [संज्ञा पु.] (फा.) शत्रु। वैरी। द्वेषी।

दुश्मनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शत्रुता। विरोध। वैर

दुष्कर [वि.] (सं.) दुःसाध्य। जिसे करना कठिन हो। [संज्ञा पु.] आकाश।

दुष्करण [वि.] (सं.) जो कठिनता से किया जा सके।

दुष्कर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) बुरा काम। पाप।

दुष्कर्मा [वि.] (सं.) बुरा काम करने वाला। पापी।

दुष्कर्मी [वि.] (हिं.) पापी। दुराचारी। बुरा काम करने वाला। [संज्ञा पु.] पापी।

दुष्कलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) खराब शरीर।

दुष्कल्पनाशील [वि.] (सं.) बुरी कल्पना करने वाला।

दुष्काल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुसमय। बुरा वक्त। दुर्भिक्ष। अकाल। ३-महादेव।

दुष्कीर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपयश। बदनामी।

दुष्कुल [संज्ञा पु.] (सं.) नीच कुल। अप्रतिष्ठित घराना। [वि.] नीच कुल का। तुच्छ घराने का।

दुष्कुलीन [वि.] (सं.) तुच्छ या नीच घराने का।

दुष्कृत [संज्ञा पु.] (सं.) नीच या बुरा काम।

दुष्कृतकर्मा [वि.] (सं.) बुरा काम करने वाला। पापी।

दुष्कृतात्मा [वि.] (सं.) दुरात्मा। खोटा।

दुष्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा काम। कुकर्म। [वि.] पापी। कुकर्मी।

दुष्कृती [वि.] (हिं.) कुकर्मी। बुरा काम करने वाला। पापी।

दुष्कृष्ट [वि.] (सं.) कठिनता से खींचा जाने वाला।

दुष्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा काम।

दुष्क्रीत [वि.] (सं.) महँगा। महँगे दाम का।

दुष्खदिर [संज्ञा पु.] (सं.) निकृष्ट श्रेणी का एक प्रकार का खैर इसका कत्था खाने में कडुआ और कसैला होता है।

दुष्ट [वि.] (सं.) (स्त्री. दुष्टा) १-जिसमें दोष हो। दोषग्रस्त। २-बुरे स्वभाव वाला। ३-दुर्जन। खल। पाजी। दुराचारी। [संज्ञा पु.] कुष्ट। कोढ़।

दुष्टचारी [वि.] (सं.) १-बुरा आचरण करने वाला। दुराचारी। २-खल। दुर्जन।

दुष्टचेता [वि.] (सं.) १-बुरे विचार का। २-बुरा चाहने वाला। अहिताकांक्षी। ३-कपटी।

दुष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दोष। नुक्स। ऐब। २-बुराई। ३-बदमाशी। दुर्जनता।

दुष्टत्व [संज्ञा पु.] (सं) दुर्जनता।

दुष्टपना [संज्ञा पु] (हिं) दुष्टता। खोटाई।

दुष्टयोग [संज्ञा पु.] (सं) ज्योतिष के अनुसार अनिष्टसूचक योग।

दुष्टर [वि.] (सं.) जो कठिनता से पार किया जा सके। दुस्तर।

दुष्टवृष [संज्ञा पु.] (सं.) गलियर बैल।

दुष्टव्रण [संज्ञा पु.] (सं) वह घाव जिसमें दुर्गन्ध आये और जो जल्दी अच्छा न हो।

दुष्टसाक्षी [वि.] (सं) भूठा गवाह। ठीक-ठीक गवाही न देने वाला गवाह या साक्षी।

दुष्टा [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) खोटी। बुरे स्वभाव की।

दुष्टाचार [संज्ञा पु.] (सं.) कुचाल। कुकर्म। खोटा काम। [वि.] बुरा काम करने वाला। दुराचारी।

दुष्टाचारी [वि.](सं.) (स्त्री. दुष्टाचारिणी) खोटा काम करने वाला। कुकर्मी।

दुष्टात्मा [वि.] (सं.) जिसका अन्तःकरण बुरा हो। दुराशय।

दुष्टान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिगड़ा, बासी या सड़ा हुआ अन्न। २-कुत्सित अन्न। ३-पाप की कमाई का अन्न। ४-नीच का अन्न।

दुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दोष। विचार। ऐब।

दुष्पच [वि.] (सं) १-जो कठिनता से पचे। २-जो जल्दी न पचे।

दुष्पतन [संज्ञा पु.] (सं.) अपशब्द। गाली-गलौच।

दुष्पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चोर नामक एक गंधद्रव्य

दुष्पद [वि.] (सं.) दुष्प्राप्य।

दुष्पराजय [वि.] (सं.) जिसका जीतना कठिन हो। [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्परिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) जो जल्दी पकड़ में न आ सके।

दुष्परिहंतु, दुष्परिहन्तु [वि.] (सं) जिसको मारना कठिन हो।

दुष्परीक्ष [वि.] (सं.) जिसकी जाँच कठिनता से हो

दुष्पर्श [वि.] (सं.) १-जिसे स्पर्श करना कठिन हो। २-जो सहज में प्राप्त हो सके। दुष्प्राप्य

दुष्पर्शा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवासा।

दुष्पान [वि.] (सं.) जो कठिनता से पीया जा सके

दुष्पार [वि.] (सं.) १-जल्दी पार न किया जा सकने वाला। २-कठिन। दुःसाध्य।

दुष्पुत्र [वि.] (सं.) जिसके पुत्र खराब हों। [संज्ञा पु.] (सं.) खराब लड़का। कुपुत्र।

दुष्पूर [वि.] (सं.) जो सहज में पूरा न हो सके अनिवार्य।

दुष्प्रकाश [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार। अंधेरा।

दुष्प्रकृति [वि.] (सं) बुरे स्वभाव या प्रकृति वाला। दुःशील। [संज्ञा स्त्री.] बुरी प्रकृति। खोटा स्वभाव।

दुष्प्रज्ञ [वि] (सं) निर्बोध। अनजान।

दुष्प्रज्ञान [संज्ञा स्त्री.] (सं) निन्दनीय। ज्ञान।

दुष्प्रतिग्रह [वि.] (सं) जो जल्दी से ग्रहण न किया जा सके।

दुष्प्रधर्ष [वि.] (सं.) जो जल्दी से पकड़ा न जा सके। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्प्रधर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जवासा। हिंगुवा खजूर।

दुष्प्रधर्षिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भटकटैया। २-बैंगन।

दुष्प्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का अनुचित या बुरे ढंग से किया जाने वाला उपयोग।

दुष्प्रलंभ, दुष्प्रलम्भ [वि.] (सं.) १-जो सहज न ठगा जा सके। २-जो सहज में प्राप्य न हो सके।

दुष्प्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट प्रवाद या बुरी अफवाह।

दुष्प्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) बुरी या दूषण प्रवृत्ति। [वि.] (सं.) दुष्ट या बुरी प्रवृत्ति वाला।

दुष्प्रवेश [वि.] (सं.) जिसमें घुसना कठिन हो।

दुष्प्रवेशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंथारी वृक्ष।

दुष्प्रसह [वि.] (सं.) १-दुःसह। जिसका सहन करना कठिन हो। २-भीषण। भयानक।

दुष्प्रसाद [वि.] (सं.) जो कठिनता से प्रसन्न किया जा सके।

दुष्प्रसाह [वि.] (सं.) जिसका सहन करना कठिन हो।

दुष्प्रहर्ष [वि.] (सं.) जो सहज में प्रसन्न न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्प्राप [वि.] (सं.) जो कठिनता से प्राप्त हो सके। दुर्लभ।

दुष्प्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरा प्रेम।

दुष्प्राप्य [वि.] (सं.) जो सहज में न मिल सके।

दुष्प्रेक्ष [वि.] (सं.) १-जिसे देखना कठिन हो। २-दुर्दर्शन। भीषण। भयंकर।

दुष्प्रेक्षणीय [वि.] (सं.) देखो 'दुर्दर्शनीय'।

दुष्प्रेक्ष्य [वि.] (सं.) १-जिसे देखना कठिन हो। २-दुर्दर्शन। भीषण। भयंकर।

दुष्पंत, दुष्पन्त [संज्ञा पु.] देखो 'दुष्यन्त'।

दुष्यंत, दुष्यन्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुरुवंशी राजा जिसने कण्वऋषि के आश्रम में शकुन्तला के साथ गंधर्व-विवाह किया था और इनसे भरत नाम का परम प्रतापी बालक उत्पन्न हुआ था।

दुष्योदर [संज्ञा पु.] (सं.) एक उदर रोग जो सिंह आदि पशुओं के नख और रोएं या मल, मूत्र आर्त्तव मिश्रित अन्न या एक साथ हुआ घी और मधु खाने तथा गंदा पानी पीने के कारण हो जाता है।

दुसराना* [क्रि. स.] (हिं.) दुहराना।

दुसरिहा* [वि.] (हिं.) १-साथ रहने वाला दूसरा आदमी। साथी। संगी। २-प्रतिद्वन्दी।

दुसह* [वि.] (हिं.) जो सहा न जाय। असह्य। कठिन।

दुसही [वि.] (हिं.) जो कठिनता से सहा जा सके।

दुसाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का शमादान जिसमें दो कनखे निकले होते हैं। २-डंडे के आकार की एक छोटी लकड़ी सिरे पर दो कनखे फूटे होते हैं। इसमें छानने का कपड़ा बाँधकर लोग भाँग छानते हैं।

दुसाध [संज्ञा पु.] (हिं.) हिन्दुओं में एक जाति विशेष जो सूअर पालने का काम करते हैं। [वि.] नीच। अधम। दुष्ट। पाजी। (गाली)

दुसार* [संज्ञा पु.] (हिं.) आरपार किया हुआ छेद। [क्रि. वि.] आरपार या वार पार। एक पार से दूसरे पार तक।

दुसाल [संज्ञा पु.] (हिं.) आरपार किया हुआ छेद। [क्रि. वि.] इस पार से उस पार तक।

दुसाला* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुशाला'।

दुसासन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुःशासन'।

दुसाहा [संज्ञा पु.] (देश.) वह खेत जिसमें दो फसलें हों।

दुसूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दोहरे सूत के तानेबाने में बुना कपड़ा। २-दोहरे सूतों की बुनी चादर।

दुसेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी खाट। पलंग।

दुस्तर [वि.] (सं.) १-जिसे पार करना कठिन हो। २-विकट। कठिन।

दुस्त्यज [वि.] (हिं.) जो कठिनाई से छोड़ा जा सके। जिसका त्यागना कठिन हो।

दुस्थ [वि.] (सं.) जिसका रहना कठिन हो।

दुस्पृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) जो बुरी तरह से पूछा गया हो।

दुस्पर्शा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशवल्ली-लता। भटकटैया।

दुस्फोट [संज्ञा पु.] (स.) १-बुरा व्रण या घाव। २-एक प्रकार का हथियार।

दुस्सह [वि.] (हिं.) देखो 'दुःसह'।

दुहता* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. दुहती] बेटी का का बेटा। नाती।

दुहत्थड़ [क्रि. वि.] (हिं.) दोनों हाथों से (मारना) [संज्ञा पु.] (हिं.) दोनों हाथों से मारा जाने वाला प्रहार।

दुहत्था [वि.] (हिं.) [स्त्री. दुहत्थी] १-दोनों हाथ से किया हुआ। २-जिसमें दो मूठें या दस्ते हों।

दुहत्थी [संज्ञा स्त्री] (हिं) मालखंभ की एक कसरत।

दुहना [क्रि. सं.] (हिं.) १-स्तन से दूध निचोड़ कर निकालना। गाय भैंस आदि के स्तन से दूध निकालना। २-सत्व या सार खैंचना। ३-खूब धन बसूल करना। दुह *लेना*-१-सार या सत्व खैंच लेना। २-धन हर लेना। लूटना।

दुहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह पात्र जिसमें दूध दुहा जाता है।

दुहरना [क. सं.] (हिं.) देखो 'दोहरा'।

दुहरा [वि.] (हिं.) देखो 'दोहरा'।

दुहराना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दोहराना'।

दुहाई [संज्ञा स्त्रीं.] (हिं.) १-घोषणा। पुकार। उच्च स्वर से चिल्लाकर सब को दी जाने वाली सूचना। २-अपनी रक्षा के लिए किसी को चिल्ला कर बुलाना। ३-शपथ। कसम। सौगन्द। ४-गाय भैंस आदि दुहने का काम ४-दुहने की मजदूरी। (*किसी की*) दुहाई *फिरना*-१-राजा के नाम की सूचना डंके आदि के द्वारा फिरना। २-प्रभुत्व की डोंडी फिरना। विजय घोषणा करना। दुहाई *देना*-अपने बचाव के लिए किसी का नाम लेकर चिल्लाना।

दुहाग [संज्ञा पु.] (हिं) [स्त्री. दुहागी] १-दुर्भाग्य २-सोहाग का उलटा। वैधव्य। रँडापा।

दुहागिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) विधवा। सुहागिन का उलटा।

दुहागिल+ [वि.] (हिं.) १-अभागा। अनाथ। २-सूना। खाली।

दुहागी [वि.] (हिं.) अभागा। दुर्भागी।

दुहाजूं [वि.] (हिं.) (पु. प्र.) पहली पत्नी के मर जाने पर दूसरा विवाह करने वाला। [वि.] (स्त्री. प्र.) पहले पति के मर जाने पर दूसरा विवाह करने वाली (स्त्री)।

दुहाना [क्रि. स.] (हिं.) दूहने का काम दूसरे से करवाना। दूध निकलवाना।

दुहाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जमींदार का त्योहारों पर किसान की गाय, भैंस का दूध दुहाकर लेना। २-वह दूध जो इस प्रथा के अनुसार किसान जमींदार को देता है।

दुहावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध दूहने की मजदूरी। दुहाई।

दुहिता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कन्या। लड़की।

दुहितुःपति [संज्ञा पु.] (सं.) जामाता। दामाद।

दुहितृपति [संज्ञा पु.] (सं.) जामाता। दामाद।

दुहिन* [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्मा।

दुहुँघा* [क्रि. वि.] (?) दोनों ओर।

दुहू [वि.] (हिं.) दोनों।

दुहेनू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध देने वाली गाय

दुहेक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दुःख। विपत्ति।

दुहेला [वि.] (हिं.) (स्त्री. दुहेली) १-दुःखदायी २-दुःसाध्य। कठिन। ३-दुःखी। दुखिया। [संज्ञा पु.] विकट या दुःखदायक काम।

दुहोतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री दुहोतरी) लड़की का लड़का। नाती। * [वि.] दो अधिक। दोऊपर।

दुह्य [वि.] (सं.) दुहने योग्य।

दुह्यमान् [वि.] (सं.) जो दूहा जाय।

दुह्यु [संज्ञा पु.] (सं.) शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा के एक पुत्र का नाम।

दूँगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दौंगरा'।

दूँगरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दौंगरा'।

दूँद* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऊधम। उपद्रव। २-देखो 'द्वंद्व'। ३-देखो 'तोंद'।

दूँदना [क्रि अ.] (हिं.) १-उपद्रव या ऊधम करना। २-घोर शब्द करना।

दू [संज्ञा पु] (सं.) रोग। बीमारी। [वि] (हिं.) देखो 'दो'।

दूआ [संज्ञा पु] (हिं) १-दो बूटियाँ वाला ताश का पत्ता। दुक्की। २-दो चिह्नों, बूटियों या कौड़ियों से संबंध रखने वाला किसी खेल या जुए आदि का दांव। ३-सोरही के खेल में दो कौड़ियों का चित्त पड़ना। (देश.) कलाई पर सब गहनों की पीछे पहनने का एक प्रकार का आभूषण। पछेली। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दुआ'।

दूइ [वि] (हिं) देखो 'दो'।

दूइज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रति पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

दूई [वि.] (हिं.) देखो 'दो'।

दूक* [वि.] (हिं.) दो एक। कुछ।

दूकान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुकान'।

दूकानदार [संज्ञा पु] देखो 'दुकानदार'।

दूकानदारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दुकानदारी'।

दूख+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुःख'।

दूखन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दूषण'।

दूखना*+ [क्रि. स.] (हिं.) दोष लगाना। ऐब लगाना। + [क्रि. अ.] देखो 'दुखना'।

दूखित [वि.] (हिं.) १-देखो 'दूषित'। २-देखो 'दुःखित'।

दूगला+ [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का बड़ा टोकरा या दौरा। (हिं) देखो 'दोगला'।

दूगा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा।

दूगुन+ [वि.] (हिं) दूना। दुगुना।

दूगू [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय की तराई में पाया जाने वाला एक प्रकार का बकरा।

दूज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया। *दूज का चाँद होना*-बहुत दिनों में या कम दिखाई पड़ना।

दूजा [वि.] (हिं.) दूसरा। द्वितीय।

दूत [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. दूती) १-वह जो किसी विशेष कार्य के लिए या कोई समाचार पहुँचाने या लाने के लिए कहीं भेजा जाय। २-प्रेमी का संदेसा प्रेमिका तक या प्रेमिका का संदेसा प्रेमी तक पहुँचाने वाला व्यक्ति।

दूतक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की आज्ञा का सर्वसाधारण में प्रचार करने वाला कर्मचारी।

दूतकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूत का काम। २-दूतक का काम।

दूत-कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) दूत का काम। दूतत्व।

दूतघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

दूतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूत का काम या भाव।

दूतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) दूत का काम। दूतता।

दूतपन [संज्ञा पु.] (हिं.) दूत का काम।

दूत-मंडल, दूत-मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल

दूतर* [वि.] (हिं.) देखो 'दुस्तर'।

दूताधिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर का वह स्थान जहां दूसरे राष्ट्र का दूत और उसके कर्मचारी गण रहते हों। लीगेशन।

दूतायन [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'दूताधिष्ठान'।

दूतावास [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश या राष्ट्र के दूत का निवासस्थान जहां वह अपने साथियों और कर्मचारियों-सहित रहता है। लीगेशन।

दूतावास-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी राष्ट्र के राजदूतों से संबंध रखने वाला मन्त्री। २-दूतावास-संबंधी मामलों का मन्त्री।

दूति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दूतिका'।

दूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूती।

दूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेमी या प्रेमिका का समाचार एक दूसरे तक पहुँचाने वाली स्त्री। कुटनी।

दूत्य [संज्ञा पु.] (?) दूध का काम या भाव।

दूदकश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) धुआं निकलने का मार्ग। चिमनी। २-एक प्रकार का दमकला जिसकी सहायता से धुआं देकर पौधों से चिपके कीड़े छुड़ाए जाते हैं।

दूदला [संज्ञा पु.] (देश.) डुब्ला नामक एक वृक्ष।

दूध [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों से निकलने वाला सफेद रंग का तरल पदार्थ। जो उनके छोटे बच्चे पीते हैं। पय। दुग्ध। २-दूध के समान वह तरल सफेद पदार्थ जो डंठलों और पत्तियों से निकलता है। ३-अनाज के हरे बीजों का रस जो जमकर सत हो जाता है। *दूध उगलना या उलटना*-बच्चे का दूध पीकर कै कर देना। *दूध उछालना*-ठंडा करने के लिए दूध को बर्तनों में धार बांधकर बार-बार डालना। *दूध उतरना*-स्तनों में दूध भर जाना। *दूध का दूध और पानी का पानी होना*-ऐसा न्याय होना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। *दूध का बच्चा होना*-दूध पीने वाला छोटा बच्चा। *दूध का उबाल*-शीघ्र शान्त होने वाला क्रोध, उत्साह आदि मनोवेग। *दूध की मक्खी*-तुच्छ, तिरस्कृत पदार्थ। *दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक देना*-किसी को तुच्छ या पराया समझकर बिलकुल अलग कर देना। *दूध की बू मुँह से आना*-विशेष अनुभव और ज्ञान न होना। *दूध के दाँत*-सब से पहले दांत। *दूध के दाँत टूटना*-बहुत छोटा या बच्चा होना। सयाना न होना। *दूध चढ़ना*-१-दूध कम निकलना। २-दूध गर्म करना। *दूध चढ़ाना*-१-दूहते समय गाय का अपने दूध को स्तनों में ऊपर की ओर खींच लेना। २-दूध का भाव तेज होना। *दूध चुराना*-दूहते समय दूध कम निकलना। *दूध छुड़ाना*-दूध पीने की आदत छुड़ाना। *दूध डालना*-पीये हुए दूध की कै कर देना। *दूध तोड़ना*-गाय आदि का दूध देना बन्द या कम कर देना। २-गरम दूध को ठंडा करने के लिये हिलाना। *दूध पड़ना*-अनाज में रस पड़ना। *दूध पिलाना*-बालक का मुंह स्तनों से दूध लगा कर पीने देना। *दूध पीता बच्चा*-छोटा, गोद का बच्चा। *दूध फटना या बिगड़ना*-खटाई आदि पड़ने या किसी और प्राकृतिक कारण से दूध का जल अलग और सार भाग अलग हो जाना। *दूध बढ़ाना*-बच्चे की दूध पीने की आदत छुड़ाना। *(स्तनों मे) दूध भर आना*-बच्चे की ममता अथवा स्नेह के कारण माता के स्तनों मे दूध उतर आना। माता का प्रेम बढ़ना। *दूधों नहावो, पूतों फलो*-धन और सन्तान की वृद्धि हो।

दूध-चढ़ी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसके स्तनों में दूध पहले से बढ़ गया हो।

दूध-पिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दूध पिलाने वाली दाई। २-दूध पिलाने के बदले में मिलने वाला धन। ३-विवाह की एक रीति जिसमें बारात के समय वर को घोड़ी पर चढ़ने से पूर्व माता द्वारा वर को दूध पिलाना।

दूधपूत [संज्ञा पु.] (हिं.) धन और संतति।

दूध-बहन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसी लड़की जो किसी ऐसी स्त्री का दूध पीकर पली हो जिसका दूध पीकर कोई और लड़का भी पला हो।

दूधभाई [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. दूध-बहिन) ऐसे दो बालकों में कोई एक जो एक ही स्त्री के स्तन का दूध पीकर पले हों, पर अलग-अलग माता-पिता से उत्पन्न हों।

दूधमहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

दुधमुँहा [वि.] (हिं.) जो अभी तक माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा। बालक।

दुधमुख [वि.] (हिं.) छोटा बच्चा। बालक।

दूध-मुख [वि.] (हिं.) छोटा बच्चा। बालक। २-असा-मलमूत्र उठाना, मातृत्व का काम। २-मां के समान स्नेह-ध्य रोगी की सेवा। ३-मां के समान स्नेह सहित पालना।

दूधराज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अफगानिस्तान और तुर्किस्तान में पाई जाने वाली एक प्रकार की बुलबुल। २-बड़े और चौड़े फन वाला एक प्रकार का साँप।

दूधवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. दूध वाली) दूध बेचने वाला। ग्वाला।

दूधवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध बेचने वाली ग्वालिन।

दूधहँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह मिट्टी की हाँड़ी जिसमें दूध रखकर आग पर पकाते हैं। मटिया।

दूधा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अगहन मास में तैयार होने वाला एक प्रकार का धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रहता है। २-दूध के से रङ्ग का रस जो कच्चे या हरे दाने में होता है।

दूधाभाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू दोनों अपने-अपने हाथ से एक दूसरे को भात खिलाते हैं।

दूधिया [वि] (हिं.) १-जिसमें दूध मिला हो या जो दूध से बना हो। २-जिसमें दूध होता हो ३-दूध के रङ्ग का। सफेद। [संज्ञा पु.] १-एक प्रकार का सफेद रत्न। २-एक प्रकार का सफेद, मुलायम और चिकना पत्थर जिसकी कटोरियाँ बनती हैं। ३-दुद्धि नामक एक घास। ४-खड़िया मिट्टी।

दूधियाखाकी [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद राख का सा रङ्ग।

दूधी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुद्धी'।

दून [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दूने का भाव। २-संगीत में गाने की गति का अपेक्षाकृत कुछ बढ़ या तेज हो जाना। दून की लेना या हाँकना-बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी हाँकना। [संज्ञा पु.] ((देश.) दो पहाड़ों के बीच का मैदान। तराई। घाटी। + [वि] देखो 'दूना'।

दूनाॐ [वि.] (हिं.) जो लचककर दोहरा हो गया हो।

दूधसिरिस [संज्ञा पु.] (देश.) सफेद सिरिस का पेड़ जो बहुत ऊँचा होता है। यह हिमालय पर्वत पर कम ऊँचाई पर पाया जाता है।

दूना [वि.] (हिं.) जितना हो, उतना ही और। दुगुना। *दिल दूना होना*-मन में खूब उत्साह और उमंग होना। *दिन दूना रात चौगुना होना*-देखो 'दिन के मुहावरे में'।

दूनौं*+ [वि.] (हिं.) देखो 'दोनों'।

दूब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की प्रसिद्ध घास जो प्रायः सब ऋतुओं में होती है। यह हरी और सफेद दो तरह की होती है।

दूबदू [क्रि. वि.] (हिं.) आमने-सामने। मुकाबले में।

दूबर+ [वि.] (हिं.) देखो 'दूबरा'।

दूबरा*+ [वि.] (हिं.) १-दुबला। पतला। कृश २-कमजोर निर्बल। ३-दुर्बल। दीन।

दूबला+ [वि.] (हिं.) देखो 'दुबला'।

दूबा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दूब'।

दूबिया [वि.] (हिं.) एक प्रकार का हरा रंग जो हरी घास का सा होता है।

दूबे [संज्ञा पु.] (हिं.) द्विवेदी ब्राह्मण।

दूभर [वि.] (हिं.) जिसके करने में बहुत कठिनता हो। कठिन। दुःसाध्य।

दूमना* [क्रि. अ.] (हिं.) हिलना। डोलना।

दूमा [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़े का छोटा थैला जिसमें पहाड़ी लोग चाय की पत्तियाँ रखते हैं।

दूमुहाँ* [वि.] (हिं.) देखो 'दुमुंहा'।

दूरंगम, दूरङ्गम [वि] (सं.) बहुत दूर तक जाने वाला।

दूरंदेश [वि.] (फा.) आगापीछा सोचने वाला दूरदर्शी। अग्रसोची।

दूरंदेशी [संज्ञा स्त्री.] (फा) दूरदर्शिता।

दूर [क्रि. वि.] (सं.) विस्तार, काल, संबंध आदि के विचार से बहुत अन्तर पर। *दूर करना*-१-अलग या जुदा करना। २-मिटाना। *दूर की कहना*-दूरदर्शिता की बात कहना। *दूर की बात*-१-बहुत बारीक और समझदारी की बात। कठिन या दुस्साध्य बात। *दूर की सुनना*-बड़ों को गालियाँ देना। *दूर की सूझना*-सूक्ष्म बात का ख्याल आना। *दूर क्यों जाइए या जाएं*-अपरिचित अथवा दूर का दृष्टांत न लेकर परिचित और निकट वाले का ही करें। *दूर खींचना*-घमंड करना *दूर तक पहुंचना*-१-बड़ों को गाली देना। २-आगे चल कर आने वाली बात कहना। *दूर दूर करना*-घृणा, तिरस्कार करना। *दूर पहुंचना*-१-साधन या सामर्थ्य के बाहर। २-दूर की बात सोचना। *दूर भागना या रहना*-पास न जाना। *दूर होना*-१-हट जाना। २-मिट जाना। नष्ट होना।

दूरगामी [वि.] (सं.) दूर तक चलने वाला।

दूरग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दूर से ग्रहण करने की शक्ति

दूरतर [वि.] (सं.) अधिक दूर। बहुत दूर।

दूरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूर होने का भाव। अन्तर। दूरी। फासला।

दूरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) दूर होने का भाव। अन्तर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक [वि.] (सं.) दूर तक की बात देखने या समझने वाला। [संज्ञा पु.] पंडित। बुद्धिमान।

दूरदर्शक-यंत्र, दूरदर्शक-यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) दूरबीन नामक यंत्र।

दूरदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिद्ध। २-पंडित। विद्वान्। ३-समझदार। ४-दूरबीन।

दूरदर्शिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूर की बात सोचने या समझने का गुण। दूरंदेशी।

दूरदर्शी [वि.] (सं.) भविष्य में बहुत दूर तक की बातें देखने या सोचने वाला। अग्रसोची। [संज्ञा पु.] १-पंडित। विद्वान्। २-गीध। गिद्ध।

दूरदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भविष्य का विचार। दूरदर्शिता।

दूरनिरीक्षण [संज्ञा पु.] (सं) दूरबीन नामक यंत्र

दूरप्रेषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूरस्थ स्थान पर भेजने वाला। २-वह यंत्र जिसके द्वारा एक स्थान से दूसरे दूर वाले स्थान पर बिजली या अन्य शक्तियों की सहायता से (बिना तार की सहायता के) संवाद भेजे या प्राप्त किये जाते हैं। ट्रांसमीटर।

दूर-प्रेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक स्थान से दूसरे दूरस्थ स्थान को भेजने का कार्य। २-२-दूर-प्रेषक यन्त्र की सहायता से संवाद भेजने या प्राप्त करने का काम। *ट्रांसमीशन*।

दूर-प्रेषित [वि.] (सं.) दूर-प्रेषक द्वारा भेजी हुई।

दूरबा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दूर्वा'।

दूरबीन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह यंत्र जिसके द्वारा दूर की वस्तुएँ बहुत पास और स्पष्ट और बड़ी दिखाई देती हैं। २-इस आकार का एक बच्चों का खिलौना।

दूरमूल [संज्ञा पु.] (सं.) मूँज।

दूरयायी [वि.] (सं.) दूर जाने वाला। दूरगामी।

दूरवर्ती [वि.] (सं.) दूर का। जो दूर हो।

दूरवस्त्रक [वि.] (सं.) नंगा। वस्त्रहीन।

दूरवासी [वि.] (सं.) दूर देश में रहने वाला।

दूरवीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) दूरबीन।

दूरवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) दूर से निशाना मारने

वाला व्यक्ति।

दूरसंस्थ [वि.] (सं.) दूरवर्त्ती। दूरस्थित।

दूरसस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दूर हो। दूरस्थता।

दूरस्थ [जि.] (सं.) दूर का। जो दूर हो।

दूरागत [वि.] (सं.) दूर से आया हुआ।

दूरापात [संज्ञा पु.] (सं.) वह अस्त्र जो दूर से फेंक कर मारा जाता हो।

दूरात्पाव [वि.] (सं.) दूर से उछलने वाला।

दूरावस्थित [वि.] (सं.) दूरवर्त्ती। जो दूर में हो

दूरि* [वि.] (हिं.) देखो 'दूर'।

दूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो वस्तुओं के बीच का स्थान या फासला। दूरत्व। अंतर। बीच का अवकाश।

दूरीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) बाहर निकाल देने की क्रिया।

दूरीकृत [वि.] (सं.) जो दूर निकाल दिया हो।

दूरीप्रदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) वह यन्त्र जिसके द्वारा लक्ष्य या निशाने की दूरी का अनुमान किया जाता है। दूरीमापक-यंत्र। रेंज-फाइंडर।

दूरीभूत [वि] (सं.) बाहर निकाला हुआ।

दूरीमापकयंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यन्त्र जिसकी सहायता से लक्ष्य या निशाने की दूरी का अनुमान किया जाता है। दूरी प्रदर्शक। रेंज-फाइंडर।

दूरुदा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का क्षुद्र रोग। (वैद्यक)।

दूरे-अमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) उनचास मरुतों में से एक का नाम।

दूरेत्य [वि.] (सं.) दूरस्थ। जो दूर हो।

दूरेभा [वि.] (सं.) दूर से चमकने वाला।

दूरेयम [वि.] (सं.) जहां पर यम न पहुँच सके।

दूरेवेध [वि.] (सं.) दूर से मारने वाला।

दूरोह [संज्ञा पु.] (सं.) आदित्य-लोक (जिस पर चढ़कर जाना कठिन है)। [वि.] जिस पर चढ़कर जाना कठिन हो।

दूरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

दूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–छोटा कचूर। २–विष्ठा। मल।

दूर्वा [संज्ञा स्त्री.].(सं.) दूब नाम की घास।

दूर्वाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वासुदेव के भाई वृक की स्त्री।

दूर्वाद्यघृत [संज्ञा पु.] (सं.) एक विशिष्ट प्रकार से बनाया हुआ बकरी का घी (वैद्यक)।

दूर्वाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों सुदी अष्टमी इस दिन व्रत करते हैं।

दूर्वासोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सोमलता।

दूर्वेष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम में आती है।

दूलन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'दोलन'।

दूलभ+ [वि.] (हिं.) कठिनता से प्राप्त होने योग्य। दुर्लभ।

दूलह [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दुलहा। वर। २–पति। स्वामी।

दूलाश [वि.] (सं.) जो कठिनाई से मारा जा सके।

दूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का पेड़।

दूलित* [वि.] देखो 'दोलित'।

दूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का पेड़।

दूल्हा [संज्ञा पु.] देखो 'दुलहा'।

दूवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दूआ'।

दूश्य [संज्ञा पु.] (सं.) तंबू। खेमा।

दूषक [वि.] (सं.) १–दूसरों पर दोष लगाने और उनकी निंदा करने वाला। २–दोष उत्पन्न करने वाला (पदार्थ)।

दूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १–अवगुण। दोष। ऐब। २–दोष या ऐब लगाना। ३–रावण के एक भाई का नाम। ४–जैनमतावलम्बियों के सामयिक व्रत में ३२ त्याज्य बातें या अवगुण जिनमें से १२ कायिक १० वाचिक और दस मानसिक हैं।

दूषणारि [संज्ञा पु.](सं.) दूषण नामक राक्षस को मारने वाले, श्रीरामचन्द्र।

दूषणीय [वि.] (सं.) दोष लगाने योग्य। जिसमें ऐब लगाया जा सके।

दूषन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दूषण'।

दूषना+ [क्रि. स.] (हिं.) दोष लगाना।

दूषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँख का मैल।

दूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँख का मैल।

दूषित [वि.] (सं.) जिसमें दोष हों। खराब। दोषयुक्त।

दूषी [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'दूषि'।

दूषीविष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में रहने वाला एक प्रकार का विष जो धातुओं को दूषित करता है। (सुश्रुत)।

दूष्य [वि.] (सं.) १–जिसमें दोष लगाया या निकाला जा सके। २–निन्दनीय। ३–तुच्छ। ४–राज्य को हानि पहुंचाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १–कपड़ा। वस्त्र। २–तम्बू। खेमा।

दूष्या [संज्ञा स्त्री.] हाथी बाँधने का रस्सा।

दूष्युदर [संज्ञा पु.] (सं.) पेट का रोग।

दूसना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दूषना'

दूसर+ [वि] (हिं.) देखो 'दूसरा'।

दूसरा [वि.] (हिं.) १–क्रम में पहले के बाद आने वाला। द्वितीय। २–जिसका प्रस्तुत विषय या बात से कोई सम्बन्ध न हो। अन्य। अपर। यौ०–दूसरी माँ–जो अपनी माँ न हो। सौतेली माँ।

दूहना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दुहना'।

दूहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोहनी'।

दूहा+* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दोहा'।

दूहिया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चूल्हा।

दृंभू [संज्ञा पु] देखो 'दृन्भू'।

दृंहण [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ या मजबूत करने की क्रिया।

दृंहित [वि.] (सं.) बढ़ाया हुआ।

दृक् [संज्ञा पु.] (सं.) १–छिद्र। छेद। २–आंख। नेत्र। [संज्ञा पु.] (?) हीरा।

दृक्कर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

दृक्कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में वह क्रिया या संस्कार जो ग्रहों को अपने क्षितिज पर लाने के निमित्त किया जाता है और जिससे ग्रहों के योग, चन्द्रमा की शृंगोन्नति और ग्रहों तथा नक्षत्रों के उदयास्त का ज्ञान होता है।

दृक्काण [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक राशि का तीसरा भाग जो दस अंशों का होता है।

दृक्क्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) अवलोकन। दृष्टिपात। २–दशमलग्नकनतांश की भुजज्या जिसका काम सूर्यग्रहण के स्पष्टीकरण में पड़ता है।

दृक्पथ [संज्ञा पु.] (सं) दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुँच।

दृक्पात [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टिपात। अवलोकन।

दृक्प्रसादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलत्था। कुलत्थांजन।

दृक्प्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शोभा। सुन्दरता। खूबसूरती।

दृक्शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकाशरूप चैतन्य आत्मा।

दृक्श्रुति [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

दृगंचल, दृगञ्चल [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख की पलक।

दृग* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–आंख। २–देखने की शक्ति। दृष्टि। ३–दो की संख्या। दृग डालना या देना–देखना।

दृगध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्र के अधिष्ठाता देवता सूर्य।

दृगमिचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) आंखमिचौली का खेल।

दृग्गणित [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों का वेध करके गणित करना।

दृग्गणितैक्य [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों को किसी समय पर गणित से स्पष्ट करके फिर उन्हें वेधकर मिलाना और न्यूनता अथवा अधिकता प्रतीत होने पर उसमें संस्कार कर

ज्याति
जिससे ग्रहों के वेध तथा स्पष्ट में आगे भेद न पड़े।

ग्गति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दृष्टि की गति अथवा पहुँच। २–दृशमलग्न की नतांश की कोटिज्या।

गोचर [वि.] (सं.) जो आंख से दिखाई दे।

ग्गोल [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृत्त जिसे ऊर्ध्वस्वस्तिक और अधःस्वस्तिक में होता हुआ कल्पित करके जिस ओर ग्रहों का उदय होता है उस ओर घुमाकर उनकी स्थिति का पता लगाया जाता है।

ज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दृक्मंडल या दृग्गोल स्वस्तिक से जो ग्रह जितना लटका रहता है उसे नतांश कहते हैं तथा इसी नतांश की ज्या दृग्ज्या कहलाती है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेम दृष्टि।

भू [संज्ञा पु.] (सं.) १–वज्र। २–सूर्य। ३–सर्प

लंबन, दृग्लम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण स्पष्ट करने में जिस समय सूर्य, चन्द्र गर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाते हैं पर पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में नहीं आते तब उन्हें पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में लाने के लिए जो पूर्वापर संस्कार किया जाता है उसे दृग्लंबन कहते हैं।

विष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सर्प जिसकी आंखों में विष होता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) क्षितिज।

नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रहण स्पष्ट करने में सूर्य चन्द्र का जब अमांतकालीन स्पष्ट करते हैं तथा वे गर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाते हैं पर पृष्ठाभिप्राय से नहीं आते, ऐसी अवस्था में पृष्ठाभिप्राय से उन्हें एक सूत्र में लाने के लिए जो याम्योत्तर संस्कार किया जाता है उसे दृङ्नति कहते हैं।

दृङ्मंडल, दृङ्मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) दृग्गोल

दृढ़ [वि.] (सं.) १–अच्छी तरह बंधा या मिला हुआ। प्रगाढ़। २–टूटे-फूटे। पुष्ट। मजबूत। ३–ठोस। कड़ा। ४–बलवान्। बलिष्ठ। ५–जो जल्दी दूर, नष्ट अथवा विचलित न हो सके। स्थायी। ६–जो अन्यथा न हो सके। निश्चित। ध्रुव। पक्का। ७–निडर। ढीठ। कड़े दिल वाला। [संज्ञा पु.] १–लोहा। २–विष्णु। ३–धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम। ४–संगीत में सात रूपकों में से एक। ५–तेरहवें अनुरुचि के एक पुत्र का नाम। गणित में वह अंक जो किसी दूसरे अंक से पूरा-पूरा विभाजित न हो सके। जैसे–१, ३, ५, ७, ११, १७ आदि।

दृढ़कंटक, दृढ़कण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) क्षुद्रफलक वृक्ष।

दृढ़कर्मा [वि.] (सं.) धैर्य और स्थिरता के साथ काम करने वाला। जो अपने काम में दृढ़ रहे

दृढ़कांड, दृढ़काण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाँस। २–रोहिस घास।

दृढ़कांडा, दृढ़काण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पातालगारुड़ी नामक लता। छिरेंट।

दृढ़कारी [वि.] (सं.) १–दृढ़ता से काम करने वाला। २–पुष्ट करने वाला। मजबूत करने वाला।

दृढ़क्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक का नाम।

दृढ़क्षुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वल्वजा तृण। सागेबागे।

दृढ़गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) हीरक। हीरा।

दृढ़गात्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राब। खांड।

दृढ़ग्रंथि, दृढ़ग्रन्थि [वि.] (सं.) जिसकी गाँठ मजबूत हो। [संज्ञा पु.] बाँस।

दृढ़ग्राही [वि.] (सं.) निश्चित रूप से ग्रहण करने वाला।

दृढ़चेता [वि.] (सं.) पक्के विचारों वाला।

दृढ़च्छद [संज्ञा पु.] (सं.) दीर्घरोहिष तृण। बड़ी रोहिस।

दृढ़च्युत [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि के एक पुत्र का नाम। जो परपुरंजय नामक राजा की कन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था (भागवत)

दृढ़तरु [संज्ञा पु.] (सं.) धव का पेड़।

दृढ़ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दृढ़ होने का भाव। दृढ़त्व। २–मजबूती। ३–स्थिरता। ४–पक्कापन।

दृढ़तृण [संज्ञा पु.] (सं.) मूंज नामक घास।

दृढ़तृणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वल्वजातृण।

दृढ़त्व [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ता।

दृढ़त्वच् [वि.] (सं.) जिसकी त्वचा या छाल कड़ी हो।

दृढ़दंशक [संज्ञा पु.] (सं.) घड़ियाल नामक जलजन्तु।

दृढ़दस्यु [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि जो दृढ़च्युत के पुत्र थे।

दृढ़धन [संज्ञा पु.] (सं.) शाक्यमुनि। बुद्ध।

दृढ़धन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १–जो धनुष चलाने में दृढ़ हो। २–जिसका दृढ़ धनुष हो। ३–इस नाम का एक पुरुवंशीय राजा।

दृढ़धन्वी [वि.] (सं.) जिसका धनुष दृढ़ हो।

दृढ़धुर [वि.] (सं.) जो बोझ ढोने में समर्थ हो।

दृढ़नाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक मंत्र जो माया-अस्त्र को रोक सकता है। यह मंत्र विश्वामित्र ने श्रीरामचन्द्रजी को बतलाया था।(वाल्मीकिरामायण)।

दृढ़निश्चय [वि.] (सं.) जो अपनी बात या संकल्प पर दृढ़ रहे। स्थिर-प्रतिज्ञ।

दृढ़नीर [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल (जिसके भीतर का जल जमकर धीरे-धीरे कड़ा हो जाता है)

दृढ़नेत्र [संज्ञा पु.](सं.) विश्वामित्र के चार पुत्रों में से एक का नाम। (वाल्मीकि)।

दृढ़नेमि [वि.] (सं.) जिसकी नेमि दृढ़ हो। (वह रथ) जिसकी धुरी मजबूत या दृढ़ हो। [संज्ञा पु.] अजमीढ़वंशीय एक राजा का नाम।

दृढ़पत्र [वि.] (सं.) जिसके पत्ते दृढ़ हों। मजबूत पत्तों वाला। [संज्ञा पु.] १–बाँस। २–मूंज की घास।

दृढ़पत्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) वाल्वजातृण। सागेबागे।

दृढ़पद [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २३ मात्राएं होती हैं इसमें १३ और १० मात्राओं पर विश्राम होता है तथा अन्त में दो गुरु होते हैं।

दृढ़पाद [वि.] सं.) दृढ़। निश्चय। विचार का पक्का।

दृढ़पादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यवतिक्ता।

दृढ़पादी [संज्ञा पु.] (सं.) भूम्यामलकी। भूआँवला।

दृढ़पृष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) कच्छप। कछुआ।

दृढ़प्रतिज्ञ [वि.] (सं.) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला। जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।

दृढ़प्ररोह [संज्ञा पु.] (सं.) वट। बरगद।

दृढ़फल [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल।

दृढ़बंधिनी, दृढ़बन्धिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) अनंतमूल नामक लता।

दृढ़बालुक [संज्ञा पु.] (सं.) मुसव्वर।

दृढ़भार्गवक [संज्ञा पु.] (सं.) १–हीरा। २–वज्र।

दृढ़भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योगशास्त्र में मनको एकाग्र और स्थिर करने का एक अभ्यास विशेष जिसमें मन अविचल हो जाता है, इधर-उधर नहीं जाता। इस अवस्था को प्राप्त कर लेने के उपरान्त वैराग्य की प्राप्ति निकट हो जाती है।

दृढ़मुष्टि [वि.] (सं.) १–मुट्ठी में जोर से कस कर पकड़ने वाला। २–कृपण। कंजूस। [संज्ञा पु.] (सं.) खड्गादि अस्त्र (क्योंकि यह मुट्ठी में पकड़ कर चलाये जाते हैं।)

दृढ़मूल [संज्ञा पु.] (सं.) १–मूंज। २–तालाबों पर होने वाली मथाना नामक घास। ३–नारियल

दृढ़रंगा, दृढ़रङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकरी (जिससे रंग में पक्कापन आता है)।

दृढ़रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रौढ़-स्त्री। जवान स्त्री।

दृढ़रथ [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक का नाम।

दृढ़रोह [संज्ञा पु.] (सं.) पाकर नामक पेड़। पक्कड़।

दृढ़लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाताल-गरुड़ी नामक लता।

दृढ़लोम [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। शूकर। [वि.] (सं.) [स्त्री. दृढ़लोम्नी, दृढ़लोमा] जिसके रोएँ कड़े हों।

दृढ़लोमा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] कड़े रोओं वाली

दृढ़लोम्नी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'दृढ़लोमा'

दृढ़वर्म [वि.] (सं.) जिसका कवच बड़ा मजबूत हो

दृढ़वर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़वल्कल [वि.] (सं.) जिसकी छाल कड़ी हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुपारी का पेड़। २-लकुच का पेड़।

दृढ़वल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंबष्ठा।

दृढ़वीज [वि.] (सं.) जिसके बीज कड़े हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकवड़। २-बेर। ३-बबूल।

दृढ़वृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल।

दृढ़वेधन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दृढ़तापूर्वक या मजबूती के साथ छेदने की क्रिया।

दृढ़व्रत [वि.] (सं.) अपने संकल्प पर दृढ़ रहने वाला।

दृढ़शक्तिक [वि.] (सं.) जिसकी बड़ी ताकत हो

दृढ़संध, दृढ़सन्ध [वि.] (सं.) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का। संकल्प का पक्का। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़संधि, दृढ़सन्धि [वि.] (सं.) बिना छेद का

दृढ़सूत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वा नामकी लता। मुर्रा।

दृढ़स्कंध, दृढ़स्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिंड-खजूर। २-खिरनी का पेड़।

दृढ़स्थिति [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारियल का पेड़। २-दृढ़ अवस्था।

दृढ़स्यु [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यऋषि के एक पुत्र का नाम जो लोपमुद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

दृढ़हस्त [वि.] (सं.) जो हथियार आदि पकड़ने में पक्का हो। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़ांग, दृढ़ाङ्ग [वि.] (सं.) जिसका अंग दृढ़ हो। कड़े बदन का हृष्टपुष्ट। [संज्ञा पु.] जीरक। जीरा।

दृढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसली।

दृढ़ाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दृढ़ता। मजबूती।

दृढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) दृढ़ या पक्का करना। मजबूत करना। [क्रि. अ.] १-कड़ा होना। पुष्ट या मजबूत होना। २-स्थिर या पक्का होना।

दृढ़ायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दृढ़ या पक्का करना। २-किसी कही हुई बात, किये हुए कार्य अथवा किसी की नियुक्ति आदि को पक्का या ठीक ठहराना। कनफर्मेशन।

दृढ़ायु [संज्ञा पु.] (सं.) १-तृतीय मनु सावर्णि के एक पुत्र का नाम। २-उर्वशी नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न ऐल राजा का एक पुत्र (महाभारत)।

दृढ़ायुध [वि.] (सं.) अस्त्र ग्रहण करने में पक्का। युद्ध में तत्पर। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

दृढ़ारंग, दृढ़ारङ्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकरी।

दृढ़ाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) धुंधमार के एक पुत्र का नाम (हरिवंश)।

दृढ़ीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) निश्चित या स्थिर करने की क्रिया।

दृत [वि.] (सं.) [स्त्री. दृता] १-सम्मानित। आदृत। आदर किया हुआ। २-विदीर्ण। फाड़ा हुआ।

दृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीरा।

दृति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चमड़ा। खाल। २-खाल का बना हुआ पात्र। ३-मशक। ४-मेघ। ५-एक प्रकार की मछली। ६-गाय बैल आदि के गले के नीचे झूलता हुआ चमड़ा। गलकंबल।

दृतिधारक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा जिसे बंगाल में आकनपाता कहते हैं।

दृतिवातवतोरयन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

दृतिहरि [संज्ञा पु.] (सं.) (खाल या चमड़ा चुराने वाला) कुत्ता।

दृतिहार [संज्ञा पु.] (सं.) मशक ढोने वाला, भिश्ती)।

दृत्य [वि.] (सं.) आदरणीय।

दृन्भू [संज्ञा पु.] (सं.) १-वज्र। २-सूर्य। ३-राजा। ४-सांप। ५-पहिया।

दृप्त [वि.] (सं.) १-उग्र। प्रचंड। २-प्रज्वलित। ३-तेजयुक्त। ४-अभिमानी। घमंडी।

दृप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमक। आभा। २-तेजस्विता। ३-प्रकाश। रोशनी। ४-अभिमान गर्व। ५-उग्रता। प्रचंडता।

दृप्र [वि.] (सं.) १-प्रचंड। प्रबल। २-इतराया हुआ। घमंडी।

दृब्ध [वि.] (सं.) १-ग्रंथित। गुथा हुआ। २-भीत। डरा हुआ।

दृश् [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखना। दर्शन। २-प्रदर्शक। दिखाने वाला। ३-देखने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) २-आंख। २-दो की संख्या। ३-दृष्टि। ४-ज्ञान।

दृशद् [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दृषद्'।

दृशद्वती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दृषद्वती'।

दृशद्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक नदी जो ब्रह्मावर्त के सीमा पर थी।

दृशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आंख।

दृशाक [वि.] (सं.) देखने योग्य। दर्शनीय।

दृशाकांक्ष्य, दृशाकाङ्क्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) कम

दृशान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। आभा। २-विरोचन नामक एक दैत्य। ३-आचार्य गुरु। ४-प्रजा का पालन करने वाला राजा ५-ब्राह्मण। [वि.] जो देख पड़ता हो।

दृशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चक्षु। नेत्र। आँख। २-देखो 'दृशी'।

दृशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दृष्टि। २-प्रकाश। ३-चेतन पुरुष। ४-शास्त्र।

दृशेन्य [वि.] (सं.) देखने योग्य। दर्शनीय।

दृशोपम [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेत कमल। सफेद कमल। पुंडरीक।

दृश्य [वि.] (सं.) १-जो देखने में आ सके। जिसे देख सकें। दृग्गोचर। जैसे-दृश्य पदार्थ २-देखने योग्य। दर्शनीय। ३-मनोरम। सुन्दर। ४-जानने योग्य। ज्ञेय। [संज्ञा पु.] १-वह पदार्थ, घटना अथवा स्थल आदि जो आँखों के सामने हों। दिखाई देने वाली वस्तु या घटना। २-वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय। नाटक। ३-गणित में ज्ञानराशि।

दृश्यकाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह काव्य जो नाट्यशाला में अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय।

दृश्यमान [वि.] (सं.) १-जो दिखाई पड़ रहा हो चमकीला। सुन्दर।

दृश्यादृश्य [वि.] (सं.) दृश्य और अदृश्य। दीखने और न दीखने वाला।

दृश्यालेख्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी घटना आदि के स्थान का रेखाचित्र। साइट-प्लान।

दृश्वन् [वि.] (सं.) देखने वाला। दर्शक।

दृषत् [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-पहाड़ की चट्टान। २-सिला। ३-पत्थर।

दृषद् [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) ५-पहाड़ की चट्टान। २-सिल। पट्टी। ३-पत्थर।

दृषद्वत् [वि.] (सं.) शिलायुक्त।

दृषद्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऋग्वेदमें उल्लिखित एक नदी जिसे आजकल घग्घर और राक्षी कहते हैं। २-यह थानेश्वर से १३ कोस दक्षिण में स्थित है। ३-विश्वमित्र की एक पत्नी का नाम। [वि.] (सं.) पथरीली।

दृषद्वान् [वि.] (सं.) (स्त्री. दृषद्वती) पाषाणयुक्त पथरीला।

दृष्ट [वि.] (सं.) देखा हुआ। २-जाना हुआ। २-जाना हुआ। ज्ञात। प्रकट। ३-लौकिक और गोचर। प्रत्यक्ष। [संज्ञा पु.] (सं) १-दर्शन। साक्षात्कार। ३-सांख्य में तीन प्रकार के प्रमाणों में से एक। प्रत्यक्ष प्रमाण।

दृष्टकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) रेखा या परीक्षा किया हुआ काम।

दृष्टकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहेली। २-ग

[illegible] जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से [illegible] प्रसंग या रूढ़ अर्थों से निकलता हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टि का भाव। देखने का [illegible]।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य का वह दोष जो [illegible] आदि से देखा या जाना गया हो।

[illegible] [वि.] (सं.) जो दर्शनमात्र से नष्ट हो जाय

[illegible] [वि.] (सं.) युद्ध में से भाग जाने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) देखकर किया जाने वाला संकल्प।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) रेहन का वह प्रकार [illegible] महाजन या साहूकार को रेहन रखी [illegible] वस्तु के भोग का अधिकार न हो और [illegible] रुपये देने वाले का कोई कब्जा न हो। उसे केवल सूद मिलता रहे।

[illegible] [वि.] (हिं.) प्रकट। व्यक्त।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रौढ़ा-स्त्री। जवान [illegible]

[illegible] [वि.] (सं.) १-प्रत्यक्ष के समान। २-[illegible] सांसारिक।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) वह दार्शनिक सिद्धांत [illegible] प्रत्यक्ष को ही मानता है।

[illegible] [वि.] (सं.) जिसके बल की परीक्षा की [illegible] हो।

[illegible] [वि.] (सं.) देखने योग्य।

[illegible] [वि.] (सं.) जिसका बल देखा गया हो।

[illegible], दृष्टान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-अज्ञात [illegible] वस्तुओं या व्यापारों का धर्म आदि बतलाते [illegible] समझाने के निमित्त समान धर्मवाली [illegible] वस्तु या व्यापार का कथन जो सब को [illegible] हो। किसी विषय को स्पष्ट रूप से [illegible] या सिद्ध करने के लिये किसी जाने [illegible] अन्य विषय का उल्लेख। उदाहरण। [illegible]। २-एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय [illegible] उसके साधारण धर्म का वर्णन करके [illegible] तुलना में उपमान और उसके धर्म का [illegible] होता है। ३-शास्त्र। ४-मरण।

[illegible], दृष्टान्तित [वि.] (सं.) जो उदाहरण [illegible] में लिया गया हो।

[illegible] [वि.] (सं.) न देखने वाली वस्तु को [illegible] देखने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो। २-वह शब्द जिसके श्रवण [illegible] श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो [illegible] जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह शक्ति या वृत्ति जिससे मनुष्य अथवा जीव सब चीजें देखते हैं। आँख की ज्योति। २-देखने के लिए आंख की पुतली की सीध में किसी वस्तु के होने की स्थिति। देखने के लिए नेत्रों की प्रवृत्ति। नजर। निगाह। [illegible]। अवलोकन। ३-आंख का वह व्यापार, जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का ज्ञान होता है। ४-देखने में प्रवृत्त नेत्र। देखने के लिए खुली हुई आंख। ५-परख। पहचान। ६-हित का ध्यान। कृपा-दृष्टि। ७-आशा की दृष्टि। आसरे में लगी हुई टकटकी। आस। उम्मीद। ८-ध्यान। विचार। अनुमान। ९-उद्देश्य। अभिप्राय। नीयत। *दृष्टि आना*-दिखाई देना। *दृष्टि उठाना*-ताकने के लिए आंखें ऊपर करना। *दृष्टि करना*-दृष्टि डालना। ताकना। *दृष्टि गाड़ना, जमाना*-एकटक ताकना। दृष्टि स्थिर करना। *दृष्टि चुराना*-(लाज या भय से) सामने न आना। नजर बचाना। *दृष्टि चूकना*-नजर का इधर-उधर हो जाना। आंख का दूसरी ओर फिर जाना। (*किसी से*) *दृष्टि जुड़ाना*-साक्षात्कार होना। आंख मिलना। देखा-देखी होना। (*किसी से*) *दृष्टि जोड़ना*-आंख मिलाना या देखा-देखी करना। *दृष्टि देना*-ताकना। नजर डालना।। *दृष्टि पड़ना*-दिखाई देना। *दृष्टि पथ में आना*-निगाह के सामने आना।

दृष्टि पर चढ़ना-१-देखने में बहुत भला लगना निगाह में जँचना। पसन्द आना। भाना। २-आँखों में खटकना। किसी वस्तु का इतना बुरा लगना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। *दृष्टि फिसलना*-चमक-दमक के कारण नजर न ठहराना। आँख में चकाचौंध होना। *दृष्टि फेंकना*-नजर डालना। ताकना। *दृष्टि फेरना*-नजर हटा लेना। दूसरी ओर देखना (*किसी से*) *दृष्टि फेरना*-(*किसी पर*) कृपादृष्टि न रखना। अप्रसन्न या विरक्त होना। खिन्न होना। (*किसी की*) *दृष्टि बचाना*-१-(किसी के) सामने होने से बचना। आँख के सामने न आना। २-(किसी से) छिपाना। *दृष्टि बाँधना*-इस प्रकार जादू करना कि आँखों को और-का-और दिखाई दे। *दृष्टि बिछाना*-१-उत्कंठापूर्वक किसी के आगमन की प्रतीक्षा करना। २-किसी के आने पर अत्यन्त श्रद्धा या प्रेम प्रकट करना। *दृष्टि भर देखना*-जी-भर ताकना। *दृष्टि मारना*-१-आँख से इशारा करना। पलक गिराकर संकेत करना। २-आँख के इशारे से रोकना। *दृष्टि मिलना*-देखादेखी होना। साक्षात्कार होना। *दृष्टि मिलाना*-देखो 'दृष्टि जोड़ना'। *दृष्टि में आना* दिखाई पड़ना। *दृष्टि में पड़ना*-दिखाई पड़ना *दृष्टि में समाना*-नजर में जँचना। भाना। *दृष्टि में रखना*-१-निगरानी रखना। किसी चीज को देखते रहना जिसमें वह इधर-उधर न हो जाय। २-दशा का निरीक्षण करते रहना। *दृष्टि लगाना*-१-नजर का पड़ना। दृष्टिपात होना। २-देखादेखी होने के कारण प्रेम होना। प्रीति होना।

दृष्टि लगाना-१-स्थिर होकर ताकना। टक-टकी बांधना। २-(किसी को देखने के लिए) ताकना। ३-प्रेम करना। प्रीति करना। ४-बुरी दृष्टि का प्रभाव डालना। (किसी से) *दृष्टि लड़ाना*-आंख के सामने आंख किये रहना। घूरना। खूब ताकना। *दृष्टि उतरना या गिरना*-श्रद्धा, विश्वास या प्रेम का पात्र न रहना।

दृष्टिकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रहेलिका। पहेली। २-ऐसी कविता जिसका अर्थ वाच्यार्थ से न समझा जा सके परन्तु प्रसंग से ज्ञात हो।

दृष्टिकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शक। २-स्थल-पद्म।

दृष्टिकोण [संज्ञा पु.] (सं.) वह अंग या कोण जिससे कोई वस्तु देखी या कोई बात सोची-समझी जाय।

दृष्टि-क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) चित्रों आदि में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथाक्रम प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर तथा ठीक मान में दिखाई दे। मुनासिबत *पार्सपेक्टिव*।

दृष्टिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) अवलोकन। देखना। दृष्टिपात।

दृष्टि-गत [वि.] (सं.) जो दिखाई पड़ता हो। [संज्ञा पु.] १-नेत्र का विषय। २-आंख का एक रोग।

दृष्टिगुण [संज्ञा पु.] (सं.) तीर का निशाना।

दृष्टिगोचर [वि.] (सं.) जो देखने में आवे। नेत्रेन्द्रिय द्वारा जिसका बोध हो।

दृष्टिधृक [संज्ञा पु.] (सं.) इक्ष्वाकु नामक राजा के एक पुत्र का नाम

दृष्टिनिपात [संज्ञा पु.] (सं.) देखना। अवलोकन

दृष्टिपथ [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टि का फैलाव। नजर की पहुँच।

दृष्टिपरंपरा, दृष्टिपरम्परा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'दृष्टि-क्रम'।

दृष्टिपात [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टि डालने की क्रिया या भाव। ताकना। देखना। अवलोकन।

दृष्टिपूत [वि.] (सं.) १-जो देखने में शुद्ध हो। जो देखने में शुद्ध जान पड़े। २-जिसके देखने से आखें पवित्र हों

दृष्टिप्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आंख का एक रोग।

दृष्टिफल [संज्ञा पु.] (सं.) एक राशि में स्थितिग्रह को दूसरी राशि में स्थित ग्रह पर दृष्टि करने से जो फल होता हैं उसे दृष्टिफल कहते हैं (फलित-ज्योतिष)।

दृष्टिबंद, दृष्टिबन्द [संज्ञा प.] (सं.) देखो 'दृष्टिबंध'।

दृष्टिबंध, दृष्टिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह क्रिया जिससे देखने वालों की दृष्टि में भ्रम हो जाय। दीठबंदी। इन्द्रजाल। माया। जादू। २-हाथ की सफाई। हस्तलाघव। चालाकी।

दृष्टिबंधु, दृष्टिबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत।

जुगनू।

दृष्टिमंडल, दृष्टिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शन।

दृष्टिमत् [वि.] (सं.) दृष्टि या नजर वाला। जिसे दृष्टि हो।

दृष्टिमान् [वि.] (सं.) [स्त्री. दृष्टिमती] आंख वाला। दीठ वाला।

दृष्टियोनि [संज्ञा पु.] (सं.) नपुंसक। हीजड़ा।

दृष्टिरोग [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का रोग।

दृष्टिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १–दृष्टि या नजर पहुँचने में रुकावट। २–आड़। ओट। व्यवधान।

दृष्टिवंत, दृष्टिवन्त [वि.] (हिं.) १–दृष्टि वाला। २–ज्ञानी। जानकार।

दृष्टिवर्त्म [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आंख की पलक।

दृष्टिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह सिद्धान्त जिसके अनुसार दृष्टि ही प्रत्यक्ष प्रमाण मानी जाती है। २–जैनियों के बारह अंगों में से एक जिसकी रचना गणधर लोग तीर्थङ्करों के उपदेशों को लेकर करते हैं।

दृष्टिविभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) देखने में भ्रम होना।

दृष्टिविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शनविषयक-विद्या

दृष्टिविष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सर्प जिसके नेत्रों में विष रहता है।

दृष्टिविषय [वि.] (सं.) दृष्टि-संबंधी।

दृष्टिसंधि, दृष्टिसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का कोना।

दृष्टिस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) कुंडली में वह स्थान जिस पर किसी दूसरे स्थान में स्थितग्रह की दृष्टि पड़ती हो।

दृष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी की पीठ पर का ओहार।

देंवका+ संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दीमक'।

दे [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।

देई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देवी। २–स्त्रियों के लिए एक आदर सूचक शब्द।

देउ+ [संज्ञा पु.] देखो 'देव'।

देउर [संज्ञा पु] देखो 'देवर'।

देउरानी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'देवरानी'।

देख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखने की क्रिया या भाव अवलोकन।

देख में–आँख के सामने। समक्ष।

देखन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखने की क्रिया या भाव। २–देखने का ढंग।

देखनहारा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री.] देखने वाला।

देखनहारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखने वाली।

देखना [क्रि. स.] (हिं.) १–आँखों से किसी व्यक्ति या पदार्थ के रूप-रंग और आकार-प्रकार आदि का ज्ञान प्राप्त करना। अवलोकन करना। २–जाँच या निरीक्षण करना। मुआयना करना। ३–खोजना। ढूँढ़ना। पता लगाना। तलाश करना। ४–परीक्षा करना। आजमाना। ५–किसी वस्तु पर ध्यान रखना जिससे वह बिगड़ने या इधर-उधर न होने पावे। निगरानी रखना। ६–समझना। सोचना। विचारना। ७–अनुभव करना। ८–भोगना। ९–पढ़ना। बाँधना। १०–जाँचना परीक्षा करना। ११–ठीक करना। शोधना।

यौ०– *देखना-भालना*–निरीक्षण करना। जाँच करना। *देखना-सुनना*–जानकारी प्राप्त करना पता लगाना। *देख में*–१–बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। बाहरी चेष्टाओं में। २–रूप-रंग में। वर्ण-आकृति आदि में।

किसी के देखते–रहते हुए। समक्ष। उपस्थिति में। *देखते-देखते*–१-तुरन्त चटपट। २–आंखों के सामने। *देखते रह जाना*–चकित होकर चुपचाप रह जाना। ऐसी अवस्था में हो जाना जिसमें कुछ करते-धरते न बने। *हम देख लेंगे*–उपाय या प्रतिकार करेंगे। जो कुछ करना होगा करेंगे। *देखा जायगा*–१–पुनः विचार किया जायगा। २–पीछे जो कुछ करना होगा किया जायगा। *देखो*–१–ध्यान दो। विचारो। २–सावधान रहो। खबरदार। ३–(पुकारने का शब्द) सुनो।

देखनि [संज्ञा स्त्री.] देखो 'देखन'।

देखभाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जाँच-पड़ताल। २–देखरेख। निगरानी।

देखराना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिखलाना'

देखरावना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिखलाना'

देखरेख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखभाल। २–निरीक्षण। निगरानी।

देखऊ [वि.] (हिं.) १–जो केवल देखने के लिये हो। २–जो ऊपर से दिखाने के लिये हो वास्तविक न हो। बनावटी।

देखादेखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक दूसरे को देखने की क्रिया, दशा या भाव। साक्षात्कार। [क्रि. वि.] दूसरे को करते देखकर उसी के अनुकरण पर (कोई काम करना)।

देखना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिखाना'।

देखाभाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'देखभाल'।

देखाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दृष्टि की सीमा। नजर की पहुँच। २–रूपरंग दिखाने की क्रिया या भाव। बनाव। ३–तड़क-भड़क। ठाटबाट।

देखावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–रूप-रंग दिखाने की क्रिया या भाव। २–ठाटबाट। तड़कभड़क

देखावना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'दिखाना'।

देखौआ [वि.] (हिं.) १–जो केवल देखने के लिये हो। २–बनावटी।

देग [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चौड़े मुंह और वाला बरतन जिसमें दाल चावल पकाये जाते हैं। [संज्ञा पु.] (देश) एक का बाज पक्षी।

देगचा [संज्ञा पु] (फ़ा.) (स्त्री. देगची) देग।

देगची [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) छोटा देगचा।

देदीप्यमान [वि.] (सं.) अत्यन्त प्रकाशयुक्त चमकता हुआ।

देन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देने की क्रिया भाव। दान। २–किसी की दी हुई या किसी से मिली हुई वस्तु। प्रदत्त या प्राप्त वस्तु। गिफ्ट। ३–वह धन जो किसी को देना या चुकाना हो। बाकी रकम। [illegible]

देनदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १–ऋणी। कर्जदार। २–वह जिसके जिम्मे कुछ देना बाकी हो लायबुल।

देनदारी [संज्ञा स्त्री] (हिं) ऋणी होने की अवस्था।

देनलेन [संज्ञा पु.] (हिं) कुछ लेने देने का व्यवहार।

देनहार* [वि.] (हिं.) देखो 'देनहारा'।

देनहारा* [वि.] (हिं.) देने वाला।

देना [क्रि. स.] (हिं.) १–अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में पहुँचाना। दान करना। २–हवाले करना। सौंपना। ३–अनुभव कराना। भोगना। जैसे–कष्ट देना। लगाना या डालना। स्थापित, प्रयुक्त करना। ५–मारना। प्रहार करना। प्रकार पूरा करना। ७–अपने में से करके या निकालकर किसी को लाभ पहुँचाना। ८–बंद करना। भिड़ाना। [संज्ञा पु.] लिया हुआ रुपया। कर्ज़।

देमान* [संज्ञा पु.] (हिं.) दीवान। मंत्री। आमात्य।

देय [वि.] (सं.) १–जो दिया जा सके। बाकी होने के कारण दिया जाने को हो। देन। दातव्य। ड्यू। ३–(वस्तु जो दूसरे को दी जा सकती हो)

देयादेश [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह आज्ञा आदेश जो किसी को धन आदि देने के में हो। इस प्रकार की आज्ञा कि अमुक को इतना धन दे दो। पे आर्डर। २–वह जिसमें किसी के नाम, विशेषतः बैंक के यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को खाते में से इतने रुपये दे दो। चेक।

देयासिन+ [संज्ञा स्त्री.] (?) ओझे की

देयासी+ [वि.] (?) [स्त्री. देयासिन] ओझा। करने वाला [संज्ञा पु.] (?) [स्त्री. प्र.] झाड़फूंक करने वाली।

देर [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–जितना समय

उस से अधिक समय। अतिकाल। लम्ब। समय। वक्त। जैसे-तुम कितनी तक लिखोगे।

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'डेरा'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'देर'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'दीमक'।

[संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. देवी] १-स्वर्ग में या क्रीड़ा करने वाला अमर प्राणी। देवता। सुर। २-पूज्य व्यक्ति। ४-बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द या संबोधन। ५-की एक उपाधि। ६-मेघ। बादल। ७-। ८-देवदार। ९-देवर। १०-ज्ञानेन्द्रिय। ११-ऋत्विक्। [संज्ञा पु.] (फा.) दैत्य। राक्षस। दानव।

[वि.] (हिं.) जो देवता के अंश से उत्पन्न या किसी देवता का अवतार हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के ऋण से होने के लिए किये जाने वाले यज्ञादि कृत्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) नारद, अत्रि, मरीचि, आदि जो ऋषि होने पर भी देवता माने जाते हैं।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-श्रीकृष्ण के नाम जो यदुवंशी थे।

[संज्ञा स्त्री.] (सं) देवता की पुत्री या । देवी।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) नरमा। रामकपास

[संज्ञा पु.] (सं.) चंदन, अगर, कपूर और केसर को एक में मिलाने से बनने वाला द्रव्य।

[संज्ञा पु.] देवताओं को प्रसन्न करने के निमित्त किया हुआ यज्ञादि कर्म।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की रागिनी

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बहुत छोटा जिसकी पत्तियों और डंठलों में राई के मालूम होती है। यह पौधा उभरी को बैठाने की अच्छी दवा है। इसे भी कहते हैं।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवकी।

[संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं को प्रसन्न करने के निमित्त किया हुआ यज्ञ. पूजा आदि कृत्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का देवदार।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी जो मेघ की भार्या मानी जाती है।

[संज्ञा पु.] (सं.) देवता का किया हुआ अनिष्ट।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की माता जो वसुदेव की पत्नी थी।

नंदन, **देवकीनन्दन** [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण।

देवकीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

देवकीमातृ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। (जिनकी माता देवकी है।)

देवकीय [वि.] (सं.) देवता-सम्बन्धी। देवता का।

देवकुंण्ड, देवकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-आपसे आप बना हुआ ताल या पानी का गड्ढा। प्राकृतिक जलाशय। २-किसी देवस्थान के निकट या नाम पर बना हुआ जलाशय जो पवित्र समझा जाता है।

देवकुरुंबा [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा गूमा। गोमा।

देवकुरु [संज्ञा पु.] (सं) जम्बूद्वीप के छः खंडों में से एक खंड जो सुमेरु और निषध के बीच माना गया है।

देवकुल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवताओं का वंश २-देवताओं का समूह। ३-एक प्रकार का देवमन्दिर जिसका द्वार अत्यन्त छोटा होता है।

देवकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा नदी। २-मरीचि और पूर्णिमा की कन्या।

देवकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) लवंग। लौंग।

देवकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर के आठ पुत्रों में से एक जो शिवपूजन के निमित्त सूंघकर कमल ले गया था जिसके कारण वह कंस का भाई हुआ तथा श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया। २-एक पवित्र आश्रम जो वशिष्ठ के आश्रम के समीप था (महाभारत)।

देवकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पुन्नाग।

देवक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ।

देवक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुण्य-स्थान। २-स्वर्ग।

देवखात [संज्ञा पु.] (सं.) प्राकृतिक जलाशय। ऐसा ताल या गड्ढा जो आपसे आप बन गया हो।

देवगंग, देवगङ्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आसाम राज्य के अन्तर्गत बहने वाली एक छोटी नदी। इसे आजकल दिवंग कहते हैं।

देवगंधा, देवगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा।

देवगज [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत।

देवगढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की ईख या ऊख।

देवगण [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का वर्ग या अलग-अलग समूह। वैदिक देवताओं के गण इस प्रकार हैं-८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, इनमें इन्द्र और प्रजापति मिला देने से ३३ देवता होते हैं। पीछे इन गणों के अतिरिक्त ये गण और माने गए-३० तुषित, १० विश्वेदेवा, १२ साध्य, ६४ आभास्वर, ४९ मरुत २२० महाराजिक। २-नक्षत्रों का वह समूह जिसमें अश्विनी, रेवती, पुष्य, स्वाति, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा और श्रवण हैं (फलित ज्योतिष)। ३-किसी देवता का अनुचर।

देवगणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की वेश्या। अप्सरा।

देवगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मरने के बाद। देवयोनि की प्राप्ति। २-स्वर्गलाभ। मरने के उपरान्त उत्तम गति।

देवगन+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'देवगण'।

देवगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) वह मनुष्य जो किसी देवता के वीर्य से उत्पन्न हुआ हो।

देवगांधार, देवगान्धर (सं.) [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्णजाति का एक राग जो भैरव रागका पुत्र माना जाताहै इसमें ऋषभ और धैवत कोमल लगते हैं।

देवगांधारी, देवगान्धारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी जो श्रीराग की भार्या मानी जाती है। यह शिशिर ऋतु में तीसरे पहर से लेकर अर्धरात्रि तक गाई जाती है।

देवगायक [संज्ञा पु.] (सं) गंधर्व।

देवगायन [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्व।

देवगिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देववाणी। संस्कृत।

देवगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। २-दक्षिण हैदराबाद का एक प्राचीन नगर जो आजकल दौलताबाद कहलाता है। यह पहले यादव राजाओं की राजधानी था।

देवगिरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक रागिनी जो हेमंत ऋतु में दिन के चौथे पहर से लेकर आधी-रात तक गाई जाती है।

देवगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का गुरु, बृहस्पति। २-देवताओं के गुरु अर्थात् पिता कश्यप।

देवगुही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

देवगुह्य [संज्ञा पु.] (सं) जो विषय देवताओं के लिये गुह्य हो।

देवगृह [संज्ञा पु.] (सं) देवताओं का घर। देवालय। मन्दिर।

देवग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) जो मनुष्य जागते-सोते देवताओं को देखते हैं।

देवघन [संज्ञा पु.] (सं.) (देश.) एक प्रकार का पेड़ जो बगीचों में लगाया जाता है।

देवचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) गवायमन यज्ञ के एक अभिप्लव का नाम।

देवचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं के लिये हवन आदि।

देवचाली [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत-दामोदर के अनुसार इन्द्रताल के छः भेदों में से एक।

देवचिकित्सक [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

२-दो की संख्या।

देवच्छंद, देवच्छन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का हार जो ८१, १०० या १०८ लड़ियों का होता है।

देवज [वि.] (सं.) देवता से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १-सूर्यवंशीय संयम राजा के एक पुत्र का नाम। २-सामवेद।

देवजग्ध [वि.] (सं.) देवताओं का खाया हुआ। [संज्ञा पु.] रोहिस नामक एक सुगंधित घास

देवजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंधर्व। २-देवताओं के समान मनुष्य।

देवजन-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधर्वविद्या।

देवजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'देवगढ़'।

देवजामि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की स्त्री।

देवजुष्ट [वि.] (सं.) देवता को चढ़ा हुआ।

देवट [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्पी। कारीगर।

देवठान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विष्णु भगवान का सोकर उठना। २-कार्तिकशुक्ला-एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान सोकर उठते हैं।

देवडोंगरी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देवदाली लता। बंदाल।

देवढ़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ड्योढ़ी'।

देवतर [वि.] (सं.) बहुत चमकदार।

देवतरु [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग के अन्तर्गत देवताओं के पाँच वृक्ष जो इस प्रकार माने जाते हैं-मंदार, पारिजात, संताने, कल्पवृक्ष और हरिचंदन।

देवतर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का नाम लेकर पानी देने की क्रिया।

देवता [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग में रहने वाले वे अमर प्राणी जो पूज्य माने जाते हैं। सुर। ऋग्वेद में जिन देवताओं का उल्लेख है उन में से कुछ के नाम ये हैं-अग्नि, वायु, इन्द्र, मित्र, वरुण, अश्विद्वय, विश्वेदेवा, मरुद्गण, ऋतुगण, ब्रह्मणस्पति, सोम, त्वष्टा, सूर्य, विष्णु, पृश्नि, यम, पर्जन्य, अर्यमा, पूषा, रुद्रगण, वसुगण, आदित्यगण, उशना, त्रित, त्रैतन, अहिर्बुध्न, अज, एकपात, ऋभुक्षा, गुरुत्मान् इत्यादि।

देवताड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का तृण या पौधा जिसके पत्ते ही होते हैं टहनियाँ नहीं होती। इसके पत्तों के रस्से बनते हैं। इसे रामबाँस भी कहते हैं। २-देखो 'देवताड़ी'।

देवताड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवदाली-लता। २-तुरई। तरोई।

देवतात [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के पिता, कश्यप।

देवताधिप [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के अधिपति इन्द्र।

देवताध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद का एक ब्राह्मण।

देवताध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद का एक ब्राह्मण।

देवतानुक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का उद्देश्य

देवता-प्रतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता की प्रतिमूर्त्ति।

देवतामणि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

देवतामय [वि.] (सं.) देवतास्वरूप।

देवतायतन [संज्ञा पु.] (सं.) देवगृह। ठाकुरद्वारा।

देवतालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'देवालय'।

देवतावेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) देवालय। देवगृह। ठाकुरद्वारा।

देवतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवपूजा के लिए उपयुक्त समय। २-अंगूठे को छोड़ अंगुलियों का अग्रभाग जिससे होकर संकल्प या तर्पण का जल गिरता है।

देवत्त [वि.] (सं.) देवता का दिया हुआ। देवदत्त

देवत्य [वि.] (सं.) देवता का देंवता-सम्बन्धी।

देवत्रयी [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीन देवताओं का समूह।

देवत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देवता होने का भाव या धर्म।

देवदंडा, देवदण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवाला नामक क्षुप।

देवदग्ध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोहित नामक घास।

देवदत्त [वि.] (सं.) १-देवता का दिया हुआ। देवता से प्राप्त। जो देवता के निमित्त दिया गया हो। [संज्ञा पु.] १-देवता के निमित्त दान की हुई सम्पत्ति। २-अर्जुन के शंख का नाम। ३-अष्टकुल नागों में से एक। ४-शरीर की पाँच प्रकार की वायुओं में से एक। ५-गौतमबुद्ध का चचेरा भाई।

देवदर्श [वि.] (सं.) देवता का दर्शन करने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

देवदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता का दर्शन। २-इस नाम का एक ऋषि।

देवदानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी तरोई।

देवदार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिमालय पर ६००० फुट से ८००० फुट तक की ऊँचाई पर पाया जाने वाला एक बहुत ऊँचा पेड़ जिससे अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल निकलता है। इसकी लकड़ी सुन्दर, हलकी, सुगंधित होती है और मजबूती के लिए प्रसिद्ध है। इसमें घुन या कीड़े नहीं लगते यह इमारतों में लगती है और अनेक प्रकार के सामान बनाने के काम में आती है।

देवदारु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार।

देवादावदि [संज्ञा पु.] (सं.) एक क्वाथ जिसे प्रसूता स्त्री को पिलाने से ज्वर, दाह, सिर की पीड़ा आदि शांत होती है।

देवदालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाकाल

देवदाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुरई की बेल की की एक लता। जीमूतक। कंटफला। कर्कटी।

देवदासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी दे नाम पर उत्सर्ग की हुई अथवा उसके में रहने वाली दासी या नर्तकी। २- (दक्षिण भारत)। ३-बिजौरा नीबू।

देवदीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दीपक जो दे के निमित्त जलाया गया हो। २-आँख।

देवदुंदुभि, देवदुन्दुभि [संज्ञा पु.] (सं.) तुलसी।

देवदूत [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

देवदूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वर्ग की अप्सरा। २-बिजौरा नीबू।

देवदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-ब्रह्मा। विष्णु। ४-गणेश।

देवद्युर [संज्ञा पु.] (सं.) भारतवंशीय एक जो देवाजित के पुत्र थे (भागवत)।

देवद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्पवृक्ष, पारि आदि स्वर्ग के पाँच वृक्ष। २-देवदार।

देवद्रोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्घा जिसे भूलिंग स्थापित किया जाता है।

देवधन [संज्ञा पु.] (सं.) देवता के निमित्त किया हुआ या दिया हुआ धन।

देवधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वार।

देवधाम [संज्ञा पु.] (सं.) तीर्थस्थान। देवालय। देवधाम करना-तीर्थयात्रा करना।

देवधुनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगानदी।

देवधूप [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुल। गूगुल।

देवधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामधेनु।

देवनंदी, देवनन्दी [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का पाल।

देवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार। २-और किसी से बढ़-चढ़कर होने की वासना। कामना। ३-खेल। क्रीड़ा। ४-लीलोद्यान। बगीचा। ५-कमल। पद्म। ६-परिवेदन। खेद। रंज। शोक। ७-द्युति। कांति। स्तुति। ९-गति। १०-जूआ। द्यूत। ११- पासे का खेल।

देवनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा। २-सरस्वती और दृषद्वती नदी।

देवनल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का या नरसल।

देवना [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रीड़ा। खेल। सेवा।

देवनागर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'देवनागरी'।

देव-नागरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारत की लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी, मराठी

राजस्थानी आदि अनेक देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। उन अक्षरों का नाम जिनमें संस्कृत हिन्दी आदि लिखी जाती है। यह प्राचीन ब्राह्मीलिपि का एक रूप है।

देवनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) कुशद्वीप के एक वर्ष का नाम। २-कुशद्वीप के राजा हिरण्यरेता के एक पुत्र।

देवनायक [संज्ञा पु.] (सं.) सुरपति। इन्द्र।

देवनाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नरसल। बड़ा नरकट।

देवनिकाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवस्थान। स्वर्ग। २-देवताओं का समूह।

देवनिर्मित [वि.] (सं.) देवता का बनाया हुआ।

देवनिर्मिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) गुडूची। गुरुच।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) सत्रह चरण का एक [illegible]।

देवपंचरात्र, देवपञ्चरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाँच रातों में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

देवपति [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के स्वामी, इन्द्र। सुरपति।

देवपतिमंत्री, देवपतिमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) इंद्र के मन्त्री बृहस्पति।

देवपत्तन [संज्ञा पु.] (सं.) सोमनाथ नामक देवस्थान जो काठियावाड़ सौराष्ट्र में स्थित है। इसे देवनगर भी कहा जाता था।

देवपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देववा की स्त्री। २-मध्वालु। एक प्रकार का कंद।

देवपथ [संज्ञा पु.] (सं.) छायापथ। आकाश।

देवपथिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) आकाश में बहने वाली गंगा।

देवपर [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो आपत्ति पड़ने पर केवल देवता के भरोसे बैठा रहे पर कोई उद्योग न करें।

देवपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) माची पत्र।

देवपशु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवता के नाम पर उत्सर्ग किया हुआ पशु। देवता का उपासक।

देवपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) आग। अग्नि।

देवपान [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान करने का पात्र

देवपाल [संज्ञा पु.] (सं.) शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम।

देवपालित [वि.] (सं.) वह देश जहाँ केवल वर्षा के जल से ही खेती होती है।

देवपीयु [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं से द्वेष करने वाले असुर।

देवपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. देवपुत्री) देवता का पुत्र।

देवपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'देवपुत्री'।

देवपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवता की पुत्री। इलायची। कपूरी साग।

देवपुर [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की नगरी। अमरावती।

देवपुरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) इन्द्र की राजधानी। अमरावती।

देवपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लवंग। लौंग।

देवपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की पूजा।

देवपूज्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं में पूज्य, बृहस्पति।

देवप्रतिकृति [संज्ञा पु.] (सं.) देवता की प्रतिमा।

देवप्रतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता की प्रदिमा

देव-प्रयाग [संज्ञा पु.] (सं.) टीहरी जिले में एक तीर्थ जो गंगा और अलक नन्दा के सगम पर है।

देवप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह प्रश्न जो ग्रह, नक्षत्र, ग्रहण आदि के सम्बन्ध में हो। २-शुभ और अशुभ संबंधी वह प्रश्न जो किसी देवता के प्रति समझा जाय। और जिसका उत्तर किसी युक्ति से निकाला जाय।

देवप्रसूत [संज्ञा पु.] (सं.) जो देवता से उत्पन्न हुआ हो।

देवप्रस्थ [संज्ञा पु.](सं.) कुरुक्षेत्र के पूर्व में स्थिति एक पुरी।

देवप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त का पेड़। २-अगस्त का फूल। ३-पीत भृंग राज। पीली भंगरैया।

देवबंद, देवबन्द [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ों की एक भँवरी जो उनकी छाती पर होती हैं और शुभ समझी जाती हैं।

देवबला [संज्ञा पु.] (सं.) सहदेइया नामक एक बूटी।

देवबाँस [संज्ञा पु.] (सं.) पूरबी बंगाल (पाकिस्तान) और आसाम में होने वाला एक प्रकार का बाँस ४० से ४५ हाथ तक ऊँचा होता है

देवब्रह्मन् [संज्ञा पु.] (सं.) नारद।

देवब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देवता की पूजा करके जीवन-निर्वाह करने वाला। पुजारी। पंडा।

देवभवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का घर या स्थान। २-स्वर्ग। ३-अश्वत्थ। पीपल।

देवभाग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या संपत्ति का वह अंश या भाग जो देवता के लिए निकाला गया हो। देवताओं का भाग।

देवभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संस्कृत भाषा।

देवभिषक [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

देवभीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं का भय।

देवभू [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग। देवभूमि।

देवभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवताओं का ऐश्वर्य। २-मंदाकिनी।

देवभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की प्रिय भूमि। स्वर्ग।

देवभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) (देवताओं का भरण करने वाले)। १-इन्द्र। २-विष्णु।

देवभोज्य [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत।

देवमंजर, देवमञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) कौस्तुभ-मणि।

देवमंदिर, देवमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) वह मकान या भवन जिसमें किसी देवता की मूर्त्ति स्थापित हो। देवालय। ठाकुरद्वारा।

देवमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-कौस्तुभ-मणि। ३-घोड़े की भँवरी। ४-महामेदा नामक औषधि।

देवमत [वि.] (सं.) देवताओं की सम्मति या मत [संज्ञा पु.] एक ऋषि का नाम।

देवमत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा।

देवमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवता की माता। २-अदिति। ३-दाक्षायणी।

देवमातृक [वि.](सं.) (वह देश) जहां इतनी वर्षा होती हो कि खेती आदि का सब काम उसी में चल जाता हो।

देवमादन [संज्ञा पु.] (सं.) वह सोम जिसको पीकर देवता मोहित हो जाते हैं।

देवमान [संज्ञा पु.] (सं.) काल की गणना में देवताओं का मान। जैसे-एक सौरवर्ष देवताओं के एक दिन के बराबर होता है।

देवमानक [संज्ञा पु.] (सं.) देवमणि। कौस्तुभ-मणि।

देवमाया [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-देवताओं की माया। २-परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप में सब प्रकार के बंधन का कारण होती है।

देवमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) देवयान।

देवमास [संज्ञा. पु.] (सं.) १-गर्भ का आठवाँ महीना। २-देहताओं का आठवाँ महीना। ३-देवताओं का महीना जो मनुष्यों के तीस वर्ष के बराबर होता है।

देवमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) शाकल्यऋषि का एक नाम।

देवमित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एकमातृका।

देवमीढ [संज्ञा पु.] (सं.) मिथला के एक प्राचीन राजा जो जनक के पूर्वज थे। २-यदुवंशीय एक राजा।

देवमीढुष [संज्ञा पु.] (सं.) वसुदेव के पिता का नाम।

देवमुख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी। कामांधा।

देवमुनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारदऋषि। २-सूर नामक ऋषि।

देवमूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

देवमूर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता की प्रतिमा।

देवयजन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की एक वेदी। वह स्थान जहां यज्ञ किया जाता है।

देवयजनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

देवयजि [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के निमित्त यज्ञ करने वाला।

देवयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) होम या हवन आदि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है जो गृहस्थों का प्रतिदिन का कर्त्तव्य है।

देवयज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं के निमित्त यज्ञ।

देवयात [वि.] (सं.) जिसने देवत्व प्राप्त किया हो। जो देवता हो गया हो।

देवयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की यात्रा।

देवयात्री [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम। (हरिवंश)।

देवयान [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का विमान २-शरीर के अलग होने के उपरान्त जीवात्मा के जाने के दो मार्ग हैं, उनमें से वह मार्ग जिससे जीवात्मा ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दैत्यगुरु शुक्राचार्य की कन्या जो पहिले अपने पिता के शिष्य कच पर अनुरक्त हुई थी परन्तु जय असुरों ने कच को मार डाला तब उसका विवाह राजा ययाति से हुआ था।

देवयावन् [वि.] (सं.) देवताओं के उद्देश्य से यात्रा करने वाला।

देवयुग [संज्ञा पु.] (सं.) सतयुग।

देवयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग, अन्तरिक्ष आदि में रहने वाले वह जीव जो देवताओं के समान माने जाते हैं। जैसे-अप्सरा, यक्ष, किन्नर, विद्याधर, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध आदि।

देवयोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की स्त्री।

देवर [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. देवरानी) १-पति का छोटा भाई। २-पति का भाई।

देवरक [संज्ञा पु.] (सं.) पति का छोटा भाई।

देवरक्षित [वि.] (सं.) देवताओं से रक्षा किया हुआ। [संज्ञा पु.] देवक राजा के एक पुत्र का नाम।

देवरक्षिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवक राजा की एक कन्या का नाम।

देवरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का रथ। विमान। २-सूर्य का रथ।

देवरहस्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की गुप्त बात।

देवरा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. देवरी) छोटामोटा देवता। +[संज्ञा पु.] (राजस्थानी) देवालय। मन्दिर। देवस्थान। [संज्ञा पु.] (देश.) वह पटसन जिससे सुतली बनती है।

देवराज [संज्ञा पु.] (सं) (देवताओं के राजा) इन्द्र

देवराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

देवरात [संज्ञा पु.] (सं.) १-(देवताओं से रक्षित) राजा परीक्षित। २-नेमी के वंश का एक राजा ३-यज्ञवल्क्य ऋषि के पिता का नाम। ४-एक प्रकार का सारस।

देवरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पति के छोटे भाई अर्थात् देवर की पत्नी। २-देवराज इन्द्र की रानी, शची। इन्द्राणी।

देवराय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'देवराज'।

देवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी-मोटी देवी।

देवर्द्धि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध जैन स्थविर का नाम जिन्होंने जैन सिद्धांत लिपिबद्ध किया था।

देवर्षि [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं में ऋषि। नारद अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, पुलह, क्रतू, भृगु आदि जो ऋषि होने पर भी देवता माने जाते हैं।

देवल [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं की पूजा में प्राप्त धन से जीवन निर्वाह करने वाला। पुजारी। पंडा। २-धार्मिक पुरुष। ३-देवर। ४-नारदमुनि। ५-धर्मशास्त्र के वक्ता एक मुनि। ६-एक स्मृतिकार। ७-देवालय। देवमन्दिर। देवस्थान।

देवलक [संज्ञा पु.] (सं.) पुजारी ब्राह्मण। पंडा।

देवलता [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) नवमल्लिका। नेवारी

देवलांगुलिका, देवलाङ्गुलिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) वृश्चिकाली।

देवला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. देवली] छोटा दीया।

देवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दिउली।

देवलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-मत्स्य पुराणानुसार भूः, भुवः, स्वः महः, जनः, तपः और सत्यम् यह सातों लोक देवलोक कहलाते हैं।

देववक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) (देवताओं का मुँह) अग्नि।

देववती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रामणी नामक गंधर्व की माता का नाम यह सुकेश नामक राक्षस की पत्नी थी।

देववधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवता की स्त्री। देवी। ३-अप्सरा।

देववर्णिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारद्वाज मुनि की कन्या का नाम।

देववर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

देववर्द्धकि [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

देववर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) देवकी का एक भाई जो श्रीकृष्ण का मामा था।

देववर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक द्वीप का नाम।

देववला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेई नामक बूटी।

देववल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं को प्रिय। २-सुरपुन्नाग नामक वृक्ष। ३-केसर।

देववल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संस्कृत भाषा। २-आकाशवाणी।

देववाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संस्कृत भाषा। २-आकाशवाणी। किसी अदृश्य देवता का वचन जो अन्तरिक्ष में सुनाई पड़े।

देवयात [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि नाम।

देववायु [संज्ञा पु.] (सं.) बारहवें मनु के एक पु का नाम।

देववाहन [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का वाहन। अग्नि जो देवताओं का हव्य ले जा पहुँचाते हैं।

देवविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निरुक्तविद्या।

देवविहाग [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति के एक राग का नाम जो कल्याण तथा बिहाग अथवा सारंग और पुरवी के मेल से बना है।

देववीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं का भक्ष्य

देववृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंदार का वृक्ष। २-गूगल। ३-छतिवन।

देवव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान

देवव्रती [संज्ञा पु.] (सं.) देवता के निमित्त व्रत करने वाला।

देवशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) असुर। राक्षस।

देवशर्मन् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण जाति की उपाधि।

देवशाक [संज्ञा पु.] (सं.) शंकराभरण, कान्हरा और मल्लार से मिलकर बना एक संकर राग। इसके गाने का समय १७ दंड से २० दंड तक है।

देवशिल्पी [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

देवशुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवलोक की कुतिया सुरमा।

देवशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) दमनक। दौने का पौधा।

देवशेष [संज्ञा पु.] (सं.) अनन्त।

देवश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम

देवश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की लक्ष्मी।

देवश्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-नारद। ३-शास्त्र। ४-शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम। ५-अवसर्पिणी के एक दिन का नाम। (जैन)

देवश्रेणी [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) १-देवताओं की पंक्ति। २-मूर्वालता।

देवश्रेष्ठ [वि.] (सं.) १-देवताओं में श्रेष्ठ। २-बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

देवसख [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का मित्र।

देवसखा [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर दिशा का पर्वत।

देवसंगीतयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) नारदऋषि।

देवसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ का नाम।

देवसत्व [वि.] (सं.) देवताओं के से स्वभाव वाला।

देवसद [संज्ञा पु.] (सं.) देवस्थान।

देवसदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का आधार। २-देवालय। मन्दिर। ३-स्वर्ग।

देवसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवताओं की सभा या समाज। २-राजसभा।

देवसभ्य [वि.] (सं.) जुए में उपस्थित।

देवसमाज [संज्ञा पु.] सुधर्मा नाम की सभा।

देवसरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगानदी।

देवसर्षप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सरसों।

देवसहा [संज्ञा स्त्री] (सं.) सफेद फूल का दंडोत्पल।

देवसाक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक संकरराग जो शंकराभरण, कन्हड़ा और मल्लार से मिलकर बना है।

देवसात [वि.] (सं.) देवता के निमित्त अर्पण किया हुआ।

देवसायुज्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवत्व प्राप्ति।

देवसार [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रताल के छः भेदों में से एक।

देवसावर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) तेरहवें मनु का एक नाम (भागवत)।

देवसूरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध जैन आचार्य का नाम।

देवसृष्ट [वि] (सं.) देवताओं का बनाया हुआ।

देवसृष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा। मद्य।

देवसेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवताओं की सेना। २-प्रजापति की कन्या जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

देवसेनापति [संज्ञा पु.] (सं.) स्कंद।

देवस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं के रहने की जगह। २-देवालय। ३-एक ऋषि का नाम।

देवस्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता की सेवा के लिए अर्पित किया हुआ धन। २-यज्ञशील मनुष्य का धन।

देवहंस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बत्तख।

देवहरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देवालय। मन्दिर।

देवहरिया [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार की नाव।

देवहव्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

देवहा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरयू नदी।

देवहित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं का हित।

देवहू [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-देवताओं का आह्वान २-अनाज से भरी हुई गाड़ी। ३-बायाँ कान ४-एक ऋषि का नाम।

देवहूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वयंभुवमनु की एक कन्या जिसका विवाह महर्षि कर्दम से हुआ था। सांख्यशास्त्र के कर्ता कपिलमुनि इनके पुत्र थे।

देवहूय [संज्ञा पु.] (सं.) देवता और राक्षसों का युद्ध।

देवहेति [संज्ञा स्त्री.] (सं) देवास्त्र।

देवह्रद [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीपर्वत पर एक सरोवर जिसमें स्नान करने से यज्ञ का फल होता है (महाभारत)।

देवांगना [संज्ञा स्त्री.] (स.) १-देवता की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। अमरी। २-अप्सरा।

देवांतक, देवान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम जो रावण का पुत्र था और जो हनुमान द्वारा राम-रावण युद्ध में मारा गया था।

देवांधस, देवान्धस [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमृत। २-देवता के नैवेद्य का अन्न।

देवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पद्मचारिणी लता। २-पटसन। [वि.] (हिं.) १-देने वाला। +२-देनदार। ऋणी।

देवाक्रीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का बगीचा। इन्द्र का उद्यान।

देवागार [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के रहने का स्थान। देवालय।

देवागारिक [वि.] (सं.) देवालय या मन्दिर में काम करने वाला कारीगर।

देवार्ची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता का पूजन करने वाली स्त्री। पुजारिन।

देवाजीव [संज्ञा पु.] (सं.) देवता का पुजारी। पंडा।

देवजीवी [वि.] (सं.) देवता की पूजा करके जीविका चलाने वाला।

देवाट [संज्ञा पु.] (सं.) हरिहरक्षेत्र नामक तीर्थ।

देवातिथि [संज्ञा पु.] (सं) भागवत के अनुसार पुरुवंशीय एक राजा का नाम।

देवातिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

देवात्मा [संज्ञा पु] (सं.) १-देव-स्वरूप। २-पीपल।

देवाधिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २-शिव। महादेव। ३-इन्द्र।

देवाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं के अधिपति। २-इन्द्र। ३-परमेश्वर।

देवान [संज्ञा पु.] (फा.) १-दरबार। राजसभा। २-अमात्य। मंत्री। वजीर। ३-प्रबंधकर्ता।

देवानांप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं को प्रिय २-छाग। बकरा। ३-राजा अशोक की एक उपाधि।

देवाना [वि.] (हिं.) देखो 'दीवाना'। [संज्ञा पु.] एक चिड़िया।

देवानीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं की सेना २-सगर वंश का एक राजा। ३-तीसरे मनुसावर्ण के एक पुत्र का नाम।

देवानुचर [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के साथ चलने वाले विद्याधर आदि उपदेव।

देवानुयायी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'देवानुचर'।

देवान्न [संज्ञा पु.] (सं.) हवि। चरु।

देवापि [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

देवाब [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की लेई जो धौंमर, गोंद, चूना, चीकन और पानी मिलाकर जाती है। यह फटी हुई छत आदि पर लगाई जाती है।

देवाभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी दुष्ट देवता का शरीर में प्रवेश जो अनुचित कर्म करावे।

देवाभीष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान।

देवायतन [संज्ञा पु.] (सं) देव-मन्दिर। ठाकुरद्वारा।

देवायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की आयु। देवताओं का जीवनकाल जो बहुत अधिक होता है।

देवायुध [संज्ञा पु.] (सं) १-देवताओं का अस्त्र। २-इन्द्र का धनुष।

देवायुष [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का जीवनकाल जो अधिक होता है।

देवारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का वन या उपवन। २-एक तीर्थ का नाम (महाभारत)

देवाराधन [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की पूजा।

देवारि [संज्ञा पु.] (सं.) असुर। देवताओं के शत्रु।

देवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीवाली'।

देवार्पण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का दान जो देवता के निमित्त किया जाय।

देवार्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्हत के एक गण का नाम।

देवाई [वि.] (सं.) देवता के निमित्त दान देने योग्य। [संज्ञा पु.] सुरपर्णी। माचीपत्र।

देवाल+ [वि.] (हिं.) देने वाला। दाता।

देवालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-वह स्थान जहाँ देवता की मूर्त्ति हो। मंदिर।

देवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दिवाला'। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

देवालिया [वि.] (हिं.) देखो 'दीवालिया'।

देवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दीवाली'।

देवालेई+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देने और लेने का काम। लेन-देन।

देवावतार [संज्ञा पु.] (सं.) देवता का अवतार।

देवावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल का पेड़। २-स्वर्ग। ३-देवता का मन्दिर।

देवावृध [संज्ञा पु.] (सं) हरिवंश के अनुसार एक राजा का नाम।

देवाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) उच्चैःश्रवा। इन्द्र का घोड़ा।

देवाहार [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत।

देवाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

देविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जिसमें कालिकापुराण के मतानुसार सरयू से मिली है। घाघरानदी जिसमें मिलने के कारण सरजू को भी देवहा कहते हैं।

देवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवता की स्त्री। देवपत्नी। २-दुर्गा। ३-वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो। पटरानी। ४-ब्राह्मणों की एक उपाधि। ५-दिव्यगुण वाली स्त्री। सदाचारिणी और सुशील स्त्री। ६-स्त्रियों के नाम के साथ लगने वाली एक आदरसूचक उपाधि। ७-मूर्वा। मरोरफली। ८-पृक्का नामक एक सुगंधित घास। ९-हुलहुल। हुर-हुर। १०-पँचगुरिया। ११-बनककोड़ा। १२-शालपर्णी। १३-महाद्रोणी। १४-पाठा। १५-नागरमोथा। सफेद इन्द्रायन। १७-हरीतकी। हड़। १८-अलसी। तीसी। १९-श्यामा पक्षी। २०-रविसंक्रांति जो बड़ी पुण्यजनक समझी जाती है।

देवीकोट [संज्ञा पु.] (सं.) बाण की राजधानी शोणितपुर का एक नाम।

देवीतंत्र, दवीतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक तंत्र का नाम।

देवीत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देवी होने का भाव।

देवीपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण जिसमें देवी के महात्म्य का वर्णन है।

देवीबीज [संज्ञा पु.] देखो 'देवीवीर्य'।

देवीभागवत [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराण जिसकी गणना बहुत लोग उपपुराण में तथा कुछ लोग पुराणों में करते हैं। इसमें बारह स्कंध और अट्ठारह हजार श्लोक हैं। इसमें विस्तृत रूप से देवी के महात्म्य का वर्णन है।

देवीभोया [संज्ञा पु.] (हिं.) देवी को मानने वाला। ओझा।

देवीमाहात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गादेवी का माहात्म्य।

देवीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनन्तमूल।

देवीवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

देवीसूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद की शाकलसंहिता का एक सूक्त जिसका देवता देवी है।

देवृ [संज्ञा पु.] (सं.) पति का छोटा भाई। देवर।

देवेंद्र, देवेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का राजा इन्द्र।

देवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का राजा इन्द्र। २-परमेश्वर। ३-महादेव। ४-विष्णु।

देवेश्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २-विष्णु।

देवेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। देवी।

देवेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

देवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुल। [वि.] देवताओं को प्रिय।

देवेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ा बिजौरा।

देवैया+ [वि.] (हिं.) देने वाला।

देवोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) देवता को चढ़ाया हुआ धन या संपत्ति।

देवोत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकशुक्ला एकादशी को विष्णु का शेश की शय्या पर सोकर उठना, जो एक पर्व माना जाता है।

देवोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के चार बगीचे या उद्यान। जो इस प्रकार हैं-वैभ्राज, चैत्ररथ, मिश्रक, और सिम्रकावण।

देवोन्माद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उन्माद जिसमें रोगी पवित्र रहता है, अच्छे सुगंधित पुष्पों की माला धारण करता है, आँखें बन्द नहीं करता और संस्कृत बोलता है यह रोग कहा जाता है देवता के कोप के कारण होता है।

देवौकस् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं का स्थान। सुमेरु पर्वत।

देव्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'देवत्व'।

देव्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुरा। २-ब्राह्मीबूटी।

देव्युन्माद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उन्माद रोग जिसमें पक्षाघात हो जाता है।

देश [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी का वह भाग जिसका कोई विशिष्ट नाम हो और जिसके अन्तर्गत अनेक नगर ग्राम आदि हों और जिसमें अधिकांश एक जाति के और एक भाषा बोलने वाले लोग रहते हों। जनपद। २-विस्तार जिसके अन्दर सब कुछ हो। दिक्। स्थान। ३-वह भूभाग जो एक ही राजा अथवा शासक के आधीन या एक शासन पद्धति के अन्तर्गत हो। राष्ट्र। ४-स्थान। जगह। ५-शरीर का कोई भाग या अंग। ६-जैनमतानुसार चौथा पंचक जिसके द्वारा अथानुसन्धानपूर्वक तपस्या अर्थात गुरु, जन, गुहा, श्मशान और रुद्र की वृद्धि होती है। एक राग जो कुछ संगीतज्ञों के मत से सम्पूर्ण जाति का और कुछ के मत से षाड़व (ऋषवर्जित) है।

देशक [संज्ञा पु.] (सं.) उपदेशक। उपदेश करने वाला व्यक्ति।

देशकली [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक रागिनी जिसमें गांधार कोमल और बाकी सब स्वर लगते हैं।

देशकार [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग जो प्रातःकाल के समय एक दण्ड से से पांच दण्ड दिन चढ़े तक गाया जाता है।

देशकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। इसके गाने का समय वर्षाऋतु का निशांत या प्रातःकाल है।

देशगांधार, देशगान्धार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल एक दंड से पाँच दंड के समय तक गाया जाने वाला एक राग।

देशचारित्र [संज्ञा पु.] (सं.) जैनशास्त्रों के मत से गृहस्थ के बारह धर्म जो इस प्रकार हैं-स्थूलप्राणातियात-विरमणव्रत, स्थूलमृषावाद-विरमणव्रत, थूल-अदत्तदान-विरमणव्रत, स्थूल-मैथुन-विरमाण-व्रत, भोगोपभोग-विरमणव्रत, दिग्विरमाणव्रत, स्थूलपरिग्रह-विरमणव्रत, अनर्थदंड-विरमणव्रत, सामयिकव्रत, देशावकाशिकव्रत, पौषधोपवासव्रत, अतिथि-संविभाग व्रत।

देशज [वि.] (सं.) देश में उत्पन्न। [संज्ञा पु.] शब्द के तीन विभागों में से एक। वह शब्द जो न तो शुद्ध संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रन्श हो परंन्तु किसी देश में बोले जाने के कारण प्रचलित हो गया हो। वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा से न निकला हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोलचाल से बन गया हो।

देशजात [वि.] (सं.) देश में उत्पन्न। अपने ही देश में उत्पन्न होने वाला।

देशज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो देश का हाल जानता हो।

देशद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) देश को हानि पहुँचाने की वृत्ति देश से द्रोह या वैर करने का भाव।

देशद्रोही [वि.] (सं.) देश से द्रोह करने या हानि पहुँचाने वाला।

देशधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) देश की रीति के अनुसार आचार-व्यवहार।

देशना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपदेश। २-निर्देश की एक विधि।

देश-निकालना [संज्ञा पु.] (हिं.) देश से निकाले जाने का दंड। निर्वासन।

देशनिष्कासन [संज्ञा पु.] (सं.) देश से निकाले जाने का दंड।

देशनिष्कासित [वि.] (सं.) देश से निकाला हुआ देश से निकालेजाने का दंड पाया हुआ।

देशपरिच्छन्न [वि.] (सं.) जो सब स्थान में फैला हो। सर्वव्यापी।

देशपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देशकारी नामक रागिनी का एक नाम।

देशभक्त [वि.] (सं.) देश के प्रति श्रद्धा रखने वाला।

देशभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देश के प्रति होने वाली श्रद्धा या आदरभाव।

देशभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश या प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा। जैसे-बंगला, मराठी, गुजराती आदि।

देशमल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

देशराज [संज्ञा पु.] (सं.) आल्हा, ऊदल के पिता

का नाम। यह राजा परमाल के सामंतों में से थे।

देशस्थ [वि.] (सं.) देश में स्थित। देश में रहने वाला। [संज्ञा पु.] महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद।

देशरूप [वि.] (सं.) उचित। योग्य।

देशसमाख्यबीज [संज्ञा पु.] इन्द्रजव।

देशांकी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक रागिनी।

देशांतर, देशान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरा देश। विदेश। पर-देश। २-पृथ्वी के मान-चित्र पर उत्तर-दक्षिण खींची हुई एक सर्वमान्य मध्य-रेखा से पूर्व या पश्चिम के देशों या स्थानों की दूरी। लम्बांश (भूगोल)।

देशांतरगमन, देशान्तरगमन [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश से दूसरे देश या विदेश जाने की क्रिया या भाव।

देशांतरगमनात्मक, देशान्तरगमनात्मक [वि.] (सं.) एक देश से दूसरे देश या पर-देश जाने वाला।

देशांतरगामी, देशान्तरगामी [वि.] (सं.) देश-विदेश में घूमने वाला।

देशांतरवास, देशान्तरवास [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे देश में निवास या रहने का भाव।

देशांतरवासी, देशान्तरवासी [संज्ञा पु.] (सं.) स्वदेश छोड़कर अन्य देश में जाकर बसने वाला।

देशांश [संज्ञा पु.] देखो 'देशांतर'।

देशाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

देशाखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) षाडव जाति की एक रागिनी जिसके गाने का समय वसंतऋतु का मध्याह्न है।

देशाचार [संज्ञा पु.] (सं.) देश की चाल या व्यवहार।

देशाटन [संज्ञा पु.] (सं.) दूर-दूर के देशों की यात्रा या भ्रमण।

देशावकाशिक [व्रत] [संज्ञा पु.] (सं.) एक शिक्षा-व्रत जिसमें स्वार्थ के लिए सब दिशाओं में आने-जाने के जो प्रतिबंध हैं उन को और भी संक्षिप्त तथा कठिन करके पालन किया जाता है।

देशिक [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक। बटोही।

देशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूची। २-अँगूठे और मध्यमा के बीच की अँगुली। तर्जनी अँगुली।

देशी [वि.] (हिं.) १-देश का। देश-संबंधी। २-स्वदेश का। अपने देश का। ३-अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ। ४-अपने देश में स्थित।

देशीय [वि.] (सं.) देखो 'देशी'।

देशी-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देश में स्थित प्रदेश पर किसी राजा आदि का राज्य। २-देश के किसी भूभाग पर स्थित राज्य। ३-अपने देश का राज्य।

देश्य [वि.] (सं.) देश का। देश-संबंधी।

देष्ठ [वि.] (सं.) अतिदानी। बड़ा दान करने वाला

देस [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'देश'।

देसकार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'देशकार'।

देसवाल [वि] (हिं.) स्वदेश का। जो अपने ही देश का हो। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का पटसन।

देसवाली [संज्ञा पु.] (हिं.) गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद।

देसाई [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्राह्मणों का एक कुल नाम।

देसावर [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्य देश। विदेश। पर-देश।

देसावरी [वि.] (हिं.) दूसरे देश से आया हुआ। देसावर का।

देसी [वि.] (हिं.) स्वदेश का, दूसरे देश का नहीं।

देसी-राज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अपने देश का राज्य। २-अपने देश का अपना राज्य। स्वराज्य। ३-किसी देश में के किसी भू-भाग पर स्थित किसी राजा का राज्य।

देसी-राजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी देश या किसी भू-भाग पर राज्य करने वाला राजा। २-अपने देश का राजा।

देहंभर [वि.] (सं.) अपने ही शरीर का-पोषण करने वाला।

देह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर। तन। बदन। २-शरीर का कोई अंग। ३-जीवन। जिन्दगी ४-विग्रह। चित्रमूर्त्ति। देह *छूटना*-जीवन समाप्त होना। मृत्यु होना। देह *छोड़ना*-मरना। देह *विसारना*-तन की सुधबुध न रखना। देह *धरना*-जन्म लेना। देह *लेना*-जन्म लेना। [संज्ञा पु.] (फा.) गाँव। खेड़ा मौजा।

देहकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-सूर्य।

देहकान [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसान। कृषक। २-गँवार।

देहकानी [वि.] (फा.) ग्रामीण। गँवारू।

देहकृत [वि.] (सं.) परमेश्वर।

देहकोष [संज्ञा पु.] (सं.) त्वचा। चमड़ा।

देहक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग। २-शरीर का नाश।

देहज [संज्ञा पु.] (सं.) तनुज। पुत्र। बेटा। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्री। बेटी। [वि.] जो शरीर से उत्पन्न हो।

देहत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु।

देहद [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

देहधारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर धारण करने वाला। २-अस्थि। हाड़।

देहधारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर की रक्षा। २-जन्म।

देहधारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'देहधारी'।

देहधारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने देह या शरीर धारण किया हो। शरीर।

देहधि [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों का पंख। डैना।

देहधृज [संज्ञा. पु.] (सं.) वायु। पवन। हवा।

देहपर्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में का रस, रक्त, मांस आदि की उत्पत्ति।

देहपात [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मौत।

देहभाज [वि.] (सं.) जीवधारी। शरीर को धारण करने वाला।

देहभुज [वि.] (सं.) १-देहाभिमानी जीव। २-सूर्य।

देहभृत [संज्ञा पु.] (सं.) जीव।

देहयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृत्यु। मरण। २-भरणपोषण। पालन। ३-भोजन।

देहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह नीची भूमि जो किसी नदी के किनारे हो और जहाँ नदी के बढ़ने पर पानी आ जाता हो।

देहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देवालय। देवावास। २-नर-शरीर। नरदेह।

देहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दरवाजे में चौखट के नीचे की लकड़ी या पत्थर। देहली। २-देखो 'देहर'।

देहलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के ऊपर का चिह्न। २-सामुद्रिकशास्त्र।

देहला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा। शराब।

देहली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है और जिसे लाँघते हुए लोग भीतर घुसते हैं। दहलीज।

देहलीदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देहली पर रखा हुआ दीपक जो भीतर और बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलता है। २-एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगाया जाता है।

देहलीदीपक न्याय-देहली पर रखे हुए दोनों ओर प्रकाश फैलाने वाले दीपक के समान दोनों ओर लगने वाली बात।

देहवंत, देहवन्त [वि.](हिं.) शरीरधारी। जिसके देह हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीरधारी व्यक्ति प्राणी। शरीरी।

देहवान् [वि.] (सं.) शरीरधारी। जो तनुधारी हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीरधारी व्यक्ति। देही। २-सजीव प्राणी।

देहवायु [संज्ञा पु.] (सं.) देहस्थ पाँच वायु जिनके नाम-प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान हैं।

देहशंकु, देहशङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) पत्थर का खंभा

देहसंचारिणी, देहसञ्चारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या। लड़की।

देहसाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की समता।

देहसार [संज्ञा पु.](सं.) मज्जा। धातु।

देहांत, देहान्त [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मौत।

देहांतर, देहान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरा शरीर। २-दूसरे शरीर की प्राप्ति। जन्मान्तर। ३-मृत्यु। मरण।

देहात [संज्ञा स्त्री.](फा.) गाँव। ग्राम।

देहाती [वि.] (फा.) १-ग्रामीण। गाँव का रहने वाला। २-गाँव का। गाँव में होने वाला।

देहातीत [वि.] (सं.) १-जो देह से स्वतंत्र हो। २-जिसे देहाभिमान न हो। जिसे शरीर की ममता न हो।

देहात्मवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो शरीर के अतिरिक्त आत्मा को न माने, शरीर ही को आत्मा माने। शरीर को ही आत्मा समझने वाला।

देहात्मप्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर को ही आत्मा समझने वाला।

देहाध्यास [संज्ञा पु.] (सं.) देह-धर्म को ही आत्मा समझने का भ्रम।

देहावरण [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़ियों का पंख।

देहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक कीड़े का नाम।

देही [संज्ञा पु.] (सं.) (देह को धारण करने वाला) आत्मा। जीवात्मा।

देहेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर या देह का अधिष्ठाता, आत्मा।

देहोद्भव [वि.] (सं.) शरीर से उत्पन्न। देहजात।

दैं※ [अव्य.] (हिं.) से।

दैंती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दरेंती'।

दैउ※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दैव'।

दैक्ष [वि.] (सं.) दीक्षा-सम्बन्धी।

दैजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दायजा', 'दहेज'।

दैतेय [वि.] (सं.) दिति से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १-दिति की संतान। दैत्य। राहु का एक नाम।

दैत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिति की संतान। कश्यप के वह पुत्र जो दिति के गर्भ से उत्पन्न हुए। असुर। २-लम्बे डीलडौल वाला या असाधारण बल का। ३-अति करने वाला व्यक्ति। ४-दुराचारी। नीच। ५-लोहा।

दैत्यगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्राचार्य।

दैत्यदानवमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

दैत्यदेव [संज्ञा पु.] (सं.) (दैत्यों के देवता) १-वरुण। २-वायु।

दैत्यद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के पुत्रों में से एक (महाभारत)।

दैत्यग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) असुरग्रह।

दैत्यधूमिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तारादेवी की तांत्रिक उपासना में एक मुद्रा का नाम।

दैत्यनिसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

दैत्यपुरोधस्, दैत्यपुरोधा [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्यों के पुरोहित शुक्राचार्य।

दैत्यपूज्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'दैत्यपुरोधस्'।

दैत्यमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दैत्यों की माता दिति।

दैत्यमेदज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुग्गुल। गूगल। २-पृथ्वी।

दैत्ययुग [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्यों का युग जो बारह वर्ष का माना जाता है।

दैत्यसेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रजापति की एक कन्या का नाम जो यह देवसेना की बहन थी।

दैत्यहनू [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

दैत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दैत्यजाति की स्त्री। २-मुर्रा। कपूरकचरी। ३-चंडौषधि। ४-मद्य मदिरा।

दैत्यारि [संज्ञा पु.] (सं.)(दैत्यों के शत्रु) १-विष्णु २-इन्द्र। ३-देवता मात्र।

दैत्याहोरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्यों की एक रात जो मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है।

दैत्येंद्र, दत्येन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दैत्यों का राजा। २-गंधक।

दैत्येज्य [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य

दैधिषव्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री के दूसरे पति का पुत्र।

दैनंदिन, दैनन्दिन [वि.] (सं.) दिन-दिन होने वाला। नित्य का। प्रतिदिन का। [क्रि. वि.] १-प्रतिदिन। रोज-रोज। २-दिनोंदिन।

दैनंदिनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दैनिकी'।

दैन [संज्ञा पु.] (सं.) दीन होने का भाव। दीनता। [वि.] दिन-संबंधी। ※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'देम'। ※[वि.] (हिं.) दायक। (यौगिक के अन्त में)। जैसे-सुखदैन-सुख देने वाला।

दैनार [वि] (सं.) दीनार के सदृश सुवर्ण वस्तु।

दैनिक [वि.] (सं.) १-प्रतिदिन से सम्बन्ध रखने वाला। नित्य या रोज का। २-प्रतिदिन या रोज होने वाला। नित्य होने वाला। ३-जो एक दिन में हो। ३-जो एक दिन में हो। ४-दिन-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] १-दैनिकपत्र। २-एक दिन का वेतन या मजदूरी।

दैनिक-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह समाचार पत्र जो नियमित रूप से नित्य प्रकाशित होता हो। हर रोज छपने वाला अखबार।

दैनिकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नित्य या हर रोज दिन भर के कार्य आदि लिखने की पुस्तिका। *डायरी*।

दैन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीनता। विनीत भाव। २-गर्व या अहंकार के प्रतिकूल भाव। ३-वियोग, दुःख आदि से चित्त का बहुत नम्र हो जाना, जो काव्य में एक संचारी भाव माना गया है। कातरता।

दैर्घ्य [संज्ञा पु.] (सं.) दीर्घता। लम्बाई।

दैयत [संज्ञा पु.] (हिं.) दैत्य। दानव। राक्षस। असुर।

दैया※ [संज्ञा पु.] (हिं.) दैव। ईश्वर। *दैयन कै*-दई-दई या दैव-दैव करके। कठिनता से। [संज्ञा स्त्री.] माता। माँ।

दैयागति+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दैवगति'।

दैव [वि.] (सं.) (स्त्री. दैवी) १-देवता-सम्बन्धी। २-देवता का किया हुआ। ३-देवता को अर्पित। [संज्ञा पु.] १-प्रारब्ध। भाग्य। २-होने वाली बात। होनहार। परमात्मा। ४-आकाश। आसमान। *किसी को दैव लगाना*-ईश्वर का कोप होना। *दैव बरसना*-पानी बरसना। मेंह बरसना।

दैवक [संज्ञा पु.] (सं.) दैव। प्रारब्ध।

दैवकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वसुदेव की पत्नी। श्रीकृष्ण की माता का नाम।

दैवकीनंदन, दैवकीनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

दैवकृत [वि.] (सं.) ईश्वर का किया हुआ (मनुष्य का नहीं)। दैव।

दैवकोविद [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का विषय जानने वाला। २-दैवज्ञ। ज्योतिषी।

दैवगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ईश्वरीय बात। दैवी घटना। २-कर्म। भाग्य। अदृष्ट। प्रारब्ध।

दैवचिंतक, दैवचिन्तक [संज्ञा पु.] (सं) ज्योतिषी

दैवज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री दैवज्ञा] २-गणक ज्योतिषी। २-बंगदेश में ब्राह्मणों की एक जाति।

दैवज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिषी की एक स्त्री।

दैवतंत्र, दैवतन्त्र [वि.] (सं) भाग्य के अधीन

दैवत [वि.] (सं.) देवता-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं) १-देवता-सम्बन्धी प्रतिमा आदि। २-देवता का परिचय होता है।

दैवतपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

दैवतप्रतिमा [संज्ञा पु.] (सं.) देवता की मूर्ति या प्रतिमा।

दैवति [संज्ञा पु.] (सं.) देवता की संतति।

दैवतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) आचमन करने में उंगलियों के अग्रभाग का नाम। उंगलियों की नोंक।

दैवत्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

दैवदीप [संज्ञा पु.] (सं.) चक्षु। नेत्र। आँख।

दैवदुर्विपाक [संज्ञा पु.] (सं.) दैव या भाग्य की प्रतिकूलता।

129802
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

दैवपर [वि.] (सं.) भाग्य पर भरोसा करने वाला।

दैवप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) शुभाशुभ जानने की जिज्ञासा।

दैवमति [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

दैवयुग [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का युग जो मनुष्यों के चारों युगों के बराबर होता।

दैवयोग [संज्ञा पु.] (सं.) संयोग। इत्तफाक। भाग्य का आकस्मिक फल।

दैवराति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा जनक के पिता का नाम।

दैवल [संज्ञा पु.] (सं.) देवलऋषि की संतति।

दैवलेखक [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी। गणक।

दैववंश [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का वंश।

दैववर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का एक वर्ष जो १३१५२१ सौर दिनों का होता है।

दैववश [क्रि. वि.] (सं.) संयोग से। दैवयोग से। अकस्मात्। कदाचित्।

दैवात् [क्रि. वि.] (सं.) दैवयोग से। अकस्मात् संयोग से।

दैववाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आकाशवाणी। २-संस्कृत।

दैववादी [वि.] (सं.) १-दैव को ही प्रधान कर्ता मानने वाला। २-भाग्य के भरोसे रहने वाला। ३-आलसी। निरुद्योगी।

दैवविद् [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी। गणक।

दैवविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) आठ प्रकार के विवाह में से वह जिसमें यज्ञ करने वाला पुरोहित को अपनी कन्या देता है।

दैवश्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के निमित्त किया जाने वाला श्राद्ध।

दैवसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की सृष्टि। इसके आठ भेद हैं—ब्राह्म, प्रजापत्य, ऐंद्र, पैत्र, गांधर्व, यक्ष, राक्षस, और पैशाच। (सांख्यकारिका)

दैवसृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मा की बनाई हुई देवताओं की सृष्टि।

दैवहीन [वि.] (सं.) जिसके भाग्य में कोई शुभ लक्षण न हो। भाग्यहीन।

दैवाकरि [संज्ञा पु.] (सं.) (दिवाकर या सूर्य के पुत्र)। १-शनि। २-यम।

दैवाकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (सूर्य की पुत्री) जमुना नदी।

दैवागत [वि.] (सं.) आकस्मिक। सहसा होने वाला।

दैवागारिक [वि.] (सं.) जो देवालय में नियुक्त हो

दैवात् [क्रि. वि.] (सं.) अकस्मात्। अचानक। दैवयोग से।

दैवात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) अकस्मात् आप से आप होने वाला अनर्थ। दैवकृत उत्पात।

दैवारिप [संज्ञा पु.] (सं.) शंख।

दैवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी।

दैवासुर [संज्ञा पु.] (सं.) देवता और असुर की शत्रुता।

दैवाहोरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का एक दिन जो मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर होता है।

दैविक [वि.] (सं.) १-देवता-संबंधी। देवताओं का। २-देवताओं का किया हुआ।

दैवी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-देवता-सम्बन्धी २-देवताओं की की-हुई। ३-प्रारब्ध या संयोग से होने वाली। जैसे—दैवीघटना। ४-सात्विक। जैसे—दैवी-संपत्ति।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दैव-विवाह द्वारा ब्याही हुई पत्नी। २-एक वैदिक छन्द।

दैवीगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ईश्वर की की-हुई बात। २-भावी। होनहार। प्रारब्ध। अदृष्ट।

दैवोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का बगीचा।

दैवोपहतक [वि.] (सं.) हतभाग्य। अभागा।

दैव्य [वि.] (सं.) देवता-संबंधी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-दैव। २-भाग्य।

दैशिक [वि.] (सं.) देश संबंधी। देशकृत। २-देखो 'जानपाद'।

दैष्टिक [वि.] (सं.) भाग्य के भरोसे रहने वाला।

दैहिक [वि.] (सं.) १-देह-संबंधी। शारीरिक। २-देह से उत्पन्न।

दोंकना* [क्रि. अ.] (देश.) गुर्राना।

दोंकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धौंकनी।

दोंच* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोच'।

दोंचन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोचना'।

दोंचना* [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाव में डालना। २-दाबकर या कब्जे में करके पिटाई करना।

दोंर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का साँप।

दो [वि.] (हिं.) एक और एक, २।
दो एक—कुछ। थोड़े से।
दो-चार—कुछ। थोड़े। *दोचार होना*—भेंट होना मुलाकात होना। *आँखें दो-चार होना*—सामना होना। *दो दिन का*—थोड़े दिनों का। *दो-दो दाने को फिरना*—बहुत ही हीन या दरिद्र दशा में दूसरों से मांगते हुए फिरना। *दो-दो बातें करना*—कुछ बातें पूछना और कहना। *दो नावों पर पैर रखना*—दो पक्षों का अवलम्बन करना।

दो-आतशा [वि.] (फा.) दो बार का भभके में से खींचा या चुआया हुआ। जैसे—दो आतशा-गुलाब।

दोआब [संज्ञा पु.] (फा.) दो नदियों के बीच का प्रदेश। किसी देश का वह भाग जो नदियों के बीच में पड़ता हो।

दोआबा [संज्ञा पु.] (फा.) आपस में मिलने वाली दो नदियों के बीच की भूमि या प्रदेश।

दोइ+ [वि.] (हिं.) देखो 'दो'।

दोउ*+ [वि.] (हिं.) दोनों।

दोऊ*+ [वि.] (हिं.) दोनों।

दोक [संज्ञा पु.] (हिं.) दो वर्ष की उम्र का बछेड़ा

दोकड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुकड़ा'।

दोकरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुकड़ा'।

दोकला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दो कल या पेंच वाला ताला। २-एक प्रकार की मजबूत बेड़ी।

दोकोहा [संज्ञा पु.] (हिं) दो कूबर वाला ऊँट। वह ऊँट जिसकी पीठ पर दो कूबड़ हों।

दोखंभा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का नैचा जिसमें कुल्फी नहीं होती। यह नैचा काटकर लोहे की कमानी पर बनाया जाता है।

दोख*+ [संज्ञा पु.] देखो 'दोष'।

दोखना*+ [क्रि. स.] (हिं.) दोष लगाना। ऐब लगाना।

दोखी* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'दोषी'। २-ऐबी। ३-शत्रु। बैरी।

दोगंग [संज्ञा स्त्री.](हिं.) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दोगंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-इमली की वह चित्ती या चीआँ जिसे लड़के आपस में जुआ खेलने में बेईमानी करने के लिए घिस लेते हैं। २-झगड़ा-बखेड़ा करने वाला मनुष्य। उपद्रवी। उत्पाती।

दोगर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दुग्गर देश का निवासी जिसे डोगरा कहते हैं।

दोगला [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. दोगली] १-वह मनुष्य अपनी माता के असली पति से नहीं प्रत्युत उसके उपपति या यार से उत्पन्न हुआ हो। जारज। २-वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न जातियों के हों। (हिं.) किसानों के पानी उलीचने की छीछली टोकरी या दौरी।

दोगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छपे हुए मोटे देशी कपड़े का लिहाफ। २-पानी में घोला हुआ चूना जिससे मकान की दीवारों पर कलई या सफेदी की जाती है।

दोगाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) दो नली वाली बन्दूक।

दो-गुना [वि.] (हिं.) देखो 'दुगना'।

दोग्धव्य [वि.] (सं.) दुहने योग्य।

दोग्धा [संज्ञा पु.] (सं.) ग्वाला। अहीर। [वि.] १-दुहने वाला। २-दुहने योग्य।

दोग्ध्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुधार गाय।

दोघ [संज्ञा पु.] (सं.) दुहने वाला मनुष्य।

दोचंद [वि.] (फा.) दुगना।

दोच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-असमंजस। दुबधा। २-कष्ट। दुःख। ३-दबाव। दबाए जाने का भाव।

129802

दोचन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–असमंजस। दुबधा। २–दुःख। कष्ट। ३–दबाव पड़ने का भाव।

दोचना [क्रि. स.] (हिं.) दबाव डालना। कोई काम करने के लिए बहुत जोर डालना।

दोचल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) दोपलिया छाजन या छप्पर। बीच में से ऊपर और दोनों ओर ढालुआँ छाजन।

दो-चित्ता [वि.] (हिं.) [स्त्री. दो-चित्ती] उद्विग्न चित्त। जिसका मन या चित्त दो प्रकार की बातों में लगा हो।

दो-चित्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चित्त की उद्विग्नता। मन या चित्त का दो कामों या बातों में बटा रहना।

दोचोवा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बड़ा खेमा जिसमें दो-दो चोबें लगी हों।

दोज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी पक्ष की द्वितीया या दूसरी तिथि। दूज। [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में अष्टताल का एक भेद।

दोजई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नक्काशों का एक औजार जो गोलाकार वृत्त बनाने के काम आता है।

दोजख़ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) नरक। (देश.) एक प्रकार का पौधा जिसके फूल सुन्दर होते हैं।

दोजखी [वि.] (फ़ा.) १–दोजख़-संबंधी। दोजख़ का। २–पापी।

दोजर्बी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) दोनली बन्दूक।

दोजा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जिसका दूसरा दूसरा विवाह हुआ हो। कल्याण-भार्य। + [वि.] देखो 'दूजा'।

दोजानू [क्रि. वि.] (फ़ा.) घुटनों के बल अथवा दोनों घुटने टेककर (बैठना)।

दोजिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्त्री जिसके पेट में वच्चा हो। गर्भवती स्त्री।

दोजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चावल।

दोजीवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्त्री जिसके पेट में वच्चा हो। गभवती स्त्री।

दोत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दावत'।

दोतरफ़ा [वि.] (फ़ा.) दोनों तरफ का। दोनों ओर सम्बन्धी। [क्रि. वि.] दोनों तरफ। दोनों ओर।

दोतर्फा [वि.] (फ़ा.) [पु. प्र.] देखो 'दोरफा'।

दोतला [वि.] (हिं.) देखो 'दोतल्ला'।

दोतल्ला [वि.] (हिं.) दो तल्ले या खंड का। दोमंजिला (मकान)।

दोतही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोहरी और मोटी चादर। दो तह वाली चार।

दोता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दोतही'।

दोतारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का दुशाला २–दो तारों का एकतारे की तरह का बाजा।

दोदना* [क्रि. स.] (हिं.) किसी की कही प्रत्यक्ष बात से इनकार करना।

दोदरी [संज्ञा स्त्री.] (नैपाली) दारजिलिंग, सिकिम, भूटान, और पूर्वी बंगाल में पाया जाने वाला एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष।

दोदल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चने की दाल। २–कचनार की कलियाँ जिनका अचार पड़ता है और तरकारी भी बनती है।

दोदलक [संज्ञा पु.](हिं.) चने की दाल या तरकारी

दोदस्ता-खिलाल [संज्ञा पु.] (फ़ा.) ताश के तुरुप के खेल में किसी एक खिलाड़ी का एक साथ बाकी दोनों खिलाड़ियों को मात करना।

दोदा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा कौवा जो दो-डेढ़ हाथ लम्बा होता है। इसका रंग काला और चोंच तथा पैर चमकीले होते हैं। इसकी प्रकृति भी साधारण कौवों के समान ही होती है।

दोदाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी की दोदने या प्रत्यक्ष बात से मुकरने में प्रवृत्त करना।

दोदामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुदामी'।

दोदिन [संज्ञा पु.] (देश.) रीठे की जाति का एक वृक्ष जिसके फलों से साबुन के समान कपड़े धोने का काम लिया जाता है।

दोदिला [वि.] (हिं.) जिसका मन या चित्त दो कामों या बातों में बटा हो। दो-चित्ता।

दोदिली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोदिल होने का भाव चित्त की अस्थिरता। दो-चित्ती।

दोदुल्यमान [वि.] (सं.) बारंबार झूलने वाला।

दोध [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. दोधी] १–ग्वाला। अहीर। २–गाय का बछड़ा। ३–वह कवि जो पुरस्कार के लिए कविता करता हो।

दोधक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु वर्ण होते हैं।

दोधार [संज्ञा पु.] (हिं.) भाला। बरछा।

दो-धारा [वि.] (हिं.) (स्त्री. दो-धारी) जिसमें दोनों ओर धारें या बाढ़ हो। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का थूहर।

दोधूयमान [वि.] (सं.) बारंबार काँपने वाला।

दोन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भूमि का वह नीचा भाग जो दो पर्वतों के बीच में हो। २–दो नालियों के बीच का प्रदेश। ३–दो नदियों का संगम स्थान। ४–दो वस्तुओं का मेल। ५–काठ का लम्बा और बीच से खोखला टुकड़ा जिससे धान के खेतों में सिंचाई की जाती है।

दोनला [वि.] (हिं.) (स्त्री. दोनली) दो नाल या नलीवाला।

दोनली (सं.) (हिं.) (स्त्री. प्र.) दो नाल वाली। जिसमें दो नालें हों। जैसे–दो नाली बंदूक।

दोना [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्तों का बना, कटोरे के आकार का पात्र। दोना चढ़ना–किसी की समाधि पर फूल आदि चढ़ना। दोना देना- १–दोना चढ़ाना। २–अपने भोजन के थाल में कुछ भोजन किसी को देना जिससे देने वाले को प्रसन्नता और पाने वाले को सम्मान प्रकट होता है। दोना खाना या चाटना–बाजार में चाट आदि खाना। दोना की चाट पड़ना-बाजारी भोजन का चस्का पड़ना।

दोनिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा दोना।

दोनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा दोना।

दोनों [वि.] (हिं.) वे विशिष्ट दो जिनमें से कोई छोड़ा न जा सके। उभय। एक और दूसरा।

दोपंथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की दोहरे खाने की जाली जिसकी स्त्रियाँ कुरतियाँ बनाती हैं।

दोपट्टा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुपट्टा'।

दोपलका [वि.] (हिं.) दो पल्ले का (नगीना)। दोहरा। [संज्ञा पु.] १–दोहरा नगीना। दो पल्ले का नगीना। २–एक प्रकार का नगीना।

दोपलिया [वि.] (हिं.) देखो 'दो पल्ली'।

दोपल्ली [वि.] (हिं.) जिसमें दोपल्ले हों। दो पल्ले वाला। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की मलमल, अद्धी आदि की टोपी जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ सिले होते हैं।

दोपहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मध्याह्नकाल। वह समय जब सूर्य मध्य आकाश में रहता है। *दोपहर ढलना*–दोपहर के बाद और समय बीतना।

दोपहरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोपहर'। [वि.] (हिं.) दोपहर का। दोपहर से संबंध रखने वाला।

दोपहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोपहर'।

दो-पीठ [वि.] (हिं.) दोनों ओर समान रंग रूप का-दो रुखा। [संज्ञा पु.] कागज का एक ओर छापने के उपरान्त दूसरी ओर छपना। (प्रेस)

दोपीवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पान की आधी ढोली (तंबोली)। २–किसी वस्तु का आधा।

दोप्याजा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) दो बार प्याज से भूनकर पकाया हुआ मांस।

दो-फ़सली [वि.] (हिं.) १–रबी और खरीफ दोनों फसलों से सम्बन्ध रखने वाला। २–जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देने योग्य बात।

दोबल [संज्ञा पु.] (?) दोष। अपराध।

दोबारा [क्रि. वि.] (फ़ा.) दूसरी बार। दूसरी दफा। एक बार हो चुकने पर फिर दूसरी बार [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–दो बार चुआई या खैंची हुई शराब। २–दो-आतशा अर्क। ३–दो बार साफ की हुई चीनी। ४–वह वस्तु जो एक बार तैयार करने के उपरान्त दूसरी बार उसी से तैयार की गई हो।

दोबाला [वि.] (फ़ा.) दूना। दुगना।

…षिया

…षिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुभाषिया'।

…ला [वि.] (फ़ा.) दोखंड का । दो मंजिल वाला (मकान)।

…ट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भूमि जिस की मिट्टी में बालू (रेत) भी मिला हो।

…ला [वि.] (हिं.) दो मंजिल या खंड वाला।

…या [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का देशी मोटा कपड़ा जिसकी पहले जनानी धोतियां बनाई जाती थी।

…हाँ [वि.] (हिं.) १–दो मुँह वाला। जिसके दो मुंह हों। २–दोहरी चाल चलने या बात करने वाला। कपटी।

…साँप [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का साँप जिसकी पूंछ मोटी होने के कारण मुंह के समान ही जान पड़ती है। इसके संबंध में लोगों में यह प्रसिद्ध है कि छः मास तक इसका मुख एक ओर रहता है और छः मास …इसकी पूंछ का सिरा मुंह बन जाता है और पहले वाला मुंह दुम बन जाता है। इस …विष नहीं होता और ना ही यह किसी को काटता ही है। २–दो तरह की बातें करने वाला। कपटी।

… [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोनारों का नक्काशी करने का एक उपकरण या औजार।

… [वि.] (हिं.) १–देखो 'दो'। २–देखो 'दोनों'।

… [वि.] (फ़ा.) दूसरा।

… [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष जो दारजिलिंग के जंगलों में पाया जाता है। इसकी लकड़ी सफेद और मजबूत होती है।

… [संज्ञा पु.] (देश.) बया नाम का पक्षी।

…गा [वि.] (हिं.) १–दो रंग का। जिसमें दो रंग हों। २–जो दोमुंहा या दो-तरफा हो। जो दोनों ओर लग या चल सके। ३–वर्णसंकर। दोगला।

…गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दोरंगे या दोमुंहे होने का भाव। २–दोनों ओर लगने या चलने का भाव। ३–छल। कपट।

…+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दोबारा जोती हुई ज़मीन।

…क [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा या बीन की ताँत बाँधने की रस्सी।

…दंड, दोरदण्ड [वि.] (हिं.) देखो 'दुर्दण्ड'।

…स+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दोमट'।

…सा [वि.] (हिं.) दो प्रकार के रस या स्वाद वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) पीने का एक तमाकू जिसका धुआँ कड़वा और मीठा मिला हुआ होता है। यौ०–दो रसे दिन–गर्भावस्था के दिन। दो ऋतुओं के बीच के दिन।

…+ [संज्ञा पु.] (देश.) हल की मुठिया के पास की बीज डालने की बाँस की नली। भाला।

दोराहा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।

दोरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'डोरी'।

दो-रुखा [वि.] (फ़ा.) १–जिसके दोनों ओर एक जैसे रंग या बेल-बूटे हों। २–जिसके एक ओर रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो। ३–सोनारों का एक उपकरण जिससे हँसली आदि बनाई जाती है।

दोरेजी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) नील की वह फसल जो पहले साल की फसल कट जाने के बाद उसके डंठलों या जड़ों से फिर होती है।

दोर्गुड, दोर्गुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) काठ की मुँगरी।

दोर्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथ पकड़ना। २–हाथ की पीड़ा।

दोर्ज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुज के आकार की ज्या।

दोर्दंड, दोर्दण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) भुजदंड।

दोर्मूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काँख। बगल।

दोल [संज्ञा पु.] (सं.) १–झूला। हिंडोला। २–डोली। चंडोल।

दोलड़ा [वि.] (हिं.) (स्त्री. दोलड़ी) दो लड़ों का जिसमें दो लड़ें हों।

दोलत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुलत्ती'।

दोला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हिंडोल। झूला। २–डोली या चंडोल। ३–नील का पेड़।

दोलायंत्र, दोलायन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक यन्त्र जिसकी सहायता से औषधियों का अर्क उतारा जाता है।

दोलायमान [वि.] (सं.) झूलता हुआ। हिलता हुआ।

दोलायुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वह युद्ध जिसमें कभी एक पक्ष की कभी दूसरे पक्ष की हार या जीत होती रहे और जल्दी किसी एक पक्ष की अन्तिम विजय न हो।

दोलावा+ [संज्ञा पु.] (?) वह कुआँ जिसमें दो लाव (रस्से) या दो चरसों से पानी खैंचा जा सके।

दोलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हिंडोला। झूला। २–डोली।

दोलित [वि.] (सं.) [स्त्री दोलिता] हिलता या झूलता हुआ।

दोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डोली।

दोलोही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुलोही'।

दोलू [संज्ञा पु.] (डि.) दाँत।

दोलोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णवों का एक त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है जिसमें वे अपने ठाकुरजी को फूलों के हिंडोले पर झुलाते हैं।

दोवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देवबाँस नाम का बाँस जो बंगाल में बहुतायत से होता है।

दोश [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लाख जो रंग बनाने के काम में आता है।

दोशमाल [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कसाई का हाथ पोंछने का तौलिया या अंगोछा जो अपने पास रखते हैं।

दोशाखा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–दो बत्तियों वाला शमादान। २–भाँग छानने की लकड़ी जिसमें दो शाखें होती हैं।

दोशाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुशाला'।

दोष [संज्ञा पु.] (सं.) १–ऐसी बात जिसके कारण कोई व्यक्ति अथवा वस्तु खराब समझी जाय। अवगुण। खराबी। बुराई। २–अपराध कसूर। ३–पाप। पातक। ४-शरीर में के वात, पित्त और कफ जिनके बिगड़ने या कुपित होने से शरीर विकार या व्याधि उत्पन्न होती है। ५–नव्य न्याय में वह त्रुटि जो तर्क के अवयवों का प्रयोग करने में होती है। ६–न्याय के अनुसार वह मानसिक भाव जो मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होता है और जिसकी प्रेरणा से मनुष्य भले अथवा बुरे कामों में प्रवृत्त होता है। ७–मीमांसा में वह अदृष्ट फल जो विधि के न करने अथवा उसके विपरीत आचरण से होता है। ८–साहित्य में वह बातें जिनसे काव्य के गुण में कमी हो जाती है। ९–आठ वसुओं में से एक का नाम। १०–प्रदोष। *दोष देना या लगाना*–लांछन या कलंक का आरोप करना। *दोष लगाना*–दोपाकरना। *दोष निकालना*–अवगुण प्रकट करना। *दोषदर्शी*–दोष दिखलाने वाला। *दोषारोपण*–दोष देना या लगाना। ॐ [संज्ञा पु.] (हिं.) विरोध। द्वेष। वैर।

दोषक [संज्ञा पु.] (हिं.) बछड़ा। गाय का बच्चा।

दोषग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट। दुर्जन।

दोषघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) कुपित वात, पित्त और कफ को शान्त करने वाली औषध।

दोषज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) पंडित।

दोषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दोष का भाव।

दोषत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) वात, पित्त और कफ नामक तीन दोष।

दोषत्व [संज्ञा पु.] (सं.) दोष का भाव।

दोषन* [संज्ञा पु.] (हिं.) दोष। अपराध। दूषण

दोषना* [क्रि. स.] (हिं.) दोष लगाना।

दोष-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह कागज जिस पर अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा होता है।

दोषपाचन [संज्ञा पु.] (सं.) कपित्थ। कैथ का पेड़

दोषभेद [संज्ञा पु.] (सं.) आयुर्वेद के अनुसार बासठ प्रकार के दोषों में से एक।

दोषमार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) दोष या अपराध से निर्मुक्त करने का भाव। एक्सकल्पेट।

दोषमार्जन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र या कागज जिस पर किसी अपराधी के अपराधों या दोषों से मुक्त करने का विवरण लिखा हो। एक्सकल्पेशन-लैटर।

दोषल [वि.] (सं.) दोषयुक्त। दूषित। जिसमें दोष हो।

दोषांध, दोषान्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का एक रोग।

दोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–रात्रि। रात। २–सध्या। ३–भुजा। बाँह।

दोषाकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

दोषाक्लेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनतुलसी।

दोषाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) लगाया हुआ अपराध। अभियोग।

दोषातन [वि.] (सं.) रात में होने वाला।

दोषातिलक [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक। दीआ। प्रदीप।

दोषाभूत [वि.] (सं.) रात्रि में परिणत।

दोषामान्य [वि.] (सं.) रात्रि समझकर।

दोषारोपण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पर कोई दोष लगाना। यह कहना कि इसने अमुक दोष या अपराध किया है।

दोषावह [वि.] (सं.) दोषयुक्त। दोषपूर्ण। जिसमें दोष हो।

दोषास्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रदीप। दीपक। दीया।

दोषिक [संज्ञा पु.] (सं.) रोग। बीमारी। [वि.] देखो 'दूषित'।

दोषिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अपराधिनी। २–पाप करने वाली स्त्री।

दोषिल* [वि.] (हिं.) देखो 'दूषित'।

दोषी [संज्ञा पु.] (सं.) १–जिसमें दोष या ऐब हो। २–अपराधी। कसूरवार। ३–पापी। ४–अभियुक्त। मुजरिम।

दोस*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दोष'।

दोसदारी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मित्रता। दोस्ती।

दोसरता+ [संज्ञा पु.] (हिं.) द्विरागमन। गौना।

दोसरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो बार जोती हुई जमीन।

दोसा [संज्ञा पु.] (देश.) पानी में उगने वाली एक प्रकार की घास। इसमें एक प्रकार के दाने अधिकता से होते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दोषा'।

दोसाध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुसाध'।

दोसाद [संज्ञा पु.] (?) बरमा के एक प्रकार के हाथी जो साधारणतः लकड़ी ढोने या सवारी के काम में आते हैं।

दोसाला+ [वि.] (हिं.) दो वर्ष का। दो वर्ष में होने वाला।

दोसाही [वि.] (हिं.) जिससे वर्ष में दो फसलें होती हों (जमीन)।

दोसी [संज्ञा पु.] (देश.) दही। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'घोसी'। २–देखो 'दोषी'।

दोसूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दो सूत के तानेबाने से बुना हुआ कपड़ा। २–मोटी देशी चादर जो दो सूतों वाले तानेबाने से बुनी गई हो।

दोस्त [संज्ञा पु.] (फा.) १–मित्र। स्नेही। २–यार। प्रेमी।

दोस्तदार [संज्ञा पु.] देखो 'दोस्त'।

दोस्तदारी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दोस्ती'।

दोस्तना [संज्ञा पु.] (फा.) १–मित्रता। दोस्ती। २–मित्रता का व्यवहार। [वि.] (फा.) दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मित्रता।

दोस्ती-रोटी [संज्ञा पु.] (फा.) वह रोटी या पराँठा जो दो अलग-अलग पेड़े बेलकर और तब दोनों को सटाकर एक साथ पकाते हैं।

दोस्थ [वि.] (सं.) जो बहुत दूर हो। [संज्ञा स्त्री.] खेलने वाला।

दोह*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'द्रोह'।

दोहगा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो और जिसको किसी दूसरे पुरुष ने रख लिया हो। उपपत्नी।

दोहज [संज्ञा पु.] (सं.) दूध।

दोहड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्ण-वृत्त का नाम।

दोहता [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. दोहती) लड़की का लड़का। नाती।

दोहती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की की लड़की। नातिन। + [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दोस्ती-रोटी'।

दोहत्थड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दोनों हाथों से मारा जाने वाला।

दोहत्था [क्रि. वि.] (हिं.) दोनों हाथों के द्वारा। [वि.] जो दोनों हाथों से हो।

दोहद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गर्भवती स्त्री की इच्छा। उकौना। २–गर्भवती स्त्री की मितली आदि। ३–गर्भावस्था। ४–गर्भ का चिह्न। ५–गर्भ। ६–यात्रा के समय दिशा, वार या तिथि के भेद से उनके दोष। की शान्ति के लिए खाये या पीये जाने वाले कुछ निश्चित पदार्थ। (फलित ज्योतिष)। ७–एक प्राचीन भारतीय विश्वास कि–सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, पैरों के आघात से अशोक, देखने से तिलक, मधुर गान से आम और नाचने से कचनार आदि वृक्ष फूलते हैं।

दोहदलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) दोहद के लक्षण। गर्भ के लक्षण।

दोहदवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती। गर्भधारण करने वाली स्त्री।

दोहदान्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती। दोहदवती।

दोहदोहीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक गीत।

दोहन [संज्ञा पु.] (सं.) १–गाय, भैंस आदि का दूध दूहना। २–दोहनी।

दोहना* [क्रि. स.] (हिं.) १–दोष लगाना। ऐब निकालना। २–तुच्छ ठहराना। देखो 'दुहना'।

दोहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह बरतन जिसमें दूध दोहते हैं। २–दूध दोहने का काम।

दोहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चादर जो कपड़े के दो परतों या पल्लों को सीकर बनाई जाती है।

दोहराना [क्रि. अ.] (हिं.) १–दो बार होना। दूसरी आवृति होना। २–दो परतों का किया जाना। दोहरा होना। [क्रि. स.] (हिं.) दोहरा करना।

दोहरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. दोहरी] १–जिसमें दो पल्ले, परतें या तहें हो। २–दो बार या दूसरी बार का। दुगना। [संज्ञा पु.] १–एक ही पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े। २–[illegible] सुपारी। ३–दोहा नामक छंद।

दोहराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दोहराने की क्रिया या भाव। २–दोहराने की मजदूरी।

दोहराना [क्रि. स.] (हिं.) १–कोई बात या काम दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। रिपीट। २–किसी किये हुए काम को देख भाल करने या जाँचने के लिए फिर से अच्छी तरह देखना। रिवाइज। ३–कपड़े कागज आदि की तहें करना। दोहरा करना।

दोहरीपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

दोहरीसखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

दोहल [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छा।

दोहलवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती स्त्री।

दोहला [वि.] (हिं.) (वह गाय आदि) जिसने दो बार बच्चा दिया हो।

दोहली [संज्ञा पु.] (सं.) १–आक का पेड़। मदार। २–अशोकवृक्ष। [संज्ञा स्त्री.] वह भूमि जो ब्राह्मण को दी गई हो।

दोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक मात्रिक छंद जिसमें होते तो चार-चार चरण हैं, पर लिखा दो पंक्तियों में जाता है। इसके पहले और तीसरे चरण में १३, १३, मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में ११, ११ मात्राएँ होती हैं। दूसरे और चौथे चरण का तुकांत मिलना चाहिए। २–संकीर्णराग का एक भेद।

दोहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुहाई'।

दोहाक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दोहाग'।

दोहाग* [संज्ञा पु.] (हिं.) दुर्भाग्य। अभाग्य। बदनसीबी।

दोहागा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।

दोहागिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अभागी। बदकिस्मत

दोहान+ [संज्ञा पु.] (देश.) नौजवान बैल। बछवा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) दूध।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) काश्तकारों की गायों का वह दूध जो जमींदार के घर जाता है।

दोहिता+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बेटी का बेटा। नाती। [वि.] (सं.) दूहा हुआ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

दोही [वि.] (सं.) दूहने वाला। [संज्ञा पु.] गोप। ग्वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) दोहे की तरह का एक छंद जो चार चरण का होने पर भी दो ही पंक्तियों में लिखा जाता है। इसके पहले और तीसरे चरण में १५, १५, मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में ११, ११ मात्राएँ होती हैं। इसके अन्त में एक लघु होना चाहिए।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह भूमि जिसमें बालू अधिक हो। बालूई जमीन।

[illegible] [वि.] (सं.) दूहने योग्य। जो दूहा जा सके

[illegible] [अव्य.] (हिं.) १-वा। अथवा। २-देखो 'धौं'।

[illegible]* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'दमकना'।

[illegible]+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह हलकी वर्षा जो गरमी के दिनों में तपी हुई धरती पर होती है

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दोच'।

[illegible]*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाव डालकर लेना। २-लेने के लिए अड़ना।

[illegible]+ [संज्ञा पु.] (देश.) मचान। पाड़।

[illegible]* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक साथ बँधे बैलों के झुंड जो कटी फसल के डंठलों पर दाना झाड़ने के लिए फिराया जाता है। २-वह रस्सी जिसे बैलों के गले में डालते हैं। ३-झुंड।

[illegible]* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-आग। २-जंगल की आग। दावानल। ३-संताप। ४-ताप। जलन

[illegible] [वि] (सं.) कपड़े का।

दौड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दौड़ने की क्रिया या भाव। २-धावा। चढ़ाई। वेगपूर्वक आक्रमण। ३-प्रयत्न में इधर-उधर फिरने की क्रिया। ४-दौड़ने की प्रतियोगिता। ५-गति, बुद्धि, उद्योग आदि की सीमा। पहुँच। ६-विस्तार। लम्बाई। ७-अपराधियों को छापा मारकर पकड़ने के लिए सिपाहियों का दौड़ते हुए कहीं जाना। ८-जहाज पर की वह चरखी जिसमें लकड़ी डालकर घुमाने से जंजीर खिसकती है। *दौड़ मारना*-१-वेग के साथ जाना। २-दूर तक पहुँचना। लम्बी यात्रा करना। ३-प्रयत्न इधर-उधर घूमना। *दौड़ लगाना*-देखो 'दौड़ मारना'। *मन की दौड़*-कल्पना।

दौड़धपाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दौड़धूप'।

दौड़धूप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह प्रयत्न या उद्योग जिसमें इधर उधर दौड़ना पड़े।

दौड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बहुत जल्दी-जल्दी पैर उठाकर चलना। द्रुतगति से चलना। २-सहसा प्रवृत्त होना। ३-किसी प्रयत्न में इधर-उधर फिरना। उद्योग करना। ४-फैलना। व्याप्त होना। जैसे—बिजली सी दौड़ना। *दौड़ पड़ना*-सहसा जल्दी-जल्दी पैर उठाकर चलना। *चढ़ दौड़ना*-धावा या आक्रमण करना। *दौड़-दौड़ कर आना*-जल्दी-जल्दी आना। *दौड़-दौड़ कर जाना*-जल्दी-जल्दी बार-बार जाना।

दौड़ादौड़ [क्रि. वि.] (हिं.) अविश्रान्त। दौड़ते हुए। बिना कहीं रुके हुए। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दौड़ादौड़ी'।

दौड़ादौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दौड़धूप। २-बहुत से लोगों के एक साथ दौड़ने की क्रिया आतुरता। हड़बड़ी।

दौड़ान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दौड़ने की क्रिया या भाव। २-लम्बाई। विस्तार। ३-वेग। झोंक। ४-सिलसिला। ५-फेरा। बारी। पारी

दौड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे को दौड़ने में प्रवृत करना। २-किसी को जल्दी-जल्दी या बार बार कहीं भेजना। ३-कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान तक खींच या तानकर ले जाना। जैसे तार दौड़ाना। ४-पोतना। फैलाना। जैसे स्याही दौड़ाना। ५-फेरना। जैसे—दीवार पर कूंची दौड़ाना।

दौतिक [वि.] (सं.) कूटनीतिक। दाँव-पेंच की नीति या चालसम्बन्धी। डिप्लोमेटिक।

दौतिक-प्रत्यावेदन [संज्ञा पु.] (सं.) कूटनीतिक प्रतिनिधित्व। डिप्लोमेटिक रिप्रेजंटेशन।

दौतिक-विघटन [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक विच्छेद।

दौतिक-संबंध, दौतिक-सम्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) कूटनीतिक सम्बन्ध।

दौतिक-संवाददाता, दौतिक-सम्वाददाता [संज्ञा पु.] राजनैतिक संवाददाता। वह जो किसी विशेष स्थान या क्षेत्र के राजनैतिक समाचार लिखकर समाचार पत्र में छपने के लिये भेजता हो। डिप्लोमेटिक-कॉरेसपॉडेंट।

दौतिक-समवाय [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तर्राज्य-नैतिक संस्था। डिप्लोमैटिक बॉडी।

दौतिक-सेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्तर्राज्यनैतिक सेवा। डिप्लोमेटिक-सर्विस।

दौत्य [संज्ञा पु.] (सं.) दूत का काम।

दौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दमन'।

दौना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ गुलदावदी के समान कटावदार होती हैं। उससे तीव्र पर कुछ कड़वी सुगंध आती है। +[संज्ञा पु.] देखो 'दोना' *[क्रि स.] (हिं.) दमन करना।

दौनागिर [संज्ञा पु.] (हिं) द्रोणगिर नामक पर्वत।

दौर [संज्ञा पु.] (अ.) चक्कर। भ्रमण। फेरा। २-उन्नति या वैभव के दिन। ३-बारी। पारी। ४-देखो 'दौरा'। *दौरदौरा*-वैभव या प्रताप के दिन। *दौर चलना*-शराब के प्याले का बारी-बारी से सब के सामने लाया जाना। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दौड़'।

दौरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'दौड़ना'।

दौरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-चक्कर। भ्रमण। २-अधिकार का अपने अधिक्षेत्र में जाँच-पड़ताल के लिए अनेक स्थानों पर जाना। ३-बीच बीच में आते-जाते रहना। ४-फेरा। ४-उस रोग का प्रकट होना जो समय-समय पर या रह-रहकर होता है। ५-बारबार होने वाली बात किसी बार होना। *दौरा सुपुर्द करना*-फैसले के लिए किसी मुकदमे को सेशनजज के न्यायालय में भेजना। [संज्ञा पु.] (हि.) बाँस की फट्टियों का बना हुआ टोकरा।

दौरात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुरात्मा होने का भाव। दुर्जनता। २-दुरात्मा का काम।

दौरादौर* [क्रि. वि.] (हिं.) १-लगातार। अविश्रांत। २-धुन से। तेजी से।

दौरादौरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दौड़ादौड़ी'

दौरान [संज्ञा पु.] (फा.) १-दौरा। चक्र। २-दो घटनाओं के बीच का समय। ३-सिलसिला। झोंक।

दौराना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दौड़ाना'।

दौरित [संज्ञा पु.] (सं.) क्षति। हानि।

दौरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी टोकरी।

दौर्गंघ्य, दौर्गन्ध्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बदबू।

दौर्ग [वि.] (सं.) १-दुर्ग-संबंधी। दुर्ग का। २-दुर्गा-संबंधी। दुगा का।

दौर्गत्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुःखित अवस्था। दरिद्रता।

दौर्ग्य [वि.] (सं.) दुर्ग-संबंधी। किले का।

दौर्जन्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्जनता। दुष्टता।

दौर्बल्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्बलता। कमजोरी।

दौर्भाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्भाग्य।

दौर्मनस्य [संज्ञा पु.] (सं.) मन का खोटापन। दुर्जनता।

दौर्य, दौर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) दूरी।

दौर्योधन [वि.] (सं.) दुर्योधन-संबंधी।

दौर्योधनि [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्योधन के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

दौर्बल्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्बलता।

दौर्वासस [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण का नाम।

दौर्वीण्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वच्छन्दता।

दौर्हार्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुष्ट स्वभाव। २-दुर्भाव। बैर।

दौर्हृदय [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्टता। नीचता।

दौलत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) धन। संपत्ति।

दौलतखाना [संज्ञा पु.] (फा.) निवास-स्थान। घर। (बड़ों के लिए आदरार्थक)।

दौलतमंद [वि.] (फा.) धनवान।

दौलतमंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) धनाढ्यता। सम्पन्नता। मालदारी।

दौलति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'दौलत'।

दौलेय [संज्ञा पु.] (सं.) कच्छप। कछुवा।

दौल्मि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

दौवारिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल। २-एक प्रकार का वास्तु देव।

दौवालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश का नाम २-उस देश का निवासी। (महाभारत)।

दौश्चर्म्य [संज्ञा प.] (सं.) दुश्चर्मा होने का भाव।

दौष्कुल [वि.] (सं.) निन्दित कुल का।

दौष्कृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्टता। नीचता।

दौष्मंत, दौष्मन्ति [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्मन्त का का पुत्र या दुष्मन्त कुल में उत्पन्न व्यक्ति।

दौहिक [वि.] (सं.) प्रतिदिन दूहने योग्य।

दौहित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-लड़की का पुत्र। नाती। २-खड्ग। तलवार। ३-तिल। ४-गाय का घी।

दौहित्रिक [वि.] (सं.) दोहित्र-संबंधी।

दौहृद [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भिणी स्त्री की इच्छा। दोहद।

दौहृदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती-स्त्री।

द्याना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'दिलाना'।

द्यावाक्षमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग और पृथ्वी।

द्यावना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'दिलाना'।

द्यावापृथिवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य और पृथ्वी

द्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन। २-आकाश। ३-स्वर्ग। ४-अग्नि। ५-सूर्यलोक।

द्युकारि [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा। काक।

द्युग [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश में गमन करने वाला। २-पक्षी।

द्युगण [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों की मध्यगति के साधक अंग दिन।

द्युचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रह। २-पक्षी।

द्युज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अहोरात्र-वृत्त की व्यास रूप ज्या।

द्युत् [संज्ञा पु.] (सं.) किरण।

द्युत [वि.] (सं.) प्रकाशवान।

द्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीप्ति। कान्ति। चमक २-शोभा। छवि। ३-लावण्य। ४-रश्मि। किरण।

द्युतिकर [वि.] (सं.) प्रकाश उत्पन्न करने वाला चमकने वाला। [संज्ञा पु.] ध्रुव।

द्युतिधर [वि.] (सं.) प्रकाश या कांति को धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] विष्णु।

द्युतिबंम [संज्ञा पु.] (सं., अ.) ऐसा बम या विस्फोटक गोला जिसका विस्फोट रेडियो द्वारा होता है। रेडियो-बॉम्ब।

द्युतिमंत, द्युतिमन्त [वि.] देखो 'द्युतिमान्'।

द्युतिमणि [संज्ञा पु.] (सं.) मदार का वृक्ष।

द्युतिमत् [वि.] (सं.) कांतियुक्त। चमकदार।

द्युतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रभा। प्रकाश। चमक

द्युतिमान् [वि.] (सं.) [स्त्री द्युतिमती] प्रकाश वाला। जिसमें चमक या आभा हो। [संज्ञा पु.] १-स्वायंभुवमनु के एक पुत्र का नाम। २-शाल्वदेश के एक राजा का नाम। ३-प्रियव्रत राजा के पुत्र जिन्हें क्रौंच नामक द्वीप का राज्य मिला था (विष्णु पुराण)।

द्युन [संज्ञा पु.] (सं.) लग्न से सातवाँ स्थान।

द्युनिवास [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

द्युनिवासी [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

द्युनिस [संज्ञा पु.] (सं.) दिन-रात। अहर्निश।

द्युपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-इन्द्र।

द्युपथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाशमार्ग।

द्युमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-मंदार। ३-शोधा हुआ तांबा।

द्युमत्सेन [संज्ञा पु.] (सं.) सत्यवान के पिता का नाम जो शाल्वदेश के राजा थे।

द्युमद्गान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान।

द्युमयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विश्वकर्मा की कन्या का नाम।

द्युमान् [वि.] (सं.) [स्त्री. द्युमती] चमकीला। कांतियुक्त।

द्युम्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-धान। २-सूर्य। ३-अन्न। ४-बल।

द्युलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्गलोक।

द्युवन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-स्वर्ग।

द्युषद [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-नक्षत्र। ३-ग्रह।

द्युसद्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

द्युसरित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की नदी मंदाकिनी।

द्युसिंधु, द्युसिन्धु [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्वर्ग की नदी मंदाकिनी।

द्यू [वि.] (सं.) जूआ खेलने वाला। जुआरी।

द्यूत [संज्ञा पु.] (सं.) वह खेल जिसमें दांव लगा कर खेला जाय और हारने वाला जीतने वाले को कुछ दे। जूआ।

द्यूतकर [वि.] (सं.) जुआ खेलने वाला। जुआरी।

द्यूतकारक [वि.] (सं.) जूआ खेलने वाला। जुआरी।

द्यूतदास [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री द्यूतदासी] वह दास जो जुवे की जीत में मिला हो।

द्यूतदासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दासी जो जुवे की जीत में मिली हो।

द्यूतपूर्णिमा [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विन की पूर्णिमा इस दिन प्राचीनकाल में जूआ खेला जाता और लोग रात भर जागते थे। कोजागरी।

द्यूतप्रतिपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकशुक्ल प्रतिपदा। इस दिन लोग जूआ खेलते थे।

द्यूतफलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह चौकी जिस पर पासा बिछाया या खेला जाय।

द्यूतबीज [संज्ञा पु.] (सं.) जुआ खेलने की कौड़ी।

द्यूतभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ जुआ खेला जाय।

द्यूतमंडल, द्यूतमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) जुआरियों की टोली। २-वह घर जहां जूआ खेला जाय। जुआखाना।

द्यूतसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) वह मंडली या टोली अथवा स्थान जिसमें जुआ खेला जाय।

द्यून [संज्ञा पु.] (सं.) लग्न-स्थान से सातवाँ स्थान [वि.] (सं.) क्षीण। कमजोर।

द्यो [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वर्ग। २-आकाश। ३-आठ वसुओं में से एक।

द्योकार [संज्ञा पु.] (सं.) चिनाई का काम करने वाला। राजगीर।

द्योत [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। २-आतप। धूप।

द्योतक [वि.] (सं.) १-प्रकाश करने वाला। २-दिखलाने अथवा बतलाने वाला।

द्योतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन। २-प्रकाशित करना, दिखलाना या जतलाना। ३-दीपक [वि.] (सं.) चमकीला। प्रकाशमान्।

द्योतित [वि.] (सं.) प्रकाशित।

द्योतिरिंगण, द्योतिरिङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत। जुगनू।

द्योभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पक्षी। चिड़िया। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग और भूमि।

द्योषद् [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

द्योहरा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'देवालय'।

द्यौस* [संज्ञा पु.] (हि.) दिवस। दिन।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) तौलने का एक प्राचीन मान जो एक तोले के बराबर होता था।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) वह नगर जो पत्तन से बड़ा और कवर से छोटा हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा। [illegible]ड़ा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ता। मजबूती।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ता। मजबूती।

[illegible] [वि.] (सं.) अधिक दृढ़। बहुत मजबूत।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) वह पदार्थ जो गाढ़ा न हो। २-मट्ठा। छाछ। ३-रस। ४-शुक्र।

[illegible] [वि.] (सं.) तेज चलने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) पतला पदार्थ जो गाढ़ा न हो। २-मट्ठा। छाछ। ३-रस। ४-शुक्र।

[illegible] [संज्ञा पु.) (सं.) एक देश का नाम।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह पण मूल्य की एक [illegible]।

[illegible], द्रवन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नदी। [illegible]पर्णी। छोटा।

[illegible] [वि.] (सं.) १-पानी की तरह पतला। तरल। [illegible]गीला। ३-गला या पिचका हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्रवण। २-बहाव। ३-दौड़। ४-[illegible]। ५-आसव। ६-रस। ७-परिहास। ८-[illegible]।

[illegible] [वि.] (सं.) १-बहने वाला। रसने वाला। २-भागने वाला। भगेड़ू।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-रस से बनाई जाने वाली वस्तु। २-गुड़।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-गलने पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। २-चित्त के कोमल होने की वृत्ति। हृदय पर करुणापूर्ण प्रभाव पड़ने का भाव। बहाव। क्षरण।

[illegible]-शील [वि.] (सं.) जो पिघलता या पसीजता हो।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रवत्व।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चँगोनी या शिमुड़ी नामक पौधा जो औषध के काम आता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहने का भाव। पानी की तरह पतला होने का भाव। २-बहना। ढलना।

[illegible] [क्रि. अ.] (हि.) १-प्रवाहित होना। बहना। २-पिघलना। ३-पसीजना। ३-दयार्द्र होना।

[illegible] [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) लाख। लाह।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) तरल पदार्थ रखने का पात्र।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण भारत का एक प्रांत जो उड़ीसा के दक्षिण पूर्वीय सागर के किनारे रामेश्वर तक है। २-द्रविड़देश का रहने वाला। ३-ब्राह्मणों का एक विभाग जिसके अन्तर्गत आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, [illegible] और महाराष्ट्र ये पांच वर्ग हैं।

द्रविड़ी [संज्ञा पु.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

द्रविण [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन। २-सुवर्ण। सोना। ३-बल। पराक्रम। ४-पृथु राजा का एक पुत्र। ५-भागवत के अनुसार कुशद्वीप का एक सीमा पर्वत। ६-धुर नामक वसु के एक पुत्र का नाम।

द्रविणक [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि की एक स्त्री का नाम।

द्रविणनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) शोभांजन। सहजन का पेड़।

द्रविणोदा [संज्ञा पु.] (सं.) धन देने वाला एक वेद का देवता। अग्नि।

द्रवित [वि.] (सं.) देखो 'द्रवीभूत'।

द्रवीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) गलने की क्रिया।

द्रवीकृत [वि.] (सं.) गलाया हुआ।

द्रवीभूत [वि.] (सं.) १-जो पानी की तरह पतला हो गया हो। २-पिघला हुआ। गला हुआ। ३-पसीजा हुआ। दयार्द्र।

द्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्तु। पदार्थ। चीज। २-वह पदार्थ जो क्रिया तथा गुण या केवल गुण का आश्रय हो। वह पदार्थ जिसमें केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो और जो समवायिकरण हो। (वैशेषिक में द्रव्य नौ कहे गये हैं-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक, आत्मा और मन)। ३-वह जिससे कोई वस्तु बनी हो। सामग्री। सामान। उपादान। ४-धन। रुपया पैसा। दौलत। ५-पीतल। ६-औषध। भेषज। ७-मद्य। ८-लेप। ९-गोंद। [वि.] १-द्रुम-सम्बन्धी। पेड़ का। २-पेड़ के ऐसा।

द्रव्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) द्रव्य का भाव। द्रव्यपन

द्रव्यवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. द्रव्यवती] धनी। धनवान्।

द्रव्यांतर, द्रव्यान्तर [संज्ञा पु.] (सं) अन्य द्रव्य दूसरा द्रव्य।

द्रव्याधीश [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

द्रष्टव्य [वि.] (सं.) १-देखने योग्य। दर्शनीय। २-जो दिखाया जाने को हो। ३-जिसे बतलाना या जताना हो। ४-साक्षात् कर्त्तव्य।

द्रष्टा [वि.] (सं.) १-देखने वाला। २-साक्षात् करने वाला। ३-दर्शक। प्रकाशक। [संज्ञा पु.] सांख्य के मतानुसार पुरुष और योग के मतानुसार आत्मा।

द्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताल। झील। २-वह स्थान जहाँ गहरा जल हो। दह।

द्राक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाख। अंगूर।

द्राक्षा-शर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाख या अंगूर के रस की बनाई हुई चीनी। ग्ल्यूकोज।

द्राघिमा [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीर्घता। लम्बाई। २-भूमध्य के समानान्तर पूर्व और पश्चिम की वह कल्पित रेखायें जो अक्षांश को सूचित करती हैं।

द्राण [वि.] (सं) १-सोया हुआ। सुप्त। २-भगोड़ा। पलायित। [संज्ञा पु.] १-स्वप्न। २-भागना। पलायन।

द्राप [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-कौड़ी। [वि.] (सं.) मूर्ख। सुप्त।

द्रामिल [वि.] (सं.) द्रमिल या द्रविणदेश का निवासी। [संज्ञा पु.] (सं) चाणक्य।

द्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-गमन। २-क्षरण। गलने या पिघलने की क्रिया। ४-अनुपात।

द्रावक [वि.] (सं.) [स्त्री. द्राविका] १-ठोस वस्तु को पानी के समान पतला करने, गलाने या बहाने वाला। २-हृदय को दयार्द्र बनाने वाला। ३-हृदयग्राही। ४-पीड़ा करने वाला भागने वाला। ५-चतुर। चालाक। चुराने वाला। चोर। [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकान्त मणि। २-जार। ३-मोम। ४-सुहागा।

द्रावकर [संज्ञा पु.] (सं.) सुहागा।

द्रावककंद, द्रावककन्द [संज्ञा पु.] तिल कंदरा। तैलकंद।

द्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) १-गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव। २-भागने का काम। ३-३-रीठा।

द्राविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लार। २-मोम।

द्राविड़ [वि.] (सं.) (स्त्री. द्राविड़ी) द्रविणदेश का निवासी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्रविड़ देश। २-कचूर। ३-कचिया हलदी।

द्राविड़क [संज्ञा पु.] (सं) १-सोंचर नमक। कचिया हल्दी।

द्राविड़गोड़ [संज्ञा पु.] (सं.) रात के समय गाया जाने वाला एक राग। इसमें शृंगार और वीररस अधिकतर गाया जाता है।

द्राविड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) द्रविड़जाति की स्त्री [वि.] (हि.) द्रविड़-सम्बन्धी। द्रविड़देश का। द्राविड़ी प्राणायाम—कोई काम सीधी तरह से नहीं बल्कि कुछ घुमा-फिराकर या उलटे ढंग से करना।

द्रावित [वि.] (सं) १-द्रव किया हुआ। २-लगाया या पिघलाया हुआ। ३-भगाया हुआ।

द्राव्य [वि.] (सं.) गलने वाला। गलने योग्य।

द्राह्यायण [संज्ञा पु] (सं.) एक ऋषि का नाम सामवेद के कल्प, श्रौत और गृह्यसूत्र इनके बनाए हुए हैं।

द्रु [संज्ञा पु.] (सं) १-वृक्ष। २-शाखा।

द्रुकिलिम [संज्ञा पु.] (सं) देवदारु।

द्रुघण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहे का मुगदर। २-परशु या फरसे के आकार का एक अस्त्र। ३-कुठार। कुल्हाड़ी। ४-ब्रह्मा। ५-भूचम्पा।

द्रुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष। २-खड्ग। ३-बिच्छू। ४-भृंगी नामक कीड़ा।

द्रुणस [वि.] (सं.) लम्बी नाक वाला।

द्रुणह [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार की म्यान।

द्रुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष की ज्या। धनुष की डोरी।

द्रुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कछुही। २-कन। खजूरा। ३-कठवत।

द्रुत [वि.] (सं.) १-द्रवीभूत। गला या पिघला हुआ। २-तेज। शीघ्रगामी। तेज। ३-भागा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विच्छु। २-वृत्त। ३-बिल्ली। ४-संगीत में ताल की एक मात्रा का आधा। ५-संगीत में कुछ मध्यम से तेज लय। दून।

द्रुतगति [वि.] (सं.) शीघ्रगामी।

द्रुतगामिनी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) तेज चलने वाली।

द्रुतगामी [वि.] (सं.) शीघ्रगामी। तेज चलने वाला।

द्रुतचारी [वि.] (सं.) भूमि पर तेज चलने वाला।

द्रुतत्रिताली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'जल्द-तिताला'।

द्रुतपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं, जिसमें चौथा ग्यारहवाँ और बारहवाँ अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं!

द्रुतमध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्द्ध समवृत्त जिसके पहले और तीसरे चरण में तीन भगण और २ गुरु होते हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में दो जगण और एक यगण होता है।

द्रुतविलंबित, द्रुतविलम्बित [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण दो भगण और एक रगण होता है। इसे सुन्दरी भी कहते हैं।

द्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-द्रव। २-गति।

द्रुनख [संज्ञा पु.] (सं.) काँटा।

द्रुपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाभारत के अनुसार एक चन्द्रवंशी उत्तर-पांचाल का राजा जिसके पुत्र का नाम शिखंडी था। २-खंभे का पाया। ३-खड़ाऊ।

द्रुपदा [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वैदिक ऋचा जिसके आदि में द्रुपद शब्द आता है।

द्रुपदात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री द्रुपदात्मजा] १-शिखंडी। २-धृष्टद्युम्न।

द्रुपदादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) द्रौपदी की स्थापित की हुई सूर्य की मूर्त्ति।

द्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृत्त। २-पारिजात। ३-कुवेर। ४-एक राजा का नाम जो पूर्वजन्म में शिवि नामक दैत्य था। ५-रुकमणी से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

द्रुमकंटिका, द्रुमकण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमर का पेड़।

द्रुमकिल [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार का वृक्ष।

द्रुमग [संज्ञा पु.] (सं.) वह देश जहाँ जल कम हो

द्रुमध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का वृत्त।

द्रुमनख [संज्ञा पु.] (सं.) काँटा।

द्रुमव्याधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़ का रोग। २-लाख। लाक्षा।

द्रुममर [संज्ञा पु.] (सं.) कंटक। काँटा।

द्रुमर [संज्ञा पु.] (सं.) कांटा।

द्रुमवल्क [संज्ञा पु.] (सं.) वृत्त की छाल।

द्रुमशय [संज्ञा पु.] (सं.) बानर। बन्दर।

द्रुमश्रेष्ठ [संज्ञा. पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

द्रुमशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़ का शिखर या सिरा। २-एक प्रकार की छत या गोलमण्डप जो वृत्त के समान फैला हुआ होता है।

द्रुमसार [संज्ञा पु.] (सं.) दाड़िम। अनार।

द्रुमसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौरवपत्त का योद्धा २-गविष्ट नामक असुर के उत्तर जन्म का नाम। (महाभारत)।

द्रुमामय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़ का रोग। २-लाख। लाह।

द्रुमारि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

द्रुमालय [संज्ञा पु.] जंगल।

द्रुमाश्रय [संज्ञा पु.] गिरगिट (जो पेड़ पर चले)।

द्रुमिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वन। जंगल।

द्रुमिल [संज्ञा पु.] (सं) १-एक दानव का नाम जो सौभदेश का राजा था। २-नव योगेश्वरों में से एक।

द्रुमिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्राएं होती हैं। चरण के अन्त में गुरु होता है तथा १० और १८ पर यति होती है।

द्रुमेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा २-ताड़ का पेड़। ३-पारिजात।

द्रुमोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) कनकचंपा। कनिआरी

द्रुवय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लकड़ी की माप। २-परिमाण।

द्रुसल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी का पेड़। २-वृत्त।

द्रुह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. द्रुही] पुत्र। २-वृत्त।

द्रुहण [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

द्रुहिण [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

द्रुही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या।

द्रुह्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन आर्यों का एक वंश। ययाति की पत्नी शर्मिष्ठा के बड़े लड़के का नाम। जिन्होंने अपने पिता का बुढ़ापा लेना अस्वीकार किया। इसी से ययाति ने उसे शाप दिया था।

द्रू [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्ण। सोना।

द्रूण [संज्ञा पु.] (सं.) वृश्चिक। बिच्छू।

द्रेका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकायन। महानिम्ब।

द्रेक्क [संज्ञा पु.] (सं.) राशि का तृतीयांश।

द्रेक्काण [संज्ञा पु.] राशि का तृतीयांश।

द्रेष्काण [संज्ञा पु.) (सं.) राशि का तृतीयांश।

द्रोघमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) हानि पहुंचाने वाला मित्र।

द्रोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल आदि रखने का लकड़ी का एक पुराना बरतन। कठवत। २-एक प्राचीन माप जो प्रायः सोलह सेर के बराबर होती थी। ३-लकड़ी का एक कलश या बरतन जिसमें वैदिककाल में सोम रखा जाता था। ४-पत्तों का दोना। ५-नाव। अरणी की लकड़ी। ७-लकड़ी का बना रथ। ८-काला कौवा। डोम-कौवा। ९-बिच्छू। १०-चारसौ धनुष लम्बा-चौड़ा जलाशय या तालाब। यह पुष्करिणी और दीर्घा से बड़ा होता है। ११-मेघों के एक नायक का नाम। १२-वृक्ष। पेड़। १३-द्रोणाचल नामक पर्वत। १४-एक फूल का नाम। १५-नील का पौधा। १६-देखो 'द्रोणाचार्य'।

द्रोणकलश [संज्ञा पु.] (सं.) लकड़ी का कलश जिसमें प्राचीनकाल में सोमलता का रस छाना जाता है।

द्रोणकाक [संज्ञा पु.] (सं.) काला कौवा। डोम कौवा।

द्रोणक्षीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोलह सेर दूध देने वाली गाय।

द्रोणगंधिका, द्रोणगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना।

द्रोणगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जिस पर हनुमान जी संजीवनी जड़ी लेने गये थे।

द्रोणदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोलह सेर दूध देने वाली गाय।

द्रोणदुधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोलह सेर दूध देने वाली गाय।

द्रोणपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूकदली।

द्रोणपुष्पी [संज्ञा पु.] (सं.) गूमा।

द्रोणमुख [संज्ञा पु.] वह गाँव जो चारों प्रधान हो।

द्रोणमेघ [संज्ञा पु.) (सं.) बादलों में एक अधिपति का नाम।

द्रोणशर्मपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम (महाभारत)।

द्रोणस [संज्ञा पु.) एक दानव का नाम।

द्रोणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गूमा।

द्रोणाचल [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोणगिरि नामक पर्वत।

द्रोणाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतकालीन एक प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो भारद्वाज ऋषि के पुत्र थे। जिनसे कौरवों और पांडवों ने शस्त्र शिक्षा पाई थी।

द्रोणाहव [संज्ञा पु.] (सं.) काठ का बना

बात । १०-भय । डर । आशंका । ११-दुविधा । असमंजस । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुन्दुभी ।

द्वंद्ज, द्वन्दज [वि.] (सं.) देखो 'द्वंद्वज' ।

द्वंदयुद्ध [संज्ञा पु.] देखो 'द्वंद्वयुद्ध' ।

द्वंदर ※ [वि.] (हिं.) झगड़ालू ।

द्वंद्व, द्वन्द्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-युग्म । दो वस्तुएं जो एक साथ हों । जोड़ा । २-स्त्री पुरुष या नर मादा का जोड़ा । जैसे-सुख-दुःख, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक आदि । ४-रहस्य । गुप्त बात । ५-दो आदमियों की लड़ाई । ६-झगड़ा । कलह । बखेड़ा । ७-एक प्रकार का समास जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है । जैसे-दाल रोटी । ८-दुर्ग । किला ।

द्वंद्वचर, द्वन्द्वचर [संज्ञा पु.] (सं.) चक्रवाक । चकवा ।

द्वंद्वचारी, द्वन्द्वचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. द्वंद्वचारिणी] चकवा ।

द्वंद्वज, द्वन्द्वज [वि.] (सं.) १-सुख-दुःख रागद्वेष आदि द्वंद्वों से उत्पन्न (मनोवृत्ति) । २-वात, पित्त और कफ नामक त्रिदोषों से उत्पन्न (रोग) ।

द्वंद्वयुद्ध, द्वन्द्वयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) दो पुरुषों या दलों में होने वाला बराबरी की लड़ाई । कुश्ती । हाथापाई ।

द्वय [वि.] (सं.) दो ।

द्वयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दो का भाव । द्वैत । २-अपनेपन और परायेपन का भाव । भेद भाव ।

द्वयाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चीता ।

द्वयातिग [वि.] (सं.) जिसमें सत्वगुण प्रधान हो और शेष दो गुण दबाकर अधीन हो गये हों

द्वर [वि.] (सं.) विघ्न डालने वाला ।

द्वाःस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल । दरबान । २-नंदकेश्वर ।

द्वाचत्वारिंश [वि.] (सं.) बयालीसवाँ ।

द्वाचत्वारिंशत् [वि.] (सं.) बयालीस ।

द्वाज [संज्ञा पु.] (सं.) यार या उपपति से उत्पन्न पुत्र । जारज । दोगला ।

द्वात्रिंश [वि.] (सं.) बत्तीसवाँ ।

द्वात्रिंशत् [वि.] (सं.) बत्तीस ।

द्वादश [वि.] (सं.) १-बारह । २-बारहवाँ ।

द्वादशक [वि.] (सं.) बारह का ।

द्वादशकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय । २-बृहस्पति । ३-कार्त्तिकेय का एक अनुचार । ४-हर्वणयोग । [संज्ञा स्त्री.] भैरवी का एक भेद ।

द्वादश-वानी [वि.] (हिं.) देखो 'बारहवानी' ।

द्वादशभाव [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में जन्मकुण्डली के बारह रखे गये हैं ।

द्वादशरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) बारह दिनों में होने वाला एक यज्ञ ।

द्वादशलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय ।

द्वादशवर्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, चतुर्थांश, पंचमांश, षष्ठांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश, दशमांश, एकदशांश और द्वादशांश यह बारह वर्गों की समष्टि जिनसे वर्षकाल में ग्रहों के फलाफल निकाले जाते हैं ।

द्वादशवार्षिक [संज्ञा पु.] (सं) ब्रह्महत्या लगने पर किया जाने वाला एक बारह वर्ष का व्रत ।

द्वादशशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैष्णव सम्प्रदाय में तंत्रोक्त बारह प्रकार की शुद्धि ।

द्वादशांग, द्वादशाङ्ग [वि.] (सं.) बारह अंग या अवयव वाला । [संज्ञा पु.] गुग्गुल, चन्दन, तेजपात, कुट, अगर, केसर, जायफल, कपूर, जटामासी, नागरमोथा, तज और खस इन बारह गंधद्रव्यों के योग से बनी हुई पूजा में जलाने की धूप । जनों का वह ग्रन्थसमूह जिसे वे गणधरों का बनाया मानते हैं ।

द्वादशांगी, द्वादशाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनों के द्वादश अङ्ग ग्रन्थों का समूह ।

द्वादशांशु [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति ।

द्वादशाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय । २-बुद्धदेव ।

द्वादशाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) 'ओंनमोभगवते-वासुदेवाय' यह बारह अक्षरों वाला विष्णु का मंत्र ।

द्वादशाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

द्वादशात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक का पेड़ । २-सूर्य ।

द्वादशायतन [संज्ञा पु.] (सं.) जैनदर्शन के अनुसार पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों तथा मन और बुद्ध का समुदाय ।

द्वादशायु [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता ।

द्वादशाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के मरने पर बारहवें दिन होने वाला श्राद्ध । २-बारह दिनों का समुदाय । ३-बारह दिन में पूरा होने वाला एक यज्ञ ।

द्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की बारहवीं तिथि ।

द्वादस-बानी※ [वि.] (हिं.) १-सूर्य के समान प्रकाशमान । २-चोखा (सोना) । ३-निर्दोष । शुद्ध । ४-पूरा । पक्का ।

द्वापर [संज्ञा पु.] (सं.) चार युगों में से तीसरा युग । पुराणों में यह युग ८६४००० वर्षों का माना गया है ।

द्वामुष्यायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पुरुष जो दो आदमियों का पुत्र हो (एक औरस और दूसरा दत्तक) । २-दो ऋषियों के गोत्र में उत्पन्न पुरुष । ३-उद्दालक मुनि का नाम । ४-गौतममुनि का नाम ।

द्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-इधर-उधर से घिरे हुए स्थान के बीच में वह खुला स्थान, जिससे होकर लोग अन्दर-बाहर आते जाते हों। २-घर में आने-जाने के लिए दीवार में बना हुआ थोड़ा-सा खुला स्थान। दरवाजा। ३-इन्द्रियों के मार्ग या छेद। जैसे—नाक, कान आदि। ४-कोई काम करने का वह मार्ग जो उपाय या साधन के अंग के रूप में हो। चैनल।

द्वारकंटक, द्वारकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) कपाट। किवाड़।

द्वारक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वारकापुरी।

द्वारका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काठियावाड़ की एक प्राचीन पवित्र पुरी या नगरी। हिन्दू लोग इसे चार धामों में मानते हैं और यहां आकर बड़ी श्रद्धा से छाप लेते हैं।

द्वारकाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-श्रीकृष्ण की वह मूर्त्ति जो द्वारका में है।

द्वारकानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-द्वारका में स्थित श्रीकृष्ण की मूर्त्ति।

द्वारकेश [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारकानाथ।

द्वारगोप [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल। दरबान।

द्वारचार [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह की एक रसम जो लड़की वाले के द्वार पर पहुँचने पर होती है।

द्वारछेंकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवाह की एक रसम जिसमें जब वर-वधु घर पहुँचते हैं तब वर की बहन उसकी राह रोकती है और उसको कुछ नेग दिया जाता है। २-द्वारछेंकाई के समय दिया जाने वाला नेग।

द्वारपंडित, द्वारपण्डित [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राजा के यहाँ का प्रधान पंडित।

द्वारप [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल। २-विष्णु।

द्वारपति [संज्ञा पु.] (सं) द्वारपाल। दरबान।

द्वारपाल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. द्वारपाली, द्वारपालिनी, द्वारपालिन] १-द्वार या दरवाजे पर रक्षा के निमित्त नियुक्त व्यक्ति। दरबान। प्रतिहारी। २-तंत्र के अनुसार वह देवता जो किसी मुख्य देवता के द्वार का रक्षक हो।

द्वारपालक [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल।

द्वारपिंडी, द्वारपिण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देहली। ड्योढी।

द्वार-पूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विवाह की एक रीति जो लड़की वाले के द्वार पर बरात पहुँचने के समय होती है और जिसमें वर का पूजन किया जाता है। २-जैनियों की एक पूजा।

द्वारवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वारकापुरी।

द्वारयंत्र, द्वारयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) ताला।

द्वारवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) फाटक। द्वार।

द्वारवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) काली पीपल।

द्वारशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दरवाजे का भाग।

द्वारसमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) कर्नाटक के राजाओं की पुरानी राजधानी का नाम।

द्वारस्तंभ, द्वारस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) दरवाजे पर का खंभा।

द्वारस्थ [वि.] (सं.) जो द्वार पर बैठा हो। [संज्ञा पु.] द्वारपाल।

द्वारा [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वार। दरवाजा। फाटक। २-मार्ग। राह। [अव्य.] (हिं.) जरिये से। साधन से।

किसी के द्वारा—१-किसी के करने से। २-किसी की मारफत से। ३-किसी वस्तु के उपयोग से।

द्वाराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) दरवाजे का मालिक। द्वारपाल।

द्वाराध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दरबान। द्वारपाल।

द्वारावती [संज्ञा स्त्री.] (सं) द्वारकापुरी।

द्वारिक [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल। दरबान।

द्वारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वारकापुरी।

द्वारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा द्वार या दरवाजा [संज्ञा पु.] (हिं.) द्वारपाल।

द्वाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुवाल'।

द्वालबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुवालबंद'।

द्वाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुवाली'।

द्वाविंश [वि.] (सं.) बाईसवाँ।

द्वाविंशति [वि.] (सं.) बाईस।

द्वाषष्ठ [वि.] (सं.) बासठवाँ।

द्वाषष्ठि [वि.] (सं.) बासठ।

द्वासप्तत [वि.] (सं.) बहत्तरवाँ।

द्वासप्तति [वि.] (सं.) बहत्तर।

द्वास्थ [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल।

द्वास्थित [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

द्वि [वि.] (सं.) दो।

द्विक [वि.] (सं.) १-जिसमें दो अवयव हों। २-दोहरा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-काक। २-चकवा।

द्विककुद [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

द्विकर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो भुजा। दो हाथ।

द्विकर्मक [वि.] (सं.) क्रिया। जिसके दो कर्म हों। (व्याकरण)।

द्विकल [संज्ञा पु.] (हिं.) पिंगल या छंद शास्त्र में दो मात्राओं का समूह।

द्विक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) शोरा और सज्जीखार।

द्विगु [वि.] (सं.) जिसे दो गायें हों। दो गायों संबंधी। [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्मधारय समास जिसके पूर्वपद संख्यावाचक होता है। इसके तीन भेद होते हैं। तद्धितार्थ जैसे पंचगु, उत्तरपद। जैसे—पंचकोण और समाहार। जैसे—त्रिलोकी।

द्विगुण [वि.] (सं.) दुगना। दूना।

द्विगुणाकृत [वि.] (सं.) दो बार जोती हुई (भूमि)

द्विगुणाकर्ण [वि.] (सं.) दो बार गुणा किया हुआ।

द्विगुणित [वि.] (सं.) १-दो से गुणा किया हुआ २-दूना। दुगना।

द्विगूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) वह गीत जिसमें सब पद सम और सुन्दर हों, संधियाँ वर्णित हों तथा जो रस और भाव से परिपूर्ण हो (न्यत्र्यशास्त्र)।

द्विघटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो घड़ियों के हिसाब से निकाला हुआ महूर्त्त।

द्विचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम। [वि.] दो पहियों वाला।

द्विचत्वारिंश [वि.] (सं.) बयालीसवाँ।

द्विचत्वारिंशत् [वि.] (सं) बयालीस।

द्विचरण [वि.] (सं.) दो पैर वाला।

द्विज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंडज प्राणी। २-पक्षी। ३-हिन्दुओं में ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष। ४-ब्राह्मण। ५-चन्द्रमा। ६-दाँत। ७-नैपाली धनिया। [वि.] दो बार उत्पन्न हुआ।

द्विजत्व [संज्ञा पु.] (सं) द्विज का धर्म या भाव।

द्विजदंपति, द्विजदम्पति [संज्ञा पु.] (सं.) वह चाँदी का पत्तर जिस पर स्त्री-पुरुष या लक्ष्मी नारायण का युगल चित्र खुदा रहता है।

द्विजदास [संज्ञा पु.] (सं.) द्विजों का सेवक।

द्विजन्मा [वि.] (सं.) जिसका दो बार जन्म हुआ हो। [संज्ञा पु.] द्विज।

द्विजपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-चन्द्र। ३-कपूर। ४-गरुड़।

द्विजप्रपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेड़ के नीचे खोदा हुआ गड्ढा जिसमें पेड़ के लिए पानी देते हैं।

द्विजप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता। [वि.] जो द्विज का प्रिय या प्रेमपात्र हो।

द्विजबंधु, द्विजबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) केवल नाम मात्र का द्विज। संस्कार या कर्महीन द्विज।

द्विजब्रुव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह द्विज जिसका जन्म तो द्विज माता-पिता से हुआ हो पर वह स्वयं द्विजों के संस्कार और कर्म से हीन हो। २-नाममात्र का ब्राह्मण।

द्विजराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-चन्द्रमा। ३-कपूर। ४-गरुड़। ५-श्रेष्ठ ब्राह्मण।

द्विजलिंगी, द्विजलिङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूद्र या अन्य वर्ण का होकर ब्राह्मण का वेश धारण करने वाला मनुष्य। २-क्षत्रिय।

द्विजवर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण। द्विज श्रेष्ठ।

द्विजवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

द्विजव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत का एक रोग।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) भटवांस।

द्विजश्रेष्ठ [वि.] (सं.) द्विजों में श्रेष्ठ। ब्राह्मण।

द्विजसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) द्विजों की सेवा करने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) द्विजों में श्रेष्ठ। ब्राह्मण।

द्विजांगिका, द्विजाङ्गिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

द्विजांगी, द्विजाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

द्विजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-द्विज की स्त्री। २-संभालू का बीज। ३-पालक का शाक। ४-भारंगी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

द्विजाति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। द्विज। २-ब्राह्मण। ३-अंडज। ४-पक्षी। ५-दाँत।

द्विजातिमुख्य [वि.] (सं.) ब्राह्मणों में श्रेष्ठ।

द्विजानि [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुरुष जिसके दो स्त्रियाँ हों।

द्विजायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञोपवीत।

द्विजालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष का वह पोला भाग जिसमें पक्षी अपना घोंसला बनाते हैं। कोटर। २-ब्राह्मण का घर।

द्विजिह्व [वि.] (सं.) १-दो जीभों वाला। २-चुगलखोर। ३-खल। दुष्ट। ४-चोर। ५-दुःसाध्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-एक रोग।

द्विजेंद्र, द्विजेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-चन्द्रमा। ३-गरुड़। ४-कपूर।

द्विजेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-चन्द्रमा। ३-गरुड़। ४-कपूर।

द्विजोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) द्विजों में श्रेष्ठ। ब्राह्मण।

द्विजोपासक [संज्ञा पु.] (सं.) द्विज सेवक। शूद्र।

द्विट्सेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रु की सेवा।

द्विट्सेवी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो राजा के शत्रु से मिला हो या मित्रता रखता हो।

द्विठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विसर्ग। २-स्वाहा।

द्वित [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देवता का नाम। २-एक ऋषि का नाम।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को दी जाने वाली पावती (रसीद), प्राप्यक या सूचना आदि की वह प्रतिलिपि जो अपने पास रखी जाती है। २-किसी लेख आदि की वह दूसरी प्रतिलिपि जो पाने वाले को फिर से दी जाय। डुप्लीकेट।

द्वितय [वि.] (सं.) १-दो के मेल से बना हुआ। २-जोड़ा।

द्वितीय [वि.] (सं.) [स्त्री. द्वितीया] दूसरा। [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। बेटा।

द्वितीयक [वि.] (सं.) १-जिसका स्थान प्रमुख अथवा सब से पहले वाले के बाद हो। दूसरे का स्थान। सैकेंडरी। २-दूसरा।

द्वितीयत्रिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंभारी।

द्वितीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। वाममार्ग के अनुसार मास।

द्वितीयाकृत [वि.] (सं.) दो बार जोता हुआ (खेत)

द्वितीयाभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहलदी।

द्वितीयाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) गृहस्थ-आश्रम।

द्वित्र [वि.] (सं.) दो या तीन।

द्वित्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो का भाव। २-दोहरा होने का भाव।

द्विदल [वि.] (सं.) १-जिसमें दो दल हों। २-जिसमें दो पत्ते हों। ३-जिसमें दो पंखड़ियाँ हो। [संज्ञा पु.] (सं.) वह अन्न जिसमें दो दल हों। दाल।

द्विदश [वि.] (सं.) बारह।

द्विदाम्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जो दो रस्सियों में बंधी हो। नटखट गाय।

द्विदिव [संज्ञा पु.] (सं.) दो दिन में समाप्त होने वाला यज्ञ।

द्विदेवता [वि.] (सं.) १-दो देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला। २-जिसके दो देवता हों। [संज्ञा पु.] (सं.) विशाखानक्षत्र।

द्विदेह [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

द्विद्वादश [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष के अनुसार एक योग।

द्विधा [क्रि. वि.] (सं.) १-दो प्रकार से। २-दो खंडों या टुकड़ों में।

द्विधागति [संज्ञा पु.] (सं.) घड़ियाल। [वि.] (सं.) जिसकी गति दो प्रकार की हो।

द्विधातु [वि.] (सं.) जो दो धातुओं के मेल से बना हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मिश्रित धातु जो दो धातुओं के मेल से बनी हो। २-गणेश।

द्विधात्मक [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

द्विधालेख्य [संज्ञा पु.] (सं.) हिंताल का पेड़। [वि.] (सं.) जो दो प्रकार से लिखा जा सके।

द्विनग्नक [संज्ञा पु.] (सं.) दुश्चर्मा।

द्विनवति [वि.] (सं.) बानवे।

द्विपंचाशत्, द्विपञ्चाशत् [वि.] (सं.) बावन।

द्विपंचाशत्तम् [वि.] बावनवां।

द्विप [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-नागकेसर।

द्विपक्ष [वि.] (सं.) १-जिसके दो पर हों। २-जिसमें दो पक्ष हों। [संज्ञा पु.] १-पक्षी। २-महीना। मास।

द्विपञ्चमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दशमूल।

द्वि-पक्षी [वि.] (सं.) १-दो पक्षों या पार्श्वों से सम्बन्ध रखने वाला। २-दो पक्षों या दलों में होने वाला। बाई-लेटरल।

द्विपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) द्विदल वाला।

द्विपथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ दो पथ या मार्ग आकर मिलते हों। दोराहा।

द्विपद [वि.] (सं.) १-दो पैरों वाला। २-जिसमें दो पद या शब्द हों। [संज्ञा पु.] १-दो पैरों वाला जन्तु। २-मनुष्य। ३-ज्योतिष के अनुसार मिथुन, तुला, कुंभ, कन्या और धनु लग्न का पूर्व भाग। ४-वास्तुमंडल का एक कोठा।

द्विपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह ऋचा जिसमें केवल दो पद हों।

द्विपदिक [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्ध राग का एक भेद

द्विपदिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का गीत

द्विपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह छन्द जिसमें दो पद हों। २-दो पदों वाला गीत। ३-एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोष्टों की तीन पंक्तियों में लिखते हैं

द्विपमद [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के मद का जल।

द्विपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार के जंगली बेर का पेड़।

द्विपाद [वि.] (सं.) १-दो पैरों वाला। २-जिसमें दो पद या चरण हों (छंद)। [संज्ञा पु.] मनुष्य, पक्षी आदि दो पैर वाले जन्तु।

द्विपाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत।

द्विपायी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. द्विपायिनी] हाथी

द्विपार्श्विक [वि.] (सं.) १-दो या दोनों पार्श्वों से संबंध रखने वाला। दोरुखा। २-देखो 'द्विपक्षी'।

द्विपास्य [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

द्विपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली। मल्लिका।

द्विपृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के नव वासुदेवों से एक।

द्विबंधु, द्विबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) दो लोकों का का बन्धु। अग्नि।

द्विबाहु [वि.] (सं.) जिसके दो बाहु हों। द्विभुज [संज्ञा पु.] मनुष्य आदि दो पैर वाले जीव।

द्विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) दो भाग। दो अंश।

द्विभाव [संज्ञा पु.] (सं.) दो भाव। दुराव। [वि.] दुष्ट स्वभाव का। कपटी।

द्विभाषी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. द्विभाषिणी] दो भाषाएँ जानता हो। दुभाषिया।

द्विभुज [वि.] (सं.) जिसके दो हाथ हों। दो हाथ वाला।

द्विभूम [वि.] (सं.) दो तल्ला (मकान)।

द्विमातृ [संज्ञा पु.] (सं.) (दो माताओं के गर्भ से

उत्पन्न) जरासंध।

द्विमातृज [संज्ञा पु.](सं.) १-जरासंध। २-गणेश

द्विमात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह वर्ण जो दो मात्राओं का हो। दीर्घ। जैसे-आ, ई, ऊ आदि।

द्विमीढ [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिनापुर बसाने वाले महाराज हस्ति का एक पुत्र।

द्विमुख [वि.] (सं.) [स्त्री. द्विमुखी] जिसके दो मुँह हों। [संज्ञा पु.] १-पेट के मल में उत्पन्न होने वाले कृमि। २-दो मुँह वाला सर्प।

द्विमुखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

द्विमुखी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दो मुँह वाली। [संज्ञा स्त्री.] वह गाय जो बच्चा दे रही हो

द्वियजुष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ईंट जो यज्ञकुण्ड बनाने के काम आती है। [संज्ञा पु.] यजमान।

द्विर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भ्रमर। भौंरा। २-शहद की मक्खी।

द्विरद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) दो दांतों वाला।

द्विरदांतक, द्विरदान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

द्विरदाशन [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

द्विरभ्यस्त [वि.] दुगना।

द्विरशन [संज्ञा पु.] (सं.) दो बार भोजन।

द्विरसन [संज्ञा पु.] (सं.) सांप।

द्विरागमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर दूसरी बार आना। २-विवाह के उपरान्त वधू का अपने ससुराल में दूसरी बार आना। गौना।

द्विरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) दो रातों में सम्पन्न होने वाला एक यज्ञ।

द्विरात्रीण [वि.] (सं.) दो रातों में होने वाला।

द्विराप [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी। हस्ती।

द्विरुक्त [वि.] (सं.) दो बार कहा हुआ।

द्विरुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहले या एक बार कही हुई बात फिर से कहना।

द्विरूढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका विवाह पहले एक पति से तथा दुबारा दूसरे पति से हुआ हो।

द्विरेतस् [संज्ञा पु.](सं.) १-दो भिन्न-भिन्न पशुओं के संयोग से उत्पन्न पशु। जैसे—घोड़े और गदहे से उत्पन्न खच्चर। २-दोगला।

द्विरेफ [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

द्विर्वचन [संज्ञा पु.] (सं.) दो बार कथन।

द्विलक्षण [वि.] (सं.) दो प्रकार का।

द्विवचन [संज्ञा पु.] (सं.) संस्कृत-व्याकरण के अनुसार किसी विभक्ति का वह रूप जो दो व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

द्विवज्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह कोनों वाला घर। वह घर जिसमें सोलह कोण हों।

द्विविंदु, द्विविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) विसर्ग का चिह्न।

द्विविद [संज्ञा पु.] (सं.) रामचन्द्र की सेना के एक बंदर का नाम।

द्विविध [वि.] (सं.) दो प्रकार का। [क्रि. वि.] (हिं.) दो प्रकार से।

द्विविधा* [संज्ञा पु.] (हि.) दुवधा।

द्विवेद [वि.] (सं.) दो वेद पढ़ने वाला।

द्विवेदी [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

द्विवेशरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) दो पहियों की छोटी गाड़ी।

द्विव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) दो प्रकार का व्रण या घाव।

द्विशफ [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जिसका खुर फटा हो। जैसे—गाय।

द्विशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार कन्या, मिथुन, धनु, और मीन राशियाँ जिनका प्रथमार्द्ध स्थिर और द्वितीयार्द्ध चर माना जाता है।

द्विशाल [वि.] (सं.) जिसमें दो कोठरियाँ हों।

द्विशिर [वि.] (हिं.) दो सिर वाला। कौन द्विशिर है-किसका फालतू सिर है? अर्थात् किसे अपने मरने का भय नहीं है।

द्विशीर्ष [वि.] (सं.) जिसके दो सिर हों। [संज्ञा पु.] अग्नि।

द्विशृंगी, द्विशृङ्गी [वि.] (सं.) जिसके दो सिर हों।

द्विषंतप, द्विषन्तप [वि.] (सं.) शत्रु को पीड़ा पहुँचाने वाला।

द्विष [वि.] (सं.) द्वेष रखने वाला। [संज्ञा पु.] शत्रु। वैरी।

द्विषत् [वि.] (सं.) द्वेष रखने वाला। [संज्ञा पु.] शत्रु। वैरी।

द्विषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इलायची।

द्विषेण्य [वि.] (सं.) जिसका स्वभाव द्वेष करने का हो। ईर्षालु।

द्विष्ट [वि.] (सं.) जिसके द्वेष हो। [संज्ञा पु.] ताँबा। ताम्र।

द्विसप्तति [वि.] (सं.) १-बहत्तर। २-बहत्तरवाँ।

द्विसम [वि.] (सं.) दो वर्ष का।

द्विसहस्राक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अनन्त जिसके एक हजार मुख हों।

द्विसीत्य [वि.] (सं.) (वह खेत) जो दो बार हल से जोता गया हो।

द्विस्विन्नान्न [संज्ञा पु.] (सं.) उबाले हुए धान का चावल।

द्विहन् [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

द्विहरिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

द्विहल्य [वि.] (सं.) वह खेत जो दो बार हल से जोता गया हो।

द्विहायन [संज्ञा पु.] (सं.) दो साल का बछड़ा।

द्विहृदया [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] गर्भवती।

द्वींद्रिय, द्वीन्द्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) वह जन्तु जिसके दो ही इन्द्रियाँ हों।

द्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो। २-पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग। यथा-जम्बूद्वीप, लङ्काद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, कौंचद्वीप, शाकद्वीप, और पुष्करद्वीप। ३-आधार। ४-व्याघ्रचर्म।

द्वीप-कर्पूर [संज्ञा पु] (सं.) चीनीकपूर।

द्वीपकुमार [संज्ञा प.] (सं.) जैनमत के अनुसार एक प्रकार का देवता।

द्वीपखर्जूर [संज्ञा पु.] (सं.) महापारेवत।

द्वीप-पुंज (पुञ्ज) [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र में होने वाले बहुत से छोटे-छोटे निकटवर्ती द्वीपों या टापुओं का समूह। आर्कीपैलेगो।

द्वीपवत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। नद।

द्वीपवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक नदी का नाम। २-भूमि। जमीन।

द्वीपशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) सतावर।

द्वीपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावरी। सतावर।

द्वीपिनख [संज्ञा पु.] (सं.) व्याघ्रनख। बाघ का नाखून।

द्वीपी [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याघ्र। बाघ। २-चीता। ३-चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

द्वीश [वि.] (सं.) १-जो दो का स्वामी हो। २-जिसके दो स्वामी हों। ३-जो दो देवताओं के लिए हो। [संज्ञा पु.] (सं.) विशाखा नक्षत्र।

द्वृच [संज्ञा पु.] (सं.) वह सूक्त जिसमें दो ही ऋचायें हों।

द्वेधा [अव्य.] (सं.) दो प्रकार के।

द्वेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी बात का मन को न भाना या अप्रिय लगने की वृत्ति। चिढ़। २-शत्रुता। वैर।

द्वेषण [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु। दुश्मन।

द्वेषी [वि.] (सं.) १-द्वेष रखने वाला। द्वेष करने वाला। ३-शत्रु।

द्वेष्टा [वि.] (सं.) विरोधी। द्वेष करने वाला। शत्रु। वैरी।

द्वेष्य [वि.] (सं.) जिससे द्वेष किया जाय। [संज्ञा पु.] शत्रु। वैरी।

द्वै* [वि.] (हिं.) १-दो। २-दोनों।

द्वैगुणिक [वि.] (सं.) दूना ब्याज खाने वाला। दूना सूद लेने वाला।

द्वैज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) द्वितीया। दूज।

द्वैत [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो का भाव।

द्वैतभाव २-अन्तर। भेदभाव। अपने पराये का भाव। ३-दुविधा। भ्रम। ४-अज्ञान। ५-द्वैतवाद।

द्वैतवन [संज्ञा पु.] (सं.) वह तपोवन जिसमें युधिष्ठर ने वनवास के समय कुछ दिन तक निवास किया था।

द्वैतवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर दो अलग-अलग पदार्थ मान कर विचार किया जाता है। २-वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें भूत और चित्शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं। ३-दो स्वतन्त्र और भिन्न सिद्धान्त एक साथ मानने वाली विचारशैली। ड्यूअलिज्म

द्वैतवादी [वि.] (सं.) (स्त्री. द्वैतवादिनी) ईश्वर और जीव में भेद मानने वाला।

द्वैतवादिनी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) द्वैतवाद सिद्धान्त को मानने वाली।

द्वैती [वि.] (सं.) द्वैतवादी।

द्वैध [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोध। परस्पर विरोध २-राजनीति में मुख्य उद्देश्य छिपाकर दूसरा उद्देश्य प्रकट करना। डिप्लोमेसी। ३-वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में तथा कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों। डायार्की।

द्वैधीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु के दो टुकड़े करना।

द्वैधीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनिश्चय। द्विधा भाव। २-भीतर कुछ और बाहर कुछ और भाव।

द्वैप [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाघ का चमड़ा। २-बाघ से सम्बन्ध रखने वाली या बाघ से बनी या निकली हुई वस्तु।

द्वैपायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यासजी का एक नाम। २-वह ताल जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन भागकर छिपा था।

द्वैप्य [वि.] (सं.) द्वीप-सम्बन्धी।

द्वैभाव्य [वि.] (सं.) जो दो भागों में विभक्त हो।

द्वैमातुर [वि.] (सं.) जिसकी दो माताएँ हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। २-जरासंध।

द्वैमातृक [संज्ञा पु.] (सं.) वह भूमि या देश जहाँ खेती नदी के जल से और वर्षा के जल से भी होती है।

द्वैयाहिक [वि.] (सं.) जो दो दिन में किया जाय या दो दिन का हो।

द्वैरथ [संज्ञा पु.] (सं.) दो रथों पर सवार होने होकर होने वाला युद्ध।

द्वैराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य जो दो राजाओं में विभक्त हो।

द्वैविध्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो प्रकार का होने का भाव। २-दुबधा।

द्वैपणीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली का एक भेद।

द्वौ [वि.] (हिं.) दोनों। [वि.] देखो 'दव'।

द्व्यणुक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह द्रव्य जो दो अणुओं के संयोग से उत्पन्न हो। २-वह मात्रा जो अणुओं की हो।

द्व्यर्थ [वि.] (सं.) दो अर्थ वाला (शब्द)।

द्व्यशीति [वि.] (सं.) बयासी।

द्व्यष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) ताम्र। ताँबा।

द्व्याद्वायण [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

द्व्यात्मक [संज्ञा पु.] (सं.) दो स्वभाव की राशियाँ जो इस प्रकार हैं :—मिथुन, कन्या, धनु और मीन।

द्व्यामुष्यायण [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुत्र जो एक की तो सन्तान हो और दूसरे द्वारा दत्तक रूप में स्वीकार किया गया हो और दोनों पिता उसको अपना पुत्र मानते हों। ऐसा पुत्र दोनों को पिंडदान देता है और दोनों की सम्पत्ति का अधिकारी होता है।

ध

ध हिन्दी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण दंतमूल से होता है।

धंगर [संज्ञा पु.](देश.) चरवाहा। ग्वाल। अहीर

धंगा* [संज्ञा पु.] (देश.) खांसी।

धंदर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

धंधक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संसार के काम-धंधों का झगड़ा। जंजाल। बखेड़ा। २-एक प्रकार का ढोल।

धंधकधोरी [संज्ञा पु.] (हिं.) काम-धंधे का बोझ लादे रहने वाला। हर समय किसी न किसी काम या जंजाल में फंसा रहने वाला। बहुधन्धी।

धंधका* [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. धंधकी] एक प्रकार का ढोल।

धंधकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटा धन्धका। छोटा ढोल।

धंधरक [संज्ञा पु.] (हिं.) संसार के काम-धन्धों का झंझट।

धंधरकधोरी [संज्ञा पु.] (हिं.) हर घड़ी काम में जुता रहने वाला।

धंधला [संज्ञा पु.](हिं.) १-छलछंद। झूठा ढोंग। २-हीला। बहाना।

(किसी को) *धंधले आते हैं*-छलछंद का अभ्यास है।

धंधलाना [क्रि. अ.] (हिं.) छलछंद करना। ढंग रचना।

धंधा [संज्ञा पु.] (हिं) १-धन या जीविका के लिए किया जाने वाला काम। कामकाज। उद्योग। २-उद्यम। व्यवसाय। कारबार।

धंधार [संज्ञा पु.] (देश.) भारी पत्थर लकड़ी आदि को उठाने का एक प्रकार का औजार। [वि.] (देश.) एकाकी। अकेला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आग की लपट।

धंधारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोरखधन्धा जिसे गोरखपंथी साधु लिये रहते हैं। २-एकांत। निर्जनता। ३-सुनसान। सन्नाटा।

धंधाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुटनी। दूती।

धंधेरा [संज्ञा पु.] (देश.) राजपूतों की एक जाति

धँधोर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-होली। होलिका। २-आग की लपट।

धंधना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धांकना'।

धंस [संज्ञा पु.] (हिं.) जल आदि में प्रवेश। गोता। डुबकी।

धँसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धंसने की क्रिया या ढंग। २-घुसने या पैठने का ढंग। गति। चाल।

धँसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी कड़ी वस्तु का नरम वस्तु के भीतर घुसना। गड़ना। २-अपने लिये जगह निकालते हुए आगे बढ़ना या अन्दर घुसना। ३-नीचे की ओर धीरे-धीरे बैठना या जाना। ४-तल के किसी अंश का दबाव आदि पाकर नीचे हो जाना। ५-किसी गड़ी या खड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे चला जाना जिसके कारण वह खड़ी न रह सके। बैठ जाना। ६-नष्ट होना ध्वस्त होना।

जीया मन में धसना-१-मनमें निश्चय या विश्वास उत्पन्न करना। दिल में असर करना हृदय पर अंकित होना।

धँसनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धंसन'।

धँसान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धंसने की क्रिया या ढंग। २-ऐसी जमीन जिस पर कीचड़ के कारण पैर धंसता हो। दलदल। ऐसी जमीन जिस पर नीचे की ओर पैर फिसले। ढाल। उतार।

धँसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-गड़ाना। चुभाना। २-पैठाना। प्रवेश कराना। ३-तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना। नीचे की ओर बैठाना।

धँसाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धंसने की क्रिया। २-दलदल।

ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन। दौलत। २-कुबेर। ३-ब्रह्मा। ४-धर्म। ५-धकार-वर्ण। [संज्ञा पु.] (हिं.) संगीत में 'धैवत' स्वर का सूचक संक्षिप्त रूप।

धई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पौधा जिसकी जड़ नागपुर की पहाड़ी जाति के लोग खाते हैं।

धउरहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धरौहर'।

धक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भय आदि के कारण हृदय-गति तीव्र होने का भाव या शब्द।

२–उमंग। उद्वेग। *जी धक-धक करना*–भय या उद्वेग से कलेजा धड़कना। *जी धक हो जाना*–१–डर दुःख आदि से जी दहल जाना २–चौंक उठना। [क्रि. वि.] (हिं.) अचानक एक बारगी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी जूं।

धकधकाना* [क्रि. अ.] (हिं) १–भय, उद्वेग, आग के कारण हृदय की गति का तीव्र होना २–(आग का) लपट के साथ जलना। दहकना।

धकधकाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जी धकधक करने की क्रिया या भाव। धड़कन। २–खटका। आशंका। ३–आगापीछा

धकधकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हृदय की धड़कन २–पेट और छाती के बीच का वह गड्ढा जिसके नीचे धड़कन होती है। धुक-धुकी। हृदय। कलेजा। भय। डर।

धकपक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डरते हुए। धड़कते हुए जी के साथ।

धकपकाना [क्रि. अ.] (हिं.) जी में धक-पक होना। भय या आशंका होना।

धकपेल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धक्कम–धक्का। रेलापेल।

धका* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धक्का'।

धकाधकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धक्कमधक्का।

धकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) दहकना। सुलगाना

धकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'ध' अक्षर का रूप।

धकारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धकधकी। आशंका। खटका।

धकियाना+ [क्रि. स.] (हिं) धक्का देना। ढकेलना।

धकेलना [क्रि. स.] (हिं.) ढकेलने वाला। धक्का देने वाला।

धकेलू [संज्ञा पु.] (हिं.) ढकेलने वाला। धक्का देने वाला।

धकैत [वि.] (हिं.) धक्कमधक्का करने वाला। धक्का देने वाला।

धकोना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धकियाना'।

धक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धक'।

धकपक [संज्ञा स्त्री.,क्रि. वि.] (हि.) देखो 'धकपक'।

धकमधका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भीड़भाड़ में आदमियों का एक दूसरे को धक्का देने का काम। २–ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से धक्के खाते हों।

धका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ वेगपूर्ण स्पर्श। टक्कर। २–झोंका। ३–ढकेलने की क्रिया या भाव। ४–बहुत भीड़। कश-मकश। ५–दुःख, शोक हानि आदि का अघात। ६–संकट। विपत्ति। ७–हानि। घाटा। टोटा। ८–कुश्ती का एक पेंच।

धकामुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को ढकेलें और घूँसों से मारें।

धकाड़ [वि.] (हिं.) १–जिसकी खूब धाक जमी हो। २–किसी विषय या बात में बहुत बढ़ा-चढ़ा। ३–बहुत बड़ा।

धगड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) उपपति। जार।

धगड़बाज [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जार या यार के पास जाने वाली व्यभिचारिणी। कुलटा।

धगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. धगड़ी] किसी स्त्री का यार। उपपति।

धगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा स्त्री।

धगधगाना* [क्रि. अ.] (हिं.) (छाती या जी का) धड़कना। धकधकाना।

धगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धगड़ा'।

धगरिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चे की नाल काटने वाली स्त्री।

धगवरी [वि.] (हिं.) १–पति के मुँह लगी। पति की दुलारी। २–कुलटा। छिनाल।

धगा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धागा'।

धगुला+ [संज्ञा पु.] (देश.) हाथ में पहनने का कड़ा।

धग्गड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धगड़'।

धचकचाना+ [क्रि. स.] (देश.) डराना। दहलाना

धचकना [क्रि. अ.] (हिं.) दलदल में धँसना।

धचका [संज्ञा पु.] (देश.) झटका। झोंका। आघात। *धचका उठाना*–नुकसान उठाना।

धज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–सजावट या बनावट का अनूठा ढंग। २–सुन्दर चाल या ढंग। ३–उठने-बैठने का ढब। ठवन। ४–ठसक। नखरा। ५–आकृति या डील-डौल। रूप-रंग। शोभा। *सजधज*–साज-सामान। तैयारी।

धजबड़ [संज्ञा स्त्री.] (?) तलवार।

धजा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–ध्वजा। पताका। २–कपड़े की धज्जी। कतरन। ३–रूप-रंग। डील-डौल।

धजीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. धजीली] सजीला। तरहदार।

धज्जी [संज्ञा. स्त्री.] (हिं.) धातु, लकड़ी, कागज, कपड़े आदि की लम्बी पतली पट्टी। *धज्जियाँ उड़ाना*–१–टुकड़े-टुकड़े करना। २–किसी की पूरी दुर्गति या खंडन आदि करना। *धज्जियाँ लगना*–बहुत गरीबी आना। *धज्जियाँ लेना*–दोषों को उधेड़ना। *धज्जी हो जाना*–सूखकर दुबला-पतला हो जाना।

धट [संज्ञा पु.] (सं.) १–तुला। तराजू। २–तुला राशि। ३–तुला परीक्षा। ४–धर्म।

धटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन परिमाण जो ४२ रत्ती के बराबर होती थी।

धटकर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मुड़ी हुई लोहे की कील।

धटपरीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'तुला-परीक्षा'

धटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पाँच सेर का एक तौल। २–लँगोटी। कौपीन। ३–चीर। वस्त्र।

धटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चीर। कपड़े की धज्जी। २–कौपीन। लँगोटी। ३–वह वस्त्र जो स्त्रियों को गर्भाधान के उपरान्त दिया जाता है। [वि.] [स्त्री. धटिनी] तुलाधारक। डाँडी पकड़ने वाला। [संज्ञा पु.] १–तुला राशि। शिव।

धड़ंग [वि.] (हिं.) वस्त्रहीन। नंगा।

धड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शरीर में गले के नीचे से कमर तक का सारा भाग। २–पेड़ का तना *धड़ में डालना या उतारना*–पेट में डालना। खा जाना। *(किसी का) धड़ रह जाना*–देह सुन हो जाना। लकवा मार जाना। *धड़ से सिर अलग करना*–सिर काट लेना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अचानक गिरने या टकराने आदि का गम्भीर शब्द।

धड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–हृदय का स्पन्दन। २–दिल के कूदने या उछलने की क्रिया। ३–भय आशंका आदि से होने वाला हृदय का अधिक स्पंदन। ४–खटका। आशंका। अंदेशा।

बेधड़क–बिना किसी रुकावट या संकोच के।

धड़कन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हृदय का स्पन्दन। कलेजे का धकधक करना।

धड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) १–भय, दुर्बलता आदि के कारण हृदय का स्पन्दित होना। हृदय का धकधक करना। २–धड़धड़ शब्द होना। *कलेजा, छाती, जी या दिल धड़कना*–भय या आशंका से हृदय का स्पन्दन या धड़कन बढ़ जाना।

धड़का [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दिल की धड़कन। २–दिल धड़कने से उत्पन्न शब्द। ३–खटका। आशंका। अंदेशा। भय। ४–चिड़ियों को डराने के लिये खेतों में खड़ा किया हुआ पुतला आदि। धोखा।

धड़काना [क्रि. स.] (हिं.) १–दिल में धड़क उत्पन्न करना। २–खटका या आशंका उत्पन्न करना। जी दहलाना या डराना। ३–धड़धड़ शब्द उत्पन्न कराना।

धड़का [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धड़का'। *धूमधड़क्का*–खूब भीड़भाड़ और धूमधाम।

धड़टूटा [वि.] (हिं.) १–जिसकी कमर झुकी हुई हो। २–कुबड़ा।

धड़धड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी भारी वस्तु के एकबारगी गिरने, फेंके जाने, गमन करने या छूटने से उत्पन्न लगातार होने वाला भीषण शब्द। [क्रि. वि.] १–धड़धड़-शब्दसहित। २–बेधड़क। बिना रुकावट के।

धड़धड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) भारी वस्तु के गिरने का सा धड़धड़ शब्द होना। *धड़धड़ाता हुआ*–बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के। बेधड़क।

पौधा जिसके गोल फल के ऊपर कांटे होते हैं। इसका बीज बड़ा विषैला होता है। *धतूरा खाये फिरना*–पागल के समान घूमना।

धतूरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) ठगों का वह दल जो पथिकों को लूटने के लिए उनको धतूरा खिला कर बेहोश कर देते थे।

धत्ता [संज्ञा पु] (हिं.) १–एक छंद जिसके विषम अर्थात पहले और तीसरे चरणों में १८ और सम (दूसरे और चौथे) चरणों में सोलह मात्राएँ होती हैं। अन्त में नगण होता है। २–थाली की बारी का ढालुवाँ भाग।

धत्तानंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११, ७, और १३ के विश्राम से ३१ मात्राएँ होती हैं। अन्त में एक नगण होता है

धत्तूर [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरा।

धधक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–आग की लपट का ऊपर को उठने की क्रिया या भाव। २–आँच। लपट। लौ।

धधकना [क्रि. अ.] (हिं.) आग का इस प्रकार जलना कि लपट ऊपर उठे। दहकना। २–भड़कना।

धधकाना [क्रि. स.] (हिं.) अग्नि को प्रज्वलित करना। दहकना।

धधाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'धधकाना'।

धनंजय, धनञ्जय [वि.] (सं.) धन को जीतने वाला। धन की प्राप्त करने वाला। [संज्ञा पु.] १–अर्जुन का एक नाम। २–अर्जुनवृक्ष ३–अग्नि। ४–चित्रकवृक्ष। ५–विष्णु। ६–एक नाग का नाम। ७–शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। ८–सोलहवें द्वापर के व्यास।

धनंतर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'धन्वंतरि'। २–एक पौधा जिसकी पत्तियाँ मोटी और फूल नीचे होते हैं।

धन [संज्ञा पु.] (सं.) १–रुपया-पैसा, सोना-चाँदी आदि। द्रव्य। दौलत। २–वह सभी मूल्यवान सामिग्री जो किसी के पास हो और जो खरीदी और बेची जा सकती हो। संपत्ति। जायदाद। ३–अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। स्नेहपात्र ४–गणित में जोड़ का (+) चिह्न। ऋण का उलटा। ५–मूल। पूँजी। ६–जन्मकुंडली में लग्न से दूसरा स्थान। ७–खान से निकाली हुई कच्ची धातु। *धन उड़ाना*–धन को चटपट व्यर्थ खर्च कर डालना। ॐ[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युवती स्त्री। वधू। ॐ[वि.] (हिं.) देखो 'धन्य'।

धनक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–धन की कामना। धन की इच्छा। २–राजा कृतवीर्य के पिता का नाम। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–धनुष। कमान। २–एक प्रकार का पतला गोटा। ३–एक प्रकार की ओढ़नी। ४–इन्द्रधनुष। (क्वचित्)

धनकटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–धान की कटाई या कटाई का समय। २–एक प्रकार का कपड़ा।

धनकर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार की कड़ी मिट्टी जिसमें धान बोया जाता है। २–वह खेत जिसमें धान बोया जाता है।

धनकुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–धान कूटने का कार्य। २–ओखली मूसल आदि धान कूटने के औजार। ३–एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो जौ के बराबर होता है।

धन-कुबेर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के समान धनी अत्यन्त धनी।

धन-केलि [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

धनकोटा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिसका कागज बनता है। सतबरवा। चमोई।

धनक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) धन का नाश। दौलत की बरबादी।

धनखर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत जो (कुआरी) धान बोने के काम में आता है।

धनगर्व [संज्ञा पु.] (सं.) धन का गर्व या घमंड।

धनगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) धन की बड़े यत्न से रक्षा करने वाला मनुष्य।

धनचिड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया।

धनतेरस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कार्तिककृष्णा त्रयोदशी जो दिवाली के दो दिन पहले होती है। इस दिन रात को लक्ष्मीपूजन किया जाता है

धनदंड, धनदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) धन के रूप में दिया जाने वाला दंड। जुरमाना।

धनद [वि.] (सं.) धन देने वाला। [संज्ञा पु.] कुबेर।

धनदतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रजस्थित कुबेर-तीर्थ का नाम।

धनदत्त [वि.] (सं.) धन देने वाला।

धनदा [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) धन देने वाली। [संज्ञा स्त्री.] १–अश्विनकृष्णा-एकादशी। २–एक देवी का नाम।

धनदाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लताकरंज।

धनदायन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पौधा जिसके काढ़े से ऊन में मांड़ी दी जाती है।

धनदायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम।

धनदायी [वि.] (सं.) धन देने वाला। [संज्ञा पु.] अग्नि।

धनदेव [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

धन-धान्य [संज्ञा पु.] (सं.) धन और अन्न जो सम्पन्नता या समृद्धि के सूचक माने गये हैं।

धन-धाम [संज्ञा पु.] (सं.) घरबार और रुपया-पैसा

धनधारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बहुत बड़ा धनी। २–कुबेर।

धननंद, धननन्द [संज्ञा पु.] (सं.) मगध के नंदवंश के अन्तिम राजा का नाम।

धननाथ [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर (जो धन के अधि-

उठाता हैं)।

धन-पत्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहीखाते आदि में वह पत्त जिसमें आमद की रकम आदि अंकित की जाती है। जमावाला पत्त। क्रेडिटसाइड। २-वह पत्त जिसमें पूंजीलाभ या उपयोगी बातों का उल्लेख हो।

धनपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर। २-शरीर के एक वायु का नाम।

धनपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिसाब लिखने का बही-खाता।

धनपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) धनवान। धनी।

धनपाल [वि.] (सं.) धन की रत्ता करने वाला [संज्ञा पु.] कुबेर।

धनपिशाचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धन की आशा। २-धन का लोभ या लालच।

धनप्रयोग [संज्ञा प.] (सं.) धन को किसी व्यापार या उद्योग-धंधे में लगाने का काम।

धनप्रिया [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छोटा जामुन।

धनमद [संज्ञा पु.] (सं.) धन का घमंड।

धनमाली [संज्ञा पु.] (सं.) एक अस्त्र का संहार।

धनमूल [वि.] (सं.) धन का लोभी या लालची।

धनलोभ [संज्ञा पु.] (सं.) धन की अभिलाषा।

धनवंत, धनवन्त [वि.] (सं.) देखो 'धनवान'।

धनवती [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) धन रखने वाली। [संज्ञा स्त्री.] धनिष्ठानत्तत्र।

धनवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास। ❋ [संज्ञा पु.] देखो 'धन्वा'।

धनवान् [वि.] (सं.) (स्त्री. धनवती) जिसके पास धन हो। धनी। सम्पन्न। अमीर।

धनशाली [वि.] (सं.) (स्त्री. धनशालिनी) धनिक। धनी। धनवान। अमीर।

धनसंचय, धनसञ्चय [संज्ञा पु.] (सं.) धन का इकट्ठा करना।

धनसार [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज रखने की कोठरी।

धनसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक चिड़िया का नाम।

धनसू [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनेस नामक चिड़िया २-धन का संचय।

धनस्थ [वि.] (सं.) धनवाला। धनवान। धनी। अमीर।

धनस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मकुण्डली में लग्न से दूसरा स्थान।

धनस्पृहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन की अभिलाषा।

धनस्यक [वि.] (सं.) धन की लालसा रखने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) गोत्तुरक। गोखरू।

धनस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

धनहर [वि.] (सं.) धन हरने वाला। धन चुराने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। लुटेरा। २-चोर नामक गंधद्रव्य।

धनहारी [वि.] (सं.) दूसरे के धन का वारिस या उत्तराधिकारी।

धनहीन [वि.] (सं.) निर्धन। गरीब। कंगाल।

धनहृत [वि.] (सं.) धन हरने वाला।

धना [संज्ञा स्त्री.] (?) एक रागिनी का नाम। ❋[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-युवती। २-वधू।

धनाकांक्षा, धनाकाङ्क्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन की अभिलाषा।

धनागम [संज्ञा पु.] (सं.) धन की प्राप्ति। धन का मिलना।

धनाढ्य [वि.] (सं.) धनवान। अमीर। मालदार धनी।

धनाणु [संज्ञा पु.] (सं.) वह अणु जो सर्वदा धनात्मक विद्युत से आविष्ट रहता है।

धनाधिकारी [संज्ञा पु.](सं.) कोषाध्यत्त। खजांची

धनाधिकृत [वि.] (सं.) धन देकर लिया हुआ।

धनाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

धनाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर। २-कोषाध्यत्त। खजांची।

धनाध्यत्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-खजांची। २-कुबेर

धनाना [क्रि. अ.] (हिं.) गाय आदि का गर्भवती होना। [क्रि. स.] (हिं.) गाय का साँड़ से संयोग कराना।

धनार्थ [वि.] (सं.) धन के निमित्त। धन के लिए

धनार्थी [वि.] (सं.) धन चाहने वाला। रुपया पैसा मांगने वाला।

धनाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धन की आशा। २-धन का लोभ। धन का लालच।

धनाश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी जो श्रीराग की तीसरी पत्नी मानी जाती है।

धनि❋ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्नी। वधू। [वि.] (हिं.) देखो 'धन्य'।

धनिक [वि.] (सं.) धनवाला। धनी। मालदार। धनवान्। [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनी मनुष्य। २-पति। स्वामी। ३-रुपया उधार देने वाला मनुष्य। महाजन। ४-धनिया।

धनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धनी स्त्री। २-वधू। पत्नी। ३-प्रियंगुवृत्त।

धनिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनाढ्यता। मालदारी।

धनियाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी सुगंधित पत्तियां होती हैं। २-इस पौधे के फल जो गोल दाने के समान होता हैं और मसाले के काम में आते है। *धनिये की खोपड़ी में पानी पिलाना*-प्यासों मारना। बहुत दुखी करना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युवती स्त्री। वधू।

धनियामाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में पहनने का एक गहना।

धनिष्ठ [वि.] (सं.) धनी। धनाढ्य।

धनिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवां नक्षत्र जो नव उर्ध्व नक्षत्रों में से है और जिसमें पांच तारे संयुक्त हैं।

धनी [वि.] (हिं.) १-धनवाला। धनवान्। माल-दार। अमीर। २-जिसके पास कोई गुण या किसी विषय में दक्षता रखता हो। जैसे-तल-वार का धनी।

धनी-धोरी-धन और मर्य्यादा वाला। धनी-मानी-धनी और प्रतिष्ठित। बात का धनी-बात पर दृढ़ रहने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनवान आदमी। २-अधिपति। मालिक। स्वामी। ३-पति। शौहर। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युवती स्त्री या वधु।

धनीयक [संज्ञा प.] (सं.) धन्याक। धनियां।

धनुःपट [संज्ञा पु.] (सं.) पियालवृक्ष।

धनुःशाखा [संज्ञा पु.] (सं.) पियालवृक्ष।

धनुःश्रेणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मुर्वा। मुर्रा। २-महेन्द्रवारुणी।

धनु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाप। कमान। २-ज्योतिष की बारह राशियों में से नवीं। ३-फलित ज्योतिष में एक लग्न विशेष जिसका परिमाण। ५।१७।२० है। ४-एक आसन का नाम (हठयोग)। ५-पियाल नामक वृक्ष। ६-चार हाथ के बराबर की एक नाप। ७-गोल क्षेत्र के आधे से कम अंश का क्षेत्र।

धनुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. धनुई] १-धनुष। कमान। २-रूई धुनने की धुनकी।

धनुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा धनुष।

धनुक❋ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनुष। कमान। २-इन्द्रधनुष।

धनुकना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धुनकना'।

धनुकवाई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वायु रोग जिसमें जबड़े बैठ जाते हैं और मुंह नहीं खुलता।

धनुकेतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पु

धनुर्गुण [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष की डोरी। चिल्ला

धनुर्गुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरोरफली। मुरहार।

धनुर्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुर्धर। २-धनुर्विद्या। ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

धनुद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) बांस का पेड़।

धनुर्द्धर, धनुर्धर [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष धारण करने वाला पुरुष। तीरंदाज। २-धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति। ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

धनुर्द्धारी, धनुर्धारी [वि.] (सं.) [स्त्री. धनुर्द्धारिणी, धनुर्धारिणी] धनुष धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] देखो 'धनुर्द्धर'।

धनुर्भृत [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष धारण करने वाला योद्धा। वीर।

धनुर्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ। धनुर्यज्ञ।

धनुर्मध्य [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष का मध्य भाग जिसको पकड़कर तीर छोड़ा जाता है।

धनुर्मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष की टेढ़ी रेखा। [वि.] वक्र। टेढ़ा।

धनुर्माला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरोरफली।

धनुर्यज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह यज्ञ जिसे राजा जनक ने सीता के स्वयंवर के लिए किया था। २-एक यज्ञ जिसमें धनुष का पूजन और चलाने की परीक्षा होती है।

धनुर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) जवासा।

धनुर्लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

धनुर्वक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

धनुर्वात [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'धनुकबाई'। २-एक वात या वायुरोग जिसमें शरीर धनुष के समान टेढ़ा हो जाता है।

धनुर्विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष चलाने की विद्या। तीरंदाजी। तीर चलाने का हुनर।

धनुर्बीज [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

धनुर्वृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-धामिनी का पेड़। २-बाँस। ३-भिलावाँ। ४-पीपल का पेड़।

धनुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) यजुर्वेद का उपवेद जिसमें धनुष चलाने की विद्या निरूपण है।

धनुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस या लोहे के छड़ को कुछ लचकाकर दोनों सिरों के बीच में डोरी बाँधकर बनाया हुआ अस्त्र जिससे तीर या बाण चलाते हैं। २-चार हाथ के बराबर की एक नाप।

धनुष्टंकार, धनुषटङ्कार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष पर बाण खींचने से उत्पन्न 'टन' शब्द [संज्ञा पु.] वह भीषण और घातक रोग जो व्रण या क्षत के विषाक्त होने के कारण होता है। इससे गरदन और पीठ अकड़ कर धनुष के समान टेढ़ी हो जाती है। टिटानस।

धनुषाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

धनुष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष बनाने वाला।

धनुष्कोटि [संज्ञा पु.] (सं.) रामेश्वर का दक्षिण का तीर्थ जहां समुद्र में स्नान करने का माहात्म्य है।

धनुष्पाणि [वि] (सं) जो हाथ मे धनुष लिये हो।

धनुष्मान् [संज्ञा, पु] (सं.) बृहत्संहिता के अनुसार उत्तर दिशा के एक पर्वत का नाम।

धनुस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर फेंकने का एक अस्त्र। धनुष। कमान। २-ज्योतिष में एक राशि। धनुराशि। ३-एक लग्न। ४-हठयोग का एक आसन। ५-पियाल नामक एक वृक्ष ६-चार हाथ के बराबर की एक माप। ७-गोल-क्षेत्र के आधे से कम अंश का क्षेत्र।

धनुहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धनुष से होने वाली लड़ाई।

धनुहिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़कों के खेलने का साधारण और छोटा धनुष।

धनुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़कों के खेलने की एक कमाने।

धनेयक [संज्ञा पु.] (सं.) धनियाँ।

धनेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन का स्वामी। २-कुबेर। विष्णु। ४-लग्न से दूसरा स्थान।

धनेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन का अधिपति। २-कुबेर। ३-विष्णु।

धनेस [संज्ञा पु] (हिं.) बगुले के आकार का एक पक्षी जिसकी गरदन और चोंच लम्बी होती है।

धनैश्वर्य [संज्ञा पु.](सं.) धन। संपत्ति।

धनैषी [वि.] (सं.) धन का इच्छुक। धन चाहने वाला।

धन्न* [वि.] (हिं.) देखो 'धन्य'।

धन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धरना'। [वि.] (हिं.) धनवाला। धनिक।

धन्नासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की रागिनी जो वीर और शृंगार-रस के लिए गाई जाती है।

धन्ना-सेठ [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत धनी व्यक्ति। प्रसिद्ध-धनाढ्य। *धन्ना सेठ का नाती*—बहुत मालदार कुल का (व्यंग्य)।

धब्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गाय बैलों की एक जाति। २-घोड़ों की एक जाति। ३-बेगारी। बेगार का आदमी।

धन्य [वि.] (सं.) (स्त्री. धन्या) १-प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। श्लाघ्य। २-सुकृती। पुण्यवान। ३-धन देने वाला। [संज्ञा पु.] १-विष्णु। २-नास्तिक। ३-धनिया।

धन्यवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधुवाद। प्रशंसा। शाबाशी। २-किसी प्रकार, अनुग्रह आदि के बदले में प्रशंसा या कृतज्ञतासूचक शब्द। शुक्रिया।

धन्यव्रत [संज्ञा पु.) (सं.) धन-जन के लिये किया जाने वाला व्रत।

धन्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-उपमाता। २-बनदेवी ३-मनु की एक कन्या का नाम। ४-छोटा आँवला। ५-धनिया।

धन्याक [संज्ञा पु.] (सं.) धनिया।

धन्वंग, धन्वङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) धामिन का पेड़

धन्वंतर, धन्वन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) चार हाथ के बराबर की एक नाप।

धन्वंतरि, धन्वन्तरि [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्रमन्थन के समय समुद्र से निकले बताये जाते हैं।

धन्वंतरिग्रस्ता, धन्वन्तरिग्रस्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) कुटकी।

धन्व [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष। कमान।

धन्वचर [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष चलाकर जीविका चलाने वाला व्यक्ति।

धन्वज [वि.] (सं.) मरुदेश में उत्पन्न।

धन्वतरु [संज्ञा पु.] (सं.) सोमवल्ली।

धन्वदुर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा दुर्ग या गढ़ जिसके चारों ओर पांच-पांच योजन तक मरुभूमि हो।

धन्वन [संज्ञा पु.] (सं.) धामिन का पेड़।

धन्वपति [संज्ञा पु.] (सं.) मरुदेश का राजा।

धन्वयावस [संज्ञा पु.] (सं.) जवासा। दुरालभा।

धन्वसह [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुर्धर। २-योद्धा वीर।

धन्वा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनुष। कमान। चाप। २-मरुभूमि। रेगिस्तान। ३-सूखी जमीन। ४-आकाश।

धन्वाकार [वि.] (सं.) धनुष के आकार का। धनुष की सी गोलाई में झुका हुआ।

धन्वायी [वि.] (सं.) धनुष धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] १-धनुर्द्धर। २-रुद्र।

धन्विन [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

धन्वी [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुर्द्धर। २-वीर। ३-निपुण। ४-विष्णु। ५-महादेव। ६-धनुराशि। ७-अर्जुन (पांडव)। ८-जवासा। ९-मौलसिरी।

धप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी भारी और मुलायम वस्तु के गिरने का शब्द। [संज्ञा पु.] धौल। थप्पड़। तमाचा।

धपना [क्रि. अ.] (हिं.) १-तेजी से आगे बढ़ना। झपटना। २-मारना। पीटना।

धपाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-दौड़ाना। २-इधर उधर फिराना। घुमाना। सैर कराना।

धप्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धौल। थप्पड़। तमाचा। २-हानि का आघात। घाटा। टहलना। *धप्पा मारना*—धोखा देकर कुछ माल ले उड़ना।

धप्पाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दौड़।

धबधब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी भारी और मुलायम वस्तु के गिरने का शब्द। २-भद्दे और मोटे आदमी के पैर रखने का शब्द।

धबला [संज्ञा पु.] (देश.) १-ढीला पायजामा। २-स्त्रियों का लहँगा। घाघरा।

धब्बा [संज्ञा पु.] (देश.) १-किसी तल या सतह पर पड़ा हुआ भद्दा चिह्न या निशान। दाग। २-कलंक। दोष। ऐब। लांछन। *नाम में धब्बा लगाना*—कीर्त्ति नष्ट करने वाला काम करना। *(किसी पर) धब्बा रखना*—कलंक लगाना। दोषारोपण करना।

धमंकना* [क्रि स.] (हिं.) नष्ट करना।

धम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भारी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।

धमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भारी वस्तु के गिरने का 'धम' शब्द। २-पैर रखने की आवाज।

पैर की आहट । ३-किसी भारी वस्तु के चलने से पृथ्वी पर होने वाला कंप और शब्द । ४-वह आघात जो किसी भारी शब्द से हृदय पर मालूम हो । दहल । [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. धमिका) १-धौंकने वाला । २-लोहार ।

धमकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-'धम' शब्द-सहित गिरना । धमका करना । २-दर्द करना । (सिर) *आ धमकना*-अवाँछित रूप से पहुँचना । *जा धमकना*-जा पहुंचना ।

धमकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भय या डर दिखाना । दंड देने अथवा अनिष्ट करने का विचार प्रकट करना । ३-डाँटना-घुड़कना ।

धमकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दंड देने या अनिष्ट करने का भय दिखाना । २-घुड़की । डाँट-डपट । *धमकी में आना*-किसी के डराने से डर कर कोई काम कर बैठना ।

धमक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धमाका' ।

धमगजर [संज्ञा पु.] (देश.) १-उत्पात । उपद्रव । २-युद्ध । लड़ाई ।

धमधम [संज्ञा पु.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे ।

धमधमाना [क्रि. अ.] (हिं.) 'धम-धम' शब्द करना

धमधूसर [वि.] (हिं.) भद्दा और मोटा आदमी । स्थूल और बेडौल आदमी ।

धमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवा से फूंकने का काम फुकनी । धौंकनी । ३-नरकट । नरसल ।

धमना [क्रि. स.] (हिं.) धौंकना । फूंकना ।

धमनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाड़ी । धमनी । २-वाक् । शब्द ।

धमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर में की वह नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता हैं । सुश्रुत के मतानुसार धमनियाँ २४ हैं और नाभि से निकलकर दस ऊपर की ओर, दस नीचे की ओर तथा चार बगल की ओर गई हैं, पर इनकी हजारों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं । २-वह नली जिसमें हृदय से शुद्ध रक्त निकलकर शरीर में फैलता है । नाड़ी ३-हलदी ।

धमसा [संज्ञा पु.] (हिं.) नगाड़ा । धौंसा ।

धमाका [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु के गिरने का शब्द । बंदूक, तोप आदि का शब्द । ३-आघात । धक्का । ४-हाथी पर लाद कर चलाई जाने वाली एक प्रकार की बड़ी तोप ।

धमाचौकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उछलकूद । कूद-फाँद । मार-पीट । धींगाधींगी । उपद्रव ।

धमाधम [क्रि. वि.] (हिं.) बारम्बार । 'धम-धम' शब्द सहित । २-लगातार प्रहार के शब्दों सहित । [संज्ञा स्त्री.] १-लगातार गिरने पड़ने का 'धमधम' शब्द । २-आघात-प्रतिघात । उपद्रव । उत्पात ।

धमाना* [क्रि. स.] (?) जोर से हवा करना । धौंकना ।

धमार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उछलकूद । धमाचौकड़ी । २-नटों की कलाबाजी या उछलकूद । ३-एक विशेष प्रकार के साधुओं का दहकती हुई आग पर चलना । [संज्ञा पु.] १-एक प्रकार का गीत जो होली के दिनों में गाया जाता है । २-होली में गाने का एक ताल

धमारिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उछलकूद दिखाने वाला नट । कलाबाज । २-होली की धमार गाने वाला । ३-दहकते हुए अंगार पर चलने वाला साधु [वि.] उपद्रव करने वाला । शांत न रहने वाला ।

धमारी [वि.] (हिं.) उपद्रवी । उत्पाती ।

धमाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धमार' ।

धमासा [संज्ञा पु.] (हिं.) जवासा । दुलाह ।

धमि+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धमनी । नाड़ी । २-अंतड़ी ।

धमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लोहारिन । २-लोहार की स्त्री ।

धमूका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धमाका । प्रहार । २-घूंसा । मुक्का ।

धमेख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुद्धकाल का एक स्तूप जो काशी से दो कोस की दूरी पर है ।

धम्म [संज्ञा पु.] (हिं.) बौद्धधर्म वाले धर्म को धम्म बोलते हैं ।

धम्मन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का घास

धम्माल [संज्ञा स्त्री., पु.] देखो 'धमार' ।

धम्मिल्ल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लपेटकर बाँधे हुए बाल । जूड़ा ।

धम्हा+ [संज्ञा पु.] (देश.) धातु गलाने की भट्टी

धरंता*+ [वि.](हिं.) धरने वाला । पकड़नेवाला

धर [वि.] (सं.) १-धारण करने वाला । ऊपर लेने वाला । ग्रहण करने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत । पहाड़ । २-कपास डोडा । ३-कच्छप जो पृथ्वी को ऊपर लिये है । ४-एक वस्तु का नाम । ५-विष्णु । ६-श्रीकृष्ण । व्यभिचारी पुरुष । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धड़' [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धरने या पकड़ने की क्रिया । यौ०-*धर पकड़*-भागते हुए अपराधियों को पकड़ने का काम । गिरफ्तारी ।

धरक*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धड़क' ।

धरकना [क्रि. अ.) (हिं.) देखो 'धड़कना' ।

धरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-धारण करने की क्रिया रखने, संभालने, थामने या ग्रहण करने की क्रिया २-एक तौल । ३-बाँध । ४-पुल । ५-संसार । जगत् । ६-सूर्य । ७-स्तन । ८-धान । ९-एक नाग का नाम ।

धरणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी । शाल्मलि वृक्ष

धरणिज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगल । २-नरकासुर । ३-पृथ्वी में से उत्पन्न पानी का सोता ।

धरणिधर [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी को धारण करने वाला—१-शिव । २-विष्णु । ३-पर्वत ४-शेषनाग । ५-कच्छप ।

धरणिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष । पेड़ ।

धरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी । २-शाल्मलि वृक्ष । ३-नाड़ी ।

धरणीकंद, धरणीकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक कंद का नाम ।

धरणीकीलक [संज्ञा पु.] (सं.) (पृथ्वी को कील के समान दबाये रखने वाला) पर्वत । पहाड़ ।

धरणीधर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'धरणिधर' ।

धरणीधृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत । २-[illegible] देव ।

धरणीपूर [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

धरणीभृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत । विष्णु ।

धरणीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-विष्णु । ३-राजा ।

धरणीसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगल । २-नरकासुर ।

धरणीसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता ।

धरता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी के रुपयों का देनदार । ऋणी । कर्जदार । २-किसी कार्य का भार लेने वाला । ३-ऋण । कर्ज । *कर्त्ता धरता*-सब कुछ करने वाला ।

धरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पृथ्वी । जमीन । २-संसार । जगत ।

धरती का फूल-१-खुमी । कुकुरमुत्ता । २-थोड़े दिनों का अमीर । ३-मेढक । *धरती बाहना*-१-जमीन जोतना । २-परिश्रम करना ।

धरधर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धराधर' । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धड़धड़' ।

धरधरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धड़कन । धकधकाहट ।

धरधराना*+ [क्रि. अ.] (हिं.), [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धड़धड़ाना' ।

धरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धरने की क्रिया, भाव या ढंग । २-वह लम्बा और मोटा शहतीर जो छत का बोझ सँभालने के लिए दीवारों या खम्भों पर आड़ा रखा जाता है । बड़ी कड़ी । ३-गर्भाशय को दृढ़ता से पकड़े रहने वाली नस । गर्भाशय का आधार । ४-टेक । हठ । अड़ । ५-गर्भाशय । *धरन टलना, डिगना, खसकना या सरकना*-गर्भाशय की नस का अपने स्थान से हट जाना । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धरना' । + [संज्ञा स्त्री.] धरती । जमीन ।

धरनहार* [वि.] (हिं.) १-धारण करने वाला । २-पकड़ने वाला ।

धरना [क्रि. स.] (हिं.) १-पकड़ना । थामना । २-ग्रहण करना । ३-स्थापित करना । रखना । ठहराना । ४-धारण करना । पहनना । ५-आरोपित करना । अंगीकार करना । ६-अधिकार या रक्षा में लेना । ७-किसी का पल्ला पकड़ना । आश्रय लेना । ८-किसी फैलने वाली वस्तु का किसी अन्य वस्तु में लग

२-सतह। वह तल जिसमें केवल लम्बाई-चौड़ाई हो और मोटाई या गहराई न हो। ३-लम्बाई और चौड़ाई का गुणनफल। क्षेत्रफल। रकबा।

धरात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगलग्रह। २-नरकासुर।

धरात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

धराधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। २-विष्णु। ३-शेषनाग। [वि.] पृथ्वी को धारण करने वाला।

धराधरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धराधर'।

धराधरा [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताल का नाम।

धराधार [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

धराधारधारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

धराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) नृप। राजा।

धराधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) नृप। राजा।

धराधीश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

धराना [क्रि. स.] (हिं.) १-पकड़ाना। थमाना। स्थित करना। रखाना। ३-स्थिर करना। ठहराना।

धरापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

धराभृत [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी का मालिक।

धरामय [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण

धरावट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमीन की वह माप या क्षेत्रफल जो कूतकर मान लिया गया हो।

धरावना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धराना'।

धरासुर+ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

धरासून [संज्ञा पु.] (सं.) १-नरकासुर। २-मंगलग्रह।

धरास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अस्त्र।

धराहर [संज्ञा पु.] (हिं.) मीनार।

धरिंगा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चावल

धरित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धरती। पृथ्वी।

धरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चार सेर की एक तौल। २-रखेल स्त्री। रखनी। २-कान में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

धरुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-अग्नि। ३-पृथ्वी। ४-सूर्य। ५-ब्रह्मा। ६-स्वर्ग। ७-इक्कीस की संख्या।

धरेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धरेला'।

धरेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रखेली स्त्री। उपपत्नी

धरेला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पति जिसे कोई स्त्री बिना विवाह के ही ग्रहण करे।

धरेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उपपत्नी। रखेली।

धरैया [वि.] (हिं.) धरने वाला। २-पकड़ने वाला

धरोड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धरोहर'।

धरोहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह वस्तु या द्रव्य जो किसी के पास इस विश्वास पर रखा हो कि जब उसका स्वामी मांगे तब वह (वस्तु या द्रव्य) वापस कर दिया जायेगा। अमानत। थाती।

धरौली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक छोटा पेड़ जिसके बीजों का तेल और छाल दवा के काम आते हैं।

धरौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बिना विधिपूर्वक विवाह किए स्त्री को रखने की चाल।

धर्णि [वि.] (सं.) धारण करने वाला।

धर्तव्य [वि.] (सं.) १-धरने योग्य। २-पकड़ने योग्य। ३-रहने योग्य। ४-गिरने योग्य।

धर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-धारण करने वाला। २-अपने ऊपर भार लेने वाला। *कर्त्ता-धर्त्ता*-सब कुछ करने वाला। सब कामों का मालिक

धर्त्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धरती'।

धर्तूर [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरा।

धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे, उससे कभी अलग न हो। प्रकृति। स्वभाव। २-अलंकार शास्त्र में वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो। ३-किसी मान्य, ग्रन्थ, आचार्य या ऋषि द्वारा निर्दिष्ट वह कर्म जो पारलौकिक सुख की प्राप्ति के अर्थ से किया जाय। ४-वह कर्म जिसका करना किसी सम्बन्ध, स्थिति अथवा गुण विशेष के विचार से उचित और आवश्यक हो। किसी जाति, वर्ग, पद आदि के लिए निश्चित किया हुआ कार्य या व्यवहार। कर्त्तव्य। जैसे—ब्राह्मण का धर्म, माता-पिता का धर्म। ५-वह वृत्ति या आचरण जो लोक या समाज की स्थिति के लिए आवश्यक हो। वह आचार जिसके द्वारा समाज की रक्षा और सुख-शान्ति की वृद्धि हो और पर लोक में भी उत्तम गति प्राप्त हो। सत्कर्म। सुकृति। सदाचार। ६-किसी आचार्य आदि द्वारा प्रवर्त्तित ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में विशेष रूप का विश्वास और आराधना की विशेष प्रणाली। पंथ। मजहब। मत। ७-आपसी व्यवहार-सम्बन्धी नियम का पालन जो किसी राजा आचार्य या मध्यस्थ द्वारा कराया जाय। नीति। न्याय-व्यवस्था। ८-उचित-अनुचित का विचार करने वाली चित्तवृत्ति। ईमान। *धर्म कमाना*-धर्म करके उसका फल संचित करना। *धर्म खाना*-धर्म की शपथ खाना। *धर्म बिगाड़ना*-१-धर्म के विपरीत आचरण करना २-स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। *धर्म रखना*-धर्म बचना या बचाना। *धर्म लगती कहना*-सच्ची बात कहना। *धर्म में आना*-अन्तःकरण में ठीक जान पड़ना।

धर्मकथक [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का उपदेश करने वाला।

धर्मकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) वह कृत्य जिसका करना किसी धर्मग्रन्थ में आवश्यक बताया गया हो।

जैसे-संध्योपासन आदि ।

धर्मकाय [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

धर्मकार [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्र का प्रणेता ।

धर्मकील [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का शासन ।

धर्मकूप [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम ।

धर्मकृत [वि.] (सं.) धर्म करने वाला । [संज्ञा पु.] विष्णु ।

धर्मकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १–सुकेत राजा के पुत्र का नाम । २–बुद्धदेव ।

धर्मकोष [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मरूप रक्षणीय वस्तु

धर्म-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–कर्मभूमि । भारत देश जो धर्मकार्यों के लिए विशिष्ट क्षेत्र माना गया है । २–कुरुक्षेत्र ।

धर्मग्रंथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रन्थ या पुस्तक जिसमें किसी जनसमाज के आचार-व्यवहार तथा उपासना के संबंध में शिक्षा दी गई हो ।

धर्मघट [संज्ञा पु.] (सं.) सुगन्धित जल से भरा हुआ वह घड़ा जिसे दान में देने का माहात्म्य काशीखंड, हेमाद्रि-दानखंड आदि में है ।

धर्मघड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊँचे स्थान पर टाँगी हुई घड़ी जिसमें सब कोई समय देखकर लाभ उठा सकें ।

धर्मघ्न [वि.] (सं.) धर्मद्वेषी । धर्मनाशक ।

धर्मचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्म का समूह । २–प्राचीनकाल का एक अस्त्र । ३—बुद्धदेव । ४–बुद्धदेव की धर्मशिक्षा जिसका प्रारम्भ काशी से हुआ था ।

धर्मचर्य्या, धर्मचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म का आचरण और पालन ।

धर्मचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहधर्मिणी । [वि.] [स्त्री. प्र.] धर्म के अनुसार आचरण करने वाली ।

धर्मचारी [वि.] (सं.) [स्त्री. धर्मचारिणी] धर्मानुसार आचरण करने वाला ।

धर्मचिंतक, धर्मचिन्तक [वि.] (सं.) धर्म से सम्बन्ध रखने वाली बातों का विचार करने वाला ।

धर्मचिंतन, धर्मचिन्तन [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म-सम्बन्धी बातों का विचार । धर्म की भावना

धर्मचिंता, धर्मचिन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म-विषयक चिन्ता या विचार ।

धर्मच्युत [वि.] (सं.) अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ ।

धर्मच्युति [संज्ञा स्त्री] (सं.) धर्म से गिरने या च्युत होने की अवस्था या भाव ।

धर्मज [वि.] (सं.) धर्म से उत्पन्न । [संज्ञा पु.] १–धर्मपत्नी से उत्पन्न और सपुत्र । २–धर्मपुत्र युधिष्ठिर । ३–एक बुद्ध का नाम । ४–नर-नारायण ।

धर्मजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) युधिष्ठिर ।

धर्मजन्य [वि.] (सं.) धर्म से उत्पन्न होने वाला (सुख) ।

धर्मजिज्ञासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म के संबंध में शंका उत्पन्न होने पर वेदवाक्य द्वारा धर्म की मीमांसा ।

धर्मजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मकृत्य कराकर जीविका कमाने वाला । ब्राह्मण ।

धर्मज्ञ [वि.] (सं.) धर्म को जानने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) युधिष्ठिर ।

धर्मण [संज्ञा पु.] (सं.) १–धामिनवृक्ष । २–धामिन सर्प । ३–धामिनपक्षी ।

धर्मणा [क्रि. वि.] (सं.) धर्म के विचार से । धर्म के अनुसार ।

धर्मतः [अव्य.] (सं.) धर्म को साक्षी करके । धर्म का ध्यान रखते हुए ।

धर्मतत्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का गुप्त मर्म ।

धर्मद [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मोत्पादक । [वि.] (सं.) धर्म देने वाला ।

धर्मदान [संज्ञा पु.](सं.) वह दान जो धर्म समझकर केवल सात्विक बुद्धि की प्रेरणा से किया जाय ।

धर्मदार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मपत्नी ।

धर्मद्रवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगानदी ।

धर्मद्रोही [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्म का द्रोही या वैरी । २–राक्षस ।

धर्मद्वेषी [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्मद्रोही । २–राक्षस

धर्म-धक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १–धर्म के निमित्त उठाया जाने वाला कष्ट । २–वह कष्ट या प्रयत्न जिसमें अपना कोई लाभ या स्वार्थ न हो । व्यर्थ का कष्ट ।

धर्मधातु [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

धर्मध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्म का आडम्बर रचकर स्वार्थ साधने वाला मनुष्य । पाखंडी । २–मिथला । देश के जनकवंशीय एक राजा जो परमज्ञानी थे ।

धर्मध्वजी [संज्ञा पु.] (हिं.) पाखंडी ।

धर्मनंदन, धर्मनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मपुत्र । युधिष्ठिर ।

धर्मनंदी [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध पंडित का नाम ।

धर्मनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के पन्द्रहवें तीर्थंकर ।

धर्मनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु । २–एक नदी का नाम ।

धर्मनिष्ठ [वि.] (सं.) धर्म में निष्ठा, आस्था या श्रद्धा रखने वाला । धार्मिक । धर्मपरायण ।

धर्मनिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म में आस्था, श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति ।

धर्मनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें
अन्तर्गत कर्तव्या-कर्तव्य और उसके
का निरूपण हो ।

धर्मपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यवस्था-पत्र जो
किसी राजा अथवा किसी धर्माधिकारी की
ओर से दिया जाय ।

धर्मपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्म पर
रखने वाला व्यक्ति । धर्मात्मा । २–

धर्मपत्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १–दक्षिणदेश के
का एक जनस्थान जो कदाचित
मालाबार जिले के आसपास रहा हो ।
श्रावस्तीनगरी । ३–गोलमिर्च ।

धर्मपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म या धर्मशास्त्र
की रीति से व्याही हुई स्त्री । विवाहित स्त्री ।

धर्मपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर ।

धर्मपथ [संज्ञा पु.] (सं.) धर्ममार्ग । कर्तव्य-पथ ।

धर्मपर [वि.] (सं.) जिसकी धर्म में आस्था या
श्रद्धा हो ।

धर्मपरायण [वि.] (सं.) सदा धर्म के कार्यों का
यथाशक्ति अनुष्ठान करने वाला ।

धर्मपरिणाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक धर्म के निवृत्त
होने पर दूसरे धर्म की प्राप्ति । जैसे–
के पिंडतारूप धर्म के निवृत्त होने पर
रूप धर्म की प्राप्ति ।

धर्मपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्म का पालन वा
रक्षा करने वाला । २–दंड (जिसके भय से
कारण लोग धर्म का पालन करते हैं) ३–
दशरथ के एक मन्त्री का नाम ।

धर्मपाश [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म अथवा न्याय का
वंधन ।

धर्मपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का मुख्य स्थान ।
२–काशी । ३–वह स्थान जहाँ से धर्म की
व्यवस्था मिले ।

धर्मपीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म अथवा न्याय के
विरुद्ध आचरण ।

धर्मपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–धर्म के पुत्र, युधि-
ष्ठिर । २–नर-नारायण । ३–धर्म के
ग्रहण किया हुआ या बनाया हुआ पुत्र ।

धर्मपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–यमपुरी । २–
लय । कचहरी ।

धर्म-पुस्तक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पुस्तक जो
किसी धर्म का मूल आधार हो । किसी धर्म
का आधार ग्रन्थ ।

धर्मपूत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धर्मपुत्र' ।

धर्मप्रचार [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म-सम्बन्धी विचारों
का प्रचार ।

धर्मप्रचारक [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का प्रचार करने
के लिए इधर उधर घूम कर व्याख्यान देने
वाला या धर्म-मर्म समझाने वाला ।

धर्मप्रतिरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसे व्यक्ति
दिया गया दान जिसके अपने कुटुम्बी

[illegible] में हों [मनु के अनुसार यह धर्म नहीं बल्कि धर्म का प्रतिरूपक (नकल) है]।

धर्मप्रदीप [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का प्रदीप अर्थात् [illegible]। [वि.] (सं.) धर्मनिष्ठा।

धर्मप्रभास [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव का एक नाम

[illegible] [वि.] (सं.) धर्म ही जिसका साक्षी हो।

धर्मप्रवर्तन [संज्ञा पु.] (सं) बुद्धदेव का एक नाम।

धर्मप्रवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का निर्णायक।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं) धर्म में श्रद्धा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग में बहने वाली एक नदी का नाम।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म की शक्ति।

धर्मबुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म-अधर्म या भले बुरे का विचार।

धर्मभगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मानुसार मानी हुई बहन। २-गुरु की कन्या।

धर्मभय [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का भय (ऐसा विश्वास कि अधर्म करने से नरकयातना भोगनी पड़ती है)।

धर्मभाणक [संज्ञा पु.] (सं.) कथा-पुराण बाँचने वाला। कथक्कड़।

धर्मभिक्षुक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने धर्मार्थ भिक्षावृत्ति को ग्रहण की हो।

धर्मभीत [वि.](सं.) धर्म के भय से डरने वाला

धर्मभीरु [वि.] (सं.) जिसे धर्म का भय हो। अधर्म से डरने वाला।

धर्मभृत् [वि.] (सं.) धार्मिक। धर्मशील।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

धर्मभ्राता [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म का बनाया हुआ भाई। अभिन्न मित्र। २-एक ही आश्रम में भाई के समान रहने वाला।

धर्ममति [वि.] (सं.) धार्मिक। पुण्यात्मा।

धर्ममय [वि] (सं.) धर्म से परिपूर्ण।

धर्ममहामात्र [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मविषयक मन्त्री

धर्ममूल [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का प्रमाण।

धर्ममेघ [संज्ञा पु.] (सं.) योग में एक समाधि जिसमें वैराग्य के अभ्यास से चित्त सब वृत्तियों से रहित हो जाता है।

धर्मयुग [संज्ञा पु.] (सं.) सतयुग।

धर्मयुत [वि.] (सं.) धर्मयुक्त। [संज्ञा पु.] न्याय से उपार्जित धन।

धर्मयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अन्याय अथवा नियम भंग न हो। २-धर्म के निमित्त अथवा किसी अच्छे उद्देश्य से किया जाने वाला युद्ध।

धर्मरक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) योनदेश का एक स्थविर जो अशोक के समय में बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए अपरान्तक देश में भेजा गया था।

धर्मराइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धर्मराज'।

धर्मराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म का पालन करने वाला राजा। २-युधिष्ठिर। ३-यमराज। ४-न्यायाधीश।

धर्मराज-परीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म के अनुसार अभियुक्त दोषी है या निर्दोष, इसकी एक दिव्य परीक्षा (स्मृति)।

धर्मराय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धर्मराज।

धर्म-लिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह लिपि जिसमें किसी धर्म का प्रमुख ग्रन्थ लिखा गया हो। जैसे—अरबी मुसलमानों की धर्मलिपि है। २-स्तम्भों पर खुदे हुए सम्राट् अशोक के प्रज्ञापन।

धर्मलुप्त-उपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समानरूप से पाई जाने वाली बात का कथन हो। उपमा-अलंकार का वह भेद जिसमें समान धर्म का कथन हो।

धर्मवत् [वि.] (सं.) धार्मिक। धर्मयुक्त।

धर्मवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

धर्मवर्म [वि.] (सं.) धार्मिक। धर्मरक्षक।

धर्मवत्सल [वि.] (सं.) धर्मनिष्ठ। धार्मिक।

धर्मवाद [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मविषयक तर्क।

धर्मवादी [वि.] (सं.) धर्म का उपदेश देनेवाला।

धर्मवासर [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णिमा।

धर्मवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव (जिसका वाहन धर्म हो)। २-धर्मराज का वाहन, महिष। भैंसा।

धर्मवाह्य [वि.] (सं.) धर्म पर विश्वास रखने वाला।

धर्मविद् [वि.] (सं.) धर्म का मर्म जानने वाला। धर्मज्ञ।

धर्मविदुत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

धर्मवित्तम [वि.] (सं.) धार्मिकों में श्रेष्ठ। [संज्ञा पु.] विष्णु।

धर्मविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीमांसा आदि शास्त्र।

धर्मविप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का व्यतिक्रम।

धर्मविवेचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म और अधर्म का विचार। २-किसी के दोषी अथवा निर्दोष होने का निर्णय। ३-धर्म के सम्बन्ध में चिन्तन।

धर्मवीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो धर्मविषयक कार्य करने में साहसी हो। २-रस-निर्णय ग्रन्थ के अनुसार वीररस के अन्तर्गत चार प्रकार के वीरों में से एक।

धर्मवृद्ध [वि.] (सं.) जो धर्माचरण द्वारा श्रेष्ठ हो

धर्मवैतंसिक [संज्ञा पु.] (सं.) पाप या भ्रष्टाचार द्वारा कमाये हुए धन से लोगों को दिखाने तथा धार्मिक प्रसिद्ध होने के लिए बहुत दान-पुण्य करने वाला व्यक्ति।

धर्मव्याध [संज्ञा पु.] (सं.) मिथलापुर-वासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक तपस्वी को धर्म का उपदेश किया था।

धर्मव्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म की विश्वरूपा पत्नी के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या। (वायु-पुराण)।

धर्मवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का वृक्ष।

धर्मशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का चिह्न।

धर्मशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यात्रियों के टिकने के लिए धर्मार्थ बनाया हुआ मकान।

धर्मशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रन्थ जिसमें समाज के शासन के लिए नीति तथा सदाचार सम्बन्धी नियम लिखे हों।

धर्म-शास्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था देने वाला। धर्मशास्त्र जानने वाला पंडित।

धर्म-शील [वि.] (सं.) जिसकी धर्म में प्रवृत्ति हो।

धर्मशीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्माचरणकी वृत्ति। धर्मशील होने का भाव।

धर्मसंकर, धर्मसङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) विरुद्ध धर्म का एकत्र **समवाय**।

धर्मसंश्रित [वि.] (सं.) धर्मतत्व का अभिलाषी।

धर्मसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें धर्म का निरूपण हो। धर्मशास्त्र।

धर्मसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्यायालय। कचहरी

धर्मसार [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्यकर्म का साधन। श्रेष्ठ पुण्यकर्म।

धर्मसारी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धर्मशाला।

धर्मसावर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों के अनुसार ग्यारहवें मनु।

धर्मसुत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'धर्मपुत्र'।

धर्मसू [संज्ञा पु.](सं.) १-धर्म प्रेरक। २-धम्याट पक्षी।

धर्मसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जैमनी का बना हुआ वह धर्मग्रन्थ जिसमें धर्म की मीमांसा की गई है।

धर्मसेतु [संज्ञा पु.] (सं.) सेतु की तरह धर्म को धारण करने वाला। धर्म का पालन करने वाला।

धर्मसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन महा-स्थविर (बौद्धमहात्मा) जो ऋषिपत्तन संघ के प्रधान थे। जैनों के द्वादश अंगविदों मे से एक।

धर्मस्कंध, धर्मस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मास्ति-काय पदार्थ। जैन।

धर्मस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) विचारक। न्यायकर्त्ता।

धर्मस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां धर्म कार्य किये जाते हैं।

धर्मस्थविर [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म में दृढ़चित्त।

धर्महंता, धर्महन्ता [वि.] (सं.) धर्मकार्य में बाधा डालने वाला।

धर्मांग, धर्माङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बक। बगला (जिसका अंग धर्म के समान शुभ्र होता है)

धर्मांध, धर्मान्ध [वि.](सं.) जो धर्म के नाम पर अन्धा हो रहा हो तथा उसके लिए घोर अनुचित कर्म तक करे।

धर्मांधता, धर्मान्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म के नाम पर अन्धा होने का भाव। धर्म के नाम पर अन्धानुसरण करने की अवस्था।

धर्मागम [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्र।

धर्माचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म की शिक्षा या उपदेश देने वाला गुरु। २-ऋग्वेदियों में उन ऋषियों में एक जिनके निमित्त तर्पण किया जाता है।

धर्मात्मा [वि.] (सं.) धर्म करने वाला। धार्मिक। धर्मशील।

धर्माधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्य और पाप।

धर्माधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय।

धर्माधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय और अन्याय के विचार का अधिकार।

धर्माधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म और अधर्म की व्यवस्था देने वाला। न्यायाधीश। २-पुण्यखाते का प्रबंधकर्त्ता। दानाध्यक्ष।

धर्माधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) प्रधान व्यवस्थापक।

धर्माधिष्टान [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय।

धर्माध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। १-विष्णु। ३-धर्माधिकारी।

धर्माध्वन् [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय का रास्ता।

धर्मानुगत [वि.] (सं.) धार्मिक।

धर्मानुयायी [वि.] (सं.) धर्म के अनुसार आचरण करने या चलने वाला।

धर्मारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-तपोवन। २-गया के अन्तर्गत एक तीर्थ स्थान। ३-कूर्म-विभाग के मध्यभाग स्थित एक देश।

धर्मायतन [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म का मानसिक ज्ञान।

धर्मार्थ [क्रि. वि.] (सं.) धर्म अथवा पुण्य के के विचार से। परोपकार के लिए।

धर्मालीक [वि.] (सं.) पाखंडी। कपटी।

धर्मावतार [संज्ञा पु.] (सं.) १-साक्षात् धर्म-स्वरूप। अत्यन्त धर्मात्मा। २-धर्माधर्म का निर्णायक व्यक्ति। न्यायाधीश। ३-युधिष्ठिर

धर्माश्रित [वि.] (सं.) धर्मशील। धार्मिक।

धर्मासन [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायाधीश के बैठने आसन जिसपर बैठकर न्याय करता है।

धर्मास्तिकाय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनशास्त्रानुसार छः द्रव्यों में से एक।

धर्मिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पत्नी। २-रेणुका [वि.] धर्म करने वाली।

धर्मिष्ठ [वि.] (सं.) धर्मशील। धार्मिक।

धर्मिष्ठता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मशीलता। धार्मिकता। धार्मिक या धर्म निष्ठा होने का भाव

धर्मी [वि.] (सं.) [स्त्री. धर्मिणी] १-जिसमें कोई धर्म या गुण हो। २-धार्मिक। धर्मशील। ३-कोई मत या धर्म मानने वाला। [संज्ञा पु.] १-गुण या धर्म का आधार। २-धर्मात्मा मनुष्य। ३-विष्णु।

धर्मीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक का कोई पात्र या अभिनेता।

धर्मीयस् [वि.] (सं.) अत्यन्त धर्मात्मा।

धर्मेंद्र, धर्मेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मराज।

धर्मेप्सु [वि.] (सं.) धर्मलाभ करने का अभिलाषी।

धर्मेयु [संज्ञा पु.] (सं.) राजा रौद्राश्व का एक पुत्र

धर्मेश [संज्ञा प.] (सं.) धर्मराज।

धर्मोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रधान धर्म।

धर्मोपदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म की ओर प्रवृत्त करने वाला या धर्म का तत्व समझाने वाला कथन या व्याख्यान। २-धर्म की अवस्था।

धर्मोपदेशक [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म-विषयक उपदेश देने वाला।

धर्मोपदेशना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यवहार-शास्त्र का उपदेश।

धर्मोपाध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) पुरोहित।

धर्मोपेत [वि.] (सं.) १-धार्मिक। २-न्यायी।

धर्म्य [वि.] (सं.) जो धर्म या न्यायानुकूल हो।

धर्म्यविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्म, दैव, आर्ष, गांधर्व और प्राजापत्य के पांच धर्म्य-विवाह कहलाते हैं। स्मृति।

धर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-संकोच या शिष्टता का अभाव। धृष्टता। गुस्ताखी। २-असहनशीलता। तुनकमिजाजी। ३-अधीरता। बेसब्री। ४-अशक्त होने या करने का भाव। शक्तिबंधन। ५-रोक। दबाव। ६-नामर्द करने या होने का भाव। ७-नपुंसक। हीजड़ा। ८-हिंसा। ९-अनादर। अपमान। अपमान। १०-स्त्री का सतीत्वहरण।

धर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दमन करने वाला। २-अपमान या तिरस्कार करने वाला। ३-असहनशील। ४-व्यभिचारी। ५-अभिनेता। अभिनय करने वाला। नट।

धर्षकारिणी [वि.] (सं.) व्यभिचारिणी। अ-सती।

धर्षकारी [वि.] (सं.) [स्त्री. धर्षकारिणी] १-दबाने या दमन करने वाला। हराने वाला। २-अपमान करने वाला।

धर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनादर। अपमान। अवज्ञा। २-दबोचना। दबाने या दमन करने का काम। ३-असहनशीलता। ४-एक अस्त्र का नाम। ५-स्त्री-प्रसंग। रति। ६-शिव।

धर्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अवज्ञा। अपमान। २-नीचा दिखाने का काम। ३-सतीत्वहरण। ४-रति। संभोग।

धर्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

धर्षणीय [वि.] (सं.) धर्षण के योग्य। दबाने या हराने योग्य।

धर्षित [वि.] (सं.) १-दबाया या दमन किया हुआ। परिभूत। २-अपमानित। [संज्ञा पु.] रति। मैथुन।

धर्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. धर्षिणी] १-धर्षण करने वाला। २-आक्रमण करने या दबोचने वाला। ३-हराने वाला। ४-नीचा दिखाने वाला। ५-अपमान करने वाला।

धलंड, धलण्ड [संज्ञा पु.](सं.) अंकोला का पे

धव [संज्ञा पु.] (सं.) १-औषध के काम आने जंगली पेड़। २-पति। स्वामी। ३-पुरुष। मर्द। ४-धूर्त आदमी। ५-एक वसु का नाम।

धवई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक वृक्ष का नाम। धातकी। धावनी।

धवनि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

धवनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लोहार की धौंकनी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालिपर्णी। सरिवन।

धवर* [वि.] (हि.) सफेद। उजला।

धवरहर [संज्ञा पु.] (हि.) धरहरा। मीनार।

धवरा* [वि.] (हि.) (स्त्री. धवरी) उजला। सफेद।

धवराहर [संज्ञा पु.] (हि.) धरहरा। मीनार।

धवरी [वि.] (हि.) (स्त्री. प्र.) १-धवरपक्षी की मादा। २-सफेद रंग की गाय।

धवल [वि.] (सं.) १-श्वेत। उजला। २-निर्मल। झकाझक। ३-सुन्दर। मनोहर। [संज्ञा पु.] १-धव का पेड़। चीनियाकपूर। ३-सिंदूर। ४-सफेद मिर्च। ५-धवरपक्षी। ६-बड़ा बैल। छप्पय छन्द का ४५वाँ भेद। ८-अर्जुनवृक्ष। सफेद कोढ़। १०-एक राग जो हिंडोलराग का आठवाँ पुत्र माना जाता है।

धवलकोष्टी [संज्ञा स्त्री.] (?) वैश्यों की एक जाति।

धवलगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

धवलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेदी। उज्ज्वलता।

धवलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सफेदी। उज्ज्वलता।

धवलना [क्रि. स.] (हि.) उज्ज्वल करना। प्रकाशित करना।

धवलपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुक्लपक्ष। २-हंस।

धवलमृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खरियामिट्टी।

धवलश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी जि

लांग, धवलाङ्ग
पंचम और गांधार वर्जित हैं।

लांग, धवलाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) हंस।

[वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] सफेद। उजला। [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद गाय। [संज्ञा पु.] (हि.) सफेद बैल।

ई*+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सफेदी। उजला-

गिरि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत की एक प्रख्यात चोटी।

[वि.] (सं.) १-जो सफेद किया गया हो। २-जो साफ झक किया गया हो।

[संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सफेदी। २-उज्वलता।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद गाय। २-सफेद होने का एक रोग। ३-सफेद

[वि.] (सं.) जो सफेद किया गया हो।

[वि.] (सं.) जो सफेद हुआ हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) सफेद आंख।

[संज्ञा पु.] (सं.) कुमुद।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धव'।

[संज्ञा पु.] (सं.) वायु।

[क्रि. स.] (हिं.) दौड़ाना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-डुबकी। गोता। जल आदि में प्रवेश। २-एक प्रकार की जमीन या मिट्टी जो भुरभुरी होती है।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ठस-ठस शब्द जो सूखी खांसी में गले से निकलता है। २-सूखी खांसी। ३-डाह। ईर्षा। ४-धसकने की क्रिया या भाव।

[क्रि. अ.] (हि.) १-नीचे धँस या खिसक जाना। दब जाना। २-डाह करना। ईर्ष्या करना। ३-डरना।

[संज्ञा पु.] (हि.) एक छूत का रोग जो चौपायों के फेफड़ों में होता है।

[क्रि. अ.] (हि.) ध्वस्त होना। नष्ट होना। [क्रि. अ.] देखो 'धँसना'।

[संज्ञा स्त्री.] देखो 'धसन' 'धँसनि'।

ना* [क्रि. अ.] (हि.) धँस जाना। धरती में समाना।

[संज्ञा स्त्री] (हि.) १-देखो 'धँसान'। २-एक छोटी नदी का नाम जो पूरबी मालवा और बुन्देलखंड से होकर बहती है।

[क्रि. स.] (हि) देखो 'धँसाना'।

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'धँसाव'।

[संज्ञा पु.] (देश.) भीलों के समान रहने-वाली एक जंगली जाति।

[संज्ञा पु.] (हि.) १-एक अनार्य जंगली जाति। २-एक जाति के लोग जो कुएँ और तालाब आदि खोदने का काम करते हैं।

धाँगर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'धाँगड़'

धाँधना [क्रि. स.] (हिं.) १-बंद करना। भेड़ना। २-बहुत अधिक खा लेना। ठूसना।

धाँधल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ऊधम। उपद्रव। २-फरेब। धोखा। ३-बहुत अधिक जल्दी।

धाँधलपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पाजीपन। शरारत २-धोखेबाजी।

धाँधली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उपद्रव। उत्पात। २-बहुत अधिक जल्दी। ३-स्वेच्छाचारिता। ४-जबरदस्ती अपनी गलत बात आगे रखना

धाँय [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'धायँ'।

धाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुँघनी, मिर्च आदि उग्र या तेज गंध जिससे खाँसी और छींक आने लगती हैं।

धाँसना [क्रि. अ.] (हिं.) पशुओं का खाँसना।

धाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घोड़े की खाँसी।

धा [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-बृहस्पति [वि.] धारक। धारण करने वाला। [प्रत्य.] तरह भाँति। प्रकार जैसे-नवधा भक्ति। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संगीत में धैवत स्वर का संकेत या सूक्ष्म रूप। ध। २-मृदंग,. तबले आदि का एक बोल। + [संज्ञा स्त्री.] देखो 'धाय' [संज्ञा पु.] देखो 'धय'।

धाइ* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'धाय'। [संज्ञा पु.) धव का पेड़।

धाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धाय'।

धाउ [संज्ञा पु.] (हिं.) नाच का एक भेद।

धाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह आदमी जो किसी आवश्यक कार्य के लिए दौड़ाया जाय। हरकारा। २-धव का पेड़।

धाक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-रोब। आतंक। २-ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत। *धाक जमना या बाँधना*-रोब या दबदबा होना। [संज्ञा पु.] ढाक। पलास। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृष। २-उपहार। भोजन। ३-अन्न। अनाज। ४-स्तम्भ। खंभा। ५-आधार।

धाकना* [क्रि. अ.] (हिं.) धाक या रोब जमना।

धाकर [संज्ञा पु.] (देश.) १-ब्राह्मणों की एक जाति। २-राजपूतों की एक जाति। ३-पंजाब में होने वाला एक प्रकार का धान जो बिना पानी के पैदा होता है। + [वि.] दोगला।

धाका+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धाक'।

धाखा+ [संज्ञा पु.] (देश.) पलाश का पेड़।

धागा [संज्ञा पु.] (हिं.) बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।

धागा मारना -कपड़े के छेद आदि में तागे भर कर उसे रफू करना। *धागे-धागे करना*-कपड़े के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े करना।

धाड़* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डाकुओं का धावा। २-झुंड। जत्था। गिरोह। ३-देखो 'डाढ़'। ४-देखो 'दहाड़'। *धाड़ पड़ना*-बहुत जल्दी होना।

धाड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'दहाड़ना'।

धाड़स [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ढारस'।

धाड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा भारी डाकू। भारी लुटेरा।

धाणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक अनार्य जाति। २-एक प्रकार का प्राचीन परिमाण।

धात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धातु'।

धातकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धव का फूल। २-एक प्रकार का झाड़।

धाता [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव। ४-भृगुमुनि के पुत्र का नाम। ५-४९ वायुओं में से एक। ६-शेषनाग। ७-१२ सूर्यों में से एक। ८-ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ९-विधाता। विधि। १०-साठ संवत्सरों में से एक। ११-टगण के आठवें भेद की संज्ञा। [वि.] १-पालक। पालने वाला। २-रक्षक। रक्षा करने वाला। धारण करने वाला। धारक

धातु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह अपारदर्शक, चमकीला खनिज विशुद्ध द्रव्य जिसमे बरतन, तार, गहने शस्त्र आदि बनाये जाते हैं। जैसे—सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि। २—शरीर को बनाए रखने वाले भीतरी तत्व या पदार्थ जो वैद्यक के अनुसार सात हैं। यथा-रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, और शुक्र। ३-बुद्ध या किसी अन्य महात्मा की अस्थि आदि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे में बन्द करके स्थापित करते थे। ४-शुक्र। वीर्य। *धातु गिरना*-वीर्यपात होना। (रोग से) प्रमेह होना। [संज्ञा पु.] १-भूत। तत्व। २-क्रिया का मूलरूप। जैसे-संस्कृत में भू, कृ, धृ आदि। (व्याकरण)। ३-परमात्मा।

धातुक [संज्ञा पु.] शिलाजीत।

धातुकासीस [संज्ञा पु.] (सं.) कसीस।

धातुकुशल [वि.] (सं.) जो धातु क्रिया में कुशल हो।

धातुक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाँसी का वह रोग जिसमें शरीर क्षीण हो जाता है। २-प्रमेह आदि रोग जिसमें धातु का अधिक क्षय होता है।

धातुगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कंगूरेदार डिब्बा या पात्र जिसमें बौद्धलोग अपने धर्मानुयायी साधु महात्माओं के दाँत या हड्डी आदि रखते हैं। देह गोप।

धातुगोप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'धातुगर्भ'।

धातुघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के धातु को नष्ट करने वाला पदार्थ।

धातुचैतन्य [वि.] (सं.) धातु अर्थात वीर्य को उत्पन्न या चैतन्य करने वाला। वीर्यवर्धक।

धातुद्रावक [संज्ञा पु.] (सं.) सोहागा जिसके डालने से सोना आदि धातु गल या पिघल जाते है.

धातुनाशक [संज्ञा पु.] देखो 'धातुघ्न'।

धातुष [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर में का वह धातु या रस जो भोजन के उपरान्त तुरन्त ही तयार होता है और जिससे शेष धातुओं का पोषण होता है। (वैद्यक)।

धातुपुष्ट [वि.] (सं.) (औषध) जिससे वीर्य गाढ़ा होकर बढ़े।

धातुपुष्पिका, धातुपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धव का फूल।

धातुप्रधान [संज्ञा पु.] (हिं.) वीर्य। शुक्र।

धातुवैरी [संज्ञा पु.] (हिं.) गंधक।

धातुभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़। पर्वत। [वि.] (सं.) जिससे धातु का पोषण हो।

धातुमर्म [संज्ञा पु.] (सं.) कच्ची धातु को साफ करने की कला।

धातुमल [संज्ञा पु.] (सं.) धातु के परिपक्व हो हो जाने पर उसके बचे हुए निरर्थक अंश से उत्पन्न होने वाला मल। जैसे-कफ, पित्त, पसीना, नाखून, बाल, आँख, कान या नाक का मल आदि। (वैद्यक)। २-खनिज पदार्थों या वस्तुओं को गलाने पर उनमें से निकलने वाला मैल या कीचड़। स्लैग।

धातुमाक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामाखी नामक उपधातु।

धातुमारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोहागा।

धातुराग [संज्ञा पु.] (सं.) धातुओं से निकला हुआ (ईंगुर, गेरू आदि) रंग।

धातुराजक [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के सब धातुओं में श्रेष्ठ माना जाने वाला, वीर्य। शुक्र।

धातुरेचक [वि.] (सं.) वीर्य को बहाने वाला। जो शुक्र को बहाकर निकाल दे।

धातुवर्द्धक [वि.] (सं.) वीर्य को बढ़ाने वाला।

धातुवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) सोहागा।

धातुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-कच्ची धातु को साफ करने और इसमें मिली हुई अनेक धातुओं को अलग करने की कला। २-रसायन बनाने का काम। ३-ताँबे से सोना बनाना। ४-कीमियागिरी।

धातुवादी [संज्ञा पु.] (सं.) रसायनिक क्रिया द्वारा सोना या चांदी बनाने वाला। रसायनी। कीमियागर।

धातुविट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीसा धातु।

धातुविष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरताल। २-सीसा।

धातुवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीर्य की वृद्धि।

धातुवैरी [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

धातुशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसीस। २-सीसा

धातुसंज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा।

धातुसंभव, धातुसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसीस। सीसा।

धातुस्तंभक, धातुस्तम्भक [वि.] (सं.) वीर्य को रोकने या स्तम्भन करने वाला जिससे वह देर में स्खलित हो।

धातुहन [संज्ञा पु.] (सं.) खड़िया मिट्टी।

धातू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'धातु'।

धातृ [वि.] (सं.) धारण करने वाला। धारक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-आत्मा। ४-ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम।

धातृपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार

धातृपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धव के फूल।

धातृपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धव के फूल।

धात्र [संज्ञा पु.] (सं.) पात्र। बरतन।

धात्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँवला।

धात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माता। माँ। २-बच्चे को दूध पिलाने और उसका लालन-पालन करने वाली स्त्री। धाय। ३-गायत्री स्वरूपिणी भगवती। ४-गंगा। ५-आँवला। ६-भूमि। पृथ्वी। ७-सेना। फौज। ८-गाय। ९-आर्य्याछंद का एक भेद जिसमें १६ गुरु और १६ लघु मात्राएँ होती हैं।

धात्रीपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तालीसपत्र। २-आँवले की पत्ती।

धात्रीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) धाय का लड़का।

धात्रीफल [संज्ञा पु.] (सं.) आँवला।

धात्री-विद्या [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) स्त्री को प्रसव कराने और बच्चे पालने आदि की विद्या।

धात्री-सरकार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देश का शासन करने वाली कामचलाऊ सरकार।

धात्रेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धात्री। धाय। दाई।

धात्वर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी शब्द का धातु से निकलने वाला मूल और पहला अर्थ।

धाधना+ [क्रि. स.] (?) देखना।

धाधि [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि की ज्वाला।

धान [संज्ञा पु.] (हिं.) तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों में से चावल निकलते हैं। शालि। व्रीहि।

धानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनिया। २-एक रत्ती का चौथाई भाग। (हिं.) १-धनुष चलाने वाला। धनुर्धारी। २-धुनिया। ३-एक पहाड़ी जाति का नाम (पूरब)।

धानकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनुर्द्धर। धनुर्धारी। २-कामदेव।

धानजई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

धान-पान [वि.] (हिं.) १-दुबला-पतला। २-कोमल। नाजुक। [संज्ञा पु.] विवाह से पूर्व होने वाली एक रीति जिसमें वर-पक्ष की ओर से लड़की वालों के घर धान और हल्दी भेजी जाती है।

धानमाली [संज्ञा पु.] (सं.) किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

धानतवर्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधर्व का नाम।

धाना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भूना हुआ जौ या चावल। २-धनिया। ३-अन्न का कण। सत्तू। ५-धान। ६-अन्नमात्र। + [क्रि. अ.] (हिं.) १-दौड़ना। २-दौड़-धूप या प्रयत्न करना।

धानाचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सत्तू।

धानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धानी। आधार।

धानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २-स्थान। जगह। जैसे-राजधानी। (हिं.) धान की पत्तियों का-सा हलका हरा रंग। [वि.] हलके हरे रंग का। [संज्ञा स्त्री.] १-भूना हुआ जौ या गेहूँ। २-

३-सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

धानुक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनुर्धारी। धनुष चलाने वाला। २-रूई धुनने वाला। धुनिया।

धानुष्क [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष चलाकर अपनी जीविका चलाने वाला। कमनैत। धनुर्धारी।

धानुष्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपामार्ग। चिचड़ा।

धानुष्य [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का बांस।

धानेय, धायक [संज्ञा पु.] (सं.) धनिया।

धान्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार तिल का एक परिमाण या तौल। २-धनिया। ३-

का नागरमोथा। ४-धान। ५-अन्न। ६-प्राचीनकाल का एक अस्त्र।

धान्यकंचकी, धान्यकञ्चकी [संज्ञा पु.] (सं.) धान का छिलका।

धान्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनिया। २-

धान्य-कल्क [संज्ञा पु.] (सं.) धान की भूसी।

धान्यकोष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न भरने का या बरतन। काठिला। गोला।

धान्यचमस [संज्ञा पु.] (सं.) चिवड़ा।

धान्यतुषोद [संज्ञा पु.] (सं.) काँजी।

धान्यधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान के लिए कल्पित गाय जिसकी कल्पना धान की ढेरी में की जाती है।

धान्यपंचक, धान्यपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शालि, व्रीहि, शूक, शिंबी और क्षुद्र ये पाँच प्रकार के धान। २-एक पाचक पानी जो पाँचों धान और आम आदि के मेल से बनता है। ३-एक पाचक औषध, जो धनिये, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथे और के योग से बनती है।

धान्यपति [संज्ञा पु.] (सं.) चावल। २-जौ।

धान्यपानक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पन्ना जो धनिये से बनता है।

धान्यबीज [संज्ञा पु.] (सं.) धनिया।

धान्यभक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का

धान्यमंजरी, धान्यमञ्जरी [संज्ञा पु.] (सं.)

धान्यमंड, धान्यमण्ड का अंकुर।

धान्यमंड, धान्यमण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) धान की बनाई हुई मदिरा।

धान्यमाय [संज्ञा पु.](सं.) धान तोलने या बेचने वाला।

धान्यमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रावण की दासी राक्षसी जिसने सीता को समझाने के लिये नियुक्त किया था।

धान्यमाष [संज्ञा पु.] (सं.) दो धान के बराबर का एक प्राचीन परिमाण।

धान्यमुख [संज्ञा पु.] (सं.) चीरफाड़ करने का एक प्राचीन अस्त्र।

धान्यमूल [संज्ञा पु.] (सं.) काँजी।

धान्ययूष [संज्ञा पु.] (सं.) काँजी।

धान्ययोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं) काँजी।

धान्यराज [संज्ञा पु.] (सं.) जौ।

धान्यवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पाँचों प्रकार के धान। धान्यपंचक।

धान्यवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) सवाई पर अन्न ऋण देने का व्यवहार।

धान्यबीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-धान का बीज। २-धनिया।

धान्यवीर [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द। उरद। माष।

धान्यशर्करा [संज्ञा स्त्री] (सं.) चीनी मिला हुआ धनिए का पानी।

धान्यशीर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) धान की मंजरी।

धान्यशुंठी, धानशुण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक औषध का नाम।

धान्यशैल [संज्ञा पु.] (सं) दान करने के लिए वह कल्पित पर्वत जिसकी कल्पना धान की ढेरों में की जाती है।

धान्यसार [संज्ञा पु.] (सं.) चावल। तंडुल।

धान्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिया।

धान्याक [संज्ञा पु.] (सं.) धनिया।

धान्याकृत [संज्ञा पु.] (सं.) खेतिहर। कृषक।

धान्याभ्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैद्यक में भस्म बनाने के लिए धान की सहायता से शोधा और साफ किया हुआ अभ्रक। २-अभ्रक को इस प्रकार शोधने की क्रिया।

धान्याम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) काँजी।

धान्याम्लक [संज्ञा पु.] (सं.) धान से बनाई हुई खटाई या काँजी।

धान्यारि [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा।

धान्यागार [संज्ञा पु.] (सं.) अन्नशाला। भंडार घर।

धान्यास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) तुष। भूसी।

धान्योत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) शालि। धान।

धान्वंतर्य, धान्वन्तर्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह होम आदि जिसमें धन्वंतर आदि देवता प्रधान हों।

धान्व [वि.] (सं.) धन्वदेश का।

धाप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूरी की एक नाप जो लगभग एक मील होती है। २-लम्बा-चौड़ा मैदान। ३-खेत की नाप या लम्बाई-चौड़ाई। ४-पानी की धार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जी भरना। संतोष। तृप्ति।

धापना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-संतुष्ट या तृप्त होना। अघाना। जी भरना। २-दौड़ना। भागना। [क्रि. स.] (हिं.) संतुष्ट या तृप्त करना।

धाबरी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कबूतरों का दरबा।

धाबा [संज्ञा पु.] (देश.) १-छत के ऊपर का कमरा अटारी। २-वह स्थान जहाँ कच्ची या पक्की रसोई बिकती है।

धभाई [संज्ञा पु.] (हिं.) दूध-भाई।

धाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के देवता। २-विष्णु। ३-घर। मकान। ४-देह। शरीर। तन। ५-लगाम। बागडोर। ६-देवस्थान या पुण्यस्थान। ७-शोभा। ८-प्रभाव। ९-जन्म। १०-विष्णु। ११-ज्योति। १२-ब्रह्म। १३-चारदीवारी। १४-किरण। १५-तेज। १६-परलोक। १७-स्वर्ग। १८-अवस्था। गति।

धामक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माशा। २-एक प्रकार की सुगंधित घास।

धामकधूमक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूमधाम'।

धामकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) किरणयुक्त सूर्य।

धामधा [संज्ञा पु.] (सं.) पालक। रक्षक।

धामन [संज्ञा पु.] (देश.) १-फालसे की जाति का एक प्रकार का पेड़। २-एक प्रकार का बांस [संज्ञा स्त्री.] देखो 'धामिन'।

धामनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'धमनी'।

धामनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

धामनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाड़ी। धमनी।

धामभाज [संज्ञा पु.] (सं.) वह देवता जो यज्ञ में भाग लेता है।

धामश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की रागिनी जिसके गाने का समय दिन में २५ दंड से २८ दंड तक है।

धामा* [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन का निमन्त्रण।

धामार्गव [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल चिचड़ा। २-घीयातोरी।

धामासा [संज्ञा पु.] देखो 'धमासा'।

धामिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत लम्बा और विषैला सर्प जो बहुत तेज दौड़ता है।

धामिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक पंथ या सम्प्रदाय का नाम। २-इस पंथ का अनुयायी।

धायँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तोप, बन्दूक आदि के छूटने का शब्द। २-किसी पदार्थ के जोर से गिरने का शब्द।

धाय [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह स्त्री जो दूसरे बालक को दूध पिलाती है। और उसका पालन-पोषण करती है। धात्री। दाई। [संज्ञा पु.] (हिं.) धवई नामक पेड़।

धायना [संज्ञा स्त्री. (हिं.) दौड़ना-धूपना।

धायस [वि.] (सं.) १-धारण करने वाला। २-पालन-पोषण करनेवाला।

धायी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धाय'।

धाय्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुरोहित।

धाय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि प्रज्वलित करने के समय पढ़े जाने वाले वेदमंत्र।

धार [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोर की वर्षा का जल। ३-ऋण। उधार। कर्ज। प्रांत। प्रदेश। [वि.] (सं.) गहरा। गम्भीर। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जल आदि के बहने या गिरने का क्रम। प्रवाह। २-पानी का सोता। चश्मा। ३-किसी काटने वाले हथियार का तेज सिरा या किनारा जिससे कोई वस्तु काटते हैं। ४-सिरा किनारा। छोर। ५-सेना। फौज। ६-आक्रमण या हल्ला। ७-समूह। ८-रेखा। लकीर ९-ओर। दिशा। १०-पहाड़ की कोई छोटी श्रेणी। ११-जलडमरूमध्य। *धार गिरना*-किसी हथियार की धार का तेज या तीक्ष्ण न रहना *धार चढ़ाना*-देवता या किसी पवित्र नदी में जल, दूध आदि की धार बाँध कर डालना। *धार टूटना*-जल आदि का धारा क्रम बंद होना। *धारदेना*-दूध देना। २-फायदा पहुंचाना। *धार पर मारना*-१-परवा न करना। २-तुच्छ समझना। *धार बंधना*-१-धार बन कर गिरना। २-मन्त्र-बल से अस्त्र की तेजी चली जाना। *धार बाँधना*-१-तरल पदार्थ को धार बनाकर गिराना। २-मन्त्र-बल से हथियार की धार निकम्मी कर देना। [संज्ञा पु.] (हिं.) द्वारपाल। चोबदार। [संज्ञा पु.] (हिं.) वर्तुलाकार काठ में (जमोट में) लगाया हुआ जिस पर कुएं की कोठी बाँधी जाती जाती है

धारक [वि.] (सं.) १-धारण करने वाला। २-रोकने वाला। ३-ऋण लेने वाला। कर्जदार। उधार लेने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) कलश। घड़ा।

धारका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री की मूत्रेन्द्रिय।

धारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-थामना, रखना, या अपने ऊपर लेना। २-परिधान। पहनना। ३-सेवन करना। खाना या पीना। ४-अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५-ऋण लेना। ६-कश्यप के एक पुत्र का नाम। शिव। महादेव।

धारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धारण करने की क्रिया या भाव। २-वह शक्ति जिससे कोई बात मनमें धारण की जाती है। बुद्धि। समझ दृढ़-निश्चय। पक्का विचार। ४-मर्यादा। मन या ध्यान में रखने की वृत्ति। याद। स्मृति। ६-योग के आठ अंगों में से एक। ७-

एक योग जिससे इस बात का पता लगता है कि आगामी वर्षाऋतु में पर्याप्त पानी बरसेगा या नहीं। (बृहत्संहिता)।

धारणवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रबल धारणशक्ति रखने वाली।

धारणवान् [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. धारणवती] प्रबल धारणशक्ति रखने वाला। मेधाशाली

धारणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋणी। धरता। कर्जदार। २-वह आदमी जिसके पास धन जमा किया जाय।

धारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाड़ी। २-श्रेणी। पंक्ति। पृथ्वी।

धारणीमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग में एक प्रकार की समाधि।

धारणीय [वि.] (सं.) धारण करने योग्य।

धारधूरा+ [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के हट जाने से निकली हुई या नदी के रेत से बनी हुई भूमि गंगबरार।

धारन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथी को खिलाने की दवा। २-देखो 'धारण'।

धारना* [क्रि. स.] (हिं.) १-धारण करना। २-उधार लेना। ३-देखो 'धारना'।

धारय [वि.] (सं.) धारण करने वाला।

धारयिता [संज्ञा पु.] (स.) [स्त्री. धारयित्री] धारण करने वाला।

धारयितव्य [वि.] (सं.) धारण करने योग्य।

धारयितृ [वि.] (सं.) धारण करने वाला।

धारयित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धारण करने वाली २-पृथ्वी।

धारयिष्णु [वि.] (सं.) धारण करने वाला।

धारस [संज्ञा स्त्री] देखो 'ढारस'।

धारांकुर, धाराङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-साल का गोंद। २-घनोपल। ओला।

धारांग, धाराङ्ग [संज्ञा पु.) (सं.) १-एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २-खड्ग।

धारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घोड़े की चाल। २-पानी आदि का बहाव या गिराव। अखंड प्रवाह। धार। ३-लगातार गिरता या बहता हुआ तरल पदार्थ। ४-पानी का झरना। चश्मा। ५-धार। बाढ़। ६-बहुत अधिक वर्षा। ७-समूह। झुन्ड। ८-सेना। ९-सेना का अगला भाग। १०-घड़े आदि में बना हुआ छेद। ११-संतान। १२-उत्कर्ष। उन्नति तरक्की। १३-रथ का पहिया। १४-यश। कीर्ति। १५-प्राचीनकाल के एक नगर का नाम। १६-एक प्राचीन तीर्थ का नाम। १७-पंक्ति। वाक्यावलि। १८-रेखा। लकीर। १९-पहाड़ की चोटी। २०-राजा भोज के समय में मालवा की राजधानी का नाम। २१-विधान आदि का वह विशेष अथवा स्वतंत्र अंश जिसमें किसी एक विषय की सब बातें अथवा आदेश हों। (प्रायः इसके साथ क्रमांक रहते हैं) जैसे-इसकी २० वीं धारा हमें अमान्य है।

धाराकदंब, धाराकदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कदम्ब का पेड़।

धारागृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह घर या स्थान जहाँ फुहारा लगा हो।

धाराट [संज्ञा पु.] (सं.) १-चातक। २-मेघ। बादल। ३-घोड़ा। ४-मस्त हाथी।

धाराधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-तलवार। खड्ग।

धारापात [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का गिरना।

धारापूप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पूआ।

धाराफल [संज्ञा पु.] (सं.) मदनवृक्ष।

धारायंत्र, धारायन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) १-पिचकारी २-फुहारा।

धाराल [वि.] (सं.) धारदार (हथियार)।

धाराली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तलवार। २-कटारी।

धारावनि [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा।

धारावर [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ।

धारावर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) निरन्तर वर्षा।

धारावाहिक [वि.] (सं.) १-धारा के रूप में बिना रुके आगे बढ़ने या चलने वाला। जैसे—धारावाहिक-लेख।

धारावाही [वि.] (सं.) देखो 'धारावाहिक'।

धाराविष [संज्ञा पु.] तलवार। खड्ग।

धारासंपात, धारासम्पात [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत तेज और अधिक वर्षा।

धारासभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जनतंत्रीय-शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नये विधान अथवा कानून आदि बनाती है और पुराने विधानों में परिवर्त्तन संशोधन आदि करती है। *लेजिसलेचर*।

धारासार [वि.] (सं.) बराबर पानी बरसना।

धारास्नुही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिधारा थूहर।

धारि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'धार'। २-समूह। झुंड।

धारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धारिणी। पृथ्वी। २-सेमर का पेड़। ३-चौदह देवताओं की पत्नियों के नाम, जो ये हैं-शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृति, सिनी वाला, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा, सेला और वेला। [वि.] [स्त्री. प्र.] धारण करने वाली।

धारी [वि.] (सं.) [स्त्री. धारिणी] धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पहले तीन जगण और फिर एक जगण होता है। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण और एक लघु होता है। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सेना। फौज। २-समूह। झूंड। ३-रेखा। लकीर। ४-पुश्ता।

धारीदार [वि.] (हिं.) लम्बी-लम्बी धारियों या लकीरों वाला।

धारू [वि.] (सं.) पीने वाला।

धारूजल [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार। खड्ग।

धारोष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) थन से निकला हुआ ताजा और गरम दूध।

धार्तराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धृतराष्ट्र के बेटे। २-एक नाग का नाम। ३-काले रंग की चोंच और पैरों वाला हंस।

धार्तराष्ट्रपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंसपदी नामक लता।

धार्तराष्ट्रि [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र की संतान।

धार्म [वि.] (सं.) धर्म-संबंधी।

धार्मिक [वि.] (सं.) १-धर्मशील। धर्मात्मा। २-धर्म-संबंधी।

धार्मिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मशीलता। धार्मिक होने का भाव।

धार्मिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'धार्मिकता'।

धार्य [वि.] (सं.) धारण करने योग्य। [संज्ञा पु.] वस्त्र। कपड़ा।

धार्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) धारण करने का भाव।

धार्ष्ट, धार्ष्ट्य [संज्ञापु.] (सं.) धृष्टता।

धार्ष्णक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा धृष्णु का पुत्र।

धाव [संज्ञा पु.] (हिं.) धावरा नामक वृक्ष जो लम्बा और सुन्दर होता है।

धावक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दौड़कर चलने वाला। हरकारा। २-धोबी। रजक।

धावड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) धव का पेड़।

धावण [संज्ञा पु.] (हिं.) दूत। हरकारा।

धावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत जल्दी से दौड़कर जाना। २-दूत। हरकारा। ३-धोने साफ करने का काम। ४-वह वस्तु जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय।

धावना* [क्रि. अ.] (हिं.) वेग से चलना। दौड़ना। भागना।

धावनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जल्दी-जल्दी चलने की क्रिया या भाव। दौड़। २-धावा। चढ़ाई। (सं.) पिठवन नामक लता।

धावनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कटेरी। कंटकारिका। २-पिठवन। ३-कँटीली मकोय।

धावनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिठवन। २-कंटकारी। ३-धव का फूल।

धावरा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. धावरी] धवल। सफेद।

धावरी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] सफेद। [संज्ञा स्त्री.] सफेद गाय। धौरी।

धौंता

धावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आक्रमण। चढ़ाई। २-किसी काम के लिए जल्दी-जल्दी जाना। दौड़। धावा बोलना–आक्रमण या चढ़ाई की आज्ञा देना। धावा मारना–जल्दी-जल्दी चलना।

धावित [वि.] (सं.) दौड़ता हुआ।

धासि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न। अनाज। २-गृह। घर।

धाह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़।

धाही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध पिलाने वाली स्त्री। धाय। धात्री।

धिंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊधम। उपद्रव। धींगाधींगी।

धिंगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धींगरा'।

धिंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बदमाश। उपद्रवी। शरीर। २-बेशर्म। निर्लज्ज।

धिंगाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उपद्रव। शरारत। ऊधम। २-निर्लज्जता। बेशर्मी।

धिंगाधिंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धींगाधींगी'

धिंगाना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) उपद्रव करना। ऊधम मचाना।

धिंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बदमाश-स्त्री। निर्लज्ज-स्त्री।

धिअ, धिआ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कन्या। बेटी। २-छोटी लड़की।

धिआन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ध्यान'।

धिआना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'ध्याना'।

धिक् [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धिक्कार'।

धिक [संज्ञा स्त्री.] देखो 'धिक्कार'।

धिकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) गरम होना। तप्त होना।

धिकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) खूब गरम करना। तपाना।

धिक्कार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिरस्कार या घृणा व्यंजक शब्द। लानत। फटकार।

धिक्कारना [क्रि. स.] (हिं) 'धिक्' कहकर बहुत तिरस्कार करना। फटकारना। लानत-मलामत करना।

धिक्कृत [वि.] (सं.) जिसे 'धिक' कहा जाय। जिसका तिरस्कार हो।

धिक्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धिक्कार'।

धिग* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धिक्कार'।

धिग्दंड, धिग्दण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) तिरस्कार रूपी दंड।

धिग्वण [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण पिता और अयोगवी माता से उत्पन्न सन्तान।

धिमचा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की इमली।

धित [वि.] (सं.) स्थापित। रखाहुआ।

धिय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कन्या। बेटी। २-लड़की। बालिका।

धियसान [वि.] (सं.) धारण करने वाला।

धिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धिय'।

धियायु [वि.] (सं.) अपनी बुद्धि के अनुसार काम करने वाला।

धियावसु [संज्ञा पु.] (सं.) सरस्वती के वर्ग के एक वैदिक देवता।

धिरकार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'धिक्कार'।

धिरकारना+ [क्रि. स.](हिं.) देखो 'धिक्कारना'

धिरना, धिरवना [क्रि. स.] (हिं.) धमकाना। डराना।

धिराना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-डराना। धमकाना। [क्रि. अ.] १-धीमा पड़ना। मन्द होना। २-धैर्य रखना।

धिषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। ४-गुरु। शिक्षक।

धिषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुद्धि। २-प्रशंसा। ३-पृथ्वी। स्थान। ५-वाक्शक्ति। [वि.] [स्त्री. प्र.] धारण करने वाली।

धिषणाधिप [संज्ञा पु.](सं.) बृहस्पति।

धिष्ण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थान। २-गृह। [वि.] (सं.) स्तुति करने योग्य।

धींग [संज्ञा पु] (हिं.) हट्टाकट्टा मनुष्य। [वि.] १-मजबूत। जोरावर। २-उपद्रवी। शरीर। ३-पापी। कुमार्गी।

धींगड़, धींगड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हट्टा-कट्टा मनुष्य। मुस्टंडा।

धींगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हट्टीकट्टी स्त्री।

धींगामुकड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धींगामुस्ती। २-पाजीपन।

धींगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हट्टा-कट्टा। मुस्टंडा। २-शठ। गुंडा।

धींगरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाजी। उपद्रव करने वाली स्त्री।

धींगा [संज्ञा पु.] (हिं.) उपद्रवी। पाजी। बदमाश

धींगाधींगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शरारत। बदमाशी। उपद्रव। बल-प्रयोग।

धींगामुस्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उपद्रव। पाजीपन। २-जबरदस्ती लड़ना। हाथापाई।

धींद्रिय, धीन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्ञानेंद्रिय।

धींवर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धीवर'।

धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समझ। बुद्धि। २-मन। ३-कर्म।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की। बेटी।

धीआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धीया'।

धीगुण [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धि का गुण।

धीजना [क्रि. स.] (हिं.) १-ग्रहण या स्वीकार करना। अंगीकार करना। २-संतुष्ट करना। ३-पतियाना। विश्वास करना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-धीरज धारना। २-संतुष्ट होना।

धीत [वि.](सं.) १-जो पीया गया हो। २-जिसका अनादर हुआ हो। ३-जिसकी आराधना की जाय।

धीति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पान करने की क्रिया। पीना। २-प्यास। अनादर।

धीदा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कन्या। कुँआरी लड़की। २-पुत्री। बेटी।

धीन [संज्ञा पु.] (डिं.) लोहा।

धीपति [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

धीम* [वि.] (हिं.) देखो 'धीमा'।

धीमर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धीवर'।

धीमा [वि.] (हिं.) [स्त्री. धीमी] १-धीरे चलने वाला। मंदगति वाला। २-साधारण से नीचा। मन्द (स्वर)। ३-जो अधिक उग्र, तीव्र या प्रचंड न हो। ४-जिसका जोर या तेजी घट गई हो।

धीमा-तिताला [संज्ञा पु.] (हिं.) संगीत में सोलह मात्राओं का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली हो।

धीमान् [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. धीमती] १-बुद्धिमान। समझदार। अक्लमंद। २-बृहस्पति।

धीमोदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मद्य। सुरा। शराब

धीय+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुहिता। लड़की। २-जामाता। दामाद।

धीया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की। बेटी।

धीर [वि.] (सं.) १-जिसमें धैर्य हो। दृढ़ और शांत चित्तवाला। २-बलवान्। ३-विनीत। नम्र। ४-गम्भीर। ५-मनोहर। सुन्दर। ६-मंद। धीमा।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-केसर। २-ऋषभ औषध। ३-मन्त्र। ४-राजा बलि। *+ (हिं.) १-धीरज। धैर्य। मन की स्थिरता। २-संतोष सब्र।

धीरक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धैर्य'।

धीरज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धैर्य्य'।

धीरजमान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धैर्य्यवान्' वा 'धीर'।

धीरट [संज्ञा पु.] (?) हंसपक्षी।

धीरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चित्त की स्थिरता। मन की दृढ़ता। २-स्थिरता। ३-संतोष। सब्र

धीरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) धीर होने का भाव। धीरता।

धीरपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमीकंद।

धीरप्रशांत, धीरप्रशान्त [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक का वह नायक जो अनेक गुणों से युक्त उत्तम वर्ण का हो (साहित्य)।

धीरललित [संज्ञा पु.] (सं.) वह नायक जो सदा खूब बना ठना और प्रसन्न चित्त रहता हो।

धीरशांत, धीरशान्त [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में वह नायक जो सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् हो।

धीरस्कंध, धीरस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-भैंस। २-जंगली सूअर।

धीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देख कर व्यंग से कोप प्रकाशित करे। ताने से अपना क्रोध प्रकट करने वाली नायिका। २-गिलोय। ३-काकोली। ४-मलकंगनी। [वि.] (हिं.) मंद। धीमा। [संज्ञा पु.] धीरज। धैर्य।

धीराधीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य में वह नायिका जो अपने नायक में पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध प्रकट कर दे।

धीरावी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीशम का पेड़।

धीरी [संज्ञा स्त्री.] (?) आंख की पुतली।

धीरे [क्रि. वि.] (हिं.) १-आहिस्ते से। मन्द या धीमी गति से। २-हलके या नीचे स्वर से। चुपके से।

धीरोदात्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-साहित्य में वह नायक जो निरभिमानी, दयालु, क्षमाशील बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो। २-वीर-रस-प्रधान नाटक का मुख्य नाटक।

धीरोद्धत [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में वह नायक जो बहुत प्रचंड और चंचल हो और दूसरे का गर्व न सह सके तथा सर्वदा अपने गुणों का बखान करता रहे।

धीर्य*+ [संज्ञा पु.] (सं.) कातर। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धैर्य्य'।

धीवर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. धीवरी] १-मछली पकड़ने और बेचने का व्यवसाय करने वाली एक जाति। मछुआ। मल्लाह। २-सेवक। ३-काला मनुष्य। ४-एक देश। ४-उक्त देश का निवासी।

धीवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मल्लाहिन। मछली मारने की कंटियाँ।

धुँआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुआँ'।

धुँई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूनी'।

धुंकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोर का शब्द। गरज। गड़गड़ाहट।

धुंगार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तड़का। छौंक। बघार

धुंगारना [क्रि. स.] (हिं.) १-बघारना। छौंकना तड़का देना। २-मारना। पीटना।

धुंज+ [वि.] (हिं.) धुँधली। मंद दृष्टि।

धुंद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुँध'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुंद'।

धुंदा [वि.] (हिं.) देखो 'अंधा'।

धुंदुल [संज्ञा पु.] (देश.) बंगाल और मलाबार में अधिकता से पाया जाने वाला एक मझोले कद का वृक्ष।

धुंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होने वाला अंधेरा। २-हवा में उड़ती हुई धूल। ३-आँख का एक रोग जिसमें चीजें धुँधली दिखाई देती हैं।

धुंधक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुंध'।

धुंधका [संज्ञा पु.] (हिं.) धुआं निकलने का छिद्र। धुवांकश।

धुंधकार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अंधकार। अंधेरा। धुंकार। गड़गड़ाहट।

धुंधमार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुंधुमार'।

धुंधमाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुंधुमार'।

धुंधर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हवा में उड़ती हुई धूल। २-अँधेरा।

धुंधराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'धुंधलाना'।

धुँधलका+ [वि.] (हिं.) धुंधल।

धुँधला [वि.] (हिं.) १-कुछ काला या धुएं के रंग का। २-स्पष्ट दिखाई न देने वाला। ३-कुछ-कुछ अंधेरा। धुंधले का वक्त-बहुत सवेर या संध्या का समय।

धुंधलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुंधलापन'।

धुंधलाना [क्रि. अ.] (हिं.) धुंधला या कुछ काला पड़ना।

धुंधलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) धुंधला या अस्पष्ट होने का भाव। कम दिखाई देने का भाव।

धुँधली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुंध'।

धुँधाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-धुआं देना। २-धुआं देते हुए जलना।

धुंधु, धुन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का पुत्र जो मधुराक्षस का पुत्र था।

धुंधुआना [क्रि. अ., क्रि. स.] (हिं.) १-धुआं देना २-धुआं देते हुए जलना।

धुंधुकार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धुंधलापन २-अंधकार। अंधेरा। ३-नगाड़े का शब्द। धुंकार।

धुंधुमार, धुन्धुमार [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्रिशंकु का पुत्र। २-कुवलयाश्व का एक नाम।

धुंधुरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूएं या गर्द-गुबार के कारण होने वाला अंधेरा।

धुंधुरित [वि.] (हिं.) १-धुंधला किया हुआ। धूमिल। २-दृष्टिहीन। धुंधली दृष्टि वाला।

धुँधुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह अंधकार जो हवा में मिली हुई धूल के कारण हो। धुंध। २-धुंधलापन। धुंध नामक आँख का रोग।

धुँधुवाना* [क्रि. अ.] (हिं.) धुआँ देना। धुंआँ दे-देकर जलना।

धुँधेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुर्द-गुबार से उत्पन्न होने वाला अंधेरा। धुंध।

धुँधेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बदमाश। पाजी। २-दगाबाज। धोखेबाज।

धुँवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुआँ'।

धुँवाँकश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुआँकश'।

धुँवाँदान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुआँदान'।

धुँचाधार [वि., क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'धुआँधार'।

धुअ* [संज्ञा पु.] देखो 'ध्रुव'।

धुआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुलगती हुई आग से निकलने वाली काली भाप। धूम। घटाटोप। उमड़ती हुई वस्तु। भारी समूह। ३-धुर्रा। धुएं का धौरहर-क्षणभंगुर वस्तु। धुएं के बादल उड़ाना-भारी गप हाँकना। धुआं देना-१-सुलगतीहुई वस्तु से धुआं निकलना २-धुआँ लगाना या पहुँचाना। धुआं निकलना या काढ़ना-शेखी हाँकना। डींग मारना। धुआँ रमना-धुएं का छाया रहना। धुआँ सा मुँह होना-चेहरे का रंग फीका पड़जाना। (किसी वस्तु का) धुआं होना-काला पड़ना। मुंह धुआँ होना-लाज से मुख मलिन हो जाना। धुएं उड़ाना-छिन्न-भिन्न करना। धुएं उड़ाना-देखो 'धुएं उड़ाना'।

धुआँकश [संज्ञा पु.] (हिं.+फा.) भाप की शक्ति से चलने वाली नाव या जहाज। स्टीमर।

धुआँधार [संज्ञा पु.] (हिं.) छत में धुआं निकलने का छिद्र।

धुआँदान [वि.] (हिं.) १-धूएं से भरा। धूमयुक्त। २-गहरे रंग का। भड़कीला। भव्य। ३-धुएं के समान काला। ४-बड़े जोर का। प्रचंड। घोर। [क्रि. वि.] (हिं.) बड़े वेग से और बहुत अधिक। बहुत जोर से।

धुआँना [क्रि. अ.] (हिं.) धुआँ लगने से दूध, पकवान आदि का स्वाद और गंध बिगड़ जाना।

धुआँयँध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धुएं की-सी गंध। अपच या अजीर्ण के कारण आने वाली डकार धूम।

धुआँरा [संज्ञा पु.] (हिं.) धुआँ निकलने के लिए छत में बना हुआ छिद्र या खिड़की। चिमनी।

धुआँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उरद का आटा।

धुआँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कालिख जो धुआं लगने के कारण छत में जम जाती है। [वि.] (हिं.) धुआँ लगने के कारण दूध, पकवान आदि का बिगड़ा हुआ स्वाद या गंध।

धुआ* [संज्ञा पु.] (?) शव। लाश।

धुक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कलाबत्तू बटने की सलाई।

धुकड़पुकड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भय आदि के कारण होने वाली चित्त की व्याकुलता या अस्थिरता। घबराहट। २-आगा-पीछा। पसोपेश।

धुकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी थैली। बटुआ।

धुकधुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेट और छाती के बीच का भाग जो गहरा-सा होता है। २-कलेजा। हृदय। ३-कलेजे की धड़कन या

कम्प। ४-डर। भय। ५-एक प्रकार का गले में पहनने का गहना जो छाती पर लटकता रहता है। पदिक। जुगनू।

धुकना* [क्रि अ.] (हिं.) १-झुकना। नवना। २-गिर पड़ना। ३-झपटना। टूट पड़ना।

धुकनी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धूनी'।

धुकान+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) धुधकार। घोर शब्द गड़गड़ाहट का शब्द।

धुकाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-झुकाना। नवाना। २-गिराना। ३-पटकना। पछाड़ना। ४-धूनी देना।

धुकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नगाड़े का शब्द।

धुकारी*+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'धुकार'।

धुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेर का पेड़।

धुखना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'धुकना'।

धुखाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'धुकाना'।

धुगधुगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुकधुकी'।

धुज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ध्वजा'।

धुजा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ध्वजा'।

धुजिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सेना। फौज।

धुड़ंगा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. धुड़ंगी] १-जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो। २-जिस पर धूल पड़ी हो।

धुड़ंगी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। केवल धूल ही धूल हो।

धुत [वि.] (सं.) १-छोड़ा हुआ। २-भगाया हुआ।

धुतकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'दुतकार'।

धुतकारना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'दुतकारना'।

धुताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूर्त्तता'।

धुतू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धूतू'।

धुतूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धतूरा'।

धुत्ता [संज्ञा पु.](हिं.) धूर्त्तता। दगाबाजी। छल। कपट। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली।

धुधकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धूधू शब्द का शोर। २-घोरशब्द। गरज के समान शब्द।

धुधुकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुधुकार'।

धुधुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुधुकार'।

धुन [संज्ञा पु.] (सं.) कांपने की क्रिया या भाव। कंपन। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी काम को बराबर करते रहने की अनिवार्य प्रवृत्ति। लगन। २-मन की तरंग। मौज। ३-चिन्ता। ४-गाने की तर्ज। ५-सम्पूर्ण जाति का एक राग। ६-देखो 'ध्वनि'। धुन का पक्का-आरम्भ किये हुए काम पर बराबर लगा रहने वाला।

धुनकना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धुनना'।

धुनकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धुनियों का धनुष का सा वह औजार जिससे वह रूई धुनते हैं। २-लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धुनना [क्रि. स.] (हिं.) धुनकी की सहायता से रूई साफ करना। खूब मारना-पीटना। ३-दूसरे की बात बिना सुने अपनी बात बराबर कहते जाना। ४-कोई काम लगातार करते जाना।

धुनवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को (रुई) धुनने में प्रवृत्त करना।

धुनवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुनकी'।

धुना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुनिया'।

धुनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'ध्वनि'। २-देखो 'धुनी'।

धुनियाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) रूई धुनने का काम करने वाला। बेहना।

धुनिहाव+ [संज्ञा पु.] (?) हड्डी में का दर्द।

धुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'ध्वनि'। २-देखो 'धूनी'।

धुनीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र।

धुनेचा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार के सन का पौधा।

धुनेहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुनिया'।

धुपना+ [क्रि. अ.] (हिं.) धुलना। धोना।

धुपाना [क्रि. स.] (हिं.) १-धूप के धूएँ से सुवासित करना। २-किसी वस्तु को सुखाने के लिए धूप में रखना।

धुपेना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धूपदानी।

धुपेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी के दिनों में पसीने के कारण निकलने वाली फुन्सी। अँभौरी।

धुप्पस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) किसी को डराने या धोखा देने के लिए किया जाने वाला कार्य धौंस।

धुमई+ [वि.] (हिं.) धुएँ के रंग का। [संज्ञा पु.] (हिं.) धूएं के से रंग वाला बैल।

धुमरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'धूमिल'।

धुमला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसको दिखाई न दे। अन्धा।

धुमलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धूमिल होने का भाव। २-अंधकार। अंधेरा।

धुमारा [वि.] (हिं.) धूएँ के रोग का। धूमिल।

धुमिला [वि.] (हिं.) देखो 'धूमिल'।

धुमिलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) धूमिल होना। काला पड़ना।

धुर् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जूआ जो बैलों आदि के कंधे पर रखा जाता है। २-बोझ। भार। ३-गाड़ी आदि का धुरा। अक्ष। ४-खूँटी। ५-अच्छी और ऊँची जगह। ६-उँगली। ७-चिनगारी। ८-भाग। अंश। ९-धन। संपत्ति १०-गंगा का एक नाम।

धुरंधर, धुरन्धर [वि.] (सं.) १-जो सब में बहुत बड़ा भारी या बली हो। २-भार उठाने वाला। ३-श्रेष्ठ। प्रधान। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोझा ढोने वाला पशु। २-एक राक्षस का नाम। ३-धव का पेड़। ४-बोझ ढोने वाला कोई जीव।

धुर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रथ या गाड़ी का धुरा। अक्ष। २-शीर्ष या उच्च स्थान। ३-आरम्भ। शुरू। ४-भार। बोझ। ५-जूआ जो बैलों आदि के कंधे पर रखा जाता है। ६-बिस्वांसी धुर सिर से-बिलकुल शुरू से। [अव्य.] (सं.) १-न इधर न उधर। बिलकुल ठीक। २-एक दम दूर। [वि.] (सं.) दृढ़। पक्का।

धुरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वे दो कुएँ की लकड़ियाँ जिनके जमीन-पर वाले सिरे आपस में मजबूती से बाँधे रहते हैं और दूसरे सिरों के बीच में छोटी लकड़ी रहती है जिसमें गराड़ी पहनाई जाती है।

धुरकट [संज्ञा पु.] (हिं.) भूमि का वह लगान जो आसामी जमींदार को जेठ के महीने में पेशगी देते हैं।

धुरकिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ी के धुरे में लगाई जाने वाली कील।

धुरचट [संज्ञा पु.] (?) अधिकता। प्रचुरता।

धुरजटी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धूर्जटी'।

धुरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-मारना। पीटना। २-बजाना।

धुरपद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ध्रुपद'।

धुरमुट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'दुरमुस'।

धुरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) मेघ। बादल।

धुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. धुरी] लोहे का वह डंडा जिसके दोनों सिरों पर गाड़ी आदि के पहिये लगे रहते हैं। अक्ष।

धुरियाधुरंग [वि.] (देश.) १-वह गाना जो बाजे या साज के साथ न गाया जाय। २-अकेला एकाकी।

धुरियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी वस्तु को धूल से ढँका जाना। २-ऊख के खेत को पहले-पहल गोड़ा जाना। ३-किसी ऐब, बदनामी आदि को किसी प्रकार दबाया जाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु पर धूल डालना। २-ऊख के खेत को पहली बार गोड़ना। ३-ऐब या बदनामी को किसी प्रकार से दबा देना।

धुरियामल्लार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मल्लार जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

धुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा धुरा।

धुरीण [वि.] (सं.) १-बोझ संभालने वाला। २-मुख्य। प्रधान। ३-धुरंधर।

धुरीन [वि.] (हिं.) देखो 'धुरीण'।

धुरीय [वि.] (हिं) किसी पदार्थ के केन्द्र का। किसी पदार्थ के केन्द्र-सम्बन्धी।

धुरी-राष्ट्र [संज्ञा पु.] (हिं.) दूसरे महायुद्ध से पूर्व सार्वराष्ट्रीय राजनीति में जर्मनी, इटली तथा जापान इन तीन राष्ट्रों का गुट।

धुरी-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धुरी-राष्ट्रों की सैन्यशक्ति।

धुरेंडी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुलेंडी'।

धुरेटना* [क्रि. स.] (हिं.) धूल लगाना। धूल से लपेटना।

धुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लहसुन के समान एक औषधि। यह हिमालय पर पाई जाती है। २-विष्णु। ३-बैल।
[वि.] (सं.) १-धुरंधर। २-श्रेष्ठ। ३-बोझ ढोने वाला।

धुर्रा [संज्ञा पुं.] (हिं.) धूल। रजकण। कण। जर्रा। चूर्ण। *धुर्रा करना*–शीत से शरीर सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना। *धुर्रें उड़ाना*–१-किसी वस्तु के टुकड़े-टुकड़े कर डालना। २-किसी के मत आदि का खंडन करके बहुत दुर्दशा करना। ३-बहुत अधिक मारना या पीटना।

धुलना [क्रि. अ.] (हिं.) पानी से साफ या स्वच्छ किया जाना। धोया जाना।

धुलवाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को धोने में प्रवृत्त करना।

धुलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धोने का काम या भाव। २-धोने की मजदूरी।

धुलाना [क्रि. स.] (हिं.) धोने का काम दूसरे से कराना। धुलवाना।

धुलियापीर [संज्ञा पु.] (हिं.) खेल आदि में बच्चों का एक कल्पित पीर।

धुलियामिटिया [त्रि.] (हिं.) १-जिस पर धूल या मिट्टी पड़ी हो। २-दबाया या शान्त किया हुआ (झगड़ा-बखेड़ा आदि)।

धुलेंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) होली के दूसरे दिन होने वाला एक हिन्दुओं का त्यौहार जिसमें परस्पर अबीर लगाते और रंग डालते हैं।

धुव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ध्रुव'। (डिं.) कोप। क्रोध। गुस्सा।

धुवक [त्रि.] (सं.) गर्भनाश करने वाला।

धुवका+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गीत का पहला पद। टेक।

धुवन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग। [वि.] चलाने या कंपाने वाला।

धुवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुआँ'।

धुवाँकश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धुआँकश'।

धुवाँधार [वि., क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'धुआँधार'

धुवाँधज* [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि। आग।

धुवाराँ [संज्ञा पु.] (हिं.) घर या रसोईघर आदि का धुआँ निकलने का छेद या खिड़की जो छत में होती है।

धुवाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उड़द या उरद का आटा जिसके पापड़ आदि बनाये जाते हैं।

धुवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धुलाना'।

धुवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन के चमड़े का प्राचीनकाल में बनने वाला एक प्रकार का पंखा जिससे यज्ञ की आग दहकाते थे।

धुस्तूर [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरा।

धुस्स [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर। टीला। २-नदी के किनारे पर बाँधा हुआ बाँध।

धुस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) ओढ़ने की ऊन की मोटी लोई या चादर।

धूँध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धुँध'।

धूँधर [वि.] (हिं.) धुंधला। [संज्ञा स्त्री.] १-हवा में छाई हुई धूल। २-अंधेरा जो हवा में छाई हुई धूल।

धूँधला+ [वि.] (हिं.) देखो 'धुँधला'।

धूँसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धौंसा'।

धू* [वि.] (हिं.) १-ध्रुवतारा। २-राजा उत्तानपाद का हरिभक्त बालक का नाम। ३-धुरी।

धूआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुलगती हुई आग से निकलने वाली काली भाप। धूम। २-घटाटोप उमड़ता हुआ ढेर।

धूआँ-कश [संज्ञा पु.] (हिं.) भाप की शक्ति से चलने वाला जहाज। अगिनबोट। स्टीमर।

धूआँधार [वि.] (हिं.) १-धूंए से भरा हुआ। २-गहरे काले रंग का। ३-बहुत जोर का। घोर। [क्रि. वि.] बहुत अधिक या बहुत जोर से।

धूई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूनी'।

धूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। २-धूर्त्त मनुष्य। ३-काल। (हिं.) कलाबत्तू बटने की सलाई

धूकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'धुकना'।

धूजट* [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव। महादेव।

धूजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हिलना। २-काँपना।

धूजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कँपकँपी।

धूत [वि.] (सं.) १-कंपित। काँपता हुआ। २-जो धमकाया या डाँटा गया हो। ३-त्यक्त। छोड़ा हुआ। ४-तर्कित। * [त्रि.] (हिं.) धूर्त। दगाबाज।

धूतना* [क्रि. स.] (हिं.) धोखा देना। ठगना। धूर्त्तता करना।

धूतपाप [वि.] (सं.) जो पाप या दोष से रहित हो गया हो।

धूतपापा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काशी की एक प्राचीन छोटी नदी का नाम।

धूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। पत्नी। भार्या।

धूताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूर्त्तता'।

धूताड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धूतुक नामक बाजा।

धूती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया।

धूतुक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धू-धू करने वाला बाजा। २-तुरही।

धूतूक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धूतुक'।

धूध [संज्ञा पु.] (हिं.) आग की लपट उठने का शब्द।

धून [त्रि.] (सं.) कंपित। काँपता हुआ। [संज्ञा पु.] देखो 'दून'।

धूनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिलाने डुलाने वाला। चालक। २-साल का गोंद। राल।

धूनन [संज्ञा पु.] (सं.) कम्प। थरथराहट।

धूनना* [क्रि. स.] (हिं.) १-कुछ जलाकर उसका धूँआँ उठाना। धूआँ या धूनी देना। २-देखो 'धुनना'।

धूनराज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष

धूना [संज्ञा पु.) (हिं.) गुग्गुल की जाति का एक बड़ा वृक्ष। इसका गोंद भी धूप के समान ही जलाया जाता है।

धूनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुग्गुल आदि गन्धद्रव्य जलकर निकाला हुआ धूआँ। २-साधुओं को तापने की आग।
धूनी जगाना, लगाना–१-साधुओं का अपने पास तापने के लिए आग जलाना। २-विरक्त योगी होना। ३-शरीर तपाना। *धूनी देना*–धुआँ पहुँचाना। *धूनी रमाना*–१-सामने आग जलाकर शरीर तापने बैठना। २-साधु हो जाना।

धूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगंधित द्रव्यों को जलाकर निकाला हुआ धूआँ। सुगंधित धूम। २-जलाने पर सुगंध छोड़ने वाली वस्तु। [संज्ञा स्त्री.] १-एक प्रसिद्ध मिश्रित गंधद्रव्य जिसके जलाने से सुगन्ध देने वाला धूआं निकलता है। २-सूर्य की किरणों का विस्तार। आतप। घाम। *धूप खाना*–शरीर गरमाने के लिए धूप में बैठना। *धूप खिलाना*–धूप में रखना। *धूप दिखाना या देना*–धूप में रखना। *धूप निकलना*–घाम आना। सूर्योदय के प्रकाश और ताप फैलना। *धूप पड़ना*–सूर्य का ताप अधिक होना। *धूप में बाल या चूंड़ा सफेद करना*–बूढ़ा होने पर भी अनुभव न होना। *धूप लेना*–गरमी के लिए शरीर को धूप में रखना।

धूपघड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का यंत्र। जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है।

धूपछाँह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई देता है कभी दूसरा। *धूपछाँह रंग*–धूप छांह कपड़े का सा रङ्ग।

धूपदान [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पात्र जिसमें धूप या गंधद्रव्य रखकर जलाया जाता है।

धूपदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूप रखने का छोटा बरतन।

धूपद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) लाल खैर का वृक्ष।

धूपन [संज्ञा पु.] (सं.) धूप देने की क्रिया।

धूपना* [क्रि. अ.] (हिं.) धूप देना। गंधद्रव्य जलाना। [क्रि. स.] १-सुगन्धित धूएं से बसाना। २-दौड़ना। हैरान होना।

धूपपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) धूप रखने का बरतन।

धूप-बत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूप आदि गंध-द्रव्यों से बनी हुई वह बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धूआँ निकलता है।

धूपमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तन्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा।

धूपवास [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान करने के उपरान्त सुगंधित धूएँ से शरीर, बाल आदि सुवासित करने का काम।

धूपवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सलई या गूगल का वृक्ष

धूपायित [वि.] (सं.) १-सुगंधित धूएँ से बसा हुआ। २-चलने आदि से थका हुआ।

धूपार्ह [वि.] (सं.) धूप देने योग्य।

धूपित [वि.] (सं.) १-धूप जलाकर सुगंधित किया हुआ। थका हुआ।

धूम [संज्ञा पु.] (सं.) १-धुआं। धूआं। २-अपच या अजीर्ण में उठने वाली डकार। ३-धूमकेतु ४-उल्कापात। ५-एक ऋषि का नाम। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-बहुत से लोगों के इकट्ठे होकर शोर मचाने आदि का काम। २-हल-चल। आन्दोलन। ३-उपद्रव। ऊधम। ४-ठाटबाट। समारोह। ५-कोलाहल। हल्ला। शोर। ६-प्रसिद्धि। ख्याति।

धूम डालना-ऊधम करना। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक घास जो तालों में होती हैं।

धूमक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धूआँ। २-एक शाक का नाम।

धूमकथया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उछल-कूद और हल्लागुल्ला। उपद्रव।

धूमकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-केतुग्रह।

धूमकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-केतुग्रह। पुच्छलतारा। ३-शिव। महादेव। ४-वह घोड़ा जिसकी पूंछ में भंवरी हो। ५-रावण की सेना का एक राक्षस।

धूमगंधि, धूमगन्धि [संज्ञा पु.](सं.) रूसा नामक घास।

धूमग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) राहुग्रह।

धूमज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-मोथा मुस्तक।

धूमजांगज, धूमजाङ्गज [संज्ञा पु.] (सं.) वज्रक्षार नौसादर।

धूमदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसकी आँखों के सामने धूआँ-सा दिखाई पड़ता हो। १-एक प्रकार का आँख का रोग।

धूमधड़क्का [संज्ञा पु.] (हिं.) भारी आयोजन। समारोह।

धूमधर [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

धूमधाम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत अधिक तैयारी ठाटबाट। समारोह।

धूमध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

धूमप [वि.] (सं.) धूम्रपान करने वाला।

धूमपथ [संज्ञा पु.] (सं.) धूआँ निकालने का रास्ता। २-पितृयान।

धूम-पान [संज्ञा पु.] (सं.) १-औषधियों का धुआँ जो रोगी को नली द्वारा पान कराया जाता है। २-तम्बाखू, बीड़ी, आदि का धूआँ पीना।

धूमपोत [संज्ञा पु.] (सं.) धूआँकश।

धूमप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नरक जो सदा धूएं से भरा रहता है।

धूमप्राश [वि.] (सं.) धूआँ पीकर तपस्या करने वाला।

धूममार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) धूआँ निकलने का रास्ता।

धूममृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुवर्ण शोधने की एक प्रकार की मिट्टी।

धूमयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

धूमर* [वि.] (हिं.) देखो 'धूमिल'।

धूमरज [संज्ञा पु.] (सं.) घर के धूएँ का कालिख। घर का धूआँ।

धूमरा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. धूमरी] धूएं के रंग का कालापन लिये लाल रंग का।

धूमल [वि.] (सं.) धूएं के रंग का।

धूमला [वि.] (सं.) धूएं के रंग का। ललाई लिये काले रंग का। धुँधला जिसकी कांति मलिन हो।

धूमली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'धूमला'।

धूमवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. धूमवती] धूएं वाला

धूमवार [वि.] (सं.) जिसमें धूआँ लगा हो।

धूमशिखा [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

धूमस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शाक।

धूमसार [संज्ञा पु.] (सं.) घर का धूआँ।

धूमसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उड़द का आटा।

धूमांग, धूमाङ्ग [वि.] (सं.) जिसका अंग धूएं के समान हो। [संज्ञा पु.] शीशम का पेड़।

धूमाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुरुष जिसकी आँखें धूएँ के रंग की हों।

धूमाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) बिना ज्वाला या लपट की आग।

धूमाभ [वि.] (सं.) धूएँ के रंग का।

धूमावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दश महाविद्याओं में से एक देवी का नाम।

धूमित [वि.] (सं.) जिसमें धूआँ लगा हो। [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के मतानुसार वह दूषित मंत्र जो सादे अक्षरों का हो।

धूमिता [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) वह दिशा जिसमें जाने वाला हो।

धूमिल* [वि.] (हिं.) १-धूएँ के रंग का। २-धुन्धला।

धूमी [वि.] (सं.) धूएं से भरा हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की एक जिह्वा का नाम।

धूमोत्थ [वि.] (सं.) धूएं से निकला हुआ। [संज्ञा पु.] (सं) नौसादर।

धूमोद्गार [संज्ञा पु.] (सं.) अपच के कारण आने वाली धूएँ की-सी कड़वी डकार।

धूमोर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यम की पत्नी। २-मार्कण्डेय की पत्नी।

धूमोर्णापति [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

धूम्याट [संज्ञा पु.] (सं.) भृंगराज नामक एक पक्षी

धूम्र [वि.] (सं.) धूएँ के रंग का। [संज्ञा पु.] १-ललाई लिये काला रंग। २-शिला रस नामक गंघद्रव्य। ३-एक असुर का नाम। ४-शिव। महादेव। ७-एक योग (फलित ज्योतिष)।

धूम्रक [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

धूम्रकांत, धूम्रकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक रत्न का नाम।

धूम्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) राजा भरत के एक पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) जिसकी पताका धूएँ के से रंग की हो।

धूम्रकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा पृथु के एक पुत्र का नाम। २-कृष्णाश्व के एक पुत्र का नाम

धूम्रपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृमिघ्नी नामक एक पौधा।

धूम्रपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'धूम्रपत्रा'।

धूम्रमूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूली नामक तृण

धूम्रलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कबूतर। २-शुंभ नामक एक दानव के सेनापति का नाम।

धूम्रवर्ण [वि.] (सं.) धूएँ के रंग का। [संज्ञा पु.] (सं.) धूएँ का रंग।

धूम्रवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वा में एक का नाम।

धूम्रशूक [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

धूम्रशूल [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

धूम्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ककड़ी।

धूम्राक्ष [वि.] (सं.) जिसकी आँखें धूमले रंग की हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण का एक सेना-पति। २-विंदुवंशीय राजा हेमचंद्र के पुत्र का नाम।

धूम्राट [संज्ञा पु.] (सं.) भिंगराज।

धूम्रार्चि [संज्ञा स्त्री.](सं.) अग्नि की दस कलाओं में से एक।

धूम्राश्व [संज्ञा पु.] (सं.) इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा

धूम्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीशम का पेड़।

धूर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूल'। २-एक घास। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सिक्के का

बीसवाँ भाग। बिस्वांसी।

धूरकट [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पेशगी लगान जो आसामी जमींदार को जेठ असाढ़ में देता है।

धूरजटी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धूर्जटि'।

धूरडाँगर [संज्ञा पु.] (देश.) सींग वाला चौपाया ढोर।

धूरत* [वि.] (हिं.) देखो 'धूर्त्त'।

धूरधान [संज्ञा पु.](हिं.) धूल की राशि का ढेर।

धूरधानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धूल या गर्द की ढेरी। ध्वंस। विनाश। पथरकला बंदूक।

धूरधुरेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो। [वि.] (हिं.) धूल में लपेटा हुआ।

धूरसझा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोधूली का समय।

धूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धूल। गर्द। २-चूर्ण। बुकनी।

धूरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धूल'।

धूरियाबेला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बेला

धूरियामल्लार [संज्ञा पु.] (हिं.) मल्लार राग का एक भेद।

धूर्जटि [संज्ञा प.] (सं.) शिव। महादेव।

धूर्त्त, धूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-मायावी। छली। चालबाज। २-वंचक। प्रतारक। धोखा देने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में शठ नायक का एक भेद। २-विट्-लवण। लोहे का मैल। ४-धतूरा। ५-चोर नामक गंध द्रव्य ६-जुआरी। ७-दाँवपेंच या चालबाजी से काम को निकालने वाला।

धूर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुआरी। २-गीदड़। ३-कौरव्य कुल का नाग।

धूर्त्तचरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धूर्तों का चरित्र २-संकीर्ण नाटक का एक भेद।

धूर्त्तजंतु, धूर्त्तजन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य।

धूर्त्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शठता। वंचकता। चालाकी। चालबाजी।

धूर्त्तमानुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना।

धूर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद भटकटैया।

धूर्धर [संज्ञा पु.] (सं.) बोझा ढोने वाला। भारवाही।

धूर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

धूर्वह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'धूर्धर'।

धूर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रथ का अगला भाग।

धूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी, बालू आदि का बहुत महीन चूर। रेणु। रज। गर्द। २-धूल के समान साधारण या तुच्छ वस्तु। (कहीं) *धूल उड़ना*-१-सन्नाटा होना। २-बरबादी या नाश होना। (किसी की) *धूल उड़ना* १-बुराइयों का प्रकट किया जाना। २-उपहास होना। (किसी की) *धूल उड़ाना*-१-बुराइयों को प्रकट करना। बदनामी करना। २-हँसी करना। *धूल उड़ाते फिरना*-दीन दशा में इधर-ऊधर मारे-मारे फिरना। *धूल की रस्सी बटना*-असंभव बात को करने का प्रयत्न करना। *धूल चाटना*-१-बहुत गिड़गिड़ाना। २-बड़ी नम्रता दिखाना। *धूल छानना*-मारा-मारा फिरना। *धूल झड़ना*-(किसी पर) मार पड़ना। पीटना (विनोद)। *धूल झाड़ना*-१-मारना-पीटना (विनोद)। २-सेवा या खुशामद करना। *धूल डालना*-१-(किसी बात) इधर उधर प्रकट या फैलाने न देना। २-ध्यान न देना। *धूल फाँकना*-१-मारा-मारा फिरना। २-सरासर झूठ बोलना। *धूल बरसाना*-उदासी बरसना। रौनक न रहना। *धूल में मिलना*-नष्ट या चौपट करना। *धूल ले डालना*-बहुत फेरे लगाना। *पैर की धूल*-अत्यन्त तुच्छ वस्तु। *सिर पर धूल डालना*-पछताना। सिर धुनना। *धूल समझना*-अत्यंत तुच्छ समझना।

धूलक [संज्ञा पु.] (सं.) विष। जहर।

धूलधानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चूर-चूर होने का भाव। विनाश।

धूला [संज्ञा पु.] (देश.) टुकड़ा। खंड। कतरा।

धूलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्द। धूल। रेणु। रज

धूलिकदंब [कदम्ब] [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का कदंब।

धूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महीन जलकणों की झड़ी। २-कुहरा।

धूलिकुट्टिम [संज्ञा पु.] (सं.) जोता हुआ खेत।

धूलिकेदार [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का टीला।

धूलिगुच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) अबीर जो होली में डाला जाता है।

धूलिचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वे चित्र, कोष्ठक आदि जो रंगों के चूर्णों को जमीन पर भुरककर बनाये जाते हैं। साँझी।

धूलिजंघ, धूलिजङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौवा।

धूलिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। वायु। हवा।

धूलिपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी।

धूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धूल। रज। गर्द।

धूलीपटल [संज्ञा पु.] (सं.) धूल का ढेर।

धूलीमय [वि.] (सं.) धूल से भरा हुआ।

धूवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धूआँ'।

धूसना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-मलना। दलना। गींजना। मर्दित करना। २-ठूसना।

धूसर [वि.] (सं.) १-धूल के रंग का। खाकी। २-धूल से भरा। धूल लगा हुआ। *धूलधूसर*-धूल से भरा। [संज्ञा पु.] १-मटमैला रंग। २-ऊँट। ३-गदहा। ४-कबूतर। ५-बनियों की एक जाति।

धूसरच्छदा [संज्ञा स्त्री. (सं.) सफेद बोना।

धूसरपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी सूंड नामक पौधा।

धूसरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. धूसरी] १-धूल के रंग का। खाकी। २-धूल लगा हुआ।

धूसरित [वि.] (सं.) १-जो धूल से मटमैला हुआ हो। २-धूल से भरा हुआ।

धूसरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक किन्नरी का नाम।

धूसला [वि.] (हिं.) देखो 'धूसरा'।

धूस्तूर [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरा।

धूहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढूह। २-चिड़ियों को डराने का पुतला जो खेत में खड़ा किया जाता है।

धृक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धिक्कार'।

धृग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धिक्कार'।

धृत [वि.] (सं.) १-धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २-धारण किया हुआ। ३-स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४-पतित। [संज्ञा पु.] १-तेरहवें मनु रौच्य के पुत्र का नाम। २-द्रुह्युवंशीय धर्म का पुत्र।

धृतकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) वसुदेव के बहनोई।

धृतदेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवकी की एक कन्या का नाम।

धृतपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री का एक भेद।

धृतमाली [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रों को निम्न करने का एक अस्त्र विशेष।

धृतराष्ट्र [संज्ञा पु.](सं.) १-वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो। २-वह जिसका राज्य दृढ़ हो। ३-एक कौरव जो दुर्योधन के पिता थे। ४-एक नाग का नाम। ५-गंधर्वों के एक राजा। ६-जनमेजय के एक पुत्र का नाम। ७-एक प्रकार का हंस।

धृतराष्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धृतराष्ट्र की पत्नी। २-कश्यपऋषि की एक पत्नी का नाम।

धृतवत् [वि.] (सं.) ग्रहण करने वाला।

धृतवर्मा [संज्ञा प.] (सं.) १-वह जो कवच धारण किये हो। २-त्रिगर्त्त का राजकुमार।

धृतव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसने व्रत धारण किया हो। २-पुरुवंशीय जयद्रथ के पुत्र विजय का पौत्र।

धृतात्मा [वि.] (सं.) धीर। आत्मा को स्थिर रखने वाला। [संज्ञा पु.] १-धीर पुरुष। २-विष्णु।

धृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धारण करने या पकड़ने की क्रिया। २-स्थिर रहने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३-मन की दृढ़ता। धीरता। धैर्य। ४-सोलह मातृकाओं में से एक का नाम। ५-अठारह अक्षरों के वृत्तों की संज्ञा। ६-दक्ष की एक कन्या का नाम। ७-अश्वमेध की एक आहुति का नाम। ८-फलित-ज्योतिष में एक योग। ९-चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक। [संज्ञा पु.] १-जयद्रथ का पौत्र। ३-एक विश्वदेव का

धृतिमत्
नाम। ३–यदु-वंशीय बभ्रु का नाम।

धृतिमत [वि.] (सं.) धैर्ययुक्त।

धृतिहोम [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के बाद करने का एक होम।

धृती [वि.] (सं.) धीर। धैर्यवान्।

धृत्वन [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु। २–धर्म। ३–आकाश। ४–समुद्र। [वि.] धारण करने वाला।

धृषज [वि.] (सं.) दमन करने वाला।

धृषु [वि.] (सं.) दक्ष। निपुण। होशियार।

धृष्ट [वि.] (सं.) १–संकोच या लज्जा न करने वाला प्रगल्भ। निर्लज्ज। बेहया। २–अनुचित साहस करने वाला। उद्धत। ढीठ। गुस्ताख। [संज्ञा पु.] १–अस्त्रों का संहार। २–चेदिवंशीय कुन्ति का पुत्र। ३–सप्तम मनु के एक पुत्र का नाम।

धृष्टकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १–चेदिदेश के राजा शिशुपाल का पुत्र। २–जनकवंशीय सुध्वति के पुत्र। ३–नवें मनु रोहित के पुत्र। ४–सन्नति राजवंशीय सुकुमार का एक पुत्र।

धृष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुचित साहस। ढिठाई। निर्लज्जता।

धृष्टद्युम्न [संज्ञा पु.] (सं.) राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई।

धृष्टधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठोर स्वभाव।

धृष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यभिचारिणी। कुलटा-स्त्री।

धृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) १–दशरथ के एक मंत्री का नाम। २–यज्ञ का एक पात्र।

धृष्णज [वि.] (सं.) निर्लज्ज। बेहया।

धृष्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धृष्टता। निर्लज्जता।

धृष्णत्व [संज्ञा पु.] (सं.) धृष्टता। निर्लज्जता।

धृष्णि [संज्ञा पु.] (सं.) किरण।

धृष्णु [वि.] (सं.) १–धृष्ट। प्रगल्भ। ढीठ। उद्धत [संज्ञा. पु.] (सं.) १–वैवस्वत मनु के एक पुत्र २–एक रुद्र का नाम। ३–सावर्णमनु के एक पुत्र।

धृष्णोजा [संज्ञा पु.](सं) कार्त्तवीर्य के एक पुत्र।

धृष्य [वि.] (सं.) धर्षण योग्य। धर्षणीय।

धेड़ी-कौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) डोमकौवा।

धेन [संज्ञा पु.] (सं.) १–समुद्र। २–नद। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'धेनु'।

धेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रस। स्वाद। मज़ा।

धेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–थोड़े दिनों की ब्याई हुई गाय। सवत्सा-गौ। २–गाय।

धेनुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक राक्षस का नाम। महाभारत के अनुसार एक तीर्थ। ३–सोलह प्रकार के रति बंधों में से एक।

धेनुका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १–धेनु। २–हस्तिनी स्त्री।

धेनुकारि [संज्ञा पु.] (सं.) १–बलराम। २–नागकेशर का वृक्ष।

धेनुजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गवजुवाँ नामक औषधि।

धेनुदुग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १–गाय का दूध। २–चिर्भिटा।

धेनुदुग्धकर [संज्ञा पु.] (सं.) गाजर।

धेनुमक्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़े मच्छर या डांस जो चौपायों को लगते हैं।

धेनुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गोमती नदी। २–देवद्युम्न की पत्नी।

धेनुमुख [संज्ञा पु.] (सं.) गोमुख नाम का एक बाजा। नरसिंहा।

धेनुष्टरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी गाय।

धेनुष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जो बंधक रखी हो।

धेय [वि.] (सं.) १–धारण करने योग्य। धार्य। २–पोषण करने योग्य। पोष्य। ३–पीने योग्य पेय।

धेयना※ [क्रि. अ.] (हिं.) ध्यान करना।

धेर [संज्ञा पु.] (देश.) एक अनार्य जाति।

धेरा+ [वि.] (देश.) भेंगा।

धेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुत्री। बेटी।

धेलचा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आधे पैसे का सिक्का

धेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–आधा पसा। २–आधे पैसे का सिक्का।

धेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आठ आने का सिक्का। अठन्नी।

धेष्ठ [वि.] (सं.) बहुत धारण करने वाला।

धैंताल+ [वि.] (हिं.) १–चपल। चंचल। २–उजड्ड।

धैनव [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का बच्चा। [वि.] गाय से उत्पन्न।

धैना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–स्वभाव। आदत। २–काम-धन्धा।

धैनुक [संज्ञा पु.] (सं.) गायों का समूह या झुण्ड

धैर्य्य, धैर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–चित्त की स्थिरता। धीरता। २–उतावला न होने का भाव। सब्र। ३–चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव। निर्विकार।

धैर्य्यकलित [वि.] (सं.) स्थिर। अटल।

धैर्य्यच्युत [वि.] (सं.) अस्थिर। धैर्यहीन।

धैर्य्यशाली [वि.] (सं.) शांत। धैर्ययुक्त।

धैर्य्यावलंबन, धैर्य्यावलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) शांत होने की क्रिया।

धैर्य्यावलंबी, धैर्य्यावलम्बी [वि.] (सं.) सहिष्णु। शांत।

धैवत [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जिसका संकेत धा या ध है।

धोंडाल [वि.] (हिं.) जिसमें कंकड़ पत्थर के ढोंके हों (ऐसी जमीन या मिट्टी)।

धोंधका [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. धोंधकी) घर का धूआँ निकलने के लिये चोंगे के समान निकला हुआ छेद।

धोंधा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बेडौल पिंडा। लोंदा। २–भद्दा और बेडौल शरीर। *मिट्टी का धोंधा*–१–मूर्ख। नासमझ। २–आलसी।

धोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छिलका अलग की हुई मूंग या उरद की दाल। २–अफीम के बरतन का धोवन। ※[संज्ञा पु.] राजगीर। थवई।

धोकड़ [वि.] (देश.) मोटा ताजा। हट्टाकट्टा। मुस्टंडा।

धोका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पाँच मुट्ठी भर डंठलों का पूला। २–देखो 'धोखा'।

धोखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–मिथ्या व्यवहार जिस से दूसरे के मन में भ्रम उत्पन्न हो। छल। दंगा। २–किसी के झूठे या मिथ्या व्यवहार से उत्पन्न भ्रम। भुलावा। ३–भ्रम उत्पन्न करने वाली बात या वस्तु। ४–अज्ञान से होने वाली भूल। ५–अनिष्ट की संभावना। जोखिम ६–आशा या विश्वास के विरुद्ध होने वाला काम या फल। ७–चिड़ियों को डराने के लिए खड़ा किया हुआ पुतला, हाँडी आदि। बिजूखा। ८–पेड़ में बंधा हुआ फटा बाँस जिनसे चिड़ियों को उड़ाते हैं। खटखटा। ९–बेसन का एक पकवान जिसके भीतर मसाला आदि इस प्रकार भरा रहता है कि देखने वाले को कबाब का भ्रम हो जाता है। *धोखा उठाना*–विश्वास करके नुकसान सहना असावधानता से हानि होना। *धोखे की टट्टी होना*–१–वह परदा जिसकी ओट में शिकार खेलते हैं। २–भ्रम में डालने वाली वस्तु जिसमें केवल बाहरी तड़क-भड़क हो। *धोखा खड़ा करना या रचना*–जाल फैलाना। माया रचना। *धोखा खाना*–किसी के छल या कपट के कारण भ्रम में पड़ जाना या ठगा जाना। *धोखा देना*–१–भुलावा देना। छलना। २–भ्रम में डालना। ३–अकस्मात मर कर या नष्ट होकर दुःख पहुंचाना। *धोखा लगना*–कसर या त्रुटि होना। २–धोखा दिखाई देना। *धोखा लगाना*–चूक या कसर करना।

धोखेबाज [वि.] (हिं) धोखा देने वाला। छली। कपटी। धूर्त्त।

धोखेबाजी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) छल। कपट धूर्त्तता।

धोटा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'ढोटा'।

धोड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साँप।

धोतर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा कपड़ा

धोती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नौ-दस हाथ लम्बा और दो या ढाई हाथ चौड़ा वस्त्र जिसे भारतीय हिन्दू कमर से लेकर घुटनों के नीचे तक

का शरीर और स्त्रियाँ प्रायः सारा शरीर ढकने के लिए कमर से बांध लेती हैं। २-देखो 'धौति'।
धोती बांधना-धोती पहनना। *धोती ढीली करना*-डरजाना। *धोती ढीली होना*-भय या डर होना- [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाजा।

धोना [क्रि. स.] (हिं.) १-पानी से रगड़ कर किसी वस्तु पर से मैल गर्द आदि हटाना। प्रक्षालित करना। पखारना। (किसी वस्तु) से *हाथ धोना*-खो देना। गवां देना। *हाथ धोकर पीछे पड़ना*-जी-जान से किसी व्यक्ति या काम के पीछे लग जाना। *धोया-धाया*-१-निष्कलंक। निर्दोष। साफ। २-धृष्ट। बेहया बुराई करके भी लज्जित न होने वाला व्यक्ति *धो बहाना*-छोड़ देना या खो देना।

धोप*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलवार। खड्ग।

धोब [संज्ञा पु.] (हिं) धुलावट। धोये जाने की क्रिया।
धोब पड़ाना-धोया जाना।

धोबइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'धोबिन'।

धोबन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'धोबिन'।

धोबिघटा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घाट जहां धोबी कपड़े धोते हैं।

धोबिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़ा धोने वाली स्त्री। २-धोबी की स्त्री। ३-एक प्रकार की चिड़िया जो जल के किनारे रहती है।

धोबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (स्त्री. धोबिन) कपड़ा धोने का काम करने वाला। रजक।
धोबी का कुत्ता-व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला निकम्मा आदमी।

धोबीघास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ी दूब।

धोबीपछाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

धोबीपाट [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच। धोबीपछाड़।

धोम [संज्ञा पु.] (हिं.) धूम्र। धूआं।

धोयी [संज्ञा पु.] (सं.) एक संस्कृत के कवि का नाम।

धोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पास। सामीप्य। निकटता। २-किनारा। धार। बाढ़।

धोरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सवारी। २-घोड़े की सरपट चाल। ३-दौड़।

धोरणि [संज्ञा पु.] (सं.) परम्परा। श्रेणी।

धोरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धुरे को उठाने वाला। भार उठाने वाला। २-बैल। वृषभ। ३-प्रधान। मुखिया। सरदार। ४-श्रेष्ठ पुरुष। बड़ा आदमी।

धोरे*+ [क्रि. वि.] (हिं.) १-पास। निकट। समीप।
धोरे-धारे-आसपास।

धोलधक [संज्ञा पु.] (?) एक पेड़ का नाम।

धोला [संज्ञा पु.] (हिं.) जवासा। धमासा।

धोलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धुलाना'।

धोवती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोती।

धोवन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धोने का भाव। धोने की क्रिया। २-कोई वस्तु धोने पर निकला या बचा हुआ।

धोवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धोना'।
किसी के पैर की धोवन होना-किसी की अपेक्षा अत्यधिक तुच्छ होना।

धोवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धोवन। २-जल। पानी।

धोवाना* [क्रि. स.] (हिं.) धुलाना। [क्रि. अ.] धोया जाना। धुलना।

धोसा [संज्ञा पु.] (हिं.) गुड़ आदि का सूखा हुआ लोंदा। भेली।

धौं* [अव्य.] (हिं) एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले आता है जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और संदेह का भाव अधिक होता है। न जानें। मालूम नहीं। २-विकल्प या सन्देह-सूचक वाक्यों के पहले लगने वाला अव्यय। कि। या। अथवा। ३-जोर देने के लिए तो या भला के अर्थ में आने वाला शब्द। ४-विधि, आदेश आदि में केवल जोर देने के लिए एक शब्द।

धौंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग दहकाने के लिए दिया हुआ हवा का झोंका या आघात। २-गरमी की लपट। ताप। लू। *धौंक लगाना*-शरीर पर ताप का प्रभाव पड़ना।

धौंकना [क्रि. स.] (हिं.) १-आग को दहकाने के लिए उस पर वायु का आघात पहुँचाना। २-ऊपर डालना। ३-दंड आदि देना या लगाना

धौंकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग फूँकने की धातु या बाँस की सुनारों की पोली नली। २-भाथी।

धौंका+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी में चलने वाली गरम हवा। लू। *धौंका लगाना*-लू लगना।

धौंकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाथी चलाने वाला आग फूंकने वाला। २-बरतनों की मरम्मत करने वाले व्यापारी जो अंगीठी भाथी आदि लेकर नगरों की गलियों में घूमा करते हैं।

धौंकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-धौंकनी। २-भाथी।

धौंज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दौड़धूप। २-घबराहट। व्याकुलता।

धौंजना [क्रि. स.] (हिं.) १-दौड़धूप करना। २-किसी वस्तु को पैरों से रौंदना। कुचलना।

धौंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) अँधियारी। ढोका।

धौंताल [वि.] (हिं.) १-फुरतीला। चुस्त। चालाक। २-जिसे असाधारण धुन न हो। ३-साहसी। दृढ़। हट्टाकट्टा। हेकड़। ४-निपुण। पटु। तेज।

धौंधौंमार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हड़बड़ी। उतावली। शीघ्रता।

धौंर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सफेद ऊख।

धौंस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धमकी। डाँट। २-धाक। अधिकार। ३-भुलावा। धोखा। छल ४-बाकी वसूल होने का खर्च जो जमींदार या आसामी को देना पड़े। *धौंस की चलना*-चाल चलना। *धौंस बाँधना*-खर्च जिम्मे करना।

धौंसना [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाना। दमन करना। २-धमकी देना। डराना। धमकाना। ३-मारना पीटना।

धौंसपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुलावा। झांसा-पट्टी। दमदिलासा। *धौंसपट्टी में आना*-भुलावे में आना।

धौंसर* [वि.] (हिं.) देखो 'धूसर'।

धौंसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ा नगाड़ा। डंका। २-शक्ति। बूता। सामर्थ्य।

धौंसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धौंस जमाने वाला। २-धोखेबाज। ३-नगारा बजाने वाला। ४-वसूल करने का खर्चा लेने वाला।

धौ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक ऊंचा झाड़ या सदाबहार पेड़ जो हिमालय पर ४००० फुट की ऊँचाई तक होती है।

धौत [वि.] (सं.) १-धोया हुआ साफ। २-उजाला। सफेद। [संज्ञा पु.] रूपा। चांदी।

धौतकट [संज्ञा पु.] (सं.) सूत की बनी हुई थैली।

धौतकोषज [संज्ञा पु.] सोनापाठा नामक औषध

धौतय [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधानमक।

धौतशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्फटिक। बिल्लौर

धौतात्मा [वि.] (हिं.) शुद्ध आत्मा वाला। पवित्रात्मा।

धौति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुद्ध। २-हठयोग की एक क्रिया। ३-योग की एक क्रिया जिसमें आठ-दस हाथ लम्बी और दो अंगुल चौड़ी कपड़े की धज्जी मुंह से पेट के नीचे उतारते हैं। इस क्रिया द्वारा आंतें शुद्ध हो जाती हैं। ४-कपड़े की वह लम्बी धज्जी जो योग में काम आती है।

धौमल [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त-विकार। खून की खराबी।

धौम्य [संज्ञा पु.] (सं.) धूमऋषि के पुत्र।

धौम्र [वि.] (सं.) धूएं के रंग का।

धौर [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद परेवा नामक चिड़िया।

धौरहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धौराहर'।

धौरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. धौरी] १-सफेद। उजला। २-सफेद रंग का बैल। ३-धौ का पेड़। ४-एक पक्षी।

धौरादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिवपुराण के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

धौरहर [संज्ञा पु.] (हिं.) धरहरा । मीनार । बुर्ज ।

धौरितक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की पांच प्रकार की चालों में से एक ।

धौरिय* [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल ।

धौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेद गाय । कपिला ।

धौरे* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'धोरे' ।

धौरेय [वि.](सं.) रथ आदि खैंचने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) वह बैल जो गाड़ी खींचता है ।

धौर्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) धूर्त्तता ।

धौर्य [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की एक चाल ।

धौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ के पंजे का भारी आघात । चांटा । थप्पड़ । हानि का आघात । टोटा । हानि । *धौल कसना या जमाना*-चांटा लगाना । *धौल खाना*-चांटा सहना । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धौंर नामक ईख । २-ज्वार का हरा डंठल । [संज्ञा पु.] (हिं.) धौ का पेड़ १-धरहरा । [वि.] (हिं.) उजला । सफेद ।

धौलधक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) मारपीट । दंगा । ऊधम ।

धौलधक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) आघात । चपेट ।

धौलधप्पड़ [संज्ञा पु.](हिं.) १-मारपीट । धक्का-मुक्की । ऊधम । दंगा ।

धौलधप्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) धौलधप्पड़ ।

धौलहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धरहरा' ।

धौलहरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धरहरा' ।

धौलांजर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पर्वत जो पंजाब के कांगड़ा जिले में है ।

धौला [वि.] (हिं.) [स्त्री. धौली.) सफेद । उजला श्वेत । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धौ का पेड़ । २-सफेद बैल ।

धौलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेदी । उजलापन ।

धौलाखैर [संज्ञा पु.] (हिं.) बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल सफेद होती है ।

धौलागिरि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'धवलगिरि' ।

धौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बड़ा वृक्ष जो जाड़े में पत्तियाँ झाड़ता है । इसकी लकड़ी नरम और भूरी होती है । [संज्ञा पु.] एक पर्वत का नाम ।

ध्मांक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ध्वांक्ष' ।

ध्मांक्षनाशिनी, ध्माङ्क्षनाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाऊबेर ।

ध्मांक्षवल्ली, ध्माङ्क्षवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौआठोठी ।

ध्मांक्षादनी, ध्माङ्क्षादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकतुंडी ।

ध्मांक्षी, ध्माङ्क्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीतलचीनी ।

ध्मांक्षोली, ध्माङ्क्षोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकोली ।

ध्माकार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहार ।

ध्मापन [संज्ञा पु.] (सं.) जलाने की क्रिया ।

ध्मापति [वि.] (सं.) जलाकर खाक किया हुआ ।

ध्यात [वि.] (सं.) ध्यान किया हुआ । चिंतित ।

ध्याता [वि.] (हिं.) १-ध्यान करने वाला । २-विचार करने वाला ।

ध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी बात या कार्य में मन के लीन होने की क्रिया, दशा या भाव । २-मानस अनुभूति या प्रत्यक्ष । ३-चित्त की ग्रहण या विचार करने की वृत्ति या शक्ति । मन । ४-चेतना की वृत्ति चेत । खयाल । ५-बोध या ज्ञान कराने वाली वृत्ति या शक्ति । समझ । बुद्धि । ६-स्मृति । याद । ७-चित्त की एकाग्रता । ८-योग का सातवाँ तथा समाधि के पूर्व का अंग । *ध्यान आना*-विचार पैदा होना । *ध्यान छूटना*-एकाग्रता नष्ट होना । *ध्यान जमना*-१-चित्त एकाग्र होना । २-विचार स्थिर होना ।
ध्यान जाना-दृष्टि पड़ना । याद आना । *ध्यान दिलाना*-१-याद दिलाना । २-सुझाना । चेताना *ध्यान देना*-१-चित्त लगाना । *ध्यान पर चढ़ना ध्यान में आना*—१-चिन्ता, परवा करना । २-सोचना । समझना । *ध्यान बँटना*-खयाल इधर से उधर हो जाना । *ध्यान बँधना*-लगातार खयाल रहना । २-चित्त लग जाना । *ध्यान में डूबना, मग्न होना*-सब कुछ भूलकर एक ओर लगना । *ध्यान धरना*-भगवान की ओर मन लगाना । *ध्यान में लगना*-चित्त लगाकर मग्न होना । *ध्यान रखना*-याद रखना *ध्यान रहना*-याद रहना । *ध्यान लयना या लगाना*-मन से खयाल या याद रहना । *ध्यान से उतरना*-याद न रहना ।

ध्यानगोचर [संज्ञा पु.] (सं.) जो ध्यान से मालूम किया जाय ।

ध्यानना* [क्रि. स.] (हिं.) ध्यान करना ।

ध्यानमय [वि.] (सं.) ध्यानस्वरूप ।

ध्यानयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो । २-तंत्र या इन्द्रजाल की एक क्रिया ।

ध्याना* [क्रि. स.] (हिं.) १-ध्यान करना । २-स्मरण करना ।

ध्यानावचार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के बौद्ध देवता ।

ध्यानिक [वि.] (सं.) जिसकी प्राप्ति ध्यान द्वारा हो

ध्यानिबुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के बुद्ध ।

ध्यानी [वि.] (हिं.) १-ध्यानयुक्त । समाधिस्थ । २-जो ध्यान में रहता हो । ध्यान करने वाला

ध्याम [संज्ञा पु.] (सं.) १-दौना । दमनक । २-गंधतृण । [वि.] श्यामल । साँवला ।

ध्यामक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोहिस घास ।

ध्यामन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिन्ता । विचार । २-परिमाण । अन्दाज ।

ध्येय [वि.] (सं.) ध्यान करने योग्य । २-जिसका ध्यान किया जाय । उद्देश्य । ऑब्जैक्ट ।

ध्राक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्राक्षा । दाख ।

ध्रुपद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्का गाना जिसकी लय और स्वर बिलकुल बंधे हुए होते हैं । तथा जिसमें देवताओं की स्तुति आदि होती है ।

ध्रुव [वि.] (सं.) १-सदा एक ही स्थान पर या एक ही अवस्था में रहने वाला । स्थिर । अचल । २-दृढ़ । पक्का । निश्चित । [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश । २-कील । ३-पर्वत । खंभा । ५-वट । बरगद । ६-आठ वस्तुओं में से एक । ७-ध्रुपद । एक यज्ञपात्र । ९-विष्णु । १०-हर । ११-फलित ज्योतिष में एक शुभयोग । १२-शरारि नाम का पक्षी । १३-ध्रुवतारा । १४-गांठ । १६-भगवान् के एक प्रसिद्ध भक्त जो राजा उत्तानपाद के पुत्र थे तथा जिनकी माता का नाम सुनीति था । १७-शरीर की भौंरी । १८-पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे, जिनके बीचों बीच अक्षरेखा की स्थिति मानी जाती है । १९-फलित ज्योतिष में एक नक्षत्र गण जिसमें उत्तराफालगुणी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी हैं । २०-रगण का अठारहवां भेद जिसमें पहले एक लघु फिर एक गुरु और तीन लघु होते हैं । २१-तालू का एक रोग । २२-सोमरस का वह भाग जो प्रातःकाल से सायंकाल तक बिना किसी देवता को अर्पित हुए रखा रहे ।

ध्रुवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खंभा । २-ध्रुपद । नक्ष की दूरी ।

ध्रुवका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ध्रुपद ।

ध्रुवकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पुच्छल तारा ।

ध्रुवचरण [संज्ञा पु.](सं.) रुद्रताल के बारह भेदों में से एक भेद ।

ध्रुवच्युत [वि.] (सं.) अचलपर्वत को हिलाने वाला ।

ध्रुवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्थिरता । अचलता । २-दृढ़ता । पक्कापन । ३-निश्चय ।

ध्रुवतारा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है जो कभी इधर-उधर नहीं होता ।

ध्रुवदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सप्तर्षि-मंडल । २-एक प्रसिद्ध यंत्र जिसकी सूई सर्वदा उत्तरी ध्रुव की ओर रहती है तथा जिससे दिशाओं का ज्ञान होता हैं । कुतुबनुमा ।

ध्रुवदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह संस्कार के अन्तर्गत एक कृत्य जिसमें वर-वधु को मन्त्र पढ़कर ध्रुवतारा दिखाया जाता है ।

ध्रुवधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूहते समय चुपचाप

खड़ी रहने वाली गाय।

ध्रुवनंद, ध्रुवनन्द [संज्ञा पु.] (सं.) नन्द के एक भाई का नाम।

ध्रुवपद [संज्ञा पु.] (सं.) ध्रुपद।

ध्रुवमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) दिशाओं का बोध कराने वाला यंत्र। कुतुबनुमा।

ध्रुवरत्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

ध्रुवरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विपुवतरेखा।

ध्रुवलोक [संज्ञा पु.] (सं.) एक लोक जो सत्यलोक के अन्तर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित है।

ध्रुवसंधि, ध्रुवसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) राजा सुसंधि के पुत्र।

ध्रुवसिद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निमित्र की सभा का एक वैद्य।

ध्रुवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का यज्ञपात्र २-मरोड़फली। ३-शालपर्णी। ४-ध्रुपद गीत ५-सती या साध्वी स्त्री।

ध्रुवावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ों की एक भौंरी का नाम। २-वह घोड़ा जिसके ऐसी भौंरियां हों।

ध्रुवाश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बड़ा घोड़ा।

ध्रुवीय [वि.] (सं.) १-ध्रुव संबंधी। २-ध्रुव प्रदेश का।

ध्वंस [संज्ञा पु.] (सं.) विनाश। क्षय। हानि।

ध्वंसक [वि.] (सं.) नाश करने वाला। [संज्ञा पु.] शत्रु के जहाज का नाश करने वाला जहाज।

ध्वंसकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) हत्या। कत्ल।

ध्वंसन [संज्ञा पु.] (सं.) ध्वंश या नाश करने की की क्रिया या भाव। क्षय। विनाश।

ध्वंसनीय [वि.] (सं.) नाश करने योग्य।

ध्वंसावशेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु के टूट-फूट जाने पर बचा हुआ अंश। २-खंडहर।

ध्वंसित [वि.] (सं.) विनाशित। नष्ट किया हुआ

ध्वंसी [वि.] (सं.) [स्त्री ध्वंसिनी] नाश करने वाला। [संज्ञा पु.] १-पहाड़ी पीलू का पेड़। २-शत्रु के जहाज का नाश करने वाला जहाज

ध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिह्न। निशान। २-लम्बे या ऊँचे झंडे पर लगा हुआ कोई कपड़ा या कागज जो चिह्नस्वरूप होता है। पताका। झंडा। ३-ध्वजा लेकर चलने वाला आदमी। शौंडिक। ४-खाट की पट्टी। ५-लिंग। पुरुषेंद्रिय। ६-दर्प। गर्व। घमंड। ७-वह घर जिसकी स्थिति पूर्व की ओर हो।

ध्वजगृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह घर जिस पर ध्वज या झंडा लहराया जाता है।

ध्वजग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम (रामायण)।

ध्वजद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) ताल। ताड़ का पेड़।

ध्वजभंग, ध्वजभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नपुंसकता। क्लीवता।

ध्वजयंत्र, ध्वजयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिसमें ध्वजा का डंडा रखा जाता है।

ध्वजयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झंडे का डंडा।

ध्वजवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. ध्वजवती] १-ध्वजा वाला। २-चिह्न वाला।

ध्वजांशुक [संज्ञा पु.] (सं) झंडे या ध्वज का कपड़ा।

ध्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पताका। झंडा। २-एक प्रकार की कसरत जो दो प्रकार से होती है एक मालखंभ पर की दूसरी चौरंगी। ३-छंद शास्त्रानुसार टगण का पहला भेद। जिसमें पहले लघु और फिर गुरु आता है।

ध्वजादिगणना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलित-ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार की गणना जिसके द्वार प्रश्न के फल कहे जाते हैं।

ध्वजारोपण [संज्ञा पु.] (सं.) देवालय, अट्टालिकाओं या भवनों पर झंडा या पताका फहराने का कृत्य।

ध्वजारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी व्यक्ति विशेष से या नेता आदि के हाथों से झंडा फहरवाने का कार्य सम्पन्न कराना। २-ध्वजयष्टि पर झंडा चढ़ाकर फहराना।

ध्वजाहृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दास जिसे लड़ाई में जीतकर पकड़ा हो। २-वह धन जो लड़ाई में शत्रु को जीतने पर मिले।

ध्वजिक [वि.] (सं.) धर्मध्वजी। पाखंडी।

ध्वजिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पांच प्रकार की सीमाओं में से एक। पेड़ के निशान वाली सीमा। २-सेना का एक भेद।

ध्वजी [वि.] (सं.) [स्त्री. ध्वजिनी] चिह्न या पताका रखने वाला। [संज्ञा पु.] १-पर्वत। २-ब्राह्मण। ३-रण। संग्राम। ४-साँप। ५-घोड़ा। ६-मोर। ७-सीपी। ८-ध्वज लेकर चलने वाला। शौंडिक।

ध्वनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रवणेंद्रिय का विषय। वह जो सुनाई दे। शब्द। आवाज। २-आवाज की गूंज। ३-वह कथन जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ का अधिक चमत्कार होता है। ४-झलकता हुआ अर्थ। व्यंग्य अथ।

ध्वनिकाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम प्रकार का काव्य।

ध्वनिक्षेपक [वि.] (सं) ध्वनि को चारों ओर फैलाने वाला।

ध्वनिक्षेपक-यंत्र, ध्वनिक्षेपक-यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिसकी सहायता से किसी एक स्थान पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि विद्युत शक्ति से चारों ओर बहुत दूर-दूर तक पहुँचाई या फैलाई जाती है।

ध्वनिक्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) (आधुनिक रेडियो आदि में) किसी स्थान पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि, एक विद्युत् यंत्र विशेष की सहायता से चारों ओर बहुत दूर तक फैलाना या पहुँचाना।

ध्वनिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) कान।

ध्वनित [वि.] (सं.) १-जो ध्वनि या शब्द के रूप में प्रकट हुआ हो। २-शब्द से युक्त। ३-झलकता हुआ। व्यंजित। ४-बजाया हुआ। वादित। [संज्ञा पु.] बाजा। जैसे-मृदंग आदि।

ध्वनिनाला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वीणा। २-वेणु

ध्वनिविकार [संज्ञा पु.] (सं.) विकृत। ध्वनि। ध्वनि का अन्यथा भाव।

ध्वनिबोधक [संज्ञा पु.] (सं.) रोहित नामक घास।

ध्वन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यंग्यार्थ। २-एक प्राचीन राजा जिसका उल्लेख ऋग्वेद में आया है।

ध्वन्यात्मक [वि.] (सं.) १-ध्वनि स्वरूप या ध्वनिमय। २-काव्य जिसमें व्यंग्य अर्थ प्रधान हो

ध्वन्यार्थ [संज्ञा पु.] (हिं) शब्द की व्यंजना शक्ति से निकलने वाला अर्थ।

ध्वन्यालेखन [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक बोलते चित्रपट में वह प्रकिया जिसके द्वारा पात्रों की बातचीत अथवा संगीत आदि की ध्वनियां एक विशेष यंत्र के द्वारा इस प्रकार गृहीत और अंकित की जाती है कि आवश्यकता पड़ने पर चित्रपट दिखाने के समय उसके साथ सुनाई जा सकें।

ध्वसन [संज्ञा पु.] (सं.) ध्वंस का स्थान।

ध्वसनि [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

ध्वसिर [वि.] (सं.) जिसका नाश हुआ हो।

ध्वस्त [वि.] (सं.) १-गिरा पड़ा। २-खंडित। टूटा फूटा। ३-नष्ट भ्रष्ट। ४-परास्त। पराजित।

ध्वस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाश। विनाश।

ध्वस्मन् [वि.] (सं.) ध्वंसक। नाश करने वाला

ध्वस्र [वि.] (सं.) नाश करने वाला।

ध्वांक्ष, ध्वाङ्क्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-काक। कौवा। २-तक्षक। ३-मछली खाने वाली एक चिड़िया। ४-भिक्षुक।

ध्वांक्षजंघा, ध्वाङ्क्षजङ्घा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकजंघा।

ध्वांक्षदंडी, ध्वाङ्क्षदण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौवाठोंठी।

ध्वांक्षपुष्ट, ध्वाङ्क्षपुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

ध्वांक्षमाची, ध्वाङ्क्षमाची [संज्ञा स्त्री] (सं.) मकोय।

ध्वांक्षी, ध्वाङ्क्षी [संज्ञा स्त्री] (सं.) शीतलचीनी।

ध्वांत, ध्वान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंधकार। अंधेरा। २-एक नरक का नाम। ३-एक नरक का नाम।

ध्वांतचर, ध्वान्तचर [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर। राक्षस।

ध्वांतवित्त, ध्वान्तवित्त [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत जुगनू।

ध्वांतशत्रु, ध्वान्तशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य २-अग्नि। ३-चन्द्रमा। ४-श्वेतवर्ण। ५-श्योनाक।

ध्वांताराति, ध्वान्ताराति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य २-अग्नि। ३-चन्द्रमा।

ध्वांतोन्मेष, ध्वान्तोन्मेष [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत जुगनू।

ध्वान [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द।

न

न हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का बीसवां और तवर्ग का पांचवां वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत है।

नंग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नग्नता। नंगापन। २-स्त्री या पुरुष का गुप्त अंग। [वि.] (हिं.) १-बदमाश और बेहया। २-व्यर्थ में आगे से सिर फुड़व्वल करने वाला।

नंगधड़ंग [वि.] (हिं.) बिलकुल नंगा। जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र न हो। दिगम्बर।

नंगपैरा+ [वि.] (हिं.) जिसके पैर नंगे हो। जिसके पैरों में जूता न हो।

नंगमुनंगा [वि.] (हिं.) देखो 'नंगधड़ंग'।

नंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लंगर'।

नंगरवारी [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र में चलने वाली एक प्रकार की नाव।

नंगा [वि.] (हिं.) जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। दिगम्बर। वस्त्रहीन। २-निर्लज्ज। बेहया। ३-लुच्चा। पाजी। ४-जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। जैसे—नंगा सिर। नंगा पैर। नंगा उघाड़ा-जिसके शरीर पर वस्त्र न हो। नंगा लुच्चा-बदमाश और पाजी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिव। महादेव। २-काश्मीर की सीमा पर का एक बहुत बड़ा पर्वत।

नंगाझोरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नंगाझोली'

नंगाझोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छिपाई हुई वस्तु ढूंढने के लिए या संदेहवश किसी के कपड़े आदि उतरवाकर या योंही अच्छी तरह देखना। पहने हुए कपड़ों की तलाशी। जामा-तलाशी।

नंगाबुंगा [वि] (हिं) १-जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। २-जिसके ऊपर कोई आवरण न हो।

नंगाबुच्चा, नंगाबूचा [वि.] (हिं.) जिसके पास कुछ भी न हो। परम। निर्धन।

नंगामादरजाद [संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसा नंगा जैसा माता के उदर से निकलने के समय होता है। बिलकुल नंगा।

नंगामुनंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) बिलकुल नंगा।

नंगा-लुच्चा [वि.] (हिं.) नीच और दुष्ट। बदमाश।

नंगियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-नंगा करना। शरीर पर से वस्त्र उतार लेना। २-कपट का आवरण हटाना। ३-सब-कुछ छीन लेना।

नँगियावन [क्रि. स.] (हिं.) नंगा करना।

नँग्याना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'नगियाना'।

नंदंत, नन्दन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेटा। २-राजा। ३-मित्र।

नंद, नन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-आनन्द। हर्ष। २-सच्चिदानंद परमेश्वर। ३-पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ४-स्वामी कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम। ५-एक नाग का नाम। ६-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ७-वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ८-क्रौंचद्वीप के एक पहाड़ का नाम। ९-विष्णु। १०-मेंढक। ११-ज्ञानेश्वर। १२-एक प्रकार का मृदंग। १३-चार प्रकार की वेणुओं या बाँसुरियों में से एक। १४-एक राग का नाम। १५-पिंगल में डगण के दूसरे भेद का नाम जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। १६-लड़का। पुत्र। बेटा। १७-गोकुल के गोपों के मुखिया, वसुदेव के मित्र और श्रीकृष्ण के पालक पिता १८-महात्माबुद्ध के भाई का नाम जो उनकी विमाता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। १९-मगधदेश के कई राजाओं का नाम।

नंदक, नन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण का खड्ग २-मेंढक। ३-स्कंद का एक अनुचर। ४-धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ५-एक नाग का नाम। ६-राजा नंद जिनके यहाँ श्रीकृष्ण का बाल्यकाल बीता। [वि.] १-आनन्ददायक। २-कुलपालक। ३-संतोषप्रद।

नंदकि, नन्दकि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीपल।

नंदकिशोर, नन्दकिशोर [संज्ञा पु.] (सं.) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदकी, नन्दकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णु।

नंदकुँवर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नंदकुमार'।

नंदकुमार, नन्दकुमार [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण

नंदगाँव, [संज्ञा पु.] (हिं.) मथुरा से चौदह कोस की दूरी पर स्थित वृंदावन का एक गांव जहां नंदगोप रहते थे।

नंदगोपिता, नन्दगोपिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना नामक औषधि।

नंदग्राम, नन्दग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) १-नंदगांव २-अयोध्या के पास का एक गांव जहां बैठकर राम के वनवासकाल तक भरत ने तपस्या की थी

नंदद, नन्दद [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र। बेटा। लड़का। [वि.] (सं.) आनन्द देने वाला।

नंदनंद, नन्दनन्द [संज्ञा पु.] (सं.) नन्द के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र।

नंदनंदन, नन्दनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) नंदके पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदनंदिनी, नन्दनन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नन्द कन्या, योगमाया।

नंदन, नन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का उपवन जो स्वर्ग में है। २-कामाख्यादेश का एक नाम। ३-कार्त्तिकेय के एक अनुचार का नाम एक प्रकार का विष। ५-शिव। महादेव। ६-केसर। ७-चन्दन। ८-वास्तुकला के अनुसार वह मकान जो षट्कोण का हो। ९-विष्णु। मेंढक। ११-लड़का। बेटा। १२-एक प्रकार अस्त्र। १३-मेघ। बादल। १४-साठ संवत्सरों में से छब्बीसवां। १५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, जगण, भगण, जगण और दो रगण होते हैं। [वि.] (सं.) आनन्द देने वाला।

नंदनज, नन्दनज [संज्ञा पु.] (सं.) हरिचन्दन। श्रीकृष्ण।

नंदनप्रधान, नन्दनप्रधान [संज्ञा पु.] (सं.) नदनवन के स्वामी, इन्द्र।

नंदनमाला, नन्दनमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय थी। (पुराण)

नंदनवन, नन्दनवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र की वाटिका। २-कपास।

नंदना* [क्रि. अ.] (हिं.) आनन्दित होना। प्रसन्न होना। [क्रि. स.] (हिं.) आनन्दित या प्रसन्न करना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की बेटी।

नंदिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नन्दिनी'।

नंदपाल, नन्दपाल [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण।

नंदपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नंदनंदिनी'।

नंदप्रयाग, नन्दप्रयाग [संज्ञा पु.] (सं.) बदरिकाश्रम के पास का एक तीर्थ जो सात प्रयागों में से है।

नंदरानी [संज्ञा. स्त्री. (हिं.) नंद की रानी या पत्नी, यशोदा।

नंदरूख [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पेड़ जिसकी पत्तियां रेशम के कीड़ों को खाने के लिये दी जाती हैं।

नंदलाल [संज्ञा पु.] (हिं.) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण

नंदवंश, नन्दवंश [संज्ञा पु.] (सं.) मगध का एक विख्यात राजवंश जिसका अन्तिम राजा उस समय सिंहासनारूढ था जिस समय सिकन्दर ने ईसा से ३२७ वर्ष पूर्व पंजाब पर चढ़ाई की थी।

नंदा, नन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-गौरी ३-एक प्रकार का कामधेनु। ४-एक मातृ का

या बालग्रह जिसके सम्बन्ध में यह माना जाता है कि इसके कारण बालक अपने जीवन के प्रथम दिन, प्रथम मास, प्रथम वर्ष में ज्वर से पीड़ित होकर बहुत रोता तथा अचेत हो जाता है। ५-किसी पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथि। ६-संपत्ति। ७-एक प्रकार की संक्रांति। ८-हर्ष की स्त्री। ९-संगीत में एक मूर्च्छना का नाम। १०-एक अप्सरा का नाम। ११-विभीषण की कन्या। १२-वर्त्तमान अवसर्पिणी के दसवें अर्हत की माता का नाम। (जैन)। १३-एक नदी का नाम। १४-मिट्टी का घड़ा या झंझर आदि जिसमें पानी रखते हैं। १५-शाकद्वीप की एक नदी का नाम। १६-पति की बहन। ननद। १७-एक तीर्थ का नाम। १८-बरवैछंद का एक नाम।

नदातीर्थ, नन्दातीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक नदी और तीर्थ जो हेमकूट पर्वत पर है।

नंदात्मज, नन्दात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

नंदात्मजा, नन्दात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योगमाया।

नंदादेवी, नन्दादेवी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दक्षिणी हिमालय की एक चोटी जो २५००० फुट से ऊँची है।

नंदापुराण, नन्दापुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराण का नाम।

नंदार्थ, नन्दार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) शाकद्वीप ब्राह्मणों का एक संप्रदाय।

नंदाश्रम, नन्दाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम। (महाभारत)।

नंदि, नन्दि [संज्ञा पु.](सं.) १-आनन्द। २-वह जो आनन्दमय हो। ३-सच्चिदानन्द परमेश्वर। ४-शिव के द्वारपाल बैल का नाम। ५-शिव।

नंदिकर, नन्दिकर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

नंदिका, नन्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिट्टी की नांद जिसमें पानी रखते हैं। २-नंदनवन जहां इन्द्र क्रीड़ा करते हैं। ३-किसी पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथि। ४-हँसमुख स्त्री।

नंदिकावृत, नन्दिकावृत [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार की मणि (बृहत्संहिता)।

नंदिकुंड, नन्दिकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ (महाभारत)।

नंदिकेश, नन्दिकेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के द्वारपाल, नन्दकेश्वर।

नंदिकेश्वर, नन्दिकेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव के द्वारपाल बैल का नाम। २-नंदी का कहा हुआ एक उपपुराण जो चौथा उपपुराण माना जाता है।

नंदिग्राम, नदिग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्या से चार कोस की दूरी पर स्थित एक गांव जहां भरत ने चौदह वर्ष तक राम की प्रतीक्षा में तपस्या की थी।

नंदिघोष, नन्दिघोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्निदेव द्वारा दिये गये अर्जुन के रथ का नाम। २-बंदीजनों की घोषणा।

नंदित, नन्दित [वि.] (सं.) आनन्दित। सुखी। प्रसन्न। ❀ [वि.] (हिं.) बजता हुआ।

नंदितरु, नन्दितरु [संज्ञा पु.] (सं.) धव का पेड़।

नंदितूर्य, नन्दितूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक प्रकार का बाजा।

नंदिन, नन्दिन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली जो बंगाल और आसाम में पाई जाती है। ❀ (हिं.) लड़की। बेटी। पुत्री।

नंदिनी, नन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कन्या। लड़की। पुत्री। २-रेणुका नामक गंधद्रव्य। ३-जटामासी। ४-उमा। ५-गंगा का एक नाम। ६-पति की बहन। ननद। ७-दुर्गा का एक नाम। ८-तेरह अक्षरों के एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, एक जगण, दो सगण और एक गुरु होता है। -वसिष्ठ की कामधेनु का नाम। १०-पत्नी। जोरू। ११-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। १२-

नंदिमुख, नन्दिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी। २-सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का चावल। ३-शिव का एक नाम।

नंदिमुखी, नन्दिमुखी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-तंद्रा। २-भावप्रकाश के अनुसार वह पक्षी जिसकी चोंच के ऊपर का भाग जो बहुत कड़ा और गोल हो।

नंदिरुद्र, नन्दिरुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

नंदिवर्द्धन, नन्दिवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-पुत्र। बेटा। ३-मित्र। दोस्त। ४-प्राचीनकाल का एक प्रकार का विमान। ५-वह मन्दिर जिसका विस्तार चौबीस हाथ हो, जो सात भूमियों से संयुक्त हो और जिसमें २० शृंग हों। ६-मगधराज्य के राजा बिंबसार के पुत्र के पड़पोते का नाम।
[वि.] (सं.) आनन्द बढ़ाने वाला।

नंदिवारलक, नन्दिवारलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली जो समुद्र में पाई जाती है।

नंदिषेण, नन्दिषेण [संज्ञा पु.] (सं.) कुमार के एक अनुचर का नाम।

नंदी, नन्दी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिव के एक प्रकार के गण। २-शिव का द्वारपाल, बैल। ३-शिव के नाम पर दाग कर छोड़ा हुआ बैल। ४-वह बैल जिसके सारे शरीर पर गाँठें हों। ऐसा बैल खेती के उपयुक्त नहीं होता। ५-विष्णु। ६-जैनों के एक श्रुत पारग ७-उड़द। ८-बंगाल के कायस्थ, तेली, नाई आदि कई जातियों की उपाधि। ९-धव का पेड़। १०-पाखर का पेड़। ११-पदवृक्ष। १२-तुन का पेड़। [वि.] (हिं.) जो प्रसन्न हो आनन्दयुक्त।

नंदीगण, नन्दीगण [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव का द्वारपाल, बैल। २-दागकर छोड़ा हुआ बैल। साँड।

नंदीघंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल के गले के बांधने का बिना डांडी का घंटा।

नंदीपति, नन्दीपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नंदीमुख, नन्दीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नांदीमुख'।

नंदीवृक्ष, नन्दीवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुन का पेड़। २-मेढासिंगी।

नंदीश, नन्दीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-संगीत के अनुसार तालों के साठ भेदों में से एक। ३-नंदी।

नंदीश्वर, नन्दीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-नंदीश ताल। ३-वृन्दावन का एक तीर्थ। ४-शिव का एक गण जिसका मुँह बन्दर का सा और रंग काला था।

नंदेऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नंदोई'।

नंदोई [संज्ञा पु.] (हिं.) ननद का पति। पति का बहनोई।

नंदोला [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी की बड़ी नांद।

नंदोसी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नंदोई'।

नंद्यावर्त्त [संज्ञा प.] (सं.) १-एक प्रकार की इमारत। २-तगर का पेड़।

नंबर [वि.] (अं.) १-अंक। अदद। संख्या। २-गणना। गिनती। [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि की कोई खास संख्या या अंक। २-कपड़े नापने का लोहे का ३६ इंच या तीन फुट का गज।

नंबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गांव का वह अधिकारी जो अपनी पट्टी के तथा हिस्सेदारों की मालगुजारी आदि वसूल करता हो। २-मुखिया।

नंबरवार [क्रि. वि.](अं., फ़ा.) संख्या के क्रम से। यथाक्रम। एक-एक करके। क्रमशः।

नंबरिंगमशीन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह यंत्र जिसकी सहायता से रसीद टिकट आदि पर क्रमसंख्या छापी जाती है।

नंबरी [वि.] (हिं.) १-जिस पर नंबर लगा हो। २-नंबर-संबंधी। नंबर का। ३-मशहूर। ४-बहुत बड़ा।

नंबरी-गज [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़े नापने का ३६ इंच का गज।

नंबरी-सेर [संज्ञा पु.] (हिं.) तौलने का सेर जो भारतीय सरकारी रुपयों से ८०भर का होता है।

नंबूरी [संज्ञा पु.] (देश.) मालाबार प्रांत के ब्राह्मणों की एक जाति।

घास जिसके फल को सूंघने से बहुत छींक आती हैं। उग्रगंधा। छवक।

नकटा [वि.] (हिं.) [स्त्री. नकटी] १–वह जिसकी नाक कट गई हो। २–एक प्रकार का गीत जिसे स्त्रियाँ विवाह आदि के शुभ अवसर पर गाती हैं। ३–वह उत्सव जिसमें उक्त गीत गाया जाता है। ४–एक प्रकार की चिड़िया। [वि.] १–जिसकी नाक कटी हो। २–बेशर्म। निर्लज्ज। ३–अप्रतिष्ठित। जिसकी बहुत अप्रतिष्ठा या दुर्दशा हुई हो।

नकटेसर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पौधा जो फूलों के लिए लगाया जाता है।

नकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलों के नाक फूल जाने या सूज जाने का एक रोग।

नकतोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

नकतोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक-भौं सिकोड़कर बड़े अभिमानपूर्वक नखरा करना। *नकतोड़े उठाना*–अनुचित अभिमान सहना। *नकतोड़े तोड़ना*–बहुत अधिक और अनुचित नखरा करना।

नकद [संज्ञा पु.] (अ.) तैयार रुपया। रुपया-पैसा। वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। [वि.] १–(रुपया) जो तैयार या सामने हो। २–जिसका मूल्य रुपये-पैसे आदि के रूप में दिया या चुकाया जाय। रोक। [क्रि. वि.] तुरन्त दिए हुए रुपये के बदले में। उधार का उलटा।

नकदावा [संज्ञा पु.] (हिं.) चने या मटर की दाल के साथ हुई बरी कौंहडोरी।

नकदी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–धन। रोकड़। रुपया-पैसा। सिक्का। २–वह भूमि जिसका लगान नकद रुपयों में लिया जाय।

नकना* [क्रि. स.] (हिं.) १–लाँघना। उल्लंघन करना। फांदना। २–त्यागना। छोड़ना। तजना। [क्रि. अ.] (हिं.) १–नाक में दम होना। हैरान होना। २–चलना। [क्रि. स.] नाक में दम करना।

नकपोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाक'।

नकफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक में पहनने का (एक प्रकार का आभूषण) लौंग–या कील।

नकब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह छेद जिसको चोर किसी दीवार में से प्रवेश करने के लिए करता है। सेंध।

नकबजन [संज्ञ पु.] (अ.+फा.) चोरी करने के लिए दीवार में छेद करने वाला व्यक्ति। सेंध लगाने वाला।

नकबज़नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सेंध लगाने की क्रिया।

नकबानी* [सज्ञा स्त्री.] (हिं) नाक में दम। हैरानी।

नकबेसर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाक में पहनने की छोटी नथ। बेसर।

नकमोती [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक में पहनने का मोती जिसे लटन भी कहते हैं।

नकल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–किसी दूसरे के ढंग पर या उसके आकार-प्रकार की बनाई हुई वस्तु। अनुकृति। २–कोई वस्तु या काम देखकर उसके अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का काम। अनुकरण। ३–किसी लेख आदि की अक्षरशः उतारी हुई प्रतिलिपि। कापी। ४–किसी के हावभाव का अथवा बातचीत का भलीभांति अनुकरण। स्वांग। अभिनय। ५–हास्यरस की छोटी कहानी। चुटकला। ६–अद्भुत और हास्यजनक आकृति।

नकलनवीस [संज्ञा पु.] (अ.+फा.) वह जो दूसरों के लेखों आदि की नकल करता हो। (अदालती)।

नकलनवीसी [संज्ञा स्त्री.] (अ.+फा.) १–नकलनवीस का काम। २–नकलनवीस का पद।

नकलनोर [संज्ञा पु.] (देश.) मुनिया नामक एक चिड़िया।

नकलपरवाना [संज्ञा पु.] (अ. + फा.) पत्नी का भाई। साला। (हास्य)।

नकलबही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बही जिस पर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है।

नकली [वि.] (अ.) १–नकल करके बनाया हुआ २–कूट। बनावटी। जाली। झूठा।

नकलेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव खींचने की वह रस्सी जो और सब रस्सियों से आगे रहती है।

नकलोल [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'नकलोर'।

नकवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाक में दम। परेशानी। हैरानी।

नकश [संज्ञा प.] (अ.) १–देखो 'नक्शा'। २–ताश से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ

नकशमार [संज्ञा पु.](हिं.) नकश नाम का जूआ जो ताश के पत्तों से खेला जाता है।

नकशा [संज्ञा पु.] देखो 'नक्शा'।

नकशाकार [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी विषय या बात की रूपरेखा या प्रारूप तैयार करने वाल ड्राफ्टसमैन।

नकशानवीस [संज्ञा पु.] देखो 'नक्शानवीस'।

नकशी [वि.] देखो 'नक्शी'।

नकशीमैना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मैना जिसे तेलिया भी कहते हैं।

नकसमार [संज्ञा पु.] (हिं.) ताश से खेला जाने वाला एक प्रकार का जूआ।

नकसा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्शा'।

नकसीर [संज्ञा पु.](हिं.) आपसे-आप नाक से रक्त बहने का एक रोग जो प्रायः गरमी के दिनों में होता है।
नकसीर भी न फूटना–तनिक सा भी कष्ट य

हानि न होना।

नकाना* [क्रि. अ.] (हिं.) नाक में दम होना। [क्रि. स] (हिं.) नाक में दम करना।

नकाब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चेहरा छिपाने के लिये उस पर डाला हुआ कपड़ा। स्त्रियों के मुख पर का घूंघट।

यौ०-*नकाबपोश*-जिसके चेहरे पर नकाब हो। *नकाब उलटना*-चेहरे पर से नकाब हटाना। मुँह पर से घूँघट हटाना।

नकार [संज्ञा पु.] (सं.) १- न या नहीं का बोध कराने वाला वाक्य। अस्वीकृतिसूचक शब्द या बात। नहीं। अस्वीकृति। इनकार। २-'न' अक्षर।

नकारची [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्कारची'।

नकारना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अस्वीकृत करना। २-किसी बात के सम्बन्ध में इस प्रकार कहना कि यह ऐसी नहीं है। हमने ऐसा नहीं किया या हम ऐसा नहीं करेंगे। 'नहीं' कहना अथवा करना।

नकारा [वि.] (फा.) खराब। बुरा। निकम्मा। [संज्ञा पु.] देखो 'नक्कारा'।

नकाश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्काश'।

नकाशना* [क्रि. स.] (हिं.) धातु, पत्थर आदि पर खोदकर बेलबूटे आदि बनाना।

नकाशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नक्काशी'।

नकाशीदार [वि.] (अ.) जिस पर नक्काशी या बेलबूटे खुदे हों।

नकास [संज्ञा पु.] देखो 'नक्काश'।

नकासना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'नकाशना'।

नकासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नक्काशी'।

नकासीदार [वि] (हिं.) जिस पर नक्काशी हो।

नकिंचन, नकिञ्चन [वि.] (सं.) दरिद्र। कंगाल

नकियाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाक से बोलना बोलते समय शब्दों का अनुनासिकवत् उच्चारण करना। २-नाक में दम आना। बहुत दुखी या हैरान होना। [क्रि. स.] (हिं.) नाक में दम करना। बहुत परेशान या तंग करना।

नकीब [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह व्यक्ति जो राजाओं आदि के आगे उनके तथा उनके पूर्वजों के यश का गान करता हुआ चलता है। चारण। भाट। वंदीजन। २-कड़खा गाने वाला पुरुष। कड़खैत।

नकीम [अव्य.] (सं.) रोकने की क्रिया।

नकुच [संज्ञा पु.] (सं.) मदार का पेड़।

नकुट [संज्ञा पु.] (सं.) नाक।

नकुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक। नासिका।

नकुल [संज्ञा पु.] (सं) १-नेवला नामक एक प्रकार का जंतु। २-पांडुराजा के चौथे पुत्र का नाम, जो माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३-पुत्र। बेटा। ४-शिव। महादेव। ५-प्राचीन काल का बाजा। [वि.] जिसका कोई कुल नहीं हो। कुलरहित। [संज्ञा पु.] (हिं.) दोपहर के समय पुर आदि चलाने वालों को पीने के लिए दिया जाने वाला रस।

नकुलकंद, नकुलकन्द [संज्ञा पु.] (सं) रास्ना नामक कंद।

नकुलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का प्राचीन काल का गहना। २-रुपया आदि रखने की एक प्रकार की थैली।

नकुलतैल [संज्ञा पु.] (सं.) नेवले के मांस में कई प्रकार का औषधियाँ मिला कर बनाया हुआ तेल, जिससे आमवात, शरीर के सब अंगों का कंप और कमर-पीठ, जाँघ आदि का दरद दूर होता है। वैद्यक।

नकुलांधरोग, नकुलान्धरोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आँख का रोग जिसमें आँखें नेवले की आँखों के समान चमकने लगती हैं और चीजें रंग बिरंगी दिखाई देने लगती हैं (सुश्रुत)।

नकुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

+[संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नेवला'।

नकुलाढ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधनाकुली।

नकुलारि [संज्ञा पु.] (सं.) बिडाल। बिलैया।

नकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामासी। २-केसर। ३-शंखिनी। ४-नेवले की मादा।

नकुलीश, नकुलेश [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के एक भैरव का नाम।

नकुलीश-पाशुपतदर्शन [संज्ञा. पु.] (सं.) एक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शन संग्रह में है इसमें शिव ही परमेश्वर और सब प्राणी उनके पशु माने गये हैं।

नकुलेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रायसन। रास्ना।

नकुलौष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन काल का बाजा जो तारों से बजाया जाता था।

नकुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाक। २-तराजू की डंडी का छेद।

नकेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊँट, बैल आदि की नाक में बंधी हुई रस्सी जिससे लगाम का काम लिया जाता है। मुहार। २-भालू की नाक में पहनाई हुई रस्सी।

किसी की नकेल हाथ में होना-किसी व्यक्ति पर पूरा वश या नियन्त्रण होना।

नक्क [संज्ञा पु.] (सं.) नाश। बरबादी।

नक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका। २-ताश के पत्तों में एक बूटी वाला पत्ता। एक्का। ३-देखो 'नक्की' और 'नक्कीमूठ'। ३-कौड़ी।

नक्कादूआ [संज्ञा पु.] देखो 'नक्कीमूठ'।

नक्कार [संज्ञा पु.] (सं.) अवहेलना। अवज्ञा। अपमान।

नक्कारखाना [संज्ञा पु] (फा.) वह स्थान ... पर नक्कारा बजता है। नौबतखाना। नक्कार खाने में तूती की आवाज-बड़े ... सामने छोटों की न सुनी जाने वाली ...

नक्कारची [संज्ञा पु.] (फा.) नगाड़ा या न... बजाने वाला।

नक्कारा [संज्ञा पु.] (फा.) डुगडुगी या ... आकार का एक प्रकार का बहुत बड़ा ... जिसमें एक बहुत बड़े कूंड़े के ऊपर ... मढ़ा रहता है। नगाड़ा। डंका। धौंसा। दुंदुभी।

नक्कारा बजाते फिरना-चारों ओर प्रकट ... फिरना। *नक्कारा बजाके*-खुल्लमखुल्ला। ... की चोट। *नक्कारा हो जाना*-... बढ़ना।

नक्काल [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी का अनुकरण या नकल करने वाला। २-भाँड़। ३-बहुरूपिया।

नक्काली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-नकल करने ... काम। नकल करने की क्रिया या ... भाँड का काम, विद्या या कला। ३-... का काम, विद्या या कला।

नक्काश [संज्ञा पु.] (अ.) नक्काशी करने ... किसी धातु, पत्थर आदि पर खोदकर ... या चित्र आदि बनाने वाला कारीगर।

नक्काशी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-धातु, पत्थर ... पर खोदकर बेल-बूटे या चित्र आदि ... की कला या विद्या। २-इस प्रकार ... बनाये हुए बेल-बूटे।

नक्काशीदार [वि.] (अ., फा.) जिस पर खोद... बेल-बूटे आदि बनाये गये हों।

नक्की [वि.] (देश.) १-पक्का। दृढ़। २-ठीक। निश्चित। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-... खेल में 'एक' का दाँव। २-ताश के पत्तों ... का एक्का। ३-जूये के किसी खेल ... दाँव जिसके लिए 'एक' का चिह्न ... या जिसकी जीत किसी प्रकार के एक ... आने से हो।

नक्कीपूर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्कीमूठ'।

नक्कीमूठ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जूए का एक खेल ... कौड़ियों से खेला जाता है।

नक्कू [वि.] (हिं.) १-बड़ी नाक वाला। २-... आपको बहुत बड़ा या प्रतिष्ठित ... वाला। ३-सब अलग और उलटा ... वाला।

नक्तंचर, नक्तञ्चर [संज्ञा पु.] (सं.) १-... २-राक्षस। ३-चोर। ४-बिल्ली। ५-... [वि.] रात के समय विचरण करने ... वाला।

नक्तंजात, नक्तञ्जात [संज्ञा पु.] (सं.) ... की औषध जिसका उल्लेख वेदों में है। ...

नक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह समय ...

एक मुहूर्त ही रह गया हो। २-रात। ३-अगहन मास के शुक्लपक्ष की को किया जाने वाला एक व्रत, जिस दिन के समय बिलकुल भोजन नहीं किया और रात के समय तारे देखकर किया है। ४-शिव। ५-राजा पृथु के पुत्र का [वि.] जो शरमा गया हो। लज्जित।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-गूदड़। चिथड़ा। २- की पलक।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-रात को घूमने २-महादेव। शिव। ३-राक्षस। ४-

[संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्ली। २-उल्लू [वि.] रात के समय विचरण करने या घूमने-

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

[वि.] (सं.) १-रात के समय भोजन वाला। २-नक्त नाम का व्रत करने

[संज्ञा पु.] (सं.) करंजवृक्ष।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

[संज्ञा पु.] (सं.) वह व्रत जिसमें दिन के नहीं केवल रात को तारे देख किया जाता है।

[वि.] (सं.) रात को उत्पन्न होने

[संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे समय दिखाई न दे। रतौंधी रोग से व्यक्ति।

[संज्ञा पु.] (सं.) आँख रोग जिसमें रात के समय कुछ भी नहीं देता। रतौंधी।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक विषैला पौधा कलियारी भी कहते हैं। २-हलदी।

[संज्ञा पु.] (सं.) करंजवृक्ष। कंजा।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नकद'।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-नाक नामक जल-जन्तु। २-घड़ियाल। कुंभीर (जल-जन्तु)।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-घड़ियाल। २- ३-नाक नामक जल-जंतु।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाक। नासिका।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'नकले'।

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नकलनवीस'

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो नकल-

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नकलपर-

(हि.) देखो 'नकलबही'।

नक्श [वि.] (अ.) अंकित या चित्रित। खींचा, बनाया या लिखा हुआ।
मन में नक्श करना या कराना–किसी के मन में किसी बात का निश्चय करना या कराना। *नक्श होना*–किसी बात का मन में भलीभाँति जम जाना। पूर्ण निश्चिय होजाना। [संज्ञा पु.] (अ.) १-तसवीर। चित्र। २-खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटे या फूल पत्ती आदि का काम। ३-मुहर। छाप। ४-यंत्र। तावीज। ५-जादू। टोना। ६-एक प्रकार का जूआ जो ताश से खेला जाता है ७-कव्वालों द्वारा गाया जाने वाला एक प्रकार का गाना।
नक्श बैठाना–अच्छी तरह अधिकार जमाना। *नक्श बैठना*–अधिकार या रंग जमना। *नक्श बिगड़ना*–अधिकार या प्रभाव का न रहना। रंग उखड़ना।

नक्शनिगार [संज्ञा पु.] (फा.) नक्काशी करके बनाए हुए बेलबूटे या चित्र आदि।

नक्शमार [संज्ञा पु.] (हिं.) 'नकश' नामक जूआ जो ताश के पत्तों से खेला जाता है।

नक्शा [संज्ञा पु.] (अ.) १-रेखाओं द्वारा आकार का निर्देश। रेखाचित्र। २-बनावट। आकृति ढाँचा। गढ़न। ३-किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४-चाल-ढाल। तरज। ढंग। ५-अवस्था। दशा। हाल। ६-ढाँचा। ठप्पा। पृथ्वी या खगोल के किसी भाग की स्थिति आदि के विचार से बनाया वह चित्र जिसमें देश, नगर, नदी, पहाड़, समुद्र आदि दिखाये गये हों। २-भवन आदि का उक्त प्रचार का रेखाचित्र।
(आँखों के सामने) नक्शा खिचजाना–किसी के सामने न रहने पर भी उसके रूप-रंग आदि का ठीक ध्यान हो जाना। *नक्शा जमना*–बहुत अधिक प्रभाव होना। *नक्शा जमाना* खूब प्रभाव डालना। *नक्शा तेज होना*–खूब प्रभाव होना।

नक्शानवीस [संज्ञा पु.] (अ., फा.) नक्शा अङ्कित करने वाला। नक्शा बनाने वाला।

नक्शानवीसी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) नक्शा बनाने का कार्य।

नक्शाबंद [संज्ञा पु.] (अ.) वह जो कपड़ों, धोतियों, साड़ियों आदि के छापने के ठप्पों क बेल-बूटे आदि के नक्शे या तर्ज तैयार करता है।

नक्शी [वि.] (अ.) जिस पर बेलबूटे बने हों।

नक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तारों का वह समूह या गुच्छा जो चन्द्रमा के मार्ग में पड़ता है। जिसकी पहचान के लिए आकार निर्दिष्ट करके कोई नाम रखा गया हो। तारों को ग्रहों से भिन्न समझना चाहिए। जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं तथा हमारे इस सौर जगत के अन्तर्गत हैं। तारे हमारे सौर जगत के अन्दर नहीं हैं। यह सूरज से पर्याप्त दूरी पर हैं तथा सूर्य की परिक्रमा न करने के कारण स्थिर जान पड़ते हैं। पहिचान के लिये नक्षत्रों के भिन्न-भिन्न नाम रखे गये हैं, वह इस प्रकार हैं और संख्या में २७ हैं :—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तर-भाद्रपद और रेवती इन २७ नक्षत्र के अलावा अभिजित नाम का एक और नक्षत्र पहले माना जाता था पर वह पूर्वाषाढ़ा के अन्तर्गत ही आ जाता है।

नक्षत्र-ईश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

नक्षत्र-कल्प [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्ववेद का एक परिशिष्ट जिस में चन्द्रमा की स्थिति आदि का उल्लेख या वर्णन है।

नक्षत्रकांति-विस्तार, नक्षत्रकान्ति-विस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद ज्वर।

नक्षत्रगण [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट नक्षत्रों का अलग अलग समूह अथवा गण।

नक्षत्रचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांत्रिकों के अनेक चक्रों में से एक जिसके अनुसार दीक्षा के समय नक्षत्र आदि के विचार से गुरु यह निश्चय करता है कि शिष्य को कौनसा मन्त्र दिया जाय। २-राशिचक्र।

नक्षत्रचिंतामणि, नक्षत्रचिन्तामणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कल्पित रत्न जिसके संबंध में यह प्रसिद्ध है कि इससे जो कुछ मांगा जाय वह मिलता है।

नक्षत्रज [वि.] (सं.) नक्षत्र से उत्पन्न होने वाला

नक्षत्रजात [संज्ञा पु.] (सं.) वह नक्षत्र जिसमें किसी का जन्म हो।

नक्षत्रदर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्षत्र देखने वाला या नक्षत्र सम्बन्धी ज्ञान रखने वाला व्यक्ति। २-ज्योतिषी।

नक्षत्रदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी। गणक। [वि.] (सं.) नक्षत्रों को देखने वाला।

नक्षत्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्र-भेद के अनुसार भिन्न-भिन्न पदार्थों का दान। जिस प्रकार रोहिणी नक्षत्र में घी, दूध तथा रत्न, मृगशिरा नक्षत्र में बछड़े सहित गौ, आर्द्रा में खिचड़ी हस्ता में हाथी और रथ, अनुराधा में उत्तरीय सहित वस्त्र, पूर्वाषाढ़ा में बरतन सहित दही तथा साना हुआ सत्तू, रेवती में काँसा, उत्तरा-भाद्रपद में मांस आदि। कहा जाता है कि इस तरह के दान से पुण्य और स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

नक्षत्रनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

नक्षत्रनेमि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ध्रुवतारा। २-चन्द्रमा।

नक्षत्रप [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

नक्षत्रपति [संज्ञा पु.]. (सं.) चन्द्रमा।

नक्षत्रपथ [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रों के चलने का पथ या मार्ग।

नक्षत्रपदयोग [संज्ञा पु .] (सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार एक योग विशेष जो उस समय होता है जबकि सूर्य जन्मराशि से छठे स्थान में या मेषराशि में हो तथा चन्द्रमा वृषराशि में हो। कहते हैं कि राजा या कोई राष्ट्र इस योग में अपने शत्रु पर चढ़ाई या आक्रमण करे तो वह शत्रु को तुरन्त परास्त कर सकता है।

नक्षत्रपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) एक कल्पित पुरुषाकार जिसकी कल्पना नक्षत्र-भेद के अनुसार भिन्न-भिन्न अङ्ग मान कर की जाती है जो बृहत्संहिता के अनुसार इस प्रकार है—मूल-नक्षत्र पांव, रोहिणी-अश्विनी-जांघ, पूर्वापाढ़ा तथा उत्तरापाढ़ा उरु, उत्तरा-फाल्गुणी तथा पूर्वाफाल्गुणी को गुह्य, कृत्तिका को कमर, उत्तरा-भाद्रपदा तथा पूर्वा-भाद्रपदा को पार्श्व, रेवती को कोख, अनुराधा को छाती, धनिष्ठा को पीठ, विशाखा को बांह, हस्त को कर, पुनर्वसु को उँगलियाँ, अश्लेषा को नाखून, ज्येष्ठा को गरदन, श्रवण को कान, पुष्य को मुख, स्वाति को दाँत, शतभिषा को हास्य, मघा को नाक, मृगशिरा को आँख, चित्रा को ललाट, भरणी को सिर तथा आर्द्रा को बाल मानकर नक्षत्र-पुरुष की कल्पना की जाती है।

नक्षत्र फल [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्र-समूह या गुच्छ का फल।

नक्षत्रभोग [संज्ञा पु.] (सं) राशिचक्र में स्थित नक्षत्रों का एक दिन का भोग।

नक्षत्रमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रों के चलने का पथ या मार्ग।

नक्षत्रमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह हार जिसमें सत्ताईस मोती हों।

नक्षत्रमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जातीपुष्प। हुड़हुल का फूल।

नक्षत्रयाजक [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों तथा नक्षत्रों आदि के दोषों की शान्ती कराने वाला ब्राह्मण जो निकृष्ट और चांडाल के समान होता है।

नक्षत्रयोग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नक्षत्रों के साथ ग्रहों का योग।

नक्षत्रयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) वह नक्षत्र जो विवाह के लिए निषिद्ध हो।

नक्षत्रराज [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रों के स्वामी, चन्द्रमा।

नक्षत्रलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण के मतानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं। यह लोक चन्द्रलोक से ऊपर माना जाता है।

नक्षत्रवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रों के चलने का मार्ग, आकाश।

नक्षत्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खगोल विद्या। ज्योतिष विद्या।

नक्षत्रवीथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नक्षत्रों में गति के अनुसार तीन-तीन नक्षत्रों के बीच का कल्पित मार्ग। तीन-तीन नक्षत्रों की एक वीथि बृहत्संहिता के अनुसार इस प्रकार है:— स्वाति, भरणी तथा कृत्तिका में नागवीथि। रोहिणी मृगशिरा तथा आर्द्रा में गजवीथि। पुनर्वसु, पुष्य तथा अश्लेषा में ऐरावत। मघा, पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी में वृषभ। अश्विनी, रेवती तथा पूर्वा उत्तरा-भाद्रपद में गोवीथि। श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा में जरद्गववीथि। अनुराधा ज्येष्ठा तथा मूला में मृगवीथि। हस्त, विशाखा तथा चित्रा में अजावीथि और पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा में दहनावीथि होती है।

नक्षत्रवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं) उल्कापात। तारा टूटना।

नक्षत्रव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में वह चक्र जिसमें यह दिखाया जाता है कि किनकिन द्रव्यों या पदार्थों तथा जातियों आदि का स्वामी कौन नक्षत्र है।

नक्षत्रव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्रत जो किसी विशिष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जाता है। जिस नक्षत्र के उद्देश्य से व्रत किया जाता है व्रत के दिन उस नक्षत्र के स्वामी देवता का अर्चन या पूजन भी किया जाता है। (फलित ज्योतिष)।

नक्षत्रशूल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार काल का वह वास जो किसी विशिष्ट दिशा में कुछ विशिष्ट नक्षत्रों के होने के कारण माना जाता है। जैसे-पूर्व दिशा में श्रवण अथवा ज्येष्ठा, दक्षिण में अश्विनी या उत्तराभाद्रपद, पश्चिम में रोहिणी या पुष्य तथा उत्तर में उत्तरफाल्गुनी या हस्तनक्षत्र हों तो उस दिशा में यात्रा आदि के निमित्त नक्षत्रशूल समझा जाता है।

नक्षत्रसंधि, नक्षत्रसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा आदि ग्रहों का पूर्वनक्षत्र मास में से उत्तरनक्षत्र की ओर संक्रमण।

नक्षत्रसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों के मत के अनुसार एक विशेष प्रकार का यज्ञ जो नक्षत्रों के लिए किया जाता है। नक्षत्र-मास के अनुसार यह यज्ञ होता है।

नक्षत्रसाधक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नक्षत्रसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) वह गहना जिसके अनुसार यह जाना जाता है कि अमुकग्रह पर अमुकनक्षत्र इतने समय तक रहता है।

नक्षत्रसूचक [संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्योतिषी जिसे स्वयम् तो भारी गणना करना न आता हो पर दूसरों के मत के अनुसार ज्योतिष विषयक साधारण कार्य करता हो।

नक्षत्रसूची [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नक्षत्रसूचक'।

नक्षत्रामृत [संज्ञा पु.] (सं.) वह उत्तम योग जो किसी विशिष्ट दिन में कुछ विशिष्ट नक्षत्रों के होने पर यात्रादि कार्यों में माना जाता है। जैसे रविवार को हस्त, पुष्य, रोहिणी अथवा मूल आदि नक्षत्रों का होना, सोमवार को श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, अथवा या हस्तआदि का होना, मंगलवार को रेवती पुष्य, आश्लेषा, कृत्तिका अथवा स्वाति आदि का होना।

नक्षत्रिद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक देवता जिनका नक्षत्रों में रहना माना जाता है।

नक्षत्रिन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-विष्णु।

नक्षत्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) जो क्षत्रिय न हो।

नक्षत्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। विष्णु। [वि.] (हिं.) जिसका जन्म शुभ या अच्छे नक्षत्र में हुआ हो। भाग्यवान। खुशकिस्मत।

नक्षत्रेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

नक्षत्रेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

नक्षत्रेष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रों के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ।

नखं [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ या पैर का नाखून। २-बीस की संख्या।

नख [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ या पैर का नाखून। २-एक गंधद्रव्य जो सीप अथवा घोंघे की जाति के एक जन्तु विशेष के ऊपर के आवरण या ढकना होता है। इसका आकार नाखून के समान चंद्राकार अथवा गोलाकार भी होता है। कई प्रकार और रंग का होता है। जिसमें छोटा तथा सफेद रंग का अच्छा होता है। छोटे को क्षुद्रनखी और बड़े को शंखनखी कहते हैं। यह दवा के काम में आता है। वैद्यक के अनुसार यह हलका गरम, स्वादिष्ट वीर्यवर्द्धक तथा विष, श्लेष्मा, वात, ज्वर, कुष्ट तथा मुख की दुर्गंध दूर करने वाला होता है। ३-खंड। टुकड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-एक प्रकार का महीन रेशमी तागा जिससे पतंग उड़ाते और कपड़े सीये जाते थे। २-पतंग उड़ाने का पतला और पक्का तागा या डोर।

नखअंक, नखअङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) खरोंच। नख का चिह्न।

नखकर्त्तिनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाखून काटने का उपकरण या औजार। नहरनी।

नखकुट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) नाई। हज्जाम।

नखक्षत [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाखून लगने से होने वाला दाग या चिह्न। खरोंच। २-स्त्री के शरीर पर का विशेषतः स्तन आदि पर वह चिह्न या खरोंच जो पुरुष के मर्दन के कारण उसके नाखून से बन जाता है।

नखखादिन [वि.] (सं.) दाँतों से नाखून कुतरने वाला।

नखखादी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जो दाँतों से नाखूनों को कुतरता है। मनु के मतानुसार ऐसे व्यक्ति का अति शीघ्र नाश हो जाता है।

नखच्छफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सेम की लता या फली।

नखचारी [संज्ञा पु.] (हिं.) पंजे के बल चलने वाला जीव।

नखच्छत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नखक्षत'।

नखच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) नाखून का काटना।

नखछोलिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नखक्षत'

नखजाह [संज्ञा पु.] (सं.) नाखून का अगला भाग।

नखत* संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्षत्र'।

नखतर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्षत्र'।

नखतराज* [संज्ञा पु.] (हिं) नक्षत्रराज। चन्द्रमा।

नखतेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) नक्षत्रराज। 'चन्द्रमा'

नखत [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया जो भिन्न-भिन्न ऋतुओं में भिन्न भिन्न स्थानों में रहती है।

नखदारण [संज्ञा पु.] (सं) नाखून काटने का उपकरण या औजार। नहरनी।

नखना [क्रि. अ.] (हिं.) उल्लंघन होना। डांका जाना। [क्रि. स.] (हिं.) १-उल्लंघन या पार करना। २-नष्ट करना।

नखनामा [संज्ञा पु.] (सं.) नील का पेड़।

नखनिकृंतन, नखनिकृन्तन [संज्ञा पु.] (सं.) नाखून काटने का औजार। नहरनी।

नखनिष्पाव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सेम

नखपद [संज्ञा पु] (सं.) नाखून का चिह्न। नख-खरौंच।

नखपर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) बिछुवा नामक घास।

नखपुंजफला, नखपुंजफला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद सेम।

नखपुष्पफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद सेम।

नखपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असबरग नामक एक गंधद्रव्य।

नखपूर्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरी सेम।

नखफलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सेम

नखभेद [संज्ञा पु.] (सं.) कुलथी। कुलत्थ।

नखयान* [संज्ञा पु.] (हिं.) नख। नाखून।

नखमुच [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष। २-चिरौंजी का वृक्ष।

नखरंजनी, नखरञ्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) नहरनी।

नखर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख। नाखून। २-एक प्राचीन काल में होने वाला अस्त्र।

नखरचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेंहदी का पौदा।

नखरा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह चुलबुलापन, चेष्टा अथवा चपलता आदि जो जवानी की उमंग में या प्रिय को रिझाने के निमित्त की जाती है। चोचला। नाज। हावभाव। २-साधारण चपलता अथवा चुलबुलाहट। बनावटी चेष्टा। ३-बनावटी इनकार। *नखरा बघारना*-नखरा करना।

नखरातिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) नखरा। चोचला। नाज।

नखरायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेर। २-चीता। ३-कुत्ता।

नखराह्व [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का पेड़।

नखरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

नखरीला+ [वि.] (फा.) नखरा करने वाला। नखरेबाज।

नखरेखा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-नाखून का चिह्न। नखक्षत या खरौंच। २-कश्यपऋषि की एक पत्नी का नाम जो बादलों की माता थी।

नखरेबाज [वि.] (फा.) बहुत नखरे करने वाला। जो बहुत नखरे करता हो।

नखरेबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नखरा करने की क्रिया या भाव।

नखरौट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर पर का वह चिह्न जो नाखून के आघात या चुभाने से होता है। नाखून की खरौंच।

नखबिंदु, नखबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) वह मेंहदी या महावर का गोल या चंद्राकार चिह्न जो स्त्रियाँ नाखून पर बनाती हैं।

नखविष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके नख या नाखून में विष हो। जैसे—कुत्ता, बिल्ली, मनुष्य, बंदर, छिपकली, मेंढक, गोह आदि।

नखविष्किर [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जो अपने शिकार को नाखून से फाड़कर खाता हो। जैसे-शेर, चीता, बाज आदि। धर्मशास्त्रानुसार ऐसे पशु का मांस नहीं खाना चाहिए।

नखवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नील का पेड़।

नखशंख, नखशङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा शंख।

नखशस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) नहरनी।

नख-शिख [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख से लेकर शिख या शिखा तक के सब अंग। २-नख से शिख तक के सब अंगों का वर्णन। *नख-शिख से*-सिर से पैर तक। ऊपर से नीचे तक

नखशूल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नख का रोग जिसमें उसके जड़ या आस-पास पीड़ा होती है।

नखहरणी [संज्ञा स्त्री] (सं) नाखून काटने की, नहरनी।

नखांक, नखाङ्क [संज्ञा पु.] (सं) १-व्याघ्रनख। व्याघ्रनखी। २-नाखून गड़ने या चुभने का चिह्न।

नखांकर, नखाङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) नख। नाखून

नखांग, नखाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख नामक गंधद्रव्य। २-नालिका या नली नामक गंधद्रव्य।

नखानखि [अव्य.] (सं.) नख के लिए नख।

नखायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेर। २-चीता। ३-कुत्ता।

नखारि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

नखालि [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा शंख।

नखालु [संज्ञा पु.] (सं.) नील का वृक्ष।

नखाशी [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लू नामक पक्षी। [वि.] जो नाखूनों की सहायता से खाता हो।

नखास [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह बाजार जिसमें चौपाये बिकते हों विशेषतः घोड़े। २-साधारणतः बाजार भेजना। *नखास पर भेजना या चढ़ाना*-बेचने के लिए बाजार भेजना। *नखास की घोड़ी या नखास वाली*-कसब कमाने वाली स्त्री।

नखिन् [संज्ञा पु.] (सं.) पंजे वाला जन्तु। यथा-चीता, सिंह आदि। [वि.] १-पंजा या नखायुध-सम्पन्न। २-कटीला।

नखियाना* [क्रि स.] (हिं.) नाखून या नख गड़ना। नाखून से खरौंचना।

नखी [संज्ञा पु] (स) १-शेर। २-चीता। ३-वह पशु जो नख से किसी पदार्थ को चीर अथवा फाड़ सकता हो। [संज्ञा स्त्री] नख नाम का गंधद्रव्य।

नखेद* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निषेध'।

नखोरना* [क्रि. स.] (हिं.) नाखून से खरौंचना। नाखून से नोचना।

नख्खास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नखास'।

नग [वि.] (सं.) १-न गमन करने वाला। न चलने फिरने वाला। अचल। स्थिर। [संज्ञा पु.] १-पर्वत। पहाड़। २-वृक्ष। ३-पौधा। ४-सूर्य। साँप। ६-सात की संख्या। [संज्ञा पु.] (फा.) १-शीशे अथवा पत्थर आदि का रंगीन बढ़िया जो अंगूठियों और आभूषणों में जड़ा जाता है। नगीना। अदद। संख्या। *नग बैठाना*-नग जड़ना।

नगज [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी। [वि.] वह जो पर्वत से उत्पन्न हो।

नगजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-पाषाण-भेदा नामक लता पाखान-भेद।

नगजित [संज्ञा पु] (सं.) पाषाणभेदक।

नगण [संज्ञा पु] (सं.) पिंगल शास्त्र के अनुसार एक गण जिसमें तीन अक्षर होते हैं। यह तीनों अक्षर लघु होते हैं। जैसे-कमल, मदन, चरण। (इस गण से छंद आरंभ शुभ समझा जाता है।

नगणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

नगण्य [वि.] (सं.) जो गणना करने के योग्य न हो। बहुत ही साधारण या गया-बीता। तुच्छ दीन-हीन या तुच्छ।

नगदंती, नगदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विभीषण की स्त्री का नाम।

नगद [संज्ञा पु.] (हिं.) वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा। रोकड़। [वि.](हिं.) १-(रुपया) जो तैयार या सामने हो। जिसका मूल्य रुपया पैसे आदि के रूप में दिया या चुकाया जाय। रोक। [क्रि. वि.] तुरन्त दियेहुए रुपये के बदले में। 'उधार' का उलटा [वि.] (हिं.) अच्छा। बढ़िया।

नगदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रोकड़। धन। रुपया पैसा। सिक्का। २-देखो 'नकदी'।

नगधर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत को धारण करने वाले, श्रीकृष्ण।

नगधरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नगधार'।

नगनंदिनी, नगनन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती जो हिमालय की कन्या मानी जाती है

नगन+ [वि.] (हिं.) १-जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। २-जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।

नगनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पर्वत से निकली हुई नदी।

नगना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नग्ना'।

नगनिका [संज्ञा स्त्री.] (?) १-संगीत में संकीर्ण-राग का एक भेद। २-क्रीड़ा नामक एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण और एक गुरु होता है।

नगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह कन्या जो रजस्वला न हुई हो। वह कन्या जिसके स्तन अभी न उभरे हों और वह छाती खोले घूम फिर सकती हो। २-कन्या। ३-नंगी स्त्री।

नगन्निकाछंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक यगण और एक गुरु होता है।

नगपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिमालय-पर्वत। २-चन्द्रमा। ३-कैलाश के स्वामी, शिव। ४-सुमेरु।

नगभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाखान-भेद नामक-लता। २-प्राचीनकाल का एक अस्त्र जिससे पत्थर भी टूट जाते थे। ३-इन्द्र।

नगभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी पाखान-भेद लता। २-पहाड़ी जमीन। [वि.] जो पर्वत से उत्पन्न हुआ हो।

नगमाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुगंधित धान।

नगरंध्रकर, नगरन्ध्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय का एक नाम।

नगर [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों की बस्ती जो गांव और कस्बे से बहुत बड़ी होती है जिसमें अनेक जातियों तथा पेशों के लोग रहते हैं। शहर।

नगरकाक [संज्ञा पु.] (सं.) शहरुआ कौआ। तिरस्कार का शब्द।

नगरकीर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) नगर की गलियों और सड़कों में घूम-घूमकर होने वाला धार्मिक गाना बजाना या कीर्त्तन।

नगरक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कोई नगर और उसके आसपास का वह क्षेत्र जिसकी लोकहित संबंधी व्यवस्थाएँ नगरपालिका के अधीन हों। *म्युनिसिपल एरिया*।

नगरघात [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

नगरजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाँव के लोग। २-नागरिक।

नगर-ट्रामवे [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'नगर-रथ्यायान'।

नगरतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) गुजरात प्रान्त का एक प्राचीन तीर्थ जहां किसी समय शिव का निवास माना जाता था।

नगरद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) शहरपनाह का फाटक।

नगरनायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रंडी। वेश्या।

नगरनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रंडी। वेश्या।

नगरनिगम [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर की वह संघटित संस्था जिसे विधि के द्वारा शरीर अथवा शरीरधारी के समान रूप दिया गया हो। *म्युनिसिपल-कॉरपोरेशन*।

नगरपति [संज्ञा पु.] (सं.) नगर का अध्यक्ष। शहर का मालिक।

नगरपार्षद [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नगर परिषद का सदस्य हो। *म्युनिसिपल-कमिश्नर*।

नगरपाल [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसका का नगर में होने वाले सब प्रकार के उपद्रवों आदि से नगर की रक्षा करना हो। शहर कोतवाल।

नगरपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी नगर के वैधानिक आधार पर चुने हुए प्रतिनिधियों की वह संस्था जो सड़क, स्वास्थ्य और जल-कल आदि लोकोपकारी कार्यों की व्यवस्था करती है। *म्युनिसिपैलिटी*।

नगरपिता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नगर-परिषद का सदस्य हो। *म्यूनिसपल-कमिश्नर*।

नगरप्रदक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलूस के रूप में मूर्त्ति आदि को नगरों के चारों ओर ले जाना।

नगरभवन [संज्ञा पु.] (सं.) नगर निवासियों या नगर परिषद की ओर से बना हुआ सार्वजनिक भवन। *टाउनहाल*।

नगरशाला [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जो नगर के सर्वसाधारण लोगों के सभा आदि करने के काम आता है। *टाउनहाल*।

नगरप्रबंधक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नगरशासक'

नगरप्रांत, नगरप्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) नगर के पास का स्थान। उपपुर। बाहिरी भाग।

नगरमर्दी [संज्ञा पु.] (सं.) मस्त हाथी।

नगरमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शहर में का बड़ा और चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। मुख्य मार्ग।

नगरमुस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा।

नगर-रक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी ग्राम या नगर की व्यवस्था या शासन।

नगर-रथ्यायान [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़े बड़े नगरों में सड़कों पर बिछी हुई बिजली द्वारा लाइनों पर चलने वाली गाड़ी। ट्रामवे।

नगरवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की ईख की बोआई जो मध्यप्रदेश के उन प्रान्तों में होती है जहाँ मिट्टी काली अथवा कैली होती है। इसमें खींचने की आवश्यकता नहीं होती पलवार।

नगर-वायस [संज्ञा पु.] (सं.) नगर-काक। घृणा-सूचक शब्द।

नगरवासी [संज्ञा पु.] (सं.) नगर-निवासी शहर में रहने वाला। पुरवासी।

नगर-विवाद [संज्ञा पु.] (हिं.) दुनियाँ के झगड़े बखेड़े।

नगर-शुल्क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुंगी। शहर में बाहर से आने वाले माल पर लगने वाला महसूल।

नगर-शासक [संज्ञा पु.] (सं.) नगर की परिषद का सदस्य। नगर-प्रबंधक। म्यूनिसिपल कमिश्नर।

नगर-समिति [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो 'नगर-पालिका'।

नगरस्थ [संज्ञा पु.] (स.) ग्रामवासी। नगर-निवासी।

नगरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) शहर में रहने वाला।

नगरहार [संज्ञा पु.] (सं.) भारत का एक प्राचीन नगर जो किसी समय जलालाबाद के पास बसा था। चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने अपनी यात्रा में इसका उल्लेख या वर्णन किया है।

नगराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नागरिकता। शहरातीपन। २-चतुराई। चालाकी।

नगरादि-सन्निवेश [संज्ञा पु.] (सं.) नगर का निर्माण, बनाना या बसाना।

नगराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुलिस का मुख्य अधिकारी। *जिला-मैजिस्ट्रेट*। २-किसी कसबे का शासक।

नगराधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुलिस का मुख्य अधिकारी। *जिला-मैजिस्ट्रेट*। २-किसी कसबे का शासक।

नगराधीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा तथा व्यवस्था करना होता है। शहर कोतवाल। *सिटी-सुपरिन्टैंडेंट*।

नगराध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नगर का स्वामी या रक्षक। वह जिस पर नगर की रक्षा आदि का पूरा-पूरा भार हो।

नगराह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) शुण्ठि। सोंठ।

नगरी [संज्ञा स्त्री.] (सं) छोटा नगर। कस्बा।

नगरउआ [संज्ञा पु.] (हिं.) शहर में रहने वाला मनुष्य। नगरनिवासी। नागरिक। शहराती।

नगरीबक [संज्ञा पु.] (सं.) बक। बगला।

नगरीक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं) कोई नगरी या कस्बा और इसके आस-पास का वह क्षेत्र जिसकी लोकहित विषयक व्यवस्थाएँ स्थानिक संस्था के अधीन हों। टाउनएरिया।

नगरीय [वि] (सं.) १-नगरविषयक। नगर-संबंधी। २-शहर का रहने वाला।

नगरीवक [संज्ञा पु.] (सं) काक। कौआ।

नगरोत्थ [वि](सं.) जो नगर में उत्पन्न हुआ हो

नगरोत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा।

नगरौषधि [संज्ञा स्त्री.](सं.) केला।

नगवास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नागपाश'।

नगवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

नगस्वरूपिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण, एक रगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

नगाटन [संज्ञा पु.] (सं.) बंदर। कपि। [वि.] पर्वत पर विचरण करने वाला।

नगाड़ा [संज्ञा पु] (हिं.) डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगारा। डंका। धौंसा।

नगाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिमालयपर्वत। २-सुमेरु पर्वत।

नगानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार-चार अक्षर होते हैं।

नगारा [संज्ञा पु.] (फा.) डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा और प्रसिद्ध बाजा जिसमें एक बहुत बड़ी कूंडी के ऊपर चमड़ा मढ़ा रहता है। नगाड़ा। डंका। धौंसा। *नगारा बजाते फिरना*–डुगडुगी पीटते फिरना। चारों ओर प्रकट करते फिरना। *नगारा बजाके*–खुल्लमखुल्ला। *नगारा हो जाना*–बहुत फूलना।

नगारि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

नगावास [संज्ञा पु.] (सं) १-वृक्ष पर रहने का स्थान। २-मोर।

नगाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) हाथीकंद। [वि] पहाड़ और वृक्ष पर रहने वाला।

नगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-रत्न। मणि। नगीना। २-पर्वत की कन्या, पार्वती। ३-पर्वत पर रहने वाली स्त्री। पहाड़ी-स्त्री।

नगीच+ [क्रि. वि.] (हिं) देखो 'नजदीक'।

नगीना [संज्ञा पु.] (फा.) १-पत्थर आदि का वह रंगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषण, अँगूठी आदि में जड़ा जाता है। रत्न। मणि। २-एक देशी कपड़ा जो चारखाने का होता है।
नगीना सा–बहुत छोटा और सुन्दर।

नगीनासाज [संज्ञा पु.] (फा.) नगीने बनाने या जड़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति। वह कारीगर जो नगीने बनाता या जड़ता हो।

नगीनागर [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'नगीनासाज'।

नगेंद्र, नगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत राजा हिमालय।

नगेश [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

नगेसरि* [संज्ञा पु.] (हिं.) नागकेसर।

नगौक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पक्षी। पंछी। २-सिंह। शेर। ३-कौआ।

नगौकस् [वि.] (सं.) पर्वत या वृक्ष पर रहने वाला [संज्ञा पु] (हिं) १-पक्षी। २-सिंह। ३-कौआ।

नग्न [वि.] (सं.) १-जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो। नंगा। २-जिसके ऊपर किसी प्रकार का कोई आवरण न हो। आवरणरहित। ३-बिना जुता हुआ। जो आबाद न हो। सुनसान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के दिगम्बर जैन जो कोपीन तथा कषाय वस्त्र ही धारण करते हैं। २-पुराण के अनुसार वह जिसे शास्त्रों आदि का ज्ञान न हो तथा जिसके कुल में किसी ने वेद न पढ़ा हो। ३-वह जिसने गृहस्थाश्रम के बाद बिना वानप्रस्थ ग्रहण किए ही सन्यासी हो गया हो। पुराणों के मतानुसार ऐसा व्यक्ति पाप का भागी समझा जाता है।

नग्नक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नग्न'।

नग्नका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नंगी या निर्लज्ज स्त्री। २-रजोधर्म होने के पूर्व की अवस्था वाली लड़की।

नग्नक्षपणक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का बौध भिक्षु।

नग्नजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-गांधारदेश के एक प्राचीन राजा का नाम जिसका वर्णन शतपथ ब्राह्मण के अन्तर्गत आता है। २-कौशल के एक राजा का नाम जिसकी सत्या नाम की कन्या का विवाह श्रीकृष्ण के साथ हुआ था।

नग्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नंगापन। वस्त्रविहीनता।

नग्नपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल के एक देश का नाम।

नग्नयोषित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नंगी स्त्री।

नग्नव्रतधर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नग्ना [संज्ञा पु.] (सं.) १-नंगी-स्त्री। बेहया स्त्री। २-बारह या दस वर्ष से कम की बालिका जिसको रजोधर्म न हुआ हो।

नग्नाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-जो नंगा घूमे फिरे। २-दिगंबर जैन या बौद्ध देव।

नग्नाटक [संज्ञा पु.] (सं.) सदा नंगा घूमने वाला साधु।

नग्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं) नंगी या निर्लज्ज स्त्री। २-रजोधर्म होने से पूर्व अवस्था वाली लड़की।

नग्मा [संज्ञा पु.] देखो 'नगमा'।

नग्र* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नगर'।

नग्रोध [संज्ञा पु.] (हिं.) वटवृक्ष। बड़ का पेड़।

नघना [क्रि. स.] (हिं.) लाँघना। डाकना। पार करना।

नघमरु [संज्ञा पु.] (सं.) कोढ़ की बीमारी। कुष्ट रोग।

नघाना [क्रि. स] (हिं.) लँघाना। उल्लंघन करना डँकादेना।

नघारीष [संज्ञा पु] (सं) कुष्टरोग।

नघुष [संज्ञा पु.] (सं.) नहुष राजा।

नचना* [क्रि. अ.] (हिं.) नाचना। [वि] (हिं.) [स्त्री. नचनी] १-नाचने वाला। २-इधर-उधर घूमने या डोलने वाला।

नचनि*[संज्ञा स्त्री.] (हिं) नाच। नृत्य।

नचनिया [संज्ञा पु.] (हिं) नाचने वाला। नृत्य करने वाला।

नचनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करघे में लगने वाली वे दो लकड़ियां जो बेसर के कुलवांसे से लटकती होती हैं। इन्हीं की सहायता से राछें ऊपर नीचे जाती और आती हैं। इन्हें चक या कलहरा भी कहते हैं। [वि] (हिं) [स्त्री प्र.] १-नाचने वाली। जो नृत्य करती हो। २-इधर-उधर घूमने-फिरने वाली।

नचवैया [संज्ञा प] (हिं) नाचने वाला। जो नाचता हो।

नचाना [क्रि. स.] (हिं) १-दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना। २-किसी को बारबार उठने बैठने या और कोई कार्य करने के लिये विवश कराना। हैरान करना। ३-किसी वस्तु को बारबार इधर-उधर घुमाना या हिलाना। भ्रमण कराना। चक्कर देना। ४-इधर उधर दौड़ाना। हैरान या परेशान करना।
नाच-नाचन-हैरान या तंग करना। *आँखें या नयन नचाना*-चंचलतापूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर-उधर घुमाना।

नचिकेता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। २-अग्नि।

नचिर [वि.] (सं.) अ-चिर।

नचिरात् [क्रि. वि.] (सं.) शीघ्र। तुरन्त।

नचेत [अव्य.] (सं) नहीं तो। ऐसा न हो कि।

नचीला [वि.] (हिं.) जो नाचता या इधर-उधर घूमता रहे। चंचल। चपल।

नचैया* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'नचवैया'।

नचौहाँ* [वि.] (हिं.) जो सर्वदा नाचता या इधर-उधर घूमता रहे। चंचल। अस्थिर।

नछत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्षत्र'।

नछत्री [वि.] (हिं.) प्रभावशाली। भाग्यवान।

नज़दीक [वि.] (फ़ा.) निकट। पास। समीप।

नज़दीकी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पास या नजदीक होने का भाव। सामीप्य। [वि.] (फ़ा.) निकट का। पास का।

नज़्म [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कविता। पद्य। छंद।

नज़र [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दृष्टि। निगाह। चितवन। कृपादृष्टि। ३-निगरानी। देख-रेख। ४-ध्यान। ५-परख। पहचान। ६-किसी सुन्दर वस्तु या प्रियजन पर पड़ने वाला दृष्टि का बुरा प्रभाव। ७-भेंट। उपहार अधीनता सूचित करने की एक प्रथा जिसमें राजा-महाराजाओं तथा जमीदारों आदि के सम्मुख प्रजावर्ग के या दूसरे अधीनस्थ और छोटे लोग जो दरबार लगने पर, त्यौहार या किसी विशिष्ट अवसर पर नगद रुपया आदि थैली में रखकर सम्मुख लाते हैं। इस धन को कभी तो ले लेते हैं या कभी छूकर छोड़ दिया जाता है। *नजर आना*-दिखाई देना। दृष्टिगोचर होना *नजर उतारना*-बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मन्त्र या युक्ति से हटा देना। *नजर करना*-भेंट करना। २-देखना। *नजर खाना या खाजाना*-बुरी नजर लगना। बुरी दृष्टि से प्रभावित हो जाना। *नजर चुराना*-छिपकर रहना। *नजर जलाना या झाड़ना*-दृष्टि के कुप्रभाव को दूर करना। *नजर दौड़ाना*-चारों ओर ढूंढना। *नजर पड़ना*-दिखाई देना। दृष्टिगोचर होना। *नजर पर चढ़ना*-पसन्द आना। प्रिय बनना। *नजर फिसलना*-चकाचौंध से दृष्टि का न जमना। *नजर फेंकना*-१-दूर तक देखना। २-सरसरी तौर से देखना *नजर मारना*-चितवन से देखना। *नजर मिलाना*-तुलना करना। *नजर में आना*-दृष्टिगोचर होना। दिखाई देना। *नजर में तोलना*-देखकर गुण आदि की परीक्षा करना। *नजर रखना*-कृपादृष्टि रखना। मेहरबानी करना। *नजर लगना, लगाना*-बुरी दृष्टि का प्रभाव होना। *नजर होना या हो जाना*-१-बुरी दृष्टि का असर होना। २-भेंट चढ़ जाना। किसी के लिए जान देना। *नजर से नजर दो चार होना*-आँख से आँख मिलना। *नजर से निकलना*-देखने में आना। *नजरों से गिर जाना* मन में इज्जत न रहना। घृणा हो जाना।

नजरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखना। २-नजर लगना।

नजरबंद [वि.] (अ., + फ़ा.) ऐसी निगरानी में रखा हुआ कि निश्चित स्थान या सीमा से बाहर न जा सके। [संज्ञा पु.] जादू या इन्द्रजाल आदि का वह खेल जिसके सम्बन्ध में लोगों का विश्वास रहता है कि वह लोगों की नजर बाँधकर किया जाता है। लोगों की दृष्टि में भ्रम उत्पन्न करके किया जाने वाला खेल।

नजरबंदी [संज्ञा स्त्री.] (अ., + फ़ा.) १-राज्य की ओर से दिया गया वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित अथवा निश्चित स्थान पर रखा जाता है और उसपर कड़ी निगरानी रखी जाती है। २-नजरबंद होने की दशा या अवस्था। ३-दर्शकों की दृष्टि में भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया। जादूगरी। बाजीगरी।

नजरबाग [संज्ञा पु.] (अ.) वह बाग जो महलों या बड़े-बड़े मकानों आदि के आगे या चारों ओर उनके अहाते के भीतर रहता है।

नजरसानी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) किसी किये हुए काम या लेख आदि को उसमें सुधार अथवा परिवर्त्तन के लिए फिर से देखना। पुनर्विचार या पुनरावृत्ति। *रिवीज़न*।

नजरहाया [वि.] (हिं.) [स्त्री. नजरहाई] जो नजर लगावे। जिसकी दृष्टि का कुप्रभाव पड़े। नज़र लगाने वाला।

नजरानना [क्रि. स.] (हिं.) १-भेंट या उपहार स्वरूप देना। २-नजर लगाना।

नजराना [क्रि. अ.] दृष्टि के कुप्रभाव में आना। नजर लग जाना। [क्रि. स.] (हिं.) नजर लगाना। [संज्ञा पु.] (अ.) १-भेंट। उपहार। २-वह वस्तु जो भेंट में दी जाय। भेंटस्वरूप दिया जाने वाला धन।

नज़रि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नजर'।

नजला [संज्ञा पु.] (अ.) हिकमत के अनुसार वह रोग जिसमें गरमी के कारण सिर का विकारयुक्त पानी ढलकर भिन्न-भिन्न अंगों की ओर प्रवृत्त होता है। यह जिस अंग की ओर ढलता है उसे खराब कर देता है। जैसे यदि नजले का पानी सिर में ही रह जाय तो बाल सफेद हो जाते हैं, आँखों पर उतर आने की की अवस्था में दृष्टि कम हो जाती है, कान पर उतरे तो आदमी बहरा हो जाता, गले, में खाँसी और अंडकोष में उतरने पर उसकी वृद्धि हो जाती है। २-जुकाम। सरदी।

नजलाबंद [संज्ञा पु.] (अ., फ़ा.) नजला रोकने के लिए दोनों कनपटियों पर लगाया जाने वाला अफीम और चूने का फाहा।

नज़ाकत [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) नाज़ुक या सुकुमार होने का भाव। कोमलता। सुकुमारता।

नजात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मोक्ष। मुक्ति। २-छुटकारा।

नज़ामत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-नाज़िम का पद। २-नाज़िम का महकमा या विभाग।

नज़ारत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-नाजिर का पद। २-नाज़िर का महकमा या विभाग। ३-नाज़िर का कार्यालय जहाँ बैठकर नाज़िर कार्य करता हो।

नज़ारा [संज्ञा पु.] (अ.) १-दृश्य २-दृष्टि। नजर। ३-किसी स्त्री या पुरुष का अन्य स्त्री या पुरुष को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

नज़रेबाजी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फ़ा.) किसी स्त्री या पुरुष का अन्य स्त्री या पुरुष को लालसा की दृष्टि से देखना।

नजिकाना* [क्रि. स.] (हिं.) निकट या पास पहुँचना। नजदीक पहुँचना।

नजीक* [क्रि. वि.] (हिं.) निकट। पास। समीप।

नज़ीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-उदाहरण। दृष्टांत। मिसाल। २-किसी अभियोग का वह निर्णय जो उसी प्रकार के किसी अन्य अभियोग में वैसे ही निर्णय या फ़ैसले के लिए उपस्थित किया जाय।

नजूम [संज्ञा पु.] (अ.) ज्योतिष-विद्या।

नजूमी [संज्ञा पु.] (अ.) ज्योतिषी।

नजूल [संज्ञा पु.] (अ.) नगर या शहर की वह भूमि जो राज्य या सरकार के अधिकार में चली गई हो। राजग।

नट [संज्ञा पु.] (सं.) १-दृश्यकाव्य का अभिनय करने वाला पात्र। नाट्यकला में प्रवीण पुरुष। २-एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौंडिकी स्त्री और शौंडिक पुरुष से बताई जाती है। इस जाति का काम गाना बजाना बताया जाता है। ३-मनु के मतानुसार क्षत्रियों की एक जाति। ४-मालाकार पिता तथा शूद्रा माता से उत्पन्न एक जाति जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। ५-गा-बजाकर और नाना प्रकार के खेल-तमाशों का प्रदर्शन करके जीवन निर्वाह करने वाली एक जाति। यह लोग बाँसों पर अनेक प्रकार की कसरतें करते और रस्सों पर कई तरह से चलते हैं। ६-एक राग का नाम। ७-अशोकवृक्ष। ८-श्योनाक वृक्ष। ९-सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। इसके गाने का समय तीसरा पहर और संध्या है।

नटई [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गला। गरदन। २-गले की घंटी। घाँटी।

नटखट [वि.] (हिं.) १-जो कुछ न कुछ उपद्रव करता रहे। ऊधमी। चंचल। २-चालाक। मक्कार। धूर्त्त।

नटखटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरारत। पाजीपन। बदमाशी।

नटगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।

नटचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक के पात्र द्वारा किया हुआ अभिनय।

नटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नट का भाव। नट का काम।

नटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाट्य करना। २-नाचना। नृत्य करना। ३-इनकार करना। मुकरना। कहकर बदल जाना। ४-

होना। [क्रि स] (हि.) नष्ट करना। [संज्ञा पु.] (देश.) १-रस छानने की बाँस की बनी छलनी। २-कटे हुए पेंदे वाला मछली पकड़ने का बड़ा टोकरा। टाप।

नटनारायण [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जिसके गाने का समय बरसात में तीसरा पहर बताया जाता है।

नटनि* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) नृत्य। नाच। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) इनकार। अस्वीकृति।

नटनी [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-नट की पत्नी। २-नट जाति की स्त्री।

नटपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैंगन। भाँटा।

नटपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) दालचीनी।

नटभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

नटमंडन, नटमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

नटमंडल, नटमंडल [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

नटमल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का राग।

नटमल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) नट और मल्लार के योग से बनने वाला सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

नटमल्लारि [सज्ञा स्त्री] (हिं.) एक रागिनी का नाम।

नटरंग, नटरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अभिनयशाला।

नटवटु [संज्ञा पु.] (सं.) १-युवक। अभिनेता।

नटवना* [क्रि. स.] (हिं.) १-नाट्य करना। अभिनय करना।

नटवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाट्यकला में प्रवीण व्यक्ति। प्रधान नट। सूत्रधार। श्रीकृष्ण (जो नाट्यकला तथा नाट्यशास्त्र के आचार्य थे। [वि.] (सं.) बहुत चतुर। चालाक।

नटवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. नटिया] छोटे कद का या कम उमरवाला बैल। [संज्ञा पु.] (हि.) नट। अभिनय पात्र।

नटवा-सरसों [संज्ञा पु.] (हि.) साधारण सरसों

नटसंज्ञक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाटक का पात्र। नचैया। २-गौदन्ती। हरताल।

नटसार* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नाट्यशाला।

नटसारा* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'नाट्यशाला'।

नटसारी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नट का काम।

नटसाल [संज्ञा स्त्री.] (?) १-शरीर में चुभे हुए काँटे का वह भाग जो निकाल लिये जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २-बाण की गासी जो निकाल लिये जाने पर भी टूटकर शरीर में रह जाती है। ३-चुभी हुई फाँस जो बहुत छोटी होने के कारण नहीं निकाली जा सकती। ४-वह कसक पीड़ा अथवा ऐसी मानसिक व्यथा जो सदा तो न रहे पर समय-समय पर किसी बात या मनुष्य के स्मरण से होती हो।

नटांतिका, नटान्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लज्जा। शरम। (लाज से अभिनय या नाट्य नहीं हो सकता इस कारण से ही इसे 'नटांतिका' कहते हैं)।

नटाई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जुलाहों के काम में आने वाला वह औजार जिसके किनारे का ताना ताना जाता है।

नटिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नट की पत्नी। २-नट जाति की स्त्री।

नटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नट जाति की स्त्री। २-नाचने वाली स्त्री। नर्त्तकी। ३-अभिनय करने वाली स्त्री। अभिनेत्री। ४-अभिनय करने वाले नट की स्त्री। अभिनेता की पत्नी। ५-वेश्या। ६-नखी नामक गंधद्रव्य।

नटीसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाचने वाली का पुत्र २-अभिनेत्री का लड़का।

नटुआ [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'नट'। २-देखो 'नटई'।

नटेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नटैया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'नटई'।

नट्ट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नट'।

नट्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की रागिनी जो प्राय: नट के समान होती है। २-अभिनय करने वाले नटों का समुदाय।

नठना* [क्रि. स.] (हिं.) नष्ट होना। [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट करना।

नड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-नरसल। नरकट। २-एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि का नाम। ३-शीशे की चूड़ियाँ बनाने वाली एक जाति।

नड़क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो हड्डियों के बीच की हड्डी।

नड़प्राय [वि.] (सं.) सरपत के बाहुल्य से सम्पन्न। (वह स्थान) जहाँ नरकट बहुत होता है।

नड़भय [वि.] (सं.) सरपत या नरकट के बाहुल्य से सम्पन्न।

नड़मीन [संज्ञा पु.] (सं.) झिंगा नामक एक प्रकार की मछली।

नड़वन [संज्ञा पु.] (सं.) सरपत या नरकट का वन।

नड़श [वि.] (सं.) [स्त्री नड़शी] सरपतों से ढका हुआ।

नड़शी [वि.] (सं) [स्त्री. प्र.] सरपतों से ढकीहुई।

नड़संहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरपत का समूह।

नड़ह [वि.] (सं.) सुन्दर। ललित। चमकदमक वाला।

नड़िनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नदी जिसमें सरपत अधिक हों।

नड़िल [वि.] (सं.) [स्त्री. नड़िली] १-सरपतों की विपुलता। २-सरपतों से ढका हुआ। ३-सरपतों का।

नड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की आतिशबाजी।

नड्वत [वि.] (सं) [स्त्री. नड्वती] १-सरपतों की विपुलता। २-सरपतों से ढका हुआ। ३-सरपतों का।

नड्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरपतों का मूढा।

नड्वल [संज्ञा पु.] (सं) सरपतों की बनी हुई चटाई। २-वह प्रदेश जहाँ सरपत की अधिकता हो। ३-एक वैदिक देवता का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणों के मतानुसार वैराजमनु की पत्नी का नाम। [वि.] सरपतों की अधिकता।

नढ़ना+ [क्रि. स.] (हि.) १-गूँथना। पिरोना। २-कसना। ३-बाँधना।

नत [वि.] (सं.) १-झुका हुआ। २-विनीत। ३-प्रणाम करता हुआ। ४-उदास। ५-टेढ़ा।

नतइत [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नतैत'।

नतकुर [संज्ञा पु.] (हिं.) बेटी का बेटा। नवासा। नाती।

नतगुल्ला [संज्ञा पु.] (देश) घोंघा।

नतद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शालवृक्ष जिसे लताशाल भी कहते हैं।

नतन [संज्ञा पु.] (सं.) 'नत' होने या झुकने की क्रिया या भाव। झुकाव।

नतनासिक [वि.] (सं.) जिसकी नाक चपटी हो। चिपटी नाक का।

नतपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रणाम करने वाले का पालन करने वाला। शरणपाल। प्रणतपाल।

नतपुर [संज्ञा पु.] (सं) आधुनिक नदियाद का नाम।

नतभ्रू [वि.] (सं.) टेढ़ी भौं वाला।

नतम [वि.] (डिं.) बाँका।

नतमी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आसाम प्रदेश में बहुलता से पाया जाने वाला एक प्रकार का वृक्ष। इसकी लकड़ी चिकनी, मजबूत और लाल रंग की होती है। इस लकड़ी की मेज, कुरसियाँ और नावें बनाते हैं।

नतर* [क्रि. वि.] (हिं.) नहीं तो। अन्यथा।

नतरक* [क्रि. वि.] (हिं.) नहीं तो। अन्यथा।

नतरु* [क्रि. वि.] (हिं.) नहीं तो। अन्यथा।

नतांग, नताङ्ग [वि.] (सं.) १-बदन झुकाये हुए। २-प्रणाम करने वाला।

नतांगी, नताङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। औरत

नतांश [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृत्त जिसका केन्द्र भू-केन्द्र पर होता है और जो विषुवत रेखा पर लंब हो। इस वृत का उपयोग ग्रहों की स्थिति निश्चित करते समय होता है।

नताउल [संज्ञा पु.] (देश.) पश्चिमी घाट के पर्वत पर पाया जाने वाला एक प्रकार का वृक्ष। इसके रेशे बहुत मजबूत होते हैं। इससे एक प्रकार की जहरीली राल निकलती है जिसे तीरों में लगाकर उन्हें विषयुक्त बनाते हैं।

नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उतार। झुकाव। २-प्रणाम। नमस्कार। ३-विनय। विनती। ४-खाकसारी। नम्रता। ५-ज्योतिष में एक प्रकार की गणना। ६-प्रणाम करने के लिए शरीर झुकाना।

नातिनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की की लड़की। पुत्र की पुत्री। नातिन।

नतीजा [संज्ञा पु.] (फा.) परिणाम। फल।

नतु [क्रि. वि.] (हिं.) नहीं तो। अन्यथा।

नतैत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) संबंधी। नातेदार

नतैती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रिश्तेदारी। संबंध।

नतोदर [वि.] (सं.) जिसका ऊपरी भाग या तल कुछ नीचे अथवा भीतर की ओर दबा या झुका हो। कॉन्केव।

नत्थ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'नथ'।

नत्थी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कागज आदि के टुकड़ों को एक साथ मिलाकर नाथना या फँसाना। २-इस प्रकार नाथे हुए कागजों आदि का समूह। मिसिल। फाइल।

नत्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) कठफोड़वा नामक पक्षी।

नत्यर्थक [वि.] (सं.) १-जिसमें किसी वस्तु या बात का अस्तित्व न माना गया हो। २-जिसमें कोई प्रस्ताव या सुझाव मान्य न किया गया हो। *नगेटिव*।

नथ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का वृत्ताकार प्रसिद्ध गहना जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं। यह सोने आदि का तार खींचकर बनाया जाता है।

नथना [संज्ञा पु] (हिं) १-नाक का अगला भाग। नाक का वह चमड़ा। जो छेदों के परदे का काम देता है। २-नाक का छेद।

नथना फुलाना-क्रोध करना। गुस्सा दिखाना। *नथना फूलना*-क्रोध आना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी के साथ नत्थी होना। २-छिदना। छेदा जाना।

नथनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाक में पहनने की छोटी नथ। २-बुलाक। ३-तलवार की मूठ पर लगा हुआ छल्ला। ४-नथ के आकार की कोई वस्तु। ५-बैल की नाक में नाथी हुई रस्सी। नाथ।

नथिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नथ'।

नथुना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नथना'।

नथुनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाक में पहनने की नथ। *नथुनी उतारना*-कुमारी के साथ प्रथम समागम करना (केवल वैश्या-पुत्री के लिए)।

नद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ी नदी या ऐसी नदी जिसका नाम पुल्लिंगवाची हो। जैसे-ब्रह्मपुत्र, दामोदर। २-एक ऋषि का नाम।

नदन [संज्ञा पु] (सं) १-शब्द करना। प्रतिध्वनि करना। २-बोलना। चिल्लाना। दहाड़ना। थरथराना।

नदनदीपति [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

नदना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-पशुओं का शब्द करना। २-रंभाना।

नदनिमन् [वि] (सं.) शब्द करने वाला।

नदनु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-शेर। सिंह। ३-शब्द। आवाज।

नदम [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कपास जो दक्षिण में पैदा होती है।

नदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी या नदी का निकटवर्ती प्रदेश। २-जिसे किसी प्रकार का भय न हो। निडर।

नदराज [संज्ञा पु.] (सं.) सागर। समुद्र।

नदान* [वि.] (हिं.) १-बेसमझ। बुद्धिहीन। २-छोटी उम्र का। इतनी कम उमर का जिसे सांसारिक या व्यवहारिक ज्ञान बिलकुल न हो

नदारत+ [वि.] (हिं.) देखो 'नदारद'।

नदारद [वि.] (फा.) गायब। जो मौजूद न हो। लुप्त। गायब।

नदाल [वि.] (सं.) सौभाग्यशाली। भाग्ययुक्त।

नदि [संज्ञा पु.] (सं.) स्तुति। प्रशंसा।

नदिया [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाल प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर। *[संज्ञा स्त्री.] देखो 'नदी'।

नदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जल का वह भारी प्राकृतिक प्रवाह जो किसी बड़े पर्वत, झील या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से बहकर किसी समुद्र या किसी दूसरी नदी आदि में जा गिरे और जो बारहों मास बहता रहता हो। दरिया। सरि। सरिता तरंगिणी। शैवलिनी। आपगा। तटनी। स्रोतवती। निम्नगा। निर्झरणी। कूलवती। कल्लोलिनी। स्रोतस्विनी। ऋषिकुल्या। २-किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह। जैसे-खून की नदी बह निकली।

नदी नाव संयोग-ऐसा संयोग जो बार-बार न हो अकस्मात् होने वाली भेंट या मिलाप।

नदीकदंब, नदीकदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी गोरखमुंडी।

नदीकांत, नदीकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र सागर। २-समुद्रफल। ३-सिंधुवार नामक वृक्ष।

नदीकांता, नदीकान्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-जामुन का पेड़। २-काकजंघा।

नदीकूल [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का तट या किनारा

नदीकूलप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) जलबेंत।

नदीकूलस्थ [वि.] (सं.) तटस्थ। तटवर्ती। किनारे का।

नदीकुकंठ, नदीकुकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) नैपाली बौद्धों का एक तीर्थ स्थान जहाँ पर स्नान करके सुख, ऐश्वर्य की वृद्धि और शत्रुओं का नाश होता है।

नदीगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के दोनों किनारों के बीच का स्थान।

नदीगूलर [संज्ञा पु.] (?) लिसोड़ा।

नदीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला सुरमा। २-सेंधा नमक। ३-अर्जुनवृक्ष। ४-समुद्रफल। ५-महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम। यह गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। [वि.] नदी से उत्पन्न होने वाला। जो नदी में उत्पन्न हुआ हो।

नदीजल [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का पानी।

नदीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरणी का वृक्ष।

नदीजामुन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी जामुन।

नदीतरस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ से नदी पार की जाय। उतरने का स्थान। घाट।

नदीदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव का एक नाम।

नदीदोह [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो नदी पार करने के बदले में दिया जाय। भाड़ा। नदी पार होने का कर। उतराई।

नदीधर [संज्ञा पु.] (सं.) गंगा को मस्तक पर धारण करके वाले, शिव। महादेव।

नदीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-वरुण देवता। ३-पलाश की तरह का एक जंगली वृक्ष जिसे वरुण या बन्ना भी कहते हैं।

नदीनिष्पाव [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का धान जिसका चावल कड़ुवा, कसैला, भारी, हल्का, वात और कफ उत्पन्न करने वाला तथा त्रिदोषनाशक माना जाता है।

नदीपंक, नदीपङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का तटवर्ती कीचड़युक्त स्थान।

नदीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। सागर। २-वरुण।

नदीपूर [संज्ञा पु.] (सं.) उमड़ती हुई नदी।

नदीभल्लातक [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। सागर २-वरुण।

नदीभाव [वि.] (सं.) नदी में उत्पन्न होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंधा नमक। २-छोटा शंख।

नदीभापक [संज्ञा पु.] (सं) मानकंद या मान कच्चू नामक कंद।

नदीमातृक [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के जल या नहर के जल से सींचा जाने वाला प्रदेश।

नदीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ समुद्र में नदी गिरती हो। नदी का मुहाना।

नदीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरणी का वृक्ष।

नदीरय [संज्ञा पु.] (सं) नदी की धारा।

नदीवंक, नदीवङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का मोड़।

नदीवट [संज्ञा पु.] (सं.) वट या बड़ का पेड़।

नदीश [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

नदीष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी के जल में स्नान

२-नदी के विकट या खतरनाक स्थानों को जानने वाला व्यक्ति। अनुभवी। चतुर।

नदीसर्ज [संज्ञा पु.] (सं) अर्जुनवृक्ष।

नदीष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) नदी के जल में स्नान। २-खतरनाक स्थानों को जानने वाला व्यक्ति। ३-चतुर। अनुभवी।

नदेया [संज्ञा स्त्री.] (सं) भूमिजंबू। छोटीजामुन

नदेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'नदेय'।

नदोला [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी की छोटी नांद।

नद्दना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'नदना'।

नद्दी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'नदी'।

नद्ध [वि.] (सं.) १-बंधा हुआ। अटका हुआ। चारों ओर से लपेटा हुआ। पहनाया हुआ। २-ढकाहुआ। २-जड़ाहुआ। ४-गुथाहुआ। ५-जुड़ाहुआ। मिलाहुआ।

नद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंधन। रस्सी।

नद्ध्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़े की डोरी तांत।

नद्याम्र [संज्ञा पु.] (सं.) समष्ठिला। कोकुआ का पौधा।

नद्यावर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा विषयक एक शुभ योग जो उस समय होता है जबकि बुद्ध अपनी राशि पर हो और बृहस्पति या शुक्र लग्न में हों अथवा मंगल उच्च स्थित हो तथा शनि कुंम्भ-राशि में हो। इसे नद्यावर्त्तक भी कहते हैं। इस शुभयोग में यात्रा करने पर सब प्रकार के विघ्न सहज में नष्ट हो जाते हैं।

नद्युत्सृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह भूमि या स्थान जो नदी के हट या सरक जाने के कारण निकल आई हो।

नधना [क्रि. अ] (हि) रस्सी या तस्मे के द्वारा बैल घोड़ें आदि का उस बस्तु के साथ बंधना जिसे उन्हें खैंचकर ले जाना हो। बैल का हल गाड़ी आदि के आगे बंधना। जुतना। २-संयुक्त या सम्बद्ध होना। जुड़ना। ३-किसी कार्य का अनुष्ठित होना। कार्य का आरम्भ होना।

काम का नधना-काम में लगना।

नधाव [संज्ञा पु.] (हि.) भूमि में का वह गड्ढा जिसमें के पानी को सिंचाई के लिए ऊपर के खेत में ले जाते हैं।

ननंद, ननन्द [संज्ञा स्त्री] (सं.) ननद। पति की बहन।

ननका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नन्हा'।

ननकारना* [क्रि. अ.] (हिं.) इनकार करना। अस्वीकार करना। मंजूर करना।

ननंद, ननद [संज्ञा स्त्री] (हिं) पति की बहन

ननदी [संज्ञा स्त्री] (हिं) पति की बहन। ननद।

ननदोई [संज्ञा पु.] (हिं) पति का बहनोई। ननद का पति।

ननसार [संज्ञा स्त्री.] (हिं) नाना का घर। ननिहाल।

ननांद, ननान्द [संज्ञा स्त्री.] (सं) पति की बहन। ननद।

ननांदपति, ननान्दपति [संज्ञा पु.] (सं) पति की बहन का पति। ननदोई।

ननांदुपति, ननान्दुपति [संज्ञा पु.] (सं.) पति की बहन का पति। ननद का पति। पति का बहनोई। ननदोई।

नना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माता। २-कन्या। लड़का। वाक्य।

ननिअउरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ननिहाल'।

ननिआउर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ननिहाल'।

ननियासमुर [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री या पति का नाना।

ननियासास [संज्ञा स्त्री] (हिं.) स्त्री या पति की नानी।

ननिहारी [संज्ञा स्त्री] (देश) एक प्रकार की ईंट।

ननिहाल [संज्ञा पु.] (हिं.) नाना का घर। ननसार

ननु [अव्य.] (सं.) एक अव्यय जिसका व्यवहार कोई बात पूछने, सन्देह प्रकट करने या वाक्य के आरम्भ में किया जाता है।

ननोई [संज्ञा पु] (देश.) एक प्रकार का जंगली धान जो आप ही आप बिना जोते बोए जलाशयों में उगजाता है। पसही। तिन्नी।

नन्ना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाना'। [वि.] (हिं.) देखो 'नन्हा'।

नन्यौरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ननिहाल'।

नन्हा [वि.] (हिं.) [स्त्री. नन्ही] छोटा।

नन्हा-सा-अत्यन्त छोटा।

नन्हाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटापन। छोटाई २-अप्रतिष्ठा। हेठी। बदनामी।

नन्हिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का धान। इस धान का चावल।

नन्ही [वि] (हिं) [स्त्री. प्र.] छोटी।

नन्हैया* [वि] (हिं.) देखो 'नन्ह'।

नपत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नपाई'।

नपता [संज्ञा पु.] (देश.) एक पक्षी जिसके डैनों पर काली अथवा लाल चित्तियाँ होती हैं।

नपरका [संज्ञा पु.] (देश.) एक पक्षी जिसकी गरदन तथा पेट लाल और पैर तथा चोंच पीली होती है।

नपराजित [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव। शिव।

नपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नापने का काम। २-नापने का भाव। ३-नापने की मजदूरी।

नपाक* [वि.] (हिं.) नापाक। अपवित्र। अशुद्ध

नपात [संज्ञा पु.] (सं.) देवयान-पथ।

नंपुसक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैद्यक-मतानुसार वह मानव जिसमें कामेच्छा बिलकुल न हो या बहुत ही कम हो और किसी उपाय विशेष से जाग्रत हो। नपुंसक पांच प्रकार के बताये जाते हैं- आसेव्य, सुगन्धी, कुंभीक, ईर्षक और षंड। क्लीव। हिजड़ा। नामर्द। ३-कायर। डरपोक।

नंपुसकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नपुंसक होने का भाव। हिजड़ापन। २-एक रोग विशेष जिसमें मनुष्य बिलकुल नष्ट हो जाता है और वह स्त्री के योग्य नहीं रहता। नामर्दी

नंपुसकत्व [संज्ञा पु.] (सं) नपुंसकता। नामर्दी।

नंपुसकमंत्र, नपुसकमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतावलम्बियों के अनुसार वह मंत्र जिसके संत में नमः हो।

नंपुसकवेद [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के अनुसार एक मोहनीय कर्म जिसके उदय से स्त्री के साथ भी समागम की कामना होती है और बालक के साथ भी।

नंपुसीकरण [संज्ञा पु.] (सं) निपुरुष, हीजड़ा या नामर्द बनाने की क्रिया, क्लीवित करना।

नपुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) नापने का पात्र। वह बरतन जिसमें रखकर कोई वस्तु नापी जाय। मान।

नपुत्री* [वि] (हिं.) देखो 'निपुत्र'।

नप्ता [संज्ञा पु] (हिं.) लड़की या लड़के की संतान। नाती या पोता।

नप्तृ [संज्ञा पु.] (सं) नाती। पौत्र।

नप्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक पक्षी विशेष जिसका मास हलका, ठंढा, मीठा, कसैला और दोषनाशक माना जाता है।

नप्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) पोती। नातिन।

नफर [संज्ञा पु.] (फा.) १-दास। सेवक। २-व्यक्ति।

नफरत [संज्ञा स्त्री] (अ.) घिन। घृणा।

नफरी [संज्ञा स्त्री.] (फा) एक मजदूर या श्रमक की एक दिन की मजदूरी। २-मजदूर का एक दिन का काम। ३-मजदूरी का दिन।

नफसा-नफसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-व्यक्तिगत या निजी स्वार्थ का ध्यान करके किया जाने वाला विवाद या झगड़ा। वैमनस्य। चख-चखी। लड़ाई।

नफा [संज्ञा पु.] (अ.) लाभ। फायदा।

नफ़ासत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नफीस होने का भाव। उम्दापन। सुंदरता।

नफ़ीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा) तुरही। शहनाई।

नफ़ीस [वि.] (अ.) १-उत्तम। उमदा। बढ़िया। २-साफ। स्वच्छ। ३-बहुत अच्छी बनावट वाला। सुंदर।

नबी [संज्ञा पु] (अ) वह जिसे लोग या जन साधारण ईश्वर का दूत मानते हों। पैगंबर। रसूल।

नबेड़ना [क्रि. सं.] (हिं.) १-निपटाना। (झगड़ा आदि) समाप्त करना। तै करना। २-अपने

मतलव की चीज़ ले लेना और बाकी छोड़ देना । चुनना ।

नवेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) न्याय । फैसला । निपटारा ।

नवेरना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'नवेड़ना' ।

नवेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नवेड़ा' ।

नब्दीगर [संज्ञा पु.] (फा.) चारजाम बनाने वाला कारीगर ।

नब्ज [संज्ञा स्त्री.] (अ.) हाथ की वह रक्तवाहिनी नाली जिसकी गति से रोग को पहचान कर निर्णय किया जाता है । नाड़ी । कलाई की नाड़ी । *नब्ज चलना*-नाड़ी में गति होना । *नब्ज न रहना*-नाड़ी की गति का अन्त हो जाना । प्राण न रहना । *नब्ज छूटना*-नाड़ी में गति न रहना ।

नब्बे [वि.] (हिं.) अस्सी और दस या सौ में दस कम । ९० ।

नभः [संज्ञा पु.] (सं.) श्रावणमास ।

नभःकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य । सूरज ।

नभःक्रांती, नभःक्रान्ती [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह । शेर ।

नभःपांथ, नभःपान्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

नगःप्रभेद [संज्ञा पु.] (सं.) विरूप के वंशज एक वैदिक ऋषि जिनके मन्त्र ऋग्वेद में मिलते है

नभःप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) वायु । हवा ।

नभःसद [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता । २-आकाश में विचरण करने वाले पक्षी आदि ।

नभःसरित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा ।

नभःसुत [संज्ञा पु.] (सं.) पवन । हवा ।

नभःस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

नभःस्थित [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम ।

नभःस्पृश् [वि.] (सं.) आकाश में छूने वाला ।

नभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पंचतत्वों में से एक । आकाश । आसमान । २—शून्य-स्थान । आकाश । ३-शून्य । सिफर । ४-श्रावण मास । सावन का महीना । ५-भादों का महीना । ६-राजा नल के एक पुत्र का नाम । ७-चाक्षुसमुनि के एक पुत्र का नाम । ८-आश्रय । आधार । ९-पास । निकट । नजदीक । १०-रामचन्द्र के वंश के एक राजा का नाम । ११-चाक्षुस मन्वंतर के सप्तऋषियों में से एक का नाम । १२-शिव । महादेव । १३-अभ्रक । १४-जल । १५-जन्मकुण्डली में लग्न स्थान से दसवाँ स्थान । १६-मेघ । बादल । १७-वर्षा । १८-मृणालसूत्र । १९-विपतन्तु । [वि.] हिंसक ।

नभग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी । २-हवा । ३-बादल । ४-वैवस्वतमनु के एक पुत्र का नाम । [वि.] १-आकाश में विचरण करने वाला । आकाशगामी । २-भाग्यहीन । अभागा

नभगनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ ।

नभगामी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा । २-सूर्य । ३-पक्षी । ४-देवता ।

नभगेश [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ ।

नभचर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पक्षी । २-बादल । ३-हवा । ४-देवता, गंधर्व और ग्रह आदि । [वि.] (हिं.) आकाश में चलने वाला ।

नभधुज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मेघ । बादल ।

नभध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

नभंनीरप [संज्ञा पु.] (हिं.) चातक । पपीहा ।

नभन्य [वि.] (सं.) आकाश में उत्पन्न होने वाला

नभश्चक्षु [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य । सूरज ।

नभश्चक्षुस् [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य । सूरज ।

नभश्चमस [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-इन्द्रजाल । जादू ।

नभश्चर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-चन्द्र । ३-तारा । ४-पक्षी । ५-बादल । ६-देवता । [वि.] (सं.) आकाश में चलने या विचरण करने वाला ।

नभसंगम, नभसङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़िया । पक्षी ।

नभस [संज्ञा पु.] (सं.) दसवें मन्वंतर के सप्तऋषियों में से एक का नाम (हरिवंश) ।

नभस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश । आसमान गगन । व्योम । २-शिव ।

नभस्थित [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम । [वि.] (सं.) आकाश में स्थित या ठहरा हुआ जो आकाश में हो ।

नभस्मय [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य । सूरज ।

नभस्य [संज्ञा पु.] (सं.) भादों का महीना । २-स्वारोचिष मनु के एक पुत्र का नाम । (हरिवंश)

नभस्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) वायु । हवा ।

नभस्वान् [संज्ञा पु.] (सं.) वायु । हवा ।

नभाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंधेरा । अंधकार । २-राहु । ३-एक ऋषि का नाम ।

नभाकांति, नभाकान्ति [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह ।

नभि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहिया । चक्र ।

नभोंबु, नभोम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) चातक पक्षी ।

नभोग [संज्ञा पु.] (सं.) (आकाश में चलनेवाले) पक्षी, देवता, ग्रह आदि । २-जन्मकुंडली में लग्न स्थान से दसवाँ स्थान । ३-दसवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक का नाम ।

नभोगज [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

नभोगति [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो आकाश में चलता हो । जैसे-पक्षी, ग्रह आदि ।

नभोज [वि.] (सं.) जो आकाश में उत्पन्न हो ।

नभोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक विश्वदेव का नाम । (हरिवंश)

नभोदुह [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

नभोद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) बादल । मेघ ।

नभोधूम [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

नभोध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

नभोनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा ।

नभोमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य । सूरज ।

नभोमंडल, नभोमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) गगनमंडल । वायुमंडल । आकाश ।

नभोमंडलदीप [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

नभोयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

नभोरजस [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार । अंधेरा ।

नभोरूप [वि.] (सं.) नीले रंग का । जिसका रंग नीला हो ।

नभोरेणु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुहरा । कुहासा ।

नभोलय [संज्ञा पु.] (सं.) धूम । धूआं । [वि.] जो आकाश में लीन हो जाय ।

नभोवट [संज्ञा पु.] (सं.) आकाशमंडल ।

नभोवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'रेडियो' ।

नभ्य [संज्ञा प.] (सं.) १-पहिये के मध्य का भाग । २-धुरी । अक्ष । ३-पहिये में दी जाने वाली चिकनाई ।

नभ्राज [संज्ञा पु.] (सं) मेघ । बादल ।

नम [वि.] (फा.) गीला । तर । आर्द्र । भीगा हुआ [संज्ञा पु.] (सं) १-नमस्कार । २-त्याग । ३-अन्न । ४-वज्र । ५-यज्ञ । ६-स्तोत्र ।

नमक [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जो भोज्य पदार्थों में एक विशेष स्वाद उत्पन्न करने के निमित्त थोड़ी मात्रा में डाला जाता है । यह संसार के प्रायः सभी भागों में दो रूपों में पाया जाता है-एक तो भूमि में, चट्टानों अथवा स्तरों के रूप में तथा दूसरा समुद्रों, झीलों और तालाबों के खारे पानी में । कहीं-कहीं रेह या मिट्टी से भी निकाला जाता है जो खारी कहलाता है । एक और भी नमक होता है जो काला-नमक के नाम से प्रसिद्ध है यह हड़, बहेड़े और सज्जी के साथ गलाकर बनाया जाता है । सिंध के नमक को सैंधव और पंजाब की खान के नमक को सेंधा कहते हैं । वैद्यक में कई प्रकार के लवण या नमक गिनाये गये है जो इस प्रकार हैं—सैंधव, (सेंधा), शाकम्भरी (साँभर) समुद्रलवण (कर कच), विडलवण, सौवर्चल (काला नमक या सोंचर), काचलवण (नोनी मिट्टी द्वारा बनाया हुआ कचिया नमक), औद्भिद, औषर, रोमक और द्रोणीनमक । इन सब में सेंधा नमक सर्वोत्तम माना गया है । २-कुछ विशेष प्रकार का सौन्दर्य जो अधिक आकर्षक, मनोहर या प्रिय हो । लावण्य । सलोनापन । *नमक अदा करना*-अपने मालिक या स्वामी के उपकार का अच्छा बदला चुकाना । (किसी का) *नमक खाना*-किसी के दिये हुए अन्न से पेट भरना । किसी का दिया खाना । *नमक मिर्च मिलाना या लगाना*-किसी बात को

अधिक रोचक या प्रभावशाली बनाने के लिए उसमें अपनी ओर से कुछ बढ़ा देना। नमक फूटकर निकलना–कृतघ्नता का दंड मिलना। नमक से या नमक पानी से अदा होना–अपने मालिक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। कटे या जले पर नमक छिड़कना–किसी दुखी या पीड़ित को और भी दुःख देना या पीड़ा पहुंचना। नमक का सहारा–थोड़ा सहारा।

नमकख़्वार [वि.] (फ़ा.) नमक खाने वाला। जिसका पालन-पोषण दूसरे से किया जावे। पालित होने वाला।

नमकदान [संज्ञा पु.] (हि) [स्त्री. नमकदानी] जिसमें नमक को रखने का पात्र।

नमकदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा नमकदान।

नमकसार [संज्ञा पु] (फ़ा.) वह स्थान जहां से नमक निकाला या बनाया जाता हो।

नमकहराम [संज्ञा पु.](फ़ा., अ.) किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उससे द्रोह करने वाला। कृतघ्न।

नमकहरामी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा., अ.) कृतघ्नता।

नमकहलाल [संज्ञा पु.] (फ़ा., अ.) स्वामी, मालिक या अन्नदाता का काय अथवा सेवा धर्मपूर्वक या ईमानदारी से करने वाला। स्वामिनिष्ठ। स्वामिभक्त।

नमकहलाली [संज्ञा स्त्री.](फ़ा.,अ.) स्वामिनिष्ठा स्वामिभक्ति।

नमकीन [वि] (फ़ा) १–जिसमें नमक का-सा स्वाद हो। २–जिसमें नमक पड़ा हो। ३–खूबसूरत। सलोना। [संज्ञा पु.] (फ़ा.) नमक डालकर बनाया हुआ पकवान।

नमगीरा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–वह अस्त्र जिसे ओस आदि से बचाने के लिये पलंग के ऊपरी भाग में तान देते हैं। वह पाल या तिरपाल आदि जिसे धूप और वर्षा से बचाने के लिये किसी स्थान के ऊपर तानते हैं।

नमत [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्वामी। प्रभु। २–अभिनयकर्त्ता नट। ३–धूम। धूआं। [वि.] (सं.) जो झुके। नम्र।

नमदा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जमाया हुआ ऊनी कम्बल या कपड़ा।

नमन [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रणाम। नमस्कार। झुकाव।

नमनशील [वि.] (सं.) जो सहज में लच या झुक सकता हो। लचीला। लचकदार।

नमना* [क्रि. अ.] (हि.) १–झुकना। २–प्रणाम करना। नमस्कार करना।

नमनीय [वि.] (सं.) १–नमस्कार करने योग्य। आदरणीय। पूजनीय। माननीय। जिसके आगे झुककर नमस्कार किया जाय। २–जो झुक सके या झुकाया जा सके।

नमयिष्णु [वि.] (सं.) १–आदर करने योग्य। २–जा झुक सके।

नमस् [संज्ञा पु.](सं) झुकना। नमन। २–प्रणाम। नमस्कार। ३–त्याग। छोड़देना। ४–यज्ञ। ५–अन्न। ६–वज्र। ७–स्तोत्र।

नमसित [वि.] (सं.) जिसे नमस्कार किया गया हो। प्रणाम्य। सम्माननीय। पूज्य।

नमस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) झुककर सादर अभिवादन करना। प्रणाम। २–एक प्रकार का विष

नमस्कारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लजालू। लज्जावती। २–वाराहक्रांता। ३–खदिर नामक क्षुप

नमस्कार्य [वि.] १–नमस्कार के योग्य। वंदनीय। पूज्य। २–जिसे नमस्कार किया जाय।

नमस्कृत [वि.] (सं.) नमस्कार या प्रणाम किया हुआ।

नमस्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नमस्कार'।

नमस्ते [संज्ञा पु.] (सं.) आपको नमस्कार है।

नमस्य [संज्ञा पु.] (सं.) नमस्कार करने योग्य। पूज्य। आदरणीय। सम्माननीय।

नमस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूजा।

नमस्यित [वि.] (सं.) जिसे नमस्कार किया गया हो। पूज्य। प्रणाम्य। सम्माननीय।

नमाज़ [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना जो नित्य पाँच बार करते हैं। यह एक विशेष प्रकार से उठ, बैठ और झुककर की जाती है। *नमाज़ क़ज़ा होना*–निश्चित समय पर नमाज़ का न पढ़ा जा सकना।

नमाज़गाह [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) मसजिद में वह स्थान जहाँ नमाज़ पढ़ी जाती है।

नमाज़बंद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कुश्ती का एक पेंच।

नमाज़ी [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–नमाज़ पढ़ने वाला। २–वह वस्त्र जिसपर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जाती है।

नमाना* [क्रि. अ.](हिं.) १–झुकना। २–झुका या दबाकर अपने अधीन करना।

नमित [वि.] (सं.) झुकाहुआ।

नमिस [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) दूध का जमा फेन जो जाड़े के दिनों में विशेष प्रकार से तैयार किया जाता है।

नमी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) गीलापन। आर्द्रता। तरी

नमुचि [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक दैत्य का नाम जिसका इन्द्र ने वध किया था। २–कामदेव का नाम। ३–पुराणानुसार एक दैत्य जो शंभु और निशंभु का छोटा भाई था। ४–एक ऋषि का नाम।

नमुचिसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) नमुचि को मारने वाला, इन्द्र।

नमूदार [वि.] (फ़ा.) जो उदित हुआ हो। प्रकट। दृग्गोचर।

नमूना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १–किसी बड़े या अधिक पदार्थ में से निकाला हुआ वह छोटा या थोड़ा अंश जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान कराने के लिए होता है। बनगी। २–वह जिसके द्वारा उसके समान दूसरी वस्तुओं के स्वरूप तथा गुण आदि का ज्ञान हो जाय। ३–वह जिसके अनुकरण पर उसके समान ही अन्य वस्तुएँ बनाई जायँ। ४–ढाँचा। ठाठ। खाका।

नमेरु [संज्ञा पु.] (सं.) १–रुद्राक्ष का वृक्ष। २–एक प्रकार का पुन्नाग।

नमेरू [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नमेरु'

नमोगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

नमोवाक् [संज्ञा पु] (सं) नमस्कार का वाक्य।

नम्य [वि.] (सं.) नमनीय। झुकने योग्य।

नम्र [वि.] (सं.) १–विनीत। जिसमें नम्रता हो २–झुकाहुआ।

नम्रक [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत।

नम्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नम्र होने का भाव।

नम्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नम्र होने का भाव।

नम्रप्रकृति [वि.] (सं.) विनीत स्वभाव का।

नम्रमुख [वि.] (सं.) जिसका मस्तक झुका हो।

नम्रमूर्ति [वि.] (सं.) विनीत। जिसमें नम्रता हो।

नम्रस्वभाव [वि.] (सं.) विनीत स्वभाव या प्रकृति का।

नय [संज्ञा पु.] (सं.) १–नीति। २–नम्रता। ३–एक प्रकार का जूआ। ४–विष्णु। ५–दर्शन में प्रमाणों द्वारा निश्चित अर्थ को ग्रहण करने की वृत्ति जो सात प्रकार की होती है—नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ और एवंभूत। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नदी।

नयऋषि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नैऋत'।

नयक [वि.] (सं.) नीति या न्याय में कुशल।

नयकारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नर्त्तकों के दल का नायक। नाचनेवालों का मुखिया। २–नाचनेवाला। नचनिया।

नयन [संज्ञा पु.] (सं.) १–चक्षु। नेत्र। आँख। २–लेजाना। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

नयनगोचर [वि.] (सं.) देख पड़ने वाला। जो आँखों के सामने हो समक्ष।

नयनछद [संज्ञा पु.] (सं.) आँख की पलक।

नयनपट [संज्ञा पु.] (सं) आँख की पलक।

नयनपथ [संज्ञा पु.] (सं.) जितनी दूर तक दृष्टि जा सके आँख के आगे या सामने का स्थान।

नयनपुट [संज्ञा पु.] (सं.) आँख की पलक।

नयनप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) निर्मली का वृक्ष।

नयनप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) अश्रुपूर्ण नयन। आँसू से भरी हुई आँख।

नयनवारि [संज्ञा पु.] (सं.) आँसू। नेत्रजल।

नयनसलिल [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'नयनवारि'।

नयना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–झुकना। लटकना।

२-नम्र होना। [संज्ञा पु.] आँख। नेत्र। चक्षु।

नयनांजन, नयनाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) काजल। सुरमा।

नयनागर [वि.] (सं.) नीतिनिपुण। नीतिज्ञ।

नयनापांग, नयनापाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) आँख की कोर।

नयनाभिराम [वि.] (सं.) देखने में मनोहर। आँखों को प्रिय लगने वाला। [संज्ञा पु.] चन्द्रमा।

नयनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँख की पुतली। [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] आँखवाली।

नयनू [संज्ञा पु.] (हि.) १-मक्खन। नवनीत। २-एक प्रकार की मलमल जिसपर सफेद बूटियां बनी होती हैं।

नयनृत [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक नेता।

नयनोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीपक। प्रदीप। २-कोई भी मनोहर वस्तु।

नयनोपांत, नयनोपान्त [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्रों के कोये। आँख का किनारा या कोर।

नयनौषध [संज्ञा पु.] (सं.) पीला कसीस। पुष्प-कसीस।

नयपीठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का जुए का खेल।

नयलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) नीतिरूपी चक्षु। [वि.] (सं.) जिसकी आँखें न्याय की ओर जाती हैं।

नयर* [संज्ञा पु.] (हि.) शहर। पुर। नगर।

नयवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) नीति मार्ग। न्याय का रास्ता।

नयविद् [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक नेता। नीतिशास्त्रज्ञ। नीतिनिपुण।

नयविशारद [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक नेता। नीतिनिपुण। नीतिकुशल।

नयशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजनैतिक-शास्त्र। २-नीति-सम्बन्धी कोई शास्त्र।

नयशील [वि.] (सं.) १-नीतिज्ञ। २-विनीत। ३-ईमानदार।

नयसार [संज्ञा पु.] (सं.) नीतिशास्त्र।

नया [वि.] (हि.) १-जिसका सृजन, संगठन, आविष्कार या आविर्भाव अभी-अभी या हाल में हुआ हो। जो अभी-अभी बना, चला या निकला हो। ताजा। नवीन। नूतन। २-जिसका अस्तित्व तो पहले से ही परन्तु परिचय अभी हुआ हो। ३-पहले वाले के स्थान पर आने वाला दूसरा। ४-जो पहले किसी के व्यवहार, प्रयोग या काम में न आया हो। ५-जिसका प्रारम्भ सर्वप्रथम या फिर से परन्तु बहुत हाल में हुआ हो। जैसे—नया चाँद। ६-जिसका नामकरण किसी पुराने नाम पर हुआ हो। जैसे—नया बाजार। ७-नौसिखुआ। *नया-नवेला*—नवयुवक। नये कपड़ों में सजा-धजा नौजवान। *नया करना*—१-नया फल, अनाज आदि मौसम में पहले-पहल खाना। २-कपड़ा आदि फाड़ या जला देना। (स्त्रियाँ प्राय अशुभ बात मुख से निकालने से बचने के लिए प्रयोग करती हैं) *नया पुराना करना*—१-पुराना हिसाब बेबाक करके नया हिसाब चलाना। २-पुराने को हटाकर उसकी जगह पर नया करना या रखना।

नयापन [संज्ञा पु.] (हि.) नया होने का भाव। नवीनता।

नयाम [संज्ञा पु.] (फा.) तलवार की म्यान या खोल।

नरंग, नरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी का पेड़।

नर [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। महादेव। ३-अर्जुन। ४-एक पौराणिक ऋषि जो ईश्वर के अंशावतार माने जाते थे। ५-एक देवयोनि। ६-पुरुष। मर्द। आदमी। ७-रायकपूर रोहिस नामक एक प्रकार का क्षुप। संधिया। गंधेल। ८-वह खूँटी जो छाया जानने के लिए खड़े बल गाड़ी जाती है। शंकु। लंब। ९-सेवक। १०-गयराक्षस के एक पुत्र का नाम। ११-सुधृति के एक पुत्र का नाम। १२-भवन्मन्य के पुत्र का नाम। १३-एक प्रकार का दोहा जिसमें १५ गुरु और १८-लघु होते हैं। १४-छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें १० गुरु और १३ लघु होते हैं। [वि.] (सं.) जो पुरुष जाति का हो। मादा का उलटा। [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'नल'। २-देखो 'नरकट'।

नरई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-गेहूँ की बाल का डंठल जो भीतर पोला हो। २-जलाशयों के पास पाई जाने वाली एक प्रकार की घास।

नरकंत* [संज्ञा पु.] (हि.) नृप। राजा।

नरक [संज्ञा पु.] (सं.) हिन्दू धर्म-शास्त्र तथा पुराणों के मतानुसार वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा को अपने किये हुए पाप का फल भोगना पड़ता है। मनुस्मृति में नरकों की संख्या २१ है। वह इस प्रकार हैं-तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, नरक, महा नरक, कालसूत्र, संजीवन, महावीचि, तपन, प्रतापन, संहात, काकोल, कुड्मल, प्रतिमूर्त्तिक, लोहशंकु, ऋजीष, शाल्मली, वैतरणी, असिपत्रवन और लोहदारक। भागवत के अनुसार २१ नरकों के नाम इस प्रकार हैं—तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, शूकरमुख, अंधकूप, कृमि भोजन, संदेश, तप्तशूर्म्मि, वज्रकंटक शाल्मली, वैतरणी, श्योद, प्राणरोध विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीची तथा अयःपान। २-बहुत ही गंदा स्थान। ३-वह स्थान जहाँ बहुत अधिक पीड़ा या कष्ट हो। ४-कलि के पौत्र का नाम। ५-विप्रचित्ति नामक दैत्य के एक पुत्र का नाम। ६-निकृत के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम। *नरक होना*-नरक में भेजा जाना।

नरककुंड, नरककुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पापियों के कष्ट भोगने का स्थान। पुराणों के अनुसार अनेक नरककुंड माने गये हैं। जैसे-वसाकुंड, तप्तकुंड, सर्पकुंड, चक्रकुंड आदि।

नरकगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार वह कर्म जिसके करने से मनुष्य को नरक में जाना पड़े।

नरकगामी [वि.] (सं.) नरक में जाने वाला।

नरक-चतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकबदी चौदस जिस दिन घर का सारा कूड़ा-करकट निकालकर बाहर फेंका जाता है।

नरकचूर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'कचूर'।

नरकजित् [संज्ञा पु.] (सं.) नरकासुर को जीतने वाला, श्रीकृष्ण।

नरकट [संज्ञा पु.] (हि.) बेंत की तरह का एक प्रकार का पौधा। जिसकी पत्ती बांस की पत्तियों के समान लम्बी होती है। इसके डंठल पोले लम्बे तथा मजबूत होते हैं और लिखने की कलमें तथा चटाइयां आदि बनाने के काम में आते हैं। इसके अतिरिक्त इसके डंठलों से हुक्के की निगालियाँ, बैठने के मूढ़े आदि बनाते तथा छत पाटने का भी काम लिया जाता है।

नरकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) मुरदे की खोपड़ी।

नरकभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां पापी लोगों को नाना प्रकार की यातनायें भोगनी पड़ती हैं।

नरकभूमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नरकलोक। (जैनमत)।

नरकमुक्त [वि.] (सं.) नरक से छुटकारा पाया हुआ।

नरकल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नरकट'।

नरकस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नरकट'।

नरकस्थ [वि.] (सं.) नरकभूमि या नरकलोक में स्थित।

नरकस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैतरणी नदी।

नरकांतक, नरकान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

नरकामय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरने के बाद जीव का सूक्ष्मशरीर। २-भूत। प्रेतात्मा।

नरकासुर [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न एक असुर का नाम। जो प्राग्ज्योतिषपुर का राजा था। इसने ब्राह्मण और देवताओं पर बहुत अत्याचार किये थे तथा राजा इन्द्र को जीत लिया। अतः देवताओं की प्रार्थना करने पर विष्णु ने श्रीकृष्ण अवतार लेकर सुदर्शनचक्र से इसका सिर काट डाला। कहते हैं कि इसके पास कुबेर के भंडार से भी अधिक सम्पत्ति थी। वह सब श्रीकृष्ण अपने साथ द्वारिका ले आये थे।

नरकी [वि.] (हि.) देखो 'नारकी'।

नरकीलक [वि.] (सं.) गुरु की हत्या करने वाला।

नरकुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरकट'।

नरकेशरी [संज्ञा पु.] (सं) १-नरसिंह नामक विष्णु का अवतार। २-वह मनुष्य जो अन्य मनुष्यों में श्रेष्ठ हो।

नरकेसरी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नरकेशरी'।

नरकेहरी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरकेशरी'।

नरकौतुक [संज्ञा पु.] (सं.) मदारी का खेल।

नरखड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) गला।

नरगण [संज्ञा पु.](सं.) फलित-ज्योतिष में नक्षत्रों का एक गण जिसमें उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पूर्वभाद्रपद, रोहिणी, भरणी तथा आर्द्रा आदि नक्षत्र सम्मिलित हैं। इस गण में जन्म लेने वाला सुशील तथा बुद्धिमान होता है।

नरगिस [संज्ञा पु.] [फा.] प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार के लोग सफेद रंग के सुन्दर फूल लगते हैं जिनके बीच में गोल काला धव्वा होता है। इसकी सुगंध बड़ी मनोहर होती है । फारसी तथा उर्दू के कवि इस फूल के साथ आँखों की उपमा देते हैं। २-इस पौधे का फूल।

नरगिसी [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का कपड़ा जिसपर नरगिस की तरह के बूटे बने होते हैं। २-एक प्रकार का तला हुआ अंडा। [वि.] (फा.) नरगिस के समान या नरगिस के से रंग का। नरगिस-संबंधी।

नरचा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का पाट या पटुआ।

नरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्यत्व। नरत्व।

नरत्राता [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृपति।

नरत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नरपाल। राजा। २-श्रीकृष्ण।

नरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नर होने का भाव। नरता। मनुष्यत्व।

नरद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चौसर खेलने की गोटी। २-एक पौधा जिसके फूलों का अर्क खींचा जाता है। तथा इसकी पत्तियां मसाले के उपयोग में आती हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शब्द। ध्वनि। नाद।

नरदन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नाद करना। गरजना।

नरदमा [संज्ञा पु.] (हि.) मैले पानी का नल। पनाला।

नरदवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) मैले पानी का नल। पनाला।

नरदा [संज्ञा पु] (फा) मैला पानी बहने की नाली

नरदारा [संज्ञा पु.] (हि.) १-जनाना। जनखा। हिजड़ा। नपुंसक। २-जो पुरुष होकर भी स्त्रियों का काम करे। कायर। डरपोक।

नरदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। नृपति। २-ब्राह्मण।

नरदेवकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम जिनकी कथा श्रीमद्भागवत में आती है।

नरदेवदेव [संज्ञा पु.] (सं.) नृपति। राजा। नरदेव

नरद्विप [संज्ञा पु.] (सं) दैत्य। दानव। असुर। राक्षस।

नरनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृपति। नृपाल।

नरनायक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृप। नरेश। भूपति।

नरनारायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नर और नारायण नामक दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। कहते हैं कि ये दोनों भाई थे और नारायण इन में बड़े थे। यह भृगु ऋषि के शाप के कारण और पृथ्वी का भार हरने के लिए अर्जुन और कृष्ण के रूप में संसार में उत्पन्न हुए थे। २-श्रीकृष्ण का एक नाम। ३-मनुष्य और भगवान।

नरनारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी। पांचाली।

नरनाह* [संज्ञा पु.] (हि) राजा। नृप। नृपाल।

नरनाहर [संज्ञा पु.] (हि.) नृसिंह भगवान।

नरनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पौधा।

नरपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृपति। भूपति।

नरपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर। २-देश।

नरपशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-नृसिंह। २-मनुष्याकृति में पशु या जानवर। मनुष्य होने पर भी पशुओं के-से आचरण या काम करने वाला।

नरपाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। भूपति। नृपाल। नृप।

नरपालि [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा शंख।

नरपिशाच [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य होने पर भी पशुओं के से आचरण या काम करने वाला। बहुत दुष्ट और नीच मनुष्य।

नरपुंगव, नरपुङ्गव [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों में श्रेष्ठ।

नरपुर [संज्ञा पु.] (सं.) भूलोक। मनुष्यलोक।

नरप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कबूतर। २-नील का पेड़। [वि.] (सं.) जो मनुष्य को अच्छा या भला लगे।

नरबदा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'नर्मदा'।

नरबलि [संज्ञा पु.] (सं.) देवता की पूजा के निमित्त की जानने वाली नर या मनुष्य की हत्या।

नरभक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों को खाने वाला दैत्य। राक्षस।

नरभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारतवर्ष।

नरभूमि [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों का आदि उत्पत्ति स्थान भारतवर्ष।

नरम [वि.] (हि.) १-कोमल। मुलायम। २-लचीला। ३-'तेज' का उलटा। मंदा। ४-धीमा लघुपाक। ६-जिसमें पौरुष की अथवा पुंसत्व की कमी हो।

नरमट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह भूमि जहाँ की मिट्टी मुलायम या नरम हो।

नरमदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नर्मदा'।

नरम-रोआँ [संज्ञा पु.] (हि.) लाल या सफेद रंग का वह रोआं जो बुनाई के लिए सदा बहुत मुलायम या नरम होता है।

नरम-लोहा [संज्ञा पु.] (हि.) आग में तपाकर या लाल करके ठंडा कियाहुआ लोहा जो मुलायम हो जाता है।

नरमा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक प्रकार की कपास जिसे मनवा, देवकपास या रामकपास भी कहते हैं। २-सेमर की रूई। ३-कान के नीचे का लटकता हुआ भाग। लोल। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नरमी। कोमलता। मुलायमियत।

नरमाना [क्रि. स.] (हि.) १-नरम या मुलायम करना। २-शान्त करना। धीमा करना। [क्रि. अ] (हि.) १-कोमल, मुलायम या नरम पड़ना। २-व्यवहार में उग्रता छोड़ कर नरम होना।

नरमावड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वनकपास।

नरमानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मर्दानी औरत जिसके दाढ़ी-मूँछ हो।

नरमानिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह स्त्री जिसके दाढ़ी या मूँछें हो।

नरमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नरमुंडों की माला।

नरमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसे दाढ़ी-मूँछ निकल आई हों।

नरमाहट [संज्ञा स्त्री.] (हि) नरम होने की क्रिया या भाव। कोमलता। नरमी। मृदुता। मुलायमियत।

नरमी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नरम होने की क्रिया या भाव। मृदुता। मुलायमियत। कोमल।

नरमेध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीनकाल में मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी। यह यज्ञ चैत्रसुदी दशमी से आरम्भ होकर चालीस दिन में समाप्त होता था।

नरयंत्र, नरयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शंकुयंत्र जो धूप में समय बताने के काम आता था। धूपघड़ी।

नरयान [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का यान रथ या हलकी गाड़ी जिसमें मनुष्य जुतकर दौड़ता है और सवारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है। रिक्शा। २-पालकी। ३-हाथठेला।

नररथ [संज्ञा पु.] (सं.) पालकी, पीनस, तामझाम, ठेला, रिक्शा आदि सवारी जिसे आदमी ढकेल कर या उठाकर ले चलें।

नरराज [संज्ञा पु.](सं) नरश्रेष्ठ। मनुष्यों में श्रेष्ठ

नरराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य का राज्य।

नररूप [वि.] (सं.) मनुष्य के समान आकृति वाला।

नरर्षभ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नरलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्यलोक। जगत। संसार। मृत्युलोक। २-मानवजाति।

नरवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) कपोत। कबूतर।

नर-वध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मनुष्य को जान-बूझकर अथवा किसी उद्देश्य से मार डालना मर्डर।

नरवरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) क्षत्रियों की एक जाति

नरवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

नरवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नरई'।

नरवाह [संज्ञा पु.] (सं.) पालकी, पीनस, तामझाम ठेला रिक्शा आदि सवारी जिसे आदमी ढकेलकर या उठाकर ले चलें।

नरवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह सवारी जिसे मनुष्य खींचकर या ढोकर ले चलें। २-कुबेर। ३-किन्नर।

नरवीर [संज्ञा पु.] (सं.) बहादुर आदमी।

नरवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नील का पेड़।

नरव्याघ्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्यों में श्रेष्ठ। २-एक प्रकार का जलजन्तु जिसके शरीर के नीचे का भाग मनुष्य के आकार का तथा ऊपर का भाग बाघ के समान होता है।

नरशक्र [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृप। नरेन्द्र।

नरशृंग, नरशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य के सींग। एक असंभव कल्पना।

नरसंसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों का संसर्ग। मनुष्य-समुदाय।

नरसख [संज्ञा पु.] (सं.) मानव-बन्धु या सखा। भगवान्।

नरसल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरकट'।

नरसादर, नरसार [संज्ञा प.] (सं.) नौसादर।

नरसिंग [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का विलायती फूल।

नरसिंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरसिंघा'।

नरसिंघ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नृसिंह'।

नरसिंघा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा बाजा जो तुरही के समान होता है जो फूंककर बजाया जाता है यह जिस स्थान से फूंका जाता है वह पतला और आगे का भाग बराबर चौड़ा होता जाता है। प्राचीन समय में इसका उपयोग रणक्षेत्र में होता था और आजकल यह देहात विवाह आदि के अवसर पर बजाया जाता है।

नरसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'नृसिंह'। २-श्रेष्ठ।

नरसिंहज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ज्वर जो चौथिया या चतुर्थिक का उलटा है। यह ज्वर तीन दिन रहकर चौथे दिन उतर जाता है पुनः फिर तीन दिन के लिए चढ़ता है। इसका इसी प्रकार क्रम चलता है।

नरसिंहपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नृसिंह-पुराण'।

नरसिंहावतार [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'नृसिंह'।

नरसेज [संज्ञा पु.] (हिं) तिधारा नाम की थूहर जिसमें पत्ते नहीं आते।

नरसों* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'अतरसों'।

नरस्कंध, नरस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों का समूह या दल।

नरहत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी आदमी की साधारण चोट से होने वाली वह मृत्यु या मौत, जिसमें मारनेवाले का यह उद्देश्य न हो कि वह मर जाय। *होमीसाइड*। *नरहत्या आत्मरक्षार्थ*–आत्मरक्षा या अपने बचाव में किये गये प्रतिकार से होने वाली हत्या जिस में मारने वाले का जान से मारने का अभिप्राय न हो। *होमीसाइड-इन-सैल्फडिफेंस*। *नर-हत्या अपराध*–वह दंड योग्य दोष या अपराध जो नर-हत्या करने के कारण हो। *होमीसाइड कलपीबल*।

नरहत्यान्याय [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायोचित-वध।

नरहत्योन्माद [संज्ञा पु.] (सं.) पागलपन की झोंक या सनक में की गई नर-हत्या। *होमीसाइड मेनिया*।

नरहर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पैर की वह हड्डी जो पिडली के ऊपर होती है।

नरहरि [संज्ञा पु.] (सं.) नृसिंह-अवतार जो भगवान के दस अवतारों में से चौथा है।

नरहरी [संज्ञा पु.] (छं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक पद में १४ और ५ के विराम से १९ मात्राएँ तथा अन्त में एक नगण और एक गुरु होता है।

नर-हीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) आठ या छः पहल का वह बड़ा हीरा जिसके किनारे बहुत तेज हो। कहा जाता है कि जिसके पास इस प्रकार का हीरा होता है वह राजा हो जाता है या उसका वैभव खूब बढ़ जाता है।

नराग, नराङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाभि। ढोंढी। २-एक प्रकार का फोड़ा।

नरांतक, नरान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण के एक पुत्र का नाम जो अंगद के हाथ से मारा गया था। २-मृत्यु।

नरांश [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्य। राक्षस।

नरा [संज्ञा पु.] (हिं.) जुलाहों के काम आने वाली नरकट की एक छोटी नली जिसके ऊपर सूत लिपटा रहाता है।

नराच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीर। बाण। शर। २-एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अन्त में एक गुरु होता है। पंचचामर।

नराचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वितानवृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में तगण, रगण, लघु और गुरु होता है।

नराज [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं। [वि.] (हिं.) देखो 'नाराज़'।

नराजना* [क्रि. अ.] (हिं.) अप्रसन्न होना। नाराज होना। [क्रि. स.] (हिं.) अप्रसन्न करना। नाराज करना।

नराट* [संज्ञा पु.] (हिं.) नृप। राजा। नृपति।

नराधम [संज्ञा पु.] (सं.) नीचाशय व्यक्ति। नीच आदमी।

नराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) नृप। राजा। नृपति। नरेन्द्र।

नरायण [संज्ञा पु.] (सं.) नारायण। विष्णु।

नरायन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नारायण'।

नराश [संज्ञा पु.] (सं.) नरभोजी। राक्षस।

नराशस [संज्ञा पु.] (सं.) १-नर। अग्नि।

नरासन [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य के आकृति वाला एक प्रकार का आसन।

नरिंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा। नरपति।

नरिअर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नारियल'।

नरिअरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नारियल की खोपड़ी का आधा भाग।

नरियर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नारियल'।

नरिया+ [संज्ञा पु.](हिं.) अर्द्धवृत्ताकार मिट्टी का वह खपड़ा जो मकान की छाजन पर के काम आता है।

नरियरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नारियल की खोपड़ी। २-नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

नरियाना [क्रि अ.] (देश.) चिल्लाना। मचाना।

नरी [संज्ञा स्त्री.](फा.) बकरी या बकरे का हुआ चमड़ा जो लाल रंग का होता है। सिझाया या कमाया हुआ मुलायम ३-करघे की वह नली जिसपर सूत रहता है। नार। ४-ताल या नदी के होने वाली एक प्रकार की घास। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-नली। नाली। बाँस की वह नली जिसकी सहायता से सुनार लोग आग सुलगाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नारी। स्त्री। (देश.) एक प्रकार का बगुला।

नरु* [संज्ञा पु.] देखो 'नर'।

नरुई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छुच्छी। छोटी नली।

नरुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज के पौधे की डंडी जो भीतर से पोली होती है।

नरेंद्र, नरेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं) १-राजा। २-वैद्य। हकीम। चिकित्सक। ३-साँप।

आदि के काटने का इलाज। विषवैद्य। ४-स्योनाक वृक्ष। ५-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं, जिसमें सोलह मात्राओं पर विराम और अन्त में दो गुरु होते हैं। इसे सार तथा ललितपद भी कहते हैं।

नरेंद्रमंडल, नरेन्द्रमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) अंग्रेजी शासन के समय में भारत की देशी रियासतों या राज्यों के नरेशों की वह संस्था जो देशी रियासतों या राज्यों की समुचित व्यवस्था तथा हित रक्षार्थ बनी थी। चेम्बर आफ प्रिंसेज़।

[illegible] [संज्ञा पु.](देश.) शिवसागर तथा आसाम के सिलहट प्रदेश में पाया जाने वाला एक वृक्ष जिसकी छाल से एक प्रकार की खाकी गोंद निकलता है, जो शीघ्र सूख जाता है और चमकीला होता है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नारियल की खोपड़ी। [illegible] की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

नरेश [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यों का स्वामी। राजा। नृप।

नरेस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरेश'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परसों के बाद आने वाला दिन। अतरसों।

नरोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) भगवान। ईश्वर।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-पैर की पिंडली की हड्डी। नली। २-कोल्हू की वह नली जिसमें से रस निकलता या गिरता है।

नर्क [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरक'।

नर्कट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरकट'।

नर्कुटक [संज्ञा पु.] (सं.) नासिका। नाक। घ्राणेंद्रिय।

नर्गिस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नरगिस'।

नर्गिसी [वि.] (हिं.) देखो 'नरगिसी'।

नर्त्त, नर्त [संज्ञा पु.] (सं.) नाचने वाला। वह जो नाचता हो।

नर्त्तक, नर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. नर्त्तकी] १-नट। नाचने वाला। नृत्य करने वाला। २-एक प्रकार का नरकट। ३-चारण। भाट। [illegible]। ४-नाटक का अभिनय करने वाला एक पात्र। ५-खड्ग की धार पर नाचने वाला। [illegible]। ६-हाथी। ७-मयूर। मोर। ८-राजा। ९-महुआ। १०-महादेव का एक नाम। ११-महुआ। १२-एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति धोबी पिता और वेश्या माता से मानी जाती है।

नर्त्तकी, नर्तकी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-नाचने वाली स्त्री। २-नाच दिखाकर लोगों का चित्त प्रसन्न करने वाली। वेश्या। रंडी। ३-नलिका नामक सुगंध द्रव्य। ४-हथिनी। ५-मयूरनी।

नर्त्तन, नर्तन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाच। नृत्य।

नर्त्तनगृह, नर्तनगृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह रंगमंच या स्थान जहाँ नाच होता हो। नाचघर।

नर्त्तनप्रिय, नर्तनप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) (वह जो नाचना पसन्द करता हो)। १-मोर। मयूर। २-शिवजी।

नर्त्तनशाला, नर्तनशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ नाच होता है। नाचघर।

नर्त्तना* [क्रि. अ.] (हिं.) नाचना।

नर्त्तनागर, नर्तनागर [संज्ञा पु.] (सं.) नाचने का स्थान। नाचघर।

नर्त्तित, नर्तित [वि.] (सं.) १-नाचा या नचाया हुआ। २-नृत्य करता हुआ। नाचता हुआ।

नर्द [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) चौसर की गोटी।

नर्दकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कटील नामक एक कपास। निभरी। बगई।

नर्दटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।

नर्दन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाद। गरज। भीषण-ध्वनि।

नर्दबान [संज्ञा पु.](देश.) लकड़ी की बनी हुई सीढ़ी। २-मार्ग। रास्ता।

नर्दा+ [संज्ञा पु.] (देश.) मैला बहाने की नाली।

नर्दित [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के पाँसे या पाँसे का विशेषरूप से एक फिंकाव।

नर्दितम् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द। दहाड़। २-डकार। रंभाना।

नर्वदा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नर्मदा'।

नर्म [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परिहास। हंसी। ठट्ठा। २-हंसीमजाक। दिल्लगी। ३-मसखरा। हँसोड़ा।

नर्मकील [संज्ञा पु.] (सं.) पति।

नर्मट [संज्ञा पु.](सं.) १-सूर्य। २-ठीकरा। खप्पर।

नर्मठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदूषक। भांड़। २-कामुक। लंपट। ऐय्याश। ३-खेल। मनोरंजन। आमोद-प्रमोद। ४-मैथुन। संभोग। ५-ठोड़ी। ६-चूची के ऊपर की काली घुंडी। चूचुक।

नर्मद [वि.] (सं.) प्रसन्नकारक। आल्हादक। आनन्द देने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) दिल्लगी-बाज। मसखरा। भांड।

नर्मदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मध्य प्रदेश की एक नदी जो विन्ध्यगिरि से निकल कर खंभात की खाड़ी में गिरती है। २-पृक्का अथवा असवर्ग नामक गंधद्रव्य। ३-एक गंधर्व स्त्री का नाम जो सुन्दरी, केतुमती और वसुदा की माता थी।

नर्मदेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक का शिवलिंग जो नर्मदानदी में से निकलता है। पुराणानुसार ऐसे लिंगों के पूजन का बहुत महात्मा है।

नर्मद्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी हँसी की बात सुनकर प्रसन्न होना। २-नाटक में का प्रतिमुख। ३-संधि का एक अंग।

नर्मरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुफा। खोह। २-पात्र। ३-वृद्धा स्त्री। ४-भाथी। धौंकनी।

नर्मवत् [वि.] (सं.) आनन्दयुक्त। [संज्ञा स्त्री.] आनन्द। हँसी।

नर्मसचिव [संज्ञा पु.] (सं.) वह मनुष्य जो किसी राजा के पास उसे हँसाने के लिए रहे। विदूषक।

नर्मसुहृद [संज्ञा पु.] (सं.) वह मनुष्य जो राजा को हंसाने के लिए रखा जाता है। विदूषक।

नर्मस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण हंसी-दिल्लगी

नर्मी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नरमी'।

नर्य [वि.] (सं.) बलवान। साहसी। वीर।

नर्री [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-ऊसर भूमि पर उगने वाली एक प्रकार की बारहमासी घास २-एक प्रकार का बाँस जो हिमालय में होता है।

नल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-नरकट। ३-निषधदेश का एक चन्द्रवंशी राजा जिसका विवाह तत्कालीन राजा भीम की कन्या दमयन्ती से हुआ था। यह अश्वविद्या में बड़ा दक्ष था। रामचन्द्रजी की सेना का एक प्रसिद्ध बानर यूथपति, जिसने समुद्र पर पुल बाँधने के काम में मुख्य साहाय्य प्रदान किया था। पुराणानुसार यह ऋतुध्वज ऋषि के शाप के कारण घृताची के गर्भ से बंदर के रूप में उत्पन्न हुआ था। ५-एक दानव का नाम जो विप्रचित्त का चौथा पुत्र था और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ६-यदु के एक पुत्र का नाम। ७-एक नद का नाम। ८-एक प्रकार का चमड़े से मढ़ाहुआ बाजा जो प्राचीनकाल में घोड़े की पीठपर रखकर युद्ध के समय बजाया जाता था। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पोली लम्बी गोल वस्तु। २-धातु, काठ, मिट्टी आदि का बना हुआ पोला गोलखंड जो कुछ लम्बा होता है। जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक पानी, हवा, धुआं, गैस आदि के ले जाने के काम आता है। ३-गंदगी और मैला आदि बहाने का मार्ग। ४-पेड़ू में की वह नाड़ी जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नला।

नल टलना-आघात आदि के कारण पेशाब की नली में किसी प्रकार का व्यतिक्रम होना जिससे बहुत पीड़ा होती है।

नलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर की कोई भी लम्बी हड्डी। गोलाकार वह हड्डी जिसके भीतर मज्जा हो। नली के आकार की हड्डी। २-कालदेवल के भतीजे का नाम, जिसे बुद्ध ने उपदेश दिया था।

नलका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नली। नाल।

नलकानन [संज्ञा पु.] (सं.) नरकट का जंगल।

नलकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जंघा। जांघ। २-टांग।

नलकील [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जानु। घुटना।

नलकूप [संज्ञा पु.] (हिं.) मैदानों, खेतों आदि में भूमि के भीतर से पानी निकलने का वह नल जिसका एक सिरा भूमि में उस गहराई तक पहुँचा रहता है जहाँ जल होता है और दूसरा सिरा बाहर पानी खैंचकर फैंकता है। ट्यूबवैल।

नलकूबर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर के एक पुत्र का नाम। इसका भ्राता मणिग्रीव था। नारद के शाप के कारण यह दोनों भाई अर्जुनवृक्ष हो गये। श्रीकृष्ण के स्पर्श से ये शापमुक्त हो गये थे। २-संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक जिसमें चार लघु मात्राएं होती हैं।

नलकील [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का बैल।

नलदंबु, नलदम्बु [संज्ञा पु] (सं.) नीम का पेड़

नलद [संज्ञा पु.] (सं) १-पुष्परस। मकरंद। २-उशीर। खस। ३-जटामासी। बालछड़। ४-एक प्रकार की घास जिसे लालमञ्जक भी कहते हैं।

नलदा [संज्ञा स्त्री] (सं.) जटामासी। बालछड़।

नलनी [संज्ञा स्त्री] (सं) देखो 'नलिनी'।

नलनीरुह [संज्ञा पु.] (सं) कमल की नाल। मृणाल।

नलपट्टिका [संज्ञा स्त्री] (सं) नरकट की बनी हुई चटाई।

नलपुर [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन नगर का नाम। जिसका उल्लेख बौद्ध-ग्रन्थों में आया है।

नलमीन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली जिसे 'झींगा मछली' भी कहते हैं।

नलवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँस की टोंटी जिससे बैल को घी पिलाया जाता है। चोंगा।

नलसेतु [संज्ञा पु.] (सं.) रामेश्वर के पास समुद्र पर बंधा हुआ पुल जिसे श्रीराम ने नल-नील की सहायता से बंदरों से बनवाया था।

नला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ या पैर के आकार की लम्बी हड्डी। २-पेड़ू के भीतर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। *नला टलना*-आघात आदि के कारण पेशाब की नाली में किसी प्रकार का व्यतिक्रम होना जिससे बहुत पीड़ा होती है।

नलाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बोये हुए खेत में से घास-पात हटाने का काम। नलाने या निराने की क्रिया या भाव। २-नलाने की मजदूरी।

नलाना [क्रि. स.] (हिं.) बोए हुए खेत में से निरर्थक घास-पात आदि हटाना या दूर करना। निराना।

नालिक [संज्ञा पु.] (सं.) नरकुल। नरकट।

नलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नल के आकार की कोई वस्तु। नली। चोंगा। २-मूंगे के आकार का एक प्रकार का गन्धद्रव्य। कपोलचरण। नलिनी। रक्तदला। प्रवाली। विद्रुमलतिका। ३-एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र जिसके संबंध में कुछ लोगों का अनुमान है कि वह आजकल की बंदूक के समान होता था इसे लोहे की छोटी-छोटी गोलियां या तीर छोड़े जाते थे। इसका वर्णन रामायण, महाभारत और वेदों तक में पाया जाता है। इसे नालक या नाल भी कहा जाता था। ४-तीर रखने का तरकश। ५-करेमू का साग। ६-पुदीना। ७-वैद्यक में एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से जलोदर रोग के रोगी के पेट का पानी निकाला जाता था।

नलिकायंत्र, नलिकायन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में काम आने वाला एक प्राचीन यंत्र जिसकी सहायता से जलोदर रोग के रोगी के पेट का पानी निकाला जाता था।

नलित [संज्ञा पु.] (सं.) नाड़िका नामक एक साग वैद्यक में यह तिक्त, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक माना गया है।

नलिन [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. नलिनी] १-कमल पद्म। २-नील। नीलिका। ३-जल। पानी। ४-नीम। ५-सारसपक्षी। ६-करौंदा।

नलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमल। कमलिनी। २-वह प्रदेश जहां कमल बहुतायत से होते हों। ३-गङ्गा की एक धारा का नाम। ४-नलिनी नामक गंधद्रव्य। ५-नारियल की शराब। ६-नाक का बांया नथना। ७-नदी। ८-एक वर्णवृत्त जिससे प्रत्येक चरण में पांच सगण होते हैं। मनहरण। भ्रमरवली।

नलिनीखंड, नलिनीखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पद्मिनी-समूह।

नलिनीनंदन, नलिनीनन्दन [संज्ञा पु] (सं.) कुबेर के उपवन का नाम।

नलिनीरुह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृणाल। कमल की नाल। २-ब्रह्मा।

नलिनीषंड, नलिनीषण्ड [संज्ञा पु] (सं.) कमलों का ढेर या समूह।

नलिनेशव [संज्ञा पु.] (?) ब्रह्मा।

नलिया* [संज्ञा पु.] (सं.) बहेलिया।

नली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मैनसिल। २-नलिका नामक गंधद्रव्य। [संज्ञा स्त्री] (हि) १-छोटा या पतला नल। २-नल के आकार की हड्डी जिसमें मज्जा भरी रहती है। ३-घुटने के नीचे का भाग। पैर की हड्डी। ४-बन्दूक का वह अगला भाग जिसमें से होकर गोली निकलती है। ५-जुलाहों की नाल।

नलीमोज [संज्ञा पु.] (फा.) वह कबूतर जिसके पंजे तक परे होते हैं।

नलुंआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पशुओं का एक प्रकार का रोग जिसमें सूजन हो जाती है। २-छोटा नल। ३-बांस की दो गांठों के बीच का टुकड़ा। बांस की पोर।

नलुका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आयफल का वृक्ष।

नलोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी जाति का नरसल या नरकट।

नल्ला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नल के आकार की पोली हड्डी, जिसके भीतर मज्जा होती है। २-पलवान नामक एक प्रकार की घास।

नल्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का भूमि नापने का एक नाप जो चार सौ हाथ का होता था।

नल्वण [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक मान जो किसी के मत से सोलह सेर का और किसी के मत से बत्तीस सेर का होता है।

नल्ववर्त्मगा [संज्ञा स्त्री] (सं.) ककड़ी।

नवंबर [संज्ञा पु.] (अं) अंग्रेजी वर्ष का ग्यारहवां महीना जो तीस दिन का होता है।

नव [वि.] (सं) १-नवीन। नूतन। नया। २-बिलकुल नये सिरे से या पहले-पहल बना हुआ। ओरिजिनल। ३-आधुनिक। [संज्ञा पु.] १-स्तव। स्तोत्र। २-लाल रंग की गदहपूरना। ३-उशीर नामक राजा के लड़के का नाम (हरिवंश)। [वि] (हिं) आठ और एक। दस में एक कम। नौ। ९।

नवक [वि] (सं) १-नया। २-अनोखा। [संज्ञा पु] एक ही प्रकार की नौ वस्तुओं का समूह।

नवकार [संज्ञा पु.] (सं) जैनियों का एक मंत्र।

नवकारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नवविवाहिता स्त्री। वह स्त्री जिसका विवाह अभी हुआ हो। २-वह स्त्री जो थोड़े ही दिनों से प्रथम बार रजस्वला हुई हो।

नवकार्षिगूगल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो गूगल, त्रिफला और पिप्पली सब समान भाग लेकर बनाया जाता है। यह शोथ, गुल्म, भगंदर और बवासीर आदि दूर करने में काम आता है।

नवकालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-नव-यौवना। नौजवान स्त्री। २-वह युवती जो हाल में पहले-पहल रजस्वला हुई हो।

नवकुमारी [संज्ञा पु] (सं.) नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें निम्नलिखित नौ देवियों की कल्पना की जाती है। यथा-कुमारिका, त्रिमूर्त्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा।

नवखंड, नवखण्ड [संज्ञा पु.] (सं) पृथ्वी के यह नौ खड या विभाग-भरत, इलावृत्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश।

नवग्रह [संज्ञा पु.] (सं) फलित ज्योतिष के अनुसार

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु यह नौ ग्रह।

नवचक्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

[संज्ञा पु.] (सं.) हाल में दाखिल हुआ विद्यार्थी। नवीन विद्यार्थी।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'न्योछावर'

[संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के नौ छिद्र या द्वार, यथा–दो आँखें, दो कान, दो नाक, एक मुख, एक गुदा और एक लिंग या भग।

नवजात [वि.] (सं.) जो हाल ही में उत्पन्न हुआ हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्वर या बुखार जिसका आरम्भ अभी हुआ हो। ताजा या हाल का चढ़ा बुखार।

[संज्ञा पु.] (?) मरसे का शाक।

नवतन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १–नया सूत। २–विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी की झूल। २–वस्त्र। ३–कम्बल।

[वि.] (हिं.) नूतन। नवीन। नया।

[संज्ञा पु.] (हिं.) ढालुआँ जमीन। उतार।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवीनता। नयापन।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्रकार की कूँची जिससे वह रंग भरता है।

नवदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं के प्रकार के छत्रों में से एक छत्र का नाम।

[संज्ञा पु.] (सं.) कमल का वह पत्ता जो पास होता है। नया पत्ता।

[संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराण के मतानुसार दुर्गाएं जिनका नवरात्र में पूजन होता है। –शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, गौरी और सिद्धिदा।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) नया हिंडोला।

[संज्ञा पु.] (सं.) शरीर में के नौ द्वार दो आँखें, दो कान, दो नाक, एक मुख, गुदा और एक लिंग या भग। कहते हैं कि जब मनुष्य मरने लगता है तब उसका इन्हीं नौ द्वारों में से एक द्वार से निकलता है।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंगाल का एक प्रसिद्ध और विद्यापीठ जो राजा लक्ष्मणसेन की राजधानी था। वह नगर गङ्गानदी के मध्य एक चर पर बसा हुआ है। बताया जाता है कि वहाँ छोटे छोटे नौ गांव हैं जिनके समूह को नवद्वीप कहते थे। आज-कल नदिया शब्द इसी का अपभ्रंश है।

[अव्य] (सं.) नौ-गुणा। नौ बार।

नवधा-अंग, नवधाअङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के नौ अङ्ग। यथा दो आंखें, दो कान, दो हाथ, दो पैर और एक नाक।

नवधातु [संज्ञा पु.] (सं.) नौ प्रकार के धातु। यथा सोना, चांदी, लोहा, सीसा, तांबा, रांगा, इस्पात, कांसा, और कांतिलोहा।

नवधा-भक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ प्रकार की भक्ति। यथा–श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।

नवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नमक'।

नवना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–झुकना। २–नम्र होना

नवनि* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवनीत। मक्खन।

नवनिधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ प्रकार की (कुबेर) निधि।

नवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवनीत। मक्खन।

नवनीत [संज्ञा पु.] (सं.) १–मक्खन। २–श्रीकृष्ण।

नवनीतक [संज्ञा पु.] (सं.) १–घृत। घी। २–मक्खन।

नवनीत-गणप [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक गणेश या गणपति का नाम।

नवनीतज [संज्ञा पु.] (सं.) घृत। घी।

नवनीतधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान के लिए एक प्रकार की कल्पित गौ जिसकी कल्पना मक्खन के ढेर से की जाती है। कहते हैं कि इस गौ के दान से विष्णुलोक में वास मिलता है। (वाराहपुराण)।

नवनीतोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १–दधि। दही। घृत। घी।

नवपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ वृक्षों के पत्ते। यथा–केला, अनार, धान, हलदी, मानकच्चू, कच्चू, बेल, अशोक और जयन्ती इनका व्यवहार नवदुर्गा पूजन में होता है।

नवपद [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक मूर्त्ति विशेष जिसकी उपासना जैन लोग करते हैं। २–मात्रवृत्त का एक प्रकार का छंद।

नवपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौपाई या जानकरी छंद का एक नाम।

नवपाठक [संज्ञा पु.] (सं.) नया शिक्षक।

नवप्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) नया अन्न या फल आदि खाना।

नवफलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नवयौवना। नौजवान औरत। २–वह स्त्री जो थोड़े ही दिनों पूर्व प्रथमवार रजस्वला हुई हो।

नवभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ प्रकार की भक्ति। यथा–श्रवण कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन वंदन, सख्य, दास्य और आत्म निवेदन।

नवम [वि.] (सं.) संख्याक्रम में नवां।

नव-मल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चमेली। २–नेवारी।

नवमांश [संज्ञा पु.] (सं.) एक राशि का नवां भाग जिसका व्यवहार फलित-ज्योतिष में किसी नवजात बालक के चरित्र, आकार तथा चिह्न आदि का विचार करने में होता है।

नवमालिका [संज्ञा स्त्र.] (सं.) १–एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण, भगण और यगण होता है। २–चमेली का एक भेद। ३–नेवारी का फूल।

नवमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली। नव-मल्लिका।

नवमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चान्द्रमास के किसी पक्ष की नवीं तिथी।

नवयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) नये अन्न के निमित्त किया जाने वाला।

नव-युवक [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. नव-युवती] तरुण। जवान।

नव-युवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरुणी। नौजवान औरत।

नवयुवा [संज्ञा पु.] (सं.) जवान। तरुण।

नवयोनिन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक प्रकार का न्यास।

नवयौवन [संज्ञा पु.] (सं.) तरुण अवस्था। जवानी।

नवयौवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसने अभी यौवनकाल या अवस्था में पदार्पण या प्रवेश किया हो। नौजवान औरत।

नवरंग [वि.] (हिं.) १–सुन्दर। रूपवान्। नई छटा वाला। २–नये ढंग का। नवेला। नई शोभायुक्त।

नवरंगी [वि.] (हिं.) १–नित्य नए आनंद करने वाला। २–हँसमुख। रंगीला। खुशमिजाज। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नारंगी'।

नवरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) १–मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २–गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार। ३–राजा विक्रमादित्य की एक कल्पित सभा के नौ पंडित जिनके नाम यह हैं–धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, बाराहमिहिर और वररुचि। ४–नौ मसालों से युक्त एक प्रकार की चटनी।

नवरस [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य के नौ रस—शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त। इन नौ रसों के स्थायीभाव इस प्रकार हैं—शृंगार का रति, हास्य का हास या हंसी, करुण का शोक, रौद्र का क्रोध, वीर का उत्साह, भयानक का भय, वीभत्स का जुगुप्सा, अद्भुत का विस्मय और शान्त का शान्ति।

नवरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्राचीनकाल का एक

प्रकार का यज्ञ जो नौ दिन में संपन्न होता था। २-चैत्र सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें लोग नवदुर्गा का व्रत, घट-स्थापन और पूजन आदि करते हैं।

नवराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश जिसे दिग्विजय करते समय सहदेव ने जीता था।

नवल [वि.] (सं.) [स्त्री. नवला] १-नव्य। नूतन। नवीन। नया। २-सुन्दर। ३-जवान। युवा। नवयुवक। ४-उज्ज्वल। शुद्ध। साफ़। स्वच्छ।

नवल-अनंगा, नवल-अनङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केशव के अनुसार मुग्धानायिका के चार भेदों में से एक।

नवलकिशोर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

नव-लक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्त के मतानुसार ब्रह्म को प्रमाणित करने के नव लक्षण यथा—विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, इसका उत्पादन, गोचर, अपरोक्ष ज्ञान, चिकीर्षा और कृत्रिमत्व हैं।

नवल-वधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केशव के मतानुसार मुग्धानायिका के चार भेदों में से एक।

नवला [संज्ञा स्त्री.] (सं) नवीन स्त्री। तरुणी।

नवलेवा+ [संज्ञा पु.] (हिं) नदी के किनारे की वह कीचड़ या दलदल जो बढ़ी हुई नदी के उतरने पर रह जाती है।

नववधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लड़की या कन्या जिसका हाल ही में विवाह हो।

नववध्वागमन [संज्ञा पु.] (सं.) विवाहिता लड़की का पहले-पहल ससुराल या स्वामी के घर जाना।

नववारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवोढ़ा। नव-विवाहिता स्त्री।

नववर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नया वर्ष। नया साल।

नववल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुगंधित अगर।

नववस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) नया वस्त्र या कपड़ा।

नववासुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) रत्नसारानुसार जैनलोगों के नौ वासुदेव जिनके नाम इस प्रकार हैं—त्रिपृष्ट, द्विपष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, सिंहपुरुष, पुण्डरीक, दत्त, लक्ष्मण और श्रीकृष्ण कहा जाता है कि ये सब ग्यारहवें, बारहवें, चौदहवें पंद्रहवें, अठारहवें, बीसवें और बाईसवें तीर्थङ्करों के समय में नरक गये थे।

नववास्तु [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक राजर्षि का नाम।

नवविध [वि.] (सं.) नौ प्रकार का। नौ तरह का।

नवविंश [वि.] (सं.) उनतीसवां

नवविंशति [वि.] (सं.) उनतीस।

नवविष [संज्ञा पु.] (सं.) नौ प्रकार के विष जो इस प्रकार हैं—वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र।

नवशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार नौ-शक्ति जिसके नाम ये हैं—प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धदा।

नवशस्य [संज्ञा पु.] (सं.) नया अन्न। नया अनाज।

नवशिक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौसिखुआ। २-वह जिसे आधुनिक शिक्षापद्धति के अनुसार शिक्षा मिली हो।

नवशिष्ट [वि.] (सं.) आधुनिक व्यवहार और आचरण वाला। न्यू क्लासिक।

नवशोभ [संज्ञा पु.] (सं.) नई शोभा वाला। तरुण। जवान। युवक।

नवसंगम, नवसङ्गम [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रथम समागम। नया मिलाप। पति से पत्नी की पहली भेंट।

नवसंभार, नवसम्भार [संज्ञा पु.] (सं.) पुनः प्रवाहित या प्रसारित करने की क्रिया या भाव। नये सिरे से या फिर से किसी वाणी या बात आदि (जो रिकार्ड आदि की होती है) को रेडियो द्वारा प्रसारित करना। रिले।

नवसत* [संज्ञा पु.] (हिं) (नौ और सात) सोलह शृङ्गार। [वि.] (हिं.) सोलह। षोडश।

नवसप्त [संज्ञा पु.] (सं.) (नौ और सात) सोलह शृङ्गार।

नवसर [संज्ञा पु.] (हिं.) नौ-लर का हार। [वि.] (हिं.) नवयवस्क। जिसकी नई उमर हो।

नवससि* [संज्ञा पु.] (हिं.) द्वितीया का चाँद। दूज का चाँद। नया चाँद।

नवसिखा [संज्ञा पु.] (हिं.) नव शिक्षित। नौ-सिखुआ।

नवसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नईप्रसूता गाय या स्त्री।

नवसूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नई प्रसूता स्त्री २-नई प्रसूता गाय।

नवाँ [वि.](हिं.) आठ के बाद आनेवाला। नौवाँ

नवांग, नवाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ, पीपल, मिर्च, हड़, बहेड़ा, आँवला, चाब, चीता और बायबिडङ्ग ये नौ पदार्थ।

नवांगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासिंगी।

नवांश [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार मेष आदि बारहों लग्नों का नवाँभाग जिसका व्यवहार नवजाति बालक के चरित्र आकार और चिह्न आदि का विचार करने में होता है।

नवा* [वि] (हिं.) देखो 'नया'।

नवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विनीत होने का भाव। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गरमाहट। जैसे रजाई नवाई हो गई। [वि.] (हिं.) नया। नवीन।

नवागंतुक, नवागन्तुक [वि.] (सं.) नया आया हुआ।

नवागत [वि.] (सं.) जो अभी आया हो। नया आया हुआ।

नवाज [वि.] (फ़ा.) कृपा करने वाला। कृपा दिखाने वाला। (इस शब्द का प्रयोग केवल यौगिक शब्दों के अन्त में ही होता है। जैसे-गरीबनवाज।)

नवाजना*+ [क्रि. स.] (हिं.) कृपा करना। दया दिखलाना।

नवाज़िश [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) दया। कृपा। मेहरबानी।

नवाड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार की छोटी नाव। २-नाव को बीच धार में ले जाकर चक्कर देने की जलक्रीड़ा। नावर।

नवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-झुकाना। २-विनीत या नम्र करना।

नवान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-फसल का [illegible] नया अनाज या अन्न। २-एक प्रकार का श्राद्ध जो नया अन्न तैयार होने पर पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। ३-ताजा पका या रांधा हुआ अन्न।

नवाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-मुगल बादशाहों का वह प्रतिनिधि जो किसी प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त किया जाता था। २-एक उपाधि जो कुछ मुसलमान रईस अपने नाम के आगे लगाते हैं। ३-एक उपाधि जो आजकल छोटे-मोटे मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के आगे लगाते हैं। जैसे-नवाब रामपुर। [वि.] (अ.) खूब ठाठ-बाट से रहने और खुले हाथों खर्च करने वाला।

नवाबज़ादा [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-नवाब का पुत्र। नवाब का बेटा। २-बहुत ठाठ-बाट से रहने वाला। वह जो बहुत बड़ा शौकीन हो। (व्यंग)।

नवाबज़ादी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-नवाब की पुत्री या बेटी। २-बहुत ठाट-बाट से रहने वाली स्त्री।

नवाबपसंद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) भादों के अन्त या क्वार के आरंभ में तैयार होने वाला एक प्रकार का धान।

नवाबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नवाब का पद। २-नवाब का काम। ३-नवाब होने की दशा। ४-नवाबों का राजत्वकाल। ५-नवाबों का सा शासन। ६-बहुत अधिक अमीरी या अमीरों का-सा अपव्यय। ७-एक विशेष प्रकार का कपड़ा जिसे पहले अमीर लोग पहना करते थे।

नवाभ्युत्थान [संज्ञा पु.](सं.) १-नये सिरे या फिर से होने वाला उत्थान। २-किसी देश में नई विद्याओं और कला-कौशल आदि का नये

ढंग से होने वाला आरम्भ या उत्थान। रिन्नैसेंस।

[illegible]+ [क्रि. अ.] (?) १-चलना। टहलना। २-यात्रा करना। सफर करना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी नाव।

नवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नेवारी'।

नवासा [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. नवासी.] बेटी का बेटा। दौहित्र।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त का नाम

नवासी [वि.] (हिं.) अस्सी और नौ, '८९'। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेटी की बेटी।

नवाह्न [संज्ञा पु.] (सं.) नौ दिन में समाप्त होने वाला रामायण का पाठ। २-किसी सप्ताह, मास, पक्ष या वर्ष का नया दिन।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गाय को दूहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी जो गाय के पैर में बाँध दी जाती है।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिसमें नौ शब्द आये हों।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह रस्सी जिससे गाय के पैर में बछड़े का गला बाँधकर दूहते हैं।

नवीन [वि.] (सं.) १-जो अभी का या थोड़े समय का हो। जिसे, बने, निकले या प्रस्तुत हुए थोड़े ही दिन हों। २-नया। ताजा। नूतन। ३-अपूर्व। विचित्र। ४-[स्त्री. नवीना] तरुण। जवान। ५-जो पहले-पहल या मूल-रूप में बना हो। ओरिजिनल।

नवीनतम [वि.] (सं.) जो अभी बना, निकला, प्रस्तुत या विदित हुआ हो। लेटेस्ट। *नवीनतम समाचार*-अभी घटित घटनाओं संबंधी सब से पहली या बिलकुल ताजा खबर

नवीनता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नवीन या नया होने का भाव। नूतनत्व। नूतनता।

नवीनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नवीन या नया होने का भाव। नूतनता। नूतनत्व।

नवीनभाव [संज्ञा पु.] (सं.) नया या नवीन होने की क्रिया या भाव।

नवीनीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) नवीन या नई विचार धारा के अनुसार करने की क्रिया। नई पद्धति।

नवीस [संज्ञा पु.] (फा.) लिखने वाला। लेखक। कातिब।

नवीसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निमन्त्रण। न्योता। २-वह चिट्ठी या पत्र जिसमें न्योता लिखकर भेजा जाय। निमन्त्रण-पत्र।

नवेला [वि.] (हिं.) [स्त्री. नवेली] १-नया। नवीन २-तरुण। युवक। जवान;

नवेली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] नई उमर की। तरुणी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नई स्त्री। युवती। तरुणी।

नवोढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नवविवाहिता स्त्री। वधू। २-नवयौवना। युवती स्त्री। ३-साहित्य के अनुसार मुग्धा के अन्तर्गत ज्ञात यौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका-जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाती हो।

नवोदक [संज्ञा पु.] (सं.) नूतन जल। नया या ताजा पानी।

नवोद्धृत [संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन। नवनीत। [वि.] (सं.) तुरत का निकाला हुआ।

नव्य [वि.] (सं.) १-नया। ताजा। नवीन। २-स्तुति करने योग्य।

नव्य-समूहवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह नया राजनैतिक या सामाजिक समाजवाद का सिद्धांत जो क्रांतिरहित सामूहिक आधिपत्य के आधार पर होता है और जिसमें उत्पादन और विनिमय राज्य के अधीन होते हैं। न्यू-कलक्टिवीज्म।

नव्वाब [संज्ञा पु.] (उर्दू.) देखो 'नवाब'।

नव्वाबी [संज्ञा स्त्री.] (उर्दू.) देखो 'नवाबी'।

नशन [संज्ञा पु.] (सं.) जिनका नाश हो।

नशना* [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट होना। बरबाद होना। बिगड़ जाना।

नशा [संज्ञा पु.] (फा., अ.) नशः) १-वह मानसिक अवस्था जो शराब, भाँग, अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य सेवन करने से होती है। २-वह वस्तु जिससे नशा हो। मादक-द्रव्य। नशा चढ़ाने वाली चीज़। ३-धन, विद्या, प्रभुत्व (अधिकार) आदि का घमंड। अभिमान। गर्व। मद। *नशा उतरना*-१ अभिमान दूर होना। २-नशे का प्रभाव हटना। *नशा उतारना या झाड़ना*-ऐंठ या घमंड दूर करना। *नशा किरकिरा होना*-किसी अप्रिय बात के कारण नशे का मजा बिगड़ना। *नशा चढ़ना*-नशा होना। नशे का प्रभाव होना। (आंखों में) *नशा छाना*-मस्ती चढ़ना। *नशा जमना*-खूब नशा होना। *नशा टूटना*-नशा दूर होना। *नशाहिर न होना*-किसी असंभावित घटना के कारण बीच में ही नशा उतर जाना या काफूर हो जाना। *नशा-पानी*-नशे का सामान।

नशाखोर [संज्ञा पु.] (फा.) किसी प्रकार के नशे का सेवन करने वाला। नशेबाज।

नशाना* [क्रि. स.] (हिं.) नष्ट करना। बिगाड़ डालना। बरबाद करना। [क्रि. अ.] १-नष्ट होना। २-खोजाना।

नशावन* [वि.] (हिं.) देखो 'नाशक'।

नशीन [वि.] (फा.) बैठने वाला।

नशीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला [वि.] (फा.) १-नशा लाने वाला। मादक २-जिस पर नशे का प्रभाव हो। *नशीली आँखें*-वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो।

नशेबाज [संज्ञा पु.] (फा.) वह जो नित्य किसी का सेवन करता हो। जिसे कोई नशा करने की आदत हो।

नशोहर* [वि.] (हिं.) नाश करने वाला। नाशक

नश्तर [संज्ञा पु.] (फा.) फोड़े चीरने का एक प्रकार का छोटा और तेज चाकू जिसका अग्रभाग नुकीला और टेढ़ा होता है। *नश्तर देना या लगाना*-नश्तर के द्वारा फोड़े को चीरना। *नश्तर लगना*-फोड़े का चीरा जाना।

नश्यप्रसूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका बच्चा मर गया हो।

नश्वर [वि.] (सं.) जो जल्दी नष्ट हो जाय। नष्ट हो जाने वाला।

नश्वरता [संज्ञा स्त्री.] (सं) नश्वर होने का भाव।

नष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नख'।

नषत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नक्षत्र'।

नष-शिष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नख-सिख',

नष्ट [वि.] (सं.) १-जिसका नाश हो गया हो। जो बरबाद या बहुत दुर्दशा को पहुँच गया हो। २-जो दिखाई न दे। जो अदृश्य हो। ३-अधम। नीच। ४-निष्फल। व्यर्थ ५-धनहीन। दरिद्र। ६-मृत या मरा हुआ।

नष्टचंद्र, नष्टचन्द्र [संज्ञ पु.] (सं.) भादों के महीने के दोनों पक्षों की चतुर्थी दिखाई पड़ने वा चन्द्रमा जिसका दर्शन पुराण के मतानुसार निषिद्ध है बताया जाता है कि उस दिन चन्द्रमा को देखने से कोई न कोई कलंक या अपवाद लगता है।

नष्टचित्त [वि.] (सं.) उन्मत्त। मतवाला।

नष्टचेतन [संज्ञा पु.] (सं.) अचेत। बेहोश। बेखबर।

नष्टचेष्ट [वि.] (सं.) जिसकी चेष्टा या गति नष्ट हो गई हो। जिसमें हिलने-डोलने की शक्ति न रहगई हो।

नष्टचेष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूर्च्छा। बेहोशी। २-प्रलय। ३-एक प्रकार का सात्विक भाव।

नष्टजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णसंकर। दोगला। जारज।

नष्टजातक [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में वह क्रिया जिसके अनुसार ऐसे मनुष्य की जन्मकुण्डली आदि बनाई जाती है जिसके जन्म लेने के समय और तिथि आदि का कुछ भी पता नहीं रहता।

नष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नष्ट होने का भाव। २-बाहियातपन। दुराचारिता।

नष्टदृष्टि [वि.] (सं.) जिसकी दृष्टि नष्ट हो गई हो। जिसके आँखों की ज्योति चली गई हो। दृष्टिहीन। अंधा।

नष्टनिधि [वि.] (सं.) जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ भी न रह गया हो। जिसकी निधि या संपत्ति नष्ट, घट, या खर्च हो गई हो। दीवालिया।

नष्टनिधित्व [संज्ञा पु.] (सं.) वह आर्थिक हीन अवस्था जिसमें किसी की निधि या संपत्ति नष्ट, घट, या खर्च हो जाने के कारण ऋण चुकाने के लिए पास में कुछ भी न रह जाय। दीवाला।

नष्टप्रभ [वि.] (सं.) कांतिरहित। तेजहीन।

नष्टबुद्धि [वि.] (सं.) मूर्ख। मूढ़। बुद्धिहीन। बेवकूफ।

नष्टभ्रष्ट [वि.] (सं.) जो पूर्णतया टूटफूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टमार्गण [संज्ञा पु.] (सं.) खोई हुई वस्तु की खोज।

नष्टराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम।

नष्टरूप [वि.] (सं.) मृत। मराहुआ।

नष्टरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनुष्टुप छन्द के एक भेद का नाम।

नष्टविष [वि.] (सं.) (वह विषैला जन्तु) जिसका विष नष्ट हो गया हो।

नष्टबीज [वि.] (सं.) (वह अन्न) जो बोने पर न उगा हो।

नष्टवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) खोई हुई वस्तु की खोज।

नष्टशुक्र [वि.] (सं.) जिसका वीर्य नष्ट हो गया हो।

नष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेश्या। रंडी। २-व्यभिचारिणी। कुलटा।

नष्टाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्री जिसकी अग्नि बुझ गई हो।

नष्टात्मा [वि.] (सं.) दुष्ट। खल।

नष्टाप्तिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) खोई हुई वस्तुओं का कुछ अंश मिलना जिससे बाकी वस्तुओं का भी सूत्र मिले।

नष्टार्थ [वि.] (सं.) जिसका धन नष्ट हो गया हो। दरिद्र।

नष्टाशंक, नष्टाशङ्क [वि.] (सं.) निर्भय। निडर

नष्टाश्वदग्धरथन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्याय जिसके अनुसार दो आदमियों का मिलकर काम करना जिसमें दोनों एक दूसरे की वस्तुओं का उपयोग करके अपना अपना उद्देश्य सिद्ध करें।

नष्टासु [वि.] (सं.) मृत। मराहुआ।

नष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाश। विनाश। बरबादी

नष्टेंदुकला, नष्टेन्दुकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अमावस्या जिस दिन चन्द्रमा बिलकुल दिखाई न दे।

नसंक* [वि.] (हिं.) निःशंक। निर्भय। निडर। बेखौफ।

नस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शरीर में तंतु के रूप की वह नली जो पेशी को किसी कड़े स्थान से जोड़ती है। २-कोई शरीर तंतु या रक्तवाहिनी नली। ३-पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच-बीच में होता है। ४-लिंग। पुरुष की मूत्रेंद्रिय।

नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना–नस का बल खाना या स्थान से इधर-उधर होना जिससे पीड़ा और सूजन हो। *नस नस फड़क उठना*–बहुत खुशी होना।

नस-नस में–सारे शरीर में। *नस भड़कना*–१-खिंचाव, दबाव या झटके आदि के कारण शरीर में किसी स्थान की विशेषतः पैर की पिंडली की नस का अपने स्थान से डिग या सरक जाना या बल खाजाना जिसके कारण उस स्थान पर तनाव और पीड़ा होती है। २-पागल होना। *नसें ढीली पड़ना या होना*–१-थकावट आना। २-पुरुषत्व की कमी होना। *घोड़ा नस*–पैर की वह बड़ी नस जो पीछे की ओर पिंडली के नीचे होती है।

नसकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) नपुंसक। हिजड़ा।

नसतरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) शहनाई के आकार का पीतल का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो गले की नसों पर रखकर बजाया जाता है।

नसतालीक [संज्ञा पु.] (अ.) १-फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर खूब स्पष्ट और सुन्दर होते हैं। वसीट या शिकस्त का उलटा। २-वह जिसका रंग-ढंग बहुत अच्छा और सुन्दर हो।

नसना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-नष्ट होना। बरबाद होना। २-बिगड़ या खराब हो जाना। ३-भागना। दौड़ना।

नसफाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों को होने वाला एक रोग जिसमें उनके पैर सूज जाते हैं।

नसर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) गद्य। पद्य का उलटा।

नसरी [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार की मधुमक्खी। २-इस मक्खी के छत्ते में होने वाला मोम।

नसल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वंश। खानदान।

नसवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तमाखू के महीन पीसे हुए पत्ते जो सूंघने के काम में आते हैं। सुँघनी। नास।

नसहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसमें नसें हों।

नसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नासिका। नासा। नाक। ❀[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नशा'।

नसाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाश को प्राप्त होना। नष्ट हो जाना। २-बिगड़ जाना। खराब हो जाना।

नसावना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'नसाना'।

नसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कुसी की नोक। हल के फार की नोक।

नसीठ [संज्ञा पु.] (देश.) बुरा शकुन। असगुन।

नसीत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नसीहत'।

नसीनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सीढ़ी। जीना। निसेनी।

नसीपूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) हल की पूजा जो बोने के मौसम के पीछे की जाती है। हलपूजा।

नसीब [संज्ञा पु.] (अ.) भाग्य। किस्मत। प्रारब्ध। तकदीर।

किसी को नसीब होना–किसी को प्राप्त होना।

नसीबजला [वि.] (हि.) जिसका भाग्य फूटा हो। अभागा।

नसीबवर [वि.] (अ.) भाग्यवान। जिसका नसीब या भाग्य अच्छा हो। सौभाग्यशाली।

नसीबा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नसीब'।

नसीम [संज्ञा पु.] (अ.) धीमी, ठंढी और अच्छी हवा।

नसीला+ [वि.] (हि.) १-जिसमें नसें हों। २-देखो 'नशीला'।

नसीहत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) उपदेश। शिक्षा। सीख। २-अच्छी सम्मति। बुरे काम के फलस्वरूप मिलने वाली अच्छी शिक्षा।

नसीहा [संज्ञा पु.] (देश.) हलका हल जिससे मुलायम मिट्टी में जुताई की जाती है।

नसूड़िया+ [वि.] (हि.) जिसके छूने, देखने आदि से ही अनिष्ट हो। मनहूस।

नसूर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नासूर'।

नसेनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सीढ़ी।

नस्त [संज्ञा पु.] (सं) १-नासिका। नाक। २-एक प्रकार की सुंघनी।

नस्तकरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक यंत्र विशेष जिसका व्यवहार भिक्षुलोग नाक में दवा डालने के लिए करते थे।

नस्तरन [संज्ञा पु.] (फा.) १-सफेद गुलाब। सेवती। २-एक प्रकार का कपड़ा।

नस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पशुओं के नाक के वह छेद जिसमें रस्सी डाली जाती है।

नस्तित [संज्ञा पु.] (सं.) नाक के छेद में रस्सी डलवाने वाला पशु। जैसे-ऊँट, बैल आदि। [वि.] नस्ती या नत्थी किया या लगाया हुआ। फाइल्ड।

नस्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कागज आदि के वे टुकड़ों आदि को एक साथ मिलाकर बांधना या नाथे हुए पत्रों आदि का समूह। फाइल।

नस्तोत [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जिसकी नाक में छेद करके रस्सी डाली जाय। जैसे-बैल, ऊँट आदि।

[संज्ञा पु.] (सं) १-नास। सुँघनी। २-बैलों के नाक की रस्सी। नाथ। ३-वह दवा या चूर्ण आदि जिसे नाक के रास्ते मगज में चढ़ाते हैं।

[संज्ञा स्त्री] (सं) १-नाक। २-नाक का छेद।

[संज्ञा पु.] (सं) सूँघनी या नसवार रखने का पात्र। नासदानी।

[संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जिसकी नाक में रस्सी डालने के लिए छेद गया हो।

+ [वि.] (हिं.) देखो 'नश्वर'।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नसवार'।

[संज्ञा पु.] (देश) उत्तरप्रदेश में उगने वाला एक प्रकार का चावल जो बहुत बढ़िया होता है। (हिं.) देखो 'नाखून'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह की एक रीति या रस्म जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते और उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है।

[संज्ञा पु.] (हिं.) नाखून से की हुई खरोंच। नखक्षत।

[संज्ञा पु.] (देश.) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

[क्रि. स.] (हिं.) नाथना। जोतना। काम में तत्पर करना।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नहरनी'।

[संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह कृतिम छोटी नदी या जलमार्ग जिसकी सहायता से खेतों में सिंचाई या यात्रा आदि के लिए उसमें नौकाएं चलाई जा सकती हैं। कुल्या। *नहर काटना या खोदना*–नहर तैयार करना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हज्जामों का एक औज़ार जिससे नाखून काटे जाते हैं। यह लम्बा गोल लोहे का टुकड़ा होता है तथा इसका सिरा चिपटा और धारदार होता है। २-इसी तरह का पोस्ते के डोंड़े चीरने का औज़ार।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली जो भारतीय नदियों और अधिकतर पहाड़ी झरनों में पाई जाती है।

[संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नहर के पानी से सींची जाने वाली भूमि। +२-छोटी नहर। [वि.] नहर-सम्बन्धी।

[संज्ञा पु.] (देश.) कमर के निचले भाग में होने वाला एक प्रकार का रोग। पानी पीने के साथ एक विशेष प्रकार के कीड़े के शरीर प्रविष्ट हो जाने से यह रोग होता है। इसमें पहले किसी स्थान जाँघ या टाँग आदि में फुंसियाँ सी हो जाती हैं तथा इन फुंसियों से सूत की सी तरह का कीड़ा निकलता है जो एक हाथ तक का होता है। यह रोग प्रायः

गरमी या बरसात में होता है। बरसात में जब बिजली चमकती है और बादल गरजते हैं उस समय विशेषतया यह सूत बाहर की ओर निकलता है तथा प्राणांतक पीड़ा देता है।

नहरुवा [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'नहरुआ'।

नहरू [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'नहरुआ'।

नहला [संज्ञा पु.] (हिं.) ताश का वह पत्ता जिसमें किसी भी रंग की नौ बूटियाँ होती हैं। (देश.) करनी के आकार का पर छोटा औजार जिसकी सहायता से दीवार पर नक्काशी या कारनिस आदि बनाने का काम होता है। छोटी करनी।

नहलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नहलाने की क्रिया या भाव। २-नहलाने की मजदूरी।

नहलाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को स्नान में प्रवृत्त करना। नहवाना।

नहवाना [क्रि. स] (हिं.) देखो 'नहलाना'।

नहसुत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नख की रेखा या निशान। २-फरहद नामक पेड़ जो पलास की तरह का होता है।

नहाँ [संज्ञा पु.] (देश.) १-पहिये के बीच का छिद्र जिसमें धुरी डाली जाती है। २-घर के आगे का आँगन। +[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाखून'।

नहान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नहाने की क्रिया या भाव। २-स्नान का पर्व।

नहाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-शरीर को साफ करने के निमित्त उसे जल से धोना। स्नान करना। २-रजोधर्म से निवृत्त होने पर स्त्री का स्नान करना। ३-किसी तरल पदार्थ से शरीर का तर होना।

दूधों नहाना पूतों फलना–धन तथा परिवार से पूर्ण होना। [आशीर्वाद]।

नहानी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रजस्वला स्त्री। स्त्री का रजस्वला होना।

नहार [वि.] (फा.) जिसने सवेरे से कुछ खाया न हो। जिसने सवेरे से जलपान आदि कुछ न किया हो। बासीमुंह।

नहार तोड़ना–सबेरे के समय जलपान करना *नहार मुंह*–बिना जलपान किये। बासीमुंह *नहार रहना*–भूखे रहना। उपवास करना।

नहारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सबेरे के समय का जलपान या हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता। घोड़े का कलेवा जो गुड़ या गुड़ मिला जौ का आटा होता है। २-मुसलमानों द्वारा पकाया जाने वाला शोरबेदार वह सालन जो सारी रात पकता है और सबेरे उसके साथ खमीरी रोटियाँ खाई जाती हैं।

नहिं [अव्य.] देखो 'नहीं'।

नहिअन* [संज्ञा पु.] [हिं.] पैर की छोटी उँगली में पहनने का एक प्रकार का गहना जो बिछिया की तरह का होता है।

नहियाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नहिअन'।

नहिरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नहरनी'।

नहीं [अव्य.] (हिं.) एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति सूचित करने के लिए होता है।

नहीं तो–यदि यह बात न हो तो। *नहीं सही*–यदि यह बात न हो तो कोई परवाह या चिन्ता नहीं।

नहुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अयोध्या के एक प्राची इक्ष्वाकुवंशी राजा का नाम जो अंबरीष का पुत्र तथा ययाति का पिता था। २-एक नाग का नाम। ३-पुराणों के अनुसार एक ब्राह्मण राजा का नाम जो कुशिक वंश के थे। ४-एक राजर्षि जिनके नाम का उल्लेख ऋग्वेद में है। ६-हरिवंश के मतानुसार एक मरुत का नाम। विष्णु का एक नाम। ७-मनुष्य। आदमी।

नहुषाख्य [संज्ञा पु.] (सं) नगरपुष्प।

नहूर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तिब्बत में पाई जाने वाली एक प्रकार की भेड़।

नहूसत [संज्ञा पु.] (अ.) मनहूस होने का भाव। उदासीनता। खिन्नता। मनहूसी। अशुभ लक्षण।

नाँ [अव्य.] (हिं.) देखो 'नहि'।

नाँउँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाम'।

नाँगा [वि.] (हिं.) देखो 'नंगा'। [संज्ञा पु.] नंगे रहने वाले साधु लोग। *[संज्ञा स्त्री.] देखो 'छुट्टी'।

नाँगी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'नंगी'।

नाँघना* [क्रि. स.] (हिं.) लाँघना। उछलकर इस पार से उस पार जाना।

नाँट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इनकार।

नाँटना+ [क्रि. स.] (हिं.) इनकार करना। अस्वीकार करना। नाँहीं करना।

नाँठना* [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट होना। बिगड़ जाना।

नाँद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौड़े मुँह का मिट्टी का बड़ा बरतन जिसमें पशुओं के लिए चारा दिया जाता है।

नाँदना* [क्रि. अ.] (हिं) १-शब्द करना। शोर करना। २-छींकना। ३-प्रसन्न या खुश होना। आनंदित होना।

नांदी, नान्दी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-अभ्युदय। समृद्धि। २-मंगलाचरण। वह आशीर्वादात्मक श्लोक या पद्य जिस का सूत्रधार नाटक के आरम्भ में पाठ करता है।

नांदीक, नान्दीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोरणस्तंभ। नांदीमुख श्राद्ध।

नांदीपट, नान्दीपट [संज्ञा पु.] (सं.) कुएँ का ढकना।

नांदी-मुख, नान्दी-मुख [संज्ञा पु] (सं) १-

एक मांगलिक श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों से पहले होता है। २-कुएँ का ढकना।

नांदीमुखी, नान्दीमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण, दो तगण, और दो गुरु होते हैं।

नांधना [क्रि स] (हिं) देखो 'लाँघना'।

नाँयँ [अव्य] (हिं.) देखो 'नाहीं'।

नाँवँ* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'नाम'।

नाँह* [स ज्ञा पु.] (हि) नाथ। स्वामी। मालिक

ना [अव्य] (सं.) अस्वीकृति या निषेधसूचित करने वाला एक अव्यय। नहीं। न। [संज्ञा पु.] (डि.) मनुष्य। [संज्ञा पु.] (हि.) नाभि।

नाइक* [स ज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नायक'।

नाइत्तिफाकी [स ंज्ञा स्त्री.] (फा.) मतभेद। मेल का अभाव। फूट।

नाइन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-नाई की पत्नी। २-नाई जाति की स्त्री।

नाइब* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नायब'।

नाईं [स ंज्ञा स्त्री.] (हि.) एक सी गति। समान-दशा। [अव्य] (हि) १-समान। तुल्य। २-की तरह।

नाई [संज्ञा पु.] (हि.) नापित। नाऊ। हज्जाम। [स ंज्ञा स्त्री.] (देश.) नाकुलीकंद।

नाउँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाम'।

नाउ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नाव'।

नाउड़ा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नाई'।

नाउड़ो+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नाई'।

नाउत [संज्ञा पु.] (देश.) मंत्रतंत्र से झाड़फूँक-कर भूतप्रेत भगाने वाला। सयाना। ओझा।

नाउन* [स ंज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'नाइन'।

ना-उम्मेद [वि.] (फा.) निराश।

ना-उम्मेदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निराशा।

नाऊ* [स ंज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नाई'।

नाकंद [वि.](फा.) १-बिना निकाला हुआ (घोड़ा) २-अल्हड़।

नाक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-होंठों के ऊपर मांस पेशियों और अस्थियों के उभार से बनी हुई नल रूप इन्द्रिय जिससे सूंघा और सांस लिया जाता है। नासा। नासिका। २-नासिका से निकलने वाला मल। रेंट। ३-लकड़ी का वह डंडा जिसपर चढ़ाकर बरतन खरादा जाता है। ४-चरखे में लगी हुई वह चिपटी लकड़ी जो अगले खूंटे के आगे निकले हुए बेलन के सिरे पर लगी रहती है और जिसे पकड़कर चरखा घुमाते हैं। ५-प्रतिष्ठा या शोभा बढ़ाने वाली वस्तु। ६-प्रतिष्ठा। इज्जत। मान। ७-नाशपाती। ८-*नाक घिसनी*-विनती और गिड़गिड़ाहट। *नाक कटी या नाक कटाई*-अप्रतिष्ठा। *नाक बंद*-घोड़े की पूंजी। *नाक वाला*-इज्जत वाला। *नाक कटना*-प्रतिष्ठा नष्ट कराना। *नाक कटाना*-इज्जत या प्रतिष्ठा नष्ट कराना। *नाक काटना*-प्रतिष्ठा नष्ट करना। इज्जत बिगाड़ना। *नाक काटकर चूतड़ों तले रख लेना*-दुनिया की लाज या शर्म छोड़ देना। अपमान की परवा न करना। *नाक कान काटना*-१-कठोर दण्ड देना। २-हरा देना। *किसी की नाक का बाल*-वह जिसका किसी पर पूर्ण प्रभाव हो। सदा साथ रहने वाला घनिष्ट मित्र या मन्त्री। वह जिसकी मन्त्रणा से सब काम हो। *नाक की सीध में*-ठीक सामने। *नाक घिसना*-बहुत विनती या मिन्नतें करना। *नाक चढ़ना*-क्रोध आना। *नाक चढ़ाना*-१-क्रोध से नथने फुलाना। २-घृणा करना। *नाक चोटी काटकर हाथ देना*-१-कठिन दंड देना। २-दुर्दशा करना। *नाक चोटी काटना*-कठिन दंड देना। *नाक चोटी में गिरफ्तार*-अपनी प्रतिष्ठा का हर समय ख्याल होना। *नाक तक खाना*-बहुत भोजन करना।

नाक तक भरना-१-मुंह तक भरना (बरतन आदि को)। २-खूब ठूंस-ठूंसकर खाना। *नाक न दी जाना*-अति दुर्गन्ध आना। *नाक पर उँगली रख कर बात करना*-नाज-नखरे से औरतों की तरह बात करना। *नाक पर दीया बाल कर आना*-सफलता प्राप्त करके आना। मुंख उज्ज्वल करके आना। *नाक पर पहिया फिर जाना*-नाक चिपटी हो जाना। *नाक पर मक्खी न बैठने देना*-१-बहुत ही खरी प्रकृति का होना। थोड़ा-सा भी दोष अथवा त्रुटि या कमी न रह सकना। ३-बहुत साफ रहना। *नाक पर रखना*-तुरन्त सामने रख देना। चट दे देना। *नाक पर सुपारी तोड़ना*-खूब तंग या दुखी करना। *नाक फटने लगना*-असह्य दुर्गन्ध आना। *नाक बैठना*-नाक चपटी होना। *नाक बोलना*-खर्राटा भरना। *नाक भौं चढ़ाना या सिकोड़ना*-अरुचि ना-पसन्दगी आदि प्रकट करना। *नाक में जान या दम आना या करना*-तंग या हैरान होना या करना। *नाक में तीर करना, होना या डालना*-१-बहुत तंग करना या हो जाना। २-वश में करना या होना। *नाक में दम करना*-तंग करना। *नाक में बोलना*-ङङ करके बात करना। *नाक में सुतली पिरोना*-१-आँखों पर पट्टी बाँधकर ले जाना। २-बहुत सताना। ३-वश में करना। *नाक रखना*-प्रतिष्ठा की रक्षा करना। *नाक रख लेना*-प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना। *नाक रगड़ना*-बहुत विनीती या मिन्नतें करना।

नाक लगाकर बैठना-बहुत प्रतिष्ठा या इज्जत वाला बनकर बैठना। *नाक सिकोड़ना*-अरुचि या घृणा प्रकट करना। *नाकों आना*-दुखी होना। *नाकों चने चबवाना*-खूब तंग या दुखी करना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मगर की जाति का एक जलजन्तु। [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-अन्तरिक्ष। आकाश। ३-अस्त्र का एक आघात।

नाकचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-किन्नर।

नाकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक के बांसे के भीतर होने वाला एक रोग जिसमें जलन और सूजन होती है और नाक पक जाती है।

नाक़दर [वि.] (फा) अप्रतिष्ठित।

नाकनटी [स ंज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की नर्तकी। अप्सरा।

नाकना* [क्रि. स] (हि.) १-लाँघना। पार करना। डाँकना। उल्लङ्घन करना।

नाकनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग का नाथ या स्वामी, इन्द्र।

नाकनायक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग का नायक, इन्द्र

नाकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

नाकपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्गलोक।

नाकबुद्धि [वि.] (हिं.) जिसके विवेक नाक ही तक हो। ओछी समझ का। तुच्छ बुद्धिवाला

नाकलोक [संज्ञा पु.] (सं) १-स्वर्ग। २-आकाश लोक।

नाकवनिता [स ंज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की स्त्री। अप्सरा।

नाकषेधक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

नाकसद [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

नाका [संज्ञा पु] (हि.) १-किसी रास्ते आदि का वह छोर या सिरा जिससे होकर लोग किसी ओर जाते या मुड़ते हैं। मुहाना। २-वह प्रमुख स्थान जहाँ से किसी नगर बस्ती में जाने के मार्ग का आरम्भ होता है। ३-किसी नगर, दुर्ग, क्षेत्र आदि का प्रवेश स्थल। ४-वह स्थान जहाँ पहरा देने या कर उगाहने के लिए कुछ सिपाही रहते हों। ५-सूई में का छेद। ६-ताने के तागे बाँधने का जुलाहों का एक औजार। ६-मगर की जाति का एक जल-जन्तु। *नाका छेंकना या बाँधना*-आनेजाने का रास्ता रोकना।

नाकामगा [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्वर्ग की नदी, मन्दाकिनी।

नाकाबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट। २-रास्ते आदि का छेंकाजाना।

ना-काबिल [वि.] (फा.) अयोग्य।

नाकारा [वि.] (फा.) खराब। बुरा। निकम्मा।

नाकिन् [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

नाकिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

नाकिस [वि.] (अ.) खराब। बुरा। निकम्मा।

नाकी [संज्ञा पु.] (हिं) (नाक या स्वर्ग में रहने वाला) देवता।

नाकु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीमक की मिट्टी का ढूह।

नाखूना [संज्ञा पु.] (फा.) १–आँख का वह रोग जिसमें पुतली पर एक सफेद झिल्ली पड़ जाती है। २–एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। ३–बारीक काम करने की बढ़इयों की पतली रुखानी।

नाग [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. नागिन] १–साँप। सर्प। २–सर्पजाति विशेष जिनका ऊपरी शरीर मनुष्याकृति का और नीचे का धड़ सर्पशरीरकृत होता है। ३–हाथी। ४–जल-जीव विशेष। शार्क। ५–निष्ठुर या संगदिल आदमी। ६–बादल। ७–खूंटी। ८–नाग-केसर। नागरमोथा। ६—शरीरस्थ पाँच वायुओं से नाग वायु वह है जिसके द्वारा डकारें आती हैं। १०–महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम। ११–रांगा। १२–सीमा नामक धातु। १३–पान। तांबूल। १३–ज्योतिष के करणों में से तीसरे करण का नाम। १४–आठ की संख्या। १५–अश्लेषानक्षत्र। १६–एक देश का नाम। १७–उस देश में बसने वाली जाति। १८–एक प्रकार की घास। १६–१६–पुन्नाग। *नाग खोलना*–खतरे का काम करना। *नाग फूंकना*–धातु फूंकना।

नागकंद, नागकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिकंद।

नागकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाग जाति की कन्या।

नागकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी का कान। २–एरंड। अंडी का पेड़।

नागकिंजल्क, नागकिञ्जल्क [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

नागकुमारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गुरुच। गिलोय। २–मजीठ। मंजिष्ठ।

नागकेशर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नागकेसर'।

नागकेसर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सीधा सदाबहार वृक्ष जो देखने में बहुत सुन्दर होता है। यह द्विदल अंकुर से उत्पन्न होता है इसकी पत्तियाँ बहुत पतली और घनी होती हैं। गरमियों के दिनों में इसमें सफेद फूल लगते हैं। इसके सूखे फल औषध, मसाले तथा रंग बनाने के काम में आते हैं।

नागखंड, नागखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार जम्बू द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष के नौ खंडों या भागों में से एक।

नागगंधा, नागगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नकुलकंद।

नागगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह की वह गति जो उस समय होती है जब वह आश्विनी, भरणी तथा कृत्तिका नक्षत्र में रहता है।

नागगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) सिन्दूर।

नागचंपक, नागचम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर का पेड़।

नागचंपा, नागचम्पा [संज्ञा पु.] (हिं.) नागकेसर का पेड़।

नागचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नागच्छत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदंती।

नागजंबू, नागजम्बू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जामुन।

नागज [वि.] (सं.) १–जो सर्प से उत्पन्न हो। २–जो हाथी से उत्पन्न हो। [संज्ञा पु] १–सिंदूर। २–वंग।

नागजिह्वा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–अनन्त मूल। २–शारिवा।

नागजिह्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनःशिला। मैनसिल।

नागजीवन [संज्ञा पु.](सं.) वंग। फूंका हुआ रांगा

नागझाग* [संज्ञा पु.] (हिं.) अहिफेन। अफीम

नागतुंबी, नागतुम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा कडुआ कद्दू।

नागदंत, नागदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–हाथी दांत। २–दीवार में गड़ी हुई खूंटी।

नागदंतिका, नागदन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृश्चिकाली का पौधा।

नागदंती, नागदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं) नखी नामक गंधद्रव्य।

नागदमन [संज्ञा पु.] (सं.) नागदौने का पौधा।

नागदमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदौने का पौधा

नागदला [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाल, आसाम, मालाबार और सिंहल में पाया जाने वाला एक वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी और मजबूत होती है। इसके बीजों का गाढ़ा तेल जलाने के काम आता है।

नागदलोपम [संज्ञा पु.] (सं.) परुषफल। फालसा

नागदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी। हरें।

नागद्रुमा [वि.] (हिं.) (हाथी) जिसकी पूंछ का सिरा सर्प के फन के आकार का हो। (ऐसा हाथी ऐबी समझा जाता है)।

नागदौन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शिमले तथा हजारे में पाया जाने वाला छोटे आकार का एक पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी भीतर से सफेद और मुलायम होती है और विशेषतः छड़ियाँ बनाने के काम में आती है। लोगों का विश्वास है कि इस लकड़ी के पास साँप नहीं आते। २–देखो 'नागदौना'।

नागदौना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का पौधा जिसमें डालियाँ और टहनियां नहीं होती। इसकी पत्तिया हाथ भर लम्बी तथा दो या ढाई उंगल चौड़ी होती हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडुआ, हलका, त्रिदोषनाशक, कोठे को शुद्ध करने वाला, विषनाशक तथा सूजन प्रमेह और ज्वर को दूर करने वाला माना जाता है। नागदमनी। बला। मोटा। विषापहा। नागपत्रा। महायोगेश्वरी।

जीवन्ती । वृका । जांबची । मलघ्नी । दूद्धेषा । दुःसहा । विफला । वनकुमारी । श्रीकंदा । कंदशालिनी । २-एक प्रकार का कड़ुवा तथा कटीला दौना जिसके पेड़ लंबे-लंबे होते हैं । इसकी सूखी पत्तियाँ लोग कीड़ों से बचाने के लिए कपड़ों आदि की तहों के बीच में रख देते हैं ।

नागद्रु म [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंहुड़ । थूहर । २-नागफनी ।

नागद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णुपुराण के अनुसार भारतवर्ष के नौ भागों में से एक ।

नागधर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

नागध्वनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लार और केदार या सूहा अथवा कान्हड़े तथा सारंग के योग से बननेवाली एक संकररागिनी ।

नागनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अश्लेषानक्षत्र ।

नागनग [संज्ञा पु.] (सं.) गजमुक्ता ।

नागनायक [संज्ञा पु.] (सं.) नागों का अधिपति, अनन्त, वासुकि आदि ।

नागनासा [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद या काली तुलसी । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी की सूंड़ ।

नागना* [क्रि. अ.] (हिं.) नागा करना । अन्तर डालना ।

नागनिर्यू ह [संज्ञा पु.] (सं.) खूँटी या ब्रैकट ।

नागपंचमी, नागपञ्चमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रवणशुक्ला-पंचमी को होने वाला नाग-सम्बन्धी एक उत्सव जिसमें हिन्दूलोग नाग की पूजा करते हैं ।

नागपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्पों का राजा वासुकी । २-हाथियों का राजा ऐरावत ।

नागपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मणा नामक एक कन्द ।

नागपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पान का पत्ता ।

नागपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदमनी ।

नागपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मणा नामक एक कंद ।

नागपद [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह प्रकार के रतिबन्धों में से एक । मैथुन करने का एक आसन विशेष ।

नागपाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐन्द्रिजालिक फंदा जो युद्धकाल में शत्रुओं को फँसाने के लिए व्यवहृत किया जाता था । २-वरुण के अस्त्र या फन्दे का नाम ।

नागपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोगवती नामक नगरी जो पाताल-लोक में स्थित है । २-हस्तिनापुर । ३-अग्निपुराण के मतानुसार एक स्थान का नाम ।

नागपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-नागकेसर । २-पुन्नाग का पेड़ । ३-चंपा ।

नागपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपित्थ । कैथ का पेड़ । २-पीली जूही । ३-कुष्मांड । कुम्हड़े की लता ।

नागपुष्पफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेठा ।

नागपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदौना । २-मनःसिल । मैनसिल ।

नागपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीली जूही । २-नागदौना ।

नागपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदमनी । २-मेढासींगी ।

नागफनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शाखारहित एक थूहर की जाति का पौधा जो साँप के फन के आकार का गूदेदार मोटे दल का होता है । यह दल कुछ नीलापन लिये हरे और काँटेदार होते हैं । नागफनी के पौधे झाड़ लगाने के काम में आते हैं । २-सिंघे के आकार का एक नैपाली बाजा । ३-एक कान का आभूषण

नागफल [संज्ञा पु.] (सं.) परवल ।

नागफाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नागपाश' ।

नागफेन [संज्ञा पु.] (सं.) अफीम । अहिफेन ।

नागबंध, नागबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु को लपेटकर बाँधने का वह ढंग विशेष जो प्रायः वैसा ही होता है जैसा नाग का किसी जन्तु या वृक्ष आदि को अपने शरीर से लपेटने का होता है ।

नागबंधु, नागबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का पेड़ ।

नागबल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीम का एक नाम । २-हाथी के समान बल ।

नागबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गँगेरन । गुलसकरी ।

नागबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पान की बेल । पान । २-कोई सर्पाकार बेल जो किसी वस्तु पर बनाई जाय । ३-घोड़े की आड़ी या तिरछी चाल ।

नागभगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वासुकि की बहन जरत्कारु ।

नागभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का भारी सर्प ।

नागभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

नागमंडलिक, नागमण्डलिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सपेरा । २-साँप पालने वाला ।

नागमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लता का नाम ।

नागमरोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच । यह पेंच धोबीपछाड़ के समान होता है ।

नागमल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत ।

नागमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागों की माता, कद्रु । २-सुरसा । ३-मनःशिला । मैनसिल । ४-मनसादेवी ।

नागमार [संज्ञा पु.] (सं.) केशराज । कालाभंगरा । कुकुरभंगरा ।

नागमुख [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश ।

नागयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नये खुदे तालाब को नापने का एक प्रकार का थाम । २-धरती में छेद करने का बर्मा । ३-तालाब के बीचों बीच खड़ा किया हुआ खम्भा ।

नागयष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नागयष्टि' ।

नागरंग, नागरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी ।

नागर [वि.] (सं.) [स्त्री. नागरी] १-नगर-संबंधी । २-नगर में रहने वाला । ३-नगर निवासियों से संबंध रखने वाला । सिविल । [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर का निवासी । २-चतुर, सभ्य और शिष्ट व्यक्ति । भला आदमी । ३-देवर । ४-सोंठ । ५-नागरमोथा । ६-नारंगी । ७-गुजरात में रहने वाले ब्राह्मणों की एक जाति । [संज्ञा पु.] (हिं.) दीवार का वह टेढ़ापन जो जमीन की तंगी के कारण होता है ।

नागरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिल्पी । कारीगर । २-चोर । ३-नगर-परिषद । नगर-समिति ।

नागरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प या हाथी का रक्त । २-सिंदूर ।

नागरघन [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा ।

नागरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागरिकता । शहरातीपन । २-नगर की रीति और व्यवहार । सभ्यता । चतुराई ।

नागरदोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का भूला ।

नागरबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पान की बेल । पान । तांबूल ।

नागरमुस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा ।

नागरमोथा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास जिसके मूल में से लम्बी-लम्बी पत्तियां निकलती हैं । पत्तियों के मध्य से एक सीधी और ठोस मंजरीयुक्त सीक निकलती है जो लगभग एक फुट तक ऊँची हो जाती है यह प्रायः तालों के किनारे या नमी वाली भूमि में मिलता है । इसकी जड़ सूत में फँसी हुई गाँठों के रूप में और सुगंधित होती है । वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कसैला, ठंडा और पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा तथा दाह को दूर करने वाला होता है । नागरमुस्ता । नादेयी । वृषध्मांक्षी । कलापिनी । चक्रांक्षा । उच्चटा । शिशिरा ।

नागर-युद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राष्ट्र या देश के नागरिकों में होने वाली आपसी लड़ाई । *सिविल-वार* ।

नागर-विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह विवाह जो धार्मिक रीति रिवाजों के बन्धनों से रहित होता तथा विशुद्ध नागरिक की हैसियत से होता है । *सिविल-मैरेज* ।

नागराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्पों में बड़ा सर्प । २-शेषनाग । ३-हाथियों में बड़ा हाथी । ४-ऐरावत । ५-'पंचामर' या 'नाराच' छंद का दूसरा नाम ।

नागराह्व [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ ।

नागरिक [वि.] (सं.) १-नगर-सम्बन्धी । नागर

का। २-नगर में रहने वाला। शहरी। ३-चतुर। सभ्य। शिष्ट। [संज्ञा पु.] नगर निवासी। शहर का रहने वाला आदमी।

नागरिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नगर के या नागरिक अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। सिटीजनशिप।

नागरिकताधिगम [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक या नगर के अधिकारों में वृद्धि या इजाफा करने की अवस्था।

नागरिकतापहार [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक या सार्वजनिक अधिकारों की क्षति। लाँस-आफ-सिटीजनशिप।

नागरिकतावाप्ति [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक या सार्वजनिक अधिकारों में वृद्धि करने की अवस्था।

नागरिकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। नागरिकता।

नागरिकत्व-प्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक अधिकार प्रदान करने या देने की क्रिया, भाव या अवस्था। डिनाईजेशन।

नागरिक-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह अस्त्र जिसमें व्यक्ति, समाज तथा देश के हित के विचार से, संस्कृति, परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए वास्तविक उत्तम और सद्जीवन व्यतीत करने का विचार होता है। सिविक्स।

नागरिकाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-नागरिक अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। नागरिकता। सिटीजनशिप। २-नगर-निवासियों से सम्बन्ध रखने वाले सार्वजनिक-स्वत्व या अधिकार। सिविल-राइट्स।

नागरिकाधिकारविषय [संज्ञा पु.] (सं.) नगर निवासियों से सम्बन्ध रखने वाले अधिकार या स्वत्व का विषय। नागरिक अधिकार का प्रश्न। सिविलराइट्स-केस।

नागरिकापादन [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक अधिकार या स्वत्व प्रदान करने या देने की क्रिया अथवा अवस्था। डिनाईजेशन।

नागरिकीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नागरिक या देशीय बनाने की क्रिया। २-किसी नगर या देश के व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति करने वाले प्रमुख उद्योग-धंधों को किसी नगर, देश या राष्ट्र के अधिकार में करना। देशीकरण। नेशनलाइज़।

नागरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नगर की रहने वाली स्त्री। शहर की औरत। २-चतुर या प्रवीण-स्त्री। ३-स्नुही। थूहर। ४-भारत की वह प्रमुख लिपि जिसमें संस्कृत और हिन्दी लिखी जाती है। ५-पत्थर की मोटी पटिया। ६-पत्थर की मोटाई की एक बड़ी नाप।

नागरीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-लंपट। व्यभिचारी। २-प्रेमी। आशिक। ३-जार।

नागरुक [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी।

नागरेणु [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

नागरेयक [वि] (सं.) नगर-सम्बन्धी। नगर का।

नागरोत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा।

नागर्य्य, नागर्य [संज्ञा पु.] (सं) १-नागरिकत्व। शहरातीपन। २-चतुराई। बुद्धिमानी।

नागल [संज्ञा पु.] (देश.) १-हल। २-जूए की रस्सी जिससे बैल जोड़े जाते हैं।

नागलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान की बेल।

नागलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल।

नागवंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-नागों की कुल परंपरा। २-शकजाति की एक शाखा।

नागवंशी [वि.] (हिं.) नागों के वंश या कुल का।

नागवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान।

नागवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान की बेल। पान। तांबूल।

ना-गवार [वि.] (फा.) १-असह्य। २-जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

नागवारिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-महावत। फीलवान। २-गरुड़। ३-मयूर। मोर।

नागवास [संज्ञा पु.] (सं.) नागगण के रहने का स्थान।

नागवीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-लंपट। व्यभिचारी। २-प्रेमी। आशिक। ३-जार।

नागवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृहत्संहिता के अनुसार शुक्रग्रह की चाल में वह मार्ग जो स्वाति, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रों में हों। २-कश्यप की एक पुत्री का नाम।

नागवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

नागशत [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम।

नागशुंडी, नागशुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ककड़ी जिसे डंगरीफल भी कहते हैं।

नागशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार नया घर या मकान बनवाते में नागों की स्थिति का विचार। कहा जाता है कि भादों, कुआर तथा कार्तिक इन तीन महीनों में नागों का सिर पूरब की ओर; अगहन, पूस तथा माघ में दक्षिण की ओर, फागुन, चैत तथा वैशाख में पश्चिम की ओर और जेठ, असाढ़ तथा सावन में उत्तर की ओर रहता है। आरम्भ में नींव डालते समय, यदि नागों के मस्तक पर आघात पड़ा तो मकान बनवाने वाले की मृत्यु होती है। पेट पर आघात पड़ना शुभ समझा जाता है।

नागसंभव, नागसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंदूर। २-वह मोती जो वासुकि, तक्षक आदि नागों के सिर पर होता है।

नागसाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिनापुर।

नागसुगंधा, नागसुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रास्ना या रायसन। सर्पसुगंधा।

नागस्तोकक [संज्ञा पु.] (सं) अमृतविष। वत्सनाभ विष।

नागस्तोफा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-नागदंती। २-दंती।

नागहंत्री, नागहन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंध्याकर्कोटकी। बाँझककोड़ा या खखसा।

नागहनु [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

नागहाँ [क्रि. वि.] (फा) अचानक। एकाएक। अकस्मात्।

नागहानी [वि.] (फा.) (स्त्री. प्र.) अकस्मात् या एकाएक आई हुई। अचानक आई हुई।

नागांगना, नागाङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागों की स्त्री।

नागांचला, नागाञ्चला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागयष्टि।

नागांजना, नागाञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागयष्टि। २-हथिनी।

नागांतक, नागान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-मोर। मयूर। ३-सिंह। शेर।

नागा [संज्ञा पु.] (हिं.) शैव-सम्प्रदाय के वे साधु जो वस्त्र धारण नहीं करते एक दम नंगे रहते हैं। यह सिर की जटाओं को रस्सी की तरह बटकर पगड़ी के समान लपेटे रहते हैं तथा शरीर में भस्म लगाते हैं। यह अपने पास भस्म गोला रखते हैं जिसकी नित्य प्रति पूजा करते हैं। इनके कई अखाड़े होते हैं जिनमें निरंजनी और निर्वाणी प्रमुख हैं। २-आसाम के पूर्व में बसने वाली एक पहाड़ी जंगली जाति। २-आसाम का वह पहाड़ जहाँ यह जाति बसती है। [संज्ञा पु.] (अ.) नियमपूर्वक होने वाले किसी काम का किसी दिन निर्दिष्ट समय पर न होना।

नागाख्य [संज्ञा पु.] (सं) नागकेसर।

नागाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाग या सर्पों का अधिपति, शेषनाग। २-हाथियों का अधिपति, ऐरावत।

नागाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेषनाग। २-ऐरावत।

नागानन [संज्ञा पु.] (सं.) गजानन। गणेश।

नागाभिभू [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव का एक नाम।

नागाराति [संज्ञा पु.] (सं.) बंध्या-कर्कोटकी। बाँझककोड़ा या खखसा।

नागारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-मोर। ३-सिंह।

नागार्जुन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन बौद्ध महात्मा या बोधिसत्व जिन्होंने पहले-पहल बौद्ध धर्म को दार्शनिक रूप प्रदान किया

जिसके द्वारा सभ्य और पठित समाज में बौद्धधर्म का पर्याप्त प्रचार हुआ। इन्होंने सात वर्ष तक सारे भारत में उपदेश तथा शास्त्रार्थ करके बहुत से लोगों को बौद्धधर्म में दीक्षित किया। यह ईसा से १०० वर्ष पीछे हुए थे।

नागार्जुनी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दुद्धी। दुधिया-घास।

नागालाबू [संज्ञा पु] (सं.) गोल घीया। गोल लौकी।

नागाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। मयूर। ३-सिंह।

नागाश्रय [संज्ञा पु] (सं.) हस्तिकंद।

नागाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

नागाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं) लक्ष्मणकंद।

नागिन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-नाग या साँप की मादा। २-रोयों की वह लम्बी भौंरी जो पीठ या गरदन पर होती है। स्त्रियों के लिए कुलक्षणीय समझी जाती हैं। ३-चौपायों की पीठ पर होनी वाली भौंरी जिसे अशुभ माना जाता है।

नागी [संज्ञा पु] (हिं.) (नाग वाले) शिव। महादेव।

नागी-गायत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद जिसमें २४ वर्ण होते हैं। इसके प्रथम दो चरणों में नौ-नौ वर्ण तथा तीसरे में केवल ६ वर्ण होते हैं।

नागीय [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

नागुला [संज्ञा पु.] (सं.) १-नकुल। नेवला। २-नाकुली नामक जड़ी।

नागेंद्र, नागेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा हाथी। उत्कृष्ट हाथी। २-ऐरावत। ३-बड़ा सर्प। ४-शेष, वासुकि आदि नाग।

नागेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेषनाग। २-'नागेश' भट्ट नामक प्रसिद्ध संस्कृत वैयाकरण।

नागेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.)१-शेषनाग। २-ऐरावत। ३-नागकेसर।

नागेश्वररस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार एक प्रसिद्ध रसौषध जो पारा, गंधक, सीसा, रांगा, मैनसिल, नौसादर, सज्जी, सोहागा, लोहा, तांबा तथा अभ्रक इन सबको समान भाग लेकर थूहर के दूध में मले। फिर चीते अड़ूसे और दन्ती के क्वाथ में मिलाकर उड़द की दाल के समान गोली बनाते हैं।

नागेसर* [संज्ञा पु.] देखो 'नागकेसर'।

नागेसरी [वि.] (हिं.) नागकेसर के रंग का, पीला।

नागोद [संज्ञा पु.] (सं.) छाती पर पहनने का लोहे का कवच। सीनाबंद।

नागोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्भिणी के गर्भ का एक प्रकार का उपद्रव।

नागौर [संज्ञा पु] (हिं.) जोधपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर जो गायों तथा बैलों के लिए भारत भर में प्रसिद्ध है। [वि.] (हिं.) [स्त्री नागौरी] नागौर का, अच्छी जाति का (बैल, गाय, बछड़ा आदि)।

नागौरी [वि.] (हिं.) नागौर (नागर) का बैल या बछड़ा जो अच्छा समझा जाता है)। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] नागौर की। अच्छी जाति की गाय। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की खस्ता पूरी जो आकार में बहुत छोटी होती है

नाच [संज्ञा पु.](हिं.) १-हृदय के भावों को अंगों द्वारा संगीत के मेल में ताल स्वर सहित प्रदर्शित करने का ढंग। अंगों की वह गति जो चित्त के उमंग के कारण हो। नृत्य। २-नाट्य। खेल। क्रीड़ा। ३-कृत्य। धंधा। कर्म। *नाचकूद*-नाच-तमाशा। *नाचरंग*। *नाच काछना*-नाचने के लिए तैयार होना। *नाच दिखाना*-१-किसी के सामने नाचना। २-उछलना कूदना। ३-विलक्षण आचरण करना। *नाच नचाना*-१-इच्छानुसार काम करना। २-दिक करना। हैरान करना।

नाचकूद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाच-तमाशा। २-आयोजन। प्रयत्न। ३-गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग। डींग। ४-क्रोध से उछलना, पटकना।

नाचघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ नृत्य और संगीत आदि हो। नृत्यशाला।

नाचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रसन्नतापूर्वक उछलना-कूदना। २-संगीत के साथ ताल-स्वर के अनुसार हाव-भाव दिखाते हुए उछलना घूमना और इसी प्रकार की दूसरी चेष्टाएँ करना। नृत्य करना। ३-चक्कर लगाना। मंडराना। ४-उद्योग या प्रयत्न में घूमना। स्थिर न रहना। दौड़ना-धूपना। ५-थरानां। काँपना। ६-क्रोध में आकर उछलना-कूदना। *सिर पर नाचना*-१-आक्रांत करना। प्रभाव डालना। २-पास या निकट आना। *आँख के सामने नाचना*-प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना।

नाच-महल [संज्ञा पु.] (हिं.) नाचघर। नृत्यशाला।

नाचरंग [संज्ञा पु.](हिं.) आमोद-प्रमोद। संगीत या गाने-नाचने का जलसा।

नाचार [वि.] (फ़ा.) १-विवश। लाचार। असहाय। २-तुच्छ। व्यर्थ। [क्रि. वि.] विवश होकर। हारकर। मजबूरन।

नाचारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) लाचारी।

नाचिकेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-नचिकेता नाम का एक ऋषि।

नाचीज़ [वि.] (फ़ा.) १-तुच्छ। पोच। २-निकम्मा।

नाचीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाभारत के अनुसार एक देश जो दक्षिण में है। २-उक्त देश का राजा।

नाज़ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-ठसक। नखरा। चोचला। हाव-भाव। २-घमंड। गर्व। नाज अदा, नाज नखरा-१-हाव-भाव। २-चटक मटक। बनाव-सिंगार। नाज़ उठाना-चोचला सहना। नाज से पालना-स्नेह सहित लाड़-प्यार से पालना। [संज्ञा पु.] (हिं) १-देखो 'अनाज'। २-खाद्य सामग्री। खाना।

नाज़नी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) सुन्दरी स्त्री।

नाज़बू [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) मरुवे का पौधा।

नाजाँ [वि] (फ़ा.) घमंड करने वाला। गर्वित।

नाजायज [वि.] (अ.) १-अनुचित। २-जो जायज या वैध न हो। अवैध।

नाज़िम [संज्ञा पु.] (अ) १-भारत के मुसलमानी राज्यकाल में वह प्रधान कर्मचारी जिसके ऊपर राज्य के प्रबंध का भार रहता था। २-आजकल किसी न्यायालय संबंधी कार्यालय का प्रबंधकर्त्ता [वि.] प्रबंधकर्त्ता।

नाज़िर [वि.] (अ.) देखने वाला। दर्शक। [संज्ञा पु.] १-देखभाल करने वाला। निरीक्षक। २-न्यायालय के लिपिकों का अधिकारी। ३-वेश्याओं का दलाल।

नाजी [संज्ञा पु.] (जरमन) १-जरमन देश का शक्तिशाली दल जो अपने आपको राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था और जिसका पतन दूसरे महायुद्ध में हुआ था। २-उक्त दल का सदस्य।

नाजीवाद [संज्ञा पु.] (हिं) जर्मनी समाजवादी दल जिसकी यह घोषणा है कि जर्मनी इस देश की पवित्र आर्य संतति के लिए है। देश का सब विषयों का व्यक्तिगत स्वतंत्र देश के कल्याण के निमित्त ही है। प्रत्येक व्यक्ति की निजी संपत्ति देश के हित के लिए समर्पित है। *नाजीइज्म*।

नाजीवादी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो नाज़ी।

नाज़ुक [वि.] (फ़ा.) १-कोमल। सुकुमार। २-पतला। महीन। बारीक। ३-सूक्ष्म। ४-गूढ़। ५-तनिक से आघात से टूट-फूट जाने वाला। ६-जिसमें हानि या अनिष्ट का डर हो। जोखिम का।

नाजुकदिमाग [वि.] (फ़ा.,अ.) १-जो अपने प्रतिकूल की थोड़ी-सी बात भी न सह सके। २-तुनकमिजाज। चिड़चिड़ा।

नाजुकबदन [वि.] (फ़ा.) १-कोमल और सुकुमार शरीर का। २-डोरिए की तरह का एक महीन कपड़ा। ३-एक प्रकार का गुललाला।

नाजुकमिजाज [वि.] (फ़ा.) जो कुछ भी कष्ट न सह सके।

नाजो [वि.] (फ़ा.) [स्त्री. प्र.] १-नाज करने वाली। चटक-मटक वाली। २-लाड़ली। दुलारी। ३-प्रियतमा। ४-कोमलांगी।

नाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-नृत्य। नाच। २-अभि-

नय करने की क्रिया। नकल। स्वांग। २-करनाटक देश का नाम। ३-उक्त देशवासी पुरुष। ४-एक राग का नाम जिसमें वीररस गाया जाता है।

नाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाट्य या अभिनय करने वाला। २-रंगमंच पर अभिनेताओं का हाव-भाव, वेष और कथोपकथन द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। वह दृश्य जिसमें सांग द्वारा चरित्र दिखाए जाएँ। अभिनय। ३-वह ग्रन्थ जिसमें स्वांग के द्वारा दिखाया जाने वाला चरित्र हो। दृश्यकाव्य। (साहित्य-दर्पण के अनुसार नाटक किसी प्रसिद्ध आख्यान को (कल्पित नहीं) लेकर लिखना चाहिए। यह नाना प्रकार के विलास, सुख-दुःख तथा अनेक रसों से युक्त होना चाहिए इसमें पांच से दस तक अंक, नायक धीरोदात्त और प्रख्यात वंश का कोई प्रतापी पुरुष या राजर्षि होना चाहिये। नाटक के प्रधान या अंगीरस शृंगार और वीर हैं। शेषरस गौणरूप से आते हैं। संधिस्थल में कोई विस्मयजनक व्यापार होना चाहिए। उपसंहार में मंगल ही दिखाया जाना चाहिए अभिनय आरम्भ के पूर्व मंगलाचरण नांदी आदि की जो क्रिया होती है उसे पूर्व रंग कहते हैं। पूर्व रंग के पश्चात् प्रधान नट या सूत्रधार आदि परस्पर कथनोपकथन करते हैं। नाटक के इस अंश को प्रस्तावना कहते हैं। जिस इतिवृत्त को लेकर नाटक रचा जाता है उसे वस्तु कहते हैं। आधुनिक नाटकों में उपरोक्त सब नियमों का पालन अथवा विषयों का समावेश अनावश्यक समझा जाता है। भारत में नाटकों का प्रचार प्राचीनकाल से है।

नाटकशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान या घर जहां नाटक होता है।

नाटक-देवदारु [संज्ञा पु.](हिं.) भारत के दक्षिण और लंका में पाया जाने वाला एक झाड़ जिसकी लकड़ी से एक प्रकार का तेल निकलता है वह नावों में लगाने के काम आता है। इसकी पत्तियाँ पाचक होती हैं।

नाटकावतार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नाटक के अभिनय के बीच अन्य नाटक का अभिनय। अंतर्नाटक।

नाटकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाटक करने वाला अभिनयपात्र। २-नाटक करके जीविका चलाने वाला।

नाटकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाट्य या अभिनय करने वाला मनुष्य। अभिनयपात्र। २-नाटक करके जीविका करने वाला।

नाटकीय [वि.] (सं.) १-नाटक-सम्बन्धी। २-नाटक अथवा नटों की तरह का।

नाटना [क्रि. अ] (हिं.) किसी ऐसी बात को अस्वीकार या इनकार कर जाना जिसके लिए वचन दिया गया हो। कहकर मुकर जाना। प्रतिज्ञा आदि पर स्थिर न रहना। [क्रि. स.] (हिं.) अस्वीकार करना। इनकार करना।

नाटवमंत, नाटवसन्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग विशेष का नाम।

नाटा [वि.] (हिं) [स्त्री. नाटी] छोटे डील या कद का। कम ऊँचा। (प्राणियों के लिए)। [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री नाटी] छोटे डील या कद का बैल या गाय।

नाटा-करंज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का करंज।

नाटाम्र [संज्ञा पु.] (सं) तरबूज।

नाटिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक प्रकार का दृश्य-काव्य जिसमे चार अंक होते हैं, पर इसकी कथा कल्पित होती है। नायिकाराजकुलोद्भवा तथा नवानुरागिणी और नायक धीरललित होता है इसमें स्त्री पात्र अधिक होते हैं। २-नटनारायण हमीर राग से बनने वाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। नारद के मतानुसार यह कर्णाटकी तथा हनुमत के मत से दीपक की पत्नी है।

नाटित [वि] (सं.) जिसका अभिनय किया गया हो। अभिनीत। [संज्ञा पु.] अभिनय।

नाटितक [संज्ञा पु.] (सं.) नाट्य या अभिनय करने वाला मनुष्य। अभिनय-पात्र।

नाटेर [संज्ञा पु.] (सं.) नट की सन्तान।

नाट्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-नटों का काम-नृत्य, गीत तथा अभिनय आदि। २-स्वांग के द्वारा चरित्र प्रदर्शन। अभिनय। ३-नकल स्वांग चेष्टा के द्वारा प्रदर्शन। ४-वह नक्षत्र जिसमें नाट्य का आरम्भ किया जाता है। (नाटक का आरम्भ इन नक्षत्रों में करना कहा गया है—अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्येष्ठा, शतभिषा और रेवती)।

नाट्यकार [संज्ञा पु.](सं.) १-नाटक करने वाला। नट। २-वह जो नाटक लिखता हो।

नाट्यप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) (नाट्य या नृत्य जिन्हें प्रिय है) शिव। महादेव।

नाट्यमंदिर, नाट्यमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ नाटक अथवा अभिनय होता हो। नाट्यशाला।

नाट्यरासक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दृश्य काव्य या उपरूपक, जिसमें केवल एक अङ्क ही होता है। इसका नायक उदात्त, नायिका वासकसज्जा, उपनायक पीठमर्द होते हैं। इसमें अनेक प्रकार के नृत्य और गीत होते हैं। एकांकी नाटक।

नाट्यशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ पर अभिनय द्वारा जनसाधारण का मनोरंजन किया जाय। नाटकघर। २-राजभवन के पास का मकान।

नाट्यशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र जिस में नृत्य, गीत अभिनय आदि का विवेचन हो। नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। २-एक प्राचीन ग्रंथ जिसकी रचना भरतमुनि ने की थी।

नाट्याचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाट्यविद्या सिखाने वाला। २-नृत्यशिक्षक।

नाट्यालंकार, नाट्यालङ्कार [संज्ञा पु] (सं) नाटक का भूषण हेतु अथवा वह अलङ्कार जिसके आने से नाटक का सौन्दर्य अधिक बढ़ जाता है। साहित्यदर्पण के अनुसार ऐसे अलङ्कार तेंतीस होते हैं-आशीर्वाद, अक्रंद, कपट, अक्षमा, गर्व, उद्यम, आश्रय, उत्प्रासन, स्पृहा, क्षोभ, पश्चाताप, उपपत्ति, आशंसा, अध्यवसाय, विसर्प, उल्लेख, उत्तेजन, परिवाद, नीति, अर्थविशेषण, प्रोत्साहन, सहाय्य, अभिमान, अनुवृत्ति, उतकीर्तन, याचा, परिहार, निवेदन, पवर्तन, आख्यान, युक्ति, प्रहर्ष और शिक्षा।

नाट्योक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वे विशेष-विशेष सम्बोधनसूचक शब्द जो विशेष-विशेष व्यक्तियों के लिये नाटक ग्रन्थों में व्यवहृत किये जाते हैं। जैसे-ब्राह्मण के लिये आर्य, क्षत्रिय के लिये महाराज, पति के लिये आर्य-पुत्र, राजा के लिये देव, वेश्या के लिये अज्जका, कुमार के लिये युवराज तथा विद्वान् के लिये भाव।

नाठ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाश। ध्वंस। २-अभाव। अनस्तित्व। ३-वह संपत्ति या जायदाद जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो। *नाठ पर बैठना*-लावारिस सम्पत्ति का अधिकारी होना।

नाठना* [क्रि. स.] (हिं.) नष्ट करना। ध्वस्त करना। [क्रि. अ.] १-नष्ट होना। ध्वस्त होना। २-हटना। भागना।

नाठा [संज्ञा पु.] (हिं) वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न हो।

नाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ग्रीवा। गदन।

नाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घाघरा, पाजामा आदि बाँधने की सूत की बुनी हुई या साधारण डोरी। इजारबंद। नीवी। २-वह मांगलिक लाल या पीला सूत जो देवताओं पर चढ़ाया हाथ में बाँधा जाता है। मौली। (किसी का) *नाड़ा खोलना*-संभोग करने के लिए इजारबंद खोलना। संभोग करना (मारवाड़िन)। *नाड़ा छोड़ करना*-पेशाब करना (मारवाड़ी) *नाड़ा छोड़*-पेशाब।

नाडिंधम, नाडिन्धम [वि.] (सं.) १-नली को फूंकने वाला। २-नाड़ियों को हिलाने वाला। ३-श्वास को जल्दी-जल्दी चलाने वाला। ४-जिसे देखते ही नाड़ी हिल जाय। दहलाने वाला। भयंकर। [संज्ञा पु.] स्वर्णकार। सोनार।

नाडि [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'नाड़ी'।

नाड़िक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पटुआ नामक एक प्रकार का साग। २–नाड़ी। ३–घटिका। दंड

नाड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नाड़ी। धमनी। २–एक घड़ी या चौबीस मिनट का काल। घड़ी।

नाड़िकेल [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल। नारिकेल।

नाड़िया [संज्ञा पु.] (हि) (नाड़ी पकड़ने वाला) वैद्य। चिकित्सक।

नाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–किसी कमल का पोला नाल। २–तृण का पोला डंठल। ३–नली। ४–शरीर के भीतर की वे नलियाँ जिनमें होकर लहू बहा करता है। विशेषकर वे नालियाँ जिनमें हृदय से शुद्ध रक्त बनकर प्रत्येक क्षण सारे शरीर में जाया करता है। नाड़ी एक मिनट में उतनी ही बार फड़कती है जितनी बार हृदय धड़कता है। नाड़ी परीक्षा द्वारा हृदय तथा रक्त भ्रमण की दशा का ज्ञान होता है, उससे नाड़ियों और हृदय के तथा और भी कई अंगों के रोगों का पता लग जाता है। सुश्रुत के मतानुसार ७०० शिराएं लिखी गई हैं जिनमें ४० मुख्य हैं–१० रक्तवाहिनी, १० कफवाहिनी, १० पित्तवाहिनी और १० वायुवाहिनी होती हैं। धमनी। ५–हठयोग में अनुभूति तथा श्वास-प्रश्वास संबंधी नालियाँ। योगियों के मतानुसार मेरुदंड के एक इस ओर तथा एक उस ओर ऐसी दो नालियाँ हैं, जिनमें बांई को इला या इड़ा तथा दाहिनी को पिंगला कहते हैं। इन दोनों के मध्य में सुषुम्ना नाम्नी नाड़ी है। स्वरोदय और तंत्र के मतानुसार बाएं नथुने से जो सांस आती-जाती है वह इड़ा नाड़ी से होकर तथा दाहिने नथुने से निकलती है वह पिंगला से होकर। श्वासगति के अनुसार शुभाशुभ फल भी बताये गये हैं। इड़ा नाड़ी में चन्द्र की अवस्थिति रहती है तथा पिंगला में सूर्य की। अतः इड़ा का गुण शीत और पिंगला का ऊष्ण है। ६–नासूर का छेद। ७–बन्दूक की नली। ८–एक कालमान जो ६ क्षण का होता है। ९–कपट। छद्म। मक्कारी। १०–अर्ध मुहूर्त्तकाल। ११–वंशी। वीणा। *नाड़ी चलना*–कलाई की नाड़ी में स्पन्दन या गति होना। (जीवन का लक्षण)। *नाड़ी छूटना* १–नाड़ी का न चलना। २–मृत्यु हो जाना। ३–मूर्छा आना। संज्ञारहित होना। *नाड़ी देखना*–कलाई की नाड़ी पर हाथ रखकर रोग का पता लगाना। *नाड़ी धरना पकड़ना*–देखो 'नाड़ी देखना'। *नाड़ी दिखाना या घटाना*–रोग के निदान के लिए वैद्य से नाड़ी की परीक्षा करना। *नाड़ी न बोलना*–१–नाड़ी न चलना। २–प्राण न रहना। ३–मूर्च्छा आना।

नाड़ीक [संज्ञा पु.] (सं.) पटुआ नामक एक साग का नाम।

नाड़ीकलापक [संज्ञा पु.] (सं.) भिड़नी नामक घास।

नाड़ीकूट [संज्ञा पु.] (सं.) नाड़ीनक्षत्र।

नाड़ीकेल [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल।

नाड़ीच [संज्ञा पु.] (सं.) पटुआ साग।

नाड़ीचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) हठयोग के मतानुसार नाभिदेश में स्थित एक अंडाकार गांठ जिससे निकलकर सब नाड़ियां शरीर भर में फैली हैं २–नक्षत्रों के उन भेदों को सूचित करने वाला कोष्ठ या चक्र जिन्हें नाड़ी कहते हैं। (फलित-ज्योतिष)।

नाड़ीचरण [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

नाड़ीचीर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की छोटी नरकुल।

नाड़ीजंघ, नाड़ीजङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) १–काक। कौआ। २–एक मुनि का नाम। ३–महाभारत के मतानुसार एक बगला जो कश्यप का पुत्र था।

नाड़ीतरंग, नाड़ीतरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १–कोकिल। २–हिंडक।

नाड़ीतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) नेपाली नीम।

नाड़ीदेह [वि.] (सं.) अत्यधिक दुबला-पतला। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के द्वारपाल का नाम।

नाड़ी-नक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार वरवधू की गणना बैठाने के लिए कल्पित चक्रों में स्थित नक्षत्र।

नाड़ीमंडल, नाड़ीमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) विपुवद्रेखा।

नाड़ीयंत्र, नाड़ीयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्र-चिकित्सा में चीरफाड़ का एक औजार जो शरीर की नाड़ियों अथवा स्रोतों में घुसी हुई वस्तु को बाहर निकालने के काम में आता था

नाड़ीवलय [संज्ञा पु.] (सं.) समय निश्चित करने का एक प्राचीन यन्त्र। एक प्रकार की घड़ी।

नाड़ीव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) वह घाव या व्रण जिसमें भीतर ही भीतर नली की तरह छेद हो जाय तथा उसमें से निरन्तर मवाद निकला करे। नासूर।

नाड़ीशाक [संज्ञा पु.] (सं.) पटुआ शाक।

नाड़ीशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हठयोग के अनुसार नाड़ी शोधने की एक विधि।

नाड़ीहिंगु, नाड़ीहिङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष जिसमें से हींग गोंद निकलती है जो औषध के काम आती है। इसके फूल सफेद और फल पोस्त के डोडे के समान होते हैं। २–उक्त-वृक्ष से निकलने वाली हींग या गोंद।

नाड़ूदाना [संज्ञा पु.] (देश.) मैसूर में होने वाली बैलों की एक जाति जो अत्यधिक मजबूत होने पर भी पर्याप्त महनती नहीं होते।

नाणक [संज्ञा पु.] (सं.) १–धातु। २–निष्क। ३–सिक्का। कोई वस्तु जिस पर कोई ठप्पा लगा हो। अंकित मुद्रा। *नाणक परीक्षा*–धातु परीक्षा।

नात [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नातेदार। सम्बन्धी। २–नाता। सम्बन्ध। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–ईश्वर की प्रशंसा। २–ईश्वरीय प्रशंसात्मक या अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला गीत। (मुसलमान)

नातरु [अव्य.] (हिं.) नहीं तो। अन्यथा।

नातवाँ [वि.] (फा.) दुर्बल। हीन। अशक्त। निर्बल।

नाता [संज्ञा पु.] (हि.) १–मनुष्यों का वह पारस्परिक सम्बन्ध जो एक ही कुल में जन्म लेने अथवा विवाह आदि करने के कारण होता है। ज्ञाति-सम्बन्ध। २–सम्बन्ध। रिश्ता। लगाव।

नाताकत [वि.] (फा., + अ.) निर्बल। अशक्त।

नातिचर [वि.] (सं.) जो बहुत काल का न हो।

नातिदीर्घ [वि.] (सं.) जो अधिक लम्बा न हो।

नातिदूर [वि.] (सं.) जो बहुत दूर न हो।

नातिन, नातिनी [संज्ञा स्त्री .] (हिं.) पुत्री की पुत्री। लड़की की लड़की। नातिवाद। [संज्ञा पु.] (सं.) कुवाच्यों को बचाने वाला।

नातिशीतोष्ण [वि.] (सं.) न अधिक गरम न अधिक ठंडा। गुनगुना।

नाती [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. नातिन, नातिनी] लड़की का लड़का। पुत्री का पुत्र। दोहता।

नाते [क्रि. वि.] (हिं.) १–सम्बन्ध से। २–हेतु। वास्ते। लिए।

नातेदार [वि.] (हिं.) सम्बन्धी। रिश्तेदार।

नातेदारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रिश्तेदारी। संबंध।

नात्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नात्सी [संज्ञा पु.] (जरमन) जरमन के राष्ट्रीय समाजवादियों का संक्षिप्त नाम। नाजी।

नाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रभु। स्वामी। मालिक। २–पति। ३–नटखट बैल की नाक में डाला हुआ रस्सा। ४–गोरखपंथी साधुओं की एक पदवी जो उनके नामों के साथ ही जुड़ी रहती है। ५–वह मदारी जो सांप पालते और नचाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नथ'।

नाथता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रभुता। स्वामित्व।

नाथत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभुत्व। स्वामित्व।

नाथना [क्रि. स.] (हिं.) १–बैल, भैंसे आदि को वश में रखने के लिए उनकी नाक छेदकर उसमें रस्सी पिरोना। नकेल डालना। २–किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या तागा डालना। ३–कई वस्तुओं या किसी वस्तु के कई भागों को छेदकर तागे आदि से जोड़ना। नत्थी करना। लड़ी के रूप में जोड़ना।

नाथद्वारा [संज्ञा पु.] (हिं.) राजस्थान राज्य के उदयपुर प्रदेश के अन्तर्गत वल्लभ सम्

नाथद्वारा राज के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।

नाथवत [वि.] (सं.) १-जिसका कोई रक्षक या रक्षा करने वाला हो। सनाथ। परतंत्र। दूसरे पर निर्भर। परवशवर्ती।

नाथविद् [वि.](सं.) शरण देने वाला।

नाथहरि [संज्ञा पु.] (सं.) पशु।

नाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द। ध्वनि। आवाज २-वर्णों का अव्यक्त मूलरूप। (कहा जाता है कि आत्मा के द्वारा प्रेरित होकर चित्त दहेज-अग्नि पर आघात करता है तथा अग्नि ब्रह्मग्रन्थित प्राण को प्रेरित करती है। अग्नि द्वारा प्रेरित प्राण फिर ऊपर चढ़ने लगता है। नाभि में पहुँच कर वह अति सूक्ष्म, हृदय में सूक्ष्म गलदेश में पुष्ट, शीर्ष में अपुष्ट तथा मुख में कृत्रिम नाद उत्पन्न करता है। नाद तीन प्रकार का माना गया है—प्राणिभव, अप्राणिभव, तथा उभय-संभव। जो मुख आदि अंगों से उत्पन्न किया जाता है वह प्राणिभव जो वीणा आदि से निकलता है वह अप्राणिभव और जो बाँसुरी से निकलता है वह उभयभव होता है। नाद के बिना गीत, स्वर, राग आदि कुछ भी संभव नहीं। नाद पर ज्योति या ब्रह्मरूप है तथा सारा जगत् नादात्मक है, इस दृष्टि से नाद दो प्रकार का है—आहत और अनाहत। अनाहत नाद को केवल योगी ही सुन सकते हैं)। ३-वर्णों के उच्चारण में एक प्रयत्न जिसमें कंठ को न तो बहुत अधिक फैलाकर न संकुचित करके वायु निकालनी पड़ती है। ४-सानुनासिक स्वर जो ँ अर्द्धचन्द्र से व्यक्त होता है। ५-संगीत। नाद विद्या-संगीतशास्त्र।

नादता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द का गुण।

नादना [क्रि. स.] (हिं.) बजाना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-बजना। २-गरजना। चिल्लाना। लहलहाना। प्रफुल्लित होना। लहकना।

नादपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उप-पुराण का नाम।

नादमुद्रा [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्रोक्त एक मुद्रा जिसमें दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर अँगूठे को ऊपर की ओर उठाए रहना पड़ता है।

नादली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) संगयशब नामक पत्थर का छोटा और चौकोर टुकड़ा जो कलेजे की धड़कन दूर करने के लिए यंत्र की तरह गले में पहना जाता है। इस पर कुरान की एक विशेष आयत खुदी रहती है। हौलदिली

नादान [वि.] (फा.) नासमझ। अनजान। मूर्ख।

नादानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अज्ञान। नासमझी।

नादार [वि.] (फा.) १-जिसके पास कुछ न हो। अकिंचन। निर्धन। कंगाल। २-गंजीफे के खेल में बिना रंग की बाजी।

नादारी [संज्ञा स्त्री] (फा.) गरीबी। निर्धनता।

नादित [वि.] (सं.) शब्द करता हुआ। बजाया हुआ। शब्दित।

नादिम [वि.] (अ.) लज्जित।

नादिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नंदी। २-वह बैल जिसका प्रदर्शन करके जोगी भीख माँगते हैं।

नादिर [वि.] (फा.) अद्भुत। अनोखा।

नादिरशाह [संज्ञा पु.] (फा.) फारसदेश का एक क्रूर बादशाह जिसने सन् १७३८ में दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह पर चढ़ाई की तथा १७३६ में दिल्ली के नागरिकों की हत्या कराई। यह हत्याकांड सूर्योदय से सूर्यास्त तक जारी रहा जिसमें लाखों आदमी मौत के घाट उतारे गये। [वि.] नादिरशाह के ऐसा। बहुत ही कठोर तथा उग्र।

नादिरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मुगल बादशाहों के समय में पहनी जाने वाली एक प्रकार सदरी या बंडी, जिसके किनारे पर कुछ काम होता था। २-गंजीफे का वह पत्ता जो खेल के समय निकालकर अलग रख दिया जाता है *नादिरी चढ़ना*-बेतरह मात करना।

ना-दिहंद [वि.] (फा.) ऋण न चुकाने वाला। जिससे पावना जल्दी वसूल न हो। न देने वाला।

न-दिहंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) किसी को कुछ न देने की प्रवृत्ति। अदातव्यता।

नादी [वि.] (हिं.) [स्त्री. नादिनी] १-शब्द करने वाला। २-बजाने वाला।

नादेय [वि.] (सं.) [स्त्री. नादेयी]। १-नदी-संबंधी। नदी का। २-नदी में होने वाला। [संज्ञा पु.] १-सेंधा नमक। २-सुरमा। ३-काँस नामक घास। ४-जलबेंत।

नादेया [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-नदी-संबंधिनी। नदी की। २-नदी में होने वाली। [संज्ञा स्त्री.] १-अम्बुवेतस। जलबेंत। २-भूमि जंबुक। भुइँजामुन। ३-वैजयंतिका। वैजयंती। ४-नारंगी। अड़हुल। ६-अग्निमंथ वृक्ष।

ना-देहंद [वि.] (हिं.) देखो 'नादिहन्द'।

नाद्य [वि.] (सं.) नदी में होने वाला।

नाधन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चरखे के तकले में लगी हुई गोल टिकिया जो तागे को रोकने के लिए लगी रहती है।

नाधना [क्रि. स.] हिं.) १-बैल, घोड़े आदि को सवारी आदि खींचने के लिए उसके आगे बाँधना। जोतना। २-लगाना। ३-गूंथना। पिरोना। ४-आरम्भ करना। अनुष्ठित करना। ठानना। *काम में नाधना*-काम में लगाना।

नाधा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह रस्सी जिससे हल या कोल्हू की हरीस जुए से बाँधी जाती है। नारी। २-वह नाली जिसमें से होकर कुएं का पानी चलता है।

नान [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रोटी। चपाती। २-तन्दूर में पकने वाली एक प्रकार की मोटी खमीरी रोटी।

नानक [संज्ञा पु.] एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख-संप्रदाय के संस्थापक और सिक्खों के आदि गुरु थे। इनका जन्म रावी नदी के किनारे तिलौंडी नामक गाँव में संवत् १५२६ में कार्त्तिकी पूर्णिमा को कालू नामक खत्री के घर में हुआ था। जालंधर जिले कर्त्तारपुर नामक स्थान पर आश्विन कृष्णा १० संवत् १५९७ को इनका परलोकवास हुआ।

नानकपंथी [संज्ञा पु.] (हिं.) गुरुनानक का अनुयायी। सिख।

नानकशाह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नानक'।

नानकशाही [वि.] (हिं.) १-गुरुनानक से संबंध रखने वाला। २-नानकशाह का शिष्य या अनुयायी।

नानकार [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की माफी जिसमें जमींदार को कुछ जमीन की मालगुजारी देनी नहीं पड़ती।

नानकीन [संज्ञा पु.] (चीनी) एक प्रकार मटमैले रंग का सूती कपड़ा जो पहले पहल चीन के नानकिङ नगर में बनता था।

नान-खताई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।

नानपरिल [संज्ञा पु.] (अं) एक प्रकार का छोटा टाइप।

नानबाई [संज्ञा पु.] (फा.) रोटियाँ पकाकर बेचने वाला।

नानस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सास की माता। पति या पत्नी की नानी। ननिया-सास।

नानसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) सास का पिता। ननिया ससुर। पति या पत्नी का नाना।

नाना [वि.] (सं.) १-अनेक प्रकार के। तरह-तरह के। २-अनेक। बहुत। [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. नानी] माता का पिता। माँ का बाप। मातामह। + [क्रि. स.] (हिं.) १-झुकना। नम्र करना। २-नीचा करना ३-डालना। फेंकना। ४-घुसाना। प्रविष्ट करना। [संज्ञा पु.] (अ.) पुदीना। *अर्क-नाना*-पुदीने का अर्क

नानाकंद, नानाकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडालू।

नानाकार [अव्य.] (सं.) अनेक प्रकार से किया हुआ।

नानात्मवादी [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्यदर्शन का वह सिद्धान्त जो आत्मा को अनेक मानता है

नानात्यय [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का।

नानाद्र [संज्ञा पु.] (सं.) ननद की सन्तति।

नानाप्रकार [वि.] (सं.) बहुविध। अनेक प्रकार से।

नानारस [वि] (सं.) भिन्न भिन्न प्रकार के स्वादों वाला।

नानारूप [वि.] (सं.) अनेक रूपों वाला। विविध आकृति वाला।

नानार्थ [वि.] (सं.) १-भिन्न उद्देश्य और लक्ष्य वाला। २-अनेकार्थवाची। एक से अधिक अर्थ वाला (शब्द)।

नानावर्ण [वि.] (सं.) अनेक रंगों का।

नानाविध [वि.] (सं.) विविध प्रकार का। [अव्य.] अनेक प्रकार से।

नानाशब्दसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक प्रकार के शब्दों का संग्रह। शब्दकोश।

नानाशस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक प्रकार के शस्त्र या हथियार।

नानाशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक प्रकार की विद्या।

नानाशास्त्रज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अनेक शास्त्रों का पंडित हो।

नानिहाल [संज्ञा पु.] (हिं.) नाना-नानी का घर।

नानी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) माता की माता। मां की मां।

नानी याद आना या मर जाना–सङ्कट या आपत्ति सी आ जाना।

ना-नुकर [संज्ञा पु.] (हिं.) इनकार।

नान्तरीयक [वि.] (सं.) जो पृथक न हो सके। घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाला।

नान्ह+ [वि.] (हिं.) १-छोटा नन्हा। लघु। २-नीच। क्षुद्र। ३-पतला। बारीक। महीन।

नान्ह कातना–१-बहुत बारीक काम करना। कठिन या दुष्कर कार्य करना।

नान्हक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नानक'।

नान्हरिया+* [वि.] (हिं.) छोटा। नन्हा।

नान्हा*+ [वि.] (हिं.) (स्त्री. नान्ही) १-छोटा। लघु। नन्हा। २-पतला। बारीक। महीन। ३-नीच। क्षुद्र। [संज्ञा पु.] छोटा बच्चा। लड़का *नान्हाबारा*–छोटा बालक।

नाप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि जिसका विचार किसी निर्दिष्ट लम्बाई के आधार पर या तुलना में होता है। परिमाण। माप। *मेजर*। २-वह क्रिया जिससे किसी वस्तु की लम्बाई चौड़ाई आदि जानी या स्थिर की जाती है। नापने का काम। *मेजरमेंट*। ३-वह निर्दिष्ट लम्बाई जिसे एक मानकर किसी वस्तु की लम्बाई चौड़ाई या विस्तार स्थिर किया जाता है। ४-निर्दिष्ट लम्बाई की वह वस्तु जिसका व्यवहार करके स्थिर किया जाय कि कोई वस्तु कितनी लम्बी-चौड़ी आदि है। नापने की वस्तु। मानदंड। नपना। पैमाना।

नापजोख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नापने या तौलने की क्रिया। १-परिमाण या मात्रा जो नाम या तौलकर स्थिर की जाय।

नापतौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नापजोख'।

नापदान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाबदान'।

नापना [क्रि. स.] (हिं.) १-लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई आदि का हिसाब लगाना। मापना २-किसी बात की गहराई या थाह का या किसी व्यक्ति की जानकारी आदि का पता लगाना।

गरदन नापना–धक्का देकर हटाना या बाहर निकालना। *सिर नापना*–सिर काटना।

ना-पसंद [वि.] (फा.) १-जो पसन्द न हो। अनसुहाता। २-अरुचिकर। अप्रिय।

ना-पाक [वि.] (फा.) १-अ-पवित्र। भ्रष्ट। अशुचि। २-मैलाकुचैला।

नापाकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अपवित्रता। अशुद्धता

नापायदार [वि.] (फा.) १-जो अधिक चलने या ठहरने वाला न हो। क्षणभंगुर। २-जो दृढ़ या मजबूत न हो।

नापायदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अस्थायित्व। क्षणभंगुरता। २-दृढ़ता।

ना-पास [वि.] (हिं.) जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण।

नापित [संज्ञा पु.] (सं.) सिर के बाल मूँड़ने या काटने तथा नाखून आदि का काम करने वाला व्यक्ति। नाई। नाऊ। हज्जाम।

नापितशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान (या दूकान) जहाँ हजामत बनाई जाती है।

नाफ़रमाँ [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का गुलेलाला जो कुछ नीलापन लिये होता है।

नाफा [संज्ञा पु.] (फा.) कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृग की नाभि में होती है। मृगमद-कोश।

नाबदान [संज्ञा पु.] (फा.) वह नाली जिससे होकर घर का मैला पानी आदि बाहर बहकर जाता है। पनाला। नरदा।

नाबदान में मुँह मारना–घृणित कर्म करना।

नाबालिग [वि.] (अ., फा.) जो अभी पूरा जवान न हुआ हो। अ-वयस्क। अप्राप्तवयस्क।

नाबालिगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नाबालिग रहने की अवस्था।

नाबूद [वि.] (फा.) जिसका अस्तित्व न रहा हो। नष्ट। ध्वस्त।

नाभ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चन्द्रमा का प्रकाश। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाभि। ढोंढी। धुनी। २-शिव का एक नाम। ३-एक सूर्यवंशी राजा जो भागीरथ के पुत्र थे। ४-अस्त्रों का एक संहार।

नाभक [संज्ञा पु.] (सं.) हरीतकी। हड़।

नाभस [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग।

नाभा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाभादास'।

नाभादास [संज्ञा पु.] (हिं.) भक्तमाल के रचयिता एक प्रसिद्ध भक्तकवि।

नाभाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

नाभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे। २-मार्कण्डेय पुराण के अनुसार कारुष वंश के एक राजा जो दिष्ट के पुत्र थे।

नाभागारिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) हरिवंश के मतानुसार वैवस्वतमनु के एक पुत्र का नाम।

नाभारत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े की नाभि के नीचे एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

नाभि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पहिये का मध्य भाग। चक्रमध्य। २-जरायुज जंतुओं के पेट पर का मध्य का वह गड्ढा जहाँ गर्भावस्था में जरायुनाल रहता है। ढोंढी। ३-कस्तूरी। ४-पृथ्वी के भीतरी मध्यभाग का कल्पित अंश या केन्द्र। ५-बीच में रहने वाला वह भाग या वस्तु जिसके चारों ओर दूसरे भाग अंग या वस्तुएँ आकर एकत्रित होती या मिलती हैं। समष्टि या घनपदार्थ का केन्द्र। न्यूक्लिअस। [संज्ञा पु.] १-प्रधान राजा। २-प्रधान व्यक्ति या वस्तु। ३-गोत्र। ४-क्षत्रिय। ५-महादेव। ६-प्रियव्रत राजा के पौत्र का नाम।

नाभिकंटक, नाभिकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) निकली हुई ढोंढी।

नाभिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटभीवृक्ष।

नाभिगुड़क [संज्ञा पु.] (सं.) नाभिकाआवर्त। तुंदी का उभर अंश।

नाभिगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्रियव्रत राजा के पुत्र का नाम।

नाभिगोलक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नाभिगुड़क'

नाभिच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) तुरत के जन्मे हुए बच्चे के नाल काटने की क्रिया।

नाभिछेदन [संज्ञा पु.] (सं.) तुरन्त के जन्मे हुए बच्चे के नाल काटने की क्रिया।

नाभिज [संज्ञा पु.] (सं.) (विष्णु की नाभि से उत्पन्न) ब्रह्मा।

नाभिनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभी की नाड़ी जो गर्भकाल में माता की रसवहा नाड़ी से जुड़ी रहती है।

नाभिपाक [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चों की ढोंढी पकने का एक रोग।

नाभिभू [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

नाभिल [वि.] (सं.) १-नाभि। सम्बन्धी। उभरी हुई नाभी वाला।

नाभिवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) नाभिछेदन। नाल काटने की क्रिया।

नाभिवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) जंबूद्वीप के नौ वर्षों में से एक भारतवर्ष।

नाभिशोथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें नाभि सूज जाती है।

नाभिसंबंध, नाभिसम्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) गोत्र-सम्बन्ध।

नाभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'नाभि'।

नाभील [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्रियों के कमर नीचे का भाग। ऊरुसंधि। २-नाभि की गहराई। नाभि का गड्ढा। ३-कृच्छ्र। कष्ट।

नाभ्य [वि.] (सं.) नाभि-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नामंज़ूर [वि.] (फ़ा., अ.) जो मंजूर न हो। जो कबूल न किया गया हो। अस्वीकृत।

नाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह शब्द जिससे किसी वस्तु व्यक्ति या समूह का बोध हो। किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का निर्देश करने वाला शब्द। संज्ञा। अभिख्या। आख्या। आह्वा। २-सुनाम। प्रसिद्धि। ख्याति। यश। कीर्त्ति। ३-बहीखाते का वह विभाग या अंश जिसमें किसी को दिया हुआ धन या माल लिखा जाता है।

नाम उछालना-निन्दा या बदनामी करना। *नाम उठना या उठ जाना*-१-नाम, चिह्न या यादगार मिटजाना। २-मर जाना। *नाम कमाना*-बड़ाई या प्रसिद्ध पाना। *नाम कर जाना*-स्मारक या यादगार छोड़ जाना। *नाम करना*-१-प्रसिद्धि प्राप्त करना। २-काम को पूरी तरह करना। ३-पुकारने के लिए नाम निश्चित करना। ४-दूसरे के सिर दोष मढ़ना *नाम का*-१-नामधारी। २-कहने भर को, काम या उपयोग का नहीं। *नाम के लिए*-१-थोड़ा-सा। २-दिखाने भर को। काम के लिए नहीं। *नाम को*-कहने-सुनने भर को। ऐसा नहीं जिससे काम चल सके। २-बहुत थोड़ा। तनिक-सा। *नाम को नहीं*-१-अणुमात्र भी नहीं कहने सुनने को भी नहीं। २-एक भी नहीं। *नाम चढ़ना या चढ़ाना*-नाम लिखना या लिखा जाना। *नाम चमकना*-यश या प्रसिद्धि फैलना *नाम चलना*-यादगार बनी रहना। *नाम चार का*-१-नाम-मात्र को। बहुत थोड़ा। २-कहने सुनने भर को।

नाम जगाना-ऐसा कार्य करना जिससे लोगों में याद बनी रहे। *नाम जपना*-१-बारबार नाम का उच्चारण करना। २-नाम स्मरण करना। ईश्वर या देवता का स्मरण करना। *नाम डालना*-खाते में यह लिखना कि अमुक व्यक्ति को इतना धन या माल दिया गया। *नाम डूबना*-१-यादगार न रहना। २-नाम कलंकित होना। *नाम देना*-१-नामकरण करना। २-देवता के नाम का मंत्र देना। *नाम धरना*-१-नामकरण करने वाला। २-पिता बाप। (किसी का) *नाम धरना*-१-नाम स्थिर करना। २-दोष लगाना। ३-अपनी वस्तु का मोल मांगना। (किसी को) *नाम धरना*-१-बदनाम करना। २-दोष निकालना। ऐब बताना। *नाम धराना*-१-नामकरण कराना। २-बदनामी कराना। *नाम न लेना*-अरुचि, तृष्णा, भय आदि के कारण संकल्प या विचार तक न करना। *नाम निकल जाना*-किसी (भली अथवा बुरी बात के लिए नाम प्रसिद्ध हो जाना। *नाम निकलना*-किसी बात के लिए नाम प्रसिद्ध होना। २-मंत्र आदि की युक्ति से किसी वस्तु को चुराने वाले का नाम प्रकट होना। ३-नाम का कहीं प्रकट या प्रकाशित होना। *नाम निकलवाना*-२-बदनामी करवाना। २-किसी नामावली में से नाम कटवाना। *नाम निकालना*-यश फैलना या बदनामी करना। २-मंत्र-तंत्र आदि द्वारा चोर का नाम प्रकट करना। ३-किसी नामावली से नाम काटना।

(किसी के) *नाम पर बैठना*-किसी के भरोसे सन्तोष करके चुपचाप बैठे रहना। *नाम पड़ना* १-नाम होना। २-नाम रखा जाना। बही में नाम लिखा जाना। ३-नाम रखा जाना। *नाम पर जान देना, मारना या मिटाना*-शौहरत यश चाहना। *नाम पर धब्बा लगाना*-कलंक या बदनामी होना। *नाम बाकी रहना*-१-प्रसिद्धि मात्र रह जाना। २-यादगार बनी रहना। *नाम बिकना*-नाम की प्रसिद्धि से कदर होना। *नाम बिगाड़ना*-१-नाम को छोटा या बुरा करके बोलना। २-बदनामी कराना। ३-बदनाम करना। *नाम बेच डालना*-प्रतिष्ठा के विरुद्ध कार्य करना। *नाम मात्र*-नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। *नाम मिटना*-१-नाम जाता रहना। २-नाम तक शेष न रहना। कोई चिह्न न रह जाना। *नाम रखना*-१-नाम निश्चित करना। २-कीर्ति बनाये रखना। ३-बदनामी करना। ४-दोष निकालना। *नाम लगना या लगाना*-अपराध, कलंक सिर मढ़ा जाना या मढ़ना। *नाम लेकर*-१-नाम लेकर। २-स्मरण करके। *माम लेना*-१-नाम पुकारना। २-देवता आदि का नाम जपना। ३-गुण गाना। ४-चर्चा करना। ५-दोष लगाना, बदनामी देना। *नाम से*-१-चर्चा से। २-यह बताकर कि कोई बात किसी की ओर से है। ३-हकदार या मालिक बनाकर। ४-नाम के प्रभाव से। ५-नाम लेते ही। *नाम से काँपना*-नाम सुनते ही डर जाना। *नाम से बिकना*-नाम की प्रसिद्धि से आदर आना। *नाम से पुजना*-नाम की प्रसिद्धि से आदर पाना। *नाम ही नाम रह जाना*-केवल प्रसिद्धि रह जाना। *नाम होना*-१-कलंक लगाना। २-नाम प्रसिद्ध होना।

नामक [वि.] (सं.) नाम से प्रसिद्ध। नामवाला।

नामकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहचान के लिये नाम निश्चित करने की क्रिया। नाम रखने का काम। २-हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक का नाम रखा या स्थिर किया जाता है।

नामकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-नामकरण-संस्कार। २-जैन शास्त्रों के अनुसार कर्म का वह भेद जिससे जीव गति और जाति आदि पर्यायों का अनुभव करता है।

नामकीर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर के नाम का जप। भगवान का भजन।

नामग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) नाम और पता।

नामचढ़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह क्रिया जिसमें सम्पत्ति या जायदाद आदि के स्वामित्व पर से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढ़ाया जाता है। नामांतर। दाखिल-खारिज। *म्यूटेशन*।

नाम-जद [वि.] (फ़ा.) १-जिसका किसी बात के लिये निश्चित किया या चुना गया हो। नामांकित। २-प्रसिद्ध। मशहूर।

नाम-जदगी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) कोई कार्य करने के लिये अथवा किसी चुनाव आदि में खड़े होने के लिये किसी का नाम निश्चित किया जाना।

नामतः [क्रि. वि.] (सं.) नाम अथवा नाम के उल्लेख से।

नामदार [वि.] (फ़ा.) जिसका बड़ा नाम हो। प्रसिद्ध। नामी।

नामदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध भक्त जो वामदेवजी के नाती थे। यह श्रीकृष्ण के उपासक थे। २-महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कवि जो सन् १३०० के लगभग वर्त्तमान थे।

नामद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहन-सुदी तीज को गौरी, काली, उमा, भद्रा, दुर्गा, कांति, सरस्वती, मंगला, वैष्णवी, लक्ष्मी, शिवा तथा नारायणी इन बारह देवियों की पूजा होती है और व्रत किया जाता है।

नामधन [संज्ञा पु.] (सं.) मल्लार, शंकराभरण, विलावल सूदे और केदारे के योग से बनने वाला एक संकर राग।

नामधराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बदनामी। निंदा। अपकीर्त्ति।

नाम-धातु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याकरण में वह नाम या संज्ञा जो कुछ क्रियाओं में धातु का काम देती है।

नामधाम [संज्ञा पु.] (हिं.) नाम और पता। नामग्राम। पता-ठिकाना।

नामधारक [वि.] (सं.) केवल किसी नाम को धारण करने वाला। नाम-मात्र का।

नामधारी [वि.] (हिं.) नाम धारण करने वाला। नामवाला। नामक।

नामधेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-नामकरण। २-नाम निर्देश करने वाला शब्द। नाम। [वि.] (सं.) नामवाला। नाम का।

नामन् [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या व्यक्ति का निर्देश करने वाला शब्द। संज्ञा। आख्या। अभिख्या। आह्व।

नामनामिक [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

नाम-निक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) नाम-स्मरण (जैन)।

नाम-निर्देश [संज्ञा पु.] (सं.) नाम लेकर बतलाना

नाम-निवेश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य विशेष के लिए किसी बही या नामावली में किसी का नाम जाना। एनरोलमेंट।

नामनिशान [संज्ञा पु.] (हिं.) चिह्न। पता। ठिकाना।

नाम-पट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह पट्ट या तख्ता जिस पर किसी व्यक्ति दुकान या संस्था आदि का नाम लिखा रहता है। साइनबोर्ड।

नामबद्ध [वि.] (सं.) नाम में बंधा या बाँधा हुआ नाम लिखा हुआ।

नामबद्ध करना–फौज में भरती करना।

नामबोला [संज्ञा पु.] (हिं.) विनय तथा भक्ति-पूर्वक नाम स्मरण करने वाला। नाम जपने-वाला।

नाममात्र [वि.] (हिं.) केवल नाम के लिए।

नाम-माला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नामों की तालिका। २–एक प्रकार का कोष।

नाममुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अंगूठी पर खोदा हुआ नाम। २–नाम खुदी या लिखी हुई मुहर।

नामयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वह यज्ञ जो केवल नाम या धूमधाम के लिए किया जाय।

नामरूप [संज्ञा पु.] (सं.) सबके आधार–स्वरूप अगोचर वस्तु तत्व के परिवर्तनशील नाना-रूप या आकार जो इन्द्रियों को जान पड़ता है और उनके भिन्न नाम जो भेद-ज्ञान के अनुसार रखे जाते हैं। (वेदान्तमतानुसार) एक ही अगोचर नित्य तत्व है। जो नाना प्रकार के भेद दिखाई पड़ते हैं वे वास्तविक नहीं हैं। वह केवल रूपों आकारों के कारण हैं। जो इन्द्रिय तथा मनके संस्कार-मात्र हैं। जिस प्रकार सोना और गहना दो अलग-अलग नाम हैं एकीकरण द्वारा आत्मा सोने और गहने में सामान्य गुण वाला एक ही पदार्थ देखते हैं।

नामर्द [वि.] (फ़ा.) १–जिसमें पुरुषत्व की कमी हो। नपुंसक। क्लीव। २–भीरु। डरपोक। कायर।

नामर्दा [वि.] (फ़ा.) देखो 'नामर्द'।

नामर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–नपुंसकता क्लीवता। २–कायरपन। भीरुता। साहस का अभाव।

नामलिखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी पंजि तालिका आदि में नाम लिख जाना। एनरोलमेंट। २–इस प्रकार नाम लिखाने के लिए लिया या दिया जाने वाला धन।

नामलेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नाम लेने या स्मरण करने वाला। उत्तराधिकारी। संतति। औलाद।

नामवर [वि.] (फ़ा.) नामी। प्रसिद्ध। मशहूर।

नामवरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) प्रसिद्धि। कीर्त्ति। शुहरत।

नामवर्जित [वि.] (सं.) १–नामरहित। २–मूढ़। मूर्ख।

नामवाचक [वि.] (सं.) नाम बतलाने वाला।

नामशेष [वि.] (सं.) १–जिसका केवल नाम बच रहा हो। २–नष्ट। ध्वस्त। ३–मृतक। मरा हुआ।

नामसत्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या व्यक्ति का ठीक-ठीक नाम-कथन चाहे वह नाम उसकी अवस्था या गुण के अनुकूल न हो। (जैन)।

नामांक, नामाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) किसी सूची में आये हुए बहुत से नामों में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक। रोल नम्बर। [वि.] जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।

नामांकन, नामाङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी पंजी, तालिका आदि में नाम लिखा जाना। एनरोलमेंट। २–किसी कार्य विशेषतः किसी निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना। नाम-जदगी। नॉमिनेशन।

नामांकना [क्रि. अ.] (हिं.) नाम जाना।

नामांकित, नामाङ्कित [वि.] (सं.) १–जिस पर नाम लिखा या खुदा हो। २–जिसका किसी काम या पद के लिए नाम लिखा गया हो। नामजद। ३–प्रसिद्ध। मशहूर।

नामांतर, नामान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

नामांतरण, नामान्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संपत्ति पर चढ़े हुए नाम को हटाकर उसके स्थान पर दूसरा नाम लिखा या चढ़ाया जाना। दाखिल-खारिज। म्यूटेशन।

नामांतरण-करणिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संपत्ति पर चढ़े हुए नाम को हटाकर उसके स्थान पर दूसरा नाम लिखने वाला लिपिक। दाखिल-खारिज करने वाला कर्मचारी। म्यूटेशन-क्लर्क।

नामांतरणीय, नामान्तरणीय [वि.] (सं.) १–दाखिल-खारिज करने योग्य। नामांतरण करने योग्य। २–विकारशील।

नामा [वि.] (सं.) नामवाला। नामधारी। [संज्ञा पु.] (सं.) भक्त नामदेव।

ना-माकूल [वि.] (फ़ा., अ.) १–अयोग्य। नालायक। २–अयुक्त। अनुचित।

नामापराध [संज्ञा पु.] (सं.) नाम लेकर गाली देना। नाम निकालना अर्थात् बदनामी करना।

नामाभिधान [संज्ञा पु.] (सं.) १–अपना नाम बतलाने की क्रिया। २–शब्दकोश।

ना-मालूम [वि.] (फ़ा.) जो मालूम न हो। अज्ञात

नामावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बहुत से व्यक्तियों या वस्तुओं के नामों की तालिका। २–वह कपड़ा जिसपर रामकृष्ण आदि के नाम छपे रहते हैं।

नामिक [वि.] (सं.) १–नाम-सम्बन्धी। २–संज्ञा-सम्बन्धी। ३–जो केवल नाम के लिए या संकेत-रूप में हो और जिसका वास्तविक स्थिति या तथ्य से कोई संबंध न हो। नाम भर का। नॉमिनल।

नामित [वि.] (सं.) झुकाया हुआ।

नामी [वि.] (हिं.) १–नामधारी। नामवाला। २–जिसका बड़ा नाम हो। प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

नामीकरण [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी कार्य या निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना। नामजदगी। नॉमिनेशन

नामीकरण-पत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी कार्य या निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए अपना नाम पता आदि भरने का छपा हुआ कागज। नॉमिनेशन-पेपर।

नामीकर्त्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) नामीकरण या नामांकन करने वाला व्यक्ति। आये हुए नामीकरण-पत्र में नाम, पता और सदस्य की योग्यता आदि के संबंध में जाँच करने वाला व्यक्ति। मनोनेता। नोमिनेटर।

नामीकृत [वि.] (सं.) नामीकरण या नामांकन किया हुआ। मनोनीत। नॉमिनेटेड। [संज्ञा पु.] (सं.) नामीकरण या नामांकन किया हुआ व्यक्ति। नामजद आदमी। मनोनीत व्यक्ति। नॉमिनेटी।

नामीगिरामी [वि.] (फ़ा.) प्रसिद्ध। विख्यात।

ना-मुनासिब [वि.] (फ़ा.) अनुचित। अयोग्य।

न-मुमकिन [वि.] (फ़ा.,अ.) जो कभी न हो सके। असंभव।

नामूसी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अप्रतिष्ठा। निंदा। बदनामी।

ना-मेहरबान [वि.] (फ़ा.) जो मेहरबान न हो। अकृपालु।

नाम्ना [वि.] (सं.) [स्त्री. नाम्नी] नामवाला। नामधारी।

नाम्नी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] नामवाली।

नाम्य [वि.] (सं.) लचीला। झुकने योग्य।

नायँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाम'। [अव्य.] देखो 'नहीं', 'नाहीं'।

नाय [संज्ञा पु.] (सं.) १–नेता। मुखिया। २–नेतृत्व। ३–नय। नीति। ४–सावधान। उपाय। युक्ति।

नायक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. नायिका] १–जनता को किसी ओर प्रवृत्त करने का प्रभाव रखने या अपने कहे पर चलाने वाला व्यक्ति। नेता। अगुआ। २–अधिपति। स्वामी। मालिक। ३–श्रेष्ठ पुरुष। जननायक। ४–साहित्य में शृंगार का आलम्बन अथवा साधक रूप यौवन-संपन्न पुरुष जो किसी

का काव्य या नाटक का चरित्र नायक हो। (साहित्यदर्पण के मतानुसार दानशील, कृती, सुश्री, रूपवान, युवक, कार्यकुशल, लोकरंजक, तेजस्वी, पंडित तथा सुशील व्यक्ति को नायक कहते हैं। नायक चार प्रकार के होते हैं—धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित और धीरप्रशांत। आत्मश्लाघा-रहित, क्षमाशील, गंभीर, महा बलशाली, स्थिर तथा विनय संपन्न को धीरोदात्त, मायावी, प्रचंड, अहंकार तथा आत्मश्लाघायुक्त को धीरोद्धत, निश्चिन्त, मृदु तथा नृत्यगीत प्रिय को धीरललित और त्यागी तथा कृति को धीरप्रशांत कहते हैं। इन चार नायकों के चार भेद और है। यथा–अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट और शठ। ५–हार के बीच का रत्न या नग। ६—नायक। चमूपति। ७–संगीतकला में निपुण पुरुष। संगीतज्ञ। कलावंत। ८–एक वर्णवृत्त का नाम। ९–एक राग जो दीपकराग का पुत्र माना जाता है।

नायक-पोत [संज्ञा पु.] (सं.) नौ सेनापति की पताका फहराने वाला तथा नेतृत्व करने वाला वह पोत या जल जहाज जो जहाजी बेड़े को समादिष्ट करता रहता है। *फ्लैगशिप*।

नायका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह वृद्धा स्त्री जो किसी वेशा को अपने पास रखकर उससे पेशा कराती हो। २–कुटनी। दूती। ३–देखो 'नायिका'।

नायकाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृप।

नायकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राग का नाम।

नायकीकान्हड़ा [संज्ञा पु.] (?) एक राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

नायकीमल्लार [संज्ञा पु.] (हिं) सपूर्णजाति का एक राग जिसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

नायड़ [संज्ञा स्त्री.] (?) कोचीन के उत्तर भाग में रहने वाली एक उत्कृष्ट जाति।

नायत [संज्ञा पु.] (डि.) चिकित्सक। वैद्य।

नायन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नाई या नापित की पत्नी। २–नाईजाति की स्त्री। ३–संपन्न या राजघरानों में महिलाओं की वेणी गूंथने वाली स्त्री।

नायब [संज्ञा पु.] (अ.) १–किसी की ओर से काम करने वाला। मुख्तार। २–सहायक। सहकारी।

नायबी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–नायब का काम। २–नायब का पद।

नायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रूप, गुण-संपन्न वह स्त्री जो शृङ्गाररस का आलम्बन या किसी काव्य-नाटक आदि की प्रधान पात्री। (प्रकृति-अनुसार नायिकाओं के तीन भेद होते हैं—उत्तमा, मध्यमा और अधमा। प्रिय के अहितकारी होने पर भी हितकारिणी स्त्री को उत्तमा, प्रिय के हित या अहित करने पर हित या अहित करने वाली स्त्री को मध्यमा तथा प्रिय के हितकारी होने पर अहित करने वाली को अधमा नायिका कहते हैं। धर्मानुसार नायिका तीन प्रकार की होती हैं–स्वकीय, परकीया और सामान्या। अपने ही पति से अनुराग रखने वाली को स्वकीया पर पुरुष से प्रेम करने वाली को परकीया तथा धन के लिए प्रेम करने वाली को सामान्या नायिका कहते हैं। वयः क्रमानुसार स्वकीया तीन प्रकार की होती है—मुग्धा, मध्या तथा प्रौढ़ा। काम चेष्टा रहित अंकुरित यौवना को मुग्धा, अवस्था के कारण जिसमें लज्जा और कामवासना समान हो उसे मध्यमा तथा कामकला में पूर्णरूप से कुशल नायिका या स्त्री को प्रौढ़ा कहते हैं। परकीया के दो भेद होते हैं–ऊढा और अनूढा। पर पुरुष से प्रेम करने वाली विवाहिता स्त्री को ऊढा और अविवाहिता हो तो उसे अनूढा या कन्या कहते हैं)।

नारंग, नारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १–नारंगी। २-गाजर। ३–यमजप्राणी। ४–पिप्पलीरस।

नारंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १–नीबू की जाति का एक पेड़ जिसके फल मीठे, सुगंधित और रसीले होते हैं। २–नारंगी के छिलके के समान पीला रंग। पीलापन।

[वि] (हिं.) पीलापन लिये लाल रग का।

नार [संज्ञा स्त्री] (हिं) १–नाड़। गला। गरदन। ग्रीवा। २–जुलाहों की ढरकी। नाल।

नार नवाना–१–गरदन झुकाना। २–लज्जित होने, चिंता करने या रूठने का भाव प्रकट करना। *नार नीची करना*–देखो 'नार नवाना'

&[संज्ञा पु] (हिं) १–उल्वनाल। आँवल-नाल। २–नाला। ३–बहुत मोटा रस्सा। ४–सूत की डोरी। नारा। नाला। इजारबंद। ५–जुआ जोड़ने की रस्सी या तस्मा। ६–चरने के लिए जाने वाले चौपायों का झुन्ड। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'नारी'। [संज्ञा पु.] (सं.) १–मनुष्यों की भीड़। २–तुरत का जन्मा हुआ गाय का बछड़ा। ३–जल। पानी। ४–सोंठ। शुंठी। [वि.] १–नर-सम्बन्धी। मनुष्य-सम्बन्धी। २–परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाली।

नारक [संज्ञा पु.] (सं.) १–नरक। २–नरक में रहने वाला प्राणी।

नारकिक [वि.] (सं.) नरक का। नरक-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) नरकवासी।

नारकी [वि.] (सं.) १–नरक में जाने योग्य। बहुत बड़ा पापी। २–नरक में रहने वाला।

नारकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार का कीड़ा। २–किसी को आशा देकर निराश करने वाला अधम मनुष्य।

नारकीय [वि.] (सं.) नरक का। [संज्ञा पु.] नरक निवासी।

नारद [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र थे वह बड़े हरिभक्त और कलह-प्रिय थे (कुछ लोगों का मत है कि नारद किसी व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि साधुओं के एक संप्रदाय का नाम था)। २–विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम। ३–एक प्रजापति का नाम। ४–कश्यपऋषि की पत्नी से उत्पन्न एक गंधर्व का नाम। ५–चौबीस बुद्धों में से एक का नाम। ६–शाकद्वीप का एक पर्वत। [वि] जल देने वाला। २–वंशज।

नारदपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) १–अठारह महा-पुराणों में से एक। २–बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण।

नारदसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक धर्मशाला का नाम।

नारदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊख की जड़।

नारदी [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

नारदीय [वि.] (सं) नारद का। नारद-संबंधी।

नारना [क्रि. स.] (हिं.) थाह लगाना। भाँपना। ताड़ना।

नारफ़िक [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार के विलायती घोड़े जो डीलडौल में बड़े सुन्दर और मजबूत होते है।

नारबेवार [संज्ञा पु.] (हिं.) आँवलनाल।

नारमन् [संज्ञा पु.] (अ.) १–फ्रांस के नारमंडी प्रदेश का निवासी। २–जहाज का रस्सा बाँधने का रस्सा।

नारवे [संज्ञा पु.] यूरोप के एक देश का नाम।

नारसिंह [संज्ञा पु.] (सं) १–नरसिंह रूपधारी विष्णु। २–एक तंत्र का नाम। ३–वह उप पुराण जिसमें नरसिंह-अवतार की कथा है।

नारसिंही [वि.] (हिं.) नारसिंह संबंधी।

नारसिंही टोना–बड़ा गहरा टोना।

नारांतक, नारान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के एक राक्षस पुत्र का नाम।

नारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नाड़ा। नीवी। इजार बंद। २–लाल रंगा हुआ सूत जो पूजन देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली। कुसुम्भ सूत्र। ३–वह रस्सी जो हल के जुवे में बँधी रहती है। ४-बरसाती पानी बहने का प्राकृतिक मार्ग। छोटी नदी।

नाराइन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नारायण'।

नाराच [संज्ञा पु.] (सं.) १–लोहे का बाण। २-दुर्दिन। ऐसा दिन जिसमें बादल घिरा हो, अन्धड़ चले तथा इसी प्रकार के और उपद्रव हों। ३–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और चार रगण होते हैं। ४–चौबीस मात्राओं का एक छन्द।

नाराचघृत [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक घृत जो उदर रोग में दिया जाता है।

नाराचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सोनारों का सोना चाँदी तौलने का काँटा। २–एकवर्ण

वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ-आठ अक्षर होते हैं।

नाराची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुनारों का काँटा।

नाराज [वि.] (फा.) अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

नाराजगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अप्रसन्नता। कोप रोष।

नाराजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अप्रसन्नता। कोप। रोष।

नारायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। भगवान ईश्वर। २-पूस का महीना। ३-'अ' अक्षर का नाम। ४-कृष्ण। यजुर्वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद का नाम। ५-एक ऋषि का नाम। ६-एक अस्त्र का नाम।

नारायणक्षेत्र [संज्ञा पु] (सं.) गंगा के प्रवाह से से चार हाथ तक की भूमि।

नारायणतेल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध आयुर्वैदिक तेल।

नारायणप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-सहदेव।

नारायणवलि [संज्ञा पु.] (सं) वह कर्म जो पापियों के मरने पर प्रायश्चित रूप में किया किया जाता है।

नारायणास्त्र [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु के चार अस्त्र शंख, चक्र, गदा और खंग।

नारायणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-लक्ष्मी। ३-गंगा। ४-सतावर। ५-श्रीकृष्ण की सेना का नाम जो दुर्योधन को युद्ध में सहायता के लिए दी गई थी। [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

नारायणीय [वि.] (सं.) नारायण-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के शांतिपर्व में एक उपाख्यान जिसमें नारद और नारायण ऋषि की कथा है।

नाराशंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों के वे मंत्र जिनमें कुछ विशेष मनुष्यों की प्रशंसा होती है। दान। स्तुति। प्रशस्ति। २-वह चमचा जिसमें पितरों को सोमपान दिया जाता है। ३-पितरों के लिए चमचे में रखा हुआ सोम। पितर। [वि.] (सं.) ४-जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो। प्रशंसा या स्तुति-सम्बन्धी।

नाराशंसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनुष्यों की प्रशंसा। २-वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं के दान आदि की प्रशंसा की है।

नारि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नारी'।

नारिक [वि.] (सं.) १-जल-सम्बन्धी। जलका। जलीय। २-आध्यात्मिक। आत्मा-संबन्धी।

नारिकेर [संज्ञा पु.] (सं.) नारिकेल। नारियल।

नारिकेल [संज्ञा पु.] (सं) नारियल।

नारिकेलचीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं) नारियल की गिरी की बनी हुई एक प्रकार की खीर या मिठाई।

नारिकेलखंड, नारिकेलखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल की गिरी से बनने वाली एक प्रकार की औषधि।

नारिदा* [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'नाबदान'।

नारियल [संज्ञा पु.] (हिं) १-खजूर की जाति का एक वृक्ष जो पचास साठ हाथ तक ऊँचा लम्बाकार होता है। इसके पत्ते खजूर के समान होते हैं। इसके फलों के ऊपर बहुत कड़ा रेशेदार छिलका होता है और फलों के भीतर की गिरी मीठी होती है। वैद्यक के अनुसार इसका फल, शीतल, दुर्जर वृष्य तथा पित्त और दाहनाशक होता है। ताजे फल का पानी शीतल, हृदय को हितकारी, और वीर्यवर्द्धक होता है। २-नारियल का हुक्का *नारियल का खोपड़ा*-नारियल की कड़ी गुठली की भीतरी तह। *नारियल तोड़ना*-नारियल तोड़कर लड़का या लड़की होने का शकुन निकालना। (मुसलमानों की एक रीति)।

नारियल-पूर्णिमा [संज्ञा स्त्री] (देश.) बंबई प्रांत में होने वाला एक त्योहार जिसमें लोग नारियल लेकर समुद्र में फेंकते हैं।

नारियली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नारियल का खोपड़ा। २-नारियल का हुक्का। ३-नारियल की ताड़ी।

नारी [संज्ञा स्त्री] (सं) १-स्त्री। औरत। २-तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति। (हिं.) १-पानी के किनारे रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया जिसके ललाई लिये भूरे रंग के पैर और पीठ तथा पूंछ भी भूरी होती है। २-हल के जूए में बाँधने की रस्सी। नार। *+ १-देखो नाड़ी। २-देखो 'नाली'।

नारीकवच [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यवंशीयमूलक राजा का नाम।

नारीकेल [संज्ञा पु.] (सं) नारियल।

नारीच [संज्ञा पु.] (सं.) नालिता नामक एक प्रकार का शाक।

नारीतरंगक, नारीतरङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों के चित्त को चंचल करने वाला पुरुष। जार। व्यभिचारी।

नारीतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ जहाँ पाँच अप्सराएं ब्राह्मण के शाप से जलजंतु हो गई थीं। अर्जुन ने इनका शाप से उद्धार किया था।

नारीदूषण [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों के पांच दोषणीय कार्य। जैसे-सुरापान, दुर्जन संसर्ग, पतिविरह, भ्रमण, अन्य गृह में वास।

नारीप्रसंग, नारीप्रसङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) १-लम्पटता। २-व्यभिचार।

नारीमुख [संज्ञा पु] (सं.) वृहत्संहिता के मतानुसार कूर्म विभाग से नैर्ऋत की ओर एक देश।

नारीयान [संज्ञा पु] (सं) जनानी सवारी।

नारीरत्न [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तम स्त्री।

नारीष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लिका। चमेली। [वि.] (सं) जो स्त्रियों को प्रिय हो।

नारीष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधर्व का नाम।

नारुंतुद, नारुन्तुद [वि.] (सं.) जिसके शरीर पर किसी प्रकार का आघात न लग सके। अनाहत।

नारू [संज्ञा पु.] (देश.) १-कटि के नीचे के भाग में होने वाला एक रोग जिसमें टाँग जाँघ आदि में से सूत-सा एक कीड़ा निकलता है। इसे नहरुआ भी कहते हैं। २-जूँ। ढील। +[संज्ञा पु.] (हिं.) वह बुआई जो क्यारियों में होती है।

नार्तिक [वि.] (सं.) खूब नाचने वाला।

नार्पत्य [वि.] (सं.) नृप-सम्बन्धी। राजा से संबंध रखने वाला।

नार्मत [संज्ञा पु.] (सं) पूर्व पुरुष के नाम से उत्पन्न।

नार्मद [संज्ञा पु.] (सं.) वह शिवलिंग जो नर्मदा में पाया जाता है। [वि.] (सं) नर्मदा सम्बंधी नर्मदा नदी का।

नार्मर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर जिसका संहार इन्द्र ने किया था। (ऋग्वेद)।

नार्मिन [वि.] (सं) लचीला। सहज में झुकने वाला।

नार्यंग, नार्यङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) नारंगी का पेड़

नार्यतिक्त [संज्ञा पु.] (सं) चिरस्यता।

नालंदा, नालन्दा [संज्ञा पु] एक प्राचीन बौद्धक्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कोस दक्षिण तथा बड़गांव से ग्यारह कोस पश्चिम में स्थित था। किसी-किसी के मतानुसार यह स्थान आजकल के तलोढ़ा की जगह था। पहले-पहल महाराज अशोक ने नालंदा में एक मठ स्थापित किया। चीनी यात्री उएनत्सांग ने अपने विवरण में लिखा है कि कुछ समय पश्चात् शकर तथा मुद्गलगोमी नामक दो ब्राह्मणों ने इस मठ को फिर से बड़े विशाल आकार का बनवाया। आजकल मिलने वाले खंडहरों से इसकी विशालता स्पष्ट हो जाती है। इसमें इधर-उधर जो दीवारें खड़ी मिलती हैं उनमें से तीस और बत्तीस-बत्तीस हाथ ऊँची हैं। कहा जाता है कि इस विद्यापीठ में नागार्जुन ने कुछ दिनों तक रहकर शंकर ब्राह्मण से शास्त्रज्ञान प्राप्त किया था। सन् ६३७ ईसवी में प्रसिद्ध चीनी यात्री उएनचांग ने इस विद्यापीठ में प्रज्ञाभद्र नामक आचार्य से विद्याध्ययन किया था। उस समय में इतना बड़ा विद्यापीठ और मठ भारत में अन्यत्र कहीं

नहीं था। यहां पर सैकड़ों आचार्य तथा दस हजार से ऊपर-ऊपर याजक और शिष्य या छात्र निवास करते थे। जिस समय काशी में बुद्धपक्ष नामक नृप राज्य करते थे उस समय इस मठ में आग लगी और बहुत से ग्रन्थ जल गये।

नालंब* [वि.] (हिं.) जिसका कोई अवलंब या सहारा न हो। निरवलंब। असहाय।

नालंबी, नालम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महादेवजी की वीणा का नाम।

नाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली और लम्बी डंडी। २-पौधे का डंठल। कांड। ३-गेहूँ जौ आदि की बाल जिसमें दाने होते हैं। ४-नली। नाल। ५-सुनारों की फुंकनी। ६-बंदूक की नली। बंदूक के आगे की ओर का वह पोला डंडा जिसमें से गोली निकलकर जाती है। ७-जुलाहों की नली जिसमें सूत लपेटकर रखते हैं। छेंडा। छुच्छा। छूंछा। ८-कलमों के भीतर से निकलने वाला रेशा। ९-रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भाशय से मिलती है तथा दूसरे गर्भस्थ बच्चे की नाभि से। *क्या किसी की नाल काटी है*-क्या किसी की दाई है। क्या किसी को जनाने वाली है। *नाल गड़ना*-१-कोई स्थान जन्मस्थान के समान प्रिय होना। २-किसी स्थान पर अधिकार होना। *नाल छीलना*-नाल काटना। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-घोड़ों की टाप और जूतों की एड़ी में लगने वाला अर्धचंद्राकार लोहा। २-पत्थर का वह भारी कुण्डलाकार टुकड़ा जिसे कसरत करने वाले उठाते हैं। ३-लकड़ी का वह चक्कर जो कूएं की नींव में रखा जाता है। और उसके ऊपर जोड़ाई की जाती है। २-वह धन जो जूए के अड्डे का मालिक जीतने वाले से अपने अंश रूप में लेता है।

नालक [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द। माष।

नाल-कटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नवजात शिशु की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम। २-नाल काटने के बदले में किया जाने वाला धन। नाल काटने की मजदूरी।

नालकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मेहराबदार छाजन वाली वह पालकी जो इधर उधर से खुली रहती है और जिसमें विवाह के अवसर पर दूल्हा बैठकर जाता था।

नालबंद [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े की टाप या जूते की एड़ी में नाल जड़ने वाला आदमी।

नालबंदी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) नाल जड़ने का काम।

नालबाँस [संज्ञा पु.] (हिं) हिमालय के अंचल में होने वाला एक प्रकार का बाँस जो सीधा, कड़ा और मजबूत होता है।

नालवंश [संज्ञा पु.] (सं) नरसल। नरकट।

नालशतारी [संज्ञा पु.] (अ., फा.) लकड़ी की वह मेहराब जिसमें कई छोटी मेहराबें कटी होती हैं।

नालशाक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूरन की नाल जिसकी लोग तरकारी बनाकर खाते हैं।

नाला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. नाली] १-वह प्रणाली अथवा जलमार्ग जिसमें वर्षा का जल बहता है। जलप्रणाली। २-गन्दे जल के बहने का मार्ग या प्रणाली। ३-देखो 'नाड़ा'।

ना-लायक [वि.] (फा., अ.) अयोग्य। निकम्मा। मूर्ख।

ना-लायकी [संज्ञा स्त्री.] (फा., अ.) अयोग्यता। निकम्मापन। मूर्खता।

नालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमल की डंडी। २-नाड़ी।

नालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-भैंसा। ३-एक प्रकार का अस्त्र जिसकी नली में कुछ भर कर चलाते थे।

नालिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-छोटी नाल या डंठल। २-नाली। ३-जुलाहों की वह नली जिसमें लपेटा हुआ सूत रखते हैं। ४-नालिता शाक। पटुआ साग। ५-एक गंधद्रव्य का नाम।

नालिकेर [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल। नारिकेल।

नालिकेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शाक

नालिजंघ, नालिजङ्घ [संज्ञा पु.] (सं) डोम-कौवा।

नालिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) पटुवा जिसके कोमल पत्तों का साग बनाया जाता है।

नालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) नाक के एक छेद का तांत्रिक नाम।

नालिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) न्यायालय में या किसी बड़े के सामने होने वाली फरियाद। अभियोग।

नालिश दागना-नालिश करना।

नाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जल बहने का पतला मार्ग या छोटा नाला। जलप्रवाह-पथ। २-गंदा पानी बहने की मोरी। ड्रेन। ३-वह गहरी लकीर जो तलवार के बीचोंबीच पूरी लम्बाई तक गई होती है। डँड करने का गड्ढा जिसमें से होकर छाती निकल जाय। ५-कुम्हार के आँवे का वह छेद जिसमें से होकर आग डालते हैं। ६-घोड़े की पीठ का गड्ढा। ७-बैल आदि पशुओं को दवा पिलाने का चोंगा। ढरका। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाड़ी। धमनी। २-कमल की नाल। ३-घड़ी। २४ मिनट का काल। ४-हाथी का कान छेदने का औजार। ५-कमल का फूल।

नालीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर। २-एक प्रकार का छोटा बाण जो नली में रखकर छोड़ा जाता है। ६-कमल। ४-सूतदार कमल नाल। ५-कमल के फूल का सूतदार डंठल।

नालीघटी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की घड़ी जिससे दंड आदि का पता लग जाता है।

नालीय [संज्ञा पु.] (सं.) कदम्ब का वृक्ष।

नालीव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) नासूर।

नालुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधद्रव्य। [वि.] (सं.) कृश। दुबला। पतला।

नालौंट [वि.] (हिं.) बात कहकर मुकर जाने वाला। वादा करके इनकार हो जाने वाला।

नालौंट हो जाना-बात से फिर या मुकर-जाना।

नावँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नाम'।

नाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जल के ऊपर तैरने या चलने वाली लोहे लकड़ी आदि की बनी सवारी। जलयान। नौका। किश्ती। तरणि। तरी। तरिका। तरंडी। तरंड। पादालिंद। तल्लवा। होड़। वार्वट। वहित्र। पोत। वहन *सूखे में नाव नहीं चलती*-उदारता के बिना प्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती। *नाव में धूल उड़ाना* १-बिना सिर-पैर की बात कहना। २-झूठा अपराध लगाना।

नावक [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का छोटा बाण। २-मधुमक्खी का डंक। *[संज्ञा पु] (हिं) केवट। माझी। मल्लाह।

नावघाट [संज्ञा पु] (हिं.) नावों के ठहरने का घाट या स्थान।

नावध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नौसेना का वह अधिकारी जिसके अधीन जहाजी बेड़ा होता है। नौ-सेनापति। एडमिरल।

नावना+ [क्रि. सं.] (हिं.) १-झुकाना। २-डालना। फेंकना। गिराना। ३-प्रविष्ट करना। घुसाना।

नावर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-नाव। नौका। २-नाव को जल के बीच में लेजाकर चक्कर देने की क्रीड़ा।

नावरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जो भारत के दक्षिणी प्रदेशों में होता है। इसकी लकड़ी बहुत साफ चिकनी और मजबूत होती है।

नावरि*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नावर'।

नावाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रकम जो किसी के नाम लिखी हो।

न-वाकिफ [वि.] (फा., +अ.) अनभिज्ञ। अनजान

नावाधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य की सामुद्रिक शक्ति और नाविक-विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग अथवा उनका प्रधान कार्यालय। ऐडमिरैल्टी।

नाविक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माझी। मल्लाह। केवट। २-जल में यात्रा करने वाला। ३-जहाज का यात्री।

नाविक-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जहाज चलाने की विद्या या हुनर।

नावी [संज्ञा स्त्री] (सं) नौका, जलयान आदि

जल पर चलने वाली सवारी। [संज्ञा पु.] (हिं.) माझी। मल्लाह। केवट।

नावेल [संज्ञा पु.] (अं.) उपन्यास।

नावोपजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो जहाज आदि चलाकर अपनी जीविका चलाता है।

नाव्य [वि.] (सं.) १-नाव से जाने योग्य। २-प्रशंसार्ह। ३-(नदी या कोई जलाशय) जिसमें नावें जहाज आदि चल सकते हों। नैविगेबुल। [संज्ञा पु.] नयापन। नवीनता।

नाव्युदक [संज्ञा पु.] (सं.) नाव में जमा हुआ पानी।

नाश [संज्ञा पु.] (सं) १-अस्तित्व न रह जाना। ध्वंस। बरबादी। २-अदृश्यता। गायब होना। ३-दुर्भाग्य। बदकिस्मती। विपत्ति। ४-त्याग। ५-भागजाना। पलायन।

नाशक [वि.] (सं) १-नाश करने वाला। बरबाद करने वाला। २-मारने वाला। वध करने वाला। ३-दूर करने या हटाने वाला।

नाशकारी [वि.] (हिं) [स्त्री. नाशकारिणी] नाश करने वाला। नाशक।

नाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाश। बरबादी। २-मृत्यु। ३-स्थानान्तरकरण। दूर या अलग करना। [वि] [स्त्री नाशनी] नाश करने वाला।

नाशनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] नाश करने वाला

नाशना* क्रि. स.] (हिं.) १-नाश करना। नष्ट करना। २-मार डालना। वध करना।

नाशपाती [संज्ञा स्त्री.] (तु.) मझोले आकार का एक पेड़ जिसकी पत्तियां अमरूद के समान होती हैं इसका फल गोल और मीठा होता है। वैद्यक के अनुसार यह धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, रोचक तथा अम्लवातनाशक होता है

नाशमय [वि.] (सं.) नाश को प्राप्त होने वाला। नश्वर। अनित्य।

नाशयित्री [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) नाश करने वाली।

नाशवान् [वि.] (सं.) नश्वर। अनित्य।

नाशित [वि.] (सं.) नाश किया हुआ।

नाशिनी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) १-नाश करने वाली। २-नष्ट होने वाली।

नाशी [वि.] (हिं.) (स्त्री. नाशिनी) १-नाश करने वाला। नाशक। २-नष्ट होने वाला। नश्वर।

नाशुक [वि.] (सं.) नष्ट होने वाला। नश्वर।

नाश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) जलपान। कलेवा।

नाश्य [वि.] (सं.) नाश के योग्य। ध्वंसनीय।

नाष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी खोई हुई वस्तु का मालिक या रखने वाला।

नास [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-वह औषधि जो नाक से सूंघी जाय। २-सुंघनी।

नासत्य [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

नासत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्विनीनक्षत्र।

नासदान [वि.] (हिं.) (हिं) सुंघनी रखने की डिबिया।

नासना* [क्रि. स.] (हिं.) १-नष्ट करना। बरबाद करना। २-मार डालना। बध करना।

नासपाल [संज्ञा पु.] (फा.) १-कच्चे अनार का छिलका जिसमें से रंग निकाला जाता है। कच्चा अनार। ३-एक प्रकार की आतिशबाजी

नासपाली [वि.] (फा.) कच्चे अनार के छिलके का रंग।

ना-समझ [वि.] (हिं.) जिसे समझ न हो। मूर्ख। निर्बुद्धि।

ना-समझी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) मूर्खता। बेवकूफी

नासांतिक, नासान्तिक [वि] (सं.) नाक तक।

नासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाक। नासिका। २-सूंड़। ३-नाक का छेद। नासारंध्र। ४-चौखट के ऊपर का भाग या बजू। द्वार के ऊपर लगी हुई लकड़ी। ५-अडूसा।

नासाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) नाक की नोंक। नाक का अगला भाग।

नासाछिद्र [संज्ञा पु.] (सं) नथुना। नाक का छेद

नासाज्वर [संज्ञा पु.] (सं) वह ज्वर जो नाक के भीतर प्याज की गांठ की तरह का फोड़ा होने से होता है।

नासादारु [संज्ञा पु.] (सं.) द्वार की चौखट के ऊपर लगी हुई लकड़ी भरेटा।

नासानाह [संज्ञा पु.] (सं.) नाक का एक रोग जिसमें वायु के साथ कफ मिलकर नाक के छेद को बन्द कर देता है। प्रतिनाह।

नासापरिशोष [संज्ञा पु.] (सं.) नाक में कफ सूख जाने का रोग।

नासापाक [संज्ञा पु.] (सं) नाक पकजाने का एक रोग जिसमें नाक में बहुत सी फुंसियाँ निकल आती हैं।

नासापुट [संज्ञा पु. (सं.) नाक का वह चमड़ा जो छेदों के किनारे परदे का नाम देता है। नथना।

नासावेध [संज्ञा पु.] (सं.) नाक का वह छेद जिसमें नथ पहनी जाती है।

नासायोनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नपुंसक जिसे घ्राण करने पर उद्दीपन हो। सौगंधिक नपुंसक।

नासारंध्र, नासारन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) नथना। नाक का छेद।

नासारोग [संज्ञा पु.] (सं.) नाक में होने वाले रोग जिनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार ३१ तथा भाव प्रकाश ३४ बताई गई है।

नासालु [संज्ञा पु.] (सं.) कायफल।

नासावेश [संज्ञा पु.] (सं.) नाक के बीचोंबीच वाली पतली हड्डी। नाकपाँसा।

नासाविवर [संज्ञा पु.] (सं) नाक का छेद।

नासाशोष [संज्ञा पु.] (सं.) नाक में कफ सूख जाने का रोग।

नासासंवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) चिचड़ी। चिटचिड़ कांडवेल।

नासास्राव [संज्ञा पु.] (सं.) नाक का एक रोग जिसमें नाक से सफेद और पीला मवाद निकला करता है।

नासिकंधम, नासिकन्धम [वि.] (सं) नकिया कर बोलने वाला।

नासिकंधय, नासिकन्धय [वि.] (सं.) नाक से होकर पीना।

नासिक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बम्बई राज्य के अन्तर्गत तीर्थ जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी नदी निकलती है। इसी के पास वह पंचवटी वन है जहाँ वनवास के समय श्रीरामचन्द्र ने कुछ समय तक निवास किया था तथा लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक और कान काटे थे।

नासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) नाक। [वि.] (सं) श्रेष्ठ। प्रधान।

नासिक्य [वि.] (सं.) नासिका से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नासिका। नाक। २-अश्विनीकुमार। ३-नासिक।

नासी* [वि.] (हिं.) देखो 'नाशी'।

नासीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी शत्रु के सामने जाना या आमने-सामने लड़ने की क्रिया। २-सेना का अगला भाग। ३-सेनानायक के आगे चलने वाला दल जो जयनाद करता जाता है।

नासीरना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी शत्रु के सामने जाना या आमने-सामने लड़ना।

नासीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) सब से आगे जाने वाली सेना।

नासूर [संज्ञा पु.] (अ.) दूर तक गया हुआ नली का-सा छोटा घाव जिससे बराबर मवाद निकला रहता है। नाड़ीव्रण। *नासूर डालना*-नासूर पैदा करना। घाव करना। *छाती में नासूर डालना*-बहुत तंग करना। *नासूर भरना*-नासूर का घाव अच्छा होना।

नास्ति [अव्य.] (सं.) अविद्यमानता। नहीं।

नास्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) वेद, ईश्वर और परलोक को न मानने वाला। ईश्वर को जगत का उपादामकरण न मानने वाला।

नास्तिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईश्वर परलोक आदि में अविश्वास। नास्तिक होने का भाव।

नास्तिकदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) नास्तिकों का दर्शन।

नास्तिक्य [संज्ञा पु.] (सं) वेद, ईश्वर, परलोक आदि में अविश्वास। नास्तिकता।

नास्तितद [संज्ञा पु.] (सं.) आम्रवृक्ष। आम का पेड़।

नारिंद [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

नास्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर का होना नहीं माना जाता। २-नास्तिकों का तर्क।

नास्य [वि.] (सं.) १-नाक का। नासिका-संबंधी। २-नासिका से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल की नाथ। बैल की नाक में बंधी हुई रस्सी

नाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाथ। स्वामी। मालिक। २-स्त्री का पति। २-पहिये का छेद। नाभि। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँधने या बंद करने वाला। बंधन। २-हिरन फँसाने का फंदा। पाश। जाल। ३-बद्धकोष्ठता। कब्जियत।

नाहक [क्रि. वि.] (फा.) वृथा। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। बेमतलब।

नाहट+ [वि.] (देश.) नटखट। बुरा।

नाहनूह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नहीं-नहीं शब्द। इनकार।

नाहर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिंह। शेर। २-बाघ। [संज्ञा पु.] (?) टेसू का फूल।

नाहरपाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े का दम फूलने की एक बीमारी।

नाहरू* [संज्ञा पु] (हिं) १-नारू या नहरुआ नामक एक रोग। २-देखो 'नाहर'।

नाहिनै* [अव्य.] (हिं.) नहीं (है)।

नाहीं [अव्य] (हिं.) देखो 'नाहीं'। २-कदापि नहीं। कभी नहीं।

नाहुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-ययाति राजा की उपाधि २-नहुषराज के पुत्र।

निंडिका, निण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मटर।

नित* [क्रि. वि] (हिं.) देखो 'नित्य'।

निंद* [वि.] (हिं.) देखो 'निंद्य'।

निंदक, निन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) निंदा करने वाला। दूसरों के दोष या बुराई बताने वाला

निंदन, निन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) निंदा करने का काम।

निंदना*+ [क्रि. स] (हिं.) निंदा करना। बदनाम करना।

निंदनीय, निन्दनीय [वि.] (सं.) १-निंदा करने योग्य। बुरा कहने योग्य। २-बुरा। खराब। गर्ह्य।

निंदरना [क्रि. स.] (हिं.) निन्दा करना। बदनाम करना।

निंदरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नींद। निद्रा।

निंदा, निन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी की वास्तविक या कल्पित बुराई या दोष बतलाना। २-अपकीर्त्ति। बदनामी।

निंदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेतों के पास की घास, तृण आदि को उखाड़कर या काटकर अलग करने का कार्य। निराई। २-निराने की मजदूरी।

निंदाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निराना'।

निंदासा [वि.] (हिं.) जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।

निंदास्तुति, निन्दास्तुति [संज्ञा स्त्री] (सं.) निन्दा के बहाने स्तुति। व्याज-स्तुति।

निंदित, निन्दित [वि.] (सं.) १-जिसकी निंदा होती है। २-दूषित। बुरा।

निंदिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) नींद। ऊँघ। निद्रा।

निंद्य, निन्द्य [वि.] (सं.) १-निंदा करने योग्य। निंदनीय। २-दूषित। बुरा।

निंब, निम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का वृक्ष।

निंबरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) वह कुंज जिसमें सब नीम के ही पेड़ हों।

निंबादित्य, निम्बादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) निंबार्क सम्प्रदाय के आदि आचार्य।

निंबार्क, निम्बार्क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निंबादित्य। २-निंबादित्य का चलाया हुआ वैष्णव सम्प्रदाय।

निंबू+ [संज्ञा पु.] देखो 'नीबू'।

निः [अव्य] (सं.) एक उपसर्ग। देखो 'नि', 'निस्'।

निःकपट [वि.] (हिं.) देखो 'निष्कपट'।

निःकाम [वि.] (हिं) देखो 'निष्काम'।

निःकारण [वि] (हिं.) देखो 'निष्कारण'।

निःकासन [संज्ञा पु] (सं) देखो 'निष्कासन'।

निःकासित [वि] (सं) बहिष्कृत। निःसारित।

निःक्षत्र [वि] (सं) क्षत्रियरहित। क्षत्रियशून्य।

निःक्षिप्त [वि.] (सं) प्रक्षिप्त। फेंका हुआ।

निःक्षेप [संज्ञा पु.] (सं) १-विश्वासपूर्वक अपना द्रव्य दूसरे के पास रखना। रहेन। २-अर्पण

निःक्षोभ [वि.] (सं) क्षोभरहित। जिसको क्षोभ न हो।

निःछल [वि.] (सं.) देखो 'निश्छल'।

निःपक्ष [वि] (सं) देखो 'निष्पक्ष'।

निःपाप [वि.] (सं) देखो 'निष्पाप'।

निःप्रभ [वि.] (सं.) ज्योतिरहित। जिसमें चमक-दमक न हो।

निःप्रयोजन [वि.] (सं.) देखो 'निष्प्रयोजन'।

निःफल [वि.] (सं.) देखो 'निष्फल'।

निःशंक, निःशङ्क [वि.] (सं.) १-भयरहित। निर्भय। निडर। जिसे डर न हो। २-जिसे किसी प्रकार की हिचक या आशंका न हो।

निःशब्द [वि.] (सं) १-जहाँ और जिसमें शब्द न हो। २-जो शब्द न करे।

निःशलाक [वि.] (सं) निर्जन। एकांत। सुनसान

निःशल्या [वि] (सं) १-शल्यरहित। २-प्रतिबंधरहित। बिना प्रतिबंध का। निष्कंटक।

निःशुल्क [वि] (सं.) १-जिस पर शुल्क या फीस न ली जाय। बिना शुल्क का। २-जिस से शुल्क न लिया जाय।

निःशूक [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का धान।

निःशेष [वि.] (सं.) १-जिसमें कुछ शेष न हो। जिसका कोई अंश न रह गया हो। समूचा। २-समाप्त। पूरा। खतम।

निःशेषित [वि] (सं) जो समाप्त हो चुका हो।

निःशोध्य [वि.] (सं.) शोधा या साफ किया हुआ

निःश्रयणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काठ या बाँस आदि की सीढ़ी।

निःश्रयिणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) काठ की सीढ़ी।

निःश्रेणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काठ की सीढ़ी। २-खजूर का वृक्ष।

निःश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'निःश्रेणि'।

निःश्रेयस [वि.] (सं) १-मोक्ष। मुक्ति। २-मंगल। कल्याण। ३-भक्ति। ४-विज्ञान।

निःश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाक से साँस बाहर निकालना। २-नाक से निकाली हुई वायु। *दीर्घ निःश्वास*-गहरा या ठंडा साँस।

निःषभ [अव्य] (सं.) १-निंदा। २-शोक। ३-चिन्ता।

निःषंधि, निःषन्धि [वि.] (सं) संधिशून्य। जिसमें कहीं से छेद आदि न हो। २-दृढ़। मजबूत

निःसंकल्प, निःसङ्कल्प [वि] (सं) इच्छारहित

निःसंकोच, निःसङ्कोच [क्रि. वि.] (सं.) बिना संकोच के। बेधड़क।

निःसंग, निःसङ्ग [वि] (सं) १-बिना संपर्क या लगाव का जो मेल या लगाव न रखता हो। २-किसी से संबंध न रखने वाला। निर्लिप्त। ३-जिसके साथ कोई और न हो। अकेला।

निःसंतान, निःसन्तान [वि] (सं.) जिसके कोई सतान न हो। बिना बालबच्चे वाला।

निःसंदेह, निःसन्देह [वि.] (सं) जिसमें कुछ भी संदेह न हो। संदेहरहित। [अव्य.] (सं.) १-बिना किसी संदेह के। २-जिसमें कोई संदेह नहीं। ठीक है। बेशक।

निःसंधि, निःसन्धि [वि.] (सं.) १-जिसमें कहीं छेद या दरार न हो।

निःसंपात, निःसम्पात [वि.] (सं.) १-जहाँ या जिसमें आना जाना। न हो। गमनागमन-शून्य। २-रात।

निःसंशय [वि.] (सं.) संदेहरहित। शंकारहित।

निःसत्व [वि] (सं.) जिसमें कुछ तत्व या सार न हो। बिना सत का। निःसार।

निःसरण [संज्ञा पु] (सं.) १-निकलना। २-निकलने का मार्ग। निकास। ३-कठिनाई से निकलने का मार्ग या उपाय। ४-निर्वाण। ५-मरण।

नि:सार [वि.] (सं.) जिसमें कुछ सार या तत्व न हो। २-जिसमें कुछ वास्तविकता न हो। ३-जिसमें प्रयोजन या महत्व की कोई बात न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शाखोटवृक्ष। २-सोनापाठा।

नि:सारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकालना। २-निकलने का मार्ग। निकास।

नि:सारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कदली वृक्ष। केले का पेड़।

नि:सारित [वि] (सं.) बाहर निकाला हुआ।

नि:सारु [संज्ञा पु.] (सं) ताल के साठ भेदों में से एक।

नि:सीम वि.] (सं.) १-जिसकी सीमा न हो। बेहद। २-बहुत बड़ा या बहुत अधिक।

नि:शुकि [संज्ञा पु.] (सं.) भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का गेहूं जिसके दाने छोटे होते हैं और जिसकी बाल में ढूँड़ या सीगुर नहीं होते।

नि:सृत [वि.] (सं) निकालाहुआ।

नि:स्नेहा [वि.] (सं.) १-रसहीन। २-प्रेमरहित ३-जिसमें चिकनाहट न हो।

नि:स्नेह [संज्ञा स्त्री.] अलसी। तीसी। [वि] (सं.) अनुरागरहित। जिसमें प्रेम न हो।

नि:स्पंद, नि:स्पन्द [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन न हो। जो हिलता। डोलता न हो। निश्चल। स्थिर।

नि:स्पृह [वि.] (सं.) जिसे कोई स्पृहा या आकांक्षा न हो। २-जिसे कुछ लेने या पाने की इच्छा न हो। निर्लोभ।

नि:स्यंदन, नि:स्यन्दन [वि] (सं.) जो रथ रहित हो। विरथ।

नि:स्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकास। २-अवशेष बचत।

नि:स्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकाल। २-व्यय। खर्च।

नि:स्व [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके पास कुछ न हो धनहीन। दरिद्र।

नि:स्वन [वि.] (सं.) १-जहाँ या जिसमें शब्द न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) ध्वनि। शब्द।

नि:स्वार्थ [वि.] (सं.) १-जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान रखता हो। जो अपना अर्थ साधन करने वाला न हो। २-(काम या बात) जो अपने लाभ या स्वार्थ के लिये न हो।

नि [अव्य.] (सं.) यह एक उपसर्ग है जो संज्ञावाचक और क्रियावाचक शब्दों के पहले लगकर निम्नार्थों में प्रयुक्त होता है। १-नीचपन। नीचे की ओर गति, जैसे-निपत्। २-समूह। समुदाय। जैसे-निकर, निकाय। ३-आधिक्य। जैसे-निकाम। ४-आज्ञा। आदेश जैसे-निर्देश। ५-सातत्य। स्थिरत्व। जैसे—निविशन। ६-पटुता। जैसे-निपुण। ७-रोक। बन्धन। जैसे-निबंध। ८-सम्मिलन। संयोग। जैसे-निपीतमुदक। ९-सामीप्य। जैसे निकट। १०-तिरस्कार। हानि। जैसे—निकृति, निकाय। ११-दिखावट। जैसे—निदर्शन। १२-अवसान। जैसे-निवृत। १३-आश्रय। जैसे-निलय। १४-संदेह। १५—निश्चय। १६-स्वीकृति। १७-दान। १८-मोक्ष। [संज्ञा पु.] निषादस्वर का संकेत। (संगीत)

निअर, निअरे* [अव्य.] (हिं.) निकट। पास। समीप। [वि.] समान। तुल्य।

निअराना*+ [क्रि. स.] (हिं) निकट जाना। समीप पहुँचना। [क्रि अ.] निकट आना। पास होना।

निआउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्याय'।

निआथी*[संज्ञा स्त्री.] (हिं) निर्धनता। दरिद्रता। गरीबी। [वि.] देखो 'निआरथी'।

निआन* [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्त। परिणाम। [अव्य] अन्त में। आखीर।

निआना* [वि.] (हिं.) देखो 'न्यारा'।

निआमत [संज्ञा स्त्री.](अ.) अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ।

निआरथी* [वि] (हिं) निर्धन। गरीब।

निआरा* [वि.] (हिं) देखो 'न्यारा'।

निकंटक* [वि] (हिं.) देखो 'निष्कंटक'।

निकंदन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाश। विनाश। २-वध। मार डालना।

निकंदना* [क्रि. स](हिं) नष्ट करना। बरबाद करना।

निकंद-रोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक योनि सम्बन्धी रोग।

निकट [वि.] (सं.) १-पास का। समीप का। २-(संबंध) जिसमें विशेष अन्तर न हो। [क्रि. वि.] (सं.) पास। समीप। नजदीक।

किसी के निकट-१-किसी से। २-किसी की समझ में या विचार से।

निकटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समीपता। सामीप्य।

निकटपना [संज्ञा पु.] (हिं.) निकटता। समीप्य। समीपता।

निकटवर्ती, निकटवर्त्ती [वि](सं.) [स्त्री. निकटवर्त्तिनी] पासवाला। समीपस्थ। नजदीक का

निकटसंबंधी, निकटसम्बन्धी [वि] (सं) नजदीकी रिश्तेदार।

निकटस्थ [वि.] (सं.) १-पास का। जो निकट का हो। २-संबंध के विचार से पास का। सम्बन्ध मे जिसके बहुत अन्तर न हो।

निकती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोटा तराजू। काँटा।

निकम्मा [वि] (हिं) [स्त्री. निकम्मी] १-जो कोई कामधंधा न करता हो। २-जो किसी काम का न हो। निरर्थक।

निकम्मी [वि] (हिं) [स्त्री प्र] १-काम न करने वाली। निरर्थक।

निकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। झुण्ड। २-राशि। ढेर। ३-निधि। कोष। [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का अंगरेजी पहनावा जो घुटनों तक होता है। हाफपैंट।

निकरना* [क्रि. अ] (हिं.) देखो 'निकलना'।

निकर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) काटकर नीचे गिराने की क्रिया।

निकर्मा [वि.] (हिं.) जो काम या उद्योग-धंधा न करता हो। आलसी।

निकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौगान या मैदान जो नगर के निकट हो। २-घर के द्वार के सामने की खुली जगह। ३-पड़ोस। ४-अनबुई और अनजुती भूमि का टुकड़ा।

निकलंक [वि.] (हिं.) निर्दोष। दोषरहित। बे-दाग।

निकलंकी [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्किअवतार।

निकल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) चाँदी के रंग की एक चमकीली धातु जिसके सिक्के आदि बनते हैं। यह सुरमे, कोयले, गंधक, संखिया आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है।

निकलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भीतर से बाहर आना। निर्गत होना। २-मिलीहुई, लगी हुई या सटीहुई वस्तु का अलग होना। व्याप्त या ओत-प्रोत वस्तु का अलग होना। ३-एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। पार होना। ४-किसी श्रेणी आदि के पार या उत्तीर्ण होना। ५-गमन करना। गुजरना। जाना। ६-उदय होना। ७-प्रभूत या उत्पन्न होना। ८-उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ९-किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १०-निश्चित होना। ठहराया जाना। उद्भावित होना। ११-प्रकट या स्पष्ट होना। खुलना। १२-मेल में से अलग या पृथक होना। १४-आरम्भ होना। छिड़ना। १४-प्राप्त होना। सिद्ध होना। सरना। १५-किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर मिलना या प्राप्त होना। हल होना। १६-दूर तक जाने वाली वस्तु का आरम्भ होना। १७-फैलाव होना। जारी होना। १८-प्रचलित या जारी होना। १९-छँटना। बँधा अथवा जुड़ा न रहना। छूटना या मुक्त होना। २०-आविष्कृति होना। नई वस्तु या बात का प्रकट होना। २१-शरीर से उत्पन्न होना। २२-प्रमाणित या सिद्ध होना। साबित होना। २३-(किसी को लगा या फंसा) अपने से अलग हो जाना। २४-बचजाना। अपने को बचा जाना। २५-कहकर नहीं करना। मुकरना। २६-बिकना। खपना। २७-प्रकाशित होना। २८-हिसाब होने पर कुछ धन किसी के जिम्मे ठहरना। २९-उचड़ना या फटकर अलग होना। ३०-पाया जाना। प्राप्त होना। मिलना। ३१-दूर होना या मिटजाना।

ढेर। राशि। ३–सभा। समाज। संस्था। ४–घर। आवासस्थान। ५–शरीर। ६–लक्ष्य। निशाना। ७–परमात्मा। ८–कुछ लोगों का ऐसा समूह जो मिलकर कोई काम करने के लिए बना हो या कोई काम करता हो। बॉडी।

निकार [संज्ञा पु.] (सं.) १–अनाज फटकना। २–ऊपर उठाना। ३–वध। हत्या। ४–नीचा दिखाना। वशवर्ती करना। ५–तिरस्कार। हतक। मानहानि। ६–गाली। कुवाच्य। अपमान। ७–दुष्टता। ८–विरोध। खंडन। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निकालने का काम। निष्कासन। २–निकलने का द्वार। निकास। ३–ईख का रस पकाने का कड़ाहा।

निकारण [संज्ञा पु.] (सं.) वध। हत्या। मरण।

निकारना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निकालना'।

निकाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निकास। २–कुश्ती में एक पेंच का काट। तोड़। ३–कुश्ती का एक पेंच।

निकालना [क्रि. स] (हिं.) १–अन्दर से बाहर करना या लाना। निर्गत करना। २–मिली, लगी या सटी हुई वस्तु को अलग करना। ३–किसी के आगे बढ़ा ले जाना। पार करना। अतिक्रमण करना। ४–गमन कराना। गुजराना या ले जाना। ५–किसी ओर को या आगे की ओर बढ़ाना। ६–निश्चित करना। ठहराना। उद्भावित करना। ७–उपस्थित करना। प्रादुर्भूत करना। ८–स्पष्ट, प्रकट या व्यक्त करना। खोलना। ९–आरम्भ करना। छोड़ना। १०–सबके सम्मुख लाना। ११–स्थान, स्वामित्व, पद, अधिकार आदि से पृथक करना। १२–घटाना। कम करना। १३–फँसा, बंधा, जुड़ा या लगा न रहने देना। अलग करना। छुड़ाना। १४–काम या नौकरी से अलग या बरखास्त करना। १५–पास न रखना। दूर करना या हटाना। १६–बेचना। खपाना। १७–सिद्ध करना। फलीभूत करना। १८–निर्वाह करना। चलाना। १९–किसी प्रश्न या समस्या का ठीक-ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। २०–रेखा के समान दूर तक जाने वाली वस्तु का विधान करना। जारी करना। फैलाना। जैसे—सड़क निकालना। २१–प्रचलित या जारी करना। २२–आविष्कृत करना। नवीन वस्तु या बात प्रकट करना। ईजाद करना। २३–संकट, कठिनाई आदि से छुटकारा करना। निस्तार या उद्धार करना। २४–प्रकाशित या प्रचारित करना। २५–किसी पर ऋण या देन निश्चित करना। २६–ढूंढकर सामने रखना। बरामद करना। २७–पशु या व्यक्ति को किसी कार्य में शिक्षा देकर आगे बढ़ाना। २८–कपड़े पर सूई से बेलबूटे बनाना।

निकाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निकालने की क्रिया या भाव। २–किसी स्थान से निकाले जाने का दंड। निष्कासन।

निकाश [संज्ञा पु] (सं.) १–दृष्टि। प्रत्यक्ष। २–२–आकाश। ३–सामीप्य। पड़ोस। ४–समानता। सादृश्य।

निकाष [संज्ञा पु.] (सं.) रगड़। खरोंच।

निकास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निकाश'। [संज्ञा पु.] (हिं.) निकलने की क्रिया या भाव। २–निकालने की क्रिया या भाव। ३–वह स्थान जिससे होकर कुछ निकले। ४–मैदान। बाहर का खुला स्थान। ५–द्वार। दरवाजा। ६–उद्गम। मूलस्थान। ७–वंश का मूल। ८–रक्षा या बचाव का उपाय। ९–निर्वाह का ढंग। सिलसिला। वसीला। १०–लाभ या आय का सूत्र। आमदनी का रास्ता। ११–आय। आमदनी।

निकासना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निकालना'।

निकासपत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) जमा-खर्च और बचत का हिसाब समझाने का कागज।

निकासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। इश्यू। २–यात्रा के निमित्त निकलना प्रस्थान या रवानगी। ३–वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं से निकलकर बाहर जा सके। *ट्रानजिट पास*। ४–आय। आमदनी। ५–लाभ। मुनाफा। ६–बिक्री के लिए माल का बाहर जाना। लदाई। भरती। ७–माल की बिक्री। खपत।

निकाह [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानी पद्धति या विधि के अनुसार होने वाला विवाह। *निकाह पढ़ाना*–विवाह करना।

निकियाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निकियाने की मजदूरी।

निकियाना [क्रि. स.] (देश.) १–नोचकर धज्जी-धज्जी अलग करना। २–चमड़े पर उगे बाल या पंख नोचकर अलग करना।

निकिल्विष [संज्ञा पु.] (सं.) पाप का अभाव।

निकिष्ट* [वि.] (हिं.) देखो 'निकृष्ट'।

निकुंचन, निकुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की प्राचीन तौल जो आठ तोले के बराबर होती है।

निकुंचित, निकुञ्चित [वि.] (सं.) संकुचित। सिकुड़ा हुआ।

निकुंज, निकुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १–घनी लताओं से छाया या घिरा हुआ स्थान। लतागृह। २–लताओं से आच्छादित मंडप।

निकुंजिकाम्ला, निकुञ्जिकाम्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुब्ज का एक भेद। कुंचिका।

निकुंभ, निकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव के एक अनुचर का नाम। २–सुन्द और उपसुन्द के पिता का नाम। ३–कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण का मन्त्री था। इसे हनुमान ने मारा था। ४–शतपुर का एक असुर राजा

जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था। ५-हरिवंश के अनुसार हर्यश्व राजा का पुत्र। ६-एक विश्वदेव। ७-कुमार का एक गण। दंतीवृत्त। ८-जमालगोटा।

निकुंभाख्यवीज, निकुम्भाख्यवीज [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

निकुंभित, निकुम्भित [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाच।

निकुंभिला, निकुम्भिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ लंका के पश्चिम की एक गुफा। २-उस गुफा की देवी जिसका पूजन मेघनाद ने करके युद्ध-यात्रा की थी।

निकुंभी, निकुम्भी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दंतीवृत्त। २-कुंभकर्ण की कन्या का नाम।

निकुरंब, निकुरम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) झुण्ड। समूह। गिरोह।

निकुरुंब, निकुरुम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) झुण्ड। समूह। गिरोह।

निकुलीनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई भी दस्तकारी या कला जो किसी के घर में परम्परागत होती चली आती हो।

निकुही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

निकूल [संज्ञा पु.] (सं.) वह देवता जिसके लिये नरमेधयज्ञ तथा अश्वमेधयज्ञ के अन्तर्गत छठे यूप में पशु हनन होता था।

निकृंतन, निकृन्तन [संज्ञा पु.] (सं) १-छेदन। खंडन। २-कटने का औजार। [वि.] (स्त्री. निकृंतनी) काटकर नीचे गिराने वाला।

निकृंतनी, निकृन्तनी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) काटने वाली। [संज्ञा स्त्री.] १-छुरी। २-तलवार।

निकृत [वि.] (सं.) अपमानित करना। नीचा देखते हुए। २-तिरस्कृत। ३-प्रवंचित। धोखा खाये हुए। ४-स्थानान्तरित किया हुआ ५-दुःखी। घायल। ६-दुष्ट। बेईमान ७-नीच। कमीना। कमीना। पापी। ८-निकाला हुआ। बहिष्कृत

निकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीचता। दुष्टता। २-बेईमानी। कपट। दगा। ३-अपमान। मानहानि। ४-गाली। कुवाच्य। धनहीनता। गरीबी। ६-स्थानान्तरकरण। ७-अस्वीकृति। ८-पृथ्वी। ९-साध्या से उत्पन्न धर्मपुत्र, एक वसु।

निकृतिप्रज्ञ [वि.] (सं) दुष्ट हृदय का। बुरे स्वभाव का।

निकृती [वि.] (सं.) नीच। शठ। दुष्ट।

निकृत्त [वि] (सं.) जड़ से कटा हुआ। मूल से छिन्न।

निकृष्ट [वि] (सं.) १-बुरा। खराब। २-नीच। कमीना। पाजी। ३-घृणित। जातिच्युत। ३-गँवार।

निकृष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुराई। खराबी। २-नीचता। कमीनापन।

निकृष्टत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुराई। खराबी। २-नीचता।

निकृष्टप्रकृति [वि.] नीच स्वभाव का।

निकेत [संज्ञा पु.] (सं.) घर। मकान। आवास स्थान। भवन।

निकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। मकान। आवास-स्थान। २-पलांडु। प्याज।

निकोचक [संज्ञा पु.] (सं) अंकोलवृत्त। ढेर।

निकोचन [संज्ञा पु.] (सं.) संकुचन। सिकोड़। सिमटाव।

निकोठक [संज्ञा पु.] (सं.) ढेरा। अंकोल।

निकोश्य [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ-पशु के पेट की एक नाड़ी।

निकोसना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दाँत निकालना। २-दाँत कटकटाना या पीसना। किचकिचाना

निकौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निराने का काम। निराई। २-निराने की मजदूरी।

निक्का+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. निक्की] छोटा। नन्हा।

निक्की+ [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] छोटी। नन्ही।

निक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) स्थान। जगह।

निक्रीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रीड़ा। कौतुक। तमाशा। २-सामभेद।

निक्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १-संगीतिक स्वर। २-स्वर। ३-वीणा की झनकार। ४-किन्नरों का शब्द।

निक्वाण [संज्ञा. पु.] (सं.) देखो 'निक्वण'।

निक्षण [संज्ञा पु.] (सं) चुंबन।

निक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूँ का अंडा। लीख।

निक्षिप्त [वि] (सं) १-फेंका हुआ। नीचे पटका हुआ। २-छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३-भेजा हुआ। *कन्साइन्ड*। ४-धरोहर रखा हुआ। जमा कराया हुआ। कहीं रखा हुआ। *डिपाजिटेड*।

निक्षिप्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह धन जो किसी कोश में जमा किया, डाला या रखा जाय। २-वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। *कन्साइन्मेंट*।

निक्षिप्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) देखो 'निक्षेप'।

निक्षिप्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसके नाम कोई (विशेषतः पोष्ट, पारसल आदि) भेजी गई हो। *कन्साइनी*।

निक्षुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-ब्राह्मणी। २-सूर्य की एक पत्नी।

निक्षेप [संज्ञा पु.] (सं) १-फेंकने या ढालने की क्रिया या भाव। २-चलाने की क्रिया या भाव। ३-वह वस्तु जो भेजी जाय। ४-गिरवी। धरोहर। ५-कोई वस्तु बिना सील मोहर लगाये खुली जमा करा देना। धन जमा कराने की क्रिया या भाव। धन जो कहीं जमा किया जाय। ८-पोंछने या सुखाने की क्रिया।

निक्षेपक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो कहीं माल भेजे। कन्साइनर। २-वह जो कहीं धन जमा करे। डिपॉजिटर।

निक्षेपकरण [संज्ञा पु.] देखो 'न्यास-पत्र'।

निक्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंकना। २-छोड़ना। चलाना। ३-त्यागना। भी उपाय जिसके द्वारा कोई वस्तु

निक्षेप-निधि [संज्ञा स्त्री] (सं) वह कोष जिसके द्वारा ऋण परिशोध या चुकती हो। ऋणविमोचक कोष। कर्ज-अदाई-कोष। सिंकिंगफंड।

निक्षेपी [वि.] (हिं.) १-फेंकने वाला। छोड़ने वाला। २-धरोहर रखने वाला।

निक्षेप्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फेंकने वाला छोड़ने वाला। २-धरोहर रखने वाला।

निक्षेप्तृ [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'निक्षेप्ता'।

निक्षेप्य [वि.] (सं.) फेंकने योग्य। छोड़ने योग्य

निखंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निषंग'

निखंगी* [वि.] (हिं) देखो 'निषंगी'।

निखंड [वि.] (हिं.) ठीक मध्य या बीच का। थोड़ा इधर न थोड़ा उधर। सटीक।

निखट्टर+ [वि] (हिं.) १-कड़े दिल का। चित्त वाला। २-निष्ठुर। निर्दय।

निखट्टू [वि] (हिं.) १-जमकर कोई काम न करने वाला। निकम्मा। आलसी। अपनी कुचाल के कारण कहीं न टिकने वाला

निखनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खनना। गाड़ना। २-मृत्तिका। मिट्टी।

निखरना [क्रि. अ] (हिं.) १-मैल छूट साफ या निर्मल होना। २-रंगत का खुल या साफ होना।

निखरवाना [क्रि. स] (हिं) धुलवाना। कराना।

निखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पक्की। घी में कर पकाई हुई रसोई। सखरी का उलटा।

निखर्व [वि.] (सं.) १-दस हजार करोड़। सहस्र कोटि। २-वामन। बौना। नाटा।

निखर्वट [संज्ञा पु.] (सं.) रावण की सेना एक राक्षस।

निखवख* [वि.] (हिं.) पूरा। सब। [क्रि वि.] (हिं.) पूरा। बिलकुल।

निखात [वि.] (सं.) १-खोदाहुआ। निकाला हुआ। २-खोदकर लगाया जमायाहुआ। ३-खोदकर गाड़ाहुआ।

निखात-निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वह या खजाना जो भूमि से खोद निकाला हो। भूनिधि। गुप्तनिधि। २-

निगदित [वि.] (सं.) कथित। कहाहुआ। भाषित

निगम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेद। वेदसंहिता। २-वेद का कोई अंश या अवतरण। ३-वेद-भाष्य। आप्तवचन। ४-धातु। ५-निश्चय। विश्वास। ६-न्याय। ७-व्यापार। व्यवसाय ८-हाट-मंडी। बाजार। ९-पैंठ। १०-फेरी वाला सौदागर। बनजारा। ११-मार्ग। बाजार का रास्ता। १२-कायस्थों का एक भेद। १३-नगर। १४-वह संघटित स्थायी संस्था जिसे विधि के द्वारा शरीर अथवा शरीरधारी का-सा रूप दिया गया हो। *कॉरपोरेशन*।

निगम-कर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर की निगम या विधि के द्वारा संघटित संस्था द्वारा लगाया गया कर या महसूल। *कॉरपोरेशन-टैक्स*।

निगमन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेद का अवतरण। २-न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक। न्याय में वह कथन जो कोई प्रतिज्ञा सिद्ध कर चुकने पर उस प्रतिज्ञा के फिर से उल्लेख के रूप में होता है। सिद्ध की हुई बात के सम्बन्ध में अंतिम कथन। परिणाम। नतीजा। जैसे—यहाँ पर आग है (प्रतिज्ञा) क्योंकि यहाँ पर धूआँ है (हेतु)। जहाँ धुआँ रहता है वहाँ आग रहती है, यथा, रसोई घर में (उदाहरण)। 'यहाँ पर धूआँ है (उपनय)। इसलिए यहाँ पर आग है (नगमन)। ३-किसी संस्था को निगम का सारूप देने की क्रिया। *इनकॉरपोरेशन*।

निगमनात्मक [वि.] (सं.) पृथक या अलग करने वाला। वियोजक।

निगम-निकाय [संज्ञा पु.] (हिं.) सुसंगठित या सु-संस्थित रूप से बना हुआ कुछ लोगों का ऐसा समूह जो मिलकर कोई कार्य करने के निमित्त बना हो अथवा कोई कार्य करता हो। *बॉडी-कॉपरेट*।

निगमनिवासी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। नारायण

निगमनीय [वि.] (सं.) निष्कर्ष योग्य। निष्कर्षणीय।

निगमबोध [संज्ञा पु.](सं.) दिल्ली के पास जमुना नदी के किनारे का एक पवित्र स्थान। (पृथ्वीराज-रासो)।

निगमागम [संज्ञा पु.] (सं.) वेदशास्त्र।

निगयी [संज्ञा पु.] (सं.) वेदों का ज्ञाता।

निगर [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलने या भक्षण करने की क्रिया। भोजन। २-५५ मोतियों के बराबर की एक प्राचीन तौल। [वि.] (हिं.) सब। सारे। [संज्ञा पु.] देखो 'निकर'।

निगरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन। २-गला। ग्रीवा। ३-यज्ञीय अग्नि या यज्ञीय जले पदार्थ का धूआँ।

निगरना* [क्रि. स.] (हिं.) निगलना।

निगराँ [संज्ञा पु.] (फा.) १-निगरानी रखने वाला। निरीक्षक। २-रक्षक।

निगरा [वि.](हिं.) (ईख का रस) जो जल मिलाकर पतला न किया गया हो। खालिस।

निगराना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-निर्णय करना। निबटाना। २-छाँटकर अलग-अलग करना। ३-स्पष्ट करना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-अलग होना। २-स्पष्ट करना।

निगरानी [संज्ञा स्त्री.](फा.) देखरेख। निरीक्षण।

निगरु* [वि.] (हिं.) हलका। जो भारी या वजनी हो।

निगलना [क्रि. स.] (हि.) १-मुँह में रखकर गले के नीचे उतार लेना। लीलना। गटक जाना। २-खा-जाना। ३-दूसरे का धन दबा या मार बैठना।

निगह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नजर। दृष्टि।

निगहबान [संज्ञा पु.] (फा.) रक्षक।

निगहबानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखरेख। रखवाली चौकसी।

निगाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तुति। पाठ। स्तोत्र पाठ। २-व्याख्यान। भाषण। संवाद। ३-अर्थ सीखना। ४-वर्णन।

निगादी [संज्ञा पु.] (हिं.) वक्ता। बोलने वाला।

निगार [संज्ञा पु.] (सं.) निगलने या भक्षण करने की क्रिया। [संज्ञा पु.] (फा.) १-चित्र। बेलबूटा। नक्काशी। २-एक फारसी राग का नाम।

निगाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-निगलना। लीलना। खा-डालना। २-घोड़े का गला या गरदन। [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय पर उगने वाला एक प्रकार का बांस जिसे रिंगाल भी कहते हैं

निगालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण और लघु गुरु होते हैं। जिसे प्रमाणिका और नागस्वरूपिणी भी कहते हैं।

निगाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निगाल। बाँस की बनी हुई नली। २-हुक्के की नली जिससे धूआँ खैंचते हैं। (यह बांस की होती है।

निगा* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'निगाह'।

निगाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दृष्टि। नजर। २-देखने की क्रिया या ढंग। चितवन। तकाई। ३-कृपादृष्टि। मेहरबानी ४-ध्यान। विचार। समझ। ५-परख। पहचान।

निगिभ* [वि.] (हिं.) अत्यन्त गोपनीय। बहुत प्यारी जिसका बहुत लोभ हो।

निगुंफ, निगुम्फ [संज्ञा पु.] (सं.) समूह। गुच्छा।

निगु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन। अन्तःकरण। २-भ्रम। भूल।

निगुण* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्गुण'।

निगुनी* [वि.] (हिं.) जो गुणी न हो। गुण रहित।

निगुरा [वि.] (हिं) जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। जिसने गुरू न किया हो। अदीक्षित। (उपेक्ष्य)

निगूढ़ [वि] (सं.) १-छिपा हुआ। २-अत्यन्त गुप्त।

निगूढ़ार्थ [वि.] (स.) जिसका अर्थ छिपा न हो।

निगूहक [वि.] (सं.) छिपाने वाला।

निगूहन [संज्ञा पु.] (सं.) गोपन। छिपाव।

निगूहनीय [वि.] (सं.) गोपनीय। छिपाने योग्य

निगृहीत [वि.] १-धरा हुआ। घेरा हुआ। पकड़ा हुआ। २-जिस पर आक्रमण किया गया हो। आक्रांत। आक्रमित। ३-पीड़ित। ४-दंडित।

निगृह्य [वि.] (सं.) दंड देने योग्य। सज़ा के लायक।

निगेटिव [संज्ञा पु.] (अ) मसाला लगी वह प्लेट जिस पर फोटो लिया जाता है तथा जिस पर प्रकाश और छाया की छाप उलटी पड़ती है।

निगोड़ा [वि.] (हिं.) (स्त्री. निगोड़ी) १-जिसके ऊपर या आगे पीछे कोई न हो। २-अभागा जिसके आगे पीछे कोई न हो। ३-दुष्ट। नीच बुरा। कमीना। (गाली स्त्री.)
निगोड़ा नाठा–लावारिस। अनाथ।

निग्रंथन, निग्रन्थन [सज्ञा पु.] (सं.) हत्या। वध। मरण।

निग्रह [संज्ञा पु.] (स.) १-रोक। अवरोध। २-दमन। ३-पकड़ना। गिरफ्तार करना। ४-पकड़कर बन्द कर देना। कैद कर लेना। ५-पराभव। पराजय। ६-नाश। विनाश। ७-चिकित्सा। रोग की रोकथाम। ८-दंड। सजा ९-डाँट। फटकार। १०-अरुचि। घृणा। ११-(न्याय में) तर्क-सम्बन्धी दोष विशेष। १२-दस्ता। बेंट। १३-सीमा। हद। १४-शिव। १५-विष्णु।

निग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोकने या थामने का काम। २-दंड देने का कार्य। ३-गिरफ्तारी। पकड़। ४-पराजय। हार।

निग्रहना* [क्रि. स.] (हिं.) १-पकड़ना। थामना। २-पकड़ना। गिरफ्तार करना। ३-रोकना। ४-दंड देना।

निग्रहस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायदर्शन के सोलह पदार्थों में से एक, वादविवाद अथवा शास्त्रार्थ में जहाँ विप्रतिपत्ति (उलट-पुलटा ज्ञान) या अप्रतिपत्ति (अज्ञान) किसी पक्ष की ओर से कहाजाता है। तो उसको निग्रहस्थान कहते ह। न्याय में २२ निग्रह स्थान माने गये हैं जो इस प्रकार हैं–प्रतिज्ञा-हानि, प्रतिज्ञांतर, प्रतिज्ञा-विरोध, प्रतिज्ञा-संन्यास, हेत्वंतर, अर्थान्तर, निरर्थक, अवज्ञातार्थ, अपार्थक, अप्राप्तकाल, न्यून, अधिक, पुनरुक्त, अननुभाषण, अज्ञान, अप्रतिभा, विक्षेप, मतानुज्ञा, पयनुयोज्योपेक्षण, निरनुयोज्यानुयोग, अपसिद्धांत और हेत्वाभास।

निग्रही [वि.] (हिं.) १-रोकने वाला। दबाने वाला। २-दमन करने वाला। ३-दंड देने वाला।

निग्रहीतव्य [वि.] (सं.) जो दंड देने योग्य हो।

निग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक्रोश। शाप। २-सजा।

निग्राहक [वि.] (सं.) गिरफ्तार करने वाला।

निग्राह्य [वि.] (सं.) ग्रहण करने योग्य।

निग्रो [संज्ञा स्त्री.] (अमरीकन) अफ्रीका महाद्वीप की एक असभ्य और जंगली जाति।

निघंट, निघण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निघंटु'।

निघंटिका, निघण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का गुलंच नामक कंद।

निघंटु, निघण्टु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैदिक शब्दों का संग्रह। यास्क ने निघंटु की जो व्याख्या लिखी वह निरुक्त के नाम से प्रसिद्ध है। २-शब्द संग्रहमात्र। जैसे-वैद्यक का निघंटु।

निघ [वि.] (सं.) जितना लम्बा उतना ही चौड़ा। [संज्ञा पु.] १-गैंद। २-पाप।

निघटना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'घटना'।

निघर-घट [वि.] (हिं.) १-जिसका कहीं घर-घाट न हो। जो घूम-फिरकर वहीं आये जहां से दुदकारा गया हो। २-निर्लज्ज। बेहया।
निघर घट देना–बेहयाई से भूंठी सफाई देना

निघरा [वि.] (हिं.) जिसके घरबार न हो। निगोड़ा (गाली)।

निघर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रगड़। मथन।

निघर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) घिसना। रगड़ना।

निघस [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाने की क्रिया। भोजन करने की क्रिया। २-खाने की सामग्री। आहार। भोजन।

निघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रहार। घात। २-उच्चारण के लहजे का अभाव। अनुदात्त स्वर।

निघाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लोहे की गदा। लौहदंड। २-निहाई।

निघाती [वि.] (सं.) [स्त्री. निघातिनी] १-मारने वाला। प्रहार करने वाला। २-वध करने वाला।

निघुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। शोरगुल। कोलाहल।

निघृष्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-खुर। २-वायु। ३-३-मार्ग। ४-सूअर।

निघ्न [वि.] (सं.) १-अधीन। वशीभूत। आज्ञाकारी। २-नम्र। वश्य। शिक्षणीय। ३-निर्भर। अवलंबित। ४-गणित। गुण किया हुआ। [संज्ञा पु.] १-सूर्यवंशीय राजा अनरण्य का पुत्र। २-एक राजा जो अनमित्र का पुत्र था।

निचंद्र, निचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

निचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तिनापुर के एक राजा जो असीम कृष्ण के पुत्र थे।

निचमन [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा-थोड़ा पीना।

निचय [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढेर। समूह। समुदाय। २-संचय। ३-किसी कार्य विशेष के निमित्त जमा या इकट्ठा किया जाने वाला धन। फंड।

निचल* [वि.] (हिं.) देखो 'निश्चल'।

निचला [वि.] (हिं.) [स्त्री. निचली] १-नीचे का। नीचे वाला। २-अचल। जो हिलता-डुलता न हो। ३-स्थिर। जो चंचल या चपल न हो। शांत।
निचला बैठना–१-स्थिर, शांतभाव से बैठना। २-शिष्टतापूर्वक बैठना।

निचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नीचा होने का भाव। नीचापन। २-नीचे की ओर दूरी या विस्तार। नीच होने का भाव। नीचता। ओछापन। कमीनापन।

निचान [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-नीचापन। २-ढाल। ढुलान। ढालुवांपन।

निचाय [संज्ञा पु.] (सं.) धान आदि का ढेर।

निचिंत, निचिन्त [वि.] (हि.) चिन्तारहित। वेफिक्र। सुचित।

निचि [संज्ञा पु.] (सं.) कानों सहित गाय का सिर।

निचिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी गाय।

निचित [वि.](सं.) १-संचित। इकट्ठा। २-पूरित। व्याप्ति। ३-तैयार। निर्मित। ४-संकीर्ण।

निचिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

निचिर [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यन्त प्राचीनकाल।

निचुंकण, निचुङ्कण [संज्ञा पु.] (सं.) गरज। बड़बड़ाहट।

निचुड़ना [क्रि. अ.] (हि.) १-रसपूर्ण या गीली वस्तु का इस प्रकार दबना कि रस अथवा पानी टपककर निकल जाय। गरना। २-भरे अथवा समाये हुये पानी आदि का दब खाकर अलग होना टपकना या चूना। ३-रस या सारहीन होना। ४-शरीर का रस अथवा सार निकल जाने से दुबला होना।

निचुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत। २-हिज्जलवृक्ष। ईंजड़ का पेड़। ३-ऊपर से शरीर ढांकने का कपड़ा। ४-कालिदास के एक कवि-मित्र।

निचुलक [संज्ञा पु.] (सं.) उरस्त्राण। वर्मविशेष।

निचेता [वि.] (सं.) पाई या प्राप्त वस्तु का संचय करने वाला।

निचेय [वि.] (सं.) संग्रह करने योग्य।

निचेरु [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वदा इधर-उधर घूमने वाला।

निचै [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निचय'।

निचोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निचोड़ने की क्रिया या भाव। २-वह अंश जो निचोड़ने से निकले। ३-सारवस्तु। सार। ४-कथन का सारांश। मुख्य तात्पर्य। खुलासा।

निचोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-गीली अथवा रसपूर्ण वस्तु को दबाकर उसका जल या रस निकालना। गारना। २-किसी वस्तु का सार भाग निकाल लेना। ३-अधिकतर धनहरण कर लेना। निर्धन कर देना।

निचोना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निचोड़ना'।

निचोर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निचोड़'।

निचोरना* [क्रि. स] (हिं) देखो 'नचोड़ना'।

निचोल [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर से शरीर ढांकने का कपड़ा। आच्छादन वस्त्र। २-स्त्रियों की ओढ़नी। घूँघट का वस्त्र। ३-उतरीय कपड़ा। ४-घाघरा। लहँगा। ५-कपड़ा। वस्त्र।

निचोलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोल। कंचुक। कुर्त्ता। २-सन्नाह। बक्तर।

निचोवना* [क्रि. स] (हिं.) देखो 'निचोड़ना'।

निचौहाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. निचौहीं] नीचे की ओर किया या झुकाहुआ।

निचौहीं [वि] (हिं.) [स्त्री. प्र.] नीचे की ओर की हुई या झुकीहुई।

निचौहैं [क्रि. वि] (हिं.) नीचे की ओर।

निच्छवि [संज्ञा स्त्री] (सं) तीरयुक्त देश। तिरहुत।

निच्छिवि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के व्रात्य क्षत्रिय। सवर्णा स्त्री से उत्पन्न व्रात्य क्षत्रिय की सन्तान।

निछक्का [संज्ञा पु] (हिं.) वह समय या स्थान जिसमें कोई दूसरा न हो। एकांत। निर्जन। *निछक्के में*-एकान्त में।

निछत्र [वि.] (हिं.) १-छत्रहीन। विना छत्र का। बिना राज्य चिह्न का। ३-छत्रियों से रहित। बिना क्षत्रियों का।

निछनियाँ* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'निछान'।

निछल [वि] (हिं.) छलरहित। छलहीन।

निछला* [वि] (?) विना मिलावट का। एकमात्र।

निछान [वि.] (हिं.) १-विना मैल या मिलावट का। खालिस। विशुद्ध। विलकुल। निछला एकमात्र। केवल। [क्रि. वि.] (हिं.) एकदम। विलकुल।

निछावर [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-किसी की मंगलकामना से कोई वस्तु उसके सिर के ऊपर से घुमाकर दान करने अथवा कहीं रख आने का उपचार या टोटका। वाराफेरा। २-वह धन या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़दी जाय। ३-नेग। इनाम। *निछावर करना*-उत्सर्ग करना। छोड़ना (किसी का किसी पर) *निछावर होना*-किसी के लिये प्राण उत्सर्ग या त्याग करना।

निछावरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'निछावर'

निछेद [संज्ञा पु.] छेदन। कतरना।

निछोह [वि.] (हिं) १-जिसमें छोह या प्रेम न हो। २-निर्दय। निष्ठुर।

निछोही [वि.] (हिं.) १-छोह या प्रेमरहित। २-निर्दय। निष्ठुर।

निज [वि.] (सं.) १-अपना। स्वकीय। स्वीय। खास। मुख्य। प्रधान। ३-ठीक। सही। वास्तविक। यथार्थ। सच्चा। *निज का*-खास अपना। [अव्य] निश्चय। ठीक ठीक। सही-सही विशेष करके। मुख्यतः खासकर।

निजकाना [क्रि. अ.] (हिं.) निकट पहुँचना। समीप आना।

निजकारी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-बंटाई की फसल। २-वह भूमि जिसके लगान में उससे उत्पन्न वस्तु ही ली जाय।

निजकृत [वि.] (सं.) अपने आप किया हुआ।

निजघास [संज्ञा पु.] (सं) पार्वती के क्रोध से उत्पन्न होने वाले गणों में से एक।

निजघ्नी [वि.] (सं.) जो सर्वदा हत्या करता हो।

निजता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अपनापन। मौलिकता।

निजत्व [संज्ञा पु.] (सं.) निजता। अपनापन।

निजधृति [वि.] (सं.) बुद्धिमान। अल्कमंद।

निजस्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-निजता। अपनापन। २-मौलिकता।

निजा [संज्ञा पु.] (अ.) झगड़ा। विवाद।

निजाअ [संज्ञा पु.] (अ.) १-झगड़ा। तकरार। २-बैर। शत्रुता।

निजाई [वि.] (अ.) १-जिसके सम्बन्ध में झगड़ा या विवाद हो। विवादास्पद।

निजाम [संज्ञा पु.](अ.) १-बंदोबस्त। व्यवस्था। इन्तजाम। २-हैदराबाद के शासकों की उपाधि

निजि [वि.] (सं.) जो शुद्धि के सहित हो। शुद्धियुक्त।

निजी [वि.] (हिं.) १-निज का। अपना। २-व्यक्तिगत।

निजी-सहायक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी बड़े आदमी या अधिकारी विशेष के साथ रहकर उसके कार्यों में सहायता देता हो। *पर्सनल असिस्टेन्ट*।

निजु [वि.] (हिं.) देखो 'निज'।

निजुर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हत्या। नाश।

निजू [वि.] (हिं.) निजका। अपना।

नि-जोर* [वि.] (हिं.) निर्बल। कमजोर।

निझरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अच्छी प्रकार झड़ जाना। लगा या अटका रहना। २-लगीहुई वस्तु के झड़जाने से खाली हो जाना। ३-वस्तु से रहित हो जाना। ४-अपने आपको निर्दोष सिद्ध करना। सफाई देना।

निझाना+ [क्रि. अ.] (देश) ताकझाँक करना। आड़ में छिपकर देखना।

निझोटना+ [क्रि. स.] (हिं.) खींचकर छीनना। झपटना।

निझोल [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी का एक नाम।

निटर [वि.] (देश.) जो उपजाऊ न हो। जिसका जोर मर गया हो। (खेत या भूमि)

निटल [संज्ञा पु.] (स) माथ। मत्था। कपाल। मस्तक।

निटलाच [संज्ञा पु.] (सं) शिव। महादेव।

निटिल [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक। माथा।

निटिलाच [संज्ञा पु.] (सं) शिवजी का एक नाम

निटोल [संज्ञा पु] (हिं.) टोला। मुहल्ला। बस्ती। पुरा।

निट्ठि* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'नीठि'।

निठल्ला [वि.] (हिं) १-जिसके पास कोई काम धंधा न हो। खाली। २-बे-रोजगार। बेकार। ३-कोई काम धंधा न करने वाला। निकम्मा।

निठल्लू [वि] (हिं.) देखो 'निठल्ला'।

निठाला [संज्ञा पु.] (हि) १-ऐसा समय जब कोई कामधंधा न हो। खाली वक्त या समय। २-वह समय जिसमें हाथ में कोई काम धंधा या रोजगार न हो। जीविका का अभाव।

निठुर [वि.] (हिं.) जिसे दूसरे की पीड़ा का अनुभव न हो। कठोर हृदय। निर्दय। क्रूर।

निठुरई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) हृदय की कठोरता। निर्दयता।

निठुरता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) निर्दयता। क्रूरता। हृदय का कठोरता।

निठुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हृदय की कठोरता। निर्दयता।

निठुराव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) निठुराई। निर्दयता।

निठौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुरी जगह। कुठाँव। २-बुरी दशा। *निठौर पड़ना*-बुरी दशा में पड़ना।

निडर [वि.] (हिं.) १-जिसे डर न हो। निर्भय। निःशंक। २-साहसी। हिम्मत वाला। ३-ढीठ। धृष्ट।

निडरता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निर्भयता। निर्भीकता।

निडरपन [संज्ञा पु.] (हिं) निडर होने का भाव। निर्भयता। निर्भीकता।

निडरपना [संज्ञा पु.] (हिं.) निर्भयता। निर्भीकता।

निडीन [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना या झपट्टा।

निड़े* [क्रि. वि.] (हिं.) निकट। समीप। पास।

निढाल [वि.] (हिं.) शिथिल। थकामाँदा। २-

अशक्त । ३-सुस्त । उत्साहहीन । मराहुआ *जी निढाल होना*-जी डूबना । मूर्च्छा आना

निढिल* [वि.] (हिं.) १-जो ढीला न हो कसा या तनाहुआ । कड़ा । कठोर ।

निएय [वि.] (सं.) गायब । लापता । अंतर्हित ।

नितंत [क्रि. वि.] (हिं.) १-बहुत अधिक । २-बिलकुल । एकदम । ३-परम । हद दरजे का

नितंब, नितम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमर का पिछला उभरा हुआ भाग । चूतड़ (विशेषत: स्त्रियों का) २-पर्वत का ढालुवां किनारा । ३-नदी का ढालुवां तट । ४-कंधा । स्कंध । खड़ी चट्टान ।

नितंबदेश, नितम्बदेश [संज्ञा पु.] (सं.) पिछला भाग ।

नितंबबिंब, नितम्बबिम्ब [वि.] (सं.) गोल कमर का पिछला भाग ।

नितंबवत्, नितम्बवत् [वि.] (सं.) सुन्दर कमर वाला ।

नितंबवती, नितम्बवती [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) सुन्दर कमर वाली ।

नितंबिनी, नितम्बिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़े और सुन्दर बितम्ब (चूतड़ों) वाली स्त्री । २-सुन्दर स्त्री । [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] सुन्दर नितम्ब वाली ।

नितंबी, नितम्बी [वि.] (सं) [स्त्री. प्र.] अच्छे नितंबों वाली ।

नित [अव्य.](सं.) १-प्रतिदिन । हररोज । २-सदा सर्वदा । *नितनित*-प्रतिदिन । हररोज । *नितनया* -कभी पुराना न पड़ने वाला । हमेशा नया रहने वाला ।

नितराम् [अव्य.] (सं.) सदा । सर्वदा । हमेशा ।

नितल [संज्ञा पु.] (सं.) सात पातालों में से एक ।

नितांत, नितान्त [वि.] (सं.) १-बहुत अधिक । बिलकुल । एकदम । ३-हद दरजे का । परम

निति* [अव्य.] (हिं.) देखो 'नित' ।

नित्य [वि.] (सं.) जो सब दिन रहे । जिसका कभी नाश न हो । शाश्वत । **अविनाशी** । त्रिकालव्यापी । [अव्य.] (सं) १-**प्रतिदिन** । हर रोज । २-सर्वदा । सदा । **हमेशा** । **अनवरत** ।

नित्यकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-नित्य या प्रतिदिन का काम । २-प्रतिदिन आवश्यक रूपसे किये जाने वाले कार्य । जैसे—संध्या, तर्पण, अग्निहोत्रादि ।'

नित्यक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नित्यकर्म । जैसे-स्नान, संध्या आदि ।

नित्यकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नित्यकर्म' ।

नित्यगति [संज्ञा पु.] (सं.) वायु । हवा ।

नित्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नित्य होने का भाव । अनश्वरता ।

नित्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नित्यता' ।

नित्यदा [अव्य.] (सं.) सर्वदा । सदा । हमेशा ।

नित्यदान [संज्ञा पु.] (सं.) नित्यप्रति किया जाने वाला दान । वह दान जो प्रतिदिन किया जाता है ।

नित्यनर्त्त, नित्यनर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव । शिव ।

नित्य-नियम [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिदिन का बंधा हुआ काम । हर रोज का बंधा हुआ कायदा या नियम ।

नित्यनैमित्तिक (कर्म) [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वश्राद्ध प्रायश्चितादि कर्म ।

नित्यप्रति [अव्य.] (सं.) प्रतिदिन । हररोज ।

नित्यप्रलय [संज्ञा पु.] (सं.) नित्य होने वाला प्रलय । सुषुप्ति की अवस्था जब निद्रा आती है और किसी विषय का ज्ञान नहीं रहता । नींद । निद्रा ।

नित्यमय [वि.] (सं.) अनन्त ।

नित्यमुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा । ईश्वर ।

नित्ययज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र आदि प्रतिदिन करने का यज्ञ ।

नित्ययुक्त [वि.] (सं.) सदा या सर्वदा काम में लगा रहने वाला । [संज्ञा पु.](सं.) परमात्मा । श्रीरामानुज सिद्धान्तानुसार विष्वक्सेनादि सूरिगण जिनके विषय में वेदों में लिखा है-तद्विष्णो: परमंपदं सदा पश्यन्ति सूरय: ।

नित्ययौवना [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] सदैव युवती बनी रहने वाली अथवा जिसका यौवन बराबर या बहुत काल तक स्थिर रहे । [संज्ञा स्त्री.] द्रौपदी ।

नित्यवैकुंठ, नित्यवैकुण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का स्थान विशेष ।

नित्यशंकित, नित्यशङ्कित [वि.] (सं.) सदैव शंकाशील रहने वाला ।

नित्यश: [अव्य.] (सं.) १-सदैव । सर्वदा । हमेशा । २-प्रतिदिन । हररोज ।

नित्यसम [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में जो २४ जाति अर्थात केवल साधर्म्य और वैधर्म्य से अयुक्त-खंडन कहे गये हैं उनमें से एक । यह इस प्रकार किया जाता है कि अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है अत: धर्म के नित्य है अत: धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ ।

नित्यसमास [संज्ञा पु.] (सं.) 'कु' शब्द और 'आदि' शब्द के साथ जो समास होता है वह नित्य समास कहलाता है ।

नित्यस्तोत्र [वि.] (सं.) १-सर्वदा प्रशंसित । २-वह स्तोत्र जिसका सर्वदा पाठ किया जाय ।

नित्यहोम [संज्ञा पु.] (सं.) वह हवन जिसका प्रतिदिन करना द्विजों के लिये आवश्यक हो

नित्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवी की एक शक्ति का नाम । २-पार्वती । ३-मनसादेवी । ४-एक शक्ति का नाम ।

नित्यानंद, नित्यानन्द [वि.] (सं.) जो सदैव आनन्द से रहे ।

नित्यानध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा अवसर चाहे वह जिस दिन या वार अथवा तिथि को पड़ जाय जिसमें वेद के अध्ययन अध्यापन का निषेध हो । मनु के मतानुसार जब पानी बरसता, बादल गरजता तथा बिजली चमकती हो अथवा आंधी के कारण आसमान में धूल छाई हो तब अनध्याय रखना चाहिए ।

नित्यानुबद्ध [वि.] (सं.) रक्षा करने वाला । बचाने वाला ।

नित्याभियुक्त [वि.] (सं.) (योगी) जो केवल इतना भोजन करके रहे जितने से देह रक्षा होती रहे तथा सब त्याग करके योग साधन करे ।

निथंभ* [संज्ञा पु.] (हिं.) खंभा । स्तम्भ ।

निथरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जल अथवा अन्य किसी तरल पदार्थ का स्थिर होना जिससे उसमें मैल आदि नीचे बैठ जाय । निखर साफ होना । २-घुले हुए पदार्थ के बैठ जाने से जल या अन्य किसी तरल पदार्थ का अलग हो जाना । पानी छन जाना ।

निथार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जल के स्थिर होने के कारण उसके तल में बैठी हुई वस्तु । २-घुली हुई वस्तु के बैठ जाने से अलग हुआ स्वच्छ पानी ।

निथारना [क्रि. स.] (हिं.) १-पानी या अन्य किसी तरल पदार्थ को स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई मैल नीचे बैठ जाय । निथार कर साफ करना । २-घुली हुई वस्तु को नीचे बैठाकर खाली पानी अलग करना । छानकर अलग करना ।

निथालना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निथारना' ।

निद [संज्ञा पु.] (सं.) विष । जहर । [वि.] निन्दा करने वाला ।

निदई* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दयी' ।

निदद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य । मानव । [वि.] जिसको दाद का रोग न हुआ हो ।

निदरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-निरादर करना । अपमान या अप्रतिष्ठा करना । २-बेइज्जती करना । ३-तिरस्कार करना । त्याग करना । ४-मात करना । बढ़कर निकलना । तुच्छ ठहराना । दबाना ।

निदर्शक [वि.] (सं.) १-देखने वाला । २-जताने वाला । पहचानने वाला । ३-बतलाने वाला । निर्देश करने वाला ।

निदर्शन [संज्ञा पु.](सं.) १-दिखाने या प्रदर्शित करने का काय । प्रकट करने का कार्य । २-

…तु। साक्षी। ३-उदाहरण। दृष्टान्त। नज़ीर। …वस्तु या बात जो आदर्श या प्रमाणरूप …सामने रखी जाय। इलस्ट्रेशन। ४-आप्त-वचन आदेश।

निदर्शना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालंकार जिसमें एक बात या काम से कोई दूसरी बात या काम ठीक तरह से कर दिखलाने का वर्णन होता है। इस अलंकार के भिन्न आचार्यों ने अलग अलग लक्षण लिखे हैं। साहित्यदर्पण के अनुसार—'जहाँ होता हुआ वस्तु-संबंध तथा न होता हुआ वस्तु-संबंध दोनों बिंबानुबिंब भाव से दिखाये जाते हैं। वहाँ निदर्शना होती है'। काव्यप्रकाशकारिका—न होता हुआ वस्तु-संबंध जहाँ उपमा की कल्पना करे। (प्रथम निदर्शना) अथवा जहाँ क्रिया से ही अपने और अपने हेतु के संबन्ध की उक्ति हो वहाँ निदर्शना अलंकार होता है' (दूसरी निदर्शना)। दंडी के मतानुसार—'अर्थांतर में प्रवृत्त कर्त्ता द्वारा अर्थांतर के द्वारा जो सत या असत फल दिखाया जाता है वह निदर्शना है'। चन्द्रालोककार के अनुसार लक्षण इस प्रकार है—'सदृश वाक्यार्थों की एकता का आरोप निदर्शना है'। हिन्दी कवियों ने चन्द्रालोककार का ही लक्षण ग्रहण किया है जिस प्रकार भूषण कवि ने अपने पद में उल्लेख किया है—सरिस वाक्य जुग के अरथ करिए एक अरोप। भूषण ताहि निदर्शना कहे बुद्धि दै ओप।

निदलन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्दलन'।

निदहना* [क्रि. स.] (हिं.) जलाना।

निदाघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरमी। ताप। २-घाम। ३-ग्रीष्मकाल। गरमी। ४-विष्णु पुराणानुसार पुलस्त्य ऋषि के एक पुत्र का नाम।

निदाघकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। सूरज। आक। मदार।

निदाघकाल [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रीष्मकाल या ऋतु। गरमी का मौसम।

निदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-कारण, विशेषतः मूल या आदिकारण। चिकित्सक का यह निश्चय करना कि रोगीके कौन रोग है। रोग की पहचान। रोग निर्णय। रोग लक्षण। ३-अन्त अवसान। ४-तप के फल की चाह। शुद्धि। पवित्रता। ६-बछड़ा बाँधने की रस्सी। बागडोर। रस्सी। बंधना। ७-अन्त में। आखीर। [अव्य.] (सं.) [वि.] (सं.) अन्तिम या निम्न श्रेणी का। बहुत ही गया बीता। हद दरजे का।

निदारुण [वि.] (सं.) १-कठिन। घोर। भयानक २-दुःसह। ३-निर्दय। कठोर।

निदाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निदाघ'।

निदिग्ध [वि.] (सं.) १-छोपा हुआ। लेप किया हुआ। जमा कियाहुआ। चढ़ाया हुआ।

निदिग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची।

निदिग्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची।

निदिध्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) फिर-फिर स्मरण करना। बारबार ध्यान में लाना।

निदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्य का स्वरूप प्रकार या विधि बतलाना। डाइरेक्शन। २-शासन। ३-आज्ञा। हुक्म। ३-कथन। वर्णन वार्तालाप। उक्ति। ४-पड़ौस। नैकट्य। ५-पात्र। बरतन। यज्ञीय पात्र। ६-किसी आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के सम्बन्ध में लगाई हुई कोई शर्त या बंधन। प्राविजन।

निदेशी [वि.] (सं.) निर्देश करने वाला। आज्ञा करने वाला।

निदेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निदेश'।

निदोष* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दोष'

निद्धि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निधि'।

निद्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपसंहारक अस्त्र।

निद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी चेतन वृत्तियाँ बीच-बीच में कुछ समय के लिए निश्चेष्ट होकर रुकी रहती हैं और उन्हें शारीरिक और मानसिक विश्राम मिलता है। नींद।

निद्राकर [वि.] (सं.) सुलाने वाला। निद्राकारक।

निद्राकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा का आकर्षण। निद्राशीलता।

निद्राकारी [वि.] (सं.) सुलाने वाला।

निद्राकाल [संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा लेने या सोने का समय।

निद्राकुल [वि.] (सं.) निद्रा से आकुल या पीड़ित

निद्राकृष्ट [वि.] (सं.) जिसको नींद आगई हो।

निद्राक्रांत, निद्राक्रान्त [वि.] (सं.) निद्रा से पीड़ित। निद्राकुल।

निद्रागत [वि.] (सं.) जो सो गया हो। निद्रित।

निद्रागार [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का कमरा।

निद्रागौरव [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत नींद आना।

निद्राग्रस्त [वि.] (सं.) निद्रा में ग्रस्त। निद्राशील। निद्रालु। जिसे नींद आरही हो।

निद्राजनक [वि.] (सं.) सुलाने वाला।

निद्रादरिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) नींद का आना।

निद्रान्वित [वि.] (सं.) सोया हुआ। निद्रागत।

निद्राभंग, निद्राभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नींद टूटना। जागरण। जागरति।

निद्राभाव [संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा का अभाव। नींद न आना।

निद्रायमान [वि.] (सं.) जो नींद में हो। सोता हुआ।

निद्रायोग [संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा और गहरी चिन्ता।

निद्रारि [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

निद्रालु [वि.] (सं.) निद्राशील। सोने वाला। [संज्ञा स्त्री.] १-बैंगन। भंटा। २-बबरी। ममरी। बनतुलसी। ३-नली नामक गंधद्रव्य।

निद्रावस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निद्रित अवस्था।

निद्राविमुख [वि.] (सं.) अनिद्रा। जागरुक।

निद्रावृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार। अंधेरा।

निद्रावेश [संज्ञा पु.] (सं) सोने की इच्छा।

निद्राशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने का कमरा।

निद्राशील [वि.] (सं.) जिसे नींद आरही हो। निद्रालु। सोने वाला।

निद्रासंजन, निद्रासञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कफ। श्लेष्मा। (कफ की वृद्धि से नींद अधिक आती है)।

निद्रित [वि.] (सं.) सुप्त। सोया हुआ।

निद्रोत्थित [वि.] (सं.) जो सोकर उठा हो।

निधड़क [क्रि. वि.] (हिं.) १-बे-रोक। बिना किसी रुकावट के। २-बिना संकोच के। बिना हिचक। ३-निःशंक। बेखटके। बिना किसी भय या चिन्ता के।

निधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाश। विनाश। २-फलित-ज्योतिष में लग्न से आठवाँ स्थान। ३-जन्मनक्षत्र से सातवाँ, सोलहवाँ और तेईसवाँ नक्षत्र। ४-कुल। कुटुम्ब। जाति। ५-कुल का अधिपति। ६-विष्णु। ७-पाँच अवयव या सात अवयवयुक्त साम का अन्तिम अवयव। ८-मृत्यु। मौत। मरण। (श्रेष्ठ या आदरणीय व्यक्तियों के लिए) डिमाइज। [वि.] धनहीन। दरिद्र। निर्धन।

निधनक्रिया [संज्ञा स्त्री.] अन्त्येष्टि क्रिया।

निधनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दरिद्रता। निर्धनता। कंगाली।

निधनपति [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकर्त्ता, शिव।

निधनी [वि.] (हिं.) धनहीन। दरिद्र।

निधमन [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का पेड़।

निधरक+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'निधड़क'।

निधातव्य [वि.] (सं.) स्थापना न करने योग्य। स्थापनीय।

निधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधार। आश्रय। २-निधि। कोश। २-वह जिसमें किसी गुण की परिपूर्णता हो। जैसे—कृपानिधान। ३-वह स्थान जहाँ कोई वस्तु लीन हो जाय। लयस्थान।

निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-गाड़ा हुआ खजाना। २-कुबेर के नौ प्रकार के खजाने है। यथा-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और वर्च्च। ३-नौ की संख्या का सूचक शब्द। ४-किसी विशेष कार्य के लिए इकट्ठा या जमा किया जाने वाला धन। फंड। ५-वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिए

अलग रखा या जमा कर दिया जाय । एन्डाउमेंट । ६-वह स्थान जहाँ इस प्रकार धन रखा जाय । ७-समुद्र । ८-आगार । घर । विष्णु । १०-शिव । ११-जीवक नाम की एक औषधि । १२-नलिका नामक एक गंधद्रव्य । १३-अनेक सद्गुणों से भूषित पुरुष ।

निधिगोप [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो वेद-वेदांग में पारंगत होकर गुरुकुल से आया हो । अनूचान ।

निधिनाथ [संज्ञा पु.] (सं) निधियों का स्वामी, कुवेर ।

निधिप [संज्ञा पु.] (सं.) कुवेर ।

निधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) कुवेर । धनेश्वर ।

निधिपा [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञों का अधिपति ।

निधिपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुवेर । २-वह जिसकी देख-रेख में कोई निधि, संपत्ति या कुछ वस्तुएँ रखी गई हों या रहती हों । कस्टोडियन ।

निधिमान् [वि.] (सं.) जिसके पास धन हो । धनाढ्य ।

निधीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) कुवेर ।

निधुवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मैथुन । २-नर्म-केलि । ३-हँसीठट्ठा । ४-कम्प ।

निधेय [वि.] (सं.) स्थापनीय । स्थापना करने योग्य ।

निध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन । देखना । २-निदर्शन ।

निध्रुव [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि ।

निध्वान [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द । नाद । आवाज

निनक्षु [वि.] (सं.) १-मरने का अभिलाषी । २-निकल भागने की इच्छा रखने वाला ।

निनद [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द । आवाज । घरघराहट । २-गुंजार । भिनभिन-शब्द ।

निनय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नम्रता । आजजी । नौताई ।

निनयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्य को पूर्ण करने की क्रिया । २-उड़ेलना । ३-निष्पादन । ४-प्रणीता के जल को कुश से यज्ञ की वेदी पर छिड़कने का कार्य ।

निनरा※ [वि.] (हिं.) न्यारा । अलग । जुदा । दूर ।

निनाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द । नाद । आवाज २-जोर का शब्द ।

निनादना※ [क्रि. अ.] (हिं) निनाद या शब्द करना ।

निनादित [वि.] (सं.) शब्दित । ध्वनित । शब्द किया हुआ ।

निनादी [वि.] (हिं.) [स्त्री. निनादिनी] शब्द करने वाला ।

निनान※ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अन्त । २-लक्षण । [क्रि. वि.] (हिं.) अन्त में । आखिर । [वि.] (हिं.) १-परले सिरे का । एकदम । घोर । बिलकुल । २-बुरा । निकृष्ट ।

निनाया [संज्ञा पु.] (देश.) खटमल ।

निनार [वि.] (हिं.) देखो 'निनारा' ।

निनारा [वि.] (हिं.) १-अलग । जुदा । भिन्न । न्यारा । २-दूर । हटा हुआ ।

निनावाँ [संज्ञा पु.] (देश.) मुँह के भीतरी भाग में निकलने वाले छोटे छाले ।

निनावीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिना नाम की वस्तु । वह जिसका नाम लेना अशुभ समझा जाता हो । २-चुड़ैल । भुतनी ।

निनीषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की अभिलाषा ।

निनौना [क्रि. स.] (हिं.) नीचे करना । झुकाना । नवाना ।

निनौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान या घर जहाँ नाना-नानी रहते हों ।

निनानवे [वि.] (हिं.) नब्बे और नौ । सौ से एक कम । *निनानवे के फेर में आना या पड़ना*-धन बढ़ाने की चिन्ता में पड़ना ।

निन्यारा※ [वि.] (हिं.) १-अलग । जुदा । भिन्न । न्यारा । २-दूर । हटाहुआ ।

निन्हियाना [क्रि. अ.] (हिं.) गिड़गिड़ाना । दीनता प्रकट करना । आजजी दिखाना ।

निपंग [वि.] (हिं.) जिसके हाथ पैर टूटे हों या काम न दे सकें । अपाहिज । निकम्मा ।

निप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलसा । कलश । २-कदंब का पेड़ ।

निपजना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-उगना । उपजना । उत्पन्न होना । २-पकना । बढ़ना । पुष्ट होना । ३-बनना । तैयार होना ।

निपजी※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लाभ । मुनाफा । २-उपज ।

निपट [अव्य.] (हिं.) १-निरा । विशुद्ध । खाली । एकमात्र । २-सरासर । एकदम । बिलकुल । नितांत ।

निपटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-निवृत होना । छुट्टी पानी । २-समाप्त या पूरा होना । निर्णित या तै होना । ४-खतम होना । शौच स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होना ।

निपटारा [क्रि. स.] (हिं.) १-पूरा करना । समाप्त करना । २-चुकाना । (देन ऋण आदि) । ३-समाप्त या तै करना (काम झगड़ा आदि) । डिस्पोज ।

निपटाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निपटने की क्रिया या भाव । २-किसी बात के तै या निश्चित होने की क्रिया या भाव । सेटिलमेंट । ३-अन्त । समाप्ति । ४-निर्णय । फैसला ।

निवटावा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निबटावा' ।

निपटेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निवटरा' ।

निपठ [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ना । पाठ करना । अध्ययन करना ।

निपठित [वि.] (सं.) जो पढ़ा लिखा न हो । अशिक्षित ।

निपतन [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे गिरने की क्रिया । नीचे उतरने की क्रिया । अधःपतन । गिरना । गिराव ।

निपतित [वि:] (सं.) गिराहुआ । पतित । अधःपतन ।

निपत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह जमीन जहाँ विचलाहट या फिसल न हो । २-युद्धभूमि । रणक्षेत्र ।

निपत्र [वि.] (हिं.) पत्रहीन । ठूँठा (वृक्ष या पौधा) ।

निपरन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम का अभाव ।

निपलाश [वि.] (सं.) जिसका पत्ता गिर गया हो ।

निपाँगुर [वि.] (हिं.) १-लगड़ा । २-अपाहिज । ३-जिसके हाथ पैर काम न करते हों ।

निपाक [संज्ञा पु.] (सं.) पकाने की क्रिया । जैसे कच्चे फल को ।

निपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-पतन । गिराव । पात । २-अधःपतन । ३-विनाश । ४-मृत्यु । क्षय । नाश । ५-व्याकरण के मतानुसार वह शब्द जिसके बनने के नियम का पता न हो या जो व्याकरण के नियमों से सिद्ध न हो । ※[वि] (हिं.) बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा) ।

निपातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिराने का कार्य । २-नाश । क्षय । ३-वध । हत्या । ४-नियम विरुद्ध शब्द का रूप ।

निपातना※ [क्रि. सं.] (हिं.) १-गिराना । नीचे गिराना । २-नष्ट करना । काटकर गिराना । ३-मारना । वध करना ।

निपातनीय [वि.] (सं.) वध करने योग्य ।

निपातित [वि.](सं.) जो नीचे फेंक दिया गया हो ।

निपाती [वि.] (हिं.) १-गिराने वाला । फेंकने वाला । २-घातक । मारने वाला । ३-बिना पत्ते का । [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव । महादेव ।

निपाद [संज्ञा पु.] (सं.) नीचा प्रदेश । नीची भूमि ।

निपान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीने की क्रिया । २-तालाव । ३-कूप के समीप का हौद जिसमें पशुओं के पीने को जल भरा जाय । ४-कूप । ५-दूध दूहने का पात्र ।

निपीड़क [वि.] (सं.) १-पीड़ा देने वाला । दुःखदायक । २-मलने-दलने वाला । ३-निचोड़ने वाला । ४-पेरने वाला ।

निपीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-कष्ट पहुँचाने या पीड़ित करने का काम । पीड़ित करना । तकलीफ देना । २-दलना-मलना । ३-पसेव निकालना । पसाना । ४-दबाकर निकालने की क्रिया । पेरना । (जिस प्रकार तेल निकाला जाता है) । ५-घायल करने की क्रिया ।

तरह बाँधने की क्रिया या भाव। २–बन्धन। किसी विषय का वह सविस्तार विवेचन जिसमें उससे संबन्ध रखने वाले अनेक मतों विचारों, मन्तव्यों आदि का तुलनात्मक और पांडित्यपूर्ण विवेचन हो। एस्से। ४–उक्त प्रकार का वह छोटा लेख जो विद्यार्थी अपनी लेखन शक्ति तथा विवेचन बुद्धि बढ़ाने के निमित्त अभ्यास के रूप में लिख लेते हैं। ५–(मकान) बनाने का कार्य। ६–रोकथाम। ७–सहारा। अवलम्ब। ८–अधीनता। संबंध। ९–कारण। उपादानकारण। आधार। आधार। उद्देश्य। नीव। १०–स्थापना। ११–सद्वृत्ति। १२–वीणा की खूँटी। १३–टीका। १४–वाक्यरचना। १५–नीम का पेड़ १६–पेशाब बंद होने की बीमारी। अनाह रोग। करक। वह वस्तु जिसे किसी को देने का वायदा कर दिया गया हो।

निबंधक, निबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १–निबंधन करने वाला। २–वह अधिकारी जो लेख आदि की प्रमाणिकता सिद्ध करने के निमित्त उन्हें राजकीय पंजी में प्रतिलिपि के रूप में निबन्धित करता या लिखता है (न्याय और शासन-विभाग का रजिस्ट्रार)। २–इसी से मिलता-जुलता वह अधिकारी जो किसी विभाग अथवा संस्था के सब प्रकार के लेख रखता तथा निबन्धित करता है। यथा-विश्व विद्यालय या सहयोग समितियोंका निबन्धक। महाधिकरण अथवा हाईकोर्ट का निबन्धक। रजिस्ट्रार।

निबंधन, निबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाँधना। २–बन्धन। ३–बंधा हुआ ढंग या नियम। बंधेज। ४–कारण। हेतु। ५–लेखों आदि का प्रमाणिक सिद्ध होने के लिए किसी राजकीय या सरकारी पंजी में लिखा या चढ़ाया जाना। रजिस्ट्रेशन। ६–वह नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्त्ता या प्रतिनिधि अपना कार्य करता है। टर्म।

निबंधनी, निबन्धनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–बंधन २–बेड़ी।

निबंधित, निबन्धित [वि.] (सं.) जिसका निबन्धन हुआ हो। रजिस्ट्री किया हुआ। रजिस्टर्ड

निब [संज्ञा स्त्री.] (अं.) लोहे पीतल आदि की बनी हुई कलम की चोंच या जीभी जो कलम में ऊपर से खोंसी जाती है।

निबकौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नीम का फल। निबौली। निबौरी। २–नीम का बीज।

निबटना [क्रि. अ.] (हि.) १–निवृत्त या फारिग होना। छुट्टी या फुरसत पाना। खाली होना। २–समाप्त होना। पूरा होना। भुगतना। ३–निर्णित होना। तै होना। ४–चुकना। खतम होना। ५–शौच आदि से निवृत्त होना।

निबटाना [क्रि. स.] (हिं.) १–पूरा करना। समाप्त करना। २–भुगताना। चुकाना। बेबाक करना। ३–निर्णित करना। तै करना।

निबटाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–निबटने की क्रिया या भाव। निबटेरा। २–झगड़े का फैसला। निर्णय।

निबटेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निबटने की क्रिया या भाव। छुट्टी। २–झगड़े का फैसला। निश्चय।

निबड़ना [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'निबटना'।

निबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा घड़ा।

निबद्ध [वि.] (सं.) १–बंधा हुआ। २–निरुद्ध। रुका हुआ। ३–ग्रथित। गुथा हुआ। ४–निवेशित। जड़ा या बैठाया हुआ। ५–लेखों आदि का प्रमाणित सिद्ध होने के लिए किसी राजकीय या सरकारी पंजी में लिखा अथवा चढ़ाया हुआ। जिसका निबंधन हुआ हो। रजिस्टरी किया हुआ। रजिस्ट्रेशन।
[संज्ञापु.] (सं.) वह गीत जिसे गाते समय अक्षर, ताल, मान, गमक, रस आदि के नियमों का विशेष ध्यान रखा जाय।

निबर [वि.] (हिं.) देखो 'निर्बल'।

निबरना [क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी बंधी, फँसी अथवा लगी वस्तु का अलग होना। छूटना। २–मुक्त होना। पार पाना। उद्धार पाना। ३–निवृत्त होना। छुट्टी या अवकाश पाना। खाली होना। ४–(काम) पूरा होना। समाप्त होना। भुगतना। निबटना। चुकना। ५–निर्णय होना। तै होना। फैसला होना। ६–एक में मिलीजुली चीजों का अलग होना। छँटना, विलग होना। ७–उलझन दूर होना। सुलझना। फँसाव या अड़चन दूर होना। ८–न रह जाना। जाता रहना। दूर होना।

निबर्हण [वि.] (सं.) नाशक। विनाशक। शत्रु।
[संज्ञा पु.] १–निष्ट होने की क्रिया या भाव २–नाशक। नाश। ३–वध। हत्या।

निबल* [वि.] (हिं.) निर्बल। अशक्त। कमजोर। दुर्बल।

निबलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निर्बलता। कमजोरी। दुर्बलता।

निबह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्वह'।

निबहना [क्रि. अ.] (हिं.) १–छुटकारा पाना। पार पाना। छुट्टी पाना। २-निर्वाह होना। गुजारा होना। पालन या रक्षा होना। ३–किसी सम्बन्ध स्थिति आदि का निरन्तर बना रहना ४–पूरा होना। बराबर होता चलना। सरपना ५–किसी बात के अनुसार बराबर व्यवहार रहना। पालन या चरितार्थ होना (आज्ञा कार्य आदि)।

निबहुर* [संज्ञा पु.] (हिं) जहाँ से लौटकर कोई वापिस न आये, यमद्वार।

निबहुरा* [वि.] (हिं.) जो जाकर फिर वापस न आये।

निबाह [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निबाहने की क्रिया

या भाव। गुजारा। २–प्रथा, परम्परा आदि के अनुसार व्यवहार करके उसकी रक्षा या पालन करना। ३–आज्ञा, कार्य आदि पूरा करना। पालन।

निबाहक [वि.] (हिं.) निबाह करने वाला। निबाहने वाला।

निबाहना [क्रि. स.] (हिं.) १–निर्वाह करना। संबंध या परम्परा की रक्षा करना। बनाये रखना। २–पालन या चरितार्थ करना। पूरा करना। ३–निरन्तर साधना करना। बराबर करते जाना। सपराना।

निविड़ [वि.] (हिं.) देखो 'निविड़'।

निविड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १–बँधी। फंसी या लगी वस्तु का अलग होना। २–उलझन आदि का दूर होना। सुलझना। ३–निबटना। तै होना। ४–दूर या अलग होना। ५–भुगतना। सरपना। पूरा होना।

निबुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नीबू'।

निबुकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–छुटकारा पाना। बंधन से निकलना २–बंधन आदि का खिसकना।

निबेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १–बंधन से छुड़ाना। उन्मुक्त करना। बंधी, फंसी या लगी वस्तु को अलग करना। २–परस्पर मिली हुई वस्तुओं को अलगाना। छाँटना। चुनना। ३–लगाव फंसाव दूर करना। सुलझाना। उलझन दूर करना। ४–निर्णय करना। तै करना। निबटाना। ५–दूर करना। अलग करना। छोड़ना। हटाना। ६–भुगताना। निबटाना। पूरा करना।

निबेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–छुटकारा। मुक्ति। २–बचाव। उद्धार। ३–परस्पर मिली हुई वस्तुओं के अलग होने की क्रिया या भाव। ५–त्याग ६–भुगतान। समाप्ति। निबटेरा। चुकती। ७–फैसला। निर्णय।

निबेरना [क्रि. सं.] (हिं.) १–बंधन से छुड़ाना। २–चुनना। छाँटना। ३–हटना। दूर करना। ४–निर्णय या फैसला करना। तै करना। ५–त्यागना। छोड़ना। ६–(काम आदि) निबटाना या भुगताना। पूरा करना। ७–उलझन दूर करना या सुलझाना।

निबेरा [संज्ञा पु.] (हिं) १–छुटकारा। उद्धार। मुक्त। बचाव। २–विलगाव। छाँट। चुनाव उलझन या फँसाव का दूर होना। ४–निर्णय फैसला। निबटेरा। ५–(काम आदि का) निबटेरा या पूर्ति।

निबेहना* [क्रि. सं.] (हिं.) देखो 'निबेड़ना'।

निबौरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निबौली'।

निबौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीम का फल। निबकौरी।

निभ [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश। प्रभा। चमक-दमक। [वि.] (सं.) समान। तुल्य। बराबर।

निभना [क्रि. अ.] (हिं.) १–छुटकारा पाना। पार पाना। २–सम्बन्ध व्यवहार आदि का ठीक तरह से चलता रहना। गुजारा होना। ३–किसी स्थिति के अनुकूल जीवन व्यतीत होना। गुजारा होना। ४–बराबर होता चलना भुगताना पूरा होना। ५–किसी बात के अनुरूप निरन्तर व्यवहार होना। पालन या चरितार्थ होना।

निभरम* [वि.] (हिं.) जिसे या जिसमें किसी प्रकार की शंका न हो। भ्रमरहित। [क्रि.वि.] (हिं.) बेधड़क। निःशंक। बेखटके।

निभरमा [वि.] (हिं.) जिसका विश्वास उठ गया हो। जिसका परदा ढका न हो। जिसकी कलई खुल गई हो।

निभरोस+ [वि.] (हिं.) जिसे भरोसा न हो। हताश। निराश।

निभरोसी* [वि.] (हिं.) जिसे कोई भरोसा न रह गया हो। निराश। हताश। २–जिसे कोई आसरा या भरोसा न हो। निराश्रय। निराधार बिना सहारे का।

निभाउ* [वि.] (हिं.) भावरहित। भावहीन। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निबाह'।

निभागा [वि.] (हिं.) अभागा। बदकिस्मत।

निभाना [क्रि. स.] (हिं.) १–सम्बन्ध या परंपरा रक्षित रखना। २–किसी बात के अनुरूप निरन्तर व्यवहार करना। ३–बराबर करते जाना। चलाना। भुगताना।

निभालन [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शन। देखना पहचानना।

निभाव [संज्ञा पु.] (हिं) निभने या निभाने की क्रिया या भाव। गुजारा। २–प्रथा, परम्परा आदि के अनुसार व्यवहार करके उसकी रक्षा अथवा पालन करना। ३–आज्ञा, कार्य आदि पूरा करना। पालन।

निभीम [वि.] (सं.) भयावना। डरावना।

निभूत [वि.] (सं.) भूत। बीता हुआ। गया गुजरा।

निभूयप [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। नारायण।

निभृत [वि.] (सं.) १–रखा हुआ। जमा किया किया हुआ। धृत। २–परिपूर्ण। भरा हुआ। छिपा हुआ। ४–गुप्त। ५–शान्त। चुप। अचंचल। अनुद्विग्न। धीर। ६–निम्न। कोमल। ७–विनीत। विनम्र। ८–दृढ़ संकल्प या विचार का। ९–निर्जन। एकान्त। १०–अस्त होने के निकट। (सूर्य या चन्द्रमा)।

निभृतम् [अव्य.] चुपचाप। गुपचुप। गुप्त रीति से। बिना जनाये हुए।

निभ्रान्त* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्भ्रांत'।

निमंत्रण, निमन्त्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी कार्य के लिए अथवा किसी अवसर पर आने के लिए आदरसहित कहना। बुलावा। आह्वान। न्योता। २–भेजने के लिए दिया आने वाला बुलावा।

निमंत्रण-पत्र, निमन्त्रण-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति से उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए अ किया गया हो और लिखा हो कि आप दिनांक को अमुक समय पर पधारने कृपा करें।

निमंत्रना* [क्रि. स.] (हिं.) न्योता देना।

निमंत्रित, निमन्त्रित [वि.] (सं.) जिसे निमं दिया गया हो।

निम [संज्ञा पु.] (सं.) शलाका। शंकु।

निमक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नमक'।

निमकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नीबू का अचार। २–मैदे की नमकीन, मोयनदार घी में तली हुई, टिकिया।

निमकौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निबौली। नीम का फल।

निमगारना* [क्रि. अ] (हिं) उत्पन्न होना।

निमग्न [वि] (सं) [स्त्री. निमग्ना] १–डूबा हुआ। लिप्त। मग्न। २–तन्मय।

निमछड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसा समय जिसमें करने का कोई काम न हो। अवकाश। फुरसत। छुट्टी।

निमज्जक [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र आदि जलों में डुबकी या गोताखोर।

निमज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) डुबकी या गोता लगा कर किया जाने वाला स्नान। अवगाहन।

निमज्जना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–डुबकी लगाना। गोता लगाना। २–लीन होना।

निमज्जित [वि.] (सं.) १–डूबा हुआ। मग्न। २–स्नात। नहाया हुआ।

निमटना [क्रि. अ.] (हिं.) १–निवृत्त होना। छुट्टी पाना। २–समाप्त या पूरा होना। ३–निर्णीत या तै होना। ४–खतम होना। ५–शौच स्नान आदि क्रियाओं से निवृत होना।

निमटाना [क्रि. सं.] (हिं.) १–पूरा या समाप्त करना। २–भुगताना। चुकाना। बेबाक करना। ३–निर्णीत या तै करना। [illegible] रखना।

निमटेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–निमटाने या निबटाने की क्रिया या भाव। छुट्टी। २–समाप्ति। ३–झगड़े का फैसला या निर्णय। निबटेरा।

निमता* [वि.] (हिं.) १–जो उन्मत्त न हो। २–धीर। शांत।

निमन्यु [वि.] (सं.) क्रोधरहित। जिसको गुस्सा न हो। शांत।

निमय [संज्ञा पु.] (सं.) अदला-बदली। एक वस्तु के मूल्य में देकर, दूसरी वस्तु खरीदना। विनिमय।

निमरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मध्य-भारत में

ने वाली एक प्रकार की कपास। बरही। आई।

निमर्म [वि.] (सं.) जिसमें मर्म न हो। मर्मरहित।

निमाज़ [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) मुसलमानी धर्मानुसार ईश्वर प्रार्थना। ॐ[वि.] (हिं.) नवाज़। कृपा करने वाला।

निमाज़बंद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कुश्ती का एक पेंच।

निमाज़ी [वि.] (फ़ा.) १-नित्य नियम से नमाज पढ़ने वाला। २-दीनदार। धार्मिक (मुसलमान)।

निमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाव। २-मूल्य। ॐ(हिं.) १-नीचा स्थान। गड्ढा। २-जलाशय।

निमाना [वि.] (हिं.) [स्त्री. निमानी] १-नीचे की ओर गया हुआ। ढलुवाँ। २-नम्र। विनीत। सरल स्वभाव का। ३-दब्बू।

निमि [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँख झपकाना या मूंदना। निमेष। २-महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। ३-इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम जो मिथिला के राजाओं का पूर्व पुरुष था।

निमिख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निमेष'।

निमित्त [संज्ञा पु.] १-वह बात या कार्य जिससे कोई अन्य बात या कार्य हो। हेतु। २-वह फल जिसके विचार अथवा उद्देश्य से कोई काम या बात हो। कारण। ३-वह जो नाममात्र के लिए सम्मुख आया हो, वास्तविक कर्त्ता न हो। ४-शकुन। सगुन। ५-उद्देश्य। फल की ओर लक्ष्य।

निमित्तक [वि.] (सं.) किसी हेतु से होने वाला। [संज्ञा पु.] चुम्बक।

निमित्त-कारण [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय के अनुसार वह कारण जो किसी वस्तु को बनाये या जिसकी सहायता से वस्तु बनें। वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई कार्य हो या वस्तु बने।

निमित्त-काल [संज्ञा पु.] (सं.) निमेष समय या काल।

निमित्त-कृत [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौआ।

निमित्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) कारणत्व।

निमित्त-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रायश्चित। २-धार्मिक विधि जो कभी-कभी की जाय।

निमित्तमात्र [संज्ञा पु.] (सं.) कारणमात्र। हेतुमात्र।

निमित्तविद् [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी। दैवज्ञ। [वि.] शकुनों का शुभाशुभ फल जानने वाला

निमित्त-हेतु [संज्ञा पु.] (सं.) वह कारण जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने। (न्याय)।

निमित्तावृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विशेष कारण पर निर्भर।

निमित्ती [वि.] (सं.) प्रयोजक। कर्ता।

निमिराज॰ [संज्ञा पु.] (सं.) निमिवंशीय राजा जनक।

निमिष [संज्ञा पु.] (सं.) १-आंख झपकने की क्रिया। आंखें बंद करने की क्रिया। २-पलक मारने भर का समय। पल। क्षण। ३-फूलों के मुँदने की क्रिया। ४-पलकों के खुलने और बन्द होने की क्रिया। ५-पलक पर होने वाला एक रोग (सुश्रुत)।

निमिषक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) नैमिषारण्य।

निमिषित [वि.] (सं.) निमीलित। मिचा हुआ। पलक मारता हुआ।

निमीलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलक मारना या झपकाना। निमेष। २-मरण। ३-बंद करना। मूंदना। ४-सिकोड़ना। ५-पलक मारने भर का समय। पल। क्षण। ६-सर्वग्रास ग्रहण।

निमीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आंखों की झपकी। २-व्याज। छल।

निमीलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आंखों की झपकी। २-व्याज। छल।

निमीलित [वि.] (सं.) १-बंद। ढकाहुआ। २-मृत। मराहुआ।

निमुहाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. निमुहीं] न बोलने वाला। चुपका। कम बोलने वाला।

निमूँद॰ [वि.] (हिं.) मुँदाहुआ। बन्द किया हुआ।

निमूल [वि.] (सं.) १-मूलरहित। २-प्रकाशन। [क्रि. वि.] (हिं.) जड़ के नीचे तक।

निमेख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निमेष'।

निमेट॰ [वि.] (हिं.) न मिटने वाला। अमिट।

निमेय [वि.] (सं.) परिवर्तनीय। बदलने योग्य।

निमेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलक गिरना या झपकना। २-पलक गिरने भर का समय। पल। क्षण। ३-आँख का एक रोग जो पलक पर होता है। ४-एक यक्ष का नाम (महाभारत)।

निमेषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलक। २-जुगनू। खद्योत।

निमेषकृत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत। बिजली।

निमेषण [संज्ञा पु.] (सं.) पलक गिरना। आँख मुँदना।

निमेषरुच [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत। जुगनू।

निमोची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षस विशेष।

निमोना [संज्ञा पु.] (हिं.) पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को भूनकर बनाया हुआ एक व्यंजन।

निमौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह दिन जब ऊख की फसल में से पहले-पहल कटाई होती है।

निम्न [वि.] (सं.) नीचा।

निम्नग [संज्ञा पु.] (सं.) नीचे जाने वाला।

निम्नगत [वि.] (सं.) नीचे की ओर गया हुआ।

निम्नगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

निम्नदेश [संज्ञा पु.] (सं.) तल प्रदेश। निचला भाग।

निम्न-मध्य-वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) निम्न श्रेणी से ऊपर का तथा मध्यम श्रेणी के रहन-सहन के स्तर से गिरा हुआ वर्ग। परिश्रमभोगी वर्ग।

निम्न-लिखित [वि.] (सं.) नीचे लिखा हुआ।

निम्नसिक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कम कीमत का सिक्का या मुद्रा। २-किसी एक राष्ट्र की विनिमय मुद्रा से गिरी हुई और किसी अन्य राष्ट्र की मुद्रा या सिक्का।

निम्नोक्त [वि.] (सं.) नीचे कहा हुआ।

निम्नोन्नत [वि.] (सं.) ऊंचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।

निम्लोच [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का अस्त होना। सूर्यास्त।

निम्लोचनी [संज्ञा पु.] (सं.) मानसोत्तर पर्वत के पश्चिम में स्थित वरुण की नगरी का नाम

निम्लोचा [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक अप्सरा का नाम।

नियंतव्य, नियन्तव्य [वि.] (सं.) नियमित होने के योग्य। प्रतिबद्ध होने योग्य। शासन योग्य।

नियंता, नियन्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. नियंत्री] १-नियम बनाने वाला। २-नियंत्रण या व्यवस्था करने वाला। ३-कार्य चलाने वाला। ४-नियम के अनुसार चलने वाला। ५-शासक।

नियंत्रक, नियन्त्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियम बनाने वाला। २-नियन्त्रण या व्यवस्था करने वाला। ३-कार्य चलाने वाला। ४-नियमानुसार चलने वाला। ५-शासक।

नियंत्रक-महालेखा-परीक्षक, नियन्त्रक-महालेखा-परीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) आय व्यय के लेखे की जाँच-पड़ताल करने वाला वह बड़ा लेखा परीक्षक या लेखा-निरीक्षक जो पद मर्यादा आदि में (साधारण लेखा परीक्षकों से) बहुत उच्च होता है तथा साधारण लेखा परीक्षकों पर नियन्त्रण या व्यवस्था रखता है। *कॉमपट्रालर एण्ड एडिटर जनरल।*

नियंत्रण, नियन्त्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियम या किसी प्रकार के बंधन में बंधना। व्यवस्थित करना। २-अपने अधिकार में लेकर या अपनी देखरेख में रखकर कार्य व्यापार चलाना। कन्ट्रोल।

नियंत्रित, नियन्त्रित [वि.] (सं.) १-जिस पर नियंत्रण हो। नियम से बंधा हुआ। २-कायदे में रखा लाया या बाँधा हुआ।

नियत [वि.] (सं.) १-नियम, प्रथा, बंधेज आदि

के द्वारा निश्चित किया हुआ। २-समझौते आदि के द्वारा ठीक किया या ठहराया हुआ। निश्चित। मुकर्रर। ३-आज्ञा, विधान आदि के द्वारा स्थिर किया हुआ। ४-पद, कार्य आदि पर नियुक्त किया हुआ। नियोजित। नियुक्त। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'नीयत'।

नियत-तिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह तिथि या दिन जो कोई काम पूरा करने के लिए नियत हो।

नियतन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के नाम पर कोई वस्तु या मकान आदि नियत करने का कार्य। बंटवारा। *अलाटमेंट*।

नियतन-आदेश [संज्ञा पु.] (सं.) वह आदेश या आज्ञा जो किसी के नाम कुछ नियत या निश्चित करने के लिए दी जाय। नियतन-संबंधी आज्ञा। *अलाटमेंट-आर्डर*।

नियतन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी के नाम किसी वस्तु या मकान आदि के नियत किये जाने का अधिकार किया गया हो। विभाजन-पत्र। *अलाटमेंट-लैटर*।

नियतभागी [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जिसके नाम कोई वस्तु या मकान आदि दिया या नियत किया गया हो। *अलॉटी*।

नियत-व्यवहारिककाल [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में पुण्य, दान, व्रत, श्राद्ध, यात्रा, विवाह आदि के लिए नियत समय, यह कालमान नौ प्रकार के माने गये हैं—सौर, सावन, चांद्र, नाक्षत्र, पित्र्य, दिव्य, प्रजापत्य, (मन्वन्तर), ब्राह्म (कल्प) और बार्हस्पत्य।

नियतात्मा [वि.](सं.) अपने ऊपर प्रतिबंध रखने वाला। अपने आपको वश में रखने वाला। संयमी। जितेंद्रिय।

नियताप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य-दर्पण के अनुसार नाटक में अनेक उपायों को छोड़कर एक ही उपाय से फलप्राप्ति का निश्चय।

नियताहार [वि.] (सं.) परिमित आहार करने वाला। थोड़ा खाने वाला। अल्पाहारी।

नियति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-नियत होने की क्रिया या भाव। बंधेज। २-ईश्वरीय या अदृश्य शक्ति के द्वारा पहले से नियत वह बात जो अवश्य होकर रहे। होनी। ३-भाग्य। दैव। अदृष्ट। ४-ठहराव। स्थिरता। ५-जड़ प्रकृति (जैन)।

नियतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) यह सिद्धान्त या मत कि जो कुछ होता है, वह सब पहले से ईश्वर द्वारा नियत रहता है तथा किसी प्रकार टल नहीं सकता।

नियतिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नियतिवाद सिद्धान्त को मानता हो।

नियती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा। भगवती।

नियतेंद्रिय, नियतेन्द्रिय [वि.] (सं.) इन्द्रियों को वश में रखने वाला। जितेंद्रिय।

नियम [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार या आचरण के संबंध में नीति, विधि, धर्म आदि के द्वारा निश्चित सिद्धांत, ढंग या प्रतिबंध। कायदा। रूल। २-किसी प्रकार की ठहराई हुई रीति या व्यवस्था। ३-वे निश्चित बातें जिनके अनुसार कोई संस्था या उसका कार्य चलता है। ४-किसी बात का बहुत दिनों से बंधा या चला आया हुआ क्रम। परम्परा। दस्तूर। ५-योग के आठ अंशों में से एक जिसमें पवित्रता और संतोषपूर्वक रहकर तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर का चिन्तन किया जाता है। स्मृति में दस नियम गिनाये हैं—स्नान, मौन, उपवास, यज्ञ, वेद-पाठ, इन्द्रियनिग्रह, शौच, अक्रोध और अप्रमाद। जैनशास्त्र में गृहस्थ धर्म के अन्तर्गत १२ प्रकार के नियम कहे गये हैं—प्राणातिपातविरमण, मृषावाद विरमण, अदत्तादानविरमण, मैथुनविरमण, परिग्रहविरमण, दिग्व्रत, भोगोपभोग नियम, धनार्थदंड निषेध, सामयिक शिक्षाव्रत, देशावकाशिक शिक्षाव्रत, औषध, और अतिथि-संविभाग। ७-एक अर्थालंकार जिसमे किसी बात के किसी एक या विशेष स्थान में ही होने का वर्णन होता है। ८-विष्णु। ९-शिव। महादेव।

नियमतंत्र, नियमतन्त्र [वि.] (सं.) नियमों से बंधा हुआ। नियमों के अधीन।

नियमतः [क्रि. वि.] (सं.) नियम के अनुसार।

नियमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियमबद्ध करने का कार्य। किसी विषय या कार्य को नियमों में बांधने या नियमित करने की क्रिया या भाव २-शासन।

नियमन-विधान [संज्ञा पु.] (सं.) कानून या व्यवस्था-सम्बन्धी नियम।

नियमनिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नियम के अनुसार काम करने की श्रद्धा।

नियमपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिज्ञापत्र। शर्तनामा।

नियमपर [वि.] (सं.) नियमाधीन। नियमानुवर्त्ती

निमबद्ध [वि.] (सं.) नियमों से बंधा हुआ। नियमों के अनुकूल। कायदे का पाबंद।

नियमभंग, नियमभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिज्ञा भंग। नियम का उल्लंघन।

नियमसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नियमपूर्वक ईश्वर की उपासना।

नियमस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तपस्या। २-संन्यास।

नियमावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी सभा, समिति या कार्य आदि के संचालन से संबंध रखने वाले नियमों का संग्रह। २-वह पुस्तिका जिसमें इस प्रकार के नियमों का संग्रह हो।

नियमित [वि.] (सं.) १-नियमों से बंधा हुआ। नियमबद्ध। २-नियम, कायदे या कानून के अनुसार बना हुआ। ३-बराबर या ठीक समय पर होता रहने वाला।

नियमित-चमू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह व्यवस्थित चमू या सैन्यदल जो स्थायी रूप से किसी राज्य या देश के लिए बनी हो। रेगुलर ट्रूप्स।

नियमितता [संज्ञा स्त्री.] नियमित होने का भाव। नियमपूर्वकता।

नियमित-सेना [संज्ञा स्त्री] (सं.) हर समय तैयार रहने वाली सेना। रेगुलर आर्मी।

नियमी [वि.] (सं) नियम पालन करने वाला।

नियम्य [वि.] (सं.) १-नियमित करने योग्य। नियमों से बांधने योग्य। २-शासित होने योग्य। रोके या दबाये जाने योग्य।

नियर+ [अव्य.] (हिं.) निकट। पास। समीप।

नियराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निकटता। सामीप्य।

नियराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) निकट पहुँचना, पास होना। निकट या पास आना।

नियरे+ [अव्य.] (हिं.) पास। समीप। निकट।

नियाई* [वि.] (हिं.) देखो 'न्यायी'।

नियाज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-इच्छा। २-... ३-बड़ों का प्रसाद। ४-मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जाने वाला भोजन (मुसल.)। ५-व्यवस्था विधान करने वाला।

नियातन [संज्ञा पु.] (सं.) नाश या विनाश करने का कार्य।

नियान [संज्ञा पु.] (सं.) गौशाला। *[संज्ञा पु.] (हिं.) अन्त। परिणाम। [अव्य.] (हिं.) अन्त में। आखिर।

नियाम [संज्ञा पु.] (सं.) नियम। कायदा।

नियामक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. नियामिका] १-नियम बनाने या नियम से बाँधकर रखने वाला। २-व्यवस्था या विधान करने वाला। शासन करने वाला। ३-मारने वाला। ४-मांझी। पोतवाह।

नियामक-गण [संज्ञा पु.] (सं) रसायन में पारे को मारने वाली औषधियों का समूह।

नियामत [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २-स्वादिष्ट भोजन। उत्तम व्यंजन। ३-धन। दौलत। माल।

नियामिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] नियम करने वाली। देखो 'नियामक'।

नियार [संज्ञा पु.] (हिं.) जौहरी या सुनारों की दुकान का कूड़ा।

नियारा+ [वि.] (हिं.) अलग। जुदा। दूर। न्यारा। [संज्ञा पु.] जौहरियों या सुनारों की दुकान का कूड़ा।

नियारिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिली हुई वस्तुओं को अलग करने वाला। २-सुनारों या जौहरियों के कूड़े में से माल निकालने वाला।

१-चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

नियारे* [अव्य.] (हिं.) देखो 'न्यारे'।

नियाव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्याय'।

नियुक्त [वि.] (सं.) १-किसी काम पर लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। एपॉइन्टेड। २-आदिष्ट। निर्देश किया हुआ। आज्ञाप्त। ३-प्रश्न करने के लिए आज्ञा दिया हुआ। ४-लगा हुआ। ५-अनुमति दिया हुआ। ६-दर्याप्त किया हुआ संलग्न। ५-बंधा हुआ।

नियुक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में कुछ काम करने के लिए नियत हो। एटार्नी।

नियुक्तक-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी की ओर से कोई काम करने के लिए साधिकार नियुक्त किया गया हो। पावर ऑफ एटारनी।

नियुक्तक-पद [संज्ञा पु.] (सं.) किसी की ओर से उसके नियुक्तक के रूप में प्राप्त स्थान। एटार्नीशिप।

नियुक्तक-शक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी की ओर से कोई करने के लिए दिया गया अधिकार। पावर आफ-एटारनी।

नियुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नियुक्त होने की क्रिया या भाव। मुकर्ररी। २-काम पर नियोजित करने की अवस्था या स्थिति। एपॉइन्टमैंट

नियुक्तिकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम पर किसी को नियुक्त या नियोजित करने वाला व्यक्ति। अपाइन्टर।

नियुक्ति-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र या चिट्ठी जिसके द्वारा किसी को किसी काम पर नियुक्त करने की सूचना दी जाती है। एपॉइन्टमैंट लैटर

नियुत् [संज्ञा पु.] (सं.) वायु का अश्व। (वैदिक)

नियुत [वि.] (सं.) १-एक लाख। लक्ष। २-दस लाख।

नियुत्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) वायु।

नियुद्ध [संज्ञा पु.] (सं) १-पैदल युद्ध करने वाला। २-व्यक्तिगत झगड़ा। २-बाहुयुद्ध। मल्ल युद्ध। कुश्ती। हाताबांही।

नियोक्तव्य [वि] (सं.) नियोजति करने योग्य।

नियोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियोग करने वाला २-नियोजित करने वाला। लोगों को अपने यहाँ काम पर लगाने वाला। एमप्लॉयर।

नियोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियोजित करना या किसी काम में लगाना। तैनाती। मुकररी। २-राज्य की आज्ञा से किसी कार्य, विशेषतः सैनिक कार्य के लिए किसी व्यक्ति या व्यक्तियों की होने वाली नियुक्ति। कमीशन। ३-प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार यदि किसी स्त्री का पति न होता अथवा उसे अपने पति से संतान न होती तो वह स्त्री अपने देवर या पति के किसी अन्य गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी। पर कलि में यह वर्जित है। (मनु)। ४-आज्ञा। ५-निश्चय।

नियोगकर्ता [वि.] (सं) किसी काम मे नियुक्त करने वाला।

नियोग-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी की नियुक्ति के विषय में लिखा हो।

नियोग-विधि [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को किसी कार्य में नियुक्त करने की विधि।

नियोगार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) नियुक्त करने का उद्देश्य।

नियोगस्थ [वि.] (सं.) १-जिसका नियोग हुआ हो। २-जो राज्य या सरकार की आज्ञा से किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त हुआ हो। कमिशन्ड।

नियोगी [संज्ञा पु] (सं.) १-वह जिसको नियोग हुआ हो। २-वह जो राज्य या सरकार की आज्ञा से किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त हुआ हो। कमिश्नर।

नियोग्य [वि] (सं.) नियोग करने का योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी। प्रभु।

नियोजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियोजित करने या काम में लगाने वाला। मुकर्रर करने वाला। नियुक्तकर्त्ता। एपाइन्टर।

नियोजक-उत्तरदायिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) मालिक का दायित्व। एम्पलॉयरस् लायबिलिटी।

नियोजक-दातव्य [संज्ञा पु.] (सं.) मालिक द्वारा किसी देन के देनदार होने का भाव। एम्पलॉयर लायबिलिटी।

नियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम से लगाने या नियुक्त करने की क्रिया या भाव। नियुक्त। तैनाती। २-राज्य की आज्ञानुसार किसी व्यक्ति का किसी विशेष कार्य के लिये नियुक्त होना। कमीशन।

नियोजित [वि.] (सं) नियुक्त किया हुआ। लगाया हुआ। मुकर्रर। तैनात।

नियोज्य [वि.] (सं) जो नियुक्त करने योग्य हो। [संज्ञा पु] (सं) अधिकारी। अफसर।

नियोद्धा [संज्ञा पु.] (सं.) कुश्ती लड़ने वाला। पहलवान। मल्ल। योद्धा।

निर् [अव्य.] (सं.) निस् का पर्यायवाची। इसका अर्थ है—बाहिर। दूर। बिना। रहित।

निरंकार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निराकार'।

निरंकुश, निरङ्कुश [वि.] (सं.) [स्त्री. निरंकुशा] जिसके लिए कोई अंकुश या रुकावट न हो; या जो कोई अंकुश या रुकावट न माने।

निरंग, निरङ्ग [वि] (सं.) १-अङ्गरहित। २-केवल। खाली। जिसमें कुछ न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) रूपक अलंकार का एक भेद। रूपक दो प्रकार का होता है—एक अभेद दूसरा तद्रूप। अभेद रूप भी तीन प्रकार का होता है—संग या सावयव, निरंग या निरवयव तथा परंपरित। 'जहाँ उपमेय में उपमान का इस प्रकार आरोप होता है कि उपमान के और सब अंग नहीं आते वहाँ निरवयव या निरंग-रूपक होता है। निरंग या निरवयव रूपक भी दो प्रकार का होता है। शुद्ध और मालाकार। जब एक उपमेय में एक ही उपमान का आरोप होता है वहाँ शुद्ध और जहाँ एक उपमेय में अनेक उपमानों का आरोप हो वहाँ मालाकार होता है। [वि.] (हिं.) १-बदरंग। बे-रंग। विवर्ण। २-फीका। उदास। बेरौनक

निरंगल, निरङ्गल [वि.] (सं) जिसकी अगल न हो।

निरंजन, निरञ्जन [वि] (सं.) १-अंजनरहित बिना काजल का। २-कलमषशून्य। दोषरहित। ३-माया से निर्लिप्त। माया से अलग [संज्ञा पु] (सं.) १-परमात्मा। महादेव

निरंजना, निरञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूर्णिमा २-दुर्गा का नाम।

निरंजनी, निरञ्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साधुओं का एक संप्रदाय के लोग निराकार की उपासना करते थे किन्तु आजकल यह साकार की उपासना करते हैं। यह कौपीन पहनते, तिलक लगाते और कंठी धारण करते हैं।

निरंतर, निरन्तर [वि.](सं) १-जिसमें या जिसके बीच अन्तर या फासला न हो। अविच्छिन्न। अन्तररहित। २-लगातार या बराबर होने वाला। ३-निबिड़। घना। ४-सदा रहने वाला। अविचल। स्थायी। ५-जिसमे भेद या अन्तर न हो। जो समान या एक ही हो। ६-अन्तर्धान न हो। जो दृष्टि से ओझल न हो। [क्रि. वि.](सं) लगातार। बराबर। सदा। हमेशा।

निरंध [वि.] (हिं.) १-भारी अन्धा। बिलकुल अंधा। २-महामूर्ख। ज्ञानशून्य। ३-बहुत अंधेरा। ४-बिना अन्न का। निरन्न।

निरंबु, निरम्बु [वि] (सं) १-निर्जल। बिना पानी का। २-जो बिना पानी के रहे। ३-जिसमें (व्रत) बिना जल के रहना पड़े।

निरंभ, निरम्भ [वि.] (हिं.) १-निर्जल। २-बिना पानी पीये रह जाने वाला।

निरंश [वि.] (सं.) जिसे उसका भाग न मिला हो। २-बिना अक्षांश का। [संज्ञा पु] (सं) राशि के भोग का पहला और शेष दिन। संक्रान्ति।

निरकार* [वि] (हिं.) देखो 'निराकार'।

निरकेवल [वि.] (हिं.) १-खाली। खालिस। २-स्वच्छ। साफ।

निरक्षदेश [संज्ञा पु.] (सं.) भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण के वह देश जहाँ रात-दिन बराबर होते हैं।

निरक्षन* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निरीक्षण'।

निरक्षर [वि.] (सं.) जिसने कुछ भी पढ़ा न हो। अनपढ़।

निरक्षर भट्टाचार्य-पंडित बना हुआ मूर्ख।

निरक्षरेखा [संज्ञा स्त्री.](सं.) नाड़ीमंडल। निरक्षवृत।

निरख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निर्ख। भाव। दर।

निरखना* [क्रि. स.] (हिं.) देखना। ताकना। अवलोकन करना।

निरग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नृग'।

निरगुन* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्गुण'।

निरगुनिया [वि.] (हिं.) जिसमें गुण न हो या जो गुणी न हो। अनाड़ी।

निरगुनी [वि.] (हिं.) गुणरहित। अनाड़ी।

निरग्नि [वि.] (सं.) वह ब्राह्मण जो श्रौत और स्मार्त विधि के अनुसार अग्निहोत्र न करने वाला।

निरचू [वि.] (हिं.) जिसको फुरसत मिलगई हो। जिसने छुट्टी पाई हो। निश्चित। खाली।

निरच्छ [वि.] (हिं.) अक्षरहित। बिना आँख का अन्धा।

निरजर [वि] (हिं.) जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।

निरजल [वि.] (हिं.) देखो 'निर्जल'।

निराजिन् [वि.] (सं.) बिना काजल या सुर्मे का। २-बेदाग। निष्कलंक। ३-मिथ्या से रहित। ४-सीधा-साधा। चालाकी न जानने वाला

निराजिन [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके चमड़ा न हो।

निरजी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) संगतराशों की संगमरमर काटने की महीन टांकी।

निरजोस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सार। निचोड़। २-निर्णय।

निरजोसी [वि.] (हिं.) १-निचोड़ निकालने वाला २-निर्णय करने वाला।

निरझर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्झर'।

निरझरनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निर्झरिणी'

निरझरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निर्झरी'।

निरत [वि.] (सं.) किसी काम में लगा हुआ। लीन। [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'नृत्य'।

निरतना* [क्रि. स.] (हिं.) नाचना। नृत्य करना

निरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लिप्त या लीन होने का भाव। अत्यन्त रति। अधिक प्रीति।

निरतिशय [वि.] (सं.) १-हद दरजे का। परम। सबसे बढ़कर। [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

निरत्यय [वि.] (सं.) १-खतरे से महफूज। सुरक्षित। दोषशून्य। निस्वार्थी। हर प्रकार से सफल कार्य।

निरदई* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दय'।

निरदय* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दय'।

निरदोषी* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दोषी'।

निरधार* [संज्ञा पु.](अ.) निश्चय करने या ठहराने का काम।

निरधारना [क्रि. स.] (हिं.) १-निश्चय करना। ठहराना। २-मन में धारण करना। समझना

निरध्व [वि.] (सं.) गुमराह। जो मार्ग भूल गया हो।

निरना [वि.] (हिं.) देखो 'निरन्ना'।

निरनुक्रोश [वि.] (सं.) निर्दयी। संगदिल। निष्ठुर-हृदय।

निरनुक्रोशता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्ठुरता।

निरनुक्रोशयुक्त [वि] (सं.) निर्दय। बेरहम। निष्ठुर हृदय।

निरनुग [वि.] (सं.) १-जिसके कोई अनुयायी न हो जिसके पास कोई सेवक न हो।

निरनुनासिक [वि.] (सं.) जिसका उच्चारण। नाक से न हो।

निरनुयोज्यानुयोग [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में। एक निग्रह स्थान।

निरनुरोध [वि.] (सं.) १-प्रतिकूल। अकृपालु।

निरनै* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्णय'।

निरन्न [वि.] (सं.) १-अन्नरहित। बिना अन्न का। २-निराहार। जो अन्न न खाये हो।

निरन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपवास।

निरन्ना [वि.] (हिं.) निराहार। जो अन्न न खाये हो।

निरन्ने मुँह-बिना मुँह में अन्न डाले। बिना कुछ खाये। बासी मुँह।

निरन्वय [वि.] (सं.) १-निस्सन्तान। बे-औलाद २-जिसका कोई सम्बन्ध न हो। ३-मूल से भिन्न। ४-दृष्टि से ओझल। नौकर-चाकरों से रहित।

निरप [वि.] (सं.) जलहीन। बिना पानी का। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नृप'।

निरपत्रय [वि.] (सं.) धृष्ट। निर्लज्ज। बेहया।

निरपना* [वि.] (हिं.) जो अपना न हो। बिराना। बेगाना। गैर। जो आत्मीय न हो।

निरपराध [वि.] (सं.) बेकसूर। निर्दोष। अपराधरहित। [क्रि. वि.] बिना अपराध के। बिना कोई कसूर किये।

निरपराधी* [वि.] (हि.) देखो 'निरपराध'।

निरपवर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-जो लौटा न देता हो। २-जिसमें भाजक का पूरा भाग लग सके

निरपवाद [वि.] (सं.) १-अपवाद-रहित। जिसकी कोई बुराई न की जाय। २-निर्दोष। जिसमें कोई दोष न हो।

निरपाय [वि.] (सं.) १-दुष्टता से रहित। अपकारशून्य। २-अविनाशी। जिसका विनाश न हो। ३-अभ्रान्त। अव्यर्थ। अमोघ।

निरपेक्ष [वि.] (सं.) १-जिसे किसी बात की अपेक्षा या कामना न हो। बेपरवाह। २-जो किसी पर आश्रित न हो। ३-जो दोनों किसी पक्ष में न हो। अलग। तटस्थ। पु.] १-अनादर। २-अवहेलना।

निरपेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अपेक्षा का अभाव। २-लगाव का न होना। अवज्ञा। परवाह न होना। ४-निराशा।

निरपेक्षित [वि.] (सं.) १-जिसकी अपेक्षा चाह न की गई हो। २-जिसके साथ न रखा गया हो।

निरपेक्षी [वि.] (हिं.) १-अपेक्षा या चाह न रखने वाला। २-लगाव न रखने वाला।

निरबंसी [वि.] (हिं.) जिसके वंश या सन्तान हो। निर्वंश।

निरबर्त्ती* [संज्ञा पु.] (हिं.) त्यागी। वैरागी।

निरबल* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्बल'।

निरबहना* [क्रि. अ.] (हिं.) निबहना। निर्वाह होना। चला। चलना।

निरबान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्वाण'।

निरबिसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निर्विसी'।

निरबेद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्वेद'।

निरबेरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निबेरा'।

निरभय* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्भय'।

निरभर [वि.] (हिं.) देखो 'निभर'।

निरभिभव [वि.] (सं.) जो अपमान का पात्र हो।

निरभिमान [वि.] (सं.) अहंकाररहित। अभिमान शून्य।

निरभिलाष [वि.] (सं.) इच्छारहित। अभिलाषा शून्य जिसे किसी बात की अभिलाषा न हो।

निरभ्र [वि.] (सं.) बादलशून्य। मेघहीन। बिना बादल का।

निरमण [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यन्त अनुराग। अधिक प्रेम।

निरमना* [क्रि. स.] (हिं.) निर्माण करना। बनाना।

निरमर्ष [वि.] (सं.) क्रोधरहित। धैर्यधारी।

निरमर* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्मल'।

निरमल* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्मल'।

निरमली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निर्मली'।

निरमसोर [संज्ञा पु.] (हिं.) अफीम के विष प्रभाव दूर करने वाली एक जड़ी जो पंजा में पाई जाती है।

निरमान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्माण'।

निरमाना* [क्रि. स.] (हिं.) बनाना। तैयार करना। रचना।

निरमायल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्माल्य'।

निरमूल* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्मूल'।

निरमित्र [वि.] (सं.) शत्रुरहित। [संज्ञा

नकुल के एक पुत्र का नाश।

निरमूलना* [क्रि. स.] (हिं.) १-निर्मूल करना। उखाड़ना। २-नष्ट करना।

निरमोल [वि.] (हिं.) १-अमूल्य। अनमोल। जिसका मोल न हो। २-बहुत बढ़िया।

निरमोही* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्मोही'।

निरय [संज्ञा पु.] (सं.) नरक। दोजख।

निरयण [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में गणना की वह रीति जो अयनरहित होती है।

निरर्गल [वि.] (सं.) १-बिना चटखनी या सांकल कुंडे का। २-बेरोकटोक। जिसमें कोई बाधा न हो।

निरर्थ [वि.] (सं.) १-अर्थहीन। २-व्यर्थ। निष्फल

निरर्थक [वि.] (सं.) १-व्यर्थ। हानिकर। २-बिना अर्थ का। बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। निष्फल। जिससे कोई कार्यसिद्धि न हो। बेफायदा। ४-न्याय में एक निग्रह स्थान।

निरर्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

निरवकाश [वि.] (सं.) जिसमें अवकाश या गुंजायश न हो।

निरवग्रह [वि.] (सं.) १-बेरोकटोक। बेकाबू। २-स्वतंत्र। स्वच्छन्द। खुदमुख्तयार। ३-मनमौजी। जिद्दी।

निरवच्छिन्न [क्रि. वि.] (हिं., सं.) जिसका क्रम न टूटा हो। सिलसिलेवार। [वि.] (सं.) १-निरंतर। लगातार। २-विशुद्ध। निर्मल।

निरवद्य [वि.] (सं.) [स्त्री. निरवद्या] निर्दोष। कलंकरहित। जो आपत्तिजनक न हो।

निरवध [वि.] (सं.) निंदा या दोष से रहित।

निरवधि [वि.] (सं.) १-असीम। सीमारहित। २-जिसकी कोई अवधि न हो। [क्रि. वि.] निरन्तर। लगातार।

निरवयव [वि.] (सं.) १-जिसमें हिस्से न हो। अदृश्य। २-जिसमें अवयव (अंगउपांग) न हों।

निरवलंब, निरवलम्ब [वि.] (सं.) १-अवलंबहीन। बिना सहारे का। आधाररहित। २-जिसका कोई सहायक न हो।

निरवलंबन, निरवलम्बन [वि.] (सं.) निराश्रय। असहाय।

निरवशेष [वि.] (सं.) समूचा। पूर्ण। समग्र।

निरवशेषण [अव्य.] (सं.) पूर्णतया। बिलकुल।

निरवशेषित [वि.] (सं.) जिसका कुछ न बचा हो।

निरवसाद [वि.] (सं.) जिसको दुःख या चिन्ता न हो। अवसादरहित।

निरवसित [वि.] (सं.) जो ऊँची जातियों से अलग हों। जिसके भोजन अथवा स्पर्श करने पर पात्र आदि अशुद्ध हो जायँ (चाँडाल आदि)।

निरवस्कृत [क्रि. स.] (सं.) परिष्कृत। साफ किया हुआ।

निरवस्तार [वि.] (सं.) बिना बिछौने का।

निरवहालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीर।

निरवाना [क्रि. सं.] (हिं.) निराने का कार्य कराना।

निरवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-निस्तार। छुटकारा। बचाव। २-छुड़ाने या सुलझाने का काम। ३-निबटेरा। फैसला।

निरवारना* [क्रि. स.] (हिं.) १-रोकने वाली वस्तु आगे से हटाना। छेंकन या बाधा डालने वाली वस्तु को दूर करना। २-बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। छुड़ाना। ३-छोड़ना। त्यागना। किनारे करना। ४-सुलझाना। गाँठ आदि छुड़ाना। ५-निर्णय करना।

निरवाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्वाह'।

निरवाहना* [क्रि. अ.] (हिं.) निर्वाह करना। निभाना।

निरशन [वि.] (सं.) १-भोजन से परहेज करने वाला। २-भोजनरहित। जिसने खाया न हो या जो न खाय। ३-जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाय। जो बिना कुछ खाये किया जाय [संज्ञा पु.] भोजन न करना। लंघन। उपवास।

निरसंक* [वि.] (हिं.) देखो 'निःशंक'।

निरस [वि.] (सं.) १-जिसमें रस न हो। रसविहीन। २-बिना स्वाद का। बद-जायका। फीका। ३-असार। निस्तत्व। ४-रूखा। सूखा। ५-विरक्त।

निरसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूर करना। हटाना। २-पहले का निश्चय या आज्ञा आदि रद्द करना। निरस्त करना। *रिपील। कैंन्सलेशन।* ३-निराकरण। ४-परिहार। ५-नाश। ६-वध। ७-निकालना। बाहर करना। *डिसचार्ज।* २-दमन करना।

निरसनाधार [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा आधार (हवाई जहाज आदि को) जिसपर ठहराया न जा सके। निवेश या स्थापन न करने का आधार। *ग्राँउन्ड आफ सैंटिंगअसाइड।* (वायुयान आदि के उतरने के अयोग्य भूमि या ऐसा आधार जिसपर हवाई जहाज आदि न उतरे जा सकें)

निरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की घास जो कोंकणदेश में होती है।

निरस्त [वि.] १-जिसका निरस न हुआ या किया गया हो। २-जो रद्द या व्यर्थ कर दिया गया हो। कैन्सिल्ड। ३-फैंका हुआ (जैसे-तीर, बाण। ४-त्याग किया हुआ। अलग किया हुआ। निकाला हुआ। दूर किया हुआ। ५-रहित। वर्जित। ६-थूका हुआ। उगला हुआ। ७-मुख से अस्पष्ट रूप से जल्दी-जल्दी बोला हुआ। शीघ्र। उच्चारित (वाक्य आदि)।

निरस्त्र [वि.] (सं.) जिसके पास अस्त्र या हथियार न हों। अस्त्रहीन।

निरस्त्रीकरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पराजित या हारे हुए देश की सेना अथवा पराजित देश के लोगों से शस्त्रास्त्र आदि छीन लेना या शस्त्ररहित करना। २-किसी स्थान या प्रदेश से सेना आदि हटा लेने का कार्य। *डिसआरमेंट।* *निरस्त्रीकरण सम्मेलन*-१-वह सम्मेलन जिसमें किसी पराजित देश को निरस्त्र के संबंध में सोचा जाय। २-किसी स्थान से फौजें आदि हटा लेने के विचारार्थ किया जाने वाला सम्मेलन। *डिसआरमेंट-कान्फरेंस*

निरस्थि [वि.] (सं.) जिसमें या जिसके हड्डी न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) वह मांस जिससे हड्डी अलग कर दी गई हो।

निरस्य [वि.] (सं.) निरसन के योग्य।

निरस्यमान [वि.] (सं.) अलग किया हुआ। निरसन किया हुआ।

निरहंकार, निरहङ्कार [वि.] (सं.) अभिमानरहित

निरहंकृत, निरहङ्कृत [वि.] (सं.) अहंकारशून्य। घमंडरहित।

निरहंकृति, निरहङ्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निरभिमान। निरहंकार।

निरहंक्रिय, निरहङ्क्रिय [वि.] (सं.) जिसका घमंड नष्ट हुआ हो।

निरहम् [वि.] (सं.) अहंकाररहित। अहंभाव।

निरहेतु* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्हेतु'।

निरहेल+ [वि.] (हिं.) अनाहत। तुच्छ। जिसकी कोई कदर न हो।

निरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. निरी] १-विशुद्ध। बिना मेल का। खालिस। २-जिसके साथ और कुछ न हो। केवल। एकमात्र। ३-निपट। नितांत। एकदम। बिलकुल।

निराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निराने का काम। २-निराने की मजदूरी।

निराकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलग-अलग करना छाँटना। २-सोच-समझकर ठीक निर्णय करना या परिणाम निकालना। ३-मिटाना। रद्द करना। ४-शमन। निवारण। परिहार। ५-किसी युक्ति का खंडन।

निराकांक्ष, निराकाङ्क्ष [वि.] (सं.) जिसे आकांक्षा न हो। कामनाशून्य। इच्छारहित।

निराकांक्षा, निराकाङ्क्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकांक्षा या कामना का अभाव। लोभ या लालसा का न होना।

निराकांक्षी, निराकाङ्क्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. निराकांक्षिणी] निस्पृह। जिसे कुछ इच्छा न हो।

निराकार [वि.] जिसका कोई आकार या शक्ल-सूरत न हो। जिसके आकार की भावना न हो। बदशक्ल। बदसूरत। कुरूप। भद्दा। ३-कपटवेशी। ४-विनम्र। लज्जालु। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान परमात्मा।

ईश्वर । २-आकाश ।

निराकुल [वि.] (सं.) १-आकुल, क्षुब्ध या डाँवाडोल न होने वाला । २-जो घबराया न हो । अनुद्विग्न । ३-बहुत व्याकुल । बहुत घबराया हुआ ।

निराकुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निराकुल होने का भाव ।

निराकृत [वि.] (सं.) १-मिटाई हुई । रद्द की हुई । २-हटाई या दूर की हुई । ३-खंडन की हुई ।

निराकृति [वि.] (सं.) १-आकृतिरहित । निराकार । २-स्वाध्यायरहित (विद्यार्थी) । वेदपाठरहित (ब्रह्मचारी) । ३-वैदिक कर्मानुष्ठान पंचमहायज्ञादि कर्म से रहित । [संज्ञा स्त्री.] निराकरण । परिहार । [संज्ञा पु.] हरिवंश के अनुसार रोहितमनु के एक पुत्र का नाम ।

निराक्रंद, निराक्रन्द [वि.] (सं.) १-जहाँ कोई पुकार सुनने वाला न हो । जहाँ कोई रक्षा या सहायता करने वाला न हो । २-जो पुकार न सुने । जो रक्षा या सहायता न करे । ३-जिसकी पुकार न सुनी जाय । जिसकी कोई सहायता न करे ।

निराक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिबंध । अस्वीकार

निराक्रोश [वि.] (सं.) जो न दोषी ठहराया गया हो ।

निराखर [वि.] (हिं.) १-जिसमें अक्षर न हों । बिना अक्षर का । २-बिना अक्षर या शब्द का । मौन । ३-जिसे अक्षर का बोध न हो । अपढ़

निरागम [वि.] (सं.) आगमरहित ।

निरागस [वि.] (सं.) दोषरहित । पापशून्य । निष्पाप ।

निराग्रह [वि.] (सं.) बिना आग्रह का । आग्रहरहित ।

निराचार [वि.] (हि.) आचारहीन । आचाररहित ।

निराजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहों के करघे में लगने वाली वह लकड़ी जो हत्थे और तिरौंछी को मिलाने के लिए दोनों के सिरों पर लगी रहती है ।

निराट [वि.] (हि.) जिसके साथ और कुछ न हो । निरा । अकेला । एकमात्र । निपट । बिल्कुल ।

निराटा [वि.] (हिं.) [स्त्री निराटी] निराला । अनोखा ।

निराटी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] निराली । अनोखी

निराडंबर, निराडम्बर [वि.] (सं.) १-आडम्बररहित । बिना ठाठ बाट का । २-बिना ढोल का । ढोलों से रहित ।

निरांतक, निरान्तक [वि.] (सं.) १-निर्भय । निडर बिना किसी पीड़ा के । स्वस्थ । तंदुरुस्त ।

निरातप [वि.] (सं.) गर्मी से रक्षित । छायादार जहाँ सूर्य की रश्मियाँ प्रवेश न कर सकें ।

निरातपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजनी । रात । रात्रि

निरात्मक [वि.] (सं.) आत्माशून्य ।

निरादर [संज्ञा पु.] (सं.) आदर का अभाव । अपमान । बेइज्जती ।

निरादान [संज्ञा पु.] (सं.) १-आदान या लेने का अभाव । २-एक बुद्ध का नाम ।

निरादिष्ट [वि.] (सं.) जो समाप्त कर दिया गया हो ।

निरादेश [संज्ञा पु.] (सं.) अदा करने या चुकाने का काम । भुगतान । [वि.] (सं.) आदेशरहित ।

निराधार [वि.] (सं.) १-जिसका कोई आधार न हो । २-जो प्रमाणों से सिद्ध न हो सके । अयुक्त । बेबुनियाद का । मिथ्या । झूठ । जिसे अथवा जिसमें जीविका आदि का सहारा न हो । ४-जो बिना अन्न, जल आदि के हो ।

निराधि [वि.] (सं.) १-रोगशून्य । नीरोग । २-चिन्तारहित । जिसको कोई चिन्ता न हो ।

निरानन्द, निरानन्द [वि.] (सं.) आनन्दरहित जिसमें आनन्द न हो । [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द का अभाव । दुःख ।

निराना [क्रि.स.] (हिं.) फसल के पौधों के आसपास उगी हुई घास आदि खोदकर हटाना । निकाना ।

निरापद [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई आफत या डर न हो । जिसे कोई आपदा न हो । सुरक्षित २-जिसमें किसी प्रकार की विपत्ति की संभावना न हो । ३-जिसमें ध्यान अथवा अनर्थ की आशंका न हो । जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो ।

निरापन* [वि.] (हिं.) जो अपना न हो । पराया । बेगाना ।

निरापुन* [वि.] (हिं.) देखो 'निरापन' ।

निराबाध [वि.] (सं.) १-उपद्रवों से रहित । २-बिना बाधा का । ३-जो उपद्रव न करे । ४-वृथा । शून्य ।

निरामय [वि.] (सं.) १-रोगरहित । स्वस्थ । २-निष्कलंक । शुद्ध । दोषशून्य । ३-कलंक या ऐबों से रहित । ४-पूर्ण । सम्पूर्ण । ५-अचूक । अभ्रांत । [संज्ञा पु.] १-जंगली बकरा । २-सूअर । ३-कुशल ।

निरामालु [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ का पेड़ । कपित्थ ।

निरामिष [वि.] (सं.) १-(भोजन) जिसमें मांस न हो । मांसरहित । २-जो मांस न खाय ।

निराय [वि.] (सं.) जिससे कुछ भी लाभ न हो । जिससे कुछ भी आय या आमदनी न हो ।

निरायण [वि.] (सं.) अयनरहित ।

निरायत [वि.] (सं.) विस्तृत । फैला हुआ । अनायत । सिकुड़ा हुआ ।

निरायास [वि.] (सं.) आयास या चेष्टारहित ।

निरायुध [वि.] (सं.) बिना हथियार के । खाली हाथ । निरस्त्र ।

निरारंभ, निरारम्भ [वि.] (सं.) आरम्भ का कार्यशून्य । [संज्ञा पु.] आरम्भ का अभाव । आरम्भ का उलटा ।

निरार+ [वि.] (हि.) अलग । पृथक । जुदा ।

निरारा [वि.] (हिं.) पृथक । अलग । जुदा ।

निरालंब, निरालम्ब [वि.] (सं.) १-बिना सहारे का । निराधार । २-मित्रशून्य । एकाकी । २-निराश्रय । बिना ठिकाने का ।

निरालंबा, निरालम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी जटामासी ।

निराल+ [वि.] (हि.) १-बिना किसी प्रकार के मेल या मिलावट का । २-निरा । खालिस ।

निरालक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की समुद्र में पाई जाने वाली मछली ।

निरालस [वि.] (हिं.) जिसमें आलस्य न हो । तत्पर । चुस्त । फुरतीला ।

निरालसी [संज्ञा पु.] (हिं.) जो आलसी या सुस्त न हो ।

निरालस्य [वि.] (सं.) जिसमें आलस्य न हो । फुरतीला । चुस्त । तत्पर । [संज्ञा पु.] आलस्य का अभाव ।

निराला [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो । एकान्त स्थान । [वि.] [स्त्री निराली] १-जहाँ कोई मनुष्य या बस्ती न हो एकांत । निर्जन । २-सबसे अलग तरह का अद्भुत । विलक्षण । ३-अनूठा । अपूर्व बहुत बढ़िया । जिसके जोड़ का दूसरा न हो अनोखा ।

निरालोक [वि.] (सं.) आलोकरहित । अन्धकारयुक्त । जिसमें आलोक या प्रकाश न हो । [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश या आलोक का अभाव

निरावना+ [क्रि स.] (हि.) देखो 'निराना' ।

निरावर्ष [वि.] (सं.) वृष्टि या वर्षा से निवारित ।

निरावलंब, निरावलम्ब [वि.] (सं.) बिना सहारे का । निराधार ।

निरावृत [वि.] (सं.) बिना ढका हुआ ।

निराशंक, निराशङ्क [वि.] (सं.) निडर । निर्भय

निराश [वि.] (सं.) आशारहित । जिसे आशा न हो । नाउम्मीद ।

निराशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आशा का अभाव । नाउम्मीदी ।

निराशावाद [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वदा सब बातों के सम्बन्ध में निराश और फलत हतोत्साह रहने का सिद्धांत या वृति । सर्वदा यही मानना अथवा सोचना कि अन्त में निराशा या असफलता का मुख देखना पड़ेगा ।

निराशावादी [वि.] (सं.) जिसके मन में निराशा की धारणा जमी हो । आशा या सफलता में विश्वास न करने वाला ।

निराशित्व [संज्ञा पु.] (सं) निराशा का भाव।

निराशिष [वि.] (सं) १—आशिषरहित। २—आशीर्वादशून्य।

निराशी* [वि.] (हि.) १-हताश। नाउम्मीद। २-आशातृष्णारहित। उदासीन। विरक्त।

निराश्रम [वि.] (सं) आश्रयरहित।

निराश्रय [वि] (सं.) १-बिना सहारे का। आधार हीन। आश्रयरहित। २-जिसे कहीं कोई ठिकाना न हो। असहाय। अशरण। ३-जिसे शरीर आदि पर ममता न हो। निर्लिप्त।

निरास [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूर करना। निराकरण। २-खंडन। *[वि.] (हिं.) आशाहीन। जिसे आशा न हो। ना-उम्मीद।

निरासन [संज्ञा पु.](सं.) १-निराकरण। दूर करना २-खंडन। [वि.] (सं.) आसनरहित। बिना आसन का।

निरासी* [वि.] (हि.) १-जिसे आशा न रह गई हो। ना-उम्मीद। २-जिसमें चहल-पहल या रौनक न हो। उदास।

निरास्वाद [वि.] (सं.) स्वादरहित। बे-जायका। फीका। [संज्ञा पु.] (सं.) स्वाद या जायके का अभाव।

निरास्वाद्य [वि.] (सं) सम्भोग या मैथुन के बिना।

निराहार [वि.] (सं.) १-आहाररहित। जो भोजन न किये हो। २-जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो। जैसे--निराहार व्रत।

निरिंग, निरिङ्ग [वि.] (सं.) अचल। निश्चल।

निरिंगिणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) चिक। झिलमिली। परदा।

निरिंद्रिय, निरिन्द्रिय [वि.] (सं.) १-जिसे या जिसमें कोई इन्द्रिय न हो। इन्द्रियरहित। इनॉर्गेनिक। २-जिसके हाथ, पैर, आंख, कान आदि न हों या काम के न हों।

निरिंधन, निरिन्धन [वि.] (सं.) बिना ईंधन का।

निरिच्छ* [वि.] (सं.) इच्छारहित। जिसे कोई इच्छा न हो।

निरिच्छना* [क्रि. स.] (हिं.) देखना। निरीक्षण करना।

निरी [वि] (हि.) [स्त्री. प्र] देखो 'निरा'।

निरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखने वाला। २-निरीक्षण या देखरेख करने वाला। इन्सपेक्टर।

निरीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) देखना। दर्शन। २-यह देखना कि सब बातें ठीक हैं या नहीं। देखरेख। इन्सपेक्शन। ३-देखने की मुद्रा या ढंग। चितवन। आँख। नेत्र।

निरीक्षणाधिकारी [संज्ञा पु.](सं) वह अधिकारी जिसे देखरेख या निरीक्षण करने के सम्बन्ध में पूर्ण अधिकार प्राप्त हों।

निरीक्षणिक [वि.] (सं) निरीक्षण या देखरेख करने वाला।

निरीक्षमाण [वि.] (सं.) जो देख या देखरेख कर रहा हो।

निरीक्षा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-देखना। दर्शन।

निरीक्षित [वि.] (सं.) १-देखा हुआ। देखा-भाला हुआ। जाँच किया हुआ।

निरीक्ष्य [वि.] (सं.) १-देखने योग्य। जाँच के लायक। निगरानी के लायक।

निरीक्ष्यमाण [वि.] (सं.) जिसको देखते हों। जिसको देखा जाता हो।

निरीति [वि.] (सं.) अति वृष्टि आदि से रहित। ईतिरहित। ऋतु के कष्टों से मुक्त।

निरीश [वि.] (सं.) १-बिना मालिक या स्वामी का। २-जिसकी समझ में ईश्वर न हो। अनीश्वरवादी। नास्तिक। [संज्ञा पु.] (सं.) हल का फल।

निरीश्वर [वि.] (सं) जिसमें ईश्वर न हो। ईश्वर से रहित। [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर होने का भाव। (ऐसी कल्पना)।

निरीश्वरवाद [संज्ञा पु.](सं.) वह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का होना न माना जाता हो। ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न करने वाला सिद्धान्त

निरीश्वरवादी [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न करने वाला। ईश्वर को न मानने वाले सिद्धांत का अनुयायी।

निरीष [संज्ञा पु.] (सं.) हल की फाल।

निरीस+ [वि.] (हिं.) १-बिना स्वामी या मालिक का। २-अनीश्वरवादी। नास्तिक। ३-जो बड़ों का आदर करना न जानता हो।

निरीह [वि.] (सं.) १-चुपचाप पड़ा रहने वाला। २-जिसे कोई अभिलाषा न हो। विरक्त। उदासीन। कामनारहित। ४-सीधा-साधा और निर्दोष। बेचारा। ४-तटस्थ। शांतिप्रिय।

निरीहता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निरीह होने का भाव

निरीहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चेष्टा का अभाव। २-चाह का न होना। विरक्त।

निरुआर+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'निरुवार'।

निरुआरना+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'निरुवारना'

निरुक्त [वि.] (सं.) १-निश्चित रूप से कहा या बताया हुआ। २-निश्चित किया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-छः वेदांगों में एक। वेद का चौथा अंग। वैदिक शब्दों की व्याख्या जो यास्कमुनि ने की है उसे निरुक्त कहते हैं। इसमें वैदिक शब्दों के अर्थों का निर्णय किया गया है। २-व्याकरण का वह अंग या शाखा जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति या मूल और उसके रूपों को विकास आदि का विवेचन होता है। एटिमालोजी।

निरुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा-पूरा विवेचन हो। २-एक का व्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय परन्तु वह अर्थ सयुक्तिक हो।

निरुच्छ्वास [वि.] (सं) १-(ऐसा स्थान) जहाँ बहुत लोग न अट सकें। सँकरा। संकीर्ण। २-जहाँ ठसाठस लोग भरे हों। जहाँ खड़े होने तक की जगह न हो।

निरुज* [वि.] (हि.) देखो 'नीरुज'।

निरुत्तर [वि.] (सं.) १-जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २-जो उत्तर न दे सके। जो कायल हो जाय।

निरुत्पात [वि.] (सं.) उत्पात या उपद्रवरहित।

निरुत्सव [वि.] (सं.) बिना उत्सवों का। धूमधामरहित।

निरुत्साह [वि.] (सं.) जिसमें उत्साह न हो। उत्साहहीन।

निरुत्सुक [वि.] (सं) जो उत्सुक न हो। जिसमें किसी बात की उत्सुकता का अभाव हो।

निरुदक [वि.] (सं) जलहीन। बिना जल का।

निरुदन [संज्ञा पु.] (सं) रासायनिक तत्वों, वनस्पतियों आदि में से जल या उसका अंश निकालना अथवा सुखाना। डी-हाइड्रेशन।

निरुदित [वि.] (सं) जिसमें रासायनिक तत्वों वनस्पतियों आदि में से जल या उसका अंश निकाला या सुखाया गया हो।

निरुद्ध [वि] (सं) रुकाहुआ। बंधाहुआ। [संज्ञा पु.] योग की पाँच प्रकार की मनोवृत्तियों में से चित्त की वह अवस्था जिसमें वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है।

निरुद्धगुद [संज्ञा पु.] (सं) एक रोग जिसमें मल द्वार बंद-सा हो जाता है और मल थोड़ा-थोड़ा और कष्ट से आता या निकलता है।

निरुद्धप्रकाश [संज्ञा पु.] (सं) एक रोग जिसमें मूत्रद्वार बंद हो जाता है।

निरुद्यम [वि.] (सं.) जिसके हाथ में कोई उद्यम या काम न हो। उद्योगरहित। बेकार। निकम्मा।

निरुद्यमता [संज्ञा स्त्री] (सं.) निरुद्यम होने का भाव या अवस्था। निकम्मापन। बेकारी।

निरुद्यमी [संज्ञा पु.] (हिं.) जो कोई उद्यम न करता हो। निकम्मा। बेकार।

निरुद्योग [वि] (सं) जिसके पास कोई उद्योग या काम न हो। उद्योगरहित। बेकाम। निकम्मा।

निरुद्योगता [संज्ञा स्त्री] (सं.) निरुद्योग होने की क्रिया या भाव। बेकारी। निकम्मापन।

निरुद्योगी [वि.] (सं) जो कुछ उद्योग न करे। निकम्मा। बेकार।

निरुद्विग्न [वि] (सं) उद्वेगरहित । निश्चिन्त ।

निरुद्वेग [वि.] (सं) उद्वेग से रहित । निश्चित ।

निरुपक्रम [वि] (सं.) बिना उपक्रम का । आरम्भशून्य ।

निरुपद्रव [वि.] (सं.) जिसमें कोई उपद्रव न हो । जो उत्पात या उपद्रव न करता हो ।

निरुपद्रवता [संज्ञा स्त्री] (सं) निरुपद्रवता होने की क्रिया या भाव ।

निरुपद्रवी [वि.] (सं.) जो उपद्रव न करता हो । शान्त ।

निरुपद्रुत [वि.] (सं.) उपद्रवरहित ।

निरुपधि [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार की उपाधि न हो । जो उपद्रव न करता हो ।

निरुपपत्ति [वि.] (सं.) जिसकी कोई उपपत्ति न हो ।

निरुपपद [वि.] (सं.) बिना किसी उपाधि या खिताब का ।

निरुपप्लव [वि.] (सं) उपद्रव या उत्पात-रहित ।

निरुपभोग [वि.] (सं.) जिसका कोई उपभोग न हो ।

निरुपम [वि.] (सं.) [स्त्री. निरुपमा] जिसकी उपमा न हो । उपमारहित । बेजोड़ । [संज्ञा पु.] राष्ट्रकूटवंशीय एक राजा का नाम ।

निरुपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री का एक नाम

निरुपयोगी [वि.] (सं.) जो उपयोग या काम न आसके । व्यर्थ का ।

निरुपरोध [वि.] (सं.) उपरोधरहित । अपक्षपाती

निरुपल [वि.] (सं.) बिना पत्थर का । जो पत्थर का न हो ।

निरुपलेप [वि.] (सं.) उपलेपरहित ।

निरुपसर्ग [वि.] (सं.) अपशकुनों से रहित ।

निरुपस्कृत [वि.] (सं.) पवित्र । स्वभाविक । अकृत्रिम ।

निरुपहत [वि.] (सं.) शुभसूचक ।

निरुपाख्य [वि.] (सं.) १–जिसकी व्याख्या न हो सके । २–जो असली न हो । बनावटी । जिसका अस्तित्व ही न हो । जैसे–वन्ध्य पुत्र । ३–तुच्छ । ४–अदृश्य ।
[संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म ।

निरुपाधि [वि.] (सं.) १–उपाधिरहित । बाधारहित । २–मायारहित । [संज्ञा पु.] ब्रह्मा ।

निरुपाधिक [वि.] (सं.) १–जो सब प्रकार की उपाधियों, बंधनों तथा बाधाओं से रहित हो । परम । एब्सोल्यूट । २–सांसारिक बंधनों या मायाजाल से रहित और मुक्त । [संज्ञा पु.] ब्रह्मा ।

निरुपाय [वि.] (सं.) १–जो कुछ उपाय न कर सके । २–जिसका कोई उपाय न हो सके ।

निरुपेक्ष [वि.] (सं.) जिसमें उपेक्षा न हो । उपेक्षारहित ।

निरुवना* [क्रि. अ.] (हिं.) कठिनता आदि का दूर होना । सुलझना ।

निरुवार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–छोड़ने का काम । मोचन । २–छुटकारा । बचाव । ३–सुलझाने का काम । उलझन मिटाने का काम । ४–तै करने का काम । निपटाने का काम । ५–फैसला । निर्णय ।

निरुवारना* [क्रि. स.] (हिं.) १–छुड़ाना । मुक्त करना । २–सुलझाना । फँसी या गुथी हुई वस्तुओं को अलग करना । उलझन मिटाना । ३–निर्णय या फैसला करना । तै करना । निबटाना ।

निरुष्मन् [वि.] (सं) जो गरम न हो ।

निरूढ़ [वि.] (सं.) १–उत्पन्न । २–प्रसिद्ध । विख्यात । ३–बिन ब्याहा । अविवाहित । कुआँरा । [संज्ञा पु.] एक प्रकार का पशु-याग

निरूढ़-लक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्षणा का वह भेद जिसमें शब्द का नया माना हुआ अर्थ चल पड़ा हो और वह केवल प्रसंग या प्रयोजनवश ही न लिया जाता हो ।

निरूढ़वस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार की वस्ती या पिचकारी जिसमें रोगी की गुदा में एक विशेष प्रकार की नली के द्वारा कुछ औषधियाँ पहुँचाई जाती हैं । यह क्रिया भी डाक्टरी एनिमा के समान होती है

निरूढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'निरूढ़-लक्षणा' । [वि.] अविवाहिता स्त्री । कुँआरी ।

निरूढ़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–निरूढ़ लक्षण । २–प्रसिद्ध ।

निरूप [वि.] (सं.) १–रूपरहित । निराकार । २–कुरूप । बदशकल । [संज्ञा पु.] १–वायु । २–देवता । ३–आकाश ।

निरूपक [वि.](सं.) [स्त्री. निरूपिका, निरूपिणी] निरूपण करने वाला ।

निरूपकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निरूपण करने का भाव ।

निरूपण [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रकाश । २–निदर्शन । ३–सोच-समझकर किया जाने वाला विचार या निर्णय ।

निरूपना* [क्रि. अ.] (हिं.) निर्णय करना । ठहराना । निश्चित करना ।

निरूपम [वि.] (हिं.) देखो 'निरुपम' ।

निरूपिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] निरूपण करने वाली ।

निरूपिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'निरूपक' ।

निरूपित [वि.] (सं.) निरूपण किया हुआ । जिसकी विस्तृत विवेचना हो चुकी हो । जिस का निर्णय या फैसला हो चुका हो ।

निरूप्य [वि.] (सं.) जो निरूपण करने योग्य हो ।

निरूष्मन् [वि.] (सं.) शीतल । जो ठंडा हो ।

निरूह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की पिचकारी

निरूहण [संज्ञा पु.] (सं.) स्थिरता । निश्चय ।

निरूहवस्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'निरूढ़वस्ति' ।

निर्ऋति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नैर्ऋतकोण की स्वामिनी । २–राक्षसी । ३–मृत्यु । ४–दरिद्रता । ५–विपत्ति ।

निरेक [वि.] (सं.) परिपूर्ण । पूरा ।

निरेखना* [क्रि. स.] (हिं.) देखना । निरखना ।

निरै* [संज्ञा पु.] (हिं.) निरय । नरक ।

निरैठा* [संज्ञा पु.] (?) मस्त । मनमौजी ।

निरोग [वि.] (हिं.) रोगरहित । जिसमें कोई रोग न हो । स्वस्थ । तंदुरुस्त ।

निरोगी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जिसे कोई किसी प्रकार का रोग न हो । स्वस्थ । तन्दुरुस्त ।

निरोठा [वि] (देश) बदसूरत । बदशक्ल ।

निरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १–रोक । अवरोध । रुकावट । घेरा । घेर लेना । ३–नाश । ४–योग में चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकना जिसमें अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता होती है । चित्त-वृत्तियों के निरोध के उपरांत मनुष्य को निर्वीज समाधि प्राप्त होती है । ५–किसी अभियुक्त, संदिग्ध, विकट या उपद्रवी व्यक्ति को इसलिए रोक रखना कि वह भाग न सके या अनिष्ट न कर सके । डिटेन्शन । ६–किसी संपत्ति को रक्षा-पूर्वक रखने के लिए या किसी आदमी को भागने आदि से रोकने के लिए अपने अधिकार, देख-रेख या रक्षा में लेकर रखने की क्रिया या भाव । कस्टडी ।

निरोधक [वि.] (सं) रोकने वाला । जो रोकता हो ।

निरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १–रोक । रुकावट । २–पारे का छटा संस्कार (वैद्यक) ।

निरोध-परिणाम [संज्ञा पु.] (सं.) चित्त-वृत्ति की वह अवस्था जो व्युत्थान और निरोध के मध्य होती है । योगशास्त्र में क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त इन तीन राजसिक परिणामों को व्युत्थान कहते हैं और विशुद्ध सत्वगुण की प्रधानता होने पर जो अवस्था प्राप्त होती है उसे निरोध कहते हैं । जिस समय व्युत्थान से उत्पन्न संस्कारों का अन्त हो जाता है और निरोध का आरम्भ होने को होता है उस समय चित्त का थोड़ा-थोड़ा संबंध दोनों ओर रहता है । उस अवस्था को निरोध-परिणाम कहते हैं ।

निरोधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के निमित्त बाहर से आने वाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की

जाती है। २-इस कार्य के लिए अलग किया हुआ स्थान। क्वारेन्टाइन।

निरोधी [वि.] (सं.) निरोध करने वाला। प्रतिबंध या रुकावट करने वाला।

निर्ख [संज्ञा पु.] (फा.) भाव। दर।

निर्ख-दारोगा [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानी शासन-काल में बाजार का वह दारोगा जो वस्तु के भाव या दर आदि की निगरानी करता था।

निर्खनामा [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानों के राजत्वकाल की वह सूची जिसमें बाजार की प्रत्येक वस्तु का भाव लिखा होता था।

निर्खबंदी [संज्ञा स्त्री] (फा.) किसी वस्तु का भाव या दर निश्चित करने की क्रिया।

निर्गंध, निर्गन्ध [वि] (सं) जिसमें कोई गंध न हो। गंधरहित।

निर्गंधता, निर्गन्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्गंध होने की क्रिया या भाव।

निर्गंधन, निर्गन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) मारण।

निर्गंधपुष्पी, निर्गन्धपुष्पी [संज्ञा स्त्री] (सं.) सेम्हर का पेड़।

निर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) देश।

निर्गत [वि] (सं) [पु. प्र.] [स्त्री. निर्गता] निकला हुआ। बाहर आया हुआ।

निर्गता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र] निकली हुई। बाहर आई हुई।

निर्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाहर निकलने की क्रिया या भाव। निकासी। २-वह मार्ग जिससे कोई वस्तु बाहर निकलती हो। निकास। ३-आज्ञा आदि निकलना या प्रकाशित होना। ४-किसी वस्तु, विशेषतः धन आदि का किसी स्थान या देश से बहुत अधिक परिमाण में बाहर जाना। ड्रेन।

निर्गमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलने का काम। निकलना। द्वार जिसमें से होकर निकलते हैं।

निर्गमना* [क्रि अ.] (हिं.) निकलना।

निर्गर्व [वि.] (सं.) जिसे किसी प्रकार का गर्व या अभिमान न हो।

निर्गवाक्ष [वि] (सं.) बिना झरोखे या खिड़की का। जिसमें झरोखा न हो।

निर्गुंठी, निर्गुण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'निर्गुंडी'।

निर्गुंडी, निर्गुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का क्षुप जिसमें कि प्रत्येक में से अरहर के समान पाँच-पाँच पत्तियाँ होती हैं जिनके ऊपर का भाग नीला और नीचे का भाग सफेद होता है। इसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है। वैद्यक के अनुसार यह स्मरणशक्ति-वर्धक, गरम, रूखी, कसैली, चरपरी, हलकी, नेत्रों के लिए लाभप्रद तथा शूल, सूजन, आमवात, कृमि, प्रदर, कोढ़, अरुचि, कफ और ज्वर को दूर करने वाली होती है। सम्हालु।

निर्गुंडीकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध जो निर्गुण्डी और शहद को मिलाकर विशेष प्रकार से तैयार की जाती है जो आँखों की ज्योति बढ़ाने वाली और कोढ़, गुल्म, शूल, प्लीहा, उदर आदि रोगों को दूर करने वाली तथा बहुत ही पौष्टिक होती है (वैद्यक)।

निर्गुंडीतैल [संज्ञा पु.] (सं.) एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ निर्गुण्डी का तेल जो सब प्रकार के फोड़े, फुंसियों, अपची तथा तथा कंठमाला आदि को अच्छा करने वाला माना जाता है।

निर्गुण [संज्ञा पु.] (सं.) सत्व, रज, और तम इन तीनों गुणों से परे। परमेश्वर। [वि.] १-जो सत्व, रज और तम से परे हो। २-जिसमें कोई अच्छा गुण न हो। ३-जिससे कोई डोरी न हो। ४-बिना नाम का।

निर्गुणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्गुण होने की क्रिया या भाव।

निर्गुणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्गुणता'।

निर्गुणात्मक [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुणस्वरूप ब्रह्म

निर्गुणिया [वि.] (हिं.) निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने वाला।

निर्गुणी [वि.] (हिं.) जिसमें कोई गुण न हो। मूर्ख।

निर्गुन+ [वि] (हिं.) देखो 'निर्गुण'।

निर्गूढ [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष का कोटर। [वि.] (सं.) जो बहुत ही गूढ़ हो।

निर्गृह [वि.] (सं.) जिसके घर-द्वार न हो।

निर्गौरव [वि.] (सं.) जिसका गौरव न हो।

निर्ग्रंथ, निर्ग्रन्थ [वि.] (सं.) १-समस्त बंधनों और बाधाओं से रहित। २-गरीब। अकिञ्चन। निर्धन। ३-एकाकी। असहाय। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्ध-क्षपणक। २-दिगम्बर जैनी। ३-एक प्राचीन मुनि का नाम।

निर्ग्रंथक, निर्ग्रन्थक [वि.] (सं.) १-निष्फल। २-वस्त्ररहित। नंगा।

निर्ग्रंथन, निर्ग्रन्थन [संज्ञा पु.] (सं.) मारण।

निर्ग्रंथि, निर्ग्रन्थि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूर्ख। मूढ़। बेवकूफ। २-जुवारी। ३-संसार-त्यागी साधु। जिसने संसार का मोह त्याग दिया हो और जो भगवान में अनुरागवान हो। परमहंस। [वि.] जिसमें गांठ या गिरह न हो।

निर्ग्रंथिक, निर्ग्रन्थिक [वि.] (सं.) १-चतुर। चालाक। २-जिसके साथ कोई न हो। एकाकी। ३-त्यक्त[illegible] त्यागा हुआ। ४-फलरहित। [संज्ञा पु.] दिगम्बरी जैनसाधु।

निर्घंट, निर्घण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द या ग्रन्थ-सूची। फहरिस्त।

निर्घट [संज्ञा पु.] (सं.) वह हाट या बाजार जहां किसी प्रकार का राजकर न लगता हो। सब के लिए खुला बाजार।

निर्घात [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु के तेज चलने से उत्पन्न शब्द। २-बिजली की कड़क। ३-एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

निर्घातन [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के मतानुसार अस्त्र-चिकित्सा में एक अस्त्रक्रिया का नाम।

निर्घात्य [वि.] (सं.) छेदने योग्य।

निर्घुरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्झरणी। पानी का सोता।

निर्घृण [वि.] (सं.) १-जिसे गंदी और बुरी वस्तुओं से घिन न लगे। जिसे घृणा न हो। २-जिसे बुरे कामों से घृणा अथवा लज्जा न आये। ३-निष्ठुर। संगदिल। बेरहम। ४-निर्लज्ज। बेहया।

निर्घोष [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। आवाज। [वि.] शब्दरहित।

निर्घोषित [वि.] (सं) शब्दयुक्त। जिसमें आवाज हो।

निर्चा [संज्ञा पु.] (?) चंचु नामक एक साग।

निर्छल* [वि] (हिं.) जिसे किसी प्रकार का छल या कपट न आता हो। निश्छल।

निर्जन [वि.] (सं.) (स्थान) जहाँ कोई न हो। जो आबाद न हो। सुनसान। एकांत। [संज्ञा पु.] ब्याज, लाभ आदि के रूप में बढ़कर प्राप्त होने वाला धन।

निर्जनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्जन होने का भाव। जनहीनता। सूनापन। एकांतता।

निर्जर [वि.] (सं.) जिसे कभी बुढ़ापा न आवे। कभी वृद्ध न होने वाला। [संज्ञा पु.] १-देवता। २-सुधा। अमृत।

निर्जरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुडुच। गिलोय। २-तालपर्णी। ३-जैनमतानुसार संचित कर्म का तप द्वारा निर्जरण या क्षय करना।

निर्जरायु [वि.] (सं.) जरायुरहित।

निर्जल [वि.] (सं.) १-बिना जल का। जल के संसर्ग से रहित। २-जिसमें जल पीने का विधान न हो। [संज्ञा पु] वह स्थान जहाँ जल बिलकुल न हो।

निर्जलव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्रत या उपवास जिसमें व्रती जल तक न पीये।

निर्जलाएकादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जेठ सुदी एकादशी तिथि जिस दिन हिन्दू लोग व्रत करते हैं और पानी नहीं पीते।

निर्जित [वि.] (सं.) १-जीता हुआ। जिसे जीत लिया हो। २-जो वश में कर लिया गया हो ३-ब्याज या लाभ आदि के रूप में बढ़कर

मिला हुआ। एकूड।

निर्जिह्व [वि.] (सं.) जिसको जीभ न हो। [संज्ञा पु.] मेंढक।

निर्जीव [वि.] (सं.) १-जीवरहित। बेजान। २-मुरदों का सा। अशक्त। ३-उत्साहहीन।

निर्ज्वर [वि.] (सं.) जिसको ज्वर न हो।

निर्झर [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का झरना। सोता। चश्मा।

निर्झरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नदी। दरया। २-पानी का सोता या झरना।

निर्झरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पानी का सोता। झरना [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़। गिरि।

निर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) १-औचित्य तथा अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष को उचित या ठीक ठहराना। किसी विषय में कोई सिद्धान्त स्थिर करना। निश्चय। २-मीमांसा में किसी स्थिर सिद्धांत से कोई परिणाम निकालना। ३-वादी और प्रतिवादी की बातें और तर्क सुनकर उनके ठीक होने या न होने के संबंध में न्यायालय द्वारा मत-स्थिर करना। फैसला। *जजमेंट*।

निर्णयोच्चार-निर्णय या फैसला सुनाना। *डिलीवर-जजमेंट*।

निर्णयन [संज्ञा पु.] (सं.) अभियोग विवाद आदि के सम्बन्ध में न्यायालय का किया हुआ निर्णय। फैसला। जजमेंट।

निर्णयात्मक [वि.] (सं.) निर्णय या फैसला करने वाला।

निर्णयोपमा [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय तथा उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।

निर्णायक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो निर्णय या फैसला करे।

निर्णायक-मत [संज्ञा पु.] (सं.) सभा, संस्था आदि के सभापति का वह मत या वोट जो वह उस समय देता है, जब किसी विषय में उपस्थित सदस्यों के मत बराबर-बराबर भागों से विभक्त हों तथा उनके मतदान से उस विषय का निर्णय अथवा फैसला न होता हो (सभापति के ऐसे मत द्वारा ही उस समय किसी प्रश्न का निर्णय होता है और इसी कारण इसे निर्णायक मत कहा जाता है।) *कास्टिङ्ग-वोट*।

निर्णीत [वि.] (सं.) जिसका या जिसके विषय में निर्णय हो चुका हो।

निर्त* [संज्ञा पु.] (हिं.) नृत्य। नाच।

निर्तक* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाचने वाला। नट। २-भाँड़।

निर्तना* [क्रि. अ.] (हिं.) नाचना। नृत्य करना।

निर्तना* [क्रि. अ.] (हिं.) नाचना। नृत्य करना।

निर्दंड, निर्दण्ड [वि.] (सं.) जिसे सब प्रकार के दंड दिये जा सकें। [संज्ञा पु.] शूद्र।

निर्दंभ, निर्दम्भ [वि.] (सं.) जिसे दम्भ या अभिमान न हो। दंभहीन।

निर्दई* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दय'।

निर्दय [वि.] (सं.) जिसे कुछ भी दया न हो। निष्ठुर। बेरहम।

निर्दयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्दय होने की क्रिया या भाव। निष्ठुरता।

निर्दयत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्दयता'।

निर्दयपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्दयता'।

निर्दयी* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दय'।

निर्दर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुफा। कंदरा।

निर्दल [वि.] (सं.) १-जिसमें दल या पत्र न हो। २-जिसका कोई दल या जत्था न हो। ३-जो किसी दल में न हो। तटस्थ।

निर्दलन [संज्ञा पु.] (सं.) विदारण।

निर्दश [वि.] (सं.) दस दिन से अधिक का।

निर्दशन [वि.] (सं.) दशनहीन। विना दाँत का। पुपला।

निर्दहन [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावे का पेड़। [वि.] (सं.) अग्निरहित।

निर्दहना* [क्रि. स.] (हिं.) जला देना।

निर्दहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वालता। चूरनहार। मरोड़फली। मुर्रा।

निर्दाह [वि.] (सं.) आग से जलाहुआ।

निर्दिग्ध [वि.] (सं.) मोटाताजा। पुष्ट।

निर्दिष्ट [वि.] (सं.) १-जिसका निर्देश हुआ हो। २-बतलाया या नियत किया हुआ। ठहराया हुआ। ३-किसी को दिया सौंपा या सहेजा हुआ। *एसाइन्ड*।

निर्दूषण* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्दोष'।

निर्देश [संज्ञा पु.] (सं.) १-विशेषरूप से यह बतलाना कि यह वस्तु या कार्य है। २-किसी कार्य का आकार, प्रकार या विधि बतलाना। *डाइरेक्शन*। ३-आज्ञा। हुकम। ४-किसी अन्य स्थान पर आई या कही हुई किसी बात का उल्लेख अथवा कथन। ५-ऐसा उल्लेख अथवा चर्चा जिससे किसी विषय की विशेष ज्ञातव्य बातों का पता चल सके। *रिफरेन्स*। ६-किसी को कोई वस्तु किसी कार्य के लिए देना या सौंपना। *एसाइन्मेंट*। ७-वर्णन। वृत्तान्त। ८-नाम।

निर्देशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो किसी प्रकार का निर्देश करता अथवा कुछ बतलाता हो। २-आजकल की रजतपट (फिल्म आदि) के कला में वह अधिकारी जो पात्रों की वेशभूषा भूमिका अथवा आचरण तथा दृश्यों के स्वरूप आदि निश्चित आदि करता है। *डायरेक्टर*।

निर्देशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्देश करने की क्रिया या भाव। २-आजकल के रजतपट में वह सब काम जो निर्देशक को करने पड़ते हैं।

निर्देशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पुस्तक जिसमें किसी व्यापार, व्यवसाय-विभाग आदि की जानने योग्य सब बातें तथा उनसे संबंध रखने वाले लोगों के नाम पते आदि रहते है। *डायरेक्टरी*।

निर्दोष [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई दोष न हो। बे-ऐब। २-निरपराध। बे-कसूर। जिसने कोई अपराध न किया हो।

निर्दोषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्दोष होने की क्रिया या भाव। अकलंकता। शुद्धता। दोषविहीनता।

निर्दोषी [वि.] (हिं.) जिसने कोई अपराध न किया हो। बे-कसूर।

निर्द्रव्य [वि.] (सं.) दरिद्र। गरीब।

निर्द्रोह [वि.] (सं.) द्रोहरहित। मित्र।

निर्द्वंद, निर्द्वन्द [वि.] (सं.) जिसका कोई विरोध करने वाला न हो। जिसका कोई द्वंद्वी न हो। २-राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वंद्वों से रहित या परे हो। ३-स्वच्छंद। विना बाधा का।

निर्द्वंद्व, निर्द्वंद्व [वि.] (सं.) १-जिसका विरोध करने वाला कोई न हो। २-राग, द्वेष आदि द्वंद्वों से रहित। ३-स्वच्छंद।

निर्धंधा [वि.] (हिं.) जिसके हाथ में काम-धन्धा न हो। बे-रोजगार।

निर्धन [वि.] (सं.) जिसके पास धन न हो। धनहीन। गरीब। दरिद्र। कंगाल।

निर्धनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्धन होने की क्रिया या भाव। गरीबी। कंगाली। दरिद्रता।

निर्धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) जो धर्म से रहित हो।

निर्धार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्धारण'।

निर्धारक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. निर्धारिका, निर्धारिणी] वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करने वाला।

निर्धारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई बात ठहराना या निश्चित करना। २-न्याय में एक तरह के बहुत से पदार्थों में से गुण, कर्म आदि की समानता के विचार से कुछ का अलग वर्ग बनाना। ३-यह निश्चित करना कि इसका मूल या महत्व क्या है अथवा इस पर कितना कर लगना चाहिये। *एसेस्मेंट*।

निर्धारणीय [वि.] (सं.) कर लगाने योग्य। *एसेस्बल*।

निर्धारना* [क्रि. स.] (हिं.) निश्चित या निर्धारित करना। ठहराना।

निर्धारित [वि.] (सं.) निश्चित किया या ठहराया हुआ।

निर्धारिती [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसके विषय

में यह निर्धारित किया जाय कि इसे इतना कर देना होगा। एसेसी।

निर्धार्य [संज्ञा पु.] (सं) वह जिसके सम्बन्ध में यह निर्धारित किया जाय कि इसे इतना कर देना होगा। करदाता। निर्धारित या निश्चित कर देने वाला। एसेसी।

निर्धूत [वि.] (सं.) १-धोया हुआ। २-खंडित। टूटा हुआ। ३-जिसका त्याग कर दिया गया हो।

निर्धूम [वि.] (सं.) जहाँ धूआं न हो। धूमरहित।

निर्धूम-विस्फोटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विस्फोटक जिसमें धूआँ नहीं होती। कर्डाइट।

निर्धौत* [वि.] (हिं.) धुला हुआ। साफ किया हुआ।

निर्नमस्कार [वि] (सं.) नमस्कार या प्रणाम रहित।

निर्नर [वि.] (सं.) १-जिसको मनुष्यों ने त्याग दिया हो। २-मनुष्यशून्य। नररहित।

निर्नाथ [वि.] (सं.) अनाथ। असहाय। जिसका कोई नाथ न हो।

निर्नाभि [वि.] (सं.) जिसको नाभी या ढोंढी न हो।

निर्नाशन [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वासन। बहिस्कार।

निर्निमित्त [वि.] (सं.) अकारण। विना वजह।

निर्निमित्तक [वि.] (सं.) अकारण। विना वजह।

निर्निमेष [क्रि. वि.] (सं.) विना पलक झपकाये। एकटक। [वि.] १-जो पलक न गिरावे। २-जिसमें पलक न गिरे।

निर्निवार्य [वि.] (सं.) अनिवार्य।

निर्नीड [वि.] (सं.) विना घरबार का। आश्रय। शून्य।

निर्पक्ष* [वि.] (हिं.) देखो 'निष्पक्ष'

निर्फल [वि.] (हिं.) देखो 'निष्फल।

निर्बंध, निर्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-अड़चन। रुकावट। २-ज़िद। हठ। ३-आग्रह। ४-किसी व्यक्ति पर अथवा किसी विषय में शर्तों आदि के रूप में लगाई जाने वाली रोक। रुकावट। रेस्ट्रिक्शन।

निर्बंधन, निर्बन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्बंध'।

निर्बंधी, निर्बन्धी [वि.] (सं.) आवश्यक। काम का।

निर्बंधु, निर्बन्धु [वि.] (सं.) १-जिसका जाति बिरादरी वाला न हो। मित्रवर्जित। २-बंधुरहित। बंधुहीन।

निर्बल [वि.] (सं.) बलहीन। कमजोर।

निर्बलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमजोरी।

निर्बहना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-पार होना। २-अलग होना। ३-पालन होना। निभना।

निर्बाचन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्वाचन'।

निर्बाण* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्वाण'।

निर्बाध [वि.] (सं.) जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो। बाधारहित। [क्रि. वि.] विना किसी बाधा के।

निर्बाधित [वि.] (सं.) जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो। बाधारहित। [क्रि. वि.] बिना किसी बाधा के।

निर्बुद्धि [वि.] (सं.) मूर्ख। बेवकूफ। जिसमें बुद्धि न हो।

निर्बुस [वि.] (सं.) बिना भूसे का।

निर्बोध [वि.] (सं.) जिसे भले-बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो। जिसे कुछ भी बोध न हो। अनजान। अज्ञान।

निर्भट [वि.] (सं.) दृढ़। पुष्ट। मजबूत।

निर्भय [वि.] (सं.) जिसे कोई डर या भय न हो। निडर। बेखौफ। १-रौच्यमनु के एक पुत्र का नाम। २-बढ़िया घोड़ा।

निर्भयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निडर होने की अवस्था। २-निडरपन। निडर होने का भाव

निर्भर [वि.] (सं.) १-पूर्ण। पूरा। भराहुआ। २-मिलाहुआ। युक्त। ३-अवलंबित। आश्रित [संज्ञा पु.] (सं.) वह भृत्य जिसे वेतन न दिया जाता हो। बेगार।

निर्भर्त्सन [संज्ञा पु.] (सं.) १-डाँट-डपट। तिरस्कार। २-निंदा। ३-अलता।

निर्भर्त्सना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निंदा। बदनामी। २-डाँट-डपट। तिरस्कार।

निर्भर्त्सित [वि.] (सं.) जिसकी निंदा की गई हो

निर्भाग्य [वि.] (सं.) अभागा। बदकिस्मत। मन्दभाग्य।

निर्भाज्य [वि.] (सं.) जो भाग के योग्य न हो।

निर्भिन्न [वि.] (सं.) अभिन्न। जो भिन्न न हो।

निर्भीक [वि.] (सं.) जिसे भय न हो। निडर। बेडर।

निर्भीकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्भीक होने की क्रिया या भाव।

निर्भीत [वि.] (सं.) जिसे भय न हो। निडर।

निर्भुज [वि.] (सं.) जिसका एक छोर मुड़ा हो।

निर्भूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्तर्धान होना। गायब होना।

निर्भृति [वि.] (सं.) १-जिसको रोजनदारी अर्थात मजदूरी न मिली हो। वेतनशून्य। २-बेगार

निर्भेद [वि.] (सं.) विदारण। फाड़ना।

निर्भेदी [वि.] (सं.) भेद करने वाला।

निर्भेद्य [वि.] (सं.) विभेद करने योग्य।

निर्भोग [वि.] (सं.) संभोगरहित। सुखहीन।

निर्भ्रम [वि.] (सं.) जिसमें कोई संदेह न हो। भ्रमरहित। शंकारहित। [क्रि. वि.] बेधड़क। बेखटके। बिना संकोच के।

निर्भ्रांत, निर्भ्रान्त [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई भ्रम या संदेह न हो। २-जिसको कोई भ्रम या संदेह न हो।

निर्मंथन, निर्मन्थन [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभाँति मथना।

निर्मंडूक, निर्मण्डूक [वि.] (सं.) (वह कूआं या तालाब) जहां मेंढक न हों।

निर्मक्षिक [वि.] (सं.) मक्खियों से रहित। एकाकी। एकान्त।

निर्मज्ज [वि.] (सं) मज्जारहित।

निर्मत्सर [वि.] (सं.) १-अहंकारहीन। विना घमंड का। २-ईर्षारहित।

निर्मत्स्य [वि.] (सं.) मछलियों से शून्य।

निर्मथ [संज्ञा पु.] (सं.) अरणी जिसे रगड़कर यज्ञों के लिए आग उत्पन्न करते हैं।

निर्मथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नालिका या नली नामकगंध द्रव्य।

निर्मद [वि.] (सं.) १-जो नशे में न हो। २-जो अभिमानी या घमंडी न हो।

निर्मना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निर्माना'।

निर्मनुज [वि.] (सं.) जहां कोई मनुष्य न रहता हो। निर्जन। गैर-आबाद।

निर्मनुष्य [वि.] (सं.) जहाँ कोई मनुष्य न रहता हो। निर्जन। गैर-आबाद।

निर्मन्यु [वि.] (सं.) १-सांसारिक संबंधों से मुक्त निस्वार्थी। निरपेक्ष। २-क्रोधरहित। जिसे गुस्सा न हो।

निर्मम [वि.] (सं.) १-जिसे ममता या मोह न हो। निर्मोही। २-जिसको कोई वासना न हो। निष्काम।

निर्ममता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ममता या वासना का अभाव।

निर्ममत्व [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'निर्ममता'।

निर्मर्याद [वि.] (सं.) मर्यादारहित। असीम।

निर्मल [वि.] (सं.) १-जिसमें किसी प्रकार का मल या दोष न हो। शुद्ध। पवित्र। निर्दोष। २-जिसमें किसी प्रकार का मैल या मलीनता न हो। मलरहित। साफ। स्वच्छ। ३-जो अपने विशुद्ध रूप में हो। [संज्ञा पु.] १-अभ्रक। २-निर्मली।

निर्मलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफाई। स्वच्छता २-निष्कलंकता। ३-शुद्धता। पवित्रता।

निर्मला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक नानकपंथी संप्रदाय जिसके प्रवर्त्तक रामदास नामक एक महात्मा थे। इस पंथ के लोग गेरुए वस्त्र धारण करते और साधु संन्यासियों के समान

रहते हैं। ६-इस पंथ या सम्प्रदाय का कोई व्यक्ति।

निर्मली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का सदाबहार का वृक्ष जिसके फल का गूदा खाया जाता है जिसके बीज घिसकर या जिसके बीजों के चूर्ण से गंदला पानी साफ हो जाता है। चाकसू। २-रीठे का वृक्ष या फल।

निर्मलोपम [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक। बिल्लौर।

निर्मल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्पृक्का। असबरग।

निर्मशक [वि] (सं.) मच्छररहित। जहाँ मच्छर न हों।

निर्मांस [संज्ञा पु] (सं.) वह व्यक्ति जो भोजन के अभाव के कारण दुबला हो गया हो।

निर्मा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मूल्य। दाम। २-परिमाण।

निर्माण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का बनाया जाना। बनाने का काम। रचना। २-वह वस्तु जो बनकर तैयार हुई हो।

निर्माण-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमारत, नहर, पुल आदि बनाने की विद्या। वास्तुविद्या। *इंजीनियरी*।

निर्माता [संज्ञा पु.] (सं.) निर्माण करने वाला। बनाने वाला। जो बनावे।

निर्मात्रिक [वि.] (सं.) बिना मात्रा का। जिसमें मात्रा न हो।

निर्मान [वि.] (हिं) बहुत अधिक। अपार।

निर्माना* [क्रि. स.] (हिं.) बनाना। रचना।

निर्मायक [वि.] (सं.) निर्माण करने या बनाने वाला।

निर्मायल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निर्माल्य'।

निर्माल्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देवता पर चढ़ा हुआ पदार्थ। देवार्पित वस्तु।

निर्माल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्पृक्का। असबरग

निर्मित [वि.] (सं.) जिसका निर्माण किया गया हो। बनाया हुआ। रचित।

निर्मिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निर्माण। बनाने की क्रिया। २-बनाने का भाव।

निर्मुक्त [वि.] (सं) १-जो मुक्त हो गया हो। जो छूट गया हो। २-जिसके लिए किसी प्रकार का बन्धन न हो। [संज्ञा पु.] अभी हाल का केंचुली छोड़ा हुआ साँप।

निर्मुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुक्ति। छुटकारा २-बहुत से अपराधियों, विशेषतः राजनैतिक कैदियों को एक साथ क्षमा करके छोड़ देना। एम्नेस्टी। २-मोक्ष।

निर्मुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। सूरज। २-बदमाश। गुण्डा। ३-बड़ा बाजार या बड़ी पैंठ।

निर्मूल [वि.] (सं.) १-बिना जड़ या मूल का। २-जड़ से उखाड़ा हुआ। ३-जिसका कोई आधार या सहारा न हो। निराधार। ४-जो बिलकुल नष्ट हो चुका हो। जिसका मूल भी न रह गया हो।

निर्मूलक [वि.] (सं.) देखो 'निर्मूल'।

निर्मूलन [संज्ञा पु.] (सं.) निर्मूल होना या करना। विनाश।

निर्मेघ [वि] (सं.) बिना बादलों का। मेघरहित।

निर्मेध [वि.] (सं.) बुद्धिहीन। बेअक्ल।

निर्मोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांप की केंचुली। २-शरीर की ऊपरी खाल। ३-सावर्णिमनु के एक पुत्र का नाम। ४-तेरहवें मनु के सप्तर्षियों में से एक का नाम। ५-आकाश।

निर्मोक्ता [वि.] (सं.) मुक्त करने वाला। छुटकारा देने वाला।

निर्मोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्ण मोक्ष जिसमें कुछ भी संस्कार बाकी न रह जाय। २-त्याग

निर्मोच्य [वि.] (सं) मुक्ति या छुटकारा पाने योग्य।

निर्मोल* [वि.] (हिं.) १-जिसके मूल्य का अनुमान न हो सके। अमूल्य। २-मूल्यवान। बहुमूल्य। कीमती। ३-बिना मूल्य का। मूल्यरहित। (क्वचित)।

निर्मोह [वि.] (सं.) जिसके मन में मोह न हो। जिसके मन में ममता न हो। [संज्ञा पु.] १-रैवतमनु के एक पुत्र का नाम।

निर्मोहिनी [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] निर्दय। कठोर हृदय। जिसके चित्त में ममता या दया न हो।

निर्मोहिया+ [वि.] (हिं.) निर्दय। कठोर हृदय।

निर्मोही [वि] (हिं.) जिसके हृदय में मोह या ममता न हो। निर्दय। कठोर हृदय।

निर्यंत्रण, निर्यन्त्रण [वि.] (सं.) १-जिसकी कोई रोकटोक न हो। जो वश में न रह सके। उद्दंड। हठी। जिद्दी। २-स्वाधीन। मनमौजीपन।

निर्यत्न [वि.](सं) अक्रियशील। सुस्त। आलसी

निर्यस्क [वि.] (सं.) अकीर्तिकर।

निर्याण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाहर निकलना। २-यात्रा। रवानगी। प्रस्थान। (विशेषतः सेना का रणक्षेत्र की ओर अथवा चौपायों का चराई की ओर प्रस्थान)। ३-वह सड़क जो किसी नगर के बाहर की ओर जाती हो। ४-अदृश्य होना। गायब होना। ५-शरीर से आत्मा का निकलना। मृत्यु। ६-मोक्ष। मुक्ति। परमानन्द। ७-हाथी के आँख का बाहरी कोना। ८-पशुओं के पैर में बांधने की रस्सी।

निर्यात [वि.] (सं.) निर्गत। निकाला हुआ। [संज्ञा पु.] १-वह जो कहीं से बाहर निकले। २-देश से माल बाहर जाने की क्रिया। ३-देश से बाहर जाने वाला माल। एक्सपोर्ट।

निर्यातक [वि.] (सं.) निर्यात करने वाला। [संज्ञा पु.] देश में बाहर बिक्री के लिए माल भेजने का कार्य करने वाला व्यक्ति। एक्सपोर्टर।

निर्यातकर [संज्ञा पु.] (सं.) देश से बाहर जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला कर। एक्सपोर्ट टैक्स।

निर्यातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बदला चुकाना। २-प्रतिकार। ३-मार डालना। ४-ऋण चुकाना। ५-देखो 'निर्यात'।

निर्यातशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) निर्यात या देश से बाहर जाने वाली विक्रय आदि की वस्तुओं पर राज्य की ओर से लगने वाला एक विशेष प्रकार का कर। एक्सपोर्ट ड्यूटी।

निर्याता [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृषक। किसान। २-देखो 'निर्यातक'।

निर्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं) प्रस्थान। रवानगी।

निर्याम [संज्ञा पु..] (सं.) मांझी। मल्लाह। सारथि।

निर्यामिक [वि.] (सं) निर्माण करने या बनाने वाला।

निर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्षों या पौधों से निकसने वाला रस। २-गोंद। राल। ३-कोई गाढ़ी तरल वस्तु। ४-सार। काढ़ा। क्वाथ। ५-बहना या झरना। क्षरण।

निर्युक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) युक्ति का अभाव। युक्तिहीनता।

निर्यूथ [वि] (सं.) १-झुण्ड से छूटा हुआ। २-यूथ या झुण्ड से अलग किया हुआ।

निर्यूष [संज्ञा पु] (सं) देखो 'निर्यास'।

निर्यूह [संज्ञा पु.] (सं) १-कलस। छज्जा। गौख। २-मुकुट। कलगी। शिरोभूषण। ३-दीवार में लगी या गड़ी हुई वह लकड़ी जिसमें कोई चीज टाँगी जाय। खूंटी। ४-द्वार। फाटक। ५-रस। क्वाथ।

निर्योग [संज्ञा पु.] (सं.) अलंकार। सजावट।

निर्योग्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं) अयोग्यता। असमर्थता। डिस्-एबिलिटी।

निर्लक्षण [वि.] (सं.) जिसका कोई लक्षण न हो। अप्रसिद्ध।

निर्लक्ष्य [वि.] (सं.) लक्ष्यहीन। जो निगाह में न पड़े।

निर्लज्ञ [वि.] (सं.) जिसे लज्जा या शर्म न हो। बेहया।

निलज्ञता [संज्ञा स्त्री] (सं.) निर्लज्जता होने का भाव। बेशर्मी। बेहयाई।

निर्लिंग, निर्लिङ्ग [वि.] (सं.) जिसमें कोई निश्चित लिंग या चिह्न न हो।

निर्लिप्त [वि] (सं.) १-राग-द्वेष आदि से मुक्त। जो किसी विषय में आसक्त न हो। २-लिप्त न हो। बेलौस।

निर्लिप्तता [संज्ञा स्त्री.](सं.) निर्लिप्त होने की क्रिया

का भाव।

निर्लुंचन, निर्लुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं) १-लूट मार करने का काम। २-खींचकर उखाड़ लेना।

निर्लुंठन, निर्लुण्ठन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपहरण। लूटखसोट। लूटना। २-चीरफाड़।

निर्लेखन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु पर जमी हुई मल आदि खुरचना। २-खरोंचने या खुरचने का औजार। खरोंचा।

निर्लेप [वि.] (सं.) विषयों आदि से अलग रहने वाला। निर्लिप्त।

निर्लोभ [वि.] (सं.) जिसे लोभ या लालच न हो।

निर्लोभी [वि] (हिं) लोभ या लालच न करने वाला।

निर्लोम [वि.] (सं.) बिना रोयें या बाल का।

[illegible] [संज्ञा पु.] बोल नाम का एक गंधद्रव्य।

निर्वयनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांप की केंचुली।

निर्वंश [वि.] (सं.) जिसके आगे वंश चलाने वाला कोई न हो। जिसका वंश नष्ट हो गया हो।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वंश होने का भाव।

निर्वक्तव्य [वि.] (सं.) निर्वाच्य। प्रकाश न करने योग्य।

निर्वचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा वर्णन हो। किसी गूढ़ पद या वाक्य का अर्थ लगाना या बताना कि यह इसका अर्थ है। इन्टरप्रीटेशन। २-निश्चित रूप से कोई बात कहना। निरूपण। [वि.] चुप। मौन।

निर्वपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेंट करना। २-पिंडदान। ३-पुरस्कार-प्रदान। ४-दान। भेंट।

निर्वयणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साँप की केंचुली।

[illegible] [वि.] (सं.) १-बेशरम। निर्लज्ज। २-निर्भय। निडर।

निर्वसन [वि.] (सं.) [स्त्री. निर्वसना] नग्न। नंगा। वस्त्ररहित।

निर्वसना [वि] (सं.) [स्त्री. प्र.] बिना कपड़ों को धारण की हुई। वस्त्ररहित। नंगी।

निर्वसीयत जिसने मृत्युलेख या वसीयतनामा न लिखा हो। इन्टैस्टेट।

निर्वसीयता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिना मृत्युलेख या वसियत नामे के रहने का भाव। अकृत-मृत्युलेखत्व। अरिक्थपत्रता। इन्टैस्टैसी।

निर्वहण [संज्ञा पु] (सं.) १-निबाह। गुजर। निर्वाह। २-समाप्ति।

निर्वहना* [क्रि. अ.] (हिं.) गुजर करना या होना। निभना। चला चलना। परंपरा का पालन होना।

निर्वाह-वेतन [संज्ञा पु.] देखो 'निर्वाह-मजूरी'।

निर्वाक [वि.] (सं.) जिसके मुख से बात न निकले। मौन। चुप।

निर्वाच्य [वि.] (सं.) जो बोल न सकता हो। गूंगा।

निर्वाचक [संज्ञा पु.] (सं) जो निर्वाचन करे अथवा चुने। जो चुनता हो। चुनने वाला। *इलेक्टर।*

निर्वाचक-गण [संज्ञा पु] (सं.) निर्वाचन करने वालों का मंडल, गण या समूह। निर्वाचन-मंडल। *इलक्टरल-कॉलेज।*

निर्वाचक-नामावली [संज्ञा स्त्री.](सं) वह नामावली या सूची जिसमें निर्वाचकों के नाम पते आदि लिखे रहते हैं। *इलक्टरलरोल।*

निर्वाचक-मतपत्र [संज्ञा पु.] (सं) निर्वाचकों द्वारा किसी के पक्ष डालनेवाले अपने सम्मति-सूचक-पत्र। *इलेक्टरेट-बैलट।*

निर्वाचक-समूह [संज्ञा पु.] (सं) निर्वाचन करने वालों का समूह या झुण्ड। *इलेक्टरेट।*

निर्वाचक-सूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सूची या नामावली जिसमें निर्वाचन करने वालों के नाम पते आदि लिखे रहते हैं। *इलेक्टरल-रोल।*

निर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य के लिए बहुतों में से एक अथवा कुछ को प्रतिनिधि के रूप में चुनना। *इलेक्शन।* *नियमित निर्वाचन*–वैध या न्यायसंगत ढंग पर किया हुआ निर्वाचन या चुनाव। *प्रारंभिक निर्वाचन*–परिगणित जातियों के लिये होने वाला वह प्रथम निर्वाचन या चुनाव जिसमें पहले सर्वसाधारण के मत लिये जाते है तदनन्तर उस श्रेणी या वर्ग के लोगों द्वारा चुनाव होता है। *अवैध निर्वाचन*–वह निर्वाचन या चुनाव जो न्यायसंगत न हो। जिसमें किसी प्रकार का गोलमाल या गड़बड़ हुई हो। *उप-निर्वाचन*–किसी प्रतिनिधि के त्यागपत्र देने या मर जाने की अवस्था में रिक्त होने वाले स्थान का निर्वाचन या चुनाव *पृथक निर्वाचन*–१-किसी जाति, श्रेणी आदि या धर्म के लोगों को विशेष छूट देने के लिए उसी जाति या सम्प्रदाय के लोगों के मत से होने वाला चुनाव। २-जातीय या साम्प्रदायिक दृष्टि से होने वाला अलग-अलग चुनाव। *संयुक्त निर्वाचन*–बिना किसी भेद भाव (धर्म या साम्प्रदायिक) के होने वाला चुनाव। *सांप्रदायिक निर्वाचन*–साम्प्रदायिक आधार पर उनकी गणना के अनुपात से होने वाला चुनाव।

निर्वाचन-अधिकरणिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्यायालय जिसमें निर्वाचन या चुनाव संबंधी सब प्रकार के मामलों का निर्णय होता है। *इलेक्शन-ट्रिब्युनल।*

निर्वाचन-अधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन या चुनाव अधिकारी को दिये गये निर्वाचन में व्यवस्था सम्बन्धी अधिकार। निर्वाचन सम्बन्धी कार या स्वत्व। *इलेक्टरलराइट।*

निर्वाचन-अधिकारिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पदाधिकारी जिसकी देखरेख में मतदान होता है। *पोलिंग-आफीसर।*

निर्वाचन-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी जो किसी निर्वाचन की देखरेख तथा व्यवस्था के लिए नियुक्त हो और उसका परिणाम बतलाता हो। *रिटर्निंग-आफीसर।*

निर्वाचन-अधिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ पर निर्वाचक या मतदाता मतदान करते हैं। *पोलिंग-स्टेशन।*

निर्वाचन-अपराध [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन में किसी प्रकार की गड़बड़ (जाली मत आदि देने सम्बन्धी) करने का अपराध या दोष। *इलेक्शन-आफेंसेज।*

निर्वाचन-अभियान [संज्ञा पु] (सं.) निर्वाचन या चुनाव में युद्ध प्रवृत्ति की सी दृष्टि से निर्वाचकों या मतदाताओं का मतदान करने के लिए निर्वाचन-अधिष्ठान या निर्वाचन-स्थान की ओर कूच या प्रस्थान। *इलेक्शन कैम्पेन।*

निर्वाचन-आयुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य की आज्ञा से निर्वाचन या चुनाव सम्बन्धी मामलों के लिए निर्वाचन अधिकारी आदि नियुक्त करनेवाला बड़ा अधिकारी। *इलेक्शन कमिश्नर।*

निर्वाचन-कुंडली, निर्वाचन-कुण्डली [संज्ञा स्त्री] (सं) वह सूची या नामावली जिसमें निर्वाचकों या मतदाताओं के नाम पते आदि लिखे रहते हैं। *इलेक्टर रोल।*

निर्वाचन-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। *रिटर्निंग आफीसर।*

निर्वाचन-घटक [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन या चुनाव लड़ने वाले की ओर से प्रतिनिधिरूप में नियुक्त व्यक्ति। जो चुनाव-स्थान पर नियुक्त किया जाता है ताकि मतदान में किसी प्रकार की गड़बड़ न होने पाये। *पोलिंग ऐजेंट।*

निर्वाचन-चालबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निर्वाचन या चुनाव-सम्बन्धी चालबाजी या धूर्तता। *इलेक्शनियरिंग डोज।*

निर्वाचन-ज्वर [संज्ञा पु] (सं.) चुनाव का बुखार या चुनाव लड़ने सम्बन्धी अभिलाषा। (सनक)।

निर्वाचन-न्यायालय [संज्ञा पु] (सं.) वह न्यायालय जिसमें निर्वाचन या चुनाव से संबंधित सब प्रकार के मामलों का निर्णय होता है। *इलेक्शन-ट्रिब्यूनल।*

निर्वाचन-पद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं) चुनाव-संबंधी

प्रणाली या पद्धति (जिसके द्वारा प्रतिनिधि आदि चुनकर राज्य कार्य चलाते हैं)।

निर्वाचन-पुस्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पुस्तिका जिसमें निर्वाचकों या मतदाताओं की नामावली और पता आदि लिखा होता है जिसके द्वारा निर्वाचन-स्थान पर मतदान के लिए आनेवालों के सम्बन्ध में ठीकठीक निर्णय किया जाता है कि अमुक नाम वाला व्यक्ति वय, पते ठिकाने आदि की दृष्टि से ठीक है या नहीं। *पोलिंग-बुक*।

निर्वाचन-मंडल, निर्वाचन-मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचकों का या मतदाताओं का समूह या मण्डल। निर्वाचकगण। *इलक्टर-कालेज*

निर्वाचन-मताधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मत का स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग के द्वारा बिना किसी प्रकार के दबाव के चुनाव करने का अधिकार। *एलक्टरोल-फ्रॅन्चाइज*।

निर्वाचन-युद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्वाचन-अभियान'।

निर्वाचन-लेखा [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन या चुनाव में व्यय होने का हिसाब।

निर्वाचन-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह विभाग जिसकी देखरेख समस्त चुनाव कार्य हो। *एलक्टररोल-डिविजन*।

निर्वाचन-व्यय [संज्ञा पु.] (सं.) चुनाव में होने वाला खर्चा।

निर्वाचनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्वाचक या निर्वाचन करने का समूह। *एलक्टरेट*।

निर्वाचनिका-छंदक, निर्वाचनिका-छन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचकों द्वारा डाले जाने वाले मतपत्र। निर्वाचक-मतपत्र।

निर्वाचनी-युक्तियाँ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्वाचन या चुनाव (में अपनी सफलता) सम्बन्धी उपाय या युक्तियाँ। *एलक्टरोल-डॅवाइस*।

निर्वाचित [वि.] (सं.) चुना हुआ।

निर्वाचित-शासन [संज्ञा पु.] (सं.) चुने हुए लोगों या प्रतिनिधियों की सरकार। प्रजासत्तात्मक-राज्य-शासन। *एलक्टिव-गवर्नमेंट*।

निर्वाण [वि.] (सं.) १-बुझा हुआ (दीपक अग्नि आदि)। २-अस्त। डूबा हुआ। ३-शांत। धीमा पड़ा हुआ। ४-मृत। मरा हुआ। ५-निश्चल। ६-शून्यता को प्राप्त। ७-बिना बाण का। [संज्ञा पु.] १-बुझना। ठंडा होना। २-समाप्ति। न रह जाना। ३-अस्त। डूबना। ४-शान्ति। ५-मुक्ति। मोक्ष।

निर्वाणप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक गंधर्वी का नाम।

निर्वाणी [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के एक शासन-देवता का नाम।

निर्वात [वि.] (सं.) १-जहाँ हवा न हो। जहाँ हवा का झोंका न लग सके। २-जो चंचल न हो। स्थिर।

निर्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपवाद। निन्दा। २-अवज्ञा। लापरवाही।

निर्वानर [वि.] (सं.) जहाँ बंदर न हो।

निर्वाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-दान। २-पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला दान।

निर्वापण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुझने या बुझाने का काम। २-(अधिकार या स्वत्व आदि का) अन्त या समाप्ति करना। *एक्सटिंक्शन*।

निर्वापित [वि.] (सं.) १-जिसको निर्वाण मिला हो। २-नाश किया हुआ। बुझाया हुआ।

निर्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्वासन। निकाल देना। २-प्रवास। विदेश-यात्रा।

निर्वासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो निर्वासन करता हो। २-देश निकाला देने वाला।

निर्वासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार डालना। वध। २-निकालना। ३-विसर्जन। ३-गांव, शहर या देश आदि से दंडस्वरूप बाहर निकाल देना। *ट्रांसपोर्टेशन*।

निर्वासना* [क्रि. स.] (हि.) देश-निकाले का दंड देना। निकालना।

निर्वासनीय [वि.] (सं.) देश से बाहर निकालने योग्य।

निर्वासित [वि.] (सं.) जिसे देश निकाले का दंड मिला हो। अपने निवास-स्थान से निकाला हुआ।

निर्वाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी क्रम अथवा परम्परा का चलता रहना। किसी बात का जारी रहना। निवाह। २-किसी बात के अनुसार बराबर आचरण। पालन। ३-समाप्ति। पूरा होना।

निर्वाहक [वि.] (सं.) १-निर्वाह करने वाला। निभाने वाला। २-आज्ञा का निर्वाहण या पालन करने वाला। *एक्ज़ीक्यूटर*।

निर्वाहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्वाह करना। निभाना। २-किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक प्रकार से कार्य करना। ३-कुछ समय के लिए किसी दूसरे का कार्य अथवा भार अपने ऊपर लेना। अस्थायी रूप से स्थानापन्न के रूप में कार्य करना।

निर्वाहणिक [वि.] (सं.) १-निर्वाहण-सम्बन्धी। निर्वाहण का। २-जो किसी कार्य का निर्वाह करता हो। निर्वाहण करने वाला। ३-किसी के पद पर अस्थायी रूप से रहकर उसके कार्य का निर्वाहण करने वाला। स्थानापन्न। *ऑफिशिएटिंग*।

निर्वाहना* [क्रि. अ.] (हि.) निर्वाह करना।

निर्वाह-मजूरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) निर्वाह करने के योग्य वेतन या मजूरी। *लिविंग-वेजेज़*।

निर्वाहित [वि.] (सं.) निबाहा हुआ।

निर्विंध्या, निर्विन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) के अनुसार एक नदी का नाम जो से निकलती है।

निर्विकल्प [वि.] (सं.) १-जिसमें विकल्प वर्त्तन या भेद न हो। एब्सोल्यूट। निश्चित।

निर्विकल्पक [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत के वह अवस्था जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय नहीं रह जाता, दोनों एक हो जाते हैं। न्याय के मतानुसार वह लौकिक त्मक ज्ञान जो इन्द्रियजन्य ज्ञान से भिन्न होता है। बौद्धशास्त्रों के मत से ऐसा ही ज्ञान-प्रमाण माना जाता है।

निर्विकल्प-समाधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता का कोई भेद नहीं रह जाता सच्चिदानन्द-ब्रह्म के अतिरिक्त नहीं पड़ता। इस समाधि की सुषुप्ति अवस्था के साथ की जा सकती है।

निर्विकार [वि.] (सं.) विकाररहित। किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन

निर्विकास [वि.] (सं.) विकासरहित। किसी का विकास न हो।

निर्विघ्न [वि.] (सं.) जिसमें विघ्न हो। विघ्न-बाधारहित। [क्रि. वि.] किसी प्रकार के। विघ्न-बाधा के।

निर्विचार [वि.] (सं.) विचाररहित। का। जिसमें कोई विचार न हो। योगदर्शन के अनुसार एक प्रकार समाधि जो किसी सूक्ष्म आलम्बन होने से प्राप्त होती है तथा जिसमें म्बन के नाम और संकेतादि नहीं रह जाता केवल इसके आकार ज्ञान होता है।

निर्विचेष्ट [वि.] (सं.) अज्ञान। मूर्ख।

निर्वितर्क [वि.] (सं.) वितर्कशून्य।

निर्वितर्क-समाधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दर्शन के अनुसार एक प्रकार समाधि जो किसी सूक्ष्म आलंबन होने से प्राप्त होती है तथा जिसमें बन के नाम और संकेत आदि नहीं रह जाता, केवल उसके का ज्ञान होता है।

निर्विद्य [वि.] (सं.) जो पढ़ा लिखा न विद्या न आती हो। विद्याहीन।

निर्विभाग [वि.] (सं.) जिसके पास या महकमा न हो।

निर्विभाग-मंत्री, निर्विभाग-मन्त्री (सं.) वह मन्त्री या सचिव कोई विभाग नहीं होता। अविभागीय *मिनिस्टर-विदाउट-पोर्टफ़ोलियो*।

निर्विभेद [वि.] (सं.) भेदरहित। अभिन्न

निर्विमर्श [वि.] (सं.) चिन्ताहीन। विना विमर्श का।

निर्विरोध [वि.] (सं.) जिसमें कोई विरोध, बाधा या रुकावट न हो। विरोधहीन। [क्रि. वि.] विना किसी विरोध, बाधा या रुकावट के।

निर्विरोधी [वि.] (सं.) विरोध, बाधा या रुकावट न डालने वाला।

निर्विवर [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई विवर, रंध्र या छेद न हो। २-जिसमें अन्तर न हो।

निर्विवाद [वि.] (सं.) जिसमें कोई विवाद या झगड़े की बात न हो।

निर्विवेक [वि.] (सं.) जो किसी बात की विवेचना न कर सकता हो। विवेकहीन।

निर्विवेकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्विवेक होने का भाव। विवेकहीनता।

निर्विशंक, निर्विशङ्क [वि.] (सं.) निर्भय। निडर

निर्विशंकित, निर्विशङ्कित [वि.] (सं.) शंकाहीन। भयरहित।

निर्विशेष [वि.] (सं.) वह जो किसी में भेदभाव न करे। [संज्ञा पु.] परब्रह्म। परमात्मा।

निर्विशेषण [वि.] (सं.) विना उपाधियों के। विशेषणरहित।

निर्विष [वि.] (सं.) विषहीन। जिसमें जहर न हो

निर्विषय [वि.] (सं.) १-घर से निकाला हुआ। २-जिसको काम करने के लिए कोई भी स्थान न हो। ३-जिसको विषय (स्त्री-मैथुनादि) की वासना न हो।

निर्विषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'निर्विषी'।

निर्विषाण [वि.] (सं.) जिसके सींग न हों।

निर्विषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असवर्ग जाति की एक घास। यह पश्चिमोत्तर हिमालय, काश्मीर तथा मलयागिरि में अधिकता से होती है। इसकी जड़ का प्रयोग अनेक विषों के नाश करने में होता है। वैद्यक के अनुसार यह जड़ कटु, शीतल, व्रण को भरने वाली तथा कफ, वात, रुधिर विकार और विष को नष्ट करने वाली होती है। अविषा।

निर्विष्ट [वि.] (सं.) १-कृतभोग। जो भोग कर चुका हो। २-कृतविवाह। जो विवाह कर चुका हो। ३-जो मुक्त हो गया हो। ४-जो अग्निहोत्र कर चुका हो।

निर्वीज [वि.] (सं.) १-जिसमें वीज न हो। वीजरहित। २-जो कारण से रहित हो। अकारण। ३-जिसका वीज तक न रह गया हो। स्वंशी नष्ट।

निर्वीज-समाधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाधि की वह अवस्था जिसमें चित्त का निरोध करते-करते उसका अवलम्बन या वीज भी विलीन हो जाता है। इस अवस्था में मनुष्य को सुख दुःखादि का तनिक भी अनुभव नहीं होता और वह मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

निर्वीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किशमिश नामक मेवा

निर्वीर [वि.] (सं.) १-प्रभुतारहित। २-वीरताशून्य।

निर्वीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पति और लड़के-वाले मर चुके हों।

निर्वीर्य [वि.] (सं.) १-वीर्यहीन। बल या तेजरहित। २-अशक्त। कमजोर। ३-नपुंसक।

निर्वृक्ष [वि.] (सं.) वृक्षों से रहित। वृक्षशून्य।

निर्वृत [वि.] (सं.) प्रसन्न। खुश।

निर्वृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोक्ष। २-मृत्यु। ३-शान्ति। ४-आनन्द।

निर्वृत-शत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

निर्वृत्त [वि.] (सं.) जो पूरा हो गया हो। जिसकी निष्पत्ति हो गई हो।

निर्वृत्तात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

निर्वृत्ति [वि.] (सं.) निष्पत्ति।

निर्वृष [वि.] (सं.) १-विना वर्षा का। २-विना बैल का।

निर्वेग [वि.] (सं.) जिसमें वेग या गति न हो। स्थिर।

निर्वेतन [वि.] (सं.) जो वेतन न लेता हो। अवैतनिक।

निर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-(अपना) अपमान। २-खेद। दुःख। ३-वैराग्य। ४-अनुताप।

निर्वेधिम [संज्ञा पु.] (सं.) कान छेदने का एक औजार। (सुश्रुत)।

निर्वेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोग। २-वेतन। तनखाह। ३-विवाह। शादी। ४-मूर्च्छा। बेहोशी।

निर्वेशनीय [वि.] (सं.) भोग्य। प्राप्त करने योग्य

निर्वेष्टन [वि.] (सं.) वेष्टनरहित। विना ढपने का

निर्वैर [वि.] (सं.) जिसमें वैर न हो। द्वेषरहित।

निर्व्यथ [वि.] (सं.) व्यथा, या पीड़ा से रहित।

निर्व्यथन [वि.] (सं.) जिसे व्यथा या पीड़ा न हो।

निर्व्यपेक्ष [वि.] (सं.) निरपेक्ष। वेपरवाह।

निर्व्यलीक [वि.] (सं.) निष्कपट। छलरहित।

निर्व्याकुल [वि.] (सं.) जो घबड़ाया न हो।

निर्व्याघ्र [वि.] (सं.) जहाँ व्याघ्र का भय या डर न हो।

निर्व्याज [वि.] (सं.) १-ईमानदार। सच्चा। साफ मन का। २-निष्कपट। छलशून्य। ३-बाधारहित।

निर्व्याधि [वि.] (सं.) व्याधि या रोग से मुक्त

निर्व्यापार [वि.] (सं.) विना कामकाज या व्यवसाय का।

निर्व्यूढ [वि.] (सं.) निष्पन्न। समाप्त। स्थिर

निर्व्रण [वि.] (सं.) जिसके कोई घाव न हो। चीर-फाड़रहित।

निर्व्रत [वि.] (सं.) जो व्रत न रखता हो।

निर्हरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शव को जलाने के लिए ले जाना। २-जलाना। ३-नाश करना।

निर्हरणीय [वि.] (सं.) अलग करने योग्य।

निर्हस्त [वि.] (सं.) विना हाथ का। जिसके हाथ न हों।

निर्हिम [वि.] (सं.) १-हिमशून्य। जहाँ बरफ न गिरती हो। २-जाड़े का अवसान। हेमन्त-ऋतु की समाप्ति।

निर्हृत [वि.] (सं.) निकाला हुआ। हटाया हुआ

निर्हृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह जो अपने स्थान से हटाया गया हो।

निर्हेतु [वि.] (सं.) जिसमें कोई हेतु या कारण न हो।

निर्ह्रीक [वि.] (सं.) १-निर्भीक। साहसी। २-निर्लज्ज। बे-हया। बे-शर्म।

निल [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम जो माली पिता तथा वसुदा माता से उत्पन्न हुआ था। यह विभीषण का मन्त्री था।

निलज+ [वि.] (हिं.) देखो 'निर्लज्ज'।

निलजई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निलज्जता। बेशर्मी। बे-हयाई।

निलजता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बेशर्मी। निर्लज्जता।

निलजी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] निर्लज्जा। (स्त्री)। बेशर्म।

निलज्ज [वि.] (हिं.) देखो 'निर्लज्ज'।

निलज्जता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निर्लज्जता'।

निलज्जी [वि.] (हिं.) निर्लज्ज। बेशरम। बेहया।

निलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकान। घर। २-छिपने का स्थान। ३-जानवरों का बिल या भीटा। ४-चिड़ियों का घोंसला।

निलयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आवास-स्थान। मकान। घर। २-किसी स्थान में बस जाना।

निलहा [वि.] (हिं.) नील वाला। नील-संबंधी।

निलाम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नीलाम'।

निलिंप, निलिम्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-मरुतों का दल।

निलिंपनिर्झरी, निलिम्पनिर्झरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

निलिंपा, निलिम्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाय। २-दूध दूहने का पात्र।

निलिंपिका, निलिम्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौ। गाय।

निलीन [वि.] (सं.) बहुत अधिक लीन।

निवत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह जीव या पशु जो यज्ञ आदि में उत्सर्ग किया जाय।

निवचने [अव्य.] (सं.) जबान बन्द करना। न बोलना।

निवछरा* [वि.] (हिं.) (ऐसा समय) जिसमें बहुत कामकाज न हो।

निवछार+ [वि.] (हिं.) देखो 'निछावर'।

निवछावर+ [वि.] (हिं.) देखो 'निछावर'।

निवाड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की नाव

निवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह जो नीचे को जाता हो। +[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्योता'।

निवपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितरों के नाम पर दिया हुआ दान। पितरों के नाम पर किसी वस्तु को देना। २-बखेरना। उड़ेलना। डालना। ३-बोना।

निवर [वि.] (सं) निवारण करने वाला। निवारक।

निवरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्वारी कन्या। अविवाहिता स्त्री।

निवर्त [वि.] (सं) हटाया हुआ। लौटाया हुआ।

निवर्तक [वि.] (सं) १-लौटाने वाला। वापिस लाने वाला। २-बन्द करने वाला। पकड़ने वाला। हटा देने वाला। ४-लौटाकर लाने वाला।

निवर्तन [संज्ञा पु.] (सं) १-प्राचीनकाल में भूमि की एक नाप जो आठ सौ वर्ग गज होती थी अर्थात बीस बाँस लम्बी। २-वापसी। ३-बंदी। ४-विरक्ति। ५-अकर्मण्यता। ६-लाकर पीछे देने या लौटाने की क्रिया। ७-पश्चाताप। ८-उन्नति करने की अभिलाषा। [वि.] १-लौटाने वाला। २-पीछे हटाने वाला। बन्द करने वाला।

निवर्तनीय [वि.] (सं.) लौटने योग्य। पीछे हटने योग्य।

निवर्तमान [वि.] (सं.) जो लौट रहा हो।

निवर्तित [वि.] (सं.) लौटाया हुआ।

निवर्त्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो पीछे की ओर हट आया हो। २-युद्ध में भाग आया हुआ। ३-निर्लिप्त।

निवसति [संज्ञा पु.] (सं.) घर। मकान। आवास-स्थान।

निवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-निष्कपट। छलरहित २-बाधारहित।

निवसन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाँव। २-घर। आवास स्थान। ३-वस्त्र। ४-स्त्री का सामान्य अधोवस्त्र।

निवसना* [क्रि. अ.] (हिं.) रहना। निवास करना।

निवस्तव्य [वि.] (सं.) निर्वाह करने योग्य।

निवह [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। यथ। २-फलित ज्योतिष के अनुसार सात पवनों में से एक पवन का नाम।

निवाई [वि.] (हिं.) १-नवीन। नया। २-अनोखा। विलक्षण।

निवाज [वि.] (फा.) कृपा करने वाला। अनुग्रह करने वाला। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नमाज'।

निवाजना+ [क्रि स.] (हिं.) अनुग्रह करना। कृपा करना।

निवाजिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कृपा। मेहरबानी। २-दया।

निवाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निवार'।

निवाड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) १-छोटी नाव। २-नाव की एक क्रीड़ा जिसमें नाव को बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं। नवार।

निवात [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहां पवन या वायु न हो। २-रहने का स्थान। घर। आवास-स्थान। ३-कवच धारण किये हुए। वह वर्म्म जो शस्त्र द्वारा छेदा न जा सके। ४-शान्त। अबाध। ५-सुरक्षित स्थान

निवान+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-नीची भूमि जहाँ नम, हरी, कीचड़ या पानी भरा रहता है। २-जलाशय। झील। बड़ा तालाब।

निवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) नीचे की ओर करना। झुकाना।

निवान्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय, जिसका बछड़ा मरगया हो तथा दूसरे बछड़े को लाकर दूही जाती हो।

निवाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-बीज। दाना। अनाज जो बीज के काम आये। २-पितरों के उद्देश्य से या उनके नाम पर किसी वस्तु का दान। श्राद्ध में तर्पण-क्रिया। ३-भेंट। नजर

निवापक [वि.] (सं.) १-बीज बोने वाला। २-श्राद्ध में तर्पण क्रिया करने वाला। ३-भेंट देने वाला।

निवापी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निवाप'।

निवार [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-कुएँ की नींव में बैठाने का लकड़ी का गोल चक्कर जिसके ऊपर कोठी की जोड़ाई या चिनाई होती है। जाखन। जमवट। २-मोटी सूत की बुनी हुई पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। निवाड़। नेवार। ३-तिन्नी का धान। मुन्यन्न पसही। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मोटी और मीठी मूली। [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोक। बचाव। हटाने या रोकने की क्रिया। २-वर्जन। निषेधकरण। ३-बाधा। रुकावट।

निवारक [वि.] (सं.) १-निवारण करने या रोकने वाला। २-दूर करने वाला। मिटाने वाला।

निवारक-निरोध [संज्ञा पु.] (सं.) निवारणात्मक कारारोध। रोधात्मक कारानिग्रह। प्रेवेंटिव डिटेन्शन।

निवारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोकने की क्रिया। २-हटाने की या दूर करने की क्रिया। निवृत्ति। छुटकारा।

निवारणात्मक [वि.] (सं.) रोकने वाला। रोकता हो। निरोधक।

निवारणात्मक-कारारोध [संज्ञा पु.] (सं.) 'निवारक-निरोध'।

निवारणीय [वि.] (सं.) रोकने या हटाने योग्य।

निवारन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निवारण'।

निवारना* [क्रि. स.] (हिं.) १-रोकना। करना। हटाना। २-बचाना। रक्षा के काटना या बिताना। ३-निषेध करना। करना।

निवारस्वाफ [संज्ञा पु.] (फा.) निवार बुनने वाला

निवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जूही की जाति का एक पौधा जो जूही के पौधों से कुछ बड़ा होता है। इसमें सफेद फूल आते हैं। फूल आम के मौ के समान गुच्छेदार होते हैं तथा इसमें भीनी-भीनी सुगंध निकलती है। २-इस पौधे का फल।

निवाला [संज्ञा पु.] (फा.) उतना भोजन जितना एक बार में मुंह में डाला जाय। कौर। लुकमा।

निवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-रहने की क्रिया या भाव। रहाइस। २-रहने का स्थान। स्थल। ३-घर। मकान। ४-वस्त्र। कपड़ा।

निवास-स्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहां कोई रहता हो। घर। मकान।

निवासी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. निवासिनी] रहने वाला। बसने वाला। वासी।

निवास्य [वि.] (सं.) रहने योग्य।

निविड़ [वि.] (सं.) १-घना। घन। घोर। गहरा। ३-चपटी या टेढ़ी नाक वाला।

निविड़ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-घनापन। गहरापन। ३-वंशी स्वय इसी प्रकार के बाजे के स्वर का गम्भीर होना जो पांचों गुणों में से एक माना जाता है।

निविद्धान [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही दिन होने वाला हवन, यज्ञादि।

निविरीस [वि.] (सं) १-घना। सघन। नाक वाला।

निविशेष [वि.] (सं.) अभिन्न। एकसा। सदृश्य। [संज्ञा पु.] भिन्नता का असमानतारहित।

निविष* [वि.] (हिं.) देखो 'निर्विष'।

निविष्ट [वि] (सं.) १-जिसका चित्त २-एकाग्र। ३-लपेटा हुआ। ४-ठहराया रखा हुआ। स्थापित। ५-बांधा हुआ। घुसा या घुसाया हुआ। ७-कहीं क्रिया या चढ़ाया हुआ। एन्टर्ड।

निविष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खाते आदि में लिखने, दर्ज करने या चढ़ाने की क्रिया

...१ । २-इस प्रकार चढ़ी हुई बात या रकम । ...प्रवेश । एन्ट्री ।

...[संज्ञा पु.] (सं.) ओढ़ने का कपड़ा । चादर

...[वि.] (सं.) वीर्यहीन । जिसमें वीर्य ...वा पुरुषत्व न हो ।

...[वि.] (सं.) घेरा हुआ । लपेटा हुआ । [संज्ञा पु.] १-घुंघट । बुरका । २-चादर ।

...[संज्ञा स्त्री] (सं.) ओढ़नी । चादर ।

...[वि.] (सं.) १-छूटा हुआ । २-जो अलग ...गया हो । विरक्त । ३-जो छुट्टी पा गया ...। वाली । ४-सदाचरण के लिए पश्चाताप ...किये हुए । ५-जिसने काम से अवकाश ग्रहण ...लिया हो । रिटायर ।

...कारण [वि.] (सं.) विना किसी अन्य हेतु ...उद्देश्य के । [संज्ञा पु.] धर्मात्मा मनुष्य । ...मनुष्य जिसमें सांसारिक वासनाएं न रह ...गई हों ।

...मांस [वि] (सं.) जिसने मांस खाना ...दिया हो ।

...[वि] (सं.) जितेन्द्रिय । जिसने अपनी ...न्द्रियों को वश में कर लिया हो ।

...वृत्ति [वि] (सं.) किसी पेशे को त्यागा ...हुआ ।

...संतापनीय [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह ...औषधियों के योग से बनने वाला एक रसा-...यन जिसके सेवन करने से मनुष्य का शरीर ...के समान तथा बल सिंह के समान हो ...जाता है । यह सब औषधियां सोमरस के ...समान वीर्ययुक्त मानी जाती हैं । इनके नाम ...इस प्रकार हैं-अजगरी, श्वेतकपोती, कृष्ण-...कपोती, गोनसी, वाराही, कन्या, छत्रा, अति-...छत्रा, करेणु, अजा, चक्रका, आदित्यवर्णिनी, ...सुवर्चला, श्रावणी, हाश्रावणी, गोलोभी, ...जलोभी और महावेगवती । (सुश्रुत) ।

...हृदय [वि] (सं.) वह जो अपने मन में ...पश्चाताप करता हो । मन में पछताने वाला ।

...त्मा [संज्ञा पु.] (सं) १-ऋषि । २-विष्णु

निवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-मुक्ति । छुटकारा । 'प्रवृत्ति' का उलटा । २-बौद्धों के मतानुसार मुक्ति या मोक्ष । ३-एक प्राचीन तीर्थ का नाम ४-अपने कार्य या पद से अवकाश पाकर या ...अवधि पूरी हो जाने पर सदा के लिए अपने ...कार्य या पद से हट जाना । रिटायरमेंट । निवृत्ति होना-जिसने काम से अवकाश ग्रहण ...कर लिया हो । जिसने पेंशन ले ली हो । रिटायर ।

निवृत्ति-वेतन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मासिक अथवा वार्षिक वृति या वेतन जो किसी व्यक्ति ...अथवा परिवार के लोगों को उसकी पिछली ...सेवा के कारण दी जाती है । पेन्शन ।

...+ [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'नैवेद्य' ।

निवेदक [संज्ञा पु.] (सं.) निवेदन करने वाला । प्रार्थी ।

निवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नम्रतापूर्वक किसी से कुछ कहना । विनती । प्रार्थना । विनय । २-समर्पण ।

निवेदना*+ [क्रि स.] (हि.) १-विनती करना । प्रार्थना करना । २-नैवेद्य चढ़ाना । ३-कुछ भोज्य पदार्थ आगे रखना । अर्पित या भेंट करना ।

निवेदनीय [वि.] (सं.) निवेदन करने योग्य ।

निवेदित [वि.] (सं.) १-चढ़ाया या अर्पित किया हुआ । दिया हुआ । २-कहा हुआ । निवेदन किया हुआ । सुनाया हुआ ।

निवेदी [वि.] (सं.) निवेदन करने वाला ।

निवेद्य [वि.] (सं.) निवेदन करने योग्य ।

निवेरना*+ [क्रि. स.] (हि.) १-निबटना । फैसला करना । २-खतम या समाप्त करना । ३-छांटना । चुन लेना । ४-छुड़ाना । दूर करना । हटाना ।

निवेरा* [वि.] (हि.) १-चुना या छाँटा हुआ । २-नवीन । अनोखा ।

निवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-विवाह । २-शिविर । डेरा । ३-पड़ाव । ४-घर । मकान । ५-प्रवेश । द्वार । ६-धरोहर । सुपुर्दगी । ७-प्रतिलिपि । अंकन । नक्शा । ८-सैनिक छावनी । ९-भूषण । सजावट ।

निवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रवेश । द्वार । २-पड़ाव । डेरा । ३-विवाह । ४-लिखा पढ़ी । ५-घर । मकान । ६-तम्बू । ७-कस्बा या नगर ८-घोंसला ।

निवेशनीय [वि.] (सं) प्रवेश करने योग्य ।

निवेशित [वि.] (सं.) प्रवेश किया हुआ ।

निवेश्य [वि.] (सं.) प्रवेश करने योग्य ।

निवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं) १-वह कपड़ा जिससे कोई चीज ढकी या लपेटी जाय । चादर या वेठन । २-सामवेद का मंत्रभेद ।

निवेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) वस्त्र द्वारा आच्छादन । कपड़े से ढकने का कार्य । चादर या वेठन ।

निवेष्टव्य [वि.] (सं.) ढाँपने योग्य ।

निवेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याप्ति । २-बरफ का पानी । ३-जलस्तम्भ । [वि.] व्याप्त । फैला हुआ ।

निव्याधी [संज्ञा पु.] (सं.) एक रुद्र का नाम ।

निव्यूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) निरन्तर । परिश्रम ।

निश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात । रात्री । २-हल्दी । हरिद्रा ।

निशंक [वि.] (हि.) जिसे किसी बात की शंका या भय न हो । निर्भय । निडर । [संज्ञा पु.] एक प्रकार का नृत्य ।

निशंग [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'निषंग' ।

निश*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रात । रात्री । रजनी

निशचर*+ [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'निशाचर' ।

निशठ [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार बलदेव के एक पुत्र का नाम ।

निशतर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'नशतर' ।

निशमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन । देखना । २-श्रवण । सुनना ।

निशल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देतीवृक्ष ।

निशांत, निशान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-रात्रि का अन्त । पिछली रात । रात का चौथा पहर । २-प्रभात । तड़का । ३-घर । [वि.] जो बहुत ही शांत हो ।

निशांध, निशान्ध [वि.] (सं.) जो रात को अंधा हो जाय । जिसे रात को न सूझे । जिसे रतौंधी होती हो । [संज्ञा पु.] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग । यह उस समय पड़ता है जब सिंहराशि सूर्य में हो । इस योग के पड़ने से रतौंधी होती है ।

निशांधी, निशान्धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जतुका या पहाड़ी नामक लता जिसकी पत्तियां दवा के काम में आती हैं । २-राजकन्या । राजकुमारी ।

निशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात । रात्रि । रजनी । २-हरिद्रा । हल्दी । ३-दारुहल्दी । ४-फलित ज्योतिष में मेष, वृष आदि छः राशियां ।

निशाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । शशि । चाँद । २-मुरगा । कुक्कुट । ३-महादेव । ४-कपूर । ५-एक महर्षि का नाम ।

निशाखातिर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) तसल्ली । दिल जमई प्रबोध ।

निशाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलदी । हरिद्रा ।

निशागृह [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का कमरा ।

निशाचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस । २-शृगाल गीदड़ । ३-उल्लू । ४-सर्प । ५-चक्रवाक । ६-भूत । ७-चोर । ८-ग्रंथिपर्ण का एक भेद । ९-महादेव । १०-चोर नामक गंधद्रव्य । ११-बिल्ली । १२-वह जो रात को चले । जैसे-कुलटा, पिशाच आदि ।

निशाचरपति [संज्ञा पु.] (सं) १-शिव । महादेव । २-रावण ।

निशाचरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राक्षसी । २-वह स्त्री जो पूर्व निश्चय के अनुसार रात में अपने प्रेमी से मिलने जाय । अभिसारिका नायिका । ३-वेश्या । कुलटा स्त्री । ४-केशनी नामक गंधद्रव्य ।

निशाचर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार । अंधेरा ।

निशाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । महादेव । २-निशाचर ।

निशाजल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओस । २-कुहरा । पाला । हिम ।

निशाट [संज्ञा पु] (सं.) १-उल्लू । २-निशाचर ।

निशाटन [संज्ञा पु.] (सं) १-रात के समय भ्रमण। २-उल्लू।

निशातिक्रम [[संज्ञा पु.] (सं) १-रात का बीत जाना। २-प्रभात। सबेरा। तड़का।

निशातैल [संज्ञा पु.] (सं) एक तेल विशेष जो धतूरा, हलदी और गंधक के मेल से बनता है। यह तेल कान के रोगों के लिए विशेषकर उपकारी माना जाता है।

निशात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-रात्रि का अन्त। रात का बीत जाना। २-प्रातःकाल। सवेरा।

निशाद [वि.] (सं.) केवल रात को खाने वाला।

निशादि [संज्ञा पु.] (सं) संध्याकाल। सूर्यास्त के बाद का समय।

निशादर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लू।

निशाध-तैल [संज्ञा पु] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का तेल जो कडुवे तेल, पिसी हुई हल्दी, सेंधा नमक, चितामूल और गुग्गुल आदि के मेल से बनाया जाता है। यह तेल भगंदर के लिये उपकारी माना जाता है।

निशाधीश [संज्ञा पु] (सं.) १-चन्द्रमा। निशाकर। २-कपूर।

निशान [संज्ञा पु.] (फा.) १-ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय या जिससे किसी बात या घटना का परिचय मिले। २-बना या बनाया हुआ चिह्न। ३-शरीर अथवा अन्य किसी पदार्थ पर बना हुआ स्वभाविक या और किसी प्रकार का चिह्न, दाग या धब्बा। ४-किसी पदार्थ का परिचय करने के निमित्त उसके स्थान पर बनाया हुआ कोई चिह्न। ५-वह चिह्न जो अशिक्षित लोग अपने हस्ताक्षर के बदले किसी कागज आदि पर बनाते हैं। ६-वह लक्षण या चिह्न जिसके द्वारा किसी प्राचीन अथवा पूव घटना या पदार्थ का परिचय प्राप्त हो। ७-पता। ठिकाना। ८-वह चिह्न या संकेत जो किसी विशेष कार्य या पहचान के लिये नियत किया जाय। ९-समुद्र में अथवा पहाड़ों आदि में बना हुआ वह स्थान जो मार्ग प्रदर्शन के लिए काम आता हो। १०-देखो 'लक्षण'। ११-देखो 'निशाना'। १२-देखो 'निशानी'। १३-ध्वजा। पताका। झंडा *नाम निशान*-१-किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। २-बचा हुआ थोड़ा अंश। *निशान देना*-१-पता बताना। २-सम्मन आदि तामील करने के लिए यह बताना कि यही आसामी हैं। (*किसी बात का*) *निशान उठाना या खड़ा करना*-१-किसी कार्य में अगुआ होकर लोगों को अपना अनुयायी बनाना। २-आंदोलन करना।

निशानकोना [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तर और पूर्व का कोण।

निशानची [संज्ञा पु.] (फा.) वह जो किसी राजा की सेना या दल आदि के आगे झण्डा लेकर चलता हो। निशानबरदार।

निशानदिही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'निशान देही'।

निशानदेही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आसामी को सम्मन आदि की तामील के लिए पहचनवाने की क्रिया। आसामी का पता बतलाने का काम।

निशानपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चेहरे की बनावट आदि या उसका वर्णन। हुलिया।

निशानबरदार [संज्ञा पु.] (फा.) वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आगे-आगे झण्डा लेकर चलता है। निशानची।

निशाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह जिसपर ताक या लक्ष्य कर अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय। लक्ष्य। २-किसी वस्तु को लक्ष्य बनाकर उसकी तरफ किसी तरह का वार करना। ३-मिट्टी आदि का ढेर अथवा अन्य कोई वस्तु जिस पर निशाना साधा जाय। ४-वह जिसे लक्ष्य करके कोई बात कही जाय।

निशाना करना या बनाना-अस्त्र आदि के वार करने के लिये किसी को लक्ष्य बनाना। *निशाना बाँधना*-वार करने के लिए अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना जिससे कि वार लक्ष्य पर हो। *निशाना मारना या लगाना*-ताक कर अस्त्र-शस्त्र आदि का वार करना। *निशाना साधना*-१-निशाना बाँधना। २-ठीक-ठीक वार करने का अभ्यास करना। *निशाना होना*-निशाना बनाना। लक्ष्य होना।

निशानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। चाँद। २-कपूर।

निशानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-स्मृति बनाये रखने के लिये दिया या रखा हुआ पदार्थ। स्मृतिचिह्न। यादगार।

२-वह चिह्न जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय। निशान। पहचान।

निशापति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। चाँद। निशाकर। २-कपूर।

निशापुत्र [संज्ञा पु.] (सं) नक्षत्र आदि आकाशीय पिंड।

निशापुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमोदनी जो रात को खिलती या फूलती है। २-ओस। कुहरा। कुहासा।

निशा-प्राणेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) निशापति। चन्द्रमा।

निशाबल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार छः राशियाँ जो रात के समय बलवती मानी जाती हैं। वह इस प्रकार हैं-मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मीन।

निशाभंगा, निशाभङ्गा [संज्ञा पु.] (सं.) दुग्धपुच्छी नामक पौधा।

निशाभाग [संज्ञा पु.] (सं.) रात। रात्री।

निशामणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। निशाकर। २-कर्पूर। कपूर।

निशामन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन। देखना। २-आलोचन। ३-श्रवण। सुनना।

निशामय [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

निशामुख [संज्ञा पु.] (सं.) संध्याकाल। गोधूली का समय।

निशामृग [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़। सियार। शृगाल।

निशारत्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। चाँद। २-कर्पूर। कपूर।

निशारुक [संज्ञा पु.] (सं.) सात प्रकार के रूपक तालों में से एक का नाम जिसमें दो गुरु और दो लघु मात्राएं होती हैं। इसका व्यवहार प्रायः हास्यरस के गीतों के साथ होता है। [वि.] बहुत अधिक हिंसा करने वाला।

निशारोध [संज्ञा पु.] (सं.) संध्या समय के बाद जो समय निश्चित किया जाता है उस समय से निर्धारित समय तक नगर निवासियों का घर के बाहर निकलना दंड्य होता है। कर्फ्यू।

निशारोधादेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्यास्त या निर्धारित समय के बाद घर के बाहर न निकलने की सरकारी आज्ञा। कर्फ्यूआर्डर।

निशावन [संज्ञा पु.] (सं.) सन का पौधा।

निशावसान [संज्ञा पु.] (सं.) रात्रि का अवसान। प्रातःकाल।

निशाविहार [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

निशावेदी [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्गा। कुक्कुट।

निशास्ता [संज्ञा पु.] (फा.) १-गेहूँ या आटे का जमाया हुआ सत या गूदा। २-माँड़ी। कलफ।

निशाहस [संज्ञा पु.] (सं.) कुमोदनी।

निशाहसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शेफालिका। सिंदुवार। निर्गुण्डी।

निशाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हल्दी। २-जतुका नामक एक लता।

निशि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-रात। रात्री। रजनी। २-हल्दी।

निशिकर [संज्ञा पु] (सं.) शशि। चन्द्रमा। चाँद।

निशिचर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशाचर'।

निशिचरराज* [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षसों का राजा विभीषण।

निशिचारी [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'निशाचारी'।

निशित [वि.] (सं.) १-चोखा। तेज। तीखा। सान पर चढ़ा हुआ। २-ठहराव किया हुआ। [संज्ञा पु.] लोहा।

निशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्री।

निशिदिन [क्रि. वि.] (सं.) रातदिन। सदा। सर्वदा। हमेशा।

निशिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निशानाथ'।

नायक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निशानाथ'।

ति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निशापति'।

ाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। चाँद। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, जगण, सगण, नगण और रगण होता है।

ालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रात को पहरा देने वाला। द्वारपाल। २-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, जगण, सगण, नगण और रगण होता है।

ालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'निशा-ल'।

ुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शेफालिका नामक ार लता। सिंदुवार।

ुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्गुण्डी शेफालिका।

ुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं) शेफालिका। निर्गुण्डी।

ासर* [क्रि. वि.] (सं) १-रात दिन। २-सदा। हमेशा।

थ [संज्ञा पु.] (सं) रात्रि। रात। आधी रात।

थिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

थिनी-नाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। निशानाथ। २-कपूर।

ाथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि। रजनी।

ुंभ, निशुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वध। हत्या। २-हिंसा। ३-झुकाने की (धनुष को) क्रिया। ४-एक दैत्य का नाम जिसे दुर्गादेवी ने मारा था।

ुंभन, निशुम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) वध। मार डालना।

ुंभमथनी, निशुम्भमथनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी की एक उपाधि।

ुंभमर्दिनी, निशुम्भमर्दिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्गादेवी।

ुंभी, निशुम्भी [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

ृत्य [वि.] (सं.) उपनीत। लाया हुआ।

निशेश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। निशापति।

निशैन [संज्ञा पु.] (सं.) बक। बगुला।

निशोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। तड़का।

निशोपशाय [वि.] (सं.) रात में विश्राम करने वाला।

निश्कुला [वि.] (सं.) अपने कुल से निकाली हुई (स्त्री)

निश्चंद्र, निश्चन्द्र [वि] (सं.) १-चन्द्रमारहित। २-जिसमें चमक न हो।

निश्चंद्र-अभ्रक, निश्चन्द्र-अभ्रक [संज्ञा पु] (सं.) वैद्यक के अनुसार वह अभ्रक जो दूध, ग्वारपाठा, आदमी के मूत्र बकरी के दूध आदि कई पदार्थ मिलाकर और सौबार उनका पुट देकर तैयार किया जाता है। यह वीर्यवर्धक, रसायन और ज्वर का नाश करने वाला होता है।

निश्चक्षु [वि.] (सं.) नेत्रहीन। अंधा।

निश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसी धारणा या ज्ञान जिसमें कोई भ्रम या दुबधा न हो। २-विश्वास। यकीन। ३-दृढ़ संकल्प। पक्का विचार। पूरा इरादा। ४-निर्णय। ५-एक अर्थालङ्कार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर प्रकृत या यथार्थ विषय का स्थापन होता है।

निश्चयरूप [वि.] (सं.) आकृतियुक्त।

निश्चयात्मक [वि.] (सं.) जो पूर्णतया निश्चित हो। जो बिलकुल निश्चित हो। ठीक। पक्का। असंदिग्ध।

निश्चयात्मकता [संज्ञा स्त्री.] (सं) निश्चयात्मक होने का भाव। यथार्थता। असंदिग्धता।

निश्चयी [वि.] (सं.) स्थिर किया हुआ। विचारा हुआ। ठीक किया हुआ।

निश्चर [संज्ञा पु.] (सं) एकादशमन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक।

निश्चल [वि.] (सं.) १-जो अपने स्थान से न हटे। अचल। अटल। २-जो जरा भी न हिले-डुले। स्थिर।

निश्चलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निश्चल होने का भाव। स्थिरता। दृढ़ता।

निश्चलांग, निश्चलाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बगुला। २-पर्वत आदि जो सर्वदा निश्चल या स्थिर रहते हैं।

निश्चला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालपर्णी। २-पृथ्वी। ३-मत्स्यपुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

निश्चायक [संज्ञा पु] (सं.) वह जो किसी बात का निश्चय या निर्णय करता हो। निश्चयकर्ता। निर्णायक।

निश्चायक-साध्य [संज्ञा स्त्री.] (सं) निर्णायक प्रमाण। अन्तिम प्रमाण।

निश्चारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रवाहिका नाम का रोग जो अतिसार का एक भेद है। यह छोटे बच्चों को होता है और इसमें बहुत दस्त आते हैं। २-वायु। हवा। ३-मनमौजीपना

निश्चिंत, निश्चिन्त [वि.] (सं.) जिसमें कोई चिन्ता या फिक्र न हो। जो चिन्तामुक्त हो गया हो। चिन्तारहित। बेफिक्री।

निश्चिंतई* [संज्ञा स्त्री] (हिं) निश्चिन्त होने का भाव। बेफिक्री।

निश्चिंतता, निश्चिन्तता [संज्ञा स्त्री] (सं.) निश्चिन्त होने का भाव। बेफिक्री।

निश्चित [वि.] (सं.) १-जिसके विषय में निश्चय हो चुका हो। निर्णीत। तैशुदा। २-जिसमें कोई परिवर्त्तन या फेर बदल न हो सके। दृढ़। पक्का।

निश्चिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निश्चय करना।

निश्चित्त [संज्ञा पु.] (सं.) योग में एक प्रकार की समाधि।

निश्चिरा [संज्ञा स्त्री] (सं) महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

निश्चुक्रण [संज्ञा पु.] (सं.) मिस्सी।

निश्चेतन [वि.] (सं.) १-बेसुध। बेहोश। बदहवास। २-जड़।

निश्चेतस् [वि.] (सं.) १-बेहोश। अचेत। चेष्टारहित। २-स्थिर। निश्चल।

निश्चेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निश्चलता। २-बेहोशी।

निश्चेष्टाकरण [संज्ञा पु] (सं.) १-एक प्रकार की औषध जो मैनसिल से बनती है। २-कामदेव के एक प्रकार के बाण का नाम।

निश्चै* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निश्चय'।

निश्चौर [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ से डाकुओं ने अपना अड्डा हटा लिया हो।

निश्च्यवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैवस्वतमन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक का नाम। २-महाभारत के अनुसार एक प्रकार की अग्नि।

निश्छंद, निश्छन्द [वि.] (सं.) जिसने वेद का अध्ययन न किया हो।

निश्छल [वि.] (सं.) जो छल कपट न जानता हो। सरल प्रकृति का। सीधा। निष्कपट।

निश्छिद्र [वि.] (सं.) बिना छेद का। छिद्ररहित।

निश्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) गणित में वह राशि जिसका किसी गुणक के द्वारा भाग न दिया जा सके। अविभाज्य।

निश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) अध्यवसाय। किसी कार्य को करते-करते न घबड़ाना या ऊबना।

निश्रयणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीढ़ी। नसैनी।

निश्रावि [वि.] (सं.) नाश होने वाला।

निश्रीक [संज्ञा पु.] (सं.) सीढ़ी। जीना।

निश्रेणिका-तृण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास जो रसहीन और गरम होती है तथा पशुओं को निर्बल बना देती है।

निश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीढ़ी। जीना। २-मुक्ति। ३-खजूर का पेड़।

निश्रेयस [संज्ञा पु] (हिं.) १-मोक्ष। २-दुःख का अभाव। ३-कल्याण।

निश्वस्य [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'निश्वास'।

निश्वास [संज्ञा पु] (सं) नाक या मुख के बाहर निकलने वाला श्वास या सांस।

निश्शंक, निश्शङ्क [वि] (सं) १-निर्भय। निडर

बेखौफ। २-सन्देहरहित। जिसमें शङ्का न हो

निरशक्त [वि.] (सं.) जिसमें शक्ति न हो। निर्बल। नाताकत।

निरशील [वि.] (सं.) बेमुरौवत। बदमिजाज। बुरे स्वभाव वाला।

निरशीलता [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुष्ट स्वभाव। बदमिजाजी।

निरशेष [वि.] (सं.) जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो। जिसका कुछ भी अवशिष्ट न हो।

निषंग, निषङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-तरकश। तूणीर। तूण। २-खड्ग। ३- मुँह से फूँककर बजाया जाने वाला एक बाजा जो प्राचीन काल में होता था।

निषंगथि, निषङ्गथि [संज्ञा पु.] १-आलिंगन। २-धनुर्धर। तीरन्दाज। ३-सारथी। ४-रथ। ५-कन्धा।

निषंगी, निषङ्गी [वि.] (सं.) १-आलिङ्गन करने वाला। २-तरकश रखने वाला। ३-खड्ग धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीरन्दाज। धनुर्धर। २-तूणीर। तरकश। ३-तलवारधारी। ४-धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम (महाभारत)।

निषंण, निषण्ण [वि.] (सं.) १-बैठा हुआ। आराम करता हुआ। २-जिसको सहारा मिला हुआ हो। ३-प्रस्थानित। गमन किया हुआ। ४-उदास। पीड़ित। नीची गर्दन किये हुए।

निषंणक, निषण्णक [संज्ञा पु.] (सं.) बैठक। आसन। बैठकी।

निषकपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर। राक्षस। असुर।

निषकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) स्वरसाधन की एक प्रणाली जिसमें प्रत्येक स्वर को दो-दो बार अलापना पड़ता है।

निषक्त [संज्ञा पु.] (सं.) बाप। पिता। जनक।

निषद् [संज्ञा स्त्री] (सं.) यज्ञ की दीक्षा।

निषद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सङ्गीत में निषाद नामक स्वर। २-एक राजा का नाम।

निषदन [संज्ञा पु.] (सं.) घर। मकान।

निषद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी खाट। २-व्यापारी की दुकान या गद्दी। ३-मण्डी। हाट बाजार।

निषद्यादेश [संज्ञा पु.] न्यायालय। कचहरी।

निषद्या-नगर [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालयनगर।

निषद्यापरीषत [संज्ञा पु.] (सं) ऐसे स्थान में जहां षंड स्त्री आदि का आगम हो न रहना और यदि इष्टानिष्ट का उपसर्ग हो तो भी अपने चित्त को चलायमान न करना। (जैन)।

निषद्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कीचड़। चहला। कामदेव।

निषद्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात्रि। रात।

निषध [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश विशेष और वहां के अधिवासी, जहां राजा नल राज करते थे। २-निषधदेश का राजा। ३-हरिवंश के अनुसार श्रीरामचन्द्र के प्रपौत्र तथा कुश के पौत्र का नाम। ४-महाराज जनमेजय के पुत्र का नाम। ५-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ६-कुरु के एक लड़के का नाम। ७-सङ्गीत के सात स्वरों में से अन्तिम स्वर का नाम। निषाद।

निषधाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) निषधदेश का राजा।

निषधाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) निषधदेश का राजा, नल।

निषधाभास [संज्ञा पु.] (सं.) अलङ्कार के पांच भेदों में से एक। आक्षेप।

निषधावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विंध्यपर्वत से निकलनेवाली एक नदी का नाम। (मार्कण्डेय-पुराण)।

निषधाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) कुरु के एक लड़के का नाम।

निषाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत की एक अति प्राचीन अनार्यजाति जो आर्यजाति के आने से पहले निवास करती थी। इस जाति के लोग, चिड़ीमार, मछली मारने और डाका डालने आदि का कार्य करते थे। २-एक देश का प्राचीन नाम जिसका उल्लेख रामायण, महाभारत, पुराण आदि में मिलता है। ३-सङ्गीत के सात स्वरों में अन्तिम और सबसे ऊँचा स्वर जिसका संक्षिप्त रूप 'नि' है।

निषादकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का प्राचीन नाम।

निषादित [वि.] (सं.) १-उपवेशित। बैठा हुआ। २-पीड़ित। संतप्त।

निषादी [संज्ञा पु.] (सं.) हाथीवान। महावत।

निषिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्य से उत्पन्न गर्भ।

निषिक्तपा [वि.] (सं.) गर्भ की रक्षा करने वाला

निषिद्ध [वि.] (सं.) जिसका निषेध किया गया हो। वर्जित। मना किया हुआ। २-बुरा। दूषित। खराब।

निषिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निषेध। मनाही।

निषूदन [वि.] (सं.) मारने वाला। जैसे-अरिनिषूदन।

निषेक [संज्ञा पु] (सं.) १-गर्भाधान। २-वीर्यपात ३-वीर्यपात-सम्बन्धी अपवित्रता। ४-मैला पानी। ५-सिञ्चन। आबपाशी। ६-छिड़काव बुरकाव। ७-चुआव। झराव। ८-बहाव। ढरकाव। रिसाव। ९- किसी के अन्दर कोई वस्तु या शक्ति भरना। १०-इस प्रकार भरी हुई वस्तु या शक्ति। इम्प्रेगनेशन।

निषेक्तव्य [वि.] (सं.) सींचने योग्य।

निषेचन [संज्ञा पु.] (सं.) सींचना। तर करना। भिगोना। आर्द्र करना।

निषेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्जन। मनाही। रोक न करने का आदेश। २-रुकावट। बाधा।

निषेधक [वि.] (सं.) १-निषेध करने वाला। मना करने वाला। रोकने वाला। २-(आज्ञा या कथन) जिसके द्वारा मनाही या निषेध किया जाय। प्रौहिबिटरी।

निषेधन [संज्ञा पु.] (सं.) निषेध या मना करने का कार्य। निवारण। मना करना।

निषेध-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी प्रकार का निषेध किया जाय।

निषेधविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह बात या आज्ञा जिसके द्वारा किसी बात का निषेध किया जाय।

निषेधित [वि.] (सं.) निषेध या मना किया हुआ।

निषेधी [वि.] (सं.) निषेध या मनाही करने वाला

निषेधोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) निषेध वाक्य।

निषेव [वि.] (सं.) १-अनुरक्त। २-अभ्यासशील [संज्ञा पु] (सं.) अनुसरण। पूजा।

निषेवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेवा। चाकरी। पूजा ३-अभ्यास। अभिनय। ४-अनुराग। आसक्ति। ५-निवास। ६-परिचय। उपयोग

निषेवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेवा। चाकरी। २-सेवन। व्यवहार।

निषेवनीय [वि.] (सं.) सेवा करने योग्य।

निषेवित [वि.] (सं.) सेवा किया हुआ। जिसकी सेवा की गई हो।

निषेवितव्य [वि.] (सं.) सेवनीय। सेवा करने योग्य।

निषेव्य [वि.] (सं.) सेवनीय। सेवा के योग्य।

निष्कंटक, निष्कण्टक [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति या झंझट आदि न हो। विना खटका। निर्विघ्न।

निष्कंठ, निष्कण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण या वरुना नामक पेड़।

निष्कंप, निष्कम्प [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार का कम्प न हो। स्थिर।

निष्कंभ, निष्कम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

निष्कंभु, निष्कम्भु [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के एक सेनापति का नाम।

निष्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैदिक-काल का एक सोने का सिक्का या मोहर जिसका भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न मान था। २-एक प्रकार की प्राचीन तौल जो चार सुवर्ण के बराबर होती थी। ३-वैद्यक में चार माशे की एक तौल। टङ्क। ४-सुवर्ण। सोना। ५-सोने का बरतन। ६-हीरा।

निष्कनिष्ठ [वि.] (सं.) जिसकी कानी अंगुली कट गई हो।

निष्कपट [वि.] (सं.) जो किसी प्रकार का छल या कपट न जानता हो । निश्छल । छलरहित । सीधा । सरल ।

निष्कपटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्कपट होने का भाव । निश्छलता । सरलता । सीधापन ।

निष्कपटी [वि.] (हिं.) जिसके मन में कपट या छल न हो । सीधा । सरल ।

निष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह भूमि जिसका कर न देना पड़ता हो ।

निष्करुण [वि.] (सं.) जिसमें करुणा या दया न हो । निष्ठुर । निर्दय । बेरहम ।

निष्करूप [वि.] (सं.) परिच्छन्न । साफ-सुथरा ।

निष्कर्म [वि.] (सं.) जो किसी काम में लिप्त न हो । अकर्मा ।

निष्कर्मण्य [वि.] (सं.) अकर्मण्य । अयोग्य । निकम्मा । जो कुछ काम न कर सके ।

निष्कर्मा [वि.] (सं.) १-जो कर्मों में लिप्त न हो । अकर्मा । २-निकम्मा ।

निष्कर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-निचोड़ । सार । सारांश । २-निश्चय । खुलासा । तत्व । ३-राजा का निज लाभ या कर आदि के लिए प्रजा को दुःख देना । ४-निकालने की क्रिया ।

निष्कर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खिचाव । खींचकर निकालना । २-(नतीजा) निकालना ।

निष्कर्षणीय [वि.](सं.) निष्कर्ष निकालने योग्य ।

निष्कर्षी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार के मरुत् ।

निष्कलंक, निष्कलङ्क [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार कलंक का न हो । निर्दोष । बेऐब ।

निष्कलंकतीर्थ, निष्कलङ्कतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक तीर्थ जिसमें स्नान करने से सर्व प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं ।

निष्कलंकित, निष्कलङ्कित [वि.] (सं.) निष्कलंक । निर्दोष । बेऐब ।

निष्कलंकी [वि.] (हिं.) निष्कलंक । निर्दोष । बेऐब ।

निष्कल [वि.] (सं.) १-जिसमें किसी प्रकार की कला न हो । कलारहित । २-जिसका कोई अंग या भाग नष्ट हो गया हो । वृद्ध । ४-नपुंसक । ५-पूरा । समूचा । [संज्ञा पु.] ब्रह्म ।

निष्कलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पदार्थ की वह अवस्था जिसमें उसके और अधिक भाग न हो सकें । अविभाज्य होने की अवस्था ।

निष्कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृद्धा स्त्री । बुढ़िया ।

निष्कली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका मासिकधर्म बन्द हो गया हो । (अधिक अवस्था के कारण) ।

निष्कल्मष [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार का कलंक या पाप न हो । कलंकहीन । पापरहित । बेऐब ।

निष्कषाय [वि.] (सं.) १-जिसका चित्त स्वच्छ और पवित्र हो । जिसके चित्त में किसी प्रकार का दोष न हो । २-मुमुक्षु । ३-एक जिन का नाम (जैन) ।

निष्काम [वि.] (सं.) १-(वह मनुष्य) जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो । २-(वह काम) जो बिना किसी कामना अथवा इच्छा के किया जाय । (सांख्यशास्त्र तथा गीता के मतानुसार इस प्रकार का काम करने से चित्त शुद्ध होता और मुक्ति प्राप्त होती है) ।

निष्कामता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्काम होने की अवस्था या भाव ।

निष्कामी [वि.] (सं.) किसी प्रकार की कामना या आसक्ति न रखने वाला (मनुष्य) ।

निष्कारण [वि.] (सं.) १-बिना कारण का । बेसबब । २-वृथा । व्यर्थ । [क्रि. वि.] १-बिना किसी कारण के । २-व्यर्थ । वृथा । बेफायदा ।

निष्कालक [संज्ञा पुं.] (सं.) मूंड़े हुए बाल या रोएं आदि ।

निष्कालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाँकने या चलाने की क्रिया (पशुओं को) । २-मार डालने की क्रिया । मारण ।

निष्काश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी भवन, प्रासाद आदि का बाहर निकला हुआ भाग । जैसे-बरामदा ।

निष्काशन [संज्ञा पु.] (सं.) निकालना । बाहर करना ।

निष्काशित [वि.] (सं.) १-निकाला हुआ । बाहर किया हुआ । बहिष्कृत । २-निंदित । जिसकी निंदा की गई हो ।

निष्कास [संज्ञा पु.] (सं.) निकालने की क्रिया या भाव । २-मकान का बरामदा ।

निष्कासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकालना । बाहर करना । २-किसी को दण्ड आदि के रूप में किसी स्थान, क्षेत्र आदि से हटाकर बाहर या दूर करना ।

निष्कासित [वि.] (सं.) १-निःसारित । बाहर निकाला हुआ । २-निन्दा किया हुआ । भर्त्सना किया हुआ । फटकारा हुआ ।

निष्किंचन, निष्किञ्चन [वि.] (सं.) अकिंचन । धनहीन । दरिद्र । जिसके पास कुछ न हो ।

निष्किल्विष [वि.] (सं) पापशून्य । पापरहित ।

निष्कुंभ, निष्कुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) देतीवृक्ष ।

निष्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-नजर-बाग । पाई-बाग । घर के समीप का बाग । २-खेत । क्षेत्र । ३-जनानखाना । अन्तःपुर । रनवास । स्त्रियों के रहने का घर । ४-द्वार । ५-वृक्ष का कोटर । ६-एक पर्वत का नाम ।

निष्कुटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची ।

निष्कुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक मातृका का नाम

निष्कुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची ।

निष्कुतूहल [वि.] (सं.) जिसको या जिसे किसी प्रकार का कुतूहल न हो ।

निष्कुल [वि.] (सं.) कुलरहित । जिसके कुल का पता न हो ।

निष्कुषित [वि.] (सं.) १-फटा हुआ । २-बलपूर्वक । खींचकर निकाला हुआ । ३-बाहिर किया हुआ ।

निष्कुह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष-कोटर । पेड़ का खोंड़रा ।

निष्कृत [वि.] (सं.) १-मुक्त । छूटा हुआ । स्वतन्त्र । २-निश्चित । निश्चय किया हुआ । ३-हटाया हुआ । ४-क्षमा किया हुआ ।

निष्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निस्तार । छुटकारा । उपकार या ऋण से उद्धार । २-प्रायश्चित । ३-स्थानान्तरकरण । ४-निरोगता प्राप्ति । आराम होना । ५-बचाव । ६-असावधानी । ७-बुरा चालचलन । गुण्डापन । बदमाशी ।

निष्कृप [वि.] (सं.) तेज । तीक्ष्ण धार वाला । चोखा ।

निष्कृष्ट [वि.] (सं.) १-निकाला हुआ । खींचा हुआ । २-सारांश । निचोड़ ।

निष्कोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीरना । २-निकालना । भीतर से निकालना । खींचकर निकालना । ३-भूसी या चोकर अलगाना ।

निष्कोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीतरी अवयव का बाहर निकलना । २-भूसी या चोकर अलग करना ।

निष्कोषणक [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत साफ करने या कुरेदकर मैल निकालने का तिनका । सींक या लकड़ी का वह तिनका जिससे भोजन के उपरांत दाँत के जोड़ों में से अन्न आदि निकालते हैं । खरका ।

निष्क्रम [वि.] (सं.) बिना क्रम या सिलसिले का । बेतरतीब । [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर से बाहर निकालने का कार्य । २-निष्क्रमण की रीति । ३-वैदिक हिन्दुओं में एक संस्कार इसमें बालक जब चार मास का होता है तब उसे बाहर लाकर सूर्य का दर्शन कराते हैं । ४-जातिभ्रंशता । पतित होना । ५-मन की वृत्ति ।

निष्क्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाहर निकालना । २-चार मास के बच्चे को सूर्यदर्शन कराने का एक संस्कार । (हिन्दू)

निष्क्रमणार्थी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कहीं से निकलने की इच्छा रखने वाला । २-वह जो किसी संकट या विपत्ति से बचने के लिए अपना निवास स्थान छोड़कर अन्य किसी जगह जाय या जाना चाहे । इवैकुई ।

निष्क्रमणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चार मास के

बालक को सर्वप्रथम घर से निकालकर सूर्य के दर्शन करना।

निष्क्रमित [वि.] (सं.) निकला हुआ। निकलकर आया हुआ।

निष्क्रमिती [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी संकट अथवा विपत्ति से बचने के लिए अपना निवास-स्थान छोड़कर अन्य किसी स्थान पर जाय या जाना चाहे। इवैकुई।

निष्क्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेतन। तनख्वाह। भाड़ा। मजदूरी। २-वह धन जो किसी पदार्थ के बदले में दिया जाय। ३-विनिमय। ४-बिक्री। बेचने की क्रिया। ५-सामर्थ्य। शक्ति। ६-पुरस्कार। इनाम।

निष्क्रांत, निष्क्रान्त [वि.] (सं.) १-निकाला या निकाला हुआ। २-मुक्त। छूटा हुआ।

निष्क्रांत-संपत्ति, निष्क्रान्त-सम्पति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्क्रांत या निकाले हुए व्यक्तियों द्वारा छोड़ी हुई सम्पत्ति।

निष्क्रांति, निष्क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्क्रांत होने की क्रिया या भाव।

निष्क्रिय [वि.] (सं.) जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो। सब प्रकार की क्रियाओं से रहित। निश्चेष्ट। [संज्ञा पु.] कर्मशून्यब्रह्म।

निष्क्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्क्रियप्रतिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अनुचित आज्ञा या निर्णय का वह विरोध जिसमें उचित काम बराबर किया जाता है और दंड की परवाह नहीं की जाती। *सिवल-डिस्ओबीडियस*।

निष्क्रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोक्ष। मुक्ति।

निष्क्रोध [वि.] (सं.) जिसको क्रोध न हो। जिस को गुस्सा न हो। क्रोधहीन।

निष्क्लेश [वि.] (सं.) १-क्लेशरहित। सब प्रकार के कष्टों से मुक्त। २-बौद्धों के मतानुसार दसों प्रकार के क्लेशों से मुक्त।

निष्क्वाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांस आदि का रसा। शोरुवा। २-काढ़ा।

निष्टपन [संज्ञा पु.] (सं.) जलाने की क्रिया।

निष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष की कन्या और कश्यप की स्त्री दिति का एक नाम।

निष्टिग्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अदिति का एक नाम।

निष्ट्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-चांडाल। २-वेदोक्त एक म्लेच्छों की जाति का नाम।

निष्ठ [वि.] (सं.) १-स्थित। ठहरा हुआ। २-तत्पर। काम में लगा हुआ। ३-किसी के प्रति निष्ठा, श्रद्धा या भक्ति रखने वाला। *लॉयल*।

निष्ठांत, निष्ठान्त [वि.] (सं.) जिसका नाश अवश्य हो। नष्ट होने वाला।

निष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्थिति। ठहराव। २-मन की एकान्त स्थिति। चित्त का जमना। ३-निर्वाह। ४-विश्वास। निश्चय। ५-विष्णु जिनमें प्रलय के समय समस्त भूतों की स्थिति होगी। ६-इति। समाप्ति। ७-नाश। ८-उत्कृष्टता। निपुणता। योग्यता। सर्वाङ्गपूर्णता ९-किसी नाटक का दुखान्त। १०-नाश। मृत्यु। किसी निश्चित समय पर इस संसार से अन्तर्धान होना। ११-याचना। १२-कष्ट। पीड़ा। संताप। चिंता। १३-धर्म, देवता, राज्य या बड़े आदि के प्रति पूज्यबुद्धि और भक्ति का भाव। *फेथ। लॉयलटी*। १४-राज्य या शासन के प्रति जनता या प्रजा का श्रद्धापूर्ण भाव। *एलीजिएन्स*।

निष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) १-चटनी। २-मसाला।

निष्ठानक [संज्ञा पु.] (सं.) चटनी, मसाला आदि

निष्ठावत् [वि.] (सं.) निष्ठायुक्त। जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।

निष्ठावान् [वि.] (सं.) जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो

निष्ठित [वि.] (सं.) १-स्थित। ठहरा या जमा हुआ। दृढ़। २-जिसमें निष्ठा हो। निष्ठायुक्त।

निष्ठीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूक। २-एक दवा जिसके सेवन से रोगी का कफ निकलने लगता है।

निष्ठीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूक। २-वैद्यक के अनुसार एक दवा जिसका सेवन रोगी का कफ निकालने के लिये किया जाता है।

निष्ठीवित [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूक। २-एक दवा जिसके सेवन से रोगी का कफ निकलने लगता है। वैद्यक।

निष्ठुर [वि.] (सं.) [स्त्री. निष्ठुरा] १-कठिन। कड़ा। सख्त। २-कठोर हृदय वाला। क्रूर। बे-रहम। संगदिल। नृशंस। ३-बेशरम। निर्लज्ज। ४-तीव्र। तीक्ष्ण। उग्र।

निष्ठुरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निष्ठुर होने का भाव। कड़ाई। सख्ती। कठोरता। २-निर्दयता। क्रूरता। बेरहमी।

निष्ठुरिक [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

निष्ठेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूक। २-एक दवा जिसके सेवन करने से रोगी का कफ निकलने लगता है।

निष्ठैव [संज्ञा पु.] (सं.) थूक।

निष्ठैवन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निष्ठैव'।

निष्ठ्यूत [वि.] (सं.) थूका हुआ। उगला हुआ।

निष्ण [वि.] (सं.) १-कुशल। निपुण। पटु। होशियार। २-किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता या ज्ञानकार। विशेषज्ञ। विज्ञ। पारंगत। ३-सुचारु रूप से सम्पन्न किया हुआ। श्रेष्ठतर।

निष्णात [वि.] (सं.) १-किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता या ज्ञानकार। निपुण। विशेष २-सुचारु रूप से सम्पन्न किया हुआ।

निष्पंक, निष्पङ्क [वि.] (सं.) जिसमें कीच आदि न लगा हो। स्वच्छ। निर्मल। साफ़। सुथरा।

निष्पंद, निष्पन्द [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो। जिसमें किसी प्रकार की गति न हो।

निष्पक्व [वि.] (सं.) १-काढ़ा निकाला हुआ। २-औटाया या उबाला हुआ। भलीभाँति राँधा हुआ।

निष्पक्ष [वि.] (सं.) जो विरोधियों में से किसी का पक्ष न करे। पक्षपातरहित। तटस्थ। इम्पार्शल।

निष्पक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्पक्ष होने का भाव।

निष्पतन [संज्ञा पु.] (सं.) झटककर निकलना। शीघ्र बाहर आना।

निष्पताक-ध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन राजलोगों का अपने पास रखने का एक प्रकार का दण्ड जो पताका के दण्ड के समान होता था, अन्तर केवल इतना ही होता था कि इसमें पताका नहीं होती थी।

निष्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समाप्ति। अन्त। २-पक्वावस्था। परिपाक। ३-निश्चय। निर्धारण। ४-निर्वाह। ५-मीमांसा। ६-हठयोग के अनुसार नाद की चार प्रकार की अवस्थाओं में से अन्तिम।

निष्पत्र [वि.] (सं.) पत्रहीन। बिना पत्तों का।

निष्पत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करील का पेड़।

निष्पद [वि.] (सं.) बिना पैर या पहिये का। [संज्ञा पु.] वह सवारी जिसमें पहिये आदि न हों।

निष्पन्न [वि.] (सं.) १-जिसकी निष्पत्ति हो चुकी हो। जो समाप्त या पूरा हो चुका हो। २-(काम) जो आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के अनुसार समाप्त या पूरा किया जा चुका हो। *एक्जिक्यूटेड*।

निष्पराक्रम [वि.] (सं.) शक्तिहीन। निर्बल। कमज़ोर।

निष्परिग्रह [वि.] (सं.) १-जो दान आदि न लेता हो। २-जिसके स्त्री न हो। रंडुआ। ३-अविवाहित। कुँवारा। ४-जिसके पास कोई संपत्ति न हो।

निष्परिच्छद [वि.] (सं.) १-बिना कपड़ा पहने हुए। वस्त्ररहित। २-बिना नौकर का। भृत्यरहित।

निष्परिदाह [वि.] (सं.) जो सहज में जल न सके।

निष्परीक्ष [वि.] (सं.) जिसकी परीक्षा न की गई हो।

निष्परुष [वि.] (सं.) जो सुनने में कर्कश न हो।

छोमन।

निष्पाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न में से भूसी निकालने का कार्य। दाँना। २-बोड़ा नामक तरकारी या फली। ३-सेम। ४-मटर।

निष्पादक [वि.] (सं.) निष्पत्ति करने वाला। [संज्ञा पु.] १-आज्ञा, नियम आदि के अनुसार कोई कार्य करने वाला व्यक्ति। २-वह जो किसीकी दित्सा अथवा वसियत में लिखित बातों का पालन या व्यवस्था करने का अधिकारी बनाया गया हो। एक्जिक्यूटर।

निष्पादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निष्पत्ति करना। २-आज्ञा, नियम आदि के अनुसार काम को भली प्रकार से पूरा करना। २-किसी अधिकारी आदि के बताये हुए कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करना। एक्जिक्यूशन।

निष्पादनीय [वि.] (सं) निष्पादन करने योग्य।

निष्पादित [वि] (सं.) निष्पादन किया हुआ।

निष्पादी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बोड़ा या लोबिया नाम की तरकारी या फली।

निष्पाद्य [वि.] (सं) निर्वाह करने योग्य।

निष्पाप [वि.] (सं) १-जो पाप से दूर रहे। २-जिसमें पाप न हो। पापरहित।

निष्पाव [संज्ञा पु.] (सं) १-फटक कर अनाज को साफ करना। २-सूप से निकली हुई हवा ३-सेम। लोबिया।

निष्पावक [संज्ञा पु.] (सं) सफेद सेम।

निष्पिष्ट [वि] (सं.) चूर्णित। चूर-चूर किया हुआ

निष्पीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) गीले कपड़े को दबाकर उसमें से पानी निकालना। निचोड़ना।

निष्पीड़न [संज्ञा पु.] (सं) निचोड़ना। गारना।

निष्पीड़ित [वि.] (सं.) निचोड़ा हुआ। दबाकर पानी निकाला हुआ।

निष्पुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके कोई पुत्र न हो। पुत्रहीन।

निष्पुरुष [वि.] (सं.) जहाँ आबादी न हो। पुरुष या जनशून्य।

निष्पुलाक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमत के अनुसार आगामी उत्सर्पिणी के चौदहवें अर्हत का नाम।

निष्पेष [संज्ञा पु.] (सं.) मिलाकर रगड़ना। घिसना। पीसना। कुचलना। कूटना। चूर्ण करना।

निष्पेषण [संज्ञा पु.] (सं.) घिसना। रगड़ना। पीसना। चूर्ण करना।

निष्पौरुष [वि.] (सं.) पुरुषत्वहीन। निर्बल।

निष्प्रकंप, निष्प्रकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) तेरहवें मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक का नाम (पुराण)।

निष्प्रकाश [वि] (सं) जिसमें प्रकाश या रोशनी न हो। [संज्ञा पु] प्रकाश या रोशनी का अभाव।

निष्प्रचार [संज्ञा पु.] (सं.) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके। जिसमें गति न हो। न चल सकने योग्य।

निष्प्रताप [वि] (सं) प्रतापहीन। जिसमें तेज न हो।

निष्प्रतिघ [वि.] (सं) जिसमें कोई रुकावट न हो

निष्प्रतिपक्ष [वि] (सं) बिना शत्रु का। शत्रुहीन।

निष्प्रतिभ [वि.] (सं.) १-मूर्ख। जड़। नादान। २-जिसमें चमक न हो।

निष्प्रतीकार [वि.] (सं) प्रतिकाररहित। विघ्नशून्य।

निष्प्रत्यूह [वि.] (सं) बाधारहित। निर्विघ्न।

निष्प्रधन [वि.] (सं.) बिना प्रधान या मुखिया का। बिना किसी सरदार का। प्रधानशून्य।

निष्प्रपंच, निष्प्रपञ्च [वि.] (सं.) छल, प्रपंचरहित।

निष्प्रपंचात्मा, निष्प्रपञ्चात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

निष्प्रभ [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। प्रभाशून्य। तेजरहित।

निष्प्रभाव [वि.] (सं.) बिना प्रभाव या असर का

निष्प्रयत्न [वि.] (सं) यत्न या उपायरहित।

निष्प्रयोजन [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई प्रयोजन हो। प्रयोजनरहित। स्वार्थशून्य। २-जिससे कुछ अर्थ सिद्ध न हो। ३-व्यर्थ। निरर्थक। [क्रि. वि.] १-बिना अर्थ या मतलब के। २-व्यर्थ। फजूल।

निष्प्राण [वि.] (सं.) प्राणरहित। मुरदा। जिसमें प्राण न हों।

निष्प्राणिक [वि.](सं.) विश्लेषात्मक। अयोग्यात्मक।

निष्प्रीति [वि.] (सं.) प्रीतिरहित। जिसमें प्रेम न हो।

निष्प्रेही* [वि.] (हिं.) जिसको किसी वस्तु की चाह न हो। किसी बात की इच्छा न रखने वाला।

निष्फल [वि.] (सं.) १-अंडकोषरहित। जिसके अंडकोष न हों। २-जिसका कोई फल या परिणाम न हो। व्यर्थ। निरर्थक। *एबोर्टिव*। [संज्ञा पु.] धान का पयाल। पूला।

निष्फला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका रजोधर्म होना बन्द हो गया हो। वृद्धा स्त्री।

निष्फलि [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रों के निष्फल करने का अस्त्र।

निष्फली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्फला स्त्री। वृद्धा स्त्री।

निष्फेन [वि.] (सं.) फेनरहित। जिसमें फेन न हो।

निस् [अव्य.] (सं.) यह शब्द निषेध, निश्चय, साकल्य और अतिक्रम में व्यवहार होता है।

निसंक* [वि.] (हिं.) देखो 'निःशंक', 'निश्शंक'।

निसंकल्प [वि.] (सं.) संकल्परहित।

निसंग* [वि.] (हिं.) देखो 'निःसंग'।

निसंज्ञ [वि.] (सं.) संज्ञाहीन। बेहोश।

निसँठ* [वि.] (हिं.) निर्धन। गरीब। दरिद्र।

निसंपात, निसम्पात [संज्ञा पु.] (सं.) निशीथ।

निसंस* [वि.] (हिं.) १-निर्दय। क्रूर। बेरहम। २-जिसमें सांस न हो। मृत। ३-मृतप्राय। मुरदा सा।

निसंसना* [क्रि. अ.] (हिं) हाँफना। निःश्वास लेना।

निस*+ [संज्ञा स्त्री.](हिं) देखो 'निशा'।

निसक* [वि.] (हिं) अशक्त। कमजोर। दुर्बल।

निसकर* [संज्ञा पु.] (हिं) निशाकर। चन्द्रमा। चाँद।

निसचय*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निश्चय'।

निसचर* [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'निशाचर'।

निसत* [वि.] (हिं.) १-देखो 'निःसत्व'। २-असत्य। मिथ्या।

निसतरना* [क्रि. अ.] (हिं.) निस्तार पाना। छुटकारा पाना। छुट्टी पाना।

निसतार [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'निस्तार'।

निसतारना* [क्रि. स] (हिं.) निस्तार करना। मुक्त करना। छुटकारा दिलाना।

निस-दिन* [क्रि. वि] (हिं) १-रात-दिन। २-सदा। नित्य।

निसद्योस* [क्रि वि.] (हिं.) १-रात-दिन। २-सदा। नित्य।

निसनेहा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'निःस्नेहा'

निसबत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सम्बन्ध। लगाव २-मँगनी विवाह-सम्बन्ध की बात। ३-तुलना। अपेक्षा। मुकाबला।
निसबत देना-तुलना या मुकाबला देना।

निसयाना* [वि.] (हिं.) जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

निसर [वि.] (सं.) खूब चलने वाला।

निसरना* [क्रि. अ] (हिं.) निकालना। बाहर होना।

निसरावन [संज्ञा पु.] (हि.) ब्राह्मण को दिया जाने वाला कच्चा अन्न। सीधा।

निसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वभाव। प्रकृति। २-रूप। आकृति। ३-दान। ४-सृष्टि।

निसर्गज [वि.](सं) जन्म से। स्वाभाविक।

निसर्गत [वि.] (सं) स्वभाव से। स्वाभाविक

निसर्गविनीत [वि.] (सं) १-स्वभाव से विवेकी बुद्धिमान या दूरदर्शी। २-स्वभाव से सदाचारी।

निसर्गसिद्ध [वि.] (सं.) जन्म से। स्वभाविक

निसर्गायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलित ज्योतिष में एक प्रकार की गणना जिससे किसी व्यक्ति की आयु का पता लगाया जाता है।

निसर्गेण [वि.] (सं.) स्वभाव से। स्वाभाविक।

निसवादला* [वि.] (हिं.) स्वादरहित। जिसमें कोई स्वाद न हो।

निस-वासर* [क्रि वि.] (हिं.) १-दिन-रात। २-सदा। नित्य। [संज्ञा पु.] रात और दिन।

निसस* [वि.] (हिं.) श्वासरहित। अचेत। बेहोश।

निसहाय* [वि.] (हिं.) देखो 'निस्सहाय'।

निसाँक [वि.] (हिं.) १-बेखटके। निर्भय। बेखौफ। २-बेफिक्र। निश्चिन्त।

निसाँस* [संज्ञा पु.] (हिं) ठंडी सांस। लम्बी सांस। [वि.] मृतप्राय। बेदम।

निसाँसा* [संज्ञा पु.] (हिं.) ठण्डा सांस। दीर्घ श्वास। निस्वास। [वि.] १-जिसमें सांस न हो। २-मृतप्राय।

निसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संतोष। तृप्ति।

निसा भर-जी भरके।

*+[संज्ञा स्त्री.] देखो 'निशा'। +[संज्ञा पु.] देखो 'नशा'।

निसाकर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशाकर'।

निसाचर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशाचर'।

निसाद [संज्ञा पु.] (हिं.) भंगी। मेहतर।

निसान* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'निशान'। २-नगाड़ा। धौंसा।

निसानन* [संज्ञा पु.] (हिं.) संध्या। रात्रि का आरम्भ।

निसाना [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'निशाना'।

निसानाथ* [संज्ञा पु.] हिं.) देखो 'निशानाथ'।

निसानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निशानी'।

निसापति [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशापति'।

निसाफ* [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्साफ। न्याय।

निसार [संज्ञा पु.] (अ.) १-निछावर। सदका। उतारा। ८-मुगलों के राजत्वकाल का एक सिक्का जो चार आने के बराबर का होता था। [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। २-सहोरा या सोनापाठा नामक एक वृक्ष। +[वि.] देखो 'निस्सार'।

निसारक [संज्ञा पु.] (सं) शालक राग का एक भेद।

निसारना* [क्रि. स.] (हिं.) निकालना। बाहर करना।

निसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केले का पेड़। कदली-वृक्ष।

निसावरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कबूतर।

निसास* [संज्ञा पु.] (हिं.) गहरा और ठण्डा साँस। [वि.] (सं.) विगतश्वास। बेदम।

निसासी* [वि] (हिं) जिसका सास न चलता हो। बेदम।

निसिंधु, निसिन्धु [संज्ञा पु.] (सं) सम्हालु नामक पेड़।

निसि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'निशि'। २-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और एक लघु होता है।

निसिकर* [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'निशिकर'।

निसिचर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशाचर'।

निसिचारी* [संज्ञा पु.] (हिं.) निशाचर। राक्षस

निसिदिन* [क्रि. वि.] (हिं.) १-रात दिन। आठों पहर। २-सदा। सर्वदा। नित्य। हमेशा।

निसिनाथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशानाथ'।

निसिनाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा। चाँद।

निसिनिसि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अर्द्धरात्रि। निशीथ। आधी रात।

निसिपति* [संज्ञा पु.] (हिं.) निशिपति। चंद्रमा

निसिपाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) निशिपाल। चन्द्रमा। चाँद।

निसिमनि* [संज्ञा पु.] (हिं.) निशामणी। चन्द्रमा। चाँद।

निसिमुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशामुख'

निसियर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशाकर'।

निसि-वासर* [क्रि. वि.](हिं.) १-रात दिन। २-सदा। सर्वदा। नित्य।

निसीठा* [वि.] (हिं.) निःसार। जिसमें कुछ तत्व न हो। निरस। थोथा।

निसीथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशीथ'।

निसुंधु, निसुन्धु [संज्ञा पु.] (सं) प्रह्लाद के भाई ह्लाद के पुत्र का नाम।

निसुंभ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निशुंभ'।

निसु* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निशा'।

निसुका* [वि.] (हिं.) १-गरीब। निर्धन। २-बेचारा।

निसूदक [वि.] (सं.) हिंसक। हिंसा करने वाला।

निसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंसा करना। २-वध करना।

निसृत [वि.] (हिं.) देखो 'निःसृत'।

निसृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ। सोनापाठा

निसृष्ट [वि.] (सं.) १-छोड़ा या निकाला हुआ। २-भेजा हुआ। ३-दिया हुआ।

निसृष्टार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन प्रकार के दूतों में से एक। वह दूत दोनों पक्षों के अभिप्राय को समझकर स्वयं सब प्रश्नों के उत्तर देता तथा कार्य सिद्ध कर लेता है। २-धन के आय व्यय तथा कृषि और वाणिज्य की देख-रेख के लिए नियुक्त व्यक्ति। ३-अपने मालिक का काम तत्परता से करने वाला, धीर और वीर मनुष्य।

निसेनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सीढ़ी। जीना। सोपान।

निसेष* [वि.] (हि) देखो 'निःशेष'।

निसेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) निशेश। चन्द्रमा। चाँद।

निसैनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) निसेनी। सीढ़ी। जीना।

निसोग*+ [वि.] (हिं.) जिसे कोई शोक या चिन्ता न हो।

निसोच* [वि.] (हिं.) निःशोच। चिन्तारहित। निश्चिन्त। बेफिक्र।

निसोढ़ [वि.] (सं.) भलीभाँति सहने योग्य।

निसोत [वि.] (हिं.) जिसमें और किसी वस्तु का मेल न हो। शुद्ध। निरा। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'निसोथ'।

निसोथ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भारत के पहाड़ी जंगलों में ३००० फुट की ऊँचाई पर पाई जाने वाली एक लता। इसके पत्ते गोल और नुकीले होते और इसमें गोल फल लगते हैं। वैद्यक में इसे गरम, चरपरी, रूखी, रेचक और कफ, सूजन तथा उदर रोगों को दूर करने वाली होती है। निसृता। रेचनी। त्रिवृत।

निसोध* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सुध। होश। २-हाल। खबर। ३-संदेसा।

निसोधु [संज्ञा स्त्री.] १-सुध। २-खबर। ३-सँदेसा। कहलाया हुआ समाचार।

निसौत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निसोथ'।

निस्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (देश.) निस्तरी नामक एक रेशम का कीड़ा।

निस्केवल [वि.] (हिं.) निष्केवल। शुद्ध। निर्मल। खालिस। (बोलचाल)।

निस्तंतु, निस्तन्तु [वि.] (सं.) जिसके कोई संतान न हो।

निस्तंद्र, निस्तन्द्र [वि.] (सं.) १-जिसमें आलस्य न हो। निरालस्य। २-जिसे तंद्रा न आई या न आती हो। २-जागा हुआ। जागृत।

निस्तंभ, निस्तम्भ [वि.] (सं) जिसमें खंभा न हो। स्तम्भहीन।

निस्तत्व [वि.] (सं.) जिसमें कोई तत्व न हो। निस्सार।

निस्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके स्तन न हो। वटिका। गोली।

निस्तब्ध [वि.] (सं.) १-जो गड़ अथवा जम गया हो। जो हिलता-डुलता न हो। २-जड़ के समान निश्चेष्ट। जड़वत्। निश्चेष्ट।

निस्तब्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तब्ध होने का भाव। खामोशी। २-जरा भी शब्द न होने का भाव। सन्नाटा।

निस्तमस्क [वि.] (सं.) अन्धकाररहित। उजेला।

निस्तरंग, निस्तरङ्ग [वि] (सं.) १-जिसमें तरङ्ग या लहर न हो। २-शांत। ३-जिसमें कुछ भी गति या शब्द न हो।

निस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निस्तार। छुटकारा। उद्धार। ३-पार जाने की क्रिया या भाव। ३-सामने आये हुए मुकदमे, कार्य या व्यवहार (मुकदमे आदि) को नियमित रूप से देखकर पूरा करना अथवा उसका निराकरण करना। डिस्पोजल।

निस्तरना* [क्रि. अ.] (हिं.) निस्तार पाना। छुटकारा होना। मुक्त होना। छूट जाना।

निस्तरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जिसका रेशम कम मुलायम और चमकीला होता है।

निस्तरीक [वि.] (सं.) बिना बेड़े का।

निस्तरीप [वि.] (सं.) जिस नाव पर माँझी या केवट न हो।

निस्तर्क्य [वि.] (सं.) जिसकी कल्पना न की जाय

निस्तल [वि.] (सं.) १-जिसका तल न हो। २-जिसके तल की थाह न हो। बहुत गहरा। ३-गोल। वृत्ताकार। ४-नीचा। निम्न।

निस्तलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीचा, गहरा या तलरहित होने का भाव।

निस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) १-पार होने का भाव। २-छुटकारा। उद्धार। ३-काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना। ४-दोषमोचन। अपराध से निष्कृति।

निस्तारक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. निस्तारिका] निस्तार करने वाला। छुड़ाने वाला। बचाने वाला। उद्धारक।

निस्तारकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) उद्धारक। उद्धार करने वाला।

निस्तारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निस्तार करना। बचाना। छुड़ाना। २-पार करना। ३-जीतना

निस्तारन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निस्तारण'।

निस्तारना* [क्रि. स.] (हिं.) छुड़ाना। मुक्त करना। उद्धार करना।

निस्तारबीज [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपाय या काम जिससे मनुष्य की इस संसार तथा जन्म-मरण आदि से मुक्ति हो जाय (पुराण)।

निस्तारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निस्तार'।

निस्तारात्मक [वि.] (सं.) मुक्त करने वाला। छुड़ाने वाला।

निस्तिमिर [वि] (सं.) अंधकाररहित या अंधकारशून्य।

निस्तीर्ण [वि.] (सं.) १-पार गया हुआ। जो नैया पार कर चुका हो। २-जिसका निस्तार हो चुका हो। छूटा हुआ। मुक्त।

निस्तुष [वि.] (सं.) १-बिना तुष या भूसी का। जिसमें भूसी न हो। २-निर्मल।

निस्तुषरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिकमणि

निस्तुषक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ।

निस्तुषित [वि.] (सं.) जिसमें भूसी न हो। बिना भूसी का।

निस्तुषोपल [संज्ञा पु.](सं.) स्फटिकमणि। बिल्लौर

निस्तेज [वि.] (सं.) जिसमें तेज न हो। तेजरहित। अप्रभ। मलिन।

निस्तैल [वि.] (सं.) बिना तेल का। जिसमें तेल न हो।

निस्तोदन [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत कष्ट या तकलीफ

निस्तोय [वि.] (सं.) जलरहित। बिना पानी का।

निस्त्रंश [वि.] (सं.) निडर। निर्भय। जिसे भय या डर न हो

निस्त्रप [वि.] (सं.) निर्लज्ज। बेहया।

निस्त्रिंश १-खड्ग। २-तंत्र के अनुसार एक मंत्र [वि.] (सं.) निर्दय। जिसमें दया न हो।

निस्त्रिंश-पत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थूहर।

निस्त्रुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची।

निस्त्रैगुण्य [वि.](सं.) जो सत, रज और तम इन तीनों गुणों से रहित हो।

निस्त्रैणपुष्पिक [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरे का पेड़।

निस्नेह [वि.] (सं.) १-जिसमें प्रेम न हो। २-जिसमें तेल न हो। [संज्ञा पु.] तंत्रानुसार एक प्रकार का मंत्र।

निस्नेहफला [संज्ञा स्त्री.] (सं) भटकटैया। कटेरी।

निस्पंद, निस्पन्द [वि.] (सं.) १-जो हिलता-डुलता न हो। स्थिर। निश्चल। २-निश्चेष्ट। स्तब्ध।

निस्पंदता, निस्पन्दता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निस्पंद होने का भाव।

निस्पंदन, निस्पन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थिरता। निश्चलता। २-स्तब्धता।

निस्पंदित, निस्पन्दित [वि.] (सं.) कँपनरहित। बिना धड़कता या फड़कता हुआ।

निस्पृह [वि.] (सं.) जिसे किसी प्रकार का लोभ या लालसा न हो। निर्लोभ।

निस्पृहता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निस्पृह होने का भाव। लोभ या कामना न होने का भाव।

निस्पृहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलिहारी नामक पेड़। अग्निशिखा।

निस्पृही [वि.] (सं.) जिसे किसी प्रकार का लोभ या लालच न हो। निर्लोभ।

निस्फ [वि.] (अ.) अर्द्ध। आधा। दो बराबर भागों में से एक भाग।

निस्फल*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निष्फल'।

निस्फी-बँटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बँटाई जिसमें उपज का आधा भाग जमींदार के जाता है और आधा आसामी के रहता है।

निस्वत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'निसबत'।

निस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-भात का माँड़। २-वह जो बह या झड़कर निकला हो। पसेव।

निस्रावी [वि.] (सं.) जो बहता न हो।

निस्व [वि.] (सं.) दरिद्र। गरीब। हीन।

निस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) ध्वनि। शब्द।

निस्वाम्यकरण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी के अधीन न रहने देने की क्रिया। स्वामी के अधिकार में न रहने देने की क्रिया स्वाम्य निष्कासन। एक्सप्रोप्रेशन।

निस्वास [संज्ञा पु.] देखो 'निःश्वास'।

निस्संकोच [वि.] (सं.) जिसे अथवा जिसमें किसी प्रकार की लज्जा या संकोच न हो। बेधड़क। संकोचरहित। [क्रि. वि] (हिं.) बिना किसी संकोच के।

निस्संतान [वि.] (सं.) जिसे या जिसके कोई सन्तान न हो। संततिरहित।

निस्संदेह [क्रि. वि.] (हिं.) अवश्य। जरूर। सचमुच। बेशक। [वि.] जिसमें किसी प्रकार का सन्देह न हो।

निस्संबल [वि.] (सं.) जिसका कोई संबल, सहारा या ठिकाना न हो।

निस्सरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलने का मार्ग या स्थान। २-निकालने की क्रिया या भाव। निकास। ३-किसी को उसके पद या सेवा से उसके किसी दोष आदि को ध्यान में रखकर अलग करना या निकालना। डिस्चार्ज।

निस्सहाय [वि.] (सं.) जिसका कोई सहायक या मददगार न हो। असहाय।

निस्सार [वि.] (सं.) १-साररहित। जिसमें कुछ भी सार या गूदा न हो। २-जिसमें कोई काम की बात या वस्तु न हो। निस्तत्व।

निस्सारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकालने की क्रिया या भाव। कहीं से कुछ बाहर निकालना। २-वनस्पतियों की गांठों या शरीर की गिल्टियों को अपने अन्दर से कोई तत्व अथवा तरल अंश बाहर निकालना जो अङ्गों को विशुद्ध तथा ठीक अवस्था में रखने या भली प्रकार से चलाने के लिए आवश्यक होता है। ३-इस प्रकार निकलने वाला कोई पदार्थ। सीक्रेशन।

निस्सारित [वि.] (सं.) १-निकाला हुआ। बाहर किया हुआ। २-बेदखल किया हुआ।

निस्सीम [वि.] (सं.) १-जिसकी कोई सीमा न हो। असीम। अपार। २-बहुत अधिक।

निस्सृत [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।

निस्स्नेह [वि.] (सं.) जिसे अथवा जिसमें स्नेह या प्रेम न हो।

निस्स्वादु [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई स्वाद न हो २-जिसका स्वाद बुरा हो।

निस्स्वार्थ [वि.] (सं.) जिसमें या जिसे अपने स्वार्थ या हित का कोई विचार न हो।

निहंग [वि.] (हिं.) १-एकाकी। अकेला। २-अविवाहित रहने वाला या स्त्री आदि से सम्बन्ध न रखने वाला (साधु)। ३-नङ्गा। ४-निर्लज्ज। बेहया। बेशर्म। [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक प्रकार के वैष्णव साधु। २-अकेला रहने वाला साधु। ३-सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

निहंगम [वि.] (हिं.) देखो 'निहंग'।

निहंग-लाड़ला [वि.] (हिं.) जो माता-पिता के लाड़ या दुलार के कारण उद्दंड और स्वेच्छाचारी हो गया हो।

निहंता [वि.](हिं.) [स्त्री. निहंत्री] १-विनाशक। नाश करने वाला। २-मारने वाला। प्राण लेने वाला।

निहकर्मा*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निष्कर्मा'।

निहकर्मी*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निष्कर्मी'।

निहकलंक*+ [वि] (हिं.) देखो 'निष्कलंक'।

निहकाम*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निष्काम'।

निहकामी+ [वि] (हिं.) देखो 'निष्कामी'।

निहचक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पहिये के आकार का गोल चक्कर जो काठ का बना होता है कुएँ की नींव में दिया जाता है। जमव। निवार। जाखिम।

निहचय*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निश्चय'।

निहचल*+ [वि] (हिं.) देखो 'निश्चल'।

निहठा+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) वह लकड़ी का कुन्दा जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी को गढ़कर कोई चीज बनाते हैं।

निहत [वि] (सं.) १-फेंकाहुआ। २-नष्ट। ३-माराहुआ। जो मार डाला गया हो।

निहत्था [वि.] (हिं) १-जिसका हाथ न हो। बिना हाथ का। २-जिसके हाथ में कोई अस्त्र या शस्त्र न हो।

निहतव्य [वि.] ((सं.) मारने योग्य।

निहनन [संज्ञा पु] (सं.) मारण। वध। हत्या।

निहनना*+ [क्रि. स.] (हिं.) मारना। मार डालना।

निहपाप*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निष्पाप'।

निहफल*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निष्फल'।

निहल+ [संज्ञा पु.] (देश.) नदी के पीछे की ओर हट या सरक जाने से निकली हुई भूमि गंगबरार। कछार।

निहलिस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) १—वह व्यक्ति जिसका यह सिद्धान्त हो कि वस्तुओं का वास्तविक ज्ञान होना असम्भव है क्योंकि वस्तुओं की कोई सत्ता ही नहीं है। रूसदेश का एक पुराना दल जो आजकल नहीं है।

निहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पक्के लोहे का वह चौकोर टुकड़ा जो लोहार या सोनार की दूकान में धातु पीटने के लिए भूमि में गड़ा रहता है। यह छोटे-बड़े कई आकारों का होता है। *निहाई की थाली*-वह थाली जो निहाई पर रखकर नक्काशी की गई हो।

निहाउ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे का घन।

निहाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोह नामक जन्तु। २-घड़ियाल।

निहानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बारीक खुदाई का काम करने की एक प्रकार की रुखानी जिसकी नोक अर्द्ध चन्द्राकार होती है। २-एक प्रकार का नुकीला औजार जिससे ठप्पे की लकीरों के बीच में भरा हुआ रंग खुरचकर साफ किया जाता है।

निहायत [वि.] (अ.) अत्यन्त। बहुत। अधिक।

निहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुहरा। पाला। २-ओस। ३-हिम। बरफ।

निहारना [क्रि. स.] (हिं.) देखना। ताकना। ध्यानपूर्वक देखना।

निहारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक आकाशस्थ पदार्थ जो देखने में धुंधले रंग के धब्बे की तरह होता है।

निहारुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नहरुआ'।

निहाल [वि.] (फा.) जो सब प्रकार से सन्तुष्ट और प्रसन्न हो गया हो। पूर्णकाम।

निहालचा [संज्ञा पु.] (फा.) छोटी गद्दी या तोशक जो प्रायः छोटे बच्चों के नीचे बिछाने के लिए उपयोग होती है।

निहाललोचन [संज्ञा पु.] (फा.) वह घोड़ा जिस की आयल दो भागों में बटी हो।

निहाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गद्दा। तोशक। २-निहाई।

निहाव [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे का घन।

निहिंसन [संज्ञा पु.] (सं.) मारण। वध।

निहिचय*+ [संज्ञा पु.].(हिं.) देखो 'निश्चय'

निहिचिंत*+ [वि.] (हिं.) देखो 'निश्चिन्त'।

निहित [वि.] (सं.) स्थापित। रखा हुआ। कहीं या किसी के अन्दर रखा, पड़ा या छिपा हुआ

निहितार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वाक्य का वह गूढ़ार्थ अथवा आशय जो साधारणतः देखने पर न खुले, पर जो वस्तुतः महत्व रखता हो। इम्पोर्ट।

निहीन [वि.] (सं.) नीच। पामर।

निहुँकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) झुकना।

निहुड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'निहुरना'।

निहुड़ाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'निहुराना'।

निहुरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) झुकना। नवना।

निहुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निहुरने या झुकने की क्रिया या भाव। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निष्ठुरता'।

निहुराना [क्रि. स.] (हिं.) झुकाना। नवाना।

निहोर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निहोरा'।

निहोरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रार्थना करना। विनय करना। २-मनाना। कृतज्ञ होना।

निहोरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनुग्रह। एहसान। कृतज्ञता। उपकार। २-विनती। प्रार्थना। ३-भरोसा। आसरा। आश्रय। आधार। [क्रि. वि.] १-कारण से। द्वारा। २-के लिए। वास्ते। निमित्त।

निह्नव [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिपाव। दुराव। अस्वीकृत। इन्कार। २-रहस्य। ३-अविश्वास। सन्देह। सन्दिग्धता। ४-दुष्टता। ५-अपवित्रता। ६-बहाना। मिस। ७-शुद्धि। पवित्रता। ८-एक प्रकार का साम।

निह्नुत [वि.] (सं.) छिपाया हुआ।

निह्नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी बात की जानकारी को छिपाना। इन्कार। २-कपटाचरण। ३-छिपाव। दुराव।

निह्राद [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। ध्वनि।

नींद [संज्ञा स्त्री.](हिं.) प्राणियों की वह अवस्था जिसमें बीच-बीच में या नित्यप्रति रात को उनकी चेतन क्रियाएं रुक जाती हैं तथा शरीर और मस्तिष्क विश्राम करता है। सोने की अवस्था। निद्रा। स्वप्न।

नींद उचटना-नींद का दूर होना। *नींद उचटना*-नींद दूर करना। सोने में बाधा डालना। *नींद का दुखिया*-बहुत सोने वाला। *नींद का माता*-नींद से गिर-गिर पड़ने वाला। नींद से व्याकुल। *नींद उचाट होना*-एक बार नींद से जागने पर फिर नींद न आने की अवस्था होना। सोने में बाधा पड़ना। *नींद टूटना*-नीद से जाग पड़ना। *नींद हराम होना*-नींद आने में बाधा पड़ना। *नींद हराम करना*-सोने में बाधा डालना। *नींद खुलना*-आँख खुलना। नींद टूटना। *नींद पड़ना*-नींद आना। *नींद भरना*-नींद पूरी करना। *नींद भर सोना*-इच्छानुसार सोना। जितनी इच्छा हो उतना सोना। *नींद मारना*-सोना। *नींद लेना*-सोना। *नींद संचारना*-नींद आना। *नींद हराम करना*-सोना छुड़ा देना। *नींद हराम होना*-सोने की नौबत न आना। चिंता आदि के कारण सोना न होना।

नींदड़ली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नींद'।

नींदड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नींद'।

नींदना [क्रि. अ.] (हिं.) नींद लेना। सोना। [क्रि. स.] १-निराना। २-देखो 'निंदाना'।

नींदरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नींद'।

नींबू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नीबू'।

नींव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नीवँ'।

नीक* [वि.] (हिं.) [स्त्री. नीकि] अच्छा।

सुन्दर। भला। अनुकूल।
नीक लगना-१-रुचि के अनुकूल जान पड़ना। २-सजना। सुशोभित होना।
[संज्ञा पु.] अच्छाई। उत्तमता। अच्छापन।

नीका* [वि.] (हिं.) [स्त्री. नीकी] उत्तम। अच्छा। बढ़िया।
नीका लगना-१-रुचना। भाना। २-सोहना। सजना।
+[संज्ञा पु.] उत्तमता। अच्छापन। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेतों की सिंचाई के लिए पानी का बम्बा या नहर।

नीकार [संज्ञा पु.] (सं.) भर्त्सना। तिरस्कार।

नीकाश [वि.] (सं.) तुल्य। समान।

नीकि, नीकी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] अच्छी। भली। उत्तम।

नीके [क्रि. वि.] (हिं.) अच्छी तरह। भलीभांति।

नीको+ [वि.] (हिं.) देखो 'नीका'।

नीग्रो [संज्ञा पु.] (अं.) हबशी।

नीच [वि.] (सं.) १-जाति, गुण, कर्म या किसी अन्य बात में घटकर। तुच्छ। अधम। क्षुद्र। हेठा। २-जो उत्तम और मध्यम कोटि से घट कर हो। अधम। बुरा। निकृष्ट।
नीच-ऊँच-१-छोटा-बड़ा। भला-बुरा। ३-गुण-अवगुण। ४-हानि-लाभ। ५-सफलता-असफलता। सुख-दुःख।
[संज्ञा पु.] १-नीच, क्षुद्र या ओछा आदमी। २-चोर नामक एक गंधद्रव्य। ३-फलित ज्योतिष के अनुसार वह स्थान जो किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवां हो। ४-भ्रमणकाल में किसी ग्रह के भ्रमण वृत्त का वह स्थान जो पृथ्वी से अधिक दूर हो। ५-दशार्ण देश में स्थित एक पर्वत का नाम।

नीचक [वि.] (सं.) वामन। नाटा। बौना।

नीचकदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) मुंडी।

नीच-कमाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निंद्य या खोटा काम या व्यवसाय। तुच्छ काम। २-बुरे कामों से पैदा किया धन।

नीचका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वोत्तम गौ। अच्छी गाय।

नीचकी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. नीचकिनी] १-किसी वस्तु का सर्वोच्च भाग। २-बैल का सिर। ३-अच्छी गायों को रखने वाला। जिसके पास अच्छी गायें हों।

नीचकैस् [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

नीचग [वि.] (सं.) [स्त्री. नीचगा] १-नीचे जाने वाला। २-पामर। ओछा।

नीचगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नदी। २-नीच के साथ गमन करने वाली स्त्री। नीच गामिनी स्त्री।

नीचगामी [वि.] (हिं.) [स्त्री. नीचगामिनी] १-नीचे जाने वाला। २-ओछा। [संज्ञा पु.] जल। पानी।

नीचगृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जो किसी ग्रह के उच्च स्थान या राशि से गिनती में सातवाँ पड़े।

नीचट+ [वि.] (हिं.) पक्का। दृढ़।

नीचता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीच होने का भाव २-अधमता। खोटाई। तुच्छता। क्षुद्रता। कमीनापन।

नीचत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नीचता'।

नीचभोज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अखाद्य भोजन। २-पलांडु। प्याज।

नीचयोनि [वि.] (सं.) अकुलीन। निम्न जाति में उत्पन्न।

नीचवज्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैक्रांत नामक रत्न या मणि।

नीचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वोत्तम गाय या गौ। [वि.] (हिं.) [स्त्री. नीची] १-जिसके तल से उसके आसपास का तल ऊँचा हो। जो कुछ उतार या गहराई पर हो। गहरा। ऊँचा का उलटा। २-उँचाई में सामान्य की अपेक्षा कम। जो ऊपर की ओर दूर तक गया हो। ३-अधिक लटका हुआ। ४-जो ऊपर की ओर पूरा न उठा हो। नत। झुका हुआ। ५-जो जोर का न हो। जो तीव्र न हो। धीमा। मध्यम। ६-जो जाति, गुण, पद आदि में घटकर हो। ७-जो उत्तम तथा मध्यम कोटि का न हो। छोटा या ओछा। बुरा। क्षुद्र।
नीचा ऊँचा-कहीं कुछ गहरा और कहीं कुछ उठा हुआ ऊबड़-खाबड़। *नीचा ऊँचा*-१-भला-बुरा। २-अच्छा और बुरा परिणाम। हानि-लाभ। ३-सुख-दुःख। सफलता-असफलता। *नीचा खाना*-१-तुच्छ बनना। अपमानित होना। हेठा बनना। २-हारना। परास्त होना। ३-लज्जित होना। झिपना। *नीचा दिखाना*-१-तुच्छ बनाना। हेठा करना। २-मान भंग करना। दर्प चूर्ण करना। शेखी झाड़ना। ३-परास्त करना। हराना। ४-झिपाना। *नीचा देखना*-१-तुच्छ ठहराना। २-हारना। परास्त होना। *नीची दृष्टि से देखना*-तुच्छ या छोटा समझना। कदर न करना।

नीचाभक [वि.] (सं.) बहुत चाहने वाला।

नीचाशय [वि.] (सं.) तुच्छ विचार का। ओछा। क्षुद्र।

नीचू+ [वि.] (हिं.) जो टपकता न हो। न चूने वाला। [क्रि. वि.] १-निम्न तल की ओर। अधोभाग में। २-अस्तव्यस्त। अव्यवस्थित [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लीची'।

नीचे [क्रि. वि.] (हिं.) १-नीचे की ओर। 'ऊपर' का उलटा। अधोभाग में। २-घटकर। कम। न्यून। ३-अधीनता में। मातहती में।
नीचे ऊपर-१-एक पर एक। २-अव्यवस्थित। अस्तव्यस्त। उलट-पलट। उथल-पुथल। *नीचे गिरना*-१-मान मर्यादा गंवाना। २-अवनत दशा को प्राप्त होना। ३-कुश्ती पछाड़ खाना। *नीचे गिराना*-१-मान मर्यादा दूर करना। २-कुश्ती में पटक या पछाड़ लगाना *नीचे डालना*-१-फेंकना। गिराना। २-पराजित करना। जीतना। *नीचे लाना*-कुश्ती में पछाड़ना। *ऊपर से नीचे तक*-सिर से पैर तक। एक सिरे से दूसरे सिरे तक।

नीचोच्चवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृत्त जिसका केन्द्र किसी बड़े वृत्त के मध्य में घूमता हो।

नीचोपगत [वि.] (सं.) वह जो खगोल के नीचे के भाग में हो।

नीज+ [संज्ञा पु.] (सं.) रज्जु। रस्सी।

नीजन* [वि.] (हिं.) निर्जन। जनशून्य। सुनसान। [संज्ञा पु.] निर्जन स्थान। निराला। एकान्त।

नीजू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी। पानी भरने की डोरी।

नीझर* [संज्ञा पु.] (हिं.) निर्झर। झरना। सोता।

नीठ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'नीठि'।

नीठि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अरुचि। अनिच्छा। इच्छा या रुचि न होना।
नीठि-नीठि करके-१-ज्यौंत्यों करके। किसी न किसी प्रकार। २-कठिनता से। मुश्किल से।
[क्रि. वि.] ज्यों-त्यों करके। किसी न किसी प्रकार। २-मुश्किल से। कठिनता से।
नीठि-नीठि-जैसे-तैसे कठिनता से।

नीठो [वि.] (हिं.) अनिष्ट। अप्रिय। न सुहाने वाला। न भाने वाला।

नीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैठने या ठहरने का स्थान। २-चिड़ियों के रहने का स्थान। घोंसला। ३-रथ में रथी के बैठने का स्थान। रथ में बैठने का मुख्य स्थान।

नीड़क [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

नीड़ज [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

नीड़जेंद्र, नीड़जेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़-पक्षी।

नीड़ोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) खग। पक्षी।

नीत [वि.] (सं.) १-लाया हुआ। पहुँचाया हुआ। २-स्थापित। ३-प्राप्त। ४-गृहीत। ग्रहण किया हुआ।

नीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लेजाने या ले-चलने की क्रिया, भाव या ढंग। २-व्यवहार की रीति। आचार-पद्धति। ३-व्यवहार की रीति जिससे अपना हित हो तथा दूसरों को कष्ट अथवा हानि न पहुँचे। ४-जनता अथवा समाज के हित के लिए निश्चित आचार व्यवहार। अच्छा व्यवहार और चलन। लोक-मर्यादा के अनुसार व्यवहार। नय। ५-राज्य तथा राष्ट्र की रक्षा तथा हित के लिए निश्चित

रीति या व्यवहार । राजविद्या । ३-कोई कार्य ठीक ढंग से पूरा करने के लिए की जाने वाली युक्ति या उपाय । हिकमत ।

नीतिकुशल [वि.] (सं.) नीति में कुशल । नीति निपुण । नीति जानने वाला ।

नीतिघोष [संज्ञा पु.] (सं.) वृहस्पति के रथ का नाम ।

नीतिज्ञ [वि] (सं.) नीति जानने वाला । नीति-कुशल ।

नीतिदोष [संज्ञा पु.] (सं.) नीति-सम्बन्धी त्रुटि या भूल ।

नीतिनिपुण [वि.] (सं.) राजनीति का जानने वाला ।

नीतिबीज [संज्ञा पु.] (सं.) षड्यन्त्र का उद्गम स्थान ।

नीतिभ्रष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नैतिक पतन ।

नीतिमान् [वि.] (सं.) १-नीतिपरायण । २-सदाचारी ।

नीतिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो सब कार्य नीतिशास्त्र के सिद्धांतानुसार करना चाहता या करता हो ।

नीतिविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र जिस में देश, काल तथा पात्र का ध्यान रखकर सब के आचरण करने के नियम रहते हैं । २-वह शास्त्र जिसमें समाज कल्याण के निमित्त आचार-व्यवहार बताये गये हों ।

नीतिविद् [वि.] (सं.) राजनीति को जानने वाला

नीतिविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) नीति से सम्बन्ध रखने वाली विद्या ।

नीतिव्यतिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजनीति या सामाजिक नीति के नियमों को तोड़ना या उल्लंघन करना । २-नीति में भूल । आचार-पद्धति में भूल ।

नीतिशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र जिस में देश, काल और पात्र के अनुरूप व्यवहार करने के नियमों का निरूपण किया गया हो । २-वह शास्त्र जिसमें मनुष्य समाज के हित के लिए देश, काल और पात्र के अनुसार आचार-व्यवहार तथा प्रबन्ध एवं शासन का विधान हो ।

नीथ [संज्ञा पु.] (सं.) नयन । स्तोत्र ।

नीदना* [क्रि. स.] (हिं.) निंदा करना ।

नीधना* [वि.] (हिं.) धनहीन । दरिद्र ।

नीध [संज्ञा पु.] (सं.) १-छप्पर या छत की ओलती । वलीक । २-वन । जंगल । ३-पहिये का व्यास या चक्र । नेमि । ४-चंद्रमा । चांद । ५-रेवती-नक्षत्र ।

नीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़ का निचला भाग । पर्वत की तलहटी । २-कदम्बवृक्ष । ३-अशोकवृक्ष । ४-भूकदम्ब । ५-बंधूक । दुपहरिया । ७-एक देश का नाम । ८-राज-वंश विशेष । [संज्ञा पु.] (अं.) दो वस्तुओं को बाँधने या गाँठ देने के लिए रस्सी का फेरा या फंदा । *नीप लेना*--रस्सी में बाँधने के लिये फंदा लगाना ।

नीपना* [क्रि स.] (हिं.) देखो 'लीपना' ।

नीपर [संज्ञा पु.] (अं.) १-लंगर में बंधी हुई रस्सियों में से एक । २-उक्त रस्सी के बंधन को कसने के लिए लगा हुआ डंडा ।

नीपराज [संज्ञा पु.] (सं.) राजकदम्ब नामक वृक्ष

नीपातिथि [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककाल के एक ऋषि का नाम ।

नीब+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नीम' ।

नीबर+ [वि.] (हिं.) निर्बल । कमज़ोर । दुर्बल ।

नीबी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नीवी' ।

नीबू [संज्ञा पु.](हिं.) मध्यमाकार का एक पेड़ या क्षुप जिसके फल का रस प्रयोग में आता है और पृथ्वी के गरम भूभागों या प्रदेशों में होता है । सुश्रुत में चार प्रकार के नीबू बताये गये हैं । यथा--जंबीर, नारंग, ऐरावत और दंतशठ । भावप्रकाश में— बीजपूर या बिजौरा । मधुकर्कटी या चकोतरा, जंबीर या खट्टा नीबू और निंबूक या कागजी नीबू यह चार प्रकार के नीबू बताये गये हैं । मातुलुङ्ग, रुचक, फलपूरक, अम्लकेशर, बीजपूरण, सु-केशर, बीजक, बीजफलक, जंतुघ्न, दतुरच्छद पूरक, रोचनफल आदि यह सब नीबू के पर्यायवाची शब्द कहे गये हैं ।

नीबू निचोड़-थोड़ा सा सम्बन्ध जोड़कर बहुत कुछ लाभ उठाने वाला । बड़ा भारी कंजूस ।

नीम [संज्ञा पु.] (हिं.) । एक प्रसिद्ध कड़ुवा वृक्ष जिसकी निंबोली (फल) के गूदे को छोड़कर सब अङ्ग कड़ुए होते हैं । इसके बीजों से तेल निकलता है जिनका उपयोग औषध रूप में या जलाने में होता है । नीम की लकड़ी ललाई लिए मजबूत होती है । इसकी पतली टहनियों की दातून की जाती है । वैद्यक के अनुसार नीम कड़ुआ, शीतल और कफ, व्रण, कृमि, वमन, सूजन, पित्तदोष तथा हृदय के दाह को दूर करने वाला होता है । निंब, निय-मन, नेता, पिचुमन्द, अरिष्ट, प्रभद्रक, पारि-भद्रक, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वर-त्वच, छर्दन, हिंगु, निर्यास, पीतसार, रवि-प्रिय, मालक, पूपारि, पूकमालक, कीटक, निबन्ध, कैटर्य, छर्दिघ्न, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, वशर्णिपर्ण, शीत, राजभद्रक ।

नीम की टहनी हिलाना-गरमी की बीमारी लेकर बैठना ।

[वि.] (फ़ा.) आधा । अर्द्ध ।

नीम हकीम-कुचिकित्सक ।

नीमगिर्द [संज्ञा पु.] (फ़ा.) बढ़ई का वह औजार जो पेचकश और रुखानी की तरह का होता है जो खरादने के काम आता है ।

नीमच [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मछली जिसका मांस खाने में स्वादिष्ट होता है । यह बंगा उड़ीसा, पंजाब और सिंध (पाकिस्तान) की नदियों में पाई जाती है ।

नीमचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) खांडा ।

नीमजाँ [वि.] (फ़ा.) अधमरा ।

नीमटर [वि.] (हिं.) अधकचरा । जिसे पूरी ज्ञान-कारी न हो ।

नीमन+[वि.] (हिं.) १-अच्छा । भला । निरोग । चंगा । २-जो बिगड़ा हुआ या जीर्ण न हो । दुरुस्त । ३-बढ़िया । अच्छा । सुन्दर ।

नीमबर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कुश्ती का एक पेंच ।

नीमर [वि.] (हिं.) निर्बल । दुर्बल । बलहीन ।

नीमरजा [वि.] (फ़ा.) १-थोड़ी बहुत रजामन्दी । २-कुछ तोष या प्रसन्नता ।

नीमषारण्य [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नैमिषारण्य'

नीमषारन [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'नैमिषारण्य' ।

नीमस्तीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नीमास्तीन'

नीमा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जामे के नीचे पहनने का एक पहिनाव जिसकी आधी बांह होती है ।

नीमावत [संज्ञा पु.] (हिं.) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय ।

नीमास्तीन [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) एक प्रकार की कुरती या फतूही जो आधी बांह की होती है ।

नीयत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मनमें रहने वाला भाव लक्ष्य या उद्देश्य । आशय । मंशा । इच्छा । सङ्कल्प । *नीयत डिगना*-मन में विकार उत्पन्न होना । बुरा सङ्कल्प होना । *नीयत बद होना*-बुरा विचार होना । अनुचित या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना । बेईमानी सूझना । *नीयत बदल जाना*-१-सङ्कल्प या विचार और का और होना । २-अनुचित या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना । *नीयत बाँधना*-सङ्कल्प करना । मन में ठानना । इरादा करना । *नीयत बिगड़ना*-अच्छे सङ्कल्प या विचार का बुरा हो जाना । *नीयत भरना*-जी भरना । तृप्ति होना । *नीयत में फर्क आना*-बुरा सङ्कल्प या विचार होना । अनुचित और बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना । *नीयत लगी रहना*-ध्यान बना रहना । इच्छा बनी रहना ।

नीरंध्र, नीरन्ध्र [वि.] (सं.) जिसमें छेद न हो । छेदरहित ।

नीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल । पानी । २-रस । अर्क़ । कोई द्रव पदार्थ । ३-फफोले आदि के भीतर का चेप । जैसे-चेचक का नीर । ४-सुगन्धवाला । *नीर ढलना*-मरते समय आँखों से पानी बहना । (किसी का) *नीर ढल जाना*-निर्लज्ज या बेहया हो जाना ।

नीरज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल । २-मोती । ३-जलजीव या जल में उत्पन्न वस्तु । ४-कुट । कूट । ५-एक प्रकार का तृण । ६-शिव । महादेव ।

नीरजस् [वि.] (सं.) १-जहां धूलि न हो । निर्धूल

२-बिना पराग का।

नीरजात [वि.] (सं.) जल से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-मोती। ३-जलजीव।

नीरत [वि.] (सं.) विरत। अनिलीन।

नीरद [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ। [वि.] १-जल देने वाला। २-बिना दाँत का।

नीरधर [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ।

नीरधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

नीरना+ [क्रि स] (देश.) छिटकना। छितराना। बिखेरना।

नीरनिधि [संज्ञा पु] (सं.) समुद्र।

नीरपति [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण देवता।

नीरप्रिय [वि.] (सं) जिसको जल बहुत प्यारा हो

नीरम [संज्ञा पु.] (?) वह बोझ जो जहाज का सम भार लेने के लिए रखा जाता है।

नीररुह [संज्ञा पु.] (सं) कमल।

नीरव [वि.] (सं.) १-जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। निःशब्द। २-जो कुछ न बोलता हो। चुप। मौन।

नीरस [वि.] (सं.) १-जिसमें रस न हो। रसहीन २-सूखा। शुष्क। ३-जिसमें कोई स्वाद न हो। फीका। ४-जिसमें कोई आकर्षक या रुचिकर बात या तत्व न हो।

नीरसन [वि.] (सं) बिना करधनी अथवा कमरबन्द का।

नीरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की घास।

नीराखु [संज्ञा पु](सं.) १-नेवला। २-ऊदबिलाव

नीरांजन, नीराञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीपदान देवता की आरती। अस्त्रों का मार्जन। हथियारों को चमकाने या साफ करने का काम। २-एक सैनिक एवं धार्मिक कृत्य, जिसमें राजा लोग शत्रु पर चढ़ाई करने के पूर्व आश्विन मास में हथियारों की सफाई कराते थे।

नीराजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीपदान। किसी देवता की आरती उतारना। आरती। २-हथियारों को मांजने का काम। ३-वह सैनिक समारोह जिसमें चढ़ाई करने से पूर्व आश्विन मास में हथियारों की सफाई कराते थे।

नीराजना [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो 'नीराजन'। [क्रि. स.] (हिं.) किसी देवता की आरती उतारना। दीपक दिखाना। २-हथियारों को मांजना।

नीरिंदु, नीरिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) सिहोर का पेड़

नीरुक्ष [वि.] (सं.) जिसमें अधिक चमक न हो।

नीरुज [संज्ञा पु.] (सं.) आरोग्य। स्वास्थ्य। [वि.] चालाक। होशियार।

नीरूप [वि.] (सं.) रूपहीन। कुरूप।

नीरे [क्रि. वि.] (हिं.) नियरे। पास में।

नीरोग [वि.] (सं.) जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। स्वस्थ। तन्दुरुस्त।

नीरोह [संज्ञा पु.] (सं.) अंकुरित होना।

नीलंगु, नीलङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का कीड़ा। २-गीदड़। ३-भँवरा। ४-फूल।

नील [वि.] (सं.) नीले रंग का। गहरे आसमानी रंग का। [संज्ञा पु.] १-नीला रंग। गहरा आसमानी रंग। एक प्रसिद्ध पौधा जो दो-तीन हाथ ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ चमेली के समान टहनी में दोनों ओर लगती हैं। फूल मञ्जरियों में लगते हैं और बबूल के समान लम्बी-लम्बी फलियाँ लगती हैं। इसमें से नीला रंग दो प्रकार से निकलता है। एक हरे पौधे से, दूसरे सूखे पौधे से। इसके पौधों को पानी से भरी नांदों में डाल देते हैं जिससे उसका रस निकल आता है उस रस को यन्त्रों की सहायता से उबालने आदि की क्रिया द्वारा रंग बनाते हैं। ३-इस पौधे से निकलने वाला नीला रंग। ४-शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले या काले रंग का दाग या चिह्न। ५-लांछन। कलङ्क। ६-राम की सेना के एक बन्दर का नाम। ७-इलावृत्तखण्ड का एक पर्वत जो रम्यकवर्ष की सीमा पर है (भागवत)। ८-नव निधियों में से एक। ९-मङ्गल-घोष। मङ्गल-शब्द। १०-वटवृक्ष। बरगद। ११-नीलम। इन्द्रनीलमणि। १२-काचलवण। १३-तालिसपत्र। १४-विष। १५-एक नाग का नाम। १६-विष्णुपुराण के अनुसार नीलनी से उत्पन्न अजमीढ़ राजा का एक पुत्र। १७-महाभारत के अनुसार माहिष्मती का एक राजा। १८-नृत्य के १०८ करणों में से एक। १९-एक यम का नाम। २०-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होते हैं। २१-मंजुश्री का एक नाम। २२-सौ-खरब की एक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१,००,००,००,००,००,०००।

नील का टीका–कलङ्क लेना या बदनामी उठाना *नील का खेत*–कलङ्क का स्थान।

नील की सलाई फिरवा देना–आंखें फुड़वा डालना। अन्धा कर देना।

नील घोंटना–झगड़ा-बखेड़ा मचाना। *नील जलाना*–पानी बरसाने के लिए नील जलाने का टोटका करना। *नील बिगड़ना*–१-आचरण भ्रष्ट होना। २-आकृति बिगड़ना। चेहरे का रंग उड़ना। ३-झूठी असंगत बात फैलाना। ४-समझ पर पत्थर पड़ना। बुद्धि ठिकाने न रहना। ४-कुदिन आना। शामत आना। ६-भारी हानि या घाटा होना। *नील डालना*–गहरी मार के कारण शरीर पर नीले दाग पड़ना।

नीलकंठ, नीलकण्ठ [वि.] (सं.) जिसका कंठ नीला हो। [संज्ञा पु.] १-मोर। मयूर। २-एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने और कंठ नीला होता है। चाषपक्षी। ३-महादेव का एक नाम। ४-गौरापक्षी। चटक। ५-मूली। ६-पियासाल।

नीलकंठक, नीलकण्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) चातक पक्षी। पपीहा।

नीलकंठ-रस, नीलकण्ठ-रस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की रसौषध जिसके सेवन करने से कास, श्वास, प्रमेह, हिचकी, विषम ज्वर, ग्रहणी, शोथ, पांडु, मूत्रकृच्छ्र आदि रोग दूर होते हैं।

नीलकंठाक्ष, नीलकण्ठाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष। [वि] जिसकी आंखें खंजन के समान हों।

नीलकंठी, नीलकण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मधुर स्वर में बोलने वाली एक छोटी चिड़िया जो हिमालय पर पाई जाती है।

नीलकंद, नीलकन्द [संज्ञा पु.] (सं) भैंसा कंद। महिष्कंद। शुभ्रालु।

नीलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-काचलवण। २-वर्त्त लौह। बीदरी लोहा। ३-मटर। ४-भौंरा। ५-पियासाल। ६-बीजगणित में एक प्रकार की अव्यक्त राशि।

नीलकण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलम का टुकड़ा। २-ठोड़ी पर के गोदने का बिंदु।

नीलकणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला जीरा। स्याह जीरा।

नीलकर [संज्ञा पु] (सं.) नील बनाने वाला।

नीलकांत, नीलकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिमालय के अंचल में पाई जाने वाली एक प्रकार की चिड़िया जिसे मसूरी और नैनीताल में दिगदल कहते हैं। इसका माथा, कंठ के नीचे का भाग और छाती काली होती है। पूंछ नीली तथा कण्ठ में कुछ नीलेपन की झलक होती है। २-विष्णु। ३-एक मणि का नाम। नीलम।

नीलकायिक [संज्ञा पु.] (सं) जिसका शरीर नीला हो।

नीलकुंतला, नीलकुन्तला [संज्ञा स्त्री] (सं.) पार्वती की एक सखी का नाम।

नीलकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली कटसरैया।

नीलकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का पौधा।

नीलक्रांता, नीलक्रान्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) विष्णुक्रांता नामक एक प्रकार की लता जिसमें बड़े-बड़े नीले रंग के फूल होते हैं।

नीलक्रौंच, नीलक्रौञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) काला-बगला। वह बगला जिसका पर कुछ कालापन लिये होता है।

नीलगंगा, नीलगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

नीलगर्भ [वि.] (सं.) जिस फूल का मध्य या बीच का भाग नीला हो।

नीलगाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है। यह नीलापन लिये भूरे रंग का होता है। इसके गाय

के समान कान एवं सींग टेढ़े और छोटे होते हैं। छोटे-छोटे काले बालों का अयाल भी होते हैं; यह जन्तु देखने में गाय और हिरन दोनों से मिलता-जुलता जान पड़ता है तथा प्रायः जंगलों में झुंड के रूप में रहता है। गवय। नीलांगव। रोझ।

नीलगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।

नीलग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नीलचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर माना जाने वाला एक चक्र। २-तीस अक्षरों का एक दंडकवृत्त जिसमें गुरु लघु १५ बार क्रम से आते हैं। यह अशोक-पुष्पमंजरी का एक भेद है।

नीलचर्मा [वि.] (सं.) नीले चमड़े का। [संज्ञा पु.] फालसा।

नीलच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-छुहारे का पेड़। २-गरुड़। [वि.] नीले पंख या आवरण का।

नीलज [संज्ञा पु.] (सं.) बीदरी लोहा। वर्तलौह।

नीलजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलपर्वत से निकलने वाली वितस्ता (झेलम) नदी।

नीलझिंटी, नीलझिण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली कठसरैया।

नीलतरा [संज्ञा स्त्री.] (?) बौद्ध कथाओं में वर्णित गांधारदेश की एक नदी का नाम जो उस वेलारण्य से होकर बहती थी जहां जाकर बुद्धदेव ने उरुवेल आदि तीन भाइयों का अभिमान दूर किया था।

नीलतरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताड़वृक्ष। २-नारियल।

नीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीलापन। २-कालापन। स्याही।

नीलताल [संज्ञा पु.] (सं.) श्याम-तमाल। हिंताल

नीलदूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरी दूब।

नीलध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) तमालवृक्ष।

नीलनिर्यासक [संज्ञा पु.] (सं.) पियासाल का पेड़।

नीलनीरज [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकमल।

नीलपंक, नीलपङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला कीचड़। २-अन्धकार ३-काला परदा या काला उघार। अन्धे की आंख पर का काला जाला।

नीलपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलकमल। नीलनीरज २-गोनरा नामक घास जिसकी जड़ को कसेरू कहते हैं। गुंडतृण। ३-अशमन्तक-वृक्ष। ४-विजयसाल। ५-अनार।

नीलपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील।

नीलपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली नील।

नीलपर्ण [संज्ञा पुं.] (सं.) वृन्दारवृक्ष।

नीलपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकमल।

नीलपिंगला, नीलपिङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलगाय।

नीलपिच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) बाजपक्षी।

नीलपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराण का नाम।

नीलपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीला फूल। २-नीली भंगरैया। ३-नीलाम्लान। काला कोराठा। ४-गठिवन।

नीलपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णुक्रांता-लता। अपराजिता।

नीलपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पौधा। २-अलसी।

नीलपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीली कोयल। काला दौना। २-अलसी।

नीलपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

नीलपोर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की ऊख।

नीलफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जामुन। २-बैंगन।

नीलबड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नीलबरी'

नीलबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कच्चे नील की बट्टी

नीलबिरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सनाय का पौधा।

नीलभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल। २-चन्द्रमा। ३-मधुमक्खी।

नीलभृंगराज, नीलभृङ्गराज [संज्ञा पु.] (सं.) नीला भंगरा।

नीलम [संज्ञा पु.] (फा.) नीले रङ्ग का एक प्रसिद्ध रत्न जो हीरे के समान मूल्यवान और चोखा होता है। यह हलके रङ्ग से लेकर नीले रङ्ग तक के होते हैं। रत्नपरीक्षा-सम्बन्धी पुस्तकों के अनुसार नीलम तीन प्रकार का होता है। यथा—उत्तम, महानील और साधारण। महानील को यदि उससे सौगुने पानी में डाल दिया जाय तो वह भी नीला दिखाई देने लगता है। इन्द्रनील सर्वोत्तम नीलम होता है। इसमें इन्द्रधनुष के समान आभा होती है। नीलम पांच बातों से परखा जाता है—गुरुत्व, स्निग्धत्व, वर्णाढ्यत्व, पार्श्ववर्तित्व और रंजकत्व।

नीलमंडल, नीलमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा।

नीलमक्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली मक्खी।

नीलमणि [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम।

नीलमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपित्थ। कैथ

नीलमाधव [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

नीलमाष [संज्ञा पु.] (सं.) काला उरद। राजमाष

नीलमीलिक [संज्ञा पु.] (सं.) खद्योत। जुगनू।

नीलमृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली मिट्टी। पुष्प कसीस।

नीलमेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेह रोग का एक भेद

नीलमोर [संज्ञा पु.] (हिं.) हिमालय पर पाया जाने वाला एक प्रकार का पक्षी जिसे कुररी कहते हैं।

नीलयष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की काली ईख।

नीलरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) नीलमणि। नीलम।

नीलरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) पाकड़ का वृक्ष।

नीललोचन [वि.] (सं.) नीली आंख वाला।

नीललोह [संज्ञा पु.] (सं.) बीदरी लोहा। वर्तलौह।

नीललोहित [वि.] (सं.) नीलापन लिये लाल। बैंगनी। [संज्ञा पु.] शिव का एक नाम (जिन का कंठ नीला तथा मस्तक लोहित वर्ण है)।

नीललोहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी जामुन २-पार्वती।

नीलवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा।

नीलवर्षाभू [संज्ञा पु.] (सं.) काला मेंढक।

नीलवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बदाक। बांदा। परगाछा।

नीलवसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीला कपड़ा। २-बलराम। ३-शनिग्रह। [वि.] नीला या काला वस्त्र धारण करने वाला।

नीलवस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नीलवसन'।

नीलवीज [संज्ञा पु.] (सं.) पियासाल।

नीलवुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीला चोना नामक पेड़।

नीलवृंत, नीलवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) तूल। रुई

नीलवृष [संज्ञा पु.] (सं.) एक विशेष प्रकार का सांड या बछड़ा।

नीलवृषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैंगन।

नीलशिग्रु [संज्ञा पु.] (सं.) सहजन का पेड़।

नीलसंध्या, नीलसन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्ण पराजिता।

नीलसस्य [संज्ञा पु.] (सं.) बाजरा।

नीलसरस्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तारादेवी।

नीलसार [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदू का पेड़।

नीलसिर [संज्ञा पु.] (सं.) नीले सिर वाली एक प्रकार की बत्तख जो सिंध, पंजाब, काश्मीर आदि में पाई जाती है। यह गरमियों में अंडे देती है।

नीलस्वरूप [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु अक्षर होते हैं।

नीलस्वरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) 'नीलस्वरूप' नामक छंद।

नीलांग, नीलाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सारस पक्षी। [वि.] नीले अङ्ग वाला।

नीलांगु, नीलाङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कीड़ा। २-भौंरा। ३-घड़ियाल।

नीलांजन, नीलाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीला सुरमा। २-तूतिया। नीला थोथा।

नीलांजना, नीलाञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-

नीलाञ्जसा, नीलाञ्जसा बिजली। विद्युत। २-काली कपास।

नीलाञ्जसा, नीलाञ्जसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। विद्युत। २-एक अप्सरा। ३-एक नदी।

नीलाम्बर, नीलाम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीला वस्त्र। नीले रङ्ग का कपड़ा, विशेषतः रेशमी कपड़ा। २-तालिशपत्र। ३-बलदेव। ४-शनैश्चर। ५-राक्षस। [वि.] नीले वस्त्र पहनने वाला।

नीलाम्बरी, नीलाम्बरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

नीलाम्बुज, नीलाम्बुज [संज्ञा पु.] (सं) नीलकमल।

नीला [वि.] (हिं.) आकाश के रङ्ग का। नीले रङ्ग का। *नीला करना*-मार-पीटकर शरीर पर दाग डालना। *नीला पड़ना*-नीला हो जाना। *नीला पीला होना*-क्रोध दिखाना। बिगड़ना। *नीले हाथ पीले हों*-ठण्डा हो जाय अर्थात मर जाय। (स्त्रियों द्वारा गाली या शाप)। *चेहरा नीला पड़ जाना*-१-आकृति से भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट होना। २-आकृति बिगड़ जाना। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का कबूतर। २-नीलम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीली मक्खी। २-नील-पुनर्नवा। ३-महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम। एक लता विशेष ४-नील का पौधा। ५-मल्लार राग की एक भार्या।

नीलाक्ष [वि.] (सं.) नीली आँख वाला। [संज्ञा पु.] राजहंस।

नीलाचल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलगिरी नामक पर्वत। २-जगन्नाथ जी के निकट एक छोटी पहाड़ी का नाम।

नीलाथोथा [संज्ञा पु.] (हिं.) ताँबे की उपधातु। ताँबे का क्षार या लवण। तूतिया।

नीलाब्ज [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकमल।

नीलाम [संज्ञा पु.] (हिं.) [पुर्त. लीलाम] चीजें बेचने का वह ढङ्ग जिसमें माल उस आदमी को दिया जाता है जो सब से अधिक दाम बोलता है। बोली बोलकर माल बेचने का ढंग। *नीलाम पर चढ़ना*-बोली बोलकर बेचा जाना। *(माल) नीलाम पर चढ़ाना*-बोली बोलकर बेचना।

नीलामघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान या घर जहाँ पर वस्तुएं नीलाम होती या नीलाम पर चढ़ाई जाती हैं।

नीलामी [वि.] (हिं.) नीलाम में मोल लिया हुआ।

नीलाम्लान [संज्ञा पु.] (सं.) एक सुन्दर फूल वाला पौधा जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं। काला कोरांटा (मराठी)।

नीलाम्ली [संज्ञा पु.] (सं) नल्लबुड़ गुड़।

नीलारुण [संज्ञा पु.] (सं.) तड़का। भोर। उषा काल।

नीलावती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का चावल।

नीलाश्मज [संज्ञा पु.] (सं.) तूतिया। नीलाथोथा

नीलाश्मन् [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकान्तमणि।

नीलाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम।

नीलासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पियासाल का पेड़ २-एक रतिबन्ध।

नीलाहट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीलापन।

नीलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जलजंतु।

नीलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीलबरी। नील बड़ी। २-नील सम्हालु वृक्ष। नीली निर्गुण्डी। ३-आंख तिलमिलाने का एक रोग। ४-मुंह पर सरसों के बराबर के छोटे-छोटे दाने निकलने का एक रोग, इसे झल्ला भी कहते हैं। ५-चोट आदि के कारण शरीर पर पड़ा हुआ नीला दाग। नील।

नीलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पेड़। २-नीला बोना।

नीलिमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नीलापन। २-श्यामता। स्याही।

नीली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] नीले रंग की। काली। आसमानी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पौधा। २-नीले रंग की मक्खी। ३-नीलिका नामक आँख का रोग।

नीलीघोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काले या सब्ज रंग की घोड़ी। २-जामे के साथ सिली हुई कागज की घोड़ी जिसे पहन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है। डफाली लोग इसे पहनकर गाजी मियां के गीत गाकर भीख मांगते हैं।

नीलीचकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

नीलीचाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अगिया नामक घास या यज्ञकुश।

नीलीराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेम जो नील के रंग के समान पक्का हो। अटल प्रेम। २-पक्के मित्र।

नीलसंधान, नीलसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) नील का खमीर।

नीलू [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की घास। पलवान।

नीलोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) नील कमल।

नीलोत्पली [संज्ञा पु.] १-शिव का एक अंश। २-चौद्ध महात्मा मंजुश्री का एक नाम।

नीलोद [संज्ञा पु.] (सं.) वह समुद्र या नदी जिसका पानी नीला हो।

नीलोफर [संज्ञा पु.] (फा.) १-नीलकमल। २-कुमुद। कोईं।

नीवँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मकान, घर या भवन आदि बनाने के समय उसका वह मूल-भाग जो दीवारों की दृढ़ता के लिये भूमि को खोद कर उसमें से दीवारों की जोड़ाई आरम्भ करके बनाया जाता है। २-किसी वस्तु या कार्य का आरम्भिक भाग। ३-जड़। मूल। ४-आधार।

नीवँ का पत्थर-१-असली सहारा। २-प्रारम्भिक कार्य या सहारा। ३-मकान के नीचे का सब से पहला पत्थर। *नीवँ जमाना, डालना या देना*-१-दीवार की जड़ जमाना। २-आरम्भ करना। सूत्रपात करना। ३-गर्भस्थित करना। *नीवँ पड़ना*-१-मकान बनना शुरू होना। २-आधार खड़ा होना। ३-आरम्भ होना। *नीवँ भरना*-दीवार के लिए खुदे गड्ढे में कंकड़-पत्थर भरना या जमाना *नीवँ होना*-आदि कारण या सहारा होना।

नीव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नीवँ'।

नीवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवसाय। व्यापार। २-व्यवसायी। ३-साधु। संन्यासी। ४-कीचड़। ५-जल।

नीवाक [संज्ञा पु.] (सं.) महँगी के समय अनाज की बढ़ी हुई मांग। २-अकाल। दुष्काल।

नीवानास [संज्ञा पु] (हिं.) जड़मूल से नाश। बरबादी। ध्वंस। [वि.] चौपट। नष्ट। बरबाद।

नीवार [संज्ञा पु.] (सं.) वह चावल जो बिना जोते-बोये आपसे आप उत्पन्न हों। पसाई के चावल। तिन्नी के चावल। मुन्यन्न। मुनियों के खाने का अनाज विशेष।

नीवि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमर में लपेटी हुई धोती की वह गांठ जिसे स्त्रियां पेट के नीचे सूत की डोरी से या यों ही बांधती हैं। २-सूत की डोरी जिससे स्त्रियां धोती की गांठ बांधती हैं। फुफुन्दी। नारा। इजारबन्द। ३-पूंजी। बारदाना। ४-होड़। दांव। ५-साड़ी धोती।

नीवी [संज्ञा स्त्री] (सं) देखो 'नीवि'।

नीवृत [संज्ञा पु.] (सं.) कोई भी आबाद स्थान।

नीव्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहिये का घेरा। २-चन्द्रमा। ३-रेवती नक्षत्र।

नीशार [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्म कपड़ा। कंबल। २-सरदी हवा आदि से बचाव के लिये परदा। कनात। ३-मसहरी।

नीस+ [संज्ञा पु.] (देश.) सफेद धतूरा।

नीसक* [वि.] (हिं) कमजोर। निर्बल।

नीसान*+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'निशान'।

नीसानी [संज्ञा स्त्री.] (?) तेईस मात्राओं का एक छंद जिसमें तेरह और दसवीं मात्रा पर विराम लगता है।

नीसुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ का भूमि में गड़ा वह कुन्दा जिस पर रखकर चारा या गन्ना

काटते हैं।

नीखू [संज्ञा पु.] (हिं.) गंडासे से चारा काटने का काठ का कुंदा जो भूमि में गड़ा रहता है।

नीहार [संज्ञा पु] (सं) १-कुहरा। २-पाला। ३-हिम। बरफ।

नीहारस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) बरफ का बड़ा टुकड़ा।

नीहारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ वह प्रकाश-पुंज जो अँधेरी रात में सफेद धारी की तरह दिखाई देता है।

नु [अव्य.] (सं.) सन्देह या अनिश्चितता सूचक अव्यय। यह सम्भावना तथा अवश्य के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। [संज्ञा पु.] अनुस्वार।

नुकता [संज्ञा पु.] (अ.) १-बिन्दु। बिंदी। २-फबती। लगती हुई उक्ति। ३-ऐब। दोष। ४-घोड़े के माथे पर बांधने का पट्टा या परदा। तिल्हारी।

नुकता-चीन [वि.] (फा) ऐब या दोष ढूढ़ने वाला या निकालने वाला। छिद्रान्वेषी।

नुकता-चीनी [संज्ञा स्त्री] (फा.) दोष या ऐब निकालने का काम। छिद्रान्वेषण।

नुकती [संज्ञा स्त्री] (फा.) बेसन की छोटी-छोटी बुंदिया। एक प्रकार की मिठाई।

नुकरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-घोड़े का सफेद रंग। २-चाँदी। [वि] सफेद रंग का (घोड़ा)।

नुकरी [संज्ञा स्त्री] (देश.) जलाशयों के पास रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया जिसके पैर सफेद और चोंच काली होती है।

नुकसान [संज्ञा पु.] (अ.) १-कमी। घाटा। २-क्षति। हानि। ३-बिगाड़। खराबी। दोष। अवगुण। विकार।

नुकसान उठाना-हानि सहना। पास से खोना *नुकसान पहुँचना*-हानि होना। नुकसान होना। *नुकसान पहुंचाना*-क्षतिग्रस्त करना। *नुकसान भरना*-कमी या घाटा पूरा करना। *(किसी को) नुकसान करना*-दोष उत्पन्न करना

नुकाई [संज्ञा स्त्री.] (देश) खुरपी से निराने का कार्य।

नुकीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. नुकीली] १-नोकदार जिसमें नोक निकली हो। २-नोकझोंक का। बांका। तिरछा। सुन्दर ढबका। सजीला।

नुकीली [वि] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'नुकीला'।

नुक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मकान, गली अथवा मार्ग पर आगे की ओर निकला हुआ कोना। २-पतला सिरा। ३-कोना। निकला हुआ कोना।

नुक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नोक। २-गेड़ी के खेल में एक लकड़ी।

नुक्स [संज्ञा पु.] (अ.) दोष। ऐब। खराबी। बुराई। २-त्रुटि। कसर।

नुखरना [क्रि. अ.] (देश.) भालू का चित्त लेटना (कलंदरों की बोली)।

नुखाट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भालू के मुख पर छड़ी की मार जो कलंदर उसे सिखाने या कोई भूल करने पर मारते हैं।

नुगदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नुकती'।

नुचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अंश या अंग से लगी वस्तु का झटके से खिंचकर अलग होना। खिंचकर उखड़ना। २-नाखून आदि से छिलना। खरोंचा जाना।

नुचवाना [क्रि. स.] (हिं.) नोचने में प्रवृत्त करना। नोचने देना।

नुजट [संज्ञा पु.] (?) संगीत की चौबीस शोभाओं में से एक।

नुत [वि] (सं.) जिसकी स्तुति अथवा प्रशंसा की गई हो। प्रशंसित। वंदित। स्तुत।

नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तुति। वंदना। २-पूजा।

नुत्त [वि.] (सं.) १-चलाया हुआ। क्षिप्त। २-प्रेरित।

नुत्फा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वीर्य। शुक्र। २-संतति। औलाद।

नुत्फा ठहरना-गर्भ रहना।

नुत्फाहराम [वि.](अ.) १-जिसकी उत्पत्ति व्यभिचार से हो। दोगला। २-कमीना। बदमाश (गाली)।

नुनखरा [वि.] (हिं.) स्वाद में खारा। नमकीन।

नुनखारा [वि.] (हिं.) स्वाद में नमक के सदृश्य खारा। नमकीन।

नुनना* [क्रि. स.] (हिं.) लुनना। खेत काटना।

नुनाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लावण्य। सुन्दरता। सलोनापन।

नुनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काश्मीर से सिक्किम तक और बरमा तथा दक्षिण भारत के पहाड़ों में पाया जाने वाला एक छोटी जाति का तूत

नुनेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालने वाला। नमक बनाने का रोजगार करने वाला। २-लोनिया। नोनिया। (पहले इस जाति के लोग नमक निकालने का काम करते थे)।

नुमाइंदा [संज्ञा पु.] (फा.) प्रतिनिधि।

नुमाइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दिखावट। दिखावा। प्रदर्शन। २-तड़क-भड़क। ठाटबाट। सजधज। ३-परिचय कराने के निमित्त नाना प्रकार की कौतुहलजनक वस्तुओं का प्रदर्शन करना। ४-वह मेला जहां अद्भुत, अनूठी और उत्तम-उत्तम वस्तुएं प्रदर्शनार्थ अनेक स्थानों से आती हैं।

नुमाईशगाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह स्थान जहाँ पर अद्भुत, अनूठी तथा उत्तम-उत्तम वस्तुएं प्रदर्शनार्थ रखी जाती हैं। प्रदर्शनी।

नुमाइशी [वि.] (फा.) १-जो केवल दिखावट के लिए हो। दिखाऊ। दिखौआ। २-जि ऊपरी तड़क-भड़क हो भीतर कुछ सार न हो

नुसखा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह कागज जिस पर रोगी के लिए औषध और सेवन-विधि लिखी रहती है। २-अवसर या योग।

नुसखा बाँधना-हकीम या वैद्य के लिखे अनुसार दवाइयाँ बांधना। पंसारी या अत्तार का काम करना। नुसखा लिखना- के रोग की दवा लिखना।

नुहरना+ [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'निहुरना'।

नूत [वि.] (सं) १-नया। नूतन। २-अनोखा। अनूठा।

नूतन [वि.] (सं.) १-नया। नवीन। २-ताजा। हाल का।

नूतनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवीनता। नयापन। नूतन होने का भाव।

नूतनत्व [संज्ञा पु.] (सं) नवीनता। नयापन। नूतनता।

नूद [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत।

नूधा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का तम्बाकू।

नून [संज्ञा पु.] (?) १-आल। २-आलजाति की एक लता जिसमें से एक प्रकार का लाल रंग निकलता है। यह दक्षिण भारत, आसाम, बरमा आदि देशों में होती है। +[संज्ञा पु.] (हिं.) नमक। *नून-तेल*-गृहस्थी का सामान। [वि.] (हिं.) देखो 'न्यून'।

नूनताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'न्यूनता'।

नूनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों की लिंगेन्द्रिय

नूपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्रियों का एक गहना जो पैर में पहना जाता है। पैंजनी। घुंघरू। २-नगण के पहले भेद का नाम। ३-इक्ष्वाकु वंशीय एक राजा।

नूर [संज्ञा पु.] (अ.) १-ज्योति। प्रकाश। आभा। २-कांति। शोभा। श्री। ३-ईश्वर का एक नाम। ४-संगीत के बारह स्थानों में से एक।

नूर का तड़का-प्रातःकाल। *नूर का पुतला*-अति रूपवान। *नूर बरसना*-बहुत अधिक प्रभा या शोभा प्रगट होना।

नूरबाफ [संज्ञा पु.] (अ., फा.) जुलाहा।

नूरा [संज्ञा पु.] (?) वह कुश्ती जो आपस में मिलकर लड़ी जाय अर्थात दोनों पहलवान एक ही अखाड़े के हों। (पहलवानों की बोली) +[वि.] नूरवाला। तेजस्वी।

नूरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी और सुन्दर चिड़िया।

नूह [संज्ञा पु.] (अ.) शामी या इबरानी (यहूदी, ईसाई, मुसलमान आदि) के मतानुसार एक पैगम्बर का नाम जो एक बार के भारी तूफान में जब सारी सृष्टि जलमग्न हो गई थी केवल उनका परिवार ही शेष रहा था और कुछ पशु। कहा जाता है कि उन्हीं से फिर नये सिरे से सृष्टि चली।

पु.] (सं.) १-नर। मनुष्य। २-मनुष्य ति। ३-शतरंज की गोट। सूर्य घड़ी की ल।

[संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य की खोपड़ी।

[संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ते के समान व्यवहार करने वाला मनुष्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-नृसिंह अवतार। मनुष्यों में सिंह के समान पराक्रमी पुरुष।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-महाभारत के अनुसार राजा का नाम जो बड़े दानी थे परन्तु ब्राह्मण के शाप से उनको गिरगिट की योनि मिली। २-मनु के एक पुत्र का नाम। यौधेय वंश का आदि पुरुष नृगा के गर्भ से उत्पन्न और उशीनर का पुत्र था।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) उशीनर नामक राजा की पत्नी का नाम।

[वि.] (सं.) नर-घातक।

[वि.] (सं.) नर-भक्षक। मनुष्य को खाने वाला।

[संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य का मूत्र।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्यजाति।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नर्त्तक'।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर्तन। नाच। नृत्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) नर्त्तक। नाचने वाला।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-नर्त्तक। २-नरहिंसक।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-नाच। नृत्य। २-मूक अभिनय। अंगविक्षेप। मटकना।

[क्रि. अ.] (हिं.) नाचना। नृत्य करना

[संज्ञा पु.] (सं.) संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ-पांव हिलाने, उछलने-कूदने आदि का व्यापार। संगीत-शास्त्रानुसार नृत्य दो प्रकार का होता है-ताण्डव तथा लास्य। जिसमें उग्र तथा उद्धत चेष्टा हो उसे तांडव और जो सुकुमार अंगों से किया जाय तथा जिससे शृङ्गार आदि कोमल रसों का संचार हो उसे लास्य कहते हैं। धर्मशास्त्रानुसार नृत्य से जीविका चलाने वाले निंद्य कहे जाते हैं। नाच। नर्त्तन।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नर्त्तकी। नाचने वाली।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव (जिन्हें तांडव नृत्य प्रिय है)। २-कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाचघर। वह स्थान जहां नाच होता हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) नाचने का स्थान।

[संज्ञा पु.] (सं.) सेना या फौज का चारों ओर का घेरा।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-ब्राह्मण।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-ब्राह्मण।

नृप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नरपति।

नृपकंद, नृपकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) लाल प्याज या पलांडु।

नृपगृह [संज्ञा पु.] (सं.) राजप्रासाद। महल।

नृपंजय [संज्ञा पुं.] (सं.) एक पुरुवंशीय राजा का नाम।

नृपतरु [संज्ञा पु.] (सं.) खिरनी का पेड़।

नृपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा होने का भाव। राजापन।

नृपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-कुबेर।

नृपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनुष्यों का पालन करने वाली स्त्री।

नृपत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नृपता। राजापन।

नृपद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमलतास। २-खिरनी का पेड़।

नृपद्रोही [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

नृपनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजनीति।

नृपप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल प्याज। २-सरकंडा। रामशर। ३-एक प्रकार का बाँस। ४-जड़हन धान। ५-आम का पेड़। ६-पहाड़ी तोता। राजसुग्गा।

नृपप्रियफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैंगन।

नृपप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केतकी। २-पिंडखजूर।

नृपमंदिर, नृपमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) राजभवन। राजगृह। महल।

नृपमान [संज्ञा पु.] (सं.) वह संगीत जो राजा के भोजन करने के समय बजाया जाता है।

नृपलिंग, नृपलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) राजचिह्न विशेषकर सफ़ेद छाता।

नृपवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) राजान्नवृक्ष।

नृपवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी।

नृपवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सोनालु का पेड़।

नृपशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-नरपशु। २-मूर्ख।

नृपसभ [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं का समारोह।

नृपसभा [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं की सभा। नरेन्द्रमण्डल।

नृपसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजकन्या। राजकुमारी। २-छछूंदर।

नृपात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) राजकुमार। राजा का पुत्र।

नृपात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजकुमारी। राजकन्या। २-कडुवा घीया। कड़ुई तूंबी।

नृपाध्वर [संज्ञा पु.] (सं.) राजसूययज्ञ।

नृपानुचर [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का नौकर।

नृपान्न [संज्ञा पु.] (सं.) राजभोग-धान।

नृपाभीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह बाद्य संगीत जो राजा के भोजन करते समय होता है।

नृपामय [संज्ञा पु.] (सं.) राजयक्ष्मा नामक रोग। क्षयरोग।

नृपाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। [वि.] मनुष्यों का पालन करने वाला।

नृपालय [संज्ञा पु.](सं.) राजमहल। राजप्रासाद।

नृपावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न जिसे राजावर्त्त भी कहते हैं।

नृपासन [संज्ञा पु.] (सं.) राजसिंहासन। तख्त।

नृपाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा कहलाने वाला। राजा-नामधारी। २-लाल प्याज।

नृपोचित [वि.] (सं.) जो राजाओं के योग्य हो। [संज्ञा पु.] १-काला बड़ा उरद। राजमाष। २-लोबिया।

नृमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन। दौलत। संपत्ति २-भागवत के अनुसार प्लक्षद्वीप की एक महानदी का नाम।

नृमणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का भूत या पिशाच जो बच्चों को लगकर कष्ट पहुँचाता है।

नृमर [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस। दैत्य। [वि.] मनुष्यों को मारने वाला।

नृमिथुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री-पुरुष का जोड़ा। २-मिथुनराशि।

नृमेध [संज्ञा पु.] (सं.) नरमेधयज्ञ। वह यज्ञ जिसमें मनुष्य का बलिदान दिया जाता है।

नृयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) पंचयज्ञों में से एक जिसका करना गृहस्थ के लिये कर्त्तव्य है। अतिथि-पूजा। अभ्यागत-सत्कार।

नृलोक [संज्ञा पु.] (सं.) मर्त्यलोक। मनुष्यलोक। नरलोक।

नृवराह [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का वाराहरूपधारी अवतार।

नृवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) नरवाहन। कुबेर।

नृवेष्टन (संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

नृशंस [वि.] (सं.) १-लोगों को कष्ट अथवा पीड़ा पहुँचाने वाला। क्रूर। निर्दय। २-अनिष्टकारी। अत्याचारी। जालिम।

नृशंसता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नृशंस होने का भाव निर्दयता। क्रूरता।

नृशृंग, नृशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) असम्भावना के उदाहरण के लिये मनुष्य के सींग। अलीकपदार्थ। मनुष्य के सींग के समान अनहोनी बात।

नृषदन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञशाला। यज्ञगृह।

नृसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्यों में सिंह या श्रेष्ठ अथवा उत्तम पुरुष। २-विष्णु भगवान का चौथा अवतार जो आधे पुरुष और आधे सिंह रूप में हिरण्यकशिपु को मारने के लिये हुआ था। ३-एक रतिबंध।

नृसिंह-चतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैशाख मास

'की शुक्ला चतुर्दशी जिस दिन नृसिंहदेव के निमित्त व्रत किया जाता है।

नृसिंहपुराण [संज्ञा पु] (सं) एक उपपुराण।

नृसिंहपुरी [संज्ञा पु] (सं) एक तीर्थ जो मुलतान में बताया जाता है।

नृसिंहवन [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के अनुसार कूर्म विभाग के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक देश का नाम।

नृसोम [संज्ञा पु](सं) वह जो मनुष्यों में चंद्रमा के सदृश हो। नरश्रेष्ठ।

नृहन् [संज्ञा पु.] (सं.) नर-घातक।

नृहरि [संज्ञा पु] (सं.) नृसिंह।

ने [प्रत्य.] (हिं.) सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता का चिह्न जो उसके पीछे लगाया जाता है। सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता की विभक्ति।

नेई + [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'नीव'।

नेउछाउरि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'न्योछावर', 'निछावर'।

नेउतना+ [क्रि. स.](हिं.) देखो 'नेवतना' 'न्योतना'।

नेउता+ [संज्ञा पु.](हिं) देखो 'नेवता' 'न्योता'।

नेउला [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'नेवला'।

नेउली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हठयोग का एक भेद।

नेक [वि.] (फा.) १-अच्छा। भला। उत्तम। २-शिष्ट। सज्जन। ※+[वि.] (हिं.) थोड़ा। तनिक। जरा-सा। किंचित। कुछ। [क्रि. वि.] (हिं.) थोड़ा। तनिक। जरा।

नेक-चलन [वि.](हिं.) अच्छे चालचलन वाला। सदाचारी।

नेक-चलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सदाचार। भलमनसाहत। सुचाल।

नेकनाम [वि] (फा.) जिसका अच्छा नाम हो। जो अच्छा प्रसिद्ध हो। यशस्वी।

नेकनामी [संज्ञा स्त्री] (फा.) सुख्याति। नामवरी कीर्ति। सुयश।

नेकनीयत [वि.] (अ.) १-अच्छे या शुभ सङ्कल्प वाला। जिसका आशय या उद्देश्य अच्छा हो उत्तम विचार वाला। उदाराशय। भलाई का विचार रखने वाला।

नेकनीयती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नेकनीयत होने का भाव। अच्छा सङ्कल्प। २-ईमानदारी।

नेकबख्त [वि.](फा.) १-भाग्यवान। खुशकिस्मत २-अच्छे स्वभाव वाला। सुशील।

नेकर [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार का अंग्रेजी जांघिया जिसमें बगलों में जेबें होती हैं। हाफपैंट।

नेकरी [संज्ञा स्त्री.] (?) समुद्र की लहर का थपेड़ा जिससे जहाज एक ओर बढ़ता है। हाँक।

नेकी [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-भलाई। उपकार। २-सज्जनता। भलमनसी। उत्तम व्यवहार।
नेकीबदी-१-भलाई-बुराई। पाप-पुण्य। २-हित-अहित। उपकार-अपकार। *नेकी और पूछपूछ*-किसी की भलाई या उपकार करने में उससे पूछने की क्या आवश्यकता।

नेकु※+ [वि.] (हिं.) तनिक। थोड़ा। किंचित। कुछ। [क्रि. वि] (हिं) थोड़ा। तनिक। जरा।

नेग [संज्ञा पु.](हिं.) १-विवाहादि के शुभावसरों पर संबंधियों तथा आश्रितों आदि को कुछ धन देने की रीति या प्रथा। २-वह वस्तु या धन जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, नौकरों-चाकरों नाई आदि को नियमानुसार दिया जाता है। बंधा हुआ पुरस्कार। रीति। प्रथा।
नेग करना-शुभ महूर्त्त या साइत में आरम्भ करना। *नेगलगना*-१-रीति के अनुसार कुछ देना। २-काम में आ जाना। सार्थक या सफल होना।

नेगचार [संज्ञा पु.](हिं.) १-विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधी या आश्रितों को दस्तूर देने की प्रथा या रीति। २-इस प्रकार दिया जाने वाला धन या वस्तु।

नेगजोग [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'नेगचार'।

नेगटी※ [संज्ञा पु](हिं.) नेग या रीति का पालन करने वाला।

नेगी [संज्ञा पु.] (हिं.) नेग लेने या पाने का अधिकारी। नेग पाने वाला।

नेगीजोगी [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह आदि के शुभ अवसरों पर नेग लेने या पाने का अधिकारी।

नेचरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रकृति के अतिरिक्त ईश्वर आदि को न मानने वाला। नास्तिक। लोकायतिक।

नेचवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) पलंग का पाया।

नेछावर※[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निछावर'।

नेजक [संज्ञा पु.] (सं.) रजक। धोबी।

नेजन [संज्ञा पु.] (सं.) धुलाई का काम। सफाई का काम।

नेजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-भाला। बरछा। २-साँग। निशान।
नेजा हिलाना-बरछा या बल्लम फिराना।

नेजाबदार [संज्ञा पु.] (सं.) भाला या राजाओं का निशान उनके आगे लेकर चलने वाला।

नेजाल※ [संज्ञा पु.](हिं.) भाला। बरछा।

नेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक से निकलने वाला कफ या मल।
नेटा बहना-गंदा और मैलाकुचैला रहना।

नेठना※ (क्रि. अ.) (हिं.) देखो 'नाठना'।

नेड़े+ [क्रि. वि.] (हिं.) निकट। पास। नजदीक।

नेत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ठहराव। निर्धारण। किसी बात का स्थिर होना। २-निश्चय। सकल्प। इरादा। ३-व्यवस्था। आयोजन। ४-मथानी की रस्सी।
[संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार का
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो नेती
'नीयत'।

नेतक※ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चूना।

नेतली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की डोरी।

नेता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री नेत्री] १- रास्ता दिखाने के लिए उनके आगे वाला। अगुवा। नायक। २-प्रभु। मालिक ३-काम को चलाने वाला। निर्वाहक। र्त्तक। ४-नीम का पेड़। विष्णु। की रस्सी।

नेतागीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नेता होने का भाव। २-नेतां का काम। नेता का पद। नायकत्व। सरदारी।

नेति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक संस्कृत वाक्य जिसका अर्थ है 'इति' या अन्त नहीं है तथा जिसका प्रयोग ईश्वर की महिमा के वर्णन के सम्बन्ध में होता है। २-हठयोग का एक भेद।

नेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह रस्सी जिसमें मथानी लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मथानी फिरती है और दूध या दही मथा जाता है।

नेती-धोती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हठयोग की क्रिया जिसमें मुंह के रास्ते पेट में कपड़े की लम्बी धज्जी डालकर आँतें साफ की जाती हैं। धौति।

नेतृ [संज्ञा पु.] (सं.) १-नेता। अगुआ। संचालक व्यवस्थापक। अग्रगन्ता। २-आज्ञा देने वाला। गुरु। ३-प्रधान। मालिक। मुखिया ४-दंड देने वाला। ५-मालिक। स्वामी। किसी अभिनय का मुख्य पात्र।

नेतृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-नेता होने का भाव। २-नेता का कार्य। ३-नेता का पद। ४-नायकत्व। सरदारी।

नेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँख। २-मथानी की रस्सी। ३-एक प्रकार का महीन रेशमी वस्त्र। पेड़ की जड़। वृक्षमूल। ५-गाड़ी। ६-दो की संख्या। ७-नक्षत्र। तारा। ८- की सलाई। कटीटा। ९-नाड़ी। १०-

नेत्र-कनीनिका [संज्ञा स्त्री.](सं) आँख की पुतली। आँख का तारा।

नेत्रकोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँख का ढेला। २- फूल की कली।

नेत्रगोचर [वि.] (सं.) दृष्टि के भीतर। निगाह के नीचे।

नेत्रछद [संज्ञा पु.] (सं) पलक।

नेत्रज [संज्ञा पु.] (सं.) आँसू।

नेत्रजल [संज्ञा पु.] (सं.) आँसू'

नेत्रपर्यंत, नेत्रपर्यन्त [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का कोना।

नेत्रपाक [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का एक रोग।

नेत्रपिंड, नेत्रपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्र-गोलक आँख का एक ढेला। २-बिल्ली।

नेत्रपुष्करा [संज्ञा स्त्री.](सं.) रुद्रजटा नामक लता।

नेत्रबंध, नेत्रबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) आँखमिचौनी का खेल।

नेत्रबाला [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगन्धबाला। कचमोद।

नेत्रभाव [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत या नृत्य में आँखों की चेष्टा से सुख-दुःख आदि का भाव प्रदर्शित करने की कला जिसमें अन्य अंग हिलते डोलते नहीं।

नेत्रमंडल, नेत्रमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का घेरा। आँख का ढेला।

नेत्रमल [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का कीचड़।

नेत्रमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्र-गोलक से मस्तिष्क तक गया हुआ सूत्र जिससे अन्तःकरण में दृष्टिज्ञान होता है।

नेत्रमीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यवतिक्ता लता। जिसके सेवन से आँखें बंद रहती हैं।)

नेत्रयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र (इनके गौतम के शाप से सारे शरीर में सहस्र-योनि चिह्न हो गये थे जो पीछे नेत्र के आकार के बन गये)। २-चन्द्रमा (यह अत्रि की आंख से उत्पन्न हुए थे)।

नेत्ररंजन, नेत्ररञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) काजल। कज्जल। सुर्मा।

नेत्ररोग [संज्ञा पु.] (सं.) आंख में होने वाले ७६ रोग जिनका उल्लेख वैद्यक में हैं। यह इस प्रकार है-१०-वायुजन्य, १३ कफजन्य, १६ रक्तजन्य, १० पित्तज, २५ सन्निपातज तथा २ बाहरी हैं।

नेत्ररोगहा [संज्ञा पु.] (सं.) वृश्चिकालीवृक्ष।

नेत्रलोम [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की बिरनी। बरौनी।

नेत्रवस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की छोटी पिचकारी।

नेत्रवस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) घूंघट विशेष।

नेत्रवारि [संज्ञा पु.] (सं.) आंसू।

नेत्रविट् [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का कीचड़।

नेत्रविष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दिव्य सर्प जिनकी आंख में विष होता है।

नेत्रसंधि, नेत्रसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आंख का कोना।

नेत्रस्तंभ, नेत्रस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का पथरा जाना। आंखों का हिलना-डुलना बन्द हो जाना।

नेत्रस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) आंखों से पानी बहना

नेत्रांजन, नेत्राञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) आंखों का सुरमा।

नेत्रांत, नेत्रान्त [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख के कोने और कान के बीच का भाग। कनपटी।

नेत्रांबु, नेत्राम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) नेत्रजल। आंसू

नेत्रांभस्, नेत्राम्भस् [संज्ञा पु.] (सं.) आंसू।

नेत्राभिष्यंद, नेत्राभिष्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) आंख आने का रोग जो छूत के कारण फैलता है।

नेत्रामय [संज्ञा पु.] (सं) आँख का एक रोग।

नेत्रारि [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर। सेंहुड़।

नेत्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की छोटी पिचकारी।

नेत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लोगों का पथ प्रदर्शन करने के लिए उनके आगे चलने वाली। अग्रगामिनी। अगुआ। स्त्री-नेता। २-शिक्षयित्री ३-नाड़ी। धमनी। ४-लक्ष्मीदेवी। ५-नदी।

नेत्रोत्सव [संज्ञा पु.] कोई भी मनोहर वस्तु जिसके देखने से नेत्रों को आनन्द मिले। दर्शनीय वस्तु।

नेत्रोपम [फल] [संज्ञा पु] (सं) बादाम।

नेत्रौषध [संज्ञा पु] (सं.) १-आंख की दवा। २-पुष्पकसीस।

नेत्रौषधी [संज्ञा स्त्री.] (सं) मेढ़ासिंगी।

नेत्र्यगण [संज्ञा पु.] (सं.) रसौत, त्रिफला, लोध ग्वारपाठा, बनकुलथी आदि नेत्रों के लिए उपकारी औषधियों का समूह।

नेदिष्ट [वि] (सं.) १-निकट का। पास का। २ निपुण। [संज्ञा पु.] अंकोटवृक्ष। ढेरे का पेड़।

नेदिष्टी [वि.] (सं.) समीप का। निकटस्थ। [संज्ञा पु.] सहोदर भाई।

नेदिष्ठ [वि.] (सं.) अत्यन्त निकट। निकटतम्।

नेदीयस् [वि.] (सं) [स्त्री नेदीयसी] निकटतर

नेदीयसी [वि.] (सं.) [स्त्री. ध.] निकटतर।

नेनुआ [संज्ञा पु.] (हिं) घियातोरई नामक तरकारी। घिवरा।

नेनुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नेनुआ'।

नेप [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-घर का पुरोहित। २-उदक। जल।

नेपचून [संज्ञा पु.] (फ्रांसीसी) सूर्य की परिक्रमा करने वाला एक ग्रह जिसके सम्बन्ध में सन् १८४६ से पूर्व कोई नहीं जानता था। इस ग्रह का व्यास ३७००० मील है। यह सूर्य से लगभग २८०००००००० मील की दूरी पर है। इसे सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करने में १६४ वर्ष (हमारे) लगते हैं।

नेपथ्य [संज्ञा पु.] (सं) १-अभिनय आदि में रङ्गमंच के परदे के पीछे का वह भाग या स्थान जहां नाटक के पात्र अपना रूप भरते हैं। वेश-स्थान। २-शृङ्गार। भूषण। सजावट। ३-पर्दे के पीछे का स्थान।

नेपथ्य-विधान [संज्ञा पु.] (सं.) उस स्थान की व्यवस्था जहां अभिनयकर्ता अपना रूप भरते हैं।

नेपाल [संज्ञा पु.] (देश.) भारत के उत्तर में एक रूखा पहाड़ी देश जो हिमालय के तट पर है। [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा।

नेपालजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनःसिल। मैनसिल सिंगरफ।

नेपालजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'नेपालजा'।

नेपालनिंब, नेपालनिम्ब [संज्ञा पु.] (सं) नेपाल की नीम। एक प्रकार का चिरायता। वैद्यक के अनुसार यह नीम कुछ गरम, योगवाही, हलकी, कड़ुई तथा पित्त, कफ, सूजन, रुधिर रोग, प्यास और ज्वर को दूर करने वाली होती है।

नेपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) मनःशिला। मैनसिल। सिगरफ।

नेपाली [वि] (हिं.) १-नेपाल का। नेपाल निवासी। २-नेपाल-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] नेपाल में रहने वाला आदमी। [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-जंगली छुहारे का वृक्ष या उसके फल। २-मनःशिल। मैनसिल।

नेपुर+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'नूपर'।

नेफा [संज्ञा पु.] (फा.) पायजामे, लहंगे आदि में वह स्थान जिसमें नाड़ा, डोरा या इजारबन्द डाला जाता है।

नेब* [संज्ञा पु.] (हिं.) कार्य में सहायता देने वाला। सहायक। मन्त्री। दीवान।

नेबुआ+ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'नीबू'

नेबू+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'नीबू'।

नेम [संज्ञा पु.] (सं) १-काल। समय। २-अवधि ३-खंड। टुकड़ा। ४-प्राकार। दीवार। ५-कैतव। छल। ६-अर्द्ध। आधा। ७-गर्त गड्ढा। ८-अन्य। और। ९-सायंकाल। १०-मूल। जड़। [संज्ञा पु.] (हिं) १-नियम। बंधी हुई या बराबर होने वाली बात। कायदा। २-रीति। दस्तूर। ३-धार्मिक क्रियाओं का पालन।

यौ०-नेमधरम-पूजापाठ। व्रत-उपवास आदि

नेमत [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'न्यामत'।

नेमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चक्रपरिधि। पहिये का घेरा या चक्र। २-कूएँ की जगत। कूएँ के चारों ओर का ऊँचा स्थान। ३-कूएँ की जमवट। ४-किनारे का हिस्सा। ५-कूएँ के किनारे लकड़ी का वह ढाँचा जिस पर रस्सी रखते और जिसमें प्रायः घिरनी लगी रहती है। [संज्ञा पु.](सं.) १-नेमिनाथ तीर्थंकर। २-तिनिश या तिनसुना वृक्ष। ३-भागवत के

अनुसार एक दैत्य का नाम । ४-वज्र ।

नेमिचक्र [संज्ञा पु] (सं) परीक्षित के वंश के एक राजा जो असीमकृष्ण के पुत्र थे ।

नेमिवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं) सफेद खैर का पेड़ ।

नेमी [संज्ञा पु] (हिं.) तिनिशवृक्ष । +[संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'नेमि' [वि.] (हिं.) नियम का पालन करने वाला । २-नियमित रूप से पूजापाठ, व्रत, उपवास आदि धार्मिक कृत्य करने वाला ।

नेय [वि] (सं) लाने योग्य ।

नेयार्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं) काव्यदोष का एक भेद ।

नेर+ [क्रि. वि] (हिं.) देखो 'नियर' ।

नेरता* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) नैर्ऋत्य दिशा । पश्चिम-दक्षिण का कोना ।

नेरावाती [संज्ञा स्त्री.] (देश) लदाख से भूटान तक पाई जाने वाली नीले रंग की भेड़ जिसकी ऊन के कम्बल आदि बनते हैं ।

नैराना+ [क्रि. अ., क्रि. स.] (हिं.) देखो 'नियराना' ।

नेरे [क्रि. वि.] (हिं.) निकट । पास । समीप ।

नेव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नेब' । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'नींव' ।

नेवग* [संज्ञा पु.] (हिं.) नेग ।

नेवगी [संज्ञा पु.] (हिं) नेगी ।

नेवछावर+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'निछावर' ।

नेवज* [संज्ञा पु.] (हिं.) देवता को अर्पित करने की वस्तु । खाने-पीने की वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय । भोग । नैवेद्य ।

नेवजा [संज्ञा पु](फा.) चिलगोजा ।

नेवजी [संज्ञा स्त्री.](?) एक फूल का नाम ।

नेवत+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'नेवता' 'न्योता' ।

नेवतना+ [क्रि. स.](हिं.) निमंत्रण करना । नेवता भेजना ।

नेवतहरी [संज्ञा पु.] (हिं) जिसको निमंत्रण दिया जाय ।

नेवता [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'न्योता' ।

नेवतारी+ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'न्योतहरी' ।

नेवना* [क्रि. अ.] (हिं.) भुकना । नवना ।

नेवर* [संज्ञा पु.](हिं.) पैर का एक गहना । नूपुर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पैर की ठोकर या टाप की रगड़ से घोड़े के पैर में होने वाला घाव । घोड़ों के पैर से पैर की रगड़ । * [वि.] (हिं.) बुरा खराब ।

नेवरना* [क्रि. अ.] (हिं) १-निवारण होना । समाप्त होना ।

नेवरा [संज्ञा पु.] (देश) लाल कपड़े की, झारी की खोली ।

नेवल [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'नेवर' ।

नेवला [संज्ञा पु] (हिं) गिलहरी की तरह का चार पांच अगुल चौड़ा और सवा हाथ लम्बा पिंडज जन्तु जो भूरे रंग का होता है । यह सांप को खा जाता है ।

नेवा [संज्ञा पु. (हिं.) १-रीति । रिवाज । दस्तूर । कहावत । लोकोक्ति । [वि] (हिं) नाईं । समान । तरह । भाँति । [वि] चुप । मौन ।

नेवाज* [वि.] (हिं) देखो 'निवाज' ।

नेवाजना* (क्रि. स.] (हिं) अनुग्रह करना । निवाजना ।

नेवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'निवाड़' ।

नेवार [संज्ञा पु.] (देश.) नेपाल की आदिवासी जाति का नाम । [संज्ञा पु , संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'निवाड़' 'निवार' ।

नेवारना* [क्रि. स.] (हिं) देखो 'निवारना' ।

नेवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जूही या चमेली की जाति का एक सफेद फूलवाला पौधा जो बरसात में अधिक फूलता है । इसके फूलों में बड़ी भीनी-भीनी महक आती है ।

नेष्टा [वि.] (सं.) एक ऋत्विक् । त्वष्टा देवता ।

नेष्टु [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का ढेला ।

नेष्टृ [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयाग में यज्ञ करने वाले जिनकी संख्या १६ होती है ।

नेस [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगली पशुओं का लम्बा और नुकीले दाँत जिनसे वे काटते हैं ।

नेसकुन [संज्ञा पु.] (देश) (कलंदर की बोली में) बन्दरों का जोड़ा खाना ।

नेसुक*+ [वि.] (हिं) तनक । थोड़ासा । जरा । [क्रि वि.] (हिं.) थोड़ा । जरा । टुक । तनक ।

नेसुहा* [संज्ञा पु.] (हिं) चारा या गन्ना काटने के लिए भूमि में गाड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा ।

नेस्त [वि] (फा.) जो न हो । जिसका कोई अस्तित्व न हो ।

यौ० नेस्त-नाबूद-पूर्णतया नष्टभ्रष्ट ।

नेस्ती [संज्ञा स्त्री.] [फा.] १-अनस्तित्व । आलस्य ३-नाश । बर्बादी ।

नेह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्नेह । प्रीति । प्यार । प्रेम चिकना । तेल या घी ।

नेही+ [वि.] (हिं) स्नेह करने वाला । प्रेमी । स्नेही ।

नै [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-देखो 'नय' । २-नदी' [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बांस की नली । २-हुक्के की निगाली । ३-बांसुरी ।

नैऋत* [वि.] (हिं.) देखो 'नैर्ऋत्य' । [संज्ञा पु.] देखो 'नैर्ऋत्य' ।

नैक [वि] (हिं.) देखो 'नेक' ।

नैकचर [वि.] (सं.) जो अकेले न चलते हों, झुंड में चलते हों । झुण्ड बनाकर चलने वाले । जैसे-सूअर, हिरन ।

नैकटिक [वि.] (सं.) निकटवर्ती । समीप का । [संज्ञा.पु.] साधु । भिक्षुक ।

नैकट्य [संज्ञा पु] (सं) निकट होने का भाव निकटता ।

नैकध [अव्य.] (सं) अनेक बार । एक से अधिक बार ।

नैकभेद [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का । कई तरह का ।

नैकरूप [वि] (सं.) अनेक रूप वाला । नाना रूप वाला । [संज्ञा पु.] परमेश्वर । परब्रह्म ।

नैकशः [वि.] (सं.) अनेक बार । कई दफा मरतबा ।

नैकशृंग, नैकशृङ्ग [संज्ञा पु] (सं) विष्णु का एक नाम ।

नैकषेय [संज्ञा पु.] (सं) राक्षस । दानव । निकषा के वंशज ।

नैकसानुचर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

नैकु [वि.] (हिं.) देखो 'नेकु' ।

नैकृतिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैकृतिकी] १-बेईमान । झूठा । २-कमीना । दुष्ट । नीच । ३-घुन्ना । रूखा । ४-कटुभाषी । कड़ुवा बोलने वाला । ५-निष्ठुर ।

नैकृतिकी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-कटुभाषिणी । २-निष्ठुर हृदय । ३-दुष्टा । दुर्शीला ।

नैगम [वि.] (सं.) [स्त्री. नैगमी] १-निगम सम्बन्धी । २-जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो । [संज्ञा पु.] १-वेद का व्याख्याकार या टीकाकार । २-उपनिषद । ३-युक्ति । उपाय ४-विवेकपूर्ण आचरण । ५-नागरिक । व्यापारी । सौदागर । महाजन ।

नैगमनय [संज्ञा पु.] (सं.) वह नय या तर्क जो द्रव्य तथा पर्याय दोनों को सामान्य विशेष युक्ति मानता हो और कहता हो कि सामान्य के बिना विशेष तथा विशेष के बिना सामान्य नहीं रह सकता । (जैन) ।

नैगमेय [संज्ञा पु.](सं.) १-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम । २-सुश्रुत के अनुसार नैगमेय नामक बालग्रह ।

नैगमेष [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत में वर्णित नौ बाल ग्रहों में से नवां जिसके द्वारा पीड़ित होने से बच्चों के मुंह से फेन गिरता है, ज्वर होता है, दृष्टि ऊपर की ओर स्थिर रहती है तथा देह से चरबी की सी गन्ध आती है ।

नैघंटुक, नैघण्टुक [संज्ञा पु] (सं) १-वेद का शब्दकोष । वैदिक शब्दों का कोष । २-शब्द कोष ।

नैचा [संज्ञा पु] (फा.) हुक्के की दोहरी नली जिसके एक किनारे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे छोर को मुंह में लेकर धुआं खींचा जाता है ।

नैचाबन्द [संज्ञा पुं.] (फा) नैचा बनाने वाला ।

नैचाबन्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) नैचा बनाने का काम ।

नैचिक [संज्ञा पु.] (सं.) गाय, बैल आदि का सिर या माथा।

नैचिकी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक प्रकार की उत्तम गौ। अच्छी गाय।

नैची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुएं के पास की वह ढालु राह या भूमि जिस पर बैल चरसा खींचते समय चलते हैं। रपट। पैढ़ी।

नैचुल [वि.] (सं.) निचुल-सम्बन्धी। हिज्जलवृक्ष सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] निचुल का फल या बीज।

नैज [वि.] (सं.) निज-सम्बन्धी। अपना।

नैटी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दुधिया घास।

नैक* [संज्ञा पु.] (हिं.) सुअवसर। अच्छा मौका

नैतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नरक। २-पाताल।

नैतलसद्म [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

नैतिक [वि.] (सं.) नीति-सम्बन्धी। नीतियुक्त।

नैतिक-आभार [संज्ञा पु.] (सं.) नैतिक उपकार या अहसान।

नैतिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नैतिक होने का भाव। सदव्यवहारता। सदाचार।

नैतिक-प्रकृति [संज्ञा स्त्री.] सदव्यवहार शील प्रकृति या स्वभाव।

नैतिकबल [संज्ञा पु.] (सं.) सदाचरण का बल या शक्ति।

नैतिकविजय [संज्ञा स्त्री] (सं.) सद्-व्यवहार युक्त आचरण करने के कारण दूसरे के हृदय पर अंकित भाव जिससे वह आभार प्रदर्शित करे। मॉरल-विक्टरी।

नैतिकविधान [संज्ञा पु.] (सं.) सदव्यवहारयुक्त आचरण-सम्बन्धी नियम या कायदे मॉरल-लॉ

नैतिकस्तर [संज्ञा प.] (सं.) १-मानसिक अवस्था। २-सेना की नैतिक शक्ति।

नैत्य [वि.] (सं.) १-नित्य का। २-नित्य दिया जाने वाला। [संज्ञा पु.] नित्य का कर्म।

नैत्यक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैत्यकी] १-सदैव अनुष्ठेय। नियमित रूप से। प्रतिदिन करने का। २-अनिवार्य। जो टल न सके।

नैत्यकी [वि.] (सं.) [स्त्री प्र.] १-प्रतिदिन करने की। २-अनिवार्य जो। टल न सके।

नैत्यिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैत्यिकी] देखो 'नैत्यक'।

नैत्यिकी [वि.] (सं.) देखो 'नैत्यकी'।

नैदाघ [वि.] (सं.) ग्रीष्मऋतु-संबंधी। गरमी का। निदाघ-सम्बन्धी।

नैदाघिक [वि.] (सं.) निदाघ-सम्बन्धी। ग्रीष्म का।

नैदाघीय [वि.] (सं.) निदाघ-सम्बन्धी।

नैदानिक [संज्ञा पु.] (सं) निदान-शास्त्र विशारद। [वि.] रोगों का निदान जानने वाला।

नैदेशिक [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञा पालन करने वाला। नौकर। दास।

नैद्र [वि.] (सं.) निद्रा-सम्बन्धी।

नैधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निधन। मरण। २-फलित-ज्योतिष के अनुसार आठवां स्थान।

नैधानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुस्मृति के अनुसार पांच प्रकार की सीमाओं में से एक। वह सीमा जिसका चिह्न गड़ा हुआ कोयला या तुष हो।

नैन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नयन। नेत्र। २-नवनीत। मक्खन।

नैनसुख [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।

नैनू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उभरे हुए बेलबूटे का एक प्रकार का सूती कपड़ा। +२-नवनीत। मक्खन।

नैपातिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैपातिकी] अकस्मात या दैवसंयोग से वर्णन करने वाला।

नैपाल [वि.] (सं.) १-नैपाल-संबंधी। २-नैपाल का। नैपाल में होने वाला। [संज्ञा पु.] १-नैपाल का नीम। २-एक प्रकार की ईख। [संज्ञा पु] (देश.) देखो 'नेपाल'।

नैपालिक [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा।

नैपाली [वि.] (हिं.) १-नेपाल देश का। २-नैपाल में उत्पन्न। ३-नैपाल का रहने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नवमल्लिका। नेवाली। २-मनःशिला। मैनसिल। ३-नील का पौधा। ४-शेफालिका। एक प्रकार की निर्गुण्डी।

नैपुण [संज्ञा पु.] (सं.) निपुणता।

नैपुण्य [संज्ञा पु.](सं.) निपुणता। पटुता। चातुर्य। योग्यता। दक्षता। कमाल।

नैभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाज। संकोच। विनम्रता। २-रहस्य।

नैमंत्रणक, नैमन्त्रणक [संज्ञा पु.] (सं.) भोज। दावत।

नैमय [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापारी। व्यवसायी। रोजगारी।

नैमत्तिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैमत्तिकी] १-जो किसी कारण विशेष वश किया जाय। जो निमित्त या कारण उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए हो। २-असाधारण। कभी-कभी होने वाला। [संज्ञा पु.] १-कारण। २-कभी-कभी होने वाला शास्त्रोक्त कर्म। ३-ज्योतिषी। भविष्यवक्ता।

नैमित्तिकलय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रलय जिसमें सौ वर्ष तक अनावृष्टि होती है, बारहों सूर्य उदित होकर तीनों लोकों का शोषण करते हैं, फिर बड़े भीषण मेघ सौ वर्ष तक निरन्तर बरस कर सृष्टि का नाश करते हैं।

नैमिश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नैमिष'।

नैमिष [संज्ञा पु] (सं) १-नैमिषारण्य तीर्थ। महाभारत और पुराणानुसार यमुना के दक्षिण तट पर बसने वाली एक जाति। [वि.] (सं.) [स्त्री. नैमिषी] एक निमिष या क्षण रहने वाला। क्षणिक। विनश्वर।

नैमिषारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वन जो आजकल हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थान माना जाता है। यह आजकल नीमखार कहलाता है। यह स्थान सीतापुर जिले में है।

नैमिषि [संज्ञा पु.] (सं.) नैमिषारण्यवासी।

नैमिषी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] एक निमिष या क्षण में होने वाली।

नैमिषीय [वि.] (सं.) निमिष-संबंधी।

नैमिषेय [वि.] (सं.) १-नैमिष-संबंधी। नैमिषारण्य का।

नैमेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनिमय। वस्तुओं का बदला। २-वाणिज्य। व्यवसाय।

नैयग्रोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-गूलर का फल। २-गूलर का वृक्ष।

नैयत्य [संज्ञा पु.] (सं.) नियतत्व। नियम होने भाव। संयम। जितेन्द्रियत्व।

नैयमिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैयमिकी] नियमित नियमानुसार।

नैयमिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नियमानुसारता।

नैयमिकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नैयमिकता। नियमानुसारता।

नैया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव। नौका। किश्ती।

नैयायिक [वि.] (सं.) न्यायशास्त्र का जानने वाला। न्यायवेत्ता।

नैरंजना, नैरञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फल्गुनदी का प्राचीन नाम।

नैरंतर्य, नैरन्तर्य [संज्ञा पु.] (सं.) निरंतर का भाव। अविच्छेद।

नैर* [संज्ञा पु.] (हिं.) शहर। देश। जनपद।

नैरपेक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) निरपेक्षता। तटस्थता। उदासीनता।

नैरयिक [वि.] (सं.) नरक में रहने वाला। नरकवासी।

नैरर्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) निरर्थकता।

नैराश्य [संज्ञा पु.](सं.) १-निराशा का भाव। नाउम्मेदी। २-आशा या इच्छा का अभाव।

नैरास्य [संज्ञा पु.] (सं.) बाण छोड़ने का एक मन्त्र।

नैरुक्त [वि.] (सं.) निरुक्त सम्बन्धी। [संज्ञा पु.](सं.) १-निरुक्त-सम्बन्धी ग्रन्थ। २-शब्द-व्युत्पत्ति-तत्वज्ञ। ३-निरुक्त जानने या अध्ययन करने वाला।

नैरुक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) निरुक्त-तत्वज्ञ। निरुक्तवेत्ता।

नैरुज्य [संज्ञा पु.] (सं) स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।

नैर्ऋत [वि.] (सं.) निर्ऋत-संबंधी। [संज्ञा पु.]

(सं) निर्ऋत का पुत्र। राक्षस। २-पश्चिम दक्षिण कोण का स्वामी। ३-मूलनक्षत्र।

नैर्ऋती [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुर्गादेवी। २-दक्षिण पश्चिम का कोना। दक्षिण-पश्चिम के मध्य की दशा।

नैऋतेय [संज्ञा पु.] (सं.) निऋति का वंशाज।

नैर्ऋत्य [वि.] (सं.) निर्ऋति देवता का (पशु आदि)।

नैर्गंध्य, नैर्गन्ध्य [संज्ञा पु.] (सं) गंधहीनता

नैर्गुण्य [संज्ञा पु](सं.) १-गुणों का अभाव। २-उत्तमता का अभाव। अच्छे गुणों का अभाव। ३-कलाकौशल आदि का अभाव। ४-सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का न होना। त्रिगुण शून्यता।

नैर्मल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-निर्मलता। विषयों से वैराग्य।

नैर्लज्ज [संज्ञा पु.] (सं.) निर्लज्जता।

नैर्वाहिक [वि.] (सं) निर्वाह योग्य। जो निर्वाह के लिए हो।

नैवामी [संज्ञा पु.](सं.) १-निवासी-साधु। २-वृक्ष पर रहने वाला देवता।

नैविड्य [संज्ञा पु.] (सं.) निविड़ता। घनत्व।

नैवेद्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवता के निवेदन के लिए भोज्यद्रव्य। भोज्यपदार्थ जो किसी देवता को अर्पण किया जाय।

नैश [वि.] (सं.) [स्त्री. नैशी] १-रात-संबंधी। २-रात में दिखाई पड़ने वाला।

नैशिक [वि.] (सं.) [स्त्री नैशिकी] १-निशा-सम्बन्धी। रात का। २-रात में दिखाई पड़ने वाला।

नैश्चल्य [संज्ञा पु.] (सं.) अचलता। अटलता।

नैश्चित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दृढ़ विचार। पक्का इरादा। निश्चय। २-निश्चित कृत्य या रस्म।

नैषदिक [वि.] (सं.) १-उपवेशनकारी। बैठने वाला। २-निषद्‌देश-सम्बन्धी। निषाद का

नैषध [संज्ञा पु.] (सं.) १-निषधदेश का राजा। २-यह उपाधि इस देश के राजाओं में से राजा नल की थी। ३-निषधदेशवासी। ४-श्रीहर्ष रचित एक संस्कृतकाव्य जिसमें राजा नल की कथा वर्णन है। [वि.] निषधदेश-सम्बन्धी। निषधदेश का।

नैषधीय [वि.] (सं.) नल-सम्बन्धी।

नैषध्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजा नल का पुत्र या वंशाज।

नैष्कर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुस्ती। अकर्मण्यता २-कर्म या कर्मफलों से छेका हुआ। ३-समाधि द्वारा प्राप्त मोक्ष।

नैष्किक [वि] (सं.) १-निष्क-सम्बन्धी। २-निष्क द्वारा मोल लिया हुआ। [संज्ञा पु.] [स्त्री. नैष्किकी] १-वह वस्तु जिसका मूल्य एक निष्क हो। (प्राचीन सिक्के का नाम) २-टकसालघर का व्यवस्थापक।

नैष्ठिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैष्ठिकी] १-निष्ठावान। निष्ठायुक्त। २-मरणकाल में कर्त्तव्य (कर्म)। ३-अन्तिम। आखीर। ४-निर्णीत। स्पष्ट। पक्का। ५-पूर्णतया परिचित या अवगत। ६-सर्वोच्चपूर्ण। ७-निर्दिष्ट। दृढ़। सतत। ८-सदैव के लिए त्यागने और शुद्ध रहने का व्रत धारण करने वाला। [संज्ञा पु.] वह ब्रह्मचारी जिसने आजन्म के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो।

नैष्ठुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) निठुराई। नृशंसता। क्रूरता।

नैष्ठ्य [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ता। मजबूती। स्थिरता। स्थिरत्व।

नैष्फल [संज्ञा पु.] (सं.) निष्फलता।

नैसर्गिक [वि.] (सं.) [स्त्री. नैसर्गिकी] स्वाभाविक। प्रकृतिजन्य। परंपरागत।

नैसर्गिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वाभाविकता।

नैसर्गिकी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] प्राकृतिक।

नैसर्गिकीदशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष की एक दशा।

नैसा* [वि.] (हिं.) बुरा। खराब।

नैसिक [वि.] (हिं.) थोड़ा। नेक। तनिक।

नैसुक [वि.] (हिं.) थोड़ा। नैसिक।

नैस्त्रिंशक [संज्ञा पु.] (सं.) खड्गधारी। तलवार बहादुर।

नैहर [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री के पिता का घर। मायका। पीहर।

नो [अव्य.] (सं.) नहीं। न।

नोआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. नोई] दूध दोहते समय गाय के पैरों में बांधने की रस्सी। बंधी

नोइनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह रस्सी जो गाय को दुहते समय उसके पिछले पैरों में बांधी जाती है।

नोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुहते समय गाय के पैर बांधने की रस्सी। बंधी।

नोक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सूक्ष्म अग्रभाग। अपेक्षाकृत बहुत पतला सिरा। २-आगे की ओर निकला हुआ पतला भाग, सिरा या कोना।

नोक की लेना–बढ़ बढ़ कर बातें करना। डींग हांकना। गर्व दिखाना। *नोक दुम भागना*–जी छोड़कर भागना। *नोक रह जाना*–आन की बात रह जाना। *नोक बनाना*–रूप संवारना।

नोंकझोंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनाव सिंगार। सजावट। ठाटबाट। [illegible]। तेज। आतंक। दर्प। ३-चुभने वाली बात। व्यंग्य। ताना। ४-आपस में होने वाले आक्षेप या दबी हुई प्रतिद्वंद्विता।

नोकना [क्रि. स.] (?) ललचना।

नोकदार [वि.] (फा.) १-जिसमें नोक हो। २- चुभने वाला। पैना। ३-चित में चुभने वा दिल में असर करने वाला। ४-शानदा तड़कभड़क वाला।

नोकपलक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चेहरे की बना वट। मुखाकृति गढ़न।

नोक पलक से ठीक–नख से सिख तक सु

नोकपान [संज्ञा पु.] (हि.) पान के आकार क कीमुख्त नामक चमड़े का वह टुकड़ा जो जू की नोक और एड़ी पर लगता है। जूते क काटछाँट सुन्दरता और मजबूती (जूते व

नोकाझोंकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छेड़छा परस्पर व्यंगादि द्वारा आक्रमण। ता आवाज। २-परस्पर की चोट। विवा झगड़ा।

नोकीला+ [वि.] (हिं.) देखो 'नुकीला'।

नोखा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. नोखी] अद्भु विचित्र। अपूर्व। विलक्षण। अनूठा। अ

नोच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नोचने की क्रिया या भाव। २-छीनने या लेने की क्रिया। च ओर से कई आदमियों का झपटे के सा छीनना या लेना। लूट। ३-कई ओर से क आदमियों का मांगना। चारों ओर की मां बहुत से लोगों का तकाज़ा।

नोचखसोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झपटे के सा लेना या छीनना। छीनाझपटी। उजड्ड नोच या खसोटकर लेना।

नोचना [क्रि. स.] (हिं.) १-लगी या जमी वस्तु को खींच या झपटकर अलग करना। उखा ड़ना। २-किसी वस्तु में दांत नख या पं धंसाकर उसका अंश खैंच लेना। ३-ख चना। ४-पीछे पड़कर उसकी इच्छा के विरु लेना। बारबार तंग करके लेना। ५-बारब तंग करके मांगना। [संज्ञा पु.] बाल नोच या उखाड़ने की चिमटी।

नोचानाची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नोच खसोट'।

नोचू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नोचने वाला। छी झपटी करके लेने वाला। ३-तंग करके ले वाला। ४-तकाजों के मारे नाक में दम क वाला।

नोट [संज्ञा पु.] (अं) ध्यान रखने के लिए लिख अथवा टाँगने का काम। २-पत्र। चिट्ठी टिप्पणी। ४-राज्य की ओर से चलाया हु वह पत्र या कागज जिस पर उस देश के राजा या राज्य चिह्न अंकित होता है और कु रुपयों की संख्या छपी रहती है तथा जो उतने सिक्के के रूप में चलता है।

नोटपेपर [संज्ञा पु.] (अं.) चिट्ठी लिखने क कागज।

नोटबुक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) [illegible] लिखने क

पुस्तिका या छोटी किताब।

नोटिस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-विज्ञप्ति। सूचना। २-विज्ञापन। इश्तिहार।

नोद [संज्ञा पु.] (सं.) नमक। लवण।

नोदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेरणा। चलाने या हाँकने का काम। २-बैलों को हाँकने की छड़ी या कोड़ा। पैना। प्रतोद। ३-खंडन।

नोधा [अव्य] (सं.) नौ हिस्सों में। नौगुना।

नोन* [संज्ञा पु.] (हिं.) नमक।

नोनचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नमकीन आचार। २-नमक में डाली हुई आम की फाकों की खटाई। ३-लोनी जमीन। वह जमीन जहाँ पर लोनी अधिक हो।

नोनछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोनी मिट्टी।

नोनहरा [संज्ञा पु.] (?) पैसा।

नोना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. नोनी] १-नमक या वह अंश जो पुरानी दीवारों, नमी वाली जमीन पर मिलता है। २-लोनी मिट्टी। ३-शरीफा। सीताफल। आत। ४-उधई नामक कीड़ा। जो नाव या जहाज के पेंदे में लगकर उसे कमजोर कर देता है। [वि.] (हिं.) [स्त्री. नोनी] १-नमकमिला। खारा। २-लावण्यमय। सलोना। सुन्दर। अच्छा। बढ़िया। [क्रि स.] (हिं.) देखो 'नोवना'।

नोना-चमारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध जादूगरनी जो कामरूप की रहने वाली थी। इसकी दोहाई अब तक मंत्रों में दी जाती है।

नोनिया [संज्ञा पु] (हिं.)एक जाति विशेष जिसके लोग लोनी मिट्टी में से नमक निकालने का कार्य करते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक भाजी अमलोनी। लोनिया।

नोनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लोनी मिट्टी। २-लोनिया। अमलोनी का पौधा। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १-लावण्यमयी। रूपवती। २-अच्छी। बढ़िया।

नोनो*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. नोनी] १-सलोना सुन्दर। २-अच्छा। भला। बढ़िया।

नोरु* [वि.] (हिं.) नवीन। नया।

नोल* [वि.] (हिं.) देखो 'नवल'। +[संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'नेवला'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चिड़िया की चोंच।

नोवना+ [क्रि. स.] (हिं.) दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।

नोहर+ [वि.] (हिं.) १-अलभ्य। दुर्लभ। जल्दी न मिलने वाला। २-अनोखा। अद्भुत।

नौंदना [क्रि. स] (हिं.) बही में लिखना।

नौंसराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नाम-धराई'

नौंधराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नाम-धराई'

नौंधरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नाम-धराई'।

नौ [वि.] (हिं.) आठ और एक। ९।

नौ दो ग्यारह होना–देखते-देखते चल देना या भाग जाना।

नौ तेरह बाईस बताना–इधर-उधर की बातें करके टाल देना। [संज्ञा स्त्री.] १-जहाज। पोत। नौका। नाव। बेड़ा। २-एक नक्षत्र का नाम।

नौकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) तीन आदमियों द्वारा खेला जाने वाला एक प्रकार का जूआ जो तीन तीन कौड़ियों से खेला जाता है।

नौकर [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. नौकरानी] १-टहल या काम-धंधे के लिये वेतन पर रखा हुआ आदमी। भृत्य। चाकर। २-वेतन आदि पर किसी का काम करने वाला व्यक्ति। वैतनिक कर्मचारी। खिदमतगार।

किसी को नौकर रखना–वेतन पर काम के लिए नियुक्त करना। काम पर लगाना।

नौकर-शाही [संज्ञा स्त्री] (फा.) वह शासन पद्धति जिसमें सब अधिकार बड़े २ राज्य कर्मचारियों के हाथ में रहते हैं। *ब्यूरोक्रेसी*।

नौकराना [संज्ञा पु.] (हिं.) नौकरों को मिलने वाला वेतन दस्तूरी आदि।

नौकरानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) घर का काम धन्धा करने वाली स्त्री। मजदूरी। दासी। चाकरनी

नौकरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नौकर का कार्य। सेवा। टहल। २-वह पद या काम जिसके लिये वेतन मिलता हो।

नौकरी देना या बजाना–नौकरी पाना।

नौकर-कर [संज्ञा पु.] (सं.) नौकरी पर लगने वाला कर।

नौकरीपेशा [संज्ञा पु.] (फा.) वह जिसका काम नौकरी करना हो। नौकरी से जीविका चलाने वाला।

नौ-कर्णधार [संज्ञा पु.] (सं.) डांड़ खेने वाला। मल्लाह। मांझी।

नौ-कर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की एक अनुचरी मातृका का नाम।

नौ-कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) नाव चलाने का काम। मांझी का पेशा।

नौका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाव। जहाज।

नौकागम्य [वि.] (सं.) नाव या जहाज ले जाने योग्य। (नदी या कोई जलाशय) जिसमें नावें या जहाज चल सकते हों। नाव्य। *नैविगेबुल*।

नौकादंड, नौकादण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) नाव का डाँड़।

नौकाधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य की सामुद्रिक शक्ति और नाविक विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग अथवा उनका प्रधान कार्यालय। *ऐडमिरैल्टी*।

नौक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) नाव का बना हुआ पुल।

नौगमन [संज्ञा पु.] (सं.) नदी, समुद्र आदि के मार्ग से एक स्थान पर आना जाना। जलयात्रा। नैविगेशन।

नौगर, नौगिरही* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नौग्रही।

नौग्रही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ में पहनने का एक गहना।

नौचर [वि.] (सं.) नाव पर चढ़कर घूमने वाला

नौ-चालक [संज्ञा पु.] (सं.) नाव या जहाज चलाने वाला। नाविक। नैविगेटर।

नौ-चालन (संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नौ-गमन'।

नौची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या की पालिता पुत्री जिसे वह अपना व्यवसाय या पेशा सिखाती है।

नौछावर+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'निछावर'।

नौज [अव्य.] (हिं.) १-ऐसा न हो। ईश्वर न करे। (अनिच्छासूचक)। २-न हो। न सही (बेपरवाही)।

नौजवान [वि.] (फा.) नवयुवक। उठती जवानी

नौजवानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) उठती युवावस्था।

नौजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-बादाम। २-चिलगोजा।

नौजी [संज्ञा स्त्री.] (?) लीची।

नौजीविक [संज्ञा पु.] (सं.) नाव चलाकर जीवन यापन करने वाला।

नौटंकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ब्रज में होने वाला एक प्रकार का नाटक जिसमें चौबोले गाकर अभिनय किया जाता है। इसमें संगीतवादन में नगाड़े का प्राधान्य होता है

नौतन* [वि.] (हिं.) देखो 'नूतन'।

नौतम* [वि.] (हिं.) १-बिलकुल नया। २-ताजा। [संज्ञा पु.] नम्रता। विनय।

नौतरण [संज्ञा पु.] (सं.) नदी, समुद्र आदि के मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना जाना। जलयात्रा। नैविगेशन।

नौता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्यौता'।

नौतेरही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी ईंट। २-पासों से खेला जाने वाला एक प्रकार का जूआ।

नौतोड़ [वि.] (हिं) नया तोड़ा हुआ। जो पहले पहल जोता गया हो।

नौदंड, नौदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) नाव चलाने का डांड।

नौदसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रुपया उधार लेने की एक रीति जिसमें ऋण लेने वाले को ९) रु० के एक साल पीछे १०) रु० देने पड़ते हैं।

नौध [संज्ञा पु.] (हिं.) नया पौधा। अँखुवा।

नौधा [संज्ञा पु.] (हिं) १-बरसात के आरम्भ में बोई जाने वाली नील की फसल। २-नए

फलदार पौधा का बगीचा। नया लगा हुआ बगीचा। ॐ[वि] देखो 'नवधा'।

नौनगा [संज्ञा पु.] (हिं.) नौनग जड़ा हुआ एक गहना जिसे बाहु पर पहनते हैं।

नौना❋ [क्रि अ] (हिं) नवना। झुकना।

नौनार [स ज्ञा स्त्री] (हिं) वह स्थान जहां नोनिया लोग लोनी मिट्टी मे नमक बनाते हैं

नौ-निरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं) जहाज का निरीक्षण या देखरेख करने वाला। *मैरिन सुपरवाइजर*।

नौ-परिमापक [संज्ञा पु] (स) जहाज में नाप या पैमाइश करने वाला अधिकारी।

नौ-परिवहन [स ज्ञा पु] (सं) समुद्री जहाज आदि चलाना। *नौविगेशन*।

नौबढ़ [वि.] (हिं) हाल में बढ़ा हुआ। उच्च। जिसे गिरी हुई अवस्था से अच्छी दशा में आये हुए थोड़े ही दिन हुए हों।

नौबढ़िया+ [वि] (हिं) देखो 'नौबढ़'।

नौबढुवा [वि] (हिं) देखो 'नौबढ़'।

नौबत [स ज्ञा स्त्री] (फा.) १-बारी। पारी। २-दशा। हालत। संयोग। ४-वैभव अथवा मंगलसूचक शहनाई आदि बाजे जो देवालय में बजाते हैं।

नौबत झाड़ना-नौबत बजाना। *नौबत बजना*-१-आनन्द-उत्सव होना। २-प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना। *नौबत बजाना*-१-आनन्द-उत्सव करना। २-प्रताप ऐश्वर्य की घोषणा करना। *नौबत बजाकर*-स्पष्ट डंके की चोट। *नौबत की टकोर*-१-डंके की चोट। २-डंके या नगाड़े की आवाज।

नौबतखाना [संज्ञा पु.] (फा.) फाटक ऊपरी भाग या स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक्कारखाना।

नौबती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नौबत बजाने वाला नक्कारची। २-फाटक पर पहरा देने वाला। पहरेदार। ३-बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। कोतल घोड़ा। बड़ा खेमा या तंबू।

नौबतीदार [संज्ञा पु.] (फा) १-खेमे पर पहरा देने वाला, संतरी। २-द्वारपाल। दरबान।

नौबरार [स ज्ञा पु] (फा.) नदी के हट या सरक जाने से निकली हुई भूमि।

नौ-बल [संज्ञा पु.] (सं.) जलसेना जो किसी राष्ट्र के युद्धपोतों पर उस देश की रक्षा करने के लिए होती है, जिससे कि समुद्र की ओर से होने वाले आक्रमण को रोका जाय। नेवल-फोर्स।

नौमासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गर्भ का नवाँ मास या महीना। २-वह रस्म या रीति जो गर्भ के नवें मास होती है।

नौमि❋ [क्रि स.] (हिं.) एक वाक्य जिसका अर्थ है 'मैं नमस्कार करता हूं'।

नौमी [स ज्ञा स्त्री] (हिं.) प्रति पक्ष की नवीं तिथि

नौ-मुसलिम [वि] (फा. अ.) जो अभी हाल में मुसलमान हुआ हो।

नौयान [स ज्ञा पु] (सं.) जलयान। पोत। जहाज

नौयान-करणिक [स ज्ञा पु.] (सं.) वह लिपिक या करणिक जो किसी जहाज पर जहाजी मामलों के पत्र-व्यवहार आदि का हिसाब या अन्य हिसाब आदि लिखता है। नेविगेशन-क्लर्क।

नौरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया या उसका नाम। +ॐ [स ज्ञा पु.] (हिं.) औरंग (औरंगजेब का) रूपान्तर।

नौरंगी+ [स ज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नारंगी'।

नौरतन [स ज्ञा पु](हिं.) देखो 'नवरत्न'। नौनगा नामक गहना। नौ मसालों के योग से बनी एक चटनी।

नौरस [वि] (हिं.) १-नये अर्थात् ताजे रस वाला (फल)। नया पका हुआ (फल)। ताजा (फल)। २-नवयुवक।

नौरातर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'नवरात्र'।

नौरूप [स ज्ञा पु.] (हिं.) नील की फसल की पहली कटाई

नौरोज़ [संज्ञा पु](फा.) १-पारसियो का नये साल का पहला दिन। ३-कोई खुशी का दिन। शुभ दिन।

नौल❋ [वि.] (हिं.) देखो 'नवल'। [संज्ञा पु.] (दे श.) जहाज पर माल लादने का भाड़ा या उजरत।

नौलक्खा [वि.] (हिं) देखो 'नौलखा'।

नौलखा [वि.] (हिं.) नौलाख का। जिसका मूल्य नौ लाख हो। जड़ाऊ और बहुमूल्य।

नौलखी [स ज्ञा स्त्री.] (?) जुलाहे की वह लकड़ी जिसमें ताना दबाया जाता है।

नौला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नेवला'।

नौलासी [वि.] (?) नर्म। मुलायम। कोमल।

नौवाब [संज्ञा पु.] देखो 'नवाब'।

नौवाबी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'नवाबी'।

नौवाह [वि] (हिं.) जिससे नाव चलाई जाती है [संज्ञा पु.] (सं.) नाव चलाने की डाँड।

नौवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाव या जहाज चलाने वाला। २-जहाज का बड़ा अफसर या कप्तान।

नौवाहनिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी राज्य की सामुद्रिक या जहाजी शक्ति और नाविक विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग। *ऐडमिरेल्टी*।

नौवाहनिक-क्षेत्र [संज्ञा पु] (सं.) सामुद्रिक न्यायालय का अधिकार-क्षेत्र। *ऐडमिरेल्टी-ज्यूरिस्डिक्शॅन*।

नौवाहनिक-न्यायालय [संज्ञा पु] (सं.) सामु द्रिक नाविक विभाग से सम्बन्धित कर्म रियों और अधिकारियों के मामलों का नि टारा करने वाला न्यायालय। जहाजी अदा लत। ऐडमिरेल्टी कोर्ट।

नौवाहनी [संज्ञा स्त्री] (सं) नौसेना। सामुद्रि सेना।

नौवाहनी-अध्यक्ष [संज्ञा पु] (सं) सामुद्रिक सेना का प्रधान अधिकारी या अफसर। एडमिरल।

नौवाहनी-पर्षद [स ज्ञा स्त्री.] (सं.) जलसेना या सामुद्रिक सेना का संचालने वाली परिषद या समिति। बोर्ड आफ-ऐडमिरेल्टी।

नौवाहनी-विभाग [स ज्ञा पु.] (सं) किसी राज्य के सामुद्रिक-विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग। नौसेना-विभाग। एडमिरेल्टी।

नौविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) जहाज आदि चलाने की विद्या।

नौ-व्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज का नष्ट होना। जहाज का नाश।

नौ-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौ-सेना के रूप में होती है। नैवल-फोर्स।

नौशा [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. नौशी] दुल्हा। वर।

नौशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नववधू। दुलहिन।

नौशेरवाँ [संज्ञा पु.] (फा) फारसदेश के एक प्रसिद्ध न्यायी और प्रतापी बादशाह का नाम।

नौसत [संज्ञा स्त्री] (हिं) सोलह-शृङ्गार। सिगार।

नौसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) नौलड़ी वाली माला। नौलड़ वाला हार या गजरा।

नौसरिया [वि.] (हिं) १-धूर्त्त। चालबाज। २-जालसाज।

नौसादर [संज्ञा पु] (हिं.) एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक जो सींग, हड्डी, खुर, बाल आदि का भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है। वैद्यक के अनुसार यह शोधनाशक शीतल और यकृति, प्लीहा, ज्वर, अर्बुद, सिर दर्द, खांसी आदि में उपकारी है। अमृत क्षार। विदारण। नरसार।

नौसाधन [स ज्ञा पु] (सं) जहाजी बेड़ा। जल सेना। नौसेना।

नौसिख [वि.] (हिं) देखो 'नौसिखिया'।

नौसिखिया [वि.] (हिं) जिसने कोई काम अभी अभी सीखा हो। जो सीखकर पक्का, दक्ष या कुशल न हुआ हो। नवशिक्षित।

नौ-सेना [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह सेना जो जहाजों पर रहती तथा नदी या समुद्र में रहकर युद्ध करती है। जहाजी बेड़ा। जलसेना। नेवी,

नौ-सेनाध्यक्ष [संज्ञा पु] (सं) जहाजी या साम

दिक सेना का वह प्रधान अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं। नेवल-कमाण्डर।

नौ-सेना-संघ, नौ-सेना-सङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) नावी सैनिकों का संघटित समाज या समुदाय। नेवी लीग।

नौसैनिक [वि.] (सं.) नौसेना-सम्बन्धी। नौसेना का।

नौसैनिक-अड्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) नौसेना की कार्यवाही आरम्भ करने का जहाजी अड्डा। नेवल बेस।

नौसैनिक-कार्रवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नौसैनिकों द्वारा की जाने वाली क्रिया या कार्यवाही। नेवल-एक्शन।

नौसैनिक-तोपें [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जंगी जहाजों या युद्धपोतों पर लगी हुई तोप। नेवल-गन्स।

नौसैनिक-युद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्री सेना की लड़ाई। नौसेना या जल-सेना का युद्ध। नेवल-वॉरफेयर।

नौसैनिक-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलसेना। नौसेना के रूप में संघटित शक्ति। नेवल-पावर।

नौसेनीय [वि.] (सं) नौसेना सम्बन्धी। नौ-सेना की। नेवल।

नौसेनीयभिडंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समुद्र में जहाजों की छोटी लड़ाई। नेवल-एनगेजमेंट।

नौहँड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी की नई हांड़ी। कोरी हँड़िया।

नौहँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पितृपक्ष। कनागत। (जिसमें मिट्टी के पुराने बरतनों को फेंक देते हैं और नये रखते हैं)।

न्यंक, न्यङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) रज का एक अङ्ग।

न्यंकु, न्यङ्कु [वि.] (सं.) बहुत दौड़ने वाला। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का मृग। बारहसिंगा।

न्यंकुभूरुह, न्यङ्कुभूरुह [संज्ञा पु.] (सं.) श्योनाकवृक्ष। सोनापाठा।

न्यंकुसारिणी, न्यङ्कुसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छन्द का नाम जिसके पहले और दूसरे चरण में १२-१२ अक्षर तथा चौथे चरण में ८,८ अक्षर होते हैं।

न्यंचित, न्यञ्चित [वि.] (सं.) नीचे फेंका या डाला हुआ। अधःक्षिप्त।

न्यंजलिका, न्यञ्जलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीचे की ओर झुकी हुई अंजुली या हथेली।

न्यक् [अव्य.] (सं.) एक अव्यय जो तिरस्कार, अधःपात, अपमान का अर्थवाची है।

न्यक्ष [वि.] (सं.) नीच। दुष्ट। कमीना। अपकृष्ट। [संज्ञा पु.] १-सूराख। २-भैंसा। ३-परशुराम।

न्यग्रोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वटवृक्ष। बरगद का पेड़। २-लम्बाई का एक नाप, उतनी लम्बाई जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से होती है। पुरसा। ३-बाहु। ४-शमीवृक्ष। ५-विष्णु। ६-महादेव ७-मोहनौषधि। ८-हरिवंश के अनुसार उग्रसेन के एक पुत्र का नाम। ८-मूसाकानी।

न्यग्रोधपरिमंडल, न्यग्रोधपरिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसकी लम्बाई-चौड़ाई एक व्याम या पुरसा हो।

न्यग्रोधपरिमंडला, न्यग्रोधपरिमण्डला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके स्तन कठोर, नितम्ब विशाल और कटिक्षीण हो। ऐसी स्त्री उत्तम मानी जाती है।

न्यग्रोधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'न्यग्रोधी'।

न्यग्रोधादिगण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार वृक्षों का एक गण या वर्ग जिसमें यह वृक्ष माने जाते हैं—बरगद, पीपल, गूलर, पाकर, महुआ, अर्जुन, आम, कुसुम, आमड़ा, जामुन, चिरौंजी, बेर, मांसरोहिणी, कदम, तेंदू, सलाई, तेजपात, लोध, सावर, भिलावां, पलाश, तुन, घुंघची या मुलेठी।

न्यग्रोधिक [वि.] (सं.) बहुत से वट वृक्ष वाला (स्थान)।

न्यग्रोधिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) मूसाकानी लता।

न्यग्रोधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूसाकानी।

न्यच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चर्मरोग जिससे शरीर पर काले चकत्ते हो जाते हैं।

न्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-हानि। नुकसान। २-बरबादी।

न्यर्बुद [वि.] (सं.) दस अरब (संख्या)।

न्यर्बुदि [संज्ञा पु.] (सं.) एक रुद्र का नाम।

न्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धरोहर। न्यास। २-सौंपना। दे देना।

न्यस्त [वि.] (सं.) १-नीचे फेंका हुआ। २-फेंका हुआ। डाला हुआ। ३-रखा हुआ। धरा हुआ। ४-स्थापित किया हुआ। बैठाया या जमाया हुआ। ५-धरोहर रखा हुआ। अमानत रखा हुआ। हस्तान्तरित किया हुआ। ६-छोड़ा हुआ। हटाया हुआ। त्यागा हुआ।

न्यस्त-करना [क्रि. स.] (हिं.) १-न्याय करना। २-विश्वास करना। विश्वास पर छोड़ना। निक्षेप करना। सौंपना। प्रतिपादन करना। इन्ट्रस्ठ।

न्यस्त-दंड, न्यस्त-दण्ड [वि.] (सं.) सजा से बरी किया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यासी। साधु।

न्यस्तदेह [संज्ञा पु.] (सं.) मृत शरीर। शव।

न्यस्तशस्त्र [वि.] (सं.) १-जिसने अपने हथियार रख दिये हों। २-जिसके पास अपने बचाव के लिए कुछ भी न हो। निरस्त्र। ३-जो हानिकारक न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) पितृलोक।

न्यस्य [वि.] (सं.) स्थापनीय। रखने योग्य। छोड़ने योग्य।

न्यह्न [संज्ञा पु.] (सं.) अमावस्या का सायंकाल।

न्यांकव, न्याङ्कव [संज्ञा पु.] (सं.) बारहसिंघे का चमड़ा। मृगचर्म।

न्याह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्याय'।

न्याउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्याय'।

न्याक्य [संज्ञा पु.] (सं.) भुना हुआ चावल।

न्याति+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्ञाति। जाति।

न्याद [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन। आहार।

न्याना+ [वि.] (हिं.) नासमझ। 'स्याना' का उलटा। [संज्ञा पु.] (हिं.) नादान बच्चा।

न्यामत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बहुत अच्छा बहुमूल्य या अलभ्य पदार्थ।

न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियम के अनुकूल बात। उचित बात। वाजिब बात। २-किसी व्यवहार या मुकदमे में दोषी और निर्दोष या अधिकारी और अनअधिकारी का विचारपूर्वक निर्धारण। दो पक्षों के बीच निर्णय। व्यवहार या विवाद में उचित-अनुचित का निपटारा। ३-वह शास्त्र जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है। छः दर्शनों में से एक जिसके प्रवर्त्तक गौतमऋषि थे। वह वाक्य जिसका व्यवहार लोक में दृष्टान्त के रूप में होता है। यह गौतम के अनुसार १११ बताये गये हैं। ५-अवयव तर्क जिसमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन यह पांच अवयव होते हैं।

न्यायक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्यायकर्त्ता'।

न्यायकरणिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'न्यायलिपिक'।

न्यायकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) दो पक्षों के विवाद का निर्णय करने वाला अधिकारी। मुकदमे का फैसला करने वाला हाकिम। न्याय करने वाला।

न्यायज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहारशास्त्र का ज्ञाता। व्यवहार-शास्त्रज्ञ।

न्यायतः [क्रि. वि.] (सं.) न्याय के अनुसार। धर्म और नीति के अनुसार। २-ठीक-ठीक।

न्यायता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय का भाव। औचित्य। निष्पक्षता।

न्यायपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र या कागज जिस पर न्यायकर्त्ता अपना निर्णय लिखता है।

न्यायपथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आचरण का न्याय सम्मत मार्ग। उचित रीति। २-मीमांस शास्त्र।

न्याय-निपुण [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय विद्या का पूर्णज्ञाता। न्यायविद्या विशारद।

न्यायपरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्यायशीलता।

न्यायी होने का भाव ।

न्यायपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय । अधिकारीवर्ग । *ज्यूडिसियरी* ।

न्यायपीठ [संज्ञा पु.](सं.) वह अदालत या न्यायालय जिसमें साधारण अभियोगों का निर्णय किया जाता है । छोटी अदालत । बैंच ।

न्यय-भवन [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जहाँ न्यायाधीश अपना निर्णय या विनिश्चय सुनाता है । जजमेंट-हाल ।

न्याय-भ्रांति, न्याय-भ्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विवाद के निर्णय से उत्पन्न भ्रान्ति या भ्रम । २–किसी न्याय के निर्णय सुनाने से होने वाला भ्रम ।

न्याय-मंदिर, न्याय-मन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'न्याय-भवन'।

न्याय-मत [संज्ञा पु.] (सं) न्यायालय का मत या विचार ।

न्यायमर्मज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय के मर्म को समझने या जानने वाला व्यक्ति ।

न्यायमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रान्त के सर्वोच्च या मुख्य न्यायालय के विचारक या जज की उपाधि । *जस्टिस* ।

न्यायलिपिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह लिपिक या लेखक जो न्याय-विभाग या किसी न्यायालय में काम करता हो । अदालती मुंशी । *ज्यूडिसियल-क्लर्क* ।

न्यायवत् [वि.] (सं.) न्याययुक्त । न्यायशील ।

न्यायवर्ती [वि.] (सं.) सदाचारी । न्याय पर चलने वाला ।

न्यायवादी [वि.] (सं.) ठीक और न्यायोचित बात कहने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो ठीक और न्यायोचित बात करता हो ।

न्यायवान [संज्ञा पु.] (सं) न्याय पर चलने वाला । न्यायी । विवेकी ।

न्याय-विद्या-विशारद [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय-सम्बन्धी मामलों में चतुर प्रवीण व्यक्ति । *ज्यूरिस-प्रूडेन्ट* ।

न्याय-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय-सम्बन्धी महकमा जो राज्य के न्याय मंत्री के अधीन होता है । *ज्यूडिशियल-डिपार्टमेंट* ।

न्यायविरुद्ध [वि.] (सं.) प्रत्यक्ष प्रमाण का विरोधी ।

न्यायवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा चालचलन । सद्गुण ।

न्यायशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय से सम्बन्ध रखने वाले अधिकार या शक्ति । ज्यूडिसियल पावर ।

न्यायशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह भवन जहाँ न्यायाधीश अपना निर्णय या विनिश्चय सुनाता है । जजमेंट-हाल ।

न्यायशालिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) न्यायाधीश या जज का निजी कमरा । न्याय-सदन । कोर्ट चैम्बर ।

न्यायशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–न्यायदर्शन । न्यायदर्शन का विज्ञान ।

न्यायशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह शुल्क जो न्यायालय में कोई प्रार्थना-पत्र उपस्थित करते समय अंकपत्र या स्टाम्प के रूप में देना पड़ता है । कोर्ट-फी ।

न्यायसंगत, न्यायसङ्गत [वि.] (सं.) न्याय की दृष्टि से उचित ।

न्यायसदन [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायाधीश या जज का निजी कमरा । न्यायशालिका । कोर्ट । चैम्बर ।

न्यायसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ राज्य की ओर से विवादों का निर्णय होता है । अदालत । कचहरी । कोर्ट ।

न्यायसभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) उस वर्ग का सदस्य जो जज या न्यायाधीश के साथ बैठकर किसी के दोषी या निर्दोष होने के संबंध में अपना निर्णय या मत देते हैं । जूरी का सदस्य । *ज्यूरीमैन* ।

न्यायसभ्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायसभ्य के लोगों के बैठने का आसन या स्थान । *ज्यूरी-बाक्स* ।

न्यायसमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय से संबंध रखने वाली समिति । *ज्यूडिसियल-कमेटी* ।

न्यायसिद्धांत, न्यायसिद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–न्याय में विचार और तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत । २–वह मत या सिद्धांत जो न्याय की कसौटी पर ठीक उतरे । ३–न्यायशास्त्र द्वारा निर्णीत मत या सिद्धांत । *ज्यूडिसियल-प्रिंसिपल* ।

न्यायसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायशास्त्र के सूत्र ।

न्यायस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायप्रधान । *लॉर्ड-लार्ड* ।

न्यायाधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) विवादग्रस्त विषयों पर विचार करके उनका न्याय या निर्णय करने वाला अधिकारी, अधिकारीवर्ग अथवा न्यायालय । *ट्रिब्यूनल* ।

न्यायाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रान्त के प्रधान या सर्वोच्च अधिकरण या न्यायालय का विचारक जज । *जस्टिस* ।

न्यायाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायविभाग का वह उच्च अधिकारी जो किसी व्यवहार या मुकदमे पर विधि या कानून और न्याय के के अनुसार विचार करके अपना निर्णय देता है । विचारपति । जज ।

न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ सरकार की ओर से मुकदमों का न्याय होता है । अदालत । कचहरी । कोर्ट ।

न्यायालय-अपमान [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय की मानहानि । न्यायालय का अपमान । कन्टेम्प्ट-आफ-कोर्ट ।

न्यायिक [वि.] (सं.) न्याय-संबंधी ।

न्यायिक-कार्यरीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'न्यायिक-कार्यवाही' ।

न्यायिक-कार्यवाही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय संबंधी कार्य विधि । अदालती कार्रवाई । ज्यूडिसियल-प्रोसिडिंगस ।

न्यायिक-जांच [संज्ञा पु.] (हि.) अदालती जांच पड़ताल । ज्यूडिसियल-इंक्वारी ।

न्यायिक-मुद्रांक [संज्ञा पु.] (सं.) वह मुद्रांक या अंकपत्र (स्टाम्प) जो न्यायालय में उपस्थित किये जाने वाले प्रार्थना पत्र पर लगते हैं । ज्यूडिसियल-स्टाम्प ।

न्यायिक-विधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्यायसंगत या न्याय की दृष्टि से उचित कार्यवाही ।

न्यायी [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय पर चलने वाला । न्याय के अनुसार चलने या नीतिसम्मत आचरण करने वाला ।

न्यायोचित [वि.] (सं) न्याय की दृष्टि में ठीक । न्यायसंगत ।

न्याय्य [वि.](सं.) १–न्याय की दृष्टि से उचित । न्यायसंगत । न्याययुक्त । २–ठीक । उपयुक्त । उचित । ३–साधारण चलन के अनुसार ।

न्यार* [वि.] (हिं.) देखो 'न्यारा' । [संज्ञा पु.] (देश.) चारा । चौपायों का अहार । [संज्ञा पु.] (हिं.) पसही धान । मुन्यन्न ।

न्यारा [वि.] (हिं.) [स्त्री. न्यारी] १–अलग । दूर । जुदा । २–और कोई । अन्य । ३–निराला । अनोखा ।

न्यारिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सुनारों या जौहरियों के नियार (कूड़ा-करकट) को धोकर सोना चांदी निकालने वाला ।

न्यारे [क्रि. वि.] (हिं.) १–पास नहीं । दूर । २–अलग । पृथक । साथ में नहीं ।

न्याव* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नियम । नीति । धार्मिक आचरण-पद्धति । २–उचित पक्ष । वाजिब बात । कर्त्तव्य का ठीक निर्धारण । ३–उचित अनुचित की बुद्धि । विवेक । इंसाफ । ४–दो पक्षों के बीच का निर्णय । विवाद या झगड़े का निपटेरा ।

न्याव चुकाना–झगड़ा निबटाना ।

न्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्थापन करना । रखना । २–धरोहर । थाती । ३–किसी विशेष कार्य के लिए निकाली या किसी को सौंपी हुई संपत्ति या धन । ट्रस्ट । ४–सन्यास । ५–अर्पण । त्याग । ६–पूजा की तांत्रिक पद्धति के अनुसार देवता के भिन्न भिन्न अंगों का ध्यान रखते हुए मन्त्र पढ़कर उन पर विशेष वर्णों का स्थापन । ७–किसी रोग या बाधा की शांति के निमित्त रोगी या बाधाग्रस्त मनुष्य के एक एक अंग पर हाथ लेजाकर मंत्र पढ़ने का

न्योतहरी [संज्ञा पु.] (हिं.) न्योते में आया हुआ आदमी। निमंत्रित व्यक्ति।

न्योता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आनन्द, उत्सव या मंगल कार्यों आदि में सम्मिलित होने के लिये लोगों को अपने यहाँ बुलाना। बुलावा। निमंत्रण। २-वह धन जो इष्टमित्रों या संबन्धियों के यहाँ से निमंत्रण आने पर भेजा जाता है। ३-भोजन के लिए ब्राह्मण को अपने यहाँ बुलाना।

न्योतारी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'न्योताहरी'।

न्योरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'नेवला'। बड़े दानों का घुंघरू।

न्योला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नेवला'।

न्योली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हठयोग में पेट के नलों को पानी से साफ करने की क्रिया।

न्योनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'नोइनी'।

न्हाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'नहाना'।

प

प हिन्दी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण होठ से होता है, अतएव यह स्पर्शवर्ण है। इसके उच्चारण के लिए विवार, श्वास, घोष और अल्प प्राण नामक प्रयत्न का व्यवहार किया जाता है।

पंक, पङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-कीचड़। कीच। २-पानी के साथ मिला पोतने योग्य पदार्थ। लेप।

पंककर्वट, पङ्ककर्वट [संज्ञा पु.] (सं.) नदी की बाढ़ से बहकर आई हुई मिट्टी।

पंककीर, पङ्ककीर [संज्ञा पु.] (सं.) टिटहरी नामक पक्षी।

पंकक्रीड़, पङ्कक्रीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर। [वि.] कीचड़ में खेलने वाला।

पंकिक्रीड़नक, पङ्कक्रीड़नक [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

पंकगड़क, पङ्कगड़क [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

पंकग्राह, पङ्कग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) मकर या मगर। नक्र। घड़ियाल।

पंकछिद्, पङ्कछिद [संज्ञा पु.] (सं.) रीठे का वृक्ष। निर्मलीवृक्ष।

पंकज, पङ्कज [वि.] (सं.) कीचड़ में उत्पन्न होने वाला।

पंकजन्मा, पङ्कजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल २-सारस पक्षी।

पंकजराग, पङ्कजराग [संज्ञा पु.] (सं.) पद्मराग-मणि।

पंकजवाटिका, पङ्कजवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण, एक नगण, दो जगण और अन्त में एक लघु होता है।

पंकजात, पङ्कजात [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

पंकजासन, पङ्कजासन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

पंकजित्, पङ्कजित् [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पंकजिनी, पङ्कजिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पद्माकर। कमलाकर। कमल के पौधों का समूह। २-कमल का पौधा। ३-वह स्थान जहां पुष्पों की बहुतायत हो। ४-कमोदनी का लचीला दंड या डंठुल।

पंकदिग्ध, पङ्कदिग्ध [वि.] (सं.) कीचड़ में सना हुआ।

पंकदिग्धशरीर, पङ्कदिग्धशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

पंकदिग्धांग, पङ्कदिग्धाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

पंकधूम, पङ्कधूम [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के मतानुसार एक नरक का नाम।

पंकपर्पटी, पङ्कपर्पटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौराष्ट्र-मृत्तिका। गोपीचन्दन।

पंकप्रभा, पङ्कप्रभा [संज्ञा पु.] (सं.) कीचड़ से भरे एक नरक का नाम।

पंकभाज्, पङ्कभाज् [वि.] (सं.) कीचड़ में डूबा हुआ।

पंकभारक, पङ्कभारक [वि.] (सं.) कीचड़हा।

पंकमंडूक, पङ्कमण्डूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोंघा २-छोटी सीप। सुतही।

पंकरुह, पङ्करुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

पंकवारि, पङ्कवारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काँजी।

पंकवास, पङ्कवास [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा। मकरा। कर्कट।

पंकशुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ताल में होने वाली सीप। सुतही। २-घोंघा।

पंकशूरण, पङ्कशूरण [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़।

पंकसूरण, पङ्कसूरण [संज्ञा पु.] कमल की जड़। भसीड़ा।

पंकार, पङ्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-गड़हों के कीचड़ में होने वाला एक पेड़। २-जल-कूब्जक। ३-सिघाड़ा। ४-सेवार। ५-पुल। ६-बांध। सन्तु। ७-सीढ़ी। जीना। नसैनी

पंकिन, पङ्किन [वि.] (सं.) कीचड़ से भरा हुआ कीचड़ से सना हुआ।

पंकिल, पङ्किल [वि.] (सं.) [स्त्री. पंकिला] १-जिसमें कीचड़ हो। २-गंदला। मैला। मलिन।

पंकेज, पङ्केज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

पंकेरुह, पङ्केरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

पंकेशय, पङ्केशय [वि.] (सं.) कीचड़ में रहने वाला।

पंकेशया, पङ्केशया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

पंकण, पङ्कण [संज्ञा पु.](सं.) चांडाल का झोंपड़ा।

पंक्ति, पङ्क्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऐसी परम्परा जिसमें एक प्रकार की बहुत सी वस्तुएं, व्यक्ति या जीव एक दूसरे के बाद एक सीध में हों। श्रेणी। कतार। २-खींची हुई सीधी रेखा। लकीर। ३-सेना में दस-दस योद्धाओं की श्रेणी। ४-दस की संख्या। ५-साथ बैठकर भोजन करने वाले लोग। ६-वर्तमान या जीवित पीढ़ी। ७-एक वैदिक छंद का नाम जो चालीस अक्षरों का होता है। ८-पांच अक्षर वाला एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और अन्त में दो गुरु होते हैं।

पंक्तिकंटक, पङ्क्तिकण्टक [वि.] (सं.) पंक्तिदूषक।

पंक्तिका, पङ्क्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंक्ति। पंगत। पतनार।

पंक्तिकृत, पङ्क्तिकृत [वि.] (सं.) श्रेणीबद्ध। पंक्तिबद्ध।

पंक्तिग्रीव, पङ्क्तिग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

पंक्तिचर, पङ्क्तिचर [संज्ञा पु.] (सं.) कुरर नामक पक्षी।

पंक्तिच्युत, पङ्क्तिच्युत [वि.](सं.) किसी कलंक अथवा दोष के कारण जाति बहिष्कृत। बिरादरी से निकाला हुआ।

पंक्तिदूषक, पङ्क्तिदूषक [वि.] (सं.) पंगत को दूषित करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) जातिबहिष्कृत पुरुष जिसके साथ पंक्ति या पंगत बैठकर कोई भोजन न करे या जिसके साथ बैठकर भोजन करने से भोजन वाले पतित हो जायँ।

पंक्तिपावन, पङ्क्तिपावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना तथा दान देना श्रेष्ठ माना गया है। ऐसा ब्राह्मण पंगत को पवित्र करता है।(मनुस्मृति)। २-वह गृहस्थ जो साग्नियुक्त हो।

पंक्तिबद्ध, पङ्क्तिबद्ध [वि.] (सं.) पंक्ति या कतार में बंधा, रखा या लगाया हुआ श्रेणीबद्ध।

पंक्तिरथ, पङ्क्तिरथ [संज्ञा पु.] (सं.) राजा दशरथ।

पंक्तिवाह्य, पङ्क्तिवाह्य [वि.] (सं.) पंगति से निकाला हुआ। जातिच्युत।

पंक्तिबीज, पङ्क्तिबीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-बबूल। २-उरगा। ३-कर्णिकार।

पंख [संज्ञा पु.] (हिं.) डैना। पर। चिड़िया, पतंगे आदि के वह अवयव जिनकी सहायता से वह हवा में उड़ते हैं।

पंख जमना-मृत्यु या विनाश के लक्षण प्रकट होना। २-बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई पड़ना। शामत आना। *पंख लगना*-गति में बहुत वेग होना।

पंखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फूलों का वह रंगीन पटल जिसके खिलने या छितराने से फूल का रूप बनता है। पुष्पदल।

पंखा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पंखी] वह उपकरण जिसे डुलाने या इधर उधर ले जाने से हवा होती या लगती है। बिजना। बेना। *पंखा करना*-पंखा हिलाकर हवा करना।

पंखाकुली [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कुली या श्रमिक जिसका कार्य पंखा खींचना होता है। पंखा खींचने वाला कुली।

पखाउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पखाउज'।

पंखापोश [संज्ञा पु.] (हिं.) पंखे के ऊपर चढ़ाने का गिलाफ।

पंखिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूसे या भूसे के महीन टुकड़े। पांकी। २-पंखड़ी।

पंखी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पक्षी। चिड़िया। २-एक प्रकार का ऊनी कपड़ा। ३-हलकी और बहुत पतली-पतली पत्तियाँ जो सारवू के फल के सिरे पर होती हैं। ४-जुलाहे के एक औजार का नाम। ५-पंखड़ी। पतिंगा। पांखी।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पंखा।

पँखुड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मनुष्य के शरीर में कंधे के पास का वह भाग जहाँ हाथ जुड़ा रहता है। कंधे और बांह का जोड़। पखौरा।

पँखुड़ी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फूल का दल। पँखड़ी।

पँखुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पँखुड़ा'।

पँखेरू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पखेरू'।

पंग [वि.] (हिं.) १-लंगड़ा। स्तब्ध। बेकाम। (संज्ञा पु.] (देश.) १-एक पेड़ का नाम जो आसाम की ओर सिलहट कछार आदि में होता है। २-एक प्रकार का नमक जो लिवरपूल में होता है।

पंगत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पांत। पंगती। कतार। ८-भोजन के समय भोजन करने वालों की पंक्ति। ३-भोज। ४-सभा। समाज जुलाहे के करघे में लगने वाला एक औजार।

पंगति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पंगत'।

पँगला [वि.] (हिं.) [स्त्री. पँगली] पंगु। लंगड़ा

पँगली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] लंगड़ी। पंगु (स्त्री.)।

पंगा [वि.] (हिं.) [स्त्री. पंगी] १-लंगड़ा। स्तब्ध बेकाम।

पँगायत [संज्ञा पु.] (हिं) चरपाई का पायताना। गोडवारी।

पँगाप्त [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार की मछली।

पंगी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] लंगड़ी। पंगु (स्त्री) [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धान के खेत में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा। २-वह मिट्टी जो नदी के घट जाने पर जमी रहती है।

पंगु, पङ्गु [वि.] (सं.) जो पैर से चलने में असमर्थ हो या न चल सकता हो। लूला। लंगड़ा। पंगुल। [संज्ञा पु.] (सं.) २-शनैश्चर। एक वातरोग जो मनुष्य के पैरों में होता है। ३-एक प्रकार का साधु जो भिक्षावृत्ति या मलमूत्रोत्सर्ग के अतिरिक्त सारे दिनभर में अपने काम के लिये एक योजन से अधिक दूर नहीं जाता।

पंगुक, पङ्गुक [वि.] (सं.) लंगड़ा। लूला।

पंगुगति, पङ्गुगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) [illegible] छंद का वह दोष जब किसी स्थान पर गुरु के स्थान में लघु अथवा लघु के स्थान में गुरु का प्रयोग होता है।

पंगुग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकर। २-मकर राशि।

पंगुल [वि.] (सं.) लगड़ा। लूड़ा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अंडी का पेड़। चाँदी के [illegible] सफेद रंग का घोड़ा।

पंगुल्यहारिणी, पङ्गुल्यहारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंगोनी।

पंगो [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह मिट्टी जो नदी बरसात बीत जाने पर डालती है।

पंच, पञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाँच की संख्या या अंक। पाँच वा अधिक मनुष्यों का समुदाय। ३-सर्वसाधारण। जनता। लोक। ४-कुछ आदमियों का चुना हुआ वह दल जो कोई झगड़ा या मामला निपटाने के लिए नियत हो। न्याय करने वाला समाज। ५-वे लोग जो फौजदारी के मुकदमे सुनने के समय दौरा जज की सहायता के लिए उनके साथ बैठते हैं।

पंच की भीख-सर्वसाधारण की कृपा। सबका आशीर्वाद। *पंच की दुहाई*-सब लोगों से अपने प्रति किये गये अन्याय को दूर करने या सहायता करने की पुकार। *पंच परमेश्वर*-पांच आदमियों का या पंचायत में बैठे लोगों का कहना ईश्वर वाक्य के तुल्य है। (किसी को) *पंच मानना या बदना*-झगड़ा निपटाने के लिए किसी को नियत करना।

पंचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच का समूह या समुदाय। पाँच का संग्रह। वह जिसके पांच अवयव या भाग हों। पांच सैकड़े का व्याज। ४-शकुन शास्त्र। ५-पाशुपतदर्शन उल्लिखित आठ वस्तुएँ जिनमें से प्रत्येक के पांच पांच भेद होते हैं। वह आठ वस्तुएँ इस प्रकार

हैं-लाभ, मल, उपाय, देश, अवस्था, विशुद्ध, दीक्षाकारिक और बल।

[संज्ञा स्त्री] (सं.) धनिष्ठा से रेवती तक के पांच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं (फलित-ज्योतिष)।

पंचकन्या, पञ्चकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार पाँच स्त्रियां जो विवाहित होने पर कन्या ही रहीं या कन्या के समान मानी जाती हैं। यथा-अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी।

पंचकपाल, पञ्चकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) पांच प्यालों में बनाया हुआ या भेंट किया हुआ। वह पुरोडाश जो पांच कपलों में पृथक, पृथक पकाया जाय।

पंचकर्ण, पञ्चकर्ण [वि.] (सं.) (पशुओं के) कान पर पांच की संख्या दागना।

पंचकर्प, पञ्चकर्प [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम की ओर का एक देश जिसे नकुल ने राजसूय-यज्ञ के समय जीता था। (महाभारत)।

पंचकर्म, पञ्चकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिकित्सा में पांच क्रियाएं जैसे-वमन, विरेचन, यस्न, निरूहवस्ति और अनुवासन। २-वैशेषिक के अनुसार पांच प्रकार के कर्म-उत्क्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन।

पंचकल्याण, पञ्चकल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) लाल या काले रङ्ग का वह घोड़ा जिसका सिर या पैर सफेद हो।

पंचकवल, पञ्चकवल [संज्ञा पु.] (सं.) पाँच ग्रास या कौर अन्न जो स्मृति के मतानुसार दीन-हीनों के लिये निकाल देने चाहिएं। यथा-कुत्ते, पतित, कोढ़ी, रोगी और कौए आदि के लिये।

पंचकषाय, पञ्चकषाय [संज्ञा पु.] (सं.) पांच प्रकार के वृक्षों का कसैला द्रव्य। यथा-जामुर, सेम्हर, खिरैंटी, मौलसिरी और बेर।

पंचकाम, पञ्चकाम [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्र के अनुसार कामदेव के पांच नाम। यथा-काम, मन्मथ, कन्दर्प, मकरध्वज और मीनकेतु।

पंचकारण, पञ्चकारण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य की उत्पत्ति के लिये जैनमतानुसार पांच कारण। यथा-काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म।

पंचकुर, पञ्चकुर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत की उपज की वह बंटाई जिसके पांच भागों में से एक भाग जमींदार लेता है।

पंचकृत्य, पञ्चकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर या शिव के पांच काम। यथा-सृष्टि, स्थिति, ध्वंस, विधान और अनुग्रह। २-पक्षपौड़ वृक्ष। पखौड़े का पेड़।

पंचकृत्वस् [अव्य.] (सं.) पांच बार। पांच मरतबा।

पंचकृष्ण, पञ्चकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक कीट का नाम जिसका उल्लेख सुश्रुत में है।

पंचकोण, पञ्चकोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच कोने। २-कुण्डली में लग्न से पांचवां और नवां स्थान। [वि.] जिसमें पांच कोने हों। पंचकोना।

पंचकोल, पञ्चकोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच जाति का समूह। २-वैद्यक के अनुसार पीपल, पिपरामूल, चव्य, चित्रकमूल और सौंठ इन पांच भिन्न-भिन्न जाति के द्रव्यों का समूह।

पंचकोश, पञ्चकोश [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्त और उपनिषद् के मतानुसार शरीर को संघटित करने वाले पांच कोश (स्तर)। यथा-अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मोनामयकोश, विज्ञानमयकोश और आनन्दमयकोश।

पंचकोष, पञ्चकोष [संज्ञा पु.] (सं.) शरीरस्थ पांचकोष। यथा-अन्नमयकोष, प्राणमयकोष, मोनामयकोष, विज्ञानमयकोष और आनन्दमयकोष।

पंचकोस [संज्ञा पु.] (हिं.) पांच कोस की लंबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि। काशी।

पंचकोसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पंचक्रोशी'।

पंचक्रोश, पञ्चक्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) पांच कोस की लम्बाई चौड़ाई में बसी काशी नगरी। काशी।

पंचक्रोशी, पञ्चक्रोशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पांच कोस के घेर में बसी हुई काशी नगरी। २-(प्रयाग, काशी आदि) किसी तीर्थ स्थान की धार्मिक दृष्टि से होने वाली परिक्रमा।

पंचक्लेश, पञ्चक्लेश [संज्ञा पु.] (सं.) योग-शास्त्र के अनुसार अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश नामक पांच प्रकार के क्लेश।

पंचक्षारगण, पञ्चक्षारगण [संज्ञा पु.] (सं.) पांच प्रकार के मुख्य क्षार या लवण। यथा-काचलवण, सैंधव, समुद्र, विट् और सौवर्चल। (वैद्यक)।

पंचगंगा, पञ्चगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा इन पांच नदियों का समूह। २-काशी का एक प्रसिद्ध स्थान जहां गंगा में किरणा और धूपपापा नदियां मिली थीं। यह दोनों नदियां अब लुप्त हो गई हैं।

पंचगण, पञ्चगण [संज्ञा पु.] (सं.) विदारीगंधा, वृहती, पृश्निपर्णी, निदिग्धका और भूकूष्मांड नामक पांच औषधियों का गण या समुदाय। (वैद्यक)।

पंचग, पञ्चगत [संज्ञा पु.] (सं.) बीजगणित के अनुसार वह राशि जिसमें पांच वर्ण हों।

पंचगव, पञ्चगव [संज्ञा पु.] (सं.) पांच गायों का समुदाय।

पंचगव्य, पञ्चगव्य [संज्ञा पु.] (सं.) गाय से उत्पन्न पांच पदार्थ। यथा-दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर। यह बहुत पवित्र माने जाते हैं।

पंचगव्यघृत, पञ्चगव्यघृत [संज्ञा पु.] (सं.) अपस्मार और उन्माद में दिया जाने वाला एक घृत का नाम (आयुर्वेद)।

पंचगीत, पञ्चगीत [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के अन्तर्गत पांच प्रसिद्ध प्रकरण जिनके नाम इस प्रकार हैं। वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषीगीत।

पंचगु, पञ्चगु [वि.] (सं.) पांच गाय देकर खरीदा हुआ।

पंचगुण, पञ्चगुण [वि.] (सं.) पांच गुना। पांच से गुणा किया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के पांच गुण। यथा-शब्द, स्पर्श, रूप रस और गंध।

पंचगुणी, पञ्चगुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमीन। भूमि।

पंचगुप्त, पञ्चगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-कछुवा २-चार्वाकमत। चार्वाकदर्शन जिसमें पंचेन्द्रिय का गोपन प्रधान माना गया है।

पंचगुप्तिरसा, पञ्चगुप्तिरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असवरग। स्पृक्का।

पंचगौड़, पञ्चगौड़ [संज्ञा पु.] (सं.) सारस्वत कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल इन पांच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग। (यह विभाग स्कंदपुराण के सह्याद्रि खंड में मिलता है)।

पंचचक्र, पञ्चचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार पांच प्रकार के चक्र जिनके नाम इस प्रकार हैं-राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र।

पंचचत्वारिंश, पञ्चचत्वारिंश [वि.] (सं) पैंतालीसवां।

पंचचत्वारिंशत्, पञ्चचत्वारिंशत् [वि.] (सं.) पैंतालीस।

पंचचामर, पञ्चचामर [संज्ञा पु.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अन्त में गुरु होता है।

पंचचूड़ा, पञ्चचूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रामायण के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

पंचजन, पञ्चजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच या पांच प्रकार के जनों का समूह या समुदाय। २-एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ३-जीवात्मा। ४-पांच प्रकार के जीव। यथा—देवता, मानव, गंधर्व, नाग और पितृ। ५-पांच वर्ण। यथा-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अंत्यज। ६-मनुष्य जीव तथा शरीर से सम्बन्ध रखने वाले प्राण आदि। ७-राजा

सगर के एक पुत्र का नाम।

पंचजनी, पञ्चजनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) पांच आदमियों की मंडली। पंचायत।

पंचजनीन, पञ्चजनीन [संज्ञा पु] (सं.) १-अभिनयकर्त्ता विदूषक या मसखरा। २-अभिनेता। ३-नकल करने वाला। भांड़।

पंचजन्य, पञ्चजन्य [संज्ञा पु.] (सं) वह प्रसिद्ध शंख जिसे श्रीकृष्ण बजाया करते थे। यह पंचजन नामक राक्षस की हड्डी का बना हुआ था।

पंचज्ञान, पञ्चज्ञान [संज्ञा पु.] १-बुद्धदेव की उपाधि। २-पाशुपत-सिद्धांतों का जानकार पुरुष।

पंचतंत्र, पञ्चतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं) एक नीति विषयक संस्कृत ग्रंथ का नाम।

पंचतंत्री, पञ्चतन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांच तार वाली एक प्रकार की वीणा। [वि.] पांच तार वाली जिसमें पांच तार हों।

पंचतक्ष, पञ्चतक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच बढ़इयों का समूह।

पचतत्व, पञ्चतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १ पंचभूत। पांच तत्वों का समूह यथा-पृथ्वी, जल, वायु तेज और आकाश। २-पंचमकार (तांत्रिकों के) मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन। ३-तंत्र के मतानुसार-गुरुतत्व, मंत्रतत्व, मनस्तत्व, देवतत्व और ध्यानतत्व।

पंचतन्मात्र, पञ्चतन्मात्र [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रियों से गृहण किये जाने वाले पांच विषय। यथा-शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गंध।

पंचतप, पञ्चतप [संज्ञा पु.] (सं.) वह साधु जो ग्रीष्मऋतु में अपने चारों ओर चार जगहों में आग जला और पांचवें सूर्य के आतप से पंचाग्नि तपता है।

पंचतपा [संज्ञा पु.] (सं.) पंचाग्नि तापने वाला। तपस्वी। चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठकर तपस्या करने वाला।

पंचता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पांच का भाव। २-शरीर को घटित करने वाले पांच भूतों का अलग-अलग अवस्थान। मृत्यु। मौत।

पंचताल, पञ्चताल [संज्ञा पु.] (सं.) अष्टताल का एक भेद।

पंचतालेश्वर, पञ्चतालेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्धजाति का एक राग।

पंचतिक्त, पञ्चतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) पाँच प्रकार की कड़ुवी औषधियाँ। यथा-गिलोय (गुरुच), कंटकारि (भटकटैया), सोंठ, कुट और चिरायता। भावप्रकाश के अनुसार पंच तिक्त यह हैं। नीम की जड़ की छाल, परवल की जड़, अड़ूसा, कंटकारि (कटैया) और गिलोय।

पंचतृण, पञ्चतृण [सं स्त्री.] (सं.) पाँच प्रकार के तृणों का समूह। यथा-कुश, काँस, शर (सरकंडा), दर्भ (डाभ) और ईख। भावप्रकाश के मतानुसार, शालि (धान), ईख, कुश, काश और शर।

पंचतोलिया [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का झीना महीन वस्त्र।

पंचत्रिंश, पञ्चत्रिंश [वि.] (सं.) पैंतीसवां।

पंचत्रिंशत्, पञ्चत्रिंशत् [वि.] (सं.) पैंतीस।

पंचत्रिंशति, पञ्चत्रिंशति [वि.] (सं.) पैंतीस।

पंचत्व, पञ्चत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाँच का भाव। २-मृत्यु। मौत। विनाश।

पंचत्व प्राप्त होना-मरना। मौत आना।

पंचथु, पञ्चथु [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

पंचदश, पञ्चदश [वि.] (सं.) पन्द्रह।

पंचदशधा, पञ्चदशधा [अव्य] (सं.) पन्द्रह प्रकार का।

पंचदशाह, पञ्चदशाह [संज्ञा पु.] (सं.) पन्द्रह दिन का समय।

पंचदशी, पञ्चदशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूर्णमासी। २-अमावस्या। ३-वेदान्त का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ का नाम।

पंचदेव, पञ्चदेव [संज्ञा पु.] (सं.) हिन्दुओं के पाँच प्रकार के देवता जिनकी आजकल वे पूजा करते हैं-आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी।

पंचदेवता, पञ्चदेवता [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'पंचदेव'।

पंचद्रविड़, पञ्चद्रविड़ [संज्ञा पु.] (सं.) महाराष्ट्र तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविण इन पाँच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।

पंचधा, पञ्चधा [अव्य.] (सं.) पाँच प्रकार।

पंचनख, पञ्चनख [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जिसके हाथ और पैरों में पाँच नख होते हैं। जैसे बन्दर।

पंचनद, पञ्चनद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पंजाब। जहाँ पाँच नदियां हैं। यथा-शतद्रू, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्था। इनके आधुनिक नाम यह हैं-सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और जेहलम। २-पंजाब प्रदेश जहाँ उक्त पांच नदियां बहती हैं। ३-काशी में एक तीर्थ जिसे पंचगंगा कहते हैं।

पंचनवत, पञ्चनवत [वि.] (सं.) पंचानवेवां।

पंचनवति, पञ्चनवति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंचानवे की संख्या।

पंचनाथ, पञ्चनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

पंचनाम [संज्ञा पु.](हिं.) १-वह कागज जो वादी और प्रतिवादी अपना झगड़ा या कोई विवाद निपटाने के लिये पंच चुनते समय लिखते हैं वह कागज जिस पर पंचों का अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।

पंचनिंब, पञ्चनिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) नीम के पांच अवयव-पत्ता, छाल, फल, फूल और मूल।

पंचनिर्णय, पञ्चनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी गांव के चुने हुए पंचों का किया हुआ निर्णय या फैसला। २-किसी विवाद या झगड़े के लिए नियुक्त मध्यस्थ का निर्णय। एर्बिट्रेशन।

पंचनिर्णय-पर्षत्, पञ्चनिर्णय-पर्षत् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पंचायत-बोर्ड'।

पंचनीराजन, पञ्चनीराजन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देवी विग्रह के सामने पांच वस्तुओं का घुमाना। यथा-दीपक, कमल, वस्त्र, पान और आम।

पंचपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शकुन-शास्त्र जिसमें अ, इ, उ, ए और ओ इन पांच वर्णों को पक्षी कल्पना करके शुभाशुभ विचार किया जाता है।

पंचपत्र, पञ्चपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौ. चंडालकंद।

पंचपनड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पचौली'।

पंचपर्णिका, पञ्चपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरक्षी नाम का पौधा।

पंचपर्व, पञ्चपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) पांच पर्व। यथा—चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और रविसंक्रान्ति।

पंचपल्लव, पञ्चपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) पांच वृक्षों के पत्ते। यथा—आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल। यह पूजा में घट के ऊपर रखने के लिए उपयोग में आते हैं।

पंचपान, पञ्चपात [संज्ञा पु.] (सं.) पंचौली नामक पौधा।

पंचपात्र, पञ्चपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिलास के आकार का चौड़े मुँह का एक बरतन जो पूजा में जल रखने के काम में आता है। २-पार्वण श्राद्ध। वह श्राद्ध जिसमें पाँच पात्रों में रखकर भोग लगाया जाता है।

पंचपाद, पञ्चपाद [वि.] (सं.) पाँच पैर वाला। पाँच पैरों का। [संज्ञा पु.] (सं.) संवत्सर।

पंचपिता, पञ्चपिता [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पंचपितृ'।

पंचपितृ, पञ्चपितृ [संज्ञा पु.] (सं.) पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता और भय से रक्षा करने वाला।

पंचपित्त, पञ्चपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक शास्त्रानुसार बारह, छाग, महिष, मत्स्य और मयूर का पित्ता।

पंचपीरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पाँच मुसलमान पीरों को पूजने वाला।

पंचपुष्प, पञ्चपुष्प [संज्ञा पु](सं.) पाँच प्रकार के फूल जो देवताओं को प्रिय हैं। यथा—चम्पा, आम, शमी, कमल और कनेर।

पंचप्राण, पञ्चप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) शरीरस्थ पांच प्राणवायु जिनके नाम—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान है। हृदयदेश में प्राणवायु, गुह्यदेश में अपानवायु, नाभिदेश में समान वायु, कण्ठदेश में उदासवायु और सम्पूर्ण शरीर में व्यानवायु रहती है।

पंचप्रासाद, पञ्चप्रासाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मंदिर जिसमें चार कोनों पर चार कलस और लाट या धौरहरा हो।

पंचबंध, पञ्चबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अर्थदंड जो चोरी गई या खोई हुई वस्तु से या उसके मूल्य का पाँचवां भाग होता है।

पंचबटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पंचवटी'।

पंचबला, पञ्चबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में बला, अतिबला, नागबला, राजबला और महाबला नामक औषधियों का समूह।

पंचबाण, पञ्चबाण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पंचबाण'।

पंचबाहु, पञ्चबाहु [संज्ञा पु] (सं.) शिव। महादेव।

पंचभद्र, पञ्चभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिलोय, पित्तपापड़ा, मोथा, चिरायता और सोंठ इन पाँच औषधियों का समूह। २-वह घोड़ा जिसके शरीर में पांच जगह फूल के चिह्न हों। पंचकल्याण घोड़ा। [वि.](सं.) १-पाँच गुणों वाला। २-पाँच मसाले की (चटनी)। ३-पाँच शुभ लक्षणों वाला (घोड़ा)।

पंचभर्त्तारी, पञ्चभर्त्तारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाँच भर्त्तार या पति वाली, द्रोपदी।

पंचभुज, पञ्चभुज [संज्ञा पु.] (सं.) पांच भुजा वाली आकृति। पांचकोण वाला। पंचकुनिया

पंचभूत, पञ्चभूत [संज्ञा पु.] (सं.) पांच प्रधान तत्व जिनसे संसार की सृष्टि हुई—आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी।

पंचम, पञ्चम [वि.] (सं.) [स्त्री. पंचमी] १-पांचवां। २-रुचिर। सुन्दर। ३-दक्ष। निपुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सात स्वरों में से पांचवां स्वर जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २-एक राग जो छः प्रधान रागों में तीसरा है। ३-मैथुन।

पंचमकार, पञ्चमकार [संज्ञा पु.] (सं.) वाममार्गियों के मत के अनुसार मद्य; मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंचमहापातक, पञ्चमहापातक [संज्ञा पु.] (सं.) मनुस्मृति के अनुसार पांच महापातक। यथा—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु स्त्री-गमन और इन पातकों को करने वाले का सहवास।

पंचमहायज्ञ, पञ्चमहायज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) स्मृतियों और गृह्यसूत्रों के अनुसार पांच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थ के लिए आवश्यक है। वे पांच कृत्य इस प्रकार हैं-१-अध्यापन-इसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। संध्या-वन्दन इसी के अन्तर्गत है। २-पितृतर्पण-इसे पितृयज्ञ भी कहते हैं। ३-हवन-इसको देवयज्ञ कहते हैं। ४-बलिवैश्वदेव-इसे भूतयज्ञ कहते हैं। ५-अतिथिपूजन-इसे नृयज्ञ कहते हैं।

पंचमहाव्याधि, पञ्चमहाव्याधि [संज्ञा पु.] (सं.) अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद वैद्यकशास्त्र के अनुसार ये पांच बड़े रोग।

पंचमहाव्रत, पञ्चमहाव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपग्रह यह योगशास्त्र के अनुसार रिपांच आचरण।

पंचमहाशब्द, पञ्चमहाशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) पांच प्रकार के बाजे। यथा-शृङ्ग (सींग), तम्मट (खंजड़ी), शंख, भेरी और जयघण्टा। इन बाजों को एक साथ बजवाने का अधिकार प्राचीककाल में राजांओं महाराजाओं को ही प्राप्त था।

पंचमहिष, पञ्चमहिष [संज्ञा पु.] (सं.) भैंस से पांच पदार्थ-मूत्र, गोबर, दही, दूध और घी (सुश्रुत)।

पंचमार, पञ्चमार [संज्ञा पु.] (सं.) बलदेव के एक पुत्र का नाम।

पंचमापक, पञ्चमापक [संज्ञा पु.] (सं.) वह अर्थदंड (प्राचीनकाल) जिसमें पांच माशा सुवर्ण अपराधी को देना पड़ता था।

पंचमाषिक, पञ्चमाषिक [संज्ञा पु.] (सं.) पंचमापक नामक अर्थदंड।

पंचमास्य, पञ्चमास्य [वि.] (सं.) हर पांचवें महीने होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल कोयल।

पंचमी, पञ्चमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुक्ल या कृष्णपक्ष की पांचवीं तिथि। २-द्रोपदी। ३-एक रागिनी। ४-व्याकरण में अपादानकारक यज्ञ की वेदी में कासं आने वाली एक प्रकार की ईंट जो एक पुरुष की लंबाई के पांचवें भाग के बराबरं होती थी तंत्र में एक मंत्र विधि।

पंचमुख, पञ्चमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह। २-शिव। ३-एक प्रकार का रुद्राक्ष जिसमें पांच लकीरें होती हैं।

पंचमुखी, पञ्चमुखी [वि.] (सं.) पांच मुख वाला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बासा। अड़ूसा २-जवा। गुड़हल का फूल। ३-सिंही। ४-पार्वती।

पंचमुद्रा, पञ्चमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रानुसार पूजन में पांच प्रकार की मुद्राएं दिखाना आवश्यक हैं। वे पांच मुद्रा यह हैं-आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, संबोधनी और संमुखी करणी।

पंचमुष्टिक, पञ्चमुष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक के अनुसार सन्निपात रोग की एक औषध का नाम।

पंचमूल, पञ्चमूल [संज्ञा पु.] (सं) औषधियों की जड़ों से बनने वाली एक प्रकार की पाचन औषधि (वैद्यक)।

पंचमूली, पञ्चमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्वल्प-पंचमूल।

पँचमेल [वि.] (हिं.) १-जिसमें पांच प्रकार की चीजें मिली हों। २-जिसमें सब प्रकार की चीजें हों। ३-साधारण।

पंचमेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) पांच प्रकार की मेवों का समूह। यथा बादाम, छुहारा, किशमिश, चिरोंजी और गरी।

पंचमेश, पञ्चमेश [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष के अनुसार पांचवें घर का स्वामी।

पंचयज्ञ, पञ्चयज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) पंचमहायज्ञ।

पंचयाम, पञ्चयाम [संज्ञा पु.] (सं.) दिन।

पँचरंग [वि.] (हिं.) १-पांच रंग का। पांच रंग वाला। २-अनेक रंगों वाला। रंग-बिरंग का

पँचरंगा [वि.] (हिं.) १-पांच रंगों का। २-अनेक रंगों का।

पंचरक्षक, पञ्चरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) पखौड़ा-वृक्ष।

पंचरत्न, पञ्चरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच प्रकार के रत्न। यथा—सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती यह पांचों रत्न। २-महाभारत के पांच प्रसिद्ध उपाख्यान।

पंचरसा, पञ्चरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमला।

पंचरात्र, पञ्चरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच रातों का समूह। पांच रात का समय। २-एक प्रकार का यज्ञ जो पांच दिन में होता था ३-वैष्णव धर्म का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

पंचराशिक, पञ्चराशिक [संज्ञा पु.](सं.) गणित का एक प्रकार का हिसाब या क्रिया जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पांचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पंचरीक, पञ्चरीक [संज्ञा पु.] (सं.) संगीतशास्त्र के अनुसार एक ताल।

पंचल, पञ्चल [संज्ञा पु.] (सं.) शकरकंद।

पंचलक्षण, पञ्चलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण जिसमें पांच लक्षण होते हैं। वह लक्षण इस प्रकार हैं—सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय, देवताओं की उत्पत्ति और वंशपरम्परा, मन्वन्तर और मनुष्य के वंश का विस्तार।

पँचलड़ा [वि.] (हिं.) जिसके पांच लड़ हों। पांच लड़ों वाला।

पँचलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में पहनने की की पांच लड़ों वाली माला।

पँचलरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पँचलड़ी'।

पंचलवण, पञ्चलवण [संज्ञा पु,] (सं.) पाँच प्रकार के नमक—काँच, सेंधा, सामुद्र, विट और सोंचर। वैद्यक।

पंचलांगलक, पञ्चलाङ्गलक [संज्ञा पु.] (सं.) महादान। अर्थात् उतनी भूमि का दान जिसको पांच हल जोत सकें।

पंचलोकपाल, पञ्चलोकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) पांच लोकपाल। यथा-विनायक, दुर्गा, वायु और दोनों अश्विनीकुमार।

पंचलोह, पञ्चलोह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पंचलौह'।

पंचलोहक, पञ्चलोहक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पंचलौह'।

पंचलौह, पञ्चलौह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच धातु-सोना, चांदी, तांबा, पीतल और राँगा। २-पांच प्रकार का लोहा-वज्रलौह, कांतलौह, पिंडलौह और क्रौंचलौह।

पंचवक्त्र, पञ्चवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पंचवट, पञ्चवट [संज्ञा पु.] (सं) यज्ञोपवीत। जनेऊ।

पंचवटी, पञ्चवटी [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच वृक्षों का समूह। यथा-अश्वत्थ, बिल्व, वट, आँवला और अशोक। २-रामायण के अनुसार दंडकारण्य के अन्तगत एक स्थान जहां श्रीराम वनवास में रहे थे। यह स्थान गोदावरी के किनारे पर नासिक के पास है। यहीं पर सीताहरण हुआ था।

पंचवदन, पञ्चवदन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

पंचवर्ग, पञ्चवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पांच वस्तुओं क समूह।

पंचवर्ण, पञ्चवर्ण [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रणव के पांच वर्ण अर्थात अ, उ, म नाद और विंदु। २-एक वन का नाम। ३-एक पर्वत का नाम

पंचवर्णक, पञ्चवर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरे का पेड़।

पंचवल्कल, पञ्चवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) वट, गूलर, पीपल, पाकर और बेत या सिरिस की छाल।

पंचवाँमा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रस्म जो गर्भ रहने से पांचवें महीने में की जाती है।

पंचवाण, पञ्चवाण [संज्ञा पु.] (सं) १-कामदेव के पांच वाण। यथा-द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद। २-कामदेव के पांच पुष्पवाण। यथा-कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल। ३-कामदेव।

पंचवाद्य, पञ्चवाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र, आनद्ध, सुशीर, घन और वीरों का गर्जन।

पंचवार्षिक, पञ्चवार्षिक [वि.] (सं.) प्रति पांचवें वर्ष होने वाला।

पंचवाही, पञ्चवाही [वि.] (सं.) (सवारी) जिसमें पांच घोड़े जुते हों।

पंचविंश, पञ्चविंश [वि.] (सं.) पच्चीसवां।

पंचविंशति, पञ्चविंशति [वि.] (सं.) पच्चीस।

पंचविंशतिका, पञ्चविंशतिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) पच्चीस (कहानी आदि का) का संग्रह।

पंचविधि, पञ्चविधि [वि.] (सं.) पांच प्रकार का पांच गुना।

पंचवृत्ति, पञ्चवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पातंजलि के अनुसार मन की पांचवृत्ति यथा—प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति।

पंचशत, पञ्चशत [वि.] (सं.) जिसका जोड़ ५०० हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-१०५ की संख्या। २-पाँचसौ।

पंचशब्द, पञ्चशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-तंत्री, ताल, झांझ, नगारा और तुरही यह पांच मंगलसूचक बाजे। २-व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग। ३-पांच प्रकार की ध्वनि। यथा—वेदध्वनि, वंदीध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि और निशानध्वनि।

पंचशर, पञ्चशर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव के पांच वाण। २-कामदेव के पांच पुष्पवाण ३-कामदेव।

पंचशः, पञ्चशः [अव्य.] (सं.) पांच-पांच करके

पंचशाख, पञ्चशाख [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ (जिसमें शाखारूप अंगुलियाँ होती है।) २-पनसाखा।

पंचशाखा, पञ्चशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पनसखा।

पंचशिख, पञ्चशिख [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंघा नामक बाजा। २-महाभारत के अनुसार एक मुनि का नाम जो महर्षि कपिल के पुत्र थे। यह सांख्यशास्त्र के प्रधान आचार्यों में से माने जाते हैं।

पंचशैरीषक, पञ्चशैरीषक [संज्ञा पु.] (सं.) सिरस के वृक्ष के पांच अंग जो दवा के काम में आते हैं। यथा—जड़, छाल, पत्ते, फूल और फल।

पंचशूरण, पञ्चशूरण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार पांच विशेष कंद। यथा—अत्यम्लपूर्णी, कांडवेल, मालाकंद, सूरन, सफेदसूरन।

पँचषष्ठ [वि.] (सं.) पैंसठवां।

पंचषष्ठि [वि.] (सं.) पैंसठ।

पंचसंधि पञ्चसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याकरण में संधि के भेद -स्वरसन्धि, व्यंजनसन्धि विसर्गसन्धि, स्वादिसंधि और प्रकृतिभाव

पंचसप्तति, पञ्चसप्तति [वि.] (सं.) पचहत्तर।

पंचसिद्धौषधि, पञ्चसिद्धौषधि [संज्ञा स्त्री.](सं) सालिबमिस्री, बाराहीकंद, रोदंती, सर्पाक्षी और सरहटी वैद्यक की पाँच औषधियां।

पंचसुगंध, पञ्चसुगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार पांच प्रकार की सुग औषधियां- लौंग, शीतलचीनी, जायफल, कपूर, (कर्पूर) लौंग और सुपारी।

पंचसूना, पञ्चसूना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मतानुसार गृहस्थों से गृहस्थ कार्यों में होने वाली पांच प्रकार की हिंसा-चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाड़ू देना, कूटना और पानी का घड़ा रखना, इन पांच छोटे-छोटे कामों से हिंसा होती है। इन्हें मनु ने चुल्ली, पेषणी, उपस्कर, कुंडनी और उदकुंभ कि है। इन्हीं पांच प्रकार की हिंसाओं के दोष की निवृत्ति के लिये पंचमहायज्ञों का विधान किया गया है।

पंचस्कंध, पञ्चस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पांच स्कंध- रूपस्कंध, वेदनास्कंध, संज्ञास्कंध, संस्कारस्कंध, और विज्ञानस्कंध। बौद्ध दर्शन में गुणों की समष्टि को स्कंध कहते हैं।

पंचस्नेह, पञ्चस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) घी, तेल, चरबी, मज्जा और मोम। यह पांच प्रकार की चिकनाइयां।

पंचस्रोतस्, पञ्चस्रोतस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक तीर्थ का नाम। एक प्रकार का यज्ञ।

पंचस्वेद, पञ्चस्वेद [संज्ञा पु.](सं.) पांच प्रकार के स्वेद जिनका उल्लेख वैद्यक में आता है। यथा-लोष्टस्वेद, वालुकास्वेद, वाष्पस्वेद घटस्वेद और ज्वालास्वेद।

पंचहजारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पांच हजार की सेना का अधिपति। २-मुगल राजत्व काल में दी जाने वाली एक पदवी जो बड़े-बड़े लोगों को मिलती थी।

पंचांग, पञ्चाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच अंग या पाच अंगों वाली वस्तु। २-वृक्ष के पांच अंग-जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल। ३-तंत्र के मतानुसार पांच कर्म-जप, होम, तर्पण, अभिषेक और विप्र-भोजन जो पुरश्चरण में किये जाते हैं। ४-ज्योतिष के अनुसार वह पुस्तिका जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार लिखे रहते हैं। पत्रा। ५-राजनीति में सहाय, साधन, उपाय, देश-कालभेद और विपद्-प्रतिकार। ६-प्रणाम करने का वह ढंग जिसमें घुटने, हाथ और माथा पृथ्वी के ऊपर टेककर आंखें देवता की ओर करके मुख से 'प्रणामसूचक' शब्द कहना। ७-तांत्रिक उपासना में किसी इष्टदेव का कवच, स्तोत्र, पद्धति, पटल और सहस्रनाम। ८-वह घोड़ा जिसके चारों पैर टाप के पास सफेद हों और सफेद टीका माथे पर हो। पंचकल्याण। पंचभद्र। ९-कछुआ कच्छप।

पंचांग-मास, पञ्चाङ्ग-मास [संज्ञा पु.] (सं.) पहली से अन्तिम तिथि या तारीख तक का वह पूरा महीना जो पंचांग में किसी महीने में दिखाया जाता है।

पंचांग-वर्ष, पञ्चाङ्ग-वर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पंचांग में दिखाया हुआ आदि से अन्त तक सम्पूर्ण या पूरा वर्ष।

पंचांगी, पञ्चाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी की कमर में बांधने का रस्सा।

पंचांगुल, पञ्चाङ्गुल [वि.] (सं.) पांच अंगुल ड़ा। जो पांच अंगुल का हो [संज्ञा पु.] (सं.) एरंड। अंडी। रेंड। तेजपत्ता।

पंचान्तरीय, पञ्चान्तरीय [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध मतानुसार पांच प्रकार के पातक-माता, पिता अर्हत और बुद्ध का घात तथा याजकों के साथ विवाद।

पंचाइत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पंचायत'।

पंचाक्षर, पञ्चाक्षर [वि.] (सं.) जिसमें पांच अक्षर हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिष्ठा नामक वृत्ति जिसमें पांच अक्षर होते हैं। २-शिव का एक मंत्र जिसमें पांच अक्षर हैं। जैसे-ॐ नमः शिवाय।

पंचाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अन्वाहार्य, पचन, गार्हपत्य। आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य-नामक पांच अग्नियाँ। २-छांदोग्य-उपनिषद् के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्। ३-एक प्रकार की तपस्या जिसमें चारों ओर आग सुलगाकर सूर्य की गरमी में बाहर बैठा जाता है। आयुर्वेद के अनुसार चीता, चिचड़ी, भिलावां, गन्धक और मदार नामक औषधियां जो बहुत गरम होती हैं। [वि.] (सं.) १-पंचाग्नि की उपासना करने वाला। २-पंचाग्नि विद्या जानने वाला। ३-पंचाग्नि तापने वाला।

पंचाट, पञ्चाट [संज्ञा पु.] (हिं.) निर्णय करना या देना परिनिर्णय। अवार्ड।

पंचातप, पञ्चातप [संज्ञा पु.] (सं.) वह तपस्वी जो ग्रीष्मऋतु में तपते हुए सूर्य की गरमी में अपने चारों ओर आग जलाकर तपस्या करता है और ऊपर से सूर्य तपाता है। पंचाग्नि।

पंचात्मा, पञ्चात्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंच-प्राण।

पंचानन, पञ्चानन [वि.] (सं.) जिसके पांच-मुख हों। पंचमुखी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सिंह। सिंह को पंचानन दो कारणों से बताया जाता है। कुछ लोग पंच शब्द का अर्थ 'विस्तृत' या चौड़े मुँह से करते हैं। कुछ चारों पंजों समेत मुंह को मिलाकर पंचानन कहते हैं)। ३-संगीत में स्वरसाधन का एक ढंग या प्रणाली।

पंचाननी, पञ्चाननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव की पत्नी, दुर्गा।

पंचानवे [वि.] (हिं.) नब्बे और पांच। सौ में पांच कम।

पंचाप्सर, पञ्चाप्सर [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण में पंपा नामक तालाब जहां शतकर्णि नामक मुनि तप करते थे। (पुराण)।

पंचामरा, पञ्चामरा वैद्यक के अनुसार दूर्वा, विजया, बिल्वपत्र, निर्गुण्डी और काली तुलसी।

पंचामृत, पञ्चामृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिलाकर देवताओं के स्नान के लिये बनाया जाने वाला वह पदार्थ जिसे पवित्र समझ कर श्रद्धासहित पान किया जाता है। २-वैद्यक में पांच गुणकारी औषधियां गिलोय, गोखरू, मुसली, गोरखमुण्डी और शतावरी।

पंचाम्ल, पञ्चाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) पांच अम्ल या खट्टे पदार्थ-अमलवेद, इमली, जंभीरी-नीबू, कागजी नीबू, और बिजौरा। मतांतर से बेर, अनार, विपावलि, अमलवेद और बिजौरा-नीबू।

पंचायत, पञ्चायत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी विवाद या झगड़े का निबटारा करने के लिए चुने हुए लोगों की सभा। २-एक साथ बहुत से लोगों की बकवाद। ३-बहुत से लोगों का एकत्रित होकर किसी मामले या झगड़े पर विचार। पंचों का वादविवाद।

पंचायतन, पञ्चायतन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देवता और उसके साथ के चार देवताओं की मूर्तियों का समूह। जैसे राम-पंचायतन।

पंचायत-बोर्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रामीण लोगों की वह विचारसभा जिसमें गांव के प्रतिनिधि चुनकर आते हैं। यह आपस के सब प्रकार के झगड़े निबटाते और गांव की सफाई करने, पक्का मार्ग बनवाने का कार्य आदि इसके अधीन होता है।

पंचायती [वि.] (हिं.) १-पंचायत का। पंचायत का किया हुआ। २-पंचायत-सम्बन्धी। ३-बहुत से लोगों का मिलाजुला। साझे का जो कई लोगों का हो। ४-सब पंचों का। सर्व-साधारण का।

पंचायुध, पञ्चायुध [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम

पंचाल, पञ्चाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम जो ब्राह्मण ग्रंथों से लेकर उपनिषदों और पुराणों तक में पाया जाता है। यह हिमालय और चंबल के बीच गङ्गा के दोनों ओर था। २-[स्त्री. पंचाली] पंचाल देश का निवासी। ३-पंचालदेश का राजा। ४-एक ऋषि का नाम जो वाभ्रव्य गोत्र के थे। ५-शिव। महादेव। ६-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण (SSI) होता है। ७-दक्षिण देश की एक जाति। इस जाति के लोग बढ़ई और लोहार का काम करते हैं। ८-एक सर्प का नाम। ९-एक विषैला कीड़ा।

पंचालिका, पञ्चालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुतली। गुड़िया।

पंचालीस [वि.] (हिं.) देखो 'पैंतालीस'।

पंचाली, पञ्चाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बच्चों खेलने की पुतली या गुड़िया। २-पांचाली। द्रौपदी। ३-एक गीत का नाम। पांचाली। ४-चौसर की बिसात।

पंचावयव, पञ्चावयव [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय के पांच अवयव। यथा-प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

पंचावी, पञ्चावी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जिसके तले ढाई वर्ष का बच्चा हो।

पंचाश, पञ्चाश [वि.] (सं.) पचासवां।

पंचाशत, पञ्चाशत् [वि.] (सं.) पचास।

पंचाशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पचास श्लोक या कविता वाली पुस्तक।

पंचाशीत, पञ्चाशीत [वि.] (सं.) पच्चासीवां

पंचाशीति, पञ्चाशीति [वि.] (सं.) पच्चासी।

पंचास्य, पञ्चास्य [वि.] (सं.) पांच मुंह वाला। [संज्ञा पु.] १-शिव। २-सिंह। (पंचानन)।

पंचाह, पञ्चाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांच दिन में होने वाला एक यज्ञ। २-सामयोग के अन्तर्गत वह कृत्य जो सुत्या के पांच दिनों में किया जाता है।

पंचिका, पञ्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पांच अध्यायों या खंडों का समूह। २-पांच पासों से खेला जाने वाला एक खेल। ३-ऐतरेय-ब्राह्मण।

पंचीकरण, पञ्चीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्त में पंचभूतों का विभाग विशेष।

पंचीकृत, पञ्चीकृत [वि.] (सं.) भूत। जिसका पंचीकरण हुआ हो।

पंचूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छेददार बरतन या बच्चों का खिलौना जिससे बच्चे पानी भर कर खेलते हैं।

पंचेंद्रिय, पञ्चेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांच ज्ञानेन्द्रियां जिनसे प्राणियों को बाह्यजगत का ज्ञान होता है।

पंचेषु, पञ्चेषु [संज्ञा पु.] (सं.) (पांच इषु या शर वाला) कामदेव।

पंचो [संज्ञा पु.] (देश.) गुल्ली डंडे के खेल में एक प्रकार जिसमें गुल्ली को बाएं हाथ से उछालकर दहने हाथ से मारते हैं।

पंचोदन, पञ्चोदन [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ का नाम।

पंचोपण, पञ्चोपण [संज्ञा पु.] (सं.) पांच औषध विशेष-पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, मिर्च और चित्रक नामक पांच औषधियां।

पंचोष्मा, पञ्चोष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शरीरस्थ पांच प्रकार की अग्नि जो भोजन पचाती हैं।

पंचौदन, पञ्चौदन [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ का नाम।

पंचौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियों और डंठलों से सुगन्धित तेल निकलता है। यह पौधा पश्चिम भारत, मध्य प्रदेश, बम्बई और बरार में मिलता है। इसे पंचपात और पंचपानड़ी भी कहते हैं। [संज्ञा पु.] (हिं.) वंशपरम्परा से चली आती हुई एक उपाधि।

पंछा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी की सी तरह का एक प्रकार का स्राव जो प्राणियों के शरीर से या पेड़ पौधों के अंगों से चोट लगने पर या योंही निकलता है। २-छाले, फफोले या चेचक आदि में भरा हुआ पानी।

पंछाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फफोला। २-फफोले का पानी।

पंछी [संज्ञा पु.] (हिं.) पक्षी। चिड़िया। उड़ने वाला पखेरू।

पंज [वि.] (हिं.) देखो 'पाँच'।

पंजक [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ के पंजे का वह निशान या छापा जो प्रायः मांगलिक अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

पँजड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चौसर के एक दाव का नाम।

पंजना [क्रि. अ.] (हिं.) धातु के बरतन में टांके आदि के द्वारा जोड़ लगना। झलना। झाल लगना।

पंजर, पञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर की हड्डियों का ढाँचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराये रहता है। कंकाल। ठटरी। २-पसलियों का बना हुआ परदा। ऊपरी धड़ (छाती) का हड्डियों का घेरा। पाश्व, वक्षस्थल आदि की अस्थी पंक्ति। ३-शरीर। देह। ४-पिंजड़ा। ५-गाय का एक संस्कार। ६-कलियुग। ७-कोलकंद।

पंजरक, पञ्जरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत या लचीले डंठलों आदि का बुना हुआ बड़ा टोकरा। खाँचा। झाबा। २-पिंजड़ा।

पंजरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पजरना'।

पंजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अर्थी। टिकठी।

पंजहजारी [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानी राजत्वकाल में दी जाने वाली एक उपाधि जो सरदारों और दरबारियों को मिलती थी। उपाधिधारी लोग या तो पांच हजार सेना रखते थे या पांच हजार सेना के नायक बनाये जाते थे

पंजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ या पैर की पांचों उँगलियों का समूह। २-पांच का समूह। ३-उँगलियों और हथेली का संपुट। ४-दो व्यक्तियों में होने वाली ऐसे संपुटों की बल-परीक्षा। ५-जूते का अगला भाग, जिसमें उंगलियाँ रखी रहती हैं। ६-पांचों उंगलियों के आकार का अथवा सादा वह दो पल्लों वाला उपकरण जिससे कागज पत्र दबाकर रखे जाते है। ७-पांच बूटियों वाला ताश का पत्ता। ८-देखो 'पंजक'। ९-जूए का एक दांव जिसे नक्की भी कहते हैं।

छक्का पंजा-दांव-पेंच। चालबाजी। *पंजा करना या लड़ाना*-हाथ की उंगलियों में उंगलियां डालकर मरोड़ने का यत्न करना। *पंजा फेरना, मोड़ना या लेजाना*-पंजा लड़ाने में दूसरे का पंजा मरोड़ना। *पंजा फैलाना या बढ़ाना*-हथियाने या लेने का उद्योग करना। *पंजा मारना*-लेने के लिए हाथ फैलाना या लपकना। झपाटा मारना। *पंजे झाड़कर पीछे पड़ना*-सिर हो जाना। हाथ धोकर पीछे पड़ना। *पंजे में*-१-पकड़ में। मुट्ठी में। २-अधिकार में। *पंजे में लाना*-वश में करना। *पंजे से छूटना, निकलना*-वश या अधिकार में से निकल जाना। *पंजों के बल चलना*-घमंड करना।

पंजातोड़बैठक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

पंजाब [संज्ञा पु.] (फा.) भारत के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश जहां सतलज, व्यास, रावी, चनाब और जेहलम नाम की पांच नदियां बहती हैं। भारत विभाजन के कारण अब इसके दो भाग हो गये हैं।

पंजाबल [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊंची भूमि। (पालकी के कहारों की बोली)।

पंजाबी [वि.] (फा.) पंजाब का। पंजाब-संबंधी। [संज्ञा पु.] [स्त्री. पंजाबिन] पंजाब का रहने वाला। पंजाब का निवासी।

पंजिका, पञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंचांग। २-टीका। व्याख्या। ३-यमराज की वह लेखाबही जिसमें मनुष्यों के शुभाशुभ कार्यों का लेखा लिखा जाता है। ५-हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। रजिस्टर। *प्राप्त पंजिका*-आने वाले पत्र या वस्तुओं के हिसाब की पुस्तिका। रिसिप्ट रजिस्टर। *प्रेषक पंजिका*-भेजे जानेवाले पत्र या वस्तुओं के हिसाब या विवरण की पुस्तिका। डिस्पैच रजिस्टर।

पंजिकाकारक, पञ्जिकाकारक [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक। मुनीम।

पंजी, पञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंचांग। पत्रा। २-रूई का गोलाकार गाला जिससे सूत काता जाता है। रूई की पूनी या प्योनी। ३-हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। लेखा। बही। रजिस्टर। ४-गोलाई में लिपटा हुआ मोटे कागज का मुट्ठा।

पंजीकर, पञ्जीकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्यालय आदि में पंजी (रजिस्टर) पर हिसाब या विवरण चढ़ाने या लिखने वाला। लेखक। करणिक। क्लर्क। २-पत्रा या पंचांग बनाने वाला।

पंजीकारक, पञ्जीकारक [संज्ञा पु.] (स.) देखो 'पंजीकर'।

पंजीकृत, पञ्जीकृत [वि.] (सं.) लेखा आदि जो प्रमाणिक सिद्ध होने के लिये किसी राजकीय या सरकारी पंजी में लिखा अथवा चढ़ाया हुआ। राजपुस्तकांकित। जिसका निबन्ध हुआ हो। रजिस्टरी किया हुआ। रजिस्टर्ड।

पंजीकृत-कार्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) पंजीकृत किया हुआ या राजकीय पुस्तकांकित-कार्यालय रजिस्टरी किया हुआ कार्यालय। रजिस्टर्ड ऑफिस।

पंजीकृत-श्रमिकसंघ, पञ्जीकृत-श्रमिकसङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) वह श्रमिकसङ्घ जिसे पंजीकृत किया गया हो। रजिस्टर्ड ट्रेड-यूनियन।

पंजीबंधन, पञ्जीबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) लेखों आदि का प्रमाणिक सिद्ध होने के लिये किसी राजकीय या सरकारी पंजी में लिखा या चढ़ाया जाना। रजिस्ट्रेशन।

पंजीबद्ध, पञ्जीबद्ध [वि.] (सं.) लेखों आदि का प्रमाणिक होने के लिये किसी राजकीय पंजी में लिखा या चढ़ाया हुआ। राज-पुस्तकांकित। रजिस्टरी किया हुआ। रजिस्टर्ड।

पंजीयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी लेख या लेखे का पंजी में लिखा जाना। पंजी पर चढ़ाया जाना। २-नामसूची में नाम लिखा या चढ़ाया जाना। एनरोलमेंट। ३-देखो 'पंजीबंधन'।

पंजीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मिठाई जो आटे को घी में भूनकर उसमें धनिया, सोंठ जीरा आदि मिलाकर बनाई जाती है। इसका व्यवहार विशेषतः नैवेद्य में होता है। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दक्षिण भारत में होने वाला एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम आता है। जुकाम या सर्दी में इसकी पत्तियों और डंठलों का काढ़ा दिया जाता है। इसे इन्दुपर्णी और अजपाद भी कहते हैं।

पँजेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बरतनों को झालने का काम करने वाला कारीगर। बरतन में टांके आदि देकर जोड़ लगाने वाला।

पंड, पण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-नपुंसक। हिजड़ा। २-बिना फल वाला या जिसमें फल न लगते हों।

पंडक, पण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नपुंसक। हिजड़ा। २-वह पेड़ जिसमें फल न लगें।

पंडग, पण्डग [संज्ञा पु.] (सं.) खोजा। नपुंसक।

पंडरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) परनाला। पनाला। नाबदान।

धँडरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पँड़वा'।

पँड़री+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भूमि जो ईख बोने के लिये रखी हो। बखांव। पँडुवा।

पड़रू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पँड़वा'।

पंडुर [वि.] (हिं.) पांडुवर्ण का। पीला।

पंड [संज्ञा पु.] पिंड। शरीर।

पंडव, पंडवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पांडव'।

पंडवा [संज्ञा पु.] (?) भैंस का बच्चा।

पंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पंडाइन] १-किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी। घाटिया। पुजारी। २-रोटी बनाने वाला ब्राह्मण। रसोइया। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विवेकात्मिका बुद्धि। विवेक। ज्ञान। बुद्धि। २-शास्त्रज्ञान

पंडाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पंडे की पत्नी।

पंडापूर्व, पण्डापूर्व [संज्ञा पु.] (सं.) मीमांसा-शास्त्र के अनुसार वह धर्माधर्मात्मक अदृष्ट जो अपने कर्म का फल देने में अयोग्य हो। अदृष्ट फल की अप्राप्ति। भाग्य में जो लिखा हो उसका न होना।

पंडाल [संज्ञा पु.] (?) वह बड़ा मण्डप जो किसी सभा के उत्सव या अधिवेशन के लिए बनाया जाता या लगाया जाता है।

पंडित, पण्डित [वि.] (सं.) [स्त्री. पंडिता, पंडिताइन, पडितानी] १-विद्वान। बुद्धिमान। २-चतुर। निपुण। योग्य। ३-संस्कृत भाषा का विद्वान्। ४-वह जिसे किसी विषय का बहुत अधिक और अच्छा ज्ञान हो। [संज्ञा पु.] १-शास्त्रज्ञ। २-ब्राह्मण।

पंडितक, पण्डितक [वि.] (सं.) बुद्धिमान। अक्लमन्द। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

पंडितजातीय, पण्डितजातीय [वि] (सं.) कुछ-कुछ चतुर।

पंडितमंडल, पण्डितमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) विद्वानों का समुदाय।

पंडितमानिक, पण्डितमानिक [संज्ञा पु.] (सं.) अपने को पंडित मानने वाला व्यक्ति।

पंडितमानी, पण्डितमानी [संज्ञा पु.] (सं.) अपने को पंडित मानने वाला व्यक्ति।

पंडितम्मन्य, पण्डितम्मन्य [वि.] (सं.) अपने को विद्वान मानने वाला। पांडित्याभिमानी। मूर्ख।

पंडितवादी, पण्डितवादी [वि.] (सं.) अपने को बुद्धिमान समझने का दावा रखने वाला।

पंडितसभा, पण्डितसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्वानों का समुदाय।

पंडिता, पण्डिता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] विदुषी बुद्धिमती।

पंडिताइन+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-पंडित की स्त्री। २-ब्राह्मणी।

पंडिताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विद्वता। पांडित्य २-पंडितों का काम या व्यवसाय।

पंडिताऊ [वि.] (हिं.) पंडितों के ढंग का। पण्डितों की तरह का।

पंडितानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पंडित की स्त्री। २-ब्राह्मणी।

पंडु, पण्डु [वि.] (सं.) १-पीलापन लिए हुए मटमैला। २-सफेद। श्वेत। ३-पीला।

पंडुक [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पंडुकी] कपोत या कबूतर की जाति का एक पक्षी जो ललाई लिए भूरे रंग का होता है। पेंड़की। फाख्ता।

पंडुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मादा पंडुक।

पंडोह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) परनाला। पनाला। नाबदान।

पँत्यारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पंक्ति'।

पंथ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मार्ग। रास्ता। राह। २-आचार-व्यवहार का ढंग। रीति। ३-धर्ममार्ग। सम्प्रदाय। मत।

पंथ गहना–१-रास्ता पकड़ना। चलने के लिये रास्ते पर होना। २-चाल पकड़ना। ३-किसी मत या सम्प्रदाय को ग्रहण करना। किसी सम्प्रदाय का अनुयायी होना। *पंथ दिखाना*–१-रास्ता या मार्ग बताना। २-धर्म या आचार की रीति बताना। उपदेश देना। *पंथ देखना या निहारना*–प्रतीक्षा या इन्तजार करना।

पंथ में या पंथ पर पाँव देना–१-चलाना। २-आचरण ग्रहण करना। *पंथ पर लगना*–१-रास्ते पर होना। २-चाल ग्रहण करना। *किसी के पंथ पर लगना*–१-किसी का अनुयायी होना। २-किसी को तंग करने के लिए उसके पीछे पड़ना। ※ *पंथ सेना*–प्रतीक्षा करना। आसरा देखना।

+[संज्ञा पु.] (हिं.) वह हलका भोजन जो रोगी को लंघन या उपवास के पीछे शरीर कुछ स्वस्थ होने पर दिया जाता है।

पंथकी※ [संज्ञा पु.] (हिं.) पथिक। राही। राहचलता मुसाफिर।

पंथाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पथिक। राही। बटोही २-किसी मत, पंथ या सम्प्रदाय का अनुयायी।

पंथान※ [संज्ञा पु.] (हिं.) मार्ग। रास्ता।

पंथिक※ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पथिक'। 'पंथी'।

पंथिक-दल [संज्ञा पु.] (हिं.) सिख सम्प्रदाय के अनुयायियों का एक सामाजिक और राजनैतिक। *पंथिक पार्टी*।

पंथी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पथिक। राही। बटोही २-किसी पंथ या मत का अनुयायी।

पंद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शिक्षा। उपदेश। सीख।

पंदरह [वि.] (हिं.) दस और पांच।

पंदरहवाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री पंदरहवीं] चौदह के बाद आने वाला।

पँधलाना [क्रि. स.] (देश.) फुसलाना। बहलाना

पंप [संज्ञा पु.](अं.) वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक ओर से दूसरे ओर तक पहुंचाई जाती है। २-एक प्रकार का जूता।

पंपा, पम्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी। २-इस नदी के किनारे बसा हुआ नगर। ३-इस नगर के पास का एक सर या तालाब। (रामायण)।

पंपासर [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण के अनुसार दक्षिण देश की एक नदी और उसी से लगा हुआ एक ताल।

पंवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पीला रंग जिससे ऊन रंगी जाती है।

पँवर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पँवरी'।

पंवरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-तैरना। पानी में तैरना। २-थाह लेना। पता लगाना।

पंवरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रवेश द्वार या गृह। वह फाटक या घर जिसमें होकर किसी मकान में जायँ। ड्योढी।

पँवरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्वारपाल। दरबान ड्योढीदार। २-शुभ अवसर पर दरवाजे पर बैठकर मंगल गीत गाने वाला याचक।

पँवरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पंवरी'। २-पदत्राण। पाँवरी। खड़ाऊ।

पँवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-व्यर्थ की विस्तार से कही हुई बात। लम्बी-चौड़ी कथा जिसे सुनते-सुनते जी ऊबे। एक प्रकार का देहाती गीत। ३-बात का बतक्कड़। बढ़ाई हुई बात।

पँवार [संज्ञा पु.] (हिं.) राजपूतों की एक जाति।

पँवारना+ [क्रि. स.] (हिं.) हटना। दूर करना। फेंकना।

पँवारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) लोहे में छेद करने का लोहारों का एक औजार।

पँसरहट्टा [संज्ञा पु.](हिं.) वह बाजार जहां पंसारियों की दुकानें हों।

पंसारी [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्दी, मिर्च, मसाले और साधारण उपयोग में आने वाली औषधियाँ बेचने वाला बनिया।

पंसा-सार※ [संज्ञा पु.] (सं.) पासे का खेल।

पँसियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) पासे से मारना।

पँसुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पसली'।

पँसुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पसली'।

पँसेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पांच सेर की तोल या बाट।

प [वि.] (सं.) १-पीने वाला। जैसे—पादप। १-रक्षक। शासक। अभिभावक। जैसे—गो-प, नृ-प, क्षिति-प। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। पवन। २-पत्र। पत्ता। ३-अंडा।

पइग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पग'।

पइज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पैज'।

पइठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पैठ'।

पइठना※ [क्रि. अ.] (हिं.) पैठना।

पइता [संज्ञा पु.] (?) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक मगण, एक भगण और सगण होता है। इसे 'पाईता' भी कहते हैं।

पइना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैना'।

पइला+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक बरतन जिससे अनाज नापते हैं। यह पांच सेर की माप का होता है।

पइसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पैठना'।

पइसार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पैठ। प्रवेश।

पउँरि, पउँरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौंरि'।

पउनार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौनार'।

पउला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की साधारण और भद्दी खड़ाऊ जिसमें अंगुलियां फैलाने के स्थान पर रस्सी लगी रहती हैं।

पकड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण। २-पकड़ने का ढंग। ३-लड़ाई या प्रतियोगता में एक बार आकर परस्पर गुथना। ४-भिड़न्त। हाथापाई। ५-वह त्रुटि या सूत्र जिससे किसी वास्तविक दोष या तथ्य का पता लगे। दोष, भूल आदि ढूंढ निकालने की क्रिया या भाव।

पकड़ में आना–१-पकड़ा जाना। २-दांव पर चढ़ना। घात में आना।

पकड़धकड़ [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'धरपकड़'।

पकड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-कोई वस्तु इस प्रकार हाथ में लेना कि वह छूट न सके। थामना। धरना। गहना। ग्रहण करना। २-दो, अपराधी आदि को अपने अधिकार या बंधन में लेना। काबू में करना। गिरफ्तार करना। ३-गति या व्यापार न करने देना। कुछ करने से रोकना। स्थिर करना। ४-ढूंढ़ निकालना। पता लगाना। ५-कुछ करते हुए को कोई विशेष बात आने पर रोकना। टोकना। ६-किसी बात में आगे बढ़े हुए के बराबर या पास हो जाना। ७-फैलने वाली वस्तु में लग कर उसमें अपना संचार करना या उसमें संचरित होना। संबंध होने के कारण फैलना। ८-अपने स्वभाव या वृत्ति के अन्तर्गत करना। ९-आक्रान्त करना। ग्रसना। घेरना। १-किसी चलने वाली चीज तक पहुँचना।

पकड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना। ग्रहण कराना।

पकड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पकड़ने के क्रिया या भाव। २-पकड़ने की मजदूरी।

पकड़ाना [क्रि. स.] (हिं) १-किसी के हाथ में देना या रखना।

पकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फल आदि का पुष्ट होकर खाने योग्य होना। पक्वावस्था को पहुँच जाना। कच्चा न रहना। २-गरमी या आँच खाकर गलना या तैयार होना। रंधना। सीझना। ३-फोड़े या घाव में मवाद आना। पीब से भरना। ४-चौसर में गोटियों को सब घरों को पार करके अपने घर में आ जाना। ५-कीमत ठहराना। सौदा पटना। मामला तै होना।

बाल पकना–(वृद्धावस्था के कारण) बाल सफेद होना। बुढ़ापा आना। *(मिट्टी का) बरतन पकना* आवे में आँच खाकर कड़ा होना। *कलेजा पकना*–जी जलना।

पकरना※+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पकड़ना'।

पकरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पाकर'।

पकला※ [संज्ञा पु.] (हिं.) फोड़ा।

पकवान [संज्ञा पु.] (हिं.) घी में तलकर बनाया हुआ खाद्य-पदार्थ।

पकवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पकाने का काम दूसरे से कराना। पकाने में प्रवृत्त करना। २-आँच पर तैयार करना।

पकसालू [संज्ञा पु.] (देश.) बंगाल, आसाम, चटगांव और बरमा में होने वाला एक प्रकार का बाँस। इसकी पतली पट्टियों से टोकरे बनाये जाते हैं।

पकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पकाने की क्रिया या भाव। २-पकाने की मजदूरी।

पकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। २-आग पर चढ़ाकर या रखकर गलाना या तैयार करना। रींधना। सिझाना। ३-फोड़े आदि किसी उपचार द्वारा इस अवस्था में पहुँचाना कि उसमें मवाद पड़ जाय। ४-पक्का करना।

(मिट्टी का) बरतन पकाना–आवे की आँच से कड़ा और पुष्ट करना। *कलेजा पकाना*–जी जलाना। दुःख या संताप पहुँचाना।

पकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'प' अक्षर।

पकारांत, पकारान्त [वि.] (सं.) जिसके अन्त में 'प' अक्षर हो।

पकारादि [वि.] (सं.) जिसके आदि में 'प' हो।

पकाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पकने का भाव। २-पीब। मवाद।

पकावन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पकवान'।

पकौड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पकौड़ी] घी या तेल में पकी हुई बेसन या पीठी की बरी या बट्टी। बड़ी।

पकौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे आकार का पकौड़ा।

पक्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाकर का वृक्ष।

पक्कण [संज्ञा पु.] (सं.) चाण्डाल या वर्बर का झोंपड़ा।

पक्ति [वि] (सं.) १ पका हुआ। दृढ़। पक्का। २-परिपुष्ट।

पक्तृ [वि.] (सं.) १ पकाहुआ। २-दृढ़। पक्का। परिपुष्ट।

पक्करस [वि.] (सं.) मदिरा। शराब।

पक्कवारि [संज्ञा पु.] (सं.) काँजी।

पक्का [वि.] (हिं.) १-अन्न या फल जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो। जो कच्चा न हो। पका हुआ। २-जो आग पर पकाया गया हो। जिसमें कोई कोर कसर या त्रुटि न रह गई हो। जिसमें पूर्णता आ गई हो। ३-जो अपनी पूरी बाढ़ अथवा प्रौढ़ता को पहुंच गया हो। पुष्ट। ४-जिसमें संस्कार या सशोधन की प्रक्रिया पूर्ण हो गई हो। साफ और दुरुस्त। तैयार। जैसे-पक्की चीनी। ५-जो आंच पर कड़ा या दृढ़ हो गया हो। ६-जिसे अभ्यास हो। अनुभवी। तजुर्बेकार। ७-जो अभ्यस्त या निपुण व्यक्ति के द्वारा बना हो। ८-दृढ़। मजबूत। ९-जिसमें व्यय लागत या छीजन आदि निकल चुके हो। १०-ठहराया हुआ। निश्चित। ११-प्रमाणिक। १२-जिसका मान प्रमाणिक हो।

पक्का पान–वह पान जो कुछ दिन रखने से स्वादिष्ट हो गया हो। *पक्का खाना या पक्की रसोई*–घी में पका हुआ भोजन। निरोग और पुष्ट जल। *पक्का काम*–असली कारीगरी का काम। *पक्का घर या मकान*–मसाले और ईंटों से बना हुआ घर। *पक्का रंग*–न छूटने वाला रंग। *पक्का कागज*–वह कागज जिस पर लिखी हुई बात कानून या नियम से ठीक समझी जाय।

पक्की बही या खाता–वह बही जिस पर ठीक जंचा या तै किया हुआ हिसाब उतारा जाता हैं। *पक्का चिट्ठा*–ठीक जंचा चिट्ठा।

पक्काइत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दृढ़ता। मजबूती। निश्चय। पोढ़ाई।

पक्काचिट्ठा [संज्ञा पुं.] (हिं.) आय-व्यय का ठीक जांचा हुआ चिट्ठा।

पक्कीरसोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घी के योग से बने या घी में तले हुए खाद्य पदार्थ।

पक्खर※ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'पाखर'। [वि.] पक्का। पुख्ता।

पक्खा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाखा'।

पक्तपौड [संज्ञा पु.] (सं.) पखौड़ा नाम का एक पेड़।

पक्तव्य [वि.] (सं.) पाक योग्य।

पक्ति [वि.] (सं.) १-पका हुआ। २-दृढ़। मजबूत।

पक्त [वि.] (सं.) १-पका हुआ। २-दृढ़। मजबूत। पुष्ट।

पक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) गार्हपत्य अग्नि।

पक्व [वि.] (सं.) १-पका हुआ। २-पक्का। दृढ़। परिपुष्ट।

पक्वकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकड़ने वाले। २-फोड़ा आदि को पकाने वाला, नीम।

पक्वकेश [संज्ञा पु.] (सं.) पके हुए सफेद बाल।

पक्वता [संज्ञास्त्री.] (सं.) पक्व होने का भाव पक्कापन।

पक्वमान [वि](सं.) पकाया हुआ।

पक्वरस [संज्ञा पु.] (सं.) मद्य । मदिरा । शराब

पक्ववारि [संज्ञा पु.] (सं.) उबाला हुआ जल।

पक्वश [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्बर जाति का नाम। एक अत्यन्त नीच जाति । चांडाल ।

पक्वातीसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अतिसार जो आमातिसार का उलटा होता है

पक्वान्न [संज्ञा पु.] (स.) १-पका हुआ अन्न। २-घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाकर बनाई हुई खाने की चीज।

पक्वाशय [संज्ञा पु.] (सं.) पेट के भीतर का वह स्थान जहां आमाशय में ढीला होकर अन्न जाता है तथा यकृत् और क्लोम ग्रंथियों से मिलता है। यह वास्तव में अंत्र का ही एक भाग है। पेट के भीतर का वह स्थान जहां पहुँचकर अन्न पचता है।

पक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी स्थान या पदार्थ के वे दोनों छोर या किनारे जो अगले और पिछले से भिन्न हों। २-किसी विषय के दो या अधिक परस्पर विरोधी तत्वों, सिद्धांतों अथवा दलों में से कोई एक । ३-वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो तथा जिस का किसी ओर से विरोध होता या हो सकता हो। ४-झगड़ा या विवाद करने वालों में से कोई एक व्यक्ति अथवा दल । पार्टी । ५-न्याय या तर्क में वह वस्तु या तत्व जिसके विषय में साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं। जिस प्रकार-'तेल जलता है' में 'तेल' पक्ष है तथा उसके सम्बन्ध में साध्य 'जलता है' की प्रतिज्ञा की गई है। ६-सहायकों अथवा सवर्गी वालों का दल। साथ रहने वाला समूह। ७-किसी ओर से लड़ने वालों का दल। फौज सेना। बल। ८-सहायक। सखा। साथी। ९-चिड़ियों का डैना। पंख। पर। १०-तीर के पिछले भाग में लगा हुआ पर। शरपक्ष। ११-एक मास के दो भागों में एक। चांद्रमास के दो विभागों में से कोई एक। पंद्रह दिन का समय। पखवारा जो १५ दिन का होता है। १२-किसी दल का अनुयायी। १३-दो की संख्यावाची शब्द। १४-राजा के चढ़ने का हाथी। १५-दीवार। दीवाल। १६-उत्तर का उत्तर। प्रत्युत्तर। जवाब का जवाब १७-मकान। घर। गृह। १८-अग्निकुण्ड का वह स्थान जहां राख जमा हो। १९-सामिप्य पड़ोस। २०-कोष्ठक। २१-शुद्धता। सर्वाङ्ग पूर्णता। २२-हाथ में पहनने का कड़ा। २३-महाकाल शिव।

पक्ष गिरना-मत अथवा युक्ति द्वारा सिद्ध या प्रमाणित न हो सकना। *पक्ष निर्बल पड़ना*-मत का युक्तियों द्वारा पुष्ट न हो सकना। *पक्ष प्रबल पड़ना*-मत का युक्तियों द्वारा सिद्ध या पुष्ट होना। *पक्ष संभालना*-किसी मत या बात का खंडन होने से बचना। *पक्ष में*-मत या बात के प्रमाण में। *किसी बात के पक्ष में होना*-किसी बात का होना ठीक या अच्छा समझना। *(किसी का) पक्ष करना*-पक्षपात करना। *पक्ष ग्रहण करना*-पक्ष लेना। *(किसी का) पक्ष लेना*-१-(झगड़े में) किसी की ओर होना। २-पक्षपात करना। *केश पक्ष*-बालों का पक्ष।

पक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पक्ष जिसमें ऐसे लोग हों जो किसी विषय में अथवा किसी कार्य के लिये मिलकर एक हो गये हों। दल। पार्टी।

पक्षगम [वि.] (सं.) उड़ने वाला। [संज्ञा पु.] चिड़िया। पक्षी।

पक्षग्रहण [सज्ञा पु] (सं.) किसी भी पक्ष का हो जाना।

पक्षग्राह [वि.] पक्ष लेने वाला।

पक्षघात [संज्ञा पु.] (सं.) वह वातरोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं। लकवा। अर्द्धाङ्ग रोग।

पक्षघ्न [वि.] (सं.) पक्षनाशक।

पक्षचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी जो अपने दल या झुण्ड से बहक गया हो। २-चन्द्रमा। ३-सेवक। चाकर। नौकर।

पक्षछिद [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पक्षज [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

पक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरफदारी। मेलमिलाप २-किसी एक पक्ष में हो जाना। ३-किसी पक्ष या दल को ग्रहण कर लेना। ४-किसी का एक अंग बन जाना। ५-किसी पक्ष का समर्थन करना।

पक्षति [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षमूल। डैने की जड़।

पक्षत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षधर्मता। पक्षता।

पक्षद्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहस के दोनों पहलू २-युग्मपक्ष अर्थात् एक मास।

पक्षद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-अप्रधान द्वार। अपना निजी दरवाजा। २-खिड़की का दरवाजा।

पक्षधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्ष का आदमी तरफदार। पक्षपाती। २-पक्षी। ३-चन्द्रमा। ४-अपने दल या झुंड से बहका हुआ हाथी।

पक्षनाड़ी [संज्ञा पु.] (सं.) पर की कलम।

पक्षपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-औचित्य अथवा न्याय का विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होने वाली प्रवृत्ति या सहानुभूति और उस पक्ष का समर्थन। २-पर या डैनों का पतन अथवा झड़ना।

पक्षपातिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पक्षपात। तरफदारी। २-सहायता। मदद।

पक्षपाती [संज्ञा पु.] (सं) वह जो किसी के पक्ष का पोषण या समर्थन करे। तरफदार।

पक्षपुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपना निजू दरवाजा। प्राईवेट डोर। २-बाजू। डैना।

पक्षपोषक [वि.] (सं) पक्ष का पोषण या समर्थन करने वाला। तरफदारी करने वाला।

पक्षमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर। डैना। २-प्रतिपदा तिथि।

पक्षयालि [संज्ञा पु] (सं) खिड़की।

पक्षरचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पक्ष-साधन के लिए रचा हुआ आयोजन। षड्यंत्र। चक्र

पक्षरूप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पक्षवर्द्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहने वाली द्वादशतिथि।

पक्षवध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पक्षाघात'।

पक्षवान् [वि.] (हिं.) १-पक्षवाला। परवाला। उच्चकुलोत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़। पर्वत। (पुराणों में लिखा है कि पहले पर्वतों के पर हुआ करते थे और वह उड़ते फिरते थे पीछे इन्द्र ने इनके पर काट डाले)।

पक्षवाहन [संज्ञा पु] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

पक्षबिंदु, पक्षबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं) कंकपक्षी

पक्षव्यापी [वि.] (सं.) समूचे तर्क में व्याप्त होने वाला या समूचे तर्क को ग्रहण करने वाला।

पक्षस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-डैना। बाजू। २-किसी गाड़ी के एक बाजू का भाग। ३-सेना की एक टुकड़ी। ४-अर्द्धमास। ५-नदी-तट।

पक्षसुंदर, पक्षसुन्दर [संज्ञा पु.] (सं) लोध्र।

पक्षहत [वि.] (सं) शरीर के एक भाग को लकवा मारा हुआ।

पक्षहर [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

पक्षहोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पखवारे तक होने वाला यज्ञ। २-वह धार्मिक विधि या भृत्य जो प्रतिपक्ष किया जाय।

पक्षांत, पक्षान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृष्ण या शुक्लपक्ष का पन्द्रहवां दिन। २-पूर्णिमा। ३-अमावस्या। ४-सेना के पक्षों के छोर।

पक्षांतर, पक्षान्तर [वि.] (सं.) १-दूसरी तरफ। दूसरी ओर। २-पक्ष। ३-भिन्न कल्पना।

पक्षाघात [संज्ञा पु.](सं) १-अर्द्धाङ्ग रोग जिसमें शरीर के दाहने या बाएं किसी पार्श्व के सब अङ्ग क्रियाहीन हो जाते हैं। लकवा। फलिज। अर्द्धाङ्ग रोग। (यह रोग वायु कुपित होने के कारण होता है)। २-युक्ति का खंडन।

पक्षाभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिद्धांताभास। २-झूठा अर्जी दावा।

पक्षालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की एक अनुचरी मातृका का नाम।

पक्षालु [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

पक्षावसर [संज्ञा पु.] (सं) पूर्णिमा।

पक्षिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मादा पक्षी। चिड़िया। २-दो दिन और एक रात का र

३-पूर्णिमा । [वि.] (सं.) पक्षवाली ।

पक्षितीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण का एक तीर्थ जो प्राचीनकाल में हिन्दुओं और बौद्धों में बहुत प्रसिद्ध था। यह मद्रास से १६ या १७ कोस दक्षिण में स्थित है। आजकल इसको तिरुक्कडुकुनरम् है।

पक्षिपति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पक्षिराज'।

पक्षिप्रवर [संज्ञा पु] (सं.) गरुड़।

पक्षिराज [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों का राजा गरुड़

पक्षिल [संज्ञा पु.] (सं.) वात्सायन मुनि का नाम।

पक्षिलस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन आचार्य का नाम।

पक्षिशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिड़िया या पक्षियों को रखने का घर। चिड़ियाघर।

पक्षिसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षिराज गरुड़।

पक्षींद्र, पक्षीन्द्र [संज्ञा पु] (सं) १-गरुड़। २-जटायु।

पक्षी [संज्ञा पु.] (सं) गरुड़।

पक्षीपानीयशालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कठोता या कुंड जिसमें पक्षियों के लिए जल भरा जाता है।

पक्षीपुंगव, पक्षीपुङ्गव [संज्ञा पु.] (सं.) जटायु

पक्षीय [वि.] (सं) किसी पक्ष या दल से सम्बन्ध रखने वाला।

पक्षीशावक [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी का बच्चा।

पक्षीश्वर [वि] (सं.) गरुड़।

पक्षेष्टि [वि] (सं.) एक पक्ष में होने वाला। पाक्षिक। [संज्ञा पु.] (सं) वह यज्ञ जो प्रतिपक्ष किया जाय।

पक्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की बिरौनी। बिरौनी।

पक्ष्मकोप [संज्ञा पु.](सं.) बरौनी के आंख में चले जाने से उत्पन्न हुई आंख की जलन।

पक्ष्मप्रकोप [संज्ञा पु.] (सं.) आंख की बिरौनी या पलकों का एक रोग।

पक्ष्मल [वि.] (सं) १-सुन्दर बिरौनी वाला। २-बालों वाला। बालदार।

पक्ष्य [वि.] (सं.) १-एक पाख मे उत्पन्न होने वाला। २-पक्षपाती। ३-एकतरफी। एक लंग का। ४-प्रत्येक पक्ष में बदलने वाला।

पखंड [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाखंड'।

पखंडी [वि.] (हि.) देखो 'पाखंडी'।

पख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात या शर्त। अड़ङ्गा। २-झगड़ा बखेड़ा। ३-दोष। त्रुटि। नुक्स।

पखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) फूलों का रंगीन पटल जो पहले इसे बंद किये रहता है और खिलने पर फैल जाता है। पुष्पदल। पंखड़ी।

पखनारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिड़ियों के पंखों की डंठी जिसे ढकी के छेद में तीली रोकने के लिए लगाते हैं। (जुलाहे)।

पखपान [संज्ञा पु.] (हिं.) पाँवपोश नामक पैर में पहनने का एक गहना।

पखराना [क्रि. स.] (हिं.) धुलवाना। पखारने का काम कराना।

पखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-देखो 'पाखर'। २-देखो 'पँखड़ी'।

पखरैत [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घोड़ा, बैल, या हाथी, जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखरोटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने या चांदी के वर्क से लपेटा हुआ पान का बीड़ा।

पखवाड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अर्द्धमास। पन्द्रह दिन का समय। २-चान्द्रमास का पूर्वार्द्ध या उत्तरार्द्ध।

पखवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पखवाड़ा'

पखाउज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पखावज'।

पखाटा [संज्ञा पु.] (देश.) धनुष का कोना।

पखान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाषाण'।

पखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कहावत। मसल। २-देखो 'पाखाना'।

पखारना [क्रि. स.] (हिं.) धोकर साफ करना। धोना।

पखाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पानी भरने की चमड़े की बड़ी मशक। २-धौंकनी।

पखालपेटिया [संज्ञा पु.] (हिं) १-वह जिसका पेट पखाल के समान बड़ा हो। बड़े पेट वाला। बहुत खाने वाला आदमी। भिश्ती।

पखाली [संज्ञा पु.] (हिं.) पखाल या मशक। में पानी भरने वाला। भिश्ती।

पखावज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है।

पखावजी [संज्ञा पु.] (हिं.) पखावज बजाने वाला

पखिया [संज्ञा पु.](हिं.) झगड़ालू। बखेड़ा मचाने वाला।

पखी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षी'।

पखीरी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षी'।

पखुड़ी, पखीरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पंखड़ी'।

पखुरा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पखुवा'।

पखुवा [संज्ञा पु.] (ह.) बांह का वह भाग जो किनारे या बगल में पड़ता है। पार्श्व। बगल पखुरा। *पखुए से लगकर बैठना*-बगल में सटकर बैठना।

पखेरुवा* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'पखेरू'।

पखेरू [संज्ञा पु.] (हिं.) पक्षी।

पखेव [संज्ञा पु.] (देश) वह चारा जो गाय या भैंस ब्याने पर ६ दिन तक दिया जाता है।

इसमें सोंठ, गुड़, हल्दी, मंगरैला और का आटा होता है।

पखौड़ा [संज्ञा पु.](सं.) एक पेड़ का नाम। पक- पौड़ नामक वृक्ष।

पखौआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पंख। पर।

पखौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पंख। पर। २- मछली का पर।

पखौड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पखौरा'।

पखौरा [संज्ञा पु.](हिं.) कंधे और भुजदंड की संधि। कंधे पर की हड्डी।

पग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैर। पांव। २-चलने में एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह रखना। डग। फाल।

पगडंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैदान या जंगल का वह पतला मार्ग जो लोगों के आने-जाने से बन जाता है।

पगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिर पर लपेटकर बांधने का लम्बा कपड़ा। पाग। साफा। उष्णीष २-वह धन जो मकान या दूकान का मालिक किराये पर देते समय किराये के अतिरिक्त यों ही ले लेता है। इसे अनुचित समझा जाता है)। नजराना।

(*किसी से*) *पगड़ी अटकाना*-बराबरी होना। *पगड़ी उछालना*-१-दुर्दशा या बेइज्जती करना २-उपहास करना। *पगड़ी उतारना*-१-मान या प्रतिष्ठा भंग करना। २-धन-सम्पत्ति हरण करना। (*किसी को*) *पगड़ी बंधना*-उत्तराधिकार प्राप्त होना। २-उच्चपद या स्थान प्राप्त होना। अधिकार प्राप्त होना। प्रतिष्ठा मिलना। सम्मान प्राप्त होना। (*किसी के साथ*) *पगड़ी बदलना*-भाई का नाता जोड़ना। (*किसी की*) *पगड़ी रखना*-मानरक्षा करना। इज्जत बचाना। (*किसी के आगे*) *पगड़ी रखना*-गिड़गिड़ाना। सविनय नम्रतापूर्वक प्रार्थना करना।

पगतरी+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जूती।

पगदासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जूता। खड़ाऊं।

पगना [क्रि अ.] (हिं.) १-रस या सरबत में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट और घुस जाय। रस के साथ परिपक्व होकर मिलना। २-किसी लस से पदार्थ के साथ इस प्रकार मिलना कि वह उसमें भर जाय। रस आदि के साथ ओत-प्रोत होना। सनना। ३-बहुत अधिक अनुरक्त होना। किसी के प्रेम में मग्न होना या डूबना।

पगनियाँ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जूती।

पगपान [संज्ञा पु] (हिं.) पैर में पहनने का एक भूषण।

पगरना [संज्ञा पु.] (देश.) सोने या चांदी पर नक्काशी करने का एक औजार।

पगरा*+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-पग। डग। कदम। २-यात्रा करने का समय। प्रभात। चलने का

समय। सवेरा। तड़का।

पती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पगड़ी'।

पगला [वि.] (हिं.) [पु. प्र.] [स्त्री. पगली] पगली।

पगली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] पागल (स्त्री)।

पगहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पगही] पशु बांधने की रस्सी। गिरांव। पघा।

पगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटका। दुपट्टा। २-देखो 'पघा'। ३-देखो 'पगरा'।

पगाना [क्रि. स.] (हिं.) पागने का काम कराना। २-मग्न करना। अनुरक्त करना।

पगार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गढ़, प्रासाद या बाग बगीचे के रक्षार्थ बनी हुई चारदीवारी। कोट की दीवार। २-पैरों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा। ३-वह पानी या नदी जिसे पैदल चलकर पार कर सकें। पायाब। ४-वेतन। तनखाह।

पगाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) यात्रा आरम्भ करने का समय। भोर। प्रभात। तड़का।

पगिआना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पगाना'।

पगिया+* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पगड़ी'।

पगियाना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पगाना'।

पगु*+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'पग'।

पगुराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-पागुर या जुगाली करना। २-हजम कर जाना। डकार जाना। ले लेना।

पघा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पीतल या ताँबा गलाने की घरिया। पागा।

पघा [संज्ञा पु.] (हिं.) गायों, भैंसों के गले में बाँधे जाने वाली मोटी रस्सी। पगहा।

पघाल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बहुत कड़ा लोहा।

पघिलना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पिघलना'।

पघिलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिघलाना'।

पचैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गावों आदि में घूम कर माल बेचने वाला व्यापारी।

पचक [संज्ञा पु.] (हिं.) कट नामक गुल्म।

पचकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पिचकना'।

पचकल्यान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पंचकल्याण'।

पचखना [वि.] (हिं.) पांच खंडों वाला या पांच मंजिला वाला। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पचकना'।

पचखा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पंचक'।

पचगुना [वि.] (हिं.) पांच बार अधिक। पाच गुना।

पचग्रह [संज्ञा पु.] (हिं.) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि का समूह।

पचड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झंझट। बखेड़ा। पंवारा। प्रपंच। २-वह गीत जो ओझा लोग देवी के सामने गाते हैं। ३-लावनी या खयाल के ढंग का एक प्रकार का गीत जिसमें पांच-पांच चरणों के टुकड़े होते हैं। (ऐसे गीतों में प्रायः कोई कथा आदि हुआ करती हैं)।

पचत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-इन्द्र।

पचतूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा।

पचतोलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पांच तोले का बाट। २-देखो 'तौलिया'।

पचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकाने की क्रिया या भाव। पाक। २-पकने की क्रिया या भाव। ३-अग्नि। ४-वह जो पकाता हो। पकाने वाला।

पचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खाई हुई वस्तु का हजम होकर रस आदि के रूप में परिणत होना। हजम होना। २-क्षय होना। समाप्त या नष्ट होना। ३-पराया माल इस प्रकार हाथ में आ जाय कि अपना हो जाय। हजम हो जाना। ४-अनुचित उपाय से प्राप्त किए हुए धन या पदार्थ का काम में आना। ५-बहुत अधिक परिश्रम के कारण शरीर मस्तिष्क आदि का गलना, सूखना या क्षीण होना। ऐसा परिश्रम या मेहनत होना जिससे शरीर क्षीण हो। बहुत हैरान होना। दुःख सहना। ६-एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में पूर्णरूप से लीन होना। खपना।

पच मरना-जी तोड़ परिश्रम करना। हैरान होना।

पचनागार [संज्ञा पु.] (सं.) रसोईघर। पाकशाला।

पचनाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) पेट की आग जिस से खाया हुआ पचता है। जठराग्नि।

पचनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ाही।

पचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिहारी नीबू।

पचनीय [संज्ञा पु.] (सं.) पचने योग्य। जो पच सकता हो।

पचपच [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी की उपाधि। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पचपच शब्द होने की क्रिया या भाव। २-कीचड़।

पचपचा [वि.] (हिं.) वह अधपका भोजन जिस का पानी भली प्रकार से सूखा या जला न हो।

पचपचाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी पदाथ का आवश्यकता से अधिक गीला होना। २-कीचड़ होना।

पचपन [वि.] (हिं.) पचास और पांच।

पचपनवाँ [वि.] (हिं.) चौवन के बाद आने वाला।

पचपल्लव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पंचपल्लव'।

पचमान [वि.] (सं.) पकाने वाला।

पचमेल [वि.] (हिं.) जिसमें कई तरह के पदार्थ हों। जिसमें कई या सब मेल (की चीजें) हों।

पचरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) चौक पूरने की सामग्री जिसमें मेंहदी का चूर्ण, अबीर, बुक्का, हलदी और सुरवाली के बीज होते हैं। [वि.] देखो 'पचरंगा'।

पचरंगा [वि.] (हिं.) [स्त्री. पंचरंगी] १-जिसमें भिन्न-भिन्न पाँच रंग हों। पाँच रंग का या पाँच रंगों वाला। २-(कपड़ा) जो पांच रंगों से रंगा या पांच रंगों के सूतों से बुना हुआ हो। ३-जिसमें कई या बहुत से रंग हों। [संज्ञा पु.] मंगल अवसरों या पूजा के निमित्त पूरा जाने वाला जिसके खाने या कोठे पांच रंगों से भरे जाते हैं।

पचरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पचड़ा'।

पचलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह माला या आभूषण जिसमें पांच लड़ियां होती हैं।

पचलोना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसमें पांच प्रकार के नमक मिले हों। २-देखो 'पंचलवण'।

पचवई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पचवाई'।

पचवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की देशी शराब जो चावल, जौ, ज्वार आदि से बनाई जाती है।

पचहत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और पांच।

पचहत्तरवाँ [वि.] (हिं.) चौहत्तर के बाद पड़ने वाला।

पचहरा १-जिसमें पांच परत या तह हों। पांच बार मोड़ा या लपेटा हुआ पांच आवृत्तियों वाला। २-पांच बार किया हुआ।

पचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पचाने की क्रिया।

पचानक [संज्ञा पु.] (देश.) एक पक्षी जिसकी गर्दन और डैने काले होते हैं। यह दक्षिण भारत और बंगाल में पाया जाता है।

पचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पचना का सकर्मक रूप। हजम करना। २-समाप्त नष्ट या क्षीण करना। ३-पराया माल लेकर हजम करना। ४-परिश्रम कर के या कष्ट देकर किसी के शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ५-एक पदार्थ को अपने आपमें आत्मसात् या लीन करना।

पचार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँस या लकड़ी का वह छोटा डंडा जो जूए में बाँई ओर होता है और सीढ़ी के डंडे के समान उसके ढाँचे में दोनों ओर ठुका रहता है।

पचारना* [क्रि. स.] (हिं.) लड़ने के लिए ललकारना। किसी कार्य के करने से पूर्व उन लोगों के मध्य घोषणा करना।

पचाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) पचने की क्रिया या भाव।

पचास [वि.] (हिं.) चालीस और दस। सौ के आधे।

पचासवाँ [वि.] (हिं.) गणना में पचास के स्थान पर पड़ने वाला।

पचासा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह।

पचासी [वि.] (हिं.) अस्सी और पाँच।

पचासीवाँ [वि.] (हिं.) चौरासी के बाद आने वाला।

पचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-रसोई बनाने की प्रक्रिया। ३-पकाने की क्रिया या भाव।

पचित [वि.] (हिं.) पच्ची किया या जड़ा हुआ। [वि.] (सं.) पचा हुआ।

पची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पच्ची'।

पचीस [वि.] (हिं.) बीस और पाँच।

पचीसवाँ [वि.] (हिं.) चौबीस के बाद पड़ने वाला। गणना में पच्चीस के स्थान पर आने वाला।

पचीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की पच्चीस वस्तुओं का समूह। २-किसी की आयु के प्रारंभिक या पहले पच्चीस वर्ष। ३-एक विशेष गणना जिसका सैकड़ा पच्चीस गाहियों अर्थात् १२५ का माना जाता है। ४-एक प्रकार का चौसर का खेल जो कौड़ियों से खेला जाता है। ५-चौसर खेलने की बिसात।

पचूका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पिचकारी।

पचेलिम [वि.] (सं.) १-शीघ्र पकना। २-पकने लायक। पकने योग्य। फल आदि का पकना अपने आप या कृत्रिम ढंग से। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य।

पचेलुक [संज्ञा पु.] (सं.) रसोइया। पाचक।

पचोतर [वि.] (हिं.) (किसी संख्या में) पाँच अधिक या पांच ऊपर। जैसे—पचोतरसो।

पचोतरसो [संज्ञा पु.] (हिं.) एकसौ-पांच।

पचोतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कन्यापक्ष के पुरोहित का एक नेग जिसमें उसे दायज में, विशेषकर तिलक के समय वर पक्ष को मिलने वाले रुपयों आदि में से सैकड़े पीछे पांच मिलता है

पचौआ [संज्ञा पु.] (देश.) किसी कपड़े पर छींट छप चुकने पर ८ या १२ दिन तक उसे धूप में खुला रखना।

पचौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाचन। पाचक।

पचौर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव का मुखिया। सरदार। सरगना। पंच।

पचौली+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव का मुखिया। सरदार। पंच। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मध्य-भारत या बंबई में होने वाला एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियों से तेल निकाला जाता है।

पचौवर [वि.] (हिं.) पांच तह या परत किया हुआ। पचहरा।

पच्चड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पच्चर'।

पच्चर [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी की वह गुल्ली जो काठ की चीजों को कसने के लिए उनमें ठोंकी जाती है। *पच्चर अड़ाना*–बाधक होना। रुकावट डालना। *पच्चर ठोंकना*–किसी को कष्ट पहुँचाने या पीड़ित करने के लिए कोई उपाय करना। *पच्चर मारना*–होते काम को रोकना। भांजी मारना।

पच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २-जड़ाव का एक प्रकार जिसमें जड़ी जाने वाली भली प्रकार से जमकर बैठ जाती है। (*किसी में*) *पच्ची हो जाना*–खड़े-खड़े महसा बेसुध होकर गिर पड़ना।

पच्चीकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पच्ची करने की क्रिया या भाव। २-पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

पच्छ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षपात'।

पच्छकट [संज्ञा पु.] (हिं.) आल की मंझोली जड़ जो रंगाई के काम में आती है।

पच्छघात [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षाघात'।

पच्छताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पक्षपात।

पच्छम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पश्चिम'।

पच्छि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षी'।

पच्छिम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पश्चिम'। [वि.] (हिं.) पिछला। पीछे का।

पच्छिराज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षिराज'।

पच्छिउँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पश्चिम'।

पच्छी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पक्षी'।

पछटी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तलवार।

पछड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लड़ने में पटका या पछाड़ा जाना। २-देखो 'पिछड़ना'।

पछताना [क्रि. अ.] (हिं.) अपने द्वारा किये हुए किसी अनुचित कार्य के सम्बन्ध में पीछे से मन में खिन्न या दुःखी होना। पश्चाताप करना।

पछतानि*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पछताने का भाव। पछतावा। पश्चाताप।

पछताव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पश्चाताप। अनुताप। पछतावा।

पछतावना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पछताना'।

पछतावा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह संताप अथवा दुःख जो किसी की की हुई बात पर पीछे से हो। पश्चाताप। अनुताप।

पछना [क्रि. अ.] (हिं.) 'पाछना' शब्द का अकर्मक रूप। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पाछने का औजार। २-फसद।

पछमन* [क्रि. वि.] (हिं.) पीछे।

पछलगा [वि.] (हिं.) देखो 'पिछलगा'।

पछवाँ [वि.] (हिं.) १-पश्चिम दिशा की। पश्चिम दिशा संबंधी। पच्छिमी। २-देखो 'पछुआं'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगिया का वह भाग जो पीठ की ओर मोढे के पीछे रहता है।

पछाँह [संज्ञा पु.] (हिं.) पश्चिम में पड़ने वाला देश। पश्चिम की ओर का देश।

पछाँहिया [वि.] (हिं.) पश्चिम का या पश्चिम प्रदेश का।

पछाँही [वि.] (हिं.) पश्चिम प्रदेश का।

पछाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पछाड़ने या पछड़ने की क्रिया या भाव। २-बहुत शोक आदि के कारण खड़े-खड़े बेसुध होकर गिर पड़ना। अचेत होकर गिरना। मूर्छित होकर गिरना। *पछाड़ खाना*–बेसुध होकर सहसा गिर पड़ना।

पछाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-कुश्ती में विपक्षी को जमीन पर पटकना या गिराना। २-प्रतियोगियों में विपक्षी को हराना। ३-धोते समय कपड़े को बारंबार पटकना।

पछाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिछाड़ी'।

पछानना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहचानना'।

पछाया [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु का पिछला भाग। पिछाड़ी।

पछार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पछाड़'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पछरने की क्रिया या भाव।

पछारना [क्रि. स.] (हिं.) कपड़े को पानी से साफ करना। धोना। *[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पछाड़ना'।

पछावर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार का शिखरन या शरबत। २-छाछ का बना हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ।

पछावरि+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'पछावर'।

पछाहीं [वि.] (हिं.) पछांह का। पश्चिम प्रदेश का।

पछिआना+ [क्रि. अ.] (हिं.) पीछे-पीछे चलना। पीछे हो लेना। पीछा करना।

पछिआवर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का शिखरन या शरबत। २-छाछ का बना एक प्रकार का पेय पदार्थ।

पछिताना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पछताना'।

पछिताव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पछतावा'।

पछिनाव [संज्ञा पु.] (देश) पशुओं का एक रोग।

पछियाना [क्रि. स.] (हिं.) पीछे-पीछे चलना। पीछा करना।

पछियाव [संज्ञा पु.] (हिं.) पच्छिम की हवा।

पछिलना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिछड़ना'।

पछिला+ [वि.] (हिं.) देखो 'पिछड़ना'।

पछिवाँ [वि.] (हिं.) पश्चिम की ओर से आने वाली (हवा)। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पच्छिम की हवा।

पछीत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घर या मकान के पीछे की ओर का भाग। २-घर के पीछे की दीवार।

पछुवाँ [वि.] (हिं.) पच्छिम की (हवा)। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पच्छिम की (हवा)।

पछुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़े के आकार का पै

में पहिनने का एक आभूषण।

पछेड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पीछा।

पछेलना+ [क्रि. अ.] (हिं.) पीछे डालना। पीछे छोड़ना। आगे बढ़ जाना।

पछेला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पछेली] १–हाथ में पहने जाने वाले चिपटे कड़ों में से पिछला २–एक प्रकार का कड़ा जिसे स्त्रियाँ अपने हाथ में पहनती हैं। [वि.] (हिं.) पिछला। पीछे का।

पछेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पछेला'।

पछोड़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनाज आदि का वह कूड़ा-करकट जो सूप आदि से पछोड़ने पर निकलता है।

पछोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) अन्न आदि को सूप में रखकर और उसे फटका देकर साफ करना फटकना।
फटकना पछोड़ना–उलटपलटकर परीक्षा करना

पछोरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पछोड़न'।

पछोरना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पछोड़ना'।

पछौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिछौरा'।

पछ्यावर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का शरबत।

पझर [संज्ञा पु.] (हिं.) चूने या टपकने की क्रिया

पजरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) जलना। दहकना। सुलगना।

पजहर [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का पत्थर जिस पर नक्काशी का काम किया जाता है। यह पीलापन या हरापन लिये सफेद होता है।

पजामा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पायजामा'।

पजारना* [क्रि. स.] (हिं.) जलाना। दहकाना। सुलगाना।

पजावा [संज्ञा पु.] (हिं.) आवाँ। ईंटें या मिट्टी के बरतनों का पक्का भट्टा।

पजूसण [संज्ञा पु.] (देश.) जैनमतावलम्बियों का एक व्रत।

पजोख [संज्ञा पु.] (देश.) बल, गुण आदि की परख। जाँच। परीक्षा। आजमाइश।

पजोखना [क्रि. स.] (हिं.) जांच करना। परीक्षा करना। आजमाइश करना।

पजोखा [संज्ञा पु.] (?) किसी की मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों का शोक प्रकाश। मातम-पुरसी।

पजोदा [संज्ञा पु.] (हिं.) पाजी। दुष्ट।

पज्ज* [संज्ञा पु.] (हिं.) शूद्र।

पंजर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पांजर'।

पज्झटिका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ इस नियम से होती हैं कि ८ वीं और छटी मात्रा पर एक-एक गुरु होता है। इसमें जगण का निषेध है।

पटंबर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रेशमी कपड़ा। कौषेय।

पट [संज्ञा पु.] (सं.) १–वस्त्र। कपड़ा। २–वस्त्र का टुकड़ा। ३–महीन कपड़ा। ४–पर्दा। चिक। कोई आड़ करने वाली वस्तु। ५–धातु या लकड़ी की पटरी अथवा कपड़े का टुकड़ा, जिस पर चित्र लिखे जायं। ६–वह चित्र जो जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मन्दिरों से दर्शनप्राप्त यात्रियों को मिलता है। ७–कोई वस्तु जो अच्छी प्रकार बनी हो। ८–छत। छाजन या छप्पर। ९–नाव या बहेली के ऊपर डाला जाने वाला सरकंडे का बना हुआ छप्पर। १०–चिरोंजी का पेड़। पियार। ११–कपास। १२–गन्धतृण। शरवान। १३–रंगशाला का पर्दा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–साधारण दरवाजे के किवाड़। २–पालकी के सरकाने से खुलने वाले किवाड़। ३–सिंहासन। ४–चिपटी और चौरस तल भूमि।
पट उघारना–दर्शनार्थ मन्दिर का द्वार खुलना दर्शन का समय होना। *पट खुलना*–दर्शनार्थ मन्दिर का द्वार खुलना। *पट बंद होना*–मंदिर का द्वार बन्द होना। दर्शन का समय समाप्त होना। *पट मारना*–किवाड़ बंद कर लेना। यौ० *पटदार*–पट लगी हुई पालकी। +[संज्ञा पु.] (देश.) १–टांग। २–कुश्ती का एक पेच। *पट लेना*–कुश्ती में पट नामक पेच करने के लिए जोड़ की टांगें अपनी ओर खींचना। [वि.] (हिं.) भूमि पर पेट के बल या पेट रखकर लेटा हुआ। औंधा। चित्त का उलटा *पट पड़ना*–१–औंधा पड़ना। २–कुश्ती में नीचे वाले पहलवान पेट के बल पड़कर मिट्टी थामना। ३–मंद या धीमा पड़ना। *तलवार पट पड़ना*–तलवार का औंधी या उस ओर गिरना जिस ओर धार न हो। [क्रि. वि.] (हिं.) तुरंत। फौरन।

पटइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पटवा जाति की स्त्री पटहार जाति की स्त्री। २–गहना गूथने वाली स्त्री।

पटक [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिविर। तंबू। खेमा। सूती कपड़ा। ३–आधा गांव।

पटकन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पटकने की क्रिया या भाव। २–चपत। तमाचा। ३–छोटा डंडा छड़ी।

पटकना [क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु को जोर के साथ ऊंचे स्थान से नीचे को झोंक से गिराना २–किसी बैठे या खड़े हुए व्यक्ति को जोर से नीचे की ओर गिराना। दे-मारना। ३–कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को जमीन पर गिराना अथवा पछाड़ना।
पटकना–किसी ऐसे कार्य को किसी के जिम्मे लगाना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो। [क्रि. अ.] (हिं.) १–सूजन बैठना या पचकना। वरम कम होना। २–गेहूँ, चने, धान आदि का सील या जल से भीगकर फिर सूखकर सिकुड़ जाना। ३–पट शब्द के साथ किसी वस्तु का दरक या फट जाना।

पटकनियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पटकने की क्रिया या भाव। पटकान। २–भूमि पर गिरकर लोटने या पछाड़ें खाने की क्रिया। लोटनिया। ३–पटके जाने की क्रिया या भाव।

पटकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पटकने की क्रिया या भाव। २–पटके जाने की क्रिया या भाव ३–भूमि पर गिरकर पछाड़ें खाने की क्रिया।

पटकरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बेल

पटका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह दुपट्टा या रूमाल जिससे कमर बांधी जाय। कमरबंद। दीवार में की वह पट्टी या बंद जो सुन्दरता के लिए जोड़ी जाती है।

पटकान [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–पटकने की क्रिया या भाव। २–पटकजाने की क्रिया या अवस्था ३–भूमि पर गिरकर लोटने या पछाड़ खाने की क्रिया।

पटकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) बुनाई का काम। बुनाई।

पटकार [संज्ञा पु.] (सं.) १–कपड़ा बुनने वाला। जुलाहा। २–चित्र बनाने वाला। चित्रकार।

पटकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रावटी। छोलदारी। खेमा।

पट-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़े पर बना हुआ। ऐसा चित्र जिसे लपेटकर रखा जा सके।

पटच्चर [संज्ञा पु.] (सं.) १–जीर्ण वस्त्र। पुराना और फटा हुआ कपड़ा। २–एक प्राचीन देश का नाम जिसका वर्णन महाभारत और पुराणों में मिलता है। ३–चोर।

पटझोल* [संज्ञा पु.] (हिं.) आंचल।

पटड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पटरा'।

पटड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पटरी'।

पटतर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–समता। बराबरी। तुल्यता। समानता। २–उपमा। सादृश्य कथन +[वि.] १–समतल। बराबर। चौरस। जिसका तल ऊंचा-नीचा न हो।

पटतरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–उपमा देना। २–तुलना करना।

पटतारना* [क्रि. स.] (हिं.) १–असमतल भूमि को समतल करना। पड़तारना। २–खाँड़ा, भाला आदि शस्त्रों को किसी पर चलाने के लिये पकड़ना या खींचना। संभालना।

पटताल [संज्ञा पु.] (हिं.) मृदंग का एक ताल जो १ दीर्घ या २ ह्रस्व मात्राओं का होता है।

पटत्क [संज्ञा पु.] (सं.) चोर।

पटद [संज्ञा पु.] (सं.) कपास। रूई।

पटधारी [वि.] (सं.) [पुं. प्र.] जो कपड़ा पहने हो। [संज्ञा पु.] तोशेखाने का अधिकारी या मुख्य अफसर।

पटना [क्रि. अ.] (हिं) १–गड्ढे आदि का भर-

कर आसपास की सतह के बराबर हो जाना। गड्ढे आदि का पटकर समतल होना। २-किसी स्थान में किसी वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में एकत्रित होना। ३-मकान, कूएं आदि पर कच्ची या पक्की छत बनना। ४-घर का दूसरा खंड बनाया जाना। ५-खेत का सींचा जाना। ६-दो व्यक्तियों के विचार, भाव, रुचि, स्वभाव आदि में ऐसी समानता होना जिससे उनमें सहयोगिता अथवा मित्रता हो सके। मन मिलना। बनना। ७-विचारों या स्वभाव में समानता होने के कारण मेल या निर्वाह होना। बनना। ८-लेनदेन, बेचा बिक्री आदि में मूल्य आदि का स्थिर होनां। तै हो जाना। बैठ जाना। ९-(ऋण या देन) चुकता हो जाना। पाई-पाई अदा हो जाना। (ऋण) चुकना। [संज्ञा पु.] वर्त्तमान बिहार राज्य की राजधानी नाम का जो बौद्धकाल में पाटलिपुत्र के नाम से विख्यात थी।

पटनिया, पटनिहा [वि.] (हिं.) १-वह वस्तु जो पटनानगर में बनी हो। २-पटनानगर से सम्बन्धित।

पटनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-वह कमरा जिसके ऊपर और कोई कमरा हो। पहले खंड के नीचे वाला कमरा। पटौंहा। २-वह भूमि जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिला हो। ३-खेत देने की वह प्रणाली जिसमें लगान देने तथा किसान के अधिकार सर्वदा के लिए निश्चित कर दिये हों। इस्तमरारी पट्टे द्वारा खेत का बन्दोबस्त करने की पद्धति। ३-कोई वस्तु रखने के लिए दो खूंटियों पर रखी हुई पटरी।

पटपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की बार-बार आवृत्ति। पट शब्द के अनेक बार होने की क्रिया या भाव। [क्रि. वि.] पट-पट शब्द करता हुआ।

पटपटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भूख, प्यास अथवा सरदी, गरमी के कारण बहुत कष्ट पाना या उठाना। बुरा हाल होना। किसी वस्तु से पट-पट ध्वनि निकलना। [क्रि. स.] १-किसी वस्तु को बजा या पीटकर पट-पट शब्द उत्पन्न करना। २-खेद या शोक करना।

पटपड़ [वि.] (देश.) पक्की और समतल। चौरस। [संज्ञा स्त्री.] वह भूमि जो पक्की और समतल हो। एकसार या चौर पड़ी बंजर भूमि।

पटपर [वि] (हिं.) समतल। चौरस। हमवार। [संज्ञा पु.] १-नदी के आसपास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्रायः डूबी रहती है। इसमें केवल रबी की फसल की जाती है। २-ऐसा जंगल जहां घास, पेड़ और पानी तक न हो। अत्यन्त उजाड़ स्थान

पट-परिवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) रंगमंच का पर्दा बदलना।

पटबंधक [संज्ञा पु] (हिं) रेहन का वह प्रकार जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई सम्पत्ति की आय में से अपना सूद लेने के बाद शेष धन मूल ऋण के हिसाब में जमा करता चलता है इस प्रकार जब सारा ऋण चुक जाता है तब सम्पत्ति उसके वास्तविक स्वामी को लौटा देता है।

पटबीजना+ [संज्ञा पु.] (हिं) जुगनू। खद्योत।

पटभर [वि.] (हिं.) पेट भर खाकर पड़ा रहने वाला कोई काम न करने वाला। पेट भरने का गरजी।

पटभाव [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक यन्त्र जिससे आंख को देखने में सहायता मिलती थी।

पटमंजरी, पटमञ्जरी [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी जो हिंडोल राग की पत्नी है। इसके गाने का समय ६ दंड से दस दंड तक है।

पटमंडप, पटमण्डप [संज्ञा पु.] (सं) तम्बू। खेमा।

पटम [वि] (हिं) वह जिसके नेत्र भूख के कारण पटपटा गये हों। जो भूख के मारे अन्धा हो गया हो।

पटमय [संज्ञा पु.] (सं.) तम्बू। खेमा। [वि.] कपड़े का बना।

पटरक [संज्ञा पु.] (सं.) गोंद पटेर। पेटर।

पटरा [संज्ञा पु] (हिं) [स्त्री. पटरी] काठ का लम्बा चौकोर और चौरस चीरा हुआ टुकड़ा जो लम्बाई-चौड़ाई के हिसाब से बहुत कम मोटा हो। तख्ता। पल्ला। २-धोबी का पाट। ३-हेंगा। पाटा।

पटरा कर देना-१-मारकाटकर गिरा या बिछा देना। २-चौपट कर देना। तबाह कर देना। *पटरा होना*-मर जाना। नष्ट होना। *पटरा बैठना*-बहुत अधिक नुकसान होना। *पटरा फेरना*-तबाह कर देना। ध्वंस करना।

पटरानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह रानी जो राजा के साथ पट या सिंहासन पर बैठती हो। राजा की सब से बड़ी या मुख्य रानी। पाट-महिषी। पट्टरानी।

पटरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काठ का लम्बा और पतला तख्ता। २-लिखने की तख्ती। पटिया। ३-वह चौड़ा खपड़ा जिस पर नरियां जमाते हैं। ४-सड़क के दोनों किनारों की कुछ ऊँचा वह भाग जो पैदल चलने वालों के लिए होता है। ५-नहर के दोनों किनारों पर के रास्ते। ६-बगिया में क्यारियों में आसपास के पतले रास्ते जिनके दोनों ओर शोभा के लिए घास लगादी जाती है। रविश। ७-सुनहरे या रूपहले तारों का वह फीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है। ८-हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी जिस पर नकाशी का काम होता है। ९-लोहे के वह सामांतर छड़ जि पर रेल गाड़ी के पहिये दौड़ते हैं। १०-जंत्र। चौकी। तावीज।

पटल [संज्ञा पु.] (सं.) १-छत। छान। छप्पर। २-पर्दा। आवरण। घूंघट। बुरका। ३-आँख ढकने का घूंघट। आंख के पर्दे। ४-मोतियाबिंद नामक आंख का रोग। चित्र। ७-लकड़ी आदि का पटरा। ८-पुस्तक का भा या अंश विशेष। परिच्छेद। लावलश्कर। लवाजमा। ९-माथे पर का तिलक। टीका। १०-ढेर। समूह। अंबार। ११-टोकरी।

पटलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आवरण। पर्दा। घूंघट। बुरका। २-डलिया या टोकरा। ३-छोटी संदूक। ४ समूह। राशि। ढेर। अंबार।

पटलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिकता।

पटलप्रांत, पटलप्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) छप्पर का सिरा या किनारा।

पटली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छान। छप्पर। छत।

पटवा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पटइन] १-रेशम या सूत में गहने गूंथने वाला। पटहार। २-पटसन। पाट। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का नारंगी के से रंग का बैल जो मजबूत और तेज चलने वाला होता है।

पटवाद्य [संज्ञा पु.] (सं) झांझ की तरह का प्राचीन बाजा।

पटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पटने का काम दूसरे से कराना। २-आच्छादित कराना। छत छवाना। ३-गड्ढों को मिट्टी आदि से भरवाना। पूरा करा देना। ४-सिंचवाना। पानी से तर कराना। ५-ऋणं आदि चुकता देना। पाई-पाई दिलबा देना। ६-(पीड़ा वा दुःख) दूर कर देना। मिटाना। बंद करना। शान्त करना।

पटवाप [संज्ञा पु.] (सं.) तंबू। खेमा।

पटवारगरी [संज्ञा स्त्री] (हिं) पटवारी का काम या पद।

पटवारी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह सरकारी अधिकारी या कर्मचारी जो गाव की जमीन, उस और लगान आदि का हिसाब किताब रखता है। ✻[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रानियों को वस्त्र भूषण पहनानें वाली दासी।

पटवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-खेमा। तंबू। शिविर। २-वह वस्तु जिससे वस्त्रों में सुगंध बसाई जाती है। ३-बंडी। कुर्ती। ४-लँहगा।

पटवासक [संज्ञा पु] (सं.) वस्त्रों में सुगंध बसाने वाला चूर्ण। सुगन्धिपूर्ण चूर्ण।

पटवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) शिविर। खेमा। तंबू।

पटसन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और गलीचे आदि बनाये जाते हैं। यह गरम जलवायु वाले प्रदेश में पाया जाता है। २-पटसन के रेशे। पाट। जूट।

पटसाली [संज्ञा पु.] (हिं.) धारवाड़ के रहने वाले जुलाहों की एक जाति । यह लोग रेशमी वस्त्र बुनने का काम करते हैं ।

पटहंसिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जो १७ दंड से २० दंड तक के बीच में गाई जाती है । इसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं ।

पटह [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगाड़ा । डंका । दुन्दुभ २-मृदंग । तबला । बड़ा ढोल ।

पटहघोषक [संज्ञा पु.] (सं.) डौंड़ी पीटने वाला । ढिंढोरा पीटने वाला । मुनादी करने वाला ।

पटहता [संज्ञा स्त्री] (सं.) नगाड़े की ध्वनि ।

पटहभ्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) लोगों को इकट्ठा करने के लिए इधर-उधर घूमकर ढोल बजाने वाला ।

पटहा [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'पटह' ।

पटहार [संज्ञा पु.] (हिं) [स्त्री. पटहारिन, पटेरिन] एक जाति जो रेशम या सूत के डोरों से गहने गूंथते हैं । पटवा । [वि.] १-रेशम के डोरे बनाने वाला । २-रेशम के डोरों से गहना गूंथने वाला ।

पटहारिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-पटहार पत्नी । २-पटहार जाति की स्त्री ।

पटा [संज्ञा पु.] (हिं) लोहे की वह पट्टी जिससे लोग तलवार का वार तथा उसका बचाव करना सीखते हैं । [संज्ञा पु.] १-अधिकार पत्र । सनद । पट्टा । २-सौदा । लेनदेन । क्रय-विक्रय । ३-चौड़ी लकीर । धारी । ४-लगाम की मुहरी । ५-चटाई । ६-पीढ़ा । पटरा । पटा फेरे-विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधु के आसन बदल दिये जाते हैं । पटा बँधना-पटरानी बनाना ।

पटाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पटाने की क्रिया या भाव । सिंचाई । आबपाशी । २-सिंचाई की मजदूरी । ३-पाटने की क्रिया या भाव । पटाने की मजदूरी ।

पटाक [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी छोटी चीज के गिरने का शब्द । [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी । चिड़िया ।

पटाका [संज्ञा पु.] (हिं) १-पट या पटाक शब्द २-वह आतिशबाजी जिसमें से पट या पटाक शब्द निकले । ३-पटाके की ध्वनि । कोड़े या पटाके की आवाज । ४-तमाचा । थप्पड़ । चपत । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युवती अथवा उभरती अवस्था की अपेक्षाकृत अधिक सजी-बजी स्त्री । (बाजारू) ।

पटाक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक का अंक समाप्त होने पर मुख्य परदा गिरना ।

पटाख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह वस्तु जिसके गिरने से पटाक शब्द निकले । २-वह बारूद की गोली जिसे भूमि पर दे मारने से पटाख या पटाक शब्द उत्पन्न हो ।

पटाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पटाका'

पटान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पाटने की क्रिया या भाव । २-वह अंश जो गड्ढे, छत आदि पाटकर उसके ऊपर छत या पाटन के रूप में तैयार किया जाता है । ३-ऋण आदि चुकाने या पाटने की क्रिया या भाव ।

पटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पाटने का काम कराना । गड्ढे आदि को भरवाकर चौरस करना । २-छत पिटाई कराकर चौरस या बराबर कराना । ३-छत या पाटन बनवाना ४-ऋण चुका देना । ५-बेचने वाले को किसी मूल्य पर सौदा देने के लिये राजी कर लेना मूल्य तै करना । [क्रि. अ.] (हिं.) शान्ति होकर बैठना । चुपचाप बैठना ।

पटापट [क्रि वि.] (हिं.) लगातार पट-पट शब्द सहित । पट-पट शब्द करते हुए । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निरन्तर पट-पट शब्द की आवृत्ति ।

पटापटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-वह वस्तु जिसके अनेक रंगों के फूल पत्ते कढ़े हों । २-वह वस्तु जो कई रंगों से रंगी हुई हो । चित्र विचित्र वस्तु ।

पटापटी का पर्दा-रंग-बिरंगे फूल पत्तियों वाला परदा । *पटापटी की गोट*-वह रंग-बिरंगी गोट जिसमें सिंघाड़े आदि कढ़े हों ।

पटार [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-पिटोरा । पेटी मंजूषा । २-पिंजड़ा । ३-रेशम की रस्सी या निवार । ४-कनखजूरा ।

पटालुका [संज्ञा स्त्री] (सं) जोंक । जलौका ।

पटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पाटने की क्रिया या भाव । २-पटा हुआ या पाट कर चौरस किया किया हुआ स्थान । ३-दीवार के आधार पर काटकर बनाया हुआ ऊंचा स्थान । ४-लकड़ी का वह मजबूत तख्ता जिसे दरवाजे के ऊपरी भाग पर रखकर उसके ऊपर दीवार उठाते हैं । भरेठा ।

पटि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-कोई छोटा वस्त्र या वस्त्रखंड । २-जलकुंभी । ३-देखो 'पटी' ।

पटिआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पटिया' ।

पटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुना हुआ वस्त्र ।

पटिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) रंग-मंच का परद गिरना ।

पटिम [संज्ञा पु] (सं.) १-निपुणता । चातुरी । २-तीव्रता । ३-क्षारपन । ४-कड़ाई । सख्ती । रूखापन । ५-उग्रता । प्रचंडता ।

पटिया+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पत्थर का चौकोर या लम्बोतरा चौकोर और चौरस टुकड़ा । चिपटा चौरस शिलाखंड । फलक । २-काठ का छोटा तख्ता । खाट या पलंग की पट्टी । पाटी + ३-मांग । पट्टी । ४-हेंगा । पाटा । ५-टाट की एक पट्टी । ६-लिखने की पट्टी । तख्ती । सकरा और लम्बा खेत ।

पटी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-रंगशाला का पर्दा । २-वस्त्र । ३-मोटा कपड़ा । ४-कनात । ५-रंगीन वस्त्र ।

पटीमा [संज्ञा पु.] (हिं) छीपियों का वह तख्ता जिस पर वे छापते समय कपड़े को बिछा लेते हैं ।

पटीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का चंदन २-कत्था । ३-कत्थे या खैर का वृक्ष । मूली । ५-वटवृक्ष । [वि.] (सं.) १-सुन्दर । रूपवान २-लम्बा । ऊंचा ।

पटीलना [क. अ.] (हिं) १-किसी को उलटी सीधी बातें करके अपने अनुकूल करना । ढंग पर लाना । हाथ चढ़ना । अर्जित करना । कमाना । प्राप्त करना । ठगना । छलना । ४-मारना । पीटना । ठोंकना । ५-परास्त करना । नीचा दिखाना । ६-सफलतापूर्वक किसी कार्य को समाप्त करना । खतम करना । पूर्ण करना

पटु [वि.] (सं.) १-चतुर । निपुण । योग्य । कुशल । दक्ष । २-चतुर । चालाक । होशियार ३-चरपरा । तीता । ४-कुशाग्र-बुद्धि । ५-प्रचंड । उग्र । ६-उद्देश्योपयोगी । स्वभावत उन्मुख । प्रवण । ७-निष्ठुर । नृशंस हृदय । ८-धूर्त । मक्कार । छलिया । ९-स्वस्थ । तन्दुरुस्त । रोगरहित । १०-क्रियाशील । मशगूल ११-सुन्दर । मनोहर । १२-स्फुट । व्यक्त । प्रकाशित । १३-फूंका हुआ । बढ़ाया या फुलाया हुआ । १४-सख्त । भयंकर १५-बड़बोला । बे-लगाम । [संज्ञा पु.] (सं.) १-छत्रा । कुकुरमुत्ता । धरती का फूल । २-नमक ३-पांशुलवण । पांगानोन । ४-परवल । ५-परवल के पत्ते ६-करेला । ७-चिटचिटा नामक लता । ८-चीनी कपूर । ९-जीरा । १०-बच । ११-नकछिकनी

पटुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटसन । पटवा ।

पटुक [संज्ञा पु.] (सं) परवल ।

पटुकल्प [वि.] (सं.) कुछ कम पटु । जो पूर्ण कुशल या चालाक न हो । कामचलाऊ दक्ष ।

पटुका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह वस्त्र जो कमर में लपेटकर बाँधते हैं । कमरबंद । २-गले में डालने का वस्त्र । ३-धारीदार चारखाना ।

पटुता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पटु होने का भाव । प्रवीणता । निपुणता । होशियारी । २-चतुराई । चालाकी ।

पटुतूलक [संज्ञा पु.](सं) एक घास । लवणतृण ।

पटुतृणक [संज्ञा पु.] (सं.) लवणतृण नामक घास

पटुय [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक का एक पारिभाषिक शब्द जिससे तीन प्रकार के नमकों का बोध होता है । यथा--विड़नमक, सेंधानमक और कालानमक ।

पटुत्व [संज्ञा पु] (सं) पटुता ।

पटुदेशीय [वि.] (सं.) साधारण चतुर । कामचलाऊ दक्ष ।

पटुपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटे चेंच का पौधा।

पटुपर्णिका, पटुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की कटेहरी। सत्यानाशी कटेहरी। स्वर्णक्षीरी। भँड़भाँड़।

पटुमान् [संज्ञा पु.] (सं.) आंध्रवंश का एक राजा।

पटुरूप [वि.] (सं.) अत्यन्त चतुर।

पटुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काठ की पटरी जो झूले के रस्सों पर रखी जाती है। २-चौकी। पीढ़ी। ३-गाड़ी या छकड़े में जड़ाहुआ लम्बा और चिपटा डंडा।

पटुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटसन। जूट। २-करेमू। ३-गून के सिरे पर बंधा हुआ डंडा जिसको पकड़े हुए मांझी लोग गून खींचते हैं। [संज्ञा पु.] (देश.) तोता। शुक।

पटूका*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पटका'।

पटेबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटा खेलने वाला। पटे से लड़ने वाला। पटैत। २-पटा खेलने वाला एक प्रकार का खिलौना। ३-कुलटा पर चतुरा स्त्री। छिनालपने में होशियार स्त्री। (बाजारू)। ४-व्यभिचारी और धूर्त व्यक्ति। (बाजारू)।

पटेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरकंडे की जाति की एक घास जो पानी में उगती है। इसके पत्ते प्रायः एक इंच चौड़े और चार फुट तक लम्बे होते हैं। इनकी चटाइयां बनाई जाती हैं। इनमें बाजरे के बालों की तरह की बालें लगती हैं। बालों के दानों को सिंधदेश (पाकिस्तान) के दरिद्र लोग खाते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कसैली, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक और मूत्र,शुक्र,रज तथा स्तनों के दूध को शुद्ध करने वाली मानी जाती है। पटेरक। रच्छ। गुन्द्र।

पटेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पटेला'। २-'पटैला'।

पटेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजस्थान, गुजरात आदि में गांव का नम्बरदार या मुखिया। २-गांव का मुखिया।

पटेलना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पटीलना'।

पटेला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पटेली] १-वह नाव जिसका मध्य भाग पटा हो। २-एक प्रकार की घास जिसकी चटाइयां बनाते हैं। पटेर। ३-हेंगा। ४-सिल। पटिया। ५-कुश्ती का एक पेंच।

पटेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी। पटेला नाव।

पटैत [संज्ञा पु.] (हिं.) पटा खेलने या लड़ने वाला। पटेबाज।

पटैला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काठ का वह चिपटा डंडा जो किवाड़ों को बन्द करने के लिए दो किवाड़ों के बीच में आड़ा लगाया जाता है। इसके एक ओर सरकाने से किवाड़ खुलते तथा दूसरी ओर सरकाने से बन्द होते हैं। डंडा। ब्योंड़ा। २-देखो 'पटेला'।

पटोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटोल। २-कोई रेशमी वस्त्र।

पटोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रेशमी साड़ी या धोती। २-रेशमी किनारे की धोती।

पटोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जो प्राचीनकाल में गुजरात में बनता था। २-परवल की लता। ३-परवल का फल।

पटोलक [संज्ञा पु.] (सं.) घोंघा। सीपी। शुक्ति।

पटोलपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की पोई।

पटोलिका, पटोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद फूल की तरोई या तोरई।

पटौतन [संज्ञा पु.] (हिं.) ऋण आदि का परिशोध। कर्ज चुकना।

पटौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पटने या पटाने की क्रिया। २-पटने या पटाने का भाव। [संज्ञा पु.] (देश.) मांझी। मल्लाह।

पटौहाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटा हुआ स्थान। २-पटाव के नीचे का स्थान। ३-वह कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा हो। ४-पटबन्धक।

पट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पट्टी। तख्ती। लिखने की पटिया। २-तांबे आदि धातुओं की चिपटी पट्टी जिसके ऊपर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ३-मुकुट किरीट। कलंगी। ४-धज्जी। ५-रेशम। ६-महीन या रंगीन वस्त्र। ७-सब कपड़ों के ऊपर पहनने का वस्त्र। ८-पगड़ी। साफा। मंडील। ९-राजसिंहासन। तख्त। १०-कुर्सी। काठ का मूढ़ा। ११-ढाल। १२-चक्की का पाट। १३-चौराहा। १४-नगर। कस्बा। १५-घाव या चोट पर बांधने की पट्टी। १६-वह भूमि-सम्बन्धी अधिकारपत्र जो भूमि के स्वामी की ओर से आसामी को दिया जाता है और जिसमें वह सब शर्तें लिखी होती हैं जिन पर वह अपनी जमीन उसे देता है। पट्टा। [वि.] मुख्य। प्रधान। [वि.] (हिं.) देखो 'पट'।

पट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धातु की चपटी पट्टी जिस पर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाय। २-चोट या घाव पर बांधने की पट्टी। ३-वह रेशमी वस्त्र जिस की पगड़ी बनाई जाय। ४-कमरबन्द। पटका ५-लिखने की पट्टी या पटिया। तख्ती। ६-ताम्रपट या चित्रपट।

पट्टदाता [संज्ञा पु.] (सं.) पट्टा देने वाला। किसी स्थावर भूमि या सम्पत्ति का अधिकारपत्र देने वाला।

पट्टदेवी [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की प्रधान रानी। पटरानी।

पट्टदोल [संज्ञा स्त्री] (सं) कपड़े का बना हुआ पालना।

पट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर। २-बड़ा नगर

पट्टमहिषी [संज्ञा स्त्री] (सं.) पटरानी। की प्रधान रानी।

पट्टरंग, पट्टरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पतंग।

पट्टरंजक, पट्टरञ्जक [संज्ञा पु.] पतंग।

पट्टरंजनक, पट्टरञ्जनक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पट्टरंग'।

पट्टराज [संज्ञा पु.] (सं.) महाराष्ट्र के उन ब्राह्मणों की उपाधि जो पूजारी का कार्य करते हैं।

पट्टराज्ञी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पटरानी।

पट्टला [संज्ञा स्त्री] (सं.) मण्डल। जिला।

पट्टशाक [संज्ञा पु.] (सं.) पटुवा।

पट्टांशुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पहनावा।

पट्टा [संज्ञा पु.] (सं) १-किसी स्थावर सम्पत्ति या भूमि के उपभोग का वह अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से आसामी या ठेकेदार को मिलता है। लीज। २-कोई अधिकारपत्र। सनद। ३-चमड़े आदि का वह तस्मा जो कुत्तों, बिल्लियों आदि के गले में पहनाया जाता है। ४-एक गहना जो चूड़ियों के बीच में पहना जाता है। ५-पीढ़ी। ६-जनानी जूतियों पर का कपड़ा जिस पर काम बना होता है। ७-घोड़ों के मस्तक पर पहनने का एक गहना। ८-पीछे या दाहिने बाएं गिरे और बराबर कटे हुए कुछ लम्बे बाल। ९-चपरास। १०-वह वृत्ताकार पट्टी जिसमें चपरास टंकी रहती है। ११-चमड़े का कमरबन्द। पेटी। १२-एक प्रकार की तलवार। १३-लकड़ी वालों के नाई, धोबी, कहार आदि का वह नेग जो विवाह में वर पक्ष से उन्हें दिलवाया जाता है। १४-घोड़ों के मुख पर का वह लम्बा और सफेद निशान जो नथुनों से लेकर मत्थे तक होता है।

पट्टाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण देश में रहने वाले प्राचीन पंडितों की उपाधि।

पट्टाधार [संज्ञा पु.] (सं.) पट्टा होने की अवस्था।

पट्टाधारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जिसके पास किसी स्थावर संपत्ति या भूमि का अधिकारपत्र हो। पट्टेदार। लीज-होल्डर।

पट्टार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश।

पट्टारक [वि.] (सं) पट्टार में उत्पन्न।

पट्टार्हा [संज्ञा स्त्री] (सं.) पटरानी।

पट्टिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पटिया। छोटी तख्ती। २-छोटा ताम्रपट या चित्रपट। ३-कपड़े की छोटी पट्टी। ४-एक बित्ता लम्बा कपड़ा। ५-रेशम का फीता। ६-पठानी लोध।

पट्टिकाख्य, पट्टिकालोध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पठानी लोध।

पट्टिकार [वि.] (सं) रेशमी वस्त्र बनाने वाला (जुलाहा)।

पट्टिकावायक [संज्ञा पु.] (सं) रेशमी वस्त्र बनाने

ला जुलाहा या कोरी।

[संज्ञा पु.] (सं.) पलंग। पूतिकरंज।

ध्र, पट्टिलोध्रक [संज्ञा पु.] (सं.) पठानी लोध।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन त्र या खांड़ा जो ३, ३॥ या ४ हाथ लम्बा ता था। यह दुधारा और अत्यन्त पैनी नोक का होता था।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-पट्टिश बाँधने वाला। २-पट्टिश से लड़ने वाला।

[संज्ञा पु.] (सं.) पट्टिश। पटा।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-लकड़ी की वह चौरस पटरी जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पाटी। पटिया। २-पाठ। सबक। ३-उपदेश। शिक्षा। सिखावन। ४-बुरी नीयत से दी जाने वाली शिक्षा या सलाह। बहकाने वाली शिक्षा। भुलावा। चकमा। झाँसा। दम। ५-लकड़ी की वह बल्ली जो तार के ढाँचे की लम्बाई में लगाई जाती है। ६-कपड़े की घाव पर बांधने की धज्जी। ७-पत्थर का पतला, चिपटा और लम्बा टुकड़ा। ८-लकड़ी की लम्बी बल्ली जो छत या छाजन के ठाठ में लगाई जाती है। ९-ठाठ के ओर की बल्लियों की पंक्ति। १०-तिल, दाल आदि को चाशनी में पगाकर बनाई जाने वाली एक प्रकार की मिठाई। ११-सन की बुनी हुई पट्टियां जिनके जोड़ने से टाट तैयार होते हैं। १२-कपड़े की कोर या किनारी। १३-सिर की मांग के दोनों ओर कंघी से बैठाये हुए बाल जो देखने में पट्टी की तरह जान पड़ते हैं। पाटी। पटिया। १४-वह तख्ता जो नाव के बीचोंबीच होता है। १५-किसी की संपत्ति या उसके होने वाली आय का भाग या अंश। हिस्सा। पत्ती। १६-सूती या ऊनी कपड़े की पट्टी जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिए टांगों में बांधते हैं। १७-पंक्ति। पांति। १८-किसी जमींदारी का उतना भूभाग जितना एक पट्टीदार के अधिकार में हो। पट्टीदारी का मुख्य भाग। १९-वह अतिरिक्त कर जो जमींदार किसी विशेष प्रयोजन के निमित्त संग्रह करने के लिए अपने आसामियों पर लगाता है। अबवाब। नेग।

पट्टी पढ़ना-गुरु से पाठ लेना। सबक पढ़ना। पट्टी पढ़ाना-विद्यार्थी को पट्टी पर लिखकर पाठ देना। पट्टी में आना-किसी के चकमे में आ जाना। पट्टी जमाना-माँग के दोनों ओर के बालों को गोंद की सहायता से सिर या कनपटी से चिपका कर जमाना। पट्टी का गाँव वह गांव जिसके बहुत से मालिक हों। इस कारण उसमें कुप्रबंध हो। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माथे का आभूषण विशेष। पगड़ी में लगाने का गहना। २-घोड़े का जेरबन्द और तंग। ३-तलसारक। तोबड़ा। ४-पठानीलोध [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घोड़े की लम्बी सीधी और सरपट दौड़।

पट्टीदार [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह व्यक्ति जिसका किसी की संपत्ति में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २-वह व्यक्ति जिसे किसी की संपत्ति में हिस्सा बटाने का अधिकार हो। पट्टीदारी के मालिकों में से एक। ४-वह व्यक्ति जिसकी राय की अपेक्षा न की जा सकती हो। बराबर का अधिकारी। समान अधिकारयुक्त।

पट्टीदारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पट्टी या हिस्से होने का भाव। किसी वस्तु का अनेक की सम्पत्ति होना। २-बराबर अधिकार रखने का भाव। हिस्सेदारी। ३-वह जमीदार जिसके बहुत से स्वामी होने पर भी जो अविभक्त संपत्ति समझी जाती है। भाईचारा। *पट्टीदारी अटकना*-ऐसा झगड़ा उपस्थित होना जिसका कारण पट्टी हो। पट्टीदारी के कारण विरोध होना। *पट्टीदारी करना*-पट्टीदारी के हक (स्वत्व) पर अड़ना। २-बराबरी करना।

पट्टीवार [क्रि. वि.] (हिं.) इस प्रकार जिसमें हर पट्टी का हिसाब अलग आजाय। हर पट्टी का हिसाब-किताब अगल करते हुये। [वि.] (हिं.) अलग-अलग पट्टी के अनुसार तैयार किया हुआ (बही या लेख) जो पट्टीभेद को ध्यान में रखकर तैयार किया गया हो।

पट्टू [संज्ञा पु.] (हि.) १-काश्मीर, अलमोड़ा आदि पहाड़ी प्रदेशों में जो बहुत रूप में बुना जाने वाला एक ऊनी वस्त्र जो बहुत गरम होता है। २-एक प्रकार का चार खाना [संज्ञा पु.] (देश.) सुवा। तोता। शुक।

पट्टेदार [संज्ञा पु.] (हि.) जिसके पास किसी स्थावर संपत्ति या भूमिं का पट्टा या अधिकारपत्र हो।

पट्टेदारी [संज्ञा स्त्री.](हि.) पट्टेदार होने का भाव किसी स्थावर भूमि या सपत्ति का स्वत्व-पत्र या अधिकार पत्र मिलने की अवस्था।

पट्टेपछाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच

पट्टेबैठक [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

पट्टैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पटैत। २-मूर्ख। बेवकूफ। ३-वह कबूतर जो बिलकुल लाल, काला या नीला हो और जिसकी गरदन में सफेद कंठा हो।

पट्टोलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जो भूमि जोतने को जोते को दी जाती है। २-लिखित कानून-व्यवस्था।

पट्ठमान* [वि.] (हि) पढ़ने योग्य। जिसका पढ़ना उचित हो।

पट्ठा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. पठिया] १-जवान तरुण। पाठा। २-वह मनुष्य, पशु आदि का बच्चा जिसमें यौवन का आगमन हो चुका हो। नवयुबक। ३-कुश्तीबाज। अखाड़िया। ४-मांस-पेशियों को आपस में अथवा हड्डियों के साथ जोड़ने वाले मोटे तंतु या नसें। स्नायु। ५-लम्बा-मोटा और दलदार पत्ता ६-एक प्रकार का चौगोटा। ७-पेड़ू के नीचे कमर और जाँघ के जोड़ का वह स्थान जहां छूने से गिल्टियां मालूम होती हैं। पट्टी पर बेल बुनकर बनाई हुई गोट।

पट्ठापछाड़ [वि.] (हि.) इतनी बलवती (स्त्री) जो पुरुष को भी पटक लगादे। खूब हृष्ट-पुष्ट और बलवती (स्त्री)।

पट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पठिया'।

पंठ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बिना ब्याई जवान बकरी। पाठ।

पठक [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ने वाला। पाठक।

पठन [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ने की क्रिया। पढ़ना *पठनपाठन*-पढ़ना पढ़ाना।

पठनीय [वि.] (सं.) पढ़ने योग्य।

पठनेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) पठान का लड़का।

पठमंजरी, पठमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्री राग की चौथी रागिनी यह एक पहर दिन के के बाद गाई जाती है।

पठवनी* [क्रि. स.] (हि.) भेजना।

पठवाना* [क्रि. स.] (हि.) दूसरे को भेजने में प्रवृत्त करना।

पठान [संज्ञा पु.] (हि.) [वि. स्त्री. पठानी] अफगानिस्तान और पाकिस्तान के पश्चिमी सीमान्त प्रदेश में बसने वाली एक मुसलमान योद्धा जाति।

पठाना* [क्रि. स.] (हिं.) भेजना।

पठानिन, पठानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पठान जाति की स्त्री। पठान स्त्री। २-पठान होने का भाव। ३-पठान जाति की चरित्रगत विशेषता। पठानपन।

पठानीलोध [संज्ञा पु.] (हि.) एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल, औषध तथा पत्ती और छाल रंग बनाने के काम में आती है। वैद्यक के अनुसार यह कसैला, शीतल, वात-कफनाशक, नेत्रहितकारी, रुधिर और विष के विकारों का नाशक होता है। लोध का फूल कसैला, शीतल, मधुर, कड़ुवा, ग्राहक तथा कफ-पित्तनाशक माना गया है। पट्टिका-लोध्र। क्रमुक।

पठार [संज्ञा पु.] (देश.) एक पहाड़ी जाति।

पठावन+ [संज्ञा पु.] (हि.) सन्देश ले जाने या लानेवाला। दूत। संदेशवाहक।

पठावनि, पठावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिए भेजना। २-किसी के भेजने से कहीं कुछ लेकर जाना।

पठावर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

पठित [वि.] (सं.) १-पढ़ा हुआ। पाठ किया हुआ। दोहराया हुआ। २-जिसने कुछ पढ़ा हो। पढ़ालिखा। शिक्षित। (अशुद्ध प्रयोग)

पठितव्य [वि.] (सं.) पढ़ने योग्य।

पठिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्दालंकार का एक भेद।

पठियार+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बल्ला या पटिया जो कुएँ के मुख पर बीचोंबीच इसलिए रख दी जाती है कि पानी भरने वाला या निकालने वाला उस पर पैर रखकर निकाले।

पठिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यौवनप्राप्त स्त्री। जवान और तगड़ी स्त्री।

पठोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-बिना ब्याही हुई जवान बकरी। २-जवान, पर बिना ब्याई मुर्गी।

पठौनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) किसी को कुछ देकर कहीं भेजने की क्रिया या भाव।

पाठ्यमान [वि.] (सं) जो पढ़ा जाता हो।

पड़छती, पड़छत्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह छोटा छप्पर या टट्टी जिसे बरसात के में आरम्भ कच्ची दीवार पर इसलिए लगा देते हैं कि बौछार के कारण वह कट न जाय। भीत की रक्षा के लिए लगाने वाला छप्पर।

पड़त* [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'पड़ता'।

पड़ता [संज्ञा पु.] (हिं) १-किसी वस्तु की खरीद या तैयारी का दाम। लागत। २-दर। शरह। ३-भू-कर की दर। लगान की शरह। ४-सामान्य दर। औसत।

पड़ता रहना-औसत होना। *पड़ता खाना या पड़ना*-खर्च और मुनाफा निकल आना। *पड़ता फैलाना या लगाना*-लगान आदि का हिसाब लगाना।

पड़ताल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु या बात के ठीक होने की जाँच। अनुसंधान। चेकिङ्ग। २-गाँव अथवा नहर के पटवारी द्वारा खेतों की एक विशेष प्रकार की जाँच।

पड़तालना [क्रि. स.] (हिं) पड़ताल करना। जाँचना। अनुसंधान करना। छानबीन करना

पड़ती [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जोतने-बोने योग्य वह भूमि जो कुछ समय से खाली पड़ी हो, जोती बोई न गई हो।

पड़ती उठना-१-पड़ती का जोता जाना। पड़ती पर खेती होना। २-पड़ती के जोते जाने का प्रबंध होना। *पड़ती उठाना*-१-पड़ती को जोतना। २-पड़ती का बंदोबस्त कर देना। *पड़ती छोड़ना*-किसी खेत को कुछ समय तक योंही छोड़ना।

पड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-एक स्थान से गिरकर, उछलकर या और किसी प्रकार दूसरे स्थान पर पहुँचना या स्थित होना। गिरना। पतित होना। २-दुःख, कष्ट, भार आदि ऊपर आना ३-बिछाया जाना। फैलाया जाना। ४-छोड़ा या डाला जाना। पहुँचना। दाखिल होना। प्रविष्ट होना। ५-बीच में आना या आजाना। हस्तक्षेप करना। दुख देना। ६-ठहरना। टिकना। डेरा डालना। पड़ाव करना। ७-विश्राम के लिए सोना या लोटना। आराम करना। ८-बीमार होना। खाट पर पड़ना। ९-मिलना। प्राप्त होना। १०-पड़ता खाना। ११-आय, प्राप्ति आदि की औसत होना। पड़ता होना। १२-रास्ते या मार्ग में मिलना। १३-उत्पन्न होना। पैदा होना। १४-स्थित होना। १५-संयोगवश होना। प्रसंग में आना। १६-जांच और विचार करने पर ठहराना। पाया जाना। १७-पहली स्थिति अथवा दशा त्याग कर नवीन स्थिति या दशा में) होना। (बदलकर) होना। १८-मैथुन या सम्भोग करना (पशुओं के लिए)। १९-धुन या चिन्ता होना। अत्यन्त इच्छा होना।

(किसी पर) पड़ना-विपत्ति या मुसीबत आना *पड़ा होना*-१-एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना। २-एक ही अवस्था में रहना। ३-बाकी रहना। *पड़े रहना या पड़ रहना*-बिना कुछ किये लेटे रहना। लेटकर बेकारी काटना। *क्या पड़ी है*-क्या प्रयोजन है। क्यां मतलब है।

पड़पड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निरन्तर पड़पड़ शब्द होना। २-देखो 'पटपट'।

पड़पड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पड़पड़ शब्द होना २-तीक्ष्ण वस्तु के स्पर्श से जलन-सी मालूम होना। चरपराना।

पड़पड़ाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पड़पड़ाने की क्रिया या भाव। चरपराहट।

पड़पोता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पड़पोती] लड़के के लड़के का लड़का। पोतों का पुत्र। पुत्र का पोता। प्रपौत्र।

पड़म [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा जो खेमा आदि बनाने के काम में आता है।

पड़वा [संज्ञा स्त्री.] (हिं) प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा। [संज्ञा पु.] भैंस का नर बच्चा।

पड़वाना [कि. स.] (हिं) पड़ने का काम दूसरे से कराना। गिरवाना।

पड़वी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की ईख जो बैशाख या जेठ में बोई जाती है।

पड़ाइन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) 'देखो 'पँड़ाइन'।

पड़ाका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पटाका'।

पड़ाके की गोट-देखो 'पटापटी की गोट'।

पड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को पड़ने में प्रवृत्त करना। झुकाना। गिराना।

पड़ापड़ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'पटापट'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पटापट'।

पड़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैदल यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय अथवा दिनों के लिये ठहरना। २-वह स्थान जहां इस प्रकार यात्री ठहरते हैं।

पड़ाव मारना-१-पड़ाव डाले हुए किसी यात्री दल को लूटना। २-कोई बड़ा साहसपूर्ण कार्य करना।

पड़ाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं) ढाक का पेड़।

पड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भैंस का मादा

पड़ियाना+ [क्रि. अ.] (हिं) भैंस का संयोग हो जाना। [क्रि.स.] भैंस का संयोग कराना।

पड़िवा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

पड़ेरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पड़रू'।

पड़ोरा+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'परवल'।

पड़ोस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी स्थान के पास का स्थान। २-किसी के घर के घर। प्रतिवेश।

पास पड़ौस-समीपवर्ती स्थान।

पड़ोस करना-पड़ोस में बसना।

पड़ोसी [संज्ञा पु.] (हिं) [स्त्री पड़ोसिन] में रहने वाला। जिसका घर अपने घर के हो। प्रतिवासी। प्रतिवेशी।

अड़ोसी-पड़ोसी-पड़ोसी आदि।

पड़ौसी [संज्ञा पु.] (हिं.) पड़ोस में रहने प्रतिवासी। पड़ोसी।

पढ़ंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-पढ़ने की क्रिया भाव। २-मंत्र। जादू।

पढ़त [संज्ञा स्त्री.] (हि) १-पढ़ने की क्रिया भाव। पढ़ाई। २-मंत्र। जादू।

पढ़ना [क्रि स.] (हिं.) १-पुस्तक या लेख आदि में लिखित बातें अथवा विषय इस प्रकार देखना कि उनका ज्ञान हो जाय। २-शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने के लिए ग्रंथ आदि कई बार देखना अध्ययन करना। ३-लेख के शब्दों का उच्चारण करना। लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना। उच्चारणपूर्वक पाठ करना। बाँचना ४-मध्यम अथवा धीमे स्वर से कहना। स्मरण रखने के लिए किसी विषय का बार बार उच्चारण करना। रटना। ६-मंत्र फूंकना जादू करना। ७-तोते मैना कोयल आदि पक्षियों का मनुष्यों के सिखाये हुए शब्दों का उच्चारण करना। नया पाठ प्राप्त करना।

पढ़ना लिखना-पढ़ने लिखने अथवा पढ़ने का कार्य। *पढ़ालिखा*-शिक्षित। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मछली जिसे पढ़ना भी कहते हैं।

पढ़नी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

पढ़नी-उड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) कसरत में एक प्रकार का अभ्यास जिसमें उछलकर जाता है।

पढ़वाना [क्रि. स] (हिं.) १-किसी से पढ़ने का काम कराना। किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना। बँचवाना। २-किसी से पढ़ाने की क्रिया कराना।

पढ़वैया+ [संज्ञा पु.] (हिं) पढ़ने वाला। शिक्षार्थी।

पढ़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पढ़ने का काम। अध्ययन। विद्याभ्यास। पठन। २-पढ़ने का भाव। ३-पढ़ने के बदले में दिया जाने वाला धन। ४-पढ़ाने का काम या भाव। अध्यापन। ५-अध्यापन-शैली।

पढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-शिक्षा देना। अध्यापन करना। किसी को पढ़ने या सीखने में प्रवृत्त करना। २-कोई कला या हुनर सिखाना। ३-तोते, मैना, कोयल आदि पक्षियों को मनुष्य की बोली सिखाना। शिक्षा देना। समझाना। सिखाना।

पढ़िना [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्रों और तालाबों में रहने वाली एक प्रकार की बिना सेहरे की मछली। यह अन्य सब मछलियों से अधिक दीर्घजीवी तथा डील-डौल वाली होती है। वैद्यक के अनुसार यह कफ, पित्तकारक, बलदायक, निद्राजनक और कोढ़ तथा रक्तदोष उत्पन्न करने वाली बताई जाती है। पाठीन। बोदलक। पढ़ना।

पढ़ैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पढ़ने वाला। पाठक। शिक्षार्थी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पढ़ने-पढ़ाने की क्रिया या भाव।

पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाँसे से खेलना या दाँव लगाकर खेलना। २-कोई खेल जो दाँव लगाकर या होड़ बदकर खेला जाय। जूआ। द्यूत। ३-दाँव पर रखी हुई वस्तु। ४-लेख्य या ठेके आदि की शर्त। टर्म। कंडिशन। ५-वह वस्तु जिसके देने का करार या शर्त हो मजदूरी। भाड़ा। ७-पुरस्कार, इनाम रकम जो किसी मुद्रा या सिक्के के रूप में हो अथवा कौड़ियों में। ८-एक प्राचीन सिक्का जो आठ कौड़ियों का होता था। १०-दाम। मूल्य। ११-धन-दौलत। संपत्ति। १२-बिक्री के लिए वस्तु। सौदा। १३-व्यवसाय। बनिज। व्यापार। १४-शराब खींचने वाला। १५-मकान। घर। १६-सेना की चढ़ाई का खर्च। १७-मुट्ठीभर कोई भी वस्तु। १८-ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार प्राचीनकाल में सिक्के के समान किया जाता था। पण लगाना-शर्त्त बदना। बाजी बदना। + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रण। प्रतिज्ञा।

पणक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शर्त्त बदने की क्रिया। जूआ खेलने का काम।

पणग्रंथि, पणग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाजार। हाट। मंडी। पैंठ।

पणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कीमत। मूल्य। दाम।

पणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पणता। मूल्य।

पणदंड, पणदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह दंड जो पण या सिक्के के रूप में दिया जाय। अर्थदंड।

पणन [संज्ञा पु.] (सं.) खरीदने की क्रिया या भाव। २-बेचने की क्रिया या भाव। ३-शर्त लगाने या बाजी बदने की क्रिया या भाव। व्यापार या व्यवहार करने की क्रिया या भाव।

पणनीय [वि.] (सं.) धन देकर जिससे काम लिया जा सके। २-जिसे खरीदा या बेचा जा सके।

पणफर [संज्ञा पु.] (सं.) कुंडली में लग्न से दूसरा, तीसरा, पाँचवाँ, आठवाँ और ग्यारहवां घर।

पणबंध, पणबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-संधि। २-शर्त्त लगाना। बाजी बदना।

पणव [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा नगाड़ा। २-छोटा ढोल। ढोलकी। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक मगण, एक नगण, और अन्त में एक गुरु होता है। प्रत्येक चरण सोलह-सोलह मात्रा होने के कारण यह चौपाई में ही आता है।

पणवानक [संज्ञा पु.] (सं.) नगाड़ा।

पणस [संज्ञा पु.] (सं.) क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा।

पणसुंदरी, पणसुन्दरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) बाजारी स्त्री। वेश्या। रंडी।

पणस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

पणास्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौड़ी। कपर्दक।

पणांगना, पणाङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी। कसबी।

पणाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाजार। व्यापार का लाभ। ३-जूआ। ४-प्रशंसा। ५-किसी प्रकार का आदान-प्रदान या लेनदेन। *ट्रैंनजैक्शन।*

पणायित [वि.] (सं.) १-प्रशंसित। २-खरीदा हुआ। ३-बेचा हुआ। ४-मोल-भाव किया

पणार्पण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ठेका।

पणि [संज्ञा पु.] (सं.) मंडी। बाजार। हाट। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृपण। कंजूस। लोभी। २-पापीजन।

पणिक [वि.] (सं.) पचास पण (प्राचीन सिक्के का नाम) का (अर्थदंड या जुर्माना)।

पणित [वि.] (सं.) १-जिसकी प्रशंसा की गई हो प्रशंसित। २-खरीदा हुआ। ३-बेचा हुआ। ४-मोल-भाव किया हुआ। ५-दांव पर लगा हुआ। [संज्ञा पु.] १-दांव। होड़। २-जूआ।

पणितव्य [वि.] (सं.) १-खरीदने योग्य। २-बेचने योग्य। ३-व्यवहार करने योग्य। ४-प्रशंसा करने योग्य।

पणितृ [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवसायी। सौदागर।

पणी [संज्ञा पु.] (सं.) क्रय-विक्रय करने वाला।

पण्य [वि.] (सं.) १-खरीदने योग्य। २-बेचने योग्य। ३-व्यापार या व्यवहार करने योग्य। प्रशंसा करने योग्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-सौदा। माल। व्यापार। व्यवसाय। रोजगार। ३-हाट। बाजार। ४-दूकान।

पण्य-चिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह चिह्न जो व्यवसायी अथवा कारखानेदार अपनी बिक्री के या अपने यहाँ बने या तैयार हुए माल पर औरों उसका पार्थक्य तथा अपनी विशिष्टता सूचित करने के निमित्त लगाते हैं। *मर्चेंएडाइज मार्क*।

पण्यदासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन लेकर सेवा करने वाली स्त्री। सेविका। लौंडी। मजदूरनी बांदी।

पण्यद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वे वस्तुएँ अथवा पदार्थ जो खरीदने और बेचनें के लिए बनते हैं। बिक्री की वस्तुएँ। *मर्चेंडाइज*।

पण्यपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारी व्यापारी। बहुत बड़ा व्यवसायी। ८-बहुत बड़ा साहूकार। पूंजीपति।

पण्यफल [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापार में प्राप्त लाभ। नफा। मुनाफा।

पण्यभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माल जमा करने का स्थान। गोदाम।

पण्यविलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

पण्यवीथिका, पण्यवीथी [संज्ञा स्त्री.](सं.) क्रय-विक्रय का स्थान। बाजार। हाट।

पण्यशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाजार। २-मंडी। दुकान।

पण्यस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

पण्यांगना, पण्याङ्गना [संज्ञा स्त्री.] वेश्या। रंडी।

पण्यांधा, पण्यान्धा [संज्ञा स्त्री.] (?) कंगनी नामक धान्य।

पण्यांजीव [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापार से जीविका चलाने वाला। व्यापारी। व्यवसायी।

पण्या [संज्ञा स्त्री. (सं.) मालकंगनी।

पतंखा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बगला जिसे पतोखा कहते हैं।

पतंग, पतङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिड़िया। पक्षी २-सूर्य। सूरज। ३-टिड्डी। ४-मधुमक्षिका। ५-शलभ। परवाना। भुनगा। फतिंगा। ६-एक प्रकार का धान। ७-जलमहुआ। जलमधूकवृक्ष। ८-एक प्रकार का चन्दन। ९-कंदुक। गेंद। १०-नौका। नाव। ११-चिनगारी। शोला। १२-एक गंधर्व का नाम। १४-शरीर। १५-जैनों के एक देवता जो वाणव्यंतर नामक देवगण के अन्तर्गत हैं। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो मध्यभारत तथा कटक प्रांत में अधिकता से होता है। इसकी लकड़ी में से लाल रंग निकलता है। इसको बक्कम भी कहते हैं। २-हवा में ऊपर उड़ने वाला कागज का प्रसिद्ध खिलौना जो धागे के सहारे आकाश में उड़ता है। गुड्डी। कनकौवा। चंग।
पतंग काटना-अपने पतंग की डोरी से दूसरे

की पतंग की डोरी काट देना। *पतंग बढ़ाना*-डोरी को ढीली करके पतंग को हवा में और ऊपर या आगे बढ़ाना।
[वि.] (हिं.) उड़ने वाला।

पतंगछुरी+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पीठ पीछे बुराई करने वाला। पिशुन। चुगलखोर। चवाई।

पतंगबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसे पतंग या गुड्डी उड़ाने का व्यसन हो। २-पतंग उड़ाकर मनोरंजन करने वाला। पतंग का शौकीन।

पतंगम* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पक्षी। चिड़िया। २-फतिंगा। पतंगा। शलभ।

पतंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उड़ने वाला कोई छोटा कीड़ा-मकोड़ा। फतिंगा। २-परदार कीड़ों की एक जाति विशेष जो प्रायः घास या वृक्ष की पत्तियों पर रहता है। फतिंगा। ३-चिनगारी। स्फुलिंग। अग्निकण। ४-दीये की बत्ती का वह अंश जो उससे जलकर अलग हो जाता है। गुल। फूल।

पतंगिका, पतङ्गिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी चिड़िया। २-मधुमक्खियों का एक भेद। बड़ी मधुमक्खी। पुत्तिका।

पतंगी, पतङ्गी [संज्ञा पु.] (सं) पक्षी।

पतंगेंद्र, पतङ्गेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षिराज। गरुड़।

पतंचिका, पतञ्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष की डोरी। चिल्ला। कमान की तांत।

पतंजलि, पतञ्जलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग दर्शन के निर्माता ऋषि का नाम। २-महाभाष्य के प्रसिद्ध रचयिता एक प्रसिद्ध मुनि का नाम।

पत* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पति। खसम। खाविंद। २-स्वामी। मालिक। प्रभु।
[संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-कानि। लज्जा। आबरू २-प्रतिष्ठा। इज्जत। ३-एतबार। साख। क्रेडिट।
पतपानी-लज्जा। आबरू। *पतउतारना*-बेइज्जती करना। आबरू लेना। *पत रखना*-इज्जत या प्रतिष्ठा बचाना। *पतलेना*-इज्जत-आबरू लेना।

पतई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्ती। पत्र।

पतउड़* [संज्ञा पु.] (हिं) चन्द्रमा।

पतखोवन [संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसा कार्य करने वाला जिससे अपना या दूसरे की बेइज्जती हो

पतग [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया। पखेरू।

पतगेंद्र, पतगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षिराज। गरुड़।

पतचौली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पौधा।

पतछीन* [वि.] (हिं.) जिसके पत्ते झड़ गये हों। बिना पत्तों का वृक्ष।

पतझड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती है। शिशिर। ऋतु। माघ और फाल्गुन के महीने। २-अवनतिकाल। खराबी और तबाही का समय। वैभवहीनता या कंगाली का समय।

पतझर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पतझड़'।

पतझल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पतझड़'।

पतझाड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पतझड़'।

पतत्[वि.] (सं.) १-उड़ने वाला। २-उतरने वाला। गिरने वाला। ३-नीचे को जाता या आता हुआ। [संज्ञा पु.](सं.) पक्षी। चिड़िया

पतत्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना जो बचत में रखी जाय। २-पीकदान।

पतत्पतंग, पतत्पतङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) डूबता हुआ सूर्य। वह सूर्य जो अस्त हो रहा हो।

पतत्प्रकर्ष [संज्ञा पु] (सं.) काव्य में एक प्रकार का रस-दोष।

पतत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्ष। पंख। डैना। २-पर। ३-वाहन। सवारी।

पतत्रि [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

पतत्रिकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

पतत्रिराज [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षिराज। गरुड़।

पतत्री [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

पतद्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीकदान। प्रतिग्राह। २-भिक्षापात्र। कमंडलु। कासा।

पतद्भीरु [संज्ञा पु.] (सं.) बाजपक्षी। श्येन।

पतन् [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

पतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरने अथवा नीचे आने की क्रिया या भाव। गिरना। २-नीचे जाने, धँसने या बैठने की क्रिया या भाव। बैठना या डूबना। ३-अवनति। अधोगति। तबाही। ४-नाश। मृत्यु। ५-पाप। पातक। ६-जातिच्युत। जाति से बहिष्कृत होना। ७-उड़ने की क्रिया या भाव। उड़ान। उड़ना। ८-किसी नक्षत्र का अक्षांश। ९-किले, नगर आदि का शत्रु के सैनिकों के हाथ में चला जाना। [वि.] (सं.) १-गिरने वाला। २-उड़ने वाला।

पतनशील [वि.] (सं.) जिसका पतन निश्चित हो। गिरने वाला।

पतना [संज्ञा पु.] (?) योनि का तट भाग। योनि का किनारा।

पतनारा [संज्ञा पु.] (?) परनाला। मोरी। पतनाला। नाबदान।

पतनाला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पतनारा'।

पतनीय [वि.](सं.) जिसका गिरना अथवा अधोगत होना संभव हो। जातिभ्रष्ट होने वाला। गिरने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) वह पाप जिसके कारण जातिच्युत होना पड़े। जातिभ्रष्टकर पाप।

पतनोन्मुख [वि.] (सं.) १-जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो। जो गिरने को हो। २- पतन या दुर्गति समीप आरही हो।

पतपानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रतिष्ठा। इज्जत। २-लाज। आबरू।

पतम [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्र। २-पक्षी। फतिंगा।

पतय [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २- टिड्डा।

पतयालु [वि.] (सं.) पतनशील। गिरने

पतयिष्णु [वि.] (सं.) पतनशील। गिरने

पतर+* [वि.] (हिं.) १-पतला। कृश। २- पर्ण। ३-पत्तल। पनवारा।

पतरा+ [संज्ञा पु.](हिं.) १-वह पत्तल जो के टोकरे या डलिया में बिछाई जाती है। सरसों का पत्ता। [वि.] (हिं) देखो

पतराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूक्ष्मता।

पतरिंग [संज्ञा पु.] (देश.) एक हरे रंग का जिसकी चोंच लम्बी होती है। यह को पकड़कर खाता है।

पतरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पत्तल'।

पतरेंगा [संज्ञा पु.] (देश.) पतरिंगा पक्षी।

पतला [वि.] (हिं.) [स्त्री. पतली.] १- घेरा, लपेट या चौड़ाई कम हो। जो मोटा न हो। २-जिसके शरीर के इधर-उधर विस्तार कम हो। जो स्थूल या मोटा नहीं कृश। ३-जिसका दल मोटा न हो। हलका। गाढ़े का उलटा। अधिक अशक्त। निर्बल। कमजोर। हीन।
दुबला पतला-जो मोटा ताजा न हो। वस्तु या पदार्थ-कोई तरल पदार्थ। पड़ना-दुर्दशाग्रस्त होना। पतला हाल- और कष्ट की अवस्था। करुणाजनक बुरा हाल।

पतलाई+ [संज्ञा स्त्री] हिं) पतला होने का पतलापन।

पतलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) पतला होने का

पतली [संज्ञा स्त्री.](हिं) जुआ। द्यूत। बोली)।

पतलून [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह अंग्रेजी ढंग पायजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई और जो बटन से बंद किया जाता है दोनों ओर दो जेबें भी होती हैं।

पतलूननुमा [संज्ञा पु.] (हिं.) पतलून से मिलता जुलता पायजामा।

पतलो [संज्ञा स्त्री] (देश.) १-सरकंडे की पताई। सरपत की पताई। २-सरकंडा। पत।

पतवर [क्रि. वि.] (हिं.) पंक्ति। क्रम से। वार।

पतवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का

ढेलने का मचान।

पतवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव या जहाज का वह तिकोना पिछला अङ्ग जो आधा जल में और आधा बाहर होता है तथा जिसके द्वारा नौका इधर-उधर घुमाई जाती है। कर्ण। पतवाल। सुकान। कन्हर।

पतवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊख का खेत। २-पतवार।

पतवाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पतवार'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्तियों का अड्डा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। २-चन्द्रमा। पतिंगा। टिड्डी आदि।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि।

पता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ठिकाना या स्थान सूचित करने वाली वह बात जिसके द्वारा किसी तक पहुँच अथवा किसीको पासकें। २-पत्र आदि पर लिखा हुआ किसी का नाम और रहने का स्थान आदि। एड्रेस। ३-खोज अनुसंधान। सुराग। टोह। ४-अभिज्ञता। जानकारी। ५-गूढ़तत्त्व। रहस्य। भेद। पते की-भेद प्रकट करने वाली बात। पते की बात-वह बात जिससे कोई भेद प्रकट हो। पता ठिकाना-किसी वस्तु का स्थान और जिसका परिचय। पता निशान-१-वे बातें जिनसे किसी के सम्बन्ध में कुछ जान सकें २-अस्तित्वसूचक चिह्न।

पताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वृक्ष या पौधे की वह पत्तियां जो झड़ गई हों। झड़ी हुई पत्तियों का ढेर। पताई *लगाना*-वहकाने के लिए आग में सूखी पत्तियां झोंकना। (*किसी के*) *मुंह में पताई लगाना*-(किसी का) मुंह फूंकना (स्त्रियों की गाली)।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मजबूत होती है। यह वृक्ष बङ्गाल आसाम और पश्चिमी घाट में पाया जाता है।

पताकांक, पताकाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पताका-स्थान'।

पताकांशु [संज्ञा पु.] (सं.) झंडा। झंडी। पताका

पताका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-झंडा। ध्वजा। फरहरा। २-वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया रहता है। ध्वज। ३-कागज आदि का वह छोटा टुकड़ा जो किसी बड़े कागज पर उसकी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिये लगाया जाता है। फ्लैग। ४-दस खव की संख्या। ५-नाटक में वह स्थल जहां किसी अभिनयपात्र के चिन्तागत भाव या विषय का समर्थन अथवा पोषण आने वाले भाव से हो। ६-पिंगल के नौ पत्ययों में से आठवां जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु-लघुवर्ण के छन्द अथवा छन्दों का स्थान जाना जाय। ७-तीर चलाने में उङ्गलियों की एक विशेष स्थिति। (*किसी स्थान में या किसी स्थान पर*) *पताका उड़ना*-१-अधिकार या राज्य होना। २-सब में श्रेष्ठ माना जाना। (*किसी वस्तु की*) *पताका उड़ाना*-अधिकार करना। विजयी होना। *पताका गिरना*-पराजय होना। *पताका फहराना*-१-पताका उड़ना। २-पताका उड़ाना। *विजय की पताका*-विजय को सूचित करने वाला।

पताकादंड, पताकादण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पताका या झण्डे का डंडा।

पताकाधारक [संज्ञा पु.] (सं.) झंडाबरदार। झंडा उठाने वाला।

पताका-स्थान [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में वह स्थान जहां पताका हो। देखो 'पताका' (५)।

पताकिक [संज्ञा पु.] (सं.) पताकाधारक। झंडाबरदार।

पताकित [वि.] (सं.) १-जिसमें पताका लगी हो पताका से युक्त। २-(कागज-पत्र) जिसमें विशेश रूप से ध्यान आकृष्ट करने के लिए पताका के समान कागज लगा हो। फ्लैग्ड।

पताकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेना। फौज। ध्वजिनी। २-एक देवी का नाम।

पताकी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पताकिनी] १-झंडा उठाकर चलने वाला व्यक्ति। २-राजचिह्न। राजचिह्नसूचक झंडा ले जाने वाला। ३-रथ। ४-महाभारत के अनुसार एक योद्धा का नाम जो कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों की ओर से लड़ा था। ५-फलित ज्योतिष में राशियों का एक विशेष वेध जिससे जातक के अरिष्ठकाल की अवधि मानी जाती है।

पतामी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की नाव

पतार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पाताल'। २-जंगल। सघन वन।

पतारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बत्तख की जाति का एक जलपक्षी जो उत्तर भारत के जलाशयों में पाया जाता है।

पताल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाताल'।

पतालआँवला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का क्षुप जिसके पत्ते के नीचे पतली डंडी निकलती है। इसमें ही फल आते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कड़ुवा, कषैला, मधुर, शीतल, वातकारक, प्यास, खांसी, रक्तपित्त, कफ, पांडुरोग, क्षत तथा विष का नाश करने वाला और पुत्रदायक है।

पतालकुम्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार जंगली पौधा जो शकरकन्द लता के समान भूमि पर फैलता है और शकरकन्द के समान ही गांठें फूटती हैं।

पतालदंती [संज्ञा पु.] (हिं.) वह हाथी जिसके दांत का झुकाव नीचे की ओर हो।

पतावर [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ के सूखे हुए पत्ते।

पतासा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बतासा'।

पतासी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बढ़इयों की छोटी रुखानी।

पतिंवरा, पतिम्वरा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-जो अपना पति स्वयं चुने। स्वेच्छा से पति का वरण करने वाली (स्त्री)। स्वयंवरा। २-कालाजीरा। कृष्णजीरक।

पति [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पत्नी] १-स्वामी। प्रभु। मालिक। अधिपति। २-स्त्री की दृष्टि से उसका विवाहित पुरुष। दूल्हा। ३-मर्यादा। प्रतिष्ठा। इज्जत। साख। ४-मूल। ५-पशुपतदर्शन के अनुसार सृष्टि, स्थिति तथा संहार का वह कारण जिसमें निरतिशय, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति हो एवं ऐश्वर्य से जिसका नित्य संबंध हो। शिव या ईश्वर।

पतिआना+ [क्रि. अ.] (हिं.) किसी की कही हुई बात ठीक मानकर उस पर विश्वास करना पतियाना।

पतिआर* [संज्ञा पु.] (हिं.) पतियाने का भाव। विश्वास। साख। एतबार। मातबरी।

पतिक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्राचीन सिक्का जिसे कार्षापण भी कहते थे।

पतिकामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति पाने की कामना करने वाली स्त्री। पति की अभिलाषा रखने वाली स्त्री।

पतिघातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जिसने अपने पति की हत्या की हो। २-हाथ की एक रेखा विशेष जिसका फल यह है कि जिस स्त्री के वह रेखा हो वह अपने पति के साथ विश्वासघात करती है। ३-ज्योतिष या सामुद्रिक के अनुसार वैधव्य योग या लक्षण वाली स्त्री।

पतिघ्न [वि.] (सं.) वैधव्यसूचक योग या लक्षण

पतिघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिघ्न योग या लक्षण वाली स्त्री।

पतिजिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जियापोता नाम का एक वृक्ष।

पतित [वि.] (सं.) [स्त्री. पतिता] १-नीचे गिरा या आया हुआ। २-आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। आचारच्युत। आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। आचारच्युत। नीति भ्रष्ट या धर्मत्यागी। ३-महापापी। अति पातकी। ४-जाति से निकाला हुआ। समाज बहिष्कृत। जातिच्युत। ५-अत्यन्त मलीन। ६-अधम। अधिनीच।

पतितउधारन* [वि.] (हिं.) पतितों का उद्धार करने वाला। [संज्ञा पु.] १-ईश्वर। २-सगुण ईश्वर।

पतितता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पतित होने का भाव। जाति अथवा धर्मच्युत होने का भाव २-अपवित्रता। ३-नीचता। ४-अधमता।

पतितत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पतित होने का भाव।

पतितपावन [वि.] (सं.) पतित को पावन या पवित्र करने वाला। पतित को शुद्ध करने वाला। [संज्ञा पु.] १-ईश्वर। २-सगुण ईश्वर।

पतितवृत्त [वि.] (सं.) पतित दशा में रहने वाला जातिच्युत होकर जीवन बिताने वाला।

पतितव्य [वि.] (सं.) गिरने वाला। पतन योग्य।

पतितसाविजीक [वि.] (सं.) जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो या विधिपूर्वक न हुआ हो। (क्षत्रियादि)। [संज्ञा पु.] प्रथम तीन प्रकार के व्रात्यों में से एक।

पतितेस* [संज्ञा पु.] (हिं) पतितों का सरदार। बहुत बड़ा पतित।

पतित्व [संज्ञा पु.] (सं) १-स्वामी, प्रभु या मालिक होने का भाव। स्वमित्व। प्रभुत्व। २-पाणिग्राहकता।

पतित्वन [संज्ञा पु.] (सं) यौवन। जवानी।

पतिदेवता, पतिदेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह स्त्री जो अपने पति को देवता तुल्य पूज्य एवं मान्य समझे। सती या साध्वी स्त्री। [वि.] जिस (स्त्री) का आराध्य या उपास्य एकमात्र पति हो।

पतिधर्म [संज्ञा पुं.] (सं.) पत्नी का अपने पति के प्रति कतव्य।

पतिधर्मवती [वि.] (सं) पति-सम्बन्धी कर्त्तव्यों का भक्तिपूवक पालन करने वाली (स्त्री) पतिव्रता।

पतिध्रुक [वि] (सं.) पति को न चाहने वाली (स्त्री)।

पतिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पत्नी'।

पतिप्राणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति की कामना करना।

पतियंती, पतियन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति की कामना वाली स्त्री अथवा पति के योग्य पत्नी

पतियति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति की कामना करना।

पतियान [वि.] (सं.) पति का पदानुसरण करने वाली (स्त्री)। पति की अनुगामिनी (पत्नी)।

पतियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) विश्वास करना। सच मानना।

पतियार+ [वि.] (हिं.) विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय।

पतियारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) पतियाने का भाव। विश्वास। एतबार।

पतिरिप् [वि.] (सं.) पति से द्वेष करने वाली (स्त्री)। पति से वैर रखने वाली।

पतिलंघना, पतिलङ्घना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुनर्विवाह करके प्रथम पति की अवहेलना करने वाली स्त्री।

पतिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पतिव्रता स्त्री को मिलने वाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवंती, पतिवन्ती [वि.] (सं.) पतिवती। सधवा।

पतिवती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सधवा। जीवित पति वाली।

पतिवेदन [वि.] (सं.) पति लाभ कराने वाला। [संज्ञा पु.] शिव। महादेव।

पतिवेदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तन्त्र-मन्त्र से पति को प्राप्त करने वाली स्त्री।

पतिव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) पत्नी की अपने पति पर अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

पतिव्रता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] (स्त्री) जो अपने पति में अनन्य अनुराग रखती और यथा विधि उसकी पूरी सेवा करती हो। सती। साध्वी।

पतिवर्त [संज्ञा पु.] देखो 'पतिव्रत'।

पतिवर्त्ता [वि.] देखो 'पतिव्रता'।

पतिष्ठ [वि.] (सं.) अत्यंत पतनशील। गिरने-वाला।

पतिसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति की सेवा। पति भक्ति।

पती [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पति'।

पतीजन*, पतीजना* [क्रि. अ.] (हिं.) विश्वास या एतबार करना। पतियाना। भरोसा करना

पतीनना* [क्रि. स.] (हिं.) विश्वास करना। यकीन करना।

पतीर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पांति। कतार। पंक्ति।

पतीरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चटाई।

पतील [वि.] (हिं.) देखो 'पतला'।

पतीला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पतीली] तांबे या पीतल की बड़ी बटलोई।
*[वि.] (हिं.) देखो 'पतला'।

पतीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तांबे या पीतल की चौड़े मुँह की बटलोई।

पतुकी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाँड़ी।

पतुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाचने-गाने का व्यवसाय करने वाली स्त्री। वेश्या। रंडी। २-व्यभिचारिणी स्त्री। छिनाल।

पतुला+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कलाई में पहनने का एक आभूषण जिसे अवध प्रदेश की स्त्रियां पहनती हैं।

पतुही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नन्हे-नन्हे दानों वाली छीमी।

पतूख, पतूखी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पतोखी'।

पतेर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पक्षी। चिड़िया। २-गर्त। गड्ढा।

पतोई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गुड़ बनाते समय खौलते रस में निकलने वाला फेन।

पतोखद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औषध जो किसी वृक्ष, पौधे, अथवा तृण का पत्ता या [illegible] आदि हो। जड़ी बूटी की दवा। खरविरई। [संज्ञा पु.] (डि.) चन्द्रमा।

पतोखदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जड़ी बूटी की औषध। खरविरई।

पतोखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) [स्त्री. पतोखी] १-पत्ते का बना पात्र। दोना। २-पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बगला जिसके पर खूब सफेद, नरम, चिकने और चमकीले होते हैं।

पतोखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्ते का बना छोटा दोना। २-पत्तों का बना छोटा छाता।

पतोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पत्योरी'।

पतोह, पतोहू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बेटे की स्त्री। पुत्रवधू।

पतौआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्ता। पर्ण।

पत्तंग, पत्तङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्तचंदन। एक प्रकार का धान।

पत्त [संज्ञा पु.] (सं.) पाद। पैर। पांव। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पात्र'।

पत्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर। शहर। २-नगरी। कस्बा। टाउन। ३-मृदंग। ४-समुद्र के किनारे जहाज ठहरने का स्थान। पोर्ट।

पत्तन-आयुध [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तन या बंदरगाह के रक्षार्थ काम आने वाले शस्त्र। पोर्टआर्म्स।

पत्तन-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पत्तन या कस्बे और उसके आस-पास का वह क्षेत्र जो सफाई, रोशनी, आरंभिक शिक्षा आदि के लिए एक स्वतंत्र मात्रा या इकाई के रूप में होता है तथा जिसकी व्यवस्था वहां के कुछ निर्वाचित लोगों के हाथ में होती है। टाउन एरिया। २-किसी पत्तन अथवा बंदरगाह के आस-पास का क्षेत्र जो वहां के देश की सेना की देख-रेख में रहता है। पोर्ट-एरिया।

पत्तननिरोधा [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तन या बंदरगाह से संक्रामक रोग ग्रस्त होने पर यात्रा करने की रुकावट। पोर्ट क्वरींन्टीन।

पत्तनपाल [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी जिस की देखरेख में कोई पत्तन या बन्दरगाह रहती है तथा आने-जाने वाले व्यक्तियों की वास्तविक जानकारी की जाती है। पोर्ट कमिश्नर।

पत्तनाधिकारिक [संज्ञा पु.] (सं.) बंदरगाह का अधिकारी या अफसर। पोर्ट-आफीसर।

पत्तरंग, पत्तरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) लालचन्दन। बक्कम।

पत्तर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धातु को पीटकर बनाया हुआ चिपटा। लंबोतरा टुकड़ा। धातु की छोटी चादर या टुकड़ा। २-देखो 'पत्र'।

पत्तिगणक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पतिगण'।

पत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा पत्ता। साझे का ६ अंश या भाग। हिस्सा। ३-फूल की पंखड़ी। ४-दल। भांग। ५-वस्त्र, लकड़ी धातु आदि का पत्ती के आकार का टुकड़ा।

पत्तीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसका किसी के साथ व्यवसाय आदि में साझा हो। हिस्सेदार। साझीदार।

[वि.] (हिं.) जिसमें पत्ती या टुकड़ा लगा या जुड़ा हो। पत्ती लगा हुआ। जैसे—पत्तीदार कुर्ता।

पत्तूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शांति या शालिंचनामक शाक। २-जलपीपल। ३-पकड़ का वृक्ष। ४-शमी का वृक्ष। ५-पतंग की लकड़ी।

पत्थ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पथ्य'।

पत्थर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पृथ्वी के स्तर में का वह कठोर प्रसिद्ध पिंड अथवा खंड जो चूने बालू आदि के जमने से बना होता है। प्रस्तर। शिलाखंड। २-सड़क के किनारे का गड़ा हुआ वह शिलाखंड जिसपर मील के संख्या सूचक अंक खुदे या लिखे होते हैं। सड़क की नाप सूचित करने वाला पत्थर। ३-ओला। इन्द्रोपल। बिनौली। ४-रत्न। हीरा, पन्ना, लाल आदि रत्न। ५-पत्थर के समान कठोर भारी या हटने गलने आदि के अयोग्य वस्तु। ६-कुछ नहीं। बिलकुल नहीं। (तुच्छता अथवा तिरस्कारयुक्त अभाव सूचित करने वाला शब्द।

पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय—अत्यंत कठोर हृदय। किसी के दुःख या पीड़ा पर न पसीजने वाला दिल या हृदय। *पत्थर का छापा*—१-लीथो-प्रणाली की छपाई। २-पत्थर के छापे द्वारा छापा हुआ लेख। *पत्थर की छाती*—असफलता अथवा कष्ट से विचलित न होने वाला हृदय। बलवान और दृढ़ हृदय। *पत्थर की लकीर*—पक्की, स्थायी और अमिट। सर्वकालिक। *पत्थर के देवता*—कुछ न बोलना या चुपचाप रहना। *पत्थर को जोंक लगाना*—असम्भव बात करना। *पत्थर चाटना*—पत्थर पर घिसकर तेज करना।

पत्थर तले हाथ आना—ऐसे संकट में फंसना जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पड़ता हो। *पत्थर तले हाथ दबना*—भारी संकट में फंस जाना। *पत्थर तले से हाथ निकलना*—संकट या मुसीबत से छूटना। *पत्थर निचोड़ना*—१-किसी से उसके स्वभाव के विरुद्ध कार्य कराना। *पत्थर पसीजना*—अनहोनी बात होना *पत्थर पड़ना*—१-चौपट हो जाना। २-इच्छा पूरी न होना। कुछ न पाना। ३-दुःख पड़ना *पत्थर पड़े*—नष्ट या चौपट हो जाय। ईश्वर का कोप पड़े। *पत्थर पानी*—आंधी पानी का समय। तूफान समय। *पत्थर पर दूब जमना*—अनहोनी बात अथवा असम्भव कार्य होना। *पत्थर पिघलना*—अत्यन्त कठोर चित्त में नरमी, कृपा के मन में दानेच्छा या अत्याचारी के मन में दया होना। *पत्थर मारे भी न मरना*—मरने के कारण या सामान होने पर भी न मरना। बेहयाई से जीना। *पत्थर बरसना*—ओले पड़ना। *पत्थर लुढ़काना*—१-भारी या असंगत शब्द बोलना या लिखना। २-किसी का बुरा चाहना। *पत्थर सा खींच या फेंक मारना*—बहुत कड़ी बात कहना या उत्तर देना। *पत्थर से सिर फोड़ना या मारना*—असम्भव बात के लिये प्रयत्न करना। व्यर्थ सिर खपाना।

पत्थर होना—१-जमकर सख्त हो जाना। २-निर्दय और कठोर दिल होना। ३-न टलना। न हिलना। ४-बहरा बन जाना।

पत्थरकला [संज्ञा पु.] (हिं.) पुराने चाल की बंदूक जिसमें बारूद सुलगाने के लिए चकमक पत्थर लगा रहता था। तोड़ेदार बन्दूक।

पत्थरफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) छरीला। शैलाख्य।

पत्थरचटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की घास। २-पत्थर चाटने वाला एक प्रकार का सांप। ३-एक प्रकार की मछली जो सामुद्रिक चट्टानों से चिपटी रहती है। ४-कंजूस। मक्खीचूस। [वि.] घर की चार दीवारी से न निकलने वाला। कूपमण्डूक।

पत्थरचूर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

पत्थरफोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) हुदहुदपक्षी।

पत्थरफोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) १-पत्थर तोड़ने वाला मजदूर। २-पत्थर का कार्य करने वाला संगतराश।

पत्थरबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जो पत्थर फेंककर किसी को मारता हो। २-वह जो प्रायः पत्थर या ढेला फेंका करे। ३-वह जिसे पत्थर फेंकने का अभ्यास हो। ढेलवाह।

पत्थरबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पत्थर फिंकाई। पत्थर फेंकने की क्रिया।

पत्थल + [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'पत्थर'।

पत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री। वह स्त्री जिसके साथ किसी पुरुष का शास्त्र-रीति से विवाह हुआ हो। जाया। भार्या। दयिता। कलत्र। वधू। सहधर्मिणी। दारा। दार। गृहिणी। पाणिगृहीता। जनि। सहचरी।

पत्नीत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पत्नी का भाव या धर्म।

पत्नीमंत्र, पत्नीमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक मन्त्र।

पत्नीयूप [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में देवपत्नियों के लिए निश्चित स्थान।

पत्नीवत् [वि.] (सं.) पत्नी या स्त्री के समान।

पत्नीव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी विवाहिता स्त्री के अलावा अन्य किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम।

पत्नीशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पत्नी के रहने और गृहस्थी के योग्य कमरा। २-यज्ञशाला

में वह घर जो यजमान-पत्नी के लिए बनाया जाता है। यह घर यज्ञशाला से पश्चिम की ओर होता है।

पत्नीसंयाज, पत्नीसंयाजन [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के पश्चात् होने वाला एक वैदिक कर्म

पत्य [संज्ञा पु.] (सं.) पति होने का भाव।

पत्याना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पतियाना'।

पत्यारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो पतिआरा'।

पत्यारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पंक्ति। कतार।

पत्योरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घी या तेल में तली हुई पत्तों की पकौड़ी।

पत्रंग, पत्रङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पतंग नाम की कड़ी या पेड़। बक्कम।

पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वृक्ष का पत्ता। दल। पर्ण। २-वह लिखा हुआ कागज, विशेषतः वह कागज जिसपर किसी विषय की कोई महत्व की बात लिखी हो। ३-वह कागज अथवा ताम्रपट आदि जिसपर किसी विशेष व्यवहार के प्रमाणस्वरूप कुछ लिखा गया हो। ४-वह लेख जो किसी व्यवहार अथवा घटना के प्रमाण या सनद के लिए लिखा गया हो। कोई पट्टा या दस्तवेज। ५-चिट्ठी। खत ६-समाचारपत्र। अखबार। ७-पुस्तक अथवा लेख का एक पन्ना। सफा। पृष्ठ। ८-धातु की चद्दर। पत्तर। वरक। ९-पक्षी के पंख या पर। पक्ष। १०-तेजपत्ता। ११-चिड़िया। पखेरू। १२-पुष्प की पखुड़ी। १३-सवारी। जैसे—गाड़ी, घोड़ा, ऊँट।

पत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्ता। २-तेजपात। ३-शांतिशाक। ४-पत्तों की लड़ी। पत्रावली। ५-वह पत्र जिसपर स्मृति के लिए अथवा सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो। मेमो। नोट।

पत्रकर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिससे कागज काटे जाते हैं। कटिङ्ग्प्रेस।

पत्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-समाचारपत्र का संपादक। २-वह जो समाचारपत्रों में बराबर लेख आदि लिखकर भेजता हो।

पत्रकारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पत्रकार होने का भाव। २-पत्रकार का काम।

पत्रकाहला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शोर जो पक्षी के परों की फड़फड़ाहट अथवा पत्तों से हो।

पत्रकृच्छ् [संज्ञा पु.] (सं.) एक व्रत जिसमें केवल पत्तों का काढ़ा पीकर रहना पड़ता है।

पत्रगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) तिधारा। थूहर। सेंहुड़। त्रिकंटक।

पत्रघना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पौधा जिसमें सघन पत्ते हों।

पत्रघ्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेंहुड़। थूहर।

पत्रज [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपात।

पत्रजात [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी विषय से सम्बन्ध रखने वाले पत्रों आदि का समूह। पेपर्स। २-इस प्रकार के पत्रों की नत्थी। फाइल।

पत्रतंडुली, पत्रतण्डुली [संज्ञा स्त्री.] यवतिक्ता-लता।

पत्रतरु [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गन्ध खैर।

पत्रतालक [संज्ञा पु.] (सं.) वंशपत्र। हरताल।

पत्रद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

पत्रनाडिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्ते की नस।

पत्रपंजी, पत्रपञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पंजी अथवा बही जिसमें आये हुए पत्रों अथवा उनके उत्तरों का विवरण रहता है। लेटरबुक।

पत्रपरशु [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार या लोहार की छेनी।

पत्रपाल [संज्ञा पु.] (सं.) लंबा छुरा या कटार।

पत्रपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाण का वह भाग जिसमें पर लगे हों। बाण का पिछला भाग। २-कैंची। कतरनी।

पत्रपाश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माथे का आभूषण विशेष।

पत्रपुट [संज्ञा पु.] (सं.) पत्ते का बना हुआ पात्र। दोना।

पत्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल तुलसी। २-सत्कार या पूजा की बहुत साधारण सामग्री। सामान्य या तुच्छ उपहार।

पत्रपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

पत्रपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तुलसी। २-छोटे पत्ते की तुलसी।

पत्र-पेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह पेटी अथवा बक्स जिसमें डाक द्वारा बाहर जाने वाले पत्र छोड़े जाते हैं। किसी की निजी पेटी या बक्स जिसमें लोग उसके नाम के पत्र छोड़ जाते हैं। लेटरबॉक्स।

पत्रबंध, पत्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) फलों और पत्तों की सजावट।

पत्रबाल [संज्ञा पु.] (सं.) नाव की डाँड़।

पत्रभंग, पत्रभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वे चित्र या रेखा जो सौन्दर्यवृद्धि के उद्देश्य से स्त्रियां कसतूरी केसर आदि का लेप अथवा सुनहले, रुपहले पत्तरों (कटोरियों) से भाल, कपोल आदि पर बनती हैं। साटी। २-पत्रभंग बनाने की क्रिया।

पत्रभंगि, पत्रभङ्गि, पत्रभंगी, पत्रभङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पत्रभंग'।

पत्रभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

पत्रमंजरी, पत्रमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का तिलक जो पत्रयुक्त मंजरी के आकार का होता है।

पत्रमाल [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत का पौधा।

पत्रमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्तों की बनी हुई माला।

पत्रयौवन [संज्ञा पु.] (सं.) नया पत्ता पल्लव।

पत्ररंजन, पत्ररञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) में जब ग्रन्थ हाथ से लिखे जाते थे उसके पत्रों को या पृष्ठों को सजाने की सजावट। पन्ने का शृङ्गार।

पत्ररचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्रभंग।

पत्ररथ [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

पत्ररथेंद्र, पत्ररथेन्द्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गरुड़।

पत्ररथेंद्रकेतु, पत्ररथेन्द्रकेतु [संज्ञा विष्णु।

पत्ररेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पत्र

पत्रलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह प्रायः पत्ता ही पत्ता हो। २-पत्रभंग।

पत्रलवण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार जो एरंड, मोरवा, अडूसा, तथा चीते के हरे पत्तों से निकाला यह नमक वातरोगों के लिए लाभदायक है।

पत्रलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्रभंग।

पत्रवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्रभंग।

पत्रवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पान। ३-पलाशीलता। पर्णलता।

पत्रवाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। वह बाण जो परों से सम्पन्न हो।

पत्रवारक [संज्ञा पु.] (सं.) धातु, आदि का वह छोटा टुकड़ा जो को उड़ने से बचाने के लिए या लिए उनके ऊपर भार के रूप में है। पेपरवेट।

पत्रवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। चिड़िया बाण। ३-वह जिसका काम पत्र के यहां पहुँचाना होता है। का वह कर्मचारी जिसका काम के पत्र पहुँचाना होता है। डाकिया।

पत्र-वाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्र ले २-डाकिया-हरकारा।

पत्रवाहपंजी, पत्रवाह-पञ्जी [संज्ञा स्त्री.] वह पंजी अथवा बही जिस पर भेजे जाने वाले पत्र चढ़ाये जाते हैं पर पत्र पाने वाले के हस्ताक्षर होते पियनबुक।

पत्रविशेषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिलक। भंग। साटी।

पत्रविष [संज्ञा पु.] (सं.) पत्रों से विष।

पत्रवृश्चिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार जो छोटा-सा होता है और जिसके से बड़ी जलन होती है। पनबिछिया।

पत्रवेष्ट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार

भूषण। कर्णफूल नामक कान में पहनने का गहना। २-तरकी। ताटंक।

त्र-व्यवहार [संज्ञा पु.](सं.) १-वह व्यवहार या संबंध जिसमें किसीको पत्र लिखे जाते हैं तथा उनके उत्तर आते हैं। पत्राचार। खतकिताबत चिट्ठी-पत्री। २-इस प्रकार भेजे हुए और आये हुए उनके उत्तर।

त्रशबर [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल की एक अनार्य जाति।

त्रशाक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पौधा जिसके पत्तों का शाक बनाकर खाया जाता है।

त्रशिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्ते की नस।

त्रशृंगी, पत्रशृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी नामकी लता।

त्रश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूसाकानी। २-पत्तों की पंक्ति। पत्रावली।

त्रश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पत्ता। बिल्वपत्र।

त्रसूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंटक। काँटा।

त्रहिम [संज्ञा पु.] (हिं.) हेमन्तऋतु।

त्रांग, पत्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल चन्दन २-पतंग। बक्कम। ३-भोजपत्र। ४-कमलगट्टा

त्रांगुलि, पत्राङ्गुलि [संज्ञा पु.] (सं.) माथे पर त्रिपुंड लगाना।

त्रांजन, पत्राञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्याही। २-कालिख पोतना।

त्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तिथिपत्र। पंचांग। जंत्री २-पन्ना। पृष्ठ। सफहा। वर्क।

त्राख्य [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपात। २-तालीशपत्र

त्राचार [संज्ञा पु.] (सं.) दो व्यक्तियों या पत्तों में चिट्ठियों का आना जाना। पत्र-व्यवहार।

त्राढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपलामूल। २-पर्वत तृण। ३-तेजपात। ४-पतंग। बक्कम। ५-नरसल। ६-तालीसपत्र।

त्रान्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पतंग। २-लालचन्दन

त्राली [संज्ञा स्त्री] (सं.) चिट्ठी लिखने के सादा कागजों का समूह जो एक गड्डी के रूप में होते हैं। पैड।

त्रालु [संज्ञा पु.] (सं.) कासालु। २-इक्षुदर्भ।

त्रावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिंदूर। २-पत्र रचना। ३-शरीर पर चन्दन आदि से विशेष रूप से लकीरें खींचकर शरीर का शृंगार करना। ४-गेरू। ५-पत्रों की पंक्ति या श्रेणी

त्रावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पत्रों की पंक्ति या श्रेणी। २-पीपल के कोमल पत्तों का जव और शहद के साथ सम्मिश्रण।

त्राहार [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तों को खाकर निर्वाह करना।

पत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिट्ठी। खत। २-कोई छोटा लेख या लिपि। ३-नियत समय पर प्रकाशित होने वाला कोई-सामयिक पत्र या पुस्तक।

पत्रिकाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कपूर। पर्णकर्पूर।

पत्रिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोंपल। अँखुआ। अंकुर।

पत्रिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) हरकारा। चिट्ठीरसा।

पत्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-चिट्ठी। खत। २-कोई छोटा लेख या लिपिपत्रिका। ३-दोना। ४-जवासा। धमासा। ५-खैर का पेड़। ६-ताड़ ७-महातेजपत्र। [वि.] (सं.) जिसमें पत्ते हों। पत्रयुक्त। [संज्ञा पु.](सं.) १-तीर। बाण। २-पक्षी। ३-बाजपक्षी। श्येन। ४-वृक्ष। पेड़ ५-पर्वत। पहाड़। ६-रथ। ७-ताड़। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जहाँगीरी नामक गहना जिसे हाथ से पहना जाता है।

पत्रोपस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) कसौंदी।

पत्रोर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सोनापाठा।

पत्सल [संज्ञा पु.] (सं.) मार्ग। रास्ता।

पथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्ग। रास्ता। राह। २-आचरण, व्यवहार आदि की रीति या ढंग। [संज्ञा पु.] (हिं.) रोग के लिए उपयुक्त हलका आहार। पथ्य।

पथक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पथ जानने या बताने वाला। २-प्रांत।

पथ-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो किसी विशेष सुभीते के लिए अथवा यात्रियों आदि पर लगता है। टोल।

पथकल्पना [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजाल। जादू का खेल।

पथगामी [संज्ञा पु.] (सं.) रास्ता चलने वाला। पथिक।

पथचारी [संज्ञा पु.] (सं.) रास्ता चलने वाला। पथिक।

पथदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) रास्ता दिखाने वाला। मार्गदर्शक।

पथनार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोबर के उपले बनाना या थापना। २-पीटने या मारने की क्रिया।

पथनियम [संज्ञा पु.] (सं.) सड़क-संबंधी नियम। रूल-आफ-दी-रोड।

पथप्रदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) मार्गदर्शक। रास्ता दिखाने वाला।

पथप्रदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) कोई काम करने का रास्ता या ढंग बतलाना। *गाइडेन्स*।

पथरकला [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरानी चाल की वह बन्दूक जो चकमक पत्थर की रगड़ से आग उत्पन्न करके चलाई जाती है। कड़बीन।

पथरचटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पाखान या पाषाण भेद नामक औषध। २-एक प्रकार की मछली जो लंका और भारत की नदियों में पाई जाती है।

पथरना+ [क्रि. स.] (हिं.) औजारों को पत्थर पर रगड़कर तेज करना।

पथराना [क्रि. अ.](हिं.) १-पत्थर के समान कड़ा हो जाना। २-नीरस और कठोर होना। स्तब्ध हो जाना। जड़ हो जाना।

पथरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कटोरी या कटोरे के आकार का पत्थर का बना पात्र। २-एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। यह टुकड़े मूत्रोत्सर्ग में बाधक होते हैं। और इस कारण बड़ी पीड़ा होती है। ३-चकमक पत्थर जिस पर रगड़ लगने से तुरन्त आग निकल आती है। ४-उस्तरे की धार तेज करने का पत्थर का टुकड़ा। सिल्ली। ५-कुरंड पत्थर। जिसके चूर्ण को लाख में मिलाकर औजार या हथियार तेज करने की शान बनाते हैं। ६-पक्षियों के पट का वह भाग जहां अनार आदि के बहुत कड़े दाने जाकर पचते हैं। ७-एक प्रकार की मछली। ८-जायफल की जाति का एक वृक्ष। इसमें जायफल के से फल लगते हैं जिन्हें उबालने अथवा पेरने से पीले रंग का तेल निकलता है जो औषध और जलाने के काम में आता है।

पथरीला [वि.] (हिं.) [स्त्री पथरीली] पत्थर से युक्त। जिसमें पत्थर हों।

पथरीली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] पत्थरों वाली। जिसमें पत्थर हों।

पथरौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्थर की कटोरी। कूंडी। पथरी।

पथरौड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पथौरा'।

पथ-शुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर या महसूल जो किसी विशेष सुभीते के लिये या यात्रियों आदि पर लगता है। सड़क का महसूल। पथ-कर। टोल।

पथ-शुल्क-गृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह चुङ्गीघर जहां पर पथ-शुल्क या पथ-कर लिया जाता है। टोल-हाउस।

पथ-शुल्कद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) वह द्वार जहां से पथ-शुल्क या पथ-कर लगना मान्य होता है। टोल-गेट।

पथ-शुल्कप्राप्य [संज्ञा पु.](सं.) दातव्य पथ-कर। सड़क का उचित महसूल।

पथिक [संज्ञा पु.] (सं.) राह चलने वाला। यात्री। मुसाफिर। राहगीर।

पथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुनक्का।

पथिकार [वि.] (सं.) रास्ता बनाने वाला।

पथिकाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.)-पथिकों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला।

पथिचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में एक चक्र जिससे यात्रा का शुभ तथा अशुभ फल जाना जाता है।

पथिदेय [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो किसी विशिष्ट पथ पर चलने वालों से लिया जाता है।

पथिद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) खैर का पेड़।

पथिल [संज्ञा पु.] (सं.) यात्री । पथिक। राहगीर।

पथी [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक । यात्री । मुसाफिर। राहगीर।

पथीय [वि.] (सं.) १-पथ सम्बन्धी । २-संप्रदाय सम्बन्धी।

पथु*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पथ । मार्ग । रास्ता। राह।

पथेरा [संज्ञा पु.] (हिं) ईंटें पाथने वाला कुम्हार

पथौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां उपले पाथे जाते हों। गोबर पाथने का स्थान।

पथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जल्दी पचने वाला भोजन दो रोगी को उपवास की समाप्ति पर दिया जाता है। २-उपयुक्त अहार । ३-सेंधा नमक। ४-हितमंगल। कल्याण।

पथ्य से रहना-संयम से रहना।

पथ्यकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का लाल धान।

पथ्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

पथ्यभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) रोगी के लिए हितकर भोजन या आहार।

पथ्यशाक [संज्ञा पु.] (सं.) चौई का साग।

पथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरीतकी। हड़। २-बनककोड़ा। ३-आर्याछंद का एक भेद। ४-सैंधनी। ५-चिर्भिटा। ६-गङ्गा। ७-मार्ग। रास्ता।

पथ्यादिक्वाथ [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक काढ़ा जो पाचक होता है। यह त्रिफला, गुड़च, हलदी, चिरायते और नीम के पत्तों को उबाल कर तैयार किया जाता है।

पथ्यापंक्ति, पथ्यापङ्क्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छंद का नाम। जिसमें पाँच पद होते हैं और प्रत्येक पद में आठ, आठ वर्ण होते हैं।

पथ्यापथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) रोगी के लिए हितकारी और अहितकारी द्रव्य।

पथ्यावक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) मायावृत्त का एक भेद।

पद [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम। व्यवसाय। २-त्राण। रक्षा। ३-योग्यता के अनुसार किसी कर्मचारी या कार्यकर्ता का नियत स्थान। पोस्ट। ४-पैर। पाँव। ५-चिह्न। निशान। ६-वस्तु। चीज। ७-शब्द। ८-प्रदेश। ९-पैर के निशान। १०-श्लोकं या किसी छंद का चतुर्थांश। श्लोकपाद। ११-उपाधि। १२-मोक्ष। निर्वाण। १३-ईश्वरभक्ति-सम्बन्धी गीत। भजन। १४-पुराणानुसार जूते, छाता, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह जिनका एक साथ दान करना लिखा है। १५-कोई विशेष अर्थ रखने वाला शब्द या शब्दसमूह।

पदक [संज्ञा पु.] (सं) १-एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम। २-एक प्रकार का गहना जिसमें किसी देवता के पैरों के चिह्न अंकित होते हैं, तथा जो प्रायः बालकों को रक्षार्थ पहनाया जाता है। ३-पूजन आदि के निमित्त किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। ४-वह जो वेदों का पाठ करने में प्रवीण हो। ५-धातु का कुछ विशिष्ट आकार का बनाया हुआ वह छोटा टुकड़ा जो किसी को कोई विशेष अच्छा या अद्भुत कार्य करने पर प्रमाण और पुरस्कार रूप में या सम्मानित करने के लिए प्रदान किया जाता है। यह प्रशंसासूचक तथा योग्यता का परिचायक होता है। तमगा। मैडिल।

पदकमल [संज्ञा पु.] (सं.) चरणकमल। पद्मरूपी पैर।

पदकार, पदकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पद पाठ का रचयिता।

पदकाषिन् [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल चलने वाला। राहगीर। [वि.] (सं.) १-पैर मलने या खरोचने वाला। पैदल जाने वाला।

पदक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) चलना। गमन।

पदग [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल सिपाही। प्यादा।

पदगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाल।

पदगोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) भारद्वाज आदि चार ऋषियों का गोत्र।

पदचतुरर्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) विषम वृतों का एक भेद जिसके प्रथम चरण में आठ, दूसरे में बारह, तीसरे में सोलह तथा चौथे में बीस वर्ण होते हैं।

पदचर [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल प्यादा।

पदचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैदल चलना। २-घूमना। फिरना। टहलना।

पदचारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैदल चलना। २-घमना-फिरना। टहलना।

पदचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पदचारिणी] पैदल चलाने वाला।

पदचिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह चिह्न जो चलते समय पैरों से जमीन पर बनता है। पैर का निशान।

पदच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) संधि और समासयुक्त किसी वाक्य प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

पदच्युत [वि.] (सं.) जो अपने पद या स्थान से हटा दिया गया हो। पद से यटाया या अलग किया हुआ।

पदच्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पद या स्थान से हटाने का काम, भाव या अवस्था।

पदज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर की उंगलियां। २-शूद्र [वि.] (सं.) जो पैर से उत्पन्न हो।

पदज्ञ [वि.] (सं.) राह जाने वाला।

पदतल [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का तलवा।

पदत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) अपना पद अथवा अधिकार छोड़ना। एब्डिकेशन।

पदत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) (पैरों की रक्षा करने वाला) जूता।

पदत्रान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पदत्राण'।

पदत्री [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

पददलित [वि.] (सं.) १-पैरों से रौंदा हुआ। २-जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पददारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर की बिवाई जिसमें पैर फट जाते हैं और पीड़ा होती है।

पदधारी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राजकीय कार्यालय पर निर्भर।

पदनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह नाम जो किसी अधिकारी के के पद आदि का होता है। २-किसी कार्य संस्था अथवा व्यवहार का वह मुख्य नाम जिससे वह प्रसिद्ध हो।

पदन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर रखना। चलना गमन। २-पैर रखने की एक मुद्रा। ३-चलन ढंग। ४-पद रखने का कार्य। ५-गोखरू।

पदपंकज, पदपङ्कज [संज्ञा पु.] (सं) पदकमल। चरणकमल।

पदपंक्ति, पदपङ्क्ति [संज्ञा पु.] (सं.) पांच पाद वाला एक वैदिक छन्द। इसके प्रत्येक पाद में पांच वर्ण होते हैं।

पदपद्धति [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का चिह्न।

पदपलटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का नाच।

पदबंध, पदबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पद-चिह्न। पैर का निशान।

पदस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पद्म'। २-बादाम जाति का जंगली वृक्ष जो सिंधु से आसाम तक २५००० से ७००० फुट की ऊंचाई पर पाया जाता है इसके फल की गिरी का कड़ुए बादाम की गिरी की तरह तेल निकलता है। कहते हैं कि गर्भ न रहता हो तो इसकी लकड़ी घिसकर पीने से गर्भ रह जाता है और यदि गर्भ गिरने को हो तो स्थिर हो जाता है वैद्यक के अनुसार इसकी लकड़ी ठण्डी. कड़ुवी, कसैली, हलकी, वादी, रक्तपित्त नाशक, दाह, ज्वर, कोढ़ तथा विस्फोटक आदि को दूर करने वाली होती है। पद्माख

पदकाठ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पदम'।

पद-पद्म [संज्ञा पु] (सं.) चरण-कमल। कमलरूपी पैर।

पदमचल [संज्ञा पु.] (देश) रेवन्द चीनी।

पदमेणी ;

पदमण [संज्ञा स्त्री.] (डि.) स्त्री।

पदमना [संज्ञा पु] (हिं.) १-विष्णु। २-सूर्य।

पदमाकर [संज्ञा पु.] (डि.) ज़लाशय। तालाब।

पदमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं) पैरों के चिह्न दूर दूर तक पंक्ति रूप में चले गये हों।

पदमिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पद्मिनी'।

पदमूल [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का तलवा।

पदमैत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी कविता में एक ही शब्द अथवा अक्षर चमत्कार लाने के लिए बार-बार आना। अनुप्रास। वर्णसाम्य। वर्ण मैत्री।

पदमी [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

पदयोजना [संज्ञा स्त्री] (सं.) कविता के लिये पदों का जोड़ना। पद बनाने के लिये शब्दों को मिलाना।

पदर [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का पेड़। २-ड्योढ़ीदारों के बैठने का स्थान।

पदरथी [संज्ञा पु.] (सं.) जूता। खड़ाऊ।

पदरिपु [संज्ञा पु.] (हिं.) कंटक। कांटा।

पदवाद्य [संज्ञा पुं.] (सं.) प्राचीनकाल का एक प्रकार का ढोल।

पदवाना [क्रि. स.] (हिं.) पदाने काम दूसरे से कराना।

पदवाय [वि.] (स.) मार्ग दिखलाने वाला।

पदवि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पथ। रास्ता। २-पद्धति। परिपाटी। ३-उपाधि। खिताब।

पदविग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) संधि तथा समासयुक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को व्यकरण के नियमों के अनुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

पदविच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पदविग्रह'।

पदवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रास्ता। मार्ग। २-पद्धति। परिपाटी। तरीका। ३-वह प्रतिष्ठा-सूचक पद (शब्द समूह) जो राज्य अथवा किसी मान्य संस्था की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है। उपाधि। खिताब। ४-आदेश।

पदवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो शब्दों की संधि।

पदव्याख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्दों की व्याख्या या टीका।

पदसंघात, पदसङ्घात [संज्ञा पु.] (सं.) १-संहिता के उन शब्दों का मिलान जो पृथक हैं। २-टीकाकार। व्याख्या करने वाला।

पदसंघाट, पदसङ्घाट [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पदसंघात'।

पदसमूह [संज्ञा पु.](सं.) कविता का चरण। पद-पाठ।

पदस्थ [वि.](सं.) १-जो अपने पैरों के बल खड़ा हो। २-जो पैरों के बल चल रहा हो। ३-जो किसी पद पर नियुक्त हो।

पदस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) पदचिह्न।

पदांक, पदाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) पैरों का निशान। पैरों का चिह्न।

पदांगी पदाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल रंग का। लजालू।

पदात*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पदाति'।

पदाक्रांत, पदाक्रान्त [वि.] (सं.) पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।

पदांत, पदान्त [संज्ञा पु.] (सं.) पद का शेष। पद का अन्त।

पदांतर, पदान्तर [संज्ञा पु.](सं.) १-स्थानान्तर। २-दूसरा पद। और एक पग। एक पग का अन्तर।

पदाघात [संज्ञा पु.] (सं.) लात।

पदाति [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। पैदल सिपाही। ३-नौकर। सेवक ४-जनमेजय के पुत्र का नाम।

पदातिक [संज्ञा पु.](सं.) १-पैदल चलने वाला। २-पैदल सिपाही।

पदादिका [संज्ञा पु] (हिं.) पदैल। सैना।

पदाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पद या ओहदे पर प्राप्त होने वाला अधिकार।

पदाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी पद पर नियुक्त हो और जिसे उस पद के सब अधिकार प्राप्त हों। ओहदेदार अधिकारी।

पदाध्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) पद-पाठ के अनुसार वेद का पठन।

पदाना [क्रि. स.] (सं.) १-पदाने का काम दूसरे से कराना। २-बहुत अधिक दिक करना। तंग करना।

पदानुग [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी का अनुगमन करता हो। अनुयायी।

पदानुराग [संज्ञा पु.] (सं.) देवचरण में भक्ति।

पदानुषंग, पदानुषङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कोई वस्तु जो पद में जोड़ दी जाय।

पदार [संज्ञा पु.] (सं.) पैरों की धूल।

पदारविंद, पदारविन्द [संज्ञा पु](सं.) पद-कमल। कमल जैसे पैर।

पदार्घ्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जल जो किसी अतिथि या पूज्य व्यक्ति को पैर धोने के लिए दिया जाय।

पदार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पद का अर्थ। पद का विषय। २-वह जिसका कुछ नाम हो तथा जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। ३-किसी दर्शन में प्रतिपादित वह विषय जिसके संबंध में यह माना जाता है कि उसका ज्ञान मुक्ति-दायक होता है, ४-पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ५-वैद्यक के अनुसार रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति। ६-वस्तु। चीज़।

पदार्थवाद [संज्ञा पु] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें विशेषत: भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता है तथा जिसमें आत्मा अथवा परमात्मा का अस्तित्व नहीं माना जाता।

पदार्थवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो आत्मा अथवा परमात्मा का अस्तित्व न मानकर केवल भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ मानता हो।

पदार्थ-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें भौतिक पदार्थों और व्यापारों का विवेचन होता है।

पदार्थ-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के गुण-गुण का विचार करते हुए उनके कार्य आदि का वर्ण होता है।

पदार्पण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया। (बड़ों के लिए आदरसूचक)।

पदावनत [वि.] (सं.) १-जो पैरों पर झुका हो। २-जो प्रणाम कर रहा हो। ३-नम्र। विनीत।

पदावली [संज्ञा स्त्री.] १-वाक्यों की श्रेणी। २-भजनों का संग्रह।

पदावास [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य की ओर से मिला हुआ निवास स्थान।

पदाश्रित [वि.] (सं.) १-जिसने पैरों में आश्रय लिया हो। शरण में आया हुआ। शरणागत २-जो आश्रय में रहता हो।

पदास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पदाने का भाव। २-पदाने की प्रवृत्ति।

पदासन [संज्ञा पु.] (सं.) पैर रखने की काठ की चौकी विशेष।

पदासा [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसको पादने की इच्छा या प्रवृत्ति हो।

पदाहत [वि.] (सं.) लतियाया हुआ।

पदिक [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल सेना।

* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गले में पहनने का वह गहना जिस पर किसी. देवता के चरण अंकित हो। २-गले में पहनने का जुगनू नामक गहना। ३-हीरा। ४-रत्न। ५-देखो 'पदक'।

पदिकहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) रत्नों का बनाया जड़ा हुआ आहार। मणिमाला।

पदी* [संज्ञा पु.] (हिं.) पैदल। प्यादा। पदाति।

पदु* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पद'।

पदुम* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोड़े का एक चिह्न या लक्षण। २-देखो 'पद्म'।

पदुमिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पद्मिनी'।

पदेक [संज्ञा पु.] (सं.) बाजपक्षी। श्येन।

पदेन [क्रि. वि.] (सं.) किसी पद के या किसी पद पर आरूढ़ होने के अधिकार से। एक्स-ऑफ़ीशियो'

पदोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत पादने वाला। जो अधिक पादता हो। २-कायर।

पदोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जल जिससे पैर धोया गया हो। २-चरणामृत।

पदोन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी अधिकारी अथवा कर्मचारी के पद में होने वाली उन्नति। वर्तमान पद से ऊँचे पद पर भेजा जाना या पहुँचना। प्रोमोशन।

पदौक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिस की लकड़ी मजबूत तथा सफेद रंग की होती है। यह बरमा में अधिक होता है।

पद्दू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पदोड़ा'।

पद्धटिका [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं तथा अंत में जगण होता है।

पद्धड़ी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पद्धटिका'।

पद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राह। पथ। मार्ग। २-रीति। रसम।

पद्धरि, पद्धरी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पद्धटिका'

पंद्दी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-किसी को पीठ पर चढ़ाकर चलाना। २-लड़कों का एक खेल जिसमें जीतने वाला हारने वाली की पीठ पर चढ़कर चलता है।

पद्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल का फूल या पौधा। २-एक भाग्यसूचक चिह्न जो पैर में एक विशेष आकार का होता है (सामुद्रिक)। ३-किसी स्तम्भ के सातवें भाग का नाम। (वस्तु विद्या)। ४-विष्णु के एक आयुध का नाम। ५-कुबेर की नौ निधियों में से एक निधि। ६-गले में पहनने का एक प्रकार का गहना। ७-शरीर पर का सफेद दाग। ८-हाथी के चेहरे और सूंड पर की रंगामेजी या चित्रकारी जो उसे सजाने को प्रायः लोग किया करते हैं। ९-पदम या पदमाख वृक्ष। १०-सांप के फण पर बने हुए चित्र-विचित्र चिह्न ११-एक ही कुरसी या नींव पर बना हुआ एक ही शिखर का आठ हाथ चौड़ा घर। (वास्तु विद्या) १२-एक नाग का नाम। १३-सीसा। १४-पुरष्कार। मूल। गणित में सोलहवे स्थान की संख्या (१०० नील) जो इस प्रकार लिखी जाती है १००००००००००००००० १६-बौद्धमतानुसार एक नक्षत्र का नाम पुराणानुसार एक कल्प का नाम। १८-कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। १९-जैन मतानुसार भारत के नवें चक्रवर्ती का नाम। २०-एक पुराण का नाम। २१-तंत्रमतानुसार शरीरस्थ भाग का एक कल्पित कमल जो सोने के रंग का और बहुत ही प्रकाशमान समझा जाता है। २७-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, एक सगण तथा अन्त में लघु गुरु होते हैं। २८-देखो 'पद्मव्यूह'। २९-देखो 'पद्मासन'। ३०-देखो 'पद्मा' (नदी)

पद्मकंद, पद्मकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़। भिस्सा। भसीड़।

पद्मक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पद्म या पद्मकाठ का पेड़। २-सेना का पद्मव्यूह। कमलव्यूह। ३-हाथी के चेहरे और सूंड पर के रंगीन चिह्न। ४-सफेद कोढ़। ५-कुट नामक औषधि।

पद्मकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमल का बीज कोष। २-कमलव्यूह बनाकर खड़ीहुई सेनाका मध्यवर्ती भाग।

पद्मकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पद्ममणि। २-विष्णु

पद्मकलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमल की कली। अनखिला कमलका फूल।

पद्मकाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) पद्माख या पद्म नामक वृक्ष।

पद्मकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) पदमवृक्ष। पदमाख।

पद्मकिंजल्क, पद्मकिञ्जल्क [संज्ञा पु.] (सं.) कमलकेसर।

पद्मकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजपत्र का पेड़।

पद्मकीट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

पद्मकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पद्मकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) मृणाल के आकार का एक तारा। यह केतु पश्चिम की ओर ही रात भर दिखाई पड़ता है।

पद्मकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) कमल का केशर।

पद्मकोश, पद्मकोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल का संपुट। २-एक प्रकार की कर मुद्रा।

पद्मक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) उड़ीसा राज्यान्तर्गत एक तीर्थ का नाम।

पद्मखंड, पद्मखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) कमल-समूह

पद्मगंधि, पद्मगन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) पद्माख का पद्म नामक वृक्ष। [वि.] (सं.) कमल के समान गंध या खुशबू वाला।

पद्मगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल का भीतरी भाग २-ब्रह्मा का नामान्तर। ४-सूर्य। ५-बुद्ध। ६-एक बोधिसत्व।

पद्मगुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का नाम। २-लवंग। लौंग।

पद्मगूहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पद्मगुणा'।

पद्मगृहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी का एक नाम।

पद्मचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गेंदा। २-शमीवृक्ष। ३-हल्दी। ४-लाख।

पद्मज, पद्मजात [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

पद्मतंतु, पद्मतन्तु [संज्ञा पु.] कमल की नाल।

पद्मदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) लोहबान।

पद्मनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु को फेंके हुए अस्त्र को निष्फल करने का एक मन्त्र या युक्ति। २-विष्णु का एक नाम। ३-धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम। ४-जैनमतानुसार भावी उत्सर्पिणी के पहले अर्हत का नाम।

पद्मनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

पद्मनाल [संज्ञा पु.] (सं.) मृणाल।

पद्मनिधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुबेर की नौ निधियों में से एक का नाम।

पद्मनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का पक्षी। २-बौद्धों के अनुसार एक बुद्ध का नाम जिन का अवतार अभी होने को है।

पद्मपत्र, पद्मपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्करमूल। पुष्करमूल।

पद्मपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-बुद्ध की एक विशेष मूर्त्ति। ३-सूर्य का नामांतर। ४-विष्णु का नामांतर। ५-एक बोधिसत्व जो अमिताभ बुद्ध के देवपुत्र कहे गये हैं।

पद्मपुष्प [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कनेर का पेड़। २-एक प्रकार का पक्षी।

पद्मप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) भविष्य मे अवतार लेने वाले एक बुद्ध का नाम।

पद्मप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जगत्कारुमुनि की पत्नी। २-गायत्रीरूप महादेवी।

पद्मबंध, पद्मबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं, जिससे कमल का आकार बन जाता है।

पद्मबंधु, पद्मबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-भौंरा। भ्रमर।

पद्मबीज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के बीज।

पद्मभव [संज्ञा पु.] (सं.) कमल से उत्पन्न ब्रह्मा का नाम।

पद्मभास [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

पद्मभू [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

पद्ममय [वि.] (सं.) पद्म या कमल निर्मित। पद्म युक्त।

पद्ममालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन की अधिष्ठात्री देवी, लक्ष्मी।

पद्ममाली [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

पद्ममुख [वि.] (सं.) पद्म या कमल के समान मुख वाला।

पद्ममुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुरालाभ या धमासा नामक कटील पौधा।

पद्ममुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की पूजा में एक मुद्रा विशेष जिसमें दोनों हथेलियों को सामने करके उङ्गलियाँ नीचे रखते हैं तथा अँगूठे मिला देते हैं।

पद्मयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल से उत्पन्न ब्रह्मा का एक नाम। २-बुद्ध का एक नाम।

पद्मरज [संज्ञा पु.] (सं.) कमलकेशर।

राग [संज्ञा पु.] (सं.) मानिक या लाल नामक रत्न।

हस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का एक नाम।

रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सामुद्रिक शास्त्रानुसार हथेली की कमलाकार रेखा। (जो भाग्यवान-मनुष्य होती है)।

रेणु [संज्ञा पु.] (सं.) कमलकेशर।

लांछन, पद्मलाञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्मा। २–कुबेर। ३–सूर्य।

लांछना, पद्मलाञ्छना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लक्ष्मी का नाम। २–सरस्वतीदेवी का एक नाम।

वर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार यदु के एक पुत्र का नाम।

वर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करमूल।

वासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

बीज [संज्ञा पु.] (सं.) कमलगट्टा।

बीजाभ [संज्ञा पु.] (सं.) मखाना।

वृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पदम (वृक्ष)'।

व्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार की समाधि २–प्राचीनकाल में युद्ध के समय किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की रक्षा के लिये सेना स्थापित करने की एक विधि इसमें सम्पूर्ण सेना कमल के आकार की हो जाती थी।

शायिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक जलचर पक्षी

श्री [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

संभव, पद्मसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

समासन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

सूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के फूलों का गूंथा हुआ हार।

सुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गंगा का एक नाम २–लक्ष्मीदेवी का एक नाम। दुर्गा का एक नाम।

स्वस्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्वस्तिक चिह्न जिसमें कमल भी बना हो।

हस्त [संज्ञा पु.] (सं.) लम्बाई नापने की एक प्राचीन नाप।

हास [संज्ञा प.] (सं.) विष्णु।

ांतर, पद्मान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) कमल के पत्ते।

ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–श्री विष्णु की पत्नी लक्ष्मी का एक नाम। २–लवंग। लौंग। ३–बंगाल में बहने वाली गंगा की पूर्वी शाखा का नाम। ४–भादों सुदी एकादशी तिथि। ५–गेंदे का वृक्ष। कुसुम का फूल। ७–मनसा-देवी का एक नाम। ८–बृहद्रथ की कन्या का नाम। जो कल्किदेव के साथ ब्याही हुई थी। प्रसारिणी-लता।

पद्माकर [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़ा तालाब जिसमें कमलों की बहुतायत हो। २–जलपूर्ण सरोवर या तालाब। ३–सरोवर या तालाब। ४–कमल-समूह। ५–हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि का नाम।

पद्माक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु का नाम। २–कमलगट्टा। [वि.] (सं.) कमल के समान नेत्र वाला।

पद्माख [संज्ञा पु.] (हिं) पदम नामक वृक्ष। देखो 'पदम'।

पद्माचल [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

पद्माट [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड़।

पद्माधीश [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

पद्मालय [संज्ञा पु.] (सं.) सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का नाम।

पद्मालया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लक्ष्मी। लौंग। लवंग।

पद्मावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पटनानगर का प्राचीन नाम। २–पन्नानगर का प्राचीन नाम ३–उज्जयिनीनगरी का पुराना नाम। ४–एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दस, आठ और चौदह के विराम से ३२ मात्राएं होती हैं तथा अन्त में दो गुरु होते हैं। ५–गेंदे का वृक्ष। ६–जरतकारु ऋषि की पत्नी का नाम, लक्ष्मी। ७–मनदेवी का नाम। स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में है। ९–राजा शृगाल की पत्नी का नाम। १०–युधिष्ठिर की एक रानी का नाम।

पद्मासन [संज्ञा पु.] १–योगसाधन का एक आसन जिसमें बायीं जाँघ पर दाहिनी जाँघ रखी जाती है, तथा छाती पर अंगूठा रखकर नासिका का अग्रभाग देखा जाता है। २–पद्म के आकार का धातुनिर्मित आसन। ३–मैथुन करने का एक आसन। ४–ब्रह्मा। ५–शिव। सूर्य।

पद्मासनडंड, पद्मासनडण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) कसरत में एक प्रकार का डंडा।

पद्माह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गेंदा।

पद्मिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कमल का छोटा पौधा। कमलिनी। २–कमल-समुदाय। वह सरोवर या ताल जिसमें कमलों की बहुतायत हो। ४–कमलनाल। ५–हथिनी। ६–कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों से सर्वोत्तम जाति। इस जाति की स्त्री अत्यन्त कोमलांगी, सुशीला, रूपवती और पतिव्रता होती है।

पद्मिनीकंटक, पद्मिनीकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें दाने दार चकते पड़ जाते हैं, यह कुष्ट के अन्तर्गत मांना जाता है।

पद्मिनीकांत, पद्मिनीकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

पद्मिनीखंड, पद्मिनीखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां कमलों की बहुतायत हो।

पद्मिनीवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

पद्मिनीश [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

पद्मी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पद्मयुक्त देश। वह प्रदेश जहाँ कमल हों। २–पद्मधारी, विष्णु। ३–पद्मसमूह। ४–बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम। ५–उक्त लोक में भविष्य में अवतार लेने का एक बुद्ध का नाम।

पद्मेशय [संज्ञा पु.] (सं.) पद्मों पर सोने वाले, विष्णु।

पद्मोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुसुम। २–एक बुद्ध का नाम।

पद्मोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) जिसका उद्भव पद्म से हुआ हो, ब्रह्मा।

पद्मोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं) मनसादेवी का एक नाम।

पद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–पिंगल के नियमानुसार नियमित मात्रा अथवा वर्ण वाला छंद जिसमें चार चरण होते हैं। कविता। गद्य का उलटा। २–शूद्र (जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के चरणों से मानी जाती हैं)। ३–शठता। [वि.] (सं.) १–पद या पैर-संबन्धी। जिसका सम्बन्ध पैरों से हो। २–जिसमें कविता के पद या चरण हों। ३–पदचिह्न से चिह्नित। ४–शब्द-सम्बन्धी। ५–अंतिम।

पद्यात्मक [वि.] (सं.) पद्य के रूप में बना हुआ। छंदोबद्ध।

पद्र [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राम। गाँव।

पद्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल चलने वाला।

पद्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–भूलोक मृत्युलोक। २–गाड़ी। ३–मार्ग।

पधरना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन। आना।

पधराना [क्रि. स.] (हिं.) १–सादर बैठाना। २–प्रतिष्ठित या स्थापित करना।

पधरावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी देवता की स्थापना। २–किसी को आदरसहित लाकर अपने यहा बैठाना।

पधारना [क्रि. अ.] (हिं.) १–जाना। चला जाना। गमन करना। २–आपहुँचना। आना। ३–गमन करना। चलना। [क्रि. स.] (हिं.) सादर बैठाना। प्रतिष्ठित करना।

पनंग [संज्ञा पु.] (हिं.) सर्प। साँप।

पन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–प्रतिज्ञा। संकल्प। अहद। २–आयु के चार भागों में से एक। अवस्था। प्रत्य. (हिं.) भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए नामवाचक अथवा गुणवाचक संज्ञाओं में लगने वाला एक प्रत्यय। जैसे–लड़कपन।

पनकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मनुष्य जो खेतों में इधर-उधर सिंचाई के लिए पानी ले जाता है।

पनकपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी में भिगोया हुआ लत्ता या कपड़ा जो शरीर में कहीं कट जाने पर बाँधा जाता है।

पनकाल [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक वर्षा होने के कारण पड़ने वाला अकाल। पनियाकाल।

पनकुकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनकौवा'।

पनकुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह छोटा खरल जिसमें बिना दाँत वाले (वृद्धजन) खाने के लिए पान कूटते हैं।

पनकौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जल पक्षी जिसे जलकौवा भी कहते हैं।

पनखट [संज्ञा पु] (हिं.) जुलाहों की वह लचीली धुनकी जिस पर उनके सम्मुख बुना हुआ कपड़ा फैला रहता है।

पनगाचा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी से भरा अथवा सींचा हुआ खेत।

पनगोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोतिया। शीतला।

पनघट [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी भरने का घाट। वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

पनच* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धनुष की डोरी। चिल्ला। प्रत्यंचा।

पनचक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी के बहाव की की शक्ति से चलने वाली चक्की अथवा और कोई कल।

पनची [संज्ञा स्त्री] (देश.) गेड़ी नामक खेल में खेलने के लिए पतली लकड़ी अथवा गेड़ी।

पनचोरा [संज्ञा पु.] (हिं) छोटे मुँह और चौड़ी पेंदी वाला बरतन।

पनडब्बा [संज्ञा पु.] (हिं.) पान रखने का डब्बा। पानदान।

पनडुब्बा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी में गोता लगा लगा कर तल की चीजें निकाल कर लाने वाला। गोताखोर। २-एक पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियां पकड़ता है। ३-मुरगाबी। जलाशयों में रहने वाला एक प्रकार का कल्पित भूत जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह स्नान करने वालों को पानी में डुबा देता है।

पनडुब्बी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ने वाला एक जलपक्षी। २-एक प्रकार की नाव जो पानी में डूब कर चलती है। सब-मेरिन।

पनपना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नये पौधे का पत्तेयुक्त और हराभरा होना। पुनः अंकुरित या पल्लवित होना। २-नये सिरे या फिर से तन्दुरुस्त, समर्थ अथवा सशक्त होना।

पनपनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं) वाण चलने से उत्पन्न 'पन' 'पन' शब्द।

पनपाना [क्रि स.](हिं.) ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे।

पनफर [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से दूसरा, आठवाँ पाँचवां तथा ग्यारहवां स्थान।

पनबट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) पान के लगे हुए बीड़े रखने का छोटा डब्बा।

पनबिछिया, पनबिच्छी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डंक मारने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो डंक मारता है।

पनबुड़वा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पनडुब्बा'।

पनभता [संज्ञा पु.] (हिं.) केवल पानी में उबाले हुए चावल। साधारण भात।

पनभरा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी भरने वाला। पनहरा।

पनमड़िया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह पतली मांड़ जिससे जुलाहे टूटे हुए तागों को जोड़ते हैं।

पनरंगा [वि.] (हिं.) [स्त्री. पनरंगी] पानी के रंग का। कुछ मटमैलापन लिये सफेद रंग का।

पनलगवा, पनलगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत का पानी से सींचने वाला मनुष्य। पनकटा।

पनलोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जलपक्षी जो ऋतु के अनुसार रंग बदलता है।

पनव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणव'।

पनवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) हमेल के बीच का टुकड़ा जो पान के आकार का होता है। टिकड़ा। पान।

पनवाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह खेत जिसमें पान पैदा होता है। बरेजा। [संज्ञा पु.](हिं) पान बेचने वाला। तमोली।

पनवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पत्तों की बनी हुई पत्तल जिस पर रखकर लोग भोजन करते हैं। २-एक आदमी के खाने भर का पत्तल भर भोजन। ३-एक प्रकार का सांप।

पनवारा लगाना–पत्तल पर खाना परसना।

पनवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनवाड़ी'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पनवाड़ी'।

पनस [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटहल का वृक्ष। २-कटहल का फल। ३-रामदल के एक बन्दर का नाम। ४-विभीषण का एक मंत्री।

पनसखिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का फूल। २-उक्त फूल का वृक्ष।

पनसतालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटहल।

पनसनालका [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल।

पनसल्ला+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान जहां राहगीरों को पानी पिलाया जाता है। पनसाल। पौसरा।

पनसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का रोग २-बानरी। बंदरिया। ३-राक्षसी।

पनसाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मसाल जिसमें तीन या पांच बत्तियां एक साथ जलती हैं।

पनसार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी से भली प्रकार सराबोर करने की क्रिया या भाव। भरपूर सिंचाई।

पनसारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पंसारी'।

पनसाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान जहां साधारण को पानी पिलाया जाता है। [संज्ञा स्त्री.](देश.) १-पानी की गहराई का एक उपकरण जिसपर फुट, इंच के चिह्न लगे होते हैं। २-पानी की नापने की क्रिया या भाव।

पनसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान और होने वाली फुंसी जो कटहल के तरह नुकीली होती है।

पनसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कटहल का पनसिका नामक रोग।

पनसुइया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की नाव जिस पर एक ही खेने वाला चला सकता है।

पनसूर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का

पनसेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पंसेरी'।

पनसोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पनसुइया'।

पनस्यु [वि.] (सं.) प्रशंसा या बड़ाई सुनने का इच्छुक।

पनह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनाह'।

पनहड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बरतन जिसे तंबोली पान या हाथ धोने के लिए रखता है।

पनहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पनहारन, पनहारिन, पनहारी] दूसरों के घर पानी भरने का कार्य करने वाला मनुष्य। पनभरा। [संज्ञा स्त्री.] वह अथरी जिसमें सुनार गहने आदि धोने के लिये पानी रखते हैं।

पनहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े अथवा दीवार की चौड़ाई। २-गूढ़ आशय या तात्पर्य। मर्म। भेद। ३-चोरी का पता लगाने वाला

पनहारन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी भरने वाली

पनहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पनहारन, पनहारिन, पनहारी] पानी भरने का काम करने वाला मनुष्य। पनभरा।

पनहारिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनहारन'।

पनहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पनहारन'।

पनहिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पनही'।

पनहियाभद्र [संज्ञा पु.] (हिं.) सिर पर प्रहार। सिर पर जूतों की इतनी मार कि बाल उड़ जावें।

पनही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) जूता।

पना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का शरबत जो आम, इमली आदि से बनाया जाता है। प्रपानक।

पनाती [संज्ञा पु.](हिं.)[स्त्री. पनातिन] पोते या नाती का पुत्र। पुत्र अथवा कन्या का

पनारा, पनाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो

पनासना+ [क्रि. स] (हिं.) पोषण

) पोसना। परवरिश करना।

पनाह [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-शत्रु। संकट अथवा कष्ट से बचाव या रक्षा पाने की क्रिया या भाव। त्राण। बचाव। २-बचाव या रक्षा का ठिकाना। शरण। आड़।
(किसी से) पनाह मांगना-किसी से बहुत बचने की इच्छा करना। पनाह लेना-शरण लेना।

पनिक+ [संज्ञा पु.] (देश.) जुलाहों का एक औजार जो कैंचीनुमा होता है, जिस पर ताना फैला कर पाई करते हैं। कंडाल।

पनिख+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पनिक'।

पनिगार [वि] (हिं.) देखो 'पानीदार'।

पनिघट [संज्ञा पु.] (सं.) (हिं.) देखो 'पनघट'।

पनिच* [संज्ञा पु.] (हिं.) धनुष की डोरी। चिल्ला। प्रत्यंचा।

पनिड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुण्डरीक वृक्ष। पुण्डरिया।

पनियाँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी के सम्बन्ध का। २-पानी में उत्पन्न। ३-जिसमें पानी मिला हो। ४-पानी में रहने वाला। ५-देखो 'पनिहा'।

पनियाकाल [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत वर्षा के कारण पड़ने वाला अकाल।

पनियाग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बाढ़।

पनियाला [संज्ञा पु.] (हिं) १-एक प्रकार का फल। २-एक प्रकार का रंगीन वस्त्र।

पनियासोत+ [वि.] (हिं.) जिसमें पानी का सोता निकलता हो। अत्यंत गहरा।

पनिवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पनुआँ'।

पनिसिगा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जलपीपल'।

पनिहा [वि] (हिं.) १-पानी में रहने वाला। २-जिसमें पानी मिला हो। ३-पानी-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पनुआँ'। [संज्ञा पु.] (?) भेदिया। जासूस।

पनिहार [संज्ञा पु] हिं.) [स्त्री पनिहारन, पनिहारिन, पनिहारी] पानी भरने वाला। पनहरा।

पनिहारन, पनिहारिन, पनिहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी भरने वाली। पनहारन।

पनी*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रण करने वाला। प्रतिज्ञा करने वाला।

पनीर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) फाड़कर जमाया हुआ दूध। छेना। २-पानी निचोड़ा हुआ दही।
पनीर चटाना-काम निकालने के लिये किसी की चिरोरी करना। पनीर जमाना-१-इस प्रकार की बात करना जिससे भविष्य में बहुत से कार्य सम्पन्न हों। २-किसी वस्तु को प्राप्त करने अथवा अधिकार में लाने के लिए प्रारम्भिक कार्य करना।

पनीरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह लेजाकर रोपने के लिए लगाये जाते हैं। २-वह क्यारी जिसमें ऐसे पौधे लगाए जाते हैं। ३-गलगल नीबू की फांकों के ऊपर का गूदा।

पनीला [वि.] (हिं.) जिसमें पानी हो। पानी मिला हुआ।

पनुआं [संज्ञा पु.] (हिं.) गुड़ पकाने के कड़ाहे के धोवन का शरबत। [वि.] (हिं.) फीका। जिसमें मिठास की कमी हो।

पनेथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी लगाकर पोई हुई रोटी। मोटी रोटी।

पनेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनीरी'। [संज्ञा पु.] (हिं.) पान बेचने वाला। तंबोली।

पनेहड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनहड़ा'।

पनेहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) 'पनहरा'।

पनैला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कपड़ा जो गरम कपड़ों के अस्तरों के नीचे लगता है। यह रंगीन, चिकना और चमकीला होता है।

पनौआ+ [संज्ञा पु.](हिं.) पान के पत्तों को बेसन में लपेटकर बनाई हुई पकौड़ी।

पनौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पान रखने की बांस की फट्टियों की बनी हुई पिटारी। पानदान।

पन्न [वि.] (सं.) १-गिरा हुआ। पड़ा हुआ। २-नष्ट। गत। [संज्ञा पु.] (सं) सरक-सरक कर चलना। रेंगना।

पन्नई [वि.] (हिं.) पन्ने या पन्ने के से रंग का पन्ने के समान हरा।

पन्नग [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पन्नगी] १-सर्प। २-पद्माख। एक बूटी का नाम। +[संज्ञा पु.] (हिं.) पन्ना। मरकत।

पन्नगकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

पन्नगनाशक [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

पन्नगपति [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

पन्नगारि, पन्नगाशन [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

पन्नगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सर्पिणी। नागिन। २-सर्पिणी नामक एक बूटी। ३-मनसादेवी।

पन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) फिरोजी अथवा हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। मरकत। जमुर्रद। २-पुस्तक आदि का पृष्ठ। वरक। ३-देशी जूते के ऊपरी भाग का नाम जिसे पान भी कहते हैं।

पन्निक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पनिक'।

पन्नी [संज्ञा पु.] (हिं.) रांगे या पीतल का पत्तर जो कागज के समान पतला होता है। २-वह कागज अथवा चमड़ा जिस पर सुनहला या रुपहला लेप किया रहता है। ३-एक प्रकार का भोज्य पदार्थ। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-बारूद की एक तोल जो लगभग आधा सेर के बराबर होती है। २-छप्पर छाने के काम आने वाली एक लम्बी घास। [संज्ञा पु.] (देश.) एक पठान जाति का नाम।

पन्नीसाज [संज्ञा पु] (हिं.) पन्नी बनाने का काम करने वाला। मनुष्य। पन्नी बनाने वाला।

पन्नीसाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पन्नी बनाने क काम।

पन्नू [संज्ञा पु:] (देश.) एक प्रकार का फूल क पौधा। एक पुष्पवृक्ष।

पन्य [वि.] (सं) प्रशंसा करने योग्य।

पन्यारी [संज्ञा स्त्री.](देश) एक प्रकार का सदाबहार जंगली वृक्ष।

पन्हाना+ [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'पिन्हाना'। [क्रि. स.] १-देखो 'पिन्हाना'। २-देखो 'पहनना'।

पन्हारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गेहूँ के खेतों के आसपास होने वाला एक तृण धान्य जिसे अंकारा भी कहते हैं।

पन्हैयाँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पनहीं'।

पपटा [संज्ञा पु.] (देश.) १-देखो 'पपड़ा'। २-छिपकली'।

पपड़ा [संज्ञा पु] (हिं) [स्त्री. पपड़ी] १-लकड़ी का करकर और पतला छिलका। चिप्पड़। २ रोटी का छिलका।

पपड़िया [वि] (हिं.) पपड़ीदार। जिसमें पपड़ी हो। पपड़ी-सम्बन्धी। पपड़ी वाला।

पपड़िया-कत्था [संज्ञा पु] (हिं) सफेद कत्था जो साधारण कत्थे से अच्छा तथा खाने में स्वादु होता है। वैद्यक के अनुसार यह कड़ुवा, कसैला तथा चरपरा और व्रण, कफ, रुधिर-दोष, मुखरोग, खुजली, विष, कृमि, कोढ़ तथा ग्रह और प्रेतबाधा में लाभदायक बताया जाता है। श्वेतसार।

पपड़ियाना [क्रि अ.] (हिं) किसी वस्तु की परत का सूखकर सिकुड़ जाना। २-बिलकुल सूख-जाना।

पपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-सूखकर अथवा सिकुड़ने के कारण जगह-जगह चिटकी हुई किसी चीज की पतली परत। २-मवाद सूख-जाने पर घाव के ऊपर जमी हुई परत। खुरंड ३-सोहनपपड़ी नामक मिठाई। ४-छोटा पापड़।
पपड़ी छोड़ना-१-मिट्टी की तह का सूख तथा सिकुड़कर चिटक जाना। पपड़ी पड़ना। २-बिलकुल सूख जाना।

पपड़ीला [वि.] (हिं.) जिसमें पपड़ी हो। पपड़ीदार।

पपनी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पलक के ऊपर के बाल। बिरौनी।

पपरिया-कत्था [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'पपड़िया-कत्था'।

पपरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है। २-देखो 'पपड़ी'।

पपहा+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-धान की फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा। २-जौ, गेहूँ आदि में लगने वाला एक प्रकार का घुन।

पपि [संज्ञा पु] (सं) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।

पपिहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पपीहा'।

पपी [संज्ञा पु.] (सं) चन्द्रमा।

पपीता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध बड़ा पौधा जिसके पत्ते एरंड के समान होते हैं और ऊँचाई में भी यह एरंड के समान ही होता है। इसके फल खाये जाते हैं।

पपीलि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिपीलिका। च्यूंटी

पपीहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पपीहा'।

पपीहा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का पत्ती जो वर्षा और वसंतऋतु में आम के पेड़ पर बैठकर बड़ी सुरीली आवाज में बोलता है। चातक। नोकक। मेघजीवन। शारंग। सारंग। स्तोतृक। २-सितार के छः तारों में से एक जो लोहे का होता है। ३-आल्हा के पिता के घोड़े का नाम। ४-देखो 'पपैया'।

पपु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पोष्या माता जिसने माँ के समान पाला हो।

पपैया [संज्ञा पु] (हिं) १-आम का नया पौधा, जिसे गुठली समेत उखाड़कर उसी की गुठली को घिसकर बनाई हुई सीटी। २-सीटी। ३-आम का नया पौधा। अमोला।

पपोटन [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार का पौधा जिसके पत्तों का उपयोग फोड़ा पकाने में करते हैं।

पपोटा [संज्ञा पु.] (हिं) आंख के ऊपर का चमड़े का पर्दा। आंख के ऊपर की पलक। दृगंचल।

पपोरना+ [क्रि. स.] (देश.) अपनी बांह को ऐंठा कर उसकी पुष्टता देखना।

पपोलना [क्रि. अ.] (हिं.) बिना दाँत का चुभलाना या मुँह चलाना।

पपौता [संज्ञा स्त्री.] (देश) बामं नामक मछली। गुंगवहरी।

पवई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मैना की जाति का एक पत्ती जिसकी बोली बहुत मधुर होती है।

पवलिक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सर्वसाधारण। आम जनता। [वि] सार्वजनिक। सर्वसाधारण-सम्बन्धी।

पवलिक-वर्क्स [संज्ञा पु.] (अं.) १-वे निर्माण सम्बन्धी कार्य जो सर्वसाधारण के हित के लिए राज्य की ओर से बनाये जाते हैं। २-इंजीनियर का एक महकमा।

पवारना [क्रि. स.] (?) फेंकना।

पवि [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'पवि'।

पव्वय* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहाड़। २-पत्थर। [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

पव्वि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पवि'।

पमरा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) शल्लुकी नामक सुगंधित पदार्थ।

पमाना* [क्रि. अ.] (?) डींग हांकना।

पमार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अग्नि कुलोत्पन्न क्षत्रियों की एक शाखा। प्रमार। पवार। २-चकवँड। चकौंड़ा।

पम्मन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मोटी गेहूँ जिन्हें कठिया गेहूँ भी कहते हैं।

पयःकंदा, पयःकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षीरविदारी। भूकुम्हड़ा।

पयःकुंड, पयःकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं) दूध का या जल रखने का घड़ा।

पयःपयोष्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

पयःपान [संज्ञा पु.] (सं.) दुग्धपान। दूध पीना।

पयःपालिनी [संज्ञा स्त्री. (सं.) खस। उशीर।

पयःपुर [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करिणी। छोटा तालाब।

पयःपेटी [संज्ञा स्त्री] (सं.) नारियल।

पयःफेनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुग्धफेनी।

पयःप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) निर्मली का बीज।

पय [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध। २-जल। पानी। ३-अन्न।

पयज+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पैज'।

पयद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पयोद'।

पयधि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पयोधि'।

पयना+ [वि.] (हिं.) देखो 'पैना'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैना'।

पयनिधि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पयोनिधि'।

पयस्य [वि.] (सं.) १-दूध वाला या दूध का बना हुआ। २-पनीला। [संज्ञा पु.] १-दूध से निकलने या बनने वाली वस्तु। जैसे-घी, मट्ठा, दही आदि। २-बिल्ला।

पयस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दूधिया घास। २-क्षीरकोली। ३-दही।

पयस्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

पयस्वल [वि.] (सं.) १-बहुत दूध वाला। दुधार २-जलयुक्त। [संज्ञा पु.] बकरा।

पयस्वान् [वि.] (सं.) [स्त्री. पयस्वती] पानी वाला।

पयस्विन्, पयस्विनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुधार गौ। दूध देने वाली गाय। २-बकरी। ३-नदी। ४-चित्रकूट की एक नदी। ५-क्षीर काकोली। ६-दूधफेनी। ७-दूधविदारी। ८-जीवती।

पयस्वी [वि] (सं.) [स्त्री पयस्विनी] पानी वाला। जलयुक्त।

पयहारी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह साधु अथवा तपस्वी जो केवल दूध के सहारे रहता हो।

पयादा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्यादा'। [वि] देखो 'प्यादा'।

पयान [संज्ञा पु.] (हिं.) गमन। यात्रा। रवाना।

पयार [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'पयाल'।

पयाल [संज्ञा पु.] (हिं.) धान आदि के दाने झड़े हुए सूखे डंठल। पुराल।

पयाल गाहना या झाड़ना-१-ऐसा श्रम करना जिसका कुछ फल न हो। २-ऐसे की सेवा करना जिसे प्राप्ति की कुछ आशा न हो।

पयोगड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पयोगल'।

पयोगल [संज्ञा पु.] (सं) १-ओला। २-द्वीप।

पयोग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में काम आने वाला एक पात्र।

पयोघन [संज्ञा पु.] (सं.) ओला।

पयोज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

पयोजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल। मेघ। मोथा। मुस्तक।

पयोद [संज्ञा पु.] (सं) १-मेघ। बादल। २-मोथा। मुस्तक। ३-एक यदुवंशी राजा का नाम।

पयोदन [संज्ञा पु.] (हिं.) दूध भात।

पयोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं) कुमार कार्त्तिकेय की एक अनुचरी का नाम।

पयोदेव [संज्ञा पु.] (सं) वरुण।

पयोधर [संज्ञा पु.] (सं) १-स्तन। २-बादल। ३-नागरमोथा। ४-नारियल। ५-पर्वत। पहाड़। ६-मदार। आक। ७-कसेरु। ८-तालाब। तड़ाग। ९-कोई दुग्धवृक्ष। १०-दोहा छंद का ग्यारहवां भेद। ११-समुद्र। १२-एक प्रकार की ऊख। १३-छप्पय छंद का सत्ताईसवां भेद। १४-गाय का अयन।

पयोधा [संज्ञा पु.] (हिं) १-जलाधार। २-समुद्र।

पयोधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं) जलकी धारा।

पयोधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

पयोधिक [संज्ञा पु.] (सं) समुद्रफेन।

पयोनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

पयोमुख [वि.] (सं.) दूध पीता। दूध मुहां बच्चा।

पयोमुच [संज्ञा पु.] (सं) १-बादल। २-मोथा।

पयोरं [संज्ञा पु.] (सं) खैर का पेड़।

पयोलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूधविदारी कंद।

पयोवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल। मेघ। २-मोथा।

पयोव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक व्रत जिसमें एक दिन रात या तीन रात केवल जल पीकर रहना पड़ता है। २-एक व्रत जिसमें बारह दिन दूध पीकर रहना तथा श्रीकृष्ण का पूजन स्मरण आदि करना होता है।

ोष्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जो विन्ध्याचल से निकलती है और चित्रकूट के नीचे बहती हुई जाती है।

ोष्णीजाता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सरस्वती नदी।

ं, परञ्च [अव्य] (सं.) १-और भी। २-तो भी। परन्तु। लेकिन।

ंज, परञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेल पेरने का कोल्हू। २-छुरी का फल। ३-फेन। ४-इन्द्र की तलवार।

ंजन, परञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) [पश्चिम दिशा के अधिपति) वरुण देवता।

ंजय, परञ्जय [संज्ञा पु.](सं) १-शत्रु को जीतने वाला। २-वरुण।

ंतप, परन्तप [वि.] (सं.) १-शत्रु या वैरियों को ताप अथवा दुःख देने वाला। २-जितेन्द्रिय।

ंतु, परन्तु [अव्य.] (हिं.) एक शब्द जो किसी वाक्य के साथ उससे कुछ अन्यथा स्थिति-सूचित करने वाला। दूसरा वाक्य कहने से पूर्व लाया जाता है। पर। तो भी। मगर। किन्तु। लेकिन।

ंद [संज्ञा पु.] (फा.) १-पक्षी। पखेरू। २-कश्मीर की झीलों में चलने वाली एक प्रकार की हवादार नाव।।

ंपर, परम्पर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक के बाद दूसरा ऐसा क्रम। अनुक्रम। २-परपोता। पौत्र का पुत्र। ३-एक हिरन विशेष।

ंपरा, परम्परा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अविच्छिन्न क्रम। सिलसिला जो टूटे नहीं। अनुक्रम। पूर्वापर क्रम। २-वंशपरंपरा। संतति। औलाद। ३-वह विचार, प्रथा अथवा क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चला आया हो। ट्रैडिशन। ४-किसी घटना, कार्य, पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम।

ंपराक, परम्पराक [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ के लिए पशुओं का वध।

ंपरागत, परम्परागत [वि.] (सं.) परंपरा से चला आता हुआ। जो सर्वदा से सदा होता आया हो।

ंपरीण, परम्परीण [वि.] (सं.) १-पैतृक। वंशपरम्परा से प्राप्त। २-खानदानी।

र [वि.] (सं.) १-दूसरा। अन्य। और। गैर। परलोक। २-पराया। जो अपना न हो। दूसरे का। ३-अतिरिक्त। भिन्न। जुदा। अलावा। ४-पीछे का। बाद का। ५-जो परे हो। दूर। अलग। जो सीमा के बाहर हो। तटस्थ। ६-सबसे ऊपर। श्रेष्ठ। ७-प्रवृत्त। लीन तत्पर। [अव्य.] (हिं.) सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। [उप.] एक उपसर्ग जो सम्बन्ध बताने वाले शब्दों के पहले लगकर उसके ठीक पहले अथवा ठीक बाद वाली पीढ़ी का सूचक होता है। जैसे-परदादा, परपोता। [संज्ञा पु] (सं.) १-शत्रु। वैरी। दुश्मन। २-शिव। ३-ब्रह्मा। ४-मोक्ष। ५-न्याय में जाति या सामान्य के दो भेदों में से एक। [अव्य] (हिं.) १-पश्चात्। पीछे। २-परन्तु। किन्तु। लेकिन। तो भी। [संज्ञा पु.] (फा.) पक्षी का पंख। पक्ष।

पर कट जाना-अशक्त हो जाना। *पर काट देना*-अशक्त कर देना। *पर कैंच करना*-पंख कतरना। (कबूतरबाज)। *पर जमना*-१-पर निकलना। २-सीधे-साधे को भी पहले-पहल धूर्त्तता, चालाकी आदि आना। *पर जलना*-१-साहस न होना। २-गति न होना। *पर झड़ना*-१-पुराने परों का गिरना। २-पंख फटफटाना। डैनों का हिलना। *पर टूटना*-हिम्मत या साहस न होना। *पर टूट जाना*-कुछ करने धरने लायक न रहना। *पर न मारना*-जा न सकना। फटक न सकना। *चिड़िया पर नहीं मार सकती*-किसी की पहुँच नहीं हो सकती। *पर निकलना*-१-पंख निकलना, या पंखों से युक्त होना। २-इतराना। *पर और बाल निकलना*-१-सीधा-साधा न रहना। २-उपद्रव करना।

[प्रत्य.] (सं.) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर-१-निमग्न, लीन, उद्यत आदि। जैसे-तत्पर, स्वार्थपर आदि। २-पीछे या साथ में लगा हुआ आदि अर्थसूचित करता है।

परइ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) दीये के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन। सराव। पारा।

परक [प्रत्य.] (सं.) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'पीछे या अन्त में लगा हुआ' का अर्थ सूचित करता है। जैसे-विष्णु-परक नामावली ऐसी नामावली जिसके अन्त में विष्णु या उसका वाचक और कोई शब्द हो।

परकटा [वि.] (हिं.) जिसके पर अथवा पंख कटे हों।

परकना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-परचना। हिलना। मिलना। २-अभ्यास पड़ना। चसका लगना। धड़क खुलना।

परकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का काम।

परकलत्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरे की स्त्री।

परकसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रकाशित होना जगमगना। २-प्रकट होना।

परकाजी [वि.] (हिं.) दूसरे का साधने वाला। परोपकारी।

परकान [संज्ञा पु.] (हिं.) तोप का कान या मूठ।

परकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-परचाना। हिलाना। मिलाना। २-धड़क खोलना। अभ्यास डालना। चसका लगाना।

परकायप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी आत्मा को दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की यौगिक क्रिया।

परकार [संज्ञा पु] (फा) वृत्त या गोलाई खैंचने का औजार जो पिछले सिरों पर परस्पर जुड़ी हुई दो शलाकाओं के रूप का होता है। *[संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'प्रकार'

परकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का काम या धंधा

परकाल [संज्ञा पु.] (हिं) परकार नामक वृत खैंचने का औजार।

परकाला [संज्ञा पु.] (हिं) १-सीढ़ी। जीना। २-चौखट। देहली। ३-टुकड़ा। खंड। शीशे का टुकड़ा। ४-अग्निकण। चिनगारी।

आफत का परकाला-अद्भुत शक्ति वाला, प्रचंड या भयंकर मनुष्य। गजब करने वाला।

परकास [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'प्रकाश'।

परकासना* [क्रि. स] (हिं) १-प्रकाशित करना। २-प्रकट करना।

परकिति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'प्रकृति'।

परकीकरण [संज्ञा पु.] (सं) १-अदेशीयकरण। २-हस्तन्तर करण। अन्यार्पण।

परकीय [वि.] (सं.) १-पराया। दूसरे का। २-अपरिचित। बेगाना।

परकीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निज पति को छोड़कर पर पुरुष से प्रीति करने वाली स्त्री। नायका दो प्रधान भेदों में से एक। परकीया दो प्रकार की होती है-अनूढा (अविवाहित) और ऊढा (विवाहित)। स्वच्छापूर्बक पर पुरुष से प्रीति करने वाली परकीया को उदबुद्धा तथा पर पुरुष की चतुराई अथवा प्रयत्न से उसके प्रेमजाल में फंसने वाली को उद्बोधिता कहते ह। इसके अतिरिक्त परकीया के छ भेद होते हैं-गुप्ता, लक्षिता, कुलटा, अनुशयाना तथा मुदिता)।

परकीरति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रकृति'।

परकृति [संज्ञा स्त्री] (सं) १-दूसरे की कृति। दूसरे का किया हुआ काम। २-दूसरे की कृति का वर्णन। ३-कर्मकांड में दो परस्पर विरुद्ध वाक्यों की स्थिति।

परकोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किले की रक्षा के लिए उसके चारों ओर बनाई हुई दीवार। कोट। किले आदि की दीवार। २-पानी आदि की रोक के लिए खड़ा किया हुआ धुस। बांध। चह।

परक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं) १-दूसरे का शरीर। २-दूसरे का खेत। ३-दूसरे की स्त्री।

परख [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-गुण दोष की ठीक-ठीक जांच। परीक्षा। टेस्ट। २-गुण-दोष का ठीक-ठीक पता लगाने वाली दृष्टि। पहचान।

परखना [क्रि. स.] (हिं.) १-गुण-दोष जानने के लिए पूरी जांच करना। परीक्षा करना। २-अच्छी प्रकार देख-भालकर गुण-दोष का पता लगाना। भला और बुरा पहिचानना।

३-इन्तजार या प्रतीक्षा करना। आसरा देखना

परखवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'परखाना'।

परखवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) परखने वाला। जाँचने वाला। पहिचानने वाला।

परखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परखने का काम या मजदूरी।

परखाना [क्रि. स.] (हिं.) १-परखने या जँचवाने का काम दूसरे से करवाना। जँचवाना। सँभलवाना। सहेजवाना।

परखुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पंखड़ी'।

परखैया [संज्ञा पु.] (हिं.) परखने वाला।

परग [संज्ञा पु.] (हिं.) पग। डग। कदम।

परगटना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रगट होना। खुलना जाहिर होना। [क्रि. स.] (हिं) प्रकट करना। जाहिर करना।

परगत [वि.] (सं.) पर प्राप्त। अपरगति।

परगना [संज्ञा पु.] (फा) भूमि का वह भाग जिसके अन्तर्गत बहुत से गांव हों।

परगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सुनारों का एक औजार जिसमें चांदी या सोने की गुल्लियां ढाली जाती हैं।

परगसना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रकाशित होना। प्रकट होना।

परगहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सुनारों का नली के आकार का एक औजार जिसमें करछी की सी डाँडी लगी होती है। इस नली में तेल देकर उसमें चाँदी अथवा सोने की गुल्लियाँ ढालते हैं। परगनी।

परगाछा [संज्ञा पु.] (हिं.) गैरदेश में होने वाले एक प्रकार के छोटे पौधे जो दूसरे पेड़ों पर उगते हैं। परगाछे को संस्कृत में बालक तथा हिन्दी में बांदा भी कहते हैं।

परगाछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अमरबेल। आकाश बौर।

परगाढ़* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रगाढ़'।

परगास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रकाश'।

परगासना+ [क्रि. अ.] (हिं) प्रकाशित होना। [क्रि. स.] (हिं.) प्रकाशित करना।

परगुण [वि.] (सं.) दूसरे को लाभदाई। उपकारी

परग्रंथि, परग्रन्थि [संज्ञा पु.] (सं.) जोड़। गांठ।

परग्लानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रु के वशीभूत कराने की क्रिया।

परघट [वि.] (हिं.) देखो 'प्रकट' 'प्रगट'।

परघनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परगाहनी'।

परचंड* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रचंड'।

परचइ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परिचय'।

परचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु सैन्य। २-छः प्रकार की दूतियों में से एक। ३-वैरी-राज। विपक्षी राजा।

परचत*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जान-पहचान। जानकारी।

परचना [क्रि अ.] (हिं.) १-किसी के पास रह कर धीरे-धीरे उसने हिलना-मिलना। धड़का खुलना। घनिष्टता प्राप्त करना। २-चसका लगना।

परचर [संज्ञा पु.] (देश.) बैलों की एक जाति जो अवध के खीरी जिले के आसपास पाई ज़ाती है।

परचा [संज्ञा पु.] (फा.) १-कागज का टुकड़ा। चिट। कागज। पत्र। २-पुरजा। खत। चिट्ठी २-परीक्षा का प्रश्न-पत्र। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परिचय। जानकारी। २-प्रमाण। सबूत। ३-परख। परीक्षा। जांच।
परचा देना–ऐसा लक्षण अथवा चिह्न बताना जिससे लोग जान जायँ। *परचा मांगना*–१-प्रमाण देने के लिये कहना। २-किसी देवी देवता से अपनी शक्ति दिखाने को कहना। [संज्ञा पु.] (देश.) जगन्नाथजी के मन्दिर का प्रधान पुजारी जो मन्दिर के आय-व्यय तथा पूजा-सेवा आदि की देखभाल करता है।

परचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-हिलना-मिलना। आकर्षित करना। २-धड़का खोलना। ३-३-चसका लगना।

परचार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रचार'।

परचारना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'प्रचारना'।

परचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परचने की क्रिया या भाव। २-हेल-मेल। मेल-जोल।

परचित्तज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे के मन का भाव जान लेना।

परचित्त-पर्यायज्ञान [संज्ञा पु.] (सं) अपने मन में दूसरे के मन का भाव जानना (बौद्ध)।

परचून [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी भी वस्तु फुटकर दुकान। २-आटा, दाल, मसाले जो बनिये के यहां बिकने वाला फुटकर सामान।

परचूनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परचूनी'।

परचूनी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परचून या फुटकर बेचने वाला। २-आटा, दाल आदि फुटकर सामान बेचने वाला बनिया। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परचून या परचूनी का काम या भाव।

परचे* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिचय'।

परचै [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिचय'।

परच्छंद, परच्छन्द [वि.] (सं.) पराधीन। अधीन।

परछंद, परछन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरे की इच्छा या अभिलाषा। २-पराधीनता।

परछत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सामान रखने के लिए कोठरी के भीतर दीवार से सटा कर कुछ दूर तक लगाई हुई पाटन। २-हलका छप्पर जो दीवारों आदि पर रख दिया जाता है। फूस आदि का छावन।

परछन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह जिसमें द्वार पर बरात आनेपर कन्या स्त्रियाँ वर पूजा करती हैं और आरती रती हैं।

परछना [क्रि. स.] (हिं.) द्वार पर पर कन्या-पक्ष की स्त्रियों का वर आदि करना।

परछा [संज्ञा पु.] (हि.) १-तेली के की आँखों में अधौंटी बाँधने का जुलाहों की वह नली जिस पर हैं। ३-बहुत सी वस्तुओं के कुछ के निकल जाने से पड़ा हुआ विरलता। ४-भीड़ का छँटाव। निबटेरा। फैसला।
[संज्ञा पु.] (?) [स्त्री. परछी] लोई। बड़ा देग। २-कड़ाई। मिट्टी का मझोला बरतन।

परछाईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-प्रकाश आने से पीछे की ओर अथा प्रकाश होने पर आगे की ओर पड़ी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया। दर्पण आदि पर पड़ा हुआ किसी पूरा प्रतिरूप। प्रतिबिंब। अक्स।
किसी को परछाईं से डरना या के पास जाने तक से डरना।

परछालना* [क्रि. स.] (हिं) धोना।

परछिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे की निर्बलता। दूसरे का दोष या ऐब।

परजंक* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पर्यंक'।

परज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गांधार, मारू के मेल से बनी हुई एक रात को ग्यारह दंड से लेकर गाई जाती है। [वि.] (सं.) १- परजात। दूसरे से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] कोकिल। कोयल।

परजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिजन'।

परजन्य* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पर्जन्य'।

परजना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-जलना। सुलगना। २-क्रुद्ध होना। कुढ़ना। द्वेष से संतप्त होना। डाह करना।

परजवट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परजौट'।

परजा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-प्रजा। रैयत। आश्रितजन। ३-जमींदार की जमीन पर वाला या खेती करने वाला। आसामी।

परजात [वि.] (सं.) १-दूसरे से उत्पन्न। आजीविका के लिए दूसरे पर निर्भर वाला। [संज्ञा पु.] १-कोकिल। कोयल। दूसरी जाति का आदमी। ३-नौकर।

परजाता [संज्ञा पु.] (हिं.) मझोले आकार एक वृक्ष जिसमें पीली डंडी वाले छोटे सफेद फूल लगते हैं। इसकी पत्तियां

होती और वह औषध के काम में लाई जाती है। इसे हारसिंगार भी गहते हैं। पारिजात।

जाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरी जाति।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्याय'।

[वि.] (सं.) शत्रु से पराजित या हारा हुआ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-पराश्रित व्यक्ति। वह जो दूसरों के सहारे रहकर जीवन बिताता हो। २-कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियां अथवा कीड़े-मकोड़े जो दूसरे वृक्षों और जीव जन्तुओं के शरीर पर रहकर तथा उनका रक्त या रस चूसकर पलते हैं। यथा-अमरबेल, स्सू आदि। पैराजाइट।

[संज्ञा पु.] (हिं.) वह वार्षिक कर या किराया जो मकान बनाने के लिए ली हुई ज़मीन पर लगे।

[क्रि. स.] (हिं.) विवाह करना। ब्याहना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पतंचिका'।

परतन्त्र [वि.] (सं.) पराश्रित। दूसरे के सहारे रहने वाला। परमुखापेक्षी। पराधीन। परवश।

परतन्त्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पराधीनता। परवशता। परतंत्र या पराश्रित होने का भाव।

[अव्य.] (हिं.) १-दूसरे से। अन्य से। २-पश्चात्। पीछे। ३-परे। आगे।

प्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) जो स्वतः प्रमाण न हो। जिसे दूसरे प्रमाणों की अपेक्षा हो।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सतह। फैली हुई वस्तु की मोटाई। स्तर। तह। २-कपड़े आदि को लपेटने या मोड़ने पर बनने वाला उसका हर भाग या मोड़। तह। ३-कपड़े, कागज आदि के भिन्न-भिन्न भाग जो जोड़ने से ऊपर नीचे हो गये हों। तह।

[वि.] (हिं.) देखो 'प्रत्यक्ष'।

[वि.] (सं.) बाद या पीछे का।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) परतरने या पीछे रहने का भाव।

[संज्ञा पु.] (हिं.) लादने वाला घोड़े की पीठ पर रखने का बोरा या गून।

[संज्ञा पु.] (हिं.) कंधे से कमर तक तिरछी पहनी जाने वाली चमड़े अथवा कपड़े की चौड़ी और गोलाकार पट्टी। तला का टट्टू-लद्दू घोड़ा।

[संज्ञा पु.] (देश.) एक जंगली वृक्ष जिसकी जड़ और छाल दवा के काम आती है तथा लकड़ी इमारतों में लगती है।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रेष्ठता। + [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पड़ता'।

[संज्ञा पु.] (देश.) सुनारों का एक औजार।

परताप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रताप'।

परतापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो दूसरों को कष्ट देता हो। २-गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

परताल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पड़ताल'।

परतिंचा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पतंचिका'।

परतिग्या* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रतिज्ञा'।

परतिज्ञा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रतिज्ञा'।

परती [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत अथवा भूमि जो बिना जोती हुई छोड़ दी गई हो। २-वह चादर जिससे हवा करके भूसा उड़ाया जाता है।

परती लेना-चद्दर से हवा करके भूसा उड़ाना। ओसाना। उड़ाना। बरसाना।

परतीत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रतीत'।

परतेजना* [क्रि. स.] (हिं.) परित्याग करना। छोड़ना।

परतेला [वि.] (हिं.) कुछ समय तक घोलकर और उबालकर रखा हुआ रंग।

परतोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गली।

परत्र [क्रि. वि.] (सं.) १-और जगह। २-परकाल में। परलोक में। ३-इसके बाद भविष्य में।

परत्रभीरु [वि.] (सं.) जो परलोक से भयभीत हो। धार्मिक। जिसे परलोक का डर हो।

परत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर होने का भाव। पूर्व या पहले होने का भाव। २-भेद। पहिचान ३-दूरी। ४-परिणाम। नतीजा। ५-शत्रुता। वैर। ६-समय या स्थान की पूर्वता। ७-वैशेषिक दर्शनानुसार द्रव्य के २४ गुण।

परत्व अपरत्व-पहले पीछे का भाग।

परथन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलोथन'।

परद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परदा'।

परदच्छिना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रदक्षिणा'

परदनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धोती। दान-दक्षिणा।

परदा [संज्ञा पु.] (फा) १-आड़ करने के लिए लटकाया हुआ कपड़ा, चिक आदि। २-आड़ करने वाली वस्तु। व्यवधान। ३-रोक जिससे सामान की वस्तु कोई देख न सके या उसके पास तक पहुँच न सके। आड़। ओट। ओझल। ४-लोगों की दृष्टि के सामने न होने की अवस्था। ओट। छिपाव। ५-स्त्रियों को घर में ही रखने का नियम। ६-वह दीवार जो विभाग करने अथवा ओट करने के लिए उठाई जाय। ७-तल। तह। परत। ८-वह झिल्ली अथवा चमड़ा जो आड़ या व्यवधान के रूप में हो। जैसे कान का परदा। ९-अंगरखे का छाती के ऊपर वाला भाग। १०-हारमोनियम सितार आदि बाजे का वह स्थान जहां से स्वर निकलता है। ११-नाव की पतवार।

परदा उठाना या खोलना-१-छिपी बात प्रकट करना। २-शर्म या लाज छोड़ना। *परदा उठा-देना*-१-घर से परदे की प्रथा या रीति हटा देना। घूंघट की रीति न रखना। २-बेशर्म या निर्लज्ज हो जाना। *(आंख या बुद्धि पर) परदा पड़ना*-दिखाई न देना। समझ में न आना। *परदा फाश करना*-भेद प्रकट करना। *परदा रखना*-१-भेद छिपाना या कोई बुराई प्रकट न होने देना। २-परदे के भीतर (स्त्रियों का) रहना। ३-छिपाव रखना। *परदा रख लेना या रह जाना*-१-प्रतिष्ठा बचा लेना। शर्म या बात रह जाना। भेद न खुलने देना। *परदा लगना*-१-सामने न होना। २-ओट खड़ी करना।

परदा होना-१-स्त्रियों के सामने न होने का नियम होना। २-छिपाव होना। *परदे परदे*-छिपे-छिपे। *परदे बिठाना*-(स्त्री को) परदे के भीतर रखना। *परदे में चाहना*-दिल ही दिल में इच्छा करना। *परदे में छेद होना*-परदे के भीतर व्यभिचार होना। *परदे में रखना*-१-स्त्रियों को किसी के सामने विशेषतः मर्दों के सामने न होने देना। २-छिपाकर रखना। *परदे में रहना*-स्त्रियों का घर के भीतर ही रहना।

परदाज [संज्ञा पु.] (फा.) १-सजाना। २-चित्र आदि के चारों ओर बेलबूटे बनाना। ३-चित्रों में अभीष्ट रंगत लाने के लिए आस-पास महीन बिंदु लगाना।

परदाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) परदाजने की क्रिया या भाव।

परदादा [संज्ञा पु.] (हिं.) दादा का बाप। पड़दादा। प्रपितामह।

परदानशीन [वि.] (फा.) परदे में रहने वाली और पराये मरदों के सम्मुख न आने वाली (स्त्री)।

परदार [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे की स्त्री।

परदार गमन-पर-स्त्री गमन।

परदारगामी [वि.] (सं.) दूसरे की स्त्री के संभोग करने वाला।

परदारी [संज्ञा पु.] (सं.) व्यभिचारी। लंपट।

परदिवस [संज्ञा पु.] (सं.) आज से दूसरा दिन।

परदुःख [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का दुख या शोक।

परदुम्भ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रद्युम्न'।

परदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमात्मा। परब्रह्म २-इष्ट देवता।

परदेश [संज्ञा पु.] (सं.) स्वदेशातिरिक्त देश विदेश। अपने देश से भिन्न दूसरा देश।

परदेश में छाना-दूसरे देश में निवासकरना या रहना।

परदेशी [वि.] (सं.) विदेशी। अपने देश से भिन्न देश का।

परदोस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रदोष'।

परद्रोही [वि.] (सं) दूसरों से घृणा करने वाला। बैरी। द्वेषी।

परद्वेषी [वि.] (सं.) बैरी। द्वेषी।

परधन [संज्ञा पु.] (सं) दूसरे की संपत्ति। दूसरे का धन।

परधर्म [संज्ञा पु.] (सं) १-दूसरे का धर्म। २-दूसरे का कर्त्तव्य या धंधा। ३-दूसरी जाति के कर्त्तव्य।

परधान* [वि.] (हिं) [स्त्री. प्र.] देखो 'प्रधान'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिधान'।

परधानी* [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-धोती। २-दान दक्षिणा।

परधाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैकुण्ठधाम। परलोक। २-ईश्वर।

परध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) समाधि।

परन [संज्ञा पु.] (?) मृदंग आदि बाजों को बजाते समय मुख्य बोलों के बीच में बजाये जाने वाले बोलों के खंड या अंश। [संज्ञा पु] (हिं.) १-प्रतिज्ञा। टेक। २-देखो 'पर्ण'। ३-देखो 'वरण'। [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पड़ी हुई बान। आदत।

परनना* [क्रि. स.] (हिं) वरण करना। विवाह करना।

परना*+ [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'पड़ना'। [संज्ञा पुं] (देश.) गमच्छा। तौलिया। (पंजाब)।

परनाना [संज्ञा पु] (हिं.) [स्त्री. परनानी] नाना का पिता।

परनानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) परनाना की पत्नी।

परनाम+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'प्रणाम'।

परनाला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री परनाली] पनाला। नाबदान। मोरी।

परनाली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा पनाला। मोरी। २-अच्छे घोड़े की पीठ का पुट्ठों और कंधों की अपेक्षा नीचापन जो उसकी तेजी प्रकट करता है।

परनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पड़ी हुई बान। टेव। आदत।

परनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राँगे का महीन पत्तर जिसमें सुनहली अथवा रूपहली चमक होती है। पन्नी।

परनौत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रणाम। नमस्कार।

परपंच*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रपंच'।

परपंचक* [वि.] (हिं.) १-बखेड़िया। फसादी। २-मायावी। धूर्त्त।

परपंची+* [वि.] (हिं.) देखो 'परपंचक'।

परपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुपक्ष या शत्रु का दल।

परपट [संज्ञा पु.] (हिं) चौरस मैदान। समतल भूमि।

परपटी [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'पर्पटी'।

परपद [संज्ञा पु] (सं) १ सर्वोच्चपद। श्रेष्ठस्थान। प्राधान्य। २-मोक्ष। मुक्ति।

परपरा [वि.] (हिं.) १-जो परपराता हो। पर-पर शब्द करके टूटने वाला।

परपराना [क्रि. अ.] (देश) मिर्च आदि वस्तुओं का जीभ या शरीर तीखा अनुभव होना। तीक्ष्ण लगना। चुनचुनाना।

परपराहट [संज्ञा स्त्री] (हिं) परपराने का भाव। चुनचुनाहट।

परपाकनिवृत्त [वि.] (सं.) दूसरे के लिए भोजन न निकालने वाला। पंचयज्ञ न करने वाला। (गृहस्थ)।

परपाकरत [वि.] (सं.) पेट के लिए दूसरे की रसोई बनाने वाला, किन्तु पाक बनाने के पूर्व निर्दिष्ट पंचयज्ञादि करने वाला।

परपाजा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. परपाजी] आजा या दादा का पिता। पितामह का बाप। प्रपितामह।

परपार [संज्ञा पु.] (सं.) उस ओर का तट। दूसरी ओर का किनारा।

परपिंड, परपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का दिया हुआ भोजन। दूसरे का भोजन।

परपिंडाद, परपिण्डाद [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का अन्न खाकर जीने वाला व्यक्ति। परान्नोपजीवी।

परपीड़क [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराई पीड़ा या दुःख समझने वाला। २-दूसरे को दुःख देने वाला।

परपुरंजय, परपुरञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) शूर। विजयी।

परपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-गैर। अजनबी। अपरिचित। २-परब्रह्म। विष्णु। ३-पति के अतिरिक्त दूसरा पुरुष। दूसरी स्त्री का पति।

परपुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल। कोकिल। [वि.] (सं.) दूसरे द्वारा पाला पोसा गया।

परपुष्टमहोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) आम्रवृक्ष। आम का पेड़ (जो कोयल को आनन्ददायक है)।

परपुष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोयलपक्षी। २-एक प्रकार का पौधा। ३-वेश्या। रंडी। पराश्रया।

परपूठा [वि.] (हिं.) पक्का।

परपूर्वा [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह स्त्री जो अपने प्रथम पति को छोड़कर दूसरा पति करे।

परपैठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हुंडी की तीसरी नकल या प्रतिलिपि।

परपोत [संज्ञा पु.] (हिं.) पोते का लड़का। पुत्र के पुत्र का पुत्र।

परपौत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पोते के बेटे का बेटा। प्रपौत्र का पुत्र।

परप्रेष्य [संज्ञा पु] (सं.) नौकर। चाकर।

परफुल्ल* [वि.] (हिं) देखो 'प्रफुल्ल'।

परफुल्लित [वि.] (हिं.) देखो 'प्रफुल्ल'।

परबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) नाच की वह दोनों पर इस तरह खड़े रखते हैं कि दोनों कुहनियां सटी रहती हैं।

परबंध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रबंध'।

परब [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्व'। (हिं.) किसी रत्न या जवाहर का

परबत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्वत'।

परबत्ता [संज्ञा पु.] (हिं) पहाड़ी तोता जो साधारण तोते की अपेक्षा और जिसके दोनों परों पर हैं। करमेल।

परबल* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रबल'।

परबस [वि.] (हिं.) दूसरे के वश में परतंत्र। पराधीन।

परबसताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धीनता।

परबाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आंख कष्ट देने वाला फालतू बाल। 'प्रवाल'।

परबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पर्व का दिन।

परबीन* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रवीण'।

परबेस* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'प्रवेश'।

परबोध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रबोध'।

परबोधना* [क्रि. स.] (हिं.) ज्ञानोपदेश करना। २-दिलासा या देना। ढाढस बंधाना।

परब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुण और ब्रह्म जो जगत से परे है।

परभव [संज्ञा पु.] (सं) जन्मांतर।

परभा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'प्रभा'।

परभाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रभाव'।

परभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरे का पश्चिम भाग। ३-बचा हुआ भाग ४-सर्वोत्तमता। सर्वोत्कृष्टता। समृद्धि।

परभाग्योपजीवी [वि] (सं) दूसरे पर जीने वाला।

परभात* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'प्रभात'।

परभाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'प्रभाती'।

परभाव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रभाव'।

परभुक्त [वि] (सं.) अन्य द्वारा व्यवहृत किया हुआ।

परभुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह स्त्री साथ पहले दूसरा समागम कर चुका हो।

परभृत [संज्ञा पु.] (सं) काक। कौवा।

परभृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोयल। [वि.] दूसरे द्वारा पाला पोसा हुआ।

लार्ड-चीफ-जस्टिस।

परमफल [संज्ञा पु.] (सं.) १–सब से उत्तम फल या परिणाम। २–मोक्ष। मुक्ति।

परमब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–परब्रह्म। २–ईश्वर।

परमब्रह्मचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

परमभट्टारक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. परम भट्टारिका] १–महाराजाधिराज। एक छत्र राजाओं की एक उपाधि। २–किसी श्रद्धेय व्यक्ति के लिए अथवा रक्षक के सम्मान में बोली जाने वाली एक उपाधि। लार्ड-प्रोटेक्टर।

परमभट्टारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रानियों की एक सम्मान-सूचक उपाधि।

परमभागवत [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णवों की एक सम्प्रदायक उपाधि।

परममहत् [वि.] (सं.) सबसे बड़ा और व्यापक।

परममाननीय [वि.] (सं.) [स्त्री. परममाननीया] परम सम्माननीय। अत्यधिक आदर और सम्मान के योग्य। ऑनरेबुल मोस्ट।

परमरस [संज्ञा पु.] (सं.) पानी मिला हुआ मट्ठा।

परमर्दिदेव [संज्ञा पु.] (सं) महोबे के चंदेलवंशी राजा जो आल्हा में राजा परमाल के नाम से विख्यात हैं।

परमर्षि [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास आदि ऋषि।

परमल [संज्ञा पु.](हिं.) १–ज्वार या गेहूँ का भूना हुआ दाना। ※२–देखो 'परिमल'।

परम-सत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सत्ता या शक्ति जो सबसे बढ़कर हो तथा जिसके ऊपर अन्य कोई सत्ता अथवा शक्ति न हो। एब्सोल्यूट-पॉवर।

परमसत्ताधारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे परम अथवा सर्वोच्च सत्ता या अधिकार प्राप्त हो। सॉवरेन।

परमहंस [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह संन्यासी जो ज्ञान की परम अवस्था को प्राप्त कर चुका हो। कुटीचक, बहुदक, हंस, और परमहंस नाम से संन्यासियों के चार भेद स्मृतिकारों ने किये इनमें परमहंस सबसे श्रेष्ठ माना गया है। परमात्मा।

परमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चव्य। २–शोभा। छवि। खूबसूरती। +[संज्ञा पु.](हिं.) प्रमेह-रोग।

परमाटा [संज्ञा पु.] (देश.) संगीत में एक ताल। [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'परमटा'।

परमाणु [संज्ञा पु.] (सं.) १–पृथ्वी, जल, तेज और इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिससे फिर विभाग नहीं हो सकते। अत्यन्त सूक्ष्म अणु। २–किसी तत्व का वह अत्यन्त सूक्ष्म भाग जिसका और विभाग ही न हो सकता हो। एटम।

परमाणुबंम [संज्ञा पु.] (हिं.) अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुओं के आधार पर बना हुआ महाविनाशकारी विस्फोटक, जिसके फटने पर लगभग तीन मील के घेरे में कुछ भी नहीं बचता, प्राणियों, भवनों और वृक्ष सबको भस्म कर डालता है। एटमबम।

परमाणुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १–न्याय तथा वैशेषिक का यह मत या सिद्धान्त कि परमाणुओं से ही जगत् की सृष्टि हुई है। २–अत्यन्त सूक्ष्म अणुओं से विस्फोटक शक्ति उत्पन्न करने का सिद्धान्त।

परमाणुवादी [संज्ञा पु.] (सं.) १–परमाणुओं के योग से सृष्टि की उत्पत्ति मानने वाला। सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में न्याय तथा वैशेषिक का मत मानने वाला। २–परमाणुओं में अपरमित शक्ति है और उस शक्ति का उपयोग निर्माण और विनाश दोनों में हो सकता है, ऐसा मानने वाला।

परमात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) परब्रह्म। ईश्वर। परमेश्वर।

परमादेश [संज्ञा पु.] (सं.) वह आदेश अथवा आज्ञा जो सर्वोपरि हो तथा जिसमें किसी प्रकार का कोई भी परिवर्तन या हेरफेर न हो सकता हो।

परमाद्वैत [संज्ञा पु.] (सं.) १–परब्रह्म या परमात्मा। २–नितान्त भेद विकल्परहितवाद। जीव और ब्रह्म में अभेद की कल्पना करने वाला वेदान्त का एक सिद्धान्त।

परमानंद, परमानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १–बहुत बड़ा सुख। २–ब्रह्म के अनुभव का सुख। ३–ब्रह्मानन्द। परमात्मा।

परमान※ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–प्रमाण। सबूत। २–यथार्थ बात। सत्य बात। ३–सीमा। मिति। अवधि। हद।

परमानना※ [क्रि. स.] (हिं.) १–प्रमाण मानना। २–स्वीकार करना। सरकाना।

परमान्न [संज्ञा पु.] (सं.) दूध में पके हुए चावल खीर जो देवताओं को अत्यन्त प्रिय है।

परमायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्य के जन्मकाल की चरम सीमा जो सौ वर्ष मानी जाती है।

परमायुष [संज्ञा पु.] (सं.) विजयसाल का पेड़।

परमार [संज्ञा पु.] (हिं.) राजपूतों की जाति की एक प्रधान शाखा। पँवार।

परमारथ※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परमार्थ'।

परमार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १–सर्वोच्च या सर्वोत्कृष्ट सत्य। सत्य आत्मज्ञान। २–जीव और ब्रह्म-संबंधी ज्ञान। ३–सत्य। कोई भी उत्तम और आवश्यक वस्तु। ४–उत्तम भाव। ५–उत्तम प्रकार की संपत्ति। ६–परोपकार।

परमार्थता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सत्यभाव। यथार्थता

परमार्थवादी [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञानी। वेदांती। तत्वज्ञ।

परमार्थविद् [वि.] (सं.) परमार्थवेत्ता।

परमार्थी [वि.] (हिं.) १-यथार्थ तत्व को खोजने वाला। तत्वजिज्ञासु। २-मोक्ष चाहने वाला। मुमुक्षु। ३-परोपकारी।

परमाह [संज्ञा पु.] (सं.) शुभदिन। अच्छा दिवस

परमिट [संज्ञा पु.] (अ.) कोई विशेष कार्य करने अथवा कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए मिलने वाला आज्ञापत्र या अधिकारपत्र।

परमिति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चरम सीमा। अंतिम मर्यादा या हद।

परमीकरणमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रमतानुसार देवताओं को आह्वान करने की एक मुद्रा जिसमें हाथ के दोनों अंगूठों को एक में गांठकर उँगलियों को फैलाते हैं।

परमुख* [वि.] (हिं.) १-विमुख। पीछे फिरा हुआ। २-प्रतिकूल आचरण करने वाला।

परमृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौवा। (ऐसा कहा जाता है कि कौए स्वयं नहीं मरते)।

परमेश, परमेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार तथा जगत् का कर्त्ता तथा परिचालक सगुण ब्रह्म। २-विष्णु। शिव।

परमेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा या देवी का नाम।

परमेष्ट [वि.] (सं.) जो परम इष्ट अथवा प्रिय हो

परमेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) चतुर्मुख ब्रह्म। प्रजापति।

परमेष्ठिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-परमेष्ठी की शक्ति। देवी। २-श्री। ३-वाग्देवी। ४-ब्राह्मी जड़ी।

परमेष्ठी [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २-विष्णु। ३-शिव। ४-एक जिन का नाम। ५-चाक्षुष मनु। ६-गरुड़।

परमेसर* [संज्ञा पु.] (हिं.) परमेश्वर।

परमेसुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) परमेश्वर।

परमैश्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वोत्कृष्ट ऐश्वर्य।

परमोद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रमोद'।

परमोदना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'परबोधना'। २-मीठी-मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाना।

परयंक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्यंक'।

परयस्तापहनुति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पर्यस्तापह्नुति'।

परराज्य-निष्कासन [संज्ञा पु.] (सं.) विदेशी को अपने देश से निकालना या जिस देश का वह निवासी हो उसको सौंपना। एक्सट्रेडिट।

परराज्य-निष्कासन-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य का वह अधिकारी जो परराज्य निष्कासन या प्रत्यर्पण कार्य करता हो। एक्सट्रेडिशन ऑफिसर।

परराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) अपने राष्ट्र या देश से भिन्न राष्ट्र या देश।

परराष्ट्र-मंत्री, परराष्ट्र-मन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक क्षेत्र में अपने राष्ट्र से भिन्न या अन्य बाहरी राष्ट्र अथवा देशों से सम्बन्ध रखने वाला मन्त्री। फारेन-मिनिस्टर।

परराष्ट्र-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजकीय विभाग जो अपने देश से भिन्न देशों से राजनैतिक संबंध रखता है तथा जिसकी ओर से विदेशों में राजदूत भेजे जाते हैं। विदेशी विभाग। *एक्सटर्नल-अफेयरस्*।

परराष्ट्रसचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परराष्ट्र-मंत्री'।

परराष्ट्रिय [वि.] (सं.) राजनैतिक क्षेत्र में अपने राष्ट्र से भिन्न, दूसरे या बाहरी राष्ट्र से संबंध रखने वाला। फॉरेन।

पररु [संज्ञा पु.] (सं.) नील-भृंगराज। नीली भंगरैया।

परलउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रलय'।

परलय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सृष्टि का नाश अथवा अंत। प्रलय।

परला [वि.] (हिं.) [स्त्री. पाली] उस ओर का। दूसरी तरफ का।

परले दर्जे का परले सिरे का-हद दरजे का *परले पार होना*-१-बहुत दूर तक जाना। २-समाप्त होना।

परलै* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रलय'।

परलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरा लोक। वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है। २-मृत्यु के उपरान्त आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति।

परलोकवासी-मृत। मरा हुआ (आदर में) *परलोक-वास*-मृत्यु। *परलोकगामी होना*-मरना। *परलोक सिधारना*-मरजाना।

परलोकगत [वि.] (सं.) मरा हुआ। मृत।

परलोकगमन [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु।

परलोकगामी [वि.] (सं.) मरा हुआ। मृत।

परलोकप्राप्ति [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मरण।

परवत् [वि.] (सं.) परवश। पराधीन। पराश्रित।

परवर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परवल। देखो 'प्रवर'।

[संज्ञा पु.] (?) आँख का एक रोग।

परवरदिगार [संज्ञा पु.] (फा.) १-पालन करने वाला। २-ईश्वर।

परवरिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पालन-पोषण।

परवल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बेल जिसे टट्टियों पर चढ़ाते हैं तथा जिसके फलों की तरकारी बनाते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कटु, तिक्त, पाचन, दीपक, हृद्य, वृष्य, उष्ण, सारक और कफ, पित्त, ज्वर दाह को हटाने वाले माने जाते हैं। २-चिचुड़ा जिसके फलों की तरकारी होती है।

परवश [वि.] (सं.) जो दूसरे के वश में हो।
धीनता। पराश्रित।

परवश्य [वि.] (सं.) पराधीन। पराश्रित।

परवश्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पराधीनता।

परवस्ती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परवरिश।
पोपण।

परवा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. परई]
वना कटोरे की आकृति का वरतन।
[संज्ञा स्त्री.] पक्ष की पहली तिथि।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चिंता।
आशंका। खटका। २-आसरा। भरोसा।
(किसी के) महत्व, शक्ति आदि का
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की

परवाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो
'परवाह'।

परवाच्य [वि.] (सं.) जिसे दूसरे बुरा कहें।
निंदित।

परवाज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) उड़ान।

परवाणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्माध्यक्ष।
वत्सर। ३-कुमार कार्त्तिकेय का
मयूर।

परवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अफवाह। निन्दा।
२-आपत्ति। एतराज। वादविवाद।

परवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वादविवाद करने
वाला। वादी। मुद्दै।

परवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रमाण।
२-यथार्थ वात। सत्य वात। ३-
अवधि। हद।

परवान चढ़ना-१-पूरी आयु तक पहुँचना।
विवाहित होना (स्त्री.)।

परवानगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अनुमति। आज्ञा।

परवानना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो

परवाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-आज्ञापत्र।
फतिंगा। पतंगा। ३-वरी-चूना आदि
का एक वड़ा मान या पात्र।

परवाने नवीस-परवाना लेखक।

परवाया [संज्ञा पु.] (हिं.) चारपाई के पावों के
नीचे रखने की चीज।

परवाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रवाल'।

परवास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रवास'।

परवासिका, परवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
वंदाक। परगाछा।

परवासी [वि.] (सं.) दूसरे के घर वसने वाला।

परवाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चिन्ता। व्यग्रता।
खटका। आशङ्का। २-ध्यान। ख्याल।
वात वात की ओर चित्त देना। ३-आसरा।
भरोसा। [संज्ञा पु.] (हिं.) वहने का भाव।
परवाह करना-वहाना। धारा में छोड़ना।

परवी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परबी'।

[illegible] [वि.] (हिं.) देखो 'प्रवीण'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा के चारों ओर हल्की बदली के बीच दिखाई पड़ने वाला घेरा। मंडल। चांद की अथाई या कुण्डल।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रवेश'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) परब्रह्म का आवासस्थान। स्वर्ग।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र का एक नाम।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) स्पर्शमणि। पारस पत्थर।

[संज्ञा पु.] (हिं.) स्पर्श। छूना।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) परगाछा। बांदा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का आदेश।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अस्त्र जिसमें एक डंडे के सिरे पर अर्धचंद्राकार लोहे का फल लगा रहता है। तबर। भलुवा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) १-परशु धारण करने वाला। २-परशुराम।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) जमदग्नि ऋषि के पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया था। यह ईश्वर के छठें अवतार माने जाते हैं 'परशु' इनका मुख्य शस्त्र था इसी कारण इनका 'परशुराम' नाम पड़ा।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक जिसमें परशु जैसी तीखी धार वाले पत्ते होते हैं।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) कुठार। कुल्हाड़ी। परशु।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रसंग'।

[illegible], परसङ्गत [वि.] (सं.) १-दूसरे के साथ रहने वाला। २-दूसरे से लड़ने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) जीव। रूह। आत्मा।

[illegible], परसम्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का संबंध।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रशंसा'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छूने की क्रिया या भाव। स्पर्श। छूना। २-पारस पत्थर। स्पर्शमणि।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छूना। छूने का काम। २-छूने का भाव। [वि.] (हिं.) प्रसन्न। खुश। आनंदित।

[illegible] [क्रि. स.] (हिं.) १-छूना। स्पर्श करना। २-छुवाना। स्पर्श कराना। ३-किसी के सामने भोज्य पदार्थ रखना। परोसना।

[illegible] [वि.] (हिं.) देखो 'प्रसन्न'।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रसन्नता'।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) परस पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) परस या उत्तरवर्ती वर्णों के समान वर्ण।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फरसा। परशु। कुठार। कुल्हाड़ा। २-उतना पात्र में रखा हुआ भोजन जितना एक मनुष्य के खाने भर को पर्याप्त हो। पत्तल।

परसाद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रसाद'।

परसादी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रसाद'।

परसाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-स्पर्श कराना। २-भोजन सामने रखवाना। भोजन बँटवाना।

परसामान्य [संज्ञा पु.] (सं.) जैनदर्शन के अनुसार गुणकर्म समवेत-सत्ता।

परसाल [पद.] (हिं.) १-गत वर्ष। पिछले साल। २-आगामी वर्ष। अगले साल। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की जलमें उगने वाली घास।

परसिद्ध* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रसिद्ध'।

परसिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हँसिया।

परसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली जो नदियों में होती है।

परसीया [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी काली और मजबूत होती है। यह मदरास और गुजरात में बहुतायत से होता है।

परसु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परशु'।

परसूक्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक सूक्ष्म परिमाण जो आठ परमाणुओं के बराबर माना गया है।

परसूत* [वि., संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रसूत'।

परसेद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रस्वेद'।

परसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरे की चाकरी। दूसरे की सेवा।

परसों [अव्य.] (हिं.) १-बीते हुए कल से पहले वाला दिन। २-आगामी कल के बाद वाला दिन।

परसोतम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरुषोत्तम'।

परसोर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान जो अगहन में तैयार होता है।

परसौंहाँ [वि.] (हिं.) छूने वाला। स्पर्श करने वाला।

परस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरे की भार्या या पत्नी।

परस्त्रीगमन [संज्ञा पु.] (सं.) पराई स्त्री के साथ संभोग।

परस्पर [क्रि. वि.] (सं.) एक दूसरे के साथ। आपस में।

परस्परानुमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक दूसरे की सलाह।

परस्परोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।

परस्वध [संज्ञा पु] (सं.) कुठार। कुल्हाड़ी।

परहरना* [क्रि. स.] (हिं.) त्यागना। छोड़ना।

परहार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'प्रहार'। २-देखो 'परिहार'।

परहारी [संज्ञा पु.] (हिं.) जगन्नाथजी के मंदिर के पुजारी जो मन्दिर ही में रहते हैं।

परहित [वि] (सं.) १-शुभचिन्तक। परोपकारी। २-दूसरे के लिए लाभकारक।

परहेज [संज्ञा पु.] (फा.) १-खाने-पीने आदि का संयम। २-दोषों, पापों या बुराइयों से अलग रहना।

परहेजगार [संज्ञा पु.] (फा.) १-परहेज करने वाला। संयमी। कुपथ्य न करने वाला। २-बुराइयों से बचने वाला। दोषों से दूर रहने वाला।

परहेजगारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-परहेज करने का काम। संयम। २-दोषों और बुराइयों का त्याग।

परहेलना* [क्रि. स.] (हिं.) अनादर या तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

परांगद, पराङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

परांग-भक्षी, पराङ्ग-भक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो दूसरों के अंग खाकर रहता हो। २-कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियां तथा कीड़े-मकोड़े आदि जो वृक्षों अथवा जीवजंतुओं के शरीर पर रहकर तथा उनका रस या खून चूसकर अपना निर्वाह करते हैं। जैसे—अमरबेल, खटमल आदि।

परांगव, पराङ्गव [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

पराँचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तख्ता। पटरी। २-तख्तों की पटन जो आसपास के तल से ऊँचाई पर हो तथा जिसपर उठा बैठा जा सकता हो। पाटन। ३-बेंडा।

परांज, पराञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेल निकालने का यन्त्र। कोल्हू। २-फेन। ३-छुरी का फल।

परांजन, पराञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परांज'

पराँठा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह चपाती या रोटी जो घी लगाकर तवे पर सेकी जाती है। परौठा।

परांतक, परान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वनाशक। महादेव।

परांतकाल, परान्तकाल [संज्ञा पु.](सं.) मृत्यु का समय।

परांतिका, परान्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मात्रा वृत्त का एक भेद।

परा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चार प्रकार की वाणियों में से पहली जो नाद-स्वरूप मानी जाती है। २-परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या। ब्रह्म-विद्या। उपनिषदविद्या। ३-एक प्रकार का सामगान। ४-एक नदी का नाम। ५-गंगा। ६-बाँझककोड़ा। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-जो सबसे परे हो। २-श्रेष्ठ। उत्तम। [अव्य.] (सं.) एक अव्यय जो दूर, पीछे, एक ओर आदि-आदि अर्थ में

प्रयुक्त होना है। यथा-पराधीन, परागत। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रेशम खोलने वालों का एक औज़ार। २-पंक्ति। कतार।

पराक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुस्मृति के अनुसार प्रायश्चितस्वरूप किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत जिसमें चार दिन तक निराहार रहा जाता है। २-बलिदान देने की तलवार। ३-एक प्रकार का रोग। ४-एक क्षुद्र जन्तु। [वि.] (सं.) छोटा।

पराकाश [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दूर की आशा या उम्मेद। दूरदर्शिता। (शतपथ-ब्राह्मण)।

पराकाष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चरम सीमा। सीमान्त। हद। अन्त। २-गायत्री का एक भेद। ३-ब्रह्मा की आधी आयु।

पराकोटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पराकाष्ठा। ब्रह्मा की आधी आयु।

पराकपुष्पी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपामार्ग। चिचड़ी।

पराक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-बल। शक्ति। २-पुरुषार्थ। पौरुष। उद्योग।

पराक्रम चलना-उद्योग हो सकना।

पराक्रमी [वि.] (हिं.) १-बलवान। बलिष्ठ। २-वीर। बहादुर। पुरुषार्थी। उद्योगी। उद्यमी।

पराक्रमज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु के बल को जानने वाला।

पराक्रांत, पराक्रान्त [वि.] (सं.) १-आक्रमण किया हुआ। २-पीछे भगाया हुआ।

पराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्परज। वह रज या धूल जो फूलों के बीच लम्बे केसरों पर जमी रहती है। २-धूल। रज। ३-एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण जो स्नानोपरान्त शरीर में मला जाता है। ४-चन्दन। ५-चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण करना। ५-उपराग। ६-कपूर की धूल या चूर्ण। कपूर-रज। ७-विख्याति। ८-एक पर्वत का नाम। ९-स्वच्छन्द गति या गमन मनमौजीपन।

परागकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों के मध्य के लम्बे-पतले सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।

परागति [संज्ञा स्त्री.] गायत्री।

परागना* [क्रि. अ.] (हिं.) अनुरक्त होना।

परागम [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु का आगमन।

पराङ्मुख [वि.] (सं.) १-मुँह फेरे हुए। विमुख। जो ध्यान न दे। उदासीन। ३-विरुद्ध।

पराङ्मुखता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिकूलता। विमुखता।

पराच् [वि.] (सं.) [स्त्री. पराची] १-प्रतिलोमगामी। उलटा चलने वाला। २-अर्द्धगामी। अप्रत्यक्षगम्य। बाह्योन्मुख।

पराचित [वि.] (सं.) दूसरे से पाला-पोसा हुआ।

पराचीन [वि.] (सं.) १-सामने की ओर भगाया हुआ। २-ध्यान देने वाला। ३-उत्तरकालभव दूसरी ओर अवस्थित।

पराजय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हार जाने की क्रिया, भाव या अवस्था। हार।

पराजिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परज नामक एक रागिनी।

पराजित [वि.] (सं.) परास्त। पराभूत। हारा-हुआ।

पराजिष्णु [वि.] (सं.) विजयी। जीता हुआ।

पराण* [संज्ञा पु.] ((सं.) देखो 'प्राण'।

पराणुत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगा देने की क्रिया हटा देने की क्रिया।

परातंस [वि.] (सं.) धक्का देकर हटाया हुआ।

परात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थाली के आकार का बरतन। बड़ा थाल।

परातर [वि.] (सं.) बहुत दूर।

परात्पर [वि.] (सं.) जिसके परे कोई दूसरा न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमात्मा। २-विष्णु।

परात्प्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) कुश की तरह की एक घास। जिसमें जौ या गेहूं के से दाने पड़ते हैं। उलपतृण।

परात्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परमात्मा। परब्रह्म। २-दूसरे की आत्मा।

परादन [संज्ञा पु.] (सं.) फारसदेश का घोड़ा।

पराधीन [वि.] (सं.) परवश। जो दूसरे के अधीन हो।

पराधीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परतंत्रता। २-दूसरे की अधीनता।

परान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्राण'।

पराना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) भागना।

परान्न [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का दिया हुआ भोजन। पराया अन्न।

परान्नपरिपुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे के भोजन से बना हुआ। (परिपुष्ट) शरीर।

परान्नभाजी [वि.] (सं.) दूसरे का या पराया अन्न खाने वाला।

परापर [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा।

पराभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराजय। हार। २-तिरस्कार। मानध्वंस। ३-विनाश। ४-वैश्य-युग के अन्तर्गत पांचवाँ वर्ष। (बृहत्संहिता) ५-दूसरे को दबाकर अपने अधीन करना। सबजुगेशन।

पराभिक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के वानप्रस्थ जो गृहस्थों के घर से थोड़ी भिक्षा लेकर वन में अपना कालक्षेप करते हैं।

पराभिध [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकुम। केशर।

पराभूत [वि.] (सं.) १-पराजित। हारा हुआ। २-ध्वस्त। नष्ट। तिरस्कृत।

परामर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकड़ना। खींचना। २-विवेचन। विचार। ३-निर्णय। मान। ५-स्मृति। याद। ६-युक्ति। मंत्रणा। कन्सल्टेशन।

परामर्शदाता [संज्ञा पु.] (सं.) परामर्श या देने वाला। सलाहकार। एडवाइज़र।

परामर्शदात्री [क्रि. स.] (सं.) परामर्श या देने वाली। एडवाइजरी।

परामर्शदात्री-परिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) या सलाह देने के लिए चुने हुए या नियुक्त किये हुए सदस्यों की सभा। एडवाइज़री कौन्सिल।

परामर्शदात्री-पर्षद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नियुक्त किये हुए परामर्शदाताओं या कारों का मण्डल। एडवाइजरीबोर्ड।

परामर्शदात्री-समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विशेष कार्य के निमित्त परामर्श या देने के लिये बनी हुई छोटी सभा या एडवाइजरी कमिटी।

परामर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खींचना। रण। चिंतन। ३-विचार करना। ४-करना। मशवरा करना।

परामर्शी [वि.] (सं.) परामर्श, सलाह या वरा देने वाला।

परामर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परामर्श'।

परामृत [वि.] (सं.) जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। जो मृत्यु आदि के बन्धन से छूट हो। मुक्त।

परामृश्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उचित या औचित्य।

परामृष्ट [वि.] (सं.) १-स्पर्श किया हुआ। हुआ। पकड़ा हुआ। २-बुरी तरह किया हुआ। निर्णय किया हुआ। ४-हुआ। ५-सम्बन्ध किया हुआ। ६-क्रांत ७-जिसकी सलाह दी गई हो।

परायचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-सिलेसिलाये बेचने वाला। २-कपड़ों के कटे हुए की टोपियां आदि बनाकर बेचने वाला।

परायण [वि.] (सं.) (स्त्री. परायणा) १-गया हुआ। २-निरत। प्रवृत। लीन। लगा हुआ। [संज्ञा पु.] १-भागकर लेने का स्थान। आश्रय। २-विष्णु।

परायणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परायण होने भाव। तत्परता।

परायति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तर-काल। वाला समय। [वि.] पराधीन। परवश।

परायत्त [वि.] (सं.) परवश। पराधीन।

पराया [वि.] (हिं.) [स्त्री. पराई] १-दूसरे का। और का। अन्य का। २-जो आत्मीय न हो। दूसरा। गैर।

अपना पराया समझना-१-भले बुरे या मित्र की पहचान करना। २-भेदभाव रखना।

परायु [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्मा।

परार* [वि.] (हिं.) दूसरे का। पराया। बिराना

परार्ध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परार्द्ध'।

परारु [संज्ञा पु.] (सं.) करेला।

परारुक [संज्ञा पु.] (सं.) पत्थर या चट्टान।

परार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का उपकार या भलाई। परोपकार। [वि.] (सं.) जो दूसरे के लिए हो।

परार्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परार्थ होने का भाव। परोपकारिता।

परार्थवाद [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य को दूसरे की भलाई करते रहना चाहिए, ऐसा मत या सिद्धांत। एलट्रुइज्म।

परार्थवादी [वि.] (सं.) परार्थवाद सिद्धांत का मानने वाला। दूसरे की भलाई में विश्वास रखने वाला।

परार्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब से बड़ी संख्या। वह संख्या जिसे लिखने में अठारह अंक आते हैं। एक शंख १००००००००००००००००० २-ब्रह्मा की आयु का आधा काल।

परार्द्धि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

परारब्ध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रारब्ध'।

परावत [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा।

परावन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक साथ बहुत से लोगों का भागना। भगदड़। पलायन। [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्रामीणों का घर के बाहर डेरा डालकर पूजा तथा उत्सव करने की रीति

परावर [वि.] (सं.) [स्त्री परावरा] १-सर्वश्रेष्ट। २-अगला पिछला। निकट का दूर का।

परावरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की विद्या।

परावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रत्यावर्त्तन। लौटने या पलटने का भाव। पलटाव। २-बदलौअल। अदलबदल। विनिमय। लेनदेन। ३-फिर से पाने की क्रिया। पुनः प्राप्ति। ४-सजा का बदला जाना।

परावर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संपत्ति, दायित्व, स्वत्व आदि को दूसरे को देने या लौटाने वाला। हस्तांतरकर्त्ता। ट्रांसफरर।

परावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलटना। लौटना। प्रत्यावर्तन। २-जैनदर्शनानुसार ग्रन्थों का का दोहराना। ३-उलटकर फिर ज्यों का त्यों होना। रिवर्शन। ४-(संपत्ति स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में लौटना या पलटना। हस्तांतरित करना। ट्रांसफर।

परावर्तनवाद [संज्ञा पु.] (सं.) आकस्मिक क्रान्ति द्वारा साम्यवाद की स्थापना का सिद्धांत। रिवर्शनिज्म।

परावर्तन-व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) दुबारा विचार करने की प्रार्थना। अपील।

परावर्तनीय [वि.] (सं.) (संपत्ति, स्वत्व आदि का) प्रत्यावर्तन करने योग्य। हस्तान्तर योग्य। लौटाने योग्य। ट्रांसफरेबल।

परावर्तित [वि.] (सं.) पलटाया हुआ। लौटाया हुआ।

परावर्ती [वि.] (सं.) १-लौटकर फिर अपने स्थान पर आने वाला। २-फिर से ज्यों का त्यों हो जाने वाला।

परावर्त्त-व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुकदमे की फिर से जाँच। २-मुकदमे के निर्णय पर फिर से विचार।

परावर्त्तित [वि.] (सं.) लौटाया हुआ। पलटाया हुआ पीछे फिरा हुआ।

परावर्त्त्य [वि.] (सं.) देखो 'परावर्तनीय'।

परावसु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शतपथ ब्राह्मण के अनुसार असुरों के पुरोहित का नाम। २-महाभारत के अनुसार रैम्यमुनि के एक पुत्र का नाम। ३-एक गंधर्व का नाम। ४-विश्वमित्र के एक पौत्र का नाम।

परावह [संज्ञा पु.] (सं.) वायु के सात भेदों में से एक।

परावा+ [वि.] (हिं.) पराया।

परावृत्त [वि.] (सं.) १-पलटा या पलटाया हुआ। २-फेरा हुआ। ४-लौटाकर दिया हुआ।

परावृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पलटने या पलटाने का भाव। पलटाव। २-मुकदमे का फिर से विचार या फैसला।

परावेदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भटकटैया। कटाई।

पराव्याध [संज्ञा पु.] (सं.) इतना फासला जितने में फेंका हुआ पत्थर जाकर गिरे।

पराशर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि द्वैपायन वेदव्यास के पुत्र थे। २-चरकसंहिता के अनुसार आयुर्वेद के एक आचार्य का नाम। ३-एक प्रसिद्ध स्मृतिकार का नाम। ४-ज्योतिष-शास्त्र के एक आचार्य जिसकी रची पाराशरी-संहिता है।

पराशरी [संज्ञा पु.] (सं.) भिक्षुक। भिखारी।

पराश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरे का सहारा या अवलम्ब। पराया भरोसा। २-पराधीनता

पराश्रया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँदा। बंदाक। परगाछा।

पराश्रित [वि.] (सं.) १-जिसे दूसरे का ही आसरा हो। २-दूसरे के अधीन।

परास [संज्ञा पु.] (सं.) इतना फासला जितने में उस स्थान से फैंकी हुई वस्तु गिरे। +[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलाश'।

परासन [संज्ञा पु.] (सं.) वध। हत्या।

परासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

परासु [वि.] (सं.) प्राणरहित। जिसका प्राण निकल गया हो। मृत। मराहुआ।

परास्त [वि.] (सं.) १-पराजित। हारा हुआ। २-विजित। ध्वस्त। ३-प्रभावहीन। दबा हुआ।

पराह [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरा दिन।

पराहत [वि.] (सं.) १-आक्रांत। ध्वस्त। २-दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ३-निराकृत। खंडित। ३-जोता हुआ।

पराह्न [वि.] (सं.) दो पहर के बाद का समय। तीसरा पहर। अपराह्न।

परि [उप.] (सं.) एक उपसर्ग जिसके अन्य शब्दों में जोड़ने से निम्न अर्थों की उपलब्धि होती है:—

१-सर्वतोभाव। अच्छी तरह। जैसे-परिपूर्ण २-अतिशय। जैसे-परिवर्द्धन। ३-पूर्णता जैसे-परित्याग, परिताप। ४-दोषाख्यान। जैसे-परिहास, परिवाद। ५-नियम। क्रम जैसे-परिच्छेद। ६-चारों ओर। जैसे परिक्रमण। परिधि।

परिकंप, परिकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) भयंकर कपकपी। भय।

परिक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खोटी चांदी।

परिकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक कथा या कहानी के अन्तर्गत उसी के सम्बन्ध में दूसरी कहानी

परिकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुगत। सहचर। अनुयायियों का दल। लवाजमा। २-समूह। संग्रह। भीड़। ३-आरम्भ। शुरूआत। तैयारी। ४-कमरबंद। कमरपट्टी। पटुका। ५-पर्यंक। पलंग। फैसला। निर्णय। ७-एक अर्थालंकार। जिसमें अभिप्राय पूर्ण विशेषणों के साथ विशेष्य आता है।

परिकरमा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परिक्रमा'।

परिकरांकुर, परिकराङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य अथवा शब्द का प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है।

परिकर्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काटने की सी पीड़ा।

परिकर्तृ [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुरोहित जो अविवाहित बड़े भाई के रहते छोटे भाई का विवाह करावे।

परिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) देह में केसर, चन्दन आदि का उबटन लगाना। शरीर-संस्कार।

परिकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) परिचारक। सेवक। नौकर।

परिकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) खींचने की क्रिया।

परिकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) खींचने की क्रिया। खींचकर निकालने की क्रिया।

परिकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) खींचकर दूसरे स्थान में ले जाना।

परिकलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो परिकलन करता हो। हिसाब लगाने अथवा लेखा ठीक करने वाला। २-एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से बहुत बड़े-बड़े हिसाब थोड़े समय

में सरलता पूर्वक लगाये जाते हैं। कैलकुलेटर ३–वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के लगे हुए हिसावों के बहुत से कोष्ठक होते हैं। कैलक्युलेटर।

परिकलन [संज्ञा पु.] (सं.) गिनने अथवा हिसाव लगाने का काम। गणना करना। कैलक्युलेशन।

परिकलित [वि.] (सं.) जिसका परिकलन हो चुका हो। लेखा अथवा हिसाब लगाकर ठीक किया हुआ।

परिकल्कन [संज्ञा पु.] (सं.) धोखेबाजी। दगाबाजी। प्रवंचना।

परिकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्थिर। निश्चय। निर्देश। ३–रचना। बनावट।

परिकल्पन [संज्ञा पु.] (सं.) १–मनन। चिंतन। बनावट। रचना। अविष्कार। ३–सम्पन्न करण। विभक्तकरण। बटवारा।

परिकल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जिस बात की बहुत कुछ सम्भावना हो, उसे प्रथम ही मान लेना अथवा उसकी कल्पना कर लेना। २–केवल तक के लिए कोई बात मान लेना। ३–ऐसी बात मान लेना जो अभी प्रमाणित न हुई हो। *हाइपॉथेसिस*। ४–कुछ विशिष्ट आधारों पर कोई बात ठीक मान लेना। *प्रिजम्प्शन*।

परिकल्पित [वि.] (सं.) १–कल्पना किया या सोचा हुआ। विचारा हुआ। २–मन में गढ़ा-हुआ। मनगढ़न्त। ३–निश्चित ठहराया हुआ ४–मनमें सोचकर बनाया हुआ। रचित।

परिकांक्षित, परिकाङ्क्षित [संज्ञा पु.] (सं.) भक्त। साधु। संन्यासी।

परिकीर्ण [वि.] (सं.) १–फैला हुआ। विखरा हुआ। २–घिरा हुआ। भीड़-भाड़ से युक्त। परिपूर्ण।

परिकीर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) गुणों का विस्तृत वर्णन। अधिक प्रशंसा।

परिकीर्तित [वि.] (सं.) प्रशंसा किया हुआ। कहा हुआ। गाया हुआ।

परिकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १–नगर अथवा दुर्ग के फाटक पर की खाई। २–एक नागराज का नाम

परिकृश [वि.] (सं.) अति दुर्बल। बड़ा कमजोर।

परिकेश [संज्ञा पु.] (सं.) वाल का अगला भाग।

परिकोप [संज्ञा पु.] (सं.) महान कोप। रोष।

परिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १–टहलना। २–क्रम। सिलसिला। ३–एक के पीछे दूसरे का आना। ४–प्रविष्ट होने वाला। घुसने वाला। ५–फेरी देना। चारों ओर घूमना। ६–किसी कार्य अथवा निरीक्षण के लिए जगह-जगह जाना या घूमना। दौरा। टूर।

परिक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १–टहलना। मन बहकाने के लिए घूमना। २–चारों ओर घूमना। फेरी देना। ३–देखो 'परिक्रम'।

परिक्रमसह [संज्ञा पु.] (सं.) बकरा।

परिक्रमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २–किसी तीर्थ अथवा मंदिर के चारों ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग।

परिक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १–मजदूरी। भाड़ा। २–क्रय। मोल। खरीद।

परिक्रियण [संज्ञा पु.] (सं.) १–मजदूरी। भाड़ा। २–मजदूरी पर काम में लगना। ३–क्रय। खरीद। ४–विनिमय। पलटौअल। अदला-बदली। ५–संधि जो रुपये देकर की गई हो।

परिक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–खाई से घेरने की क्रिया। २–एक प्रकार का यज्ञ जो स्वर्ग की कामना से किया जाता है।

परिक्लांत, परिक्लान्त [वि.] (सं.) थका हुआ। परिश्रांत।

परिक्लिष्ट [वि.] (सं.) १–परिक्षत। २-अति क्लिष्ट

परिक्लेद [संज्ञा पु.] (सं.) तरी। नमी। सील।

परिक्लेश [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यन्त दुःख। कष्ट। कड़ाई।

परिक्वणन [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

परिक्षत [वि.] (सं.) नष्ट। भ्रष्ट।

परिक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) १–अदृश्य हो जाने की क्रिया। बरबादी। हानि। नाश। ३–समाप्त होने की क्रिया।

परिक्षव [संज्ञा पु.] (सं.) छींक।

परिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कीचड़। [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो परीक्षा।

परिक्षाम [वि.] (सं.) दुबला। दुर्बल। पतला और कमजोर।

परिक्षालन [संज्ञा पु.] (सं.) १–धोने या साफ करने की क्रिया।

परिक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा। देखो 'परीक्षित'।

परिक्षिप्त [वि.] (सं.) १–खाई आदि से घेरा हुआ। २–विखरा हुआ। ३–घेरा हुआ। ४–बिछा हुआ। ५–त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ।

परिक्षीण [वि.] (सं.) १–नष्ट हुआ। अंतर्धान हुआ। २–नष्ट किया हुआ। ३–दुबला या लटा हुआ। घिसा हुआ। मिघटा हुआ। ४–नितांत नाश को प्राप्त। ५–खोया हुआ। विनिष्ट किया हुआ। ६–छोटा किया हुआ। घटाया हुआ। ७–दिवाला निकाले हुए। निर्धन

परिक्षीव [वि.] (सं.) नशे में बिलकुल चूर।

परिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १–इधर-उधर भ्रमण करना। टहलना। २–फैलाना। बखेरना। ३–घेरना। छेकना। ४–घेरने की सीमा या घेरा

परिक्षेपक [वि.] (सं.) फेरा लगाने वाला। घूमने वाला।

परिखन [वि.] (हिं.) रक्षक। रखवाली करने वाला

परिखना [क्रि. स.] (हि.) १–प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। वाट जोहना। २–परीक्षा करना। जाँचना।

परिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी नगर या गढ़ के बाहर की नहर जो नगर या गढ़ की रक्षा के लिए खोदी जाती है। खंदक। खाई।

परिखात [संज्ञा पु.] (सं.) १–खंदक। खाई। २–पहिये से वनी लीक या लकीर। ३–खुदाई।

परिखान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ी के पहिये की लीक या लकीर।

परिखेद [संज्ञा पु.] (सं.) थकावट। श्रान्ति।

परिख्यात [वि.] (सं.) विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर।

परिख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कीर्ति। नामवरी। प्रसिद्धि।

परिगण [संज्ञा पु.] (सं.) गृह। घर।

परिगणन [संज्ञा पु.] (सं.) १–भलीभांति गिनना सम्यक रीति से गिनना। २–गिनना। गणना करना। शुमार करना।

परिगणना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिगणन.

परिगणनीय [वि.] (सं.) गिने जाने योग्य।

परिगणित [वि.] (सं.) गिना हुआ। जिसकी गिनती हो चुकी हो।

परिगणित जाति–वह गिनी हुई जातियां जो और जातियों से आर्थिक और शिक्षा संबंधी मामलों में पिछड़ी हुई हैं। *शिडयूल्ड-कास्ट*।

परिगणित-जातीय-संघ [संज्ञा पु.] (सं.) परिगणित जातियों का संघ या समूह। *शिडयूल्ड-कास्ट-फेडरेशन*।

परिगण्य [वि.] (सं.) गिनने योग्य।

परिगत [वि.] (सं.) १–गत। बीता हुआ। गया-गुजरा। २–मृत। मराहुआ। ३–विस्मृत। जिसे भूल गये हों। ४–ज्ञात। जाना हुआ। ५–प्राप्त। मिला हुआ। ६–घेरा हुआ।

परिगदित [वि.] (सं.) कहाहुआ।

परिगर्भिक [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार बच्चों को होने वाला एक रोग जो गर्भिणी माता का दूध पीने से होता है।

परिगर्वित [वि.] (सं.) बहुत गर्वीला। भारी घमण्डी।

परिगर्हण [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी निन्दा। भारी बदनामी।

परिगलित [वि.] (सं.) १–पिघला या गला हुआ। २–डूबा हुआ। ३–टकराया हुआ। गिरा हुआ ३–अदृश्यता को प्राप्त। पिघला या गला हुआ। ५–वहाहुआ।

परिगह [संज्ञा पु.] (हिं) संगी-साथी या आश्रित जन। कुटुम्बी।

परिगहन [संज्ञा पु.] (सं.) घोर अंधकार । भारी अंधेरा ।

परिगीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द का नाम ।

परिगुंठित, परिगुण्ठित [वि.] (सं.) छिपाया-हुआ । ढकाहुआ ।

परिगुंडित, परिगुण्डित [वि.](सं.) धूल से छिपा-हुआ । गर्द से ढकाहुआ ।

परिगूढ़ [वि.] (सं.) १-जो समझ ही में न आवे बड़ी कठिनाई से समझ में आने वाला । २-नितांत गुप्त । अत्यंत गुप्त ।

परिगृहीत [वि.] (सं.) १-स्वीकृत । मंजूर किया हुआ । २-मिलाहुआ । शामिल ।

परिगृह्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाहिता स्त्री ।

परिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिग्रह । ग्रहण लेना । दान लेना । २-पाना । ३-धनादि का संग्रह । ४-सादर कोई वस्तु लेना । स्वीकार । अंगीकार । ५-स्त्री को अंगीकार करना । विवाह । ६-भार्या । पत्नी । स्त्री । ७-परिजन । परिवार के लोग । परिवार । ८-विष्णु का एक नाम । ९-सेना का पिछला भाग । १०-सूर्यग्रहण । ग्रहुग्रस्त-सूर्य । ११-जड़ । उत्पति स्थान । मूल । १२-शपथ । कसम । १३-अनुग्रह । मिहरवानी । १४-कुछ विशिष्ट वस्तुएं संग्रह न करने का व्रत । १५-जैनशास्त्रों के अनुसार तीन प्रकार के गतिवन्धन कर्म—द्रव्यपरिग्रह, भावपरिग्रह, द्रव्यभाव-परिग्रह ।

परिग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब प्रकार से ग्रहण । पूर्णरूप से ग्रहण करना । २-कपड़े पहनना ।

परिग्रहीतृ [संज्ञा पु.] (सं.) पति ।

परिग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) गांव के सामने का भाग ।

परिग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) एक विशेष प्रकार की यज्ञ की वेदी ।

परिग्राह्य [वि.] (सं.) ग्रहण करने योग्य । जो ग्रहण किया जा सके ।

परिघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंडासा । लोहांगी । २-२७ योगों में से एक का नाम । ३-अर्गला अगड़ी । ४-मुद्गर । ५-शूल । भाला । बर्छी ६-कलस । घड़ा । ७-शीशे का घड़ा । ८-घोड़ा । ९-गोपुर । फाटक । १०-घर । ११-स्वामी कार्त्तिकेय का एक अनुचर । १२-तीर । १३-पर्वत । १४-वज्र । १५-शेषनाग । १६-जल । १७-चन्द्र । १८-सूर्य । १९-नदी । २०-स्थल । २१-आनन्द और सुख की निवारक अविद्या । २२-एक चांडाल का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है । २३-बाधा । प्रतिबन्ध । २४-सुश्रुत के मतानुसार एक प्रकार का मूढ़गर्भ । २५-वे बादल उदयास्त के समय सूरज के सम्मुख आ जाते हैं ।

परिघमूढ़गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार वह बालक जो प्रसव के समय योनि के द्वार पर आकर अगड़ी के समान अटक जाता है ।

परिघर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में काम आने वाला एक प्रकार का पात्र ।

परिघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-हत्या । हनन । मार डालना । २-वह अस्त्र जिससे किसी की हत्या की जा सकती है ।

परिघाती [वि.] (सं.) परिघात या हत्या करने वाला ।

परिघोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शोर । होहल्ला । कोलाहल । २-अनुचित कथन । ३-मेघगर्जन बादलों का गरजना ।

परिचक्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी का नाम ।

परिचना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'परचना' ।

परिचपल [वि.] (सं.) अति चंचल । जो किसी समय स्थिर न रहे । जो हर समय हिलता-डुलता अथवा घूमता-फिरता रहे ।

परिचय [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी विषय अथवा वस्तु के संबंध की प्राप्त की हुई या मिली-हुई जानकारी । ज्ञान । अभिज्ञता । अवगति । २-प्रमाण । पहचान । लक्षण । ३-किसी व्यक्ति के नाम-धाम अथवा गुणकर्म आदि से संबंधित सब या कुछ बातें जो किसी को बतलाई जायँ । ४-जान-पहचान । ५-हठयोग में नाद की चार अवस्थाओं में से तीसरी

परिचयपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय लिखा हो । *इन्ट्रोडेक्शन लैटर* । २-किसी वस्तु अथवा संस्था विषयक वह पत्रक या पुस्तिका जिसमें उस वस्तु की सब बातों या संस्था के उद्देश्यों, कार्यक्षेत्रों और कार्य-प्रणालियों आदि का परिचय या विवरण दिया हो । *मेमोरैंडम* ।

परिचर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. परिचरी] १-नौकर । सेवक । चाकर । टहलुवा । २-रोगी की सेवा करने वाला । सुश्रूषाकारी । ३-वह सैनिक जो रथ पर शत्रु के प्रहार से उसकी रक्षा करने के लिए बैठाया जाता है । ४-सेनापति । दंडनायक ।

परिचरजा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परिचर्या' ।

परिचरण [संज्ञा पु.] (सं.) सेवा करना या सेवा । परिचर्या । खिदमत । टहल ।

परिचरणीय [वि.] (सं.) सेवा करने योग्य । परिचर्या करने योग्य ।

परिचरत [संज्ञा-स्त्री.] (डिं.) प्रलय । कयामत ।

परिचरितव्य [वि.] (सं.) सेवा या परिचर्या करने योग्य ।

परिचरिता [संज्ञा पु.] (सं.) सेवक । सेवा करने वाला । सुश्रूषाकारी ।

परिचरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासी । सेविका । लौंडी ।

परिचर्जा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परिचर्या' ।

परिचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेवा । टहल । खिदमत । २-रोगी की सेवा सुश्रूषा ।

परिचायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिचय कराने वाला । जान-पहचान कराने वाला । २-सूचित करने वाला । जताने वाला ।

परिचाय्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ की अग्नि । यज्ञकुण्ड ।

परिचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेवा । टहल । खिदमत । २-वह स्थान जो टहलने या घूमने-फिरने के लिए निर्दिष्ट हो ।

परिचारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेवक । नौकर । भृत्य । २-वह जो किसी रोगी की सेवा करने के लिए नियुक्त हो । सुश्रूषाकारी । ३-वह जो देवमंदिर आदि का कार्य या प्रबंध करता हो ।

परिचारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-टहल या खिदमत करना । सेवकाई । २-सहवास करना । संग करना ।

परिचारना* [क्रि. स.] (हिं.) सेवा करना । खिदमत करना ।

परिचारक [संज्ञा पु.] (सं.) [परिचारिका] सेवक । टहलुवा । खिदमतगार ।

परिचारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासी । सेविका ।

परिचारित [वि.] (सं.) घुमाया गया ।

परिचारी [वि.] (हिं.) १-टहलने वाला । जो भ्रमण करता हो । गश्ती । २-सेवा करने वाला चाकर ।

परिचारी-पत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) गश्ती चिट्ठी । संचारी-पत्र । *सरकुलर-लैटर* ।

परिचार्य [वि.] (सं.) सेव्य । सेवा करने योग्य । जिसकी सेवा करना उचित हो ।

परिचालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलने या चलाने के लिए प्रेरित करने वाला । कन्डक्टर किसी कार्य को जारी करने या आगे बढ़ने वाला । संचालक । ३-गति प्रदान करने वाला हिलाने वाला ।

परिचालकता [संज्ञा स्त्री] (सं.) परिचालन करने की क्रिया, भाव या शक्ति ।

परिचालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलाना । चलाने के लिए प्रेरित करना । २-कार्य कर्म को चलाते रहने की व्यवस्था करना । ३-हिलाना । गति देना ।

परिचालित [वि.] (सं.) १-चलाया हुआ । चलाने में लगाया हुआ । चलने में लगाया हुआ । २-निर्वाह किया हुआ । हिलाया हुआ ।

परिचित [वि.] (सं.) १-जाना-बूझा जिसका परिचय हो चुका हो । २-वह जो किसी को जान चुका हो । अभिज्ञ । ३-जान-पहचान रखने वाला । मिलने-जुलने वाला । मुलाकाती । ४-संचित । इकट्ठा किया हुआ ।

परिचिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिचय । ज्ञान । अभिज्ञता ।

परिचुंबन, परिचुम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) भरपूर प्रेम अथवा स्नेह सहित चुम्बन करना ।

परिचुंबित, परिचुंबित [वि.] (सं.) स्नेह सहित चूमा हुआ । प्रेमपूर्वक चूमाहुआ ।

परिचेय [वि.] (सं.) १-परिचय या जान-पहचान करने योग्य । संचय या इकट्ठा करने योग्य ।

परिचो [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परिचय । ज्ञान ।

परिच्छंद, परिच्छन्द [संज्ञा पु.](सं.) वस्त्र । पहरावा । पोशाक ।

परिच्छद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा आदि के साथ रहने वाले नौकर । अनुचर । २-अनुयायी । लवाजमा । ३-असबाब । सामान ।

परिच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर के ढकने का कपड़ा । आच्छादन । २-पहनने के पूरे कपड़े जो किसी विशेष वर्ग अथवा दल के सब लोगों के पहनने के लिए निर्धारित होते हैं । वर्दी । *यूनिफार्म* । सामान । असबाब । (बरतन आदि) ५-यात्रोपयोगी सामान ।

परिच्छन्न [वि.] (सं.) १-ढकाहुआ । लिपटाहुआ । २-कपड़ा पहने हुए । वस्त्र धारण किए हुए । ४-छायाहुआ । ४-घिराहुआ । ५-छिपाहुआ ।

परिच्छा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परीक्षा' ।

परिच्छिति [संज्ञा पु.](सं.) १-अलगाव । बँटवारा २-लक्षण । निर्णय । ३-पहचान । फैसला । सीमा । अवधि । ५-अध्याय । प्रकरण ।

परिच्छिन्न [वि.] (सं.) १-परिमित । सीमित । २-अलग किया हुआ । विभक्त । बाँटा हुआ । ३-भलीभाँति परिभाषा दिया हुआ । निश्चित किया हुआ । दर्याफ्त किया हुआ ।

परिच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-काटकर विभक्त करने का भाव । खंड या टुकड़े करना । विभाजन । २-ग्रन्थ या पुस्तक का ऐसा विभाग अथवा खंड जिसमें प्रधान विषय के अंगभूत पर स्वतंत्र विषय का वर्णन या विवेचन होता है । ग्रन्थ का कोई स्वतंत्र विभाग । अध्याय । प्रकरण । ग्रंथविच्छेद । ३-सीमा इयत्ता । अवधि । हद । ४-दो वस्तुओं को स्पष्ट रूप से अलग अलग कर देना । परिभाषा द्वारा दो वस्तुओं अथवा भागों का अंतर स्पष्ट कर देना । ५-निर्णय । निश्चय । फैसला । ६-विभाग । बंटवारा ।

परिच्छेदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीमा अथवा इयत्ता निर्धारित करने वाला । हद । मुकर्रर करने वाला । २-पृथक करने वाला । अलगाने वाला । ३-सीमा । हद । ४-परिमाण, गिनती नाप या तोल ।

परिच्छेदकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की समाधि ।

परिच्छेद्य [वि.] (सं.) १-गिनने, नापने अथवा तोलने योग्य । परिमेय । २-अलग करने योग्य । बिलगाने योग्य । २-बांटने योग्य । विभाज्य ।

परिच्युत [वि.] (सं.) १-सब भांति गिरा हुआ । सर्वथा भ्रष्ट या पतित । ३-जाति या पंक्ति से बहिष्कृत । बिरादरी से अलग किया हुआ ।

परिच्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिरना । स्खलन । पतन । भ्रंश ।

परिछत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह छत्र या छतरी जिसकी सहायता से विमान या वायुयान से कूदते हैं । वैमानिक छतरी । हवाई छतरी । *पैराशूट* ।

परिछत्र कूदना–हवाई छतरी के सहारे कूदना ।

परिछत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) वायुसेना का वह सैनिक जो परिछत्र या वैमानिक छतरी की सहायता से उतरता है ।

परिछत्रक-सेना [संज्ञा पु.] (सं.) वायु सेना का वह अंग जो समय पड़ने पर वैमानिक छतरियों से भी उतर सके । छतरीबाज फौज । *पैराट्रुप्स* ।

परिछन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परछन' ।

परिछाहीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परछाईं' ।

परिछिन्न [वि.] (हिं.) देखो 'परिच्छन्न' ।

परिजंक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्यंक' ।

परिजटन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्यटन' ।

परिजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आश्रित लोग । २-परिवार । ३-साथ रहने वाले लोग या सेवक

परिजनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिजन होने का भाव । २-अधीनता ।

परिजन-नाशक-बम [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनजान में फूटने वाला बम या गोला । जननाशक गोला । *एन्टी-पर्सनल-बम्ब* ।

परिजन्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा । २-अग्नि

परिप्त [वि.] (सं.) मुग्ध । मोहित ।

परिजय्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सब ओर जय करने में समर्थ हो । सब ओर जीत सकने वाला ।

परिजल्पित [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा गूढ़ कथन जिससे अपनी श्रेष्ठता और निपुणता प्रकट हो और (अपने स्वामी) की निष्ठुरता, परिवंचना तथा अन्य ऐसे ही दुर्गुण प्रकट हों ।

परिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं) आदि जन्मभूमि । उद्गम । निकास ।

परिजात [वि.] (सं.) उत्पन्न । जन्मा हुआ ।

परिजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने वर्ग, परिवार या साथ के दूसरे व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के न रह जाने पर भी प्राप्त होने वाला दीर्घकालिक जीवन । साधारणतः नियतकाल से अधिक चलने वाला जीवन । *सरवाइवल* ।

परिजीवित [वि.] (सं.) वह जो अपने वर्ग, समुदाय या परिवार के लोगों अथवा पदार्थों की अपेक्षा अधिक काल तक जीता या बचा रहे । *सरवाइवर* ।

परिजीवी [वि.] (सं.) देखो 'परिजीवित' ।

परिज्ञप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जानपहचान । २-बातचीत । कथनोपकथन ।

परिज्ञा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-ज्ञान । २-सूक्ष्मज्ञान । निश्चयात्मक ज्ञान । संशयरहित ज्ञान ।

परिज्ञात [वि.] (सं.) १-जाना हुआ । विशेष या सम्यक् रूप से जाना हुआ । २-निश्चित रूप से जाना हुआ ।

परिज्ञाता [संज्ञा पु.] (हिं.) ज्ञानी । बुद्धिमान ।

परिज्ञान [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी वस्तु का भली भांति ज्ञान । पूर्णज्ञान । सम्यक् ज्ञान । २-निश्चयात्मक ज्ञान । वह ज्ञान जिस पर पूरा भरोसा हो । ३-सूक्ष्मज्ञान । भेद अथवा अन्तर का ज्ञान ।

परिज्ञेय [वि.] (सं.) जानने योग्य ।

परिज्वा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा । २-अग्नि । ३-सेवक । ४-यज्ञ करने वाला । ५-इन्द्र ।

परिडीन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पक्षी का आकाश में चक्कर खाते हुए उड़ना ।

परिणत [वि.] (सं.) १-एक रूप से दूसरे रूप में आया हुआ । रूपांतरित । २-पकाया हुआ । ३-प्रौढ़ । पुष्ट । पक्का ।

[संज्ञा पु.] (सं.) वह हाथी जो दाँतों का प्रहार करने को झुका हुआ हो ।

परिणति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नवन । झुकाव । नीचे की ओर झुकना । अवनति । २-पकावट । पक्वता । पुष्टि । ३-रूपान्तरित्व । बदलना । अवस्थान्तरित्व । परिणयन । विकृति ४-पकना या पचना । ५-पूर्णता । ६-परिणाम । नतीजा । ७-अन्त । समाप्ति । अवसान । ८-जीवन का अवसान । वृद्धावस्था ।

परिणद्ध [वि.] (सं.) १-चारों ओर से ढका या बंधा हुआ । २-चौड़ा । लम्बा । विस्तीर्ण । ३-बाँधा या जकड़ा हुआ ।

परिणय [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह । शादी ।

परिणयन [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह करने की क्रिया । ब्याहना ।

परिणहन [वि.] (सं.) चारों ओर से लपेटा या बांधा हुआ ।

परिणाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारों ओर से बांधने का भाव । २-लपेटने या आवृत करने का भाव ।

परिणाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-बदलने का भाव या कार्य । एक अवस्था या रूप का परित्याग करके दूसरे रूप या अवस्था को प्राप्त होना । रूपान्तर-प्राप्ति । २-स्वाभाविक रीति से रूप परिवर्त्तन अथवा अवस्थांतर प्राप्ति । मूल

प्रकृति का उलटा। विकृति। विकारप्राप्ति। ३-किसी कार्य के अन्त में उसके फलस्वरूप होने वाला कार्य या बात। नतीजा। फल। रिजल्ट। ४-प्रथम या प्राकृतरूप अथवा अवस्था से च्युत होने के उपरान्त प्राप्त हुआ अन्य रूप या अवस्था। किसी वस्तु का कार्यावस्था। विकृति। ५-किसी एक धर्म के निवृत्त होने पर दूसरे धर्म की प्राप्ति। एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति। ६-पकने या पचने का भाव। पाक। ७-विकास। बाढ़। वृद्धि। ८-वृद्ध होना। बूढ़ा होना। ९-बीतना। समाप्त होना। अवसान। १०-एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) को प्रकृत (उपमेय से एक रूप होकर कोई कार्य करना) कहा जाय।

परिणाम-दर्शी [वि.] (सं.) जिसे काम करने से पहले उसका नतीजा मालूम हो जाय। फल को सोचकर कार्य करने वाला। सूक्ष्मदर्शी। दूरदर्शी।

परिणाम-दृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी कार्य के परिणाम या फल को जान लेने की शक्ति। आगामी फल की ओर दृष्टि।

परिणामन [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिणत करना। पूर्ण पुष्ट और वर्द्धित करना। २-जाति अथवा संघ का उद्दिष्ट वस्तु को अपने काम में लाना (बौद्ध)।

परिणामपथ्य [वि.] (सं.) अन्त में गुणकारी।

परिणामवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसके अनुसार संसार की उत्पत्ति नाश आदि नित्य परिणामरूप में मानी जाती है।

परिणामशूल [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन पचने के समय पेट में उत्पन्न होने वाला। शूल या दर्द। वायगोले का दर्द।

परिणामित्व [संज्ञा पु.] (सं.) बदलने का स्वभाव या धर्म। परिवर्त्तनशीलता।

परिणामिनित्य [वि.] (सं.) जो नित्य हो पर बदलता रहे। जो एक रस न होकर भी अविनाशी हो।

परिणामी [वि.] (सं.) [स्त्री परिणामिनी] १-जो बराबर बदलता रहे। जिसका बदलने का स्वभाव हो। २-जो परिवर्त्तन स्वीकार करे। बदलने वाला।

परिणाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शतरंज की गोट की चाल। २-सब ओर चलाना। ३-विवाह। ब्याह।

परिणायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नेता। चलाने वाला। पथप्रदर्शक। २-सेनापति। ३-स्वामी। पति। भर्त्ता।

परिणायक-रत्न [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध-चक्रवर्ती राजाओं के साथ सप्तधन या सात कोषों में से एक।

परिणाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-विस्तार। फैलाव। विशालता। चौड़ाई। २-दीर्घ श्वास। लम्बी साँस।

परिणाहवान [वि.] (हिं.) विस्तारयुक्त। फैला-हुआ। प्रशस्त।

परिणाही [वि] (सं) विस्तारयुक्त फैलाहुआ। विस्तृत।

परिणिंमक [वि.] (सं.) १-खाने वाला। चखने-वाला। २-चुम्बन करने वाला।

परिणिंसक [वि.](सं.) १-चूमने वाला। २-खाने-वाला।

परिणिंसा [संज्ञा स्त्री:] (सं.) १-चूमना। चुम्बन २-खाना। भक्षण।

परिणिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्ण निपुणता।

परिणीत [वि.] (सं.) १-विवाहित। जिसका विवाह हो गया हो। ३-समाप्त। पूर्ण।

परिणीतरत्न [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'परिणायक-रत्न'।

परिणीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाहित स्त्री।

परिणेता [संज्ञा पु.] (सं.) पति। खसम। स्वामी भर्ता।

परिणेया [वि.] (सं.) विवाह करने योग्य (स्त्री)। पति या भार्या बनने के उपयुक्त।

परितः [अव्य.] (हिं.) १-सब ओर। चारों ओर। २-सब प्रकार। सम्पूर्ण रूप से। सर्वतोभाव से।

परितच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रत्यक्ष'।

परितत्नु [वि.] (सं.) सर्वत्र व्याप्त। सब ओर फैलाहुआ।

परितप्त [वि.] (सं.) १-अत्यंत गर्म। जलता-हुआ। तपाहुआ। २-दुखित। संतप्त। जिसे दुःख पहुँचा हो। पीड़ित। परिताप करने या पछताने वाला।

परितप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलन। तपन। गरमी। दाह। २-दुःख। क्लेश। पीड़ा। व्यथा। दर्द।

परितर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभांति तृप्ति। सन्तोष। प्रसन्नता।

परिताप [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यन्त जलन। गरमी। आंच। ताव। २-दुःख। क्लेश। पीड़ा। व्यथा। दर्द। तकलीफ। ३-मानसिक दुःख या क्लेश। मनस्ताप। संताप। रंज। ४-पश्चाताप। पछतावा। ५-भय। डर। ६-कंप। कँपकँपी। ७-एक विशेष नरक का नाम.

परितापी [वि.] (हिं.) १-दुखित या व्यथित। परितापयुक्त। २-परितापकर्ता। सताने या पीड़ा देने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) उत्पीड़क। सताने वाला।

परितिक्त [वि.] (सं.) अत्यन्त तीता। बहुत तिक्त [संज्ञा पु.] नीम। निंब।

परितुष्ट [वि.] (सं) १-खूब सन्तुष्ट। अच्छी तरह से सन्तुष्ट। २-प्रसन्न। खुश। आह्लादित। हर्षित।

परितुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परितुष्ट होने का भाव। संतुष्टता। २-खुशी। प्रसन्नता।

परितृप्त [वि.] (सं.) अघायाहुआ। संतुष्ट। तृप्त

परितृप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संतुष्टि। तृप्ति। अघाना।

परितोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-संतोष। तृप्ति। किसी काम या बात के ठीक तरह से होने पर प्रसन्नता तथा सन्तोष होना। वह सुख जो मन के अनुसार कार्य होने पर होता है। *सैटिस्फैक्शन*। २-प्रसन्नता। खुशी।

परितोषक [संज्ञा पु.] (सं) परितोष या संतुष्ट करने वाला। प्रसन्न या खुश करने वाला।

परितोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी का परितोष करने की क्रिया या भाव। पूरी तरह से सन्तुष्ट करना या होना। २-वह धन जो किसी को सन्तुष्ट करने अथवा उसका परितोष करने के लिए दिया जाय। *ग्रैटिफिकेशन*

परितोषद [वि.] (सं.) परितोष देने या सन्तुष्ट करने वाला।

परितोषवान् [वि.] (सं.) सन्तुष्ट। परितुष्ट।

परितोषी [वि.] (हिं.) सन्तोषी।

परितोस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परितोष'।

परित्यक्त [वि.] (सं.) [स्त्री. परित्यक्ता] त्यागा छोड़ा अथवा अलग किया हुआ। अबैंडन्ड।

परित्यक्ता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] त्यागी या छोड़ी हुई। [संज्ञा पु.] (सं) परित्याग करने वाला। छोड़ने वाला। छोड़ने वाला।

परित्यजन [संज्ञा पु.] (सं.) परित्याग की क्रिया। छोड़ना। निकलना। अबैन्डमैंट।

परित्यज्य [वि.] (सं.) त्यागने, छोड़ने, फैंकने या निकालने योग्य।

परित्याग [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोड़ देना। त्याग देना। २-अपना अधिकार या स्वत्व सदा के लिए और पूरी तरह से छोड़ना। ३-किसी वस्तु अथवा प्राणी से सदा के लिए संबंध तोड़ लेना।

परित्यागना* [क्रि स.] (हिं) छोड़ देना। त्यागना।

परित्यागी [वि.] (सं.) त्याग करने वाला। छोड़ने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने किसी व्यक्ति, संपत्ति अथवा वस्तु का परित्याग कर दिया हो।

परित्याजन [संज्ञा पु.] (सं.) परित्याग की क्रिया। छोड़ना।

परित्याज्य [वि.](सं.) छोड़ने या त्याग देने योग्य

परित्रस्त [वि.] (सं.) डराहुआ। भीत।

परित्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी की रक्षा या

बचाव करना विशेषतः ऐसे समय में जब कोई उसे मार डालने को उद्यत हो। बचाव। रक्षा। ३-शरीर के बाल। रोंगटे।

परित्रात [वि] (सं.) जिसकी रक्षा की गई हो। रक्षा प्राप्त।

परित्राता [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षा करने वाला। बचाने वाला।

परित्रापक [संज्ञा पु] (सं) रक्षा करने वाला। रक्षक।

परिदंशित [वि.] (सं.) कवच से भलीभांति आपाद मस्तक ढका हुआ। जिरहपोश।

परिदर [संज्ञा पु.] (सं.) एक दंत रोग जिसमें मंसूड़े दांतों से अलग हो जाते हैं तथा थूक के साथ रक्त निकलता है। यह रोग पित्त, रुधिर और कफ के साथ प्रकोप से होता है। वैद्यक।

परिदर्शकयंत्र, परिदर्शकयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की दूरबीन जो पनडुब्बियों में लगी रहती है। *पेरिस्कोप*।

परिदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभाँति देखना २-देखना। दर्शन। अवलोकन। ३-न्यायालय मुकदमे की होने वाली सुनवाई। *ट्रायल*।

परिदष्ट [वि.] (सं.) १-जो काटकर टूक-टूक कर दिया हो। २-काटा हुआ। दंशित।

परिदान [संज्ञा पु.] (सं.) लौटा देना। फेर देना। वापस कर देना।

परिदाप [संज्ञा पु.] (सं) सुगंध। खुशबू। परिमोद।

परिदायी [संज्ञा पु.] (सं) वह पिता जो अपनी लड़की का ऐसे मनुष्य से विवाह करे जिसका बड़ा भाई क्वारा हो।

परिदाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक जलन या दाह। २-शोक। मानसिक पीड़ा अथवा व्यथा। संताप।

परिदीन [वि.] (सं.) जिसको अतिशय मानसिक दुःख हो।

परिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) विलाप। रोना-धोना।

परिदेवक [संज्ञा पु.] (सं.) विलाप करने वाला। रोने-धोने वाला।

परिदेवन [संज्ञा पु.] (सं.) विलाप करना। रोकर आंतरिक दुःख जताना। कल्पना।

परिदेविता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विलाप। शोक। पछतावा। २-उलाहना।

परिद्रष्ट [संज्ञा पु.] (सं) तमाशबीन। दर्शक।

परिद्रष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) दर्शन करने वाला। देखने वाला।

परिद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ का एक पुत्र।

परिध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिधि'।

परिधन* [संज्ञा पु.] (हिं.) कमर और जाँघों पर पहनने का कपड़ा। धोती आदि।

परिधर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक्रमण। चढ़ाई २-बलात्कार। ३-हतक। अपमान। कुवाच्य दुर्व्यवहार।

परिधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिससे अपने शरीर को ढका या छिपाया जाय। कपड़े लपेटना। २-वस्त्र धारण करना। कपड़े पहनना ३-वह जो पहना जाय। वस्त्र। पहनावा। पोशाक। ४-धोती आदि कमर से नीचे पहनने के वस्त्र।

परिधानीय [वि.] (सं.) १-पहनने योग्य। धारण करने योग्य। २-जो पहना जाय (वस्त्र)। परिधेय।

परिधाय [संज्ञा पु.] (सं.) पहनावा। वस्त्र। २-जलस्थान।

परिधायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढाँपने या लपेटने वाला। २-घेरा। बाड़ा। रुधान। ३-चहारदीवारी।

परिधारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-उठाना। सहारना। धारण करना। २-बचा रखना। रक्षा करना।

परिधावन [संज्ञा पु.] (सं.) पहनने या धारण करने की प्रेरणा करना। पहनवाना।

परिधावी [वि.] (हिं.) दौड़ने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) बृहस्पति के साठ वर्ष के युगचक्र अथवा फेरे में से ४६ वाँ या बीसवाँ वर्ष।

परिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेखागणित के अनुसार वह रेखा जो किसी वृत्त के चारों ओर खींची जाती है। २-सूर्य, चन्द्रमा आदि के चारों ओर का प्रभामंडल। ३-वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर बने। गोल वस्तु की चौहद्दी बनाने वाली रेखा। ४-नियत अथवा नियमित और प्रायः गोलाकार वह मार्ग जिस पर कोई वस्तु चलती, घूमती या चक्कर लगाती हो। कक्षा। ५-अग्नि कुण्ड के चारों ओर रखी हुई गोलाकार पलाश आदि की लकड़ी। ६-परिधेय। वस्त्र कपड़ा। पोशाक।

परिधिक [वि.](सं.) १-परिधि-सम्बन्धी। परिधि का। २-जिसका कार्यक्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो।

परिधिखेचर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम

परिधिनिरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह निरीक्षक या देखभाल करने वाला अधिकारी जिसका कार्य-क्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो। *सर्किल-इंसपेक्टर*।

परिधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

परिधिस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिचारक। सेवक २-रखवाला। चौकीदार। ३-रथ और रथी का रक्षक एक सैनिक या सैनिकदल।

परिधीर [वि.] (सं.) अतिशय धीर। गंभीर।

परिधूपित [वि.] (सं.) अत्यधिक सुगंध वाला। बहुत खुशबूदार।

परिधूमन [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का तृष्णा रोग।

परिधूमायन [संज्ञा पु.] (सं.) परिधूमन।

परिधेय [वि.] (सं.) पहनने योग्य। परिधान के उपयुक्त।

[संज्ञा पु.] (सं.) वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।

परिध्वंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यन्त नाश। २-नाश। मिटना।

परिनय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिणय'।

परिनाय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परिणाय'।

परिनामी [वि.] (हिं.) देखो 'परिणामी'।

परिनिर्वाण [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्ण मोक्ष। मुक्ति। निर्वाण।

परिनिर्वाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्वाण। मुक्ति। निर्वाण गति।

परिनिर्वृत [वि.] (सं.) जिसे परिनिर्वाण प्राप्त हुआ हो। मुक्त।

परिनिर्वृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्ण मोक्ष। मुक्ति।

परिनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) पूरा या स्थिर निश्चय।

परिनिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चरम सीमा या या अवस्था। परकाष्ठा। २-अभ्यास या ज्ञान की पूर्णता। ३-सर्वांगपूर्णता।

परिनिष्ठित [वि.] (सं.) १-पूर्णरूप से निपुणता प्राप्त। पूर्ण कुशल। पूर्ण अभ्यस्त। २-सम्पन्न। समाप्त।

परिनैष्ठिक [वि.] (सं.) सर्वश्रेष्ठ। सर्वोच्च। सर्वोत्कृष्ट।

परिन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-काव्य में वह स्थल जहां कोई विशेष अर्थ पूरा हो। २-नाटक में प्रधान कथा की मूलभूत घटना का सूचना से संकेत द्वारा किया जाना।

परिपंच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रपंच'।

परिपंथ, परिपन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो रास्ता रोके हुए हो।

परिपंथक, परिपन्थक, परिपंथिक, परिपन्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु।

परिपंथी, परिपन्थी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। वैरी। २-विरुद्ध या प्रतिकूल आचरण करने वाला।

परिपक्व [वि.] (सं.) १-भलीभांति पका या पचा हुआ। खूब पका या पचा हुआ। २-पूर्ण विकसित। प्रौढ़। पुख्ता। ३-जो बहुत कुछ देख या सुन चुका हो। बहुदर्शी। तजुर्बेकार। ४-निपुण। प्रवीण। कुशल।

परिपक्वता [संज्ञा स्त्री] (सं.) परिपक्व होने की क्रिया या भाव।

परिपण [संज्ञा पु.] (सं) मूलधन। पूँजी।

परिपणग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके पास बंधक रखा जाता है। पाँनई।

परिपणधाता [संज्ञा पु.] (सं.) ऋण के बदले सब कुछ बंधक रखने वाला। चीज बंधक रखने वाला। पाँन-अर।

परिपति [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वव्यापी। जो सर्वत्र उपस्थित हो।

परिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी संस्था अथवा दल के उद्देश्य, विचार, कार्य-प्रणाली या संघटन के मूल नियम अथवा किसी विषय पर विचार या सम्मतियां आदि दी गई हों।

परिपवन [संज्ञा पु.] (सं.) चालनी। चलनी।

परिपांडु, परिपाण्डु [वि.] (सं) १-बहुत हलका पीला। सफेदी लिए हुए पीला। २-दुर्बल। कृश। क्षीण।

परिपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकने का भाव। पकना या भलीभांति पकाया जाना। २-पाचन-शक्ति। ३-पूर्णवृद्धि को प्राप्त होना। परिपूर्णता ४-फल। परिणाम। नतीजा। कर्मफल। ५-चातुर्य। चालाकी। निपुणता। दक्षता।

परिपाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

परिपाचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभांति पचना। अच्छी प्रकार पचना। २-वह जो पूर्णतया पच जाय।

परिपाचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पदार्थ को पूर्ण पक्व अवस्था में लाना।

परिपाटल [वि.] (सं.) पिलहोंहा लाल। जिसका रंग पीलापन लिये लाल हो।

परिपाटलित [वि.] (सं.) पीले और लाल रंग में रंगा हुआ। जो पीला और लाल रंग मिलाकर रंगा गया हो।

परिपाटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'परिपाटी'।

परिपाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्रम। सिलसिला। श्रेणी। २-रीति। प्रणाली। शैली। तरीका। चाल। ढंग। ३-अंकगणित। ४-पद्धति। नियम। रीति। चाल।

परिपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) पार्श्व। बगल।

परिपार्श्वचर [वि.] (सं.) पार्श्व या बगल में चलने जाने वाला।

परिपार* [संज्ञा पु.] (हिं.) मर्यादा।

परिपालक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संस्था या किसी राजकीय विभाग का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी। एडमिनिस्ट्रेटर।

परिपालक-पद [संज्ञा पु.] (सं.) संस्था या राजकीय विभाग के प्रबन्धक का पद या ओहदा। एडमिनिस्ट्रेटरशिप।

परिपालन [संज्ञा पु.] (सं) १-रक्षा करना। बचाना २-रक्षा। बचाव। ३-कार्यपरिणति। अभिपूरण करना। इम्प्लेमैन्ट। ४-प्रबन्ध करना।

परिपालन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमे किसी संस्था या किसी राजकीय विभाग विषयक प्रबन्धक अधिकार दिये गये हों। प्रबन्धाधिकारपत्र। लैटर-ऑफ-एडमिनिस्ट्रेशन।

परिपालन-पर्षद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सभा जो किसी संस्था आदि का प्रबन्ध करती हो। एडमिनिस्ट्रेटिव-बोर्ड।

परिपालना [क्रि. स.] (हिं.) परिपालन करना। प्रबन्ध करना।

परिपालनाधिकारिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रबन्धक पदाधिकारी।

परिपालनिक [वि.] (सं.) १-प्रबन्ध-सम्बन्धी। रक्षा-सम्बन्धी।

परिपालनीय [वि.] (सं.) १-रक्षा के योग्य। २-प्रबन्ध के योग्य। प्रबन्धनीय। एडमिनिस्ट्रेबल।

परिपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शासिका। प्रबन्धिका।

परिपालित [वि.] (सं.) जिस पर शासन किया जाय। प्रबन्धित।

परिपाल्य [वि.] (सं.) जो रक्षा या पालन करने के योग्य हो।

परिपिंजर, परिपिञ्जर [वि.] (सं) हलके लाल रङ्ग का। पिंगल वर्ण।

परिपिच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक आभूषण जो मोर की पूंछ और पंखों का बनाया जाता था।

परिपिष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा।

परिपीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यन्त पीड़ा पहुँचाना या देना। २-पसीना। अनिष्ट करना।

परिपीवर [वि.] (सं.) अति मोटा। बहुत मोटा या तगड़ा।

परिपुष्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोडुम्बक कड़ी। गोंडुवा।

परिपुष्ट [वि.] (सं.) १-जिसका भलीभांति पोषण हुआ हो। २-पूर्ण पुष्ट। खूब हृष्टपुष्ट।

परिपूजन [संज्ञा पु.] (सं.) सम्यक प्रकार से पूजन या उपासना।

परिपूत [वि.] (सं.) अति पवित्र। [संज्ञा पु.] भूसी से अलगाया हुआ अन्न।

परिपूरक [वि.] (सं.) १-परिपूर्ण कर देने वाला। लबालब कर देने वाला। २-समृद्धिकर्ता। धनधान्य से भरने वाला। ३-सम्पूर्ण।

परिपूरन* [वि.] (हिं.) देखो परिपूर्ण'।

परिपूरित [वि.] (सं.) १-परिपूर्ण। खूब भरा हुआ। लबालब। २-सम्पूर्ण। पूरा किया हुआ

परिपूर्ण [वि.] (सं.) १-भलीभांति भराहुआ। अच्छी तरह से भरा हुआ। २-पूर्ण तृप्त। अघायाहुआ। ३-समाप्त कियाहुआ। पूरा कियाहुआ। सम्पूर्ण।

परिपूर्णचंद्रविमलप्रभ, परिपूर्णचन्द्रविमलप्रभ [संज्ञा पु] (सं.) बौद्धशास्त्रानुसार एक प्रकार की समाधि।

परिपूर्णता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सम्पूर्णता। परिपूर्ण होने का भाव।

परिपूर्णत्व [संज्ञा पु.] (सं.) परिपूर्णता। सम्पूर्णता।

परिपूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिपूर्ण होने की क्रिया या भाव। परिपूर्णता।

परिपृच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) पूछने वाला। जिज्ञासा करने वाला। [वि.] पूछने वाला। जिज्ञासा करने वाला।

परिपृच्छनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह बात जिस को लेकर वादविवाद किया जाय। विवाद का विषय।

परिपृच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रश्न। सवाल।

परिपेल [संज्ञा पु.] (सं) केवटी मोथा। कैवर्त्त-मुस्तक।

परिपेलव [वि.] (सं.) अत्यन्त कोमल। अति सुकुमार।

परिपोट, परिपोटक [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग जिसमें लौक का चमड़ा सूज कर स्याही लिये हुए लाल रंग का हो जाता है और उसमें दर्द होता है।

परिपोटन [संज्ञा पु.] (सं.) परिपोट।

परिपोटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिपोटक।

परिपोष [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्ण पुष्टि अथवा वृद्धि

परिपोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पालन। परवरिश करना। २-पुष्ट या वर्धित करना।

परिप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राप्ति। मिलना। उपलब्धि।

परिप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) कोई बात जानने के लिए किया जाने वाला प्रश्न। पछताछ। तहकीकात। इनक्वायरी।

परिप्रेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारों ओर भेजना। २-दूत या हरकारा बनाकर भेजना। ३-किसी विशेष स्थान या देश से निकाल देना। निर्वासन। ४-त्याग देना।

परिप्रेषित [वि.] (सं.) १-भेजा हुआ। प्रेरित। २-निर्वासित। निकाला हुआ। ३-त्यागा हुआ। परित्यक्त।

परिप्रेष्य [वि.] (सं.) १-भेजने योग्य। प्रेरणा करने योग्य।

[संज्ञा पु.] (सं.) नौकर। दास। अनुचर।

परिप्लव [वि.] (सं.) १-हिलता हुआ। कांपता हुआ। २-उतरता हुआ। ३-चंचल। अस्थिर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बूढ़ा। बाढ़। प्लावन। २-अत्याचार। जुल्म। २-नौका। नाव। जहाज।

४-गीला। भीगा। पुराणानुसार सुखील राजा के पुत्र का नाम।

परिप्लवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की करछी या चम्मच जो यज्ञ में काम आती है।

परिप्लावित [वि.] (सं.) १-प्लावित। डूबा हुआ। २-भीगा हुआ। गीला। तर।

परिप्लुत [वि.] (सं.) १-जल की बाढ़ में डूबा-हुआ। प्लावित। डूबा हुआ। २-भीगा हुआ। गीला। स्नात। ३-काँपता हुआ। कंपित। [संज्ञा पु.] (सं.) फलाँग। छलाँग।

परिप्लुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मदिरा। शराब। २-वह योनि जिसमें रजःस्राव के समय पीड़ा हो।

परिप्लुष्ट [वि.] (सं.) जला हुआ। झुलसा हुआ

परिप्लोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलन। दाह। २-जलना। भुनना। तपना। ३-शरीर के भीतर की गरमी।

परिफुल्ल [वि] (सं.) १-भलीभाँति खिला हुआ विकसित। २-खूब खुला हुआ। ३-रोमांच युक्त। जिसके रोंगटे खड़े हों।

परिबंधन, परिबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी प्रकार खुला हुआ। जकड़कर बांधना।

परिबर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-लवाजमा। नौकर-चाकर। २-राजाओं के छत्र चँवर आदि राजचिह्न। ३-सजावट का सामान। ४-संपत्ति। धन-दौलत। ५-राजाओं के हाथी, घोड़ों पर डाली जाने वाली झूल।

परिबर्हण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुचर वर्ग। नौकरसमुदाय। २-पूजा। उपासना। ३-शृंगार। सजावट।

परिबाधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कष्ट। पीड़ा। बाधा। थकावट। श्रांति। मिहनत।

परिबृंहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-समृद्धि। सकुशलता। २-किसी ग्रन्थ के अङ्गस्वरूप अन्य ग्रंथ। वह ग्रंथ अथवा शास्त्र जो किसी अन्य ग्रन्थ या शास्त्र की पूर्ति अथवा पुष्टि करता हो। जैसे-ब्राह्मणग्रंथ वेद की परिबृंहण हैं।

परिबृंहित [वि.] (सं.) १-उन्नत। बढ़ाहुआ। २-समृद्ध। फलता-फूलता हुआ। युक्त। अंगीभूत।

परिबोध [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान।

परिबोधन [संज्ञा पु] (सं.) १-दंड की धमकी देकर या दिखाकर कोई विशेष कार्य करने से रोकना। २-इस प्रकार की धमकी या भय प्रदर्शन। चेतावनी।

परिबोधना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिबोधन।

परिभंग, परिभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) टुकड़े-टुकड़े होकर टूटना। टुकड़े-टुकड़े हो जाना।

परिभक्ष [वि.] (सं.) दूसरों का माल खाने वाला।

परिभक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) बिलकुल खा डालना सफाचट कर देना।

परिभव [संज्ञा पु.] (सं.) अनादर। तिरस्कार। हतक।

परिभवन [संज्ञा पु.] (सं.) अनादर या तिरस्कार करने वाला।

परिभवनीय [वि.] (सं.) अनादर या तिरस्कार के योग्य। अपमानजनक।

परिभवी [वि.] (सं.) अपमानकारी। अनादर या तिरस्कार करने वाला।

परिभाव [संज्ञा पु.] (सं.) अनादर। तिरस्कार अपमान।

परिभावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिलन। संयोग मिलाप। २-फिक्र। चिंता।

परिभावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिन्ता। सोच। फिक्र। २-साहित्य में वह पद अथवा वाक्य जिससे अधिक कौतुहल अथवा उत्सुकता सूचित होती है या उत्पन्न होती है।

परिभावित [वि.] (सं.) अपमानित। तिरस्कृत।

परिभावी [वि.] (सं.) [स्त्री. परभाविनी] १-अपमानकारक। तिरस्कार करने वाला। २-लज्जित करने वाला। ३-तुच्छ समझने वाला चुनौती देने वाला।

परिभाषक [संज्ञा पु.] (सं.) निंदक। निंदाद्वारा। किसी का अपमान करने वाला।

परिभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निंदा करते हुए उलाहना देना। किसी को दोष देते या लानत मलामत करते हुए उसके कार्य पर असंतोष प्रकट करना। २-निंदासहित उपालंभ। लानत-मलामत। फटकार। नियम। कायदा। दस्तूर। ४-बोलना चालना या बातचीत करना।

परिभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी शब्द अथवा पद का अर्थ या भाव प्रकट करने वाला स्पष्ट कथन। व्याख्या। डेफिनेशन। २-वह शब्द जो किसी शास्त्र अथवा विज्ञान में किसी एक कार्य या भाव का सूचक मान लिया गया हो। टैक्निकल टर्म। किसी शब्द की वह व्याख्या अथवा स्पष्टीकरण, जिसमें उसकी विशेषता तथा व्याप्ति पूर्णतया निश्चित या स्पष्ट हो जाय। ४-सूत्र के छः लक्षणों में से एक। ५-निंदा। परिवाद। शिकायत। बदनामी। ६-परिष्कृत भाषण। स्पष्ट कथन। संशयरहित कथन।

परिभाषित [वि] (सं.) जिसकी परिभाषा या व्याख्या की गई हो। डिफाइन्ड।

परिभाषी [वि.] (सं.) बोलने वाला। भाषणकारी

परिभाष्य [वि.] (सं.) कहने योग्य। बताने योग्य

परिभुक्त [वि.] (सं.) जो काम में आ चुका हो। उपयुक्त। जिसका भोग किया जा चुका हो।

परिभू [वि.] (सं.) १-जो चारों ओर से आच्छादित हो। २-परिचालक। नियामक। [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर। परिपालक।

परिभूत [वि.] (सं.) १-हराया हुआ। पराजित। २-तिरस्कृत। अपमानित।

परिभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निरादर। तिरस्कार। अपमान। २-श्रेष्ठता।

परिभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह संधि या शांति जो किसी विशेष अथवा भूखंड की समस्त राजस्व देकर स्थापित की गई हो। २-पूर्वोक्त शान्ति या सन्धि स्थापित करने का कार्य। ३-सजाने की क्रिया या भाव। सजावट या सजाना।

परिभूषित [संज्ञा पु.](सं.) सजाया हुआ। बनाया या संवारा हुआ।

परिभेद [संज्ञा पु] (सं.) तलवार, तीर आदि का घाव। जख्म।

परिभेदक [वि.] (सं.) गहरा घाव करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) खूब गहरा घाव करने वाला मनुष्य या हथियार।

परिभोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मनुष्य जो दूसरे के धन का उपभोग करे। २-गुरु के धन का उपभोग करने वाला मनुष्य।

परिभोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोग। उपभोग। २-मैथुन। स्त्री प्रसंग। ३-अनाधिकार किसी वस्तु को काम में लाना।

परिभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-छुटकारा। निकास। २-गिराव। पतन। स्खलन। गिराव। च्युति।

परिभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-इधर-उधर टहलना। घूमना। भ्रमण। पर्यटन। २-घुमा-फिराकर कहना। सीधे न कहकर फेरफार से कहना। ३-भूल। भ्रम।

परिभ्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्यटन। भ्रमण। मटरगश्त। २-घूमना। (पहिये आदि का) चक्कर खाना। ३-घेरा। व्यास। परिधि।

परिभ्रष्ट [वि.] (सं.) १-पतित। गिराहुआ। च्युत। स्खलित। २-निकलाहुआ। निकलकर भागाहुआ। ३-अधःपतित। ४-रहित या वंचित किये हुए। ५-असावधानी किया हुआ।

परिभ्रांत, परिभ्रान्त [वि.] (सं.) भ्रांत या घबराहट में पड़ाहुआ। अस्तव्यस्त।

परिभ्रांतता, परिभ्रान्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घबराहट। अव्यवस्थावाद।

परिभ्रांति, परिभ्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संभ्रम। अस्तव्यस्तता। घबराहट।

परिमंडल, परिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्कर। घेरा। दायरा। परिधि। २-एक प्रकार का विषैला मच्छर। [वि.] १-गोलाकार। गोल। चक्करदार। २-जिसका मान परमाणु के बराबर हो।

परिमंडलकुष्ठ, परिमण्डलकुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का महाकुष्ठ।

परिमंडलता, परिमण्डलता

परिमंडलता, परिमण्डलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोलाई।

परिमंडलित, परिमण्डलित [वि.] (सं.) जो गोल किया गया हो। वर्त्तुलाकार बनाया हुआ।

परिमंथर, परिमन्थर [वि.] (सं.) अत्यन्त सुस्त। धीरा या धीमा।

परिमंद, परिमन्द [वि.](सं.) १-अत्यन्त धुँधला अस्पष्ट। २-बहुत सुस्त। ३-बहुत थकाहुआ। या कमजोर। ४-बहुत थोड़ा।

परिमन्यु [वि] (सं.) क्रोध से भराहुआ। अत्यन्त क्रोपयुक्त।

परिमर [संज्ञा पु.] (सं.) नाश।

परिमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-रगड़ना। पीसना। २-कुचलना। पीस डालना। ३-नाश। ४-अनिष्ट। ५-दबाना।

परिमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) रगड़ने या पीसने की क्रिया।

परिमर्श [संज्ञा पु.] (सं.) विचार। परामर्श।

परिमर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-डाह। ईर्ष्या। घृणा। अरुचि। २-रोष। क्रोध। गुस्सा।

परिमल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुवास। उत्तमगंध। खुशबू। २-खुशबूदार चीजों का चूर्ण करना या मलना। ३-सुगंधित वस्तु। ४-सहवास। मैथुन। संभोग। ५-पंडितों का समुदाय।

परिमलज [वि.] (सं.) मैथुन से प्राप्त होने वाला (सुख)। संभोगजनित (सुख)।

परिमलित [वि.] (सं.) १-सुवासित। खुशबूदार। २-सौन्दर्यभ्रष्ट। भ्रष्ट।

परिमाण [संज्ञा पु.] (सं.) वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। वह विस्तार, भार या मात्रा जो नापने या तौलने से जानी जाय। नाप या तौल। मात्रा।

परिमाणक [संज्ञा पु.] (सं.) नापने का कोई यन्त्र या पैमाना।

परिमाणवान् [वि.] (सं.) परिमाण विशिष्ट। परिमाणयुक्त।

परिमाणी [वि.] (हिं.) परिमाणयुक्त। परिमाण वाला।

परिमान* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'परिमाण'

परिमाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-नापने की क्रिया या भाव। २-वह पदार्थ या आदर्श जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाय। मान-दंड। मानक।

परिमापक [वि.] (सं.) नापने वाला। जिससे नापा जाय।

परिमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलाश। खोज। अनुसंधान। २-स्पर्श। संसर्ग।

परिमार्गण [संज्ञा पु.] (सं.) खोजना। ढूँढना।

परिमार्गन [संज्ञा पु.] (सं.) खोजने या ढूँढने का कार्य। अन्वेषण। अनुसंधान।

परिमार्गी [वि.] (सं.) खोजने या खोज में किसी के पीछे जाने वाला।

परिमार्जक [संज्ञा पु.] (सं.) धोने या मांजने वाला

परिमार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धोने या मांजने का काम। झाड़ने-पोंछने का काम। २-एक प्रकार की मिठाई जो घी-मिश्रित शहद के शीरे में डुबोई हुई होती है।

परिमार्जित [वि.] (सं.) १-धोया या मांजा हुआ। २-साफ किया हुआ। परिष्कृत।

परिमित [वि.] (सं.) १-न अधिक और न कम। २-जिसकी सीमा संख्या या विस्तार नियत हो। सीमित। लिमिटेड। ३-जिसकी नाप-तोल हो गई हो। नपा-तुला हुआ। ४-हिसाब या अंदाज से उचित मात्रा या परिमाण में। ५-थोड़ा। कम। अल्प।

परिमितकथ [वि.] (सं.) कम बोलने वाला। नपे-तुले शब्द बोलने वाला।

परिमिताभरण [वि.] (सं.) अंदाजे से आभूषण धारण किये हुए। थोड़े गहने पहने हुए।

परिमितायुस [वि] (सं.) थोड़े दिन जीने वाला। अल्पायु।

परिमिताहर [वि.] (सं.) १-कम भोजन करने वाला। ठीक परिमाण में भोजन करने वाला।

परिमिति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-नाप, तोल, सीमा आदि। २-किसी क्षेत्र को घेरने वाली रेखा या परिमाण। ३-मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा।

परिमिलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्पर्श। संसर्ग। २-संयोग। मेल।

परिमुक्त [वि.] (सं.) पूर्णरूप से स्वाधीन।

परिमुख [वि.](सं.) चेहरे के चारों ओर। मुख-मंडल के, चारों ओर।

परिमुग्ध [वि.] (सं.) १-मनोहर और सादा। २-मनमोहक किन्तु मूर्ख।

परिमूढ़ [वि.] (सं.) १-व्याकुल। २-विचलित। मथित। ३-क्षोभित।

परिमृज्य [वि.] (सं.) धोने या मांजने योग्य।

परिमृदित [वि.] (सं.) १-कुचला हुआ। पैरों से रौंदा हुआ। २-आलिगन किया हुआ। २-रगड़ा हुआ। पीसा हुआ।

परिमृष्ट [वि.] (सं.) १-साफ किया हुआ। धोया हुआ। पवित्र किया हुआ। २-रगड़ा हुआ। ३-आलिंगन किया हुआ। ४-फैला हुआ व्याप्त। ५-पकड़ा हुआ। अधिकृत।

परिमृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धोना। मांजना। परिमार्जन।

परिमेय [वि.] (सं.) १-जो नापा या तोला जा सके। २-जिसे नापना या तौलना हो।

परिमोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्ण मोक्ष। निर्वाण। २-परित्याग। छोड़ना। ३-मल परित्याग। हगना। ४-विष्णु।

परिमोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-छुटकारा। मुक्ति २-परित्याग करना या किया जाना। ३-मल त्याग करना। ४-धौति क्रिया द्वारा आंतें साफ करना।

परिमोष [संज्ञा पु.] (सं.) चोरी। डाकाजनी। लूट। अस्तेय।

परिमोषक [संज्ञा पु.] (सं.) चोर।

परिमोषी [वि.] (सं.) जिसकी स्वभाव से ही चोरी करने की प्रवृत्ति हो।

परिमोहन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के मन या उसकी बुद्धि को पूर्ण रूप से अपने वश में कर लेना। सम्यक वशीकरण।

परिम्लान [वि.] (सं.) १-कुम्हलाया हुआ। मुरझाया हुआ। उदास। २-मलीन। हतप्रभ। निस्तेज। ३-निर्बल। कमजोर। घटा हुआ। ४-धब्बा खाया हुआ। कलंकित।

परियंक* [संज्ञा पु] (हिं) 'पर्यंक'।

परियंत* [अव्य.] (हिं) देखो 'पर्यंत'।

परियज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वह छोटा यज्ञ अथवा विधान जिसको अकेले करने की विधि न हो किन्तु जो किसी अन्य यज्ञ के साथ उसके पहले अथवा पीछे किया जाय।

परियत्त [वि] (सं.) चारों ओर से घिरा हुआ।

परियष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो अपने बड़े भाई से पहले सोमयाग करे।

परिया [संज्ञा पु.] (*तामिल परैयान*) १-दक्षिण भारत की एक प्राचीन जाति जो अस्पृश्य समझी जाती है। २-अछूत। अस्पृश्य। ३-क्षुद्र। तुच्छ। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जुलाहे का ताना तनने की लकड़ियां।

परियाण [संज्ञा पु.] (सं.) घुमाई-फिराई। भ्रमण। पर्यटन।

परियाणिक [संज्ञा पु.] (सं.) चलती हुई गाड़ी।

परियात [वि.] (सं.) १-जो भ्रमण अथवा पर्यटन कर चुका हो। २-आया हुआ। कहीं से लौटा हुआ।

परियान [संज्ञा पु.] (सं.) अपना देश या स्थान छोड़कर स्थायी रूप से बसने के लिए किसी अन्य देश अथवा स्थान में जाना। *एमिग्रेशन*

परियार [संज्ञा पु.](देश.) १-मदरास में बसने-वाली एक अस्पृश्य जाति। २-बिहार के शाक-द्वीपीय ब्राह्मणों का एक उपभेद।

परियोग्य [संज्ञा पु.] (सं.) वेद की एक शाखा।

परिरंभ, परिरम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) गले से गला और छाती से छाती लगाकर मिलने की क्रिया। आलिंगन।

परिरंभण, परिरम्भण [संज्ञा पु.](सं.) आलिंगन करने की क्रिया।

परिरंभना* [क्रि. स.] (हिं.) परिरंभण करना

आलिंगन करना।

परिरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) अभिभावक। रक्षक।

परिरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्रकार या सब तरह से रक्षा।

परिरक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिरक्षण। छुटकारा। निस्तार।

परिरचित [वि.] (सं.) उत्तम रूप से रचित।

परिरक्षी [वि.] (हिं.) बचाने वाला। रक्षा करने-वाला।

परिरथ्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रथ का एक अंग।

परिरथ्या [संज्ञा पु.] (सं.) चौड़ा रास्ता। सड़क।

परिरुद्ध [वि.] (सं.) परिसीमित।

परिरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी होने वाले काय के स्वरूप आदि के संबंध में पहले से की जाने वाली कल्पना। २-किसी कलात्मक-कृति, रचना सजावट आदि के संबंध की वह मूल कल्पना अथवा रूप रेखा जिसमें अनुसार उसका बाकी सब कार्य पूर्ण होता है। नमूना। ३-किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक सुन्दर ढंग अथवा प्रकार। डिजाइन

परिरूपक [संज्ञा पु] (सं.) वह जो किसी वस्तु का परिरूप बनाता हो। डिजाइनर।

परिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकावट। अड़ंगा। अवरोध। २-कैद।

परिलंघ, परिलङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) कूद या उछल कर लांघ जाना। फलांग या छलांग मारना।

परिलंघन, परिलङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परिलंघ'।

परिलंबन, परिलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) भाचक्र का २७ अंश विषुवतरेखा से एक ओर हिंडोले के समान जाकर फिर लौट आना तथा इसी प्रकार दूसरी ओर २७ अंश तक हिंडोले के समान जाकर अपने स्थान पर लौट आना। लाइब्रेशन।

परिलघु [वि.] (सं.) १-अत्यंत छोटा। २-बहुत हल्का। जैसे—वस्त्र। ३-बहुत हल्का या पचने में सुलभ।

परिलब्धि [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक लाभ (ऊपरी आमदनी के रूप में) परिक्विज़िट्।

परिलिखन [संज्ञा पु.](सं.) १-रगड़कर या घिसकर किसी वस्तु की खुरदराहट मिटना। २-चिकना और चमकदार करना।

परिलिखित [वि.] (सं.) रेखा से घिरा हुआ। रेखा से परिवेष्टित।

परिलुप्त [वि.] (सं.) १-नष्ट। विनष्ट। २-क्षतिग्रस्त। [illegible]। जिसकी क्षति अथवा अपकार किया गया हो।

परिलेख [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्र का खाका या ढाँचा। रेखाचित्र। २-चित्र। तसवीर। ३-चित्र अंकित करने की कूँची या कलम। ४-उल्लेख। वर्णन। ५-[illegible] अधिकारियों के पास भेजे जाने वाला विवरण।

परिलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना।

परिलेखना [क्रि. स.] (हिं.) समझना। मानना। खयाल करना।

परिलेही [संज्ञा पु.] (सं.) एक कान का रोग।

परिलोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षति। हानि। विलोप। छूट। नाश।

परिवंचना, परिवञ्चना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी को धोखा देने या ठगने का काम। छल। प्रवंचना।

परिवंश [संज्ञा पु.] (सं.) धोखा। छल। प्रतारण।

परिवक्त्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोलाकार वेदी।

परिवत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूचा। एक वर्ष पूरा एक साल। २-ज्योतिष के पाँच संवत्सरों में से एक।

परिवत्सरीण, परिवत्सरीय [वि.] (सं.) जो पूरे वर्ष भर रहे। समस्त वर्षव्यापी।

परिवदन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के दोष का वर्णन या कथन। निंदा।

परिवर्जन, परिवर्ज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोड़ना। परित्याग करना। २-हत्या करना। मार डालना।

परिवर्जित [वि.] (सं.) त्यागा हुआ। परित्यक्त।

परिवर्त [संज्ञा पु] (सं.) १-फिराव। घुमाव। फेरा। चक्कर। २-विवर्तन। आवृत्ति। ३-अवधि। अवधि की समाप्ति। ४-युग की समाप्ति। ५-परिवर्तन। ६-विनिमय। अदल बदल। ७-पुनरागमन। ८-आवास स्थल। घर। ९-परिच्छेद। अध्याय। १०-भगवान विष्णु का दूसरा अवतार, कच्छपावतार। मृत्यु के पुत्र। दुस्सह के पुत्रों में से एक (पुराण)। १२-स्वर-साधन का एक ढंग।

परिवर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-घूमने वाला। फिरने वाला। चक्कर देने वाला। २-बदलने वाला। विनमय करने वाला। ३-घुमाने वाला। ४-परिवर्तन योग्य। ५-युग का अंत करने वाला।

परिवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घुमाव। फेरा। २-हेरफेर। अदलाबदली। ३-जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय। विनिमय। ४-किसी काल या युग की समाप्ति। ५-बदलने या बदलजाने की क्रिया या भाव। रूपांतर। तबदीली।

परिवर्तनीय [वि.] (सं.) घूमने, बदलने या बदले जाने के योग्य। परिवर्त्तन योग्य।

परिवर्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रोग जिसमें अधिक खुजलाने, दबाने या रगड़ लगने से लिंग का चर्म उलटकर सूज जाता है।

परिवर्तित [वि.] (सं.) १-बदला हुआ। रूपांतरित। २-जो बदले में मिला हुआ हो।

परिवर्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों शुक्लपक्ष की एकादशी।

परिवर्ती [वि.] (सं.) १-घूमने वाला। चक्कर लगाने वाला। २-बार-बार बदलने वाला। परिवर्तनशील। ३-किसी वस्तु का बदले वाला।

परिवर्तुल [वि.] (सं.) खूब गोल। पूर्ण गोलाकार।

परिवर्त्सन [वि.] (सं.) जो किसी वस्तु के चारों ओर घूम रहा हो।

परिवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) संख्या, गुण आदि में विशेष वृद्धि। परिवृद्धि।

परिवर्द्धित [वि.] (सं.) १-बढ़ा हुआ। २-[illegible] हुआ।

परिवर्म्म [वि.] (सं.) कवच या बख्तर से [illegible] हुआ। जिरहपोश।

परिवर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) चँवर, छत्र आदि [illegible] चिह्न।

परिवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राम। गांव।

परिवह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सात पवनों में से छठा। अग्नि की सात जीभों में से एक।

परिवहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान पर उठाकर ले जाना। [illegible]। २-समुद्री या हवाई जहाज आदि चलाना। नैविगेशन। ३-कोई वस्तु एक जगह से दूसरी जगह लेजाकर पहुँचाना। ट्रांसपोर्ट।

परिवा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी पक्ष की पहली तिथि।

परिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-निंदा। [illegible]। २-लोहे के तारों का वह छल्ला जिससे वीणा या सितार बजाई जाती है। मिजराब। ३-अधिकारियों के सम्मुख किसी की [illegible] वाली शिकायत। कम्पलेंट।

परिवादक [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिवाद करने वाला व्यक्ति। २-वीणा बजाने वाला। [illegible]कार।

[वि.] (सं.) १-परिवाद करने वाला। निंदक। २-शिकायत करने वाला।

परिवादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात तार वाली वीणा।

परिवादी [वि.] (सं.) निंदा करने वाला। परिवाद करने वाला।

परिवाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंडन। २-मुंडाई। ३-जलाशय। तालाब। ४-[illegible]। ५-[illegible] घर वर्ग।

परिवापित [वि.] (सं.) जिसका सिर मुड़ा हुआ हो।

परिवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-आवरण। परिच्छद। २-म्यान। तलवार की खोल। ३-किसी राजा या रईस के साथ उसको लेकर चलने वाले लोग। परिषद। ४-[illegible] के लोग। कुटुंब।

कुनबा। ५-खानदान। वंश। ६-बालबच्च। ७-एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग। कुल। जाति।

परिवारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढकने या छिपाने की क्रिया। आवरण। आच्छादन। २-कोष। खोल। म्यान।

परिवारवान् [वि.] (हिं.) परिवार वाला। जिसके परिवार हो।

परिवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठहरना। टिकना। टिकाव। २-घर। गृह। ३-सुगन्ध। ४-बौद्धसंघ में अपराधी भिक्षुक का निकाला जाना या बहिष्करण।

परिवासन [संज्ञा पु.] (सं.) खंड। टुकड़ा।

परिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा जल प्रवाह जिसके कारण पानी ताल, तालाब आदि की समाई से अधिक हो जाय और बांध के ऊपर से बहने लगे। २-जलमार्ग। नहर।

परिवाही [वि.] (सं.) [स्त्री. परिवाहिनी] समाई से अधिक जल आने से बांध के ऊपर से बहने वाला पानी का बहाव। उतराकर बहने वाला।

परिविंदक, परिविन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) वह छोटा भाई जिसका विवाह बड़े भाई का विवाह होने से पूर्व हो चुका हो।

परिविंदन, परिविन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) परिवेत्ता परिविंदक।

परिवित्त [संज्ञा पु.] (सं.) अविवाहित बड़े भाई का विवाहित छोटा भाई।

परिवित्ति [संज्ञा पु.] (सं.) परिवित्त।

परिविद्ध [वि.] (सं.) सब ओर अथवा सब प्रकार से बिधा हुआ।

परिविदान [संज्ञा पु.] (सं.) बड़े भाई से पहले विवाह करने वाला छोटा भाई।

परिविष्ट [वि.] (सं.) १-घेराहुआ। परिवेष्टित। २-परोसा हुआ (भोजन)।

परिविष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेवा। टहल। परिचर्या। २-घेरा। वेष्टन।

परिविहार [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्दार्थ इधर उधर भ्रमण।

परिविह्वल [वि.] (सं.) बहुत घबड़ाया हुआ। नितांत उद्विग्न।

परिवीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-घिराहुआ। लपेटाहुआ। २-ढकाहुआ। छिपायाहुआ। आच्छादित। आवृत।

परिवीत [वि.] (सं.) १-घिराहुआ। लपेटाहुआ। २-आच्छादित। ढकाहुआ। आवृत।

परिवृढ [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी। प्रभु। प्रधान।

परिवृत [वि.] (सं.) ढका, घेरा या छिपाया हुआ। आवृत।

परिवृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ढकने या छिपाने वाली वस्तु। वेष्टन।

परिवृत्त [वि.] (सं.) १-घुमायाहुआ। उलटा-पलटाहुआ। २-घेराहुआ। वेष्टित। ३-समाप्त किया हुआ। [संज्ञा पु.] घटना, कार्य आदि का वह संक्षिप्त विवरण जो किसी के सामने उपस्थित किया जाय। विवरण। स्टेटमेंट।

परिवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घुमाव। चक्कर। २-घेरा। वेष्टन। ३-विनिमय। ४-समाप्ति। अन्त। ५-दोहराने या फिर से करने की क्रिया या भाव। ६-किसी के किये हुए काम को देखकर उसके अनुसार वैसा ही और कोई काम करना। ७-एक शब्द के बदले दूसरे शब्द को बैठाना। ऐसा शब्द-परिवर्तन जिससे अर्थ में कोई अन्तर न आने पावे। [संज्ञा पु.] एक अर्थालङ्कार जिसमें एक वस्तु को देकर दूसरी के लेने अर्थात् अदल-बदल का कथन होता है।

परिवृद्ध [वि.] (सं.) खूब बढ़ा हुआ। परिवर्द्धित।

परिवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब प्रकार से वृद्धि। उपज। बढ़ती।

परिवेत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छोटा भाई जिसका विवाह बड़े भाई के विवाह से पहले हुआ हो।

परिवेद [संज्ञा पु.] (सं.) पूरा ज्ञान। परिज्ञान।

परिवेदक [संज्ञा पु.] (सं.) पूरा ज्ञान कराने वाला

परिवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह। २-पूर्ण ज्ञान। परिज्ञान। ३-लाभ। प्राप्ति। उपलब्ध ४-विद्यमानता। मौजूदगी। ५-वादविवाद। बहस। ६-भारी दुःख या कष्ट। ७-विचरण ८-अग्निहोत्र के लिए अग्नि की स्थापना। अन्याधान।

परिवेदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीक्ष्ण बुद्धि। चतुराई। विदधग्ता।

परिवेदनीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़े भाई से पहले विवाह करने वाले छोटे भाई की स्त्री।

परिवेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उस मनुष्य की स्त्री जिसका विवाह उसके बड़े भाई से पहले हुआ हो या कर लिया हो। परिवेत्ता की पत्नी।

परिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-परसना या परोसना २-घेरा। परिधि। ३-सूर्य या चन्द्र का पार्श्व या घेरा। ४-चन्द्रमंडल। ५-सूर्यमंडल। ६-कोई ऐसी वस्तु जो चारों ओर से घेर कर किसी वस्तु की रक्षा करती हो। ७-परकोटा। कोट। शहर पनाह की दीवार।

परिवेष [संज्ञा पु.] (सं.) परिवेश।

परिवेषक [संज्ञा पु.] (सं.) परोसने वाला।

परिवेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-परोसना। २-घेरना। घेरा। ३-चन्द्रमा या सूर्य का पार्श्व या घेरा। ४-परिधि।

परिवेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारों ओर से घेरना या वेष्टन करना। २-छिपाने, ढकने या लपेटने वाली वस्तु। आवरण। आच्छादन। ३-परिधि। घेरा। दायरा।

परिवेष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) परसने वाला। परिवेषक।

परिवेष्टित [वि.] (सं.) चारों ओर से घिरा हुआ।

परिवेष्टृ [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन परसने वाला।

परिव्यक्त [वि.] (सं.) खूब स्पष्ट अथवा प्रकट।

परिव्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु की तैयारी या बनने में होने या लगने वाला व्यय कॉस्ट। २-मूल्य। ३-शुल्क। ४-पारिश्रमिक। ५-भाड़े आदि के रूप में होने वाला वह व्यय जो किसी से प्राप्त किया या दिया जाय। चार्ज।

परिव्ययनीय [वि.] (सं.) जो परिव्यय के रूप में किसी से लिया अथवा दिया जा सके। चार्जेबुल।

परिव्याध [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारों ओर से बेधने या छेदने वाला। २-सरपत या नरकुल की एक जाति। ३-कनेर। द्रुमोत्पल। ४-एक ऋषि का नाम।

परिव्रज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जगह-जगह घूमते फिरना। भ्रमण। २-तपस्या। ३-भिक्षुक की तरह जीवन बिताना।

परिव्राज, परिव्राजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहता है। २-संन्यासी। यती। परमहंस।

परिव्राजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमंडी। मुंडी।

परिव्राट् [संज्ञा पु.] (सं.) परिव्राज। परिव्राजक।

परिशयन [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ पशुओं और जीव जन्तुओं की वह निष्क्रिय अवस्था जिसमें वे जाड़े के दिनों में बिना कुछ खाये पीये चुप-चाप पड़े रहते हैं। हारबरनेशन।

परिशमित [वि.] (सं.) निर्वापित। दूर किया हुआ।

परिशाश्वत [वि.] (सं.) [स्त्री. परिशाश्वती] सदा एक-सी।

परिशिष्ट [वि.] (सं.) छूटाहुआ। बचाहुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पुस्तक लेख आदि का वह अन्तिम भाग जिसमें वे आवश्यक या उपयोगी बातें रहती हैं जो पहले अपने स्थान पर आ सकी हों। एपेंडिक्स। किसी पुस्तक का वह अतिरिक्त अंश जिसमें कुछ ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उनकी उपयोगिता अथवा महत्व बढ़ता हो। जमीमा।

परिशीलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मननपूर्वक किया जाने वाला अध्ययन। खूब सोचते समझते हुए पढ़ना। स्पर्श लगजाना या छू जाना।

परिशुद्ध [वि.] (सं.) अच्छी तरह से साफ

किया हुआ।

परिशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्णरूप से शुद्ध या पवित्रता। २-छुटकारा। रिहाई।

परिशुश्रूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भली प्रकार से सेवा करना।

परिशुष्क [वि.] (सं.) १-भली-भाँति सूखाहुआ २-कुम्हलायाहुआ। अत्यन्त रसहीन। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तलाहुआ माँस।

परिशून्य [वि.] (सं.) १-बिलकुल खाली। २-पूर्णतः वंचित या रहित।

परिश्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्सुक आत्माएं। २-सुरा। मद्य।

परिशेष [वि.] (सं.) बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-बचा रहने वाला। २-परिशिष्ट। ३-समाप्ति। अन्त।

परिशेषण [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बाकी बच रहा हो।

परिशोध [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्ण शुद्धि। पूरी सफाई। ऋण की बे-बाकी। चुकता।

परिशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्णतया शुद्ध या साफ करना। २-ऋण की पाई-पाई चुका देना। चुकता। कर्ज की बे-बाकी।

परिशोधनीय [वि.] (सं.) १-पूरी तरह साफ या शुद्ध करने योग्य। २-कर्ज की पाई-पाई चुकाने योग्य।

परिशोधित [वि.] (सं.) १-पूर्णतया साफ या शुद्ध किया हुआ। २-ऋण का परिशोध किया हुआ। चुकता किया हुआ।

परिशोष [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण रूप से सुखाने या भूनने की क्रिया।

परिशोषण [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्रकार से सफाई या शुद्धता।

परिश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा काम जिसें करते-करते थकावट आने लगे। आयास। श्रम। मेहनत। लेबर। २-थकावट। मांदगी। श्रांति।

परिश्रमी [वि.] (सं.) बहुत परिश्रम करने वाला। मेहनती। उद्यमी। श्रमशील।

परिश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सभा। परिषद्। २-रक्षा स्थान।

परिश्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) परिश्रय।

परिश्रांत, परिश्रान्त [वि.] (सं.) थका हुआ। श्रमित। थका मांदा।

परिश्रांति, परिश्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थकावट। क्लान्ति। मांदगी।

परिश्रित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपड़े की दीवार या चिक आदि का घेरा। कनात। २-एक प्रकार का पत्थर का टुकड़ा जिसका उपयोग यज्ञ में होता है।

परिश्रुत [वि.] (सं.) जिसके संबंध में पर्याप्त सुना अथवा जाना जा चुका हो। प्रख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर।

परिश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) आलिंगन। गले मिलना

परिषत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'परिषद'।

परिषत्व [संज्ञा पु.] (सं.) परिषद का भाव या धर्म

परिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्राचीनकाल के विद्वान ब्राह्मणों की सभा जिसे राजा समय-समय पर किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था। २-सभा। समाज। ३-निर्वाचित या नियुक्त सदस्यों की सभा। काउन्सिल।

परिषद [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'परिषद्'। २-सदस्य। सभासद। ३-मुसाहव।

परिषद्य [संज्ञा पु.] (सं.) सदस्य। किसी विश्व-विद्यालय का सभासद। २-प्रेक्षक। दर्शक।

परिषद्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विश्व-विद्यालय की सदस्यता।

परिषद्वल [संज्ञा पु.] (सं.) सभासद्। सदस्य। परिषद।

परिषिक्त [वि] (सं.) १-जिसे सींचा गया हो। सिंचित। २-जिस पर छिड़काव किया गया हो।

परिषीवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीना। सिलाई करना। गांठ देना।

परिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंचाई। नम करना तर करना। छिड़काव। ३-स्नान।

परिषेचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सींचने वाला। २-छिड़कने वाला।

परिषेचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सींचना। छिड़कना।

परिष्कंद, परिष्कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) माता-पिता के अलावा औरों द्वारा पाली-पोसी संतान। परपोषित संतति।

परिष्करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वच्छ या शुद्ध करना। २-दोष या त्रुटियाँ दूर करके ठीक करना। मॉडिफिकेशन।

परिष्कन्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह बालक जिसे किसी अपरिचित मनुष्य ने पाला पोसा हो। पोष्यपुत्र।

परिष्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-संस्कार। शुद्धि। सफाई। स्वच्छता। निर्मलता। आभूषण। जेवर। गहना। ४-शृंगार। सजावट। ५-शोभा। ६-संयम। (बौद्धदर्शन के मत से)।

परिष्कारक [संज्ञा पु.] (सं.) पालिश करने वाल पॉलिशर।

परिष्कारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो पाला पोसा गया हो। २-दत्तक पुत्र।

परिष्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शोधन। शुद्ध करना। २-सजावट। शृंगार। धोना माँजना।

परिष्कृत [त्रि.] (सं.) १-साफ किया हुआ। पकाया हुआ। ३-धोया या माँजा हुआ। ३-आरम्भिक संस्कारों से शुद्ध किया हुआ। ४-शृंगारित। सजाया हुआ।

परिष्टवन [संज्ञा पु.] (सं.) भली प्रकार से या स्तुति करना खूब तारीफ करना।

परिष्टोभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम जो स्तुतियुक्त होता है।

परिष्टोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी की झूल। २-आच्छादन।

परिष्यंद, परिष्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल की धारा। प्रवाह। २-नदी। दरिया। ३- टापू।

परिष्यंदी, परिष्यन्दी [वि.] (सं.) प्रवाहयुक्त। बहता हुआ।

परिष्वंग, परिष्वङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-आलिंगन २-स्पर्श। मेल।

परिष्वंजन, परिष्वञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) आलिंगन।

परिष्वक्त [वि.] (सं.) चिपटाया हुआ। गले लगाया हुआ। आलिंगन न किया हुआ।

परिसंख्या, परिसङ्ख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गणना। गिनती। २-एक अर्थालङ्कार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात को व्यंग या वाच्य के हटाने के निमित्त कही जाती है। यह कही हुई बात अन्य प्रमाणों से सिद्ध जान पड़ती है।

परिसंख्यात, परिसङ्ख्यात [वि.] (सं.) गिना हुआ। गणना किया हुआ। विशेष रूप से बतलाया हुआ।

परिसंख्यान, परिसङ्ख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) कोष्ठक, सूची आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अन्त में परिशिष्ट के रूप में लगाई जाती है। शेड्यूल।

परिसंघ, परिसङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) राज्यों, छोटे सङ्घों आदि का ऐसा सङ्गठन जो एक दूसरे की सहायता करने तथा कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए सब को एक में रखने के लिए होता है। कॉनफेडरेशन।

परिसंचर, परिसञ्चर [संज्ञा पु.] (सं.) महाप्रलय। सृष्टि के प्रलय का काल।

परिसंतान, परिसन्तान [संज्ञा पु.] (सं.) तार। तन्त्री।

परिसंपद्, परिसम्पद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूर्ण सम्पत्ति और धन-दौलत। एस्टेट। २-वह धन जो कारोबार में लगा हो तथा जल्द हटने वाला न हो। एसेट्स।

परिसभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) सभासद। सदस्य।

परिसमंत, परिसमन्त [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वृत्त के चारों ओर की सीमा।

परिसमापन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाप्ति। खातमा

परिसमाप्त [वि.] (सं.) बिलकुल समाप्त। निश्शेष

परिसमाप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाप्ति। खातमा

परिसमूहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ की अग्नि में समिधा डालना। २-तृण आदि को आग में झोंकना।

परिसर [संज्ञा पु.] (सं) १-नदी अथवा पर्वत के आसपास की भूमि। किसी घर के आसपास का खुला मैदान। २-नाड़ी या शिरा। ३-मृत्यु। मौत। ४-विधि।
[वि.] (सं.) मिला, जुड़ा या लगा हुआ।

परिसरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-इधर-उधर घूमना फिरना। पर्यटन। टहलना। २-हार। पराभव। ३-मौत। मृत्यु।

परिसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रमण। २-इधर-उधर घूमना फिरना। टहलना। ३-किसी के पीछे उसे खोजते या ढूँढ़ते हुए जाना। ४-सुश्रुत के मतानुसार ग्यारह प्रकार के क्षुद्र कुष्ट रोगों में से एक। ५-एक प्रकार का सर्प। ६-नाटक में किसी का किसी की खोज में केवल मार्ग चिह्नों की सहायता अनुमान लगाते हुए उसको ढूँढ़ते हुए फिरना।

परिसर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिलना। रेंगना। २-इधर-उधर चलते-फिरते रहना। घूमना। टहलना।

परिसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) परम विषय का साधन।

परिसाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक विशेष प्रकार का साम।

परिसर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फेरी। २-इधर-उधर-घूमना। फिरना।

परिसार [संज्ञा पु.] (सं.) इधर-उधर घूमना-फिरना।

परिसारक [संज्ञा पु.] (सं.) घूमने-फिरने वाला। इधर-उधर भटकने वाला।

परिसारी [संज्ञा पु.] (सं.) घूमने वाला। परिसारक

परिसिद्धक [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ अपराधियों में से वह अपराधी जो सरकार की ओर से साक्षी बनकर अपराध सिद्ध करने में न्यायालय को सहायता दे। सरकारी गवाह। एप्रूवर

परिसिद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) सरकारी गवाह बनकर अन्य अपराधियों के अपराध प्रमाणित या सिद्ध करना।

परिसिद्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैदिक के अनुसार चावल की बनी एक प्रकार की लपसी।

परिसीमन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रदेश अथवा स्थान की सीमा निर्धारित करना। हद बाँधना। डिलिमिटेशन।

परिसीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चारों ओर की सीमा या हद। २-सीमा ठहराना या निश्चित करना। *लिमिटेशन*। ३-किसी मामले की आखिरी, अन्तिम या चरमसीमा। *एक्सट्रीम*।

परिसेवन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सेवा'।

परिसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सेवा'।

परिसोधना* [क्रि. स.] (हिं.) भली-भांति साफ, शुद्ध, अथवा ठीक करना।

परिस्कंद, परिस्कन्द [वि.] (सं.) वह व्यक्ति जिसका पालन-पोषण किसी अपरिचित मनुष्य ने किया हो।

परिस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चारों ओर फैलाना या बिछाना। छितराना। २-आवरण। आच्छादन।

परिस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक कल्पित लोक जहां परियां रहती हैं। परियों का देश। वह स्थान जहां मनमोहक वस्त्राभूषण से सुसज्जित सुन्दर मनुष्यों, विशेषतः स्त्रियों का जमघट हो।

परिस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी की पीठ पर डालने की रंगीन झूल।

परिस्थान [संज्ञा पु.](सं.) रहने का घर या स्थान

परिस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी घटना, कार्य आदि के आसपास की वास्तविक स्थिति या अवस्था। किसी व्यक्ति अथवा घटना के आसपास होने अथवा घटने वाली बातें या अवस्था में। सर्कमस्टैंसेज।

परिस्पंद, परिस्पन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंपकंपी। काँपने का भाव। दबाना। मर्दन।

परिस्पंदन, परिस्पन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक हिलना या काँपना। २-कंपन। काँपना।

परिस्पर्द्धा, परिस्पर्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुकाबला। प्रतियोगिता। धन, बल या यश आदि में किसी की होड़।

परिस्पर्द्धी, परिस्पर्धी [संज्ञा पु.] (सं.) मुकाबला या प्रतियोगिता करने वाला।

परिस्फुट [वि.] (सं.) १-बिलकुल साफ। प्रत्यक्षगोचर। २-स्पष्टगोचर। ३-पूरा खिला या विकसित। ४-खिला हुआ। विकसित।

परिस्फुरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंप। थरथराहट। २-खिलना।

परिस्मापन [संज्ञा पु.] (सं.) कुतूहल, विस्मय, आश्चर्य आदि उत्पन्न करना।

परिस्यंद, परिस्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूना। टपकना। रिसना। २-बहाव। धारा।

परिस्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहाव। धार। २-फिसलाहट। ३-नदी।

परिस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहाव। प्रवाह। विकास। २-एक प्रकार का रोग जिसमें गुदा से पित्त तथा कफ मिला हुआ पतला मल निकलता है।

परिस्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें से पानी टपकाकर साफ किया जाता है।

परिस्रावी [वि.] (सं.) चूने वाला। टपकने वाला। रिसने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) भगंदर नामक रोग का वह प्रकार जिसमें हर समय गाढ़ा मवाद निकलता रहता है।

परिस्रुत [वि.] (सं.) जिससे कुछ टपक रहा हो।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा। शराब।

परिस्रुतदधि [संज्ञा पु.] (सं.) निचोड़कर पानी निकाला हुआ दही।

परिस्रुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की मदिरा अंगूर से बनती है। २-मदिरा। सुरा। शराब।

परिहत [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हल के अन्तिम तथा मुख्य भाग की वह सीधी खड़ी लकड़ी जिसके ऊपर मुठिया लगी होती है और नीचे वाली हरिस तथा तरेली ठोंकी जाती हैं। नगरा। २-वह नगरा जिसमें तरेली की लकड़ी अलग से नहीं लगानी पड़ती किन्तु जिसका नीचे वाला भाग स्वयं ही इस प्रकार टेढ़ा होता है कि उसी को नुकीला बनाकर उसमें फाल ठोक दिया जाता है। [वि.] (सं.) १-ढीला। २-मृत। मरा हुआ।

परिहरण [संज्ञा पु.](सं.) बलपूर्वक लेना। जबरदस्ती छीन लेना। २-छोड़ना या तजना। परित्याग। ३-दोष अनिष्ट आदि का उपचार करना। निराकरण। निवारण।

परिहरणीय [वि.] (सं.) १-बलपूर्वक लेने या छीन लेने योग्य। २-त्यागने या छोड़ने योग्य ३-उपचार करने योग्य। निवार्य।

परिहरना* [क्रि. स.] (हिं.) त्यागना। छोड़ना।

परिहस* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परिहास। हंसी-दिल्लगी। मसखरी। २-दुःख। खेद। रंज।

परिहाना* [क्रि. स.] (हिं.) प्रहार करना।

परिहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-दोष आदि का निवारण या निराकरण। दोष, अनिष्ट, खराबी आदि दूर करने का काम। २-दोष आदि के निराकरण का उपाय या उपचार। ३-छोड़ने या त्यागने का काम। परित्याग। ४-ग्राम के समीप का वह भूमिखण्ड अथवा परती जमीन जो सब ग्रामीणों की समझी जाय और जिसमें सारे गाँव के पशु चरें। ५-लड़ाई में जीता हुआ धन। ६-लगान कर की माफी। ७-खंडन। तरदीद। ८-अवज्ञा। तिरस्कार। अपमान। ९-साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक में किसी अनुचित अथवा विधेय कर्म का प्रायश्चित करना। १०-उपेक्षा। ११-मनु के मत के अनुसार एक स्थान विशेष। १२-अग्निकुल के अन्तर्गत माने जाना वाला एक राजवंश का नाम।

परिहारक [वि.] (सं.) परिहार करने वाला।

परिहार-विधेयक [संज्ञा पु.] (सं.) वह विधेयक अथवा कानून का मसौदा जो क्षतिपूर्ति विषयक हो। *बिल ऑफ इन्डैम्निटि*।

परिहारना* [क्रि स.] (हिं.) १-त्यागना। छोड़ना २-दूर करना। हटाना।

परिहारी [संज्ञा पु.] (सं.) परिहरण करने वाला। निवारण, त्याग, या हरण करने वाला।

परिहाय [वि.] (सं.) जिसका परिहार किया जा सके। जिससे बचा जा सके। त्याज्य।

परिहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंसी। मजाक। दिल्लगी। ठट्ठा। २-खेल। क्रीड़ा।

परिहासवेदी [संज्ञा पु.] (सं.) भांड़। मसखरा। विदूषक।

परिहित [वि.] (सं.) १-चारों ओर से ढका या छिपा हुआ। आच्छादित। आवृत। २-ऊपर लिया या डाला हुआ (वस्त्र)। ३-पहना या धारण किया हुआ (वस्त्र)।

परिहीण [वि.] (सं.) १-सब तरह से हीन। दीनहीन। २-त्यागाहुआ। परित्यक्त।

परिहृत [वि] (सं.) १-पतित। भ्रष्ट। गिरा हुआ। २-तबाह। नष्ट।

परिहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ध्वंस। नाश। क्षय।

परी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-प्राचीन फारसी कथाओं की वह कल्पित सुन्दर स्त्रियों जिनके कंधे पर पंख लगे होते थे और जो उड़ती थी। २-परमसुन्दरी स्त्री। अत्यन्त रूपवती स्त्री।

परीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. परीक्षिका] या इम्तहान लेने वाला। *अग्जामीनर*।

परीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाँचने या परखने का कार्य। २-किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की इस बात की जांच कि उससे ठीक प्रकार से काम हो सकता है अथवा नहीं या जिस प्रकार का वह होना चाहिए वैसा है या नहीं *ट्रायल*।

परीक्षणिक [वि.] (सं.) १-परीक्षण-विषयक। परीक्षा का। २-अस्थाई रूप से परीक्षण के लिए रखा गया (कमचारी)। *प्रोबेशनरी*।

परीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी की योजना गुण अथवा सामर्थ्य आदि जानने के लिए भली-भाँति जाँचने या परखने की क्रिया या भाव। इम्तहान। समीक्षा। *अग्जामीनेशन*। २-किसी वस्तु के गुण-दोषों की जानकारी के लिए किया गया प्रयोग।। *एक्सपैरीमैंट* ३-वह प्रयोग जिससे प्राचीन न्यायालयों में किसी अभियुक्त या साक्षी अथवा गवाह के झूठे या सच्चे होने का पता लगाया जाता था। दिव्य। निरीक्षण। मुआयना। जांच-पड़ताल।

परीक्षित [वि] (सं) जिसकी जांच या परीक्षा की गई हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन के पौत्र तथा अभिमन्यु के पुत्र का नाम जो उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २-एक अयोध्या नरेश का नाम। ३-कंस के एक पुत्र का नाम। ४-अनश्व के पुत्र का नाम।

परीक्षितव्य [वि.] (सं.) १-परीक्षा करने। योग्य जिसकी परीक्षा करना उचित हो।

परीक्ष्य [वि.] (सं.) परीक्षा करने योग्य। जिसकी परीक्षा करना उचित हो।

परीखना* [क्रि. स.] (हिं.) परखना। जांचना। परीक्षा लेना।

परीछत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परीक्षित'।

परीछम [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियां पहनती हैं

परीछा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परीक्षा'।

परीछित* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परीक्षत'।

परीजाद [वि.] (फा.) बहुत सुन्दर। अत्यन्त रूपवान।

परीज्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञांग। परियज्ञ।

परीणाय [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राम के पास की वह भूमि या परती भूमि जो गांव वालों की समझी जाय।

परीत* [वि.] (सं.) १-घिरा हुआ। २-बीता हुआ। ३-जमाहुआ। ४-अधिकृत कियाहुआ पकड़ा हुआ।

परीताप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परिताप'।

परीतोष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परितोष'।

परीत्त [वि.] (सं.) १-सीमाबद्ध। मर्यादित। २-संकुचित। संकीर्ण।

परीदाह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परिदाह'।

परीप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा। २-शीघ्रता। त्वरा।

परीबंद, परीबन्द [संज्ञा पु.] (फा.) १-कलाई पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। २-एक घुंघुरूदार आभूषण जो बच्चों को पहनाया जाता है। २-कुश्ती का एक पेंच।

परीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परिभाव'

परीरंभ, परीरम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'परिरंभ'

परीर [संज्ञा पु.] (सं.) फल।

परीरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कछवा। २-छड़ी। एक विशेष प्रकार का वस्त्र।

परीरू [वि.] (फा.) अत्यन्त रूपवान। बहुत सुन्दर।

परीवर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) परिवर्त्त।

परीवाद [संज्ञा पु.] (सं.) अपवाद। निंदा।

परीवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार की म्यान। २-परिजन। परिवार। ३-चँवर और छत्र आदि सामग्री।

परीवाह [संज्ञा पु.] देखो 'परिवाह'।

परीशान [वि.] (फा.) हैरान। परेशान।

परीशानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) परेशानी। हैरानी।

परीषह [संज्ञा पु.] (सं.) जैनशास्त्रानुसार (बाईस प्रकार के) त्याग या सहन जो इस प्रकार हैं- क्षुत्परीषह, पिपासापरीषह, शीतपरीषह, उष्णपरीषह, दंशमशकपरीषह, स्त्रीपरीषह, चर्यापरीषह, निद्यापरीषह, शय्यापरीषह, आक्रोशपरीषह, वधपरीषह, याचनापरीषह, लाभपरीषह, रोगपरीषह, तृणपरीषह, मलपरीषह, सत्कारपरीषह, प्रज्ञापरीषह, अज्ञानपरीषह और दर्शनपरीषह।

परीष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खोज। तहकीकात। २-सेवा। चाकरी। ३-पूजा। मान।

परीसार [संज्ञा पु.] (हिं.) इधर-उधर घूमना।

परीहार [संज्ञा पु.] (सं.) अवज्ञा। अनादर।

परीहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-हँसी। मजाक। परिहास। २-क्रीड़ा। खेल।

परु [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाँठ। जोड़। २-अंग। हचक। ३-समुद्र। ४-स्वर्ग। ५-पर्वत। पहाड़।

परुआ [संज्ञा पु.] (देश.) अनादर या अपमान का बदला।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पड़िया'।

परुई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भड़भूजे की अन्न भूनने की नांद।

परुख* [वि.] (हि) देखो 'परुष'।

परुखाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परुषता। कठोरता। कड़ाई।

परुद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

परुष [वि.] (सं.) [स्त्री. परुषा] १-कठोर। कर्कश। कड़ा। २-अप्रिय। बुरा लगने वाला। ३-निष्ठुर। निर्दय। ४-उग्र। प्रचंड। तीव्र। ५-सुस्त। आलसी। ६-मैला। कुचैला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-फालसा। २-तीर। बाण। ३-सरपत। सरकंडा। ४-कठोर, अप्रिय लगने वाली बात। ५-रामायण के अनुसार खरदूषण के एक सेनापति का नाम।

परुषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कर्कशता। कठोरता। कड़ाई। २-श्रुतिकटुता। ३-निर्दयता। निष्ठुरता।

परुषत्व [संज्ञा पु.] (सं.) परुषता।

परुषवचन [संज्ञा पु.] (सं.) कुवाच्य या सख्त कलामी।

परुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रावीनदी। फालसा ३-काव्य में वह वृत्ति अथवा शब्द योजना जिसमें स्वर्गीय, द्वित्व, संयुक्त, रेफ तथा श, ष आदि कठोर वर्णों का और लम्बे-लम्बे समासों को प्रयुक्त किया जाता है। यह वीररस के लिए उपयुक्त होती है।

परुषाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) कर्कश वचन। बुरी लगने वाली बात।

परुषित [वि.] (सं.) कठोर या अप्रिय वचन बोलने वाला।

परुषेतर [वि.] (सं.) कोमल। मुलायम।

परुषोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुवाच्य। निष्ठुर वचन। कठोर वचन।

परूंगा [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय पर पाया जाने वाला। एक प्रकार का शाहबलूत वृक्ष।

परूष, परूषक [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा।

परे [अव्य.] (हिं.) १-दूर। उधर। उस तरफ। उस ओर। २-अतीत। बाहर। अलग। ३-ऊपर। ऊंचे। ४-बाद। पीछे।

परे करना-अलग हो जाने के लिए कहना।

परे बैठाना-मात करना। तुच्छ या छोटा सिद्ध करना।

परेई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फाख्ता। मादा कबूतर। कबूतरी।

परेखना* [क्रि. स.] (हिं.) १-जांचना। परखना। परीक्षा करना। २-प्रतीक्षा करना।

परेखा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जांच। परीक्षा। २-विश्वास। प्रतीति। ३-पछतावा। विषाद। खेद।

परेग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी कील।

परेट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परेड'।

परेड [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह मैदान जहां सैनिकों को युद्ध-विषयक शिक्षा दी जाती है। २-सैनिक कवायद।

परेत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक भूतयोनि का नाम २-प्रेत। [वि.] (सं.) मृत। मराहुआ। सर्वदा के लिए गया हुआ।

परेतभूमि [संज्ञा स्त्री.](सं.) श्मशान। क़ब्रिस्तान

परेतराज [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

परेतवास [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशानभूमि।

परेता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूत लपेटने का जुलाहों का एक औजार। २-वह बेलन जिसमें पतंग या गुड्डी की डोर लपेटी जाती है।

परेर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आसमान। आकाश।

परेली [संज्ञा पु.] (?) नृत्य में तांडव का प्रथम भेद। इसमें अभिनय कम तथा अंग संचालन अधिक करना पड़ता है।

परेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. परेई] १-कबूतर। २-पंडुकी। फाख्ता। ३-वेग से उड़ने वाला पक्षी। ४-लगभग दौड़ती हुई अवस्था में चलने वाला पत्रवाहक या हरकारा।

परेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु।

परेशान [वि.] (फ़ा.) दुःख अथवा संताप के कारण उद्विग्न। व्याकुल।

परेशानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) व्याकुलता। उद्विग्नता। हैरानी।

परेष्टु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कई बार की ब्याई हुई गाय।

परेष्टुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'परेष्टु'।

परेहा [संज्ञा पु.] (देश.) हल चलाने के बाद सींची हुई जमीन।

परैना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैना'।

परों*+ [क्रि. वि.] (हिं.) परसों।

परोक्ष [वि.] (सं.) १-दृष्टि से बाहर। अगोचर अनुपस्थित। २-गुप्त। अनजान। अपरिचित [संज्ञा पु.] १-त्रिकालज्ञाता। परम ज्ञानी। २-अभाव। अनुपस्थिति।

परोक्षत्व [संज्ञा पु.] (सं.) अदृश्य होने की क्रिया या भाव।

परोक्ष-कर [संज्ञा पु.] (सं.) स्वयं प्रत्यक्ष रूप से न देकर अप्रत्यक्ष रूप से उपभोगता का अन्यों के द्वारा दिया जाने वाला कर। *इन्डाइरेक्ट-टैक्स।*

परोक्ष-निर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) अप्रत्यक्ष चुनाव या निर्वाचन। *इन्डाइरेक्ट टैक्स।*

परोक्ष-भोग [संज्ञा पु.] (सं.) वस्तु के स्वामी या मालिक की अनुपस्थिति में उसकी वस्तु का उपभोग।

परोक्ष-मतदान [संज्ञा पु.] (सं.) मतदाता की अनुपस्थिति में किसी और के द्वारा उसके मत का डाला जाना। अप्रत्यक्ष मतदान। अनुपस्थित मतदान। *एब्सेंट-वोटिंग।*

परोक्ष-लाभवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रियाक्षेत्र से दूर रहकर आय प्राप्त करने की पद्धति।

परोक्षवृत्ति [वि.] (सं.) दृष्टि के ओझल रहने वाला।

परोजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घर गृहस्थी से सम्बन्धित कोई ऐसा कार्य जिसमें परिजनों की उपस्थिति आवश्यक हो। २-देखो 'प्रयोजन'।

परोट [संज्ञा पु.] (सं.) घी में तली या पकाई हुई

परोढा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाहिता।

परोता [संज्ञा पु.] (देश.) १-गेहूँ के पायल से बना टोकरा। २-नाई को किसी मंगल कार्य में दिया जाने वाला आटा, गुड़, हल्दी, पान आदि। [संज्ञा पु.] (हिं.) पड़पोता।

परोना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिरोना'।

परोपकार [संज्ञा पु.] (सं.) वह कार्य जिससे दूसरों का हित या भला हो। दूसरों के साथ किया जाने वाला उपकार।

परोपकारक [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरों की भलाई या हित करने वाला।

परोपकारवाद [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरों की भलाई या हित करने वाला सिद्धांत। परमार्थ।

परोपकारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरों के साथ भलाई या हित करने का भाव।

परोपकारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. परोपकारिणी] दूसरों का हित करने वाला। दूसरों की भलाई चाहने वाला।

परोपजाना [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुओं में आपस में भेद करना।

परोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) अभिमंत्रित करना या मंत्र पढ़कर फूंकना।

परोल [संज्ञा पु.](अं.) वह सांकेतिक शब्द जिसे सैनिक अफसर या अधिकारी अपने सैनिकों को बतला देता है तथा जिसके बोलने के कारण पहरे का सैनिक आगंतुक को आने या जाने से नहीं रोकता। *पेरोल।*

परोल मिलना-अपनी ओर मिलाना।

परोवरीण [वि.] (सं.) जिसमें भला और बुरा दोनों गुण हों।

परोवरीयस् [वि.] (सं.) सर्वश्रेष्ठ।

परोष्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तिलचिट्टा। झींगर। २-काश्मीर की एक प्राचीन नदी का नाम जिसका वर्णन पुराणों में मिलता है।

परोस [संज्ञा पु.] (हिं.) पड़ोस।

परोसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पड़ोसन।

परोसना+ [क्रि. स.] (हिं.) थाली या पत्तल में खाने के लिए भोजन रखना। परसना।

परोसा [संज्ञा पु.] (हिं.) थाली या पत्तल में लगा हुआ उतना भोजन जो एक आदमी के खाने भर को पर्याप्त हो।

परोसी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. परोसन] पड़ोसी

परोसैया [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन परसने वाला खाने वालों के आगे थाली या पत्तल में भोजन सामिग्री रखने वाला।

परोहन [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिस पर सवार होकर यात्रा की जाय। वह पशु जिस पर कोई चीज लादी जाय।

परोहा+ [संज्ञा पु.] (देश.) कुएँ से पानी निकालने का चमड़े का थैला या चरसा। पुर। मोट।

परौं* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परसों'।

परौका* [संज्ञा स्त्री](देश.) बच्चा न देने वाली जवान भेड़। बाँझ भेड़।

परौठा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परांठा'।

परौता [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अनाज बरसाते समय हवा करने वाला कपड़ा।

परौती+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पढ़ती'।

पर्कट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बगला

पर्कटि, पर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाकर का वृक्ष पाकड़वृक्ष।

पर्कार, पर्काल [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'परकार' या 'परकाल'।

पर्काला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परकाला'

पर्गना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परगना'।

पर्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) परचा।

पर्चाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'परचाना'

पर्चून [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परचून'।

पर्चूनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परचूनी'।

पर्चूनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परचूनी'।

पर्छा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परछा'।

पर्जंक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्यंक'।

पर्ज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परज'।

पर्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहलदी।

पर्जन्य [संज्ञा पु] (सं.) १-पानी बरसाने वाला, मेघ या बादल। जो गर्जन करे। बादल। २-इन्द्र। ३-विष्णु। ४-कश्यपऋषि के एक पुत्र का नाम जो गधर्वों में गिना जाता है

पर्जन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहलदी।

पर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्ता। पान। ताम्बूल। बाण में लगे पंख। ४-डैना। बाजू। ५-पलास का पेड़। ६-पुस्तक या पंजी आदि का कोई पन्ना या पृष्ठ। ७-कागज आदि का वह टुकड़ा अथवा परत जिसमें से वैसा ही अन्य टुकड़ा अथवा परत प्रतिलिपि के रूप में काटकर अलग रखते हैं। फायल।

पर्णक [संज्ञा पु] (सं.) पर्णिक गोत्र के प्रवर्त्तक एक ऋषि का नाम।

पर्णकपूर [संज्ञा पु.] (सं.) पानकपूर।

पर्णकार [संज्ञा पु] (सं.) तंबोली। पान बेचने वाला।

पर्णकुटिका, पर्णकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झोंपड़ी जो पत्तों से छायी या बनाई गई हो। पर्णशाला।

पर्णकुर्च [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का व्रत जिसमें ढाक, गूलर, कमल और बेल के पत्तों का काढ़ा तीन दिन तक पीया जाता है।

पर्णकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रायश्चित करने वाले को पांच दिन तक पत्तों का काढ़ा पीकर और कुश खाकर रहना होता है।

पर्णखंड, पर्णखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) बिना फूलों का वृक्ष या वनस्पति।

पर्णचीरपट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पर्णचोरक [संज्ञा पु.] (सं.) चोरक नामक गंधद्रव्य।

पर्णनर [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तों का पुतला जो अप्राप्त शव के स्थान में रखकर फूंक दिया जाता है।

पर्णनाल [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तों का डंठल।

पर्णभोजन [संज्ञा पु.](सं.) १-एकमात्र पत्ते खाकर रहने वाला। २-बकरा।

पर्णमणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक अस्त्र विशेष २-पन्ना (रत्न)।

पर्णमाचल [संज्ञा पु.] (सं.) कमरख का वृक्ष।

पर्णमृग [संज्ञा पु.] (सं.) कोई पशु जो वृक्षों के झुरमुट में रहे।

पर्णमेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगुलता।

पर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर विशेष जिसका संहार इन्द्र ने किया था।

पर्णरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वसंत का मौसम या ऋतु।

पर्णल [वि.] (सं.) जिसमें पत्ते हों। पत्तों वाला। जहां पत्तों का बहुमूल्य हो।

पर्णलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पानों की बेल।

पर्णवल्क [संज्ञा पु.] (सं.) इस नाम का ऋषि।

पर्णवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पलाशी नामक एक बेल।

पर्णवी [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। पंछी। [वि.] (सं.) पत्तों पर रहने वाला या पत्तों का घर बनाकर रहने वाला।

पर्णवीटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुपारी के टुकड़े जो पान के बीड़े में रखे जाते हैं।

पर्णशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्तों का बिछौना।

पर्णशवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश का नाम। २-एक आदिम अनार्य जाति।

पर्णशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पर्णकुटी। पत्तों की झोंपड़ी।

पर्णशालाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम जिसका वर्णन पुराणों में मिलता है।

पर्णसि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलविहार-भवन। वह घर जो पानी के बीच बना हो। २-कमल। ३-शाक। ४-उबटन।

पर्णाटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

पर्णाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी व्रत के उद्देश्य से पत्ते खाकर रहने वाला। २-इस नाम का एक ऋषि।

पर्णाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्ते खाकर रहना। २-बादल। मेघ।

पर्णास [संज्ञा पु.] (सं.) तुलसी।

पर्णाहार [संज्ञा पु.] (सं.) व्रत के उद्देश्य से पत्ते खाकर रहने वाला।

पर्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) पत्ते बेचने वाला।

पर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिठवन की बेल। २-अरणी। ३-शालपर्णी।

पर्णिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मषवन।

पर्णिल [मि.] (सं.) जहां पत्तों का बाहुल्य हो। जिसमें पत्ते हों।

पर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष। २-शालपर्णी। ३-पिठवनलता। ४-तेजपात। [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार की अप्सराएँ।

पर्णीर [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंधवाला।

पर्णोटज [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तों की झोंपड़ी। पर्णकुटी।

पर्त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परत'।

पर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-केशसमूह। घने बाल। २-अपानवायु। पाद।

पर्दनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोती।

पर्दा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परदा'।

पर्दानशीन [वि] (हिं.) देखो 'परदानशीन'।

पर्द्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-केश समूह। घने बाल। २-पाद। अपान वायु।

पर्द्दन [संज्ञा पु.] (सं.) पादना। अपानवायु निकालना।

पर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटी घास। २-... के रहने का स्थान। ३-एक पहिये की गाड़ी जिसके सहारे पंगु चलें। ४-मकान।

पर्पट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पित्तपापड़ा। २-पापड़।

पर्पटद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) जलकुम्भी।

पर्पटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोपीचन्दन। २-पपड़ी। ३-पानड़ी। ४-सौराष्ट्रदेश की मिट्टी।

पर्पटीरस [संज्ञा पु.] (सं.) पारे तथा गंधक को भँगरैया के रस में खरल करके और उसमें तांबे और लोहे की भस्म मिलाकर बनाया हुआ एक प्रकार का रस।

पर्परीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-तालाब। जलाशय।

पर्व [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्व'।

पर्वत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्वत'।

पर्वती [वि.] (हिं.) पहाड़ी। पहाड़-संबंधी।

पर्यंक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलंग। खाट। चारपाई। २-योगासन विशेष। ३-एक पर्वत का नाम जो विंध्यपर्वत का पुत्र माना जाता है। ४-एक प्रकार का वीरासन।

पर्यंकपादिका, पर्यङ्कपादिका [संज्ञा स्त्री] (सं) काले रंग की सेम।

पर्यंत, पर्यन्त [अव्य.] (सं.) तक। लौं। [संज्ञा पु.](सं.) १-परिधि। व्यास। २-सीमा। किनारा। ३-पाश्व। बगल। २-अवसान। खातमा।

पर्यंतदेश, पर्यन्तदेश [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोस का, नगर, कसबा, जिला या स्थान।

पर्यंतभू, पर्यन्तभू [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'पर्यंतदेश'।

पर्यंतभूमि, पर्यन्तभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पर्यंतदेश'।

पर्यंतिका, पर्यन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सद्गुणों की हानि या अभाव।

पर्यंतीकृत, पर्यन्तीकृत [वि.] (सं.) समाप्त किया हुआ।

पर्यग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ के निमित्त लाये हुए पशु की, अग्नि लेकर परिक्रमा करना।

वह अग्नि जिसे हाथ में लेकर यज्ञ के चारों ओर परिक्रमा के लिए फिरा जाता है।

पर्यटन [संज्ञा पु.] (सं.) इधर-उधर की मटरगश्त। भ्रमण।

पर्यनुयोग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय का खंडन करने के लिए पूँछताछ। दूषणार्थ जिज्ञासा।

पर्यन्य [संज्ञा पु.] (सं.) गरजता हुआ बादल। २-बादल की गरज। ३-इन्द्र।

पर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) विपर्यय। गड़बड़ी। किसी नियम अथवा क्रम का उलंघन।

पर्ययण [संज्ञा पुं.] (सं.) १-चक्कर लगाना। चारों ओर घूमना। परिक्रमा लगाना। २-घोड़े की जीन।

पर्यवदात [वि.] (सं.) नितांत स्वच्छ या विशुद्ध

पर्यवरोध [संज्ञा पु.] (सं.) रोक। अटकाव। विघ्न। बाधा।

पर्यवलोकक [वि.] (सं.) पर्यवलोकन करने वाला।

पर्यवलोकन [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण कार्य को आदि से अन्त तक सरसरी तौर से समझने, देखने अथवा जाँच करने की क्रिया या भाव सर्वे।

पर्यवसान [संज्ञा पु.] (सं.) १-समाप्ति। अन्त। खात्मा। २-इरादा। निश्चय। ३-ठीक और सही अर्थ निश्चित करना। ४-समावेश।

पर्यवसायी [वि.] (हिं.) समाप्त या खत्म करने वाला।

पर्यवसित [वि.] (सं.) समाप्त या पूरा किया हुआ। खत्म किया हुआ। २-खोयाहुआ। ३-निश्चित किया हुआ।

पर्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विरोध। रुकावट। २-खण्डन।

पर्यवस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) विरोध। रुकावट।

पर्यवस्थित [वि.] (सं.) क्रोधयुक्त। गुस्से में भरा हुआ।

पर्यवेक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखभाल, निरीक्षण अथवा निगरानी करने वाला। सुपरवाइजर। २-किसी बात, काम अथवा व्यवहार आदि को ध्यान से देखने वाला। अबजरवर।

पर्यवेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभांति देखना। निरीक्षण। २-यह देखना कि सब बातें ठीक हैं अथवा नहीं। इन्सपेक्शन। २-किसी कार्य की निगरानी अथवा देखरेख। सुपरवीजन। ३-कोई काम अथवा कार्य को ध्यान से देखते रहना। आबजरवेशन।

पर्यवेक्षित [वि.] (सं.) भलीभांति देखा या निरीक्षण किया हुआ।

पर्यश्रु [वि.] (सं.) अश्रुपूर्ण। आंखों में आंसू भरे हुए।

पर्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंकना। निक्षेप। २-हटाना। दूर करना। ३-मुलतवी करना। स्थगित करना।

पर्यस्त [वि.] (सं.) १-बिखराहुआ। छितराया हुआ। २-अस्तव्यस्त किया हुआ। उलटा-सीधा किया हुआ। निकाला हुआ। ३-घिरा हुआ। ४-घायल किया हुआ।

पर्यस्तापह्नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी वस्तु का गुण छिपाकर उस गुण का किसी दूसरे में आरोपित किया जाना।

पर्यस्ति, पर्यस्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसका व्यवहार तांत्रिकों के साधनों में हुआ करता है। वीरासन।

पर्याकुल [वि.] (सं.) १-बहुत अधिक विकल। बहुत घबड़ाया हुआ।

पर्याकुलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) विकलता। घबड़ाहट।

पर्याचांत, पर्याचान्त [संज्ञा पु.] (सं.) पंगत में बैठकर भोजन खाने वालों में से किसी एक व्यक्ति के बीच में ही आचमन कर लेने या उठ खड़े होने के पश्चात बचा हुआ भोजन।

पर्याण [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की काठी, जीन या साज।

पर्याप्त [वि.] (सं.) १-काफी। आवश्यकतानुसार यथेष्ट। २-प्राप्त। हासिल किया हुआ। मिला हुआ। ३-समर्थ। ४-परिमित। ५-सशक्त। [संज्ञा पु.] १-तृप्ति। संतोष। २-यथेष्ट होने का भाव। प्रचुरता। शक्ति। ४-सामर्थ्य। ५-योग्यता।

पर्याप्ततः [क्रि. वि.] (हि.) पूर्णतया। पूरे तौर पर।

पर्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काफी। यथेष्टता। २-समाप्ति। अवसान। अन्त। उपलब्धि। ३-योग्यता। ४-प्रहार को रोकने की क्रिया।

पर्याय [संज्ञा पु.] (सं.) समानार्थवाची शब्द। समानार्थक शब्द। २-क्रम। सिलसिला। परम्परा। ३-प्रकार। ढंग। तरह। ४-मौका। अवसर। ५-बनाने का काम। निर्माण। ६-एक ही कुल में उत्पन्न होने के कारण किन्हीं दो व्यक्तियों का पारस्परिक सम्बन्ध। ७-एक अर्थालङ्कार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रित करने का वर्णन हो।

पर्यायक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-मान अथवा पद आदि के विचारानुसार क्रम। २-उत्तरोत्तर वृद्धि का विधान।

पर्यायच्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक को त्यागकर या छोड़कर ग्रहण करने की वृत्ति।

पर्यायशयन [संज्ञा पु.] (सं.) पहरा देने वालों का अपनी-अपनी बारी या क्रमानुसार सोना।

पर्यायान्न [संज्ञा पु.] (सं.) पर्याचांत।

पर्यायिक [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत अथवा नृत्य का अङ्गभेद।

पर्यायोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक शब्दालङ्कार जिसमें कोई बात स्पष्ट रूप से न कही जाकर घुमाव-फिराव से कही गई हो या किसी बहाने या व्याज़ से कार्यसाधन किये जाने का वर्णन हो।

पर्यालोचन [संज्ञा पु.] (सं.) छान-बीन अथवा जाँच-पड़ताल करने के लिए किसी वस्तु अथवा बात का भली-भाँति रखना। [वि.] विचारपूर्वक, सावधानी से किया हुआ। डेलिबरेट।

पर्यालोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वस्तु की पूरी-पूरी जाँच-पड़ताल या देख-भाल।

पर्यावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौटकर आना। २-फिर से संसार में आना या जन्मग्रहण करना।

पर्यावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) लौटना। वापस आना।

पर्याविल [वि.] (सं.) मैला या गंदला (पानी)। जिसमें मिट्टी मिली हो।

पर्यास [संज्ञा पुं.] (सं.) १-पतन। गिरना। २-नाश। ३-मार डालना। बध।

पर्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के चारों ओर बैठना। २-चारों ओर घूमना या परिक्रमा करना।

पर्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंधों पर जुआ रखकर किसी भरी हुई गाड़ी को खींचना। २-ढुलाई। ३-बोझ। भार। ४-अन्न जमा करने की क्रिया।

पर्युक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध, होम या पूजन आदि के समय बिना किसी मंत्रोच्चारण के चारों ओर जल छिड़कना।

पर्युक्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पर्युक्षण का जल छिड़कने का पात्र।

पर्युत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह से उठना। खड़ा हो जाना।

पर्युत्सुक [वि.] (सं.) अत्यन्त उत्सुक।

पर्युदय [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्योदय का समय होने को होना।

पर्युदास [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नियम या आज्ञा का अपवाद।

पर्युपस्थान [संज्ञा पुं.] (सं.) १-उपस्थित। २-सेवा। टहल।

पर्युपासक [संज्ञा पु.] (सं.) सेवक। टहलुआ। सेवा करने वाला।

पर्युपासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूजा। अर्चन। २-सेवा।

पर्युप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीज बोने की क्रिया

पर्युषण [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार [illegible]

करों की सेवा या पूजा।

पर्युषित [वि.] (सं.) बासी। जो ताजा न हो।

पर्येषण [संज्ञा पु.] (सं.) १–तर्क द्वारा अनुसंधान या छानबीन। खोज। तहकीकात। २–सम्मान प्रदर्शन। पूजन।

पर्येषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छानबीन। तहकीकात

पर्योष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोज। तलाश।

पर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–गांठ। ग्रन्थि। जोड़। अङ्ग। शरीर के अवयव। ३–भाग। विभाग टुकड़ा। ४–पुस्तक का भाग। जैसे महाभारत में अठारह भाग या पर्व हैं। ५–जीना। सीढ़ी ६–अवधि। निर्दिष्टकाल। विशेषत: प्रतिपक्ष की अष्टमी चतुर्दशी तथा पूर्णिमा एवं अमावस्था। ७–यज्ञ आदि के समय होने वाला उत्सव या कार्य। २–पूर्णिमा, अमावस्था तथा संक्रान्ति। ९–चन्द्र अथवा सूर्यग्रहण। १०–उत्सव। पुण्यकाल। ११–अवसर।

पर्वक [संज्ञा पु.] (सं.) घुटना।

पर्वकार [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोभी ब्राह्मण जो पर्व के दिन का कांम और दिनों में करे।

पर्वकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–पर्व का समय। पुण्यकाल। २–चतुर्दशी, अष्टमी, पूर्णिमा और संक्रान्ति।

पर्वगामी [संज्ञा पु.] (सं.) पर्व के दिन भी स्त्री प्रसंग करने वाला (पर्व के दिन स्त्री-प्रसंग वर्जित है)।

पर्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १–पूरा करने की क्रिया या भाव। २–एक राक्षस का नाम।

पर्वणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक आंख का रोग

पर्वणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पूर्णिमा। पूर्णमासी २–उत्सव। ३–एक प्रकार का आंख का रोग वह आंख की संधि में होता है।

पर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) १–भूमि के ऊपर खूब ऊँचा उठा हुआ वह प्राकृतिक भाग जिसमें पत्थर ही पत्थर होते हैं। पहाड़। २–पर्वत या पहाड़ के सदृश्य किसी वस्तु का लगा हुआ बहुत ऊँचा ढेर। ३–सात की संख्या। ४–पुराणानुसार नारद के एक मित्र देवर्षि का नाम। ५–वृक्ष। ६–एक मछली विशेष जिसका मांस वायुनाशक, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वीर्य को बढ़ाने वाला होता है। ६–एक साग विशेष। ८–एक प्रकार का संन्यासी संप्रदाय। ९–एक गंधर्व का नाम (महाभारत)। १०–मरीचि के एक पुत्र का नाम।

पर्वतकाक [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली कौवा। डोम कौवा।

पर्वतज [वि.] (सं.) पर्वत में से निकलने या उत्पन्न होने वाला।

पर्वतजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गिरिजा। पार्वती। २–नदी।

पर्वततृण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तृण जो पशुओं को बड़ा प्रिय है।

पर्वतपति [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

पर्वतमोचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पहाड़ी केला।

पर्वतराज [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वतों का राजा अर्थात् हिमालय।

पर्वतराजपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

पर्वतवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छोटी जटामासी। २–काली। ३–गायत्री। ४–पहाड़ी प्रदेश की रहने वाली।

पर्वतवासी [वि.] (हिं.) पहाड़ी प्रदेश का रहने वाला।

पर्वतस्थ [वि.] (सं.) पर्वतवासी या पहाड़ी।

पर्वतात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) मैनाकपर्वत का एक नाम।

पर्वतात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

पर्वताधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

पर्वतारि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

पर्वताशय [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

पर्वताश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शरभ नामक जंतु।

पर्वतास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकने पर शत्रुसेना पर बड़े-बड़े पत्थरों की बौछार होने लगती थी या सेना के चारों ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे।

पर्वतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नैपालियों की एक जाति। २–एक प्रकार का कद्दू। ३–एक प्रकार का तिल।

पर्वती [वि.] (हिं.) १–पर्वत या पहाड़-संबंधी। पहाड़ी। २–पहाड़ पर होने या रहने वाला।

पर्वतीय [वि.] (सं.) १–पर्वत या पहाड़-संबंधी। पहाड़ी। २–पहाड़ पर रहने या उत्पन्न होने वाला।

पर्वतेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय। पर्वतराज।

पर्वतोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १–पारद। पारा। २–हिंगुल। शिंगरफ।

पर्वतोद्भूत [संज्ञा पु.] (सं.) अबरक।

पर्वतोर्मि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

पर्वधि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। चाँद।

पर्वयोनि [संज्ञा पु.](सं.) नरकुल, सरपत या बेंत। (वह वनस्पति जिसमें गांठ हो)।

पर्वर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परवल'।

पर्वारिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पालन-पोषण।

पर्वरीण [संज्ञा पु.](सं.) १–पर्व। २–मृतक। मुर्दा ३–गर्व। घमंड। अभिमान।

पर्वरुह [संज्ञा पु.] (सं.) अनार का पेड़।

पर्ववल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब।

पर्वसंधि, पर्वसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) १–पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के बीच का सम २–चन्द्र या सूर्यग्रहण काल। ३–घुटने पर जोड़।

पर्वा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'प्रतिपदा'। २– देखो 'परवाह'।

पर्वानगी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परवानगी'।

पर्वाना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परवाना'।

पर्वाह [संज्ञा पु.](सं.) पर्व का दिन। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परवाह'।

पर्विणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पर्व'।

पर्वित [संज्ञा पु.] (सं.) एक मछली का नाम।

पर्वेश [संज्ञा पु.] (सं.) काल-भेद के अनुसा ग्रहण के अधिपति देवता। (फलित ज्योति

पर्शनीय+ [वि.] (हिं.) छूने या स्पर्श करने योग्य

पर्शु [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुल्हाड़ी। २–हथियार। ३–एक प्राचीन योद्धा जाति का नाम।

पर्शुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छाती पर की हड्डी। पसली।

पर्शुपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) १–गणेशजी। २–परशुराम।

पर्शुराम [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

पर्शुस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम जो अफगानिस्तान देश के अन्तर्गत था।

पर्श्वध [संज्ञा पु.] (सं.) कुठार। कुल्हाड़ी।

पर्ष [वि.] (सं) कठोर। निष्ठुर।

पर्षद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'परिषद्'।

पर्षद्वल [संज्ञा पु.] (सं.) परिषद् का सदस्य।

पर्हेज [संज्ञा पु.] (फा.) १–रोग के समय संयम या अपथ्य वस्तु का परित्याग। २–बचना। अलग रहना।

पर्हेजगार [वि.] (फा.) पर्हेज करने वाला। संयम से रहने वाला।

पलंकट, पलङ्कट [वि.] (सं.) भीरु। डरपोक।

पलंकर, पलङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त।

पलंकष, पलङ्कष [संज्ञा पु.] (सं.) १–राक्षस। प्रेत। २–गूगल।

पलंकषा, पलंकषी, पलङ्कषा, पलङ्कषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गूगल। २–पलास। ३–गोखरू। ४–लाख। ५–गोरखमुंडी। ६–मक्खी।

पलंका+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत दूर का स्थान। दूरवर्ती जगह।

पलंग [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पलंगड़ी] बड़ी, मजबूत और बुनावट आदि में अच्छी चारपाई। पर्यंक।

पलंग को लात मार कर खड़ा होना–१–बहुत भारी बीमारी सहकर अच्छा होना। २–संतान उत्पत्ति के बाद से सुख होना। *पलंग तोड़ना*–घर में बेकार रहना। व्यर्थ पड़े रहना। *पलंग लगाना*–बिस्तर या बिछौना बिछाना।

पलंगड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा पलंग। २-साधारण पलंग।

पलंगतोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक स्तम्भक औषध का नाम जो वीर्य वृद्धि के लिए भी खाई जाती है। [वि.] (हिं.) निठल्ला। सुस्त। आलसी।

पलंगदंत [संज्ञा पु.] (हिं.) चीते के समान टेढ़े दांतों वाला।

पलंगपोश [संज्ञा पु.] (हिं.) पलंग पर बिछाने की चादर।

पलंगिया+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) छोटा और साधारण पलंग। खाट।

पलंजी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास

पलंडी [संज्ञा स्त्री.](देश.) नाव में का वह बांस जिससे या जिसके सहारे पाल खड़ी की जाती है।

पल [संज्ञा पु.] (सं.) १-समय का वह विभाग जो २४ सैकिंड के बराबर होता है। घड़ी अथवा दंड का साठवां भाग। २-चार कर्ष के बराबर की एक तौल। ३-तराजू। तुला। धान अलग किये हुए सूखे डंठल। पयाल। ५-धोखेबाजी प्रस्तारणा। ६-चलने की गति या क्रिया। ७-मूल्य। [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख का पलक। दृगंचल। २-समय का बहुत छोटा विभाग। क्षण। दम।

पल मारते या पल मारने में-तुरंत। *पल के पल या पल की पल में*-देखते-देखते। बात की बात में। क्षणभर में।

पलई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेड़ की नई और कोमल टहनी। २-पेड़ का ऊपरी भाग। सिरा।

पलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आंख के ऊपर का चमड़ा अथवा परदा। जिसके गिरने से आंखें बन्द और उठने से खुलती हैं। २-पल। क्षण। लहमा।

पलक झपकते-बहुत थोड़े समय में। *पलक पसीजना*-१-नेत्रों में आंसू आना। २-हृदय में दया अथवा करुणा उत्पन्न होना। *पलक बिछाना*-प्रेम से आदर, स्वागत करना। *पलक भँजना या भौंजना*-आंखों अथवा पलकों से संकेत करना। पलक गिराना। *पलक मारना*-आंखों से संकेत करना। *पलक लगना*-नींद की झपकी आना। *पलक लगना*-थोड़ी सी नींद आना। *पलक न लगना*-नींद न आना। *पलक से जमीन झाड़ना, तिनके चुनना या नमक उठाना*-श्रद्धा प्रेम से सेवा-सुश्रूषा करना।

पलकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) धूपघड़ी के शंकु की वह छाया जो ठीक दोपहर में पड़ती है।

पलकदरिया [वि.] (हिं.) अति उदार या दानी।

पलकनेवाज [वि.] (हिं.) अति उदार। महादानी। क्षणभर में निहाल कर देने वाला।

पलकपीटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आंख की बरौनी झड़ने का रोग। २-पलकपीटा रोग से पीड़ित रोगी।

पलका※ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पलकी] पलंग। खाट।

पलकी※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी खाट या पलंग।

पलक्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पालक का साग।

पलक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद रंग। श्वेतवर्ण

पलक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त। खून। लहू।

पलखन [संज्ञा पु.] (हिं.) पाकर का पेड़।

पलगंड, पलगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का पलास्तर करने वाला। लेपक। राज।

पलचर [संज्ञा पु.] (हिं.) राजपूत जाति के एक उपदेवता का नाम।

पलटन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-सेना। फौज। २-सैनिकों का दल। ३-समुदाय। झुण्ड।

पलटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी वस्तु के ऊपरी भाग का नीचे अथवा नीचे के भाग का ऊपर हो जाना। उलट जाना। २-अवस्था या दशा बदलना। परिस्थिति में परिवर्त्तन होना। ३-अच्छी अवस्था अथवा स्थिति होना। इच्छित दशा आना अथवा प्राप्त होना। ४-मुड़ना। घूमना। ५-लौटना या वापस होना। [क्रि. स.] १-उलटा अथवा औंधा करना। उलटी को सीधी अथवा सीधी को उलटी करना। २-किसी वस्तु को उसकी पहली की अवस्था अथवा रूप को बदलकर नवीन अवस्था या रूप में लाना। बदलना। ३-बारम्बार उलटना। फेरना। ४-अवनत को उन्नत अथवा उन्नत को अवनत अवस्था या दशा में लाना। उलटना। ५-पहले एक बात कहना और उससे मुकर कर अन्य बात कहना। ※६-वापस करना। लौटना। फेरना।

पलटनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पलटन या सेना में काम करने वाला सैनिक या सिपाही।

पलटा [संज्ञा पु.] (हिं.) पलटने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन। २-बदला। प्रतिफल। ३-नौका में की वह पटरी जिस पर माझी या केवट बैठता है। ४-संगीत में गाते समय ऊंचे स्वर तक पहुँचकर खूबसूरती के साथ फिर नीचे के स्वरों की ओर आना। ५-कुश्ती का एक पेंच। ६-लोहे अथवा पीतल की बड़ी खुरचनी।

पलटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-लौटाना। वापस करना। फेरना। २-बदलना।

पलटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पलटे अथवा उलटे जाने की क्रिया। २-पलटे या उलटे जाने का भाव।

पलटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा पलटा। २-देखो 'उलटी'।

पलटे+ [क्रि. वि.] (हिं.) बदले में। प्रति फलस्वरूप।

पलड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-तराजू का कोई पलड़ा। २-विरोधियों में से कोई पक्ष।

पलथा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी में कलाबाजी मारने की क्रिया।

पलथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएं तथा बाएं पैर का पंजा दहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठते हैं। स्वस्तिकासन।

पलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पाला-पोसा जाना। पर्वरिश पाना। २-खा-पीकर मोटा-ताजा या हृष्ट-पुष्ट होना। [क्रि. स.] (देश.) कोई वस्तु किसी को देना (दलालों की बोली में)। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पालना'।

पलनाना※ [क्रि. स.] (हिं.) घोड़े पर जीन आदि कसकर उसे चलने के लिए तैयार करना। कसना।

पलप्रिय [वि.] (सं.) मांस खाने वाला। [संज्ञा पु.] १-वनकाक। डोमकौआ। २-राक्षस।

पलभक्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. पलभक्षिणी] मांसभक्षी। मांसाहारी।

पलभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धूपघड़ी के शंकु या कील की तत्कालीन छाया जब मेषसंक्रान्ति के मध्यान्हकाल में सूर्य ठीक विषवत् रेखा पर होता है।

पलरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलड़ा'।

पलल [वि.] (सं.) पुलपुला या पिलपिला। [संज्ञा पु.] १-तिल और गुड़ या चीनी के मेल बनाया हुआ लड्डू अथवा तिलकुट। २-तिल का चूरा। ३-कीचड़। ४-मांस। ५-तिल का फूल। ६-राक्षस। ७-गंदगी। मैल। ८-पत्थर। ९-शैवाल। १०-दूध। ११-शव या लाश।

पललज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तज्वर।

पललप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-डोमकाक। २-राक्षस। [वि.] मांस खाने वाला। मांसाहारी।

पललाशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अजीर्ण। बदहजमी। २-गंडरोग।

पलव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जाल जिससे मछलियां पकड़ी जाती हैं।

पलवल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परवल'।

पलवा※ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अंजुली। चुल्लू। २-ऊख के ऊपर का नीरस भाग। अगौरा। ३-एक प्रकार की घास। ४-ऊख के गाड़े जो पाल बोने के लिए पाल में लगाये जाते हैं।

पलवान [संज्ञा पु.](हिं.) पलवा नामक घास जिसे भैंसें बड़े चाव से खाती हैं।

पलवाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी के द्वारा पालन-पोषण कराना।

पलवार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की नाव

होने वाली बड़ी नाव। पटैला। २–ईख बोने का एक ढंग। नगरवा।

पलवारी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) केवट। नौका खेने वाला।

पलवाल+ [वि.] (हिं.) हृष्ट-पुष्ट। बलवान।

पलवैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) पालन-पोषण करने वाला। पालक।

पलस्तर [संज्ञा पु.] (हिं) [अं. प्लास्टर] १–मिट्टी, चूने आदि का दीवार पर लेप। २–रोगी के शरीर पर का औषध का लेप।

पलस्तर ढीला होना अथवा बिगड़ना–सुस्त या मंद पड़ना। परिश्रम, हानि आदि के कारण शिथिल होना।

पलस्तरकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पलस्तर होने या करने की क्रिया या भाव।

पलहना* [क्रि. अ.] (हिं.) पल्लवित होना। लहलहाना।

पलहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) कोंपल। कोमल नया पत्ता।

पलांग, पलांङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सूंस। शिशुमार

पलांडु, पलाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज। कांदा।

पला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–तेल की बड़ी पली। २–तराजू का पल्ला या पलड़ा। ३–आंचल। पल्ला। ४–पल। निमिष।

पलाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त।

पलाद, पलादन [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

पलान [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं की पीठ पर चढ़ने या बोझ आदि लादने के लिए कसी जाने वाली गद्दी या चारजामा। जीन।

पलानना* [क्रि. स.] (हिं.) १–घोड़े आदि पर पलान या चारजामा कसना अथवा बाँधना। २–चलने अथवा चढ़ाई के लिए तैयारी करना।

पलाना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) पलायन करना। भागना।

[क्रि. स.] (हिं.) भगाना।

पलानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–स्त्रियों का एक गहना जो पंजे के ऊपर उंगलियों में पहनती हैं। २–छप्पर। छाजना। ३–देखो 'पलान'।

पलान्न [संज्ञा पु.] (सं.) मांस और चावल के मेल से बना एक खाद्य पदार्थ। पुलाव।

पलायक [संज्ञा पु.] (सं.) अपने सब प्रकार के उत्तरदायित्व त्यागकर अथवा दंड के भय से भाग जाने वाला। भगोड़ा। पलायी। एब्सकांडर।

पलायन [संज्ञा पु.] (सं.) १–भागने की क्रिया या भाव। २–अपना स्थान, पद, उत्तरदायित्व आदि त्यागकर या दंड आदि के भय से बचने के लिए भागना या फरार होना। एब्सकांड।

पलायमान [वि.] (सं.) पलायन करता हुआ।

पलायित [वि.] (सं.) भागा हुआ।

पलायी [संज्ञा पु.] (सं.) पलायक। भगोड़ा। फरार।

पलाल [संज्ञा पु.] (सं.) पुआल। भूसी। चोकर।

पलालदोहद [संज्ञा पु.] (सं.) आम्रवृक्ष। आम का पेड़।

पलाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात प्रकार की राक्षसियों में से वह जो लड़कों को बीमार कर देती है।

पलालि [संज्ञा पु.] (सं.) मांस का ढेर।

पलाश [संज्ञा पु.] (सं.) १–किंशुक नामक वृक्ष। पलास। ढाक। टेसू। २–राक्षस। ३–पत्ता। पत्र। ४–शासन। ५–मगधदेश। ६–एक पक्षी। ७–परिभाषण। ८–विदारीकंद। ९–परिभाषण [वि.] (सं.) १–हरा। २–मांसाहारी। ३–निर्दय

पलाशक [संज्ञा पु.] (सं.) १–ढाक। पलास। २–पलाशवृक्ष के फूल। ३–कपूर। ४–लाख। लाक्षा।

पलाशगंधजा, पलाशगन्धजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशलोचन विशेष।

पलाशच्छदन [संज्ञा पु.] (सं.) तमालपत्र।

पलाशततरुज [संज्ञा पु.] (सं.) पलास का नया या ताजा पत्ता। पलास की कोंपल।

पलाशन् [संज्ञा पु.] (सं.) मैना। सारिका।

पलाशनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) ढाक का गोंद।

पलाशपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वगंधा। असगंध।

पलाशांता, पलाशान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनकचूर। गंधपत्रा।

पलाशाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) नाड़ी। हींग।

पलाशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विदारीकंद।

पलाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक नदी जो शुक्तिमान पर्वत से निकली थी। २–रेवतक पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम।

पलाशी [वि.] (सं.) मांसाहारी। २–पलाशयुक्त। [संज्ञा पु.] १–राक्षस। २–क्षीरिका। खिरनी। ३–कचूर। [संज्ञा स्त्री.] १–कचरी। २–लाख।

पलाशीय [वि.] (सं.) पत्रयुक्त।

पलास [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का वृक्ष जिसमें लाल फूल लगते हैं। ढाक। टेसू। २-गीध की जाति का एक मांसहारी पक्षी।

पलासना [क्रि. स.] (हिं.) सिल जाने पर राँपी से जूते का फालतू चमड़ा तराशना या काटना।

पलासपापड़ा [संज्ञा पु] (हिं.) पलास की फली जो दवा के काम में आती है। ढकपन्ना।

पलासपापड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पलास पापड़।

पलिंजी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जिसके दानों को गरीब लोग अकाल के दिनों खाते हैं।

पलिक [वि.] (सं.) तोल में एक पल के बराबर।

पलिका [संज्ञा पु.] (हि.) पलंग। चारपाई।

पलिक्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह बूढ़ी स्त्री के बाल पक गये हों। २–गाय जो प्रथम बार ब्यायी हो। बालगर्भिणी।

पलिघ [संज्ञा पु.] (सं.) १–काँच या शीशे का घड़ा। २–दीवार। परकोटे की दीवार। लोहे का डंडा। ४–अर्गल।

पलित [वि.] (सं.) [स्त्री. पलिता] १–वृद्ध। बुड्ढा। २–पका हुआ या सफेद (बाल)। [संज्ञा पु.] १–सफेद बाल। २–बुढ़ापे के कारण बालों का सफेद होना। ३–एक रोग जिसके कारण असमय ही बाल सफेद हो जाते हैं। ४–गूगल। ५–कीचड़। ६– ७–गरमी। ताप। ८–शैलज।

पलितग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) तगर। गुल

पलिती [वि.] (हिं.) पलित रोग वाला। जिसे पलित रोग हुआ हो।

पलिया [संज्ञा पु.] (देश.) पशुओं को होने वाला एक रोग जिसमें उनका गला फूल जाता है।

पलिहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत जिसमें बरसात के दिनों में बिना कुछ बोये केवल जोत कर छोड़ दिया हो। चौमासा।

पली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की कलछी जिससे बड़े बरतन में से तेल, घी आदि निकालते हैं।

पली-पली जोड़ना–थोड़ा-थोड़ा करके संग्रह करना।

पलीत [संज्ञा पु.] (हिं.) भूत। प्रेत। पिशाच।

पलीता [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. पलीती] १–मंत्र लिखकर जलाने के निमित्त बत्ती की तरह लपेटा हुआ कागज। २–बन्दूक या तोप की रंजक में आग लगाने की बत्ती। फ्यूजर।

काल-पलीता–निश्चित समय के बाद विस्फोटक को भड़काने वाला पलीता। टाइम-फ्यूज।

पलीता चाटना–भड़क कर जल या बल उठना।

[वि.] (हि.) १–तेज दौड़ने या भागने वाला। २–क्रोध से लाल।

पलीती [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा पलीता।

पलीद [वि.] (फा.) १–अपवित्र। गन्दा। स्पद। ३–नीच। दुष्ट।

[संज्ञा पु.] (हिं.) भूत। प्रेत।

पलुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पाला हुआ। पालतू। [संज्ञा पु.] (देश.) सन की जाति के एक का नाम।

पलुहना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) पल्लवित होना। हराभरा होना।

पलूखना [क्रि. स.] (हि.) देना।

पलेट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) लंबी पट्टी या पटरी।

पलेटन [संज्ञा पु.] (अं.) छापे के यन्त्र

चिपटा लोहे का भाग जिसके दबने से अक्षर छपते हैं।

पलेड़ना*+ [क्रि. स.] (हिं.) धक्का देना। धकेलना।

पलेथन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रोटी बेलने के समय गीले आटे के पेड़े के लगाया जाने वाला सूखा आटा। २-वह अनावश्यक व्यय जो किसी हानि या घड़े के पीछे हो।
पलेथन निकलना-१-व्यग्र या परेशान होना। २-खूब मार पड़ना। *पलेथन निकालना*-१-खूब मारना। २-तंग करना।

पलेनर [संज्ञा पु.] (अं.) प्रेस के कसे हुए फरमे को चौरस करने की पटिया।

पलेना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलेनर'।

पलेव+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-खेत की सिचाई या छिड़काव। पटकन। २-जूस। शोरवा। ३-शोरवे को गाढ़ा करने का मसाला।

पलोटना [क्रि. स.] (हिं.) १-पैर दवाना। २-सेवा करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) तड़फड़ाना। तड़फते हुए इधर उधर लोटना।

पलोथन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलेथन'।

पलोवना* [क्रि. स.] (हिं.) १-पैर दवाना। २-सेवा करना।

पलोसना* [क्रि. स.] (हिं.) १-धोना। २-मीठी-मीठी वातें करके फुसलाना।

पल्टन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पलटन'।

पल्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलटा'।

पल्थी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पलथी'।

पल्यंक, पल्यङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) पलंग। खाट।

पल्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीन। काठी। २-लगाम। रास।

पल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न रखने का वड़ा भंड़ार। खत्ती।

पल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-नये निकले हुए कोमल पत्ते। कोंपल। २-कड़ा, कंकण या वाजूवंद। ३-दक्षिण का एक राजवंश। ४-चपलता। चांचल्य। ५-वल। ताकत। विस्तार। फैलाव। ६-नाच में हाथ की एक प्रकार की स्थिति। ७-पह्लवदेश। ८-पह्लवदेश का निवासी।

पल्लवक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अधर्मी। दुराचारी। २-अप्राकृतिक मैथुन करने वाला बालक। ३-रंडी का प्रेमी। ४-अशोक वृक्ष। ५-एक प्रकार की मछली। ६-कोंपल। कल्ला। अँखुआ।

पल्लवग्राही [वि.] (सं.) किसी विषय का पूरा ज्ञान न रखने वाला।

पल्लवद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक वृक्ष।

पल्लवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पौधों का पल्लव या पत्ते निकालना अथवा उत्पन्न करना। २-किसी बात वा विषय का विस्तार करना।

पल्लवना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पल्लवित होना। पत्ते निकलना। २-पनपना।

पल्लवांकुर, पल्लवाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) शाखा डाली।

पल्लवाद [संज्ञा पु.] (सं.) हरिण। हिरन।

पल्लवाधार [संज्ञा पु.] (सं.) शाखा। डाली।

पल्लवास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पल्लवाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) तालीसपत्र।

पल्लविक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुराचारी लम्पट। २-अप्राकृतिक मैथुन कराने वाला।

पल्लवित [वि.] (सं.) [स्त्री. पल्लविनी] १-नवीन पत्तों से युक्त। नये-नये पत्तों वाला। २-हरा-भरा। लहलहाता। ३-विस्तृत। ४-लाख के रंग में रंगा हुआ। ५-जिसके रोंगटे खड़े हों।

पल्लवी [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्ष। पेड़। [वि.] (हिं.) नये पत्तों से युक्त। जिसमें पत्ते हों।

पल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी कपड़े का सिरा या छोर। दामन। आंचल। २-दुपल्ली टोपी का एक भाग। ३-वह चादर जिसमें अन्न बांधकर ले जाते हैं। ४-किवड़। पटल। ५-बोरा। ६-तराजू का पलड़ा। ७-तीन मन का बोझ। ८-पास। अधिकार में। ९-दूरी। १०-तरफ। ११-कैंची के दो भागों में से एक।
पल्ला छूटना-छुटकारा पाना। *पल्ला छुड़ाना*-पीछा छुड़ाना। *पल्ला झुकना*-पक्ष बलवान होना। *पल्ला पकड़ना*-१-सहारा लेना। २-रोक लेना। *पल्ला पसारना*-१-मांगना या हाथ फैलाना। २-दुआ प्रार्थना करना। *पल्ला भारी होना*-पक्ष वलवान या भारी होना। *पल्ला-लेना*-१-सहारा लेना। २-रोक लेना। *पल्ले-पड़ना*-१-हिस्से में आना। २-हाथ लगना। ३-देखो 'पल्ले बंधना'। *पल्ले बाधना*-१-ब्याह देना। २-गांठ बाँधना। ३-तह करना या बंद करना। ४-ऊपर या जिम्मे करना। *पल्ले से बंधना*-१-गले पड़ना। २-जवरदस्ती मिलना। विवाह में आना। [क्रि. वि.] (हिं.) १-दूर। २-दूरी। [वि.] (हिं.) देखो 'परला'।

पल्लिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास जो लाल रंग की होती है।

पल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा गांव। गांवड़ा २-झोंपड़ी। ३-मकान। स्थान। ४-नगर या कसवा। ५-झोंपड़ी। ६-विस्तुइया। छिपकली

पल्लू* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आँचल। छोर। २-चौड़ी गोट। पट्टा।

पल्ले [अव्य.] (हिं.) १-अधिकार या पास में। २-गांठ में। *+[वि.] १-पल्ला। २-परलय।

पल्लेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह मनुष्य जो अनाज आदि के बोरे ढोता है। २-अनाज तोलने का काम करने वाला मनुष्य। वया।

पल्लेदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पल्लेदार का काम

पल्लौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पल्लव। अनाज बांधने की चादर या गोन।

पल्वल [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा तालाब।

पल्वलपंक, पल्वलपङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) तालाब की कीचड़।

पल्वलावास [संज्ञा पु.] (सं.) कछुआ।

पव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पवन। हवा। २-गोवर। ३-अनाज को फटकना या पछोरना।

पवई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया जिस की चोंच पीली, पीठ खाकी, तथा छाती खैरे रंग की होती है।

पवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवा। वायु। २-प्राण वायु। ३-श्वास। सांस। ४-अनाज का भूसी से अलगाना। ५-जल। पानी। ६-कुम्हार का आवा। ७-विष्णु। ८-उत्तममनु के पुत्र का नाम। (पुराण)।
[वि.] (हिं.) देखो 'पावन'।

पवन-अस्त्र [संज्ञा पु.] (हिं.) वह अस्त्र जिसके चलाने से बड़े वेग से वायु चलने लगती है

पवन-कुमार [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान।

पवन-चक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वायु के वेग से चलने वाली चक्की।

पवन-चक्र [संज्ञा पु.] (सं.) चक्र खाती हुई वायु। ववंडर।

पवनज, पवन-तनय [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीम (पांडव)।

पवन-नंद, पवन-नन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीम।

पवन-नंदन पवन-नन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। भीमसेन।

पवन-पति [संज्ञा पु.] (सं.) वायु (हवा) के अधिष्ठाता देवता।

पवन-परीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन ज्योतिषियों की वह क्रिया जिससे वायु की दिशा को देखकर ऋतु विषयक भविष्यवाणी करते हैं।

पवन-पुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनूमान जी। २-भीमसेन नामक पाँडव।

पवन-पूत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पवन-पुत्र'।

पवन-बाण [संज्ञा पु.] (सं.) वह बाण जिसके चलने से प्रचंड वायु बहने लगती है। (पुराण)।

पवन-वाहन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

पवन-व्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गठिया का रोग। [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्ण सखा उद्धव या ऊधो

पवन-संघात [संज्ञा पु.] (सं.) दो ओर से या दिशाओं से वायु का आकर आपस में जोर से टकराना। (यह अपशकुन समझा जाता है। दुर्भिक्ष या देश पर आक्रमण का सूचक होता है)।

पवन-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीमसेन।

पवना+ [संज्ञा पु.] (देश.) झरना।

पवनात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १–हनुमान। २–भीम ३–अग्नि।

पवनाल [संज्ञा पु.] (सं.) पुनेरा नामक एक धान्य

पवनाश, पवनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

पवनाशनाश [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

पवनाशी [संज्ञा पु.] (हिं.) साँप। [वि.] (हिं.) जो हवा खाकर रहता हो।

पवनास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) यह अस्त्र जिसके चलने से प्रचंड वायु बहने लगती हैं। (पुराण)।

पवनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–गांव में रहने वाला वह दीन-दलित लोग जो अपने निर्वाह के लिए गांव के लोगों से नियमित रूप से खाना आदि पाते रहते हैं। २–'पौना'।

पवनेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) बकायन।

पवनोंबुज, पवनोम्बुज [संज्ञा पु.] (सं.) फालसा

पवमान [संज्ञा पु.] (सं.) १–पवन। हवा। २–चन्द्रमा का एक नाम। ३–यज्ञीय अग्नि विशेष। ४–अग्नि के एक पुत्र का नाम। ५–स्तोत्र जो ज्योतिष्टोम यज्ञ में गाया जाता है।
[वि.] (सं.) पवित्र करने वाला।

पवर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पँवरि'।

पवरिया [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पौरिया'।

पवरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पँवरि'।

पवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग। जिसमें प से म तक के अक्षर होते हैं।

पवाँर [संज्ञा पु.] (देश.) १–पमार क्षत्रियों की एक शाखा। २–चकवड़।

पवाँरना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–गिराना। फेंकना। २–खेत में बीज बोना या छितराना।

पवाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक पैर का जूता। २–चक्की का एक पाट।

पवाड़ [संज्ञा पु.] (देश.) चकवड़।

पवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पँवाड़ा'।

पवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) भोजन करना या खिलाना।

पवार [संज्ञा पु.] (हिं.) परमार।

पवि [संज्ञा पु.] (सं.) १–वज्र। २–बिजली। गाज। ३–वाक्य। ४–थूहर। ५–मार्ग। राह। रास्ता। पथ।

पविताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पवित्रता। सफाई

पवित्तर [वि.] (हिं) देखो 'पवित्र'।

पवित्र [वि.] (सं.) १–शुद्ध। निर्मल। साफ। २–पापरहित।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–चलनी आदि साफ करने का साधन। २–कुश जो यज्ञ में घी को छिड़कने अथवा शुद्ध करने में व्यवहृत होता है। ३–कुश की पवित्री। ४–यज्ञोपवीत। जनेऊ। ५–ताँबा। ६–जलवृष्टि। ७–जल। ८–मलना। साफ करना। ९–अर्घा। १०–घी। ११–शहद। १२–रगड़। १३–महादेव। १४–विष्णु। १५–कार्त्तिकेय का एक नाम। १६–पुत्रजीवा वृक्ष।

पवित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूत का बना हुआ जाल। २–कुशा। ३–दौने का पेड़। ४–गूलर का वृक्ष। ५–पीपल। ६–क्षत्रिय का जनेऊ।

पवित्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वच्छता। पावनता। सफाई।

पवित्रधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) जौ। जव। यव।

पवित्रवति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वनस्पति जो क्रौंचद्वीप में होती है।

पवित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–तुलसी। २–एक नदी का नाम। ३–हलदी। ४–पीपल। ५–रेशम के दानों की बनी हुई माला। ६–श्रावणसुदी एकादशी।

पवित्रात्मा [वि.] (सं.) जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध अन्तःकरण वाला।

पवित्रारोपण, पवित्रारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) सावनसुदी बारस को होने वाला एक उत्सव जिसमें भगवान कृष्ण की मूर्त्ति को यज्ञोपवीत पहनाई जाती है।

पवित्राश [संज्ञा पु.] (सं.) सन का डोरा। (प्राचीन काल में भारतीय इसे बहुत पवित्र मानते थे)।

पवित्रित [वि] (सं.) निर्मल या शुद्ध किया हुआ

पवित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्मकांड के समय अनामिका में पहनने का कुश का बना छल्ला

पवित्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अशुद्ध या अपवित्र वस्तु को पवित्र करना। शुद्धि।

पविद [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

पविधर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र। (जो वज्र धारण करते हैं)।

पवीनव [संज्ञा पु.] (सं.) वह असुर जो स्त्रियों के गर्भ गिरा देते थे। (अथर्ववेद)।

पवीर [संज्ञा पु.] (सं.) १–हल की फाल। २–हथियार। शस्त्र। ३–वज्र।

पवेरना+ [क्रि. स.] (हिं.) खेत में छितराकर बीज बोना।

पवेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न को छितराकर या फेंककर की जाने वाली बोआई।

पव्य [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञपात्र।

पशम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बढ़िया और मुलायम ऊन जिसके दुशाले आदि बनाये जाते हैं। २–उपस्थ पर के बाल। झांट। ३–अत्यन्त तुच्छ वस्तु।
पशम उखाड़ना–१–कोई नुकसान न पहुँचा सकना। २–फिजूल में समय खोना। *पशम न उखड़ना*–१–कुछ भी न बन पड़ना। २–कुछ भी कष्ट अथवा हानि न होना *पशम पर मारना*–बिलकुल हीन समझना। *पशम न समझना*– कुछ भी न समझना।

पशमीना [संज्ञा पु.] (फा.) पशम या पश का बना कपड़ा।

पशव्य [वि.] (सं.) १–पशु के योग्य। २–पशु पूर्ण। पशु जैसा। ३–पशु-संबंधी।

पशु [संज्ञा पु.] (सं.) १–चार पैरों से चलने वाला जंतु। जानवर। मवेशी। चौपाया। २–जीव मात्र। प्राणी। ३–देवता। ४–यज्ञ। ५–अग्नि कुंड। ६–शिव का एक गण।

पशु-अवरोध [संज्ञा पु.] (सं.) यह सार्वजनिक स्थान जिसमें कृषि को हानि पहुँचाने वाले आवारा पशु बन्द करके रखे जाते हैं। कांजी हाउस। कैटल पाउंड।

पशुकर्म [संज्ञा पु.] यज्ञादि में पशुओं का बलिदान।

पशुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का हिरन।

पशुकाम [वि.] (सं.) गाय भैंस का अभिलाषी।

पशुक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पशु बलिदान की क्रिया। २–संभोग। मैथुन।

पशुगायत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बलिपशु के कान में उच्चारण करने का एक मन्त्र।

पशुघात [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में पशु-वध।

पशुघ्न [वि.] (सं.) पशुघातक।

पशुचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पशु की सी तरह विवेकहीन आचरण। २–स्वेच्छाचार।

पशुचिकित्सक [संज्ञा पु.] (सं.) पशुओं की चिकित्सा करने वाला। वैद्य।

पशुचिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह ग्रंथ या शास्त्र जिसमें पशु के रोग और उनके निदान लिखे होते हैं।

पशुचिकित्सालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां पशुओं के रोगों का इलाज होता है।

पशुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पशु का भाव। २–मूर्खता। जानवरपन।

पशुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पशुता।

पशुदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

पशुधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) पशु के समान व्यवहार। २–पशु के सदृश स्वच्छन्द मैथुन। यह धर्म मनुष्यों के लिए निंदनीय समझा जाता है– मनु।

पशुनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। महादेव। २–सिंह। शेर।

पशुप [संज्ञा पु.] (सं.) पशुता। गोपाल। [वि.] (सं.) पशुओं को पालने वाला।

पशुपतास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव जी का शिखर नामक अस्त्र।

पशुपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–पशु पालने या रखने वाला। ३–अग्नि। ४–औषधि। दवा।

पशुपन्वल ,

पशुपन्वल [संज्ञा पु.] (सं.) केवटीमोथा।

पशुपाल [संज्ञा पु.] (सं.) पशुओं को पालने वाला। गड़रिया। ग्वाला।

पशुपालक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पशुपालिका] पशुओं को पालने वाला। पशुओं का रक्षक।

पशु-पालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशुओं का पालना या रखना। २-पशुओं को ठीक तरह से रखने पालने-पोसने और उनकी नसल सुधारने की विद्या अथवा कला।

पशुपाश [संज्ञा पु.](सं.) पशुरूपी जीव का बंधन

पशुपाशक [संज्ञा पु.] (सं.) एक मैथुन विशेष। एक रतिबंध का नाम।

पशुभाव [संज्ञा पु.](सं.) १-पशुता। जानवरपन। २-तंत्र के अनुसार मंत्र के साधन के तीन प्रकारों में से एक।

पशुमार [अव्य.] (सं.) पशुवध की प्रणाली के अनुसार।

पशुयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ विशेष जिसमें पशुबलि दी जाती है।

पशु-मैथुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नर और मादा पशुओं का परस्पर संभोग। २-मनुष्य का मादा पशुओं के साथ संभोग। *बेस्टियालिटी*।

पशुयाग [संज्ञा पु.] (सं.) पशुबलियज्ञ।

पशुराशि [संज्ञा पु.] (सं.) गोपाल। ग्वाला। गड़रिया।

पशुरक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) पशु की रक्षा करने वाला।

पशुरज्जु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पशु बांधने की रस्सी

पशुराज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

पशुलंब, पशुलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) इस नाम एक प्राचीन देश।

पशुवत् [वि.] (सं.) पशु का सा। पशु के समान।

पशुहरीतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमड़े का फल।

पश् [संज्ञा पु.] देखो 'पशु'।

पश्चात् [अव्य.] (सं.) पीछे से। पीछे। तदुपरांत बाद। फिर। अनन्तर।

पश्चात्कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के मतानुसार वह कर्म जो शरीर के बल, वर्ण, अग्नि आदि की वृद्धि के लिए रोग की समाप्ति पर शरीर को पूर्व प्रकृत अवस्था में लाने के लिए किया जाता है।

पश्चाताप [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अनुचित अथवा बुरे काम से मन में उत्पन्न होने वाली ग्लानि या खेद। पछतावा। अनुताप।

पश्चात्तापी [वि.] (सं.) पछताने वाला।

पश्चादुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाद में कहना।

पश्चाद्भाग [संज्ञा पु.] (सं.) पिछवाड़ा। पीछे का हिस्सा।

पश्चानुताप [संज्ञा पु.] (सं.) पछतावा। अनुताप। अफसोस।

पश्चान्मारुत [संज्ञा पु.] (सं.) पछवा। पश्चिम दिशा की ओर से आने या बहने वाली हवा

पश्चारुज [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों को होने वाला एक रोग जो माता के कदन्न खाने से उतरने वाले दूध को पीने के कारण होता है।

पश्चार्द्ध [वि.] (सं.) शेषार्ध। [संज्ञा पु.] १-(शरीर का) पिछला भाग। २-(समय या स्थान-सम्बन्धी) अन्तिम। ३-राठ का अन्तिम आधा भाग।

पश्चिम [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व दिशा के सामने वाली वह दिशा जिस ओर सूर्य अस्त होता है। प्रतीची। पच्छिम। [वि.] (सं.) पिछला। अन्तिम। २-जो बाद में उत्पन्न हुआ हो।

पश्चिम-घाट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पश्चिमी-घाट'।

पश्चिमप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम की ओर झुकी हुई भूमि।

पश्चिमयामकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के मतानुसार रात्रि के पिछले पहर का कृत्य।

पश्चिमरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) रात्रि का अन्तिम या शेष भाग।

पश्चिमवाहिनी [वि.] (सं.) पश्चिम दिशा की ओर बहने वाली (नदी)।

पश्चिमसागर [संज्ञा पु.] (सं.) एटलांटिक महासागर।

पश्चिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य के अस्त होने की दशा। प्रतीची। पश्चिम।

पश्चिमाचल [संज्ञा पु.] (सं.) एक कल्पित पर्वत जिसके विषय में लोगों की यह धारणा है कि सूर्य उसकी आड़ में होकर छिपता है। अस्ताचल।

पश्चिमी [वि.] (हिं.) १-पश्चिम की ओर का। २-पश्चिम दिशा की ओर के देश का रहने वाला। ३-पश्चिम-सम्बन्धी।

पश्चिमीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) रहन-सहन वेश-भूषा तथा आचार-व्यवहार में पाश्चात्य देशों का अनुकरण करना।

पश्चिमीघाट [संज्ञा पु.] (हिं.) बम्बई राज्य के पश्चिम दिशा की पर्वतमाला जो विंध्य-पर्वत की पश्चिमी शाखा की अन्तिम सीमा से समुद्र के तट के सहारे-सहारे ट्रावनकोर की उत्तरी सीमा तक चली गई है।

पश्चिमोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर और पश्चिम के मध्य का कोना। वायुकोण।

पश्त [संज्ञा पु.] (फा.) खंभा।

पश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) तट। किनारा।

पश्तो [संज्ञा पु.] (देश.) पाकिस्तान की पश्चिमोत्तर सीमा से अफगानिस्तान तक बोली जाने वाली भाषा। २-एक ताल जिसमें दो आघात होते हैं। यह ३॥ मात्राओं का होता है।

पश्म [संज्ञा पु.] (फा.) भेड़, बकरी आदि का मुलायम रोंवा।

पश्मीना [संज्ञा पु.] (फा.) मुलायम रोंये का बना कपड़ा जो बहुत गरम होता है।

पश्यंती, पश्यन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाद की वह अवस्था जब कि वह मूलाधार से उठकर हृदय में जाता है।

पश्यतोहर [संज्ञा पु.] (सं.) आंखों के सामने, देखते-देखते चीज चुरा लेने वाला। जैसे-सुनार।

पश्वयम [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैविकयज्ञ विशेष

पश्वाचार [संज्ञा पु.] (सं.) देवी का वह पूजन या अर्चन जो कामना और संकल्प सहित वेदोक्त विधान से किया जाता है।

पश्वाचारी [संज्ञा पु.] (हिं.) कामना और संकल्प-सहित, वैदिक रीति से देवी का पूजन करने वाला।

पश्विज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ

पश्वेकादशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जिसमें देवताओं को प्रसन्न करने के उद्देश्य से पशुबलि दी जाती है।

पष+* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पंख। डैना। २-पक्ष। पाख। ३-ओर। तरफ।

पषां [संज्ञा पु.] (हिं.) दाढ़ी। श्मश्रु।

पषाण, पषान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाषाण'।

पषारना+* [क्रि. स.] (हिं.) धोना।

पष्पान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाषाण'।

पसंगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बोझ जो तराजू के पल्लों का सम भार करने के लिए जिस ओर हलका होता है बांध देते हैं। [वि.] बहुत कम या थोड़े परिमाण का। *पसंगा भी न होना*–कुछ भी न होना।

पसंघा [संज्ञा पु.,वि.] (हिं.) देखो 'पसंगा'।

पसंती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पश्यंती'।

पसंद [वि.] (फा.) रुचि के अनुकूल। मन को भला लगने वाला।

[संज्ञा स्त्री.] (फा.) मन को रुचिकर प्रतीत होने की वृत्ति। अभिरुचि।

पसंदा [संज्ञा पु.](देश.) १-एक प्रकार का कबाब २-मांस के कुचले हुए टुकड़े।

पस [अव्य.] (फा.) अतः। इस कारण।

पसई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पहाड़ी राई।

पसकरण [वि.] (डिं.) कायर। डरपोक।

पसघ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पसंगा'।

पसताल [संज्ञा पु.] (देश.) पानी के आस-पास उड़ने वाली एक प्रकार की घास।

पसनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्नप्राशन संस्कार जिसमें बालक को प्रथम बार अन्न खिलाया जाता है।

पसर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गहरी की हुई हथेली।

आधी अंजली। करतल पुट। २-विस्तार। प्रसार। फैलाव। [संज्ञा पु.] (देश.) १-आक्रमण। धावा। चढ़ाई। २-पशुओं को रात्रि के समय चराने का काम।

पसरकटाली, पसरकटेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भटकटैया। कटाई।

पसरन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) पसारनी। गंध प्रसारणी

पसरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फैलना। २-विस्तृत होना। ३-पैर फैलाकर इस प्रकार सोना कि कोई और सो या बैठ न सके।

पसरट्टा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पसरहट्टा'।

पसरहट्टा संज्ञा पु.] (हिं.) वह बाजार जहाँ पंसारियों की दुकानें हों।

पसराना [क्रि. स.] (हिं.) पसारने का काम दूसरे से करना।

पसरौहाँ* [वि.] (हिं.) पसरने या फैलने वाला। जो पसरता हो।

पसली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मनुष्यों और पशुओं आदि के छाती पंजर में की आड़ी और कुछ गोलाकार हड्डी।
पसली का रोग-बच्चों को होने वाला वह रोग जिसमें उनका सांस जोर-जोर से चलता है। *पसली फड़कना या फड़क उठना*-जोश या उमंग पैदा होना। *पसलियाँ ढीली करना*-बहुत मारना पीटना। *पसली तोड़ना*-बहुत मारना।

पसवपेश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पसोपेश'।

पसवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) हलका गुलाबी रंग।

पसही+ [संज्ञा पु.] (देश.) तिन्नी का चावल।

पसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अंजली।

पसाई [संज्ञा स्त्री.] देश.) पसताल नामक घास।

पसाउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) कृपा। अनुग्रह।

पसाना [क्रि. स.] (हिं.) भात पकजाने के उपरान्त उसमें का माँड या बचा हुआ पानी निकालना।
*[क्रि. अ.] (हिं.) प्रसन्न होना।

पसार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परसने की क्रिया या भाव। फैलाव। प्रसार। २-लम्बाई चौड़ाई। ३-दालान।

पसारना [क्रि. स.] (हिं.) फैलाना।

पसारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रसार। फैलाव। २-विस्तार। लम्बाई-चौड़ाई।

पसारी [संज्ञा पु.] (देश.) १-तिन्नी का धान। २-पंसारी।

पसाव [संज्ञा पु.] (हिं.) पसाने के उपरान्त निकलने वाला पदार्थ। माँड़। पीच।

पसावन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पकाई या उबाली हुई वस्तु में का निकाला हुआ पानी। २-माँड़। पीच।

पसाहन* [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगराग।

पसिंजर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रेल या जहाज का यात्री। २-यात्रियों को लेकर चलने वाली गाड़ी जो प्रत्येक स्टेशन पर ठहरती है और डाकगाड़ी से धीरे चलती है।

पसित* [वि.] (हिं.) बँधा हुआ।

पसीजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रस-रस कर बहना। २-पसीने से तर होना। ३-चित्त में दया उत्पन्न होना।

पसीना [संज्ञा पु.] (हिं.) परिश्रम अथवा गरमी के कारण शरीर से निकलने वाला जल। स्वेद श्रमवारि।
पसीने-पसीने होना-बिलकुल पसीने में तर होना। *गाढ़े पसीने की कमाई*-कठिन परिश्रम से अर्जित धन।

पसु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पशु'।

पसुरी, पसुली*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पसली'।

पसू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पशू'।

पसूज [संज्ञा स्त्री] (देश.) वह सिलाई जिसमें सीधे तोपे लगाये या भरे जाते हैं।

पसूजना [क्रि. स.] (हिं.) सिलाई करना। सीना।

पसूता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रसूता। जच्चा।

पसूस [वि.] (डिं.) कठोर।

पसेउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रस्वेद। पसेव। पसीना।

पसेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाँच सेर का बाट। पंसेरी।

पसेव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पसीजने से निकलने वाला तरल पदार्थ। २-अफीम में का तरल अंश जो सुखाने पर निकल जाता है। ३-पसीना। प्रस्वेद। स्वेद।

पसेवा [संज्ञा पु.] (देश.) वह चार ईंटे जो सुनार की अंगीठी के चारों ओर रहती हैं।

पसोपेश [संज्ञा पु.] (फा.) दुविधा। आगा-पीछा। सोच-विचार। असमंजस।

पस्त [वि.] (फा.) १-हिम्मत हारा हुआ। २-थका हुआ। ३-दबा हुआ।

पस्तकद [वि.] (फा.) नाटा। छोटे कद वाला। बौना।

पस्तहिम्मत [वि.] (फा.) कायर। डरपोक। हिम्मत हारा हुआ।

पस्ताना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पछताना'।

पस्तावा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पछतावा'।

पस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-निचाई। २-कमी। न्यूनता।

पस्तो [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'पश्तो'।

पस्सर [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज कर्मचारियों को वेतन बांटने वाला अधिकारी। जहाज का खजान्ची।

पस्सी-बबल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पहाड़ी बबूल का वृक्ष जिसमें जाड़े की ऋतु में सुगंधित फूल लगते हैं जिनका इत्र बनाया जाता है।

पहँ [अव्य.] (हिं.) निकट। पास। समीप। से।

पहँसुल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तरकारी काटने का एक प्रकार का हंसिये के आकार का औजार।

पह*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौ'।

पहचनवाना [क्रि. स.] (हिं.) पहचानने का काम कराना।

पहचान (हिं.) १-पहचानने की क्रिया या भाव। २-किसी गुण, मूल्य, योग्यता आदि जानने की क्रिया, भाव या योग्यता। परख। ३-चिह्न लक्षण। ४-किसी को देख या जानकर यह बतलाना कि यह वही है। आइडेंटिफिकेशन। ४-परिचय। जान-पहचान।

पहचानना [क्रि. स.](हिं.) १-किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को देखते ही जान लेना कि वह कौन या क्या है। चीन्हना। किसी वस्तु की आकृति रंग-रूप आदि से परिचित होना। २-अन्तर समझना या करना। डिस्टिंग्विश। ३-किसी वस्तु का गुण दोष जानना।

पहटना+ [क्रि. स.] (हिं.] भगाने के लिए या पकड़ने के लिए किसी के पीछे दौड़ना। खदेड़ना। [क्रि. स.] (देश.) हथियार की धार को तेज करना।

पहटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पाटा'। २-देखो 'पेठा'।

पहन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पाहन। पाषाण। [संज्ञा पु.] (फा.) वात्सल्यता के कारण बच्चे के लिए मां की छातियों में भर आने वाला दूध।

पहनना [क्रि. स.] (हिं.) शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण करना।

पहनवाना [क्रि. स.] (हिं.) पहनने का काम दूसरे से करवाना।

पहना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पनहा। अरज। [संज्ञा पु.] (फा.) बच्चे को देखकर माँ की छातियों में भर आने वाला दूध।

पहनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पहनने की क्रिया या भाव। २-वह धन जो पहनाने के बदले में दिया जाय। पहनाने की मजदूरी।

पहनाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को गहने या कपड़े लत्ते आदि पहनाने में प्रवृत्त करना। दूसरे को वस्त्राभूषण धारण कराना।

पहनावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहनने के कपड़े। पोशाक। परिच्छद। परिधेय। २-सिर से पांव तक पहने जाने वाले सब कपड़े। ३-विशेष स्थान, अवस्था, या समाज में धारण किये जाने वाले वस्त्र। जैसे-दरबारी या फौजी पहनावा। ४-पहनने का ढंग या रीति।

पहपट [संज्ञा पु.] (देश.) १-स्त्रियों का

विशेष। २-हल्ला। शोरगुल। कोलाहल। ३-बदनामी या अपवाद की जोर शोर चर्चा। ४-कानाफूसी द्वारा की जाने वाली बदनामी या निंदा। ५-धोखा। छल।

पहपटबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हल्ला या शोरगुल करने अथवा कराने वाला। झगड़ालू। फसादी। २-ठग। छलिया। धोखेबाज।

पहपटबाजी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झगड़ालुपन। कलहप्रियता। २-ठगी। मक्कारी। छलियापन

पहपटहाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बात का बतंगड़ बनाने वाली स्त्री। छोटी सी बात का झगड़ा बना देने वाली।

पहर [संज्ञा पु.] (हिं.) रात और दिन का आठवां भाग। तीन घंटे का समय।

पहरना+ [क्रि. स.] (हिं.) पहनना। शरीर पर धारण करना।

पहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के किसी स्थान से न हटने या न भागनें देने के लिए एक या अधिक आदमियों को निगरानी के लिए बैठाना। रक्षा या निगहबानी करने का प्रबंध। चौकी। २-किसी व्यक्ति या वस्तु का निर्दिष्ट स्थान रक्षा करने या हटने देने का कार्य। रखवाली। ३-पहरेदार या पहरेदारों के एक दल के बदलने में लगने वाला समय। ४-एक बार में नियुक्त पहरेदार। गारद। रक्षकदल। ५-चौकीदार आदि का फेरा। ६-सावधान करने के निमित्त चौकीदार द्वारा दी जाने वाली आवाज। ७-पहरे में रहने की स्थिति। हिरासत। हवालात ८-युग। समय। जमाना। ९-किसी के आने या जाने का शुभ या अशुभ प्रभाव। पैर। *पहरा देना*-रखवाली करना। *पहरा पड़ना*-रक्षा के लिए सिपाही बढाना। *पहरा बदलना*-रक्षक या पहरेदार बदलना। *पहरा बैठना, बैठाना*-रखवाली, चौकसी या रक्षा के लिए सिपाही बैठाना। *पहरे में डालना, देना या बैठाना*-रखवाली के लिए नियुक्त करना। *पहरे में रखना*-हिरासत में रखना। *पहरे में होना*-१-रखवाली पर। २-वश में होना। *अच्छा पहरा*-शुभ समय जिसमें कार्य भली भांति निर्विघ्न पूरा हो जाय। *बुरा पहरा*-खोटा समय जिसमें कार्य में विघ्न, बाधा आदि पड़ें या देरी हो। *भारी पहरा*-बुरा पहरा। *हलका पहरा*-अच्छा पहरा।

पहरायत [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'पहरेदार'।

पहराना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनाना'।

पहरावन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पोशाक। पहनावा। २-पहरावनी में दिये जाने वाले कपड़े।

पहरावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिर से पैर तक के वह सब कपड़े जो कोई व्यक्ति किसी पर प्रसन्न हो कर देता है। वह पोशाक या पहनावा जो बड़ा छोटे को दे। खिलअत।

पहरावा [संज्ञा पु.] (हिं.) पहनावा। पोशाक।

पहरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहरे पर नियुक्त व्यक्ति। चौकीदार। पहरेदार। २-एक जाति विशेष जिसका काम पहरा देना होता था।

पहरुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पहरा देने वाला। चौकीदार।

पहरू [संज्ञा पु.] (हिं.) पहरेदार। पहरा देने वाला। संतरी।

पहरेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) पहरा देने वाला। चौकीदार। संतरी।

पहरेदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पहरेदार का काम या भाव। २-पहरा देने की मजदूरी।

पहल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी घन पदार्थ के कोनों या सिरों के बीच की समभूमि। २-बगल। पहलू। ३-जमी हुई रूई या ऊन की तह। ४-तह। परत। ५-किसी ऐसे काम का आरम्भ जिसके प्रतिकार में कुछ किये जाने की सम्भावना हो। छेड़।
पहल निकालना-पहल बनाना।

पहलदार [वि.] (हिं.) जिसमें चारों ओर अलग बँटी हुई सतहें हों। जिसमें पहल हों।

पहलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोहड़े को गोल करने का सुनारों का लोहे का एक औजार।

पहलवान [संज्ञा पु.] (फा.) १-दाँवपेंच सहित कुश्ती लड़ने वाला बली पुरुष। मल्ल। २-हृष्टपुष्ट और बलवान।

पहलवानी [संज्ञा स्त्री.]. (फा.) १-कुश्ती लड़ने का काय। २-कुश्ती लड़ने का पेशा। ३-पहलवान होने का भाव।

पहलवी [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'पह्लवी'।

पहला [वि.] (हिं.) [स्त्री. पहली] १-क्रमानुसार आरम्भ का। गणना में एक के स्थान पर पड़ने वाला। प्रथम। +२-रूई की जमी हुई परत। पहल।

पहलू [संज्ञा पु.] (फा.) १-बगल और कमर की बीच का वह भाग जहां पसलियां होती हैं। पार्श्व। २-किसी वस्तु का बायाँ भाग। बाजू बगल। पार्श्व भाग। ३-सेना का दाहिना या बायाँ भाग। ४-करवट। बल। दिशा। तरफ. ५-पहल। ६-किसी वस्तु के विषय में उन बातों में से एक जिन पर पृथक-पृथक विचार किया जा सकता हो या करने का प्रयोजन हो। गुणावगुणादि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न अंग। पक्ष। एस्पेक्ट। ७-पार्श्व। पड़ोस। आसपास। ८-संकेत। गूढ़ाशय। व्यंग्यार्थ।

(किसी का) पहलू गरम करना-प्रेयसी अथवा प्रेमपात्र का प्रेमी के शरीर से सटकर बैठना। *(किसी से) पहलू गरम करना*-प्रेयसी अथवा प्रेमपात्र को शरीर से सटाकर बैठाना। *पहलू में बैठाना*-बिलकुल पास बैठाना। *पहलू में रहना*-बिलकुल पास रहना। *पहलू दबाना*-१-शत्रु की सेना का एक ओर से आक्रमण, कर देना। २-अपनी सेना के एक भाग को पीछे छोड़ते हुए धावे में आगे की ओर बढ़ना। *पहलू बचाना*-१-टाल जाना। २-कतराकर निकल जाना। *पहलू बसाना*-किसी के पास या पड़ोस में जा बसना।

पहले [अव्य.] (हिं.) १-आदि या आरम्भ में। सर्वप्रथम। २-क्रम से प्रथम। स्थिति में सब से आगे। ३-बीते समय में। प्राचीन काल में

पहलेपहल [अव्य.] (हिं.) सर्वप्रथम। सबसे पहले।

पहलौंठा [वि.] (हिं.) देखो 'पहलौठा'।

पहलौंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहलौठी'।

पहलौठा [वि.] (हिं.) [स्त्री. पहलौठी] किसी स्त्री का पहला (लड़का)।

पहलौठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सब से पहले जानने की क्रिया। पहले-पहल बच्चा जनना।

पहाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पहाड़ी] १-भूमि के तल से बहुत ऊंचा पथरीला प्राकृतिक भाग। पर्वत। २-किसी वस्तु का बड़ा भारी ढेर। पहाड़ के सदृश ऊंची राशि या ढेर।
पहाड़ उठना-१-बड़ा काम सर पर लेना। २-कठिन काम पूरा करना। *पहाड़ कटना*-संकट कटना। *पहाड़ काटना*-संकट से पीछा छुड़ाना *पहाड़ टूटना या टूट पड़ना*-अचानक भारी आपत्ति आ पड़ना। *पहाड़ से टक्कर लेना*-बहुत बलवान से भिड़ना। [वि.] बहुत बड़ा और भारी।

पहाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी अङ्क के एक से लेकर दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सूची जिसे बच्चे याद कर लेते हैं।

पहाड़िया+ [वि.] (हिं.) देखो 'पहाड़ी'।

पहाड़ी [वि.] (हिं.) १-पहाड़ पर रहने वाला। पहाड़ पर होने वाला। पहाड़ का। २-जिसमें पहाड़ हो। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा और कम ऊँचा पहाड़। एक धुन जिसे पहाड़ी लोग गाते हैं। ३-आधीरात के समय गाई जाने वाली एक रागिनी।

पहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पहाड़'।

पहारी [वि.] (हिं.) देखो 'पहाड़ी'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहाड़ी'।

पहारू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पहरेदार।

पहिचान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहचान'।

पहिचानना [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'पहचानना'

पहित, पहिती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पकी हुई दाल।

पहिनना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनना'।

पहिनवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनवाना'

पहिनाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनाना'।

पहिनावा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पहनावा'।

पहियाँ* [अव्य.] (हिं.) १-निकट। पास। २-से

पहिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाड़ी या कल आदि में लगा हुआ वह चक्कर जिसकी धुरी पर घूमने के कारण गाड़ी अथवा कल चलती है। चक्र। चक्का। २-किसी यंत्र या कल का वह चक्राकार भाग जो अपनी धुरी पर घूमती है। चक्कर।

पहिरना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनना'।

पहिराना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनाना'।

पहिरावना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनाना'।

पहरावनि, पहिरावनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहनावा'।

पहिरावा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री पहिरावनि, पहिरावनी] देखो 'पहनावा'।

पहिल* [वि.] (हिं.) देखो 'पहला'। [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'पहले'।

पहिला [वि.] (हिं.) [स्त्री. पहिली] १-देखो 'पहला'। २-पहले पहल ब्याई हुई।

पहिले [अव्य.] (हिं.) देखो 'पहले'।

पहिलो* [वि.] (हिं.) देखो 'पहला'।

पहिलौठा [वि.] (हिं.) देखो 'पहलौठा'।

पहिलौठी [वि.] (हिं.) देखो 'पहलौठी'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहलौठी'।

पहीति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहीती'।

पहुँच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी स्थान तक गति। किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया अथवा शक्ति। २-किसी स्थान तक निरंतर फलाव या विस्तार। ३-प्रवेश। पैठ। समीप तक गति। ४-प्राप्ति सूचना। प्राप्ति। रसीद। ५-किसी विषय को समझने अथवा ग्रहण करने की शक्ति। मम अथवा आशय समझने की शक्ति। दौड़। ६-जानकारी का विस्तार। आभज्ञता की सीमा। परिचय। प्रदेश।

पहुँचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या उपस्थित होना। २-किसी स्थान तक फैलना। कहीं तक विस्तृत होना। ३-एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना। एक रूप से दूसरे रूप में जाना। ४-घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना। ५-किसी-किसी आशय या मर्म को जान या समझ लेना। ताड़ना। ६-जानकारी रखना। समझने में समर्थ होना। ७-भेजी या आई हुई वस्तु किसी को प्राप्त होना या मिलना। ८-अनुभव में आना। ६-किसी विषय में किसी के समकक्ष या बराबर होना। तुल्य होना। *पहुँचने वाला*-जानकार। पता या जानकारी रखने वाला। *पहुँचा हुआ*-१-उस्ताद। दक्ष। निपुण। २-गुप्त और प्रकट सबका जानकार। ३-ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ। सिद्ध।

ँचा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुहनी के नीचे का भाग। कलाई। मणिबंध। *पहुँचा पकड़ना*-बलपूर्वक या जबरदस्ती किसी से कोई काम करने के लिए उसे रोकना।

पहुँचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी निर्दिष्ट स्थान तक उपस्थित कराना या ले जाना। २-किसी के साथ किसी स्थान तक इसलिए जाना कि मार्ग में उस पर कोई विपत्ति न आने पावे। ३-प्रविष्ट कराना। पैठाना। घुसाना। ४-कोई वस्तु किसी के पास ले जाना। किसी विषय में किसी के बराबर समकक्ष कर देना।

पहुँची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कलाई पर पहनने का एक गहना। २-राखी के दिन बाहु में बाँधने का एक डोरा जो नीचे से झब्बेदार होता है यह देहाती स्त्रियाँ बांधती हैं।

पहुड़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'पौढ़ना'। २-तैरना।

पहुनई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहुनाई'।

पहुना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाहुना'।

पहुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अतिथि के रूप में कहीं जाना। पाहुना होना। २-अतिथि-सत्कार। मेहमानदारी।

पहुनाई करना-भोज या दावतें उड़ाते फिरना या आतिथ्य पर चैन करना।

पहुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहुनाई'।

पहुन्नी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह पच्चड़ या फन्नी जिसको बढ़ई लकड़ी चीरते समय काठ में ठोक देते हैं।

पहुप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुष्प'।

पहुम, पहुमि, पहुमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुहमी'।

पहुरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) संगतराश की गढ़े हुए पत्थरों को चिकना करने की टांकी। मठरनी।

पहूला* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुमुदिनी। कोई का फूल।

पहेरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहेली'।

पहेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु अथवा विषय का ऐसा गूढ़ वर्णन जिसके आधार पर उत्तर देने या उस वस्तु का नाम बताने में बहुत सोच-विचार करना पड़े। बुझौवल। २-ऐसी जटिल बात जो जल्दी किसी की समझ में न आये। घुमाव-फिराव की बात। समस्या।

पहेली बुझाना-कोई बात इस प्रकार घुमा-फिराकर कहना कि जल्दी किसी की समझ में न आये।

पह्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन फारसी या ईरानी। २-पारसदेश का प्राचीन नाम।

पह्लवी [संज्ञा स्त्री.] (फा., सं.) प्राचीन पारसी अथवा आधुनिक पारसी के बीच से समय की फारस की भाषा।

पांहुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलकुम्भी।

पाँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) पाँव। पैर।

पाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर। पाँव।

पाँइता* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाँयता'।

पाँईबाग [संज्ञा पु.] (फा.) महलों के आस-पास चारों ओर बना हुआ बगीचा या छोटा बा जिसमें प्रायः राज-परिवार की स्त्रियां रहतीं हैं।

पाँउ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पांव। पैर।

पाँउ पसारे सोना-निर्भय या निश्चिन्त स

पाँक, पाँका [संज्ञा पु.] (हिं.) पंक। कीचड़।

पाँख, पाँखड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प या डैना। पंख।

पाँखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पखड़ी'।

पाँखी* [संज्ञा. स्त्री.] (हिं.) १-पक्षी। चिड़िया। २-फतिंगा।

पाँखुरी+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पंखड़ी'।

पाँग [संज्ञा पु.] (हिं.) नदी के पीछे हट जाने से निकली हुई भूमि। गंगबरार। कछार।

पाँगल [संज्ञा पु.] (डि.) ऊँट।

पाँगा+ [संज्ञा पु.] (देश.) समुद्र के जल से निकला हुआ नमक।

पाँशानोन [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्री नोन।

पाँच [वि.] (हिं.) चार और एक।

पाँच उँगलियाँ घी में होना-खूब लाभ होना। *पाँचों सवारों में नाम लिखाना*-अनुचित रूप से बड़ों में अपनी गिनती कराना। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पांच की संख्या। २-पांच का अंक ५। ३-बहुत से लोग। कई एक आदमी। बहुत लोग। ४-जाति बिरादरी के मुखिया लोग।

पाँचक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पंचक'।

पांचजनी, पाञ्चजनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंचजन नामक प्रजापति की कन्या का नाम।

पांचजन्य, पाञ्चजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के शंख का नाम जो इन्हें पंचजन नामक दैत्य से प्राप्त हुआ था। २-पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। ३-अग्नि। ४-पुराणानुसार जम्बूद्वीप के एक प्रदेश का नाम। ५-विष्णु के एक शंख का नाम।

पाँचभौतिक, पञ्चभौतिक [संज्ञा पु.] (सं.) पांचों भूतों या तत्वों से बना हुआ शरीर।

पाँचर [संज्ञा पु.] (हिं.) कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के टुकड़े।

पांचालिका, पाञ्चलिका [संज्ञा स्त्री.] कपड़े की बनी हुई गुड़ियां।

पाँचवाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. पांचवीं] चार के बाद वाला।

पांचशाब्दिक, पाञ्चशाब्दिक [संज्ञा पु.]

च प्रकार के बाजे। यथा–करताल, ढोल, ल, घंटा और भेरी।

[संज्ञा पु.](हि.) घास-भूसा आदि समेटने वा हटाने का किसानों का एक औजार। पचां-गुण।

ल, पाञ्चाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–भारत के पश्चिमोत्तर का एक देश। २–नाई, धोबी, चमार, जुलाहे तथा बढ़ई इन पांचों का समुदाय। [वि.] (सं.) १–पांचालदेश का रहने वाला। २–पांचालदेश-सम्बन्धी।

लिका, पाञ्चालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पांचाली'।

ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपड़े की बनी पुतली या गुड़ियां। २–साहित्य में वाक्य रचना की वह शैली जिसमें बड़े-बड़े साहित्य या विकट पदावलियां होती हैं। ३–पांचाल देश की राजकुमारी। पाण्डव पत्नी द्रोपदी। ४–सन्द्रताल के छः भेदों में एक। ५–स्वर साधन की एक प्रणाली। ६–छोटी पीतल।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) तालाबों उगने वाली एक प्रकार की घास।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी पक्ष की पांचवीं तिथि। पंचमी।

[क्रि. स.] (हि.) धातु के टुकड़ों को टांका लगाकर जोड़ना। झालना। टांका लगाना।

[संज्ञा पु.] (हि.) १–शरीर में बगल तथा कमर के मध्य का भाग। २–पसली। ३–पार्श्व। बगल।

[संज्ञा स्त्री.] (हि) नदी का पानी इतना सूख या कम हो जाना कि उसको हलकर पार किया जा सके। घुटनों तक या उससे भी नदी का पानी कम हो जाना।

[वि.] (हि) देखो 'पाँजी'।

[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पंडुक'।

र, पाण्डर [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुन्द का फूल या वृक्ष। २–सफेद रङ्ग या सफेद रङ्ग का कोई पदार्थ। ३–पानड़ी। ४–मरुवा नामक वृक्ष। ५–ऐरावत कुलोत्पन्न एक हाथी का नाम जिसका वर्णन महाभारत में आया है। ६–एक प्रकार का पक्षी।

मुष्टिका, पाण्डरमुष्टिका [संज्ञा स्त्री:] (सं.) शीतला नामक एक वृक्ष।

रा [संज्ञा पु] (देश) एक ईख विशेष।

व, पाण्डव [संज्ञा पु.] (सं.) १–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव यह पाँचों भाई जो कुन्ती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके पिता पांडु रोग से पीड़ित होने के कारण यह पांडव कहलाये। २–एक प्राचीन प्रदेश का नाम झेलम (वितस्ता) नदी के तट पर बसा था। ३–उस प्रदेश के निवासी।

नगर, पाण्डवनगर [संज्ञा पु.] (सं.) दिल्ली या देहली।

पांडवायन, पाण्डवायन [संज्ञा पु.](सं.) श्रीकृष्ण

पांडवेय, पाण्डवेय [संज्ञा पु.] (सं.) १–पांडव। २–अभिमन्यु-पुत्र परीक्षित राजा।

पांडित्य, पाण्डित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–पंडित होने का भाव। २–विद्वत्ता। पंडिताई।

पांडीस [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) तलवार।

पांडु, पाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) १–कुछ लाली लिए पीला रंग। २–सफेद हाथी। ३–एक नाग का नाम। ४–सफेद रंग। ५–एक प्रकार का रोग जिससे शरीर का रंग पीला पड़ जाता है। यह रक्त दूषित हो जाने के कारण होता है। सुश्रुत के अनुसार यह चार प्रकार का होता है—कफज, पित्तज, वातज और सन्निपात इसके अतिरिक्त मृत्तिकाभक्षण-पांचवां भेद-भावप्रकाश में माना है। इस रोग के रोगी को कंप, पीड़ा, शूल, भ्रम, तंद्रा, आलस्य, खांसी, श्वास, अरुचि तथा अङ्गों में से सूजन भी होता है। ६–प्राचीनकाल के एक राजा का नाम जिनके युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव यह पांच पुत्र थे। ७–पांडुफली। पाटली। ८–परमल।

पांडुकंटक, पाण्डुकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) अपामार्ग। चिचड़ा।

पांडुकंबल, पाण्डुकम्बल [संज्ञा पु.] (सं.) एक पत्थर विशेष जो पांडुरंग का होता है।

पांडुक, पाण्डुक [संज्ञा पु.] (सं.) १–देखो 'पंडुक'। २–देखो 'पांडु'। ३–परवल। ४–पांडुवर्ण। पीला रंग।

पांडुकर्म, पाण्डुकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) फोड़े के अच्छा होने के उपरान्त त्वचा पर पड़ने वाले दाग को औषध के द्वारा दूर करने की क्रिया। (सुश्रुत)।

पांडुक्षमा, पाण्डुक्षमा [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन हस्तिनापुर का एक नाम।

पांडुतरु, पाण्डुतरु [संज्ञा पु.] (सं.) धौ का पेड़

पांडुता, पाण्डुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांडु होने का भाव, धर्म या क्रिया। पांडुत्व।

पांडुतीर्थ, पाण्डुतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक तीर्थ का नाम।

पांडुत्व, पाण्डुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पांडुता।

पांडुनाम, पाण्डुनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १–पुन्नाग वृक्ष। २–सफेद रंग का हाथी। ३–एक प्रकार का सांप जो सफेद रंग का होता है।

पांडुपंचाननरस, पाण्डुपञ्चाननरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रस विशेष जो पांडु तथा हलीमक आदि रोगों के लिए परम उपकारक माना गया है। यह त्रिकटु, त्रिफला, दंतमूल, चिता, मूल, हल्दी, मानमल, इन्द्र जौ, वच, मोथा आदि औषधियों को गोमूत्र में पकाकर बनाया जाता है।

पांडुपत्री, पाण्डुपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेणुका नामक गंधद्रव्य।

पांडुपुत्र, पाण्डुपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पांडव।

पांडुपृष्ठ, पाण्डुपृष्ठ [संज्ञा पु.](सं.) १-अयोग्य। निकम्मा। २–जिसकी पीठ सफेद हो।

पांडुफूल, पाण्डुफूल [संज्ञा पु.] (सं.) परवल।

पांडुमृत, पाण्डुमृत, पांडुमृत्तिका, पाण्डुमृत्तिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–दूधिया मिट्टी। खड़िया २–रामरज नामक पीली मिट्टी।

पांडुरंग, पाण्डुरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १–पुराणानुसार विष्णु के एक अवतार का नाम। २–एक साग विशेष जो वैद्यक के मतानुसार तिक्त और लघु तथा कृमि श्लेष्मा और कफ को नाश करने वाला माना जाता है।

पांडुर, पाण्डुर [वि.] (सं.) १–पीला। जर्द। २–सफेद। [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह जो पीला हो। २-वह जो श्वेत या सफेद हो। ३–धौ का पेड़। ४–सफेद ज्वार। ५–कबूतर। ६–बगला ७–सफेद खड़िया। ८–कामला रोग। ९–सफेद कोढ़। १०–कुमार कार्त्तिकेय के एक गण का नाम।

पांडुरद्रुम, पाण्डुरद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) कुटज। कुड़े का वृक्ष।

पांडुरपृष्ठ, पाण्डुरपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पांडुपृष्ठ'।

पांडुरफली, पाण्डुरफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छोटा क्षुप।

पांडुरा, पाण्डुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–माषपर्णी २–ककड़ी। ३–बौद्धमतानुसार एक देवी या शक्ति का नाम।

पांडुराग, पाण्डुराग [संज्ञा पु.] (सं.) दौना।

पांडुरेक्षु, पाण्डुरेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद ईख।

पांडुलिपि, पाण्डुलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लेखादि का वह प्रारंभिक रूप जिसे काटा-छाँटा या घटाया-बढ़ाया जा सकता है। मसौदा। ड्राफ्ट। २–छपाने के लिए हाथ से लिखी गई पुस्तक या लेख आदि की प्रति। मेनस्क्रिप्ट।

पांडुलेख, पाण्डुलेख [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'पांडुलिपि'।

पांडुलेखक, पाण्डुलेखक [संज्ञा पु.](सं.) लेख आदि की पांडुलिपि लिखने का कार्य। ड्राफ्टिंग।

पांडुलेख्य, पाण्डुलेख्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पांडुलिपि'।

पांडुलोमशा, पाण्डुलोमशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मषवन। माषपर्णी। [वि.] (सं.) [स्त्री प्र.] जिसके सफेद रोएँ हों।

पांडुलोमा, पाण्डुलोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो

'पांडुलोमशा'।

पांडुवा, पाण्डुवा [संज्ञा पु.] (सं.) वह भूमि जिसकी मिट्टी में बालु भी मिली हो। दो मट जमीन।

पांडुशर्करा, पाण्डुशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह।

पांडुशर्मिला, पाण्डुशर्मिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रौपदी का एक नाम।

पांडुसोपाक, पाण्डुसोपाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वर्णसंकर जिसकी उत्पत्ति वैदेही माता तथा चांडाल पिता से बताई गई है।

पाँड़े [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कान्यकुब्ज, सरयूपारी और गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा का नाम। २-कायस्थों की एक शाखा का नाम। पंडित। विद्वान। ४-शिक्षक। अध्यापक। ५-रसोई आदि बनाने वाला।

पाँडेय, पाण्डेय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाँड़े'।

पाँति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क़तार। पंक्ति। २-एक साथ बैठकर भोजन करने वाले लोग। पंगत।

पाँथ, पान्थ [वि.] (सं.) १-पथिक। २-वियोगी विरही।

पाँथनिवास, पान्थनिवास [संज्ञा पु.] (सं.) सराय। चट्टी।

पाँथशाला, पान्थशाला [संज्ञा पु.] (सं.) सराय चट्टी।

पाँय*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर। कदम। चरण पाद।

पाँयँचा [संज्ञा पु.] (फा.) १-पायजामे की मोहरी जिसमें आंघ से टखने तक का अङ्ग ढका रहता है। २-पाखाने में पैर रखने की बैठकी कदमचा।

पाँयँता [संज्ञा पु.] (हिं.) खाट या पलंग का उस ओर का भाग जिस ओर पैर किया जाता है। पैताना।

पाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) पाद। पैर।

पाँवड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पावँड़ा'।

पाँवँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पावँड़ी'।

पाँवर [व.] (हिं.) पामर। अधम। नीच।

पाँवरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-देखो 'पाँवड़ी'। २-सोपान। सीढ़ी। ३-पैर रखने का स्थान। ४-जूता। ५-पौरी। ड्योढ़ी। ६-बैठक। दालान

पांशव [संज्ञा पु.] (सं.) रेह का नमक।

पांशु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धूलि। रज। ५-बालु। ३-गोबर की खाद। ४-पित्तपापड़ा। ५-एक प्रकार का कपूर। ६-रज। ७-भू-संपत्ति।

पांशुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवड़े का पौधा।

पांशुकासीस [संज्ञा पु.] (सं.) कसीस।

पांशुकूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का वस्त्र जो चिथड़ों को सीकर बनाया जाता है। २-ऐसा प्रमाण-पत्र या दस्तावेज जो किसी के नाम से न हो।

पांशुचत्वर [संज्ञा। पु.] (सं.) ओला।

पांशुज [संज्ञा पु.] (सं.) नोनी मिट्टी से निकला हुआ नमक।

पांशुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बथुवे का साग।

पांशुभव [संज्ञा पु.] (सं.) नोनी मिट्टी से निकला हुआ नमक।

पांशुरागिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा।

पांशुराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का प्राचीन नाम। (महाभारत)।

पांशुल [वि.] (सं.) १-लंपट। पर-स्त्रीगामी। व्यभिचारी।

पांशुलवण [संज्ञा पु.] (सं.) पांगा नमक। २-धूल से ढका हुआ। मैला। मलिन।

पांशुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुलटा। छिनाल। २-रजस्वला स्त्री। ३-भूमि। जमीन। ४-केतकी

पाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-राख, गोबर और गली सड़ी चीजें जो खेत की उपजाऊ शक्ति बढाने के लिए डाली जाती हैं। २-शराब निकाला हुआ महुआ। ३-किसी वस्तु को सड़ाने पर उठने वाला खमीर।

पाँसना+ [क्रि. स.] (हिं.) खेत में खाद देना या डलना।

पाँसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हड्डी अथवा हाथी के दाँत के बने वह टुकड़े जिनसे चौसर खेलते हैं। यह चार पांच अंगुल लम्बे और चौपहले होते हैं।

पाँसा उलटना या पलटना-किसी उद्योग या प्रयत्न का विपरीत फल होना।

पाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह जाल जो सूत के डोरों का बना होता है और घास-भूसा आदि बांधने के काम आता है।

पांसु [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'पांशु'। २-देखो पसली।

पांसुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांगा नमक। समुद्री नोन। २-धूल। रेत।

पांसुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला स्त्री।

पांसुकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मार्ग। रास्ता।

पांसुकृत [वि.] (सं.) धूल से ढका हुआ।

पांसुक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) पांगा नामक समुद्र के पानी का बना नमक।

पांसुखुर [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े के खुरों में होने वाला एक रोग।

पांसुचंदन, पांसुचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पांसुचामर [संज्ञा पु.] (सं.) तंबू। बड़ा खेमा।

पांसुजालिक [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम

पांसुपटल [संज्ञा पु] (सं.) धूल की तह या परत।

पांसुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बथुवे का साग।

पांसुभिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वच का पेड़।

पांसुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-डांस। मच्छड़। लूला। लंगड़ा।

पांसुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पसली'।

पांसुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-धूल-धूसरित। लस्तपस्त। मलिन। मैला। २-दूसरे की से प्रेम करने वाला। ३-पापी। ४-

पांसुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रजस्वला स्त्री। छिनाल औरत। ३-जमीन। भूमि। केतकी।

पांही*+ [क्रि. वि.] (हिं.) निकट। पास।

पाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) पाद। पैर। पांव।

पाइक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पायक'।

पाइका [संज्ञा पु.] (अं.) नाप के विचार से एक प्रकार का टाइप जो चौड़ाई में एक छः इञ्च होता है।

पाइट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दीवार, मकान बनाने के लिए खड़ी की जाने वाली

पाइतरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पलंग पाई का पैताना।

पाइप [संज्ञा पु.] (अं.) १-नल। नली। का नल। ३-बांसुरी की सी तरह अंगरेजी बाजा। ४-हुक्के की नली।

पाइरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े की लगी हुई रकाब।

पाइल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पायल'।

पाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक छोटा सिक्का एक पैसे में तीन होते हैं। २-किसी (¼) इकाई का चौथा भाग प्रकट सीधी खड़ी रेखा। जैसे-¼। अर्थात ३-लेख में पूर्ण विराम की सूचक खड़ी ४-किसी एक ही घेरे अथवा मंडल में या चलने की क्रिया। चक्कर। घोड़ों का एक रोग जिसमें टनके जाते हैं। ६-वह पिटारी जिसमें पए आदि रखती हैं। ७-छापे के लिए बेकार टाइप। ८-एक प्रकार का जो घुन के समान धान को खा जाता दीर्घ आकारसूचक मात्रा जिसे दीर्घ करने के लिए लगाते हैं। जैसे १०-जुलाहों का पतली छड़ियों का बना एक ढाँचा जिस पर ताने फैलाकर मांजते हैं। टिकठी। अड्डा।

पाई करना-पई पर फैले हुए ताने को मांजना।

पाईता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसमें एक मगण, एक भगण तथा होता है।

पाउँ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाँव'।

पाउंड [संज्ञा पु.] (अं.) १-सोने का एक जो बीस शिलिंग का होता है

की दूर के हिसाब से घटता-बढ़ता है। २-एक अंग्रेजी तोल जो लगभग आधे सेर के बराबर होता है।

पाउडर [संज्ञा पु.] (अं.) १-चूर्ण। बुकनी। २-मुख की शोभा बढ़ाने के लिए या शरीर के अन्य भागों का सौन्दर्य बढ़ाने वाला चूर्ण, जिसे स्त्रियां प्रयोग में लाती हैं।

पाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन बनाने की क्रिया। २-पकाने की क्रिया। जैसे-ईंट पकाना। ३-पचने या हजम करने की क्रिया। जैसे-भोजन पचाना। ४-वह औषध जो मिस्री, चीनी अथवा शहद आदि के योग से बनाई जाय। ५-श्राद्ध में पिंडदान के निमित्त पकाई हुई खीर अथवा भात। ६-एक दैत्य का नाम। [वि.] (फ़ा.) १-शुद्ध। पवित्र। २-निर्दोष। पापरहित। निर्मल। ३-जिसका कोई अंश शेष न हो। समाप्त। ४-साफ। *पाक करना*-१-किसी वस्तु को धार्मिक विधि के अनुसार धो-धाकर साफ करना। २-हलाल या जिवह किये हुए पशुपक्षी आदि के पर, रोंए आदि अलग करना। *झगड़ा पाक करना*-१-मार डालना। २-झगड़ा तै होना। ३-किसी ऐसे काम को समाप्त कर देना जिस के लिए विशेष चिन्ता हो। [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पाकिस्तान।

पाककृष्ण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जङ्गली करौंदा। करंज।

पाकज [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला नमक। कचिया नमक। २-अफरा।

पाकट [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जेब। खीसा। थैली। *पाकट गरम होना*-धन प्राप्त होना। *पाकट गरम करना*-घूंस लेना। घूंस देना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैकेट'।

पाकठ+ [वि.] (हिं.) १-पका हुआ। २-पुराना। तजरबेकार। बली। मजबूत।

पाकड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाकर'।

पाकदामन [वि.] (फ़ा.) निष्कलंक और विशुद्ध चरित्र वाली स्त्री पतिव्रता। सती।

पाकदामिनी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पातिव्रत्य। शुद्ध चरित्रता।

पाकद्विष [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

पाकभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें भोजन रखा अथवा पकाया या रांधा जाय।

पाकपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) रसोई के बरतन।

पाकपुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुम्हार का आँवा।

पाकफल [संज्ञा पु.] (सं.) करौंदा।

पाकभांड, पाकभाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह बरतन जिसमें कुछ खाया या पकाया जाय।

पाकयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पंचमहायज्ञ में ब्रह्मयज्ञ को छोड़ अन्य चार यज्ञ [वैश्वदेव होम, बलिकर्म, नित्य श्राद्ध तथा अतिथि-भोजन। २-वृषोत्सर्ग और गृह प्रतिष्ठा आदि कर्मों में किया जाने वाला क्षीर का हवन।

पाकयाज्ञिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाकयज्ञ करने वाला। २-पाकयज्ञ के विधान विषयक पुस्तक।

पाकरंजन, पाकरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपत्ता

पाकर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पाकरी] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जो सारे भारत में पाया जाता है

पाकरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पाकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुष्ठ की दवा। २-हाथी का बुखार। ३-आग। अग्नि। ४-फोड़े को पकाने वाली दवा। ५-एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिसमें पित्त प्रबल, वात मध्य तथा कफ हीन अवस्था में होता है।

पाकलि, पाकली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासींगी। कर्कटी।

पाकशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रसोईघर।

पाकशासन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का नाम।

पाकशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ अथवा व्यंजन बनाने की प्रक्रियाओं का वर्णन होता है।

पाकशासनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इन्द्र के पुत्र जयन्त का नाम। २-बालि का नाम। ३-अर्जुन का नाम।

पाकशुल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खड़िया मिट्टी।

पाकस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उदर में पक्वाशय जहाँ आहार पचता है।

पाकहंता, पाकहन्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र का एक नाम।

पाका [संज्ञा पु.] (हिं.) फोड़ा।
[वि.] (हिं.) देखो 'पक्का'।

पाकागार [संज्ञा पु.] (सं.) रसोईघर।

पाकातीसार [संज्ञा पु.] (सं.) अतिसार रोग का एक भेद।

पाकात्य [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का एक रोग जिस में आँख का काला भाग सफेद हो जाता है।

पाकारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-सफेद कचनार।

पाकिस्तान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) भारत के कुछ प्रदेशों को अलग करके बनाया हुआ एक मुसलमानी राज्य जिसमें सारा सिंध, आधा पंजाब (पश्चिमी भाग) सारा पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत तथा आधा बंगाल (पूर्वी भाग) है।

पाकिस्तानी [वि.] (फ़ा.) १-पाकिस्तान-संबंधी। २-पकिस्तान देश में उत्पन्न। ३-पाकिस्तान का।
[संज्ञा पु.] (सं.) पाकिस्तान देश का निवासी।

पाकी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-पवित्रता। शुद्धता। निर्मलता। २-परहेजगारी।
पाकी लेना-उपस्थ पर के बाल साफ करना।

पाकीजा [वि.] (फ़ा.) १-पाक। पवित्र। शुद्ध। २-खूबसूरत। सुन्दर। निर्दोष। बे-ऐब।

पाकु [संज्ञा पु.] (सं.) रसोइया।

पाकुक [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन बनाने या पकाने वाला। रसोइया।

पाकेट [संज्ञा पु.] (अं.) जेब। खीसा। *पाकेट मार*-गिरहकट। *पाकेट गरम होना*-धन प्राप्त होना। *पाकेट गरम करना*-१-घूस लेना। २-घूस देना। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैकेट' [संज्ञा पु.] (डि.) ऊँट।

पाक्य [वि.] (सं.) पचने योग्य। जो पच सके। पचनीय। [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला नमक। २-सांभर नमक। ३-जवाखार। ४-शोरा।

पाक्यक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) १-जवाखार। २-शोरा

पाक्यज [संज्ञा पु.] (सं.) काला नमक। कचियानोन

पाक्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जी। जवाखार।

पाक्षायण [वि.] (सं.) १-जो पक्ष में एकबार हो अथवा किया जाय। २-पक्ष-संबंधी। जो पक्ष से संबंध रखता हो।

पाक्षिक [वि.] (सं.) १-किसी व्यक्ति विशेष का पक्ष करने वाला। पक्षपाती। तरफदार। २-दो मात्राओं वाला (छंद)। ३-जो पक्ष में एक बार हो अथवा किया जाय। ४-पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों को मारने वाला। व्याध। बहेलिया।

पाखंड, पाखण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वेद विरुद्ध आचरण। २-ढोंग। आडम्बर। ढकोसला। ३-छल। धोखा। ४-धूर्तता। चालाकी। *पाखंड फैलाना*-किसी को ठगने के लिए आडंबर या उपाय रचना। मक्कर या ढकोसला खड़ा करना।

पाखंडी, पाखण्डी [वि.] (सं.) १-वेद-विरुद्ध आचरण करने वाला। २-बनावटी धार्मिकता या सत्यशीलता दिखाने वाला। ढोंगी। २-धोखेबाज। धूर्त।

पाख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-महीने का आधा। पखवाड़ा। २-कच्चे मकानों की चौड़ाई की दीवारों के वह ऊंचे भाग जिनपर बड़ेर, बल्ले या लट्ठे रखे रहते हैं। ३-पंख। पर।

पाखर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़ाई के समय हाथी घोड़ों पर डाली जाने वाली लोहे की भूल। २-राल चढ़ाया हुआ टाट अथवा उसकी बनी हुई पोशाक।

पाखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टाट का बना हुआ वह बड़ा चादर जिसको बैलगाड़ी में रखकर अनाज भूसा आदि लादा जाता है।

पाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोना। छोर। २-कच्चे घर का पाख।

पाखान*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पाषाण। पत्थर।

पाखानभेद [संज्ञा पु.] (हिं.) पखानभेद।

पाखाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-मलत्याग करने का स्थान। २-मल। गू। पुरीष। *पाखाने जाना*-मलत्याग के लिए जाना। *पाखाना निकलना*-

मारे भय के बुरा हाल होना। *पाखाना फिरना*–मलत्याग करना। हगना। *पाखाना फिर देना*–डर या भय के कारण घबरा जाना। *पाखाना लगना*–मलत्याग की इच्छा होना।

पाग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पगड़ी। [संज्ञा पु.] १–वह शीरा अथवा चाशनी जिसमें डुबाकर मिठाइयाँ रखी जाती हैं। २–चाशनी में पकाई हुई औषध, फल आदि। ३–देखो 'पाक'।

पागना [क्रि. स.] (हिं. शीरे अथवा चाशनी में कोई वस्तु पकाना या लपेटना। [क्रि. अ.] (हिं.) मग्न या तन्मय होना। डूबना।

पागल [वि.] (सं.) [स्त्री पगली] १–जिसका दिमाग खराब हो गया हो। जिसकी विवेक-शक्ति नष्ट हो गई हो। बावला। विक्षिप्त। सिड़ी। २–आपे मे बाहर। ३–नासमझ। बेवकूफ।

पागलखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां पागलों की चिकित्सा की जाती है और उन्हें वहीं रखा जाता है।

ागलपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की विवेकशक्ति वेकार हो जाती है। उन्माद। विक्षिप्तता। २–पागलों के समान आचरण। मूर्खता। बेवकूफी।

पागलिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पगली।

ागली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पगली।

पागुर+ [संज्ञा पु.]) (हिं.) देखो 'जुगाली'।

पाचक [वि] (सं.) पचाने अथवा पकाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह क्षारयुक्त औषधि जिसे पाचनशक्ति को बढ़ाने के लिए खाई जाती है। २–[स्त्री पाचिका] रसोई बनाने वाला। रसोइया। पाँच प्रकार के पित्तों में से एक। ४–पाचक पित्त में की अग्नि।

ाचका [संज्ञा पु.] (सं.) ककड़ी। ७

ाचन [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पाचनी] १–पचाने अथवा पकाने की क्रिया। २–किसी वस्तु के अजीर्ण को नाश करने वाली औषध। ३–खाये हुए आहार को पेट में जाकर शरीर की धातुओं के रूप में परिवर्त्तन। ४–खट्टा रस। ५–अग्नि। ६–प्रायश्चित। ७–लाल एरंड। [वि.] (सं) १–पचाने वाला। २–किसी वस्तु के अजीर्ण को नाश करने वाली [औषधि]।

ाचनक [संज्ञा पु] (सं) सोहागा।

पाचनगण [संज्ञा पु.] (सं.) पाचन औषधियों का वर्ग।

पाचनशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन को पचाने या हजम करने वाली शक्ति। आमाशय तथा पक्वाशय में रहने वाले पित्त तथा अग्नि की शक्ति। हाजमा।

पाचना* [क्रि स.] (हि.) १–भली भांति पकाना। परिपक्व करना। २–पकाना।

पाचनी [संज्ञा स्त्री] (सं) हड़

पाचनीय [वि. (सं.) जो पचाई या पकाई जा सके। पाच्य।

पाचयिता [वि.] (हिं.) १–पाक करने वाला। रसोइया। २–हाजिम। पचाने वाला।

पाचर+ [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'पच्चर'।

पाचाल [संज्ञा पु.] (सं.) १–रसोई बनाने की क्रिया। २–रसोइया। ३–हवा। ४–अग्नि।

पाचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रसोई करने वाली। रसोईदारिन।

पाची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पच्ची नामक एक लता जो वैद्यक के मतानुसार कटु, तिक्त, कषाय, उष्ण, वातविकार, प्रेत तथा भूत आदि की बाधा, चर्मरोग और फोड़े-फुन्सियों में लाभदायक बताई जाती है।

पाच्छा, पाच्छाह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बादशाह।

पाच्य [वि.] (सं.) जो पचाया अथवा पकाया जा सके।

पाछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–रक्त या रस आदि निकालने के लिए जंतु अथवा पौधे के शरीर पर मारा हुआ हलका आघात। २–पोस्ते के डोडे पर लगाया हुआ चीरा। ३–किसी वृक्ष पर लगाया हलका आघात या चीरा। [संज्ञा पु.] (हिं.) पिछला भाग या अंश। [क्रि. स.] (हि.) पीछे।

पाछना [क्रि. स.] (हिं.) रक्त या रस निकालने के लिए शरीर या पौधे पर छुरी आदि का हलका आघात करना।

पाछल, पाछलु* [वि.] (हि.) देखो 'पिछला'।

पाछा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीछा'।

पाछिल, पाछिलो* [वि.] (हि.) देखो 'पिछला'।

पाछी* [क्रि. वि.] (हिं.) पीछे की ओर। पीछे।

पाछू+ [क्रि. वि.] (हिं) देखो 'पीछे'।

पाछें, पाछे* [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'पीछे'।

पाज* [संज्ञा पु.] (हिं.) पाँजर।

पाजरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक वनस्पति विशेष जिससे रंग निकाला जाता है।

पाजस्य [संज्ञा पु.](सं.) शरीर में बगल और कमर का भाग। पार्श्व।

पाजा [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'पायजा'।

पाजामा [संज्ञा पु.] (फा.) एक पहनावा जो पैरों में पहना जाता है इससे कमर से लेकर एड़ी तक का भाग ढका रहता है।

पाजी [संज्ञा पु.](हि.) १–पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २–रक्षक। चौकीदार। [वि.] (हिं.) दुष्ट। लुच्चा। शरारती।

पाजीपन [संज्ञा पु.] (हि.) दुष्टता। कमीनापन। नीचता।

पाजेब [संज्ञा स्त्री.](फा.) पैर में पहनने का घुँघुरूदार चाँदी का गहना जिसे स्त्रियां पहनती है। नूपुर। मंजीर।

पाटंबर, पाटम्बर [संज्ञा पु.] (सं) [illegible]मी वस्त्र।

पाट [संज्ञा पु.] (हि.) १–रेशम। २–एक प्र रेशम का कीड़ा। ३–बटा हुआ रेशम। पटसन के रेशे। ५–राजगद्दी। सिंहा राज्यासन। ६–चौड़ाई। फैलाव। चिपटा शहतीर जिसपर कोल्हू के बैलों हाँकने वाला बैठता है। ८–पीढ़ा। ९–कोई शिला अथवा पटिया। १०–धोबी कपड़े पछाड़ने की शिला। ११–वह जिसपर खड़े होकर लोग कुएं से पानी लते हैं। १२–कोई शिला। १३–बैलों के वाला एक प्रकार का रोग जिसमें से रक्त बहता है। १४–मृदंग के चार से एक।

पाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चीरने वाला। जित करने वाला। २–ग्राम का ३–नदी तट। किनारा। ४–घाट ५–मूलधन या पूंजी का घाटा। पासों की फिकावट। ६–एक

पाटकरण [संज्ञा पु.] (सं) शुद्धजाति का एक भेद।

पाटच्चर [संज्ञा पु.] (सं) लुटेरा। चोर।

पाटद [संज्ञा पुं.] (सं.) कपास।

पाटन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–पाटने की भाव। पटाव। २–जो कुछ पाटकर जाय (कच्ची या पक्की छत) ३–मकान के खंड से ऊपर के खंड। ४–सर्प का रने का एक मन्त्र जो सर्प के काटे के कान में जोर-जोर से चिल्लाते अवस्था में पढ़ा जाता है। ५–कई नगरों के नाम। [संज्ञा पु.] (सं.) फाड़ने, तोड़ने और नष्ट करने की क्रिया।

पाटना [क्रि. स.] (हि) १–किसी को उसके आसपास के धरातल के करना। २–किसी वस्तु की बहुतायत ढेर लगाना। ३–दीवार के मध्य किसी गहरे स्थान के आरपार के लिये वल्ले, धरन आदि बिछाकर बनाना। ४–तृप्त करना। सींचना।

पाटपाट [वि.] (सं.) बहुत चतुर। बड़ा

पाटमहिषी [संज्ञा स्त्री.] (हि) राजा की रानी। पटरानी।

पाटरानी [संज्ञा स्त्री.] (हि) प्रधान रानी।

पाटल [संज्ञा पु.] (सं.) पाडर या पाढ़ जिसके पत्ते बेल के समान होते हैं। प्रकार का होता है। एक में सफेद में लाल रङ्ग के फूल आते है। [वि.] (सं.) गुलाबी रंग का।

पाटलकीट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार

पाटलद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) पुन्नागवृक्ष।

पाटला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पाडर वृक्ष। २–लाल लोध। ३–जलकुंभी।

का एक रूप। [संज्ञा पु.] (दश.) एक उत्तम कोटि का सोना। (धातु)।

पाटलावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-एक नदी का प्राचीन नाम।

पाटलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाडर का वृक्ष। २-पांडुफली।

पाटलिक [संज्ञा पु.] (सं.) शिष्य। शागिर्द।

पाटलिपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक पटना का प्राचीन नाम जो बिहार की राजधानी है।

पाटली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाडर का वृक्ष। २-पांडुफली। ३-पटने की अधिष्ठात्री देवी का नाम। ४-गाधि की पुत्री जिसके अनुरोध से पाटलीपुत्र नामक नगर बसा। (हिं.) जहाज के मस्तूल में काम आने वाली एक बल्ली जिस में बहुत से छेद होते हैं।

पाटलीतैल [संज्ञा पु.] (सं.) जले हुए स्थान पर लगाने का एक तेल जिसमें जल, पीड़ा और लेप बहना दूर होता है।

पाटलीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिहार राज्य की राजधानी पटना का प्राचीन नाम जो आधुनिक पटना से २३ मील पूर्व गंगा के तट पर जहाँ अब कुम्हरार नामक ग्राम है।

पाटलोपल [संज्ञा पु.] (सं.) सफेदी लिये लाल रंग की एक मणि।

पाटल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाटल वृक्ष के फूलों का समुदाय।

पाटव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पटुता। कुशलता। चतुराई। २-दृढ़ता। मजबूती। ३-आरोग्य।

पाटविक [वि.] (सं.) [स्त्री. पाटविकी] १-चतुर। होशियार। २-धूर्त। चालाक। धोखेबाज।

पाटवी [वि.](हिं.) १-पटरानी से उत्पन्न। राजकुमार। २-रेशमी। रेशम का बना हुआ। वस्त्र।

पाटसन [संज्ञा पु.] (हिं.) पटसन। पटुआ।

पाटहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पटह या दुन्दुभी। बजाने वाला। २-गुंजा। घुंघची।

पाटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दो खड़े आधारों पर टिकाकर बनाया हुआ आसन जिसपर बैठकर स्नान आदि किया जाता है। २-वह आधार स्थान जो दो दीवारों के बीच में बांस, बल्ली, पटिया आदि देकर बनाया जाता है। ३-पीढ़ा।

पाटा फेरना-पीढ़ा बदलना (विवाह के समय)

पाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा। २-छाल या छिलका। ३-एक दिन की मजदूरी।

पाटित [वि.] (सं.) १-काटा हुआ। छेदा हुआ। फटा हुआ।

पाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रीति। शैली। परिपाटी। जोड़, बाकी, गुणा आदि गणित के क्रम। २-पंक्ति। श्रेणी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लकड़ी का वह गोला, चिपटा अथवा चौकोर पतला बल्ला जो खाट की लम्बाई के बल में दोनों ओर रहता है। पलंग या खाट के चौखटे की लम्बाई के बल की लकड़ी। शिला चट्टान। ३-मछलियाँ पकड़ने के लिए पतले मार्ग से पानी निकालने की क्रिया। ४-खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग। ५-चटाई ६-जंती। ७-पाठ। सबक।

पाटी पढ़ना–पाठ पढ़ाना। शिक्षा पाना।

पाटी पढ़ाना–पाठ पढ़ना। शिक्षा देना।

पाटीकूट [संज्ञा पु.] चित्रकवृक्ष।

पाटी-गणित [संज्ञा पु.] (सं.) गणित का वह अङ्ग अथवा शाखा जिसमें ज्ञात अङ्कों की सहायता से अज्ञात या उद्दिष्ट अंक या संख्याएँ जानी जाती हैं। एरिथमेटिक।

पाटीर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चंदन।

पाटूनी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह माझी या मल्लाह जो किसी घाट का ठेकेदार हो। घटवार।

पाट्य [संज्ञा पु.] (सं.) पटसन।

पाठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २-किसी पुस्तक या धार्मिक ग्रन्थ को नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया या भाव। ३-जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। ४-उक्त विषय का उतना अंश जो एक दिन में या एक बार में पढ़ा जाय। सबक। ५-पुस्तक का एक अंश। परिच्छेद। अध्याय। ६-शब्दों अथवा वाक्यों का क्रम या योजना। रीडिंग।

पाठ पढ़ना–कुछ सीखना। उलटा पाठ पढ़ाना–कुछ का कुछ समझा देना। पाठ पढ़ाना–पट्टी पढ़ाना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) जवान गाय, भेंस अथवा बकरी।

पाठक [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ने वाला। जो पढ़े। वाचक। छात्र। शिष्य। २-शिक्षक। गुरू। पढ़ाने वाला। ३-कथावाचक। पुराण बांचने वाला। ४-गौड़, सारस्वत, सरयूपरीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम।

पाठदोष [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ने की वह शैली, ढंग या पढ़ने के समय की वह चेष्टा जो निंदित और वर्जित समझी जाती है।

पाठन [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ाने की क्रिया या भाव अध्यापन कर्म।

पाठना* [क्रि. स.] (हिं.) पढ़ाना।

पाठनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पुस्तक के किसी अंश पर मनन करके उसके अर्थादि का निश्चय करना।

पाठपद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पढ़ने की रीति या ढंग।

पाठप्रणाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठ पढ़ने की रीति या ढंग।

पाठभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहां वेदादि का पाठ किया जाय। २-ब्रह्मारण्य।

पाठभेद [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही पुस्तक की दो या अधिक प्रतियों के लेखों में कहीं-कहीं शब्द, पद या वाक्य में दिखाई पड़ने वाला भेद। पाठांतर।

पाठमंजरी, पाठमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैंना या सारिका पक्षी।

पाठशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान। विद्यालय। चटसाल। मदरसा। स्कूल।

पाठशालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैंना या सारिका पक्षी।

पाठांतर, पाठान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ही पुस्तक की दो या दो से अधिक प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थल पर भिन्न शब्द, क्रम या वाक्य हों। पाठभेद।

पाठा [संज्ञा स्त्री.] (सं) पाढ नामक एक लता जिसके पत्ते गोल और नोकदार, फूल सफेद और फल लाल और मकोय के समान होते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कड़वी, चरपरी, तीखी, गरम, टूटी हड्डियों को जोड़ने वाली हलकी, पित्त, दाह, शूल और अतिसार वात, पित्त, ज्वर, वमन, विष, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदय रोग, रक्तकुष्ट, कंडु, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, व्रण और कफ, वात का नाश करने वाली मानी गई है। [संज्ञा पु.] (हि.)[स्त्री. पाठी] १-हृष्टपुष्ट। मोटा। तगड़ा २-जवान भैंसा, बकरा या बैल।

पाठार्थी [वि.] (सं.) पढ़ने वाला।

पाठालय [संज्ञा पु.] (सं.) पाठशाला। विद्यालय

पाठावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाठों का समूह। २-पाठों की पुस्तक।

पाठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पढ़ने वाली। २-पढ़ाने वाली। ३-पाठा।

पाठित [वि.] (सं.) पढ़ाया या सिखाया हुआ।

पाठी [संज्ञा पु.] (हि.) १-पाठ करने अथवा पढ़ने वाला। पाठक। २-चीता। चित्रक वृक्ष।

पाठीकुट [संज्ञा पु.] (सं.) चित्रक या चीते का का पेड़।

पाठीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पढ़िना नामक मछली २-गूगल का पेड़। ३-पुराणों की कथा सुनाने वाला।

पाठ्य [वि.] (सं.) १-जो पढ़ने योग्य हो। पठनीय। २-जो पढ़ाया जाय।

पाठ्यक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) पाठ्य-पुस्तक निर्धारित करने वाली पुस्तिका। सलेबस।

पाठ्यपुस्तक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठशालाओं में विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई जाने

वाली पुस्तक। पढ़ाई की किताब। टेक्स्टबुक।

पाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–साड़ी, धोती आदि का किनारा। २–मचान। पाइट। ३–कूएं के मुंह पर रखने की जाली। चह। ४–फाँसी का तख्ता। ५–बाँध। पुश्ता।

पाड़इ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाटल नामक वृक्ष।

पाडल [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पाटल'।

पाडलीपुर [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पाटलीपुत्र'।

पाडसाली [संज्ञा पु.] (देश.) जुलाहों की एक जाति का नाम जो दक्षिण भारत में रहते हैं।

पाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मुहल्ला। टोला। पुरवा। (देश.) एक प्रकार की समुद्र में पाई जाने वाली मछली जो प्राय तीन फुट लम्बी होती है।

पाडिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) मिट्टी का बरतन। हाँडी।

पाढ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पाटा। २–वह मचान जिसपर बैठकर किसान खेत की रखवाली करते हैं। ३-कुएं के मुंह पर रखी हुई लकड़ी की चह। पाड़। ४–वह ढाँचा जिसपर बैठकर कारीगर काम करते हैं।

पाढ़त* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जो कुछ पढ़ा जाय या जिसका पाठ किया जाय। २–जादू। मंत्र।

पाढर [संज्ञा पु] (हिं) पाडर का पेड़।

पाढल [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'पाटल'।

पाढ़ा [संज्ञा पु.] (देश.) एक मृग विशेष जिसकी खाल पर सफेद चित्तियाँ होती हैं। चित्रमृग। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पाठा'।

पाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह नाव जो यात्रियों को पार उतारने पर नियत हो। २–सूत की एक लच्छी।

पाण [संज्ञा पु.] (सं.) १–व्यापार। तिजारत। २–हाथ। कर। ३–दाँव। बाजी। ४–प्रशंसा।

पाणि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ।

पाणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १–जो खरीदा जा सके। सौदा। २–हाथ। ३–कार्त्तिकेय का एक गण।

पाणिकच्छपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) कूर्म्ममुद्रा।

पाणिकर्म्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव। [वि] (सं.) हाथ से बाजा बजाने वाला।

पाणिकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रकार का छंद अथवा गीत। २–चम्मच की तरह का एक बरतन।

पाणिकूर्चा [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय का एक गण।

पाणिखात [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ स्थान का नाम।

पाणिगृहीती [वि.] (सं.) [स्त्री. प] धर्मानुसार विवाहिता।

पाणिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह। शादी।

पाणिग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १–हिन्दुओं में विवाह की वह रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है। २-विवाह। ब्याह

पाणिग्रहणिक [वि.] (सं.) १–विवाह-संबंधी। २–विवाह में दिया जाने वाला (उपहार)। ३–विवाह में पढ़ा जाने वाला।

पाणिग्रहणीय [वि.] (सं.) १–विवाह-संबंधी। २–विवाह में दिया जाने वाला (उपहार)।

पाणिग्राह, पाणिग्राहक [संज्ञा पु.] (सं.) पति।

पाणिघ [संज्ञा पु.] (सं.) १–ढोल बजाने वाला। २–मजदूर। कारीगर। शिल्पी। ३–हाथ से बजाये जाने वाले ढोल, मृदंग आदि।

पाणिघात [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ का आघात या प्रहार। जैसे—थप्पड़, मुक्का, चपत, घूंसा।

पाणिज [संज्ञा पु] (सं.) १–उँगली। २–हाथ की उँगलियों के नाखून। ३–नखी।

पाणितल [संज्ञा पु.] (सं.) १–हथेली। २–वैद्यक में दो तोले के बराबर का एक परिमाण।

पाणिताल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक विशेष ताल।

पाणिधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह संस्कार। विवाह की विधि या क्रिया।

पाणिन [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'पाणिनि'।

पाणिनि [संज्ञा पु.] (सं) संस्कृत भाषा के एक प्रख्यात तथा प्राचीन व्याकरण शास्त्र के रचियता एक प्रसिद्ध ऋषि।

पाणिनीय [वि.] (सं.) १–पाणिनि-सम्बन्धी या पाणिनि का बनायाहुआ। २–पाणिनि का कहा हुआ। ३–पाणिनि का ग्रंथ पढ़ने वाला। ४–पाणिनि में भक्ति रखने वाला।

पाणिनीय-दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण ('सर्वदर्शनसंग्रह' कार ने पाणिनि के व्याकरण को भी दर्शन कोटि में स्थान दिया है)।

पाणिपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) उंगलियाँ।

पाणिपीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १–पाणिग्रहण। विवाह। २–क्रोध पश्चातापादि के कारण हाथों को परस्पर मलना।

पाणिप्रणयिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) भार्या। पत्नी स्त्री।

पाणिप्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ द्वारा शपथ करना।

पाणिबंध, पाणिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह शादी।

पाणिभुक्, पाणिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर का पेड़।

पाणिमंथ, पाणिमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) करंज का वृक्ष।

पाणिमाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलाई की हड्डी।

पाणिमर्द, पाणिमर्द्द [संज्ञा पु] (सं.) करौंदा। करमर्द।

पाणिमुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ से फैंका

पाणिमूल [संज्ञा पु.] (सं.) कलाई।

पाणिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) उंगली। नख।

पाणिरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथेली पर की लकीरें।

पाणिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १–ताली पीटना। ढोलक बजाना। ३–मृदंग, ढोल आदि बजाने वाला। ४–ढोल, मृदंग आदि बाजे।

पाणिवादक [वि.] (सं.) १–ताली बजाने वाला। २–मृदंग आदि बजाने वाला।

पाणिसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ पकड़ना।

पाणिहता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छोटा तालाब जिसे देवताओं ने बुद्धभगवान के लिये बनाया था (ललित विस्तार)।

पाणिहोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का होम जो अधिकारी ब्राह्मण के हाथ से किया जाता है।

पाणी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पाणि'।

पाणीतक [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के गण का नाम।

पाणीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह। शादी।

पातंजल, पातञ्जल [वि.] (सं.) पतंजलिकृत (ग्रन्थ)। पातंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र अथवा व्याकरण महाभाष्य)। [संज्ञा पु.] १–पातंजलिविरचित योगदर्शन। २–पातंजलिप्रणीत महाभाष्य। ३–पातंजलि के सूत्र के अनुसार योगसाधन करने वाला

पातंजलदर्शन, पातञ्जलदर्शन [संज्ञा पु] योगदर्शन।

पातंजलभाष्य, पातञ्जलभाष्य [संज्ञा पु.] व्याकरण का महाभाष्य नामक प्रसिद्ध ग्रंथ

पातंजलसूत्र, पातञ्जलसूत्र [संज्ञा पु] योगसूत्र।

पांतंजलीय, पातञ्जलीय [वि.] (सं.) पतंजलि रचित या बनाया हुआ।

पात [संज्ञा पु.] (सं.) १–गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। २–टूटकर गिरने या झड़ने की क्रिया या भाव। ३-नाश। ध्वंस। गिराव। पड़ना। ५–खगोल में वह स्थान जहां नक्षत्रों की कक्षायें क्रान्तिवृत्त को काट कर ऊपर चढ़ती अथवा नीचे आती है। राहु का नाम। *[संज्ञा पु.] (हिं.) १–पत्ता। २–कान का एक गहना। [संज्ञा पु.] (डि.) कवि।

पातक [संज्ञा पु.] (सं.) पाप। गुनाह। 'प्रायश्चित्त' के अन्तर्गत नौ प्रकार के पातक

हैं वह इस प्रकार हैं—अतिपातक, महापातक, अनुपातक, उपपातक, संकरीकरण, अपात्रीकरण, जातिभ्रशंकर, प्रकीर्ण आदि।

पातकी [वि.] (हिं.) पापी। अधर्मी। कुकर्मी।

पातघावरा+ [वि.] (हिं.) पत्ता खड़कने से भी डरजाने वाला। अत्यन्त डरपोक।

पातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिराने की क्रिया। २-पारे के आठ संस्कारों में से पांचवां।

पातबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह नकशा जिसमें किसी जायदाद की अंदाजन मालियत तथा जितना उस पर देन या कर्ज हो वह सब लिखा होता है।

पातर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्तल। २-वेश्या। रंडी। २-तितली। [वि.] १-पतला। सूक्ष्म। २-क्षीण। बारीक।

पातराज [संज्ञा पु.] (देश.) एक सर्प विशेष।

पातरि [संज्ञा स्त्री., वि.] (हिं.) देखो 'पातर'।

पातल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पातर'।

पातव्य [वि.] (सं.) १-रक्षा करने योग्य। २-पीने योग्य।

पातशाह [संज्ञा पु.] (हिं.) पादशाह। बादशाह।

पातशाही [संज्ञा पु.] (हि.) बादशाही। पादशाही

पाता [वि.] (हिं.) १-रक्षक। रक्षा करने वाला। २-पीने वाला। * [संज्ञा पु.] पत्र। पत्ता।

पातावा [संज्ञा पु.] (फा.) १-मोजा। २-पद तल के आकार का पतले और मुलायम चमड़े का टुकड़ा जो जूतें के भीतर डाला जाता है। सुखतला।

पातार [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पाताल'।

पाताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीचे के सप्त लोकों में से अंतिम लोक का नाम। कहा जाता है कि इस लोक में नाग निवास करते हैं। २-नीचे का कोई भी लोक। अधोलोक। नागलोक। ३-गढ़ा या सूराख। विवर। बिल। ४-बड़वानल। ५-बालक के लग्न से चौथा स्थान। ६-पातालयंत्र। ७-छंदशास्त्र में वह चक्र जिससे मात्रिक छंद के संख्या, लघु, गुरु, कला आदि का ज्ञान होता है।

पातालकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल में रहने वाले एक दैत्य का नाम।

पातालखंड, पातालखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल लोक।

पातालगंगा, पातालगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीचे के लोक में बहने वाली एक गङ्गा।

पातालगरुड़, पातालगरुड़ी [संज्ञा पु.] (सं.) छिरिहटा। छिरेंटा।

पातालतुंबी, पातालतुम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की बेल जो खेतों में होती है और जिसमें बिच्छू के डंक के समान पीले काँटे होते हैं। भूतुम्बी। नागतुम्बी।

पातालनिलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। दैत्य। २-सर्प। साँप।

पातालनिरास [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-नाग। सर्प।

पातालनृपति [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा।

पातालयंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह यंत्र जिसके द्वारा कड़वी औषधियां पिघलाई जाती हैं। इस यंत्र में एक शीशे या मिट्टी का बरतन ऊपर तथा एक नीचे रहता है दोनों के मुँह परस्पर मिले रहते हैं तथा संधि-स्थल पर कपड़मिट्टी करदी जाती है। २-वह यन्त्र जिसमें ऊपर के पात्र में जल रहता है, नीचे के पात्र को आँच दी जाती है तथा बीच में रस की सिद्धि होती है।

पातालवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली लता।

पाताली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ताड़ के फल के गूदे की टिकिया जिसको गरीब लोग सुखाकर खाने के काम में उपयोग करते हैं।

पातालौकस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसका घर पाताल में हो।

पाताखत+ [संज्ञा पु.] (हि.) पत्र और अक्षत। पूजा की साधारण सामग्री। तुच्छ भेंट।

पांति+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्ती। पर्ण। २-पात्र। चिट्ठी।

पातिक [संज्ञा पु.] (सं.) सूँस या शिशुमार नामक जलजंतु।

पातित [वि.] (सं.) १-फेंका या गिराया हुआ। नीचे गिरा हुआ। २-नीचा दिखाया हुआ। ३-(पद आदि में) नीचा किया हुआ।

पातित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पतित होने अथवा गिरने का भाव। गिरावट। २-पद या जाति की भ्रंशता। अधःपतन।

पातिव्रत [संज्ञा पु.] (हिं.) पतिव्रत होने का भाव

पातिव्रत्य [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री का पतिव्रता होने का धर्म।

पातिसाहि [संज्ञा पु.] (हि.) बादशाह।

पाती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिट्ठी। पत्री। २-पत्ती। वृक्ष के पत्ते। ३-लज्जा। प्रतिष्ठा। इज्जत।

पातुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरने वाला। पतनशील। २-प्रपात। झरना। ३-जलहाथी।

पोतुर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

पातुरनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

पात्त [संज्ञा पु.] (सं.) पापियों का उद्धार करने वाला। पापियों का त्राता।

पात्य [वि.] (सं.) १-गिरने योग्य। २-पतित होने का भाव। गिरावट।

पात्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री पात्री] १-वह वस्तु जिसमें कुछ रखा जा सके। बरतन। आधार। २-वह व्यक्ति जो किसी विषय का अधिकारी हो। ३-नदी के तटों के मध्य का स्थान। ४-नाटक में अभिनय करने वाला। अभिनेता। नट। ५-आमात्य। राजसचिव। राजमंत्री। ६-चार सेर के बराबर का एक तौल। आढक। (वैद्यक)। ७-पत्ता। पत्र। ८-स्रुवा आदि यज्ञ के उपकरण। ९-किसी कथानक, उपन्यास आदि में का वह व्यक्ति जिसका कथा वस्तु में कुछ चरित्र प्रदर्शित किया गया हो। [वि.] अनेक गुणों से युक्त। योग्य। उपयुक्त।

पात्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भिक्षापात्र। २-थाली हाँड़ी, आदि पात्र या बरतन।

पात्रट [संज्ञा पु.] (सं.) भिखमंगा। [वि.] (सं.) दुर्बल। दुबला-पतला।

पात्रतरंग, पात्रतरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

पात्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पात्र होने का भाव। अधिकार। योग्यता।

पात्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पात्रता। योग्यता।

पात्रदुष्टरस [संज्ञा पु.] (सं.) केशवदास के मतानुसार काव्य का वह रस दोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझता है रचना में उसके विपरीत कर जाता है। एक ही वस्तु के सम्बन्ध में ऐसी बातें कह जाना जो एक दूसरे के विपरीत या बे-मेल हों।

पात्रशेष [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन करने के उपरान्त बचे हुए रोटी आदि जूठे टुकड़े उच्छिष्ट। जूठा।

पात्रासादन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ पात्रों का यथा स्थान रखना।

पात्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्याला। तश्तरी आदि पात्र। [वि.] (सं.) [स्त्री. पात्रिकी] १-योग्य उचित। आढक से नापा हुआ।

पात्रिय [वि.] (सं.) भोजन में शरीक होने योग्य

पात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा बरतन। २-कथानक, अभिनय आदि में स्त्री पात्र। ३-छठौवाँ छोटी भट्टी। [वि.](हि.) जिसके पास सुयोग्य व्यक्ति हों। २-जिसके पास बरतन हों।

पात्रीय [वि.] (सं.) पात्र सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) स्रुवा आदि यज्ञीय पात्र।

पात्रीर [संज्ञा पु.] (सं.) नैवेद्य। भेंट। चढ़ावा।

पात्रेबहुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-जूठन खोर। मुफ्तखोर। २-खुशामदी टट्टू। ३-कपटी या दंभी आदमी।

पात्रोपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) अपकृष्ट श्रेणी की सजावट। कौड़ी आदि पदार्थ जिन्हें टाँककर बरतनों को सजाते हैं।

पात्र्य [वि.] (सं.) जिसके साथ एक थाली में भोजन किया जा सके। सहभोजी

पाथ* [संज्ञा पुं.] (हि.) मार्ग। रास्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-पवन। ३-भोजन

४-सूर्य । ५-आकाश । ६-वायु ।

पाथना [क्रि. स.] (हिं.) १-ठोक-पीटकर सुडौल बनाना । गढ़ना । २-किसी गीली वस्तु को साँचे के द्वारा अथवा बिना सांचे के हाथों से थोप, पीट या दबाकर बड़ी-बड़ी टिकिया या पटरी बनाना । जैसे—उपले, ईंट आदि पाथना । ३-किसी को पीटना । ३-किसी को पीटना या ठोंकना । मारना ।

पाथनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र ।

पाथनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र ।

पाथर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पत्थर' ।

पाथस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण ।

पाथा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जल । २-अन्न । ३-आकाश । [संज्ञा पु.] १-कच्चे चार सेर के बराबर की एक तौल । २-उतनी भूमि जितनी में एक पाथा अन्न बोया जाय । ३-हल की खोंपी जिसमें फाल लगा रहता है । ४-खलियान में राशि नापने का एक बड़ा टोकरा । ५-अन्न में लगने वाला एक कीड़ा । ६-कोल्हू हाँकने वाला ।

पाथि [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आंख । २-समुद्र । ३-खरंड । घाव पर की पपड़ी । ४-एक प्रकार का शरबत । कीलाल ।

पाथेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह खाद्य-पदार्थ या भोजन जो पथ या रास्ते में काम आता है । रास्ते का कलेवा । २-वह धन जो यात्री राह खर्च के लिए ले जाता है । सफर खर्च । ३-कन्याराशि ।

पाथेयक [व.] (सं.) वह जिसके पास राह खर्च हो ।

पाथोज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल ।

पाथोद [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

पाथोधर [संज्ञा पु.] (सं.) बादल । मेघ ।

पाथोधि [संज्ञा पु.] (सं.) सागर । समुद्र ।

पाथोन [संज्ञा पु.] (हिं.) कन्याराशि ।

पाथोनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

पांथ्य [वि.] (सं.) १-आकाश में रहने वाला । २-हवा में रहने वाला । ३-हृदयाकाश में बसने या रहने वाला ।

पाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-चरण । पैर । पाँव । २-मंत्र, श्लोक अथवा और किसी वस्तु का चौथा भाग । चौथाई । ३-पुस्तक का प्रकरण । ४-वृक्ष का मूल । ५-किसी वस्तु का नीचे का भाग । तल । ६-बड़े पहाड़ के पास वाला छोटा पहाड़ । ७-वद्य, रोगी, उपचारक और औषध यह चिकित्सा के चार अंग । ८-किरण । रश्मि । ९-पद की क्रिया । गमन । १०-शिव । महादेव । ११-एक ऋषि का नाम [संज्ञा पु.] (हिं.) अपान वायु गुदामार्ग से निकलने वाली वायु ।

पादक [वि.] (सं.) १-चलने वाला । जो खूब चलता हो । २-चौथाई । ३-छोटा पैर ।

पादकटक [संज्ञा पु.] (सं.) नूपुर ।

पादकीलिका [संज्ञा पु.] (सं.) नूपुर ।

पादकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रायश्चित के रूप में किया जाने वाला एक व्रत जो चार दिन का होता है ।

पादगंडिर, पादगण्डिर [संज्ञा पु.] (सं.) श्लीपद या पीलगाँव नामक रोग ।

पादग्रंथि, पादग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एड़ी और घुट्टी के मध्य का स्थान । गुल्फ ।

पादग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) पैर छूकर प्रणाम करना

पादचत्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बकरा । २-बालू का भीटा । ३-ओला । ४-पीपल का वृक्ष ।

पादचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैदल चलने वाला । २-पैदल ।

पादचिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) दोनों पैरों के चिह्न या निशान ।

पादज [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्र । [वि.] (सं.) जो पैरों से उत्पन्न हो ।

पादजल [संज्ञा पु.](सं.) १-पैरों की धोवन का जल चरणोदक । २-मठा ।

पाद-टिप्पणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह टिप्पणी जो किसी पुस्तक के नीचे लिखी जाती है । फुटनोट

पादटीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह टिप्पणी जो किसी पुस्तक में पृष्ठ के नीचे सूचना, निर्देश आदि के लिए लिखी जाती है । फुटनोट ।

पादतल [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का तलवा ।

पादत्र, पादत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जूता । खड़ाऊँ । [वि.] (सं.) जो पैर की रक्षा करे । पदरक्षक ।

पादत्रान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जूता । २-खड़ाऊं ।

पाददलित [वि.] (सं.) पददलित । पैर से कुचला हुआ ।

पाददारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर की एड़ी के आस-पास फट जाने का रोग । बिवाई ।

पाददाह [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त पित्त के साथ वायु मिलने से उत्पन्न होने वाला एक रोग जिससे पैर के तलवों में जलन होती है । तलवों का जलना ।

पादधावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पग पखारने का काम । पैर धोने की क्रिया । २-वह बालु या मिट्टी जिसको लगाकर पैर धोया जाता है ।

पादनख [संज्ञा पु.] (सं.) पैर की अंगुलियों के नख ।

पादना [क्रि. अ.] (हिं.) गुदा से वायु बाहर निकालना । अपान वायु का त्याग करना ।

पादनालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर में पहनने का गहना ।

पादन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलना । पैर रखना २-नाचना ।

पादपंकज, पादपङ्कज [संज्ञा पु.](सं.) कमल के समान चरण ।

पादप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष । पेड़ । २-

पादपखंड, पादपखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वन जङ्गल ।

पादपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) पद-कमल । चरण कमल

पादपद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मार्ग । रास्ता । २-पगडंडी ।

पादपरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंदाक नामक वृक्ष । बांदा ।

पादपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खड़ाऊँ । २-जूता ।

पादपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर का गहना ।

पादपाश [संज्ञा पु.] (सं.) पशु के पैर बांधने रस्सी ।

पादपाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिकड़ी । २-बेड़ी ।

पादपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) पैर रखने का पीढ़ा । का आसन ।

पादपीठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाई की सिल्ली जिसपर वह उस्तरा चलाता है । २-पीढ़ा ।

पादपूरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी श्लोक कविता के किसी चरण को लेकर उस चरण के भाव को नष्ट न करते हुए पूरा श्लोक छन्द बना देना । २-वह अक्षर अथवा शब्द जो किसी पद की पूर्ति के निमित्त रखा जा

पादप्रक्षालन [संज्ञा पु.] (सं.) पैर धोना ।

पादप्रणाम [संज्ञा पु.](सं.) पांव पड़ना । साष्टां दंडवत् ।

पादप्रतिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का पीढ़ा ।

पादप्रधारण [संज्ञा पु.] (सं.) खड़ाऊँ ।

पादप्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) पैर की ठोकर या ला

पादबंध, पादबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) पैरों को बां की जंजीर । बेड़ी ।

पादबंधन, पादबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १- घोड़े, बैल आदि पशुओं के पैर बांधना । कोई वस्तु जिससे पैर बांधे जायँ ।

पादबद्ध [वि.] (सं.) श्लोक का एक चरणयुक्त ।

पादभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर का तलवा । चौथाई ।

पादभुज [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

पादमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर का चिह्न । का निशान ।

पादमूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एड़ी या एड़ी गांठ । २-पैर का तलवा । ३-पर्वत की त हटी । ४-किसी व्यक्ति के विषय में न सूचक कथन ।

पादरक्ष, पादरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पैरों की रक्षा हो । जैसे खड़ाऊँ, जूता आ

पादरज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चरणों की धूल । की धूल ।

पादरज्जु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह साँकल या र

पादर

जिसमें पैर, विशेषतः हाथी के पैर बाँधे जायँ।

पादरथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जूता। २-खड़ाऊँ

पादरी [संज्ञा पु.] (हिं.) ईसाइयों का पुरोहित जो उनको उपासना आदि कराता है।

पादरोह, पादरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) वट वृक्ष।

पादलेप [संज्ञा पु.] (सं.) वह लेप आदि जो पैर में लगाया जाय। जैसे-महावर आदि।

पादवंदन, पादवन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) पैर पकड़ कर प्रणाम करना।

पादवल्मीक [संज्ञा पु.] (सं.) श्लीपद। पील-पांव।

पादविक [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक। मुसाफिर।

पादविदारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़े के पैर में होने वाला एक प्रकार का रोग।

पादविन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) पैर रखने का ढंग

पादशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पैर की अँगुली। २-पैर की नोक।

पादशाह [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'बादशाह'।

पादशाहजादा [संज्ञा पु.] (फा.) राजकुमार।

पादशिष्टजल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार वह जल जो ओटने पर चौथाई रह जाय। यह त्रिदोषनाशक माना जाता है।

पादशीली [संज्ञा पु.] (सं.) कसाई। भूचर।

पादशुश्रूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चरण सेवा। पैर दबाना।

पादशैल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पर्वत की तलहटी की पहाड़ी।

पादशोथ [संज्ञा पु.] (सं.) पैर की सूजन। (वैद्यक के मत से यह रोग आप से आप हो जाता है)

पादशौच [संज्ञा पु.] (सं.) पैर धोना।

पादशलाका [संज्ञा स्त्री.](सं.) पैर की नली।

पादसेवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चरण स्पर्श कर प्रतिष्ठा करना। २-सेवा।

पादसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चरण सेवा। २-सेवा।

पादस्तम्भ, पादस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु को गिरने से रोकने के लिए लगाई गई सहारे की लकड़ी।

पादस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर चटकाना। २-एक प्रकार का कुष्टरोग। इसमें पैरों में काले रंग की फुंसियां निकलती हैं।

पादहत [वि.] (सं.) लतियाया हुआ।

पादहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिस में पैरों में झुनझुनी होती है।

पादहारक [संज्ञा पु.] (सं.) पैर से चोरी करना। (पैर के नीचे दबा लेना)।

पादहीन [वि.] (सं.) १-जिसके चरण न हों। २-तीन चरण वाली (कविता या छन्द)।

पादहीना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशलता।

पादांकुलक, पादाङ्कुलक [संज्ञा पु.] (सं.) चौपाई (छन्द)।

पादांगद, पादाङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) नूपुर।

पादांबु, पादाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) मठा जिसमें एक चौथाई जल मिला हो।

पादाकुल [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपाई (छन्द)।

पादालक [संज्ञा पु.] (सं.) चौपाई नामक मात्रावृत्त।

पादाक्रांत, पादाक्रान्त [वि.] (सं.) १-पददलित पैर से कुचला हुआ। २-पराजित। विजित।

पादाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) पैर की नोक।

पादाघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठोकर। २-लात।

पादात [संज्ञा पु.](सं.) पैदल सिपाहियों की सेना

पादाति, पादातिक [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल सिपाही

पादानोन [संज्ञा पु.] (देश.) काला नमक।

पादाभ्यंजन, पादाभ्यञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) वह घी अथवा तेल जो पैर में मला जाय।

पादायान [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

पादारक [संज्ञा पु.] (सं.) नाव के यात्रियों के बैठने की पटरी।

पादारघ॰ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाद्यार्घ'।

पादार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पाद का आधा भाग। आठवां हिस्सा।

पादालिंदी, पादालिन्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौका

पादावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुएं से जल निकालने वाला यन्त्र या पहिया जो पैर से चलाया जाता है। २-कुएं से जल निकालने का यन्त्र अरहट या रहट।

पादावसेचन [संज्ञा पु.] (सं.) पैर धोना।

पादाविक [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल सिपाही।

पादासन [संज्ञा पु.] (सं.) पैर रखने का आसन या पीढ़ा।

पादिक [वि.] (सं.) [स्त्री. पादिकी] एक चौथाई। [संज्ञा पु.] पादकृच्छ्र नामक व्रत जो प्रायश्चित के लिये किया जाता है।

पादी [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर वाले जन्तु। यथा-गोह, घड़ियाल, मगर आदि। [वि.] जो एक चौथाई का हिस्सेदार हो।

पादीय [वि.] (सं.) पद वाला। मर्यादा वाला।

पादुक [संज्ञा पु.] (सं.) चलने वाला। गमनशील

पादुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खड़ाऊ। २-जूता

पादुकाकार [संज्ञा पु.] (सं.) खड़ाऊ या जूता बनाने वाला।

पादू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पादुका। खड़ाऊं।

पादोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर धोने का जल या वह जल जिसमें किसी पूज्य व्यक्ति के पैर धोये गये हों। २-चरणामृत।

पादोदर [संज्ञा पु.] (सं.) सांप।

पाद्य [संज्ञा पु] (सं.) पैर धोने का जल या वह जल जिसमें किसी पैर धोये गये हों।

पाद्यक [संज्ञा पु.] (सं.) पैर धोने की एक विधि।

पाद्यार्घ [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ-पैर धुलाने का जल। २-पूजा सामग्री। पूजा या भेंट में दिया जाने वाला धन।

पाधा [संज्ञा पु.] (हिं.) उपाध्याय। आचार्य। २-पंडित।

पान [संज्ञा पु.] (सं.) १-घूंट-घूंट करके किसी द्रव-पदार्थ को गले के नीचे उतारना। पीना। २-पीने का पदार्थ। पेयद्रव्य। ३-मद्य-पान। शराब पीना। ४-मद्य। मदिरा। ५-पानी। ६-पीने का पात्र। प्याला। कटोरा। ७-प्याऊ। पौसाला। ८-शस्त्रों को गरम करके द्रवपदार्थ में बुझाने से आने वाली चमक। ९-कुल्या। नहर। १०-निःश्वास। ११-जय। १२-पानी। (हिं.) १-पत्ता। २-एक प्रसिद्ध लता का पत्ता जिसपर कत्था, चूना आदि लगाकर और बीड़ा बनाकर खाया जाता है। ताम्बूल। ॰३-प्राण। ४-लड़ी। गून। ५-॰देखो 'पाणि'। ६-पान के आकार की चौकी जो हार में रहती है। ७-ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक जिसपर पान आकार की लाल रंग की बूटियां बनी रहती हैं। ८-जूते में एड़ी के पीछे लगने वाला पान के आकार का चमड़े का टुकड़ा। *पान उठना*-कोई काम करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होना। *पान कमाना*-पान के सड़े-गले अंश को निकालना। *पान चीरना*-निरर्थक काम करना। *पान खिलाना*-मँगनी करना। *पान देना*-कोई कार्य करने के लिए किसी से हामी भरवाना। *पान पत्ता*-१-लगा या बना हुआ पान। २-तुच्छ भेंट। *पान फूल*-१-सामान्य उपहार। २-बहुत मुलायम वस्तु। *पान फेरना*-पान कमाना। *पान लेना*-किसी काम के करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूत को मांडी से तर करके ताना करना।

पानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेय पदार्थ। शर्बत। रस। २-पना।

पानगोष्ठिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शराबियों की टोली। २-मदिरालय। शराब की दुकान। ३-वह स्थान जहां तांत्रिक लोग एकत्र होकर मदिरापान और कुछ पूजन आदि करते हैं। मद्यपान चक्र।

पानगोष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शराबियों की मंडली या सभा। शराब की मजलिस।

पानड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सुगंधित पत्ती।

पानदान [संज्ञा पु.] (हिं.) वह डिब्बा जिसमें पान और पान पर लगाये जाने वाली कत्था, चूना, सुपारी आदि सामग्री रखी जाती है। पनडब्बा।

- पानदान का खर्च-स्त्रियों को उनकी निजी आवश्यकताओं के लिए दिया जाने वाला धन।

पानदोष [संज्ञा पु] (स) मद्यपान का व्यसन और लत।

पानन [संज्ञा पु.] (हिं) एक वृक्ष हिमालय की तराई वाले प्रदेश में पाया जाता है। इसका गोंद औषध के रूप में प्रयुक्त होता है।

पानप [संज्ञा पु.] (सं.) शराबी। पियक्कड़।

पानपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मद्यपान का पात्र। २-गिलास।

पानभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां शराबी मदिरापान करते हैं।

पानमंगल, पानमङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरापान करने वालों की गोष्ठी।

पानरा [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'पनारा' या 'पन्नाला'

पानवणिज [संज्ञा पु.] (सं.) कलवार। शराब बेचने वाला।

पानविभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-नशा। २-पानात्ययनामक रोग जो अधिक मदिरा पीने से होता है।

पानस [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल से बनाई जाने वाली एक प्रकार की प्राचीन शराब। [वि.] (सं.) कटहल से संबंध रखने वाला।

पानही+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जूता।

पाना [क्रि. स.] (हिं.) १-प्राप्त करना। उपलब्ध करना। हासिल करना। २-अच्छा या बुरा फल भोगना। ३-दी या खोई हुई वस्तु फिर से हाथ में लेना। ४-पड़ी हुई वस्तु उठाना। ५-देख या जान लेना। ६-साक्षात करना। देखना। ७-अनुभव करना। भोगना। ८-पास तक पहुँचना। ९-भोजन करना। खाना (साधु)। १०-समर्थ होना। सकना। ११-किसी के पास या निकट पहुँचना। १२-ज्ञान प्राप्त करना। जानना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) पावना। प्राप्तव्य धन।

पानागार [संज्ञा पु.] (सं.) जहां बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हैं। मदिरालय। मदिरा गृह।

पानात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक मदिरापान। २-अत्यधिक मदिरा पीने से होने वाला एक रोग।

पानि* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पाणि। हाथ। २-पानी। जल।

पानिक [संज्ञा पु.] (सं.) शराब बेचने वाला। कलवार।

पानिग्रहण* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाणिग्रहण'

पानिप [संज्ञा पु.] (हि.) १-चमक। आब। द्युति। ओप। कांति। २-पानी। जल।

पानिल [संज्ञा पु] (सं.) मदिरापान पात्र। शराब पीने का बरतन।

पानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह प्रसिद्ध द्रव पदार्थ जो नदी, कुएँ, वर्षा आदि से प्राप्त होता है और पीने, स्नान करने, खेत आदि सींचने के काम आता है। जल। नीर। २-जीभ, आंख, घाव आदि में से रसने वाला तरल पदार्थ। ३-वर्षा। मेह। वृष्टि। ४-वह वस्तु जो पानी के समान पतली हो। ५-चमक। कांति। आब। छबि। ६-वह द्रव पदार्थ जो किसी वस्तु को निथारने या निचोड़ने से प्राप्त हो। ७-तलवार आदि धारदार हथियारों के फल की वह रंगत अथवा चमक जिससे उसकी उत्कृष्टता प्रकट हो। आब। जौहर। ८-मान प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू। ९-वर्ष। साल। १०-मुलम्मा। ११-वीर्य। शुक्र। १२-पुंस्त्व। मरदानगी। स्वभिमान। १३-पानी के समान ठंडा पदार्थ। १४-पशुओं की वंशगत विशेषता। १५-पानी के समान ठंडा पदार्थ। १६-पानी के समान स्वादहीन पदार्थ। १७-द्वंद्व-युद्ध। १८-बार। दफ़ा। १९-अवसर। मौका। २०-जलवायु। आबहवा। २१-एक बारगी गीली या मुलायम वस्तु। २२-परिस्थित। सामाजिक दशा। २३-देखो 'पाणि'।

पानी आना-१-पसेव, लार आदि निकलना। २-मेह पड़ना। ३-कूएँ आदि में सोता खुलना। ४-घाव या आंख में पानी भर आना। पानी उठाना-पानी सोखना। पानी उतर आना-१-बहाव कम होना। मनुष्य मोती, शीशे आदि में चमक न रहना। २-लाज, शर्म न रहना। पानी उतरना-१-उतार होना। २-प्रतिष्ठा अथवा चेहरे का नूर या कान्ति बिगड़ना। ३-अण्डकोष बढ़ना। ४-आंखों में नजला आना। पानी उतारना-बेइज्जत करना। पानी करना-१-द्रवित करना २-सरल या सहल कर देना। ३-क्रोध दूर कर देना। ४-लज्जित करना। पानी का आसरा-सहायता की आशा। पानी का हगा मुँह को आना-ऐब खुल जाना। किये का फल मिलना। पानी काटना-१-बहाव को एक ओर से दूसरी ओर करना। २-तैरने में हाथ से पानी हटाना। पानी का बतासा या बुलबुला-क्षणभंगुर। थोड़ी देर रहने वाला पानी की तरह बहाना-अधिक खर्च करना। उड़ाना। पानी की धौंकनी लगाना-बहुत प्यास लगना।

पानी की पोट १-वह साग जिसमें पानी अंश अधिक हो। २-जिसमें पानी ही पानी हो। पानी की लहरें गिनना-असंभव कार्य करना पानी के मोल होना-बहुत सस्ता। पानी के घड़े पड़ना-बहुत लज्जित होना। पानी के मोल बिकना-बड़े सस्ते दाम पर बिकना। पानी के रेले में बहना-नष्ट कर देना। २-कौड़ियों में लुटना। पानी खुलना-वर्षा बन्द होना। पानी तले तक आ जाना-हद हो जाना पानी चढ़ना-१-पानी ऊंचाई पर जाना। २-पानी बढ़ना। ३-सींचा जाना। पानी चढ़ाना-१-बहुत पानी पीना। १-खेती सींचना ३-पानी चूल्हे पर रखना। गरम करना। ४-पानी ऊंचाई पर ले जाना। पानी चल १-आसू बहना। २-पानी फेरना। पानी चुराना-घाव में पानी जाना। पानी छानना-खूब सावधानी से परीक्षा करना। पानी छूटना-रस-रस कर पानी निकलना। पानी छूना-मलत्याग के उपरान्त जल से गुदा को धोना। (ग्राम्य)। पानी छोड़ना-पानी निकलना। पानी टूटना-कूए में पानी कम हो जाना। वर्षा रुकना या बन्द होना। पानी ढलना-रौनक या नूर जाता रहना। पानी तोड़ना-१-जल्दी-जल्दी खूब खींचकर कम पानी कर देना। २-पानी को डाँड़ या बल्ली से चीरना। पानी थमना-पानी बरसना बंद होना। पानी थामना-१-धार पर ठहरना (नाविक)। २-पानी रोकना। पानी दम करना-दुआ पढ़कर पानी पर फूंकना।

पानी दिखाना-पशु को पानी पिलाना। पानी देना-१-तर्पण करना। २-सींचना। ३-छिड़काना। पानी देवा न नाम लेवा-वंश में कोई न होना। पानी ना माँगना-तुरन्त मर जाना। पानी पड़ना-१-वर्षा होना। २-लज्जित होना। पानी पड़ा-ढीलाढाला। पानी पढ़ना-अंजुली में पानी लेकर मन्त्र पढ़ना। पानी पर नींव डालना, देना या होना-पक्का या दृढ़ आधार न होना। पानी-पानी करना या होना-बहुत लज्जित करना या होना। पानी पीकर जात पूछना-काम करने के पश्चात यह सोचना क़ि यह ठीक था या नहीं। पानी पी-पीकर कोसना-हर समय गाली देते रहना। पानी फिरना या फिर जाना-१-काम बिगड़ना या चौपट होना। २-ताजगी आ जाना। पानी फूंकना-मन्त्र पढ़कर पानी पर फूंकना। पानी फूटना-१-उबाल आना। २-बाँध या मेंड़ तोड़कर पानी निकालना। पानी फेरना या फेर देना-बना काम बिगाड़ देना। पानी बचाना-इज्जत बचाना। पानी बांधना-१-बहाव रोकना। २-जादू से जलस्तम्भ करना। पानी बुझाना-ईंट, लोहा आदि गरम करके पानी में डालना। पानी भरी खाल-अनित्य शरीर। पानी मरना-१-सूखना। २-दोष सिद्ध होना। ३-नींव में पानी जाना या चुराना। पानी में आग लगाना-जहां झगड़ा होना असम्भव हो वहां उत्पन्न कर देना। पानी में फेंकना, बहाना-खराब कर देना। खो देना।

पानी रखना-इज्जत बचाना। पानी लगना-१-पानी जमना। २-ठंडक से दांतों में टीस होना। ३-कहीं रहने से स्वास्थ्य बिगड़ना। ४-किसी स्थान के गुण से शरारत सूझना। ५-संग-साथ का असर पड़ना। पानी लेना-१-इज्जत खराब करना। पानी लेकर जाना। पानी सर से ऊंचा हो जाना-झगड़ा वश से बाहर हो जाना या बढ़ जाना पानी से पतला-१-तुच्छ। २-अति सरल

२-बहुत बदनाम। पानी से पहले पुल बांधना-व्यर्थ मेहनत करना। पानी होकर बह जाना बरबाद हो जाना। पानी होना-१-गलकर द्रव होना। २-क्रोध उतर जाना। ३-धीमा या मन्द पड़जाना। +पानी परोरना-मंत्र पढ़कर पानी पर फूकना। मुँह में पानी आना १-पाने का लोभ होना। चखने के लिए जीभ ललचाना। किसी के सामने पानी भरना-१-लज्जित या वश में होना। २-पानी खींचना १-फोड़े में पानी भरना। किसी के सिर पानी भरना-किसी का दोष सिद्ध होना। कड़ा पानी-ऐसी जलवायु जहां के व्यक्ति या पशु जीवट वाले सहिष्णु तथा कट्टर स्वभाव के हों। नरम पानी-ऐसी जलवायु जहां के व्यक्ति या पशु जीवटहीन, असहिष्णु तथा मंद हों।

पानीतराश [संज्ञा पु.] (फा.) जहाज या नाव की पेंदी की वह लकड़ी जो पानी को चीरती है।

पानीदार [वि.] (हिं.) १-आबदार। चमकदार। २-इज्जत वाला। प्रतिष्ठित। ३-जीवट वाला साहसी।

पानीदेवा [वि.] (हिं.) १-तर्पण या पिंडदान करने वाला। २-पुत्र। अपने कुल का।

पानीपत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध युद्ध-क्षेत्र जो दिल्ली और अम्बाले के बीच में है। इसी के पास महाभारत प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र है।

पानीफल [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंघाड़ा।

पानीय [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-पेय पदार्थ। [वि.] १-पीने योग्य। जो पीया जा सके। २-रक्षा करने योग्य। रक्षा-संबंधी।

पानीयकल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक औषधियों से बना हुआ एक प्रकार का घृत जो अपस्मार, उन्माद, ज्वर, खांसी, क्षय आदि रोगों को दूर करने वाला माना जाता है।

पानीयनकुल [संज्ञा पु.] (सं.) ऊदबिलाव जो मछली खाते हैं।

पानीयचूर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बालू।

पानीयपृष्ठज [संज्ञा पु.] (सं.) जलकुम्भी।

पानीयफल [संज्ञा पु.] (सं.) मखाना।

पानीयमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) बकूची।

पानीयवर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बालू। रेती।

पानीयशाल, पानीयशालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्याऊ। पौसरा। वह स्थान जहां बिना कुछ प्यासों को पानी पिलाया जाता है।

पानीयामलक [संज्ञा पु.] (सं.) पानीआंवला।

पानीयालु [संज्ञा पु.] (सं.) पानी आलू नाम का एक कंद।

पानीयारना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बल्वजा नामक एक घास।

पानूस* [संज्ञा पु.] (हिं.) फानूस।

पानीरा+ [संज्ञा पु.] (हिं) पान के पत्ते की बनी पकौड़ी।

पान्यो* [संज्ञा पु.] (हि.) पानी।

पान्हर [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार सरपता।

पाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-इस लोक में बुरा माना या समझा जाने वाला तथा परलोक में अशुभ फलदायक कर्म, धर्म अथवा पुण्य का उलटा पातक। गुनाह। २-अपराध। जुर्म। ३-वध। हत्या। ४-पापबुद्धि। बदनीयत। ५-अहित। बुराई। ६-झंझट-बखेड़े का काम। जंजाल (हिन्दी में ही) ७-कठिनाई। संकट। ८-पापग्रह। अशुभ ग्रह।

पाप उदय होना-१-पुराने पापों का फल मिलना २-दुःख मिलना। पाप कटना-१-पापों का नाश होना २-दुखदायी वस्तु दुःख या दूर होना २-झगड़ा या जंजाल हटना। पाप कमाना या बटोरना-पाप करके उसके फल के भागी बनना। पाप काटना-१-पाप से छुड़ाना। २-जंजाल उठाना। पाप की गठरी या पोट सिर पर रखना-बहुत पापी होना। पाप गले पड़ना या पीछे लगना-बिना इच्छा, बाधा या झंझट सिर पड़ना। * पाप पड़ना-कठिन होना या शक्ति से बाहर होना। पाप बिसाना-बवाल या झंझट में पड़ना। पाप मोल लेना-जान बूझकर जंजाल में फंसना। पाप लगना-पाप या दोष होना। [वि.] १-पापी। पापिष्ठ। २-दुष्ट। दुराचारी। ३-कमीना। नीच। ४-अशुभ। अमंगल।

पापक [संज्ञा पु.] (सं.) पाप। [वि.] (सं.) पापयुक्त।

पापकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अनुचित कार्य। बुरा काम।

पापकर्मा [वि.] (हिं.) पातकी। पापी।

पापकर्मी [व.](हिं.) [स्त्री. पापकर्मिणी] पाप करने वाला। पापी।

पापकल्प [वि.] (सं.) पापी के समान आचरण करने वाला। पाप कर्म से जीविका करने वाला। बदमाश।

पापधारी, पापकृत [वि.] पापी। पातकी।

पापक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप का नाश। २-वह स्थान जहां जाने से पापों का नाश हो। तीर्थ।

पापगण [संज्ञा पु.] (सं.) छंदशास्त्रानुसार ठगण का आठवां भेद।

पापग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुष्टग्रह। जैसे—मंगल, शनि, राहु और केतु। २-फलित ज्योतिष के अनुसार कृष्णाष्टमी से शुक्लाष्टमी तक का या वह चन्द्रमा जो देखने में आधे से कम हो।

पापघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) तिल। [वि.] पाप नाश करने वाला। जिससे पाप नष्ट हो।

पापघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी।

पापचंद्रमा, पापचन्द्रमा [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार विशाखा तथा अनुराधा नक्षत्र के दक्षिण भाग में स्थित चन्द्रमा।

पापचर [वि.] (सं.) [स्त्री. पापचरा] पापी। पा० कमाने वाला।

पापचारी [वि.] (सं.) [स्त्री. पापचारिणी] पाप करने वाला। पापी।

पापचेता [वि.] (हिं.) जिसके मन में सर्वदा पाप बसता हो। दुष्ट चित्त।

पापचेलिका, पापचेली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठा।

पापचैल [वि.] (सं.) जो बुरे वस्त्र धारण किये हो।

पापजीव [संज्ञा पु.] स्त्री, शूद्र, हूण और शबर आदि जीवों को पुराणों में पापजीव कहा गया है।

पापड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मसालेदार पतली चपाती जो उर्द या मूंग के आटे की बनती है *पापड़ बेलना*-१-बहुत परिश्रम करना। २-दुःख से दिन काटना। *बहुत से पापड़ बेलना*-बहुत तरह के काम कर चुकना। [वि.] (हिं.) १-कागज सा पतला या बारीक। २-सूखा। शुष्क।

पापड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी को खराद कर खिलौने बनाते हैं। बनडाल। २-देखो 'पित्तपापड़ा'।

पापड़ाखार [संज्ञा पु.] (हिं.) केले के पेड़ का क्षार

पापड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक पेड़ जो मध्य-प्रदेश, पंजाब तथा मद्रास राज्य में पाया जाता है। इसकी लकड़ी पीलापन लिये सफेद होती है तथा गाड़ियों आदि के बनाने में काम आती है। २-*पूरी। (पकवान)।

पापत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पाप का भाव।

पापदर्शी [वि.] (हिं.) बुरी नियत या निगाह से देखने वाला।

पापदृष्टि [वि.] (सं.) बुरी निगाह वाला।

पापधी [वि.] (सं.) पापमति। पापचेता। निंदित अथवा दुष्ट बुद्धि वाला।

पापनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ या बुरे नक्षत्र।

पापनाम [वि] (सं.) बदनाम।

पापनाशक [वि.] (सं.) पापों का नाश करने वाला

पापनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप का नाश करने वाला। २-वह कर्म जिससे पाप का नाश हो प्रायश्चित। ३-विष्णु। ४-शिव। ५-पाप नाश का भाव या क्रिया। पाप का नाश होना या करना।

पापनाशिनी [संज्ञा पु.] (सं) १-शमीवृक्ष। २-काली तुलसी।

पापनिश्चय [वि.] (सं.) दुष्कर्म करने का निश्चय

करने वाला। पाप करने को कृत-संकल्प।

पापपति [संज्ञा पु.] (सं.) उपपति। यार। जार।

पापपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १–दुष्ट मनुष्य। २–तंत्रोक्त एक पुरुष जिसका सम्पूर्ण शरीर पापमय होता है।

पापफल [वि.] (सं.) अशुभ फल देने वाला। पाप का फल।

पापबुद्धि [वि.] (सं.) पापमति। दुष्टमति।

पापभक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) कालभैरव।

पापमति [वि.] (सं.) जिसकी मति सर्वदा पाप में रहे।

पापमय [वि.] (सं.) [स्त्री. पापमयी] जो सदा पापवासना में लिप्त रहे। पाप से ओतप्रोत।

पापमुक्त [वि.] (सं.) पाप से मुक्त। पाप से छूटा हुआ। पवित्र।

पापमोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत्र कृष्णपक्ष की एकादशी।

पापयक्ष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) क्षयरोग। तपेदिक।

पापयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि।

पापर [संज्ञा पु.] (हिं.) पापड़।

पापरोग [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी पाप विशेष के फल से उत्पन्न रोग। २–मसूरिका चेचक। छोटी माता।

पापरोगी [वि.](हिं.) [स्त्री. पापरोगिणी] जिसे कोई पापरोग हुआ हो।

पापर्द्धि [संज्ञा पु.] (सं.) शिकार। आखेट। (शिकार से पाप की ऋद्धि (बढ़ती) होती है)।

पापलेन [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का मुलायम सूती कपड़ा।

पापलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पापियों के रहने का स्थान। नरक।

पापलोक्य [वि.] (सं.) नरक-संबंधी।

पापवाद [संज्ञा पु.] (सं.) अशुभसूचक शब्द। अमंगल ध्वनि। जैसे–कौवे आदि की बोली।

पापविनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

पापशमनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] पापों का नाश करने वाली। पापनिवारिणी।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष।

पापशील [वि.] (सं.) पापकर्मों को करने की प्रवृत्ति रखने वाला।

पापशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १–पाप से शुद्ध होने की क्रिया या भाव। पापनिवारण। २–तीर्थ-स्थान।

पापसंकल्प, पापसङ्कल्प [वि.] (सं.) जिसने पाप करने का दृढ़ निश्चय कर लिया हो।

पापसम [वि.] (सं.) पापतुल्य। पाप सदृश।

पापसूदनतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ स्थान का नाम।

पापहन् [वि.] (सं.) पापनाशक।

पापहर [वि.] (सं.) [पु. प्र.] पाप का नाशक। पापहारक।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक नदी का नाम।

पापहा [वि.] (हिं.) देखो 'पापहर'।

पापांकुश, पापाङ्कुश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन शुक्ला एकादशी।

पापांत, पापान्त [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

पापा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार बुध की उस समय की गति जब वह, अनुराधा या ज्येष्ठानक्षत्र में होता है।
[संज्ञा पु.] (देश.) ज्वार-बाजरे की फसल में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा। यह उस वर्ष लगता है जिस वर्ष बरषा अधिक होती है
[संज्ञा पु.](हिं.) १–बच्चों का पिता को संबोधन करने का शब्द। २–पानी। (बच्चा)।

पापाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पापा'।

पापाचार [संज्ञा पु.] (सं.) पाप का आचरण। दुराचार।

पापाचारी [वि.] (सं.) पाप का आचरण करने वाला। पापी।

पापात्मा [वि.] (सं.) जिसकी आत्मा सदा पापकर्म में बसे या लिप्त रहे। पापी। दुष्टात्मा।

पापाशय [वि.] (सं.) बुरे इरादे रखने वाला। दुष्ट हृदय।

पापाह [संज्ञा पु.] (सं.) १–अशुभ दिन। २–सूतक-काल।

पापाही [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

पापिष्ठ [वि.] (सं.) बहुत बड़ा पापी।

पापी [वि.] (हिं.) [स्त्री. पापिनी] १–पाप करने वाला। पातकी। २–क्रूर। निर्दय। नृशंस। परपीड़क।

पापोश [संज्ञा पु.] (फा.) जूता।

पाप्मा [संज्ञा पु.] (सं.) पाप। गुनाह। जुर्म। अपराध। [वि.] (सं.) पापी। पाप करने वाला।

पाबंद [वि.] (फा.) [स्त्री. पाबंदी] १–बंधा हुआ। बद्ध। २–नियम विधि आदि का नियमित रूप से पालन करने वाला या उसके पालन के लिए विवश। [संज्ञा पु.] (फा.) १–घोड़े की पिछाड़ी। २–नौकर। दास। सेवक।

पाबंदी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १–पाबंद होने का भाव अधीनता। बद्धता। २–मजबूरी। लाचारी। ३–नियमित रूप से किसी बात का अनुसरण ४–कोई विशेष कार्य करने की बाध्यता या लाचारी।

पाबार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ घुटने तक पानी भरा हो। (कहारों की बोली)।

पाम [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–गोटे किनारी के छोर पर की डोरी जो मजबूती के लिए डाली जाती है। २–रस्सी। डोरी।

पामघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

पामघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

पामड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पावँड़ा'।

पामन् [संज्ञा पु.] (सं.) १–चर्मरोग विशेष। २– खुजली।

पामन [वि.] (सं.) जिसे अथवा जिसमें पाम नामक रोग हुआ हो।

पामर [वि.] (सं.) [स्त्री. पामरा, पामरी] १– दुष्ट। कमीना। पाजी। २–पापी। अधम। नीचकुलोत्पन्न। ३–मूर्ख। मूढ़।

पामरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दुष्टता। कमीनेपन। २–मूर्खता। मूढ़ता। ३–पामर होने का भाव।

पामरयोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का निकृ योग।

पामरि [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

पामरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उपरना। दुपट्टा।

पामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रकार का चर्म-रोग। २–खुजली।

पामाल [वि.] (हिं.) १–पैर से मला या रौंदा हुआ। पददलित। पादाक्रांत। २–तबाह। बरबाद। चौपट।

पामाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तबाही। बरबादी। नाश।

पामोज़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कबू जिसके पंजे तक परों से ढके रहते हैं।

पायँ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पांव। पैर।

पायँजेहरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाजेब।

पायँत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पायंता। पैताना।

पायँता [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बिछौने या चारपाई का उस ओर का सिरा जिधर पैर रहते हैं। सिराहने का उलटा। पैताना। २–वह दिशा जिधर सोने वाले पांव हों।

पायँती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पायँता। पैताना।

पायँदाज [संज्ञा पु.] (फा.) पैर पोंछने का बिछावन। पाँवड़ा।

पायँपसारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निर्मली का पौधा या फल।

पाय* [संज्ञा पु.] (हिं.) पांव। पैर।

पायक [वि.] (सं.) पीने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पैदल सिपाही। २–हरकारा। दूत। ३–दास। सेवक। अनुचर।

पायखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाखाना'।

पायजामा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाजामा'।

पायजेब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पाजेब'।

पायठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पाइट'।

पायड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैंड़ा'।

पायतन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पैताना। पायँता।

पायताबा [संज्ञा पु.] (फा.) मोज़ा। जुर्राब।

पायदार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बहुत दिन तक टिकने या काम देने वाला। दृढ़। मजबूत। टिकाऊ।

पायदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दृढ़ता। मजबूती।

पायपोश [संज्ञा पु.] (हिं.) पापोश। जूता।

पामाल [वि.](फा.) १-पैरों से रौंदा या कुचला हुआ। पदाक्रान्त। २-बरबाद। ध्वस्त।

पामाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अधोगति। दुर्गति। २-नाश। खराबी।

पायरा [संज्ञा पु.] (हिं) घोड़े की जीन के दोनों ओर लटकते हुए तस्मे में लगा हुआ लोहे का आधार जिस पर सवार के पैर टिके रहते हैं। रकाब। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कबूतर।

पायल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों का पैर में पहनने का एक गहना जो घुँघरूदार होता है पाजेब। नूपुर। २-बांस की सीढ़ी या नसैनी ३-तेज चलने वाली हथिनी। ४-जन्म के समय पहले पैर बाहर निकालने वाला बच्चा

पायस [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दूध में चावल डाल कर राँधा हुआ भोज्य पदार्थ। खीर। २-देवदार के वृक्ष से निकला हुआ गोंद। [वि] [स्त्री. पयसी] दूध या जल का बना हुआ।

[illegible]* [संज्ञा पु.] (हिं) आसपास का स्थान। पड़ोस।

पाया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुर्सी, चौकी, पलंग आदि में नीचे लगे हुए वह छोटे खम्भे जिन के सहारे ढांचा खड़ा रहता है। गोड़ा। पावा। २-खम्भा। स्तम्भ। ३-पद। ओहदा। दरजा। ४-घोड़े के पैर का एक रोग। ५-जीना। सीढ़ी

पायिक [संज्ञा पु.] (सं) १-पैदल सिपाही। २-दूत। चर।

पायित [वि.] (सं.) सान धरा हुआ।

पायी [वि.] (सं.) पानकारी। पीने वाला।

पायु [संज्ञा पु.] (सं.) गुदा। मलद्वार। २-भरद्वाज ऋषि के एक पुत्र का नाम।

पायुभेद [संज्ञा पु.] (सं.) चंद्रग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार।

पाय्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-पेय पदार्थ [वि.] पान करने या पीने योग्य।

पारंगत, पारङ्गत [वि.] (सं.) [स्त्री. पारंगता] १-जो पार हो चुका हो। २-जिसने किसी शास्त्र अथवा विद्या को पढ़कर पार किया हो पूर्ण पण्डित। पूरा जानकार।

पारंपरीण, पारम्परीण [वि.] (सं) परम्परा से चला आया हुआ।

पारंपर्य, पारम्पर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-परम्परा का क्रम या भाव। २-वंशपरम्परा। ३-परम्परा से चली आती हुई रीति। आम्नाय।

पार [संज्ञा पु] (सं.) १-नदी या समुद्र का सामने वाला या दूसरा तट। अपर तट या सीमा। २-किसी वस्तु के आगे या सामने की ओर। दूसरी ओर। ३-अन्त। सिरा। छोर। ४-किसी वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण। *आरपार*-इस सिरे से उस सिरे या इस किनारे से उस किनारे तक। *पार उतर जाना*-१-काम साधकर अलग होना २-उस पार पहुँचना। ३-काम पूरा करना। ४-सफल हो जाना। ५-मर मिटना। *पार उतरना*-१-दूसरे किनारे पर पहुँचना। २-पूरा करा देना। ३-उद्धार करना। ४-ठिकाने लगाना। मार डालना। *पार करना*-१-दुर्गम मार्ग तै करना। २-पार उतरना या उतारना। *पार पाना*-१-अन्त तक पहुँचना। २-जीतना। *पार बसाना*-बस चलना। संभव होना। *पार लगना*-१-उस पार होना। २-काम पूरा होना ३-निर्वाह होना। ४-काम होना। *पार लगाना* १-संकट से उद्धार करना। २-उस पार या दूसरे पार पहुँचाना। ३-काम पूरा या समाप्त करना। ४-निर्वाह करना। *पार हो जाना*-१-तैरकर पार होना। २-छुटकारा पाना। ३-अपना काम करके अलग हो जाना। *पार होना*-१-मतलब साधकर दूर होना। २-अलग हो जाना। ३-दूसरे किनारे पहुँचना। ४-दूसरी ओर निकलना। ५-काम पूरा हो चुकना

पारक् [संज्ञा पु.] (सं.) सोना।

पारक [वि.] (सं.) [स्त्री. पारकी] १-पालन करने वाला। २-पार करने वाला। ३-उद्धार या मुक्त करने वाला। ४-पूर्ति करने वाला। संतुष्ट करने वाला।

पारक्य [वि.] (सं.) १-पराया। परकीय। दूसरे का। २-विरोधी। [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्यकार्य जो परलोक सुधारता है। परलोकसाधन।

पारख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जिसे परख हो। वह जिसमें परीक्षा करने की क्षमता हो। २-परखने या जाँचने वाला। परीक्षक।

पारखद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पार्षद'।

पारखी [संज्ञा पु.] (हिं.) परख या पहचान करने वाला। परखने वाला। परीक्षक।

पारग [वि.] (सं.) १-पार जाने वाला। २-अन्त तक पहुँचने वाला। ३-किसी विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेने वाला। ४-प्रकांड-विद्वान।

पारगत [वि.] (सं.) १-जिसने पार किया हो। २-पूरा जानकार। ३-समर्थ। ४-जिसने किसी विषय को आदि से अन्त तक पूरा किया हो। ५-जिन। (जैन)

पारगामी [वि.] (सं.) पल्ले पार गया हुआ।

पारचा [संज्ञा पु.] (फा.) १-टुकड़ा। धज्जी। खंड (कागज के)। कपड़ा। वस्त्र। ३-पोशाक। ४-एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। ५-कूएँ के मुख पर रखी हुई पटिया जिस पर पैर रखकर पानी खींचा जाता है।

पारज [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। सुवर्ण।

पारजात* [संज्ञा पु.] (हिं.) पारिजात।

पारजायिक [संज्ञा पु.] (सं.) लम्पट पुरुष। व्यभिचारी आदमी।

पारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पार करने या उतारने की क्रिया या भाव। २-परीक्षा या जाँच में पूरा उतरना। उत्तीर्ण होना। *पासिंग*। ३-रुकावट की जगह पार करके आगे बढ़ना। *पासिंग*। ४-धार्मिक उपवास के दूसरे दिन का पहला भोजन तथा तद्विषयक कृत्य। ५-समाप्ति। ६-धार्मिक ग्रंथ का नित्य नियमित रूप से पाठ।

पारण-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पत्र जो किसी परीक्षा आदि में उत्तीर्ण होने का सूचक हो। २-वह पत्र जिसे दिखाकर कोई नहीं आ जा-सके अथवा इसी प्रकार का अन्य कार्य कर सके। *पास*।

पारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पारण। व्रत समाप्ति पर भोजन। भोजन करना।

पारणीय [वि.] (सं.) पूरा करने योग्य।

पारतंत्र्य [संज्ञा पु.] परतंत्रता।

पारत [संज्ञा पु.] पारा। पारद।

पारत्रिक [वि.] (सं.) [स्त्री. पारत्रिकी] १-परलोक का। २-(कम) जिसमें परलोक बने। मरने के पश्चात उत्तम गति प्रदाता।

पारथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पार्थ'।

पारथिव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पार्थिव'।

पारद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा। २-एक प्राचीन मलेच्छ जाति का नाम।

पारदर्शक [वि.] (सं.) जिसके भीतर से होकर प्रकाश की किरणें जा सकें। जिसके सामने अथवा बीच में रहने पर भी उस ओर की वस्तु दिखाई दे। *ट्रांसपेरेन्ट*।

पारदर्शन [वि.] (सं.) सर्वज्ञ। पारगामी।

पारदर्शिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पारदर्शी होने का भाव।

पारदर्शी [वि.] (सं.) १-उस पार तक की बात देखने वाला। २-दूर तक देखने वाला। दूर-दर्शी। चतुर। ३-जो भलीभाँति देख चुका हो

पारदारिक [संज्ञा पु.] (सं.) पर-स्त्री से मैथुन करने वाला। व्यभिचारी।

पारदार्य [संज्ञा पु.](सं.) पराई स्त्री के साथ गमन व्यभिचार।

पारदेशिक [वि.] (सं.) [स्त्री पारदेशिकी] विदेश का। अन्य देश का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदेश का रहने वाला। २-यात्री।

पारदेश्य [वि.] (सं.) [स्त्री. पादेश्यी] विदेश का विदेशी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारदेशी। २-यात्री।

पारधी [संज्ञा पु.] (हिं.) बहेलिया। व्याध। २-शिकारी। ३-अहेरी। हत्यारा। बधिक।

+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओट। आड़।
पारधी पड़ना-ओट में होकर कुछ देखना या किसी की बात सुनना।

पारन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पारण'।

पारना [क्रि. स.] (हिं.) १-डालना। गिराना। २-जमीन पर लम्बा डालना। ३-लेटाना। ४-कुश्ती या लड़ाई में गिराना या पछाड़ना। ५-एक वस्तु को अन्य वस्तु में रखने, ठहराने या मिलाने के लिए उसमें गिराना या रखना ६-रखना। ७-किसी के अन्तर्गत करना। शामिल करना। मिलाना। ८-पहनना। शरीर पर धारण करना। ९-बुरी बात या दुर्घटना घटित करना। १०-सांचे आदि में ढालना। *+११-देखो 'पालना'।
पिंडा पारना-पिंडदान करना।
*+[क्रि. अ.] (हिं.) समर्थ होना।

पारमार्थिक [वि.] (सं.) [स्त्री. पारमार्थिकी] १-परमार्थ सम्बन्धी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो। २-वास्तविक। यथार्थ में विद्यमान। असली

पारमिक [वि.] (सं.)[स्त्री. पारमिकी] सर्वोत्कृष्ट। श्रेष्ठ।

पारमित [वि.] (सं.) १-आरपार गया हुआ। २-पल्ले पार गया हुआ।

पारयिष्णु [वि.] (सं.) १-पार जाने के योग्य। किसी काम को पूरा करने योग्य। २-प्रसन्नकर।

पारलौकिक [वि.] (सं.) १-परलोक-सम्बन्धी। २-परलोक में शुभ फल देने वाला।

पारवत [संज्ञा पु] (सं.) कपोत। कबूतर।

पारवश्य [संज्ञा पु.] (सं.) परवशता। पराधीनता परतंत्रता।

पारशव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराई स्त्री से उत्पन्न पुत्र। २-एक वर्णसंकर जाति। ३-एक प्राचीन देश का नाम जहां मोती निकलते थे। ४-लोहा। ५-दोगला। हरामी।

पारश्वध, पारश्वधिक [संज्ञा पु.] (सं.) परसाधारी।

पारषद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पार्षद'।

पारस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक कल्पित पत्थर जिसके संबन्ध में यह प्रसिद्ध है। यदि लोहा उससे छू जाय सोना हो जाता है। स्पर्शमणि २-अत्यधिक लाभदायक और उपयोगी वस्तु ३-परसा हुआ भोजन। ४-वह पत्तल जिसमें खाद्य-पदार्थ हो (देने के लिए)। ५-एक पहाड़ी वृक्ष काम। यह ढाक का सा होता है। ६-अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्राचीन देश। [वि.] १-पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। २-निरोग। चंगा।
* [अव्य.] (हिं.) पास। निकट। समीप।

पारसनाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पार्श्वनाथ'।

पारसव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पारशव'।

पारसी [वि.] (सं.) पारसदेश-संबंधी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पारसदेश का निवासी २-बम्बई तथा गुजरात में हजारों वर्षों से बसे हुए वे फारस निवासी जिनके पूर्वज मुसलमानों के भय से स्वदेश परित्याग करके चले आये थे।

पारसीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-फारसदेश। २-फारसदेश का घोड़ा। ३-फारसदेश का निवासी।

पारसीकयमानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खुरासानी अजवायन।

पारसीकवचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खुरासानी वच।

पारसीकेय [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकुम।

पारस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन देश का नाम। २-एक गृहसूत्रकार मुनि का नाम।

पारस्त्रैणेय [संज्ञा पु.] (सं.) दोगला। जारज पुत्र। हरामी।

पारस्परिक [वि.] (सं.) परस्पर होने वाला। आपस का। एक दूसरे का।

पारस्परिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पारस्परिक का भाव।

पारस्य [संज्ञा पु.] (सं.) पारसदेश।

पारा [संज्ञा पु.] (हिं.) चाँदी के समान चमकने वाला एक प्रसिद्ध तरल धातु जो बहुत वजनी होती है। भावप्रकाश में यह चार प्रकार का बताया गया है-श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण। इनमें श्वेत श्रेष्ठ होता है। वैद्यक के अनुसार पारा कृमि तथा कुष्टनाशक, नेत्रहितकारी, रसायन, मधुर आदि छ रसों से युक्त, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, योगवाही, शुक्रवर्द्धक तथा एक प्रकार से पूर्ण रोगनाशक कहा गया है। यह आठ प्रकार से शोधा जाता है। २-टुकड़ा ३-मिट्टी का बड़ा कसोरा। ४-छोटी दीवार।
पारा पिलाना-कोई वस्तु इतनी भारी करना की जैसे उसमें पारा भरा हो।

पारायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूरा करने का काम। समाप्ति। २-किसी धर्मग्रन्थ का नियमित रूप से नित्यपाठ जो आद्योपांत किया जाय।

पारायणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नित्य नियमित धर्मग्रन्थों का पाठ करने वाला। आद्योपांत पढ़ने वाला। २-छात्र।

पारारुत [संज्ञा पु.] (सं.) चट्टान। शिला।

पारावत [संज्ञा पु.] (सं.) १-कबूतर। २-परेवा। पंडुक। ३-बंदर। ४-पर्वत। ५-महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। ६-सुश्रुतोक्त एक प्रकार का खट्टा पदार्थ। ७-तेंदू का पेड़। ८-दत्तात्रेय के गुरु का नाम।

पारावतक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

पारावतकालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी मालकङ्गनी।

पारावतपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकजंघा। २-मालकंगनी नामक लता।

पारावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोप या का गीत। २-एक नदी का नाम। ३- लवलीफल।

पारावार [संज्ञा पु.] (सं.) १-आर-पार। दोनों २-हद। सीमा। ३-समुद्र।

पारावारीण [वि.] (सं.) १-दोनों तट पर जाने वाला। २-पूर्णतया परिचित।

पाराशर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाराशर पुत्र। व्यास जी का नाम। २-पराशर का वंशज। [वि.] १-पाराशर का बनाया हुआ। २-पाराशर संबंधी।

पाराशरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाराशर पुत्र व्यास। २-शुकदेव का एक नाम।

पाराशरी [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यासी। चतुर्थाश्रमी

पाराशरीय [वि.] (सं.) पाराशर के पास का।

पाराशर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पाराशर पुत्र व्यासजी का नाम।

पारिंद्र, पारिन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

पारि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हद। सीमा। २-ओर। तरफ। ३-जलाशय का तट। [संज्ञा पु.] (सं.) मद्यपान पात्र। प्याला।

पारिकांक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मज्ञान का अभिलापी। तपस्वी।

पारिकुट [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर। भृत्य।

पारिक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) परिक्षित पुत्र जनमेजय का नाम।

पारिख [वि.] (सं.) परीखा-संबंधी। परीखा का। *+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परख'।

पारिगर्भिक [संज्ञा पु.] (सं.) कबूतर।

पारिग्रामिक [वि.] (सं.) गाँव के चारों ओर

पारिजात [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देववृक्ष का नाम जो स्वर्गलोक में इन्द्र के कानन में है। यह समुद्रमंथन के समय निकला था। २-परजाता। हरसिंगार। ३-कचनार। ४-पारिभद्र। फरहद। ५-एक हाथी का नाम जो ऐरावत के कुल का बताया जाता है। ६-सीतोद पर्वत। ७-एक मुनि का नाम।

पारिजातक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरसिंगार। २-परिभद्र। फरहद।

पारिणामिक [वि.] (सं.) किसी के उपरान्त या उसके परिणामस्वरूप होने वाला। न्शल।

पारिणाय [वि.] (सं.) विवाह में प्राप्त (धन)।

पारिणाह्य [संज्ञा पु.] (सं.) घरेलू सामान और बरतन।

पारितथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिर में गूंथने की मोती की लड़ी।

पारितोषिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी से किसी कार्य से प्रसन्न होकर उसे दिया

वाला धन या कोई पदार्थ। इनाम। प्राइज। [वि.] (सं.) आनन्दकर। प्रीतिकार।

पारितोषिक-न्यायालय [संज्ञा पुं.](सं.) १–नष्टप्राय पोतों के उद्धार के अधिकार विषयक न्यायालय। २–युद्ध में लूटे हुए माल का बटवारा करने की अदालत। प्राइजकोर्ट।

पारिध्वजिक [संज्ञा पु.] (सं.) झंडाबरदार। झंडा लेकर चलने वाला।

पारिपंथिक, पारपन्थिक [संज्ञा स्त्री] (सं.) डाकू। लुटेरा।

पारिपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तकुल पर्वतों में से एक का नाम जो विंध्य के अन्तर्गत है।

पारिपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–अनुचर। अरदली। २–पारिषद्।

पारिपार्श्विक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पारिपार्श्विका] १–सदा साथ रहने वाला नौकर। अनुचर। अरदली। २–पारिषद्। ३–नाटक में स्थापक का अनुचर।

पारिपार्श्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सदा साथ रहने वाली दासी। चाकरनी।

पारिप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १–नौका। नाव। जहाज। २–एक प्रकार का जलपक्षी। ३–शतपथब्राह्मण के अनुसार अश्वमेधादि यज्ञों में कहा जाने वाला एक आख्यान। महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम। [वि.] (सं.) १–चंचल। चपल। अस्थिर। २–इधर-उधर घूमने वाला। ३–तैरने वाला। ४–उद्विग्न। घबड़ाया हुआ।

पारिप्लवनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चंचल नयन।

पारिबर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १–विवाह के समय की भेंट। गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पारिभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–मूंगे का एक पेड़। २–देवदारु वृक्ष। ३–सरलवृक्ष। सलई का पेड़। ४–नीम का पेड़।

पारिभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १–देवदार। २–नीम ३–फरहद।

पारिभाव्य [संज्ञा पु.](सं) १–कुट नाम की औषधि २–परिभू या जामिन होने का भाव। [वि.] (सं) परिभू या जमानत आदि के रूप में कोई शर्त्त आदि पूरी कराने के लिए लिया हुआ। कॉशनमनी।

पारिभाषिक [वि.] (सं.) १–जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाय। २–(शब्द) जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय। टेक्निकल। ३–प्रचलित।

पारिभाषिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधान आदि का वह पृथक् अंग या अंश जिसमें उनके विशिष्ट शब्दों की परिभाषायें रहती हैं।

पारिमांडल्य, पारिमाण्डल्य [संज्ञा पु.] (सं.) अणु अथवा परमाणु का परिमाण।

पारिमुखिक [वि.] (सं.) [स्त्री. पारिमुखिकी] मुँह के सामने का। पास का। समीपवर्ती।

पारिमुख्य [संज्ञा पु.] (सं.) उपस्थिति। मौजूदगी

पारियात्र [संज्ञा पु.] (सं.) सप्तकुल पर्वतों में से एक जो विंध्य के अन्तर्गत है।

पारियात्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १–पारियात्र पर्वत। २–पारियात्र पर्वत का निवासी।

पारियानिक [संज्ञा पु.] (सं.) गाड़ी। बग्घी।

पारिरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी। साधु।

पारिव्राजक [संज्ञा पु.] (सं.) १–परिव्राजक का काम या भाव। भ्रमण। २–संन्यास।

पारिव्राज्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–देखो 'पारिव्राजक'। २–अश्वत्थ विशेष।

पारिश [संज्ञा पु.] (सं.) पारिस पीपल। परास पीपल।

पारिशील [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पूआ। मालपूआ।

पारिश्रमिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के कुछ परिश्रम करने के फलस्वरूप या परितोषिक के रूप में दिया जाने वाला धन। *रिम्यूनरेशन*।

पारिषद [संज्ञा पु.] (सं.) १–परिषद् में बैठने वाला। सभासद। पंच। सभ्य। २–अनुयायी वर्ग। गण।

पारिषदक [वि.] (सं.) पंच से किया हुआ।

पारिषद्य [संज्ञा पु.](सं.) परिषद में उपस्थित लोग

पारिसपीपल [संज्ञा पु.] (हिं.) भिंडी की जाति का एक पौधा जिसमें कपास के ढोंडे के आकार का फल लगता है।

पारिसीर्य [वि.] (सं.) जो बिना जोते या हल चलाये उत्पन्न हुआ हो।

पारिहारिक [वि.] (सं.) परिहार करने वाला।

पारिहारिकी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार की पहेली

पारिहार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–पारिहारत्व। २–हाथ का कड़ा।

पारिहास्य [संज्ञा पु.](सं.) हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी

पारींद्र, पारीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–सिंह। २–अजगर सर्प।

पारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हाथी के पैर का रस्सा २–जल परिमाण। ३–पानी का घड़ा। ४–पीने का पात्र। प्याला। ५–जलसमूह। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी बात या काम के लिए वह अवसर जो कुछ अन्तर देकर क्रम से प्राप्त हो। बारी। २–+ गुड़ आदि का जमाया हुआ बड़ा ढोंका।

पारीक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) १–जन्मेजय। २–परीक्षित का पुत्र अथवा वंशज।

पारीण [वि.] (सं.) १–विरुद्ध पक्ष वाला। २–पूर्ण परिचित।

पारीणह्य [संज्ञा पु.] (सं.) गृहस्थी का सामान या बरतन।

पारीरण [संज्ञा पु.] (सं.) कछुवा।

पारीश [संज्ञा पु.] (सं.) पारिस पीपल का पेड़।

पारु [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य। २–अग्नि।

पारुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–कठोरता। रूखापन। २–कडुआपन। वचन की कठोरता। ३–गाली। कुवाच्य। ४–अगर। ५–इन्द्र का वन। ६–बृहस्पति।

पारेरक [संज्ञा पु.] (सं.) खड्ग। तलवार।

पारेवत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की खजूर।

पारोक्ष [वि.] (सं.) परोक्ष-संबंधी।

पार्क [संज्ञा पु.] (अं.) उद्यान। बगीचा।

पार्घट [संज्ञा पु.] (सं.) धूल या राख।

पार्जन्य [वि.] (सं.) जलवृष्टि-संबंधी।

पार्टी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १–मंडली। दल। २–समारोह जिसमें निमंत्रित लोगों को जलपान या भोज़न कराया जाता है।

पार्ण [वि.] (सं.) [स्त्री. पार्णी] १–पत्ता-संबंधी। २–पत्तों का बना हुआ। ३–पत्तों पर लगाया या बैठाया हुआ। जैसे–कर।

पार्णव [संज्ञा पु.] (सं.) पितृश्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय। इस श्राद्ध में पिता, पितामह आदि समस्त मातृकुल तथा पितृकुल के पितरों को पिंडदान दिया जाता है।

पार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १–राजा। पृथ्वीपति। २–कुन्ती का दूसरा नाम पृथा था अतएव युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को पार्थ कहते थे, किन्तु पार्थ शब्द विशेषतया अर्जुन के लिए ही प्रयुक्त किया जाता था।

पार्थक्य [संज्ञा पु.] (सं) १–पृथक होने का भाव। भेद। २–वियोग। जुदाई।

पार्थव [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़ाई। बड़प्पन। चौड़ाई। २–पृथु होने का भाव। [वि.] पृथु-संबंधी।

पार्थिव [वि.] (सं.) [स्त्री. पार्थिवी] १–मिट्टी का पृथ्वी का। २–पृथ्वी-संबंधी। ३–पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ। ४–पृथ्वी पर शासन करने वाला। ५–राजसी। शाही। [संज्ञा पु.] १–मिट्टी का शिवलिंग जिसके पूजन का विशेष महत्व बताया गया है। २–राजा। ३–मिट्टी का बरतन। ४–मंगलग्रह। ५–एक संवत्सर। तगर का पेड़। ६–एक संवत्सर।

पार्थिवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सीता। २–पार्वती

पार्पर [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

पार्य [संज्ञा पु.] (सं.) इस नाम का एक रुद्र।

पार्लमेंट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य की शासन व्यवस्था करने वाली महासभा। संसद।

पार्वत [वि.] (सं.) १–पर्वत-सम्बन्धी। २–पहाड़ पर रहने वाला। पर्वत पर उत्पन्न या पर्व

पर आया हुआ। ३-पहाड़ी। [संज्ञा पु.] १-बकायन। २-शिलाजीत। ३-सीसा नामक धातु। ४-एक अस्त्र। ५-ईंगुर।

पार्वतपीलु [वि.] (सं.) अखरोट।

पार्वतिक [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ों का समूह अथवा सिलसिला।

पार्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिमालय कन्या का नाम। उमा। गिरिजा। शिवा। भवानी। २-सिंहलीपीपल का नाम। गोपीचन्दन। ६-धाय का पौधा।

पार्वतीनंदन, पार्वतीनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

पार्वतीय [वि.] (सं.) पहाड़ का। पहाड़ी।

पार्वतीलोचन [संज्ञा. पु.] (सं.) ताल के साठ भेदों में से एक।

पार्वतीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) इस नाम का एक शिवलिङ्ग।

पार्वतेय [वि.] (सं.) पर्वत पर होने वाला। [संज्ञा पु.] १-सुरमा। अंजन। २-धाय का पेड़। ३-जिगनी। ४-हुरहुर का पौधा।

पार्शव [संज्ञा पु.] (सं.) परशुधारी योद्धा।

पार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के बगलों के नीचे का भाग, जहाँ पसलियाँ हैं। अधोभाग कक्षक। २-अगल-बगल की जगह। ३-पसली ४-टेढ़ी चाल। कुटिल उपाय।

पार्श्वक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पार्श्विकी] कुटिल उपायों से धन कमाने वाला। चालबाजी के द्वारा अपनी उन्नति चाहने वाला।

पार्श्वग [संज्ञा पु.] (सं.) अर्दली। सहचर। [वि.] साथ रहने वाला।

पार्श्वगत [वि.] (सं.) शरणागत।

पार्श्वचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुचर। सहचर अर्दली। २-नौका।

पार्श्वद [संज्ञा पु.] (सं.) अर्दली। सहचर। नौकर

पार्श्वदेश [संज्ञा पु.] (सं.) कुक्षि। पार्श्व या बगल का भाग।

पार्श्वनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के तेईसवें तीर्थंकर का नाम।

पार्श्वभाग [संज्ञा पु.] (सं.) बगल।

पार्श्वमौलि [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के एक मन्त्री का नाम।

पार्श्ववक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पार्श्ववर्ती [संज्ञा पु.] (सं.) पास रहने वाला मनुष्य। मुसाहब। [वि.] (सं.) १-लगा या मिला हुआ। २-पास रहने वाला।

पार्श्वशय [वि.] (सं.) १-करवट से सोने वाला २-बगल में सोने वाला।

पार्श्वशूल [संज्ञा पु.] (सं.) पसली का दर्द।

पार्श्वसूत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल में होने वाला आभूषण विशेष।

पार्श्वस्थ [वि.] (सं.) पास खड़ा रहने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) अभिनय के नटों में से वह जो पास खड़ा रहता है।

पार्श्वस्थित [वि.] (सं.) बगल में रहने वाला।

पार्श्वानुचर [संज्ञा पु.] (सं.) पासवान। नौकर सहचर। अर्दली।

पार्श्वासन्न [वि.] (सं.) बगल में खड़ा हुआ। पास में उपस्थित।

पार्श्वास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) पसली की हड्डी।

पार्श्विक [वि.] (सं.) १-पार्श्व-सम्बन्धी। बगल वाला। २-कुटिल उपायों से रुपया कमाने की फिक्र में रहने वाला।

पार्श्वैकादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाद्रशुक्ल एकादशी। इस दिन भगवान् विष्णु करवट बदलते हैं।

पार्षत [वि.] (सं.) पृषत या राजा विराट-संबंधी [संज्ञा पु.] (सं.) विराटपुत्र धृष्टद्युम्न।

पार्षती [संज्ञा स्त्री] (सं.) द्रौपदी।

पार्षद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पास रहने वाला। २-सेवक। पारिषद। ३-मुसाहब।

पार्षद्य [संज्ञा पु.] (सं.) सभा का सदस्य। पंच।

पार्ष्णि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एड़ी। २-सेना का पिछला भाग। ३-पृष्ठ। ४-लात। ठोकर। ५-छिनाल स्त्री। ६-कुन्ती।

पार्ष्णिक्षेम [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वदेवा में से एक।

पार्ष्णिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) अनुयायी।

पार्ष्णिग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) आक्रमण। पिछाड़ी की ओर पड़े शत्रु को धमकाना।

पार्ष्णिग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेनापति जो पीछे रहने वाली सेना का नायक हो। २-पीछे पड़ा हुआ शत्रु। ३-वह मित्र राजा जो अपने मित्र राजा को सहायता दे।

पार्ष्णिघात [संज्ञा पु.] (सं.) ठोकर। लात।

पार्ष्णिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे का घोड़ा।

पार्सल [संज्ञा पु.] (अं.) १-बंधी हुई गठरी। पुलिंदा। २-डाक से भेजा जाने वाला पुलिंदा। *पार्सल करना*-पुलिंदा बनाकर डाक से भेजना। *पार्सल जगाना*-पुलिंदे को डाकघर में बाहर भेजने के लिए देना।

पालंक, पालङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-पालक का शाक। २-बाजपक्षी। ३-एक प्रकार का रत्न जो काला, हरा और लाल होता है।

पालंकी, पालङ्की [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंदरू नामक गंधद्रव्य।

पालंक्य, पालङ्क्य [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पालंक्या] १-एक गंधद्रव्य। २-पालक साग।

पाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षक। रखवाला। ग्वाल। अहीर। गड़रिया। ३-एक पीकदानी। ५-बंगाल का एक प्रसिद्ध वंश का नाम जिसने लगभग साढ़े वर्ष तक मगध और बङ्ग पर राज्य ६-चित्रक या चीते का पेड़। (हिं.) लंबा-चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के नाव ढकेलने के लिए बांधते हैं। सामियाना। ३-वह कपड़ा जिससे या पालकी ढकते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फलों को कर कृत्रिम रूप से पकाने की आदि से ढकने और नीचे २-वह स्थान जहां फलों को पत्ते आदि बिछाये हों। ३-पानी वाली मेंड़ या किनारा। बांध। कगार या किनारा। [संज्ञा पु.] मैथुन।

पालउ+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पल्लव'।

पालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षक। २-राजा। शासक। ३-साईस। पिता। ५-चित्रकवृक्ष। [संज्ञा पु.] प्रकार का साग।

पालकजूही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) में आने वाला एक छोटा पौधा।

पालकपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाला हुआ दत्तक पुत्र।

पालकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लकड़ी जो चारपाई के सिरहाने को ऊंचा लिये लगाया जाता है।

पालकाप्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-करेणु ऋषि जिन्होंने सबसे पहले हाथियों का विज्ञान लोगों को सिखलाया था। २-हाथियों से सम्बन्ध विज्ञान।

पालकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं। २-पालक का शाक।

पालकी-गाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आकार की घोड़ागाड़ी।

पालघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुकुरमुत्ता। २-जलतृण।

पालट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पटेबाजी [संज्ञा पु.] (हि.) पाला हुआ लड़का पुत्र।

पालड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पलड़ा'।

पालती [संज्ञा स्त्री.] (अं.) जोड़

पालतू [वि.] (हिं.) पाला हुआ। कुत्ता।

पालथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

पालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन, वस्त्र आदि द्वारा की जाने वाली जीवनरक्षा। भरणपोषण। परवरिश। मेंटेनेंस। २-अनुकूल आचरण द्वारा किसी निश्चय की रक्षा अथवा निर्वाह। एबाइड। ३-तुरंत या हाल की ब्यायी हुई गौ का दूध। ४-किसी आज्ञा, निर्देश, वचन, कर्त्तव्य आदि के अनुसार कार्य करना। कंपलायंस, डिसचार्ज। ५-जीव, जन्तुओं आदि को रखकर उनका वंश, सामर्थ्य अथवा उनसे होने वाली उपज आदि बढ़ाने का कार्य। कलचर।

पालना [क्रि. स.] (हि.) १-भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवन रक्षा करना। परवरिश करना। भरण पोषण करना। २-मनोविनोद के लिए पशु, पक्षी आदि को अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना। ३-अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा करना। न टालना। भंग न करना। जैसे-वचन पालना। [संज्ञा पु.] एक प्रकार झूला या हिंडोला जिसमें छोटे बच्चों को सुलाकर इधर-उधर झुलाते हैं। गहवारा। पिंगूरा।

पालनीय [वि.] (सं.) पालन करने योग्य। पाल्य।

पालयिता [वि.] (हिं.) पालन करने वाला।

पालल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिल और चीनी को कूटकर बनाई हुई पपड़ी की सी तरह की एक मिठाई।

पालवंश [संज्ञा पु.] (सं.) बंगाल का एक राजवंश जिसने बङ्ग और मगध पर साढ़े तीन सौ वर्ष तक राज्य किया।

पालव* [संज्ञा पु.] (हि.) १-पल्लव। पत्ता। २-कोमल पत्ता।

पाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वायु में मिली हुई भाप के वह सूक्ष्म अणु या कण जो ठंडक के कारण सफेद तह के रूप में पृथ्वी पर जम जाते हैं। हिम। २-ठंड से जमा हुआ पानी। हिम। बरफ। ३-ठंड। सरदी। ४-सम्बन्ध या अवसर। वास्ता। साबिका। ५-झड़बेरी की पत्तियाँ जो बकरियों को चराई जाती है। ६-प्रधान स्थान। पीठ। ७-कबड्डी के खेल में दो दलों के बीच-बीच की रेखा। ८-सीमा निर्धारित करने के लिए बनी हुई मेंड़ या भीटा। ९-अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन। १०-कुश्ती लड़ने का स्थान। अखाड़ा। ११-कुछ आदमियों के उठने बैठने का स्थान। *पाला मर जाना*-पाला पड़ने से फसल को हानि पहुँचना। (किसी से) *पाला पड़ना*-व्यवहार का संयोग होना। काम पड़ना। सरोकार होना। (किसी के) *पाले पड़ना*-किसी के वंश में आजाना।

पालागन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नमस्कार। दंडवत्। प्रणाम।

पालान [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पलान'।

पालाश [संज्ञा पु.] (सं.) तमालपत्र। तेजपत्ता।

पालाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खिरनी का पेड़।

पालिंद, पालिन्द [संज्ञा पु.] (सं.) कुँदरु नामक सुगंधद्रव्य।

पालिंदी, पालिन्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काला निसोथ। २-सरिवन।

पालिंधी, पालिन्धी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पालिंदी'।

पालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कान का अग्रभाग। कान की लौ। २-नोक। ३-किनारा। ४-सीमा हाशिया। ५-सीमा। हद। ६-किसी अस्त्र की धार या बाढ़। ७-पंक्ति। अवली। ८-दाग। धब्बा। ९-पुल। १०-गोदी। अंक। क्रोड़। ११-ऐसा तालाब जो लम्बा अधिक और चौड़ा कम हो। १२-छात्रावस्था में गुरु-द्वारा छात्र का भरण-पोषण। १३-जूं। चीलर १४-प्रशंसा। बड़ाई। १५-डढ़ियल औरत।

पालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलंग। चारपाई। २-पलकी।

पालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पालन करने वाली।

पालित [वि.] (सं.) [स्त्री. पालिता] १-रक्षित। २-पाला-पोसा हुआ। ३-पाला हुआ। जो कहा सो किया हुआ।

पालितमंदार [संज्ञा पु.] (सं.) एक मझोले आकार का वृक्ष।

पालित्य [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्धावस्था के कारण बालों की सफेदी।

पालिधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फरहद का पेड़।

पालिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] पालन करने वाली।

पालिश [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-चिकनाई तथा चमक ओप। २-चिकनाई और चमक लाने वाला रोगन या मसाला।
पालिश करना-रोगन लगाकर चिकना और चमकदार करना। *पालिश होना*-रोगन से चिकना और चमकीला किया जाना। *पालिश देना*-पालिश करना।

पालिसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कार्य साधन का ढंग नीति।

पाली [वि.] (हिं.) [स्त्री. पालिनी] पालने या रक्षा करने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्थान जहाँ तीतर, बटेर आदि लड़ाये जाते हैं। २-बरतन का ढक्कन। परई। ३-पारी। बारी। ४-कल कारखाने आदि में काम करने का वह या उतना निर्धारित समय जिसमें एक मजदूर दल आकर कार्य करता है। शिफ्ट ५-एक प्राचीन भाषा का नाम जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं।

पालीवत [संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ का नाम।

पालीशोष [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग।

पालू [वि.] (हि.) पाला हुआ। पालतू।

पालो [संज्ञा पु.] (हि.) १-सुनारों की एक तौल जो पाँच रुपये के बराबर की होती है। २-झड़बेरी के पत्ते।

पाल्य [वि.] (सं.) पालने के योग्य।

पाल्वल [वि.] (सं.) [स्त्री. पाल्वली] १-तलैया-सम्बन्धी। २-तलैया में होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) तलैया का पानी।

पावँ [संज्ञा पु.] (हिं.) चलने का अंग। पैर। पग। *पावँ अड़ाना*-व्यर्थ बीच में पड़ना। विघ्न डालना। *पावँ आगे बढ़ाना*-हद से बाहर होना। *पाँव उखड़ जाना या उठ जाना*-१-पैर न जमना। २-उच्चता से गिरना। ३-विचार बदल जाना। ४-लड़ाई में ठहर न सकना। पाँवँ उखाड़ना-१-हराकर भगा देना। २-बात पर ठहरने न देना। पाँवँ उठाकर चलना-जल्दी चलना। पाँवँ उड़ाना-१-शत्रु के आघात से पैरों की रक्षा करना। २-पैर काट देना। पाँवँ उठाना-१-जाने लगना। २-जल्दी-जल्दी चलना। पाँवँ उतरना-१-पर जोड़ या गट्टा उखड़ना। २-पैर समाना। पांव कट जाना। २-अन्न-जल उठना। ३-आना जाना बंद होना। आने-जाने की शक्ति या सामर्थ्य न रहना। पाँवँ काँपना-काम के विचार से डर लगना। पाँवँ का खटका-चलने का आहट या खटका। पाँवँ की जूती-तुच्छ सेवक। पाँवँ की जूती सिर चढ़ना-छोटे अथवा नीच का बड़े के सामने पड़ना। पाँवँ की जूती-अत्यन्त छोटा, दास या नीच। पाँवँ की ठुकराई का सर पर चढ़ना-छोटे आदमी का बड़े से बराबरी करना। पाँवँ की मेंहदी न घिस जायगी-कुछ हानि न होगी या जाने में पैर मैले न होंगे। पाँवँ खींचना-इधर-उधर घूमना-फिरना छोड़ देना। पाँवँ गड़ाना-१-जमकर खड़ा होना। २-बात पर स्थिर रहना। पाँवँ गोर में लटकना-बहुत बूढ़ा होना। पाँवँ गोर में लटकाना-मरने को होना। मरणासन्न। पाँवँ घिसना-चलते-चलते पैर थक जाना। पावँ चप्पी करना-खुशामद या चिरौरी करना। पावँ दबाना। पावँ चलना-१-चलने के लिए कदम बढ़ाना। डग आगे रखना। २-जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। पावँ चूमना-पूजा या मान करना। खुशामद करना। पावँ छुटाना-पीछा छुटाना। पांव छूटना-रजस्वला होना। पावँ छोड़ना-उपचार या औषध द्वारा रुका हुआ मासिक-धर्म जारी कराना। रजस्राव कराना।
पावँ जमना या जमाना-१-न हटना। खड़ा रहना। २-स्थिर हो जाना। पावँ जमीन पर न रखना-१-घमंड करना। २-खुशी से उछलना। पावँ जोड़ना-झूले की रस्सी में परस्पर पैर उलझना या आपस में पर मिलाकर झूलना। पावँ टिकना या टिकाना-१-खड़ा होना। २-ठहर जाना। पावँ ठहरना-१-पैर न जमना। २-स्थिरता होना। पावँ डगमगाना-१-लड़-

बढ़ाना। पैर ठीक न पड़ना। २-दृढ़ न रहना। पावँ डालना-काम में पड़ना। पावँ डिगना-पैर ठीक स्थान पर न रहना, इधर-उधर हो जाना। पावँ तले की चींटी-दीन जीव। पावँ तले की धरती सरकी जाती है-मर्म भेदी दुःख से धरती कांपी जाती है। पावँ तले की मिट्टी निकल जाना-(किसी भयानक बात को सुन कर) स्तब्ध रह जाना। सन्न हो जाना। पावँ तले मलना-रौंदना। बहुत तंग करना। पामाल करना। पावँ तोड़ना-१-हिम्मत हारना। २-बहुत दौड़ धूप करना। ३-तंग करना। पावँ तोड़कर बैठना-१-प्रयत्न करते-करते थक कर बैठ जाना। २-अचल या स्थिर हो जाना। कहीं न जाना। पावँ थर थराना-साहस या हिम्मत न होना। पावँ दबना-बेबस होना पाव दबाना या दाबना-१-सेवा करना। २-पाव पलोटना। पावँ धरती पर न रखना-१-इतराना। बहुत घमंड करना। २-फूले न समाना। पाव धरना-१-किसी स्थान पर जाना। पधारना। २- (किसी का) पैर छूकर प्रणाम करना। विनती करना। ३- (काम में) आगे होना। ४-आरम्भ करना। पावँ धोकर पीना- बड़े आदर सहित पूजा या सेवा करना।

पावँ न धुलाना-नीच समझना। पावँ न होना-सहस अथवा दृढ़ता का न होना। पावँ निकलना-दुश्चरित्रता की बात फैलना। पावँ निकालना-१-इतराकर चलना। ३-बे कहा होना। ३-व्यभिचार करना। ४-सीमा से बाहर होना। ५-वापस ले लेना। ६-चालाक होना। ७-(किसी काम से) अलग होना। पावँ पकड़ना-१-विनती करना। २-सिर झुकाना। ३-सादर आग्रह करना। पावँ पखारना-पैर धोना। पावँ पड़ना-१-पैरों पर सिर रखना। २-अत्यन्त दीनता पूर्वक विनय करना। पावं पर गिरना-१-पैरों पर सर धरना। २-बड़ी दीनता से विनय करना। पावँ और पाँव रखकर बैठना या सोना-१-लापरवाह या असावधान होना। २-बिना किसी कार्य के आराम सहित बैठना। पावँ पर पावँ रखना-अनुसरण या नकल करना। पावँ पर सिर झुकाना या सिर रखना-गिड़गिड़ाना या प्रार्थना करना। पावँ पसारना-१-पैर फैलाना २-आराम से सोना। ३-ठाठबाट या आडम्बर बढ़ाना। ४-मर जाना। प्राण छोड़ना। पावँ पावँ चलना-पैदल चलना। पावँ पीटना-घोर प्रयत्न करना। पावँ पीट-पीटकर मरना-बहुत दुःख झेलकर मरना। पावँ पूजना-१-बहुत आदर-सत्कार या श्रद्धाभक्ति प्रदर्शित करना। २-कन्यादान के समय विवाह में लड़की वालों का वर का पूजन करना तथा कन्यादान में योग देना। पावँ फंसना-झंझट में पड़ना। पावँ फिसलना-रपटना। पावँ फूंक-फूंककर रखना-भय या सावधानी से चलना। पावँ फूलना-१-थंक जाना। २-डर से व्याकुल होना। पावं फेरने जाना-१-नाश करने जाना। २-प्रसव के बाद मायके जाना। *पावँ फैलाकर सोना*-निश्चित या बेखटके रहना। पावँ फैलाना-१-आग्रह करना। २-अधिक पाने की इच्छा करना। पावँ बढ़ाना-आगे बढ़ना। अधिकार अथवा शक्ति बढ़ाना ३-जल्दी चलना। पावँ बाहर निकालना। २-बढ़कर चलना। पावँ बिचलना-१-पैर रपटना या फिसलना। २-ईमान डिगना। ३-पक्कापन न रहना। पावँ बीच में होना-जिम्मेदार होना। पावँ बीच से निकाल लेना-अपना जिम्मा उठा लेना। कोई वास्ता न रखना। पावँ भर जाना-पैर थकना। चलते-चलते बहुत थक जाना। पावँ भारी होना-१-गर्भवती होना। २-आगमन बुरा होना। (किसी से) पावँ भी न धुलवाना-किसी को अपनी तुच्छ सेवा के योग्य भी न समझना पाव में क्या मेंहदी लगी है-(किसी कार्य को स्वयं न करके दूसरों को करने को कहने की अवस्था में प्रत्युत्तर में यह मुहावरा व्यंग्य रूप में कहा जाता है) क्या भय है जो स्वयं नहीं करते। पावँ में पर लगना-बहुत तेज चलना। पावँ में बेड़ी पड़ना-१-बंधन या चक्कर में फँसना। २-घर का भार सिर पर होना। ३-विवाहित होना। पावँ में सनीचर या घनचक्कर होना-मारे-मारे फिरने की प्रकृति या भाग्य होना। पावँ में सिर देना-मिन्नत करना। पावँ रखने का ठिकाना न होना-रहने का स्थान न होना। पावँ रगड़ना-१-पीड़ा आदि के कारण छटपटाना। २-बहुत दौड़ धूप करना। घोर प्रयत्न करना। पाव रह जाना-१-पैर मारे जाना। थकावट आदि के कारण पैरों का बेकाम हो जाना २-पैरों का शक्तिरहित हो जाना। पावँ रोपना-संकल्प करना। दृढ़ निश्चय करना। पाव लगना-१-पैर छूना। प्रणाम करना। २-विनती करना। पावँ लगा होना-बार-बार आते जाते रहने के कारण परिचित होना।

पावँ लड़खड़ाना-काम के विचार से डर लगना। पावँ लेना-१-पैर छूना। २-आज्ञा पालना। ३-निवेदन करना। पावँ सकोड़ना-पैर समेटना। पैर फैला न रहने देना। पावँ समेटना-१-मरना। २-लगाव न रखना। ३-पैर खींचना या सिकोड़ना। ४-व्यर्थ घूमना-फिरना छोड़ना। पावँ से पावँ बाँधकर रखना-१-पास रखना। २-चौकसी करना या रखना। पावँ सो जाना-पैर सो जाना या झन्ना उठना। पावँ हाथ निकालना-हैसियत से बढ़कर चलना।

पावँचप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थकावट दूर करने के लिए पैर दबाना।

पावँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर रखने के लिए फैलाया हुआ कपड़ा। किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति के आगमन पर मार्ग में बिछाया हुआ कपड़ा।

पावँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खड़ाऊ। २-जूता ३-गोटा बुनने वालों का एक लकड़ी का औजार।

पावँर* [वि.] (हि.) १-तुच्छ। क्षुद्र। २-नीच दुष्ट। [संज्ञा पु.] देखो 'पाँवड़ा'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पाँवड़ी'।

पावँरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खड़ाऊ। २-जूता।

पाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चौथाई भाग या अंश। २-एक सेर का चौथा हिस्सा। चार छटाँक का मान। ३-चार छटाँक की तौल का बाट।

पावक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-अग्निदेव। ३-तेज। ताप। ४-चित्रक। ५-तीन की संख्या। ६-अग्निमंथ। ७-भिलावां। ८-कुसुम्भ। ९-सूर्य। १०-वरुण [वि.] शुद्ध या पवित्र करने वाला।

पावकमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकान्तमणि। आतशी शीशा।

पावकवर्ण [वि.] (सं.) अग्नि के समान तेजस्वी।

पावका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

पावकात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्तिकेय। २-सुदर्शनऋषि।

पावकि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्तिकेय। पावक का पुत्र। २-इक्ष्वाकुवंशीय दुर्योधन की कन्या सुदर्शना से उत्पन्न हुआ था।

पावकुलक [संज्ञा पु.] (हिं.) पादकुलक छन्द। चौपाई।

पावती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोई वस्तु पाने का प्राप्तिसूचकपत्र। रसीद। रिसीट।

पावदान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैर रखने की वस्तु या स्थान। २-इक्के गाड़ी आदि में पैर रखकर चढ़ने का स्थान। ३-गाड़ी के भीतर पैर लटकाने का स्थान। ४-वह छोटी चौकी जो कुरसी पर बैठे हुए आदमी के पैर टिकाने के लिए मेज के नीचे रखी जाती है।

पावन [वि.] (सं.) [स्त्री. पावनी] १-पवित्र शुद्ध करने वाला। २-पवित्र। शुद्ध। पवन अर्थात हवा पीकर रहने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-तप। २-जल। ३-४-माथे का तिलक। ५-रुद्राक्ष। ६-७-पीली भंगरैया। ८-चित्रकवृक्ष। ९-१०-शिलारस। ११-सिद्ध पुरुष। १२-का एक नाम। १३-विष्णु।

पावनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पवित्रता।

पावनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पवित्रता।

पावनध्वनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शंख। २-नाद।

पावना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रुपया जो पाना या प्राप्त करना हो। प्राप्यधन। *+[क्रि. स.] (हि.) १-प्राप्त करना। २-ज्ञान प्राप्त करना। जानना।

२-भोजन करना। जीमना।

पावनि [संज्ञा पु.] (सं.) पवनसुत। हनुमान।

पावनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तुलसी। २-गौ। ३-गंगानदी। ४-हड़। हरीतकी। ५-मत्स्यपुराणानुसार शाकद्वीप की एक नदी का नाम

पावमानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद की एक ऋचा।

पावमुहर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक सिक्का जो शाहजहाँ के समय में होता था। यह एक मुहर का चौथाई होता था।

पावल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पायल'।

पावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रुपये का चौथाई सिक्का। चवन्नी।

पावस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्षाऋतु। बरसात

पावा [संज्ञा पु.] (हि.) कुर्सी, पलंग आदि का पाया। (देश.) एक प्राचीन गांव का नाम जो वैशाली से पश्चिम और गंगा के उत्तर में था। यहां कुछ दिन बुद्ध भगवान ठहरे थे।

पावी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मैना विशेष जो ऋतु के अनुसार रंग बदलती है।

पाव्य [वि.] (सं.) पवित्र करने योग्य।

पाश [संज्ञा पु.] (सं) १-रस्सी, तार आदि का बना वह फंदा जिसमें पड़ने से जीव बंध जाता है और बंधन कसने से प्रायः मर भी जाता है। बंधन-जाल। फंदा। २-पशु, पक्षियों को फँसाने का फंदा या जाल। ३-बंधन। फँसाने वाली वस्तु। ४-फलित-ज्योतिष में एक योग।

पाशक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार खेल या जूआ। पासा। चौपड़।

पाशकपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) वह पीढ़ा जिसपर जूआ खेला जाता है।

पाशक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्यूत कर्म। जूआ

पाशकेवली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पासा फेंककर की जाने वाली फलित-ज्योतिष की एक गणना।

पाशधर [संज्ञा पु.] (सं.) वरुणदेव का एक नाम।

पाशबंधक, पाशबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़ीमार। बहेलिया।

पाशभृत [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण का एक नाम।

पाशमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रोक्त एक प्रकार की मुद्रा।

पाशव [वि.] (सं.) [स्त्री. पासवी] १-पशु से संबंधयुक्त या पशु से उत्पन्न। २-पशुओं का सा।

पाशवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पशु होने का भाव।

पाशवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. पाशवती] पाशवाला पाश या फंदा रखने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण देवता।

पाशासन [संज्ञा पु.] (सं.) एक आसन विशेष का नाम।

पाशविक [वि.] (सं.) १-पशु-संबंधी। २-पशुओं का सा।

पाशहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुणदेव। २-शतभिषानक्षत्र।

पाशा [संज्ञा पु.] (तु.) तुर्कदेश के सरदारों की एक उपाधि।

पाशिक [संज्ञा पु.] (सं.) बहेलिया। चिड़ीमार।

पाशित [वि.] (सं.) फँदे में फंसा हुआ। बंधा हुआ।

पाशी [वि.] (सं.) पाश या फंदा रखने वाला। पाशवाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण देवता २-यम। ३-बहेलिया। चिड़ीमार। ४-अपराधियों को फांसी देने वाला चांडाल।

पाशुक [वि.] (सं.) पशु-संबंधी।

पाशुपत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशुपति या शैव का उपासक। पशुपति के सिद्धान्तों को मानने वाला। २-शैव। ३-शिवोक्त तंत्र शास्त्र। ४-अथर्ववेद एक उपनिषद् का नाम। ५-अगस्त का फूल। [वि.] (सं.) १-पशुपति या शिव-सम्बन्धी। २-पशुपति का।

पाशुपतदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम्प्रदायिक दर्शन का नाम जिसका उल्लेख माधवाचार्य ने सर्वदर्शनसंग्रह में किया है।

पाशुपतरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध का नाम जो अग्निमंद, अपच, हृदय के रोग और हैजे में दी जाती हैं।

पाशुपतास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव का वह अस्त्र जो बहुत प्रचंड था। इसे अर्जुन ने कठोर तपस्या करके शिव से यह अस्त्र प्राप्त किया था।

पाशुबंधक, पाशुबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां यज्ञ का बलिपशु बांधा जाता है

पाश्चात्य [वि.] (सं.) १-पीछे का। पिछला। २-पश्चिम दिशा का। पश्चिमी।

पाश्चात्यीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश अथवा जाति को पाश्चात्य सभ्यता या संस्कृत के सांचे में ढालना अथवा पाश्चात्य ढंग का बनाना।

पाषंड, पाषण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेद का मार्ग छोड़कर अन्य मत ग्रहण करने वाला। २-ढोंगी आदमी। ३-साम्प्रदाय। मत। पंथ।

पाषंडक, पाषण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) वेद के विरुद्ध आचरण करने वाला।

पाषंडी, पाषण्डी [वि.] (सं.) वेद विरुद्ध आचरण करने वाला। झूठा मत मानने वाला। २-ढोंगी। धूर्त।

पाषक [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का आभूषण विशेष।

पाषर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पाखर'।

पाषाण [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. पाषाणी] १-पत्थर प्रस्तर। २-गंधक। ३-पन्ने और नीलम का एक दोष।

पाषाणकदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहाड़ी केला।

पाषाणकुंदक, पाषाणकुन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) पाषाणभेद।

पाषाणगर्दभ [संज्ञा पु.] (सं.) दाढ़ सूजने का रोग

पाषाणगैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू।

पाषाणचतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.](सं.) अग्रहायण मास (अगहन) शुक्ला चतुर्दशी। इस तिथि को स्त्रियां गौर का पूजन करके रात को पाषाण के आकार की बड़ियां बनाकर खाती हैं।

पाषाणजतु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिलाजीत।

पाषाणदारक [संज्ञा पु.] (सं.) संगतराश की छेनी यां टाँकी।

पाषाणदारण [संज्ञा पु.] (सं.) संगतराश की टाँकी

पाषाणभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाषाणभेद। २-कुलथी।

पाषाणभिन्न [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध विशेष

पाषाणभेद [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ बहुत सुन्दर होती हैं। पखानभेद। पथरचट।

पाषाणभेदन [संज्ञा पु.] (सं.) पाषाणभेद।

पाषाणभेदी [संज्ञा पु.] (सं.) पाषाणभेद। पखानभेद।

पाषाणरोग [संज्ञा पु.] (सं.) अश्मरी। पथरी।

पाषाणसंधि, पाषाणसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) चट्टान में बनी गुफा।

पाषाणसंभव-वल्ली [वि.] (सं.) मूँगा। प्रवाल।

पाषाणहृदय [वि.] (सं.) पत्थर के समान कठोर हृदय। नृशंस हृदय।

पाषाणांतक, पाषाणान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) अश्मन्तक तृण।

पाषाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा पत्थर जो बटखरे की तरह काम में लाया जाय। बाट। [वि.] (सं.) पत्थर के समान कठोर हृदय वाली।

पासंग [संज्ञा पु.] (फा.) १-तराजू की डंडी या तौल बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ बोझ। पसंघा। २-डाँडी या पलड़ा का अन्तर।

पास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बगल। ओर। तरफ २-सामीप्य। निकटता। ३-अधिकार। कब्जा [अव्य.] (हिं.) १-निकट। समीप। २-अधिकार में। कब्जे में। ३-किसी से। किसी के प्रति।
(किसी) स्त्री के पास आना या जाना–समागम करना। *(किसी के) पास बैठना*–१-निकट बैठना। २-संगत या सुहबत में रहना। साथ करना। ३-पहुँचना। *पास बैठने वाला*–१-मेलजोल रखने वाला। २-मुसाहिब। *(किसी स्त्री के) पास रहना*–अनुचित संबंध रखना। *पास न फटकना*–निकट न जाना।
[वि.] (अं.) १-पार किया हुआ। तै किया

हुआ। २-किसी अवस्था, श्रेणी कक्षा आदि के आगे निकला हुआ। ३-जाँच या परीक्षा में ठीक उतरा हुआ। उत्तीर्ण। सफलीभूत। ४-स्वीकृत। मंजूर। ५-प्रचलित जारी। [संज्ञा पु.] (अं.) वह कागज या पात्र जिससे किसी को बिना रोक-टोक कहीं आने-जाने का अधिकार अथवा अनुमति हो। पारण-पत्र [संज्ञा पु.] १-देखो 'पाशा'। २-देखो 'पासा' [संज्ञा पु.] (देश.) १-भेड़ों के बाल कतरने की कैंची का दस्ता या मूठ। २-आवें के ऊपर उपले जमाने का कार्य।

पासना [क्रि. अ.] (हिं.) थनों में दूध आना।

पासनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाने की रीति।

पासबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) दरी बुनने के करघे की एक लकड़ी।

पासबुक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-वह पुस्तक जिस में बुक का हिसाब-किताब रहता है। २-वह पुस्तक जिसमें किसी प्रकार के लेनदेन का हिसाब-किताब हो।

पासमान* [संज्ञा पु.] (हिं.) पास रहने वाला दास। अनुचर।

पासवर्ती* [वि.] (हिं.) देखो 'पार्श्ववर्त्ती'।

पाससार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पासासार'।

पासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काठ या हाथी दांत आदि के वह छः पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं तथा जिनसे चौसर (चौपड़) या कई प्रकार के जूए खेले जाते हैं। २-वह खेल जो पासों से खेला जाता है। चौसर का खेल। ३-मोटी बत्ती के आकार की गुल्ली। जैसे-सोने के पासे। ४-पीतल या कांसे का चौखूंटा लम्बा ठप्पा जिसमें छोटे छोटे गोल गड्ढे बने होते हैं।
किसी का पासा पड़ना-भाग्य अनुकूल और प्रबल होना। *पासा पलटना*-१-अच्छे से बुरा भाग्य होना। २-युक्ति, उपाय आदि का उलटा फल होना। ३-जो कुछ हो रहा है, उसे उलटा करना। *पासा फेंकना*-भाग्य परीक्षा करना। किस्मत आजमाना।

पासासार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पासे की गोटी। २-पासे का खेल।

पासिक* [संज्ञा पु.] (हिं.) फंदा। जाल। बंधन

पासिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जाल। फंदा। बंधन।

पासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जाल या फन्दे में फंसा कर चिड़िया पकड़ने वाला। २-एक जाति-विशेष का नाम। इस जाति के लोग सूअर पालनें और ताड़ी निकालने का काम करते हैं [संज्ञा स्त्री.] १-फंदा। फाँस। पाश। फांसी २-घास बांधने की जाली। ३-घोड़े के पैर बांधने की रस्सी। पिछाड़ी।

पासुरी, पासुली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पसली'।

पाहँ [अव्य.] (हिं.) १-निकट। पास। २-पास जाकर सम्बोधन करके। किसी से।

पाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पत्थर।

पाहन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर। प्रस्तर।

पाहरू*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पहरेदार। पहरा देने वाला।

पाहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल की खेत के बीच का रास्ता। मेंड़।

पाहात [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत का पेड़।

पाहिं* [अव्य.] (हिं.) १-पास। निकट। समीप। २-किसी के प्रति। किसी से।

पाहि एक संस्कृतपद जिसका अर्थ है—'बचाओ' 'रक्षा करो'।

पाहीं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'पाहिं'।

पाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जिस खेत का किसान दूसरे गाँव में रहता हो।

पाहुँच+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहुँच'।

पाहुना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पाहुनी] १-अभ्यागत। अतिथि। २-दामाद। जामाता।

पाहुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मेहमान या अतिथि स्त्री। २-आतिथ्य। मेहमानदारी। खातिर-तवाजा। ३-रखेल स्त्री।

पाहुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भेट। नजर। २-सौगात।

पाहू+ [संज्ञा पु.] (?) व्यक्ति। शख्स।

पिंग, पिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-भैंसा। २-चूहा। ३-हरताल। [वि.] १-पीला या पीलापन लिये हुए। भूरा रंग। २-दीपशिखा के रंग का। तामड़ा। ३-सुंघनी रंग का। भूरापन। लिये लाल।

पिंगकपिशा, पिङ्गकपिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेलचटा। तेलपायी।

पिंगचक्षु, पिङ्गचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) नक्र नामक जल-जंतु।

पिंगजट, पिङ्गजट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पिंगल, पिङ्गल [वि.] (सं.) १-भूरापन लिये लाल। तामड़ा। २-पीत। पीला। ३-सुंघनी के रंग का। भूरापन लिये पीला। [संज्ञा पु.] १-पीतल। २-हरताल। ३-आग। ४-बंदर। ५-न्योला। ६-छोटा उल्लू। ७-एक सर्प विशेष। ८-सूर्य का एक गण। ९-कुबेर की नवनिधियों में से एक। १०-छंदशास्त्रकार के एक प्राचीन मुनि का नाम। ११-उक्त मुनि का बनाया छंदशास्त्र। १२-छंदशास्त्र। १३-साठ संवत्सरों में से इक्यावनवाँ। १४-भैरवराग का एक पुत्र जिसके गाने का समय प्रातःकाल का है। १५-भारत के उत्तर-पश्चिम में एक देश। १६-खस। उशीर। १७-उल्लू पक्षी। १८-रास्ना। १९-एक प्रकार का स्थावर विष।

पिंगला, पिङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हठयोग और तंत्र में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। २-लक्ष्मी। ३-एक पुराणाख्यात वेश्या का नाम। ४-दक्षिण दिग्गज की स्त्री ५-एक चिड़िया। ६-राजनीति। ७-शीशम का पेड़। ८-गोरोचन।

पिंगलिका, पिङ्गलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बगला। २-मक्खी की जाति का एक कीड़ा।

पिंगलित, पिङ्गलित [वि.] (सं.) पिंगलवर्ण का

पिंगसार, पिङ्गसार [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

पिंगस्फटिक, पिङ्गस्फटिक [संज्ञा पु.] (सं.) गोमेद रत्न।

पिंगा, पिङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोरोचन। २-हींग। ३-हलदी। ४-वंशलोचन। ५-एक रक्तवाहिनी नाड़ी का नाम। ६-चंडिका देवी। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पुरुष जिसके पैर टेढ़े हों।

पिंगाक्ष, पिङ्गाक्ष [वि.] (सं.) [स्त्री पिंगाक्षी] भूरे रंग की आंखों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-नाक नामक जंतु। ३-बिल्ली।

पिंगाक्षी, पिङ्गाक्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] भूरे रंग की आंखों वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार की एक मातृका का नाम।

पिंगाश, पिङ्गाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-गांव का मुखिया, चौधरी या जमींदार। २-एक प्रकार की मछली। ३-चोखा सोना।

पिंगाशी, पिङ्गाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का पौधा।

पिंगी, पिङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष।

पिंगूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों को झुलाने का पालना।

पिंगेक्षण, पिङ्गेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पिंगेश, पिङ्गेश [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निदेव।

पिंजक, पिञ्जक [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

पिंजट, पिञ्जट [संज्ञा पु.] (सं.) आंख का कीचड़। गीड़।

पिंजड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिंजरा'।

पिंजन, पिञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) रूई धुनने की कमान। धुनकी।

पिंजर, पिञ्जर [वि.] (सं.) १-पीला (रंग)। २-भूरापन लिये लाल रंग का। ३-भूरापन लिये पीला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के भीतर की हड्डियों की ठट्ठरी। पंजर। २-पिंजरा। ३-सोना। स्वर्ण। ४-हरताल। ५-नागकेसर। ६-भूरापन लिये लाल रंग का घोड़ा।

पिंजरक, पिञ्जरक [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

पिंजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे, बांस आदि की तीलियों का बना झाबा जिसमें बंद करके पक्षी रखे जाते हैं।

पिंजरापोल [संज्ञा पु.] ((हिं.) गाय, बैल आदि जानवरों के पालने का स्थान। गोशाला। पशुशाला।

पिंजरित, पिञ्जरित [वि.] (सं.) १-पीले रंग का। भूरे रंग का।

पिंजल, पिञ्जल [वि.](सं.)१-बहुत घबड़ाया हुआ। परेशान। भयभीत। २-जिसका चेहरा पीला या फीका पड़ गया हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरताल। २-कुश की पत्ती। ३-जलबेंत।

पिंजली, पिञ्जली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्राद्ध या होम में काम आने वाली सामग्री विशेष।

पिंजा, पिञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हलदी। २-रूई।

पिंजान, पिञ्जान [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (देश.) त्रायमाण नामक औषध।

पिंजिका, पिञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रूई की पोली बत्ती, जिससे कातने पर बढ़-बढ़कर सूत निकलते हैं। पूणी। पूनी।

पिंजारा [संज्ञा पु.] (हिं.) रूई ओटने वाला।

पिंजिल, पिञ्जिल [संज्ञा पु.] (सं.) रूई की बत्ती

पिंजूष, पिञ्जूष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान का मैल

पिंजेट, पिञ्जेट [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का कीचड़

पिंजोला, पिञ्जोला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्तों की खरखर।

पिंड, पिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठोसगोला। गोल पदार्थ। २-कोई गोल खंड। ३-ढेलाया लौंदा। लुगदा। ४-पकी खीर का या चाँवलों का गोल लौंदा। यह श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५-भोजन। ६-जीविका। ७-शरीर। काया। *पिंड छोड़ना*-साथ रहकर या पीछे लगकर तंग करने से विरत होना।

पिंडकंद, पिण्डकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडालु।

पिंडक, पिण्डक [संज्ञा पु.](सं.) १-गोला। २-[illegible]। ३-भोज्य पदार्थ का गोलाकार कौर। ४-पिंडालु। ५-शिलारस। ६-मुरमकी।

पिंडकर्कटी, पिण्डकर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पेठा।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी [illegible]। मसूरिका रोग।

पिंडकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पंडुकी'।

पिंडखजूर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक विशेष प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

पिंडगोल, पिण्डगोल [संज्ञा पु.] (सं.) गंधरस।

पिंडज, पिण्डज [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भ से शरीर अथवा पिंड के रूप में सजीव निकलने वाले जंतु।

पिंडतैल, पिण्डतैल [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस। पिंडतैलक।

पिंडतलक, पिण्डतैलक [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस।

पिंडर, पिण्डर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितरों को पिंड देने का अधिकारी। २- मालिक। संरक्षक।

पिंडदान, पिण्डदान [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों को पिंड देने का कार्य।

पिंडनिर्वपण, पिण्डनिर्वपण [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों को पिंडदान देना।

पिंडपात, पिण्डपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैरात बाँटने वाला। धर्मादा बाँटने वाला। भिक्षादान। २-पिंडदान।

पिंडपातिक, पिण्डपातिक [संज्ञा पु.] (सं.) खैरात या भिक्षादान पर निर्वाह करने वाला।

पिंडपाद, पिण्डपाद [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

पिंडपाद्य, पिण्डपाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

पिंडपुष्प, पिण्डपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-अशोक या गुलाब का फूल। २-कमल। ३-तगर का फूल। ४-जयापुष्प।

पिंडपुष्पक, पिण्डपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ शाक।

पिंडफल, पिण्डफल [संज्ञा पु.] (सं.) कद्दू।

पिंडफला, पिण्डफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कड़ुई तूँबी।

पिंडबीजक, पिण्डबीजक [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का पेड़।

पिंडभाज, पिण्डभाज [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडों में भाग पाने का अधिकारी।

पिंडभृति, पिण्डभृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुजर बसर या आजीविका का उपाय। निर्वाह।

पिंडमुस्ता, पिण्डमुस्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) नागरमोथा।

पिंडमूल, पिण्डमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शलजम २-गाजर।

पिंडमूलक, पिण्डमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पिंडमूल'।

पिंडयज्ञ, पिण्डयज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) श्राद्धकर्म।

पिंडरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिंडली'।

पिंडरोग, पिण्डरोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा रोग जो शरीर में घर किये हो। २-कोढ़।

पिंडरोगी, पिण्डरोगी [वि.] (सं.) रोगी या रुग्ण शरीर का।

पिंडली, पिण्डली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग। *पिंडली हिलना*-डर से कँपकँपी होना

पिंडलेप, पिण्डलेप [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडदान के अन्तर्गत पिंड का एक भाग विशेष जो वृद्ध पितामह आदि तीन पुरखों को दिया जाता है।

पिंडलोप [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्धकर्म का लोप। पिंड देने वाले वंशजों का लोप। निर्वंश।

पिंडवाही [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार का कपड़ा

पिंडसंबंध, पिण्डसम्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मृत पुरुषों में और जीवितों में वह सम्बन्ध जिससे जीवित लोग मृतों को पिंड दे सकें।

पिंडस, पिण्डस [संज्ञा पु.] (सं.) भिक्षादान पर निर्वाह करने वाला।

पिंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) [पिंडी] १-ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २-गोल-मटोल टुकड़ा। ३-श्राद्ध में पितरों को देने का मधु, तिल मिली हुई खीर आदि का लोंदा। ४-शरीर। देह। ५-स्त्रियों की गुप्तेन्द्रिय। धरन। *पिंडा पानी देना*-श्राद्ध और तर्पण करना। *पिंडा फीका होना*-तबियत खराब होना। *पिंडा धोना*-स्नान करना। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कस्तूरी विशेष। २-हल्दी। ३-वंशपत्री। ४-इसपात

पिंडाकार, पिण्डाकार [वि.] (सं.) गोल बँधे हुए लौंदे का-सा।

पिंडात, पिण्डात [संज्ञा पु.] (सं.) लोबान। गूगल।

पिंडान्वाहार्य [वि.] (सं.) पितरों को पिंडादान दे चुकने के बाद खाने के योग्य।

पिंडान्वाहार्यक [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन।

पिंडापा, पिण्डापा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाड़ी हिंगु।

पिंडाभ्र, पिण्डाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) ओला।

पिंडायस, पिण्डायस [संज्ञा पु.] (सं.) फौलाद। इस्पात।

पिंडार, पिण्डार [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधु। भिखारी। २-गाय, भैंस चराने वाला। ग्वाला। ३-विकंकतवृक्ष। ४-एक प्रकार का फल शाक।

पिंडारक, पिण्डारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नाग का नाम। २-वासुदेव और रोहिणी के के एक पुत्र का नाम। ३-एक पवित्र नद का नाम। ४-एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

पिंडारा, पिण्डारा [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक शाक विशेष जो वैद्यक के अनुसार शीतल तथा पित्तनाशक होता है। २-लूट-पाट करने वाली एक जाति विशेष। पिंडारी।

पिंडारी [संज्ञा पु.] (देश.) एक मुसलमान जाति जो लूटमार का पेशा करती थी। इस जाति के लोग अधिकतर दक्षिण भारत में रहते हैं

पिंडालक्तक, पिण्डालक्तक [संज्ञा पु.] (सं.)

लाल-लाल रंग।

पिंडालू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का शकरकंद जिसके ऊपर कड़े-कड़े से सूत होते हैं। सुथनी पिंडिया। २-एक प्रकार का शफ-तालू या रतालू।

पिंडाशन, पिण्डाशन [संज्ञा पु.] (सं.) भिक्षुक भिखारी।

पिंडाशी, पिण्डाशी [संज्ञा पु.] (सं.) भिक्षुक। भिखारी।

पिंडाह्वा, पिण्डाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाड़ी हिंगु।

पिंडिका, पिण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मांस की गोलाकार सूजन। २-पिंडली। ३-छोटा पिंडा। छोटा गोलमटोल टुकड़ा। ४-शिवलिंग की मूर्त्ति। ५-पहिये के मध्य का वह गोल भाग जिसमें धुरी पहनाई होती है। ६-इमली।

पिंडित, पिण्डित [वि.] (सं.) १-पिंडी के रूप में बनाया या लपेटा हुआ। २-गुणित। गुणा किया हुआ। ३-शिलारस। ४-गणित। ५-काँसा।

पिंडिनी, पिण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराजित-लता।

पिंडिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुड़ या कुछ पकवानों की हाथ से बाँधी हुई लम्बोतरी भेली २-सूत, सुतली आदि को लपेट कर बनाया हुआ गोला।

पिंडिल, पिण्डिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेतु। २-गणक।

पिंडिला, पिण्डिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

पिंडी, पिण्डी, [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा गोल गोला या पिंडा। २-पहिये के बीच का भाग चक्रनाभि। ३-टाँग की पिंडली। ४-अशोकवृक्ष ५-ताड़ विशेष। ६-घीया। कद्दू। लौकी। ७-हजारातगर। ८-वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है। ९-सूत, रस्सी आदि को कसकर लपेटा हुआ गोला।

पिंडीतक, पिण्डीतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मैनफल। २-हजारा तगर।

पिंडीपुष्प, पिण्डीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक-वृक्ष।

पिंडीर, पिण्डीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनार का वृक्ष। २-समुद्र का फेन।

पिंडीशूर, पिण्डीशूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर में बैठे ही बैठे बहादुरी दिखाने वाला। २-खाने में बहादुर। पेटू।

पिंडली, पिण्डली*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिंडली'।

पिंडोदकक्रिया, पिण्डोदकक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पितरों को पिण्डदान और जलदान। श्राद्ध और तर्पण।

पिंडोद्धरण, पिण्डोद्धरण [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध सम्बन्धी कृत्य में भाग लेना।

पिंडोल, पिण्डोल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पोतने की पीली मिट्टी।

पिंडोलि, पिण्डोलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूठन। [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

पिंशन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेनशन'।

पिअ [वि.] (हिं.) देखो 'प्रिय'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिय'।

पिअना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पीना'।

पिअर [वि.] (हिं.) देखो 'पीला'।

पिअरवा [वि. (हिं.) देखो 'प्यारा'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पति'।

पिअराई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीलापन।

पिअरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पीले रंग का बैल जो चलने में तेज और मजबूत होता है।

पिअरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवाह के अवसर पर वर-वधू को पहनाने की पीले रंग की धोती। २-वह पीली धोती जिसे देहाती स्त्रियाँ गङ्गाजी को चढ़ाती हैं। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'पीली'।

पिआज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्याज'।

पिआना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिलाना'।

पिआनो [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पियानो'।

पिआर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्यार'।

पिआरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'प्यारा'।

पिआस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्यास'।

पिआसा+ [वि.] (हिं.) देखो 'प्यासा'।

पिउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) पति।

पिउनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूनी'।

पिक [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल। कोकिल।

पिकदेव [संज्ञा पु.] (सं.) आम्रवृक्ष। आम का पेड़।

पिकप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतकाल। आम का पेड़।

पिकप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ा जामुन।

पिकबंधु, पिकबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) आम का वृक्ष।

पिकबंधुर, पिकबन्धुर [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

पिकराग, पिकवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

पिकांग, पिकाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) चातकपक्षी

पिकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) तालमखाना।

पिकानंद, पिकानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) वसन्त ऋतु।

पिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मादा कोयल।

पिकुरस [संज्ञा पु.] (सं.) मद्य। शराब।

पिकेक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालमखाना।

पिक्क [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का बच्चा।

पिघलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गरमी से किसी वस्तु का गलकर पानी सा हो जाना। द्रवीभूत होना। २-चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

पिघलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु को गरमी पहुँचा कर पानी के रूप में लाना। २-किसी के चित्त या मन में दया उत्पन्न करना। दयार्द्र करना।

पिचक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिचकारी'।

पिचकना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी उभरे या फूले हुए तल का दबजाना।

पिचकवाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी दूसरे को पिचकाने में प्रवृत्त करना।

पिचका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी पिचकारी।

पिचकाना [क्रि. स.] (हिं.) उभरे, फूले या उठे हुए तल को भीतर की ओर दबाना।

पिचकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक उपकरण या यंत्र विशेष जिससे कोई द्रव पदार्थ धार या फुहारे के रूप में छोड़ा जाता है।

पिचकारी छूटना या निकलना-किसी स्थान से किसी द्रव पदार्थ का बहुत वेग से बाहर निकलना। *पिचकारी छोड़ना*-पिचकारी के समान किसी तरल पदार्थ को बाहर निकालना।

पिचकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिचकारी'

पिचपिचा [वि.] (हिं.) देखो 'चिपचिपा'।

पिचपिचाना [क्रि. अ.] (हिं.) घाव आदि में से थोड़ा-थोड़ा पदार्थ रसना। पानी निकलना।

पिचपिचाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिचपिचाने का भाव। गीले अथवा आर्द्र होने का भाव

पिचरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा कोल्हू।

पिचलना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कुचलना'।

पिचवय* [संज्ञा पु.] (डिं.) वटवृक्ष।

पिचु [संज्ञा पु.] (सं.) १-रूई। २-एक प्रकार का कुष्ट। ३-दो तोले के बराबर की एक तौल। एक असुर का नाम।

पिचुक [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल का पेड़

पिचुकिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोटी पिचकारी

पिचुक्का+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पिचकारी। २-गोलगप्पा।

पिचुमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का पेड़।

पिचुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्रफल। २-झाऊ का पेड़। ३-गोताखोर। ४-रूई।

पिचू [संज्ञा पु.] (?) एक कर्ष या सोलह माशे की तोल।

पिचूका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिचुक्का'।

पिचोतरसो [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़े में एक सौ-पांच की संख्या के लिए कहा जाने वाला शब्द

पिच्चट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आंख का एक रोग। २-सीसा। रांगा।

पिच्चिट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

पिच्चित [वि.] (सं.) पिचका या दबा हुआ। [संज्ञा पु.] १-दबकर पिचकी हुई वस्तु जो चिपटी हो गई हो। २-सुश्रुत के मत से एक प्रकार का घाव या क्षत।

पिच्ची [वि.] (हिं.) देखो 'पिच्चित'।

पिच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालदार पूंछ। किसी पशु की पूंछ। २-मोर की पूंछ। ३-मोर की चोटी। ४-मोचरस।

पिच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूंछ। २-मोचरस।

पिच्छतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीशम। शिंशिपा

पिच्छन [संज्ञा पु.] (सं.) दबकर चिपटा करने की क्रिया।

पिच्छपाद [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का एक रोग।

पिच्छपादी [वि.] (सं.) जिसको पिच्छपाद हो गया हो।

पिच्छबाण [संज्ञा पु.] (सं.) बाज पक्षी। श्येन।

पिच्छभार [संज्ञा पु.] (सं.) मोर की पूंछ।

पिच्छल [संज्ञा पु.](सं) १-मोचरस। २-आकाशबेल। ३-शीशम। ४-एक सर्प जो वासुकी के वंश का था। [वि.] चिकना। रपटन वाला। [वि.] (हिं.) देखो 'पिछला'।

पिच्छलच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेर। २-उपोदकी शाक।

पिच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-म्यान। खोल। २-चाँवल का माँड़। ३-मोचरस। ४-अकासबेल। ५-निर्मली का पेड़। ६-टांग की पिंडली ७-साँप का विष। ८-सुपारी। ९-कवच। १०-केला।

पिच्छिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मयूर पक्षी का मोरछल। २-चामर। चँवर। ३-वह ऊन की चँवर जिसे जैन साधु रखते हैं।

पिच्छितिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीशम।

पिच्छिल [वि.] (सं.) १-चिकना। रिपटन वाला। २-पूंछ वाला। ३-चाँवल के माँड़ से चुपड़ा हुआ। ४-(पक्षी) जिसके सिर पर चूड़ा हो। वैद्यक के अनुसार खट्टा, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ) [संज्ञा पु.] (सं.) १-भात का मांड़। २-एक प्रकार की चटनी। ३-दही जिसके ऊपर छाली हो।

पिच्छिलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धामिन वृक्ष। २-मोचरस।

पिच्छिलच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेर। २-उपोदकी शाक।

पिच्छिलत्वक्, पिच्छिलत्वच [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नारंगी का पेड़। २-धामिन का पेड़।

पिच्छिलदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पिच्छिलच्छदा'।

पिच्छिलपाद [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों के पैर में होने वाला एक रोग।

पिच्छिलबीज [संज्ञा पु.] (सं.) दाड़िम। अनार।

पिच्छिलवस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निरूहवस्ति का एक भेद।

पिच्छिलसार [संज्ञा पु.] (सं.) मोचरस।

पिच्छिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृश्चिकाली नामक जड़ी। २-शीशम। ३-तालमखाना। ४-अगर। ५-अलसी। ६-अरबी। ७-पोई। ८-सेमल। ९-शूली घास। [वि.] देखो 'पिच्छिल'।

पिछड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-साथ से छूट कर पीछे रह जाना। २-प्रतियोगिता आदि में पीछे रह जाना।

पिछलगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह आदमी जो किसी के पीछे लगा-फिरे या पीछे-पीछे चले। २-किसी का मतानुयायी। अनुगामी। अनुवर्ती। ३-सेवक। नौकर। खिदमतगार।

पिछलगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनुयायी। अनुगमन करना।

पिछलगू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिछलगा'।

पिछलग्गू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह आदमी जो किसी के पीछे लगा-फिरे। २-किसी का मतानुयायी। अनुगामी। ३-सेवक।

पिछलत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मारना।

पिछलना [क्रि. अ.] (हिं.) पीछे की ओर हटना। पीछे की ओर मुड़ना।

पिछलपाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चुड़ैल। २-जादूगरनी।

पिछला [वि.] (हिं.) [स्त्री. पिछली] १-पीछे की ओर का। अगला का उलटा। २-जो घटना, स्थिति या क्रम के विचार से सब के पीछे पड़ता हो। ३-अंत के भाग अथवा अर्द्धांश का। अंत की ओर का। ४-बीता हुआ। गुजरा हुआ। गत। ५-गत बातों में से अंतिम अथवा अन्त की ओर का।

पिछला दिन–वर्त्तमान दिन से एक दिन पहले बीता हुआ दिन। *पिछला* पहर–दिन अथवा रात का उत्तरकाल। *पिछली रात*–१-कल की या गत रात्रि। २-आधी रात के बाद वाली रात। रात्रि का उत्तरकाल।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक दिन पूर्व पढ़ा हुआ पाठ। आमोख्ता। २-रोजे (उपवास) के दिनों का मुसलमानों का वह भोजन जो वह कुछ रात रहे खाते हैं। सहरी।

पिछवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीछे की ओर लटकाया जाने वाला परदा।

पिछवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घर या मकान के पीछे का भाग। २-वह स्थान या भूमि जो घर के पीछे हो।

पिछवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिछवाड़ा'।

पिछाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पिछला भाग। पृष्ठ भाग। २-वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं। ३-पंक्ति या क्रम में सब से अन्त वाला आदमी।

पिछान+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहचान'।

पिछानना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहचानना'।

पिछारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिछाड़ी'।

पिछौंड़+ [वि.] (हिं.) १-किसी के मुँह की ओर पीठ किया हुआ। २-जिसने अपना मुँह पीछे कर लिया हो।

पिछौंड़ा+ [क्रि. वि.] (हिं.) पीछे की ओर।

पिछौंता+ [क्रि. वि.] (हिं.) पीछे की ओर।

पिछौंही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों के ओढ़ने की चादर। २-ओढ़ने का वस्त्र।

पिछौंहैं*+ [क्रि. वि.] (हिं.) पीछे की ओर।

पिछौरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरुषों के ओढ़ने की चादर।

पिछौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सब वस्त्रों के ऊपर ओढ़ने की स्त्रियों की चादर। ओढ़ने का वस्त्र।

पिटंकोकी, पिटङ्कोकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रायन।

पिटंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिटने की क्रिया या भाव। मारपीट।

पिटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेटी। टोकरी। २-मुहाँसा। फुंसी। ३-इन्द्र के झण्डे पर का आभूषण विशेष। ४-किसी ग्रन्थ का एक भाग या खंड।

पिटका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पिटारी। २-फुंसी।

पिटना [क्रि. स.] (हिं.) १-पीटा जाना। मार खाना। २-बजना। +[संज्ञा पु.] (हिं.) छत आदि पीटने का औजार। थापी।

पिटपिट [संज्ञा स्त्री] (हिं.) हलके आघात अथवा किसी छोटी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द

पिटरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिटारी।

पिटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पीटने का काम दूसरे से कराना। २-बजवाना। ३-दूसरे से आघात कराना। कुटवाना।

पिटाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-पीटने का काम, भाव या मजदूरी। २-मारने का पुरस्कार। ३-पिटवाने की मजदूरी।

पिटापिट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मारपीट। मारकूट।

पिटारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री पिटारी] बांस, बेंत आदि की फट्टियों द्वारा बना हुआ ढक्कनदार पात्र या संपुट।

पिटारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–छोटा पिटारा। २–पनडब्बा। पानदान। *पिटारी का खर्च*–व्यभिचार से प्राप्त कमाई।

पिट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) दांत का मैल।

पिट्टस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दुःख अथवा शोक से छाती पीटना। *पिट्टस पड़ना या मचाना*–रोना-धोना या हाय-हाय मचाना।

पिट्टू [वि.] (हि.) मारखाने का अभ्यस्त।

पिट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पीठी'।

पिट्ठू [संज्ञा पु.] (हि.) १–गुप्त रूप से छिपकर सहायता करने वाला। २–सहायक। पृष्ठपोषक। हिमायती। ३–कुछ विशिष्ट लेखों में किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसके बदले उसे खेलने का दांव प्राप्त होता है। ४–एक साथ मिलकर खेलने वाला खेल में साथ रहने वाला।

पिठ [संज्ञा पु.] (सं.) दुःख। पीड़ा।

पिठर [संज्ञा पु.] (सं.) १–मोथा। २–मथानी। ३–थाली। ४–अग्नि विशेष। ५–एक दानव का नाम। ६–एक प्रकार का घर।

पिठरक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक नाग का नाम। २–थाली।

पिठरपाक [संज्ञा पु.](सं.) अलग-अलग परमाणुओं के गुणों में तेज के योग से परिवर्त्तन या फेरफार होना।

पिठारका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थाली।

पिठरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–थाली। २–राजमुकुट

पिठवन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रसिद्ध लता का नाम जो दवा के काम में आती है। इसमें सफेद और गोल फूल आते हैं। वैद्यक के अनुसार यह कटु, तिक्त, उष्ण, मधुर, क्षारक, त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक और दाह, ज्वर, श्वास, तृषा, रक्तातिसार, वमन, वातरक्त, व्रण तथा उन्माद आदि का नाश करने वाली होती है।

पिठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पिट्ठी'।

पिठीनस [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि।

पिठौनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिठवन'।

पिठौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीठी की बनी बरी या पकौड़ी।

पिड़क [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा फोड़ा या फुंसी। स्फोटक।

पिड़का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फुंसी। छोटा फोड़ा।

पिढ़ई+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छोटा पाटा या पीढ़ा। २–वह छोटा ढाँचा जिस पर कोई यंत्र रखा जाता है।

पिढ़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'पीढ़ी'। २–मचिया।

पिण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकङ्गनी।

पिण्याक [संज्ञा पु.] (सं.) १–तिल या सरसों की खली। २–शिलाजीत। ३–शिलारस। ४–केसर। ५–हींग।

पितंबर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीतांबर'।

पितपापड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक क्षुप विशेष जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है।

पितर [संज्ञा पु.] (हि.) मृत पूर्वज या पूर्वपुरुष।

पितरपति [संज्ञा पु.] (हि.) यमराज।

पितराइंध+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पीतल के बरतन में अधिक समय तक रखे रहने से उत्पन्न विकार। पीतल का कसाव।

पितराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पीतल का कसाव या स्वाद।

पितरिशूर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपने पिता के सम्मुख शूरता दिखलाता हो।

पतिरिहा+ [वि.] (हि.) पीतल का बना हुआ। [संज्ञा पु.] पीतल का घड़ा।

पितससुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चचियाससुर। पितियाससुर।

पिता [संज्ञा पु.] (हिं.) जन्म देकर पालनपोषण करने वाला। बाप। जनक। तात।

पितामह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पितामही] १–पिता का पिता। दादा। २–भीष्म। ३–शिव ४–ब्रह्मा। ५–एक ऋषि का नाम।

पितामही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिता की माता। दादी।

पितिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पितियानी] पिता का भाई। चाचा।

पितियानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चाचा की पत्नी। चाची।

पितियाससुर [संज्ञा पु.] (हि.) ससुर का भाई। चचियाससुर।

पितियासास [संज्ञा स्त्री.] (हि.) ससुर के भाई की पत्नी। चचियासास।

पितु* [संज्ञा पु.] (हि.) पिता। बाप। [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न। अनाज।

पितुःपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुयोग्य पिता का योग्य पुत्र।

पितुःस्वसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिता की बहिन। फूबा।

पितृ [संज्ञा पु.] (सं.) १–पिता। बाप। २–किसी व्यक्ति के मृत पिता, दादा, परदादा आदि पूर्व पुरुष। ३–किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वज जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ४–मनुस्मृति के अनुसार एक प्रकार का देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गये हैं।

पितृऋण [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक। (पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है)।

पितृक [वि.] (सं.) १–पैतृक। २–पिता का दिया हुआ।

पितृकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्धकर्म।

पितृकल्प [संज्ञा पु.] (फा.) श्राद्ध तर्पण आदि कर्म

पितृकानन [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान घाट।

पितृकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कार्य।

पितृकुल [संज्ञा पु.] (सं.) पिता के कुल या वंश के लोग। (बाप, दादा, परदादा या इनके भाई बन्धुओं आदि का कुल)।

पितृकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मलय से निकलने वाली एक नदी का नाम जो महाभारत के अनुसार तीर्थ स्थानों में गिनी जाती है।

पितृकृत [वि.] (सं.) पूर्वजों द्वारा किया हुआ।

पितृकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कृत्य। श्राद्धकर्म।

पितृक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्राद्धकर्म। पितृकर्म

पितृगण [संज्ञा पु.] (सं.) मनुपुत्र मरीचि आदि के पुत्र।

पितृगाथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पितरों द्वारा पठित कुछ विशेष प्रकार के श्लोक अथवा गाथा।

पितृगीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की गीता जिसमें पितरों का महात्म्य दिया गया है।

पितृग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों के लिए उनके पिता का घर। मायका। पीहर। [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय के उन अनुचरों में से एक का नाम जो कुछ रोगों के उत्पादक माने गये हैं।

पितृघात [संज्ञा पु.] (सं.) पिता की हत्या।

पितृघातक, पितृघाती [संज्ञा पु.] (सं.) पिता को मारने वाला। पिता का हत्यारा।

पितृतर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १–पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला तर्पण। २–तिल।

पितृतिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमावस्या।

पितृतीर्थ [संज्ञा पु](सं.) १–गयातीर्थ। २–अंगूठे और तर्जनी के बीच का हथेली का स्थान। ३–गया, वाराणसी, प्रयाग आदि २२२ तीर्थ जिनका उल्लेख मत्स्यपुराण में मिलता है।

पितृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पिता का भाव या धर्म।

पितृदत्त [वि] (सं.) पिता द्वारा दिया हुआ।

पितृदान [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों का श्राद्ध या श्राद्ध सम्बन्धी दान।

पितृदाय [संज्ञा पु.] (सं.) पिता से प्राप्त संपत्ति अथवा धन। बपौती।

पितृदिन [संज्ञा पु.] (सं.) अमावस्या।

पितृदेव [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के अधिष्ठाता देवता। अग्निष्वात्तादि पितृगण।

पितृदैवत [संज्ञा पु.](सं) १–मघानक्षत्र। २–यम।

पितृदैवत्य [वि.] (सं.) पितृदैवता।

पितृद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) पिता से प्राप्त संपत्ति

नौती।

पितृनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमराज। २-सब पितरों में श्रेष्ठ। अर्यमा नामक पितर।

पितृपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिता की ओर के लोग। पितृकुल। २-आश्विन का कृष्णपक्ष जो प्रतिपदा से अमावस्या तक होता है। इसमें पितरों का श्राद्ध या ब्राह्मण भोजन होता है।

पितृपति [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज का नाम।

पितृपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितरों का लोक या देश। २-पितृत्व। पितर होने की स्थिति का भाव।

पितृपितृ [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के पिता। ब्रह्मा।

पितृपैतामह [वि.](सं.)[स्त्री. पितृपैतामही] जिसका संबंध बापदादों से हो। पैतृक।

पितृप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पितामही। दादी २-संध्या।

पितृप्राप्त [वि.] (सं.) पिता से या पुरखों से प्राप्त।

पितृप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-भंगरैला। भृङ्गराज २-अगस्तवृक्ष।

पितृबंधु, पितृबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) पितृकुल के लोग। पिता के नातेदार।

पितृभक्त [वि.] (सं.) पिता का आज्ञाकारी।

पितृभक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र का पिता के प्रति कर्त्तव्य। २-पिता की भक्ति।

पितृ-भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पितरों के रहने का स्थान। २-पूर्वजों का देश।

पितृभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितरों को अर्पण किया हुआ भोजन। २-उरद। माष।

पितृभ्रातृ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाचा। २-ताऊ।

पितृमंदिर, पितृमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) पिता का घर।

पितृमेध [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक अन्त्येष्टि कर्म का भेद विशेष जिसमें अग्निदान तथा दस पिंडदान आदि सम्मिलित होते थे और जो श्राद्ध से भिन्न होता था।

पितृयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला तर्पण।

पितृयाण [संज्ञा पु.] (सं.) वह मार्ग जिससे जाकर मृत व्यक्ति को निश्चित समय तक स्वर्ग सुख भोग कर पुनः संसार में आना पड़ता है।

पितृराज [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

पितृरिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह योग जिसमें बालक का जन्म होने से पिता की मृत्यु होती है। (फलित-ज्योतिष)।

पितृरूप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पितृलोक [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोक जिसमें पितृगण रहते हैं।

पितृवन [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान।

पितृवनेचर [संज्ञा पु.] (सं.) (श्मशान में बसने वाले) शिव। महादेव।

पितृवर्ती [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम। (पुराण)।

पितृवसति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्मशान।

पितृवित्त [संज्ञा पु.] (सं.) पैतृक धन। बाप-दादों की संपत्ति।

पितृविसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) पितृपक्ष के अंतिम दिन होने वाला धार्मिक कृत्य।

पितृव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिता का भाई। चाचा। २-कोई भी पुरुष-जातीय वयोवृद्ध नातेदार।

पितृषद् [संज्ञा पु.] (सं.) पिता का घर। पितृगृह। मायका।

पितृषदन [संज्ञा पु.] (सं.) कुश।

पितृष्वसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिता की बहिन। बूआ।

पितृष्वस्रीय [संज्ञा पु.] (सं.) फुफेरा भाई। बूआ का पुत्र।

पितृसू [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दादी। पितामही। २-संध्या।

पितृसूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक मंत्र समूह।

पितृहा [संज्ञा पु.] (सं.) पितृघाती। पिता की हत्या करने वाला।

पितृहूय [संज्ञा पु.](सं.) पितरों का आह्वान करना।

पित्त [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के भीतर का एक तरल पदार्थ जो यकृत् (जिगर) में बनता है तथा पाचन में सहायक होता है। इसका रंग नीलापन लिये पीला तथा स्वाद में कड़ुवा होता है।

पित्त उबलना या खौलना–बहुत क्रोध आना।
पित्त गरम होना–क्रोधशील स्वभाव होना।
पित्त डालना–वमन या उलटी करना।

पित्तकार [वि.](सं.) पित्त को उत्पन्न करने वाला (द्रव्य)।

पित्तकास [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तदोष से उत्पन्न खाँसी।

पित्तक्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त का प्रकोप।

पित्तघ्न [वि.] (सं.) पित्त का नाश करने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) घृत। घी।

पित्तघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुडुच।

पित्तज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।

पित्तद्रावी [वि.] (सं.) पित्त को द्रवित करने या पिघलाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा नीबू

पित्तधरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) आमाशय तथा पक्वाशय के मध्य में स्थित एक झिल्ली। (सुश्रुत)

पित्तनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नाड़ी व्रण जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होता है।

पित्तपथरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रोग विशेष जिसमें पित्ताशय या पित्तवाहक नालियों में पित्त की कङ्कड़ियाँ सी पड़ जाती हैं।

पित्तपांडु, पित्तपाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त प्रकोप से उत्पन्न एक रोग जिससे सारा शरीर सामान्य रूप से पीला हो जाता है।

पित्तपापड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग दवा के रूप में किया जाता है।

पित्तप्रकृति [वि.] (सं.) जिसके शरीर में वात तथा कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।

पित्तप्रकोप [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त का विकार।

पित्तप्रकोपी [वि.] (सं.) पित्त को बढ़ाने या कुपित करने वाला (द्रव्य)।

पित्तभेषज [संज्ञा पु.] (सं.) मसूर की दाल। मसूर

पित्तरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रक्त-पित्त'।

पित्तल [वि.] (सं.) पित्त को बढ़ाने वाला। पित्तकारी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-भोज-पत्र। २-हरताल। ३-पीतल। धातु।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शालपर्णी। जलपीपल

पित्तला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पित्त के दूषित होने के कारण होने वाला एक प्रकार का योनि रोग

पित्तवर्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंचविधि पित्तवर्ग या पित्तों का समूह जो मछली, गाय, घोड़े, रुरु तथा मोर का होता है।

पित्तवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला अतीस।

पित्तविदग्ध [वि.] (सं.) पित्त विकार से निर्बल किया गया।

पित्तविदग्ध-दृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जो आँख में होता है। यह दूषित पित्त के दृष्टि स्थान में आजाने के कारण होता है। इस रोग से पीड़ित रोगी को केवल रात में दिखाई पड़ता है।

पित्तविसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विसर्प

पित्तव्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पित्त दोष से रोग उत्पन्न रोग।

पित्तशूल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शूल रोग जो पित्त प्रकोप से उत्पन्न होता है।

पित्तश्लेष्मज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ज्वर जो पित्त तथा कफ दोनों के प्रकोप या अधिकता के कारण होता है।

पित्तश्लेष्मोल्वण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिसमें साँस फूलती है तथा हिचकियां आती हैं।

पित्तसंशमन [संज्ञा पु.](सं.) सुश्रुत के अनुसार वे औषधियां जिनसे कुपित पित्त शान्त होता है

पित्तस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) आमाशय-पक्वाशय, यकृत्प्लीहा, हृदय, दोनों नेत्र और त्वचा यह शरीर के पाँच पित्त स्थान।

पित्तस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नेत्र रोग जिसमें नेत्र संधि से पीला या नीला तथा गरम पानी बहता है।

पित्तहर [वि.] (सं.) पित्त के विकारों को दूर करने वाला। [संज्ञा पु.] खस। उशीर।

पित्तहा [संज्ञा पु.] (हिं.) पित्तपापड़ा। [वि.] पित्त का नाश करने वाला (द्रव्य)।

पित्तांड, पित्ताण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग विशेष जो घोड़ों के अंडकोश में होता है।

पित्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जिगर में की वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय। २-हिम्मत। साहस। ३-पित्त। *पित्ता उबलना*-क्रोध के कारण मिजाज भड़क उठना। *पित्ता खौलना*-बहुत गुस्सा आना। *पित्ता निकालना*-बहुत अधिक परिश्रम का काम कराना। *पित्ता पानी करना*-जी-जान से काम करना। अत्यधिक परिश्रम करनां। *पित्ता मरना*-प्रकृति अथवा मन में क्रोध, आवेश आदि न रह जाना। *पित्ता मारना*-१-दूषित मनोविकार उभड़ने न देना। २-धैर्यपूर्वक कठिन परिश्रम करना। *पित्ता मार काम*-मन मारकर किया जाने वाला कार्य।

पित्तातिसार [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त प्रकोप या दोष से उत्पन्न होने वाला अतिसार रोग।

पित्ताभिस्यंद [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त प्रकोप से होने वाला नेत्र रोग।

पित्तारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पित्तपापड़ा। २-पीला चंदन। ३-लाख।

पित्ताशय [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त की वह थैली जो यकृत् के नीचे पीछे की ओर होती है।

पित्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की औषध

पित्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का रोग जो पित्त की अधिकता या रक्त में अधिक गरमी आजाने के कारण होता है इसमें सारी देह में दाने और लाल चिकोते पड़ जाते हैं। २-गरमी के दिनों में पसीना मरने से शरीर में निकलने वाले महीन दाने। [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता का भाई। चाचा।

पित्तोक्लिष्ट [संज्ञा पु.](हिं.) आंख की पलकों का एक रोग विशेष।

पित्तोदर [संज्ञा पु.](सं.) एक उदर रोग जो पित्त-विकार से उत्पन्न होता है।

पित्तोपहत [वि.] (सं.) पित्त प्रकोप से पीड़ित।

पित्तोल्वण-सन्निपात [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का सन्निपातिक ज्वर।

पित्र्य [वि.] (सं.) १-पैतृक। पिता-संबंधी। पुश्तैनी। २-मृत पितरों से संबंध रखने वाला ३-श्राद्ध करने योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मघानक्षत्र। २-तर्जनी और अंगूठे के बीच की हथेली का भाग। ३-ज्येष्ठ भ्राता। ४-शहद। मधु। ५-पितृ तीर्थ।

पित्र्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मघानक्षत्र। २-अमावस्या। ३-पूर्णिमा।

पिदड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिद्दी'।

पिदारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिद्दी'।

पिद्दा [संज्ञा पु](हिं.) १-पिद्दी का नर। २-अत्यंत तुच्छ और नगण्य जीव।

पिद्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बया की जाति की एक छोटी चिड़िया जो कई रंग की होती है। यह देखने में बहुत सुन्दर और भली लगती है। फुदकी। २-अति तुच्छ प्राणी।

पिधातव्य [वि.] (सं.) ढांपने योग्य।

पिधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढकना। २-म्यान। ३-आच्छादन। आवरण। ४-किवाड़।

पिधानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-म्यान। २-ढकना।

पिधायक [वि.] (सं.) ढकने वाला। छिपाने वाला।

पिन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कागज आदि नत्थी करने की छोटी और पतली कील।

पिनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अफीम आदि के नशे में चूर होने के कारण सिर का रह-रह आगे झुकना।

पिनकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अफीम के नशे में ऊँघना। पिनक लेना। २-नींद में ऊंघना।

पिनकी [संज्ञा पु.] (हिं.) अफीम के नशे में पिनक लेने वाला व्यक्ति।

पिनपिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रोगी या दुर्बल बच्चे का नकिया कर रोने की आवाज। २-'पिनपिन' करके रोना।

पिनपिनहाँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हर समय रोने वाला बालक। २-रोगी या दुर्बल बालक।

पिनपिनाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-रोते समय नाक से स्वर निकालना। २-रोगी या दुर्बल बालक का रोना।

पिनपिनाहट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पिनपिना करके रोने का शब्द। २-पिनपिन करके रोने की क्रिया या भाव।

पिनशन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेंशन'।

पिनसल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेन्सिल'।

पिनसिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेंशन'।

पिनाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिवजी का धनुष। २-त्रिशूल। ३-धनुष। ४-डण्डा या छड़ी। ५-एक प्रकार का अभ्रक।

पिनाकपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पिनाकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिव का एक नाम। २-एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमें तार लगा रहता था।

पिन्नस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पीनस'।

पिन्ना+ [वि.](हिं.) सर्वदा। रोज वाला। [संज्ञा पु.] १-देखो '[illegible]'। २-धुनकी। ३-देखो 'पीना'।

पिन्नी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चावल या गेहूं के आटे में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाया हुआ लड्डू।

पिन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) हींग।

पिन्हाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनाना'।

पिपरमिंट [संज्ञा पु.] (अं.) पुदीने की जाति का एक पौधा जिसका सत्व औषधियों में काम आता है। यह पौधा यूरोप तथा अमेरिका में होता है।

पिपरामूल [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल की जड़।

पिपराही+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पीपल का वन।

पिपली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक वृक्ष जो नैपाल और दार्जिलिंग में होता है।

पिपासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जल पीने की इच्छा। तृषा। प्यास। २-लोभ। लालच।

पिपासित [वि.] (सं.) तृषित। प्यासा।

पिपासु [वि.] (सं.) १-तृषित। प्यासा। २-लोभी लालची।

पिपीतक [संज्ञा पु.] (सं.) भविष्य पुराणानुसार एक ब्राह्मण का नाम जिसने पिपात की द्वादशी का पहले-पहल व्रत किया था।

पिपीतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक व्रत जो वैशाख शुक्ल द्वादशी के दिन होता है। इस दिन पानी से भरे घड़ें ब्राह्मण को दिये जाते हैं।

पिपीलक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पिपीलिका] च्यूटा। चींटा।

पिपीलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) च्यूटी। चींटी। कीड़ी।

पिपीलिकाभक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण अमेरिका का एक जन्तु जिसका आहार ही चींटियां है

पिपीलिका-मातृकादोष [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चे को होने वाला एक रोग जो ग्यारहवें दिन ग्यारहवें मास या ग्यारहवें वर्ष में होता है।

पिप्पटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मिठाई

पिप्पल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल का वृक्ष। २-स्तन की ढेपनी। ३-कुर्ती या जाकेट की आस्तीन। ४-जल। ५-एक पक्षी। ६-वस्त्र खँड। ७-नंगा आदमी।

पिप्पलक [संज्ञा पु.] (सं.) स्तनमुख।

पिप्पलयांग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा जो गढ़वाल, कुमांऊ और कांगड़े की पहाड़ियों में पाया जाता है। मोमचीना।

पिप्पलाद [संज्ञा पु.] (सं.) अथर्ववेद की एक शाखा के प्रवर्त्तक एक ऋषि का नाम।

पिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी पीपल।

पिप्पलीखंड, पिप्पलीखण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) कई औषधियों के योग से बनने वाली एक औषध।

पिप्पलीमूल [संज्ञा पु.] (सं.) पीपलामूल।

पिपल्यादिगण [संज्ञा पु.] औषधियों के एक वर्ग का नाम।

पिप्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दांतों का मैल।

पिप्पीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पक्षी विशेष।

पिप्लु [संज्ञा पु.] (सं) १-जतुमणि। २-तिल का निशान। ३-मस्सा।

पिप्रीषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रीतिकामना।

पिप्रीषु [वि.] (सं.) प्रीति के अभिलाषी।

पिय* [संज्ञा पु.] (हिं.) पति। स्वामी।

पियर+ [वि.] (हिं.) पीला।

पियरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीलापन।

पियरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्यारा।

पियराई+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पीलापन। जर्दी।

पियराना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) पीला पड़ना। पीला होना।

पियरी*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] पीली। [संज्ञा स्त्री.] १-पीली रंगी हुई धोती। २-पीलापन। ३-गाय के मूत्र से बनने वाला एक पीला रंग। यह गाय को आम की पत्तियां खिलाने से होता है।

पियरोला [संज्ञा पु.] (हिं.) पीले रंग की एक चिड़िया।

पियली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बढ़इयों के काम आने वाला नारियल की खोपड़ी का टुकड़ा जिससे बरमा दबाकर छेद करते हैं।

पियल्ला* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूध पीने वाला बच्चा। २-पियरोला।

पियवास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पियाबांसा'।

पिया* [संज्ञा पु.] ((हिं.) देखो 'पिय'।

पियाज* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्याज'।

पियाजी+ [वि.] (हिं.) देखो 'प्याजी'।

पियादा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्यादा'।

पियाना+ [क्रि.] (हिं.) देखो 'पिलाना'।

पियानो [संज्ञा पु.] (सं.) मेज के आकार का एक बाजा जिसमें नीचे की ओर कई मोटे पतले तार लगे रहते हैं।

पियाबाँसा [संज्ञा पु.] हिं.) कटसरैया।

पियार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-महुवे की तरह का मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों से चिरौंजी निकलती है। २-देखो 'प्यार'। [वि.] (हिं.) देखो 'प्यारा'।

पियारा* [वि.] (हिं.) देखो 'प्यारा'।

पियाल [संज्ञा पु.] (हिं.) चिरौंजी का पेड़। पियार

पियाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्याला'।

पियास+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्यास'।

पियासा* [वि.] (हिं.) देखो 'प्यासा'।

पियासाल [संज्ञा पु.] (हिं.) बहेड़े या अर्जुन की जाति का एक पेड़ जो भारत के जंगलों में सर्वत्र पाये जाते हैं। इसकी छाल से पीला रंग बनता है और रंग के अतिरिक्त दवा के भी काम आती है। पीतसाल।

पियूख, पियूष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीयूष'

पिरकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुंसी। छोटा फोड़ा

पिरता [संज्ञा पु.] (हिं.) पूनी दबाने का काठ का टुकड़ा।

पिरथमी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पृथ्वी'।

पिरथी** [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पृथ्वी'

पिरन+ [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों का लंगड़ापन।

पिराई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पियराई'

पिराक [संज्ञा पु.](हिं.) एक पकवान जिसे गोझा या गुझिया भी कहते हैं।

पिराना* [क्रि. अ.](हिं.) १-दुखना। दर्द करना २-पीड़ा अनुभव करना।

पिरारा*+ [संज्ञा पु.](हिं.) पिंडारा।

पिरिच+ [संज्ञा पु.] (देश.) कटोरा। तश्तरी।

पिरिया+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का बाजरा। २-कूएँ से पानी निकालने का रहँट

पिरीतम*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रियतम'

पिरीता* [वि.] (हिं.) प्रिय। प्यारा।

पिरोज* [संज्ञा पु.] (हिं.) कटोरा। तश्तरी।

पिरोजन [संज्ञा पु.] (हिं.) बालक के कान छेदने की रीति।

पिरोजा [संज्ञा पु.] (हिं.) हरापन लिए नीला पत्थर विशेष।

पिरोड़ा+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पीली कड़ी मिट्टी की जमीन।

पिरोना [क्रि. स.] (हिं.) १-तागे आदि को सूई के छेद में डालना। २-पोहना। छेद के आर-पार निकालना या पहराना।

पिरोला [संज्ञा पु.] (हिं.) पियरोला नामक पक्षी।

पिरोहना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिरोना'।

पिलई+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तापतिल्ली।

पिलक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मधुर स्वर से बोलने वाली पीले रंग की एक चिड़िया। पियरोला। २-अबलक कबूतर।

पिलकना* [क्रि. अ.](हिं.) १-गिरना। २-झूलना या लटकना।

पिलकिया [संज्ञा पु.](देश.) एक छोटी चिड़िया जो पीलापन लिये खाकी रंग की होती है। यह चट्टानों के नीचे बच्चे देती है।

पिलखन+ [संज्ञा पु.] (हिं) पाकर का वृक्ष।

पिलड़ी* [संज्ञा स्त्री.](देश) मसालेदार कीमा। कीमा।

पिलचना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-दो आदमियों का परस्पर गुथना। २-किसी काम में तत्पर होना।

पिलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-वेग से किसी ओर टूट पड़ना। दृढ़तापूर्वक प्रवृत्त होना। भिड़ जाना। ३-रस या तेल आदि निकलने के लिए पेरा जाना।

पिलपिल, पिलपिला [वि.] (हिं.) इतना कोमल और ढीला कि दबाने से भीतर का रस अथवा गूदा बाहर निकलने लगे।

पिलपिलाना [क्रि. स.] (हिं.) अंदर से रसदार अथवा गूदेदार वस्तु को दबाना (जिससे रस या गूदा बाहर निकलने लगे)।

पिलपिलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह नरमी या मुलामियत जो गूदे अथवा रस के ढीले होने के कारण आगई हो।

पिलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पिलाने का काम दूसरे से कराना। २-पेलने या पेरने का काम कराना। पेरवाना।

पिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पिलाने की क्रिया या भाव। २-किसी द्रव पदार्थ को इस प्रकार उँड़ेलना कि वह नीचे के छेदों या संधियों में समा जाय। *ग्राउटिङ्ग*।

पिलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पीने का काम कराना। २-पीने को देना। ३-अंदर भरना। *(कोई बात) पिलाना*-कान में भरना। जी में जमाना।

पिलुंडा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुलिंदा'।

पिलुक [संज्ञा पु.] (सं.) पीलू का पेड़।

पिलुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वा।

पिलुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वा।

पिल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों से थोड़ा-थोड़ा कीचड़ बहने या चिपचिपाने का एक नेत्र रोग

पिल्लका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथिनी।

पिल्ला [संज्ञा पु.] (तामिल) कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सफेद लम्बा कीड़ा जिसके पैर नहीं होते। ढोला। २-वह छोटा-सा गोल गड्ढा जिसमें गोली का खेल खेलने वाले गोली पिलाते हैं।

पिव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिय'।

पिवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिलाना'।

पिशंग, पिशङ्ग [वि.] (सं.) पीलापन लिये भूरे रंग का। [संज्ञा पु.] पीलापन लिये भूरा रंग।

पिशंगक, पिशङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु तथा उनके अनुचर का नाम।

पिशाच [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पिशाचनी, पिशाची] एक हीन देवयोनि। भूत। प्रेत।

पिशाचक [संज्ञा पु.] (सं.) भूत। प्रेत। पिशाच।

पिशाचकी [संज्ञा पु.] (हिं.) कुबेर का एक नाम।

पिशाचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) सिहोर का पेड़।

पिशाचघ्न [वि.] (सं.) पिशाचों को नष्ट करने वाला।

[संज्ञा पु.] (सं.) पीली सरसों।

पिशाचचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्मशान सेवन।

पिशाचता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिशाच का भाव या धर्म।

पिशाचवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सिहोर या शाखोट का वृक्ष।

पिशाचसभ [संज्ञा पु.] (सं.) पिशाचों की सभा।

पिशाचालय [संज्ञा पु.] (सं.) पिशाचों का घर।

पिशाचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिशाची। २-किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए पिशाच के समान उत्सुकता। ३-लड़ने की पैशाचिक अभिलाषा। ४-छोटी जटामासी।

पिशाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिशाच स्त्री। २-जटामांसी।

पिशिक [संज्ञा पु.] (सं) वृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम।

पिशित [संज्ञा पु.] (सं.) माँस। गोस्त।

पिशिता [संज्ञा पु.] (सं.) जटामांसी।

पिशिताशन, पिशिताशी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांसभक्षी। गोश्तखोर। २-मनुष्यभक्षी।

पिशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामांसी।

पिशील [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का कटोरा।

पिशुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चुगलखोर। इधर की उधर लगाने वाला। २-दुर्जन। खल। ३-केसर। ४-काक। ५-तगर। ६-कपास। ७-नारद का नाम।

पिशुनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुगलखोरी।

पिशुना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चुगलखोरी।

पिशोन्माद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पागलपन।

पिशोर [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय पर उगने वाली एक प्रकार की झाड़ी।

पिष्ट [वि.] (सं.) १-पिसा हुआ। चूर्ण किया हुआ। २-दोनों हाथों से पकड़ कर दबाया हुआ। [संज्ञा पु.] १-पीसी हुई कोई भी वस्तु। २-पीठी। पिट्ठी। ३-कचौर या पुआ

पिष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूड़ी या कचौरी जो किसी अन्न के आटे की बनाई गई हो। २-पीठी या पिट्ठी। ३-फूला नामक नेत्र रोग। ४-सीसा धातु। ५-सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का अस्थिभंग।

पिष्टप [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मांड का विभाग विशेष। लोक। भुवन।

पिष्टपचन [संज्ञा पु.] (सं.) आटा भूँजने की कड़ाही।

पिष्टपशु [संज्ञा पु.] (सं.) आटे का बनाया हुआ पशु की आकृति का खिलौना।

पिष्टपिंड, पिष्टपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-आटा २-पूड़ी। ३-पीठी। ४-लड्डू।

पिष्टपूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की पीठी। २-बरी।

पिष्ट-पेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिसे हुए को फिर से पीसना। २-कही हुई बात को फिर से कहना।

पिष्टप्रमेह* [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमेह रोग जिसमें चावल के पानी के समान कोई पदार्थ मूत्र के साथ गिरता है।

पिष्टमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह रोग।

पिष्टयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) कचौरी या पुआ।

पिष्टवर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा लड्डू जो दाल की पीठी या चावल के आटे से बनाया जाता है।

पिष्टसौरभ [संज्ञा पु.] (सं.) घिसा हुआ चंदन।

पिष्टात [संज्ञा पु.] (सं.) खुशबूदार चूर्ण। गुलाल। अबीर।

पिष्टालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंदन।

पिष्टिक [संज्ञा पु.] चावल के आटे की पूड़ी विशेष।

पिष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीठी। पिट्ठी।

पिष्टोडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेताम्ली का पौधा।

पिष्टोदक [संज्ञा पु.] (सं.) पिसे हुए चावल का पानी।

पिसंग [वि.] (हिं.) देखो 'पिशंग'।

पिसनहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आटा पीसने वाली स्त्री।

पिसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दाब अथवा रगड़ खाकर चूर्ण होना। २-किसी पीसी जाने वस्तु का पिसकर तैयार होना। ३-दब या कुचल जाना। ४-घोर कष्ट अथवा हानि सहना या उठाना। पीड़ित होना। ५-थक कर बेदम होना। अति या अधिक परिश्रम से क्लान्त होना।

पिसवाज* [संज्ञा पु.] (हिं.) नाचने के समय नर्त्तकियों के पहनने का घघरा जो अपेक्षाकृत बड़ा होता है।

पिसवाना [क्रि. स.] (हिं.) पीसने का काम दूसरे से कराना।

पिसाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पीसने की क्रिया। २-पीसने का भाव। ३-पीसने की मजदूरी। ४-बहुत अधिक परिश्रम। कड़ी मेहनत। ५-चक्की पीसने का काम।

पिसाच* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिशाच'।

पिसान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न का पिसा बारीक चूर्ण। आटा।

पिसान होना-दबकर चूर्ण होना।

पिसाना [क्रि. स.] (हिं.) पीसने का काम किसी और से कराना। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पिसना'।

पिसिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का और मुलायम लाल गेहूँ।

पिसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गेहूँ।

पिसुन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पिशुन। चुगल

पिसुनता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिशुनता। चुगलखोरी।

पिसुराई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सरकंडे का टुकड़ा जिस पर रूई लपेट कर पूनियां है।

पिसेरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार जिसका ऊपर भाग भूरा तथा नीचे होता है।

पिसौनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १- का धंधा। २-परिश्रम का काम।

पिस्त [संज्ञा पु.] (फा.) पिस्ता।

पिस्तई [वि.] (फा.) पिस्ते के रंग लिये हरा।

पिस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक छोटा पेड़ गिरी अच्छे मेवों में गिनी जाती है। फल की गिरी।

पिस्तौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बन्दूक की एक छोटा अस्त्र। तमंचा।

पिस्सी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार

पिस्सू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा उड़ने कीड़ा जो शरीर का रक्त चूसता है।

पिहकना [क्रि. अ.] (हिं.) कोयल, पपीहे आदि मधुर कंठ वाले पक्षियों का बोलना

पिहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) पास के ऊपर जाने वाली पत्ती।

पिहान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ढकने की वस्तु तन का ढक्कन।

पिहित [वि.] (सं.) छिपा हुआ। [संज्ञा पु.] अर्थालङ्कार जिसमें किसी के मन भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव करने का उल्लेख होता है।

पिहुवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक पक्षी

पिहोली [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार जिसकी पत्तियों से बड़ी अच्छी सुगन्ध लती है।

पींग+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेंग'।

पींजना [क्रि. स.] (हिं.) रूई धुनना।

पींजर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पिंजड़ा। पंजर

पींजरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) पिंजड़ा।

पींड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी गीली वस्तु गोला। पिंडी। २-कोल्हू के चारों ओर मिट्टी का बनाया हुआ घेरा जिससे छोटे टुकड़े छटककर बाहर नहीं ३-चरखे के बीच का हिस्सा। बेलन पिंड खजूर नामक फल। ५-वृक्ष का

६-शरीर । देह । पिंड ।

पींढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिंडी' ।

पींडुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिंडुली' ।

पीऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रिय' । [संज्ञा स्त्री.] पपीहे की बोली ।

पीक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-थूक से मिला हुआ पान का रस । पान के रंग में रंगा हुआ थूक । २-पहली बार का रंग ।

पीकदान [संज्ञा पु.](हिं.) डमरू के आकार का वह पात्र जिसमें थूकते या पीक डालते हैं । उगालदान ।

पीकना+ [क्रि. अ.) (हिं.) कोयले अथवा पपीहे का बोलना । पिहिकना ।

पीका+ [संज्ञा पु.] (देश.) नया कोमल पत्ता । कोंपल । पल्लव ।
पीका फूटना-पनपना । कोंपल निकलना ।

पीच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भात का माँड़ । [संज्ञा पु.] (सं.) ठोड़ी ।

पीचू [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का झाड़ या क्षुप । जरदालू । चीलू । २-करील का पक्का फल ।

पीछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पीच । मांड़ । २-पत्तियों की पूँछ ।

पीछा [संज्ञा पु.](हिं.) १-पीछे की ओर का भाग २-मनुष्य शरीर के पीठ वाला भाग । ३-किसी के पीछे रहने की क्रिया या भाव । ४-किसी घटना के बाद का समय ।
पीछा करना-१-कोई कार्य करने के लिए किसी को दुःखी करना । गले पड़ना । २-किसी को पकड़ने या उसके गुप्त भेदों की जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके पीछे-पीछे रहना पीछा छुड़ाना-१-पीछा करने वाले से जान बचना । २-अप्रिय अथवा अवांछित संबंध का अन्त करना । पीछा छूटना-१-पीछा करने वाले से छुटकारा मिलना । पिंड छूटना । २-अप्रिय कार्य अथवा संबंध से छुटकारा मिलना रिहाई मिलना । पीछा छोड़ना-१-हाथ में लिए काम से अगल होना । २-किसी व्यक्ति को तंग करना, छोड़ना । पीछा दिखाना-पीठ दिखाना । हारकर भागना । पीछा देना-किसी कार्य में लगगर फिर पीछे हट जाना । पीछा पकड़ना-सहारा बनाना । पीछा भारी होना-१-पीछे की ओर से भय अथवा खतरा होना २-किसी के साथ प्रबल सहायक होना ।

पीछू*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'पीछे' ।

पीछे [अव्य.] (हिं.) १-पीठ की ओर । आगे से उलटा । २-पीछे की ओर कुछ दूर पर । ३-देश अथवा कालक्रम के विचार से किसी के उपरान्त या पश्चात् । अनंतर । ४-अन्त में । ५-किसी की अनुपस्थिति अथवा अभाव में । ६-मर जाने पर । मरणोपरान्त । ७-वास्ते । ८-कारण निमित्त । बदौलत ।
(किसी के) पीछे चलना-१-किसी का अनुगामी बनाना । २-नकल करना । (किसी के) पीछे छूटना-१-भेद लेने के लिए जासूस नियुक्त करना । २-मार्ग में पीछे रह जाना । ३-भागे हुए या फरार व्यक्ति को पकड़ने को नियुक्त होना । ४-किसी विषय में घट जाना । पीछे छोड़ना-किसी से आगे बढ़ जाना । पीछे छोड़ना या भेजना-१-किसी का पीछा करने के लिए किसी को पीछे दौड़ाना या भेजना । २-भेदिये लगाना । (किसी के) पीछे डालना-पीछे दौड़ाना । (धन) पीछे डालना-रुपया बचाना । पीछे दौड़ना-१-जाते हुए को लौटाने के लिए भेजना । २-भागे हुए को पकड़ने के लिए आदमी दौड़ाना । (किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना-१-बार-बार कहना । २-समय कुसमय बुराई करते ही रहना । (किसी काम के) पीछे पड़ना-किसी काम में निरन्तर उद्योग करना । पीछे पड़ा रहना-१-निरन्तर कहते रहना । २-तंग करते रहना । पीछे लगना-१-नकल या अनुकरण करना । २-बुरे से संबंध होना । ३-किसी मतलब से साथ घूमना । (अपने) पीछे लगाना-१-बुरी बात से संबंध स्थापित करना । २-आश्रय देना । (किसी ओर के) पीछे लगाना-१-अप्रिय वस्तु या बात से संबंध करा देना । २-किसी व्यक्ति को किसी का पीछा करने के लिए नियुक्त करना ।

पीजन [संज्ञा पु.](हिं.) वह धुन की जिससे भेड़ों के बाल धुनते हैं ।

पीजर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिंजड़ा' ।

पीजरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिंजड़ा' ।

पीटन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिटना' ।

पीटना [क्रि. स.](हिं.) १-मारना या प्रहार करना । हाथ से आघात लगाना । २-चोट देकर किसी वस्तु को चिपटी करना । ३-किसी न किसी प्रकार से कोई वस्तु प्राप्त कर लेना । ४-येन-केन-प्रकारेण किसी काम को समाप्त कर लेना निबटा लेना । ५-किसी वस्तु पर चोट पहुँचाना छाती पीटना-दुःख अथवा शोक से छाती पर हाथ से आघात करना । किसी बात की पीटना किसी बात का ध्यान करके हाय-हाय करना । सिर धुनना । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मृत्यु पर होने वाला शोक । मातम । २-मुसीबत । आफत

पीठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्थर, लकड़ी आदि का बैठने का आसन । पीढ़ा । २-मूर्ति का वह आधारवत् स्थान जिस पर वह खड़ी रहती है । वेदी । ३-किसी वस्तु के रहने का स्थान । अधिष्ठान । ४-कुशासन । ५-विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान । ६-वह स्थान जहाँ पर सती के शरीर का कोई अंग अथवा आभूषण भगवान विष्णु के चक्र से कटकर गिरा हो । (पुराण) । ७-बैठने का एक विशेष ढंग । एक आसन । ८-राजसिंहासन । तख्त । ९-प्रदेश प्रांत । १०-एक असुर का नाम । ११-कंस के एक मंत्री का नाम । १२-वृत्त के किसी अंश का पूरक । १३-विधायिका सभाओं आदि में किसी दल अथवा पक्ष विशेष के बैठने के लिए सुरक्षित स्थान । १४-न्यायाधीश के बैठने का स्थान । १५-न्यायाधीश या न्यायाधीश का वर्ग । बेंच ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु की बनावट का पिछला भाग । पृष्ठभाग । २-शरीर में पेट के दूसरी ओर का या पिछला भाग । पृष्ठ
पीठ का-जन्म क्रम के विचार से अपने सहोदर के बाद का । पीठ का कच्चा-(घोड़ा) जो देखने में तो मोटा ताजा और सजीला हो पर सवारी में ठीक न हो । पीठ का सच्चा-अच्छी चाल वाला (घोड़ा) । पीठ की-जन्मक्रम के विचार से अपने सहोदर के बाद की । पीठ की खाल या पीठ उधेड़ना-पीठ पर खूब मार लगाना । पीठ खाली होना-सहायक न होना । पीठ चारपाई से लग जाना-रोग से अति दुर्बल होना । उठ बैठ न सकना । पीठ ठोंकना-१-शबाशी देना । २-हिम्मत या साहस बढ़ाना । ३-प्यार जताना । पीठ तोड़ना-दिल या साहस तोड़ना । पीठ दिखा कर जाना-प्रेम अथवा मोह छोड़ना । पीठ दिखाना-मैदान छोड़कर भाग जाना । पीछा दिखाना । पीठ देना-१-मुँह मोड़ना । जाना या विदा होना । २-भाग जाना । ३-साधन देना । ४-सो जाना या लेटना । (किसी की ओर) पीठ देना-१-मुँह फेरना । २-उपेक्षा, घृणा, नापसंदगी आदि दिखाना । पीठ पर-एक ही गर्भ से किसी के जन्म लेने वाला ।
पीठ पर का-जन्मक्रम के विचार से अपने बड़े सहोदर के बाद वाला । पीठ पर की-जन्मक्रम विचार से अपने बड़े सहोदर के बाद वाली । पीठ पर खाना-भागते हुए मार खाना । पीठ पर हाथ फेरना-किसी की पीठ पर हाथ रख कर उसी की प्रशंसा करना अथवा उसे उत्साहित करना । पीठ पर होना-१-सहायक होना २-बड़े सहोदर से छोटा होना । पीठ पीछे-अनुपस्थिति या परोक्ष में । पीठ फेरना-चले जाना । भाग जाना । पीठ फोड़ डालना-बहुत पीटना । पीठ मीजना-पीठ ठोंकना । शाबासी देना । पीठ लगना-१-लेटना । पड़े ही रहना । २-चित्त होना । पछड़ जाना । ३-पीठ पर घाव होना । पीठ लगाना-लेट कर विश्राम करना । (घोड़े बैल आदि की) पीठ लगना-जीन के रगड़ से पीठ पर घाव बन जाना ।

पीठक [संज्ञा पु.] (सं.) पीढ़ा ।

पीठ-का-मोजा [संज्ञा पु.](हिं.) कुश्ती का एक पेंच

पीठ-के-डंडे [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच

पीठकेलि [संज्ञा पु.] (सं.) पीठमर्द नायक ।

पीठग [वि.] (सं.) लंगड़ा । पंगु ।

पीठगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) वह गड्ढा जो वेदी पर मूर्ति के जमाने के लिए खोद कर बनाय

जाता है।

पीठचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक रथ विशेष जो प्राचीन-काल में होता था।

पीठदेवता [संज्ञा पु.](सं.) आदि देवता। आधार-शक्ति।

पीठना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पीसना'।

पीठनायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-उत्सव में दुर्गा की प्रतिनिधि मानी जाती है।

पीठनायिकादेवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दुर्गा। भगवती। २-पीठस्थान की अधिष्ठात्रीदेवी।

पीठन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) एक तंत्रोक्त न्यास जो प्रायः सभी तांत्रिक पूजाओं में आवश्यक है।

पीठभू [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीर के आस-पास का भू-भाग।

पीठमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-नायक के चार सखाओं में से एक जो वचन चातुरी से या मीठी बातों से रुष्ट नायिका को मना सके। २-कुपित या रुष्ट नायिका को प्रसन्न करने वाला नायक। ३-नृर्त्तकी वेश्या को नाच सिखाने वाला उस्ताद।

पीठविवर [संज्ञा पु.] (सं.) वह गड्ढा जो वेदी पर मूर्त्ति जमाने के लिए खोदकर बनाया जाता है।

पीठसर्प [वि.] (सं.) लंगड़ा।

पीठसर्पी [वि.] (सं.) लंगड़ा।

पीठस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) कोई विशिष्ट पवित्र स्थान।

पीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पीढ़ा। २-एक प्रकार का पकवान जो आटे की लोई में पीठी भरकर बनाया जाता है। ३-देखो 'पठा'।

पीठासीन [वि.] (सं.) किसी समाज अथवा वर्ग में सर्वोच्चस्थान पर आसीन या बैठा हुआ। प्रिसाइडिङ्ग। *पीठासीन होना*-किसी समाज अथवा वर्ग में सब से ऊंचे स्थान पर होना। सभापति होना। अध्यक्ष होना। प्रिसाइड।

पीठासीन-पदाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय आदि का प्रधान विचारक या अधिकारी। प्रिसाइडिंग ऑफिसर।

पीठि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पीठ'।

पीठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीढ़ा। २-मूर्ति या खंभे का मूल या आधार। ३-पुस्तक का अंश या अध्याय। परिच्छेद। ४-आसन।

पीठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उरद, मूंग आदि की की पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़ [संज्ञा पु.] (देश.) मिट्टी का वह आधार जिसे घड़े को पीटकर बढ़ाते समय उसके अंदर रख लेते हैं।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का आभूषण जो सिर या बालों पर बाँधा जाता है। २-देखो 'पीड़ा'।

पीड़क [संज्ञा पु.] (सं.) १-कष्ट या पीड़ा देने वाला। २-उत्पीड़क। अत्याचारी। जालिम।

पीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-दबाने की क्रिया। चाँपना। २-पेरना। पेलना। ३-दुःख या कष्ट देना। यंत्रणा पहुँचाना। ४-उत्पीड़न। अत्याचार करना। ५-आक्रमण द्वारा किसी देश को बरबाद करना। ६-पीट-पीटकर अनाज बालों से निकाल लेना। ७-सूर्य-चन्द्र का ग्रहण। ८-तिरोभाव। लोप। ९-भली प्रकार से किसी वस्तु को पकड़ना। दबोचना। १०-उच्छेद। नाश।

पीड़नीय [वि.] (सं.) दुःख या कष्ट पहुँचाने योग्य। [संज्ञा पु.] १-बिना मंत्री और सेना का राजा। २-चार प्रकार के शत्रुओं में से एक।

पीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेदना। व्यथा। दर्द। २-कष्ट। तकलीफ। ३-रोग। व्याधि। ४-सिर में लपेटी हुई माला। शिरोमाला। ५-एक सुगंधित औषध। सरल।

पीड़ास्थान [संज्ञा पु.] (सं.) अशुभग्रहों के स्थान

पीड़ित [वि.] (सं.) पीड़ायुक्त। क्लेशयुक्त। दुखित। २-रोगी। बीमार। ३-दबाया हुआ। ४-नष्ट किया हुआ। [संज्ञा पु.] १-स्त्रियों के कान का छेद। २-तंत्रमत से एक मंत्र विशेष

पीडुरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिंडली।

पीढ़ा+ [संज्ञा पु.] [स्त्री. पीढ़ी] काठ का कम ऊंचा और छोटा आसन। पाटा।

पीढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वंशपरंपरा में किसी के बाप, दादे, परदादे आदि या बेटे, पोते, परपोते आदि के विचार से गणना-क्रम में कोई स्थान। २-किसी विशेष समय में होने वाले व्यक्तियों की समष्टि। जेनरेशन। ३-किसी विशेष व्यक्ति या प्राणि का संतति समुदाय।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पीढ़ा।

पीत [वि.] (सं.) [स्त्री. पीता] १-पीला। २-भूरा ३-पीया हुआ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-पीला रंग। २-भूरा रंग। ३-हरताल। ४-कुसुम। ५-पुखराज। ६-हरिचंदन। ७-सिहोर का पेड़। ८-सरल धूप। ९-सोमलता विशेष। १०-पद्मकाष्ठ। ११-मूँगा। १२-पीला खस। १३-अकोल का पेड़। १४-तुन। नंदिवृक्ष। १५-बेंत। १६-स्वर्ण। सोना।

पीतकंद, पीतकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाजर २-शलजम।

पीतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरताल। २-केसर। ३-अगरकाष्ठ। ४-सोनामाखी। ५-पद्माख ६-तुन। ७-विजयसार। ८-सोनापाठा। ९-हलदुआ। १०-बबूल विशेष। ११-शहद। १२-पीवल। १३-चंदमकाष्ठ। १४-शहद। १५-गाजर। १६-पीतजीरक। १७-चिरायता। १८-पीली लोध। १९-सोनापाठा।

[वि.] (सं.) पीला। पीले रंग का।

पीतकदली [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का के… जिसे चंपक-कदली भी कहते हैं।

पीतकद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) हलदुआ। …

पीतकरवीरक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कनेर जिसमें पीले फूल आते हैं।

पीतका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हल्दी। २-… सरैया।

पीतकावेरं [संज्ञा पु.] (सं.) १-केसर। २-…

पीतकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीला चंदन। २-… पद्माख।

पीतकीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आवर्तकी लता। भागवतवल्ली।

पीतकुरवक [संज्ञा पु.] (सं.) पीली कटसरैया।

पीतकुरुंट, पीतकुरुण्ट [संज्ञा पु.](सं.) पीली कटसरैया।

पीतकुष्मांड, पीतकुष्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) तरकारी के काम में आने वाला कुम्हड़ा।

पीतकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) पीली कटसरैया।

पीतकेदार [संज्ञा पु.] (सं.) एक धान विशेष।

पीतगंध, पीतगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पीला चंदन।

पीतगंधक, पीतगन्धक [संज्ञा पुं.] (सं.) गंधक।

पीतचंदन, पीतचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीले रंग का चन्दन जिसे हरिचन्दन भी कहते हैं। २-केसर। ३-हलदी।

पीतचंपक, पीतचम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीप प्रदीप। चिराग। २-पीली चम्पा।

पीतचोप [संज्ञा पु.] (सं.) पलास का फूल। …

पीतझिंटी, पीतझिण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह कटसरैया जिसमें पीले फूल आते हैं। २-एक प्रकार की कटाई।

पीततंडुल, पीततण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कांगुनवृक्ष। २-सालवृक्ष।

पीततंडुलिका, पीततण्डुलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालवृक्ष। साल।

पीतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीलापन।

पीततुंड, पीततुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) कारंड… या बयापक्षी।

पीततैला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मालकँगनी। २-बड़ी मालकँगनी।

पीतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पीतता। पीलापन।

पीतदंतता, पीतदन्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का दांतों का रोग जिसमें दांत पीले पड़ जाते हैं।

पीतदारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरलवृक्ष। २-देव दार। ३-चिरायता। ४-हलदी। ५-… करंज।

पीतदीप्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) बौद्धों के एक देवता

पीतदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का थूहर। २-एक प्रकार की कटेहरी। ३-ऊंटकटारा। ४-दुधार गाय।

पीतद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दारुहलदी। २-सरल-वृक्ष

पीतधातु* [संज्ञा पु.] (हि.) रामरज। गोपीचन्दन।

पीतन, पीतनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरताल। २-केसर। ३-सरल वृक्ष। ४-आमड़ा। ५-पाकड़।

पीतनखता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नाखून रोग।

पीतनाश [संज्ञा पु.] (सं.) बड़हर। लकुच।

पीतनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी।

पीतनील [संज्ञा पु.] (सं.) पीले और नीले रंग के मेल से बना हुआ रंग। हरा रंग।

पीतपराग [संज्ञा पु.] (सं.) कमल। केसर।

पीतपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृश्चिकाली।

पीतपादप [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोध का पेड़। २-सोना पाठा।

पीतपादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैना पक्षी जिसके पैर पीले होते हैं। [वि.] (सं.) जिसके पैर या चरण पीले होते हों।

पीतपिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा धातु।

पीतपुष्प, पीतपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनेर। २-घियातोरई। ३-पेठा। ४-तगर। ५-लाल कचनार। ६-हिंगोट। ७-पीले फूल वाली कटसरैया। ८-चंपा। ९-रग नामक क्षुप।

पीतपुष्पका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली ककड़ी।

पीतपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-झिंझरीटा। २-अरहर। ३-तरोई। ४-पीले फूल वाली कटसरैया। ५-पीले फूल वाली कनेर। ६-इन्द्रायण। ७-सहदेवी। ८-यूथिका।

पीतपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शंखाहुली। २-सहदेई। ३-बड़ी। तरोई। ४-सोनजुही। ५-खीरा। ६-इन्द्रायण।

पीतपृष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कौड़ी जिसकी पीठ पीले रंग की होती है।

पीतपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) वह कौड़ी जिसकी पीठ पीले रंग की होती है।

पीतफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमरख। २-धव। सिहोर।

पीतफलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिहोर। २-रीठा ३-कमरख।

पीतफेन [संज्ञा पु.] (सं.) रीठा।

पीतबलि [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

पीतबालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

पीतबीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

पीतभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) बबूल विशेष। देवबब्बुर।

पीतभृङ्गराग* [संज्ञा पु.] (सं.) पीला भंगरा।

पीतम* [वि.] (सं.) देखो 'प्रियतम'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रियतम'।

पीतमणि [संज्ञा पु.] (सं.) पुखराज।

पीतमस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाज जो साधारण बाज से बड़ा होता है।

पीतमाक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामाखी।

पीतमुंड, पीतमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का हिरन।

पीतमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाजर। २-शलगम

पीतमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेवन्दचीनी।

पीतयूथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णयूथिका।

पीतर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीतल'।

पीतरक्त [वि.] (सं.) पीले और लाल रंग से बनने वाले रंग का। नारंगी रंग का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुखराज। २-पद्माख।

पीतरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) पुखराज।

पीतरस [संज्ञा पु.] (सं.) कसेरू।

पीतराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीला रंग। २-मोम ३-पद्मकेसर। [वि.] (सं.) पीले रंग का।

पीतरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जंभीरी। २-पीली कुटकी।

पीतल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो तांबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

पीतलोह [संज्ञा पु.] (सं.) पीतल।

पीतवर्ण [वि.] (सं.) पीला। पीले रंग का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्णमण्डूक। २-ताड़ का पेड़। ३-कदम्ब। ४-हलदुआ। ५-लाल कचनार। ६-पीतचन्दन। ७-मैनसिल। ८-केसर।

पीतवल्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशबेल।

पीतवान [संज्ञा पु.] (देश.) हाथी की दोनों आंखों के मध्य का स्थान।

पीतवालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलदी।

पीतवास [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। [वि.] पीले वस्त्र पहनने वाला।

पीतविंदु, पीतविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु के चरणचिह्नों में से एक।

पीतवीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

पीतवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरलवृक्ष। २-सोना पाठा।

पीतशाल, पीतशालक [संज्ञा पु.] (सं.) विजयसार।

पीतसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) ससुर का भाई। चचियाससुर।

पीतसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरिचन्दन। २-गोमेदमणि। ३-अंकोल। ४-विजयसार। ५-शिलारस। ६-सफेद चन्दन।

पीतसारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीम का पेड़। २-ढेरे का पेड़।

पीतसारिका [संज्ञा पु.] (सं.) काला सुरमा।

पीतसाल, पीतसालक [संज्ञा पु.] (सं.) विजयसार नामक वृक्ष।

पीतस्कंध, पीतस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूअर शूकर। २-एक वृक्ष।

पीतस्फटिक [संज्ञा पु.] (सं.) पीतमणि। पुखराज।

पीतस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) खुजली (रोग)।

पीतांग, पीताङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सोनापाठा।

पीतांबर, पीताम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीले रंग का वस्त्र। २-रेशमी धोती जो पूजापाठ के समय पहनी जाती है। ३-श्रीकृष्ण। ४-नट। अभिनयकर्त्ता। [वि.] पीले कपड़े वाला।

पीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हल्दी। २-बड़ी मालकंगनी। ३-दारुहलदी। ४-देवदार। ५-राल। ६-असगन्धा। ७-शालिपर्णी। ८-अकासबेल। ९-गोरोचन। १०-अतीस। ११ पीला केला। १२-बिजौर नीबू। १३-जर्दचमेली। १४-भूरे रंग का शीशम। १५-फलप्रियंगु।
[वि.] (सं.) पीले रंग वाली (वस्तु या स्त्री)।

पीताब्धि [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्य ऋषि का नाम

पीताभ [वि.] (सं.) पीली आभा देने वाला। पीतवर्ण।
[संज्ञा पु.] (सं.) पीला चन्दन।

पीताभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) पीले रंग का अभ्रक

पीताम्लान [संज्ञा पु.] (सं.) पीला कटसरैया।

पीतारुण [वि.] (सं.) पिलौहा लाल। पीलापन लिये लाल रंग का।

पीताश्म [संज्ञा पु.] (सं.) पुखराज रत्न। पीतमणि

पीताह्व [संज्ञा पु.] (सं.) राल।

पीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीना। २-गति।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-सूँड़।

पीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हलदी। २-दारुहलदी। ३-स्वर्णयूथी।

पीतिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी।

पीती [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'प्रीति'।

पीतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-हाथियों के गिरोह का सरदार या यूथपति।

पीतुदारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदार। २-गूलर (वृक्ष)।

पीथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-समय। ३-अग्नि। ४-पेय पदार्थ (पानी, घी आदि)। ५-जल।

पीथि [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

पीदड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिद्दी'।

पीन [वि·] (सं.) १-मोटा । स्थूल । २-पुष्ट । प्रवृद्ध । परिवर्धित । ३-संपन्न । भरापूरा । [संज्ञा पु.] (सं.) स्थूलता । मोटाई ।

पीनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अफीम के नशे में झूमना । २-ऊँघना । नींद आने के कारण झुक-झुक पड़ना ।
पीनक में आना–अफीमची का नशे में ऊँघने लगना ।

पीनता [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्थूलता । मोटाई ।

पीनना+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पींजना' ।

पीनस [संज्ञा · पु.] (सं.) १-नाक का एक रोग जिसमें घ्राणशक्ति नष्ट हो जाती है । २-जुकाम । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पालकी ।

पीनसा [संज्ञा स्त्री.] (स.) ककड़ी ।

पींनसी [वि.] (सं.) जिसे पीनस रोग हुआ हो ।

पीना [क्रि. स.] (हिं.) १-द्रव पदार्थ को मुख द्वारा ग्रहण करना । पेय पदार्थ को घूँट-घूँट करके गले के नीचे उतारना । पान करना । २-किसी बात को दबा देना । ३-कोई विचार या मनोविकार को मन ही मन दबा देना । ४ सह: जाना । बरदाश्त करना । ५-कुछ भी शेष या बाकी न रखना । ६-मद्यपान करना । शराब पीना । ७-धूम्रपान करना । ८-सोखना या जज्ब करना । शोषण करना । [संज्ञा.पु.](हिं.) तिल या तीसी आदि की खली [संज्ञा पु.] (देश.) डाट ।

पीनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तिल या तीसी आदि तेहलनों की खली ।

पींप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फोड़े या घाव के फूटने पर उसमें से निकलने वाला सफेद लसलसा विषाक्त पदार्थ । पीब । मवाद ।

पीपर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीपल' ।

पीपरपर्न* [संज्ञा पु.] (हिं.) कान में पहनने का एक आभूषण ।

पीपरामूल [संज्ञा पु.] (हिं.) पीपलामूल ।

पीपरि [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा पाकड़ । [संज्ञा पु.] (हिं.) पीपल ।

पीपल [संज्ञा पु.] (हिं.) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसे हिन्दू लोग बहुत पवित्र मानते हैं । [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक लता जिसकी कलियां शहतूत के आकार की होती हैं । यह औषधि रूप में प्रयुक्त होती है ।

पीपलामूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध औषध का नाम जो पीपल औषध की जड़ है ।

पीपा [संज्ञा पु.] (?) काठ या लोहे आदि का बना वह गोल पात्र जिसमें घी, तेल, शीरा, शराब आदि रखते हैं ।

पीब [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीप' ।

पीय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिय' ।

पीयर+ [वि.] (हिं.) देखो 'पीला' ।

पीया* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिय' ।

पीयु [संज्ञा पु.] (सं.) १-काक । २-सूर्य । ३-अग्नि । ४-समय । ५-उल्लू । ६-सुवर्ण । सोना । [वि.] १-हिंसक । हिंसा करने वाला । २-विरुद्ध । प्रतिकूल ।

पीयूक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाकर नामक वृक्ष विशेष ।

पीयूख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीयूष' ।

पीयूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमृत । सुधा । २-दूध । ३-ब्याने के सात दिन के भीतर का गाय का दूध ।

पीयूषमहस [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।

पीयूषरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर

पीयूषवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर । ३-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दस और नौ के विश्राम से १६ मात्राए और अंत में गुरु लघु होता है ।

पीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पीड़ा । दुःख । दर्द । २-दूसरे की पीड़ा अथवा कष्ट देखकर उत्पन्न होने वाली पीड़ा । सहानुभूति । करुणा । हमदर्दी । दया । ३-प्रसवकाल की पीड़ा ।
पीर न आना–सहानुभूति उत्पन्न होना ।
[वि.] (फा.) १-वृद्ध । बुजुर्ग । २-सिद्ध । महात्मा । ३-धूर्त्त । चालाक । [संज्ञा पु.] १-परलोक का मार्ग बताने वाला । २-मुसलमानों का धर्मगुरु । ३-सोमवार का दिन ।

पीरजादा [संज्ञा पु.] (फा.) किसी पीर अथवा धर्मगुरु की संतान ।

पीरनाबालिग [वि.] (फा.,अ.) ऐसा वृद्ध जो बच्चों के समान कार्य अथवा बातें करे । सठिया हुआ बुड्ढा ।

पीरगान [संज्ञा पु.] (हिं.) मस्तूल पर के वह डंडे जिन पर पाल चढ़ाई जाती है ।

पीरमुरशिद [संज्ञा पु.] (फा.) महात्मा, गुरु, पूजनीय या अपने दरजे से बड़ा आदमी ।

पीरा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पीड़ा' । [वि.] देखो 'पीला' ।

पीराई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति विशेष जिसके लोग पीरों के गीत गाकर अपनी जीविका चलाते हैं । डफाली ।

पीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वृद्धावस्था । बुढ़ापा । २-चेला मूंड़ने का धंधा या पेशा । गुरुवाई । ३-धूर्त्तता । ४-इजारा । ठेका । ५-चमत्कार । करामात । [वि.] (हिं.) पीली ।

पीरू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मुर्गा ।

पीरोजा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फिरोजा' ।

पील [संज्ञा पु.] (फा.) १-हाथी । गज । २-शतरंज का एक मोहरा । (हिं.) १-एक प्रकार का कीड़ा । २-पीलू नामक एक वृक्ष विशेष ।

पीलक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पीले रंग का पक्षी । इसकी चोंच लाल और पर काले होते हैं ।

पीलखाँ [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष विशेष।

पीलपाल* [संज्ञा पु.] (हि.) महावत । हाथीवान।

पील-पाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) श्लीपद नामक एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ या पैर फूल जाते हैं ।

पीलवान [संज्ञा पु.] (फा.) महावत । हाथीवान।

पीलवान [संज्ञा पु.] (हिं.) महावत । हाथीवान।

पीलसोज [संज्ञा पु.] (फा.) दीया जलाने की दीयट । चिरागदान ।

पीलसोत* [संज्ञा पु.](हिं) १-चिरागदान। २-दीपक । प्रदीप ।

पीला [वि.] (हि.) [स्त्री. पीली] १-हल्दी या केसर के रंग का । पीत । जर्द । २-निस्तेज । कांतिहीन ।
पीला पड़ना–१-रोग, भय, चिन्ता आदि के कारण शरीर में रक्त का अभाव दीखना । २-डर के कारण मुख पर सफेदी आना । सूख जाना । [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्दी के रंग का । *पीली फटना*–पौ फटना । तड़का होना ।

पीलाकनेर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कनेर जिसमें पीले घंटी के आकार के फूल आते हों।

पीलाधतूरा [संज्ञा पु.] (हि.) ऊँटकटारा । भाड़ ।

पीलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) पीला होने के भाव । पीतता । जर्दी ।

पीलाबरेला [संज्ञा पु.] (देश.) बरियारा।

पीलाम [संज्ञा पु.] (?) साटन नाम का एक कपड़ा जो चमकीला होता है ।

पीला-शेर [संज्ञा पु.](हि.) अफ्रीका में होने वाला एक पीले रंग का बाघ विशेष।

पीलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल रोग जिसमें मनुष्य का सम्पूर्ण शरीर तथा आंखें पीली हो जाती हैं ।

पीलीचमेली [संज्ञा स्त्री.] (हि) एक प्रकार की चमेली ।

पीलीचिट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हि) विवाह का निमंत्रण पत्र जिस पर केसर आदि के छींटे होते हैं ।

पीलीजुही [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सोनजुही'।

पीलीमिट्टी [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की चिकनी कड़ी और पीले रंग की मिट्टी।

पीलु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का फल वृक्ष । २-तीर । बाण । ३-अणु । ४-अंश । ५-हाथी । ६-पुष्प । फूल । ७-हड्डी का टुकड़ा । ८-तालवृक्ष काटना । ९-ताड़वृक्षों का समूह । १०-चने का साग । ११-सरपत या कांडे का फूल । १२-लाल कटसरैया । १३-अखरोट का पेड़ । १४-हथेली । करतल ।

पीलुआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा जाल जिस से मछली पकड़ी जाती है।

पीलुक [संज्ञा पु.] (सं.) च्यूंटा। चींटा।

पीलुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चने का साग। २-चूरनहार। मूर्वा।

पीलुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मोरटलता। क्षीरमोरट।

पीलुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूर्वा। चूरनहार २-कुंदरू।

पीलुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीलुवृक्ष की जड़ २-सतावर। ३-शालपर्णी।

पीलुसूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जयान गौ।

पीलुसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

पील्ू [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष। इसमें छोटे-छोटे लाल या काले फल लगते हैं। २-लम्बे और सफेद कीड़े जो सड़े हुए फलों में पड़ जाते हैं। ३-एक राग जो दिन के समय २१ दंड से २४ दंड तक गाया जाता है।

पील्ू पड़ना-कीड़े उत्पन्न करना।

पीव [वि.] (हिं.) स्थूल मोटा।

[संज्ञा स्त्री.] पीप। मवाद।

पीवना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पीना'।

पीवर [वि.] (सं.) [स्त्री. पीवरा, पीवरी] १-मोटा। मांसल। स्थूल। तगड़ा। २-भारी।

[संज्ञा पु.] १-जटा। २-कछुवा। ३-एक ऋषि का नाम।

पीवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-युवती स्त्री। २-गौ। गाय। ३-सतावर। ४-सरिवन। शालपर्णी। ५-वर्हिषद नामक पितृ की एक मानसी कन्या का नाम।

पीवस [संज्ञा पु.] (सं.) मोटा। तगड़ा। स्थूल।

पीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल। पानी।

+[वि.] (हिं.) पुष्ट। मोटा। स्थूल।

पीविष्ठ [वि.] अत्यधिक मोटा।

पीसना [क्रि. स.] (हि.) १-रगड़कर आटे या चूर्ण के रूप में करना। २-किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़कर महीन करना। ३-इस प्रकार दबाना अथवा पीड़ित करना कि उभरने की शक्ति शेष न रहे। कुचल देना। ४-बड़ी मेहनत करना। कठोर परिश्रम करना। किसी (आदमी) को पीसना-नष्टप्राय कर देना बिलकुल चौपट कर देना।

[संज्ञा पु.] १-पीसे जाने वाली वस्तु। २-उतनी वस्तु जितनी एक आदमी को पीसने के लिए दी जाय। ३-एक व्यक्ति के हिस्से या जिम्मे का कार्य (व्यंग्य में)।

पीसना पीसना-निरन्तर कठिन परिश्रम का कार्य करते रहना।

पीसू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पिस्सू नामक कीड़ा जो रक्त चूसता है।

पीह+ [संज्ञा स्त्री.] (?) चरबी।

पीहर [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों के लिये उनके माता-पिता का घर। मैका। मायका।

पीहा [संज्ञा पु.] (हिं.) पपीहे की बोली।

पीहू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पीसू'।

पुंख, पुङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर की वह जगह जहां उसमें पर लगे होते हैं। २-मंगलाचार। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाजपक्षी।

पुंखित, पुङ्खित [वि.] (सं.) पंखों से युक्त (बाण) (तीर) जिसमें पर लगे हो।

पुंग, पुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) संग्रह। समूह। राशि

पुंगफल, पुङ्गफल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूंगीफल'।

पुंगल, पुङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा। जीव। रूह।

पुंगव, पुङ्गव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृष। बैल। २-एक औषध विशेष का नाम। [वि.] श्रेष्ठ। उत्तम।

पुंगवकेतु, पुङ्गवकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

पुंगीफल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूँगीफल'।

पुँछल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पूंछ के समान जुड़ी हुई वस्तु। दुम्बाला। २-सर्वदा साथ लगा रहने वाला। ३-पिछलग्गू। ४-साथ में जुड़ी अथवा लगी हुई वस्तु या व्यक्ति जिसकी इतनी आवश्यकता न हो।

पुँछवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पुछवाना'।

पुँछार* [संज्ञा पु.] (हिं.) मोर। मयूर।

पुँछाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पुछल्ला। दुंबाला। २-साथ न छोड़ने वाला। ३-पिछलग्गू। ४-अनावश्यक रूप के साथ में लगी या जुटी हुई वस्तु या व्यक्ति।

पुंज, पुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) समूह। ढेर।

पुंजदल, पुञ्जदल [संज्ञा पु.] (सं.) सुसना नामक साग।

पुंजशः, पुञ्जशः [अव्य.] (सं.) ढेर का ढेर। बहुत सा।

पुंजन, पुञ्जन [संज्ञा पु.] (हिं.) धीरे-धीरे जमा होकर बड़े परिमाण में होना। एक्यूम्यूलेशन।

पुंजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुच्छा। समूह। २-पूला। गट्ठा।

पुंजि, पुञ्जि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ढेर। समूह।

पुंजिक, पुञ्जिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओला। २-जमी हुई बर्फ।

पुंजित, पुञ्जित [वि.] (सं.) १-जमा या संग्रह किया हुआ। ढेर लगाया हुआ। २-मिलकर दबाया हुआ। ३-थोड़ा-थोड़ा जमा होकर अत्यधिक बढ़ा हुआ। एक्यूम्यूलेटेड।

पुँजी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूंजी'।

पुंजीभवन [संज्ञा पु.] (सं.) कैथोलिक धर्म का शासन।

पुंजीभूतशासन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वतंत्र धर्म-पद्धति विषयक शासन या अवस्था।

पुंड, पुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक अथवा शरीर पर पोतकर बनाया हुआ चिह्न। तिलक टीका। २-भारत के दक्षिण में रहने वाली एक जाति जो रेशम के कीड़े पालने का कार्य करती थी।

पुंडरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पुंडरी नामक पौधा।

पुंडरी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ शालपर्णी की पत्तियों के समान होती है। श्रीपुष्प। सानुज।

पुंडरीक, पुण्डरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल पुष्प, विशेषकर सफेद रंग का। २-सफेद छाता। ३-सफेद रंग। ४-आग्नेयी दिशा का दिग्गज। ५-चीता। ६-सफेद रंग का हाथी। ७-पुंडरिया नामक पौधा। ८-माथे पर साम्प्रदायिक तिलक। टीका। ९-जल का घड़ा। १०-श्वेत रंग का सर्प। ११-श्वेत कुष्ट। सफेद कोढ़। १२-सफेदा नामक आम। १३-धान विशेष। १४-कमंडलु। १५-हाथियों का ज्वर। १६-क्रौंचद्वीप का एक पर्वत। १७-एक तीर्थ स्थान जिसका महाभारत में उल्लेख है। १८-शर। बाण। १९-अग्नि। आग। २०-आकाश। २१-जैनियों के एक गणधर। २२-दौने का पौधा। २३-एक यज्ञ।

पुंडरीकाक्ष, पुण्डरीकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-(कमल के समान नेत्र वाले) विष्णु। २-एक जाति, जो रेशम के कीड़े पालने का काम करते हैं।

[वि.] (सं.) जिसके कमल के समान नेत्र हों।

पुंडरीयक, पुण्डरीयक [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्डरी नाम का पौधा।

पुंडर्य, पुण्डर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुंडरी नामक पौधा।

पुंड्र, पुण्ड्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल जाति की ऊख। २-कमल। ३-सफेद कमल। ४-माथे का तिलक। ५-भारत के एक प्राचीन प्रांत का नाम। ६-माधवीलता। ७-तिनिश वृक्ष। ८-तिलकवृक्ष।

पुंड्रक, पुण्ड्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईख की एक जाति। २-माथे का तिलक। टीका। ३-माधवीलता। ४-तिलकवृक्ष। ५-घोड़े की देह पर का एक चिह्न।

पुंड्रवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) पुंड्रदेश की प्राचीन राजधानी का नाम।

पुंड्रा, पुण्ड्रा [संज्ञा पु.] (सं.) भारत के एक प्रान्त का प्राचीन नाम और उस प्रांत के निवासी।

पुंड्राकेलि, पुण्ड्राकेलि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

पुंयान [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य द्वारा खैंचकर चलाई जाने वाली सवारी।

पुंमंत्र, पुमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह मन्त्र जिसके अन्त में 'नमः' या स्वाहा न हो।

पुंरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषों में श्रेष्ठ ।

पुंराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ राशियाँ ।

पुंलक्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुरुष के लक्षण वाली नपुंसक स्त्री ।

पुंलिंग, पुंलिङ्ग [संज्ञा पु.] १–पुरुष का चिह्न । २–व्याकरण के अनुसार वह शब्द जो पुरुष जाति अथवा उससे सम्बन्ध रखने वाले विशेषणों, क्रियाओं आदि का बोधक हो ।

पुंवत [अव्य.] (सं.) १–पुरुष की तरह । २–पुरुषवाची शब्द की तरह ।

पुंवत्सा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह स्त्री जिसके केवल लड़के ही होते हों ।

पुंवृष [संज्ञा पु.] (सं.) छछून्दर ।

पुंवेश [वि.] (सं.) पुरुष वेशधारी । [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष का वेश ।

पुंश्चल [संज्ञा पु.](सं.) व्यभिचारी पुरुष । लम्पट पुरुष ।

पुंश्चली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यभिचारिणी स्त्री । दुश्चरित्रा स्त्री । छिनाल । कुटला ।

पुंश्चलीय [संज्ञा पु.] (सं.) पुंश्चली का पुत्र । रंडी का लड़का ।

पुंस* [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष । नर ।

पुंसता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मर्दानगी ।

पुंसवन [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से दूसरा संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे मास किया जाता है । २–दूध । ३–गर्भपिंड । ४–भागवत के अनुसार वैष्णवों का एक व्रत ।

सवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. पुंसवती] पुत्रवाला । बेटे वाला ।

स्कामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो पति की चाहना रखती हो ।

पुंस्कोकिल [संज्ञा पु.](सं.) नर कोयल (पक्षी) ।

पुंस्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–पुरुषत्व । मर्दानगी । २–वीर्य । ३–पुरुष की स्त्री-संमागम की शक्ति ४–गंधतृण ।

पुंस्त्व-विग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) भूतृण नामक एक सुगंधयुक्त घास ।

पुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) आटे को मीठे रस में सान कर उतारी हुई पूरी ।

पुआई [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक सदाबहार पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है । [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-(रोटी) पोने की क्रिया या भाव । २-रोटी पोने की मजदूरी ।

पुआल [संज्ञा पु] (देश.) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी पीले रंग की और मजबूत होती है । [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'पयाल' ।

पुकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.)१–किसी को पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव । हाँक । टेर । २–किसी की रक्षा, सहायता या प्रतिकार आदि के लिए बुलाना । दुहाई । ३–किसी वस्तु की बहुत अधिक मांग ।

पुकारना [क्रि. स.] (हिं.) १–नाम लेकर बुलाना या आवाज देना । ऊंचे स्वर से संबोधन करना । २–नाम उच्चारण करना । नाम रटना ३–चिल्लाकर कहना, मांगना, सुनाना अथवा बुलाना । ४–फरियाद करना । अभियोग लगाना ।

पुक्कश, पुक्कष, पुक्कस [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री. पुक्कशी, पुक्कषी, पुक्कसी] १–वर्णसंकर जाति विशेष । २–नीच । ओछा ।

पुक्कसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कालिमा । कालापन । नील नामक पौधा ।

पुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुष्य' ।

पुखता [वि.] (हिं.) देखो 'पुख्ता' ।

पुखर* [संज्ञा पु.] (हिं.) पोखर । तालाब ।

पुखराज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रत्न जो पीले रंग का होता है । पीत-मणि ।

पुख्तगी [संज्ञा स्त्री.] (फा) पुख्ता होने का भाव । दृढ़ता । मजबूती ।

पुख्ता [वि.] (फा.) पक्का । दृढ । मजबूत ।

पुगना [क्रि. अ.] (हिं.) पूरा होना ।

पुगाना [क्रि. स.] पूरा करना ।

पुचकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्यार जताने के लिए ओठों से निकला हुआ चूमने का-सा शब्द । चुमकार ।

पुचकारना [क्रि. स.] (हिं.) चूमने का-सा शब्द करते हुए प्यार जताना । चुमकारना ।

पुचकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुचकारने या चुमकारने का शब्द ।

पुचरस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कई धातुओं का मेल ।

पुचकारना [क्रि. स.] (हिं.) पुचारा फेरना या देना । पोतना ।

पुचारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–तर कपड़े से पोंछने अथवा पतला लेप करने की क्रिया । २–हलका लेप या चढ़ाई हुई पतली तह । ३–वह तर कपड़ा जिससे पोता जाता है । ४–पानी में घोली हुई पतली वस्तु जो पोतने के काम में आती है । ५–प्रसन्न अथवा उत्साहित करने के लिए कही जाने वाली बात । ६–ठकुरसुहाती । चापलूसी । झूठी प्रशंसा ।

पुच्छंतक, पुच्छन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) तक्षक वंश का एक नाग ।

पुच्छ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दुम । पूँछ । २–किसी वस्तु का छोर । ३–किसी वस्तु का पीछे का भाग ।

पुच्छकंटक, पुच्छकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) बिच्छू

पुच्छटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उंगली चटकाना ।

पुच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मणकंद ।

पुच्छफल [संज्ञा पु.] (सं.) बेर का पेड़ ।

पुच्छमूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूंछ की जड़ ।

पुच्छल [वि.] (हिं.) पूँछ वाला । दुमदार । पुच्छलतारा–वह तारा जिसके कोहरे की सी पूँछ दूर तक दिखाई दे

पुच्छाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) पूँछ की नोक ।

पुच्छिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) माषपर्णी । उड़द ।

पुच्छी [वि.] (सं.) पूंछ वाला । दुमदार । [संज्ञा पु.] (सं.) १–मुर्गा । २–आक

पुच्छल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पूंछ के जोड़ी हुई वस्तु । २–बड़ी दुम । पीछे लगा रहने वाला । ४–व्यर्थ रूप से पूंछ के समान लगी हुई खुशामद से पीछे लगा रहने वाला । ६–जुलाहे की लपेटन के बाँई ओर

पुछवैया [वि.] (हिं.) १–पूछने वाला । खबर लेने वाला ।

पुछार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पूछने वा महत्व समझकर आदर करने वाला । देखो 'पुँछार' ।

पुछिया [संज्ञा पु.] (हिं.) दुंबा । मेढ़ा ।

पुछैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पूछने वा खोज-खबर लेने वाला ।

पुजंता* [वि.] (हिं.) पूजने या पूजा करने पूजक ।

पुजना [क्रि. अ.] (हिं.) १–पूजा जाना । नित होना । ३–पूरा होना । पुगना ।

पुजवना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १–पुजाना पूरा करना । ३–सफल या सिद्ध करना रथ आदि) ।

पुजवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–पूजने का दूसरे से कराना । २–अपनी पूजा सम्मान कराना ।

पुजाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पूजने की भाव । २–पूजने की उजरत या मजदूरी

पुजाना [क्रि. स.] (हिं.) १–पूजा प्रवृत्त करना । २–अपनी पूजा या प्रतिष्ठा ३–किसी को दबाकर उससे धन वसूल ४–भर देना । ५–पूरा करना । कमी पूरी ६–परिपूर्ण करना । सफल करना ।

पुजापा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देवपूजन की सामग्री । २–वह झोली या पात्र जिसमें की सामग्री रखी जाती है । पुजाड़ी । पुजापा फैलाना–१–बखेड़ा फैलाना । रहित इधर-उधर वस्तुओं को फैलाकर

पुजारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पूजा करने पूजक । २–वह जो देवालय में ठाकुर पूजा करने के लिये नियुक्त हो । ३–किसी देवता के समान मानकर उसकी भक्ति वाला । उपासक ।

पुंजाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह झोली

जिसमें पूजा की सामग्री रखी जाती है।

पुजेरी [संज्ञा पु.] (हिं) पुजारी।

पुजैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पूजा करने वाला। २-भरने या पूरा करने वाला। + [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पुजाई'।

पुजौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देवता को पूजा के समय अर्पित करने की सामग्री। २-पूजन। अर्चा।

पुट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु को मुलायम या तर करने या हलका मेल मिलाने के लिए दिया जाने वाला छींटा। २-बहुत हलका मेल या मिश्रण। भावना। + [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढकने वाली वस्तु। आच्छादन। २-गोल गहरा बरतन। दोना। कटोरा। ३-कटोरे के समान या दोने के आकार की वस्तु। ४-औषध पकाने का मुंह बन्द बरतन। ५-घोड़े की टाप। ६-अंतरौटा। ७-एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण और एक यगण होता है। ८-जायफल ९-कटोरे के आकार के दो बराबर बरतनों को मुंह मिलाकर जोड़ने से बना हुआ बन्द घेरा। संपुट।

पुटकंद, पुटकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) कोलकंद। बाराहीकंद।

पुटक [संज्ञा पु.] (सं.) कमल। (शेष अर्थ पुट के समान)।

पुटकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमलिनी। २-कमलसमूह। ३-वह देश जहां कमलों की अधिकता हो।

पुटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पोटली। गठरी। २-अकस्मिक मृत्यु। दैवी विपत्ति। ३-तरकारी के रसे को गाढ़ा करने के लिये मिलाया हुआ बेसन या आटा। आलन।

(किसी पर) पुटकी पड़ना-१-असामयिक मृत्यु होना। २-विपत्ति आना (स्त्री)।

पुटग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-घड़ा। कलसा। २-तांबे का बरतन।

पुटपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैद्यक में वह क्रिया जो औषध को पत्ते के दोने में पकाने के लिए रखकर की जाती है। २-औषध विशेष को भस्म आदि बनाने के लिए मुँह बंद बरतन में रख उसे गड्ढे के अन्दर पकाने का विधान। ३-इस प्रकार तैयार की हुई रस या औषध।

पुटभेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल का भँवर। २-नगर। कसबा। ३-एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

पुटभेदक [संज्ञा पु.] (सं.) परतदार पत्थर।

पुटरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पोटली'।

पुटरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पोटली'।

पुटली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पोटली'।

पुटालु [संज्ञा पु.] (सं.) कोलकंद।

पुटास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पोटाश'।

पुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इलायची। २-संपुट। पुड़िया।

पुटित [वि.] (सं.) १-सुकड़ा हुआ। २-सिला हुआ। ३-जो सिमटकर या सुकड़कर दोने के आकार का हो गया हो। ४-पटा हुआ। ५-बंद।

पुटिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फेनी नामक मिठाई।

पुटिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

पुटियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) फुसलाना।

पुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कटोरा या छोटा दोना। २-खाली स्थान जिसमें कोई चीज रखी जा सके। ३-कौपीन। लंगोटी। ४-पुड़िया।

पुटीन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का मसाला जो किवाड़ के शीशे बैठाकर लगाया जाता है, और छेद आदि भरने के काम आता है।

पुटोदक [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल।

पुट्टी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का झाबा जिससे मछली पकड़ी जाती हैं।

पुट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चूतड़ के ऊपर का भाग जो कुछ कड़ा होता है। २-चौपायों विशेषतः घोड़ों का चूतड़ वाला भाग। ३-घोड़ों की संख्या के लिए शब्द। ४-किसी पुस्तक की जिल्द का पृष्ठ भाग। ५-पुट्ठे पर का चमड़े का भाग। (चर्मकार)।

पुट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) गाड़ी के पहिये का वह भाग जिसमें आरे जड़े होते हैं।

पुठवार [क्रि. वि.] (हिं.) १-पीछे। २-बगल में।

पुठवाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चोरों के दल में का वह बलिष्ठ चोर जो सेंध के मुँह पर पहरे के लिए नियुक्त किया जाता है। २-भले-बुरे काम का सहायक। पृष्ठरक्षक। मददगार।

पुड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पुड़ी, पुड़िया] १-बंडल या पुड़िया। २-ढोल मढ़ने का चमड़ा।

पुड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कागज मोड़कर या लपेटकर बनाया हुआ वह संपुट जिसके भीतर कोई वस्तु रखी हो। २-इस प्रकार लपेटी हुई दवा की एक मात्रा या खुराक। ३-खान। भंडार। ४-धन-संपत्ति और पूंजी।

पुड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढोल मढ़ने का चमड़ा।

पुण्य [वि.] (सं.) १-पवित्र। २-शुभ। मंगलात्मक। [संज्ञा पु.] १-धार्मिक विचार से शुभ फलदायक कार्य। धर्म-कार्य। २-ऐसे शुभ कार्य का फल। ३-परोपकार आदि का काम।

पुण्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह व्रत जिससे पुण्यफल की प्राप्ति होती है। २-पुत्रवती द्वारा किये गये वह उपचार या व्रत जो अपने पुत्र की मंगल कामना के हेतु करती है। ३-विष्णु।

पुण्यकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्य या शुभ कार्य करने वाला व्यक्ति।

पुण्यकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) वह काम जिसके करने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। मंगलात्मक कार्य।

पुण्यकर्मी [वि.] (सं.) पुण्य या शुभ कार्य करने वाला। पुण्यात्मा।

पुण्यकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दान-पुण्य का समय। २-शुभकार्य करने का समय।

पुण्यकीर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुण्य कथन। २-विष्णु।

पुण्यकीर्ति [वि.] (सं.) शुभ नाम या नामवरी वाला। प्रसिद्ध। प्रख्यात।

पुण्यकृत् [वि.] (सं.) पुण्यात्मा। धर्मात्मा। नेक।

पुण्यकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) शुभकाय। धर्मकार्य।

पुण्यक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर्थ स्थान। २-(पुण्यभूमि) आर्यवर्त का नाम।

पुण्यगंध, पुण्यगन्ध [वि.] (सं.) मधुर सुगंधियुक्त।

[संज्ञा पु.] (सं.) चंपा।

पुण्यगंधा, पुण्यगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनजुही का फूल।

पुण्यगंधि, पुण्यगन्धि [वि.] (सं.) मधुर सुगंधयुक्त।

पुण्यगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

पुण्यगृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह घर जहाँ दीन दरिद्रों को खैरात बाँटी जाती है। २-देवालय मंदिर।

पुण्यजन [संज्ञा पु] (सं.) १-धर्मात्मा आदमी। सज्जन। २-दानव। दैत्य। ३-यक्ष।

पुण्यजनेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

पुण्यजित [वि.] (सं.) धर्म कर्म से जीता हुआ।

[संज्ञा पु.] (सं.) पुण्य द्वारा प्राप्त चन्द्रलोक आदि।

पुण्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुण्य या शुभ कर्म का भाव। पवित्रता।

पुण्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्यता। पवित्रता।

पुण्यदर्शन [वि.] (सं.) जिसके दर्शन का फल शुभ या मंगलमय हो।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-देवालय में ठाकुरजी के दर्शन। २-नीलकंठ पक्षी। (कहा जाता है कि विजयदशमी के दिन इस के दर्शन से पुण्य होता है।)

पुण्यनामी [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

पुण्यपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्यात्मा या धर्मात्मा आदमी।

पुण्यप्रताप [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्य या अच्छे कर्म का प्रभाव।

पुण्यप्रद [वि.] (सं.) पुण्यफल देने वाला।

पुण्यफल [संज्ञा पु.] (सं.) सत्कर्मों का पुरस्कार।

पुण्यभाज [वि.] (सं.) धर्मात्मा। नेक।

पुण्यभू, पुण्यभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पवित्र

स्थान। तीर्थ स्थान। २-आर्यावर्त्त देश।

पुण्यरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) पवित्र रात।

पुण्यवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. पुण्यवती] १-सुकर्मी धर्मात्मा। २-भाग्यवान। ३-सुखी।

पुण्यलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

पुण्यशकुन [संज्ञा पु.] (सं.) शुभ शकुन या चिह्न

पुण्यशील [वि.] (सं.) अच्छे या सुन्दर चरित्र या यशवाला।

पुण्यश्लोक [वि.] (सं.) (पुण्यश्लोका) पवित्र एवं शिक्षाप्रद जीवन वृत्तान्त वाला। पवित्र चरित्र या आचरण वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नल। २-युधिष्ठिर। ३-विष्णु।

पुण्यश्लोका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीता। २-द्रौपदी।

पुण्यस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पवित्र स्थान। तीर्थस्थान। २-देवालय। ३-जन्मकुंडली में लग्न से नवां स्थान।

पुण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तुलसी का पौधा। २-पुनपुना नामक नदी।

पुण्याई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुण्य का फल या प्रभाव।

पुण्यात्मा [वि] (सं.) जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। धर्मात्मा। नेक।

पुण्यालंकृत, पुण्यालङ्कृत [वि.] (सं.) धर्मात्मा। नेक।

पुण्याह [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्ददायक मङ्गल दिवस। सुदिन।

पुण्याहवचन [संज्ञा पु.] (सं) देवकर्म के अनुष्ठान के पहले मंगल के लिए 'पुण्याह' शब्द तीन बार कहना।

पुण्योदय [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्य या शुभ कर्मों का उदय।

पुत [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक जिसमें वे जीव डाले जाते हैं जो अ-पुत्रक हैं।

पुतना [क्रि. अ.] (हिं.) पुताई होना। पोता जाना।

पुतारा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुतला'।

पुतरिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुत्तलिका'।

पुतरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुतली'।

पुतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुतली'।

पुतला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पुतली] घास, कपड़े या लकड़ी आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार अथवा मूर्ति।

(किसी का) पुतला बाँधना-निंदा या बदनामी करते फिरना। *पुतला जलाना*-१-किसी का शव प्राप्त न होने की अवस्था में पुतले का दाहकर्म करना। २-किसी के प्रति घृणा प्रकट करने या मरण मनाने के लिये उसका पुतला बनाकर फूंकना।

पुतली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्री की आकृति का पुतला। २-छोटा पुतला। गुड़िया। ३-आंख के बीच का काला दाग। ४-कपड़ा बुनने की कल अथवा मशीन। ५-वह शब्द जो स्त्री की सुकुमारता तथा सुन्दरता सूचित करने के लिए व्यवहृत होता है। ६-घोड़े की टाप का मांस जो मेंढक सा निकला होता है।

पुतलीघर [संज्ञा पु.] (सं.) कारखाना विशेषतः वह कारखाना जिसमें कपड़े बुनने की मशीनें लगी हों।

पुताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पोतने की क्रिया या भाव। २-दीवार आदि पर मिट्टी, चूने आदि की पतली तह चढ़ाने या पोतने का काम। ३-पोतने की मजदूरी।

पुतारा [संज्ञा पु.] (हि.) पुचारा।

पुत्त* [संज्ञा पु.] (हि.) पुत्र।

पुत्तरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुत्री। २-पुतली।

पुत्तल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुत्तली] पुतला।

पुत्तलक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुत्तलिका] पुतला।

पुत्तलदहन [संज्ञा पु.] (सं.) अप्राप्त मृतक के बदले उसका पुतला बनाकर जलाना।

पुत्तलिका, पुत्तली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुतली। २-गुड़िया।

पुत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मधुमक्षिका। २-दीमक।

पुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुत्री] बेटा। पुत। लड़का।

पुत्रकंदा, पुत्रकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मणकंद जो गर्भदोष दूर करने के लिए उपकारी औषध है।

पुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा पुत्र या बच्चा। २-टिड्डी। फतिंगा। ३-शरभ जंतु। ४ दौने का पौधा।

पुत्रकाम [वि.] (सं.) पुत्र की कामना रखने वाला पुत्राभिलाषी।

पुत्रकामेष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्रप्राप्ति के लिए किया जाने वाला यज्ञ विशेष।

पुत्रकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र से सम्बन्ध रखने वाली रीति या रस्म।

पुत्रकृतक [संज्ञा पु.] (सं.) गोद लिया हुआ बेटा

पुत्रघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुत्रघाती स्त्री। २-एक योनि रोग जिसके कारण गर्भ नहीं ठहरता।

पुत्रजात [वि.] (सं.) जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो पुत्र वाला।

पुत्रजीव [संज्ञा पु.] (सं) पुतजिया नामक वृक्ष जिसकी छाल और बीज दवा के काम में आते हैं। यष्टीपुष्प।

पुत्रजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्रजीववृक्ष।

पुत्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुत्र का भाव। २-पुत्र का धर्म।

पुत्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाँझककोड़ा या खेखसा। २-सफेद भटकटैया। ३-लक्ष्मणकंद। ४-जीवंती।

पुत्रदात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक लता वि २-श्वेत कंटकारि।

पुत्रपौत्र [संज्ञा पु.] (सं.) लड़के पोतों का दाय।

पुत्रप्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद भटकटैया।

पुत्रभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी जीवंती।

पुत्रभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्रता। २- पंचम स्थान का विचार। (फलित ज्योतिष)

पुत्रलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र की प्राप्ति।

पुत्रवत [वि.] (सं.) पुत्र के समान। पुत्र तुल्य।

पुत्रवती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] पुत्रवाली। जि के पुत्र हो।

पुत्रवत्सल [वि.] (सं.) पुत्र के प्रति प्रेम रखने वाला।

पुत्रवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्र की स्त्री।

पुत्रभृंगी, पुत्रभृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंघी।

पुत्रश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

पुत्रसख [संज्ञा पु] (सं.) वह पुरुष जो लड़कों मित्रवत् व्यवहार करता हो।

पुत्रसहस्र [संज्ञा पु.] (हि.) पचास प्रकार के में से एक। (नीलकण्ठताजिक)।

पुत्रहीन [वि.] (हिं.) जिसके कोई पुत्र न हो।

पुत्रादी [वि.] (सं.) [स्त्री. पुत्रादिनी] पुत्र खा जाने वाला। (गाली के रूप में)।

पुत्रान्नाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र की पर निर्वाह करने वाला। २-कुटीचक संन्या

पुत्रार्थी [वि.] (सं.) पुत्र की कामना रखने वा

पुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लड़की। बेटी। २- पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या। ३-गुड़िया। ४-आँख की पुतली। ५- चित्र।

पुत्रिकापत्र, पुत्रिकासुत [संज्ञा पु.] (सं.) लड़की का पुत्र जो अपने नाना की गोद हो। २-वह लड़की जो अपने पिता के पुत्र रूप में हुई हो।

पुत्रिकाप्रसू [संज्ञा स्त्री.] ऐसी माता जिसे कन्याएँ ही हों, पुत्र न हों।

पुत्रिकाभर्तृ [संज्ञा पु.] (सं.) जामाता। दामाद।

पुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या। लड़की। बेटी। [वि.] (हि.) [स्त्री. पुत्रिणी] पुत्रों वाला।

पुत्रीय [वि] (सं.) पुत्र-संबंधी।

पुत्रीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्र प्राप्ति की कामना या अभिलाषा।

पुत्रेष्ठि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्र प्राप्ति की कामना से किया जाने वाला यज्ञ।

पुत्र्य [वि.] (सं.) पुत्र-संबंधी।

पुदीना [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगंधित पत्तियों वाला एक छोटा पौधा जो जमीन पर फैलता है और चटनी आदि में डाला जाता है।

पुद्गल-[संज्ञा पु] (सं.) १-परमाणु। २-शरीर। ३-आत्मा। जीव। ४-शिव का नाम। ५-गंधतृण। ६-जैन-मतानुसार छः प्रकार के द्रव्यों में से एक। [वि.] सुंदर। मनोहर।

पुद्गलास्तिकाय [संज्ञा पु.] जगत के समस्त रूपवान् जड़ पदार्थों की समष्टि।

पुनः [अव्य.] (हिं.) १-फिर। दूसरी बार। दोबारा। २-पीछे। उपरान्त। अनंतर।

पुनःकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से या दूसरी बार कोई कार्य करना। २-दोहराना।

पुनःखुरी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रोग जो घोड़े के पैरों में होता है इसमें घोड़े की टाप फैल जाती है और वह लड़खड़ाकर चलता है।

पुनःपराजय [संज्ञा पु.] (सं.) फिर से पराजय या हार।

पुनःपुनः [क्रि. वि.] (सं.) बार-बार।

पुनःपुना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गया की पुनपुना नामक नदी।

पुनःप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोई, भेजी या गई हुई वस्तु फिर से मिलना। *रिकवरी*।

पुनःसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) उपनयन आदि संस्कार जो दोबारा किये जायँ।

पुन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पुण्य। धर्म। सबाब। +[अव्य.] पुनः। फिर। दोबारा।

पुनना [क्रि. स.] (हिं.) बुरा-भला कहना।

पुनपुना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिहार या मगध की एक छोटी नदी का नाम जो पवित्र मानी जाती है।

पुनरपि [क्रि. वि.] (हिं.) फिर भी।

पुनरबस, पुनरबसु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुनर्वसु'।

पुनरभिधान [संज्ञा पु.] (सं.) दुबारा कथन।

पुनरागत [वि.] (सं.) फिरा हुआ। लौटा हुआ।

पुनरागमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से या दोबारा आना। २-फिर जन्म ग्रहण करना। संसार में फिर से आना।

पुनरादान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी गई, भेजी अथवा खोई वस्तु का पुनः प्राप्त करना। *रिकवरिंग*।

पुनरादि [वि.] (सं.) प्रथम। पहला।

पुनरादेय [वि.] (सं.) पुनः प्राप्त करने योग्य। *रिकवरेबल*।

पुनरायन [संज्ञा पु.] (सं.) पुनरागमन।

पुनरारंभ, पुनरारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) स्थगित किया हुआ अथवा छोड़े हुए कार्य को पुनः आरम्भ करना। *रिजंपशन*।

पुनरावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्कर। २-पुनरागमन।

पुनरावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौटकर आना। २-बराबर संसार में जन्म ग्रहण करना।

पुनरावर्ती [वि.] (सं.) १-बारंबार आने वाला। २-फिर जन्म लेने वाला।

पुनरावृत्त [वि.] (सं.) १-फिर से कहा हुआ। २-दोहराया हुआ।

पुनरावृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फिर से लौटकर अथवा घूमकर आना। २-किये हुए काम को फिर से करना। दोहराना। ३-फिर से दुबारा पढ़ना। पुनः पाठ। दोहराना।

पुनरावृत्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार यह माना जाता है कि वह बार-बार संसार में कर्मानुसार जन्म-ग्रहण करता है।

पुनरावृत्तिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) पुनरावृत्तिवाद सिद्धांत को मानने या विश्वास करने वाला।

पुनरावेदक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी न्यायालय के निर्णय से संतुष्ट न होने पर दोबारा उससे उंच्च न्यायालय में पुनरावेदन करने वाला व्यक्ति। *एंपेलेंट*।

पुनरावेदन [संज्ञा पु] (सं.) किसी न्यायालय के निर्णय से संतुष्ट न होने पर पुनर्विचार के लिए उच्च न्यायालय से प्रार्थना करना। अपील करना। *अपील*।

पुनरावेदन-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अपील सुनवाई का अधिकार-क्षेत्र।

पुनरावेदन-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्यायालय जहां किसी अभियोग पर पुनविचार के लिए प्रार्थना की जाती है या प्रार्थनापत्र उपस्थित किया जाता है। *अपील-कोर्ट*।

पुनरावेदी [संज्ञा पु.] (सं.) अपील करने या पुनर्विचार के लिए प्रार्थना करने वाला। पुनरावेदक। *अपीलर*।

पुनरावेद्य [वि.] (सं.) पुनरावेदन करने योग्य। *अपीलेबल*।

पुनरासीन [वि.] (सं.) जो एक बार अपने स्थान से हटने अथवा हटाये जाने पर दोबारा उस स्थान पर आकर बैठे अथवा लाकर बैठाया जाय। *रिसीटेड*।

पुनराहार [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरी बार भोजन।

पुनरीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से देखना। २-न्यायालय का एक बार सुने हुए मुकदमें को, फिर से सुनना। *रिवीजन*।

पुनरुक्त [वि.] (सं.) १-फिर से कहा हुआ। २-दोहराया हुआ।

पुनरुक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दोहराने की क्रिया। २-साहित्य में वह दोष जो एक वाक्य को दुबारा कहने से होता है।

पुनरुक्तवदाभास [संज्ञा पु.] (सं.) एक शब्दालंकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पड़े तरन्तु वस्तुतः ऐसा न हो।

पुनरुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बार कही हुई बात को दुबारा कहना। दुबारा कही हुई बात *रिपीटीशन*।

पुनरुज्जीवन [संज्ञा. पु.] (सं.) फिर से जीवित होना

पुनरुज्जीवित [वि.] (सं.) फिर से जीवनदान प्राप्त किया हुआ।

पुनरुत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से उठना। २-पतन होने के उपरान्त फिर से उठना, उन्नति करना अथवा समर्थ होना।

पुनरुत्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुनर्जन्म।

पुनरुद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) टूटी फूटी अथवा नष्ट हुई वस्तु को पनः यथावत ठीक करना या उद्धार करना। *रेस्टोरेशन*।

पुनर्ग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुनरुक्ति। २-छोड़ा हुआ काम या पद फिर से ग्रहण करना। *रिजम्पशन*।

पुनर्घटन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु को फिर से रचा अथवा बनाया जाना।

पुनर्जन्म [संज्ञा पु.] (सं.) मरने के बाद फिर से दूसरे शरीर में जन्मग्रहण करना। फिर से दूसरा शरीर धारण करना।

पुनर्जागरण [संज्ञा पु.] (सं.) फिर से जाग्रत होना उन्नति करने के लिए फिर से समर्थ होना।

पुनर्जात [वि.] (सं.) फिर से उत्पन्न।

पुनर्जीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से जीवित होना। २-फिर से दूसरा शरीर धारण करना

पुनर्णव [संज्ञा पु.] (सं.) नाखून। जो बार-बार उत्पन्न हो।

पुनर्देशावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरे देश में जा बसने के उपरांत फिर से अपने देश में आ बसना। २-स्वदेश प्रत्यागमन। अपने देश में वापस लौट आना।

पुनर्नवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियां चौलाई के समान गोल होती हैं।

पुनर्निर्माण [संज्ञा पु.] (सं.) गिरे या टूटेफूटे को दुबारा बनाना।

पुनर्निर्यात [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से देश से बाहर माल भेजना। २-फिर से देश से बाहर ले जाने वाला माल। *रि-एक्सपोर्ट*।

पुनर्निर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) दुबारा चुनाव।

पुनर्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर होना। २-नाखून। ३-रक्तपुनर्नवा। [वि.] जो फिर से हुआ हो।

पुनर्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) मरणोपरांत फिर से जन्म।

पुनर्भू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विधवा स्त्री

जिसका विवाह पति के मरने के उपरान्त अन्य पुरुष से हुआ हो।

पुनर्मुद्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-छपे हुए , पत्रिका ग्रंथ आदि को दुबारा छापने की क्रिया या भाव। २-इस प्रकार दुबारा छापे हुए लेख पत्रिका या ग्रन्थ आदि। *रि-प्रिंट*।

पुनर्मुद्रणाधिकार [संज्ञा पु.](सं.) कानून के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन के प्रकाशन अथवा अनुवाद आदि का वह स्वत्व जो उसके ग्रंथकार अथवा उसके प्रकाशक को बारबार या फिर से छापने का प्राप्त होता है। *काँपी-राइट*।

पुनर्वसु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ। २-शिव। ३-विष्णु। ४-एक लोक का नाम। ५-कात्यायन मुनि का एक नाम।

पुनर्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) किसी न्यायालय के निर्णय से संतुष्ट न होने पर पुनर्विचार के लिए उच्च न्यायालय से प्रार्थना करना। अपील करना। *अपील*।

पुनर्वादी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी न्यायालय के निर्णय से संतुष्ट न होने पर दोबारा विचार करने के लिए प्रार्थना करने वाला। *एपेलेंएट*।

पुनर्वास [संज्ञा पु.] (सं.) किसी एक स्थान से उजड़ या उखड़ जाने की अवस्था में दूसरे स्थान पर पुनः बसना या आबाद होना।

पुनर्वासन [संज्ञा पु.] (सं.) (विस्थापित लोगों को) फिर से बसाना या आबाद करना।

पुनर्वास-संत्रालय, पुनर्वास-मन्त्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह कार्यालय जो पुनर्वास-मंत्री के अधीन होता है और उसमें विस्थापित लोगों को फिर से बसाने का कार्य होता है।

पुनर्वास-मंत्री, पुनर्वास-मन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश की प्रांतीय या केन्द्रीय मंत्रीमंडल का वह मंत्री जिसके अधीन विस्थापित लोगों को फिर से बसाने कार्य होता है।

पुनर्वास-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पुनर्वास-मंत्री'।

पुनर्विचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से विचार करना। २-न्यायालय का एक बार सुने हुए मुकदमे को कुछ विशेष अवस्थाओं में फिर से सुनना। *रिवीजन*।

पुनर्विचार-कर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्यायकर्ता जो न्यायालय में एक बार हुए मुकदमे को कुछ विशेष अवस्था में फिर से विचार करने के लिए सुने।

पुनर्विचार-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्यायालय जिसमें किसी निम्न श्रेणी के न्यायालयों के निर्णय के विरुद्ध फिर से विचार करने के लिए प्रार्थना की जाती है। *कोर्ट ऑफ़ अपील*।

पुनर्वितरण [संज्ञा पु.] (सं.) फिर से बाँटना या वितरण करना। *रि-डिस्ट्रीब्यूशन*।

पुनर्विधान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का फिर से रचाया-बनाया जाना। पुनर्घटन।

पुनर्विधायन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बने हुए विधान को फिर से घटा अथवा बढ़ाकर नवीन रूप देना। *री-एनैक्टमेंट*।

पुनर्विधायित [वि.] (सं.) १-जिसका फिर से विधान किया गया हो। २-(पहले के बने हुए विधान को) घटा या बढ़ाकर फिर से बनाया गया हो। *रि-ऐक्टेड*।

पुनर्विलोकन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिर से देखना। २-न्यायालय का एक बार सुने हुए अभियोग को, कुछ विशेष अवस्थाओं में, फिर से या नये सिरे से सुनना। *रिव्यू*।

पुनर्विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्त्री के पति द्वारा छोड़ देने या तलाक देने अथवा पति के मर जाने की अवस्था में होने वाला दूसरा विवाह।

पुनर्वाँसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पूर्णमासी'।

पुनि* [क्रि. वि.] (हिं.) फिर। पुनः। दोबारा। *पुनि पुनि*–बार-बार।

पुनी*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पुण्यात्मा।
*[संज्ञा स्त्री.] (हिं) पूर्णिमासी।
*[क्रि. वि.] (हिं.) पुन। फिर।

पुनीत [वि.] (सं.) पवित्र। पाक।

पुन्न [संज्ञा पु.] (हिं.) पुण्य।

पुन्नाग [संज्ञा पु.](सं.) १-सुलताना चम्पा नामक एक सदाबहार वृक्ष जिसकी टहनियों के सिरे पर लाल रंग के फूल गुच्छों में लगते हैं। २-श्वेत कमल। ३-जायफल। ४-पुरुषश्रेष्ठ।

पुन्नाट, पुन्नाड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकवँड़ का पौधा। २-दिगंबर जैन संप्रदाय का एक संघ ३-कर्नाटक के पास के एक देश का नाम।

पुन्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पुण्य'।

पुन्यता, पुन्यताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धर्मशीलता। २-पवित्रता। ३-पुण्य का फल या प्रभाव।

पुपली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाँस की पतली और पोली नली।

पुप्पुट [संज्ञा पु.] (सं.) तालु का एक रोग।

पुप्फुल [संज्ञा पु.] (सं.) उदरस्थ वायु। जठर-वात

पुप्फुस [संज्ञा पु.] (सं.) १-कँवलगट्टे का छत्ता २-फुप्फुस।

पुमान् [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष। नर। मर्द।

पुरंजन, पुरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) जीवात्मा।

पुरंजय, पुरञ्जय [वि.](सं.) पुर को जीतने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

पुरंदर, पुरन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का नाम। २-(घर में सेंध लगाने वाला) चोर। ३-पुर, नगर अथवा घर को तोड़ने वाला। ४-विष्णु ५-ज्येष्ठानक्षत्र। ६-चव्य। चई। ७-मिर्च।

पुरंदरा, पुरन्दरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा का नाम।

पुरंध्रि (ध्री), पुरन्ध्रि (ध्री) [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति पुत्र, कन्या आदि से भरीपूरी स्त्री। २-स्त्री

पुरः [अव्य.] (हिं.) १-आगे। २-पहले।

पुरःदत्त [वि.] (सं.) पहले से दिया या चुकाया हुआ। (शुल्क, परिव्यय आदि) प्री-पेड।

पुरःदान [संज्ञा पु.] (सं.) (शुल्क, देन आदि) पहले से देना या चुकाना। प्री-पेमेंट।

पुरःसंगी, पुरःसङ्गी [वि.] (सं.) किसी कां विषय कथवा तथ्य में उससे पूर्व, सहगामी अथवा संबंध रूप में होने वाला। एक्सेसरी बिफोर दी फैक्ट।

पुरःसर [वि.] (सं.) १-अगुआ। अग्रगामी। २-संगी। साथी। ३-मिला हुआ। समन्वित। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्रगमन। २-साथ।

पुरःस्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्तुत करना। २-सामने रखना। इन्ट्रोडयूस।

पुरस्थापना [संज्ञा पु.] (सं.) जारी करना।

पुर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुरी] १-नगर। शहर। कसबा। २-घर। आगार। जैसे-अंतःपुर। ३-कोठा। अटारी। ४-लोक। भुवन। ५-देह। शरीर। ६-मोथा। ७-गुग्गुल। ८-नक्षत्र। पुंज। राशि। ९-पुरवट। मोट। १०-पीली कटसरैया। ११-दुर्ग। किला। [वि.] (फा.) पूर्ण।

पुरहन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमल का पत्ता। २-कमल।

पुरकायस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारत में किसी नगर का वह प्रधान अधिकारी जिसके पास (आधुनिक रजिस्टार के समान) दस्तावेजों की प्रतिलिपि या नकल रहती थी।

पुरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पुरखी, पुरखिन] १-पूर्वज। पूर्वपुरुष। २-घर का बड़ा-बूढ़ा आदमी।
पुरखे तर जाना–(संतान के शुभ कार्यों से) पूर्व पुरुषों को उत्तम गति प्राप्त होना।

पुरग [वि.] (सं.) १-नगर में जाने वाला। २-अनुकूल।

पुरगुर [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी के खिलौने बनते हैं। यह बंगाल के उत्तर पूर्व में पाया जाता है।

पुरचक [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-पुचकार। चुमकार। २-प्रोत्साहन। बढ़ावा। ३-प्रेरणा। ४-हिमायत। पृष्ठपोषण।

पुरजा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-टुकड़ा। खंड। २-कटा हुआ टुकड़ा या धज्जी। ३-अवयव। भाग। अंश। ४-चिड़ियों के महीन पर।
चलता पुरजा–चालाक या होशियार आदमी।
पुरजे-पुरजे करना–टुकड़े-टुकड़े करना।

पुरजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिवजी का नाम। २-

एक राजा का नाम। ३-कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

पुरट [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

पुरण [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

पुरतः [अव्य.] (सं.) १-पूर्व। पहले। सामने। २-पीछे से।

पुरतटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा ग्राम जिसमें बाजार या पैंठ लगती हो।

पुरतोरण [संज्ञा पु.] (सं.) नगर की बहिर्द्वार।

पुरत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) शहर के चारों ओर पर-कोट की दीवार जो रक्षा के निमित्त बनाई जाती है। कोट। शहरपनाह।

पुरद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) शहरपनाह का फाटक।

पुरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-पूरा होना। समाप्त होना। २-पूरा पड़ना।

पुरनियाँ+ [वि.] (हिं.) वृद्ध। बुड्ढा।

पुरनिवेश [संज्ञा पु.] नगर की नीव डालना।

पुरनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छल्ला जो अंगूठे में पहना जाता है। २-तुरही। ३-बन्दूक का गज।

पुरपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर का रक्षक। कोतवाल। २-जीव।

पुरबला, पुरबुला+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. पुरबली, पुरबुली] १-पूर्व का। पहले का। २-पूर्व जन्म का।

पुरबा [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'पुरवा'।

पुरबिया [वि.](हिं.) [स्त्री. पुरबिनी] पूरब का

पुरबिहा+ [वि.] (हिं.) पुरबिया। पूरब का।

पुरबी+ [वि.] (हिं.) देखो 'पूरबी'।

पुरभिद्, पुरमथन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का नाम।

पुरमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नगर की सड़क।

पुररक्ष, पुररक्षक, पुररक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) नगर रक्षक दल का सिपाही या अधिकारी।

पुरला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी का एक नाम

पुरवइया※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुरवाई'।

पुरवट※ [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत सींचने का पानी का बड़ा डोल जो बैलों की सहायता से खींचा जाता है। चरसा। मोट। पुरवट नाधना-पुरवट की रस्सी में बैल जोतना। पुरवट हाँकना-पुरवट के बैलों को चलाना।

पुरवना※ [क्रि. स.] (हिं.) १-पूरना। २-पूरा करना। ३-भरना। साथ पुरवना-अन्त तक पूरा साथ देना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-पूरा होना। २-पर्याप्त होना। बल पुरवना-पूर्ण सामर्थ्य होना।

पुरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा गाँव। २-मिट्टी का कुल्हड़। [संज्ञा स्त्री.] १-पूरब से चलने या आने वाली हवा। २-पशुओं का गला फूलने का एक रोग।

पुरवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूर्व दिशा की ओर से आने वाली हवा।

पुरवाना [क्रि. स.] (हिं.) पूरा करना।

पुरवासी [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक। नगर-निवासी।

पुरवैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूरब की हवा। पुरवाई।

पुरशासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु

पुरश्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से उपाय सोचना और प्रबंध करना। २-किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए नियमानुसार मन्त्र का जाप या स्तोत्रपाठ।

पुरश्छद [संज्ञा पु.] (सं.) कुश या डाभ के समान एक प्रकार की घास।

पुरषा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरखा'।

पुरस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खाद।

पुरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक नाप जो साढ़े चार या पाँच हाथ की होती है।

पुरस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगे करने अथवा लाने की क्रिया। २-आदर। सम्मान। ३-स्वीकार। ४-वह धन या द्रव्य जो किसी अच्छे काम के लिए सादर दिया जाय।

पुरस्कृत [वि.] (सं.) १-सामने रखा हुआ। आगे किया हुआ। २-पूजा किया हुआ। आदृत। ३-स्वीकृत। ४-पुरस्कार या इनाम पाया हुआ।

पुरस्तात् [अव्य.] (सं.) १-पूर्व। सामने। २-सबसे आगे। ३-पूर्व। पेशतर। ४-पूर्व दिशा की ओर। ५-पीछे से। अंत में।

पुरस्तावक [संज्ञा पु.] देखो 'प्रस्तावक'।

पुरस्सर [वि.] देखो 'पुरःसर'।

पुरहत [संज्ञा पु.] (हिं) विवाह आदि मंगल अवसरों के समय पुरोहित या प्रजा को किसी कृत्य के शुरू में दिया जाने वाला अन्न और द्रव्य आदि। आखत।

पुरहन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु।

पुरहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जो पुरवट या चरसे का पानी गिराने के लिए कूएँ पर नियुक्त हो।

पुरहूत※ [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरुहूत। इन्द्र।

पुरांगना, पुराङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नगर-निवासिनी। नगर में रहने वाली स्त्री। शहरी स्त्री।

पुरांतक, पुरान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का नाम।

पुरा [अव्य.] (सं.) पूर्वकाल मे। पुराने समय में। पहले। [वि.] प्राचीन। पुराना। (योगिक शब्दों के आरंभ में। जैसे-पुरातत्व। पुराकथा। [संज्ञा स्त्री.] १-पूर्वदिशा। २-मुरा नामक एक सुगंध-द्रव्य। ३-गंगा। ४-महल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गाँव। २-बस्ती।

पुराकथा[संज्ञा स्त्री](सं.) प्राचीन कहावत या कहानी।

पुराकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहले का कल्प। २-प्राचीन-काल। ३-एक प्रकार का अर्थवाद जिसके अनुसार प्राचीन समय का इतिहास कहकर किसी विधि के करने के निमित्त लोग प्रवृत किये जाते हैं।

पुराकृत [वि.](सं.) १-पूर्वकाल में या पहले किया हुआ। २-पूर्वजन्म में किया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वजन्म में किया हुआ पाप अथवा पुण्य

पुराण [वि.]-(सं.) प्राचीन। पुरातन। [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन कालीन कोई घटना। २-अतीतकाल की कथा। प्राचीन आख्यान। पुरानी कथा। ३-हिन्दुओं के वे अठारह धार्मिक आख्यान या धर्मग्रन्थ जिनकी रचना वेदव्यास ने की थी। इनमें सृष्टि की उत्पत्ति लय तथा प्राचीन ऋषियों और राजवंशों आदि के वृतांत तथा देवी देवताओं, तीर्थों आदि के महात्म्य हैं—विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त्त, लिंग, बाराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़ ब्रह्माड और भविष्य। ४-अठारह की संख्या। ५-शिव। ६-कार्षापण।

पुराणकिट्ट [संज्ञा पु.](सं.) लोहे का मैल। कौसीस

पुराणग [संज्ञा पु.](सं.) १-ब्रह्मा। २-पुराण कहने वाला।

पुराणपंथी, पुराणपन्थी [वि.] (सं.) पुरानी परम्परागत रूढ़ियों और विचारों पर विश्वास रखने और चलने वाला। पुरानी रूढ़ियों पर न चलने वालों के प्रति कोई भी उदारता न प्रकट करने वाला। कंजर्वेटिव।

पुराणपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

पुराणप्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुरानी रूढ़ियों और विचारों के प्रति कट्टर या अंधविश्वास। कंजर्वेटिज़्म।

पुराणप्रोक्त [वि.] (सं.) जो पुराणों में कहा गया हो।

पुराणवित् [वि.] (सं.) पुराण का जानकार।

पुरातत्व [संज्ञा पु.](सं.) वह विद्या जिसमें प्राचीन समय की चीजों के आधार पर पुराने अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है प्राचीन-काल-संबंधी विद्या। प्रत्न-विज्ञान। आर्कियालोजी।

पुरातत्ववेत्ता [संज्ञा पु.] (सं.) पुरातत्व विद्या का जानकार।

पुरातन [वि.] (सं.) १-प्राचीन। पुराना। २-जीर्ण घिसा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का नाम।

पुरातनत्व [संज्ञा पु.] पुराना होने का भाव। प्राचीनतत्व।

पुरातल [संज्ञा पु.] (सं.) तलातल। सात पताल के नीचे की भूमि।

पुरान+ [वि.] (हिं.) देखो 'पुराना'। [संज्ञा पु.] देखो 'पुराण'

पुराना [वि.] (हिं.)[स्त्री. पुरानी] १-बहुत दिनों का। जो नया न हो पुरातन। २-जो अधिक दिनों का होने के कारण ठीक या अच्छी अवस्था में न रह गया हो। ३-जिसका अनुभव या जानकारी बहुत दिनों की हो। परिपक्व ४-जो अतीतकाल में रहा हो, पर अब न हो। प्राचीन। ५-बहुत काल अथवा समय का। जिसका चलन अब न रहा हो।

पुराना खुर्राट–१-वृद्ध। २-बहुत दिनों का अनुभवी या जानकार। *पुरानी खोपड़ी*–पुराना खुर्राट *पुराना घाघ*–किसी बात का पूरा जानकार। गहरा काइयाँ। भारी धूर्त्त।

[क्रि. स.] (हिं.) १-पूरा कराना। २-पालन कराना। पूरा करना। ३-पालन करना। ४-पूरा डालना। अँटाना।

पुरारि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पुराल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पयाल'।

पुरा-लिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल की लिपि।

पुरा-लिपि-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल की (हजारों वर्ष पहले की) जानकारी कराने और विवेचन करने वाला शास्त्र। एपग्राफी।

पुरावती [संज्ञा स्त्री] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

पुरावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पुराना'।

पुरावसु [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्म।

पुराविद् [वि.] (सं.) पुराणों को जनाने वाला।

पुराविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विद्या जिसमें प्राचीनकाल की वस्तुओं के आधार पर पुरातन अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। आर्कियॉलोजी।

पुरावृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) अतीतकाल का इतिहास या वृतांत। पुराना हाल।

पुराषाह [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पुरासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेवी नामक एक बूटी।

पुरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कस्बा। शहर। २-नदी ३-शरीर।

पुरिखा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पुरखा'।

पुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह नरी जिस पर जुलाहे बाने को बुनने से पूर्व फैलाते हैं। २-देखो 'पुड़िया'।

पुरिया करना–जुलाहे का ताने को पुरिया पर फैलाना।

पुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नगरी। शहर। २-जगन्नाथपुरी।

पुरीतत [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय के पास की एक आँत।

पुरीमोह [संज्ञा पु] (सं.) धतूरे का पौधा।

पुरीष [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्टा। गू। मल। २-कूड़ा। करकट।

पुरीषण [संज्ञा पु.] (सं.) मलत्याग।

पुरीषम [संज्ञा पु.] (सं.) उदर। माष।

पुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्पराग। २-देवलोक। अमरलोक। ३-दैत्य। ४-शरीर। ५-एक पर्वत का नाम। ६-बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। ७-एक चन्द्रवंशी राजा का नाम जो राजा ययाति के पुत्र थे। ८-ईसा से ३२७ वर्ष पूर्व सिकन्दर से लड़ने वाले एक राजा का नाम।

पुरुकुत्स [संज्ञा पु.] (सं.) हरिवंश-पुराण के अनुसार एक राजा जो मांधाता का पुत्र और मुचुकुंद का भाई था।

पुरुकुत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) गरुण-पुराण के अनुसार इन्द्र के एक शत्रु का नाम।

पुरुकृत [वि.] (सं.) कर्मकर्ता।

पुरुघ्न [वि.] (सं.) वह जिसके पास बहुत अन्न हो।

पुरुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरुष'।

पुरुखा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरखा'।

पुरुचेतन [वि.] (सं.) अनेक विषयों को जानने वाला।

पुरुज [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुराज के एक पुत्र का नाम।

पुरुजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-कुन्तिभोज राजा का या उसके भाई का नाम।

पुरुदंशक [संज्ञा पु.] (सं.) हंस।

पुरुदंशा [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पुरुद [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्ण। सोना।

पुरुदस्म [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

पुरुदिन [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दिन। अनेक दिन

पुरुप्रशस्त [वि.] (सं.) बहुविधि या अनेक प्रकार से स्तुति किया हुआ।

पुरुब+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूर्वदिशा'।

पुरुभुज [वि.] (सं.) बहुत खाने वाला।

पुरुभूत [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पुरुभोजा [संज्ञा पु.] (सं.) मेष। मेढ़ा।

पुरुमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

पुरुरुच [वि.] (सं.) बहुत चमकीला।

पुरुरूप [वि.] (सं.) अनेक रूपधारण करने वाला

पुरुलंपट, पुरुलम्पट [वि.] (सं.) बहुत विषयी। बड़ा कामुक।

पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य। आदमी। २-नर। किसी पुश्त या पीढ़ी का कोई प्रतिनिधि ३-सांख्य में एक अकर्त्ता तथा असंग चेतन-पदार्थ जो प्रकृति से भिन्न तथा उसका पूरक अङ्ग माना गया है। आत्मा। ४-विष्णु। ५-सूर्य। ६-जीव। ७-परमात्मा। ८-शिव। ९-पुन्नागवृक्ष। १०-पारा ११-घोड़े का अगले पैर उठाकर पिछले पैरों के बल खड़े होने की स्थिति। सीख। पांव। १२-व्याकरण में सर्वनाम और उसके साथ आने वाली क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह जाना जाता है कि सर्वनाम अथवा क्रियापद का प्रयोग वक्ता (कहने वाले) के लिये हुआ है अथवा श्रोता या सम्बोधन करने वाले के लिये। जैसे-मैं उत्तम पुरुष है, 'तुम' मध्यमपुरुष और 'वह' अन्यपुरुष। १३-पति। स्वामी। १४-पूर्वज।

पुरुषक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े का पुरुष के समान (पिछले दो पैरों पर खड़ा होना। घोड़े का जमना या अलफ होना।

पुरुषकार [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष का ... प्रयत्न। पुरुषार्थ।

पुरुषकुणप [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य की लाश मृतकशरीर।

पुरुषकेशरी, पुरुषकेसरी [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु का नृसिंहावतार। २-पुरुषों में ... पुरुष।

पुरुषगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का ...

पुरुषग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष ... मंगल, सूर्य तथा बृहस्पति।

पुरुषच्छंदा, पुरुषच्छन्दा [संज्ञा पु.] (सं.) ... पद वाला छन्द।

पुरुषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मर्दानगी। ... २-पुंसत्व।

पुरुषत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषता।

पुरुषदंतिका, पुरुषदन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषध जिसे मेदा भी कहते हैं।

पुरुषनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) हस्त, मूल, ... पुनर्वसु, मृगशिरा तथा पुष्य, यह ... पुरुषनक्षत्र कहलाते हैं।

पुरुषनाग [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष श्रेष्ठ।

पुरुषनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) सेनापति।

पुरुषपुंगव, पुरुषपुङ्गव [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष ... श्रेष्ठ।

पुरुषपुंडरीक, पुरुषपुण्डरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जैनमतानुसार नव वासुदेवों में से ... वासुदेव का नाम। २-पुरुषश्रेष्ठ।

पुरुषपुर [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक पेशावर (... स्तान) का प्राचीन नाम। यह पहले ... देश की राजधानी था।

पुरुषमुख [वि.] (सं.) पुरुष के समान ... वाला।

पुरुषमेध [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ विशेष ... नरबलि दी जाती थी।

पुरुषराज [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषश्रेष्ठ।

पुरुषराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेष, मिथुन, ...

तुला, धनु और कुम्भ को ज्योतिषशास्त्र में पुरुषराशि कहा गया है।

पुरुषरूप [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषाकार।

पुरुषरेषण [वि.](सं.) पुरुष की हत्या करने वाला।

पुरुषवध [संज्ञा पु.] (सं.) नरहत्या।

पुरुषवत् [वि.] (सं.) पुरुष के समान।

पुरुषवार [संज्ञा पु.] (सं.) रवि, मंगल, बृहस्पति तथा शनिवार यह ज्योतिष में पुरुषवार कहे गये हैं।

पुरुषवाह [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

पुरुषव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

पुरुषर्षभ, पुरुषव्याघ्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष श्रेष्ठ।

पुरुषव्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपदंश रोग।

पुरुषशार्दूल [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषश्रेष्ठ।

पुरुषसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषों में श्रेष्ठ।

पुरुषसूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद में एक सूक्त का नाम जो सहस्रशीर्षा से आरम्भ होता है

पुरुषांतर, पुरुषान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरा आदमी।

पुरुषांतरात्मा, पुरुषान्तरात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) जीवात्मा।

पुरुषाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य भक्षी। राक्षस २-एक देश का नाम। (बृहत्संहिता)।

पुरुषादक [संज्ञा पु.](सं.). १-मनुष्य भक्षी। राक्षस २-कल्माषपाद का नाम।

पुरुषाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-विष्णु। ३-जैनमतानुसार जिनों में प्रथम, आदिनाथ।

पुरुषानुक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) पुरखों या पूर्वजों से चली आई हुई परम्परा। एक के बाद एक पीढ़ी का क्रम।

पुरुषानुक्रमिक [वि.] (सं.) जो किसी वंश में कई पीढ़ियों से निरन्तर चला आया हो तथा जिसके आने वाली पीढ़ियों में भी चलते रहने की सम्भावना हो। आनुवंशिक। हेरिडेटरी।

पुरुषायण [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणादि षोडशकला।

पुरुषायित [वि.] (सं.) मनुष्य के समान आचरण करने वाला।

पुरुषायितबंध, पुरुषायितबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) विपरीत रीति।

पुरुषायुष [संज्ञा पु.](सं.) मनुष्य की जिन्दगी या उम्र का काल (जो सौ वर्ष का माना गया है)।

पुरुषारथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरुषार्थ'।

पुरुषार्थ [संज्ञा पु.](सं.) १-पुरुष का अर्थ अथवा प्रयोजन (जिसके लिए उसे प्रयत्न करना चाहिए)। पुरुष के प्रयत्न का विषय या कार्य। २-पौरुष। पराक्रम। पुंस्त्व। शक्ति। सामर्थ्य

पुरुषार्थी [वि.] (सं.) १-पुरुषार्थ करने वाला। २-परिश्रमी। ३-उद्योगी। ४-बली। सामर्थ्यवाला।

पुरुषाशी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुरुषाशिनी] नरभक्षी राक्षस।

पुरुषोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरुषों में उत्तम या श्रेष्ठ मनुष्य। २-विष्णु। ३-जगन्नाथ। ४-नारायण। ५-मलमास। ६-श्रीकृष्ण। ७-जैनियों के एक वसुदेव का नाम। ८-शत्रु मित्र आदि से सर्वदा उदासीन रहने वाला निष्पाप मनुष्य।

पुरुषोत्तमक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जगन्नाथपुरी।

पुरुषोत्तम-मास [संज्ञा पु.] (सं.) मलमास।

पुरुह [वि.] (हिं.) प्रचुर। काफी।

पुरुहूत [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पुरुहूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवती की एक मूर्ति।

पुरुहूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाक्षायणी। [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

पुरूरवा [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन राजा का का नाम, जो ऋग्वेदानुसार इला के पुत्र थे। इनकी पत्नी का नाम उर्वशी था। २-विश्वदेवा। ३-पार्वण श्राद्ध के एक देवता का नाम

पुरूवसु [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यधिक धन संपत्ति।

पुरेथा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हल की मूठ।

पुरेभा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्ष में दो बार ब्याने वाली गाय। कुरेभा।

पुरैन, पुरैनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुरइन'।

पुरोग [वि.] (सं.) आगे जाने वाला। अग्रगामी।

पुरोगत [वि.] (सं.) जो पहले गया हो।

पुरोगति [संज्ञा पु.] (सं.) श्वान। कुत्ता।

पुरोगम, पुरोगव, पुरोगा [वि.] (सं.) आगे जाने वाला।

पुरोगामी [वि.] (सं.) [स्त्री. पुरोगामिनी] आगे जाने वाला। अग्रगामी।

पुरोगुरु [वि.] (सं.) जिसका अगला भाग भारी हो। आगे से भारी हो।

पुरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्योधन के एक मित्र का नाम जिसे उसने पांडवों को लाक्षागृह में जलाने के लिए नियुक्त किया था।

पुरोजन्मा [वि.] (सं.) बड़ा भाई।

पुरोजव [वि.] (सं.) १-आगे बढ़ने वाला। २-जिसका अगले भाग में तेज हो। [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करद्वीप के सात खंडों में से एक।

पुरोट्टि [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी का प्रवाह या धार। २-पत्तों की खरभर। पत्तों का शब्द।

पुरोडाश [संज्ञा पु] १-जौ के आटे की बनी हुई टिकिया जो कपाल में पकाई जाती थी। यज्ञ में इसके टुकड़े काट-काटकर, और मंत्र पढ़-पढ़कर देवताओं के उद्देश्य से इसकी आहुति दी जाती थी। २-हवि। ३-यज्ञ से बची हुई हवि या पुरोडाश। ४-यज्ञ में होम की जाने वाली वस्तु। यज्ञ भाग। ५-सोमरस। ६-आटे की चौंसी। ७-पुरोडाश बनाते समय बोले जाने वाले मंत्र।

पुरोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा नामक औषध।

पुरोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) नगर या शहर का बगीचा।

पुरोध [संज्ञा पु.] (सं.) पुरोहित।

पुरोधा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पुरोहिताई।

पुरोधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्यारी स्त्री।

पुरोनुवाक्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यज्ञों में दी जाने वाली तीन प्रकार की आहुतियों में से एक। २-वह ऋचा जिसका पाठ करके 'पुरोनुवाक्या' आहुती दी जाती है।

पुरोभाग [संज्ञा पु.] (सं.) अग्रभाग। अगला भाग या हिस्सा।

पुरोभागी [वि.] (सं.) [स्त्री. पुरोभागिनी] १-अग्र भाग वाला। २-केवल दोषों को देखने वाला। छिद्रान्वेषी। दोषदर्शी।

पुरोमरुत [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व दिशा की ओर से चलने वाली हवा।

पुरोरवस [संज्ञा पु.] (सं.) पुरूरवा।

पुरोवर्ती [वि.] (सं.) सामने रहने वाला।

पुरोवात [संज्ञा पु.] (सं.) पुरवैया हवा।

पुरोहित [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुरोहितानी] वह ब्राह्मण जो यजमान के यहाँ कर्मकांड के सब कृत्य तथा संस्कार कराता है।

पुरोहिताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुरोहित का काम।

पुरोहितानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुरोहित की स्त्री।

पुरौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरवट। चरसा।

पुरौती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूर्त्ती'।

पुर्जल [संज्ञा पु.] (हिं.) कलाबत्तू लपेटने का यंत्र

पुर्जा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरजा'।

पुर्तगाल [संज्ञा पु.] (अं.) युरोप के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक प्रदेश जो स्पेन से लगा हुआ है।

पुर्तगाली [वि.](हिं.) १-पुर्तगाल-संबंधी। २-पुर्तगाल का रहने वाला।

पुर्तगीज [वि.] (अं.) पुर्तगाल का रहने वाला। पुर्तगाली।

पुर्वला+ [वि.] (हिं.) देखो 'पुरवला'।

पुर्या [वि.] (सं.) दुर्ग या किले के मध्य का।

पुर्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरसा'।

पुल [वि.] (सं.) विपुल। बहुत सा। [संज्ञा पु.] (फ़ा.) [स्त्री. पुलिया] किसी नदी, नाले आदि के आर-पार जाने-आने के लिए नावें पाटकर, मोटे-मोटे रस्से बाँधकर अथवा खंभों पर पटरियाँ बिछाकर बनाया हुआ रास्ता। सेतु।

पुल बँधना–पुल का बँधकर तैयार होना। *पुल बाँधना*–पुल बनाकर तैयार करना। *(किसी का) पुल बाँधना*–बहुत अधिकता कर देना। झड़ी लगाना। *(किसी वस्तु का) पुल टूटना*–बहुत अधिक मान में आ पड़ना। [संज्ञा पु.] (सं.) १–पुलक। रोमाँच। २–शिव के एक अनुचर का नाम।

पुलक [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रेम, हर्ष आदि के अतिरेक में शरीर के रोंगटे खड़े होना। रोमांच। २–एक प्रकार का पत्थर या रत्न। ३–खनिज-पदार्थ। ४–रत्न-दोष। ५–हाथी का रातिब। ६–शराब पीने का काँच का गिलास। ७–एक प्रकार की राई। ८–एक प्रकार का गेरू। गिरिमारि। ९–एक प्रकार का कंद। १०–एक प्रकार का मोटा अन्न। ११–शरीर में पड़ने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

पुलकना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना। पुलकित होना।

पुलकांग, पुलकाङ्ग [वि.] (सं.) रोमांचित होने वाला। [संज्ञा पु.] वरुण का फन्दा या पाशास्त्र।

पुलकाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुलकित होने का भाव।

पुलकायल [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

पुलकालि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हर्ष से प्रफुल्ल रोम। पुलकावलि।

पुलकावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हर्षातिरेक के कारण प्रफुल्ल या खड़ी होने वाली रोमावली

पुलकित [वि.] (सं.) जिसे प्रेम अथवा हर्षातिरेक के कारण पुलक हुआ हो। रोमांचित। आनन्दित।

पुलकी [वि.] (सं.) [स्त्री. पुलकिनी] जो रोमांचित हो। प्रेम अथवा हर्षातिरेक से गद्‌गद होने वाला। [संज्ञा पु.] कदम्बवृक्ष विशेष।

पुलकोद्‌गम [संज्ञा पु.] (सं.) हर्ष। खुशी।

पुलट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पलट'।

पुलटिस [संज्ञा स्त्री.] (अं. पुल्टिस) फोड़े आदि को पकाने के लिये अलसी, रेड़ी आदि का मोटा लेप।

पुलपुल+ [वि.] (हिं.) देखो 'पुलपुला'।

पुलपुला [वि.] (हिं.) १–जो इतना ढीला और मुलायम हो कि तनिक-सा दबाने से दब जाय २–बारम्बार दबने तथा उभड़ने या खुलने और बन्द होने वाला।

पुलपुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी मुलायम वस्तु को दबाना। २–मुँह में लेकर दबाना। चूसना।

पुलपुलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुलपुला होने का भाव।

पुलस्त* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुलस्त्य'।

पुलस्ति [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा के मानस पुत्र ऋषियों में से एक ऋषि का नाम।

पुलस्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्रह्मा के मानसपुत्र जो सप्तर्षियों में से एक और प्रजापति माने जाते हैं। २–एक शिव का नाम।

पुलह [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के मानस पुत्रों और प्रजापतियों तथा सप्तर्षियों में से थे। २–शिव। ३–एक गन्धर्व का नाम।

पुलाक [संज्ञा पु.] (सं.) १–कदन्न विशेष। अँकरा। २–उबला हुआ चावल। भात। ३–भात का माड़। पीच। ४–पुलाव। ५–क्षिप्रता। जल्दी। ६–अल्पता। संक्षेप।

पुलाककारी [वि.] (सं.) जल्दीबाज।

पुलाकी [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष।

पुलायित [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की सरपट चाल

पुलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) पकाये हुए मास में चावल डाल कर पुनः पकाकर तैयार किया हुआ एक व्यजन। मांसोदन।

पुलिंद, पुलिन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १–भारत की प्राचीन असभ्य जाति का नाम। २–वह देश जहां यह जाति बसती थी।

पुलिंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) लपेटे हुए कागज, कपड़े आदि का मुट्ठा। बंडल।

पुलिकेश [संज्ञा पु.] (सं.) चालुक्यवंशीय राजा का नाम।

पुलिन [संज्ञा पु.] (सं.) १–नदी का रेतीला तट। २–पानी के हट जाने से निकली हुई हाल की जमीन। चर। ३–नदीतट। ४–एक वृक्ष का नाम।

पुलिनवति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

पुलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे नालों आदि को पार करने का छोटा पुल।

पुलिरिक [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

पुलिश [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के एक प्राचीन आचार्य का नाम।

पुलिस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १–प्रजा के जानमाल के रक्षार्थ तथा शान्तिस्थापन के लिए नियुक्त कर्मचारियों और सिपाहियों का वर्ग। २–इस प्रकार के कार्यकर्त्ताओं का विभाग।

पुलिसमैन [संज्ञा पु.] (अ.) पुलिस का सिपाही।

पुलिहोरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक पकवान।

पुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक चिड़िया जो काले और भूरे रंग की होती है। यह पंजाब से लेकर बंगाल तक देखी जाती है।

पुलुकाम [वि.] (सं.) नाना प्रकार की कामना करने वाला।

पुलोम [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक असुर जो इन्द्र के ससुर थे। २–एक राक्षस। ३–आंध्रवंशीय एक राजा का नाम।

पुलोमजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुलोम की पुत्री इन्द्र की पत्नी शची।

पुलोमजित्, पुलोमभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पुलोमही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अहिफेन। अफीम।

पुलोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भृगु की पत्नी जो च्यवनऋषि की माता थी।

पुल्कस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन संकरजाति।

पुल्ल [वि.] (सं.) विकसित। खिला हुआ।

पुल्ला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक में पहनने का एक गहना।

पुल्लिंग [संज्ञा पु.] देखो 'पुलिंग'।

पुल्ली+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घोड़े के सुम के ऊपर का हिस्सा।

पुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मालपूवा'।

पुवार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पयाल'।

पुश्त [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–पृष्ठ। पीठ। २–वंश परम्परा में कोई एक स्थान। *पुश्त-दर-पुश्त*–वंश परम्परा में। पुश्तहापुश्त कई पीढ़ियों तक।

पुश्तक [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) घोड़े, गधे आदि का पिछले दोनों पैरों से लात मारना।

पुश्तनामा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह ग्रंथ जिसमें किसी कुल में उत्पन्न होने वाले पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों के नाम लिखे हों। वंशावली। पीढ़ीनामा।

पुश्तवानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) वह आड़ी लकड़ी जो किवाड़ के पीछे पल्ले को पुष्ट करने के निमित्त गड़ी होती है।

पुश्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पानी की रोक के लिए या मजबूती के लिए दीवार से लगाकर जमाया हुआ ईंट, पत्थर मिट्टी आदि का ढेर। २–पानी रोकने के लिए कुछ दूर तक उठाया हुआ टीला। बाँध। ३–किताब की जिल्द का चमड़ा। ४–संगीत में एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली रहता है।

पुश्ताबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–पुश्ता बांधने की क्रिया या भाव। २–पुश्ता बांधने का काम।

पुश्ती [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–टेक। सहारा। आश्रय। धाम। २–सहायता। पृष्ठता। मदद। ३–तरफदारी। ४–पीठ लगाने का तकिया। गावतकिया।

पुश्तैन [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पीढ़ी-दर-पीढ़ी। वंश परम्परा।

पुश्तैनी [वि.] (हिं.) १–कई पुश्तों अथवा पीढ़ियों से चला आया हुआ। २–कई पीढ़ियों तक चलने वाला।

पुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलिहारी का पौधा।

पुषित [वि.] (सं.) १–पाला-पोसा हुआ। २–वर्द्धित। बढ़ा हुआ।

पुष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल। २–तालाब। सरोवर। ३–नीलकमल। ४–हाथी की

की नोक। ५-दोजख का नाम। ६-तलवार की धार। ७-तलवार की म्यान। ८-तीर। ९-आकाश। अन्तरिक्ष। १०-वायुमंडल। ११-पिंजड़ा। १२-नशा। मद। १३-सम्मेलन। मेला। १४-नशा। मद। १५-नृत्यकला। १६-युद्ध। लड़ाई। १७-अजमेरनगर के निकटस्थ एक तीर्थ स्थान का नाम। १८-सर्प विशेष। १९-ढोल। नगाड़ा। २०-सूर्य। २१-शिव का नाम। २२-एक प्रकार के बादल जो अनावृष्टि का कारण होते हैं। २३-राजा नल के भाई का नाम। २४-भरत के एक पुत्र का नाम। २५-एक असुर। २६-कृष्ण के एक पुत्र का नाम। २७-अग्नपाद नक्षत्र का अशुभ योग जिसकी शांति की जाती है। २८-कलछी का कटोरा। २९-ब्रह्मांड के सात विशाल भागों में एक। (पुराण)। ३०-बुद्ध का एक नाम। ३१-एक प्रकार का रोग।

पुष्करक [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करमूल।

पुष्करकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थलपद्मिनी।

पुष्करनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थलपद्मिनी।

पुष्करपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कमल का पत्ता।

पुष्करपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल का पत्ता। २-यज्ञ की वेदी में लगने वाली विशेष प्रकार की ईंटें।

पुष्करप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुमक्षिका। २-मोम

पुष्करबीज [संज्ञा पु.] (सं.) कमलगट्टा।

पुष्करमूल [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषधि विशेष की जड़ या मूल।

पुष्करशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमल की जड़। भसींड़।

पुष्करसागर [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करमूल नामक औषधि।

पुष्करस्थापति [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी का नाम

पुष्करस्रज् [संज्ञा स्त्री.] (स.) कमल की माला। [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

पुष्कराक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण।

पुष्करावर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) मेघों के अधिपति विशेष।

पुष्करिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिश्न पर फुंसियां हो जाने का एक रोग।

पुष्करिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा तालाब। २-कमल का तालाब। ३-हथिनी।

पुष्करी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुष्करिणी] १-हाथी। २-वह सरोवर जिसमें कमलों का बाहुल्य हो।

पुष्कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार ग्रास की भिक्षा। २-अनाज नापने का एक मान जो ६४ मुट्ठियों के बराबर होता था। ३-एक प्रकार का ढोल। ४-मेरुपर्वत। ५-एक प्रकार की वीणा। ६-राम के छोटे भाई भरत के एक पुत्र का नाम। ७-वरुण के एक पुत्र का नाम। ८-एक बुद्ध का नाम। [वि.] (सं.) १-बहुत। विपुल। अधिक। २-पूर्ण। पूरा। ३-चटकीला। भड़कीला। ४-सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम। ५-समीप। ६-गूंजने या प्रतिध्वनि करने वाला।

पुष्कलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है। २-खूंटी। मेख। कील।

पुष्कलावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधुनिक पेशावर का प्राचीन नाम। यह गांधार देश की प्राचीन राजधानी थी।

पुष्ट [वि.] (सं.) १-पाला या पोषण किया हुआ। २-मोटा ताजा। बलिष्ठ। ३-बलवर्द्धक। मोटा-ताजा बनाने वाला। ४-दृढ़। मजबूत। ५-पूर्ण। पूरा।

पुष्टई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बलवीर्यवर्द्धक या पुष्ट करने वाली औषध। ताकत की दवा।

पुष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोटाताजापन। २-दृढ़ता। पोढ़ापन।

पुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पोषण। २-मोटाताजापन। ३-दृढ़ता। मजबूती। ४-मंगला, विजया आदि आठ प्रकार की चारपाइयों में से एक। ५-धर्म की पत्नियों में से एक। ६-एक योगिनी ७-बात का समर्थन। ८-संतति की बढ़ती या वृद्धि। ९-असगंध। १०-सोलह मातृकाओं में से एक।

पुष्टिकर [वि.] (सं.) पुष्ट करने वाला। बलवीर्यवर्द्धक।

पुष्टिकरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) गंगा।

पुष्टिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्टि के लिए काम।

पुष्टिकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) एक धार्मिक अनुष्ठान जो सांसारिक समृद्धि की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

पुष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल की सीप।

पुष्टिकारक [वि.](सं.) पौष्टिक। पुष्टि करने वाला

पुष्टिद [वि.] (सं.) १-पुष्टि देने वाला। २-ताजगी देने वाला। ३-समृद्धिकारी।

पुष्टिदग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आग के जले हुए को आग के उपचार से ही ठीक करने की युक्ति।

पुष्टिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-असगंध। २-वृद्धि नामक औषधि विशेष।

पुष्टिपति [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि का एक भेद।

पुष्टिमति [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि का एक भेद।

पुष्टिमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वल्लभाचार्य के मतानुसार वैष्णवों का भक्तिमार्ग।

पुष्टिवर्धन [वि.] (सं.) बल वीर्यवर्द्धक। ताकत देने वाला।

पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल। सुमन। २-रजस्वला या ऋतुमती स्त्री का रज। ३-आँख का फूला (रोग)। ४-घोड़े का एक लक्षण। चित्ती। ५-कुबेर का पुष्पक विमान। ६-पुष्करमूल। ७-रसौत। एक प्रकार का अंजन। ८-विकाश ९-लवंग। १०-मांस। (वाममार्गी)।

पुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल। २-पीतल की भस्म या [illegible]। ३-लोहे का प्याला। ४-एक विमान जिसे रावण ने कुबेर से छीन लिया था जिसे रामचन्द्रजी ने रावण को हरा कर वापस लौटा दिया था। ५-आंख में फूला पड़ने का रोग। ६-एक प्रकार का विषरहित सर्प। ७-वलय। कंगन। ८-एक पर्वत का नाम। ९-एक प्रकार का खंभा जो आठ भागों में बटा होता है। १०-प्रासाद बनाने में एक प्रकार का मंडप। ११-मिट्टी की अंगीठी। सिगाड़ी। १२-रसौत। १३-हीराकसीस।

पुष्पकरंडक, पुष्पकरण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) उज्जयिनी का एक पुराना उद्यान जो महाकाल के मंदिर के पास था।

पुष्पकरंडिनी, पुष्पकरण्डिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) उज्जयिनी।

पुष्पकर्ण [वि.] (सं.) कान पर फूल लगाने वाला।

पुष्पकाल [संज्ञा पु] (सं.) १-स्त्रियों का ऋतु समय। २-वसंतकाल।

पुष्पकासीस [संज्ञा पु.] (सं.) हीराकसीस।

पुष्पकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल का कीड़ा। २-भँवरा।

पुष्पकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का व्रत जिसमें महीने भर तक केवल फूलों का रस पीकर रहना पड़ता है।

पुष्पकेतन, पुष्पकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकरंद। पराग। २-कामदेव।

पुष्पगंधा, पुष्पगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूही।

पुष्पगवेधुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागबला।

पुष्पगृह [संज्ञा पु.] (सं.) शीशे का घर अथवा कमरा जिसमें पौधे शीत से बचाकर रखे जाते हैं।

पुष्पघातक [संज्ञा पु.] (सं.) बांस।

पुष्पचाप [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पचामर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दौना मरुआ। २-केवड़ा।

पुष्पज [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों का रस या फूलों से उत्पन्न वस्तु।

पुष्पजासव [संज्ञा पु.] फूलों से बनाई शरा

पुष्पदंत, पुष्पदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव के एक गण का नाम। २-महिम्नस्तोत्र के रचियता का नाम। ३-वायुकोण के एक दिग्गज का नाम। ४-एक विद्याधर।

पुष्पदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

पुष्पद [संज्ञा प.] (सं.) वृक्ष। [वि.] (सं.) फूल देने वाला।

पुष्पदर्शन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मासिकधर्म वाली स्त्रियों का रजदर्शन।

पुष्पदाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूलों की माला। २-एक छंद का नाम-जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।

पुष्पद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों का रस।

पुष्पद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) फूलने वाला वृक्ष।

पुष्पध [संज्ञा पु.] (सं.) जाति बहिष्कृत ब्राह्मण की संतान।

पुष्पधनुस् [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की रस औषधि। २-कामदेव।

पुष्पधर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

पुष्पधारण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम

पुष्पध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पनिक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौंरा। भ्रमर। २-मधुमक्षिका।

पुष्पनिर्यास, पुष्पनिर्यासक [संज्ञा पु.](सं) पुष्प-रस।

पुष्पनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल की डंडी। २-बस्ति की पिचकारी की सलाई।

पुष्पपत्री [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पपथ [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों का रज निकलने का मार्ग। भग।

पुष्पपांडु, पुष्पपाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सर्प।

पुष्पपिंड, पुष्पपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक का पेड़।

पुष्पपुट [संज्ञा पु.](सं) १-फूल की पंखड़ियों का कटोरी के आकार का आधार। २-उक्त आकार का बना हाथ का चंगुल।

पुष्पपुर [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन पाटलिपुत्र जो आजकल पटना (नगर) के नाम से विख्यात है, का एक नाम।

पुष्पप्रचय, पुष्पप्रचाय [संज्ञा पु.] (सं.) फूल तोड़ना।

पुष्पप्रस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों की सेज या शय्या।

पुष्पप्रियक [संज्ञा पु] (सं.) विजयसाल।

पुष्पफल [संज्ञा प.] (सं.) १-कुम्हड़ा। २-कैथ। ३-अर्जुनवृक्ष।

पुष्पभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) बासठ खम्भों वाला मंडप।

पुष्पभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का एक उपवन।

पुष्पभद्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) मलयगिरि के पश्चिम की एक नदी का नाम।

पुष्पभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल का रस। मधु। २-मकरंद।

पुष्पभूति [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंबोज (काबुल) के एक हिन्दू राजा का नाम। २-सम्राट् हर्षवर्द्धन के पूर्व पुरुष का नाम।

पुष्पभूषित [वि.] (सं.) फूलों से सजाया हुआ।

पुष्पमंजरिका, पुष्पमन्जरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलकमलिनी।

पुष्पमंजरी, पुष्पमन्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूलों की मंजरी। २-घी-करंज।

पुष्पमंडन, पुष्पमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों का अलङ्कार।

पुष्पमास [संज्ञा पु.] (सं.) वसन्तऋतु के दो मास

पुष्पमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम। पुष्यमित्र।

पुष्पमृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नरकट या नरसल।

पुष्परक्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यमणि नामक फूल का पौधा।

पुष्परज [संज्ञा पु.] (सं.) पराग। फूल की धूल। मकरंद।

पुष्परथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह रथ या गाड़ी जो युद्धोपयोगी न हो जिसमें साधारणतया बैठ कर घूमा फिरा जाय।

पुष्परस, पुष्परसोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) फूल का मधु।

पुष्पराग, पुष्पराज [संज्ञा पु.] (सं.) एक मणि। पुखराज।

पुष्परेणु [संज्ञा पु:] (सं.) फूल की धूल। पराग। मरकंद।

पुष्परोचन [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

पुष्पलाव [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पुष्पलावी] फूल चुनने या इकट्ठा करने वाला। माली।

पुष्पलावन [संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता के अनुसार उत्तर दिशा का एक देश।

पुष्पलावी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूल चुनने वाली। मालिन।

पुष्पलिक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

पुष्पलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन लिपि या लिखावट।

पुष्पलिह् [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा। भ्रमर।

पुष्पलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर वृक्ष।

पुष्पवटुक [संज्ञा पु.] (सं.) वीर। बहादुर।

पुष्पवती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-फूल वाली। २-रजस्वला स्त्री।
[संज्ञ स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

पुष्पवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

पुष्पवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फुलवारी। फूलों का बगीचा।

पुष्पवाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फुलवारी।

पुष्पवाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूलों का वाण। २-कामदेव। ३-कुशद्वीप के एक राजा का नाम ४-एक दैत्य का नाम।

पुष्पवाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरिवंश के मत से एक नदी का नाम।

पुष्पवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊपर से होने वाली फूलों की वर्षा (जो मंगलसूचक समझी जाती है)

पुष्पवेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूलों की वेणी या चोटी।

पुष्पशकटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशवाणी।

पुष्पशकली [संज्ञा पु.] (सं.) एक सर्प विशेष जिसमें विष नहीं होता।

पुष्पशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूलों की शय्या या सेज।

पुष्पशर, पुष्पशरासन [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पशाक [संज्ञा पु.] (सं.) वह फूल जिसका साग बनता हो।

पुष्पशून्य [वि.] (सं.) बिना फूल का। [संज्ञा पु.] गूलर।

पुष्पश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

पुष्पसमय [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतकाल।

पुष्पसाधारण [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतकाल।

पुष्पसार [संज्ञा पु.](सं.) १-फूलों का बना इत्र या रस। २-फूलों से तैयार किया हुआ इत्र।

पुष्पसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी।

पुष्पसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) गोभिलरचित सामवेद का सूत्रग्रन्थ।

पुष्पसौरभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियारी नामक पौधा।

पुष्पस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पुष्यस्नान'।

पुष्पस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत या फूलों से बना शहद।

पुष्पहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूलों का विकसित होना या खिलाना। २-विष्णु का नाम।

पुष्पहासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋतुमति स्त्री।

पुष्पहीन [वि.] (सं.) बिना फूल का।
[संज्ञा पु.] गूलर का वृक्ष।

पुष्पहीना [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] रजस्वला न होने वाली (स्त्री)। वंध्या। बांझ।

पुष्पांक, पुष्पाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) माधवी (ल अर्थों में)।

पुष्पांजन, पुष्पान्जन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अंजन।

पुष्पांजलि, पुष्पान्जलि [संज्ञा पु., स्त्री.] फूलों से भरी अंजलि जो किसी देवता अथवा पूज्य पुरुष को चढ़ाई जाय।

पुष्पाबुज, पुष्पाम्बुज [संज्ञा पु.] (सं.) मकरन्द। पराग।

पुष्पांभस्, पुष्पाम्भस् [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

पुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्पानगरी।

पुष्पाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसंतऋतु। २-फूलों से सम्पन्न।

पुष्पागम [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतकाल।

पुष्पाजीव, पुष्पाजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों की माला बनाकर जीविका चलाने वाला। मालाकार।

पुष्पानन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मद्य।

पुष्पायुध [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पार्क [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों का अर्क।

पुष्पासव [संज्ञा पु.] (सं.) फूलों से बना मद्य।

पुष्पास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

पुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दाँत का मैल। २-लिंग का मैल। ३-अध्याय के अंत का वह भाग जिसमें वर्णन किये हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है। जैसे-'इति श्रीमन् महाभारते' आदि।

पुष्पिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला स्त्री।

पुष्पित [वि.] (सं.) १-पुष्पसंयुक्त। फूला हुआ। २-पूर्ण विकसित। खिला हुआ।

पुष्पिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला स्त्री।

पुष्पिताग्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्द्ध सम वर्णवृत्त जिसके पहले और तीसरे चरण में दो नगण, एक रगण और एक यगण होता है तथा दूसरे और चौथे चरण में एक नगण, दो जगण, एक रगण और गुरु होता है।

पुष्पी [वि.] (सं.) फूलदार। फूलों वाला।

पुष्पेषु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

पुष्पोत्कटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रावण और कुम्भकरण की माता का नाम।

पुष्पोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूलों का खेल। २-एक उत्सव-विशेष।

पुष्पोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) फुलवारी। पुष्पवाटिका।

पुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्टि। पोषण। २-फूल या सार वस्तु। ३-सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवां। ४-पूस का महीना। ५-एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

पुष्यनेत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह रात्रि जिसमें रातभर पुष्य नक्षत्र रहे।

पुष्यमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रतापी राजा का नाम जिसने मौर्यों के पीछे मगध देश में शुङ्गवंश का राज्य स्थापित किया था।

पुष्यलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कस्तूरी मृग। २-जैन क्षपणक। चँवर लिये हुए जैन साधु। ३-कील। खूंटा।

पुष्यस्नान [संज्ञा पु.] (सं) पूस के महीने में पुष्यनक्षत्र पड़ने पर किया जाने वाला स्नान। यह विघ्न और शान्ति के लिए किया जाता है। यह स्नान राजाओं के लिए होता है।

पुष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्य नक्षत्र।

पुष्यार्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष का एक योग जो कर्क की संक्रान्ति में सूर्य के पुष्यनक्षत्र में रहने पर होता है। २-रविवार के दिन पड़ा हुआ पुष्यनक्षत्र।

पुस [संज्ञा पु.] (देश.) बिल्ली को बुलाने का प्यार का शब्द।

पुसकर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुष्कर'।

पुसाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-हो सकना या बन पड़ना। २-अच्छा लगना। शोभा देना।

पुस्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीली मिट्टी का पलस्तर। २-चित्रकारी। लीपना-पोतना। ३-मिट्टी खोदने आदि का काम। ४-लकड़ी या की बनी कोई वस्तु। ५-[स्त्री. पुस्ती] पुस्तक। हाथ की लिखी हुई पोथी। किताब। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुश्त'।

पुस्तक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लिखी या छपी अनेक पृष्ठों वाली वस्तु जिसमें विवेचन, विचार आदि पढ़ने को मिलते हैं। किताब। पोथी।

पुस्तकाकार [वि.] (सं.) पुस्तक या पोथी के आकार अथवा रूप का।

पुस्तकागार [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जिसमें बहुत सी पुस्तकें हों। पुस्तकालय।

पुस्तकालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जहां अनेक विषयों की पुस्तकों का संग्रह हो।

पुस्तकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुस्तक। पोथी।

पुस्त-डाक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डाक से भेजने की वह रीति, जिसके अनुसार समाचार पत्र, पत्रिका, पुस्तकें और छायाचित्र आदि रियायती दर से भेजे जाते हैं। बुक-पोस्ट।

पुस्तशिंबी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सेम।

पुस्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कम पन्नों वाली पुस्तक। छोटी पुस्तक।

पुस्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुस्तक, विशेषतः हाथ की लिखी पुस्तक।

पुस्फुस [संज्ञा पु.] (सं.) फुसफुस रोग।

पुहकर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुष्कर'।

पुहकरमूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुष्करमूल'।

पुहना [क्रि. अ.] (हिं.) पिरोया जाना। गुथना।

पुहप* [संज्ञा पु.] (हिं.) फूल। पुष्प।

पुहाना+ [क्रि. स.] (हिं.) पिरोने का काम कराना गुथवाना।

पुहुप* [संज्ञा पु.] (हिं.) फूल। पुष्प।

पुहुपराग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुखराज'।

पुहुमी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी।

पुहुरेनु* [संज्ञा पु.] (हिं.) पराग।

पुहुवी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि।

पूँगरण [संज्ञा पु.] (डिं.) सामान्य वस्त्र। साधारण कपड़ा।

पूँगा [संज्ञा पु.] (देश.) सीप के भीतर का कीड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूँगी'।

पूँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं। महुवर।

पूँछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुम। पुच्छ। २-किसी पदार्थ का पिछला भाग। पुछल्ला। ३-पिछलग्गू।

(किसी की) पूँछ पकड़ कर चलना-१-किसी के पीछे चलना। किसी का पिछलग्गू बनना। २-किसी के सहारे से कोई काम करना।

पूँछगच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) पूछताछ।

पूँछड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पूँछ। दुम। २-नाले के चढ़ाव के आगे-आगे चलने वाला पानी।

पूँछतात [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पूछताछ'।

पूँछना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पूछना'।

पूँछपाँछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूछताछ'।

पूँछलतारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुच्छलतारा'

पूँजना [क्रि. स.] (देश.) नये बंदर को पकड़ना।

पूँजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एकत्रित किए हुए पास के रुपये। धन। जमा। २-वह द्रव्य या धन जिससे कोई व्यापार आरम्भ किया जाय। ३-किसी कारखाने की अचल संपत्ति। ४-किसी में जानकारी या सामर्थ्य। ५-पुंज। समूह।

पूंजी खोना या गँवाना-व्यापार में इतनी हानि होना कि लगाये मूलधन में भी द्रव्य का कुछ अंश निकल जाय।

पूँजीकर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी लिमिटेड कम्पनी के लिए एकत्रित पूंजी पर लगाने वाला कर। कैपिटल ड्युटी।

पूँजीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसके पास पँजी हो अथवा जो किसी कार्य में पूँजी लगावे। पूँजीपति।

पूँजीदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूंजीपतियों का स्थान प्रधान और सर्वोपरि हो।

पूँजीपति [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसके पास पूंजी हो या जो किसी काम या उद्योग मे पूंजी लगावे। पूँजीदार।

पूँजीवाद [संज्ञा पु.] (हिं.) वह वाद या सिद्धान्त जिसमें पूँजीपतियों का स्थान आर्थिक क्षेत्र में प्रमुख माना जाता है। कैपिटलिज्म।

पूँजीवादी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो पूँजीवाद सिद्धान्त को मानता या अनुसरण करता हो। पूँजीपति। धनिक।

पूँठ* [संज्ञा स्त्री.) (हिं.) पीठ।

पूआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुड़ या चीनी के रस में आटे को पतला गूंदकर घी या तेल में

खारी हुई पूरी

पूखन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पोषण'।

पूग [संज्ञा स्त्री.] १-सुपारी का वृक्ष या फल। २-ढेर। समूह। ३-छंद। ४-कटहल। ५-शहतूत का पेड़। ६-एक प्रकार की कटेरी। ७-वह संघ जो किसी कार्य अथवा व्यापार के निमित्त बना हो। कंपनी।

पूगकृत [वि] (सं.) १-जो टीले के आकार का हो। २-एकत्रित किया हुआ।

पूगना [क्रि. अ.](हिं.) १-पूरा होना। भरना। २-नियत समय आ पहुँचना।

पूगपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) उगालदान। पीकदान।

पूगपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) पीकदान।

पूगपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह-संबन्ध स्थिर होने के अवसर पर दिया पुष्पसहित पान। पानफूल।

पूगफल [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी।

पूगमंड, पूगमण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पाकड़।

पूगरोठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ताड़वृक्ष।

पूगवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का पेड़।

पूगवैर [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक लोगों से वैर या शत्रुता।

पूगी [संज्ञा पुं.] (सं.) सुपारी का वृक्ष। [संज्ञा-स्त्री.] (सं.) सुपारी।

पूगीफल [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी।

पूछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पूछने अथवा पूछे जाने की क्रिया या भाव। जिज्ञासा। २-खोज। चाह। ३-आदर। सम्मान।

पूछगछ, पूछगाछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूछताछ'।

पूछताछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुछ जानने के लिए बार-बार पूछना। बातचीत करके किसी विषय में खोज या जाँच-पड़ताल।

पूछना [क्रि. स.](हिं.) १-किसी बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए सवाल करना। दरियाफ्त करना। जिज्ञासा करना। २-किसी की खोज-खबर लेना। ३-किसी व्यक्ति के प्रति सत्कार के सामान्य भाव प्रकट करना। ४-गुण अथवा मूल्य जानना। कदर करना। ५-टोकना। *बात न पूछना*-१-आदर या सत्कार न करना। २-तुच्छ जानकर बातचीत न करना।

पूछपाछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'पूछताछ'।

पूछरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुम। पूँछ। २-२-पिछला भाग।

पूछाताछी, पूछापाछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूछने की क्रिया या भाव।

पूज+ [वि.] (हिं) पूजने योग्य। पूजनीय।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देवता।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह, यज्ञोपवीत आदि मंगल अवसर पर गणेशपूजन की रीति। यह प्रथा खत्रियों आदि में होती है।

पूजक [संज्ञा पु.] (सं.) पूजने या पूजा करने वाला। वह जो पूजन करे।

पूजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूजा की क्रिया। किसी देवता के प्रति श्रद्धा, विनय, सम्मान आदि प्रकट करना। २-आदर। सम्मान। खातिरदारी।

पूजना [क्रि. स.] (हिं.) १-अर्चना या आराधना करना। देवी. देवताओं के प्रति श्रद्धा, विनय, सम्मान आदि प्रकट करना। २-भक्ति अथवा श्रद्धासहित किसी की सेवा करना। आदर-सत्कार करना। ३-वंदना करना। सिर झुकाना ४-घूस देना।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-पूरा होना। भरना। २-गहराई या गड्ढे का भरकर आसपास के धरातल के समान हो जाना। ३-पटना। चुकता होना।

पूजनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौरैयापक्षी।

पूजनीय [वि.] (सं.) १-जिसकी पूजा करना उचित हो। पूजने योग्य। अर्चनीय। २-आदरणीय। सम्मान के योग्य।

पूजबंद [संज्ञा पु.] (सं.) चौपायों के मुख पर बाँधने की जाली।

पूजमान [वि.] (हिं.) पूजनीय। पूज्य।

पूजयिता [संज्ञा पु.] (हिं.) पूजा करने वाला। पूजक।

पूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवता या ईश्वर को प्रसन्न अथवा अनुकूल करने के लिए श्रद्धा सम्मान, विनय आदि प्रकट करने का कृत्य। अर्चना। आराधना। २-वह धार्मिक कृत्य जो किसी देवता पर जल, फल, फूल, अक्षत या इसी प्रकार के अन्य और पदार्थ चढ़ाकर किया जाता है। ३-आदरसत्कार। खातिर। आवभगत। ४-किसी को प्रसन्न अथवा अनुकूल करने के लिए कुछ देना। ५-दंड। सजा।

पूजाधार [संज्ञा पु.] (सं.) पूजा की आधाररूप वस्तुएं। देवपूजा में विवेच्य वस्तुएं।

पूजार्ह [वि.] (सं.) पूजनीय। पूजा के योग्य।

पूजित [वि.] (सं) [स्त्री. पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो। आराधित। अर्चित।

पूजितव्य [वि.] (सं.) पूजा करने योग्य। पूजनीय।

पूजिल [वि.] (सं.) पूज्य। माननीय।
[संज्ञा पु.] देवता।

पूज्य [वि.] (सं.) १-पूजा करने योग्य। पूजनीय २-आदर या मान करने योग्य। माननीय।

पूज्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूज्य होने का भाव। पूजनीयता।

पूज्यपाद [वि.] (सं.) जिसके पैर पूजनीय हों। अत्यन्त पूज्य और मान्य।

पूज्यमान [वि.] (सं) जिसकी पूजा की जा रही हो। सेव्यमान। [संज्ञा पु.] सफेद जीरा।

पूटरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ईख की वह
स्था जो उसके गांठ बनाने से पूर्व होती है।

पूटीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुटीन'।

पूठ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुट्ठा'।

पूठा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुट्ठा'।

पूठि*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीठ।

पूड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'पूआ'।

पूड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'पूरी'। २-वह
गोल चमड़ा जो तबले या मृदंग पर मढ़ा
होता है।

पूणू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूर्णिमा। पूर्णमासी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर।

पूत [वि.] (सं.) पवित्र। शुद्ध। [संज्ञा पु.] १-
सत्य। सचाई। २-शंख। ३-सफेद कुश। ४-
पलास। ५-सूप से फटका हुआ अन्न। ६-
तिल का पौधा। ७-जलाशय।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-बेटा। लड़का। पुत्र। २-
चूल्हे के उठे हुए दोनों किनारों और बीच का
नुकीला उभार जिसपर तवा या बटलोई आदि
ठहराये जाते हैं।

पूतक्रता [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक वैदिककालीन
ऋषि की पत्नि का नाम।

पूतक्रतायी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्राणी। शची।

पूतक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पूतगंध, पूतगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) बबई।
तुलसी।

पूतड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मलमूत्रादि से बचने के
लिये बच्चे के नीचे बिछाने का कपड़ा
छोटा बिछौना।
पूतड़ों के अमीर-जन्म से धनी या अमीर।

पूतदृण [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कुश।

पूतदारु [संज्ञा पु.] (सं.) पलास। ढाक।

पूतद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलासवृक्ष। ढाक। २-
खैर का पेड़। ३-देवदार।

पूतधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) तिल।

पूतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुदा में होने वाला
रोग। २-बेताल।

पूतना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक राक्षसी जो कंस
की प्रेरणा से गोकुल में कृष्ण को मारने गई
थी पर वह श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं मारी गई।
एक रोग जिसमें बच्चों को पतले और
रंग के दस्त आते हैं और रात में अच्छी
नहीं आती। ३-कार्तिकेय की एक मातृका
नाम। ४-गंधमासी। ५-पीली हड़। ६-
योगी का नाम।

पूतनारि [संज्ञा पु.] (सं.) पूतना के संहार करने
वाले। श्रीकृष्ण।

पूतनासूदन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

पूतनाहड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी हड़।

पूतनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुश्रुत के मत

एक बालग्रह या रोग जिसमें बच्चों को पतले और मैले रंग के दस्त आते हैं और रात में अच्छी तरह नींद नहीं आती।

पूतफल [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल। पनस।

पूतभृत [संज्ञा पु.] (सं.) सोमरस रखने का पात्र विशेष।

पूतमति [वि.] (सं.) जिसकी बुद्धि पवित्र हो। पवित्र अन्तःकरण वाला। [संज्ञा पु.] शिव।

पूतरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'पुतला'। २–पुत्र। लड़का।

पूतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पुतली'।

पूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब। [वि.] [स्त्री. प्र.] पवित्र। शुद्ध।

पूतात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। [वि.] जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध अन्तःकरण वाला।

पूति [वि.] (सं.) सड़ा हुआ। बुसा हुआ। [संज्ञा स्त्री.] १–स्वच्छता। पवित्रता। २–दुर्गंध। बदबू। ३–मुश्कबिलाव। ४–रोहिषतृण।

पूतिकंटक, पूतिकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगोट

पूतिक [वि.] (सं.) सड़ा हुआ। बुसा हुआ। [संज्ञा पु.] १–मल। विष्ठा। गू। २–पूतिकरंज।

पूतिकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुदीना।

पूतिकर्ण, पूतिकर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) कान में फुंसी या घाव होने का रोग जिसमें से बदबूदार पीप निकलने लगती है।

पूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रकार की शहद की मक्खी। ३–पोई का साग। ३–बिल्ली।

पूतिकामुख [संज्ञा पु.] (सं.) घोंघा। शंबूक।

पूतिकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १–देवदार का वृक्ष। २–सरल वृक्ष।

पूतिकाष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का वृक्ष।

पूतिकाह [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गन्धि करंज। पूतिकरंज।

पूतिकीट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मधुमक्खी।

पूतिकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) १–नागकेशर। २–गंधमार्जार।

पूतिकेश्वरतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) शिवपुराण के अनुसार एक प्रकास का तीर्थ स्थान।

पूतिगंध, पूतिगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १–गंधक। २–दुर्गन्ध। बदबू। ३–इंगुदी। २–राँगा।

पूतिगंधा, पूतिगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बावची। बकुची।

पूतिगंधि, पूतिगन्धिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बदबू। दुर्गन्ध।

पूतिगंधिका, पूतिगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बावची। बकुची। २–पूतिका शाक।

पूतिघास [संज्ञा पु.] (सं.) मृगजाति का एक जंतु विशेष। (सुश्रुत)।

पूतितैला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

पूतिदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेजपत्ता।

पूतिनस्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें श्वास या नाक और मुँह से बदबू निकलती है।

पूतिनासिक [वि.] (सं.) जिसे पूतिनस्य रोग हुआ हो।

पूतिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–सोनापाठा। २–पीत लोध्र।

पूतिपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी नामक लता।

पूतिपर्ण, पूतिपर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गन्ध करंज।

पूतिपल्लवा [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा करेला।

पूतिपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) गोंदी। इंगुदीवृक्ष।

पूतिपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चकोतरा नीबू।

पूतिफल [संज्ञा पु.] (सं.) बावची। बकुची।

पूतिफला, पतिफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बावची।

पूतिमज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोंदी। इंगुदीवृक्ष।

पूतिमयुरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बनतुलसी। २–बर्वरी।

पूतिमारुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेल का पेड़। २-छोटे बेर की झाड़ी।

पूतिमांस [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गंधयुक्त मांस।

पूतिमाष [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

पूतिमूषिका [संज्ञा पु.] (सं.) छछूंदर।

पूतिमृत्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों में वर्णित २१ नरकों में से एक।

पूतिमेद [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गंध खैर।

पूतिमुद्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोहिष तृण।

पूतियोनि [संज्ञा पु.] (सं.) योनि का एक रोग।

पूतिरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) नाक का एक रोग जिसमें बदबूदार रक्त बहता है।

पूतिरज्जु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लता।

पूतिवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनतुलसी। काली तुलसी।

पूतिवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सोनापाठा।

पूतिशाक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकवृक्ष।

पूतिशारिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनबिलाव।

पूतिसृंजय [संज्ञा पु] (सं.) १–एक प्राचीन देश का नाम। २–उक्त देश का नागरिक या निवासी।

पूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–लहसुन की गाँठ के रूप में होने वाली जड़।

पूतीक [संज्ञा पु.] (सं.) १–बिलाव। २–दुर्गंध या कांटा। करंज।

पूतीकरंजक [संज्ञा पु.] (सं.) काँटाकरंज।

पूतीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पोई नामक साग।

पूतुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार का वृक्ष।

पूत्कारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सरस्वती का नाम २–नागों की राजधानी का नाम।

पूत्यंड, पूत्यण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १–कस्तूरी मृग। २–गंधकीट।

पूत्रित [वि.] (सं.) पूजन या अर्चन किया हुआ।

पूथ, पूथा [संज्ञा पु.] (देश.) बालू का ऊंचा टीला।

पूथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) पोई का शाक।

पूदना [संज्ञा पु.] (देश.) एक भूरे रंग का पक्षी जो उत्तर भारत में पाया जाता है। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुदीना'।

पून [संज्ञा पु.] (देश.) १–जंगली बादाम का पेड़ २–कलपून का वृक्ष। ३–तलवार की मूठ का नीचे का भाग। ४–गुदा का बाहरी भाग।

पूनना [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'पुण्य'। २–देखो 'पूर्ण'। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की ऊख।

पूनव [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पूनो। पूर्णिमा।

पूनसलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रूई की पूनी बनाने की सलाई।

पूनाक+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तेलहन में की बची हुई खली।

पूनिऊं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूनो। पूर्णिमा।

पूनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धुनी हुई रूई को सलाई से लपेट कर बनाई हुई बत्ती जिससे सूत कातते हैं।

पूनें*+, पूनों [संज्ञा पु.] (हिं.) पूर्णिमा। पूर्णमासी।

पून्यो+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूनो'।

पूप [संज्ञा पु.] (सं.) पूआ। मालपुआ।

पूपला, पूपली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन काल का पूप के समान एक पकवान।

पूपली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–पोली नली। २–बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना। ३–पंखे की डंडी में फँसाई हुई बाँस की पोली नली।

पूपशाला [संज्ञा पु.] (सं.) पूप आदि पकवान बनाने का स्थान।

पूपालिका, पूपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूआ। पूप।

पूपिक [संज्ञा पु.] (सं.) पूआ या पूप के आकार के पूरी आदि पकवान।

पूय [संज्ञा पु.] (सं.) पीप। मवाद।

पूयउडश [संज्ञा पु.] (देश.) भोजपत्र की जाति का एक वृक्ष।

पूयकुंड, पूयकुण्ड [संज्ञा पु] (सं.) एक नरक का नाम।

पूयप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) पीप के समान मूत्र आने का एक प्रमेह रोग।

पूयरक्त [संज्ञा पु.](सं.) १-एक रोग जिसमें नाक से पीप मिला हुआ रक्त निकलता है। २-कचलोहू।

पूयवाह [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

पूयस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्र रोग जिसमें नेत्रों के संधि-स्थान से पीप बहने लगती है।

पूयारि [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का पेड़।

पूयालस, पूयालसक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्र रोग।

पूयोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

पूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भरना। २-अघाना। सन्तुष्ट करना। ३-उड़ेलना। ४-नदी या समुद्र के जल की बाढ़। ५-धार या बाढ़। ६-सरोवर। तालाब। ७-घाव भरना या साफ होना। ८-एक प्रकार की रोटी या पूड़ी।

[वि.] (हिं.) देखो 'पूर्ण'। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मसाले जो किसी पकवान में भरे जाते हैं। जैसे-समोसे का पूर।

पूरक [वि.] (सं.) १-पूरा करने वाला। पूर्त्ति करने वाला। २-किसी के साथ मिलकर उसे पूर्ण स्वरूप प्रदान करने वाला। कॉम्पलीमेंटरी।

[संज्ञा पु.] १-बिजौरा नीबू। २-पितृश्राद्ध में सब से पीछे दिया जाने वाला पिंड। ३-गुणक अङ्क। वह अङ्क जिससे गुणा किया जाता है। ४-प्राणायाम का वह अङ्ग जिसमें नाक के एक छिद्र को बन्द करके दूसरे छिद्र द्वारा साँस ऊपर खैंची जाती है। ५-वह जो किसी वस्तु के साथ मिलकर उसे पूर्ण करता हो। पूर्ण या पूरा बनाने या करने वाला अङ्ग कॉम्पलीमेंट।

पूरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भरने की क्रिया। २-पूरा या समाप्त करने की क्रिया। ३-मृतककर्म मे व्यवहृत होने वाली रोटी या पूड़ी। ४-कान को तेल से भरने की क्रिया। ५-वातप्रकोप से होने वाला एक प्रकार का फोड़ा। ६-समुद्र। ७-सेतु। पुल। ८-अंकों का गुणा करना। ९-मोथा। १०-मेह। वृष्टि। ११-गदहपूर्ना।

[वि.] (सं.) पूरक। पूरा करने वाला।

पूरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमर।

पूरणीय [वि.] (सं.) परिपूर्ण करने योग्य। भरने योग्य।

पूरन※ [वि.] (हिं.) देखो 'पूर्ण'।

पूरनकाम※ [वि.] (हि.) देखो 'पूर्णकाम'।

पूरनपरब※ [संज्ञा पु.] (हिं.) पूर्णमासी।

पूरनपूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मीठी पूरी या कचौड़ी।

पूरनमासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूर्णमासी'।

पूरना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-कमी अथवा त्रुटि को पूरा करना। पूरा या पूर्त्ति करना। २-ढांकना। ३-(मनोकामना) सफल या सिद्ध करना। पूर्ण कराना। ४-मंगल अवसरों पर भूमि पर आटे, अबीर आदि से गोल, तिखूटे और चौखूटे क्षेत्र बनाना। ५-फूंकना। बजाना ६-बटना।

[क्रि. अ.] (हिं.) पूर्ण होना। भर जाना।

पूरब [संज्ञा पु.] (हिं.) वह दिशा जिस ओर से सूर्य निकलता है। पूर्व। प्राची।

※[वि.] (हिं.) देखो 'पूर्व'।

+[क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'पूर्व'।

पूरबल※ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्राचीनकाल। पुराना जमाना। २-पूर्वजन्म।

पूरबला※ [वि.] (हिं.) [स्त्री. पूरबली] १-पुराना प्राचीनकाल का। २-पहले जन्म का।

पूरबिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूरबी'।

पूरबी [वि.] (हिं.) १-पूरब-सम्बन्धी। २-देखो 'पूर्वी'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) बिहारी बोली में गाया जाने वाला दादरा।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूर्वी नाम की एक रागनी

पूरयितव्य [वि.] (सं.) पूरा करने योग्य।

पूरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. पूरी] १-परिपूर्ण जो भरा हो। २-जिसके विभाग या टुकड़े न हुए हों। समूचा। समग्र। ३-जिसमें किसी प्रकार की कमी या कसर न रह गई हो। ४-भरपूर। काफी। पर्याप्त। ५-पूर्णतया संपादित या सम्पन्न किया हुआ। ६-पूर्णतुष्ट।

पूरा उतरना-१-अच्छी तरह हो जाना। भली प्रकार से संपन्न हो जाना। २-तौल में ठीक बैठना। पक्की या सच्ची बात होना। *पूरा पड़ना*-१-कमी न होना। २-बाधा न होना। *पूरा होना*-पक्का, दृढ़ या संपन्न होना। *(बात) पूरी उतरना*-जाँच, तौल में जैसी कही वैसी ही होना। *दिन पूरे करना*-जैसे तैसे समय बिताना। *दिन पूरे होना*-मरने का समय आना।

पूराम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्षाम्ल।

पूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूड़ी। कचौड़ी।

पूरित [वि.] (सं.) [स्त्री. पूरिता] १-भरा हुआ। परिपूर्ण। २-गुणा किया हुआ। गुणित। ३-तृप्त।

पूरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) संध्या के समय गाया जाने वाला एक षड्वजाति का राग।

पूरियाकल्याण [संज्ञा पु.] (हिं.) रात के प्रथम पहर में गाने का संपूर्णजाति का एक संकरराग।

पूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खौलते हुए तेल या घी में पकाई हुई छोटी रोटी। २-वह गोल चमड़ा जो ढोल, मृदंगादि के मुँह पर मँढ़ा जाता है

पूरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य। २-वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम। ३-एक राक्षस का ना ४-जह्नु के एक पुत्र का नाम।

पूरुजित [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु भगवान।

पूरुब [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूरब'।

पूरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरुष। २-आत्मा।

पूर्ण [वि.] (सं.) १-भरा हुआ। पूरा। परिपूर्ण। २-जिसमें किसी प्रकार की अपेक्षा न हो। सर्वांगपूर्ण। एब्सोल्यूट। ३-जिसकी इच्छा या कामना पूरी हो चुकी हो। तृप्त। ४-भरपूर। यथेष्ट। पर्याप्त। काफी। ५-सम समूचा। समस्त। ६-सफल। सिद्ध। ७-समाप्त या पूरा हो चुका हो। ८-सिद्ध।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-विष्णु। ३-एक गंधर्व का नाम। ४-एक नाग का ना ५-मैत्रायणी के एक पुत्र का नाम।

पूर्ण-अतीत [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ता विशेष।

पूर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसोइया। २-कुक्कु ताम्रचूड़। मुर्गा। ३-एक देवयोनि। देखो 'पूर्ण'।

पूर्ण-काम [वि.] (सं.) १-जिसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों। २-कामना रहित। निष्काम।

पूर्णकाश्यप [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध-शास्त्रानुसार एक प्रसिद्ध तीर्थंक का नाम।

पूर्णकुंभ, पूर्णकुम्भ [संज्ञा पु.](सं.) १-भरा हुआ घड़ा। २-दीवार में घड़े के आकार का ३-एक प्रकार का युद्ध।

पूर्णकूट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

पूर्णकोशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लता विशेष।

पूर्णकोषा [संज्ञा पु.](सं.)१-कचौरी। २-एक प्राचीन पकवान जो जौ के आटे से बनाया जा था।

पूर्णकोष्ठा [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा।

पूर्णगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जि शीघ्र प्रसव होने वाला हो। २-पूरनपूरी।

पूर्णघट [संज्ञा पु.] (सं.) जल से भरा हुआ घ जो मंगलसूचक या शुभ समझा जाता है।

पूर्णचंद्र, पूर्णचन्द्र [संज्ञा पु.](सं.) पूरा चांद जो पूर्णिमा को होता है। पूर्णिमा का चांद।

पूर्णतया [क्रि. वि.] (सं.) पूर्णरूप से। पूरी तरह से।

पूर्णतः [क्रि. वि.] (सं.) पूरे तौर से। पूर्णरूप

पूर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्ण होने का भाव पूर्ण होना।

पूर्णत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णता। पूर्ण होना।

पूर्णदर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्णिमा। २- वैदिक-क्रिया।

पूर्ण-नाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह नाम जिसके साथ उपाधि या समस्त उपाधियाँ भी

२-लम्बी-लम्बी उपाधियों से युक्त नाम।

पूर्णपरिवर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जीव जो अपने जीवन काल में अनेक बार रूप बदलता है।

पूर्णपर्वेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णमासी। पूर्णिमा।

पूर्णपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनाज का एक प्राचीन माप जो २५६ मुठियों के बराबर होता था। २-बक्स जिसमें भरकर उत्सवों पर नातेदार के पास सौगात भेजी जाय।

पूर्णप्रज्ञ [वि.] (सं.) पूर्ण ज्ञानी। बहुत विद्वान्। [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्ण-प्रज्ञादर्शन के कर्त्ता माधवाचार्य।

पूर्णप्रज्ञदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्तसूत्र और इस पर के रामानुजकृत्यभाष्य का अवलम्बन करके बनाया हुआ दर्शनशास्त्र।

पूर्णबीज [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरा नीबू।

पूर्णभद्र [संज्ञा पु.] (सं) महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

पूर्णमा [संज्ञा स्त्री] सं.) पूर्णिमा। पूर्णमासी।

पूर्णमास् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्णिमा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।

पूर्णमास [संज्ञा पु] (सं) १-पौर्णमास याग। धाता के एक पुत्र का नाम।

पूर्णमासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उजियाले पाख की अन्तिम तिथि जिस दिन चन्द्रमा का मंडल पूर्ण दिखाई पड़ता है। पूर्णिमा।

पूर्णमुख [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मेजय के सर्पसत्र में जलाये गए एक नाग का नाम।

पूर्णमैत्रायनी-पुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध भगवान के अनुचरों में से एक का नाम।

पूर्णयोग [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का बाहुयुद्ध

पूर्णवर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) मगध का एक बौद्ध राजा जो सम्राट अशोक के वंश में अंतिम था

पूर्णविराम [संज्ञा पु.] (सं.) लिखने में वह चिह्न जो किसी वाक्य में उसकी समाप्ति पर उसके अन्त में लगाया जाता है। यह गोल बिंदी () और खड़ी पाई (।) के रूप में प्रयुक्त होता है।

पूर्णविषम [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत के अनुसार ताल में एक स्थान जो कभी-कभी सम का काम देता है।

पूर्णशैल [संज्ञा पु.] (सं.) योगिनीतंत्र में वर्णित एक पर्वत का नाम।

पूर्णहोम [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णाहुति।

पूर्णांगद, पूर्णाङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक नाग।

पूर्णांजलि, पूर्णाञ्जलि [वि.] (सं.) जितना अंजलि में आ सके। अंजलिभर।

पूर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ज्योतिष के मतानुसार पंचमी, दशमी, अमावस और पूर्णिमा तिथि। २-दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

पूर्णाघात [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत का एक ताल।

पूर्णानंद, पूर्णानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर। परब्रह्म।

पूर्णाभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) एक तांत्रिक संस्कार जो किसी नए साधक के गुरु दीक्षित होने के समय किया जाता है।

पूर्णामृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा की सोलह कलाओं का नाम।

पूर्णायु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूरी आयु (जो मनुष्य के लिए सौ वर्ष की होती है)। २-महाभारत में वर्णित एक गंधर्व का नाम। [वि.] (सं.) पूरी आयु वाला। सौ वर्ष तक जीने वाला।

पूर्णावतार [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देवता का सम्पूर्ण कलाओं से युक्त अवतार। २-वह अवतार जो विष्णु के अंशावतार नहीं थे।

पूर्णाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारतवर्णित एक नदी।

पूर्णाहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-होम या यज्ञ की अन्तिम आहुति। २-किसी काम की समाप्ति के समय होने वाला अन्तिम कृत्य।

पूर्णि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्णमा। पूर्णमासी।

पूर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नासाच्छिन्नी नामक पक्षी।

पूर्णिमा [संज्ञा स्त्री] (सं.) पूनों। पूर्णमासी।

पूर्णेंदु, पूर्णेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णिमा का चांद पूर्णचन्द्र।

पूर्णोत्कट [संज्ञा पु.] (सं.) मार्कण्डेय पुराण में वर्णित एक पूर्वदेशीय पर्वत।

पूर्णोत्संग, पूर्णोत्सङ्ग [वि.] (सं.) जिसकी गोद भरी हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) आंध्रवंशीय एक राजा का नाम।

पूर्णोदरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम।

पूर्णोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग अर्थात्-उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म प्रकटरूप से प्रस्तुत हों।

पूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-पालन। २-खोदने या बनाने का काम। जनता के लाभार्थ मकान, कूएँ, बगीचे, सड़कें आदि बनाने का काम। ३-धर्मादे या परोपकार के कार्य। *चैरेटी।*

पूर्त-धार्मिक-धर्मस्व [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मादे या परोपकार और धर्म-सम्बन्धी कार्यों में दान देने का विधान। *चैरेटेबिल एन्ड रिलिजियस एन्डोमेंट।*

पूर्तविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजकीय विभाग जिसका कार्य सड़क, नहर, पुल आदि बनवाना है। तामीरी महकमा।

पूर्त-संस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी धार्मिक, सामाजिक अथवा लोकोपकारी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिए संघटित समाज या मंडल २-वह संस्था जो धर्मादे या परोपकार के कार्य करे। *चैरेटेबिल इंस्टिट्यूशन।*

पूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति। २-पूर्णता। पूरापन ३-किसी प्रकार की त्रुटि, अपेक्षा पूरा करने की क्रिया या भाव। ४-गुणा करने की क्रिया गुणन।

पूर्व [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूर्व'। [वि.] (हिं.) देखो 'पूर्व'।

पूर्वभक्षिका [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल का भोजन जलपान।

पूर्य [वि.] (सं.) १-पूरा करने योग्य। पूरणीय। २-पालनीय। [संज्ञा पु.] (सं) एक तृणधान्य

पूर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दिशा जिस ओर से सूर्य निकलता है। २-जैनमतानुसार एक काल विशेष जो सात नील, पाँच खरब, साठ अरब वर्ष का होता है। [वि] (सं) १-पहले का पुराना। २-सब से आगे का। अगला। ३-पिछला। पीछे का। ४-बड़ा। [क्रि. वि.] (सं.) पहले। पेश्तर। आगे।

पूर्वक [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व पुरुष। पुरखा। [क्रि. वि.] (हिं.) सहित। साथ। जैसे-निश्चय पूर्वक।

पूर्वकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्व समय में किया हुआ कर्म। २-पहले किया जाने वाला कर्म। ३-वह कर्म जो पूर्व जन्म में किये हैं। ४-सुश्रुत के अनुसार रोगोत्पत्ति के पहले किये जाने वाले काम।

पूर्वकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वकाल। पहला समय

पूर्वकाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशुओं के शरीर का भाग। २-मनुष्य के शरीर का ऊपरी भाग।

पूर्वकाल [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल।

पूर्वकालिक [वि.] (सं.) १-पूर्वकाल का। प्राचीन पुराना। २ जिसकी उत्पत्ति अथवा रचना पूर्वकाल में हुई हो।

पूर्वकालिकक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्णक्रिया के पहले होता हो।

पूर्वकालिका, पूर्वकालीन [वि.] (सं.) प्राचीन।

पूर्वकाष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वदिशा।

पूर्वकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वदिशा के कर्ता, सूर्य।

पूर्वकृत [वि.] (सं.) पूर्वकाल में किया हुआ।

पूर्वगंगा, पूर्वगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर्मदा नदी।

पूर्वग [वि.] (सं.) पूर्वगामी।

पूर्वचित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्र की सभा में नाचने वाली एक अप्सरा का नाम।

पूर्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्येष्ठ भ्राता। अग्रज। २-बाप, दादा, परदादा आदि जो पहले गये

हों। पूर्वपुरुष। पुरखा।
[वि.] (सं.) पूर्वकाल में उत्पन्न।

पूर्वजन [संज्ञा पु.] (सं.) पुराने समय के लोम।

पूर्वजन्म [संज्ञा पु.] (सं.) इस जन्म से पहले का जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा भाई। अग्रज।

पूर्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी बहन।

पूर्वजाति [संज्ञा स्त्री] (सं.) पिछला जन्म। पूर्व जन्म।

पूर्वजिन [संज्ञा पु.] (सं.) १–मंजुश्री का एक नाम। २–अतीत जिन या बुद्ध।

पूर्वज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १–पिछले जन्म का ज्ञान। २–पहले का ज्ञान। पूर्वार्जित ज्ञान।

पूर्वतः [क्रि. वि] (सं.) पहले से।

पूर्वतर [वि.] (सं.) १–पहला। २–पहले। पूर्व का

पूर्वतरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्व या पहला होने का भाव।

पूर्वतिथीय [वि.] (सं.) जिस पर पहले से आने वाली तारीख लिखी हो। ऐन्टीडेट।

पूर्वत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व का भाव। पुरानापन

पूर्वदक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना।

पूर्व-दत्त [वि.] (सं.) जो पहले दिया जा चुका हो (शुल्क, कर आदि)। प्रीपेड।

पूर्वदान [संज्ञा पु.] (सं) पहले ही दे देना। पहले ही चुका देना।

पूर्वदिग्वदन [संज्ञा पु.] (सं.) यह तीन राशियां सिंह, मेष और धनु।

पूर्वदिगीश [संज्ञा पु.] (सं.) १–इन्द्र। २–मेष, सिंह और धनु यह तीन राशियां।

पूर्वदिन [संज्ञा पु.] (सं.) आज से पहले का दिन।

पूर्वदिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वजन्म के परिणाम-स्वरूप भोगे जाने वाला कर्म।

पूर्वदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १–नर और नारायण। २–असुर जो पहले सुर थे।

पूर्वनड़क [संज्ञा पु.] (सं.) टांग की एक हड्डी का नाम।

पूर्वनिरूपण [संज्ञा पु.] (सं.) भाग्य। किस्मत।

पूर्वन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अभियोग में प्रत्यार्थी का यह कहना कि ऐसे अभियोग में मैं वादी को पराजित कर चुका हूँ।

पूर्वपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी विषय के सम्बन्ध में उठाई हुई चर्चा, प्रश्न अथवा शंका, जिसका किसी को उत्तर देना अथवा समाधान करना पड़े। २–मुद्दई का दावा या अभियोग। ३–कृष्णपक्ष।

पूर्वपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १–पूर्वपक्ष उपस्थित करने वाला। २–वह जो किसी प्रकार का दावा दायर करे। मुद्दई का दावा।

पूर्वपक्षीय [वि.] (सं) पूर्वपक्ष का। पूर्वपक्ष-संबंधी।

पूर्वपद [संज्ञा पु.] (सं.) वर्तमान पद से पहले का पद। पहला स्थान।

पूर्वपद [संज्ञा पु.] (सं.) वर्तमान पद से पहले का पद। पहला स्थान।

पूर्वपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल्पित पर्वत जिस की ओट से सूर्य उदय होता है। उदयाचल।

पूर्वपाली [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पूर्वपितामह [संज्ञा पु.] (सं.) परदादा। प्रपितामह

पूर्वपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १–तीन पीढ़ियों (पिता, पितामह, प्रपितामह) में से कोई एक। २–पुरखा। ३–ब्रह्मा।

पूर्वप्रज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वज्ञान। पूर्वस्मृति।

पूर्वफाल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ।

पूर्वभाद्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) सत्ताईस नक्षत्रों में से पच्चीसवां नक्षत्र।

पूर्वभाग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रथम भाग। ऊर्ध्व-भाग।

पूर्वभाषी [वि.] (सं.) पहले बोलने वाला।

पूर्वभूत [वि.] (सं.) पहला बीता हुआ।

पूर्वमंजूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहले से दी हुई अनुमति या स्वीकृति। *प्रिवियस-सैंक्शन।*

पूर्वमीमांसा [संज्ञा पु.] (सं.) एक हिन्दू दर्शन-शास्त्र जिसमें कर्मकांड-सम्बन्धी विषयों का निर्णय किया गया है।

पूर्वयज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) जैन-मतानुसार एक जिन-देव।

पूर्वरंग, पूर्वरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वह गान या स्तुति जो किसी नाटक के अभिनय के आरंभ में विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिये होता है।

पूर्वराग [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में नायक या नायिका की एक अवस्था जो दोनों के संयोग होने के पूर्व प्रेम के कारण होती है। यह किसी के गुण सुनकर, चित्र या रूप आदि देखकर होता है।

पूर्वरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) रात्रि का प्रथम भाग।

पूर्वरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह रूप जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २–किसी वस्तु का वह रूप जो उस वस्तु के पूर्णरूप से प्रस्तुत होने के पहले बना हो।

पूर्वलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १–पहले का लक्षण या चिह्न। २–आगमनसूचक लक्षण।

पूर्ववत् [क्रि. वि.] (सं) पहले के समान। जैसा पहले था वैसा ही।

पूर्ववयस [संज्ञा स्त्री.](सं) कम उमर। अल्प वय

पूर्ववर्ती [वि.] (सं.) १–पहले का। २–जो पहले रह चुका हो।

पूर्ववाद [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार शास्त्रानुसार वह अभियोग जो न्यायालय में उपस्थित किया जाय। पहला दावा।

पूर्ववादी [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय आदि में पहले अभियोग उपस्थित करने वाला। वादी। मुद्दई।

पूर्ववायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूरब दिशा से आने वाली हवा। पुरवैया।

पूर्ववार्षिक [वि.] (सं.) वर्षाकाल के पहले का।

पूर्वविद् [वि.](सं.) पुरानी बातों को जानने वाला

पूर्ववृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) इतिहास।

पूर्वशैल [संज्ञा पु.] (सं.) उदयाचल।

पूर्वसंध्य, पूर्वसन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रातःकाल भोर। तड़का।

पूर्वसम्मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी के प्रस्ताव या विचार को ठीक और उचित समझकर उसके निर्वाह के लिए पहले से दी जाने वाली अनुमति। *प्रिवियस कॉंसेंट।*

पूर्वसर [वि.] (सं.) आगे जाने वाला। अग्रगामी।

पूर्वसाहस [संज्ञा पु.](सं.) प्रथम या तीन बड़े भारी अर्थदण्डों में से एक।

पूर्वस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वावस्था। पहले की अवस्था।

पूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पूर्व दिशा। पूरब। २–देखो 'पूर्वाफाल्गुनी'।

पूर्वाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) आवसथ्य अग्नि।

पूर्वाचल [संज्ञा पु.] (सं.) उदयाचल।

पूर्वाधिकार [संज्ञा पु.](सं.)वह अधिकार जो किसी पद पर अथवा वर्तमान अधिकार से पहले रहा हो।

पूर्वाधिकारी [संज्ञा पु.](सं.) १–वह अधिकारी जो किसी पद पर उसके वर्त्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। २–सम्पत्ति का वह स्वामी या अधिकारी जो उसके वर्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। प्रेडिसेसर।

पूर्वानिल [संज्ञा पु.] (सं.) पूरब दिशा से आने वाली हवा।

पूर्वानुराग [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य के अनुसार नायक, नायिका का वह आरम्भिक प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा किसी का चित्र या स्वयं किसी को देखकर उत्पन्न होता है।

पूर्वापर [क्रि. वि.] (सं.) आगे-पीछे। [वि.] (सं.) १–जो आगे और पीछे हो। २–अगला और पिछला। [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व और पश्चिम।

पूर्वापर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वापर का अभाव।

पूर्वाफाल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवां नक्षत्र।

पूर्वाभाद्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रों में पच्चीसवां नक्षत्र।

पूर्वाभिभाषी

पूर्वाभिभाषी [वि.] (सं.) पहले बोलने वाला।

पूर्वाभिमुख [वि.] (सं.) पूर्व की ओर मुख किये हुए।

पूर्वाभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मंत्र।

पूर्वाराम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बौद्ध मठ या संघ।

पूर्वार्जित [वि.] (सं.) १-पूर्व कर्मों से उपार्जित। २-पहले का उपार्जित या कमाया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) पुश्तैनी जायदाद या संपत्ति

पूर्वार्द्ध, पूर्वार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आरम्भ का आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वार्द्धय [वि.] (सं.) जो पूर्वार्द्ध से उत्पन्न हुआ हो।

पूर्वावेदक [संज्ञा पु.] (सं.) अभियोग उपस्थित करने वाला। वादी। मुद्दई।

पूर्वाशी [वि.] (सं.) पहले भोजन करने वाला।

पूर्वाषाढ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पूर्वाषाढ़ा'।

पूर्वाषाढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नक्षत्रों में बीसवां नक्षत्र।

पूर्वाह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूर्वाह्न'।

पूर्वाह्न [संज्ञा पु.] (हिं.) दिन का पहला आधा भाग। प्रातःकाल से दोपहर तक का समय।

पूर्वाह्निक [वि.] (सं.) पर्वाह्न का। पूर्वाह्न सम्बन्धी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पूर्वाह्न'।

पूर्वाह्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कृत्य जो दिन के पहले भाग में किया हो।

पूर्वित [वि.] (सं.) पहले किया हुआ। पहले बुलाया हुआ।

पूर्वी [वि.] (सं.) पूर्व दिशा से सम्बन्ध रखने वाला। पूरब का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का चावल। जो पूर्व में होता है। २-बिहारी भाषा में गाया जाने वाला एक प्रकार का दादरा। ३-संपूर्ण जाति का एक राग जो संध्या समय गाया जाता है।

पूर्वीघाट [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण भारत के पूर्वी किनारे पर की पर्वतश्रेणी जो बालासोर से कन्याकुमारी तक चली गयी है।

पूर्वेतर [वि.] (सं.) पूर्व से भिन्न, पश्चिम।

पूर्वेद्युः [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगहन, पूस, माघ और फागुन के कृष्णपक्ष की सप्तमी तिथि को किया जाने वाला श्राद्ध। २-प्रातःकाल। सवेरा।

पूर्वोक्त [वि.] (सं.) जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी हो। पहले कहा हुआ।

पूर्वोत्तरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्व और उत्तर के बीच की दशा। ईशानकोण।

पूर्वोत्पन्न [वि.] (सं.) पूर्वकाल में उत्पन्न।

पूलक [संज्ञा पु.] (सं.) मुट्ठा। गट्ठा। बंडल।

पूला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पूली] मूँज सरपत आदि का बंधा हुआ गट्ठा। पूलक।

पूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूड़ी।

पूलिया [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक मुसलमान जाति जो मालाबार में रहती थी।

पूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पूला।

पूलीची [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक असभ्य जंगली जाति।

पूवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पूआ'।

पूष [संज्ञा पु.](सं.) १-शहतूत का पेड़। २-पौष-मास।

पूषक [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत का पेड़ या फल।

पूषण [संज्ञा पु.](सं.) १-सूर्य। २-बारह आदित्यों में से एक। ३-वैदिक देवता जिनकी भावना भिन्न-भिन्न रूपों में पाई जाती है।

पूषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक अनुचरी एक मातृका का नाम।

पूषदंतहर, पूषदन्तहर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के अंश उत्पन्न वीरभद्र।

पूषध्न [संज्ञा पु.] (सं.) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

पूषभाषा [संज्ञा स्त्री.](सं.) इन्द्र की नगरी का एक नाम।

पूषमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) गोभिल का एक नाम।

पूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-दाहिने कान की एक नाड़ी का नाम। [संज्ञा पु.](हिं.) सूर्य

पूषात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

पूषासुहृद् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

पूस [संज्ञा पु.] (हिं.) अगहन के बाद और माघ के पूर्व का महीना।

पृक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असबरग नामक गंध-द्रव्य।

पृक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लगाव। संबंध। २-छूना। स्पर्श।

पृच [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न। अनाज।

पृच्छक [वि.] (सं.) १-पूछने वाला। प्रश्न करने वाला। २-जिज्ञासु। जानने की इच्छा रखने वाला।

पृच्छना [संज्ञा स्त्री.](सं.) जिज्ञासा करना। पूछना

पृच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रश्न। जिज्ञासा। २-भविष्य-संबंधी प्रश्न।

पृच्छ्य [वि.] (सं.) जो पूछने योग्य हो।

पृत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेना।

पृतना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेना। युद्ध। लड़ाई। २-प्राचीन सैन्यदल जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल सिपाही होते थे।

पृतनानी, पृतनापति [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृतना सैन्यदल का नायक। २-सेनापति।

पृतनाषाट्, पृतनासाह [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

पृतन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेना। फौज।

पृतन्यु [वि.] (सं.) जो युद्ध करना चाहता हो।

पृथक् [वि.] (सं.) भिन्न। अलग। जुदा।

पृथकता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पृथक्ता'।

पृथक्करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पथक या अलग करने की क्रिया या भाव। २-किसी को उसके पद या अधिकार से हटाना या अलग करना। रिमूवल।

पृथक्क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही पिता परन्तु भिन्न माता से उत्पन्न सन्तान।

पृथक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथक् या अलग होने का भाव। अलगाव। पार्थक्य।

पृथक्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) पार्थक्य। अलगाव। आइसोलेशन।

पृथक्त्वचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वालता।

पृथक्त्ववाद [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध से पृथक् या अलग रहने (सम्मिलित न होने) का सिद्धांत आइसोलेशनिज्म।

पृथक्त्ववादी [संज्ञा पु.](सं.) पृथक्त्ववाद सिद्धांत को मानने और अनुसरण करने वाला। आइसोलेशनिस्ट।

पृथक्पर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन औषध।

पृथगात्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैराग्य। विरक्ति २-भेद। अंतर।

पृथग्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूर्ख। बेवकूफ। २-नीच व्यक्ति। कमीना आदमी। ३-पापी।

पृथग्न्यस्त [वि.] (सं.) १-अलग किया हुआ। २-आसपास कीं परिस्थिति से अलग किया हुआ।

पृथग्न्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलग करना, लगाना या रखना। २-आसपास की परिस्थिति से अलग करना। ३-दो वस्तुओं के मध्य में कोई ऐसी आड़ खड़ी करना कि जिस से एक के ताप अथवा विद्युत का दूसरी में संचार न हो सके।

पृथग्बीज [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

पृथग्विध [वि.] (सं.) नाना प्रकार का।

पृथवान [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी। भूमि।

पृथवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धरा। भूमि।

पृथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा पांडु की दो रानियों में से एक जिसका दूसरा नाम कुन्ती था।

पृथाज, पृथातनय, पृथासुत [संज्ञा पु.] (सं.) युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन इन तीन पांडवों का नाम, किन्तु विशेषकर अर्जुन का।

पृथापति [संज्ञा पु.] (सं.) पांडुराज।

पृथिवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी। धरा। भूमि।

पृथिवीकंप, पृथिवीकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) भूकंप। भूचाल।

पृथिवीक्षित् [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

पृथिवीगीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णुपुराण में

वर्णित पृथ्वी की कथा।

पृथिवीजय [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम

पृथिवीतल [संज्ञा पु.] (सं.) धरातल। जमीन की सतह।

पृथिवीतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

पृथिवीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-यम। ३-ऋषभ नामक औषध।

पृथिवीपाल, पृथिवीभुज् [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

पृथिवीमंडल, पृथिवीमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) भूमण्डल।

पृथिवीलोक [संज्ञा पु.] (सं.) भूलोक। मर्त्यलोक।

पृथिवीश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

पृथिवीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

पृथिवीस्थ [वि.] (सं.) भूमि पर रहने वाला।

पृथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पृथ्वी'।

पृथु [वि.] (सं.) १-चौड़ा। विस्तृत। २-विशाल। बड़ा। महान्। ३-विस्तारित। ४-अधिक। विपुल। ५-असंख्य। अगणित। ६-चतुर। तेज। चालाक। [संज्ञा पु.] १-त्रेतायुग के सूर्यवंशीय पंचम राजा जो राजा वेणु के पुत्र थे। २-चतुर्थ मन्वंतर के एक सप्तर्षि। ३-दानवों का एक भेद। ४-शिव। महादेव। ५-अग्नि। ६-विष्णु। ७-काला जीरा। ८-अफीम। ९-एक हाथ या दो बालिश्त का मान।

पृथुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिड़वा। चिउरा। २-बच्चा। लड़का। ३-हिंगुपत्री। ४-चाक्षुष मन्वंतर का एक देवगण।

पृथुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बच्ची। लड़की। २-हिंगुपत्री।

पृथुकीर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथा की छोटी बहन का नाम।

[वि.] (सं.) जिसकी कीर्ति अधिक हो।

पृथुकोल [संज्ञा पु.](सं.) बड़ा बेर।

पृथुग [संज्ञा पु.](सं.) चाक्षुष मन्वंतर के देवताओं का एक भेद।

पृथुग्रीव [वि.] (सं.) लम्बी गरदन वाला।

पृथुच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-डाभ विशेष। २-हाथीकंद।

पृथुजय [वि.] (सं.) तेज चलने वाला।

पृथुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विस्तार। फैलाव

पृथुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पृथुता। फैलाव।

पृथुदर्शी [वि.] (सं.) चतुर। प्रवीण। बहुदर्शी।

पृथुपलाशिका [संज्ञा पु.] (सं.) कचूर।

पृथुपाणि [वि.] (सं.) लम्बे हाथ वाला।

पृथुप्रथ [वि.](सं.) जिसका यश दूर तक फैला हो

पृथुभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के एक देवता का नाम।

पृथुल [वि.] (सं.) १-चौड़ा। लम्बा। विस्तृत। २-अधिक। बहुत। मोटाताजा। स्थूल।

पृथुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंगुपत्री।

पृथुलाक्ष [वि.] (सं.) जिसकी बड़ी-बड़ी आँखें हों।

पृथुलोमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मछली। २-मीन-राशि।

पृथुवक्त्र [वि.] (सं.) बड़े मुँह वाला।

पृथुशिंब, पृथुशिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना-पाठा। २-पीली लोध।

पृथुशिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली जोंक।

पृथुशृंगक [संज्ञा पु.] (सं.) मेढ़ा।

पृथुशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़। पर्वत।

पृथुश्रव [वि.] (सं.) जिसके कान बड़े हों।

पृथुश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमार कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। नवें मनु के एक पुत्र का नाम।

पृथुस्कंध, पृथुस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

पृथूदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ स्थान जो सरस्वती नदी के दक्षिण तट पर है।

पृथूदर [संज्ञा पु.](सं.) १-मेढ़ा। मेष। २-बड़े पेट वाला।

पृथ्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौर जगत् का वह ग्रह जिस पर हम लोग रहते हैं। धरा। अवनि। २-पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग (मिट्टी, पत्थर आदि) जिस पर हम सब लोग चलते-फिरते हैं। भूमि। जमीन। धरती। ३-पंचभूतों अथवा तत्वों में से एक, जिसका प्रधान गुण गंध या बास है। ४-बड़ी इलायची। ५-काला जीरा। ६-हिंगुपत्री। ७-मिट्टी। ८-सत्रह अक्षरों वाला एक वर्णवृत्त जिसमें ८, ९ पर यति तथा अन्त में लघु गुरु होते हैं। ९-सोंठ।

पृथ्वीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी इलायची। २-छोटी इलायची। ३-काला जीरा। ४-हिंगुपत्री।

पृथ्वीकुरबक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद आक या मंदार।

पृथ्वीगर्भ [संज्ञा पु.] [वि.] गणेश।

पृथ्वीगृह [संज्ञा पु.] (सं.) गुफा।

पृथ्वीज [संज्ञा पु.] (सं.) साँभर नमक। [वि.] (सं.) जो पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हो।

पृथ्वीतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमीन की सतह। वह धरातल जिस पर हम सब घूमते-फिरते हैं। २-संसार। जगती।

पृथ्वीधर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़।

पृथ्वीनाथ, पृथ्वीपति पृथ्वीपाल [संज्ञा पु.](सं.) राजा।

पृथ्वीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

पृथ्वीश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

पृदाकु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिच्छू। २-चीता। ३-सर्प। ४-वृक्ष। ५-हाथी। ६-तेंदुआ।

पृश्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चितकबरी गाय। २-रश्मि। किरण। ३-पिठवन। ४-सुत नामक राजा की रानी का नाम। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न। २-देप। ३-जल। ४-अमृ ५-एक प्राचीन ऋषि का नाम। [वि.] (सं.) १-कृशकाय। दुबला-पतला। २-सफेद रं वाला। ३-सामान्य। साधारण। मामूली। ४-चितकबरा।

पृश्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पौधा जो जल में उत्पन्न होता है। जलकुम्भी।

पृश्निगर्भ, पृश्निधर [संज्ञा पु.](सं.) श्रीकृष्ण का नाम।

पृश्निपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन-लता।

पृश्निभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

पृश्निशृंग, पृश्निशृङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्णु २-गणेश।

पृश्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलकुम्भी।

पृषत् [संज्ञा पु.] (सं.) जल या अन्य किसी तरल पदार्थ की बूँद।

पृषत [संज्ञा पु.] (सं.) १-चितकबरा हिरन। २-जलबिन्दु। ३-सर्प विशेष। ४-राजा द्रुप के पिता का नाम। ५-रोहित नामक मछली।

पृषाताश्व [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। हवा।

पृषत्क [संज्ञा पु.] (सं.) तीर। बाण।

पृषदश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा। २-महाभारत में वर्णित एक राजर्षि का नाम। ३-भागवत के अनुसार विरूपाक्ष के पुत्र का ना

पृषदाज्य [संज्ञा पु.] (सं.) घी और दही का संमिश्रण।

पृषद्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैवस्वतमनु के एक पु का नाम।

पृषद्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेनका की कन्या का नाम।

पृषभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरावती का नाम।

पृषाकरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तौलने का बाट।

पृषातक [संज्ञा पु.] (सं.) घी और दही का संमिश्रण।

पृषोदर [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा। [वि.] (सं.) छोटे पेट वाला।

पृषोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा बगीचा।

पृष्ट [वि.] (सं.) जिज्ञासित। पूछा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पृष्ठ'।

पृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूछने की क्रिया या भाव। २-पिछला भाग।

पृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिछला भाग। २-सतह। तल। ऊपरी भाग। ३-पीठ। ४-पुस्तक का पन्ना। ५-पुस्तक के पन्ने का एक ओर का तल। पेज।

पृष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ की ओर का भाग। पिछला भाग।

पृष्ठगोप [संज्ञा पु.](सं.) सेना के पिछले भाग की रक्षा करने वाला सिपाही।

पृष्ठग्रंथि, पृष्ठग्रान्थि [वि.] (सं.) कुबड़ा।

पृष्ठग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग विशेष जो घोड़ों को होता है।

पृष्ठचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) १-रीछ। भालू। २-केकड़ा।

पृष्ठचर [वि.] (सं.) पीछे चलने वाला।

पृष्ठज [वि.] (सं.) जिसका जन्म पीछे हुआ हो।

पृष्ठतल्पन [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी की पीठ की रग विशेष।

पृष्ठदृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) १-केकड़ा। २-भालू। रीछ।

पृष्ठितःप्रथित [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार का एक हाथ।

पृष्ठपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवनलता।

पृष्ठपोषक [संज्ञा पु.](सं.) १-पीठ ठोंकने वाला। २-सहायक। मददगार!

पृष्ठपोषण [संज्ञा पु.](सं.) १-साहाय्य। समर्थन २-उत्साहित करना।

पृष्ठफल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पिंड के ऊपरी भाग का क्षेत्रफल।

पृष्ठभंग, पृष्ठभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध की वह रीति जिसमें शत्रु की सेना का पिछला भाग आक्रमण करके नष्ट कर दिया जाता है।

पृष्ठभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीठ। २-पिछला भाग।

पृष्ठभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्ति अथवा चित्र में वह सब से पीछे का भाग जो अंकित दृश्य घटना का आश्रय होता है।

पृष्ठमर्म्म [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ पर के मर्मस्थान जिन पर आघात लगने से मनुष्य मर सकता है। यह चौदह हैं। (सुश्रुत)।

पृष्ठमांस [संज्ञा पु.] (सं.) पशु आदि की पीठ पर का मांस।

पृष्ठमांसद [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ पीछे बुराई करने वाला व्यक्ति। चुगलखोर।

पृष्ठमांसदन [संज्ञा पु.] (सं) पीठ पीछे की जाने वाली निंदा। चुगली।

पृष्ठयान [संज्ञा पु.] (सं.) सवारी (घोड़े की पीठ की)।

पृष्ठवंश [संज्ञा पु.] (सं.) रीढ़।

पृष्ठवास्तु [संज्ञा पु.] (सं.) मकान का ऊपर का तल्ला।

पृष्ठवाह, पृष्ठवाह्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जिसकी पीठ पर बोझा लादा जाता हो।

पृष्ठशय [वि.] (सं.) पीठ के बल सोने वाला।

पृष्ठशृंग, पृष्ठशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली बकरा।

पृष्ठशृंगी, पृष्ठशृङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेष। मेढ़ा। २-भैंसा। ३-हीजड़ा। ४-भीम का नाम।

पृष्ठांकन, पृष्ठाङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी लेख या पत्र पर हस्ताक्षर करना। एन्डोर्स।

पृष्ठांकित, पृष्ठाङ्कित [वि.] (सं.) किसी लेख या पत्र पर हस्ताक्षर किया हुआ। एन्डोर्सड।

पृष्ठानुग, पृष्ठानुगामी [वि.] (सं.) पीछे जाने वाला।

पृष्ठास्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीठ की हड्डी। रीढ़।

पृष्ठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिछला भाग। पीछे का हिस्सा। २-मूर्ति या चित्र में वह सब से पीछे का भाग जो अंकित दृश्य अथवा घटना का आश्रय होता है। पृष्ठभूमि।

पृष्ठेरख [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

पृष्ठोदय [संज्ञा पु.] (सं.) मेष, वृष, कर्क, धन, मकर और मीन ये छः राशियाँ जिनके संबन्ध में ऐसा माना जाता है कि यह पीठ की ओर से उदय होती हैं।

पृष्ठ्य [वि.] (सं.) पीठ-सम्बन्धी।
[संज्ञा पु.] (सं.) वह घोड़ा जिसकी पीठ पर बोझा लादा जाता हो।

पृष्ठ्यस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का षडाह्निक नामक एक समय-विभाग।

पृष्ठ्यावलम्ब, पृष्ठ्यावलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का पांच दिन का एक समय विभाग।

पृष्णिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवनलता।

पें [संज्ञा पु.] (हिं.) रोनें या बाजा फूंकने से निकलने वाला शब्द।

पेंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झूलने के समय झूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना।
पेंग मारना–झूलते समय झूले को गति देने के लिए जोर लगाना। *पेंग बढ़ाना या चढ़ाना*–पेंग मारना।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

पेंगियामैना [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सतभैया नामक पक्षी जो मैना की तरह का होता है।

पेंघट, पेंघा [संज्ञा पु.] (देश.) मटमैले रंग का एक पक्षी जिसकी आंखें लाल और चोंच सफेद होती है।

पेंच+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेच'।

पेंचक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेचक'।

पेंचकश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेचकश'।

पेंजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पैजनी'।

पेंठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पैंठ'।

पेंड़ [संज्ञा पु.] (देश.) पीले चोंच वाला एक प्रकार का सारस पक्षी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पेड़'। २-'पैंड़'।

पेंड़ना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'बेंड़ना'।

पेंडुकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पंडुक नामक पक्षी। फाखता। २-सुनारों की आग सुलगाने की फुँकनी। ३-गुझिया नामक पकवान।

पेंडुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'पिंडली'।

पेंदर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पेड़ू।

पेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पेंदी] किसी वस्तु का निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरी रहती है।
पेंदे के बल बैठना–१-पालथी मारकर या चूतड़ टेककर बैठना। २-दबाना या हार मानना। *पेंदे का हलका*–ओछा।

पेंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु का नीचे का भाग। २-गुदा। ३-गाजर, मूली आदि की जड़। ४-तोप या बन्दूक की कोठी।

पेंशन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'पेन्शन'।

पेंशनर [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'पेन्शनर'।

पेंसिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'पेन्सिल'।

पेउश+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेउसी'।

पेउसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ब्यायी हुई गाय या भैंस का पहले दिन का दूध। २-एक प्रकार का पकवान।

पेखक* [संज्ञा पु.] (हिं.) दर्शक। देखने वाला।

पेखना* [क्रि. स.] (हिं.) देखना। [संज्ञा पु.] वह जो कुछ देखा जाय। दृश्य।

पेच [संज्ञा पु.] (फा.) १-घुमाव। चक्कर। फेर। २-उलझन। झंझट। बखेड़ा। ३-चालबाजी चालाकी। धूर्त्तता। ४-पगड़ी की लपेट या फेरा। ५-यंत्र। ६-मशीन का पुरजा। ७-वह कील या कांटा जिसके अगले नुकीले भाग पर कील की आधी लम्बाई तक गड़ारियाँ बनी होती हैं। ८-दो गुड्डी या पतंगों की डोर का उड़ते समय आपस में फँसना या उलझना। ९-कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। दाँव। १०-युक्ति। तरकीब। ११-टोपी या पगड़ी में आगे की ओर शोभा के लिए लगाया हुआ एक प्रकार का आभूषण। कलगी। सिरपेंच। १२-कानों में पहनने का एक आभूषण जिसे गोशपेच कहते हैं।
पेच घुमाना–दूसरे के विचार पलटने की युक्ति करना।
पेच हाथ में होना–किसी के विचारों को परिवर्तन करने की शक्ति होना। *पेच काटना*–उड़ती हुई पतंग की डोर में डोर फँसाकर काट देना। *पेच लड़ना*–उड़ती पतंगों की डोर परस्पर फँस जाना। *पेच छुटना*–दो पतंगों की परस्पर फंसी हुई डोर का अलग हो जाना।

पेचक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बटे हुए महीन तागे की गोली जिससे कपड़े सिलते हैं। २-बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी। [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पेचिका] १-उल्लूपक्षी। २-हाथी

की पूँछ की जड़। ३-पलंग। चारपाई। ४-जूँ। ५-बादल।

पेचकश [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह औजार जिससे घुमाकर पेच बैठाये या जड़े जाते हैं। २-एक प्रकार का घुमावदार पेच जिससे बोतल के काग निकलते हैं।

पेचताब [संज्ञा पु.] (फा.) वह क्रोध या गुस्सा जो विवशता आदि के कारण प्रकट न किया जाय।

पेचदार [वि.](फा.) १-जिसमें पेच लगा या जड़ा हो। पेचवाला। २-जिसमें कोई उलझाव हो [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का कसीदेकारी का काम।

पेचना[क्रि. स.](हिं.) किसी दो वस्तुओं के बीच में तीसरी वस्तु को इस प्रकार जमा देना कि पता न चले।

पेचनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सीधी लकीर पर काढ़ा हुआ कसीदा।

पेचवान [संज्ञा पु.](फा.) १-फर्शी या गुड़गुड़ी में लगाने की बड़ी सटक। २-बड़ा हुक्का।

पेचा+ [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. पेची] उल्लूपक्षी।

पेचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उल्लूपक्षी की मादा।

पेची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उल्लूपक्षी की मादा।

पेचिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) आँव होने के कारण पेट में होने वाली पीड़ा। मरोड़।

पेचीदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-घुमावदार या पेचीला होने का भाव। २-उलझाव।

पेचीदा [वि.] (फा.) १-जिसमें पेच हो। पेचदार २-जो टेढ़ा-मेढ़ा या कठिन हो। मुश्किल।

पेचीला [वि.] (हिं.) १-घुमाव-फिराव वाला। पेचदार। २-जो टेढ़ा-मेढ़ा या कठिन हो। विकट। मुशकिल।

पेचुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शाक।

पेज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रबड़ी। बसौंधी। [संज्ञा पु.](अं.) पुस्तक का पृष्ठ या पन्ना। वरका।

पेट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शरीर में छाती के नीचे का वह भाग जिसमें पहुँचकर भोजन पचता है। उदर। २-गर्भ। हमल। ३-अन्तःकरण। मन। दिल। ४-पोली वस्तु के बीच का खाली भाग। ५-गुंजाइश। अवकाश। समाई ६-रोजी। जीविका। ७-बंदूक या तोप में की वह जगह जहाँ गोली या गोला भरा जाता है।

पेट का कुत्ता-रोजी या पेट के लिए सब कुछ करने वाला। पेट काटना-खाने में से बचाना (किसी का) पेट काटना-किसी को मिलने वाले धन में से कमी करना। पेट का धंधा-१-जीविका का उपाय। २-रोटी बनाने का झंझट। पेट का पानी न पचना-१-न रह सकना। २-रहा न जाना। पेट का पानी न हलना-कुछ भी कष्ट या परिश्रम न होना। पेट का हलका होना-ओछे स्वभाव का। पेट की आग-१-भूख। २-संतान। पेट की आग बुझाना-भोजन करना। पेट की खबर न लेना या बात न पूछना-खाने पीने की न पूछना या प्रबन्ध करना। पेट की बात-गुप्त भेद। पेट की चोट्टी-गर्भ होने पर लक्षण न दीखें। पेट की मार देना या मारना-भोजन न देना। पेट के लिए दौड़ना-निर्वाह के लिए श्रम करना। पेट को धोखा देना-कम खाकर भोजन बचाना। पेट को लगना-भूख लगना। पेट को लगाना-दीनता प्रकट करना। भूखापन दिखाना। पेट गड़ना या गुड़गुड़ाना-अजीर्ण के कारण पेट में गड़-गड़ शब्द होना। पेट गदराना-गर्भ के लक्षण दीखना। पेट गिराना गर्भपात करना। पेट चलना-दस्त होना। पेट छटना-पेट की मोटाई, मल या गर्भाशय का मल दूर होना। पेट छूटना-दस्त होना। पेट जलना-१-जोर की भूख लगना। २-क्रोध आना। पेट जारी होना-दस्तों की बीमारी होना। पेट जिलाना-किसी प्रकार अपना पेट भरना। पेट ठंढा रहना-सन्तान जीवित रहना या बच्चों से सुख मिलना। पेट दिखाना-१-रोग या गर्भ पहचनवाना। २-भूखे होने का संकेत करना।

पेट देना-दिल की कहना। पेट न भरना-इच्छा पूरी न होना। पेट पकड़ कर भागना-१-डर कर भागना। २-पाखाने की ओर दौड़ना। पेट पकड़े या थामे फिरना-दुखी, तंग या परेशान होना। पेट पतला होना-धन की तंगी, विवशता या कंजूसी होना। पेट पीटना-भोजन से पेट भरना। पेट पर पट्टी बाँधना-भूखे न रहना। पेट पानी होना-१-डरना। २-पतले दस्त आना। पेट पालना-१-जैसे-तैसे गुजर-बसर करना। २-मतलबी होना। पेट पीटना-बेचैन होना। पेट पीठ एक होना या पेट पीठ से लगना-१-भूख से पेट अन्दर धँस जाना। २-निर्बल होना। पेट पोंछना-अन्तिम सन्तान। पेट फटना-१-हँसी के मारे बेहाल होना। २-स्पर्धा होना। ३-अधीर होना। पेट फूलना-१-जलन होना। २-जानने पाने के लिए व्याकुल होना। पेट बँधना या बाँधना-आवश्यकता से कम नियमित भोजन करना या अभ्यास करना। पेट बढ़ना-१-बहुत खाना। २-दूसरों को हड़प लेना। पेट भर जाना-१-उकता जाना या घबरा जाना। २-धनवान होना। पेट भरना-१-खूब खाना २-संतुष्ट होना। पेट मसोसना-भूखा रहना। *पेट मारना*-१-खाने में से बचाना। २-आत्महत्या करना। पेट मारकर मरजाना-आत्महत्या करना। पेट में आँत न मुँह में दांत। बहुत बूढ़ा। पेट में खलबली पड़ना या पानी होना-चिन्ता या घबड़ाहट होना। पेट में घुसना-स्वार्थ के लिए प्रेम बढ़ाना या भेद लेना। पेट में चूहे दौड़ना, कलाबाजी खाना या फुदकना। १-बहुत भूख लगना। २-व्याकुल या चिंतित होना। पेट में चींटे की गिरह होना-बहुत कम खाना। पेट में दाढ़ी होना-बच्चे का बहुत बुद्धिमान होना। पेट में डालना-१-खाना या इच्छा न होते हुए खाना २-भेद न खोलना। पेट में पांव होना-अत्यन्त छली अथवा कपटी होना। पेट में पानी न पचना-भेद न छुपा सकना। पेट में बल पड़ना-अधिक हंसी के कारण पेट दुखना पेट में रखना-गुप्त रखना। पेट में होना-१-दिल में इच्छा या विचार होना। २-पास में होना। पेट मोटा हो जाना-रिश्वत या घूस अधिक लेना। पेट रहना-गर्भ रहना। पेट लगना, लगजाना भख से पेट का भीतर धँस जाना। पेट से पांव निकालना-ऐंठना। अकड़ दिखाना। खोटे काम करना। पेट से निकलवाना गई वस्तु उगलवाना या वापिस पाना। पेट से होना-गर्भवती होना।

पेटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-टोकरी। पिटारा। २-थैला। ३-समूह। समुदाय।

पेटकैयां [क्रि. वि.] (हिं.) पेट के बल।

पेटपोसुया [संज्ञा पु.] (हिं.) पेटू।

पेटरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिटारी'।

पेटल [वि.] (हिं.) बड़े पेट वाला। तोंदल।

पेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु का मध्य भाग। २-पूरा विवरण। ब्योरा। तफ़सील। ३-बड़ा टोकरा। ४-सीमा। हद। ५-नदी का पाट। ६-नदी के बहने का मार्ग। ७-पशुओं की अँतड़ी। ८-वृत्त। घेरा। ९-उड़ती पतंग की डोर का झोल।

पेटा तोड़ना-उड़ती हुई पतंग की झूलती हुई डोर को तोड़ देना। *पेटा छोड़ना*-पतंग की लम्बी उड़ान करने पर डोर का बहुत अधिक झूल जाना।

पेटाक [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री पेटिका] १-थैली। २-पिटारा।

पेटागि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) (पेट की आग) भूख

पेटार* [संज्ञा पु.] (हिं.) पिटारा।

पेटारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पेटारी] पिटारा। मंजूषा।

पेटारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'पिटारी'। २-पिटारी नामक एक वृक्ष विशेष।

पेटार्थी, पेटार्थू [वि.] (हिं.) भुक्खड़। पेटू।

पेटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी पिटारी। २-सन्दूक। पेटी। ३-पिटारी नामक वृक्ष विशेष।

पेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सन्दूकची। छोटी सन्दूक। २-पेट का वह भाग जहाँ त्रिवली पड़ती है। ३-कमर में बाँधने का चौड़ा तस्मा। कमरबन्द। ४-चपरास। ५-कैंची, उस्तरा आदि रखने की नाई की किसबत।

पेटी उतारना-सिपाही को नौकरी से अलग करना। *पेटी पड़ना*-तोंद निकलना।

पेटू [वि.] (हिं.) जिसे सर्वदा खाने या पेट भरने की चिंता रहती हो। भुक्खड़।

पेटेंट [वि.] (अं.) १-किसी आविष्कार के संबंध में राज्य द्वारा की हुई रजिस्टरी जिसकी सहायता से वह आविष्कारक ही अपने आविष्कार द्वारा लाभ उठा सकता है। २-वह वस्तु या आविष्कार जिसकी इस प्रकार की रजिस्टरी हो चुकी हो।

पेट्रोल [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जो मिट्टी के तेल जैसा होता है। इसके ताप की शक्ति से मोटरें आदि चलती हैं। २-सैनिक रक्षा के निमित्त घूम-घूम कर पहरा देना। ३-इस प्रकार पहरा देने वाला सिपाही।

पेठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैठ'।

पेठा [संज्ञा पु.] (देश.) सफेद कुम्हड़ा।

पेड [वि.] (अं.) दिया या चुकाया हुआ। जिसका महसूल किराया आदि दे दिया गया हो।

पेड़ [संज्ञा पु.](हिं.) १-वृक्ष। दरख्त। २-आदि या मूलकारण। पेड़ *लगना*-पौधे आदि का जमना या जड़ पकड़ना। पेड़ *लगाना*-वृक्ष या पौधे आदि को किसी स्थान पर जमाना।

पेड़ना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पेटना'।

पेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध मिठाई जो खोवे और खाँड के योग से बनती है। इसका आकार गोल और चिपटा होता है।

पेड़रा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष विशेष।

पेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेड़ का तना। धड़। २-मनुष्य के शरीर का ऊपरी भाग या धड़। ३-पान का पुराना पौधा या उस पौधे के पान ४-प्रति वृक्ष के हिसाब से लगने वाला कर ५-एक बार का काटा हुआ नील का पौधा। ६-वह खेत जिसमें सर्व प्रथम ईख बोई जाय और फिर जौ या गेहूँ बोने के लिये जोता जाय।

पेडू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाभि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का भाग। उपस्थ। २-गर्भाशय।

पेद्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पिद्दी'।

पेनार [संज्ञा पु.] (देश.) मद्रास और बंगाल में पाया जाने वाला एक जङ्गली वृक्ष, जिसकी लकड़ी सफेद और मजबूत होती है।

पेन [संज्ञा पु.] (देश.) लसोड़े की जाति का एक वृक्ष विशेष इसे 'कूम' भी कहा जाता है।

पेनी [संज्ञा स्त्री.](अं.) इंगलैंड नामक देश का एक ताँबे का सिक्का जो एक शिलिंग का बारहवां भाग होता है। यह भारतीय तीन पैसे के बराबर मूल्य का होता है।

पेनीवेट [संज्ञा पु.] (अं.) एक अङ्गरेजी तोल जो लगभग दस रत्ती के बराबर होती है।

पेन्शन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह मासिक अथवा वार्षिक वृत्ति जो किसी को उसकी पिछली या बहुत दिनों की सेवाओं के बदले में मिले या उसके परिवार के लोगों को मिलती है।

पेन्शनर [संज्ञा पु.] (अं.) वह व्यक्ति जिसे पेन्शन मिलती हो। पेन्शन पाने वाला व्यक्ति।

पेन्सिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार का कलम जिसमें सीसे, सुरमे, रंगीन खड़िया आदि की सलाई भरी होती है और जो कागज पर लिखने के काम में आती है।

पेन्हाना* [क्रि. स.](हिं.) देखो 'पहनाना'। [क्रि. अ.] (हिं.) दुहते समय गाय भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

पेपर [संज्ञा पु.] (अं.) १-कागज। २-समाचार-पत्र। ३-दस्तावेज, तमस्सुक, सनद या कोई लिखित कागज।

पेपरमिंट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिपरमिंट'।

पेम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रेम'।

पेमचा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

पेय [वि.] (सं.) पीने योग्य। [संज्ञा पु.] १-पीने की तरल वस्तु। २-दूध। ३-जल। पानी।

पेया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चावल की बनी हुई एक प्रकार की लपसी।

पेयु [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-अग्नि। ३-सूर्य।

पेयूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमृत। सुधा। २-उस गौ का दूध जिसे ब्याये सात दिन से अधिक न हुए हों। ३-ताजा घी।

पेरना [क्रि. स.] (हिं.) १-दो भारी और कड़ी वस्तुओं के बीच में किसी तीसरी वस्तु को डालकर इस प्रकार दबाना कि उस का रस निकल आये। २-सताना या कष्ट देना। ३-किसी कार्य में अपेक्षाकृत अधिक समय लगाना। आवश्यकता से अधिक देर लगाना ४-यंत्र में डालकर किसी वस्तु को घुमाना। ५-प्रेरणा करना। चलाना। ६-भेजना। पठाना

पेरली [संज्ञा स्त्री.] (?) तांडव नृत्य का एक भेद

पेरवा, पेरवाह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कोल्हू आदि में कोई वस्तु पेरने वाला व्यक्ति। पेरने वाला

पेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घर आदि पोतने की एक प्रकार की मिट्टी। २-देखो 'पेड़ा'।

पेरी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह में वर-वधु को पहनाने की पीली धोती।

पेरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-सूर्य। ३-अग्नि। [वि.] १-रक्षा करने वाला। २-पूर्ति करने वाला।

पेरोल [संज्ञा पु.] (अं.) कैदी या बंदी आदि का कुछ समय के लिए इस शर्त्त पर मुक्त करना कि अवधि पूरी होने पर अथवा बीच में आज्ञा मिलते ही पुनः जेल में अविलंब लौट आयेगा।

पेल, पेलक [संज्ञा पु.] (सं.) अंडकोष।

पेलढ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेल्हड़'।

पेलना [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाकर भीतर घुसाना या धँसाना। दबाना। २-धक्का देना। ढकेलना। ३-अवज्ञा करना। टाल देना। ४-त्यागना। फेंकना। हटाना। ५-जबरदस्ती करना ६-घुसेड़ना। प्रविष्ट करना। ७-गुदा मैथुन करना। ८-किसी पर आक्रमण करने के निमित्त हाथी, घोड़ा आदि उसके सामने छोड़ना अथवा आगे बढ़ाना। ९-देखो 'पेरना'।

पेलवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को पेलने में प्रवृत्त करना। पेलने का काम दूसरे से कराना।

पेला* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झगड़ा। तकरार। २-अपराध। कसूर। ३-आक्रमण। चढ़ाई। ४-पेलने की क्रिया या भाव।

पेलास [संज्ञा पु.] (अं.) एक ग्रह जो मंगल और बृहस्पति के बीच में है। यह सूर्य से २८३ करोड़ मील दूर स्थित है।

पेलि, पेली [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा। [वि.] गमनशील। जाने वाला। (केवल 'पेलि')।

पेलिशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वशाला। अस्तबल।

पेलू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पेलने वाला। वह जो पेलता हो। २-पति। खाविंद। ३-उपपति। जार। बलवान।

पेल्हड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) अंडकोष। फोता।

पेवँ, पेव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रेम।

पेवकड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पियक्कड़'।

पेवड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पीले रंग की बुकनी। २-पीला रज। रामरज।

पेवर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पीला रंग।

पेवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेवड़ी'।

पेवस [संज्ञा पु.] (हिं.) हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध। यह पीला होता है पीने योग्य नहीं होता।

पेवसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेवस'।

पेश [क्रि. वि.] (फा.) सामने। आगे। सम्मुख। *पेश आना*-१-बर्ताव या व्यवहार करना। २-होना। घटित होना। *पेश करना*-सम्मुख उपस्थित करना। दिखलाना। *पेश चलना या जाना*-वश चलना। (*किसी से*) *पेश पाना*-जीतना। कृतकार्य होना।

पेशकब्ज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कटारी।

पेशकश [संज्ञा पु.] (फा.) १-नजर। भेंट। २-सौगात। तोहफा।

पेशकार [संज्ञा पु.](फा.) वह कर्मचारी जो न्यायालय में हाकिम के सामने कागज पत्र पेश करता है।

पेशकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पेशकार का पद या काम।

पेशखेमा [संज्ञा पु.] (फा.) १–सेना का अगला भाग जो आगे चलता है। २–सेना की खेमा-तम्बू आदि आवश्यक सामग्री जो आगे भेज दी जाती है। ३–किसी बात का पूर्व लक्षण।

पेशगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह धन जो किसी को किसी काम के लिए उस काम के करने से पूर्व ही दे दी जाय। अगाऊ।

पेशतर [क्रि. वि.] (फा.) पहले। पूर्व।

पेशताख [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अच्छी इमारतों में दरवाजे के ऊपर की ओर निकली हुई मेहराव

पेशदस्त [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'पेशकार'।

पेशदस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह अनुचित काम जो किसी पक्ष की ओर से पहले हो। जबरदस्ती।

पेशबंद [संज्ञा पु.] (फा.) चारजामें में लगा हुआ वह दोहरा बन्धन जो घोड़े की गरदन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है।

पेशबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति। २–छल। धोखा।

पेशराज [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर ढोने वाला मजदूर। राज या मेमार के पास पत्थर ढोकर लाने वाला मजदूर।

पेशल [वि.] (सं.) १–कोमल। सुकुमार। २–मनोहर। सुन्दर। ३–चतुर। निपुण। ४–धूर्त्त। चालाक। [संज्ञा पु.] विष्णु।

पेशलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–कोमलता। सुकुमारता। २–सौंदर्य। सुन्दरता। ३–धूर्तता। चालाकी।

पेशवा [संज्ञा पु.] (फा.) १–नेता। सरदार। २–महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधानमंत्रियों की उपाधि

पेशवाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–पेशवाओं की शासन-काल। २–पेशवा का पद या कार्य। ३–किसी सम्माननीय व्यक्ति के आने पर आगे बढ़कर उसका सत्कार करना। अगवानी।

पेशवाज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नर्त्तकियों का वह घाघरा जो नाच के समय पहनते हैं।

पेशा [संज्ञा पु.] (फा.) वह काम जो मनुष्य जीविका उपार्जित करने के लिए नियमित-रूप से करता हो। धंधा। उद्यम। व्यवसाय।

पेशा करना या कमाना–स्त्री का व्यभिचार कराकर धन कमाना।

पेशानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–ललाट। भाल। माथा। २–भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। ३–किसी पदार्थ का ऊपरी या आगे का भाग।

पेशाब [संज्ञा पु.] (फा.) १–मूत। मूत्र। २–धातु वीर्य। ३–सन्तान। औलाद।

पेशाब करना–१–मूतना। २–कुछ न समझना। *पेशाब की राह बहा देना*–रंडीबाजी में खर्च कर देना। *पेशाब निकल पड़ना या खता खाना*–अत्यन्त भयभीत होना। *(किसी के) पेशाब से चिराग जलना*–बड़ा यशस्वी या प्रतापी होना। बहुत अधिक दबदबा होना।

पेशाबखाना [संज्ञा पु.] (फा.) पेशाब करने का स्थान। मूतने की जगह।

पेशावर [संज्ञा पु.] (फा.) १–किसी प्रकार का पेशा करने वाला। व्यवसायी। २–पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा का एक प्रसिद्ध नगर।

पेशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अंडा। २–अरहर की दाल।

पेशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंडा।

पेशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–न्यायालय या किसी अधिकारी के सम्मुख अभियोग या मुकदमे के पेश होने तथा सुने जाने की कारवाई। २–किसी के सम्मुख या आगे होने की क्रिया या भाव। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–शरीर के भीतर मांस की वह मांसल गुल्थी या गांठ जिससे अङ्गों का संचालन होता है। २–तलवार की म्यान। ३–अंडा। ४–जटामासी। ५–वज्र। ६–पकी हुई कली। ७–एक प्रकार का ढोल जो प्राचीन समय में होता था। ८–एक प्राचीन नदी का नाम। ९–एक राक्षसी का नाम। १०–चमड़े की वह थैली जिसमें गर्भ रहता है।

पेशी-का-मुहर्रिर [संज्ञा पु] (फा.) वह लिपिक जो अभियोग सम्बन्धी कागजपत्र हाकिम को पढ़ कर सुनाता है।

पेशीतर [क्रि. वि.] (फा.) पहले। पूर्व।

पेशीनगोई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) भविष्य कथन।

पेषक [वि.] (सं.) पीसने वाला।

पेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १–पीसना। चूर-चूर करना २–कोई भी कूटने-पीसने का यन्त्र। ३–खलिहान में वह स्थान जहां दायं चलाई जाती है ४–तिधारा। थूहड़।

पेषणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिला जिस पर कोई वस्तु पीसी जाय।

पेषणीय [वि.] (सं.) पीसने योग्य।

पेषना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पेखना'। [संज्ञा पु.] देखो 'पेखना'।

पेषाक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चक्की का पाट। २–सिल। लोढा।

पेषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वस्त्र।

पेषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिशाचिनी।

पेहँटा+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कचरी नामक लता का फल जो कुँदरू के आकार का होता है।

पैं* [अव्य.] (हिं.) पास।

पैंकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पैर का कड़ा। २–बेड़ी [संज्ञा पु.] (?) ऊँट की नकेल।

पैंग* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेंग'।

पैंच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–धनुष की डोरी। २–नोर की पूँछ।

पैंचना+ [क्रि. स.] (देश.) १–अनाज फटक पछोरना। २–पलटना। फेरना।

पैंचा [संज्ञा पु.] (देश.) पलटा। हेरफेर।

ऐंचा-पैंचा–हेराफेरी।

पैंजना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पैंजनी] पै पहनने का एक प्रकार का पोला कड़ा जिस भीतर कंकड़ियाँ होती हैं और चलने पर ब है।

पैंजनियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिः) पैंजनी। (गहना)

पैंजनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १–पैर में पहनने का गहना जो चलने पर झनझन शब्द बजता है। २–बैलगाड़ी के पहिये के दोनों ओर की वह टेढ़ी लकड़ी जिसमें से पहिया या धुरा निकला रहता है।

पैंठ [संज्ञा स्त्री.] (हि) १–हाट। बाजार। २–दुकान। ३–वह दिन जिस दिन हाट लगती है। ४-पहली हुण्डी के खोजाने की अवस्था महाजन द्वारा लिखी हुई दूसरी हुण्डी।

पैंठौर [संज्ञा पु.] (हि.) हाट। दुकान।

पैंड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–डग। कदम। २–रास्ता।

पैंड़ भरना–१–पैर नापते हुए किसी देवता तीर्थ की ओर चलना। २–इस प्रकार खाना।

पैंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पथ। रास्ता। २–अस्तबल। घुड़साल। ३–रीति। प्रथा। पैंड़े *परना*–पीछे पड़ना।

पैंड़िया+ [संज्ञा पु.] (देश.) कोल्हू में गन्ना वाला।

पैंड़ो [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैंड़ा'।

पैंत*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दांव। बाजी। (देश.) सात (संख्या) (दलाल)।

पैंतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वार करने लड़ने के समय पैर खड़े होने की मु चालाकी से भरी हुई युक्त। चाल।

पैंतरा दिखाना–चाल या युक्ति के द्वारा चालाकी दिखाना।

पैंतालिस, पैंतालीस [वि.] (हिं.) चालीस पांच।

पैंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कुश का छ जो श्रद्धादि कर्म-करते समय उं पहना जाता है। पवित्री। २– लिये अनामिका में पहनने की तांबे की अंगूठी।

पैंतीस [वि.] (हिं.) तीस और पांच।

पैंया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैर। चरण। पां

पैंसठ [वि.] (हिं.) साठ और पांच।

पैं* [अव्य.] (हिं.) १–परन्तु। पर। २–अवश्य। जरूर। ३–पीछे। अनन्तर। ४–पास। समीप। प्रति। ओर। तरफ।

जो पै-यदि। अगर। ती पै-तो फिर। उस अवस्था में।

पै [प्रत्य.] (हिं.) १-पर। ऊपर। (अधिकरणसूचक विभक्ति) २-से। द्वारा (करणसूचक विभक्ति) [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दोष। त्रुटि ऐब। २-घोड़ानस। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पय'। २-मांड़ी या कलफ देने की क्रिया।

पैंजा [संज्ञा पु.] (हिं.) कपांस से रुई इकट्ठी करने वाला।

पैंकरमा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'परिक्रमा'।

पैंजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पांव में पहनने का एक गहना।

पैकार [संज्ञा पु.] (फा.) छोटा व्यापारी। फेरी वाला।

पैकारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैकार'।

पैकिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी वस्तु को कहीं भेजने अथवा लेजाने के समय बक्स आदि के भीतर या कागज, कपड़े आदि में भली प्रकार मजबूती से बांधने की क्रिया या भाव।

पैकी [संज्ञा पु.] (हिं.) मेले, तमाशे आदि में लोगों को घूम-घूम कर हुक्का पिलाने वाला व्यक्ति।

पैकेट [संज्ञा पु.] (अं.) पुलिंदा। मुट्ठा। छोटी गठरी। *पैकेट लगाना*-बाहर भेजने के लिये डाकघर में कोई पुलिंदा देना।

पैखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) 'देखो पाखाना'।

पैगंबर [संज्ञा पु.] (फा.) वह धर्माचार्य जो ईश्वर का सन्देश मानव-मात्र को सुनाता है। धर्मप्रवर्तक।

पैगंबरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पैगंबर होने का भाव। २-पैगंबर का कार्य या पद। ३-इस प्रकार का गेहूँ। [वि.] (फा.) पैगंबर सम्बन्धी

पैग* [संज्ञा पु.] (हिं.) डग। कदम। फाल।

पैगाम [संज्ञा पु.] (फा.) १-सन्देसा। सन्देश। २-विवाह के सम्बन्ध की बात। *पैगाम डालना*-सम्बन्ध करने की बातचीत करना।

पैज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। २-होड़। लागडाट। प्रतिद्वंद्विता। *पैज पड़ना जाना*-प्रतिद्वंद्विता या लागडाट हो जाना। [संज्ञा पु.] (हिं.) पैंतरा।

पैजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पैंजनी'।

पैजा [संज्ञा पु.](हिं.) किवाड़ के छेद में पहनाया हुआ लोहे का कड़ा। पायना।

पैजामा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पाजामा'।

पैजार [संज्ञा स्त्री.] (फा) जूता। जोड़ा। *जूती पैजार*-बुरी तरह से होने वाली लड़ाई-झगड़ा। जूतों से मारपीट।

पैठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घुसने या प्रवेश करने की क्रिया या भाव। दखल। २-गति। पहुँच

पैठना [क्रि. अ.] (हिं.) प्रविष्ट होना। प्रवेश करना।

पैठाना [क्रि. स.] (हिं.) प्रवेश करना। घुसाना।

पैठार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पैठ। प्रवेश। २-प्रवेशद्वार। फाटक। ३-मुहाना।

पैठारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पैठ। प्रवेश। २-गति। पहुँच।

पैठी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बदला। एवज।

पैड [संज्ञा पु.] (अं.) १-कोई छोटी मुलायम गद्दी २-छोटे कागजों की गड्डी। ३-सोख्ते या स्याहीसोख कागज की गद्दी।

पैड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीढ़ी। २-पुरवट खींचते समय बैलों के चलने के लिए बना-हुआ ढालुआँ रास्ता। ३-वह स्थान जहां सिंचाई के लिए जलाशय से पानी लेकर ढालते हैं। पौदर।

पैतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुश्ती लड़ने या तलवार चलाते समय घूम फिर कर पैर रखने की मुद्रा। २-धूल पर पड़ा हुआ पैर का निशान या चिह्न। *पैतरा बदलना*-पटा या कुश्ती में विशेष प्रकार से इधर-उधर पैर रखना। *पैतरा भाँजना*-घूमते हुए पैर रखना और हाथ घुमाना।

पैतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रेशम फेरने की परेती।

पैतला [वि.] (हिं.) छिछला। कम गहरा।

पैतलाय [वि.] (देश.) सतत्तह (संख्या)। (दलाल)

पैताना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पायँता'।

पैतामह [वि.] (सं.) १-पितामह-सम्बन्धी। २-पितामह से प्राप्त।

पैतामहिक [वि.] (सं.) पितामह से प्राप्त।

पैतृक [वि.](सं.) १-पिता-संबन्धी। २-बाप-दादा के समय से चला आया हुआ। पुश्तैनी। परम्परागत प्राप्त। ३-पितरों का।

पैतृक-भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ बापदादा के समय से रहते आये हों।

पैतृक-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य, जिसका शासक न केवल पूर्ण राज्य की प्रभुता ही भोगता हो, बल्कि भूमि का भी स्वामी समझा जाता हो। *पैट्रीमोनियल स्टेट*।

पैत्त [वि.] (सं.) [स्त्री. पैत्ती] पित्त का। पित्त-सम्बन्धी।

पैत्तल [वि.] (सं.) पीतल-सम्बन्धी।

पैत्तिक [वि.] (सं.) [स्त्री. पैत्तिकी] पित्त से उत्पन्न पित्त का।

पैत्र [वि.] (सं.) १-पैतृक। पुश्तैनी। २-पितरों का [संज्ञा पु.] (सं.) तर्जनी और अंगूठे के बीच का स्थान।

पैत्रिक [वि.] देखो 'पैतृक'।

पैत्र्य [वि.] (सं.) पितृ-सम्बन्धी।

पैथला+ [वि.] (हिं.) उथला। छिछला।

पैदर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैदल'।

पैदल [वि.] (हिं.) पैरों-पैरों चलकर जाने वाला। [क्रि. वि.] (हिं.) पाँव-पाँव। पैरों से। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिना किसी सवारी के पैरों से चलने की क्रिया। २-वह सिपाही जिसके पास कोई सवारी न हो और जो पैरों से चलकर कहीं जाता हो। पदाती। ३-शतरंज का एक मोहरा।

पैदा [वि.] (फा.) १-उत्पन्न। प्रसूत। जन्मा हुआ २-प्रकट। घटित। उपस्थित। ३-प्राप्त। अर्जित कमाया हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आय। आमदनी। लाभ।

पैदाइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) उत्पत्ति। जन्म।

पैदाइशी [वि.] (फा.) १-जन्म के समय का। बहुत पुराना। २-स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पैदावार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) खेत में उपजा हुआ अन्नादि। उपज। फसल।

पैदावारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैदावार। उपज। फसल।

पैन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाली। २-पनाला। [संज्ञा पु.] (अं.) लिखने की कलम।

पैना [वि.] (हिं.) [स्त्री. पैनी] १-पतली और चोखी धार वाला। धारदार। २-नुकीला। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह छोटी छड़ी जिससे हलवाहे बैल हांकते हैं। २-लोहे का नुकीला छड़। अंकुश। ३-नाली। ४-पनाला। [संज्ञा पु.] (?) धातु गलाने का मसाला।

पैनाक [वि.] (सं.) पिनाक-सम्बन्धी।

पैनाना* [क्रि. स.] (हिं.) किसी हथियार आदि की धार को रगड़ कर पैना-पैनी करना। चोखा करना।

पैन्हना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पहनना'।

पैमक [संज्ञा स्त्री.] (?) कलाबत्तू की बनाई हुई एक प्रकार की सुनहली गोट।

पैमाइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मापने की क्रिया या माप।

पैमाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह उपकरण जिससे कोई वस्तु मापी जाय।

पैमाल*+ [वि.] (हिं.) देखो 'पामाल'।

पैयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पावँ। पैर। [क्रि. वि.] (हिं.) पैरों के सहारे (चलना)।

पैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पोला दाना। बिना सत का अन्न का दाना। २-दीनहीन। तुच्छ। ३-देखो 'पहिया'। [संज्ञा पु.] (देश.) पूर्वी बंगाल, चटगांव और बरमा में होने वाला एक प्रकार का बांस।

पैर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह अंग या अवयव जिसके द्वारा प्राणी चलते-फिरते और खड़े होते हैं। पांव। पग। २-धूल पर अंकित पैर का निशान या चिह्न। ३-खलियान। डंठल-सहित अनाज का अटाला। ४-प्रदर रोग।

पैर उखड़जाना-लड़ाई में मुकाबले पर न ठहर सकना। *पैर उठाना*-१-चलने को कदम बढ़ाना। २-जल्दी-जल्दी आगे की ओर पैर रखना।

पैर छूटना-ऋतुमति को रजःस्राव अधिक होना। *पैर छूना*-१-आदर या सम्मान के लिए बड़ों के पांव पर हाथ रखना। २-दीनता-पूर्वक विनय करना। *पैर जमाना* १-दृढ़ रहना २-स्थिर भाव से खड़ा रहना। *पैर तोड़ना*-१-अधिक चलकर पांव को थकाना। बहुत अधिक दौड़धूप करना। *पैर तोड़ कर बैठना*-हार कर बैठना। कहीं न जाना। *(बुरे रास्ते पर) पैर धरना या रखना*-बुरे काम की ओर लगना। *पैर पकड़ना*-१-कहीं जाने से रोकने के लिए विनती करना। २-दीनता-पूर्वक विनय करना। ३-पैर छूना। *पैरों पड़ना*-पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत् करना। २-अत्यधिक दीनतासहित प्रार्थना करना। *पैरों पर गिरना या पड़ना*-१-दंडवत् करना। २-सविनय प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाकर विनती करना *पैर पसारना या फैलाना*-१-विश्राम करने के लिए सोना या लेटना। २-आडंबर या ठाठ-बाट खड़ा करना। *पैरों चलना*-पैदल चलना। *पैर पूजना*-बहुत आदर सत्कार करना या पूज्य मानना। *फूँकफूँक कर पैर रखना*-बहुत संभलकर कोई काम करना। बहुत सावधानी बरतना। *पैर बढ़ाना*-१-हद से बाहर जाना। गति तेज करना। *पैर भर जाना*-थक जाने के कारण चलने में पैरों में बोझ मालूम होना। *पैर भारी होना*-गर्भ या हमल रहना। *पैर में पैर या पैर से पैर बांधकर रखना*-सदा अपने पास रखना। *पैर सो जाना*-पैर सुन्न हो जाना।

(किसी के) पैर न होना-रुकने का साहस न होना। *धरती पर पैर न रखना*-१-बहुत गर्व करना। २-फूले अङ्ग न समाना।

पैरउठान [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

पैरगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैरों के द्वारा चलने वाली गाड़ी। जैसे—बाइसिकिल।

पैरना [क्रि. अ.] (हिं.) पानी के ऊपर हाथ पैर चलाते हुए जाना। तैरना।
पैरा हुआ-निपुण। पारंगत।

पैरवी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अनुसरण। अनुगमन। २-अभियोग या मुकदमे में अपने पक्ष के समर्थन आदि के लिए की जाने वाली कार्रवाई। ३-प्रयत्न। कोशिश।

पैरवीकार [संज्ञा पु.] (फा.) पैरवी करने वाला।

पैरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आया हुआ कदम। पौरा। २-पैर में पहनने का एक प्रकार का कड़ा ३-ऊंची जगह पर चढ़ने के लिए बल्ले रख कर बनाया हुआ रास्ता। ४-लकड़ी का खाना जिसमें सुनार अपने काँटे बाट आदि रखता है। ५-देखो 'पयाल'। [संज्ञा पु.] (अं.) लेख का उतना अंश जितने में कोई एक बात पूरी हो जाय और जो जगह छोड़कर अलग न किया गया हो।

पैराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पैरने या तैरने की क्रिया या भाव। २-तैरने की कला। ३-तैरने की मजदूरी।

पैराऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैराव'।

पैराक [संज्ञा पु.] (हिं.) तैरने वाला। तैराक।

पैराग्राफ [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'पैरा'।

पैराना [क्रि. स.] (हिं.) तैराना।

पैराव [संज्ञा पु.] (हिं.) इतना गहरा पानी जो तैर कर ही पार किया जासके। डुबाव।

पैराशूट [संज्ञा पु.] (अं.) वह बड़ा छाता जिसके सहारे वायुयान पर से उतरा जाता है।

पैरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का काँसे का गहना जिसे गरीब ग्रामीण स्त्रियां पैरों में पहनती हैं। २-सूखे पौधों पर बैल चलाकर दाना अलगाने की क्रिया। ३-भेड़ों के बाल कतरने का काम। ४-सीढ़ी। पैड़ी।

पैरेखना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'परेखना'।

पैरोकार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैरवीकार'।

पैल [संज्ञा पु] (सं.) ऋग्वेद का अध्ययन करने वाले एक ब्राह्मण का नाम।

पैलगी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रणाम। अभिवादन पालागन।

पैलव [वि.] (सं.) [स्त्री. पैलवी] पिलवा की लकड़ी का बना हुआ।

पैला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अन्न नापने की डलिया। २-दूध, दही ढांकने का नाँद के आकार का बरतन।

पैली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अन्न या तेल नापने का बरतन जो मिट्टी का होता है। २-अनाज या तेल रखने का मिट्टी का बरतन जिसका मुँह चौड़ा होता है।

पैवंद [संज्ञा पु.] (फा.) १-छेद बंद करने के लिए कपड़े आदि का छोटा टुकड़ा जो जोड़कर सीं दिया जाता है। चकती। थिगली। २-एक पेड़ की टहनी काटकर उसमें उसी जाति के पेड़ की टहनी में जोड़कर बांधना जिससे फल बढ़ते या स्वादिष्ट होते हैं। ३-इष्ट-मित्र। मेलजोल का आदमी। इष्ट-मित्र।
पैवंद लगाना-१-बात में बात जोड़ना या मेल मिलाना। २-अधूरी बात में नई बात जोड़कर उसे पूरा करना या सुधारना।

पैवंदी [वि.](फा.) १-पैवंद लगाकर उत्पन्न किया हुआ। २-वर्णसंकर। दोगला।
पैवँदी मूछ-चिपकाई हुई मरोड़दार मूंछ।
[संज्ञा पु.] (फा.) बड़ा आड़ू। शफतालू।

पैवस्त [वि.] (फा.) (तरल पदार्थ) जो भीतर घुस कर सब भागों में फैल गया हो। समाया हुआ।

पैशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) कोमलता। नरमी। नम्रता।

पैशाच [वि.](सं.) १-पिशाच का। पिशाच सं २-पिशाच देश का।

पैशाचकाय [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत में वर्णि (शरीरों) में से एक।

पैशाचविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) आठ प्रका विवाहों में से आठवां या निकृष्ट श्रे विवाह। वह विवाह जो सोई हुई कन्या हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुस किया जाय।

पैशाचिक [वि.] (सं.) पिशाच-सम्बन्धी। पै

पैशाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की नि प्राकृत भाषा।

पैशुन [संज्ञा पु.] (हिं.) चुगली। पीठ पीछे नि

पैशुनिक [वि.](सं.) पीठ पीछे निन्दा करने चुगलखोर।

पैशुन्य [संज्ञा पु.] (सं.) पिशुनता। चुगलखो

पैष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) अनाज से तैयार मदिरा। [वि.] (सं.) [स्त्री. पैष्टिकी] पीठी का बना हुआ।

पैष्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनाज को सड़ा बनाया हुआ मद्य।

पैसना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) पैठना। प्रवेश कर घुसना।

पैसरा+ [संज्ञा पु.](हिं.) झंझट। बखेड़ा।

पैसा [संज्ञा पु] (हिं.) १-तांबे का भारतीय सि जो तीन पाई या पाव आने के बराबर हो है। २-धन। दौलत।
पैसा उठना-धन खर्च होना। *पैसा उड़ा* धन व्यर्थ नष्ट या खर्च करना। *पैसा क* धन उपार्जित करना। *पैसा डूबना*-हानि हो *पैसा ढो लेजाना*-सब धन खींच ले जा *पैसा धोकर उठाना*-मनौती करने (किसी दे आदि की) अलग पैसा निकाल कर रखना।

पैसार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रवेशद्वार। भीतर घु का मार्ग।

पैसिंजरगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुसाफिरों ले जाने वाली रेलगाड़ी।

पैसेवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धनी। मालदा २-सराफ़।

पैहरा [संज्ञा पु.](देश.) कपास के खेत में त्रित करने वाला नौकर। बिनिया। पैहर।

पैहारी [वि.] (हिं.) केवल दूध पीकर रहने (साधु)।

पों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अधोवायु निकलने शब्द। २-भोंपा फूकने से निकला हुआ
पों बोलना-१-पराजय स्वीकार करना २-दिवाला निकालना।

पोंकना [क्रि. अ.](हिं.) १-पतला पाखाना फि २-अत्यधिक भयभीत होना। [संज्ञा पु.] (पतला दस्त फिरने का रोग।

पोंका [संज्ञा पु.] (देश.) पौधों पर लगने

वाला एक प्रकार का बड़ा पतिंगा।

नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'पौंगी'। २-वह नलिया जो दोबारा चाक पर से बनाकर उतारी गई हो (कुम्हार)।

[संज्ञा पु.](हिं.)[स्त्री. पोंगी] १-टीन आदि की खोखली नली जिसमें कागज पत्र रखे जाते हैं। भोंगा। २-बांस की नली। [वि.](हिं.) १-मूर्ख। भोंदू। २-पोला।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी पोली नली। २-बांस या ऊख का दो गांठों के बीच का स्थान। ३-नरकुल की वह नली जिस पर जुलाहे तागा लपेट कर ताना अथवा भानी करते हैं।

+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूँछ'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु का छोंछकर निकाला हुआ अंश।

टे की पोंछन-स्त्री की अन्तिम सन्तान।

[क्रि. स.] (हिं.) १-किसी लगी या चिपकी वस्तु को कपड़े आदि से हटाना। २-रगड़ कर साफ करना। [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. पोंछनी] पोंछने का कपड़ा।

+ [संज्ञा पु.](देश.) नाक का मल या रेंट।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटे आकार की मछली।

, पोन्तून [संज्ञा पु.] (अं.) वह नावें जिन से पुल बनाया जाता है।

सेतु [संज्ञा पु.] (अं., हिं.) नावों का पुल। लोहे के पीपों का पुल।

[संज्ञा पु.] (हिं.) सँपोला। सांप का बच्चा

[क्रि. स.] (हिं.) १-पोने का काम दूसरे से कराना। २-आटे की लोई बना कर सेंकने के लिए देना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े की सरपट चाल।

पोइयों जाना-दोनों पैर फेंकते हुए दौड़ना।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरपट चाल।

[अव्य] (हिं.) देखो। बचो। हटो।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक लता जिसकी पत्तियों का सांग बनाकर खाया जाता है। २-कोपल। अंकुर। ३ ईख का कल्ला। ४-गन्ना की पोर। ५-गेहूँ ज्वार, बाजरे आदि का छोटा पौधा।

पोई फूटना-ईख में अंकुर निकलना।

[संज्ञा पु.] (देश.) महुए का पका हुआ फल। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पोंकना'।

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'पोंकना'।

[वि.] (देश.) १-पुलपुला। नाजुक। २-पोला। खोखला। ३-तत्वहीन। निःसार।

[संज्ञा पु.] (हिं.) पालने पोसने का सम्बन्ध।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहे की ढरकी के बीच का गड्ढा।

[क्रि. स] (हिं) पालना। पोसना।

पोखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. पोखरी] खोदकर बनाया हुआ जलाशय। तालाब। पोखर।

पोखराज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुखराज'।

पोखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलैया। छोटा पोखर

पोगंड, पोगण्ड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पांच से सोलह वर्ष तक की वय का बालक। २-छोटे अङ्ग वाला।

पोच [वि.] (हिं.) १-तुच्छ। क्षुद्र। २-हीन। निकृष्ट। ३-अशक्त। निर्बल।

पोचारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुचारा'।

पोची* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हेठापन। निचाई। बुराई।

पोछना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पोंछना'।

पोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गठरी। पोटली। बकुचा। २-ढेर। अटाला। ३-पुस्तक के पन्नों की वह जगह जहाँ से जुजबन्दी या सिलाई होती है। ४-कफन के ऊपर का कपड़ा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल। मिलान। २-घर की नीवँ या बुनियाद।

पोटगल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का नरकुल। नरसल। २-कांस। ३-एक प्रकार की मछली। ४-एक सर्प विशेष।

पोट-डाक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोई वस्तु डाक द्वारा भेजने की वह व्यवस्था जिसमें उस वस्तु को चारों ओर से कपड़े आदि से लपेट कर भलीभांति कसकर बांध देते हैं और सीं देते हैं या किसी टीन, लकड़ी आदि के डब्बों में बन्द करके भेजी जाती हैं। पारसल पोस्ट। २-इस प्रकार भेजी हुई वस्तु।

पोटना* [क्रि. स.] (हिं.) १-समेटना। बटोरना २-फुसलाना। हथियाना। बात में लाना।

पोटरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पोटली'।

पोटला [संज्ञा पु.] (हिं) बड़ी गठरी।

पोटली [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी गठरी या बकुचा

पोटा [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. पोटी] १-उदराशय पेट की थैली। २-साहस। सामर्थ्य। कलेजा। ३-औकात। बिसात। समाई। ४-आंख की पलक। ५-उँगली का छोर। ६-चिड़िया का छोटा बच्चा जिसके पर भी न निकले हों। गेदा।

पोटा तर होना-पास में धन आदि होने से प्रसन्नता और निश्चिंतता होना।

[संज्ञा पु.] (?) नाक का मल। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मरदाने लक्षणों वाली औरत। वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूँछ हों। २-नौकरानी चाकरनी। ३-घड़ियाल।

पोटास [संज्ञा पु.] (अं.) पौधों की राख से तैयार किया जाने वाला क्षार जो अब खनिज पदार्थों से प्राप्त होता है।

पोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलेजा।

पोढ़*+ [वि.] (हिं.) देखो 'पोढ़ा'।

पोढ़ा [वि.] (हिं.) [स्त्री. पोढ़ी] १-पुष्ट। दृढ़। मजबूत। २-कड़ा। कठोर।

जी पोढ़ा करना-जी कड़ा करना।

पोढ़ाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-दृढ़ होना। मजबूत होना। २-पक्का पड़ना। [क्रि. स.] पक्का करना। दृढ़ करना।

पोत [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी भी जानवर (पशु-पक्षी आदि) का बच्चा। २-दो वर्ष की उमर का हाथी। ३-वस्त्र। कपड़ा। ४-कपड़े की बुनावट। ५-वह गर्भस्थ पिंड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो। ६-वह स्थल जहाँ घर हो। घर की नींव। ७-नौका नाव। जहाज। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माला में का छोटा दाना। २-काँच की गुरिया (माला) का दाना। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूमिकर। जमीन का लगान। २-ढंग। ढब। प्रवृत्ति। ३-बारी। दाँव। पारी। अवसर।

पोत पूरा करना-कमी पूरा करना।

पोतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'पोत'। २-जानवर का बच्चा। ३-महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

पोतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूतिका। पोई नामक लता।

पोतड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छोटा कपड़ा जो बच्चों के नीचे बिछाया जाता है। गंतरा।

पोतदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खजानची। २-खजाने में रुपया परखने वाला। पारखी।

पोतधारी [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज का मालिक या अध्यक्ष।

पोतन [संज्ञा पु.] (सं.) पवित्र। स्वच्छ। शुद्ध। [वि.] पवित्र करने वाला।

पोतनहर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह पात्र जिस में पोतने के निमित्त मिट्टी घोल रखी हो। २-घर पोतने का काम करने वाली स्त्री। ३-आँत। अंतड़ी।

पोतना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी गीले पदार्थ की पतली-पतली तह चढ़ाना। २-किसी सूखे या गीले पदार्थ को किसी स्थान या वस्तु पर लगाना (जिससे कि वह उस पर जम जाय)। ३-गोबर, मिट्टी, चूने आदि से किसी स्थान को लीपना। [संज्ञा पु.] पोतने का कपड़ा।

पोतनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जहाज का कप्तान २-नाव का मांझी।

पोतभंग, पोतभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज का टकराकर नष्ट होना।

पोतरक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) नौका खेने की डाँड़।

पोतला [संज्ञा पु.] (हिं.) तवे पर घी पोतकर पकाई हुई चपाती। पराठा।

पोतवाह [संज्ञा पु.] (सं.) मांझी। मल्लाह। केवट।

पोता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बेटे का बेटा। २-यज्ञ के सोलह प्रधान ऋत्विजों में से एक। ३-

पवित्र वायु। ४-विष्णु। ५-घुली हुई मिट्टी जो दीवार पर पोती जाती है। ६-पोतने का कपड़ा। ७-लगान। भूमिकर। ८-अंडकोष। ९-एक प्रकार की मछली। १०-देखो 'पोटा'। *पोता फेरना*-१-चौका लगाना। २-सफाई करना। दीवार आदि पर मिट्टी या चूना फेरना

पोताई [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'पुताई'।

पोताच्छादन [संज्ञा पु.] (*सं.*) तम्बू। छोलदारी। डेरा।

पोताधान [संज्ञा पु.] (*सं.*) छोटी मछली का बच्चा

पोवारा [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'पुतारा'।

पोतारी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) पोतने का कपड़ा।

पोताश्रय [संज्ञा पु.] (*सं.*) बन्दरगाह।

पोतास [संज्ञा पु.] (*सं.*) कपूर।

पोतिका [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १-पोई की बेल। २-वस्त्र। कपड़ा।

पोतिया [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-वह छोटी थैली जिसमें चूना, तम्बाकू, सुपारी आदि होती है। २-वह कपड़ा जिसे पहनकर लोग नहाते हैं। [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का खिलौना।

पोती [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १-बेटे की लड़की। २-वह लेप जो मिट्टी की हँड़िया की पेंदी पर चढ़ाया जाता है। ३-पानी से तर किया हुआ वह पुतारा जो मद्य चुवाते समय उसके बरतन पर फेरा जाता है। ४-पोतने की क्रिया या भाव।

पोतोद्वहन [संज्ञा पु.] (*सं.*) जहाज पर माल ले जाने का ठेका।

पोत्र [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-सूअर का थूथन या खांग २-वज्र। ३-नाव। जहाज। ४-हल की फाल। यज्ञपात्र विशेष जो पोत नामक याजक के पास रहता है। ५-नाव की डांड़।

पोत्रायुध, पोत्री [संज्ञा पु.] (*सं.*) सूअर। शूकर।

पोथकी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) छोटे बच्चों की आंख में होने वाला एक रोग।

पोथा [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १-बड़ी पुस्तक। २-कागजों की गड्डी।

पोथिया [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'पोतिया'।

पोथी [संज्ञा स्त्री.](*हिं.*) १-पुस्तक। २-लहसुन की गाँठ।

पोदना [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-एक छोटी चिड़िया। २-नाटा या ठेंगना आदमी।
पोदना-सा-अत्यधिक छोटा। जरासा।

पोदीना [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'पुदीना'।

पोद्दार [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-देखो 'पोतदार'। २-गांजे के सम्बन्ध में पूरी जानकारी रखने वाला व्यक्ति।

पोना [क्रि. स.] (*हिं.*) १-गीले आटे की लोई को हाथों से घुमा-घुमा कर रोटी के रूप में बढ़ाना २-(रोटी) पकाना। ३-पिरोना। गूथना।

पोप [संज्ञा पु.] (*अं.*) ईसाई धर्म का सब से बड़ा या प्रधान आचार्य।

पोपला [वि.] (*हिं.*) १-जिसके मुँह में दाँत न हों २-जिसमें दांत न हों। बिना दांत का। ३-सिकुड़ा या पिचका हुआ।

पोपलाना [क्रि. अ.] (*हिं.*) पोपला होना।

पोपली [संज्ञा स्त्री.](*हिं.*) उगी हुई आम की गुठली को घिसकर बच्चों द्वारा बनाया हुआ बाजा।

पोपलीला [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) धर्माचार्यों के आडम्बर तथा सीधे सादे धर्मनिष्ठ लोगों को अपने जाल में फँसाने का कार्य।

पोय+ [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'पोई'।

पोया [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-ताजा उगा हुआ पौधा। २-साँप का छोटा बच्चा। संपोला। ३-बच्चा

पोर [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १-उँगली की गांठ या जोड़ जहां से वह मुड़ती है। २-दो गांठों के बीच का उँगली का भाग। ३-ईख, बांस आदि की गांठों के मध्य का भाग। ४-रीढ़। पीठ। ५-जूए में किसी के जिम्मे बाकी रहने वाली रकम।

पोरा [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) १-लकड़ी का गोलाकार टुकड़ा। २-लकड़ी का गोल कुन्दा। ३-कुन्दे के समान मोटा आदमी।

पोरिया [संज्ञा पु.] (*हिं.*) छल्ले के आकार का चांदी का वह गहना जो हाथ या पैर की उंगलियों के पोरों में पहना जाता है।

पोरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी। [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) देखो 'पोर'।

पोरुआ [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'पोरिया'।

पोर्ट [संज्ञा पु.] (*अं.*) अंगूरों से बनाई हुई एक प्रकार की शराब।

पोल [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-खाली जगह। शून्य स्थान। २-खोखलापन। सारहीनता। ३-आंगन। सहन। कहीं जाने का फाटक या प्रवेशद्वार।
(किसी की) *पोल खुलना*-भांडा फूटना। (किसी की) *पोल खोलना*-भांडा फोड़ना।
[संज्ञा पु.] (*सं.*) अवकाश। खाली जगह। शून्य स्थान।

पोलक [संज्ञा पु.] (*हिं.*) बिगड़े हाथी को डराने का एक प्रकार का बांस जिसके सिरे पर चरखी में बँधे पायल में से लुक निकालते हैं।

पोलच, पोलचा [संज्ञा पु.] (*हिं.*) १-वह ऊसर जमीन जिसे जुते तीन वर्ष हो गये हों। २-वह परती भूमि जो गतवर्ष रबी की फसल बोने के पूर्व जोती गई हो।

पोला [वि.] (*हिं.*) [स्त्री. पोली] १-जिसका भीतरी भाग खाली हो। २-जो कड़ा या ठोस न हो। खोखला। ३-सारहीन। तत्वहीन। ४-जो भीतर से कड़ा न हो। पुलपुला। [संज्ञा पु.] सूत का लच्छा। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और नरम होती है।

पोलाद [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'फौलाद'।

पोलारी [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) सुनार का बें आकार का एक औजार।

पोलाव [संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'पुलाव'।

पोलिंद, पोलिन्द [संज्ञा पु.] (*सं.*) जहाज मस्तूल।

पोलिका [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) गेहूँ के आटे की हुई पूड़ी।

पोलिटिकल [वि.] (*अं.*) राज्यप्रबन्ध-सम्बन्धी राजनीतिक।

पोलिटिकल-एजंट [संज्ञा पु.] (*अं.*) किसी की ओर से नियुक्त वह अधिकारी जो राज्य में अपने राज्य की ओर से तथा व्यापार आदि की रक्षा के लिए

पोलिया [संज्ञा स्त्री.] (*हिं.*) पैर में पहनने का गहना जो पोला होता है।
[संज्ञा पु.] (*हिं.*) देखो 'पौरिया'।

पोली [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) गेहूँ के आटे की पूरी
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) जंगली कुसुम।

पोलो [संज्ञा पु.] (*सं.*) गेंद का एक अंग्रेजी खेल जो घोड़े पर चढ़कर खेला जाता है।

पोश [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह जिससे कोई वस्तु ढकी जाय। जैसे—पिलंगपोश। २-से हटने का संकेत जिसका अर्थ है-हटजाओ।
[वि.] (फा.) पहनने वाला। जैसे-सफेदपोश

पोशाक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) परिधान। पहनने के सब कपड़े।
पोशाक बढ़ाना-कपड़े उतारना।

पोशाकी [संज्ञा पु.] (फा.) १-पापलेन की तरह का एक कपड़ा। २-अच्छा कपड़ा।

पोशीदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) छिपाव।

पोशीदा [वि.] (फा.) छिपा हुआ। गुप्त।

पोष [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-पालनपोषण। २-धन। ३-तुष्टि। संतोष। ४-वृद्धि। ५-उन्नति। अभ्युदय।

पोषक [वि.] (*सं.*) १-पालने वाला। ३-वर्द्धक। बढ़ाने वाला। ४-सहायक।

पोषण [संज्ञा पु.] (*सं.*) १-पुष्ट या २-बढ़ाना। वर्द्धन। ३-ऐसा अथवा ऐसी सहायता देना जिससे कोई पूर्वक जीवन बिता सके तथा जीवित बढ़ सके। मेंटेनेन्स, एलिमेंट।

पोषणीय [वि.] (*सं.*) पोषण करने योग्य।

पोषध [संज्ञा पु.] (*हिं.*) उपवास

पोषना [क्रि. स.] (*हिं.*) पालना।

पोषयिष्णु [वि.] (*सं.*) पोषक। पालने वाला

पोषाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (*सं.*) किसी देख भाल करने वाला अधिकारी।

रिप्टैंट।

पोषणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले के भीतर की वह नली जिसके द्वारा भोजन पेट तक पहुँचता है। एलिमेंटरी केनाल।

पोषित [वि.] (सं.) पाला हुआ।

पोषी [वि.] (सं.) पालन पोषण करने वाला। खिलाने-पिलाने वाला।

पोष्टा [वि.](हिं.) पालने-पोसने वाला [संज्ञा पु.] (हिं.) कंजा। करंज।

पोष्य [वि.] (सं.) पाले जाने के योग्य। पालनीय। पालाहुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर। चाकर। भृत्य।

पोष्यपुत्र, पोष्यसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र के समान पाला हुआ लड़का। २-दत्तक या गोद लिया हुआ लड़का।

पोस [संज्ञा पु.] (हिं.) पालने वाले के प्रति होने वाला प्रेम और कृतज्ञता।

पोसन [संज्ञा पु.] (हिं.) पालन। रक्षा।

पोसना [क्रि. स.] (हिं.) १-पालना या रक्षा करना २-अपने पास अपनी रक्षा में रखना। ३-देखो 'पोंछना'।

पोस्ट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-स्थान। जगह। २-पद ३-नौकरी। ४-डाकखाना।

पोस्टआफिस [संज्ञा पु.] (अं.) डाकखाना। डाकघर।

पोस्टकार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) डाक द्वारा भेजने का मोटे कागज का टुकड़ा।

पोस्टमार्टम [संज्ञा प.] (अं.) १-मृत्यु का कारण ज्ञात करने या निश्चित करने के लिए मरने पर किसी प्राणी के शरीर की चीरफाड़। २-किसी प्राणी की लाश को चीरफाड़कर की जाने वाली परीक्षा।

पोस्टमास्टर [संज्ञा पु.] (अं.) डाकघर का सब से बड़ा कर्मचारी।

पोस्टमैन [संज्ञा पु.] (अं.) डाकिया। चिट्ठीरसाँ।

पोस्टर [संज्ञा पु.] (अं.) बड़े-बड़े अक्षरों में छपा या लिखा हुआ विज्ञापन। प्रज्ञापक।

पोस्टर-इंक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की छापे की स्याही।

पोस्टल-गाइड [संज्ञा पु.] (अं.) वह पुस्तिका जिसमें डाक द्वारा चिट्ठी, पारसल आदि भेजने के नियम और डाकघरों के नाम आदि होते हैं।

पोस्टेज [संज्ञा स्त्री.] (अं.) डाकद्वारा चिट्ठी या पारसल आदि भेजने का महसूल जो टिकट आदि के रूप में चिपकाया जाता है।

पोस्त [संज्ञा पु.] (फा.) १-छिलका। बकला। २-खाल। चमड़ा। ३-अफीम के पौधे का डोडा ४-अफीम का पौधा।

पोस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) वह पौधा जिसके डोडे में से अफीम निकलती है।

पोस्ती [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह जो नशा करने के लिए पोस्ते के डोडे को पीसकर पीता हो। २-आलसी आदमी। ३-एक प्रकार का कागज का खिलौना।

पोस्तीन [संज्ञा पु.] (फा.) १-जानवरों की मुलायम खाल का बना हुआ पहरावा। २-खाल का बना हुआ कोट जिसके भीतर की ओर रोयें होते हैं।

पोहना* [क्रि. स.] (हिं.) १-पिरोना। गूंथना। २-छेदना। ३-लगाना। पोतना। ४-घुसाना। धँसाना। ५-पीसना। घिसना। ६-देखो 'पोना'। [वि.] देखो 'पुहमी'।

पोहमी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी। पुहमी।

पोहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह स्थान जहां पशु चराये जाते हैं। २-घास आदि पशुओं का चारा।

पोहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पशु। चौपाया।

पोहिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) चरवाहा।

पौंचा [संज्ञा पु.] (हिं.) साढ़े पांच का पहाड़ा।

पौंडई [वि.](हिं.) पौंडे या गन्ने के रंग का। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रंग जो पौंडे या गन्ने के रंग का हो।

पौंडरीक, पौण्डरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का कुष्ठ। २-स्थल पद्म। पुण्डरी। ३-एक यक्ष का नाम।

पौंडर्य, पौण्डर्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलपद्म।

पौंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गन्ना या ईख।

पौंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौरी'।

पौंड्र, पौण्ड्र [वि.] (सं.) १-एक देश का नाम। २-उस देश का निवासी या राजा। ३-एक प्रकार का गन्ना या ऊख। पौंडा। ४-माथे पर का तिलक। ५-भीम के एक शंख का नाम ५-मनु के अनुसार एक जाति।

पौंड्रक, पौण्ड्रक [संज्ञा पु.](सं.) १ मोटा गन्ना। पौंडा। २-वर्णसंकर एक जाति विशेष। ३-पुण्ड्रदेश के राजा का नाम।

पौंड्रवत्स, पौण्ड्रवत्स [संज्ञा पु.] (सं) वेद की एक शाखा का नाम।

पौंड्रवर्द्धन, पौण्ड्रवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं) पुण्ड्रवर्द्धन नामक एक नगर।

पौंड्रिक, पौण्ड्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) मोटा गन्ना। पौंडा। २-एक पक्षी जिसे लवा कहते हैं। ३-पुण्ड्र नामक देश। ४-एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

पौंढ़ना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पौढ़ना'

पौंढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गन्ना जो साधारण गन्ने की अपेक्षा मोटा होता है।

पौंढ़ाना [क्रि. स.) (हिं.) देखो 'पौढ़ाना'।

पौंरना [क्रि. अ.] (हिं.) तैरना।

पौंरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौरी'।

पौंरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पौरिया'।

पौ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्याऊ। पौसाला। २-प्रातःकाल के प्रकाश की रेखा। किरण। ज्योति ३-पासे का एक दांव।

पौ फटना-तड़का या सबेरा होना। *पौ बारह पड़ना*-जीत का दांव पड़ना या आना। *पौ बारह होना*-१-भाग्य खुलना। २-जीत का दांव पड़ना।

पौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पौवा'।

पौगंड, पौगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पांच से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौठ [संज्ञा स्त्री](हिं.) जोत की वह रीति जिसके अनुसार जोतने का अधिकार प्रतिवर्ष बदलता जाता है।

पौड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) तैरना।

पौडर [संज्ञा पु.] (अं.) १-मुख पर मलने की सफेद या गुलाबी बुकनी। २-चूर्ण। बुकनी।

पौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लकड़ी का वह मोढ़ा जिस पर मदारी बन्दर को नचाता है। २-सीढ़ी। पैड़ी। [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की अत्यधिक कड़ी मिट्टी।

पौढ़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-झूलना। २-लेटना। सोना।

पौढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-झुलाना। २-लेटाना ३-सुलाना।

पौण्य [वि.] (सं.) पुण्यकर्मकारक।

पौतन [संज्ञा पु.] (सं.) एक जनपद।

पौताना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'पैताना'। २-जुलाहों के करघे में का एक औजार जो लकड़ी का होता है।

पौतिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मधु।

पौतिनासिक्य [संज्ञा पु.](सं.) पीनस नामक रोग

पौत्तलिक [वि.] (सं.) १-पुतली का। पुतली-संबंधी। २-मूर्तिपूजक।

पौत्तिक [संज्ञा पु.](सं.) पुत्तिका नामक मधुमक्खी का मधु।

पौत्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पौत्री] पोता। लड़के का बेटा। पुत्र का पुत्र।

पौत्रिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) लड़की का लड़का (नाती) जो अपने नाना की संपत्ति का उत्तराधिकारी हो।

पौद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा पौधा। २-वह छोटा पौधा जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सके। ३-वंश। सन्तान। ४-माननीय व्यक्ति की राह में बिछाया हुआ कपड़ा। पांवड़ा।

पौदन्य [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नगर का नाम।

पौदर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पैर का चिह्न। २-पगडंडी। ३-ढालुवाँ रास्ता जिस पर से बैल

कुएँ से चरसा या पुरवट खैंचते हैं।

पौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–छोटा पौधा। २–छोटा पेड़। बुलबुल की पेटी में बांधने का रेशम या सूत का फुंदना।

पौधन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी का वह पात्र जिसमें रखकर खाना परोसा जाता है।

पौधा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नया निकलता हुआ पेड़। २–छोटा पेड़ या झाड़ी।

पौधि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौद'।

पौनःपुनिक [वि.] (सं.) बार-बार होने वाला। पुनः-पुनः या फिर-फिर होने वाला।

पौन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जीवात्मा। प्राण। २–हवा। वायु। ३–प्रेतात्मा। भूत। प्रेत। *पौनका पूत*–१–हनुमान। २–नाग। सर्प। *पौन चलाना या मारना*–जादू-टोना करना। *पौन बिठाना*–(किसी के) पीछे प्रेत लगाना।
[वि.] एक में चौथाई कम। तीन-चौथाई।

पौनरुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) बार-बार दोहराने की क्रिया।

पौनर्णव [संज्ञा पु.] (सं.) सन्निपात ज्वर का एक भेद।

पौनर्भव [वि.] (सं.) [स्त्री. पौनर्भवा] १–उस विधवा सम्बन्धी, जिसने दूसरे पति के साथ विवाह किया हो। २–ऐसी स्त्री से उत्पन्न।
[संज्ञा पु] १–पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र। २–वह पति जिसने विधवा या किसी परित्यक्ता स्त्री से पुनर्विवाह किया हो।

पौनर्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कन्या जिसका किसी के साथ एक बार विवाह संस्कार हो गया हो और दूसरी बार उसके साथ विवाह किया जाय।

पौना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–पौन का पहाड़ा। २–लोहे की बड़ी करछी या झरनी।
[वि.] (हिं.) देखो 'पौन'।

पौनार, पौनारि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कमल के फूल की नाल या डंठल।

पौनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कपड़ा जिसका थान पौन थान के बराबर होता है। यह अर्ज में भी कुछ कम होता है।

पौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–नाई, धोबी, बारी आदि लोग जो विवाह आदि मंगल अवसरों पर नेग लेते हैं। २–गांव में रहने वाले लोग जिन्हें अन्नराशि में से कुछ अंश मिलता है। २–छोटा पौना।

पौने [वि.] (हिं.) तीन चौथाई। एक में चौथाई कम। जैसे–पौने पांच।
पौने सोलह आने–अधिकांश। बहुत सा।

पौमान [संज्ञा पु.] (हिं.) १–देखो 'पवमान'। २–जलाशय।

पौरंदर, पौरन्दर [वि.] (सं.) इन्द्र-सम्बन्धी।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्येष्ठानक्षत्र।

पौर [वि.] (सं.) १–नगर-सम्बन्धी। नगर का। २–नगर में उत्पन्न। ३–पेटू।
[संज्ञा पु.] (सं.) १–रूसा नामक घास। २–गुरु राजा का पुत्र। ३–नखी नामक गंधद्रव्य नख। [संज्ञ स्त्री.] देखो 'पौरी'।

पौर-अधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) नागरिक अधिकार।

पौर-अधिसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) नगर निवासियों से सम्बन्ध रखने वाला सेवक। जनसेवक। *सिविल सर्वेन्ट*। धर्मादे या परोपकार का कार्य करना।

पौरजानपद [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र में पुर या नगर तथा जनपद अथवा बाकी देश के प्रतिनिधियों की सभाओं का सम्मिलित रूप।

पौर-लेखक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र में वह अधिकारी जिसके पास किसी पुर अथवा नगर के लेख्यों या दस्तावेजों की प्रतिलिपि तथा विवरण रहता था।

पौरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पुर या पौर के अधिकारों से सम्पन्न होने की अवस्था। *सिटीजनशिप*।

पौर-अधिसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारे देश से सम्बन्ध रखने वाली सेवा, पर सैनिक और धार्मिक क्षेत्रों से भिन्न। *सिविल सर्विस*।

पौर-अधिसेवा-परीक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) वह परीक्षा जिसमें पौर-अधिसेवा-सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर दिये जाते हैं। *सिविल सर्विस एग्जामिनेशन*।

पौर-अधिसेवा-व्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जनपदाधिकार का कानून। *सिविल सर्विस एक्ट*।

पौरक [संज्ञा पु.] (सं.) १–घर के समीप का उद्यान। २–नगर के पास का बाग।

पौरकर्त्तव्य [संज्ञा पु.] (सं.) नगर निवासियों से संबंधित। अवश्य करने योग्य कार्य। *सिविल ड्यूटी*।

पौरकुत्स [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम। महाभारत।

पौरक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कोई नगरी तथा उसके आस-पास का वह क्षेत्र जिसकी लोकहित-सम्बन्धी व्यवस्थाएँ स्थानिक संस्था के आधीन हों। *टाउन एरिया*।

पौरगीय [वि.] (सं.) पूर्वजन्म-सम्बन्धी।

पौरजन [संज्ञा पु.] (सं.) शहर में रहने वाला। नगरनिवासी।

पौरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरता। शिष्टता।

पौर-परिषद् [संज्ञा प.] (सं.) वैधानिक आधार पर संघटित किसी नगर के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह संस्था जो उस नगर के स्वास्थ्य, सफाई, सड़कों, भवननिर्माण, जल-कल आदि लोकोपकारी कार्यों की व्यवस्था करती है। *म्यूनिसिपैलिटी*।

पौरप्रदेष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो पौर-परिषद् या नगरपालिका का सदस्य हो। *म्यूनिसिपल-कमिश्नर*।

पौरव [वि.] (सं.) पुरु से आया हुआ। पुरु
[संज्ञा पु.] (सं.) १–पुरु की सन्तान। २
देश का नाम। ३–उस देश का अधि
राजा।

पौरविधान [संज्ञा पु.] (सं.) पौरपरिषद्
कानून। *म्यूनिसिपल लॉ*।

पौरवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–युधिष्ठिर
का नाम। २–वासुदेव की एक स्त्री
३–संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना।

पौरवृद्ध [संज्ञा पु.](सं) नगर का
पौरसंघ, पौरसङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो
परिषद्'।

पौरसंघकरणिक, पौरसङ्घकरणिक [
(सं.) पौर-परिषद् में लिखा-पढ़ी
करने वाला कर्मचारी। *म्यूनिसिपल*

पौरस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अन्तःपुर
वाली स्त्री। २–पुर या नगर में
स्त्री।

पौरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आया हुआ
हुए चरण।

पौराण [त्रि.] (सं.) १–पुराण में लिखा
हुआ। २–पुराण-सम्बन्धी।

पौराणिक [वि.](सं.) [स्त्री. पौराणिकी]
पुरातन। २–पुराण सम्बन्धी। ३
निष्णात। ४–पुराणपाठी। [संज्ञा पु]
अठारह मात्रा के छंदों की संख्या।

पौराधिकरणिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह
जो पौरविधान के अन्तर्गत आने वाले
राधिक अभियोगों का विचार करते
अपराधियों को दण्ड देने का अधिकार
है। *म्यूनिसिपल मजिस्ट्रेट*।

पौरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पौरी'।

पौरिक [संज्ञा पु.] (सं.) अपराधों को रोकने
अपराधियों का पता लगाकर उन्हें पकड़ने
लिए नियुक्त सिपाही। पुलिस। *पोलिस*।

पौरिकअधिकारिक [संज्ञा पु] (सं.)
आदि की शांतिरक्षा के लिए नियुक्त
चारियों में से कोई एक। *पुलिस*

पौरिक-उपपरिदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.)
या सिपाहियों के ऊपर निगरानी करने
अधिकारी जिसका पद पौरिक परि
दरोगा से छोटा होता है। छोटा
पुलिस सबइन्स्पेक्टर।

पौरिक-उपमहापरिदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.)
अधिकारी जो पौरिकमहापरिदर्शक से
अधिकार में छोटा पर अन्य पौरिक
गण से पद या अधिकार में बढ़
पुलिस डिप्टी इंसपेक्टर जेनरल।

पौरिक-कार्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) पुलिस
लय।

पौरिकजन [संज्ञा पु.] (सं.) अपराधों को रोकने और अपराधियों का पता लगाकर उन्हें पकड़ने के लिए नियुक्त सिपाही। पुलिस का प्यादा या सिपाही। *पुलिसमैन।*

पौरिकपरिदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) पौरिक स्थान या थाने का प्रधान अधिकारी। *पुलिस इंस्पेक्टर।*

पौरिक-महापरिदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य या प्रान्त के पौरिकविभाग का सर्वोच्च अधिकारी। *पुलिस इन्स्पेक्टर जेनरल।*

पौरिक-सूचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी दुर्घटना या आपसी झगड़े विषयक सूचना जो पौरिक-स्थान या थाने में लिखाई जाय। २-पुलिस कार्यालय के रजिस्टर में चढ़ी हुई सूचना या किसी घटना का विवरण आदि। *पुलिस रिपोर्ट*

पौरिकस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं। *पुलिस स्टेशन।*

पौरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) द्वारपाल। दरबान।

पौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ड्योढ़ी। २-सीढ़ी। ३-खड़ाऊँ।

पौरुकुत्स [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुकुत्स के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

पौरुक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) दोहराना।

पौरुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पौरुष'।

पौरुमद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान।

पौरुमह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान

पौरुमीढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान

पौरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरुष का भाव। पुरुषत्व। २-पुरुषों के योग्य अथवा उपयुक्त काम। पुरुषार्थ। ३-साहस। पराक्रम। वीरता बहादुरी। ४-मनुष्य की पूरी ऊँचाई। पुरसा। ५-उतना बोझ जितना कि एक आदमी लेजा सके। ६-उद्योग। उद्यम।

[वि.] (सं.) पुरुष या मानव-संबंधी। मानवी

पौरुषेय [वि.] (सं.) [स्त्री. पौरुषेयी] १-पुरुष-सम्बन्धी। पुरुष का। २-पुरुषकृत। आदमी का किया हुआ। ३-आध्यात्मिक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य समुदाय। २-पुरुष का विकार रोजंदारी पर काम करने वाला मजदूर। ३-पुरुष का कर्म या काम।

पौरुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-साहस। वीरता। २-पुरुषत्व। मनुषत्व।

पौरुहूत [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का अस्त्र, वज्र।

पौरू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मिट्टी।

पौरेय [संज्ञा पु.] (सं.) नगर के आसपास का स्थान

पौरोगव [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की पाकशाला का अध्यक्ष।

पौरोभाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दोषदर्शन। २-ईर्ष्या

पौरोहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुरोहिताई। पुरोहित का कर्म।

पौर्णपर्क [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक कृत्य।

पौर्णमास [संज्ञा पु.] (सं.) एक याग अथवा इष्टिका जो पूर्णिमा के दिन होती है।

पौर्णमासी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्णमासी। पूरनमासी।

पौर्णमास्य [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

पौर्णमी, पौर्णिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्णमासी।

पौर्त, पौर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्त्त या पूर्त्तकार्य।

पौर्तिक, पौर्त्तिक [वि.] (सं.) [स्त्री. पौर्त्तिकी] पूर्त्त-साधक कर्म। परोपकार के काम।

पौर्वदेहिक [वि.] (सं.) पूर्वदेह-संबंधी।

पौर्वापर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहले और पीछे का संबंध। २-अनुक्रम। सिलसिला।

पौर्वाह्निक [वि.] (सं.) [स्त्री. पौर्वाह्निकी] पूर्वाह्न-सम्बन्धी।

पौर्विक [वि.] (सं.) [स्त्री. पौर्वकी] १-पहले का। अगला। २-पैतृक। पुरातन। प्राचीन। पूर्व में होने वाला।

पौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नगर का गढ़ (दुर्ग) का बड़ा फाटक।

पौलना* [क्रि. स.] (?) काटना।

पौलरना+ [क्रि. स.] (हिं.) चूहे आदि का भूमि या फर्श को खोदकर पोला करना। खोखला करना।

पौलहस्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्पणखा।

पौलस्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) [पौलस्त्यी] १-पुलस्त्य का वंशज। २-कुबेर। ३-रावण, कुंभकर्ण और विभीषण। ४-चन्द्र।

पौलस्त्यी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्पणखा।

पौला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खड़ाऊ जिसमें खूटी के स्थान पर अँगूठा फसाने के लिए रस्सी लगी होती है।

पौलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-फुलका। रोटी। २-भुना हुआ जौ, सरसों आदि। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'पौली'।

पौलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पौरिया'।

पौलिश [वि.] [यू. पालस] पुलिशकृत। (ज्योतिष-सिद्धान्त विशेष।

पौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पौरी। ड्योढ़ी। २-पैर का एड़ियों से लेकर अंगुलियों तक का भाग। ३-धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का निशान।

पौलुषि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुलु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २-सत्ययज्ञ ऋषि जो पुलु के वंश में उत्पन्न हुये थे।

पौलोम [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पौलोमी] १-पुलोम ऋषि का पत्र।

पौलोमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शची। इन्द्राणी। भृगु महर्षि की पत्नी का नाम।

पौल्कस [वि.] (सं.) पुल्कसजाति-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) पुल्कसजाति का मनुष्य।

पौवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक सेर का चौथा भाग। २-पावभर दूध नापने का बरतन।

पौष+ [संज्ञा पु.] (सं.) पूसमास। पूस का महीना जिसमें पूर्णमासी पुष्यनक्षत्र में हो।

पौषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूस मास की पूर्णिमा।

पौष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल की जड़। भसीड़ २-एरंड की जड़। ३-स्थलपद्म। ४-पुष्करमूल

पौष्करमूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्करमूल।

पौष्करसादि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-पुष्करसद नामक ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

पौष्करिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा पोखरा। छोटा तालाब।

पौष्कल [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

पौष्कल्य [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्णता।

पौष्टिक [वि.] (सं.) १-पुष्टकारक। पुष्ट करने वाला। २-बलवीर्य बढ़ाने वाला।

पौष्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा पुरु की एक स्त्री।

पौष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) रेवतीनक्षत्र। [वि.] पुषा देवता-सम्बन्धी।

पौष्प [वि.] (सं.) [स्त्री. पौष्पी] १-पुष्प संबंधी। पुष्पों का। २-पुष्प या फूलों से निकला हुआ फूलदार। [संज्ञा पु.] १-फूलों से निकाला हुआ मद्य। २-पुष्परेणु। पराग।

पौष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधुनिक पटनानगर का प्राचीन नाम जिसे पुष्पपुर या पाटलीपुत्र भी कहते थे।

पौसरा, पौसला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्थान जहां पर पानी पिलाया जाता है। प्याऊ। २-प्यासों को पानी पिलाने का प्रबन्ध।

पौसार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहे के राछ को ऊँचा नीचा करने के लिये लगा हुआ डंडा।

पौसेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) पाव सेर की तोल। एक सेर के चौथे हिस्से के बराबर की तोल।

पौहारी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो केवल दूध पी कर रहता है और अन्न ग्रहण नहीं करता।

प्याऊ [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वसाधारण [illegible] पिलाने का स्थान। पौसाला।

प्याज [संज्ञा पु.] (फा.) गोल गांठ के [illegible] एक प्रसिद्ध कंद, जिसकी गन्ध बड़ी उग्र होती है।

प्याजी [वि.] (फा.) हलके गुलाबी रंग का।

प्यादा [संज्ञा पु.] (फा.) १-पैदल सिपाही। २-दूत। हरकारा। ३-शतरंज की एक गोटी।

प्याना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'पिलाना'।

प्यानो [संज्ञा पु.] (अं.) एक बड़े आकार का अङ्ग-

रेजी बाजा ।

प्यार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रेम । मुहब्बत । स्नेह २-प्रेम प्रदर्शित करने या जताने के लिये किया गया स्पर्श, चुम्बन, सम्बोधन आदि । ३-पियार नामक वृक्ष जिसके बीजों को चिरौंज़ी कहते हैं ।

प्यारा [वि.] (हिं.) [स्त्री प्यारी] १-जिसे प्यार किया जाय । प्रेमपात्र । प्रिय । २-अच्छा या भला लगे । ३-जिसे कोई अलग न करना चाहे ।

प्याला [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. प्याली] १-छोटा कटोरा । २-तोप, बन्दूक का वह स्थान जहाँ रंजक भरी जाती है । ३-जुलाहों का नरी भिगोने का पात्र । ४-भीख मांगने का पात्र । खप्पर । ५-गर्भाशय ।

प्याला पीना या लेना-मदिरा पीना । *प्याला देना*-मद्य पिलाना । *प्याला भरना*-दिन पूरे होना । *प्याला बहना*-गर्भपात होना ।

प्यावना*+ [क्रि. स.] (हिं.) पिलाना ।

प्यास [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जल पीने की इच्छा तृषा । तृष्णा । पिपासा । २-किसी वस्तु आदि पाने की प्रबल इच्छा या कामना ।

प्यास बुझाना-जल पीकर तृष्णा को शान्त करना । *प्यास लगना*-जल पीने की इच्छा होना ।

प्यासा [वि.] (सं.) जो जल पीना चाहता हो । जिसे प्यास लगी हो । तृषित ।

प्यून [संज्ञा पु.] (अं.) चपरासी । हलकारा ।

प्यूनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूनी' ।

प्यूस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेवस' ।

प्यूसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पेवसी' ।

प्यो*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पति । स्वामी ।

प्योरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-रुई की मोटी बत्ती २-एक प्रकार का पीला रंग ।

प्योसर [संज्ञा पु.] (हिं.) हाल की ब्याई हुई गाय का दूध ।

प्योसोर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री के लिए उसके माता-पिता का घर । मायका । पीहर ।

प्यौंदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पैबंद' ।

प्यौर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पति । स्वामी । २-प्रियतम ।

प्यौसरी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पेवसी' ।

प्र [अव्य.] (सं.) एक संस्कृत उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति और व्यवहार अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है ।

प्रउग [संज्ञा पु.] (सं.) एक शास्त्र विशेष ।

प्रकंप, प्रकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) कँप-कँपी । थरथराहट ।

प्रकंपन, प्रकम्पन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक कँप-कँपी या थरथराहट । २-वायु । हवा । ३-एक राक्षस का नाम । ४-एक नगर का नाम [वि] (सं.) काँपने वाला । हिलने वाला ।

प्रकंपमान, प्रकम्पमान [वि.] (सं.) काँपता या थरथराता हुआ । अत्यन्त हिलता हुआ ।

प्रकंपित, प्रकम्पित [वि.] (सं.) काँपता हुआ । हिलताहुआ । कंपनयुक्त ।

प्रकच [वि.] (सं.) जिसके रोंगटे खड़े हों ।

प्रकट [वि.] (सं.) १-जाहिर । प्रत्यक्ष । जो सब के सामने हो । २-स्पष्ट । साफ़ । ३-आविर्भूत ।

प्रकटन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकट या प्रत्यक्ष होने की क्रिया ।

प्रकटना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'प्रगटना' ।

प्रकटित [वि.] (सं.) १-प्रकट किया हुआ । प्रत्यक्ष किया हुआ । २-सर्वसाधारण के सामने रखा हुआ ।

प्रकथन [संज्ञा पु.] (सं.) कही हुई बात अथवा किये हुए कार्य की पुष्टि । एफरमेशन ।

प्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगर की लकड़ी । २-ढेर । समूह । ३-गुलदस्ता । ४-साहाय्य । सहायता । ५-चलन । प्रथा । ६-खूब काम करने वाला ।

प्रकरण [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी विषय को समझने अथवा समझाने के लिये उस पर वाद-विवाद करना । जिक्र करना । २-प्रसंग । ३-किसी ग्रंथ के अन्तर्गत छोटे-छोटे भागों में से कोई भाग । अध्याय । ४-आरम्भिक वक्तव्य । मुखबंध । ५-वह वचन जिसमें किसी काम को अवश्य करने का विधान हो । ६-दृश्य-काव्य के अन्तर्गत रूपक के दस भेदों में से एक ।

प्रकरणिका, प्रकरणी [संज्ञा स्त्री.] (स.) नाटिका

प्रकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाटक के किसी दो अङ्कों के बीच का वह अंश जिसमें आगे होने वाली घटना की सूचना दी जाती है । २-नाटक के प्रयोजन सिद्धि के पांच साधनों में से एक । इसमें देशव्यापी चरित्र का वर्णन होता है । ३-एक प्रकार का गान ।

प्रकर्तव्य [वि.] (सं.) अवश्य करने योग्य ।

प्रकर्ता [वि.] (सं.) अच्छी तरह से करने वाला ।

प्रकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्कर्ष । उत्तमता । २-अधिकता । बहुतायत ।

प्रकर्षक [वि.] (सं.) उत्कर्ष करने वाला ।

प्रकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खींच लेने की क्रिया । २-हल जोतने की क्रिया । ३-उत्कर्ष । ४-अधिकता ।

प्रकर्षणीय [वि.] (सं.) जो उत्कर्ष करने योग्य हो ।

प्रकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक कला (समय) का साठवां भाग ।

प्रकल्पना [संज्ञा स्त्री.](सं.) निश्चित करना । स्थिर करना ।

प्रकल्पित [वि.](सं.) निश्चित या स्थिर किया

प्रकश [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोड़े मारना ।
देना ।

प्रकशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूक नामक एक

प्रकांड, प्रकाण्ड [संज्ञा पु.] १-वृक्ष का
स्कंध । २-डाली । शाखा । ३-
[वि.] (सं.) १-बहुत बड़ा । बहुत विस्तृत

प्रकाम [संज्ञा पु.](सं.) अभिलाषा । कामना ।
[वि.] (सं.) यथेष्ट । पर्याप्त । काफी ।

प्रकाम्य [वि.] (सं.) देखो 'प्राकाम्य' ।

प्रकाम्योद [संज्ञा पु.](सं.) एक वैदिक

प्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेद । किस्म ।
भांति । ३-समानता । बराबरी ।
स्त्री.] परकोटा । चहारदीवारी ।

प्रकारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विषय

प्रकारांतर, प्रकारान्तर [संज्ञा पु.]
तरह । दूसरा प्रकार ।

प्रकारान्तर से-सीधी तरह से नहीं
घुमाव-फिराव से । अप्रत्यक्ष रूप से ।

प्रकाश [संज्ञा पु.](सं.) १-वह शक्ति
जिसके योग से वस्तुओं का रूप
दिखाई देता है । आलोक । ज्योति ।
गोचर होना । ३-विकास । स्फुटन ।
व्यक्ति । ४-ख्याति । प्रसिद्धि ।
स्पष्ट होना । ६-धूप । घाम ।
या पुस्तक का अध्याय । परिच्छेद ।
होना । खुलना । ९-घोड़े की पीठ पर
[वि.] (सं.) १-चमकीला । भड़कीला ।
प्रख्यात । प्रसिद्ध । ३-फूला हुआ ।
प्रस्फुटित ।

प्रकाशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश देने वाला
सूर्य । २-खोजी । आविष्कारकर्त्ता ।
जो प्रकट करे । ४-वह जो पुस्तक
समाचार-पत्र आदि छाप कर बांटता
बेचता हो । पब्लिशर । ५-कांसा ।
का एक नाम ।

प्रकाशकार [संज्ञा पु] (हिं.) देखो

प्रकाश-गृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह ऊंची
या मीनार विशेषतः समुद्र में बनी हुई
रत, जहां से बहुत प्रबल प्रकाश चारों
फैलता हो । लाइट हाउस ।

प्रकाशता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रकाश का
धर्म ।

प्रकाशधर्म [संज्ञा पु.] (अं.) सूर्य ।

प्रकाशधृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) दो प्रकार के
नायकों में से एक । वह नायक जो
से धृष्टता करे, झूठी सौगंध खावे
के साथ-साथ लगा फिरे, सब के
संकोच त्यागकर हंसी-ठट्ठा करे,
फटकारने पर भी न माने । ऐसे नायक
प्रकाशधृष्ट कहते हैं ।

प्रकाशन [वि.](सं.) प्रकाश करने वाला ।

कीला। [संज्ञा पु.] १-विष्णु। २-प्रकाशित करने का काम। प्रकाश में लाने का काम। ३-वे पुस्तकें, ग्रंथ आदि जो प्रकाशित किये जायँ। प्रकाशित पुस्तक, पत्र आदि। पब्लिकेशन।

प्रकाशमान [वि.] (सं.) १-चमकता हुआ। चमकीला। २-प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रकाशवान [वि.] (हिं.) १-चमकता हुआ। चमकीला। २-प्रसिद्ध।

प्रकाशवियोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह वियोग जो गुप्त न रहे सबको विदित हो जाय।

प्रकाशसंयोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह संयोग जो सब को विदित हो जाय।

प्रकाशात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-विष्णु।

प्रकाशित [वि.] (सं.) १-चमकता हुआ। जिसमें प्रकाश निकल रहा हो। २-जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो। ३-जो छप कर लोगों के सामने आगया हो।

प्रकाशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकाश का धर्म या भाव।

प्रकाशी [वि.] (सं.) उज्ज्वल। चमकीला।

प्रकाश्य [वि.] (सं.) प्रकट करने योग्य। [क्रि. वि.] (सं.) प्रकट रूप से। स्पष्टतया।

प्रकास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रकाश'।

प्रकासना [क्रि. स.] (हिं.) प्रकट करना।

प्रकीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकरण। अध्याय। २-पागल। ३-दुर्गन्धवाला करंज। ४-उद्दंड। ५-चँवर। ६-फुटकर कविता। [वि.] (सं.) १-बिखरा हुआ। छितराया हुआ। २-अनेक प्रकार का। ३-जिसमें कई प्रकार की वस्तुएँ मिली हों।

प्रकीर्णक [वि.] (सं.) जिसमें कई वस्तुएं या मदें एक साथ मिली हों। फुटकर। मिसलेनियस। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चँवर। २-अध्याय। प्रकरण। ३-विस्तार। ४-फुटकर वस्तुओं का संग्रह। ५-वह पाप कर्म जिसका उल्लेख धर्म ग्रंथों में न हो।

प्रकीर्ण-भंडार, प्रकीर्ण-भण्डार [संज्ञा पु.] (सं.) वह भंडार गृह जिसमें विविध प्रकार की वस्तुएं हों।

प्रकीर्ण-भंडार-पाल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकीर्ण-भंडार का रक्षक।

प्रकीर्णकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

प्रकीर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोर-जोर से कीर्त्तन करना। २-घोषणा करना।

प्रकीर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसिद्धि। ख्याति। नामवरी। २-घोषणा।

प्रकीर्तित [वि] (सं.) कथित। कहा हुआ।

प्रकुंच (प्रकुञ्च), प्रकुंज (प्रकुञ्ज) [संज्ञा पु.] (सं.) आठ तोले या एक पल का मान।

प्रकुपित [वि.] (सं.) १-जिसका क्रोध बहुत बढ़ गया हो। २-जो बहुत क्रुद्ध हो।

प्रकुल [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर शरीर। सुडौल बदन

प्रकुष्मांडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी का एक नाम

प्रकृत [वि.] (सं.) १-वास्तविक। असली। २-जो बनाया गया हो। रचा हुआ। ३-जिसमें कोई विकार न हो। ४-जो अपने यथार्थ रूप या स्थिति में हो। नॉर्मल। ५-प्रकृति-संबंधी। [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकृत होने का भाव २-यथार्थता। वास्तविकता। असलियत।

प्रकृतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृतता।

प्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वस्तु अथवा व्यक्ति का मूल गुण। स्वभाव। तासीर। २-मिजाज ३-मह मूलशक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत् का विकास किया है तथा जिसका रूप दृश्यों में दृष्टिगोचर होता है। जगत् का उपादान कारण। कुदरत। नेचर।

प्रकृतिज [वि.] (सं.) जो प्रकृति या स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो।

प्रकृतिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजपुरोहित। २-आमात्य।

प्रकृतिभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वभाव। २-व्याकरण में सन्धि का वह नियम जिसमें दो-दो पदों के मिलने से इनमें से किसी में कोई परिवर्तन नहीं होता।

प्रकृतिमंडल, प्रकृतिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य के स्वामी, आमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग तथा बल इन सात अंगों का समूह। २-प्रजा का समूह।

प्रकृतिवशित्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृति को अधिकार में लाने या रखने की शक्ति।

प्रकृतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें प्रकृति को ही मानते हैं और उसमें ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं की जाती। नेचुरलिज्म।

प्रकृतिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृतिवाद सिद्धांत को मानने वाला। नेचुरलिस्ट।

प्रकृतिविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान जिसमें प्राकृतिक -बातों का विचार किया जाता है।

प्रकृतिशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे—जीव, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विवेचन होता है।

प्रकृतिसिद्ध [वि.] (सं.) स्वाभाविक। नैसर्गिक।

प्रकृतिस्थ [वि.] (सं.) १-जो अपनी स्वाभाविक अवस्था में हो। मामूली हालत में। २-स्वाभाविक। ३-जिसके होशहवाश ठिकाने हों!

प्रकृतिस्थ-सूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तरायण उल्लंघन करके आया हुआ सूर्य।

प्रकृत्यजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण या स्वाभाविक अजीर्ण।

प्रकृष्ट [वि] (सं.) १-मुख्य। प्रधान। खास। २-उत्तम। श्रेष्ठ। ३-खींचा हुआ। आकृष्ट। ४-जोता हुआ (खेत)।

प्रकृष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तमता। श्रेष्ठता। उत्कृष्टता।

प्रकोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-शहरपनाह। परकोटा। २-धुस्स।

प्रकोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक कोप। बहुत अधिक क्रोध। २-क्षोभ। ३-किसी रोग की प्रबलता। बीमारी का बढ़ने वाला जोर। ४-वात, पित, कफ आदि में विकार उत्पन्न होने से रोग का होना।

प्रकोपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के प्रकोप को बढ़ाना या उत्तेजित करना। २-गुस्सा करना। नाराज होना। ३-क्षोभ। ४-चंचलता ५-वात, पित्त और कफ का कोप।

प्रकोपनीय [वि.] (सं.) कोप या क्षोभ करने योग्य।

प्रकोपित [वि.] (सं.) उत्तेजित किया हुआ।

प्रकोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोहनी के नीचे का भाग। २-दरवाजे के पास का कोठा। ३-घर के बीच का आँगन। ४-संसदों, विधायिका सभाओं आदि में का वह बाहर वाला कमरा जिसमें उसके सदस्यगण बैठकर बातचीत करते तथा बाहिरी लोगों से भेंट करते हैं। लॉबी।

प्रकोष्ठक [संज्ञा पु.] (सं) १-बड़े दरवाजे के पास की कोठरी। २-देखो 'प्रकोष्ठ'।

प्रकोष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम

प्रक्खर [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़े या हाथी का कवच। २-कुत्ता। ३-खच्चर।

प्रक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रम। सिलसिला। २-किसी कार्य के आरम्भ में किया हुआ उपाय उपक्रम। ३-मौका। अवसर। ४-अतिक्रम। उल्लंघन।

प्रंक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली प्रकार घूमना। २-पार करना। ३-आरम्भ करना। ४-आगे बढ़ना।

प्रक्रमभंग, प्रक्रमभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम में किसी आरम्भ किये हुए क्रम का उल्लङ्घन। २-साहित्य का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जिस समय किसी विषय के वर्णन में आरम्भ किये हुए क्रम आदि का यथावत् पालन नही किया जाता।

प्रक्रांत, प्रक्रान्त [वि.] (सं.) १-आरम्भ किया हुआ। २-गया हुआ। ३-विवादग्रस्त।

प्रक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राज्य चिह्न (चँवर, छत्र आदि) का धारण करना। २-वह क्रिया अथवा प्रणाली जिससे कोई वस्तु होती बनती या निकलती हो। प्रोसेस। ३-किसी काम या अभियोग आदि की सुनवाई में होने

वाले आदि से अन्त तक के समस्त कार्य अथवा उनके ढङ्ग। प्रोसीजर।

प्रक्रियावाहक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो न्यायालय से निकलने वाले प्रसर लोगों के पास पहुँचाता हो। प्रोसेस-सर्वर।

प्रक्रियाशुल्क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शुल्क जो न्यायालय से कोई प्रसर निकलवाने के लिए देना पड़ता है। प्रोसेस-सर्वर।

प्रक्लिन्न [वि.] (सं.) १-भीगा हुआ। तर। २-करुणापूर्ण। दयामय।

प्रक्लिन्नवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नेत्र रोग जिसमें पलकें बाहर से सूज जाती हैं और नेत्रों में गीड़ या कीचड़ भर जाता है।

प्रक्लेद [संज्ञा पु.] (सं.) आर्द्रता। नमी। तरी।

प्रक्लेदन [संज्ञा पु.] (सं.) तर करना। भिगोना।

प्रक्वण [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा की झङ्कार।

प्रक्ष* [वि.] (हिं.) पूछने वाला।

प्रक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) नाश। बरबादी।

प्रक्षयण [संज्ञा पु.] (सं.) नाश करना।

प्रक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की पाखर।

प्रक्षरण [संज्ञा पु.] (सं.) झरना। बहना। चूना।

प्रक्षाल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रायश्चित।

प्रक्षालन [संज्ञा पु.] (सं.) जल से साफ करना। धोना।

प्रक्षालनीय [वि.] (सं.) धोने या साफ करने योग्य

प्रक्षालित [वि.] (सं.) धोया या साफ किया हुआ

प्रक्षाल्य [वि.] (सं.) धोने योग्य। साफ करने योग्य।

प्रक्षिप्त [वि.] (सं.) १-फेंका या छितराया हुआ। २-पीछे से या ऊपर से किसी में मिलाया या बढ़ाया हुआ। ३-आगे की ओर बढ़ा अथवा निकला हुआ। प्रोजेक्टेड।

प्रक्षीण [वि.] (सं.) १-जीर्ण। २-नष्ट किया हुआ ३-प्रायश्चित करके पवित्र किया हुआ। ४-लुप्त। अन्तर्धान।

प्रक्षुण्ण [वि.] (सं.) १-छेदा या भेदा हुआ। २-उत्तेजित किया हुआ। ३-कुचला हुआ।

प्रक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंकना। डालना। २-छितराना। बिखराना। ३-वह जो बाद में बढ़ाया गया हो। ४-किसी बहुत बड़े कार्य की योजना। प्रोजेक्ट।

प्रक्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंकना। २-ऊपर से मिलाना। ३-निश्चित करना। जहाज आदि का चलाना।

प्रक्षेपलिपि [संज्ञा पु.] (सं.) अक्षर लिखने की एक विशेष प्रणाली।

प्रक्षोभण [संज्ञा पु.] (सं.) घबराहट। बेचैनी।

प्रखंड, प्रखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रान्त का कोई खंड या भाग जिसमें कुछ जिले मिले होते हैं। डिविजन।

प्रखर [वि.] (सं.) १-बड़ा तेज या तीव्र। तीक्ष्ण। २-धारदार। पैना। चोखा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-खच्चर। २-कुत्ता। ३-घोड़े का पाखर।

प्रखरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रखर होने की क्रिया या भाव। तेजी।

प्रखल [वि.] (सं.) बहुत बड़ा दुष्ट। पाजी।

प्रख्य [वि.] (सं.) स्पष्ट। साफ। २-सदृश। समान।

प्रख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसिद्धि। ख्याति। २-समता। बराबरी। ३-उपमा।

प्रख्यात [वि.] (सं.) विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर

प्रख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्धि। विख्याति।

प्रख्यापक [संज्ञा प.] (सं.) वह जो किसी प्रकार का प्रख्यापन करे। डिक्लेरेटरी।

प्रख्यापन [संज्ञा प.] (सं.) १-किसी को जतलाने के लिए स्पष्ट रूप से कही हुई बात। २-वह लिखित वक्तव्य जो किसी अधिकारी के संमुख अपने किसी काम या उत्तरदायित्व के संबंध में उपस्थित किया जाय। डिक्लेरेशन। ३-देखो 'प्रचारण'।

प्रख्यायनिक [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार का प्रख्यापन हो। डिक्लेरेटरी।

प्रख्यापित [वि] (सं.) जिसके सम्बन्ध में कोई प्रख्यापन हुआ हो। डिक्लेयर्ड।

प्रगंड, प्रगण्ड [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंधे से लेकर कोहनी तक का भाग।

प्रगंडी, प्रगण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नगर या दुर्ग के परकोटे की दीवार जिस पर बैठकर दूर-दूर की चीजें देखते हैं।

प्रगंध, प्रगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) दवनपापड़ा।

प्रगट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रकट'।

प्रगटन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रकटन'।

प्रगटना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रकट होना। सामने आना।

प्रगटाना+ [क्रि. स.] (हिं.) प्रकट करना। जाहिर करना।

प्रगत [वि.] (सं.) १-आगे गया हुआ। २-जुदा। अलहदा।

प्रगतजानु [वि.] (सं.) टेढ़ी टाँगों वाला।

प्रगति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आगे की ओर बढ़ना अग्रसर होना। २-उन्नति।

प्रगतिवाद [संज्ञा पु.] (हिं.) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि को निरंतर आगे की ओर बढ़ाते रहना ही हितकर समझा जाता है। (आजकल प्रायः इसका यह अर्थ समझा जाता है कि प्राचीन या अर्वाचीन सभी बातें त्रुटिपूर्ण हैं, और नई बातों को ग्रहण करना ही आगे की ओर बढ़ना है।

प्रगतिवादी [संज्ञा पु] (हिं.) प्रगतिशील विचार रखने वाला या प्रगतिवाद सिद्धांत का अनुसरण करने वाला।

प्रगतिशील [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो आगे की ओर बढ़ता या उन्नति करता हो।

प्रगतिशीलता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रगतिशील होने का भाव।

प्रगम [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगे की ओर बढ़ना। २-प्रेम का प्रथम प्रदर्शन।

प्रगमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगे बढ़ना। उन्नति। तरक्की। ३-झगड़ा। लड़ाई। अनूठा और उचित (माकूल) उत्तर।

प्रगमनीय [वि.] (सं.) आगे बढ़ने योग्य।

प्रगर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) भयंकर गरज ([illegible]) दहाड़।

प्रगल्भ [वि.] (सं.) १-चतुर। होशियार। साहसी। उत्साही। ३-निर्भय। निडर। हाजिरजवाब। प्रत्युत्पन्नमति। शाली। संपन्न बुद्धि वाला। बोलने वाला। वक्रवादी। वाग्मी। भरापूरा। ८-प्रधान। मुख्य। निर्लज्ज। बेहया। १०-उद्धत। जिसमें का अभाव हो। उदंड। ११-पुष्ट।

प्रगल्भता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-बुद्धिमत्ता। होशियारी। २-हाजिरजवाबी। वाक्चातुरी। प्रतिभा। बुद्धि की संपन्नता। ४-निर्भयता। गम्भीरता। ६-उद्दंडता। उद्धतता। बेहयाई। ८-सामर्थ्य। शक्ति। १०-उत्साह। ११-प्रधानता। मुख्यता। अभिमान। १३-पुष्टिता।

प्रगल्भवचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चार प्रकार की मध्यानायिकाओं में से एक। वह नायिका जो बातों ही बातों में अपना दुःख तथा क्रोध प्रकट करे तथा उलाहना दे।

प्रगल्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रौढ़ा (नायिका)।

प्रगसना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) प्रकाशित होना। प्रकट होना।

प्रगाढ़ [वि.] (सं.) १-बहुत गाढ़ा अथवा गहरा। २-बहुत अधिक। ३-कड़ा। घना। कठोर।

प्रगाता [संज्ञा पु.] (सं.) गायक। गाने वाला।

प्रगाद्य [वि.] (सं.) कहने योग्य। कथनीय।

प्रगामी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो गमन करे।

प्रगायी [संज्ञा पु.] (हिं.) गाने वाला।

प्रगाहन [संज्ञा पु.] (सं.) अवगाहन।

प्रगीति [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद विशेष।

प्रगुण [वि.] (सं.) १-चतुर। दक्ष। ३-अनुकूल। ४-धर्मात्मा।

प्रगुणित [वि.] (सं.) १-सीधा किया हुआ। चिकनाया हुआ।

प्रगुणी [वि.] (सं.) गुणवान्।

प्रगुण्य [वि.] (सं.) चतुर होशियार।

प्रगृहीत [वि.] (सं.) १-जो भली भाँति किया गया हो। २-जिसका उच्चारण

के नियमों का ध्यान रखे बिना किया गया हो।

प्रगृह्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्मृति। २-वाक्य। [वि.] १-जो ग्रहण करने के योग्य हो। २-जो संधि के नियमों का बिना ध्यान रखे उच्चारण करने के योग्य हो।

प्रगेतन [वि.] (सं.) प्रातःकाल किया जाने वाला।

प्रगेनिश, प्रगेशय [वि.] (सं.) जो सबेरा होने पर भी सोता रहे।

प्रग्रथन [संज्ञा पु.] (सं.) बुनना। गूथना।

प्रग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकड़ने या ग्रहण करने का भाव या ढङ्ग। २-चन्द्र अथवा सूर्य के ग्रहण का आरम्भ। ३-लगाम। रास। ४-लड़ने का एक ढङ्ग। ५-आदर। सत्कार। ६-अनुग्रह। कृपा। ७-किरण। ८-रस्सी। डोरी। (तराजू की)। ९-किसी ग्रह के साथ रहने वाला उपग्रह। छोटा ग्रह। १०-घोड़े आदि पशुओं का साधना। ११-कैदी। १२-सोना। सुवर्ण। १३-विष्णु। १४-एक प्रकार का अमलतास। १५-उद्धतता। १६-किरण। १७-हाथ। बांह। १८-कनियारी। १९-नेता। मार्ग दर्शक।

प्रग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य-चन्द्रमा के ग्रहण का आरम्भ। २-लगाम। रास। ३-घोड़े आदि पशुओं को साधना। ४-तराजू आदि की डोरी ५-पकड़ने या गिरफ्तार करने की क्रिया या भाव। अरैस्ट।

प्रग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) १-तराजू की डोरी। २-लगाम। रास। ३-पकड़। थाम।

प्रग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी मकान के चारों ओर बनाया हुआ लकड़ी का घेरा। २-तबेला। ३-वृक्ष की फुनगी। ४-रंगा हुआ कलस या बुर्जी। ५-आमोद-प्रमोद का स्थान। ६-झरोखा। छोटी खिड़की।

प्रघट* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रकट'।

प्रघटक [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धान्त।

प्रघटना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'प्रगटना'।

प्रघट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धांत। [वि.] (हिं.) प्रकट करने वाला।

प्रघण, प्रघन [संज्ञा पु.](सं.) १-बंगले के दरवाजे के सामने छाया हुआ स्थान। बरसाती। २-तांबे का बरतन। ३-लोहे की गदा या मुदगर

प्रघस [वि.] (सं.) खाने वाला। भक्षक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण की सेना का मुख्य सेनापति जिसे वाटिका उजाड़ते समय हनुमान ने मारा था। २-दैत्य। राक्षस।

प्रघसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

प्रघात [संज्ञा पु.](सं.) १-वध। मारना। २-युद्ध। लड़ाई।

प्रघाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का [illegible] रा।

प्रघुण, प्रघूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) अतिथि। पाहुन।

प्रघोर [वि.](सं.) अत्यधिक कठिन। अति कठिन।

प्रचंड, प्रचण्ड [वि.] (सं.) १-अत्यन्त तीव्र। तेज। उग्र। प्रखर। २-भयंकर। भयानक। ३-अत्यधिक वेगवान्। प्रबल। ४-कठिन। कठोर ५-दुःसह्य। असह्य। ६-पुष्ट। बलवान। ७-बड़ा। भारी। ८-बहुत गरम। ९-प्रतापी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव के एक गण का नाम २-सफेद कनेर।

प्रचंडता, प्रचण्डता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रचंड होने का भाव। तेजी। तीखापन। २-भयंकरता।

प्रचंडत्व, प्रचण्डत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रचंडता'।

प्रचंडमूर्ति, प्रचण्डमूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वरना नामक वृक्ष।

प्रचंडा, प्रचण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद दूब २-दुर्गा। चंडी। दुर्गा की एक सखी।

प्रचय [संज्ञा पु.] (सं.) १-बीजगणित में एक प्रकार का संयोग। २-समूह। झुण्ड। ३-राशि ढेर। ४-वृद्धि। बढ़ती। ५-लकड़ी आदि की सहायता से फूल या फल एकत्रित करना। ६-एक प्रकार की वेदपाठ-विधि।

प्रचयन [संज्ञा पु.] (सं.) संग्रह। एकत्रीकरण।

प्रचर [संज्ञा पु.] (सं.) मार्ग। रास्ता।

प्रचरण [संज्ञा पु.] (सं.) चलना। फिरना।

प्रचरना* [क्रि. अ.](हिं) प्रचारित होना। प्रचार में आना। फैलना।

प्रचरित [वि.] (सं.) प्रचलित। चलता हुआ।

प्रचल [संज्ञा पु] (सं.) १-वह जो अत्यन्त चंचल हो। २-मोर।

प्रचलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

प्रचलन [संज्ञा पु.](सं.) १-चलते रहने की क्रिया या भाव। २-किसी चीज का बराबर व्यवहार प्रयोग या चलन में आना, रहना या होना। करेंसी। ३-चलन। प्रचार। प्रथा। रिवाज।

प्रचला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह निद्रा जो खड़े या बैठे को भी आये। २-वह पाप कर्म जिसके उदय से ऐसी निद्रा आती है।

प्रचलित [वि.](सं.) १-जिसका चलन हो। चलता-हुआ। जारी। २-जो इस समय चल रहा हो करेंट।

प्रचाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ से कोई वस्तु इकट्ठी करना। २-राशि। ढेर। ३-वृद्धि। अधिकता।

प्रचायक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. पचायिका] १-या इकट्ठा करने वाला व्यक्ति। २-ढेर लगाने वाला।

प्रचायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फूल चुनने वाली २-संग्रह करने वाली। ३-मालिन।

प्रचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु या बात का निरंतर व्यवहार या उपयोग। चलन। रिवाज २-घोड़ों की आंख का एक रोग। ३-कोई विषय, मत या बात बहुत से लोगों के सामने रखना। प्रोपेगेंडा।

प्रचारक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रचारिणी] प्रचार करने वाला।

प्रचारना* [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रचार करना। सम्मुख आकर लड़ने के लिए ललकारना।

प्रचारित [वि.] (सं.) प्रचार किया हुआ। फैलाया हुआ।

प्रचारी [वि.] (सं.) प्रचार करने वाला।

प्रचालित [वि.] (सं.) जिसका प्रचलन किया गया हो। जो चलाया गया हो।

प्रचिकीर्षु [वि.] (सं.) जो बदला लेना चाहता हो।

प्रचित [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे एकत्रित किया गया हो। २-दंडक छन्द का एक भेद।

प्रचुर [वि.] (सं.) बहुत। अधिक। विपुल। [संज्ञा पु.] वह जो चोरी करे। चोर।

प्रचुरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचुर होने का भाव। अधिकता।

प्रचेतसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कायफल। २-प्रचेता की कन्या।

प्रचेता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार भी थे। २-वरुण। ३-पृथु के परपोते का नाम। ४-बारहवें प्रजापति का नाम। [वि.] (सं.) चतुर। बुद्धिमान।

प्रचेय [वि.] (सं.) १-चुनने या संग्रह करने योग्य २-ग्रहण करने योग्य। ग्राह्य।

प्रचेल [संज्ञा पु.] (सं.) पीला चन्दन।

प्रचेलक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा। अश्व। [वि.] बहुत अधिक चलने वाला।

प्रचोद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रचोदन।

प्रचोदक [वि.] (सं.) प्रेरणा करने वाला। उत्तेजित करने वाला।

प्रचोदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेरणा। उत्तेजना। २-नियम। कायदा। कानून। ३-आज्ञा।

प्रचोदित [वि.] (सं.) जो प्रेरित किया गया हो। जो उत्तेजित किया गया हो।

प्रचोदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटेहरी।

प्रच्छक [वि.] (सं.) पूछने वाला।

प्रच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-लपेटने का वस्त्र। वेठन। २-कम्बल। ३-चोगा।

प्रच्छना [क्रि. स.] (हिं.) पूछना। प्रश्न करना।

प्रच्छन्न [वि.] (सं.) १-लपेटा या ढका हुआ। परिवेष्ठित। २-छिपा हुआ।

प्रच्छर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांस की वायु को नाक के रास्ते बाहर निकालना। रेचन। २-वमन। कै।

प्रच्छर्दिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वमन। कै (रोग)

२-वह (औषध) जिससे वमन कराई जाय।

प्रच्छादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढकने या छिपाने का भाव। २-ओढ़ने का वस्त्र। चादर। ३-आंख की पलक।

प्रच्छादित [वि.] (सं.) १-ढका हुआ। ओढ़े हुए २-छिपा हुआ। ३-वस्त्राच्छादित।

प्रच्छान [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के मतानुसार घाव चीरने का एक प्रकार।

प्रच्छाय [संज्ञा पु.] (सं.) सघन या घनी छाया छायादार स्थान।

प्रच्छाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रहण के समय सूर्य पर पड़ने वाली चन्द्रमा की या चन्द्रमा पर पड़ने वाली पृथ्वी की छाया। अम्बा।

प्रच्छालना* [क्रि. स.] (हिं.) धोना। साफ करना।

प्रच्छिल [वि.] (सं.) निर्जल। सूखा।

प्रच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) छेदने या काटने की क्रिया।

प्रच्यवन [संज्ञा पु.] (सं.) क्षरण। टपकना। चूना

प्रच्युत [वि.] (सं.) गिरा हुआ। अपने स्थान से हटा हुआ।

प्रच्युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने स्थान से गिरने या हटने का भाव।

प्रजंघ, प्रजङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) रावण की सेना का एक राक्षस जो अंगद के हाथों मारा गया था।

प्रजंत* [अव्य.] (हिं.) देखो 'पर्यंत'।

प्रजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशुओं का गर्भ-स्थापन जोड़ाखाना। २-पशुओं के गर्भ धारण का समय। ३-लिंग। पुरुषेंद्रिय। ४-सन्तान उत्पन्न करने का काम। ५-जनक। जन्म देने वाला।

प्रजनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सन्तान उत्पन्न करने का काम। २-बच्चा जनाने का काम। दाई का काम। ३-जन्म। ४-योनि। ५-जन्म देने वाला पिता।

प्रजनिका [संज्ञा पु.] (सं.) माता। जननी।

प्रजनुक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह जो सन्तान उत्पन्न करता हो।

प्रजरना* [क्रि. अ.] हिं.) अच्छी प्रकार जलना।

प्रजल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यर्थ की या इधर-उधर की बात। गप। २-वह बात जो अपने प्रिय को प्रसन्न करने के लिए की जाय।

प्रजल्पन [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत।

प्रजल्पित [वि.] (सं.) कहा हुआ। व्यक्त। प्रकट।

प्रजल्पिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकवादी औरत।

प्रजव [संज्ञा पु.] (सं.) तेज चाल।

प्रजवी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रजविनी] तेज। फुर्तीला

प्रजहित [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराण। २-गार्हपत्य अग्नि।

प्रजाँतक, प्रजान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

प्रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सन्तान। औलाद। २-किसी देश, राज्य या राष्ट्र में रहने वाला जनसमूह। रिआया। रैयत।

प्रजाकाम [संज्ञा पु.] (सं.) सन्तान की इच्छा रखने वाला।

प्रजाकार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजापति। ब्रह्मा।

प्रजागर [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-प्राण। ३-जागरण। जगना। ४-नींद न आने का रोग।

प्रजागरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

प्रजागरण [संज्ञा पु.] (सं.) बिलकुल नींद न आना

प्रजागरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

प्रजातंतु, प्रजातन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सन्तान। औलाद। २-वंश।

प्रजातंत्र, प्रजातन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन-पद्धति जिसमें प्रजा ही समय-समय पर अपने प्रतिनिधि तथा प्रधान शासक चुनती है। *रिपब्लिक*।

प्रजातंत्रवाद, प्रजातन्त्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें प्रजा ही अपने मतों द्वारा प्रतिनिधि या शासक चुनती है। *रिपब्लिकनिज्म*।

प्रजातंत्रवादी, प्रजातन्त्रवादी [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजातंत्र के सिद्धांतों पर चलने वाला।

प्रजातांत्रिक, प्रजातान्त्रिक [वि.] (सं.) १-प्रजातंत्र-संबंधी। २-जो प्रजातंत्र के सिद्धात के अनुसार हो। [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजातंत्रवादी। गणराज्यवादी।

प्रजातांत्रिक-दल, प्रजातान्त्रिक-दल [संज्ञा पु.] (सं.) संयुक्तराज्य-अमेरिका का एक राजनैतिक दल *रिपब्लिकन पार्टी*।

प्रजातंत्री, प्रजातन्त्री [वि.] (सं.) १-प्रजातंत्र-संबंधी। २-जो प्रजातन्त्र के सिद्धांत के अनुसार हो। ३--प्रजातन्त्र का पक्षपाती।

प्रजादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषध विशेष जिससे बांझपन दूर होता है।

प्रजादान [संज्ञा पु.] (सं.) चांदी।

प्रजाद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-संतान उत्पन्न करने का साधन।

प्रजाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-प्रजापति।

प्रजानाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-मनु। ३-दक्ष। ४-राजा। नरपति।

प्रजापति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सृष्टि उत्पन्न करने वाला। सृष्टिकर्त्ता। २-ब्रह्मा। ३-मनु। ४-राजा। ५-सूर्य। ६-आग। ७-पिता। बाप। ८-विश्वकर्मा। ९-दामाद। जमाई। १०-एक प्रकार का यज्ञ। ११-घर का मालिक या बड़ा १२-साठ संवत्सरों में से पांचवां। १३-एक प्रकार का विवाह। १४-एक तारा।

प्रजापती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गौतमबुद्ध को पालने-वाली गोतमी का एक नाम।

प्रजापाल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजा का पालन करने वाला, राजा।

प्रजापालक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

प्रजायिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माता।

प्रजारना*+ [क्रि. स.] (हिं.) अच्छी प्रका जलाना।

प्रजावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भ्रातृजाया। भाव भाई की स्त्री। २-प्रियव्रत राजा की पत्नी का नाम। ३-वह स्त्री जिसके कई संतान हों। ४-गर्भवती स्त्री।

प्रजावान् [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रजावती] जिसके बालबच्चे हों।

प्रजासत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शासनपद्धति जिसमें कोई राजा नहीं होता परन्तु प्रजा समय-समय पर अपना शासन आप लेती है।

प्रजासत्तात्मक [वि.] (सं.) (वह शासनपद्धति) जिसमें प्रजा अथवा उसके प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।

प्रजाहित [संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी। [वि.] (सं.) प्रजा की भलाई।

प्रजित् [संज्ञा पु.] (सं.) विजय करने वाला। विजेता।

प्रजिन [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा।

प्रजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) आजीविका। रोजी।

प्रजुरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जलना। प्रज्वलित होना। २-चमकना। प्रकाशित होना।

प्रजुलित, प्रजूलित* [वि.] (सं.) देखो 'प्रज्वलित'

प्रजेश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रजापति'।

प्रजेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। नृप।

प्रजोग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रयोग'।

प्रज्झटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राकृत छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएं होती हैं।

प्रज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रज्ञा] जानकार। विद्वान्।

प्रज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांडित्य। विद्वत्ता।

प्रज्ञप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जताने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २-सूचनापत्र। ३-सूचना। ४-संकेत। ५-ज्ञान। ६-वह प जो माल के साथ सूचना के रूप में भेजा जाता है तथा जिसमें भेजे हुए माल का विवरण मूल्य आदि रहता है। बीजक। एडवाइस।

प्रज्ञप्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों की एक विद्या देवी का नाम।

प्रज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुद्धि। ज्ञान। २-एकाग्रता। ३-सरस्वती।

प्रज्ञाकाय [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्धाचार्य का नाम।

प्रज्ञाकूट [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का ना

नायक के प्रति झूठ-मूठ का या बनावटी क्रोध

प्रणयन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बनाना। रचना। २–होम के समय एक अग्नि-संस्कार।

प्रणयिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रेमपात्री। प्रेमिका। माशूका। २–भार्या। पत्नी। स्त्री।

प्रणयी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रणयिनी] १–प्रेम करने वाला। प्रेमी। २–पति। स्वामी।

प्रणव [संज्ञा पु.] (सं.) १–ओंकार। ओंकारमंत्र। २–परमेश्वर। ३–त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और महेश)।

प्रणवना* [क्रि. स.] (हिं.) प्रणाम या नमस्कार करना।

प्रणस [वि.] (सं.) लम्बी नाक वाला। नक्कू।

प्रणाद [संज्ञा पु.] (सं.) १–बहुत जोर से होने वाला शब्द। कोलाहल। शोरगुल। २–वह शब्द जो आनन्द के समय मुख से निकले। ३–एक कान का रोग जिसमें कानों में अलग-अलग तरह की गूंज सुनाई देती है।

प्रणाम [संज्ञा पु.] (सं.) झुककर अभिवादन करना। दंडवत्। नमस्कार।

प्रणामी [संज्ञा पु.] (सं.) प्रणाम करने वाला।

प्रणायक [संज्ञा पु.] (सं.) १–चमूपति। सेनापति। २–नेता। पथ-प्रदर्शक।

प्रणाल [संज्ञा पु.] (सं.) जल निकलने का मार्ग। जैसे–नाली, नहर, बम्बा आदि।

प्रणालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–नाली। परनाली २–बन्दूक की नाली।

प्रणाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पानी निकलने अथवा बहने की नाली। २–रीति। परिपाटी। प्रथा। चाल। ३–पद्धति। ढंग। तरीका। ४–परम्परा। ५–वह छोटा जलमार्ग जो दो जल के बड़े भागों को मिलाता हो। चैनेल। ३–कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु कहीं भेजने का उचित, उपयुक्त तथा नियत मार्ग या साधन। चैनेल।

प्रणाश [संज्ञा पु.] (सं.) १–नाश। बरबादी। २–मौत। मृत्यु। ३–भागना।

प्रणाशन [संज्ञा पु.] (सं.) नाश करने की क्रिया या भाव।

प्रणाशी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रणाशिनी] नाश करने वाला।

प्रणिधान [संज्ञा पु.] (सं.) १–रखा जाना। २–प्रयत्न। ३–समाधि (योग)। ४–अत्यन्त भक्ति या उपासना। ५–चित्त की एकाग्रता। ध्यान। ६–किसी कर्म के फल का त्याग। ७–अर्पण। ८–भक्ति। ९–प्रवेश। गति। १०–भावी जन्म विषयक किसी प्रकार की प्रार्थना

प्रणिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १–राज्य के किसी कार्य विशेष के लिए भेजा जाने वाला दूत। एमिसरी २–वह दूत या अभिकर्त्ता जो गुप्तरूप से कार्य करे। सीक्रेटएजेंट। [संज्ञा स्त्री.] १–मन की एकाग्रता। २–प्रार्थना। निवेदन। ३–तत्परता।

प्रणिनाद [संज्ञा पु.] (सं.) उच्च स्वर। वज्र के समान गरजना।

प्रणिपतन, प्रणिपात [संज्ञा पु.] (सं.) चरणों में सिर नवाना। प्रणाम। दण्डवत्।

प्रणिहित [वि.] (सं.) १–स्थापित लगाया हुआ। २–मिला हुआ। मिश्रित। ३–पाया हुआ। प्राप्त। ४–सौंपा हुआ। रखा हुआ।

प्रणी [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

प्रणीत [संज्ञा पु.] (सं.) १–रचित। बनाया हुआ २–भेजा हुआ। लाया हुआ। ३–फेंका हुआ। ४–पास पहुँचाया हुआ। ५–जिसका मन्त्रों से संस्कार किया गया हो। ६–मन्त्रों से संस्कृत की हुई यज्ञाग्नि। ७–अच्छी तरह पकाया या बनाया हुआ कोई पदार्थ। ८–वह जल जिसका मन्त्र से संस्कार किया गया हो।

प्रणीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मन्त्रोच्चारण सहित छानकर रखा हुआ जल। २–वह पात्र जिसमें ऐसा जल रखा जाता है।

प्रणीय [संज्ञा पु.] (सं.) वह वैदिक मंत्र जिसके द्वारा किसी वस्तु का संस्कार किया जाय।

प्रणुत्त [वि.] (सं.) १–निकाला हुआ। २–डरा हुआ

प्रणेजन [वि.] (सं.) धोने या साफ करने वाला।

प्रणेता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रणेत्री.] रचयिता। बनाने वाला। कर्त्ता।

प्रणेय [वि.] (सं.) १–आज्ञाकारी। अधीन। वशवर्ती। २–जिसके लौकिक-संस्कार हो चुके हों

प्रणोदित [वि.] (सं.) नियोजित। प्रेरित।

प्रतंचा* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रत्यक्ष'।

प्रतक्ष* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रत्यक्ष'।

प्रतच्छ [वि.] (हिं.) देखो 'प्रत्यक्ष'।

प्रतत [वि.] (सं.) विस्तृत। लम्बा-चौड़ा

प्रतति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विस्तार। फैलाव।

प्रतन [वि.] (सं.) पुरानी। प्राचीन।

प्रतना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पूतना'।

प्रतनु [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रतन्वी] १–क्षीण। दुबला २–बारीक। सूक्ष्म। ३–बहुत छोटा। ४–तुच्छ

प्रतपन [संज्ञा पु.] (सं.) १–तापना। तप्त करना। २–गरमी।

प्रतप्त [वि.] (सं.) १–गरमाया हुआ। तपाया हुआ। २–सताया हुआ। पीड़ित।

प्रतमक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दमा।

प्रतमाली [संज्ञा स्त्री.] (डि.) कटारी।

प्रतर [संज्ञा पु.] (सं.) पार होना। पार जाना।

प्रतर्क [संज्ञा पु.] (सं.) वादविवाद। तर्क।

प्रतर्कण [संज्ञा पु.] (सं.) वादविवाद करना।

प्रतर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १–काशी का एक विख्यात राजा। २–एक प्राचीन ऋषि का नाम। ३–३-विष्णु। ४–ताड़ना या वाड़ना करने वाला।

प्रतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाताल के सातवें भाग का नाम । २-हाथी की हथेली ।

प्रतान [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक रोग जिसमें मूर्च्छा आती है । २-एक प्राचीन ऋषि का नाम । ३-बेल । लता । ४-रेशा । [वि.](सं.) १-विस्तृत लम्बा-चौड़ा । २-जिसमें रेशे हों । रेशे वाला ।

प्रताप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पौरुष । मरदानगी । वीरता । २-शक्ति, वीरता आदि का ऐसा प्रभाव या आतङ्क जिससे विरोधी दबे रहें । इकबाल । ३-मदार का पेड़ । ४-रामचन्द्र के एक सखा का नाम । ५-ताप । गरमी । ६-युवराज का छत्र ।

प्रतापन [वि.] (सं.) कष्ट देने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुम्भीपाक नामक नरक । २-विष्णु । कष्ट पहुँचाना ।

प्रतापवान् [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्रतापवती] जो प्रताप वाला हो । इक़बालमन्द ।

प्रतापस [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद मँदार ।

प्रतापी [वि.] (हिं.) जिसका बहुत अधिक प्रताप हो । इकबालमन्द । [संज्ञा पु.] (सं.) राम के एक सखा का नाम ।

प्रतारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धोखा देने वाला । धोखेबाज । २-धूर्त्त । चालाक । ३-ठग । वंचक

प्रतारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वंचना । ठगी । २-धूर्त्तता ।

प्रतारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धोखा देना । ठगी । वंचना ।

प्रतारणीय [वि.] (सं.) १-ठगने योग्य । २-धोखा देने योग्य ।

प्रतारित [वि.] १-जो ठगा गया हो । २-जिसे धोखा दिया गया हो ।

प्रतिंचा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) धनुष की डोरी । चिल्ला

प्रति [अव्य.] (सं.) एक उपसर्ग शब्दों के आरंभ में लगता है और निम्न अर्थ देता है— १-विरुद्ध । विपरीत । २-सामने । ३-बदले में । ४-हरएक । एक-एक । ५-समान । सदृश । ६-जोड़का । मुकाबले का । ७-सामने । मुकाबले में । ८-ओर । तरफ । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक ही तरह की कई वस्तुओं में अलग-अलग एक-एक वस्तु । अदद । २-नकल । (कापी) ।

प्रतिकंठ, प्रतिकण्ठ [अव्य.](सं.) १-एक के बाद एक । अलग-अलग । २-गले के समीप ।

प्रतिकंचुक, प्रतिकञ्चुक [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु । दुश्मन ।

प्रतिकर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को उसकी हानि होने पर बदले में दिया जाने वाला धन । क्षतिपूर्ति । हरजाना । कंपेन्सेशन ।

प्रतिकरक [वि.] (सं.) १-प्रतिकर अथवा हरजाने से सम्बन्ध रखने वाला । २-प्रतिकर अथवा हरजाने के रूप में दिया जाने वाला । कम्पेन्सेटरी ।

प्रतिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह काम जो किसी काम के विरोध, प्रतिकार या उत्तर में किया जाय । काउन्टर ऐक्शन ।

प्रतिकर्तव्य [वि.] सं.) बदला चुकाने योग्य ।

प्रतिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी दूसरे के द्वारा प्रेरित कर्म । २-वेश । भेस । ३-प्रतिकार । बदला । ४-शरीर को सँवारना । ५-अङ्ग कर्म ।

प्रतिकस्वत्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कृति की प्रतियां छापने अथवा प्रस्तुत करने का वह अधिकार जो उसके कर्त्ता (कवि, लेखक या कलाकार आदि) की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता । कॉपी-राइट ।

प्रतिकांक्षी [वि.] (सं.) आकांक्षायुक्त ।

प्रतिकामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सपत्नी । सौत ।

प्रतिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह काम जो किसी बुरे काम का बदला चुकाने के लिए किया जाय । २-प्रतिशोध । बदला । ३-चिकित्सा । इलाज ।

प्रतिकारक [संज्ञा पु.] (सं.) बदला चुकाने वाला । वह जो किसी बात का प्रतिकार करता हो ।

प्रतिकारी [वि.] (सं.) बदला चुकाने वाला ।

प्रतिकार्य्य [वि.] (सं.) जिसका प्रतिकार किया जा सके ।

प्रतिकाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिबिम्ब । २-चितवन । दृष्टि ।

प्रतिकितव [संज्ञा पु.] (सं.) जुआरी का जोड़ीदार जुआरी के मुकाबले में जुआ खेलने वाला । जुआरी ।

प्रतिकुंचित, प्रतिकुञ्चित [वि.] (सं.) मुड़ाहुआ झुकाहुआ । टेढ़ा ।

प्रतिकुंजर, प्रतिकुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) आक्रमणकारी हाथी ।

प्रतिकूप [संज्ञा पु.] (सं.) परिखा । खाई ।

प्रतिकूल [वि.] (सं.) विपरीत । विरुद्ध । खिलाफ जो अनुकूल न हो । [संज्ञा पु.] (सं.) विरोध या अनुकूलता करने वाला ।

प्रतिकूल असर डालना-विपरीत या विरुद्ध प्रभावित करना ।

प्रतिकूलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिकूल होने की क्रिया या भाव । विपरीतता । विरोध ।

प्रतिकूलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिकूलता । विपरीतता ।

प्रतिकूल-प्रभाव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विवादास्पद अथवा अप्रमाणित बात अथवा विषय में पहले से स्थिर की हुई विपरीत, विकृत या या पक्षपातपूर्ण धारणा । प्रजुडिस ।

प्रतिकूल प्रभाव डालना-विपरीत या विरुद्ध प्रभावित करना ।

प्रतिकूलवचन [संज्ञा प.] (सं.) विरुद्ध वाक्य ।

प्रतिकृत [वि.] (सं.) १-जिसका बदला हो हो । २-जिसके विरुद्ध प्रयत्न किया हो ।

प्रतिकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी के पर बनाई हुई, प्रतिमा या प्रतिमूर्ति । वीर । चित्र । ३-प्रतिबिंब । छाया । प्रतिकार । ५-पूजा । ६-लेख आदि की रश: प्रतिलिपि । कॉपी ।

प्रतिकृत्य [वि.] (सं.) प्रतिकार करने योग्य ।

प्रतिकृष्ट [वि.] (सं.) १-दुबारा जोता हुआ २-अति निंदित । निकृष्ट ।

प्रतिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) उलटा-पुलटा सिलसिला ।

प्रतिक्रांति, प्रतिक्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] क्रान्ति के विरोध या प्रतिकार में वाली क्रान्ति । काउन्टर-रिवोल्यूशन ।

प्रतिक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बदला । २-एक तरफ कोई क्रिया उसके विरोध में अथवा दूसरी तरफ होने वाली क्रिया । अथवा विपरीत दिशा में होने वाली अथवा गति । रि-एक्शन ।

प्रतिक्रियावादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सुधार आदि कार्यों या विचारों के विपरीत चलता हो । रि-एक्शनरी ।

प्रतिक्रुष्ट [वि.] (सं.) निर्धन । दरिद्र ।

प्रतिक्षण [अव्य.] (सं.) हर लहमे में ।

प्रतिक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षा करने रक्षक ।

प्रतिक्षिप्त [वि.] (सं.) १-रोका हुआ । हुआ । ३-भेजा हुआ । ४-निंदित ।

प्रतिक्षेप [संज्ञा पु] (सं.) १-फेंकना । ३-तिरस्कार ।

प्रतिखुर [संज्ञा पु.] (सं.) वह शिशु हाथ पैर बाहर निकालकर तथा सिर से योनिमार्ग को रोक दे ।

प्रतिख्यात [वि.] (सं.) बहुत प्रसिद्ध ।

प्रतिख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्धि ।

प्रतिगत [वि.] (सं.) जो वापस आया हो हुआ । [संज्ञा पु.] पक्षियों की उड़ान ।

प्रतिगमन [संज्ञा पु.] (सं.) वापसी ।

प्रतिगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा पहाड़ी । २-वह जो देखने में पहाड़ हो ।

प्रतिगृह [अव्य.] (सं.) घर-घर में ।

प्रतिगृहीत [वि.] (सं.) जो ग्रहण कर हो । लिया हुआ ।

प्रतिगृहीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। धर्मपत्नी।

प्रतिगृह्य [वि.] (सं.) ग्रहण करने या लेने योग्य।

प्रतिग्या* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वीकार। ग्रहण। २-उस दान का लेना जो विधिपूर्वक दिया जाय ३-पकड़ना। ४-विवाह। पाणिग्रहण। ५-ग्रहण। उपराग। ६-स्वागत। अभ्यर्थना। ७-दान देने वाला। ८-अनुग्रह। कृपा। ९-सेना का पिछला भाग। १०-उगालदान। पीकदान। ११-स्वागत। अभ्यर्थना। १२-रक्षांपूर्वक रखने के निमित्त मिली हुई किसी की संपत्ति। १३-अभियुक्त या संदिग्ध व्यक्ति का अधिकारी गण के हाथ में जांच अथवा विचारार्थ रखा जाना। कस्टडी।

प्रतिग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधिपूर्वक दिया हुआ दान लेना। २-स्वागत। ३-विवाह।

प्रतिग्रही, प्रतिग्रहीता [संज्ञा पु.] (सं.) दान लेने वाला। प्रतिग्राही।

प्रतिग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण करना। लेना।

प्रतिग्राहक [संज्ञा पु] (सं) १-लेने या ग्रहण करने वाला। २-वह जो किसी की दी हुई कोई वस्तु, संपत्ति आदि ग्रहण करता हो। रिसीवर ३-वह अधिकारी जो किसी संपत्ति को रक्षा पूर्वक रखने के लिए अपने अधिकार में ले। कस्टोडियन।

प्रतिग्राही [संज्ञा पु] (सं) दान लेने वाला।

प्रतिग्राह्य [वि.] (सं.) लेने या ग्रहण करने योग्य।

प्रतिघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोध। सामना। मुकाबला। २-आपस की मारपीट। लड़ाई। ३-क्रोध। रोष। ४-मूर्छा। ५-शत्रु। वैरी।

प्रतिघात [संज्ञा पु] (सं.) प्रतिघात करने वाला।

प्रतिघातक [संज्ञा पु.] (सं) प्रतिघात करने वाला

प्रतिघातन [संज्ञा पु.] (सं.) १ प्राणघात। जान से मार डालना। २-रुकावट। बाधा।

प्रतिघाती [संज्ञा पु] (सं) [स्त्री. प्रतिघातिनी] प्रतिद्वंद्वी। [वि.] (सं.) १-मुकाबला करने वाला। विरोध करने वाला। २-टक्कर मारने वाला।

प्रतिघ्न [संज्ञा पु.] (सं) शरीर। देह।

प्रतिचिंतन, प्रतिचिन्तन [संज्ञा पु.] (सं.) फिर से विचार करना। दुबारा गौर करना।

प्रतिच्छंद, प्रतिच्छन्द [संज्ञा पु] (सं) १-प्रतिकृति। २-अनुरोध।

प्रतिच्छंदक, प्रतिच्छन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रतिच्छंद'।

प्रतिच्छन्न [वि] (सं) १-ढका हुआ। २-छिपा हुआ। ३-सम्पन्न। ४-घिरा हुआ।

प्रतिच्छवि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रतिबिंब। छाया परछाँईं। २-चित्र। तसवीर।

प्रतिच्छा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'प्रतीक्षा'।

प्रतिच्छाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चित्र। तसवीर २-परछाँईं। प्रतिबिंब। ३-मिट्टी पत्थर आदि की बनी हुई मूर्ति।

प्रतिच्छायित [वि.] (सं.) १-जिस पर किसी की परछाँईं पड़ी हो। २-जिसकी परछाँईं कहीं पड़ी हो।

प्रतिच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) बाधा। रुकावट।

प्रतिछाँई, प्रतिछाँह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रतिबिंब परछाँहीं।

प्रतिछाया [संज्ञा स्त्री.](हिं.) परछाँहीं। प्रतिबिंब

प्रतिछाँहीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रतिछाया। परछाँहीं।

प्रतिजंघा, प्रतिजङ्घा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जांघ का अगला भाग।

प्रतिजल्प [संज्ञा पु.] (सं.) परामर्श। सलाह। सम्मति।

प्रतिजल्पक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिष्ठापूर्वक सहमति।

प्रतिजागर [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब सावधानी रखना। २-रक्षा।

प्रतिजिह्वा, प्रतिजिह्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले के भीतर की घंटी। कव्वा। छोटी जीभ।

प्रतिजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) नया जन्म। फिर से जन्म।

प्रतिज्ञांतर, प्रतिज्ञान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) तर्क में निग्रह-स्थान का एक भेद।

प्रतिज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी काम को करने या न करने के विषय में वचनदान। २-शपथ। सौगन्ध। ३-न्याय के अनुमान के पांच खंडों या अवयवों में प्रथम अवयव। ४-अभियोग दावा।

प्रतिज्ञात [वि.] (सं.) १-जिसके सम्बन्ध में प्रतिज्ञा की गई हो। २-करने अथवा हो सकने योग्य। साध्य।

प्रतिज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईमान-धर्म से कहना २-किसी कही हुई बात या किये गये कार्य की पुष्टि। एफरमेशन।

प्रतिज्ञापत्र [संज्ञा पु.](सं.) वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो। इकरारनामा।

प्रतिज्ञाभंग, प्रतिज्ञाभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) की हुई प्रतिज्ञा को तोड़ देना। किये गये वाइदे से फिर जाना।

प्रतिज्ञाविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिज्ञा के प्रतिकूल आचरण वाला। खिलाफी। २-न्याय में वह स्थिति जब प्रतिज्ञा और हेतु दोनों का विरोध होता है।

प्रतिज्ञासंन्यास [संज्ञा पु.] (सं) १-प्रतिज्ञा भंग करने की क्रिया। वाइदाखिलाफी। २-न्याय में एक प्रकार का निग्रह-स्थान।

प्रतिज्ञाहानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय में निग्रह-स्थान का एक भेद।

प्रतिज्ञेय [वि.] (सं.) १-प्रतिज्ञा कर सकने योग्य २-प्रशंसा करने वाला।

प्रतितंत्र, प्रतितन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मत से विरुद्ध का शास्त्र।

प्रतितंत्रसिद्धांत, प्रतितन्त्रसिद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धान्त जो किसी शास्त्र में तो हो और किसी में न हो।

प्रतितर [संज्ञा पु.] (सं) नाव खेने की डांड़।

प्रतिताल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ताल का एक भेद। इसमें कांतार, समराव्य, वैकुण्ठ और वांछित यह चारों ताल हैं।

प्रतितुलन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी एक तरफ पड़े हुए भार की बराबरी करने अथवा उसका प्रभाव नष्ट करने वाला दूसरी तरफ का भार। काउन्टर बैलेन्स।

प्रतितूणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार का वातजन्य रोग।

प्रतिदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वापिस किया या लौटाया हुआ। २-बदले में दिया हुआ।

प्रतिदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-ली अथवा रखी-हुई वस्तु को लौटाना। वापस करना। २-एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देना। विनिमय। बदला।

प्रतिदारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध। लड़ाई। २-चीरना। फाड़ना।

प्रतिदिन [संज्ञा पु.] (सं.) हररोज।

प्रतिदेय [वि.] (सं) जो बदलने या लौटाने योग्य हो।

प्रतिदेश [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा पर का देश।

प्रतिदृष्ट [वि.] (सं.) निगाह के सामने पड़ा हुआ देखा हुआ।

प्रतिदृष्टांतसम, प्रतिदृष्टान्तसम [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में एक प्रकार की जाति।

प्रतिद्वंद्व, प्रतिद्वन्द्व [संज्ञा पु.] (सं.) दो समान व्यक्तियों का विरोध।

प्रतिद्वंद्विता, प्रतिद्वन्द्विता [संज्ञा स्त्री] (सं.) बराबर वालों की लड़ाई या विरोध। प्रतियोगिता

प्रतिद्वंद्वी, प्रतिद्वन्द्वी [संज्ञा पु.] (सं.) दो समान विरोधी व्यक्ति। मुकाबले का लड़ने वाला। शत्रु। वैरी।

प्रतिधावन [संज्ञा पु.] (सं.) आक्रमण। हमला। चढ़ाई।

प्रतिधि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक स्तोत्र जो संध्या समय पढ़ा जाता है।

प्रतिध्वंसक-तोप [संज्ञा स्त्री.](हिं.) हवाई जहाजों को गोला मारकर भूमि पर गिराने वाली तोप।

प्रतिध्वनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अपने उत्पत्ति स्थान पर फिर से सुनाई पड़ने वाला शब्द।

गूंज। प्रतिशब्द। २-शब्द से व्याप्त होना। गूंजना। ३-दूसरे के भावों अथवा विचारों आदि का दोहराया जाना।

प्रतिध्वान [संज्ञा प.] (सं.) प्रतिध्वनि।

प्रतिनंदन, प्रतिनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अभिनन्दन जो आशीर्वाद देते हुए किया जाय २-किसी शुभ अवसर पर आनन्द प्रकट करने वाला वचन या संदेसा। बधाई। मुबारकबाद। कांग्रेचुलेशन।

प्रतिनव [वि.] (सं.) नूतन। नया।

प्रतिना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पृतना'।

प्रतिनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी नाड़ी। उपनाड़ी।

प्रतिनाद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिध्वनि। गूँज।

प्रतिनायक [संज्ञा पु.] (सं.) नाटकों अथवा काव्यों में मुखनायक का प्रतिद्वंद्वी नायक।

प्रतिनाह [संज्ञा पु.] (सं.) श्वास बंद होने का एक रोग।

प्रतिनिचयन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी का दिया हुआ धन शुल्क आदि जो अधिक अथवा अनुचित होने की अवस्था में लौटाना या उसके खाते में जमा करना। रिफंड।

प्रतिनिधान [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति अथवा व्यक्ति का वह दल जिसे कहीं प्रतिनिधि बनाकर भेजा जाय। डेलिगेसी।

प्रतिनिधायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को या कुछ लोगों को कहीं प्रतिनिधि बनाकर भेजना। डेलिगेशन। २-कहीं किसी कार्य के निमित्त जाने वाला प्रतिनिधियों का दल। डेपुटेशन।

प्रतिनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिमा। प्रतिमूर्त्ति। २-वह व्यक्ति जो दूसरे के बदले कोई काम करने को नियुक्त किया जाय। रिप्रेजेन्टेटिव।

प्रतिनिधिक [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे के लिए कार्य करने का अधिकारी। प्रॉक्सी।

प्रतिनिधिक-मतदान [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिनिधि रूप में मत या वोट देना। प्रॉक्सी वोटिंग।

प्रतिनिधित्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिनिधि होने की क्रिया या भाव। २-किसी अन्य की ओर से उनका कार्य करने का भाव। रिप्रेजेन्टेशन

प्रतिनिधि-सत्तात्मक [वि.] (सं.) (वह शासन-पद्धति) जिसमें जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।

प्रतिनियम [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण नियम। प्रत्येक के लिए एक नियम।

प्रतिनियुक्त [वि.] (सं.) प्रतिनिधि अथवा अधीनस्थ अधिकारी के रूप में कहीं भेजा हुआ (व्यक्ति)। डेप्यूटेड।

प्रतिनियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को कहीं भेजने के निमित्त अधीनस्थ कर्मचारी के रूप में नियुक्त करना। डेप्यूटेशन।

प्रतिनिर्दिष्ट [वि.] (सं.) जिसका प्रतिनिर्देश किया गया हो। प्रसंगवश जिसका उल्लेख या चर्चा की गई हो। रेफर्ड।

प्रतिनिर्देश [संज्ञा पु.] (सं.) साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूप में किया हुआ उल्लेख। रेफरेंस

प्रतिनिर्देश्य [वि.] (सं.) वह जो, यद्यपि पहले व्यक्त किया जा चुका है, तथापि पुनः कहा जाय. इस अभिप्राय से कि कुछ अधिक कथन किया जाय।

प्रतिनिर्यातन [संज्ञा पु.] (सं.) वह अपकार जो किसी अपकार के बदले में किया जाय।

प्रतिनिवर्तन [संज्ञा पु.] (सं) १-वापस आना। लौटना। २-मुड़ना। पराङ्मुख होना।

प्रतिनिवासन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जिसे बौद्धभिक्षु धारण करते हैं।

प्रतिनिविष्ट [वि.] (सं.) हठी। जिद्दी। आग्रही।

प्रतिनिविष्टमूर्ख [संज्ञा पु.] (सं.) दुराग्रही मूर्ख।

प्रतिप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा शान्तनु के पिता का नाम।

प्रतिपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिवादी। विरोधी पक्ष। विरुद्ध दल। २-शत्रु। बैरी। दुश्मन। ३-समानता। बराबरी।

प्रतिपक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विरोध।

प्रतिपक्ष-नेता [संज्ञा पु.] (सं.) विरोधी दल का नेता। लीडर ऑफ दी अपोजिशन।

प्रतिपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) विरुद्ध पक्ष वाला। विपक्षी। विरोधी।

प्रतिपच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रतिपक्ष'।

प्रतिपच्छी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रतिपक्षी'।

प्रतिपत् [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रतिपद्'।

प्रतिपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उपलब्धि। प्राप्ति पाना। २-ज्ञान। विवेक। ३-अनुमान। ४-देना। दान। ५-कार्यरूप में लाना। ६-प्रतिपादन। निरूपण। ७-प्रमाण पूर्वक प्रदर्शन। इतमिनान। ८-मानना। कायल होना। ९-पदप्राप्ति। धाक। साख। १०-आदर-सत्कार ११-प्रवृत्ति। १२-निश्चय। दृढ़ विचार। १३-परिणाम। १४-गौरव।

प्रतिपत्तिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध आदि में सब के अन्त में किया जाने वाला कर्म।

प्रतिपत्तिपटह [संज्ञा पु.] (सं.) ढोल। ढोलक। मृदंग।

प्रतिपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रतिपर्ण'।

प्रतिपत्रफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेली।

प्रतिपत्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रतिनिधि रूप में दिया जाने वाला मत। प्रॉक्सी।

प्रतिपद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रास्ता। मार्ग। २-आरम्भ। प्रारम्भ। ३-पाख की प्रथम तिथि। प्रतिपदा। परवा। ४-बुद्धि। समझ। ५-पंक्ति। श्रेणी। ६-एक प्रकार का बड़े आकार का ढोल जो प्राचीनकाल में होता था। ७-[illegible] की जन्मतिथि।

प्रतिपदा, प्रतिपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी पक्ष की पहली तिथि। परवा।

प्रतिपन्न [वि.] (सं.) १-प्राप्त। जो मिला हो। २-पूरा किया हुआ। आरम्भ किया हुआ। ३-अपनाया हुआ। अंगीकृत। ४-प्रमाणित। साबित। ५-भरा-पूरा। ६-शरणागत। ७-सम्मानित। जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो।

प्रतिपन्नक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध-शास्त्रानुसार श्रोतापन्न, सकृदगामी, अनागामी और अर्हत् यह चार पद।

प्रतिपन्नत्व [संज्ञा पु.](सं.) प्रतिपन्न होने का भा

प्रति-परीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के कुछ कह चुकने पर उससे दबी दबाई बातों का पता लगाने के निमित्त उससे कुछ और प्रश्न पूछना। क्रास-इग्जामिनेशन।

प्रनि-परीक्षित [वि.](सं.) प्रति-परीक्षण किया हुआ

प्रतिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वह रसीद या पावती जिसमें दो टुकड़े हों, प्रमाणपत्र आदि में का वह एक टुकड़ा जो देने वाले के पास रह जाता है तथा जिस पर किसी को दिये हुए दूसरे टुकड़े की प्रतिलिपि रहती है। काउंटर-फॉयल।

प्रतिपर्णशिफा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी। प्रवंती।

प्रतिपाण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिपक्षी का जुए में रखा हुआ दांव।

प्रतिपादक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली भांति समझाने या कहने वाला। २-प्रतिपन्न करने वाला। साबित करने वाला। समर्थन करने वाला। ३-निष्पादन या निरूपण करने वाला। ४-निर्वाह करने वाला। ५-उत्पन्न करने वाला। उत्पादक।

प्रतिपादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली भांति समझाना। प्रतिपत्ति। २-किसी बात का प्रमाण कथन। ३-प्रमाण। सबूत। ४-पुरस्कार। ५-दान। ६-उत्पत्ति।

प्रतिपादनानुचय [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर का सारांश।

प्रतिपादित [वि.](सं.) १-जो भली भांति समझा दिया गया हो। २-जिसका निश्चय हो चुका हो। निर्धारित। ३-जो दिया हो।

प्रतिपाद्य [वि.] (सं.) १-निरूपण करने योग्य। समझाने योग्य। २-देने योग्य।

प्रतिपात [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पापी के साथ किया जाने वाला कठोर और पापरूप व्यवहार।

प्रतिपार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रतिपाल'।

प्रतिपाल [संज्ञा पु.] (सं.) पालना या रक्षा करने वाला।

प्रतिपा. ,

प्रतिपालक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. प्रतिपालिका] पालन-पोषण करने वाला। पोषक।

प्रतिपालक-अधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह सरकारी विभाग जो संपन्न विधवाओं, अल्पवयस्कों या अयोग्य व्यक्तियों की संपत्ति की रक्षा तथा व्यवस्था करता है। कोर्ट-आफ-वार्ड्स।

प्रतिपालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पालन करने की क्रिया या भाव। २-रक्षा करने की क्रिया या भाव। ३-आज्ञा का निर्वाह। तामील।

प्रतिपालना* [क्रि. स.] (हिं) १-पालन करना। पालना। २-रक्षा करना। बचाना।

प्रतिपालित [वि.] (सं.) १-पालन किया हुआ। २-रक्षित।

प्रतिपाल्य [वि.] (सं.) १-पालन करने योग्य। २-रक्षा करने योग्य।

प्रतिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य का पुतला जिसे चोर सेंध के भीतर खड़ा करते थे। यह इस लिए कि उन्हें यह पता लग जाय कि घर में कोई जाग तो नहीं रहा है। २-(किसी का) पुतला। ३-वह जो साथ काम करे। किसी के अधीन रहकर या यों ही किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करने वाला। डेपुटी।

प्रतिपुस्तक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी ग्रंथ या पुस्तक की नकल।

प्रतिपूजक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिपूजन या अभिवादन करने वाला।

प्रतिपूजन [संज्ञा पु.] (सं.) अभिवादन। साहब-सलामत।

प्रतिपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिपूजन। अभिवादन।

प्रतिपूज्य [वि.] (सं.) जो अभिवादन करने पर, अभिवादन किये जाने के योग्य हो।

प्रतिपोषक [संज्ञा पु.] (सं.) सहायता या मदद करने वाला।

प्रतिप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) अत्रिवंशीय एक ऋषि का नाम।

प्रतिप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिबिंब। परछांई।

प्रतिप्रसव [संज्ञा पु.] (सं.) जिस बात का एक स्थान पर निषेध किया गया हो, उसी का किसी विशेष अवसर के लिये विधान।

प्रतिप्रसूत [वि.] (सं.) जिसके सम्बन्ध में अन्य स्थानों पर तो निषेध हो पर किसी विशेष स्थान में विधान हो।

प्रतिप्रस्थाता [संज्ञा पु.] (हि.) सोमयाजी सोलह ऋत्विजों में से छठा ऋत्विज।

प्रतिप्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) मार-पर-मार। अनुरूप प्रहार।

प्रतिप्राकार [संज्ञा पु.] (सं.) बाहरी परकोटा।

प्रतिप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोई अथवा गई हुई वस्तु फिर से प्राप्त करना। रिकवरी।

प्रतिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपकार जो किसी उपकार का बदला चुकाने के लिए किया जाय

प्रतिप्लवन [संज्ञा पु.](सं.) पीछे की ओर कूदना

प्रतिफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाया। प्रतिबिंब। २-परिणाम। नतीजा। ३-बदले में मिली हुई वस्तु।

प्रतिफलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जो कोई प्रतिबिंब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता है। *रिफ्लेक्टर*।

प्रतिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बावची। बकुची।

प्रतिफलात्मक [वि.] (सं.) प्रतिकार सम्बन्धी।

प्रतिफलानुसारी [वि.] (सं.) प्रतिकार विषयक। प्रतिफलात्मक।

प्रतिफलित [वि.] (सं.) प्रतिबिम्बित।

प्रतिबंध, प्रतिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकावट। रोक। २-विघ्न। बाधा। ३-किसी बात या कार्य के लिए लगाई हुई शर्त। *कण्डिशन*।

प्रतिबंधक, प्रतिबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोकने वाला। २-बाधा डालने वाला। ३-वृक्ष। पेड़

प्रतिबंधकता, प्रतिबन्धकता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रुकावट। रोक। अड़चन। २-विघ्न। बाधा।

प्रतिबंधु, प्रतिबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बंधु के समान हो।

प्रतिबद्ध [वि.] (सं.) १-बँधा हुआ। जिसमें कोई प्रतिबंध हो। २-जिसमें कोई बाधा डाली गई हो। ३-नियंत्रित।

प्रतिबल [वि.](सं.) १-समान बलवाला।। जोड़ीदार। २-समर्थ। शक्त।

प्रतिबाधक [वि.](सं.) १-बाधा या रुकावट डालने वाला। २-पीड़ा देने वाला।

प्रतिबाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विघ्न। बाधा। २-पीड़ा। कष्ट।

प्रतिबाहु [संज्ञा पु.](सं.) १-बाँह का अगला भाग २-अक्रूर के भाई का नाम।

प्रतिबिंब, प्रतिबिम्ब [संज्ञा पु.](सं.) १-परछाईं। छाया। २-मूर्त्ति। प्रतिमा। ३-चित्र। तसवीर ४-दर्पण। शीशा।

प्रतिबिंबक, प्रतिबिम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) परछाईं के समान पीछे-पीछे चलने वाला।

प्रतिबिंबवाद, प्रतिबिम्बवाद [संज्ञा पु.] (सं.) बेदांत का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार माना जाता है कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंबमात्र है।

प्रतिबिंबित, प्रतिबिम्बित [वि.] (सं.) १-जिसकी परछाँई या प्रतिबिंब पड़ता हो। २-जो परछाँई पड़ने के कारण दिखाई पड़ता हो। ३-जो झलकता हो।

प्रतिबीज [वि.] (सं.) जिसकी उत्पन्नकर-शक्ति नष्ट हो गई हो।

प्रतिबुद्ध [वि.] (सं.) १-जागा हुआ। २-प्रसिद्ध। ३-उन्नत।

प्रतिबुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उलटी समझ या विपरीत बुद्धि।

प्रतिबोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागरण। जागना। २-ज्ञान।

प्रतिबोधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्ञान उत्पन्न करने वाला। २-जगाने वाला। ३-शिक्षा देने वाला। ४-तिरस्कार करने वाला।

प्रतिबोधन [संज्ञा पु.] (सं.) जागरण। जागृति। ज्ञानोत्पादन। ज्ञान उत्पन्न कराना।

प्रतिबोधित [वि.] (सं) १-जागा हुआ। २-सिखलाया हुआ। शिक्षित।

प्रतिभट [संज्ञा पु.] (स.) १-बराबर का या समान बल वाला योद्धा। २-मुकाबला करने वाला। ३-शत्रु। वैरी।

प्रतिभटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी। वैर।

प्रतिभय [वि.] (सं.) भयंकर। खौफनाक। [संज्ञा पु.] (सं.) खतरा। जोखों। भय। डर

प्रतिभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुद्धि। समझ। २-असाधारण मानसिक शक्ति। असाधारण बुद्धि बल। ३-उज्ज्वलता। चमक।

प्रतिभाकूट [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

प्रतिभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीनकाल में लगने वाला एक प्रकार का कर। २-आज-कल का वह शुल्क जो राज्य में बनने वाले कुछ विशिष्ट वस्तुओं (जैसे-मादक द्रव्य, दियासलाई, नमक, कपड़ों आदि) पर उनके बनते ही तथा बाजार में बिक्री के लिए जाने से पूर्व ही लेलिया जाता है। *एक्साइज ड्यूटी*।

प्रतिभागिक [वि.] (सं.) जिस पर प्रतिभाग लगाया या दिखाया गया हो।

प्रतिभाज्य [वि.] (सं.) जिस पर प्रतिभाग (शुल्क) लगता अथवा लग सकता हो।

प्रतिभात [वि.] (सं.) १-चमकीला। प्रकाशवान्। २-जाना या समझा हुआ। ज्ञात। ३-प्रतीत। ४-जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ।

प्रतिभान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रभा। चमक। २-बुद्धि। समझ।

प्रतिभानु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

प्रतिभान्वित [वि.] (सं.) प्रतिभाशाली। जिसमें प्रतिभा हो।

प्रतिभावान् [वि.] (सं.) १-जिसमें प्रतिभा हो। २-चमकदार।

प्रतिभाशाली [वि.] (सं) जिसमें प्रतिभा हो। प्रतिभावाला।

प्रतिभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-उत्तर। जवाब।

२-प्रत्युत्तर । ३-वादी का कथन । मुद्दई का बयान ।

प्रतिभासंपन्न, प्रतिभासम्पन्न [वि.] (सं.) प्रतिभाशाली । जिसमें प्रतिभा हो ।

प्रतिभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश । चमक । २-आकृति । ३-धोखा । भ्रम ।

प्रतिभाहीन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्धि का अभाव । प्रतिभारहित ।

प्रतिभिन्न [वि.] (सं.) जो अलग हो गया हो । विभक्त ।

प्रतिभू [संज्ञा पु.] (सं.) जमानत में पड़ने वाला । जामिन ।

प्रतिभूति [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो प्रतिभू या जामिन किसी बात की जमानत के लिए जमा करता है । ज़मानत के रूप में जमा किया हुआ धन । *सेक्यूरिटी* ।

यौ० *प्रतिभूतिन्यास*–जमानत के रूप में धन जमा करना ।

प्रतिभूत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जमानतदारी । *गारंटी*

प्रतिभेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्तर । फर्क । २-आविष्कार ।

प्रतिभेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विभाग करना । २-खोलना । ३-काटना ।

प्रतिभोग [संज्ञा पु.] (सं.) उपभोग ।

प्रतिभौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर का बल और तेज ।

प्रतिमंडक, प्रतिमण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) शालक-राग का एक भेद ।

प्रतिमंडल, प्रतिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का मंडल या घेरा । परिवेश । २-प्रतिनिधियों का दल अथवा मंडल ।

प्रतिमंत्रण, प्रतिमन्त्रण [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर देना । जवाब देना ।

प्रतिम [वि.] (सं.) समान । सदृश्य ।

प्रतिमल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बराबर का पहलवान । २-विरोध । शत्रुता ।

प्रतिमत [संज्ञा पु.] (सं.) वह मत जो किसी दल को जिताने के अभिप्राय से दूसरे दल के विरुद्ध दिया जाय । *काउंटर वोट* ।

प्रतिमर्श [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के मतानुसार शिरोवस्ति विशेष जो नस्य के पांच भेदों में से है ।

प्रतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी वास्तविक या कल्पित आकृति के आधार पर बनाई हुई मूर्त्ति या चित्र आदि । अनुकृति । २-मिट्टी पत्थर आदि की बनी देवमूर्त्ति । ३-प्रतिबिंब । छाया ४-तौलने का बाट । ५-वह अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ अथवा व्यक्ति के न होने की दशा में समान किसी अन्य पदार्थ अथवा व्यक्ति की स्थापना का उल्लेख होता है ।

प्रतिमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिबिंब । परछांही । २-हाथी के दोनों दाँतों के बीच का स्थान । हाथी का मस्तक । ३-समानता । बराबरी । ४-दृष्टांत । उदाहरण । ५-वह निश्चित अथवा स्थिर किया हुआ सर्वमान्य मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाय । मानदंड । मानक । स्टैंडर्ड । ६-वह वस्तु जो आदर्श रूप में सब के सामने रखी जाय । मॉडल । ७-किसी आदर्श को देखकर उसके अनुरूप बनाई हुई वस्तु । *मॉडल* । ८-तोलने का बाट । बटखरा ।

प्रतिमाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जादू के जवाब का जादू ।

प्रतिमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो व्यक्तियों का (स्मरणशक्ति का परिचय देने के लिए) एक दूसरे के पीछे लगातार श्लोक या कविता पढ़ना ।

प्रतिमास्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाभारत में वर्णित एक प्राचीन देश का नाम । २-इस देश का निवासी ।

प्रतिमुक्त [वि.] (सं.) १-(वस्त्रादि) पहना हुआ । २-जो छोड़ दिया गया हो । जो बँधा हुआ हो

प्रतिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का पिछला भाग । २-नाटक के पंच-संधियों में एक । इस सन्धि में विलास, परिसर्प, नर्म (परिहास), प्रगमन, विरोध, पर्युपासन, पुष्प वज्र, उपन्यास और वर्णसंहार आदि का वर्णन किया जाता है ।

प्रतिमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नामांकित मोहर की छाप ।

प्रतिमुहूर्त [क्रि. वि.] (सं.) निरन्तर । लगातार ।

प्रतिमूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी के अनुरूप ज्यों की त्यों बनी हुई मूर्ति या चित्र । प्रतिमा ।

प्रतिमूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का चूहा

प्रतिमोक्ष, प्रतिमोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष की प्राप्ति ।

प्रतिमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) बन्धन से मुक्त करना ।

प्रतियत्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-लालच । लाभ या प्राप्ति की इच्छा । २-उपग्रह । ३-कैदी । ४-संस्कार ।

प्रतियातना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिमा । मूर्ति ।

प्रतियान [संज्ञा पु.] (सं.) लौटना । वापस आना ।

प्रतियुक्त [वि.] (सं.) सुयोग्य । समर्थ । शक्त ।

प्रतियुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) बराबरी का युद्ध ।

प्रतियोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोधी पदार्थों का संयोग । २-शत्रुता । विरोध । ३-वह उद्योग जो फिर से किया जाय । ४-किसी पदार्थ के परिणाम को नष्ट करने वाली वस्तु ।

प्रतियोगिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बढ़ा-ऊपरी । प्रतिद्वंद्विता । मुकाबिला । किसी कार्य में औरों से बढ़ने का प्रयत्न । २-ऐसा काम जिसमें लोग अलग अलग सफल होने की कामना या इच्छा करें ।

प्रतियोगी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु । विरोधी । वैरी । २-बाधा डालने वाला । ३-सहायक । साथी । मददगार । ४-बराबर वाला । जोड़ीदार । [वि.] १-प्रतियोगिता करने वाला । २-मुकाबले का । बराबरी का ।

प्रतियोद्धा [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु । विरोधी । २-मुकाबले का । बराबर का लड़ने वाला ।

प्रतिरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षा । हिफाज़त ।

प्रतिरक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा अथवा बचाव के निमित्त अभियोग आदि का उत्तर देने के लिये किये जानें वाले कार्य या व्यवस्था । बचाव । डिफेंस ।

प्रतिरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बराबरी का लड़ने वाला । २-यदुवंशी वज्रास्त्र के पुत्र का नाम (पुराण) ।

प्रतिरव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिध्वनि । २-झगड़ा टंटा ।

प्रतिरुद्ध [वि.] (सं.) १-अवरुद्ध । रुका हुआ । २-फँसा हुआ । अटका हुआ ।

प्रतिरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिमा । मूर्ति । २-चित्र । तसवीर । ३-प्रतिनिधि । ४-नमूना । [वि.] (सं.) कृत्रिम या बनावटी । नकली । जाली । काउंटर फीट ।

प्रतिरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नकली या बनावटी वस्तुएँ, विशेषत. सिक्के, नोट आदि ढालने या बनाने वाला । काउंटर फीट ।

प्रतिरोद्धा [वि.] (सं.) १-शत्रुता करने वाला । २-रोकने या बाधा डालने वाला ।

प्रतिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोध । २-रोक । रुकावट । ३-विरस्कार । ४-प्रतिबिंब ।

प्रतिरोधक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रतिरोधिका] प्रतिरोध करने वाला । बाधा डालने वाला ।

प्रतिरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव ।

प्रतिरोधित [वि.] (सं.) जो रोका गया हो । जिसमें बाधा डाली गई हो ।

प्रतिरोधी [वि.] (सं.) रोकने या बाधा डालने वाला ।

प्रतिलंभ, प्रतिलम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाल । कुरीति । २-कलंक । दोष । ३-प्राप्ति । ४-निंदा । गाली । दुर्वचन ।

प्रतिलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) चिह्न । सबूत ।

प्रतिलभ्य [वि.] (सं.) प्राप्त करने योग्य ।

प्रतिलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाभ । प्राप्ति । २-

शालक नामक राग का एक भेद।

प्रतिलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लेख की ज्यों की त्यों नकल। कॉपी।

प्रतिलिपिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो लेखों आदि की प्रतिलिपि या नकल करता हो। कॉपिस्ट।

प्रतिलिपित [वि.] (सं.) जिसकी प्रतिलिपि की गई हो। जिसकी ज्यों की त्यों नकल की गई हो।

प्रतिलिप्याधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) बिना ग्रंथकार की अनुमति के पुस्तक न छापने का स्वत्व या अधिकार। मुद्रण अधिकार। प्रतिक स्वत्व। कॉपी राइट।

प्रतिलेखा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पुस्तिका जिसमें बैंक के लेनदेन का हिसाब हो। पासबुक।

प्रतिलोम [संज्ञा पु.] (सं) नीच या कमीना आदमी [वि.] (सं) १-विपरीत। प्रतिकूल। २-नीचे से ऊपर की ओर अथवा विपरीत दिशा में जाने वाला। उलटे क्रम वाला। कॉनवर्स।

प्रतिलोमज [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीच वर्ण का पुरुष तथा उच्चवर्ण की कन्या उत्पन्न होने वाली सन्तान। २-वह जिसके माता-पिता एक जाति या वर्ण के न हों। वर्णसंकर।

प्रतिलोम-विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह विवाह जिसमें वर नीच वर्ण का और कन्या उच्च-वर्ण की हो।

प्रतिवचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तर। जवाब। २-प्रतिध्वनि।

प्रतिवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) लौट आना। वापस आना।

प्रतिवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) गाँव। ग्राव।

प्रतिवस्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के बदले में दी जाय। २-समानांतर

प्रतिवस्तुपमा [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग-अलग वाक्यों में किया जाय

प्रतिवहन [संज्ञा पु.] (सं.) विरुद्ध दिशा में ले जाना। उलटी ओर ले जाना।

प्रतिवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिध्वनि। २-प्रत्युत्तर।

प्रतिवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रत्युत्तर।

प्रतिवात [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पेड़।

प्रतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के वाक्य अथवा सिद्धांत का खंडन करने के निमित्त या उसका विरोध करने के लिए कही हुई बात। विरोध। २-विवाद। बहस। ३-उत्तर। जवाब।

प्रतिवादक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिवाद करने वाला

प्रतिवादिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रतिवाद का भाव। २-प्रतिवादी का धर्म।

प्रतिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिवाद या खंडन करने वाला। २-वह जो किसी बात में तर्क करे। ३-वादी की बात का उत्तर देने वाला व्यक्ति प्रतिपक्षी। डिफेंडेन्ट।

प्रतिवाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काढ़े में डाला जाने वाला औषधियों का चूर्ण। २-कल्क। ३-चूर्ण। बुकनी। ४-धातु को भस्म करने का कार्य।

प्रतिवारण [संज्ञा पु.] (सं.) रोकना। मना करना

प्रतिवारित [वि.] (सं.) रोका हुआ। मना किया-हुआ।

प्रतिवार्य [वि.] (सं.) निवारण करने योग्य।

प्रतिवास [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुवास। सुगंधि। २-पड़ोस।

प्रतिवासिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पड़ोस का निवास या रहने का भाव।

प्रतिवासी [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोस का रहने वाला पड़ोसी।

प्रतिवासुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) जैन-मतानुसार विष्णु या वासुदेव के नौ पुत्र।

प्रतिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) पुराण वर्णित अक्रूर के भाई का नाम।

प्रतिवाहु [संज्ञा पु.] (सं.) एक यादव का नाम।

प्रतिविंध्य, प्रतिविन्ध्य [संज्ञा पु.] (सं) युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

प्रतिविधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी विधान के मुकाबले में किया जाने वाला विधान। २-प्रतिकार।

प्रतिविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिकार।

प्रतिविषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस। वितूला।

प्रतिविष्णु [संज्ञा पु.] (सं.) राजा मुचकुन्द जो विष्णु के प्रतिद्वंद्वी थे।

प्रतिविष्णुक [संज्ञा पु.] (सं.) मुचकुन्द नामक फूल का पौधा।

प्रतिवीर [संज्ञा पु.] (सं.) बराबरी का योद्धा।

प्रतिवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें प्रतिरोध करने की सामर्थ्य हो।

प्रतिवृष [संज्ञा पु.] (सं.) आक्रमणकारी सांड।

प्रतिवेदक [संज्ञा पु.] (सं.) संवाददाता।

प्रतिवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी घटना अथवा कार्य का विवरण जो किसी को सूचित करने के लिए हो। रिपोर्ट। २-किसी को दी जाने वाली सूचना। *रिपोर्ट*।

प्रतिवेदित [वि.] (सं.) प्रतिवेदन किया हुआ। *रिपोर्टेड*।

प्रतिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-पड़ोस। २-घर के सामने या निकट का घर। ३-आसपास की वस्तुएँ या परिस्थिति।

प्रतिवेशी [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोसी।

प्रतिवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोस का मकान।

प्रतिवेश्य [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोस में होने वाला। पड़ोसी।

प्रतिव्यक्ति-कर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिशीर्ष या प्रति व्यक्ति पर लगने वाला कर या शुल्क। *कैपिटेशन टैक्स*।

प्रतिशंक, प्रतिशङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बराबर बनी रहने वाली शङ्का।

प्रतिशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिध्वनि। गूंज।

प्रतिशम [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाश। २-मुक्ति।

प्रतिशयन [संज्ञा पु.] (सं.) धरना देना।

प्रतिशयित [संज्ञा पु.] (सं.) धरना देने वाला व्यक्ति।

प्रतिशशी [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब। २-झूठमूठ का चन्द्रमा।

प्रतिशाप [संज्ञा पु.] (सं.) फिर से शाप देना।

प्रतिशिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिष्य का शिष्य। चेले का चेला।

प्रतिशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गणना के विचार से प्रतिव्यक्ति।

प्रतिशीर्ष-कर [संज्ञा प.] (सं.) वह कर या शुल्क जो प्रति व्यक्ति के अनुसार लगाया जाता है। (जैसे—किसी परिवार चार व्यक्ति हों और प्रति व्यक्ति एक रुपया शुल्क लगता हो तो चार के चार रु० लगेंगे। *कैपिटैशन टैक्स*।

प्रतिशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) केवल बदले की भावना से किसी ऐसे देश से आने वाले माल पर लगाया जाने वाला कर अथवा शुल्क जिसने पहले (ऐसे कर लगाने वाले) देश से आने वाले माल पर अपने यहाँ कोई कर अथवा शुल्क लगा रखा हो। *काउन्टर वेलिंग ड्युटी*।

प्रतिशोध [संज्ञा पु.] (सं.) बदला चुकाने की भावना से किया जाने वाला काम। बदला।

प्रतिश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरदी से होने वाली जुकाम।

प्रतिश्यान, प्रतिश्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुकाम सरदी। पीनस रोग।

प्रतिश्रम [संज्ञा पु] (सं.) मेहनत। परिश्रम।

प्रतिश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञशाला। यज्ञमंडप २-घर। ३-विश्राम। सभा।

प्रतिश्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वीकृति। मंजूरी।

प्रतिश्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-इकरार। वाइदा। रजामंदी। २-प्रतिध्वनि। गूंज।

प्रतिश्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिज्ञाबद्ध होना। २-प्रतिज्ञा। वाइदा। ३-सुनना। सुनने का भाव।

प्रतिश्रुत [वि.] (सं.) स्वीकार या मंजूर किया हुआ।

प्रतिश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रतिध्वनि । २-स्वीकृति । मंजूरी । अनुमति । ३-वसुदेव के एक पुत्र का नाम । ४-प्रतिज्ञा । इकरार । किसी बात या कार्य के लिए दिया जाने वाला वचन । *प्रामिस* । ५-इस बात की जिम्मेदारी कि कोई वस्तु अथवा बात ऐसी ही है अथवा इसके विपरीत नहीं है, या आगे भी इसी प्रकार रहेगी । *गारन्टी* ।

प्रतिश्रुति-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य द्वारा चलाई हुई वह हुण्डी जिसका रुपया निर्धारित समय पर मिलता है । *प्रॉमिसरी नोट* ।

प्रतिषिद्ध [वि.] (सं.) निषिद्ध । वर्जित । देश से बाहर भेजने या माँगने का निषेध । *कान्ट्री-बॅन्ड* ।

प्रतिषिद्धपण्य [संज्ञा पु.] (सं.) निषिद्ध वस्तु या व्यापार । वर्जित माल ।

प्रतिषिद्ध-वणिक् [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो बिना राज्य का आज्ञा प्राप्त किये, वर्जित देश से व्यापार करता हो । *कान्ट्री बॉंडिस्ट* ।

प्रतिषिद्धव्यापार [संज्ञा पु.] (सं.) वर्जित देश से बिना राज्य की अनुमति प्राप्त किये किया जाने वाला व्यापार । *कान्ट्री बॉन्डट्रेड* ।

प्रतिषेधलेख [संज्ञा पु.] (सं.) लेख लिखने और छापने विषयक वह कानून जिसके द्वारा राजकीय या सामाजिक नियमों के तोड़ने अथवा इसी प्रकार के अन्य कार्य करने से रोकता है । *राइट आफ-प्रॉहिबिटेशन* ।

प्रतिषेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-निषेध । मनाही । अप्रलाप । खंडन । ३-एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले ।

प्रतिषेधक [वि.] (सं.) प्रतिषेध करने वाला । मना करने वाला । निषेधार्थक । *प्रो-हिब्-इट्-इव* ।

प्रतिषेधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोकथाम । २-निषेध । मनाही ।

प्रतिषेधनीय [वि.] (सं.) निषेध करने योग्य । मना करने लायक ।

प्रतिषेधात्मक [वि.] (सं.) निषेध करते हुये । मनाही करते हुये । *प्रो-हिब-इट इव-ली* ।

प्रतिषेधोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमान और उपमेय की समानता प्रतिषेध द्वारा विलक्षण रूप से वर्णन की जाती है ।

प्रतिष्क [संज्ञा पु.] (सं.) जासूस । भेदिया । दूत ।

प्रतिष्कश [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूत । २-चाबुक । ३-चमड़े का तस्मा ।

प्रतिष्कष [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाबुक । २-चमड़े का तस्मा ।

प्रतिष्कस [संज्ञा पु.] (सं.) दूत ।

प्रतिष्टंभ, प्रतिष्टम्भ [संज्ञा पु.] (सं) अवरोध । रुकावट ।

प्रतिष्ठ [वि.] (सं.) प्रसिद्ध । विख्यात । मशहूर [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार सुपार्श्व नामक वृत्तार्हत के पिता का नाम ।

प्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्थापना । अवस्थान रखा जाना । २-देव प्रतिमा की स्थापना । ३-स्थान । जगह । ४-मानमर्यादा । गौरव । ५-स्थिति । ठहराव । ६-प्रसिद्ध । ख्याति । ७-यश । कीर्त्ति । ८-आदर । सत्कार । ९-आश्रय ठिकाना । १०-पृथ्वी । ११-शरीर । १२-व्रत का उद्यापन । १३-एक प्रकार का छन्द । १४-चार वर्णों वाला वृत्त । १५-सत्कार । इज्जत ।

प्रतिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थापित या प्रतिष्ठित करना । रखना या बैठाना । जमाना । २-देवमूर्ति की स्थापना । ३-पदवी । ४-स्थान जगह । ५-जड़ । मूल । ६-व्रत आदि की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य ।

प्रतिष्ठानपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन राजधानी का नाम जो प्रयाग के समीप गङ्गा पार झूसी के नाम से अब प्रसिद्ध है । २-गोदावरी नदी के एक तटवर्ती नगर का नाम

प्रतिष्ठापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो किसी का आदर-सम्मान या प्रतिष्ठा सूचित करने के लिए दिया जाय । सम्मान-पत्र ।

प्रतिष्ठापन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देवमूर्ति की स्थापना का काम ।

प्रतिष्ठावान् [वि.] (सं.) जिसकी प्रतिष्ठा हो । इज्जतदार ।

प्रतिष्ठित [वि.] (सं.) १-जिसकी प्रतिष्ठा हो । सम्मानिता । इज्जतदार । २-जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो । जिसकी स्थापना की गई हो ।

प्रतिष्ठिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थापित करने का भाव या काम । प्रतिष्ठान ।

प्रतिसंक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-संचार । २-प्रतिछाया । परछाँही ।

प्रतिसंख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संख्या के अनुसार ज्ञान का एक भेद । २-चेतना ।

प्रतिसंख्यानिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) वैनाशिक बौद्ध दार्शनिकों के मतानुसार बुद्धिपूर्वक भाव-पदार्थ का नाश ।

प्रतिसंचर, प्रतिसञ्चर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों में वर्णित एक प्रकार की प्रलय ।

प्रतिसंदेश, प्रतिसन्देश [संज्ञा पु.] (सं.) संदेशे के उत्तर में सन्देशा । सन्देसे का जबाब ।

प्रतिसंधान, प्रतिसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) ढूंढ़ना खोजना ।

प्रतिसंधानिक, प्रतिसन्धानिक [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं आदि की स्तुति करने वाला ।

प्रतिसंधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ढूंढ़ना । खोजना २-वियोग । बिछोह ।

प्रति-संस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) टूटी-फूटी को फिर से बनाकर ठीक करना । करना ।

प्रति-संस्कारणीय [वि.] (सं.) फिर से ठीक करने योग्य । मरम्मत के योग्य ।

प्रतिसंहरण [संज्ञा पु.] (सं.) रद करना ।

प्रतिसम [वि.] (सं.) जो देखने में समान

प्रतिसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नौकर । अनुचर । कंकण विशेषत: विवाह में पहना जाने कंकण । ३-सेना का पिछला भाग । या फूलमाला । ५-प्रभात । ६-घाव या अच्छा होना ।

प्रतिसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराण के वह सब सृष्टियां जिनकी रचना मानसपुत्रों द्वारा की गई थी । २-प्रलय ।

प्रतिसर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याह के में बांधा जाने वाला कंगन । नाम ।

प्रतिसांधानिक, प्रतिसान्धानिक [संज्ञा पु.] भाट । बन्दी ।

प्रतिसारण [संज्ञा पुं.] (सं.) १-घाव के की सफाई तथा मलहम पट्टी करना । में मलहम लगाने का एक औजार । बवासीर आदि रोगों को गरम घी या दागने की सुश्रुत के मतानुसार एक प्रकार की क्रिया ।

प्रतिसारणीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की पाकविधि जो कुष्ट, भगंदर, दाद, मुंहासे आदि में अधिक उपयोगी होती है [वि.] एक स्थान से हटाकर दूसरे ले जाने योग्य ।

प्रतिसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जिसका मन्त्र धारण करने से सब विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं ।

प्रतिसीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कनात । पर्दा ।

प्रतिसूर्य [संज्ञा पु.] १-सूर्य का मण्डल या २-एक उत्पात जिसमें आकाश में सूर्य सामने एक और सूर्य निकला हुआ पड़ता है । ३-गिरगिट ।

प्रतिसेना [संज्ञा स्त्री] (सं) शत्रु पक्ष की

प्रतिसोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं) छिरेंटा नामक

प्रतिस्कंध, प्रतिस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) के एक अनुचर का नाम ।

प्रतिस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) दूसरे की औरत ।

प्रतिस्थान [क्रि. वि.] (सं.) हर जगह ।

प्रतिस्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्तु या जो अपने स्थान से हट गया हो उसे उसी स्थान पर बैठाना या रखना । री-मेंट ।

प्रतिस्थापित [वि.](सं.) प्रतिस्थापन्न किया हुआ। हटे हुए व्यक्ति या वस्तु को फिर से उस स्थान पर रखा या बैठाया हुआ।

प्रतिस्नात [वि.] (सं.) स्नान किया हुआ।

प्रतिस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) स्नेह या प्यार के बदले प्यार।

प्रतिस्पंदन, प्रतिस्पन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय की धकधक।

प्रतिस्पर्द्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी कार्य में दूसरे से बढ़ने की इच्छा या उद्योग। चढ़ा-ऊपरी। होड़। प्रतियोगिता। २-झगड़ा।

प्रतिस्पर्द्धी [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिस्पर्द्धा या होड़ करने वाला। २-उद्दंड। विद्रोही।

प्रतिस्फलन [संज्ञा पु.] (सं.) फैलाव। विस्तार।

प्रतिस्याय [संज्ञा पु.] देखो 'प्रतिश्याय'।

प्रतिस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाक का रोग।

प्रतिहंता, प्रतिहन्ता [संज्ञा प.] (सं.) १-बाधक। रोकने वाला। २-मुकाबले में आकर मारने वाला।

प्रतिहत [वि.] (सं.) १-हटाया हुआ। २-भगाया हुआ। ३-अवरुद्ध। रुका हुआ। ४-निराश। ५-चोट खाया हुआ।

प्रतिहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोकने या हटाने की चेष्टा या प्रत्यत्न। २-प्रतिघात। ३-नैराश्य। विफलता। ४-टक्कर। ५-क्रोध। गुस्सा

प्रतिहरण [संज्ञा पु.] (सं.) विनाश। बरबादी।

प्रतिहर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह ऋत्विजों में से बारहवाँ।
[वि.] (सं.) विनाश करने वाला। जो विनाश करे।

प्रतिहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिनिधि।

प्रतिहस्ताक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) हस्ताक्षर किये हुए पत्र पर हस्ताक्षर करना। वह हस्ताक्षर जो किसी पत्र पर किये हुए हस्ताक्षरों की प्रमाणित मान कर किये जाते हैं। (जैसे-यदि हमें किसी न्यायाधीश से हस्ताक्षर कराने हों तो पहले हमें ऐसे व्यक्ति से हस्ताक्षर करानें होंगे जो हम से न्यायाधीश दोनों से परिचित होगा। तब उस पर जो हमें प्रमाणित करने के लिए हस्ताक्षर किये जायेंगे उनपर किये हुए हस्ताक्षरों को प्रतिहस्ताक्षर कहते हैं)। काउन्टर साइन।

प्रतिहस्ताक्षरित [वि.] (सं.) प्रतिहस्ताक्षर किया हुआ। काउंटर साइन्ड।

प्रतिहार [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रतिहारी] १-दरवान। द्वारपाल। २-द्वार। दरवाजा। ३-चोबदार। ४-सामवेद गान का एक अङ्ग। ५-मायावी। बाजीगर। ऐन्द्रजालिक। ६-प्राचीन काल का एक राज्य-कर्मचारी जो राजाओं का समाचार आदि सुनाता या लोगों के पास राजा का सन्देसा ले जाता था।

प्रतिहारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐन्द्रजालिक। बाजीगर। २-वह जो प्रतिहार सामगान करता हो।

प्रतिहारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वार। दरवाजा। २-द्वार आदि पर पैठने या प्रवेश करने की आज्ञा।

प्रतिहारतर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों मे वर्णित वह अस्त्र जिसका उपयोग दूसरों के चलाये हुए अस्त्रों को निष्फल करने के लिए होता है।

प्रतिहारत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिहार या द्वारपाल का कार्य या पद।

प्रतिहारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन समय में राजाओं के प्रतिहार का कार्य करने वाली स्त्री

प्रतिहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-हँसी के बदले हँसी २-कनेर। ३-सफेद कनेर।

प्रतिहिंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिंसा जो किसी हिंसा का बदला चुकाने के लिए की जाय। २-बैर चुकाना। बदला लेना।

प्रतीक [वि.] (सं.) १-विरुद्ध। प्रतिकूल। २-जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। उलटा। विलोम। औंधा [संज्ञा पु.] १-चिह्न। निशान पता। २-किसी गद्य या पद्य के आदि या अन्त के कुछ शब्दों को लिखकर या पढ़ कर पूरे वाक्य या पद का पूरा पता लगाना। ३-अङ्ग। ४-मुँह। मुख। ५-रूप। आकृति। ६-प्रतिरूप। स्थानापन्न वस्तु। ७-मूर्त्ति। प्रतिमा। ८-मरु के एक पुत्र का नाम। ९-परवल। १०-वसु के पुत्र या ओघवान् के पिता का नाम। ११-वह जो किसी समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में और उसकी सब बातों का सूचक या प्रतिनिधि हो। *सिंबल*।

प्रतीकार [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रतिकार। बदल। २-चिकित्सा। इलाज।

प्रतीकोपासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता या ब्रह्मा का कोई प्रतीक बना या मान कर उसकी उपासना अथवा पूजा करना।

प्रतीक्षक [वि.] (सं.) १-आसरा देखने वाला। २-पूजने वाला।

प्रतीक्षण [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। २-कृपादृष्टि।

प्रतीक्षणीय [वि.] (सं.) प्रतीक्षा करने योग्य।

प्रतीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आसरा।, इन्तजार। प्रत्याशा।

प्रतीक्षित [वि.] (सं.) वह जिसकी प्रतीक्षा की गई हो या जिसकी बाट जोही गई हो।

प्रतीक्ष्य [वि.] (सं.) १-प्रतीक्षा के योग्य। २-जिसकी प्रतीक्षा की जाय।

प्रतीघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय। २-टक्कर। ३-रुकावट। बाधा।

प्रतीची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन [वि.](सं.) १-पश्चिम। पाश्चात्य। २-जिसने मुंह फेर लिया हो। पराङ्मुख।

प्रतीचीश [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम दिशा के स्वामी। वरुण।

प्रतीच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) पाने वाला।

प्रतीच्य [वि.] (सं.) पश्चिम दिशा का।

प्रतीत [वि.](सं.) १-ज्ञानी। विदित। जाना हुआ २-विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ३-प्रसन्न। खुश।

प्रतीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निश्चित विश्वास या धारणा। दृढ़ निश्चय। यकीन। विश्वास २-ख्याति। प्रसिद्धि। ३-आनन्द। प्रसन्नता। ४-आदर। ५-वचन लेन-देन आदि में मानी जाने वाली प्रामाणिकता। क्रेडिट।

प्रतीत्यसमुत्पाद [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धमतानुसार बारह पदार्थ जो उत्तरोत्तर संबद्ध हैं।

प्रतीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-आशा के प्रतिकूल फल या घटना। २-एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमेय को उपमान के समान रहकर, उलटा उपमान को उपमेय के समान कहते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान के तिरस्कार का वर्णन करते हैं। ३-महाराज शान्तनु के पिता का नाम। [वि.] १-विरुद्ध। प्रतिकूल। २-उलटा। विलोम।

प्रतीपग [वि.] (सं.) उलटा आचरण करने वाला

प्रतीपगमन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिकूल या विरुद्ध गमन।

प्रतीपतरण [संज्ञा पु.] (सं.) जल के प्रवाह के विपरीत नाव चलाना।

प्रतीपदर्शिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो देखते ही अपना मुँह फेर ले। नव-वधू।

प्रतीपना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विरोध। प्रतिकूलता। २-विपरीतता।

प्रतीपवचन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के वचन के विरुद्ध कथन। खण्डन।

प्रतीपोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रतीपवचन'।

प्रतीयमान [वि.] (सं.) १-ध्वनिया व्यंग्य द्वारा प्रकट होता हुआ। २-जान पड़ता हुआ।

प्रतीर [संज्ञा पु.] (सं.) किनारा। तट।

प्रतीवाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दवा जो पीने आदि के लिए काढ़े आदि में मिलाई जाय। २-किसी धातु का रूप बदलने के लिए उसमें अन्य धातु या वस्तु मिलाना। ३-संक्रामक रोग। ४-दैवी उपद्रव।

प्रतीवेश [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोस। प्रतिवेश।

प्रतीवेश्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम (पुराण)।

प्रतीहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'प्रतिहार'। २-एक प्रकार की संधि। वह संधि अथवा मेल

जिसमें यह कहा जाता है कि पहले मैं तुम्हारा काम कर देता हूँ बाद में तुम मेरा कर देना।

प्रतीहारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रतिहारी'।

प्रतीहास [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर।

प्रतुंदक, प्रतुन्दक [संज्ञा पु.](सं.) जीवक नामक एक साग।

प्रतुद [संज्ञा पु.] (सं.) वे पक्षी जो चोंच से तोड़ कर खाते हैं।

प्रतुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संतोष। हर्ष।

प्रतूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तोशक। गद्दा।

प्रतोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को किसी काम के लिए उत्तेजित या विवश करना। २-कोड़ा चाबुक। ३-अंकुश। ४-देखो 'चेतक'। व्हिप।

प्रतोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी नगर का मुख्य मार्ग। आम सड़क। २-गली। वीथी। ३-किले का वह दरवाजा जो नगर की ओर हो जिसमें सीढ़ियां लगी हों। ४-किसी फोड़े आदि पर पट्टी बांधने का एक ढंग। ५-इस ढंग के अनुसार बांधी हुई पट्टी।

प्रतोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-संतोष। तुष्टि। २-स्वायंभूमनु के एक पुत्र का नाम।

प्रत्न [वि.] (सं.) प्राचीन। पुरातन।

प्रत्नजीव-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल के उन जीव-जन्तुओं की जातियों, आकृतियों आदि का वर्णन करने वाला शास्त्र या विज्ञान जो अब नहीं मिलते। *पेलियनटालोजी*।

रत्नतत्व [संज्ञा प.] (सं.) वह विद्या जिसमें प्राचीनकाल की बातों का विवरण या विवेचन हो।

प्रत्नतत्व-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान-शास्त्र जिसमें प्राचीनकाल की बातों का विवेचन हो।

प्रत्यंकन, प्रत्यङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी अंकित वस्तु या आकृति के(ठीक-ठीक)अनुरूप प्रतिकृति प्रस्तुत करना। हूबहू नकल तैयार करना। २-किसी आकृति के ऊपर पतला कागज आदि रखकर उसकी नकल उतारना। *ट्रेसिंग*।

प्रत्यंकित, प्रत्यङ्कित [वि.] (सं.) प्रत्यंकन किया हुआ।

प्रत्यंगिरा, प्रत्यङ्गिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तांत्रिकों की एक देवी का नाम। २-सिरस का पेड़। ३-बिसखोपरा।

प्रत्यंचा, प्रत्यञ्चा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष की डोरी जो कमान के दोनों सिरों से बंधी होती है। चिल्ला।

प्रत्यंजन, प्रत्यञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) अञ्जन लगाकर आँख अच्छी करना।

प्रत्यंत, प्रत्यन्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम जिसमें म्लेच्छ रहते थे।

प्रत्यंतपर्वत, प्रत्यन्तपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बड़े पहाड़ के पास वाला छोटा पहाड़।

प्रत्यंतर, प्रत्यन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अन्तर अथवा विभाग में का और छोटा अथवा विभाग।

प्रत्यक् [क्रि. वि.] (सं.) १-पीछे। २-पश्चिम।

प्रत्यक्चेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-योगानुसार वह व्यक्ति जिसकी चित्तवृत्ति बिलकुल निर्मल हो चुकी हो। २-परमेश्वर। ३-अन्तर-आत्मा।

प्रत्यक्पर्णी, प्रत्यक्पुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दंती वृक्ष। मूसाकानी। २-अपामार्ग। चिचड़ा

प्रत्यक्ष [वि.] (सं.) १-आँखों के सामने वाला। नयनगोचर। २-जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो। इन्द्रियगोचर। [संज्ञा पु.] १-चार प्रकार के प्रमाणों में से वह जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर होता है। [क्रि. वि.] (सं.) आँखों के आगे। सामने।

प्रत्यक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रत्यक्ष होने का भाव

प्रत्यक्षदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) वह साक्षी जिसने सारी घटना अपनी आँखों से देखी हो।

प्रत्यक्षदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी घटना आदि को प्रत्यक्षरूप से देखने वाला। साक्षी। गवाह

प्रत्यक्षदृष्ट [वि.] (सं.) जो प्रत्यक्ष रूप से देखा गया हो।

प्रत्यक्षनिर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) वह चुनाव जो सीधा जनता के मतों द्वारा होता है। *डायरेक्ट इलेक्शन*।

प्रत्यक्षलवण [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन पक चुकने पर अलग से दिया जाने वाला लवण या नमक। (कम होने की अवस्था में)।

प्रत्यक्षप्रमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यथार्थ ज्ञान।

प्रत्यक्षवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें प्रत्यक्ष ही प्रमाण माना या समझा जाय।

प्रत्यक्षवादी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रत्यक्षवादिनी] वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही माने।

प्रत्यक्षीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करा देना।

प्रत्यक्षीभूत [वि.] (सं.) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हुआ हो।

प्रत्यगंधा, प्रत्यगन्धा [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण-युथिका। सोनजूही।

प्रत्यगात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यक्तिगत जीव। २-परमेश्वर।

प्रत्यगाशापति [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिम दिशा के दिक्पाल, वरुणदेवता।

प्रत्यग्र [वि.] (सं.) १-नूतन। नया। २-शोधित। शोधा हुआ।

प्रत्यग्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण पांचाल अथवा अहिच्छत्र नामक एक देश।

प्रत्यध्मान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग।

प्रत्यनंतर, प्रत्यनन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के पश्चात् उसके स्थान या पद पर बैठने वाला। २-उत्तराधिकारी।

प्रत्यनीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। दुश्मन। २-प्रतिपक्षी। विरोधी। ३-प्रतिवादी। ४-विघ्न बाधा। ५-एक अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहने वाले या सम्बन्धी के प्रति किसी या अहित का किया जाना वर्णन किया जा

प्रत्यनुमान [संज्ञा पु.] (सं.) तर्क में वह अनुमान जो किसी दूसरे के अनुमान का खंडन करते हुए किया जाय।

प्रत्यपकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार।

प्रत्यभिज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्मृति की सहायता से उत्पन्न होने वाला ज्ञान। वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को, या उस जैसी अन्य किसी वस्तु को फिर से देखने पर हो। २-वह अभेद ज्ञान जिससे ईश्वर और जीवात्मा दोनों एक ही समझे जाते हैं। ३-किसी वस्तु या व्यक्ति को देख कर यह ज्ञान कि यह अमुक है। पहचान। आईडेंटिफ़िके

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) वह दर्शन जिसके अनुसार भक्तवत्सल महेश्वर ही परमेश्वर समझे जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) समान वस्तु को देखकर किसी पहले देखी हुई वस्तु का स्मरण हो आना।

प्रत्यभिज्ञात [वि.] (सं.) पहचाना हुआ।

प्रत्यभिज्ञा-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पहचान-पत्र। वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति की पहचान विषयक बातें अंकित हों। आइडेंटिटी कार्ड।

प्रत्यभिभूत [वि.] (सं.) जीता हुआ।

प्रत्यभियुक्त [वि.] (सं.) अभियोग के बदले लगाया हुआ अभियोग।

प्रत्यभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर लगाये।

प्रत्यभिवाद, प्रत्यभिवादन [संज्ञा पु.] (सं.) नमस्कार के बदले नमस्कार।

प्रत्यभिस्कंदन, प्रत्यभिस्कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) अभियोग के बदले का अभियोग।

प्रत्यमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु। दुश्मन।

प्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतीति। विश्वास। २-एतबार। साख। क्रेडिट। ३-प्रमाण। सबूत। ४-विचार। भावना। ५-ज्ञान। समझ। ६-व्याख्या। ७-कारण। हेतु। ८-आवश्यकता। ९-प्रसिद्धि। १०-चिह्न। लक्षण। ११-निर्णय। फ़ैसला। १२-सम्मति। राय। १३-

१४–सहायक । १५–विष्णु । १६–व्याकरण में वे अक्षर जो किसी मूल धातु अथवा मूल-शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करने के अभिप्राय से लगाया जाय । १७–वह रीति जिससे छंदों के भेद तथा उनकी संख्या जानी जाती है । छंद शास्त्र के अनुसार यह संख्या नौ है । यथा—प्रस्तार, सूची, पाताल, उद्दिष्ट, नष्ट, मेरु, मेरुखण्ड, पताका और मर्कटी यह नौ प्रत्यय होते हैं ।

प्रत्ययकारक, प्रत्ययकारी [वि.] (सं.) विश्वास दिलाने वाला ।

प्रत्यय-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पत्र जिसमें यह लिखा रहता है कि पत्र लाने वाले व्यक्ति को इतनी रकम हमारे खाते में से अथवा ऋण दे दियाजाय । लेटर आफ क्रेडिट

प्रत्ययसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) महत्व अथवा बुद्धि से उत्पन्न सृष्टि । (सांख्य) ।

प्रत्ययानुदान [संज्ञा पु.] (सं.) वह मत या वे मत जिनसे श्रेय प्राप्त हो । वोटस् ऑफ क्रेडिट ।

प्रत्यर्चन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिपूजा ।

प्रत्यर्क [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रतिसूर्य । [वि.] (सं.) उपयोगी । काम का ।

प्रत्यर्थक [संज्ञा पु.] (सं.) विपक्षी । विरोधी ।

प्रत्यर्थी [संज्ञा पु.] (सं.) १–वैरी । शत्रु । २–प्रतिद्वन्द्वी । जोड़ीदार । ३–प्रतिवादी । मुद्दालह ।

प्रत्यर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) वापिस देना । लिये हुए को लौटा देना ।

प्रत्यर्पण-पदाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) पर-राज्य-निष्कासन अधिकारी ।

प्रत्यर्पित [वि.] (सं.) लौटा या हुआ । फेरा हुआ

प्रत्यवमर्श, प्रत्यवमर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १–भले बुरे का विचार करना । २–पता लगाना । अनुसंधान करना ।

प्रत्यवर [संज्ञा पु.] (सं.) जो अत्यधिक निकृष्ट हो । सब से खराब ।

प्रत्यवरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) रोक-टोक । बाधा अटकाव ।

प्रत्यवरोह [संज्ञा पु.](सं.) १–अवरोहण । उतरना २–सीढ़ी । सोपान ।

प्रत्यवरोही [वि.] उतरने वाला।

प्रत्यवसान [संज्ञा पु.] (सं.) खाना । भोजन ।

प्रत्यवसित [वि.] (सं.) खाया हुआ । भोजन किया हुआ ।

प्रत्यवस्कंद, प्रत्यवस्कन्द [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'प्रत्यवस्कंद' ।

प्रत्यवस्कंदन, प्रत्यवस्कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार शास्त्रानुसार प्रतिवादी का वह उत्तर जो वादी के कथन का खंडन करने को दिया जाय । जवाबदावा ।

प्रत्यवस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) स्थानान्तरकरण । २–विरोध । मुकाबला । शत्रु के रूप में रहना ।

प्रत्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) १–संहार । मार डालना । २–लड़ने को उद्यत सैनिकों को लड़ने से रोकना ।

प्रत्यवाय [संज्ञा पु.] (सं.) १–नित्य कर्म न करने से लगने वाला पाप । २–उलट-फेर । भारी परिवर्तन । ३–जो नहीं है उसका उत्पन्न न होना या जो है उसका न रह जाना ।

प्रत्यवेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी बात को भलीभांति देखना । २–किसी काम या वस्तु को किसी व्यक्ति की देखभाल में रखना । अवधान । चार्ज ।

प्रत्यवेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखना-भालना । मुआयना करना ।

प्रत्यश्म [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू ।

प्रत्यष्ठीला [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के मतानुसार एक वात रोग ।

प्रत्यस्तगमन [संज्ञा पु.] (सं.) सूरज का डूबना ।

प्रत्यस्तमय [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्यास्त । २–अवसान । समाप्ति ।

प्रत्यस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) तुल्य रूप का अस्त्र ।

प्रत्यह [क्रि. वि.] (हिं.) हर रोज । प्रतिदिन ।

प्रत्याक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी आक्रमण या हमले के जवाब में किया जाने वाला आक्रमण या हमला । काउंटर-अटैक ।

प्रत्याक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) किसी आक्षेप के उत्तर में किया जाने वाला आक्षेप ।

प्रत्याक्षेपक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रत्याक्षेपिका] उपहास करने वाला । हँसी उड़ाने वाला ।

प्रत्याख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १–खंडन । २–निराकरण । ३–अनादरपूर्वक लौटाना । ४–ग्रहण न करना । अमान्य करना ।

प्रत्याख्यात [वि.] (सं.) जो अंगीकार न किया हो । अस्वीकृत ।

प्रत्यागत [संज्ञा पु.] (सं.) कुश्ती का एक पेंच । [वि.] (सं.) लौट कर आया हुआ ।

प्रत्यागति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वापसी ।

प्रत्यागम, प्रत्यागमन [संज्ञा पु.] (सं.) १–लौट आना । वापसी । २–दोबारा आना ।

प्रत्याघात [संज्ञा पु.] (सं.) आघात या चोट के बदले की चोट ।

प्रत्याचार [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छे आचरण वाला ।

प्रत्यादान [संज्ञा पु.] (सं.) देकर वापिस ले-लेना ।

प्रत्यादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिसूर्य ।

प्रत्यादिष्ट [वि.] (सं.) सावधान किया हुआ । चेतावनी दिया हुआ ।

प्रत्यादेश [संज्ञा पु] (सं.) १–खंडन । २–निराकरण । ३–आकाशवाणी ।

प्रत्याध्मान [संज्ञा पु.] (सं.) एक वात रोग जिसमें पेट फूल जाता है ।

प्रत्यानयन [संज्ञा पु.] (सं.) १–दूसरे के हाथ में गई हुई वस्तु को फिर पाना । वापिसी । २–टूटी फूटी वस्तु को फिर पहले की जैसी बनाना या पूर्व स्थिति में लाना । रेस्टोरेशन ।

प्रत्यानीत [वि.] (सं.) फिर से पूर्व स्थिति में लाया हुआ ।

प्रत्यापतन [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तराधिकारी न होने की अवस्था में किसी संपत्ति का राज्य के अधिकार में आना । एसचेट ।

प्रत्यापत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वापसी । पुनरागमन । २–वैराग्य ।

प्रत्याम्नाय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिनिधि रूप में किया जाने वाला ।

प्रत्याभावित [वि.] (सं.) संरक्षित ।

प्रत्याभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इस बात की जिम्मेदारी कि अमुक वस्तु या बात ऐसी ही है, इसके विपरीत नहीं है, अथवा आगे भी ऐसी ही रहेगी । गारन्टी ।

प्रत्याय [संज्ञा पु.] (सं.) राजस्व । कर । टैक्स ।

प्रत्यायक [वि.] (सं.) १–सिद्ध करने वाला । समझाने वाला । २–विश्वास करने वाला ।

प्रत्यायित [वि.] (सं.) विश्वस्त ।

प्रत्यारोप [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के आरोप के प्रत्युत्तर में आरोप । काउन्टर चार्ज ।

प्रत्यालीढ [संज्ञा पु.] (सं.) धनुषधारियों के बैठने का एक ढंग ।

प्रत्यालोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी द्वारा किये हुए निर्णय या निर्णीत व्यवहार को पुनः जाँचना या देखना कि वह ठीक है अथवा नहीं । रिव्यू । २–देखो 'प्रत्यालोचना' ।

प्रत्यालोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी ग्रंथ अथवा विषय की आलोचना का उत्तर या उस आलोचना में कही हुई बातों की समीक्षा ।

प्रत्यावर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) लौटकर आना । वापस आना । लौटना ।

प्रत्यावर्त्तित [वि.] (सं.) लौटाकर आया हुआ । वापस आया हुआ ।

प्रत्यावृत्त [वि.] (सं.) १–लौटा हुआ । २–दोहराया हुआ ।

प्रत्याशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आशा । भरोसा ।

प्रत्याशित [वि.] (सं.) आशा या भरोसा किये हुए ।

प्रत्याश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां आश्रय या शरण ली जाय ।

प्रत्यासत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–(समय या स्थान की) समीपता । २–भिन्न-भिन्न वस्तुओं का सादृश्य । ३–घनिष्ठता ।

प्रत्यासन्न [वि.] (सं.) पास आया हुआ । निकट पहुँचा हुआ ।

प्रत्यासर, प्रत्यासार [संज्ञा पु.] (सं.) सेना के

पीछे का भाग।

प्रत्यास्वर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

प्रत्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग के आठ अंगों में से एक जिसमें इन्द्रियों को विषयों से हटा कर मन एकाग्र हो जाता है। इन्द्रियनिग्रह। २-प्रतिकार। ३-किसी कार्य को न होने के बराबर करना। ४-फिर से ग्रहण या आरम्भ करना।

प्रत्युक्त [वि.] (सं.) जिसका उत्तर दिया जा चुका हो।

प्रत्युक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवाब। उत्तर।

प्रत्युज्जीवन [संज्ञा पु.] (सं.) मरे हुए का फिर से जी उठना।

प्रत्युत् [संज्ञा पु.] (सं.) विपरीतता। [अव्य.] (सं.) बल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्क्रम [संज्ञा प.] (सं.) १-किसी कार्य के आरम्भ करने के लिए किया जाने वाला उद्योग या प्रयत्न। २-युद्ध के समय सब से पहले किया जाने वाला आक्रमण।

प्रत्युत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर।

प्रत्युथान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के आने पर उसके प्रति सम्मान-प्रदर्शन के लिए उठ खड़ा होना।

प्रत्युपन्न [वि.] (सं.) १-जो ठीक समय पर सामने आये। २-जो फिर से उत्पन्न हुआ हो प्रत्युत्पन्नमति-वह जो मौके पर ठीक उत्तर दे या समय पर जिसकी बुद्धि काम कर जाय।

प्रत्युदाहरण [संज्ञा पु.] (सं.) उदाहरण के विपरीत उदाहरण।

प्रत्युद्गति, प्रत्युद्गम, प्रत्युद्गमन [संज्ञा पु.] (सं.) आगे बढ़कर या अपने आसन को छोड़ कर आये हुए अतिथि की आवभगत के लिए उठ खड़ा होना।

प्रत्युदगमनीय [वि.] (सं.) १-सम्मान के योग्य। २-सामने या पास रखने योग्य। [संज्ञा पु.] एक प्रकार के वस्त्र का जोड़ा (उत्तरीय और अधोवस्त्र) जो प्राचीनकाल में यज्ञों या भोजन के समय पहना जाता था।

प्रत्युद्गार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वात रोग।

प्रत्युपकार [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।

प्रत्युपकारी [संज्ञा पु.] (सं.) उपकार के बदले में उपकार करने वाला।

प्रत्युपक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सेवा जो किसी की सेवा के बदले में की जाय।

प्रत्युपदेश [संज्ञा पु.](सं.) वह उपदेश जो किसी की सेवा के बदले में दिया जाय।

प्रत्युपभोग [संज्ञा पु.] (सं.) सुख का उपभोग।

प्रत्युपस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोस।

प्रत्युपहार [संज्ञा पु.] (स.) भेंट देने योग्य उपहार

प्रत्युष [संज्ञा पु.] (स.) प्रभात। तड़का।

प्रत्यूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रभात। तड़का। २-एक वसु का नाम। ३-सूर्य।

प्रत्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) विघ्न। बाधा। रोक।

प्रत्येक [वि.] (सं.) बहुतों में से हर एक।

प्रत्येकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रत्येक भाव या धर्म।

प्रत्येकबुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) इस नाम का एक बुद्ध

प्रत्रास [संज्ञा पु.] (सं.) कंप। कंप-कंपी।

प्रथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश में लाने की क्रिया या भाव। २-विस्तार। ३-एक प्रकार का गुल्म।

प्रथम [वि.] (सं.) १-गिनती में पहले आने वाला पहला। २-सब से अच्छा। सर्वश्रेष्ठ। ३-प्रधान। मुख्य।
[क्रि. वि.] (सं.) पहले। पेश्तर। आगे। आदि में।

प्रथमकारक [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में कर्ता-कारक।

प्रथमज [वि.] (सं.) १-जो पहले जन्मा हो। २-जो सबसे पहले गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। ३-३-बड़ा। श्रेष्ठ।

प्रथमजात [वि.] (सं.) देखो 'प्रथमज'।

प्रथमतः [क्रि. वि.] (सं.) सबसे पहले। पहले-पहल।

प्रथमपठन [संज्ञा पु.] (सं.) संसद आदि में किसी विधेयक आदि की पहली बार पढ़ा जाना। प्रथम वाचना। फस्ट रीडिंग।

प्रथमपुरुष [संज्ञा प.] (सं.) देखो 'उत्तमपुरुष'

प्रथमरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) पहली बार भेंट।

प्रथमवाचन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रथमपठन'

प्रथमसंगम, प्रथसङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) पहली बार भेंट।

प्रथमसदन [संज्ञा पु] (सं.) किसी देश की केन्द्रिय या प्रांतीय लोक सभाओं के दो सदनों में से पहला। *लोअर हाउस*।

प्रथमसाहस [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन व्यवहार शास्त्र में वर्णित एक दंड जो २५० पण का होता था।

प्रथमस्कान [संज्ञा पु.] (सं.) वेदमंत्र-उच्चारण का सब से धीमा स्वर।

प्रथमस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम-गान।

प्रथमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्याकरण में कर्त्ता कारक। २-मदिरा। शराब (तांत्रिक)।

प्रथमार्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वार्द्ध।

प्रथमी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी।

प्रथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रीति। रिवाज। प्रणाली २-ख्याति। प्रसिद्धि।

प्रथित [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रथिता] १-प्रख्यात। प्रसिद्ध। २-लम्बा-चौड़ा। विस्तृत।

प्रथिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्धि। ख्याति।

प्रथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'पृथ्वी'।

प्रथु [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-देखो 'पृथु'।

प्रथमेतर [वि.] (सं.) भिन्न। दूसरा।

प्रद [वि.] (सं) देने वाला। दायक।

प्रदक्षिण [संज्ञा पु.](सं.) १-देवमूर्ति को दाहिने ओर करके भक्तिपूर्वक उसके चारों ओर घूमना। परिक्रमा। २-समर्थ। योग्य।

प्रदक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रदक्षिण। परिक्रमा

प्रदग्ध [वि.] (सं.) जला हुआ।

प्रदत्त [वि.] (सं.) दिया हुआ।

प्रदर [संज्ञा पु] (सं.) एक रोग जिसमें स्त्रियों के गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का पानी सा बहा करता है।

प्रदर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूरत। चितवन। २-आदेश। आज्ञा।

प्रदर्शक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. प्रदर्शिका] १-जो कोई वस्तु दिखलाये। २-प्रदर्शन करने वाला। ३-गुरु।

प्रदर्शन [संज्ञा पु.](सं.) १-दिखाने का काम। २-देखो 'प्रदर्शिनी'। ३-अपना असन्तोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट तथा जनता की सहानुभूति प्राप्ति करने के निमित्त सामूहिक रूप से नारे लगाते हुए जलूस निकालना। डिमॉन्सट्रेशन।

प्रदर्शनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाना प्रकार की वस्तुएं लोगों को दिखलाने के लिए एक स्थान पर रखना। २-वह स्थान जहाँ इस प्रकार की वस्तुएँ रखी जायं। नुमाइश।

प्रदर्शिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान विषयक सब बातों का वर्णन हो जिससे कि उस स्थान के सम्बन्ध में जानकारी हो जाय।

प्रदर्शित [वि.] (सं.) १-दिखलाया हुआ। २-प्रदर्शनी में रखा हुआ।

प्रदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) देखने वाला। दर्शक।

प्रदल [संज्ञा पु.] (सं.) तीर। बाण।

प्रदाता [वि.] (सं.) देने वाला। दाता। [संज्ञा पु.] १-इन्द्र। २-बहुत बड़ा दानी।

प्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-देने की क्रिया। २-दान। ३-विवाह। ४-अंकुश।

प्रदानरुचि [वि.] (सं.) जिसको दान देने में रुचि हो।

प्रदानशूर [संज्ञा पु.] (सं.) दानवीर। बड़ा दानी।

प्रदानी* [वि.] (हिं.) देने वाला। जो दे।

प्रदायक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रदायिका] देने वाला।

प्रदायी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रदायिनी]

यक। जो दे।

प्रदाव [संज्ञा पु.] (सं.) दावाग्नि।

प्रदाह [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वर, फोड़े, सूजन आदि के कारण शरीर में होने वाली जलन। दाह।

प्रदिग्ध [संज्ञा पु.](सं.) विशेष प्रकार से पकाया हुआ मांस।

प्रदिव [वि.] (सं.) खूब चमकने वाला। [संज्ञा स्त्री.] १-पुरातन। पुराना। २-पर्व का दिन।

प्रदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

प्रदिष्ट [वि.] (सं.) १-आज्ञा दिया हुआ। आदिष्ट। २-जिसके सम्बन्ध में आज्ञा, नियम आदि के रूप में यह बताया गया हो कि यह इस प्रकार होना चाहिए। प्रेसक्राइब्ड

प्रदीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीपक। दीया। २-प्रकाश। ३-वह जिससे प्रकाश हो। ४-सम्पूर्ण जाति का एक राग जो तीसरे पहर गाया जाता है।

प्रदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रदीपिका] १-प्रकाशित करने वाला। २-नौ प्रकार के विषों में से एक जिसके सूंघने से ही मृत्यु हो जाती है।

प्रदीपति*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रदीप्ति'।

प्रदीपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उजाला या प्रकाश करना। २-चमकाना। उज्ज्वल करना। ३-प्रदीपक नामक विष।

प्रदीपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी लालटेन। २-एक रागिनी। ३-बिजली की बत्ती। इलेक्ट्रिक बल्ब।

प्रदीप्त [वि.] (सं.) जलता हुआ। जगमगाता-हुआ। २-प्रकाशित। प्रकाशवान। ३-उज्ज्वल चमकदार।

प्रदीप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोशनी। प्रकाश। २-आभा। चमक।

प्रदुमन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रदुष्ट [वि.] (सं.) १-अत्यधिक दोषपूर्ण। २-लोभ, स्वार्थ आदि के कारण नैतिक दृष्टि से पतित। करप्ट।

प्रदूषक [वि.] (सं.) नष्ट करने वाला।

प्रदूषण [संज्ञा पु.] (सं.) नष्ट करना। चौपट करना

प्रदूषित [वि.] (सं.) खराब। नष्ट। भ्रष्ट।

प्रदेय [वि.] (सं.) १-देने योग्य। २-दान करने योग्य। [संज्ञा पु.] उपहार में दी जाने वाली वस्तु। भेंट।

प्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसके निवासियों की भाषा, रहन-सहन, व्यवहार शासनपद्धति आदि के विचार से औरों से भिन्न या स्वतंत्र हो। सूबा। प्रांत प्राविन्स। २-स्थान। जगह। ३-अङ्ग। अवयव। ४-छोटा बित्ता या बालिश्त। ५-दीवार ६-संज्ञा। नाम। ७-सुश्रुत के मत से एक प्रकार की तंत्र युक्ति।

प्रदेशकारी [संज्ञा पु.] (सं.) योगियों का एक संप्रदाय।

प्रदेशन [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञा, निर्देश, नियमादि के रूप में यह बताना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए। *प्रेसक्रिप्शन*।

प्रदेशनी, प्रदेशिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अंगूठे के पास की अंगुली। तर्जनी।

प्रदेशी [वि.] (सं.) प्रदेश का। प्रदेश-संबंधी।

प्रदेष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) प्रदेशन करने वाला व्यक्ति। *प्रेसक्राइबर*।

प्रदेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लेप जो फोड़े पर लगाया जाता है। २-एक प्रकार का व्यंजन। (सुश्रुत)।

प्रदोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्यास्त होने का समय संध्याकाल। २-संध्या के समय होने वाला अंधेरा। ३-प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को होने वाला एक व्रत जिसमें सायंकाल शिव पूजन करके भोजन करते हैं। ४-भारी दोष या अपराध। ५-आर्थिक लाभ, स्वार्थ, पक्षपात आदि के कारण होने वाला व्यक्तियों का नैतिक पतन।। कोरप्शन।

प्रदोह [संज्ञा पु.] (सं.) दुहना। दूध निकालना।

प्रद्रुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रज्झटिका'।

प्रद्युम्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-श्री कृष्ण के बड़े पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) अत्यंत बली। भारी वीर।

प्रद्योत [संज्ञा पु.] (सं.) १-किरण। रश्मि। २-आभा। चमक। दीप्ति। ३-एक यक्ष का नाम।

प्रद्योतन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। चमक। दीप्ति

प्रद्रव, प्रद्राव [संज्ञा पु.] (सं.) पलायन। निकल-भागना।

प्रद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) दरवाजे के सामने का स्थान।

प्रद्वेष [संज्ञा पु.](सं.) १-अरुचि। घृणा। २-वैर शत्रुता।

प्रद्वेषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीर्घमता ऋषि का नाम (महाभारत)।

प्रधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध में लूट का माल। २-वह जिसके पास बहुत अधिक धन हो।

प्रधमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैद्यक में वह क्रिया जिसके द्वारा कोई दवा नाक के रास्ते जोर से सुंघाकर ऊपर चढ़ाई जाय। २-एक प्रकार की सुंघनी।

प्रधर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-बलात्कार। आक्रमण। हमला।

प्रधर्षक [वि.] (सं.) १-आक्रमण करने वाला। २-बलात्कार करने वाला।

प्रधर्षण [संज्ञा पु.](सं.) १-आक्रमण। हमला। २-दुर्व्यवहार। अपमान। तिरस्कार। ३-बलात्कार

प्रधर्षित [वि.] (सं.) १-आक्रमण किया हुआ। २-अनादर किया हुआ। ३-(वह स्त्री) जिसके साथ बलात्कार किया हो।

प्रधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष प्रजापति की कन्या जिसका विवाह कश्यप के साथ हुआ था।

प्रधान [वि.] (सं.) १-मुख्य। खास। २-सर्वोच्च। श्रेष्ठ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुखिया। नेता। सरदार। २-मन्त्री। सचिव। ३-संसार का उपादान कारण। ४-बुद्धि। समझ। ५-ईश्वर। परमात्मा। ६-सेनाध्यक्ष। ७-एक राजर्षि का नाम। ८-किसी संस्था का मुख्य अधिकारी। *चेयरमैन*।

प्रधानक [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्य के मतानुसार बुद्धि-तत्व।

प्रधानकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) रोग की उत्पत्ति हो जाने के उपरान्त किये जाने वाली तीन कर्मों में से एक। (सुश्रुत)।

प्रधान-कार्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) मुख्य अथवा सब से बड़ा कार्यालय जहां से उनके सब कार्यों और शाखाओं का संचालन होता है। *हेड ऑफिस*।

प्रधानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य या पद।

प्रधानधातु [संज्ञा पु.](सं.) शरीर का प्रधान तत्व, वीर्य।

प्रधान-मंत्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी सभा, संस्था आदि का मुख्य मन्त्री। २-किसी राज्य या देश के केन्द्रीय मंत्रिमंडल के मंत्रियों में मुख्य मंत्री जो उनका नेता होता है। *प्राइम-मिनिस्टर*।

प्रधान-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रधान-मंत्री'

प्रधानात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-परमेश्वर।

प्रधानी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रधान का कार्य या पद।

प्रधावन [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा।

प्रधि [संज्ञा पु.] (सं.) पहिये का धुरा।

प्रधी [वि.] (सं.) कुशाग्र बुद्धि वाला। [संज्ञा स्त्री.] महती प्रतिभा।

प्रधूपित [वि.] (सं.) १-तपाया हुआ। गरमाया हुआ। २-चमकता हुआ। दीप्त। ३-संतप्त।

प्रधूपिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दिशा जिस ओर सूर्य बढ़ रहा हो।

प्रधृष्ट [वि.] (सं.) वह जिसके साथ ढिठाई से व्यवहार किया गया हो।

प्रध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-गम्भीर ध्यान या सोच-विचार। २-विचार।

प्रध्वंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाश। विनाश। २-सांख्यमत के अनुसार किसी पदार्थ की अतीत अवस्था।

प्रध्वंसक [वि.] (सं.) विनाशक। नाश करने वाला।

प्रध्वंसन [संज्ञा पु.] (सं.) नाश। विनाश। बरबादी।

प्रध्वंसाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय के अनुसार पांच प्रकार के अभावों में से एक। वह अभाव जो किसी वस्तु से उत्पन्न होकर नष्ट हो जाने पर हो।

प्रध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नष्ट करे।

प्रध्वस्त [वि.] (सं.) जिसका नाश हो चुका हो।

प्रन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रण'।

प्रनत*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणत'।

प्रनति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रणति'।

प्रनमन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणमन'।

प्रनमना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'प्रणमना'।

प्रनय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणय'।

प्रनव*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणव'।

प्रनवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'प्रणमना'।

प्रनष्ठ [वि.] (सं.) १-नष्ट। बरबाद। २-अगोचर। जो देख न पड़े।

प्रनामी* [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो प्रणाम करे। नमस्कार करने वाला।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह दक्षिणा या धन जो गुरु, ब्राह्मण आदि के सम्मुख प्रणाम करने के समय रखी जाय।

प्रनायक [वि.] (सं.) वह जिसका नायक चला गया हो। नायक के अभाव से युक्त।

प्रनाली* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रणाली'।

प्रनाशन, प्रनासन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणाशन'।

प्रनाशी [वि.] (सं.) नाश करने वाला।

प्रनिघातन [संज्ञा पु.] (सं.) वध। हत्या। कत्ल।

प्रनिपात* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रणिपात'।

प्रनियम [संज्ञा पु.] (सं.) विधि-विधानों में व्याकृति आदि के सर्वसामान्य नियम। क्लाज।

प्रनीड [वि.] (सं.) घोंसला छोड़ने वाला (पक्षी)।

प्रन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन या संपत्ति जो किसी कार्य विशेष के लिए किसी को अथवा कुछ व्यक्तियों को सौंपा गया हो। ट्रस्ट।

प्रपंच, प्रपञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) १-यह दुनिया और उसका जंजाल। २-पंचतत्वों का उत्तरोत्तर अनेक भेदों में विस्तार। भवजाल। संसार। सृष्टि। ३-एक से अनेक होने का क्रम। विस्तार। फैलाव। ४-झगड़ा। झमेला। बखेड़ा। ५-आडम्बर। ढोंग। छल। धोखा।

प्रपंचक, प्रपञ्चक [वि.] (सं.) फैलाने वाला।

प्रपंचन, प्रपञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) विस्तार बढ़ाना। तूल देना।

प्रपंचित, प्रपञ्चित [वि.] (सं.) १-ठगा हुआ। प्रपंच के जंजाल में फँसा हुआ। २-भटका हुआ। भूला हुआ। ३-छला हुआ। धोखा खाया हुआ।

प्रपंची, प्रपञ्ची [वि.] (सं.) १-प्रपंच या ढोंग रचने वाला। २-छली। कपटी।

प्रपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पक्ष का अग्रभाग।

प्रपण [संज्ञा पु.] (सं.) विनिमय। बदला।

प्रपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनन्य भक्ति।

प्रपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रार्थना, विवरण आदि से संबंधित पत्रों आदि का वह निश्चित रूप जिसमें भिन्न-भिन्न बातें भरने के लिये प्रायः कोष्ठक आदि बने रहते हैं। फॉर्म।

प्रपथा [वि.] (सं.) शिथिल। थकामांदा।

प्रपथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी। हड़।

प्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) पैर का अग्रभाग।

प्रपन्न [वि.] (सं.) १-आया हुआ। पहुँचाहुआ। २-शरण में आया हुआ। शरणागत।

प्रपन्नाड [संज्ञा पु.] (सं.) चक्रमर्दक। चकवँड।

प्रपर्ण [वि.] (सं.) बिना पत्तों वाला। पत्तों से रहित। [संज्ञा पु.] (सं.) गिरा हुआ पत्ता।

प्रपलायन [संज्ञा पु.] (सं.) पलायन। निकल भागना।

प्रपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पौसला। प्याऊ। २-पशुओं के पानी पीने का एक स्थान। ३-यज्ञशाला।

प्रपाक [संज्ञा पु.] (सं.) पकाने की क्रिया।

प्रपाठक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रन्थ का अध्याय। परिच्छेद। २-वेदों के अध्याय का एक अंश

प्रपाणि [संज्ञा प.] (सं.) १-हाथ का अगला भाग २-हाथ की हथेली।

प्रपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत ऊंची जगह जहां से कोई चीज सीधी नीचे आकर गिरे। २-पर्वत अथवा ऊंचे स्थान से गिरने वाली जल की धारा। झरना।

प्रपाद [संज्ञा पु.] (सं.) असमय में प्रसव।

प्रपादिक [संज्ञा पु..] मयूर। मोर।

प्रपान [संज्ञा पु.] (सं.) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान। प्याऊ। पोसला।

प्रपानक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पेय-पदार्थ।

प्रपापूरण [संज्ञा पु.] (सं.) पानी के हौज को जल से भरने का कार्य।

प्रपालन [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभांति रक्षा करना

प्रपाली [संज्ञा पु.] (सं.) बलदेव का एक नाम।

प्रपितामह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रपितामही] १-दादा का पिता। परदादा। २-परब्रह्म।

प्रपितामही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिता की दादी। परदादी।

प्रपितृव्य [संज्ञा पु.] (सं.) परदादा का भाई।

प्रपीड़क [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत कष्ट देने वाला।

प्रपीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक कष्ट देना। २-धारक औषध।

प्रपुंज, प्रपुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा समूह। भारी झुंड।

प्रपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रपुत्री] पोता।

प्रपुनाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रपुन्नाट'।

प्रपुन्नड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रपुन्नाट'।

प्रपुन्नाट [संज्ञा पु.] (सं.) चक्रमर्दक नामक क्षुप जिसे चकवंड भी कहते हैं।

प्रपुन्नाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रपुन्नाट'।

प्रपुष्पित [वि.] (सं.) फूलों से लदा हुआ।

प्रपूरक [वि.] (सं.) १-पूरा करने वाला। २-पूर्ण करने वाला।

प्रपूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंटकारी। भटकटैया।

प्रपूर्ण [वि.] (सं.) अच्छी प्रकार भरा हुआ।

प्रपूर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रपूर्ण होने का भाव।

प्रपूरित [वि.] (सं.) भरा हुआ। परिपूर्ण।

प्रपृष्ठ [वि.] (सं.) ऊंची पीठ वाला।

प्रपौंडरीक, प्रपौण्डरीक [संज्ञा पु.] (सं.) पुंडरीक का पौधा।

प्रपौत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पड़पोता। पुत्र का पोता।

प्रप्लावन [संज्ञा पु.] (सं.) पानी से तर करना।

प्रफुड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) प्रफुलना। खिलना।

प्रफुलना* [क्रि. अ.] (हिं.) खिलना।

प्रफुला* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुमुदिनी। २-कमल।

प्रफुलित* [वि.] (हिं.) १-खिला हुआ। २-आनंदित।

प्रफुल्ल [वि.] (सं.) १-पूरा खिला हुआ। विकसित। प्रस्फुटित। २-जिसमें फूल न लगे हों। कुसुमित। ३-खुला हुआ।

प्रबंध, प्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्य के भली प्रकार से करने की व्यवस्था। इन्तजाम। बन्दोबस्त। मैनेजमैण्ट। २-आयोजन। उपाय। ३-बाँधने की डोरी आदि। ४-आयोजन। ५-बंधा हुआ क्रम या सिलसिला। ६-गद्य या ७-संबद्ध पद्यों में लिखा हुआ ग्रन्थ। ७-ऐसा निबन्ध जिसका सिलसिला जारी रहे।

प्रबंधक, प्रबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रबन्ध या इन्तजाम करने वाला। मैनेजर।

प्रबंधकर्त्ता, प्रबन्धकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य को भली प्रकार से करने की व्यवस्था करने वाला। मैनेजर।

प्रबंधकल्पना, प्रबन्धकल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऐसा प्रबन्ध जिसमें थोड़ी सी सत्य घटना को नमक, मिर्च लगाकर (बढ़ा-चढ़ाकर) वर्णन किया गया हो। २-प्रबन्ध रचना।

प्रबंधकारिणी, प्रबन्धकारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रकार के प्रबंध करती हो।

प्रबंध-समिति, प्रबन्ध-समिति [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'प्रबंधकारिणी'।

प्रबर्ह [वि.] (सं.) सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ।

प्रबल [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रबला] १-बलवान। २-ओर का। तेज। प्रचंड। उग्र। ३-घोर। भारी महान।

प्रबला [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-बहुत बलवती। २-प्रचंडा। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी औषध।

प्रबलाकी [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

प्रबाल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'प्रवाल'।

प्रबालक [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष।

प्रबालफल [संज्ञा पु.] (मं.) लालचन्दन।

प्रबालपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

प्रबालफल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चन्दन।

प्रबालिक [संज्ञा पु.] (सं.) जीवशाक।

प्रबास [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'प्रवास'।

प्रबाह [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'प्रवाह'।

प्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ का अगला भाग। पहुँचा।

प्रबाहुक [अव्य.] (सं.) १-सीध में। २-समतल में। सतह के बराबर।

प्रबिसना* [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'प्रविसना'।

प्रबीन* [वि.] (हि.) देखो 'प्रवीण'।

प्रबीर* [वि.] (हि) देखो 'प्रवीर'।

प्रबुद्ध [वि.] (सं.) १-जागा हुआ। २-होश में हुआ। ३-ज्ञानी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-नव योगेश्वरों में से एक। २-ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम। (भागवत)

प्रबुद्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यथार्थ या पूर्णज्ञानी।

प्रबोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागना। नींद खुलना। २-पूर्णज्ञान। यथार्थज्ञान। ३-ढारस। दिलासा। ४-चेतावनी। ५-विकाश। महाबुद्ध की एक अवस्था।

प्रबोधक [वि.] (सं.) १-जगाने वाला। २-समझाने वाला। ३-सांत्वना देने वाला। ढारस बंधाने वाला। ४-चेताने वाला।

प्रबोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागरण। जगाना। २-नींद से उठाना। ३-ज्ञान देना। ४-विकसित करने का काम। ५-सांत्वना या दिलासा देने का काम।

प्रबोधना* [क्रि. स.] (हि.) १-नींद से जगना। २-सजग या सचेत करना। ३-समझना-बुझाना। ४-सिखाना। पाठ पढ़ाना। ५-सांत्वना देना। ढारस या तसल्ली देना।

प्रबोधनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कार्तिक शुक्ला एकादशी, जिस दिन भगवान चार मास शयन कर जागते हैं। २-जवासा।

प्रबोधित [वि.] (सं.) १-जागा हुआ। जागृत। २-सूचित किया हुआ। ३-शिक्षा दिया हुआ।

प्रबोधिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके चरण में क्रमशः सगण, जगण, सगण, रगण और अन्त में गुरु होता है।

प्रबोधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रबोधनी'।

प्रबोधी [वि.] (सं) जगाने वाला।

प्रभंग, प्रभङ्ग [वि.] (सं.) भग्न। टूटाफूटा हुआ

प्रभंजन, प्रभञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यधिक तोड़फोड़। टुकड़े-टुकड़े कर डालना। २-पवन। वायु। विशेष कर आंधी। महाभारत के अनुसार मणिपुर के एक राजा का नाम।

प्रभंजन-सुत, प्रभञ्जन-सुत [संज्ञा पु.](सं.) हनुमान।

प्रभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का पेड़।

प्रभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

प्रभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी नामक लता।

प्रभद्रिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसमें पन्द्रह अक्षर होते हैं। जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, जगण और अन्त में एक रगण होता है।

प्रभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्गमस्थल। निकास। २-जन्म उत्पत्ति। ३-नदी का उद्गमस्थान। ४-उपादानकारण। ५-शक्ति। बल। पराक्रम ६-साठ संवत्सरों में से एक।

प्रभवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पत्ति। २-आकार। ३-मूल। ४- अधिष्ठान।

प्रभविष्णु [वि.] (सं.) प्रभावशाली।

प्रभांजन, प्रभाञ्जन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहजन-वृक्ष।

प्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आभा। चमक। दीप्ति २-सूर्यबिंब। ३-सूर्य की एक पत्नी का नाम। ४-एक अप्सरा का नाम। ५-मंदाकिनी नामक द्वादशाक्षरावृत्ति।

प्रभाऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रभाव'।

प्रभाकर [संज्ञा पु.](सं.) १ सूर्य। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-समुद्र। ५-मदार। आक। ६-एक मीमांसादर्शनकार का नाम। ७-कुशद्वीप के एक वर्ष का नाम। ८-आठवें मन्वन्तर के देवगण के एक देवता। (मार्कण्डेयपुराण)।

प्रभाकरवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) थानेसर के एक राजा का नाम।

प्रभाकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बोधिसत्वों की तृतीय अवस्था।

प्रभाकीट [संज्ञा पु.] (सं.) जुगुनू। खद्योत।

प्रभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-विभाग का विभाग। २-भिन्न का भिन्न।

प्रभात [संज्ञा पु.] (सं.) सवेरा। प्रातःकाल।

प्रभातफेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचार के उद्देश्य से बहुत सबेरे दल बांधकर गलियों में गाते-बजाते और नारे लगाते हुए घूमना।

प्रभाती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सबेरे के समय गाने का एक गीत विशेष। २-महाभारत में वर्णित प्रत्यूस और प्रभास नामक वसुओं की माता का नाम। ३-दातुन।

प्रभान [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश। ज्योति। दीप्ति

प्रभापन [संज्ञा पु.] (सं.) उजला करना।

प्रभापाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व।

प्रभामंडल, प्रभामण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश का घेरा। देवताओं तथा दिव्यपुरुषों आदि के चारों ओर का वह प्रभापूर्ण मंडल जो चित्रों या मूर्त्तियों में दिखाया जाता है।

प्रभामय [वि.] (सं.) प्रभा या दीप्ति से परिपूर्ण

प्रभारक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

प्रभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु या बात पर किसी क्रिया का होने वाला परिणाम। असर। एफेक्ट। २-प्रादुर्भाव। उद्भव। ३-महात्म्य। ४-किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक, सम्मान, अधिकार आदि पर होने वाला परिणाम। इन्फ्लुएन्स। ५-अन्तःकरण को किसी ओर करने का गुण। ६-सूर्य के एक पुत्र का नाम। ७-सुग्रीव के एक मन्त्री का नाम।

प्रभावक [वि.](सं.) प्रभाव डालने वाला। असर दिखलाने वाला।

प्रभावज [वि.](सं.) प्रभाव से उत्पन्न। प्रभाव-जात।
[संज्ञा पु.] १-शाप या ग्रहादि के फिर से उत्पन्न होने वाला रोग विशेष। २-वह राज-शक्ति जो कोष तथा दंड के रूप में व्यक्त होती है।

प्रभावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य की पत्नी का नाम। २-प्रभाती नामक राग या गीत।
[वि.] [स्त्री. प्र.] प्रभावाली।

प्रभावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकाश।

प्रभावान्वित [वि.] (सं.) जिस पर प्रभाव पड़ा हो। प्रभावित।

प्रभावित [वि.] (सं.) प्रभाव या असर में आया हुआ। जिस पर प्रभाव पड़ा हो।

प्रभाष [संज्ञा पु.] (सं.) एक वसु का नाम।

प्रभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह कहना।

प्रभाषी [वि.] (सं.) अच्छी तरह बोलने वाला।

प्रभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-आभा। चमक। २-एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो काठियावाड़ में है। ३-एक वसु का नाम। ४-कार्तिकेय के एक गण का नाम।

प्रभासन [संज्ञा पु.] (सं.) चमक। दीप्ति।

प्रभासना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रकाशित होना। दिखाई पड़ना।

प्रभास्वर [वि.] (सं.) चमकीला। दीप्तिमान्।

प्रभिन्न [वि.] (सं.) १-अलग किया हुआ। विभक्त। २-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। ३-अङ्गभङ्ग किया हुआ।
[संज्ञा पु.] (सं.) मतवाला हाथी।

प्रभु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो अनुग्रह या निग्रह करने में समर्थ हो। अधिपति। नायक। २-जो रोजी चलाता हो। स्वामी। मालिक। ३-ईश्वर। ४-श्रेष्ठ पुरुष के लिए संबोधन। ५-शब्द। ६-पारा। पारद। ७-बम्बई राज्य के कायस्थों की उपाधि।

प्रभुता [संज्ञा स्त्री.] (स.) १-महत्व। बड़ाई। २-मालिकपन। ३-हुकूमत। शासनाधिकार। ४-४-वैभव।

प्रभुताई [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'प्रभुता'।

प्रभुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभुता।

प्रभुत्वाक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) अर्थालंकार विशेष जिसमें कोई नायिका अपने प्रभुत्व के अभिमान से नायक को बाहर जाने से रोकती है।

प्रभुभक्त [वि.] (सं.) स्वामी की सच्ची सेवा करने वाला। नमकहलाल।

प्रभू॥ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रभु'।

प्रभूत [वि.] (सं.) १-निकला हुआ। उद्गत। उत्पन्न। २-बहुत। विपुल। ३-उन्नत। ४-जो अच्छी तरह हुआ हो। [संज्ञा पु.] (सं.) पंचभूत। तत्व।

प्रभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्पत्ति। निकास। २-बल। शक्ति। ३-पर्याप्तता। अधिकता।

प्रभृति [अव्य.] (सं.) इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेद। विभिन्नता। २-फोड़कर निकालने की क्रिया। स्फोटन।

प्रभेव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रभेद'।

प्रभेदक [वि.] (सं.) विभाग करने वाला।

प्रभेदन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छेदने का औजार।

प्रभेदिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेधने अथवा छेदने का अस्त्र।

प्रभ्रंश [संज्ञा प.] (सं.) भ्रष्ट होना।

प्रभ्रंशथु [संज्ञा पु.] (सं.) पीनस-रोग।

प्रभ्रष्ट [वि.] (सं.) १-गिरा हुआ। २-टूटा हुआ।

प्रभ्रष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सिर से लटकती हुई माला।

प्रमंडल, प्रमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहिये का घुरा। २-प्रदेश का वह भाग जिसमें कई मंडल या जिले हों। कमिश्नरी, डिविज़न।

प्रमग्न [वि.] (सं.) डूबा हुआ।

प्रमत [वि.](सं.) विचारा हुआ। मनन किया हुआ

प्रमत्त [वि.](सं.) १-नशे में चूर। मस्त। २-पागल। उन्मत्त। ३-असावधान। लापरवाह। ४-जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमत्तगीत [वि.] (सं.) असावधानी से गाया हुआ

प्रमत्तचित्त [वि.] (सं.) असाबधान। लापरवाह।

प्रमत्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मस्ती। २-पागलपन।

प्रमथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-शिव के गण जिनकी संख्या पुराणों में ३६ करोड़ बताई गई है। ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

प्रमथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मथना। २-पीड़ित करना। ३-नाश करना।

प्रमथनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

प्रमथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरीतकी। हड़। २-पीड़ा।

प्रमथाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

प्रमथालय [संज्ञा पु.](सं.) वह स्थान जहाँ यंत्रणा दी जाती है। नरक।

प्रमथित [वि.] (सं.) १-सताया हुआ। पीड़ित। २-भली प्रकार मथा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) मट्ठा जिसमें जल न हो।

प्रमद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मतवालापन। २-धतूरे का पौधा। ३-हर्ष। आनन्द। ४-दान देने का एक ढंग या प्रकार। ५-वसिष्ठ के पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) मतवाला। मत्त।

प्रमदक [संज्ञा पु.] (सं.) नास्तिक।

प्रमदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर युवती स्त्री। २-प्रियंगु।

प्रमदाकानन, प्रमदावन [संज्ञा पु.](सं.) राजमहल में अन्तःपुर का उद्यान जहाँ रानियां सैर करती हैं।

प्रमना [वि.] (सं.) प्रसन्न। हर्षित।

प्रमन्यु [वि.] (सं.) बहुत क्रुद्ध। [संज्ञा पु.](सं.) अति क्रोध।

प्रमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह कुचलना या नष्ट करना। पैरों से रौंदना। २-दमन करना। नष्ट करना। विष्णु का एक नाम। [वि.] (सं.) खूब मर्दन करने वाला।

प्रमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुद्ध और यथार्थ ज्ञान। २-नाप। माप। ३-नींव।

प्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह कथन या तत्व जिससे कोई सिद्ध हो। सबूत। २-सत्यता। सचाई। ३-निश्चय। प्रतीति। दृढ़ धारणा। यकीन। ४-मर्यादा। साख। मान। आदर। ५-प्रामाणिक बात या वस्तु। मानने की बात। ६-इयत्ता। हद। मान। ७-शास्त्र। ८-मूलधन। ९-प्रमाणपत्र। १०-एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का उल्लेख होता है। [वि.] (सं.) १-सत्य। प्रमाणित। चरितार्थ। २-मान्य। स्वीकार योग्य। ठीक। ३-परिमाण में बराबर। [अव्य] अवधि या सीमासूचक शब्द। तक। पर्यंत।

प्रमाणक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिस पर प्रमाण के रूप में कोई लेख हो। प्रमाण-पत्र। सरटिफिकेट।

प्रमाणकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो कोई बात प्रमाणित करता हो। सरटिफायर।

प्रमाणकुशल [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा तर्क करने वाला।

प्रमाणकोटि [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रमाण मानी जाने वाली बातों या वस्तुओं का घेरा।

प्रमाणना॥ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'प्रमानना'।

प्रमाणता [संज्ञा स्त्री.] प्रमाण का भाव या धर्म।

प्रमाणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह लिखा हुआ कागज या पत्र जिसका लेख किसी बात का प्रमाण हो। सर्टीफिकेट।

पमाणपुरुप [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके निर्णय को मानने के लिए दोनों पक्षों के लोग तैयार हों। पंथ।

प्रमाणलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वह लक्षण जिससे प्रमाण सिद्ध होता हो।

प्रमाणवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) आप्त वाक्य। वेद वाक्य।

प्रमाणशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्मशास्त्र। २-न्यायशास्त्र।

प्रमाणसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) नापने का डोरा।

प्रमाणांतर, प्रमाणान्तर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई बात प्रमाणित करने के लिए अन्य ढंग।

प्रमाणाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमाण का अभाव।

प्रमाणिक [वि.] (सं.) १-जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो। २-प्रमाण के रूप में मानने योग्य। ३-ठीक। सत्य। ४-ठीक माना जाने वाला। जिसकी साख हो।

प्रमाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं। इसे नगस्वरूपिणी भी कहते हैं। देखो 'प्रमाणी'।

प्रमाणित [वि.] (सं.) प्रमाणद्वारा सिद्ध। साबित। निश्चित।

प्रमाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण और लघु गुरु होते हैं। प्रमाणिका।

प्रमाणीकरण [संज्ञा प.] (सं.) यह लिखना कि अमुक लेख अथवा बात ठीक और प्रमाण सिद्ध है। सरटिफिकेशन।

प्रमाणीकृत [वि.] (सं.) जिसे प्रमाणरूप में स्वीकार किया गया हो। जो प्रमाणरूप से निश्चित हो।

प्रमातव्य [वि.] (सं.) मारने योग्य। वध्य।

प्रमाता [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रमाणों द्वारा प्रमेय के ज्ञान को प्राप्त करने वाला। २-ज्ञान का कर्त्ता आत्मा या चेतनपुरुष। ३-द्रष्टा। साक्षी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिता की माता। दादी।

प्रमातामह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रमातामही] नाना का पिता। परनाना।

प्रमातामही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रमातामह की पत्नी। परनानी।

प्रमात्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमा का धर्म या भाव।

प्रमाथ [संज्ञा पु.](सं.) १-अत्याचार। पीड़न। २-उत्तेजना। मथन। ३-वध। हत्या। ४-किसी

स्त्री से उसकी इच्छा के विरुद्ध भोग। बलात्कार। ५-प्रतिद्वंद्वी को पृथ्वी पर पटकर उसके घिस्से लगाना। ६-बलात्हरण। ७-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ८-शिव के एक गण का नाम। ९-स्कंद के एक अनुचर का नाम।

प्रमाथिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक अप्सरा का नाम

प्रमाथी [वि.] (सं.) [स्त्री प्रमाथिनी] १-मथने वाला। २-क्षुब्धं करने वाला। दुःखदायी। ३-पीड़न। नाश करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-राम की सेना का एक बन्दर। २-खर का एक साथी (रामायण)। ३-एक औषध। ४-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

प्रमाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कारण वश कुछ को कुछ समझना और कुछ का कुछ करना। २-भ्रम। भ्रांति। ३-अन्तःकरण की दुर्बलता। ४-भूल-चूक।

प्रमादिक [वि.] (सं.) भूलचूक करने वाला।

प्रमादिका [संज्ञा स्त्री](सं.) वह कन्या जिसे किसी ने दूषित कर दिया हो।

प्रमादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंडोल राग की एक सहचरी का नाम।

प्रमादी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रमादिनी] प्रमादयुक्त। भूल चूक करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) पागल। बावला।

प्रमान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रमाण'।

प्रमानना* [क्रि. स.] (हि.) १-प्रमाण के रूप में मानना या ठीक समझना। सत्य मांनना। २-प्रमाणित करना। साबित करना। ३-स्थिर करना। ठहराना।

प्रमानी* [वि.](सं.) प्रमाण योग्यं। मांनने लायक

प्रमापण [संज्ञा पु.] (सं.) वध हत्या।

प्रमापयिता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रमापयित्री] १-घातक। नाशकारक। २-अनिष्टकारक। हानि पहुँचाने वाला।

प्रमायु, प्रमायुक [वि.] (सं.) नाशशील। ध्वंसशील।

प्रमार [संज्ञा पु.] (सं.) राजपूत क्षत्रियों की एक श्रेणी।

प्रमार्जक [वि.] (सं.) १-साफ करने वाला। २-हटाने वाला। दूर करने वाला।

प्रमार्जन [संज्ञा पु.](सं.) १-धोना। साफ करना २-झाड़ना। पोंछना। ३-हटाना। दूर करना

प्रमित [वि.] (सं.) १-परिमित। २-निश्चित। ३-अल्प। थोड़ा। ४-जिसका यथार्थ ज्ञान हुआ हो। ५-विदित। अवगत। ६-प्रमाणित।

प्रमिताक्षरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं। यह क्रमशः इस प्रकार आते है सगण, जगण और अन्त में दो जगण।

प्रमिताशन [संज्ञा पु.] (सं.) अल्प भोजन। थोड़ा खाना।

प्रमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह यथार्थ-ज्ञान जो किसी प्रमाण की सहायता से प्राप्त हुआ हो २-यथार्थ या सत्य-ज्ञान।

प्रमीढ़ [वि.] (सं.) १-गाढ़ा। घना। मोटा। २-मूत्र बनकर निकला हुआ।

प्रमीत [वि.] (सं.) १-मृत। मरा हुआ। २-यज्ञ के निमित्त मारा हुआ (पशु)।

प्रमीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृत्यु। मौत। २-वध। हत्या।

प्रमीलक [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का आलस्य या दुर्बलता। झपकी। ऊंघाई।

प्रमीलन [संज्ञा पु.] (सं.) निमीलन। मूंदना।

प्रमीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नींद। तंद्रा। थकावट। २-ग्लानि। शैथिल्य। थकावट। ३-मूंदना। ४-अर्जुन की एक स्त्री का नाम।

प्रमीलित [वि.] (सं.) आँख मूंदे हुए।

प्रमीली [वि.](सं.) [स्त्री. प्रमीलिनी] आँखें मूंदने वाला। [संज्ञा पु.] एक दैत्य का नाम।

प्रमुक्त [वि.] (सं.) १-छोड़ा या मुक्त किया हुआ। २-त्यागा हुआ।

प्रमुचित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोक्ष। निर्वाण।

प्रमुख [वि.] (सं.) १-प्रथम। पहला। २-प्रधान। मुख्य। श्रेष्ठ। प्रतिष्ठित। अगुवा।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-आदि। आरम्भ। २-समूह। ३-पुन्नाग।
[अव्य.] (सं.) इत्यादि। वगैरह।

प्रमुग्ध [वि.] (सं.) १-अचेत। बेहोश। २-अत्यन्त मनोहर।

प्रमुच [वि.] (सं.) मुक्तिदाता।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

प्रमुचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

प्रमुचु [संज्ञा पु.] देखो 'प्रमुचि'।

प्रमुद [वि.] (सं.) अनन्दित।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्यन्त आनन्द।

प्रमुदना* [क्रि. स.] (हिं.) प्रमुदित होना। प्रसन्न होना।

प्रमुदित [वि.] (सं.) हर्षित। आनन्दित। प्रसन्न।

प्रमुदितवदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन्दाकिनी नामक वर्णवृत्त का नाम।

प्रमादितहृदय [वि.](सं.) प्रसन्नहृदय।

प्रमुषित [वि.] (सं.) चुराया हुआ।

प्रमुषिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की पहेली

प्रमूढ़ [वि.] (सं.) १-मूर्ख। मूढ़। २-घबड़ाया हुआ। व्याकुल। परेशान।

प्रमृत [वि.] (सं.) मृत। मरा हुआ।
[संज्ञा पु.] (सं.) सूखी हुई या पाला मारी हुई खेती।

प्रमृश [वि.] (सं.) पंडित। विद्वान।

प्रमृष्ट [वि.] (सं.) १-मला हुआ। माँजा हुआ। २-निरस्त।

प्रमेय [वि.] (सं.) १-जो सिद्ध करने के हो। २-जो प्रमाण का विषय हो सके। ३-जो नापा जा सके।
[संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका ज्ञान प्रमाण द्वारा कराया जा सके।

प्रमेयत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेय का भाव या धर्म

प्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्र मार्ग से वीर्य और शरीर की अन्य धातुएँ निकलती हैं।

प्रमेही [वि.] (सं.) प्रमेह रोग वाला।

प्रमोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोक्ष। मुक्ति। २-छोड़ना। त्याग। फेंकना।

प्रमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छुटकारा देना। छोड़ना। २-खूब हरण करना।

प्रमोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ककड़ी

प्रमोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हर्ष। आनन्द। २-सुख। ३-एक सिद्ध का नाम। ४-कुमार के एक अनुचर का नाम। ५-बृहस्पति के पहले युग के चौथे वर्ष का नाम।

प्रमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जड़हन।

प्रमोद-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो नाटक, चलचित्र आदि मनोरंजन के लिए देखे जाने वाले तमाशों के टिकट के साथ देना पड़ता है।

प्रमोदन [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु का नाम। [वि.] (सं.) हर्षकारक।

प्रमोदसइक [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध विशेष

प्रमोदा [संज्ञा स्त्री](सं.) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्रमोदित [वि.] (सं.) प्रसन्न। हर्षित। [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर का एक नाम।

प्रमोदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिंगिनी।

प्रमोदी [वि.] (सं.) १-हर्षजनक। २-हर्षयुक्त।

प्रमोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोह। २-मूर्छा।

प्रमोहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहित करना। २-एक प्रकार का अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रु के लोगों में प्रमोह उत्पन्न हो जाता है।

प्रमोही [वि.] (सं.) मोह जनक।

प्रम्लोचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम

प्रयंक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पर्यंत'।

प्रयंत* [अव्य.] (हिं.) देखो 'पर्यंक'।

प्रयत [वि.] (सं.) १-पवित्र। २-नम्र। दीन। ३-प्रयत्नशील।

प्रयतात्मा [वि.] (सं.) जितेन्द्रिय। संयमी।

प्रयति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संयम।

प्रयत्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह क्रिया जो किसी काम को विशेषतः कुछ कठिन कामों को पूरा

करने के निमित्त किया जाय। अध्यवसाय। प्रयास। कोशिश। २-व्याकरण के अनुसार वर्णों के उच्चारण में होने वाली क्रिया। ३-न्यायसूत्र के मतानुसार आत्मा के छः गुणों या साधन चिह्नों में से एक।

प्रयत्नवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रयत्नवती] प्रयत्न या चेष्टा में लगा हुआ।

प्रयत्नशील [वि.] (सं.) जो प्रयत्न या चेष्टा में लग रहा हो। कोशिश में लगा हुआ।

प्रयत्नशैथिल्य [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण बैठने की शिथिलता त्यागकर योगासान लगाकर जाप करना।

प्रयसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी जो रावण की अनुचरी थी और जिसे उसने सीता को समझाने का प्रयत्न किया था।

प्रयस्त [वि.] (सं.) परिश्रम से किया हुआ।

प्रयाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो इलाहाबाद में गङ्गा और यमुना के संगम पर है। २-बहुत से यज्ञों का स्थान।

प्रयागवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रयाग तीर्थ का पंडा

प्रयाचक [वि.] (सं.) मांगने या याचना करने वाला।

प्रयाचन [संज्ञा पु.] (सं.) याचना। प्रार्थना।

प्रयाज [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञीय प्रधान कर्म विशेष

प्रयाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्थान। जाना। २-चढ़ाई। युद्धयात्रा। ३-इस लोक को छोड़कर दूसरे लोक या परलोक को जाना। ४-आरम्भ।

प्रयाणकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक यात्रा का समय। २-मृत्यु का समय।

प्रयाणपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ जो दक्षिण में कावेरी नदी के तट पर है। स्कंदपुराण।

प्रयात [वि.] (सं.) १-गत। गया हुआ। प्रस्थानित। २-मृत। मरा हुआ। ३-सोया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़ का ढाल। ढलुवां चिट्टान। २-आक्रमण। ३-खूब चलने वाला।

प्रयातव्य [वि.] (सं.) चढ़ाई करने योग्य।

प्रयान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रयाण'।

प्रयापण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्थान करना। चलता करना। २-आगे जाना।

प्रयापणीय [वि.] (सं.) १-प्रस्थान करने योग्य। २-आगे जाने योग्य।

प्रयापित [वि.] (सं.) १-आगे जाने के लिये प्रेरित किया हुआ। २-भगाया हुआ।

प्रयाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभाव। मँहगी। दुष्प्राप्यता। २-संयम। ३-देश या काल संबंधी दीघता। लंबाई। ४-कदर।

प्रयास [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रयत्न। चेष्टा। उद्योग २-परिश्रम। मेहनत। इच्छा।

प्रयासी [वि.] (सं.) प्रयत्न या कोशिश करने वाला।

प्रयुक्त [वि.] (सं.) १-भली भांति जोड़ा हुआ। २-अच्छी प्रकार मिलाया हुआ। सम्मिलित। ३-व्यवहार में लाया हुआ। जिसका प्रयोग हो चुका या होता हो। ४-प्रेरित किया हुआ उकसाया हुआ।

प्रयुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपयोग। योग। इस्तेमाल। २-प्रयोजन। उद्देश्य।

प्रयुजमान [वि.] (सं.) जिसका प्रयोग किया गया हो।

प्रयुत [वि.] (सं.) १-खूब मिला हुआ। २-मिला जुला। अस्पष्ट। ३-सहित। समेत। ४-दस लाख।

प्रयुतेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) स्कंदपुराण में वर्णित एक तीर्थ का नाम।

प्रयुत्सु [संज्ञा पु.] (सं.) १-योद्धा। २-मेढ़ा। ३-पवन। ४-संन्यासी। ५-इन्द्र।

प्रयोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार करने वाला प्रयोगकर्त्ता। २-नियोजित करने वाला। ३-व्याज पर रुपया उधार देने वाला। उत्तमर्ण। महाजन। ४-(नाटक में) अभिनयकर्त्ता।

प्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कार्य में लगना २-किसी वस्तु के काम में लाये जाने की क्रिया या भाव। बरता जाना। इस्तेमाल। व्यवहार। ३-किसी बात को समझाने या जानने के निमित्त अथवा परीक्षा आदि के रूप में होने वाला किसी क्रिया का साधन। एक्सपेरिमेंट। ४-तांत्रिक उपचार अथवा साधन जो सांख्य में बारह होते हैं। यथा—मोहन, मारण, उच्चाटन, कीलन, विद्वेषण, कामनाशन, स्तंभन, वशीकरण, आकर्षण, बंदिमोचन, कामपूरण तथा वाक्प्रसारण। ५-अभिनय करना। नाटक खेलना। ६-रोग का उपचार। ७-धनवृद्धि के लिए धन लगाना ८-यज्ञादि कर्मों की विधि या पद्धति। ९-दृष्टांत। निदर्शन। १०-साम, दंड आदि उपायों का अवलंबन। ११-घोड़ा। १२-अनुमान के पांच अंगों का उच्चारण।

प्रयोग-शाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां पर किसी विषय का विशेषतः रसायनिक प्रयोग या जांच होती हो। लेबोरेटरी।

प्रयोगातिशय [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में प्रस्तावना का भेद।

प्रयोगी [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रयोग करने वाला।

प्रयोजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रयोग करने वाला। अनुष्ठान करने वाला। २-प्रेरक। ३-नियंता व्यवस्था रखने वाला।

प्रयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम। कार्य। अर्थ २-अभिप्राय। आशय। उद्देश्य। मतलब। गरज। ३-उपयोग। व्यवहार।

प्रयोजनवती लक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे।

प्रयोजनवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रयोजनवती] प्रयोजन या मतलब रखने वाला।

प्रयोजनीय [वि.] (सं.) मतलब का। काम का।

प्रयोज्य [वि.] (सं.) १-प्रयोग के योग्य। २-काम में आने के योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नौकर। चाकर। भृत्य। २-वह धन जो किसी कार्य में लगाया जाय। पूँजी।

प्रराध्य [वि.] (सं.) आराधना करने योग्य।

प्ररुदित [वि.] (सं.) फूट-फूट कर रोने वाला।

प्ररुह [वि.] (सं.) भूमि से ऊपर को बढ़ने वाला।

प्ररूढ़ [वि.] (सं.) १-पूर्णवृद्धि को प्राप्त। २-उत्पन्न। पैदा किया हुआ। ३-चढ़ा हुआ।

प्ररूढ़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाढ़। बढ़ती।

प्ररूपण [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञापन (जैन)।

प्ररेचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुचि दिखलाना। २-मोहित करना। ३-उत्तेजित करना।

प्ररोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुचि दिखलाना। चाह पैदा करना। २-मोहित करना। ३-उत्तेजित करना।

प्ररोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्तेजना। बढ़ावा। २-रुचि उत्पन्न करने की क्रिया। ३-नाटक की प्रस्तावना का एक अङ्ग जिसमें आगे आने होने वाले दृश्य का रोचक वर्णन होता है

प्ररोधन [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर उठाना। चढ़ाना।

प्ररोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-आरोह। चढ़ाव। २-ऊपर की ओर निकलना। उगना। जमना। ३-उत्पत्ति। ४-अंकुर। अँखुआँ। कोंपल। ५-तुन नामक पेड़।

प्ररोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आरोह। चढ़ाव। २-उगना। जमना। ३-उत्पत्ति।

प्ररोहभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपजाऊ भूमि। उर्वरा भूमि।

प्ररोहशाखी [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसे वृक्ष जिनकी कलम लगाने से लग जाय।

प्रलंब, प्रलम्ब [वि.] (सं.) १-लंबा। २-नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। ३-टँगा हुआ। ४-निकला हुआ। ५-शिथिल। झुला। [संज्ञा पु] १-लटकाव। झुलाव। २-शाखा डाल। टहनी। ३-गले में पड़ी हुई फूल माला। ४-कंठहार। ५-स्त्री के कुच। स्तन। ६-जस्ता या सीसा। ७-खीरा। ८-लतांकुर। ९-एक दैत्य का नाम जिसे बलराम ने मारा था (भागवत)।

प्रलंबक, प्रलम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) सुगन्ध तृण।

प्रलंबन, प्रलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) अवलम्बन। सहारा लेना।

प्रलंबित, प्रलम्बित [वि.] (सं.) खूब नीचे तक लटकाया हुआ।

प्रलंबी, प्रलम्बी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रलम्बिनी] १-दूर तक लटकाने वाला। लम्बा। २-अवलम्बन या सहारा लेने वाला।

प्रलंभ, प्रलम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राप्ति। उपलब्धि। २-छल। धोखा।

प्रलंभन, प्रलम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राप्ति या लाभ होना। २-छल। धोखा।

प्रलपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कहना। कथन। २-बकना। ऊटपटांग बातचीत।

प्रलपित [वि.] (सं.) १-कहा हुआ। २-बकवाद किया हुआ।

प्रलब्ध [वि.] (सं.) छला हुआ। धोखा दिया हुआ।

प्रलयंकर, प्रलयङ्कर [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रलयङ्करी] प्रलय के समान नाशकारी।

प्रलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लय को प्राप्त होना। न रह जाना। नाश। २-कल्पांत में संसार का नाश। ३-मृत्यु। मौत। विनाश। ४-साहित्य में एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से स्मृति नष्ट हो जाती है। ५-अचेतनता। मूर्च्छा। बेहोशी।

प्रलयकर [वि.](सं.) प्रलय का सा सर्वनाश करने वाला।

प्रलयकाल [संज्ञा पु.] (सं.) संसार के विनाश का समय।

प्रलयता [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रलय का भाव या धर्म

प्रलव [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभाँति काटना। पूर्ण रूप से छेदन। २-टुकड़ा। धज्जी। ३-लेश।

प्रलवन [संज्ञा पु.] (सं.) भली प्रकार से काटना।

प्रलवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) काटने का औजार।

प्रलाप [संज्ञा पु.] (सं.) अनाप-शनाप बातचीत। पागलों के समान कही हुई व्यर्थ की बकवाद।

प्रलापक [संज्ञा पु.] (सं.) सन्निपात रोग विशेष जिसमें रोगी अंडबंड बोलता है।

प्रलापन [संज्ञा पु.] (सं.) बकवाद। बकझक।

प्रलापहा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अंजन।

प्रलापी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रलापिनी] अंडबंड बकने वाला। प्रलाप करने वाला।

प्रलीन [वि.] (सं.) १-तिरोहित। समाया हुआ। २-चेष्टारहित। जड़वत्।

प्रलीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विलीनता। नाश। प्रलय। २-जड़त्व। चेष्टा का नाश।

प्रलेखक [संज्ञा पु.] (सं.) लेख, दस्तावेज, प्रार्थना-पत्र आदि लिखने वाला व्यक्ति। अर्जीनवीस या कातिब।

प्रलेखन [संज्ञा पु.] (सं.) लेख, दस्तावेज, प्रार्थना-पत्र लिखने का कार्य।

प्रलेप [संज्ञा पु.] (सं.) लेप। उबटन। मलहम।

प्रलेपक [वि.] (सं.) १-लेप करने वाला। उबटन लगाने वाला। २-एक प्रकार का मन्दज्वर।

प्रलेपन [संज्ञा पु.] (सं.) लेप करने या लगाने का कार्य।

प्रलेप्य [वि.](सं.) प्रलेप करने योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) घुंघराले बाल।

प्रलेह [संज्ञा पु.] (सं.) घी में भूनकर बनाया हुआ मांस। कोरमा।

प्रलेहन [संज्ञा पु.] (सं.) चाटना।

प्रलोटन [संज्ञा पु..] (सं.) जमीन पर लोटना पोटना।

प्रलोभ [संज्ञा पु.] (सं.) लालच। अत्यधिक लोभ

प्रलोभक [वि.] (सं.) प्रलोभन देने वाला। लालच देने वाला।

प्रलोभन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोभ या लालच देना। २-वह बात या काम जो किसी को लुभाकर अपनी ओर आकर्षित करने या उससे कोई काम कराने वाला हो। एल्योरमेंट।

प्रलोभित [वि.] (सं.) ललचाया हुआ। मुग्ध। मोहित।

प्रलोभी [वि.] (हिं.) लोभ में फंसने वाला। लुब्ध

प्रलोलुप [वि.] (सं.) बड़ा लालची।

प्रवंचक, प्रवञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) धोखेबाज। भारी ठग। धूर्त्त।

प्रवंचना, प्रवञ्चना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ठगपना। धूर्तता। छल।

प्रवंचित, पवञ्चित [वि.] (सं.) जो ठगा गया हो।

प्रवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह बोलने या कहने वाला। २-वेदादि का उपदेश करने वाला। ३-किसी विभाग या संस्था की ओर से अधिकृत रूप में कोई बात कहने वाला। स्पोक्समैन।

प्रवग [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी। पंछी।

प्रवचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली भाँति समझा कर कहना। अर्थ खोलकर बताना। २-धार्मिक या नैतिक बातों की की जाने वाली व्याख्या ३-वेदाङ्ग।

प्रवचनीय [वि.] (सं.) समझाकर। कहने योग्य।

प्रवट [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ।

प्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि का ढाल या उतार २-पहाड़ का किनारा। ३-चौराहा। चतुष्पथ। [वि.] (सं.) १-क्रमशः नीचा होता हुआ। ढालुवाँ। २-झुका हुआ। ३-रत। प्रवृत्त। ४-नम्र। विनीत। ५-अनुकूल। मुवाफिक। ६-उत्सुक। तत्पर। ७-व्यवहार में खरा। ८-उदार। ९-स्निग्ध। १०-निपुण। ११-लंबा

प्रवणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रवण होने का भाव

प्रवत्स्यत् [वि.] (सं.) विदेश की यात्रा करने को जाने वाला।

प्रवत्स्यत्पतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जिसका पति विदेश जाने वाला हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवत्स्यद्भर्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवदन [संज्ञा पु.] (सं.) घोषणा।

प्रवपन [संज्ञा पु.] (सं.) दाढ़ी मूंछें मुंडवाना।

प्रवयण [संज्ञा पु.] (सं.) बुने हुए कपड़े का ऊपरी भाग जो सीधा होता है।

प्रवयस् [वि.] (सं.) १-बूढ़ा। बुड्ढा। २-पुराना

प्रवर [वि.] (सं.) १-मुख्य। प्रधान। २-श्रेष्ठ। [संज्ञा पु.] १-अगर काष्ठ। २-अग्नि संस्कार का मंत्र विशेष। ३-गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि। ४-संतति।

प्रवरगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का प्राचीन नाम।

प्रवरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का आवाहन। २-बौद्धों का एक उत्सव जो वर्षाऋतु के अन्त में होता है।

प्रवरललिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, रगण और एक गुरु होता है।

प्रवरवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

प्रवर-समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह समिति जो किसी विषय पर विचारपूर्वक सम्मति देने के लिये उस विषय के विशेषज्ञों की बनाई जाय। सेलेक्ट-कमेटी।

प्रवरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अगरकाष्ठ। २-एक छोटी नदी जो गोदावरी में मिलती है।

प्रवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञीय अग्नि। २-विष्णु।

प्रवर्ग्य [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयाग की आरम्भिक विधि विशेष।

प्रवर्त [संज्ञा पु.](सं.) १-कार्यारम्भ। शुरुआत। २-एक प्रकार के मेघ। ३-एक प्राचीन आभूषण जो गोलाकार होता था।

प्रवर्तक, प्रवर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम को चलाने वाला। संचालक। २-आरम्भ करने वाला। प्रचलित करने वाला। ३-किसी को किसी कार्य में, विशेषतः अनुचित अथवा विधि विरुद्ध कार्य में लगाने तथा उसकी सहायता करने वाला। ऐबेटर। ४-किसी नवीन कार्य अथवा बात को निकालने या चलाने वाला। ओरिजिनेटर। ५-हार-जीत का निर्णय करने वाला। पंच। ६-नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार के वर्तमान समय के वर्णन करने पर पात्र उसकी चर्चा करता हुआ रंगमंच पर आता है।

प्रवर्तन, प्रवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्य आरंभ करना। २-कार्य-संचालन। ३-प्रचलित करना ४-प्रवृत्ति। ५-किसी को अनुचित कार्य करने के लिए प्रेरित करना और सहायता देना। एबेटमेंट।

प्रवर्तना, प्रवर्त्तना [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-उत्तेजना।

प्रेरणा। २-किसी कार्य में लगाने या नियुक्त करने की क्रिया। नियोजन।

प्रवर्तित, प्रवर्त्तित [वि.] (सं.) १-ठाना हुआ। आरम्भ किया हुआ। २-निकाला हुआ। ३-ईजाद किया हुआ। ४-उत्तेजित। प्रेरित।

प्रवर्ती [वि.] (सं.) १-आगे बढ़ाने वाला। प्रेरणा करने वाला। २-क्रियाशील।

प्रवर्द्धक, प्रवर्धक [वि.] (सं.) वृद्धि करने वाला।

प्रवर्द्धन, प्रवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़ती। वृद्धि।

प्रवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मूसलाधार वर्षा।

प्रवर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रथम वृष्टि। वृष्टि। २-किष्किंधा के पास के एक पर्वत का नाम।

प्रवर्ह [वि.] (सं.) प्रधान। श्रेष्ठ।

प्रवल्लाकी [संज्ञा पु:] (सं.) १-मोर। २-सांप।

प्रवल्हिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहेली। प्रहेलिका।

प्रवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्थान। २-प्रवास।

प्रवसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदेश में जाना या रहना। २-बाहर जाना।

प्रवह [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब बहाव। तेज बहाव। २-सात वायुओं में से एक। ३-अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ४-वह कुन्ड जिसमें नाली द्वारा जल जाय। ५-घर नगर आदि से बाहर निकलना।

प्रवहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लेजाना। २-कन्या को विवाह देना। ३-स्त्रियों के लिए पर्देदार गाड़ी, पालकी या डोली। ४-नाव। पोत। ५-सवारी।

प्रवहमान [वि.] (सं.) जोरों से बहता या चलता हुआ।

प्रवाक [संज्ञा पु.] (सं.) घोषणा करने वाला।

प्रवाच [वि.] (सं.) १-बहुत बोलने वाला। २-शेखी बघारने वाला। ३-अच्छी युक्तियाँ देने वाला (बातचीत या बहस में)।

प्रवाचक [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा वक्ता।

प्रवाचन [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह से कहना।

प्रवाच्य [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह कहने योग्य। २-निंदनीय।

प्रवाण [संज्ञा पु.] (सं.) बने हुए कपड़े में गोट लगाना। कपड़े का किनारा बनाना।

प्रवाणि, पवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करघा। खड्डी।

प्रवात [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवा का झोंका। तेज हवा। २-अँधड़। आँधी। ३-हवादार स्थान। ४-ढाल। उतार।

[वि.] (सं.) हवा से हिलता हुआ।

प्रवातसार [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध।

प्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बातचीत। २-सर्वसाधारण में प्रचलित कोई ऐसी बात जिसका कोई पुष्ट आधार न हो। जनश्रुति। जनरव अफवाह। ३-अपवाद। झूठी बदनामी। ४-किसी को दी जाने वाली सूचना। रिपोर्ट।

प्रवादक [संज्ञा पु.] (सं.) बाजा बजाने वाला।

प्रवाद्य [वि.] (सं.) कहने योग्य। प्रकाशित करने योग्य।

प्रवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रमाण'।

प्रवापी [वि.] (सं.) बोने वाला।

प्रवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रवर। २-वस्त्र। आच्छादन। ३-ऊपर ओढ़ने का कपड़ा। चादर।

प्रवारक [संज्ञा पु.] (सं.) चादर। आच्छादन।

प्रवारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निषेध। विरोध। २-इच्छापूर्ण करना। ३-काम्यदान। ४-एक बौद्धोत्सव जो वर्षाऋतु की समाप्ति पर होता है।

प्रवाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूंगा। विद्रुम। २-किशलय। कोंपल। ३-सितार या तंबूरे की लकड़ी।

प्रवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जा बसना। २-विदेश। ३-यात्रा।

प्रवासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदेश में वास। २-घर से बाहर निकालना। देश निकाला। ३-वध। हत्या।

प्रवासित [वि.] (सं.) १-देश से निकाला हुआ। २-मारा हुआ। हत।

प्रवासी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रवासिनी] विदेश में रहने या निवास करने वाला।

प्रवास्य [वि.] (सं.) जो देश से निकाले जाने के योग्य हो।

प्रवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल का बहाव। २-बहता हुआ जल। धारा। ३-काम का चलना या जारी रहना। ४-चलता हुआ क्रम। सिलसिला। प्रवृत्ति। ५-झुकाव। ६-उत्तम घोड़ा ७-चलता हुआ कार्य। व्यवहार।

प्रवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह ले जाने वाला। २-प्रेत। पिशाच।

प्रवाहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढोया जाना। २-बहाया जाना।

प्रवाहणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मलद्वार की सब से ऊपरी कुंडली जो मल को बाहर फेंकती है।

प्रवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकालना। २-दस्त कराकर साफ करना।

प्रवाहिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बहाने वाली। २-दस्तों की बीमारी।

प्रवाहित [वि.] (सं.) १-बहता हुआ। २-ढोया हुआ।

प्रवाही [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रवाहिनी] १-बहाने वाला। २-बहने वाला। ३-तरल। द्रव।

प्रविख्यात [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेत। बालु।

[वि.] १-नामधारी। २-प्रसिद्ध।

प्रविख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्धि। शोहरत। नामवरी।

प्रविग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) संधिभंग।

प्रविचय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुसंधान। परीक्षा।

प्रविचार [संज्ञा पु.] (सं.) विवेक। ज्ञान। राई।

प्रविचेतना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समझदारी।

प्रवितत [वि.] (सं.) १-फैला हुआ। पसरा हुआ। २-उलझे हुए (केश)।

प्रविदार [संज्ञा पु.] (सं.) तड़कन। फटन।

प्रविदारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीरना। २-युद्ध। लड़ाई।

प्रविद्ध [वि.] (सं.) फेंका हुआ। निकाला हुआ।

प्रविद्रुत [वि.] (सं.) भगाया हुआ।

प्रविधान [संज्ञा पु.] (सं.) विधायिका द्वारा बनाया हुआ विधान। स्ट्रैट्यूट।

प्रविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विशेष विषय से सम्बन्धित अथवा किसी विशेष प्रकार की विधि। यथा—साक्ष्य प्रविधि (लॉ-आफ एविडेंस) संविदा प्रविधि लॉ-आफ-कंट्रैक्ट्स।

प्रविभक्त [वि.] (सं.) १-अलहदा किया हुआ। पृथक किया हुआ। २-जिसका बटवारा हो चुका हो। विभाजित।

प्रविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-विभाग। २-भाग। अंश।

प्रविर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चन्दन।

प्रविरल [वि.] (सं.) १-स्वल्प। बहुत थोड़ा। पृथक।

प्रविलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभांति घुलना या लीन होना। २-गलाना। पिघलाना।

प्रविलुप्त [वि.] (सं.) हटाया हुआ।

प्रविवाद [संज्ञा पु.] (सं.) भारी झगड़ा या दंगा।

प्रविषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस।

प्रविष्ट [वि.] (सं.) घुसा हुआ। भीतर पैठा हुआ।

प्रविष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) रंगभूमि का द्वार।

प्रविष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खाते में लिखे दर्ज करने या चढ़ाने की क्रिया का भाव। २-इसी प्रकार चढ़ी हुई बात या रकम।

प्रविसना* [क्रि. अ.] (हिं.) घुसना। पैठना।

प्रविस्तर, प्रविस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) विस्तार। फैलाव।

प्रवीण [वि.] (सं.) १-किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण। कुशल। दक्ष। होशियार। २-अच्छा गाने बजाने वाला।

प्रवीणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निपुणता। चतुराई। कुशलता।

प्रवीन* [वि.] (हिं.) देखो 'प्रवीण'।

प्रवीनता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रवीणता'।

प्रवीर [वि.] (सं.) भारी योद्धा या वीर।

प्रवीर बहादुर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौत्यमनु के एक पुत्र का नाम। २-राजा नीलध्वज के पुत्र का नाम जो ज्वला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

प्रवीरवर [संज्ञा पु.] (सं.) असुर विशेष।

प्रवीरबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के राक्षस।

प्रवृत [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न। अनाज।

प्रवृत्त [वि.] (सं.) १-किसी बात की ओर झुका हुआ। रत। तत्पर। लगा हुआ। २-किसी काम में लगा हुआ। ३-प्रस्तुत। उद्यत। ४-उत्पन्न।

प्रवृत्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मात्रावृत्त का नाम २-रंगभूमि का प्रवेशद्वार। ३-वह जो किसी को किसी कार्य में लगाये विशेषतः अनुचित काम में लगाये और उसकी सहायता करे। प्रवर्तक। एबेटर।

प्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहाव। प्रवाह। २-मन का किसी ओर को होने वाला झुकाव। रुझान। लगन। टेन्डेंन्सी। ३-सांसारिक विषयों या भोगों का ग्रहण। दुनियां के धँधों में लीन होना। ४-न्याय में एक प्रकार का यत्न। ५-हाथी का मद। ६-उत्पत्ति का आरम्भ। ७-यज्ञादि व्यापार।

प्रवृत्तिविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वाह्य पदार्थों से प्राप्त ज्ञान।

प्रवृद्ध [वि.] (सं.) १-पूरा बढ़ा हुआ। वृद्धि युक्त २-फैला हुआ। विस्तारित। ३-प्रौढ़।

प्रवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उन्नति। तरक्की।

प्रवेक [वि.] (सं.) उत्तम। प्रधान।

प्रवेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अनुमान या आशा जो किसी कार्य के संबंध में पहले से की जाय एन्टिसिपेशन।

प्रवेक्षित [वि.] (सं.) पहले से अटकल या अनुमान लगाया हुआ।

प्रवेट [संज्ञा पु.] (सं.) जौ। यव।

प्रवेणु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बकरा।

प्रवेणि, प्रवेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बालों का जूड़ा। केशविन्यास। २-हाथी की झूल। ३-जल प्रवाह या नदी की धार। ४-रंगीन ऊनी कपड़े का थान।

प्रवेता [संज्ञा पु.] (सं.) रथवान। सारथी।

प्रवेद [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी समझ।

प्रवेदन [संज्ञा पु.] (सं.) घोषणा। प्रकट करना।

प्रवेप, प्रवेपक, प्रवेपथु, प्रवेपन [संज्ञा पु.] (सं.) थर्राना। कंपकँपी।

प्रवेरित [वि.] (सं.) इधर-उधर पटका या फेंका हुआ।

प्रवेल [संज्ञा पु.] (सं.) सोना मूंग। पीली मूंग।

प्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीतर जाना। घुसना। २-गति। रसाई। पहुँच। ३-किसी विषय की जानकारी। ४-किसी क्षेत्र, वर्ग आदि में उसके विशिष्ट नियम पालन करते हुये पहुँचना या लिया जाना। एडमीशन।

प्रवेशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रवेश करने वाला। २-नाटक के अभिनय में वह स्थल जहां कोई अभिनय करने वाला दो अंकों के बीच की घटना का (जो दिखलाई न गई हो) परिचय पारस्परिक वार्तालाप द्वारा देता है।

प्रवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीतर जाना। घुसना पैठना। २-सिंहद्वार। ३-समायोजन।

प्रवेशनीय [वि.] (सं.) घुसने लायक।

प्रवेशपत्र [संज्ञा पु,] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी स्थान विशेष में जाने का अधिकार प्राप्त हो। पास या टिकिट।

प्रवेशशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी संस्था में सम्मिलित होने या पहले-पहल नाम लिखाने के समय दिया जाने वाला शुल्क। एडमीशन फी। २-किसी स्थान में प्रवेश करते समय दिया जाने वला शुल्क। एन्ट्रेन्स-फी।

प्रवेशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त होता है। पास। २-वह धन जो प्रवेश-शुल्क के रूप में दिया जाता है। ३-निम्न श्रेणी की वह अन्तिम परीक्षा जिसमें सफलता प्राप्त करने पर विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का या विश्वविद्यालय की परीक्षा देने का अधिकार मिलता है। एन्ट्रेंस।

प्रवेशित [वि.] (सं.) प्रवेश कराया हुआ।

प्रवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाहु का निचला भाग पहुँचा। २-हाथी का मसूड़ा। ३-हाथी की पीठ का वह मांसल भाग जहां लोग बैठते हैं। ४-बाहु।

प्रवेष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) दाहिना हाथ।

प्रवेष्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रवेश करने वाला। घुसने वाला।

प्रवेसना* [क्रि. अ.] (हिं.) प्रवेश करना। पैठना [क्रि. स.] (हिं.) घुसाना। पैठाना।

प्रव्यक्त [वि.] (सं.) साफ। स्पष्ट। व्यक्त।

प्रव्रजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जाना। विदेश गमन। माइग्रेशन २-घरबार छोड़कर संन्यास ग्रहण करना।

प्रव्रजित [वि.] (सं.) १-विदेश गया हुआ। २-त्यागी।

प्रव्रजिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामासी। २-गोरखमुंडी।

प्रव्रज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदेश गमन। २-संन्यास।

प्रव्रज्यावसित [संज्ञा पु.] (सं.) जो संन्यास ग्रहण करके उससे च्युत हो गया ही।

प्रव्रज्यावत [संज्ञा पु.] (सं.) नैपाली बौद्धों का एक संस्कार।

प्रव्राज [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत नीची जमीन। २-संन्यास।

प्रव्राजक [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यासी।

प्रव्राजन [संज्ञा पु.] (सं.) घर छुड़ा वन में भेजना

प्रव्राजित [वि.] (सं.) निर्वासित। देशनिकाला।

प्रशंस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्रशंसा'। [वि.] (सं.) प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक [वि.] (सं.) १-प्रशंसा करने वाला। २-खुशामदी।

प्रशंसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सराहना। २-प्रशंसा करना। तारीफ करना। ३-धन्यवाद। साधुवाद।

प्रशंसना* [क्रि. स.] (हिं.) प्रशंसा करना। तारीफ करना। सराहना।

प्रशंसनीय [वि.] (सं.) प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

प्रशंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुण-वर्णन। श्लाघा। स्तुति। तारीफ।

प्रशंसित [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रशंसिता] जिसकी प्रशंसा की गई हो।

प्रशंसोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा-अलंकार एक भेद। इसमें उपमेय की विशेष प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा व्यक्त की जाती है।

प्रशंस्य [वि.] (सं.) प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय

प्रशंत्या [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

प्रशम [संज्ञा पु.] (सं.) १-शमन। उपशम। शांति। २-निवृत्ति। नाश। ध्वंस। रतिदेव के पुत्र का नाम (भागवत)।

प्रशमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शांति। उपशम। २-नाशन। ३-मारण। वध। ४-प्रतिपादन। ५-वश में करना। ६-सत्राजित के भाई का नाम। ७-अस्त्रप्रहार। ८-आपसी झगड़े को समझौते से निबटाना। कम्पाउन्डिंग।

प्रशमित [वि.] (सं.) १-शांत। २-तृप्त। अघाया हुआ। ३-प्रायश्चित द्वारा शुद्ध किया हुआ।

प्रशम्य [वि.] (सं.) १-जिसका शमन या शान्ति हो सके। २-(झगड़ा या विवाद) जिसे परस्पर निपटा लेने का अधिकार दोनों पक्षों को हो। कम्पाउन्डेबिल।

प्रशस्त [वि.] (सं.) १-अच्छा। प्रशंसनीय। २-श्रेष्ठ। उत्तम। ३-बड़ा या लम्बा-चौड़ा। भव्य। ४-उचित। उपयुक्त।

प्रशस्तपाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन आचार्य का नाम, जिन्होंने वैशेषिकदर्शन पर पदार्थधर्मसंग्रह नामक एक ग्रन्थ लिखा था जो अबतक मिलता है।

प्रशस्ताद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

प्रशस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तुति, प्रशंसा। २-प्रशंसा-सूचक वाक्य जो किसी को पत्र लिखते समय पत्र के आदि में लिखा जाता है। सिरनामा। ३-प्राचीन काल के राजाओं का वह आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते

थे। ४-प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के आदि और अन्त की कुछ पंक्तियां जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, काल आदि का कुछ पता चलता है।

प्रशस्तिकृत [वि.] (सं.) प्रशंसा करने वाला।

प्रशस्य [वि.] (सं.) १-प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय। २-उत्तम। श्रेष्ठ।

प्रशांत, प्रशान्त [वि.] (सं.) १-स्थिर। अचंचल २-निश्चल वृत्तिवाला। शांत। [संज्ञा पु.] (सं.) एशिया और अमेरिका के बीच का सागर। *पैसिफिक ओसन*।

प्रशांतता, प्रशान्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निश्चलता। शान्ति।

प्रशांतबाधा, प्रशान्तबाधा [वि.] (सं.) जिसकी समस्त बाधायें दूर हो चुकी हों।

प्रशांतात्मा, प्रशान्तात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-शान्तचित्त।

प्रशांति, प्रशान्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पूर्ण-शान्ति। प्रशांत या निश्चल होने का भाव। २-वह पूर्ण शांति जो किसी देश या समाज में हो, और किसी प्रकार के अन्दोलन उपद्रव आदि का अभाव हो। *ट्रैंक्विलिटी*।

प्रशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं) शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा।

प्रशाखिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी टहनी।

प्रशासक [संज्ञा पु.] (सं) राज्य का प्रशासन या प्रबन्ध करने वाला व्यक्ति। ऐडमिनिस्ट्रेटर।

प्रशासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिष्य आदि को दी जाने वाली कर्तव्य की शिक्षा। २-राज्य के परिचालन का प्रबन्ध या व्यवस्था। *ऐडमिनिस्ट्रेशन*।

प्रशासन कार्यक्षमता-किसी राज्य के परिचालन का प्रबन्ध या व्यवस्था-विषयक कार्य करने की शक्ति या सामर्थ्य। *एफिसियेंसी ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन*। *प्रशासन कार्यपटुता*-देखो 'प्रशासन कार्यक्षमता'।

प्रशासनिक [वि.] (सं.) प्रशासन या राज्य प्रबंध सम्बन्धी। *ऐडमिनिस्ट्रेटिव*।

प्रशासनीय [वि.] (सं.) १-प्रशासन करने के योग्य। *ऐडमिनिस्ट्रेबिल*। २-प्रशासन-संबंधी राज्यप्रबन्ध-सम्बन्धी*एडमिनिस्ट्रेटिव*। (विधान के अनुसार)।

प्रशासनीयकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी का कार्य। *ऐडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन*।

प्रशासित [वि.] (सं.) १-जिसका अच्छा शासन किया गया हो। २-शिक्षित।

प्रशासिता [संज्ञा पु.] (सं.) शासनकर्त्ता। शासक

प्रशास्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-शासनकर्त्ता। २-मित्र। ३-ऋत्विक। ४-होता का सहकारी।

प्रशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशास्ता का कर्म। २-प्रशास्ता के सोमपान करने का पात्र। ३-एक याग का नाम।

प्रशिक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पेशे अथवा कलाकौशल के सम्बन्ध में दी जाने वाली क्रियात्मक शिक्षा। *ट्रेनिंग*।

प्रशिक्षण-केन्द्र, प्रशिक्षण-केन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) आसपास के देहात या नगरों के बीच में पड़ने वाला वह स्थान जहाँ किसी पेशे या कला-कौशल विषयक शिक्षा क्रियात्मकरूप से दी जाती है। ऐसे केन्द्र प्रायः अस्थायीरूप से लगाये जाते हैं। *ट्रेनिंग सेन्टर*।

प्रशिक्षण-महाविद्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह महाविद्यालय जिसमें ऊँची कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान विषयक सिद्धांत तथा शिक्षा देने की प्रणाली सिखलाई जाती है। *नार्मल-कॉलेज*।

प्रशिक्षण-विद्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह विद्यालय जिसमें देशी भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षण-विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। *नॉर्मल-स्कूल*।

प्रशिथिल [वि.] (सं.) बहुत थका हुआ। अति शिथिल।

प्रशिष्ट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनुशासन। शिक्षा उपदेश। २-आदेश। आज्ञा।

प्रशिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिष्य का शिष्य। २-परम्परागत शिष्य।

प्रशिष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आज्ञा। अनुशासन।

प्रशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वच्छता। पवित्रता।

प्रशुश्रुक् [संज्ञा पु.] (सं.) मरुदेश के एक राजा का नाम जिसका उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में मिलता है।

प्रशोचन [संज्ञा पु.] (सं) वैद्यक की एक क्रिया का नाम।

प्रशोषण [संज्ञा पु.] (सं.) सोखना। सुखाना।

प्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह बात जो कुछ जाँचने अथवा जानने के निमित्त कही जाय और जिसका कुछ उत्तर हो। जिज्ञासा। सवाल। २-पूछने की बात। ३-एक उपनिषद्। ४-विचारणीय विषय। *इश्यू*।

प्रश्नदूती [संज्ञा पु.] (सं.) प्रहेलिका। पहेली।

प्रश्नपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिस पर परीक्षा के लिए विद्यार्थियों से किये जाने वाले प्रश्न लिखे रहते हैं।

प्रश्नव्याकरण [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक शास्त्र का नाम।

प्रश्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलकुंभी। एक ऋषि का नाम।

प्रश्नोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रश्न और उत्तर। सवाल-जवाब। २-पूछताछ। ३-वह काव्यालकार जिसमे प्रश्न और उत्तर रहते हैं।

प्रश्नोत्तरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी विषय के प्रश्नों का संग्रह।

प्रश्रय [संज्ञा पु] (सं) १-आश्रय स्थान। २-आधार। सहारा। टेक। ३-विनय। नम्रता। शिष्टता। ४-एक देवता का नाम। (महाभारत)।

प्रश्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) सौजन्य। शिष्टता। नम्रता।

प्रश्रयी [वि.] (सं.) १-शिष्ट। सुजन। मानुष। २-शांत। नम्र। विनीत।

प्रश्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जिसका उल्लेख रामायण में मिलता है।

प्रश्रित [वि.] (सं.) विनीत। नम्र।

प्रश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्रतिज्ञा या वचन जो किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए दिया जाय।

प्रश्रुति-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो किसी से धन उधार लेने पर और उसके प्रमाणस्वरूप तथा मांगने पर चुका देने के वचन स्वरूप लिखा जाता है। *प्रोनोट*।

प्रश्लिष्ट [वि.] (सं.) १-मिला।जुला। २-प्राप्त।

प्रश्लेप [संज्ञा पु.] (सं.) १ घनिष्ट सम्बन्ध। २-संधि में स्वरों का परस्पर मिल जाना।

प्रश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है। बाहर आती हुई सांस। वायु के नथने से बाहर निकलने की क्रिया।

प्रष्टव्य [वि.] (सं.) १-पूछने योग्य। २-पूछने का। जो पूछने का हो।

प्रष्टा [वि.] (सं.) प्रश्न करनें वाला। पूछने वाला।

प्रष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन बैलों वाली गाड़ी में का वह बैल जो आगे चलता है। २-दाहिने ओर का घोड़ा या बैल। ३-तिपाई। [वि.] पास का। पार्श्वस्थ।

प्रष्ठ [वि.] (सं.) अग्रगामी। अगुआ। [संज्ञा पु.] वह जवान बैल जिसे हल जोतने का अभ्यास कराया जाता है।

प्रष्ठौही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहली बार गाभिन होने वाली गाय।

प्रसंख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जोड़। मीजान। टोटल। २-चिंता।

प्रसंख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्यज्ञान। २-आत्मानुसंधान। ध्यान।

प्रसंग, प्रसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल। लगाव। २-बातों का परस्पर सम्बन्ध। पूर्वापर सम्बन्ध। *कांटेक्सट*। ३-व्याप्तिरूप संबंध। ४-स्त्री-पुरुष का संयोग। ५-लगन। अनुरक्ति। ६-बात। वार्ता। ७-उपयुक्त संयोग। अवसर। मौका। ८-कारण। हेतु। ९-विषयानुक्रम। प्रकरण। प्रस्ताव। १०-विस्तार। फैलाव।

प्रसंगविध्वंस, प्रसङ्गविध्वंस [संज्ञा पु.] (सं.) मानमोचन के ६ उपायों में से एक। भूमि कर भय दिखाकर मानिनी के चित्त में भय उत्पन्न कर उसका मान छुड़ाना।

प्रसंगविभ्रंश, प्रसङ्गविभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसंगविध्वंस।

प्रसंगसम, प्रसङ्गसम [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में जाति के अन्तर्गत एक प्रकार का प्रतिषेध जो प्रतिवादी की ओर से किया जाता है।

प्रसंगी, प्रसङ्गी [वि.] (हिं.) १-प्रसंगयुक्त। २-अनुरक्त।

प्रसंघ, प्रसङ्घ [वि.] (सं.) श्रेणीबद्ध।

प्रसंधान, प्रसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) सन्धि। योग।

प्रसंसना* [क्रि. स.] (हिं.) प्रशंसा करना।

प्रसक्त [वि.] (सं.) १-सम्बन्धयुक्त। लगा-हुआ। २-जो बराबर लगा रहे। अटका हुआ। ३-अत्यन्त आसक्त। सम्बद्ध। ४-प्रस्तावित।

प्रसक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-प्रसंग। संपर्क। २-अनुमिति। ३-आपत्ति। ४-व्याप्ति।

प्रसज्यप्रतिषेध [संज्ञा पु.] (सं.) निषेध विशेष जिसमें विधि की अप्रधानता तथा निषेध की अप्रधानता होती है।

प्रसत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसन्नता। २-निर्मलता। शुद्धि।

प्रसत्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राप्ति। प्रतिपत्ति।

प्रसता [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रजापति। २-धर्म।

प्रसन्न [वि.] (सं.) १-खुश। आह्लादित। हर्षित। २-संतुष्ट। तुष्ट। ३-अनुकूल। ४-स्वच्छ। निर्मल।
[संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।
[वि.] (सं.) पसंद।

प्रसन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संतोष। तुष्टि। २-हर्ष। आनंद। ३-अनुग्रह। कृपा। ४-स्वच्छता। निर्मलता। शुद्धि।

प्रसन्नमुख, प्रसन्नवदन [वि.] (सं.) जिसका मुख प्रसन्न हो।

प्रसन्नांध, प्रसन्नान्ध [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े के अन्धा होने का एक रोग।

प्रसन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आनंदप्रद। २-वह मद्य जो पहली बार खैंची गई हो।

प्रसन्नात्मा [वि.] (सं.) जो सदा प्रसन्न रहे।
[संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

प्रसन्नित* [वि.] (सं.) हर्षित। आनन्दित।

प्रसन्नेरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मदिरा

प्रसभ [संज्ञा पु.] (सं.) बल। प्रचंडता। वेग।

प्रसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगे बढ़ना। २-फैलना। फैलाव। ३-दृष्टि का फैलाव। ४-वेग। तेजी। ५-समूह। राशि। ६-व्याप्ति। ७-प्रभाव। प्रकर्ष। ८-युद्ध। ९-एक प्रकार का अस्त्र जिसे नाराच भी कहते हैं। १०-साहस। हिम्मत। ११-बाढ़। बढ़िया। १२-भूमि के ऊपर फैलने वाला एक प्रकार का पौधा। १३-वातपित्तादि प्रकृतियों का संचार या घटाव-चढ़ाव। १४-न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु को न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश लिखा होता है। प्रोसेस।

प्रसरण [संज्ञा पु.](सं.) १-आगे बढ़ना या खिसकना। २-फैलना। बढ़ना। ३-विस्तार। ४-व्याप्ति। ५-उत्पत्ति। ६-अपने काम में प्रवृत्त होना। ७-लूटमार करने के निमित्त सेना का इधर-उधर फैलना।

प्रसरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसरण। फैलाव।

प्रसरणीय [वि.](सं.) १-आगे बढ़ने या खिसकने योग्य। २-फैलने या बढ़ने योग्य।

प्रसर-पाल [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो न्यायालय से निकलने वाले प्रसर लोगों के पास पहुँचता हो। प्रोसेस-सर्वर।

प्रसर-शुल्क [संज्ञा पु.](सं.) वह शुल्क जो न्यायालय से कोई प्रसर निकलवाने के निमित्त देना पड़ता है। प्रोसेस-फी।

प्रसरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारणी नामक लता।

प्रसरित [वि.] (सं.) १-फैला हुआ। २-विस्तृत। ३-आगे को बढ़ा हुआ।

प्रसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु को ऊपर से छोड़ना। गिराना। २-बरसाना। वर्षण।

प्रसर्जन [संज्ञा पु.](सं.) गिराना। डालना। निक्षेप

प्रसर्प [संज्ञा पु.](सं.) १-गमन। २-एक सामगान विशेष।

प्रसर्पक [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रसरण। गमन। जाना २-खिसकना। ३-घुसना। पैठना। ४-रक्षा-स्थान जहाँ शरण ली जा सके। ५-गति। ६-सेना का चारों ओर फैलना।

प्रसर्पी [वि.](सं.) १-रेंगने वाला। २-गतिशील। ३-यज्ञीय सभा में जाने वाला।

प्रसल [संज्ञा पु.] (सं.) हेमंतऋतु।

प्रसव [संज्ञा पु.](सं.) १-बच्चा जनने की क्रिया। प्रसूति। जनन। २-जन्म। उत्पत्ति। ३-बच्चा। सन्तान।

प्रसवक [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी का पेड़।

प्रसवन [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चा जनना।

प्रसवना* [क्रि. स.] (हिं.) (बच्चा) जनना या उत्पन्न करना। गर्भ से सन्तान को जन्म देना

प्रसव-वेदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पीड़ा जो बच्चा जनने के समय होती है।

प्रसवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्म देने वाली। प्रसव करने वाली।

प्रसविता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रसवित्री.] उत्पन्न करने वाला। जन्म देने वाला।
[संज्ञा पु.] जनक। पिता।

प्रसवित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माता। [वि.] जन्म देने वाली।

प्रसविनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] उत्पन्न करने वाली। जनने वाली।

प्रसवी [वि.](सं.) [स्त्री. प्रसविनी] १-उत्पादक। उत्पन्न करने वाला। २-प्रसवशील।

प्रसव्य [संज्ञा पु.] (सं.) बांई ओर से परिक्रमा करना। प्रदक्षिण का उलटा। [वि.] १-प्रतिकूल। २-प्रसवनीय।

प्रसह [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिकारी पक्षी। जैसे बाज, चील आदि। २-अमलतास का पेड़।

प्रसहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंसक पशु। २-आलिंगन। ३-सहनशीलता। क्षमा। सहन।
[वि.] सहनशील।

प्रसहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटाई।

प्रसह्य [अव्य.] (सं.) १-बरजोरी। जबरदस्ती। २-बहुतायत से।

प्रसह्यचौर [संज्ञा पु.] (सं.) जबरदस्ती माल छीनने वाला।

प्रसह्यहरण [संज्ञा पु.] (सं.) जबरदस्ती हर ले जाना।

प्रसातिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटे दाने का चावल।

प्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुग्रह। कृपा। २-प्रसन्नता। ३-निर्मलता। सफाई। ४-स्वास्थ्य। ५-वह वस्तु जो देवता को अर्पण की जाय। ६-कोई भी पदार्थ जो तुष्टि साधन के लिए भेंट किया जाय। ७-देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ८-वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें। ९-काव्य का वह गुण जिससे भाषा स्वच्छ और साधु होती और सुनते ही समझ में आजाती है। १०-शब्दालङ्कार के अंतर्गत कोमलावृत्ति। ११-धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र। * +१२-देखो 'प्रासाद'। १३-भोजन। प्रसाद पाना-भोजन खाना।

प्रसादक [वि.] (सं.) १-अनुग्रहकारक। २-निर्मल। ३-प्रसन्न करने वाला। ४-प्रीतिकर। [संज्ञा पु.] १-प्रसाद। २-देवधन। ३-बथुए का साग।

प्रसाद-दान [संज्ञा पु.] (सं.) वह दान जो प्रसन्न होकर या प्रेम-भाव से किसी को दिया जाय। एफेक्शनेट गिफ्ट।

प्रसादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न। २-किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना। प्रॉपिसिएशन।

प्रसादना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चाकरी। सेवा। परिचर्या। २-पवित्रता। * [क्रि. स.] (हिं.) प्रसन्न करना।

प्रसादित [वि.] (सं.) १-संतुष्ट किया हुआ। २-परिचर्या किया हुआ।

प्रसादिनीय [वि.] (सं.) प्रसन्न किये जाने के योग्य।

प्रसादी [वि.] (सं.) १-प्रसन्न करने वाला। २-प्रीति करने वाला। ३-शांत। ४-अनुग्रह करने वाला। ५-निर्मल। स्वच्छ। [संज्ञा स्त्री.] १-वह पदार्थ जो देवताओं को चढ़ाया जाय। २-नैवेद्य। वह पदार्थ जो बड़े या पूज्य लोगों को दें। ३-बलि चढ़ाये हुए पशु का मांस।

प्रसाधक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रसाधिका] १-संपादन करने वाला। वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे। संपादक। २-सजावट का काम करने वाला। ३-राजाओं आदि को वस्त्रा-भूषण पहनाने वाला नौकर।

प्रसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शृङ्गार करना। सजाना। २-शृङ्गार की सामग्री। सजावट का सामान। ३-कार्य को पूरा करना। सम्पादन। कंघी से बाल झाड़ना।

प्रसाधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंघी।

प्रसाधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दासी जो अपनी स्वामिनी के शृङ्गार के साधनों की देखरेख रखा करे। और उसको वस्त्राभूषण पहनाकर उसका शृङ्गार करे।

प्रसाधित [वि.] (सं.) १-सँवारा हुआ। सजाया हुआ। २-सुसंपादित।

प्रसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-विस्तार। फैलाव। २-संचार। ३-गमन। ४-किसी बात को चारों ओर फैलाना या सबको सुनाना।

प्रसारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फैलाना। २-बढ़ाना ३-किसी विषय अथवा चर्चा का प्रचार करना ४-रेडियो के द्वारा संगीत, भाषण आदि सुनाने के निमित्त चारों ओर फैलाना। ब्रॉडकास्टिङ्ग।

प्रसारणीय [वि.] (सं.) प्रसारण योग्य।

प्रसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंधप्रसारिणी लता। २-देवधान्य। ३-सेना का लूटमार के लिए इधर-उधर फैलना। ४-लजालु। लाजवंती।

प्रसारित [वि.] (सं.) १-फैलाया हुआ। २-(सङ्गीत भाषण आदि की ध्वनि का रेडियो द्वारा) प्रसारण किया हुआ। ब्राडकास्ट।

प्रसारी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रसारिणी] फैलाने वाला

प्रसार्य्य [वि.] (सं.) १-फैलाने योग्य। २-(सङ्गीत भाषण आदि का रेडियो द्वारा) प्रसारण करने योग्य।

प्रसाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराजय। हार। २-आत्मशासन।

प्रसित [संज्ञा पु.] (सं.) पीब। मवाद।

प्रसिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रस्सी। २-रश्मि। ३-ज्वाला। लपट।

प्रसिद्ध [वि.] (सं.) १-विख्यात। मशहूर। जिसे सब लोग जानते हों। २-भूषित। अलंकृत।

प्रसिद्धक [संज्ञा पु.] (सं.) एक विदेहवंशीय राजा का नाम।

प्रसिद्धता [संज्ञा पु.] (सं.) ख्याति।

प्रसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसिद्ध होने की क्रिया या भाव। ख्याति। शोहरत। २-बनाव। सिंगार।

प्रसुत [वि.] (सं.) दबाकर निचोड़ा हुआ।

प्रसुप्त [वि.] (सं.) १-खूब सोया हुआ। प्रगाढ़ निद्रित। २-रुका थमा या दबा हुआ।

प्रसुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रगाढ़ निद्रा। नींद।

प्रसू [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जनने वाली। उत्पन्न करने वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माता। जननी। २-घोड़ी। ३-फैलने वाली लता। ४-नरम घास। ५-कुश। ६-केला।

प्रसूका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असगंध।

प्रसूत [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रसूता] १-उत्पन्न। पैदा २-निकला हुआ। ३-उत्पादक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुसुम। फूल। २-चाक्षुसमन्वंतर के एक देवगण का नाम। ३-प्रसव के पीछे होने वाला एक रोग।

+[संज्ञा पु.] (हिं.) एक रोग विशेष जिसमें रोगी के पैर से पसीना छूटा करता है।

प्रसूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बच्चा जनने वाली स्त्री। जच्चा। २-घोड़ी।

प्रसूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसव। जनन। २-उत्पत्ति। उद्भव। ३-कारण। प्रकृति। ४-उत्पत्ति-स्थान। ५-संतति। ६-वह स्त्री जिसने प्रसव किया हो। प्रसूता।

प्रसूति सहायता या सहाय-प्रसवकाल में दी जाने वाली सहायता।

प्रसूतिका [संज्ञास्त्री.] (सं.) जिस स्त्री के बच्चा हुआ हो। प्रसूता।

प्रसून [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल। पुष्प। २-कली। ३-फल।

[वि.] (सं.) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।

प्रसूनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल। २-मुकुल। कली।

प्रसूनवाण, प्रसूनवाण [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव

प्रसृत [वि.] (सं.) १-फैला हुआ। आगे बढ़ा हुआ। २-विनीत। ३-भेजा हुआ। प्रेरित। ४-लगा हुआ। तत्पर। ५-प्रचलित। ६-इन्द्रियलोलुप।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-गहरी की गई हथेली। २-हथेली भर का मान।

प्रसृतज [संज्ञा पु.] (सं.) व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र।

प्रसृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फैलाव। विस्तार। २-संतान। संतति। ३-एक मान जो सोलह तोले का होता है। ४-गहरी की हुई हथेली।

प्रसृष्ट [वि.] (सं.) १-उत्पन्न। २-व्यक्त।

प्रसृष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्ध का एक दाँव।

प्रसेक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सींचना। सेचन। २-निचोड़। ३-छिड़काव। ४-पसेव। ५-एक असाध्य रोग। ६-मुँह से पानी छूटने [illegible] नाक से श्लेष्मा गिरना।

प्रसेद* [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। प्रस्वेद।

प्रसेन, प्रसेनजित् [संज्ञा पु.] (सं.) भागवत के अनुसार सत्राजित के एक भाई का नाम।

प्रसेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बीन की तूँबी। २-(सूत का बना) थैला। ३-कुप्पा। कुप्पी।

प्रसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत की थैली। २-बीन की तूँबी। ३-थैली बनाने वाला [illegible]

प्रस्कंदन, प्रस्कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-[illegible] झपट। २-विरेचन। जुलाब। ३-[illegible]। ४-शिव। महादेव।

प्रस्कंदिका, प्रस्कन्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) [illegible] हणी नामक रोग।

प्रस्कुंद, प्रस्कुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) [illegible] वेदी।

प्रस्कन्न [वि.] (सं.) १-(समाज से) पतित। २-गिरा हुआ। [संज्ञा पु.] घोड़े को होने वाला एक रोग विशेष।

प्रस्खलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पतन। २-लड़खड़ाना।

प्रस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्थर। २-फूलों और पत्तों की सेज। ३-सेज। शय्या। ४-चौरस जगह। समतल। ५-चमड़े की थैली। ६-प्रस्तार। ७-डाभ या कुश का पूला। ८-एक ताल का नाम।

प्रस्तर-कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कला या विद्या जिसके द्वारा पत्थर को खोदने, गढ़ने और उस पर ओप आदि लाना बताया जाता है।

प्रस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिछाना। फैलाना। २-बिछौना। सेज। शय्या।

प्रस्तरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद दूब। २-गोजिह्वा।

प्रस्तरभेद [संज्ञा पु.] (सं.) पाखानभेद।

प्रस्तर-मुद्रण [संज्ञा पु.] (सं.) मुद्रण अथवा छापे की वह प्रक्रिया जिसमें छापे जाने वाले लेख आदि एक विशेष प्रकार के कागज पर [illegible] के लिए काम में लाई जाने वाली विशेष प्रकार की स्याही से लिखकर पहले एक [illegible] के पत्थर पर उतारते हैं और फिर छापते हैं। लीथोग्राफी।

प्रस्तर-युग [संज्ञा पु.] (सं.) वह युग जिस समय सभ्यता का विकाश नहीं हुआ था उस समय शस्त्र औजार आदि केवल पत्थर के ही बने थे। पुरातत्व के अनुसार किसी देश अथवा जाति के इतिहास में उस काल को प्रस्तरयुग कहते हैं।

प्रस्तरोपल [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकांतमणि।

प्रस्तव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तुति। प्रशंसा। २-प्रभाव।

प्रस्तान्न [संज्ञा पु.] (सं.) पुराना चावल।

प्रस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) १-विस्तार। फैलाव। २-फूलों और पत्तों की सेज या शय्या। ३-सेज। शय्या। ४-आधिक्य। वृद्धि। ५-परत। तह। चौरस जमीन। समतल। ६-सीढ़ी। ७-घास का जङ्गल। ८-छंदशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से प्रथम। इसमें छंदों के भेद की संख्या और उनके रूपों का वर्णन होता है। ९-वस्तुओं, अंकों आदि के पंक्तिबद्ध समूहों या वर्गों के क्रम या विन्यास में संगत तथा संभव परिवर्त्तन अथवा हेर-फेर करना। परम्यूटेशन।

प्रस्तारपंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक छंद जिसके पहले और दूसरे चरणों में बारह अक्षर तथा तीसरे और चौथे में आठ-आठ अक्षर होते हैं।

प्रस्तारर्यमर्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नेत्र-रोग।

प्रस्ताव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्तुत प्रसंग या छिड़ी हुई चर्चा। २-पुस्तक की भूमिका। प्रस्तावना। ३-किसी सभा या समाज में विचार अथवा स्वीकृति के लिए उपस्थित की जाने वाली बात। रेज्योल्यूशन। ४-विवाद आदि या यों ही किसी से इस प्रकार कहना कि आप अमुक वस्तु अथवा धन लेकर झगड़ा निपटा लें या अमुक कार्य करें। ऑफर।

प्रस्तावक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी सभा या समाज के सम्मुख प्रस्ताव उपस्थित करने वाला व्यक्ति। प्रोपोजर। २-वह जो किसी के सम्मुख यह मंतव्य प्रकट करे कि आप अमुक वस्तु अथवा धन लेकर अमुक कार्य करें।

प्रस्तावन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्ताव करने की क्रिया या भाव।

प्रस्तावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आरम्भ। २-किसी विषय या कथा के आरम्भ करने से पूर्व का वक्तव्य। भूमिका। प्राक्कथन। उपोद्घात।

प्रस्तावित [वि.] (सं.) जिसके लिए या जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्तावित्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसके सम्मुख कोई वस्तु अथवा धन भेंट करने का प्रस्ताव भेंट करने वाले की ओर से रखा जाय। ऑफरी।

प्रस्ताव्य [वि.] (सं.) प्रस्ताव करने या सभा, समाज आदि के सम्मुख उपस्थित करने योग्य।

प्रस्तिर [संज्ञा पु.] (सं.) घास, पत्ते आदि का बिछौना।

प्रस्तुत [वि.] (सं.) १-जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २-जो कहा गया हो। कथित। ३-जिसकी चर्चा छेड़ी गई हो। ४-प्रासंगिक। ५-उद्यत। तैयार। ६-निष्पन्न। संपादित। ७-उपयुक्त।

प्रस्तुतालंकार, प्रस्तुतालङ्कार [संज्ञा पु.] (सं.) एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत पदार्थ के संबंध में कुछ कहकर उसका अभिप्राय अन्य प्रस्तुत पदार्थ पर घटाया जाता है।

प्रस्तुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रशंसा। स्मृति। २-प्रस्तावना। ३-तैयारी। निष्पत्ति। ४-उपस्थिति।

प्रस्तोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का सामगान। २-संजय के पुत्र का नाम।

प्रस्तोता [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्ताव करने वाला। प्रस्तावक।

प्रस्तोभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

प्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौरस या समतल मैदान २-पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि। अधित्यका टेबुल लैंड। ३-प्राचीन कालीन का एक तौल। ४-पहाड़ों का ऊँचा किनारा। ५-विस्तार। ६-वह भाग जो ऊपर बहुत उठा हो।

प्रस्थकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) मरुवा।

प्रस्थपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरुवे का पौधा। २-छोटे पत्तों की तुलसी। ३-जंभीरी नीबू।

प्रस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक देश जो समय सुशर्मा नामक राजा के अधिकार में था।

प्रस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी स्थान से दूसरे स्थान को जाना। रवानगी। गमन। *डिपार्चर*। २-सेना या चढ़ाई करने वाली सेना का कूँच ३-मुहूर्त्त पर यात्रा न करने की दशा में अपना कोई वस्त्र यात्रा की दिशा में महूर्त्त साधन के लिए रखना। ४-मार्ग। ५-उपदेश की पद्धति या उपाय।

प्रस्थानी [वि.] (हिं.) जाने वाला। प्रस्थान करने वाला।

प्रस्थानीय [वि.] (सं.) प्रस्थान करने योग्य।

प्रस्थापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्थान कराना। भेजना। २-प्रेरण। ३-स्थापन।

प्रस्थापना [संज्ञा पु.](सं) १-प्रस्तावन। २-विवाह-प्रस्ताव।

प्रस्थापित [वि.] (सं.) १-भलीभांति स्थापित। २-भेजा हुआ। प्रेरित।

प्रस्थाप्य [वि.] (सं.) प्रस्थापन योग्य।

प्रस्थायी [वि.] (सं.) जो भविष्य में प्रस्थान करने वाला हो।

प्रस्थिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आमड़ा। २-पुदीना।

प्रस्थित [वि.] (सं.) १-जो जाने को तैयार हो। २-ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ३-दृढ़। जो गया हो। गत।

प्रस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रस्थान। यात्रा। २-चढ़ाई। ३-अभियान।

प्रस्न [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान पात्र। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रश्न'।

प्रस्निग्ध [वि.] (सं.) तेल लगाया हुआ।

प्रस्नुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं) पोते की पत्नी। नतोहू।

प्रस्पंदन, प्रस्पन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) धड़कन।

प्रस्फुट [वि.] (सं.) १-विकसित। खिला हुआ। २-प्रकट। स्पष्ट। साफ। ज्ञात।

प्रस्फुरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलना। २-प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का सहसा खुलना या फूटना कि उसके भीतर के पदार्थ वेग से बाहर निकल पड़ें। २-विकसित होना या करना। खिलना या खिलाना। ३-पीटना। ठोंकना। ४-(अन्न आदि) फटकना। ५-सूप।

प्रस्रंस [संज्ञा पु.] (सं.) अकाल ही में गर्भ का गिरना।

प्रस्रंसी [वि.](सं.) [स्त्री प्रस्रंसिनी] १-पतनशील। गिरने वाला। २-अकाल ही में या कच्चा गिरने वाला (गर्भ)।

प्रस्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उमड़कर बाहर निकलना। २-बहाव। धार। ३-स्तन में से दूध का झरना।

प्रस्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी स्थान से निकल-निकल कर बहता हुआ पानी। सोता। २-झरना। प्रपात। निर्झर। ३-जल आदि द्रव पदार्थों का टपक-टपक कर या गिर-गिर कर बहना। ४-दूध। ५-पसीना। ६-माल्यवान् पर्वत।

प्रस्रवणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीस प्रकार की योनियों में से एक जिसमें से पानी सा निकलता रहता है (वैद्यक)।

प्रस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल आदि का टपकना या रसना। २-पेशाब। ३-पेशाब। मूत्र। ४-प्रस्रवण।

प्रस्रुत [वि.] (सं.) उमड़ा हुआ। टपका हुआ।

प्रस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) जोर का कोलाहल या शोरगुल।

प्रस्वाद [वि.] (सं.) अच्छा स्वाद देने वाला।

प्रस्वाप, प्रस्वापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वस्तु जिसके व्यवहार से निद्रा आवे। २-वह प्राचीन अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रुपक्ष को निद्रा आजाती थी।

प्रस्वापिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्णचन्द्र की एक पत्नी का नाम (हरिवंश)।

प्रस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना।

प्रस्वेदित [वि.] (सं.) १-पसीने से तराबोर हुआ-हुआ। २-गर्म।

प्रहंता, प्रहन्ता [वि.] (सं.) मारने वाला।

प्रहत [वि.] (सं.) १-हत। मारा हुआ। २-पीटा हुआ। ३-फैलाया हुआ। प्रसारित। [संज्ञा पु.] १-पासे आदि फेंकना। २-ठोकर। प्रहार।

प्रहनेमि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

प्रहर [संज्ञा पु.] (सं.) दिन-रात का आठवाँ

भाग। तीन घंटे का समय। पहर।

प्रहरक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पहरे वाला आदमी जो घंटा बजाता हो। घड़ियाली।

प्रहरकुटवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अर्कपुष्पी।

प्रहरखना* [क्रि. अ.] (हिं.) हर्षित होना। प्रसन्न होना।

प्रहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरण करना। हरना। छीनना। २-अस्त्र। ३-युद्ध। ४-प्रहार। वार। ५-मारना या आघात पहुँचाना। ६-फेंकना। हटाना। ७-पर्दे वाली डोली या गाड़ी। ८-मृदङ्ग के बारह प्रबंधों में से एक।

प्रहरणकलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौदह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। इसके प्रत्येक चरण में दो नगण एक भगण, एक नगण और अन्त में लघु गुरु होते हैं।

प्रहरणीय [वि.] (सं.) हरण करने योग्य।

प्रहरी [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहरे वाला। २-पहर-पहर पर घंटा बजाने वाला। घड़ियाली

प्रहर्ता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रहर्त्री] १-प्रहार करने वाला। २-योद्धा।

प्रहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) हर्ष। आनन्द।

प्रहर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धग्रह। २-आनंद। ३-एक अलंकार जिसमें अनायास और बिना प्रयत्न किये किसी के अभीष्ट फल की सिद्धि का उल्लेख होता है।
[वि.] हर्ष देने वाला।

प्रहर्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हलदी। २-एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें तेरह अक्षर होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, नगण, जगण, रगण और अन्त में गुरु होता है। तीसरे तथा दसवें वर्ण पर यति लगती है।

प्रहर्षित [वि.] (सं.) आनन्दित। हर्षित। खुश।

प्रहसंती, प्रहसन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जूही। २-वासंती। ३-अच्छी अँगेठी।

प्रहस [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

प्रहसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हँसी। दिल्लगी। २-एक प्रकार का रूपक जो हास्य रस प्रधान होता है।

प्रहसित [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।
[वि.] १-हँसी से भरा हुआ। २-जिसकी हँसी उड़ाई जाय।

प्रहस्त [संज्ञा पु] (सं.) १-चपत। थप्पड़। २-रावण के एक सेनापति का नाम।

प्रहाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्यागना। छोड़ना। २-चित्त की एकाग्रता। ध्यान।

प्रहाणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परित्याग। २-हानि। घाटा। ३-नाश।

प्रहान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रहाण'।

प्रहानि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'प्रहाणि'।

प्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) चोट। वार। आघात। मार।

प्रहारक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रहार करने या मारने वाला।

प्रहारण [संज्ञा पु.] (सं.) मनचाहा दान।

प्रहारना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मारना। आघात करना। २-मारने के लिए अस्त्र आदि चलाना

प्रहारवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांसरोहिणीलता

प्रहारित* [वि.] (हिं.) जिस पर प्रहार हुआ हो।

प्रहारी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रहारिणी] १-प्रहार करने वाला। २-मारने वाला। ३-नष्ट करने वाला।

प्रहारुक [वि.] (सं.) बलपूर्वक हरण करने वाला

प्रहार्य [वि.] (सं.) १-प्रहार करने योग्य। २-हरण करने योग्य।

प्रहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-अट्टहास। जोर की हँसी २-नट। ३-शिव। ३-सोमतीर्थ का नाम। ४-कार्तिकेय का एक अनुचर।

प्रहासी [वि.] (सं.) १-खूब हँसाने वाला। २-खूब हँसने वाला।

प्रहित [वि.] (सं.) १-प्रेरित। २-फेंक हुआ। ३-फटका हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का साग। २-सूप।

प्रहीण [वि.] (सं.) परित्यक्त।

प्रहुत [संज्ञा पु.] (सं.) बलिवैश्वदेव। भूतयज्ञ।

प्रहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आहुति।

प्रहृत [वि.] (सं.) १-फेंका हुआ। चलाया हुआ। २-पसारा हुआ। फैलाया हुआ। ३-मारा हुआ। प्रताड़ित। ४-पीटा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोट। आघात। २-एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

प्रहृष्ट [वि.] (सं.) अत्यन्त प्रसन्न।

प्रहेणक [संज्ञा पु.] (सं.) लपसी। प्रहेलक।

प्रहेति [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस जो हेति का भाई था (रामायण)।

प्रहेलक [संज्ञा पु.] (सं.) लपसी। प्रहेणक।

प्रहेलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहेली।

प्रह्लत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रीति।

प्रह्राद [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'प्रह्लाद'। २-एक नाग का नाम।

प्रह्रास [संज्ञा पु.] (सं.) क्षय। नाश।

प्रह्लाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-आनन्द। आमोद। २-हिरण्यकश्यप के पुत्र जो विष्णु के परम भक्त थे।

प्रह्लादक [वि.] (सं.) संतोषजनक।

प्रह्लादन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसन्न करना।

प्रह्लादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल लजवंती।

प्रह्व [वि.] (सं.) १-नम्रता से झुका हुआ। २-विनीत। विनम्र। ३-आसक्त। अनुरक्त।

प्रह्वण [संज्ञा पु.] (सं.) बुलाना।

प्रह्लीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहेली।

प्रांगण, प्राङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँ
सहन। २-एक प्रकार का ढोल।

प्रांगन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रांगण'।

प्रांजन, प्राञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंजन
रंग। २-एक प्रकार का रंग या लेप।

प्रांजल, प्राञ्जल [वि.] (सं.) १-सरल। सीधा
२-सच्चा। ३-समान। बराबर। ४-स्वच्छ।
शुद्ध (भाषा)।

प्रांत, प्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्त। सीमा
२-सिरा। छोर। किनारा। ३-दिशा। ओर।
तरफ। ४-खंड। प्रदेश। ५-किसी देश
का कोई शासनिक विभाग। ६-एक ऋषि का
नाम। ७-इस ऋषि के गोत्रज।

प्रांतग, प्रान्तग [वि.] (सं.) सीमा पर रहने वाला

प्रांतदुर्ग, प्रान्तदुर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नगर के
कोटे के बाहर का दुर्ग।

प्रांतपुष्पा, प्रान्तपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-
फूल का नाम। २-इस फूल का पौधा।

प्रांतभूमि, प्रान्तभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-
किनारा। २-सीढ़ी। ३-योगशास्त्र
समाधि जो योग की अन्तिम सीमा
जाती है।

प्रांतर, प्रान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-
सुमसाम रास्ता। २-वह प्रदेश जिसमें
और वृक्ष न हों। उजाड़। ३-वन। जंगल
४-वृक्ष का कोटर।

प्रांतवृत्ति, प्रान्तवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षितिज

प्रांतायन, प्रान्तायन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रांत
ऋषि के गोत्रज।

प्रांतिक, प्रांतीय, प्रान्तिक, प्रान्तीय [वि.] (सं.)
प्रांत से सम्बन्ध रखने वाला।

प्रांतीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रान्तीय होने
भाव। २-अपने प्रान्त का विशेष
अतिरिक्त पक्षपात या मोह।

प्रांशु [वि.] (सं.) उच्च। ऊँचा।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-वैवस्वतमनु के
का नाम। २-विष्णु।

प्रांशुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उच्चता। ऊँचाई।

प्राइमर [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी भाषा
प्रारंभिक पुस्तक जिसमें उस भाषा की
माला दी हो। २-किसी विषय की प्रारंभिक
पुस्तक।

प्राइवेट [वि.] (अं.) व्यक्तिगत। निजी।

प्राइवेटसेक्रेटरी [संज्ञा पु.] (अं.) किसी
आदमी के साथ रह कर उसके पत्रव्यवहार
आदि का कार्य करने वाला।

प्राकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साग।

प्राकर्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-औरतों की
करने वाला व्यक्ति। २-स्त्रियों के बीच

वाला पुरुष।

प्राकाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्राकार [संज्ञा पु.] (सं.) परकोटा। चहारदीवारी।

प्राकाश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश।

प्राकाश्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकीर्ति। यश।

प्राकृत [वि.] (सं.) १-प्रकृति से उत्पन्न। २-निसर्ग या प्रकृति से संबंध रखने वाला। स्वाभाविक। ३-भौतिक। ४-साधारण। मामूली। ५-संसारी। लौकिक। ६-नीच। ७-स्वाभाविक। सहज। [संज्ञा स्त्री.] १-किसी स्थान की बोलचाल की भाषा। २-एक प्राचीन भारतीय बोलचाल की भाषा जिसका संस्कार करके संस्कृत बनाई गई थी तथा जिससे भारत की आधुनिक आर्य भाषाएं बनी हैं। ३-बुद्धग्रह की सात प्रकार की गतियों में से प्रथम तथा उस समय की गति जब वह स्वाति, भरणी और कृत्तिका में रहता है।

प्राकृतज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) ऋतु के प्रभाव से होने वाला ज्वर।

प्राकृततंत्र, प्राकृततन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रजातंत्र'।

प्राकृतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्राकृत होने का भाव या धर्म।

प्राकृतदोष [संज्ञा पु.] (सं.) वात, पित्त और कफ के प्रकोप से उत्पन्न दोष।

प्राकृत-प्रलय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रलय जिसका प्रभाव प्रकृति तक पर पड़ता है (पुराण)।

प्राकृतमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके साथ स्वाभाविक मित्रता हो।

प्राकृतशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) स्वाभाविक शत्रु।

प्राकृतसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण लोक का समाज।

प्राकृतिक [वि.] (सं.) १-जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। २-प्रकृति के विकार। ३-प्रकृति का। प्रकृति-सम्बन्धी। ४-साधारण। मामूली ५-भौतिक। ६-सांसारिक। लौकिक। ७-नीच। ८-स्वाभाविक। सहज। नेचुरल। [संज्ञा पु.] देखो 'प्राकृत-प्रलय'।

प्राकृतिक-इतिवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिससे स्पष्ट प्राकृतिक पदार्थ के स्वरूप और अवस्था का ज्ञान हो।

प्राकृतिक-भूगोल [संज्ञा पु.] (सं.) भूगोलविद्या का वह अंग जिसमें भौगोलिक तत्वों का तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाता है।

प्राकृतिक-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विद्या या शास्त्र जिसके द्वारा प्राकृतिक-कार्य-सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है।

प्राक् [वि.] (सं.) पहले का। पुराना। [संज्ञा पु.] पूर्व। पूरब।

प्राक्कथन [संज्ञा पु.] (सं.) आरम्भ में परिचय-मात्र के लिए कही हुई संक्षिप्त बात। भूमिका फोरवर्ड।

प्राक्कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्वकर्म। २-भाग्य। अदृष्ट।

प्राक्कलन [संज्ञा पु.] (सं.) पहले से व्यय या लागत आदि का अनुमान करना। आगणन। एस्टिमेट।

प्राक्कलनकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) पहले से व्यय या लागत आदि का अनुमान करने वाला। आगणक। ऐस्टिमेटर।

प्राक्कलित [वि] (सं.) प्राक्कलन या अनुमान किया हुआ। कूता हुआ। आगणित। एस्टिमेटेड।

प्राक्कल्प [संज्ञा पु.] (सं.) पुराकल्प। पूर्वकल्प।

प्राक्कूल [संज्ञा पु.] (सं.) वह कुश जिसका अगला भाग पूर्व की ओर किया गया हो।

प्राक्केवल [वि.] (सं.) जो पहले से ही भिन्न रूप से प्रकट हो रहा हो।

प्राक्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

प्राक्छाय [संज्ञा पु.] (सं.) जिस समय छाया पूर्व की ओर पड़ती हो। अपराह्नकाल।

प्राक्तन [संज्ञा पु.] (सं.) भाग्य। प्रारब्ध। [वि.] (सं.) पुरातन। पुराना। प्राचीन।

प्राक्फल [संज्ञा पु.] (सं.) कटहर।

प्राक्फाल्गुन [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति ग्रह।

प्राक्फाल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वाफाल्गुनी-नक्षत्र।

प्राक्संध्या, प्राक्सन्ध्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) सूर्योदय के समय का सन्धिकाल। सवेरा।

प्राक्सी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह लेख जिसके द्वारा किसी संस्था का कोई सदस्य किसी दूसरे सदस्य आदि को अपना प्रतिनिधि नियत करके उसे अपनी ओर से उपस्थित करके सम्मति प्रदान करने का अधिकार देता है। २-वह व्यक्ति जो किसी दूसरे व्यक्ति के स्थान पर उसका कर्त्तव्यपालन करे। प्रतिनिधि।

पाक्सौमिक [संज्ञा पु.] (सं.) यजमान का वह कर्त्तव्य जो उसे सोमयाग के पूर्व कर लेना चाहिए।

प्राखंडिक, प्राखण्डिक [वि.] (सं.) किसी प्राखंड या भूभाग से संबंध रखने वाला। *डिविजनल*

प्राखर्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रखरता। तेजी।

प्रागभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अभाव जिसके पीछे उसका प्रतियोगी भाव उत्पन्न होता है। २-वह पदार्थ जिसका आदि न होने पर अन्त हो।

प्रागल्भ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रगल्भता। वीरता। २-घमंड। अभिमान। ३-चतुरता। योग्यता ४-प्रधानता। प्रबलता। ५-प्रादुर्भाव। प्राकट्य ६-साहस। ७-धीरता।

प्रागार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रासाद। भवन। महल

प्रागुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्व कथन।

प्रागुत्तरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईशानकोण।

प्रागुदीची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा। ईशानकोण।

प्रागैतिहासिक [वि.](सं.) जिस काल का निश्चित तथा पूर्ण इतिहास मिलता हो, उससे पूर्व का। पूर्वकाल का इतिहास। प्री-हिस्टॉरिक।

प्राग्गामी [वि.] (सं.) पूर्वगामी। अग्रगामी।

प्राग्ज्योतिष [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत आदि के अनुसार कामरूप देश।

प्राग्ज्योतिषपुर [संज्ञा पु.] (सं.) प्राग्ज्योतिष-देश की राजधानी जिसे अब गोहाटी कहते हैं।

प्राग्दक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण और-पूर्व के बीच की दिशा। दक्षिण-पूर्व।

प्राग्द्वार [संज्ञा पु.] (सं.) वह घर जिसका द्वार या दरवाजा पूर्व की ओर हो।

प्राग्बोधि [संज्ञा पु] (सं.) एक पर्वत का नाम।

प्राग्भक्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह दवा जो भोजन करने से पूर्व ली जाय।

प्राग्भरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार सिद्ध-शिला का एक नाम।

प्राग्भाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामना। २-सामने का हिस्सा।

प्राग्भार [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत का शिखर। २-उत्कर्ष। उन्नति।

प्राग्रसर [वि.] (सं.) १-श्रेष्ठ। २-प्रथम। पहला।

प्राग्रहर [संज्ञा पु.] (सं.) मुख्य। श्रेष्ठ।

प्राग्राट [संज्ञा पु.] (सं.) पतला दही। मठा।

प्राग्य [वि.] (सं.) श्रेष्ठ। बड़ा।

प्राग्वश [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञशाला में का वह घर जिसमें यजमान आदि रहते हैं। २-विष्णु।

प्राग्वचन [संज्ञा पु.] (सं.) मन्वादि महर्षियों के वचन।

प्राग्वाट [संज्ञा पु.](सं.) प्राचीनकाल के एक नगर का नाम जो जमुना और गंगा के बीच में था।

प्राघात [संज्ञा पु.] (सं.) कड़ी चोट। भारी आघात

प्राघूण [संज्ञा पु.] (सं.) अतिथि। मेहमान।

प्राघूणिक [संज्ञा पु.](सं.) अतिथि। मेहमान।

प्राघूर्ण, प्राघूर्णिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिथि। पाहुन।

प्राङ्न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विवाद का पहले भी किसी न्यायालय के सम्मुख उपस्थित होकर निर्णीत हो चुकना।

प्राङ्मुख [वि.] (सं.) पूर्व की ओर मुख किये हुए

प्राच् [वि.] (सं.) [स्त्री. प्राची] पूर्व।

प्राचार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा

प्राचार्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) १ आचार्य। शिक्षक।

गुरु। २-पंडित। विद्वान्।

प्राचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जंगली मक्खी।

प्राची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूर्व दिशा। पूरब। २-जल-आँवला।

प्राचीन [वि.] (सं.) १-पूरब का। २-पुरातन। पुराना। पिछले जमाने का। ३-वृद्ध। बुड्ढा। [संज्ञा पु.] (सं.) हाते की दीवाल।

प्राचीन-काव्य-मिश्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दृश्यकाव्य। जिसकी रचना प्राचीन काल में हुई हो तथा जिसका अभिनय भी प्राचीन-काल में होता रहा हो। यह पांच प्रकार का है—१-नाट्य, २-लास्य, ३-नृत्य, ४-नृत, और ५-तांडव।

प्राचीनकुल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

प्राचीनगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

प्राचीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन होने का भाव। पुरानापन।

प्राचीन-तिलक [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

प्राचीनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनता। पुरानापन

प्राचीनपनस [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पेड़।

प्राचीनबर्हिस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-एक प्राचीन राजा का नाम।

प्राचीनयोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

प्राचीनशाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराना घर। २-पूर्व दिशा का घर।

प्राचीना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाठा। २-रास्ना। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जो प्राचीन हो।

प्राचीनामलक [संज्ञा पु.] (सं.) पानी आमला।

प्राचीनावीत [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञोपवीत धारण करने का एक ढङ्ग जिसमें बायां हाथ यज्ञोपवीत से बाहर रहता है और यज्ञोपवीत दाहिने कंधे पर रहता है।

प्राचीनावीती [वि.] (सं.) जो प्राचीन वीत या यज्ञोपवीत धारण किये हो।

प्राचीनोपवीत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्राचीनावीत'

प्राचीपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

प्राचीर [संज्ञा पु.] (सं.) चारों ओर से घेर ने वाली दीवार। चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

प्राचुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रचुर होने का भाव। अधिकता। बहुतायत। विपुलता।

प्राचेतस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनु का नाम। २-दक्ष का नाम। ३-वाल्मीकि का नाम। ४-विष्णु। ५-वरुण के पुत्र का नाम। ६-प्रचेता के वंशज।

प्राच्छित्* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रायश्चित्त'।

प्राच्य [वि.] (सं.) १-पूर्व का। २-पूर्वीय। पूर्व-सम्बन्धी। ३-पुराना। प्राचीन। [संज्ञा पु.] (सं.) शरावती नदी के पूर्व का देश।

प्राच्यवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैताली वृत्तिछंद के एक भेद का नाम।

प्राच्यपन [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व के ऋषियों के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

प्राजक [संज्ञा पु.] (सं.) रथ हांकने वाला। सारथी

प्राजहित [संज्ञा पु.] (सं.) गार्हपत्य अग्नि।

प्राजापत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजापति का धर्म या भाव।

प्राजापत्य [वि.] (सं.) १-प्रजापति-सम्बन्धी। २-प्रजापति से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बारह दिन के एक व्रत का नाम। २-रोहिणी-नक्षत्र। ३-यज्ञ। ४-प्रयाग का एक नाम।

प्राजापत्यविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह विवाह जिसमें कन्या का पिता वर और कन्या को एकत्र कर उनसे यह प्रतिज्ञा कराता है कि हम दोनों मिलकर गार्हस्थ धर्म का पालन करेंगे।

प्राजापत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक इष्टि का नाम। २-वैदिक छन्द के आठ भेदों में से एक।

प्राजिक [संज्ञा पु.] (सं.) बाज नामक पक्षी।

प्राजिता [संज्ञा पु.] (सं.) सारथी। गाड़ीवान।

प्राजी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

प्राजेश [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिणीनक्षत्र।

प्राज्ञ [वि.] (सं.) [स्त्री. प्राज्ञा या प्राज्ञी] १-बुद्धि-सम्बन्धी। मानसिक। २-बुद्धिमान। विद्वान् चतुर। [संज्ञा पु.] १-जीवात्मा (वेदांतसार)। २-पुराणानुसार कल्किदेव के बड़े भाई का नाम।

प्राज्ञत्व [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धिमत्ता, पांडित्य।

प्राज्ञमानी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे अपने पांडित्य का घमंड हो।

प्राज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुद्धि। समझ। २-चतुर या बुद्धिमती स्त्री।

प्राज्ञी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चतुर या बुद्धिमती स्त्री। २-विद्वान की पत्नी। ३-सूर्य की पत्नी का नाम।

प्राज्य [वि.] १-अधिक। बहुत। विपुल। २-जिसमें बहुत सा घी पड़ा हो।

प्राड्विवाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-न्यायकर्ता। न्यायाधीश। २-वकील।

प्राणंत, प्राणान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा २-रसांजन।

प्राणंती, प्राणान्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भूख। क्षुधा। २-हिचकी। ३-छींक।

प्राण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा। २-शरीर की वह हवा जिससे वह जीवित कहलाता

है। ३-मनोबल, वाक्बल और काय
नामक त्रिविधबल तथा उच्छ्वास नि
और आयु इन सब के समूह (जैन-शा
४-सांस। श्वास। ५-बल। शक्ति।
६-जीव या आत्मा। ७-परब्रह्म। ८-
९-प्राण समान कोई पदार्थ या व्यक्ति।
पात्र। माशूक। १०-पुराणानुसार
का नाम। ११-काल का वह विभाग
दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो
१२-वैवस्त मन्वन्तर के सप्तर्षियों में
१३-धर नामक वसु के पुत्र का नाम।
एक साम का नाम। १५-चकार वर्ण।
ब्रह्म। १७-विष्णु। १८-धाता के पु
नाम। १९-मूलाधार में रहने वाली
२०-अग्नि। आग।

प्राण उड़ जाना-१-बहुत डर या
२-भौचक्का या हक्काबक्का
प्राण कंठ में होना-मरणासन्न।
होना। *प्राण गले या मुंह को आना*-१-
की हालत होना। २-बहुत दुःख होना।
खाना-मगज चाटना। तंग करना।
जाना, छूटना या निकलना-मर जाना।
छुटाना-१-प्राण बचाना। २-छुटकारा
अप्रिय या दुखदायी वस्तु को दूर
प्राण डालना-जीवन प्रदान करना।
तजना, त्यागना या छोड़ना-मरना या
को होना। *प्राण देना*-१-किसी के
दुखी होकर मरना। २-किसी को
अधिक प्रिय समझना। *प्राण निकलना*-
मरना। २-डर के कारण होश-हवास
रहना। *प्राण पयान होना*-मर जाना।
बचाना-१-जीवन बचाना। २-पीछा
प्राण मुट्ठी या हाथ में लिये फिरना
जान देने पर उतारू होना।
जिलाना। मरने से बचाना।
भागना-जीवन बचाने के लिए
भागना।
प्राण लेना या हरना-मार डालना।
१-मर जाना। २-उत्साह हीन होना।
का मुंह या गले को आना-१-मरने
होना। २-बहुत पीड़ा होना।
पड़ना या बनना-जीवन का संकट
प्राणों पर खेलना-जान जाने का
प्राणों पर आ पड़ना या बीतना-
का भय होना। २-मर जाना।
खोना-मर जाना। [वि.] (सं.)
बहुत प्यारा।

प्राण-अधार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्राणों के
प्रिय व्यक्ति। २-पति। स्वामी। [वि.]
प्रिय।

प्राणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीव।
जीवक वृक्ष।

प्राणकर [वि.] (सं.) शक्तिवर्द्धक। पौष्टिक।

प्राणकष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह दुःख

दुःख जितना प्राण निकलते समय होता है।

प्राणकांत, प्राणकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रिय व्यक्ति। प्यारा। २–पति। स्वामी।

प्राणकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) मरते समय का कष्ट प्राणकष्ट।

प्राणग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) नासिका। नाक।

प्राणघात [संज्ञा पु.] (सं.) वध। हत्या।

प्राणघ्न [वि.] (सं.) प्राण लेने वाला।

प्राणच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) वध। हत्या।

प्राणजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्राणाधार। २–परम प्रिय व्यक्ति। ३–विष्णु।

प्राणत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) प्राण छोड़ना। मर जाना।

प्राणद [संज्ञा पु.] (सं.) १–जैनमतानुसार एक देवता। २–वायु। हवा। ३–प्रजापति। ४–पवित्र स्थान। तीर्थ। [वि.] (सं.) बलवान। हृष्टपुष्ट।

प्राणदंड, प्राणदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह दंड जिसमें किसी के प्राण ले लिये जाते हैं। मौत की सजा।

प्राणद [संज्ञा पु.] (सं.) १–खून। लहू। २–जल। पानी। ३–विष्णु। ४–जीवन नामक वृक्ष। [वि.] (सं.) १–प्राणदाता। २–प्राणों की रक्षा करने वाला।

प्राणदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–हरीतकी। हर्रे। २–ऋद्धिनामक औषधि।

प्राणदाता [वि.] (सं.) प्राण देने वाला।

प्राणदान [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी को मरने अथवा मारे जाने से बचाना। २–प्राण देना।

प्राणद्यूत [संज्ञा पु.] (सं.) १–जान की बाजी लगाना। जान जोखों में डालना। २–जीवन का मोह त्यागकर युद्ध करना।

प्राणद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) आत्महत्या।

प्राणधन [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यधिक प्रिय। प्यारा

प्राणधार [वि.] (सं.) जिसमें प्राण हों। जीवित। [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणी। प्राणधारी। जीव।

प्राणधारण [संज्ञा पु.] (सं.) १–जीवन धारण करने का भाव या क्रिया। २–शिव।

प्राणधारी [वि.] (सं.) १–जीवित। २–चेतन।

प्राणन [संज्ञा पु.] (सं.) १–जीवन। २–हिलना-डोलना। ३–जल। पानी।

प्राणनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रिय व्यक्ति। प्रियतम। प्यारा। २–पति। स्वामी। ३–एक संप्रदाय के आचार्य का नाम।

प्राणनाथी [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्राणनाथ संप्रदाय का अनुयायी। २–स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ सम्प्रदाय।

प्राणनाश [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणत्याग। हत्या या मृत्यु।

प्राणनाशक [वि.] (सं.) मार डालने वाला।

प्राणनिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम की क्रिया

प्राणपति [संज्ञा पु.] (सं.) १–आत्मा। २–हृदय। ३–पति। स्वामी। ४–प्रिय व्यक्ति। प्यारा।

प्राणपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्यारी पत्नी या स्त्री

प्राणपरिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मग्रहण करना। प्राणधारण करना।

प्राणपरिवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को किसी जीवित पुरुष के शरीर में बुलाना।

प्राणप्यारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. प्राणप्यारी] १–परमप्रिय व्यक्ति। प्रियतम। २–स्वामी। पति।

प्राणप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–प्राण धारण करना। २–कोई नई मूर्ति स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा या आरोप करना। (हिंदू धर्मशास्त्र)।

प्राणप्रद [वि.] (सं.) १–जो प्राण दे। २–स्वास्थ्यवर्धक।

प्राणप्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋद्धिनामक औषध

प्राणप्रदायक [वि.] (सं.) प्राणदाता। प्राणप्रद।

प्राणप्रिय [वि.] (सं.) [स्त्री प्राणप्रिया] १–प्राणों के समान प्रिय। २–प्रियतम। ३–पति। स्वामी।

प्राणबल्लभ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्राणवल्लभ'

प्राणभृत् [वि.] (सं.) १–प्राण धारण करने वाला। २–प्राणपोषक। [संज्ञा पु.] १–विष्णु। २–प्राणी। जीव।

प्राणमय [वि.] (सं.) प्राणसंयुक्त। जिसमें प्राण हों।

प्राणमयकोश [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा कोश जो प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान पाँचों प्राणों से बना हुआ माना जाता है।

प्राणयम [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणयाम।

प्राणयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–साँस का खींचना और छोड़ना। २–वह व्यापार जिस के द्वारा मनुष्य जीवित रहता है।

प्राणयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १–परमेश्वर। २–प्राणवायु।

प्राणरंध्र, प्राणरन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–नाक। २–मुँह।

प्राणरोध, प्राणरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम

प्राणवध [संज्ञा पु.] (सं.) जान से मार डालना।

प्राणवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) १–अत्यधिक प्रिय। बहुत प्यारा। २–पति। स्वामी।

प्राणवान् [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणी। जीव। जिसमें प्राण हो।

प्राणवायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–प्राण। २–जीव।

प्राणविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपनिषदों का एक प्रकरण विशेष जिसमें प्राण का वर्णन है।

प्राणवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राण, अपान, उदान आदि पंच प्राणों का कार्य।

प्राणव्यय [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणोत्सर्ग। मृत्यु।

प्राणशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) १–उपनिषदों के अनुसार एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना जाता है। २–परमेश्वर।

प्राणशोषण [संज्ञा पु.] (सं.) बाण।

प्राणसंकट, प्राणसङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) वह अवस्था जिसमें प्राण जाने का भय हो। जान-जोखिम।

प्राणसंदेह, प्राणसन्देह [संज्ञा पु.] (सं.) जीवन की आशंका।

प्राणसंन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) मौत। मृत्यु।

प्राणसंभूत [संज्ञा पु.] (सं.) हवा। वायु।

प्राणसंभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) वायु।

प्राणसंयम [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम।

प्राणसंवाद [संज्ञा पु.] (सं.) उपनिषद् में प्राण विषयक एक प्रकरण विशेष।

प्राणसंशय [संज्ञा पु.] (सं.) १–जीवन की आशंका २–मरणासन्नता।

प्राणसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदों के पढ़ने का एक क्रम विशेष।

प्राणसम [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणों के समान।

प्राणसार [संज्ञा पु.] (सं.) १–बल। शक्ति। २–बलिष्ठ। ताकतवर।

प्राणहंता, प्राणहन्ता [वि.] (सं.) प्राणघातक। प्राण लेने वाला।

प्राणहर [वि.] (सं.) १–प्राण लेने वाला। घातक। नाशक। २–बल या शक्तिनाशक।

प्राणहारक [वि.] (सं.) प्राण लेने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) वत्सनाभ।

प्राणहानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जान जोखिम। प्राण जाने की अवस्था।

प्राणहारी [संज्ञा पु] (सं.) प्राण लेने वाला।

प्राणांत, प्राणान्त [संज्ञा पु.] (सं) मरण। मृत्यु।

प्राणांतक, प्राणान्तक [वि.] (सं.) प्राण या जान लेने वाला। २–मरने का सा कष्ट देने वाला

प्राणाग्निहोत्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन के समय मंत्र विशेष पढ़कर खाने की क्रिया।

प्राणाघात [संज्ञा पु.] (सं.) १–मार डालना। हत्या २–पीड़ा।

प्राणातिपात [संज्ञा पु.] (सं.) जान से मार डालना जीवहिंसा।

प्राणातिपात-विरमण [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमत के अनुसार अहिंसा व्रत। यह दो प्रकार का होता है–द्रव्य-प्राणातिपातविरमण तथा भाव-प्राणातिपातविरमण।

प्राणात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) प्राण। जीवात्मा।

प्राणात्यय [संज्ञा पु.] (सं) १–प्राणनाश। २–मरने का समय।

प्राणाद [वि.] (सं.) १-प्राणनाश। २-मरने का समय।

प्राणाद [वि.] (सं.) प्राणनाशक।

प्राणाधार [वि.] (सं.) १-परम प्रिय। २-इतना प्रिय कि उसके बिना जीना कठिन हो। [संज्ञा पु.] (सं.) पति। स्वामी।

प्राणाधिक [वि.](सं.) [स्त्री. प्राणाधिका] १-प्राणों से भी बढ़कर प्यारा। अत्यधिक प्रिय। [संज्ञा पु.] (सं.) पति। स्वामी।

प्राणाधिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) पति। स्वामी।

प्राणाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणों के अधिष्ठाता देवता।

प्राणापान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राण और अपान वायु। २-अश्विनीकुमार।

प्राणाबाध [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणसंशय। जान-जोखिम।

प्राणायतन [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणों के निकलने का प्रधान मार्ग। (यह नौ होते हैं—२ कान, नाक के दोनों छेद, २ आंखें, गुदा, लिंग और मुख)।

प्राणायाम [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्रानुसार योग के आठ अङ्गों में से चौथा जिसमें स्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित और नियमति रूप से खींचने तथा बाहर निकालने की प्रक्रिया।

प्राणायामी [वि.] (सं.) प्राणायाम करने वाला।

प्राणाध्य [वि.] (सं.) उपयुक्त। योग्य।

प्राणासन [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के मत से एक प्रकार का आसन।

प्राणाहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राणाग्निहोत्र।

प्राणि [संज्ञा पु.] देखो 'प्राणी'।

प्राणिद्यूत [संज्ञा पु.] (सं.) मेंढा, तीतर, घोड़े आदि जीवों की लड़ाई या दौड़ पर लगाई जाने वाली बाजी।

प्राणी [वि.] (हिं.) जिसमें प्राण हो। जीवधारी। [संज्ञा पु.] १-जीव। जंतु। २-मनुष्य। [संज्ञा स्त्री.] स्त्री या पुरुष। दोनों प्राणी-दंपति।

प्राणेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-पति। स्वामी। २-प्यारा प्रेमी।

प्राणेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्राणेश्वरी] १-पति। स्वामी। २-प्रेमी व्यक्ति। बहुत प्यारा

प्राणोपहार [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन। आहार। खाना।

प्रात [अव्य.] (हिं.) तड़के। सबेरे। [संज्ञा पु.] सबेरा। प्रातःकाल।

प्रातः [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। तड़का। सबेरा।

प्रातःकर्म, प्रातःकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्म जो प्रातःकाल किया जाता हो। जैसे-शौच, स्नान आदि।

प्रातःकाल [संज्ञा पु.] (सं.) दिन चढ़ने का समय। सबेरा।

प्रातःकालीन [वि.] (सं.) प्रातःकाल-संबंधी। प्रातःकाल का। प्रातः कृत्य। [संज्ञा पु.] देखो 'प्रातःकर्म'।

प्रातःसंध्या, प्रातःसन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह वैदिक या तांत्रिक उपासना जो प्रातःकाल की जाती है।

प्रातःसवन [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रधान सवनों या सोमयागों में से पहला सवन।

प्रातःस्नान [संज्ञा पु.] (सं) सबेरे किया जाने वाला स्नान।

प्रातःस्नायी [वि.] (सं.) सबेरे नहाने वाला।

प्रातःस्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) सबेरे के समय ईश्वर देवता आदि के नामों का स्मरण।

प्रातःस्मरणीय [वि.] (सं.) प्रातः उठते ही स्मरण करने योग्य (परमपूज्य और श्रेष्ठ)।

प्रातनाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

प्रातर् [अव्य.] (सं.) प्रभात। सबेरे।

प्रातर [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

प्रातरनुवाक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातः सवन नामक कर्म में पढ़ा जाने वाला अनुवाक जो ऋग्वेद में है।

प्रातरभिवादन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल का प्रणाम।

प्रातरह्न [संज्ञा पु.] (सं.) दोपहर के पहले का समय।

प्रातराश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल का जलपान या कलेवा।

प्रातराहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रातःकाल दी जाने वाली आहुति।

प्रातर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतर्दन का गोत्रज व्यक्ति।

प्रातर्भोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) कौआ।

प्रातर्भोजन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातराश।

प्रातस्त्रिवर्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

प्राति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अँगूठे और तर्जनी के मध्य का स्थान।

प्रातिकंठित, प्रातिकण्ठित [वि.] (सं.) गला पकड़ने वाला।

प्रातिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवा का पेड़।

प्रातिकामी [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुर्योधन के एक दूत का नाम। २-सेवक। नौकर।

प्रातिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) आलोचना का विषय।

प्रातिपक्ष [वि.] (सं.) प्रतिकूल। विरुद्ध।

प्रातिपद [वि.] (सं.) प्रतिपद-सम्बन्धी।

प्रातिपदिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-संस्कृत-व्याकरणानुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और जिसकी सिद्धि विभक्ति लगने से न हुई हो।

प्रातिपीय [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाभारत में वर्णित एक राजा का नाम। २-एक नाम।

प्रातिपेय [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णि एक राजा का नाम।

प्रातिभ [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रातिभी] प्रति सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विघ्न जो योगियों को योगक्रिया में हुआ करता है।

प्रातिभागिक [वि] (सं.) प्रतिभाग नामक से संबंध रखने वाला। एक्साइस।

प्रातिभाज्य [वि.] (सं.) जिस पर प्रतिभाग शुल्क लगता या लग सकता हो।

प्रातिभाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) जमानत।

प्रातिभासिक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रातिभासिकी] १-जो असली न हो। २-जो व्यावहारिक हो। ३-नकल।

प्रातिलोमिक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रातिलोमिकी] १-विपक्ष। विरुद्ध। २-प्रतिलोम से

प्रातिलोम्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिलोम भाव। २-विरुद्धता। प्रतिकूलता।

प्रातिवेशिक, प्रातिवेश्मन [संज्ञा पु.] (सं.)

प्रातिवेश्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पड़ोसी। पड़ोस। वह पड़ोसी जिसके घर का ठीक अपने घर के द्वार के सामने हो।

प्रातिवेश्यक [संज्ञा पु.] (सं.) पड़ोसी।

प्रातिशाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रंथ वेदों की किसी शाखा के स्वर, पद, संयुक्त वर्णादि के उच्चारण आदि का किया जाता है।

प्रातिस्विक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रातिस्विकी] विलक्षण। विशिष्ट। २-अपना। निज। ३-अपना-अपना।

प्रातिहत [संज्ञा पु.] (सं.) स्वरित।

प्रातिहर्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिहर्ता का २-प्रतिहर्ता का भाव।

प्रातिहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मायावी। जालिक। २-द्वारपाल। प्रतिहार।

प्रातिहारिक [वि.] (सं.) प्रतिहार-संबंधी। पु.] (सं.) १-द्वारपाल। २-मायावी।

प्रातिहार्य, प्रातिहार्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) पाल का काम। २-माया। जादू।

प्रातीतिक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रातीतिकी] सिक। काल्पनिक। २-जिसकी प्रतीति किसी को हो।

प्रातीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतीप के पुत्र शान्तनु। २-प्रतीप का अपत्य।

प्रातीपिक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रातीपिकी] आचरण करने वाला। २-विपरीत।

प्रावृद [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि

प्रात्यंतिक, प्रात्यन्तिक [संज्ञा पु.] (सं.)

राज्य जो सीमाप्रान्त में हो। २-सीमा की रक्षा के निमित्त नियुक्त पुरुष।

प्रात्यक्ष [वि.] (सं.) प्रत्यक्ष-सम्बन्धी।

प्रात्यग्रथि [संज्ञा पु] (सं.) प्रतिग्रथ के गोत्रज।

प्रात्ययिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी की पहचान करने उसका प्रतिभू बने।

प्रात्यहिक [वि.] (सं.) दैनिक। प्रतिदिन का।

प्राथमिक [वि.](सं.) १-पहले का। प्रथम-संबंधी। २-आरम्भ का। आरम्भिक। ३-सब से अधिक महत्व का। मुख्य।

प्राथमिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्राथमिक होने का भाव। २-किसी विषय में किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को किसी कार्य के लिए औरों से पहले मिलने वाला स्थान, अवसर आदि। *प्रायरिटी*।

प्राथम्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रथम का भाव। पहलापन।

प्रादक्षिण्य [संज्ञा पु.](सं.) प्रदक्षिणा। परिक्रमा।

प्रादानिक [संज्ञा पु.] (सं.) जो दान करने के योग्य हो।

प्रादुराक्षि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

प्रादुर्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अस्तित्व में आना। प्रकट होना। २-अविर्भाव। ३-उत्पत्ति।

प्रादुर्भूत [वि.] (सं.) १-जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। प्रकटित। २-विकसित। निकला हुआ। ३-उत्पन्न।

प्रादुर्भूत-मनोभवा [संज्ञा स्त्री.](सं.) केशव कवि के मतानुसार मध्या के चार भेदों में से एक। यह उस समय कही जाती है जब इसके मन में काम का पूरा प्रादुर्भाव होता है और इस में काम के सब चिह्न प्रकट होते हैं।

प्रादुष्करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी अप्रकट पदार्थ को प्रकट करने का भाव। प्रकटीकरण २-दिखलाना।

प्रादुष्कृत [वि.] (सं.) १-जो प्रकट या प्रत्यक्ष किया गया हो। २-जो दिखाया गया हो।

प्रादुष्कृत्य [वि.] (सं.) १-प्रकट करने योग्य। २-उत्पाद्य।

प्रादुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रादुर्भाव।

प्रादेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मान जो अँगूठे की नोक से लेकर तर्जनी की नोंक तक का होता था और मापने के काम में आता था। २-प्रदेश। स्थान।

प्रादेशिक [वि.] (सं.) प्रदेश-सम्बन्धी। किसी प्रदेश का।

प्रादेशिक-आयुक्त [संज्ञा पु.](सं.) किसी प्रदेश से सम्बन्ध रखने वाला वह अधिकारी जो उस प्रदेश के जटिल कानूनी प्रश्नों को हल करने के लिए नियुक्त किया जाता है। *रीजनल-कमीशनर*।

प्रादेशिक-क्षेत्राधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रादेशिक अधिकार या कार्य का क्षेत्र। *टेरीटोरियल-ज्युरिडिक्शन*।

प्रादेशिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रांतीयता'

प्रादेशिक-निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी प्रदेश का खजाना।

प्रादेशिक-निर्वाचनक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रादेशिक स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। *टेरिटोरियल-कॉन्स्टिट्युएन्सी*।

प्रादेशिक-परिषद् [संज्ञा पु.] (सं.) चुने हुए या नियुक्त किये हुए प्रादेशिक सदस्यों की सभा। *रीजनल-काउन्सिल*।

प्रादेशिक-भार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रदेश पर डाला हुआ भार या जिम्मेदारी।

प्रादेशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तर्जनी।

प्रादोष, प्रादोषिक [वि.] (सं.) प्रदोष-संबंधी। सायंकाल-संबंधी।

प्राधनिक [वि.] (सं.) लड़ाका। [संज्ञा पु.] लड़ाई का सामान।

प्राधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्ष की एक कन्या का नाम। २-कश्यप की एक स्त्री का नाम।

प्राधानिक [वि] (सं.) प्रधान। प्रधान-सम्बन्धी

प्राधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रधानता। श्रेष्ठता। २-मुख्यता।

प्राधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी व्यक्ति को मिलने वाला वह अधिकार अथवा सुविधा जो उसे कुछ कठिनाइयों या बाधाओं से बचाता हो। *प्रिविलेज*। २-वह जिसे किसी कार्य का अधिकार प्राप्त हो। *ऑथोरिटी*।

प्राधिकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अधिकारियों का वर्गसमूह या संघात। *ऑथोरिटी*।

प्राधिकृत [वि.] (सं.) १-जिसको कोई काम करने का अधिकार हो। *ऑथोराइज्ड*। २-जिसे प्राधिकार या सुभीता मिला हो। *प्रिविलेज्ड*।

प्राध्यापक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा अध्यापक, विशेषतः वह अध्यापक जो किसी महाविद्यालय आदि में पढ़ाता हो। २-किसी विषय का अच्छा विद्वान्। विशेषज्ञ। प्रोफेसर।

प्राध्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-लंबी राह या रास्ता। २-सवारी। ३-पहर। ४-विनय। ५-बंध।

प्राध्वन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सड़क। २-नदी का गर्भ।

प्राध्वर [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष की शाखा।

प्रान※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्राण'।

प्रानी※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्राणी'।

प्रापक [वि.] (सं.) १-पाने वाला। २-प्राप्ति-संबंधी। ३-प्राप्त होने वाला।

प्रापण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राप्ति। मिलना। २-प्रेरण। ३-लेआना।

प्रापणिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यापारी। सौदागर।

प्रापणीय [वि.] (सं.) जो मिलने योग्य हो।

प्रापति※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'प्राप्ति'।

प्रापना※ [क्रि. स.] (हिं.) पाना। प्राप्त करना।

प्रापी [वि.] (हिं.) प्राप्त करने वाला।

प्राप्त [वि.] (सं.) १-लब्ध। पाया हुआ। मिला-हुआ। २-सामने आया हुआ। समुपस्थित। ३-उत्पन्न।

प्राप्तकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई काम करने योग्य समय। २-उपयुक्त या उचित समय। ३-मरने योग्य काल। ४-विवाह करने योग्य समय। [वि.] (सं.) जिसका काल या समय आगया हो।

प्राप्तजीवन [वि.] (सं.) जिसको नई जिंदगी हुई हो। पुनर्जीवन।

प्राप्तदोष [वि.] (सं.) जिसने कोई दोष या अपराध किया हो।

प्राप्तपंचत्व, प्राप्तपञ्चत्व [वि.] (सं.) मृत। मरा हुआ।

प्राप्तबुद्धि [वि.] (सं.) १-चतुर। बुद्धिमान। २-जो बेहोश होने पर फिर होश में आया हो।

प्राप्तभार [संज्ञा पु.] (सं.) बोझ ढोने वाला पशु।

प्राप्तमनोरथ [वि.] (सं.) जिसकी मनोकामना पूर्ण हुई हो।

प्राप्तयौवन [वि.] (सं.) जो जवान हो गया हो।

प्राप्तरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धिमान। विद्वान २-सुन्दर। रूपवान। ३-योग्य। उपयुक्त।

प्राप्तव्य [वि.] (सं.) मिलने वाला। प्राप्य।

प्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपलब्धि। प्रापण। मिलना। २-रसीद। पहुँच। ३-आगमन। ४-अर्थागम। अर्जन। ५-उदय। ६-अणमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, जिससे वांछित पदार्थ मिलता है। ७-फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारहवां स्थान। ८-भाग्य। प्रारब्ध ९-व्याप्ति। प्रवेश। १०-मेल। संगीत। ११-नाटक सुखद उपसंहार।

प्राप्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पत्र जिस पर किसी वस्तु की पहुँच का उल्लेख हो। रसीद पावती। *रिसीट*।

प्राप्तिसम [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायदर्शन के अनुसार वह प्रत्यवस्थान या आपत्ति जो हेतु और साध्य को ऐसी स्थिति में जबकि दोनों प्राप्त हो, अविशिष्ट बतला कर की जाय।

प्राप्य [वि.] (सं.) १-पाने या प्राप्त करने योग्य। मिल सकने के योग्य। २-जो किसी से आवश्यक रूप से प्राप्त करना हो। बाकी धन अथवा वस्तु जो किसी से लेनी हो। ड्यू।

प्राप्यक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी के नाम पड़ी हुई रकम अथवा किसी को दिये हुए माल का ब्योरा और मूल्य लिखा रहता है। बाकी अथवा प्राप्यधन का सूचकपत्र। बिल।

प्राप्यकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह इन्द्रिय जो किसी विषय तक पहुँचकर मनुष्य को उस वस्तु का ज्ञान कराती है।

प्राबल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रबलता। २-प्रधानता

प्राबालिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रबाल का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

प्राबोधक [संज्ञा पु.] (सं.) वह बन्दीजन जो राजाओं को उनकी स्तुति सुनाकर जगाने के लिए नियुक्त हो।

प्राभंजन, प्राभञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) स्वातिनक्षत्र [वि.] (सं.) १-प्रभंजन या वायु देवता-संबंधी २-जो वायु देवता के द्वारा अधिष्ठित हो।

प्राभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रभुत्व। अधिकार। २-प्रधानता। श्रेष्ठता।

प्राभातिक [वि.] (सं.) प्रभात विषयक। सबेरे का

प्राभाविक [वि.](सं.) प्रभाव दिखलाने या उत्पन्न करने वाला। एफेक्टिव।

प्राभासिक [वि.] (सं.) प्रभास देश का।

प्राभृत [संज्ञा पु.] (सं.) उपहार। नजर।

प्राभ्यास [संज्ञा पु.](सं.) वह अभ्यास जो अभिनय या किसी बहुत बड़े सार्वजनिक रूप में होने से पहले उसके पात्रों या उसमें सम्मिलित होने वाले लोगों को करना पड़ता है। रिहर्सल।

प्रामति, प्रामधि [संज्ञा पु.] (सं.) दसवें मन्वंतर में होने वाले एक ऋषि का नाम (पुराण)।

प्रामाणिक [वि.] (सं.) १-जो प्रत्यक्ष प्रमाण आदि से सिद्ध हो। २-प्रमाण के रूप में मानने योग्य। ३-शास्त्रसिद्ध। ४-ठीक। सत्य। ५-जिसकी साख हो। ठीक माना जाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापारियों का मुखिया।

प्रामाणिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रामाणिक होने का भाव।

प्रामाण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रमाण का भाव। प्रामाणिकता। २-मानमर्यादा।

प्रामादिक [वि.] (सं.) १-प्रमादजनित। २-दूषित। जिसमें दोष हों।

प्रमाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पागलपन। उन्माद। २-अट्टहास।

प्रामिसरी-नोट [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह सरकारी कागज अथवा ऋणपत्र जिसमें सरकार जनता से कुछ ऋण लेकर वह प्रतिज्ञा करती है कि मैंने इतना ऋण लिया और इस का ब्याज इस हिसाब से इस लेखे के मालिक को दिया जायगा। २-वह लेख अथवा पत्र जिस पर लिखने वाला अपना हस्ताक्षर करके यह वायदा करे कि मैं अमुक व्यक्ति को अथवा जिसके लिए वह कहेगा या जिसके पास यह लेख हो उसे मैं जब वह दिखलायेगा तब मैं लिखित धन लौटा दूंगा। हुँडी।

प्रामीत्य [संज्ञा पु.] (सं.) ऋण। कर्ज।

प्रामोद, प्रामोदक [वि.] (सं.) मनोज्ञ। मनोहरी।

प्राय [संज्ञा पु.] (सं.) १-समान। बराबर। २-लगभग। ३-जीवन की अवस्था। उम्र। ४-मृत्यु। ५-किसी इष्टसिद्धि के लिए खाना-पीना छोड़ कर धरना देना या भूखों प्यासों मर जाने को तैयार होना।

प्रायः [अव्य.](सं.) १-अकसर। अधिक अवसरों पर। २-लगभग। करीब-करीब।

प्रायगत [वि.] (सं.) जो मरने को हो। मरणासन्न

प्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रवेश। आरम्भ। २-एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३-एक शरीर त्यागकर दूसरे शरीर में जाना। ४-जन्मान्तर। ५-अनशनव्रत द्वारा शरीर त्याग ६-अनशन की समाप्ति पर लिया जाने वाला आहार या पथ्य। ७-जीवित अवस्था। ८-दूध के मिश्रण से बनने वाला एक खाद्य पदार्थ

प्रायणीय [संज्ञा पु.](सं.) १-सोमयाग में पहली सुत्या के दिवस का कर्म। २-प्रारम्भिक कर्म। [वि.] (सं.) आरंभिक। प्रारम्भिक।

प्रायदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण घटना जो प्रायः देखने में आती है।

प्रायद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायभव [वि.] (सं.) जो सामान्य रूप से होता हो

प्रायवृत्त [वि.] (सं.) जो बिलकुल गोल न हो पर बहुत कुछ गोल हो।

प्रायशः [अव्य.] (सं.) प्रायः। बहुधा। अकसर।

प्रायश्चित्त [संज्ञा पु.](सं.) १-वह शास्त्रीय कृत्य जिसके करने से करने वाले का पाप छूट जाता है। २-जैनमतानुसार वह नौ प्रकार के कृत्य जिनके करने से पाप की निवृत्ति होती है। यह नौ कृत्य इस प्रकार है—आलोचन, प्रतिक्रमण, आलोचना-प्रतिक्रमण, विवेक, व्युत्सर्ग तप, छेद, परिहार और उपस्थान दोष।

प्रायश्चित्ति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'प्रायश्चित्त'।

प्रायश्चित्तिक [वि.](सं.) १-प्रायश्चित्त के योग्य २-प्रायश्चित-संबन्धी।

प्रायश्चित्तीय [वि.] (सं.) प्रायश्चित विषयक।

प्रायाणिक [वि.] (सं.) प्रयाण या यात्रा-सम्बन्धी

प्रायिक [वि.] (सं.) १-प्रायः या अकसर होने वाला। २-सामान्यतया सभी अवसरों पर अपने सामान्य नियमों के अनुसार होता रहने वाला। यूजूअल। ३-गिनती, अनुमान या विचार से बहुत कुछ ठीक। लगभग। एप्रॉक्सिमेट।

प्रायोगिक [वि.] (सं.) १-प्रयोग-सम्बन्धी। २-प्रयोग के रूप में किया जाने वाला। अप्लाएड

प्रायोज्य [वि.] (सं.) प्रयोग में आने वाला।

प्रायोदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) वह देवता जिसे सब मानते हों।

प्रायोद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रायद्वीप'

प्रायोपगमन [संज्ञा पु.] (सं.) अनशन-व्रत द्वारा प्राणत्याग करने का प्रयत्न।

प्रायोपविष्ट [वि.] (सं.) प्रायोपवेशव्रत करने वाला।

प्रायोपवेश, प्रायोपवेशन [संज्ञा पु.](सं.) प्राण त्याग करने के लिए किया जाने वाला अनशन-व्रत।

प्रायोपवेशी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रायोपवेशिनी] प्रायोपवेश-व्रत करने वाला।

प्रायोपवेशनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रायोपवेशन।

प्रायोपेत [वि.] (सं.) प्रायोपवेशन-व्रत का कर्ता।

प्रारंभ, प्रारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आरम्भ। २-आदि।

प्रारंभण, प्रारम्भण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रारम्भ या शुरू करना।

प्रारंभिक, प्रारम्भिक [वि.] (सं.) १-प्रारम्भ या शुरू का। २-सब से पहले होने वाला। पहले का। प्रिलिमिनरी

प्रारब्ध [वि.] (सं.) आरम्भ किया हुआ। [संज्ञा पु.] १-वह कर्म जिसका फल भोग आरम्भ हो चुका हो। २-भाग्य। किस्मत।

प्रारब्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आरम्भ। शुरू। २-हाथी बांधने की रस्सी।

प्रारब्धी [वि.] (सं.) भाग्यवान्। भाग्यवाला।

प्रार्जयिता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रार्जयित्री] दानी। दान करने वाला।

प्रार्जुन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम।

प्रार्ण [वि.] (सं.) जिसके ऊपर बहुत सा कर्ज हो।

प्रार्थक [वि.] (सं.) प्रार्थी। प्रार्थना करने वाला।

प्रार्थन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रार्थना करना। मांगना। याचन।

प्रार्थना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी से कुछ मांगना या चाहना। २-किसी से नम्रतापूर्वक कुछ कहना। विनय। निवेदन। विनती। ३-तन्त्रसार के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा। * [क्रि. स.] (हि.) विनती करना।

प्रार्थना-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी। एप्लिकेशन।

प्रार्थना-समाज [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मसमाज के समान एक मत। इसके अनुयायी जातपांत का भेद नहीं मानते और न मूर्त्ति पूजते हैं।

प्रार्थनीय [वि.] (सं.) प्रार्थना या निवेदन करने योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) द्वापरयुग का नाम

प्रार्थयितव्य [वि.] (सं.) मांगने या प्रार्थना करने

योग्य।

प्रार्थयिता [संज्ञा पु.] (सं.) प्रार्थना करने वाला।

प्रार्थित [वि.] (सं.) जो मांगा गया हो। याचित।

प्रार्थी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रार्थिनी] प्रार्थना या निवेदन करने वाला।

प्रार्थ्य [वि.] (सं.) प्रार्थना के योग्य।

प्रालंब, प्रालम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह माला जो गरदन से छाती तक लटकती हो। २-रस्सी आदि के समान लटकती हुई वस्तु।

प्रालंबिका, प्रालम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले में पहनने का हार। माला।

प्राल [संज्ञा पु.] देखो 'पराल'।

प्रालब्ध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रारब्ध'।

प्रालेख [संज्ञा पु.] (सं.) लेख्य, विधान आदि का वह पूर्व रूप जो काटछाँट या घटाने-बढ़ाने के लिए तैयार किया गया हो। मसौदा। ड्राफ्ट।

प्रालेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिम। पाला। २-बरफ।

प्रालेयरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

प्रालेयांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर

प्रालेयाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

प्रावट [संज्ञा पु.] (सं.) यव। जौ।

प्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) कुदाल। फावड़ा। बेलचा

प्रावर [संज्ञा पु.] (सं.) परकोटा। हाता। घेरा।

प्रावरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओढ़ने का वस्त्र। चादर। २-ढक्कन। प्रच्छादन।

प्रावार [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर ओढ़ने का कपड़ा २-एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र जो प्राचीन काल में बनता था।

प्रावारकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उल्लू।

प्रावारकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपड़े में लगने वाला कीड़ा। २-दीमक।

प्राविट् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पावस। वर्षाऋतु।

प्रावित्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के आश्रम में रहना।

प्राविधानिक [वि.] (सं.) १-प्रविधान-विषयक। प्रविधान का। २-जिसे प्रविधान में स्थान मिला हो। स्टैच्यूटरी।

प्राविष्ट्य [संज्ञा पु.] (सं.) क्रौंचद्वीप के एक खंड का नाम।

प्रावीण्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवीणता। कुशलता।

प्रावृट [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाऋतु।

प्रावृडत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) शरदऋतु।

प्रावृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-घूँघट। बुरका। २-ओढ़ने का वस्त्र।

प्रावृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घेरा। हाता। बाड़ा २-आत्मा-संबंधी अज्ञान। ३-आड़। रोक।

प्रावृषिक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रावृषिका] छुद एलची।

प्रावृष [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाऋतु।

प्रावृषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्षाकाल।

प्रावृषायणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केवांच। २-विषखोपरा।

प्रावृषिक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रावृषिकी] वर्षाऋतु में उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

प्रावृषिज [संज्ञा पु.](सं.) वर्षाऋतु में चलने वाली तीक्ष्ण वायु।

प्रावृषीण [वि.] (सं.) १-वर्षाऋतु संबन्धी। २-वर्षाकाल में उत्पन्न होने वाला।

प्रावृषेण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कदम्ब वृक्ष। २-कुटज। ३-धारकदम्ब। ४-प्रचुरता। विपुलता। ५-वर्षाऋतु में दिया जाने वाला कर। ६-ईति। [वि.] (सं.) वर्षाकाल में उत्पन्न।

प्रावृषेण्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-केंवांच। २-लाल पुनर्णवा।

प्रावृषेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रावृषेयी] वर्षाकाल में होने वाला।

प्रावृष्य [वि.] (सं.) जो वर्षाकाल में हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-धार कदम्ब। २-कुटज। कुरैया। ३-विकंटक। ४-वैदूर्य।

प्रावेण्य [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेप [वि.] (सं.) कांपने वाला।

प्रावेशन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवेश करना।

प्रावेशिक [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रावेशिकी] प्रवेश-सम्बन्धी या प्रवेश संयुक्त। प्रवेश का साधनभूत। जिसके द्वारा प्रवेश मिले।

प्राव्राज्य [वि.] (सं.) प्रव्रज्या-सम्बन्धी।

प्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाना। भोजन करना २-चखना।

प्राशनीय [वि.] (सं.) १-खाने के योग्य। २-चखने के योग्य।

प्राशस्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्रशस्त होने का भाव।

प्राशास्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशास्ता का भाव। २-प्रशास्ता नामक ऋत्वज का कृत्य।

प्राशित [वि.] (सं.) खाया हुआ। भक्षित। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितृतर्पण। पितृयज्ञ। २-भक्षण।

प्राशित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह छोटा टुकड़ा जो ब्रह्मोद्देश से अलग करके प्राशित्राहरण नामक पात्र में यज्ञों में पुरोडाश आदि में से काटकर रखा जाता है।

प्राशित्राहरण [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का एक पात्र विशेष।

प्राशी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्राशिनी] खाने वाला। भक्षक।

प्राश्निक [वि.] (सं.) १-सभा की कार्रवाई चलाने वाला। २-पूछने वाला।

प्राश्निपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) इस नाम का एक ऋषि।

प्राश्य [संज्ञा पु.] (सं.) गांव में रहने वाले पशु। जैसे-गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि।

प्रासंग, प्रासङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-हलका जुआ। २-तराजू की डंडी। ३-तराजू। तुला।

प्रासंगिक, प्रासङ्गिक [वि.] (सं.) १-प्रसंग का। प्रसंग-सम्बन्धी। २-प्रसंग द्वारा प्राप्त। ३-किसी प्रसंग में आकस्मिक रूप से सम्मुख आने वाला (व्यय आदि)। कंटिनजेंट। ४-अकालिक। अनुषंगिक। नैमित्तिक।

प्रासंगिकी, प्रासङ्गिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकस्मिक रूप से उपस्थित होने वाला वह प्रसङ्ग जिसमें कुछ विशेष कार्य या व्यय आदि करने की आवश्यकता आ पड़े। कन्टिनजेंसी।

प्रास [संज्ञा पु.] (सं.) बरछी। भाला। प्राचीन समय में होने वाला एक प्रकार का भाला।

प्रासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रास नामक अस्त्र। २-पांसा।

प्रासच [संज्ञा पु.] (सं.) अतिवृष्टि। बाढ़।

प्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) फेंकना। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्राशन'।

प्रासाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा मकान। महल। राजभवन। २-देवालय। मन्दिर। ३-राजमहल की चोटी। ४-बौद्धों के संघाराम में वह विशाल भवन जिसमें साधु लोग इकट्ठे होते हैं।

प्रासादकुक्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) कबूतर।

प्रासाद-पृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) राजभवन के ऊपर का छज्जा या बरामदा।

प्रासादप्रस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) राजभवन की समतल छत।

प्रासादशृंग, प्रासादशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-महल का शिखर। २-मंदिर का कलस या गुमटी।

प्रासादिक [वि.] (सं.) १-दयालु। कृपालु। २-सुन्दर। ३-प्रसाद-संबंधी। ४-जो प्रसाद में दिया जाय।

प्रासादीय [वि.] (सं.) प्रासाद-संबंधी। प्रासाद का

प्रासिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रास या भाला रखने वाला व्यक्ति।

प्रासु [संज्ञा पु.] (सं.) गहरी साँस।

प्रासेव [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े की लगाम।

प्रास्कण्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

प्रास्तारिक [वि.] (सं.) १-प्रस्तार-सम्बन्धी। २-जिसका विषय प्रस्तार में हो।

प्रास्थानिक [वि.] (सं.) वह वस्तु जो यात्रा के समय शुभ समझी जाती हो। जैसे-शंखध्वनि, दही, मछली आदि।

प्रास्थिक [वि.] (सं.) १-प्रस्थ-संबंधी। २-जो प्रस्थ के हिसाब से खरीदा गया हो। ३-

पाचक । [संज्ञा पु.] भूमि । जमीन ।

प्रास्पेक्टस [संज्ञा पु.] (अं.) वह छपा हुआ पत्र जिसमें किसी बड़े कार्य का विस्तृत वर्णन और कार्यप्रणाली आदि लिखी होती है ।

प्राहारिक [संज्ञा पु.] (सं.) पहरुआ । चौकीदार ।

प्राहुण [संज्ञा पु.] (सं.) पाहुना । अतिथि । मेहमान ।

प्राह्लाद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रह्लाद अर्थात् विरोचन की संतान ।

प्रिंटर [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी मुद्रणालय में छापने का कार्य करने वाला । २-वह जो छपी हुई वस्तुओं की छपाई का जिम्मेदार हो

प्रिंटिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) छापने का काम ।

प्रिंटिंगइंक [संज्ञा स्त्री.](अं.) छापने में काम आने वाली स्याही ।

प्रिंटिंगप्रेस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) हाथ से टाइप छापने की कल ।

प्रिंटिंगमशीन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) छापने की वह कल जो बिजली की शक्ति से चलती है ।

प्रिंस [संज्ञा पु.] (अं.) राजकुमार ।

प्रिंसिपल [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी बड़े विद्यालय अथवा कॉलेज आदि का प्रधान आचार्य २-वह मूलधन जिसे ब्याज पर ऋण दिया गया हो ।

प्रियंकर, प्रियङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम ।

प्रियंगु, प्रियङ्गु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कँगनी नामक अन्न । २-पीपल । ३-कुटकी । ४-राई । ५-राजिका ।

प्रियंगू, प्रियङ्गू [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रियंगु' ।

प्रियंवद [वि.] (सं.)[स्त्री. प्रियंवदा] मीठा बोलने वाला । प्रियभाषी । [संज्ञा पु.] (सं.) (सं.) २-एक गंधर्व ।

प्रियंवदा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शकुन्तला की एक सखी का नाम । २-एक वृत्ति का नाम जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, जगण रगण होता है ।

प्रिय [वि.] (सं.) १-जिससे प्रेम हो । प्यारा । २-सुन्दर । मनोहर । [संज्ञा पु.] (सं.) १-पति स्वामी । २-जामाता । दामाद । ३-कार्तिकेय । ४-एक प्रकार का हिरन, ५-जीवक नामक औषध ६-ऋद्धि । ७-कंगनी । ८-हित । भलाई । ९-बेंत १०-हरताल । ११-धाराकदंब । १२-धर्मात्मा और मुमुक्षुओं को प्रसन्न करने वाला । ईश्वर ।

प्रियक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीतशालक । २-कदंब वृक्ष । ३-केसर । ४-धारा कदंब । ५-चित्रमृग चितकबरा हिरन । ६-एक पक्षी । ७-शहद की मक्खी । ८-कंगनी नामक अन्न ।

प्रियकर [वि.] (सं.) आनन्ददायी । हर्षप्रद ।

प्रियकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) हितकार्य ।

प्रियकलत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पति जो अपनी भार्या को बहुत चाहता हो ।

प्रियकांची, प्रियकाङ्क्षी [वि.] (सं.) हितकारी । भला चाहने वाला ।

प्रियकाम, प्रियकारक [संज्ञा पु.] (सं.) भला चाहने वाला । शुभचिंतक ।

प्रियकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम ।

प्रियजन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमपात्र या प्यारा व्यक्ति ।

प्रियजात [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि का एक नाम ।

प्रियतनु [वि.] (सं.) सुंदर शरीर वाला ।

प्रियतम [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रियतमा] सबसे बढ़कर प्यारा । परमप्रिय । [संज्ञा पु.] १-पति । स्वामी । २-एक वृक्ष जिसे मोरशिखा भी कहते हैं ।

प्रियतर [वि.] (सं.) जो दो में से अधिक प्रिय हो ।

प्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रिय होने का भाव ।

प्रियतोषण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री मैथुन का आसन विशेष ।

प्रियत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रियता ।

प्रियद [वि.] (सं.) प्रिय वस्तु देने वाला ।

प्रियदत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी ।

प्रियदर्शन [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रियदर्शना] मनोहर । सुन्दर । खूबसूरत । [संज्ञा पु.] १-तोता । २-खिरनी का पेड़ । ३-एक गंधर्व का नाम ।

प्रियदर्शी [वि.] (सं.) सब को प्रिय समझने वाला । [संज्ञा पु.] अशोक राजा की उपाधि

प्रियधाम [संज्ञा पु.] (सं.) प्यारा स्थान ।

प्रियपात्र [वि.] (सं.) जिसके साथ प्रेम किया जाय ।

प्रियभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) मधुर वचन बोलना

प्रियभाषी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रियभाषिणी] मधुर वचन बोलने वाला ।

प्रियमधु [संज्ञा पु.] (सं) बलराम का एक नाम ।

प्रियमेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम । २-अजमीढ में एक पुत्र का नाम (भागवत) ।

प्रियरूप [वि.] (सं.) अति सुन्दर । मनोहर ।

प्रियल्ली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'प्रियवर्णी' ।

प्रियवक्ता [वि.] (सं.) प्रिय वचन बोलने वाला ।

प्रियवचन [संज्ञा पु.] (सं.) मधुर । वचन । प्रिय वाक्य ।

प्रियवर [वि.] (सं.) अति प्रिय । सबसे प्यारा ।

प्रियवर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंगनी नामक अन्न ।

प्रियवाद [संज्ञा पु.] (सं.) मधुर वचन । मीठी बोली ।

प्रियवादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारिका । मैना

प्रियवादी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रियवादिनी] मीठा या मधुर बोलने वाला ।

प्रियव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वयंभूमनु के पुत्र का नाम । २-वह जिसे व्रत प्रिय हो ।

प्रियशालक [संज्ञा पु.] (सं.) पियासाल ।

प्रियश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा का एक ना

प्रियसंगमन, प्रियसङ्गमन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रिय और प्रिया का मिलन स्थान । २-वह स्थान जहां अदिति और कश्यप मिलन हुआ था ।

प्रियसंदेश, प्रियसन्देश [संज्ञा पु.] (सं.) १-खबरी । अच्छा सन्देश । २-चंपा का पे

प्रियसख [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्यारा मित्र । खैर का पेड़ ।

प्रियसालक [संज्ञा पु.] (सं.) पियासाल नामक पे

प्रियांबु, प्रियाम्बु [संज्ञा पु.](सं.) १-आम पेड़ या फल । २-वह जिसे जल बहुत प्रिय

प्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नारी । स्त्री । २-भार्या । ३-इलायची । ४-चमेली । मल्लि ५-मदिरा । शराब । ६-प्रेमिका । माशू ७-कंगनी । ८-चौदह मात्रा का एक छ ९-एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में र होता है ।

प्रियाख्य [वि.] (सं.) प्रिय । प्यारा ।

प्रियातिथि [वि.] (सं.) अतिथि का सत्कार करने वाला ।

प्रियात्मज [संज्ञा पु.] (सं) पसह जाति का पक्षी (चरक) ।

प्रियात्मा [संज्ञा पु.](सं) वह जिसका चित्त और सरल हो ।

प्रियाल [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी का पेड़ ।

प्रियाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाख ।

प्रियाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं) कँगनी नामक अ

प्रियोदित [संज्ञा पु.] (सं.) मीठे बोल ।

प्रिवीकौंसिल [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी शासक को शासन विषयक कार्यों में देने वाले कुछ चुने हुए लोगों का इङ्गलैंड में वहां के राजा को परामर्श वाला परिषद् जिसका एक विभाग विभाग का सर्वप्रधान होता है ।

प्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रेम । प्रीति । २-चमक । ३-इच्छा । ४-तृप्ति । ५-तर्पण ।

प्रीअंक [संज्ञा पु.] (हिं.) कदंब । कदम ।

प्रीण [वि.] (सं.) १-प्रसन्न । सन्तुष्ट । प्राचीन । पुरातन । ३-पहले का । पुराना ।

प्रीत [वि.](सं.)१-प्रसन्न । आह्लादमय । २-संतुष्ट ३-प्यारा ।
 [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'प्रीति' ।

प्रीतम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रियतम

प्रीतात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

प्रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सन्तोष। २-हर्ष आनन्द। ३-प्रेम। स्नेह। मुहब्बत ४-कामदेव की स्त्री का नाम जो रति की सौत थी। ५-मध्यम स्वर की चार श्रुतियों में से अंतिम ६-फलित ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से दूसरा।

प्रीतिकर [वि.] (सं.) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला। प्रेमजनक।

प्रीतिकारक, प्रीतिकारी [वि.] (सं.) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला।

प्रीतिजुषा [संज्ञा स्त्री.](सं.) उषा का एक नाम जो अनिरुद्ध की पत्नी थी।

प्रीतिद [संज्ञा पु.] (सं.) विदूषक। भांड़। [वि.] (सं.) सुख देने वाला। प्रेम उत्पन्न करने वाला

प्रीतिदत्त, प्रीतिदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेमपूर्वक दिया हुआ दान। २-वह सम्पत्ति जो किसी स्त्री को उसके सगे सम्बन्धियों से मिली हो विशेष कर वह जो उसके ससुर या सास से विवाह के अवसर पर प्राप्त हुई हो।

प्रीतिदाय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमोपहार।

प्रीतिधन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम या मित्रता के नाते दिया हुआ धन या रुपया।

प्रीतिपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) कोई भी पुरुष या पदार्थ जिसके प्रति प्रेम हो। प्रेमपात्र।

प्रीतिभोज [संज्ञा पु.](सं.) मित्रों और बन्धुबांधवों के साथ बैठकर खानापीना। दावत।

प्रीतिभोज्य [वि.] (सं.) प्रेमपूर्वक खाने योग्य।

प्रीतिमान् [वि.] (सं.) प्रेम रखने वाला।

प्रीतिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेम।

प्रीतिरीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेमपूर्ण व्यवहार।

प्रीतिवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

प्रीत्यर्थ [अव्य.] (सं.) १-प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के लिए। २-लिए। वास्ते।

प्रुष्ट [वि.] (सं.) जलाकर राख किया हुआ। दग्ध।

प्रूफ [संज्ञा पु.] (अं.) १-प्रमाण। सबूत। २-किसी छपने वाली वस्तु का वह छपा नमूना जिसमें गलतियां ठीक की जाती हैं।

प्रूम [संज्ञा पु.](अं.) समुद्र की गहराई नापने का एक यन्त्र जो लट्टू के आकार का होता है।

प्रेंख, प्रेङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) १-झूलना। पेंग लेना। २-एक सामगान।

प्रेंखा, प्रेङ्खा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिलना। २-झूलना। ३-घोड़े की चाल। ४-यात्रा। भ्रमण। ५-नाच।

प्रेंखोलन, प्रेङ्खोलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिलना। २-झूलना। ३-काँपना।

प्रेक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) देखने वाला। दर्शक।

प्रेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखने की क्रिया। २-नेत्र। आंख। ३-कोई भी सार्वजनिक तमाशा

प्रेक्षणक [संज्ञा पु.] (सं.) खेल। तमाशा। स्वांग। लीला।

प्रेक्षणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसे तमाशा देखने का शौक हो।

प्रेक्षणीय [वि.] (सं.) १-देखने के योग्य। दर्शनीय। २-ध्यान देने के योग्य।

प्रेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखना। २-नृत्य अभिनय आदि देखना। ३-बुद्धि। प्रज्ञा। ४-दृष्टि। निगाह। ५-शोभा। ६-वृक्ष की शाखा या डाली। ७-विचार। आलोचन। मनन।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-रंगशाला। नाट्यशाला। २-मंत्रणागृह।

प्रेक्षासंयम [संज्ञा पु.] (सं.) सोने से पूर्व यह देख लेना कि इस स्थान पर जीव तो नहीं है। (जैनमत)।

प्रेक्षित [वि.] (सं.) देखा हुआ।

प्रेक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धिमान। समझदार।

प्रेक्ष्य [वि.] (सं.) १-जो देखा जाय। २-जो देखने योग्य हो। प्रेक्षणीय।

प्रेण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेरणा करना। २-गति। चाल।

प्रेत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मृत आत्मा की अवस्था जो और्ध्वदेहिक कृत्य किये जाने के पूर्व रह जाती है। २-मरा हुआ मनुष्य। मृतक प्राणी। ३-पिशाचों के समान एक कल्पित देवयोनि। ४-बहुत ही दुष्ट, स्वार्थी और दुष्ट व्यक्ति।

प्रेतकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) दाह से लेकर सपिंडी तक का वह कर्म जो मृतक प्राणी के उद्देश्य से किया जाता है। प्रेतकार्य।

प्रेतकार्य, प्रेतकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रेतकर्म'।

प्रेतगृह [संज्ञा पु.](सं.) १-वह स्थान जहाँ मुरदा फूंका जाता है। श्मशान। मरघट। २-कब्रिस्तान।

प्रेतगेह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रेतगृह'।

प्रेतचारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

प्रेतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रेतत्व'।

प्रेततर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) वह तर्पण जो किसी के मरने के दिन से सपिंडी के दिन तक किया जाता है।

प्रेतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेत का भाव या धर्म।

प्रेतदाह [संज्ञा पु.] (सं.) मृतक के जलाने आदि का कर्म।

प्रेतदेह [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार मृतक का वह कल्पित शरीर जो मृत्यु समय से सपिंडी करण तक उसकी आत्मा को प्राप्त होता है।

प्रेतधूम [संज्ञा पु.] (सं.) चिता से निकलने वाला धूआँ।

प्रेतनदी [संज्ञा स्त्री] (सं.) वैतरणी नदी।

प्रेतनाह [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

प्रेतनिर्यातक [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो धन लेकर मृतक का दाह करे।

प्रेतनिर्हारक [संज्ञा पु.] (सं.) मृत को श्मशान भूमि तक उठाकर ले जाने वाला।

प्रेतनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूतनी। चुड़ैल।

प्रेतपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) क्वार का अंधियारा या कृष्णपाख जो पितृपक्ष कहलाता है।

प्रेतपटह [संज्ञा पु] (सं.) वह ढोल जो किसी के जनाजे को ले जाते समय बजाया जाता है। (ऐसे प्राचीनकाल में होता था)।

प्रेतपति [संज्ञा पु.] (सं.) यम का एक नाम।

प्रेतपावक [संज्ञा पु.] (सं.) रात्रि के समय रेगिस्तान, जंगलों आदि में चलता हुआ दिखाई पड़ने वाला प्रकाश। शहाब। लुक।

प्रेतपिंड [संज्ञा पु.] (सं.) मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक नित्य दिया जाने वाला अन्न का वह पिंड जिसके सम्बन्ध में यह माना जाता है कि इससे प्रेत देह बनती है।

प्रेतपुर [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुर।

प्रेतभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्मशान।

प्रेतमेध [संज्ञा पु.](सं.) मृतक के उद्देश्य किया जाके वाला श्राद्ध।

प्रेतयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जो प्रेत योनि प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाता था।

प्रेतराक्षसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी।

प्रेतलोक [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोक जहां प्रेत निवास करते हैं। यमपुर।

प्रेतवन [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान।

प्रेतविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरे हुए लोगों की आत्माओं को बुलाकर उनसे संपर्क स्थापित करके वार्तालाप करने की विद्या।

प्रेतविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृतक का दाह आदि करना।

प्रेतविमाना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंच प्रेत के विमान वाली भगवती।

प्रेतशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गया तीर्थ की वह शिला जिस पर प्रेतों के उद्देश्य से पिंडदान किया जाता है।

प्रेतशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेतशौच।

प्रेतशौच [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मरे हुये नातेदार के सूतक की शुद्धि।

प्रेतश्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मरने की तिथि से एक वर्ष के अन्तर में होने वाले सोलहश्राद्ध जिनमें सपिंडी, मासिक और षाण्मासिक श्राद्ध भी शामिल हैं।

प्रेतहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृत शरीर को उठाकर

श्मशानभूमि तक ले जाने वाला। २-मृतक का सगा या नावेदार।

प्रेता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिशाची। स्त्री-प्रेत। २-कात्यायिनी का एक नाम।

प्रेतात्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरे हुए व्यक्ति की आत्मा।

प्रेताधिप [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

प्रेतान्न [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेत के उद्देश्य से दिया जाने वाला अन्न।

प्रेताशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृतकों को खाने वाली। २-भगवती का एक नाम।

प्रेताशौच [संज्ञा पु.] (सं.) मरने का अशौच। सूतक।

प्रेतास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्दे की हड्डी।

प्रेतास्थिधारी [संज्ञा पु.] (सं.) मृतक की हड्डियों की माला पहनने वाला। रुद्र।

प्रेति [संज्ञा पु.](सं.) १-मरण। मरना। २-अन्न। अनाज।

प्रेतिक [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्त व्यक्ति। प्रेत।

प्रेतिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेत की पत्नी। पिशाचिनी।

प्रेती [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रेत की उपासना या पूजा करने वाला।

प्रेतीवाल, प्रेतीवाला [संज्ञा पु.] (देश.) वह व्यक्ति जो कभी निज के लिए और कभी स्वामी के लिए कार्य करे।

प्रेतीषणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि का एक नाम

प्रेतेश [संज्ञा पु] (सं.) यमराज।

प्रेतोन्माद [संज्ञा प.] (सं.) एक प्रकार का पागलपन जिसके सम्बंन्ध में लोगों का विचार है कि यह प्रेतों के कोप से होता है।

प्रेत्य [संज्ञा पु.] (सं.) परलोक। लोकान्तंर।

प्रेत्यभाव [संज्ञा पु.] (सं.) बारम्बार जन्म लेना और मरना।

प्रेत्यभाविक [वि.] (सं.) प्रेत्य भाव या इहलोक सम्बन्धी।

प्रेप्सु [वि.] (सं.) अभिलाषी। इच्छुक।

प्रेम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मनोवृत्ति जो किसी को बहुत अच्छा समझ कर हमेशा उसके साथ अथवा पास रहने के लिए प्रेरित करती है। मुहब्बत। प्रीति। प्यार। २-स्त्री और पुरुष जाति के ऐसे प्राणियों का पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण, सान्निध्य या कामवासना के कारण होता है। प्यार। प्रीति। मुहब्बत। ३-माया और लोभ। ४-केशव के मतानुसार एक अलङ्कार।

प्रेमकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) प्रीति करने वाला प्रेमी।

प्रेमकलह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम के कारण हास-परिहास या झगड़ा करना।

प्रेमगर्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य में वह नायिका या स्त्री जिसे इस बात का अभिमान हो कि मेरा पति मुझे बहुत चाहता है।

प्रेमजल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पसीना। २-प्रेमाश्रु।

प्रेमजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरीचि ऋषि की स्त्री का नाम।

प्रेमनीर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम के कारण आँखों से निकलने वाला आंसू। प्रेमाश्रु।

प्रेमपातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेमावेग में रोना। २-प्रेमाधिक्य के कारण निकलने वाले आंखों के आंसू।

प्रेमपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमपाश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेम का फन्दा या जाल

प्रेमपुत्तलिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्यारी स्त्री। २-पत्नी। भार्या।

प्रेमपुलक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेम के कारण होने वाला रोमांच।

प्रेमप्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा आदि के शब्द जिनसे राग रागिनी निकलती है।

प्रेमबंध, प्रेमबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) गहरा प्रेम।

प्रेमभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की वह भक्ति जो बड़े प्रेम से की जाय।

प्रेमलक्षणाभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण के चरणों में भक्ति।

प्रेमवारि [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमाश्रु।

प्रेमा [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्नेह। २-स्नेही। ३-इन्द्र। ४-वायु। ५-उपजातिवृत का ग्यारहवां भेद जिसके पहले, दूसरे और चौथे चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, और दो गुरु होते हैं तथा तीसरे चरण में क्रमशः दो तगण जगण और दो गुरु होते हैं।

प्रेमाक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) अक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें प्रेम का वर्णन करने ही में बाधा दिखलाई जाती है। (केशव)।

प्रेमामृत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमरूप अमृत या सुधा।

प्रेमालाप [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमपूर्वक होने वाली बातचीत या वार्तालाप।

प्रेमालिंगन, प्रेमालिङ्गन [संज्ञा पु.](सं.) १-सप्रेम गले लगना। २-कामशास्त्र में वर्णित नायक और नायिका का एक आलिंगन विशेष।

प्रेमाश्रु [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम के कारण नेत्र से निकलने वाले अश्रु या आंसू।

प्रेमिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम करने वाला। प्रेमी।

प्रेमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिससे प्रेम किया जाय। प्रेयसी।

प्रेमी [संज्ञा पु.](सं.) १-चाहने वाला। प्रेम करने वाला। अनुरागी। २-आसक्त। आशिक।

प्रेय:मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वह मार्ग जो लोगों को सांसारिक विषयों में फंसाता है। अविद्या मार्ग।

प्रेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक अलंकार जिसमें को एकं भाव दूसरे भाव का या स्थाई का होता है।

प्रेयर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-स्तुति। प्रार्थना। २- ईश्वर प्रार्थना।

प्रेयस् [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रेयसी] प्रियतम। सबसे प्यारा। [संज्ञा पु.] (सं.) प्यारा व्यक्ति। प्रियतम।

प्रेयसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेमिका।

प्रेयस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियता।

प्रेरक [वि.] (सं.) प्रेरणा देने वाला। किसी कार्य में प्रवृत्त करने वाला।

प्रेरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को किसी कार्य में लगाना या प्रवृत्त करना।

प्रेरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी को किसी काय में लगाने या प्रवृत्त करने की क्रिया या भाव। हलकी उत्तेजना। २-दबाव। जोर।

प्रेरणार्थक-क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के सम्बन्ध में यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुआ है।

प्रेरणीय [वि.] (सं.) किसी कार्य के लिए प्रवृत्त अथवा नियुक्त करने के योग्य। प्रेरणा करने के योग्य।

प्रेरना* [क्रि. स.] (हिं.) प्रेरणा करना।

प्रेरयिता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रेरयित्री] १-प्रेरणा करने वाला। २-भेजने वाला। ३-आज्ञा देने वाला।

प्रेरित [वि.] (सं.) १-जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो। २-भेजा हुआ। प्रेषित।

प्रेषक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के पास कोई वस्तु भेजने वाला व्यक्ति। सेंडर।

प्रेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई वस्तु किसी के पास कहीं से भेजना या रवाना करना। रेमिट। २-वह वस्तु जो कहीं से किसी के पास भेजी जाय। रैमिटेंस। कंसाइनमेंट।

प्रेषित [वि.] (सं.) १-भेजा या रवाना किया हुआ। २-प्रेरित। प्रेरणा किया हुआ। ३-स्वरसाधन की एक प्रणाली।

प्रेषितक [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्तु जो कहीं से भेजी जाय। कंसाइनमेंट।

प्रेषितव्य [वि.](सं.) जो प्रेषण करने के योग्य हो।

प्रेषिती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह जिसके पास कोई वस्तु प्रेषित की या भेजी जाय। कंसाइनी।

प्रेष्ठ [वि.] (सं) [स्त्री प्रेष्ठा] १-प्रियतम। २-पति।

प्रेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] १-प्रेमिका। २-पत्नी। ३-जांघ।

प्रेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-नौकर। दास। २-दूत। [वि.] जो भेजने के योग्य हो।

प्रेष्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दासत्व। २-दूतत्व।

प्रेस [संज्ञा पु.] (अं.) १-छापाखाना। २-छापने की कल। ३-समाचार-पत्रों का वर्ग। ४-रूई ऊन आदि दबाने की कल।

प्रेस-एक्ट [संज्ञा पु.] (अं.) वह कानून जिसके द्वारा छापेखाने वालों के स्वत्वों तथा स्वतन्त्रता आदि का नियन्त्रण होता है।

प्रेसमन [संज्ञा पु.] (अं.) छापे की कल चलाने वाला व्यक्ति।

प्रेसिडेंट [संज्ञा पु.] (अं.) १-सभा या समिति का प्रधान या सभापति। २-राष्ट्रपति।

प्रेसिडेंसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-सभापति का पद या काम। २-शासन के सुबीते के विचार से कुछ निश्चित प्रदेशों अथवा प्रांतों का किया हुआ विभाग जिसका अध्यक्ष गवर्नर होता है।

प्रैय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम। स्नेह।

प्रैयव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रियव्रत के वंशज।

प्रैष [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेषण। भेजना। २-संकट। विपत्ति। ३-विक्षिप्तता। पागलपन। ४-वह शब्द अथवा वाक्य जिसमें किसी प्रकार का आदेश हो।

प्रैष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-नौकर। सेवक। २-दासत्व।

प्रैष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौकरनी। दासी। चाकरनी।

प्रोठ, प्रोएठ [संज्ञा पु.] (सं.) पीकदान। उगालदान।

प्रोक्त [वि.] (सं.) १-कहा हुआ। कथित। २-कही हुई बात कहना।

प्रोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी की कही हुई बात अथवा उक्ति जो कहीं उद्धृत की गई हो अथवा की जाय। कोटेशन।

प्रोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल छिड़ककर पवित्र करना। २-यज्ञ में वध के पूर्व यज्ञीय पशु पर जल छिड़कना। ३-विवाह की परिछन्न नामक रीति। ४-एक संस्कार जो श्राद्ध आदि में किया जाता है।

प्रोक्षणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह पवित्र जल जो मार्जन के लिए अथवा छिड़कने के लिए हो। २-वह पात्र जिसमें प्रोक्षण के लिए जल रखा जाता है। ३-होमादि के समय अनामिका में पहनने की कुश की मुद्रिका।

प्रोक्षित [वि.] (सं.) १-सींचा हुआ। २-बलिदान के पूर्व जल का छींटा मारा हुआ। ३-मारा या वध किया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) वह मांस जो यज्ञ के लिए संस्कृत किया गया हो।

प्रोक्षितव्य [वि] (सं.) जो प्रोक्षण के योग्य हो।

प्रोग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्यक्रम। २-कार्यक्रम-सूचकपत्र।

प्रोटेस्टेंट [संज्ञा पु.] (अं.) ईसाईयों का एक संप्रदाय।

प्रोढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'प्रौढ़ा'।

प्रोत [वि.] (सं.) १-सिला हुआ। टांका लगाया हुआ। २-किसी में भलीभांति मिला हुआ। ३-छिपा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) (बुना हुआ) कपड़ा। वस्त्र।

प्रोत्कर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठता। उत्तमता।

प्रोत्खात [वि.] (सं.) खुदा हुआ।

प्रोत्तुंग, पोत्तुङ्ग [वि.] (सं.) बहुत ऊंचा।

प्रोत्तेजित [वि.] (सं.) अत्यधिक उत्तेजित किया हुआ।

प्रोत्थित [वि.] (सं.) उठाया हुआ। ऊंचा किया हुआ।

प्रोत्फल [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ की जाति का एक वृक्ष।

प्रोत्फुल्ल [वि.] (सं) भली भांति खिला हुआ। विकसित।

प्रोत्सारण [संज्ञा पु.] (सं.) पिंड छुड़ाना। पीछा छुड़ाना।

प्रोत्सारित [वि.] (सं.) १-स्थानांतरित किया हुआ निकाला या हटाया हुआ। २-त्यागा हुआ।

प्रोत्साह [संज्ञा पु.] (सं.) अतिशय उत्साह या उमंग

प्रोत्साहक [संज्ञा पु.] (सं.) उत्साह बढ़ाने वाला हिम्मत बढ़ाने वाला।

प्रोत्साहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम को करने के लिये उत्साह या हिम्मत बढ़ाना। २-नाटक में एक अलंकार।

प्रोत्साहित [वि.] (सं.) (जिसका) उत्साह खूब बढ़ाया गया हो। (जो) खूब उत्तेजित किया गया हो। (जिसकी) खूब हिम्मत बँधाई गई हो।

प्रोथ [वि.] (सं.) १-विख्यात। प्रसिद्ध। २-स्थापित। ३-भीषण। भयानक। [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े का नथुना। २-शूकर का थूथन। ३-कमर। पेड़ू। चूतड़। २-गर्त्त। गड्ढा। ६-गर्भाशय।

प्रोथथ [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े का हिनहिनाना।

प्रोथी [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

प्रोद्घोषण [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. प्रोद्घोषणा] १-घोषणा। २-उच्च स्वर में बोलना।

प्रोद्भवन [संज्ञा पु.] (सं.) लाभ प्राप्त होना। जमा होना। बढ़ना।

प्रोद्भुत [वि.] (सं.) निकला हुआ। उगा हुआ।

प्रोद्भूत [वि.] (सं.) जमा किया हुआ। बढ़ा हुआ

प्रोन्नत [वि.] (सं.) १-अतिशय ऊँचा। २-निकला हुआ।

प्रोन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्ग, पद, मर्यादा आदि में ऊपर चढ़ना या उन्नति करना। प्रोमोशन।

प्रोपोज [क्रि. स.] (अं.) १-प्रस्ताव करना। २-तजवीज करना।

प्रोपोजल [संज्ञा पु] (अं.) प्रस्ताव।

प्रोप्राइटर [संज्ञा पु.] (अं.) स्वामी। मालिक।

प्रोफेसर [संज्ञा पु.] (अं.) १-विश्वविद्यालय का आचार्य या अध्यापक। २-किसी विषय का बड़ा पंडित।

प्रोबेशन [संज्ञा पु.] (अं.) किसी कार्य को करने की योग्यता के विषय में जाँच।

प्रोबेशनरी [वि.] (अं.) १-योग्यता की जाँच से संबंध रखने वाला। २-जो इस शर्त पर नियुक्त किया जाय कि यदि संतोषजनक कार्य करेगा तो स्थायीरूप से नियुक्त कर लिया जायेगा।

प्रोमोशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी पदाधिकारी का अपने पद से ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाना। २-छात्र का किसी कक्षा में से आगे वाली श्रेणी में भेजा जाना।

प्रोष [संज्ञा पु.] (सं.) अतिशय दुःख या कष्ट। संताप।

प्रोषक [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम। (महाभारत)।

प्रोषित [वि.] (सं.) जो विदेश गया हो। प्रवासी

प्रोषितनायक (पति) [संज्ञा पु.] वह नायक जो अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो।

प्रोषितपतिका (नायिका) [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति के विदेशगमन से दुखी स्त्री या नायिका।

प्रोषितप्रेयसी, प्रोषितभर्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रोषितपतिका।

प्रोषितभार्यानायक [संज्ञा पु.] (सं.) वह नायक जो अपनी पत्नी या नायिका के विदेशगमन के कारण दुखी हो।

प्रोष्यत्पत्नी-नायक [संज्ञापु.] (सं.) वह नायक जिसकी नायिका विदेश जाने वाली हो।

प्रोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की मछली। २-बैल। साँड़। ३-तिपाई। काठ का मूढ़ा। स्टूल।

प्रोष्ठपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भादों का महीना। २-पूर्व-भाद्रपद और उत्तर-भाद्रपद नक्षत्र।

प्रोष्ठपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा-नक्षत्र।

प्रोष्ठी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक प्रकार की मछली जिसे सौरी भी कहते हैं।

प्रोष्ण [वि.] (सं.) जो बहुत गरम हो।

प्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-तर्क। २-हाथी का पैर। ३-गाँठ। जोड़।

प्रोहित [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पुरोहित'।

प्रौढ़ [वि.] (सं.) [स्त्री. प्रौढ़ा] १-पूर्ण वृद्धि को

प्राप्त। पका हुआ। २-जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३-अच्छी तरह बढ़ा हुआ। ४-गंभीर। गूढ़। ५-पुराना। ६-निपुण। चतुर।
[संज्ञा पु.] तांत्रिकों का चौबीस अक्षर वाला एक मन्त्र।

प्रौढ़ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रौढ़ होने का भाव।

प्रौढ़त्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्रौढ़ता।

प्रौढ़पाद [संज्ञा पु.] (सं.) उकड़ू बैठना।

प्रौढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अधिक उम्र वाली स्त्री। (३० से ५० या ५५ वर्ष तक की वयस वाली स्त्री प्रौढ़ा मानी जाती है)। २-साहित्य में वह नायिका जो कामकला आदि अच्छी तरह जानती हो। ३-साहित्य के अनुसार वह शब्द योजना जिसके द्वारा रचना में प्रासाद गुण आता है।

प्रौढ़ाअधीरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक में विलाससूचक चिह्न देख कर प्रत्यक्ष क्रोध करे।

प्रौढ़ाधीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने नायक में विलाससूचक चिह्न देख कर व्यंग्य रूप से क्रोध प्रकट करे।

प्रौढ़ाधीराधीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो अपने नायक में पर-स्त्री-गमन के चिह्न देखने पर कुछ प्रत्यक्ष और कुछ व्यंग्यपूर्वक से कोप प्रकट करे।

प्रौढ़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रौढ़ता। २-धृष्टता। ढिठाई। ३-शक्ति। सामर्थ्य। ४-वाद-विवाद।

प्रौढ़ोक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अलंकार जिस में उत्कर्ष का हेतु न रहने पर कल्पित किया जाता है। २-किसी बात को खूब बढ़ाकर कहना।

प्रौण [वि.] (सं.) निपुण। चतुर।

प्रौष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सौरी नामक मछली।

प्रौष्ठपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भादों का महीना। २-कुबेर के एक निधिरक्षक का नाम।

प्रौष्ठपदिक [संज्ञा पु.] (सं.) भादों का महीना।

प्रौष्ठपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाद्रमास की पूर्णिमा

प्लक [संज्ञा पु.](सं.) स्त्रियों के कटि प्रदेश से नीचे का भाग।

प्लक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाकरवृक्ष। २-पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ३-एक तीर्थ का नाम। ४-दरवाजा या बड़ी खिड़की।

प्लक्षजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती नदी।

प्लक्षतीर्थ [संज्ञा पु] (सं.) एक तीर्थ जिसका उल्लेख हरिवंश में मिलता है।

प्लक्षराज [संज्ञा पु.] (सं.) सरस्वती नदी के उद्गम-स्थान का नाम।

प्लक्षादेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती नदी का नाम।

प्लक्षावतरण [संज्ञा पु.] (सं.) सरस्वती नदी के उद्गम स्थान का नाम।

प्लति [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि का नाम

प्लवंग, प्लवङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दर। वानर। २-मृग। हिरन। ३-पाकरवृक्ष। ४-साठ सम्वत्सरों में से इकतालीसवां सम्वत्सर।

प्लवंगम, प्लवङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दर। २-मेंढक। ३-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ और तेरह के विराम से इक्कीस मात्राएं, आदि का वर्ण गुरु तथा अंत में एक जगण और एक गुरु होता है।

प्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल की बाढ़। २-सांठ सम्वत्सरों में से पैंतीसवाँ संवत्सर। ३-मुरगा। ४-कारंडवपक्षी। ५-मेंढक। ६-बन्दर। ७-भेड़। ८-नागरमोथा। ९-चांडाल १०-शत्रु। दुश्मन। ११-नहाना। १२-तैरना १३-एक प्रकार का बगला। १४-गोपालकरंज १५-अन्न। १६-शब्द। १७-कोई जलपक्षी। १८-मछली पकड़ने का काठ का टापा।
[वि.] (सं.) १-तैरता हुआ। २-झुकता हुआ। ३-क्षणभंगुर।

प्लवक [वि.] (सं.) तैरने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-मेंढक। २-पाकरवृक्ष। ३-तलवार की धार पर नाच करने वाला नट

प्लवग [संज्ञा पु.] (सं) १-मेंढक। २-बंदर। ३-हिरन। ४-जलपक्षी। ५-सूर्य का सारथी। ६-सिरस का पेड़।

प्लवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-तैरना। २-उछलना। कूदना।

प्लवर्ग [संज्ञा पु] (सं.) १-अग्नि। आग। २-जलपक्षी।

प्लविता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्लवित्री] तैरने वाला तैराक।

प्लांचेट [संज्ञा पु.] (अं.) मेस्मरिज़्म की एक पान के आकार की तख्ती जिसमें नीचे की ओर पहिये और पेंसिल लगी होती है जिससे लोग अपने प्रश्नों के उत्तर पूछते हैं। और पेंसिल स्वतः लिख देती है।

प्लाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाकर का फल। २-प्लक्ष का भाव।
[वि.] (सं.) प्लक्ष-सम्बन्धी। प्लक्षका।

प्लाक्षायन [संज्ञा पु.] (सं.) प्लाक्षि के गोत्र में उत्पन्न।

प्लॉट [संज्ञा पु.] (अं.) १-भूमि का बड़ा टुकड़ा। २-कथावस्तु। ३-षडयंत्र।

प्लाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोता। डुबकी। २-परिपूर्णता।

प्लावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल की बाढ़। २-भली भाँति धोना। ३-तैरना। ४-बहुत दिनों के बाद संसार में आने वाली वह पानी की भीषण बाढ़ जिसकी गिनती प्रलय में होती है। डेल्यूज।

प्लावनिक [वि.] (सं.) प्लावन व. बाढ़ सम्बन्धी। डिल्यूविअल।

प्लावित [वि.] (सं.) १-जल की बाढ़ में डूबा हुआ। २-पानी में डूबा हुआ।

प्लात्य [वि.] (सं.) जो जल में डुबाया जाय।

प्लाशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नाड़ी जो पुरुष के मूत्रेंद्रिय की जड़ के पास होती है।

प्लाशुक [वि.] (सं.) जो जल्दी पक जाय।

प्लास्टर [संज्ञा पु.] (अं.) पलस्तर। लेप।

प्लीडर [संज्ञा प.] (अं.) १-वकील। २-किसी का पक्ष लेकर वाद-विवाद करने वाला।

प्लीहघ्न, प्लीहशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) रोहेड़ा नामक वृक्ष।

प्लीहा [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेट की तिल्ली। २-तिल्ली बढ़ जाने का रोग।

प्लीहाकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) कान का एक रोग।

प्लीहारि [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वत्थ।

प्लीहार्णवरस [संज्ञा पु.] (सं.) प्लीहा रोग की औषध का नाम।

प्लीहाविद्रधि [संज्ञा पु.] (सं.) तिल्ली का एक रोग जिसमें रुकरुक कर सांस आती है।

प्लीहाशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) रोहड़ा।

प्लीहोदर [संज्ञा पु.] (सं.) प्लीहा या तिल्ली का रोग।

प्लीहोदरी [वि.] (सं.)[स्त्री. प्लीहोदरिणी] जिसे प्लीहा या तिल्ली का रोग हुआ हो।

प्लुषि [संज्ञा पु.] (सं.) १-आग। २-प्रेम।

प्लुत [संज्ञा पु.](सं.) १-घोड़े की टेढ़ी चाल जिसे पोई भी कहते हैं। २-दीर्घ से भी बड़ा तीन मात्राओं वाला स्वर। ३-संगीत में तीन मात्राओं वाला ताल। टेढ़ी चाल। [वि.] (सं.) १-काँपता हुआ। चलने वाला। २-प्लावित। ३-तराबोर। ४-जिसमें तीन मात्रायें हों।

प्लुतगति [वि.] (सं.) कूद-कूदकर चलने वाला।

प्लुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घोड़े की चाल जिसे पोई सकते हैं। २-वह वर्ण जो तीन मात्राओं से बोला जाता है। ३-उछल कूद की चाल।

प्लुष [संज्ञा पु.](सं.) १-जलना। २-भूमि।

प्लुष्ट [वि.] (सं.) जला हुआ। दग्ध।

प्लेग [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन। २-महामारी।

प्लेट [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी धातु का पत्तर या टुकड़ा। २-तश्तरी। रकाबी। ३-फोटो लेने का शीशा। ४-धातु का चौड़ा पत्तर जिस पर कोई लेख खुदा हो।

प्लेटफार्म [संज्ञा पु.] (अं.) १-समतल ऊंचा

२-रेलवे स्टेशन पर बना हुआ ऊँचा चबूतरा जिससे सटकर रेलगाड़ी खड़ी होती है।

प्लैटिनम [संज्ञा पु.] (अं.) एक धातु जो चाँदी के रंग की होती है।

प्लोत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पित्त विकार जो मुँह से गिरता है। २-पट्टी।

प्लोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाह। जलन। २-भक से जलजाना।

प्लोषण [संज्ञा पु.] (सं.) जलन। दाह।

फ

फ हिन्दी वर्णमाला का बाईसवां व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है और इसके उच्चारण में अभ्यन्तर प्रयत्न होता है। इसका उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग होठों से छूता है, अतः इसे स्पर्शवर्ण कहते हैं।

फँक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फाँक'।

फंका* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फंकी] १-कतरा टुकड़ा। खंड। २-सूखे दोनों अथवा बुकनी की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुंह में फांकी जा सके।

फंकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फांकने की दवा जो चूर्ण रूप में हो। २-उतनी दवा जितनी एक बार में फांकी जा सके। *३-छोटी फांक या टुकड़ा।

फंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फंदा। २-प्रेम। अनुराग।

फंजिका, फञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दंती-वृक्ष। २-जवासा। ३-देवताड़। ४-भारंगी नामक क्षुप।

फंजिपत्रिका, फञ्जिपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

फंजी, फञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ। दंतीवृक्ष। ३-भारंगी नामक क्षुप।

फंट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फणि'।

फंड [संज्ञा पु.] (अं.) किसी कार्यविशेष के लिए एकत्र धन। निधि।

फंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बन्धन। २-जाल। फांस। फन्दा। ३-छल। धोखा। ४-मर्म। रहस्य। ५-कष्ट। दुःख। ६-नथ की काँटी फँसाने का फन्दा जिसे गूंज भी कहते हैं।

फंदना* [क्रि. अ.] (हिं.) फंसना। फंदे में पड़ना। [क्रि. स.] फाँदना। लाँघना।

फंदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फंदा'।

फंदवार [वि.] (हिं.) फंदा लगाने वाला।

फंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी को फँसाने या बांधने के लिए बनाया हुआ रस्सी आदि का घेरा। २-जाल। फांस। पाश। ३-कष्ट देने वाला बन्धन।

फंदा देना या लगाना-१-धोखा या जाल फैलाना। २-गांठ लगाकर फंदा लगाना। *फंदा पड़ना*-१-फँसना। २-जाल पड़ना। *फन्दा लगना*-जाल या धोखा चलना। *फन्दे में पड़ना या फँसना*-१-संकट में पड़ना। २-धोखे या वश में आ जाना। फन्ददार-गलीचे या कसीदे में बुनी या काढ़े जाने वाली एक प्रकार की बेल।

फँदाना [क्रि. स.] (हिं.) १-फंदे या जाल में फँसाना। २-कुदाना।

फँफाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-शब्द उच्चारण करते समय जीभ कांपना। हकलाना। २-खौलते हुए दूध आदि का ऊपर को उठना।

फँसना [क्रि. स.] (हिं.) १-बन्धन या फंदे में पड़ना। २-उलझना। अटकना।

किसी से फँसना-किसी से अनुचित सम्बन्ध होना या जुड़ना। *बुरा फँसना*-संकट या विपत्ति में पड़ना।

फँसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की हथौड़ी जिससे कसेरा बरतनों का गला बनाता है।

फंसाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फँदे में उलझाना। २-अपने जाल या वश में लाना। ३-अटकाना।

फंसिहारा* [वि.] (सं.) [स्त्री. फँसहारिन] १-फँसाने वाला। २-फांसी लगाने वाला।

फँसौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फांसी की रस्सी या डोरी। २-जाल। फंदा।

फ [संज्ञा पुं.] (सं.) १-रूखा बोल। २-फूत्कार। फूक्कार।

फक [वि.] (हिं.) १-स्वच्छ। सफेद। २-बदरंग। *रंग फक हो जाना या फक पड़ जाना*-चेहरे का रंग फीका पड़ जाना। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दो मिली हुई वस्तुओं का अलग-अलग होना। छूटना।

फकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दुर्दशा। दुर्गति।

फकत [वि.] (अं.) १-केवल। सिर्फ। २-बस। पर्याप्त।

फकीर [संज्ञा पु.] (अं.) [स्त्री. फकीरन, फ़कीरनी] १-भिखमंगा। भिक्षुक। २-साधु। ३-निर्धन व्यक्ति।

फकीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भिखमंगापन। २-साधुता। ३-निर्धनता। ४-एक प्रकार का अंगूर।

फक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सर्वदा दरिद्र पर मस्त रहने वाला व्यक्ति। २-वाहियात और उदंड व्यक्ति। ३-गन्दी बातें। गालीगलौज।

फक्कड़बाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गन्दी और वाहियात बातें बकना।

फक्किका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह जो शास्त्रार्थ में दुरूह-स्थल को स्पष्टीकरण करने के लिए पूर्व पक्ष के रूप में कहा जाय। २-धोखेबाजी। ३-अनुचित व्यवहार।

फख्र [संज्ञा पु.] (फा.) गौरव।

फग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फंग'।

फगुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-होली के त्यौहार का दिन। २-फाग। बसंतागमन के उपलक्ष में होने वाला आमोद-प्रमोद। ३-फागुनमास में गाये जाने वाले गीत। ४-फाग खेलने के उपलक्ष में दिया जाने वाला उपहार।

फगुआ खेलना-होलिकोत्सव पर परस्पर अबीर आदि डालना। *फगुआ मनाना*-स्त्री-पुरुषों का परस्पर गुलाल आदि मलकर फाग मनाना।

फगुआना [क्रि. स.] (हिं.) किसी पर फागुन मास में रंग अबीर डालना या किसी के प्रति अश्लील गीत गाना।

फगुन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

फगुनहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फागुन में चलने वाली तेज हवा जो गर्द भरी होती है। २-फागुन मास में होने वाली वर्षा।

फगुनिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) त्रिसन्धि नामक फूल

फगुंहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फगुहारा'।

फगुहारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फगुहारिन, फगुहारी] १-किसी के घर फागुन में होली खेलने के लिए जाने वाले। २-फगुआ गाने वाला व्यक्ति।

फजर [संज्ञा स्त्री.] (अं.) प्रातःकाल। सबेरा।

फजल [संज्ञा पु.] (अं.) अनुग्रह। कृपा।

फजिर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फजर। सबेरा।

फजिल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) फजल। कृपा।

फजीलत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) उत्कृष्टता। श्रेष्ठता।

फजीलत की पगड़ी-विद्वतासूचक पदक या चिह्न। (मुसलमान)।

फजीहत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दुर्दशा। दुर्गति।

फजीहती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फजीहत'।

फजूल [वि.] (अं.) व्यर्थ।

फजूलखर्च [वि.] (फा.) अपव्ययी। व्यर्थ खर्च करने वाला।

फजूलखर्ची [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अपव्यय।

फट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी पतली और हलकी वस्तु के गिरने का शब्द। २-एक तांत्रिक शब्द जिसको अस्त्र मंत्र भी कहते हैं ३-दुतकार। ४-गाड़ी के नीचे रखने का टाट या चटाई का टुकड़ा।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप का फैला हुआ फन। २-दाँत। ३-बदमाश।

फटसे-झट। तुरन्त।

फटक* [संज्ञा पु.] (हिं.) स्फटिक। बिल्लौर पत्थर। [क्रि. वि.] (हिं.) झट। तत्क्षण।

फटकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फटकने की क्रिया या भाव। २-फटककर अलग निकाला हुआ अंश।

फटकना [क्रि. स.] (हिं.) १-फटफट शब्द करना २-अस्त्र आदि फेंकना या चलाना। ३-पटकना। ४-रुई आदि धुनना। ५-अन्न आदि को सूप में रख कर उसे उछालते हुए साफ करना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-कुछ पास जाना या पहुँचना। २-फड़फड़ाना। ३-हाथ पैर हिलाना। [संज्ञा पु.] (हिं.) गुलेल का फीता।

फटकरना [क्रि. अ.] (हिं.) फटकारा जाना। [क्रि. स.] (हिं.) फटकना।

फटका* [संज्ञा पु.](हिं.) १-रूई धुनने की धुनकी २-रस और गुणहीन कोरी तुकबंदी। ३-तड़फड़ाहट। ४-चिड़ियों को उड़ाने के लिए पेड़ पर बंधी हुई लकड़ी जिसकी रस्सी खींचने और ढीली करने से उसमें फटफट शब्द होता है। ५-एक प्रकार की बालुई मिट्टी ६-देखो 'फाटक'।

फटकाना* [क्रि. स.](हिं.) १-फटकने का काम दूसरे से कराना। २-फेंकना। अलग करना।

फटकार [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-फटकारने की क्रिया या भाव। २-भर्त्सना। झिड़की। ३-देखो 'फिटकार'।

फटकारना [क्रि. स] (हिं.) १-इस प्रकार झटका मारना कि ऊपरवाली वस्तुएँ छितराकर गिर जावें। २-(शस्त्रादि) चलाना या मारना। ३-लाभ उठाना। लेना। ४-भलीभांति पटक-पटक कर धोना। ५-झटका देकर दूर फेंकना। ६-दूर करना। ७-खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना।

फटकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का विष।

फटकी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-छोटे मुँह का पिंजड़ा जिसमें चिड़ीमार चिड़ियों को पकड़कर रखते हैं। २-देखो 'फटका'।

फटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फटने की क्रिया या भाव। २-फटने के कारण होने वाली दरार। ३-(शरीर के किसी अङ्ग में) फटने के समान होने वाली पीड़ा।

फटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी पोली वस्तु में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिससे अन्दर की वस्तुएँ बाहर निकल पड़े या दिखाई देने लगें २-किसी चीज का कोई भाग बीच से अलग हो जाना। ३-अलग या पृथक् हो जाना। ४-द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसका सार भाग अलग और पानी अलग हो जाय। ५-किसी बात की बहुतायत होना। ६-अत्यधिक पीड़ा होना।

छाती फटना-असह्य वेदना या दुःख होना। *मन या चित्त फटना*-विरक्ति होना। *फट पड़ना*-अचानक आ पहुँचना। *फट जाना या पड़ा*-अत्यधिक पीड़ा होना।

फटफट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फटफट का शब्द। २-निरर्थक बातें। ३-जूते पटकने से उत्पन्न शब्द।

फटफट होना-तकरार होना।

फटफटाना [क्रि. अ.] (हिं) १-फट-फट शब्द करना। २-व्यर्थ बकवाद करना। ३-प्रयास करना। ४-इधर-उधर टक्कर मारना। [क्रि. वि.] (हिं.) १-फटफट शब्द होना। २-कठिन स्थिति से निकलने के लिए जोर लगाना ३-फड़फड़ाना।

फटहा+ [वि.] (सं.) १-फटा हुआ। २-बेधड़क गाली-गलौज बकने वाला। लुच्चा।

फटा [वि.] (हिं.) फटा हुआ।

किसी के फटे में पैर देना-किसी की आफत अपने ऊपर लेना।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सांप का फन। २-छल। धोखा। ३-घमंड। शेखी।

फटिक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्फटिक। बिल्लौर। २-संगमरमर।

फटिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जौ आदि के खमीर से बनने वाली शराब।

फट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फट्टी] १-चीरकर बनाई हुई बांस की पतली छड़। २-काठ का पटरा। ३-टाट।

फट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फट्ठी] १-चिरे हुए बांस का लट्ठा। फलटा। २-फड़ पर बैठने का काठ का बना पटरा या उस पर बिछा टाट

फट्ठा लौटना या उलटना-दिवाला निकलना।

फट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पतला फट्ठा। बांस की पतली छड़।

फड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जूए का दांव जिस पर जुआरी बाजी लगाते हैं। २-जूए का अड्डा। ३-वह स्थान जहां बैठकर दूकानदार माल खरीदता या बेचता है। ४-दल। पक्ष। ५-वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। चरख। ६-गाड़ी का हरसा।

फड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फड़कने की क्रिया या भाव।

फड़कन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-फड़कने की क्रिया या भाव। २-धड़कन। ३-उत्सुकता। [वि.] (हिं.) १-भड़कने वाला २-तेज। चंचल।

फड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फड़फड़ाना। रह-रहकर इधर-उधर या ऊपर-नीचे हिलना। २-कुछ करने के लिए व्यग्र होना। ३-किसी अङ्ग में सहसा स्फुरण होना। ४-हिलना-डोलना।

फड़क उठना या जाना-प्रसन्न होना। मुग्ध होनां। *बोटी फड़कना*-अतिशय चंचलता होना।

फड़काना [क्रि स.] (हिं.) १-दूसरे को फड़कने में प्रवृत्त करना। २-उत्सुक बनाना। ३-हिलाना। विचलित करना।

फड़कापेलन [संज्ञा पु.] ((देश.) ऐसा बैल जिसका सींग ऊपर तथा दूसरा नीचे की ओर हो।

फड़नवीस [संज्ञा पु.] (सं.) मराठों के राजत्व-काल के राजकर्मचारियों का पद विशेष।

फड़फड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-
करना। २-देखो 'फटफटाना'। [क्रि. अ.]
फड़फड़ शब्द होना। २-घबराना। ३-
होना। ४-तड़फड़ाना।

फड़बाज [संज्ञा पु.] (ह.) कुछ धन लेकर
यहाँ जूआ खिलाने वाला व्यक्ति।

फड़िंगा, फड़िङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
फतिंगा।

फड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फड़बाज'।

फड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ईंटों या पत्थरों का
ढेर जो एक गज चौड़ा और एक गज
तथा बीस गज लम्बा हो।

फड़ुआ, फड़ुहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री.
फड़ुही] फावड़ा।

फड़ुई, फड़ुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा
फावड़ा। २-लाई। फरवी। ३-चीज
मथने का लकड़ी का कड़छा।

फड़ोलना+ [क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु को
उलटना-पलटना।

फण [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप का फैला हुआ
२-रस्सी का फन्दा। ३-नाव का ऊपर
अगला भाग।

फणकर [संज्ञा पु.] (सं.) सांप।

फणधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांप। २-शिवजी।

फणभृत, फणवान् [संज्ञा पु.] (सं.) सांप।

फणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्प का फन।

फणि [संज्ञा पु.] (सं.) विष।

फणिक [संज्ञा पु.] (हिं.) नाग। सांप।

फणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली गूलर

फणिकार [संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता के
सार एक प्राचीन देश का नाम जो दक्षिण में
था।

फणिकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

फणिचंपक, फणिचम्पक [संज्ञा पु.] (सं.)
चम्पा।

फणिचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष के
अनुसार सर्पाकार नाड़ीचक्र का नाम।

फणिज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की छोटी
पत्तियों वाली तुलसी।

फणिजिह्वा, फणिजिह्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.)
१-बड़ी सतावर। २-महासमंगा।

फणिज्झक [संज्ञा पु.] (सं.) १-फणिज्जा। २-
काली तुलसी। ३-नीबू।

फणितल्पग [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

फणिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेषनाग। २-
वासुकी नाग।

फणिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। हवा।

फणिफेन [संज्ञा पु.] (सं.) अफीम।

फणिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-मोर।

फणिमुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मणि जो सांप के फन में होती है।

फणिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) चोरों का सेंध लगाने का औजार।

फणिलता, फणिवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली। पान।

फणिहंत्री, फणिहन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधनाकुली। नेउरकंद।

फणींद्र, फणीन्द्र [संज्ञा पुं.] (सं.) १-शेष। २-वासुकी। ३-बड़ा सर्प।

फणी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांप। सर्प। २-केतु नाम का ग्रह। ३-सीसा। ४-मरुवा। ५-सर्पिणी औषध।

फणीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शेषनाग। २-वासुकी नाग। ३-भारी या बड़ा सर्प।

फतवा [संज्ञा पु.] (अ.) (इसलाम धर्मानुसार) किसी बात के उचित अथवा अनुचित होने के सम्बन्ध में दी जाने वाली व्यवस्था।

फतह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-विजय। जीत। २-सफलता।

फतहमंद [वि.] (अ.) विजयी।

फतिंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उड़ने वाला कीड़ा। २-पतंगा। पतिंगा।

फतीलसोज [संज्ञा पु.] (फा.) १-पीतल अथवा धातु की दीवट जिसमें एक अथवा अनेक दीये ऊपर नीचे बने होते हैं। २-चिरागदान।

फतीला [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'पलीता'। वह लकड़ी की तीली जिस पर तार लपेटकर जरदोजी बेलबूटे और फूलों की डालियां बनाता है।

फतूर [संज्ञा पु.](अ.) १-दोष। विकार। २-बाधा। विघ्न। ३-उपद्रव। ४-हानि। नुकसान।

फतूरिया [वि.] (अ.) फतूर करने वाला। बखेड़ेबाज। उपद्रवी।

फतूह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-जीत। विजय। २-लूट का माल। ३-लड़ाई जीतने पर प्राप्त होने वाला धन।

फतूही [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-बिना बाँह की एक प्रकार की कुरती। २-लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फते*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फतह। विजय।

फतेह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जीत। जय।

फदकना [क्रि. अ.](हिं.) १-फद-फद शब्द करना २-फुदकना।

फदका+ [संज्ञा पु.] (हिं) गुड़ का पाग जो बहुत अधिक गाढ़ा न हो।

फदिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फरिया'।

फन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पत्ते के से आकार में फैलाया हुआ सांप का सिर। फण। २-बाल। ३-भटवांस। ४-देखो 'फ़न'।

फ़न [संज्ञा पु.](फा.) १-विद्या। हुनर। २-गुण। खूबी। ३-छलने का ढंग। मकर।

फनकना [क्रि. अ.] (हिं.) हवा में सनसन करते हुए हिलना या चलना।

फनकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साँप के फूंकने अथवा बैल आदि के सांस लेने से होने वाला फनफन-शब्द।

फ़नकार [संज्ञा पु.] (फा.) कलाकार।

फनगना+ [क्रि. अ.] (हिं.) नये-नये अंकुर (पौधों) में निकलना या फूटना।

फनगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फतिंगा। २-अंकुर। कल्ला। ३-बांस आदि की तीली।

फनना+ [क्रि. अ.] (हिं.) काम का आरम्भ होना।

फनफनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फन-फन शब्द उत्पन्न करना। २-चंचलता के कारण हिलना

फनस [संज्ञा पु.] (हिं.) कटहल।

फ़ना [संज्ञा स्त्री.] (अ.) नाश। बरबादी।

फनाना* [क्रि अ.] (हिं.) तैयार करना या होना [क्रि. स.] तैयार कराना।

फनिंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फणींद्र'।

फनि* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फणी। २-फण।

फनिक, फन्निग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फणिक'।

फनिधर [संज्ञा पु.] (हिं.) सर्प। सांप।

फनिपति (हिं.) देखो 'फणिपति'।

फनियाला [संज्ञा पु.] (हिं.) सांप। [संज्ञा पु.] (देश) करघे की लपेटन या तूर।

फनिराज [संज्ञा पु.] (हिं.) फणींद्र।

फनी* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फणी। २-फण।

फनूस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फानूस'।

फन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज को दृढ़ करने के लिए ठोका जाता है। २-जुलाहों का कंघी की तरह का एक औजार।

फफदना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-गले पदार्थ का बढ़कर फैलना। २-फैलना। बढ़ना।

फफसा [संज्ञा पु.] (हिं) फेफड़ा। [वि.] १-पोला। २-स्वादहीन। फीका।

फफूँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी। २-काई के समान, पर सफेद, तह जो बरसात के दिनों में फल लकड़ी आदि पर लगती है। भुकड़ी।

फफोर [संज्ञा पुं.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली प्याज।

फफोला [संज्ञा पु] (हिं.) चमड़े पर का वह पोला उभार जिसके अंदर पानी भरा रहता है। यह जलने से होता है। छाला। झलका। *दिल के फफोले फोड़ना*–अपने दिल की जलन अथवा आंतरिक क्रोध प्रकट करना। *दिल के फफोले फूटना*–दिल की जलन अथवा क्रोध प्रकट होना।

फथकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मोटा होना। २-फफदना।

फबती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्यंग्य। चुटकी। २-समयानुसार कही हुई बात। *फबती उड़ाना*-उपहास या परिहास करना। *फबती कसना*-चुभती हुई या व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

फबन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फबने का भाव। शोभा। छवि।

फबना [क्रि. अ.] (हिं.) सुहावना या सुन्दर प्रतीत होना। खिलना। शोभा देना।

फबाना [क्रि. स.] (हिं.) उचित या उपयुक्त स्थान पर रखना।

फबि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फबने का भाव। छवि। फबन।

फबित [वि.] (हिं.) देखने में भला अथवा फबता-हुआ जान पड़ने वाला।

फबीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. फबीली] सुन्दर। सुहावना। शोभायुक्त।

फर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फल। २-देखो 'फड़' ३-सामना। मुकाबिला। ४-बिछौना। बिछावन।

फरक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फरकने की क्रिया या भाव। २-फड़क। चंचलता।

फ़रक़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-पार्थक्य। अलगाव। २-दो वस्तुओं के बीच का अन्तर। दूरी। ३-भेद। अन्तर। ४-कमी। कसर। ५-दुराव परायापन।
[क्रि. वि.] (अ.) अलग। पृथक्।

फरकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फड़कने की क्रिया या भाव। फड़क।

फरकना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'फड़कना'। २-अलग या दूर होना। ३-फटकर पृथक हो जाना।

फरका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छप्पर जो अलग छाकर बड़ेर के ऊपर छाया जाता है। २-बड़ेर के एक ओर की छाजन। पल्ला। ३-द्वार पर का टट्टर।

फरकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-हिलाना। संचालित करना। २-फड़फड़ाना। ३-अलग करना।

फरकिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) गाड़ी में हरसे के बाहर पटरी में लगाने का खूँटा।

फरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बांस की पतली तीली जिसमें लासा लगाकर चिड़ीमार चिड़ियों को फँसाता है। २-दीवार में खड़े बल रखनें के पत्थर।

फरकीला [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'फरकि़ल्ला'।

फरक्क [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फरक'।

फरचा [वि.] (हिं) १-जो जूठा न हो। शुद्ध। पवित्र। २-साफ। सुथरा।

फरचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पवित्रता। शुद्धता। २-सफाई।

फरचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-शुद्ध या पवित्र करना। २-धोकर साफ करना (बरतन)।

फरजंद [संज्ञा पु.] (फा.) पुत्र। बेटा।

फरजिंद [संज्ञा पु.] (हिं.) फरजंद। पुत्र। बेटा।

फरज़ी [संज्ञा पु.] (फा.) शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं। [वि.] (फा.) नकली। बनावटी। कल्पित।

फरजीबंद [संज्ञा पु.] (फा.) शतरंज के खेल में वह योग जिसमें फरजी किसी प्यादे के बल पर किसी विपक्षी राजा को हरा देता है।

फरद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-याद रखने के लिए लिखा हुआ लेखा अथवा सूची आदि। २-एक साथ काम में आने वाली दो वस्तुओं में से कोई एक। ३-रजाई अथवा दुलाई का ऊपरी पल्ला। ४-दो पदों की कविता। ५-वह लक्का कबूतर जिसके सिर पर टीका होता है। [वि.] (अ.) अनुपम। बेजोड़।

फरना* [क्रि अ.] (हिं.) फलना।

फरफंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छल-कपट। २-नखरा

फरफंदी [वि.] (हिं.) १-छली। कपटी। २-नखरेबाज।

फरफर [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु के उड़ने या फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द।

फरफराना [क्रि. अ.] (हिं.) 'फरफर' का शब्द होना। [क्रि. स.] (हिं.) १-'फरफर' शब्द करना। २-देखो 'फड़फड़ाना'।

फरफुंदा* [संज्ञा पु.] (हिं.) फतिंगा।

फरमाँबरदार [वि.] (फा.) आज्ञाकारी।

फरमा [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी वस्तु को ढालने का सांचा। २-वह ढांचा या सांचा जिस पर रखकर जूता बनाते हैं। ३-डौल। ढांचा। ४-कागज का वह पूरा ताव जो एक बार प्रेस में छापा जाता है।

फरमाइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कोई वस्तु लाने अथवा बनाने या कोई काम करने के लिए दी जाने वाली आज्ञा।

फरमाइशी [वि.] (फा.) १-विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया अथवा तैयार किया हुआ। २-बहुत अच्छा और बढ़िया।

फरमान [संज्ञा पु.] (फा.) १-राज्य अथवा राजा की आज्ञा। २-वह पत्र जिस पर ऐसी आज्ञा लिखी हो।

फ़रमाना [क्रि. स.] (फा.) कहना। आज्ञा देना (आदरार्थक शब्द)।

फ़रयाद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फरियाद'।

फरयारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा होता है।

फररानां* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फहराना'। [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'फहराना'।

फरलांग [संज्ञा पु.] (अ.) भूमि की लम्बाई की नाप जो एक मील का आठवां भाग होती है।

फरलो [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सरकारी नौकरों को मिलने वाली एक प्रकार की छुट्टी जिसमें आधा वेतन दिया जाता है।

फरवरी [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी वर्ष का दूसरा महीना।

फरवार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) खलिहान।

फरवारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खलिहान में से राशि उठाने के समय बढ़ई, धोबी, ब्राह्मण, नाई आदि को दिया जाने वाला अन्न का भाग।

फरवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का भूना हुआ चावल। मुरमुरा।

फ़रश [संज्ञा पु.] (अ.) १-बैठने आदि के लिए चौरस और पक्की भूमि। २-ऐसी भूमि पर बनाया हुआ मोटा कपड़ा।

फ़रशबंद [संज्ञा पु.](फा.) वह ऊँचा और चौरस स्थान जहां फरश बना हो।

फ़रशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का बड़ा हुक्का। गुड़गुड़ी।

फरस* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'फरश'। २-देखो 'फरसा'।

फरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की चौड़ी और तेज धार की कुल्हाड़ी। २-फवड़ा।

फरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फरशी'।

फरहटा [संज्ञा पु.](हिं.) चरखी के मध्य में जड़ी-हुई पतली और चौड़ी पटरी।

फरहत [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रसन्नता। आनन्द। २-मनःशुद्धि।

फरहद [संज्ञा पु.] (हिं.) बंगाल में समुद्र के किनारे पाया जाने वाला एक वृक्ष विशेष। पारिभद्र। निंबतरु।

फरहर+ [वि.] (हिं.) १-शुद्ध। निर्मल। २-साफ स्पष्ट। ३-प्रसन्न। खिला हुआ। ४-तेज। चालाक। ५-जो एक में मिला न हो अलग-अलग हो।

फरहरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फरफराना। फरकना। २-उड़ना। फहराना।

फरहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झण्डा। पताका। २-कपड़े आदि का वह तिकोना या चौकोना टुकड़ा जिसे किसी छड़ के सिरे पर लगाकर झण्डी बनाते हैं। [वि.] १-शुद्ध। निर्मल। २-पृथक-पृथक। स्पष्ट। ३-खिला हुआ। प्रसन्न।

फरहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फल।

फरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) रूई धुनने की कमान का वह भाग जो चौड़ा होता है।

फरही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काठ का वह चौड़ा टुकड़ा जिस पर बरतन रखकर रेती से रेतते हैं।

फरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का व्यंजन।

फराक* [संज्ञा पु.] (हिं.) मैदान।

[वि.] लम्बा-चौड़ा। विस्तृत।

फराकत [वि.] (हिं.) १-लम्बा-चौड़ा और तल। आयत। २-देखो 'फरागत'। [संज्ञा पु.] देखो 'फरागत'।

फ़राख़ [वि.] (हिं.) विस्तृत। लम्बा चौड़ा।

फराखी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चौड़ाई। २-सम्पन्नता। ३-घोड़े की तंग नामक

फरागत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-छुट्टी। मुक्ति। २-बेफिक्री। ३-मलत्याग। फिरना।

फरागत करना-पूर्ण करना। पूरा या करना। फरागत जाना-मलत्याग फरागत पाना या होना-निश्चिंत होना।

फ़राज़ [वि.] (फा.) ऊँचा।

नशेब फ़राज़-१-भला-बुरा। २-ऊँच

फ़रामोश [वि.] (फा.) भूला हुआ। विस्मृत।

फ़रार [वि.] (अ.) भागा हुआ।

फ़रालना [क्रि. स.] (हिं.) फैलाना। पसारना।

फरास+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'फर्राश'। देखो 'पलाश'।

फरासीस [संज्ञा पु.] (फा.) १-फ्रांस देश। इस देश का निवासी। ३-एक प्रकार की का कपड़ा।

फरासीसी [वि.] (हिं.) १-फ्रांस देश का उत्पन्न हुआ। २-फ्रांस का रहने वाला।

फरिका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फरका'।

फरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लहँगा जो की ओर से सिला नहीं रहता। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी की नांद। रहट के चक्कर में लगी हुई वे लकड़ियां पर हाँड़ियों की माला लटकती है।

फ़रियाद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दुःखित पीड़ित प्राणियों के लिए पुकारना। दुःख आदि से बचाये जाने के लिए वाली नालिश या प्रार्थना। २-विनती।

फ़रियादी [वि.] (फा.) फरियाद या नालिश वाला।

फरियाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-छांटकर करना। २-साफ करना। ३-निपटाना। करना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-छँटकर अलग होना। २-साफ होना। ३-निबटना। तै होना। समझ पड़ना।

फ़रिश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) १-ईश्वर का दूत (मुसलमान)। २-देवता।

फरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गाड़ी का २-फाल। कुशी। ३-चमड़े की वह छोटी जिससे गतके का वार रोकते हैं।

फ़रीक [संज्ञा पु.] (अ.) १-विपक्षी। वाला। प्रतिद्वंद्वी। दो पक्षों में से किसी पक्ष का आदमी।

फरीक़ सानी-प्रतिवादी (कानून)।

फरीदबूटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक वनस्पति का नाम।

फरुआ [संज्ञा पु] (हि) भिक्षुक का भिक्षापात्र।

फरुई* [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'फरुही'।

फरुसा* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'फरसा'।

फरुहा+ [संज्ञा पु] (हिं) फावड़ा।

फरुही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा फावड़ा। २-काठ का बना फवड़े के आकार का औजार जो घोड़ों की लीद हटाने के काम आता है। ३-मथानी। ४-फरवी। मुरमुरा। लाई। भुना हुआ वह चावल जो भीतर से पोला या खोखला हो।

फरहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'फुरहरी'।

फरेंद, फरेंदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फरेंदी] एक प्रकार की बड़ी गूदेदार मीठी जामुन।

फरेंद्र, फरेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं) जामुन का वृक्ष।

फरेब [संज्ञा पु.] (फा.) छल। कपट। धोखा।

फरेबी [वि] (फा) छल कपट करने वाला। धोखेबाज। कपटी।

फरेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फरहरा'।

फरेरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जंगली फल। जंगल के मेवा।

फरोरी+ [संज्ञा पु.] (फा) एक प्रकार का तोता।

फरो [वि.] (फा.) दबा हुआ। तिरोहित।

फरोख्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। बिक्री।

फरोदस्त [संज्ञा पु.] (फा) १-गौरी, कान्हड़ा और पूरबी के योग से बनानेवाला एक संकर-राग। २-संगीत में १४ मात्राओं का एक ताल।

फर्क [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'फरक'।

फर्चा [वि.] (हि.) देखो 'फरचा'।

फर्जंद [संज्ञा पु.] देखो 'फरजंद'।

फर्ज [संज्ञा पु.] (अ.) १-कर्तव्य कर्म। २-उत्तरदायित्व। ३-मान लेना। कल्पना। ४-इसलाम धर्म के अनुसार विधि-विहित कर्म।

फर्जी [वि.] (फा.) १-कल्पित। माना हुआ। २-नाम मात्र का। [संज्ञा पु.] देखो 'फरजी'।

फर्द [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कागज या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २-वह कागज का टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची आदि लिखी हो। ३-रजाई, शाल आदि की एक परत या पल्ला। चद्दर। ४-परत। ५-बिना जोड़े का, अकेला पशु या पक्षी। *फर्द करारदाद जुर्म*-फौजदारी न्यायालय के कार्यक्रम में वह लेख जिसके द्वारा न्यायाधीश अभियुक्त से व्यक्ति दोषी ठहराकर उससे उत्तर मांगता है। *फर्द तालिका*-अदालत में देने के लिए बनाई हुई कुर्की के सामान की सूची। *फर्द हकूक*-वह पत्र जिसमें किसी ग्राम के अधिकारियों के अधिकारों का विवरण होता है। *फर्द सजा*-फौजदारी-विभाग का वह कागज जिसमें अपराधी के दण्ड-विषयक विवरण या व्यवस्था होती है। [वि.] (फा.) देखो 'फरद'।

फर्माना [क्रि. स] (फा.) देखो 'फरमाना'।

फर्याद [संज्ञा स्त्री.] (फा) देखो 'फरियाद'।

फर्रा+ [संज्ञा पु.](हि.) १-गेहूँ या धान की फसल का एक रोग। २-कागज की लम्बी धज्जी। [संज्ञा पु.] (देश.) मोटी ईंट।

फर्राटा [संज्ञा पु.](हिं.) १-तेजी। क्षिप्रता। वेग। खर्राटा। *फर्राटा मारना या भरना*-वेग से दौड़ना।

फ़र्राश [संज्ञा पु] (अ.) १-वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फर्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २-नौकर। सेवक।

फ़र्राशी [वि] (फा.) फर्श अथवा फर्राश के कामों से सम्बन्ध रखने वाला। *फर्राशी पंखा*-इतना-बड़ा पखा जिससे सारे फर्श पर सुभीते से हवा हो सके। [संज्ञा स्त्री.] (फा) फर्राश का पद या काम।

फर्रास [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'फर्राश'।

फर्लो [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'फरलो'।

फर्श [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'फरश'।

फर्शी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार का बड़ा हुक्का। [वि.] फर्श-सम्बन्धी। *फर्शी सलाम*-जमीन पर भुककर अभिवादन करना।

फलंक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'फलांग'। २-आकाश। अंतरिक्ष।

फल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनस्पति में होने वाला गूदे या बीज से भरपूर बीजकोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूल आने के अनंतर उत्पन्न होता है। २-किसी प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ३-धर्म के विचार से सुख-दुःख आदि के रूप में मिलने वाला कर्म का परिणाम। कर्मभोग। ४-शुभ कर्मों के परिणाम जो चार होते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ५-लाभ। ६-गुण। प्रभाव। ७-प्रतिकार। बदला। प्रतिफल। ८-बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज अग्रभाग जिससे आघात किया जाता है। ९-हल के आगे का लोहा लगा भाग। हल की फाल। १०-फलक। ११-ढाल। १२-उद्देश्य की सिद्धि। १३-फलित-ज्योतिष में सुख-दुःख आदि के रूप में होने-वाले ग्रहों के योग या स्थिति का परिणाम। १४-न्याय-शास्त्रानुसार वह अर्थ जो प्रवृति और दोष से उत्पन्न होता है। १५-गणित की किसी क्रिया का परिणाम। १६-त्रिराशि की तीसरी राशि। १७-जायफल। १८-प्रयोजन। १९-क्षेत्रफल। २०-मूल का ब्याज। सूद। २१-कंकोल। २२-कोरैया का पेड़।

फलकंटक, फलकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटहल। २-खेतपापड़ा।

फलकंटकी, फलकण्टकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इंदीवरा।

फलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तख्ता। पट्टी। २-चादर। ३-वरक। तबक। ४-पत्र। वरक। पृष्ठ। ५-चौकी। मेज। ६-खाट की बुनावट वाला भाग। ७-फल। ८-हथेली। [संज्ञा पु.] (अ.) १-आकाश। २-स्वर्ग।

फलकक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक यक्ष का नाम।

फलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छलकना। उमगना २-देखो 'फरकना'।

फलकयंत्र, फलकयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष-विषयक यंत्र विशेष जिससे ज्यादि का निर्णय किया जाता है।

फलकर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो वृक्षों के फलों पर लगता है।

फलकर्कशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली बेर।

फलका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फफोला। २-जहाज की छत में दरवाजा।

फलकाम [वि.] (सं.) फल की कामना या इच्छा रखकर किया गया कार्य।

फलकानन [संज्ञा पु.] (सं.) एक कल्पित वन विशेष जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह सरस्वती को अतिशय प्रिय है।

फलकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीतल नामक एक मछली।

फलकीवन [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित वन का नाम जो किसी समय तीर्थ माना जाता था।

फलकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक मास का कृच्छ्र-व्रत जिसमें फलों का क्वाथ पीकर रहना पड़ता है।

फलकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं) १-जल-आंवला। २-करंज नामक पेड़।

फलकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का वृक्ष।

फलकोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंडकोष। २-पुरुषेंद्रिय। लिंग।

फलग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। पेड़।

फलचमस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पुराना व्यंजन।

फलचारक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध मतानुसार प्राचीन समय के एक अधिकारी का नाम।

फलचोरक [संज्ञा पु.] (सं.) चोर नामक गन्ध-द्रव्य।

फलतः* [अव्य.] (सं.) इसलिए। फलस्वरूप। परिणामतः।

फलत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृक्षों में लगने वाले फलों का समुदाय। वृक्षों से फलों आदि के

रूप में होने वाली उपज।

फलत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-हड़, बहेड़ा और आमला इन तीन फलों का समुदाय। २-द्राक्षा, परुष और काश्मीरी यह तीन फल।

फलत्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोंठ, पीपल और काली मिर्च इन तीन का समूह। २-त्रिफला।

फलद [वि.] (सं.) फल देने वाला। [संज्ञा पु.] वृक्ष।

फलदान [संज्ञा पु.](हिं.) १-हिंदुओं में विवाह सम्बन्ध स्थिर करने की एक रसम। २-विवाह-सम्बन्धी टीके की रसम।

फलदार [वि.] (हिं.) १-जिसमें फल लगे हों। फल वाला। २-जिसमें फल आयें। जो फले

फलद् [संज्ञा पु.] (हिं.) धौली नामक वृक्ष विशेष

फलद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) फला हुआ वृक्ष।

फलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-वृक्षों का फलों से युक्त होना। फल लाना। २-फल देना। लाभप्रद होना। ३-देह में छोटे-छोटे दानों का निकल आना।

फलना-फूलना-सुखी और सम्पन्न होना। +[संज्ञा पु.] (हिं.) संगतराशी के काम में आने वाली एक प्रकार की छेनी जिससे सादी पत्तियां बनाते हैं।

फलपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-करौंदा। २-जल आंवला।

फलपाकी [संज्ञा पु.] (सं.) गर्दभांड नामक पेड़।

फलपादप [संज्ञा पु.] (सं.) फल का पेड़।

फलपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) वह वनस्पति जिसकी जड़ में गांठ होती है। जैसे-प्याज, शलजम आदि।

फलपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. फलपुष्पा] वह वनस्पति जिसमें फल और पुष्प दोनों हों।

फलपुष्पा, फलपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंडखजूर।

फलपूर [संज्ञा पु.] (सं.) दाड़िम। अनार।

फलप्रद [वि.] (सं.) फलदायक। फल देने वाला।

फलप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोणकाक। डोमकौआ।

फलप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगु।

फलभरता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फलों से लदे होने का भाव।

फलभागी [वि.] (सं.) फल का भोग करने वाला

फलभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां कर्मों के फल का भोग करना पड़ता है।

फलभोग [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मफल। सुख-दुखादि का भोग।

फलमत्स्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) घीकुआंर। घृतकुमारी।

फलमुंड, फलमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का वृक्ष।

फलमुख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा।

फलमुद्गरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंडखजूर।

फलयोग [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में वह स्थान जहाँ फल की प्राप्ति अथवा उसके नायक के उद्देश्य की सिद्धि हो।

फलराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-तरबूज। २-खरबूजा

फललक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फल हेतु का लक्षण।

फलवर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घाव में रखने की कपड़े की मोटी बत्ती।

फलवर्तुल [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हड़ा।

फलवस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वस्तिकर्म विशेष जिसमें अँगूठे के बराबर मोटी और बारह अंगुल पिचकारी गुदा में दी जाती है।

फलवान् [वि] (सं.) [स्त्री. फलवती] फलवाया।

फलविक्रयी [वि.] (सं.) फल बेचने वाला।

फलविष [संज्ञा पु.] (सं.) विषैले फलों वाला वृक्ष

फलवृक्ष [संज्ञा पु] (सं.) फल का वृक्ष।

फलवृक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का पेड़।

फलश, फलशाक [संज्ञा पु.] (सं.) वह फल जिसकी तरकारी बनती है।

फलशाड़व [संज्ञा पु.] (सं.) अनार।

फलशैशिर [संज्ञा पु.] (सं.) बेर का पेड़।

फलश्रुति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वह वाक्य जिसमें किसी कर्म के फल का वर्णन होता है। तथा जिसे सुनकर लोगों में वह कर्म करने की भावना प्रबल होती है। २-ऐसे वाक्य सुनना

फलश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) आम।

फलसंबद्ध, फलसम्बद्ध [संज्ञा पु] (सं.) गूलर।

फलसंभरा, फलसम्भरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) कसूमर

फलसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश के किसी ग्रह के केन्द्र का समीकरण।

फलस्थापन [संज्ञा पु.](सं.) दस प्रकार के संस्कारों में से तीसरा संस्कार।

फलस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट।

फलहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वनवृक्ष के फल २-फल। मेवा।

फलहार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फलाहार'।

फलहारी [वि.] (हिं.) जिसकी गिनती फलाहार में हो।

फलाँ [वि.](फा.) अमुक। कोई अनिश्चित (व्यक्ति या बात)।

फलांग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक जगह से उछलकर दूसरी जगह पर जाना। कुदान। चौकड़ी। २-उतनी दूरी या अन्तर जो फलांग से तै की जाय। ३-मालखंभ की एक कसरत

फलाँगना [क्रि. अ.] (हिं.) एक जगह से उछल कर दूसरी जगह जाना। कूदना। फाँदना।

फलांत, फलान्त [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस।

फलांश [संज्ञा पु.] (सं.) सारांश। तात्पर्य। असल मतलब।

फला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रियंगु। २-
३-झिझिरीटा।

फलाकना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फलांगना'

फलागम [संज्ञा पु.] (सं.) १-फल आने
लगने की ऋतु। २-शरदऋतु।

फलाढ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली केला।

फलात्मिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेला।

फलाद*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

फलादन [संज्ञा पु.] (सं.) शुक। तोता। [वि.] फल खाने वाला।

फ़लादना*+ [क्रि. स.] (हिं.) फरियाद करना।

फलादेश [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मकुण्डली
देखकर ग्रहों आदि का फल बताना। (ज्योतिष)।

फलाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-फल देने
ईश्वर। २-खिरनी का पेड़। ३-वह जो
का स्वामी या मालिक हो।

फ़लाना [वि.] (हिं.) [स्त्री. फ़लानी]
कोई अनिश्चित या अकथित। [क्रि. स.]
किसी को फलने में प्रवृत्त करना।

फ़्लानेजीब [संज्ञा पु.] (अं.) आगे की
जहाज का तिकोना पाल।

फलाफल [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा और
फल।

फलाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-विषावली।
अम्लवेत। ३-खट्टा फल।

फलाम्लपंचक, फलाम्लपञ्चक [संज्ञा पु.]
पाँच खट्टे फल जो इस प्रकार हैं-बेर,
विषाविल, आम्लवेत और बिजौरा।

फलाम्लिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की
की चटनी।

फलार+ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'फलाहार'।

फलाराम [संज्ञा पु.] (सं.) वह बगीचा जिसमें
फलों के वृक्ष हों।

फलारिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक अरिष्ट
बवासीर के रोगी के लिए उपयोगी होती है।
(चरक)।

फलार्थी [वि.] (सं.) फल की कामना करने

फलालीन, फलालेन, फलालैन [संज्ञा पु.]
एक प्रकार का कोमल ऊनी रोयेंदार

फलाशन [संज्ञा पु.] (सं.) तोता। [वि.]
फल खाने वाला।

फलाशी [वि.] (सं.) फल खाने वाला।

फलासंग, फलासङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.)
के फल पर होने वाली आसक्ति।

फलासव [संज्ञा पु.] (सं.) फलों के
होने वाला आसव।

फलास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का वृक्ष।

फलाहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलों का आहार या भोजन। केवल फल खाना। २-वह खाद्य पदार्थ जो केवल फलों से बना हो और जिसमें अन्न का सर्वथा अभाव हो।

फलाहारी [संज्ञा पु.] (हिं.) केवल फल खाकर निर्वाह करने वाला व्यक्ति। [वि] (हिं.) फलाहार-संबंधी। जो एकमात्र फलों से बना हो।

फलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

फलित [वि.] (सं.) १-फला हुआ। २-पूर्ण। पूरा। संपन्न।

फलितज्योतिष-ज्योतिष-शास्त्र का वह अङ्ग जिसमें ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विचार होता है।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष। पेड़। २-छरीला। पत्थर फूल।

फलितव्य [वि.] (सं.) फलने योग्य।

फलिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटहल। २-रीठा। ३-श्योनाकवृक्ष।

[वि.] (सं.) फला हुआ। जिसमें फल लगे हों

फलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुधिया। दूधी। २-जलपीपल। ३-श्योनाक। ४-भायमाणा-लता। ५-मेंहदी। ६-मूसली। ७-इलायची। ८-प्रियंगु। ९-अग्निशिखा नामक वृक्ष।

फली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे बीजों वाला लम्बा और चिपटा फल।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रियंगु। २-मूसली। ३-आमड़ा।

फलीता [संज्ञा पु.] (अ.) १-पलीता। २-बत्ती।

फलीभूत [वि.] (सं.) फलदायक। लाभदायक।

फलेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा, गूदेदार और मीठा जामुन।

फलेंद्र, फलेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलेंदा जामुन।

फलेशाकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधमुस्ता।

फलेपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गूमा।

फलेरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाढ़र का वृक्ष।

फलोत्तमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुधिया। २-काकलीदाख। ३-त्रिफला।

फलोत्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आम का वृक्ष।

फलोदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

फलोदय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लगाई हुई पूंजी या संपत्ति से होने वाला लाभ। फायदा। प्रॉफिट २-हर्ष। ३-देवलोक।

फलोद्भव [वि.] (सं.) जो फल से उत्पन्न हुआ हो

फलोपजीवी [वि] (सं.) केवल फल खाकर निर्वाह करने वाला।

फल्गु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिहार-राज्य की एक नदी का नाम जिसके तट पर गया तीर्थ है। [वि.] (सं.) १-जिसमें कुछ तत्व या सार न हो। २-व्यर्थ। निरर्थक। ३-साधारण। सामान्य ४-थोड़ा। क्षुद्र।

फल्गुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फागुन मास। २-अर्जुन। [वि.] फाल्गुनी नक्षत्र-संबंधी।

फल्गुनक [संज्ञा पु.] (हिं.) पुराण वर्णित एक जाति विशेष।

फल्गुनाल [संज्ञा पु.] (सं.) फागुन का महीना।

फल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'फाल्गुनी'।

फल्गुनीभव [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति का एक नाम।

फल्गुलुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जिसका उल्लेख बृहत्संहिता में मिलता है।

फल्गुवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठूमर।

फल्गुवृंत, फल्गुवृंताक, फल्गुवृन्त, फल्गुवृन्ताक [संज्ञा पु.] (सं.) श्योनाक विशेष।

फल्य [संज्ञा पु.] (सं.) फूल।

फल्लकी [संज्ञा पु.] (हिं.) फलुई नामक मछली।

फल्ला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पीले रंग का रेशम।

फसकड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पलथी। पालथी। बैठने का एक आसन।

फसकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-मसकना। २-बैठना। धँसना। ३-फटना। तड़कना। ४-अनिच्छा प्रकट करना। [वि.] जल्दी धंसने या फट जाने वाला।

फसकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दबाकर फाड़ना २-धँसाना। बैठाना।

फसल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-ऋतु। मौसम। २-समय। काल। ३-खेत की उपज। पैदावार।

फसली [वि.] (अ.) ऋतु-सम्बन्धी। ऋतु का।

फसली बुखार-जाड़ा देकर आने वाला बुखार जो प्रायः बरसात में आता है। मलेरिया। जूड़ी।

[संज्ञा पु] अकबर का चलाया हुआ संवत् जिसका व्यवहार खेती बारी के कामों में करते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विशूचिका। हैजा।

फसलीकौवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पहाड़ी कौवा। २-स्वार्थी। मतलबी।

फसाद [संज्ञा पु.] (अ.) १-विकार। खराबी। २-उपद्रव। उत्पात। ३-लड़ाई। हुज्जत।

फसादी [वि.] (फा.) १-फसाद करने वाला। उपद्रवी। २-झगड़ालू। लड़ाका। ३-नटखट।

फसिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फसल'।

फस्त, फस्द [संज्ञा स्त्री.] (अ.) नस को चीरकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

फस्द *खोलना*-दूषित रक्त निकालने के लिए नस में चीरा लगाना। फस्द *खुलवाना*-१-नस में से दूषित रक्त निकलवाना। २-पागलपन की दवा कराना। फस्द *लेना*-१-दूषित रक्त निकलवाना। २-पागलपन का इलाज कराना

फहम [संज्ञा स्त्री.] (अ.) समझ। ज्ञान। विवेक।

फहमाइस [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-आज्ञा। हुकुम। २-शिक्षा। सीख।

फहरना [क्रि. अ.] (हिं.) हवा में उड़ना या फरफराना। (झण्डा या पताका आदि)।

फहरान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फहराने की क्रिया या भाव।

फहराना [क्रि. स.] (हिं.) कपड़ा, झण्डा, पताका आदि हवा में उड़ाना।

❀ [क्रि. अ.] फहरना।

फहरानि❀ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फहराना'।

फहरिस्त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फेहरिस्त'।

फ़हश [वि.] (अ.) अश्लील। फूहड़।

फाँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी फल आदि का एक सिरे से दूसरे सिरे तक काटकर अलग किया हुआ लंबोतरा टुकड़ा। २-किसी गोल अथवा पिंडाकार वस्तु को काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। ३-खंड। टुकड़ा। ४-गोल वस्तु को सीधी लकीरों से बाँटकर दिखाया हुआ अंश।

फाँकड़ा [वि.] (देश.) १-बाँका। तिरछा। २-तगड़ा। हृष्टपुष्ट।

फाँकना [क्रि. स.] (हिं.) चूर्ण या दाने वाली किसी वस्तु को खाने के लिए ऊपर से मुँह में डालना।

धूल *फाँकना*-दुर्दशा भोगना।

फाँका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फंका। २-उतनी वस्तु जितनी एक बार फाँकी जाय।

फाँका मारना-किसी पदार्थ को ऊपर से मुँह में डालना।

फाँकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'फाँक'। २-देखो 'फंकी'।

फाँग, फाँगी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक साग विशेष

फाँट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु को यथाक्रम कई भागों में बाँटने की क्रिया या भाव। २-अलग-अलग किये हुए कई भागों में से एक भाग। ३-दर या पड़ते के अनुसार बाँटी हुई वस्तु। ४-औषध का काढ़ा बनाने की क्रिया या भाव। ५-काढ़ा। क्वाथ।

फाँटना [क्रि. स.] (हिं.) १-बाँटना। विभाग करना। २-काढ़ा बनाना।

फाँटबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह कागज जिसमें किसी गांव के पट्टीदारों के अनुसार गांव की आमदनी लिखी होती है।

फाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) दो वस्तुओं का आपस में जोड़ने की कोनियाँ।

फाँड़, फाँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) धोती या दुपट्टे का वह भाग जो कमर में बंधा रहता है।

फाँड़ा बाँधना या कसना-किसी कार्य के लिए कटिबद्ध या मुस्तैद होना। *फाँड़ा पकड़ना*-१-खूब अच्छी तरह से पकड़ना जिससे कि भागने न पावे। २-भरण-पोषण के लिये किसी स्त्री का किसी आदमी को जिम्मेदार ठहराना

फाँद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उछलकर या कूदकर जाने की क्रिया या भाव। उछाल। २-फंदा। पाश। ३-पक्षी फँसाने का जाल या फंदा।

फाँदना [क्रि. अ.] (हिं.) उछलना। कूदना। एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर पड़ना। [क्रि. स.] (हिं.) १-उछलकर लाँघना या पार करना। *२-फंदे में डालना या फँसाना। + ३-देखो 'फानना'।

फाँदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फँदा'।

फाँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गट्ठा बाँधने की रस्सी २-गन्नों का बंधा हुआ गट्ठर।

फाँफी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बहुत बारीक झिल्ली २-दूध पर की मलाई की पतली तह। ३-जाला या माँड़ा जो आंखों की पुतलियों पर पड़ जाता है।

फाँस [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाश। फंदा। २-पशु-पक्षियों को फंसाने का फंदा। ३-कांटे के समान; बांस लकड़ी आदि का टुकड़ा जो शरीर में चुभ जाता है। ४-बेंत, बांस आदि की पतली तीली या कमची।

फाँस चुभना-मत्त में कसकने या खटकने वाली बात होना। *फाँस निकलना*-कष्ट या दुःख का खटका मिटना। *फाँस निकालना*-कंटक दूर होना।

फाँसना [क्रि. स.] (हिं.) १-जाल में फँसाना। २-धोखे में डालकर काबू में करना। छल से वशीभूत करना। ३-किसी पर ऐसा प्रभाव डालना कि वह वशीभूत हो जाय।

फाँसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह रस्सी का फंदा जिसे गले में डालकर खींचने से दम घुटकर प्राण निकल जाते हैं। २-फंसाने का फंदा। पाश। ३-वह दंड जिसमें अपराधी के गले में रस्सी फँसा कर प्राण लेते हैं।

फाँसी देना-गले में फन्दा डालकर प्राण लेना। *फाँसी पाना*-गले में फन्दा फँसा कर मार दिया जाना।

फाँसीघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां प्राणदंड पाये हुये अपराधियों को फाँसी लगाई जाती है।

फाइन [संज्ञा पु.] (अं.) अर्थदंड। जुरमाना। [वि.] (अं.) अच्छा। बढ़िया।

फाइनल [वि.] (अं.) अंतिम।

फाइनांस [संज्ञा पु.] (अं.) सार्वजनिक राजस्व तथा उसके आय-व्यय की पद्धति। अर्थ-व्यवस्था।

फाइनानशल [वि.] (अं.) १-सार्वजनिक राजस्व-सम्बन्धी। सार्वजनिक-अर्थव्यवस्था-संबंधी। २-आर्थिक। माली।

फाइनानशल-कमिश्नर [संज्ञा पु.] (अं.) वह राजकीय अधिकारी जिसके अधीन किसी प्रदेश का राजस्व-विभाग अथवा माल का महकमा हो।

फाइल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-मिसिल। नत्थी। २-मोटे कागज की मुड़ी हुई जिल्द जिसमें आवश्यक कागज-पत्र डोरे में नत्थी करके रखे जाते हैं। ३-पत्र, पत्रिकाओं आदि के पूरे अङ्कों का समूह।

फाउंड्री [संज्ञा स्त्री.] (अं.) धातु ढालने का कारखाना।

फाका [संज्ञा पु.] (अ.) उपवास। बिना खाये रहना। *फाका पड़ना*-भोजन का लंघन होना। *फाकों मरना*-क्षुधा से पीड़ित होना। भूखों मरना। *फाकों का मारा*-भूख से मरता हुआ।

फाकामस्त, फाकेमस्त [वि.] (फा.) खाने-पीने का कष्ट होते हुए भी कुछ चिंता न करने वाला।

फाकेमस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) फाकेमस्त होने की क्रिया या भाव।

फाखतई [वि.] (हिं.) फाख्ता या पंडुक के रंग का। भूरापन लिये हुए लाल रंग का।

फाखता [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पंडुक। धवँरखा पक्षी

फाग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फागुन के महीने में होने वाला उत्सव जिसमें परस्पर अबीर डालते और वसंत के गीत गाते हैं। २-फाग के उत्सव में गाया जाने वाला गीत।

फागुन [संज्ञा पु.] (हिं.) माघ के बाद आने वाला महीना। फाल्गुन।

फागुनी [वि.] (हिं.) फागुन-विषयक। फागुन का

फाजिल [वि.] (अ.) १-अपेक्षाकृत अधिक। जरूरत से ज्यादा। २-विद्वान्।

फाजिल बाकी-हिसाब में का लेना या देना।

फाटक [संज्ञा पु.] (हिं) १-बड़ा द्वार या दरवाजा तोरण। २-दरवाजे पर की बैठक। ३-कांजीहौस। ४-अन्न को फटकने के उपरांत बची हुई भूसी।

फाटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फिटकरी।

फाटना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फटना'।

फाड़खाऊ [वि.] (हिं.) १-कटखन्ना। फाड़खाने वाला। २-क्रोधी। बिगड़ैल। ३-घातक। भयानक।

फाड़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कागज या कपड़े का फाड़कर निकाला हुआ भाग। धज्जी। २-लौनी घी को तपाने पर निकलने वाली छाछ।

फाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-चीरना। विदीर्ण करना। २-संधि अथवा जोड़ को फैलाकर खोलना। ३-टुकड़े या धज्जियाँ करना। ३-किसी गाढ़े या द्रव पदार्थ में विकार उत्पन्न करके पानी और सार भाग को अलग करना।

फाणि [संज्ञा पु.] (सं.) गुड़।

फाणित [संज्ञा पु.] (सं.) खूब खौलाकर गाढ़ा किया हुआ ऊख का रस। राब। शीरा।

फातिहा [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रार्थना। २-वह चढ़ावा जिसको मुसलमान लोग मरे हुए लोगों के नाम पर देते हैं।

फानना [क्रि. स.] (हिं.) १-रुई को फट धुनना। २-किसी कार्य को आरम्भ कर

फानूस [संज्ञा पु.] (फा.) १-ऊन में टाँ लिए हंडे में लगे हुए शीशे के गिलास आदि जिनमें मोमबत्तियाँ जाती है। २-समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ रात्रि के समय तेज प्रकाश जाता है जिससे कि जहाज बन्दर ३-आग धधकाने की ईंटों की भट्ठी। प्रकार का दीपाधार या बड़े आकार

फाफर [संज्ञा पु.] (हिं.) कूटू। कूटू।

फाफा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिना दांत की करके बोलने वाली बुढ़िया। पोपले मुँह बुढ़िया।

फाफा कुटनी-इधर-उधर कुटनापन फिरने वाली बुढ़िया।

फाव* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शोभा। छवि।

फावना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फबना'।

फायदा [संज्ञा पु.] (अ.) १-लाभ। नफा। प्रयोजन। सिद्धि। ३-अच्छा फल या भला परिणाम। ४-उत्तम प्रभाव। असर।

फायदे का-लाभप्रद। लाभ देने वाला।

फायदेमंद [वि.] (फा.) लाभदायक।

फायर [संज्ञा पु.] (अं.) १-आग। २-

फायर-एंजिन [संज्ञा पु.] (अं.) आग बुझाने दमकला।

फायर-ब्रिगेड [संज्ञा पु.] (अं.) आग बुझाने वाले कर्मचारियों का दल या समुदाय।

फायरमैन [संज्ञा पु.] (अं.) एंजिन में कोयला झोंकने का काम करने वाला कर्मचारी।

फाया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फाहा'।

फार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'फाल'। खंड।

फारखती [संज्ञा स्त्री.] (अ.) इस लेख या कागज जिसमें लिखा हो हमारा कोई अधिकार नहीं।

फारगती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फारखती'।

फारना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'फाड़ना'।

फारम [संज्ञा पु.] (अं.) १-प्रार्थनापत्र, आदि के नमूने जिसमें यह दिखलाया है कि किस स्थान पर कौनसी बात चाहिए। २-छपाई का एक पूरा ताव बार में छापा जाता है। ३-छापने में हुए उतने अक्षर जितने एक ताव छापने के लिए पर्याप्त हों।

फारस [संज्ञा पु.] देखो 'पारस'।

फारसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) फारस देश की

फारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटी हुई फाल। २-देखो 'फाल'। ३-देखो 'फर'।

फ़ारिग़ [वि.] (फ़ा.) १-काम से निपटा हुआ। २-निश्चित। बेफ़िक्र। मुक्त।

फ़ार्म [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'फ़ारम'।

फाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लोहे का वह फल जो हल के नीचे लगा रहता है। २-कटी सुपारी। छालियां। ३-पतले दल का कटा हुआ टुकड़ा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डग। फलांग। २-एक क़दम का फ़ासला। पैंड। फाल *मारना*-डग भरना। फाल *बाँधना*-फलांग मारना।

फालकृष्ट [वि.] (सं.) १-हल से जोता हुआ। २-हल से जोते हुए खेत में उत्पन्न होने वाला।

फालगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम का एक नाम

फ़ालतू [वि.] (हिं.) १-आवश्यकता से अधिक। ज़रूरत से ज्यादा। २-निकम्मा। जो किसी काम के योग्य न हो।

फ़ालसई [वि.] (फ़ा.) फ़ालसे के रंग का। ललाई लिए हुए हलके ऊदे रंग का।

फ़ालसा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) छोटा वृक्ष जिसके फल मटर से कुछ बड़े होते हैं और खाने में खटमिट्ठे लगते हैं।

फ़ालिज [संज्ञा पु.] (अं.) पक्षाघात। अधरंग। *फ़ालिज गिरना*-अधरंग रोग होना।

फ़ालूदा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का पेय पदार्थ जो गेहूँ के सत्तू से बनता है।

फाल्गुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फागुन का महीना। २-दूर्वा नामक सोमलता। ३-अर्जुन का एक नाम। ४-अर्जुनवृक्ष। ५-एक तीर्थ का नाम। ६-बृहस्पति का एक वर्ष।

फाल्गुनप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) शङ्ख।

फाल्गुनि [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फागुन मास की पूर्णिमा। २-पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र।

फावड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी खोदने का लोहे का वह औज़ार जिसमें काठ का लम्बा बेंटा लगा होता है।
फावड़ा *चलाना*-खुदाई करना। फावड़ा *बजना*-खुदाई होना। फावड़ा *बजाना*-खुदाई करना।

फावड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा फावड़ा। २-घोड़े की लीद आदि हटाने का काठ का फावड़ा

फ़ासफ़रस [संज्ञा पु.] (अं.) एक अत्यन्त ज्वलनशील मूलद्रव्य।

फ़ासला [संज्ञा पु.] (अं.) दूरी। अन्तर।

फ़ास्ट [वि.] (अं.) १-तेज। २-शीघ्र चलने वाला

फाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) तेल, घी, मरहम आदि में तर किया हुआ कपड़े या रूई का लच्छा या टुकड़ा।

फ़ाहिशा [वि.] (अं.) छिनाल। पुंश्चली।

फिंकरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फेंकरना'।

फिंकवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे से फेंकने का काम कराना।

फिंगक, फिङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) फिंगा नामक पक्षी।

फिंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल पंजे, भूरे पर और पीली चोंच वाला एक पक्षी जो प्रायः डेढ़ बालिश्त लम्बा होता है।

फि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। २-कोप। ३-निष्फल वाक्य।

फिकई [संज्ञा स्त्री.] (?) बुन्देलखंड की तरफ होने वाला एक प्रकार का मोटा अन्न।

फ़िकर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फ़िक्र'।

फ़िकरा [संज्ञा पु.] (अं.) १-वाक्य। २-झाँसापट्टी *फ़िकरा चलाना*-धोखा देने के लिए बनावटी बात कहना। *फ़िकरा चलना*-धोखा देने के निमित्त कही हुई बनावटी बात का अभीष्ट फल होना। *फ़िकरा देना या बताना*-झाँसा देना *फ़िकरे सुनाना, ढालना या कहना*-व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

फ़िक़रेबाज (अं., फ़ा.) झाँसापट्टी या दमबुत्ता देने वाला।

फ़िक़रेबाजी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फ़ा.) झाँसापट्टी देना। दमबाजी।

फिकार [संज्ञा पु.] (?) फिकई नामक अन्न।

फ़िकिर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फ़िक्र'।

फिकैत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फरीगदका या पटा-बनेटी चलाने वाला व्यक्ति।

फिकैती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पटा-बनेटी चलाने का कार्य या हुनर।

फ़िक्र [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-चिंता। सोच। २-चित्त को अस्थिर करने वाली भावना। ३-यत्न। उपाय का विचार।
फ़िक्र *लगना*-विचार या आशंका बनी रहनी।

फ़िक्रमंद [वि.] (फ़ा.) चिंताग्रस्त।

फिचकुर [संज्ञा पु.] (हिं.) मूर्च्छा की अवस्था में मुँह से फेन निकलना।

फिट [अव्य.] (हिं.) धिक्। छी।
फिटफिट-धिक्कार है।
[वि.] (अं.) १-ठीक। उपयुक्त। २-जो अपने पर ठीक या पूरा बैठता हो। ३-जिसके कल-पुरजे आदि ठीक हों।
फिट करना-यन्त्र के पुरजे आदि को यथा-स्थान बैठाना।
[संज्ञा पु.] (अं.) मिरगी आदि रोग का वह दौरा या आक्रमण जिसमें रोगी मूर्छित हो जाता है तथा उसके मुख से झाग आदि निक-लने लगते हैं।

फिटकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फिटकरी'।

फिटकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धिक्कार। लानत। २-शाप। कोसना। ३-हलकी मिला-वट। बास।
मुँह पर *फिटकार बरसना*-फिट्टा मुँह होना। *फिटकार लगना*-शाप लगना।

फिटकिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेद रंग का एक खनिज पदार्थ जो प्रायः औषध रूप में प्रयुक्त होता है।

फिटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़े की बुनावट में से निकले हुए सूत के छोटे-छोटे फुचरे। २-छींटा। * ३-देखो 'फिटकिरी'।

फिटन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की बड़ी और खुली घोड़ागाड़ी।

फिटसन [संज्ञा पु.] (देश.) एक छोटा वृक्ष जिसे कठसेमल भी कहते हैं।

फिट्टा [वि.] (हिं.) १-फटकार खाया हुआ। अप-मानित। २-श्रीहत।
फिट्टा मुँह- अपमानित या लज्जित होने के कारण उतरा हुआ, फीका या उदास चेहरा।

फ़ितना [संज्ञा पु.] (अं.) १-सहसा किसी कारण से उठ खड़ा होने वाला उपद्रव। झगड़ा। २-एक प्रकार का फूल। ३-एक प्रकार का इत्र।

फ़ितरती [वि.] (अं.) १-चतुर। चालाक। २-धोखे-बाज। फितूरी।

फ़ितूर [संज्ञा पु.] (अं.) १-कमी। न्यूनता। घाटा २-विकार। खराबी। ३-झगड़ा। उपद्रव।

फ़ितूरी [वि.] (हिं.) १-लड़ाका। झगड़ालू। २-फ़सादी। उपद्रवी।

फ़िदवी [वि.] (फ़ा.) आज्ञाकारी। [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सेवक। दास।

फ़िदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फ़िदा'।

फिनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान में पहनने का एक गहना।

फिनीज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो मस्तूल वाली छोटी नाव।

फिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिल्ली। प्लीहा।

फिरंग, फिरङ्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यूरोप का प्राचीन देश। २-गरमी या आतशक नामक रोग (चरक)।

फिरंगवात, फिरङ्गवात [संज्ञा पु.] (सं.) वात से उत्पन्न फिरंग रोग।

फिरंगिस्तान [संज्ञा पु.] (हिं.) फिरंगियों का देश यूरोप।

फिरंगी [वि.] (हिं.) १-फिरंगदेश का रहने वाला। गोरा। २-फिरंगदेश का। ३-फिरंग देश में उत्पन्न।
[संज्ञा पु.] (हिं.) फिरंगदेश का निवासी। युरोपियन।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विलायत या युरोप की बनी तलवार।

फिरंट [वि.] (हिं.) १-फिरा हुआ। विपरीत। विरुद्ध। खिलाफ। २-विरोध या झगड़े पर आमादा।

फिर [क्रि. वि.] (हिं.) १-एक बार हो चुकने पर

एक बार और । पुनः । दोबारा । २-भविष्य में या आगे किसी समय । ३-पीछे । अनन्तर । उपरान्त । ४-तब उस अवस्था में । ५-आगे बढ़कर और आगे चलकर । ६-इसके अतिरिक्त । इसके अलावा ।

फिर फिर-बार-बार । कई बार । *फिर क्या है*-तब ठीक है ।

फिरक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी देहाती गाड़ी ।

फिरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाचना । २-किसी गोल वस्तु का अपने केन्द्र पर घूमना । लट्टू के समान चक्कर खाना ।

फिरका [संज्ञा प.] (अ.) १-जाति । २-जत्था । ३-पंथ । सम्प्रदाय ।

फिरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कील के आधार पर घूमने वाला गोलाकार टुकड़ा । २-वह खिलौना जो खूब चक्कर काटता है । फिरहरी ३-चकई नामक खिलौना । ४-चरखे में का चमड़े का गोल टुकड़ा । ५-कुश्ती का एक पेंच ६-मालखंभ की एक कसरत ।

फिरकी का नक्कीस-मालखंभ की एक कसरत

फिरता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फिरती] १-वापसी । २-अस्वीकार ।

[वि.] (हिं.) लौटाया हुआ ।

फिरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-इधर-उधर चलना या डोलना । भ्रमण करना । २-टहलना । सैर करना । विचरना । ३-चक्कर खाना । घूमना । ४-पीछे की ओर से लौटकर आना । वापस होना । ५-ऐंठा या मरोड़ा जाना । ६-मुड़ना । घूमना । ७-दूसरी ओर हो जाना । ८-उलटा या विपरीत हो जाना । ९-लड़ने अथवा सामना करने के लिए सन्नद्ध हो जाना । १०-किसी वस्तु पर पोता, चढ़ाया या लगाया जाना । ११-अपनी बात पर दृढ़ न रहना । १२-झुकना या टेढ़ा होना । १३-प्रचारित या घोषित होना । १४-इधर से उधर स्पर्श करते हुए जाना ।

किसी ओर फिरना-प्रवृत्त होना । *जी फिरना*-चित्त उचाट या विरक्त हो जाना । *सिर फिरना* बुद्धि भ्रष्ट होना ।

फिरनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पिसे हुए चावलों को दूध में पकाकर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ

फिरवा [संज्ञा पु.](हिं.) १-गले में पहनने का एक आभूषण । २-तार के कई फेरे डालकर बनाई हुई अंगूठी ।

फिरवाना [क्रि. स.] (हिं.) फेरने या फिराने का काम करना ।

फिराउ [वि.] (हिं.) १-फिरता हुआ । वापस लौटाया हुआ । २-(वह माल) जो फेरा जा सके ।

फिराक [संज्ञा पु.] (अ.) १-वियोग । बिछोह । २-चिन्ता । सोच । खटका । ३-खोज । टोह ।

फिराक में रहना-खोज में रहना ।

फिराना [क्रि. स.](हिं.) १-इधर से उधर डुलाना २-टहलाना । सैर कराना । ३-ऐंठना या मरोड़ना । ४-पलटाना । लौटाना । ५-एक ओर से दूसरी ओर करना । घुमाना । ६-चक्कर दिलाना । बारबार फेरे खिलाना । ७-देखो 'फेरना' ।

फिरार [संज्ञा पु.] (अ.) भागना । भाग जाना ।

फिरार होना-भागना ।

फिरारी [वि.] (फा.) १-भागने वाला । भगोड़ा । २-दण्डभय के कारण भागता फिरने वाला (अपराधी) । [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ताश के खेल में एक चाल में होने वाली उस बार की जीत ।

फिरि*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'फिर' ।

फिरियाद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुहाई । पुकार । २-वेदनासूचक शब्द । हाय ।

फिरिश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) देवदूत ।

फिरिहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल छाती और काली पीठ वाला एक पक्षी ।

फिरिहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फिरकी नामक बच्चों का खिलौना ।

फिरोही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दस्तूरी ।

फिर्का [संज्ञा पु.] देखो 'फिरका' ।

फिलासफी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-दर्शनशास्त्र । २-सिद्धान्त या तत्व की बात । गूढ़ बात ।

फिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-जुलाहों के करघे में लगने वाला लोहे की छड़ का एक टुकड़ा । २-+पिंडली ।

फिश् [अव्य.] (हिं.) घृणासूचक अव्यय । धिक्

फिस [वि.] (हिं.) कुछ नहीं (व्यंग्य में) । *टाँय-टाँय फिस*-बहुत बातें होने पर परिणाम शून्य के बराबर । *फिस हो जाना*-हवा हो जाना

फिसड्डी [वि.] (हिं.) प्रतियोगिता प्रयत्न आदि में सबसे पीछे या पिछड़ा हुआ ।

फिसफिसाना [क्रि. अ.] (हिं) १-शिथिल या ढीला होना । २-फिस होना ।

फिसलन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फिसलने की क्रिया या भाव । रपटन । २-चिकना स्थान जहां कोई वस्तु ठहर न सके ।

फिसलना [क्रि.अ.] (हिं.) १-चिकनाहट के कारण कोई वस्तु अपने स्थान पर ठहर न सकना । आगे बढ़ जाना । २-लोभ से प्रवृत्त होना । *जी फिसलना*-मन मोहित होना । [वि.] (हिं.) बहुत चिकना । जिस पर से फिसल जायँ ।

फिसलाना [क्रि. स.](हिं.) किसी को फिसलने में प्रवृत्त करना ।

फिहरिस्त, फिहरिश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सूची

फींफरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फेफड़ा' ।

फी [अव्य.] (अ.) प्रत्येक । हरएक । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हेटापन । हलकापन । निकृष्टता । २-उलाहना । जैसे-कुछ भी हो बात में
नहीं आनी चाहिए ।

फीका [वि.] (हिं.) १-स्वादहीन । बेजायका ।
२-जो चटकीला या शोख न हो । मलिन ।
३-कांतिरहित । प्रभाहीन । बेरौनक । मंद ।
४-प्रभावहीन । व्यर्थ ।

फीता [संज्ञा पु.] (फा.) १-नेवार की सी बुनावट
की पतली धज्जी या सूत आदि की जो किसी
वस्तु को लपेटने के काम आती है । २-
किनारा या कोर ।

फीफरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फेफरी' ।

फीरनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'फिरनी' ।

फीरोजा [संज्ञा पु.] (फा.) हरापन लिए नीले
का रत्न या नग । पेरोज । हरिताश्म ।

फील [संज्ञा पु.] (फा.) हाथी ।

फीलखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह घर जहां
बांधा जाता है । हस्तिशाला ।

फीलपा [संज्ञा पु.] (फा) एक रोग जिसमें पैर
फूलकर हाथी के पैर के समान होता है ।

फीलपाया [संज्ञा पु.] (फा.) १-ईंटों का
मोटा खंभा । २-देखो 'फीलपा' ।

फीलवान [संज्ञा पु.] (फा.) हाथीवान ।

फीली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुटने के नीचे पीछे
का भाग ।

फील्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १-मैदान । खेत । २-
गेंद खेलने का मैदान ।

फील्ड-ऐम्बुलेंस [संज्ञा पु.] (अं.) युद्धों में
सेना के साथ रहने वाला चिकित्सालय जिस
में घायलों की मरहम-पट्टी की जाती है ।
मैदानी अस्पताल ।

फीस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कर । शुल्क । २-
उजरत । पारिश्रमिक ।

फुँकन+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-फूंकने की क्रिया
या भाव । २-दाह । जलन ।

फुँकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फूंका या जलाया
जाना । २-(धन) व्यर्थ खर्च या नष्ट होना ।
[संज्ञा पु.] १-वह नली जिसके द्वारा मुंह से
हवा आग पर छोड़ते हैं । फुंकनी । २-
धारियों के शरीर का वह अवयव जिसमें
मूत्र रहता है ।

फुँकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाँस, लोहे, पीतल
आदि की वह नली जिसके द्वारा मुँह से
दहकाने के लिए आग पर छोड़ते हैं । २-
भाथी ।

फुँकरना [क्रि. अ.] (हिं.) फुत्कार छोड़ना । मुंह
से हवा छोड़ना ।

फुँकवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-फूंकने का काम
दूसरे से कराना । २-मुंह से हवा का
झोंका निकलवाना । ३-जलवाना या
करवाना ।

फुँकाना [क्रि. स.] (हिं.) फूंकने में प्रवृत्त

फुँकार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुत्कार'।

फुँदना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डोरी, झालर आदि के सिरे पर शोभा के लिए बना हुआ फूल के आकार का गुच्छा। झब्बा। २-कोड़े की डोरी पर की गाँठ। ३-तराजू की डण्डी के बीच की रस्सी की गांठ।

फुँदिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुँदना। झब्बा।

फुँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गाँठ। फंदा। २-बिंदी। टीका।

फुंसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा फोड़ा। फुड़िया

फुआरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुहारा'।

फुकन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फुँकने की क्रिया या भाव। २-दाह। जलन।

फुकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फुँकना'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुँकना'।

फुकाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'फुँकाना'।

फुकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुँकनी'

फुचड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह सूत या रेशा जो कपड़े, कालीन, चटाई आदि बुनी हुई वस्तु के बाहर निकला रहता है।

फुट [वि.] (हिं.) १-जिसका जोड़ा या युग्म न हो। २-एकाकी। अकेला। ३-जो किसी क्रम में न हो। पृथक। अलग।
[संज्ञा पु.] (अं.) लम्बाई की एक नाप जो बारह इंच के बराबर का होता है।

फुटकर, फुटकल [वि.] (हिं.) १-जिसका जोड़ा न हो। फुट। विषम। अकेला। २-अलग। पृथक। ३-कई प्रकार का मिलाजुला। ४-थोड़ा-थोड़ा। थोक का उलटा।

फुटका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फफोला। छाला। २-धान, मक्का, ज्वार आदि का लावा।
[संज्ञा पु.] (देश.) गन्ने का रस पकाने का कड़ाह।

फुटकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु पर पड़ा हुआ कोई छोटा दाग या दाना। २-फुदकी नामक छोटी चिड़िया।

फुटनोट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह टिप्पणी जो किसी लेख अथवा पुस्तक के पृष्ट के नीचे की ओर दी जाती है।

फुटपाथ [संज्ञा पु.] (अं.) १-शहर में सड़क के दोनों ओर की पटरी जिस पर मनुष्य पैदल चलते हैं। २-पगडंडी।

फुटबाल [संज्ञा पु.] (अं.) हवा भर कर फुलाई हुई बड़ी गेंद जिसे पैर की ठोकर से उछाल कर खेलते हैं।

फुट-मत [संज्ञा पु.] (हिं.) मतभेद। फूट।

फुटेहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भुना हुआ मटर या चने का दाना जिसका खिलने से छिलका फट गया हो। २-चने का भुना हुआ चर्बन।

फुटैल [वि.] (हिं.) देखो 'फुट्टैल'।

फुट्ट [वि.] (हिं.) देखो 'फुट'।

फुट्टैल [वि.] (हिं.) १-झुण्ड या समूह से अलग। अकेला रहने वाला। २-जिसका जोड़ा न हो। ३-अभागा। फूटे भाग्य का।

फुत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) साँप, बैल आदि के मुँह या नाक के नथनों से बलपूर्वक वायु के बाहर निकलने से उत्पन्न शब्द।

फुत्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'फुत्कार'।

फुदकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उछल-उछलकर कूदना २-हर्ष या उमङ्ग में फूले न समाना।

फुदकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुदकने-उछलने वाली एक छोटी चिड़िया का नाम।

फुनंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृक्ष या शाखा का अगला हिस्सा।

फुन* [अव्य.] (हिं.) फिर। पुनः।

फुनगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृक्ष और वृक्ष की शाखाओं का छोर वाला भाग। अंकुर। फुनंग

फुनना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुंदना'।

फुप्फुस [संज्ञा पु.] (सं.) फेफड़ा।

फुफँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह डोर जो लहँगे के इजारबन्द या स्त्रियों की साड़ी में कसी जाती है।

फुफकाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फुफकारना'।

फुफकार [संज्ञा पु.] (हिं.) सांप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द। फुँकार। पुत्कार।

फुफकारना [क्रि. अ.] (हिं.) सांप का क्रोध में फू-फू करते हुए मुंह बढ़ाना। फुत्कार करना।

फुफी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फूफी'।

फुफुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुफँदी'।

फुफू* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फूफी'।

फुफेरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. फुफेरी] फूफा के सम्बन्ध से सम्बद्ध अथवा रिश्ते में।

फुर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उड़ते समय होने वाला परों का शब्द। +[वि.] सत्य। सच्चा।

फुरकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वियोग।

फुरकना [क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु को मुंह में चबाकर सांस के जोर से थूकना।

फुरकाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'फड़काना'।

फुरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तुरन्त या चटपट काम करने की शक्ति या भाव। शीघ्रता। जल्दी।

फुरतीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. फुरतीली] प्रत्येक कार्य झटपट निपटाने वाला। जिसमें फुरती हो।

फुरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-निकलना। स्फुटित होना। २-प्रकाशित होना। चमक उठना। झलक पड़ना। ३-फड़कना। हिलना। ४-उच्चरित होना। मुख से शब्द निकलना। ५-सत्य ठहरना। पूरा उतरना। ६-प्रभाव या असर करना। ७-सफल होना।

फुरफुर [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-उड़ने में परों की फरफराहट से होने वाला शब्द। २-पर आदि की रगड़ से उत्पन्न शब्द।

फुरफुराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-'फुरफुर' का शब्द होना। परों का शब्द होना। २-किसी हल्की वस्तु का लहराना। [क्रि. स.] १-कान में रुई की फुरेरी फिराना। २-पर या हलकी वस्तु से 'फुरफुर' करना।

फुरफराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पंख फड़फड़ाने या 'फुरफुर शब्द होने का भाव।

फुरफुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुरफुराहट।
फुरफुरी *लेना*–उड़ने के लिए पंख हिलाना।

फुरमान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजाज्ञा। फरमान २-सनद। मानपत्र। आज्ञा। आदेश।

फुरमाना [क्रि. स.] (हिं.) फरमाना।

फुरसत [संज्ञा पु.] (अ.) १-कोई काम न होने की अवस्था। अवकाश। अवसर। समय। ३-निवृत्ति। छुट्टी। ४-रोग आदि से छुटकारा। आराम।
फुरसत *पाना*–नौकरी से छूटना। फुरसत *से*–खाली समय में। बिना जल्दीबाजी के।

फुरहरना* [क्रि. अ.] (हिं.) स्फुरित होना। निकलना।

फुरहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पक्षियों का परों को फुलाकर फड़फड़ाना। २-फड़फड़ाहट। फड़कना ३-देखो 'फुरेरी'। ४-कँपकँपी।
फुरहरी *लेना*–काँपना। थरथराना।

फुराना [क्रि. स.] (हिं.) १-सत्य ठहराना। ठीक उतरना। २-प्रमाणित करना। [क्रि. अ.](हिं.) देखो 'फुरना'।

फुरेरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सींक जिसके छोर पर हलकी रुई लिपटी हो और दवा, इतर आदि में डुबोकर काम में लाई जाय। २-शीत, भय आदि के कारण रोमांच के साथ होने वाली कँपकँपी। ३-होशियार होना। सहसा चौंकना
फुरेरी *आना*-भय, सरदी आदि के कारण कँपकँपी होना। फुरेरी *लेना*–१-चिड़ियों का पर फड़फड़ाना। २-रोमांचसहित काँपना।

फुर्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुरती'।

फुर्सत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुरसत'।

फुलंगो [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिना बीज वाली जंगली भाँग का पौधा।

फुलका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हलकी, पतली और फूली हुई रोटी। २-छाला। फफोला। ३-छोटा कड़ाह जिसका उपयोग चीनी के कारखाने में होता है।

फुलकारी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) साधारण मलमल पर रंगीन रेशम से बूटियां काढ़ा हुआ कपड़ा।

फुलचुही [संज्ञा स्त्री.](हिं.) फूलों पर उड़ती फिरने वाली एक छोटी चिड़िया। यह नीलापन लिये काले चमकते रंग की पतली और लम्बी चोंच वाली होती है।

फुलझड़ी, फुलझरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें से फूल के समान चिनगारियां झड़ती या निकलती हैं। २-झगड़ा लगाने वाली बात।

फुलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊसर भूमि में उगने वाली एक प्रकार की बारहमासी घास।

फुलरा [संज्ञा पु.] (हिं.) फुँदना।

फुलवर [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का वस्त्र जिसपर रेशमी फूल बने या कढ़े होते हैं।

फुलवाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुलवारी'।

फुलवाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुलवारी'।

फुलवार* वि.] (हिं.) प्रफुल्ल। प्रसन्न।

फुलवारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुष्पवाटिका। वह बगीचा जिस में फूलों के पौधे बहुतायत में हों। २-कागज के बने फूल और पेड़ जो शोभा के लिए बरात के साथ चलते हैं। ३-बालबच्चे और परिवार के लोग। ४-अनुयायियों का समुदाय।

फुलसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया जिसका शरीर काला और सिर पर सफेद छींटे होते हैं।

फुलसुंघनी, फुलसुँघी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुलचुही नामक चिड़िया।

फुलहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फुलहारी] माली

फुलांग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की भाँग।

फुलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फूलने का भाव। २-देखो 'सरफुलाई'। ३-खुखंडी। ४-एक प्रकार का बबूल।

फुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु के विस्तार को उसके अन्दर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना। २-किसी को पुलकित या आनन्दित कर देना। ३-किसी में गर्व उत्पन्न करना। ४-फूलों से युक्त करना। कुसुमित करना। मुँह फुलाना या गाल फुलाना-क्रोध प्रकट करने वाली आकृति बनाना। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फूलना'।

फुलायल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुलेल'।

फुलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) फूलने की क्रिया, भाव या अवस्था। उभार या सूजन।

फुलावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फूलने की क्रिया या भाव।

फुलावा [संज्ञा पु.] (हि.) फूल-फुँदने लगी वह डोरी जो स्त्रियों के बालों में गूथी जाती है। खजुरा।

फुलिंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) चिनगारी।

फुलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कील अथवा काँटा जिसका ऊपरी भाग फूल के समान फैला हो। २-लौंग के आकार का कानों में पहनने का गहना। ३-फूल के समान फैला हुआ कील का ऊपरी भाग।

फुलिसकेप [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का चिकना कागज जो अठारह इंच लम्बा और तेरह इंच चौड़ा होता है।

फुलुरिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे बिछाने का मोटा कपड़ा। गंडतरा।

फुलेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देवताओं के ऊपर लगाने की फूल की बनी छतरी।

फुलेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फूलों की महक से बासा या सुगन्धित किया हुआ तेल। २-एक वृक्ष विशेष जो हिमालय पर कुमाऊं से दारजिलिंग तक होता है।

फुलेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कांच आदि का वह पात्र जिसमें फुलेल या सुगंधयुक्त तेल रखा जाता है।

फुलेहरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्सवों के अवसर पर द्वार पर लगाने के सूत रेशम आदि के बने हुए झब्बेदार बंदनवार।

फुलौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) पकौड़ा। बड़ी फुलौरी।

फुलौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चने या मटर आदि के बेसन की बरी या पकौड़ी।

फुल्ल [वि.] (सं.) १-फूला या खिला हुआ। विकसित। २-प्रसन्न।

फुल्लदाम [संज्ञा पु.] (सं.) उन्नीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६, ७, ८, ९, १०, ११ तथा १७ वां वर्ण लघु होता है

फुल्लन [वि.] (सं.) वायु से भरा हुआ।

फुल्ललोचन [वि.] (सं.) (आनन्द से) विकसित नेत्रों वाला।

फुल्ला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चावल या मक्का की भुनी हुई खील। २-आंख की पुतली पर सफेद दाग जिससे कम दीखने लगता है।

फुल्लारविंद, फुल्लारविन्द [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूला हुआ कमल।

फुल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फुलिया। २-फूल के आकार का कोई आभूषण।

फुवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुहारा'।

फुस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धीमा और अस्फुट स्वर। बहुत धीमी आवाज।

फुसकारना* [क्रि. अ.] (हिं.) फूँक मारना। फूत्कारना।

फुसकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपान वायु। पाद।

फुसड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुचड़ा'।

फुसफुसा [वि.] (हिं.) १-जल्दी टूटने अथवा चूरचूर हो जाने वला। नरम। २-कमजोर। ३-जो तीक्ष्ण न हो।

फुसफुसाना [क्रि. स.] (हिं.) अतिशय मंद या धीमे स्वर से कान में कुछ कहना।

फुसलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भुलावा देकर चुप या शान्त करना। बहलाना। २-मीठी-मीठी बातें कह कर अनुकूल करना। ३-किसी को प्रवृत्त करने के निमित्त इधर-उधर की बातें करना। ४-प्रिय और विनीत वचन कहकर संतुष्ट करना। मनाना।

फुहार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी का महीन छींटा। जलकण। २-महीन बूंदों की वर्षा। हलकी वर्षा। झींसी।

फुहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक उपकरण विशेष जिसमें ऊपरी दबाव के कारण जल की पतली धार अथवा छींटे जोर से चारों ओर निकल कर गिरते हैं। २-जल का महीन छींटा।

फुही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुहार'।

फूँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फूले हुए गालों से सवेग छोड़ी हुई हवा। २-मुंह की हवा। सांस। मंत्रादि पढ़कर छोड़ी हुई हवा। फूँक निकल जाना-प्राणांत होना। दम निकल जाना।

यौ०-झाड़फूँक-मंत्र-तंत्र का उपचार।

फूँकना [क्रि. स.](हिं.) १-थोड़ा-सा मुंह खुला रख कर जोर से हवा छोड़ना। २-मंत्र आदि पढ़ कर किसी पर फूंक मारना। ३-जलाना। भस्म करना। ४-फूंक मारकर दहकाना या प्रज्वलित करना। ५-मुख से बजाए जाने वाले बाजों को फूँककर बजाना। जैसे-शंख फूंकना। ६-रासायनिक रीति से धातुओं को भस्म करना। ७-नष्ट या बरबाद करना। ८-जलाना। सताना। दुख देना। ९-चारों ओर फैलाना या प्रचारित करना।

फूँक फूँक कर पैर रखना-बड़ी सावधानी से कोई काम करना।

यौ०-फूँकना तापना-व्यर्थ खर्च करना।

फूँका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रक्रिया जिसमें बांस की नली में तीक्ष्ण औषधियां भरकर और गाय भैंस आदि के स्तन में लगा कर फूंकना जिससे वे स्तन में दूध चुरा न सकें और सारा दूध बाहर निकल आये। २-नली से आग पर फूंक मारना। ३-वह बांस की नली जो फूंक मारने के उपयोग में लाई जाती है। ४-फफोला। फोड़ा।

फूँद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फुंदना। झब्बा।

फूँदा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फुंदना। झब्बा। २-फुफुंदी। नीवी।

फूँद फूँदारा-फूँदने वाला। फुलरे वाला।

फूई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घी का फूल। २-फफूंदी। भुकड़ी।

फूट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फूटने की क्रिया या भाव। २-विरोध अथवा वैमनस्य के कारण होने वाला भेद। ३-एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फट जाती है।

फूटफटक-अनबन। बिगाड़। फूट डालना-विरोध या वैमनस्य उत्पन्न करना। फूट कर खिलना-पककर दरकना।

फूटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह टुकड़ा जो फूट

कर अलग हो गया हो। २-शरीर के जोड़ों में होने वाली पीड़ा।

फूटना [क्रि. अ.] १-भग्न होना। दरकना। कड़ी या ठोस वस्तु के आघात आदि से थोड़ा टूटना। २-ऐसी वस्तुओं का फटना जिनके ऊपर छिलका या आवरण हो और भीतरी भाग पोला या मुलायम वस्तु से भरा हो। ३-बिगड़ना। नष्ट होना। ४-भेदकर निकलना। भर जाने के कारण आवरण फाड़कर निकलना। ५-देह में दाने अथवा घाव के रूप में प्रकट होना। ६-विकसित या प्रस्फुटित होना। (कली का) खिलना। ७-अंकुर शाखा आदि निकलना। ८-बिखरना। फैलाना। ९-निकलकर अलग होना। साथ छोड़ना। १०-संयुक्त या मेल-मिलाप की दशा में न रहना। ११-शब्द का मुख से निकलना। १२-बोलना। १३-मुंह से शब्द निकलना। १४-व्यक्त या प्रकट होना। १५-जोड़ों में दर्द होना। १६-बाँध, मेड़ आदि का टूट जाना। १७-गुप्त बात का प्रकट हो जाना। १८-अपना पक्ष छोड़ दूसरे के पक्ष में होना।
उँगलियाँ फूटना–उङ्गलियां चटकाई जाना। *फूटी आँख को तारा*–कई बेटों में से बचा हुआ एक बेटा।
फूटी आँखों न भाना–जरा भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। *फूटी आँखों न देख सकना*–जलना। कुढ़ना। *फूट-फूटकर रोना*–अतिशय विलाप करना। बहुत अधिक रोना।

फूटा [वि.] (हिं.) [स्त्री. फूटी] टूटा हुआ। फूटा हुआ। भग्न। [संज्ञा पु.] १-खेत में टूटकर गिरी हुई बालें। २-जोड़ों का दर्द।

फूत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) मुख से हवा छोड़ने का शब्द। फुफ्कार।

फूफा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फूफी] पिता की बहिन या फूफी का पति। पिता का बहनोई।

फूफी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पिता की बहिन। बूआ।

फूफू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फूफी। बूआ।

फूल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पौधे में का वह अंग जो गोल अथवा लम्बी पंखड़ियों का होता है तथा जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है। पुष्प। सुमन। कुसुम। २-फूल के आकार वाले बेल-बटे या नक्काशी। ३-फूल के आकार का कोई आभूषण। ४-दीपक की बत्ती पर का गुल। ५-आग की चिनगारी। ६-सत्त। सार। ७-आटे चीनी आदि का उत्तम भेद। ८-स्त्रियों का मासिक रज। पुष्प। ९-गर्भाशय। १०-घुटने या पैर की गोल हड्डी। ११-वे हड्डियाँ जो शव जलाने के उपरान्त बच रहती हैं। १२-तांबे और रांगे के मेल से बनने वाली मिश्रित धातु। १३-सूखे हुए साग अथवा भांग की पत्तियाँ। १४-पीतल आदि की गोल गाँठ अथवा घुंडी जो शोभा के निमित्त किवाड़ छड़ी आदि में जड़ते हैं। १५–कुष्ठरोग के कारण शरीर पर पड़ने वाले सफेद अथवा लाल दाग। १६-किसी पतले पदार्थ को सुखाकर जमाया हुआ पत्तर या वरक। १७-मथानी का अग्रभाग जो पुष्पाकार होता है। १८-वह मद्य जो पहली बार उतारा हो।
फूल आना–फूल लगना। *फूल उतारना*–फूल तोड़ना। *फूल करना*–(दीपक) बुझाना। *फूल उठना*–मृतक की जली हुई हड्डियों को गङ्गा में बहाना। *फूल की थाली बजना*–आनन्दोत्सव होना। *फूल चढ़ाना*–फूलों से पूजा करना। *फूल चुनना*–फूल (तोड़कर) एकत्र करना। *फूल झड़ना*–मधुर और प्रिय शब्द बोलना। *फूलपान-सा*–अतिशय कोमल। *फूल पड़ना*–१-गुल जली बत्ती होना। २-सफेद धब्बे पड़ना। *फूल सा*–हलका, सुन्दर और कोमल। *फूल सूंघकर रहना*-बहुत कम खाना। *फूलों का गहना*–१-फूलों की माला आदि सजावट या सिंगार का सामान। २-ऐसी सुकुमार और कमजोर वस्तु जो थोड़ी देर की शोभा के लिए हो। *फूलों की छड़ी*-वह छड़ी जिसमें फूलों की माला लिपटी रहती है। *फूलों की सेज*–वह शय्या जिस पर सजावट और कोमलता के लिए फूलों की पंखुड़ियाँ बिछी हों।
[संज्ञा स्त्री.](हिं.) १–फूलने की क्रिया या भाव। उत्साह। उमङ्ग। २-आनन्द। प्रसन्नता

फूलकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बेलबूटे बनाने का काम।

फूलगोभी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार की गोभी जिसमें मंजरियों का बंधा हुआ ठोस पिंड होता है। यह तरकारी बनाने के काम आती है।

फूलडोल [संज्ञा पु.] (हिं.) चैत्रशुक्ल-एकादशी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव जिसमें श्रीकृष्ण के लिए फूलों का झूला सजाया जाता है।

फूलढोंक [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार की मछली।

फूलदान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धातु, काँच, मिट्टी आदि का एक विशेष प्रकार का पात्र जिसमें फूलों का गुच्छा रखा जाता है। गुलदान। २-वह बरतन जिसमें देवताओं के सामने फूल सजाकर रखे जाते हैं।

फूलदार [वि.] (हिं.) जिसपर बेल-बूटे या फूल-पत्ते आदि काढ़े या बनाये गये हों।

फूलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फूलों से युक्त होना। कुसुमित होना। २-(फूल की) पंखुड़ियों का फैलना। खिलना। विकसित होना। ३-किसी वस्तु के भीतर के भाग का हवा, जल आदि के भर जाने से अधिक फैल जाना या बढ़ जाना अथवा ऊंचा हो जाना। ४-शरीर के किसी अङ्ग का सूज जाना। ५-मोटा या स्थूल होना। ६-बहुत प्रसन्न होना। गर्व या घमंड करना। ७-मुँह फुलाना। रूठना।
फूलना-फलना–धन से सम्पन्न और संतान के सुख से सुखी होना। *फूलना-फलना*–प्रसन्न होना। *फूला फिरना*–गर्व या घमंड में रहना। *फूले-फूले फिरना*–अत्यधिक प्रसन्न होकर घूमना या रहना। *फूले अङ्ग न समाना*–बहुत प्रसन्न होना।

फूलपान [वि.] (हिं.) (फूल अथवा पान के समान) सुकुमार या कोमल। नाजुक।

फूलबिरंज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का धान। २-एक रागिनी।

फूलभाँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिमालय पर उगने वाली एक भाँग विशेष।

फूलमती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक देवी का नाम

फूलवारा [संज्ञा पु.] (देश.) चिउली नामक पेड़

फूलसँपेल [वि.] (हिं.) जिसके सींग विरुद्ध दिशाओं में फैले हों (गाय या भैंस)।

फूला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खीला। लावा। २-गन्ने का रस पकाने का कड़ाह। ३-एक नेत्र रोग जिसमें पुतली के ऊपर सफेद दाग या छींटा सा पड़ जाता है। फुल्ला। फूली। ४-पत्तियों को होने वाला एक प्रकार का रोग।

फूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आँख की पुतली पर पड़ा हुआ दाग या छींटा जिससे कुछ कम दिखाई देने लगता है। २-एक प्रकार की सब्जी ३-एक प्रकार की रूई।

फूवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फूफी। बुआ।

फूस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लम्बी और सूखी घास जिससे छप्पर छाये जाते हैं। २-सूखा तृण। तिनका।

फूहड़ [वि.] (हिं.) १-जिसे भली भांति काम करने का ढंग न आता हो। बेशऊर। २-देखने में भद्दा या बेढंगा। ३-कथन या वार्त्तालाप में अश्लील। गन्दा।

फूहड़पन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) फूहड़ होने का भाव

फूहर+ [वि.] (हिं.) देखो 'फूहड़'।

फूहा [संज्ञा पु.] (देश.) रूई का गाला।

फूही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फुहार'।

फेंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फेंकने की क्रिया या भाव

फेंकना [क्रि. स.] (हिं.) १-झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर गति देना। २-कुश्ती आदि में पटकना या गिरना। ३-एक जगह से दूसरी जगह पर लेजाकर डालना। ४-लापरवाही से डालदेना। ५-स्वयं कुछ न करके दूसरे के जिम्मे लगा देना। अपना पिंड छुड़ाकर दूसरे पर भार डाल देना। ६-भूल से कहीं छोड़ना या गँवाना। खोना। ७-तिरस्कारसहित परित्याग करना। ८-अपव्यय करना। ९--ऊपर नीचे हिलाना-डुलाना। झटकना-पटकना। १०-पटा चलाना।
घोड़ा फेंकना–घोड़ा सरपट दौड़ाना।

फेंकरना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १–गीदड़ का रोना

या चिल्लाना। २-फूट-फूट कर रोना या चिल्लाना।

फेंकाना [क्रि. स.](हिं.) फेंकने का काम कराना।

फेंगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फिंगा'।

फेंट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमर का घेरा। २-धोती का वह भाग जो कमर पर लपेटा जाता है। ३-कमर में बाँधने का कपड़ा। ४-लपेट। घुमाव। फेरा। ५-फेंटने की क्रिया या भाव। *फेंट धरना या पकड़ना*-फेंट इस प्रकार पकड़ना कि आदमी भागने न पाये। *फेंट कसना या बाँधना*-किसी काम को करने के लिये कमर कसकर उद्यत होना।

फेंटना [क्रि. स.] (हिं.) १-गाढ़े द्रव-पदार्थ को उँगली घुमा-घुमा कर हिलाना। २-गड्डी के ताश को ऊपर आगे पीछे या ऊपर नीचे करके भली प्रकार मिलाना।

फेंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कमर का घेरा। २-धोती का वह भाग जो कमर के घेरे पर बाँधा गया हो। ३-कमरबंद। ४-छोटी पगड़ी। ५-अटेर पर लपेटा हुआ सूत। सूत की बड़ी अंटी।

फेंटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत।

फेंसी [वि.] (अं.) देखो 'फैंसी'।

फेकरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उघाड़ा या नंगा होना (सिर)। २-देखो 'फेंकरना'।

फेकारना+ [क्रि. स.] (हिं) १-नंगा (सिर) करना २-चिल्ला-चिल्लाकर या जोर-जोर से रोना।

फेकैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो फेंकता हो २-पहलवान। ३-गदकाफरी या पटा-बनेटी खेलने वाला व्यक्ति।

फेण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फेन'।

फेदा [संज्ञा पु.] (देश) घुँइया। अरुई।

फेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी के छोटे-छोटे बुलबुलों का कुछ गठा या सटा समूह। झाग २-रेंट। नाक का मल।

फेनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-झाग। फेन। २-एक मिठाई। बातासफेनी। ३-शरीर धोने अथवा धोने की प्राचीन क्रिया। (संभवतः आधुनिक साबुन के समान रीठे आदि के फेन से धोना रहा हो)।

फेनका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पानी में रांधा हुआ चावल का चूर।

फेनदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूध फेनी नामक पौधा जो औषध रूप में प्रयुक्त होता है।

फेनना [क्रि. स.](हिं.) किसी द्रव पदार्थ में उंगली हिलाकर झाग उठाना।

फेनमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें वीर्य फेन के समान थोड़ा-थोड़ा गिरता है।

फेनल [वि.] (सं.) फेनयुक्त। झागदार। फेनिल।

फेना* [संज्ञा पु.] (हिं.) फेन। झाग।

फेनाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) बुलबुला। बुद्बुद।

फेनाशनि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

फेनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फेनी नामक मिठाई।

फेनिल [वि](सं.) फेन वाला। झागदार। जिसमें फेन हो। [संज्ञा पु.] (सं.) रीठा।

फेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक मिठाई जो लपेटे हुए सूत के लच्छे के समान होती है। २-देखो 'फेन'।

फेफड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की भीतर छाती की हड्डियों के नीचे का वह अवयव जिसके चलने से जीव सांस लेते हैं। फुप्फुस।

फेफड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गरमी या खुश्की से होंठों पर पपड़ी जमना। २-पशुओं के फेफड़े सूज जाने का एक रोग।

फेफड़ी *बाँधना या पड़ना*-होंठ सूखना।

फेफरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फेफड़ी'।

फेरंड, फेरण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल। गीदड़

फेर [संज्ञा पु] (हिं.) १-फिरने या फेरने का भाव। २-घुमाव। चक्कर। ३-परिवर्तन। हेरफेर। रद्दोबदल। ४-झंझट। बखेड़ा। ५-धोखा। भ्रम। ६-चालबाजी। धूर्त्तता। ७-उपाय। युक्ति। ढङ्ग। ८-अदला-बदला। विनिमय। ९-हानि। घाटा। नुक़सान। *और। दिशा। १०-कर्तव्य स्थिर करने की अवस्था। असमंजस। दुवधा। ११-भूतप्रेत का प्रभाव।

फेरे की *बात*-घुमाव-फिराव या चक्कर की बात। फेर खाना-घूमकर आना। फेर देना-लौटा देना। फेर पड़ना या पड़ जाना-१-कमी अथवा हानि होना। फर्क होना। २-घुमाव का रास्ता होना। फेरफार करना-अन्तर डालना। परिवतन करना। फेरफार की बात-१-चालाकी की बात। २-टालने की बात। फेर बांधना-सिलसिला, उपाय या ढंग होना। फेर में आ जाना-दुर्दिन आना। बुरे दिन होना। फेर में पड़ना या आना-१-धोखा खाना। २-घाटा सहना। ३-कठिनाई आ जाना। निन्नानवे का फेर-निन्नानवे रुपये होने पर सौ रुपये होने की धुन। हेर-फेर-१-उलटफेर। २-व्यापार में कुछ लेते-देते रहना।

[अव्य.] (हिं.) फिर। पुनः। एक बार और। [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़। सियार। शृगाल।

फेरना [क्रि. स.] (हिं) १-एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। गति बदलना। घुमाना। मोड़ना। २-जिस ओर से आता हो उस ही ओर भेजना। लौटाना। वापस करना। ३-जिसने दिया हो पुनः उसी को देना। वापस करना। लौटाना। ४-जिसे दिया गया था उससे दुबारा ले लेना। लौटा लेना। ५-मंडलाकार चलाना। घुमाना। ६-मरोड़ना। ७-एक ओर से दूसरी ओर स्पर्श करते हुए ले जाना। ८-पोतना। लेप करना। ९-परिवर्त्तित करना। रुख बदलना। १०-उलट पुलट या इधर-उधर करना। ११-विपरीत या विरुद्ध करना। १२-बार-बार पढ़ना या दोहराना। १३-एक-एक करके सब के सामने उपस्थित करना। घुमाना। जैसे-महफिल में पान फेरना। १४-प्रचारित या घोषित करना। १५-चाल चलाना या निकालना। (घोड़े आदि की)।

माला फेरना-१-माला जपना। २-बार-बार नाम लेना। *हाथ फेरना*-१-सुहलाना। २-स्पर्श करना। ३-हथियाना। ले लेना। *पानी फेरना*-नष्ट करना।

फेर-पलटा [संज्ञा पु.] (हिं.) गौना। द्विरागमन।

फेर-फार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परिवर्तन। उलट फेर। २-घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर। ३-टालमटूल। बहाना। ४-अन्तर। फर्क।

फेरव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शृगाल। सियार। गीदड़। २-राक्षस। [वि.] १-धूर्त। धोखेबाज। २-दुख पहुँचाने वाला। हिंस्र।

फेरवट [संज्ञा पु.] (हि.) १-फेरने का भाव। २-फेरा। ३-घुमाव-फिराव। चक्कर। ४-अन्तर। फर्क।

फेरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सोने के तार को दो-तीन बार लपेटकर बनाया हुआ छल्ला। हुआ। २-देखो 'फेरा'।

फेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चारों ओर घूमने की क्रिया। परिक्रमण। चक्कर। २-लपेटने अथवा चक्कर लगाने में एक-एक बार का घुमाव। लपेट। ३-बार-बार आना जाना। ४-लौटकर आना। ५-आवर्त। घेरा।

फेराफेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हेराफेरी। परिवर्तन।

फेरि* [अव्य] (हिं.) फिर। पुनः। दुबारा। फेरिफेरि-बारबार।

फेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'फेरा'। २-देखो 'फेर'। ३-परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४-चक्कर। ५-भिखारी आदि का भिक्षा के लिये बार-बार आना। ६-किसी वस्तु को बेचने के लिए उसे लादकर गांव गांव गली-गली घूमना। ७-रस्सी पर ऐंठन चढ़ाने की चरखी।

फेरी *पड़ना*-(विवाह में) भाँवर होना।

फेरीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कर्मचारी जो घूम-घूमकर अपने मालिक के आसामियों से रुपया वसूल करता है।

फेरीवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) घूम-घूमकर सौदा बेचने वाला व्यापारी।

फेरु [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़। शृगाल।

फेरुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फेरवा'।

फेरौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) टूटे-फूटे खपरैल निकाल कर उनके स्थान पर नये खपरे

रखने की क्रिया ।

फ़ेल [संज्ञा पु.] (अ.) कार्य । काम । कर्म । [वि.] (अं.) किसी कार्य में असफलता । [संज्ञा पु.] (सं.) उच्छिष्ट । जूठा । [संज्ञा पु.] (देश.) बेपार नामक वृक्ष विशेष ।

फेला, फेलिका, फेली [संज्ञा स्त्री.](सं.) उच्छिष्ट जूठा ।

फ़ेलो [संज्ञा पु.] (अं.) सभ्य । सभासद ।

फ़ेल्ट [संज्ञा पु.] (अं.) जमाया हुआ ऊन । नमदा ।

फ़ेस [संज्ञा पु.] (अं.) १-चेहरा । मुख । २-सामना । ३-घड़ी का सामने वाला भाग । ४-टाइप का वह ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है ।

फ़ेहरिस्त [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सूची' ।

फ़ैंसी [वि.] (अं.) १-देखने में सुन्दर । २-तड़क-भड़क वाला । दिखाऊ ।

फ़ैकल्टी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) विश्वविद्यालय के अन्तर्गत किसी विषय (विद्या या शास्त्र) के पंडितों और आचार्यों का समाज ।

फ़ैक्टरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कारखाना ।

फ़ैज़ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-लाभ । २-फल । परिणाम । अपने फ़ैज को पहुंचाना–अपने कर्म का उचित फल पाना ।

फ़ैदम [संज्ञा पु.] (अ.) छः फुट के बराबर की लम्बाई की नाप । पुरसा ।

फ़ैन [संज्ञा पु.] (अं.) पंखा ।

फ़ैयाज़ [वि.] (अ.) उदार ।

फ़ैयाज़ी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) उदारता ।

फ़ैर [संज्ञा स्त्री.] (अं.) बंदूक तोप आदि हथियारों का दगना । +[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पहर'

फैल* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काम । कार्य । २-क्रीड़ा । खेल । ३-नखरा । मकर । ४-हठ । दुराग्रह । (विशेषतः बच्चों को) [संज्ञा स्त्री.] १-फैला हुआ । २-लम्बा-चौड़ा । विस्तृत ।

फैलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कुछ दूर तक आगे बढ़कर और अधिक स्थान घेरना । २-अधिक जगह घेरना । विस्तृत होना । पसरना । ३-मोटा होना । ४-आवृत करना । भरना । ५-संख्या बढ़ना । ७-छितराना । बिखरना । ७-किसी छेद या गड्ढे का बढ़ जाना । अधिक खुलना । ८-पूरा तनकर किसी ओर बढ़ना । ९-प्रचलित या प्रसिद्ध होना । १०-अधिक पाने के लिए हठ करना । मचलना । ११-इधर-उधर दूर तक पहुँचना । १२-भाग या तक़सीम का ठीक उतरना ।

फ़ैलसूफ़ [वि.] (हिं.) फजूलखर्च । अपव्ययी ।

फ़ैलसूफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फजूलखर्ची ।

फैलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-फैलाने में प्रवृत्त करना । २-पसारना । ३-इधर-उधर बखेरना । छितराना । ४-बढ़ती कराना । बढ़ाना । ५-प्रकट करना । प्रचलित या प्रसिद्ध करना । ६-हिसाब या लेखा लगाना । गणित करना । ७-आयोजन करना ।

फैलाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विस्तार । प्रसार । २-लम्बाई । चौड़ाई । ३-प्रचार ।

फ़ैशन [संज्ञा प.] (अं.) १-ढंग । तर्ज़ । २-रीति प्रथा । ३-बनाव-सिंगार आदि का नया ढंग ।

फ़ैसला [संज्ञा पु.] (अ.) निर्णय । निपटारा ।

फ़ैसिज़्म [संज्ञा पु.] (अं.) फ़ैसिस्ट दल का संघटन और सिद्धांत ।

फ़ैसिस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) १-इटली के राष्ट्रवादियों का एक दल जो दूसरे महायुद्ध से पूर्व बोल्शेविकों का विरोध करने के लिए बना था । २-वह जो समस्त अधिकार अपने (अथवा अपने नेता या दल के) ही हाथ में रखना चाहता हो, प्रजा के प्रतिनिधि रखने का विरोधी हो ।

फोंक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीर का पिछला छोर जिस पर पंख लगाये जाते हैं । २-वस्त्र में की फटन ।

फोंका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लम्बा और पोला चोंगा । २-पोले डंठल वाले शस्यों की फुँनगी ३-देखो 'फूँका' । ४-देखो 'सरफोका' ।

फोंकागोला [संज्ञा पु.] (हिं.) तोप का लम्बा गोला ।

फोंदा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुँदना' ।

फोंफर [वि.] (हिं.) १-पोला । २-फोक । निःसार

फोंफी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोल लम्बी नली । २-बांस की नली जिससे सुनार लोहार आदि आग धोंकते हैं । ३-नाक में पहनने की पोली कील ।

फोक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश । सीठी । २-भूसी । तुष । ३-फीकी या नीरस वस्तु ।

[संज्ञा पु.] (देश.) एक तृण विशेष जिसका साग बनाया जाता है ।

फोकट [वि.] (हिं.) तुच्छ । निःसार । व्यर्थ ।

फोकट का–१-बिना परिश्रम का । २-बिना मूल्य । मुफ्त ।

फोकट में–मुफ्त में । योंही ।

फोकला* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फोकलाई] छिलका ।

फोकस [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह बिंदु जहां पर प्रकाश की छितराई हुई किरणें एकत्रित होती हैं । २-फोटो लेते समय लेंस द्वारा आई हुई छाया जो चित्रपट पर पड़ती है ।

फोट [संज्ञा पु.] (हिं.) स्फोट । धड़ाका ।

फोटक* [वि.] (हिं.) देखो 'फोकट' ।

फोटा [संज्ञा पु.] (हिं) १-टीका । २-बिंदी ।

फोटो [संज्ञा पु.] (अं.) १-फोटोग्राफी यंत्र से उतरा हुआ चित्र । छायाचित्र । २-प्रतिबिंब ।

फोटो लेना–यंत्र द्वारा चित्र खींचना ।

फोटोग्राफ़ [संज्ञा पु.] (अं.) फोटो के यंत्र द्वारा उतारा हुआ चित्र ।

फोटोग्राफ़र [संज्ञा पु.] (अं.) फोटो के यंत्र द्वारा चित्र उतारने वाला ।

फोटोग्राफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) फोटो के यंत्र द्वारा चित्र उतारने की कला ।

फोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-फूटने में प्रवृत्त करना तोड़ना । भग्न करना । २-किसी को दूसरे पक्ष से अपने पक्ष में मिलाना । ३-केवल आघात या दबाव से भेदन करना । ४-शरीर में ऐसा विकार पैदा करना जिससे फोड़े या घाव हो जायँ । ५-शाखा के रूप में होकर कसी सीध में जाना । ६-अंकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना । ७-भेद-भाव उत्पन्न करना । ८-(भेद) खोलना । (रहस्य) प्रकट करना । ९-भेद-भाव उत्पन्न करना ।

उँगलियाँ फोड़ना–उँगलियाँ चटखाना । *आँख फोड़ना*–आँख नष्ट करना ।

फोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. फोड़िया] शरीर में विष एकत्र होने से उत्पन्न शोथ या उभाड़ जिसमें रक्त सड़कर मवाद बन जाता है । व्रण ।

फोड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा फोड़ा ।

फ़ोता [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-भूमिकर । २-रुपया रखने की थैली । ३-अण्डकोष । ४-कमरबंद पटुका ।

फ़ोतेदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-कोषाध्यक्ष । खज़ांची । २-रोकड़िया । खजांची ।

फ़ोनोग्राफ़ [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें गाए हुए राग, कही हुई बातें बाजे आदि के स्वर चूड़ियों में भरे जाते हैं और ज्यों के त्यों बार-बार सुने जा सकते हैं ।

फ़ोनोटोग्राफ़ [संज्ञा पु.] (अं.) एक यंत्र जिसके द्वारा बोलने वाले के शब्दों से उत्पन्न वायु तरङ्गों का अङ्कन होता है ।

फ़ोया [संज्ञा पु.] (हिं.) रूई का लच्छा ।

फोरना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'फोड़ना' ।

फ़ोरमैन [संज्ञा पु.] (अं.) कारखाने में काम करने वालों का जमादार ।

फ़ोलियो [संज्ञा पु.] (अं.) कागज के तख्ते का आधा भाग ।

फोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'फाहा' । २-देखो 'फोया' ।

फोहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुहारा' ।

फौकना* [क्रि. अ.] (हिं.) डींग मारना ।

फ़ौज [संज्ञा पु.] (अं.) १-सेना । २-झुण्ड ।

फ़ौजदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सेनापति ।

फ़ौजदारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-लड़ाई-झगड़ा । मारपीट । २-वह अदालत जहां ऐसे मुकदमों का फ़ैसला क़िया जाता है जिसमें अपराध

किये हुए व्यक्तियों को दंड मिलता है।

फौजी [वि.] (फा.) फौज-संबंधी। सैनिक।

फौजीकानून [संज्ञा पु.] (हिं.) सैनिक शासन से संबंधित कानून जो साधारण कानूनों की अपेक्षा अधिक कठोर होते हैं तथा किसी बड़ी उपद्रव अथवा सैनिक के लिए प्रयुक्त होते हैं। *मार्शल-लॉ*।

फौत [वि.] (अ.) मृत। गत। नष्ट।

फौती [वि.] (अ.) १-मृत्यु-सम्बन्धी। २-मृत। मरा हुआ।
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मृत्यु। मरण। २-किसी के मरने की सूचना जो नगरपालिका के किसी कार्यालय में दिखाई जाती है।

फौतीनामा [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-मृत व्यक्तियों के नाम पते आदि की सूची जो नगरपालिका की चौकी पर तैयार की जाती है और नगरपालिका के केन्द्रीय कार्यालय में भेजी जाती है। २-मृत-सैनिक की मृत्यु की सूचना जो सेना-विभाग की ओर से उसके घरवालों को भेजी जाती है।

फौरन [क्रि. अ.] (अ.) तुरन्त। तत्काल।

फौलाद [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का उत्तम और कड़ा लोहा।

फौलादी [वि.] (फा.) १-फौलाद का बना हुआ। दृढ़। कठिन। मजबूत।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) भाले की लकड़ी।

फौवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'फुहारा'।

फ्याहुर [संज्ञा पु.] (हिं.) [फ्याहुरी] गीदड़। शृगाल।

फ्याहुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मादा गीदड़। विशेषतः हाल की ब्याई हुई।

फ्युडेटरी-चीफ [संज्ञा पु.] (अं.) वह राजा जो किसी बड़े राजा या राज्य के आधीन हो और उसे कर देता हो। सामंत-राजा। करद राजा।

फ्युडेटरी-स्टेट [संज्ञा पु.] (अं.) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य के आधीन हो तथा उसे कर देता हो। करद-राज्य।

फ्रांक [संज्ञा पु.] (अं.) फ्रांस का एक चांदी का सिक्का जो भारतीय ।≡)। सवा सात आने के मूल्य का होता है।

फ्राँस [संज्ञा पु.] (फ्रांस.) पश्चिम योरोप का एक देश का नाम।

फ्रांसीसी [वि.] (फ्रांस.) १-फ्रांस देश का। फ्रांस में उत्पन्न। २-फ्रांस देश में रहने वाला।

फ्राक [संज्ञा पु.] (अं.) बच्चों के पहनने का एक प्रकार का लम्बा कुरता।

फ्री [वि.] (अं.) १-स्वतन्त्र। २-मुक्त।

फ्रीट्रेड [संज्ञा पु.] (अं.) वह व्यापार जिसमें माल के आने-जाने पर किसी प्रकार का कर या महसूल न लिया जाय।

फ्रेंच [वि.] (अं.) फ्रांसदेश का।

फ्रेम [संज्ञा पु.] (अं.) तसवीर आदि का चौखटा।

फ्लूट [संज्ञा पु.] (अं.) बंसी के समान एक पाश्चात्य बाजा जो फूंककर बजाया जाता है।

ब

ब हिन्दी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। यह दोनों होटों को मिलाने पर उच्चरित होता है, इसलिये इसको ओष्ठ्यवर्ण कहते हैं।

बँउखा [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों की कोहनी पर बाँधने का एक बंध जिसमें झब्बे लगे रहते हैं।

बंक [वि.] (हिं.) १-तिरछा। टेढ़ा। २-पुरुषार्थी। ३-दुर्गम। [संज्ञा पु.] (अं.) वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहां जमा करती या सूद लेकर लोगों को ऋण देती है, लोगों की हुंडियां लेती और भेजती है तथा इसी प्रकार के अन्य महाजनी कार्य करती हैं।

बंकट [वि.] (हिं.) वक्र। टेढ़ा।

बंकनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुनारों की महीन फुँकनी जिससे चिराग की लौ फूँककर बारीक टुकड़ों की जुड़ाई करते हैं। बगनहा।

बंकराज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सर्प।

बंकवा [संज्ञा पु.] (हिं.) धान विशेष जो अगहन में तैयार होता है।

बंकसाल [संज्ञा पु.] (देश.) जहाज का बड़ा कमरा।

बंका [वि.] (हिं.) १-तिरछा। टेढ़ा। २-बांका। ३-पराक्रमी। बलशाली। [संज्ञा पु.] (देश.) एक कीड़ा जो हरे रंग का होता है और धान के पौधों को हानि पहुँचाता है।

बंकाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टेढ़ापन। तिरछापन।

बंकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाँक'।

बंकुर+ [वि.] (हिं.) देखो 'बंक'।

बंकुरता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टेढ़ाई। टेढ़ापन।

बंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वंग'। * [वि.] १-टेढ़ा। २-उद्दंड। ३-अज्ञानी।

बंगई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिलहट में उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की बढ़िया कपास।

बंगड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बंगली'।

बंगन्यपाली [संज्ञा स्त्री.] एक मुसलमानी रियासत का नाम।

बंगला [वि.] (हिं.) बंगाल देश का। बंगाल-सम्बन्धी।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंगाल देश की भाषा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक तला कच्चा मकान जिस पर फूस या खपड़े छाये हों। २-चारों ओर से खुला और हवादार एक मंजिला मकान जिसके चारों ओर बरामदे हों। ३-ऊपर वाली छत पर बना हुआ छोटा कमरा। ४-बंगाल देश का पान।

बंगलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पान। २-एक प्रकार का मटर।

बंगली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ की चूड़ियों के साथ पहनने का एक आभूषण। २-एक प्रकार का पान। [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा।

बंगसार [संज्ञा पु.] देखो 'बनसार'।

बंगा+ [वि.] (हिं.) १-टेढ़ा। २-मूर्ख। बेवकूफ। ३-उद्दंड।

बंगारी [संज्ञा पु.] (हिं.) हरताल।

बंगाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पूर्वी भारत का एक प्रसिद्ध देश। २-एक राग का नाम।

बंगाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बंगाल देश। २-एक रागिणी का नाम।

बंगालिका [संज्ञा स्त्री.] (?) एक रागिनी जो राग की स्त्री मानी जाती है।

बंगाली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बंगाल देश का निवासी। २-सम्पूर्ण जाति का एक राग। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बंगाल देश की भाषा। [वि.] (हिं.) बंगाल का।

बँगुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बङ्गली' (१)।

बंगू [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार की मछली। २-एक प्रकार का खिलौना जिसे भौंरा या जङ्गी भी कहते हैं।

बंगोमा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का कछुआ।

बंचक [संज्ञा पु.] (हि.) धूर्त्त। पाखंडी।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक पहाड़ी घास का दाना जो जीरे के समान होता है।

बंचकता, बंचकताई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बाजी। छल। धूर्त्तता।

बंचन [संज्ञा पु.] (हिं.) छल। ठगपना।

बंचनता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठगी। छल।

बंचना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ठगी। छल। [क्रि. स.] १-ठगना। छलना। २-पढ़ना।

बंचर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बनचर'। बेकाबू।

बंचवाना [क्रि. स.] (हिं.) पढ़वाना।

बंचित [वि.] (हि.) देखो 'वंचित'।

बँचुई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सालपान झाड़ी।

बंछना*+ [क्रि. स.] (हिं.) इच्छा या अभिलाषा करना। चाहना।

बंछनीय*+ [वि.] (हिं.) देखो 'वांछनीय'।

बंछित* [वि.] (हिं.) देखो 'वांछित'।

बंज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वनिज'।
[संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय पर पाया जाने वाला वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी खाकी होती है।

बंजर [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊसर। वह भूमि जिस

पर कुछ उत्पन्न न हो सके।

बंजारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बनजारा'।

बंजुल, बंजुलक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–अशोक-वृक्ष। २–बेंत।

बंझा [वि.] (हिं.) बाँझ। [संज्ञा स्त्री.] वह स्त्री जिसमें संतान उत्पन्न करने की शक्ति न हो।

बंटना [क्रि. अ.] (हिं.) १–कुछ हिस्सों में अलग-अलग होना। २–हिस्से के अनुसार कुछ मिलना या दिया जाना। [सज्ञा पु.] देखो 'बटना'।

बंटवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बाँटने या हिस्सा करने की मजदूरी। २–बँटवाने या पिसवाने की मजदूरी।

बंटवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–वितरण कराना। २-पिसवाना।

बंटवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु के दो या अधिक भाग या हिस्से करना। बाँटने की क्रिया या भाव। विभाग।

बंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बंटी] छोटा डब्बा। [वि.] (हिं.) छोटे कद या आकार वाला।

बंटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बाँटने या वितरण करने का काम। २–बाँटने की मजदूरी। ३–बांटने का भाव। ४–दूसरे को खेत देने की वह रीति जिसमें किसान को भूमि लगान पर न देकर फ़सल का निर्धारित अंश देता है।

बंटाधार [वि.] (?) विनिष्ट। बरबाद।

बंटाना [क्रि. स.] (हिं.) १–भाग करा लेना। बंटवाना। २–दूसरे का भारकष्ट हलका करने के लिए उसका कुछ अंश अपने ऊपर लेना।

बंटावन* [वि.] (हिं.) बँटाने वाला। हिस्सा कराने वाला।

बंटी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) वह जाल या फंदा जिस में हिरन आदि पशु फंसाये जाते हैं।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा बंटा।

बंटैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बँटा लेने वाला।

बंडल [संज्ञा पु.] (अं.) पुलिंदा।

बंड़वा+ [वि.] (हिं.) देखो 'बाँड़ा'।

बंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक प्रकार का कच्चू जो गोल और गांठदार होता है। २–अन्न भरने की बड़ी बखारी।

बंडी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १–एक प्रकार की कुरती २–बगलबन्दी नामक पहनने का वस्त्र।

बंड़ेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बँड़ेरी'।

बंड़ेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खपरेल के छाजन में मगरे पर रखने की लकड़ी।

बंद [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २–बांध। ३–शरीर के अङ्गों का कोई जोड़। ४–फीता। तनी। ५–बंधन। कैद। ६–कागज का लम्बा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा। [वि.] १–जिसके चारों ओर कोई अवरोध हो। २–जिसके मुँह या मार्ग पर ढकना या ताला आदि लगा हो। ३–जिसका काम रुका या स्थगित हो। ४–रुका हुआ। थमा हुआ। ५–जो किसी प्रकार की कद में हो। ६–किवाड़, ढकना आदि जो ऐसी स्थिति में जिससे कोई वस्तु अन्दर से बाहर न जा सके तथा बाहरी वस्तु भीतर न आ सके। ७–जो खुला न हो। ८–जिसका प्रचार, प्रकाशन आदि कार्य रुक गया हो। ९–देखो 'बंध'।

बंदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–प्रणाम। नमस्कार। २–ईश्वर की वंदना। ३–उपासना।

बंदगोभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करमकल्ला। पातगोभी।

बंदन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वंदन'।

बंदनता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आदर अथवा वंदना किये जाने की योग्यता।

बंदनवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मंगल अवसरों पर द्वार आदि पर बांधने के फूल, पत्ते, दूब आदि की बनी हुई माला। तोरण।

बंदना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वंदना'।
[क्रि. स.] (हिं.) प्रणाम करना। नमस्कार करना।

बंदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिर पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।
* [वि.] (हिं.) देखो 'वंदनीय'।

बंदनीमाला [संज्ञा पु.] (हिं.) घुटनों तक लटकने वाली लम्बी माला।

बंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्षों पर रहने वाला एक स्तनपायी चौपाया जो आदमी से बहुत कुछ मिलता जुलता है। कपि। मर्कट।
बंदर घुड़की (*भभकी*)-केवल डराने या धमकाने की डाँटडपट।
[संज्ञा पु.] (फा.) बंदरगाह।

बंदरगाह [संज्ञा पु.] (फा.) समुद्र के किनारे जहाजों के ठहरने के लिए बना हुआ स्थान।

बंदरबाँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) न्याय के नाम पर ऐसा बँटवारा करना। जिसमें वादी प्रतिवादी को कुछ न मिले और सब बटवारा करने वाले के पास चला जाय।

बंदरभबकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसी धमकी जो दिखाने भर को हो, पर जो पूरी न की जाय।

बंदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बनरा'।

बंदवान [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्दीगृह का रक्षा अधिकारी।

बंदसाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कैदखाना। बन्दीगृह। जेल।

बंदा [संज्ञा पु.] (फा.) १–सेवक। दास। २–मैं (शिष्ट या विनीत भाषा में उत्तमपुरुष पुंल्लिग के स्थान पर आने वाला शब्द)। [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्दी। कैदी।

बंदानी [संज्ञा पु] (?) १–तोप चलाने वाला। २–हलका गुलाबी रंग।

बंदारु [वि.] (हिं.) १–वन्दन करने योग्य। वन्दनीय। २–पूजनीय। आदरणीय।

बँदाल+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बालिश्त (राजस्थानी)।

बंदाल [संज्ञा पु.] (?) देवदाली। घघरबेल।

बंदि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कारा-निवास। कैद।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बंदी'।

बंदिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बन्दी नामक आभूषण जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं।

बंदिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–बांधने की क्रिया या भाव। २–पहले से किया हुआ प्रबन्ध। ३–गीत, कविता आदि की शब्द-योजना।

बंदी [संज्ञा पु.] (सं.) चारण। भाट।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का आभूषण।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–दासी। चेरी। २–बन्द होने की क्रिया या भाव। ३–स्थिर या निश्चित होने की क्रिया या भाव। [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्द होने की दशा। कैद।
बंदी *करना*–किसी अपराधी को कैद करना।

बंदीउपस्थापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बंदी-प्रत्यक्षीकरण'।

बंदीखाना [संज्ञा पु.] (फा.) कैदखाना। जेलखाना।

बंदीघर [संज्ञा पु.] (हिं.) कैदखाना। जेलखाना। बंदीगृह।

बंदीछोर* [संज्ञा पु.] कैद या बंधन से छुड़ाने वाला।

बंदी-परावर्तन-पत्र, बन्दी-परावर्तन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध के कैदियों को बदलने का एक इकरारनामा। काड्-टैल।

बंदी-परावर्त्तन-पोत, बन्दी-परावर्तन-पोत [संज्ञा पु.](सं.) वह पोत या जहाज जो युद्ध-बंदियों के आदान-प्रदान के काम में लाये जाते हैं। *काड्-टैल-शिप*।

बंदी-प्रत्यक्षीकरण [संज्ञा पु.] (हिं.) बंदीगृह के प्रमुख अधिकारी (जेलर) को न्यायालय में न्यायाधीश के सामने अपराधी को लाने या उपस्थित करने की आज्ञा। *हैबियस्-कार्पस्*।

बंदीवान [संज्ञा पु.] (हिं.) कैदी।

बंदूक [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार का अस्त्र जिससे गोली चलाई जाती है।
बंदूक *भरना*–बंदूक को चलाने के लिए उसमें गोली रखना। बंदूक *चलाना, छोड़ना या मारना*–बंदूक में गोली भरकर निशाने पर दागना। बंदूक *छतियाना*–१–बंदूक को छाती से लगाकर निशाना साधना। २–बंदूक चलाने ने लिए तैयार होना।

बंदूकची [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बंदूक चलाने वाला सिपाही।

बंदूख+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बंदूक'।

बंदेरा* [संज्ञा पु.](हिं.) १–बंदी। कैदी। बंधुआ २–देखो 'बंदा'।

बंदेरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दासी। चेरी।

बंदोबस्त [संज्ञा पु.](फा.) १–प्रबंध। इंतजाम।

२–खेत आदि नापकर उनका कर निर्धारित करने का काम। ३–वह सरकारी विभाग जिसके अधीन यह काम रहता है।
यौ०–*बन्दोबस्त इस्तमुरारी*–मालगुजारी का इस तरह ठहराया जाना कि उसमें कोई कमी बेशी न हो सके।

बंध, बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १–बंधन। २–गांठ गिरह। ३–कैद। ४–बाँध। ५–कोकशास्त्रानुसार रति या मैथुन विषयक मुख्य सोलह आसनों में से कोई एक। वह सोलह इस प्रकार हैं—पद्मासन, नागपाद, लतावेष्ट, अर्द्धसंपुट, कुलिश, सुन्दर, केशर, हिल्लोल, नरसिंह, विपरीत, क्षुब्धक, धेनुक, उत्कंठ, संहासन, रतिनाग, और विद्याधर। ६–योगसाधन की मुद्रा विशेष। ७–चित्रकाव्य में ऐसी पद्यात्मक रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। ८–निबन्ध-रचना। ९–जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। बन्द। १०–लगाव। फँसाव। ११–शरीर १२–बनने वाले मकान की लम्बाई या चौड़ाई।

बंधक, बन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी से कुछ ऋण लेकर उसके बदले कोई वस्तु उसके पास रखना। रेहन। गिरों। *मारगेज*। २–बांधने वाला। ३–विनिमय। बदला करने वाला।

बंधकिपोषक [संज्ञा पु.] (सं.) रंडियों के दलाल

बंधकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–छिनाल स्त्री। व्यभिचारणी स्त्री। २–वेश्या। रंडी।

बंधन, बन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १–बांधने की क्रिया या भाव। २–वह वस्तु जिससे कोई वस्तु बांधी जाय। ३–प्रतिबंध। रुकावट। ४–कारागार। कैदखाना। ५–शरीर के अंग का संधि स्थान। जोड़। ६–वध। हिंसा। ७–रस्सी। जंजीर। बेड़ी। ८–शिव। महादेव।

बंधनग्रंथि, बन्धनग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में वह हड्डी जो किसी जोड़ पर हो।

बंधनपालक, बन्धनपालक [संज्ञा पु.] (सं.) जेलखाने का दरोगा।

बंधनरक्षी, बन्धनरक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो कारागार का रक्षक हो।

बंधनस्तंभ, बन्धनस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) पशु बांधने का खूँटा।

बंधनस्थान, बन्धनस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १–अस्तबल। २–गौशाला।

बँधना [क्रि. अ.] (हिं.) १–किसी प्रकार के बंधन में पड़ना। बांधा जाना। २–स्वच्छंद न रहना। ३–कैद या बंदी होना। ४–प्रतिज्ञा वचन आदि से बद्ध होना। ५–क्रम निर्धारित होना। चला-चलने वाला कायदा ठहरना। ६–प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। ७–प्रेमपाश में बद्ध होना। आसक्त होना। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २–वह थैली जिसमें स्त्रियां सीने-पिरोने का सामान रखती हैं।

बँधनि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बंधन। जिसमें कोई वस्तु बांधी गई हो। २–उलझाने या फंसाने वाली वस्तु।

बंधनी, बन्धनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–शरीर के भीतर की वह नसें जो संधि-स्थान पर हों। २–वह जिससे कोई वस्तु बांधी जाय।

बंधनीय, बन्धनीय [वि.] (सं.) जो बांधने के योग्य हो। [संज्ञा पु.] (सं.) सेतु। पुल।

बंधमोचनिका, बन्धमोचनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक योगिनी का नाम।

बंधव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बांधव'।

बंधवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी को बांधने में प्रवृत्त करना। २–देना आदि नियत या मुकर्रर करना। ३–कैद कराना। ४–(पुल, कुआं, तालाब आदि) बनवाना या तैयार कराना।

बंधान [संज्ञा पु.] (हिं.) १–लेन-देन आदि की नियत या बंधी हुई प्रथा। *कस्टम*। २–वह पदार्थ या धन जो प्रथा के अनुसार लिया या दिया जाय। ३–संगीत में ताल का सम। ४–बांध।

बंधाना [क्रि. स.] (हिं.) १–बांधने का काम किसी और से कराना। बँधवाना। २–कैद कराना। ३–धारण कराना। ४–देखो 'बंधवाना'।

बंधाल [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज या नाव की पेंदी में का वह स्थान जहां पर पानी छेदों में से जमा हो जाता है।

बंधिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहे की वह डोरी जिससे साथी बांधी जाती है।

बंधित, बन्धित [वि.] (सं.) १–बाँधा हुआ। २–कैद में पड़ा हुआ। [वि.] (डिं.) वेध्या। बाँझ

बंधी [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्धुआ। कैदी।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नित्य नियमित समय पर होने वाला कार्य, विशेषतः कोई वस्तु कहीं देना।

बंधु, बन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १–भाई। २–मित्र। ३–कोई भी किसी प्रकार सम्बन्धी जो रिश्ते में भाई के बराबर हो। ४–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु होते हैं। ५–बन्धूक पुष्प। ६–पिता।

बंधुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) कैदी। बन्दी।

बंधुक, बन्धुक [संज्ञा पु.] (सं.) दुपहरिया का फूल या पौधा।

बंधुजन, बन्धुजन [संज्ञा पु.] (हि.) रिश्तेदार। जाति वाला।

बंधुजीव, बन्धुजीव, बंधुजीवक, बन्धुजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) गुलदुपहरिया का पौधा या फूल।

बंधुता, बन्धुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बन्धु होने का भाव। २–भाईचारा। ३–दोस्ती। मैत्री।

बंधुत्व, बन्धुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बंधुता'।

बंधुदत्त, बन्धुदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो विवाह के समय कन्या को पितृकुल की ओर से दिया जाता है। दहेज।

बंधुदा, बन्धुदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छिनाल स्त्री। बदचलन औरत। २–वेश्या। रंडी।

बंधुप्रीति, बन्धुप्रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–भाई बिरादरी का प्रेम। २–मित्र के प्रति प्रेम।

बंधुभाव, बन्धुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) मैत्री। भाईचारा।

बंधुर, बन्धुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–मुकुट। २–हंस। ३–सारस। ४–काकड़ासींगी। ५–पक्षी। ६–चिड़ङ्ग। [वि.] १–सुन्दर मनोहर। २–नम्र।

बंधुरा, बन्धुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छिनाल स्त्री। २–वेश्या।

बंधुल, बन्धुल [संज्ञा पु.] (सं.) १–वेश्यापुत्र। २–दुराचारिणी स्त्री का लड़का। [वि.] १–सुन्दर। आकर्षक। २–नम्र।

बँधुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) कैदी। बंदी।

बंधूक, बन्धूक [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक प्रकार का वृक्ष। २–इस वृक्ष का फूल। ३–दोधक नामक वृत्त का नाम। बंधु।

बंधेज [संज्ञा पु.] (हि.) १–लेनदेन आदि की नियत या बंधी हुई प्रथा। २–नियत समय पर या नियत रूप से कुछ देने की क्रिया या भाव। ३–किसी वस्तु को रोकने या बांधने की क्रिया या युक्ति। ४–वीर्य को शीघ्रपतन से बचाने की युक्ति। बाजीकरण। ५–प्रतिबंध। रुकावट।

बंध्य, बन्ध्य [संज्ञा पु.] (सं.) बांध। [वि.] १–बांधने योग्य। २–गिरफ्तार किया हुआ। ३–बांझ। ४–जो रजस्वला न हो।

बंध्या, बन्ध्या [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] वह स्त्री या मादा जो सन्तान पैदा न कर सके। बांझ।

बंध्यापन, बन्ध्यापन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बाँझपन'।

बंध्यापुत्र, बन्ध्यापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बांझ के पुत्र होने के समान असम्भव बात। कभी न होने वाली चीज।

बंपुलिस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नगरपालिका की ओर से बना हुआ वह सार्वजनिक स्थान जहां लोग मलत्याग कर सकें।

बंब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बंब शब्द विशेष जिसे शिवभक्त उमंग में आकर करते हैं। २–युद्ध के समय वीरों का नाद। रणनाद। ३–नगाड़ा। डंका।

बंबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पानी की कल का वह भाग जिसमें से पानी निकलता है। २–स्रोत। सोता। ३–पानी बहने का नल। ४–देखो 'बम'।

बंबाना [क्रि. अ.] (हि.) गौ आदि का रंभाना।

बंबूर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बबूल'।

बंबू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बांस की पतली और छोटी नली जिससे चंडू पीया जाता है। २-लम्बी मोटी नली।

बंबूकाट [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

बंभनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ब्राह्मणत्व। २-हठ। जिद।

बंस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वंश'।

बंसकार* [संज्ञा पु.] (हिं.) बांसुरी।

बंसरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांसुरी। मुरली।

बंसरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वंसी'।

बंसलोचन [संज्ञा पु.] (हिं.) बांस का सारभाग जो उसके जल जाने के बाद सफेद टुकड़ों में पाया जाता है और औषध रूप में प्रयुक्त होता है।

बंसवाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक स्थान पर पास-पास उगे हुए बांसों का झुरमुट या झुण्ड।

बंसार [संज्ञा पु.] (हिं.) भंडारघर।

बंसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बांसुरी। मुरली। वंशी। २-मछली फंसाने का औजार। ३-विष्णु, कृष्ण और राम के चरणों की रेखा। ४-मागधी मान में तीस परमाणु के बराबर की तौल। [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का गेहूँ।

बंसीधर [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

बंहगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बहँगी'।

बंहुटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना जो बांह में पहना जाता है।

बंहिष्ट [वि.] (सं.) बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।

बंहोलनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आस्तीन।

ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण। २-सिंधु। ३-भग। ४-जल। ५-सुगंधि। ६-वयन। ७-ताना। ८-कुम्भ।

बइठना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बैठना'।

बउर* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बौर'।

बउरा* [वि.] (हिं.) देखो 'बावला'।

बउराना* [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'बौराना'।

बक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बगुआ। २-अगस्त का फूल। ३-एक असुर जिसे भीमसेन ने मारा था। ४-एक असुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ५-कुबेर का नाम। ६-एक ऋषि का नाम। [वि.] (सं.) बगले के समान सफेद। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़बड़ाहट। प्रलाप।

बकबक या बकझक–बकवाद। प्रलाप।

बकचंदन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष विशेष जिसका फल लम्बा और पतला होता है।

बकचन [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'बकचंदन'।

बकचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बकुचा'।

बकचिंचिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक मछली जिसे कौवा-मछली भी कहते हैं।

बकची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'बकुची'। २-एक प्रकार की मछली।

बकजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीम। २-श्रीकृष्ण।

बकठाना+ [क्रि. स.] (हिं.) किसी बहुत कसैली वस्तु के खाने से मुख का स्वाद बिगड़ जाना और जीभ का सुकड़ जाना।

बकतर [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का कवच जो युद्ध के समय शरीर रक्षा के लिए पहना जाता है।

बकतरबंद-गाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की युद्ध में काम आने वाली गाड़ी जो लोहे की मोटी चादरों से मढ़ी रहती है।

बकता* [वि.] (हिं.) देखो 'वक्ता'।

बकतार* [वि.] (हिं.) देखो 'वक्ता'।

बकदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) कबूतर। कपोत।

बकध्यान [संज्ञा पु.] (हि.) बगले के समान चुपचाप शान्तिभाव से दुष्ट उद्देश्य के लिए बैठे रहना। बनावटी। साधुभाव।

बकध्यानी [वि.] (हिं.) बगले के समान बनावटी ध्यान करने वाला।

बकना [क्रि. स.] (हि.) १-व्यर्थ बोलना या बातें करना। २-बड़बड़ाना।

बकना झकना–बड़बड़ाना।

बकनिषूदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-भीमसेन।

बकपंचक, बकपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी से पूर्णमासी तक का समय जिसमें मांस मछली खाने का निषेध है।

बकबक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यर्थ की बहुत अधिक बातें। बकवाद।

बकम [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बक्कम'।

बकमौन [संज्ञा पु.] (हिं.) अपनी दुष्ट उद्देश्य-सिद्धि करने के लिए बगुले के समान सीधे बनकर चुपचाप रहने की क्रिया या भाव। [वि.] (हिं.) चुपचाप अपना काम साधने वाला।

बकयंत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) वैद्यक का एक यंत्र विशेष। लम्बे झुके हुए बगले के समान शीशी जिसके मुँह से दूसरी शीशी सटाकर अर्क उतारते हैं।

बकर-कसाब [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बकर-कसाबिन] बकरों का वध करने वाला या बकरों का मांस बेचने वाला व्यक्ति।

बकरना [क्रि. स.] (हिं.) १-आप से आप बकना बड़बड़ाना। २-अपना दोष या करतूत आप से आप कहना या कबूल करना।

बकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बकरी] एक प्रसिद्ध चौपाया जिसका मांस, मांसाहारी लोग खाते हैं। अज। छाग।

बकराना [क्रि. स.] (हिं.) दोष या करतूत कहलाना। कबूल कराना।

बकरिपु [संज्ञा पु.] (हिं.) भीमसेन।

बकल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बकला'।

बकलस [संज्ञा पु.] (अं.) लोहे पीतल आदि का बना हुआ अंकुसीदार छल्ला जो किसी बंधन के दोनों छोरों के मिलाये रखने या कसने के काम में लाया जाता है।

बकला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वृक्ष की छाल। २-फल के ऊपर का छिलका।

बकली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार का वृक्ष जो लम्बा और देखने में बहुत सुन्दर होता है। धवरा। खरधवा। २-फल या पतला छिलका।

बकवती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक नदी का प्राचीन नाम।

बकवाद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यर्थ की बातें। बकबक।

बकवादी [वि.] (हिं.) बकवाद करने वाला। बकझक करने वाला। बक्की।

बकवाना [क्रि. स.] (हिं.) बकने के लिए प्रेरणा करना। किसी से बकवाद कराना।

बकवास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बकवाद। बकबक। २-बकवाद करने की इच्छा। ३-बकझक करने की लत।

बकवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो नीचे ताकता हो और स्वार्थसाधन में तत्पर तथा कपटयुक्त हो। [वि.] (सं.) छली। कपटी। ढोंगी।

बकवैरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-बलराम।

बकव्रती [संज्ञा पु.] (सं.) बकवृत्ति वाला। कपटी

बकस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े आदि रखने का चौकोर सन्दूक। २-कीमती वस्तुएँ रखने का छोटा डब्बा।

बकसना* [क्रि. स.] (हिं.) १-क्षमा करना। छोड़ देना।

बकसा [संज्ञा पु.] (देश.) जलाशयों के आस-पास उगने वाली एक प्रकार की घास।

बकसाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-क्षमा कराना। २-दिलाना।

बकसी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बख्शी'।

बकसीला+ [वि.] (हिं.) जिसके खाने से जीभ ऐंठने लगे और मुख का स्वाद बिगड़ जाय।

बकसीस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दान। २-इनाम। पारितोषिक।

बकसुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बकलस'।

बकाइन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बकायन'।

बकाउर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बकावली'।

बकाना [क्रि. स.] (हिं.) बकबक कराना । । रटाना कहलाना ।

बकायन [संज्ञा पु.] (हिं.) नीम की जाति का एक वृक्ष जिसके फल, फूल, छाल और पत्तियां औषध के रूप में प्रयुक्त होती हैं । महानिंब । द्रका । काकोड़ ।

बकाया [संज्ञा पु.](अ.) १-बाकी । शेष । २-बचत

बकारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण । २-भीमसेन ।

बकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुंह से निकलने वाला शब्द ।

बकारी फूटना–बात मुख से निकालना ।

बकावर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुलबकावली ।

बकावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुलबकावली' ।

बकासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर या दैत्य का का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

बकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकासुर की बहिन पूतना

बकुचन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ जोड़ने की मुद्रा । २-हाथ या मुट्ठी से पकड़ने की क्रिया

बकुचना* [क्रि. अ.] (हिं.) संकुचित होना । सुकड़ना ।

बकुचा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी गठरी ।

बकुचाना [क्रि. स.] (हिं.) बकुचे के समान बांधकर कंधे पर लटकाना या बांधना ।

बकुची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ, सवा हाथ ऊंचे एक पौधे का नाम । इसका फूल गुलाबी और कहीं-कहीं काला भी होता है । सोमराजी । कृष्णफला । वाकुची । २-छोटा बकुचा । छोटी गठरी ।

बकुची बाँधना *या* मारना–हाथ-पैर समेटकर गठरी के आकार का बन जाना ।

बकुचौहाँ+ [वि.] (हिं.)[स्त्री. बकचौंहीं] बकुचे के समान ।

बकुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-तुरही । ३-बिजली ।

बकुरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बक्कुर' । [क्रि. अ.] देखो 'बकरना' ।

बकुरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बकरना' ।

बकुराना [क्रि. स.] (हिं.) मंजूर या कबूल करना । कहलाना ।

बकुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मौलसरी का पेड़ या फूल । २-शिव । महादेव । ३-एक प्राचीन देश का नाम ।

बकुलटर्रर [संज्ञा पु.] (हिं.) आदमी के कद के बराबर की एक चिड़िया जिसका रंग सफेद होता है ।

बकुला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बगुला' ।

बकेन, बकेना+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गाय या भैंस जो बच्चा देने के साल भर बाद भी दूध देती हो ।

बकेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पलास की जड़ जिसे कूट कर रस्सी बनाई जाती है ।

बकैयाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों का घुटनों के बल चलना ।

बकोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ की संपुटाकार मुद्रा । २-किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जो एक बार चंगुल में पकड़ी जा सके । ३-बकोटने या नोचने की क्रिया या भाव ।

बकोटना [क्रि. अ.] (हिं.) नाखूनों से नोचना ।

बकोरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुल बकावली' ।

बकौड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'बकेल' ।

बकौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह टेढ़ी लकड़ी जो बैलगाड़ी के दोनों ओर पहिये के ऊपर लगाई जाती है । पैंगनी ।

बकौरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गुलबकावली'

बक्कम [संज्ञा पु.] (हिं.) मद्रास, मध्यप्रदेश और बर्मा में उत्पन्न होने वाला एक वृक्ष जिसकी लकड़ी छिलके और फलों में से लाल रंग निकलता है । पतंग ।

बक्कल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छिलका । २-छाल ।

बक्का+ [संज्ञा पु.] (देश.) धान की फसल में लगने वाला एक कीड़ा जो सफेद या खाकी रंग का होता है ।

बक्काल [संज्ञा पु.] (अ.) बनिया । वणिक ।

बक्की [वि.] (हिं.) बकवादी ।

[संज्ञा स्त्री (देश.) एक प्रकार का मोटा धान जो भादों मास के अन्त में पकता है ।

बक्कुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मुख से निकाला हुआ शब्द । बोल । बचन ।

बक्खर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाखर' । [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का खमीर जिसका व्यवहार बंगाल में अधिक होता है यह पत्तियों जड़ों आदि को कूटकर बनाया जाता है ।

बक्स [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बकस' । २-खेल तमाशे में वह कुरसी जिस पर चार आदमी बैठ सकते हैं ।

बखत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'वक्त' । २-देखो 'बख्त' ।

बखतर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बकतर' ।

बखर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बाखर' । २-देखो 'बक्खर' ।

बखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हिस्सा । बाँट । भाग २-देखो 'बाखर' । [संज्ञा पु.] (देश.) बाखर सुड़की ।

बखरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक परिवार के रहने योग्य गांव का अच्छा मकान ।

बखरैत* [वि.] (हिं.) साझीदार । हिस्सेदार ।

बखसीस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बकसीस' ।

बखसीसना* [क्रि. स.] (हिं.) देना । प्रदान करना ।

बखान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वर्णन । कथन । २-प्रशंसा । बड़ाई ।

बखानना [क्रि. स.] (हिं.) १-वर्णन करना कहना । २-प्रशंसा करना । तारीफ करना ३-गाली देना । बुरा भला कहना ।

बखार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बखारी] गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान रखते हैं ।

बखारी [स्त्री. वंटी] (हिं.) छोटा बखार [स्त्री.] (देश.) मालकोस राग की एक

बखिया [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की और मजबूत सिलाई ।

बखिया उधेड़ना–भेद खोलना ।

बखियाना [क्रि. स.] (हिं.) बखिया की करना ।

बखीर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खीर जिसमें स्थान पर मीठा रस डाला जाता है ।

बखील [वि.] (अ.) कंजूस । कृपण । सूम ।

बखूबी [क्रि. वि.] (फा.) १-भली प्रकार अच्छी तरह से । २-पूर्णतया । पूरी तरह

बखेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झंझट । २- टंटा । ३-आडंबर । व्यर्थ विस्तार । नता । मुशकिल ।

बखेड़िया [वि.] (हिं.) बखेड़ा करने वाला झगड़ालू

बखेरना [क्रि. स.] (हिं.) फैलाना । बिखरना ।

बखेरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार वृक्ष जिसके फल रंगने और चमड़ा काम में आते हैं ।

बखोरना [क्रि. स.] (हिं.) टोकना । छेड़ना ।

बख्त [संज्ञा पु.] (फा.) भाग्य । किस्मत ।

बख्तर [संज्ञा पु.] (फा.) बकतर । कवच ।

बख्शना [क्रि. स.] (फा.) १-देना । प्रदान २-छोड़ना । त्यागना । ३-त्यागना । करना ।

बख्शवाना [क्रि. स.] (फा.) किसी को प्रवृत्त करना ।

बख्शाना [क्रि. स.] (फा.) देखो 'बख्शवाना' ।

बख्शिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-दान । २-

बख्शीश [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बख्शिश' ।

बग* [संज्ञा पु.] (हिं.) बगुला ।

बगई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार की जो कुत्तों पर बहुत बैठती है । २-एक की घास जिसका उपयोग कुछ लोग साथ पीने में भी करते हैं ।

बगछुट, बगटुट [क्रि. वि.] (हिं.) सरपट बहुत वेग से । (दौड़ना या भागना)

बगदना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-बिगड़ना । भूलना । ३-सही रास्ते से हट जाना ।

बगदर (देश) मच्छर।

बगदवाना [क्रि. स.] (हिं.) १–बिगड़वाना। २–भ्रम में डालना। अपने वचन या प्रतिज्ञा से हटना।

बगदहा* [वि.](हिं.) [स्त्री. बगदही] चौंकने या भड़कने वाला।

बगदाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–बिगड़ना। खराब करना। २–सही रास्ते से हटाना। च्युत करना। ३–भटकाना।

बगना* [क्रि. अ.] (हिं.) घूमना-फिरना।

बगनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बगई नामक घास।

बगमेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बराबरी। समानता। २–दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। बराबर-बराबर चलना। [क्रि. वि.] (हिं.) साथ-साथ। बाग मिलाये हुए।

बगर*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–महल। प्रासाद। २–बड़ा मकान। ३–घर। कोठरी। ४–आँगन। सहन। ५–गाय-भैंस बाँधने का स्थान। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बगल'।

बगरना* [क्रि. अ.] (हिं.) फैलना। बिखरना। छितराना।

बगरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली जिसे शुभा भी कहते हैं।

बगराना+ [क्रि. स.] (हिं.) फैलाना। छितराना। [क्रि. अ.] (हि.) फैलना। बिखरना।

बगरिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काठियावाड़ और कच्छ में होने वाली कपास।

बगरी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा धान। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घर। मकान।

बगरूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बवंडर। बगूला।

बगल [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–कंधे के नीचे का गड्ढा। काँख। २–दायें-बायें या इधर-उधर का भाग। पार्श्व। ३–कपड़े का वह टुकड़ा जो आस्तीन में कंधे के जोड़ के नीचे लगता है। ४–पास की जगह।

बगल गरम करना–सहवास या प्रसंग करना। *बगल में दबाना*–ले लेना या अधिकार कर लेना। *बगल में धरना*–१–बगल में छिपाना। २–छीन लेना। *बगल में मारना*–बगल में दबाना। *बगलें झाँकना*–भागने का प्रयत्न करना। *बगलें बजाना*–खूब खुशी मनाना।

बगलगंध [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कंखवार। २–बगल से बदबूदार पसीना निकलने का रोग।

बगलबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कुरती।

बगला [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. बगली] एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टांगें, चोंच और गला लम्बा होता है। इसका रंग सफेद होता है।

बगला भगत–साधु दीख पड़ने वाला, पर कपटी।

+[संज्ञा पु.] थाली की बाढ़। [संज्ञा पु.] (देश.) एक झाड़ीदार पौधा जो गमलों में शोभा के लिए लगाया जाता है।

बगलामुखी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) तांत्रिकों के मत से एक देवी।

बगलियाना [क्रि. अ.] (हिं.) बगल से होकर जाना। राह काटकर निकलना। [क्रि. स.] १–अलग करना। २–बगल में करना। बगल में लाना।

बगली [वि.] (हिं.) बगल से सम्बन्ध रखने वाला। बग़ल का।

बगली घूंसा–साथ रहकर धोखे से किया जाने वाला वार।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं) १–ऊंटों का वह दोष जो चलते समय उनकी जांघ की रग पेट में लगती है। २–मुगदर हिलाने का एक ढंग। ३–वह थैली जिसमें दर्जी सूई-तागा रखते हैं। ४–वह सेंध जो चोर किवाड़ की बगल में खोदते हैं। ५–कपड़े का वह टुकड़ा जो कुरते आदि में आस्तीन के नीचे लगाया जाता है। ६–वह लकड़ी जिसमें हुक्के वाले गड़गड़े को अटकाकर उसमें छेद करते हैं। ७–बगला पक्षी की मादा।

बगलीटाँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

बगलीबाँह [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक प्रकार की कसरत।

बगलीलंगोट [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

बगलेंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी

बगलौहाँ* [वि.] (हिं.) [स्त्री बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

बगसना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बख़्शना'।

बगा* [संज्ञा पु.] (हि.) १–जामा। बागा। २–बगला।

बगाना* [क्रि. स] (हिं.) घुमाना। फिराना। टहलाना। [क्रि. अ.] (हि.) भागना।

बगार [संज्ञा पु.] (देश.) गाय, भैंस बांधने का स्थान।

बगारना* [क्रि. स.](हिं.] १–फैलाना। पसारना २–देखो 'बगराना'।

बगावत [संज्ञा स्त्री] (अ.) १–विद्रोह। २–बागी होने का भाव।

बगिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा बाग। बगीचा।

बगीचा [संज्ञा पु.](फ़ा.) [स्त्री. बगीची] वाटिका छोटा बाग।

बगुलपतोख+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की पानी की चिड़िया इसकी चोंच और पैर काले बाकी सब सफेद होती है।

बगुला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बगला'।

बगूला [संज्ञा प.] (हि.) वह वायु जो गरमी के दिनों में कभी-कभी एक स्थान पर भँवर के समान घूमती हुई दीख पड़ती है। वातचक्र। बवंडर।

बगेड़ी, बगेरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गौरैया के डीलडौल की खाकी रंग की एक चिड़िया।

बगैचा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बगीचा'।

बगैर [अव्य.] (अ.) बिना।

बगौधा* [संज्ञा पु.](देश.) [स्त्री. बगौधी] एक प्रकार की चिड़िया जिसे बगेरी भी कहते हैं।

बग्गी, बग्घी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) चार पहियों की पाटनदार घोड़ागाड़ी।

बघंबर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बाघ की खाल जिस पर साधु लोग बैठते हैं। २–बाघ की खाल के समान बना हुआ कम्बल।

बघछाला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'बघंबर'।

बघनहाँ+ [संज्ञा पु.] (हि) [स्त्री. बघनहीं] १–एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नाखूनों के समान धातु के कांटे लगे रहते हैं। शेर-पंजा। २–एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखूनों को चांदी या सोने में मढ़ाकर गले में पहनते हैं।

बघनहियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बघनहाँ नामक आभूषण।

बघना* [संज्ञा पु.] (हिं.) बघनहां नामक आभूषण।

बघरूरा [संज्ञा पु.] (हि) बगूला। चक्रवात।

बघार [संज्ञा पु.] (हि.) १–तड़का। छौंक। २–बघारने की महक। ३–बघारने की क्रिया या भाव।

बघारना [क्रि. स.] (हिं.) १–छौंकना तड़का लगाना। २–योग्यता दिखाने के लिए आवश्यकता से अधिक बोलना।

शेखी बघारना–बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना।

बघूरा* [संज्ञा पु.] (हि.) बगूला। चक्रवात।

बघेरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़बग्घा।

बघेलखंड [संज्ञा पु.] (हि.) मध्यभारत में एक प्रदेश जहाँ बघेले राजपूतों का राज्य था।

बघेली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बरतन खरादने वालों का खूँटा।

बघैरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बगेरी'।

बच* [संज्ञा पु.] (हिं.) वचन। वाक्य। बात। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औषध के काम में आने वाली एक वनस्पति। उग्रगंधा। भद्रा। कांगा

बचका [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पकवान

बचकाना [वि.] (हिं.) [स्त्री. बचकानी] १–बच्चों के योग्य। २–बच्चों का।

बचत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बचने का भाव। २–बचा हुआ अंश। शेष। ३–लाभ। मुनाफा।

बचती [वि.] (हि.) १–बचत का। बचत-विषयक २–जिसमें व्यय आदि काट लेने या अपनी अवश्यकताएं पूर्ण कर लेने के पश्चात भी कुछ शेष रहे। सर्प्लस। यथा––बचती आय

व्यक्ति या व्याकल्प (सर्प्लस बजट)। बचती प्रांत। *सर्प्लस प्रॉविन्स* ।

[संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह जो व्यय, उपभोग आदि के अनन्तर भी शेष रहे । सर्प्लस ।

बचन* [संज्ञा पु] (हि.) १–वाणी । वाक् । २– *बचन डालना*–मांगना । *बचन तोड़ना या छोड़ना*–प्रतिज्ञा भंग करना । *बचन देना*–प्रतिज्ञा करना । *बचन पालना या निभाना*–प्रतिज्ञा के अनुसार काम करना । *बचन बाँधना*–प्रतिज्ञा करना । *बचन लेना*–प्रतिज्ञा कराना । *बचन हारना*–प्रतिज्ञाबद्ध होना । बात हारना

बचनविदग्धा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वचन-विदग्धा'।

बचना [क्रि. अ.] (हिं.) १–कष्ट आदि से अलग रहना । रक्षित रहना । २–किसी बुरी बात से अलग रहना । ३–रह जाना । छूट जाना । ४–काम में आने के उपरान्त बाकी रहना । शेष रहना । ५–दूर या अलग रहना ।

[क्रि. स.] (हिं.) कहना ।

बचपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बाल्यावस्था । लड़कपन । २–बालक या बच्चा होने का भाव ।

बचवया* [संज्ञा पु.] (हिं.) रक्षक । बचाने वाला

बचा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बच्ची] बालक । लड़का ।

बचाना [क्रि. स.] (हिं.) १–विपत्ति या कष्ट आदि में न पड़ने देना । रक्षा करना । २–प्रभावित होने देना । अलग रखना । ३–छिपाना । चुराना । ४–खर्च न होने देना । ५–अलग या दूर रखना ।

बचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) बचाने का भाव । रक्षा । त्राण ।

बचिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कसीदे के काम में छोटी-छोटी बूटियाँ ।

बचीता [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की झाड़ी जो दो या तीन हाथ ऊँची होती है ।

बचुआ* [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली ।

बचून+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भालू का बच्चा ।

बचो [संज्ञा पु.] (देश.) एक बारहमासी लता जिसकी पत्तियां ऊँट बहुत चाव से खाते हैं ।

बच्चा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बच्ची] १–किसी प्राणी का नवजात शिशु । २–लड़का । बालक *बच्चा देना*–प्रसव करना । शिशु को जन्म देना । *बच्चों का खेल*–सहज का काम । [वि.] (हिं.) अज्ञान । अनजान ।

बच्चाकश [वि.] (फ़ा.) बहुत बच्चे जनने वाली (स्त्री) (विनोद) ।

बच्चादानी [संज्ञा पु.] (फ़ा.) गर्भाशय । कोख

बच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–होंठ के नीचे बीच में उगे हुए बाल । २–छत या छाजन के बड़े घोड़िया के नीचे लगाने का छोटा घोड़िया । ३–नवजात कन्या । बालिका ।

बच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बच्चा । बेटा । २–गौ का बच्चा । बछड़ा ।

बच्छनाग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बछनाग'।

बच्छल* [वि.] (हिं.) माता-पिता के समान स्नेह या प्यार करने वाला । वत्सल ।

बच्छस* [संज्ञा पु.] (हिं.) छाती । वक्षस्थल ।

बच्छा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बछिया] बछड़ा

बछ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय का बच्चा । बछड़ा । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बच'।

बछड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा ।

बछनाग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक स्थावर विष जो पहाड़ी पौधे की जड़ है । इसे तेलिया, सींगिया और मीठा विष भी कहते हैं । काकोल । गरल । दारद ।

बछरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बछड़ा' ।

बछरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय का बच्चा । बछड़ा ।

बछल* [वि.] (हिं) देखो 'वत्सल'।

बछवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) बछड़ा ।

बछा [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय का बच्चा ।

बछिया [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय का मादा बच्चा । बछड़ी । *बछिया का ताऊ*–महामूर्ख ।

बछेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े का बच्चा ।

बछेरू* [संज्ञा पु.] (हिं.) बछड़ा ।

बछौटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह चन्दा जो हिस्से के अनुसार लगाया जाय ।

बजंत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बाजा बजाने वाला । २–मुसलमानी राजत्वकाल में लगने वाला एक कर जो गाने बजाने वालों पर लगाया जाता था ।

बजकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जंगली बेल जिसकी जड़ विषैली होती है ।

बजकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) किसी पदार्थ का सड़कर बुलबुले फेंकना । बजबजाना ।

बजका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चने के बेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगोकर दही में डाली जाती हैं ।

बजट [संज्ञा पु.] (अं.) आगामी वर्ष या मास के लिए होने वाले आय-व्यय का लेखा जो पहले से तैयार करके मंजूर कराया जाता है ।

बजड़ना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–टकराना । २–पहुँचाना ।

बजड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बजरा' ।

बजनक [संज्ञा पु.] (पश्तो) पिस्ते का फूल जिससे रेशम रंगा जाता है ।

बजना [क्रि. अ.] (हिं.) १–आघात लगने से शब्द होना । २–बाजे आदि से शब्द उत्पन्न होना । ३–शस्त्रों का चलना । ४–अड़ना । हठ या जिद करना । ५–प्रख्याति पाना । प्रसिद्ध होना । ६–लड़ाई या मारपीट होना । + [संज्ञा पु.] १–वह जो बजता हो । वाला बाजा । २–रुपया । + [वि.] वाला ।

बजनियाँ+ [संज्ञा पु., स्त्री.] [उभयलिंग] बजाने वाला या वाली ।

बजनिहाँ [उभयलिंग] (हिं.) बजनियां ।

बजनी, बजनू [वि.] (हिं.) बजने वाला । बजता हो ।

बजबजाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) किसी का सड़ने या गंदा होने के कारण छोड़ना ।

बजमारा* [वि] (हिं.) [स्त्री. बजमारी] से मारा हुआ (गाली) ।

बजरंग* [वि.] (हिं.) वज्र के समान शरीर वाला ।

बजरंगवली [संज्ञा पु.] (हिं.) हनुमान ।

बजरंगीबैठक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बैठक (कसरत) ।

बजर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वज्र'।

बजरबट्टू [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक वृक्ष जिसके बीजों को बच्चों बचाने के लिए पहनाते हैं । २– डंडा ।

बजरबोंग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–एक अगहनिया धान । २–बाँस का भारी डंडा ।

बजरहड्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घोड़े के होने वाला एक प्रकार का फोड़ा ।

बँजरा [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक प्रकार की पटी हुई नाव । २–देखो 'बाजरा'।

बजराग* [संज्ञा पु.] (हिं.) वज्र ।

बजरागि, बजरागी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) की अग्नि । बिजली ।

बजरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–कंकड़ के छोटे-छोटे टुकड़े । २–ओला । दीवार के ऊपर का बना हुआ देखो 'बाजरा'।

बजवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाजा बजाने की दूरी ।

बजवाना [क्रि. स.] (हिं.) बजाने के लिए को प्रेरणा करना । किसी को बजाने में करना ।

बजवैया+ [वि.] (हिं.) बजाने वाला । हो ।

बजा [वि.] (फ़ा.) उचित । ठीक । १–पूरा करना । २–करना ।

बजागि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली ।

बजाज [संज्ञा पु.] (अ.) कपड़े का कपड़ा बेचने का व्यवसाय करने वाला ।

बजाजा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह बाज़ार जिसमें बजाजों या कपड़े वालों की दुकानें हों।

बजाजी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-कपड़ा बेचने का व्यापार। २-बजाज की दूकान का सामान। (कपड़ा आदि)।

बजाना [क्रि. स.] (हिं.) १-आघात करके शब्द उत्पन्न करना। २-आघात करना। ३-किसी बाजे आदि पर आघात पहुँचा कर या हवा का जोर पहुंचा कर उससे शब्द उत्पन्न करना ४-पालन करना।

बजाकर-खुल्लमखुल्ला। पहले से कहकर। *ठोंक-ठोंकना बजाना*-परखने या जांचने के लिये भली प्रकार देखना भालना।

बजाय [अव्य] (फ़ा.) बदले में। जगह पर।

बजार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाजार'।

बजारी [वि.] (हिं.) १-बज़ार से संबन्ध रखने वाला। बाजारू। २-साधारण। सामान्य।

बजारू [वि.] (हिं.) देखो 'बाजारू'।

बजुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाजू'।

बजुज [अव्य] (फ़ा.) सिवा। अतिरिक्त।

बजुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) विजायठ नामक एक आभूषण जो बाँह पर पहना जाता है।

बजूखा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिजूखा'।

बज्जना* [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'बजना'।

बज्जर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वज्र'।

बज्जात [वि.] (फ़ा.) दुष्ट। पाजी।

बज्जाती [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) दुष्टता। पाजीपन।

बज्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वज्र'।

बज्री [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र।

बझना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-बँधना। २-अटकना। ३-हट करना। दुराग्रह करना।

बझवट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाँझ स्त्री। २-गाय भैंस आदि कोई भी मादा बाँझ। ३-अन्न के पौधों के वह डंठल जिनसे बालें तोड़ ली गई हों।

बझान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बझने की क्रिया या भाव।

बझाना* [क्रि. स.] (हिं.) उलझाना। फँसाना।

बझाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बझने या फँसने की क्रिया या भाव। २-उलझाव। अटकाव।

बझावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बझाव'।

बझावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बझाना'।

बट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'वट'। २-गोल वस्तु। ३-बड़ा नामक पकवान। बरा। ४-बट्टा। ५-मार्ग। रास्ता। ६-रस्सी का बल। ७-बाट बटखरा।

बटई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बटेर नामक चिड़िया।

बटखर, बटखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) तोलने का मान बाट।

बटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बटने की क्रिया या भाव। २-ऐंठन। बल।

[संज्ञा पु.] (अं.) १-चिपटे आकार की कड़ी गोल घुन्डी जो कुरते आदि में लगी रहती है २-एक प्रकार का बदले का तार।

बटना [क्रि. स.] (हिं.) तागों, तारों या तंतुओं को रस्सी आदि के रूप में लाने के लिए ऐंठा या बल देना।

[क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु का सिल आदि पर पीसा जाना। पिसना।

[संज्ञा पु.] (हि.) १-उबटन। २-रस्सी बटने का औजार।

बटपरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बटपार'।

बटपार [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. बटपारिन] डाकू। लुटेरा।

बटपारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बटपार का काम। ठगी। डकैती।

बटम [संज्ञा पु.] (?) पत्थर गढ़ने का एक औजार

बटमार [संज्ञा पु.] (हि.) राह में मारकर माल छीन लेने वाला। ठग। डाकू। लुटेरा।

बटला [संज्ञा पु.] (हि.) देग। देगचा। बड़ी बटलोई।

बटली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बटलोई। देगची।

बटलोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देगची। पतीली।

बटवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बँटवाना'।

बटवायक [संज्ञा पु.] (हिं.) रास्ते पर पहरा देने वाला। चौकीदार।

बटवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहरेदार। २-मार्ग का कर उगाहने वाला।

बटवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँटने की क्रिया या भाव। विभाग। तक़सीम।

बटा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बटिया] १-गोल वस्तु। गोला। २-गेंद। ३-रोड़ा। ढेला। ४-पथिक। यात्री।

बटाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बटने या ऐंठन डालने की क्रिया या भाव। २-बटने की मजदूरी। ३-देखो 'बँटाई'।

बटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बट या राह चलने वाला। बटोही। पथिक। मुसाफिर। राही। २-बंटाने वाला। भाग लेने वाला। *बटाऊ होना*-राही होना।

बटाक* [वि.] (हिं.) बड़ा ऊंचा।

बटाना [क्रि. अ.] (हिं.) बंद हो जाना। जारी न रहना।

बटालियन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पैदल सेना का एक दल जिसमें एक हजार सैनिक होते हैं।

बटाली [संज्ञा स्त्री.] (लश.) बढ़इयों का एक औजार।

बटिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटा गोला। २-पत्थर का गोल और लम्बोतरा टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसने का काम लिया जाता है। लोढ़िया।

बटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोली। २-बड़ी नामक पकवान। ३-वाटिका। बगीचा। उपवन।

बटु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बटु'।

बटुआ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बटुवा'।

*[वि.] १-बटा हुआ। २-सिल आदि पर पिसा हुआ।

बटुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बटुक'।

बटुरना+ [क्रि. अ.] (हि.) १-सिमटना। २-इकट्ठा होना।

बटुरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेसारी। मोट। एक कदन्न।

बटुला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी बटलोई।

बटुँवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कई खानों वाली एक प्रकार की छोटी थैली। +२-बड़ी बटलोई। देगचा।

बटेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तीतर या लवां के समान एक छोटी चिड़िया।

बटेर का जगाना-रात्रि के समय बटेर के कान में आवाज देना। *बटेर का बह जाना*-दाना के अभाव में बटेर का दुबला हो जाना।

बटेरबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) बटेर पालने या लड़ाने वाला।

बटेरबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बटेर पालने या लड़ाने की लत।

बटेरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) कटोरा।

बटोई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बटोही'।

बटोर [संज्ञा पु.] (हि.) १-आदमियों का जमावड़ा। २-इकट्ठा किया हुआ ढेर।

बटोरन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बटोरकर इकट्ठा किया हुआ ढेर। २-कूड़े करकट का ढेर। ३-खेत में पड़ा अन्न का दाना जो बटोरकर एकत्र किया जाय।

बटोरना [क्रि. स.] (हि.) १-बिखरी हुई वस्तुओं को एक स्थान पर करना। समेटना। २-इकट्ठा या जमा करना।

बटोहिया, बटोही [संज्ञा पुं.] (हि.) राह चलने वाला। राही। पथिक। मुसाफिर।

बट्ट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गोला। २-बटा। ३-गेंद। ४-बल। शिकन। ५-बाट। बटखरा।

बट्टन [संज्ञा पु.] (हि.) बदले से भी पतला तार जो एक तोले में लगभग आठ-सौ या नौ-सौ गज होता है।

बट्टा* [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह कमी जो व्यवहार या लेन-देन की किसी वस्तु में हो जाती है। *डिसकाउंट*। २-दलाली। दस्तूरी। ३-धातु आदि में मिलावट या उस मिलावट के कारण मूल्य में होने वाली कमी। ४-टोटा। घाटा। हानि। ५-कलङ्क। दाग। ६-[स्त्री. बट्टी, बटिया] कूटने, पीसने आदि का पत्थर। लोढ़ा। ७-गोल डिब्बा। ७-एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी। ८-बाजीगर का करतब

दिखाने का प्याला।

बट्टाखाता [संज्ञा पु.] (हिं.) न वसूल होने वाली रकमों का लेखा या मद। *बट्टेखाते लिखना*–नुकसान के लेखे में डालना।

बट्टाढाल [वि.] (हिं.) खूब समतल और चिकना

बट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–किसी वस्तु का छोटा और गोल टुकड़ा। २–टिकिया। ३–लोढ़िया

बट्टू [संज्ञा पु.] (देश.) १–धारीदार चार खाना। २–ताली। बजरबट्टू नामक वृत्त। [संज्ञा पु.] बोड़ा। लोबिया।

बट्टेबाज [वि.] (हिं.) जादूगर। धूर्त।

बठिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूखे उपलों का ढेर

बठुचना [क्रि. अ.] (हिं.) बैठना।

बठूसना [क्रि. अ.] (हिं.) बैठना।

बड़ंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बँडेरी'।

बड़ंगी [संज्ञा पु.] (डि.) घोड़ा।

बड़ंगू [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृत्त विशेष जिसमें एक प्रकार का तेल निकलता है।

बड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकवाद। प्रलाप। [संज्ञा पु.] बरगद का वृत्त। +[वि.] देखो 'बड़ा'

बड़कंघी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी टहनियों पर सफेद रंग के लम्बे रोएँ होते हैं। इसकी जड़, पत्तियां और बीज दवा के काम में आते हैं।

बड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–डींग। शेखी। २–बकवाद।

बड़का+ [वि.] (हिं.) देखो 'बड़ा'।

बड़कुइयाँ [संज्ञा पु.] (देश.) कच्चा कुआं।

बड़कौला [संज्ञा पु.] (हिं.) बरगद का फल।

बड़गुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बगला

बड़दुमा [संज्ञा पु.] (हिं.) लम्बी दुम वाला हाथी

बड़प्पन [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा या श्रेष्ठ होने का भाव। महत्व। गौरव।

बड़फन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत चौड़ी मठिया

बड़बट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) बरगद का फल।

बड़बड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बकवाद। व्यर्थ का बोलना।

बड़बड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–बकबक करना। प्रलाप करना। २–धीरे-धीरे और अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना।

बड़बड़िया [वि.] (हिं.) बड़बड़ाने वाला। बकवादी

बड़बेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जङ्गली बेर। झड़बेरी

बड़बोल [वि.] (हिं.) १–बहुत बोलने वाला। २–बहुत बढ़-बढ़कर बोलने वाला। शेखी हाँकने वाला।

बड़बोला [वि] (हिं.) लम्बी चौड़ी बातें करने वाला।

बड़भाग, बड़भागी [वि.] (हिं.) भाग्यवान। भाग्यशाली।

बड़रा* [वि.] (हिं.) देखो 'बड़ा'।

बड़राना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बर्राना'।

बड़लाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राई का पौधा या उसके बीज।

बड़वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बड़वाग्नि। २–घोड़ी ३–दासी। ४–अश्विनीनक्षत्र। ५–सूर्य-पत्नी संज्ञा। ६–वासुदेव की एक परिचारिका। ७–एक नदी का नाम।
[संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

बड़वागि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बड़वाग्नि'।

बड़वाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की आग जो समुद्र के अन्दर जलती हुई मानी जाती है। समुद्राग्नि।

बड़वानल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बड़वाग्नि'।

बड़वानलचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार एक चूर्ण जिससे अजीर्ण शान्त होकर क्षुधा की वृद्धि होती है।

बड़वानलरस [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़वाग्नि। २–एक रसौषध विशेष।

बड़वामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़वाग्नि। २–एक रसौषध। ३–शिव का मुख। ४–कूर्म के दक्षिण कुक्षि में स्थित एक जनपद।

बड़वार+ [वि.] (हिं.) देखो 'बड़ा'।

बड़वारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बड़प्पन। २–बड़ाई। प्रशंसा।

बड़वाल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भेड़ों की एक जाति।

बड़वासुत [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

बड़वाहृत [संज्ञा पु.] (सं.) स्मृति में वर्णित पंद्रह प्रकार के दासों में से एक।

बड़हंस [संज्ञा पु.] (हिं.) एक राग का नाम।

बड़हंस-सारंग [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

बड़हंसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

बड़हन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

बड़हर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बड़हल'।

बड़हल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बड़ा वृत्त जिसके फल शरीफे के आकार के और बेडौल होते हैं

बड़हार [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह के बाद होने वाली बरातियों की ज्योनार।

बड़ा [वि.] (हिं.) १–अधिक विस्तार वाला। लम्बा-चौड़ा और विशाल। २–अधिक उमर या अवस्था वाला। ३–श्रेष्ठ। ४–महत्व का बढ़कर। अधिक।
बड़ा घर–१–प्रतिष्ठित और धनी घराना। २–बंदीगृह। जेलखाना। *बड़ा आदमी*–१–धनी मनुष्य। २–प्रसिद्ध मनुष्य। *बड़ी बड़ी बातें करना*–शेखी बघारना। [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बड़ी] १–उरद की गोल टिकिया जिसे तलकर खाते हैं। २–एक बरसाती घास का नाम।

बड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बड़े होने का भाव। २–बड़प्पन। श्रेष्ठता। ३–महिमा। मह
४–प्रशंसा। तारीफ।
बड़ाई देना–आदर या सम्मान करना। *बड़ाई मारना*–शेखी बघारना।

बड़ाकुँआर, बड़ाकुँवार [संज्ञा पु.] (हिं.) केवड़े के आकार का एक पेड़।

बड़ा-कुलंजन [संज्ञा पु.] (हिं.) मोथा कुलंजन।

बड़ा-दिन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–पच्चीस दिसम्बर का दिन जो ईसुमसीह का जन्मदिन माना जाता है। २–वह दिन जिसका मान बड़ा हो।

बड़ा-पीलू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

बड़ा-बोल [संज्ञा पु.] (हिं.) अहङ्कार या घमंड की बात।

बड़ासखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कसेरों का वह औजार जिससे टांका लगाया जाता है।

बड़ी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'बड़ा'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–दाल, आलू आदि पीस कर सुखाई हुई छोटी टिकिया। कुम्हौड़ी। २–मांस की रस्सी के समान चीर कर सुखाई हुई बोटी (डि.)।

बड़ी-इलायची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इलायची'

बड़ी-कटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ी कटेरी।

बड़ी-गोटी [संज्ञा स्त्री.] (?) चौपायों की एक बीमारी

बड़ी-दाख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोटे अंगूर का मुनक्का

बड़ी-माता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीतला। चेचक।

बड़ी-मैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

बड़ी-मौसली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का लोहे का ठप्पा जिससे थालियों में नक्काशी की जाती है।

बड़ी-राई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाल रंग की सरसों जिसे लाही भी कहते हैं।

बड़ूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिड़ौजा'।

बड़ेमोती-का-फूल [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का लोहे का ठप्पा जिससे थाली आदि में नक्काशी बनाते हैं।

बड़ेरर [संज्ञा पु.] (देश.) बगूला। बवंडर।

बड़ेरा*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. बड़ेरी] १–बड़ा। बृहत्। २–प्रधान। मुख्य। मुखिया। [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बड़ेरी] १–छाजन के बीच की लकड़ी जो लम्बाई के बल होती है। २–कुएँ पर दो खंभों के ऊपर की वह लकड़ी जिसमें घिरनी लगी होती है।

बड़ेलाट [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रधान शासक।

बड़ौखा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गन्ना।

बढ़ [वि.] (हिं.) अधिक बढ़ा हुआ।
घटबढ़–छोटा-बड़ा।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बढ़ती। अधिकाई।

बढ़ई [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कारीगर जो लकड़ी को गढ़कर मेज, कुरसी, किवाड़ आदि बनाता है।

बढ़ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तौल, गिनती, मान आदि में होने वाली अधिकता। २-धन-संपत्ति आदि की वृद्धि या उन्नति। ३-मूल्य में वृद्धि।

बढ़ती से-साधारणतः जो मूल्य निश्चित था अंकित हो उससे कुछ अधिक पर।

बढ़दार [संज्ञा पु.] (देश.) पत्थर काटने की टाँकी।

बढ़न+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वृद्धि। आधिक्य।

बढ़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विस्तार या परिणाम से अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना। २-गिनती या नाप तोल में अधिक होना। ३-मूल्य, अधिकार, योग्यता, सामर्थ्य आदि में वृद्धि होना। ४-किसी स्थान से आगे जाना अथवा चलना। ५-किसी से किसी बात में अधिक होना। ६-दूकान आदि का बंद होना ७-दीपक का बुझाया जाना। ८-लाभ होना।

बात बढ़ना-१-झगड़ा होना। २-मामला टेढ़ा होना। *बढ़कर चलना*-इतराना। घमंड करना *पतंग बढ़ना*-पतंग का ऊँचाई पर उड़ना।

बढ़नी* [संज्ञा स्त्री] हिं.) १-झाड़ू। २-अग्रमी पेशगी।

बढ़वार+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'बढ़ती।

बढ़ाना [क्रि. स.] (हिं) १-परिमाण या विस्तार में अधिक करना। विस्तृत करना। २-नाप-तौल या गिनती में अधिक करना। ३-फैलाना लम्बा करना। ४-अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना। ५-उन्नत करना। तरक्की देना। ६-आगे की ओर गमन कराना। चलाना। ७-सस्ता बेचना। ८-फैलाना। विस्तार करना। ९-दीपक बुझाना। १०-दुकान आदि बन्द करना।

बात बढ़ाना-झगड़ा करना। *बात बढ़ाकर कहना*-अत्युक्ति करना। [क्रि. अ.] (हिं.) चुकना। समाप्त होना।

बढ़ाली+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कटारी। कटार।

बढ़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बढ़ाने की क्रिया या भाव। २-विस्तार। फैलाव। ३-अधिकता। ज्यादती। ४-उन्नति। वृद्धि। तरक्की।

बढ़ावन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बच्चों की नजर झाड़ने के काम में आने वाली गोबर की टिकिया।

बढ़ावना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बढ़ाना'।

बढ़ावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी कार्य की ओर मन बढ़ाने वाली बात। २-साहस या हिम्मत दिलाने वाली बात। प्रोत्साहन। उत्तेजना।

बढ़ावे में आना-उत्साह देने से किसी टेढ़े काम में प्रवृत्त हो जाना।

बढ़िया [वि.] (हिं.) अच्छा। उत्तम। [संज्ञा पु.] १-एक तौल जो डेढ़ सेर की होती है। २-एक प्रकार का कोल्हू। ३-गन्ने अनाज आदि की फसल का एक रोग।

[संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की दाल।

बढ़ेल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की भेड़ जो हिमालय के प्रदेश में ऊन के लिये पाली जाती है।

बढ़ेला [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगली सूअर।

बढ़ैया+ [वि.] (हिं.) १-बढ़ाने या उन्नति कराने वाला। २-बढ़ने वाला। + [संज्ञा पु.] देखो 'बढ़ई'।

बढ़ोतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उत्तरोत्तर वृद्धि। बढ़ती। २-उन्नति।

बणि+[संज्ञा स्त्री.] (?) कपास। रूई का पौधा।

बणिक् [संज्ञा पु.](सं.) १-वाणिज्य या व्यापार करने वाला। २-विक्रेता। बेचने वाला। ३-ज्योतिष में छठा करण।

बणिक्पथ [संज्ञा पु.] (सं.) हाट। बाजार।

बणिग्बंधु, बणिग्बन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) नील का पौधा।

बणिग्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) वाणिज्य।

बणिग्वह [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

बणिज् [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बणिक्'।

बणिज्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापार। वाणिज्य।

बत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बात। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) बत्तख।

बतक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बत्तख''।

बत-कहाव[संज्ञा पु.](हिं.) १-बातचीत। २-कहा-सुनी। वाग्युद्ध।

बतकही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सामान्यरूप से या मनबहलाव के लिए होने वाली बात-चीत। वार्त्तालाप। २-वाद-विवाद।

बतख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंस की जाति की एक सफेद चिड़िया जो पानी पर तैरती है।

बतचल [वि.] (हिं.) बक्की। बकवादी।

बतबढ़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यर्थ बात बढ़ाना। विवाद।

बतबाती [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-बे सिर-पैर की बात २-छेड़छाड़।

बतर* [वि.] (हिं.) देखो 'बदतर'।

बतरस [संज्ञा पु.] (हिं.) बातचीत का आनन्द।

बतरसिया [वि.] (हिं.) बातों का रस या आनन्द लेने वाला।

बतरान+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बातचीत। वार्तालाप

बतराना* [क्रि. अ.] (हिं.) बातचीत करना।

बतरौंहाँ* [वि.] (हिं.) [स्त्री. बतरौंही] बातचीत करने का इच्छुक।

बतलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बताना'। + [क्रि. अ.] (हिं.) बातचीत करना।

बतवन्हा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की नाव।

बताना [क्रि. स.] (हिं) १-कहना। जताना। २-समझाना। हृदयङ्गम कराना। ३-निर्देश करना। दिखाना। ४-नाच-गाने में अङ्गों की चेष्टा से भाव प्रकट करना। ५-मारपीटकर ठीक राह पर लाना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ का कड़ा। कड़े का ढांचा। २-वह पुराने कपड़े की चीर जिस पर पगड़ी बांधी जाती है।

अब बताओ-१-अब क्या उपाय है। २-अब तो मेरे वश में हो, अब क्या कर सकते हो।

बताशा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बतासा'।

बतास+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वायु। हवा। २-वातरोग। गठिया।

बतासफेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टिकिया के आकार की एक मिठाई।

बतासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की मिठाई जो चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई जाती है। २-एक प्रकार की आतिशबाजी जो अनार की तरह छुटती है।

बताशे सा घुलना-१-जल्दी ही बरबाद होना (शाप)। २-क्षीण और दुबला होना।

बतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) थोड़े दिनों का लगा हुआ कच्चा छोटा फल।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बात'।

बतियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) बातें करना।

बतियार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बातचीत।

बतू* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'कलाबत्तू'।

बतौंतकुंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान में बातचीत करने की वह नकल जो बंदर करते हैं।

बतौर [क्रि. अ.] (अं.) १-तरह पर। रीति से। २-सदृश। समान।

बतौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर में मांस का उभड़ा हुआ अंश। गुमड़ी।

बत्तक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बत्तख'।

बत्तख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंस की जाति का एक जलपक्षी जिसका रंग सफेद होता है और यह पानी पर तैरता है।

बत्तिस+ [वि.] (हिं.) देखो 'बत्तीस'।

बत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सूत या रूई का बटा हुआ लच्छा जिसे दीपक में रख कर जलाते हैं। २-दीपक। चिराग। ३-मोमबत्ती। ४-पलीता। ५-कपड़े की वह धज्जी जो घाव में मवाद सोखने के लिए रखी जाती है। ६-सलाई के आकार की कोई वस्तु। ७-पगड़ी या चीर या ऐंठा हुआ कपड़ा। ८-कपड़े के किनारे का वह भाग जो सीने के लिए मरोड़ कर पकड़ा जाता है।

बत्ती लगाना-आग लगाना। *बत्ती चढ़ाना*-शमादान में मोमबत्ती लगाना। *बत्ती दिखाना*-सामने प्रकाश दिखाना। *संझा बत्ती*-संध्या समय दीपक जलाना।

बत्तीस [वि.] (हिं.) तीस और दो।

बत्तीसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बत्तीस मसाले डालकर बनाया जाने वाला एक प्रकार का लड्डू। २-एक प्रकार की बड़ी आतिशबाजी।

बत्तीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बत्तीस का समूह। २-मनुष्य के बत्तीस दाँतों का समूह। *बत्तीसी खिलना*-हँसी आना। *बत्तीसी झड़ पड़ना*-दाँत गिर पड़ना। *बत्तीसी दिखाना*-हँसना। *बत्तीसी बजना*-शीत के कारण दाँतों का काँपना।

बथान+ [संज्ञा पु.] (हि.) गायों के रहने का स्थान।

बथुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा पौधा जिसका शाक खाया जाता है।

बद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जाँघ पर की गिलटी। गोहिया। बाघी। २-छूत का रोग जो चौपायों को होता है। ३-पलटा। बदला। एवज। ४-हेतु। ५-जोखिम। *बद का*-बदले का। जिम्मे का। *बद में*-बदले में। एवज में। [वि.] (फा.) १-बुरा। खराब। अधम। निकृष्ट। २-दुष्ट। खल। नीच।

बद-अमली [संज्ञा स्त्री.](हिं.) राज्य का कुप्रबन्ध अशांति। हलचल।

बद-इंतजामी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कुप्रबन्ध। अव्यवस्था।

बदकार [वि.] (फा.) १-कुकर्मी। २-व्यभिचारी।

बदकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-कुकर्म। २-व्यभिचार।

बदकिस्मत [वि.] (फा., अ.) मंद भाग्य। अभागा

बदखत [संज्ञा पु.] (फा.) बुरा लेख। बुरे अक्षर [वि.] बुरा लिखने वाला।

बदख्वाह [वि.] (फा.) अनिष्ट चाहने वाला।

बदगुमान [वि.] (फा.) संदेह की दृष्टि से देखने वाला।

बदगुमानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मिथ्या संदेह।

बदगोई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-निंदा। २-चुगली।

बदचलन [वि.] (फा.) कुमार्गी। दुश्चरित्र।

बदजबान [वि.] (फा.) गाली-गलौज बकने वाला कटुभाषी।

बदजबानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गाली।

बदजात [वि.] (फा.) नीच। छोटा। लुच्चा।

बदतमीज [वि.] (फा.) अशिष्ट। गँवार। बेहूदा।

बदतर [वि.] (फा.) किसी की अपेक्षा और भी बुरा। निकृष्टतर।

बददियानती [संज्ञा स्त्री.](फा. + अ.) विश्वासघात। बेईमानी। दगाबाजी।

बददुआ [संज्ञा स्त्री.] (फा. अ.) शाप।

बदन [संज्ञा पु.] (फा.) शरीर। देह। *तन बदन की सुध न रहना*-१-अचेत रहना। २-किसी ध्यान में इतना लीन होना कि किसी बात की खबर न रहे। *बदन टूटना*-शरीर के जोड़ों में दर्द होना। *बदन तोड़ना*-पीड़ा के कारण अङ्गों को तानना और खींचना [संज्ञा पु.] (हिं.) वदन। मुख।

बदनसीब [वि.] (फा. + अ.) अभागा।

बदनसीबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दुर्भाग्य।

बदनतौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत।

बदननिकाल [संज्ञा पु.] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत।

बदना [क्रि. स.] (हि.) १-कहना। वर्णन करना। २-स्वीकार करना। ३-नियत करना। ठहराना। ४-बाजी लगाना। शर्त लगाना। होड़ लगाना। ५-कुछ महत्व का मानना या समझना।
बदा होना-भाग्य में लिखा होना। *बदकर*-१-जानबूझकर और हठपूर्वक। (कुछ करना) २-दृढ़तापूर्वक कहकर।
बदकर कहना-पूरे निश्चय के साथ कहना।

बदनाम [वि.] (फा.) जिसे लोग बुरा कहते हों। कुख्यात।

बदनामी [[संज्ञा स्त्री.] (फा.) अपकीर्ति। लोकनिन्दा।

बदनीयत [वि.] (फा., अ.) १-नीचाशय। २-बेईमान।

बदनीयती [संज्ञा स्त्री.](फा.) बेईमानी। दगाबाजी

बदनुमा [वि.] (फा.) कुरूप। भद्दा। भोंडा।

बदपरहेज [वि.] (फा.) कुपथ्य करने वाला।

बदपरहेजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कुपथ्य। असंयम।

बदबख्त [वि.] (फा.) अभागा। बदकिस्मत।

बदबाछा [वि.] (हिं.) वह हिस्सा जो बेईमानी से प्राप्त किया हो।

बदबू [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दुर्गंध। बुरी गंध।

बदबूदार [वि.] (फा.) दुर्गंधयुक्त।

बदमज़ा [वि.] (फा.) १-बुरे स्वाद वाला। २-आनन्दरहित।

बदमस्त [वि.] (फा.) १-नशे में चूर। मस्त। २-कामोन्मत्त।

बदमस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मतवालापन। २-कामुकता।

बदमाश [वि.](फा., अ.) १-बुरे कामों से जीविका चलाने वाला। दुर्वृत्त। २-दुष्ट। पाजी। ३-दुराचारी।

बदमाशी [संज्ञा स्त्री.] (फा., अ.) १-बुरी वृत्ति। खोटाई। २-दुष्टता। नीचता। ३-व्यभिचार। लंपटता।

बदमिज़ाज [वि.] (फा.) बुरे स्वभाव। चिड़चिड़ा

बदमिज़ाज़ी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बुरा स्वभाव। चिड़चिड़ापन।

बदरंग [वि.] (फा.) १-बुरे या भद्दे रंग का। २-जिसका रङ्ग बिगड़ गया हो। विवर्ण। [संज्ञा पु.](फा.) १-ताश के खेल में दांव पर पड़े हुए रङ्ग के पत्ते से भिन्न रङ्ग। २-चौसर या चौपड़ के खेल में एक-एक खिलाड़ी की गोटियों में वह गोटी जो रङ्ग न हो।

बदरंगी [संज्ञा स्त्री.] (उर्दू) रङ्ग का मरना।

बदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेर का पेड़ या फल। २-कपास। ३-बिनौला। +[संज्ञा पु.] (हि.) मेघ। बादल। [क्रि. वि.] (फा.) बाहर। जैसे-शहरबदर करना। *बदर निकालना*-जिम्मे रकम निकालना।

बदरनवीसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-हिसाब के लेखे में से अनुचित रकम अलग करना। २-हिसाब-किताब की पड़ताल।

बदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मेघ। बादल। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बराहक्रांती का पौधा।

बदरामलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौधा जो जलाशयों के पास होता है।

बदराह [वि.] (फा.) १-बुरे मार्ग पर चलने वाला। २-दुष्ट। बुरा।

बदरि [संज्ञा पु.] (सं.) बेर का पौधा या फल।

बदरिकाश्रम [संज्ञा पु.](सं.) एक तीर्थ जो हिमालय पर है। यह श्रीनगर (गढ़वाल) के पास अलकनंदानदी के पश्चिमी तट पर है।

बदरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बदली (मेघ)।

बदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेर का पेड़ या फल।

बदरीच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का बेर। २-एक सुगन्ध-द्रव्य।

बदरीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) बदरिकाश्रम नामक तीर्थ।

बदरीनारायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बदरिकाश्रम के प्रधान देवता। २-नारायण की मूर्ति जो बदरिकाश्रम में है।

बदरीपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंध-द्रव्य विशेष।

बदरीफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील शेफालिका नामक पौधा।

बदरीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेर का जंगल। २-बदरिकाश्रम।

बदरून [संज्ञा पु.] (?) पत्थर की जाली एक प्रकार की नक्काशी।

बदरौब [वि.] (फा., अ.) १-जिसका रौब न हो। २-तुच्छ। ३-बुरा।

बदरौंह+ [वि.] (फा.) कुमार्गी। बदचलन। +[संज्ञा पु.] (हिं.) बदली का

बदल [संज्ञा पु.] (अ.) १-एक जगह से दूसरी जगह होना। हेरफेर। परिवर्तन। २-प्रतिकार। एवज।

बदलगाम [वि.] (फा.) जिसे भला बुरा मुंह से निकालते हुए तनिक भी संकोच न हो। मुंहजोर।

बदलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जैसा हो, उससे भिन्न हो जाना। परिवर्तित होना। २-एक वस्तु हटा उसके स्थान पर दूसरी रखना।

एक के स्थान पर दूसरा हो जाना । ४-एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्त होना । किसी से बदल जाना-अपनी वस्तु तो किसी और के पास चली जाना तथा उसकी अपने पास आ जाना । [क्रि. स.] (हिं.) १-जैसा हो उससे भिन्न रूप देना । परिवर्तित करना । २-एक वस्तु हटाकर उसके स्थान पर दूसरी वस्तु रखना । ३-एक वस्तु देकर दूसरी लेना । बात बदलना-पहले कही हुई बात न कहकर उसके विरुद्ध दूसरी बात कहना ।

बदलवाना [क्रि. स.] (हिं.) बदले का काम दूसरे से कराना ।

बदला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-परस्पर कुछ लेने और देने का व्यवहार । विनिमय । २-एक वस्तु की हानि अथवा पूर्ति के लिए उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु । पलटा । एवज । ३-एक ओर से किये जाने वाले व्यवहार के उत्तर में दूसरी तरफ का वैसा ही व्यवहार । प्रतिकार । ४-किये हुए का फल या परिणाम । नतीजा । बदला लेना-किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना ।

बदलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बदलवाना' ।

बदली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फैल कर छाया हुआ बादल या मेघ । २-बदले जाने की क्रिया या भाव । एक स्थान पर दूसरी की उपस्थिति । ३-एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर की जाने वाली नियुक्ति । तबादिला । ट्रान्सफरैन्स ।

बदलौवल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अदल-बदल हेरफेर ।

बदशकल [वि.] (फा.) भद्दा । कुरूप ।

बदसलूकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अशिष्ट व्यवहार । २-बुराई । अपकार ।

बदसूरत [वि.] (फा. + अ.) कुरूप । बेडौल ।

बदस्तूर [क्रि. वि.] (फा.) जैसा था वैसा ही । परंपरा के अनुसार । ज्यों का त्यों ।

बदहज़मी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अपच । अजीर्ण ।

बदहवास [वि.] (फा.) १-बेहोश । अचेत । २-व्याकुल । उद्विग्न । ३-श्रांत । शिथिल ।

बदा [वि.] (हिं.) भाग्य में लिखा हुआ । बदा होना-भाग्य में लिखा होना । अवश्यंभावी होना ।

बदान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाजी या शर्तें बदे जाने की क्रिया या भाव । बेटिङ्ग ।

बदाबदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो पक्षों की एक दूसरे के विपरीत प्रतिज्ञा या हठ । होड़ा-होड़ी ।

बदाम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बादाम' ।

बदामी [वि.](फा.) देखो 'बादामी' । [संज्ञा पु.] (फा.) कौड़ियाले की जाति का एक पक्षी ।

बदि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बदला । पलटा । [अव्य.](हिं.) बदले में । एवज में । पलटे में

बदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कृष्णपक्ष । अंधेरा पाख । [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अपकार । बुराई अहित ।

बदूख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बन्दूक' ।

बदे [अव्य.] (हिं.) वास्ते । लिए । खातिर ।

बदौलत [क्रि. वि.] (फा.) १-आसरे से । द्वारा । अवलंब से । कृपा से । २-कारण से । वजह से ।

बद्दर, बद्दल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बादल' ।

बद्दू [संज्ञा पु.] (देश.) अरब की एक असभ्य जाति । [वि.] (हिं.) अपमानित । बदनाम ।

बद्ध [वि.] (सं.) १-बँधाहुआ । २-अज्ञान में फँसा हुआ । ३-संसार के बंधन में पड़ा हुआ । ४-जिसके लिए कोई रुकावट या बंधन हो । ५-निर्धारित । निर्दिष्ट । ६-बैठा हुआ । जमा हुआ । ७-सटा हुआ । जुड़ा हुआ ।

बद्धक [संज्ञा पु.] (सं.) कैदी । बंदी ।

बद्धकोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) कब्जियत ।

बद्धगुदोदर [संज्ञा पु.] (सं.) पेट बढ़ने का एक रोग ।

बद्धजिह्व [वि.] (सं.) जिसे जीभ हिलाने में कष्ट होता हो । जीभ कीला हुआ ।

बद्धपरिकर [वि.] (सं.) कमर बाँधे हुए । तैयार ।

बद्धपुरीष [वि.] (सं.) जिसका मल रुक गया हो

बद्धफल [संज्ञा पु.] (सं.) करंज का पेड़ ।

बद्धमुष्टि [वि.] (सं.) कृपण । कंजूस । जिसकी मुट्ठी बँधी हो ।

बद्धमूल [वि.] (सं.) जिसने जड़ पकड़ ली हो ।

बद्धयुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँसुरी बजाने में उसके छिद्रों पर से उँगली हटाकर उसे खोलने की क्रिया ।

बद्धरसाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आम

बद्धवर्चस् [वि.] (सं.) मलरोधक ।

बद्धवीर [वि.] (सं.) वह वीर जिसकी सेना शत्रुओं से घिर गई हो ।

बद्धशिख [वि.] (सं.) जिसकी शिखा या चोटी बँधी हो । [संज्ञा पु.] शिशु । बच्चा ।

बद्धशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूम्यामलकी ।

बद्धसूतक [संज्ञा पु.] (सं.) बद्धरस या पारा जो अक्षत, लघुद्रावी, तेजोविशिष्ट, निर्मल और गुरु कहा गया है (रसेश्वरदर्शन) ।

बद्धस्नेह [वि.] (सं.) स्नेही । अनुरागी । प्रेमी ।

बद्धांजलि, बद्धाञ्जलि [वि.] (सं.) हाथ जोड़े हुए । करबद्ध ।

बद्धानुराग [वि.] (सं.) प्रेम में बंधा हुआ ।

बद्धानुशय [वि.] (सं.) पश्चाताप करके वाला ।

बद्धी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाँधने की कोई वस्तु । डोरी । रस्सी । तसमा । २-चार लड़ी जंजीर वाला एक गहना ।

बद्धोदर [संज्ञा पु.] (सं.) बद्धगुदोदर रोग ।

बध [संज्ञा पु.] (सं.) हत्या । मार डालना ।

बधक [वि.] (सं.) बध करने वाला ।

बधगराड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक औजार जिससे रस्सी बटी जाती है ।

बधत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्र ।

बधना [क्रि. स.] (हिं.) मार डालना । बध करना [संज्ञा पु.] १-मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा । २-चूड़ी वालों का एक औजार ।

बधभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराधियों को प्राणदण्ड देने का स्थान ।

बधांगक, बधाङ्गकस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) कारागार । जेलखाना ।

बधाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वृद्धि । बढ़ती । २-मंगल-उत्सव । ३-मंगल अवसर पर होने वाला गाना-बजाना । मंगलाचार । ४-किसी के यहां कोई शुभ बात अथवा काम होने पर आनन्द प्रकट करने वाला वचन । मुबारकबाद । ५-शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार ।

बधाना [क्रि. स.] (हिं.) बध कराना ।

बधाया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बधाई' ।

बधावना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बधावा' ।

बधावरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बधावा' ।

बधावा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बधाई । २-वह उपहार जो सम्बन्धियों या मित्रों के यहां मंगल अवसरों को भेजा जाता है । ३-मंगल अवसर पर होने वाला गाना-बजाना । मंगलाचार ।

बधिक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बध करने वाला । हत्यारा । २-जल्लाद । व्याध । बहेलिया ।

बधिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अंडकोष निकाला हुआ पशु । २-एक प्रकार का मीठा गन्ना । बधिया बैठाना-बहुत घाटा होना ।

बधियाना [क्रि. स.] (हिं.) अंडकोष निकालना । बधिया बनाना ।

बधिर [वि.] (सं.) जिसमें सुनने की शक्ति न हो । न सुन सकने वाला ।

बधिरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रवणशक्ति का अभाव बहरापन ।

बधिराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बधिरता' ।

बधू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वधू' ।

बधूक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बंधूक' ।

बधूटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुत्र-बधू । पुत्र की स्त्री । २-सुहागिन स्त्री । ३-नई आई हुई बहू ।

बधूरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अंधड़ । बगूला । चक्रवात ।

बधैया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बधाई' । [संज्ञा पु.] १-देखो 'बधिक' । २-देखो

'बधावा'।

बधोद्यत [वि](सं) वह जो मारने के लिए तैयार हो।

बध्य [वि.] (सं.) मार डालने के योग्य।

बध्यभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां फांसी लगाई जाती है।

बन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंगल। कानन। अरण्य २-समूह। ३-जल। पानी। ४-बाग। बगीचा ५-निरौनी। निंदाई। ६-कपास का पौधा। ७-शादियाना। ८-देखो 'वन'। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सजावट। सजधज। २-बाना। भेस।

बनआलू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जो पिंडालू और जमींकंद के समान होता है।

बनउर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बिनौला'। २-देखो 'ओला'।

बनकंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) वन में आप से आप सूखा हुआ गोबर। अरना। कंडा।

बनक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनावट। सजावट। सजधज। २-बाना। वेष। वन की उपज। पैदावार। जैसे—शहद, लकड़ी, गोंद आदि।

बनककड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पापड़े का पेड़ जिसका गोंद दवा के काम में आता है।

बनकटा [संज्ञा पु.] (हिं.) जङ्गल।

बनकटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह बांस जिससे पहाड़ी लोग टोकरे बनाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जमींदार या मालिक की ओर से किसानों को दिया जाने वाला वह अधिकार जिससे कि वे जङ्गल काटकर आबाद कर सकें।

बनकर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जङ्गल में होने वाली लकड़ी, घास आदि का कर। २-सूर्य। ३-अस्त्र-विशेष।

बनकल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जङ्गली पेड़।

बनकस [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास जिसकी रस्सियां भी बनाई जाती हैं।

बनकोरा [संज्ञा पु.] (देश.) लोनिया का साग।

बनखंड [संज्ञा पु.] (हिं.) जङ्गली प्रदेश। जङ्गल का कोई भाग।

बनखंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बन का कोई भाग २-छोटा वन। [संज्ञा पु.] (हिं.) बन में रहने वाला।

बनखरा [संज्ञा पु.](हिं.) ऐसी भूमि जिसमें पिछली फसल कपास की बोई गई हो।

बनखोर [संज्ञा पु.] (देश.) कौर नाम का वृक्ष।

बनगाव [संज्ञा पु.](हिं.) १-रोझ नामक एक बड़ा हिरन। २-एक प्रकार का तेंदूवृक्ष।

बनचर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जङ्गली पशु। २-जङ्गली आदमी। ३-जलजीव।

बनचरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की जङ्गली घास। [संज्ञा पु.] (हिं.) जङ्गली पशु।

बनचारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वन में घूमने वाला २-बन में रहने वाला आदमी। ३-जङ्गली जंतु। ४-जलजन्तु।

बनचौर, बनचौंरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की गाय जो नैपाल के जंगलों में रहती है इसकी पूंछ के चँवर बनाये जाते हैं। सुरागाय। सुरभी।

बनज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वाणिज्य। व्यापार। २-कमल। ३-जल में होने वाले पदार्थ। जैसे—शंख, कमल, मछली आदि।

बनजना* [क्रि. अ.] (हिं.) व्यापार या रोजगार करना।

बनजर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'बंजर'।

बनजात [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल।

बनजारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बैलों पर अन्न लादकर जगह-जगह बेचने वाला व्यक्ति। २-व्यापारी। सौदागर।

बनजी* [संज्ञा पु.](हिं.) १-व्यापार। २-व्यापारी।

बनज्योत्स्ना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माधवीलता।

बनड़ा [संज्ञा पु.] (?) बिलावल राग का एक भेद [संज्ञा पु.] (देश.) दुलहा। वर।

बनड़ाजैत [संज्ञा पु.] (?) एक शालकराग जो रूपक-ताल पर बजता है।

बनड़ादेवगरी [संज्ञा पु.] (?) एक शालकराग जो ताले पर बजाया जाता है।

बनत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनावट। रचना। २-मेल। अनुकूलता। ३-एक प्रकार की रेशम या मखमल पर काढ़ने की बेल।

बनताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बन की सघनता या भयंकरता।

बनतुरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बंदाल।

बनतुलसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का पौधा जिसे बबई या बर्बरी भी कहते हैं।

बनद* [संज्ञा पु.] (हिं.) बादल। मेघ।

बनदाम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनमाला।

बनदेवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वन की अधिष्ठात्री देवी।

बनधातु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गेरू या कोई रंगीन मिट्टी।

बनना [क्रि. अ.] (हिं.) १-रचाजाना। २-तैयार होना। ३-काम में आने के योग्य या ठीक होना। ४-एक रूप से बदलकर अन्य रूप में हो जाना। ५-किसी दूसरे प्रकार का भाव अथवा सम्बन्ध रखने वाला हो जाना। ६-अच्छी या उन्नत दशा को प्राप्त होना। ७-कोई विशेष, पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना ८-वसूल होना। प्राप्त होना। ९ हो सकना। १०-मरम्मत या दुरुस्त होना। ११-निभना। पटना। १२-अच्छा, सुन्दर अथवा होना। १३-सुयोग प्राप्त होना। मिलना। १४-स्वरूप धारण करना। अपने आपको बहुत योग्य या गम्भीर णित करना। १६-मूर्ख या उपहासास्पद होना। १७-सिंगार करना। सजना। बना रहना-१-जीते रहना। २- प्राणों पर या जान पर आ बनना-भारी में फँसना। ऐसे संकट में फँसना जिसमें जाने का भय हो। बनकर-भलीभांति। बनना संवारना, बनना-ठनना-खूब करना।

बननि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बनावट। बनाव। सिंगार।

बननिधि [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र।

बनपिंडालू [संज्ञा पु.] (हि.) एक जंगली जिसकी लकड़ी पीलापन लिये भूरे होती है।

बनपट* [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष की छाल से हुआ कपड़ा।

बनपति [संज्ञा पु.] (हि.) सिंह। शेर।

बनपथ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह मार्ग जिसमें जंगल बहुत पड़ता हो। २-समुद्र। मार्ग जिसमें जल बहुत पड़ता हो।

बनपाट [संज्ञा पु.] (हि.) जंगली सन।

बनपाती*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वनस्पति।

बनपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) बन या बाग का रक्षक। माली।

बनप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल। कोकिल।

बनफूल [संज्ञा पु.] (हि.) जंगली मेवा।

बनफ्शई [वि.] (फा.) बनफशे के रंग का।

बनफ्शा [संज्ञा पु.] (फा) एक छोटा पौधा जो काश्मीर और हिमालय पर्वत के दूसरे में ५००० फुट तक ऊँचाई पर होता है। फूल, पत्तियां और जड़ दवा के काम में है।

बनबकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) काश्मीर और आदि ठंडे देशों में पाया जाने वाला एक पक्षी जो लगभग एक फुट लम्बा होता है।

बनबास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बन में जाकर या रहना। २-प्राचीन काल का देश का दंड।

बनबासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बन में रहने वाला २-जंगली।

बनबाहन [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव। नौका।

बनबिलाव [संज्ञा पु.] (हि.) बिल्ली से बड़ा उससे मिलता-जुलता एक जंगली जन्तु।

बनमानुस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बन्दरों से उन्नत और मनुष्य की सी आकृति जङ्गली जन्तु। २-बिलकुल जङ्गली आदमी। (विनोद)

बनमाला [संज्ञा स्त्री.](हिं.) तुलसी, कुंद, मदार, पारिजात तथा कमल इन पाँचों वस्तुओं की बनी हुई माला।

बनमाली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वनमाला धारण करने वाला। २-कृष्ण। ३-विष्णु। ४-मेघ। बादल। ५-वह प्रदेश जिसमें घने बन हों।

बनमुर्गा [संज्ञा पु.] (ह.) जङ्गली मुरगा।

बनमुर्गिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी जिसका मांस खाया जाता है। वह हिमालय की तराई में पाया जाता है।

बनरखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वन का रक्षक। २-एक जङ्गली जाति का नाम।

बनरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बन्दर'। २-वर। दुल्हा। ३-विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला एक गीत।

बनराज* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बन का राजा। सिंह। शेर। २-बहुत बड़ा पेड़।

बनराय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बनराज'।

बनरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नववधू।

बनरीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली रीठा।

बनरीहा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास जिससे सुतली या सूत बन सकता है।

बनरुह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जङ्गली वृक्ष। २-कमल।

बनरुहिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कपास।

बनवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बनाना'।

बनवर [संज्ञा पु] (हिं.) १-बिनौला। २-जूते का अस्तर।

बनवसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्ष की छाल का कपड़ा।

बनवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक जलपक्षी जिसे पनडुब्बी भी कहते हैं। २-एक प्रकार का वच्छनाग।

बनवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को बनाने में प्रवृत्ति करना।

बनवारी [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

बनवासी [संज्ञा पु.] (हिं.) बन में निवास करने वाला।

बनवैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बनाने वाला।

बनसपती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वनस्पति'।

बनसार [संज्ञा पु.](हिं.) वह स्थान जहाँ से जहाज पर माल चढ़ाया-उतारा जाता है।

बनसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वंशी'।

बनस्थली [संज्ञा स्त्री.](हिं.) जङ्गल का कोई भाग। बनखंड।

बनस्पति [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वनस्पति'।

बनस्पति-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वनस्पति-शास्त्र'।

बनहटी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) डांड से खेई जाने वाली एक प्रकार की छोटी नाव।

बनहरदी [संज्ञा स्त्री.] दारुहल्दी।

बना [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. बनी] वर। दुलहा। [संज्ञा पु.] (?) एक मात्रिक छंद जिसमें १०, ८ और चौदह के विश्राम से ३२ मात्राएँ होती हैं।

बनाइ* [क्रि. वि.] (हिं.) १-अत्यन्त। निपट। २-अच्छी प्रकार। भलीभांति।

बनाउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बनाव'।

बनाउरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वाणावली'।

बनाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दावानल।

बनात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाती [वि.](हिं.) १-बनात-सम्बन्धी। २-बनात का बना हुआ।

बनाना [क्रि. स.](हिं.) १-रूप या अस्तित्व देना। रचना। तैयार करना। २-रूप परिवर्तित करके काम में आने के योग्य बनाना। ३-ठीक अवस्था में लाना। ४-एक वस्तु के रूप को बदलकर दूसरी वस्तु तैयार करना। ५-किसी को किसी पद, मर्यादा या अधिकार का अधिकारी करना। ६-अच्छी या उन्नत अवस्था को प्राप्त करना। ७-एक प्रकार का भाव या संबंध रखने वाला करना। ८-उपार्जित करना। वसूल करना। प्राप्त करना। ९-किसी को इस प्रकार मूर्ख या उपहासास्पद ठहराना कि वह तुरन्त न समझ सके। १०-दोष दूर करके ठीक करना।

बना कर-पूर्णतया। भलीभांति।

बनाफर [संज्ञा पु.] (हिं.) क्षत्रियों की एक जाति

बनावंत, बनायन्त* [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह करने के विचार से लड़के और कन्या की जन्म-कुण्डली मिलाना।

बनाम [अव्य.] (फा.) नाम पर। के नाम।

बनाय [क्रि. अ.] (हिं.) १-बिलकुल। पूर्णतया। २-अच्छी तरह से।

बनार [संज्ञा पु.] (?) १-चाकसू नामक औषध का वृक्ष। २-काला कसौंदा। ३-एक प्राचीन राज्य।

बनारसी [वि.] (हिं.) १-काशी-सम्बन्धी। काशी का। २-काशी-निवासी।

बनारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोल्हू में लगी हुई वह नली जिसमें से रस गिरता है।

बनाल, बनाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बंदाल'

बनाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बनावट। रचना। २-सजावट। ३-तरकीब। युक्ति।

बनावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनने या बनाने का भाव या ढंग। रचना। २-ऊपरी दिखावा। आडंबर।

बनावटी [वि.] (हिं.) नकली। कृत्रिम। बनाया हुआ।

बनावन [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न साफ करते समय निकलने वाली लकड़ी, छिलके और मिट्टी। बिनन।

बनावनहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) रचयिता। बनाने वाला। बिगड़े को बनाने वाला।

बनावरि* [वि] (सं.) बाणों की पंक्ति।

बनास [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक राजस्थानी नदी का नाम जो अर्वली पर्वत से निकलकर चंबल में मिलती है।

बनासपती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वनस्पति'।

बनि* [वि.] (हिं.) पूर्ण। समस्त। सब।

बनिक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वणिक'।

बनिज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-व्यापार। २-व्यापार की वस्तु। सौदा। ३-धनी पथिक (ठग)।

बनिजना* [क्रि. स.] (हिं.) १-व्यापार करना। २-मोल लेलेना। खरीदना। वश में करना।

बनिजारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बनजारा'।

बनिजारिन, बनिजारी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बनजारा जाति की स्त्री।

बनित*[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बानक। वेश।

बनिता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्री। औरत। २-पत्नी।

बनिया [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. बनियाइन, बनैनी] १-व्यापार करने वाला। व्यापारी। २-आटा, दाल आदि बेचने वाला। मोदी। ३-वैश्य।

बनियाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिना बांह या आस्तीन की कुरती। गंजी। २-बनिये की स्त्री। ३-वैश्या स्त्री।

ब-निस्बत [अव्य](फा.) अपेक्षाकृत। तुलना में।

बनिहार [संज्ञा पु.](हिं.) खेत-सम्बन्धी सब काम करने वाला नौकर।

बनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनस्थली। बन का कोई भाग। २-वाटिका। बाग। ३-नव-वधू। ४-स्त्री। नायिका। ५-एक प्रकार का कपास। [संज्ञा पु.] (हिं.) बनिया।

बनीनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बनैनी'।

बनीर* [संज्ञा पु.] (हिं.) बेंत।

बनेठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पटेबाजों का वह डंडा जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे होते हैं।

बनेला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

बनैनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनिये की स्त्री। २-वैश्यजाति की स्त्री।

बनैला [वि.] (हिं.) जंगली। वन्य (पशु)।

बनोवास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बनवास'।

बनौटी [वि.] (हिं.) कपास के फूल के समान। कपासी।

बनौरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वर्षा के साथ गिरने वाला ओला। २-एक रोग जिससे शरीर में

गोल गांठ उभर आती है।

बनौरा [वि.] (हिं.) बनावटी। कृत्रिम। नकली।

बन्नात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बनात'।

बन्नी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) उपज का वह अंश जो खेत में काम करने वालों को वेतन के रूप में दिया जाता है।

बन्हि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वह्नि'।

बपंस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बपौती'।

बप* [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता। बाप। *बपमार*–पिता की हत्या करने वाला। पितृघातक।

बपतिस्मा [संज्ञा पु.] (अं.) ईसाइयों का वह संस्कार जो नवजात बालक अथवा किसी विधर्मी को ईसाई बनाते समय करते हैं।

बपना* [क्रि. स.] (हिं.) बीज बोना।

बपु* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शरीर। देह। २–अवतार। ३–रूप।

बपुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर। देह।

बपुरा [वि.] (हिं.) १–बेचारा। अशक्त। २–अनाथ। ३–गरीब।

बपौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाप से मिली हुई अथवा बाप से प्राप्त।

बप्पा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता। बाप।

बफारा [संज्ञा पु.] (हिं.) औषध मिले हुए जल के भाप से शरीर का कोई अङ्ग सेकना।

बफौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाप से पकाई हुई बरी।

बबकना [क्रि. अ.] (हिं.) उत्तेजित होकर जोर से बोलना।

बबर [संज्ञा पु.] (फा.) बड़ा शेर। सिंह। २–एक प्रकार का मोटा कम्बल।

बबा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाबा'।

बबुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.)) [स्त्री. बबुई] १–लड़कों के लिए प्यार का शब्द। २–रईस। जमींदार। ३–बालक के आकार की गुड़िया।

बबुई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कन्या। बेटी। २–छोटी ननद। ३–किसी ठाकुर, सरदार या बाबू की बेटी।

बबुर, बबूल [संज्ञा पु.] (हिं.) कीकर नामक वृत्त

बबूला [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बगूला। २–बुलबुला ३–देखो 'पस्सी-बबूल'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथी के पांव में होता है।

बब्बू [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बाबू। २–एक प्रकार का उल्लू।

बभनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १–छिपकली के आकार का एक पतला छोटा कीड़ा जिसके शरीर पर सुन्दर लम्बी धारियां होती हैं। २–कुश जाति का एक तृण।

बभूत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'भभूत'। २–देखो 'विभूति'।

बम [संज्ञा पु.] (अं.) विस्फोटक पदार्थों का बना हुआ गोला जो शत्रु की सेना पर उन्हें मारने के लिये फेंका जाता है। [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शिव को प्रसन्न करने का 'बम', 'बम' शब्द। २–शहनाई वालों का छोटा नगाड़ा। ३–तांगे, इक्के गाड़ी, आदि के वह बांस जिनमें घोड़े जोते जाते हैं।

बम बोलना या बोला जाना–किसी वस्तु का अन्त हो जाना। कुछ न बचा रहना।

बमकना [क्रि. अ.] (हिं.) डींग हांकना। शेखी बघारना।

बमकांड [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कहीं पर बम फटने से होने वाली दुर्घटना। २–उक्त दुर्घटना से सम्बन्ध रखने वाली स्थिति। बॉंब-केस।

बमचख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–शोर। गुल। २–लड़ाई। झगड़ा। विवाद।

बमना* [क्रि. स.] (हिं.) कै करना।

बमबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु पर बम के गोले फेंकने वाला व्यक्ति।

बमबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शत्रु पर बम के गोले फेंकने की क्रिया या भाव। बमवर्षा। बॉंबिंग।

बम-मार [वि.] (हिं.) बम मारने वाला।

[संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वायुयान जिससे शत्रुओं पर बम फेंके जाते हैं।

बमवर्षक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का लड़ाकू हवाई जहाज जिससे शत्रु पर बम वर्षा की जाती है। बॉंबर।

[वि.] (हिं.) बम-वर्षा करने वाला। बम मारने वाला।

बमवर्षा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शत्रु पर बम बरसाने या भारी संख्या में गिराने की क्रिया या भाव

बमीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँबी। बल्मीक।

बमुकाबला [क्रि. स.] (फा.) १–मुकाबले में। २–विरुद्ध। विरोध में।

बमूजिब [क्रि. अ.] (फा.) अनुसार। मुताबिक।

बमेला+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

बमोट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बमीठा'।

बम्हनपियाव [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख को पहले-पहल पेरती समय इसका कुछ भाग ब्राह्मणों को पिलाना।

बम्हनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–देखो 'बभनी'। २–ऊख में लगने वाला एक रोग। ३–आंख का एक रोग। बिलनी। गुहांजनी। ४–लाल रंग की भूमि। ५–हाथी का एक रोग।

बयंड [संज्ञा पु.] (डिं.) हाथी।

बय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वय'।

बयन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वाणी। बोली। बात।

बयना* [क्रि. स.] (हिं.) १–बोना। बीज जमाना या लगाना। वर्णन करना। कहना। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बैना'।

बयनी*+ [वि.] (हिं.) बोलने वाली। जो बोलती हो।

बयर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बैर'।

बयल [संज्ञा पु.] (डिं.) सूर्य।

बयस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वय'।

बयसर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कमखाब बुनने वालों व करघे में गुल्ले के ऊपर नीचे करने वाली एक लकड़ी।

बयसवाला* [वि.] (हिं.) [स्त्री. बयसवाली] युवक। जवान।

बयस-सिरोमनि*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) यौवन। युवावस्था। जवानी।

बयाँग [संज्ञा पु.] (?) भूला।

बया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका माथा पीला और चमकीला होता है। २–अनाज तौलने वाला। तौलिया।

बयाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न आदि तौलने की मजदूरी।

बयान [संज्ञा पु.] (फा.) १–वर्णन। जिक्र। चर्चा। २–हाल। विवरण। वृत्तांत।

बयाना [संज्ञा पु.] (हिं.) मूल्य, पारिश्रमिक आदि का वह अंश जो किसी काम के करने अथवा कोई वस्तु खरीदने की बातचीत पक्की करने के समय पहले लिया जाता है। पेशगी।

बयाबान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–जंगल। उजाड़।

बयार, बयारि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हवा। पवन। *बयार करना*–ऊपर पंखा हिलाना जिससे हवा लगे।

बयारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हवा का झोंका। तूफान।

बयारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ब्यालू'।

बयाला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–दीवार में का छेद या झरोखा। २–ताख। आला। पटाव के नीचे की खाली जगह। ४–गढ़ों या किलों में वह स्थान जहां तोपें लगी रहती हैं। ५–कोट की दीवार में का वह छेद जिसमें से तोप का गोला दागा जाता है।

बयालिस [वि.] (हिं.) चालीस और दो।

बयालीसवाँ [वि.] (हिं.) इकतालीस के बाद का।

बयासी [वि.] (हिं.) अस्सी और दो।

बरंग [संज्ञा पु.] (देश.) १–एक प्रकार का बड़े कद का पेड़। २–कवच (डि.)।

बरंगा [संज्ञा पु.] (देश.) छत पाटने की पत्थर या लकड़ी की छोटी पटिया।

बर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बरगद। २-रेखा। लकीर। ३–जिद करना। ४–किसी व्यापार में वह कोई विशेष पदार्थ जो उसी मेल के अन्य पदार्थों से अलग हो। ५–देखो 'वर'। ६–वह आशीर्वादसूचक वचन जो किसी की प्रार्थना पूर्ण करने के लिये कहा जाय।

बर खींचना-किसी बात में बहुत दृढ़ता दिखलाना। [अव्य] (फा.) ऊपर। बर आना या पाना-प्रतियोगिता या मुकाबले में सामने ठहराना। ※ [अव्य.] (हिं.) वरन्.। बल्कि। [वि.] (फा.) १-बढ़ाचढ़ा। श्रेष्ठ। २-पूरा। पूर्ण। (आशा या कामना के लिये)। [संज्ञा पु.] (फा.) फल। [वि.) (हिं.) अच्छा। उत्तम। बर परना-श्रेष्ठ होना। [संज्ञा पु.] (हिं.) शक्ति। बल।

बरअंग [संज्ञा स्त्री.] (डि.) योनि।

बरई [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बरइन] १-एक जाति जिसके लोग पान की खेती करते हैं। २-इस जाति का कोई आदमी। तमोली।

बरकंदाज [संज्ञा पु.] (हिं.) वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी अथवा तोड़ेदार बंदूक रहती है।

बरकत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-किसी वस्तु की अधिकता। २-लाभ। फायदा। ३-प्रसाद। कृपा। ४-समाप्ति। अन्त। ५-एक की संख्या। ६-वह बचा हुआ पदार्थ या धन आदि जो इस विचार से पीछे छोड़ दिया जाता है कि इसमें और बढ़ोतरी हो।

बरकती [वि.] (अं.) १-जिसमें बरकत हो। २-बरकत-सम्बन्धी।

बरकदम [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की चटनी

बरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-निवारण होना। २-अलग रहना। हटा।

बरकरार [वि.] (फा.+अ.) १-स्थिर। कायम। २-मौजूद। उपस्थित।

बरकाज [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह।

बरकाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-निवारण करना। २-पीछा छुड़ाना। बहलाना।

बरख※ [संज्ञा पु.] (हिं.) साल। बरस।

बरखना※ [क्रि. स.] (हिं.) पानी बरसना। वर्षा-होना।

बरखा※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मेह गिरना। वृष्टि। २-वर्षाऋतु।

बरखाना※ [क्रि. स.] (हिं.) १-बरसाना। २-बहुत अधिकता से देना। ३-ऊपर से छितराकर गिराना, कि बरसता हुआ मालूम हो।

बरखास※ [वि.] (हिं.) बरखास्त।

बरखास्त [वि.] (फा.) १-नौकरी से हटाया हुआ। २-सभा आदि का विसर्जन होना। जिसकी बैठक समाप्त हो गई हो।

बरखिलाफ [क्रि. वि.] (फा., अ.) प्रतिकूल। विरुद्ध। उलटा।

बरगंध+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगंधयुक्त मसाला।

बरग+ [संज्ञा पु.] (?) १-देखो 'वर्ग'। २-देखो 'बरक'।

बरगद [संज्ञा पु.] (हिं.) पीपल, गूलर आदि की जाति का एक बड़वृक्ष जिसे 'बड़' भी कहते है।

बरगेल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लावा-पक्षी जो पाला भी जाता है।

बरचर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का देवदार वृक्ष।

बरचस [संज्ञा पु.] (डिं.) मल। विष्टा।

बरछा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बरछी] फेंककर अथवा भोंककर मारने का एक हथियार। भाला।

बरछैत [संज्ञा पु.] (हिं.) बरछा चलाने या रखने वाला।

बरजन※ [क्रि. अ.] (हिं.) रोकना। मना करना।

बरजनि※+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मनाही। २-रुकावट। ३-रोक।

बरजबान [वि.] (फा.) कंठस्थ। मुखाग्र। जो जबानी याद हो।

बरजोर [वि.] (हिं.) १-प्रबल। बलवान। २-अनुचित बल प्रयोग करने वाला।
[क्रि. अ.] (हिं.) १-बलपूर्वक। जबरदस्ती। २-बहुत जोर से।

बरजोरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवाह के अवसर पर वर तथा कन्या के पल्लों में गांठ बांधने की क्रिया। २-विवाह।

बरजोरी※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बल प्रयोग। जबरदस्ती।
[क्रि. वि.] (हिं.) बलपूर्वक। जबरदस्ती से

बरणना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरनना'।

बरत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्रत'। [संज्ञा स्त्री.] १-रस्सी। २-नट की रस्सी जिस पर चढ़कर वह खेल दिखाता है।

बरतन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धातु, मिट्टी, शीशे आदि का वह आधार जिसमें खाने-पीने की वस्तुएं रखी जाती हैं। पात्र। भाँड़ा। २-बरताव। व्यवहार।

बरतना [क्रि. अ.] (हिं.) व्यवहार या बरताव करना। [क्रि. स.] व्यवहार या काम में लाना

बरतनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की लकड़ी की कलम। २-लिखने का ढंग।

बरतर [वि.] (फा.) अधिक अच्छा। श्रेष्ठतर।

बरतरफ [वि.] (फा.+अ.) १-किनारे। अलग। २-नौकरी से हटाया या अलग किया हुआ।

बरतराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाजार में बैठने वाले दूकानदारों से लिया जाने वाला कर। बैठकी।

बरताना [क्रि. स.] (हिं.) वितरण करना। बाँटना

बरताव [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी के प्रति किया जाने वाला कार्य या व्यवहार। बरतने का ढंग या भाव।

बरती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पेड़। [वि.] (हिं.) जिसने उपवास किया हो। जिसने व्रत रखा हो। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बत्ती'।

बरतुस [संज्ञा पु.] (?) वह खेत जिसमें पहले धान बोया गया हो और फिर जोतकर ईख बोई जाय।

बरतेला+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जुलाहे के करघे के दाहिनी ओर की खूंटी।

बरतोर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बाल के जड़ से टूट-जाने पर होने वाला फोड़ा।

बरदना [क्रि. अ.] (हि.) भैंस, बकरी आदि का अपनी जाति के नर पशुओं के साथ गर्भ रखाना। जोड़ा खाना।

बरदवान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कमखाब बुनने वालों के करघे की एक रस्सी जो पगिया में बँधी रहती है। २-तेज हवा।

बरदवाना [क्रि. स.](हिं.) बरदवाने का काम दूसरे से करना।

बरदा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की रूई।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरधा'।

बरदाना+ [क्रि. स.] (हिं.) गाय, भैंस आदि का उनकी जाति के नर-पशुओं से संयोग कराना। जोड़ा खिलाना। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बरदना'।

बरदाफरोश [संज्ञा पु.] (फा.) दासों को खरीदने और बेचने वाला।

बरदाफरोशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गुलाम या दास बेचने का काम।

बरदार [वि.](फा.) १-लेजाने वाला। धारण करने वाला। २-पालन करने वाला। मानने वाला। (यौ० में)।

बरदाशत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सहन करने की शक्ति, क्रिया या भाव। सहन।

बरदिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बलदिया'।

बरदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बलदी'।

बरदुआ+ [संज्ञा पु.](देश.) लोहा छेदने का बरमे की तरह का एक औजार।

बरदौर [संज्ञा पु.] (हिं.) मवेशियों को बाँधने का स्थान।

बरध, बरधा [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल।

बरधवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरदवाना'।

बरधाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरदाना'।
[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बरदना।

बरधी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चमड़ा।

बरन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वर्ण'।

बरनन※+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वर्णन'।

बरनना※+ [क्रि. स.](हिं.) वर्णन करना। बयान करना।

बरनर [संज्ञा पु.](अं.) लंप का ऊपरी भाग जिस में बत्ती लगाई जाती है।

बरना [क्रि. स.] (हिं.) १-वर या वधू के रूप मे ग्रहण या अङ्गीकार करना। वरण करना। ब्याहना। २-किसी काम के लिए किसी को चुनना। बरण करना। ※३-दान देना। ४-बटना। ५-मना करना। रोकना। [क्रि. अ]

बलना । जलना । [संज्ञा पु.] एक प्रकार का वृक्ष ।

बरनाल [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज में का पानी निकालने का मार्ग या परनाला ।

बरनाला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'परनाला' ।

बरनेत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह मुहूर्त से कुछ पहले होने वाली रस्म ।

बरपा [वि.] (फा.) उठा हुआ । खड़ा हुआ । मचा हुआ ।

बरफ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बर्फ' ।

बरफानी [वि.] (फा.) वह देश, पर्वत आदि जहां या जिस पर बरफ की बहुतायत हो ।

बरफिस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) वह स्थान या प्रदेश जहां सब ओर बरफ ही बरफ हो ।

बरफी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की प्रसिद्ध मिठाई ।

बरफीदार-कनारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेद कांटे वाली जगह (पालकी के कहार)।

बरफीला [वि.] देखो 'बरफानी' ।

बरफी-संदेश [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बंगला मिठाई ।

बरबंड* [वि.] (हिं.) १-शक्तिशाली । बलवान । २-उद्दंड । उद्धत । ३-प्रचंड । प्रखर । तेज ।

बरबट* [वि.] (हिं.) १-बलपूर्वक । जबरदस्ती । २-बरबस ।

बरबत [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का बाजा ।

बरबर+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) व्यर्थ की बातें । वकवाद । [संज्ञा पु.] देखो 'बर्बर' ।

बरबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की बकरी २-एक देश का नाम ।

बरबस [क्रि. वि.] (हिं.) १-बलपूर्वक । हठात् । जबरदस्ती । २-व्यर्थ । फजूल ।

बरबाद [वि.] (फा.) १-नष्ट । चौपट । २-व्यर्थ खर्च किया हुआ ।

बरबादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नाश । खराबी । तबाही ।

बरम* [संज्ञा पु.] (हिं.) कवच । जिरहबक्तर । शरीर-त्राण ।

बरमा [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भारत का एक पड़ौसी देश का नाम । २-बहुत दिनों तक रह सकने वाला एक प्रकार का धन ।

बरमी [संज्ञा पु.] (हिं.) बरमादेश का निवासी । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरमादेश की भाषा । [वि.] (हिं.) बरमा-सम्बन्धी । बरमा देश का

बरम्हबोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक लम्बी नाव जिसका पिछला भाग चौड़ा होता है ।

बरम्हा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'ब्रह्मा' । २-देखो 'बरमा' ।

बरम्हाना** [क्रि. स.] (हिं.) (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना ।

बरम्हाघ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ब्राह्मण द्वारा आशीर्वाद दिये जाने का भाव । ब्राह्मण का आशीर्वाद । २-ब्राह्मणत्व ।

बरराना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बर्राना' ।

बररे [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बरे' ।

बरवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तापतिल्ली नामक रोग

बरवल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़ ।

बरवा, बरवै [संज्ञा पु.] (देश.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १२ और ७ मात्राओं पर यति और अन्त में जगण होता है । इस में कुल १६ मात्राएँ होती हैं ।

बरषना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बरसना' ।

बरषा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वर्षा । वृष्टि । २-बरसात । वर्षाकाल । बरसात ।

बरषाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरसाना' ।

बरषासन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पूरे वर्ष भर की भोजन सामग्री जो एक परिवार के लिए काफी हो ।

बरस [संज्ञा पु.] (हिं.) वर्ष । साल ।

बरस का दिन-ऐसा दिन जो साल में एक बार आता हो । बड़ा त्योहार ।

बरसगांठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो । जन्मदिन । सालगिरह । (प्राचीनकाल में जन्मदिन पर एक धागे में हर वर्ष गांठ लगाई जाती थी अब भी आगरे की तरफ ऐसा ही करते हैं) ।

बरसना [क्रि. स.](हिं.) १-वर्षा का पानी गिरना। मेह पड़ना । २-वर्षाजल के समान ऊपर से गिरना । ३-ऊपर या चारों ओर से अधिक मात्रा में आना या गिरना । ४-अच्छी प्रकार प्रकट होना । ५-ओसाया जाना ।

बरस पड़ना-बहुत क्रुद्ध होकर निरन्तर उलटी-सीधी बातें सुनाना ।

बरसाइत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जेठबदी अमावस (इस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री का पूजन करती हैं) ।

बरसाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रतिवर्ष ब्याने वाली गाय ।

बरसाऊ [वि.] (हिं.) जो अभी-अभी बरसने को हो (बादल) । बरसने वाला ।

बरसात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सावन-भादों के दिन जब कि खूब मेह बरसता है । वर्षाकाल । वर्षाऋतु ।

बरसाती [वि.] (हिं.) बरसात-संबंधी । बरसात का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोड़ों का एक रोग । २-एक प्रकार का आँख का रोग । ३-बरसात होने वाली फुंसी विशेष । ४-चीनी मोर । ५-एक प्रकार का कपड़ा जिसे बरसात से बचने के लिए पहनते हैं ।

बरसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-वर्षा करना । वृष्टि करना । २-वर्षा के जल के समान ऊपर से इधर-उधर से निरन्तर बहुत सा गिराना । ३-बहुत अधिक संख्या या मात्रा में चारों ओर से प्राप्त कराना । ४-ओसाना ।

बरसायत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शुभ घड़ी । शुभ महूर्त । २-देखो बरसाइत ।

बरसावना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरसाना' ।

बरसिंघा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह बैल जिसका एक सींग खड़ा और दूसरा नीचे की ओर झुका हो । मैना । * २-देखो 'बारहसिंगा' ।

बरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृतक के निमित्त किया जाने वाला वार्षिक श्राद्ध ।

बरसीला [वि.] (हिं.) बरसने वाला । जो बरसने को हो ।

बरसू [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष ।

बरसोदिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पूरे साल भर के लिए रखा हुआ नौकर ।

बरसौड़ी, बरसौंढ़ी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वार्षिक कर । हर वर्ष लिया जाने वाला कर ।

बरसौंहा [वि.] (हिं.) बरसने वाला । जो बरसने को हो ।

बरहंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) कड़वा भंटा । क्षुद्र वार्ताकी ।

बरह [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्ष आदि का पत्ता ।

बरहन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बड़हन' ।

बरहना [वि.] (फा.) नंगा । नग्न । जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो ।

बरहम [वि.] (फा.) १-क्रुद्ध । २-उत्तेजित ।

बरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री बरही] वह छोटी नाली जो खेतों में सिंचाई के लिए बनाई जाती [संज्ञा पु.] (हिं.) मोर । मयूर । [संज्ञा पु.] (देश.) मोटा रस्सा ।

बरही [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोर । मयूर । २-एक जङ्गली जंतु जिसे साही भी कहते हैं । ३-अग्नि आग । ४-मुरगा । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह स्नान या अन्य क्रियाएँ जो प्रसूता संतान होने के बारहवें दिन करती है । २-संतान उत्पन्न होने के दिन से बारहवाँ दिन । [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा । २-ईंधन का बोझ ।

बरहीपीड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) मोरमुकुट ।

बरहीमुख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देवता ।

बरहौं [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरही' ।

बरह्मंड [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्रह्मांड' ।

बरह्मावना [संज्ञा पु.] (हिं.) आशीर्वाद देना । असीस देना ।

बरांडल [संज्ञा पु.](हिं.) मस्तूल बांधने का जहाज पर का रस्सा ।

बरांडा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरामदा' । २-

देखो 'बरांडल'।

बरांडाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरांडल'।

बरांडी [संज्ञा स्त्री.](अं.) एक प्रकार की विलायती शराब।

बरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पीठी का बना हुआ एक प्रकार का पकवान। बड़ा। २-बरगद का पेड़। ३-एक आभूषण जो भुजदंड पर बांधा जाता है। बहुँटा। टांड़।

बराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बड़ाई'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का गन्ना।

बराक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिव। २-युद्ध। लड़ाई। [वि.](हिं.) १-नीच। पापी। अधम। २-शोचनीय। ३-बेचारा। बापुरा।

बराट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-कौड़ी। कपर्दिका। २-भैरव राग की एक रागिनी जिसके गाने का समय दिन के २५ से २८ दंड तक का है।

बराड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की रूई जो बरार और खानदेश में होती है।

बराड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कौड़ी।

बरात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह के समय वर-सहित कुछ लोगों का कन्यापक्ष वालों के यहां जाना। जनेत।

बराती [संज्ञा पु.] (हिं.) बरात में वरपक्ष वालों के साथ लड़की वालों के घर तक जाना।

बरानकोट [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह बड़ा कोट या लबादा जो जाड़े या बरसात में सिपाही लोग अपनी वर्दी के ऊपर पहनते हैं। २-देखो 'ओवरकोट'।

बराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जान-बूझकर अलग करना। बचाना। २-प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात न कहना। बचाना। ३-रक्षा करना। हिफाजत करना। [क्रि. स.] १-जान-बूझकर किसी को किसी का या बात से अलग करना। २-चुनना। छाँटना। ३-देखो 'बालना' (जलाना)। [क्रि. अ.] १-एक नाली से दूसरी नाली में सिंचाई का पानी ले जाना। २-खेतों में पानी देना।

बराबर [वि.] (फा.) १-मात्रा, गुण, महत्व आदि की दृष्टि से समान। तुल्य। एकसा। २-समतल। ३-समान पद या मर्यादा वाला। ४-जैसा चाहिए वैसा। ठीक। बराबर का-समान। बराबरी करने वाला। बराबर करना-समाप्त कर देना। [क्रि. वि.] (हिं.) १-लगातार। निरंतर। २-एक साथ। एक पंक्ति में। ३-सर्वदा। हमेशा। सदा। ४-साथ।

बराबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बराबर होने की क्रिया या भाव। समता। समानता। २-सादृश्य। ३-तुलना। मुकाबला।

बरामद [वि.] (फा.) १-जो बाहर निकल आया हो। २-खोई हुई, चोरी गई अथवा न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय। [संज्ञा स्त्री.] १-नदी के हट जाने से निकली हुई जमीन। गंगबरार। २-आमदनी। निकासी।

बरामदा [संज्ञा पु.] (फा.) १-मकानों के आगे का छाया हुआ भाग। दालान। २-घर की सीमा से कुछ बाहर निकला हुआ तथा ढपा हुआ तंग लम्बा भाग। बारजा।

बरामीटर [संज्ञा पु.] देखो 'बैरोमीटर'।

बराम्हण, बराम्हन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्राह्मण'।

बराय [अव्य.] (फा.) वास्ते। लिये। निमित्त।

बरायन [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह के समय वर के हाथ में पहराने का लोहे का छल्ला।

बरार [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का जंगली पशु। २-प्रति-घर के हिसाब से लिया जाने वाला गांव का चन्दा।

बरारक [संज्ञा पु.] (डिं.) हीरा।

बरारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दोपहर के समय गाई जाने वाली सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

बरारीश्याम [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक संकरराग।

बराव [संज्ञा पु.] (हिं.) निवारण। परहेज। बचाव।

बरास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भीमसेनी कपूर। २-पाल की वह रस्सी जिसकी सहायता से जहाज में पाल घुमाते हैं।

बराह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वराह'। [क्रि. वि.] १-के तौर पर। २-जरिये से। द्वारा।

बराही [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की घटिया ऊख। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीतला या चेचक की अधिष्ठात्री देवी का एक नाम।

बरिआत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरात'।

बरिच्छा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरच्छा'।

बरिबंड* [वि.] (हिं) देखो 'बरबंड'।

बरिया* [वि.] (हिं.) बलवान। शक्तिशाली।

बरियाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बलवान होने का भाव। ताकतवरी। २-बलप्रयोग। जबरदस्ती। [क्रि. वि.] हठात्। बलात्। जबरदस्ती।

बरियार+ [वि.] (हिं.) बली। बलवान्। मजबूत।

बरियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा, झाड़दार छतनारा पौधा जो हाथ सवा-हाथ ऊँचा होता है। वाट्यपुष्पी। वारिगा।

बरियाल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पतला बांस। बांसी।

बरिल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पकवान जो पकौड़ी या बड़े की तरह का होता है।

बरिल्ला [संज्ञा पु.] (देश.) सज्जी खार।

बरिषा* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'वर्षा'।

बरिष्ठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वरिष्ठ'।

बरिस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वर्ष। साल।

बरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गोल टिकिया। बटी। २-पीठी के सुखाये हुए छोटे टुकड़े। वह मेवा या मिठाई जो विवाह के बाद वरपक्ष की ओर से लड़की वालों के घर भेजे जाते हैं। [वि.] (फा.) छूटा हुआ। मुक्त। * [वि.] (हिं.) देखो 'बली'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास या कदन्न।

बरीस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वर्ष'।

बरीसना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बरसना'।

बरु* [अव्य.] (हिं.) १-भले ही परवा नहीं। २-बल्कि। वरन्। +[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बर'।

बरुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बटु। ब्रह्मचारी। २-उपनयन। ३-ब्राह्मणकुमार। ४-मूंज की बद्धी जिससे डलिया बनती हैं।

बरुक+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'बरु'।

बरुन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वरुण'।

बरुना [संज्ञा पु.] हिं.) एक प्रकार का सीधा सुन्दर वृक्ष जिसे बन्ना या बलासी भी कहते हैं।

बरुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आंख की पलक के किनारे के बाल।

बरुला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बल्ला'।

बरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरुआ'।

बरूथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वरूथ'।

बरूथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक नदी जो सई और गोमत के मध्य में है।

बरेंड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लकड़ी या मोटा लट्ठा जो खपरैल या छाजन में लम्बाई के बल लगी रहती है। २-छाजन या खपरैल के बीचों-बीच का सब से ऊँचा भाग।

बरेंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बरेंड़ा'।

बरे* [क्रि. वि.] (हिं.) १-जोर से। २-बलपूर्वक जबरदस्ती। ३-ऊँचे स्वर से। [अव्यय] (हिं.) १-बदले में। २-वास्ते। निमित्त।

बरेखी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बांह पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह-संबंध स्थिर रखने के लिए वर या कन्या को देखना।

बरेज, बरेजा [संज्ञा पु.] (हिं.) पान का बगीचा

बरेठा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बरेठिन] धोबी।

बरेत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरेता'।

बरेता [संज्ञा पु.] (हिं.) सन का मोटा रस्सा।

बरेदी+ [संज्ञा पु.] (देश.) चरवाहा।। चौपाये चराने वाला।

बरेषी [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'बरेखी'।

बरैंड़ा [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'बरेंडा'।

बरो+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बाल की जड़ का पतला रेशा। [संज्ञा पु.] (देश.) बाग के वृक्षों को हानि पहुँचाने वाली एक प्रकार की घास। * [वि.] देखो 'बड़ा'।

बरोक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह धन जो लड़की वालों की ओर से वरपक्ष वालों को यह यह सूचित करने को दिया जाता है कि बातचीत पक्की हो गई। फलदान। * २-सेना। फौज। [क्रि. वि.] (हिं.) बलपूर्वक। जबरदस्ती।

बरोठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ड्योढ़ी। पौरी। २-बैठक। दीवानखाना।

बरौठे का चार-द्वारपूजा।

बरोधा+ [संज्ञा पु.] (देश.) वह खेत जिसमें कपास की फसल बोई गई हो।

बरोबर [वि.] (हिं.) देखो 'बराबर'।

बरोरु* [वि.] (हिं.) देखो 'वरोरु'।

बरोह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ या बरगद की जटा।

बरौंछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुनार का गहना साफ करने की कूँची जो सूअर के बालों की बनी हुई होती है।

बरौखा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गन्ना। बड़ौंखा।

बरौठा [संज्ञा पु.) (हिं.) देखो 'बरोठा'।

बरौनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बरुनी'।

बरौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ी या बरी नामक पकवान।

बर्क [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बिजली। विद्युत। [वि.] १-तेज। चालाक। २-तुरन्त उपस्थित होने वाला। पूर्णरूप से अभ्यस्त।

बर्कत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बरकत'।

बर्खास्त [वि.] (हिं.) देखो 'बरखास्त'।

बर्छा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरछा'।

बर्ज* [वि.] (हिं.) देखो 'वर्य'।

बर्जना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरजना'.

बर्णना* [क्रि. स.] (हिं.) वर्णन करना।

बर्त [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'व्रत'।

बर्त्तन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरतन'।

बर्त्तना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरतना'।

बर्त्ताव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरताव'।

बर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) वृष। बैल।

बर्दाश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'बरदाश्त'।

बर्न* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वर्ण'।

बर्फ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-भाप के अणुओं की वह तह जो वातावरण की ठंडक के कारण धूएं के रूप में ऊपर से जमीन पर गिरती है २-मशीनों या कृत्रिम उपायों के द्वारा जमाया हुआ पानी जिससे पानी के लिये जल आदि ठंडा करते हैं। ३-कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस। देखो 'ओला'।

बर्फ होना-बिलकुल ठंडा होना-

बर्फानी [वि.] (फा.) देखो 'बरफानी'।

बर्फिस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) वह स्थान जहां बरफ हो।

बर्फी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बरफी'।

बर्फीला [वि.] (हि.) देखो 'बरफानी'।

बर्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-घुँघराले बाल। २-वर्णाश्रमविहीन असभ्य आदमी। जङ्गली आदमी। ३-अस्त्रों की झङ्कार। ४-एक प्रकार की मछली। ५-एक कीड़ा। ६-एक प्रकार का नृत्य। ७-एक प्रकार का पौधा। [वि.] १-जङ्गली। असभ्य। २-अशिष्ट। उद्दंड। ३-भ्रष्ट उच्चारण किया हुआ।

बर्बरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बर्बर होने का भाव। जङ्गलीपन।

बर्बरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बनतुलसी। २-एक प्रकार की मक्खी। ३-एक नदी का नाम।

बर्बरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बनतुलसी। २-ईंगुर ३-पीतचन्दन।

बर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) रस्से की खिंचाई जो गांवों में कुआर सुदी चौदस की होती है।

बर्राक [वि.](अ.) १-चमकीला। जगमगाता हुआ २-तेज। तीव्र। ३-चतुर। चालाक। ४-बहुत उजला। सफेद। ५-पूर्णतया अभ्यस्त।

बर्राना [क्रि. अ.](हिं.) १-व्यर्थ बकना। २-नींद या बेहोशी में बकना।

बर्रैं+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भिड़ नामक डंक मारने वाला कीड़ा। ततैया।

बर्रो [संज्ञा पु.] (देश.) एक चिड़िया का नाम।

बर्सात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बरसात'।

बर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर की पूँछ। २-पक्षी की पूँछ। ३-मोर की पूँछ के पर। ४-पत्ता।

बर्हणा [वि.] (सं.) शत्रु का संहार करने वाला।

बर्हिण [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

बर्हिणबाज [संज्ञा पु.] (सं.) वह तीर जिसमें मोर के पंख लगे हों। मयूर पंखों से युक्तबाण।

बर्हिणवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

बर्ही [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

बर्हिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) देवता। अग्नि।

बर्हिसद [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के अधिष्ठाता देवगण

बलंद [वि.] (फा.) ऊंचा।

बलंधरा, बलन्धरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भीमसेन की स्त्री का नाम। महाभारत।

बलंबी [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जिसके फल खट्टे होवे हैं।

बल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शक्ति। सामर्थ्य। जोर। बूता। २-भार उठाने की शक्ति। ३-आश्रय। सहारा। ४-भरोसा। ५-सेना। फौज। ६-पार्श्व। पहलू। देव। बलराम। ८-वरुण नामक वृक्ष। एक राक्षस का नाम। *बल भरना*-बल या दिखाना। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऐंठन। २-फेरा। लपेट। ३-लहरदार घुमाव। लचक। झुकाव। ५-सिकुड़न। शिकन। ६-कसर। कमी। अन्तर। पन। कज। खम। ८-अधपके जौ की *बल खाना*-१-ऐंठा जाना। २-मुड़ना। कुञ्चित होना। *बल देना*-१-ऐंठना। ड़ना। २-बटना। *बल निकलना*-टेढ़ापन करना।

बलकंद, बलकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) मालाकंद।

बलकट [वि.] (?) पेशगी। अगाऊ। [संज्ञा पु.] (हि) पौधे की बाल को बिना काटे तोड़

बलकटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुसलमानी काल में फसल काटते समय वसूल की वाली किस्त।

बलकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-उबलना। खौलना। २-उमगना। आवेश में आना।

बलकर [वि.] (सं.) [स्त्री. बलकारी] बलकारक। [संज्ञा पु.] (सं.) हड्डी।

बलकल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वल्कल'।

बलकाना* [क्रि. अ.] (हि.) १-खौलाना। उबालना। २-उभारना। उत्तेजित करना।

बलकारक [वि.] (सं.) बल बढ़ाने वाला।

बलकुआ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का

बलकृत [वि.] (सं.) शक्ति या बल देने वाला।

बलक्ष [वि.] (सं.) बलयुक्त।

बलगम [संज्ञा पु.] (अ.) श्लेष्मा। कफ।

बलगर [वि.] (हि.) बलवान। मजबूत। दृढ़।

बलचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-साम्राज्य। २-शासन।

बलज [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर का द्वार। ३-अन्न का ढेर। ४-शस्य। फसल। ६-युद्ध।

बलजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। ३-एक प्रकार की जूही।

बलतंत्र, बलतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शक्ति या आदि का प्रबन्ध। सैनिक व्यवस्था।

बलदंड, बलदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक का लकड़ी का ढांचा जिस पर कसरत जाती है।

बलद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल। २-जीवक वृक्ष। ३-गृह्याग्नि का एक भेद। जिससे कर्म किये जाते हैं।

बलदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वगंधा।

बलदाऊ [संज्ञा पु.] (हि.) बलदेव। बलराम।

बलदिया [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय, भैंसों आदि का चरवाहा।

बलदिहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह कर जो गाय, भैंसे चराने के बदले में दिया जाता है। चराई।

बलदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैलों का झुण्ड या समुदाय।

बलदीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्लानि। लज्जा।

बलदेव [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम।

बलना [क्रि. अ.] (हिं.) जलना। दहकना।

बलनिग्रह [संज्ञा पु.] (हिं.) शान्ति या बल का क्षय।

बलनेह [संज्ञा पु.] (हिं.) एक संकर राग का नाम।

बलपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

बलपांडुर, बलपाण्डुर [संज्ञा पु.] (सं.) कुंद का पौधा।

बलपुच्छक [संज्ञा पु.] (सं) काक। कौआ।

बलशठक [संज्ञा पु.] (सं.) रोहू नामक मछली।

बलप्रद [वि.] (सं.) बल देने वाला। बलदायक।

बलप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बलराम की माता रोहिणी।

बलबलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ऊँट का बोलना। २-निरर्थक शब्द उच्चारण करना। व्यर्थ बकना।

बलबलाहट [क्रि. अ.] (हिं.) १-ऊँट की बोली। २-व्यर्थ बकवाद। ३-घमंड। गर्व। ४-उमंग।

बलबीज [संज्ञा पु.] (हिं.) कंघी नामक पौधे का बीज।

बलबीर* [संज्ञा पु.](हिं.) बलराम के भाई कृष्णचन्द्र।

बलभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक विषैला कीड़ा।

बलभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बलराम का एक नाम। २-लोध का पेड़। ३-नीलगाय। ४-एक पर्वत का नाम। (भागवत)।

बलभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुमारी। २-त्रयमाण नामक लता। ३-नीलगाय। ४-जंगली गाय।

बलभी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सबसे ऊपर वाले खण्ड की छत पर बनी हुई कोठरी।

बलम, बलमा* [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रियतम। पति। नायक।

बलय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वलय'।

बलराम [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम। यह रोहिणी से उत्पन्न हुए थे।

बलल [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

बलवंड* [वि.] (हिं.) बली। पराक्रम वाला।

बलवंत [वि.] (हिं.) बलवान्। बली।

बलवत् [वि.](सं.) (ऐसा विधान अथवा नियम) जिसमें प्राणों का संचार हो चुका हो, और जो अपना व्यापार, कार्य या फल आरंभ करने में समर्थ हो। इनफोर्स।

बलवत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बलवान् या शक्तिशाली होने का भाव।

बलवर्धक [वि.] (सं) बल बढ़ाने वाला। जिससे बल बढ़े।

बलवा [संज्ञा पु.] (फा.) १-दंगा। हुल्लड़। खलबली। २-विद्रोह। बगावत।

बलवाई [संज्ञा पु.] (फा.) १-बलवा करने वाले। विद्रोही। २-उपद्रवी।

बलवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. बलवती] १-बलिष्ठ। ताकतवर। २-शक्तिशाली। सामर्थ्यवान्। ३-दृढ़। मजबूत।

बलविकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम।

बलवीर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बलबीर'।

बलविन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध के लिए सैन्य की रचना।

बलव्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) सेना को पराजित करना या तितर-बितर करना।

बलव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की समाधि

बलशाली [वि.] (सं.) [स्त्री. बलशालिनी] बली। बलवान्।

बलशील [वि.] (सं.) बली। शक्तिवाला।

बलसंभव, बलसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) साठी का धान।

बलसुम [वि.] (हिं.) १-जिसमें बालू हो। २-बालुआ।

बलसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-विष्णु।

बलसेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेना। दल।

बलस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छावनी। शिविर

बलहन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-श्लेष्मा। कफ।

बलहर [वि.] (सं.) बलनाशक।

बलहीन [वि.] (सं.) बलरहित। शक्तिहीन। कमजोर।

बलांगक, बलाङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतऋतु

बला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बरियारा नामक क्षुप। २-दक्षप्रजापति की कन्या का नाम। ३-वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति। ४-पृथ्वी। ५-लक्ष्मी। ६-नाट्यशास्त्रानुसार नाटकों में छोटी बहन का संबोधन। ७-एक मंत्र अथवा विद्या का नाम जिससे युद्ध के समय योद्धा को भूख और प्यास नहीं लगती: ८-वर्तमान अवसर्पिणी में सत्रहवें अर्हत के उपदेशों का प्रचार करने वाली एक जैनदेवी का नाम। ९-देखो 'बला' [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आपत्ति। विपत्ति। आफत। २-दुःख। कष्ट। ३-भूत। प्रेत। भूत-प्रेत की बाधा। ४-रोग। व्याधि। *बला का*-घोर। अत्यधिक। गजब का। (किसी की) *बला ऐसा करे या करती है*-ऐसा नहीं करता है या करेगा। *बला पीछे लगना*-१-तंग करने वाले आदमी का साथ होना। २-बखेड़ा साथ होना। *बला पीछे लगाना*-१-बखेड़ा साथ करना। २-बखेड़े में फँसाना। *बला से*-कुछ चिंता नहीं।

बलाइ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बलाय'।

बलाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बक। बगला। २-एक राक्षस का नाम। ३-भागवत में वर्णित एक राजा जो पुरु का पुत्र था। ४-शाकपूणि ऋषि के एक शिष्य का नाम। ५-जातुकर्ण्य मुनि के एक शिष्य का नाम।

बलाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बगली। २-बगलों की पंक्ति। ३-गति के अनुसार नृत्य का एक भेद। ४-कामुकी स्त्री।

बलाकाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरिवंश के अनुसार एक राजा का नाम। २-जह्नु के वंश के एक राजा का नाम।

बलाकिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी जाति का बगला या सारस।

बलाकी [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

बलाग्र [संज्ञा पु.](सं.) १-सेनापति। २-सेना का अग्रभाग। [वि.] (सं.) बली। बलवान्।

बलाठ [संज्ञा पु.] (हिं.) मूँग।

बलाढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) माष। उड़द। उरद। [वि.] (सं.) बली। बलशाली।

बलात् [क्रि. वि.] (हिं.) बलपूर्वक। जबरदस्ती।

बलात्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-जबरदस्ती करना। किसी की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक कोई काम करना। २-किसी स्त्री का (उसकी इच्छा के विरुद्ध सतीत्व नष्ट करना। ३-अन्याय। अत्याचार। ४-ऋणी को पकड़ कर बैठाना।

बलात्कार-दायन [संज्ञा पु.] (सं.) ऋणी को मार-पीटकर रुपया वसूल करना (स्मृति)।

बलात्काराभिगम [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्त्री के सतीत्व का बलात् नाश करना। जिनविल्जत्र

बलात्कारित [वि.] (सं.) जिस पर बलात्कार करके कोई कार्य कराया जाय।

बलात्कृत [वि.](सं.) जिसके साथ जोर जुल्म या बलात्कार किया गया हो।

बलात्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथीसूँड़ नामक पौधा।

बलाधिक [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक बलशाली।

बलाधिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारत में किसी राज्य के सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी तथा राजमन्त्री।

बलाध्यक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-चमूपति। सेना का बड़ा अधिकारी। २-समर-सचिव।

बलानुज [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

बलापंचक, बलापञ्चक [संज्ञा पु.] (सं) पाँच

औषधियों का समूह। पांचों का नाम—बला, अतिबला, महाबला और राजबला।

बलामोटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषध जिसे नागदमनी भी कहते हैं।

बलाय [संज्ञा पु.] (सं.) वरुना नामक वृक्ष जिसे बन्ना भी कहते हैं।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-विपत्ति। आपत्ति। बला २-दुःख। कष्ट। ३-भूतप्रेत की बाधा। ४-व्याधि। बहुत तंग करने या पीछा न छोड़ने वाला आदमी। ५-एक रोग जिसमें रोगी की उँगली की गांठ पर फोड़ा होता है।

बलाराति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बलालक [संज्ञा पु.] (सं) जलआमला।

बलावलेप [संज्ञा पु.] (सं.) गर्व। अहंकार। दर्प।

बलाश [संज्ञा पु.] (सं.) गले का एक रोग।

बलास [संज्ञा पु.] (सं.) कफ और वायु के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक रोग, जिसमें गले और फेफड़े पर सूजन आ जाती है और सांस लेने में कष्ट होता है।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बरुआ नामक पौधा।

बलासम [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध।

बलासी [संज्ञा पु.] (हिं.) बरुआ या बन्ना नामक पेड़।

बलाह [संज्ञा पु.] (हिं.) वह घोड़ा जिसकी गरदन और दुम के बाल पीले हों।

बलाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-एक दैत्य। ३-एक नाग का नाम। ४-श्रीकृष्ण के एक घोड़े का नाम। ५-जयद्रथ के एक भाई का नाम। ६-मोथा। ७-एक पर्वत का नाम। ८-प्रलयकालीन सात बादलों में से एक का नाम। ९-बगला या सारस।

बलिंदम, बलिन्दम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देवता को चढ़ाया हुआ कोई खाद्य पदार्थ। २-मालगुजारी। राजकर। ३-उपहार। भेंट। ४-पूजा की सामग्री। ५-पंचमहायज्ञों में से चौथा। भूतयज्ञ। ६-भक्ष्य अन्न। खाने की वस्तु। ७-चढ़ावा। ८-नैवेद्य। भोग। ९-वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा गया हो। १०-प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यों का राजा था। *बलि चढ़ाना*-१-मारा जाना। २-भारी हानि सहना। *बलि जाना*-किसी देवता के नाम पर मारना। *बलि जाना*-निछावर होना। *बलि-जाऊँ या बलि*-तुम पर निछावर हूँ। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सखी। २-चमड़े की झुर्री। ३-एक प्रकार का फोड़ा। ४-अर्श का मस्सा ५-देखो 'वलि'।

बलिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

बलिकनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतियोगियों विरोधियों आदि के मुकाबले में अपनी शक्ति, प्रभुत्व, अधिकार आदि बढ़ाने या स्थापित करने की नीति। पॉवर-पालिटिक्स।

बलिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) बलिदान।

बलित※ [वि.] (हिं.) १-बलिदान पर चढ़ाया हुआ। २-देखो 'वलित'।

बलिदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देवता के नाम पर बकरे आदि पशु काटकर मारना। २-देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढ़ाना।

बलिध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बलिनंदन, बलिनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) बलिराज के पुत्र बाणासुर का नाम।

बलिपशु [संज्ञा पु.] (सं.) वह पशु जो देवता के के लिये बलि चढ़ाया जाय।

बलिपुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा।

बलिपोदकी [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी पोय।

बलिप्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) बलिदान।

बलिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोध का पेड़। २-कौवा।

बलिबंधन, बलिबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बलिभ [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्ध पुरुष। बूढ़ा आदमी।

बलिभुक्, बलिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा।

बलिभृत [वि.](सं.) १-कर देने वाला। २-अधीन

बलिभोज, बलिभोजी [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा।

बलिमंदिर, बलिमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) राजा बलि के रहने का स्थान। पाताल-लोक।

बलिया [वि.] (हिं.) बलवान्। ताकतवर।

बलिवर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांड़। बैल।

बलिवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल लोक।

बलिवैश्वदेव [संज्ञा पु.](सं.) भूतयज्ञ नामक पांच महायज्ञों में से चौथा।

बलिश [संज्ञा पु.] (सं.) मछली फँसाने की बँसी या कटिया।

बलिष्ठ [वि.] (सं.) अतिशय बलवान। अधिक बलवान [संज्ञा पु.] (सं.) उष्ट्र। ऊँट।

बलिष्णु [वि.] (सं.) अपमानित। तिरस्कृत।

बलिसद्म [संज्ञा पु.] (सं.) पाताल लोक।

बलिहन् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बलिहारना※ [क्रि. स.] (हिं.) निछावर करना। चढ़ा देना।

बलिहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को किसी का अधीन अथवा किसी पर निछावर कर देना। निछावर। कुर्बान।
बलिहारी जाना-निछावर होना। *बलिहारी लेना*-बलैया लेना। प्रेम प्रकट करना। *बलिहारी है*-क्या कहना है? (रूप, गुण आदि के लिए भी और बेढंगापन, विलक्षणता आदि देखकर व्यंग रूप में भी इसका व्यवहार होता है।

बलिहृत [वि.](सं.) १-बलि या भेंट लाने वा २-कर दाता। कर देने वाला।

बली [वि.] (सं.) बलवान। ताकतवर।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चमड़े पर की झुर्री। २-वह रेखा जो चमड़े के सिकुड़ने से पड़ी हो।

बलीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिच्छू। २-एक असुर का नाम। [वि.] ※+(हिं.) देखो 'बली'।

बलीना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली।

बलीबैठक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बैठक (कसरत)।

बलीमुख※ [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्दर।

बलीयस् [वि.] (सं.) [स्त्री. बलीयसी] अधिक बलवान। बलिष्ठ।

बलीयान [संज्ञा पु.] (सं.) गदहा। गधा।

बलीवर्द [संज्ञा पु.] (सं.) सांड़। बैल।

बलीशक [संज्ञा पु.] (सं.) आमड़े का पेड़।

बलु※ [अव्य.] देखो 'बरु'।

बलुआ [वि.] (हिं.) [स्त्री. बलुई] रेतीला। जिस में बालू मिली हो। [संज्ञा पु.] वह भूमि जिसमें बालू का अंश अधिक हो।

बलूच [संज्ञा पु.] (फा.) एक जाति जिसके नाम पर एक प्रदेश का नाम पड़ा।

बलूचिस्तान [संज्ञा पु.](फा.) पाकिस्तान के पश्चिम स्थित एक प्रदेश।

बलूची [संज्ञा पु.] (देश.) बलूचिस्तान का निवासी।

बलूत [संज्ञा पु.] (अं.] माजूफल की जाति का एक वृक्ष जो प्रायः ठंडे देशों में होता है।

बलूल [वि.] (सं.) बलयुक्त। बलशाली।

बलैया [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बला। बलाय। (किसी) की *बलैया लेना*-किसी का रोग अथवा संकट आदि अपने ऊपर लेने की कामना करना।

बलोच [संज्ञा पु.] देखो 'बलूची'।

बलोतरा [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का घोड़ा।

बलोत्कट [वि.] (सं.) बलशाली। बलवान्।

बल्कल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वल्कल'।

बल्कस [संज्ञा पु.] (सं.) वह तलछट जो मद्य उतारने में नीचे बैठ जाता है।

बल्कि [अव्य.] (फा.) १-अन्यथा। प्रत्युत। इसके विरुद्ध। २-अच्छा यह कि। बेहतर है।

बल्ब [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार की वनस्पति। २-बिजली का लट्टू जो प्रकाश देता है।

बल्य [वि.] (सं.) १-मजबूत। २-बलप्रद। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। वीर्य। २-बौद्ध भिक्षुक।

बल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अतिबला। २-गंधा। ३-प्रसारिणी। ४-बंगोनी। शिम्बी।

बल्ल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वल्ल'।

बल्लकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वल्लकी'।

बल्लभ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वल्लभ'।

बल्लम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सोंटा। डंडा। २-छड़। ३-वह रुपहला अथवा सुनहला डंडा जिसे चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं। ४-बरछा।

बल्लमटेर [संज्ञा पु.] (अं., वालंटियर) १-अपनी इच्छा से सेना में भरती होने वाला। २-स्वेच्छा सेवक।

बल्लमबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) बरात, सवारी आदि के साथ बल्लम लेकर चलने वाला।

बल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्वाला। अहीर। गोपाल। २-पाचक। रसोइया। ३-भीम का वह नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय रखा था।

बल्लवयुवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोपी।

बल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बल्ली] १-लम्बा, मोटा और बड़ा शहतीर या डंडा। २-वह डंडा जिससे केवट नाव चलाता है। डांड़। ३-गेंद मारने का लकड़ी का डंडा। बैट। ४-होली में डालने के लिए बनायी गई गोबर की गोल टिकिया।

बल्लारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

बल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बल्ले की अपेक्षा छोटा और पतला शहतीर या डंडा। २-खंभा ३-डांड़। ४-देखो 'वल्ली'।

बल्व [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार एक करण का नाम।

बल्वज [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति की मोटी तृण वाली घास।

बल्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बल्वज नामक एक घास।

बल्वल [संज्ञा पु.] (सं.) इल्वल नामक दैत्य के एक पुत्र का नाम।

बल्वलारि [संज्ञा पु.] (सं.) बलदेवजी का एकनाम

बवँड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) इधर-उधर घूमना। व्यर्थ फिरना।

बवंडर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वायु का प्रबल झोंका जो घूमता हुआ चलता है और जिसमें पड़ी हुई धूल खंभे के आकार में ऊपर की ओर उठती हुई दीख पड़ती है। २-चक्रवात। बगूला प्रचंड वायु। आंधी। तूफान।

बव [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार एक करण का नाम।

बवधूरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) बगूला। बवंडर।

बवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वमन'।

बवना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'बोना'। २-छितराना। बिखराना। [क्रि. स.] (हिं.) छितराना बिखरना। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वामना'। 'वामन'।

बवरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बौरना'।

बवादा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक जड़ी या औषध का नाम जो हल्दी के समान होती है।

बवासीर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक रोग जिसमें गुदेन्द्रिय में मस्से उत्पन्न होजाते हैं। अर्श।

बविष्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वसिष्ट'।

बशीरी [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का बारीक रेशमी वस्त्र।

बष्कय [वि.] (सं.) पूर्णवयस्क। जैसे गाय का बछड़ा।

बष्कयणी, बष्कयिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऐसी गाय जिसका बछड़ा बड़ा हो। २-वह गाय जिसके कई एक बछड़े हों।

बसंत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'वसंत'। २-एक प्रकार का पौधा जो हिमालय में सात हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है।

बसंता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक चिड़िया जिसका सारा शरीर हरे रंग का और सिर से लेकर कंठ तक का भाग लाल रंग का होता है।

बसंती [वि.] (हिं.) १-वसन्तऋतु सम्बन्धी। बसन्त का। २-खुलते हुए पीले रंग का। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खुलता हुआ पीला रंग। २-पीले रंग का कपड़ा।

बसंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) आग।

बस [वि.] (फा.) पर्याप्त। भरपूर। बहुत। काफी। *बस करो! या बस!*-ठहरो। रुको। [अव्य.] (फा.) १-पर्याप्त। काफी। यथेष्ट। २-सिर्फ। केवल। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वश'। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सवारियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने वाली बड़े आकार की मोटर गाड़ी।

बसति, बसती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बस्ती'

बसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वसन'।

बसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-जीवनयापन करने के लिए कहीं निवास करना। स्थायीरूप से स्थिर होना। रहना। २-(व्यक्ति का) निवासियों से युक्त होना। आबाद होना (स्थान का)। ३-आकर रहना। टिकना। ठहरना। डेरा करना। *घर बसना*-घर में स्त्री और बालबच्चे होना। *मन में बसना*-ध्यान में बना रहना (बहुत प्रिय होने के कारण)। [क्रि. अ.] (हिं.) १-बास या सुगन्ध से भर जाना। सुगन्ध या महक से पूर्ण हो जाना। २-बैठना। [संज्ञा पु.] १-किसी वस्तु को लपेटकर रखने का कपड़ा। बेठन। २-थैली। ३-वह कोठा जिसमें रुपये का लेनदेन होता है। ४-रुपया पैसा रखने की लम्बी जालीदार थैली। ५-बरतन। बासन। [संज्ञा पु.] (देश.) जयन्ती की जाति का एक वृक्ष विशेष।

बसनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निवास। वास।

बसर [संज्ञा पु.] (फा.) गुजर। निर्वाह।

बसवार [संज्ञा पु.] (हिं.) छौंक। बघार। [वि.] सोंधा। सुगन्धित।

बसवास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-निवास। रहना। २-रहने का ढंग। स्थिति। ३-रहायस। निवास योग्य परिस्थिति। ठिकाना।

बसह [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल।

बसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वसा'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भिड़। बर्रे।

बसात [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिसात'।

बसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बसने के लिये जगह देना। २-जनपूर्ण करना। आबाद करना। ३-टिकाना। ठहराना। ४-बैठाना। ५-रखना। *मन में बसाना*-हृदय में अङ्कित कर लेना। *घर बसाना*-विवाह करके सुखपूर्वक रहने का प्रबन्ध करना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-वश या जोर चलना। २-बसना। रहना। ३-गंध से युक्त होना। महकना। ४-दुर्गन्ध देना। बदबू करना।

बसिऔरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बासी भोजन। २-वह दिन जिसमें बासी भोजन खाया जाता है।

बसिया+ [वि.] (हिं.) देखो 'बासी'।

बसियाना [क्रि. अ.] (हिं.) बासी हो जाना।

बसिष्ठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वसिष्ठ'।

बसीकत, बसीगत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बस्ती। आबादी। २-बसने का भाव या क्रिया।

बसीकर [वि.] (हिं.) वश में करने वाला। वशीकरण।

बसीकरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वशीकरण'।

बसीठ [संज्ञा पु.] (हिं.) दूत। संदेसा या समाचार ले जाने वाला दूत।

बसीठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूत का काम। दौत्य।

बसीत [संज्ञा पु.] (अ.) जहाज में का एक यंत्र जिससे अक्षांश देखा जाता है। कमान।

बसीना* [संज्ञा पु.] (हिं.) रहायस। रहन।

बसु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वसु'।

बसुकला [संज्ञा पु.] (हिं.) तारक नामक एक वर्णवृत्त।

बसुदेव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वसुदेव'।

बसुधा [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'वसुधा'।

बसुमती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वसुमती'।

बसुला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बसूला'।

बसूला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बसूली] बढ़इयों का लकड़ी गढ़ने का एक औजार।

बसूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा बसूला.

बसेंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बसेंड़ी] पतला बांस।

बसेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ठहरने या टिकने का स्थान। २-वह स्थान जहां पर चिड़िया ठहर

करे रात बिताती है। ३–टिकने या बसने का भाव।

बसेरा करना–१–ठहरना। निवास करना। २–घर बनाना। *बसेरा लेना*–निवास करना। *बसेरा देना*–१–रहने का स्थान देना। २–आश्रय देना। [वि.](हिं.) बसने वाला। रहने वाला।

बसेरी* [वि.] (हिं.) निवासी। रहने वाला।

बसैया* [वि.] (हिं.) बसने वाला। रहने वाला।

बसोवास [संज्ञा पु.] (हिं.) रहने की जगह। निवास-स्थान।

बसौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रबड़ी विशेष, जो सुगंधित और लच्छेदार होती है।

बस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) मूर्त्ति या चित्र में मुख और छाती के ऊपर के भाग की बनावट।

बस्तकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १–शाल का पेड़। २–पीतशाल नामक वृक्ष।

बस्तगंधा, बस्तगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजगंधा। अजमोदा।

बस्तमोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा।

बस्तर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वस्त्र'।

बस्तशृंगी, बस्तशृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासींगी।

बस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियें आदि बाँधी जाती हैं। बेठन। बसना। २-इस प्रकार बाँधी हुई पुस्तकें या कागज आदि। *बस्ता बाँधना*–पुस्तक, कागज-पत्र आदि समेटकर उठने की तैयारी करना।

बस्तार [संज्ञा पु.] (फा.) एक में बँधी हुई अनेक वस्तुओं का समूह। पुलिंदा। मुट्ठा।

बस्ति [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वस्ति'।

बस्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह स्थान जहाँ कुछ लोग घर बनाकर रहते हों। २–बहुत से घरों का समूह जिनमें लोग बसते हैं। जनपद

बस्तु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वस्तु'।

बस्त्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वस्त्र'।

बस्य [वि.] (हिं.) देखो 'वस्य'।

बस्साना [क्रि. अ.] (हिं.) दुर्गंध या बदबू।

बहँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी बहँगी।

बहँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बोझ ढोने के लिए वह ढाँचा जिसके दोनों सिरों पर छींके लटके रहते हैं। काँवर।

बहकना [क्रि. अ.] (हिं.) १–भूल से ठीक राह से दूसरी ओर जा पड़ना। भटकना। मार्ग भ्रष्ट होना। २–ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना। चूकना। ३–किसी के धोखे में आ जाना। ४–आपे में न रहना। किसी प्रकार के मद या आवेश में चूर होना। ५–किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना (बच्चों के लिए)।

बहक कर बोलना–१–मद में चूर होकर बोलना २–जोश में आकर बढ़-बढ़ कर बोलना। *बहकी-बहकी बातें करना*–पागलों के समान या बढ़ीचढ़ी बातें करना।

बहकाना [क्रि. अ.] (हिं.) १–ठीक राह से हटा कर धोखे से अन्य ओर ले जाना। २–लक्ष्य से हटाकर इधर-उधर करना। ३–भुलावा देना। ४–बहलाना (बच्चों को)।

बहकावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी बहने की नली

बहत्तर [वि.] (हिं.) सत्तर और दो।

बहत्तरवाँ [वि.](हिं.) [स्त्री. बहत्तरवीं] इकहत्तर के बाद वाला।

बहदुरा [संज्ञा पु·] (देश.) एक प्रकार का कीड़ा जो धान या चने के पत्ते में लगकर काट देता है।

बहन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अपनी मां से उत्पन्न कन्या। २–चाचा, मामा, बूआ आदि की लड़की।

बहना [क्रि. अ.] (हिं.) १–प्रवाहित होना। पानी या पानी के समान अन्य द्रव पदार्थों का नीचे की ओर चलना। २–पानी की धार में पड़कर जाना। ३–निरन्तर बूंद या धार के रूप में निकलकर चलना। ४–वायु का संचारित होना। ५–इधर-उधर हो जाना। कहीं चला जाना। ६–अपने या ठीक लक्ष्य से डिगना। ७–फिसल जाना। ८–कुमार्गी या आवारा होना। ९–गर्भपात होना (चौपायों के लिए)। १०–(रुपया आदि) नष्ट होना। ११-सस्ता या बहुतायत से मिलना। १२–जल्दी-जल्दी अंडे देना। १३–पतंग का पेटा छोड़ना १४–लाद कर ले चलना। वहन करना। १५–धारण करना। १६–निर्वाह करना। निवाह करना। १७–उठना। चलना।

बहती गंगा में हाथ धोना–किसी अवसर से सहज में लाभ उठाना। *बह चलना*–पानी के समान पतला हो जाना। *बहता हुआ जोड़ा*–बहुत अंडे देने वाला (कबूतर का) जोड़ा।

बहनापा [संज्ञा पु.] (हिं.) बहिन का माना हुआ सम्बन्ध। भगिनी के समान आत्मीयता।

बहनी* [संज्ञा स्त्री.] १–आग। २–बहिन। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कोल्हू में से रस लेकर रखने वाली ठिलिया।

बहनु* [संज्ञा पु.] (हिं.) सवारी।

बहमेली [संज्ञा पु.](हिं.) वह जिसके साथ बहनापा हो।

बहनोई [संज्ञा पु.] (हिं.) बहिन का पति।

बहनौता [संज्ञा पु.] (हिं.) बहिन का पुत्र।

बहनौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बहिन की ससुराल।

बहरा [वि.](हिं.) [स्त्री. बहरी] कान से न सुनने या कम सुनने वाला।

बहरा पत्थर, या वज्र बहरा–अतिशय कम या बहुत अधिक बहरा।

बहराना [क्रि. स.] (हिं.) १–बहलाना। २–बहकाना। फुसलाना। +३–देखो 'बहरियाना'।

बहरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वल्लभ-सम्प्रदाय के मन्दिरों के छोटे कर्मचारी जो प्रायः मन्दिरों के बाहर ही रहते हैं। +[वि.](हिं.) बाहर का। बाहर-सम्बन्धी।

बहरियाना* [क्रि. स.](हिं.) १–बाहर करना। २–अलग या जुदा करना। ३–किनारे से हटा नाव की मझधार की ओर ले जाना। [क्रि. अ.] (हिं.) १–बाहर की ओर होना। २–अलग या जुदा होना। ३–किनारे से नाव का हटकर मझधार की ओर जाना।

बहरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक शिकारी चिड़िया। [वि.] बाहर का। बाहरी।

बहरी अलंग या ओर–नगर का बाहरी भाग

बहरू [संज्ञा पु.] (देश.) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुन्दर, मजबूत और चमकदार होती है।

बहरूप [संज्ञा पु.] (हिं.) गोरखपुर, चम्पारन आदि पूरबी जिलों में बसने वाली एक

बहरूपिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बहुरूपिया'।

बहरो* [वि.] (हिं.) देखो 'बहरा'।

बहल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बहली'।

बहलना [क्रि. अ.] (हिं.) १–दुःख अथवा चिन्ता की बात भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना। २–मनोरंजन होना। ३–भुलावे में आना।

बहलाना [क्रि. स.] (हिं.) १–इधर-उधर की बातें करके चिंतित या दुःखी व्यक्ति का मन दूसरी ओर ले जाना। २–चित्त प्रसन्न करना। बहकाना। भुलावा देना।

बहलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) मनोरंजन। बहलने की क्रिया या भाव।

बहलिया [संज्ञा पु.] देखो 'बहेलिया'।

बहली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहल्ला* [संज्ञा पु.] (हिं.) आनन्द।

बहल्ली [संज्ञा पु.] (?) कुश्ती का एक दाँव।

बहस [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–वाद। दलील। २–विवाद। झगड़ा। ३–होड़। बाजी।

बहसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–बहस करना। विवाद करना। २–होड़ लगाना। बांधना।

बहा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी बहने का वा छोटी नहर।

बहाउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बहाव'।

बहादुर [वि.] (फा.) १–उत्साही। साहसी। शूरवीर। पराक्रमी।

बहादुराना [वि.] (फा.) बहादुरों का सा। पूर्ण।

वहादुरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वीरता। शूरता।

वहाना [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रवाहित करना। २-पानी की धारा में डालना। ३-(हवा) चलाना। ४-व्यर्थ व्यय करना। गँवाना। ५-सस्ता वेचना। ६-निरंतर बूंद या धार के रूप में छोड़ना या निकालना। ढालना। ७-फेंकना यां ढालना। *फोड़ा वहाना*-फोड़े में इस प्रकार छेद कर देना जिससे उसमें का मवाद निकल जाय। [संज्ञा पु.] (फा.) १-अपना वचाव करने अथवा मतलब सिद्ध करने के लिए कही हुई झूठी बात। मिस। हीला। २-नाम-मात्र का कारण। तुच्छ। निमित्त।

वहार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वसंतऋतु। २-यौवन का विकास। जवानी का रंग। ३-शोभा। सौंदर्य। रमणीयता। ४-सुहावनापन। ५-विकास। प्रफुल्लता। ६-नारंगी का फूल। ७-एक रागिनी का नाम। ८-कौतुक। तमाशा

वहारगुर्जरी [संज्ञा स्त्री] (फा.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

वहारनशाख [संज्ञा पु.] (फा.) एक राग का नाम

वहारना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'वुहारना'।

वहारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वुहारी'।

वहाल [वि.] (फा.) १-पूर्ववत् स्थित। ज्यों का त्यों। २-भला-चंगा। स्वस्थ। ३-प्रसन्न। खुश। *नौकरी पर वहाल करना*-जिस स्थान पर नौकर था उसी स्थान पर फिर नियुक्त करना।

वहाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) फिर उसी स्थान पर नियुक्त होना। पुनर्नियुक्ति। (हिं.) झांसा-पट्टी या धोखा देने वाली वात।

वहाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वहने की क्रिया या भाव। प्रवाह। २-वहती हुई धारा।

वहिः [अव्य.] (सं.) वाहर।

वहिःशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) विदेश से या वाहर से आने वाले माल पर लगने वाली चुङ्गी। आगमशुल्क। कस्टम ड्यूटी।

वहिअर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री।

वहिक्रम* [संज्ञा पु.] (हिं.) अवस्था। उम्र।

वहित्र [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव। जहाज।

वहिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वहन। भगिनी।

वहिनापा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वहनापा'।

वहियाँ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वांह'।

वहिरंग [वि.] (सं.) १-वाहर वाला। वाहरी। अन्तरंग का उलटा। २-जो गुट या मण्डली के भीतर न हो।

वहिरा*+ [वि.] (हिं.) वहरा।

वहिरात* [अव्य.] (हिं.) वाहर।

वहिराना+ [क्रि. स.] (हिं.) वाहर कर देना। निकाल देना। [क्रि. अ.] (हिं.) वाहर होना।

वहिर्गत [वि.] (सं.) १-वाहर आया या निकला हुआ। २-जो वाहर हो। ३-अलग। जुदा।

वहिर्जगत [संज्ञा पु.] (सं.) वाहरी अथवा दृश्य-जगत्।

वहिर्जानु [अव्य.] (सं.) दोनों हाथों को घुटनों के वाहर किये हुए।

वहिर्द्वार [संज्ञा पु.] (सं.) वाहरी दरवाजा। तोरण

वहिर्ध्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

वहिर्निगमन [संज्ञा पु.] (सं.) वाहर जाना।

वहिर्भूत [वि.] (सं.) १-जो वाहर से आया हो। २-जो वाहर हो। ३-अलग। जुदा।

वहिर्भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वस्ती से वाहर वाली भूमि। २-झाड़े-जंगल जाने की भूमि।

वहिर्मुख [वि.] (सं.) विमुख। विरुद्ध। विपरीत

वहिर्रति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रति के दो भेदों में से एक। (वाहरी रति अथवा समागम जिसके अन्तर्गत, आलिंगन, चुम्बन, स्पर्श, मर्दन, नखदान, रददान तथा अधरपान हैं)।

वहिर्लापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द उसकी पद योजना में नहीं रहता। अंतर्लापिका का उलटा।

वहिर्वाणिज्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश का अन्य देशों के साथ होने वाला वाणिज्य या व्यापार। एक्सटर्नल-ट्रेड।

वहिर्वासा [संज्ञा पु.] (हिं.) वाहरी वस्त्र। कौपीन के ऊपर पहनने का कपड़ा।

वहिला+ [वि.] (हिं.) वंध्या। वांझ।

वहिश्त [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानों के मतानुसार, 'स्वर्ग'।

वहिष्क [वि.] (सं.) जो वाहर हो।

वहिष्करण [संज्ञा पु.] (सं.) वाहर करना।

वहिष्कार [संज्ञा पु.](सं.) १-वाहर करना। निकालना। २-हटाना। दूर करना। अलग करना। सव प्रकार के सम्वन्ध छोड़ना।

वहिष्कृत [वि.](सं.) १-वाहर किया या निकाला हुआ। २-छोड़ा या त्यागा हुआ। अलग किया हुआ।

वही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिसाव-किताव लिखने की पुस्तक।

वही खाता-हिसाव-किताव की पुस्तक। *वही पर चढ़ाना यां टकना*-हिसाव की पुस्तक में लिखा जाना। *वही पर चढ़ाना या टाँकना*-वही पर लिखना।

वहीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भीड़। जनसमूह। २-सेना के साथ-साथ चलने वाला नौकर-चाकर, दूकानदार आदि। सेना की सामग्री। * [अव्यय] (हिं.) वाहर।

वहीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वहेड़ा'।

वहु [वि.] (सं.) १-विपुल। प्रचुर। २-वहुत से। अनेक। ३-सम्पन्न। वहुतायत।

वहुकंटक, वहुकण्टक [संज्ञा पु.](सं.) १-जवासा २-हिंताल वृत्त।

वहुकंटा, वहुकण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंटकारी

वहुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-केकड़ा। २-आक। मदार। ३-पपीहा। चातक।

वहुकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घृतकुमारी।

वहुकर [संज्ञा पु.](सं.) १-झाड़ू देने वाला। २-ऊँट।

वहुकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्धि। वढ़ती।

वहुकरणात्मक [वि.] (सं.) वृद्धि या वढ़ती करने वाली।

वहुकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झाड़ू। वुहारी।

वहुकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

वहुक-शारीरक [संज्ञा पु.] (सं.) वह शारीरक जिसमें वहुत से लोग हों अथवा जिसका सम्वन्ध वहुत से लोगों से हो। *कारपोरेशन एग्रिगेट*।

वहुकालीन [वि.] (सं.) पुरातन। पुराना।

वहुकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

वहुक्षम [वि.] (सं.) अधिक सहने वाला।

वहुगंध, वहुगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-दारचीनी। २-कुंदरू। ३-पीत चन्दन।

वहुगंधा, वहुगन्धा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-यूथिकालता। २-चम्पा की कली। ३-स्याह जीरा।

वहुगव [संज्ञा पु.] (सं.) भागवत में वर्णित एक पुरुवंशीय राजा का नाम।

वहुगुड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कंटकारी। २-भूम्यामलकी।

वहुगुण [वि.] (सं.) अनेक गुणों से युक्त। अत्यधिक गुण वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के गंधर्व।

वहुगुना [संज्ञा पु.] (हिं.) चौड़े मुँह का एक गहरा वरतन जिसके पेंदे और मुँह का घेरा वरावर होता हैं। यह कई कामों में आता है।

वहुग्रंथि [संज्ञा पु.] (सं.) झाऊ का पेड़।

वहुचारी [वि.](सं.) अनेक स्थानों में घूमने वाला

वहुचित्र [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का।

वहुजन-तंत्र, वहुजन-तन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) अनेक मनुष्यों से शासित राज्य। अनेक सत्ता की राजपद्धति। *पॉलइकरीसी*।

वहुजल्प [वि.](सं.) वहुत वोलने वाला। वातूनी। वकवादी।

वहुजात [वि.] (सं.) तेज चलने वाला।

वहुज्ञ [वि.] (सं.) वहुत सी वातें जानने वाला। जानकर।

वहुटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वांह पर पहनने का एक गहना।

वहुत [वि.] (हिं.) १-गिनती में अधिक। अनेक। २-मात्रा अथवा परिमाण में अधिक। ३-यथेष्ट। काफी। *वहुत अच्छा*-ठीक है। ऐसा ही होगा। *वहुत कुछ*-यथेष्ट। *वहुत खूव*-

अच्छा। बहुत करके-१-अधिकतर। ज्यादातर। प्राय.। २-संभव है। [क्रि. वि] (हिं.) खूब। ज्यादा।

बहुतक* [वि] (हिं) बहुत से। बहुतेरे।

बहुतर [वि] (सं.) अनेक। प्रभूत।

बहुताँ [वि] (हिं) १-बहुत। २-बनियों की तोल में तीसरी का नाम।

बहुता [संज्ञा स्त्री.] (सं) बहुत्व। अधिकता।

बहुताइत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बहुतायत'।

बहुताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।

बहुतात, बहुतायत [संज्ञा स्त्री] (हिं.) अधिकता। ज्यादती।

बहुतिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकमाची।

बहुतृण [संज्ञा पु.] (सं.) मूँज नामक घास।

बहुतेरा [वि] (हिं.) [स्त्री बहुतेरी] बहुत सा। अधिक। [क्रि. स] अनेक प्रकार से।

बहुतेरे [वि.] (हिं) संख्या में अधिक। अनेक।

बहुत्व [संज्ञा पु.] (सं) अधिकता। आधिक्य।

बहुत्वक् [संज्ञा पु.] (सं) भोजपत्र।

बहुत्वच् [संज्ञा पु.] (सं) भोजपत्र।

बहुदर्शिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत सी बातों का ज्ञान।

बहुदर्शी [संज्ञा पु] (हिं.) जिसने संसार या व्यवहार की बहुत सी बातें देखी हों। बहुज्ञ

बहुदल [संज्ञा पु.] (सं) चेना नामक अन्न।

बहुदला [संज्ञा स्त्री] (सं.) चेंच नामक साग।

बहुदुग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ। [वि.] बहुत दूध देने वाली।

बहुदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थूहर का पेड़।

बहुधंधी [वि.] (हिं.) जो बहुत से काम अपने हाथ में ले लेता हो।

बहुधन [वि] (सं.) धनी। अमीर।

बहुधनेश्वर [संज्ञा पु.] (सं) कुबेर।

बहुधर [संज्ञा पु.] (सं) शिव। महादेव।

बहुधा [क्रि. वि] (सं) प्राय। अकसर।

बहुधात्मक [वि] (सं) स्वयम्भू।

बहुधान्य [वि] (सं.) जिसके पास बहुत अन्न हो।

[संज्ञा पु] साठ सम्वत्सरों में से बारहवां।

बहुधार [संज्ञा पु.] (सं) १-इन्द्र का वज्र। २-एक प्रकार का हीरा।

बहुध्वज [संज्ञा पु] (सं.) शूकर। सूअर।

बहुनाद [संज्ञा पु] (सं) शंख।

बहुपत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-अभ्रक। अबरक। २-प्याज। पलाडु। ३-मुचकुन्द का पेड़। ४-पलाश।

बहुपत्रा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-तरुणी पुष्पवृक्ष। २-दूधिया घास। ३-शिवलिंगनीलता। ४-घीकुवार। ५-भूआंवला। ६-जतुकालता। ७-वृहती।

बहुपत्रिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-भूम्यामलकी। २-महाशतावरी। ३-मेथी। ४-वच।

बहुपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-तुलसी का पौधा २-जतुका। ३-भूम्यामलकी। ४-लिंगिनी। ५-वृहती। दूधिया घास।

बहुपत्नीक [वि](सं.) जिसके अनेक स्त्रियां हों।

बहुपद [संज्ञा पु.] (सं) वटवृक्ष। बड़ का पेड़।

बहुपशु [वि.] (सं.) जिसके बहुत से पशु हों।

बहुपाद [वि.](सं.) अधिक पैरों वाला।

[संज्ञा पु.] वटवृक्ष। बरगद का पेड़।

बहुपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांचवें प्रजापति का नाम। २-सप्तपर्ण।

बहुपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.](सं) स्कन्द की अनुचरी

बहुपुष्प [संज्ञा पु.](सं.) १-पारिभद्र वृक्ष। फरहद का पेड़। २-नीम का पेड़।

बहुपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धाय का पेड़।

बहुप्रज [वि.] अनेक संतानों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूकर। मूँज घास।

बहुप्रद [वि.) अतिशय उदार। बहुत देने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

बहुप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनेक बच्चों वाली माता।

बहुप्रेयसी [वि.](सं.) जिसके बहुत से प्रेमी हों। अनेक प्रेमियों वाली।

बहुफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कदम्बवृक्ष। २-बनभंटा। विकंकत। कटाई।

बहुफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भूम्यामलकी। २-खीरा। ३-क्षविका। ४-छोटा करेला। जंगली करेला। ५-काकमाची।

बहुफली [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्रकार की जंगली गाजर।

बहुफेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीले दूध वाला थूहर। २-शंखाहुली।

बहुबल [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

बहुबल्क [संज्ञा पु.] (सं.) पियासाल।

बहुबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

बहुबीज [संज्ञा पु.] (सं) १-बिजौरा नीबू। २-शरीफा। ३-बीज वाला केला।

बहुभाषज्ञ [वि.](सं.) बहुत सी भाषाओं का जानकार।

बहुभाषी [वि.] (सं.) बहुत बोलने वाला। बकवादी।

बहुभुज [संज्ञा पु.] (सं.) वह भुज या क्षेत्र जिसमें बहुत से किनारे हों। पॉलिगन।

बहुभुजक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) रेखागणित में वह क्षेत्र जो चार अधिक रेखाओं से घिरा हो।

बहुभुजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्गा।

बहुमंजरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) तुलसी का पौधा।

बहुमत [संज्ञा पु.] (सं) १-बहुत से अलग-अलग मत। २-बहुत से मिलकर एक राय। मेजॉरिटी।

बहुमल [संज्ञा पु.] (सं) सीसा नामक

बहुमान [वि.] (सं) अधिक माननीय। [संज्ञा पु.] (सं) वह पुरस्कार जो छोटे को मिले।

बहुमान्य [वि.] (सं.) जिसका बहुत से आदर करते हों। सम्माननीय। पूज्य।

बहुमाय [वि.](सं.) मायावी। छली। कपटी।

बहुमूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें अधिक और बार-बार पिशाब आता है।

बहुमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनकपास विष्णु। ३-बहुरूपिया।

बहुमूल [संज्ञा पु] (सं) १-सरकंडा। २- ३-सहिजन। सैंजना।

बहुमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) खस।

बहुमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावरी।

बहुमूल्य [वि.] (सं) अधिक मूल्य का।

बहुयाजी [वि.] (सं.) बहुत से यज्ञ करने

बहुरंगा [वि.] (हिं.) १-कई मिले-जुले वाला। २-बहुरूपधारी। ३-मनमौजी।

बहुरंगी+ [वि.] (हिं.) १-बहुरूपिया। २- रंग दिखाने वाला। ३-अनेक प्रकार के दिखाने वाला।

बहुरंध्रिका, बहुरन्ध्रिका [संज्ञा स्त्री] मेदा।

बहुरना+ [क्रि. अ.] (हिं) १-लौटना। आना। २-फिर हाथ में आना।

बहुराशिक [संज्ञा पु] (सं) गणित में त्रैराशिक द्वारा दूसरे त्रयराशिक राशि जानने की विधि।

बहुरि* [क्रि. वि] (हिं.) १-पुन.। फिर। उपरांत। पीछे। अनन्तर।

बहुरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नई बहू।

बहुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) भुना हुआ अन्न। चर्वण। चबेना।

बहुरूप [वि.] (सं.) १-अनेक रूप धारण वाला। २-चितकबरा। [संज्ञा पु] विष्णु। २-शिव। ३-कामदेव। ५-ब्रह्मा। ६-केश। ७-एक बुद्ध का एक वर्ष का नाम। ९-तांडव नृत्य भेद। १०-भागवत के अनुसार पुत्र का नाम।

बहुरूपक [संज्ञा पु.] (सं) एक जन्तु।

बहुरूपा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-दुर्गा। २- सात जिह्वाओं में से एक।

बहुरूपिया [वि.] (हिं.) १-नाना प्रकार धारण करने वाला। २-नकल बनाने [संज्ञा पु] (हिं) नाना प्रकार के रूप

रोजी कमाने वाला व्यक्ति।

बहुरूपी [वि.](हिं.) अनेक रूप धारण करने वाला [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुरूपिया।

बहुरेतस् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

बहुरोमा [संज्ञा पु.] (सं.) १–मेढ़ा। मेष। २–लोमश। ३–बन्दर। [वि.] (सं.) जिसके शरीर पर बहुत से रोवें हों।

बहुल [वि.] (सं.) अधिक। ज्यादा। [संज्ञा पु.] (सं.) १–आकाश। २–सफेद मिर्च। ३–कृष्णवर्ण। ४–कृष्णपक्ष। ५–अग्नि। ६–महादेव।

बहुलगंधा, बहुलगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची।

बहुलच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) लाल संहिजन।

बहुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–बहुतायत। अधिकता। बाहुल्य। २–फालतूपन। व्यर्थता।

बहुला [सिंज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गाय। २–नील का पौधा। ३–कलिका पुराण में वर्णित एक देवी का नाम। ४–इलायची। ५–एक नदी का नाम ६–कार्तिकानक्षत्र। ७–एक गाय जिसके सत्य-व्रत की कथा पुराणों में है और जिसके नाम पर लोग भादों बदी चौथ और माघ बदी चौथ के व्रत करते हैं।

बहुलाचौथ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादोंबदी चौथ। इस दिन व्रत किया जाता है।

बहुलानुरक्त (सैन्य) [वि.] (सं.) प्रजा से प्रेम रखने वाली (सेना)।

बहुलावन [संज्ञा पु.] (सं.) वृंदावन के चौरासी वनों में से एक का नाम।

बहुलाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) भागवत में वर्णित मिथिला के एक राजा का नाम।

बहुलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सप्तर्षिमंडल।

बहुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इलायची।

बहुवचन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह शब्द जो एक से अधिक वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का वाचक होता है।

बहुवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १–अनेक वर्ण। २–अनेक जाति।

बहुवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आंखों का एक रोग।

बहुवर्षी [वि.] (सं.) (पेड़ या पौधा) जो एक ही वर्ष में नष्ट न हो जाय- प्रत्युत बहुत वर्षों तक हरा-भरा बना रहे। पेरीनियल।

बहुवादी [वि.] (सं.) बहुत बोलने वाला।

बहुवार [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक वार।

बहुवारक [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़े का वृक्ष।

बहुवार्षिक [वि.] (सं.) कई वर्षों तक होने वाला

बहुविघ्न [वि.] (सं.) अनेक विघ्न या बाधायें डालने वाला।

बहुविद्, बहुविद [वि.] (सं.) बहुत सी बातें जानने वाला।

बहुविध [वि] (सं.) अनेक प्रकार का।

बहुविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुरुष का कई स्त्रियों से या एक स्त्री का कई पुरुषों से विवाह करना।

बहुविस्तीर्ण [वि.] (सं.) बहुत लम्बा-चौड़ा।

बहुवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–बहेड़ा। २–सेमर का पेड़। ३–मरुवा।

बहुव्ययी [वि.] (सं.) बहुत खर्चीला।

बहुव्रीहि [संज्ञा पु.](सं.) ६ प्रकार के समासों में से एक। इसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुशः [वि.] (सं.) बहुत अधिक। [कि वि.] १–प्रायः। २–बहुत प्रकार से।

बहुशक्ति [वि.] (सं.) अत्यधिक शक्तिशाली। शक्तिसम्पन्न।

बहुशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) गौरैया चिड़िया। [वि] जिसके अनेक शत्रु हों।

बहुशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) लाल खैर।

बहुशाख [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर।

बहुशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पली।

बहुशिर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बहुशृंग, बहुशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

बहुश्रुत [वि.] (सं.) जिसमें बहुत सी बातें सुनी हों। अनेक विषयों का जानने वाला। चतुर।

बहुसंख्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १–गिनती में अधिक २–जो दूसरों की अपेक्षा अथवा तुलना में, गिनती में अधिक हों।

बहुसार [संज्ञा पु.] (सं.) खदिर। खैर (वृक्ष)।

बहुसुत [वि.] (सं.) जिसके बहुत संतान हों।

बहुसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूकरी। मादा सूअर।

बहुस्राव [वि.] (सं.) शल्लकीवृक्ष। सलई।

बहुस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) १–उल्लू। २–शङ्ख।

बहूँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) बांह पर पहनने का एक आभूषण।

बहू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–लड़के की स्त्री। पुत्र-वधु। २–पत्नी। स्त्री। ३–दुलहिन।

बहूकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बहुकरी'।

बहूदक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का संन्यासी।

बहूदन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रचुर अन्न।

बहूपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्थालङ्कार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायँ।

बहेंगवा [संज्ञा पु.] (हिं.) भुजङ्गा या करचोटिया नामक एक पक्षी।

[वि.] (हिं.) १–घुमक्कड़। २–आवारा। बहेतू।

बहेंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तालों या गड्ढों में बहकर जमी हुई काली मिट्टी।

बहेंगवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों की गुदा के पास के नीचे की मांसग्रंथि।

बहेचा [संज्ञा पु.] (देश.) घड़े का ढांचा जो चाक पर से उतारा जाता है।

बहेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) अर्जुन वृक्ष की जाति का एक बड़ा और ऊँचा वृक्ष जिसके फल दवा के काम में आते हैं। तोलफल। तिल पुष्पक कर्षफल।

बहेतू [वि.] (हिं.) १–बहा-बहा फिरने वाला इधर-उधर मारा-मारा फिरने वाला। २–आवारा। व्यर्थ घूमने वाला।

बहेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बहेड़ा'।

बहेरी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बहाना। हीला।

बहेला [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

बहेलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करने वाला। चिड़ीमार। व्याध।

बहोर* [संज्ञा पु.] (हिं.) फेरा। वापसी। पलटा [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बहोरि'।

बहोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–लौटाना। वापस करना। २–घर की ओर (चौपायों को) हांकना

बहोरि* [अव्य.] (हिं.) पुनः। फिर।

बह्वक्षर [वि.] (सं.) अनेक अक्षरों का पद।

बह्वाशी [वि.] (सं.) बहुत भोजन करने वाला।

बाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गाय के बोलने का शब्द २–बार। दफा। बेर।

बाँक [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बांह पर पहनने का एक आभूषण। २–पैरों में पहनने का एक गहना। ३–कमान। धनुष। ४–एक प्रकार की छुरी। ५–एक प्रकार की कसरत। ६–हाथ में पहनने की एक प्रकार की चौड़ी चूड़ी। ७–नदी का मोड़। ८–टेढ़ापन। ९–गन्ना छीलने का सरोते की तरह का औजार। १०–लोहे का शिकजा जिससे लोहार लोहे की चीजे जकड़ कर रेतता है।

* [वि.](हिं.) १–बाँका। तिरछा। २–टेढ़ा। घुमावदार। [संज्ञा पु.] (?) जहाज के ढाँचे में का खड़े बल लगा हुआ शहतीर। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

बाँकड़ा+ [वि.] (हिं.) वीर। साहसी। बहादुर। [संज्ञा पु.] (हिं.) धुरे के नीचे आड़े बल लगी हुई लकड़ी जो छकड़े में लगी होती है।

बाँकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बादले या कलाबत्तू का एक प्रकार का फीता।

बाँकडोरी [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का अस्त्र।

बाँकनल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुनार का पीतल की बनी हुई एक छोटी फुँकनी जिससे फूँक मार कर टाँका लगाते हैं।

बाँकना+ [क्रि. स.](हिं.) टेढ़ा करना। * [क्रि. अ.] टेढ़ा होना।

बाँकपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-टेढ़ापन । तिरछापन । २-अलबेलापन । ३-बनावट । सजावट ४-छवि । शोभा ।

बाँका [वि.] (हिं.) १-टेढ़ा । तिरछा । २-अत्यन्त साहसी । वीर । बहादुर । ३-सुन्दर और बनाठना । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का लोहे का हथियार । २-धान की फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा । ३-वह बालक या युवा पुरुष जो सुन्दर घोड़े पर बैठाकर जलूस या बरात के साथ निकाला जाता है ।

बाँकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) फूँककर बजाया जानेवाला ताँबे या पीतल का बाजा जो आकार में कुछ टेढ़ा होता है । इसे नरसिंहा भी कहते हैं ।

बाँकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लोहे का बना एक औजार जिससे बाँस की फट्टियां काटी, छीली या ठीक की जाती हैं । २-भूमिकर । लगान ३-देखो 'बाकी' ।

बाँकुड़ी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाँकडी' ।

बाँकुर, बाँकुरा* [वि.] (हिं.) १-बाँका । टेढ़ा । २-पैना । पतली धार का । चतुर । कुशल ।

बाँग [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शब्द । आवाज । २-पुकार । चिल्लाहट । ३-लोगों को निमाज के समय मसजिद में बुलाने के लिए मुल्ला की पुकार । अजान । ४-मुरगे का सबेरे बोलना ।

बाँगड़ [संज्ञा पु.] (देश.) हिसार रोहतक तथा करनाल और इसके आस-पास का प्रदेश । हरियाना ।

बाँगड़ू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बागड़ प्रदेश की बोली या भाषा । [वि.] (हिं.) १-मूर्ख । बेवकूफ । २-उजड्ड । जंगली ।

बाँगर [संज्ञा पु.] (देश.) १-फड़ के ऊपर लगाकर फड़ के साथ बाँधने का वह बाँस जो छकड़ा गाड़ी में लगता है । २-वह भूमि जो कुछ ऊँचे पर अवस्थित हो और जो नदी झील आदि के बढ़ने पर भी पानी में न डूबे । ३-एक प्रकार के बैल जो अवध में पाये जाते हैं ।

बाँगा [संज्ञा पु.] (देश.) बिना ओटी हुई रूई जिसमें बिनौले भी हों । कपास ।

बाँगुर [संज्ञा पु.] (देश.) पशु या पक्षियों को फँसाने का जाल । फंदा ।

बाँचना [क्रि. स.](हिं.) १-पढ़ना । २-बाकी रहना बच रहना । ३-बचाना । छोड़ देना ।

बाँछना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इच्छा । कामना । अभिलाषा । आकांक्षा *[क्रि. स.] (हिं.) १-इच्छा करना । चाहना । २-चुनना । छाँटना

बाँछा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इच्छा । अभिलाषा । आकांक्षा ।

बाँछित* [वि.] (हिं.) जिसकी इच्छा या अभिलाषा की जाय । अभिलषित ।

बाँछी* [संज्ञा पु.] (हिं.) चाहने वाला । अभिलाषा करने वाला ।

बाँझ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्त्री या मादा पशु जिके सन्तान होती ही न हो । बंध्या ।

बाँझककोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बन ककोड़ा ।

बाँझपन, बाँझपना [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँझ होने का भाव । वंध्यात्व ।

बाँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाँटने की क्रिया या भाव २-भाग । हिस्सा । ३-घास या पयाल का बना हुआ मोटा रस्सा । ४-देखो 'बाट' । *बाँटे पड़ना*-हिस्से में आना ।
[संज्ञा पु.](देश.) १-गौओं आदि के लिये एक प्रकार का भोजन । २-डेढ़र नामक घास ।

बाँटचूँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भाग । हिस्सा । २-देना-दिलाना । देन-लेन ।

बाँटना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु के कई भाग करके अलग-अलग रखना । २-हिस्सा लगाना । विभाग करना । ३-वितरण करना । थोड़ा-थोड़ा करके सब को देना ।

बाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाँटने की क्रिया या भाव । २-भाग । हिस्सा ।

बाँड़ [संज्ञा पु.] (देश.) दो नदियों के संगम के बीच की भूमि । [वि.] देखो 'बाँड़ा' ।

बाँड़ा [संज्ञा पु.](देश.) १-वह पशु जिसके पूंछ न हो । २-परिवारहीन पुरुष । ३-तोता । [वि.] बिना पूंछ का । जिसके दुम न हो ।

बाँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-बिना पूंछ की गाय । २-कोई भी बिना पूंछ का मादा पशु । ३-छोटी लाठी । छड़ी ।

बाँड़ीबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लाठीबाज । २-उपद्रवी । शरारती ।

बाँद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बाँदी] सेवक । दास ।

बाँदपन, बाँदपना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेवकाई नौकरी । चाकरी । २-गुलामी ।

बाँदर [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्दर ।

बाँदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उगकर पुष्ट होती है । २-किसी वृक्ष पर उगी हुई दूसरी वनस्पति ।

बाँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दासी । लौंडी । *बाँदी का बेटा या जना*-१-परम अधीन या आज्ञाकारी । २-तुच्छ । हीन । ३-वर्णसंकर । दोगला ।

बाँदू [संज्ञा पु.] (हिं.) कैदी । बंधुवा ।

बाँध [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नदी अथवा जलाशय का जल रोकने के लिए उसके किनारे पर चूने पत्थर या मिट्टी आदि का बना हुआ धुस्स । पुश्ता । बन्द । २-वह बन्धन जो किसी बात को रोकने अथवा उसके आगे बढ़ने पर नियंत्रण रखने के लिए लगाया जाता हो । बार ।

बाँधना [क्रि. स.] (हिं.) १-कसने अथवा
के लिये घेरकर रोकना । २-रस्सी,
आदि में लपेटकर गांठ लगाना ।
करना । पकड़कर बन्द करना ।
निश्चय आदि द्वारा किसी सीमा में
पाबंद करना । ५-मंत्र, तंत्र आदि की
यता से शक्ति अथवा गति आदि को
६-प्रेमपाश में बद्ध करना । ७-नियत
रर करना । ८-पानी का बहाव आदि
निमित्त बाँध आदि बनाना ।
को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में
१०-मकान आदि बनाना । ११-उपक्रम
योजना करना । १२-क्रम अथवा
आदि ठीक करना । १३-मन में
स्थिर करना । १४-अस्त्र-शास्त्र आदि
करना ।

बाँधनीपौरि* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह
पशु बांधे जाते हैं । पशुशाला ।

बाँधनू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहले से
तरकीब अथवा विचार । उपक्रम ।
२-मनगढ़न्त बात । ३-कोई बात होने
मानकर पहले से ही उसके विषय में
किये हुए नाना प्रकार के विचार ।
पुलाव । ४-झूठा दोष । तोहमत ।
लहरियेदार रंगाई में वह बंधन जो
चुनरी अथवा लहरियेदार रंगाई
निमित्त कपड़े में बांधते हैं । चुनरी
अन्य कोई वस्त्र जो इस प्रकार बांधकर
गया हो ।

बांधव, बान्धव [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाई ।
२-नातेदार । रिश्तेदार । ३-मित्र ।

बाँब [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सांप की तरह
प्रकार की मछली ।

बाँबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दीमकों के
मिट्टी का भीटा या ढूह । २-सांप का

बाँमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाँबी' ।

बाँयाँ [वि.] (हिं.) देखो 'बायाँ' ।

बाँबाछोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लहसुनिया
का रत्न विशेष ।

बाँवना* [क्रि. स.] (?) रखना ।

बाँवारथी [संज्ञा पु.](हिं.) बौना । वामन ।

बाँवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बबूल की जाति
एक प्रकार का वृक्ष ।

बाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध लम्बी
वनस्पति जिसके कांडों में जगह-जगह
होती हैं तथा जिससे टोकरे आदि
जाते हैं । २-एक नाप जो सवा तीन
होती है । ३-नाव खेने की लग्गी ।
बीच की हड्डी । रीढ़ ।
बाँस पर चढ़ना-बदनाम होना ।
चढ़ाना-१-बदनाम करना । २-बहुत
करके घमंडी बना देना । मिजाज बढ़ा

बाँसों उछलना–अत्यधिक प्रसन्न होना।

बाँसपूर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत महीन वस्त्र।

बाँसफन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

बाँसली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बांसुरी। मुरली। २–जालीदार लम्बी-पतली थैली जिसमें रुपया-पैसा रखकर कमर में बांधते हैं। हिमयानी।

बाँसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बांस की छोटी नली जो हल के साथ बंधी रहती है जिसमें अन्न भरा रहता है और गिरता जाता है। २–नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के बीच में रहती है। ३–एक प्रकार का छोटा पौधा। ४–रीढ़ की हड्डी।

बाँसा फिर जाना–नाक का टेढ़ा हो जाना।

बाँसागड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेच।

बाँसिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बांस।

बाँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार का मुलायम पतला बांस। २-एक प्रकार की गेहूँ। ३–एक प्रकार की घास। ४–एक प्रकार का पक्षी। ५–एक प्रकार का धान। ६-एक प्रकार का पत्थर जिसका रंग सफेदी लिये पीला होता है।

बाँसुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बांस की नली का फूँककर बजाया जाने वाला बाजा। मुरली।

बाँसुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–एक प्रकार की घास जो फ़सल के लिए बड़ी हानिकारक होती है। २–देखो 'बाँसुरी'।

बाँसुलीकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली ज़मीकंद।

बाँह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भुजा। हाथ। २–शक्ति। बल। ३–सहायक। मददगार। ४–सहारा। मदद। ५–भुजाओं का बल बढ़ाने वाली एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं। ६–भरोसा। सहारा। ७–आस्तीन। *बाँह बोल*–रक्षा करने अथवा सहायता देने का वचन। *बाँह गहना या पकड़ना*–१-किसी की सहायता करने का भार लेना। २-अपनाना। ३–विवाह करना। *बाँह की छाँह लेना*–शरण में आना। *बाँह चढ़ाना*–१–कोई काम करने के लिए उद्यत होना। २–लड़ने के लिए उद्यत होना। *बाँह देना*–सहारा देना। *बाँह बुलंद होना*–१–बलशाली या साहसी होना। २–हृदय उदार होना। *बाँह टूटना*–निराश्रय होना। बिना सहायक के रह जाना।

बाँहतोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेच।

बाँहमरोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेच।

बाँही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाँह'।

बा [संज्ञा पु.] (हिं.) जल। पानी। (फ़ा.) बार। दफ़ा। मरतबा। * [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाई'।

बाइ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाई'।

बाइप्लेन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का वायुयान।

बाइबिरंग+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विडङ्ग।

बाइबिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) ईसाइयों की धर्म पुस्तक। इंजील।

बाइस [संज्ञा पु.] (फ़ा.) कारण। सबब। वजह। [वि.] (हिं.) देखो 'बाईस'।

बाइसवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'बाईसवाँ'।

बाइसिकिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दो पहियों वाली प्रसिद्ध गाड़ी जिस पर मनुष्य बैठकर पैरों से चलाते हैं।

बाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–त्रिदोषों में से वात नामक दोष। २–स्त्रियों के लिए एक आदरसूचक शब्द। ३–वेश्याओं के नाम के साथ लगने वाला एक शब्द। *बाई चढ़ना*–१–वायु का प्रकोप होना। २–आवेश या क्रोध के मारे पागल होना। *बाई की झोंक*–१–वायु का प्रकोप। २–आवेश। *बाई पचना*–घमंड टूटना *बाई पचाना*–घमंड तोड़ना।

बाईस [वि.] (हिं.) बीस और दो।

बाईसवाँ [वि.] (हिं.) इक्कीस के बाद वाला।

बाईसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बाईस पदार्थों का समूह। २–बाईस पद्यों का समूह।

बाउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वायु। हवा। पवन।

बाउर [वि.] (हिं.) [स्त्री. बाउरी] १–पागल। बावला। २–भोला भाला। सीधा-साधा। ३–मूर्ख। ४–जो बोल न सके। मूक। गूंगा। +५–बुरा।

बाउरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बावली'। (देश.) एक प्रकार की घास।

बाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) वायु। पवन। हवा।

बाएँ [क्रि. वि.] (हिं.) बाईं ओर या तरफ़।

बाक* [संज्ञा पु.] (हिं.) बात। वचन।

बाकचाल* [वि.] (हिं.) देखो 'वाचाल'।

बाकना* [क्रि. अ.] (हिं.) बकना। प्रलाप करना

बाकल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वल्कल'।

बाकला [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार की बड़ी मटर

बाकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का वृक्ष।

बाकस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बक्स'।

बाकसी [क्रि. अ.] (हिं.) जहाज के पाल को एक ओर से दूसरी ओर करना।

बाका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वाचा। वाणी। बोलने की शक्ति।

बाक़ी [वि.] (अ.) जो बच रहा हो। अवशिष्ट। शेष।
[संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–गणित में एक संख्या में से दूसरी संख्या घटाने की विधि। २–घटाने के बाद बची हुई संख्या।

बाकी [अव्य.] (अ.) लेकिन। मगर। परन्तु।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का धान।

बाकुंभा [संज्ञा पु.] (हिं.) जलकुम्भी का सुखाया हुआ केसर।

बाकुल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वल्कल'।

बाखर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

बाखरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बखरी'।

बाग [संज्ञा पु.] (अ.) उद्यान। वाटिका।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लगाम।
बागमोड़ना—किसी ओर प्रवृत्त करना या घुमाना।

बागड़ [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'बांगड़'।

बागड़बिल्ला [संज्ञा स्त्री.] (देश.) [स्त्री. बागड़बिल्ली] उजड्ड। जंगली।

बागडोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह रस्सी जो घोड़े की लगाम में बांधी जाती है। २–लगाम

बागना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–यों ही चलना-फिरना। टहलना। २–बोलना।

बागबान [संज्ञा पु.] (हिं.) माली।

बागबानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १–बागवान का पद। माली का स्थान। २–बागवान या माली का काम।

बागर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–नदी किनारे की वह ऊँची भूमि जहां तक नदी का पानी कभी नहीं पहुँचता। २–देखो 'बांगुर'।

बागल* [संज्ञा पु.] (हिं.) बक। बगला।

बागवान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बागबान'।

बागवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बागबानी'।

बागा [संज्ञा पु.] (हिं.) अंगे की तरह का एक पुराना पहनावा। जामा।

बाग़ी [संज्ञा पु.] (अ.) वह जो राज्य या किसी के विरुद्ध विद्रोह करे। विद्रोही।

बाग़ीचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) छोटा बाग। उपवन। उद्यान।

बागुर+ [संज्ञा पु.] (देश.) पक्षी या मृग आदि फँसाने का जाल।

बागेसरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–सरस्वती। २–सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

बाघंबर [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बाघ की खाल जिसे ओढ़ने-बिछाने के काम में लाते हैं। २–एक प्रकार का कम्बल।

बाघ [संज्ञा पु.] (हिं.) शेर नामक हिंसक जन्तु।

बाघा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चौपायों के पेट फूलने का एक रोग। २–कबूतरों की एक जाति का नाम।

बाघी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की गिलटी जो गरमी या आतशक के रोगियों की जांघ की संधि में होती है।

बाघुल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी मछली।

बाच* [वि.] (हिं.) १–वर्णनीय। अच्छा। २–सुन्दर। बढ़िया।

बाचना* [क्रि. अ.] (हिं.) बचना। सुरक्षित रहना

[क्रि. स.] (हिं.) १–बचाना। सुरक्षित रखना। २–पढ़ना। बांचना।

बाचा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १–बोलने की शक्ति। २–वाक्य। वचन। ३–प्रण। प्रतिज्ञा।

बाचाबंध* [वि] (हिं.) प्रतिज्ञाबद्ध।

बाछ [संज्ञा पु.] (हिं.) १–इजमाल। बंछौट। बहेरी। २–देखो 'बाछा'।

बाछड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बछड़ा'।

बाछा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–गाय का बछड़ा। २–लड़का। बच्चा।

बाज [संज्ञा पु.] (अ.) १–एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २–एक प्रकार का बगला। ३–तीर में लगा हुआ पर।
[प्रत्य.] (फा.) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर-रखने वाले, व्यसनी, शौकीन या कर्त्ता आदि का अर्थ देता है। यथा–नशेबाज, बहानेबाज आदि।
[वि.] (फा.) वंचित। रहित।
बाज आना–१–जानबूझकर वंचित या रहित होना। २–दूर रहना। *बाज रखना*–रोकना। मना करना। *बाज रहना*–अलग या दूर रहना
[वि.] (अ.) कोई-कोई। कुछ विशिष्ट।
[क्रि. वि.] (अ.) बगैर। बिना।
* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घोड़ा। २–बाजा।
[संज्ञा पु.] (देश.) ताने के सूतों के बीच में देने की लकड़ी।

बाजड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाजरा'।

बाजदावा [संज्ञा पु] (फा.) १–अपने दावे, स्वत्व या मांग का परित्याग करना। २–वह पत्र जिस पर ऐसे परित्याग का उल्लेख होता है।

बाजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाजा'।

बाजना [क्रि. अ.] (हिं.) १–बाजे आदि का बजना २–लड़ना। भिड़ना। ३–कहलाना। पुकारा जाना। प्रसिद्ध होना। ४–लगना। आघात पहुँचाना। ५–जा पहुँचना। सामने मौजूद हो जाना। [वि.] (हिं.) बजने वाला। जो बजता हो।

बाजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा अन्न। जोंधरी।

बाजहर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ज़हरमोहरा'।

बाजा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह यंत्र जिस पर आघात करके स्वर निकालते अथवा ताल देते हैं। बजाने का यन्त्र। वाद्य।
बाजा-गाजा–कई प्रकार के बजते हुए बाजों का समुदाय।

बा-जाब्ता [क्रि. वि.] (फा.) जाब्ते अथवा नियम के अनुसार। [वि] (फा.) जो जाब्ते अथवा नियमानुसार हो।

बाजार [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह स्थान जहां पर नाना प्रकार की वस्तुओं की दूकानें हों। २–वह स्थान जहां किसी निश्चित समय, तिथि, वार या अवसर पर दूकानें लगती हों। पैंठ। हाट।
बाजार करना–वस्तुएँ खरीदने के लिये बाजार जाना। *बाजार गर्म होना*–किसी बात की बहुत अधिकता होना। *बाजार तेज होना*–किसी वस्तु का मूल्य वृद्धि पर होना। *बाजार उतरना या मंदा होना*–किसी वस्तु का भाव अथवा दाम घटना या कम होना। *बाजार भाव*–प्रचलित मूल्य। *बाजार लगाना*–१–बहुत सी वस्तुओं का यों ही सामने होना। २–बाजार में दूकानों का खुलना। *बाजार लगाना*–वस्तुओं को इधर-उधर फैला देना।

बाजारी [वि.] (फा.) १–बाजार-संबन्धी। बाजार का। २–मामूली। साधारण। ३–बाजार में इधर-उधर भटकता फिरने वाला। मर्यादा-रहित। ४–अशिष्ट।
बाजारी औरत–वेश्या। रंडी।

बाजारू [वि.] (हिं.) देखो 'बाजारी'

बाजि* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–घोड़ा। २–बाण। ३–पक्षी। अड़ूसा। [वि.] (हिं.) चलने वाला।

बाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–ऐसी शर्त्त जिसमें हारजीत होने पर कुछ धन लिया अथवा दिया जाय। शर्त्त। बदान। २–आदि से अन्त तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें हारजीत हो अथवा दाँव लगा हो। ३–दावँ (खेल में)।
बाजी मारना–किसी बात में जीतना। *बाजी ले-जाना*–प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १–घोड़ा। २–बाजा बजाने का काम करने वाला।

बाजीगर [संज्ञा पु.] (फा.) जादू के खेल करने वाला। जादूगर।

बाजीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह हलवाहा जिसे वेतन के स्थान पर उपज का अंश दिया जाता है।

बाजु [अव्यय] (हिं.) १–बिना। बगैर। २–अतिरिक्त। सिवा।

बाजू [संज्ञा पु.] (हिं.) १–भुजा। बाहु। बांह। २–बांह पर पहनने का बाजूबंद नामक गहना ३–सेना का किसी एक ओर का पक्ष। ४–वह जो प्रत्येक कार्य में बराबर साथ रहे तथा सहायता दे। ५–बाजूबंद के आकार का गोदना जो बांह पर गोदा जाता है। ६–पक्षी का डैना।

बाजूबंद [संज्ञा पु.] (फा.) बांह पर पहनने का एक गहना। भुजबंद।

बाजूबीर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाजूबंद'।

बाझ* [अव्य.] (फा.) बगैर। बिना।

बाझन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बझने अथवा फँसने की क्रिया या भाव। २–उलझन। पेंच। ३–बखेड़ा। झंझट।

बाझना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बझना'।

बाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १–राह। रास्ता। मार्ग। २–बटखरा। ३–बट्टा। पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाय। *बाट करना*–मार्ग बनाना। नया रास्ता अथवा निकालना। *बाट जोहना या दे*... प्रतीक्षा करना। (किसी के) *बाट पड़ना*... करना। पीछे पड़ना। *बाट पड़ना*... *बाट पारना*–डाका डालना। + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बटने का भाव। रस्सी आदि में ... हुई ऐंठन या बल।

बाटकी* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो ...

बाटना+ [क्रि. स.] (हिं.) १–पीसना। ... करना। २–देखो 'बटना'।

बाटली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–जहाज पर ... तानने का रस्सा। २–बोतल। बड़ी शीशी।

बाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–छोटा ... बगीचा। २–गद्यकाव्य का एक भेद। ... गद्य जिसमें कुसुम और गुच्छ गद्य मिले ...

बाटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १–गोली। पिंड। ... उपलों पर सेंककर बनाई जाने वाली ... प्रकार की गोल रोटी। ३–चौड़ा और ... गहरा कटोरा। ४–तसला नामक बरतन।

बाड्किन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का ... जिसके लकड़ी का दस्ता लगा होता है।

बाड़* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाढ़'।

बाड़व [संज्ञा पु.] (सं.) १–ब्राह्मण। २–बड़वाग्नि। बड़वानल। ३–घोड़ियों का झुंड। [वि.] बड़वा-सम्बन्धी।

बाड़वाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बड़वा...

बाड़वानल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बड़वा...

बाड़व्य [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मणों का समूह।

बाड़स [संज्ञा पु.] (सं.) मछली।

बाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १–चारों ओर से घि... हुआ। बड़ा मैदान। २–पशुशाला।

बाडिस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) स्त्रियों के पहनने ... एक प्रकार की अंगरेजी ढंग की कुरती।

बाडी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वाटिका। फुलवारी। (अं.) देखो 'बाडिस'।

बाडीगार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १–किसी ... मन्त्री या बड़े अधिकारी के साथ रहने ... थोड़े से सैनिकों का दल जो उनकी रक्षा ... लिए होता है। अंगरक्षक। २–इन सैनिकों में से कोई एक सैनिक।

बाढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–बढ़ने की क्रिया ... भाव। बढ़ाव। अधिकता। वृद्धि। २–अधिक पानी बरसने के कारण नदी अथवा ताल... के जल का बढ़ जाना। जलप्लाव। सैला... ३–एक प्रकार का गहना। ४–बंदूक या तो... का लगातार छूटना अथवा उनके छूटने ... वाली शब्द होना। ५–तलवार, छुरी आदि शस्त्रों की धार। सान। *बाढ़ दगना*–तोपों का लगातार छूटना।

बाढ़कढ़ [संज्ञा स्त्री.] (डि.) १–तलवार। ...

बाढ़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) १–देखो 'बढ़ना'। ...

देखो 'बढ़ना'।

बाढ़ाली [संज्ञा स्त्री] (डि.) १-तलवार। २-खड्ग।

बाढ़ि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाढ़'।

बाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाढ़। बढ़ाव। २-अधिकता। वृद्धि। ज्यादती। ३-किसी को अन्न उधार देने पर मिलने वाला ब्याज। ४-लाभ। मुनाफा।

बाढ़ीवान [संज्ञा पु.] (हिं.) शस्त्रों आदि पर बाढ़ या सान रखने वाला कारीगर।

बाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक लम्बा और नुकीला अस्त्र जो धनुष पर चढ़ाकर फेंका जाता है। तीर। शर। सायक। २-गाय का ऐन या थन। ३-दैत्यराज बली के पुत्र का नाम। ४-हर्षवर्धन राजा के एक दरबारी कवि का नाम। ५-पाँच की संख्या। ६-सरपत। नरकुल। ७-निशाना। लक्ष्य। ८-तीर का वह नोक जिस में पर लगे हों। ९-नीली कटसरैया। १०-इक्ष्वाकुवंशीय विकुक्षि के पुत्र का नाम। ११-आग। १२-स्वर्ग। १३-मोक्ष।

बाणक [संज्ञा पु.] (डि.) १-महाजन। २-बनिया।

बाणगंगा, बाणगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिमालय के सोमेश्वर गिरि से निकली हुई एक प्रसिद्ध नदी का नाम।

बाणधि [संज्ञा पु.] (सं.) तूण। तरकश।

बाणपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव। (बाणासुर के स्वामी)।

बाणपथ [संज्ञा पु.] (सं.) उतनी दूरी जहां तक बाण जा सके।

बाणभट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) महाराज हर्षवर्धन के एक दरबारी कवि का नाम।

बाणलिंग, बाणलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नर्मदा नदी में मिलने वाले स्फटिक के शिवलिंग।

बाणविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाण चलाने की विद्या। तीरंदाजी।

बाणवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाणों की वर्षा।

बाणसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाणासुर की पुत्री, उषा।

बाणारि [संज्ञा पु.] (सं.) बाणासुर के शत्रु, विष्णु।

बाणावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाणासुर की स्त्री का नाम।

बाणासुर [संज्ञा पु.] (सं.) राजा बलि के सौ पुत्रों में सब से बड़े पुत्र का नाम।

बाणिजक [संज्ञा पु.] (सं.) वाणिज्य या व्यापार करने वाला सौदागर।

बाणिज्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवसाय। व्यापार। रोजगार। सौदागरी।

बात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कहा हुआ सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। वाणी। २-चर्चा। जिक्र। प्रसङ्ग। ३-प्रचलित प्रसङ्ग। अफवाह। किंवदंती। प्रवाद। ४-जानी जाने वाली या जताई जाने वाली वस्तु या स्थिति। मामला। ५-घटित होने वाली अवस्था। परिस्थिति। ६-किसी के पास पहुँचाने के लिए कहा हुआ वचन। संदेश। संदेशा। ७-परस्पर कथनोपकथन। वार्त्तालाप। ८-कुछ निश्चय करने के लिए उसके संबंध की चर्चा। ९-फँसाने अथवा धोखा देने के लिए प्रयुक्त किये हुए शब्द या किये हुए व्यवहार। १०-झूठ या बनावटी कथन। मिस। बहाना। ११-प्रतिज्ञा। कौल। १२-वचन का प्रमाण। साख। प्रतीति। विश्वास। १३-मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। इज्जत। १४-अपनी हैसियत, योग्यता, गुण, सामर्थ्य आदि विषय में कथन या चर्चा। १५-उपदेश। नसीहत। १६-रहस्य। भेद। १७-प्रशंसा या तारीफ़ का विषय। १८-अभिप्राय। आशय। तात्पर्य। १९-विशेष गुण। खूबी। २०-कथन का सारतत्व। मर्म। २१-गूढ़ अर्थ। मानी। २२-प्रश्न। सवाल। समस्या २३-कोई काम करने का उचित मार्ग, साधन या उपाय। २४-इच्छा। कामना। चाह। २५-काम। कार्य। आचरण। व्यवहार। २६-लगाव। सम्बन्ध। तअल्लुक। २७-स्वभाव। प्रकृति। लक्षण। २८-वस्तु। पदार्थ। २९-दाम। मोल। ३०-उचित पथ या उपाय। कर्त्तव्य।

बात अंचल में बाँध रखना-हमेशा याद रखना। बात आइना होना-पूर्णतया स्पष्ट होना या समझना। बात आई-गई होना-रफा-दफा होना या भूल जाना। बात आना-१-बात उठना। २-दोष लगना। बात उठना-प्रसङ्ग या चर्चा होना। बात उठाना-१-चर्चा छेड़ना २-कठोर वचन सहना। ३-बात न मानना। बात उड़ना-चर्चा फैलना। बात उलटना-१-बात का जवाब देना। २-कहकर पलट जाना। बात कहते-क्षण भर में या कहते ही। तुरन्त। झट। बात काटना-१-किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। २-किसी की बात का विरोध अथवा खण्डन करना।

बात कहे की लाज होना-कहे को निभाना। बात का धनी, पक्का या पूरा-वचन या बात का पालन करने वाला। बात कान पड़ना-सुनना। बात का बतङ्गड़ करना-साधारण सी बात को व्यर्थ बहुत बड़ा रूप देना। मामूली बात को बढ़ा देना। बात का बतङ्गड़ बन जाना या बनाना-थोड़ी सी साधारण बात को बहुत या बढ़ा देना। बात का सिर पैर न होना-बेठिकाना या बे मौजू बात करना। बात की तह तक पहुँचना-असली बात या वास्तविक तथ्य का पता जान लेना। बात का हेटा बे-एतबार। बात की बात में-क्षण भर में। तुरंत। बात को पीना-चुभती हुई बात को सह लेना। बात खटाई में पड़ना-दुविधा या अनिश्चित दशा में होना। बात खाली जाना-कहना व्यर्थ होना। बात खुलना-छिपी बात या रहस्य प्रकट होना। बात खोना-१-साख बिगड़ना या विश्वास उठना। २-इज्जत या प्रतिष्ठा गवाना। बात गई गुजरी होना-भली बिसरी होना। बात गढ़ना-झूठ बात कहना। मिथ्या प्रसंग की उद्भावना करना। बात बनाना। बात गांठ या आंचल में बांधना-बात को न भूलना। कहा हुआ बराबर याद रखना। बात गोल कर जाना-बात को स्पष्ट न करना। बात घुलना-बात झंझट में पड़ना या बहुत दिन लगना। बात घूंट जाना-१-बात सुन कर भी उसपर ध्यान न देना। सुनी अनसुनी करना-२-अनुचित या कठोर वचन सुनकर भी चुप हो रहना। बात चबा जाना-कुछ कहते-कहते रुक जाना, या एक बार कही हुई बात को ढंग के रूप में ला देना बात चलना या चलाना-जिक्र आना या छेड़ना।

बात छेड़ना-चर्चा करना। बात जमाना-दिल में बैठ जाना। बात जाती रहना-साख, प्रतिष्ठा, वायदे का इतबार जाता रहना। बात टलना-कथन का अन्यथा होना। बात टल जाना-भूली बिसरी होना। बात आई गई होना। बात ठहरना या ठहर जाना-१-मामला तै हो जाना। २-विवाह संबन्ध स्थिर होना। बात डुबो देना-प्रतिष्ठा या इज्जत गँवा देना। बात दर्पण होना-मामला स्पष्ट होना। हाल साफ़-साफ जाहिर होना। बात दब जाना-स्थगित होना। बात दुलखना-बात दिल में खटकना। बात दुहराना-१-कही हुई बात को फिर से कहना। उलट कर जवाब देना। मुंह से बात न आना-मुख से शब्द न निकलना। बात न करना-घमंड से न बोलना। बात न पूछना-स्वागत, सत्कार या इज्जत न करना। बात निकालना-बात चलाना। बात नीचे न डालना-अपनी बात का खंडन न होने देना। बात पकड़ना-तर्क, हुज्जत करना २-कहने वाले की बातों का उलटा अर्थ कहना बात पक्की करना-१-मामला पूरी तरह तै करना। २-वायदा कराना। बात पचना-दिल में रख छोड़ना। बात पड़ना-१-प्रसंग आना। मौका पड़ना। बात पर जाना-१-कहने का विश्वास करना। २-कहने का खयाल करना बात पर बात आना-एक सिलसिले में दूसरा जिक्र आना। बात पलटना-१-कहकर बदल या मुकर जाना। प्रश्न के शब्दों में जवाब देना। बात पल्ले में बांधना-खूब याद रखना। बात पाना या लेना-१-छिपी बात या गूढ़ार्थ जान लेना। २-असल वास्तविक बात समझना। बात पी जाना-१-बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। २-बुरी बात सह जाना। बात पूछना-१-कदर करना। २-सुख-दुःख का ध्यान या खबर रखना। बात फूटना-१-मुख से वचन निकलना। छिपी या गुप्त

बात का फैलना। बात फेंकना-ताने मारना। व्यंग्य छोड़ना। बात फेरना-१-प्रसंग उड़कर दूसरी बात छेड़ना। २-बात का समर्थन करके उसका महत्व बढ़ाना। बात बड़ी करना या होना-बात की इज्जत करना। बात बढ़ना या बढ़ती चली जाना-साधारण-सी बात का विवाद या झगड़े के रूप में हो जाना। बात बढ़ाना-विवाद या झगड़ा करना। (किसी की) बात बढ़ाना-बात की पुष्टि करके उसे महत्व देना। बात बदलना-एक बार एक बात कहना दूसरी बार दूसरी। मुकरना। कहकर पलटना। बात बनना-१-इज्जत होना। २-काम ठीक होना। ३-साख रहना। बात बन पड़ना-१-कह सकना। २-इज्जत मिलना। ३-मामला तै हो जाना। बात बनाना या सँवारना-काम बनाना। ३-झूठी या बढ़ाकर कहना। व्यर्थ विस्तार करना। बात बना लेना-यश या मान पा लेना। बात बहना-चर्चा फैल जाना। बात बात में-१-हर एक बात में। २-बार-बार ३-हर काम में। बात बिगड़ना-१-काम न बनना। २-मामला चौपट हो जाना। ३-प्रतिष्ठा या इज्जत जाना। ४-हैसियत जाना। बात बिगाड़ना-१-काम बिगाड़ना। २-इज्जत गँवाना। बदनाम करना। बात मात करना-चाल न चलने देना। चाल में न आना। बात मारना-१-ताने मारना। २-डींग हाँकना घुमा-फिराकर असल बात न कहना। और-और बात कहना असली दबा जाना। बात मुँह पर लाना-कह बैठना। चर्चा कर देना। बात में पख निकालना-एतराज करना। बात में बात निकालना- किसी के कथन में दोष निकालना। बात में फूल झड़ना-मनोरंजक या दिलचस्प होना।

(अपनी) बात रखना-१-हठ करना। २-इज्जत रखना। ३-कहे अनुसार करना। (किसी की) बात रखना-१-कथन या आदेश का पालन करना। २-मनोरथ पूर्ण करना। बात रख लेना-बात बिगड़ने न देना। बात रह जाना-१-मान रह जाना। २-याद रह जाना। ३-प्रार्थना स्वीकार करना। बात बनाना-व्यर्थ की झूंठमूंठ की बातें करना। २-बहाना करना। ३-खुशामद करना। ४-डींग हांकना। बात मिलाना-१-बातें बनाना। २-हाँ में हां मिलाना, सुहाती बातें करना। बात लगना-विवाह आदि का प्रस्ताव होना। बात लगाना १-किसी के विरुद्ध कहना। २-विवाह ठीक करना। बात लाना-विवाह का प्रस्ताव लाना। बात हलकी होना-विश्वास या इज्जत पसंदगी न होना-बात हांकना-बढ़ बढ़कर बातें करना। बात हारना-वचन देना। बात है-सत्य नहीं, कहने भर को है। बातें छांटना, बातें बघारना-१-शेखी जताना। २-व्यर्थ बोलना। बातें सुनाना-ऊँचनीच, भली बुरी या कड़वी बातें कहना। बातों आना-देखो 'बातों में आना'। बातों का तार बांधना-बके जाना। कहे जाना। बातों का धनी-कहने को खूब, करने को कुछ नहीं। बातों की झड़ी बांधना-लगातार, बात पर बात कहते जाना। बातों पर जाना-१-बातों पर ध्यान देना। २-कहने के अनुसार चलना। बातों में आना-बातों पर विश्वास करके उनके अनुकूल चलना। बातों में उड़ाना-१-हँसी में टालना। २-टालम-टूल देना।

बातों में धर लेना-कही हुई बातों में से किसी अंश को लेकर यह सिद्ध कर देना कि बातें यथार्थ नहीं हैं। युक्ति से बातों का खण्डन कर देना। बातों में फुसलाना-केवल बातों से सन्तुष्ट करना। बातों में लगाना-बातचीत में किसी का ध्यान लगाये रखना। बातों में बहलाना या फुसलाना-बातें कहकर संतोष या समाधान करना।

*[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बात'।

बातकंटक [संज्ञा पु.] (हिं.) वायु का एक रोग।

बातचीत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दो या दो से अधिक व्यक्तियों में होने वाला कथनोपकथन। वार्त्तालाप।

बातचीत चलना या छिड़ना-चर्चा। जिक्र। प्रसंग।

बातड़+ [वि.] (हिं.) वायुयुक्त। वायु वाला।

बातप [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरन (अनेकार्थ.)।

बातफरोश [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बात गढ़ने या बनाने वाला। २-झूठमूठ इधर-उधर की बात कहने वाला।

बातर [संज्ञा पु.](देश.) पंजाब में धान बोने का एक ढंग।

बातलारोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक योनि रोग।

बाती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लम्बी सलाई के आकार में बटकर बनाई हुई रूई या कपड़ा। २-बत्ती।

बातुल [वि.] (हिं.) पागल। सनकी।

बातूनिया [वि.] (हिं.) बहुत या व्यर्थ की बातें करने वाला।

बातूनी [वि.] (हिं.) बहुत बोलने या बात करने वाला।

बाथ* [संज्ञा पु.] (?) गोद। अङ्कवार।

बाथू [संज्ञा पु.] (हिं.) बथुआ नामक साग।

बाद [संज्ञा पु.](हिं.) १-तर्क। बहस। २-विवाद। झगड़ा। ३-झकझक। तूलकलामी। ४-शर्त। बाजी।

बाद बढ़ाना-झगड़ा बढ़ाना। *बाद में लगाना*-शर्त्त या बाजी लगाना।

[अव्य.] (अ.) उपरांत। पीछा। [वि.] १-अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। २-दस्तूरी या कमीशन में से जो काटा जाय। ३-अतिरिक्त। सिवाय।

[संज्ञा पु.] (फा.) बात। हवा।

[अव्य.] (हिं.) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बिना मतलब।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाद'।

बादकाकुल [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मु भेदों में से एक।

बादना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-तर्क-वितर्क करना। बकवाद करना। २-झगड़ा या हुज्जत करना। ३-ललकारना।

बादनुमा [संज्ञा पु.] (फा.) वायु की दिशा सूचि करने वाला यंत्र।

बादबान [संज्ञा पु.] (फा.) पाल।

बादरंग, बादरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का पे

बादर* [संज्ञा पु.] (हिं.) बादल। मेघ।

[वि.] (?) प्रसन्न। खुश।

[वि.] (सं.) १-कपास या रुई का बना हु २-मोटा खद्दड़। बदरी या बेर नामक वृ सम्बन्ध रखने वाला।

[संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता में वर्णित देश जो नैऋत्यकोण में था।

बादरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपास का पौ २-बदरी या बेर का वृक्ष। ३-जल। पा ४-रेशम। ५-दक्षिणावर्त शंख।

बादरायण [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास का ए नाम।

बादरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बदली'।

बादरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बदली'।

बादल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पृथ्वी पर से उठी हुई भाप जो घनी होकर आकाश में जाती है तथा फिर जल की बूँदों के रू गिरती या बरसती है। घन। मेघ। २-एक प्रकार का दूधिया रंग का पत्थर जो राज में होता है।

बादल उठना, उमड़ना, घिरना या बादल या मेघों का समूह रूप में छित से आना। *बादल गरजना*-मेघों की रग आकाश में घोर शब्द होना। *बादल छँ*-मेघों को इधर-उधर हट या छितरा जा *बादल फटना*-मेघों का घनी घटा के रू रह कर छितराना। *बादलों से बातें क* आसमान से बातें करना। बहुत ऊँचा

बादला [संज्ञा पु.] (?) सोने या चाँदी का चि और चमकीला तार।

बादली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बदली'।

बादशाह [संज्ञा पु.] (फा.) १-बड़ा राजा। २-सर्वश्रेष्ठ पुरुष। सरदार। ३-मनमाने करने वाला। ४-शतरंज का एक मोहरा। ताश का एक पत्ता।

बादशाहजादा [संज्ञा पु.] (फा.) राजकुमार

बादशाहजादी [संज्ञा स्त्री] (फा.) राजकु

बादशाहत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शासन। रा हुकूमत।

बादशाह-पसंद [संज्ञा पु.] (फा.) हलका मानी रंग'

बादशाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-राज्याधिकार। २-शासन। हुकूमत। ३-मनमाना व्यवहार। [वि.] १-बादशाह या राजा का। २-राजाओं के योग्य।

बाद-हवाई [क्रि. वि.] (फा., अ.) व्यर्थ। फजूल। निष्प्रयोजन।

बादाम [संज्ञा पु.] (फा.) एक वृक्ष जिसके प्रसिद्ध फल मेवों में गिने जाते हैं।

बादामा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

बादामी [वि.] (फा.) १-बादाम के छिलके के रंग का। हलका-सा पीलापन लिये लाल रंग का। २-बादाम के आकार का। अंडाकार। [संज्ञा पु.] १-एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २-एक प्रकार का धान। ३-एक प्रकार की छोटी डिबिया। ४-बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि [अव्य.] (हिं.) व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल

बादित* [वि.] (हिं.) बजाया हुआ।

बादित्य* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वादित्य'।

बादिया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का औजार जिससे लुहार पेच बनाते हैं।

बादी [वि.] (फा.) १-वायु विकार-सम्बन्धी.। २-शरीर में वायु का विकार उत्पन्न करने वाला। [संज्ञा स्त्री.] शरीर में वायु का प्रकोप। वातविकार। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी के विरुद्ध अभियोग लगाने वाला। मुद्दई। २-प्रतिद्वन्द्वी। शत्रु। ३-राग में प्रधान रूप से लगने वाला स्वर जिसके कारण राग शुद्ध होता है। [संज्ञा पु.] (देश.) लुहारों का सिकली करने का औजार।

बादीगर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाजीगर'।

बादुर+ [संज्ञा पु.] (देश.) चमगादड़। चमचटक।

बादना [संज्ञा पु.] (देश.) घेवर नामक मिठाई बनाने के काम में आने वाला एक औजार।

बाध [संज्ञा पु.](सं.) १-बाधा। अड़चन। रुकावट। २-कष्ट। पीड़ा। ३-कठिनता। मुश्किल ४-अर्थ की असंमतिं। ५-न्याय के अन्तर्गत वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो। +[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बाधी] मूंज की रस्सी।

बाधक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. बाधिका] १-रुकावट डालने वाला। रोकने वाला। २-कष्टदायक। हानिकारक। दुःखदायी। ३-स्त्रियों का एक रोग।

बाधकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाधा।

बाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकावट या विघ्न डालना। २-पीड़ा पहुँचाना।

बाधना* [क्रि. स.] (हिं.) बाधा या रुकावट डालना।

बाधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अड़चन। विघ्न। रुकावट। २-संकट। कष्ट। दुःख। पीड़ा। ३-भय। डर। आशंका। ४-भूत-प्रेत आदि के कारण होने वाला शारीरिक कष्ट।

बाधित [वि.] (सं.) १-जो रोका गया हो। २-जिसके साधन में रुकावट हो। असंगत। ३-ग्रस्त। प्रभावहीन।

बाधिर्य [संज्ञा पु.] (सं.) बहरापन।

बाधी [संज्ञा पु.] (हिं.) बाधा करने वाला।

बाध्य [वि.] (सं.) १-जो रोका या दबाया जाने वाला हो। २-विवश या मजबूर होने वाला।

बाध्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाध्य करने का भाव

बान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाण। तीर। २-पानी की ऊँची लहर। ३-एक प्रकार की आतिशबाजी। ४-धुन की तांत में मारने का डंडा। ५-बाना नामक हथियार जो फेंककर मारा जाता है। रंग। आब। कान्ति। [संज्ञा पु.] (देश.) १-जड़हन के खेत में रोपी हुई धान की जूरी। २-एक वृक्ष विशेष जो अफगानिस्तान में और हिमालय में आसाम तक सात हजार से नौ हजार फुट तक की ऊँचाई पर होता है।
[संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-आदत। टेव। अभ्यास २-सजधज। बनाव-सिंगार।

बानइत+ [वि.] (हिं.) १-बाना चलाने वाला। बानैत। २-बाण चलाने वाला।

बानक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वेष। भेस। सजधज। २-एक प्रकार का रेशम जो पीला या सफेद होता है। ३-परिस्थिति। संयोग।

बानगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी माल का वह अंश जो गाहक को दिखलाने के लिए दिया जाता है। नमूना।

बानना* [क्रि. स.](हिं.) १-किसी बात का बाना ग्रहण करना। २-किसी बात का उपक्रम करना ३-देखो 'बनाना'।

बानर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बानरी] बंदर।

बानरेंद्र [संज्ञा पु.](हिं.) १-सुग्रीव। २-हनुमान।

बानवे [वि.] (हिं.) गिनती में नब्बे और दो।

बाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पहनावा। वस्त्र। पोशाक। २-वेश-विन्यास। भेस। ३-रीति। चाल। ४-व्यापार में कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं का समुदाय। ५-तलवार के समान एक दुधारा हथियार। ६-भाले के समान एक हथियार। ७-बुनावट। बुनन। बुनाई। ८-कपड़े की बुनावट जो ताने में की जाती है। ९-कपड़े की बुनावट में वह तागा जो आड़े बल ताने में भरा जाता है। १०-एक प्रकार का बारीक महीन सूत जिससे पतंग उड़ाई जाती है। ११-खेत में की वह जुताई जो एक बार या पहली बार की जाय। [क्रि. स.] (हिं.) १-सिकुड़ने वाली वस्तु का (अपना) मुँह या छेद फैलाना। यथा—मुँह बनाना। २-बालों में कंघी करना। ३-खेत में अन्न उपजाने का काम करना।

मुँह बाना—लेने या पाने की इच्छा करना।

बानात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो मोटा और चिकना होता है।

बानावरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाण या तीर चलाने की विद्या।

बानि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनावट। सजधज। २-टेव। आदत। ३-चमक। आभा। ४-वाणी। वचन।

बानिक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बनाव-सिंगार। सजधज। २-वेश।

बानिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनिये की स्त्री।

बानिया [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बानिन] बनिया वैश्य।

बानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुख से निकलने वाला सार्थक शब्द। वचन। २-मनौती। मन्नत। ३-सरस्वती। ४-साधु, संत, महात्मा का उपदेश। ५-रंग। वर्ण। आभा। दमक। ६-एक प्रकार की पीली मिट्टी जिससे कच्चे बरतन रंगे जाते हैं। कपसा। * ७-देखो 'वाणिज्य'।
बानी मानना—मनौती करना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बनिया।
[संज्ञा पु.] (अ.) १-बुनियाद डालने वाला। जड़ जमाने वाला। २-आरम्भ करने वाला। प्रवर्तक।

बानैत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीर या बाण चलाने वाला। २-पटा या बाना फेरने वाला। ३-योद्धा। सैनिक। ४-किसी प्रकार का वेश या या बाना धारण करने वाला।

बाप [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता। जनक।
बाप दादा—पूर्वज। पूर्व पुरुष। *बाप माँ*—रक्षक। पालन करने वाला।
बाप रे—दुःख, भय अथवा आश्चर्यसूचक वाक्य। *बाप बनाना*—१-आदर या मान करना। २-खुशामद या चापलूसी करना। *बाप तक जाना*—बाप को गाली देना। *बाप का*—पैतृक।

बापा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाप्पा'।

बापिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वापिका'।

बापी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वापी'।

बापु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता। बाप।

बापुरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. बापुरी] १-बेचारा। दीनहीन। २-तुच्छ। जिसकी कोई गिनती न हो।

बापू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बाप'। २-देखो 'बाबू'। ३-भारत देश के राष्ट्रपिता महात्मा-गाँधी के लिए उनके अनुयायियों द्वारा लिया जाने वाला आदरसूचक शब्द।

बाप्पा [संज्ञा पु.] (देश.) मेवाड़ के राजवंश के आदिपुरुष का नाम।

बाफ+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'भाप'।

बाफता [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जिसपर कलाबत्तू और रेशम की बूटियां

होती हैं।

बाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-परिच्छेद। अध्याय। २-मुकदमा। ३-प्रकार। तरह। ४-विषय। ५-अभिप्राय। आशय। मतलब।

बाबची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बकुची'।

बाबत [अव्य.] (अ.) १-सम्बन्ध में। २-विषय में।

बाबर्ची [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बावरची'।

बाबरलेट, बाबरनेट [संज्ञा स्त्री.] (अं. बाबिन-नेट) एक प्रकार का जालीदार कपड़ा जो मसहरी आदि के काम में आता है।

बाबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सिर पर के लम्बे बाल। जुल्फ। पट्टा।

बाबा [संज्ञा पु.] (तु.) १-पिता। २-पिता का पिता। दादा। ३-साधु-संतों या बूढ़ों के लिए आदरसूचक शब्द। ४-लड़कों के लिए प्यार का संबोधन। ५-एक सम्बोधन जिसका व्यवहार साधु-फकीर करते हैं।

बाबिल [संज्ञा पु.] एशिया महाद्वीप का एक अत्यन्त प्राचीन नगर। जो फारस के पश्चिम में फरातनदी के किनारे था।

बाबी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-साधु स्त्री। सन्यासिन। २-लड़कियों के लिए प्यार का शब्द।

बाबुना [संज्ञा पु.] (देश.) पीले रंग का एक पत्ती।

बाबुल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाबू। २-पिता।

बाबू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़े आदमियों, शिक्षितों, भलेमानुसों और बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द। २-पिता के लिए सम्बोधन।

बाबूड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) 'बाबू' के लिए हास्य, व्यंग्य या घृणासूचक शब्द।

बाबूना [संज्ञा पु.] (फा.) एक छोटा पौधा जो फारस और युरोप में होता है।

बाभन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'ब्राह्मण'। २-देखो 'भूमिहार'।

बाम* [वि.] (हिं.) देखो 'वाम'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों के कान में पहनने का एक गहना। २-देखो 'बामा'। [संज्ञा पु.] (फा.) १-अटारी। कोठा। २-मकान के ऊपर की छत ३-साढ़े तीन हाथ का एक मान। पुरसा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साँप जैसी एक मछली।

बामकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक देवी जिसकी पूजा जादूगर लोग करते हैं।

बामदेव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वामदेव'।

बामन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वामन'।

बामा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वामा'।

बामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाँबी'।

बाम्हन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्राह्मण'।

बायँ [वि.] (हिं.) १-बायाँ। २-खाली।। *बायँ देना*-छेड़छाड़ करना।

बाय [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार का लोहे का पीपा जो समुद्र में या उन नदियों में जिनमें जहाज चलते हैं, जगह-जगह लंगर द्वारा बांध दिये जाते हैं और सिगनल का काम देते हैं। २-देखो 'लायफ-बाय'।

बायक* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कहने अथवा बतलाने वाला। २-पढ़ने वाला। ३-दूत।

बॉयकाट [संज्ञा पु.] (अं.) बहिष्कार।

बायन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १ वह मिठाई जो मंगल अवसरों पर अपने इष्टमित्रों के यहां भेजी जाती है। २-उपहार। ३-पेशगी। बयाना। *बायन देना*-छेड़छाड़ करना।

बायबरंग, बायबिड़ंग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पहाड़ी लता जिसमें छोटे-छोटे मटर के बराबर गोल फल गुच्छों में लगते हैं, जो सूखने पर दवा के काम में आते हैं।

बायबिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाइबिल'।

बायबी [वि.] (हिं.) १-बाहरी। २-अपरिचित। ३-अजनबी। नया आया हुआ।

बायव्य [वि.] (हिं.) देखो 'वायव्य'।

बायरा [संज्ञा पु.] (देश.) कुश्ती का एक पेंच।

बायल [वि.] (हिं.) (दाँव) जो खाली जाय। (दाँव) जो किसी का न पड़े। (जुआरी)।

बायला+ [वि.] (हिं.) वायु-विकार बढ़ाने या उत्पन्न करने वाला।

बायलर [संज्ञा पु.] (अं.) लोहे आदि धातु का बना हुआ भाप के इंजन का बड़ा कोठा जिसमें भाप उत्पन्न करने के लिये पानी भर कर गरम किया जाता है।

बायस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वायस'।

बायस्कोप [संज्ञा पु.] (अं.) एक यंत्र जिसके द्वारा पर्दे पर चलते-फिरते चित्र दिखाये जाते हैं।

बायस्काउट [संज्ञा पु.] (अं.) १-विद्यार्थियों द्वारा किया हुआ सैनिक ढंग का एक संगठन जिसका उद्देश्य समाज सेवा करना होता है। २-उक्त सेवा या संगठन का सदस्य।

बायाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. बाईं] १-शरीर के उस ओर का भाग जो किसी के पूरब की तरफ मुँह करके खड़े होने की अवस्था में उत्तर की ओर हो। 'दाहिना' का उलटा। २-विपरीत। उलटा। ३-अहित उपकार या हानि करने वाला। विरोधी या शत्रु। *बायाँ देना*-१-किनारे से निकल जाना। बचा जाना। २-जान बूझकर छोड़ना। *बायाँ पाँव पूजना*-धाक मानना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह तबला जो बायें हाथ से बजाया जाता है।

बायु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वायु'।

बायें [क्रि. वि.] (हिं.) १-बाईं ओर। २-विपरीत विरुद्ध। *बायें होना*-१-प्रतिकूल या विरुद्ध होना। २-रुष्ट या अप्रसन्न होना।

बारंबार [क्रि. वि.] (हिं.) बारबार। लगातार। पुनः-पुनः।

बारः [संज्ञा पु.] (फा.) प्रसंग। विषय।

बार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्वार। दरवाजा। २-आश्रय। स्थान। ठिकाना। [संज्ञा स्त्री.] १-काल। समय। २-विलंब। देर। बेर। ३-काल। ३-समय का कोई अंश जो किसी के एक गिना जाय। दफा। मरतबा। *बार-बार*-फिर-फिर। पुनः-पुनः। [संज्ञा पु.] १-घेरा अथवा रोक जो किसी स्थान के चारों ओर हो। बाढ़। २-किनारा। छोर। ३-धार। बाढ़। ४-देखो 'बाल' और 'बाला'।

बारक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छावनी आदि में सैनिकों के लिए बना हुआ पक्का मकान।

बारककंत [संज्ञा पु.] (देश.) एक पौधा जो काटने पर दवा के रूप में प्रयुक्त होता है।

बारगह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ड्योढ़ी। २-खेमा। डेरा। ३-प्रताप। ऐश्वर्य।

बारगीर [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े की सेवा करने वाला साईस का सहायक। घसियारा।

बारजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मकान के सामने धरनों या धाजों के ऊपर पाटकर बढ़ाया हुआ बरामदा। २-कोठा। अटारी। ३-बरामदा। ४-कमरे के आगे का छोटा दालान।

बारण [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'वारण'।

बारता*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वार्ता'।

बारतिय* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वेश्या। बारस्त्री।

बारतुंडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आल का पेड़।

बारदाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह सन्दूक, गठ्ठरियां, बन्द, टाट आदि जिनमें व्यापारी वस्तुएं बांधकर कहीं भेजी जाती हैं। २-फौज के खाने-पीने का सामान। रसद। ३-लोहे लकड़ी आदि के टूटेफूटे सामान। ४-बंधीहुई पगड़ी के नीचे का स्तर।

बारन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वारण'।

बारना* [क्रि. अ.] (हिं.) मना करना। [क्रि. स.] १-बालना। जलाना। २-देखो 'वारना'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

बारनिश [संज्ञा स्त्री.] (अं.) लकड़ी लोहे आदि पर पोतने का चमकीला रंग।

बारबँटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फसल के बँटाई।

बारबधू, बारबधूटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या

बारबरदार [संज्ञा पु.] (फा.) सामान या बोझ होने वाला।

बारबरदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सामान ढोने की क्रिया या काम। २-सामान ढोने की मजदूरी।

बारमुखी [संज्ञा स्त्री] (हि.) वेश्या। रंडी।

बारवा [संज्ञा स्त्री] (देश) एक रागिनी।

बारह [वि] (हिं.) दस और दो। *बारहपानी का*-बारह साल का सूअर। *बारह बच्चे वाली*-सूअरी। *बारहबाट करना या घालना*-तितर-बितर या नष्ट-भ्रष्ट करना। *बारहबाट जाना*-१-छिन्न-भिन्न होना। २-नष्ट-भ्रष्ट होना। *बारहबाट होना*-तितर-बितर या नष्ट होना।

बारहखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देवनागरी वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों को; मात्रा के रूप में लगाकर बोलते या लिखते हैं।

बारहदरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बैठक जिसमें चारों ओर बारह दर या दरवाजे हों।

बारहपत्थर [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह पत्थर जो छावनी की सरहद पर गाड़ा जाता है। सीमा का पत्थर। २-छावनी। *बारह पत्थर बाहर करना*-सीमा के बाहर करना। निकालना।

बारहबान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का उत्तम कोटि का सोना।

बारहबाना [वि.] (हिं.) १-सूर्य के समान चमक वाला। २-खरा। चोखा (सोना)।

बारहबानी [वि.] (हिं.) १-सूर्य के समान प्रकाशमान। २-खरा। चोखा (सोना)। ३-निर्दोष। सच्चा। पापरहित। ३-जिसमें कोई कसर या कमी न हो। पूर्ण। पक्का।

बारहमासा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह गीत या गद्य जिसमें बारह महीनों के विरह का वर्णन होता है।

बारहमासी [वि.] (हिं.) १-सब ऋतुओं में फलने या फूलने वाला। सदाबहार (वृक्ष)। २-बारहोमहीने होने वाला।

बारहवफात [संज्ञा पु.] (हिं..अ.) अरबी महीने की वह बारह तिथियाँ जिसमें मुसलमानों के विश्वास के अनुसार, मोहम्मद साहब बीमार पड़कर मरे थे।

बारहवाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री: बारहवीं] ग्यारह के बाद वाला।

बारहसिंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरन की जाति का पशु।

बारहाँ [वि.] (हिं.) देखो 'बारहवाँ'।

बारहा [क्रि. वि.] (फा.) अनेक बार। कई बार।

बारहीं [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बालक के जन्म से बारहवें दिन का उत्सव।

बारहों [संज्ञा पु.] (हि.) १-किसी मनुष्य के मरने के दिन से बारहवाँ दिन। २-कन्या अथवा पुत्र के जन्म से बारहवाँ दिन।

बारा [वि.] (हिं.) जो सयाना न हो। बालक। *बारेते*-बचपन से। बाल्यावस्था से। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बालक। लड़का। २-बेलन के सिरे पर लगाई हुई लोहे की कँगनी। ३-महीन तार खींचने की जंती। ४-वह व्यक्ति जो कुएं पर खड़ा होकर मोट या चरसे का पानी उलटकर गिराता है।

बारात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वरयात्रा। २-वह समाज जो वर के साथ उसे ब्याहने के लिए सजकर वधू के घर जाता है। *बारात उठना*-बरात का प्रस्थान करना।

बारादरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बारहदरी'।

बारानी [वि.](फा.) बरसाती। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह जमीन जिस पर केवल बरसात के पानी से उपज होती हो। २-वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिए बरसात में ओढ़ा या पहना जाता है।

बारामीटर [संज्ञा पु.] (अं.) 'बैरोमीटर'।

बाराह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वाराह'।

बाराहीकंद [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'वाराहीकंद'।

बारि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वारि'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बारी'।

बारिक [संज्ञा पु.] (अं.) सेना के सिपाहियों के रहने का स्थान। छावनी।

बारिकमास्टर [संज्ञा पु.](अं.) वह प्रधान अधिकारी जो बारिक की देखभाल और प्रबन्ध करता हो।

बारिगर* [संज्ञा पु.] (हिं.) सिकलीगर।

बारिज* [संज्ञा पु.] [संज्ञा पु.] (हिं.) वारिज। कमल।

बारिद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वारिद'।

बारिधर [संज्ञा पु.] (हिं.) वारिधर। बादल।

बारिधि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वारिधि'।

बारिवाह [संज्ञा पु.] (हि.) वारिवाह। बादल।

बारिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वर्षा। वृष्टि। २-वर्षाऋतु। बरसात।

बारिस्टर [संज्ञा पु.] (अं.) वह वकील जिसने विलायत की कानून की परीक्षा पास की हो। यह दीवानी और फौजदारी सभी अदालतों में बिना वकालतनामे के किसी भी अभियोग में बहस कर सकता है।

बारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किनारा। तट। २-छोर या सिरे पर का भाग। हाशिया। ३-चारों ओर बनाया हुआ घेरा। बाड़। ४-बरतन के मुँह का घेरा। औंठ। ५-पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़। ७-बाग। बगीचा। ८-खेत या बाग की क्यारी। ९-घर। मकान। १०-खिड़की। झरोखा। ११-जहाजों के ठहरने का स्थान। बन्दरगाह। १२-आगे पीछे के क्रमानुसार आने वाला अवसर या मौका। परी। १३-छोटी लड़की। बालिका। १४-युवती। १५-देखो 'बाली'।
बारी रहो-किनारे होकर या बचकर चलो। *बारी बारी से*-क्रमानुसार। एक के पीछे एक। *बारी बँधना*-अलग-अलग समय निश्चित होना। [संज्ञा पु.] (हिं.) दोने, पत्तल आदि बनाने वाली एक जाति। [वि.] (हिं) [स्त्री. प्र.] कम या थोड़ी अवस्था की। जो सयानी न हो।

बारीक [वि.] (फा.) १-महीन। पतला। २-बहुत छोटा। सूक्ष्म। ३-गंभीर। गूढ़। ४-जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। ५-जिसके अणु बहुत ही सूक्ष्म हों।

बारीका [संज्ञा पु.] (फा.) चित्रकार की महीन कलम।

बारीकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पतलापन। महीनपन। २-गुण। विशेषता। खूबी।
बारीकी निकालना-ऐसी बात निकालना जो साधारणतया समझ में न आ सके।

बारीखाना [संज्ञा पु.] (हिं +फा.) नील के कारखाने में वह स्थान जहाँ नील की बरी या टिकिया सुखाई जाती है।

बारीस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वारीश'।

बारुणी, बारुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वारुणी'।

बारु*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बालू'।

बारूत* [संज्ञा स्त्री.] (तु.) देखो 'बारूद'।

बारूद [संज्ञा स्त्री.] (तु. बारूत) एक प्रसिद्ध विस्फोटक चूर्ण जो आग लगने से भड़क उठता है तथा जिससे बन्दूक आदि चलती हैं और आतिशबाजियां बनती हैं। दारू।
यौ०-*गोली बारूद*-लड़ाई की सामग्री।

बारूदखाना [संज्ञा पु.] (हिं. फा.) गोला बारूद रखने की जगह।

बारूदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बालूदानी'।

बारे [क्रि. वि.] (फा.) अन्त को।

बारोठा* [संज्ञा पु.] (हि.) विवाह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर की जाती है।

बारोमीटर [संज्ञा पु.] देखो 'बैरोमीटर'।

बार्डर [संज्ञा पु.](अं.) किसी वस्तु के किनारे पर बना हुआ बेलबूटा।

बालंगा [संज्ञा पु.] (फा.) जीरे के समान काले रंग का बीज जो पुष्टिकर होता है। तूतमलंगा।

बाल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री बाला] १-बालक। लड़का। २-नासमझ। अनजान। ३-किसी पशु का बच्चा। ४-सुगंधबाला नामक गंधद्रव्य। ५-सूत के समान वह पतली और लम्बी वस्तु जो जन्तुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है। केश।
बाल बाँका न होना-नाम को भी कष्ट या हानि पहुँचाना। *बाल न बाँकना*-बाल बाँका न होना। *नहाते बाल न खिसकना*-कुछ भी कष्ट अथवा हानि न पहुँचाना। (किसी काम में) *बाल पकना*-(कोई काम करते-करते) बुड्ढे हो जाना। *बाल बराबर*-बहुत महीन या

पतला। बाल बराबर न समझना–तनिक भी परवाह न करना। बाल-बाल बचना–संकट आदि से इस प्रकार बचना कि बहुत थोड़ी कसर रह जाय।

[संज्ञा स्त्री] (?) जौ, गेहूँ आदि के ऊपरी भाग जिस पर दाने उगते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'बाला'। [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार की मछली। [संज्ञा पु.] (अं.) अङ्गरेजी नाच। [वि] (सं) १-जो जवान न हुआ हो। २-जो सयाना न हुआ हो। ३-हाल का उगा हुआ।

बालक [संज्ञा पु.] (सं) १-लड़का। पुत्र। २-कम उम्र का बच्चा। शिशु। ३-अबोध व्यक्ति। अनजान आदमी। ४-हाथी का बच्चा। ५-घोड़े का बच्चा। बछेड़ा। ६-बाल। केश। ७-सुगन्धबाला। ८-कंगन। ९-अंगूठा। १०-हाथी की पूंछ।

बालकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लड़कपन।

बालकताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाल्यावस्था। २-लड़कपन। ३-बालकों की सी मूर्खता।

बालकपन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बालक होने का भाव। २-लड़कपन। नासमझी।

बालकप्रिया [संज्ञा स्त्री.](सं) १-केला। २-इन्द्रवारुणी।

बालकांड, बालकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण का वह भाग जिसमें रामचन्द्र जी के बाल्यावस्था का वर्णन है।

बालकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बाल्यावस्था। बचपन।

बालकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कन्या। लड़की। पुत्री।

बालकृमि [संज्ञा पु] (सं.) जूं।

बालकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं) बाल्यावस्था के कृष्ण।

बालकेलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बालकों का खेल या खिलवाड़। २-ऐसा कार्य जिसके करने में कुछ भी परिश्रम न पड़े।

बालकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की घास

बालक्रीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) लड़कों का खेल।

बालक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं) बालकों या लड़कों के खेल और काम।

बालखंडी [संज्ञा पु.] (?) वह हाथी जिसमें कोई दोष हो।

बालखिल्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न ऋषि समूह जिनके शरीर का आकार अंगूठे के बराबर है। इस समूह मे साठ हजार ऋषियों की गणना है। यह सब के सब बड़े तपस्वी हैं।

बालखोरा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सिर के बाल झड़ने या उड़ने का रोग। गंज।

बालगर्भिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जो प्रथम बार ब्यानी हो।

बालगोपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाल्यावस्था के कृष्ण। २-परिवार के लड़के लड़कियां आदि। बाल-बच्चे।

बालगोविंद, बालगोविन्द [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बालकृष्ण'।

बालग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों के प्राणघातक ग्रह जो संख्या में नौ हैं। यथा—स्कंद, स्कंदापसार, शकुनी, रेवती, पूतना, गंधपूतना, शीतपूतना, मुखमंडिका और नैगमेय। अनाचार करने पर यह बालकों को सताते हैं।

बालचर [संज्ञा पु.] (सं.) वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाओं की शिक्षा मिली हो। बॉयस्काउट।

बालचरित [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों का खिलवाड़

बालचर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालकों की चर्या। २-कार्तिकेय।

बालछड़ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जटामासी।

बालजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) दूध।

बालटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की धातु की डोलची जो पानी भरने के काम आती है।

बालतंत्र, बालतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों के पालन-पोषण की विद्या। कौमार-भृत्य।

बालतनय [संज्ञा पु.] (सं.) खैर का पेड़।

बालतृण [संज्ञा पु.] (सं.) हरीघास।

बालतोड़ [संज्ञा पु.](हिं.) झटके द्वारा बाल टूटने से होने वाला फोड़ा।

बालत्व [संज्ञा पु.] (सं.) बालकता। बचपन। लड़कपन।

बालद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल।

बालदलक [संज्ञा पु.](सं.) खदिर का पेड़।

बालधि [संज्ञा पु.] (सं.) दुम। पूँछ।

बालधी [संज्ञा पु.] (हिं.) दुम। पूँछ।

बालना [क्रि. स.] (हिं.) १-जलाना। २-प्रज्वलित करना।

बालपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैर का पेड़। २-जवासा।

बालपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बालक होने का भाव २-बालक होने की अवस्था। लड़कपन। बचपन।

बालपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथिका। मेथी।

बालपश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-सिर के केशों में धारण करने का पुराने ढङ्ग का गहना। २-चोटी में गूँथने की मोती की लड़ी।

बालपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यूथिका। जूही।

बालबच्चे [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़के बाले। संतान। औलाद।

बालबुद्धि [संज्ञा स्त्री] (सं.) बालकों के समान बुद्धि।

बालबोध [संज्ञा स्त्री] (सं) देवनागरी लिपि।

बालबोधक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत सहज या सरल।

बालब्रह्मचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. बालब्रह्मचारिणी] वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचारी रहने का व्रत लिया हो।

बालभाव [संज्ञा पु.] (सं.) लड़कपन। बालपन।

बालभोज्य [संज्ञा पु.] (सं.) चना।

बालभैषज्य [संज्ञा पु.] (सं.) रसांजन।

बालभोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे प्रातःकाल रखा जाता है।

बालम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पति। स्वामी। २-प्रणयी। प्रेमी।

बालमखीरा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का खीरा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

बालमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

बालमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात मातृकाएँ जिनके विषय में प्रसिद्ध है कि यह बालकों को पकड़ती और उन्हें रोगी बनाती हैं।

बालमुकुन्द, बालमुकुन्द [संज्ञा पु](सं) बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।

बालमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी और कच्ची मूली।

बालमूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमड़े का पेड़।

बालरस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की औषध।

बालराज [संज्ञा पु.] (सं.) वैदूर्यमणि।

बालरोग [संज्ञा पु.] (सं.) बालक की व्याधि।

बाललीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बालकों के खेल या क्रीड़ा।

बालव [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार दूसरे करण का नाम।

बालवत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) कपोत। कबूतर।

बालविधवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो बाल्यावस्था में विधवा हो गई हो।

बालविधु [संज्ञा पु.] (सं.) अमावस्या के बाद दीख पड़ने वाला नवीन चन्द्रमा।

बालविवाह [संज्ञा पु.] (सं.) छुटपन या छोटी अवस्था में होने वाला विवाह।

बालव्यजन [संज्ञा पु.] (सं.) चामर। चँवर।

बालव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) मंजुश्री या मंजुघोष का एक नाम।

बालसाँगड़ा, बालसिंगड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

बालसूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदयकाल का सूर्य। सवेरे के समय का निकलता हुआ सूर्य। २-वैदूर्यमणि।

बालस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) लड़कपन।

बालहस्त [संज्ञा पु.] (सं) केशसमूह।

बाला [संज्ञा स्त्री] (सं) १-बारह तेरह वर्ष की

बालाई

सोलह-सत्रह वर्ष तक की जवान स्त्री । २-पत्नी । भार्या । ३-स्त्री । औरत । ४-दो वर्ष की अवस्था की लड़की । ५-पुत्री । कन्या । ६-दस महाविद्याओं में से एक का नाम । ७-एक वर्ण जिसके प्रत्येक चरण में तीन रगण और एक गुरु होता है । ८-एक प्रकार की कीड़ी जो गेहूं की फसल में लगती है । ९-चीनी ककड़ी । १०-छोटी इलायची । ११-एक वर्ष की अवस्था वाली गाय । १२-नीली कटसरैया । १३-मोइया नामक वृक्ष । १४-नारियल । १५-घीग्वार । घृतकुमारी । १६-हलदी । १७-केले का पौधा । १८-खैर का पेड़ ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ में पहनने का कड़ा । २-कान में पहनने की बड़ी बाली । ३-बालकों के समान अनजान । ४-सरल । निश्छल ।

बाला भोला-बहुत सीधा ।

[वि.] (फा.) जो ऊपर हो ऊँचा ।

बोलाबाला रहना-सम्मान और वैभव बना रहना । *बाला-बाला*-१-ऊपर ही ऊपर । २-बाहर-बाहर । ३-इस प्रकार जिसमें किसी को मालूम न हो ।

बालाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मलाई' ।

[वि.] (फा.) १-ऊपरी । ऊपर का । २-वेतन या नियत आय के अतिरिक्त ।

बालाकुप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अपराधियों को शारीरिक कष्ट पहुँचाने के लिए दिया जानेवाला दंड ।

बालाखाना [संज्ञा पु.] (फा.) मकान के ऊपर बैठक या कमरा ।

बालादस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अनुचित रीति से ले लेना । २-जबरदस्ती बल-प्रयोग ।

बालादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) हाल का उगा हुआ सूर्य ।

बालानशीन [संज्ञा पु.] (फा.) १-सब से ऊँचा अथवा श्रेष्ठ स्थान (बैठने का) । २-वह जो सब से ऊंचे स्थान पर बैठा हो ।

बालापन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लड़कपन । बचपन

बालाबर [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का छः कलिया अङ्गरखा ।

बालारुण [संज्ञा पु.] (सं.) तुरत का उगा हुआ सूर्य ।

बालारोग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नहरुआ रोग ।

बालार्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रातः का काल सूर्य २-कन्याराशि में स्थित सूर्य ।

बालि [संज्ञा पु.] (सं.) वानरराज सुग्रीव के बड़े भाई और अङ्गद के पिता का नाम ।

बालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी लड़की । कन्या । २-पुत्री । बेटी । ३-छोटी इलायची । ४-कान में पहनने की बाली । ५-बालू ।

बालिकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) बालि नामक बन्दर का पुत्र अङ्गद ।

बालिग [संज्ञा पु.] (अ.) वह जो बाल्यावस्था पार करके जवान हो चुका हो । वयस्क ।

बालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्विनीनक्षत्र का एक नाम ।

बालिश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तकिया ।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-बालक । शिशु । २-मूर्ख अबोध व्यक्ति ।

[वि.] (सं.) अबोध । अज्ञान । नासमझ । बेवकूफ ।

बालिश्त [संज्ञा पु.] (फा.) हाथ की उगलियां पूरी फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठका के सिरे तक की लम्बाई । बित्ता ।

बालिश्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाल्यावस्था । लड़कपन । २-मूर्खता । बेवकूफी । ३-किसी आदमी में ज्ञान ही न उत्पन्न होना या उत्पन्न होने पर भी बहुत कम विकसित होना । बड़े होने पर भी छोटे बालकों के समान अबोध और कम समझ होना । *अमेन्शिया* ।

बालिस-ट्रेन [संज्ञा स्त्री.] (अं. बैलास्टट्रेन) वह रेलगाड़ी जिस पर सड़क बनाने के सामान लादकर भेजे जाते हैं ।

बालिहंता, बालिहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीराम

बाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध आभूषण जो कान में पहना जाता है । २-जौ, गेहूँ आदि के पौधों का अग्रभाग जिस पर दाने उगे होते हैं । ३-खेत पर काम करने वाले मजदूर को वेतन के बदले में दिया जाने वाला अन्न ।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) हथौड़े की तरह का कसेरों का औजार ।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बालि' ।

बालीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत का मजदूर जो वेतन के स्थान पर अन्न लेता हो ।

बालीसबरी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह सबरा जिससे कसेरे थाली अथवा परात की कोर उभारते हैं

बालु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूर ।

बालुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एलुवा । २-पानिवालू ।

बालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रेत । बालू । २-एक प्रकार का कपूर । ककड़ी ।

बालुकायंत्र, बालुकायन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) औषध आदि को फूँकने का एक प्रकार का यंत्र जिसमें औषध को बालू भरी हांड़ी में रखकर आग पर रखते या आग से चारों ओर से ढकते हैं ।

बालुकाप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नरक का नाम ।

बालुकामय [वि] (सं.) बालू से भरा हुआ ।

बालुकास्वेद [संज्ञा पु.] (सं) पसीना कराने के लिए गरम बालू की गरमी पहुँचाने की क्रिया (भावप्रकाश) ।

बालुकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ककड़ी

बालू [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर का वह महीन चूर्ण या कण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ पर से आता है और नदियों के किनारे पर जम जाता है । रेणुका । रेत ।

बालू की भीत-शीघ्र नष्ट हो जाने वाला और अविश्वसनीय (पदार्थ) ।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली

बालूचर [संज्ञा पु] बंगाल के बालूचर स्थान का गांजा ।

बालूचरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भूमि जिस पर छिछला पानी भरा हो ।

बालूदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बालू रखने की झिझरीदार छोटी डिबिया जिसमें लोग बालू रखते हैं । इस बालू से स्याही सुखाई जाती है

बालूबर्द [वि.] (हिं.) बालू द्वारा नष्ट किया हुआ

[संज्ञा पु.] वह जमीन जिसकी उपजाऊ शक्ति बालू पड़ने के कारण नष्ट हो गई हो ।

बालूसाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मेदे की मिठाई ।

बालेंदु, बालेन्दु [संज्ञा पु.](सं.) नवोदित-चन्द्र ।

बालेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-गदहा । खर । २-चावल ।

[वि.] १-कोमल । मुलायम । २-जो बालकों के लिए लाभप्रद हो । ३-बलि देने के योग्य । ४-बालि के वंश का ।

बालेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) बेर ।

बाल्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'बालटी' ।

बाल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाल का भाव । लड़कपन । बचपन । २-बालक होने की अवस्था ।

[वि.] १-बालक-सम्बन्धी । बालक का । २-बालक की अवस्था से सम्बन्ध रखने वाला ।

बाल्यावस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनुष्यों में सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था । लड़कपन । २-छोटी या कम अवस्था ।

बाल्हक [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकुम । केसर ।

बाल्हीक [संज्ञा पु.] (सं.) जनमेजय के एक पुत्र का नाम ।

बाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वायु । हवा । २-वायु का प्रकोप । बाई । ३-अपान वायु । पाद । *बाव रसना*-पाद निकलना । [संज्ञा पु.] (फा.) जमींदारों का एक हक जो उन्हें आसामी की कन्या के विवाह के अवसर पर मिलता है ।

बावजूद [क्रि. वि.] (फा.) इतना होने पर भी । इस पर भी ।

बावड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-वह बड़ा और चौड़ा कुआँ जिसमे नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं । २-छोटा और गहरा तालाब ।

बावन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बामन' । [वि] पचास और दो । *बावन तोले पाव रत्ती*-जो पूरी तरह ठीक हो । *बावन वीर*-अत्यधिक चतुर और वीर ।

बावनवाँ [वि] (हिं) जो क्रम में इक्यावन के बाद आये ।

बावना [वि.] (हिं.) देखो 'बौना'।

बावभक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पागलपन। सिड़ीपन

बावर* [वि.] (हिं.) १-पागल। बावला। २-मूर्ख। बेवकूफ। [संज्ञा पु.] (फा.) यकीन। विश्वास।

बावरची [संज्ञा पु.] (फा.) रसोइया। भोजन बनाने वाला (मुसलमान)।

बावरचीखाना [संज्ञा पु] (फा) रसोईघर। भोजन पकाने का स्थान।

बावरा [वि] (हिं) देखो 'बावला'।

बावरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बावली'।

बावरी+ [वि.] (हिं) बावली। पगली। [संज्ञा स्त्री.] (देश) एक प्रकार की बारहमासी घास

बावल [संज्ञा पु] (डिं) आँधी। अंधड़।

बावला [वि] (हिं.) १-पागल। २-मूर्ख। ३-जिसे वायु का प्रकोप हो।

बावलापन [संज्ञा पु.](हिं.) पागलपन। सिड़ीपन

बावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह चौड़े मुँह वाला कुआँ जिसमें पानी तक सीढ़ियां लगी हो। २-छोटा गहरा तालाब जिसमें पानी तक सीढ़ियां बनी हों। ३-एक प्रकार की हजामत जिसमें चोटी से माथे तक के बाल काटकर सड़क सी बना देते हैं।

बावाँ* [वि.] (हिं) १-बाई ओर का। २-प्रतिकूल। विरुद्ध।

बाशिंदा [संज्ञा पु.] (फा) निवासी। रहने वाला

बाष्कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-योद्धा। वीर। २-एक ऋषि का नाम। एक उपनिषद् का नाम। एक दैत्य का नाम।

बाष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँसू। २-भाप। ३-लोहा। ४-एक प्रकार की जड़ी। ५-गौतमबुद्ध के एक शिष्य का नाम।

बाष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंगुपुत्री।

बासंतिक, बासन्तिक [वि.] (सं.) १-बसंतऋतु-सम्बन्धी। २-बसंतऋतु में होने वाला।

बासंती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माधवीलता। २-अडूसा। बासा।

बास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रहने की क्रिया या भाव। निवास। २-रहने का स्थान। ३-गंध। महक। ४-वस्त्र। कपड़ा। पोशाक। ५-छोटा वस्त्र। ६-एक छंद का नाम। [संज्ञा स्त्री.] १-वासना। इच्छा। २-अग्नि। आग। ३-तोप के गोले में भरी हुई छुरियां या तेज धार वाले दूसरे छोटे अस्त्र। ४-एक प्रकार के अस्त्र। [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी काली और मजबूत होती है।

बासकर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) यज्ञशाला।

बासकसज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो पति या प्रियतम के आने के समय के लिए क्रीड़ा की सामग्री एकत्रित करती हो।

बासठ [वि.] (हिं.) साठ और दो।

बासठवाँ [वि.] (हिं.) इकसठ के बाद वाला।

बासदेव [संज्ञा पु.] (डिं.) अग्नि। आग। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वासुदेव'।

बासन [संज्ञा पु.] (हिं.) बरतन। भाँड़ा।

बासना [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-इच्छा। चाह। वांछा। २-गंध। महक। [क्रि. स.] सुगंधित करना। महकाना।

बासफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का धान २-इस धान का चावल।

बासमती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का धान २-इस धान का चावल जो बहुत बढ़िया होता है।

बासर [संज्ञा पु.] (हिं) १-दिन। २-सवेरा। प्रातःकाल। सुबह। ३-सवेरे के समय गाया जाने वाला राग।

बासव [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

बासवी [संज्ञा पु.] (डिं.) अर्जुन।

बासवी-दिशा [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्वदिशा।

बाससी [संज्ञा पु.] (सं.) वस्त्र। कपड़ा।

बासा [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का पक्षी। २-अड़ूसा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह स्थान जहां पकी हुई रसोई बिकती है। २-एक प्रकार की घास। ३-देखो 'बास'। ४-देखो 'पियाबाँस'।

बासित [वि.] (हिं.) सुगंधित किया हुआ।

बासिष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनास नदी का एक नाम।

बासी [वि.] (हिं.) १-देर का पका हुआ। 'ताजा' का उलटा। २-कुछ समय का रखा हुआ। ३-सूखा या कुम्हलाया हुआ। ४-(फल) जिसे डाल से टूटे या पेड़ से अलग हुए ज्यादा देर हो गई हो। ५-रहने वाला। बसने वाला। *बासी कढ़ी में उबाल आना*-१-बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। २-बहुत समय बीत जाने पर किसी कार्य के लिए उत्सुकतापूर्ण प्रयत्न होना।

बासु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बास'।

बासौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बसौंधी'।

बाह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खेत को जोतने की क्रिया। २-देखो 'बाँह'।

बाहकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पालकी ढोने का काम करने वाली स्त्री। कहारिन।

बाहड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह खिचड़ी जो मसाला और कुम्हड़ौरी डालकर पकाई गई हो

बाहन [संज्ञा पु.](देश.) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी लाल और भारी होती है। २-काश्मीर और पंजाब में होने वाला एक वृक्ष जो बहुत जल्दी बढ़ जाता है।

बाहना* [क्रि. स.] (हिं.) १-ढोना। लादना या चढ़कर ले आना। २-चलाना (हथियार)। ३-
गाड़ी आदि हांकना। ४-बहाना।
करना। ५-खेत जोतना। ६-धारण
७-बालों में कंघी करना। ८-गाय, भैंस
को गाभिन करना।

बाहनी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वाहिनी।
फौज।

बाहबली [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का

बाहम [क्रि. वि.] (फा.) आपस में।
दूसरे के साथ।

बाहर [क्रि. वि.] (हिं.) १-किसी
कल्पित सीमा या मर्यादा से हटा
अथवा निकाला हुआ। 'भीतर' अथवा
का उलटा। २-किसी दूसरी जगह।
नगर या शहर में। ३-अधिकार, प्रभाव
से अलग या परे। ४-बगैर।
(क्वचित)।
बाहर आना या होना-सामने आना।
होना। *बाहर करना*-निकालना।
बाहर बाहर-अलग-अलग। ऊपर-ऊपर
बाहर रहते हुए। *बाहर का*-बेगाना। पराया
अपरिचित।

बाहरजामी* [संज्ञा पु.] (हिं.) ईश्वर का
रूप। राम, कृष्ण आदि अवतार।

बाहरी [वि.] (हिं.) १-बाहर का। बाहर
२-पराया। गैर। ३-बाहर या ऊपर से
वाला। ऊपरी।

बाहरीटाँग [संज्ञा स्त्री] (हिं.) कुश्ती का
पेंच।

बाहस [संज्ञा पु.] (डिं.) अजगर।

बाहाँजोरी [क्रि. वि.] (हिं) भुजा से भुजा
हाथ से हाथ मिलाकर।

बाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रस्सी जिससे
डांड़ बांधा जाता है।

बाहिज* [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊपर से। बाहर

बाहिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह सेना
में ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ सवार और
पैदल हों। २-सेना। फौज। ३-नदी।
यान।

बाहिर [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'बाहर'।

बाही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाँह'।

बाहु [संज्ञा स्त्री] (सं.) भुजा। हाथ। बाँह।

बाहुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा नल का
हुआ नाम जब वह सारथी बने थे।
नाग का नाम। ३-नकुल का नाम।

बाहुकर [वि.] (सं.) हाथों से काम करने

बाहुकुंथ, बाहुकुन्थ [संज्ञा पु] (सं)

बाहुज [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रिय, जिनकी
ब्रह्मा के हाथ से मानी जाती है।

बाहुत्राण* [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का
जो युद्ध के समय पहना जाता है।

बाहुदंती, बाहुदन्ती [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

बाहुदंतेय, बाहुदन्तेय [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

बाहुदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम। २-परीक्षित की पत्नी का नाम।

बाहुपाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाहु या भुजा के फंदे में। २-एक युद्धकौशल जो बाहु द्वारा बना होता है।

बाहुप्रलंब, बाहुप्रलम्ब [वि.] (सं.) लंबी भुजाओं वाला।

बाहुबल [संज्ञा पु.] (सं.) शारीरिक-शक्ति। पराक्रम। बहादुरी।

बाहुभाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बोलने वाला।

बाहुभूषा [संज्ञा पु.] (सं.) बांह पर पहनने का आभूषण।

बाहुभेदी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

बाहुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) कंधे और बांह के बीच का जोड़।

बाहुयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) कुश्ती।

बाहुरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बहुरना'।

बाहुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ की रक्षा के लिए युद्ध के समय पहनने का दस्ताना। २-कार्तिक का महीना। ३-अग्नि। आग।

बाहुलग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) मोर।

बाहुलेय [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

बाहुल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुतायत। अधिकता। २-व्यर्थता। फालतूपन।

बाहुविस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) ताल ठोंकना।

बाहुवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) बाहुबल। पराक्रम।

बाहुशाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीम। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३-एक दानव का नाम

बाहुशिखर [संज्ञा पु.] (सं.) स्कंध। कंधा।

बाहुशोष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वायु रोग जिसमें बांह में पीड़ा होती है।

बाहुश्रुत्य [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत सी बातें सुनकर प्राप्त की हुई जानकारी।

बाहुसंभव, बाहुसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रिय

बाहुहज़ार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहस्रबाहू'।

बाहू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बाहु'।

बाहर+ [क्रि. वि.] (हिं.) अपने स्थान या पद से च्युत। पतित। निकृष्ट।

बाह्मन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्राह्मण'।

बाह्य [वि.] (सं.) बाहिर का। बाहिरी। [संज्ञा पु.] १-भार ढोने वाला पशु। २-सवारी। यान।

बाह्यकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक नाग का नाम।

बाह्यकुंड, बाह्यकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

बाह्यद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) वैशेष. के अनुसार पारे का एक संस्कार।

बाह्यतपश्चर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैन मतानुसार तपस्या का एक भेद।

बाह्यनाम [संज्ञा पु.] (सं.) खत या पत्रों पर लिखा जाने वाला (पाने वाले का) नाम और ठिकाना। पता। एड्रेस।

बाह्यनामिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके नाम पत्र आदि भेजे जायँ। एड्रेसी।

बाह्यपटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवनिका। नाटक का परदा।

बाह्यभ्यंतर, बाह्यभ्यन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम का एक भेद।

बाह्यभ्यंतराक्षेपी, बाह्यभ्यन्तराक्षेपी [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणायाम का एक भेद।

बाह्यविद्रधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोग विशेष जिसमें शरीर के किसी भाग में सूजन और फोड़े की सी पीड़ा होती है।

बाह्यविषय [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणवायु को बाहर अधिक रोकना।

बाह्यवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राणायाम का एक भेद।

बाह्यशून्यवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धान्त जिसमें रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय। आदर्शवाद। आइडियलिज्म

बाह्यशून्यवादी [संज्ञा पु.] (सं.) बाह्यशून्यवाद सिद्धांत को मानने वाला। आदर्शवादी।

बाह्याचरण [संज्ञा पु.] (सं.) आडम्बर। ढकोसला

बाह्यायाम [संज्ञा पु.] (सं.) वायु-संबन्धी एक रोग

बाह्येंद्रिय, बाह्येन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा यह पांचों इन्द्रियां जिनसे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है।

बाह्लीक [संज्ञा पु.] (सं.) कंबोज के उत्तरप्रदेश का प्राचीन नाम। यह काबुल के उत्तर में है।

बिंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-व्यंग्य। काकोक्ति। २-ताना। आक्षेपपूर्ण वाक्य।

बिंजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भोज्य पदार्थ। २-देखो 'व्यंजन'। (पङ्खा)।

बिंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी की बूँद। २-दोनों भँवों के बीच का स्थान। ३-वीर्य की बूंद। ४-बिन्दी। माथे का तिलक।

बिंदा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक गोपी का नाम। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-माथे पर का बड़ा और गोल टीका। २-इस तरह का कोई चिह्न।

बिंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शून्य। बिन्दु। सिफर। २-माथे पर लगाने का छोटा और गोल टीका। ३-इस प्रकार का कोई चिह्न।

बिंदु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिंदु'। [संज्ञा स्त्री] देखो 'बिंदी'।

बिंदुका, बिंदुरी, बिंदुली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'बिंदी'।

बिंद्रावन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वृन्दावन'।

बिंध+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विन्ध्याचल'।

बिंधना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बींधा या छेदा जाना २-फँसना। उलझना।

बिंधिया [संज्ञा पु.] (हिं.) मोती में छेद करने वाला।

बिंब [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रतिबिंब। अक्स। छाया। २-कमंडलु। ३-प्रतिमूर्त्ति। ४-कुंदरू नामक फल। ५-सूर्य अथवा चन्द्रमा का मंडल। ६-कोई मंडल। ७-गिरगिट। ८-सूर्य। ९-आभास। झलक। १०-एक प्रकार का छन्द।

बिंबक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य या चन्द्रमा का मंडल। २-सांचा। ३-कुंदरू। ४-एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

बिंबट, बिम्बट [संज्ञा पु.] (सं.) सरसों।

बिंबफल, बिम्बफल [संज्ञा पु.] (सं.) कुँदरू।

बिंबसार [संज्ञा पु.] देखो 'बिंबिसार'।

बिंबा, बिम्बा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंदरूफल। २-प्रतिछाया। ३-चन्द्रमा या सूर्य का मंडल।

बिंबिसार, बिम्बिसार [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध के समकालीन एक प्राचीन राजा का नाम जो अजातशत्रु के पिता थे।

बिंबू, बिम्बू [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी।

बि* [वि.] (हिं.) दो (संख्या)।

बिअहुता [वि.] (हिं.) १-जिससे विवाह हुआ हो। २-विवाह-सम्बन्धी।

बिआज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्याज।

बिआधि* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'व्याधि'।

बिआधु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्याध'।

बिआना [क्रि. स.] (हिं.) बच्चा देना। ब्याना। (पशु)।

बिआपी [वि.] (हिं.) देखो 'व्यापी'।

बिआस [संज्ञा पु.] (हिं.) पौराणिक कथा सुनाने वाला। कथक्कड़। व्यास।

बिआहना+ [क्रि. स.] (हिं.) ब्याहना।

बिओग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वियोग'।

बिओगी+ [वि.] (हिं.) देखो 'वियोगी'।

बिकट [वि.] (हिं.) देखो 'विकट'।

बिकना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु का मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना। किसी के हाथ बिकना-किसी का अनुचर या दास होना।

बिकरम+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विक्रमादित्य'

बिकरार [वि.] (हिं.) १-व्याकुल। विकल। बेचैन २-कठिन। भयानक। भयंकर।

बिकराल [वि.] (हिं.) देखो 'विकराल।

बिकल+ [वि.] (हिं.) १-व्याकुल। घबराया हुआ

२-बेचैन।

बिकलाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्याकुलता। बेचैनी

बिकलाना* [क्रि. अ.] (हिं.) व्याकुल या बेचैन होना। घबराना।
[क्रि. स.] (हिं.) व्याकुल या बेचैन करना।

बिकवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को बेचने में प्रवृत्त करना।

बिकवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) बेचने वाला।

बिकसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विकसित होना। खिलना। फूलना। २-प्रफुल्ल या प्रसन्न होना

बिकसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-विकसित करना। खिलाना। २-प्रसन्न करना।
[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिकसना'।

बिकाऊ [वि.] (हिं.) जो बिकने को हो। जो बेचा जाने वाला हो।

बिकाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिकना'।

बिकार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिगड़ा हुआ रूप। विकृति। विक्रिया। २-रोग। पीड़ा। दुःख। ३-दोष। ऐब। ४-पापकर्म। ५-कुवासना। ६-जिसकी दशा विकृत हो। ७-विकराल। विकट। भीषण।

बिकारी+ [वि.] (हिं.) १-विकृत या बिगड़े रूप वाला। २-हानिकारक। अहितकर।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रुपयों की संख्या या मन सेर आदि का मान सूचित करने के लिये लगाई जाने वाली टेढ़ी पाई जो यह है—)ऽ

बिकासना* [क्रि. स.] (हिं.) १-विकसित करना २-(फूल) खिलाना।

बिकुंठ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैकुण्ठ'।

बिक्ख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विष'।

बिक्रमाजीत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विक्रमाजीत'।

बिक्रमी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैक्रमीय'।

बिक्रा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिक्री'।

बिक्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु के बेचे जाने की क्रिया या भाव। विक्रय। २-बेचने से प्राप्त होने वाला या मिलने वाला धन।

बिक्री-कर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह राजकीय या सरकारी कर जो ग्राहकों से उनके हाथ बेची हुई वस्तुओं पर लिया जाता है। *सेल्स-टैक्स*।

बिक्रू [वि.] (हिं.) बेचने योग्य। बिकाऊ।

बिख* [संज्ञा पु.] (हिं.) विष। जहर।

बिखम* [वि.] (हिं.) देखो 'विषम'।

बिखरना [क्रि. अ.] (हिं.) छितराना। तितर-बितर होजाना।

बिखराना [क्रि. स.] (हिं.) इधर-उधर फैलाना। छितराना।

बिखाद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विषाद'।

बिखान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विषाण'।

बिखेरना [क्रि. स.] (हिं.) इधर-उधर फैलाना। छितराना।

बिखौंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) ज्वार की जाति की एक प्रकार की घास जो ऋतुओं में रहती है।

बिग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बीग'।

बिगड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गुण रूप आदि में विकार होना। खराब होना। २-किसी वस्तु के बनते समय कोई ऐसी खराबी या विकार होना जिससे वह ठीक न उतरे। ३-बुरी दशा को प्राप्त होना। दुरवस्था में आना। ४-नीतिपथ से भ्रष्ट होना। चाल चलन अच्छा न होना। ५-क्रुद्ध होना। अप्रसन्नता प्रकट करना। ६-विरोधी होना। विरोध करना। ७-(पशुओं आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। ८-आपस में विरोध या वैमनस्य होना। ९-व्यर्थ खर्च होना।

बिगड़ेदिल [वि.] (हिं.) १-बात-बात में लड़ने-झगड़ने वाला। २-कुमार्ग पर चलने वाला।

बिगड़ैल [वि.] (हिं.) १-बात-बात में क्रोध करने वाला। क्रोधी स्वभाव का। २-हठी। जिद्दी। ३-बुरे चालचलन वाला।

बिगर+ [क्रि. वि.] बिना। रहित। बगैर।

बिगरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिगड़ना'।

बिगराइल, बिगरायल+ [वि.] (हिं.) १-हठी। जिद्दी। २-बिगड़ा हुआ। बुरे चालचलन वाला।

बिगसना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिकसना'।

बिगसाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिकसाना'।
[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिकसना'।

बिगहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बीघा'।

बिगही+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) क्यारी। बरही।

बिगाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिगड़ने की क्रिया या भाव। २-दोष। खराबी। ३-मनमुटाव। वैमनस्य। झगड़ा। लड़ाई।

बिगाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी पदार्थ के स्वभाविक गुण अथवा रूप में विकार उत्पन्न कर देना। २-किसी पदार्थ को बनाते समय उसमें ऐसा दोष या विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३-दुरवस्था में लाना या पहुँचाना। बुरी दशा में लाना। ४-नीति या कुमार्ग में लगना। नीति पथ से भ्रष्ट होना। ५-स्त्री का सतीत्व हरण करना। पातिव्रत्य भङ्ग करना। ६-बुरी आदत लगाना। स्वभाव खराब करना। ७-व्यर्थ खर्च करना। ८-बहकाना।

बिगाना+ [वि.] (फा.) १-पराया। गैर। २-अपरिचित। अनजान। अजनबी।

बिगार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिगाड़'।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बेगार'।

बिगारि* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बेगार'।

बिगारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बेगारी'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेगारी'।

बिगाम*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिश्रा

बिगासना* [क्रि. स.] (हिं.) विकसित कर
खिलाना।

बिगाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिग्गाहा'।

बिगिर* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'बगैर'।

बिगुन* [वि.] (हिं.) जिसमें कोई गुण न हो
गुणहीन।

बिगुर* [वि.] (हिं.) जिसने किसी गुरु से शि
अथवा दीक्षा न ली हो। निगुरा।

बिगुरचिन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिगूच

बिगुरदा* [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ह
यार जो प्राचीन काल में होता था।

बिगुर्चन*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिगू

बिगुल* [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार की तुरही
सैनिक एकत्र करने के लिए बजाई जाती

बिगुलर* [संज्ञा पु.] (अं.) सेना में बिगुल ब
वाला।

बिगूचन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह अवस्था
कर्त्तव्य का ठीक-ठीक निश्चय न हो
असमंजस। २-कठिनता।

बिगूचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अड़चन या अस
मंजस में पड़ना। २-पकड़ा जाना।
जाना। [क्रि. स.] (हिं.) दबोचना।

बिगूतना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिगूचना'।

बिगोना [क्रि. स.] (हिं.) १-नष्ट करना।
ड़ना। २-दुराना। छिपाना। ३-तंग
दिक करना। ४-बहकाना। भ्रम में डा
५-बिताना।

बिग्गाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) आर्याछंद का
इसे 'उद्गीति' भी कहते हैं।

बिग्रह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शरीर। देह।
झगड़ा। कलह। ३-विभाग। ४-
बिघटना [क्रि. स.] (हिं.) १-विघटित कर
विनष्ट करना। ३-बिगाड़ना।
फोड़ना।

बिघन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विघ्न'।

बिघनहरन* [वि.] (हिं.) विघ्न या
करने वाला।
[संज्ञा पु.] गणेशजी। गजानन।

बिच* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'बीच'।

बिचकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-(मुख
होना। २-भड़कना। चौंकना।

बिचकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-(मुँह)
२-किसी अप्रिय बात या वस्तु को
मुँह टेढ़ा करना। मुँह बनाना।
चौंकना।

बिचच्छन* [वि.] (हिं.) देखो 'विचक्ष

बिचरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घूमना
इधर-उधर घूमना। २-पर्यटन करना।
करना।

बिचलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विचलित होना। इधर-उधर होना। २-कहकर इनकार कर जाना। मुकरना। ३-साहस छोड़ना। हिम्मत हारना।

बिचला [वि.] (हिं.) [स्त्री. बिचली] बीच वाला जो बीच में हो।

बिचलाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-चलायमान करना। विचलित करना। डिगाना। २-हिला-देना। तितर-बितर करना।

बिचवई [संज्ञा पु.] (हिं.) बीच में पड़कर झगड़ा निपटाने वाला। मध्यस्थ।
[संज्ञा स्त्री.] बीच में पड़कर झगड़ा निपटाने की क्रिया या भाव। मध्यस्थता।

बिचवान, बिचवानी [संज्ञा पु.] (हिं.) बीच-बिचाव करने वाला। मध्यस्थ।

बिचहुत* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अन्तर। फर्क। २-दुविधा। सन्देह।

बिचारना* [क्रि. अ] (हिं.) १-विचार करना। सोचना। गौर करना। २-पूछना। प्रश्न करना।

बिचारमान [वि.] (हिं.) १-विचारने योग्य। २-विचार करने वाला। बुद्धिमान।

बिचारा [वि.] (हिं) देखो 'बेचारा'।

बिचार्ग* [संज्ञा पु.](हिं.) विचार करने वाला।

बिचाल* [संज्ञा पु.](हिं.) १-अलग करना। २-अन्तर। फर्क।

बिचेत* [वि.] (हिं.) १-मूर्छित। बेहोश। अचेत २-बदहवास।

बिचौनी, बिचौहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिचवई'।

बिच्छित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शृङ्गाररस के ग्यारह हावों में से एक।

बिच्छी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिच्छू'।

बिच्छू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर जिसके डंक में विष होता है। २-एक प्रकार की घास जिसके स्पर्श से बिच्छू के काटने की सी जलन होती है। ३-काकतुण्डी नामक पौधा या उसका फल।

बिच्छेप*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विक्षेप'।

बिछड़न [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिछड़ने का भाव।

बिछड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) अलग या जुदा होना।

बिछना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बिछाया या फैलाया जाना। २-किसी वस्तु का भूमि पर बिखेरा जाना। छितराया जाना। ३-(मारपीटकर) भूमि पर गिराया जाना।

बिछलन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'फिसलना'।

बिछलना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फिसलना'।

बिछलाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'फिसलाना'।

बिछवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिछाई'।

बिछवाना [क्रि. स.] (हिं.) बिछाने का काम किसी और से कराना। दूसरे को बिछाने में प्रवृत्त करना।

बिछाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिछाने या फैलाने की क्रिया या भाव। २-बिछाने की मजदूरी। बिछाने के पारिश्रमिक रूप में मिलने वाला धन।

बिछान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिछौना'।

बिछाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बिस्तर, कपड़ा आदि जमीन पर पूरी दूरी तक फैलाना। २-कोई वस्तु अथवा वस्तुएँ कुछ दूरी तक भूमि पर फैलाना। बिखेरना। बिखराना। ३-मारकर जमीन पर गिरा या लेटा देना।

बिछायत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिछौना'।

बिछावन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिछौना'।

बिछावना+ [क्रि स.] (हिं.) देखो 'बिछाना'।

बिछिआ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैर की उँगलियों में पहनने का घुँघरूदार छल्ला।

बिछिप्त* [वि.] (हिं.) देखो 'विक्षिप्त'।

बिछुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक गहना जो पैर में पहना जाता है। २-एक प्रकार की छुरी। ३-एक प्रकार की करधनी। ४-सन की पूली। ५-एक पौधा जिसे आंगया या भावर कहते हैं।

बिछुड़न+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बिछुड़ने या अलग होने का भाव। २-वियोग। जुदाई। विरह।

बिछुड़ना [क्रि. अ.](हिं.) १-अलग या जुदा होना। वियोग होना।

बिछुरता* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिछुड़ने वाला। २-जो बिछुड़ गया हो।

बिछुरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिछुड़ना'।

बिछुरनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिछुड़न'।

बिछुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिछुआ'।

बिछूना* [संज्ञा पु.] (हिं.) बिछुड़ा हुआ। जो बिछुड़ गया हो।

बिछोई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो बिछुड़ा हुआ हो। २-जो विरह का दुःख सह रहा हो। विरही।

बिछोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिछुड़ने की क्रिया या भाव। अलग या जुदा होना। २-वियोग होना।

बिछोय* [संज्ञा पु.] (हिं.) वियोग। जुदाई।

बिछोह [संज्ञा पु.] (हिं.) विरह। वियोग। जुदाई।

बिछौना [संज्ञा पु] (हिं.) वे कपड़े जो सोने अथवा बैठने के लिए बिछाये जाते हैं। बिछावन। बिस्तर।

बिजउर* [संज्ञा पु.] (हिं.) 'बिजौरा'।

बिजड़ [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) तलवार। खड्ग।

बिजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा हवा करने का पंखा। [वि.] (हिं.) १-एकांत (स्थान) २-जिसके साथ कोई न हो। एकाकी। अकेला। [संज्ञा पु.] (हिं) सुनसान जगह। निर्जन स्थान।

बिजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक जंगली जाति का नाम।

बिजय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विजय'।

बिजयखार [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'बिजयसार'।

बिजयघंट [संज्ञा पु] (हिं.) मंदिरों में लटकाने का बड़ा घण्टा।

बिजयसार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी मजबूत होती है।

बिजरी [संज्ञा स्त्री] (देश.) अलसी या तीसी का पौधा।

बिजली [संज्ञा स्त्री,] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध शक्ति जिससे वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण और ताप तथा प्रकाश होता है। यह कुछ विशिष्ट क्रियाओं द्वारा उत्पन्न की जाती है। विद्युत। २-आसमान में सहसा क्षणभर के लिये दीप्त पड़ने वाला वह प्रकाश जो बादलों में वातावरण की उक्त शक्ति के संचार के कारण होता है। चपला। ३-आम की गुठली के भीतर की गिरी। ४-गले में पहनने का एक गहना। ५-कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।
बिजली गिरना या पड़ना-बिजली का आकाश से वेगपूर्वक पृथ्वी की ओर आना। (इसके छूने से मार्ग में पड़ने वाले पदार्थ गलकर नष्ट हो जाते हैं तथा जीव और मनुष्य प्राय मर जाते हैं)। *बिजली कड़ना*-बिजली के आकाश में फैलने से बादलों में जोर की गड़गड़ाहट होना। [वि.] (हिं) १-अतिशय चंचल या तेज। २-अत्यधिक चमकने वाला। चमकीला।

बिजलीघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ से आस-पास के स्थानों मे बिजली पहुँचाई जाती है।

बिजलीमार [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का वृक्ष जो बड़ा, सुन्दर और छायादार होता है

बिजहन [वि.](हिं.) जिसका बीज नष्ट होगया हो

बिजाती [वि.] (हिं.) १-दूसरी जाति का। २-दूसरी तरह का। ३-जाति से बहिष्कृत या निकाला हुआ।

बिजान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अनजान'।

बिजायठ [संज्ञा पु.] बाजूबंद नामक गहना जो बांह पर पहना जाता है। अंगद। भुज। बाजू

बिजार [संज्ञा पु] (हिं) १-सांड़। २-बैल।

बिजुरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजली'।

बिजूका, बिजूखा [संज्ञा पु.] (देश) १-पक्षियों को डराने के लिए खेत में उलटी टांगी हुई काली हाँडी अथवा इसी प्रकार कोई वस्तु। २-छल। धोखा।

बिजैसार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजयसार'

बिजोग* [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'वियोग'

बिजोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिजौरा'। [वि.] (हिं.) कमजोर। अशक्त। निर्बल।

बिजोहा [संज्ञा पु] (?) केशव के मतानुसार एक छंद का नाम।

बिजौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) नीबू की जाति का एक वृक्ष। इसके फल नारङ्गी के बराबर होते हैं।

बिजौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कुम्हड़ौरी'।

बिज्जु* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजली'।

बिज्जुपात* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वज्रपात'।

बिज्जुल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'छिलका'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिजली।

बिज्जू [संज्ञा पु.](देश.) बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जङ्गली जानवर। यह कब्रों को खोदकर मृतशरीरों को निकाल कर खा जाता है।

बिज्जूहा [संज्ञा पु.] (?) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं।

बिझँवारी [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की भाषा जो छत्तीसगढ़ में बोली जाती है।

बिझरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक में मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जौ।

बिझुकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-भड़कना। २-डरना। भयभीत होना। ३-तनने के कारण कुछ टेढ़ा होना।

बिझुकाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भड़काना। २-डराना।

बिट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो। २-वैश्य। ३-पक्षियों की बिष्टा। बीट। ४-नीच। खल।

बिटरना [क्रि. अ.] (हिं) १-घंघोला जाना। २-गंदा होना।

बिटारना [क्रि. स] (हिं.) १-घंघोला जाना। २-घंघोल कर गंदा करना।

बिटिनिया, बिटिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'बेटी'।

बिट्ठल [संज्ञा पु.] (हिं) १-विष्णु का एक नाम २-बम्बई प्रान्त में शोलापुर के अन्तर्गत पंढरपुर नगर की एक प्रधान देवमूर्ति।

बिठलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बैठाना'।

बिठाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बैठाना'।

बिडंब [संज्ञा पु.] (हिं) आडंबर। दिखावा।

बिडंबना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नकल या स्वरूप उतारना। २-उपहास। हँसी। निन्दा। बदनामी।

बिड [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिष्टा। २-एक प्रकार का नमक।

बिडर [वि.] (हिं.) १-बिखरा या छितराया हुआ २-अलग-अलग। + जिसे भय न हो। निडर। ३-धृष्ट। ढीठ।

बिडरना [क्रि अ] (हिं) १-इधर-उधर होना। बिखरना। २-पशुओं का भयभीत होने के कारण बिदकना। ३-नष्ट या बरबाद होना।

बिडवना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'तोड़ना'।

बिडराना [क्रि. स.] (हिं.) १-इधर-उधर या तितर बितर करना। २-भागना।

बिड़ायते [वि.] (हिं.) अधिक। ज्यादा।

बिडारना [क्रि. स.] (हिं.) १-भयभीत करके भगाना। २-नष्ट करना।

बिड़ाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिलाव। बिल्ली। २-आँख का ढेला। ३-बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसका दुर्गा ने संहार किया था। ४-आँख के रोग की औषध विशेष। ५-दोहे के बीसवें भेद का नाम। इसमें तीन अक्षर गुरु और ४२ लघु होते हैं।

बिड़ालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँख का गोलक। २-पलकों पर लेप चढ़ाने की क्रिया।

बिड़ालपाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक तौल जो १६ माशे की होती थी।

बिड़ालवृत्तिक [वि.] (सं.) बिल्ली की सी प्रकृति या स्वभाव वाला। लोभी, कपटी, दंभी, हिंसक, सबको धोखा देने वाला और सबसे टेढ़ा रहने वाला।

बिड़ालाक्ष [वि.] (सं.) बिल्ली की सी आँखों वाला।

बिड़ालाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक राक्षसी का नाम।

बिड़ालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिल्ली। २-हरताल।

बिड़ाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिल्ली। २-आँख का एक रोग। एक योगिनी जो 'बिड़ाली' रोग की अधिष्ठात्री मानी जाती है। ३-एक प्रकार का पौधा।

बिड़िक [संज्ञा स्त्री.] (सं) पान का बीड़ा। गिलौरी।

बिड़ौजा [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

बिढ़तो* [संज्ञा पु.] (हिं.) कमाई। लाभ। नफा।

बिढ़वना* [क्रि. स.](हिं.) १-कमाना। २-संचित या इकट्ठा करना।

बिढ़ाना* [क्रि. स.] हिं.) १-कमाना। २-इकट्ठा करना।

बित* [संज्ञा पु] (हिं.) १-धन। द्रव्य। २-शक्ति सामर्थ्य। ३-कद। आकार।

बितताना [क्रि. अ.] (हिं.) बिलखना। व्याकुल होना। [क्रि. स.] (हिं.) सताना। दुखी करना।

बितना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बित्ता'।

बितरना* [क्रि. स.] (हिं.) बाँटना। वितरण करना।

बितवना* [क्रि. स.] (हिं.) बिताना।

बिता [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'बित्ता'।

बिताना [क्रि. स.](हिं) (समय) व्यतीत गुजारना। काटना।

बिताल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बैता

बितावना* [क्रि. स](हिं.) देखो 'बिता

बितीतना* [क्रि. अ.] (हिं) बीतना। गुज व्यतीत होना। [क्रि. स.] (हिं.) बित गुजारना। व्यतीत करना।

बितु* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'वित्त'।

बित्त [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-धन। २- सामर्थ्य। ३-ऊँचाई या आकार। ४- औकात।

बित्ता [संज्ञा पु.] (?) हाथ की सब उँ फैलाने पर अंगूठे के सिरे से कनि सिरे तक की दूरी। बालिश्त।

बित्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह धन जो दु धर्मादे के लिए बिके माल के मूल्य काटता है।

बिथकना* [क्रि. अ.] हिं.) १-थकना। २- या हैरान होना। ३-मोहित होना।

बिथकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-थकाना। २- या हैरान करना। [क्रि. अ.] (हिं.) 'बिथकना'।

बिथरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-छितराना अलग-अलग होना।

बिथा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'व्यथा'।

बिथारना+ [क्रि. स.] (हिं.) बिखराना। छि राना।

बिथित [वि.] (हिं.) देखो 'व्यथित'।

बिथुआ [संज्ञा पु.] (देश) शीशम की जा एक बड़ा वृक्ष।

बिथुरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बिखरना। अलग-अलग होना। खिलना।

बिथुरित* [वि.] (हिं.) बिखराया हुआ। छि राया हुआ।

बिथोरना* [क्रि स.] (हिं) देखो 'बिखरा

बिदकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फटना। चिर घायल होना। जख्मी होना। ३-भड़ बिचकना।

बिदकाना [क्रि. स] (हिं) १-फाड़ना। चि करना। २-घायल या जख्मी करना भड़काना। बिचकाना।

बिदर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विदर्भदेश २-ताँबे और जस्ते के मेल से बने उपधातु।

बिदरन* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) दरार। दर [वि.] फाड़ने या चीरने वाला।

बिदरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिदरी की काम। २-बिदर की धातु का बना सामान।

बिदरीसाज [संज्ञा पु] (हिं) बिदर धातु

बनाने वाला।

बिदल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनारदाना। २-दाल। ३-पीठा। ४-बांस का बनाया हुआ पात्र। ५-लाल सोना।

बिदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ। [वि.] जिसमें पत्ते न हों।

बिदहना [क्रि. स.] (हिं.) [स्त्री. बिदहनी] धान आदि की फसल पर आरम्भ से पाटा चलाना

बिदहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिदहने की क्रिया भाव

बिदा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-प्रस्थान। रवानगी। गमन। २-जाने की आज्ञा'। ३-द्विरागमन। गौना।

बिदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिदा होने की क्रिया या भाव। २-बिदा होने की आज्ञा। ३-किसी के बिदा होने के समय दिया जाने वाला धन।

बिदामी [वि.] (हिं.) देखो 'बादामी'।

बिदायगी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बिदाई'।

बिदारना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-चीरना। फाड़ना। २-नष्ट करना।

बिदारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शालपर्णी। २-भुइँ-कुम्हड़ा। २-एक प्रकार का कंठ रोग।

बिदारीकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कंद जिसके पत्त अरुई के पत्तों जैसे होते हैं।

बिदुरना* [क्रि. अ.] (हिं.) धीरे-धीरे हँसना। मुस्कराना।

बिदुरानी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुस्कराहट।

बिदूषना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-दोष या कलंक लगना। २-खराब करना। बिगड़ना।

बिदेस [संज्ञा पु.] (हिं.) विदेश। परदेस।

बिदोख+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बैर। वैमनस्य। विद्वेष

बिदोरना+ [क्रि. स.] (हिं.) (मुँह का दाँत) खोल कर दिखाना।

बिद्दत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-खराबी। बुराई। २-कष्ट। तकलीफ। ३-विपत्ति। आफत। ४-अत्याचार। जुल्म। ५-दुर्दशा। दुर्गति।

बिधँसना+ [क्रि. स.] (हिं.) विध्वन्स या नाश करना। नष्ट करना।

बिध [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों के खाने का चारा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रकार। तरह। भाँति। २-ब्रह्मा। ३-जमा खर्च या आय-व्यय का लेखा। बिध मिलाना-आमद खर्च का हिसाब ठीक करना।

बिधना [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्मा। कर्त्तार। विधाता। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिधना'।

बिधबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि कर देने की वह रीति जिसमें फसल की कूत पर रकम दी जाती है।

बिधवपन+ [संज्ञा पु] (हिं) रँड़ापा। वैधव्य।

बिधवा [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जिसका पति मर गया हो। राँड़।

बिधवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिधवाना'।

बिधाँसना+ [क्रि. स.] (हिं.) विध्वंस या नाश करना। नष्ट करना।

बिधाई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विधायक'।

बिधाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिधाना'।

बिधानी*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बनाने वाला। रचने वाला। विधान करने वाला।

बिधिना [संज्ञा स्त्री.] हिं.) देखो 'बिधना'।

बिधुंसना* [क्रि. स.] (हिं.) विध्वंस करना। नष्ट करना।

बिधुली [संज्ञा पु.] (देश.) हिमालय की तराई में पाया जाने वाला एक प्रकार का बांस।

बिन* [अव्यय] (हिं.) देखो 'बिना। [संज्ञा पु.] (हि.) एक जाति विशेष जिसे बिंद भी कहते हैं

बिनई* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिनती करने वाला। २-नम्र।

बिनउ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिनय'।

बिनता [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया जिसे पिंडकी भी कहते हैं।

बिनति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिनती'।

बिनती [संज्ञा स्त्री.] हिं.) प्रार्थना। निवेदन। अर्ज।

बिनकार [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा बुनने वाला। जुलाहा।

बिनन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिनने या चुनने की क्रिया या भाव। २-वह कूड़ा-कर्कट जो किसी वस्तु में से बीनने या चुनने पर निकले। ३-बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट।

बिनना [क्रि. स.] (हिं.) १-छोटी-छोटी वस्तुएँ एक एक करके उठाना। चुनना। २-छाँटकर अलग करना। ३-देखो 'बुनना'।

बिनवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पटाबनेठी चलाने की क्रिया। पटाबनेठी का खेल।

बिनवना* [क्रि. अ.](हिं.) विनय करना। प्रार्थना करना।

बिनवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बुनने का कार्य किसी और से कराना। २-बीनने का काम दूसरे कराना।

बिनशना* [क्रि. अ] (हिं.) नष्ट होना। बरबाद होना। [क्रि. स.] (हिं.) नष्ट करना।

बिनशाना* [क्रि. स.](हिं.) नष्ट करना। चौपट करना। [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट होना।

बिनसना* [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट या बरबाद होना। [क्रि. स.] (हिं.) नष्ट या चौपट करना।

बिनसाना [क्रि. स.] नष्ट या चौपट करना। [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट या चौपट होना।

बिना [अव्य.] (हिं.) छोड़कर। बगर।

बिनाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बीनने की क्रिया, या भाव या मजदूरी। २-बुनने की क्रिया या भाव या मजदूरी। ३-मूल आधार। कारण।

बिनाती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिनती'।

बिनाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बुनवाना'।

बिनानी* [वि.] (हिं.) १-ज्ञानवान। ज्ञानी। २-अनजान। [संज्ञा स्त्री.] अच्छी प्रकार होने वाला विचार। विवेचन। गौर।

बिनावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बुनावट'।

बिनास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विनाश'।

बिनासना* [क्रि. स.] (डि.) विनिष्ट या बरबाद करना।

बिनाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विनाश'।

बिनि* [अव्य.] देखो 'बिना'।

बिनु* [अव्य.] देखो 'बिना'।

बिनूठा* [वि.] (हिं.) देखो 'अनूठा'।

बिनै* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विनय'।

बिनौका+ [संज्ञा पु] (हिं.) पहले धान का पकवान जो गणेश जी या किसी देवता के नाम पर अलग रख दिया जाता है।

बिनौरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

बिनौरी [संज्ञा स्त्री.] (?) ओले के छोटे टुकड़े।

बिनौला [संज्ञा पु.] (?) कपास का बीज।

बिन्हनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहे के करघे के ताने में लगने की छड़ या लकड़ी।

बिपच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु। वैरी। [वि.] प्रतिकूल। विमुख। नाराज।

बिपच्छी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जो विपक्ष का हो। विरोधी। २-शत्रु।

बिपत, बिपता, बिपती, बिपत्त, बिपत्ति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विपत्ति'।

बिपद, बिपदा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विपत्ति। आफत। मुसीबत।

बिपर* [संज्ञा पु.] (हिं.) विप्र। ब्राह्मण।

बिफर* [वि.] (हिं.) देखो 'विफल'।

बिफरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-विद्रोही होना बागी होना। २-नाराज होना। बिगड़ना।

बिबछना* [क्रि. अ.](हिं.) १-विरोध करना। २-उलझना। फँसना।

बिबरन* [वि.] (हिं.) देखो 'विवर्ण'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विवरण'।

बिबस* [वि.] (हिं.) १-विवश। मजबूर। २-पराधीन। परतंत्र। [क्रि. वि.] (हिं.) विवश होकर। लाचारी से।

बिबसना* [क्रि. अ.] (हिं.) विवश या लाचार होना।

बिबहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यवहार'।

बिवाई [संज्ञा स्त्री] (हिं) पैर के तलवे के फटने

का रोग।

बिबाक* [वि.] (हिं.) देखो 'बेबाक'।

बिबाकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हिसाब आदि का साफ होना। २-अंत। समाप्ति।

बिबि [वि.] (हिं.) दो।

बिबुधेश [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र।

बिभाना* [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना।

बिभिचारी* [वि.] (हिं.) देखो 'व्यभिचारी'।

बिभोर [वि.] (हि.) देखो 'विभोर'।

बिमन* [वि.] (हिं) १-जिसे बहुत दुःख हो। २-उदास। सुस्त। चिंतित। [क्रि. वि.] (हिं.) बिना मन के। अनमना होकर।

बिमानी* [वि.] (हिं.) जिसे किसी प्रकार का अभिमान न हो। निरभिमान।

बिमोहना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मोहना'। [क्रि. अ.] (हिं.) मोहित करना। लुभाना।

बिमौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) दीमक के रहने का स्थान वाल्मीक।

बिय* [वि.] (हिं.) १-दो। युग्म। २-दूसरा। ३-अन्य। और। *[संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'बीज'

बियत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'आकाश'।

बियर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जौ से बनने वाली एक अङ्गरेजी शराब जो नशे में हलकी होती है।

बियरसा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष जो बहुत ऊँचा होता है।

बियहुता [वि.] (हिं.) [स्त्री. बियहुती] जिसके साथ विवाह हुआ हो।

बिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बीज'। [वि.] अन्य। अपर। दूसरा। [संज्ञा पु.] (डिं.) शत्रु।

बियाज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्याज'।

बियाजू+ [वि.] (हिं.) जो ब्याज पर लगाया अथवा दिया जाय।

बियाड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत जिसमें पहले बीज बोये जाते हैं और फिर उखाड़कर दूसरे खेत में बोये जाते हैं।

बियाधा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्याधा'।

बियाधि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'व्याधि'।

बियान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बच्चा देने की क्रिया। प्रसव। २-बच्चा देने का भाव। [वि.] देखो 'ब्यान'।

बियाना+ [क्रि. स] (हिं.) बच्चा देना (पशुओं के लिए)। [वि.] देखो 'ब्याना'।

बियापना* [क्रि. स] (हिं.) देखो 'ब्यापना'।

बियाबान [संज्ञा पु.] (फा.) १-उजाड़ जगह। २-जंगल। ३-सुनसान मैदान।

बियारी, बियारू* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) ब्यालू। रात का भोजन।

बियाल* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'व्याल'।

बियालू* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात का भोजन। ब्यालू।

बियाह* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'विवाह'।

बियाहना [वि.] (हिं) [स्त्री. प्र.] जिसके साथ विवाह हुआ हो।

बियो [संज्ञा पु.] (डिं.) बेटे का लड़का। पोता।

बिरंग [वि.] (हिं) १-कई रंगों वाला। जिसमें कई रंग हों। २-बिना रंग का। जिसमें कोई रंग न हो।

बिरंज [संज्ञा पु.] (फा.) १-चावल। २-पका हुआ चावल। भात।

बिरंजी [संज्ञा स्त्री.] (?) छोटी कील। छोटा कांटा।

बिरई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा बिरवा। २-जड़ी-बूटी।

बिरगिड [संज्ञा स्त्री.] (अं. बिगेड) १-कई रेजिमेंट और पलटनों का बनाया हुआ विभाग। २-कार्यकर्त्ताओं का ऐसा दल जो एक जैसी वर्दी पहनता हो तथा एक ही अधिकारी की अधीनता में कार्य करता हो।

बिरछ*+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'वृक्ष'।

बिरछिक, बिरछीक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वृश्चिक'।

बिरझना* [क्रि. अ.] (हिं.) उलझना। झगड़ना

बिरतंत, बिरतांत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वृत्तांत'।

बिरता [संज्ञा पु.] (हिं.) सामर्थ्य। शक्ति।

बिरताना* [क्रि. स.] (हिं) बरताना। बाँटना।

बिरतिया+ [संज्ञा पु.] (हिं) वह व्यक्ति जो विवाह संबंध ठीक करने के लिए लड़कीवालों की ओर से लड़केवालों के यहां या कन्या-पक्ष से वरपक्ष की योग्यता, मर्यादा, अवस्था आदि देखने के लिये जाता है।

बिरथ* [वि.] (हिं.) बिना रथ या वाहन के। पैदल।

बिरथा+ [वि.] (हिं.) व्यर्थ। फ़जूल। निरर्थक। [क्रि. वि.] (हिं.) बिना किसी कारण के। अनावश्यक रूप से।

बिरद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ाई। यश। २-देखो 'बिरद'।

बिरदैत [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रसिद्ध वीर या योद्धा। [वि.] (हिं.) नामी। प्रसिद्ध।

बिरध+ [वि.] (हिं.) देखो 'वृद्ध'।

बिरधाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

बिरधापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वृद्ध या बुड्ढा होने का भाव। बुढ़ापा। २-वृद्धावस्था।

बिरमना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-ठहरना। १-सुस्ताना। आरम्भ करना। ३-मोहित होकर कहीं रुक या फँस रहना।

बिरमाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रोक रखना। ठहराना। २-मोहित करके रोक रखना। बिताना। ४-सुस्ताना।

बिरला [वि.] (हिं.) कोई-कोई। इक्का-दुक्का।

बिरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वृक्ष। २-पौधा।

बिरवाही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-छोटे पौधों का समूह। २-वह स्थान जहां छोटे-छोटे पौधे उगाये गये हों।

बिरषभ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वृषभ'।

बिरसन [संज्ञा पु.] (हि.) जहर। विष।

बिरसना* [क्रि. अ.] (हिं.) विलास भोगना।

बिरह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विरह'।

बिरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का

बिरहाना [क्रि. अ] (हिं.) विरह से पीड़ित

बिरही [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'विरही'।

बिराजना [क्रि. अ] (हिं.) १-शोभित २-बैठना (आदरसूचक)।

बिरादर [संज्ञा पु.] (फा.) भाई। भ्राता।

बिरादरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-एक ही लोगों का वर्ग या समूह। २-भाई बन्धुत्व।

बिरादरी से बाहर या खारिज होना-बहिष्कृत होना।

बिरान, बिराना* [वि.] (हिं.) १-बेगाना। २-दूसरे का। जो अपना न

बिराना [क्रि. अ] (हिं.) मुँह चिढ़ाना।

बिरावना* [क्रि. स] (हिं) १-मुँह २-किसी को दिखाकर चिढ़ाने के लिए कोई विलक्षण मुद्रा बनाना।

बिरास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विलास'।

बिरासी* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'विला

बिरिख* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो देखो 'वृक्ष'।

बिरिछ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वृक्ष'।

बिरिध* [वि.] (हिं.) देखो 'वृद्ध'।

बिरियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समय। वक्त। २-बार। दफा।

बिरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कान में का एक गहना जो कटारी के आकार का है। २-चरखे के बेलन में लगाई गोल टिकिया।

बिरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो २-देखो 'बीड़ा'।

बिरुआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार हंस।

बिरुझना+ [क्रि. अ.] (हिं.) उलझना।

बिरुझाना [क्रि. अ.] (हिं.) उलझना।

बिरुदैत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरदैत'।

बिरुधाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो

बिरोध।
३-देखो 'विरोध'।

बिरोग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वियोग। बिछोह। २-दुःख। कष्ट। ३-चिंता।

बिरोजा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गंधाविरोजा'।

बिरोधना+ [क्रि. अ.](हिं.) बैर या विरोध करना। द्वेष करना।

बिरोलना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिलोरना'।

बिलंगी* [संज्ञा स्त्री.](देश.) अलगनी। अरगनी

बिलंद [वि.] (हिं.) १-ऊँचा। उच्च। २-बड़ा। ३-जो विफल हो गया हो (व्यंग्य)।

बिलंबना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-विलम्ब या देर करना। २-रुकना। ठहरना।

बिल [संज्ञा पु.] (हिं.) जमीन में खोद कर बनाई हुई पतली तङ्ग जगह जिसमें जीवजन्तु रहते हैं। विवर।

बिल ढूँढ़ते फिरना-अपने बचाव या रक्षा का उपाय ढूंढ़ते फिरना। [संज्ञा पु.] (अं.) १-पावने का वह हिसाब जिसमें प्राप्य मूल्य अथवा पारिश्रमिक का ब्योरा होता है। २-किसी कानून आदि का वह मसौदा जो कानून बनाने वाली सभा में उपस्थित किया जाय।

बिलकुल [क्रि. वि.] (अं.) १-पूरा-पूरा। सब। २-सिर से पैर तक। आदि से अन्त तक। निपट निरा। ३-सब। पूरा-पूरा।

बिलखना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विलाप करना। रोना। २-दुखी होना। ३-सिकुड़ना। संकुचित होना।

बिलखाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-रुलाना। २-दुखी करना। [क्रि. अ.](हिं.) देखो 'बिलखना'

बिलग [वि.] (हिं.) अलग। पृथक। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अलग होने का भाव। पार्थक्य। २-मैत्री या सम्पर्क का अभाव या परित्याग।

बिलगाना* [क्रि. अ.] (हिं.) अलग या पृथक् होना। [क्रि स.] (हिं.) १-अलग या पृथक् करना। २-चुनना।

बिलगाव [संज्ञा पु.](हिं.) बिलग या अलग होने की क्रिया या भाव। अलगाव। पार्थक्य।

बिलगी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का संकर-राग।

बिलगु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिलग'।

बिलच्छन [वि.] (हिं.) देखो 'विलक्षण'।

बिलच्छना [क्रि. अ.] (हिं.) लक्ष करना। ताड़ना

बिलछना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखकर समझ लेना। ताड़ना।

बिलटी [संज्ञा स्त्री.] (अं. बिलेट) रेल द्वारा भेजे-जाने वाले माल की वह रसीद जिसे दिखाने से पाने वाले को वह माल मिलता है।

बिलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आँख की पलक पर होने वाली एक प्रकार की छोटी फुन्सी। गुहाँजनी। २-मिट्टी की दीवारों पर रहने वाली काली भौंरी।

बिलपना* [क्रि. अ.] (हिं.) विलाप करना। रोना

बिलफेल [क्रि. वि] (अ.) संप्रति। इस समय। अभी।

बिलबिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-छोटे-छोटे कीड़ों का रेंगना। २-व्याकुल होकर बकना। असंबद्ध प्रलाप करना। ३-कष्ट या पीड़ा के कारण व्याकुल होकर रोना-चिल्लाना। ४-भूख से बेचैन हो उठना।

बिलम* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिलम्ब'।

बिलमना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बिलम्ब या देर करना। २-ठहरना। ३-किसी से प्रेम हो जाने के कारण उसके पास रह जाना।

बिलमाना [क्रि. स.] (हिं.) रोक रखना। अटका रखना।

बिललाना [क्रि. स..] (हिं.) देखो 'बिलखना'।

बिलल्ला [वि.] (हिं.) [स्त्री. बिलल्ली] जिसे किसी तरह का शऊर या ढंग न हो। गावदी मूर्ख।

बिलवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-नष्ट करना। २-दूसरे को बिलाने में प्रवृत्त करना। ३-छिपाना या छिपाने के कार्य में किसी को प्रवृत्त करना ४-रोटी आदि बेलन या हाथ से बढ़वाना।

बिलसना+ [क्रि.स.] (हिं.) शोभा देना। सुन्दर लगाना। भला या अच्छा जँचना। [क्रि. स.] भोग करना। भोगना।

बिलसाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-काम में लाना। बरतना। २-किसी और को बिलसने में प्रवृत्त करना। दूसरे से भोगवाना।

बिलस्त+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बालिश्त'।

बिलहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बांस की तीलियों का बना एक प्रकार का चिपटा डब्बा जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।

बिला [अव्यय] (अ.) बिना। बगैर।

बिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बिल्ली। २-वह अंकुसी या कांटों का गुच्छा जिससे कुएँ में पड़े हुए बरतन निकले जाते हैं। ३-लकड़ी या लोहे की सिटकनी जो किवाड़ों को बंद करने के लिए लगाई जाती है।

बिलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नष्ट होना। २-अदृश्य होना।

बिलापना* [क्रि. अ.] (हिं.) विलाप करना। रोना।

बिलार [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बिलारी] बिल्ला। मार्जार।

बिलारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिल्ला। मार्जारी।

बिलारीकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिदारीकंद'।

बिलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) बिल्ला। मार्जार।

बिलावर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिल्लोर'।

बिलावल [संज्ञा पु.] (सं.) केदार और कल्याण के योग से बनने वाला एक राग जो दीपक-राग का पुत्र माना जाता है। यह सबेरे के समय गाया जाता है। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-प्रेमिका। प्रियतम। २-पत्नी। स्त्री।

बिलासना [क्रि. स.] (हिं.) भोग करना। भोगना बरतना।

बिलंची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की कमरख का फल या उसका वृक्ष।

बिलयर्ड [संज्ञा पु.] (अं.) बड़ी मेज पर खेला जाने वाला एक खेल जो गोल अंटों और लम्बी छड़ियों से खेला जाता है। यौ०-बिलियर्ड रूम-वह स्थान या घर जहां बिलियर्ड खेल खेला जाता है।

बिलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कटोरी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गाय, बैल के गले में होने वाली एक बीमारी।

बिलुठना* [क्रि. अ.] (हिं.) जमीन पर कष्ट, पीड़ा आदि के कारण लोटना।

बिलूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिल्लौर'।

बिलूरगात [संज्ञा पु.] (तिब्बती) तिब्बत के एक पर्वत का नाम।

बिलैया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिल्ली'।

बिलोकना* [क्रि. स.] (हिं.) १-देखना। २-परीक्षा करना। जाँचना।

बिलोकनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखने की क्रिया या भाव। देखना। २-दृष्टि। निगाह। चितवन।

बिलोगी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

बिलोचन [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख। नेत्र।

बिलोड़ना* [क्रि. स.](हिं) १-दूध आदि मथना २-डालना। उड़ेलना।

बिलोन [वि.](हिं.) १-जिसमें नमक न हो। बिना नमक वाला। २-भद्दा। कुरूप।

बिलोना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूध आदि मथना। २-डालना। उड़ेलना। [संज्ञा पु.] १-बिलोकर निकाली जाने वाली वस्तु। नवनीत। मक्खन। २-[स्त्री. बिलोनी] वह पात्र जिस में दूध आदि बिलोया जाता है।

बिलोरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'बिलोड़ना' २-बिखराना। छिन्न-भिन्न या अस्तव्यस्त करना।

बिलोलना* [क्रि. स.] (हिं.) हिलना। डोलना

बिलोवना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिलोना'। [संज्ञा पु.] (स्त्री. बिलोवनी) वह पात्र जिस में दूध दही आदि बिलोया जाता है।

बिलोवनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूध, दही आदि मथने का छोटा बिलोवना या पात्र।

बिलौर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिल्लौर'।

बिलौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बिल्ली का बच्चा।

बिल्कुल [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'बिलकुल'।

बिल्मुक्ता [वि.] (अ.) जो घट बढ़ न सके।

[संज्ञा पु.] १-वह लगान जो घटाया बढ़ाया जा सके। वह पट्टा जिसकी शर्त्तों के अनुसार लगान घटाया बढ़ाया न जा सके।

बिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. बिल्ली) बिल्ली का नर। बिलाव। मार्जार। [संज्ञा पु.] कपड़े की वह पतली पट्टी जिसे चपरासी स्वयंसेवक आदि अपनी पहचान के लिए लगाते हैं।

बिल्लाना [क्रि. अ.] (हिं.) विलाप करना।

बिल्ली [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-शेर, चीते, व्याघ्र आदि की जाति का, पर इन से छोटा पशु जो प्रायः घरों में रहता है। यह मांसहारी होता है। २-दरवाजे में ऊपर या नीचे लगाने की एक प्रकार की सिटकनी। बिलैया।

बिल्लीलोटन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की बूटी जिसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि इसकी गंध से बिल्ली मस्त होकर लोटने लगती है।

बिल्लूर, बिल्लौर [संज्ञा पु.] (हिं.) १ एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर। स्फटिक। २-बहुत ही स्वच्छ शीशा जिसमें किसी प्रकार का मैल न हो।

बिल्लौरी [वि] (हिं.) १-बिल्लौर का बना हुआ। बिल्लौर पत्थर का। २-बिल्लौर के समान स्वच्छ।

बिल्व [संज्ञा पु] (सं) बेल का पेड़।

बिल्वपत्र [संज्ञा पु.] (सं) बेल के पेड़ की पत्ती

बिल्वन [संज्ञा पु.] (सं.) वह जंगल या वन जिस में बेल के पेड़ अधिक हों।

बिवरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-सुलझना। एक में गुथी हुई चीजों का अलग-अलग करना। २-बंधे या गुथे हुए बालों को हाथ, कंघी आदि से अलग-अलग करके साफ करना। केश सुलझाना।

बिवराना* [क्रि. स.] (हिं.) १-बाल सुलझाना। २-बाल सुलझवाना।

बिवसाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यवसाय'।

बिवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पैर के तलवे का चमड़ा फटने का रोग।

बिवाय+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिवाई'।

बिशप [संज्ञा पु.] (अं.) ईसाई मत का बड़ा पादरी

बिषान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विषाण'।

बिसंच* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संभालकर न रखना। संचय का अभाव। २-कार्य की हानि। बाधा। ३-भय। डर।

बिसंभर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विश्वंभर'। + [वि.] १-जो भली प्रकार से संभाल कर न रख सके। २-बेखबर। गाफिल। असावधान।

बिसंभार+ [वि.] (हिं) जिसकी सुधबुध खो गई हो। असावधान।

बिस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विष'। *बिस की गांठ*-बहुत भारी दुष्ट!

बिसखपरा, बिसखापर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गोह की जाति का एक विषैला जंतु। यह देखने में बड़ी छिपकली सा होता है। २-एक प्रकार की जंगली बूटी जिसे बिसखपरी कहते हैं। ३-पुनर्नवा। पथरचटा।

बिसटी [संज्ञा स्त्री.] (देश) बेगार।

बिसतरना* [क्रि. अ.] (हिं.) फैलाना। विस्तार करना।

बिसतार* [वि] (हिं.) देखो 'विस्तार'।

बिसद* [वि] (हिं.) देखो 'विशद'।

बिसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यसन'।

बिसनी [वि.] (हिं.) १-देखो 'व्यसनी'। २-छैला। शौकीन। ३-वेश्यागामी। रंडीबाज।

बिसपना+ [क्रि. अ.] (?) (सूर्य आदि का) अस्त होना। डूबना।

बिसमउ* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'विस्मय'।

बिसमरना* [क्रि. स.] (हिं) भूलना।

बिसमिल [वि.] (फा.) घायल। जख्मी।

बिसमिल्ला, बिसमिल्लाह [संज्ञा पु.] (अ.) श्री गणेश। आरम्भ।
बिस्मिल्ला ही गलत हो-शुरू से ही गलती होना। *बिस्मिल्ला करना*-श्री गणेश करना। आरम्भ करना।

बिसमौ+ [संज्ञा पु.] (हि) विषाद। दुःख। रंज

बिसयक* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देश। प्रदेश। २-राज्य। रियासत।

बिसरना [क्रि. स] (हिं) भूलना। याद न रहना

बिसरात* [संज्ञा पु.] (हिं.) खच्चर। अश्वतर। (पशु)।

बिसराना [क्रि. स.] (हिं.) विस्मृत करना। भुलाना।

बिसराम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विश्राम'। [क्रि. वि.] (हिं.) असमय या कुसमय। बिना समय के।

बिसरामी* [वि.] (हिं.) विश्राम देने वाला।

बिसरावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिसराना'।

बिसवल [संज्ञा पु.] (देश.) बबूल की जाति का एक वृक्ष। इसे कुंदरू भी कहते हैं।

बिसवार [संज्ञा पु.] (हिं.) हज्जाम के औजार रखने की पेटी। किसबत।

बिसवास* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'विश्वास'।

बिसवासिनि [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] १-विश्वास करने वाली। २-जिस पर विश्वास हो। ३-जिस पर विश्वास न हो। ४-विश्वासघातिनी

बिसवासी [वि.] (हिं.) १-विश्वास करने वाला। २-जिस पर विश्वास हो। + ३-जिस पर विश्वास न किया जा सके। बे-एतबार। ४-जिसका कुछ ठीक न हो कि वह क्या करेगा।

बिससना* [क्रि स.] (हिं.) १-विश्वास करना।

।मांस। करना। २-वध करना। मार

शरीर काटना। चीरना। फाड़ना।

बिसहना* [क्रि. स.] (हिं.) १-मोल लेना

दना। २-जानबूझकर अपने साथ लगा

बिसहर* [संज्ञा पु] (हिं.) विषधर। सांप

बिसहरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मोल लेने वाला। खरीदार।

बिसहिनी [संज्ञा स्त्री.] (देश) एक प्रकार की चिड़िया।

बिसायँध [वि.] (हिं.) सड़ी मछली के समान गंध वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सड़ी मछली के समान गंध।
बिसायँध आना-सड़ी हुई मछली के समान गंध आना।

बिसा+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'बिस्वा'।

बिसाख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'विशाखा'

बिसात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-हैसियत। औकात। वित्त। २-जमापूंजी। ३-सामर्थ्य। हकीकत। ४-शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा।

बिसातखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) (अ., फा.) वस्तुएं जो बिसाती की दूकान पर मिलें।

बिसाती [संज्ञा पु.] (अ.) १-बिसात या दरी आदि बिछाकर उस पर सौदा रखकर बेचने वाला। २-सुई, तागा, कलम आदि सा सामान बेचने वाला।

बिसाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बस चलना। विष का प्रभाव होना। जहर भरना।

बिसारद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विशारद'।

बिसायँध [वि.] (हिं.) जिसमें सड़ी मछली की सी बू आती हो।

बिसारना [क्रि. स.] (हिं.) विस्मृत करना।

बिसारा [वि.] (हिं.) [स्त्री. बिसारी] विष भरा। विषाक्त।

बिसास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विश्वास'।

बिसासिन, बिसासिनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पर विश्वास न किया जा सके। विश्वासघातिनी।

बिसासी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. बिसासिन] घाती। धोखेबाज।

बिसाह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोल लेने का काम। खरीद। क्रय। २-देखो 'विश्वास'।

बिसाहना [क्रि. स.] (हिं.) १-खरीदना। लेना। २-जानबूझकर अपने पीछे (विपत्ति, झंझट आदि)। [संज्ञा पु.] १-काम की वस्तु जिसे खरीदें। सौदा। मोल लेने की क्रिया।

बिसाहनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोल ली वाली वस्तु। सौदा।

बिसाहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिसाहनी'।

बिसिख* [संज्ञा पु.] (हि.) 'विशिख'।

बिसियर* [वि.] (हिं.) विषैला। जहरीला।

बिसुकर्मा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'विश्वकर्मा'।

बिसुनना [क्रि. अ.](हि.) कोई वस्तु खाते समय उसका कुछ अंश नाक की नाली की ओर चढ़ जाना।

बिसुनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'अमरबेल'।

बिसुवा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बिस्वा'।

बिसूरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मन में खेद या दुःख करना। २-सिसक-सिसक कर रोना। [संज्ञा स्त्री.] चिंता। फिक्र। सोच।

बिसेख *[वि.] (हि.) देखो 'विशेष'।

बिसेखता* [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'विशेषता'

बिसेखना* [क्रि. अ.] (हि.) १-विशेष प्रकार से वर्णन करना। ब्यौरेवार वर्णन करना। २-निर्णय या निश्चय करना। ३-विशेषता से युक्त होना।

बिसेन [संज्ञा पु.] (?) क्षत्रियों की एक शाखा।

बिसेस* [वि.] (हि.) देखो 'विशेष'।

बिसेसर* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'विश्वेश्वर'।

बिसैंधा+ [वि] (हिं.) १-जिसमें बिसायँध या बदबू आती हो। २-मांस, मछली आदि के समान गंधवाला।

बिस्कुट [संज्ञा पु.] (अं.) खमीरी आटे के तंदूर पर पकी हुई एक प्रकार की टिकिया।

बिस्तर [संज्ञा पु.](हि.) बिछाने के कपड़े। बिछावन। बिछौना।

बिस्तरना [क्रि. अ.] (हि) फैलना। [क्रि. स.] फैलाना।

बिस्तरबंद [संज्ञा पु.] (फा) कपड़े, चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का थैला जिसमें डोरी या चमड़े के तस्मे लगे रहते हैं। इसमे यात्रा के समय बिस्तर बांधकर ले जाते हैं।

बिस्तरा [संज्ञा पु] (हि) देखो 'बिस्तर'।

बिस्तारना [क्रि स] (हि.) फैलाना। विस्तृत करना।

बिस्तुइया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छिपकली। गृहगोधा।

बिस्मिल्लाह [संज्ञा पु.](अ.) श्री गणेश। आरंभ

बिस्वा [संज्ञा पु.] (हिं) एक बीघे का बीसवां भाग। बीस बिस्वा-निश्चय। निःसंदेह।

बिस्वादार [संज्ञा पु.] (हिं) १-हिस्सेदार। पट्टीदार। २-किसी बड़े राजा अथवा तअल्लुकेदार के अधीन जमींदार।

बिस्वास [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'विश्वास'।

बिहंग* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'विहंग'।

बिहंगी* [वि](हि) कुरूप। भद्दा।

बिहंडना [क्रि. स] (हि) १-तोड़ना। २-नष्ट करना। ३-मार डालना।

बिहँसना [क्रि. अ.] (हिं.) मुस्कराना।

बिहँसाना [क्रि. स.] (हि.) हँसाना। हर्षित करना [क्रि. अ.] (हि.) १-देखो 'बिहँसना'। २-(फूल) खिलना।

बिहँसौहाँ* [वि.] (हि) हँसता हुआ।

बिहंग* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'विहग'।

बिहतर [वि.] (फा.) बहुत अच्छा।

बिहतरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) भलाई। कुशल।

बिहद्द* [वि.] (हि.) बेहद। असीम।

बिहवल* [वि.] (सं.) १-व्याकुल। विह्वल। २-शिथिल।

बिहरना [क्रि. अ.] (हिं.) घूमना-फिरना। सैर करना। विहार करना। [क्रि. स.] (हिं) १-फटना। विदीर्ण होना। टूटना-फूटना।

बिहराना* [क. अ] (हिं.) फटना।

बिहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चंदा। बरार। भंजा।

बिहाग [संज्ञा पु.] (?) एक राग जो आधी रात के समय गाया जाता है।

बिहागड़ा [संज्ञा पु.] (हि) संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

बिहान [संज्ञा पु.] (हि.) १-सबेरा। प्रातःकाल। २-आने वाला दूसरा दिन। कल।

बिहाना* [क्रि. स.] (हि.) छोड़ना। त्यागना। [क्रि. अ.] (हि.) गुजरना। व्यतीत होना। बीतना।

बिहारना [क्रि. अ.](हिं.) विहार करना। केलि या क्रीड़ा करना।

बिहारी [वि.] (हि.) विहार करने वाला।

बिहाल [वि.] (फा.). बेहाल। व्याकुल। बेचैन।

बिहिश्त [संज्ञा पु.](फा) स्वर्ग। वैकुंठ। (मुसलमान)।

बिही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वृक्ष विशेष जिसके फल अमरूद के समान होते हैं। २-इस पेड़ का फल जो मेवों में गिना जाता है। ३-अमरूद।

बिहीदाना [संज्ञा पु.] (फा.) बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम मे आता है।

बिहीन [वि.] (हि) रहित। बिन। बगैर।

बिहुरना* [क्रि अ] (हि) देखो 'बिछुड़ना'।

बिहून* [वि.] (हि.) बिना। बगैर। रहित।

बिहोरना [क्रि. अ.] (हि.) बिछुड़ना।

बींड़ [संज्ञा पु.] (हि) १-देखो 'बींड़ा'। २-देखो 'बीड़ा'।

बींड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) १-कच्चे कुवें की दीवार न गिरने देने के लिए लगाया हुआ टहनियों आदि से बना हुआ मेड़रा। २-घास आदि ो हुई गेडुरी। ३-एक प्रकार का गोल आसन। ४-लकड़ी या बांस का बंधा हुआ गट्ठर। ५-पिंडी। पिंड।

बींड़िया+ [संज्ञा पु.](हि.) तीन बैलों वाली गाड़ी में का सब से अगला बैल।

बींड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूत की वह पिंडी जो किसी वस्तु पर लपेटकर बनाई जाती है।

बींद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बींदनी, बींदणी] वर। दुल्हा।

बींदना [क्रि. अ.] (?) अनुमान करना। अंदाज से जाँचना। *[क्रि. स.](हि.) १-देखो 'चुभाना' २-देखो 'बींधना'।

बींधना* [क्रि अ.] (हि.) फंसना। उलझना। [क्रि. स.] (हि.) छेदना। बेधना।

बी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बीबी'।

बीका+ [वि.] (हि.) टेढ़ा।

बीख+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-पद। कदम। २ देखो 'विष'।

बीग+ [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. बीगिन] भेड़िया।

बीगना [क्रि. स.] (हिं.) १-छाँटना। छितराना। २-गिराना।

बीगहाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रति बीघे के हिसाब से लिया जाने वाला लगान।

बीघा [संज्ञा पु.] (हिं.) जमीन, खेत आदि की नाप जो बीस बिस्वे की होती है।

बीच+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य। २-बीच का अंतर। अवकाश। ३-भेद। अन्तर। फरक। ४-अवसर। मौका। बीच खेत-१-सब के सामने। खुले मैदान। २-जरूर। अवश्य ही। बीच-बीच में-थोड़ी-थोड़ी देर बाद। बीच करना-झगड़ा तय करना। बीच पड़ना-१-झगड़ा निबटाने के लिए मध्यस्थ बनना। २-परिवर्त्तन होना। बीच पारना या डालना-१-भेद करना। २-बदलना। बीच मे कूदना-व्यर्थ हस्तक्षेप करना। बीच मे पड़ना-१-मध्यस्थ होना। २-जिम्मेदार बनना। बीच रखना-भेद छिपाव करना। (ईश्वर आदि को) बीच मे रखकर कहना-(ईश्वर आदि की) शपथ या कसम खाना। बीच देना या बीच मे देना-१-मध्यस्थ बनाना।

बीचि [क्रि वि.] (हि) अन्दर। में। दरमियान [संज्ञा स्त्री.] विचि। लहर। तरंग।

बीचु* [संज्ञा पु] (हि) १-अवसर। मौका २-अन्तर। फरक।

बीचोबीच [क्रि. वि] (हि) बिलकुल या ठीक बीच में।

बीछना* [क्रि स] (हि) देखो 'चुनना'।

बीछी* [संज्ञा स्त्री] (हि) बिच्छू। बीछी चढ़ना-बिच्छू के डंक का विष चढ़ना।

बीछू* [संज्ञा पु] (हि.) १-देखो 'बिच्छू'। २-देखो 'बिछुआ' (हथियार)।

बीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल वाले पौधों या अनाजों के वह दाने अथवा वृक्षों के फलों की वह गुठलियां, जिनसे वैसे ही नये पौधे अनाज या वृक्ष उत्पन्न होते हैं। बीया। २-प्रधान कारण। मूलप्रकृति। ३-जड़। मूल। ४-हेतु। कारण। ५-वीर्य। शुक्र। ६-कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्ण, समुदाय या शब्द। ७-देखो 'बीजगणित'। ८-मन्त्र का प्रधान भाग या अंग। ९-तंत्र में वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें किसी देवता को अनुकूल अथवा प्रसन्न करने की शक्ति मानी जाती है। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजली'।

बीजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूची। तालिका। फेहरिस्त। २-वह सूची जिसमें माल का ब्योरा मूल्य, दर आदि लिखा हो। ३-वह सूची जो किसी गड़े हुए धन की उसके साथ रहती है। ४-असना का वृक्ष। ५-बिजौरा नीबू। ६-बीज। ७-कबीरदासजी के पदों के एक संग्रह का नाम। ८-जन्म के समय बच्चे की वह अवस्था जब उसका सिर दोनों भुजाओं के बीच में होकर योनि के द्वार पर आ जाय।

बीजकर्ता [संज्ञा पु] (सं.) शिव। महादेव।

बीजकृत [संज्ञा पु.] (सं.) वाजीकरण।

बीजक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं.) बीजगणित के नियम के अनुसार गणित के किसी प्रश्न की क्रिया।

बीजगणित [संज्ञा पु.] (सं.) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर अज्ञात संख्याएं आदि मानी जाती हैं। अलजबरा।

बीजगर्भ [संज्ञा पु.] (सं) परवल।

बीजगुप्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सेम। २-फली। ३-भूसी।

बीजत्व [संज्ञा पु.] (सं.) बीज का भाव। बीजपन।

बीजदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक या रंगशाला के अभिनय की व्यवस्था करने वाला। स्टेज-मैनेजर।

बीजधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) धनियां।

बीजन* [संज्ञा पु.] (हिं) पंखा। बेना।

बीजना [क्रि. स] (हिं.) देखो 'बोना'।

बीजन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नाटक की कथा के उद्‌गम स्थान को या आधार को बतलाना।

बीजपादप [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावां।

बीजपुरुष [संज्ञा पु.] (सं) गोत्रप्रवर्तक।

बीजपुष्प [संज्ञा पु] (सं) १-मरुआ। २-मदन-वृक्ष।

बीजपूर, बीजपूरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिजौरा-नीबू। २-चकोतरा।

बीजपेशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंडकोष।

बीजफलक [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरे नीबू का वृक्ष

बीजबंद [संज्ञा पु.] (हिं) खरियारी के बीज। बला।

बीजमंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देवता की उपासना का मूलमंत्र। २-किसी काम को करने का असली ढंग। गुर। मूलमंत्र।

बीजमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमलगट्टा।

बीजमार्ग [संज्ञा पु] (सं) वाममार्ग का एक भेद

बीजमार्गी [संज्ञा पु] (सं) बीजमार्ग पंथ का अनुयायी।

बीजरत्न [संज्ञा पु.] (सं) उड़द की दाल।

बीजरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजली'।

बीजरेचन [संज्ञा पु] (सं.) जमालगोटा।

बीजल [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें बीज हो। [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) तलवार। [वि.] (सं.) बीज वाला। बीजयुक्त।

बीजवर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उड़द।

बीजवाहन [संज्ञा पु] (सं) शिव। महादेव।

बीजवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) असना का पेड़।

बीजसू [संज्ञा स्त्री.] (सं) पृथ्वी।

बीजहरा, बीजहारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक डाकिनी का नाम।

बीजांकुरन्याय, बीजाङ्कुरन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्याय जिसका व्यवहार दो संबद्ध पदार्थों के नित्य प्रवाह का दृष्टांत देने के लिए होता है। बीज के अंकुर और अंकुर से बीज होता है। इन दोनों का सम्बन्ध अनादि काल से चला आता है। दो पदार्थों में इस प्रकार का सम्बन्ध दिखाने के लिए ही इसका उपयोग होता है।

बीजा [वि.] (हिं.) दूसरा। [संज्ञा पु.] देखो 'बीज'।

बीजाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र में किसी बीज मंत्र का पहला अक्षर।

बीजाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

बीजाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

बीजित [वि.] (सं.) जिसमें बीज बोया गया हो।

बीजी [वि] (हिं) १-बीज विषयक। जिसका संबंध बीज से हो। २-बीज़वाला। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-गिरी। मींगी। गुठली। [संज्ञा पु.] (हिं.) पिता।

बीजु [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बिजली।

बीजुपात [संज्ञा पु] (हिं.) वज्रपात।

बीजुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजली'।

बीजू [वि.] (हिं.) बीज से उत्पन्न। 'कलमी' का उलटा। [संज्ञा पु.] देखो 'बिज्जू'।

बीजोदक [संज्ञा पु] (सं) ओला।

बीज्य [संज्ञा पु.] (हिं.) कुलीन।

बीझना [क्रि. अ.] (हिं) छिन्न होना।

बीझा* [वि.] (हिं.) १-निर्जन। एकान्त। २-घना। सघन।

बीट [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-चिड़िया या पक्षी की विष्ठा। २-गुह। मल (आंव)। देखो 'विट्लवण'।

बीठल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विट्ठल'।

बीड़ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक के ऊपर एक रखे हुए सिक्कों की गड्डी।

बीड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) १-वह डोरी जो तलवार की म्यान में मुँह के पास बंधी रहती है। २-पान में चूना, कत्था आदि लगाकर और सुपारी आदि डालकर बनाई हुई गिलौरी। खीली।

बीड़ा उठाना-१-कोई काम करने का संकल्प करना। २-उद्यत या मुस्तैद होना। बीड़ा डालना या रखना-किसी कठिन या असाधारण कार्य को सभा में लोगों के सामने पान की गिलौरी रखकर इस प्रकार कहना कि जिसे यह कार्य करने की सामर्थ्य हो वह इसे उठाले।

बीड़ा देना-काम का भार सौंपना।

बीड़िया [वि.](हिं.) बीड़ा उठाने वाला। अगुआ। नेता।

बीड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-देखो 'बीड़ा'। २-देखो 'बीड़'। ३-मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रंगने के लिए मुँह में मलती हैं। ४-पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिससे चुरट आदि के समान सुलगाकर पीया जाता है। ५-एक प्रकार की नाव।

बीतना [क्रि. अ.] (हिं.) १-समय गुजरना। विगत होना। वक्त कटना। २-दूर होना। जाता रहना। ३-घटित होना। घटना पड़ना।

बाता+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'पिता'।

बीथित* [वि.] (हिं.) देखो 'व्यथित'।

बीधना* [क्रि. अ.] (हिं.) फँसना। उलझना। [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बींधना'।

बीधा [संज्ञा पु.] (हिं.) मालगुजारी निश्चित करना।

बीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सितार की तरह का एक प्रसिद्ध बाजा। वीणा। २-सपेरों के बजाने की तूमड़ी।

बीनकार [संज्ञा पु] (हिं.) बीन बजाने वाला। वह जो बीन बजाना जानता हो।

बीनना+ [क्रि स] (हिं.) १-छोटी वस्तुओं को उठाना। चुनना। २-छाँटना। अलग करना। ३-देखो 'बींधना'। ४-देखो 'बुनना'।

बीफै [संज्ञा पु.](हिं) बृहस्पतिवार। गुरुवार।

बीबी [संज्ञा स्त्री](फा.) १-कुलीन स्त्री। कुलवधू। २-पत्नी। भार्या। ३-स्त्रियों के लिए आदर सूचक शब्द। ४-अविवाहिता लड़की।

(आगरा)।

बीबैरना [संज्ञा पु.] (सिंहली) वृक्ष विशेष जो दक्षिण-भारत के पश्चिम में होता है।

बीभत्स [वि.] (सं.) १-घृणित। २-क्रूर। ३-पापी। [संज्ञा पु.] १-काव्य के नवरसों में से सातवां जिसमें रक्त मांस आदि ऐसी बातों का वर्णन होता है जिनसे अरुचि तथा घृणा और इन्द्रियों में संकोच उत्पन्न होता है।

बीभत्सित [वि.] (सं.) घृणित। जिससे घृणा उत्पन्न हो।

बीभत्सु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन। २-अर्जुन-वृक्ष।

बीम [संज्ञा पु.] (अं.) १-लम्बाई के बल लगा हुआ बड़ा शहतीर। २-जहाज का मस्तूल।

बीमा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि होने की अवस्था में कुछ रकम देनें की जिम्मेदारी, जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है। इन्श्योरेंस। २-भेजा जाने वाला वह पत्र अथवा पारसल जिसकी क्षतिपूर्ति का इस प्रकार डाकखाने ने भार लिया हो।

बीमा-घटक [संज्ञा पु.] (हिं.) बीमा कम्पनी या संस्था की ओर से नियुक्त वह व्यक्ति जो लोगों के पास जा-जाकर बीमे का महत्व आदि बताकर उसका सदस्य बनाता है। बीमा-एजंट। इन्श्योरेंस-एजेंट।

बीमा-पत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) वह प्रमाण अथवा प्रतिज्ञापत्र जो बीमा करने वाली कम्पनी या संस्था की ओर से बीमा करने वाले को मिलता है, जिसमें लिखा रहता है कि अमुक शर्त्तें पूरी होने अथवा बीच में अमुक दुर्घटना संघटित होने पर उसे या उसके उत्तराधिकारी को इतना रुपया मिलेगा। इन्श्योरेंस-पॉलिसी

बीमा-मंडली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह संस्था या कम्पनी जो कुछ निश्चित नियमों के अनुसार लोगों का बीमा करती हो। इन्श्योरेंस-कम्पनी

बीमार [वि.] (फ़ा.) रोगग्रस्त। रोगी।

बीमारदार [कि.] (फ़ा.) रोगी की सेवा-शुश्रूषा करने वाला।

बीमारदारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) रोगियों की शुश्रूषा।

बीमारी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-रोग। व्याधि। २-झंझट। ३-दुर्व्यसन। बुरी आदत।

बीय* [वि.] (हिं.) देखो 'बीजा'।

बीया* [वि] (हिं.) देखो 'दूसरा'। [संज्ञा पु.] बीज। दाना।

बीर [वि.] (हिं.) देखो 'वीर'। [संज्ञा पु.] भाई भ्राता। [संज्ञा स्त्री.] १-सखी। सहेली। २-कान में पहनने का एक आभूषण। तरनाबीरी ३-एक प्रकार का गहना जो कलाई में पहना जाता है। ४-वह स्थान जहां पशु चरते हैं। चरागाह। ५-स्त्री। औरत।

बीरउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिरवा'।

बीरज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वीर्य'।

बीरन [संज्ञा पु.] (हिं.) भाई। भ्राता।

बीरनि [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है इसे तरना या बीरी भी कहते हैं। ढारों।

बीर-बहूटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छोटा रेंगने वाला कीड़ा जो बरसात में होता है। यह गहरे लाल रंग का होता है। इन्द्रवधू।

बीरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पान का बीड़ा। २-देवता के प्रसाद के रूप में भक्तों को मिलने वाले फल-फूल आदि।

बीरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पान का बीड़ा। २-बीर नामक कान का गहना। ३-लोहे का वह छेददार टुकड़ा जिसपर कोई दूसरा लोहा रखकर लोहार छेद करता है। ४-ढरकी के बीच में लंबे बल वह छेद जिसमें से नरी भरकर तागा निकाला जाता है।

बीरो [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्ष। पेड़।

बील [वि.] (हिं.) पोल। अन्दर से खाली। [संज्ञा पु.] १-बेल। २-एक औषध विशेष। ३-वह जमीन जो नीची हो और जहाँ पानी भरा रहता हो। ४-मन्त्र।

बीवर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का जंतु जो उत्तरी अमेरिका तथा एशिया के उत्तरी किनारे पर होता है और पानी के किनारे झुण्ड रूप में रहता है।

बीवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बीबी'।

बीस [वि.] (हिं.) १-दस और दस का जोड़। उन्नीस से एक अधिक। २-किसी से कुछ बढ़कर या अच्छा। बीस बिस्वे-बहुत संभव है [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

बीसना [क्रि. स.] (हिं.) खेलने के लिए बिसात बिछाना (शतरंज या चौसर)।

बीसवाँ [वि.] (हिं.) जो गिनती में उन्नीस के बाद हो।

बीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बीस वस्तुओं का समूह। कोड़ी। २-ज्योतिष के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों में से एक विभाग। ३-भूमि की वह नाप जो एक एकड़ से कम और बीस नालियों के बराबर हो। ४-प्रति बीघे दो बिस्वे की उपज। संज्ञा पु.] तोलने का काँटा। तुला।

बीह* [वि.] (हिं.) बीस।

बीहड़ [वि.] (हिं.) १-जो सरल हो। २-ऊबड़-खाबड़ या ऊँचा-नीचा।

बुंद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बूँद। बिंदु। कतरा। २-वीर्य। [वि.] थोड़ा सा। जरा सा। [संज्ञा पु.] (सं.) तीर।

बुँदकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी गोल बिंदी। २-किसी वस्तु पर बना अथवा पड़ा हुआ गोल धब्बा।

बुँदकीदार [वि.] (हिं.) जिसमें बुँदकियाँ बनी या लगी हों।

बुँदेलखंड [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तर-प्रदेश का वह भाग जिसमें जालौन, झांसी, हमीरपुर बांदे के जिले पड़ते हैं। इसके अलावा ओरछा, दतिया, पन्ना, चरखारी, बिजावर, छतरपुर आदि की की रियासत भी इसी में हैं।

बुँदेलखंडी [वि.] (हिं.) बुन्देलखण्ड-सम्बन्धी। बुन्देलखण्ड का। [संज्ञा पु.] बुन्देलखण्ड का निवासी। [संज्ञा स्त्री.] बुन्देलखण्ड की भाषा

बुंदेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षत्रियों का एक वंश जो गहवार वंश की शाखा से माना जाता है। २-बुन्देलवंश का कोई आदमी। ३-बुन्देलखण्ड का निवासी।

बुंदोरी, बुंदौरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुँदिया या बूँदी नामक मिठाई।

बुंलपटी [संज्ञा पु.] (लश.) जहाज का पिछला पाल।

बुआ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बूआ'।

बुक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पुस्तक। किताब। (हिं.) एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा

बुकचा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गठरी। २-वह गठरी जिसमें कपड़े बंधे हों।

बुकची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़ों की छोटी गठरी। २-वह थैली जिसमें दरजी सूई, डोरा, कैंची आदि रखते थे। ३-देखो 'बकुची'।

बुकनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु का पिसा-हुआ महीन चूर्ण। २-वह चूर्ण जिसे पानी में घोलने पर रंग बनता हो।

बुकवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उबटन। २-देखो 'बुक्का'।

बुकस [संज्ञा पु.] (हिं.) भंगी। महतर।

बुकसेलर [संज्ञा पु.] (अं.) पुस्तकविक्रेता।

बुका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुक्का'।

बुकार+ [संज्ञा पु.] (देश.) वह बालू जो नदी बरसात के बाद अपने तट पर छोड़ जाती है। भाट।

बुकुन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुकनी। २-पाचक। चूर्ण।

बुक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हृदय। कलेजा। २-गुरदे का मांस। ३-रक्त। लहू। ४-बकरी। ५-एक प्रकार का प्राचीन बाजा जो फूंककर बजाया जाता था। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अबरक या अभ्रक का चूर्ण। २-छोटे-छोटे सच्चे मोती के दाने। ३-देखो 'बूक'।

बुक्कार [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह की गरजना।

बुखार [संज्ञा पु.] (अं.) १-भाप। वाष्प। २-शरीर में होने वाला ज्वर। ताप। ३-दुःख, क्रोध आदि का आवेग। हृदय का उद्वेग। जी का बुखार निकलना-मन का दुःख या व्यथा

● फूहकर प्रकट करना और इस तरह जी हलका करना।

बुखारचा [संज्ञा पु.](फा.) १-खिड़की के आगे का छोटा बरामदा। २-कोठरी के भीतर तख्तों आदि की बनी हुई छोटी कोठरी।

बुग [संज्ञा पु.] (देश.) मच्छर।
[संज्ञा पु.] देखो 'बुक'।

बुगचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुकचा'।

बुगदर+ [संज्ञा पु.] (देश.) मच्छर।

गदा [संज्ञा पु.](फा.) पशुओं की हत्या करने का कसाइयों का छुरा।

बुगिअल [संज्ञा पु.] (देश.) पशुओं के चरने का स्थान। चरी। चरागाह।

बुगुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिगुल'।

बुचका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुकचा'।

बुज़कसाब [संज्ञा पु.] (फा.) बकर-कसाब। कसाई

बुज़दिल [वि.] (फा.) कायर। डरपोक। भीरु।

बुजनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कान में पहनने का एक गहना जो करनफूल के आकार का होता है।

बुजियाला [संज्ञा पु.] (फा.) वह बकरी का बच्चा या बन्दर जिससे कलंदर तमाशे कराता है।

बुज़ुर्ग [वि.] (फा.) १-वृद्ध। बड़ा। २-पाजी। दुष्ट। [संज्ञा पु.] (फा.) बाप। दादा। पूर्वज पुरखा। (यह शब्द बहुवचन में बोला जाता है)।

बुज़ुर्गी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बुजुर्ग होने का भाव। बड़ापन।

बुंज्जर+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी

बुज्जी [वि.] (डि.) बकरी।

बुज्झा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

झना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आग का आप से आप या जल आदि पड़ने के कारण शान्त हो जाना। २-गरम वस्तु का पानी में पड़कर ठंडा होना। ३-पानी का किसी गरम अथवा तपाई हुई वस्तु से छौंका जाना। ४-पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंडा होना। ५-चित्त या मन का आवेग शांत या मंद पड़ना

बुझाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुझाने की क्रिया या मजदूरी।
बुझाई का हौज-वह हौज जिसमें पहले-पहल नील के पौधे काटकर भिगोये जाते हैं।

बुझाना [क्रि. स.] (हिं.) १-जलती हुई वस्तु को अधिक जलने से रोक देना। अग्नि या आग शान्त करना। २-तपी हुई वस्तु को पानी में डालकर ठंडा करना। ३-पानी को छौंकना। ४-पानी डालकर ठंडा करना। ५-चित्त या मन के आवेग को शांत करना।
जहर में बुझाना-छुरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रों के फलों को तपाकर किसी विषैले तरल पदार्थ में बुझाना।
[क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को बुझने में प्रवृत्त करना। २-बोध कराना। समझना। ज्ञात कराना। ३-धैर्य देना। सान्त्वना देना।

बुझारत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गांव के जमींदारों के वार्षिक आय-व्यय का लेखा।

बुझौवल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'पहेली'।

बुट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बूटी'।

बुटना* [क्रि अ.] (हिं.) भागना। दौड़कर चला जाना।

बुड़का [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उतना अंश जितनी दूर में दांत से काटा हो। २-दांत से काटा हुआ स्थान।

बुड़की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) डुबकी। गोता।

बुड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) बूड़ना। डूबना।

बुड़बुड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) मन ही मन कुढ़कर अथवा क्रोध में आकर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।

बुड़ाना* [क्रि. स.] (हिं.) डुबाना।

बुड़ाव [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'डुबाव'।

बुड़ीत [वि.] (हिं) (प्राप्यधन) जो वसूल न हो सकता हो। जो डूब गया हो।

बुड्ढा [वि.] (हिं) [स्त्री बुढ़िया] १-साठ साल से अधिक अवस्था वाला। वृद्ध (मनुष्यों के लिये)। २-जो अपनी अवस्था या उम्र का आधे से अधिक अथवा तीन चौथाई भाग पार कर चुका हो। (जीव)।

बुढ़ना+ [संज्ञा पु.] (?) छड़ीला। पत्थरफूल।

बुढ़वा* [वि.] (हिं.) देखो 'बुड्ढा'।

बुढ़ाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बुढ़ापा।

बुढ़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) बूढ़ा होना। वृद्ध अवस्था को प्राप्त होना।

बुढ़ापा [संज्ञा पु.] (हि.) १-वृद्धावस्था। २-बुड्ढे होने का भाव।

बुढ़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पचास या साठ वर्ष या इससे अधिक अवस्था वाली स्त्री। वृद्धा।
बुढ़िया का काता-एक प्रकार की मिठाई जो बहुत बारीक सूत के लच्छों के समान होती है

बुढ़ियाबैठक [संज्ञा स्त्री.](हिं.) शारीरिक व्यायाम में एक प्रकार की बैठक।

बुढ़ौती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बुढ़ापा'।

बुत [संज्ञा पु.] (फा.) १-मूर्त्ति। प्रतिमा। २-वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रियतम।

बुतना+ [क्रि. अ] (हिं.) बुझना।

बुतपरस्त [संज्ञा पु.] (फा.) १-मूर्त्तिपूजक। २-वह जो सौंदर्य का उपासक हो। रसिक।

बुतपरस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मूर्त्तिपूजा।

बुतशकीन [संज्ञा पु] (फा.) मूर्त्ति को तोड़ने या नष्ट करने वाला। मूर्त्तिभंजक।

बुताना+ [क्रि अ] (हिं) बुझना। [क्रि स.] (हिं) बुझाना।

बुताम [संज्ञा पु.] (अ. बटन) १-बटन। घुंडी।

बुत्त [वि.] (हि.) देखो 'बुत'।

बुत्ता [संज्ञा पु] (देश.) १-धोखा। झांसा २-हीला। बहाना।

बुद [वि.] (देश) पांच (दलालों की बोली)

बुदबुद [संज्ञा पु.] (सं.) पानी का बुलबुला।

बुदबुदा [संज्ञा पु.] (हि) पानी का बुलबुला।

बुदलाय [वि.] (हि.) पंद्रह (दलाल की बोली)।

बुद्ध [वि] (सं.) १-जो जागा हुआ हो। २-ज्ञानवान। ज्ञानी। ३-विद्वान। पंडित।
[संज्ञा पु.] एक प्रसिद्ध महात्मा बौद्धधर्म के प्रवर्त्तक थे इनका जन्म ५५० में नेपाल की तराई में हुआ था। पिता का नाम शुद्धोदन और माता का महामाया था।

बुद्धत्व [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धि का भाव

बुद्धद्रव्य [संज्ञा पु.](सं.) बुद्ध भगवान केश, नख आदि स्मृति-चिह्न जो किसी के नीचे संरक्षित हों।

बुद्धमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धधर्म। सिद्धांत।

बुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोचने-समझने निश्चय करने की शक्ति। अक्ल। समझ। छप्पय छंद का बयालीसवाँ भेद। नामक वृत्त जो उपजातिवृत्त का चौदहवां कहते हैं। ४-एक छन्द जिसके चारों चरणों क्रम से १६, १४, १४ और १३ मात्राएं होती

बुद्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

बुद्धिकामा [संज्ञा स्त्री.](सं) कुमार कार्तिकेय एक मातृका का नाम।

बुद्धिगम्य, बुद्धिग्राह्य [वि.] (सं.) जो बुद्धि समझा जा सके। समझ के भीतर।

बुद्धिचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र का नाम।

बुद्धिजीविवर्ग [संज्ञा पु.](सं.) वह वर्ग या जो केवल बुद्धि के द्वारा अपनी जीविका निर्वाह करता हो।

बुद्धिजीविवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत बुद्धि-शुद्ध अनुमान से ही प्राप्त होती इन्टेल्लेक्टयूआलिज्म।

बुद्धिजीवी [वि.](सं.) वह जो केवल बुद्धि के जीविका चलाता या उपार्जन करता हो।

बुद्धितत्व [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुद्धि'।

बुद्धिपर [वि.] (सं) जो बुद्धि या समझ हो। जिस तक बुद्धि न पहुँच सके।

बुद्धिपूर्ण [वि.](सं.) जो जानबूझकर किया

बुद्धिभ्रंश [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का मान

रोग जो पागलपन के अन्तर्गत आता है। इसमें बुद्धि ठीक प्रकार से पूरा-पूरा काम नहीं देती। डिमेन्शिआ।

बुद्धिभ्रम [संज्ञा पु] (सं.) चित्त का डांवाडोल होना। मन की अस्थिरता।

बुद्धिमत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान् [वि] (सं.) जिसमें बहुत बुद्धि हो। समझदार।

बुद्धिमानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'बुद्धिमत्ता'।

बुद्धिवंत [वि] (हिं.) बुद्धिमान्। अक्लमंद। समझदार।

बुद्धिवाद [संज्ञा पु.] (सं) वह वाद या सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धिसंगत अथवा समझ में आने वाली बातें मानी जाती हैं। रैशनलिज्म

बुद्धिशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) मेधाशक्ति।

बुद्धिशाली [वि] (सं.) बुद्धिमान्। समझदार।

बुद्धिशील [वि] (सं.) बुद्धिमान्। समझदार।

बुद्धिशुद्ध [वि.] (सं.) अच्छी समझ वाला।

बुद्धिश्रीगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

बुद्धिसंपन्न, बुद्धिसम्पन्न [वि.] (सं.) बुद्धिमान्। समझदार। अक्लमन्द।

बुद्धिसहाय [संज्ञा पु.] (सं) मंत्री। वजीर। सचिव (किसी राजा का)।

बुद्धिहत [वि.] (सं.) जिसमे बुद्धि न हो। बेअक्ल। मूर्ख।

बुद्धिहा [संज्ञा स्त्री] (सं.) बुद्धि को नष्ट करने वाली मदिरा। शराब।

बुद्धिहीन [वि.] (सं.) जिसमें बुद्धि न हो। मूर्ख। बेवकूफ।

बुद्धींद्रिय, बुद्धीन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'ज्ञानेंद्रिय'।

बुद्धी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बुद्धि'।

बुधंगड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) मूर्ख। बेवकूफ।

बुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौर जगत का एक प्रसिद्ध ग्रह जो सूर्य के बहुत पास है। २-देवता। ३-बुद्धिमान या विद्वान् आदमी। ४-एक सूर्यवंशी राजा का नाम जिसका उल्लेख अग्निपुराण में मिलता है। ५-भागवत में वर्णित वेगवान राजा के पुत्र का नाम। ६-कुत्ता।

बुधजामी [संज्ञा पु.] (हिं.) बुध के पिता, चंद्रमा।

बुधतात [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

बुधरत्न [संज्ञा पु.] (हिं) मरकतमणि। पन्ना।

बुधवान्* [वि] (हि.) देखो 'बुद्धिमान्'।

बुधवार [संज्ञा पु.] (सं.) सात वारों में से एक जो मंगल के बाद और गुरुवार के पहले होता है

बुधा [संज्ञा स्त्री] (सं.) जटामासी।

बुधान [संज्ञा पु.] (स) १-गुरु। २-प्रियवादी। ३-कवि।

बुधि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बुद्धि'।

बुधिवाही* [वि.] (हि) देखो 'बुद्धिमान्'।

बुनकर [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा।

बुनना [क्रि. स.] (हिं.) १-करघे पर तागों की सहायता से कपड़े तैयार करना। २-हाथ या यंत्र से कुछ सूतों को नीचे से निकाल कर कोई वस्तु बनाना। ३-तारों से कोई वस्तु तैयार करना। जैसे मकड़ी का जाला बुनना।

बुना* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मूल कारण। आधार।

बुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बुनने की क्रिया या भाव। २-बुनने की मजदूरी।

बुनावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुनने की क्रिया, भाव या ढंग।

बुनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) कपड़ा बुनने वाला। जुलाहा। बुनकर।

बुनियाद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नींव। २-जड़। मूल। ३-असलियत। वास्तविक।

बुनियादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बुनियाद या जड़ से संबंध रखने वाला। २-आधारिक। ३-बिलकुल प्रारंभिक।

बुबुकना [क्रि. अ.] (हिं.) जोर-जोर से रोना। डाढ़ मारना।

बुबुकारी [संज्ञा स्त्री.] डाढ़मार रोने की क्रिया या शब्द। जोर-जोर से रोना।

बुभुक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षुधा। भूख।

बभुक्षित [वि.] (सं.) भूखा। जिसे भूख लगी हो

बुभुक्षु [वि.] (सं.) १-भूखा। जिसे भोजन की इच्छा हो। २-सांसारिक सुखभोग का इच्छुक

बुभूषक [वि.] (सं.) यश की इच्छा करने वाला।

बुभूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यश की इच्छा रखना।

बुयाम [संज्ञा पु.] (अं.) चीनी मिट्टी का बना हुआ गोल ऊँचा बरतन जो आचार, तेजाब आदि रखने का काम में लाया जाता है। जार।

बुरकना [क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना। भुरभुराना। [संज्ञा पु.] (हिं.) खड़िया मिट्टी घुली दवात जिससे ग्रामीण बच्चे लिखते हैं।

बुरका [संज्ञा पु.] (अं.) १-मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे वह सिर से पैर तक के सब अंग ढकती है। २-वह झिल्ली जिसमें जन्म के समय बच्चा लिपटा रहता है। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुड़का'।

बुरकाना [क्रि. स.] (हि.) बुरकने या छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

बुरद [संज्ञा पु.] (अं.) जहाज का बगल का भाग पार्श्व।

बुरा [वि.] (हिं.) जो अच्छा न हो। जो उत्तम न हो। निकृष्ट। मंद। खराब।

बुरा मानना-अनुचित या खराब समझना। (किसी से) *बुरा मानना*-द्वेष रखना। वैर रखना। *बुरा भला*-१-हानि-लाभ। २-गाली-गलौज।

बुराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बुरा होने का भाव। बुरापन। खराबी। २-खोटापन। नीचता। ३-अवगुण। दोष। ४-निंदा। शिकायत।

बुरादा [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने पर निकलता है। कुनाई। २-चूरा। चूर्ण।

बुरापन [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'बुराई'

बुरुड [संज्ञा पु.] (देश.) एक जाति विशेष।

बुरुश [संज्ञा पु.] (अं.) कूँची की तरह की एक वस्तु जो रंगने, साफ करने या पालिश आदि करने के काम आती है।

बुरुल [संज्ञा पु.] (देश.) वृक्ष विशेष जो हिमालय में १३०००फुट की ऊँचाई पर होता है।

बुर्ज [संज्ञा पु.] (अं.) १-किले आदि की दीवारों में वह ऊपरी भाग जिसमें बैठने के लिए थोड़ा स्थान होता है। गरगज। २-मीनार का ऊपर वाला भाग। ३-इस आकार की इमारत की कोई बनावट। ४-गुब्बारा। ५-राशिचक्र।

बुर्द [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-ऊपरी लाभ या आमदनी। नफा। २-शर्त। होड़। बाजी। ३-शतरंज के खेल में सब मोहरे मर जाने की अवस्था जिसमें केवल बादशाह रह जाता है, ऐसी बाजी को 'बुर्द' कहते हैं और यह आधी मात समझी जाती है।

बुर्री [संज्ञा स्त्री.] (हि.) खेत में हल जोतने के साथ-साथ बीज बोने का एक ढंग।

बुर्श [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुरुश'।

बुलंद [वि.] (फा.) ऊँचा।

बुलंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) ऊंचाई।

बुलकारना* [क्रि. स.] (हिं.) 'देखो पुचकारना'

बुलडाग [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का कुत्ता जो मझोले आकार का होता है। यह बड़ा शक्तिशाली और देखने में भयंकर लगता है।

बुलबुल [संज्ञा स्त्री.] (फा.) काले रंग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुरीला बोलती है।

बुलबुलचश्म [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का पक्षी।

बुलबुलबाज [संज्ञा पु.] (फा.) बुलबुल पालने का शौकीन।

बुलबुलबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बुलबुल पालने या लड़ाने का कार्य।

बुलबुला [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का बुल्ला। बुदबुदा।

बुलवाना [क्रि. स] (हिं.) बुलाने का काम दूसरे से कराना।

बुलाक [संज्ञा पु.] (तु.) नथ में का लंबोतरा या सुराहीदार मोती।

बुलाकी [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े की एक जाति।

बुलाना [क्रि. स] (हिं.) १-पुकारना। आवाज

देना। २-किसी को अपने पास आने को कहना। ३-किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।

बुलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह [संज्ञा पु.] (हिं) पीली गरदन और पूँछ वाला घोड़ा (अश्व वैद्यक)।

बुलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'बुलावा'।

बुलि [संज्ञा स्त्री] (डि.) योनि।

बुलिन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार का रस्सा जो चौकोर पाल के लग्घे में बाँधा जाता है।

बुलेटिन [संज्ञा पु.] (अं) १-किसी सार्वजनिक विषय पर राज्य की ओर से या किसी अधिकारी व्यक्ति का वक्तव्य। २-राज्य के बड़े अधिकारी, राजा या किसी बड़े नेता के स्वास्थ्य के विषय में राजकीय अथवा किसी अधिकारी व्यक्ति की रिपोर्ट या विवरण।

बुलेली [संज्ञा पु] (*तामिल*) मझोले आकार का एक वृक्ष जो मैसूर और पूर्वी घाट में होता है।

बुलौआ, बुलौवा+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'बुलावा'।

बुल्लन [संज्ञा पु.] (देश.) १-मुख। चेहरा। २-मूँछोंवाली और भूरे रंग की मछली। [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का बुलबुला।

बुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का बुलबुला।

बुष [संज्ञा पु.] (सं.) अनाज के ऊपर का छिलका।

बुस [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज के ऊपर का छिलका भूसी।

बुसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बास मारना। २-सड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) बासी होना।

बुहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बहुरी'।

बुहारना [क्रि. स.] (हिं.) किसी जगह को साफ करने के लिए झाड़ू लगाना। झाड़ना। झाड़ू देना।

बुहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बुहारी] बड़ा झाड़ू।

बुहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झाड़ू। सोहनी। बढ़नी।

बूँच, बूँछ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की मछली।

बूँद [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-किसी तरल पदार्थ या जल का बिंदु। कतरा। टोप। २-वीर्य। ३-एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बुँदकियाँ होती हैं। बूँदें *गिरना या पड़ना*-हलकी वर्षा होना। बूँद भर-थोड़ा सा।

बूँदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी टिकुली। २-कान या नथ में पहनने का सुराहीदार मोती या मणि।

बूँदाबाँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलकी वर्षा।

बूँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बेसन के तले हुए छोटे गोल टुकड़े। २-इन टुकड़ों से बना हुआ लड्डू। ३-बरसने वाले पानी की बूँदें।

बू [संज्ञा स्त्री] (फा) १-गंध। वास। महक। २ बदबू। दुर्गंध।

बूआ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-पिता की बहन। फूफी। २-बड़ी बहन। ३-एक आदरसूचक सम्बोधन जिसे मुसलमान स्त्रियाँ परस्पर बोलती हैं। ४-भारतीय नदियों में पाई जाने वाली एक प्रकार की बड़ी मछली। ककसी।

बूई [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पौधा जिसे जलाकर सज्जी खार निकालते हैं।

बूक [संज्ञा पु.] (देश.) माजूफल की जाति का एक बड़ा वृक्ष। (हिं.) कोई वस्तु उठाने के लिए हथेली की गहरी की हुई मुद्रा। चंगुल। बकोटा।

बूकना [क्रि. स.] (देश.) १-महीन या बारीक पीसना। पीसकर चूर्ण बनाना। २-अपने को योग्य प्रमाणित करने के लिए गढ़-गढ़कर बातें करना।

बूका [संज्ञा पु.] (देश) नदी के हटने से निकली हुई भूमि। गंगबरार। (हिं.) देखो 'बुक्का'।

बूगा+ [संज्ञा पु.] (देश.) भूसा।

बूच [संज्ञा पु.] (अं) १-बड़ी मेख। २-बड़ा कांटा।

बूचड़ [संज्ञा पु.] (अं.) मांस बेचने के लिए पशुओं की हत्या करने वाला। कसाई।

बूचड़खाना [संज्ञा पु.] (हिं., फा.) वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या की जाती है। कसाई

बूचा [वि.] (?) १-कटे हुए कान का। कनकटा। २-किसी अङ्ग के न होने या कटे होने पर भद्दा या बुरा लगने वाला।

बूजन [संज्ञा पु.] (फा.) बंदर।

बूजना [क्रि. अ.] (?) धोखा देना। छिपाना। [क्रि स.] (देश.) (बिल आदि को) मूँदना या बन्द करना। [संज्ञा पु.] वह वस्तु जिससे कोई बिल या छेद आदि बूजा या बन्द किया जाय।

बूझ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समझ। बुद्धि। २-पहेली। बुझौवल।

बूझन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बूझ'।

बूझना [क्रि. स.] (हिं.) १-समझना। जानना। २-पूछना। ३-पहेली का उत्तर निकालना।

बूट [संज्ञा पु] (हिं) १-चने का हरा पौधा। २-चने का हरा दाना। ३-पेड़। वृक्ष। पौधा। [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का अंगरेजी ढंग का जूता।

बूटना* [क्रि. स.] (?) भागना।

बूटनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बीरबहूटी'।

बूटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा वृक्ष। पौधा। २-दीवारों, कपड़ों आदि पर बनाए हुए फूल या वृक्षों के आकार के चिह्न। छोटा बूटा। बेल बूटा-किसी वस्तु पर बनाए हुए फूल पत्ते। बूटेदार-जिस पर फूलपत्ते या बूटे बने हों।

बूटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वनस्पति। जड़ी। भाँग। भँग। ३-किसी वस्तु पर बने फूलपत्तों के चिह्न।

बूड़, बूड़न+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पानी की गहराई जिसमें आदमी डूब जाय।

बूड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-डूबना। २-लीन होना। निमग्न होना।

बूड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वर्षा आदि के होने वाली जल की बाढ़। २-पानी की गहराई जिस में आदमी डूब जाय।

बूढ़ [वि] (हिं.) बुड्ढा। [संज्ञा पु.] (?) १-लाल रंग। २-बीरबहूटी।

बूढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुड्ढा'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुड्ढी स्त्री।

बूत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बूता'।

बूता [संज्ञा पु.] (हिं.) कोई काम करने की शक्ति या सामर्थ्य। शक्ति। बल। सामर्थ्य।

बूथड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चेहरा। शकल। सूरत।

बूना [संज्ञा पु.] (देश.) 'चनार' नामक वृक्ष।

बूम (अं.) वह लट्ठा जो जहाज नाव आदि को ठीक मार्ग दिखाने के लिए गाड़ा जाता है।

बूर [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार की घास जो पश्चिम भारत में होती है। २-आटा छान लेने पर बचा हुआ चोकर।

बूरना* [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'बूड़ना'।

बूरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह कच्ची चीनी जो भूरापन लिये होती है। शक्कर। २-साफ की हुई चीनी। ३-महीन चूर्ण।

बूरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बनस्पति।

बूला [संज्ञा पु.] (देश.) पायल का बना हुआ जूता।

बृंहण [वि.] (सं.) पुष्टिकारक। पौष्टिक।

बृच्छ* [संज्ञा पु.] देखो 'वृक्ष'।

बृष [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सांड। बैल। २-पंख। ३-इन्द्र।

बृहच्चंचु, बृहच्चञ्चु [वि.] (सं.) लम्बी चोंच वाला।

बृहज्जाल [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा जाल।

बृहतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊपर ओढ़ने का वस्त्र। उपरना। उत्तरीय वस्त्र।

बृहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बनभंटा। २-एक वीणा का नाम जो विश्वावसु नामक गन्धर्व की थी। ३-उपरना। उत्तरीय वस्त्र। ४-एक मर्मस्थान जो रीढ़ के दोनों ओर में है। ५-वाक्य। ६-कंटकारि। ७-एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं।

बृहतीकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कल्प (वैद्यक)।

बृहतीपति [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

बृहत् [वि.] (सं.) १-बहुत बड़ा। विशाल। भारी। २-चौड़ा। बहुत विस्तारयुक्त। ३-दृढ़। बलिष्ठ ४-पर्याप्त। ५-उच्च। ऊँचा (स्वर आदि में)। [संज्ञा पु.] एक मरुत् का नाम।

बृहत्कंद, बृहत्कन्द [संज्ञा पु.] (सं) १-विष्णुकंद। २-गाजर।

बृहत्कीर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

बृहत्कुक्षि [वि] (सं) बड़े पेट वाला। बड़ी तोंदवाला।

बृहत्तृण [संज्ञा पु.] (सं.) बांस।

बृहत्त्वच [संज्ञा पु.] (सं) नीम का पेड़।

बृहत्पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद लोध। २-हाथीकंद। ३-कासमर्द।

बृहत्पर्ण [संज्ञा पु] (सं.) सफेद लोध।

बृहत्पाटलि [संज्ञा पु] (सं.) धतूरे का पौधा।

बृहत्पाद [संज्ञा पु.] (सं.) बरगद या बड़ का पेड़।

बृहत्पाली [संज्ञा पु.] (सं.) वन जीरा।

बृहत्पीलु [संज्ञा पु.] (सं) पहाड़ी अखरोट।

बृहत्पुष्प [संज्ञा पु.] (सं) १-पेठा। २-केले का वृक्ष।

बृहत्पुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सन का पेड़।

बृहत्फल [संज्ञा पु.] (सं) १-कुम्हड़ा। २-कटहल ३-जामुन। ४-चिचड़ा।

बृहत्फला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-तितलौकी। २-महेन्द्रवारुणी। ३-कुम्हड़ा। ४-जामुन।

बृहदंग, बृहदङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

बृहदश्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

बृहदारण्यक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध उपनिषद जो शतपथब्राह्मण के अन्तिम छः अध्याय में वर्णित है।

बृहद् [वि.] (सं) देखो 'बृहत्'। [संज्ञा पु.] (सं.) एक अग्नि का नाम।

बृहद्गृह [संज्ञा पु] (सं.) करुष नामक प्राचीन देश।

बृहद्दंती, बृहद्दन्ती [संज्ञा स्त्री.](सं.) दंती विशेष जिसके पत्ते एरंड के पत्तों के समान होते हैं।

बृहद्दल [संज्ञा पु.] १-सफेद लोध। २-एक वृक्ष जिसे सप्तपर्ण कहते हैं।

बृहद्दली [संज्ञा स्त्री] (सं) लज्जावती। लजालू।

बृहद्बला [संज्ञा पु.](सं) १-महाबला। २-सफेद लोध। ३-लजालू।

बृहद्बीज [संज्ञा पु.] (सं.) आमड़ा।

बृहद्भंडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाणा लता।

बृहद्भट्टारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुर्गा का एक नाम।

बृहद्भानु [संज्ञा पु] (सं.) १-अग्नि। २-चित्रक या चीतावृक्ष। ३-सूर्य। ४-सत्यभामा के पुत्र का नाम (भागवत)।

बृहद्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-सामवेद का एक अंश। ३-यज्ञपात्र। ४-जरासंध के पिता का नाम। ५-देवराज के पुत्र का नाम। ६-शतधन्वा के पुत्र का नाम।

बृहद्वयस् [वि] (सं.) अधिक उम्र वाला।

बृहद्वर्ण [संज्ञा पु] (सं) सोनामाखी। स्वर्णमाक्षिक।

बृहद्वल्ली [संज्ञा स्त्री] (सं.) करेला।

बृहद्वारुणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) महेन्द्रवारुणी नामक लता।

बृहन्नल [संज्ञा पु.] (सं) १-अर्जुन का एक नाम २-बांह। बाहु।

बृहन्नला [संज्ञा स्त्री] (सं.) अर्जुन का अज्ञातवास के समय का नाम।

बृहन्नारायण [संज्ञा पु.] (सं) एक उपनिषद् का नाम।

बृहन्निंब, बृहन्निम्ब [संज्ञा पु.] (सं) महानिंब।

बृहस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वैदिक देवता का नाम जो देवताओं के गुरु माने जाते है। २-सौरजगत् के पांचवें ग्रह का नाम।

बृहस्पतिवार [संज्ञा पु] (सं) बुधवार और शुक्रवार के बीच का दिन।

बृहस्पतिस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंगिरा के पुत्र बृहस्पतिऋषिकृत एक स्मृति का नाम।

बेंग [संज्ञा पु.] (हिं:) मेंढक।

बेंगत+ [संज्ञा पु.] (देश.) वह बीज जो खेतिहरों को उधार दिया जाता है और फसल के समय में उससे कुछ अधिक अन्न प्राप्त करते हैं।

बेंगनकुटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पक्षी जिसे अबाली भी कहते हैं।

बेंच [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-लकड़ी लोहे आदि की बनी चौकी जो लम्बी होती है। २-सरकारी न्यायालय के न्यायकर्त्ता। ३-वह आसन जिस पर न्यायकर्ता बैठता हो। ४-न्यायालय अदालत।

बेंचना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बेचना'।

बेंट, बेंठ [संज्ञा स्त्री] (देश.) औजारों आदि में लगी हुई काठ की मूठ।

बेंड़+ [संज्ञा पु] (देश.) १-वह भेड़ा जो भेड़ों के झुण्ड में बच्चे पैदा करने के लिए छूटा रहता है। २-नकद रुपया-पैसा। ३-पड़ाव। [संज्ञा स्त्री] (हिं.) भार को रोकने की टेक। चाँड।

बेंड़ना+ [क्रि स.] (हिं.) देखो 'बेढ़ना'।

बेंड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेवड़ा'। [वि.] (हिं.) १-आड़ा। तिरछा। २-कठिन। मुश्किल।

बेंड़ी [संज्ञा स्त्री] (देश.) बांस की वह टोकरी जिसमें चार रस्सियां बंधी रहती है और उससे दो आदमी मिलकर खेत की सिंचाई करते हैं।

बेंड़ीमसकली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काठ का दस्ता लगा हँसिया के आकार का एक जिससे बरतनों पर जिला की जाती हैं।

बेंढ़ [संज्ञा पु.] (देश) हवा के रुख पर घूमने वाला एक यंत्र। फरहरा।

बेंत [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठलों से छड़ियाँ टोकरियां आदि बनती और कुरसियाँ बुनी जाती है। बेंत की तरह काँपना-भय से थर-थर काँपना।

बेंदली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माथे की बिंदी। टिकली।

बेंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-माथे पर गोल तिलक। टीका। २-एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं। ३-माथे पर लगाने की गोल टिकली। ४-गोल टिकली के आकार का माथे का एक आभूषण।

बेंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टिकली। बिंदी। २-शून्य। सुन्ना। सिफर। ३-एक गहना जिसे स्त्रियां माथे पर पहनती हैं। इसे दावनी या बंदी भी कहते हैं। ४-सरो के पेड़ का सा बेल बूटा।

बेंवड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह लकड़ी जो बन्द किवाड़ों के पीछे लगाई जाती है। अरगल।

बेंवत [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'ब्योंत'।

बेंवताना [क्रि. स.] (हिं.) ब्योंतने का काम दूसरे से कराना।

बे [अव्य.] (फा.) बिना। बगैर। (फारसी के यौगिक शब्दों के साथ इसका प्रयोग होता है। जैसे-बे-गैरत। (हिं.) बे-ते करना-किसी को तुच्छ समझकर अशिष्टतापूर्वक बातें करना।

बेअंत* [क्रि: वि.] (हिं.) जिसका कोई अन्त न हो। असीम। बेहद।

बे-अकल [वि.] (फा., अ.) नासमझ। मूर्ख।

बे-अकली [संज्ञा स्त्री.] (फा.,अ.) मूर्खता। बेवकूफी।

बे-अदब [वि] (फा., अ) जो बड़ों का आदर सम्मान न करे। उद्दंड।

बे-अदबी [संज्ञा स्त्री.] (फा., अ.) बड़ों का आदर सम्मान न करना।

बे-आब [वि] (फा., अ.) १-जिसमें आब या चमक न हो। २-जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो

बे-आबरू [वि.] (फा.) बेइज्जत।

बे-आबी [संज्ञा स्त्री.] (फा., अ.) मलिनता। निस्तेजता।

बेआरा [संज्ञा पु.] (देश.) जौ और चने का मिश्रण। एक में मिला हुआ जौ और चना।

बेओनी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कंघी की तरह का जुलाहों का एक औजार जो ताने के सूत के बीच में रहता है।

बेईंसाफी [संज्ञा स्त्री] (फा.) अन्याय। इन्साफ

का अभाव।

बे-इज्ज़त [वि] (फा, अ) १-जिसकी कोई इज्जत या प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २-जिसका अपमान या तिरस्कार किया गया हो। अपमानित।

बे-इज्ज़ती [संज्ञा स्त्री.] (फा) १-अप्रतिष्ठा। २-अपमान।

बेइलि+ [संज्ञा पु.] देखो 'वेला'।

बे-इल्म [वि] (फा., अ.) जो पढ़ा-लिखा न हो। जो कोई विद्या न जानता हो।

बे-ईमान [वि.] (फा.) १-जिसे ईमान या धर्म का विचार न हो। अधर्मी। २-जो विश्वास के योग्य न हो। अविश्वसनीय। ३-छल-कपट या किसी प्रकार का अनाचार करने वाला।

बेईमानी [संज्ञा स्त्री.] (फा, अ.) बेईमान होने का भाव।

बेउँगा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस का चोंगा जिसे कंबल की पटिया बुनते समय ताने के सांथी अलग करने के लिए ताने में रखते हैं।

बे-उज्र [वि.] (फा., अ.) जो कोई काम करने अथवा आज्ञा पालन करने में किसी प्रकार की आपत्ति प्रकट न करे।

बेक़दर [वि.] (फा.) जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। बेइज्जत। अप्रतिष्ठित।

बेकदग [वि.] (हिं.) १-जिसकी कोई कदर या प्रतिष्ठा न हो। २-क़दर या आदर करना न जाने। ३-जो किसी का महत्त्व न जानता हो।

बेक़दरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेकदर होने का भाव। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

बेकरा [संज्ञा पु.] (देश.) खुरपका नामक पशु रोग। खुरहा।

बे-करार [वि.] (फा.) जिसे शान्ति अथवा चैन न हो। व्याकुल। विकल।

बे-करारी [संज्ञा स्त्री.] (फा) व्याकुलता। बेचैनी। घबराहट।

बेकल* [वि.] (हिं.) व्याकुल। बेचैन।

बेकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्याकुलता। विकलता। बेचैनी। २-स्त्रियों को होने वाला एक रोग जिसमें गर्भाशय अपने स्थान से हट जाता है इस कारण रोगी को बहुत पीड़ा होती है।

बेकस [वि.] (फा.) १-नि.सहाय। निराश्रय। २-गरीब। मोहताज। दीन। ३-बिना मां-बाप का। अनाथ। यतीम।

बे-कसूर [वि] (फा, अ) जिसका कोई कसूर न हो। निर्दोष।

बे-कहा [वि] (हिं.) किसी का कहना न मानने वाला। उद्धत।

बे-कानूनी [वि] (फा, अ) नियम विरुद्ध। जो कानून या कायदे के खिलाफ हो।

बेकाबू [वि] (फा + अ) १-जिसका अपने ऊपर काबू न हो। विवश। लाचार। २-जो किसी के वश या काबू में न हो।

बेकाम [वि.] (हिं.) १-जिसे कोई काम न हो। २-जो काम का न हो। निरर्थक।

बेकायदा [वि] (फा. + अ.) नियम विरुद्ध। कायदे के खिलाफ।

बेकार [वि.] (फा.) १-जिसके पास करने के लिए कोई काम न हो। निठल्ला। निकम्मा। २-निरर्थक। व्यर्थ। [क्रि. वि] (फा) बिना किसी अर्थ या प्रयोजन के। व्यर्थ। बेफायदा।

बेकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा) खाली या निरुद्यम होने का भाव। वह अवस्था जिसमें जीविका-निर्वाह के लिए मनुष्यों के हाथ में कोई काम-धंधा नहीं होता। अन-एम्पलॉयमेंट।

बेकार्यो* [संज्ञा पु.](हिं.) १-बुलाने का शब्द जैसे—अरे, ओ, हो आदि। २-मुँह से निकलने वाला कोई शब्द।

बेख [संज्ञा स्त्री.](फा.) जड़। मूल। *[संज्ञा पु.] (हिं) १-भेस। स्वरूप। २-नकल। स्वाँग।

बेखटक [वि.] (हिं.) बिना किसी तरह के खटके के। निस्संकोच।
[क्रि. वि.] (हिं) मन में कोई खटका किये बिना। निस्संकोच।

बेखटके [क्रि. वि.](हिं) बिना किसी संकोच के। निस्संकोच।

बे-खतर [वि.] (फा. + अ.) जिसे किसी प्रकार का खतरा या भय न हो। निडर।

बे-खता [वि] (फा, अ) १-जिसकी कोई खता (कसूर) न हो। निरपराध। बेकसूर। २-जो कभी खाली न जाय। अमोघ। अचूक।

बेखबर [वि.](फा) १-अनजान। नाबालिक। २-बेहोश। बेसुध।

बेखबरी [संज्ञा स्त्री.] ((फा.) १-अज्ञानता। २-बेहोशी।

बेखुर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

बेखौफ [वि.] (फा.) निर्भय। निडर।

बेग [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'वेग'. [संज्ञा पु.] (अ.) कपड़े, चमड़े आदि का थैला। [संज्ञा पु.] (तु.) [स्त्री. बेगम] सरदार।

बेगड़ी [संज्ञा पु.] (देश.) १-हीरा-तराश। हीरा काटने वाला। २-नगीना बनाने वाला।

बेगती [संज्ञा स्त्री] (देश) बंगाल की खाड़ी में पाई जाने वाली एक प्रकार की मछली।

बेगम [संज्ञा स्त्री.] (तु.) १-रानी। राजपत्नी। २-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। ३-पत्नी। जोरू। ४-ताश के पत्तों मे रानी के चित्रवाला पत्ता।

बेगमी [वि] (तु) १-बेगम-सम्बन्धी। २-उत्तम। बढ़िया।
[संज्ञा पु] १-एक प्रकार का बढ़िया कपूरी पान २-एक प्रकार का पनीर। ३-एक प्रकार का बढ़िया चावल जो पंजाब में होता है।

बेगर+ [वि] (हिं.) देखो 'बहर'।
[क्रि वि.] देखो 'बगैर'।

बे-गरज़ [संज्ञा स्त्री.] (फा., अ.) जिसे कोई ... या परवा न हो। [क्रि. वि] अर्थ ... योजन।

बेगरजी [संज्ञा स्त्री] (फा, अ.) बेगरज़ होने का भाव।

बेगवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णार्द्धवृत्त ... विषम चरणों में तीन सगण, एक गुरु ... समपादों में ३ भगण और दो गुरु ...

बेगसर [संज्ञा पु.] (हिं.) खच्चर। ...

बेगानगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेगाना होने का भाव। परायापन।

बेगाना [वि] (फा.) १-गैर। दूसरा। ... अनजान। नावाकिफ।

बेगार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बिना मजदूरी ... जबरदस्ती लिया जाने वाला काम। ... काम जो मन लगाकर न किया जाय।
बेगार टालना-बिना मन लगाये ... करना।

बेगारी [संज्ञा स्त्री] (फा.) बेगार में ... वाला आदमी। वह व्यक्ति जो बेगार में ... करे।

बेगि* [क्रि. वि.] (हिं.) १-जल्दी से। २-... पट। तुरन्त।

बेगुन+ [संज्ञा पु.] देखो 'बैंगन'।

बेगुनाह [वि.] (फा.) १-जिसने कोई गुनाह पाप न किया हो। २-जिसने कोई ... या कसूर न किया हो। निर्दोष।

बेगुनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार ... सुराही।

बेचक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बेचने वाला ... करने वाला।

बेचना [क्रि. स.] (हि.) मूल्य लेकर बदले में ... वस्तु देना। विक्रय करना।
बेच खाना-खो देना। गँवा देना।

बेचवाना [क्रि. स] (हिं.) देखो 'बिकवाना'।

बेचवाल [संज्ञा पु.] (हिं) बेचने वाला।

बेचाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिकवाना'।

बेचारा [वि.] (फा.) [स्त्री. बेचारी] जिसका कोई ... साथी या अवलंब न हो। गरीब। दीन।

बे-चिराग [वि] (फा., अ) जहां दीया ... तक न जलता हो। उजड़ा हुआ।

बेची [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बेचने की क्रिया ... भाव। २-वह लेख जो किसी हुंडी ... की पीठ पर जिसको बेचने वाला ... करने के लिये लिखता है कि मैंने अमुक ... को बेच दिया।

बेचू [वि] (हिं) बेचने वाला।

बेचैन [वि] (फा) जिसे चैन न पड़ता हो। ... कुल। विकल।

बेचैनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेचैन होने का भाव। विकलता। व्याकुलता।

बेजड़ [वि.](हिं.) जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो। निर्मूल।

बे-ज़बान [वि.] (फा.) १-जिसमें बोलने की शक्ति न हो। २-गूंगा। मूक। ३-जो विरोध करना न जानता हो। दीन।

बेजा [वि.] (फा.) अनुचित। ना-मुनासिब।

बेजान [वि.](फा.) १-जिसमें जान न हो। मुरदा। मृतक। २-जिसमें जीवन-शक्ति बहुत ही कम हो। ३-मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४-निर्बल। कमजोर।

बेजाब्ता [वि.](फा., अ.) कानून या नियम आदि के विरुद्ध।

बेज़ार [वि.] (फा.) जो किसी बात से बहुत तंग आगया हो।

बेजू [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का जंगली जानवर जो दो या डेढ़ हाथ लंबा होता है। वह प्रायः सभी गरम देशों में पाया जाता है।

बेजोड़ [वि.](हिं.) १-जिसमें जोड़ न हो। अखंड २-जिसके जोड़ या समता का कोई और न हो। अद्वितीय। निरूपम।

बेझड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बझरा'।

बेझना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बेधना'।

बेझरा [संज्ञा पु.] (हिं.) गेहूँ, चना, जौ, मटर आदि में से दो या तीन मिले हुए अन्न।

बेझा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निशाना। लक्ष्य।

बेट [संज्ञा पु.] (हिं.) बेगार।

बेटकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कन्या। पुत्री। बेटी।

बेटना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेटा'।

बेटवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेटा'।

बेटा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बेटी] पुत्र। सुत। लड़का।
बेटा बनाना-किसी को दत्तक-पुत्र बनाना। *बेटे वाला*-वर का पिता या पक्ष का कोई बड़ा आदमी। *बेटा बेटी*-संतान। औलाद। *बेटे पोते*-पुत्र-पौत्र आदि।

बेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुत्री। लड़की। कन्या। *बेटी वाला*-कन्या का पिता या कन्यापक्ष का कोई बड़ा आदमी।

बेटौना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेटा'।

बेठ [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार की ऊसर भूमि
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेटा'।

बेठ [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार की ऊसर भूमि
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'बेंठ'।

बेठन [संज्ञा पु.](हिं.) वह कपड़ा जो किसी वस्तु को लपेटने के काम में आता है जिससे कि उसमें लिपटी या बँधी वस्तुएँ धूल आदि से बच सकें। बस्ता। *पोथी का बेठन*-जो अधिक पढ़ा लिखा न हो

बे-ठिकाने [वि.] (फा., हिं.) १-जो अपनी ठीक जगह पर न हो। २-जिसका कोई सिर पैर न हो। ऊलजलूल। ३-व्यर्थ। निरर्थक।

बेड [संज्ञा पु.] (अं.) १-नीचे का भाग। तल। २-बिस्तर। बिछौना। ३-छापेखाने में वह तख्ता जिस पर रखकर शुद्ध किए हुए टाइप छापने से पहले कसे जाते हैं।

बेड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह बाड़ जो वृक्ष के चारों ओर लगाई जाती है। २-रुपया। (दलाल)।

बेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) नये वृक्षों के चारों ओर रक्षा के लिए दीवार खड़ी करना।

बेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नदी पार करने के लिए बड़े-बड़े लट्ठों लकड़ियों या तख्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा। २-बहुत सी नावों, जहाजों या हवाई जहाजों का दल। ३-नाव ४-झुण्ड। समूह।
बेड़ा बाँधना-बहुत से आदमियों का इकट्ठा करना। *बेड़ा पार करना या लगाना*-संकट से पार या मुक्त करना। [वि.] (हिं.) १-जो आँखों के समानान्तर दाहिनी ओर से बाईं ओर या बाईं ओर से दाहिनी ओर गया हो २-कठिन। विकट। मुश्किल।

बेड़िया+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बांस की कमचियों की बनी टोकरी जिससे खेत में तालाब के पानी से सिचाई की जाती है।

बेड़िन, बेड़िनी [संज्ञा स्त्री.] (?) १-नट जाति की नाचने-गानेवाली स्त्री। २-कोई भी नीच स्त्री जो नाचती गाती और कसब कमाती हो

बेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो अपराधियों के पैरों में उन्हें बाँध रखने के लिए पहनाई जाती हैं। २-वह टोकरी जिससे खेतों में पानी डाला जाता है। ३-सांप के काटे की वह चिकित्सा जिससे उसे या काटे हुए स्थान को लोहे से दागा जाता है। ४-छोटी नाव। नौका। ५-नदी पार करने का टट्ठर आदि का बना हुआ छोटा बेड़ा।

बेडौल [वि.] (हिं.) १-जिसका डौल या रूप भद्दा हो। कुरूप। भद्दा। २-जो अपनी जगह पर ठीक न जँचे। बेढंगा।

बेढंग, बेढंगा [वि.] (हिं.) १-जिसका ढंग ठीक न हो। २-जो ठीक प्रकार से लगा या रखा या सजाया न गया हो। बेतरतीब। ३-कुरूप। भद्दा।

बेढंगापन [संज्ञा पु.] (हिं.) बेढंगे होने का भाव।

बेढ़ [संज्ञा पु.] (?) १-नाश। बरबादी। २-बोई हुई वह वस्तु जिसमें अंकुर फूट आया हो।

बेढ़ई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कचौड़ी। पीठी भरी हुई रोटी या पूरी।

बेढ़न+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बेठन। घेरा।

बेढ़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-वृक्ष की रक्षा के लिए, चारों ओर मेड़ बनाकर घेरना। रूँधना। २-चौपायों को घेर कर हाँक ले जाना।

बेढब [क्रि. वि.] (हिं.) अनुचित अथवा अनुपयुक्त रूप से। बे-तरह। [वि.] (हिं.) १-जिसका ढब अच्छा न हो। २-बेढंगा। भद्दा।

बेढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कड़े के रूप का गहना जो हाथ में पहना जाता है। २-तरकारियां आदि बोने के लिए घर के आसपास का घेरा-हुआ स्थान।

बेढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) १-घेरने का कार्य दूसरे से करवाना। २-घेरवाना। ओढ़ाना।

बेढुआ [क्रि. स.] (देश.) गोल मेथी।

बेणीफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण। सीसफूल।

बेत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेंत'।

बे-तकल्लुफ [वि.](फा., अ.) १-जिसे ऊपरी शिष्टाचार का विशेष ध्यान न हो। सीधा-साधा व्यवहार करने वाला। २-जो अपने मन की बात साफ-साफ कह दे। [क्रि. वि.](हिं.) १-बिना किसी तकल्लुफ के। २-बेधड़क। निस्संकोच।

बे-तकल्लुफी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेतकल्लुफ होने का भाव। सरलता। सादगी।

बे-तकसीर [वि.] (फा., अ.) जिसने कोई अपराध न किया हो। निरपराध। निर्दोष। बेगुनाह।

बेतना [क्रि. अ.] (हिं.) जान पड़ना। प्रतीत होना

बे-तमीज [वि.] (फा., अ) जिसे भद्रता का आचरण करना न आता हो। उजड्ड। फूहड़।

बेतरह [क्रि. वि.] (फा., अ.) १-अनुचित रूप से। बुरी तरह से। २-असाधारण रूप से। विलक्षण ढंग से।
[वि.] (फा., अ.) बहुत अधिक।

बे-तरीका [वि.] (फा., अ.) जो नियम के विरुद्ध हो। बेकायदा। अनुचित।
[क्रि. वि.] (फा., अ.) बिना तरीके के। अनुचित रूप से।

बेतवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुन्देलखंड की एक नदी का नाम जो भूपाल के ताल से निकलकर जमना में मिलती है।

बेतहाशा [क्रि. वि.] (फा., अ.) १-बहुत तेजी या शीघ्रता से। २-बहुत घबराकर। ३-बिना सोचे समझे।

बेताब [वि.] (फा.) १-जिसमें ताब या शक्ति का अभाव हो। अशक्त। दुर्बल। २-विकल। व्याकुल।

बे-तार [वि.] (हिं.) जिसमें तार न हो। बिना तार का। *बेतार का तार*-बिना तार के और केवल बिजली के द्वारा भेजा हुआ समाचार अथवा इस प्रकार समाचार भेजने की प्रक्रिया।

बेताल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'वेताल'। २-भाट। बंदी। [वि.] (वह गाना बजाना) जिसमें ताल का पूरा और ठीक-ठीक ध्यान न रहे।

बेताला [वि] (हिं.) १-गाने बजाने में ताल का ध्यान न रखने वाला। २-देखो 'बेताल'।

बेतुका [वि] (हिं) १-जिसमें कोई तुक सामंजस्य न हो। बेमेल। २-बेढंगा।

बेतुकी हाँकना-बेढंगी बात कहना।

बेतुका-छंद [संज्ञा पु.] (हिं.) वह छन्द जिसके तुकांत आपस में न मिलते हों।

बेतौर [क्रि. वि.] (फा., अ.) बेढंगपन से। बुरी तरह से।

[वि] (फा., अ.) जिसका तौर-तरीका ठीक न हो

बेद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'बेत'। २-देखो 'वेद'।

बेदक [संज्ञा पु] (डि.) हिन्दू।

बेदखल [वि.] (फा.) जिसका दखल, कब्जा या अधिकार हटा दिया हो। अधिकारच्युत।

बेदखली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सम्पत्ति पर से दखल, कब्जा हटाया जाना या न होना।

बेदनरोग [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं को होने वाला एक रोग।

बेदम [वि.] (फा.) १-मृतक। निर्जीव। २-मृतप्राय। अधमरा। ३-जर्जर। बोदा।

बेदमजनूँ [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी शाखाएँ बहुत झुकी हुई रहती हैं। इसकी छाल और फलों आदि को दवा के काम में लाते हैं।

बेदमल, बेदमाल [संज्ञा पु.] (देश.) लकड़ी की वह तख्ती जिसे तेल से पोतकर सिकलीगर अपना मस्किला नाम का औजार रगड़कर चमकाते हैं।

बेदमुश्क [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का वृक्ष। इसमें सुगंधित फूल लगते हैं जिनका अर्क दवा के काम आता है।

बेदरी [वि.] (हिं.) देखो 'बिदरी'।

बेदर्द [वि] (फा.) जो किसी के दुख-दर्द पर ध्यान न दे। कठोर हृदय। निर्दय।

बेदर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। ❀[वि.] (हिं.) निर्दय। कठोर हृदय

बेदलैला [संज्ञा पु.] (फा.) सुन्दर फूल वाले एक पौधे का नाम।

बेदाग [वि.] (फा.) १-बिना किसी दाग या धब्बेवाला। साफ। २-बिना ऐब का। निर्दोष। शुद्ध। ३-निरपराध। बे-क़सूर।

बेदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का काबुली अनार। २-बिहीदाना नामक फल का बीज। ३-देखो 'अंबरबारी'। ४-एक प्रकार का छोटा और मीठा शहतूत। ५-एक प्रकार के छोटे दाने की मीठी बुंदिया। [वि.] (फा.) जो दाना या समझदार न हो।

बेदाम [वि.] (फा.) बिना दाम का। मुफ्त। [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'बादाम।

बेध [संज्ञा पु] (हिं) १-देखो 'छेद'। २-देखो 'बेध'

बे-धड़क [क्रि. वि.] (हिं.) १-धड़क या संकोच रहित। निःसंकोच। २-भय या आशंकारहित होकर। बेखौफ। निडर होकर। [वि.] (हिं.) १-जिसे किसी प्रकार का संकोच या खटका न हो। निर्द्वंद। २-भय या आशंकारहित। निडर। निर्भय।

बेधना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी नुकीली वस्तु से छेद करना। सूराख करना। छेदना। २-घाव करना।

बे-धर्म [वि.] (हिं.) १-जिसे अपने धर्म का तनिक भी ध्यान न हो। २-जिसने अपने धर्म का परित्याग कर दिया हो।

बेधीर❀ [वि.] (हिं.) देखो 'अधीर'।

बेधिया [संज्ञा पु.] (हिं.) अँकुश। अँकुसा।

बेनंग [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी बाँस।

बेन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वंशी। मुरली। बाँसुरी २-सपेरों के बजाने की तूमड़ी। ३-बांस। ४-एक प्रकार का वृक्ष। [संज्ञा पु.] (अ) १-जहाज के मस्तूल पर लगाने की झंडी। २-वायु हवा।

बेनउर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिनौला'।

बे-नजीर [वि] (फा., अ.) जिसकी कोई समता या बराबरी न कर सके। अद्वितीय। अनुपम।

बेनट [संज्ञा स्त्री.] (अं. बायोनेट) बंदूक के अगले सिरे पर लगी हुई किर्च। संगीन।

बेनवर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिनौला'।

बे-नसीब [वि.] देखो 'अभागा'।

बेनसेढ़ [संज्ञा पु] (अं. विंडसेल) जहाज के निचले भागों में ताजा हवा पहुँचाने का टाट आदि का बना हुआ नल के आकार का थैला।

बेना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बांस का बना छोटा पङ्खा जो हाथ से झला जाता है। २-खस। उशीर। ३-बांस। ४-माथे पर बेंदी के बीच में पहनने का एक गहना।

बेनागा [वि.] (फा., अ.) निरंतर। लगातार। नित्य।

बेनिमून❀ [वि.] (हिं.) बेजोड़। अद्वितीय। अनुपम

बेनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा पंखा। पंखी।

बेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों की चोटी। २-गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम। त्रिवेणी। ३-किवाड़ के पल्ले में जड़ी हुई वह लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है

बेनीपान [संज्ञा पु] (हिं.) बेंदी नामक गहना।

बेनु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वेणु'। २-मुरली। वंशी। ३-बांस।

बेनुली+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जांते या चक्की के किल्ले पर रखी हुई वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर जोती रहती है।

बेनौटी [संज्ञा पु.] (हिं.) कपास के फूल का सा रंग। कपासी।

बेनौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिनौला'।

बे-परद [वि.] (फा.) १-जिसके आगे या ओट न हो। अनावृत। २-नंगा।

बेपरदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेपरद भाव। परदे का न होना।

बेपरवा, बेपरवाह [वि.] (फा.) १-जिसे परवा या चिन्ता न हो। बेफिक्र। उदार। ३-मनमौजी।

बेपरवाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बेपरवाह का भाव। बेफिक्री। २-अपने सार कार्य करना।

बेपर्द [वि.] (फा.) देखो 'बेपरद'।

बेपार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जो हिमालय की तराई में पाया + (हिं.) देखो 'व्यापार'।

बेपारी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यापारी'।

बेपीर [वि.] (हिं.) १-जिसके हृदय में दुःख के लिए सहानुभूति न हो। बेरहम।

बेपेंदी [वि.] (हिं.) जिसके पेंदा बिना पेंदे का। बे पेंदी का लोटा- निश्चित मत या सिद्धांत न हो।

बेफ़ायदा [वि.] (फा.) जिससे कोई लाभ न हो। व्यर्थ का।

बेफिकरा [क्रि. वि.] (फा.) व्यर्थ। [वि.] (हिं.) जिसे कोई बात की निश्चिन्त।

बेफिक्र [वि.] (फा.) जिसे कोई फिक्र हो। निश्चिन्त।

बेफिक्री [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निश्चिन्तता।

बेबस [वि.] (हिं.) १-जिसका वश २-पराधीन। परवश।

बेबसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवशता। मजबूरी। २-पराधीनता। परवशता।

बेबाक [वि.] (फा.) चुकाया या चुका हुआ (ऋण)।

बेबुनियाद [वि.] (फा.) जिसकी बुनियाद न हो। निर्मूल।

बेब्याहा [वि.] (हिं.) [स्त्री. बेब्याही] वाहित। कुँआरा।

बे-भाव [क्रि. वि.] (हिं.) जिसकी कोई हिसाब न हो। बेहिसाब। बेहद। बे भाव की पड़ना-१-बहुत मार अधिक फटकारा जाना।

बेम [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जुलाहों की

बेमज़ा [वि.] (फा.) जिसमें कोई मज़ा न हो।

बेमन [क्रि. वि.] (हिं.) बिना मन जिसका मन न लगता हो।

बेमरम्मत [वि.] (फा.) जिसकी मरम्मत न हुई हो। बिना सुधरा। टूटाफूटा।

बेमरम्मती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेमरम्मत होने का भाव।

बेमाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिवाई'।

बेमारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बीमारी'।

बेमालूम [क्रि. वि.] (फा.) बिना किसी को पता दिये। [वि.] (फा.) जो मालूम न पड़ता हो।

बेमिलावट [वि.] (हिं.) जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो। शुद्ध। खालिस।

बेमुख+ [वि.] (हिं.) देखो 'विमुख'।

बेमुनासिब [वि.] (फा.) अनुचित।

बेमुरव्वत [वि.] (फा.) जो मुरव्वत न करे। जिसमें शील-संकोच का अभाव हो। तोताचश्म।

बेमुरव्वती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेमुरव्वत होने का भाव।

बेमौके [वि.] (फा.) जो ठीक मौके या अवसर पर न हो [संज्ञा पु.] (फा.) अवसर का अभाव।

बेमौसिम [वि.] (फा.) १-मौसिम न होने पर भी होने वाला। २-जिसका मौसिम न हो।

बेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेरा'।

बेर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मझोले आकार का कँटीला वृक्ष जिसके फलों में कड़ी गुठली होती है। २-इस वृक्ष का फल। [संज्ञा स्त्री.] १-बार। दफा। २-विलंब। देर।

बेरड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झड़बेरी। जङ्गली बेर।

बेरजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिरोजा'।

बेरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सोने या चांदी का एक गहना जो कलाई में पहना जाता है। २-देखो 'ब्योरा'।

बेरस [वि.] (हिं.) १-निरस। रसरहित। २-बेमजा।

बेरई+ [संज्ञा पु.] देखो 'बेड़ई'।

बेरहटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुटने के नीचे की हड्डी में का उभार।

बेरहम [वि.] (फा.) निर्दय। निष्ठुर। दयाशून्य।

बेरहमी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निष्ठुरता। निर्दयता।

बेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-समय। बेला। २-तड़का। भोर। ३-कच्चा कुआं। ४-देखो 'बेड़ा'। [संज्ञा पु] (देश.) एक में मिला जौ और चना। [संज्ञा पु.] (अं.) साहब लोगों का वह चपरासी जो चिट्ठी पत्री ले जाता और लाता है।

बेरादरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिरादरी'।

बेराम+ [वि.] (हिं.) देखो 'बीमार'।

बेरामी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बीमारी'।

बेरिआ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समय। वक्त।

बेरिज+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) किसी जिले की कुल जमा।

बेरियाँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) समय। वक्त।

बेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लता विशेष जो हिमालय पर होती है। इसके रेशों से रस्सियां बनती हैं। २-देखो 'बेड़ी'। ३-देखो 'बेर'। ४-एक में मिली हुई सरसों और तीसी। ५-अन्न का उतना अंश जितना एक बार चक्की में डाला जाता है।

बेरीछत [संज्ञा पु.] (देश.) हाथी को किसी काम से मना करने का शब्द (महावत)।

बेरुआ [संज्ञा पु.] (देश.) बांस का वह टुकड़ा जो नाव खींचने की गून के आगे बंधा रहता है।

बेरुइ+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वेश्या। रंडी।

बेरुकी+ [संज्ञा स्त्री.](देश.) रोग विशेष जिसमें बैलों की जीभ पर काले-काले छाले पड़ जाते हैं।

बेरुख [वि.] (फा.) १-जो समय पड़ने पर रुख (मुँह) फेर ले। मुरव्वत। २-नाराज। क्रुद्ध।

बेरुखी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अवसर पड़ने पर मुँह फेर लेना।

बेरूप+ [वि.] (हिं.) कुरूप। भद्दी शक्ल वाला।

बेरोक [क्रि. वि.] (हिं.) बिना किसी तरह की रुकावट के। बेखटके। निर्विघ्न।

बेरोक-टोक-बिना किसी प्रकार अड़चन या रुकावट के।

बेरोजगार [वि.] (फा.) जिसके पास कोई काम-धन्धा न हो।

बेरोजगारी [संज्ञा स्त्री.](फा.) बेरोजगार होने का भाव।

बेरौनक [वि.] (फा.) जिस पर रौनक न हो। उदास।

बेरौनकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेरौनक होने का भाव।

बेर्रा [संज्ञा पु.](देश.) १-मिले हुए जौ और चने का आटा। २-कोई का फल।

बेर्राबरार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न की उगाही।

बेलंद+ [वि.] (हिं.) १-ऊँचा। २-जो बुरी तरह परास्त या बिफल मनोरथ हुआ हो (व्यंग्य)।

बेलंब*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिलंब'।

बेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके फल का मोटा कड़ा छिलका होता है। बिल्व। महाफल। २-वह स्थान जहां शक्कर तैयार होती है। ३-देखो 'बेला'। *४-बेले का फूल। [संज्ञा स्त्री.] १-बहुत ही पतली पेडी और पतले डंठलों का वह कोमल और छोटा पौधा जो दूसरे वृक्षों आदि के सहारे ऊपर की ओर बढ़ता हो। लता। बल्ली। २-सतान। वंश। ३-नाव खेने का डांड। ४-घोड़े के पैर का एक रोग। ५-फीते पर बना हुआ जरदोजी या रेशम का काम। ६-विवाह आदि के अवसरों पर नेगियों को देने का धन। ७-कपड़े आदि पर लंबाई के बल में बनी हुई फूल-पत्तियां।

बेल बढ़ना-वंश वृद्धि होना। *बेल मँढ़े चढ़ना*-किये हुए काम में पूरी सफलता होना। [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार की कुदाली जिससे मजदूर भूमि खोदते हैं। २-सड़क आदि बनाने के लिए चिह्न रूप में या सीमा निर्धारित करने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर। एक प्रकार का लम्बा खुरपा। [संज्ञा पु.](अं.) कपड़े या कागज आदि की वह बड़ी गठरी जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए बनाई जाती है।

बेलक+ [संज्ञा पु.] (देश.) फरसा। फावड़ा।

बेलकी [संज्ञा पु.] (देश.) चरवाहा।

बेलकुन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की लता।

बेलखजी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ऊंचा वृक्ष जो पूर्वी हिमालय में पाया जाता है।

बेलगगरा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

बेलगिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बेल के फल का गूदा

बेलचक+ [संज्ञा पु.] देखो 'बेलचा'।

बेलचा [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार की छोटी कुदाल। २-एक प्रकार की लम्बी खुरपी। ३-छोटी कुदाल।

बे-लज्जत [वि.] (फा.) १-जिसमें कोई लज्जत या स्वाद न हो। स्वादरहित। २-जिसमें कोई सुख न मिले।

बेलड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी बेल या लता। बौंर।

बेलदार [संज्ञा पु.](फा.) फावड़ा चलाने या जमीन खोदने वाला मजदूर।

बेलदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बेलदार का काम। फावड़े से भूमि खोदने का काम।

बेलन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लंबोतरे आकार का वह भारी गोलखंड जिससे कोई स्थान समतल करने या कंकड़, पत्थर कूटकर सड़कें बनाई जाती हैं। रोलर। २-इस आकार का कोई बड़ा पुरजा जो यंत्रों में लगता हो। ३-रूई धुनने की मुठिया या हथा। ४-कोल्हू का जाठ। ५-करघे में का पौसेरा। ६-कोई गोल और लंबा लुढ़कने वाला पदार्थ। ७-देखो 'बेलना'। [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का जड़हन धान। २-एक में मिलाई हुई दो नावें जिनसे डूबी हुई नाव पानी में से निकाली जाती हैं

बेलनदार [वि.] (हिं.) जिसमें बेलन लगा हो।

बेलना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चकले पर लोई रखकर रोटी, पूरी, कचौरी आदि बनाने का औजार जो बीच में मोटा और दोनों ओर कुछ पतला होता है। [क्रि. स.] १-रोटी, पूरी आदि बनाने के लिए चकले पर लोई रखकर बेलने से पतला करना। २-विनोद के लिए पानी की छींटे उड़ाना। ३-चौपट या नष्ट

करना।
पापड़ बेलना-व्यर्थ के या निष्फल काम करना

बेलपत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बेलपत्र'।

बेलपत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) बेल के वृक्ष की पत्तियां जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं।

बेलपात [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेलपत्र'।

बेलवागुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरनों को फँसाने का जाल।

बेलबूटेदार [वि.] (हिं.) जिसमें बेलबूटे बने हों

बेलरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'बेल'।

बेलसना* [क्रि. अ.] (हिं.) सुख या आनन्द लूटना। भोग करना।

बेलहरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बेलहरी] बांस या धातु की बनी लम्बोतरी पिटारी जिसमें लगे हुए पान रखे जाते हैं।

बेलहरी [संज्ञा पु.] (हिं.) साँची पान।

बेलहाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लहरिएदार बेल छापने का ठप्पा।

बेलहाशिया [संज्ञा पु.] (हिं.) धोती के किनारों पर बेल छापने का ठप्पा।

बेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चमेली के समान सुगंधित फूलों वाला एक छोटा पौधा। २-लहर। ३-कटोरा। ४-समुद्र का किनारा। ५-समय। ६-चमड़े की वह छोटी कुल्हिया जिससे दूसरे बरतन में तेल डालते हैं। [संज्ञा पु.] (फा.) रुपये आदि रखने की थैली।

बेलाग [वि.] (हिं.) १-जो किसी पर टिका न हो बिना आधार का। २-बिलकुल अलग। ३-व्यवहार में साफ और सच्चा खरा।

बेलाडोना [संज्ञा पु.] (अं.) मकोय का सत जो दवा के समान खाने या पीड़ित स्थान पर लगाने के काम आता है।

बेलावल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बिलावल'।

बेलि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बेल'।

बेलिफ़ [संज्ञा पु.] (अं.) दीवानी अदालत का वह कर्मचारी जिसके ज़िम्मे अदालत में उपस्थित न होने वालों को गिरफ्तार करना और माल-कुर्क करना आदि है।

बेलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी कटोरी।

बेली [संज्ञा पु.] (हिं.) सङ्गी। साथी।

बेलौस [वि.] (हिं.) १-सच्चा। खरा। २-बेमुरव्वत

बेवकूफ़ [वि.] (फा.) मूर्ख। नासमझ। निर्बुद्धि।

बेवकूफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मूर्खता। नासमझी।

बेवक्त [क्रि. वि.] (फा.) कुसमय में।

बेवट+ [संज्ञा स्त्री.] (?) १-संकट। २-विवशता

बेवतन [वि.] (फा.) १-बिना घर द्वार का। २-परदेसी।

बेवपार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यापार'।

बेवपारी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यापारी'।

बे-वफ़ा [वि.] (फा., अ.) १-जो मित्रता आदि का पालन न करे। २-दुःशील। बेमुरव्वत। ३-उपकार को न मानने वाला।

बेवर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास, इसकी रस्सी खाट बुनने के काम में आती है।

बेवरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) विवरण। ब्योरा।

बेवरेबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चालाकी। चालबाजी

बेवरेवार [वि.] (हिं.) विवरण सहित। ब्योरेवार

बेवसाय+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यवसाय'।

बेवस्था+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'व्यवस्था'।

बेवहरना* [क्रि. अ.] (हिं.) व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना।

बेवहरिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लेनदेन करने वाला। महाजन। २-लेनदेन का लेखा रखने वाला। मुनीम।

बेवहार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यवहार'।

बेवा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) विधवा। रांड़।

बेवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिवाई'।

बेवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विमान'।

बेश [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वेश'।

बेशऊर [वि.] (फा., अ.) जिसे कुछ भी शऊर न हो फूहड़। मूर्ख।

बेशऊरी [संज्ञा स्त्री] (फा., अ.) फूहड़पन। मूर्खता

बेशक [क्रि. वि] (फा., अ.) बिना किसी शक या संदेह के। जरूर। निःसंदेह।

बेशक़ीमत, बेशकीमती [वि.] (फा., अ.) जिसका मूल्य बहुत हो। मूल्यवान। बहुमूल्य।

बेशरम [वि.] (फा.) निर्लज्ज। बेहया।

बेशरमी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निर्लज्जता। बेहया।

बेशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अधिकता। २-लाभ।

बेशुमार [वि.] (फा.) अगणित। असंख्य। अनगिनत।

बेश्म [संज्ञा पु.] (हिं.) घर। निवासस्थान।

बेसंदर* [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि।

बेसँभर [वि.] (हिं.) बेहोश।

बेसँभार [वि.] (हिं.) बेसुध। बेहोश।

बेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) भेस। वेश।

बेसन [संज्ञा पु.] (देश.) चने की दाल का महीन पिसा हुआ आटा।

बेसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बेसन की बनी हुई पूरी। २-वह कचौरी जिसमें बेसन भरा हो। [वि.] बेसन बना हुआ।

बेसबब [क्रि. वि.] (फा.) अकारण।

बेसबरा [वि.] (फा., अ.) १-जिसे सब्र या संतोष न हो। २-उतावला।

बे-सबरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) असंतोष। अधैर्य।

बे-समझ [वि.] (फा.) मूर्ख। नासमझ।

बे-समझी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नासमझी।

बेसर [संज्ञा पु.] (हिं.) खच्चर। [संज्ञा नाक में पहनने की छोटी नथ।

बेसरा [वि.] (फा.) आश्रयहीन। [संज्ञा (देश.) एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

बेसरो-सामान [वि.] (फा.) जिसके पास सामग्री न हो। दरिद्र। कंगाल।

बेसवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

बेसवार [संज्ञा पु.] (देश.) शराब चुआने सड़ाया हुआ मसाला।

बेसा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी। [संज्ञा पु.] देखो 'भेष'।

बेसारा* [वि.] (हिं.) बैठाने, रखने वाला।

बेसाहना [क्रि. अ.] (हिं.) १-खरीदना। लेना। २-जान-बूझकर अपने सिर विरोध, संकट आदि)।

बेसाहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोल लेने

बेसाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) खरीदा हुआ सौदा।

बेसिलसिले [क्रि. वि.] (हिं.) अव्यवस्थित से। किसी क्रम आदि के बिना।

बेसी [क्रि. वि.] (फा.) अधिक। ज्यादा।

बेसुध [वि.] (हिं.) जिसे सुध या होश न अचेत। बदहवास।

बेसुधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अचेतनता। बेहोशी

बेसुर [वि.] (हिं.) जिसका स्वर ठीक (संगीत)।

बेसुरा [वि.] (हिं.) १-जो नियत या निर्दिष्ट में न हो (संगीत)। २-बेमौका।

बेस्वाद [वि.] (हिं.) १-बिना स्वाद का रहित। २-जिसका स्वाद खराब है जायका।

बेहंगम [वि.] (हिं.) १-बेढंगा। २-विक

बेहंगमपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बेढंगा पन। २-विकटता। भयंकरता।

बेहँसना* [क्रि. अ.] (हिं.) जोर से हँस कर हँसना।

बेह* [संज्ञा पु.] (हिं.) छेद। सूराख।

बेहड़ [वि.] (हिं.) देखो 'बीतड़'। [संज्ञा पु.] देखो 'बीहड़'।

बेहतर [वि.] (फा.) अपेक्षाकृत ठीक या [अव्यय] (फा.) स्वीकृतसूचक शब्द (प्रार्थना या आदेश के उत्तर में)।

बेहतरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अच्छापन।

बेहद [वि.] (फा.) १-असीम। अपरिमित। २-बहुत अधिक।

बेहन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) धान आदि के खेत में बोया जाता है। बीज। [वि.] पीला। जर्द।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) १-जुलाहा जाति के वह लोग जो रूई धुनने का काम करते हैं। २-धुनिया। रूई धुनने वाला।

[illegible]* [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां धान या [illegible] आदि का बीज डाला जाता है।

[illegible] [वि.] (फा.) निर्लज्ज। बेशर्म।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निर्लज्जता। बेशर्मी। *बेहयाई का जामा या बुरका ओढ़ना या पहनना*-निर्लज्जता धारण करना। पूरा या पक्का बेशर्म बन जाना।

[illegible] [वि.] (देश.) १-स्थावर। अचर। २-अलग। पृथक। [संज्ञा पु.] बावली। वापी।

[illegible]+ [क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु का फट या चिर जाना।

[illegible] [संज्ञा पु.](देश.) १-एक प्रकार की घास। २-मूँज की बनी हुई चिपटी पेटारी। [वि.] अलग। पृथक। जुदा। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेयरा'।

[illegible] [क्रि. स.](हिं.) फाड़ना। विदीर्ण करना [क्रि. अ.] फटना। विदीर्ण होना।

[illegible]+ [संज्ञा स्त्री.] (?) १-वह धन जो बहुत से लोगों से चन्दे के रूप में वसूल किया जाय। २-इस प्रकार चन्दा उगाहने की क्रिया

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा जो सारंगी के आकार का होता है।

[illegible] [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'विहान'।

[illegible] [वि.] (फा., अ.) जिसका हाल या दशा अच्छी न हो। व्याकुल। विकल। बेचैन।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) व्याकुलता। बेचैनी।

[illegible] [क्रि. वि.] (फा., अ.) बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।

[illegible] [वि.] (फा.) जिसमें कोई हुनर या कला न हो।

[illegible] [वि.] (हिं.) जिसे कोई हुनर या विद्या न आती हो।

[illegible] [वि.] (फा.) जिसकी कोई इज्जत या प्रतिष्ठा न हो।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अशिष्टता। असभ्यता।

[illegible] [वि.] (फा.) जिसमें शिष्टता न हो। अशिष्ट। असभ्य।

[illegible] [संज्ञा पु.] (फा.) अशिष्टता। असभ्यता।

[illegible]* [क्रि. वि.] (हिं.) बिना। बगैर। रहित।

[illegible] [वि.] (फा.) जिसे कोई चिन्ता न हो। बेफिक्र।

[illegible] [वि.] (फा.) जिसे होश न हो। मूर्छित। बेसुध।

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मूर्छा। अचेतनता।

[illegible] [संज्ञा पु.] (अं.) वह स्थान जहां ब्याज पाने की इच्छा से रुपया जमा करते हों और ब्याज भी लेते हों।

बैंकर [संज्ञा पु.] (अं.) महाजन। साहूकार।

बैंगन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक पौधा जिसके फलों की तरकारी बनाई जाती है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, मधुर तथा रुचिकारक और पित्तनाशक, व्रणकारक, पुष्टिजनक, भारी तथा हृदय को हितकारक बताया गया है। भंटा। २-एक प्रकार का चावल।

बैंगनी [वि.] (हिं.) बैंगन के रंग का। ललाई लिये नीले रंग का।

बैंगनी बूँद-बैंगनी रंग की बुन्दकियों वाली एक प्रकार की छींट।

बैंजनी [वि.] (हिं.) देखो 'बैंगनी'।

बैंड [संज्ञा पु.] (अं.) १-झुण्ड। २-अंगरेजी बाजा या उनके बजाने वालों का समूह।

बैंड़ा* [वि.] (हिं.) देखो 'बेंड़ा'।

बै [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कंघी। बैसर (जुलाहे)। २-देखो 'वय'। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बेचना। बिक्री।

बै लेना या खरीदना-बैनामा लिखकर जमीन आदि मोल लेना।

बैकना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बहकना'।

बैकल+ [वि.] (हिं.) १-विकल। २-पागल। उन्मत्त।

बैकुंठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैकुंठ'।

बैखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'वैखरी'।

बैखानस [वि.] (हिं.) देखो 'वैखानस'।

बैग [संज्ञा पु.] (अं.) थैला। झोला।

बैगन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बैंगन'।

बैगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'बैंगनी'। २-देखो 'बैंगन'।

बैजंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक फूल के पौधे का नाम जिसे वैजयन्ती कहते हैं। २-विष्णु की माला।

बैज [संज्ञा पु.] (अं.) १-चिह्न। २-चपरास।

बैजई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का हलका नीला रंग।

बैजनाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैद्यनाथ'।

बैजयंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैजन्ती। वैजयन्ती।

बैजा [संज्ञा पु.] (अ.) १-अंडा। २-एक प्रकार फोड़ा जिसमें पानी होता है। गलका।

बैट [संज्ञा पु.] (अं.) क्रिकेट नामक अङ्गरेजी खेल का बल्ला।

बैटरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-चीनी या शीशे आदि का वह पात्र जिससे रसायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लाई जाती है। २-इसी प्रकार की प्रक्रिया द्वारा तैयार किया हुआ लोहे आदि का छोटा मुँह बन्द पात्र जो प्रकाश आदि करने के लिए होता है। ३-तोपखाना।

बैटा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रूई आदि ओटाने की चरखी।

बैठ [संज्ञा पु.] (हिं) राजकीय कर या लगान अथवा उसकी दर।

बैठक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बैठने का स्थान या आसन। २-वह स्थान जहाँ बहुत से लोग बैठते हों। चौपाल। ३-बैठने की मुद्रा या ढंग। ४-किसी मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी। आधार। ५-बैठने का व्यापार। जमावड़ा। जमाव। ६-साथ उठना-बैठना। संग। मेल। ७-कांच या धातु आदि का दीवट जिसके सिर पर बत्ती जलती या मोमबत्ती खोंसी जाती है। ८-एक प्रकार की कसरत जिसमें जल्दी-जल्दी खड़ा होना और बैठना पड़ता है। ९-सभा-समिति आदि का एक बार का अधिवेशन।

बैठकबाज [वि.] (हिं.) केवल बातें बनाकर काम निकालने वाला। धूर्त्त। चालाक।

बैठकबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धूर्त्तता। चालाकी

बैठका [संज्ञा पु.] (हिं.) वह चौपाल या दालान जहां पर बैठकर लोग परस्पर बात-चीत करते हैं।

बैठकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक कसरत जिसमें बार-बार उठा और बैठा जाता है। २-आसन। आधार। ३-वह स्थान जहां कोई बैठता हो। चौपाल। ४-किसी मूर्त्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी। पदस्तल। ५-बैठने का ढंग या टेव। ६-दीपक के लिए धातु आदि का बना हुआ आधार। ७-बाजार में बैठने वाले बनियों आदि पर जमींदार की ओर से लिया जाने वाला कर। बरतराई।

बैठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैठने की क्रिया, भाव या ढंग। २-बैठक। आसन।

बैठना [क्रि. अ.] (हिं.) १-टाँगों का आश्रय छोड़कर इस प्रकार होना कि चूतड़ किसी आधार पर रहें। स्थित होना। आसन जमाना। आसीन होना। २-किसी स्थान पर ठीक प्रकार से जमना या स्थित होना। ३-अभ्यस्त होना। ४-जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे तल में जा लगना। ५-पानी या जमीन में किसी भारी चीज का दाब पाकर नीचे जाना या धँसना। ६-सूजा या उभरा हुआ न रहना। पिचक जाना। ७-(काम-धंधा) बिगड़ना। ८-लागत लगना। खर्च होना। ९-तेल में ठहरना या पड़ता पड़ना। १०-गुड़ का पिघल जाना। ११-चावल पकने में गीला हो जाना। १२-फेंकी या चलाई हुई वस्तु का निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना। लक्ष्य या निशाने पर लगना। १३-घोड़े आदि पर सवार होना। १४-पौधे का जमीन में रोपा जाना। लगाना। १५-किसी पद पर स्थित होना। जमना। १६-एक स्थान पर स्थिर होकर रहना। जमना। १७-किसी स्त्री को

किसी पुरुष के यहां जा रहना। १८-(किसी वस्तु मे) समाना। आना। १९-पक्षियों का अंडे सेना। २०-निर्वाचन आदि में उम्मेदवार का प्रतियोगिता से हट जाना। खड़ा न रहना। २१-अस्त होना। २२-बिना काम के खाली रहना। बेरोजगार रहना। निरुद्योग रहना। *(कहीं या किसी के साथ) बैठना उठना*-१-साथ में समय बिताना। २-संग में रहना। *बैठे बिठाये या बैठे बैठे*-१-बिना कुछ किये। २-अचानक। एकाएक। *बैठे रहो*-१-अलग रहो दखल मत दो। हाथ मत लगाओ। २-चुप रहो। मौन रहो। कुछ मत बोलो। यौ०-*बैठेदण्ड*-एक कसरत जिसमें दण्ड करके बैठ जाते हैं। *उठ बैठना*-१-लेटे न रहना। २-जाग पड़ना। *बैठते उठते*-सदा। सब अवस्था में। *बैठे रहना*-साहस छोड़कर निराश होना। देर लगाना। *नस बैठाना*-मोच दूर करना। *हाथ पैर बैठाना*-टूटे या उखड़े हुए हाथ या पैर ठीक करना।

बैठनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बैठन'।

बैठनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान (करघे में) जहाँ बुनकर कपड़ा बुनते समय बैठता है।

बैठवाँ+ [वि.] (हिं.) बैठा या दबा हुआ। चिपटा

बैठवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैठाने की मजदूरी।

बैठवाना [क्रि. स.](हिं.) १-बैठाने का काम अन्य से कराना। २-पेड़ पौधे लगवाना। रोपाना।

बैठा [संज्ञा पु.] (हिं.) चमचा या बड़ी कड़छी।

बैठाना [क्रि. स](हिं.) १-स्थिर करना। उपविष्ट करना। २-बैठने के लिए कहना। ३-पद पर नियत करना। ४-नियत स्थान पर ठीक-ठीक ठहराना। ठीक जमाना। ५-बार-बार करके हाथ को किसी कार्य में अभ्यस्त करना। ६-पानी या किसी तरल पदार्थ में घुली वस्तु को तल में लेजाकर जमाना। ७-धँसाना या डुबाना। नीचे की ओर बैठाना। ८-उभरे या सूजे हुए को धँसाना या पचकाना। ९-(काम धंधा) चलता न रहने देना। १०-लक्ष्य या निर्दिष्ट स्थान पर फेंक या चलाकर किसी वस्तु को पहुँचाना। ११-घोड़े आदि पर सवार कराना। १२-पौधे को जमाना या लगाना। १३-किसी स्त्री को घर में डालना। पत्नी के रूप रख लेना। १४-काम धंधे के योग्य न रखना।

बैठारना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बैठाना'।

बैठालना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बैठाना'।

बैढ़ना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बेढ़ना'।

बैड़ाल [वि.] (सं.) बिल्ली-संबन्धी।

बैड़ालव्रत [संज्ञा पु.](सं.) बिल्ली की तरह अपने घात में रहना और ऊपर से बहुत सीधा सादा बना रहना।

बैडालव्रती [वि.] (सं.) बिल्ली की तरह ऊपर से सीधा सादा दीख पड़ने वाला पर समय पर घात करने वाला। कपटी।

बैण [संज्ञा पु.](सं.) बास का काम करके जीविका चलाने वाला।

बैत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पद्य। श्लोक।

बैतड़ा [वि.] (हिं.) १-आवारा। २-लुच्चा। शोहदा।

बैतरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'बैतरणी'। २-एक प्रकार का अगहनियां धान।

बैतला [वि.] (अ.) लावारिस।
[संज्ञा पु.] चोरी का माल (जुआरी)।

बैताल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वेताल'।

बैतालिका [वि.] (हिं.) देखो 'वैतालिक'। [संज्ञा पु.] देखो 'वैतालिक'।

बैद [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बैदिन] देखो 'वैद्य'

बैदई, बैदगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।

बैदाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बैदगी'।

बैदूर्य [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैदूर्य'।

बैदेही [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'वैदेही'।

बैन [संज्ञा पु.] (हिं.) वचन। बात।
बैन झारना-मुख से बात या बोल निकालना।

बैनतेय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैनतेय'।

बैना [संज्ञा पु.] (हिं.) मंगल अवसरों पर सम्बन्धियों और इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाने वाली मिठाई। *[क्रि. स.] बोना। [संज्ञा पु.] देखो 'बेंदा'।

बैपार [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यापार। कामधंधा।

बैपारी [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यापारी। रोजगारी।

बैयन [संज्ञा पु.] (हिं.) बाना बैठाने का लकड़ी का एक औजार।

बैयर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औरत। स्त्री।

बैयाँ* [क्रि. वि.] (?) घुटनों के बल।

बैयां* [संज्ञा पु.] (हिं.) बै। बैसर (जुलाहे)।

बैरंग [वि.] (अ. बेयरिंग) १-डाक द्वारा भेजी जाने वाली वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल के रूप में टिकट आदि भेजनेवाले ने न चिपकाये हों। २-विफल।

बैर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शत्रुता। दुश्मनी। अदावत। २-वैमनस्य। दुर्भाव। *बैर करना*-ईर्ष्या रखना। *बैर काढ़ना या निकालना*-बदला लेना। *बैर ठानना*-शत्रुता करना। *बैर डालना*-दुश्मनी या अदावत पैदा करना। *बैर पड़ना*-शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना। *बैर बढ़ाना*-शत्रुता के काम करना *बैर बिसाहना या मोल लेना*-विरोधी या शत्रु बनना। बिना मतलब किसी से अदावत पैदा करना। *बैर मानना*-दुर्भाव या दुश्मनी रखना। *बैर लेना*-बदला लेना। [संज्ञा पु.] (देश.) चिलम के आकार का हल में लगा हुआ चोंगा जिसमें भरा हुआ बीज हल चलने के बराबर कूँड़ में पड़ता जाता है। +[संज्ञा पु.] (हिं.) बेर का पेड़ या फल।

बैरख [संज्ञा पु.] (हिं.) सेना का [illegible] पताका।

बैरन [संज्ञा पु.] (अं.) [स्त्री. बैरोनेस] [illegible] उपाधि जो इङ्गलैंड के सामंतों और [illegible] भूम्याधिकारियों को वंशपरम्परा के [illegible] जाती है।

बैरा [संज्ञा पु.] (देश.) १-हल में लगा हुआ [illegible] चोंगा जिससे बीज गिराये जाते हैं। २-[illegible] राव बनाते समय खाली जगह में [illegible] ईंट के टुकड़े। [संज्ञा पु.] (अं.) [illegible] चाकर। खिदमतगार।

बैराखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों का [illegible] पहनने का एक गहना।

बैराग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बैराग्य'।

बैरागी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बैरागिन] [illegible] प्रकार के वैष्णव मत को मानने वाले [illegible]

बैराग्य [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैराग्य'।

बैराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) वायु के [illegible] बिगड़ जाना।

बैरिस्टर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार के [illegible] या कानून के जानकार जिनकी मर्यादा [illegible] से बढ़कर होती है।

बैरिस्टरी [संज्ञा पु.](अं.) बैरिस्टर का [illegible] या उपाधि।

बैरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. बैरिन] १-शत्रु। [illegible] दुश्मन। २-विरोधी।

बैरोमीटर [संज्ञा पु.] (अं.) थर्मामीटर [illegible] का, पर उससे बड़ा एक यंत्र जिससे [illegible] की सरदी-गरमी का पता लगता है।

बैल [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. गाय] १-[illegible] का बधिया किया हुआ नर चौपाया जो [illegible] और गाड़ियों में जोता जाता है। २-[illegible]

बैल-मुतनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार [illegible] चित्रकाव्य। २-चित्रण में लहरिये[illegible] गो-मूत्रिका।

बैलर [संज्ञा पु.] (अं. ब्वायलर) पीपे के [illegible] का लोहे का बड़ा पात्र जो भाप से [illegible] वाली कलों में रहता है।

बैलून [संज्ञा पु.] (अं.) १-गुब्बारा। २-[illegible] गुब्बारा जिस पर चढ़कर लोग पहले [illegible] उड़ा करते थे।

बैल्व [वि.] (सं.) बेल-सम्बन्धी। बेल का।

बैपानस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वैखानस'।

बैसंदर* [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि। आग।

बैस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आयु। उम्र। [illegible] यौवन। जवानी। *बैस चढ़ना*-जवानी आना। [संज्ञा पु.] [illegible] १-क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा। [illegible] 'वैश्य'।

बैठना ।

बैसना [क्रि. स.] (हिं.) बैठना ।

बैसर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुनकरों का एक औजार जिससे करघे में कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं । कंघी ।

बैसवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) अवध के पश्चिमी प्रान्त का नाम ।

बैसाख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैशाख' ।

बैसाखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लाठी या डण्डा जिसे बगल के नीचे रखकर लंगड़े लोग सहारा से टेकते हुए चलते हैं ।

बैसाना* [क्रि. स.] (हिं.) बैठाना । स्थिर करना ।

बैसारना* [क्रि. स.] (हिं.) बैठाना । स्थिर करना ।

बैसिक* [संज्ञा पु.] (हिं.) वेश्या से संभोग करने वाला । वेश्यागामी ।

बैहर* [वि.] (हिं.) १-भयानक । २-क्रोधी ।
*[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वायु । हवा ।

बोंक [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे का बना हुआ कीला जो पल्ले के नीचे की चूल में लगाया जाता है ।

बोंगना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. बोंगनियाँ] चौड़े मुँह का एक प्रकार का बरतन । बहुगुना ।

बोंड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बोड़री' ।

बोंता [संज्ञा पु.] (देश.) बारूद में आग लगाने का पलीता ।

बोंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बौंड़ी' ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बाकली' ।

बोआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बोने का काम । २-बोने की मजदूरी ।

बोक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बकरा ।

बोकरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बकरा' ।

बोकरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बकरी' ।

बोकला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वकला' ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) एक पर्वत जो पश्चिम दिशा में है ।

बोखार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बुखार' ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (?) घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके पेट में पीड़ा होती है ।

बोज [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों का एक भेद ।

बोजा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चावल से बनी हुई शराब ।

बोझ [संज्ञा पु.] (?) १-एक में बंधा हुआ वस्तुओं का भारी ढेर । भार । २-भारीपन । गुरुत्व । वजन । ३-किसी कार्य का उत्तरदायित्व । ४-कठिन या रुचि के विरुद्ध काम । ५-उतना भार जितना आदमी या एक पशु ले जाय । *बोझ उठना*-किसी कठिन काम का भार लिया जा सकना । *बोझ उठाना*-किसी कठिन काम का भार अपने ऊपर लेना । *बोझ उतरना*-जी हलका होना । *बोझ उतारना*-१-किसी कठिन काम से छुटकारा देना । २-कोई ऐसा कार्य कर डालना जिससे चिन्ता मिट जाय । ३-बेगार टालना ।

बोझना [क्रि. स.] (हिं.) लादना ।

बोझल, बोझिल [वि.] (हिं.) भारी । वजनी । गुरु ।

बोझा [संज्ञा पु.] (?) १-देखो 'बोझ' । २-संदूक के समान तङ्ग कोठरी जिसमें राब के बोरे इस लिए ऊपर नीचे रखे जाते हैं कि उनका शीरा या सूसी निकल जाय ।

बोझाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लादने का काम । २-बोझने या लादने की मजदूरी ।

बोट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) नाव । नौका ।

बोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी का कटा हुआ मोटा टुकड़ा । २-कटा हुआ टुकड़ा ।

बोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माँस का छोटा कटा हुआ टुकड़ा ।
बोटी बोटी करना या काटना-शरीर को काट-कर टुकड़े-टुकड़े करना ।

बोड़ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है ।

बोड़री+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाभि । तोंदी ।

बोडल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) जेवर नामक एक पक्षी जिसकी चोंच पर सींग सा होता है ।

बोड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) १-अजगर । बड़ा साँप । २-एक प्रकार की लम्बोतरी फली जिसकी तरकारी बनती है । लोबिया ।

बोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (?) १-दमड़ी । २-अति अल्प धन । ३-एक प्रकार के पौधे की कली जिसकी तरकारी और अचार बनाया जाता है

बोत [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों की एक जाति ।

बोतक [संज्ञा पु.] (देश.) पान की पहले साल की खेती ।

बोतल [संज्ञा स्त्री.] (अं. बॉटल) एक प्रकार का कांच का बरतन जिसकी गरदन लम्बी होती है ! इसमें द्रव पदार्थ रखा जाता है ।
बोतल चढ़ाना-मद्य या शराब पीना । *बोतल पर बोतल चढ़ाना*-बहुत शराब पीना । *बोतल ढालना*-शराब पीना ।

बोतलिया, बोतली [वि.] (हिं.) बोतल के रंग का कालापन लिये हरा ।

बोता [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊँट का वह बच्चा जिस पर सवारी न होती हो ।

बोदकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का कुसुम जिसके फूल का रंग बनाया जाता है ।

बोदर+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) लचीली छड़ी ।
[संज्ञा पु.] (देश.) ताल या जलाशय के किनारे का वह स्थान जहां से सिंचाई का पानी चढ़ाया जाता है ।

बोदरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खसरा नामक रोग ।

बोदा [वि.] (हिं.) १-मूर्ख । गावदी । २-सुस्त । मट्ठर । ३-जो कड़ा या दृढ़ न हो । फुसफुसा । ४-जिसकी बुद्धि तेज न हो ।

बोदापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुद्धि का तेज न होना । २-मूर्खता ।

बोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्ञान । जानकारी । २-धीरज । सन्तोष । तसल्ली ।

बोधक [वि.] (सं.) [स्त्री. बोधिका] १-बोध या ज्ञान कराने वाला । २-सूचक । ३-वाचक ।
[संज्ञा पु.] (सं.) शृङ्गाररस के हावों में एक हाव जिसमें संकेत से अपने मन का भाव प्रकट किया जाता है ।

बोधकर [वि.] (सं.) बतलाने वाला । बोध कराने वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-बंदीजन जो राजाओं को जगाया करते थे । २-शिक्षक अध्यापक ।

बोधगम्य [वि.] (सं.) समझ में आने योग्य ।

बोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोध या ज्ञान कराना । जताना । सूचित करना । २-जगाना । ३-अग्नि या दीपक आदि को प्रज्वलित करना । ४-दीपदान । ५-मंत्र जगाना ।

बोधना* [क्रि. स.] (हिं.) १-समझाना । कुछ कह सुनकर शांत या सन्तुष्ट करना । २-ज्ञान देना । जताना ।

बोधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कार्तिक शुक्ला एकादशी । प्रबोधनी एकादशी । २-बड़ी पीपल ।

बोधनीय [वि.] (सं.) समझाने योग्य ।

बोधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धिमान पुरुष । २-बृहस्पति का एक नाम । ३-विष्णु ।

बोधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्ण ज्ञान । २-पीपल का पेड़ । ३-समाधि भेद ।

बोधित [वि.] (सं.) ज्ञापित । जताया हुआ ।

बोधितरु, बोधिद्रुम, बोधिवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध भगवान को बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ था ।

बोधिसत्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो परन्तु बुद्ध न हो सका हो ।

बोध्य [वि.] (सं.) बोधनीय । समझाने लायक ।

बोनस [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह धन जो किसी को उसके प्राप्य के अतिरिक्त दिया जाय । २-वह धन जो किसी कर्मचारी को उसके पारिश्रमिक या वेतन के अलावा दिया जाय । ३-सम्मिलित पूँजी से चलने वाली कंपनी के हिस्सेदारों को दिया जाने वाला अतिरिक्त लाभ या मुनाफा ।

बोना [क्रि. स.] (हिं.) १-खेत में उपजाने के लिए बीज बखेरना । २-किसी बात का सूत्रपात करना । अंकुर लगाना ।

बोवला [संज्ञा पु.] (देश.) १-बजरे का भूसा । २-रेत । बालू ।

बोवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्तन । थन । २-घर का साज सामान । ३-गट्ठर । गठरी ।

बोम्बी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पुन्नाग जाति का एक

सदाबहार वृक्ष।

बोय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गंध। बास। २-सुगंध।

बोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-डुबाने की क्रिया। डुबाव। २-चांदी या सोने के कँगूरेदार जो आभूषणों में गूथा जाता है। ३-सिर पर पहनने का एक गहना जो गुम्बज के आकार का होता है। ४-खड्ड। गड्ढा।

बोरका* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दवात। २-मिट्टी की दवात जिसमें छोटे बच्चे खड़िया घोलकर लिखते हैं।

बोरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-डुबाना। २-डुबाकर भिगोना। ३-कलंकित करना। ४-योग देना या मिलाना। ५-घुले रंग में डुबाकर रंगना।

बोरसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिट्टी का वह बरतन जिसमें आग रखी जाती है। अंगीठी।

बोरा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. बोरी] १-टाट का बड़ा थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं। २-चांदी या सोने का बना छोटा घुँघरू।

बोरिका* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बोरका'।

बोरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा थैला।
[संज्ञा पु.] (फा.) बिस्तर। चटाई।
बोरिया बाँधना या बोरिया बिस्तर उठाना–सब सामान समेटकर चलने की तैयारी करना।

बोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) टाट का छोटा बोरा या थैला। *बोरी बाँधना*–चलने की तैयारी करना।

बोरो [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोटा धान।

बोरोबाँस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस।

बोर्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। २-माल के मुामलों के फैसले या प्रबन्ध के लिए बनी हुई समिति अथवा कमेटी। ३-कागज की मोटी दफ्ती।

बोर्डिंग-हाउस [संज्ञा पु.] (अं.) वह घर या मकान जो विद्यार्थियों के लिए बना हो। छात्रावास।

बोलंगीबाँस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस जिसके टोकरे बनाये जाते हैं।

बोल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुख से उच्चारण किया हुआ शब्द। वचन। वाणी। २-ताना। व्यंग्य। ३-गीत तथा बाजे के गठें या बँधे हुए शब्द। ४-कही हुई बात या प्रतिज्ञा। कथन या वादा। ५-अदद। संख्या।
बोल मारना–ताना देना। (किसी का) *बोलबाला रहना*–१-बात की साख बनी रहना। २-मानमर्यादा का बना रहना। *बोलबाला होना*–१-बात की साख होना। २-प्रताप या भाग्य बढ़कर होना। ३-प्रसिद्ध होना। (किसी का) *बोल रहना*–मानमर्यादा रहना।

बोलक* [संज्ञा पु.] (देश.) जल-भ्रमण।

बोलचाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बातचीत। कथनोपकथन। २-नित्य के व्यवहार की कथन प्रणाली जो मुहावरों के समान होने पर भी उससे कुछ भिन्न होती है। ३-छेड़छाड़।

बोलता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आत्मा। २-जीवन-तत्त्व। प्राण। ३-सार्थक शब्द बोलने वाला प्राणी। मनुष्य। ४-हुक्का (फकीर)। [वि.] खूब बोलने वाला। बाचाल। वाक्पटु।

बोलती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बोलने की शक्ति। वाणी।
बोलती बंद होना या बोलती मारी जाना–मुख से शब्द न निकलना।

बोलनहारा* [वि.] (हि.) बोलने वाला।
[संज्ञा पु.] देखो 'बोलता'।

बोलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मुख से शब्द निकालना। उच्चारण करना। २-किसी वस्तु का शब्द उत्पन्न करना या निकालना।
बोल जाना–१-मर जाना। २-चुक जाना। बाकी न रह जाना। ३-पुराना अथवा जीर्ण होना। ४-हार मान लेना। ५-सिटपिटा जाना ६-दीवाला निकालना। [क्रि. स.] (हिं.) १-१-कुछ कहना। शब्द या वचन उच्चारण करना। २-ठहराना। वदना। ३-उत्तर में कुछ कहना। उत्तर देना। ४-रोकटोक करना। *५-पुकारना। आवाज देना। बुलाना। ६-आने के लिए कहना या कहलाना। ७-छेड़छाड़ करना। सताना।
बोल उठना–एकाएक कुछ कह उठना। **बोलि पठाना*–बुला भेजना।

बोलवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बहुत ऊँचा सदा बहार वृक्ष।

बोलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-उच्चारण कराना। २-देखो 'बुलवाना'।

बोलसर* [संज्ञा पु.] (हिं.) मौलसिरी। [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का घोड़ा।

बोलांस [संज्ञा पु.] (हिं.) मुख से किसी के प्रति कहा हुआ अंश।

बोलाचाली [संज्ञा पु.] (हिं.) बात-चीत या आलाप का व्यवहार। बोलचाल।

बोलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बुलाना'।

बोलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) बुलावा। निमंत्रण।

बोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी प्राणी के मुख से निकला हुआ शब्द। वाणी। २-अर्थयुक्त शब्द। सार्थक बात। ३-नीलाम के समय करने वाले और लेने वाले का जोर-जोर से दाम का कहना। ४-वह वाक्य जो उपहास अथवा कूट व्यंग्य के लिए कहा जाय। ५-वह शब्द समूह जिसका व्यवहार किसी विशिष्ट स्थान के निवासी अपने भाव या विचार प्रकट करने के लिये संकेत रूप से करते हैं। भाषा।
मीठी बोली–१-कानों को भला लगने वाला सुर या शब्द। २-मधुर वचन। *बोली छोड़ना, मारना या बोलना*–किसी को लक्ष्य करके व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

बोलीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह आसामी जिसको जोतने-बोने के लिये खेत थोड़ी जबानी कहकर दिया जाय, कोई लिखा पढ़ी न हो।

बोल्लाह [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों की एक जा

बोल्शेविक [संज्ञा पु.] (रूसी) रूस के साम्यवादी दल का चरम पंथी सदस्य। [वि.] उस द सम्बन्धी।

बोल्शेविज्म [संज्ञा पु.] (अं.) रूस के साम्यवादी दल के चरम पंथ का सिद्धांत।

बोवना+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'बोना'।

बोवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बोआई'।

बोवाना [क्रि. स.] (हि.) बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) डुबकी। गोता। बो लेना–डुबकी लगाना। गोता लगाना।

बोहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी सौदे की पहली बिक्री। २-किसी दिन की पहली बिक्री।

बोहारना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बुहारना'।

बोहारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झाड़ू।

बोहित* [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी नाव। जहा

बोहिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चा जो चीन में उपजती है।

बौंड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दूर तक डोरे के रूप में गई हुई टहनी। २-लता। बेल।

बौंड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं) बेल की तरह बढ़ टेहनी फेंकना।

बौंडर [संज्ञा पु.] (हि.) बगूला। एक ही स्थान प चक्र काटने वाली आँधी या हवा।

बौंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पौधों या लताओं के कच्चे फल या कलियाँ। २-फली। ढ़ेंढ़ी। ३-दमड़ी। छदाम।

बौआना+ [क्रि. अ.] (हि.) १-स्वप्नावस्था में कुछ कहना। २-बर्राना।

बौखल [वि.] (हि.) सनकी। पागल।

बौखलाना [क्रि. अ] (?) क्रोध में आकर बा बातें बोलना।

बौखा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) तेज हवा का ऐसा झों जो वेग में आँधी से कम हो।

बौछाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हवा के झोंके से आने वाली वर्षा की झड़ी। २-किसी चीज का बहुत अधिक संख्या या मात्रा में कहीं गिरना या पड़ना। झड़ी। ३-लगातार कही जाने वाली व्यंग्यपूर्ण या कटु आलोचना की बातें।

बौछार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बौछाड़'।

बौड़हा [वि.] (हि.) बावला। पागल।

बौड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बौराना'।

बौता [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र में तैरता हु निशान। तिरौंदा। काती।

बौद्ध [वि.] (सं.) बुद्ध द्वारा प्रचारित। [संज्ञा पु.] गौतमबुद्ध के चलाये हुए धर्म का अनुया

बौद्धधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध का चला

हुआ धर्म।

बौधायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन लेखक का नाम।

बौना [संज्ञा पु.](हि.) [स्त्री. बौनी] बहुत ठिगना आदमी। नाटा मनुष्य।

बौर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आम की मंजरी। मौर।

बौरई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पागलपन। सनक।

बौरना [क्रि. अ.] (हि) आम के पेड़ में मंजरी निकलना। बौर आना।

बौरहा+ [वि.] (हिं.) पागल। विक्षिप्त। बावला

बौरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. बौरी] १-बावला। पागल। विक्षिप्त। २-भोला। नादान। + ३-गूंगा।

बौराई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पागलपन।

बौराना+ [क्रि. अ.] (हि.) १-विक्षिप्त या पागल हो जाना। सनक जाना। २-पागलों के समान काम या बातें करना। [क्रि. स.] किसी को बौरा या पागल करना। बेवकूफ बनाना।

बौराह* [वि] (हि.) बावला। पागल। सनकी।

बौरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बावली स्त्री।

बौलड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सिकड़ी के आकार का एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।

बौलसिरी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मौलसिरी'

बौहर* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वधू। दुलहिन।

ब्यंग [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'व्यंग्य'।

ब्यंजन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'व्यंजन'।

ब्यक्ति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'व्यक्ति'।

ब्यजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यजन'।

ब्यतीतना* [क्रि. स.] (हिं.) व्यतीत हो जाना। बीत जाना। गुजर जाना।

ब्यथा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'व्यथा'।

ब्यथित [वि.] (हि.) देखो 'व्यथित'।

ब्यलीक [वि.] (हि.) देखो 'व्यलीक'।

ब्यवसाय [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'व्यवसाय'।

ब्यवसायी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'व्यवसायी'।

ब्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'व्यवस्था'।

ब्यवहार+ [संज्ञा पु.] (हि.) उधार। कर्ज।

ब्यवहरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) लोगों को रुपया उधार देने वाला। महाजन।

ब्यवहार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यवहार'। २-रुपए का लेनदेन। ३-रुपए के लेनदेन का संबंध ४-जिसके साथ लेनदेन हो।

ब्यसन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यसन'।

ब्यसनी [वि.] (हि.) देखो 'व्यसनी'।

ब्याज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह धन जो किसी मूलधन पर मिलता है। सूद। २-देखो 'व्याज'

ब्याजू [वि.](हि.) ब्याज पर दिया अथवा लगाया हुआ (धन)।

ब्याध [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'व्याध'।

ब्याधा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'व्याधि'।

ब्याना [क्रि. स.] (हिं.) गर्भ से निकालना या उत्पन्न करना। जनना। (पशु)। [क्रि. अ.] (हिं.) बच्चा देना। जनना।

ब्यापना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-व्याप्त होना। २-चारों ओर छाना या फैलना। ३-प्रभाव दिखाना। ४-घेरना। ग्रसना।

ब्यापार [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'व्यापार'।

ब्यारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ब्यालू'।

ब्याल [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'व्याल'।

ब्याली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सांपिन। सर्पिणी। नागिन। [वि.] (हि.) सर्पों को धारण करने वाला।

ब्यालू [संज्ञा पु.] (हिं.) रात का भोजन। ब्यारी।

ब्याह [संज्ञा पु.] (हि.) धर्म और समाज के नियमानुसार वह रीति जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का सम्बन्ध स्थापित होता है। विवाह। पाणिग्रहण। शादी।

ब्याहता [वि.] (हिं.) जिसके साथ विवाह हुआ हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) पति।

ब्याहना [क्रि. स.] (हि.) १-विवाह करके पुरुष का स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का पुरुष को अपना पति बनाना। २-किसी का किसी के साथ विवाह कराना।

ब्याहुला* [वि.] (हिं.) विवाह-संबन्धी। विवाह का।

ब्यूँगा [संज्ञा पु.] (देश.) एक लकड़ी का औजार जिससे चमड़े को रगड़ा देकर सुलझाते हैं। इसका अगला भाग बहुत चौड़ा होता है।

ब्योंचना [क्रि. अ.] (हि.) १-सहसा मुड़जाने या टेढ़े हो जाने से नस का अपने स्थान से हट जाना। मुरकना। २-किसी अङ्ग का अचानक इधर-उधर मुड़जाना। [क्रि. स.] (हि.) मरोड़ना।

ब्योंची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उलटी। वमन। कै।

ब्योंड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) बन्द किवाड़ों के पीछे उन्हें खुलने से रोकने के लिए लगाई हुई लकड़ी। अरगल।

ब्योंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कार्य पूर्ण करने की युक्ति, उपाय या व्यवस्था। २-ढव। ढंग। तरीका। ३-युक्ति। उपाय। ४-आयोजन। उपक्रम। ५-अवसर। संयोग। ६-प्रबन्ध। व्यवस्था। ७-काम पूरा उतारने का हिसाब-किताब। ८-साधन या सामग्री आदि की सीमा। समाई। ९-पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े की काटछांट।

ब्योंत बाँधना-आयोजन करना। *ब्योंत खाना-या फैलाना*-१-ठीक इन्तजाम बैठना। २-पूरा हिसाब-किताब बैठना।

ब्योंतना [क्रि. स.] (हिं.) १-शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा काटना-छांटना। २-मारना। काटना। मार डालना।

ब्योंताना [क्रि. स] (हिं.) नाप के अनुसार दर्जी से कपड़ा कटवाना।

ब्योपार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यापार'।

ब्योपारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यापारी'।

ब्योरन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बालों को सुलझाने या सँवारने का ढंग।

ब्योरना [क्रि स.] (हिं.) १-गुथे या उलझे हुए बालों को सुलझाना। २-गुथे या उलझे हुए सत या तागों को सुलझाना।

ब्योरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-किसी घटना के अन्तर्गत एक-एक बात का उल्लेख। २-किसी एक विषय के भीतर की सारी बात। ३-वृत्त। वृत्तांत। समाचार।

ब्योरेवार [क्रि. वि.] (हिं.) ब्योरा बतलाते हुए। विस्तार के साथ।

ब्योसाय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यवसाय'।

ब्योहर [संज्ञा पु.] (हिं.) रुपये उधार देने का काम या व्यापार।

ब्योहरा [संज्ञा पु.](हिं.) सूद या ब्याज पर रुपये के लेने-देने का व्यापार।

ब्योहरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सूद या ब्याज पर रुपये उधार देने वाला। महाजनी करने वाला।

ब्योहार [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'व्यवहार'।

ब्रंद* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'वृंद'।

ब्रज [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'व्रज'।

ब्रजना* [क्रि. अ.] (हि.) चलना। गमन करना।

ब्रजबादनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का आम जिसका वृक्ष लता के रूप का होता है।

ब्रध्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-वृक्षमूल। पेड़ की जड़। ३-दिवस। ४-मदार का पौधा। ५-सीसा। जस्ता। ६-घोड़ा। ७-शिव। ८-एक रोग। ९-चौदहवें मनुभौत्य के पुत्र का नाम (मार्कण्डेय पुराण)।

ब्रह्मंड [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ब्रह्मांड'।

ब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह सब से बड़ी, परम तथा नित्य चेतनसत्ता जो जगत् का मूल कारण और सत, चित्, आनंदस्वरूप मानी गई है। २-ईश्वर। परमात्मा। ३-आत्मा। चैतन्य। ४-ब्राह्मण। (विशेषतः समास में) ५-ब्रह्मा (समास में)। ६-ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो। ब्रह्मराक्षस। ७-वेद। ८-एक की संख्या। ९-फलित ज्योतिष में २७ योगों में से पचीसवाँ। १०-ताल के चार भेदों में से एक (सङ्गीत)।

ब्रह्मकन्यका, ब्रह्मकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती। २-ब्राह्मीबूटी।

ब्रह्मकर [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ कराने वालों को दी जाने वाली दक्षिणा।

ब्रह्मकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदविहित कर्म। २-ब्राह्मण का कर्म।

ब्रह्मकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाक्षायनी का एक

नाम।

ब्रह्मकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-उतना समय जितने में एक ब्रह्मा रहता है। २-ब्रह्मा तुल्य।

ब्रह्मकांड, ब्रह्मकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वेद का वह भाग जिसमें ज्ञानकांड हैं।

ब्रह्मकाय [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का एक भेद।

ब्रह्मकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत का पेड़।

ब्रह्मकुशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा।

ब्रह्मकूर्च [संज्ञा पु.] (सं.) रजस्वला के स्पर्श या इसी प्रकार के अन्य अशुद्धि दूर करने के लिए एक व्रत विशेष। इसमें एक दिन निराहार रहकर दूसरे दिन पंचगव्य दिया जाता है।

ब्रह्मकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-इन्द्र।

ब्रह्मकोश [संज्ञा पु.] (सं.) समस्त वेद राशि।

ब्रह्मकोशी [संज्ञा पु.] (सं.) अजमोदा।

ब्रह्मक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति जो ब्राह्मण और क्षत्रिय से उत्पन्न हुई थी।

ब्रह्मगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुक्ति। नजात। निर्माण। मोक्ष।

ब्रह्मगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) अजमोदा।

ब्रह्मगांठ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जनेऊ की गांठ।

ब्रह्मगीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्म की स्तुति।

ब्रह्मगोल [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मांड।

ब्रह्मग्रंथि, ब्रह्मग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जनेऊ की मुख्य गांठ।

ब्रह्मग्रह [संज्ञा पु.] ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्मघातक [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण की हत्या करने वाला।

ब्रह्मघातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्राह्मण की हत्या करने वाली। २-रजस्वला होने के दूसरे दिन स्त्री की संज्ञा (छूत के विचार से)

ब्रह्मघाती [वि.] (सं.) [स्त्री. ब्रह्मघातिनी] ब्राह्मण का हत्यारा।

ब्रह्मघोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदध्वनि। २-वेदपाठ।

ब्रह्मघ्न [वि.] (सं.) ब्राह्मण को मारने वाला।

ब्रह्मचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) संसारचक्र।

ब्रह्मचर [संज्ञा पु.] (सं.) वह माफी की जमीन जो ब्राह्मण को पूजा आदि करने के बदले में दी जाय।

ब्रह्मचर्य [संज्ञा पु.] (सं.) चार आश्रमों में से प्रथम, जिसमें स्त्री-संभोग या मैथुन से बचकर केवल अध्ययन किया जाता है।

ब्रह्मचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाली स्त्री। २-दुर्गा। पार्वती। ३-सरस्वती। ४-भारंगी बूटी।

ब्रह्मचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. ब्रह्मचारिणी] १-वह जो ब्रह्मचर्य धारण करने का संकल्प किये हुए हो। २-स्त्री संसर्ग आदि व्यसनों से अलग रह कर विद्याध्ययन करने वाला पुरुष।

ब्रह्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्म से उत्पन्न जगत्। २-ब्रह्मा। ३-हिरण्यगर्भ।

ब्रह्मजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दौने का पौधा।

ब्रह्मजन्म [संज्ञा पु.] (सं.) उपनय संस्कार।

ब्रह्मजार [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण स्त्री का उपपति। २-इन्द्र।

ब्रह्मजीवी [वि.] (सं.) श्रौतस्मार्त कर्म कराकर जीविका चलाने वाला।

ब्रह्मज्ञ [वि.] (सं.) वेदांत का तत्व समझने वाला। ब्रह्म को जानने वाला। ज्ञानी।

ब्रह्मज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म या पारमार्थिक सत्ता का ज्ञान।

ब्रह्मज्ञानी [वि.] (सं.) परमार्थ तत्व का ज्ञान रखने वाला।

ब्रह्मण्य [वि.] (सं.) १-ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखने वाला। २-ब्रह्म या ब्रह्मा-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] शहतूत।

ब्रह्मण्यता [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण का धर्म या भाव।

ब्रह्मताल [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह मात्राओं का ताल जिसमें दस आघात और चार खाली रहते हैं

ब्रह्मतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ जो नर्मदा के तट पर था (महाभारत)।

ब्रह्मत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मणत्व। २-शुद्ध ब्रह्म का भाव। ३-ब्रह्मा होने का भाव या धर्म।

ब्रह्मदंड, ब्रह्मदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण का शाप। २-ब्राह्मण का डंडा। ३-तीन शिखा वाला केतु।

ब्रह्मदंडी, ब्रह्मदण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक जंगली जड़ी जो कफ और वातनाशक मानी जाती है। अजदंती। कटुपत्रफला।

ब्रह्मदर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवाइन।

ब्रह्मदाता [संज्ञा पु] (सं.) वेद पढ़ाने वाला आचार्य।

ब्रह्मदान [संज्ञा पु.] (सं.) वेद पढ़ाना।

ब्रह्मदाय [संज्ञा पु.] (सं.) वेद का वह भाग जिसमें ब्रह्म का निरूपण है।

ब्रह्मदारु [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत का पेड़।

ब्रह्मदिन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगियों का माना जाता है।

ब्रह्मदेय [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण को दान में दी हुई वस्तु।

ब्रह्मदेया [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] ब्रह्म विवाह में दी जाने वाली (कन्या)।

ब्रह्मदैत्य [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण जो दैत्य हो गया हो। ब्राह्मणप्रेत।

ब्रह्मदोष [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण की हत्या करने का पाप।

ब्रह्मदोषी [वि.] (सं.) जिसे ब्राह्मण की हत्या करने का पाप लगा हो।

ब्रह्मद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) गङ्गाजल।

ब्रह्मद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) पलास। टेसू।

ब्रह्मद्रोही [वि.] (सं.) ब्राह्मणों से वैर रखने वाला।

ब्रह्मद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) खोपड़ी के बीच माना हुआ वह छेद जिससे योगियों के प्राण निकलते हैं। ब्रह्मछिद्र।

ब्रह्मधातु [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मरूप धातु।

ब्रह्मनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

ब्रह्मनिष्ठ [वि.] (सं.) १-ब्रह्म के ध्यान में लगा रहने वाला। २-ब्राह्मणभक्त। [संज्ञा पु.] (सं.) पारिस पीपल।

ब्रह्मपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पलास का पत्ता।

ब्रह्मपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मत्व। २-ब्राह्मणत्व। ३-मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्मपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन नाम की लता।

ब्रह्मपवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) कुश।

ब्रह्मपादप [संज्ञा पु.] (सं.) पलाश का पेड़।

ब्रह्मपाश [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा का पाश नामक अस्त्र।

ब्रह्मपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण का बेटा। २-एक नदी का नाम जो मानसरोवर से निकल कर हिमालय के पूर्वी प्रांत आसाम में होकर भारत में प्रवेश करती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती है। ३-मनु। ४-नारद। ५-वशिष्ठ। ६-मरीचि। ७-एक प्रकार का विष। ८-सनकादिक।

ब्रह्मपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती। २-सरस्वती नदी। ३-वाराहीकंद।

ब्रह्मपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मलोक। २-ब्रह्म के अनुभव का स्थान हृदय। ३-बृहत्संहिता के अनुसार ईशानकोण में स्थित एक देश।

ब्रह्मपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम।

ब्रह्मपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्राह्मणों की बस्ती। २-उन बहुत से मकानों का समूह जो राजा महाराजा ब्राह्मणों को एक साथ दान करते हैं। ३-ब्रह्मलोक।

ब्रह्मपुरोहित [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के पुरोहित बृहस्पति।

ब्रह्मफांस [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ब्रह्मपाश'।

ब्रह्मबंधु, ब्रह्मबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से हीन हो। पतित ब्राह्मण।

ब्रह्मबल [संज्ञा पु.] (सं.) वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण को तप से प्राप्त हो। ब्राह्मण की शक्ति

ब्रह्मभट्ट [संज्ञा पु.] (सं) १-वेदों का ज्ञाता । २-ब्रह्मविद् । ३-एक प्रकार के ब्राह्मणों की उपाधि । ४-सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मयज्ञ से उत्पन्न कवि नामक ऋषि के उपाधि ।

ब्रह्मभूमिजा [संज्ञा पु.] (सं.) सिंहली ।

ब्रह्मभूय [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मत्व । २-मोक्ष ।

ब्रह्मभोज [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण को भोजन कराने का कर्म ।

ब्रह्ममंडूकी, ब्रह्ममण्डूकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ । २-भारङ्गी । ३-मंडूकपर्णी ।

ब्रह्ममति [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध उपदेवता । (ललितविस्तार) ।

ब्रह्ममय [वि.] (सं.) ब्रह्मस्वरूप ।

ब्रह्ममुहूर्त [संज्ञा पु.] सूर्योदय के तीन चार घड़ी पहले का समय । बड़े तड़के का समय ।

ब्रह्ममेखल [संज्ञा पु.] (सं) मूँजतृण । मूँज ।

ब्रह्ममेध्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम ।

ब्रह्मयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं) १-पंचमहायज्ञों में से एक । २-विधिपूर्वक वेदाभ्यास । ३-वेद पढ़ना ।

ब्रह्मयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारंगी । बम्हनेटी ।

ब्रह्मयामल [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र का एक ग्रन्थ ।

ब्रह्मयोग [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में अठारह मात्राओं का एक ताल जिसमें बारह आघात और छः खाली होते हैं ।

ब्रह्मयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक तीर्थस्थान जो गया में है । २-ब्रह्म की प्राप्ति के लिए उसका ध्यान ।

ब्रह्मरंध्र, ब्रह्मरन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मांड द्वार । मूर्द्धा का छेद । मस्तक के मध्य का वह गुप्त छिद्र जिसमें से होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है ।

ब्रह्मराक्षस [संज्ञा पु.] (सं.) वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु से मरकर राक्षस या प्रेत हो गया हो ।

ब्रह्मरात [संज्ञा पु.] (सं) १-शुकदेव । २-याज्ञवल्क्य मुनि का एक नाम ।

ब्रह्मरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ब्रह्ममुहूर्त' ।

ब्रह्मरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है ।

ब्रह्मराशि [संज्ञा पु.] (सं.) १-परशुराम । २-बृहस्पति से आक्रांत श्रवणनक्षत्र ।

ब्रह्मरीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पीतल ।

ब्रह्मरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में गुरु लघु के क्रम से सोलह अक्षर होते हैं । इसे चंचला और चित्रा भी कहते हैं

ब्रह्मरूपिणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) बंदा । बाँदा ।

ब्रह्मरेख, ब्रह्मरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'ब्रह्मलेख' ।

ब्रह्मर्षि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण ऋषि ।

ब्रह्मर्षिप्रदेश [संज्ञा पु.] (सं) वह प्रदेश जिसके अंतर्गत कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल और सूरसेनक देश थे ।

ब्रह्मलेख [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा का लिखा हुआ भाग्य का लेख जो ध्रुव माना जाता है ।

ब्रह्मलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लोक जहां ब्रह्मा रहता है । २-मोक्ष का एक भेद ।

ब्रह्मवक्ता [संज्ञा पु.] परब्रह्मरूप । सत्य का प्रचारक ।

ब्रह्मवध [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण की हत्या ।

ब्रह्मवध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्महत्या ।

ब्रह्मवर्चस [संज्ञा पु.](सं.) वह शक्ति जो ब्राह्मण तप और स्वाध्याय द्वारा प्राप्त करे ।

ब्रह्मवर्चस्वी [वि.] (सं.) ब्रह्मतेज वाला ।

ब्रह्मवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा ।

ब्रह्मवाणी [संज्ञा स्त्री.] वेद ।

ब्रह्मवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वाद या सिद्धांत जिसमें शुरू चैतन्य मात्र की सत्ता स्वीकार की जाय, अनात्मा की सत्ता स्वीकार न की जाय । अद्वैतवाद । २-वेद का पढ़ना-पढ़ाना । वेदपाठ ।

ब्रह्मवादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री ।

ब्रह्मवादी [वि.] (सं.) [स्त्री. ब्रह्मवादिनी] १-वेदों को पढ़ाने या सिखाने वाला । २-वेदान्ती ।

ब्रह्मविंदु, ब्रह्मविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) वेदपाठ करते समय निकला हुआ थूक का छींटा ।

ब्रह्मविद् [वि.] (सं.) १-ब्रह्म को जानने या समझने वाला । २-वेदार्थज्ञाता ।

ब्रह्मविद्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म को जान सकें । २-दुर्गा ।

ब्रह्मवृक्ष [संज्ञा पु.] १-पलाशवृक्ष । २-गूलर का पेड़ ।

ब्रह्मवेत्ता [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्म को समझने वाला ब्रह्मज्ञानी ।

ब्रह्मवैवर्त्त [संज्ञा पु.] १-वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्मा के कारण हो । २-ब्रह्मा के कारण प्रतीत होने वाला जगत । ३- अठारह पुराणों में से एक का नाम । ४-श्रीकृष्ण ।

ब्रह्मशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) बबूल का पेड़ ।

ब्रह्मशाला [संज्ञा पु.] वेदाध्ययन का स्थान ।

ब्रह्मशासन [संज्ञा पु.](सं.) १-वेद या स्मृति की आज्ञा । २-वह गांव या भूमि जो राजा की ओर से ब्राह्मण को दी गई हो ।

ब्रह्मशिर [संज्ञा पु.](सं.) रामायण और महाभारत के अनुसार एक अस्त्र ।

ब्रह्मसती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वतीनदी ।

ब्रह्मसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मयज्ञ ।

ब्रह्मसदन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में ब्रह्मा नामक ऋत्विक का आसन । यह आसन वारुणी काष्ठ का और कुश से ढका होता था ।

ब्रह्मसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्राह्मणों की सभा २-ब्रह्माजी की सभा ।

ब्रह्मसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) एकमात्र ब्रह्म की उपासना करने वाला एक सम्प्रदाय ।

ब्रह्मसर [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ ।

ब्रह्मसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) हलाहल विष ।

ब्रह्मसावर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) दसवें मनु का नाम ।

ब्रह्मसिद्धांत, ब्रह्मसिद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष की एक सिद्धांत प्रणाली ।

ब्रह्मसुत [संज्ञा पु.] (सं.) मरीचि आदि ब्रह्मा के पुत्र ।

ब्रह्मसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती ।

ब्रह्मसुवर्चला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुरहुर नामक पौधा ।

ब्रह्मसू [संज्ञा पु.](सं.) १-अनिरुद्ध । २-कामदेव ।

ब्रह्मसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञोपवीत । जनेऊ २-बादरायणरचित ब्रह्मसूत्र । इसमें ब्रह्म का प्रतिपादन है और ये वेदांतदर्शन के आधार हैं ।

ब्रह्मसृज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-ब्रह्मा को उत्पन्न करने वाला ।

ब्रह्मस्तंब, ब्रह्मस्तम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) संसार । दुनिया ।

ब्रह्मस्तेय [संज्ञा पु.] (सं.) गुरु की बिना अनुमति के दूसरे को पढ़ाया हुआ पाठ सुनकर अध्ययन करना ।

ब्रह्मस्व [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण का भाग ।

ब्रह्महत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मण को मार डालना ।

ब्रह्महृदय [संज्ञा पु.](सं.) प्रथम वर्ग उन्नीस नक्षत्रों में एक ।

ब्रह्महन् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्महत्या करने वाला ।

ब्रह्महुत [संज्ञा पु.] (सं.) अतिथिपूजन रूपी यज्ञ ।

ब्रह्मांड, ब्रह्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्पूर्ण विश्व, जिसके भीतर अनंत लोक हैं । २-विश्वगोलक । ३-खोपड़ी । कपाल ।

ब्रह्मांड चटकना-१-खोपड़ी फटना । २-अधिक ताप या गरमी से सिर में भारी पीड़ा होना ।

ब्रह्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से वह जो सृष्टि की रचना करने वाला है । विधाता । सृष्टिकर्ता । २-एक प्रकार का धान । ३-यज्ञ का एक ऋत्विक ।

ब्रह्माक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रणव । ओंकार ।

ब्रह्माणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्रह्मा की स्त्री । २-सरस्वती । ३-रेणुका नामक गंधद्रव्य । ४-कटक जिले में वैतरणी नदी में मिलने

वाली एक छोटी नदी।

ब्रह्मादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंसपदी।

ब्रह्मादिजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोदावरी।

ब्रह्मानंद, ब्रह्मानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म के ज्ञान से मिलने वाला आनन्द।

ब्रह्माभ्यास [संज्ञा पु.](सं.) वेदाभ्यास।

ब्रह्मायतन [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्ममन्दिर।

ब्रह्मावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह आसन जिसमें बैठकर ब्रह्म का ध्यान किया जाता है। २-तंत्रोक्त देवपूजा में एक आसन।

ब्रह्मास्त्र [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का प्राचीन कल्पित अस्त्र जो मन्त्र द्वारा चलता था। २-कभी विफल न होने वाली युक्ति।

ब्रह्मास्य [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण का मुख।

ब्रह्मिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

ब्रह्मीभूत [वि.] (सं.) १-जो ब्रह्म में मिलकर उसमें एकाकार हो गया हो। २-मृत। स्वर्गीय (साधु महात्माओं के लिए)।

ब्राँडी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की विदेशी शराब।

ब्रात* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'व्रात्य'।

ब्राह्म [वि.] (सं.) ब्रह्म-संबन्धी। [संज्ञा पु.](सं.) १-विवाह का एक भेद। २-एक पुराण। ३-नारद। ४-नक्षत्र। ५-राजाओं का वह धर्म जिसके अनुसार उन्हें गुरुकुल से लौटे हुये ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए।

ब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. ब्राह्मणी] हिन्दुओं के चार वर्णों में से प्रथम, जो सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। जिसके मुख्य कार्य पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २-इस जाति या वर्ण का मनुष्य। द्विज। विप्र। ३-वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता। ४-शिव। ५-विष्णु। अग्नि।

ब्राह्मणक [संज्ञा पु.] (सं.) नाम मात्र का ब्राह्मण। निकृष्ट अथवा अयोग्य ब्राह्मण।

ब्राह्मणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मणत्व।

ब्राह्मणत्व [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण का भाव, धर्म या अधिकार। ब्राह्मणपन।

ब्राह्मणप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

ब्राह्मणब्रुव [संज्ञा पु.] (सं.) नाम मात्र का ब्राह्मण। कर्म और संस्कार से हीन ब्राह्मण।

ब्राह्मणभोजन [संज्ञा पु.] (सं) धार्मिक विचार से कराया हुआ ब्राह्मणों को भोजन।

ब्राह्मणयष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारंगी।

ब्राह्मणवध [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण की हत्या।

ब्राह्मणाच्छंसी [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयाग में ब्रह्मा का सहायक एक ऋत्विक।

ब्राह्मणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्राह्मण जाति की स्त्री। २-बुद्धि। ३-महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम।

ब्राह्मण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मणत्व। २-ब्राह्मणों का समुदाय। ३-शनिग्रह का एक नाम।

ब्राह्ममुहूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्योदय से पूर्व दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) एक आधुनिक संप्रदाय जिसमें एक मात्र ब्रह्म की उपासना की जाती है।

ब्राह्मसमाजी [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्मसमाज संप्रदाय का अनुयायी।

ब्राह्मिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) ब्रह्मयष्टिका। भारंगी।

ब्राह्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति। २-सरस्वती। ३-वाणी। ४-रोहिणी-नक्षत्र। ५-शिव की अष्ट मातृकाओं में एक। ६-भारत की एक प्राचीन लिपि जिससे ही देवनागरी, बङ्गला आदि लिपियाँ निकली हैं। ७-एक बूटी जो औषध के काम आती है।

ब्राह्मीअनुष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छंद।

ब्राह्मीउष्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छन्द जिसमें सब मिलाकर ४२ वर्ण होते हैं।

ब्राह्मीकंद, ब्राह्मीकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) बाराही-कंद।

ब्राह्मीगायत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद जिसमें सब मिलाकर ३६ वर्ण होते हैं।

ब्राह्मीजगती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब मिलाकर ७२ वर्ण वाला एक वैदिक छंद।

ब्राह्मीत्रिष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) सब मिलाकर ६६ वर्ण वाला एक वैदिक छन्द।

ब्राह्मीपंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब मिलाकर ६० वर्ण वाला एक वैदिक छन्द।

ब्राह्मीबृहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब मिलाकर ५४ वर्ण वाला एक वैदिक छन्द।

ब्रीगेड [संज्ञा पु.] (अं.) सेना का एक समूह।

ब्रीगेडियर [संज्ञा पु.](अं.) वह सैनिक अधिकारी जो ब्रिगेड का संचालन करता है।

ब्रीड़ना* [क्रि. अ.] (हि.) लजाना। लज्जित होना।

ब्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'व्रीड़ा'।

ब्रीवियर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का छोटा टाइप।

ब्रीहि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्रीहि'।

ब्रुश [संज्ञा पु.](अं.) बालों का बना कूँचा जिससे जूते आदि साफ किये जाते हैं।

ब्रेवरी [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार का कश्मीरी तंबाकू।

ब्लॉक [संज्ञा पु.] (अं.) १-ताँबे, जस्ते, काठ आदि का वह ठप्पा जिससे चित्र आदि छापे जाते हैं। २-भूमि का कोई चौकोर टुकड़ा या वर्ग।

भ

भ हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का चौथा वर्ण इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

भँइस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भैंस'।

भंकार* [संज्ञा पु.] (सं.) भयंकर ध्वनि या शब्द।

भंकारी, भङ्कारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-[illegible]। २-एक प्रकार का छोटा मच्छर।

भंग, भङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-तरंग। लहर। २-पराजय। हार। ३-खंड। टुकड़ा। ४-कुटिलता। टेढ़ापन। ५-भेद। ६-रोग। ७-गमन। ८-स्रोत। ९-एक नाग का नाम। १०-टूटने का भाव। विध्वंस। विनाश। ११-बाधा। अड़चन। १२-टेढ़े होने या झुकने का भाव। १३-भय। १४-लकवा नामक रोग। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भाँग'।

भंगकार, भङ्गकार [संज्ञा पु.] १-सत्राजित के पुत्र का नाम जिसका उल्लेख हरिवंश में मिलता है। २-महाभारत में वर्णित राजा अभिक्षत् के पुत्र का नाम।

भंगड़ [वि.] (हिं.) बहुत भाँग पीने वाला। भँगेड़ी।

भंगना+ [क्रि. अ](हिं.) १-टूटना। २-दबना। ३-हार मानना। [क्रि. स.] १-तोड़ना। २-दबाना।

भँगरा+ [संज्ञा पु.](हि.) १-एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो भाँग के रेशे से बनता है। २-एक प्रकार की वनस्पति जो बरसात में उगती है। यह तीन प्रकार का होता है। इनमें काले फूल का भंगरा कठिनता से मिलता है। कहते हैं कि काले फूल के भंगरे के प्रयोग से बुड्ढे के बाल भी काले हो जाते हैं।

भंगराज [संज्ञा पु.] (हि.) १-कोयल के आकार की काले रंग की एक चिड़िया। २-देखो 'भँगरा'।

भँगरैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भँगरा'।

भंगवासा, भङ्गवासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

भंगसार्थ, भङ्गसार्थ [वि.] (सं.) कुटिल।

भंगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाँग।

भंगान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

भँगार [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह गड्ढा जो बरसात के दिनों में जमीन के दब जाने से बन जाता है। २-वह गड्ढा जो कुआँ बनाने के समय पहले खोदा जाता है। ३-घास-फूस। कूड़ा-करकट।

भंगारी, भङ्गारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मच्छर।

भंगास्थन, भङ्गास्थन [संज्ञा पु.] (सं.)

भारत में वर्णित एक राजा का नाम।

भंगि, भङ्गि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विच्छेद । २-कुटिलता । टेढ़ाई । ३-विन्यास । अङ्गनिवेश । अंदाज । ४-लहर । कल्लोल । ५-भंग । ६-ब्याज । ७-प्रतिकृति ।

भंगिमा, भङ्गिमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कुटिलता । टेढ़ापन । २-स्त्रियों के हावभाव या कोमल चेष्टाएँ । अंगनिवेश । अंदाज । ३-लहर । ४-प्रतिकृति ।

भंगिरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भँगरा'।

भंगी [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. भंगिन] १-एक जाति जिसके अधिकांश लोग मैला या विष्ठा उठाते हैं । २-भांग पीने वाला । भंगेड़ी । [वि.](सं.) [स्त्री. भंगिनी] भंग या नाश होने वाला । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'भंगिमा'।

भंगील, भङ्गील [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञानेंद्रिय की विकलता ।

भंगुर, भङ्गुर [वि.] (सं.) १-जल्दी भंग या नष्ट होने वाला । नाशवान् । २-टेढ़ा । कुटिल ।

भंगुरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-अतीस । २-प्रियंगु ।

भंगेड़ी [वि.] (हिं.) जिसे भांग पीने की टेव या लत हो । अत्यधिक भाग पीने वाला । भंगड़ ।

भंगेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भांग की छाल का बना कपड़ा । भंगरा । २-भंगरा वनस्पति । भंगरैया ।

भंगेला [संज्ञा पु.] (हिं.) भांग की छाल का बना कपड़ा ।

भंजक, भञ्जक [वि.](सं.) [स्त्री. भंजिका] तोड़ने या भंग करने वाला ।

भंजन, भञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोड़ना । भंग करना । २-भंग । ध्वंस । ३-नाश । ४-मदार । आक । ५-भांग । ६-वायु के कारण होने वाली व्रण की पीड़ा । [वि.] (सं.) भंग करने या तोड़ने वाला ।

भंजनक, भञ्जनक [संज्ञा पु.] (सं.) लकवा नामक रोग ।

भंजना [क्रि. अ.] (हिं) १-टुकड़े होना । टूटना । २-किसी बड़े सिक्के का छोटे-छोटे सिक्कों के रूप में बदला जाना । भुनना । ३-(तागे आदि का) बटा जाना । ४-कागज के तावों को कई परतों में मोड़ा जाना । भाँजा जाना ।

भंजना* [क्रि. स.] (हिं.) तोड़ना । टुकड़े करना ।

भंजनागिरि, भञ्जनागिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम ।

भंजनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) करघे का एक अङ्ग जो ताने के फैलाने के लिए उसके किनारे पर लगा रहता है ।

भंजा, भञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्नपूर्णा का एक नाम ।

भंजाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भँजाने की क्रिया या भाव । २-भँजाने की मजदूरी । ३-देखो 'भुनाई'।

भँजाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-भँजाने तोड़ने आदि का काम दूसरे से कराना । तुड़वाना । २-देखो 'भुनाना' (सिक्का)।

भंझा [संज्ञा पु.] (देश.) कुएँ के किनारे के खंभे या ओट के ऊपर आड़ी रखी जाने वाली लकड़ी जिस पर गड़ारी लगाकर धुरे टिकाए जाते हैं ।

भंटक, भण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) मरसा नामक साग ।

भँटकटैया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भटकटैया'

भंटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बैंगन ।

भंटूक, भण्टूक [संज्ञा पु.] (सं.) श्योनाक ।

भंड ,भण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भाँड़'।
[वि.] (सं.) १-अश्लील या गन्दी बातें बकने वाला । २-धूर्त । पाखंडी ।

भँड़ताल, भँड़तिल्ला [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का निम्न कोटि का गाना और नाच जिसमें गाने वाला गाता है और बाकी लोग उसके पीछे तालियाँ पीटते हैं ।

भंडन, भण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हानि । क्षति २-युद्ध । ३-कवच ।

भंडना [क्रि. स.] (हिं.) १-बिगाड़ना । हानि पहुँचाना । २-तोड़ना । भंग करना । ३-नष्ट-भ्रष्ट करना । ४-बदनाम करना ।

भँडफोड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी आदि के बरतनों को तोड़ना-फोड़ना । २-मिट्टी आदि के बरतनों का टूटना-फूटना । ३-रहस्य या भेद खोलने का भाव । रहस्योद्घाटन ।

भंडर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भड्डर'। [वि.] १-पाखंडी । २-धूर्त्त ।

भँडभाँड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक कँटीला पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषध रूप में प्रयुक्त होती हैं ।

भँडरिया [संज्ञा पु.] (हि.) एक जाति विशेष जिसके लोग फलित ज्योतिष या सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बताकर अपनी रोजी चलाते हैं और शनैश्चरादि ग्रहों का दान भी लेते हैं । [वि.] १-पाखंडी । ढोंगी । २-धूर्त । मक्कार ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दीवार का ताख जिसमें पल्ले लगे हों ।

भँडसार, भँडसाल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गोदाम जहाँ सस्ता अन्न खरीद कर इस आशा में भरा जाता है कि मंहगा होने पर बेचेंगे । खत्ती । खत्ता ।

भंडा [संज्ञा पु] (हिं.) १-बर्तन । पात्र । भाँडा । २-भंडारा । ३-भेद । रहस्य । मोटे और भारी बल्लों को सहारा देकर उठाने या खसकाने की लकड़ी या बल्ला ।
भंडा फूटना-गुप्त रहस्य या भेद खुलना । *भंडा फोड़ना*-गुप्त रहस्य का भेद खोलना ।

भंडाना [क्रि. स.] (हि.) १-उछलकूद मचाना । उपद्रव करना । २-वस्तुओं को तोड़ना-फोड़ना । नष्ट करना ।

भंडाफोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) रहस्य का भेद प्रकट होना ।

भंडार [संज्ञा पु.] (हि.) १-कोष । खजाना । २-खाने-पीने की वस्तुएँ रखने का स्थान । कोठार । ३-उदर । पेट । ४-वह स्थान जहां व्यंजन पकाकर रखे जाते हैं । ५-पाकशाला । अग्निकोण । ६-देखो 'भंडारा'।

भंडारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'भंडार'। २-समूह । झुण्ड । ३-वह भोज जिसमें साधु-सन्तों को खिलाया जाता है । ४-पेट ।

भंडारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोषाध्यक्ष । खजांची २-भंडार का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी । ३-रसोइया । [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटी कोठरी । २-कोश । खजाना ।

भंडि, भण्डि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लहर । वीचि ।

भंडित, भण्डित [संज्ञा पु.](सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

भंडिर, भण्डिर [संज्ञा पु.] (सं.) सिरस । शिरीष ।

भंडिल, भण्डिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरस का पेड़ । २-दूत । शिल्पी । [वि.] (सं.) शुभ । अच्छा ।

भंडीतकी, भण्डीतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ

भंडीर, भण्डीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौलाई । २-सिरसा । ३-वट । ४-भंडभाड़ ।

भंडीरलतिका, भण्डीरलतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ ।

भंडीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ ।

भंडूक, भण्डूक [संज्ञा पु.](सं) १-भाकुर नामक मछली । २-श्योनाक ।

भँडेर [संज्ञा पु.] (देश.) घूंट नामक झाड़ या वृक्ष जिसकी छाल से चमड़ा रंगा जाता है ।

भँडेरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भड्डर'।

भँडेरियापन [संज्ञा पु.] (हि.) १-ढोंग । मक्कारी २-चालाकी ।

भँड़ौआ [संज्ञा पु.](हिं.) १-भांड़ों के गाने का गीत । (यह गीत शिष्टसमाज में बुरा समझा जाता है । २-साधारण या निम्नकोटि की हास्यपूर्ण कविता ।

भँबूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बबूल की जाति का एक पेड़ ।

भँभरना [क्रि. अ.] (हिं.) भयभीत होना ।

भँभा [संज्ञा पु.] (हि.) बिल । छेद ।

भंभाका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अधिक उमर वाली स्त्री की भग । बड़ा छेद ।

भंभाना [क्रि. अ.] (हिं.) गौ आदि पशुओं का चिल्लाना । रँभाना ।

भँभीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बरसाती फतिंगा

जिसकी पूंछ लम्बी और पतली, रंग लाल तथा चार पारदर्शक पर होते हैं।

भँभेरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भय। डर।

भँमर, भँमरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी मधुमक्खी। २-बर्रें। भिड़।

भँवन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भ्रमण। घूमना।

भँवना [क्रि. अ] (हि.) १-घूमना। फिरना। २-चक्कर लगाना।

भँवर [संज्ञा पु.] (हि.) १-भौंरा। २-जल के बहाव में वह स्थान जहां पानी की लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है। आवर्त। यमकातर। ३-गर्त। गड्ढा। + ४-प्रेमी। ५-पति। *भँवर में पड़ना*-चक्कर में पड़ना।

भँवरकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारों ओर घूम सके।

भँवरगीत [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'भ्रमरगीत'।

भँवरजाल [संज्ञा पु.] (हि.) सांसारिक झगड़े। भ्रमजाल।

भँवरभीख [संज्ञा स्त्री.] (हि.) तीन प्रकार की भीख में से दूसरी। वह भीख जो भौंरे के समान घूम-घूमकर मांगी जाय।

भँवरा [संज्ञा पु.] (हि.) भौंरा। भ्रमर।

भँवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भंवर। पानी का चक्कर। २-जंतुओं के शरीर के ऊपर का वह स्थान जहां के रोएं तथा बाल एक केन्द्र पर घूमे हुए हों। ३-देखो 'भाँवर'। ४-रक्षक कोतवाल या अन्य कर्मचारियों का नागरिकों की रक्षा के लिए चक्कर लगाना। फेरा। गश्त। ५-बनियों का घूम-फिरकर सौदा बेचना। फेरी। ६-परिक्रमा।

भँवाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-घुमाना। चक्कर देना। २-भ्रम या उलझन में डालना।

भँवारा* [वि.] (हिं.) घूमने वाला। भ्रमणशील।

सना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पानी पर तैरना। २-पानी में डाला या फेंका जाना।

भँसरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भँजनी'।

भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-नक्षत्र। २-ग्रह। ३-राशि। ४-शुक्राचार्य। ५-भौंरा। भ्रमर। ६-पहाड़। ७-भ्रांति। ८-छंद-शास्त्र में 'भगण' का सूचक या संक्षिप्त रूप।

इया [संज्ञा पु.] (हि.) १-भाई। भ्राता। २-एक आदरसूचक शब्द जो बराबर वालों के लिए व्यवहार में लाया जाता है।

भउजाई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भौजाई'।

भक [वि.] (हि.) यकायक या रह-रहकर आग के जल उठने अथवा वेगसहित धूएं के निकलने के कारण उत्पन्न होने वाला शब्द। (इसका प्रयोग प्रायः 'से' विभक्ति के साथ होता है)।

भकक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नक्षत्र की कक्षा।

भकटाना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'भकसाना'।

भकड़ना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'भभरना'।

भकभकाना [क्रि. अ] (हि.) १-भकभक-शब्द कर के जलना। २-चमकना।

भकराँध+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सड़े हुए अनाज की गंध। वह गंध जो सड़े अनाज में से आती है।

भकराँधा+ [वि.] (हि.) सड़ा हुआ (अन्न)।

भकसा [वि.] (हिं.) बुसा हुआ (खाद्य पदार्थ)। जो अधिक समय तक पड़ा रहने के कारण दुर्गंधयुक्त और कसैला हो गया हो।

भकसाना+ [क्रि. अ.] (हि.) अधिक समय तक पड़े रहने के कारण किसी खाद्य-पदार्थ का कसैला और बदबूदार होना।

भकाऊँ [संज्ञा पु.] (हि.) वह कल्पित व्यक्ति जिससे बच्चे डराये जाते हैं। हौवा।

भकुआ+ [वि.] (हि.) मूर्ख। मूढ़।

भकुआना [क्रि. अ.] (हिं.) भौंचक्का होना। चकपकाना। [क्रि. स.] १-चकपका देना। २-भूख बनाना।

भकुड़ा+ [संज्ञा पु.] (हि.) तोप में बत्ती आदि ठूंसने का मोटा गज।

भकुड़ाना+ [क्रि. स.](हि.) १-तोप के मुंह में लोहे के गज से बत्ती भरना। २-तोप के मुंह के अन्दर के भाग को लोहे की गज से साफ करना।

भकुवा [वि.] (हि.) मूर्ख। भकुआ।

भकुवाना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'भकुआना'। [क्रि. स.] देखो 'भकुआना'।

भकूट [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार की राशियों का समूह जो विवाह की गणना में शुभ मानी जाती हैं।

भकोसना [क्रि. स.] (हि.) १-बिना चबाये ही किसी वस्तु को जल्दी-जल्दी खाना। निगलना। २-भद्देपन से खाना।

भक्किका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिल्ली। झींगुर।

भक्त [वि] (सं.) १-बांटा हुआ। २-बाँटकर दिया हुआ। ३-अलग किया हुआ। ४-सेवा या भक्ति करने वाला। ५-अनुयायी। ६-पक्षपाती। [संज्ञा पु.] १-उबला हुआ चावल। भात। २-धन। ३-[स्त्री. भक्तिन] वह व्यक्ति जो सेवा पूजा करता हो। उपासक।

भक्तकंस [संज्ञा पु.] (सं.) भात (पके हुए चावलों) से भरी कांसे की थाली।

भक्तकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार सुगंधित द्रव्य जो अनेक अन्य द्रव्यों को मिलाकर बनाया जाता है।

भक्तकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसोइया। पाचक। २-'भक्तकर' नामक सुगंधित द्रव्य।

भक्तजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमृत।

भक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भक्ति'।

भक्ततूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा

जो भोजन करते समय प्राचीनकाल में जाता था।

भक्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के होने का भाव। अंगत्व।

भक्तदास [संज्ञा पु.] (सं.) भोजनमात्र पर मत या काम करने वाला दास

भक्तपन [संज्ञा पु.] (हिं.) भक्ति।

भक्तपुलाक [संज्ञा पु.] (सं.) चावल पीच।

भक्तवच्छल* [वि.] (हि.) देखो

भक्तरुचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन प्रबल इच्छा।

भक्तवत्सल [वि.] (सं.) १-भक्तों पर स्नेह रखने वाला। २-विष्णु।

भक्तवत्सलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भक्तों पर या स्नेह रखने का भाव।

भक्तशरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान भात पकाकर रखा जाता है। रसोईघर।

भक्तशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १- रसोईघर। २-वह स्थान जहाँ भक्त कर धर्मोपदेश सुनते हों।

भक्ताई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भक्ति।

भक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाँटना। भागों में विभक्त करना। २-भाग। ३-वह विभाग जो रेखा द्वारा किया ४-बाँटने या विभाग करने वाली रेखा। अंग। अवयव। ६-खंड। ७-पूजा। ८-सेवा-शुश्रूषा। ९-विश्वास। ११-रचना। १२-स्नेह। अनुराग। देवता या ईश्वर के प्रति होने वाली श्रद्धा और प्रेम जो नौ प्रकार का है। यथा-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और दन। १४-किसी बड़े के प्रति होने वाली या आदर भाव। १५-जैनमतानुसार ज्ञान जिसमें निरतिशय आनन्द हो सर्वप्रिय, अनन्य, प्रयोजन विशिष्ट वितृष्णा का उदयकारक हो। वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में और अन्त में दो गुरु होते हैं। १८-भंगी। १९-गौणवृत्ति।

भक्तिकर [वि.] (सं.) १-भक्ति के योग्य। देखकर भक्ति उत्पन्न हो।

भक्तिच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो रेखाओं द्वारा की जाय। २-भक्तों विशेष। यथा-तिलक, मुद्रा आदि।

भक्तियोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्वदा कर श्रद्धासहित भगवान की उपासना २-भक्ति का साधन।

भक्तिराग [संज्ञा पु.] (सं.) भक्ति का

भक्तिल [वि.] (सं.) भक्तिदायक।

भक्तिवाद
[संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम घोड़ा।

भक्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) भक्ति विषयक कथा

भक्तिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णव सम्प्रदाय का एक सूत्र ग्रंथ जिसमें भक्ति का वर्णन है।

भक्तोद्देशक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के प्राचीन संघाराम का वह कर्मचारी जो इस बात की जांच करता था कि कौन क्या भोजन करेगा।

भक्तोपसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसोइया। पाचक। २-परिवेशक।

भक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाने का पदार्थ। भोजन खाना। २-खाने का काम। भक्षण।

भक्षक [वि.] (सं.) [स्त्री. भक्षिका] १-भोजन करने वाला। खाने वाला। २-अपने स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करने वाला।

भक्षकार [संज्ञा पु.] (सं.) हलवाई।

भक्षटक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा गोखरू।

भक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन करना। खाना २-आहार। भोजन।

भक्षना* [क्रि. स.] (हिं.) भोजन करना। खाना

भक्षणीय [वि.] (सं.) खाने योग्य।

भक्षयिता [वि.] (सं.) खाने वाला।

भक्षित [वि.] (सं.) खाया हुआ।

भक्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. भक्षिणी] १-खाने वाला खादक। २-अपने स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करने वाला।

भक्ष्य [वि.] (सं.) जो खाया जा सके।
[संज्ञा पु.] (सं.) आहार। भोजन।

भक्ष्यकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हलवाई। २-रसोइया। पाचक।

भक्ष्याभक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) खाने और न खाने योग्य पदार्थ।

भख* [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन। आहार। भख करना-खाना। भोजन करना।

भखना* [क्रि. स.] (हिं.) १-खाना। भोजन करना। २-निगलना।

भखी [संज्ञा स्त्री](देश.) दलदली भूमि में उत्पन्न होने वाली एक घास जो छप्पर छाने के काम आती है।

भगंदर, भगन्दर [संज्ञा पु.](सं.) एक रोग, जिसमें गुदा के भीतरी भाग में फोड़ा होता है।

भग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-बारह प्रकार के आदित्यों में से एक। ३-ऐश्वर्य। ४-छः प्रकार की विभूतियां। ५-इच्छा। ६-माहात्म्य। ७-यत्न। ८-धर्म। ९-मोक्ष। १०-सौभाग्य। ११-कांति। १२-धन। १३-चन्द्रमा। १४-एक देवता का नाम। १५-पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र। १६-गुदा। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री की योनि या जननेन्द्रिय।

भगई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लंगोटी।

भगण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर। २-छन्द शास्त्रानुसार एक गण जिसमें पहले एक वर्ण गुरु और तब लघु वर्ण होते हैं। इसका रूप यह है—ऽ।।

भगत [वि.](हि.) [स्त्री. भगतिन] १-भक्त। सेवक २-साधु। ३-वह जो मांस आदि न खाता हो ४-विचारवान्। [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह साधु जो तिलक लगाता हो और मांस आदि न खाता हो। २-राजस्थान की एक जाति। इस जाति की कन्याएं नाचने गाने का कार्य करती हैं। ३-होली में भगत का सा स्वांग भरने वाला मसखरा। ४-भूत-प्रेत का प्रभाव दूर करने वाला व्यक्ति। ओझा। ५-वह व्यक्ति जो वेश्या के साथ तबला बजाता हो।
भगतबाज-लौंडों का नचाने वाला।

भगतबछल* [वि.] (हि.) देखो 'भक्तवत्सल'।

भगति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भक्ति'।

भगतिया [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. भगतिन] राजस्थान की एक जाति। इस जाति के लोग वैष्णव साधुओं की संतान जो अब गाने-बजाने का कार्य करते हैं।

भगती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भक्ति'।

भगदड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बहुत से लोगों का सहसा एक साथ इधर-उधर या किसी ओर को भागना।

भगदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्राग्ज्योतिषपुर के राजा का नाम।

भगदर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भगदड़'।

भगन* [वि.] (हि.) देखो 'भग्न'।

भगनहा [संज्ञा पु.] (हि.) करेरुआ नामक कंटीली बेल।

भगना+ [क्रि. अ.](हि.) देखो 'भागना'। [संज्ञा पु.] (हिं.) भानजा। बहिन का लड़का।

भगनी* [संज्ञा स्त्री.](हि.) देखो 'भगिनी'।

भगयुग [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति के बारह युगों में से अन्तिम युग।

भगर* [संज्ञा पु.] (देश.) छल। फरेब। ढोंग। [संज्ञा पु.] (हि.) सड़ा हुआ अनाज या अन्न।

भगरना [क्रि. अ.] (हिं.) 'अनाज का खत्ते में गरमी पाकर सड़ने लगना।

भगल [संज्ञा पु.] (देश.) १-छल। कपट। २-हाथ की सफाई। जादू। बाजीगर।

भगली [संज्ञा पु.] (हि.) १-ढोंगी। छली। २-बाजीगर।

भगवंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) भगवान। ईश्वर।

भगवत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। परमेश्वर। २-विष्णु। ३-शिव। ४-बुद्ध। ५-सूर्य। ६-कार्तिकेय। ७-जिन। [वि.](सं.) [स्त्री. भगवती] पूजनीय। ऐश्वर्ययुक्त।

भगवती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-देवी। २-सरस्वती। ३-गौरी। ४-गंगा। ५-दुर्गा।

भगवत्पदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

भगवद्गीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के भीष्मपर्व के अन्तर्गत अठारह अध्यायों का एक प्रकरण। इन प्रकरणों में कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का उपदेश जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिए युद्धस्थल में प्रश्नोत्तर-रूप में दिया था।

भगवदीय [वि.] (सं.) १-भगवत्-सम्बन्धी। २-भगवान का भक्त।

भगवद्भक्त [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर का भक्त।

भगवान्, भगवान [वि.] (हि.) १-धन-संपत्ति या ऐश्वर्य वाला। २-पूज्य। [संज्ञा पु.] १-ईश्वर। २-पूज्य और आदरणीय व्यक्ति। ३-शिव। ४-विष्णु। ५-कार्तिकेय। ६-बुद्ध। ७-जिन।

भगशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कामशास्त्र।

भगहर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भगदड़'।

भगहारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

भगांकुर, भगाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) बवासीर। अर्शरोग।

भगाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को भागने या दौड़ने में प्रवृत्त करना। २-ऐसा कार्य करना जिससे कोई कहीं से हट या भाग जाय। ३-किसी के स्त्री बच्चे आदि को अपने साथ कहीं ले जाना। एब्डक्शन * [क्रि. अ.] देखो 'भागना'।

भगाल [संज्ञा पु.] (सं.) आदमी की खोपड़ी।

भगाली [संज्ञा पु.] (हि.) आदमी की खोपड़ी धारण करने वाला, शिव।

भगास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक अस्त्र।

भगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहन। सहोदरा।

भगिनीपति [संज्ञा पु.] (सं.) बहनोई।

भगिनीय [संज्ञा पु.] (सं.) बहन का लड़का। भानजा।

भगीरथ [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो उत्कट तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाये थे। [वि.] (भागीरथ की तपस्या के समान) बड़ा या भारी।

भगेड़ू, भगेलू [वि.] (हिं.) १-भागा हुआ। २-कायर।

भगोड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) वह जो अपना कार्य, पद अथवा कर्तव्य छोड़कर भाग गया हो। काम या दंड के डर से भागा हुआ। एब्सकांडर।

भगोल [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्र। चक्र। खगोल।

भगौती* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भगवती'।

भगौहाँ [वि.] (हिं.) १-भागने के लिए सदा तैयार रहने वाला। भागने को उद्यत। २-कायर। ३-गेरु से रंगा हुआ। गेरुआ।

भग्गा [संज्ञा पु.] (हि.) लड़ाई से भागा हुआ पशु या पक्षी।

भग्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भगदड़'।

भग्गुल* [वि.] (हिं.) १-रण से भागा हुआ। भगोड़ा। २-कायर।

भग्गू [वि.] (हिं.) डर कर भागने वाला। कायर।

भग्न [वि.](सं.) [स्त्री. भग्ना] १-टूटा हुआ। २-पराजित।

भग्नदूत [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की पराजय का समाचार देने के लिए रणक्षेत्र से भाग कर आई हुई सेना।

भग्नपाद [संज्ञा पु.](सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद तथा विशाखा ये छः नक्षत्र जिनमें से किसी एक में मरने पर द्विपाद दोष लगता है।

भग्नपृष्ठ [वि.](सं.) जिसकी पीठ की हड्डी टूट गई हो।

भग्नसंधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड्डी का जोड़ पर से टूट जाना।

भग्नगंधिक [संज्ञा पु.] (सं.) मठा।

भग्नांश [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूलद्रव्य का कोई अलग किया हुआ भाग या अंश। २-गणित शास्त्र के अनुसार किसी पूरी या समूची संख्या या वस्तु का कोई भाग या अंश। फ्रैक्शन। जैसे—½ यह १ का भग्नांश है।

भग्नात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

भग्नावशेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-टूटे-फूटे मकानों या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। खंडहर। २-किसी वस्तु के टूटे-टूटे और बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश [वि.] (सं.) जिसकी आशा भंग हो गई हो। निराश।

भग्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहन। भगिनी।

भग्नोत्सृष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल के वह गोपाल या ग्वाले जो साझीदार के समान अनुपयोगी (लंगड़ी, लूली, बीमार, दूध दूहने में तङ्ग करने वाली) गायों का पालन करते थे।

भचक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भचक कर चलने या लंगड़ाने का भाव। लंगड़ापन।

भचकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आश्चर्य से स्तब्ध होकर रह जाना। २-चाल चलने में लंगड़ा मालूम होना।

भचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-राशियों अथवा ग्रहों के चलने का मार्ग। २-नक्षत्रों का समूह।

भच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भक्ष्य'।

भच्छक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भक्षक'।

भच्छन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भक्षण'।

भच्छना [क्रि. स.] (हिं.) खाना।

भजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भजन करने वाला। २-विभाग करने वाला।

भजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाग। खंड। २-सेवा पूजा। ३-बारबार ईश्वर या देवता का नाम लेना। स्मरण। जप। ४-वह गीत जिसमें ईश्वर या किसी देवता आदि के गुणों का कीर्तन हो।

भजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-देवता आदि का नाम रटना। जपना। भजन करना। २-सेवा करना। ३-आश्रय लेना। [क्रि. अ.] १-भागना। भागजाना। २-पहुँचना। प्राप्त होना।

भजनानंद, भजनानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर भजन में मिलने वाला आनन्द।

भजनानंदी [संज्ञा पु.] (हिं.) ईश्वर भजन में मग्न रहने वाला।

भजनी, भजनीक [संज्ञा पु.] (हिं.) भजन गाने वाला गायक।

भजनीय [वि.] (सं.) १-सेवा करने योग्य। २-३-आश्रय लेने योग्य। ४-भजने के योग्य।

भजमान [वि.] (सं.) १-विभाग करने वाला। २-सेवा करने वाला।

भजाना* [क्रि. स.] (हिं.) भगाना। दौड़ाना।

भजियाउर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का भोजन जो दही, चावल, घी आदि एक साथ पका कर बनाया जाता है।

भज्य [वि.] (सं.) १-विभाग करने के योग्य। २-सेवा करने के योग्य। ३-भजने के योग्य।

भट [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध करने या लड़ने वाला योद्धा। २-सैनिक। सिपाही। ३-एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। ४-पहलवान। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भटनास'।

भटई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भाट का काम या भाटपन। २-दूसरों की झूठी प्रशंसा और खुशामद।

भटकटाई, भटकटैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छोटा काँटेदार पौधा जिसके पत्तों पर भी काँटे होते हैं। कंटकारि। चित्रफला। कंटतारिका।

भटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-व्यर्थ इधर-उधर घूमते फिरना। २-रास्ता भूल जाने के कारण घूमना। भ्रम में पड़ना।

भटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-गलत रास्ता बताना २-धोखा देना। भ्रम में डालना।

भटकैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भटकने वाला। २-भटकाने वाला।

भटकौंहा* [वि.] (हिं.) भटकाने वाला। भुलावे में डालने वाला।

भटतीतर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया

भटधर्मा [वि.] (हिं.) सच्चा बहादुर।

भटनास [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की लता जिसकी फलियों के दानों की दाल बनाई जाती है।

भटनेर [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंधनदी के पूर्वी तट पर स्थित एक प्राचीन नगर का नाम।

भटनेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भटनेर नगर का निवासी। २-वैश्यों की एक उपजाति।

भटभेड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भटभेरा'।

भटभेरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दो वीरों आपस में भिड़ना। भिड़न्त। २-टक्कर। ३-आकस्मिक मिलन। अनायास हो जाने वाली भेंट।

भटवाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भटनास'।

भटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बैंगन'।

भटियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भठियारा'।

भटियारी [संज्ञा स्त्री.] (?) सम्पूर्ण जाति की संकररागिनी।

भटियाल [क्रि. वि.] (हिं.) धार के साथ-साथ। नदी की धारा की ओर।

भटू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों के लिए आदरसूचक सम्बोधन। २-सखी। ३-प्रिय व्यक्ति।

भटेरा [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

भटोट [संज्ञा पु.] (देश.) यात्रियों के गले फाँसी लगाने वाला ठग।

भटैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भटकैया।

भटोला+ [वि.] (हिं.) १-भाट-सम्बन्धी। भाट का। २-भाट के योग्य। [संज्ञा पु.] भूमि जो भाट को पुरस्कार के रूप में दी हो।

भट्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ब्राह्मणों की एक उपाधि। २-भाट। ३-सूर। योद्धा।

भट्टार [वि.] (सं.) मान्य। पूज्य।

भट्टारक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भट्टारिका] ऋषि। २-पंडित। ३-सूर्य। ४-राजा। देवता। [वि.] मान्य। पूज्य।

भट्टारकवार [संज्ञा पु.] (सं.) आदित्यवार। रविवार।

भट्टिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाटक की में राजा की वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो। २-ब्राह्मण की स्त्री। की स्त्री।

भट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भट्ठी'।

भट्टोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) वराहमिहिर के की टीका करने वाले एक आचार्य का नाम।

भट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी भट्ठी। खपड़े आदि पकाने का पजावा।

भट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विशेष आकार की ईंटों का बना हुआ चूल्हा जिस पर अनेक प्रकार की वस्तुएँ पकाते हैं। ने का कारखाना। भट्ठी दहकना—किसी का काम धंधा होना।

भठियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) समुद्र के उतार आना।

भठियारपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भठियारे काम। २-भठियारों के समान लड़ना अश्लील गालियां बकना।

भठियारा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. भठियारिन] सराय में ठहरने वालों के भोजन आदि का प्रबंध करने वाला या रक्षक।

भठियाल [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र के पानी में उतार आना। ज्वार का उलटा। भाटा।

भठुली+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ठठेरों की मिट्टी की छोटी भट्ठी।

भड़ंबा [संज्ञा पु.] (हि.) दिखौआ। आडम्बर।

भड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की हलकी नाव। [संज्ञा पु.](डि.) वीर। योद्धा। [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल की एक वर्णसंकर जाति

भड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भड़कने की क्रिया या भाव। २-भड़कीले होने का भाव। ऊपरी चमक-दमक।

भड़कदार [वि.](हि.) १-जिसमें खूब चमक-दमक हो। चमकीला। २-रोबदार।

भड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) १-तेजी से जल उठना। २-सहसा चौंक पड़ना। डर कर पीछे हटना। ३-अचानक कुछ उग्र रूप धारण करना (मनुष्य या उसके मनोविकार का) ४-क्रुद्ध होना।

भड़काना [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रज्वलित करना। जलाना। २-उत्तेजित करना। ३-उभारना। भयभीत कर देना। (घोड़े पशु आदि के लिये) ४-बढ़ावा देना। ५-बहकाना।

भड़कीला [वि.] (हि.) १-भड़कदार। चमकीला। २-भड़कर उत्तेजित होने वाला।

भड़कीलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) चमक-दमक। भड़कीले होने का भाव।

भड़भड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-आघात आदि से होने वाला भड़भड़ शब्द। २-व्यर्थ की बकवाद। ३-भीड़।

भड़भड़ाना [क्रि. स.] (हि.) 'भड़भड़' शब्द करना।

भड़भड़िया [वि.] (हि.) बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करने वाला।

भड़भांड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक कँटीला पौधा जिसे घमोय भी कहते हैं।

भड़भूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. भड़भूजिन] भाड़ में अन्न भूनने का कार्य करने वाली एक जाति।

भड़वा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भड़ुआ'।

भड़साईं [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भाड़'।

भड़सार* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किवाड़दार आला या ताक जिसमें खाने-पीने की चीजें रखी जाती हैं।

भड़हर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भड़ेहर'।

भड़ार* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भंडार'।

भड़ाका* [संज्ञा पु.] (हि.) सुभट। योद्धा। लड़ाका।

भड़ास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मन में छुपा हुआ दुःख या क्रोध।

भड़िहा* [संज्ञा पु.] (हि.) चोर।

भड़िहाई* [क्रि. वि.] (हि.) चोरों के समान लुक-छिपकर।

भड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किसी को मूर्ख बनने के लिए दी जाने वाली उत्तेजना। झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वेश्याओं या छिनाल स्त्रियों की दलाली करने वाला व्यक्ति। २-वेश्याओं का तबलची।

भड़ेरिया [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'भड्डर'।

भड़ैत [संज्ञा पु.] (हिं.) किरायादार।

भड़ौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह हास्यरस की कविता जो भाँड़ों के समान किसी का उपहास करने लिए हो। २-वह हास्यरसपूर्ण कविता जो किसी की कविता के अनुकरण पर बनी हुई पर उपहास करने वाली हो। पैरोडी।

भड्डर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार के ब्राह्मण जो सामुद्रिक आदि के द्वारा या तीर्थों में लोगों को देवदर्शन कराके जीविका चलाते हैं। भंडर।

भण [संज्ञा पु.] (डि.) ताड़ का वृक्ष।

भणना* [क्रि. अ.] (हि.) कहना। बोलना।

भणित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कही हुई बात। कथा। [वि.] (सं.) कहा हुआ।

भतरौड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मथुरा और वृन्दावन के बीच का एक स्थान जिसके विषय में कहा जाता है कि यहाँ श्रीकृष्ण ने चौबाइनों से भात मंगवाकर खाया था। २-मंदिर का शिखर। ३-ऊँचा स्थान।

भतवान [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह की एक रीति जिसमें लड़कीवाले लड़केवालों को दाल, भात आदि कच्ची रसोई खिलाते हैं।

भतार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पति। खसम।

भतीजा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. भतीजी] भाई का लड़का।

भतुआ [संज्ञा पु.](देश.) सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

भतुला [संज्ञा पु.] (देश.) बाटी।

भत्ता [संज्ञा पु](हिं.) वह दैनिक या मासिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा, महँगी आदि के समय या कोई अतिरिक्त कार्य करने के लिये दिया जाता है। एलाउएन्स।

भदंत [वि.](हिं.) पूज्य। मान्य। [संज्ञा पु.](हिं.) बौद्धभिक्षुक। बौद्ध साधु।

भदई+ [संज्ञा स्त्री.](हिं) भादों मे पककर तैयार होने वाली फसल। [वि.](हिं.) भादों संबंधी भादों का।

भदभद [वि.] (हि.) १-बहुत मोटा। २-भद्दा।

भदयल* [संज्ञा पु.] (हि.) मेंढक।

भदवरिया [वि.] (हि.) भदवर प्रदेश का।

भदावर [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रदेश जो आजकल ग्वालियर राज्य में है।

भदेस, भदेसिल+ [वि.] (हि) भद्दा। भोंडा।

भदैल* [संज्ञा पु.] (हिं.) मेंढक।

भदैला [वि.] (हिं.) भादों मास में उत्पन्न होने वाला।

भदौंहा [वि.](हिं.) भादों के महीने में होने वाला।

भदौरिया [वि.] (हिं.) भदावर प्रदेश का। भदावर-संबंधी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) १-क्षत्रियों की एक जाति। २-भदावर प्रान्त का निवासी।

भद्दा [वि.] (हिं) [स्त्री. भद्दी] १-जो देखने में अच्छा न लगे। २-कुरूप। अश्लील।

भद्दापन [संज्ञा पु.] (हि.) भद्दे होने का भाव।

भद्र [वि.](सं.) १-सभ्य। सुशिक्षित। २-कल्याणकारी। ३-श्रेष्ठ। ४-साधु। [संज्ञा पु] (सं.) १-क्षेमकुशल। कल्याण। २-हाथियों की एक जाति। ३-चंदन। ४-महादेव। बलदेव जी के एक सहोदर भाई का नाम। ५-एक प्राचीन देश का नाम। ६-उत्तर दिशा के एक दिग्गज का नाम। ७-बैल। ८-खंजनपक्षी। ९-राम के एक सखा का नाम। १०-विष्णु के एक पारिषद का। ११-स्वरसाधन की एक प्रणाली। १२-पर्वत। १३-सुमेरु। १४-कदंब १५-स्वर्ण। सोना। १६-मोथा। १७-विष्णु का द्वारपाल। १८-राम की सभा का एक सभासद जिसके कहने पर सीता को बनवास दिया गया था। १९-एक प्रकार के देवता जो तुषित कहलाते हैं (पुराण)। [संज्ञा पु.](हिं.) सिर, दाढ़ी, मूछों आदि के बालों का मुंडन।

भद्रअवज्ञा [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'सविनय-कानून-भंग'।

भद्रकंट [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू। गोक्षुर।

भद्रक [संज्ञा पु] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-चना, मूंग आदि अन्न। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, रगण, नगण, रगण, नगण, रगण, नगण और एक गुरु होता है। ४-देवदार। ५-नागरमोथा।

भद्रकपिल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

भद्रकल्पिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

भद्रका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रजव।

भद्रकाय [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्रकार, भद्रकारक [वि.](सं.) मंगल या कल्याण करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक देश का नाम।

भद्रकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोलह हाथों वाली दुर्गा की एक मूर्ति का नाम। २-कात्यायिनी। ३-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम ४-नागरमोथा। ५-गंधप्रसारिणी।

भद्रकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारुवृक्ष।

भद्रगणित [संज्ञा पु.] (सं) बीजगणित के

अन्तर्गत वह गणित जो चक्र-विन्यास की सहायता से होता है।

भद्रगौड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम।

भद्रचारु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण ने एक पुत्र का नाम।

भद्रज [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजौ।

भद्रतरुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुलाब की एक जाति

भद्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भद्र होने का भाव। शिष्टता। भलमनसी।

भद्रतुंग, भद्रतुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ।

भद्रतुरंग [संज्ञा पु.] (सं.) जंबूद्वीप के नौ वर्षों में से एक वर्ष।

भद्रदंत [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

भद्रदंती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का दंती-वृक्ष।

भद्रदारु [संज्ञा पु.] (सं) देवदारु।

भद्रदेह [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्रद्वीप [संज्ञा पु.](सं.) कुरु वर्ष के अन्तर्गत एक द्वीप का नाम।

भद्रघन [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा।

भद्रनिधि [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का महादान (पुराण)।

भद्रपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपदनक्षत्र।

भद्रपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी।

भद्रपाल [संज्ञा पु.](सं.) एक बोधिसत्व का नाम

भद्रपीठ [संज्ञा पु.](सं.) १-बैठने का आसन। २-वह सिंहासन जिस पर राजाओं या देवताओं का अभिषेक होता है।

भद्रवन [संज्ञा पु.] (सं.) मथुरा के पास का एक वन।

भद्रबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसारिणी नामक लता। २-माधवीलता।

भद्रवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

भद्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

भद्रभीमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) कश्यप की एक कन्या का नाम। (पुराण)।

भद्रभूर्पणा [संज्ञा स्त्री.](सं.) देवी की एक मूर्ति का नाम।

भद्रमंद्र, भद्रमन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के हाथी।

भद्रमुंज, भद्रमुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) सरपत।

भद्रमुस्ता [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा।

भद्रमृग [संज्ञा पु.] (सं.) हाथियों की एक जाति।

भद्रयव [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजव।

भद्रयान [संज्ञा पु] (सं.) शाखा प्रवर्त्तक एक बौद्ध आचार्य का नाम।

भद्ररूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

भद्ररेणु [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत।

भद्रवट [संज्ञा पु.](सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम (पुराण)।

भद्रवती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कटहल। २-श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।

भद्रवल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनंतमूल।

भद्रवसन [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर पहरावा।

भद्रविंद, भद्रविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

भद्रविराट [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णार्द्ध समवृत्त का नाम जिसके पहले और तीसरे चरण में १० और दूसरे तथा चौथे चरण में ११ अक्षर होते हैं।

भद्रशाखा [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

भद्रशील [वि.] (सं.) जिसका आचरण अच्छा हो। सच्चरित्र।

भद्रश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) चंदन।

भद्रश्रवा [संज्ञा पु.] (हि.) पुराणों में वर्णित घर्घ के एक पुत्र का नाम।

भद्रश्री [संज्ञा पु.] (सं.) चंदन का वृक्ष।

भद्रश्रेयाय [संज्ञा पु.] (सं.) वाराणसी के एक प्राचीन राजा का नाम।

भद्रषष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

भद्रसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वासुदेव के एक पुत्र का नाम जिसे कंस ने कारागार में मार डाला था। २-कुन्तिराज के एक पुत्र का नाम।

भद्रसोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगानदी।

भद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आकाशगंगा। २-केकयराज की एक कन्या जो श्रीकृष्ण को ब्याही गई थी। ३-गाय। ४-दुर्गा। ५-पृथ्वी। ६-सुभद्रा का एक नाम। ७-फलित-ज्योतिष के अनुसार एक आरंभ योग। ८-बाधा। विघ्न। अड़चन। ९-जीवंती। १०-शमी। ११-बरियारी। १२-प्रसारिणी लता। १३-बच। १४-दंती। १५-हलदी। १६-चंसुर। १७-गाय। १८-दुर्गा। १९-कटहल। २०-रास्ता। २१-द्वितिया, सप्तमी, द्वादशी तिथियों की संज्ञा। २२-दूर्वा। २३-बुद्ध की एक शक्ति का नाम। २४-कामरूप देश की एक नदी का नाम। २५-सूर्य की वह कन्या जो छाया से उत्पन्न हुई थी। २६-पिंगल में उपजातिवृत्त का दसवाँ भेद। *किसी के सिर की भद्रा उतारना*-आर्थिक हानि होना। *भद्रा लगाना*-अड़चन पैदा करना

भद्रांग, भद्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

भद्राकरण [संज्ञा पु.] (सं.) सिर मुड़ाना। मुंडन

भद्रात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) खड्ग। तलवार।

भद्रानंद, भद्रानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर साधना की एक प्रणाली।

भद्रायुध [संज्ञा पु] (सं) एक राक्षस का नाम।

भद्रारक [संज्ञा पु.] अठारह क्षुद्र द्वीपों में से एक का नाम (पुराण)।

भद्रावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कटहल का पेड़। २-एक प्राचीन नगरी का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

भद्राश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

भद्राश्व [संज्ञा पु.] (सं.) जंबूद्वीप के नौ खंडों में से एक खंड।

भद्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रत्नजटित राजसिंहासन जिसपर राज्याभिषेक होता है। २-योग साधन का एक आसन।

भद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण और रगण होते हैं। २-भद्रातिथि। ३-फलित-ज्योतिष के अनुसार योगिनी दशा में पाँचवीं दशा।

भद्री [वि.] (हि.) भाग्यवान।

भद्रैला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची।

भद्रोदनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बला। २-नागबला।

भनक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-धीमा शब्द। ध्वनि। २-उड़ती हुई खबर।

भनकना* [क्रि. स.] (हि.) कहना।

भनना* [क्रि. स] (हि.) कहना।

भनभनाना [क्रि. अ.] (हि.) भन-भन शब्द करना। गुंजारना।

भनभनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भनभनाने का शब्द। गुंजार।

भनित* [वि.] (हि.) देखो 'भणित'।

भबका [संज्ञा पु.] (हि.) अर्क उतारने का चुआने का एक प्रकार का घड़ा।

भभक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-भभकने की क्रिया या भाव। २-किसी वस्तु का गरम होकर ऊपर को उबलना। ३-सड़ने से उठने वाली दुर्गंध।

भभकना [क्रि. अ.] (हि.) १-उबलना। २-गरमी पाकर किसी वस्तु का फूटना। ३-जोर से जलना। भड़कना।

भभका [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भबका'।

भभकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) झूठी धमकी।

भब्भड़, भम्भड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जन-समुदाय। भीड़भाड़।

भभरना* [क्रि. अ.] (हि.) १-डरना। २-घबरा जाना। ३-भ्रम में पड़ना।

भभूका [संज्ञा पु.] (हि.) ज्वाला। लपट।

भभूत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-वह भस्म जो मस्तक और भुजाओं पर लगाया जाता है। २-देखो 'विभूति'।

भभूदर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भूभल'।

भयंकर, भयङ्कर [वि.] (सं.) [स्त्री. भयंकरी] डरावना। भयानक। भीषण। [संज्ञा

अस्त्र का नाम। २-डुंडुल पक्षी।

भयंकरता, भयङ्करता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भयंकर होने का भाव। भयानकता। भीषणता।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मनोविकार जो आपत्ति या अनिष्ट की आशंका से मन में उत्पन्न होता है। डर। खौफ। २-एक रोग जो बालकों के डर जाने से होता है। ३-द्रोण के पुत्र का नाम। ४-निऋति के एक पुत्र का नाम। ५-कुब्जकपुष्प। ※भय खाना-डरना।

[वि.] (हिं.) देखो 'भया' या 'हुआ'।

[वि.] (सं.) [स्त्री. भयकरी] भयानक। भयंकर।

[वि.] (हिं.) देखो 'भौचक'।

डिंडिम, भयडिण्डिम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा जो प्राचीनकाल में लड़ाई में बजाया जाता था।

[संज्ञा पु.] (डि.) चन्द्रमा।

[वि.] (सं.) डरावना।

[संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार एक प्रकार का दोष।

[संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

[वि.] (सं.) भयानक। खौफनाक।

[वि.] (सं.) डरा हुआ।

[वि.] (सं.) जो डर के मारे भागा हो।

[वि.] (सं.) भय या डर दूर करने वाला। निर्भय करने वाला।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) परस्पर के समझौते से तय की हुई दो गाँवों के बीच की सीमा।

[संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाईबंद। २-सजातीय।

[संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का व्यूह जो प्राचीनकाल में युद्ध के समय इसलिये रचा जाता था कि जिसमें भय उपस्थित होने की दशा में राजा उसमें आश्रय लेकर अपनी रक्षा करे।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सूचना जो भय से सचेत करने के लिये हो। अलार्म।

सूचना-घंटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भय को सूचित करने वाली घंटी। खतरे की घंटी। अलार्मबेल।

[वि.] (सं.) भय या डर दूर करने वाला

[वि.] (हिं.) भय दूर करने वाला। भयहरण।

[वि.] (हिं.) हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक राक्षसी जो हेति की स्त्री थी। २-६२ हाथ लम्बी, ५६ हाथ चौड़ी और ३६ हाथ ऊँची नाव। ※[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भाई'।

[वि.] (सं.) भय से व्याकुल। भयभीत

[संज्ञा पु.] (सं.) भय के कारण दस्त आना।

भयातुर [वि.] (सं.) डर से घबराया हुआ। भयभीत।

भयान* [वि.] (हिं.) डरावना। भयानक।

भयानक [वि.] (सं.) जिसे देखने से भय या डर लगता हो। भयंकर। डरावना। [संज्ञा पु.] १-बाघ। २-राहू। ३-साहित्य में नौ रसों में से एक जिसमें भीषण दृश्यों या बातों का वर्णन होता है।

भयाना* [क्रि. अ.] (हिं.) डराना। भयभीत होना।

भयाना [क्रि. स.] (हिं.) डराना। भयभीत करना [वि.] भयानक। भयंकर। डरावना।

भयावन* [वि.] (हिं.) भयंकर। भयानक। डरावना।

भयावना [वि.] (हिं.) भयंकर। भयानक। डरावना।

भयावह [वि.] (सं.) भयंकर। डरावना। खौफनाक

भय्या [संज्ञा पु.] (हिं.) भैया। भाई। भ्राता।

भरंत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भ्रम। सन्देह। २-भरने की क्रिया या भाव। भराई।

भर [वि.] (हिं.) कुल। पूरा। सब। तमाम। ※[क्रि. वि.] बल से द्वारा। [संज्ञा पु.] १-भार। बोझ। २-एक जाति का नाम। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो भरणपोषण करता हो। २-युद्ध। लड़ाई।

भरई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भरदूल'।

भरक [संज्ञा पु.] (देश.) पंजाब और बङ्गाल में पाया जाने वाला एक प्रकार का पक्षी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भड़क'।

भरकना ※[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भड़कना'।

भरका [संज्ञा पु.] (देश.) १-वह जमीन जिसकी मिट्टी काली और चिकनी हो। २-देखो 'भरक' ३-पहाड़ों या जङ्गलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर, डाकू छिपते हैं।

भरकाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'भड़काना'।

भरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भरका'।

भरकूट [संज्ञा पु.] (डिं.) मस्तक। माथा।

भरके [अव्यः] (हिं.) नाली आदि से बचकर चलने का सङ्केत (कहार)।

भरचिंटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जो हिसार में होती है।

भरट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुम्हार। २-सेवक। नौकर। चाकर।

भरटक [संज्ञा पु.] (सं.) सन्यासियों का एक सम्प्रदाय।

भरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पालन। पोषण। २-भरणीनक्षत्र। ३-बेतन। ४-किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तु पहुँचाना। सप्लाई

भरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घिया तोरई। २-सत्ताईस नक्षत्रों में से दूसरा। ३-एक लग्न जो भूमि खोदने के लिए शुभ समझा जाता है [वि.] (सं.) भरण या पालन करने वाली।

भरणीभू [संज्ञा पु.] (सं.) राहुग्रह।

भरणीय [वि.] (सं.) पालने-पोसने योग्य। भरण के योग्य।

भरण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाम। मूल्य। २-वेतन तनख्वाह।

भरण्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-चन्द्रमा। ३-अग्नि। ४-मित्र।

भरत [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा दशरथ के पुत्र और राम के छोटे भाई जो कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। २-भगवत् में वर्णित ऋषभदेव के पुत्र का नाम। ३-शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र का नाम। ४-एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य थे। ५-सङ्गीतशास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६-अभिनेता। नट। ७-शबर। ८-तंतुवाय। जुलाहा। ९-प्राचीनकाल का उत्तर भारत के एक प्रदेश का नाम। १०-खेत। क्षेत्र। ११-जैनियों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का लावा पक्षी। [संज्ञा पु.] (देश.) १-कांसा नामक धातु। २-कांसे के बरतन बनाने वाला। ठठेरा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालगुजारी

भरतखंड, भरतखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) भारत का पुराना नाम।

भरतपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) अभिनयकर्ता। नट।

भरतप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भरत की माता, कैकेयी

भरतरी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पृथ्वी।

भरतवर्ष [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भारतवर्ष'।

भरतवीणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कच्छपी वीणा से मिलती-जुलती एक प्रकार की वीणा।

भरता [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का सालन जो आलू, बैंगन आदि को भूनकर बनाया जाता है। २-वह जो दबने आदि के कारण बिलकुल विकृत हो गया हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भर्त्ता'।

भरताग्रज [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

भरतार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पति। खसम। २-स्वामी। मालिक।

भरताश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) भरतमुनि का आश्रम

भरतिया [वि.] (हिं.) कसकुट या कांसे का बना हुआ। [संज्ञा पु.] कसकुट के बरतन बनाने वाला।

भरती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु में भरे जाने का भाव। भरा जाना। २-सेना, कक्षा आदि में प्रविष्ट होने अथवा लिये जाने का भाव। ३-केवल स्थानपूर्ति के लिए रखी अथवा भरी व्यर्थ की चीजें या बातें। ४-वह नाव जिसमें माल लादा जाता हो। ५-वह माल जो ऐसी नाव में लादा या भरा जाता हो। ६-जहाज पर माल लादने की क्रिया। ७-समुद्र के पानी का चढ़ाव। ज्वार। ८-नदी के पानी की बाढ़।

भरती करना-किसी में रखना, रखना, लगाना या बैठाना। *भरती का*-जो केवल स्थानपूर्ति के लिए रखा जाय।
[संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-साँवाँ नामक मोटा अन्न। २-एक प्रकार की घास।

भरतोद्भुता [संज्ञा पु.] (सं.) केशव के मतानुसार एक छंद विशेष का नाम।

भरत्थ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भरत'।

भरथ+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भरत'।

भरथरी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भर्तृहरि'।

भरदुल [संज्ञा पु.] (हि.) लवा (पक्षी)।

भरद्वाज [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक वैदिक ऋषि जो गोत्रप्रवर्त्तक और मंत्रकार थे। २-बौद्धों के अनुसार एक अर्हत का नाम। ३-भरतपक्षी। ४-एक प्राचीन देश का नाम। ५-एक अग्नि का नाम। ६-भरद्वाजऋषि के वंशज।

भरना [क्रि. स.] (हि.) १-खाली स्थान को पूरा करने के लिए कोई वस्तु डालना। २-उलटना उड़ेलना। ३-तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि डालना। ४-रिक्त पद की पूर्त्ति करना। पद पर नियुक्त करना। ५-दो चीजों के बीच की जगह या छेद आदि में कुछ डाल कर बंद करना। ६-ऋण चुकाना या क्षतिपूर्त्ति करना। चुकाना। देना। ७-गुप्त रूप से किसी के बारे में किसी से कुछ निंदात्मक बातें कहना। ८-निर्वाह करना। निबाहना। ९-खेत में पानी देना। १०-धातु के छड़ आदि को पीटकर अन्य प्रकार से छोटा और मोटा करना। ११-काटना। डसना। १२-पशुओं पर बोझ आदि लादना। १३-सारे शरीर में लगाना। पोतना।
किसी का घर भरना-(किसी को) बहुत अधिक धन देना। [क्रि. अ.] (हि.) १-रिक्त पात्र आदि के खाली स्थान का किसी और पदार्थ के आने से पूर्ण होना। २-उड़ेला या डाला जाना। ३-रिक्त स्थान की पूर्ति होना। जगह खाली न रहना। ४-पदार्थों के छेद या बीच के अवकाश आदि का बन्द होना। ५-तोप-बन्दूक आदि में गोली-बारूद आदि का होना। ६-शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना। ७-गर्भ धारण करना। गभिन होना (पशु)। ८-किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करने लगना। ९-पशुओं पर बोझ या भार लादा जाना। १०-घाव में अंगूर आना। ११-चेचक के दानों का सारे शरीर में निकल आना। १२-कुछ कमी या कसर न रह जाना। १३-मन में क्रोध होना। १४-ऋण या देन का चुकाया जाना। १५-धातु के छड़ आदि को पीटकर छोटा और मोटा किया जाना। १६-भेंटना। मिलना। *भरा पूरा*-१-सब प्रकार सुखी और सम्पन्न। २-सब प्रकार से पूर्ण। [संज्ञा पु.] (हि.) १-भरने की क्रिया या भाव। २-घूस। उत्कोच।

भरनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पोशाक। पहनावा।

भरनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) करघे में की ढरकी। नार। (?) १-छछूंदर। २-मोरनी। ३-जंगली बूटी विशेष। ४-गारुड़ी-मन्त्र।

भरपाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पूरा-पूरा पावना पाजाना। २-इस प्रकार पूरा पाजाने पर लिखी जाने वाली रसीद। [क्रि. वि.] (हि.) पूर्णरूप से। भली-भाँति।

भरपूर [वि.] (हि.) १-पूरी तरह से भरा हुआ। २-जिसमें कमी न हो। पूरा-पूरा। [क्रि. वि.] (हि.) १-पूर्ण रूप से। २-भलीभांति। [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र की तरङ्गों का चढ़ाव। ज्वार

भरभराना [क्रि. अ.] (हि.) १-(रोआं) खड़ा होना २-घबराना। ३-सहसा नीचे आ गिरना।

भरभराहट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सूजन। वरम।

भरभूँजा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भड़भूंजा'।

भरभेंटा* [संज्ञा पु.] (हि.) सामना। मुकाबला। मुठभेड़।

भरम* [संज्ञा पु.](हि.) १-भ्रांति। संदेह। धोखा २-रहस्य। भेद। *भरम गँवाना*-अपना भेद खोलना। *भरम बिगड़ना*-रहस्य खोलना।

भरमना* [क्रि. अ.] (हि.) १-घूमना। चलना। २-मारा-मारा फिरना। ३-भटकना। ४-धोखे में पड़ना। [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-भूल। गलती २-धोखा। भ्रम।

भरमहीना [संज्ञा पु.](हि.) बरसात के दिन जिनमें खेतों में बीज डाले या बोये जाते हैं।

भरमाना [क्रि. स.] (हि.) १-भ्रम में डालना। बहकाना। २-भटकाना। ३-व्यर्थ इधर-उधर घूमना।

भरमार [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बहुतायत। अधिकता

भरराना [क्रि. अ.] (हि.) १-भररर शब्दसहित गिरना। २-पिल पड़ना। टूट पड़ना।

भरल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की जङ्गली भेड़।

भरवाई [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-भरने की क्रिया या भाव। २-भरवाने की मजदूरी। ३-बोझ उठाने की डलिया या टोकरी।

भरवाना [क्रि स.] (हि.) किसी को भरने में प्रवृत्त करना।

भरसक [क्रि. वि.](हि.) जहां तक हो सके। यथाशक्ति।

भरसन* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) डांट। फटकार।

भरसाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भाड़'।

भरहरना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'भरभराना'।

भरहराना [क्रि. अ.] देखो 'भहराना'।

भराँति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भ्रांति'।

भराई [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-भरने की क्रिया या भाव। २-भरने की मजदूरी। ३-एक प्रकार का कर जो पहले बनारस में लगता था।

भराना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'भरवाना'।

भरापूरा [वि.](हि.) १-जिसे किसी बात की कमी न हो। संपन्न। २-जिसमें किसी प्रकार की कमी या न्यूनता न हो।

भराव [संज्ञा पु.] (हि.) १-भरने का काम या भाव। २-भराकर तैयार किया हुआ काम। भरत। ३-कसीदा काढ़ने में पत्तियों के बीच के स्थान को तागों से भरना।

भरित [वि.] (सं.) १-भरा हुआ। २-पाला पोसा हुआ।

भरिया+ [वि.] (हि.) १-भरने वाला। पूर्ति करने वाला। २-ऋण या कर्ज चुकाने वाला। [संज्ञा पु.](हि.) बरतन ढालने का काम करने वाला।

भरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक तौल जो एक रुपये के बराबर होता है।

भरु* [संज्ञा पु.](हि.) बोझ। वजन। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-समुद्र। ३-स्वामी। मालिक। ४-सोना। स्वर्ण। ५-शंकर।

भरुआ [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'टसर'। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भड़ुआ'।

भरुआना+ [क्रि. स.] (हि.) भारी होना।

भरुकच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) भड़ौंच का प्राचीन नाम।

भरुका+ [संज्ञा पु.] (हि.) मटकना। कुल्हड़। मिट्टी का छोटा पुरवा।

भरुज [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा सियार।

भरुहाना+ [क्रि. अ.](हि.) घमंड करना। अभिमान करना। [क्रि. स.] (हि.) १-बहकाना। धोखा देना। २-उत्तेजित करना। बढ़ावा देना।

भरुही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कलम बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'लवा' (पक्षी)।

भरेंड़+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'रेंड़'।

भरेठ+ [संज्ञा पु.] (हि.) दरवाजे के ऊपर का पटाव।

भरैया [वि.] (हि.) १-भरने वाला। २-पालन करने वाला। पोषक। पालक।

भरोटा+ [संज्ञा पु.](हि.) घास या लकड़ी आदि का गट्ठा। बोझ।

भरोसा [संज्ञा पु.] (हि.) १-आश्रय। आसरा। २-सहारा। अवलम्ब। ३-आशा। ४-दृढ़ विश्वास। यकीन।

भरोसी [वि.](हि.) १-आशा या भरोसा रखने वाला। २-आश्रित। ३-विश्वास के योग्य। विश्वसनीय।

भरौंट [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास जो राजस्थान में अधिकता से होती है।

भरौती+ [संज्ञा स्त्री] (हि.) वह रसीद जिसमें भरपाई की गई हो।

भरौना+ [वि.] (हि.) बोझल। भारी। वजनी।

भर्ग [संज्ञा पु.] (हि.) १-शिव। महादेव।

सूर्य का तेज। ३-एक प्राचीन देश का नाम।

[संज्ञा पु.] (हि.) ज्योति। दीप्ति। चमक।

भर्गायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

भर्जन [संज्ञा पुं.] (सं.) भुना हुआ अन्न।

भर्तव्य [वि.] (सं.) भरण-पोषण करने वाला।

भर्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अधिपति। स्वामी। २-पति। खाविंद। ३-विष्णु। ४-देखो 'भरता'।

भर्तार [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री का पति। स्वामी। मालिक।

भर्ती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-भरने की क्रिया या भाव। २-सेना आदि में प्रविष्ट होने के लिए जाने का भाव। ३-केवल स्थानपूर्ति के लिए रखी या भरी व्यर्थ की चीजें या बातें।

भर्तृघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पतिघातिनी।

भर्तृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पति का भाव या धर्म।

भर्तृमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सधवा स्त्री।

भर्तृहरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जो राजा विक्रमादित्य के भाई थे। २-ललित और पुरज के योग से बनने वाला एक संकरराग।

भर्त्सक [वि.] (सं.) तिरस्कार या अनादर करने वाला।

भर्त्सन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निंदा। शिकायत। २-डांटडपट।

भर्त्सना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी अनुचित कार्य के लिए बुरा भला कहना। फटकार।

भर्म* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भ्रम'।

भर्मन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भ्रमण'।

भर्म [संज्ञा पु.] (सं.) भरण-पोषण का व्यय। गुजारे का खर्च।

भर्रा [संज्ञा पु.] (हि.) १-पक्षी की उड़ान। २-एक प्रकार की चिड़िया।

भर्राना [क्रि. अ.] (हि.) भर्र-भर्र शब्द होना।

भर्सन* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-निंदा। अपवाद। शिकायत। २-डांट-डपट। फटकार।

भलंदन, भलन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) कन्नौज के एक राजा का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

भल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार डालने की क्रिया। वध। हत्या। २-दान। ३-निरूपण।

भलका [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का बाँस। २-सोने या चाँदी का वह टुकड़ा जो शोभा के लिये नथ में जड़ा जाता है। +[संज्ञा पु.] (हि.) तीर का फल। गाँसी।

भलटी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) हँसिया।

भलपति [संज्ञा पु.] (हि.) भला रखने वाला। नेजेबरदार।

भलमनसत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भलामानस होने का भाव। सज्जनता।

भलमनसाहत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भलमनसत। सज्जनता। सौजन्य।

भलमनसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भलमनसत'।

भला [वि.] (हि.) १-जो स्वभाव से अच्छा हो। उत्तम प्रकृति का। २-अच्छा। बढ़िया। ३-उत्तम। श्रेष्ठ। *भलाचंगा*-शरीर से स्वस्थ। *भलाबुरा*-१-उलटी सीधी या अनुचित बात। २-डाँट-फटकार। [संज्ञा पु.] (हि.) १-कल्याण। कुशल। भलाई। २-लाभ। नफा। प्राप्ति। *भलाबुरा*-हानि और लाभ। [अव्य.] (हि.) १-अच्छा। खैर। अस्तु। २-'नहीं' का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरम्भ या मध्य में रखा जाता है। जैसे-(क) भला कहीं कायरों ने भी युद्ध जीता है। (ख) वहां भला उस गरीब कलाकार को कौन पूछता है। *भले ही*-ऐसा ही हुआ करे। कुछ चिन्ता नहीं।

भलाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-'भला' होने का भाव। भलापन। २-उपकार। नेकी। ३-हित। लाभ।

भलापन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भलाई'।

भले [क्रि. वि.] (हि.) भली प्रकार से। पूर्णरूप से। अच्छी तरह। [अव्य.] खूब। वाह।

भलेरा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भला'।

भल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वध। हत्या। २-दान। ३-भालू। ४-वृहत्संहिता के अनुसार एक प्राचीन देश। ५-पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ। ६-एक प्राचीन जाति। ७-एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र। ८-एक प्रकार का बाण। ९-देखो 'भाला'।

भल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भालू। २-इंगुदी का वृक्ष। ३-एक प्रकार की चिड़िया। ४-एक प्रकार का सन्निपात। ५-भिलावाँ।

भल्लपुच्छी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुण्डी।

भल्लय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन प्रदेश जो ईशान दिशा में था।

भल्लाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) जिसे कम दिखाई देता हो। मन्द दृष्टि।

भल्लात, भल्लातक [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

भल्लु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिससे शरीर के बाहर जाड़ा और भीतर जलन होती है।

भल्लुक [संज्ञा पु.] (सं.) भालू।

भल्लूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भालू। २-शंख के समान कोश में रहने वाला एक प्रकार का जीव। ३-कुत्ता।

भवँ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भौंह'।

भवंग, भवंगम, भवंगा* [संज्ञा पु.] (हि.) साँप। सर्प।

भवँर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भँवर'।

भवँरकली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भँवरकली'

भवँरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भँवरी'।

भवंत [वि.] (हि.) आप लोगों का। आपका (भवत का बहुवचन)।

भवँलिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की नाव जो बाजरे के समान पर उससे कुछ छोटी होती है।

भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्म। उत्पत्ति। २-मेघ। बादल। ३-शिव। ४-कुशल। ५-संसार। जगत्। ६-कारण। हेतु। ७-प्राप्ति। ८-सत्ता। ९-कामदेव। १०-संसार के आवागमन का दुःख। जन्म-मरण का दुःख। ११-मांस। * (हि.) डर। भय। [वि.] (हि.) १-शुभ। कल्याणकारक। २-उत्पन्न। जमा हुआ।

भवकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) कभी कभी पूर्व में दिखाई देने वाला एक पुच्छलतारा (वृहत्संहिता)।

भवक्षिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जन्म-भूमि।

भवचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के मत से वह कल्पित चक्र जिससे यह जाना जाता है कि कौन-कौन कर्म करने से जीवात्मा को किन-किन योनियों में भ्रमण करना पड़ता है।

भवचाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव का धनुष। २-पिनाक।

भवजाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संसार का मायाजाल २-सांसारिक झंझट।

भवत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि। जमीन। २-विष्णु। [वि.] (सं.) मान्य। पूज्य।

भवतव्यता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भवितव्यता

भवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का विषैला बाण।

भवदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकेय की एक माता का नाम।

भवदारु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु। देवदार।

भवदीय [सर्वनाम](सं.) [स्त्री. भवदीया] आपका तुम्हारा।

भवधरण [संज्ञा पु.] (सं.) संसार को धारण करने वाला, परमेश्वर।

भवन [संज्ञा पु.] (हि.) १-जगत। संसार। २-कोल्हू के चारों ओर का वह चक्कर जिसमें बैल घूमते हैं। [संज्ञा पु.] (सं.) १-घर। मकान। २-प्रासाद। महल। ३-तर्कशास्त्र में भाव। ४-जन्म उत्पत्ति। ५-आश्रय या आधार का स्थान। ६-सत्ता। ७-छप्पय का एक भेद।

भवन-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो नगर-पालिका की ओर से नगर के घरों पर लगाया जाता है। *हाउस-टैक्स*।

भवन-चिकित्सक [संज्ञा पु.](सं.) वह चिकित्सक जो कि चिकित्सालय में सर्वदा रहता हो अर्थात् जिसका निवासस्थान भी चिकित्सालय में ही हो। *हाउस सर्जन*।

भवनपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-जैनियों के दस

देवताओं का वर्ग जिनके नाम इस प्रकार हैं- असुरकुमार, नागकुमार, तडित्कुमार, अनिलकुमार, स्तनितकुमार, अधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार। २-घर का मालिक। गृहस्वामी। ३- राशिचक्र के किसी घर का स्वामी।

भवनवासी [संज्ञा पु.] (हि.) जैनों के अनुसार आत्मा के चार भेदों में एक।

भवना*+ [क्रि. अ.](हिं.) घूमना। चक्कर खाना फिरना।

भवनाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) सरयू नदी का एक नाम।

भवनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गृहिणी। भार्या।

भवननाथ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भवपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुवनेश्वर देवी जो संसार की रक्षा करने वाली शक्ति मानी जाती है।

भवप्रत्यय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाधि की एक अवस्था।

भवबंधन, भवबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) सांसारिक दुःख और कष्ट।

भवभंजन, भवभञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार का नाश करने वाला। काल। २-ईश्वर।

भवभय [संज्ञा पु.] (सं.) संसार में बारम्बार जन्म लेने और मरने का भय।

भवभामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती। भवानी।

भवभावन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भवभूप*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) संसार के भूषण।

भवमोचन [वि.] (सं.) सांसारिक बंधनों से मुक्ति दिलाने वाला ईश्वर।

भवरुत् [संज्ञा पु.] (सं.) मृतक की अंत्येष्टि के समय बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा। प्रेतपटह (इसका व्यवहार प्राचीनकाल में होता था)।

भवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्रवर्ग।

भववामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती। भवानी।

भवविलास [संज्ञा पु.](सं.) १-माया। २-ज्ञानांधकार से उत्पन्न होने वाला सांसारिक सुख।

भवशूल [संज्ञा पु.] (सं.) सांसारिक दुःख और कष्ट।

भवसंभव, भवसम्भव [वि.] (सं.) सांसारिक। संसार में घटित। संसार में होने वाला।

भवसागर [संज्ञा पु.] (सं.) संसाररूपी सागर।

भवाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भौंरी। फेरी। चक्कर।

भवाँना+ [क्रि. स.] (हिं.) घुमाना।

भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भवानी। पार्वती।

भवाचल [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास पर्वत।

भवानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

भवाभीष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुल।

भवायन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का उपासक। शिवभक्त। शैव।

भवायना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव के माथे पर रहने वाली गंगा।

भवाब्धि, भवार्णव [संज्ञा पु.] (सं.) संसाररूपी सागर।

भवि* [वि.] (हि.) देखो 'भव्य'।

भवित [संज्ञा पु.] (सं.) बीता हुआ। भूत।

भवितव्य [संज्ञा पु.] (सं.) भवनीय। होनहार। भावी।

भवितव्यता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-होनी। भावी। होनहार। २-भाग्य। किस्मत्।

भविष* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भविष्य'।

भविष्य [संज्ञा पु.](सं.) आने वाला समय। आने वाला काल।

भविष्यगुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो रति में प्रवृत्त वाली हो और पहले से उसे छुपाने का उद्योग करे।

भविष्यत् [संज्ञा पु.] (सं.) आगामी काल। आने वाला समय। भविष्य।

भविष्यद्वक्ता [संज्ञा पु.](सं.) १-पहले से भविष्य में होने वाली बातें कहने वाला। २-ज्योतिषी

भविष्यवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आगे चलकर होने वाली बात जो पहले से किसी ने कहदी हो।

भविष्य-निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह निधि जिसमें किसी बुढ़ापे आदि के समय भरण-पोषण आदि के लिए धन एकत्र किया जाय। प्रॉविडेन्ट फंड।

भविष्य-सु-रति-गोपना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'भविष्यगुप्ता'।

भवीला*+ [वि.] (हि.) १-भावपूर्ण। भावयुक्त २-बांका तिरछा।

भवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार का स्वामी। २-महादेव। शिव।

भव्य [वि.](सं.) १-देखने में विशाल और सुन्दर। शानदार। ३-शुभ। मंगलकारक। सत्य। सच्चा। ४-आगे चलकर होने वाला। ५-योग्य। लायक। ६-प्रसन्न। ७-श्रेष्ठ। बड़ा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलता नामक वृक्ष। २-कमरख। ३-करेला। ४-नीम। ५-जैनमतानुसार वह जिसे लिंग पद की प्राप्ति हो। भवसिद्धक। ६-शरीर धारण करने वाला। जन्मग्रहण करने वाला। ७-नवें मन्वंतर के एक ऋषि का नाम। ८-ध्रुव के एक पुत्र का नाम। ९-मनुचक्षुप् के अंतर्गत देवताओं के एक वर्ग का नाम।

भव्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भव्य होने का भाव।

भव्या* [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-उमा। पार्वती। २-गजपीपल।

भष* [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन। आहार।

भषना* [क्रि. स.] (हिं.) खाना। भोजन करना।

भसंधि, भसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं) ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों के चौथे ... बाद के नक्षत्रों से सन्धि।

भसन [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

भसना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-पानी के ऊपर ... २-पानी में डूबना।

भसम [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भस्म'।

भसमा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पिसा हुआ ... २-नील की पत्ती की बुकनी।

भसाकू [संज्ञा पु.] (हि.) पीने का हल्का ... मीठा तम्बाकू।

भसान [संज्ञा पु.] (हि.) पूजा के उपरांत ... को नदी में बहाने की क्रिया।

भसाना [क्रि. स.] (बँ.) १-किसी वस्तु को ... में तैराने के लिए छोड़ना। २-किसी वस्तु ... पानी में डालना।

भसिंड, भसींड [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ... कमल की जड़। मुरार।

भसुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी। गज।

भसुर [संज्ञा पु.] (हिं.) पति का बड़ा भाई। ...

भसूँड [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी की सूँड।

भसूचक [संज्ञा पु.] (सं.) दैवज्ञ। ज्योतिषी।

भस्त्रका, भंस्त्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आग ... गाने की भाथी।

भस्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-राख। २-अग्निहोत्र ... की राख जिसे शिवभक्त माथे पर लगाते ... शरीर पर मलते हैं। ३-चिता की ... शिवजी अपने सारे शरीर में लगाते थे। ... एक प्रकार की पत्थरी। [वि.] जो जलकर ... हो गया हो। जला हुआ।

भस्मक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भावप्रकाश के अनुसार एक रोग। २-बहुत अधिक भूख। ... सोना। ४-विडंग।

भस्मकारी [वि.] (हिं.) जलाने या भस्म ... वाला।

भस्मगंधा, भस्मगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ... रेणुका नामक गंधद्रव्य। २-शीशम।

भस्मजाबाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद् ... नाम।

भस्मता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भस्म होने का ... या धर्म।

भस्मतूल [संज्ञा पु.] (सं.) हिम। तुषार।

भस्मप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

भस्ममेह [संज्ञा पु.] (सं.) मेह के कारण होने ... वाला एक प्रकार का अश्मरी रोग (सुश्रुत)।

भस्मवेधक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूर।

भस्मस्नान [संज्ञा पु.] (सं.) सारे शरीर पर ... मलना।

भस्माकर [संज्ञा पु.] (सं.) धोबी।

भस्माकूट [संज्ञा पु.] (सं.) कामरूप के एक ...

का नाम जिस पर शिव का वास माना जाता है।

भस्माग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भस्मक रोग।

भस्माचल [संज्ञा पु.] (सं.) कामरूप के एक पर्वत का नाम।

भस्मासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध दैत्य का नाम जिसे शिवजी ने यह वरदान दिया था कि जिस पर तुम हाथ रखोगे वह भस्म हो जायगा।

भस्माह्व्य [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

भस्मित [वि.] (सं.) १-जलाया हुआ। २-जला हुआ।

भस्मीभूत [वि.] (सं.) पूर्णतया जला हुआ। जलकर राख बना हुआ।

भसमड़ [वि.] (हिं.) बहुत मोटा और भद्दा (आदमी)।

भहराना [क्रि. अ.] (हि.) १-सहसा नीचे आ गिरना। २-टूट पड़ना। ३-फिसल पड़ना। ४-किसी काम में पूरे तौर से लगजाना। (व्यंग्य)

भौं [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भौंह'।

भाँई [संज्ञा पु.] (हि.) खरीदने वाला। खरादी।

भाँउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) अभिप्राय।

भाँउर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भाँवर'।

भाँउरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भांवर'।

भाँकड़ी [संज्ञा पु.] (देश.) गोखरू, से मिलता जुलता एक जङ्गली झाड़ जिसे सहद सिघाड़ा भी कहते हैं।

भाँग [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियां लोग नशे के लिए पीसकर पीते हैं। भंग। विजया। बूटी। पत्ती।
भाँग छानना-नशा करने के लिए भांग की पत्तियां को खूब पीस और छानकर पीना।
भाँग खा जाना या पी जाना-नशेबाज के समान बातें करना। नासमझी या पागलपन की बातें करना। [संज्ञा पु.] (?) वैश्यों की जाति।

भाँगा+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) किसी धातु की गर्द या छोटे कण।

भाँज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-किसी वस्तु को मोड़ने या तह करने का भाव। २-भांजने अथवा घुमाने की क्रिया या भाव। ३-वह बट्टा जो रुपये, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाता है। भुनाई।

भाँजना [क्रि. स.] (हि.) १-तह करना। मोड़ना। २-दो या कई लड़ों को एक में मिलाकर बटना। ३-व्यायाम के लिए मुगदर आदि घुमाना।

भाँजा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भानजा'।

भाँजी+ [संज्ञा स्त्री.](हि.) किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही जाने वाली बात। चुगली।

भाँट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भाड़'। [संज्ञा पु.] (देश.) काले रंग की छपाई जो रूप रेखा बनाने के लिए हाथ से छींट छापने वाले पहले करते हैं।

भाँटा+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'बैंगन'।

भाँड [संज्ञा पु.](हि.) १-विदूषक। मसखरा। २-महफिलों आदि में नाच-गाकर तथा हास्य-पूर्ण अभिनय करके जीविका उपार्जन करने वाला। ३-हंसी। दिल्लगी। ४-निर्लज्ज। बेहया ५-विनाश। बरबादी। ६-बरतन। भाँड़ा। ७-रहस्योद्घाटन। ८-उपद्रव। उत्पात। ९-देखो 'भाड़'।

भाँड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) १-बरतन। बासन। २-बड़ा बरतन। ३-भाँडपन। भाँड का काम।
भाँड़े में जी देना-किसी पर दिल लगा होना।
भाड़े भरना-पछताना।

भांडागार, भाण्डागार [संज्ञा पु.] (सं.) भंडार। कोश। खजाना।

भांडागारिक, भाण्डागारिक [संज्ञा पु] (सं.) भंडार का निरीक्षक। प्रधान। भंडारी।

भांडार [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार की बहुत-सी वस्तुएं रखी रहती हों। भंडार। २-वह स्थान जहां बेची जाने वाली बहुत सी वस्तुएं एकत्र रहती हों। *स्टॉक*। ३-खजाना। कोश। ४-बहुत अधिक मात्रा में गुण आदि का आश्रय या आधार-स्थान।

भांडारगृह [संज्ञा पु.](हि.) वह घर जिसमें अनेक प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ रखी रहती हों। *स्टोर हाउस*।

भांडार-पंजी, भाण्डार-पञ्जी [संज्ञा स्त्री.](स.) वह पंजी या बही जिसमें भंडार में रहने वाली वस्तुओं की सूची तथा उनके आने जाने का लेखा होता है। *स्टाक बुक*। *स्टाक रजिस्टर*।

भांडारपाल, भाण्डारपाल [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसकी देख-रेख में कोई भंडार रहता हो। भंडार का मुख्य अधिकारी। *स्टॉक-कीपर*।

भांडारिक, भाण्डारिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भंडार रखता हो। *स्टॉकिस्ट*।

भांडिक, भाण्डिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल तुरही बजाकर राजाओं को जगाने वाला व्यक्ति।

भांडिल, भाण्डिल [संज्ञा पु.] (सं.) नापित। हज्जाम।

भांडिशाला, भाण्डिशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ नाई से हजामत बनवाई जाती है।

भांडीर, भाण्डीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वटवृक्ष। बड़ का पेड़। २-एक प्रकार का क्षुप।

भाँत* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भाँति'।

भाँति [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-तरह। किस्म। प्रकार रीति। २-मर्यादा। *भाँति-भाँति के*-नाना प्रकार के। तरह तरह के।

भाँपना+ [क्रि. स.] (?) १-दूर से देखकर समझ लेना। ताड़ना। पहचानना। २-देखना।

भाँपू [संज्ञा पु.] (हि.) भाँपने या ताड़ने वाला।

भाँभी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जूता सीने या चमड़े का काम करने वाली एक जाति।

भाँयँभाँयँ [संज्ञा पु.] (हि.) निर्जन स्थान या सन्नाटे में आपसे-आप होने वाला शब्द।

भाँरी* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'भाँवर'।

भाँवता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भावता'।

भाँवना+ [क्रि. स.] (हि.) १-चक्कर देना। २-खरादना। ३-सुन्दर बनाने के लिए खूब अच्छी तरह घड़ना।

भाँवर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चारों ओर घूमना या चक्कर काटना। चक्कर लगाना। २-हल जोतने के समय एक बार खेत के चारों ओर घूम आना। ३-अग्नि की परिक्रमा जो विवाह के अवसर पर वर और वधु मिलकर करते हैं। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भौंरा'।

भाँस+ [संज्ञा स्त्री.] (?) शब्द। आवाज।

भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमक। दीप्ति। प्रकाश २-शोभा। छटा। छवि। ३-किरण रश्मि। ४-बिजली। विद्युत्। [अव्यय] (हि.) चाहे। यदि इच्छा हो। या।

भाइ* [संज्ञा पु.] (हि.) १-प्रेम। प्रीति। २-स्वभाव। ३-विचार। [संज्ञा स्त्री.] १-प्रकार। तरह। भांति। २-चालढाल। रंगढंग। ३-चमक। दीप्ति।

भाइप* [संज्ञा पु.] (हि.) १-भाईचारा। भाईपन २-मित्रता। बन्धुत्व।

भाई [संज्ञा पु.](हि.) १-अपने माता-पिता से उत्पन्न दूसरा व्यक्ति। एक ही माता-पिता से उत्पन्न व्यक्तियों में से एक के लिए दूसरा व्यक्ति। भ्राता। सहोदर। २-किसी वंश या परिवार की किसी एक पीढ़ी के किसी व्यक्ति के लिए उस पीढ़ी का दूसरा पुरुष। ३-अपनी जाति अथवा समाज का कोई व्यक्ति। ४-बराबर वालों के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

भाईचारा [संज्ञा पु.](हिं.) १-भाई के समान परम प्रिय होने का भाव तथा व्यवहार। २-परम मित्र या बंधु होने का भाव।

भाईदूज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, इस दिन भाई को बहन टीका लगाती है। भैयादूज।

भाईपन [संज्ञा पु.](हि.) भाई या परम मित्र होने का भाव।

भाईबंद [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक ही वंश या गोत्र के लोग। २-भाई तथा मित्रबन्धु आदि

भाईबिरादरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) जाति या समाज के लोग।

भाउ* [संज्ञा पु.] (हि.) १-भाव। चित्तवृत्ति। विचार। २-प्रेम। प्रीति। ३-उत्पत्ति। जन्म। ४-देखो 'भाव'।

भाऊ* [संज्ञा पु.] (हिं) १-प्रेम । स्नेह । मुहब्बत । २-भावना । ३-स्वभाव । ४-हालत । अवस्था । ५-महत्व । महिमा । ६-स्वरूप । आकृति । शक्ल । ७-सत्ता । प्रभाव । ८-वृत्ति । विचार ।

भाएँ* [क्रि. वि.] (हि.) समझ में । बुद्धि के अनुसार ।

भाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-एक देश जो नैर्ऋत्यकोण में था (पुराण) ।

भाकसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भट्ठी । भरसाई ।

भाकुर [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की मछली ।

भाख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भाषण' ।

भाखना [क्रि. स.] (हि.) कहना । बोलना ।

भाखर [संज्ञा पु.] (हि.) पर्वत । पहाड़ ।

भाखा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भाषा' ।

भाग [संज्ञा पु.] (हि.) १-हिस्सा । खंड । अंश । २-पार्श्व । तरफ । ओर । ३-नसीब । भाग्य । किस्मत । ४-सौभाग्य । खुश नसीबी । ५-भाग्य का कल्पित स्थान । माथा । ललाट । ६-प्रातःकाल । भोर । ७-एक प्राचीन देश का नाम । ८-वैभव । ऐश्वर्य । ९-पूर्वाफाल्गुनी-नक्षत्र । १०-गणित में किसी राशि की संख्या को कई अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया ।

भागक [वि.] (सं.) देखो 'भाजक' ।

भागकर [संज्ञा पु.] (सं) विभाग करने वाला । बांटने वाला ।

भागजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विभाग के चार प्रकारों में एक । इसमें एक हर तथा एक अंश होता है चाहे वह समभिन्न हो या विषमभिन्न हो ।

भागड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भगदड़' ।

भागण [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य आदि की प्रभा ।

भागत्याग [संज्ञा पु.] (हि.) वह लक्षण जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोड़े गये हो ।

भागदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाग देने वाला ।

भागधेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाग्य । किस्मत । प्रारब्ध । २-वह कर जो राजा को दिया जाता है । ३-दायाद । सपिंड ।

भागना [क्रि. अ.] (हि.) १-किसी स्थान से हटने के लिए दौड़कर निकल जाना । पलायन करना । २-कोई काम करने से डरना या बचना । पिंड छुड़ाना । ३-टल जाना । हट जाना । *सिर पर पैर रखकर भागना*-बहुत तेजी से भागना ।

भागनेय [संज्ञा पु.](सं.) बहिन का बेटा । भानजा

भागफल [संज्ञा पु.] (सं.) भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त होने वाली संख्या या अङ्क । लब्धि ।

भागरा [संज्ञा पु.] (दे श.) एक संकरराग का नाम

भागवंत+ [वि.] (हि.) भाग्यवान् । खुशकिस्मत

भागवत [संज्ञा पु.] (सं.) १-अठारह पुराणों में एक । इसे वेदांत की टीका के रूप में माना जाता है । २-ईश्वर का भक्त । ३-देवी भागवत । ४-तेरह मात्राओं के एक छंद का नाम । [वि.] (सं.) भगवत्-सम्बन्धी । भगवत का ।

भागवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैष्णवों की कंठी जिसको वह गले में पहनते हैं ।

भागसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का हेत्वाभास ।

भागहर [वि.] (सं.) हिस्सेदार । भाग या अंश लेने वाला ।

भागहार [संज्ञा पु.] (सं.) गणित में किसी राशि को कुछ निश्चित अंशों में विभक्त करने की क्रिया ।

भागानुप्रविष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गायों का रक्षक जो प्राचीनकाल में गाय के मालिकों से दूध की आमदनी का दशांश लेता था ।

भागाभाग [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भागड़' ।

भागार्ह [वि.] (सं.) जो भाग देने योग्य हो ।

भागासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है ।

भागिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह ऋण जो ब्याज पर दिया जाय ।

भागिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) हिस्सेदारी । साझेदारी । भागीदारी ।

भागिनेय [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भागनेयी] भानजा ।

भागी [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री भागिनी] १-हिस्सेदार । साझी । २-अधिकारी । हकदार । ३-शिव । *[वि.] (हि.) भाग्य वाला ।

भागीदार [संज्ञा पु.] (हि.) हिस्सेदार । सहभागी

भागीदारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) साझेदारी । हिस्सेदारी । भागीदार होने का भाव ।

भागीरथ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भगीरथ' ।

भागीरथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगानदी । जाह्नवी । २-गंगा की एक शाखा का नाम जो बंगाल में है । [संज्ञा पु.] हिमालय की एक चोटी का नाम जो गढ़वाल के पास है ।

भागुरि [संज्ञा पु.] (सं.) साँख्य के भाष्यकर्त्ता एक ऋषि का नाम ।

भागू [संज्ञा पु.] (हि.) भगोड़ा । जो भाग गया हो ।

भाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह निश्चित तथा अटल दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब काम पहले ही नियत किये हुए माने जाते हैं तथा जिसका स्थान माथा और ललाट बताया जाता है । तकदीर । नसीब । किस्मत । प्रारब्ध । दैव । नियति । विधि । भवितव्यता । २-उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र (मुहा० के लिए देखो 'किस्मत' के मुहा०) । [वि.] (सं.) हिस्सा या भाग करने

भाग्यभाव [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मलग्न से नवां स्थान जहां से भाग्य के शुभ और अशुभ का जाता है ।

भाग्यलेख्यपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कागज जिसमें किसी जायदाद के हिस्से लिखे हों ।

भाग्यवत् [वि.] (सं.) भाग्ययुक्त ।

भाग्यवान [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. अच्छे भाग्य वाला । सौभाग्यशाली । वर ।

भाचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) क्रांतिवृत्त ।

भाजक [वि.] (सं.) विभाग करने वाला । [संज्ञा पु.] वह अङ्क जिससे संख्या अथवा राशि का भाग (गणित) ।

भाजकांश [संज्ञा पु.] (सं.) वह संख्या किसी राशि को भाग देने पर बचे । गुणनीयक ।

भाजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बरतन । आधार । ३-पात्र । योग्य । ४- तौल ।

भाजनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पात्रता ।

भाजना* [क्रि. अ.] (हि.) भागना ।

भाजित [वि.] (सं.) १-विभक्त । हुआ । २-जिसको किसी अन्य भाग दिया गया हो ।

भाजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तरकारी । खाने की वनस्पतियां तथा पीच । [संज्ञा पु.] (हि.) भृत्य । सेवक ।

भाज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह अङ्क अङ्क से भाग दिया जाता है । [वि.] (सं.) विभाग करने के योग्य

भाट [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. भाटिन] के यश का बखान करने वाला बन्दी । २-एक जाति जिसके लोग के यश का वर्णन और कविता करते खुशामदी । ४-राजदूत । [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-नदी के की भूमि । पेटा । २-बहाव की नदी का चढ़ाव उतरने पर पर जमती या कछार में जमती है । का बहाव । ४-नदी का किनारा । (सं.) भाड़ा ।

भाटक [संज्ञा पु.] (सं.) भाड़ा । किराया ।

भाटक-अधिकारी [संज्ञा पु.](सं.) लोगों या किराया इकट्ठा करने वाला रेन्ट-आफीसर ।

भाटक-समाहर्ता [संज्ञा पु.] (सं.)

२-किराया उगाहने का काम करने वाला अधिकारी। रेन्ट-कलेक्टर।

भाटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी का उतार। २-समुद्र के चढ़ाव का उतरना। 'ज्वार' का उलटा। ३-पथरीली भूमि।

भाटिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति का नाम। यह लोग अपने को क्षत्रियों के अन्तर्गत मानते हैं।

भाट्यौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) भाट का काम। यशकीर्तन।

भाठ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नदी के चढ़ाव के साथ बहकर आने वाली मिट्टी। २-वह भूमि जो नदी के करारों के बीच में हो। पेटा। ३-नदी का किनारा। ४-धारा। बहाव।

भाठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'भाटा'। २-गड्ढा।

भाठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पानी का उतार। +२-देखो 'भट्ठी'। ३-वह स्थान जहाँ शराब टपकाई जाती है।

भाड़ [संज्ञा पु.](हिं.) भड़भूँजे की अनाज भूनने की भट्ठी। *भाड़ झोंकना*-१-तुच्छ कार्य करना। २-व्यर्थ समय खोना। *भाड़ में झोंकना या डालना*-१-उपेक्षा से फेंकना। २-नष्ट करना। *भाड़ में जाय या पड़े*-अपनी ओर से कुछ भी हो।

भाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी स्थान पर रहने, किसी सवारी पर चढ़ने अथवा कोई वस्तु कहीं भेजने के लिए उजरत के रूप में दिया जाने वाला कुछ निश्चित धन। किराया। *भाड़े का टट्टू*-केवल धन के लोभ से दूसरे का काम करने वाला। [संज्ञा पु.] [वि.] १-एक प्रकार की घास। २-वह दिशा जिस ओर को वायु बहती हो।

भाड़े पड़ना-नाव को हवा के सहारे ले जाना *भाड़े फेरना*-जिस ओर वायु की दिशा हो, उस ओर नाव का मुँह फेरना।

भाण [संज्ञा पु.](सं.) १-नाट्यशास्त्रानुसार हास्यरस का वह दृश्यकाव्य या रूपक जिसमें एक ही रूप होता है। २-मिस। व्याज। ३-ज्ञान। बोध। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहन। भगिनी

भाणजा+ [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. भाणजी] भानजा।

भाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हास्यरस का वह दृश्यकाव्य जो एक अंक में समाप्त होता है। भाण।

भात [संज्ञा पु] (हिं.) १-पानी में उबालकर पकाया हुआ चावल। २-विवाह की एक रीति जिसमें समधी को भात खिलाने के लिए कन्या के घर बुलाया जाता है। [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रभात। सवेरा। २-दीप्ति। प्रकाश

भाता [संज्ञा पु.] (हि.) उपज का वह अंश जो हलवाहे को मिलता है।

भाति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भाँति'। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कांति। २-शोभा।

भातु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

माथा [संज्ञा पु.] (हि.) १-तरकश। तूणीर। २-बड़ी भाथी।

भाथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भट्ठी की आग सुलगाने की धौंकनी।

भादों [संज्ञा पु.] (हिं.) सावन के बाद के और कुआंर के पहले महीने का नाम। भाद्रपद।

भादौं* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भादों'।

भाद्र [संज्ञा पु.] (सं.) भादों का महीना।

भाद्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाद्र। भादों। २-बृहस्पति के एक वर्ष का नाम।

भाद्रपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वाभाद्रपदा तथा उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र।

भाद्रमातुर [वि.] (सं.) जिसकी माता संती हो।

भान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। रोशनी। २-दीप्ती। चमक। ३-ज्ञान। ४-आभास। प्रतीति ५-कल्पित विचार या भ्रमपूर्ण धारणा। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भानु'। [संज्ञा पु.] (देश.) तुंग नामक वृक्ष।

भानजा [संज्ञा पु.] (हिं.) बहिन का लड़का।

भानना* [क्रि. स.](हिं.) १-तोड़ना। भंग करना। २-नष्ट करना। मिटाना। ३-दूर करना। ४-काटना। [क्रि. स.] (हिं.) समझना।

भानमती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध जादूगरनी। *भानमती का पिटारा*-ऐसा बे-मेल संग्रह जिसमें बहुत तरह की चीजें हों।

भानवी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमुना।

भानवीय [वि.] (सं.) भानु-संबन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) दाहिनी ओर की आंख।

भाना* [क्रि. अ.](हि.) १-अच्छा लगना। पसंद आना। २-जान पड़ना। ज्ञात होना। ३-शोभा देना। सोहना। फबना। [क्रि. स.] (हिं.) चमकना।

भानु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-किरण। ३-राजा। ४-आक। मंदार। ५-जैनग्रन्थों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के पन्द्रहवें अर्हत् के पिता का नाम। ६-उत्तम मन्वंतर के एक देवता का नाम। ७-कृष्ण के एक पुत्र का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्ष की एक कन्या का नाम। २-कृष्ण की एक कन्या का नाम।

भानुकंप, भानुकम्प [संज्ञा पु.](सं.) ग्रहण आदि के समय सूर्य के बिंब का कांपना।

भानुकेशर [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य

भानुज [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री. भानुजा] १-यम। २-कर्ण। शनिश्चर।

भानुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

भानुतनिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमुना।

भानुतनूजा* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमुना। यमुना।

भानुदिन [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य का दिन। रविवार

भानुदेव [क्रि. स.](सं.) १-सूर्य। २-पांचाल देश के एक राजा का नाम जो कर्ण के हाथ से मारा गया था।

भानुपाक [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की गरमी से औषध को पकाने की क्रिया।

भानुप्रताप [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम जो मरने पर रावण हुआ (रामायण)।

भानुफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केला।

भानुमत् [वि.] (सं.) प्रकाशमान। दीप्तियुक्त। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-कलिंग के एक राजा का नाम। ३-श्रीकृष्ण के पुत्र का नाम। ४-केशिध्वज के एक पुत्र का नाम।

भानुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिक्रमादित्य की एक रानी का नाम जो इन्द्रजाल जानती थी। २-अंगरीस की पहली कन्या का नाम। ३-दुर्योधन की भार्या का नाम। ४-राजा सगर की एक पत्नी का नाम। ५-कृतवीर्य की कन्या का नाम। ६-गङ्गा। ७-जादूगरनी।

भानुमान [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा दशरथ के ससुर का नाम। [वि.] देखो 'भानुमत'।

भानुमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रगिर के राजा के पुत्र का नाम। २-एक प्राचीन राजा का नाम।

भानुमुखी [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यमुखी।

भानुवार [संज्ञा पु.] (सं.) रविवार। इतवार।

भानुसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम। २-कर्ण। ३-मनु। ४-शनिश्चर।

भानुसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

भानुसेन [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण के एक पुत्र का नाम।

भानेमि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

भाप [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पानी के खौलने पर उसमें से निकलने वाले बहुत छोटे-छोटे जल कण जो धूएँ के रूप में ऊपर उठते हुए दीखते हैं। वाष्प। २-भौतिक-शास्त्रानुसार घन अथवा द्रव पदार्थों की वह अवस्था जो उनके बहुत तपकर विलीन होने पर होती है। *भाप भरना*-चिड़ियों का अपने नवजात बच्चों के मुँह में मुँह डालकर फूँकना।

भापना+ [क्रि. स.] (हि.) देखो 'भाँपना'।

भाफ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भाप'।

भावर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास जो पहाड़ी प्रदेशों में होती है।

भाभर [संज्ञा पु.] (हि.) १-पहाड़ों की तराई में का जङ्गल। २-एक प्रकार की घास जिसकी रस्सी बटी जाती है।

भाभरा* [वि.] (हि.) लाल। रक्ताभ।

भाभरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-गरम राख। २-वह भूमि जिसमें बहुत धूल हो (कहार)'

भाभी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बड़े भाई की स्त्री। भौजाई।

भाम [संज्ञा पु.](सं.) १-क्रोध। २-प्रकाश। दीप्ति ३-सूर्य। ४-बहनोई। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, मगण और अन्त में तीन सगण होते हैं। ॐ [संज्ञा स्त्री] (हि.) स्त्री। औरत।

भामक [संज्ञा पु.] (सं.) बहनोई।

भामता॰ [वि.] (हि.) देखो 'भावता'।

भामतीय [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण भारत में रहने वाली एक जाति का नाम।

भामनी [वि.] (सं.) १-प्रकाशक। २-मालिक। [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

भामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। औरत। २-क्रुद्ध स्त्री।

भामिन, भामिनि॰ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भाविनी'।

भामिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-स्त्री। औरत। २-क्रोध करने वाली स्त्री।

भामी [वि.] (हि.) क्रुद्ध। नाराज। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेज स्त्री।

भाय [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाई। २-देखो 'भाव'। ३-परिणाम। ४-दर। भाव। ५-भांति। ढंग।

भायप [संज्ञा पु.] (हि.) भाईचारा। भाईपन।

भाया [वि.] (हि.) प्रिय। प्यारा। +[संज्ञा पु.] (हि.) भ्राता। भाई।

भारंगी, भारङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। असबरग। भृङ्गजा। कंजी।

भार [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का वह गुरुत्व जो तौल के द्वारा जाना जाता है। बोझ २-एक परिमाण जो बीस पसेरी का होता है। ३-विष्णु। ४-वह बोझ जो बहँगी के दोनों पल्लों पर रखकर कंधे पर उठाकर ले जाते हैं ५-देखभाल। सम्भाल। ६-आश्रय। सहारा ७-किसी प्रकार कार्य चलाने, कुछ धन चुकाने अथवा किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का उत्तरदायित्व। चार्ज। ८-दो हजार पल की एक पुरानी तौल। *किसी का भार उठाना*-किसी का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। *भार उतरना* कर्त्तव्य पूरा हो चुकने पर उससे मुक्त होना। ॐ[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भाड़'

भारक [संज्ञा पु.] (सं.) भार नामक तौल।

भारकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पालने-पोसने वाली स्त्री। दाई। धाई।

भारग्रस्त [वि.] (सं.) देखो 'भारित'।

भारग्रस्त-संपदा, भारग्रस्त-सम्पदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह संपत्ति जिस पर किसी प्रकार का ऋण या देन हो। एनकम्बर्ड-एस्टेटस।

भारत [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। २-महाभारत का वह मूल अथवा पूर्व रूप जो २४००० श्लोकों का था। ३-नट। ४-अग्नि। ५-लम्बा-चौड़ा विवरण। कथा। ६-देखो 'भारतवर्ष'। ७-घोर युद्ध।

भारतखंड, भारतखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भारतवर्ष'।

भारतवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह देश जो एशिया में हिमालय से कन्याकुमारी तक तथा सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। (इसके कुछ पूर्वी तथा पश्चिमी प्रांत पाकिस्तान बन गये हैं)। आर्यावर्त्त। हिन्दुस्तान।

भारतवासी [संज्ञा पु.] (सं.) भारत देश का रहने वाला। भारतीय।

भारनि [संज्ञा पु.] (हि.) १-सरस्वती। २-वाणी।

भारती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वचन। वाणी। २-सरस्वती। ३-एक पक्षी का नाम। ४-संन्यासियों के दस नामों में से एक। ५-एक नदी का नाम। ६-ब्राह्मी। ७-ब्राह्मीबूटी। ८-नाटक में एक वृत्ति जिसके अनुसार केवल पुरुष पात्र रहते हैं और उच्चवर्ग के लोग संस्कृत में कथोपकथन करते हैं। यह प्रायः सभी रसों में काम आती है।

भारतीकरण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भारतीयकरण'।

भारतीतीर्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक तीर्थ का नाम

भारतीय [वि.] (सं.) भारत-सम्बन्धी। भारत का [संज्ञा पु.] भारतवर्ष का निवासी।

भारतीयकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या संस्था को भारतीय बनाना अर्थात उसमें भारतीय तत्वों का अथवा भारतवासियों का आधिक्य करना।

भारतीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारतीय होने का भाव।

भारतुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वास्तुकला के अनुसार स्तम्भ के नौ भागों में से पाँचवाँ।

भारतेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) राजा भरत।

भारथ॰ [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'भारत'। २-युद्ध।

भारथी [संज्ञा पु.] (हिं.) योद्धा। सिपाही।

भारदंड, भारदण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का साम। २-बहंगी। (हिं.) कसरत में एक प्रकार का दंड।

भारद्वाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-भरद्वाज के वंशज। २-द्रोणाचार्य। ३-मंगलग्रह। ४-भरदूल नामक पक्षी। ५-एक देश का नाम। ६-बृहस्पति के एक पुत्र का नाम। ७-हड्डी। ८-एक ऋषि का नाम।

भारद्वाजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

भार-धारक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पर कोई काम करने-कराने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का दायित्व या भार हो। भार धारण करने वाला। चार्ज होल्डर।

भारना॰+ [क्रि. स.] (हि.) १-बोझ लादना। २-भार डालना। ३-दबाना।

भार-प्रमाणक [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमाणक या प्रमाणपत्र जो इस बात का सूचक हो कि व्यक्ति में दूसरे को अमुक कार्य, पद, ऋण आदि का दायित्व या भार सौंप दिया है। चार्ज सार्टिफिकेट।

भारभारी [वि.] (हि.) बोझ उठाने वाला।

भारभृत् [वि.] (सं.) बोझ ढोने वाला।

भारय [संज्ञा पु.] (सं.) भारद्वाज नामक पक्षी।

भारयष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) बहँगी।

भारव [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष की डोरी। ज्या।

भारवाह, भारवाहक [वि.](सं.) बोझा ढोने वाला

भारवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) बोझ ढोने की क्रिया या भाव।

भारवाहिक [संज्ञा पु.] (सं.) भार ढोने वाला। [संज्ञा पु.] मजदूर।

भारवाही [वि.] (सं.) [स्त्री. भारवाहिनी] बोझ ढोने वाला। [संज्ञा स्त्री.] नीली।

भारवि [संज्ञा पु.] (सं.) किरातार्जुनीय नामक काव्य के रचयिता एक प्राचीन कवि का नाम।

भारवी [संज्ञा पु.] (सं.) तुलसी का पेड़।

भार-शिव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन शैव सम्प्रदाय जिसके अनुयायी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।

भारहारी [संज्ञा पु.] (हि.) पृथ्वी का भार उतारने वाले, विष्णु।

भारा+ [वि.] (हिं.) देखो 'भारी'। [संज्ञा पु.] १-देखो 'भाड़ा'। २-देखो 'भार'।

भाराक्रांता, भराक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णिक वृत्ति का नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, भगण, नगण, रगण, सगण और गुरु होता है। तथा चौथे, छठे और सातवें वर्ण पर यति होती है।

भारावलंबकत्व, भारावलम्बकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

भारि [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

भारिक [संज्ञा पु.] (सं.) बोझ ढोनेवाला।

भारित [वि.] (सं.) १-जिस पर कोई भार या बोझ हो। २-जिस पर किसी प्रकार का ऋण या देन हो। एन-कम्बर्ड। *भारित कर्त्तव्य*-किसी कर्त्तव्य के पालन का उत्तरदायित्व सौंपना। चार्ज।

भारी [वि] (हि.) १-जिसमें भार हो। जिसमें अधिक बोझ हो। २-असह्य। ३-कठिन। भीषण। कराल। विशाल। बड़ा। ४-अधिक। बहुत। ५-असह्य। दूभर। ६-प्रबल। ७-सूजा हुआ। ८-गम्भीर। शांत। *पेट भारी होना*-पेट में अपच होना। *पैर भारी होना*-गर्भिणी होना। *माथा या सिर भारी होना*-सिर में पीड़ा होना। *गला या आवाज भारी होना या भारी पड़ना*-गला बैठना। *भारी भरकम*-बड़ा और भारी। *भारी रहना*-१-नाव को रोकना। २-धीरे चलना।

बड़ा भारी-बहुत बड़ा।

भारीपन [संज्ञा पु.](हिं.) १-भारी होने का भाव २-गुरुत्व। ३-गरिष्ठता। भारी होना।

भारुंड, भारुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक वन का नाम। जो पंजाब में सरस्वती नदी के पास पूर्व में था।

भारुंडि, भारुण्डि [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का सामगान। २-एक ऋषि का नाम। ३-पुराणानुसार एक पक्षी का नाम।

भारू+ [संज्ञा पु.] (हि.) धीरे चलने के लिये कहा जाने वाला एक संकेत (कहार)।

भारूप [संज्ञा पु.] (सं.) चिदात्मक आत्मा।

भारोद्वह [वि.] (सं.) भार या बोझ ले जाने वाला [संज्ञा पु.] (सं) मजदूर।

भारोपीय [वि.] (हि.) भारत और यूरोप में समान रूप से पाये जाने वाले या समानरूप से उत्पन्न। (जाति समूह अथवा भाषावर्ग, मुख्यतः भारतीय, पारसी, जरमनी, यूनानी, इटालियन, आदि जातियों तथा भाषाओं के सम्बन्ध में प्रयुक्त)।

भार्गव [संज्ञा पु.] (सं.) १-भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। २-परशुराम। ३-शुक्राचार्य। ४-मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक देश का नाम जो भारत के पूर्व में था। ५-गज। हाथी। ६-मार्कंडेय। ७-श्योनाक। ८-कुम्हार। ६-नीला भँगरा। १०-हीरा। ११-एक उपपुराण का नाम। १२-च्यवन। १३-जमदग्नि। १४-एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहते हैं। [वि.] (सं.) भृगु-सम्बन्धी। भृगु का।

भार्गवन [संज्ञा पु.] (सं.) द्वारका के एक वन का नाम (पुराण)।

भार्गवप्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हीरा।

भार्गवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पार्वती। २-लक्ष्मी। ३-दूर्वा। दूब। ४-नीलीदूब। ५-सफेद दूब। ६-उड़ीसा की एक नदी का नाम।

भार्गवेश [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

भार्गायन [संज्ञा पु.] (सं.) भर्ग के गोत्र के लोग

भार्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारंगी।

भार्ङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारंगी।

भारद्वाजी [संज्ञा स्त्री.](सं.) भारद्वाजी। बनकपास

भार्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी। जोरू। स्त्री।

भार्याट [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी पत्नी को पर पुरुष के पास भोग के लिए भेजने वाला व्यक्ति।

भार्याटिक [वि.] (सं.) जो अपनी भार्या या पत्नी में बहुत अनुरक्त हो। स्त्रैण। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुनि का नाम। २-एक प्रकार का हिरन।

भार्यात्व [संज्ञा पु.] (सं.) भार्या या पत्नी होने का भाव।

भार्यारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मृग। २-एक पर्वत का नाम।

भार्यावृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पतंग नामक वृक्ष।

भाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपाल। ललाट। माथा २-तेज। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाला। बरछा २-तीर का फल। गाँसी। ॐ३-रीछ। भालू।

भालचंद्र, भालचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव २-गणेश। [संज्ञा स्त्री.] दुर्गा।

भालदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर। सेंदुर।

भालना [क्रि. स] (हिं.) १-ध्यानपूर्वक देखना। २-ढूंढ़ना। खोजना। तलाश करना।

भालनेत्र, भाललोचन [संज्ञा पु.] (सं.) जिनके भाल पर नेत्र है, शिव।

भालवी [संज्ञा पु.] (डिं.) रीछ। भालू।

भालांक, भालाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-करपत्र नामक अस्त्र। २-एक प्रकार का साग। ३-रोहित मछली। ४-शिव। ५-कछुआ। ६-सामुद्रिक के अनुसार वह मनुष्य जिसके शरीर में बहुत अच्छे-अच्छे लक्षण हों।

भाला [संज्ञा पु.] (हिं.) सांग या बरछा नामक हथियार। नेजा।

भालाबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) भाला या बरछा लेकर चलने वाला व्यक्ति। बरछैत।

भालि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बरछी। सांग। २-शूल। काँटा।

भालिया [संज्ञा पु.] (देश.) हलवाहे को वेतन स्थान पर दिया जाने वाला अन्न। भाता।

भाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भाले या बरछे की गाँसी या नोक। २-शूल। कांटा।

भालु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भालू'। [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

भालुक [संज्ञा पु.] (सं.) भालू। रीछ।

भालुनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जामवंत।

भालू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध स्तनपायी हिंसक चौपाया। रीछ।

भालूक [संज्ञा पु.] (सं.) रीछ। भालू।

भावंता* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रिय। प्रीतम। प्रेमपात्र। २-होनहार। भावी।

भावँर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास जो कागज बनाने के काम में आती है। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भाँवर'।

भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-होने की क्रिया या तत्व होना। 'अभाव' का उलटा। २-मनमें उत्पन्न होने वाला कोई विचार या प्रवृत्ति। खयाल। ३-मतलब। अभिप्राय। तात्पर्य। ४-मुख की आकृति या चेष्टा। ५-आत्मा। ६-जन्म। ७-चित्त। ८-चीज। वस्तु। पदार्थ। ६-क्रिया कृत्य। १०-पंडित। विद्वान्। ११-विभूति। जंतु। जानवर। १२-जन्तु। जानवर। १३-विषय। रति आदि का क्रीड़ा। १४-भली प्रकार देखना। पर्यालोचन। १५-प्रेम। मुहब्बत। १६-योनि। १७-किसी धातु का अर्थ १८-संसार। १९-उपदेश। २०-कल्पना। २१-जन्म के समय का नक्षत्र। २२-मन में छुपी हुई कोई गूढ़ इच्छा। २३-स्वभाव मिजाज। २४-ढंग। तरीका। २५-प्रकार। तरह। २६-दशा। अवस्था। हालत। २७-विश्वास। भरोसा। २८-भावना। २९-किसी पदार्थ का धर्म या गुण। ३०-प्रतिष्ठा। इज्जत। ३१-किसी वस्तु की बिक्री आदि का प्रचलित अथवा निश्चित किया हुआ मूल्य। दर। निर्ख। रेट। ३२-उद्देश्य। ३३-ईश्वर देवता आदि के लिये मनमें होने वाली श्रद्धा ३४-फलित ज्योतिष में ग्रहों की शयन, उपवेशन, प्रकाशन, गमन आदि बारह चेष्टाओं में से कोई चेष्टा अथवा ढंग जिसका ध्यान जन्म कुण्डली का विचार करते समय किया जाता है। ३५-युवती स्त्रियों के २८ प्रकार के स्वभावज अलंकारों में से पहला। (नायक आदि को देखने के कारण या अन्य प्रकार से नायिका के मनमें उत्पन्न होने वाला विकार) ३६-नृत्यगीत आदि में अंगों का वह संचालन जो प्रसंग या विषय के अनुसार मानसिक विकारों अथवा विचारों का सूचक होता है। ३७-नाज। नखरा। चोचला। ३८-बुद्धि का वह गुण जिसमें धर्माधर्म, ज्ञानाज्ञान आदि का पता चलता है। ३९-सांख्य के अनुसार वह पदार्थ जो जन्म लेता हो, रहता हो, बढ़ता हो, परिणामशील हो तथा नष्ट रहता हो।

भाव उतारना या गिराना-किसी वस्तु का दाम घट जाना। *भाव चढ़ना*-दाम या दर तेज होना *भाव बताना*-आकृति आदि द्वारा अथवा अङ्गों को संचालित करके मन का भाव प्रकट करना। *भाव देना*-अङ्ग संचालित करके मन का भाव प्रकट करना।

भावअर्हत [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक प्रकार के तीर्थङ्कर।

भावइ* [अव्य.] (हिं.) यदि इच्छा हो तो। यदि जी चाहे तो।

भावक* [क्रि. वि.] (हिं.) थोड़ा सा। किंचित्। [वि.] (सं.) भावपूर्ण। भाव से भरा। [संज्ञा पु.] १-भावना करने वाला। २-भावसंयुक्त। ३-भक्त। प्रेमी। अनुरागी। ४-भाव। [वि.] उत्पादक। उत्पन्न करने वाला।

भावगति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इरादा। इच्छा। विचार।

भावगम्य [वि.] (सं.) जो भाव की सहायता से जाना या समझा जा सके।

भावग्राह्य [वि.] (सं.) भक्तिपूर्वक ग्रहण करने योग्य

भावज [वि.](सं.) भाव से उत्पन्न। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाई की भार्या। भाभी।

भावज्ञ [वि.] (सं.) मन की प्रवृत्ति या मानसिक भाव जानने वाला।

भावज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मानसिक प्रवृत्ति या

भाव जानने का भाव।

भावता [वि.] (हिं.) [स्त्री. भावती] १-जो भला लगे। २-प्रेमपात्र। प्रिय।

भावताव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु का मूल्य या भाव आदि। दर। २-रंग-ढंग।

भावदत्तदान [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के मतानुसार एक प्रकार का पाप।

भावदया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी जीव को दुखी देखकर अंतःकरण में दया उत्पन्न होना।

भावन* [वि.] (हिं.) अच्छा या भला लगने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-भावना। २-ध्यान। ३-विष्णु।

भावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन में किसी प्रकार का चिंतन करना। विचार। खयाल। २-साधारण विचार या कल्पना। ३-इच्छा। चाह। ४-चित्त का एक संस्कार जो अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है। ५-चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिलकर घोटना, जिसमें घोटी जाने वाली वस्तु में उस तरल पदार्थ का कुछ गुण या गंध आ जाय। पुट (वैद्यक)। ६-इस प्रक्रिया से किसी वस्तु में आया हुआ गुण या गंध।
*[क्रि. अ.] (हिं.) अच्छा लगना। पसन्द आना। [वि.] प्रिय। प्यारा।

भावनामयशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्य के अनुसार एक प्रकार का शरीर जो मनुष्य से बहुत पहले धारण करता है तथा जो उसके जन्म-भर के किये हुए पापों और पुण्यों के अनुसार होता है।

भावनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इच्छानुसार बात या काम।

भावनिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार किसी वस्तु का वह नाम जो उसके केवल वर्त्तमान स्वरूप को देखकर रखा गया हो।

भावनीय [वि.] (सं.) भावना करने अथवा सोचने विचारने के योग्य।

भावपरिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वस्तुतः धन का संग्रह न करना, परधन के संग्रह की मन में अभिलाषा रखना।

भावप्रकाश [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

भावप्रधान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भाववाच्य'।

भावप्रवण [वि.] (सं.) १-भावना करने या सोचने वाला। भावुक। जिसके मन में कोमल भावों की प्रबलता हो या जिस पर कोमल भावों का जल्दी और अधिक प्रभाव पड़ता हो।

भावप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार आत्मा की चेतनाशक्ति।

भावबंध, भावबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) भावना या विचार जिसके द्वारा कर्मतत्व से आत्मा बन्धन में पड़ता है (जैन)।

भावभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ईश्वर की भक्ति का भाव। २-आदर। सत्कार।

भावमन [संज्ञा पु.] (सं.) पुद्गलों के संयोग से उत्पन्न ज्ञान।

भावमृषावाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर से तो झूठ न बोलना, पर मन में झूठी बातों की कल्पना करना। २-शास्त्र के वास्तविक अर्थ को न बताकर अपना हेतु सिद्ध करने के लिए (झूठा) मनगढंत अर्थ बताना (जैन)।

भावय [संज्ञा पु.] (देश.) वह मनुष्य जो धातु की चद्दर पीटने के समय पासे को संड़ासे से पकड़े रहता तथा उलटता रहता है।

भावयितव्य [वि.] (सं.) चिंता के योग्य।

भावयिता [वि.] (सं.) पालने पोसने वाला।

भावरूप [वि.] (सं.) प्रकृत। यथार्थ।

भावलिंग [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग विषयक भाव या विचार।

भावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत की उपज की बँटाई जो जमीदार और आसामी के बीच होती है।

भावलेश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार विचारों की रंगत या भावों का आवरण जो आत्मा पर चढ़ता रहता है।

भाववाचक [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित करने वाली संज्ञा।

भाववाच्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह विदित होता है कि वाक्य का उद्देश्य उस क्रिया का कर्ता और कार्य नहीं, परन्तु केवल कोई भाव है। इसमें कर्ता के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

भावविकार [संज्ञा पु.] (सं.) यास्क के मतानुसार जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धनं, क्षय तथा नाश ये छः विकार जिनके अधीन जीव तब तक रहता है, जबतक उसे ज्ञान नहीं होता।

भाववृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

भावशबलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अलंकार जिसमें कई भावों की संधि होती है।

भावसंधि, भावसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है।

भावसंवर, भावसम्वर [संज्ञा पु.] (सं.) जैन मतानुसार वह शक्ति अथवा क्रिया जिससे मन में नवीन भावों का ग्रहण रुक जाता है।

भावसत्य [वि.] (सं.) ऐसा सत्य जो ध्रुव न होने पर भी भाव की दृष्टि से सत्य हो।

भावसबलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालंकार जिसमें कई एक भावों का एक साथ वर्णन किया जाता है।

भावसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्य के अनुसार तन्मात्राओं की उत्पत्ति।

भावहिंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऐसी हिंसा केवल भाव में हो पर द्रव्य में न हो।

भावात्मक [वि.] (सं.) किसी विषय की अवस्था का सूचक।

भावाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-होना और न होना। २-उत्पत्ति और लय का नाश। का भूत में होने वाला परिवर्तन (जैन)।

भावाभास [संज्ञा पु.] (सं.) एक अलंकार।

भावार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अर्थ जिससे का भाव मात्र हो। २-अभिप्राय। आशय। तात्पर्य।

भावालंकार, भावालङ्कार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अलंकार।

भावाश्रित [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह नृत्य जिसमें अङ्ग-संचालन के द्वारा भाव बताया जाय। २-संगीत में हस्त का एक भेद।

भाविक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अनुराग जो अभी हुआ न हो पर होने वाला हो। २-वह अलंकार जिसमें भूत और भावी बातें प्रत्यक्ष के समान वर्णन की गई हों। [वि.] मर्म जानने या समझने वाला।

भावित [वि.] (सं.) १-सोचा हुआ। विचारा हुआ। २-मिलाया हुआ। ३-शुद्ध किया हुआ। ४-जिसमें पुट दिया गया हो। ५-सुवासित किया हुआ। ६-मिला हुआ। ७-अर्पित। भेंट किया हुआ।

भाविता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) होनहार। होनी।

भावित्र [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिलोक्य।

भाविन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीता की का नाम। २-होनहार। होनी। भावी।

भावी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भविष्यत्काल। वाला समय। २-भविष्य में अवश्य वाली बात। भवितव्यता। होनी। तकदीर।
[वि.] (हिं.) भविष्य में आने या होने वाला।

भावुक [वि.] (सं.) १-भावना करने वाला। वाला। २-जिसके मन में भावों का कोमल भावों का सहज में प्रभाव पड़े। ३-उत्तम भावना करने वाला।

भावै+ [अव्य.] (हिं.) चाहे।

भावोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध आदि दुर्भावों का त्याग।

भावोदय [संज्ञा पु.] (सं.) वह अलङ्कार जिसमें किसी भाव के उदय होने की वर्णन होता है।

भाव्य [वि.] (सं.) १-विचारणीय। २-साबित करने योग्य। ३-जिसका होना कुल निश्चित हो। भावी।

भाषक [वि.] (सं.) बोलने वाला। कहने वाला।

भाषज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) भाषा का ज्ञाता। जानकार।

भाषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बातचीत । कथन । २-व्याख्यान । वक्तृता ।

भाषना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-बोलना । कहना । २-खाना । भोजन करना ।

भाषांतर, भाषान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) एक भाषा के लेख का दूसरी भाषा में किया हुआ अनुवाद । उल्था । तरजुमा ।

भाषांतरित, भाषान्तरित [वि.](सं.) भाषान्तर या उल्था किया हुआ ।

भाषा [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख से निकलने वाली व्यक्त ध्वनियों अथवा सार्थक शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरों पर प्रकट किये जाते हैं । बोली । ज़बान । २-किसी देश के निवासियों द्वारा प्रचलित बातचीत करने का ढंग । बोली । ३-किसी विशेष जन समुदाय में प्रचलित बातचीत करने का ढंग । ४-आधुनिक हिन्दी । ५-एक रागिनी ६-सङ्गीत में ताल का एक भेद । ७-वह अव्यक्त ध्वनि जिससे पशु-पक्षी आदि अपने मन के भाव प्रकट करते हैं । ८-वाक्य । ९-वाणी । सरस्वती । १०-अभियोगपत्र ।

भाषाबद्ध [वि.] (सं.) १-भाषा के रूप में लाया हुआ । २-साधारण देशी भाषा में बना-हुआ ।

भाषातत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दतत्व का विज्ञान

भाषापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें कष्टों का निवेदन किया गया हो ।

भाषाविद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनेक भाषाएँ जानने वाला । २-किसी एक भाषा का पूर्ण पंडित ।

भाषासम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें केवल ऐसे शब्दों की योजना होती है, जो कई भाषाओं के समान अर्थ में चलते हों ।

भाषासमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार एक प्रकार का आचार जिसके अन्तर्गत ऐसी बातचीत आती है जिससे सब लोग प्रसन्न और संतुष्ट हों ।

भाषित [वि.] (सं.) कहा हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) कथन । बातचीत ।

भाषी [वि.] (हि.) बोलने वाला ।

भाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत्रों की व्याख्या या टीका । २-किसी गूढ़ विषय की विस्तृत व्याख्या अथवा विवेचन ।

भाष्यकार [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्रों की व्याख्या करने वाला ।

भास [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीप्ति । चमक । प्रभा । २-मयूख । किरण । ३-इच्छा । ४-गोशाला । ५-गीध । गृध । ६-कुक्कुट । ७-स्वाद । ८-मिथ्याज्ञान । ९-एक पर्वत का नाम । १०-शकुन्त पक्षी ।

भासक [वि.] (सं.) प्रकाशक । द्योतक ।

भासकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) रावण की सेना का मुख्य नायक ।

भासना [क्रि. अ.] (हि.) १-चमकना । २-मालूम होना । ३-देख पड़ना । ४-फँसना । लिप्त होना । * [क्रि. अ.] (हि.) कहना । बोलना

भासमंत, भासमन्त [वि.] (सं.) चमकदार । ज्योतिपूर्ण ।

भासमान [वि.] (सं.) जान पड़ता हुआ । दिखाई देता हुआ ।

भासिक [संज्ञा पु.](सं.) १-दिखाई पड़ने वाला । २-मालूम होने वाला ।

भासित [वि.] (सं.) प्रकाशित । चमकीला । तेजोमय ।

भासु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

भासुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोढ़ की दवा । २-स्फटिक । बिल्लौर । ३-वीर । बहादुर । [वि.] (सं.) चमकीला । चमक़दार ।

भास्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुवर्ण । सोना । २-सूर्य । ३-अग्नि । आग । ४-वीर । ५-आक या मदार का पेड़ । ६-शिव । महादेव । ७-ज्योतिष के एक आचार्य का नाम । महाराष्ट्र के ब्राह्मणों की एक पदवी । ८-पत्थर पर चित्र तथा बेलबूटे बनाने की कला ।

भास्करविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्थर पर चित्र और बेलबूटे बनाने की कला ।

भास्कराचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) भारतवर्ष के एक प्रधान ज्योतिर्विद का नाम ।

भास्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-आक । मदार । ३-दीप्ति । चमक । ४-वीर । बहादुर [वि.] १-चमकदार । चमकीला । २-चमकने वाला । प्रकाश करने वाला ।

भास्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीननदी का नाम ।

भास्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुष्ट या कोढ़ की दवा २-सूर्य । ३-दिन । ४-सूर्य का एक अनुचर । [वि.] चमकदार । चमकीला ।

भिंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिलनी या भृङ्गी नामक कीड़ा । २-भौंरा । [संज्ञा स्त्री.] बाधा

भिंगराज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भृंगराज' ।

भिंगाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'भिगोना' ।

भिंगोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भृंगराज । भँगरा २-भृंगराज पक्षी ।

भिंगोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भृङ्गराज नाम का पक्षी ।

भिंजाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'भिगोना' ।

भिंडा [संज्ञा पु.] (देश.) बड़ी सटक । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिंडी ।

भिंडि [संज्ञा पु.] (हि.) ढेलावाँस ।

भिंडिपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का डंडा जो प्राचीनकाल में फेंककर मारा जाता था ।

भिंडी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक पौधे की फली जिस की तरकारी बनाई जाती है । वैद्यक के अनुसार यह उष्ण, ग्राही और रुचिकारक होती है ।

भिंदीपाल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भिंडिपाल' ।

भिंसार [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रातःकाल । सवेरा । सुबह ।

भिआ [संज्ञा पु.] (हिं.) भाई । भइया ।

भिक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) भीख मांगना । भिक्षा या भीख मांगने की क्रिया ।

भिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-याचना । माँगना । २-दीनतापूर्वक खाने आदि के लिए अन्न, धन आदि मांगना । ३-भीख । ४-सेवा । चाकरी । नौकरी ।

भिक्षाक [संज्ञा पु.] (सं.) भीख मांगने वाला । भिक्षुक ।

भिक्षाकरण [संज्ञा पु.] (सं.) भीख मांगने का कार्य ।

भिक्षाचार [संज्ञा पु.] (सं.) भीख मांगने वाला ।

भिक्षाटन [संज्ञा पु.] (सं.) भीख मांगने के लिए इधर-उधर घूमना ।

भिक्षापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें भिखारी भीख मांगते हैं ।

भिक्षार्थी [वि.] (सं.) भिखमंगा । भिक्षुक ।

भिक्षावृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भीख मांगकर जीविका चलाना ।

भिक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) [भिक्षुणी] १-भिखमंगा । भिखारी । २-बौद्ध-संन्यासी । ३-संन्यासी । ४-गोरखमुण्डी ।

भिक्षुक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भिक्षुकी] भिखमंगा । भिखारी । [वि.] भीख मांगने वाला ।

भिक्षुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्ध-संन्यासिनी ।

भिक्षुरूप [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव ।

भिखमंगा [संज्ञा पु.] (हि.) भीख मांगने वाला । भिखारी । भिक्षुक ।

भिखार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भिक्षुक । भिखारी ।

भिखारिणी, भिखारिन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) भीख मांगने वाली स्त्री ।

भिखारी [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. भिखारिन, भिखारिणी] भिक्षुक । वह जो भीख मांगता हो । भिखमंगा ।

भिखिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भिक्षा' ।

भिखियारी+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भिखारी' ।

भिगाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'भिगोना' ।

भिगोना [क्रि स.] (हि.) किसी वस्तु को पानी अथवा किसी तरल पदार्थ से तर करने के लिए उसमें डुबाना । भिगाना ।

भिच्छा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भिक्षा' ।

भिच्छु* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भिक्षु' ।

भिजवना* [क्रि. स.](हि.) १-पानी से तर करना २-किसी को भिगोने में प्रवृत्त करना ।

भिजवाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को भेजने में प्रवृत्त करना।

भिजवावर+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'भजियाउर'

भिजाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भिगोना। तर करना २-देखो 'भिजवाना'।

भिजोना, भिजोवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'भिगोना'।

भिज्ञ [वि.] (सं.) जानकार। ज्ञाता।

भिटका+ [संज्ञा पु.] (हि.) बमीठा। बामी।

भिटना+ [संज्ञा पु.] (देश.) छोटा गोलफल। [क्रि. अ.] (हि.) स्पर्श होना। छूजाना।

भिटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्तन का अग्रभाग। चूँची।

भिटाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'भेंटना'।

भिड़ंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भिड़ने की क्रिया या भाव। मुठभेड़।

भिड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ततैया। बर्रें।

भिड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-टक्कर खाना। टकराना। २-लड़ना। झगड़ना। ३-पास पहुँचना। ४-प्रसंग करना। मैथुन करना।

भिड़ज [संज्ञा पु.] (हिं.) शूर। वीर पुरुष।

भिड़ज्जाँ [संज्ञा पु] (डिं.) घोड़ा।

भितरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) मंदिर के भीतरी भाग में रहने वाला पुजारी। [वि.] भीतरी। अन्दर का।

भितल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) दोहरे कपड़े के अंदर का पल्ला। अस्तर। [वि.] भीतर या अन्दर का।

भितल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चक्की के नीचे का पाट।

भिताना* [क्रि. स.] (हिं.) डरना। भयभीत होना।

भित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दीवार। २-डर। भय। ३-टुकड़ा। ४-वह पदार्थ जिसपर चित्र अंकित किया जाता है।

भित्तिचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) दीवार अंकित किया हुआ चित्र।

भित्तिचौर [संज्ञा पु.] (हि.) दीवार में सेंध लगाकर चोरी करने वाला।

भिद [संज्ञा पु.] (सं.) भेद। अन्तर।

भिदना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अन्दर धसना। २-छेदा जानना। ३-घायल होना।

भिदुर [संज्ञा पु.] (हिं.) वज्र।

भिनकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भिनभिन शब्द करना (मक्खियों का)। २-किसी काम का अपूर्ण रह जाना। ३-घृणा उत्पन्न होना। *किसी पर मक्खियां भिनकना*-१-बिलकुल असमर्थ हो जाना। २-अत्यंत मलिन रहना।

भिनभिनाना [क्रि. अ.] (हिं.) भिनभिन शब्द करना।

भिनभिनाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भिनभिनाने की क्रिया या भाव।

भिनसहरा, भिनसार [संज्ञा पु.] (हिं.) सवेरा। प्रभात।

भिनहीं [क्रि. वि.] (हि.) सवेरे। तड़के।

भिन्न [वि.] (सं.) १-अलग। पृथक। जुदा। २-दूसरा। अन्य। [संज्ञा पु.](सं.) १-इकाई से कुछ कम अथवा उसका कोई भाग सूचित करने वाली कोई संख्या। (गणित)। २-नीलम का एक दोष जिसके कारण पहनने वाले को पति-पुत्रादि का शोक प्राप्त होना माना जाता है। ३-किसी तेज धार वाले अस्त्र आदि से शरीर के किसी भाग का कट जाना। (वैद्यक)

भिन्नक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध।

भिन्नकर्ण [वि.] (सं.) जिसके कान कट गये हों। कटे हुए कान वाला।

भिन्नकूट (सैन्य) [वि.] (सं.) बिना सेनापति की (सेना)।

भिन्नगर्भ (सैन्य) [वि.](सं.) तितर-बितर की हुई (सेना)।

भिन्नजातीय [वि.] (सं.) अलग-अलग जाति या संप्रदाय का।

भिन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिन्न या अलग होने का भाव। भेद। अलगाव।

भिन्नत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भिन्नता'।

भिन्नमनुष्या [वि.] (स.) [स्त्री. प्र.] (वह भूमि) जिसमें अलग-अलग जातियों, स्वभावों और पेशों के लोग बसते हों।

भिन्नमुद्र [वि] (सं.) जिसकी मुद्रा या मोहर टूट गई हो।

भिन्नलिंग, भिन्नलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अलङ्कार जिसमें भिन्न वचन और भिन्न लिंग द्वारा उपमा दी जाती है। २-पृथक लिंग या चिह्न।

भिन्नवर्ण [संज्ञा पु] (सं.) पृथक वर्ण। भिन्नरंग

भिन्नाना [क्रि. अ.](हिं.) १-(बदबू आदि से) सिर चकराना। २-खिजलाना।

भियना* [क्रि. अ.] (हिं.) डरना। भयभीत होना

भिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भाई। भ्राता।

भिरना [क्रि. स] (हिं.) देखो 'भिड़ना'।

भिरिंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भृंग'।

भिलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भील जाति की एक स्त्री। २-भील की स्त्री।

भिलावाँ [संज्ञा पु.](हिं.) एक जङ्गली वृत्त जिसका जहरीला फल औषधि के काम में आता है।

भिल्ल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भील'।

भिल्लतरु [संज्ञा पु.] (सं.) लोध।

भिश्त* [संज्ञा स्त्री.](फा.) स्वर्ग। वैकुण्ठ।

भिश्ती [संज्ञा पु.] (?) मशक में पानी भर कर ढोने वाला आदमी। सक्का। मशकी।

भिषक् [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्य।

भिषक्प्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुडुच।

भिषग्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी। ह

भिषज [संज्ञा पु] (सं.) वैद्य।

भिष्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) मल। गू। विष्ठा।

भिसज [संज्ञा पु.] (डि.) वैद्य।

भिसटा [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्ठा। गू। मल।

भिसर [संज्ञा पु.] (डि.) ब्राह्मण।

भिसिणी [संज्ञा पु.] (डि.) व्यसनी।

भिस्त [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बिहिश्त'।

भिस्स [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कमल की जड़। भसींड़

भिस्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अन्न। अनाज।

भींगना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो भीगना।

भींगी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भौंरा। भृंग। २-एक प्रकार का फतिंगा।

भींचना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-खींचना। कसना। दबाना। २-मूँदना। ढाँपना। बन्द करना (आँख)।

भींजना* [क्रि. अ.](हिं.) १-गीला होना। भीगना। २-पुलकित या गद्गद् हो जाना। ३-किसी के साथ हेलमेल बढ़ाना। ४-नहाना। स्नान करना। ५-समा जाना।

भींट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भीट'।

भींत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भीत'।

भी [अव्यय] (हिं.) १-अवश्य। निश्चय करके। जरूर। २-अधिक। ज्यादा। विशेष। ३-तक। लौं। * [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भय। डर।

भीउँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) भीमसेन। (पांडव)

भीक [वि.](सं.) भीत। डराहुआ। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भीख'।

भीख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दीनतापूर्वक अपनी पूर्ति के लिए कुछ मांगना। भिक्षा। २-भिक्षा में मिला धन या पदार्थ। खैरात।

भीखन* [वि.] (हि.) भयानक। डरावना।

भीखम* [संज्ञा पु.] (हि.) राजा शांतनु के पुत्र भीष्मपितामह। [वि.] भयानक। डरावना।

भीगना [क्रि. अ.] (हिं.) पानी या किसी तरल पदार्थ के संयोग से तर या मुलायम होना। आर्द्र होना। *भीगी बिल्ली होना*-भय के कारण बिलकुल चुप रहना।

भीचर [संज्ञा पु.] (डि.) सुभट। वीर।

भीजना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भीगना'।

भीट [संज्ञा पु] (देश.) १-उभरी हुई पृथ्वी। टीलेदार भूमि। २-वह ऊँची भूमि जहाँ पान की खेती होती है। ३-एक प्रकार की ढौल जो प्रायः मन भर के बराबर की होती है।

भीटन [संज्ञा स्त्री.] देखो 'भीटा'।

भीटा [संज्ञा पु.] (देश.) १-टीले के समान कुछ ऊँची जमीन। २-टीले के समान बनाई हुई वह ढालुआँ ऊँची जमीन जिस पर पान के पौधे लगाये जाते हैं।

भीड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक समय में एक स्थान पर होने वाला बहुत से आदमियों का जमाव। जनसमूह। २-संकट। आपत्ति। मुसीबत। ३-किसी बात की अधिकता। *भीड़ चीरना*-जाने को मार्ग बनाने के लिए जनसमूह को हटाना। *भीड़ छंटना*-जनसमूह का न रह जाना।

भीड़न* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मलने, लगाने अथवा भरने की क्रियां।

भीड़ना* [क्रि. स.](हि.) १-मिलाना। लगाना। २-मलना।

भीड़भड़क्का [संज्ञा पु.] (हि.) बहुत से आदमियों का जमाव। भीड़भाड़।

भीड़भाड़ [संज्ञा स्त्री.](हि.) बहुत से मनुष्यों का समूह। जनसमूह।

भीड़ा+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भीड़'। [वि.] संकुचित। तंग।

भीड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भिंडी। रामतरोई २-जनसमूह। भीड़।

भीत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दीवार। भित्तिका। २-विभाग करने वाला परदा। ३-चटाई। ४-छत। गच। ५-खंड। टुकड़ा। ६-दरार। ७-स्थान। ८-कसर। त्रुटि। ९-अवसर। अवकाश। *भीत में दौड़ना*-सामर्थ्य से बाहर अथवा असम्भव कार्य करना। *भीत के बिना चित्र बनाना*-बिना किसी आधार के कोई काम करना। [वि.] (सं.) [स्त्री. भीता] डरा हुआ। [संज्ञा पु.] भय। डर।

भीतर [क्रि. वि.] (?) अन्दर। में। *भीतर का कूआँ*-वह उपयोगी पदार्थ जिससे कोई लाभ न उठा सके। *भीतर पैठकर देखना*-असलियत जाँचना। [संज्ञा पु.] (?) १-अन्तःकरण। हृदय। २-रनिवास। जनानखाना। *भीतर ही भीतर*-मन-ही-मन।

भीतरा+ [वि.] (हिं.) भीतर या जनानखाने में आने-जाने वाला।

भीतरि* [अव्य.] (हिं.) देखो 'भीतर'।

भीतरिया [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह जो भीतर रहता हो। २-मन्दिर के भीतर मूर्त्ति के पास रहने वाला। प्रधान पुजारी। [वि.] भीतर वाला। अन्दर का।

भीतरी [वि.] (हि.) १-अन्दर का। २-छिपा-हुआ। गुप्त।

भीतरीटांग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच

भीति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-डर। भय। खौफ। २-कंप। ३-दीवार।

भीतिकर [वि.] (सं.) भयंकर। भयावना। डरावना।

भीतिकारी [वि.] (सं.) भयानक। डरावना।

भीती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दीवार। २-डर। भय। (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

भीन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रातःकाल। सबेरा।

भीनना [क्रि. अ.] (हिं.) भर जाना। समा जाना।

भीम [संज्ञा पु.] (सं.) १-भयानक रस। २-शिव। ३-विष्णु। ४-अम्लवेत ५-महादेव की आठ मूर्त्तियों में से एक। ६-एक गंधर्व का नाम। ७-विदर्भ के एक राजा। ८-महर्षि विश्वामित्र के पूर्व पुरुष जो पुरुरवा के पौत्र थे। ९-कुम्भकर्ण के पुत्र का नाम। १०-युधिष्ठिर के छोटे भाई भीमसेन जो अर्जुन से बड़े थे। *भीम के हाथी*-भीमसेन के फेंके हुए हाथी। (कहा जाता है कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी ऊपर फेंके थे जो आज तक आकाश में चक्कर खा रहे हैं)। [वि.] (सं.) १-भीषण। भयानक। भयंकर। २-बहुत बड़ा

भीमक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे। (पुराण)।

भीमकुमार [संज्ञा पु.](सं.) भीमसेन के पुत्र घटोत्कच।

भीमचंडी, भीमचण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम।

भीमता [संज्ञा स्त्री.](सं.) भयानकता। भयङ्करता डरावनापन।

भीमतिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघसुदी एकादशी

भीमनाद [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

भीमपलाशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी जो २१ दंड से २४ दंड तक गाई जाती है।

भीमबल [संज्ञा पु.] (सं) १-एक प्रकार की अग्नि २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

भीममुख [वि.] (सं.) डरावने मुख वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाण जिसका उल्लेख रामायण में मिलता है।

भीमर [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। समर।

भीमरथ [संज्ञा पु.](सं.) १-एक असुर जिसे विष्णु ने कूर्म अवतार में मारा था। २-धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम। ३-विकृति के एक पुत्र का नाम

भीमरथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक नदी जिसका मांहात्म्य पुराणों में मिलता है। २-मनुष्य की वह अवस्था जो ७७वें वर्ष के सातवें मास की सातवीं रात समाप्त होने पर होती है। (वैद्यक)।

भीमरा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दक्षिण भारत की एक नदी जिसे भीमा भी कहते हैं।

भीमराज [संज्ञा पु.] (हिं.) काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया जिसकी बोली बड़ी रसीली होती है।

भीमरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भयावनी रात।

भीमरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

भीमल [वि.] (सं.) भयङ्कर। डरावना।

भीमविक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

भीमशासन [संज्ञा पु.] (सं.) कठोर शासन।

भीमसेन [संज्ञा पु.](सं.) १-युधिष्ठिर के छोटे भाई भीम जो अर्जुन से बड़े थे। २-एक प्रकार का कपूर।

भीमसेनी [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का कपूर। बरास। [वि.](हि.) भीमसेन का। भीमसेन-संबंधी।

भीमसेनी-एकादशी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। जिसे निर्जला-एकादशी भी कहते हैं। २-माघशुक्ला-एकादशी।

भीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोचन नामक गंध द्रव्य। २-कोड़ा। चाबुक। ३-दक्षिण भारत की एक नदी का नाम। यह पश्चिमी घाट से निकल कर कृष्णानदी में मिलती है। ४-दुर्गा ५-४० हाथ लम्बी, २० हाथ चौड़ी तथा १० हाथ ऊँची नाव। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] भीषण। भयंकर।

भीमू [संज्ञा पु.] (डिं.) भीमसेन।

भीमोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) कुष्मांड। कुम्हड़ा।

भीमोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम।

भीम्राथली [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े की एक जाति।

भीर* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'भीड़'। २-कष्ट। दुःख। ३-विपत्ति। आफत। [वि.] (हिं.) १-डराहुआ। भयभीत। २-डरपोक। डरने वाला। कायर।

भीरना* [क्रि. अ.] (हिं.) डरना। भयभीत होना।

भीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसमें गोंद और तेल निकलता है। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भीड़'। [वि.] (हि.) डरपोक। कायर।

भीरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अरहर का टाल।

भीरु [वि.] (सं.) डरपोक। कायर। बुजदिल। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शतावरी। २-कंटकारी ३-बकरी। ४-छाया। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सियार। गीदड़। शृगाल। २-बाघ। ३-ऊख की एक जाति।

भीरुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन। जङ्गल। २-चांदी। ३-उल्लू। ४-एक प्रकार की ईख। [वि.] (सं) डरपोक। कायर।

भीरुता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कायरता। बुजदिली २-डर। भय।

भीरुताई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भीरुता'।

भीरुपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतमूली।

भीरुहृदय [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन।

भीरू [वि.] (हिं.) देखो 'भीरु'। [संज्ञा स्त्री.] स्त्री। औरत।

भीरे* [क्रि. वि.] (हिं.) पास। समीप। नजदीक

भील [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. भीलनी] एक प्रसिद्ध जङ्गली जाति। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ताल की सूखी मिट्टी जो पपड़ी के रूप में होती है।

भीलभूषण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुंजा। घुँघची।

भीलु [वि.] (सं.) भीरु। डरपोक।

भीलुक [संज्ञा पु.] (सं.) भालू। [वि.] भीरु। डरपोक।

भीवँ* [संज्ञा पु] (हिं.) भीमसेन।

भीष* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भीख। भिक्षा। खैरात

भीषक [वि.] (सं.) भीषण। भयंकर।

भीषज* [संज्ञा पु.] (हिं.) चिकित्सक। वैद्य।

भीषण [वि.] (सं.) १-भयानक। डरावना। २-विकट। घोर। [संज्ञा पु.] १-भयानक रस। २-कुँदरू। ३-कबूतर। ४-एक प्रकार का तालवृक्ष। ५-शिव। ६-सलाई। ७-ब्रह्मा।

भीषणक [वि.] (सं.) डरावना।

भीषणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भीषण होने का भाव। भयंकरता। डरावनापन।

भीषणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता की एक सहेली का नाम।

भीषन* [वि.] (हि.) देखो 'भीषण'।

भीषम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भीष्म'।

भीष्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा शांतनु के पुत्र जो गङ्गा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवव्रत। गांगेय। २-भयानक रस (साहित्य)। ३-राक्षस। ४-शिव। महादेव। ५-देखो 'भीष्मक' [वि.] (सं.) भीषण। भयंकर।

भीष्मक [संज्ञा पु.] (सं.) विदर्भदेश के राजा का नाम।

भीष्मकसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भीष्मक की कन्या और श्रीकृष्ण की स्त्री रुक्मणी।

भीष्मगंधक, भीष्मगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) माधवी-लता।

भीष्मपंचक, भीष्मपञ्चक [संज्ञा पु.](सं.) कार्तिक-शुक्ला एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक की पांच तिथियां। इन दिनों में लोग व्रत करते हैं।

भीष्मपितामह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भीष्म'।

भीष्ममणि [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का सफेद पत्थर या मणि जिसका धारण करना शुभ समझा जाता है, यह हिमालय के उत्तर में पाई जाती है।

भीष्मसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

भीष्मस्वरराज [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम

भीष्माष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघशुक्ला-अष्टमी, जिस दिन भीष्म ने प्राण त्यागे थे।

भीसम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भीष्म'।

भुँइ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी। भूमि।

भुँइचाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भूचाल। भूकंप।

भुँइघरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुँइहरा'।

भुँइफोर [संज्ञा पु.] (हिं.) बरसात में बाँबी के आसपास निकलने वाली एक प्रकार की खुम्भी।

भुँइहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जमीन के नीचे बना हुआ कमरा। तहखाना।

भुँइहरा [संज्ञा पु.](हिं.) १-भूमि के नीचे खोद-कर बनाया हुआ स्थान। २-वह कमरा जो भूमि के नीचे बना हो। तहखाना।

भुँकाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को भूँकने में प्रवृत्त करना।

भुँजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भुनना। २-झुलसना।

भुँजवा [संज्ञा पु.] (हिं.) भंड़भूँजा।

भुँटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुट्टा'।

भुँडली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार का कीड़ा जिसे पिल्ला या कमला भी कहते हैं।

भुँडा [वि.] (हिं.) १-बिना सींग का। २-दुष्ट। बदमाश।

भुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की छोटी मछली।

भुअंग* [संज्ञा.पु.](हि.)(स्त्री. भुअंगिन) साँप। सर्प।

भुअंगम* [संज्ञा पु.] (हिं.) साँप।

भुअन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुवन'।

भुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) सेमर आदि की रूई जो फल के अन्दर रहती है।

भुआर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुआल'।

भुआल* [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा।

भुइँ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि। जमीन।
भुँइ *खाना*-झुकाना।

भुइँआँवला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास जो दवा के काम में आती है।

भुइँकाँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास जिसकी जड़ में प्याज की तरह गोल गाँठ पड़ती है।

भुइँचाल, भुइँडोल [संज्ञा पु.] (हिं.) भूकंप। भूचाल।

भुइँतरवर [संज्ञा पु.] (हिं.) सनाय की जाति का एक वृक्ष।

भुइँदग्धा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मृतक को जलाने का श्मशान भूमि का कर। २-वह कर जो भूमि का मालिक किसी व्यवसायी से व्यवसाय करने के लिए ले।

भुइँधरा [संज्ञा पु.] (हिं.) समतल भूमि पर आवाँ लगाने की एक विधि।

भुइँनास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वायु के किनारे की भूमि को इस प्रकार गाड़ना कि उसका कुछ भाग जमीन के भीतर गड़ जाय। २-बिना जड़ का एक छोटा पौधा। की वह सिटकनी जो नीचे की ओर गड्ढे में बैठती है।

भुइँहार [संज्ञा पु.] (हि.) १-मिरजापुर जिले में रहने वाली एक जाति। २-देखो 'भूमिहार'।

भुई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पिल्ला नामक कीड़ा जिस के शरीर पर लम्बे बाल होते हैं।

भुक* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भोजन। आहार। २-अग्नि। आग।

भुकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (?) सड़े हुए खाद्य-पदार्थों पर निकलने वाली एक प्रकार की

भुकराँद, भुकराँदा, भुकरायँध [संज्ञा स्त्री.] वनस्पतियों आदि के सड़ने से आने वाली दुर्गंध।

भुक्खड़ [वि.] (हिं.) १-भूखा। २-जो खाता हो। पेटू। ३-दरिद्र। कंगाल।

भुक्त [वि.] (सं.) १-भक्षित। खाया हुआ। भोगा हुआ। भुक्त। ३-(अधिकारपत्र आदि) जिसका नगद रुपया अथवा प्राप्य वस्तु ली गई हो। जो भुना लिया गया हो।

भुक्तभोगी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने भोग

भुक्तशेष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खाने से बचा हुआ उच्छिष्ट।

भुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भोजन। आहार। लौकिक सुख। ३-कब्जा। दखल। ४-ग्रहों किसी राशि में एक-एक अंश करके गमन। अधिकार-पत्र के अनुसार नकद धन या और कोई वस्तु लेना। कैश।

भुक्तिपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन का पात्र।

भुक्तिप्रद [वि.](सं.) [स्त्री. भुक्तिप्रदा] भोग देने वाला।

भुखमरा [वि.] (हिं.) १-भुक्खड़। २-जो भूखों पीछे मरा जाता हो। पेटू।

भुखमरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अन्न के भूखों मरने की अवस्था। घोर अकाल।

भुखमुआ+ [वि.] (हिं.) देखो 'भुखमरा'।

भुखाना [क्रि. अ.] (हिं.) भूखा होना।

भुखालू [वि.](हि.) भूखा। जिसे भूख लगी हो

भुगत*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भुक्ति'।

भुगतना [क्रि. स.](हिं.) भोगना। सहना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-पूरा होना। निबटना। २-चुकना। बीतना। भुगत लेना-निबट लेना।

भुगतान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भुगताने की या भाव। २-मूल्य देना आदि चुकता देना। पेमेन्ट।

भुगताना [क्रि. स.] (हिं.) १-भुगतने का रूप। २-(काम आदि) पूरा करना।

करना। ३-बिताना। ४-(देन आदि) चुकाना। ५-दुःख देना या भोग वाना।

भुगाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'भोगवाना'।

भुगुति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भुक्ति'।

भुग्गा [वि.] (देश.) मूर्ख। [संज्ञा पु.] (देश.) तिल आदि का एक प्रकार से बनाया हुआ मीठा चूरा।

भुग्न [वि.] (सं.) १-वक्र। टेढ़ा। २-रोगी।

भुग्ननेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात रोग जिसमें आंखें टेढ़ी हो जाती हैं।

भुच्च, भुच्चड़ [वि.] (हिं.) मूर्ख।

भुजंग, भुजङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भुजंगिनी] १-साँप। सर्प। २-स्त्री का उपपति। जार। ३-सीसा नामक धातु। ४-राजा का एक पार्श्ववर्ती अनुचर।

भुजंगघातिनी, भुजङ्गघातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकोली।

भुजंगजिह्वा, भुजङ्गजिह्वा [संज्ञा स्त्री.](सं.) महासमंगा। कँगहिया।

भुजंगदमनी, भुजङ्गदमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाकुलीकंद।

भुजंगपर्णी, भुजङ्गपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदमनी।

भुजंगपुष्प, भुजङ्गपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक फूल के पेड़ का नाम।

भुजंगप्रयात, भुजङ्गप्रयात [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते हैं जिसमें पहला, चौथा, सातवाँ तथा दसवाँ वर्ण लघु और बाकी सब गुरु होते हैं या प्रत्येक चरण चार यगण का होता है।

भुजंगभुज, भुजङ्गभुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़ २-मोर।

भुजंगभोजी, भुजङ्गभोजी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भुजंगभोगिनी] १-गरुड़। २-मोर।

भुजंगम, भुजङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-सीसा नामक धातु।

भुजंगविजृंभित, भुजङ्गविजृंभित [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः २ मगण, १ तगण, ३ नगण, १ रगण, १ सगण और अन्त में एक लघु और एक गुरु होता है

भुजंगसंगता, भुजङ्गसङ्गता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में नौ वर्ण होते हैं। यह क्रमशः सगण, जगण और रगण होते हैं।

भुजंगा [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का पक्षी जो काले रंग का होता है। २-देखो 'भुजंग'।

भुजंगाक्षी, भुजङ्गाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना।

भुजंगाख्य, भुजङ्गाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

भुजंगिनी, भुजङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-'गोपाल' नामक छंद। २-सांपिन। नागिन।

भुजंगी, भुजङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सांपिन। नागिन। २-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं जिसमें क्रमशः तीन यगण और अन्त में एक लघु और एक गुरु होता है।

भुजंगेंद्र, भुजङ्गेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

भुजंगेरित, भुजङ्गेरित [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद का नाम।

भुजंगेश, भुजङ्गेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-वासुकि। २-शेष। ३-पिंगलमुनि का नाम। ४-पतंजली का एक नाम।

भुज [संज्ञा पु] (सं.) १-बाहु। बांह। २-हाथ ३-हाथी का सूंड। ४-शाखा। डाली। ५-किनारा। मेंड़। ६-फेंटा। लपेट। ७-ज्यामित में किसी क्षेत्र का किनारा अथवा किनारे की रेखा। ८-समकोण का पूरक कोण। ९-दो की संख्या का सूचक शब्द। १०-त्रिभुज का आधार। ११-छाया का मूल या आधार। १२-ज्योतिष के अनुसार तीन राशियों के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति अथवा खगोल का वह अंश जो तीन राशि से कम हो। *भुज मे मारना*-आलिंगन करना। अङ्क भरना।

भुजइल* [संज्ञा पु.](हिं.) भुजङ्गा नामक पक्षी।

भुजकोटर [संज्ञा पु.] (सं.) बगल। काँख।

भुजग [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-अश्लेषा-नक्षत्र। ३-सीस नामक धातु।

भुजगदारण [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

भुजगनिसृता [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं। छठा, आठवां और नवां अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं।

भुजगपति [संज्ञा पु.] (सं.) वासुकि। अनंत।

भुजगशिशुभृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नौ अक्षर होते हैं जिनमें पहले दो नगण और अन्त में एक मगण होता है।

भुजगाशन [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

भुजगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांपिन। सर्पिणी।

भुजगेंद्र, भुजगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

भुजगेश, भुजगेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

भुजज्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) त्रिकोणमिति के अनुसार भुज की ज्या।

भुजदंड, भुजदण्ड [संज्ञा पु.](सं.) बाहुरूपी दंड

भुजदल [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली।

भुजपात* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भोजपत्र'।

भुजपाश [संज्ञा पु.] (सं.) दोनों हाथों की वह मुद्रा जिससे किसी को गले लगाते हैं।

भुजप्रतिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) सरल क्षेत्र का समानांतर अथवा आमने सामने की भुजाएं

भुजबंद [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'भुजबंध'। २-बाजूबंद।

भुजबंध, भुजबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-अङ्गद २-भुजवेष्ठन।

भुजबल [संज्ञा पु.] (हिं.) शालिहोत्र के मतानुसार एक भौंरी जो घोड़े के अगले पैर के ऊपर होती है। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बाहुबल'।

भुजबाथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुजपाश'।

भुजमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-खवा। मोढ़ा। २-काँख।

भुजवा [संज्ञा पु.] (हि.) भड़भूंजा।

भुजशिखर, भुजशिर [संज्ञा पु.] (सं.) कंधा।

भुजांतर, भुजान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोड़। गोद। २-वक्ष। छाती। ३-दो भुजाओं का अन्तर।

भुजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) बाँह। हाथ। *भुजा उठाना* प्रतिज्ञा करना।

भुजाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ।

भुजादल [संज्ञा पु.] (सं.) करपल्लव।

भुजाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'भुनाना'।

भुजामध्य [संज्ञा पु.] (सं.) कोहनी। केहुनी।

भुजामूल [संज्ञा पु.] (सं.) बगल। काँख।

भुजाली [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की बरछी।

भुजिया+ [संज्ञा पु.](हि.) १-उबाला हुआ धान २-उबाले हुए धान का चावल। ३-वह तरकारी जिसमें शोरवा नहीं होता और सूखी ही भूनकर बनाई जाती है।

भुजिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. भुजिष्या) दास। सेवक।

भुजिष्या[संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दासी। २-गणिका। वेश्या।

भुजेना [संज्ञा पु.] (हिं.) भूना हुआ दाना। चबैना। भूना।

भुजैल[संज्ञा पु.] (हिं.) भुजंगा नाम का पक्षी।

भुजौना* [संज्ञा पु.] (हि.) १-भुंना हुआ अन्न। भुजैना। २-भूनने की मजदूरी। ३-नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाने वाला धन या रुपया।

भुज्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पात्र। २-अग्नि। ३-एक वैदिककाल के राजा का नाम।

भुटिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) डोरिया और चारखाना बुनने में डाली जाने वाली एक प्रकार की धारी।

भुट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मक्के, ज्वार, बाजरे आदि की बाल। २-गुच्छा।

भुठार, भुठौर [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े की एक जाति।

भुड़ली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का फूल।

भुड़ारी [संज्ञा पु.] (हिं.) बाल के डंठल के साथ लगा हुआ अन्न का दाना।

भुथरा [वि.] (हिं.) देखो 'भोथरा'।

भुन [संज्ञा पु.] (हिं.) अव्यक्त गुंजार या मक्खी आदि का शब्द। *भुनभुन करना*–अस्पष्ट स्वर में कुछ कुढ़कर कहना।

भुनगा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. भुनगी) १-फूलों और फलों पर उड़ने वाला एक कीड़ा। २-कोई उड़ने वाला कीड़ा या फतिंगा। ३-बहुत ही तुच्छ या निर्बल मनुष्य।

भुनगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ईख के पौधे को हानि पहुँचाने वाला छोटा कीड़ा।

भुनना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भूना जाना। २-आग की गरमी से पककर लाल होना। ३-रुपये, नोट आदि को छोटे सिक्कों में परिणत करना।

भुनभुनाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भुनभुन शब्द करना। २-मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहना। बड़बड़ाना।

भुनवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूनने की क्रिया या भाव। २-भूनने की मजदूरी।

भुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भुनवाई'।

भुनाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे को भूनने के लिए प्रेरणा करना। २-बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में परिणत करना।

भुनुगा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भुनगा'।

भुन्नास [संज्ञा पु.] (देश.) लिंग। पुरुष की इन्द्रिय (बाजारू)।

भुन्नासी [संज्ञा पु] (देश.) एक प्रकार का बड़ा ताला।

भुवि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी।

भुमिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भूमिया'।

भुरकना [क्रि. अ.] हिं.) १-सूखकर भुरभुरा होना। २-भूलना। ३-भुरभुराना। बुरकना।

भुरका [संज्ञा पु.] (हि.) १-बुकनी। अबीर। २-मिट्टी का बड़ा कसोरा। कुल्हड़। ३-मिट्टी की दवात। बुदका।

भुरकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भुरभुरा करना। २-छिड़कना। भुरभुराना। ३-भुलवाना। बहकाना।

भुरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अन्न रखने का कोठिला। हौज। २-छोटा कुल्हड़।

भुरकुटा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटा मकोड़ा।

भुरकुन [संज्ञा पु.] (हिं.) चूर्ण। चूरा।

भुरकुस [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु का वह रूप जो उसे खूब कुचलने या कूटने से प्राप्त होता है।

भुरकुस निकालना-१-मारते-मारते बेदम करना। २-बेकाम करना। ३-नष्ट या बरबाद करना।

भुरजी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भड़भूँजा।

भुरत [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बरसाती घास।

भुरता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भरता नामक सालन २-वह पदार्थ जो दब या कुचल कर विकृतावस्था को प्राप्त हो गया हो।

भुरता करना या कर देना-कुचल कर पीस देना।

भुरभुर [संज्ञा स्त्री.](देश.) ऊपर या रेतीली भूमि में होने वाली एक घास। [संज्ञा पु.] (हिं.) बुक्का। [वि.] (देश.) देखो 'भुरभुरा'।

भुरभुरा [वि.](देश.) तनिक-सा आघात पाकर चूर-चूर हो जाने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) 'भुरभुर' नामक घास।

भुरभुराना* [क्रि. स.] (हिं.) १-छिड़कना। बुरकना। २-भुरभुरा करना।

भुरभुराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुरभुरा होने की क्रिया या भाव। भुरभुरापन।

भुरभुरोई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

भुरली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भुडली। कमला। २-उपज को हानि पहुँचाने वाला कीड़ा।

भुरवना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भ्रम में डालना। २-फुसलाना।

भुराई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) भोलापन। [संज्ञा पु.] (हिं.) भूरापन।

भुराना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भूलना। २-देखो 'भुरवाना'।

भुरुंड, भुरुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-भारुण्ड नामक एक पक्षी। २-एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम

भुरुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भुरका'।

भुर्रा [वि.] (हिं.) अतिशय काला। घोर कृष्ण।

भुलक्कड़ [वि.] (हिं.) जिसका स्वभाव भूलने वाला हो।

भुलना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास। २-भूलने वाला व्यक्ति। *भुलना खरखाना*–विस्मरणशील होना।

भुलभुला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गरम राख।

भुलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भ्रम में डालना। २-भुलाना।

भुलसना [क्रि. अ](हिं.) गरम राख में झुलसना।

भुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-भूलने का प्रेरणार्थक रूप। २-भ्रम में डालना। ३-विस्मृत करना। भूलना। *[क्रि. अ.] (हिं.) १-भ्रम में पड़ना २-भटकना। राह भूलना। ३-भूल जाना। बिसरना।

भुलावा [संज्ञा पु.] (हिं.) छल। धोखा। चक्कर।

भुवंग [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. भुवंगिन, भुवंगिनी] सांप।

भुवः [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि तथा सूर्य के बीच का लोक या आकाश। अन्तरिक्ष लोक।

भुव [संज्ञा पु.] (सं) अग्नि। आग। * [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पृथ्वी। २-भौंह। भू।

भुवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जगत्। २-
जन। लोग। ४-लोक। (पुराणानुसार
चोदह हैं--सात सर्ग तथा सात पाताल।
भुव, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य
सात सर्ग (ऊपर के) लोक हैं और अतल,
वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल,
पाताल यह सात नीचे है। ५-चौदह
६-सृष्टि। ७-एक मुनि का नाम।

भुवनकोश [संज्ञा पु.] (सं) १-भूमंडल। पृथ्वी।
२-ब्रह्मांड।

भुवनेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव की एक मूर्ति
का नाम। २-ईश्वर।

भुवनेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्ति की एक मूर्ति
का नाम।

भुवनेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध
स्थान जो उड़ीसा में पुरी के पास है। २-
शिव की वह प्रधान मूर्ति जो भुवनेश्वर में

भुवनेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रानुसार एक
का नाम।

भुवन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-
चन्द्र। ४-प्रभु।

भुवपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूपति। राजा। २-
एक देवता का नाम।

भुवपाल* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भूपाल'।

भुवर्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तरिक्ष लोक।

भुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) रुई। घूआ।

भुवार* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भुवाल'।

भुवाल* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'राजा'।

भुवि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भूमि। पृथ्वी।

भुशुंडी, भुशुण्डी [संज्ञा पु.](सं.)
[संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार का अस्त्र जिसका
प्रयोग महाभारत में हुआ था।

भुस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भूसा'।

भुसी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भूसी'।

भुसुंडी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुशुंडी'।

भुसेहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भुसौरा'।

भुसौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ
भूसा रखा जाता है।

भूँई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि। पृथ्वी।

भूँकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-(कुत्ते आदि का)
भूँ-भूँ या भौं-भौं शब्द करना। २-
बकना।

भूँख+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भूख'।

भूँखा [वि.] (हिं.) देखो 'भूखा'।

भूँचाल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भूकंप'।

भूँजना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु को
में डालकर अथवा किसी प्रकार की
पहुँचाकर पकाना। २-तलना। पकाना।

सताना। दुःख देना। * ४-भोगना। भोग करना।

भूँजा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भुना अन्न। चबेना। २-भड़भूँजा।

भूँडरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माफी की जमीन जो नाई, धोबी आदि को जमींदार की ओर से दी गई हो।

भूँड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) मांगे हुए हल-बैलों से खेती करने वाला आदमी।

भूँडोल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भूकंप'।

भूँभाई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जिसे गांव का स्वामी किसी अन्य स्थान से बुलाकर अपने यहां बसावे।

भूँगा [संज्ञा पु.] (हि.) भौंरा। भ्रमर।

भूँसना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भूँकना'।

भू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-स्थान। जगह। ३-सत्ता। ४-प्राप्ति। ५-यज्ञ की अग्नि। ६-सीता की एक सहेली का नाम। [संज्ञा पु.] रसातल। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भौंह। भ्रू।

भूअभिलेख [संज्ञा पु.] (सं.) वह अभिलेख जो भूमि के नाप-जोख, स्वामित्व आदि के संबंध में हो। लैंड-रेकर्डस्।

भूआ [संज्ञा पु.] (हिं.) रूई का सा हलका और मुलायम वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बुआ'।

भूई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भूआ' (पु.)।

भूकंद, भूकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) सूरन। ओल। जमींकन्द।

भूकंप, भूकम्प [संज्ञा पु.] (सं) कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के भीतरी भाग में कुछ उथल-पुथल होने से ऊपरी भाग का सहसा हिल उठना। भूचाल। भूडोल। जलजला।

भूक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भूख'।

भूकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भूँकना'।

भूकपित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कैथ।

भूकर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भू-चुंगी'।

भूकर्ण [संज्ञा पु.] (हि.) ज्योतिष-शास्त्र में निरक्ष-मंडल का व्यासार्ध।

भूकर्बुदारक [संज्ञा पु.] (सं) लिसोड़ा।

भूकश्यप [संज्ञा पु.] (सं.) वसुदेव।

भूकाक [संज्ञा पु.] (सं.) १ एक प्रकार का छोटा बाज-पक्षी। २-नीला कबूतर। ३-कौंचपक्षी।

भूकुष्मांडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुईं कुम्हड़ा।

भूकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसकी जटाएँ जमीन पर लटकती हैं। वटवृक्ष। २-सेवार।

भूकेशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राक्षसी।

भूक्षीरी [संज्ञा पु.] (सं.) सोमराज नामक वृक्ष।

भूक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

भूख [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-शरीर का वह वेग जिसमें खाने की इच्छा हो। क्षुधा। २-आवश्यकता। जरूरत। ३-समाई। गुंजाइश ४-कामना। अभिलाषा।

भूख मरना-पेट खाली होने पर भी भोजन की इच्छा न रहना। *भूख लगना*-भोजन करने की इच्छा होना। *भूखों मरना*-भूख लगने पर भोजन न मिलने के कारण कष्ट उठाना या मरना।

भूखण, भूखन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भूषण'

भूखना* [क्रि. स.] (हिं.) भूषित करना। सजाना

भूखर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूख। क्षुधा। २-इच्छा।

भूख-हड़ताल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अनशन'।

भूखा [वि.] (हिं.) [स्त्री. भूखी] १-क्षुधित। जिसे भूख लगी हो। २-किसी बात का अभिलाषी इच्छुक। ३-दरिद्र। गरीब।

भूगंधा, भूगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुरा नामक गंधद्रव्य।

भूगर [संज्ञा पु.] (सं.) विष। जहर।

भूगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी का भीतरी भाग २-विष्णु।

भूगर्भगृह [संज्ञा पु.] (सं.) तहखाना।

भूगर्भशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग किन-किन तत्वों से बने हैं, उसकी भीतरी भाग में क्या-क्या वस्तुएँ हैं तथा उसे अपना वर्तमान रूप किस प्रकार प्राप्त हुआ है। *जियॉलोजी*।

भूगोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी। २-वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी तथा उसके प्राकृतिक विभागों आदि (जैसे पहाड़, महादेश, देश, नगर, नदी, समुद्र, झील, डमरूमध्य, वन आदि) का ज्ञान होता है। ३-वह ग्रंथ जिसमें पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप तथा प्राकृतिक विभागों आदि का विवेचन तथा वर्णन होता है। *जियॉग्रैफी*।

भूगोलविद्या [संज्ञा पु.] (सं.) वह विद्या जिसके द्वारा पृथ्वी की आकृति, धर्म, विभाग, गति और संबन्ध आदि जाना जाता है।

भूचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी की परिधि। २-विषुवतरेखा। ३-अयनवृत। ४-क्रांतिवृत।

भूचणक [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगफली।

भूचर [संज्ञा पु] (सं) १-भूमि पर रहने वाले प्राणी। २-तन्त्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि। ३-शिव। ४-दीमक।

भूचरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) योगशास्त्रानुसार समाधि अंग की एक मुद्रा जिसका निवास नाक में है तथा जिसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनों एकत्र हो जाती हैं।

भूचाल [संज्ञा पु.] (हिं.) भूकम्प। भूडोल।

भूचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी का मानचित्र।

भूचुंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह चुंगी या राजकर जो भू-सम्पत्ति पर लगता है। *एस्टेट-ड्यूटी*।

भूजंतु, भूजन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा।

भूजंबु, भूजम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-गेहूँ। २-बन-जामुन।

भूजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भुजिया'।

भूटान [संज्ञा पु.](हिं.) एक स्वाधीन पहाड़ी देश जो नैपाल के पूर्व में है।

भूटानी [वि.] (हिं.) भूटान देश का। भूटान-संबंधी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूटान देश का निवासी। २-भूटान देश का घोड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूटान देश की भाषा।

भूटिया-बादाम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पहाड़ी वृक्ष जिसे कपासी भी कहते हैं।

भूड़ [संज्ञा स्त्री.](देश) १-वह भूमि जिसमें बालु मिला होता है। २-कूएँ का सोत।

भूडोल [संज्ञा पु.] हिं.) भूकंप। भूचाल।

भूण [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जलयात्रा २-जलविहार

भूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वे मूलद्रव्य जिनकी सहायता से सृष्टि की रचना हुई है। २-सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर अथवा चर पदार्थ या प्राणी। ३-प्राणी। जीव। ४-सत्य। ५-वृत्त। ६-कार्तिकेय। ७-कृष्णपक्ष। ८-योगीन्द्र। ९-प्रेतों तथा पिशाचों का उपद्रव शांत करने वाली औषध। १०-लोध। ११-वसुदेव के बारह पुत्रों में से सबसे बड़े का नाम। १२-व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो किसी कार्य अथवा व्यापार के समाप्त हो चुकने का सूचक हो। १३-बीता हुआ समय। १४-मृतशरीर। शव। १५-मृत प्राणी की आत्मा। १६-एक प्रकार का पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं। यह बच्चों को पीड़ा देने वाले ग्रह कहे जाते हैं। १७-वे कल्पित आत्माएँ जिनके विषय में यह माना जाता है कि वे नाना प्रकार के उपद्रव करते और लोगों को कष्ट पहुँचाते हैं। प्रेत। जिन। शैतान।

भूत दया-जड़ और चेतन सब के साथ की जाने वाली दया। *भूत चढ़ना या सवार होना* १-बहुत अधिक आवेश या क्रोध होना। २-बहुत अधिक आग्रह या हठ होना। *भूत बनना* १-नशे में चूर होना। २-बहुत गुस्से में होना। ३-किसी काम में लीन होना। *भूत बनकर लगना*-बुरी तरह पीछे लगना। *भूत की मिठाई या पकवान*-१-वह वस्तु जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो। २-सहज में मिला धन जो जल्दी ही नष्ट हो जाय। [वि.] (हि.) १-बीता हुआ। गत। २-मिला हुआ। ३-समान। तुल्य। ४-जो हो-चुका हो।

भूतक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणवर्णित सुमेरु पर के २१ लोकों में से एक नाम।

भूतकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

भूतकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्ति विशेष जो पंचभूतों को उत्पन्न करने वाली मानी जाती है।

भूतकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बीता हुआ समय।

भूतकालिक [वि.] (सं.) अतीतकाल-संबंधी।

भूतकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-विष्णु।

भूतकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) दक्ष सावर्णि के एक पुत्र का नाम।

भूतकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद तुलसी। २-सफेद दूब। ३-इन्द्रवारुणी। ४-जटामासी।

भूतखाना [संज्ञा पु.] (हि.) बहुत मैलाकुचैला और अंधेरा घर।

भूतगंधा, भूतगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुर नामक गंधद्रव्य।

भूतघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊँट। २-भोजपत्र का वृक्ष। ३-लहसुन। [वि.] (सं.) भूतों का नाश करने वाला।

भूतघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी।

भूतचारी [संज्ञा पु.] (हि.) शिव।

भूतजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी।

भूततृण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक विष। २-एक गंधद्रव्य।

भूतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूत होने का भाव। २-भूत का धर्म।

भूतत्वविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शास्त्र जिस के द्वारा पृथ्वी के भीतर के पदार्थों के विषय में ज्ञान होता है।

भूतद्रावी [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कनेर।

भूतधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

भूतधाम [संज्ञा पु.] (सं.) राजा इन्द्र के एक पुत्र का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है

भूतनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूतनायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

भूतनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुद्राक्ष। २-सरसों ३-भिलावाँ।

भूतपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णपक्ष। अंधेरा पक्ष

भूतपति [संज्ञा पु] (सं.) १-शिव। २-काली तुलसी।

भूतपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी।

भूतपाल [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भूतपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) श्योनाकवृक्ष।

भूतपूर्णिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन पूर्णिमा जिसे शरद्पूर्णिमा भी कहते हैं।

भूतपूर्व [वि.] (सं.) वर्तमान समय से पहले का। इससे पहले का।

भूतभर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

भूतभव्य [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भूतभावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-विष्णु।

भूतभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैशाची भाषा।

भूतभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भूतभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) १-भैरव की एक मूर्ति का नाम। २-वैद्यक में काम आने वाला एक रस।

भूतमहेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भूतमात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाँच तन्मात्राएं।

भूतयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) गृहस्थों के पंचयज्ञों में से एक। भूतबलि। बलिवैश्व।

भूतराज [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग। धरातल। २-संसार। दुनिया। ३-पाताल।

भूतलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असबर्ग।

भूतवत् [वि.] (सं.) पहले के समान। पूर्ववत्।

भूतवाद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पदार्थवाद'।

भूतवादी [वि.] (सं.) ठीक बोलने वाला।

भूतवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु।

भूतवाहन [संज्ञा पु] (सं.) शिव। महादेव।

भूतविक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपस्मार रोग।

भूतविद् [वि.] (सं.) बीती हुई बातों का जानकार

भूतविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आयुर्वेद का वह विभाग जिसमें मानसिक रोगों का निदान और उपाय होता है।

भूतविनायक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूतवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) श्योनाक।

भूतवेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्गुंडी।

भूतशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार शरीर की वह शुद्धि जो पूजन आदि से पूर्व की जाती है तथा जिसे बिना किये पूजा का अधिकार नहीं होता।

भूतसंचार, भूतसञ्चार [संज्ञा पु.] (सं.) भूतोन्माद नामक रोग।

भूतसंताप, भूतसन्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक दानव का नाम।

भूतसंप्लव, भूतसम्प्लव [संज्ञा पु.] (सं) प्रलय।

भूतसंसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-जगत्। संसार। २-अखिल ब्रह्मांड।

भूतसिद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) भूतप्रेत आदि को सिद्ध और वश में करने वाला (तंत्र)।

भूतसूक्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'तन्मात्र'।

भूतहत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवहत्या।

भूतहंत्री, भूतहन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीली दूब। २-बाँझककोड़ी।

भूतहन् [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र का वृक्ष।

भूतहर [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गल।

भूतहारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदार। २-लाल कनेर।

भूतहास [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी हँसता और है।

भूतांकुश, भूताङ्कुश [संज्ञा पु] (सं.) जुआन। २-कश्यपऋषि।

भूतांकुश-रस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में का रस।

भूतांतक, भूतान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) २-रुद्र।

भूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्णपक्ष की

भूताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

भूतात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। ३-शिव। ४-विष्णु। ५-जीवात्मा।

भूताधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूतापि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। मतानुसार अहङ्कार तत्व जिससे त्पत्ति होती है।

भूतायन [संज्ञा पु.] (सं) नारायण।

भूतारि [संज्ञा पु.] (सं.) हींग।

भूतावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार। विष्णु। ४-बहेड़े का पेड़।

भूताविष्ट [वि.] (सं.) १-जो प्रभाव से रोगी हुआ हो। प्रेत लगा हो।

भूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैभव। २-भस्म। राख। ३-उत्पत्ति। आठ प्रकार की सिद्धियां। सत्ता। ८-विष्णु। ९-भूतृण। ११-पकाया हुआ मांस। औषध। १३-एक प्रकार का के मस्तक को रंगकर शृङ्गार करना।

भूतिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिरायता। ३-चंदन। ४-रूसा नामक घास।

भूतिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) गृहस्थ-संस्कार।

भूतिकाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति का मंत्री। [वि.] (सं.) जिसे ऐश्वर्य की हो।

भूतिकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूतितीर्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकेय मातृका का नाम।

भूतिद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूतिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

भूतिनि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भूतिनी'

भूतिनिधान [संज्ञा पु.] (सं.) धनिष्ठा

भूतिनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-भूतयोनि २-शाकिनी, डाकिनी आदि।

भूतियुवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश २-इस देश का निवासी।

भूतिलय [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ

जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

भूतिवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भूती [संज्ञा पु.] (हि.) भूतपूजक।

भूतीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिरायता। २-कपूर ३-अजवायन। ४-भूतृण। ५-कपूर।

भूतीवानी [संज्ञा स्त्री.] (डि.) राख। भस्म।

भूतृण [संज्ञा पु.] (हि.) रूसा नामक घास जिसका तेल बनता है।

भूतेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। महादेव। ३-कार्तिकेय।

भूतेश्वर [संज्ञा पु.] (सं) १-शिव। २-एक तीर्थ का नाम।

भूतेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कृष्णपक्ष की चतुर्दशी। २-आश्विनकृष्ण-चतुर्दशी।

भूतोन्माद [संज्ञा पु.] (हि.) भूतों या पिशाचों के आक्रमण या प्रभाव से होने वाला उन्माद।

भूतोपदेश [संज्ञा पु.] (सं.) यथार्थ विषय की शिक्षा।

भूत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। सुवर्ण।

भूदार [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

भूदारक [संज्ञा पु] (सं.) वीर। बहादुर।

भूदेव, भूदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

भूधन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़। २-शेषनाग। ३-राजा। ४-विष्णु। ५-वाराह अवतार। ६-वैद्यक में एक यंत्र विशेष जिसमें किसी पात्र में पारा रखकर मिट्टी से उस पात्र का मुँह बंद करके उसे आग में पकाते हैं।

भूधरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वतराज। हिमालय।

भूधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुईं आंवला।

भू-धृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोतने-बोने के लिये भूमि पर होने वाला किसान का अधिकार। लैंड-टेन्योर।

भूध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़।

भूनक* [संज्ञा पु.] (हि.) गर्भ का बच्चा।

भूनना [क्रि. स.] (हि.) १-आग पर रखकर या डालकर पकाना। २-गरम बालू में डालकर पकाना। ३-तलना। ४-बहुत अधिक कष्ट देना।

भूनिंब, भूनिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) चिरायता।

भूनीप [संज्ञा पु.] (सं.) भूमिकन्द।

भूनेता [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूपत [संज्ञा पु.] (डि.) राजा।

भूपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-एक राग जो मेघराग का पुत्र बताया जाता है। ३-बटुक भैरव।

भूपद [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। पेड़।

भूपदी [संज्ञा स्त्री.] मल्लिका। चमेली।

भूपरा [संज्ञा पु.] (डि.) सूर्य।

भूपरिधि [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी की परिधि या व्यास।

भू-परिमाप [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि की नाप जोख। जमीन की पैमाइश। लैंड सर्वे।

भू-परिमापक [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि की नाप-जोख या पैमाइश करने वाला। लैंडसर्वेयर।

भूपलाश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष।

भूपवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) गोबर।

भूपाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूपाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम। इसके गाने का समय रात्रि को ६ दंड से १० दंड तक बताया जाता है।

भूपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगलग्रह। २-नरकासुर

भूपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

भूप्रकंप, भूप्रकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) भूकंप। भूचाल

भूफल [संज्ञा पु.] (सं.) हरा मूंग।

भूबदरी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का छोटा बेर।

भूबिंब, भूबिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी की छाया

भूभल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरम राख या धूल। ततूरी।

भूभुज [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूभुरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूभल। गर्म रेत।

भूभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। पहाड़। २-राजा।

भूमंडल, भूमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी।

भूम [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी।

भूमध्यसागर [संज्ञा पु.] (सं.) युरोप तथा अफ्रीका के बीच का समुद्र। मेडिटरेनियन-सी।

भूमय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की भार्या, छाया।

भू-माप [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि के किसी खण्ड की नाप या परिमाण। २-देखो 'भूमापन'।

भूमापक [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि की नाप-जोख करने वाला। वह जिसका काम जमीन की पैमाइश करना हो। सर्वेयर।

भू-मापन [संज्ञा पु.] (सं.) खेतीबारी के लिए भूमि के खंडों या टुकड़ों अथवा किसी देश प्रदेश आदि की भमि की नाप-जोख। सर्वे।

भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वीतल के ऊपर का वह ठोस भाग जिस पर नदी, नाले, वन पर्वत आदि हैं और जिस पर हम लोग रहते तथा खेतीबारी होती और वनस्पतियाँ उगती हैं। जमीन। २-उक्त छोटा टुकड़ा जिस पर किसी का अधिकार हो अथवा जिसमें कुछ उपज आदि हो। एस्टेट। ३-स्थान। जगह। ४-नींव, पेंदे आधार आदि के रूप में वह सब से नीचे वाला अंग जिस पर उसके और अङ्ग बने या ठहरे हों। बेस। ५-जीभ। ६-देश। प्रदेश। प्रांत। ७-योगशास्त्रानुसार वे अवस्थाएं जो क्रमशः योगी को प्राप्त होती हैं तथा जिसको पार करके वह पूर्ण योगी होता है। ※ भूमि होना-पृथ्वी पर गिरना।

भूमिकंदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता।

भूमिकंप, भूमिकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) भूकम्प। भूडोल।

भूमिकदंब, भूमिकदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कदम का वृक्ष।

भूमि-कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि पर बसने की एक प्रणाली जिसके अनुसार जमीन पर बसने वाले को मासिक या वार्षिक कर देना पड़ता है। २-देखो 'लगान'।

भूमिकर-पुस्तक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लगान की पंजी या बही।

भूमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रचना। २-किसी ग्रन्थ के आरम्भ का वह वक्तव्य जिससे उस ग्रन्थ की ज्ञातव्य बातों का पता चलता है। मुखबंध। ३-वह आधार जिस पर कोई दूसरी वस्तु खड़ी की जाय। पृष्ठभूमि। बैक-ग्राउन्ड। ४-नाटक आदि में किसी पात्र का अभिनय। वेदांत के अनुसार चित्त की पांच अवस्थाएँ। जिनके नाम इस प्रकार हैं-क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) पृथ्वी। जमीन।

भूमिकुष्मांड, भूमिकुष्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) भुइँकुम्हड़ा।

भूमिखंड, भूमिखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि का भाग।

भूमिखर्जूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की छोटी खजूर।

भूमिगम [संज्ञा पु.] (सं.) उष्ट्र। ऊँट।

भूमिगर्त [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि में का विवर या छेद।

भूमिगुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जमीन में बनी हुई सुरंग।

भूमिगृह [संज्ञा पु.] (सं.) तहखाना।

भूमिचंपक, भूमिचम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का फूल वाला पौधा जिसकी जड़, छाल और पत्ते दवा के काम में आते हैं। भुइँचंपा

भूमिचल [संज्ञा पु.] (सं.) भूकम्प। भूडोल।

भूमिजंबु, भूमिजम्बु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा जामुन।

भूमिज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोन। २-सीसा धातु। ३-मंगलग्रह। ४-भूमिकदंब। ५-नरकासुर। [वि.] भूमि से उत्पन्न।

भूमिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

भूमिजात [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। पेड़। [वि.] (सं.) जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो।

भूमिजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृषक। खेतिहर। २-वैश्य।

भूमितल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी का ऊपरी भाग। भूतल।

भूमित्व [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि का भाव या धर्म।

भूमिदंड [संज्ञा पु.] (हिं.) दंड या डंड नामक कसरत।

भूमिदंडा, भूमिदण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली

भूमिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-ब्राह्मण।

भूमिधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। २-शेषनाग। ३-वह खेतिहर जिसने भूमि या खेत पर स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।

भूमिपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूमि-परिमाप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भू-माप'।

भूमि-परिमापक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भू-मापक'

भूमि-परिमापन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भू-मापन'

भूमिपाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूमिपिशाच [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ का पेड़।

भूमिपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मङ्गलग्रह। २-नरकासुर। ३-श्योनाक-वृक्ष।

भूमिपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

भूमिभाग [संज्ञा पु.] (सं.) स्थान। जगह।

भूमिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूमिभृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। पहाड़। २-राजा।

भूमिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूमि का अधिकारी। २-जमींदार। ३-ग्राम देवता। ४-किसी देश के आदिवासी।

भूमिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। पेड़।

भूमिलग्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद फूलों की अपराजिता।

भूमिलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी।

भूमिलवण [संज्ञा पु.] (सं.) शोरा।

भूमिलेप [संज्ञा पु.] (सं.) गोबर।

भूमिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वीलोक।

भूमिवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) मृत शरीर। शव।

भूमिवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुईं आवँला।

भूमिष्ठ [वि.] (सं.) भूमि पर गिरा हुआ।

भूमिसंभवा, भूमिसम्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

भूमिसव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का व्रात्यस्तोम या यज्ञ।

भूमिसात् [वि.](हिं.) जो गिरकर जमीन के साथ मिल गया हो।

भूमिसुत [संज्ञा पु.](सं.) १-मङ्गलग्रह। २-नरकासुर। ३-वृक्ष। ४-केवाँच। कौंच।

भूमिसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं) सीता।

भूमिसुर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

भूमिसेन [संज्ञा पु.] (सं.) दसवें मनु के एक पुत्र का नाम।

भूमिस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक यज्ञ जो एक दिन में संपन्न होता है।

भूमिस्पर्श [संज्ञा पु.](सं.) उपासना के लिए बौद्धों का एक आसन।

भूमिहर [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति विशेष जो बिहार और उत्तर प्रदेश में पाई जाती है।

भूमींद्र, भूमीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूमीरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। पेड़।

भूम्य [वि.] (सं.) भूमि पर होने योग्य।

भूम्याफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराजिता-लता

भूम्यामलकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुईं आँवला।

भूम्यालीक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी की भूमि को अपना बताना।

भूय [अव्य.] (सं.) १-पुनः। फिर। २-बहुत। अधिक।

भूयण [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पृथ्वी।

भूयक्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) भुईं खजूर।

भूयसी [वि.] (सं.) बहुत अधिक।
[क्रि. वि.] (सं.) बार-बार।

भूयसी-दक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मंगलकार्य के अन्त में ब्राह्मणों को दी जाने वाली दक्षिणा।

भूयिष्ठ [वि.] (सं.) प्रचुर। बहुतर।

भूर [वि.] (हिं.) बहुत। अधिक।
[संज्ञा पु.] (हिं.) बालू। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गाय की एक जाति।

भूरज [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजपत्र का वृक्ष।
[संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी की धूल। मिट्टी।

भूरजपत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजपत्र।

भूरति [संज्ञा पु.] (सं.) कुशाश्व के एक पुत्र का नाम।

भूरपूर [वि.] (हिं.) भरपूर। परिपूर्ण।
[क्रि. वि.] (हिं.) पूरी तरह से। पूर्णरूप।

भूरला [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

भूरलोखरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बालूई मिट्टी जिसमें लोमड़ी अपने लिए मांद बनाती है।

भूरसी-दक्षिणा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'भूयसी-दक्षिणा'।

भूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिट्टी की तरह का रंग मटमैला रंग। भूमिल रंग। २-युरोपियन। गोरा। ३-एक प्रकार का कबूतर। ४-चीनी। ५-कच्ची चीनी। [वि.] मिट्टी के-से रंग का खाकी।

भूरा-कुम्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद रंग का कुम्हड़ा।

भू-राजस्व [संज्ञा पु.] (सं.) वह सरकारी कर जो जोती-बोई जाने वाली भूमि या जमीन पर लगता है। लगान। लैंड-रैविन्यू।

भूरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। शिव। ४-इन्द्र। ५-स्वर्ण। सोना। दत्त के पुत्र का नाम। [वि.] अधिक। प्रचुर। २-बड़ा। भारी।

भूरिगंधा, भूरिगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नामक गंध-द्रव्य।

भूरिगम [संज्ञा पु.] (सं.) गधा।

भूरिज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

भूरितो [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अविद्या।

भूरितेजस [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। स्वर्ण।

भूरिदक्षिण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

भूरिद, भूरिदा [वि.] (सं.) बहुत दान देने

भूरिदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृश्चिकाली।

भूरिद्युम्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक चक्रवर्ती राजा का नाम जिसका उल्लेख मैत्र्युपनिषद् में आया है। २-नवें मनु के एक पुत्र

भूरिधाम [संज्ञा पु.] (सं.) नवें मनु के एक पु का नाम।

भूरिबल [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र नाम।

भूरिबला [संज्ञा स्त्री] (सं.) अतिबला।

भूरिमंजरी, भूरिमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] सफेद तुलसी।

भूरिमल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठा नामक

भूरिमूलिका [संज्ञा स्त्री.] ब्राह्मणी-लता।

भूरिरस [सज्ञा पु.] (सं.) ईख। ऊख।

भूरिलग्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद

भूरिवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा (पुराण)।

भूरिश्रवा [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रवंशी सोमदत्त का पुत्र जो महाभारत में हाथ से मारा गया था।

भूरिषेण [संज्ञा पु.] (सं.) एक मनु का नाम।

भूरिसेन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा शर्याति के पुत्र का नाम।

भूरुंडी, भूरुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नामक वृक्ष।

भूरुह [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष। ३-अर्जुनवृक्ष।

भूरोह [संज्ञा पुं.] (सं.) केंचुआ।

भूर्ज [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र नामक वृक्ष।

भूर्जकंटक, भूर्जकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) मतानुसार एक वर्णसंकर जाति।

भूर्जपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

भूर्णि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेगिस्तान। मरुभूमि।

भूर्भुव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा के एक का नाम।

भूर्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। मर्त्यलोक।

भूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूलने का भाव। २-गलती। चूक। ३-दोष। अपराध। ४-अशुद्धि गलती। भूल के कोई काम न करना-भ्रम में पड़कर कोई काम करना। भूल के कोई काम न करना-कदापि कोई काम न करना।

भूलक*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भूल करने वाला।

भूलग्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी।

भूलड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भूल जाने वाला।

भूलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केंचुआ नामक कीड़ा।

भूलना [क्रि. स.] (हिं.) १-याद न रखना। विस्मृत करना। २-गलती करना। ३-खो देना [क्रि. अ.] १-याद न रहना। २-गलती होना ३-धोखे में आना। ४-अनुरक्त होना। लुभाना ५-घमंड में होना। इतराना। ६-गुम होना। खोजाना। [वि.] भूलने वाला।

भूल-भुलैयाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह घुमावदार वास्तुरचना जिसमें आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि जल्दी ठिकाने पर नहीं पहुँच सकता। चाबुक। २-रेखाओं आदि की बनाई हुई इस प्रकार की आकृति।

भूलोक [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। मृत्युलोक।

भूलोटन [वि.] (हि.) जमीन पर लोटने वाला।

भूवलय [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि की परिधि।

भूवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूवा [वि.] (हि.) रूई का सा उजला। सफेद।

भूवायु [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी पर की हवा। पवन।

भूवारि [संज्ञा पु.] (हि.) हाथी पकड़ कर रखने या बांधने का स्थान।

भूविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'भूगर्भशास्त्र'।

भूशक्र [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

भूशय [संज्ञा पु.] (सं) १-विष्णु। २-बिल में रहने वाले जंतु। जैसे-नेवला, गोध।

भूशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जमीन पर सोना। २-शयन करने की भूमि।

भूशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कंद।

भूशायी [वि.] (हि.) १-जमीन पर सोने वाला। २-जमीन पर गिरा हुआ। ३-मृतक। मरा हुआ।

भूषण [संज्ञा पु.] (सं) १-अलंकार। गहना। २-वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़ती हो ३-विष्णु।

भूषणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूषण का भाव या धर्म।

भूषन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भूषण'।

भूषना* [क्रि. स.] (हि.) भूषण या अलंकृत करना। सजाना।

भूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आभूषण। गहना। जेवर। २-सजाने की क्रिया। ३-सजाने की सामग्री।

भूषित [वि.] (सं) १-गहना पहने हुए। अलंकृत २-सजाया या संवारा हुआ। सज्जित।

भूष्य [वि.] (सं.) सजाने योग्य।

भू-संपत्ति, भूसम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह संपत्ति जो खेतीबारी, मकान, जङ्गल आदि के रूप में हो। एस्टेट।

भू-संस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने से पहले भूमि को साफ करने, नापने, रेखा खींचने आदि की क्रिया।

भूस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भूसा'।

भूसठ* [संज्ञा पु.] (देश.) कुत्ता।

भूसन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भूषण'।

भूसना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भूँकना'।

भूसा [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज के पौधों के डंठलों का महीन चूरा। तुष। भुस।

भूसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भूसा। २-अनाज आदि के ऊपर का छिलका।

भूसीकर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।

भू-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगलग्रह। २-नरकासुर। ३-वृक्ष। पौधा। [वि.] (सं.) पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला।

भू-सुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

भू-सुर [संज्ञा पु.] (सं) ब्राह्मण।

भूस्तृण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास।

भूस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य।

भू-स्वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरुपर्वत।

भू-स्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो किसी भूमिखंड का मालिक हो, और वह भूमि दूसरों को लगान-भाड़े आदि पर देता हो। भूमि का स्वामी या मालिक। लैंडलार्ड।

भूहरा* [संज्ञा पु.] देखो 'भुँइहरा'।

भृंग, भृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौंरा। २-बिलनी नामक कीड़ा।

भृंगक, भृङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) भृंगराज पक्षी।

भृंगज, भृङ्गज [संज्ञा पु.] (सं.) अगरु।

भृंगजा, भृङ्गजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारंगी।

भृंगप्रिया, भृङ्गप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माधवीलता।

भृंगबंधु, भृङ्गबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंद का पेड़। २-कदम का पेड़।

भृंगमोही, भृङ्गमोही [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंपा। २-कनकचंपा।

भृंगरज [संज्ञा पु.] देखो 'भृंगराज'।

भृंगराज, भृङ्गराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-भँगरा नामक वनस्पति। २-काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।

भृंगराजघृत, भृङ्गराजघृत [संज्ञा पु.] (सं.) घृत विशेष जिसकी नास लेने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

भृंगरीट, भृङ्गरीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहा। २-शिव के द्वारपाल।

भृंगवल्लभ, भृङ्गवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) भूमिकदंब।

भृंगाभीष्ट, भृङ्गाभीष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

भृंगार, भृङ्गार [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौंग। २-सोना। स्वर्ण। ३-सोने का बना जल पीने का पात्र। ४-वह झारी उसमें जल भरकर अभिषेक किया जाता है।

भृंगारि, भृङ्गारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवड़ा।

भृंगारिका, भृङ्गारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिल्ली (कीड़ा)।

भृंगार्क, भृङ्गार्क [संज्ञा पु.] (सं.) भँगरैया।

भृंगी, भृङ्गी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिवजी का एक पारिषद या गण। २-वटवृक्ष। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भौंरी। २-बिलनी नामक कीड़ा। ३-अतिविषा। अतीस। ४-भांग।

भृंगीफल, भृङ्गीफल [संज्ञा पु.] (सं.) अमड़ा।

भृंगीश, भृंगीश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

भृंगेष्टा, भृङ्गेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घीकुआर। २-भारंगी। ३-युवती स्त्री।

भृकुश, भृङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) वह नट या अभिनयकर्ता जो स्त्री का वेश धारण करता हो।

भृकुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भौंह।

भृगु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध मुनि जो शिव का पुत्र माना जाता है और जिसने विष्णु की छाती पर लात मारी थी। २-परशुराम। ३-शुक्राचार्य। ४-शुक्रवार का दिन। ५-शिव। ६-जमदग्नि। ७-समुद्रतट की ऊँची ढलुवां चट्टान। कगार। क्लिफ।

भृगुक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक देश।

भृगुकच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) आजकल का भड़ौंच जो पहले एक प्रसिद्ध तीर्थ था।

भृगुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। भार्गव। २-शुक्राचार्य।

भृगुतुंग, भृगुतुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

भृगुनन्द, भृगुनन्द [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम

भृगुनंदन, भृगुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम

भृगुनाथ, भृगुनायक, भृगुपति, भृगुमुख्य, भृगुराम [संज्ञा पु.] परशुराम।

भृगुरेखा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु की छाती का चिह्न जो भृगु के लात मारने से हुआ था।

भृगुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भृगु के पैरों के चिह्न जो विष्णु की छाती पर हैं।

भृगुवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तैत्तिरीय उपनिषद् की तीसरी वल्ली जिसका अध्ययन भृगुमुनि ने किया था।

भृगुवार [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्रवार।

भृगुसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुक्रग्रह। २-शुक्राचार्य।

भृत [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भृता] दास। [वि.] १-भरा हुआ। पूरित। २-पाला-पोसा हुआ।

भृतक [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर।

भृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भरने की क्रिया या भाव। २-सेवा। नौकरी। ३-मजदूरी। ४-वेतन। तनख्वाह। ५-मूल्य। दाम। ६-पालन करना। पालना। ७-जीविका निर्वाह के निमित्त मिलने वाला धन। वृत्ति। ८-वह धन जो पत्नी को निर्वाह के निमित्त पति द्वारा त्यागे जाने पर मिलता है। *एलिमनी*। ९-देखो 'भत्ता'।

भृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर। चाकर। सेवक।

भृत्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भृत्य का भाव या कर्म।

भृमि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी में का चक्कर। भँवर। २-चक्रवात। बवंडर। ३-एक प्रकार की वीणा जो वैदिककाल में होती थी। [वि.] घूमने या चक्कर काटने वाला।

भृम्यश्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

भृश [क्रि. वि.] (सं.) बहुत अधिक। अत्यधिक।

भृशपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महानील।

भृष्ट [वि.] (सं.) भूना हुआ।

भृष्टकार [संज्ञा पु.] (सं.) भड़भूँजा।

भेंउती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भौंती'।

भेंगा [वि.] (देश.) जिसके आँख की पुतली टेढ़ी रहती हो।

भेंगापन [संज्ञा पु.] (देश.) भेंगा होने का भाव।

भेंट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिलना। मुलाकात। २-उपहार। नजराना।

भेंटना [क्रि. स.] (हिं.) १-मुलाकात करना। मिलना। २-गले या छाती लगाना। आलिंगन करना।

भेंटाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-मुलाकात होना। मिलना। २-किसी वस्तु तक हाथ पहुँचना। हाथ से छुआ जाना।

भेंड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'भेड़'।

भेंवना+ [क्रि. स.](हि.) भिगोना। तर करना।

भेइ, भेउ* [संज्ञा पु.] (हि.) भेद। मर्म। रहस्य।

भेक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेंढक'।

भेकराज [संज्ञा पु.] (सं.) भृंगराज। भँगरैया।

भेख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वेष'।

भेखज* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भेषज'।

भेज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-वह जो कुछ भेजा जाय। २-भूमि पर लगाये जाने वाले नाना प्रकार के कर। ३-लगान।

भेजना [क्रि. स.] (हिं.) किसी व्यक्ति अथवा पदार्थ को एक स्थान से दूसरे के लिए रवाना करना।

भेजवाना [क्रि. स.](हिं.) किसी को भेजने में प्रवृत्त करना। भेजने का काम किसी और से करना।

भेजा [संज्ञा पु.] (?) सिर के अन्दर का गूदा। *भेजा खाना*-बहुत बोलकर सिर खाना। *[संज्ञा पु.] (हिं.) चंदा। बेहरी।

भेजाबरार [संज्ञा पु.] (हिं.) देहात की एक प्रथा जिसके अनुसार किसी निर्धन अथवा दिवालिया का ऋण चुकाने के लिए आसपास के लोगों के लिए चन्दा लिया जाता है।

भेट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भेंट'।

भेटना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'भेंटना'। *[संज्ञा पु.] (देश.) कपास का डोडा।

भेड़ [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-बकरी की तरह का एक प्रसिद्ध चौपाया जिसकी ऊन के वस्त्र और कम्बल बनाये जाते हैं। २-थप्पड़ (बाजारू)। *भेड़ियाधसान*-बिना परिणाम सोचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।

भेड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. भेड़] भेड़ जाति का नर। मेष।

भेड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध जङ्गली हिंसक जन्तु जो कुत्तों से मिलता जुलता होता है। यह छोटे-छोटे जानवरों को उठा ले जाता है।

भेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'भेड़'। २-भेड़ का कमाया हुआ चमड़ा।

भेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेदने या छेदने अथवा अलग करने की क्रिया या भाव। २-शत्रुपक्ष के लोगों को एक दूसरे का विरोधी बनाकर कुछ लोगों को अपनी ओर मिलाना। ३-भीतर छिपी हुई बात। रहस्य। ४-मर्म। तात्पर्य। ५-अन्तर। फर्क। ६-प्रकार। किस्मत। जाति।

भेदक [वि.] (सं.) १-भेदने या छेदने वाला। २-रेचक। दस्तावर।

भेदकातिशयोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालंकार जिसमें 'औरै'-'और' शब्द द्वारा किसी वस्तु की अति अथवा अधिकता का वर्णन किया जाता है।

भेदकारी [संज्ञा पु.] (हिं.) भेदने या छेदने वाला। भेद न करने वाला।

भेदड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रबड़ी।

भेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेदने की क्रिया या भाव। २-छेदना। वेधना। ३-भेद लेने की क्रिया या भाव। एस्पॉयनेज।

भेदना [क्रि. स.] (हि.) छेदना। बेधना।

भेदनीय [वि.] (हिं.) भेद करने योग्य।

भेदबुद्ध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एकता का अभाव। फूट। बिलगाव।

भेदभाव [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ विशिष्ट ... साथ अन्तर या फरक का विचार अथवा ... रखना।

भेदवादी [वि.] (सं.) भिन्न मतावलंबी।

भेदित [वि.] (सं.) भेद किया हुआ। [संज्ञा] ... तंत्र के मतानुसार मंत्र विशेष जो ... समझा जाता है।

भेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के ... शक्ति विशेष जिसकी सहायता से ... पट चक्र को भेद सकते हैं।

भेदिया [संज्ञा पु.] (हि.) १-गुप्तचर। ... २-गुप्त रहस्य जानने वाला।

भेदी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुप्त रहस्य ... वाला। गुप्तचर। जासूस। २-गुप्त हाल ... वाला। ३-अमलवेत। [वि.] भेदन ... वाला।

भेदीसार [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़इयों का ... छेद करने का औजार। बरमा।

भेदुर [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

भेदू [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भेदिया'।

भेद्य [वि.] (सं.) भेदन करने योग्य। जो ... जा सके। [संज्ञा पु.] शस्त्रों आदि की सहायता से किसी पीड़ित अङ्ग को ... क्रिया। चीरफाड़।

भेन+ [संज्ञा स्त्री.] बहन।

भेनां+ [क्रि. स.] (हिं.) भिगोना। तर करना।

भेभस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ... और पतला बाँस।

भेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भेरी'।

भेरवा [संज्ञा पु.] (देश.) यह खजूर जिसके ... के रेशों की रस्सियां बनती हैं।

भेरा [संज्ञा पु.] (देश.) मझोले आकार का ... वृक्ष जिससे रंग, गोंद, और तेल आदि ... मिलते हैं।

भेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ा ढोल या ... दुंदुभी।

भेरीकार [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. भेरीकारी] ... बजाने वाला

भेल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का ...

भेला* [संज्ञा पु.] (हि.) १-भिड़ंत। २-... मुलाकात। ३-देखो 'भिलावाँ'। (?) ... गोला या पिंडा।

भेली+ [संज्ञा स्त्री.] (?) गुड़ आदि की ... पिंडी या बट्टी।

भेव*+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-मर्म की बात। ... स्य। भेद। २-बारी। पारी।

भेवना* [क्रि. स.] (हिं.) भिगोना। तर करना।

भेश [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'वेष'।

भेष [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'वेष'।

भेषज [संज्ञा पु.] (सं.) १-औषध। दवा। २-जल। पानी। ३-सुख। ४-विष्णु।

भेषजागार [संज्ञा पु.] (सं.) औषध बनाने का घर

भेषजांग, भेषजाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) औषधि का अनुमान।

भेषना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भेष बनाना। २-पहनना।

भेस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-केवल दूसरों को दिखाने के लिए बना या बाहरी रूप-रंग। वेष। २-किसी के अनुकरण पर बनाया हुआ बनावटी रूप तथा पहने हुए वस्त्र आदि।

भेसज+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) औषध। दवा।

भेसना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भेस बनाना। २-कपड़े पहनना।

भैंस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गाय का-सा एक काला (मादा) चौपाया जिसको दूध के निमित्त पाला जाता है। २-एक प्रकार की मछली। ३-एक प्रकार की घास। भैंस कटना-गरमी या उपदंश रोग होना।

भैंसा [संज्ञा पु.] (हिं.) भैंस का नर।

भैंसाव [संज्ञा पु.] (हिं.) भैंस और भैंसे का जोड़ खाना।

भैंसासुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महिषासुर'।

भैंसोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भैंस का चमड़ा।

भै* [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'भय'।

भैक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-भिक्षा मांगने की क्रिया या भाव। २-वह जो कुछ भिक्षा मिले। भीख।

भैक्षचर्या, भैक्षवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिक्षा मांगने की क्रिया।

भैक्षाकुल [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां से बहुत से लोगों को भिक्षा मिलती हो।

भैक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) भिक्षा। भीख।

भैचक, भैचक्क* [वि.](हिं.) चकित। विस्मित भौचक।

भैजन, भैदा* [वि.] (हिं.) भय उत्पन्न करने वाला। डरावना। भयप्रद।

भैन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहन। भगिनी।

भैना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहन। भगिनी। [संज्ञा स्त्री.] (दे श.) एक पक्षी जिसे गंगई भी कहते हैं।

भैनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहिन। भगिनी।

भैने+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भानजा।

भैम [वि.] (सं.) भीम-संबंधी। भीम का। [संज्ञा पु.] (सं.) राजा उग्रसेन।

भैमगव [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्र का नाम।

भैमी [स्त्री.स्त्री.] (सं.) १-माघसुदी-एकादशी। २-भीम राजा की कन्या दमयंती। +[वि.] (हिं.) देखो 'वहमी'।

भैयंस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) संपत्ति में दो भाइयों का हिस्सा।

भैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाई। भ्राता। २-बराबर वालों के लिए संबोधन का शब्द।

भैयाचार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भाईचारा'।

भैयाचारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भाईचारा'।

भैयादोज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाईदूज। कार्त्तिक-शुक्ला द्वितीया।

भैरव [वि.] (सं.) १-भीषण शब्द वाला। २-भयानक। विकट। [संज्ञा पु.](सं.) १-शंकर। महादेव। २-शिव के एक प्रकार के गण। ३-साहित्य में भयानक रस। ४-एक नाग का नाम। ५-एक नद का नाम। ६-सङ्गीत में एक राग का नाम। ७-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। ८-भयानक शब्द। ९-कपाली। १०-वह मदिरा जो पीते-पीते वमन करने लगे

भैरवमस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

भैरवांजन, भैरवाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अंजन। (वैद्यक)।

भैरवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक देवी जो महाविद्या की मूर्त्ति मानी जाती है। चामुंडा। २-सवेरे गाई जाने वाली एक रागिनी। ३-पुराणानुसार एक नदी का नाम। ४-पार्वती।

भैरवीचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांत्रिकों का वह मंडल जो देवी पूजन के लिए एकत्र होता है। २-मद्यपों और अनाचारियों आदि का समूह।

भैरवीयातना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह यातना या कष्ट जो प्राणियों को मरते समय उनकी शुद्धि के लिए भैरवजी देते हैं।

भैरवेश [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

भैरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बहेड़ा'।

भैरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहरी नामक पक्षी।

भैरूं, भैरू, भैरो [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भैरव'।

भैवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भैया'।

भैवाद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाईचारा। २-बिरादरी।

भैषज [संज्ञा पु.](सं.) १-औषध। दवा। २-वैद्य के शिष्य आदि। ३-लवा पक्षी।

भैषज्य [संज्ञा पु.] (सं.) औषध। दवा।

भैष्मकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भीष्मक की कन्या रुक्मिणी।

भैहा*+ [संज्ञा पु.](हिं.) १-डरा हुआ। भयभीत २-जिस पर किसी देवता या प्रेत का आवेश आता हो।

भों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भों-भों का शब्द।

भोंकना [क्रि. स.] (हिं.) नुकीली वस्तु जोर से धंसाना। घुसेड़ना। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भूँकना'।

भोंगरा [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार की बेल या लता।

भोंगाल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बड़ा भोंपा जिसका एक ओर का मुँह बहुत छोटा तथा दूसरी ओर का अधिक चौड़ा होता है।

भोंचाल [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'भूकम्प'।

भोंडा [वि.] (हिं.) [स्त्री. भांडी] कुरूप। भद्दा। [संज्ञा पु.] (दे श.) मुआर की-सी एक घास।

भोंडापन [संज्ञा पु.](हिं.) १-भद्दापन। २-बेहूदापन।

भोंडी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] भद्दी सूरत वाली। कुरूपा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भेड़ जिसके पेट पर के रोएँ सफेद हों।

भोंतरा+ [वि.] (हिं.) (वह शस्त्र) जिसकी धार कुंद हो।

भोंतला [वि.](हिं.) जिसकी धार तेज न हो। कुन्द धार वाला।

भोंदू [वि.] (हिं.) १-मूर्ख। २-सीधा। भोला।

भोंपा, भोंपू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तुरही की तरह का मुँह से फूंक कर बजाने का बाजा। २-कल कारखाने आदि के कर्मचारियों को सूचित करने के लिये बजने वाली एक प्रकार की सीटी।

भोंसले [संज्ञा पु.] (दे श.) मराठों की एक राजकुल की उपाधि।

भो* [क्रि. अ.] (हिं.) हुआ। (!) (सं.) हो। हे।

भोकस*+ [वि.](हिं.) भुक्खड़। भूखा। [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का राक्षस।

भोकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोर-जोर से रोना।

भोक्ता [वि.](सं.) १-भोग करने वाला। भोगने वाला। २-भोजन करने वाला। ३-ऐश करने वाला। ऐयाश। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु २-पति। ३-एक प्रकार का प्रेत।

भोक्तृत्व [संज्ञा पु.](सं.) भोक्ता का धर्म या भाव

भोक्तृशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्धि।

भोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुख-दुःख आदि का अनुभव करना। २-दुःख। कष्ट। ३-सुख। विलास। ४-स्त्री-संभोग। ५-सांप का फन ६-पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया जाता है। ७-प्रारब्ध। ७-मान। परिमाण। ८-देह। ९-भक्षण। आहार करना। १०-पालन। ११-घर। १२-धन। १३-सांप। १४-फल। अर्थ। १५-पुर। १६-एक प्रकार का सैनिक व्यूह। १७-नैवेद्य। राशियों में ग्रहों के रहने का समय। १८-राशियों में ग्रहों के रहने का समय। १९-भूमि या संपत्ति का व्यवहार। २०-आय। आमदनी। २१-भाड़ा। किराया। २२-[illegible] प्रमाण के तीन भेदों में एक। २३-वह स्थिति जिसमें किसी पदार्थ को अपने पास रखकर उपयोग किया जाता है। अधिकार। पजेशन।

भोगगृह [संज्ञा पु.] (सं.) रहने का घर। वासगृह

भोगत्व [संज्ञा पु.] (सं.) भोग का भाव या धर्म

भोगदेह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग या नरक भोगने के लिए सूक्ष्म देह (पुराण)।

भोगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सुख दुःख आदि कर्म फल का अनुभव करना। २-सहन करना। सहना। ३-स्त्री-प्रसंग करना।

भोगपति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर या प्रांत आदि का प्रधान शासक या अधिकारी।

भोगपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो राजा को उपहार भेजने के सम्बन्ध में लिखा जाय।

भोगपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें नैवेद्य रखकर देवता को अर्पण होता है।

भोगप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम। (बृहत्संहिता)।

भोगबंधक, भोगबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) बंधक या रेहन रखने की वह रीति जिसमें उधार लिये हुए रुपए का सूद नहीं दिया जाता परन्तु कुछ समय के लिए महाजन को संपत्ति का भोग करने का अधिकार होता है।

भोग-भूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैन-मतानुसार वह लोक जिसमें किसी प्रकार का कर्म नहीं करना पड़ता तथा सर्व प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति केवल कल्पवृक्ष के द्वारा हो जाती है

भोगलदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देहातियों का कपास के सबसे बड़े पौधे का पूजन करना।

भोगलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) सुख-भोग आदि की प्राप्ति।

भोगलिप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यसन। लत।

भोगलियाल [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) कटारी।

भोगली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-छोटी नली। २-नाक में पहनने की लौंग। ३-एक कान का गहना जिसे तरकी कहते हैं। ४-कान में पहनने के फूल को अटकाने की कील। ५-कंगनी। चपटे तार का सलमा।

भोगवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गङ्गा। २-पाताल-गङ्गा। ३-एक तीर्थ का नाम। ४-एक प्राचीन नदी का नाम। ५-वह स्थान जहाँ नाग रहते हैं। ६-कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

भोगवना* [क्रि. अ.] (हिं.) भोगना।

भोगवस्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपभोग करने की चीज।

भोगवान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-गीत। गान। ३-नाट्य।

भोगवाना [क्रि. स.] (हिं.) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

भोग-विलास [संज्ञा पु.] (सं.) सुखपूर्वक अच्छी वस्तुओं का उपभोग करना। आमोद-प्रमोद।

भोग-वेतन [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो किसी के रेहन रखी हुई वस्तु के व्यवहार के बदले में स्वामी को दिया जाय।

भोग-व्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यूह जिसमें सैनिक एक दूसरे के पीछे खड़े किये गये हों।

भोग-संपत्ति, भोग-सम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वतंत्र राजाओं आदि की वह निजी संपति जो उनके व्यक्तिगत उपभोग के लिए होती है तथा जिस पर राज्य अथवा शासन का अधिकार नहीं होता।

भोगस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) भोगभूमि। रमण-गृह।

भोगांतराय, भोगान्तराय [संज्ञा पु.] (सं.) वह पापकर्म जिनका उदय होने पर मनुष्य भोगने योग्य पदार्थ पाकर भी उनका उपभोग नहीं कर सकता (जैनमत)।

भोगाना [क्रि. स.] (हिं.) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

भोगावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोग श्रेणी। स्तुति

भोगिन, भोगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा की रखेल स्त्री। २-नागिन।

भोगिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) मोर।

भोगींद्र, भोगीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) पतंजली का एक नाम।

भोगी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. भोगिनी] १-भोगने वाला। २-साँप। ३-नाई। नापित। ४-राजा। ५-जमींदार। ६-शेषनाग। [वि.] (सं.) १-विलासी। २-विषयी। ३-सुखी। ४-भुगतने वाला। ५-खाने वाला।

भोगीन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'भोगी'।

भोगेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम। (पुराण)।

भोग्य [वि.] (सं.) १-भोगने अथवा काम में लाने योग्य। २-जिसका भोग किया जाय। ३-खाद्य (पदार्थ)। [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन। २-धान्य। ३-भोगबंधक।

भोग्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) भोगने का धर्म या भाव

भोग्यभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विलासभूमि। २-वह भूमि जिसमें किये गये पाप-पुण्यों से सुख-दुःख प्राप्त हों। मर्त्यलोक।

भोग्यमान [वि.] (सं.) जो भोगा जाने को हो। जो अभी भोग न गया हो।

भोग्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

भोग्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धरोहर की वह रकम अथवा वस्तु जो कागज पर लिखी गई हो।

भोज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। दावत। जेवनार २-भोज्य पदार्थ। खाद्यपदार्थ। ३-एक प्रकार की मदिरा जो ज्वार और भांग के योग से बनती है। [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधुनिक भोज-पुर देश जिसे भोजकट कहते थे। २-चन्द्र-वंशियों के एक वंश का नाम। ३-वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ४-कृष्ण के एक सखा का नाम। ५-कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा। ६-द्रुह्यु के एक पुत्र का नाम। ७-मालवे के एक प्रसिद्ध परमार वंशी राजा जो संस्कृत के बहुत भारी विद्वान थे।

भोजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोगी। २-

भोजदेव [संज्ञा पु.] (सं.) कान्यकुब्ज के राजा।

भोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाने की वस्तु करना। खाना। २-खाने की वस्तु। पदार्थ। भोजन पेट में पड़ना-खाया जाना।

भोजनकाल [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन करने

भोजनखानी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रसोईघर।

भोजनत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन जाना।

भोजनपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह बरतन भोजन किया जाता है।

भोजन-भट्ट [संज्ञा पु.] (हि.) बहुत वाला।

भोजनवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भोजन करने खाने का समय।

भोजन-व्यग्र [वि.] (सं.) पेटू। बहुत खाने

भोजनशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रसोईघर।

भोजनाच्छादन [संज्ञा पु.] (सं.) खाने नने की सामग्री।

भोजनालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसोईघर। वह स्थान जहां पका हुआ भोजन मिले।

भोजनीय [वि.] (सं.) भोजन करने योग्य।

भोजपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंसराज। भोज।

भोजपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मझोले आकार का वृक्ष जिसकी छाल पर प्राचीन काल में आदि लिखे जाते थे।

भोजपरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) रसोई की करने वाला।

भोजपुरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजपुर वाला।

भोजपुरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भोजपुर [संज्ञा पु.] भोजपुर का निवासी। पुर-सम्बन्धी। भोजपुर का।

भोजयितव्य [वि.] (सं.) भोजन के योग्य।

भोजयिता [वि.] (हिं.) भोजन करने वाला।

भोजराज [संज्ञा पु.] देखो 'भोज'।

भोजवाजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जादूगरी।

भोजविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाजीगरी। जाल।

भोजी [संज्ञा पु.] (हि.) भोजन करने वाला। वाला।

भोजू* [संज्ञा पु.] (हि.) भोजन। आहार। काम में आने योग्य। खाऊ-भोजू से काम में आने योग्य।

भोजेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजराज। ३-देखो 'भोज'।

भोज्य [संज्ञा पु.](सं.) खाद्य-पदार्थ। [वि.] खाने-योग्य।

भोट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूटान देश। २-एक प्रकार का पत्थर।

भोटिया [संज्ञा पु.] (हिं.) भूटान देश का निवासी [संज्ञा स्त्री.] भूटान देश की भाषा। [वि.] भूटान देश का। भूटान-सम्बन्धी।

भोटियाबादाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आलू बुखारा २-मूँगफली।

भोटी [वि.] (हिं.) भूटान देश का।

भोडर, भोडल [संज्ञा पु.](देश.) अभ्रक। अबरक

भोडागार [संज्ञा पु.] (हिं.) भण्डार।

भोण [संज्ञा पु] (डि.) भवन। मकान। घर।

भोथरा [वि.](हिं.) जिसकी धार कुंद हो। कुंठित

भोथार [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का घोड़ा।

भोना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-घूमना। २-संचारित होना। ३-लीन होना। ४-आसक्त या अनुरक्त होना।

भोंपा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भोंपू। २-मूर्ख।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) भेरन नामक घास।

भोम, भोमी [संज्ञा पु.] (डि.) पृथ्वी।

भोर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रातःकाल। तड़का। २-धोखा। भ्रम। भूल। * [वि.](हिं.) भोला सीधा। [संज्ञा पु.] (देश.) सुन्दर पंखों वाला एक प्रकार का बड़ा पक्षी।

भोरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली। * [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'भोर'। * [वि.] (हिं.) भोला। सीधा। सरल।

भोराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भोलापन। सरलता। सिधाई।

भोराना* [क्रि. स.](हिं.) भ्रम या धोखे में डालना बहकाना। [क्रि. अ.] (हिं.) भ्रम या धोखे में आना।

भोरानाथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) भोलानाथ। शिव।

भोरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अफीम का एक रोग।

भोरु* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'भोर'।

भोलना* [क्रि. स.](हि.) भुलावा देना। बहकाना

भोला [वि.] (हि.) १-सीधा सादा। सरल। २-मूर्ख।

भोलानाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव।

भोलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सरलता। सादगी। सिधाई। २-मूर्खता।

भोलाभाला [वि.] (हि.) सीधा सादा। निश्चल।

भोलि [संज्ञा पु.] (सं.) ऊंट। उष्ट्र।

भोसर+ [वि.] (देश.) मूर्ख।

भौं [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भृकुटी। भौंह।

भौंकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'भूँकना'।

भौंगर [संज्ञा पु.] (देश.) क्षत्रियों की एक जाति। +[वि.] (देश.) मोटा ताजा। हृष्टपुष्ट।

भौंचाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भूकंप। भूचाल।

भौंडी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटा पहाड़। पहाड़ी। टीला।

भौंड़ा+ [वि.] (हिं.) देखो 'भोंडा'।

भौंतुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खटमल के आकार का काले रंग का कीड़ा। २-कंधे के नीचे निकलने वाली एक प्रकार की गिलटी। ३-तेली का बैल जिसे सारे दिन घूमना पड़ता है। [वि.] बराबर घूमता रहने वाला।

भौंना [क्रि. अ.] (हिं.) घूमना।

भौंर [संज्ञा पु.] (हि.) १-भौंरा। २-भँवर। ३-मुश्की घोड़ा।

भौंरकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'भँवरकली'।

भौंरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. भँवरी, भौंरी] १-उड़ने वाला काले रंग का एक पतंगा। २-बड़ी मधुमक्खी। सारंग। ३-काला या लाल भड़। ४-एक प्रकार का खिलौना। ५-हिंडोले की वह लकड़ी जो मयारी में लगी रहती है। ६-ज्वार की फसल को हानि पहुचाने वाला एक कीड़ा। ७-गड़रिये की भेड़ों की रखवाली करने वाला कुत्ता। ८-गाड़ी के पहिये का मध्य भाग। नाभी। लट्टा। मूँड़ी। ९-रहट की खड़े बल की चरखी। १०-पशुओं का एक रोग जिसे चेचक कहते हैं। ११-पशुओं की मिरगी रोग। १२-भाँवर। १३-तहखाना। १४-खत्ता। खात।

भौंराना* [क्रि. स.] (हि.) १-घुमाना। चक्कर देना। २-विवाह के समय भांवर दिलाना। [क्रि. अ.] (हिं.) घूमना। चक्कर काटना।

भौंराला* [वि.] (हिं.) देखो 'घुंघराला'।

भौंरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पशुओं के शरीर परके चक्करदार बाल, जिनसे उनके शुभ या अशुभ लक्षणों अथवा गुण दोष का निर्णय किया जाता है। २-विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना। भांवर। ३-जल में पड़ने वाला चक्कर। आवर्त्त। ४-बाटी। अङ्गाकड़ी (रोटी)।

भौंह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आँख की हड्डी पर जमे हुये रोएँ या बाल। भौं। भृकुटी। *भौंह चढ़ाना या तानना*–क्रुद्ध होना। *भौंह जोहना*–खुशामद करना। *भौंह ताकना*–रुख देखना।

भौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संसार। जगत्। २-डर। भय।

भौका [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. भौकी] बड़ी दौरी। टोकरा।

भौगियां* [संज्ञा पु.] (हिं.) संसार के सुख-भोग करने वाला।

भौगोलिक [वि] (सं.) भूगोल का।

भौचक [वि.](हि.) हक्का-बक्का। चकित। चकपकाया हुआ।

भौचाल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) भूकंप। भूडोल।

भौज* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भाई की स्त्री। भावज

भौजाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भावज। भाभी।

भौजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भावज। भाभी।

भौज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य-प्रबंध जिसमें राजा प्रजा से लाभ उठाता हो, पर प्रजा के सत्वों का विचार न करता हो।

भौठा+ [संज्ञा पु.] (देश.) छोटा पहाड़। टीला पहाड़ी।

भौतिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-मोती। ३-उपद्रव। ४-आधि-व्याधि। ५-शरीर की इन्द्रियाँ। [वि.] (सं.) १-पंच भूत से संबंध रखने वाला। २-पंचभूतों से बना हुआ। पार्थिव। ३-शरीर-सम्बन्धी। भूत योनियों से सम्बन्ध रखने वाला।

भौतिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भौतिक का भाव।

भौतिकवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धान्त जिसमें पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता है तथा जिसमें आत्मा या ईश्वर आदि नहीं माने जाते।

भौतिक-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, प्रकाश आदि भूतों या तत्वों का विवेचन होता है। पदार्थ-विज्ञान। फीजिक्स।

भौतिक-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भूतों, प्रेतों आदि को बुलाने तथा दूर करने की विद्या। २-देखो 'भौतिक-विज्ञान'।

भौतिकसृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ प्रकार की देवयोनि, पांच प्रकार की तिर्यक-योनि तथा मनुष्य-योनि, इन तीनों का समुदाय।

भौती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि। रजनी। +[संज्ञा पु.] (देश.) वह पतली लकड़ी जिसकी सहायता से जुलाहे ताने का चरखा घुमाते हैं।

भौत्य [संज्ञा पु.] (सं.) भूतिमुनि के पुत्र तथा चौदहवें मनु के पुत्र का नाम (पुराण)।

भौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भवन'।

भौना* [क्रि. अ.] (हिं.) घूमना। चक्कर लगाना

भौम [वि.] (सं.) १-भूमि-संबंधी। भूमिका। २-भूमि या पृथ्वी से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगलग्रह। २-योग में एक प्रकार का शासन ३-वह केतु या पुच्छलतारा जो अन्तरिक्ष के परे हो। ४-लाल पुनर्नवा। ५-अम्बर।

भौमचार [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार मंगलग्रह का संचार।

भौमजल [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि-सम्बन्धी जल।

भौमदेव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की प्राचीन लिपि (ललित विस्तार)।

भौमन [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

भौमप्रदोष [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलवार को पड़ने

कहने वाला। २-वह जो साहित्य में यथार्थ-वाद-सिद्धान्त को माने। रियलस्ट।

यथार्हण [अव्यय] (सं.) योग्यतानुसार।

यथालब्ध [वि.] (सं.) जितना प्राप्त हो, उसीके अनुसार।

[संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार, जो कुछ मिल जाय उसी से संतुष्ट रहने की वृत्ति।

यथालाभ [वि.](सं.) जो कुछ मिले उसी के अनुसार।

यथावकास [अव्य.] (सं.) छुट्टी के मुताबिक।

यथावत् [अव्य.] (सं.) १-जैसा था, वैसा ही। २-जैसा चाहिए वैसा। पूर्ण रीति से। ३-अच्छी तरह।

यथावस्थित [अव्य.] (सं.) १-जैसा था, वैसा ही। २-सत्य। ठीक। ३-स्थिर। अचल।

यथाविध [अव्य.] (सं.) जिस प्रकार से।

यथाविधि [अव्य.] (सं.) विधि के अनुसार। विधिवत्।

यथाविहित [अव्य.] (सं.) जैसा विधान हो वैसा ही। विधि के अनुसार।

यथाशक्ति [अव्य.] (सं.) शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार। जहां तक हो सके। भरसक।

यथाशक्य [अव्य.] (सं.) जहाँ तक संभव हो। जहाँ तक हो सके। सामर्थ्य-भर। भरसक।

यथाशास्त्र [अव्य.] (सं.) शास्त्र के अनुसार। जैसा शास्त्रों में वर्णित है, वैसा।

यथाश्रय [अव्य.] (सं.) आश्रयस्थान के अनुरूप

यथाश्रुत [अव्य.] (सं.) यथाशास्त्र। शास्त्र के अनुकूल।

यथाश्रुति [अव्य.] (सं.) यथाश्रुत।

यथासंकल्पित, यथासङ्कल्पित [वि.] (सं.) जैसा मन में दृढ़ संकल्प किया गया हो।

यथासंख्य [अव्य.] (सं.) मित्रता भाव से।

यथासंदिष्ट, यथासन्दिष्ट [अव्य.] (सं.) जैसा कहा गया हो।

यथासंपद, यथासम्पदा [अव्य.] (सं.) शक्ति के अनुसार।

यथासंभव, यथासंभव [अव्य.] (सं.) जहाँ तक हो सके।

यथासंहित [अव्य.] (सं.) संहिता के अनुसार।

यथासमय [अव्य.] (सं.) १-ठीक समय पर। नियत समय पर। २-समयानुसार। जैसा समय हो वैसा।

यथासाध्य [अव्य.] (सं.) जहां तक हो सके। यथाशक्ति।

यथास्तुत [अव्य.] (सं.) जैसी स्तुति की गई हो।

यथास्थान [अव्य.] (सं.) ठीक जगह पर।

यथास्थित [वि.] (सं.) जैसा है वैसा ही रहने-वाला।

यथास्थित-समझौता [संज्ञा पु.](हिं.) वह समझौता जो अब तक चली आई हुई स्थिति को उसी रूप में बनाये रखने तथा चलाये चलने के लिए हो। स्टैंडस्टिल-एग्रिमेंट।

यथास्मृति [अव्य.] (सं.) स्मृति के प्रमाण के अनुसार।

यथास्व [अव्य.] (सं.) इच्छानुसार।

यथास्वैर [अव्य.] (सं.) चित्त के अनुसार।

यथाहार [अव्य.] (सं.) भोजन के अनुसार।

यथेच्छ [अव्य.](सं.) इच्छा के अनुसार। जितना अथवा जैसा चाहिए, उतना या वैसा।

यथेच्छक [वि.](सं.) मनमाना काम करने वाला।

यथेच्छाचार [संज्ञा पु.] (सं.) मनमाना काम करना। जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।

यथेच्छाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनमाना काम करने वाला। २-जो कुछ जी में आवे वही करने वाला। मनमौजी।

यथेच्छित [वि.] (सं.) इच्छानुसार। मनचाहा।

यथेप्सित [अव्य.] (सं.) जैसी इच्छा हो वैसा।

यथेष्ट [वि.] (सं.) जितना चाहिए उतना। भरपूर। पर्याप्त।

यथेष्टचारी [वि.] (सं.) इच्छानुसार घूमने वाला

यथेष्टाचरण, यथेष्टाचार [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छा के अनुसार व्यवहार करना। मनमाना काम करना।

यथेष्टाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मन के अनुसार व्यवहार करने वाला।

यथोक्त [अव्य.] (सं.) कहे हुए के अनुसार।

यथोक्तकारी [वि.] (सं.) १-शास्त्रों में जो कुछ कहा, वही करने वाला। २-आज्ञाकारी।

यथोक्तवादी [वि.] (सं.) उचित बोलने वाला।

यथोचित [वि.] (सं.) जैसा या जितना उचित हो वैसा या उतना।

यथोत्तर [अव्य.] (सं.) उत्तर के अनुसार।

यथोत्साह [अव्य.] (सं.) सामर्थ्य के अनुसार।

यथोदित [अव्य.] (सं.) कहने के मुताबिक।

यथोदिष्ट [वि.] (सं.) जैसा कहा गया हो।

यथोपदेश [अव्य.] (सं.) उपदेश के अनुसार।

यथोपपन्न [अव्य.] (सं.) जिस प्रकार प्राप्त हुआ हो।

यथोपपाद [अव्य] (सं.) यथासंभव।

यथोपयोग [अव्य.] (सं.) उपयुक्त प्रयोग।

यथोपाधि [अव्य] (सं.) उपाधि के अनुसार।

यदपि* [अव्य.] (हिं.) देखो 'यद्यपि'।

यदर्थ [वि.] (सं.) जिस कारण से।

यदा [अव्य.] (सं.) १-जिस समय। जब। २-जहाँ।

यदाकदा [अव्य.] (सं.) जबतब। कभी-कभी।

यदि [अव्य.] (सं.) अगर। जो।

यदिंच, यदिचेत् [अव्य.] (सं.) यद्यपि। अगर

यदु [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा ययाति के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ। २-पुराणानुसार हर्यश्व राजा के पुत्र का नाम।

यदुध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक ऋषि का नाम।

यदुनंदन, यदुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-यदु कुल को आनन्द देने वाले। श्रीकृष्णचन्द्र। २-कृष्णचैतन्य के एक साथी भक्त।

यदुनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यदुपति, यदुभूप [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यदुराई* [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

यदुराज, यदुराट् [संज्ञा पु.](सं.) यदुकुल के राजा श्रीकृष्ण।

यदुवंश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा यदु का कुल या खानदान।

यदुवंशमणि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

यदुवंशी [संज्ञा पु.] (सं.) यदुकुल में उत्पन्न। यादव।

यदुवर, यदुवीर, यदूत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

यदृच्छया [क्रि. वि.] (सं.) १-अकस्मात्। अचानक। २-दैव संयोग से। ३-मनमाने ढंग से

यदृच्छायाभिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) कृतसाक्षी के पांच भेदों में से एक। वह साक्षी जो घटना के समय अकस्मात् आ गया हो।

यदृच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वेच्छाचार। मनमानापन। २-आकस्मिक संयोग। इत्तिफाक।

यद्भविष्य [संज्ञा पु.] (सं.) अदृष्टवादी।

यद्वातद्वा [अव्य.] (सं.) कभी-कभी।

यद्यपि [अव्य.] (सं.) यदि ऐसा है ही। अगर्चे। गोकि।

यम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ उत्पन्न लड़कों का जोड़। यमज। २-दक्षिण दिशा के दिक्पाल। ३-इन्द्रियों को वश में रखना। निग्रह। ४-चित्त को धर्म में स्थिर रखने वाले कर्मों का साधन। ५-मृत्यु के देवता। यमराज। ६-कौआ। ७-शनि। ८-वायु। ९-विष्णु। १०-दो की संख्या। ११-यमज। जोड़े।

यमक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्दालंकार के एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार भिन्न-भिन्न अर्थों में आता है। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येकचरण में एक नगण और दो लघुमात्राएँ होती हैं। ३-एक प्रकार का सैनिक व्यूह या जमाव। ४-एक साथ उत्पन्न होने वाले दो बालक। यमज। ५-संयम।

यमकात, यमकातर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यम का

यमकिंकर, यमकिङ्कर

छुरा। २-एक प्रकार की तलवार।

यमकिंकर, यमकिङ्कर [संज्ञा पु.](सं.) यमदूत।

यमकीट [संज्ञा पु.] (सं.) केंचुवा।

यमकील [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यमक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) मरण। मृत्यु।

यमघंट, यमघण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलित-ज्योतिष के अनुसार एक दुष्टयोग जिसमें शुभ कार्य करना मना है। २-कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा। दीपावली के बाद का दिन।

यमचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज का अस्त्र।

यमज [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ जन्मे हुए दो बच्चों का जोड़ा। जुड़वाँ बच्चे। २-अश्विनीकुमार। ३-वह घोड़ा जिसका एक ओर का अंग हीन या दुर्बल हो तथा दूसरी ओर का वही अंग ठीक हो।

यमजात [संज्ञा पु.] देखो 'यमज'।

यमजातना [संज्ञा स्त्री] देखो 'यमयातना'।

यमजित् [संज्ञा पु.](सं.) मृत्यु जीतने वाले, मृत्युञ्जय।

यमत्व [संज्ञा पु.] (सं.) यम का भाव या धर्म।

यमदंड, यमदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज का डंडा। कालदंड।

यमदंष्ट्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक के मत से आश्विन, कार्त्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्टकाल, जिसमें रोग तथा मृत्यु का अधिक भय होता है।

यमदग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम के पिता का नाम।

यमदुतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यमद्वितीया'

यमदूतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौआ। २-यम के दूत।

यमदूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

यमदेवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भरणीनक्षत्र जिसके देवता यम माने जाते हैं।

यमद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मलि या सेमर का पेड़।

यमद्वितीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिक-शुल्का द्वितीया। भाईदूज।

यमधार [संज्ञा पु.] (सं.) दुधारी तलवार।

यमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियम से बाँधना। प्रतिबन्ध या निरोध करना। २-बन्धन। बांधना। ३-ठहराना। ४-रोकना। ५-यमराज

*[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यवन'।

यमनकल्याण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'एमन'।

यमनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं) भरणीनक्षत्र जिसके देवता यम माने जाते हैं।

यमनगर [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुरी।

यमनाइक* [संज्ञा पु.] (हिं.) यमराज।

यमनिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'यवनिका'।

यमनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

यमपट [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज के यहां पापियों को मिलने वाली यातनाओं के चित्र जिन्हें दिखाकर प्राचीनकाल में लोग घर-घर भीख मांगते फिरते थे।

यमपुर [संज्ञा पु.] (सं.) यमलोक।

यमपुर पहुंचना-मार डालना।

यमपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमलोक। यमपुर।

यमपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमराज। २-यम के दूत।

यमप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के दक्षिण में था।

यमप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।

यमभागिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना नदी

यममार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्युपथ।

यमयन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

यमया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष में एक नक्षत्र योग।

यमयातना [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-नरक की यातना या पीड़ा। २-मृत्यु के समय होने वाला शारीरिक या मानसिक कष्ट।

यमरथ [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा।

यमराज [संज्ञा पु.] (सं.) यमों के राजा धर्मराज जो मरने के बाद प्राणियों के कर्मों का विचार करके उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।

यमराज्य, यमराट् [संज्ञा पु.] (सं.) यमलोक।

यमल [संज्ञा पु.] (सं.) १-युग्म। जोड़ा। २-एक साथ उत्पन्न दो बालक। यमज।

यमलच्छद [संज्ञा पु] (सं.) कचनार।

यमदत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनेर। २-अशमंतक।

यमलसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो बच्चे एक साथ देने वाली गाय।

यमला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक प्रकार का हिचकी का रोग। २-एक प्राचीन नदी का नाम। ३-तांत्रिकों की एक देवी।

यमलार्जुन [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के दो पुत्रों का नाम जो नारद के शाप से गोकुल में अर्जुनवृक्ष हो गये थे जिनका उद्धार श्रीकृष्ण ने किया।

यमली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक में मिली दो वस्तुएँ। जोड़ी। २-स्त्रियों का घाघरा और चोली।

यमलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लोक जहाँ मरने पर लोग जाते हैं। यमपुरी। २-नरक।

यमलोक भेजना या पहुँचाना-मार डालना।

यमवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा।

यमवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल का पेड़।

यमव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का निष्पक्षपात शासन।

यमसदन [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुर।

यमसू [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। [संज्ञा स्त्री.] जिसके एक-ही गर्भ सेएक साथ दो बच्चों का जन्म हो।

यमसूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा घर जिसके पश्चिम उत्तर में शाला हो।

यमस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक दिन में संपन्न होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

यमस्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यमुना। २-दुर्गा।

यमहंता, यमहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) काल का विनाश करने वाला।

यमांतक, यमान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव

यमातिरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जो ४६ दिनों में संपन्न होता है।

यमादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का एक रूप।

यमानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन।

यमानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन।

यमानुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमराज की छोटी बहिन, यमुना।

यमारि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यमालय [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुर।

यमिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

यमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यम की बहिन जो बाद में यमुना नदी के रूप में बही। [संज्ञा पु.] (हिं.) संयमी।

यमुंड, यमुण्ड [संज्ञा पु.] सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

यमुना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यम की बहन यमी। २-उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जिसे हिन्दू लोग यम की बहन यमी का स्वरूप मानते हैं। ३-दुर्गा।

यमुनाभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम जिन्होंने अपने हल से यमुना के दो भाग किये थे।

यमुनोत्तरी [संज्ञा पु.] (सं.) गढ़वाल के पास का एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकली है।

यमेरुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समयसूचक वह घड़ियाल जो प्राचीनकाल में एक घड़ी के बाद बजाया जाता था।

यमेश [संज्ञा पु.] (सं.) भरणीनक्षत्र।

यमेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

ययाति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा नहुष के एक पुत्र का नाम जिसका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के साथ हुआ था।

ययातिपतन [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

ययातीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

ययावर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यायावर'।

ययी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-घोड़ा। ३-मार्ग।

ययु [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-अश्वमेधयज्ञ

कहना।

मंगलवाद, मङ्गलवाद [संज्ञा पु.] (सं.) आशीर्वाद। आशीष।

मंगलवाद्य, मङ्गलवाद्य[संज्ञा पु.](सं.) वह बाजा जो शुभ अवसरों पर बजाया जाता है।

मंगलवार, मङ्गलवार [संज्ञा पु.] (सं.) सोमवार के बाद पड़ने वाला दिन।

मंगलसूत्र, मङ्गलसूत्र [संज्ञा पु.](सं.) वह डोरा जो किसी देवता के प्रसादरूप में किसी शुभ अवसर पर कलाई में बांधा जाता है।

मंगलस्नान, मङ्गलस्नान [संज्ञा पु.](सं) किसी मंगलकामना से अथवा किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मंगला, मङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पतिव्रता स्त्री। २-पार्वती। ३-सफेद दूब। ४-हलदी ५-एक प्रकार का करंज। नीली दूब।

मंगलाचरण, मङ्गलाचरण [संज्ञा पु.](सं.) वह श्लोक अथवा पद जो किसी शुभकार्य के आरम्भ में कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिये पढ़ा अथवा लिखा जाय।

मंगलाचार, मङ्गलाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाना-बजाना आदि शुभकृत्य। २-आशीर्वादोच्चारण।

मंगलामुखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

मंगलारंभ, मङ्गलारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश

मंगलालय, मङ्गलालय [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

मंगलाव्रत, मङ्गलाव्रत [संज्ञा पु.](सं.) एक व्रत जो पार्वती के उद्देश्य से स्त्रियां करती हैं। २-शिव।

मंगली, मङ्गली [वि.](सं.) जिसकी जन्मकुण्डली के चौथे, आठवें तथा बारहवें स्थान में मंगल ग्रह हों (अशुभ)।

मंगल्य [वि.] (सं.) १-शुभ। मंगलकारक। २-साधु। ३-सुन्दर। [संज्ञा पु.](सं.) १-अनेक तीर्थ स्थानों से लाया हुआ जल जो राज्याभिषेक के काम में आता है। २-त्रायमाणलता। ३-मसूर की दाल। ४-सिंदूर। ५-चन्दनकाष्ठ। ६-जीवकवृक्ष। ७-नारियल का वृक्ष। ८-कैत। ९-रीठा। १०-दही। ११-सोना सुवर्ण।

मंगल्यकुसुमा, मङ्गल्यकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी।

मंगल्या, मङ्गल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का अगरु जिसमें चमेली के फूल जैसी महक निकलती है। २-दुर्गा का नाम। ३-गंधद्रव्य विशेष। ४-चन्दन विशेष। ५-हलदी। ६-दूब। ७-रोचना। ८-शंखपुष्पी। ९-सफेद वच। १०-जीवंती। ११-ऋद्धिलता।

मँगवाना [क्रि. स.] (हि.) १-दूसरे को मांगने में प्रवृत्त करना। २-किसी को कोई वस्तु मोल खरीदकर अथवा किसी से मांगकर लाने में प्रवृत्त करना।

मँगाना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'मँगवाना'। २-मँगनी कराना। विवाह की बातचीत पक्की कराना।

मँगेतर [वि.] (सं) जिसके साथ किसी की मंगनी हुई हो।

मँगोल [संज्ञा पु.] (सं.) मध्य एशिया में बसने वाली एक जाति।

मंच, मञ्च, मंचक, मञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाट। २-खाट के समान बनी हुई बैठने की छोटी पटड़ी। ३-वह ऊंचा बना हुआ मंडप जिसपर बैठकर सर्वसाधारण के सामने कोई कार्य किया जाय।

मंचपत्री, मञ्चकपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लता जिसे सुरपत्री भी कहते हैं।

मंचकाश्रय, मञ्चकाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) खटमल।

मंचकासुर, मञ्चकासुर [संज्ञा पु.](सं.) पुराणानुसार एक दैत्य का नाम।

मंचमंडप, मञ्चमण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) खेती में बनी हुई वह मचान जिसपर खेत का पहरेदार बैठता है।

मंचिका, मञ्चिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कुर्सी। २-कठौता।

मंछर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मत्सर'। २-देखो 'मच्छर'।

मंजन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दांत साफ करने का चूर्ण या बुकनी। २-देखो 'मज्जन।

मँजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मांजा जाना। २-अभ्यास होना।

मंजर, मञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोती। २-तिल का पौधा। ३-फूलों का भब्बा।

मंजरिका, मञ्जरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मंजरी'।

मंजरित, मञ्जरित [वि](सं.) १-फूलों से संपन्न। २-कलियों से युक्त। मंजरी से युक्त।

मंजरी, मञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटे पौधे अथवा लता आदि का नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २-कुछ विशिष्ट वृक्ष में फूलों अथवा फलों के स्थान में एक संके में लगे हुए अनेक दानों का समूह। ३-मोती। ४-तुलसी। ५-तिल का पौधा। ६-लता। बेल

मंजरीक, मञ्जरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तुलसी। २-मोती। ३-तिल का पौधा। ४-बेंत (लता)। ५-अशोकवृक्ष।

मंजाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मँजाने या माँजने की क्रिया अथवा भाव। २-मांजने की मजदूरी।

मँजाना [क्रि. स.] (हिं.) मांजने या मँजाने का काम दूसरे से कराना।

मँजार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिल्ली।

मँजावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माँजने या की क्रिया या भाव। २-किसी काम के का मंजना। हाथ की सफाई।

मंजि, मञ्जि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो

मंजिका, मञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रंडी।

मंजिफला, मञ्जिफला [संज्ञा स्त्री.](सं.)

मंजिल [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-यात्रा के में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २- खण्ड। मरातिब।

मंजिष्ठा, मञ्जिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

मंजिष्ठामेह, मञ्जिष्ठामेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकार का प्रमेह जिसमें मजीठ के समान मूत्र आता है।

मंजी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मंजरी'।

मंजीर, मञ्जीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-नूपुर। २-वह लकड़ी या खंभा जिसमें मथानी डंडा बंधा रहता है। ३-पश्चिमी एक पहाड़ी जाति का नाम।

मंजु, मंजु [वि.] (सं.) सुंदर। मनोहर।

मंजुकेशी, मञ्जुकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) का एक नाम।

मंजुगमन, मञ्जुगमन [वि.] (सं.)

मजुगर्त, मञ्जुगर्त [वि.] (सं.) नैपाल प्राचीन नाम।

मंजुघोष, मञ्जुघोष [संज्ञा पु.] (सं.) के एक देवता का नाम। २-एक प्रसिद्ध का नाम। [वि.] (सं.) मधुर स्वर वाला।

मंजुघोषा, मञ्जुघोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा का नाम।

मंजुदेव, मञ्जुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) आचार्य का नाम।

मंजुनाशी मञ्जुनाशी [संज्ञा स्त्री.](सं.) २-इ द्राणी।

मंजुपाठक, मञ्जुपाठक [संज्ञा पु.] (सं.)

मंजुप्राण,, मञ्जुप्राण [संज्ञा पु.] (सं.)

मंजुभद्र, मञ्जुभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) आचार्य का नाम।

मंजुल, मञ्जुल [वि.] (सं.) मनोहर। खूबसूरत। [संज्ञा पु.] (सं.) १- नदी या जलाशय का किनारा।

मंजुलता, मञ्जुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

मंजुला, मञ्जुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) का नाम।

मंजुवज्र, मञ्जुवज्र [संज्ञा पु.](सं.) देवता का नाम।

मंजुश्री, मञ्जुश्री [संज्ञा पु.] (सं.) देखो घोष (२)'।

मंजूर [वि.] (अ.) स्वीकृत।

मंजूरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) स्वीकृति।

मंजूषा, मञ्जुषा [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २-पिंजड़ा। ३-पत्थर। ४-मजीठ।

मंजूसा [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'मंजूषा'।

मंझधार [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-नदी या उसके प्रवाह का मध्य भाग। २-किसी काम का मध्य भाग।

मंझला [वि.] (हिं.) बीच का।

मंझा* [वि.] (हिं.) बीच का। जो दो के बीच में हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खाट। पलंग। २-देखो 'मांझा'।

मंझार+ [क्रि. वि.] (हिं.) बीच में। मध्य में।

मंझियार* [वि.] (हिं.) मध्य का। बीच का।

मंझोला [वि.] (हि.) देखो 'मंझोला'।

मंठ, मण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल में मैदे से बनने वाले एक पकवान का नाम जिसे शीरे में डुबाया जाता था।

मंड, मण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-भात का पानी। माड़। २-पिच्छ। सार। ३-भूषा। सजावट। ४-एक साग। ५-मेंढक। ६-एरंड नामक वृक्ष

मंडक, मण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की रोटी। २-माधवी लता। ३-गीत का एक अंग।

मंडन, मण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सजाना। संवारना। २-युक्ति या प्रमाण द्वारा कोई बात सिद्ध करना। ३-भरना। पूरित करना।

मंडना* [क्रि. स.] (हिं.) १-सजाना। शृङ्गार-करना। २-युक्ति द्वारा सिद्ध करना। समर्थन या पुष्टिकरण करना। ३-दलित करना। मर्दित करना।

मंडप, मण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी उत्सव अथवा मंगलकार्य के लिए बाँस, फूल, कपड़े आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। २-देव-मन्दिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा। ३-शामियाना। चंदोवा।

मंडपिका, मण्डपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा मंडप।

मंडपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा मंडप।

मंडर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मंडल'।

मंडरना [क्रि अ.] (हिं.) मंडलाकार छा जाना। चारों ओर से घेर लेना।

मंडराना [क्रि. अ.] (हि.) १-मंडलाकार उड़ना। चक्कर देते हुए उड़ना। २-किसी के चारों ओर घूमना। ३-किसी के आस-पास ही घूम-फिरकर रहना।

मंडरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पयाल की बनी हुई चटाई।

मंडल, मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिधि। चक्कर। घेरा। २-गोल। विस्तार। गोलाई। ३-सूर्य अथवा चन्द्रमा के चारों ओर पड़ने वाला घेरा। परिवेश। ४-किसी वस्तु का वह गोल भाग जो अपनी दृष्टि के सामने हो। ५-क्षितिज। ६-चालीस योजन लम्बा और बीस योजन लंबा भूमिखण्ड। ७-सेना की वृत्ताकार स्थिति। ८-समूह। समुदाय। एक ही प्रकार के या एक ही विचार के लोगों का समाज ९-कुत्ता। १०-एक प्रकार का सांप। ११-एक गंधद्रव्य। १२-कुष्टरोग विशेष जिसमें चकत्ते पड़ जाते हैं। १३-शरीर की आठ संधियों में से एक। १४-ग्रह के घूमने की कक्षा। १५-पहिया। चक्र। १६-ऋग्वेद का एक खंड। १७-कोई गोल चिह्न। १८-प्रांत या राज्य आदि का वह विभाग अथवा अंश जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो। जिला।

मंडल बाँधना-१-गोलाकार रेखा के रूप में फिरना। २-चारों ओर से छाजाना। ३-चारों ओर अंधेरा हो जाना।

मंडलक, मण्डलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'मंडल'। २-दर्पण।

मंडलनृत्य, मण्डलनृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) वृत्त की परिधि के रूप में घूमते हुए नाचना।

मंडलन्यायालय, मण्डलन्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मंडल या जिले की प्रधान अदालत। डिस्ट्रिक्ट-कोर्ट।

मंडलपत्रिका, मण्डलपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्त-पुनर्नवा।

मंडलपरिषद्, मण्डलपरिषद् [संज्ञा स्त्री.](सं.) किसी मंडल अथवा जिले के निर्वाचित प्रतिनिधियों की परिषद जो जिले की सड़कों, स्वास्थ्य, प्रारम्भिक शिक्षा आदि की व्यवस्था करती है। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड।

मंडलपुच्छक, मण्डलपुच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) एक कीड़ा जिसमें सांप के समान प्राणनाशक विष होता है।

मंडलव्यूह, मण्डलव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) सेना की वृत्ताकार स्थिति।

मंडलाकार, मण्डलाकार [वि.] (सं.) गोल।

मंडलाग्र, मण्डलाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शस्त्र जो चीरफाड़ के काम आता है। (सुश्रुत)।

मंडलाधीश, मण्डलाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) मंडल या जिले का प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में जिले की रक्षा तथा माल-विभाग रहते हैं। मंडलायुक्त। डेपुटी-कमिश्नर।

मंडलाना [क्रि. अ.](हिं.) १-किसी वस्तु के ऊपर चारों ओर घूमतेहुए उड़ना। २-बराबर किसी के आसपास बना रहना।

मंडलायित, मण्डलायित [वि.] (सं.) गोल। वर्त्तुल।

मंडलायुक्त, मण्डलायुक्त [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'मंडलाधीश'।

मंडली, मण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समूह। समाज। समुदाय। २-दूब। ३-गुडुच। ४-किसी विशेष कार्य, प्रदर्शन, व्यवसाय आदि के लिए बना हुआ कुछ लोगों का संघटित दल। कम्पनी। ५-माल के मामलों का फैसला करने वाला अधिकरण। बोर्ड। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का साँप। २-वटवृक्ष। ३-बिल्ली। ४-नेवले की जाति का बिल्ली की तरह का एक जन्तु जिसे बंगाल में खटाश कहते हैं। ५-सूर्य।

मंडलीक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मंडल अथवा १२ राजाओं का अधिपति।

मंडलेश्वर, मण्डलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक मंडल का अधिपति।

मँड़वा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मंडप'।

मंडहारक [संज्ञा पु.] (सं.) कलवार।

मंडा, मण्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) भूमि का एक मान जो दो बिस्वे के बराबर होता है। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बंगला मिठाई। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-असलकी। २-सुरा।

मँडार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गड्ढा। २-झाबा। डलिया।

मंडित, मण्डित [वि.] (सं.) १-सजाया हुआ। २-छाया हुआ। ३-पूरित। भरा हुआ।

मँड़ियार [संज्ञा पु.] (देश.) झरबेरी।

मंडी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दो बिस्वे के बराबर का एक मान। २-थोक बिक्री का स्थान। बहुत बड़ा बाजार। *मंडी लगना*-बाजार खुलना।

मँडुआ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कदन्न।

मंडूक, मण्डूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेंढक। २-एक ऋषि। ३-दोहे का एक भेद जिसमें १८ गुरु तथा १२ लघु अक्षर होते हैं। ४-एक प्रकार का नृत्य। ५-घोड़े की एक जाति। ६-प्राचीनकाल का एक बाजा। ७-रुद्रताल के ग्यारह भेदों में से एक।

मंडूकपर्णी, मण्डूकपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-ब्राह्मीबूटी। २-मंजिष्ठा।

मंडूका, मण्डूका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

मंडूकी, मण्डूकी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-ब्राह्मी। २-आदित्यभक्ता।

मंडूर, मण्डूर [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का मैल। सिंघान।

मँढा, मंढा [संज्ञा पु.](हि.) एक लकड़ी का औजार जिसे कमख्वाब बुनने वाले नक़्शा उठाने के काम में आता है।

मंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सलाह। २-मन्त्र। यौ०-*तंतमंत*-प्रयत्न। उद्योग।

मंतव्य, मन्तव्य [वि.](सं.) मानने योग्य। माननीय। [संज्ञा पु.] (सं.) मत। विचार। ६

मंत्र, मन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुप्त रखने योग्य रहस्य की बात। गुप्त सलाह। २-वेदवाक्य ३-वेदों का वह भाग जो ब्राह्मण-भाग से भिन्न है। ४-वे शब्द या वाक्य, जिनका इष्टसिद्धि अथवा किसी देवता की प्रसन्नता

के लिये जप किया जाता है। ४–वे शब्द अथवा वाक्य जिनका उच्चारण झाड़-फूंक करने वाले भूत, विष आदि का प्रभाव दूर करने के लिये करते हैं।

यौ०-*मंत्रयंत्र* या *यंत्रमंत्र*-जादू टोना।

मंत्रकार, मन्त्रकार [संज्ञा पु.] (*सं.*) मंत्र रचने वाला ऋषि।

मंत्रकुशल, मन्त्रकुशल [वि.] (*सं.*) परामर्श देने में निपुण।

मंत्रकृत, मन्त्रकृत [संज्ञा पु.](*सं.*) वेद का रचियता। [वि.] (*सं.*) १–परामर्श देने वाला। २–दौत्यकारी।

मंत्रगूढ़ [संज्ञा पु.] (*सं.*) गुप्तचर। जासूस।

मंत्रगृह, मन्त्रगृह [संज्ञा पु.] (*सं.*) वह स्थान जहां सलाह की जाती हो।

मंत्रजल, मन्त्रजल [संज्ञा पु.](*सं.*) मंत्र से प्रवाहित किया हुआ जल।

मंत्रजिह्व, मन्त्रजिह्व [संज्ञा पु.] (*सं.*) अग्नि।

मंत्रज्ञ, मन्त्रज्ञ [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–गुप्तचर। जासूस। २–चर। दूत। [वि.] (*सं.*) १–मन्त्र जानने वाला। २–जिसमें परामर्श देने की योग्यता हो। ३–भेद जानने वाला।

मंत्रण, मन्त्रण [संज्ञा पु.](*सं.*) परामर्श। सलाह

मंत्रणा, मन्त्रणा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १–परामर्श सलाह। २–कई व्यक्तियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत।

मंत्रणागृह, मन्त्रणागृह [संज्ञा पु.] (*सं.*) वह गृह या स्थान जहां किसी राज्य के मंत्रिगण बैठकर विचार विमर्श करते हैं। मन्त्रणा-सदन।

मंत्रणापरिषद्, मन्त्रणापरिषद् [संज्ञा पु.] (*सं.*) वह परिषद् या सभा जो केवल अपना परामर्श या सलाह दे। एडवाइजरी-कौंसिल।

मंत्रणासदन, मन्त्रणासदन [संज्ञा पु.](*सं.*) देखो 'मंत्रणागृह'।

मंत्रद, मन्त्रद [संज्ञा पु.] (*सं.*) मंत्र या दीक्षा देने वाला, गुरु। [वि.] (*सं.*) परामर्श देने वाला

मन्त्रदर्शी [वि.] (*सं.*) वेदज्ञ।

मंत्रदीधिति, मन्त्रदीधिति [संज्ञा पु.](*सं.*) अग्नि

मंत्रद्रुम, मन्त्रद्रुम [संज्ञा पु.] (*सं*) एक इन्द्र का नाम।

मंत्रधर, मन्त्रधर [संज्ञा पु.] (*सं.*) मन्त्री।

मंत्रनिर्णय, मन्त्रनिर्णय [संज्ञा पु.] (*सं.*) विचार करने के पीछे किया हुआ निर्णय या फैसला।

मंत्रपति, मन्त्रपति [संज्ञा पु.](*सं.*) मंत्र का अधिष्ठाता देवता।

मंत्रपूत, मन्त्रपूत [वि.] (*सं.*) १–मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। २–मंत्र पढ़कर फूंका हुआ

मंत्रबीज, मन्त्रबीज [संज्ञा पु.] (*सं.*) मूलमंत्र।

मंत्रभेद, मन्त्रभेद [संज्ञा पु.](*सं.*) गुप्त मंत्रणा या सलाह को प्रकट कर देना।

मंत्रभेदक, मन्त्रभेदक [संज्ञा पु.] (*सं.*) राजकीय गुप्त मंत्रणा का प्रकाशित करने वाला।

मंत्रमूर्ति, मन्त्रमूर्ति [संज्ञा पु.] (*सं.*) शिव।

मंत्रमूल, मन्त्रमूल [संज्ञा पु.] (*सं.*) राज्य।

मंत्रयान, मन्त्रयान [संज्ञा पु.] (*सं.*) बौद्धधर्म की एक शाखा।

मंत्रयुद्ध, मन्त्रयुद्ध [संज्ञा पु.] (*सं.*) केवल बातचीत या बहस के द्वारा शत्रु को वश में करने का प्रयत्न।

मंत्रयोग, मन्त्रयोग [संज्ञा पु.] (*सं.*) मंत्र का प्रयोग।

मंत्रवादी, मन्त्रवादी [वि.] (*सं.*) १–मन्त्रोच्चारण करने वाला। २–मंत्रज्ञ।

मंत्रविद्, मन्त्रविद् [वि.] (*सं.*) १–मंत्रज्ञ। २–वेदज्ञ। ३–जो राज्य के रहस्यों का जानकार हो

मंत्रविद्या, मन्त्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) तंत्रविद्या। मंत्रशास्त्र।

मंत्रशक्ति, मन्त्रशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) युद्ध में चतुराई अथवा चालाकी।

मंत्रसंस्कार, मन्त्रसंस्कार [संज्ञा पु.] (*सं.*) मन्त्र पढ़कर किया हुआ संस्कार।

मंत्रसंहिता, मन्त्रसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) वेदों का वह भाग जिसमें मन्त्रों का संग्रह हो।

मंत्रसाधक, मन्त्रसाधक [संज्ञा पु.](*सं.*) तांत्रिक

मंत्रसाधन, मन्त्रसाधन [संज्ञा पु.] (*सं.*) अभिलषित विषय की सिद्धि।

मंत्रसिद्धि [संज्ञा स्त्री.](*सं.*) मन्त्र का सिद्ध होना। मंत्र द्वारा प्राप्त शक्ति। मंत्र की सफलता।

मंत्रसूत्र, मन्त्रसूत्र [संज्ञा पु.] (*सं.*) मंत्र पढ़कर बनाया हुआ धागा।

मंत्रिणी, मन्त्रिणी [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) मन्त्रणा देने वाली।

मंत्रित, मन्त्रित [वि.](*सं.*) १–मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित। २–परामर्श किया हुआ।

मंत्रिता, मन्त्रिता [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) मंत्रित्व।

मंत्रित्व, मन्त्रित्व [संज्ञा पु.] (*सं.*) मन्त्री का काम या पद।

मंत्रिपति, मन्त्रिपति [संज्ञा पु.] (*सं.*) प्रधानमन्त्री। प्रधान अमात्य।

मंत्रि-परिषद्, मन्त्रिपरिषद् [संज्ञा पु.] (*सं.*) मंत्रियों की परिषद् या सभा। कैबिनेट-कौंसिल। कौंसिल-आफ-मिनिस्टर्स्।

मंत्रिमंडल, मन्त्रिमण्डल [संज्ञा पु.] (*सं.*) किसी देश, राज्य, संस्था आदि के मन्त्रियों का समूह। कैबिनेट।

मंत्रिमंडलीय, मन्त्रिमण्डलीय [वि.](*सं.*) मंत्रिमंडल-सम्बन्धी। मंत्रिमंडल का।

मंत्रिमंडलीयसंकट, मन्त्रिमण्डलीयसङ्कट [संज्ञा स्त्री.](*सं.*) किसी देश अथवा राज्य के मं में विचारों के मतभेद के कारण उत्पन्न कैबिनेट काराइसेस्।

मंत्री, मन्त्री [संज्ञा पु.] (*सं.*) [स्त्री. मंत्रि १–परामर्श अथवा सलाह देने वाला। व्यक्ति जिसके परामर्श से राज्य के राज्य के किसी विभाग के सब कार्य सचिव। मिनिस्टर। ३–किसी संस्था राजकीय विभाग का वह अधिकारी मित रूप अपने विभाग के सब कार्य हो। सेक्रेटरी। ४–शतरंज की एक गोटी।

मंत्रेला [संज्ञा पु.] (*हि.*) तंत्र-मंत्र या जानने वाला।

मंथ, मन्थ [संज्ञा पु.](*सं.*) १–मथना। २–हिलाना। ३–मलना। ४–मारना। करना। ५–कंपन। ६–एक पेय पदार्थ द्रव्यों को एक साथ मथकर बनाते हैं। दूध या जल में मिलाकर मथा हुआ ८–मथानी। मथने का औजार। ९– के मृग। १०–सूर्य किरण। ११–आंख रोग। १२–एक प्रकार का ज्वर।

मंथक, मन्थक [संज्ञा पु.] (*सं.*) १–एक मुनि। २–मंथकमुनि के वंशज।

मंथज, मन्थज [संज्ञा पु.](*सं.*) मक्खन।

मंथन, मन्थन [संज्ञा पु.] (*सं.*) १– विलोना। २–मथानी। ३–गहरी अवगाहन।

मंथपर्वत, मन्थपर्वत [संज्ञा पु.] (*सं.*) पर्वत।

मंथर, मन्थर [संज्ञा पु.](*सं.*) १–बाल २–कोष। खजाना। ३–क्रोध। मथानी। ५–बाधा। रोक। चर। ७–मक्खन। ८–दुर्ग। ज्वर। १०–हरिण। ११–भँवर। मास।

[वि.] (*सं*) धीमी गति वाला।

मंथरता [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) धीमापन। से चलने का भाव।

मंथरा, मथरा [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) १– कुबड़ी चेरी, जिसने उसे भड़काकर को वनवास दिलाया था। २– १२० हाथ लम्बी, ६० हाथ चौड़ी हाथ ऊँची हो।

मंथरु, मन्थरु [संज्ञा पु.] (*सं.*) वह हवा जो चँवर डुलाने से होती है।

मंथा, मन्था [संज्ञा स्त्री.] (*सं.*) मेथी।

मंथान, मन्थान [संज्ञा पु.] (*सं.*) १– रई। २–शिवजी। ३–मन्दराचल अमलतास। ५–भैरव का एक भेद। वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में होते हैं।

मंथानक, मन्थानक [संज्ञा पु.] (*सं.*) की घास।

मंथिता [वि.] (सं.) [स्त्री. मंथित्री] मथने वाला

मंथिनी, मन्थिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पात्र या बरतन जिसमें कोई तरल पदार्थ मथा जाय।

मंथिप, मन्थिप [वि.] (सं.) मथा हुआ सोमरस पीने वाला।

मंथी, मन्थी [वि.] (सं.) १–मथने वाला। २–संताप देने वाला। पीड़ाकारक। ३-मन्थनयुक्त [संज्ञा पु.] १–मथा हुआ सोमरस। २–वीर्य

मंद, मन्द [वि.](सं.) १-धीमा। सुस्त। २-आलसी। ३-मूर्ख। ४-ढीला। शिथिल। ५–खल। दुष्ट। [संज्ञा पु.] १–शनि। २–यम। ३–अभाग्य। ४-प्रलय। ५-एक प्रकार का हाथी।

मंदउ+ [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़े के गले में होने वाला एक रोग।

मंदक, मन्दक [वि.] (सं.) मंद बुद्धि का। मूर्ख।

मंदकर्ण, मन्दकर्ण [वि.] (सं.) थोड़ा-थोड़ा बहरा

मंदकर्णी, मन्दकर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

मंदकर्म, मन्दकर्म [वि.] (सं.) कार्यहीन।

मंदकारी, मन्दकारी [वि.] (सं.) हानि करनेवाला।

मंदग, मन्दग [वि.] (सं.) [स्त्री. मंदगा] धीरे-धीरे चलने वाला। [संज्ञा पु.] शकद्वीप के एक जनपद का नाम (पुराण)।

मंदगति, मन्दगति [वि.](सं.) धीमी चाल चलनेवाला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रहों की गति की वह अवस्था जब वे अपनी कक्षा में घूमते हुए सूर्य से दूर निकल जाते हैं।

मंदट, मन्दट [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु।

मंदता, मन्दता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–आलस्य। २-धीमापन। ३-क्षीणता।

मंदधूप [संज्ञा पु.] (हि.) काला डामर।

मंदफल, मन्दफल [संज्ञा पु.] (सं.) गणित ज्योतिष में ग्रहपति का एक भेद।

मंदबुद्धि, मन्दबुद्धि [वि.] (सं.) कम अक्ल। मूर्ख

मंदभागी, मन्दभागी [वि.] (सं.) अभागा। हतभाग्य।

मंदभाग्य, मन्दभाग्य [वि.] (सं.) दुर्भाग्य। अभाग्य।

मंदभाषिणी, मन्दभाषिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृदुभाषिणी।

मंदयंती, मन्दयन्ती [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्गा।

मंदर, मन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक पर्वत का नाम जिसे देवताओं और असुरों ने मथा था (पुराण)। २–स्वर्ग। ३–दर्पण। ४–आठ या सोलह लड़ियों वाला मोतियों का हार। ५–वह प्रासाद जो छः कोना हो और जिसका विस्तार तीस हाथ हो। ६–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण होता है। [वि.] (सं.) मंद। धीमा। २–मठा।

मंदरगिरि, मन्दरगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १–मंदराचल पर्वत। २–एक छोटा पहाड़ जो मुंगेर के पास है।

मँदरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. मँदरी] नाटा। ठिगना

मंदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा।

मंदराचल, मन्दराचल [संज्ञा पु.] (सं.) मंदर नामक एक पर्वत।

मंदरी [संज्ञा स्त्री.] (दश.) खाजे की जाति का एक वृक्ष।

मंदसान, मन्दसान [संज्ञा पु.] (सं.) १–अग्नि। २–प्राण। ३–निद्रा।

मंदसानु, मन्दसानु [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्वप्न। २–जीव।

मंदा, मन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सूर्य की वह संक्रांति जो उत्तराफल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद तथा रोहिणीनक्षत्र में पड़े। २–वल्लीकरंज। लताकरंज। [वि.] (हिं.) [स्त्री. मन्दी] १–धीमा। मंद। २–ढीला। स्थिल। ३–कम मूल्य का। सस्ता। ४–जिसका भाव या दाम उतर गया अथवा गिर गया हो। ५–घटिया।

मंदाकिनी, मन्दाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गङ्गा की वह धारा जो स्वर्ग में है। २–आकाशगङ्गा। ३–हिमालय से निकलने वाली एक छोटी नदी। ४–चित्रकूट के पास बहने वाली एक नदी जिसे अब पयस्विनी कहते हैं। ५–द्वारका के पास की एक नदी जिसका उल्लेख हरिवंश में मिलता है। ६–संक्रांति के सात भेदों में से एक। ७–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण और दो रगण होते हैं।

मंदाक्रांता, मन्दाक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्रह अक्षरों के एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण और तगण तथा अन्त में दो गुरु होते हैं।

मंदाक्ष, मन्दाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) लज्जा।

मंदाग्नि, मन्दाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न न पचने का रोग। बदहजमी। अपच।

मंदान, मन्दान [संज्ञा पु.] (?) जहाज का अगला भाग।

मंदानल, मन्दानल [संज्ञा पु.] (सं.) मंदाग्नि।

मंदार, मन्दार [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्वर्ग का एक वृक्ष। २–फरहद नामक वृक्ष जिसे नहसुत भी कहते हैं। ३–आक का पौधा। मदार। ४–स्वर्ग ५–हाथी। ६–धतूरा। ७–हाथ। ८–मंदराचल-पर्वत। ९–हिरण्यकशिपु के एक पुत्र का नाम। १०–एक तीर्थ का नाम जो विंध्यपर्वत के किनारे पर है।

मंदारमाला, मन्दारमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–मंदार के फूलों का हार। २–बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में सात नगण तथा अन्त में एक गुरु होता है।

मंदारषष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघसुदी-छठ को होने वाला एक व्रत।

मंदालसा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मदालसा'।

मंदिकुक्कुर, मन्दिकुक्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

मंदिर, मन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) १–वास-स्थान। २–घर। ३–देवालय। ४–नगर। ५–शिविर। ६–समुद्र। ७–एक गन्धर्व का नाम। ८–घोड़े की जांघ का पिछला भाग।

मंन्दिरपशु, मन्दिरपशु [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ली।

मंन्दिरा, मन्दिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अश्वशाला। २–मजीरा नामक बाजा।

मंदिल, मन्दिल* [संज्ञा पु.] (हि.) १–घर। २–देवालय। ३–मंदिरा या धार्मिक कृत्य के लिए काटा जाने वाला धन।

मंदी, मन्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–भाव कम होना। महँगी का उलटा। सस्ती। २–बाजार में बिक्री कम होना। तेजी का उलटा।

मंदीर, मन्दीर [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक ऋषि का नाम। २–मंजीर।

मंदील, मन्दील [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सिर पर पहनने का आभूषण।

मंदुरा, मन्दुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अश्वशाल २–बिछाने की चटाई।

मंदुरिक, मन्दुरिक [संज्ञा पु.] (सं.) साईस।

मंदोच्च, मन्दोच्च [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहों की गति जिससे राशि आदि का संशोधन करते हैं।

मंदोदरी, मन्दोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रावण की पटरानी का नाम। [वि.] (सं.) सूक्ष्म पेटवाली।

मंद्र, मन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–गम्भीर ध्वनि। २–संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक ३–हाथियों की एक जाति का नाम। ४–मृदंग।

मंद्राज [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. मन्द्राजिन] दक्षिण भारत का एक प्रधान नगर।

मंद्राजी [वि.](हिं.) १-मंद्राज में उत्पन्न। २-मंद्राज का रहने वाला। ३-मंद्राज-सम्बन्धी। ४-मंद्राज का बना।

मंशा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कामना। इच्छा। इरादा

मंसना+ [क्रि. स.](हिं.) १–मन में संकल्प करना २–इच्छा करना। ३–देखो 'मनसाना'।

मंसब [संज्ञा पु.] (अ.) १–पद। स्थान। पदवी। २–काम। ३–अधिकार।

मंसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–अभिरुचि। इच्छा। २–संकल्प। ३–आशय। अभिप्राय।

मंसूख [वि.] (अ.) खारिज किया हुआ।

मंसूबा [संज्ञा पु.] देखो 'मनसूबा'।

म [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–चन्द्रमा।

ब्रह्मा। ४-यम। ५-समय। काल। ६-विष। जहर। ७-मधुसूदन। ८-छंदशास्त्र में 'मगण' का संक्षिप्त रूप। ६-संगीत में यह 'मध्यम' स्वर का सूचक है।

मइँ* [सर्वनाम] (हिं.) देखो 'मैं'।

मइका*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मायका'।

मइमंत [वि.] (हि.) मदोन्मत्त। मतवाला।

मइया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मैया'।

मई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मय जाति की स्त्री। २-ऊँटनी। [संज्ञा स्त्री.] (अं. में) अंगरेजी वर्ष का पांचवां महीना जो ३१ दिन का होता है।

मउर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह के समय घर के सिर पर पहनने का फूलों का बना हुआ मुकुट अथवा सेहरा। मौर।

मउरछोराई+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-विवाह के बाद मौर खोलने की रस्म। २-वह धन जो वर को मौर खोलने के समय दिया जाता है।

मउरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तिकोना छोटा मौर जो विवाह के समय कन्या के सिर बांधा जाता है।

मउलसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मौलसिरी'।

मउसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माता की बहन। मासी।

मकई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक अन्न का नाम।

मकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मकड़ी.] बड़ी मकड़ी।

मकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का प्रसिद्ध कीड़ा जो अपने तंतुओं से जाला तान कर उसमें मक्खियां आदि फंसाता है। २-मकड़ी के विष के स्पर्श से शरीर में होने वाले दाने।

मकतब [संज्ञा पु.] (अ.) पाठशाला। मदरसा।

मकना [संज्ञा पु.] (हिं.) मगध देश का मुसलमानी नाम।

मक़दूर [संज्ञा पु.] (अ.) सामर्थ्य। शक्ति।

मक़्नातीस [संज्ञा पु.] (अ.) चुंबक पत्थर।

मक़्फ़ूल [वि.] (अ.) रेहन किया हुआ।

मक़बरा [संज्ञा पु.] (अ.) वह इमारत जिसमें किसी की कबर हो। समाधि। मजार। रौजा।

मक़्बूज़ा [वि.] (अ.) अधिकृत।

मकरंद, मकरन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूलों का रस। २-फूलों का केसर। ३-कुंद का पौधा ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात जगण और एक यगण होता है।

मकरंदिका, मकरन्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।

मकर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मकरी] १-मगर या घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु। २-मछली। ३-बारह राशियों में से एक। ४-कुबेर की नौ निधियों में से एक। ५-एक प्रकार का व्यूह। ६-माघ मास। ७-फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। ८-एक पर्वत का नाम ६-एक मंत्र जो अस्त्र-शस्त्रों को निष्फल करने के लिए पढ़ा जाता था। १०-कीड़ों और छोटे जीवों का एक वर्ग (सुश्रुत)। ११-छप्पय-छंद का एक भेद जिसमें ३२ गुरु, ८८ लघु, १२० वर्ण अथवा १५२ मात्राएँ या ३२ गुरु, ८४ लघु, ११६ वर्ण, कुल १४८ मात्राएँ होती हैं।
[संज्ञा पु.] (फा.) १-छल। कपट। धोखा। २-नखरा।

मकरकर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) क्रांतिवृत्त की वह सीमा जहां से सूर्य उत्तरायण अथवा दक्षिणायन होकर लौट आता है।

मकरकुंडल, मकरकुण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) मकर नामक जलजंतु के आकार का कुण्डल।

मकरकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मकरतार [संज्ञा पु.] (हिं.)-बादले का तार।

मकर-तेंदुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) आबनूस। काकतिंदुक।

मकरध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-रससिंदूर। ३-लौंग। ४-अहिरावण का एक द्वारपाल।

मकरपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-ग्राह

मकरव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) मकर के आकार में सेना को खड़ा करना।

मकरसंक्रांति, मकरसङ्क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह समय जब सूर्य मकरराशि में प्रवेश करता है। हिन्दू लोग इसको पुण्य दिन मानते हैं

मकरांक, मकराङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-समुद्र। ३-एक मनु का नाम।

मकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूरे रंग का एक कीड़ा। २-हलवाई की सेव बनाने की घोड़िया। ३-मडुवा नामक अन्न।

मकराकार [वि.] (सं.) मगर या मछली के आकार का।

मकराकृत [वि.] (सं.) मकर अथवा मछली के आकार का।

मकराक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) खर का पुत्र और रावण का भतीजा।

मकरानन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक गण का नाम।

मकराना [संज्ञा पु.] (हिं.) राजस्थान का एक प्रदेश जहां संगमरमर पत्थर निकलता है।

मकराई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) काली राई।

मकरालय, मकरावास [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

मकराश्व [संज्ञा पु.] (सं.) मकर पर सवार होने वाले, वरुण।

मकरासन [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों का एक आसन जिसमें हाथ और पैर पीठ की ओर कर लिये जाते हैं।

मकरिकापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल में स्त्रियों का शोभा के लिए मछली के आकार का कनपटियों पर बनाया हुआ चंदन आदि

मकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मगर की मादा। मगरी। २-एक वैदिक गीत। ३-चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जो जुए से बंधी रहती है।

मकरूह [वि.] (फा.) १-अपवित्र। २-घृणित।

मकरेड़ा+ [संज्ञा पु.] (हि.) ज्वार या मक्के का डंठल।

मकरौरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का कीड़ा।

मकलई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का

मक़सद [संज्ञा पु.] (अ.) १-मनोरथ। कामना। २-अभिप्राय। तात्पर्य।

मक़सूद [वि.] (अ.) अभिप्रेत। उद्दिष्ट। [संज्ञा पु.] १-अभिप्राय। मतलब। २-मनोरथ।

मकाँ [संज्ञा पु.] (फा.) गृह। घर। मकान।

मकाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक अन्न।

मकान [संज्ञा पु.] (फा.) १-गृह। घर। २-निवासस्थान।

मक़ाम [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'मुकाम'।

मकुंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुकुंद'।

मकु* [अव्य.] (हिं.) १-चाहे। २-बल्कि। वरन्। ३-कदाचित्। शायद। क्या जाने।

मकुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रोग जो पत्तों में लगता है।

मकुट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मुकुट'।

मकुना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिना दांत का या छोटे-छोटे दांत वाला नर हाथी। २-बिना मूँछों वाला आदमी।

मकुनी+ [संज्ञा स्त्री.] (दे श.) १-बेसनी रोटी। २-मटर के आटे की रोटी। ३-एक प्रकार की बाटी जिसमें मेथी, मंगरैला आदि मिला कर बनाई जाती है।

मकुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुम्हार का चाक घुमाने का डंडा। २-दर्पण। आईना। ३-बकुल। ४-कली।

मकुष्ट, मकुष्टक [संज्ञा पु.] (हि.) मोठ नामक अन्न।

मकुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोठ नामक अन्न। २-एक प्रकार का धान।

मकूनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मकुनी'।

मकूला [संज्ञा पु.] (अ.) १-कहावत। २-वचन। कथन।

मकेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह खेत जिसमें ज्वार या बाजरा बोया जाता हो।

मकेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें मल के साथ कीड़े निकलते हैं।

मकोई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मकोय'।

मकोइया [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मकोई'।

मकोइया [वि.] (हि.) मकोय के से रंग का। ललाई लिये पीले रंग का।

मकोड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) एक छोटा कीड़ा।

मकोय [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक छोटा पौधा जिसके पत्ते गोलाई लिए लंबोतरे होते हैं। २-एक प्रकार का कँटीला पौधा जिसमें सुपारी के आकार के फल लगते हैं। ३-इस पौधे की फली। रसभरी।

मकोरना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मरोड़ना'।

मकोसल [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसकी लकड़ी की आसाम में नावें बनाई जाती हैं।

मकोह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बमोलन'।

मकोहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक इंच लम्बा लाल रंग का एक कीड़ा।

मक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) नर मकड़ी।

मक्कर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छल। धोखा २-नखरा।

मक्कल [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्त्री-रोग जिसमें पक्वाशय फूल जाता है तथा मूत्र रुक जाता है

मक्का [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी ज्वार (अ.) अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहां मुसलमानों का तीर्थस्थान है। [वि.](हिं.) देखो 'ज्वार'।

मक्कार [वि.] (अ.) छली। कपटी। धूर्त्त।

मक्कारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) छल। धोखेबाजी।

मक्की+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मक्का'।

मक्खन [संज्ञा पु.] (हिं.) दही को मथने पर निकला हुआ सार-भाग जिसे तपाने पर घी बनता है। नवनीत। *कलेजे पर मक्खन मला जाना*-बहुत संतोष या तृप्ति होना। कलेजा ठंडा होना।

मक्खा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नर मक्खी। २-बड़ी जाति की मक्खी।

मक्खी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक प्रसिद्ध उड़ने वाला छोटा कीड़ा जो प्रायः सर्वत्र पाया जाता है। मक्षिका। २-मधुमक्खी। ३-बंदूक का वह उभरा हुआ अंश जिससे निशाना साधा जाता है। *जीती मक्खी निगलना*-जान-बूझकर ऐसा काम करना जिससे पीछे हानि हो। *नाक पर मक्खी न बैठने देना*-अभिमान के कारण किसी के सामने न दबना। *मक्खी की तरह निकाल फेंकना*-किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। *मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना*-साधारण पाप या दोषों से बचना तथा बड़े-बड़े पाप या अपराध करना। *मक्खी मारना या उड़ाना*-बहुत आलसी अथवा निकम्मा होना।

मक्खीचूस [संज्ञा पु.] (हि.) भारी कंजूस। परम कृपण।

मक्खीमार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का जानवर जो मक्खियाँ खाता है। २-एक प्रकार की छड़ी जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आती है। ३-परम घृणित व्यक्ति।

मक्खीलेट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार की जाली जिसमें बहुत छोटी-छोटी बूटियाँ होती हैं।

मक्सी [संज्ञा पु.] (देश.) १-काले दाग वाला सब्ज घोड़ा। २-बिलकुल काले रंग का घोड़ा

मक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपने दोष को छिपाना। २-क्रोध। गुस्सा। ३-समूह।

मक्षदग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मोती जिसके विषय में कहा जाता है कि उसे पहनने से पुत्र मर जाता है।

मक्षवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पियार नामक वृक्ष।

मक्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मक्खी। २-मधुमक्खी।

मक्षिकामल [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मक्षिकासन [संज्ञा पु.] (सं.) मधुमक्खी का छत्ता

मख [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ।

मख़ज़न [संज्ञा पु.] (अ.) खजाना। कोष। भंडार

मखतूल [संज्ञा पु.] (हिं.) काला रेशम।

मखतूली [वि.] (हिं.) काले रेशम का बना हुआ

मखत्राता [संज्ञा पु.](सं.) १-यज्ञ की रक्षा करने वाला। २-रामचन्द्र। (विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने के कारण)।

मख़दूम [संज्ञा पु.](अ.) १-स्वामी। मालिक। २-जिसकी खिदमत या सेवा की जाय। [वि.] (अ) सेवा के योग्य। पूज्य।

मखद्वेषी [संज्ञा पु.] (हिं.) राक्षस।

मखधारी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो यज्ञ करता हो

मखन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मक्खन'।

मखना [संज्ञा पु.] (हिं.) 'मकुना'।

मखनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मखनिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मक्खन बनाने या बेचने वाला। [वि.] (हिं.) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मखनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मध्य भारत की नदियों में पाई जाने वाली एक प्रकार की मछली।

मखमय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मखमल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसके एक ओर छोटे रेशमी रोएँ उभरे रहते हैं। २-एक प्रकार रंगीन दरी।

मखमली [वि.] (अ.) १-मखमल का बना हुआ। २-मखमल का-सा।

मखमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मखराज [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञों में श्रेष्ठ, राजसूय यज्ञ।

मख़लूक़ [संज्ञा पु.] (अ.) ईश्वर की सृष्टि।

मखवल्क्य [संज्ञा पु.] देखो 'यज्ञवल्क्य'।

मखशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञशाला।

मख़सूस [वि.] (अ.) खास तौर पर अलग किया या बनाया हुआ।

मखस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'तालमखाना'।

मखान्न [संज्ञा पु.] (सं.) तालमखाना।

मखालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञशाला।

मखी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मक्खी'।

मखीर [संज्ञा पु.] (हि.) मधु। शहद।

मखेश [संज्ञा पु.] (सं.) राजसूय-यज्ञ।

मखोना+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का कपड़ा।

मखौल [संज्ञा पु.] (देश.) हँसीठट्ठा। उपहास। दिल्लगी।

मखौलिया [वि.] (हिं.) हँसोड़। दिल्लगीबाज। मसखरा। *मखौल उड़ाना*-परिहास करना।

मग [संज्ञा पु.] (हिं.) मार्ग। रास्ता। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मगध देश। २-एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण।

मगज [संज्ञा पु.] १-मस्तिष्क। दिमाग। २-गिरी मींगी।

मगज खौलना-१-काम की अधिकता के कारण मस्तिष्क का कुछ काम न करना। २-क्रोध के मारे दिमाग खराब होना।

मगज खाना या चाटना-व्यर्थ की बकवाद करके तंग करना। *मगज उड़ना या भिन्नाना*-बदबू या शोर के कारण दिमाग खराब होना। *मगज खाली करना या पचाना*-१-सिर खपाना २-समझाने के लिए बहुत बकना।

मगजचट [संज्ञा पु.] (हिं.) मगज चाट जाने वाला। बकवादी।

मगजपच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुछ सोचने अथवा कुछ करने के लिए बहुत दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।

मगजी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।

मगण [संज्ञा पु.] (सं.) छन्दशास्त्र के आठ गणों में से एक का नाम जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं।

मगद [संज्ञा पु.] (हिं.) मूंग के आटे से बनने वाली एक मिठाई।

मगदर+, **मगदल** [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मकदूर'।

मगदा [वि.] (हिं.) पथप्रदर्शक। रास्ता दिखलाने वाला।

मगदूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मकदूर'।

मगध [संज्ञा पु.] (सं.) १-दक्षिण बिहार का प्राचीन नाम। २-राजाओं का गुणगान करने वाले। बंदीजन।

मगधेश [संज्ञा पु.] (सं.) मगध देश का राजा,

जरासंध।

मगधेश्वर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मगधेश'।

मगन [वि.] (हि.) १-डूबा या समाया हुआ। २-प्रसन्न। खुश। ३-बेहोश। मूर्च्छित। ४-लीन।

मगना* [क्रि. अ.] (हि.) १-लीन या तन्मय होना। २-डूबना।

मगमा [संज्ञा पु.] (देश.) कागज बनाने के काम में आने वाले गूदे को धोने की क्रिया।

मगर [संज्ञा पु.] (हि.) १-मकर या घड़ियाल नामक जलजन्तु। २-मछली। ३-कान में पहनने का एक गहना जो मछली के आकार का होता है। ४-नैपालियों की एक जाति। [अव्य.] (फा.) लेकिन। परन्तु। पर। *अगर-मगर करना*–आनाकानी करना।

मगरधर [संज्ञा पु.] (डि.) समुद्र।

मग़रब [संज्ञा पु.] (अ.) पश्चिम। *मगरब की नमाज*–सूर्यास्त के समय पढ़ी जाने वाली नमाज।

मगरबाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कांटेदार बाँस।

मगरमच्छ [संज्ञा पु.] (हि.) १-मगर या घड़ियाल नामक जल में रहने वाला जन्तु। २-बहुत बड़ी मछली।

मगरा [वि.] (हिं.) १-घमंडी। २-सुस्त। अकर्मण्य। ३-जिद्दी। ४-धृष्ट। ५-उद्दंड।

मगरिब [वि.] (अ.) पश्चिम दिशा। पच्छिम।

मगरिबी [वि.] (अ.) मगरिब दिशा सम्बन्धी। पश्चिमी। पश्चिम का।

मगरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ढालूए छप्पर के बीच का सब से ऊपर का भाग।

मगरूर [वि.] (अ.) घमंडी। अभिमानी।

मगरूरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) घमंड। अभिमान।

मगरो+ [संज्ञा पु.] (देश.) नदी का ऐसा किनारा जिसमें बालू के साथ मिट्टी भी मिली हो और जो जोतने बोने योग्य हो गया हो।

मगरोसन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुंघनी। नसवार

मगलीएरंड [संज्ञा पु.] (हिं.) रतनजोत। बागबरेंडा।

मग़लूब [संज्ञा पु.] (फा.) संगीत की चौबीस शोभाओं में से एक। [वि.] (फा.) पराजित।

मगस [संज्ञा पु.] (देश.) पेरे हुए ऊखों की सीठी। खोई। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन योद्धा-जाति का नाम जो शकद्वीप में रहती थी।

मगसिर+ [संज्ञा पु.] (हि.) अगहन का महीना।

मगह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मगधदेश।

मगहपति* [संज्ञा पु] (हि.) जरासंध, जो मगध का राजा था।

मगहय, मगहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) मगधदेश।

मगही [वि] (हि.) १-मगध देश सम्बन्धी। २-मगधदेश का। ३-मगह में उत्पन्न। *मगही पान*–मगध देश का पान जो उत्तमश्रेणी का होता है।

मगु* [संज्ञा पु.] (हिं.) मार्ग। पथ। रास्ता।

मगोर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली

मग्ग* [संज्ञा पु.] (हिं.) रास्ता। मार्ग। राह।

मग़ज़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-मस्तिष्क। दिमाग। भेजा २-मींगी। गूदा।

मग़ज़रोशन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सुंघनी। नास।

मग्न [वि.] (सं.) १-डूबा हुआ। २-तन्मय। लीन लिप्त। ३-मदमस्त। ४-नीचे की ओर गिरा-हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

मघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का पुष्प। २-एक द्वीप का नाम जिसमें म्लेच्छ रहते हैं (पुराण)। ३-पुरस्कार। इनाम। ४-हर्ष। आनन्द।

मघई [वि.] (हि.) देखो 'मगही'।

मघवत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्राणी।

मघवा [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र २-पुराणानुसार एक दानव का नाम। ३-सातवें द्वापर का नाम। ४-जैनों के बारह चक्रवर्तियों में से एक।

मघवाजित् [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के पुत्र मेघनाथ का नाम।

मघवान [संज्ञा पु.] (डि.) इन्द्र।

मघवाप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रप्रस्थ (नगर)।

मघवारिपु [संज्ञा पु.] (सं.) मेघनाद।

मघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवें नक्षत्र का नाम। २-एक प्रकार की औषध।

मघाना [संज्ञा पु.] (देश.) एक घास जो बरसात में उगती है।

मघाभव [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्रग्रह।

मघारना+ [क्रि. स.] (हिं.) आगामी वर्षाऋतु में धान बोने के लिये माघ मास में हल चलाना

मघोनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इन्द्राणी। शची।

मघौना [संज्ञा पु.] (हिं.) नीले रंग का कपड़ा।

मचक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बोझ। दाब। दबाव।

मचकना [क्रि स.] (हिं.) किसी पदार्थ को इस प्रकार दबाना कि मचमच शब्द निकले। [क्रि. अ.] (हिं.) दबने से मचमच शब्द होना।

मचका [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मचकी] १-झोंक झटका। २-झूले की पेंग।

मचकाना [क्रि. स.] (हिं.) मचकने में प्रवृत्त करना।

मचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आरंभ होना। शुरू होना (शोर आदि)। २-छाजाना। फैलना। धूम, कीर्ति आदि)।

मचमचाना [क्रि. अ.] (हि.) १-अत्यधिक कामातुर होना। २-दबने से मचमच शब्द होना [क्रि. स.] (हि.) दबकर मचमच शब्द करना।

मचमचाहट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मचमचाने ... क्रिया या भाव। अत्यधिक काम या क्रो...

मचमची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मचमचाह...

मचरंग [संज्ञा स्त्री.] (देश.) किलकिला ... पक्षी।

मचक्रुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाभारत में ... एक यक्ष। २-कुरुक्षेत्र के एक पवित्र स्था...

मचर्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तमता। श्रेष्ठ...

मचल [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मचलने की क्रिया ... भाव।

मचलना [क्रि. अ.] (हि.) किसी वस्तु के लेने ... देने के लिए बालकों या स्त्रियों के समान ... करना। अड़ना।

मचला [वि.] (हिं.) १-बोलने के समय ... बूझकर चुप रहने वाला। अनजान ... वाला। २-मलने वाला।

मचलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मचला...

मचलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ओकाई ... के मालूम होना। * २-देखो 'मचलना'। [क्रि. स.] किसी को मचलने में प्रवृत्त ...

मचलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मचला होने ... भाव। कुछ जानते हुए भी चुप रहने का ...

मचवा [संज्ञा पु.] (हि.) १-खाट। पलंग। ... खटिया या चौकी का पावा। ३-नाव।

मचाँग+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मचान'।

मचान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शिकार ... अथवा खेत की रखवाली के लिए ... पर बाँधकर बनाया हुआ ऊँचा स्था... ऊँची बैठक। मंच। ३-दीयट।

मचाना [क्रि. स.] (हि.) मचना का ... (?) मैला करना। गंदा करना।

मचामच [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किसी वस्तु ... से होने वाला मच-मच शब्द।

मचिया*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी ... पाई। २-पीढ़ी।

मचिलई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मचलने ... भाव। २-इतराहट। ३-मचलापन।

मचुला [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जो ... शोभा के लिए लगाया जाता है।

मचेरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बैलों के जुए ... की लकड़ी।

मचोला [संज्ञा पु.] (देश.) एक पौधा ... सुहागा बनता है। यह बंगाल की ... दल में होता है।

मच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ी मछली। ... का सोलहवाँ भेद जिसमें ७ गुरु ... लघु मात्राएँ होती हैं। ३-देखो 'मत्स्य'।

मच्छअसवारी [संज्ञा पु.] (डि.) कामदेव।

मच्छघातिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मछली ... की बंसी।

मच्छड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा पतिंगा जिसके काटने से मलेरिया ज्वर फैलता है। [वि.] कृपण। कंजूस।

मच्छर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मच्छड़'। २-देखो 'मत्सर'। [संज्ञा पु.] (डिं.) क्रोध। कोप।

मच्छरता* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।

मच्छरदानी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मच्छरों से बचने के लिए पलंग के ऊपर और चारों ओर लगाने का जालीदार कपड़ा। मसहरी।

मच्छसीमा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) नदी आदि को सीमा मानकर भूमि-सम्बन्धी झगड़ों का किया जाने वाला निपटारा।

मच्छी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मछली'।

मच्छीकाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की सिलाई। २-कालीन में की एक जालीदार बेल।

मच्छीमार [संज्ञा पु.] (हि.) धीवर। मल्लाह।

मच्छोदरी* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदव्यास की माता सत्यवती।

मछरंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जल पक्षी। रामचिड़िया।

मछरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मछली'।

मछली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सदा जल में रहने वाला एक प्रसिद्ध जलजन्तु जिसकी छोटी बड़ी कई जातियाँ होती हैं। २-सोने या चाँदी का मछली के आकार का लटकन जो गहनों में लगाया जाता है। ३-मछली के आकार का कोई पदार्थ। यौ.-*मछली का दाँत*-गैंडे के आकार के एक पशु का दाँत जो हाथी दाँत जैसा होता है। *मछली की स्याही*-एक प्रकार का काला रोगन।

मछलीगोता [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच

मछलीडंड [संज्ञा पु.](हिं.) कसरत में एक प्रकार का डंड।

मछलीदार [संज्ञा पु.] (हिं.) दरी की एक प्रकार की बुनावट।

मछलीमार [संज्ञा पु.] (हिं.) मछली मारने वाला धीवर। मछुआ।

मछवा [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह नाव जिस पर से मछली का शिकार किया जाता है। २-मल्लाह।

मछुआ, मछुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) मछली मारने वाला। धीवर। मल्लाह।

मछेरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मछुवा'।

मछेड़+ [संज्ञा पु.] (देश.) शहद का छत्ता।

मछोतर+ [संज्ञा पु.](हि.) वह लकड़ी का टुकड़ा जो मछली के आकार का होता है और जिसकी सहायता से हरिस में हल जुड़ा रहता है।

मज़कूर [वि.] (फ़ा.) जिसका उल्लेख या चर्चा पहले हो चुकी हो। कथित। उक्त।

मज़कूर-ए-वाला [वि.](फ़ा.) पूर्वोक्त। उपर्युक्त

मज़कूरात [संज्ञा पु.](फ़ा.) आराजी का लगान जो गाँव के खर्च में आता है।

मज़कूरी [संज्ञा पु.](फ़ा.) १-सम्मन तामील कराने वाला चपरासी। २-ताल्लुकेदार। ३-बिना वेतन का चपरासी। ४-वह जमीन जिसका बंटवारा न हो सके और जो सर्वसाधारण के लिए छोड़ दी गई हो।

मज़दूर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) [स्त्री. मजदूरनी, मजदूरिन] १-शारीरिक श्रम का कार्य कर निर्वाह करने वाला व्यक्ति। श्रमिक। मजूर। २-बोझा ढोने वाला। मोटिया। कुली।

मज़दूरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मजदूर का काम। २-शारीरिक श्रम के काम के बदलने में मिलने वाला धन। पारिश्रमिक।

मजना* [क्रि. अ.](हिं.) १-डूबना। २-अनुरक्त होना।

मजनूँ [संज्ञा पु.] (अ.) १-पागल। दीवाना। २-कैस नामक एक अरब के सौदागर का लड़का जो लैला नाम की लड़की के प्रेम में पागल हो गया था। ३-प्रेमी। आशिक। ४ दुबला-पतला आदमी। अतिदुर्बल, सूखा हुआ मनुष्य। ५-एक प्रकार का वृक्ष।

मज़बूत [वि.] (अ.) १-दृढ़। पुष्ट। पक्का। २-अचल। स्थिर। ३-सबल। तकड़ा। हृष्टपुष्ट

मज़बूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दृढ़ता। पुष्टता। २-बल। ३-साहस।

मजबूर [वि.] (अ.) विवश। लाचार।

मजबूरन् [क्रि. वि.](अ.) लाचारी से। विवश होकर।

मजबूरी [संज्ञा स्त्री.](अ.) असमर्थता। विवशता। लाचारी।

मजमा [संज्ञा पु.] (अ.) बहुत से लोगों का एक जगह पर जमाव। जमघट। भीड़-भाड़।

मजमूआ [वि.] (अ.) संगृहीत। जमा या एकत्र किया हुआ [संज्ञा पु.] (अ.) १-एक जैसी बहुत सी वस्तुओं का समूह। २-एक प्रकार का इत्र।

मजमून [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी लेख आदि का विषय। २-लेख।

मजमून बाँधना-किसी विषय पर गद्य या पद्य में लिखना। *मजमून मलना या लड़ना*-दो भिन्न लेखकों अथवा कवियों के वर्णित विषयों अथवा भावों का मिल जाना।

मजरिया [वि.] (फ़ा.) प्रवर्तित। जो जारी हो।

मजरी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का झाड़।

मजरूआ [वि.] (फ़ा.) जोता और बोया हुआ (खेत)।

मजरूह [वि.] (अ.) घायल। जख्मी।

मजल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मंजिल। पड़ाव। ठिकाना।

मजल मारना-१-काफी दूर पैदल चलकर आना। २-कोई बड़ा काम करना।

मजलिस [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह स्थान जहां बहुत से आदमी इकट्ठे हों। २-सभा। जलसा। समाज। ३-महफिल। नाचरंग।

मजलिसी [संज्ञा पु.] (अ.) निमंत्रित व्यक्ति। [वि.] (अ.) १-मजलिस का। २-सबको प्रसन्न करने वाला।

मज़लूम [वि.] (अ.) अत्याचार से पीड़ित। सताया हुआ।

मजहब [संज्ञा पु.] (अ.) धार्मिक संम्प्रदाय। मत पंथ।

मजहबी [वि.] (अ.) किसी धार्मिक मत या संप्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला।

मजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-आनन्द। सुख। २-स्वाद। ३-हँसी। दिल्लगी।

मजा चखाना-समुचित रूप से दंड देना। बदला लेना। *किसी चीज का मजा पड़ना*-चसका लगना। आदत पड़ना। *मजा उड़ाना या लूटना*-आनन्द या सुख भोगना। *मजा किरकिरा होना*-रंग में भंग होना। *मजे का*-अच्छा। उत्तम। *मजे पर आना*-जोबन पर आना। *मजे में या मजे से*-आनन्द पूर्वक। *मजा देखना या लेना*-दिल्लगी या तमाशा देखना। *मजा आ जाना*-मनोरंजन या परिहास का साधन प्रस्तुत होना।

मज़ाक [संज्ञा पु](अ.) १-हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी ठठोली। २-प्रवृत्ति। रुचि।

यौ.-*मजाक का आदमी*-हँसमुख।

मजाक उड़ाना-परिहास या दिल्लगी करना।

मज़ाकन् [क्रि. वि.] (अ.) मजाक या हँसी दिल्लगी के तौर पर।

मज़ाकिया [वि.](हिं.) मजाक या हँसी दिल्लगी करने वाला।

मजाज+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गर्व। अभिमान २-देखो 'मिजाज'।

मजाज़ [संज्ञा पु.] (अ.) अधिकार। हक़।

मजाज़ी [वि.](अ.) १-बनावटी। कृत्रिम। नकली २-कल्पित। माना हुआ।

मज़ार [संज्ञा पु.] (अ.) १-समाधि। मकबरा। २-कब्र।

मजारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिल्ली।

मजाल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सामर्थ्य। शक्ति।

मजिल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मंजिल'।

मजिस्टर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मजिस्ट्रेट'।

मजिस्ट्रेट [संज्ञा पु.] (अं.) फौजदारी अदालत का वह अधिकारी जो भारत में प्रायः जिले के माल-विभाग का प्रधान अधिकारी होता है

मजिस्ट्रेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मजिस्ट्रेट का कार्य अथवा पद। २-मजिस्ट्रेट की अदालत।

मजीठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लता। इसकी सूखी जड़ तथा डंठलों को पानी में उबाल कर एक प्रकार का बढ़िया लाल या गुलनार रंग तैयार किया जाता है।

मजीठी+ [स्त्री. स्त्री.](हिं.) १-वह रस्सी जो जुआठे में बंधी होती है। जोत। २-रुई ओटने की चर्खी में लगी हुई बीच की लकड़ी। [वि.] (हिं.) मजीठ के रंग का। लाल।

मजीर※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मंजीर। घौद।

मजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) ताल देने की काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी। जोड़ी। (संगीत)।

मजूर※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मयूर'। २-देखो मजदूर।

मजूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मजदूर'।

मजूरी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मजदूरी'।

मजेज※ [वि.] (हिं.) अहंकार। घमंड। दर्प।

मजेठी+ [संज्ञा स्त्री] (हि.) सूत कातने के चर्खे में की वह लकड़ी जो पहिये या चक्कर में दोनों खड़े बल डंडों को जोड़ने के लिए लगी रहती है।

मजेदार [वि.] (फा.) १-स्वादिष्ट। २-आनन्द-दायक। ३-बढ़िया। ४-मनोरंजक।

मजेदारी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-स्वाद। २-आनंद। लुत्फ।

मज्ज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हड्डी की नली के भीतर का गूदा या भेजा।

मज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान। नहाना।

मज्जना※ [क्रि. अ.] (हिं.) १-डूबना। २-नहाना। स्नान करना। ३-अनुरक्त होना।

मज्जफल [संज्ञा पु.] (सं.) माजूफल।

मज्जर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास।

मज्जा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गूदा या भेजा जो हड्डी की नली में होता है।

मज्जारस [संज्ञा पु.] (हिं.) शुक्र। वीर्य।

मज्जासार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जायफल।

मज्झ※ [वि.] (हिं.) मध्य। बीच।

मझ※ [वि] (हिं.) मध्य। बीच।

मझक्का+ [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह की एक रस्म जिसमें लड़केवाले लड़कीवालों के घर जाकर उसका मुख देखते और कुछ नकद आभूषण आदि देते हैं।

मझधार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नदी के मध्य भाग की धारा। २-किसी कार्य का मध्य। *मझधार में छोड़ना*-१-किसी कार्य को पूरा न करके बीच ही में छोड़ना। २-किसी को लटकते हुए छोड़ना।

मझरासिंगही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बैलों की एक जाति।

मझला [वि.] (हि.) मध्य का। बीच का।

मझाना※ [क्रि. स.] (हिं.) प्रविष्ट करना। बीच में धँसाना। [क्रि. अ.] थाह लेना।

मझार※ [वि.] (हिं.) बीच में। भीतर।

मझावना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मझाना'।

मझिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ी के पेंदे में लगी हुई लकड़ी की पट्टी।

मझियाना※ [क्रि. अ.] (हिं.) १-नाव खेना। २-बीच में होकर आना या निकलना। [क्रि. स.] बीच में से ले जाना।

मझियारा※ [वि.] (हिं.) बीच का।

मझीला [वि.] (हिं.) १-बीच का। २-मध्यम आकार का।

मझु※ [सर्व.] (हिं.) १-मैं। २-मेरा।

मझुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की हाथ में पहनने की चूड़ियां जिन्हें मठिया भी कहते हैं

मझेरु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जुलाहों के काम में आने वाली ऊड़ी नामक औजार के बीच की लकड़ी।

मझेला [संज्ञा पु.] (देश.) १-जूते का तला सीने का एक लोहे का औजार। २-लकड़ी का दस्ता लगा वह औजार जिससे चमड़े पर का खुरखुरापन दूर किया जाता है।

मझोला [वि.](हिं.) १-बीच का। मध्य का। २-मध्यम आकार का।

मझोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की बैलगाड़ी। २-जूते की नोक सीने का एक औजार।

मट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मटका। मटकी।

मटक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मटकने की क्रिया या भाव। २-गति। चाल।

मटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लचककर नखरे से चलना। २-नखरे से हाथ या आंख नचाना। ३-विचलित होना। ४-लौटना। फिरना। [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी का पात्र जिसे कुल्हड़ कहते हैं।

मटकनि※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गति। चाल। २-नाचना। नृत्य। ३-नखरा। ४-मटकने का भाव।

मटका [संज्ञा पु.] (हिं) [स्त्री. मटकी] मिट्टी का बड़ा घड़ा। माट। मट।

मटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-नखरे के साथ अंगों का संचालन करना। २-दूसरे को मटकाने में प्रवृत्त करना।

मटकी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-छोटा मटका। कमोरी २-मटकने की क्रिया या भाव। *मटकी देना*-चमकाना।

मटकीला [वि.] (हिं.) मटकने वाला।

मटकौअल, मटकौवल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मटकने की क्रिया या भाव।

मटखौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का हाथी जो दूषित समझा जाता है।

मटना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ऊख।

मटमँगरा+ [संज्ञा पु.](हि.) विवाह के ... की एक रीति जिसमें स्त्रियां गांव ... गाती-बजाती हुई मिट्टी लेने जाती हैं।

मटमैला [वि.](हि.) मिट्टी के से रंग का। धूमिल। खाकी।

मटर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध द्विदल ... वैद्यक के अनुसार यह मधुर, ... शीतल, पित्तनाशक, रुचिकारक, बलकारक, पुष्टिजनक, मल को निकालने वाला तथा रक्तविकार को दूर करने वाला माना जाता है।

मटरगश्त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धीरे-धीरे घूमना। टहलना। सैर-सपाटा।

मटरगश्ती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सैर-सपाटा।

मटरबोर [संज्ञा पु.] (हिं.) पाजेब आदि में ... वाले मटर के बराबर के घुंघरू।

मटराला [संज्ञा पु.] (हि.) जौ के साथ मिला हुआ मटर।

मटलनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मिट्टी का ... बरतन।

मटा+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का ... च्यूँटा। २-बेटा। पुत्र (परिहास में)।

मटिआना+ [क्रि. स.] (हि.) १-मिट्टी से मांजना या साफ करना। २-मिट्टी से ढांकना। ३-मिट्टी लगाना। ४-सुनी-अनसुनी करना।

मटिआमेट [वि.] (हिं.) देखो 'मटियामेट'।

मटिआला [वि.](हि.) मिट्टी के रंग का। धूमिल। खाकी।

मटिया+ [संज्ञा स्त्री.] १-मिट्टी। मृत शरीर। शव। ३-एक प्रकार का पक्षी जिसे ... भी कहते हैं। [वि.] (हि.) मटमैला। ...

मटियाफूस [वि.] (हिं.) बहुत दुबला और ... वृद्ध। जर्जर।

मटियामसान [वि.](हिं.) गया-बीता। ...

मटियामेट [वि.] (हिं.) देखो 'मलियामेट'।

मटियार+ [संज्ञा पु.](हि.) वह स्थान या भूमि जहां चिकनी मिट्टी अधिक हो।

मटियाला [वि.] (हिं.) देखो 'मटमैला'।

मटीला [वि.] (हिं.) देखो 'मटमैला'।

मटुक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुकुट'।

मटुका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मटका'।

मटुकिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मटकी'।

मटुकी※+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मटकी'।

मट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिट्टी'।

मट्ठर [संज्ञा पु.] (हिं.) सुस्त। आलसी।

मट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) मक्खन निकाल लेने के बाद बचा हुआ दही का पानी। छाछ। ... तक्र।

मट्ठरी, मट्ठी [संज्ञास्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बहुत खस्ता पकवान जो मैदे का बनता है।

मठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मकान जिसमें ...

महन्त के आधीन अन्य बहुत से साधु रह सकें। २-निवास-स्थान। रहने की जगह। ३-छात्रावास। ४-विद्यालय। विद्यामन्दिर। ५-देवालय। मंदिर।

मठधारी, मठपति [संज्ञा पु] (हिं.) वह साधु अथवा महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो।

मठर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन मुनि का नाम।

मठरना [संज्ञा पु.] (देश.) सुनारों और कसेरों की छोटी हथौड़ी जो हलकी चोट देने के लिए होती है।

मठरी [संज्ञा स्त्री.](देश.) १-एक प्रकार की मिठाई २-देखो 'मट्ठा'।

मठा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मट्ठा'।

मठाधीश, मठाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-मठ का प्रबंध करने वाला प्रधान कार्यकर्ता। २-मठ का महंत।

मठान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मठरना'।

मठारना [क्रि. स] (हिं.) १-'मठरना' नामक हथौड़े से धीरे धीरे पीटकर सुडौल बनाना। २-गूँधे हुए आटे में लेस उत्पन्न करने के लिए मुक्की देना। ३-बात को बहुत विस्तार देना।

मठिया [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-छोटा मठ। २-छोटी कुटी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) फूल (धातु) की चूड़ियाँ जिन्हें गरीब ग्रामीण स्त्रियाँ पहनती हैं

मठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटा मठ। २-मठ का महंत। मठधारी।

मठुलिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'मठरी'। २-देखो 'मट्ठी'।

मठोर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) दही मथने और मट्ठा या छाछ रखने की मटकी।

मठोरना+ [क्रि. स.] (देश.) १-'मठरना' नामक हथौड़े से धीरे-धीरे चोट लगाना (सुनार)। २-किसी लकड़ी को खरादने के लिए रंदा लगाकर ठीक करना।

मठौरा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का रंदा जिससे खरादने से पहले लकड़ी रंदते हैं।

मड़ई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा मंडप। २-कुटिया। पर्णशाला। ३-देखो 'मंडी'।

मड़क [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भेद। रहस्य।

मड़मड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मरमराना'। [क्रि. स.] (हि.) देखो 'मरमराना'।

मड़राना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'मंडराना'।

मड़ला+ [संज्ञा पु.] (हि.) अनाज रखने की छोटी कोठरी।

मड़वा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मंडप'।

मड़वारी+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मारवाड़ी'।

मड़घट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरघट'।

मड़हा+ [वि.] (हि.) माँड़ खाने वाला। [संज्ञा पु.] (हि.) मिट्टी या घासफूस आदि का बना छोटा घर। [संज्ञा पु.](देश.) भुना हुआ चना

मड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) कमरा। बड़ी कोठरी।

मड़ाइ+ [संज्ञा पु.] (देश.) गड्ढा या छोटा कच्चा तालाब।

मड़ियार [संज्ञा पु.](हिं.) मारवाड़ के क्षत्रियों की एक जाति।

मड़ुआ [संज्ञा पु.](देश.) १-एक प्रकार का मोटा अन्न। २-एक प्रकार का पक्षी।

मड़ैया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा मंडप। २-झोपड़ी। कुटी। ३-मिट्टी या घासफूस आदि का बना छोटा घर।

मड़ोड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मरोड़'।

मड़ोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लोहे की छोटी और पेंचदार कँटिया।

मढ़ [वि.] (हिं.) १-अड़कर बैठने वाला। २-जल्दी अपने स्थान से न हिलने वाला।

मढ़ना [क्रि. स.] (हि.) १-चारों ओर से घेर-देना। लपेट लेना। २-बाजे के मुँह पर चमड़ा आदि लगाना। ३-पुस्तक पर जिल्द लगाना। ४-बलपूर्वक आरोपित करना। थोपना। ५-चित्र, दर्पण आदि चौखटे में जड़ना। मढ़ आना-घिर आना। जैसे-बादल मढ़ आना। +[क्रि. अ.] (हिं.) मचना। आरंभ होना।

मढ़वाना [क्रि. स.] (हि) किसी को मढ़ने में प्रवृत्त करना।

मढ़ा+ [संज्ञा पु.] (हि.) मिट्टी या घासफूस आदि का बना हुआ छोटा घर।

मढ़ाई [संज्ञा पु.] (हि.) १-मढ़ने का काम या भाव। २-मढ़ने की मजदूरी।

मढ़ाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मढ़वाना'।

मढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा मठ। २-छोटा घर। ३-छोटा मंडप। ४-पर्णशाला। झोंपड़ी। ५-छोटा मन्दिर या देवालय। ६-नाथ-संप्रदाय के संन्यासी की समाधि जहां उस मत के लोग रहते हैं।

मढ़ैया+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मढ़ी'। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो मढ़ने का काम करता हो।

मणगयण [संज्ञा पु.] (डि.) सूर्य।

मणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २-बकरी के गले की थैली। ३-भगांकुर। योनिलिंग। योनि का अगला भाग। ४-लिंग (पुरुषेन्द्रिय) का अगला भाग। ५-घड़ा। ६-एक नाग का नाम। ७-प्राचीनकाल के एक मुनि का नाम। ८-कोई भी वस्तु जो अपनी जाति में श्रेष्ठ हो। ९-श्रेष्ठ तथा परम योग्य व्यक्ति।

मणिकंठ, मणिकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं) १-मुर्गा। २-चास नामक पक्षी।

मणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल का घड़ा (मिट्टी का)। २-एक रत्न जिसे चुन्नी कहते हैं।

मणिकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बनारस या काशी में एक तीर्थ विशेष। २-एक रत्न जड़ा आभूषण जो कान में पहना जाता है।

मणिकाच [संज्ञा पु.] (सं.) बाण का वह भाग जहां 'पर' लगे होते हैं।

मणिकानन [संज्ञा पु.] गरदन। कंठ।

मणिकार [संज्ञा पु.](सं.) जौहरी। रत्नों को जड़कर गहने बनाने वाला।

मणिकुट्टिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) कार्तिकेय की एक अनुचरी मातृका का नाम।

मणिकूट [संज्ञा पु.](सं.) कामरूप के पास के एक पर्वत का नाम।

मणिकेतु [संज्ञा पु.](सं.) एक बहुत छोटा पुच्छलतारा।

मणिगुण [संज्ञा पु.] (सं) एक वर्णिक वृत्त जिस के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार नगण तथा एक सगण होता है।

मणिगुणनिकर [संज्ञा पु.](सं.) मणिगुण नामक छन्द का वह रूप जो उसके आठवें वर्ण पर विराम लगाने से होता है।

मणिग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के एक पुत्र का नाम।

मणिचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक विद्याधर का नाम

मणिच्छिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेधा नामक औषध। २-एक औषध जिसे ऋषभा कहते हैं

मणिजला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम (महाभारत)।

मणित [संज्ञा पु.] (सं.) वह अव्यक्त सिसकारी जो स्त्री-संभोग के समय मुख से निकला करती है।

मणितारक [संज्ञा पु.] (सं.) सारस पक्षी।

मणिदोष [संज्ञा पु.] (सं.) रत्न आदि के दोष।

मणिद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनंतनाग का फन २-अमृतसागर का एक द्वीप विशेष जहां त्रिपुरसुन्दरी देवी का निवास-स्थान माना जाता है।

मणिधर [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

मणिपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

मणिपुर [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र के अनुसार छः चक्रों में से तीसरा जो नाभिदेश में अवस्थित है।

मणिपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) सहदेव के शंख का नाम।

मणिपूर [संज्ञा पु.](सं.) १-नाभि। २-वह चोली जिसमें बहुत से रत्न टँके हों। ३-कलिंगदेश के एक नगर का नाम।

मणिप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द का नाम

मणिबंध, मणिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलाई। पहुँचा। २-एक नवाक्षरीवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और सगण होते हैं।

मणिबंधन, मणिबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अँगूठी का वह स्थान जहाँ नगीना जड़ा होता है। २-मोती की लड़ी। ३-कलाई।

मणिबीज [संज्ञा पु.] (सं.) अनार का पेड़।

मणिभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक प्रधान गण का नाम।

मणिभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जाति का नाम। २-एक नाग का नाम।

मणिभावर [संज्ञा पु.] (सं.) सारस।

मणिभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह खान जिसमें रत्न आदि निकलते हैं।

मणिभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'मणिभू'। २-हिमालय के एक तीर्थ नाम।

मणिमंजरी, मणिमञ्जरी [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ छंद होते हैं

मणिमंडप, मणिमण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) रत्नमय गृह।

मणिमध्य [संज्ञा पु.] (सं.) मणिबंध नामक छंद

मणिमंथ, मणिमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधा नमक

मणिमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मणियों की माला। रत्नहार। २-लक्ष्मीजी का नाम। ३-चमक। आभा। ४-प्रेमक्रीड़ा या प्रेमावेश में गाल पर या अन्यत्र दाँतों से काटने का गोल चकत्ता या दाग। ५-एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, यगण, तगण, यगण होते हैं।

णिमेघ [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम (पुराण)।

मणिरत [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध आचार्य का नाम।

मणिरथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम

मणिराग [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगुल। शिंगरफ।

मणिरोग [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषेंद्रिय का एक रोग

मणिशैल [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम। (पुराण)।

मणिश्याम [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम।

मणिसर [संज्ञा पु.] (सं.) मोतियों की माला।

मणिस्कंध, मणिस्कन्ध [संज्ञा पु.](सं.) एक नाग का नाम।

मणिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मोतियों की माला।

मणी [संज्ञा पु.](हिं.) साँप। सर्प। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मणि'।

मणीचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रकांतमणि। २-एक वर्ष का नाम। ३-एक प्रकार का पक्षी।

मणीवक [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्प। फूल।

मणिसोपानक [संज्ञा पु.] (सं.) सोने के तार में पिरोई हुई मोतियों की माला जिसके बीच में कोई रत्न पिरोया हुआ हो।

मतंग, मतङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-बादल। ३-एक दानव का नाम। ४-एक प्राचीन देश का नाम जो कामरूप के अग्निकोण में था। ५-महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम जो शबरी के गुरु थे। ६-एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

मतंगज, मतङ्गज [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-बादल।

मतंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाँस जो बंगाल और बरमा में होता है इसमें दीमक नहीं लगती।

मतंगी [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी का सवार।

मत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्मति। राय। २-भाव। आशय। ३-धर्म। पंथ। मजहब। ४-ज्ञान। पूजा। ५-जिस विषय में मनुष्य रस लेता अथवा जानकारी रखता हो उसके संबंध में उसका प्रकट किया हुआ विचार सम्मति। ६-निर्वाचन आदि के समय किसी व्यक्ति के पक्ष में दी जाने वाली सम्मति। वोट। *मत उपाना*–सम्मति स्थिर करना। [क्रि. वि.] (हिं.) न। नहीं (निषेधवाचक शब्द)।

मतदाता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो प्रतिनिधि निर्वाचित करने या उसके सम्बन्ध में मत देने का अधिकारी हो। *वोटर*।

मतदान [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिये मत (वोट) देने की क्रिया या भाव। *वोटिंग। पोलिङ्ग*।

मतदानाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) मत देने का अधिकार। *वोटिंग पावर*।

मतना* [क्रि. अ.] (हि.) १-सम्मति या राय निश्चित करना। २-नशे आदि में चूर होना।

मत-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पर निर्वाचित होने वाले व्यक्तियों के नाम अथवा विशिष्ट चिह्न रहते हैं तथा जिस पर अपनी ओर से कोई चिह्न लगाकर मतदाता किसी व्यक्ति के पक्ष में अपना मत देता है। *बैलट-पेपर*।

मत-पेटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पेटी जिसमें मतदाता अपना मत-पत्र डालता या छोड़ता है। *बैलट-बॉक्स*।

मतभिन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मतभेद'।

मतभेद [संज्ञा पु.](सं.) दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों या पक्षों का परस्पर एकसा मत न होना। आपस में मत न मिलना।

मतरिया [संज्ञा स्त्री.](हि.) माता। माँ। *मतरिया बहनियाँ करना*–माँ-बहन की गाली देना। * [वि.] (हिं.) १-मंत्री। सलाहकार। २-मन्त्र से प्रभावित। मन्त्री।

मतलब [संज्ञा पु.] (अ.) १-अभिप्राय। आशय। तात्पर्य। २-अर्थ। मानी। ३-अपना हित। स्वार्थ। ४-विचार। उद्देश्य। ५-सम्बन्ध। वास्ता। *मतलब का यार*–स्वार्थी। *मतलब गाँठना या निकालना*–स्वार्थ-साधन करना। *मतलब हो जाना*–१-सफल मनोरथ होना। २-बुरा हाल हो जाना। ३-मरजाना।

मतलबिया+ [वि.] (हिं.) देखो 'मतलबी'।

मतलबी [वि.] (हि.) स्वार्थी। खुदगरज।

मतली [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कै होने की इ मिचली।

मतवार, मतवारा* [वि.](हिं.) देखो 'मत

मतवाला [वि.] (हि.) [स्त्री. मतवाली] १-नशे में चूर या मस्त। मदमस्त। २-पागल। उन्मत्त। ३-जिसे अभिमान या अहंकार हो। [संज्ञा पु.] १-वह भारी पत्थर जो शत्रु पर किले या पहाड़ पर से लुढ़काया जाता। २-एक प्रकार का कागज का खिलौना जिसका पेंदा भारी होता है।

मतवालापन [संज्ञा पु.] (हि.) मतवाला होने का भाव।

मता+ [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'मत'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मति'।

मताग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) हठधर्मिता।

मताग्रही [वि.] (हि.) हठधर्मी करने वाला।

मताधिकार [संज्ञा पु.](सं.) संसद आदि के सदस्य या प्रतिनिधि निर्वाचित करने के लिये वोट या मत देने का अधिकार। [illegible] अधिकार। मताधिकारी के [illegible] चन अधिकार का रोकना।

मताधिकार-आयु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश के विधान के अनुसार वह आयु जिसमें देश के निवासियों को मत देने का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

मताधिकारावस्था [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'मताधिकार-आयु'।

मतानुज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्यायदर्शन के अनुसार २१ प्रकार के निग्रह-स्थानों में से एक जिसमें अपने पक्ष के दोष पर विचार न करके बार-बार विपक्षी के दोष का ही उल्लेख किया जाता है।

मतानुयायी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी धर्म संप्रदाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष के मत को मानने वाला।

मतारी+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'महतारी'।

मतावलंबी, मतावलम्बी [संज्ञा पु.](सं.) किसी एक मत, सिद्धांत अथवा सम्प्रदाय का अवलंबन करने वाला।

मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समझ। बुद्धि। २-सलाह। सम्मति। ३-इच्छा। ख्वाहिश। ४-स्मृति। [वि.] (सं.) बुद्धिमान्। चतुर। *[क्रि. वि.] (हि.) देखो 'मत'। *[अव्य.] (हिं.) सदृश्य। समान।

मतिगर्भ [वि.] (सं.) प्रतिभाशाली। बुद्धिमान्। चतुर।

मतिचित्र [संज्ञा पु.](सं.) अश्वघोष का एक

मतिदर्शन [संज्ञा पु.](सं.) वह शक्ति जिससे सार की योग्यता अथवा भावों का पता है।

मतिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ज्योतिष्मती

लता। २-सेमल।

मतिन [अव्य.] (हिं.) सदृश्य। समान।

मतिपूर्व [अव्य.] (सं.) जानबूझकर। इरादतन। रज़ामंदी से।

मतिभेद [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धि की भिन्नता।

मतिभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) पागलपन।

मतिभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धिनाश। पागलपन।

मतिभ्रांति, मतिभ्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मतिभ्रम'।

मतिमंत [वि.] (हि.) चतुर। बुद्धिमान्।

मतिमांद्य, मतिमान्द्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मंद बुद्धि होने का भाव। मूर्खता। मूढ़ता। कलनेस।

मतिमान [वि.] (सं.) बुद्धिमान्। विचारवान्।

मतिमाह* [वि.] (हिं.) बुद्धिमान्। चतुर।

मतिवंत [वि.] (हिं.) बुद्धिमान्। चतुर।

मती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मति'। [क्रि. वि] (हिं.) १-देखो 'मति'। २-देखो 'मत'।

मतीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) तरबूज।

मतीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा का एक नाम।

मतीस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाजा।

मतेई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) विमाता।

मतैक्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय में सब अथवा कुछ लोगों का विचार या मत एक होना। ऐकमत्य।

मत्कुण [संज्ञा पु.] (सं.) खटमल।

मत्त [वि.] (सं.) १-मस्त। २-मतवाला। ३-पागल ४-प्रसन्न। खुश। [संज्ञा पु.] (सं) १-वह हाथी जिसके मस्तक से मद बहता है। २-धतूरा। ३-कोयल। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मात्रा

मत्तकाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्यन्त रूपवती स्त्री। उत्तम स्त्री।

मत्तकीश [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

मत्तगयंद, मत्तगयन्द [संज्ञा पु.] (सं.) सवैया नामक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण तथा दो गुरु होते हैं।

मत्तगामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उन्मत्त के समान चलने वाली स्त्री।

मत्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मत्त होने का भाव। मतवालापन।

मत्तताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मतवालापन। मस्ती।

मत्तनाग [संज्ञा पु.] (सं.) मतवाला हाथी।

मत्तमयूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघों को देखकर उन्मत्त होने वाला मोर। २-पंद्रह अक्षरों का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, तगण, यगण, सगण तथा मगण होते हैं।

मत्तमयूरक [संज्ञा पु.] (सं.) पार्श्व व [illegible] की एक योद्धा जाति का नाम।

मत्तमातंग-लीलाकर, मत्तमातङ्ग-लीलाकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक दंडकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नौ रगण होते हैं।

मत्तवारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकान के आगे का दालान या बरामदा। २-आँगन के ऊपर की छत। ३-मतवाला हाथी।

मत्तविलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द का नाम।

मत्तसमक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की चौपाई (छन्द)। जिसमें नवीं मात्रा अवश्य लघु होती है।

मत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण, तथा एक गुरु होता है और ४, ६ पर यति होती है। २-मदिरा। शराब।

[प्रत्य.](सं.) मान से बनने वाला भाववाचक रूप। पन जैसे-बुद्धिमत्ता, नितिमत्ता आदि।

* + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मात्रा'।

मत्ताक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेईस अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो मगण, एक तगण, चार नगण तथा अन्त में एक लघु और एक गुरु अक्षर होता है।

मत्तेभगमना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मतवाले हाथी के समान गति वाली स्त्री।

मत्तेभविक्रीड़ित [संज्ञा पु.](सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं।

मत्था+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-भाल। ललाट। माथा। २-सिर। मूंड़। ३-किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग। *मत्था टेकना*-सिर झुकाकर नमस्कार करना। *मत्था मारना*-सिर खपाना।

मत्थे [क्रि. वि.] (हिं.) १-मस्तक या सिर पर। माथे पर। २-आसरे या भरोसे पर।

मत्स [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मत्स्य'।

मत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) १-डाह। हसद। जलन। २-क्रोध। गुस्सा। [वि.] १-डाह करने वाला। २-कृपण। कंजूस। ३-सबको अपनी निंदा करते देखकर अपने आपको धिक्कारने वाला।

मत्सरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डाह। हसद। जलन

मत्सरी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दूसरों से डाह रखता हो।

मत्सरीकृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में एक मूर्च्छना का नाम।

मत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली। २-प्राचीन विराट देश का नाम। ३-नारायण। ४-बारहवीं राशि। मीनराशि। ५-अठारह पुराणों में से एक का नाम। यह महापुराण माना जाता है। ६-विष्णु भगवान् के दस अवतारों में से प्रथम। ७-सुनहले रंग की एक प्रकार की शिला। कहते हैं कि इसके पूजन से मुक्ति मिलती है। ८-छप्पयछन्द का एक भेद।

मत्स्यगंधा, मत्स्यगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यास की माता सत्यवती का एक नाम। २-जलपीपल।

मत्स्यजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछुआ। २-निषाद जाति का एक नाम।

मत्स्यद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहन सुदी द्वादशी।

मत्स्यद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) एक द्वीप का नाम। (पुराण)।

मत्स्यधानी [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह बरतन या पात्र जिसमें मछली रखी जाती है।

मत्स्यनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मत्स्येंद्रनाथ'

मत्स्यनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मत्स्यांगना'

मत्स्यनाशक [संज्ञा पु.] (सं.) कुरर पक्षी।

मत्स्यनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाँच प्रकार की सीमाओं में से एक वह सीमा जो नदी या किसी जलाशय के द्वारा निर्धारित की जाती है

मत्स्यपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह पुराणों में से एक का नाम जो महापुराणों में गिना जाता है।

मत्स्यबंध, मत्स्यबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मछली पकड़ने वाला। मछुआ। धीवर।

मत्स्यबंधन, मत्स्यबन्धन [संज्ञा पु.](सं.) मछली पकड़ने की वंशी।

मत्स्यबंधिनी, मत्स्यबन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह टोकरी जिसमें मछली रखी जाती है।

मत्स्यमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सभी पूजाओं में की जाने वाली एक तांत्रिक मुद्रा।

मत्स्यरंग, मत्स्यरङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) मछरंगा। राम चिड़िया।

मत्स्यरंगक, मत्स्यरङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मत्स्यरंग'।

मत्स्यराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-विराट देश के राजा। २-रोहू मछली।

मत्स्यांगना, मत्स्याङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्राणी जिसका मुख स्त्री के समान और शेष सारा शरीर मछली के समान होता है। मत्स्यनारी।

मत्स्याक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सोमलता।

मत्स्याक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोमलता। २-ब्राह्मी बूटी। ३-गाडर दूब।

मत्स्यायिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलपीपल। २-देखो 'मत्स्याक्षी'।

मत्स्यावतार [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु भगवान् के दस अवतारों में से प्रथम।

मत्स्याशन [संज्ञा पु.] (सं.) मछली खाने वाला।

मत्स्यासन [संज्ञा पु.](सं.) तांत्रिकों के मतानुसार योग का एक आसन।

मत्स्यासुर [संज्ञा पु.](सं.) पुराणानुसार एक दैत्य का नाम।

मत्स्यिनी-सीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो गांवों के

बीच की वह सीमा जो नदी के रूप में हो।

मत्स्येंद्रनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक हठयोगी प्रसिद्ध साधु जो गोरखनाथ के गुरु थे।

मत्स्योदरी [संज्ञा स्त्री.] सं.) वेदव्यास. की माता सत्यवती का एक नाम।

मत्स्योपजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) मछुआ। धीवर

मथन [संज्ञा पु.] (सं) १-मथने की क्रिया या भाव। बिलोना। २-एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३-गनियारी नामक वृक्ष। [वि.](सं.) मारने या नष्ट करने वाला।

मथना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी तरल पदार्थ को मथानी या लकड़ी आदि से तेजी से चलाना बिलोना। २-गति देकर एक में मिलाना। ३-नष्ट करना। ध्वंस करना। ४-घूम-घूम कर पता लगाना। ५-अच्छी प्रकार विचार करना +[संज्ञा पु.] (हिं.) मथानी। रई।

मथनियाँ* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह मटका जिसमें दही मथा जाता है।

मथनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मथनियाँ। दही मथने का मटका। २-मथानी। रई। ३-मथने की क्रिया।

मथवाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) महावत।

मथानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का काठ का डंडा जिससे दही मथकर मक्खन निकाला जाता है। *मथानी में पड़ना या बहना*–खलबली मचना।

मथित [वि.] (सं.) १-मथा हुआ। २-घोल कर अच्छी तरह मिलाया हुआ।

मथी [वि.] (हिं.) [स्त्री. मथिनी] मथने वाला। [संज्ञा पु.] (हि.) मथानी।

मथुरा [संज्ञा पु.] (हिं) यमुनानदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो पुराणों के अनुसार सात पुरियों में से एक है।

मथुरानाथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

मथुरिया [वि.] (हिं.) मथुरा से सम्बन्ध रखने वाला। मथुरा का।

मथुरेश [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

मथौत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'प्रस्थाय'।

मथौरा [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार का बढ़इयों का रंदा।

मथौरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक अर्धचन्द्राकार आभूषण का नाम जिसे स्त्रियां सिर में पहनती हैं। चन्द्रिका। चंदक।

मथ्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) माथा।

मथ्य [वि.] (सं.) मथने योग्य।

मदंग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का घास।

मदंती, मदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विकृत धैवत की चार श्रुतियों में से एक का नाम।

मदंध* [वि.] (हि.) देखो 'मदांध'।

मद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हर्ष। आनन्द। २-वह गंधयुक्त द्राव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है। ३-वीर्य। ४-कस्तूरी। ५-नशा। ६-मद्य। शराब। ७-विक्षिप्तता। पागलपन। ८-शहद। ९-गर्व। घमंड। १०-उन्माद नामक रोग। ११-कामदेव। १२-एक दैत्य का नाम। *मद पर आना*–१-उमंग पर आना। २-कामोन्मत्त होना। ३-युवा होना। [वि.] (सं.) मत्त। [संज्ञा स्त्री.] (अ) १-विभाग। सरिश्ता। २-खाता। ३-कोई एक रकम या बात। पद। *आइटम*। ४-शीर्षक। अधिकार। ५-ऊँची लहर।

मदक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अफीम के सत से बनने वाला पदार्थ विशेष, जो तम्बाकू के समान पीया जाता है।

मदकची [वि.](हिं.) मदक पीने वाला। जो मदक पीता हो।

मदकट [संज्ञा पु.] (सं.) सांड।

मदकद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़वृक्ष।

मदकर [वि.] (सं.) जिससे मद उत्पन्न हो। [संज्ञा पु.] धतूरा।

मदकल [वि.] (सं.) १-मत्त। मतवाला। २-पागल। बावला।

मदकारी [वि.] (हिं.) जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो।

मदकी [वि.] (हि.) मदक पीने वाला। मदकची

मदकृत् [वि.] (सं.) मादक। नशीली।

मदकोहल [संज्ञा पु.] (सं.) साँड़।

मदखूला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह अविवाहित स्त्री जिसे कोई घर में डाल ले। गृहीता। रखनी।

मदगंध, मदगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-छितवन। २-मद्य।

मदगंधा, मदगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मद्य। शराब। २-अलसी। अतीस।

मदगमन [संज्ञा पु.] (सं.) महिष। भैंसा।

मदगल [वि.] (हि.) मत्त। मस्त।

मदघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूतिका। पोय।

मदच्युत [वि.] (सं.) गर्वनाशक।

मदजल [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का मद। दान।

मदद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सहायता। सहारा। २-साथ काम करने वालों का समूह। *मदद पहुँचना*–सहायता मिलना। *मदद बाँटना*–दैनिक मजदूरी चुकाना।

मददगार [वि.] (फा.) सहायक।

मददखर्च [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-किसी की सहायतार्थ दिया जाने वाला धन। २-अग्रिम धन। पेशगी। अगाऊ।

मदधार [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम। (महाभारत)।

मदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-संभोगजन्य प्रेम। अनुराग। ३-कामक्रीड़ा। ४-आलिंगन का एक ढंग। जिसमें प्रेमी एक हाथ प्रेमिका के गले में डालकर तथा मध्यप्रदेश में लगाकर उसका आलिंगन करता है। ५-मैनफल वृक्ष और उसका फल। ६-धतूरा। ७-खैर। ८-मौलसिरी। ९-१०-भ्रमर। ११-अखरोट का वृक्ष। १२-पक्षी। १३-खंजनपक्षी। १४-एक प्रकार गीत। १५-ज्योतिष-शास्त्रानुसार जन्म सप्तम गृह का नाम। १६-एक प्रकार १७-रूपमाला छन्द का नाम। १८-छन्द के एक भेद का नाम।

मदनकंटक मदनकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सात्विक रोमांच।

मदनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मदनवृक्ष। मैनफल २-मोम। ३-खैर। दौना। ४-धतूरा। मौलसिरी।

मदनकदन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

मदनकलह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम का संभोग। मैथुन।

मदनगृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-भग। योनि। फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली सप्तम स्थान। ३-मदनहर छन्द का नाम।

मदनगोपाल [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

मदनचतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत्र शुक्ला-चतुर्दशी।

मदनताल [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में एक ता

मदनत्रयोदशी [संज्ञा स्त्री.](सं.) चैत्रशुक्लत्रयोदशी।

मदनदमन, मदनदहन [संज्ञा पु.](सं.) शिव एक नाम।

मदनदिवस [संज्ञा पु.] (सं.) मदनोत्सव का

मदनदोला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्दुताल के भेदों में से एक। (संगीत)।

मदनद्वादशी [संज्ञा स्त्री.](सं.) चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी।

मदननालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुश्चरित्रा असती भार्या।

मदनपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) खंजन पक्षी।

मदनपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-विष्णु

मदनपाठक [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल। कोकिल

मदनफल [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल।

मदनबान [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का अच्छी तीव्र गंध वाला बेले का फूल।

मदनभवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भग। योनि। फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली जन्म से सप्तम स्थान।

मदनमनोरमा [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्मिल सवैया का दूसरा नाम।

मदन-मनोहर [संज्ञा पु.] (सं.) दंडक के का नाम जिसे मनहर भी कहते हैं।

मदनमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लिकावृत्त का एक नाम।

मदनमस्त [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चंपा की तरह का एक प्रकार का फूल। २-जङ्गली सूरन का सुखाया हुआ टुकड़ा जो दवा के काम में आता है।

मदनमहोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक उत्सव जो चैत्रशुक्ला द्वादशी से चतुर्दशी तक मनाया जाता था। इस उत्सव में व्रत, कामदेव की पूजा, गीतवाद्य और रात्रि जागरण किया जाता था। उत्सव में स्त्रियां तथा पुरुष दोनों सम्मिलित होते थे और बाग-बगीचों में जा आमोद-प्रमोद करते थे।

मदनमालिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) नायिका का भेद

मदनमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) सवैया छन्द का एक भेद जिसे सुंदरी भी कहते हैं।

मदनमोहन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

मदनरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

मदनरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विक्रमादित्य की एक माता का नाम।

मदनललिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं। इसमें क्रमशः मगण, भगण, नगण, मगण, नगण तथा अन्त में गुरु होता है।

मदनलेख [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेम-पत्र।

मदनशलाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मैना। २-कोकिला। कोयल।

मदनसदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भग। योनि। २-जन्मकुण्डली के सातवें स्थान का नाम। (फलित ज्योतिष)।

मदनसारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैना।

मदनहर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मदनहरा'।

मदनहरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चालीस मात्राओं का एक छंद। इसमें दस, आठ, चौदह तथा आठ पर यति और आदि की दो मात्रा का ह्रस्व होना लिखा है।

मदनांकुश, मदनाङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरुषेंद्रिय। लिंग। २-संभोग के समय लगा हुआ नखाघात।

मदनांतक, मदनान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

मदनांध, मदनान्ध [वि.] (सं.) कामांध।

मदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैना। सारिका।

मदनाग्रक [संज्ञा पु.] (सं.) कोदों। कोदव।

मदनायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव का अस्त्र। २-भग। ३-एक अस्त्र का नाम।

मदनारि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

मदनालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मदनसदन'।

मदनावस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कामुकों की विरहावस्था। २-कामक्रीड़ा की सी दशा।

मदनास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव का अस्त्र। २-एक अस्त्र का नाम।

मदनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सुरा। २-कस्तूरी। ३-मेथी। ४-धाय का पेड़। ५-अतिपुष्प नामक फूल।

मदनीयहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) धाय का पेड़।

मदनीया [संज्ञा स्त्री.](सं.) मल्लिका वृक्ष। बेला।

मदनेच्छाफल [संज्ञा पु.] (सं.) कलमी आम का पेड़।

मदनोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) मदन-महोत्सव।

मदनोत्सवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा। स्वर्ग की वेश्या।

मदनोद्यान [संज्ञा पु.](सं.) आनन्द बाग। सुन्दर बगीचा।

मदप्रयोग [संज्ञा पु.](सं.) हाथी का मद बहना

मदफ़न [संज्ञा पु.] (अ.) मुरदे गाड़ने का स्थान। कब्रिस्तान।

मदमंजिनी, मदमञ्जिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) शतमूली।

मदमत्त [वि.] (सं.) मतवाला।

मदयंतिका, मदयन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लिका।

मदयंती, मदयन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लिका

मदयित्नु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मद्य। शराब। २-कामदेव। ३-कलवार। ४-मेघ।

मदर* [संज्ञा पु.] (हिं.) मँडराना। घेरना।

मदरसा [संज्ञा पु.] (अ.) पाठशाला। विद्यालय।

मदराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-नशे में चूर हो। २-पागल मुर्गा।

मदरास [संज्ञा पु.] भारत के एक प्रांत का नाम जो अपने प्रधान नगर के नाम से विख्यात है

मदलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात वर्ण होते हैं। यह क्रमशः मगण, सगण तथा गुरु होता है।

मदवारि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का मद जल।

मदविक्षिप्त [वि.] (सं.) मदमत्त। मतवाला। [संज्ञा पु.] मतवाला हाथी।

मदशाक [संज्ञा पु.] (सं.) पोई। पोय।

मदसार [संज्ञा पु.] (सं.) शहतूत का पेड़।

मदस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां मदिरा पीते हैं। शराबखाना।

मदहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) धातकी। धाय का पेड़।

मदांतक, मदान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसे मदात्यय कहते हैं।

मदांध, मदान्ध [वि.] (सं.) जो मद के कारण अंधा हो। मदोन्मत्त। मदोद्धत।

मदाखिलत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दखल देना। हस्तक्षेप। २-दखल जमाना।

मदाखिलत-बेजा [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) अनुचित हस्तक्षेप।

मदाढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) तालवृक्ष। ताड़।

मदात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) लगातार मदिरा पीते रहने के कारण होने वाला एक रोग।

मदाध [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

मदानि* [वि.] (?) कल्याण करने वाला।

मदार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-धूर्त। ३-सूअर। ४-एक गंधद्रव्य। (हि.) १-आक का पौधा। २-मदारी।

मदारगदा [संज्ञा पु.] (सं.) धूप में सुखाया हुआ मदार का दूध।

मदारिया, मदारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो बन्दर, भालू आदि का तमाशा दिखाता है। कलंदर। २-वह जो लाग आदि के तमाशे दिखाता है। बाजीगर। ३-शाह मदार के अनुयायी मुसलमान फकीर।

मदालसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पुराणानुसार विश्वावसु गंधर्व की कन्या का नाम जिसे वज्रकेतु के पुत्र पातालकेतु दैत्य उठाकर पाताल में ले गया था।

मदालापी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मदालापिनी] कोकिल। कोयल।

मदावस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पागलपन की दशा

मदाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी।

मदि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हेंगा। पटेला।

मदिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मादा पशु। स्त्री-जाति का पशु।

मदिर [संज्ञा पु.] (सं.) लाल फूलों वाला खदिर-वृक्ष। [वि] १-मस्त करने वाला। २-नशीला

मदिरलोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके नेत्र मनोहर हों या जिसकी आँखों में जादू-सा हो।

मदिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुछ वस्तुओं को सड़ाकर और फिर भबके से खींचा हुआ मादक रस। शराब। दारु। मद्य। २-वसुदेव की एक पत्नी का नाम। ३-बाईस अक्षरों का एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और अन्त में एक गुरु होता है।

मदिराक्ष [वि.] (सं.) [स्त्री. मदिराक्षी] मदभरी या मस्त-आंखों वाला।

मदिराक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मदिरलोचना'

मदिराभ [वि.] (सं) १-मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। २-मस्त। मतवाला। ३-मदिरा के रंग या गंध का।

मदिरायत-नयन [वि.](सं.) बड़ी और आकर्षक नेत्रों वाला।

मदिरालस [संज्ञा पु.] (हि.) मदिरा से उत्पन्न होने वाला आलस्य। खुमारी।

मदी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मदि'।

मदीय [वि.] (सं.) [स्त्री. मदिया] मेरा।

मदायून [वि.] (अ.) कर्जदार। ऋणी।

मदीला [वि.] (हिं.) नशीला। नशे से भरा हुआ।

मदुकल [संज्ञा पु.] (?) दोहे का एक भेद जिसमें तेरह गुरु और बाईस लघु मात्राएँ होती हैं।

मदोत्कट [वि.] (सं.) मदगर्वित। मदांध। [संज्ञा पु.] (सं.) मत्त हाथी।

मदोदग्र [वि.] (सं.) मत्त। मतवाला।

मदोद्धत [वि.] (सं.) १-घमंडी। २-मदोन्मत्त। मदांध।

मदोन्मत्त [वि.] (सं.) जो मद के कारण उन्मत्त हो रहा हो। मदांध।

मदोल्लापी [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल

मदोवै* [संज्ञा पु.] (हिं.) मन्दोदरी।

मद्गु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का जलपक्षी २-एक प्रकार का जंतु जो पेड़ पर रहता है। ३-सर्प विशेष। ४-मद्गुरी मछली। ५-एक प्रकार का युद्धपोत। ६-एक वर्णसंकर जाति। जो ब्राह्मण पिता और बंदी जाति की माता से हुई थी।

मद्गुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मँगुरी या मंगुर नाम की मछली। २-प्राचीनकाल की एक वर्णसंकर जाति। जिसका पेशा समुद्र से मोती निकालना था। गोताखोर।

मद्गुरक [संज्ञा पु.] (सं.) मंगुर नामक मछली।

मद्गुरसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मंगुर मछली।

मद्दत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहायता।

मद्दूसाही [संज्ञा पु.] (हिं.) पुराने जमाने का तांबे का चौकोर पैसा।

मद्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) द्राक्षा से बनने वाली मदिरा।

मद्धिम* [वि.] (हिं.) मध्यम। अपेक्षाकृत कम अच्छा। २-मंदा।

मद्धे [अव्यय] (हिं.) १-बीच में। २-विषय में बाबत। ३-लेखे या हिसाब में। बाबत। ऑन-अकाउंट-ऑफ।

मद्य [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा। शराब।

मद्यद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष विशेष।

मद्यपंक, मद्यपङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह खमीर जो मद्य या शराब खींचने के लिये उठाया जाय।

मद्यप [वि.] (सं.) मदपान करने वाला। शराबी।

मद्यपान [संज्ञा पु.] (सं.) शराब पीना।

मद्यपाशन [संज्ञा पु.] (सं.) मद्य के साथ खाई जाने वाली चटपटी चीज। चाट।

मद्यपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धातकी। धौ।

मद्यबीज [संज्ञा पु.] (सं.) शराब के लिये उठाया हुआ खमीर।

मद्यमंड, मद्यमण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मद्य के खमीर के ऊपर आने वाला फेन।

मद्यमोद [संज्ञा पु.] (सं.) मौलसिरी।

मद्यवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धातकी। धौ।

मद्यसंधान, मद्यसन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) मद्य निकालने का व्यापार।

मद्रंकर, मद्रङ्कर [वि.] (सं.) मंगलकारक।

मद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-एक देश का नाम जो रावी और झेलम नदियों के बीच में था। ३-हर्ष।

मद्रक [वि.] (सं.) १-मद्र देश सम्बन्धी। मद्र देश का। २-मद्र देश में उत्पन्न।

मद्रकार [वि.] (सं.) मंगलकारक। शुभ।

मद्रुकस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देश का नाम।

मध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मध्य'।

मधन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

मधाना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

मधि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मध्य'। [अव्य.] में।

मधिम* [वि.] (हिं.) देखो 'मध्यम'।

मधु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शहद। २-फूल का रस मकरन्द। ३-पानी। जल। ४-शराब। ५-सुधा। अमृत। ६-घी। मक्खन। ७-दूध। ८-मिसरी। ९-मुलेठी। १०-महुए का पेड़। ११-अशोकवृक्ष। १२-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो लघु अक्षर होते हैं। १३-संगीत में एक राग। १४-एक दैत्य का नाम। १५-महादेव। १६-वसंतऋतु। १७-चैत्रमास। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवंती नामक पेड़। [वि.] (सं.) १-मीठा। २-स्वादिष्ट।

मधुकंठ, मधुकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल। कोकिल।

मधुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-महुए का पेड़। २-महुए का फूल। ३-मुलेठी। जेठीमधु।

मधुकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौंरा। २-कामी पुरुष। ३-घमरा। भँगरा।

मधुकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाटी। २-साधु संन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ भोजन लिया जाता है। ३-भौंरी। भ्रमरी

मधुकर्कटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संतरा। मीठा नीबू

मधुकलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

मधुकार [संज्ञा पु.] (सं.) मधुमक्खी।

मधुकाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मधुकुंभा, मधुकुम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

मधुकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुशद्वीप की एक नदी का नाम। (पुराण)।

मधुकृत [संज्ञा पु.] (सं.) मधुमक्खी।

मधुकैटभ [संज्ञा पु.] (सं.) मधु तथा कैटभ नामक दो दैत्य। यह विष्णु भगवान् के हाथ से मारे गये थे।

मधुकोप [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

मधुक्षीर, मधुक्षीरक [संज्ञा पु.] (सं.) खजूर का पेड़

मधुघोष [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल। कोयल।

मधुगंध, मधुगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-बकुल वृक्ष। २-मौलसिरी।

मधुगायन [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

मधुगुंजन, मधुगुञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सहिजन का वृक्ष।

मधुग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) वाजपेययज्ञ के एक हवन विशेष जिसमें मधु की आहुति दी जाती है।

मधुचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) मधुमक्खियों का छत्ता

मधुच्छंदा, मधुच्छन्दा [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

मधुच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोरशिखा नामक बूटी।

मधुज [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मधुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

मधुजीरक [संज्ञा पु.] (सं.) सौंफ।

मधुजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) बहेड़े का वृक्ष।

मधुतृण [संज्ञा पु.] (सं.) ईख। गन्ना।

मधुत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) शहद, घी और चीनी इन तीनों का समुदाय।

मधुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मिठास। मीठापन।

मधुदीप [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मधुदूत [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

मधुदूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाटलावृक्ष।

मधुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा।

मधुद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सहिंजन का वृक्ष।

मधुद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का पेड़।

मधुधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मधु की वृष्टि।

मधुधारी [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामाखी।

मधुधूलि [संज्ञा स्त्री.] शक्कर। खांड़।

मधुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का क्षुप।

मधुनेत, मधुनेत्रा [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा। भ्रमर।

मधुप [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौंरा। २-शहद की मक्खी। ३-उद्धव। [वि.] (सं.) मधु पीने वाला।

मधुपटल [संज्ञा पु.] (सं.) शहद की मक्खियों का छत्ता।

मधुपति [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

मधुपर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं को चढ़ाने के लिये एक में मिलाया हुआ, दही, घी, जल, चीनी और शहद। २-तंत्रानुसार घी, दही, जल और मधु का समूह जिसका उपयोग तांत्रिक लोग पूजन में करते हैं।

मधुपर्क्य [वि.] (सं.) मधुपर्क अर्पण करने योग्य।

मधुपर्णिका, मधुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पौधा। २-गंभीरी नामक वृक्ष। ३-गुरुच

मधुपायी [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

मधुपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंभारी वृक्ष ।

मधुपिंग, मधुपिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि का नाम (पुराण) ।

मधुपीलु [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट ।

मधुपुर [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक मथुरा नगर का प्राचीन नाम ।

मधुपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मधुपुर' ।

मधुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-अशोक वृक्ष । २-बकुलवृक्ष । ३-दंती नामक वृक्ष । ४-सिरस वृक्ष । ५-महुआ ।

मधुपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदंती । २-धौ (वृक्ष) ।

मधुप्रणय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शराब पीने की लत । २-प्रेम का प्यारा सम्बन्ध ।

मधुप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमेह रोग जिसमें पेशाब के साथ शक्कर निकलने लगती है ।

मधुप्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह संस्कारों में से एक । इसमें नवजात शिशु को शहद चटाया जाता है ।

मधुप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम ।

मधुफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाख । २-कँटाय या विकंत नामक वृक्ष ।

मधुफलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीठी खजूर ।

मधुबन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्रजभूमि के एक वन का नाम । २-सुग्रीव का बगीचा जिसमें अंगूर बहुत लगते थे ।

मधुबहुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वासंती-लता । २-सफेद जूही ।

मधुबिंबी, मधुबिम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुँदरू

मधुबीज [संज्ञा पु.] (सं.) अनार ।

मधुभार [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मात्रिक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में आठ मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में जगण होता है । २-ऐसा बोझ मन को मधुर लगे ।

मधुमक्खी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी जो फूलों का रस चूसकर इकट्ठा करती है । मधुमाखी ।

मधुमक्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शहद की मक्खी

मधुमज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट नामक वृक्ष

मधुमत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम जो काश्मीर के पास था ।

मधुमती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-गंगा का एक नाम । २-एक प्राचीन नदी का नाम । ३-मधुदैत्य की कन्या का नाम । ४-नर्मदा नदी की एक शाखा का नाम । ५-पतंजली के मतानुसार समाधि की वह अवस्था जो अभ्यास तथा वैराग्य के कारण रज और तम के दूर हो जाने एवं सतगुण का पूर्ण प्रकाश होने पर प्राप्त होती है । ६-तांत्रिकों के मतानुसार नायिका विशेष जिसकी उपासना तथा सिद्धि से मनुष्य जहां चाहे वहां आ-जा सकता है । ७-एक वर्णवृत्त का नाम जिसमें दो नगण और एक गुरु होता है ।

मधुमत्त [वि.] (सं.) वसंतऋतु में प्रसन्न होने वाला ।

मधुमथन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

मधुमल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालती ।

मधुमाखी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मधुमक्खी ।

मधुमात [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जो भैरवराग का सहचर बताया जाता है ।

मधुमातसरंग, मधुमातसरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सारंग राग का एक भेद ।

मधुमाधव [संज्ञा पु.] (सं.) वसंतकाल ।

मधुमाधवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की मदिरा । २-वसंती लता । ३-एक रागिनी जो भैरव राग की सहचरी है । ४-वसंतऋतु में फूलने वाला कोई भी फूल ।

मधुमाध्वीक [संज्ञा पु.] (सं.) मद्य । शराब ।

मधुमारक [संज्ञा पु] (सं.) भौंरा ।

मधुमालती [संज्ञा स्त्री] (सं.) मालती नामक लता जिसके फूल पीले होते हैं ।

मधुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) रतालू ।

मधुमेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेह रोग जिसमें मधु के समान मूत्र निकलता है ।

मधुमेही [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसे मधुमेह रोग हो ।

मधुयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुलेठी । २-ईख ।

मधुयष्टिका मधुयष्टी [संज्ञा स्त्री.](सं.) मुलेठी

मधुर [वि.] (सं.) १-जो स्वाद में मधु के समान हो । मीठा । २-जो सुनने में प्यारा लगे । ३-सुन्दर । मनोरंजक । ४-सुस्त । मट्ठर (पशु) । ५-मंदगामी । धीरे चलने वाले । ६-जो किसी को क्लेशप्रद न हो । हलका । [संज्ञा पु.] (सं.) १-मीठा रस । २-लाल ऊख । ३-धान । ४-गुड़ । ५-जीवकवृक्ष । ६-मटर । ७-महुआ । ८-बादाम का पेड़ । ९-जङ्गली बेर । १०-विष । ११-लेहा । १२-काकोली । स्कंद के एक सैनिक का नाम ।

मधुरई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-मधुरता । २-मिठास ३-कोमलता । सुकुमारता ।

मधुरकंटक, मधुरकण्टक [संज्ञा पु.](सं.) कजली नामक मछली ।

मधुरक [संज्ञा पु.] (सं.) जीवक वृक्ष ।

मधुरकर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीठा नीबू ।

मधुरजंबीर, मधुरजम्बीर [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा नीबू ।

मधुरज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) सदा बना रहने वाला हलका ज्वर ।

मधुरता [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुर होने का भाव । २-मिठास । ३-सौंदर्य । सुन्दरता । ४-कोमलता । सुकुमारता ।

मधुरत्रय [संज्ञा पु] (सं.) घी, चीनी और शहद इन तीनों का समूह ।

मधुरत्रिफला [संज्ञा स्त्री.](सं.) दाख, गंभीरी तथा खजूर इन तीनों का समूह ।

मधुरत्व [संज्ञा पु.](सं.) १-मधुरता । २-मिठास । ३-सुन्दरता ।

मधुरत्वच [संज्ञा पु.] (सं.) धौ का पेड़ ।

मधुरफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तरबूज । २-बेरफल

मधुरफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीठा नीबू ।

मधुरबिंबी, मधुरबिम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुँदरू

मधुरस [संज्ञा पु.] (सं.) ईख । ऊख ।

मधुरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दाख । २-मूर्वा । ३-गंभारी । ४-दुधिया । ५-शतपुष्पी । ६-प्रसारिणी लता ।

मधुरसिक [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा । भ्रमर ।

मधुरस्रवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंडखजूर ।

मधुरस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्व ।

मधुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आधुनिक मदुरा का प्राचीन नाम । २-मथुरानगर । ३-शतपुष्पी । ४-मीठा नीबू । ५-मुलेठी । ६-मेदा । ७-महामेदा । ८-काकोली । सतावर । ९-पालक का साग । १०-केले का वृक्ष । ११-सेम । १२-सौंफ । १३-मसूर । १४-मीठी खजूर । १५-साहित्य में वह शब्द-योजना जिससे रचना में माधुर्य अथवा मिठास आता है ।

मधुराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मधुरता । २-मिठास । ३-सुन्दरता । ४-कोमलता ।

मधुराकर [संज्ञा पु.] (सं.) ईख । ऊख ।

मधुराक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर अक्षर ।

मधुराज [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर । भौंरा ।

मधुराना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मीठा होना । २-सुन्दर हो जाना ।

मधुरान्न [संज्ञा पु.] (सं.) मिठाई ।

मधुराम्लक [संज्ञा पु.] (सं.) अमड़ा ।

मधुराम्लरस [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी का पेड़ ।

मधुरालापा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारिका । मैनापक्षी ।

मधुरासव [संज्ञा पु.] (सं.) आम्र । आम ।

मधुरालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की छोटी मछली ।

मधुरिका [संज्ञा पु.] (सं.) सौंफ ।

मधुरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

मधुरिमा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-मधुरता । मिठास २-सुन्दता । सौन्दर्य । [वि.] जो बहुत मीठा हो ।

मधुरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुन्दरता । सौंदर्य २-एक प्रकार का बाजा जो फूंककर बजाया जाता था ।

मधुरोदक [संज्ञा पु.] (सं.) सात समुद्रों में से

अन्तिम जो मीठे जल का है (पुराण)।

मधुल [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा।

मधुलग्न [संज्ञा पु.] (सं.) शूली नामक एक घास

मधुलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फूलों का पराग। २-मधुली नामक गेहूँ से बनने वाली मदिरा ३-राई। कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

मधुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का गेहूँ जिसका उल्लेख भावप्रकाश में है।

मधुलिह, मधुलोलुप [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

मधुवटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक स्थान का नाम।

मधुवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्रज का एक वन। २-किष्किंधा के पास का एक वन। ३-कोयल। ४-वह वन या कुंज जहां प्रेमी-प्रेमिका मिलें

मधुवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

मधुवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुलेठी। २-करेला।

मधुवामन [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा।

मधुवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मद्य पीने का दिन। २-मद्य पीने की रीति। ३-मद्य। मदिरा।

मधुवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटे धव का वृक्ष

मधुवाही [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्राचीन नदी का का नाम (महाभारत)।

मधुविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की गुप्त विद्या।

मधुवीज [संज्ञा पु.] (सं.) अनार।

मधुवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का पेड़।

मधुव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा।

मधुशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शहद की बनी हुई चीनी। २-सेम। लोबिया।

मधुशाक [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का वृक्ष।

मधुशिग्रु [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन। शोभाजन।

मधुशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम। लोबिया।

मधुशिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मधुशेष [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मधुश्रम [संज्ञा पु.] (हिं.) सजीवन बूटी।

मधुश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वसंत की शोभा।

मधुश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वा।

मधुश्वासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवंती नामक वृक्ष।

मधुष्ठील [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का वृक्ष।

मधुसंभव, मधुसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोम। २-दाख।

मधुसख [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मधुसहाय, मधुसारथि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव

मधुसिक्थक [संज्ञा पु.] (सं) १-एक प्रकार का स्थावर विष। २-मोम।

मधुसुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस।

मधुसुहृद् [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मधुसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। २-भौंरा।

मधुसूदनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पालक का साग।

मधुस्कंद, मधुस्कन्द [संज्ञा पु.] एक तीर्थ का नाम।

मधुस्थान [संज्ञा पु.] मधुमक्खी का छत्ता।

मधुस्पंदी, मधुस्पन्दी [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का (प्राचीन) बाजा जिसमें तार लगे होते थे।

मधुस्यंद, मधुस्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

मधुस्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-महुए का वृक्ष। २-पिंडखजूर का पेड़।

मधुस्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का पेड़। [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मुलेठी। २-मूर्वा। ३-सजीवन बूटी। हंसपदी नामक लता।

मधुस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का वृक्ष।

मधुस्वर [संज्ञा पु.] कोयल।

मधुहंता, मधुहन्ता [संज्ञा पु.](हिं.) विष्णु।

मधुहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मधूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-महुए का वृक्ष। २-महुए का फूल। ३-मुलेठी।

मधूकपर्णी [संज्ञा स्त्री.] अमड़ा।

मधूकड़ी, मधुकरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मधुकरी'।

मधूकशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महुए के फल या फूल की चीनी।

मधूख [संज्ञा पु.] देखो 'मधूक'।

मधूच्छिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मधूत्थ, मधूत्थित [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मधूत्पन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शहद से बनाई हुई चीनी।

मधूत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसंतोत्सव। २-चैत्र की पूर्णिमा।

मधूल [संज्ञा पु.] (सं.) जलमहुआ।

मधूलक [संज्ञा पु.] (सं) १-जलमहुआ। २-मद्य शराब।

मधूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूर्वा। २-मुलेठी ३-एक प्रकार का मोटा अन्न। ४-छोटे दाने का गेहूँ। ५-इस गेहूँ की बनी मदिरा। ६-एक घास। ७-एक प्रकार की मक्खी।

मधूली [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम का पेड़। २-मुलेठी। ३-मध्यदेश का गेहूँ।

मधूवक [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

मध्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु के बीच का भाग। २-कमर। कटि। ३-अन्तर। फरक ४-सुश्रुत के मत से १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ५-पश्चिम दिशा। ६-विश्राम। ७-दस अरब की संख्या। ८-संगीत में एक सप्तक जिसके स्वरों का उच्चारण ... से, कण्ठ के भीतर के स्थानों से किया जा... है। साधारणतः इसे बीच का सप्तक ... हैं। ९-नृत्य में वह गति जो न बहुत ते... हो और न बहुत मंद। [वि.] (सं.) १-उपयुक्त। ठीक। २-बीच का। ... अधम। नीच।

मध्यक [संज्ञा पु.] (सं.) कई संख्याओं, ... अथवा मानों आदि को मिलाकर ... उनकी समष्टि का किया हुआ सम विभा... जो उनका मध्यममान सूचित करता है। ... का पड़ता। सामान्य। एवरेज। [वि.] ... बहुत छोटा और न बहुत बड़ा। एवरेज।

मध्यकुरु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश ... नाम।

मध्यखंड, मध्यखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) ज्यो... तिष-शास्त्र के मत से पृथ्वी का वह भाग ... उत्तर-क्रांतिवृत तथा दक्षिण-क्रांतिवृत के ... में पड़ता है।

मध्यगंध, मध्यगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आम ... पेड़।

मध्यगत [वि.] (सं.) मध्यम। बीच का।

मध्यचारी [वि.] (सं.) बीच में चलने वाला।

मध्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मध्य का भाव ... धर्म।

मध्यतापिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद ... नाम।

मध्यदिन [संज्ञा पु.] (सं.) दोपहर। मध्याह्न।

मध्यदेश [संज्ञा पु.] (सं.) भारत का वह ... भाग या प्रदेश जिसकी सीमा उत्तर में हिमा... लय, दक्षिण में विंध्याचल, पश्चिम में कुरु... क्षेत्र तथा पूर्व में प्रयाग है।

मध्यदेह [संज्ञा पु.] (सं.) उदर। पेट।

मध्य-पक्षक [विमान] [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार ... का वायुयान जिसके पंख पेट के साथ ... हैं। मिड्-विंग।

मध्यपद-लोपी [संज्ञा पु.] देखो 'मध्यमपद-लोपी' ...

मध्यपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष में ... प्रकार का पात। २-परिचय। जान-पहचान।

मध्यपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) जलबेंत।

मध्यपूर्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक पारिभाषिक शब्द ... जिसका प्रयोग विश्व की राजनीति में पूर्व के ... निकटवर्ती तथा दूरवर्ती राज्यों के लिए किया ... जाता है। इसमें प्रायः यह देश या ... आते हैं फारस, ईराक, सीरिया, फिलिस्तीन ... तथा तुर्किस्तान के भाग। मिडल-ईस्ट। ...

मध्यम [वि.] (सं.) मध्य का। बीच का। २-... न बहुत बड़ा न छोटा। औसत मान का। ... [संज्ञा पु.] १-संगीत कला के सप्त स्वरों में ... से चौथा स्वर। २-एक राग का नाम। ३-... मध्य देश। ४-एक प्रकार का मृग। ५-...

में तीन प्रकार के नायकों में से एक। ६-वह उपपति जो नायिका के कुपित होने पर अपना अनुराग प्रकट न करे तथा उसकी चेष्टाओं से उसके मन का भाव ताड़ ले।

मध्यमक [वि.] (सं.) [स्त्री. मध्यमिका] बीच का। बीचोंबीच का।

मध्यमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मध्यम होने का भाव।

मध्यमपद-लोपी [संज्ञा पु.] (सं.) वह समास जिसमें पहले पद का आगामी पद से संबंध बतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है। लुप्तपद समास (व्याकरण)।

मध्यमपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण के अनुसार वह व्यक्ति जिससे कुछ कहा जाय।

मध्यमरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) आधीरात। मध्यरात्रि।

मध्यमलोक [संज्ञा पु] (सं.) पृथ्वी।

मध्यमवयस [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह से सत्तर वर्ष के बीच की अवस्था।

मध्यमवाह [वि.] (सं.) मंदगति से चलने वाला।

मध्यमसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री को अपने वश में करने का वह ढंग जो उसे वस्त्राभूषण आदि भेजकर किया जाता है।

मध्यमसाहस [संज्ञा पु.] (सं.) मनु के अनुसार वह अर्थदंड जो पांच सौ पण तक का हो।

मध्यमस्थ [वि.] (सं.) बीच का। मध्य का।

मध्यमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथ की बीच की उँगली। २-वह स्यानी लड़की जो विवाह के योग्य हो गई हो। ३-रजस्वला स्त्री। ४-वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम अथवा दोष के अनुसार उसका आदर मान या अपमान करे। ५-छोटा जामुन। ६-कनियारी। ७-काकोली। ८-वह स्त्री जो अपनी जवानी की उमर के बीच पहुँची हो।

मध्यमागम [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के चार प्रकार के आगमों में से एक।

मध्यमात्रेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

मध्यमादि [संज्ञा पु.] (सं) संगीत में एक प्रकार का ताल।

मध्यमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-सङ्गीत में एक प्रकार का ताल जिसमें आठ ह्रस्व या चार दीर्घ मात्राएँ होती हैं तथा एक खाली होता है। २-औसत। बराबर का पड़ता। मध्यक।

मध्यमानिक [वि] (सं.) १-मध्य का। २-औसत मान का।

मध्यमाहरण [संज्ञा पु.] (सं.) बीजगणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई आयत्तमान निकाला जाता है।

मध्यमिक [वि.] (सं.) बीच का। मध्यम।

मध्यमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रजस्वला स्त्री। वह लड़की जो विवाह के योग्य हो गई हो।

मध्यमीय [वि.] (सं.) देखो 'मध्यम'।

मध्ययव [संज्ञा पु.] (सं) प्राचीन समय का वह परिमाण जो पीली सरसों के बराबर का होता था।

मध्ययुग [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन युग तथा आधुनिक युग के बीच का समय। २-युरोप एशिया आदि के इतिहास के अनुसार ईस्वी छठी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक का समय।

मध्ययुगीन [वि.] (सं.) मध्ययुग का।

मध्यरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) आधीरात।

मध्यरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष तथा भूगोल-शास्त्रानुसार वह रेखा जिसकी कल्पना देशांतर निकालने के लिये की जाती है।

मध्यलोक [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी।

मध्यवर्ती [वि.] (सं.) जो मध्य में हो। बीच का।

मध्यवय [संज्ञा पु.] (हिं.) जीवन का मध्य भाग

मध्यविवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण का एक प्रकार जिसमें सूर्य या चन्द्रमा का मध्यभाग पहले प्रकाशित होता है।

मध्यवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) नाभि।

मध्यशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) पेट। उदर।

मध्यशायी [वि.] (सं.) बीच का। मध्यवर्त्ती।

मध्यसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मध्यरेखा'।

मध्यस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो बीच में पड़कर किसी प्रकार का विवाद अथवा विरोध दूर करता हो। आपस में मेल या समझौता कराने वाला। मीडिएटर। २-वह जो दो दलों अथवा दो पक्षों के मध्य रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेनदेन में कुछ सुभीते उत्पन्न करके लाभ उठाता हो। जैसे-उत्पादक तथा उपभोगताओं में व्यापारी। *मिडिल-मैन* ३-जो दोनों पक्षों में से किसी पक्ष में न हो। उदासीन। तटस्थ। ४-वह जो अपनी हानि न करता हुआ दूसरों का उपकार करता हो। ५-कुछ आदमियों का चुना हुआ वह दल जो कोई झगड़ा अथवा मामला निपटाने के लिये नियत हो। पंच। *आरबिट्रेटर*।

मध्यस्थ-निर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) मध्यस्थ या पंच का किसी झगड़े अथवा मामले को निपटाने के सम्बन्ध में दिया गया निर्णय या फैसला *आरबिट्रेशन*।

मध्यस्थ-न्यायाधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) विवादग्रस्त विषयों पर विचार करके उनका न्याय या निर्णय करने वाली पंचअदालत *आरबिट्रियल-ट्रिब्यूनल*।

मध्यस्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मध्यस्थ होने का भाव या धर्म।

मध्यस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) कमर।

मध्यस्थित [वि.] (सं.) बीच का। मध्यवर्त्ती।

मध्यांतर, मध्यान्तर [संज्ञा पु.] (सं) देखो मध्यावकाश।

मध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा अथवा काम, भाव से हों। २-नाप, मान, समय आदि के विचार से दो अथवा दूसरों के बीच में पड़ने वाली नाप या मान। मीन। ३-बीच की उँगली। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं।

मध्यान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मध्याह्न'।

मध्यान्ह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मध्याह्न'।

मध्यारिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता।

मध्यावकाश [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय, पढ़ाई खेल आदि में वह अवकाश जो बीच में थोड़े समय के लिये लोगों को सुस्ताने, जलपान आदि करने के लिये मिलता है।

मध्याह्न [संज्ञा पु.] (सं.) ठीक दोपहर का समय।

मध्याह्नोत्तर [संज्ञा पु.] (सं) दोपहर के बाद का समय।

मध्ये [क्रि. वि.] (हिं.) सम्बन्ध में। बारे में। बाबत। [वि.] (हिं.) देखो 'मद्धे'।

मध्येज्योतिः [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद जो पाँच पद का होता है। इसके पहले और दूसरे चरण में आठ-आठ वर्ण तथा तीसरे में ग्यारह और फिर चौथे और पाँचवें में आठ-आठ वर्ण होते हैं।

मध्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मधु'।

मध्वक [संज्ञा पु.] (हिं.) शहद की मक्खी।

मध्वक्ष [वि.] (सं.) जिसके नेत्र मधु के समान हों

मध्वरिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक अरिष्ट जो संग्रहणी रोग में उपकारी माना जाता है।

मध्वल [संज्ञा पु.] (सं.) बार-बार तथा बहुत मदिरा पीना।

मध्वाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो मध्वाचारी नामक संप्रदाय के प्रवर्त्तक थे।

मध्वाधार [संज्ञा पु.] (सं.) मधुमक्खी का छत्ता।

मध्वालु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के पौधे की जड़ जो खाई जाती है।

मध्वासव [संज्ञा पुं.] (सं.) महुए की शराब।

मध्वासविक [संज्ञा पु.] (सं.) कलाल। कलवार।

मध्वाहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मधु की आहुती।

माध्विजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई भी नशीली चीज जो पीजाय। शराब। मदिरा।

मध्वृच [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद की एक ऋचा।

मनः [संज्ञा पु.] (सं.) मन।

मनःक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) मन का उद्वेग।

मनःपति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मनःपर्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन से सकल्प-विकल्प अथवा बोध प्राप्त करने की शक्ति।

मनःपर्याय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के मत से

वह ज्ञान जिससे चिंतित अर्थ का साक्षात् होता है।

मन:पूत [वि.] (सं.) १–मनचाहा। २–यथेष्ट। ३–मन को प्रसन्न करने वाला।

मन:प्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) मन की प्रसन्नता।

मन:प्रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन की प्रसन्नता।

मन:शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) मन और मनोविकारों का विवेचन करने वाला शास्त्र। मनोविज्ञान

मन:शिल [संज्ञा पु.] (सं.) मैनसिल।

मन:शिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैनसिल।

मन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–प्राणियों में वह शक्ति जिससे अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि होते हैं। २–अन्तःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है। ३–इच्छा। इरादा। विचार।

(*किसी से*) *मन अटकना उलझना*–प्रेम होना। *मन आना या मन में आना*–१–समझ पड़ना। २–दिल आना। तबियत आना। *मन कच्चा करना*–हिम्मत या साहस तोड़ना। *मन करना*–इच्छा होना। *मन का मारा*–दुःखी चित्त वाला *मन का मैला*–कपटी। घाती। *मन की मन में रहना*–इच्छा पूरी न होना। *मन के लड्डू खाना*–व्यर्थ आशा में खुश होना। *मन खट्टा होना*–घृणा हो जाना। अच्छा न लगना। *मन खराब होना*–१–दिल या मन फिरना। २–नाराज होना। ३–बीमार होना। ४–मतली आने को होना। *मन खोलना*–छिपाव छोड़ना। *मन चलना*–इच्छा होना। *मन टटोलना*–थाह लेना। मन की बात जानना। *मन टूटना*–हिम्मत टूटना। साहस न रहना। *मन डोलना*–१–मन चंचल होना। २–लोभ आना। *मन ढलना*–किसी की ओर इच्छा होना। *मन देना* १–जी लगाना। २–ध्यान देना। (*किसी को*) *मन देना*–आसक्त या मोहित होना। *मन धरना* मन लगाना।

मन बढ़ना–साहस या उत्साह बढ़ना। *मन बढ़ाना*–साहस या हिम्मत बढ़ाना। *मन फट जाना*–घृणा हो जाना। *मन फेरना*–चित्त हटाना। *मन बहलाना*–दिल खुश करना। *मन बिगड़ना*–१–मन का उदासीन हो जाना। २–मतली आना। ३–पागल होना। +*मन बूझना*–किसी के मन की थाह लेना। *मन मानना*–मन में शांति होना। *मन भर जाना*–१–तृप्ति हो जाना। २–अधिक इच्छा न रहना। *मन भरना*–संतोष या तृप्ति होना। *मनमाना*–अच्छा लगना। पसन्द आना। *मन भारी करना*–दुःखी या उदास होना। *मन मानना*–१–सन्तोष होना। २–विश्वास या निश्चय होना। ३–प्रेम या अनुराग होना। *मन माना*–यथेच्छ। जो चाहे सो। *मन मारकर बैठ जाना, मन मारकर रह जाना*–उत्कट इच्छा दबा जाना। *मन मारना*–१–उदास होना। २–इच्छा को रोकना। *मन मिलना*–१–मित्रता होना। २–प्रेम होना। ३–एक सी प्रकृति या प्रवृत्ति होना। *मन में आना*–१–भाव या इच्छा उत्पन्न होना। २–ध्यान में आना। ३–भला लगना। *मन में कहना*–मन ही मन सोचना। *मन में गाँठ पड़ना*–किसी के प्रति मन में घृणा बनी रहना। *मन में जमना या बैठना*–ठीक प्रतीत होना। *मन में ठानना*–निश्चय या संकल्प कर लेना। *मन में बसना*–मन में खुभना। रुचना। अच्छा लगना। *मन में भरना*–दिल में जमना। विश्वास जमाना। *मन में रखना*–१–छिपाये रखना। न कहना। २–याद रखना।

मन में लाना–सोचना। ध्यान देना। *मन मैला करना*–मन में दुर्भाव रखना। *मन मोटा होना*–चित्त हट जाना। *मन मोड़ना*–विचार इधर से हटाकर उधर करना। *मन मोहना*–किसी को मोहित करना। किसी को प्रेमी बनाना। *मन रखना*–मन में आई बात पूरी करना। *मन लगाना*–१–किसी कार्य में ध्यान देना। २–उदासी मिटाना। *मन लगना*–१–किसी काम में चित्त जमना। २–मनोविनोद होना। *मन लेना*–दिल की बात का पता लगाना। *मन से उतारना*–दिल से घृणा होना। अच्छी न लगने लगना। *मन से उतरना*–१–पहिले का सा आदर न रहना। २–याद न रहना। *मन हरना*–मोहित करना। अपनी ओर आकर्षित करना। *मन हाथ में लेना*–वश में करना। *मन हरा होना*–दिल खुश हो जाना *मन ही मन*–भीतर-भीतर। चुपचाप। *मन होना*–इच्छा होना। *[संज्ञा पु.] (हिं.) १–मणि। रत्न। २–चालीस सेर का एक मान या तौल।

मनई [संज्ञा पु.] (हिं.) मनुष्य। आदमी।

मनकना [क्रि. अ] (हिं) १–हिलना डोलना। तर्कवितर्क करना।

मनकरा* [वि.] (हिं.) चमकदार। प्रकाशमान।

मनका [संज्ञा पु.] (हिं.) १–माला का दाना। गुरिया। २–माला या सुमिरनी। ३–गरदन के पीछे वाली हड्डी जो बिलकुल रीढ़ के ऊपर होती है। *मन का ढलना या ढलकना*–मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मन-कामन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) इच्छा। अभिलाषा मनोरथ।

मनकूला [वि.] (अ.) [स्त्री. प्र.] जो स्थिर या स्थावर न हो। चल। *जायदाद मनकूला*–चल-सम्पत्ति। *गैर-मनकूला*–स्थिर। स्थावर।

मनकूहा [वि.] (अ.) [स्त्री. प्र.] विवाहिता।

मनगढ़ंत [वि.] (हिं.) जिसकी वास्तविक सत्ता न हो। कपोल-कल्पित। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोरी कल्पना। कपोलकल्पना।

मनचला [वि.](हिं.) १–निडर। धीर। २–साहसी ३–रसिक।

मनचाहता [वि] (हिं.) [स्त्री. मनचाहती] १–प्रिय। जिसे मन चाहे। २–मन के अनुकूल। यथेच्छ।

मनचाहा [वि.] (हिं.) १–चाहा हुआ। इच्छित। अभिलषित। २–यथेष्ट।

मनचीता [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनचीती] मन में सोचा हुआ। मनचाहा।

मनजात [संज्ञा पु.] (हिं.) कामदेव।

मनतोरवा [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार की

मनन [संज्ञा पु.] (सं.) १–चिंतन। सोचना। २–भलीभांति समझकर किया जाने वाला अध्ययन या विचार। ३–वेदांतशास्त्र के अनुसार सुने हुए वाक्यों पर बार-बार विचार करना तथा शंका-समाधान द्वारा उसका निश्चय करना।

मननशील [वि.] (सं.) जो बार-बार मनन अथवा चिंतन करता रहता हो।

मननाना [क्रि. अ.] (हिं.) गूंजना। गुंजारना।

मनवांछित [वि.] (हिं.) देखो 'मनोवांछित'।

मनभंग [संज्ञा पु.](हिं.) बदरिकाश्रम के एक शृंग का नाम।

मनभाया [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनभाई] १–जो मन को भावे या अच्छा लगे। २–प्यारा।

मनभावता [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनभावती] १–जो मन को भला लगता हो। २–प्यारा।

मनभावन [वि.](हिं.) १–मन को भाने या अच्छा लगने वाला। २–प्रिय। प्यारा।

मनमत* [वि.] (हिं.) देखो 'मैमंत'।

मनमति [वि.] (हिं.) स्वेच्छाचारी। अपने मन के अनुसार काम करने वाला।

मनमथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मन्मथ'।

मनमानता [वि.] (हिं.) मनचाहा। मनमाना। मनोवांछित।

मनमाना [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनमानी] १–जितना मन चाहे। जो मन को भला लगे। २–मन के अनुकूल। पसन्द। ३–यथेच्छ। मनचाहा।

मनमुखी+ [वि.] (हिं.) मनचीता काम करने वाला। स्वेच्छाचारी।

मनमुटाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मन में होने वाला वैमनस्य या विराग।

मनमोटाव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मनमुटाव'।

मनमोदक [संज्ञा पु.] (हिं.) मन में सोची या विचारी हुई सुखद, पर असंभव बात। मन के लड्डू।

मनमोहन [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनमोहनी] १–मन को मोहने या लुभाने वाला। २–प्यारा। प्रिय। [संज्ञा पु.] १–श्रीकृष्ण। २–एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएं होती हैं। ३–एक सदाबहार वृक्ष।

मनमौजी [वि.] (हिं.) मन की मौज के अनुसार काम करने वाला। स्वेच्छाचारी।

मनरंज* [वि.] (हिं.) मनोरंजन करने वाला। मनोरंजक।

मनरंजन [वि.] (हि.) मन को प्रसन्न करने वाला। मनोरंजक। [संज्ञा पु.] देखो 'मनोरंजन'।

मनरोचन [वि.](हिं.) मन को मुग्ध करने वाला। सुन्दर।

मनलाडू* [संज्ञा पु.] देखो 'मनमोदक'।

मनवाँ [संज्ञा पु.] (दे श.) देवकपास। नरमा।

मनवाना* [क्रि. स.](हि.) १-किसी को मानने के लिए प्रेरणा करना। किसी को मानने में प्रवृत्त करना। २-मनाने का काम दूसरे से कराना।

मनशा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-इच्छा। इरादा। २-अर्थ। तात्पर्य। मतलब।

मनसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-इच्छा करना। २-संकल्प या निश्चय करना। [क्रि. स.] संकल्प पढ़कर दान करना।

मनसब [संज्ञा पु.](अ.) १-पद। स्थान। २-कर्म। काम। ३-अधिकार। ४-वृत्ति।

मनसबदार [संज्ञा पु.] (फा.) उच्चपद या ओहदे वाला पुरुष। ओहदेदार।

मनसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम। (हि.) १-कामना। इच्छा। २-संकल्प। इरादा। ३-अभिलाषा। मनोरथ। ४-मन। ५-बुद्धि। ६-अभिप्राय। तात्पर्य। प्रयोजन। [वि.] १-मन में उत्पन्न। २-मन का। [क्रि. वि.] मन से। मन के द्वारा। [संज्ञा पु.] देखो 'मसी'। [संज्ञा स्त्री] (दे श.) एक प्रकार की घास।

मनसाकर [वि.] (हि.) मन की कामनापूर्ण करने वाला। मनोवांछित फल देने वाला।

मनसादेवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक देवी जो साँपों के कुल की अधिष्टात्री मानी जाती है।

मनसाना* [क्रि. अ.] (हि.) उत्साह या उमंग में आना। [क्रि. स.] संकल्प का मन्त्र आदि पढ़कर अथवा पढ़वाकर दूसरे से दान आदि कराना।

मनसापंचमी [संज्ञा स्त्री.](सं.) अषाढ़ कृष्ण पंचमी जो मनसादेवी के उत्सव का का दिन है।

मनसायन+ [वि.](हिं.) १-चहल-पहल। रौनक। २-मनोरम स्थान। मनसायन करना या रखना-बातचीत किसी का मन बहलाना।

मनसिज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मनसूख [वि.] (अ.) १-जो अप्रमाणिक ठहराया गया हो। अतिवर्तित। २-परित्यक्त।

मनसूखी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मनसूख होने की क्रिया या भाव।

मनसूबा [संज्ञा पु.] (अ.) १-युक्ति। आयोजन। ढंग। २-विचार। इरादा। मनसूबा बाँधना-युक्ति सोचना।

मनसूर [संज्ञा पु.] (अ.) एक मुसलमान फकीर जो सूफीमत का आचार्य माना जाता है।

मनसेधू [संज्ञा पु.] (हि.) पुरुष। आदमी।

मनस् [संज्ञा पु.] (सं.) मन का समासार्थक रूप। इसका प्रयोग समस्त पदों में देखा जाता है। जैसे-अन्यमनस्क।

मनस्कांत, मनस्कान्त [वि.] (सं.) १-मन के अनुकूल। २-प्रिय। प्यारा। [संज्ञा पु.] मन की अभिलाषा। मनोरथ।

मनस्काम [संज्ञा पु.] (सं.) मनोरथ। मन की अभिलाषा।

मनस्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) १-आंतरिक दुःख। २-पछतावा। अनुताप। पश्चात्ताप।

मनस्ताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरताल। २-दुर्गादेवी के एक सिंह का नाम।

मनस्तोका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम

मनस्विनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मृकंडुऋषि की पत्नी का नाम। २-प्रजापति की स्त्री का नाम

मनस्वी [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनस्विनी] १-बुद्धिमान। २-मनमौजी। स्वेच्छाचारी। [संज्ञा पु.] शरभ।

मनहंस [संज्ञा पु.] (हिं.) पन्द्रह अक्षरों का एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, दो जगण, भगण और रगण होता है।

मनहर [वि.] (हिं.) मनोहर। मन को हरने वाला [संज्ञा पु] घनाक्षरी छन्द का एक नाम।

मनहरण [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मन को हरने की क्रिया या भाव। २-पन्द्रह अक्षरों का एक छन्द। जिसके प्रत्येक चरण में पांच सगण हैं। इसे नलिनी और भ्रमरावली भी कहते हैं [वि.] मनोहर। सुन्दर।

मनहरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मनहरण'। [वि.] [स्त्री. मनहरनी] मन हरने वाला।

मनहार [वि.] (हि.) देखो 'मनोहारी'।

मनहारि [वि.] (हिं.) देखो 'मनोहारी'।

मनहुँ* [अव्य.] (हि.) मानों। जैसे। यथा।

मनहूस [वि.] (अ.) १-अशुभ। बुरा। २-अप्रिय दर्शन। ३-सुस्त। आलसी।

मना [वि.] (अ.) १-निषिद्ध। वर्जित। २-जो कुछ करने से रोका गया हो। ३-अनुचित। नामुनासिब।

मनाईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मनाही'।

मनाक्, मनाग [वि.](हिं.) अल्प। थोड़ा। जरा-सा

मनाका [संज्ञा स्त्री.] (सं) हथिनी।

मनादी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुनादी'।

मनाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रूठे हुए को प्रसन्न करना। २-राजी करना। ३-किसी कार्य अथवा बात के लिए ईश्वर या देवता आदि से प्रार्थना करना। ४-दूसरे को मानने पर उद्यत करना। स्वीकार कराना। ५-प्रार्थना या स्तुति करना।

मनार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मीनार'।

मनाल [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का सुन्दर परों वाला चकोर पक्षी।

मनावन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मनाने की क्रिया या भाव। २-रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम।

मनावी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनु की पत्नी का नाम।

मनाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मना करने की क्रिया या भाव। रोक। निषेध। अवरोध।

मनि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मणि'।

मनिका+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) माला में पिरोया हुआ दाना। गुरिया।

मनित [वि.] (सं.) उत्पन्न। जात।

मनिधर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मणिधर'।

मनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुरिया। मनिका। माला में पिरोने का दाना। २-कंठी। माला।

मनियार* [वि.] (हिं.) १-उज्ज्वल। चमकीला। स्वच्छ। शोभायुक्त।

मनिहार [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. मनिहारिन] चुड़िहारा। चूड़ी बनाने वाला।

मनी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-अहंकार। ॐ२-मणि वीर्य।

मनीआर्डर [संज्ञा पु.] (अं.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर सरकार की ओर से जनता के लिए रुपया भेजने की वह व्यवस्था जिसमें एक प्रपत्र में एक स्थान पर अपना और दूसरे स्थान पर जिसके पास रुपया भेजना हो उसका पता ठिकाना लिखकर डाकखाने में रुपया जमा कर दिया जाता है वहाँ उस प्रपत्र का रुपया जिसके नाम भेजा जाता है उसे चुका दिया जाता है। वह प्रपत्र जिसके द्वारा डाक से रुपया एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाता है।

मनीक [संज्ञा पु.] (सं.) आँजन।

मनीर+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बोरसी।

मनीषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)१-बुद्धि। अक्ल। २-स्तुति। प्रशंसा।

मनीषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्धि। अक्ल।

मनीषित [वि.] (सं.) मनोभिलषित। वाँछित।

मनीषिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्धिमानी।

मनीषी [वि.] (सं.) १-पंडित। ज्ञानी। २-बुद्धिमान्। अक्लमंद।

मनु [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूलपुरुष माने जाते हैं। चौदह मनुओं के नाम इस प्रकार हैं :—स्वायम, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि और इन्द्रसावर्णि। २-विष्णु। ३-अन्तःकरण। मन। ४-जैनियों के एक जिन का नाम। ५-कृष्णाश्व के एक पुत्र का नाम। ६-मंत्र। ७-वैवस्तमनु। ८-ब्रह्मा। ९-एक रुद्र का नाम। १०-चौदह की संख्या। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनु की पत्नी। मानवी। २-[अव्यय]

(हिं.) मानों । जैसे ।

मनुआँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मन । २-मनुष्य । [संज्ञा पु.] (देश.) देवकपास । नरमा ।

मनुग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रियव्रत के पौत्र और द्युतिमान के पुत्र का नाम ।

मनुज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मनुजा, मनुजी] मनुष्य । आदमी ।

मनुजलोक [संज्ञा पु.](सं.) मर्त्यलोक ।

मनुजात [वि.] (सं.) मनुष्य से उत्पन्न । [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य । आदमी ।

मनुजाद [वि.] (सं.) मनुष्यों को खाने वाला । [संज्ञा पु.] राक्षस ।

मनुजाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

मनुजेंद्र, मनुजेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

मनुजोचित [वि.] (सं) जो मनुष्य के लिये उचित हो । मनुष्य के उपयुक्त ।

मनुज्येष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-तलवार । २-लाठी ।

मनुयुग [संज्ञा पु.] (सं.) मन्वंतर ।

मनुराज [संज्ञा पु.] (सं) कुबेर ।

मनुश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

मनुष* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मनुष्य । आदमी । २-पति ।

मनुषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री । औरत ।

मनुष्य [संज्ञा पु.] (सं) वह द्विपद प्राणी जो अपने बुद्धिबल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है तथा जिसके अन्तर्गत हम, आप सब लोग हैं । आदमी । नर । मानव ।

मनुष्यकार [संज्ञा पु.] (सं) उद्योग । प्रयत्न ।

मनुष्यगंधर्व, मनुष्यगन्धर्व [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यरूपी गंधर्व ।

मनुष्यगणना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी स्थान या देश के निवासियों की होने वाली गिनती ।

मनुष्यगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार वह कर्म जिसके करने के कारण मनुष्य बार-बार मरकर मानव योनि ही प्राप्त करता है ।

मनुष्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनुष्य का भाव । आदमीपन । २-चित्त की कोमलता । दया-भाव । शील । ३-सभ्यता । शिष्टता । व्यवहार ज्ञान ।

मनुष्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यता । आदमीयत

मनुष्यधर्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुबेर ।

मनुष्य-यज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) अतिथि का आदर सत्कार । नृ-यज्ञ ।

मनुष्यरथ [संज्ञा पु.] (सं) मनुष्यों द्वारा खींचा जाने वाला रथ । नर-रथ ।

मनुष्यराशि [संज्ञा स्त्री] (सं) कन्याराशि ।

मनुष्य-लोक [संज्ञा पु] (सं) भू-लोक । मर्त्य-लोक ।

मनुष्यसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मानव धर्म-शास्त्र ।

मनुष्यसव [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य द्वारा किया हुआ यज्ञ ।

मनुसाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पुरुषार्थ । पराक्रम । बहादुरी । २-मनुष्यता । आदमियत ।

मनुस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जो मनु का बनाया हुआ है । मानव-धर्मशास्त्र ।

मनुहार [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मनावन । खुशामद २-विनय । प्रार्थना । ३-आदर । सत्कार ।४-शान्ति । ५-तृप्त ।

मनुहारना* [क्रि. स.](हि.) १-मनाना । खुशामद करना । २-विनय करना । प्रार्थना करना । ३-आदर-सत्कार करना ।

मनूरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुरादाबादी कलई करने की बुकनी ।

मने+ [वि.] (हिं.) देखो 'मना' ।

मनेजर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी कार्यालय आदि का वह मुख्य अधिकारी जिसका काम सब प्रकार की व्यवस्था तथा देख-रेख करना हो । प्रबंधकर्ता ।

मनों+ [अव्यय] (हिं.) मानों । जैसे ।

मनोकामना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इच्छा । अभिलाषा ।

मनोगत [वि.](सं.) जो मन में हो । मन में आया हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

मनोगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन की गति । चित्तवृत्ति । इच्छा । ख्वाहिश ।

मनोगवी [संज्ञा स्त्री.] (सं) इच्छा । अभिलाषा ।

मनोगुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैनसिल ।

मनोगुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन को अशुभ प्रवृत्ति से हटाने की क्रिया या भाव (जैन) ।

मनोज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव । मदन ।

मनोजव [वि.] (सं.) १-मन के समान वेगवान् । अत्यन्त वेगवान् । २-पितृतुल्य । [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-वायु के एक पुत्र का नाम । ३-एक तीर्थ का नाम । ४-रुद्र के एक पुत्र का नाम । ५-छठे मन्वंतर में होने वाले इन्द्र का नाम ।

मनोजवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कलिहारी । करियारी । २-अग्नि की एक जिह्वा का नाम । ३-क्रौंचद्वीप की एक नदी का नाम । स्कंद की माता का नाम ।

मनोजवी [वि.] (हि.) बहुत तेज चलने वाला ।

मनोजवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का क्षुप जिसे कामवृद्धि कहते हैं ।

मनोजात [वि.] (सं.) मन में उत्पन्न: होने वाला

मनोज्ञ [वि.](सं.) मनोहर । सुन्दर । [संज्ञा पु.] कुन्द नाम का फूल ।

मनोज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दरता । मनो हरता । खूबसूरती ।

मनोज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कलौंजी । जावित्री । ३-मदिरा ।

मनोदंड, मनोदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मन का निग्रह । चित्त की चंचलता को रोकने का करना ।

मनोदाही [वि.] (हिं.) [स्त्री. मनोदाहिनी] मन को जलाने वाला । हृदयग्राही ।

मनोदुष्ट [वि.] (सं.) दुष्ट या खराब हृदय का ।

मनोदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) अंतरात्मा । विवे

मनोधृत [वि.] (सं.) जितेंद्रिय ।

मनोध्यान [संज्ञा पु.] (सं.) संपूर्ण जाति का राग ।

मनोनयन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को मनोनीत करने की क्रिया । मनोनीत करना । करना । नॉमिनेट ।

मनोनिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) चित्त की वृत्ति का निरोध । मन को रोकना या वश में

मनोनियोग [संज्ञा पु.](सं.) किसी कार्य में भाँति मन लगाना ।

मनोनीत [वि.] (सं.) १-जो मन के अनुकूल २-पसंद किया अथवा चुना हुआ ।

मनोभय [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

मनोभाव [संज्ञा पु.] (सं.) मन में उत्पन्न होने वाला भाव ।

मनोभिराम [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर । मनोहर ।

मनोभू [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव!

मनोभूत [संज्ञा पु.] चन्द्रमा ।

मनोमथन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामदेव ।

मनोमय [वि.] (सं.) १-मानसिक । २-मन से युक्त या पूर्ण ।

मनोमयकोश [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत के अनुसार पांच कोशों में से तीसरा मन अहंकार तथा कर्मेन्द्रियां मानी जाती हैं ।

मनोमालिन्य [संज्ञा पु.](सं.) मनमुटाव । रहने वाला दुर्भाव । रंजिश ।

मनोयायी [वि.] (हि.) इच्छा के अनुसार करने वाला ।

मनोयोग [संज्ञा पु.] (सं.) मन को एकाग्र उसे एक ओर या एक पदार्थ पर मन की एकाग्रता ।

मनोयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

मनोरंजक, मनोरञ्जक [वि.] (सं.) मन लाने या प्रसन्न करने वाला ।

मनोरंजन, मनोरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव । विनोद । दिलबहलाव । २-मन को

करने वाला कोई खेल या तमाशा।

मनोरंजन-कर, मनोरञ्जन-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजकीय कर जो किसी मनोरंजन करने वाले खेल या तमाशे के (टिकिट) प्रवेशपत्र के साथ लिया जाता है।

मनोरंजनीय, मनोरञ्जनीय [वि.] (सं.) मनोरंजन के योग्य। दिलबहलाव के योग्य।

मनोरथ [संज्ञा पु.](सं.) इच्छा। अभिलाषा।

मनोरथतृतीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत्रशुक्ल-तृतीया के दिन होने वाला एक व्रत।

मनोरथद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैतसुदी-बारस के दिन होने वाला एक व्रत।

मनोरन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कपास।

मनोरम [वि.] (सं.) [स्त्री. मनोरमा] मनोहर। सुन्दर।

मनोरमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दरता। मनोहरता।

मनोरमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-गोरोचन। ३-सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ४-एक गंधर्व की पत्नी का नाम। ५-बुद्ध की एक शक्ति का नाम। ६-छन्दो मंजरी के मतानुसार एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दस वर्ण होते हैं। पहला, दूसरा, तीसरा, सातवाँ और नवाँ वर्ण लघु शेष गुरु होते हैं। ७-आर्याछन्द के ५७ भेदों में से एक जिनमें १२ गुरु तथा ३३ लघु वर्ण होते हैं। ८-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण और दो गुरु होते हैं। ९-चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण तथा अन्त में दो लघु होते हैं। १०-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन तगण और एक गुरु होता है।

मनोरा [संज्ञा पु.] (हि.) दीवार पर गोबर से बने वह चित्र या मूर्त्तियाँ जिनकी दीवाली के बाद दीपक आदि जलाकर पूजा की जाती है।

मनोराभूमक [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का गीत

मनोराज [संज्ञा पु.] (हि.) मानसिक कल्पना। मन की कल्पना।

मनोरिया [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की सिकड़ियों की जंजीर जिसको स्त्रियाँ ओढ़नी या साड़ी के किनारे पर टांक देती है जो ओढ़ने पर सिर पर लटकती है।

मनोलय [संज्ञा पु.] (सं.) विवेक का नष्ट होना।

मनोलीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऐसी कल्पित बात या विचार जो केवल मन में उठी हो, पर जिसका कोई वास्तविक आधार या अस्तित्व न हो। फैन्टम।

मनोलौल्य [संज्ञा पु.] (सं.) चित्त की चंचलता।

मनोवती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक नगर का नाम जो मेरुपर्वत पर था। २-चित्रांगद विद्याधर की कन्या का नाम।

मनोवर्गणा [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वे सूक्ष्म तत्व जिनसे मन की रचना हुई है।

मनोवांछा, मनोवाञ्छा [संज्ञा स्त्री.](सं.) इच्छा अभिलाषा।

मनोवांछित, मनोवाञ्छित [वि.] (सं.) मनचाहा। इच्छित।

मनोविकार [संज्ञा पु.] (सं.) मन में उठने वाले भाव यथा-क्रोध, दया, प्रेम आदि।

मनोविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का या मन में उठने वाले विचारों आदि की मीमांसा होती है।

मनोविज्ञानिक [वि.](सं.) मनोविज्ञान को जानने वाला।

मनोविद् [वि.] (सं.) मन के भावों को जानने वाला।

मनोविश्लेषण [संज्ञा पु.] (सं.) इस बात का विश्लेषण अथवा जांच कि मनुष्य का मन किन अवस्थाओं में किस प्रकार काय करता है। साइको-अनैलिसिस।

मनोवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन के चलने अथवा कार्य करने का ढंग। २-मन की स्थिति।

मनोवेग [संज्ञा पु.] (सं.) मन का विकार। मनोविकार।

मनोवैकल्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह अवस्था जिससे ठीक और पूरी तरह से मानसिक विकास न होने के कारण मनुष्य की बुद्धि परिपक्व नहीं होती। मेन्टल-डेफिशिएन्सी।

मनोव्यापार [संज्ञा पु.] (सं.) मन की क्रिया। संकल्प-विकल्प। विचार।

मनोसर* [संज्ञा पु.](हिं.) मन की वृत्ति। मनोविकार।

मनोहर [वि.] (सं.) १-मन को हरने वाला। २-सुन्दर। मनोज्ञ। [संज्ञा पु.] १-छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें १३ गुरु, १२६ लघु, १४९ वर्ण तथा १५२ मात्राएं होती हैं। २-एक संकर राग का नाम। ३-स्वर्ण। सोना। ४-कंदपुष्प।

मनोहरता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुन्दरता।

मनोहरताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दरता। मनोहरता।

मनोहरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जातीपुष्प। २-स्वर्णजुही। ३-एक अप्सरा का नाम। ४-त्रिशिर की माता का नाम।

मनोहरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की कान की बाली।

मनोहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) [स्त्री. मनोहारिणी] मनोहर। सुन्दर।

मनोह्लादी [वि.] (हि.) [स्त्री. मनोह्लादिनी] १-मन को प्रसन्न करने वाला। २-मनोहर। सुन्दर।

मनोह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनःशिला। मैनसिल।

मनौति, मनौती* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-असंतुष्ट को सन्तुष्ट करना। मनुहार। २-किसी देवता की विशेष रूप से पूजा करने की प्रतिज्ञा या संकल्प। मन्नत।

मन्नत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किसी कामना की पूर्ति के लिए मानी हुई किसी देवता की पूजा। मानता। मनौती। *मन्नत उतारना या बढ़ाना*-पूजा की प्रतिज्ञा पूर्ण करना। *मन्नत मानना*-कामनापूर्ति के लिए पूजा आदि करने का संकल्प करना।

मन्मथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-कैथ। ३-कामचिंता। ४-साठ संवत्सरों में से एक का नाम।

मन्मथकर [संज्ञा पु.] (सं.) कुमार कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

मन्मथलेख [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमपत्र।

मन्मथानंद, मन्मथानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उत्तम कोटि का एक आम।

मन्मथालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम का पेड़। २-वह स्थान जहां प्रेमी-प्रेमिका मिलते हैं।

मन्मथी [वि.] (सं.) कामी। कामुक।

मन्ना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का मीठा निर्यास जो बांस आदि कुछ विशेष प्रकार के वृक्षों से निकलता है। यह दवा के काम में आता है।

मन्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले की एक शिरा या नस।

मन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गरदन के पिछले भाग की एक शिरा या नस का नाम। मन्यका।

मन्यास्तंभ, मन्यास्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) गले की शिरा कड़ी होने का एक रोग।

मन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तोत्र। २-कर्म। ३-शोक। ४-याग। ५-क्रोध। ६-दीनता। ७-अहंकार। ८-अग्नि। ९-शिव। १०-वितथ राजा के एक पुत्र का नाम।

मन्युदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-क्रोध का अभिमानी देवता।

मन्यपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भेकपर्णी।

मन्वंतर, मन्वन्तर [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-इकहत्तर चतुर्युगियों का काल जो ब्रह्मा के एक दिन के चौदहवें भाग के बराबर माना गया है। २-अकाल। दुर्भिक्ष।

मन्वंतरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन समय का एक प्रकार का उत्सव जो अषाढ़शुक्ला-दशमी, श्रावणकृष्णा अष्टमी तथा भाद्रशुक्ला-तृतीया को होता था।

मन्वाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) धान्य। धान।

मन्होला+ [संज्ञा पु.] (देश.) तमाल।

मम [सर्वनाम] (सं.) मेरा (मेरी)।

ममकार [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी कमाई हुई संपत्ति

ममता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अपना समझने का भाव। 'यह मेरा है' ऐसा समझने का भाव। ममत्व। अपनापन। २-स्नेह। प्रेम। ३-वह स्नेह जो माता का पुत्र के साथ होता है। ४-मोह। लोभ। ५-गर्व। अभिमान।

ममतामय [वि.] (सं.) [स्त्री. ममतामयी] ममता से युक्त। ममता से परिपूर्ण।

ममतायुक्त [वि.] (सं.) १-जिसमें ममता हो। २-कृपण। ३-अभिमानी।

ममत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपनापन। ममता। २-स्नेह। ३-गर्व। अभिमान।

ममरखी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बधाई।

ममरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बनतुलसी।

ममाखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मधुमक्खी'।

ममास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मवास'।

ममिया [वि.] (हिं.) जो संबन्ध में मामा के स्थान पर हो।

ममियाउर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ममियौरा'।

ममियौरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मामा का घर।

ममीरा [संज्ञा पु.] (अ.) हलदी की जाति के एक पौधे की जड़ जो आँख के रोग की दवा है।

ममोला [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक छोटा पक्षी जिसके पेट पर काली धारियां होती हैं। इसे धोबिन कहते हैं। २-छोटा और प्यारा बच्चा।

मम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्तन। छाती। २-पानी (बालक)। ३-मामा। ४-स्नेहसहित लिया बच्चे का चुम्बन।

मयंक, मयङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

मयंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मृगेन्द्र। सिंह। २-राम की सेना के अधिनायक बानर का नाम।

मयंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे की छोटी सामी जो गाड़ी के पहिये की नाभि में खोदकर बैठाई जाती है।

मय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार एक दैत्य जो बहुत बड़ा शिल्पी था। २-ऊँट। ३-अश्वतर। खच्चर। ४-घोड़ा। ५-मुख। ६-एक देश का नाम। [प्रत्यय] (सं.) [स्त्री. मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप विकार तथा प्रचुरता का बोधक है। जैसे—मंगलमय। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मै'। [अव्य.] (हिं.) देखो 'मैं'।

मयगल [संज्ञा पु.] (हिं.) मत्त या मतवाला हाथी

मयन* [संज्ञा पु.] (हिं.) कामदेव।

मयना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मैना'।

मयमंत, मयमत्त [वि.] (हि.) मदमत्त। मस्त।

मयष्ठ, मयष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) बनमूँगा।

मयसुता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मय नामक दैत्य की कन्या। मन्दोदरी।

मयस्सर [वि.] (अ.) मिला हुआ। प्राप्त। सुलभ। उपलब्ध। मयस्सर होना—प्राप्त होना। मिलना

मया [संज्ञा स्त्री.] (सं) चिकित्सा। (हिं.) १-माया। भ्रमजाल। २-संसार। जगत्। ३-जीव और शरीर का सम्बन्ध। जीवन। ४-प्रेमपाश। मोह। ५-दया। अनुकंपा।

मयार [वि.] (हिं.) [स्त्री. मयारी] दयालु। कृपालु।

मयारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह डंडा या धरन जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है।

मयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊँटनी। [अव्य.] [स्त्री. प्र.] देखो 'मय'।

मयु [संज्ञा पु.] (सं.) १-किन्नर। २-मृग।

मयुराज [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

मयुष्ठ, मयुष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) बनमूँग।

मयूक [संज्ञा पु.] (सं.) मयूर। मोर।

मयूख [संज्ञा पु.] (सं.) १-किरण। रश्मि। २-दीप्ति। प्रकाश। ३-ज्वाला। ४-शोभा। ५-कील। ६-पर्वत।

मयूखादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य के एक भेद का नाम।

मयूखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अस्त्र जो प्राचीन समय में होता था।

मयूर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मयूरी] १-मोर। २-एक दैत्य का नाम। ३-मार्कंडेय पुराण का नाम जो सुमेरु पर्वत के उत्तर में है। ४-एक क्षुप जिसे मयूरशिखा कहते हैं।

मयूरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिचड़ा। २-मोर। ३-तूतिया। ४-मोरशिखा नामक क्षुप।

मयूरकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) स्कंद का एक नाम।

मयूरगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः पाँच यगण, एक मगण और अन्त में भगण होता है।

मयूरग्रीवक [संज्ञा पु.] (सं.) तूतिया।

मयूरचटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

मयूरचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) थुनेर।

मयूरचूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मयूरशिखा नामक क्षुप।

मयूरजंघ, मयूरजङ्घ [संज्ञा पु.] (सं.) सोनोपाढ़ा। श्योनाक।

मयूरनृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाच।

मयूरपदक [संज्ञा पु.] (सं.) नखाघात। नखक्षत।

मयूररथ [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय। स्कन्द।

मयूरविदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोइया। अंबष्ठा

मयूरशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोरशिखा नामक क्षुप।

मयूरसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेरह अक्षरों का एक छन्द।

मयूरसारी [वि.] (हिं.) गर्वित।

मयूरस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोल्लिखित एक तीर्थ का नाम।

मयूरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली तुलसी।

मयूरासन [संज्ञा पु.] (हिं.) मयूर के आकार का सिंहासन जो शाहजहाँ ने बनवाया था।

मयूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अंबष्ठा। मोइया। २-एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

मयूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोरनी। मयूर की

मयूरेश [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

मयेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) मय नामक दानव।

मयोभव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

मयोभू [व.] (सं.) यज्ञ के फल से उत्पन्न।

मरंद* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मकरंद'।

मरंदकोश [संज्ञा पु.] (हि.) १-फूल का वह भाग जिसमें सुधा या रस रहता है। मकरंदकोश। २-मधुमक्खियों का छत्ता।

मर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृत्यु। २-संसार। जगत्। ३-पृथ्वी। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मुर'।

मरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृत्यु। मरण। २-मारी। मरी। ३-पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-संकेत। इशारा। २-देखो 'मड़क'।

मरकज [संज्ञा पु.] (अ.) १-वृत्त का मध्य बिन्दु। २-प्रधान या मध्य स्थान।

मरकट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मर्कट'।

मरकत [संज्ञा पु.] (सं.) पन्ना।

मरकताल [संज्ञा पु.] (देश.) समुद्र की लहरों के उतार की सब से अन्तिम अवस्था।

मरकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुरकना'।

मरकहा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. मरकही] सींगों से मारने वाला (पशु)।

मरकूम [वि.] (अ.) [स्त्री. मरकूमा] लिखित। लिखा हुआ।

मरकोटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मिठाई।

मरखंडा [वि.] (हि.) देखो 'मरखन्ना'।

मरखन्ना [वि.] (हिं.) [स्त्री. मरखन्नी] सींगों से मारने वाला (पशु)।

मखरम [संज्ञा पु.] (हि.) वह खूंटा जो कोल्हू में गाड़ा रहता है।

मरगजा* [वि.] (हिं.) मला-दला। मसला हुआ। [संज्ञा पु.] देखो 'मलगजा'।

मरगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फैलने वाली मरी।

मरगोल, मरगोला [संज्ञा पु.] (सं.) गाने में ली जाने वाली स्वर का कंप। गाने में ली जाने

करी।

मरघट [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं। मसान। मरघट का भूत या प्रेत। [वि.] (हिं.) १-मनहूस। देखने में बहुत ही कुरूप और विकराल

मरचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मिरचा'।

मरचोबा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की तरकारी।

मरज [संज्ञा पु.] (अ.) रोग। बीमारी।

मरजाद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीमा। हद। २-प्रतिष्ठा। आदर। महत्व। ३-रीति। नियम। परिपाटी।

मरजादा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मर्यादा'।

मरजिया [वि.] (हिं.) १-मरकर जीने वाला। २-मृतप्राय। जो मरने को हो। मरणासन्न। ३-मरने वाला। जो प्राण देने पर उतारू हो।

मरज़ी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-इच्छा। कामना। २-प्रसन्नता। खुशी। ३-स्वीकृत। आज्ञा।

मरजीवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरजिया'।

मरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरने का भाव। मृत्यु मौत। २-वछनाग।

मरणधर्मा [वि.](हिं.) मरणशील। मरण-स्वभाव

मरण-शुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) किसी की मृत्यु पर राज्य की ओर से लिया जाने वाला शुल्क या कर। डेथ-ड्यूटी।

मरणांत, मरणान्त [वि] (सं.) मृत्यु तक। मरने तक।

मरणाशंसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) शीघ्र मरने की कामना। (जैन)।

मरणासन्न [वि.] (सं.) जो मरने के बहुत समीप हो।

मरणोत्तर [वि.] (सं.) किसी की मृत्यु के बाद होने वाला।

मरणोत्तरक [वि.] (सं.) किसी की मृत्यु के बाद होने वाला। पोस्ट-ह्यूमस।

मरत* [संज्ञा पु.] (हि.) मौत। मृत्यु। मरण।

मरतबा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पद। ओहदा। २-बार। दफा।

मरतबान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अमृतबान'।

मरद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मर्द'।

मरदई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मनुष्यत्व। २-साहस। ३-वीरता। बहादुरी।

मरदन* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मर्दन'।

मरदना* [क्रि. स.] (हिं.) १-मसलना। मलना २-ध्वंस करना। चूर्ण करना। ३-माँड़ना। गूँधना।

मरदनिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह नौकर जो बड़े आदमियों के शरीर में तेल की मालिश करता है।

मरदानगी [संज्ञा स्त्री.](फ़ा.) १-वीरता। शौर्य। २-साहस।

मरदाना [वि.] (फा.) १-पुरुष-सम्बन्धी। पुरुषों का-सा। २-वीरोचित। [संज्ञा पु.](फा.)[स्त्री. मरदानी] वीर। बहादुर। +[क्रि. स.](हि.) साहस करना। वीरता दिखाना।

मरदूद [वि.] (अ.) १-तिरस्कृत। २-लुच्चा। नीच।

मरन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरण'।

मरनव्रत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मृत्यु-पर्यंत भोजन न करने की प्रतिज्ञा।

मरना [क्रि. अ.](हिं.) १-प्राणियों की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिये अन्त होना। शरीर से प्राण निकलना। २-मरने का-सा कष्ट उठाना। बहुत दुःख सहना। ३-मुरझाना कुम्हलाना। सूखना। ४-मृतक के समान हो जाना। ५-किसी मनोवेग का दबकर नहीं के बराबर होना। ६-खेल में किसी गोटी अथवा खिलाड़ी का खेल के नियमानुसार किसी कारण से खेल से पृथक किया जाना। ७-बेकाम हो जाना। ८-पराजित होना। हारना। ९-पछताना। रोना। १०-डाह करना जलना।

किसी के लिए मरना–हैरान होना। *किसी पर मरना*-किसी पर आसक्त होना। *किसी की बात पर मरना या किसी की बान के लिए मरना*–दुःख सहना। *मर मिटना*–प्रयत्न करते-करते बुरी दशा को प्राप्त होना। *मरा जाना*–१-बहुत व्याकुल होना। २-उतावली करना। उत्सुक होना। *मर लेना*–प्रयत्न करते-करते मरने के समान कष्ट भोग चुकना। *पानी मरना*–१-दीवार की नींव में पानी धँसना। २-किसी पर कोई कलंक लगना। ३-शील या सङ्कोच खो देना।

मरनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मरनी'।

मरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मृत्यु। मौत। २-दुःख। कष्ट। हैरानी। ३-मृतक के लिये उसके सम्बन्धियों द्वारा मनाया जाने वाला एक शोक। ४-मृतक-सम्बन्धी क्रियाकर्म। यौ०–*मरनी करनी*– मृत्यु तथा मृतक की अंत्येष्टि करना।

मरबुली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पहाड़ी प्रदेश में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का कंद।

मरभुक्खा [वि.] (हिं.) १-भुक्खड़। २-कंगाल। दरिद्र।

मरम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मर्म'।

मरमती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी के खेती के औजार बनते हैं।

मरमर [संज्ञा पु.] (यू.) एक प्रकार का पत्थर जो दानेदार और चिकना होता है जिसपर घोटने से अच्छी चमक आती है।

मरमरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कम खारा पानी। २-एक पक्षी का नाम। [वि.] सहज में टूट जाने वाला।

मरमराना [क्रि. अ.](हिं.) १-मरमर शब्द करना। २-इस प्रकार दबना या दबाना कि मरमर शब्द हो।

मरमी* [वि.] (हि.) देखो 'मर्मज्ञ'।

मरम्मत [संज्ञा स्त्री.](अ.) किसी वस्तु के टूटे-फूटे अङ्गों को ठीक करने का काम। दुरुस्ती। जीर्णोद्धार। *मरम्मत करना*–१-टूटे-फूटे अंशों को ठीक करना। २-ठोकना। पीटना। मारना

मरल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

मरवट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह माफी की जमीन जो किसी के मर जाने पर उसके बाल-बच्चों को दी जाती है। २-रामलीला आदि में अभिनेताओं मुख पर चन्दन या रंग आदि से बनाई हुई लकीरें। (देश.) पटुए की कच्ची छाल जो निकालकर सुखाई गई हो।

मरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरुआ'।

मरवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-मारने का प्रेरणार्थक रूप। २-वध कराना। ३-देखो 'मारना'।

मरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का साग।

मरसिया [संज्ञा पु.] (अ) १-किसी की मृत्यु पर बनाई गई शोक-सूचक कविता। २-मरण-शोक। सियापा। रोना-पीटना।

मरहट*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मसान। मरघट। * [संज्ञा स्त्री.] ((देश.) मोठ।

मरहटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-महाराष्ट्र देश का रहने वाला। २-उन्तीस मात्राओं का एक छंद जिसमें दस, आठ और बारह पर विश्राम होता हैं तथा अन्त में गुरु, लघु होता है।

मरहटा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मरहठिन] महाराष्ट्र देश का रहने वाला।

मरहठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मरहठों से सम्बन्ध रखने वाला। मरहठों का। महाराष्ट्र देश में बोली जाने वाली भाषा।

मरहम [संज्ञा पु.] (अ.) औषध का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव पर अच्छा करने के लिए लगाया जाता है। *मरहमपट्टी*–१-घाव पर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना। २-किसी जीर्ण वस्तु की थोड़ी-बहुत मरम्मत।

मरहला [संज्ञा पु.] (अ.) १-पड़ाव। टिकान। २-झोंपड़ी। ३-दर्जा। ४-कठिन काम या प्रसंग। *मरहला तय करना*–झमेला निबटाना। *मरहला पड़ना या मचना*–झमेला पड़ना। *मरहला डालना*–झगड़ा खड़ा करना।

मरहून [वि.] (अ.) गिरों रखा हुआ।

मरहूना [वि.] (फा.) जो रहन किया गया हो।

मरहूम [वि.] (अ.) स्वर्गवासी। मृत।

मराठा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मरहठा'।

मराठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महाराष्ट्र देश की भाषा।

मरातिब [संज्ञा पु.] (अ.) १-पद। ओहदा। २-उत्तरोत्तर अथवा क्रमशः आने वाली अवस्थाएँ। ३-मकान का खंड। तल्ला। ४-पृष्ठ। तह। *माही मरातिब*—मुसलमान राजत्वकाल की वह पताका जो मुसलमान राजाओं की सवारी के आगे हाथियों पर चलती है। *मरातिब तै करना*–किसी विषय के समस्त झगड़ों को निपटाना।

मराना [क्रि. स.] (हिं.) १-मरवाना। २-किसी को अपने ऊपर आघात करने के लिए प्रेरणा करना या करके देना।

मराय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एकाहयज्ञ। २-एक प्रकार का साम।

मरायल* [वि.] (हिं.) १-जिसने कई बार मार खाई हो। २-निःसत्व। सत्वहीन। ३-मरियल। निर्बल। ४-घाटा। टोटा।

मरायु [वि.] (सं.) मरने वाला। मरणशील।

मरार [संज्ञा पु.] (सं.) खलिहान।

मराल [स्त्री. मराली] १-हंस। २-एक प्रकार का बत्तख। ३-घोड़ा। ४-हाथी। ५-बादल। ६-काजल। ७-अनार की वाटिका। ८-कारंडव पक्षी। ९-दुष्ट। खल।

मरिंद* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मलिंद'। २-देखो 'मरंद'।

मरिखम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मलखंभ'।

मरिच [संज्ञा पु.] (सं.) मिरिच।

मरिचा [संज्ञा पु.] (हि.) बड़ी लाल मिरिच। [वि.] देखो 'मिरिच'।

मरियम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-ईसामसीह की माता का नाम। २-अविवाहित लड़की। कुमारी। कन्या। ३-पतिव्रता और साध्वी स्त्री।

मरियम-का-पंजा [संज्ञा पु.](अं., हिं.) एक प्रकार की सुगन्धित वनस्पति।

मरियल [वि.] (हिं.) बहुत दुर्बल। दुबला और कमजोर।

मरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खाट के पैताने में कसने की रस्सी। २-नाव में वह तख्ता जो उसके पेंदे में लगा रहता है। ३-लोहे की एक छोटी हथौड़ी जिससे धातुओं पर खुदाई का काम करने वाले ठोकते हैं।

मरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'महामारी'। २-एक प्रकार का भूत। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देशी सागूदाने का पेड़।

मरीचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २-एक मरुत् का नाम। ३-एक ऋषि का नाम जो कश्यप के पिता थे। ४-इन्द्र के एक पुत्र का नाम। ५-एक दैत्य का नाम। ६-एक राजा का नाम। ७-एक प्राचीन मान जो छः त्रसरेणु के बराबर होता है। [संज्ञा स्त्री.] १-किरण। २-कांति। ज्योति। ३-मृगतृष्णा।

मरिचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृगतृष्णा। २-किरण।

मरिचिगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-दक्षसावर्णि मन्वंतर में होने वाले एक प्रकार के देवताओं का गण।

मरिचिजल [संज्ञा पु.] (सं.) मृगतृष्णा।

मरिचितोय [संज्ञा पु.] (सं.) मृगतृष्णा।

मरीचिमाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-चन्द्रमा।

मरीची [वि.] (हिं.) [स्त्री. मरीचिनी] किरणयुक्त जिसमें किरणें हों। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूर्य २-चन्द्रमा।

मरीज़ [वि.] (अ.) रोगी। बीमार।

मरीना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी कपड़ा जो मेरी नो नामक भेड़ के ऊन से तैयार किया जाता है।

मरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरुस्थल। रेगिस्तान। २-मारवाड़ देश। ३-मरुआ नामक पौधा। ४-वह पर्वत जिसमें जल का अभाव हो। ५-एक सूर्यवंशीय राजा का नाम। ६-नरकासुर के एक सहचर दैत्य का नाम।

मरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वनतुलसी अथवा बबरी की जाति के एक पौधे का नाम। २-बँडेर ३-हिंडोले में वह ऊपर की लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है। ४-वह लकड़ी का टुकड़ा जो जुलाहों के करघे में लगता है। ५-माँड़।

मरुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। २-एक प्रकार का मृग।

मरुकच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण दिशा के एक प्रदेश का नाम।

मरुकांतार, मरुकान्तार [संज्ञा पु.] (सं) बालू या रेत का मैदान। मरुभूमि। रेगिस्तान।

मरुकुच्च [संज्ञा पु.] देखो 'मरुकुत्स'।

मरुकुत्स [संज्ञा पु.] (सं.) वाराहीसंहिता के अनुसार एक देश का नाम।

मरुचीपट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता के अनुसार दक्षिण दिशा के एक देश का नाम।

मरुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख नामक सुगंधित द्रव्य। २-बांस का कल्ला।

मरुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इंद्रायणी की जाति की एक लता।

मरुटा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह स्त्री जिसका ललाट ऊँचा हो।

मरुत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पवन। २-पवन का अधिष्ठाता। देवता। ३-मरुवक नामक पौधा। ४-प्राण। ५-सोना। ६-एक साध्य का नाम। ७-बृहद्रथ राजा का एक नाम। ८-मरुआ। ९-गठिवन। १०-असवर्ग। ११-सौंदर्य। १२-देखो 'मरुत्त'।

मरुतवान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरुत्वान्'

मरुत्कर [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द।

मरुत्त [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक चन्द्रवंशी चक्रवर्ती राजा जो अवीक्षित का पुत्र था

मरुत्तक [संज्ञा पु.] (सं.) मरुआ नामक पौधा।

मरुत्पति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

मरुत्पथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

मरुत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

मरुत्प्लव [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मरुत्फल [संज्ञा पु.] (सं.) ओला।

मरुत्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म की भार्या नाम।

मरुत्वान् [संज्ञा पु.](सं.) १-इन्द्र। २-हनुमान। ३-धर्म के वंशज देवताओं के एक गण नाम।

मरुत्सख [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-अग्नि।

मरुत्सहाय [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

मरुत्सुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीम

मरुत्स्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

मरुथल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मरुस्थल'।

मरुदांदोल, मरुदान्दोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-धौंकनी। २-एक प्रकार की धौंकनी जो प्राचीनकाल में भैंस के चमड़े से बनाई जाती थी।

मरुदिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) गूगुल।

मरुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ऋषभदेव के पिता नाम।

मरुद्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

मरुद्द्रुम [संज्ञा पु.](सं.) १-बबूल। २-विट्खदिर

मरुद्वर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

मरुद्वाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊँट। २-धूम।

मरुद्विप [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

मरुद्वीप [संज्ञा पु.](सं.) मरुप्रदेश में स्थित छोटा सजल उपजाऊ स्थान। ओएसिज।

मरुद्वृधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का वैदिक नाम जो पंजाब में है।

मरुद्वेग [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

मरुधन्वा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मरुस्थल। २- विद्याधर के पुत्र का नाम।

मरुधर [संज्ञा पु.] (सं.) मारवाड़ देश।

मरुप्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मरुभूमि'।

मरुभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बालू का निर्जल मैदान जहां कोई वृक्ष अथवा वनस्पति नहीं उगती हो। रेगिस्तान।

मरुभूरुह [संज्ञा पु.] (सं.) करील का पेड़।

मरुन्माला [संज्ञा पु.] (सं.) असबर्ग।

मरुर [संज्ञा पु.] (हिं.) गोरचकरा।

मरुरना* [क्रि. अ.] (हिं.) बल खाना। ऐंठना।

मरुल [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली बतख की जाति का नाम।

मरुव [संज्ञा पु.] (सं.) मरुआ।

मरुवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मैनी नामक कँटीला पेड़। २-मरुआ। नागदौना। ३- तिल का पौधा। ४-व्याघ्र। बाघ। ५-

मरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरुआ'।

मरुसंभव, मरुसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की छोटी मूली।

मरुसंभवा, मरुसम्भवा

मरुसंभवा, मरुसम्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महेंद्रवारुणी। २-एक प्रकार का खैर (वृत्त)। ३-एक प्रकार का कनेर। ४-छोटा धमासा। तुद्र जवास।

मरुसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरसा'।

मरुस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) मरुभूमि। रेगिस्तान।

मरुस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्तमान मारवाड़ प्रदेश का प्राचीन नाम।

मरुस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा धमास।

मरू* [वि.] (हिं.) कठिन। दुरूह। *मरु करिके या मरूकरि*-कठिनता से ज्यों-त्यों करके।

मरूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मृग। २-मोर।

मरूद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जवास। २-कपास। ३-एक प्रकार का खैर वृत्त।

मरूर [संज्ञा पु.] ((सं.) गोरचकरा।

मरूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एंठन। मरोड़। बल। *मरूरा देना*-बल देना। मरोड़ना।

मरूल [संज्ञा पु.] (हिं.) गोरचकरा।

मरेठी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह रस्सी जिससे हेंगा बांधकर खींचा या चलाया जाता है। पत्थर। २-देखो 'मुलेठी'।

मरोड़ [संज्ञा पु.] (हि.) १-मरोड़ने की क्रिया या भाव। २-घुमाव। ऐंठन। ३-पेट में होने वाली ऐंठन। ४-व्यथा। क्षोभ। ५-घमंड। क्रोध। गुस्सा।
मरोड़ गहना-क्रोध करना। *मनमें मरोड़ करना*-कपट करना। *मरोड़ की बात*-पेचदार बात। *मरोड़ खाना*-उलझन में पड़ना। चक्कर खाना

मरोड़ना [क्रि. स.](हिं.) १-बल डालना। ऐंठना २-ऐंठ या घुमा देना अथवा मार डालना। ३-दुःख या पीड़ा देना। ४-मलना। मसलना
हाथ मरोड़ना-हाथ मलना। पछताना। *अंग मरोड़ना*-अंगड़ाई लेना। *भौंह (या दृग) मरोड़ना*-१-आँख से इशारा करना। २-नाक भौंह चढ़ाना।

मरोड़फली [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की फली जो प्रायः पेट के मरोड़ के लिए लाभदायक है।

मरोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऐंठन। मरोड़। २-पेट में होने वाली ऐंठन।

मरोड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-ऐंठन। २-घुमाव। बल। ३-गुत्थी। गांठ। ४-आटे आदि में सने हाथों को मलने पर छूटने वाली बत्ती।
मरोड़ी करना-खींचातानी करना।

मरोलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक बड़ा सामुद्रिक जंतु।

मर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-देह। शरीर। २-वायु। हवा। ३-शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम। ४-बंदर।

मर्कक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकड़ा। २-हरगीला नामक पक्षी।

मर्कट [संज्ञा पु.](सं.) १-बंदर। बानर। २-मकड़ा ३-एक प्रकार का विष। ४-हरगीला नामक पक्षी। ५-दोहे का एक भेद। इसमें १७ गुरु तथा १४ लघु मात्राएँ होती हैं। ६-छप्पय छंद का आठवां भेद जिसमें ६३ गुरु, २६ लघु कुल ८६ वर्ण अथवा १५२ मात्राएँ या ६३ गुरु, २२ लघु कुल वर्ण अथवा १४८ मात्राएँ होती हैं।

मर्कटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दर। २-मकड़ी। ३-एक जाति विशेष की मछली। ४-एक दैत्य का नाम। ५-मकरा नामक घास। ६-मडुआ नामक अन्न।

मर्कटतिंदुक [संज्ञा पु.] (सं.) कुपीलु।

मर्कटपाल [संज्ञा पु.] (सं.) सुग्रीव का एक नाम।

मर्कटपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं) अपामार्ग। चिचड़ा।

मर्कटप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) खिरनी का पेड़।

मर्कटवास [संज्ञा पु.] (सं.) मकड़ी का जाला।

मर्कटशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगुल।

मर्कटी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बानरी। २-मकड़ी। ३-कौंछ। ४-अपामार्ग। ५-अजमोदा। ६-एक प्रकार का करंज। ७-छन्द के नौ प्रत्यों में से अन्तिम।

मर्कटेंदु, मर्कटेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) कुचिल।

मर्कत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरकत'।

मर्कर [संज्ञा पु.] (सं.) भृङ्गराज। भँगरा।

मर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुरंग। २-तहखाना ३-भाँड़ा। बरतन। ४-बांझ स्त्री।

मर्ची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मिर्च'।

मर्जी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मरजी'।

मर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य। २-भूलोक।

मर्तबा [संज्ञा पु.] (अ.) १-पद। पदवी। २-बार। बेर। दफा।

मर्तबान [संज्ञा पु.] (हिं.) चीनी मिट्टी का वह रोगनी बरतन जिसमें अचार घी आदि रखते हैं। अमृतबान।

मर्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। २-भूलोक। ३-मनुष्य।

मर्त्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्य का भाव या धर्म।

मर्त्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मर्त्यता। आदमीयत।

मर्त्यधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य का धर्म।

मर्त्यभाव [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य का स्वभाव। मनुष्यत्व।

मर्त्यभुवन [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्यलोक।

मर्त्यमुख [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मर्त्यमुखी] किन्नर।

मर्त्यलोक [संज्ञा पु.] (सं.) यह पृथ्वी अथवा इस पर बसा हुआ संसार। मनुष्यलोक।

मर्द [संज्ञा पु.] (फा.) १-मनुष्य। २-पुरुष। नर ३-साहसी तथा पुरुषार्थी व्यक्ति। ४-वीर। ५-पति। खसम। *मर्द आदमी*-१ भला आदमी। २-वीर।

मर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुचलना। रौंदना। २-मसलना। ३-नाश करना। उजाड़ना। ४-शरीर में तेल उबटन आदि मलना।
[वि.] [स्त्री. मर्दनी] कुचलने वाला। पीसने वाला। नाश करने वाला।

मर्दना* [क्रि. स.](हिं.) १-मर्दन करना। मलना २-मसलना। ३-नष्ट करना। ४-मार डालना।

मर्दल [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का मृदंग।

मर्दानगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मरदानगी'

मर्दाना [वि.] (फा.) १-पुरुष-सम्बन्धी। २-मनुष्योचित। ३-वीरोचित। ४-वीर। साहसी। ५-पुरुषों का सा।

मर्दित [वि.] देखो 'मर्द्दित'।

मर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मरदानगी। वीरता।

मर्दुम [संज्ञा पु.] (फा.) मनुष्य।

मर्दुम-शुमारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-किसी देश के रहने वाले मनुष्यों की गणना। जनगणना २-किसी स्थान में रहने वाले मनुष्यों की संख्या। जनसंख्या। आबादी।

मर्दुमी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-पौरुष। मरदानगी २-पुंसत्व।

मर्दूद [वि.] (हिं.) देखो 'मरदूद'।

मर्द्दक [वि.] (सं.) १-मर्दन करने वाला। २-दबाने वाला।

मर्द्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुचलना। रौंदना। २-शरीर में तेल उबटन आदि मलना। ३-दूसरे के अंगों पर अपने हाथों से बलपूर्वक रगड़ना। मालिश। ४-ध्वंस। नाश। ५-कुश्ती में पहलवानों का एक दूसरे की गरदन पर घस्सा लगाना। ६-औषध आदि घोंटना। रगड़ना। [वि.] [स्त्री. मर्द्दिनी] नाशक। विनाशक।

मर्द्दल [संज्ञा पु.] (सं.) मृदंग की तरह का एक प्रकार का बाजा जो प्राचीनकाल में होता था।

मर्द्दित [वि.] (सं.) १-मला या मसला हुआ। २-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। ३-नष्ट किया हुआ।

मर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वरूप। २-रहस्य। भेद ३-संधि-स्थान। ४-प्राणियों में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है।

मर्मग [वि.] (सं.) मर्मज्ञ।

मर्मघ्न [वि.] (सं.) मर्मघातक।

मर्मचर [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय।

मर्मच्छिद [वि.] (सं.) मर्म भेदने वाला।

मर्मच्छेदक [वि.] (सं.) मर्मभेदक। मर्म भेदने वाला।

मर्मच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राण लेना। २-बहुत अधिक कष्ट देना। बहुत सताना।

मर्मज्ञ [वि.] (सं.) १-किसी बात का मर्म-रहस्य या गूढ़ रहस्य जानने वाला। तत्वज्ञ। २-भेद या रहस्य जानने वाला।

मर्मज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मर्मज्ञ होने का भाव तत्वज्ञता।

मर्मपारग [वि.] (सं.) भली भाँति अभिज्ञ।

मर्मपीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन को पहुचाने वाला दुःख या क्लेश।

मर्मप्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) वह आघात जो मर्म स्थान पर हो।

मर्मभिद् [वि.] (सं.) मर्मभेदी।

मर्मभेदक [वि.] (सं.) १-हृदयविदारक। २-मर्म छेदने वाला।

मर्मभेदन [संज्ञा पु.](सं.) मर्मभेदक अस्त्र। तीर। बाण।

मर्मभेदी [वि.] (हिं.) हृदय में चुभने वाला। हार्दिक कष्ट पहुँचाने वाला।

मर्ममय [वि.] (सं.) रहस्यपूर्ण।

मर्मर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पत्तों की खड़कन। २-कलफदार। कपड़े की खरभररं। [संज्ञा पु.] देखो 'मरमर'।

मर्मरित* [वि.] (सं.) जिसमें मर्मर शब्द हो।

मर्मरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरीब आदमी। मोहताज। २-दुष्ट मनुष्य।

मर्मवचन [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसे वचन जिसमें सुनने वाले को आन्तरिक कष्ट पहुँचे। मर्मभेदी बात।

मर्मवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मर्मवचन'।

मर्मविद् [वि.] (सं.) मर्मज्ञ। तत्वज्ञ।

मर्मविदारण [संज्ञा पु] (सं.) मर्मच्छेदन।

मर्मवेदी [वि.] (सं.) मर्मज्ञ।

मर्मस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के वह वह कोमल अङ्ग जिन पर चोट लगने से अत्यधिक पीड़ा होती तथा मनुष्य मर सकता है। जैसे—हृदय, कपाल, अण्डकोष आदि। २-वह स्थल जिसपर आघात अथवा आक्षेप होने से मनुष्य को विशेष मानसिक कष्ट हो

मर्मस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) मर्मस्थल।

मर्मस्पृश [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय को स्पर्श करने वाला। हृदय पर प्रभाव डालने वाला।

मर्मस्पृशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मर्म को स्पर्श करने या प्रभाव डालने का भाव।

मर्मस्पृशी [वि.] (सं.) [स्त्री. स्पृशिनी] मर्म को स्पर्श करने या प्रभाव डालने वला।

मर्मांतक, मर्मान्तक [वि.] (सं.) मनमें चुभने वाला। मर्मभेदी।

मर्मांतिक, मर्मान्तिक [वि.] (सं) देखो 'मर्मभेदी'।

मर्मान्वेषण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बात का तत्व अथवा गूढ़ रहस्य जानना।

मर्मान्वेषी [वि.] (हिं.) तत्व का गूढ़ रहस्य जानने वाला।

मर्माविद, मर्माविध [वि.](सं.) मर्म भेदने वाला मर्मभेदी।

मर्मिक [वि.] (सं.) मर्मविद्। मर्मज्ञ।

मर्मी [वि.] (हि.) रहस्य जानने वाला। तत्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्य [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य।

मर्या, मर्य्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीमा। हद।

मर्याद, मर्याद [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-देखो 'मर्यादा' २-रीति। रस्म। प्रथा। ३-विवाह का वह भोज जिसे बढ़ार कहते हैं। बढ़हार।

मर्याद रहना-बरात का विवाह के तीसरे दिन ठहर कर भोज में सम्मिलित होना।

मर्यादा, मर्य्यादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीमा हद। २-तट। किनारा। ३-दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच की प्रतिज्ञा। करार ४-सदाचार। ५-नियम। ६-मान। प्रतिष्ठा। गौरव। धर्म।

मर्यादाबंध, मर्य्यादबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-अधिकार की रक्षा। २-नजरबंदी।

मर्यादित, मर्य्यादित [वि.] (सं.) १-जिसकी हद अथवा सीमा निश्चित हो। २-जो अपनी मर्यादा अथवा सीमा के अन्दर हो।

मर्यादी, मर्य्यादी [वि.] (सं.) जो सीमायुक्त हो

मर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भूमि जो ऋण लेने वाले ने ब्याज के बदले में महाजन को दी हो।

मर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सहनशीलता। धीरज।

मर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षमा। माफी। २-घर्षण। रगड़। [वि.] (सं.) १-नाश करने वाला। ध्वंसक। २-दूर करने वाला रोकने या हटाने वाला।

मर्षणीय [वि.] (सं.) क्षमा करने योग्य। क्षम्य।

मर्षित [वि.](सं.) क्षमा किया हुआ। माफ किया हुआ।

मर्षीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छंद का नाम।

मलंग [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार के मुसलमान साधु। २-एक प्रकार का बगला जो बिलकुल सफेद होता है।

मलंगा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मलंग'।

मल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मैल। गंदगी। २-विष्ठा। गू। ३-दोष। विकार। ४-पाप। ५-शुद्धतानाशक पदार्थ। ६-दोष। बुराई ७-शरीर से निकलने वाला मैल या विकार। [मनुस्मृति के अनुसार शरीर के बारह मल हैं—वसा, शुक्र, रक्त, मज्जा, मूत्र, विष्ठा, कान का मैल, नख, श्लेष्मा या कफ, आँसू, शरीर पर जमा हुआ मैल और पसीना] ८-आत्मा का एक दोष। ९-कपूर। १०-जैनमतानुसार आत्माश्रित दुष्ट भाव। ११-[illegible] रोग। [संज्ञा पु.] (देश.) हाथी को उठाने के लिये महावत का एक सांकेतिक शब्द।

मलकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-हिलना-डोलना। २-इतराना। इठलाना।

मलकरन [संज्ञा पु.] (देश.) बरतन पर नक्काशी करने वालों का एक औज़ार।

मलका [संज्ञा स्त्री.](अ.) महारानी।

मलकाछ [संज्ञा पु.] (हिं.) ठाकुरों के शृंगार के लिये एक प्रकार की कछनी जिसमें तीन [illegible] लगे होते हैं।

मलकाना [क्रि. स.] (हिं.) हिलाना। डोलाना। [क्रि. अ.] बना-बनाकर बातें करना।

मलकुल्मोत [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानों के मत से वह फरिश्ता जो अंतकाल में प्राण लेने के लिए आता है।

मलखंभ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मलखम'।

मलखम [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक प्रकार का खंभा जिस पर चढ़ और उतरकर कई प्रकार की कसरत की जाती है। २-वह कसरत जो मलखम पर या उसके सहारे की जाय। ३-लकड़ी का खूंटा जो पुरानी चाल के कोल्हू में लगा होता है।

मलखाना*+ [वि.] (हिं.) मल खाने वाला। [संज्ञा पु.] १-महोबे के राजा परमाल के भतीजे का नाम। २-एक प्रकार के राजपूत जो मुसलमान बना लिये गये थे परन्तु अब फिर हिन्दू हो गये हैं।

मलखानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक ऊँचा [illegible] सीधा पतला खंभा जिसपर बेंत से मलखंभ की कसरत की जाती है।

मलग [संज्ञा पु.] (सं.) धोबी।

मलगजा* [वि.](हिं.) मला-दला हुआ। [illegible] [संज्ञा पु.] बेसन में लपेटकर तेल या घी में तले हुए बैंगन के पतले टुकड़े।

मलगिरि [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का हलका कत्थई रंग। [वि.] मलगिरी रंग का। हलके कत्थई रंग का।

मलघन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कचनार जो लता रूप में होता है।

मलघ्न [वि.] (सं.) [स्त्री. मलघ्नी] मलनाशक। [संज्ञा पु.] १-शाल्मली कंद। २-कचनार का एक भेद।

मलघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदौना।

मलज [संज्ञा पु.] (सं.) पीव। मवाद। [वि.] [illegible] से उत्पन्न।

मलज्वर [संज्ञा पु.] (सं) मल रुकने से होने वाला ज्वर।

मलभ्मन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की [illegible]

जिसे बागों में लगाते हैं।

मलट [संज्ञा पु.] (अं., मैलेट) १-खूँटे आदि गाड़ने का लकड़ी का हथौड़ा जिससे छापने से पूर्व सीसे के अक्षर ठोककर बैठाए तथा बराबर किये जाते हैं।

मलता [वि.] (हिं.) मला या घिसा हुआ सिक्का

मलद [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रदेश का नाम जिसका उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में मिलता है।

मलदूषित [वि.] (सं.) मलीन। मैला।

मलद्रावी [संज्ञा पु.] (हिं.) जमालगोटा।

मलद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीरस्थ वे इन्द्रियां जिन से मल निकलता है। २-पाखाने का स्थान। गुदा।

मलधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह धाय जो बच्चों का मल-मूत्र धोती हो।

मलधारी [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का जैन साधु जो मलत्याग करके धोते नहीं।

मलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मींजना। मर्दन। २-पोतना। लेप करना।

मलना [क्रि. स.] (हिं.) १-हाथ से या किसी और वस्तु से घिसना या रगड़ना। मसलना। मींजना। २-मालिश करना। ३-मरोड़ना। ऐंठना। ४-हाथ से बार-बार रगड़ना या दबाना। *दलना मलना*-१-चूर्ण करना। २-मसलना। *हाथ मलना*-१-पछताना। २-क्रोध प्रकट करना।

मलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुम्हार का सुराहियां आदि चिकनाने का औजार।

मलपंकी [वि.](हिं.) १-मलीन। मैला। २-कीचड़ में सना हुआ।

मलपू [संज्ञा पु.] (सं.) कठूमर।

मलबा [संज्ञा पु] (हि.) १-कूड़ा-कर्कट। कतवार। २-टूटी या गिरी हुई इमारत की ईंटें पत्थर आदि या उनका ढेर। ३-एक प्रकार की उगाही जो पहले हाकिमों के दौरे पर आने पर खर्च की जाती थी।

मलभुज [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा।

मलभेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) कुटकी।

मलमल [संज्ञा पु.] (हि.) बारीक सूत का बुना हुआ पतला कपड़ा।

मलमला [संज्ञा पु.] (देश.) कुलफे का साग।

मलमलाना [क्रि. स.](हिं.) १-बार-बार छुआना या स्पर्श कराना। २-बार-बार खोलना और ढकना। ३-फिर-फिर आलिंगन करना। ४-पछताना।

मलमलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मलमलाने की क्रिया या भाव। पश्चाताप। अफसोस।

मलमल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) कोपीन।

मलमा+ [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'मलबा'।

मलमास [संज्ञा पु.] (सं.) प्रति तीसरे वर्ष पड़ने वाला वह बढ़ा हुआ अथवा अधिक चाँद्रमास जो दो संक्रांत के मध्य पड़ता है। अधिकमास। पुरुषोत्तम-मास।

मलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत का नाम जो दक्षिण भारत में है और जिस पर चंदन के वृक्ष अधिकता से पाये जाते हैं। २-मलाबार देश। ३-मलाबार देश का निवासी। ४-एक द्वीप का नाम। ५-सफेद चन्दन। ६-शलांग ७-ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम। ८-इन्द्र का नन्दन-कानन। ९-गरुड़ के एक पुत्र का नाम। १०-छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें २५ गुरु, १०२ लघु कुल १२७ वर्ण या १५२ मात्राएं अथवा २५ गुरु, ९८ लघु कुल १२३ वर्ण या १४८ मात्राएं होती हैं।

मलयगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलयपर्वत का नाम जो दक्षिण में है। २-मलयगिरि पर उत्पन्न होने वाला चन्दन। ३-हिमालय पर्वत का वह देश जहाँ कामरूप और आसाम है। ४-देखो 'मलयगिरी'।

मलयगिरी [संज्ञा पु.] (हिं.) कामरूप, आसाम और दारजिलिंग में उत्पन्न होने वाला दारचीनी की जाति का एक प्रकार का बड़ा और बहुत ऊँचा वृक्ष।

मलयज [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्दन। २-राहु।

मलयद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्दन। २-मदन (वृक्ष)।

मलयभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिमालय के एक प्रदेश का नाम।

मलयवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

मलया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निसोथ। २-सोमराजी। बाबची।

मलयागिरि [संज्ञा पु.] देखो 'मलयगिरि'।

मलयाचल [संज्ञा पु.] (सं.) मलयपर्वत।

मलयानिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलयपर्वत की ओर से आने वाली वायु जिसमें चन्दन की महक होती है। २-सुगंधित वायु। ३-वसंतकाल की वायु।

मलयालम [संज्ञा पु.](हिं.) दक्षिण के एक पहाड़ी प्रदेश का नाम जो पश्चिमी घाट के किनारे-किनारे फैला हुआ है।

मलयालि [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पहाड़ी जाति का नाम जो मलयालम में बसती है।

मलयाली [वि.] (हिं.) १-मालाबार देश का। मालाबार देश-सम्बन्धी। २-मालाबार देश में उत्पन्न। [संज्ञा स्त्री.] मालाबार देश की भाषा।

मलयुग [संज्ञा पु.] (सं.) कलियुग।

मलयोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

मलराना* [क्रि. स] (हिं.) देखो 'मल्हाना'।

मलरुचि [वि.] (सं.) दूषित रुचि का। पापी।

मलरोधक [वि.](सं.) जो मल को रोके। कब्जियत करने वाला।

मलरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) कोष्ठबद्ध। कब्जियत।

मलवाना [क्रि स.] (हिं.) मलने का प्रेरणार्थक रूप।

मलविनाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शंखपुष्पी। २-क्षार।

मलवेग [संज्ञा पु.] (सं.) अतीसार।

मलशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पेट साफ करना।

मलसा [संज्ञा पु.] (हिं.) घी रखने का चमड़े का कुप्पा।

मलसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुसलमानों का खाना पकाने का मिट्टी का बरतन।

मलसूत [संज्ञा पु.] (अ.) वह यन्त्र जिसकी सहायता से भारी बोझ उठाकर नाव या गाड़ी पर लादा जाता है।

मलहंता [संज्ञा पु.] (हिं.) सेमल का मूसल।

मलहम [संज्ञा पु.] (अं., *मरहम्*) देखो 'मरहम'

मलहर [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

मलहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा रौद्राश्व की कन्या का नाम।

मलहारक [संज्ञा पु.] (सं.) मेहतर। भंगी।

मला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमड़ा। २-चमड़े से बनाकर तैयार की हुई चीजें। ३-कसकुट। ४-भुइँ आँवला। ५-बिच्छू का डंक। ६-आँबाहलदी।

मलाई [संज्ञा स्त्री.](देश.) १-गरम करने से उस पर जमने वाली सार-भाग की तह। साढ़ी। २-सार। तत्व। ३-बहुत हलका बादामी रंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मलने की क्रिया या भाव। २-मलने की मजदूरी।

मलाकर्षी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मलाकर्षिणी] भंगी। मेहतर।

मलाका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कामिनी-स्त्री। कामातुर स्त्री। २-वेश्या। ३-दूती। ४-हथिनी।

मलाट [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का मोटा घटिया कागज।

मलान* [वि.] (हिं.) देखो 'म्लान'।

मलानि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'म्लानि'।

मलापह [व.] (सं.) [स्त्री. मलापहा] १-मल दूर करने वाला। २-पापनाशक।

मलाबार [संज्ञा पु.] (हिं.) भारत के दक्षिण प्रांत का एक प्रदेश।

मलामत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लानत। फटकार दुतकार। २-किसी पदार्थ का निकृष्ट या खराब अंश। मैल। गन्दगी। *लानत-मलामत*-डाँट-फटकार।

मलार [संज्ञा पु.](हि.) संगीत-शास्त्र के अनुसार सम्पूर्ण जाति का एक राग जो वर्षाऋतु में गाया जाता है। *मलार गाना*-बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना या गाना।

मलारि [संज्ञा पु.] (सं.) क्षार।

मलारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वसंतराग की एक रागिनी।

मलाल [संज्ञा पु.](अ.) १-दुःख। रंज। २-उदासीनता। उदासी।

मलावह [संज्ञा पु.] (सं.) मनु के अनुसार पापों की एक कोटि।

मलाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मल्लाह'।

मलिंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मलंग'।

मलिंद [संज्ञा पु.] (हिं.) भौंरा।

मलिक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मलिका] १-राजा २-अधीश्वर। सरदार।

मलिका [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-रानी। २-अधीश्वर। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मल्लिका'।

मलिच्च*, मलिच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'म्लेच्छ'।

मलित [संज्ञा पु.](देश.) नक्काशी के गहनों को साफ करने की सुनार की छोटी कूँची।

मलिन [वि.] (सं.) [स्त्री. मलिना, मलिनी] १-मैल। गँदला। २-दूषित। खराब। ३-जिसका रंग बिगड़ गया हो। बदरंग। ४-पापात्मा पापी। ५-धीमा। फीका। ६-म्लान। विषण्ण उदासीन। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के साधु जो मैलाकुचैला कपड़ा पहनते हैं। पाशुपत। २-काला अगर अथवा अगर चंदन। ३-सोहागा। ४-मट्ठा। ५-गौ का ताजा निकाला हुआ दूध। ६-हंस। ७-दस्तामूठ। ८-पाप। दोष। ९-रत्नों में रंग और चमक न होना।

मलिनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैलापन। मलिन होने का भाव।

मलिनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मलिनता। मैलापन।

मलिनमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-बैल की पूँछ। ३-प्रेत। [वि.](सं.) मलिन या उदास मुँह वाला। जिसका मुँह उदास हो। क्रूर। खल।

मलिनांबु, मलिनाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) स्याही मसी।

मलिना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रजस्वला स्त्री। २-लाल खाँड़ या शक्कर। ३-छोटी भटकटैया।

मलिनाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैलापन। मलिनता

मलिनाना* [क्रि. अ.] (हिं.) मैलापन।

मलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला स्त्री।

मलिनीकरण [संज्ञा पु.](सं.) १-देखो 'मिलावह' २-निर्मल वस्तु को मैला करना।

मलिम्लुच [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलमास। २-अग्नि। ३-चोर। ४-वायु। पवन। ५-वह पुरुष जो पंचयज्ञ न करता हो।

मलिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिट्टी के एक तंग मुँह वाले बरतन का नाम। २-चक्कर। ३-एक प्रकार का खेल जो गोटियों से खेला जाता है। *मलिया बाँधना*-रस्सी को मोड़कर बांधना।

मलियामेट [संज्ञा पु.] (हिं.) तहसनहस। सर्वनाश। बरबादी।

मलिष्ठ [वि.] (सं.) अत्यन्त मैला-कुचैला।

मलिस [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सुनारों का एक औज़ार जो छेनी की तरह का होता है।

मलीदा [संज्ञा पु.](फा.) १-चूरमा। २-एक प्रकार का बढ़िया मुलायम ऊनी कपड़ा।

मलीन [वि.] (हिं.) १-मैला। मलिन। २-उदास

मलीनता [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'मलिनता'।

मलीमस [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहा। २-पीले रंग का कसीस। ३-पाप [वि.] १-मैला। २-काला। ३-पापी।

मलीयस् [वि.] (सं.) [स्त्री. मलीयसी] अत्यन्त मैला-कुचैला।

मलुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेट। उदर। २-एक प्रकार का पशु।

मलू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मलघन नामक कचनार की छाल। २-मलघन नामक वृक्ष।

मलूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का पक्षी। २-एक प्रकार का कीड़ा। ३-देखो 'अमलूक'। ४-एक संख्या स्थान। [वि.] (देश.) सुन्दर। मनोहर।

मलेच्च, मलेच्छ [संज्ञा पु.] देखो 'म्लेच्छ'।

मलेपंज [संज्ञा पु.] (देश.) बुड्ढा घोड़ा।

मलेरिया [संज्ञा पु.] (अं.) मच्छरों के काटने से आने वाला ज्वर। जूड़ी।

मलोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मानसिक व्यथा। दुःख। रंज। २-अरमान। उत्कट। इच्छा या लालसा। *मलोला या मलोले आना*-पछतावा होना। *मलोले खाना*-मानसिक दुःख सहना।

मल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जाति का नाम। २-पहलवान। पट्ठा। ३-एक प्राचीन देश का नाम। ४-दीप। ५-कपोल। ६-पात्र। ७-एक वर्णसंकर जाति।

मल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाँत। २-दीवट। ३-दीपक। ४-नारियल के छिलके का बना पात्र। ५-बरतन। पात्र। ६-संपुट या डब्बे का पल्ला।

मल्लक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] पहलवानों का दंगल। कुश्ती।

मल्लखंभ [संज्ञा पु.] देखो 'मलखम'।

मल्लज [संज्ञा पु.] (सं.) काली मिर्च।

मल्लतरु [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी।

मल्लताल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीतकला में एक ताल का नाम।

मल्लनाग [संज्ञा पु.] (सं.) कामसूत्र के रचियता वात्स्यायन का एक नाम।

मल्लभू, मल्लभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-... नामक देश। २-वह स्थान जहां कुश्ती ... जाती है। अखाड़ा।

मल्लयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) कुश्ती।

मल्लवाह [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रंग की एक

मल्लविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विद्या जिसमें कुश्ती के नियम और दाँव, पेंच बताये गये

मल्लशाला [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां मल्लयुद्ध होता है। अखाड़ा।

मल्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। २-एक ... का नाम। ३-मल्लिका। चमेली। [संज्ञा पु.] (देश.) १-जुलाहों का एक औज़ार। २-एक प्रकार का लाल रंग।

मल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) मलार नाम का राग।

मल्लारि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मल्लारी'। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृष्ण। २-शिव।

मल्लारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बसंतराग की एक रागिनी।

मल्लाह [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. मल्लाहिन] एक जाति जिसका काम नाव चलाना और मछलियां पकड़ना है। केवट। धीवर। मांझी।

मल्लाही [वि.] (फ़ा.) मल्लाह-सम्बन्धी। मल्लाह का। यौ०-मल्लाही काँटा-एक प्रकार का ... का कांटा जो नाव की पटरियों में जड़ा जाता है। [संज्ञा स्त्री.] मल्लाह का काम।

मल्लि [संज्ञा पु.] (सं.) जैनशास्त्रों के अनुसार चौबीस जिनों में से उन्नीसवें जिन का नाम जिन्हें मल्लिनाथ कहते हैं।

मल्लिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंस विशेष जिसके पैर और चोंच काली होती है। २-जुलाहे की ढरकी। ३-माघमास। (हिं.) देखो 'मलिक'।

मल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का बेला जिसे मोतिया कहते हैं। २-आठ अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण और अन्त में एक गुरु और एक लघु होता है। ३-सुमुखी वृत्ति का नाम।

मल्लिकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह घोड़ा जिसकी आँख पर सफेद धब्बे होते हैं। २-... की आँख पर के सफेद धब्बे। ३-एक प्रकार के हंस का नाम। [वि.] सफेद ... आंख वाला।

मल्लिकामोद [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के ... मुख्य भेदों में से एक।

मल्लिगंधी, मल्लिगन्धी [संज्ञा पु.] (सं.)

मल्लिनाथ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मल्लिका। सुन्दर वृत्ति का एक नाम।

मल्लिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम।

मल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मल्लिका। सुन्दर वृत्ति का एक नाम।

मल्लीकर [वि.] (सं.) चोरी करने वाला। चोर।

मल्लु [संज्ञा पु.] (सं.) १-भालू। रीछ। २-बंदर

मल्लू [संज्ञा पु.] (सं.) १-भालू। २-बन्दर।

मल्हनी [संज्ञा स्त्री.] ((देश.) एक प्रकार की नाव। इसका अगला भाग चौड़ा होता है।

मल्हराना+ [क्रि. स.] (हिं.) चुमकारना। पुचकारना।

मल्हाना+ [क्रि. स.] (हिं.) चुमकारना। पुचकारना।

मल्हावेल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मौला नामक बेल

मल्हार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मलार'।

मल्हारना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मल्हाना'।

मवक्किल [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. मवक्किला] १-मुकदमे में अपनी ओर से न्यायालय में काम करने के लिए वकील या प्रतिनिधि नियुक्त करने वाला पुरुष। २-किसी को अपना काम सौंपने वाला। आसामी।

मवर [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध-मत के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

मवर्रिख़ा [वि.] (अ.) लिखित।

मवाजिब [संज्ञा पु.](अ.) नियमित मात्रा में नियमित समय में मिलने वाला पदार्थ।

मवाज़ी [वि.] (अ.) अनुमान किया हुआ।

मवाद [संज्ञा पु.] (अ.) १-सामिग्री। मसाला। सामान। २-पीव। ३-मल। गंदगी।

मवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुर्ग। गढ़। २-शरण या रक्षा का स्थान।

मवास करना–बसेरा करना।

मवासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा गढ़। गढ़ी।

मवासी तोड़ना–१-गढ़ तोड़ना। २-विजय करना। [संज्ञा पु.](हिं.) १-गढ़पति। किलेदार। २-प्रधान। मुखिया।

मवेशी [संज्ञा पु.] (अ.) चौपाया। ढोर। पशु।

मवेशीखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह बाड़ा जिसमें पशु रखे जाते हैं। पशुशाला।

मश [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोध। २-मच्छड़।

मशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मच्छर। डांस। २-मसा नामक चर्म रोग। ३-एक आचार्य का नाम जो गार्ग्यगोत्र में उत्पन्न हुआ था। ४-शाकद्वीप में क्षत्रियों का निवास स्थान। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चमड़े का वह थैला जिसे पीठ पर लादकर भिश्ती एक स्थान से दूसरे स्थान पर पानी ले जाता है।

मशककुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मच्छर उड़ाने की चौरी।

मशकहरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मसहरी।

मशकावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम

मशक्कत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-श्रम। परिश्रम। मेहनत। २-वह मेहनत जो कैदियों को जेलखाने में करनी पड़ती है।

मशक्कती [वि] (फा.) मशक्कत करने वाला।

मशगूल [वि.] (अ.) कार्य में लगा हुआ। प्रवृत्त लीन।

मशरू [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

मशविरा [संज्ञा पु.] (अ.) सलाह। परामर्श।

सलाह मश्वरा–परामर्श।

मशहूर [वि.] (अ.) प्रख्यात। प्रसिद्ध।

मशान [संज्ञा पु.] (हिं.) मरघट। श्मशान।

मशाल [संज्ञा स्त्री] (अ.) डंडे में चीथड़े लपेट कर बनाई हुई मोटी बत्ती जिसे जलाकर हाथ में लेकर चलते हैं।

मशाल लेकर या जलाकर ढूँढ़ना–भली प्रकार ढूँढ़ना।

मशालची [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. मशालचिन] जलती हुई मशाल हाथ में लेकर दिखाने वाला।

मशीखत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शेखी। घमंड। गर्व

मशीखत बघारना–बढ़बढ़कर बातें करना।

मशीन [संज्ञा स्त्री.] [अं. मेशीन] पेचों, पुरजों आदि का बना हुआ वह यंत्र जिससे कार्य जल्दी होता हो। कल। यंत्र।

मशीनगन [संज्ञा स्त्री.] (अ.) वह मशीन अथवा यंत्र जो बन्दूक के समान, पर उससे जल्दी-जल्दी गोलियां चलाता है।

मशीर [संज्ञा पु.](अ.) सलाह देने वाला। सलाहकार।

मश्क [संज्ञा पु.].(अ.) अभ्यास।

मश्शाक [वि.] (अ.) अभ्यस्त।

मष* [संज्ञा पु.] (हिं.) मख। यज्ञ।

मषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काजल। २-सुरमा। ३-स्याही।

मषिकूपी, मषिघटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दावात।

मषिधान [संज्ञा पु.] (सं.) दावात।

मषिपण्य [संज्ञा पु.] (सं.) लिखने का काम करने वाला। लेखक।

मसिप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दावात। २-कलम

मषिमणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दावात।

मषी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मषि'।

मष्ट [वि.] (हिं.) १-जो भूल गया हो। २-मौन चुप।

मष्ट करना–मौन रहना। चुप रहना। *मष्ट मारना*–मौन धारण करना।

मष्णार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन स्थान का नाम।

मस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्याही। रोशनाई। २-मूँछें निकलने के पहले की रोमावली।

मस भीजना–मूँछों की रेख दीख पड़ना।

[संज्ञा पु.] (हि.) १-मच्छर। डांस। २-देखो 'मसा'।

मसक [संज्ञा पु.] (हिं.) मच्छर। मसा। धाँस।

[संज्ञा स्त्री.] १-मसकने की क्रिया या भाव। २-देखो 'मशक'।

मसकत*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मशक्कत'

मसकना [क्रि. स.] (हिं.) १-खिंचाव अथवा दबाव में डालकर कपड़े को इस प्रकार फाड़ना कि बुनावट के सब तंतु टूटकर अलग हो जायँ। २-जोर से दबाना या मलना।

[क्रि. अ.] १-किसी वस्तु का खिंचाव अथवा दबाव के कारण बीच में से फट जाना। २-देखो 'मसोसना'।

मसकरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मसखरा'।

मसकला [संज्ञा पु.] (अ.) १-सिकलीगरों का वह औजार जिसको रगड़ने से धातु की बनी वस्तुओं पर चमक आ जाती है। २-सैकल या सिकली करने की क्रिया।

मसकली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मसकला'।

मसका [संज्ञा पु.] (फा.) १-नवनीत। मक्खन। २-ताजा निकला हुआ घी। ३-दही का पानी ४-रासायनिक परिभाषा में, बंधा हुआ पारा। ५-बुझाये हुए चूने की बुकनी। ६-कायस्थ।

मसकीन* [वि.] (अ.) १-गरीब। दीन। बेचारा २-साधु। सन्त। ३-दरिद्र। कंगाल। ४-भोला ५-सुशील।

मसख़रा [संज्ञा पु.] (अ.) १-परिहास करने वाला। हँसोड़। २-विदूषक। नक्काल।

मसख़रापन [संज्ञा पु.](अ.) हँसी। ठट्ठा। ठठोली दिल्लगी।

मसख़री [संज्ञा स्त्री.] (फा.) हँसी। मजाक। दिल्लगी।

मसखवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मांसाहारी। मांस खाने वाला।

मसजिद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह स्थान या भवन जहां पर मुसलमान लोग सामूहिक रूप से नमाज पढ़ते और ईश्वर की वंदना करते हैं।

मसड़ी [संज्ञा स्त्री.] (डि.) कन्द। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

मसती [संज्ञा पु.] (डि.) हाथी।

मसनंद [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मसनद'।

मसन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का टकुआ या तकुआ।

मसनंद [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-गाव-तकिया। बड़ा तकिया। २-वह स्थान जहां तकिया लगाया जाय। ३-धनिकों के बैठने की गद्दी।

मसनदनशीन [संज्ञा पु.] (अ., फा.) मसनद पर बैठने वाला। अमीर।

मसना+ [क्रि. स.] (हि.) १-मसलना। २-गूंधना।

मसमुंद*+ [वि.] (हिं.) ठेलमठेल या धक्कमधक्का। कशमकश।

मसयारा* [संज्ञा पु.] (हि.) १-मशाल। २-मशालची।

मसरफ [संज्ञा पु.](अ.) काम में आना। उपयोग

मसरू [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

मसरूका [वि.](अ.) चोरी किया हुआ। चुराया-हुआ।

मसरूफ़ [वि.] (अ.) काम में लगा हुआ।

मसल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कहावत। लोकोक्ति।

मसलति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मसलहत'।

मसलन् [क्रि. वि.] (अ.) उदाहरण के रूप में। मिसाल के तौर पर। जैसे। यथा।

मसलन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मसलने की क्रिया या भाव।

मसलना [क्रि. स.] (हिं.) १-अँगुलियों से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २-जोर से दबाना। ३-आटा गूंधना।

मसलहत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-रहस्य। २-ऐसा गुप्त तथा हितकर तत्व जो समझ में न आ सके।

मसला [संज्ञा पु.] (अ.) १-कहावत। लोकोक्ति। २-विचारणीय विषय। समस्या।

मसवई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार के बबूल का गोंद जो अदन से आता है।

मसवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रसव के उपरान्त एक मास पश्चात होने वाला स्नान।

मसवासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह साधु या विरक्त जो एक मास से अधिक किसी स्थान पर न रहे। २-ऐसी स्त्री जो किसी पुरुष के पास एक मास से अधिक न रहे। वेश्या।

मसविदा [संज्ञा पु.](अ.) १-मसौदा। २-युक्ति उपाय। *मसविदा बाँधना*–उपाय या युक्ति सोचना।

मसहरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-मच्छरों आदि से बचने के लिये पलंग के चारों ओर लटकाया जाने वाला जालीदार कपड़ा। २-वह पलंग जिसमें ऐसा कपड़ा लगा हो।

मसहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो मांस खाता हो। मांसाहारी।

मसहूर [वि.] (हिं.) देखो 'मशहूर'।

मसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शरीर पर उभरा हुआ काले रंग का मांस का छोटा दाना। २-बवासीर रोग में गुदा के भीतर उभरे हुए मांस के दाने। ३-मच्छर। डाँस।

मसान [संज्ञा पु.](हिं.) १-मुर्दे फूँकने का स्थान। मरघट। २-भूत-पिशाच आदि। ३-रण-भूमि। रणक्षेत्र। *मसान की बीमारी*–एक प्रकार का रोग जो छोटे बच्चों को होता है इसमें वे घुलकर मर जाते हैं। *मसान जगाना*–शव या किसी मन्त्र की तांत्रिक सिद्धि श्मशान में बैठकर करना।

मसाना [संज्ञा पु.] (अ.) पेट में की वह थैली जहां मूत्र जमा रहता है। मूत्राशय। * (हिं.) देखो 'मसान'।

मसानिया [संज्ञा पु.](हिं.) १-वह जो श्मशान में रहकर किसी प्रकार की सिद्धि करता हो। २-झाड़-फूँककर भूत-प्रेत आदि उतारने वाला। सयाना। ओझा। ३-श्मशान पर रहने वाला। डोम।

मसानी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मसान में रहने वाली, डाकिनी, पिशाचिनी आदि।

मसार [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम (मणि)।

मसाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मशाल'।

मसालची [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मशालची'।

मसालदुम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) काली दुम वाला एक पक्षी।

मसाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साधारण सामग्री। उपकरण। २-वे पदार्थ जिनकी सहायता से कोई वस्तु तैयार होती है। ३-औषधियों अथवा रसायनिक द्रव्यों का मिश्रण या उसका कोई अंश। ४-तेल। ५-आतिशबाजी। ६-सुन्दर नवयुवती (बाजारू)।

मसाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी। डोरी।

मसाले-का-तेल [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगंधित द्रव्य डालकर बनाया हुआ एक प्रकार का तेल।

मसालेदार [वि.] (अ., फ़ा.) जिसमें मसाला मिला या पड़ा हो।

मसिंदर [संज्ञा पु.] (अं. मेसेंजर) जहाज का वह बड़ा रस्सा जिसमें लंगर बंधा रहता है।

मसि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-लिखने की स्याही। रोशनाई। २-निर्गुंडी का फल। ३-काजल। ४-कालिख।

मसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शेफालिका।

मसिकूपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दावात।

मसिजल [संज्ञा पु.] (सं.) स्याही। रोशनाई।

मसिदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दावात।

मसिधान [संज्ञा पु.] (सं.) दावात।

मसिपण्य [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक।

मसिपथ [संज्ञा पु.] (सं.) कलम।

मसिपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) दावात।

मसिबुंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) मसिबिंदु।

मसिमणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दावात।

मसिमुख [वि.] (सं.) जिसके मुख पर मसि या स्याही लगी हो। काले मुँह वाला।

मसियर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मसाल'।

मसियाना [क्रि. अ.] (?) परिपूर्ण हो जाना। पूरा हो जाना। पूरी तरह भर जाना।

मसियार*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मशाल'।

यसियारा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मशालची'।

मसिल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मैनसिल'।

मसी [संज्ञा स्त्री.] हिं.) देखो 'मसि'।

मसीका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आठ रत्ती का मान। माशा। २-चवन्नी।

मसीत*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मसजिद।

मसीद*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मसजिद'।

मसीना+ [संज्ञा पु.] (देश.) मोटा कदन्न।

मसीह, मसीहा [संज्ञा पु.] (अ.) धर्म गुरु महात्मा ईसा। २-वह जो जिला सके। (उर्दू कविताओं में प्रेमिका के लिये इस शब्द का होता है।

मसीहाई [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) १-मसीह का २-मरे को जीवित करने की शक्ति।

मसीही [वि.](अ.) ईसामसीह सम्बन्धी। का। [संज्ञा पु.] ईसाई।

मसुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मसूर'।

मसुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मसूरी'।

मसू*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कठिनता। नाई।

मस करके–बहुत कठिनता से।

मसूड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मुँह के अन्दर अङ्ग जिसमें दाँत उगे होते हैं।

मसूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का द्विदल जिसकी दाल पकाई जाती है। वैद्यक में मधुर, शीतल, संग्राहक, कफ और नाशक ज्वर को दूर करने वाला है।

यौ०–मसूर का सत्त–भूने हुए मसूर जिसमें नमक या मीठा मिलाकर समान घोलकर खाया जाता है।

मसूरक [संज्ञा पु.] (सं.) गोल तकिया।

मसूरकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि

मसूरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेश्या। मसूर की दाल। ३-मसूर की बनी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मसूड़ा'।

मसूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शीतला। चेचक। २-छोटी माता। कुटनी।

मसूरिकापिड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) की चेचक या माता जिसमें मसूर बराबर दाने निकलते हैं।

मसूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चेचक। २-देखो 'मसूर'। [संज्ञा पु.] (देश.) प्रकार का छोटे कद का वृक्ष।

मसूल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महसूल'।

मसूला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की पतली और लम्बी होती है।

मसूस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मन मसोसने कुढ़न।

मसूसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आंतरिक कुढ़न।

मसूसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ऐंठना।

२-निचोड़ना। ३-किसी मनोवेग को रोकना।
जब्त करना। ४-कुढ़न। कलपना।
मसृण [वि.] (सं.) चिकना और मुलायम।
मसेवरा+ [संज्ञा पु.] (हि.) मांस की बनी हुई
भोजन-सामग्री।
मसोढ़ा+ [संज्ञा पु.] (देश.) सोना, चाँदी आदि
गलाने की घरिया। (हिं.) देखो 'मसूड़ा'।
मसोसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी मनोवेग को
रोकना। जब्त करना। २-मन ही मन खेद
या दुःख करना। कुढ़ना। [क्रि. स.] १-
ऐंठना। मरोड़ना। २-निचोड़ना।

मसोसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मन की पीड़ा। मानसिक दुःख। २-पश्चाताप। पछतावा।

मसौदा [संज्ञा पु.] (अ.) १-लेख का वह पूर्व रूप जिसमें काट-छांट तथा सुधार किया जाने को हो। प्रालेख। २-युक्ति। तरकीब। *मसौदा गाँठना या बाँधना*-किसी कार्य की युक्ति सोचना

मसौदेबाज [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-अच्छी युक्ति या उपाय सोचने वाला। २-धूर्त्त। चालाक।

मस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वंश। खानदान। २-गति। ३-ज्ञान।

मस्करा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मसखरा'।

मस्करी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संन्यासी। २-भिक्षु। ३-चन्द्रमा। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मसखरी'।

मस्का [संज्ञा पु.] (अ.) १-मक्खन। २-देखो 'मसका'।

मस्कुर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मसूड़ा'।

मस्खरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मसखरा'।

मस्जिद [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मसजिद'।

मस्त [वि.] (फा.) १-मतवाला। मदोन्मत्त। २-जिसे किसी बात का पता न लगता हो। ३-यौवन-मद से भरा हुआ। ४-प्रसन्न और निश्चिन्त। परम आनंदित। ५-मदपूर्ण। जिसमें मद हो। ६-अभिमानी।

मस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) सिर।

मस्तकी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'मस्तगी'।

मस्तगी [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार का बढ़िया पीला गोंद।

मस्तरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु गलाने की भट्टी।

मस्ताना [वि.](फा.) १-मस्तों का सा। २-मस्त। मत्त। [क्रि. अ.](फा.) मस्त होना। मस्ती पर आना [क्रि. स.] मस्ती पर लाना। मस्त करना।

मस्तिक [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मस्तक'।

मस्तिकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मस्तगी'।

मस्तिष्क [संज्ञा पु.](सं.) १-मस्तक के भीतर का गूदा। भेजा। मगज़। २-सोचने-समझने की शक्ति या बुद्धि के रहने का स्थान। दिमाग।

मस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मस्त होने की क्रिया या भाव। मतवालापन। २-भोग या प्रसंग की प्रबल कामना। ३-कुछ विशिष्ट पशुओं की कनपटी से बहने वाला तरल स्राव। मद। ४-कुछ वृक्षों आदि में होने वाला स्राव। मद

मस्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १-दही का पानी। २-छेने का पानी।

मस्तुलुंग, मस्तुलङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तिष्क। मगज।

मस्तूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धातु गलाने की भट्टी।

मस्तूल [संज्ञा पु.] (पुर्त) बड़ी नावों के बीच का वह लट्ठा जिसमें पाल बांधते हैं।

मस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मसा'।

महँ* [अव्य.] (हि.) में।

महँई* [वि.] (हिं.) महान। भारी।

महँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'महक'।

महँकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'महकना'।

महँगा [वि.] (हिं.) १-जिसका मूल्य सामान्य मूल्य से अधिक हो। २-बहुमूल्य।

महँगाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-महँगी के कारण मिलने वाला भत्ता। २-देखो 'महँगी'।

महँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-महंगे होने का भाव या अवस्था। महँगापन। २-दुर्भिक्ष। अकाल

महँड़ा+ [संज्ञा पु.] (देश.) भुने हुए चने।

महंत [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी साधु-मंडली या मठ का अधिष्ठाता। साधु-समाज का प्रधान।

महंतशाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महंत का प्रभुत्व।

महंताई, महंती+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-महंत का भाव। २-महंत का पद।

महँदी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो "मेंहदी"।

मह [अव्यय] (हिं.) देखो "महँ"। [वि.] (हिं.) १-महा। अति। बहुत। २-श्रेष्ठ बड़ा।

महक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंध। बास। बू।

महकदार [वि.] (हि.) महकने वाला। जिसमें महक हो। गंध देने वाला।

महकना [क्रि. अ.] (हिं.) गंध देना। बास आना

महकमा [संज्ञा पु.] (अं.) किसी विशिष्ट कार्य के लिए अलग किया हुआ विभाग। सरिश्ता

महकान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महक'।

महकाली [संज्ञा स्त्री.] (डि.) पार्वती।

महकीला [वि.] (हि.) महकने वाला। सुगंधित।

महचक्र [संज्ञा पु.] (डि.) सूर्य।

महज [वि.] (अं.) १-शुद्ध। खालिस। २- केवल सिर्फ।

महजरनामा [संज्ञा पु.] (अ.+फा.) हिंसा-विषयक साक्षीपत्र।

महजित, महजिद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मसजिद'।

महण [संज्ञा पु] (डि.) समुद्र।

महत् [वि.] (सं.) १-महान्। बृहत्। बड़ा। २-सर्वश्रेष्ठ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन के अनुसार प्रकृति का पहला विकार, महत्तत्व। २-ब्रह्म। ३-राज्य। ४-जल।

महत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महत्व'।

महतवान [संज्ञा पु.] (देश.) करघे के पीछे लगी हुई खूंटी।

महता [संज्ञा पु.] (हि.) १-गाँव का मुखिया। महतो। सरदार। २-मुन्शी। लेखक। *[संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-अभिमान। घमण्ड २-महत्तत्व। विज्ञानशक्ति। ३-एक नदी का नाम।

महताब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चाँदनी। चन्द्रिका २-एक प्रकार की आतिशबाजी। ३-वह नीली रोशनी जो जहाज पर संकेत के लिये होती है। [संज्ञा पु.] (फा.) चन्द्रमा।

महताबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-नली के आकार की वह आतिशबाजी जिसके जलने पर केवल रोशनी होती है। २- बाग के बीच का गोल चबूतरा। ३-चकोतरा।

महतारी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) माता। जननी।

महती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नारद की वीणा का नाम। २-बनभंटा। ३-कुशद्वीप की एक नदी का नाम। ४-महिमा। बड़ाई। ५-वैश्यों की एक जाति। ऐसी हिचकी जिससे मर्मस्थान पीड़ित हो तथा देह में कंप हो। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] बहुत बड़ी। महान्।

महतीद्वादशी [संज्ञा स्त्री.](सं.) भाद्रपद के शुक्लपक्ष की वह द्वादशी जो श्रावण-नक्षत्र में पड़े।

महतु+* [संज्ञा पु.] (हि.) महिमा। बड़ाई महत्व।

महतो [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कुछ गयावाल पण्डों की एक उपाधि। २-कहार। ३-जुलाहों का वह खूँटा जो भाँज के आगे गड़ा रहता है। ४-सरदार। मुखिया।

महत्कथ [संज्ञा पु.] (सं.) खुशामदी।

महत्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांख्य में प्रकृति का पहला विकार। बुद्धि तत्व। २-जीवात्मा। ३-तांत्रिकों के मत से संसार के सात तत्वों में से सबसे अधिक सूक्ष्म तत्व।

महत्तम [वि.] (सं.) सबसे बड़ा।

महत्तर [वि.] (सं.) दो में से बड़ा या श्रेष्ठ। किसी से बड़ा या अच्छा।

महत्पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषोत्तम।

महत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़प्पन। बड़ाई। गुरुता। २-श्रेष्ठता। उत्तमता।

महदूद [वि.] (अ.) परिमित।

महदेश्वर [संज्ञा पु.](सं.) बैलों की एक जाति जो मैसूर में होती है।

महद्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक देवता

का नाम।

महद्वारुणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) महेन्द्र नामक लता

महन*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मथन'।

महना* [क्रि. स.] (हिं.) १-मथना। विलोना। २-किसी बात अथवा विषय का आवश्यकता से अधिक विवेचन करना।
यौ०-*महना मत्थन*-व्यर्थ का बहुत अधिक वादविवाद करना।
[संज्ञा पु.] (हिं.) मथानी। रई।

महनिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मथने वाला।

महनीय [वि.] (सं.) १-प्रतिष्ठापात्र। माननीय। पूज्य। २-महत्। महान्।

महनीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महानता।

महनु* [संज्ञा पु.] (हि.) मथन करने वाला। विनाशक।

महफिल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सभा। जलसा। २-नाच-गाने का स्थान या जलसा।

महफ़ूज [वि.] (अ.) सुरक्षित।

महबूब [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. महबूबा] १-वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रेमपात्र। २-मित्र। दोस्त।

महबूबा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रेमिका। माशूक।

महमंत* [वि.] (हिं.) मदमस्त। उन्मत। मदमत्त।

महमद* [संज्ञा पु.] देखो 'मुहम्मद'।

महमदी* [वि.] (हिं.) मुसलमान।

महमह [क्रि. वि.](हिं.) सुगन्धि या खुशबू-सहित

महमहण [संज्ञा पु.] (डि.) विष्णु।

महमहा [वि.] (हिं.) सुगंधित। खुशबूदार।

महमहाना [क्रि. अ.] (हिं.) गंध या महक देना। गमकना।

महमा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'महिमा'।

महमान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेहमान'।

महमानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेहमानी'।

महमाय [संज्ञा स्त्री.] (डि.) पार्वती।

महमूदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का पुराना छोटा सिक्का।

महमेज़ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जूते के पीछे की ओर जड़ी की एक प्रकार की लोहे की नाल जिससे सवार घोड़े को ऐंड़ लगाता है।

महम्मद [संज्ञा पु.] देखो 'मुहम्मद'।

महर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. महरी] १-एक आदर-सूचक शब्द जो बड़े आदमियों के लिए व्रज में व्यवहृत होता है। २-एक प्रकार का पक्षी। ३-देखो 'महरा'। [वि.](डि.) दयालु। दयावान्। [संज्ञा पु.] (अ.) १-विवाह के समय वर की ओर से वधू को दी जाने वाली संपत्ति (मुसलमान)। *महर बाँधना*-महर के लिए धन अथवा संपत्ति नियत करना।
[वि.] (हिं.) सुगंधित।

महरबान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेहरबान'।

महरम [संज्ञा पु.] (अ.) १-मुसलमानी धर्मानुसार किसी कन्या अथवा स्त्री के लिए उसका कोई ऐसा निकट-सम्बन्धी जिसके साथ उसका विवाह न हो सकता हो। २-भेद या रहस्य का जानकार। [संज्ञा स्त्री.] १-अँगिया का मुलकट या कटोरी। २-अँगिया।

महरा [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. महरी] १-कहार। २-सरदार। मुखिया। ३-श्वसुर के लिए आदरसूचक शब्द (चमार)। [वि.] श्रेष्ठ। बड़ा।

महराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रधानता। श्रेष्ठता।

महराज [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महाराज'।

महराजा*+ [संज्ञा पु.] देखो 'महाराज'।

महराण [संज्ञा पु.] (डि.) समुद्र।

महराना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह स्थान, मुहल्ला या गांव जहां महरे रहते हों। २-देखो 'महाराणा'।

महराव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेहराव'।

महरि [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-व्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए एक आदरसूचक शब्द। २-घरवाली। मालकिन। ३-दहिंगल या ग्वालिन नामक पक्षी।

महरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'महरि'।

महरुआ [संज्ञा पु.] (देश.) जस्ता (सुनार)।

महरू [संज्ञा पु.] (देश.) १-वह नली जिससे चंडू पीते हैं। २-वृक्ष विशेष।

महरूम [वि.] (अ.) जिसे न मिले। वंचित।

महरेटा [[संज्ञा पु.] (हिं.) १-महर का बेटा। २-श्रीकृष्ण।

महरेटी [संज्ञा स्त्री] (हि.) वृषभानु महर की लड़की, श्रीराधिका।

महर्घ [वि.] (सं.) देखो 'महार्घ'।

महर्घता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महँगी।

महर्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार चौदह लोकों में से एक।

महर्षभ [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा साँड़। [वि.](सं.) अति श्रेष्ठ।

महर्षभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंछ।

महर्षि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा और श्रेष्ठ। २-एक राग का नाम।

महर्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद कंटकारी।

महल [संज्ञा पु.] (अ.) १-राजा या ईसाई आदि के रहने का बहुत बढ़िया और बड़ा मकान। प्रासाद। २-रनिवास। अन्तःपुर। ३-बड़ा कमरा। ४-अवसर। मौका। पहाड़ी मधुमक्खी। डंगर।

महलसरा [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा) अन्तःपुर। रनिवास।

महलाठ [संज्ञा पु.](देश.) एक लम्बी दुम वा पक्षी जिसकी पीठ खाकी और पैर काले के होते हैं।

महलीपटैला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ी नाव।

महल्ला [संज्ञा पु.] (अ.) शहर या नगर का वह भाग जिसमें बहुत से मकान आदि हों। महल्लेदार-महल्ले का चौधरी।

महसिल [संज्ञा पु.] (हिं.) उगाहने वाला। महसूल आदि उगाहने वाला।

महसीर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली

महसूल [संज्ञा पु.](अ.) १-वह धन जो राज्य या सरकार किसी विशेष कार्य के लिए ले। शु टैक्स। २-भाड़ा। किराया। ३-जमीन का लगान। मालगुजारी।

महसूली [वि.] (अ.) जिस पर किसी प्रकार का महसूल लगाया या लिया जा सकता हो। महसूल के योग्य।

महसूस [वि.] (अ.) जिसका ज्ञान या अनुभव हो। अनुभूत।

महाँ* [अव्यय](हिं.) देखो 'महँ'। [वि.] देखो 'महा'।

महा [वि.] (सं.) १-बहुत अधिक। २-सर्वश्रेष्ठ। सबसे बड़ा। बहुत बड़ा। [संज्ञा पु.] (हिं.) मट्ठा। छाछ।

महाअन्वेषक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी न्यायालय की ओर से अन्वेषण या तहकीकात करने वाला सबसे बड़ा कर्मचारी। इनविस्टिगेटर-जनरल।

महाअरंभ [वि.] (हिं.) बहुत शोर। भारी हलचल।

महाअहिं [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

महाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मथने का काम। २-नील के रंग को मथने का काम। ३-मथने का भाव। ४-मथने की मजदूरी।

महाउत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महावत'।

महाउर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महावर'।

महाकंकर, महाकङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

महाकंद, महाकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-लहसुन २-प्याज।

महाकच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-वरुण देव। ३-पर्वत। पहाड़। ४-एक प्राचीन देश का नाम।

महाकंबु, महाकम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाकन्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रवरकार ऋषि का नाम।

महाकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक दैत्य का नाम। २-एक बोधिसत्व का नाम।

महाकपित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का वृक्ष।

महाकपोत [संज्ञा पु.] (सं.) २६ प्रकार के विषधर

सर्पों में से एक (सुश्रुत)।

महाकपोल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

महाकरंज [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का करंज जो साधारण करंज से बड़ा होता है।

महाकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम

महाकरुण [वि.] (सं.) बहुत दयालु।

महाकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

महाकर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

महाकर्णिकार [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

महाकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों के मतानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है।

महाकांत, महाकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाकांता, महाकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी

महाकांतार, महाकान्तार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम।

महाकाय [संज्ञा पु.](सं.) शिव का नन्दी नामक गण और द्वारपाल। २-हाथी।
[वि.] (सं.) जिसका शरीर बहुत बड़ा हो। बड़े डीलडौल वाला।

महाकारण [संज्ञा पु.] (सं.) सब कर्मों का कारण परमेश्वर।

महाकार्त्तिकी [संज्ञा स्त्री] (सं.) रोहिणीनक्षत्र में पड़ने वाली कार्त्तिक-पूर्णिमा।

महाकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-शिव के एक गण का नाम। ३-शिव के एक पुत्र का नाम। ४-समय जो विष्णु समान अनन्त और अखंड है।

महाकालपुर [संज्ञा पु.] (सं.) उज्जैन।

महाकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाकालरूप शिव की पत्नी, जिनके पास पांच मुख और आठ भुजाएँ बताई जाती हैं। २-दुर्गा की एक मूर्ति। ३-शक्ति की एक अनुचरी। ४-जैनमतानुसार सोलह विद्या देवियों में से एक।

महाकालेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम

महाकाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-साहित्यशास्त्रानुसार वह सर्गबद्ध काव्यग्रंथ जिसका नायक कोई देवता, राजा, या धीरोदात्त, गुणसम्पन्न क्षत्रिय होता है। इसमें श्रृङ्गार, वीर या शान्ति रसों में से कोई रस प्रधान होता है। बीच-बीच में अन्य रसों का समावेश होना आवश्यक है। इसमें कम से कम आठ सर्ग अवश्य होने चाहिऐं। इसमें संध्या, रात्रि, प्रभात, मृगया, पर्वत, वन, ऋतु, सागर, सम्भोग, विप्रलंभ, मुनि, पुर, यज्ञ, रणप्रयाण विवाह आदि का यथास्थान वर्णन होना चाहिए। २-बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्य।

महाकाश [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

महाकुंड, महाकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

महाकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का सबसे बड़ा पुत्र। युवराज।

महाकुमुदा [संज्ञा पु.] (सं.) गंभारी।

महाकुल [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ हो। कुलीन।

महाकुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) गलित कुष्ट।

महाकूट [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक देश का नाम।

महाकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का नाम।

महाकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का बहुत जहरीला साँप। २-एक प्रकार का चूहा।

महाकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाकोश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाकोशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम

महाकोशातकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घीयातोरई। (तरकारी)।

महाक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा यज्ञ।

महाक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

महाक्रोध [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी।

महाक्लीतन [संज्ञा पु.] (सं.) शालिपर्णी।

महाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु।

महाक्षत्रप [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. महाक्षत्रापानी] १-किसी उपनिवेश का प्रधान शासक जिसके अधीन कई राज्यों के राज्यपाल हों। गवर्नर-जेनरल-२-किसी अधीन देश का वह प्रधान शासक जो शासक देश की ओर से नियुक्त किया जाता है। *वाइसराय*।

महाक्षय [अव्यय.] (निवेश) [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपनिवेश या भूमि जिसके रखने में धन का बहुत खर्च हो।

महाक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) ईख। ऊख।

महाक्षेत्र [संज्ञा पु.](सं.) एक तीर्थ जिसका उल्लेख कलिकापुराण में मिलता है।

महाक्षौम्य [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

महाखर्व [संज्ञा पु.] (सं.) सौ खर्व्व की संख्या।

महागंगा, महागङ्गा [संज्ञा स्त्र.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम।

महागंध, महागन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुटज। २-जलबेंत। ३-चन्दन।

महागंधा, महागन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागबला। २-केवड़ा। ३-चामुण्डा का एक नाम।

महागज [संज्ञा पु.] (सं.) दिग्गज।

महागण [संज्ञा पु.] (सं.) १-महासमुद्र। २-लोगों का समूह। भीड़।

महागणपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव के एक अनुचर का नाम। २-गणपति। गणेश।

महागति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बड़ी संख्या (बौद्ध)।

महागद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्वर। बुखार। २-ऐसा रोग जो कठिनता से अच्छा हो। ३-औषध विशेष।

महागर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महागर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-एक दैत्य का नाम।

महागव [संज्ञा पु.] (सं.) गाय के सामान एक पशु जिसके गले में झालर न हो।

महागिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-विशाल पर्वत। बड़ा पहाड़। २-कुबेर के आठ पुत्रों में से एक।

महागीत [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महागुद [संज्ञा पु.] (सं.) कफ से उत्पन्न होने वाले एक प्रकार के कीड़े जिनका उल्लेख चरक में है।

महागुनी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महोगनी'।

महागुल्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

महागोधूम [संज्ञा पु.] (सं.) बड़े दाने का गेहूँ।

महागोपा [संज्ञा स्त्री] (सं.) अनंतमूल। शारिवा

महागौरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-पुराण वर्णित एक नदी।

महाग्रंथिक, महाग्रन्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी औषध जिसके सेवन से रोग बढ़ने से रुक जाय।

महाग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) राहु।

महाग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक देश नाम। ३-शिव के एक अनुचर का नाम। ४-ऊँट।

महाघटक [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रधान प्रतिनिधि जो किसी एक देश की ओर से उसके हितों की रक्षा के लिए नियुक्त किया जाता है। महाभिकर्त्ता। ऐंजेंट जेनरल।

महाघूर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुरा। शराब।

महाघृत [संज्ञा पु.] (सं.) एक सौ ग्यारह वर्ष पुराना घी जो वैद्यक में बहुत गुणकारी माना जाता है।

महाघोर [वि.] (सं.) अति भयानक।

महाघोष [संज्ञा पु] (सं.) १-भारी शब्द। २-हाट। बाजार।

महाघोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासिंगी।

महाचंचु, महाचञ्चु [संज्ञा पु.](सं.) चेंच नामक साग।

महाचंड, महाचण्ड [वि.] (सं.) प्रचंड। भयानक। [संज्ञा पु.] १-यम के दूत। २-शिव के एक अनुचर का नाम।

महाचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

महाचक्रवर्ती [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा चक्रवर्ती

राजा। सम्राट्।

महाचक्रजल [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध के मतानुसार एक पर्वत का नाम।

महाचक्री [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विष्णु। २-वह जो षड़यंत्र रचने में बहुत प्रवीण हो।

महाचपला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह आर्याछन्द जिसके दोनों दलों में चपलाछन्द के लक्षण हों।

महाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाचित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

महाचूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्कन्द की एक मातृका का नाम।

महाच्छाय [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।

महाजंबीर, महाजम्बीर [संज्ञा पु.] (सं.) कमला नीबू।

महाजंबु, महाजम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा जामुन।

महाजंभ, महाजम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

महाजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठ पुरुष। २-साधु ३-धनी व्यक्ति। धनवान। ४-भलामानुस। ५-रुपये-पैसे का लेनदेन करने वाला। कोठीवाल। ६-ऋण देने वाला। धनी। क्रेडिटर।

महाजनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-रुपये के लेनदेन का व्यवसाय। कोठीवाली। २-महाजनों के बहीखाता लिखने में काम आने वाली एक लिपि। मुड़िया।

महाजय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

महाजल [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

महाजवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

महाजानु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

महाजाबालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

महाजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक दैत्य का नाम।

महाज्ञानी [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा ज्ञानी या पंडित। २-शिव।

महाज्योतिष्मती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी मालकँगनी।

महाज्वाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवन की अग्नि। २-एक नरक का नाम। ३-शिव।

महाज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों की एक विद्यादेवी का नाम।

महातत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महत्व'।

महातप्तकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक व्रत तीन दिन तक गरम दूध, गरम जल या गरम घी पीकर चौथे दिन उपवास किया जाता है।

महातम* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'महात्म्य'।

महातल [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह भुवनों या तलों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवां भुवन या तल।

महातारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की एक देवी का नाम।

महातिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-बकायन। २-चिरायता।

महातीक्ष्ण [वि.] (सं.) १-अत्यंत तीक्ष्ण या तेज २-बहुत कड़ुवा या झालदार।

महातेज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-पारा।

महातोप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युद्ध में काम आने वाली एक प्रकार की बड़ी तोप। ग्रेटगन।

महात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत श्रेष्ठ, उच्च विचारों वाला तथा सदाचारी पुरुष। २-बहुत बड़ा साधु या महापुरुष। ३-पितरों का एक गण। ४-महादेव। ५-महत्तत्व। ६-परमात्मा।

महात्रिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड़, बहेड़ा और आँवला इन तीनों का समूह।

महात्याग [संज्ञा पु.] (सं.) दान।

महात्यागी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महादंड, महादण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम के हाथ का दंड। २-यम के दूत।

महादंडधारी, महादण्डधारी [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

महादंत, महादन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-हाथी दाँत।

महादंता, महादन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाग बेल

महादंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक असुर का नाम। ३-विद्याधर।

महादान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दान जो ग्रहण आदि के समय दिया जाता है। २-तुला पुरुष, सोने की गौ या घोड़ा आदि और भूमि हाथी, रथ, कन्या आदि पदार्थों का दान जो स्वर्ग प्राप्ति के लिए किये जाते हैं।

महादारु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार।

महादूत [संज्ञा पु.] (सं.) यमदूत।

महादूषक [संज्ञा पु.] (सं.) एक धान जिसका उल्लेख सुश्रुत में है।

महादेव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। शंकर।

महादेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-पटरानी।

महादेश [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के स्थल भागों के पांच बड़े विभागों में से कोई एक, जिसमें अनेक देश होते हैं। कान्टिनेन्ट।

महादैत्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक दैत्य का नाम।

महाद्रावक [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में औषध विशेष।

महाद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीपल। २-ताड़। ३-महुआ। ४-एक वर्ष या देश का नाम।

महाद्रोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-महादेव। २-सुमेरु-पर्वत।

महाद्रोणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रोणपुष्पी।

महाद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महादेश'।

महाधन [वि.] (सं.) १-बहुमूल्य। २-बहुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-सुगन्ध धूप। ३-कृषि। खेती।

महाधिकारपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सन् १२१५ इंगलैंड देश का प्रसिद्ध राजकीय पत्र। काट्टा।

महाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के देवता का नाम।

महाधिवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा वक्ता या अभिभाषक जो पद मर्यादा (साधारण अधिवक्ताओं या अभिभाषकों) बहुत उच्च होता है। महा व्यवहारि प्रधान सरकारी एडवोकेट। एडवोकेट-ज रल। [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा सरकारी वकील जो राजकीय मुकदमों की पैरवी के लिये नियुक्त होता है। महा-व्यवहारि प्रधान सरकारी एडवोकेट। एडवोकेट-जन

महाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) किसी छोटे प्रांत प्रधान शासक। मुख्य प्रदेष्टा। चीफ कमि

महाध्वनि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक दै का नाम।

महाध्वनिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो पुण्य के लिये हिमालय में गया हो और वहां गया हो।

महान् [वि.] (सं.) बहुत बड़ा। विशाल।

महानंद, महानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-म के एक प्रतापी राजा का नाम जिसके डर सिकन्दर आगे न बढ़ सका। २-इस की मुरली। ३-मुक्ति। मोक्ष।

महानंदा, महानन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १- शराब। २-माघशुक्ला-नवमी। ३- की एक छोटी नदी का नाम।

महानक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का चमड़ा मढ़ा बाजा।

महानग्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेमी। २- उपपति या यार। ३-प्राचीनकाल का राजकर्मचारी जो बहुत ऊँचे पद पर होता

महानट [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'महत्व' 'महत्ता'।

महानद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार नद का नाम। २-एक तीर्थ का नाम।

महानरक [संज्ञा पु.] (सं.) २१ बड़े नरकों में एक।

महानल [संज्ञा पु.] (सं.) भयंकर आग।

महानवमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन शु नवमी।

महानस [संज्ञा पु.] (सं.) रसोईघर।

महानागरिक [संज्ञा पु.] (सं.) नगरपालिका प्रधान। लार्ड-मेयर।

महानाटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नाटक जिसमें दस अंक होते हैं।

महानाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोटी नस।

महानाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-ऊँट। ३-सिंह। ४-मेघ। बादल। ५-शंख। ६-बड़ा ढोल। ७-शिव।

महानाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र विफल हो जाते हैं। २-एक दानव का नाम। ३-हिरण्यकशिपु के एक पुत्र का नाम।

महानारायण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महानास [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

महानिंब, महानिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) बकायन।

महानिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृत्यु। मौत।

महानिधान [संज्ञा पु.] (सं.) बुभिक्षित धातुभेदी पारा जिसको बावन तोला पावरत्ती भी कहते हैं।

महानियम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महानियुक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा नियुक्तक या अभिकर्ता जो पद-मर्यादा आदि में (साधारण नियुक्तक अभिकर्त्ता से) बहुत उच्च होता है। सबअधिकार सम्पन्न वह बड़ा वकील जो सरकारी मुकदमों की पैरवी के लिए नियुक्त होता है। एटारनी-जनरल।

महानियुत [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के मतानुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महानिरय [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

महानिर्वाण [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के मतानुसार वह उच्चकोटि का निर्वाण या परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी अर्हत या बुद्ध होते हैं।

महानिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आधी रात। २-कल्प के अन्त में होने वाली प्रलय की रात।

महानिशीथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक सम्प्रदाय का नाम।

महानीच [संज्ञा पु.] (सं.) धोबी।

महानीबू [संज्ञा पु.] (हि.) बिजौरा नीबू।

महानील [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का नीलम नामक रत्न जो सिंहल द्वीप में होता है। २-भृङ्गराजपक्षी। ३-एक प्रकार का गुग्गल। ४-एक नाग। ५-एक पर्वत का नाम। ६-सब से बड़ी संख्या।

महानुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा भारी आदरणीय व्यक्ति।

महानुभावता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महानुभाव होने का भाव।

महानुराग [वि.] (सं.) ऐकांतिक प्रेम।

महानृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महानेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महानेमि [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौआ।

महान्यायवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा न्यायवादी या नियुक्तक जो पद मर्यादा आदि से (साधारण न्यायवादियों या नियुक्तकों से) बहुत उच्च होता है। महानियुक्तक। सर्वअधिकारसम्पन्न वह बड़ा सरकारी वकील जो सरकारी मुकदमों की पैरवी के लिये नियुक्त होता है। *एटारनी जनरल।*

महान्यायसभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) महान् पंचायत

महापंचमूल, महापञ्चमूल [संज्ञा पु.] (सं.) पाँच वृक्षों की जड़ों का समूह (बेल, अरनी, सोनापाढ़ा, काश्मरी और पाटला) इसका व्यवहार वैद्यक में होता है।

महापंचविष, महापञ्चविष [संज्ञा पु.] (सं.) इन पाँच विषों का समूह-शृङ्गी, कालकूट, मुस्तक, बछनाग और शंखकर्णी।

महापंचांगुल, महापञ्चाङ्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल अंडी का वृक्ष।

महापक्ष, महापक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-उल्लू। ३-एक प्रकार का राजहंस।

महापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

महापथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत लम्बा और चौड़ा मार्ग। राजपथ। २-परलोक का मार्ग। मृत्यु। मौत। ३-२१ नरकों में से सोलहवाँ। ४-हिमालय के एक तीर्थ का नाम। ५-सुषुम्ना नाड़ी। ६-शिव।

महापथगमन [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। मौत।

महापथिक [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत पर प्राण त्यागने के उद्देश्य से जाने वाला व्यक्ति।

महापद्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौ-पद्म की संख्या। २-कुबेर की नौ-निधियों में से एक। ३-आठ दिग्गजों में से एक। ४-हाथियों की एक जाति ५-एक प्रकार का दैत्य। ६-सफेद कमल। ७-महाभारतकालीन एक नगर का नाम। ८-सफेद कमल। ९-कुबेर के एक अनुचर का नाम जो किन्नर था।

महापद्य [संज्ञा पु.] (सं.) महाकाव्य।

महापनस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साँप। (सुश्रुत)।

महापरिदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा परिदर्शक या निरीक्षक जो पद मर्यादा आदि में (साधारण परिदर्शकों या निरीक्षकों से) उच्च होता है। *इन्सपेक्टर जनरल।*

महापरिपालक [संज्ञा पु.] (सं.) वह बड़ा परिपालक या प्रशासक जो पद मर्यादा आदि में (साधारण परिपालकों या प्रशासकों से) उच्च होता है। *ऐडमिनिस्ट्रेटर जनरल।*

महापर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शालवृक्ष।

महापवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महापात [संज्ञा पु.] (सं.) बाण या तीर का दूरी पर गिरना।

महापातक [संज्ञा पु.] (सं.) मनु के मतानुसार पांच बड़े पाप। ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी से व्यभिचार तथा इन पाप करने वालों का साथ।

महापातकी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने महापातक किया हो। [वि.] (सं.) महापातक करने वाला। बड़ा पापी।

महापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृतककर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण। २-महामन्त्री।

महापाद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महापाप [संज्ञा पु.] (सं.) महापातक।

महापार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक दानव। २-एक राक्षस का नाम।

महापाश [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक प्रकार का यमदूत।

महापाशुपत [संज्ञा पु.] (सं.) १-मौलसिरी। २-शैवों का एक प्राचीन संप्रदाय।

महापासक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धभिक्षुक।

महापितृयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का श्राद्ध।

महापीठ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'पीठ'।

महापीलु [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का पीलुवृक्ष।

महापुट [संज्ञा पु.] (सं.) रस तैयार करने का एक ढंग।

महापुण्य [संज्ञा पु.] एक बोधिसत्व का नाम।

महापुण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम (पुराण)।

महापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पोता।

महापुमान् [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम (महाभारत)।

महापुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा नगर जो दुर्ग आदि भली प्रकार से रक्षित हो। २-एक तीर्थ (महाभारत)।

महापुरशासक [संज्ञा पु.] (सं.) जो किसी महाप्रांत का अधिकरणिक। प्रेसिडेन्सी-मजिस्ट्रेट

महापुराण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'पुराण'।

महापुराधिकरणिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महापुर-शासक'।

महापुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजधानी।

महापुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंदवृक्ष। २-काला मूँग। ३-लाल कनेर। ४-एक प्रकार का कीड़ा (सुश्रुत)।

महापुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराजिता।

महापुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठ पुरुष। २-नारायण। ३-दुष्ट। पाजी (व्यंग्य)।

महापूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन की नवरात्र में की जाने वाली दुर्गा की पूजा।

महापृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊंट। २-एक अनुवाक का नाम।

महाप्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम

महाप्रजापति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महाप्रतिहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन काल में नगर या प्रासाद की रक्षा करने वाले प्रतिहारों या चौकीदारों की देख-भाल करने वाला उच्च कर्मचारी। २-राजशयनागर प्रतिहार। ३-नगर शान्ति रखने वाला अधिकारी

महाप्रबंधक, महाप्रबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महापरिपालक'।

महाप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

महाप्रभु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वल्लभाचार्य जी की एक आदरसूचक पदवी। २-एक आदरसूचक पदवी जो बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य चैतन्य के लिए होती है। ३-ईश्वर। ४-शिव। ५-विष्णु। ६-इन्द्र। ७-राजा।

महाप्रलय [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रलय जिसमें सारी सृष्टि का विनाश होता है।

महाप्रशासक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महाप्रतिपालक'।

महाप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-जगन्नाथजी का चढ़ा हुआ भात। २-ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। ३-मांस (व्यंग्य)।

महाप्रक्षुत [संज्ञा पु.](सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महाप्रस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राण त्यागने की इच्छा से हिमालय की ओर जाना। २-मरण। देहांत।

महाप्रांत, महाप्रान्त [संज्ञा पुं.] (सं.) साधारण प्रांत से कुछ बड़ा प्रांत। प्रेसिडेंसी।

महाप्रांतशासन, महाप्रान्तशासन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बड़े प्रांत की सरकार। प्रेसिडेंसी-गवर्नमेंट।

महाप्राज्ञा [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा ज्ञानी।

महाप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण करने में प्राणवायु का विशेष प्रयोग करना पड़ता है। वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा महाप्राण हैं।

महाबल [वि.] (सं.) अतिशय बलवान्। [संज्ञा पु.] १-पितरों के एक गण का नाम। २-बुद्ध। ३-वायु। ४-सीसा। ५-एक नाग का नाम। ६-शिव के एक अनुचर का नाम। ७-तामस और मन्वंतर के एक इन्द्र का नाम।

महाबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सहदेवी नामक जड़ी। २-पीपल। ३-नील का पौधा। ४-कार्तिकेय की एक अनुचरी का नाम। ५-एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महाबलाधिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुप्तकालीन राज्य का वह सर्वप्रधान अधिकारी जिसके अधीन सारी सेना होती थी और जो सैनिक राज्यमंत्री होता था। २-देखो 'कमांडर'।

महाबलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-गुफा ३-मन।

महाबली [वि.] (हिं.) बहुत बड़ा बलवान।

महाबाहु (वि.) (सं.) १-लंबी भुजा वाला। २-बली। बलवान्। [संज्ञा पु.] (सं.) १-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २-एक राक्षस का नाम। ३-विष्णु का एक नाम।

महाबुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के बुद्ध जो साधारण बुद्धों में श्रेष्ठ माने जाते हैं।

महाबुद्धि [वि.] (सं) १-तीव्र बुद्धिवाला। २-धूर्त।

महाबृहती [संज्ञा पु.] (सं.) बारह वर्ण का एक वैदिक छंद जो तीन पद का होता है।

महाबोधि [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

महाब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृतक-कर्म का दान लेने वाला ब्राह्मण।

महाभट [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत भारी

महाभद्र [संज्ञा पु.](सं.) १-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २-एक सरोवर का नाम।

महाभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा। २-काश्मरी।

महाभय [संज्ञा पु.] (सं.) अधर्म के एक पुत्र का नाम।

महाभया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

महाभरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलंजन।

महाभाग [वि.] (सं.) भाग्यवान्।

महाभागवत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पुराण का नाम। २-छब्बीस मात्राओं के छन्दों की संज्ञा ३-परम वैष्णव। ४-मनु, सनकादि, नारद आदि बारह महाभक्त।

महाभागा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाक्षायणी का एक नाम।

महाभारत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक परम प्रसिद्ध संस्कृतभाषा का प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य इसमें कौरवों और पांडवों का वृतांत मुख्यतया है। इसमें अठारह पर्व हैं। यह वेदव्यास जी का रचा हुआ है। २-कोई बड़ा युद्ध। ३-कोई बड़ा ग्रन्थ।

महाभाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिनि के व्याकरण पर पतंजली का लिखा हुआ प्रसिद्ध भाष्य।

महाभिकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महाघटक'।

महाभिक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) भगवान बुद्ध।

महाभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़े अधिकारियों पर कोई बहुत अनुचित अथवा हानिकारक कार्य करते पर चलता है। इम्पीचमेंट।

महाभीत [वि.] (सं.) बड़ा डरपोक।

महाभीम [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा शांतनु। शिव के एक द्वारपाल का नाम।

महाभीरु [वि.] (सं.) बहुत अधिक डरने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) ग्वालिन नामक बरसाती कीड़ा।

महाभीष्म [संज्ञा पु.] (सं.) राजा शान्तनु का एक नाम।

महाभुज [वि.] (सं.) लम्बी बाहों वाला।

महाभूत [वि.](सं.) पंचतत्त्व। (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)।

महाभूमि [संज्ञा पु.](सं.) (प्राचीन भारत में) भूमि जिस पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार न हो तथा जो जनता के काम आती हो पब्लिक प्लेस।

महाभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) मूल्यवान आभूषण।

महाभृंग, महाभृङ्ग [संज्ञा पु.] भँगरा नामक पौधा जिसमें नीले फूल लगते हैं।

महाभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाभैरवी [संज्ञा पु.] (सं.) एक विद्या का नाम। (तांत्रिक)।

महाभोग [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

महाभोगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

महाभोगी [संज्ञा पु.] (सं.) बड़े फन वाला साँप।

महाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) घनघोर घटा।

महामंत्र, महामन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभावंशाली मन्त्र जिसकी सहायता से किसी कार्य का होना निश्चित हो। मन्त्र।

महामंत्री, महामन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश या राज्य का वह मन्त्री जो और सब मन्त्रियों का प्रधान या मुख्य होता है। प्रधानमन्त्री। प्रधान सचिव। प्राइम मिनिस्टर।

महामख [संज्ञा पु.] (सं.) कोई बड़ा यज्ञ।

महामणि [संज्ञा पु.] (सं.) मूल्यवान रत्न।

महामति [वि.] (सं.) बड़ा बुद्धिमान। [संज्ञा पु.] १-एक बोधिसत्त्व का नाम। २-गणेश। ३-एक यक्ष का नाम।

महामत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार एक बड़ी मछली जो स्वयंभूरमण सागर में है।

महामद [संज्ञा पु.] (सं.) मस्त हाथी। [वि.] (सं.) बहुत प्रसन्न।

महामना [वि.] (हि.) बहुत उच्च और उदार मन वाला। महानुभाव।

महामयूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बौद्ध देवी का नाम।

महामह [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा उत्सव।

महामहिम [वि.] (सं.) जिसकी महिमा बहुत अधिक हो।

महामहोपाध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुरुओं का गुरु। एक प्रकार की उपाधि जो अंग्रेजों के राजत्वकाल में संस्कृत के विद्वानों को दी जाती थी।

महामांस [संज्ञा पु.] (सं.) गाय या मनुष्य का

मांस। (परम निषिद्ध)।

महामाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-दुर्गा। २-काली।

महामात्य [संज्ञा पु.] (सं.) महामन्त्री। प्रधान सचिव।

महामात्र [वि.] (सं.) १-प्रधान। बड़ा। २-समृद्ध। संपन्न। ३-धनवान। [संज्ञा पु.] १-महामात्य। २-महावत। ३-हाथियों का निरीक्षक।

महामानसिका, महामानसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों की एक देवी का नाम।

महामानी [वि.] (हि.) बहुत बड़ा घमंडी।

महामाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकृति। २-दुर्गा ३-गंगा। ४-गौतम बुद्ध की माता का नाम। ५-आर्या छंद का एक भेद जिसमें पन्द्रह गुरु और २७ लघु वर्ण होते हैं। [संज्ञा पु.] १-विष्णु। २-शिव। ३-एक दैत्य का नाम। ४-एक विद्याधर का नाम। [वि.] मायावी।

महामायाधर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महामारी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वह संक्रामक रोग जिसके कारण एक साथ या जल्दी-जल्दी बहुत सारे लोग मरें। मरी। २-महाकाली का एक नाम।

महामाल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महामालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।

महामालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाराचछन्द का एक नाम।

महामाष [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा उड़द।

महामाषतैल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार आयुर्वैदिक तेल।

महामुंड, महामुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) बोल नामक गंधद्रव्य।

महामुंडनिका, महामुण्डनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

महामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-नदी का मुहाना। ३-एक जलजंतु जिसे कुंभीर कहते हैं।

महामुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-योग में एक प्रकार की मुद्रा। २-एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महामुनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा मुनि। २-ठग। धोखेबाज (व्यंग्य)। ३-बुद्ध। ४-व्यास। ५-अगस्त्यऋषि। ६-एक जिन का नाम। ७-काल। ८-कृपाचार्य। ९-तुंबुरु का वृक्ष।

महामूढ़, महामूर्ख [वि.] (सं.) बड़ा बेवकूफ।

महामूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महामूल [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज।

महामूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) माणिक। [वि.] १-जिसका मूल्य अधिक हो। २-महँगा।

महामृग [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

महामृत्युंजय, महामृत्युञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक मन्त्र विशेष।

महामृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम। २-शिव।

महामेघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-काली घटा

महामेद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महामेदा'।

महामेदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कन्द जो देखने में अदरक के समान होता है।

महामैत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

महामैत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रगाढ़ मित्रता।

महामोदकारी [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णिकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ यगण होते हैं।

महामोह [संज्ञा पु.] (सं.) सांसारिक सुखों के भोग की कामना जो अविद्या का रूपांतर है।

महामोहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम।

महाय* [वि.] (हिं.) महान्। बहुत। अधिक।

महायक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-यक्षों का राजा। २-एक प्रकार के बौद्ध देवता।

महायज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) हिन्दू धर्मशास्त्रानुसार प्रतिदिन किये जाने वाले कर्म। यह मुख्यतः पाँच हैं-ब्रह्मयज्ञ (संध्योपासन), देवयज्ञ (हवन), पितृयज्ञ (तर्पण), भूतयज्ञ (बलि) और नृयज्ञ (अतिथि-सत्कार)।

महायम [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

महायमक [संज्ञा पु.] (सं.) श्लोक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में शब्दात्मक वर्णमाला दी जाती है परन्तु अर्थ में भेद रहता है।

महायशस्वी [वि.] (सं.) बड़ा यश प्राप्त करने वाला।

महायात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मौत।

महायान [संज्ञा पु.](सं.) १-बौद्धों के तीन प्रधान सम्प्रदायों में से एक। २-एक विद्याधर का नाम।

महायाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

महायाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महायुग [संज्ञा पु.] (सं.) सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चार युगों का समूह ही देवताओं का एक युग होता है। देवताओं का युग।

महायुत [संज्ञा पु.] (सं.) सौ अयुत की एक संख्या का नाम।

महायुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा युद्ध जो बड़े-बड़े देशों या राष्ट्रों के गुटों में परस्पर होता है

महायुध [संज्ञा पु.] (स.) शिव।

महायोगी [संज्ञा पु.](सं.) १-शिवजी। २-विष्णु ३-मुर्गा।

महायोगेश्वर [संज्ञा पु.](सं.) पितामह, पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरा, क्रतु और कश्यप जो बहुत बड़े ऋषि तथा योगी माने जाते हैं।

महायोगेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-नागदमनी।

महायोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्रियों की योनि बढ़ जाने का एक रोग। (वैद्यक)।

महायौगिक [संज्ञा पु.] (सं) उनतीस मात्राओं के छन्दों की एक संज्ञा।

महार्घ्य [वि.] (स.) पूजने योग्य।

महारंभ, महारम्भ [वि.] (सं.) जिसका आरंभ करने में बहुत अधिक यत्न करना पड़े।

महारक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों के अनुसार पाँच देवियों के नाम जो इस प्रकार हैं-महामायुरी, महासहस्रप्रमर्दिनी, महाशीतवती, तथा महामंत्रानुसारिणी।

महारक्त [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगा। प्रवाल।

महारजत [संज्ञा पु.] (सं) १-स्वर्ण। सोना। २-धतूरा।

महारजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुसुम का फूल। २-सोना।

महारण [संज्ञा पु.] (सं.) महायुद्ध। बड़ी लड़ाई।

महारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) भारी और घना जंगल।

महारत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अभ्यास।

महारत्न [संज्ञा पु.] (सं.) हीरा, मोती, वैदूर्य्य, पद्मराग, गोमेद, पुष्पराग (पुखराज), पन्ना, मूंगा और नीलम इन नौ रत्नों में से कोई।

महारत्नवर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं) तांत्रिकों की एक देवी का नाम।

महारथ, महारथी [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा योद्धा, जो अकेला दस हजार योद्धाओं से लड़ सके।

महारथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौड़ी सड़क।

महारस [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँजी। २-खजूर। ३-ऊख। ४-कसेरू। ५-पारा। ६-सोनामक्खी। ७-रूपामक्खी। ८-अभ्रक। ९-ईंगुर। १०-जामुन का पेड़। ११-कांतिसार लोहा।

महाराज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. महारानी] १-बहुत बड़ा राजा। २-ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए आदरसूचक संबोधन।

महाराजाधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक राजाओं का प्रधान राजा।

महाराजिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के देवता

महाराज्ञी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-महारानी।

महाराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा राज्य। साम्राज्य।

महाराणा [संज्ञा पु.](सं.) मेवाड़ और नैपाल के राजाओं की उपाधि।

महारात्रि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-आधीरात। २-महाप्रलय की रात। ३-दुर्गा।

महारानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी महाराजा की रानी। बड़ी रानी।

महारावण [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों में वर्णित वह

रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।

महारावल [संज्ञा पु.] (सं.) जैसलमेर, डूँगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा राष्ट्र। २-दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। ३-इस प्रदेश के निवासी।

महाराष्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाराष्ट्र में बोली जाने वाली भाषा। मराठी। २-जलपीपल।

महारुज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी पीड़ा। भारी दुःख।

महारुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

महारूप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महारूपक [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक।

महारुरु [संज्ञा पु.] (सं.) मृगों की एक जाति।

महारूख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-थूहर। स्नुही। २-एक जङ्गली वृक्ष।

महारोग [संज्ञा पु.](सं.) बहुत बड़ा रोग। जैसे-कोढ़, तपेदिक, दमा, भगंदर आदि।

महारोगी [संज्ञा पु] (हिं.) वह जिसे कोई महा रोग हो।

महारौद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार एक नरक का नाम। २-एक प्रकार का साम।

महारौद्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

महारौरव [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में है।

महार्घ [वि.](सं.) १-बहुमूल्य। बहुत अधिक मूल्य का। २-मँहगा। उचित मूल्य से अधिक मूल्य।

महार्घता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महार्घ का भाव। महँगी।

महार्घ्य [वि.] (सं.) देखो 'महार्घ'।

महार्णव [संज्ञा पु.] (सं.) १-महासागर। बहुत बड़ा समुद्र। २-पुराणानुसार एक दैत्य। ३-शिव।

महार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

महार्थक [वि.] (सं.) अधिक मूल्य का।

महार्द्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोंठ। २-जङ्गली अदरख।

महार्बुद [संज्ञा पु.](सं.) सौ करोड़ अथवा दस अर्बुद की संख्या का नाम।

महार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद चन्दन। [वि.] (हिं.) देखो 'महार्घ'।

महाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह स्थान जहां बड़े-बड़े मकान हों। टोला। पाड़ा। २-जमीन के बन्दोबस्त के विचार से कई गांवों का समूह ३-भाग। हिस्सा। पट्टी।

महालक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-नारायण की एक शक्ति का नाम। २-लक्ष्मीदेवी की एक मूर्त्ति का नाम। ३-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन रगण होते हैं।

महालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितृपक्ष जो कुँआर के कृष्णपक्ष में होता है। २-तीर्थ। ३-नारायण। ४-पुराणवर्णित एक तीर्थ का नाम।

महालया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पितृपक्ष की अन्तिम तिथि। इस दिन पितृ-विसर्जन होता है।

महालस [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा आलसी।

महालिंग [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

महालेखापरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) आय-व्यय के लेखे की जांच-पड़ताल करने वाला उच्च अधिकारी। ऑडिटर-जनरल।

महालोक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महर्लोक'।

महालोध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पठानी लोध।

महालोभ [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौआ।

महालोल [संज्ञा पु.] (सं.) कौआ। काक।

महावक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

महावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जाड़े के दिनों में होने वाली वर्षा। जाड़े की झड़ी।

महावत [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी को चलाने या हांकने वाला। हाथीवान। फीलवान।

महावतारी [संज्ञा पु.](सं.) २५ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

महावध [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

महावन [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा और घना जंगल।

महावर [संज्ञा पु.] (हिं.) लाख से बनाकर एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर रंगती हैं। यावक। जावक।

महावरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब (घास)। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुहावरा'।

महावराह [संज्ञा पु.] (सं.) वराह अवतार।

महावरी [संज्ञा पु.] (हिं.) महावर की बनी टिकिया या गोली जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर रंगती हैं।

महावरेदार [वि.] (हिं.) देखो 'मुहावरेदार'।

महावरोह [संज्ञा पु.] (सं.) पलाश।

महावल्क [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल का पेड़।

महावल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माधवी-लता।

महावस [संज्ञा पु.] (सं.) मगर नामक जल-जन्तु

महावसु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रवरुण।

महावाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोऽहं शब्द। २-शंकराचार्य के मतावलंबियों के मतानुसार 'अहं ब्रह्मास्मि' 'तत्वमसि' 'प्रज्ञान ब्रह्म' तथा 'अयमात्मा-ब्रह्म' आदि उपनिषद् के वाक्य। ३-दान के समय पढ़ा जाने वाला संकल्प।

महावात [संज्ञा पु.](सं.) जोर की हवा। आंधी। तूफान।

महावामदेव्य [संज्ञा पु.] (सं.) शांतिकर्मों में पढ़ा जाने वाला साम।

महावायु [संज्ञा पु.] (सं.) आंधी। तूफान।

महावारुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगास्नान का एक योग।

महावार्त्ताकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनभंटा।

महावाहन [संज्ञा पु.](सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महाविक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह। २-एक नाग का नाम।

महाविज्ञ [वि.] (सं.) बड़ा भारी ज्ञानवान्।

महाविदेहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन की एक वृत्ति।

महाविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गादेवी। २-गंगा। ३-तंत्रोक्त दस देवियां जो इस प्रकार हैं—काली, तारा, षोड़सी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका।

महाविद्येश्वरा [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।

महाविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्याछन्द का एक भेद।

महाविभूत [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महाविभूति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

महाविराज [संज्ञा पु.](सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

महाविल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-

महाविशिष्ट [वि.](सं.) अति प्रसिद्ध बड़ा

महाविष [संज्ञा पु.] (सं.) वह विषधर सांप जिसके काटने से तुरन्त मृत्यु हो जाय।

महाविषुव [संज्ञा पु.] (सं.) वह समय जब सूर्य मीन से मेषराशि में जाता है तथा रात और दिन बराबर के होते हैं।

महावीचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम

महावीज [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी का वृक्ष।

महावीत [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करद्वीप के एक वर्ष का नाम।

महावीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-गरुड़। ३-देवता। ४-सिंह। ५-इन्द्र का एक नाम। ६-मनु के एक पुत्र का नाम। ७-सफेद घोड़ा। ८-बाजपक्षी। ९-जैनों के चौबीसवें तीर्थङ्कर जो महाराज सिद्धार्थ के पुत्र और विशला रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। [वि.] बहुत बड़ा वीर।

महावीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षीरकाकोली।

महावीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २- का नाम। ३-जैनों के एक अर्हत् का ४-वराहीकन्द। ५-तामस मन्वन्तर के एक इन्द्र का नाम।

महावीर्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सूर्य की स्त्री

नाम । २-वनकपास । ३-महाशतावरी ।

महावृक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-सेंहुड़ । २-करंज । ३-ताड़ । ४-महापीलु ।

महावृष [संज्ञा पुं.] (सं.) पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम ।

महावेग [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-गरुड़ ।

महावेगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्कन्द की एक अनुचरी का नाम ।

महावैर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारी शत्रुता ।

महाव्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'महारोग' ।

महाव्यावहारिक [संज्ञा पु.](सं.) राज्य की ओर से नियुक्त वह बड़ा वकील जिसे राजकीय मामलों की वकालत करने का पूरा अधिकार होता है । प्रधान सरकारी एडवोकेट । एडवोकेट-जनरल ।

महाव्याहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार सात लोकों में से पहले तीन लोकों का समूह

महाव्यूह [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की समाधि

महाव्रण [संज्ञा पु.] हिं.) देखो 'दुष्ट-व्रण' ।

महाव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेद की एक ऋचा । २-वह व्रत जो बारह वर्ष तक चलता रहे । ३-आश्विन में होने वाली दुर्गा पूजा ।

महाव्रती [संज्ञा पु.](सं.) १-कोई महाव्रत धारण करने वाला । २-शिव ।

महाव्रीहि [संज्ञा पु.] (सं.) साठीधान ।

महाशंख [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बहुत बड़ी संख्या का नाम । २-बड़ा शंख । ३-नौ-निधियों में से एक । ४-मनुष्य की ठठरी । ५-कान की हड्डी । ६-एक प्रकार का सांप ।

महाशक्ति [संज्ञा पु.] (सं) १-कार्त्तिकेय । २-शिव । ३-कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

महाशठ [वि.] (सं.) बड़ा दुष्ट । [संज्ञा पु.] पीला धतूरा ।

महाशतावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी शतावरी ।

महाशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) भयानक शब्द ।

महाशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-महान या उच्च आशय और विचारों वाला व्यक्ति । महानुभाव । सज्जन । २-समुद्र ।

महाशय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजाओं की शय्या ।

महाशर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रामशर' ।

महाशल्क [संज्ञा पु.] (सं.) झिंगा मछली ।

महाशांति, महाशान्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) विघ्न-बाधाओं को दूर करने के लिये मन्त्र का अनुष्ठान ।

महाशाखा [संज्ञा स्त्री.] नागबला ।

महाशालि [संज्ञा पु.] (सं.) मोटा धान ।

महाशालीन [वि.] (सं.) अति विनीत । बड़ा नम्र ।

महाशासक [संज्ञा पु.](सं.) वह बड़ा शासक जो पद मर्यादा आदि में (साधारण शासकों से) उच्च होता है । एडमिनिस्ट्रेटर जनरल ।

महाशासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा की आज्ञा । २-राजा का वह मन्त्री जो उसके आदेशों अथवा दान-पत्रों आदि का प्रचार करता हो ।

महाशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक हथियार का नाम ।

महाशिव [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव ।

महाशिविर-नायक [संज्ञा पु.](सं.) सेना के शिविर की देखभाल करने वाले सैनिक-अधिकारियों का बड़ा अफसर । *क्वाटर मास्टर जनरल ।*

महाशीतवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की पांच महादेवियों में से एक ।

महाशीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतमूली ।

महाशीर्ष [संज्ञा पु.](सं.) शिव का एक अनुचर ।

महाशील [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मेजय के पुत्र का नाम ।

महाशुंडी, महाशुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक क्षुप जिसे हाथीसूँड़ कहते हैं ।

महाशुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीप ।

महाशुक्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती ।

महाशुभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी ।

महाशून्य [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश ।

महाशोण [संज्ञा पु.] (सं.) सोननदी ।

महाश्मशान [संज्ञा पु.](सं.) काशीनगरी का नाम

महाश्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) भगवानबुद्ध का एक नाम ।

महाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) गोरखमुंडी ।

महाश्रावणिका [संज्ञा पु.](सं.) अखरोट का पेड़

महाश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्ध की एक शक्ति का नाम ।

महाश्वास [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का श्वास रोग । २-मरने के समय चलने वाला सांस ।

महाश्वेता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती । २-दुर्गा । ३-चीनी । ४-सफेद अपराजिता ।

महाषष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

महाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विनशुक्ला-अष्टमी ।

महासंधि-विग्रहक [संज्ञा पु.](सं.) गुप्तकालीन भारत का वह उच्च अधिकारी जिसे अन्य राज्यों से संधि तथा विग्रह आदि करने का पूर्ण अधिकार होता था ।

महासंस्कारी [संज्ञा पु.] (सं.) सत्तरह मात्राओं की छन्दों की संज्ञा ।

महासतोमुखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छन्द ।

महासत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बोधिसत्व का नाम । २-कुबेर । ३-शाक्यमुनि का एक नाम

महासत्य [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज ।

महासन [संज्ञा पु.] (सं.) सिंहासन ।

महासमंगा, महासमङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पौधा जिसे कँगही या कंघी कहते हैं ।

महासर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलय के बाद फिर से होने वाले संसार की रचना ।

महासर्ज [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का वृक्ष ।

महासहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली का वृक्ष ।

महासांतपन [संज्ञा पु.] (सं.) व्रत विशेष जिसमें पांच दिन तक पंचगव्य फिर छठे दिन कुश जल पीकर सातवें दिन उपवास किया जाता है ।

महासाहसिक [संज्ञा पु.] (सं.) चोर ।

महासिंह [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिंह जिस पर दुर्गादेवी बैठती थी ।

महासिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आठ आदमियों में से एक ।

महासीर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मछली ।

महासुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-सजावट । शृङ्गार । २-बुद्धदेव ।

महासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम ।

महासुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

महासूचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की व्यूह-रचना जो प्राचीनकाल में युद्ध के समय की जाती थी ।

महासूत [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का युद्ध-क्षेत्र में बजाने का एक प्रकार का बाजा ।

महासेन [संज्ञा पु] (सं.) १-कार्तिकेय । २-शिव । ३-सेना का प्रधान का सर्वोच्च सेनापति ।

महासौषिर [संज्ञा पु.] (सं.) दाँतों के मसूढ़े सड़ जाने का एक रोग ।

महास्कंध, महास्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) ऊंट ।

महास्कंधा, महास्कन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जामुन का वृक्ष ।

महास्थली [संज्ञा स्त्री.](सं.) अति रमणीय स्थान बहुत सुन्दर स्थान ।

महास्नायु [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त-प्रवाहिनी प्रधान नाड़ी ।

महास्पद [वि.] (सं.) बड़ा प्रभावशाली ।

महास्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

महास्वन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोर का शब्द । २-लड़ाई का डंका । ३-एक असुर का नाम ।

महास्वर [संज्ञा पु.] (सं.) जोर का शब्द । उच्च स्वर

महाहंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-हंस-विशेष ।

महाहनु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-तक्षक-जाति का एक सर्प ।

महाहव [संज्ञा पु.] (सं.) घमासान युद्ध ।

महाहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

महाहास [संज्ञा पु.] (सं.) अट्टहास ।

महाहि [संज्ञा पु.] (सं.) वासुकि नाग ।

महाहिक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिचकी आने का

एक रोग।

महाहिमवान् [संज्ञा पु.](सं.) जैनमतानुसार दूसरा पर्वत जो हैमवत और हरि नामक दो खण्डों में विभक्त है।

महाहद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

महाहस्व [संज्ञा पु.] (सं.) कौंछ। केंवांच।

महिं* [अव्यय.] (हिं.) देखो 'महँ'।

महिजक महिञ्जक [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा।

महिंधक, महिन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूहा। २-नेवला। ३-भार उठाने का छींका।

महि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-महिमा। ३-विज्ञानशक्ति। महत्तत्व।

महिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिम। बर्फ।

महिख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महिष'।

महिखरी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस मात्राएँ होती हैं और चौदह मात्राओं पर यति होती है।

महिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

महित [वि.] (सं.) पूजा किया हुआ। पूजित।

महित्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महिमा। महत्व।

महित्व [संज्ञा पु.] (सं.) महिमा। महिता।

महिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

महिधर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महीधर'।

महिनंदिनी, महिनन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीताजी।

महिपाल* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'महीपाल'।

महिफर* [संज्ञा पु.] (हिं.) मधु। शहद।

महिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महत्व। गौरव। बड़ाई। २-प्रभाव। प्रताप। ३-अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियों अथवा ऐश्वर्यों में से पांचवीं।

महिमावान् [त्रि.] (सं.) महिमा या गौरव वाला।

महिम्न [संज्ञा पु.](सं.) शिव के एक प्रसिद्ध स्तोत्र का नाम।

महियाँ+ [अव्यय] (हिं.) में।

महिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ईख के रस का फेन जो उबालने पर निकलता है।

महियाउर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मठे में पका हुआ चावल।

महिर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

महिरावण [संज्ञा पु.](सं.) एक राक्षस जो रावण का पुत्र था और पाताल में रहता था।

महिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भले घर की स्त्री २-फूलप्रियंगु। ३-रेणुका नामक गंधद्रव्य

महिष [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. महिषी] १-भैंसा। २-शास्त्रानुसार अभिषिक्त राजा। ३-एक वर्णसंकर जाति का नाम। ४-कुशद्वीप के एक पर्वत और एक वर्ष का नाम। ५-अनुहाद के पुत्र का नाम (भागवत)।

महिषकंद, महिषकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसाकन्द शुथ्रालु।

महिषक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति का नाम।

महिषघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

महिषध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमराज। २-जैनमतानुसार एक अर्हत का नाम।

महिषमत्स्य [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की काले रंग की मछली।

महिषमर्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा का एक नाम।

महिषमस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जड़हन धान।

महिषवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिरेटा।

महिषवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

महिषाकार* [वि.] (हिं.) (भैंसे के समान आकार वाला) बहुत बड़ा।

महिषाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा-गुग्गुल।

महिषार्दन [संज्ञा पु.] (सं.) स्कन्द का एक नाम।

महिषासुर [संज्ञा पु.] (सं.) रंभ नामक दैत्य का पुत्र जिसे दुर्गादेवी ने मारा था।

महिषी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-भैंस। २-रानी। ३-सैरिंध्री। ४-एक औषध का नाम।

महिषीकंद, महिषीकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसाकंद। शुथ्रालु।

महिषीप्रिया [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की घास जिसे शूली कहते हैं।

महिषेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-महिषासुर। २-यमराज।

महिषोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ

महिष्ठ [वि.] (सं.) बहुत बड़ा।

महिसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीताजी।

महिसुर [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्राह्मण।

मही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-मिट्टी। ३-अवकाश। देश। स्थान। ४-नदी। ५-क्षेत्र का आधार। ६-सेना। ७-झुण्ड। समूह। ८-एक की संख्या। ९-गाय। १०-हुरहुर। ११-एक छन्द का नाम।

महीकंप, महीकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) भूडोल।

महीक्षित् [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

महीखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सिकलीगरों का एक औजार।

महीचर [वि.] (सं.) पृथ्वी पर घूमने वाला।

महीचारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [वि.] पृथ्वी पर चलने वाला।

महीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अदरक। २-मंगलग्रह।

महीतल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी। संसार।

महीदास [संज्ञा पु.] (सं.) ऐतरेयब्राह्मण के एक रचियता का नाम जो दासीपुत्र थे।

महीदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

महीधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। २-शेषनाग। ३-बौद्धों के एक देवपुत्र का नाम। ४-एक वर्णवृत्त जिसमें चौदह बार क्रम से लघु और गुरु आते हैं।

महीध्र [संज्ञा पु.] (सं.) महीधर।

महीध्रक [संज्ञा पु.](सं.) १-महीध्र। २-एक राजा का नाम।

महीन [वि.] (हिं.) १-कम मोटाई या घेरे वाला। पतला। मोटा का उलटा। २-कोमल धीमा स्वर। ३-बारीक। झीना। महीन करना आँख गड़ाकर सावधानी से करने का काम। [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

महीनकार [संज्ञा पु.] (हिं.) कला-सम्बन्धी बहुत ही महीन काम करने वाला।

महीनकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कला-सम्बन्धी कार्य करने का भाव।

महीना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काल का एक प्रसिद्ध विभाग जो प्रायः तीस दिन का होता है। २-मासिक वेतन। ३-स्त्रियों का मासिकधर्म। महीने से होना-स्त्री का रजस्वला होना।

महीप, महीपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

महीपाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

महीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

महीप्रकंप, महीप्रकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) भूकम्प। भूडोल।

महीप्राचीर, महीप्रावर [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र

महीभर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. महीभर्त्री] राजा।

महीभुक्, महीभुज् [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

महीभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-पर्वत।

महीमंडल, महीमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी। भूमण्डल।

महीम [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का गन्ना जिसे पौंढ़ा भी कहते हैं। पूने नामक ऊख।

महीमय [वि.] (सं.) मिट्टी का बना हुआ।

महीमृग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जंतु।

महीयत्व [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठता। प्रभुता।

महीयस् [वि.] (सं.) बहुत बड़ा।

महीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मठे में पकाया हुआ चावल। २-तपाये हुए मक्खन की तलछट।

महीरथ [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म के एक पुत्र का नाम जिनका वर्णन पुराणों में मिलता है।

महीरावण [संज्ञा पु.] (सं.) रावण के पुत्र का नाम जिसका उल्लेख अद्भुत-रामायण में है।

महीरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष। पेड़।

महीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केंचुआ।

महीश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

महीशासक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

महीसुत [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह ।

महीसुर [संज्ञा पु.] (सं.) (सं.) ब्राह्मण ।

महीसूनु [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह ।

महुँ* [अव्य.] (हि.) देखो 'महँ' ।

महुअर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १–कालापन लिये लाल रंग की ऊन वाली भेड़ । २–महुआ मिलाकर पकाई हुई रोटी । [संज्ञा पु.] १–तूमड़ी या तूँबी नामक एक प्रकार का बाजा । २–तूमड़ी बजाकर खेला जाने वाला एक प्रकार का इन्द्रजाल का खेल ।

महुअरि+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'महुअर' ।

महुअरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आटे में महुआ मिलाकर बनाई हुई रोती ।

महुआ [संज्ञा पु.](हि.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे-छोटे और मीठे फलों से शराब बनती है

महुआदही [संज्ञा पु.] (हिं.) मक्खन निकाला हुआ दही ।

महुआरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महुए का जंगल ।

महुकम [वि.] (अ.) पक्का । दृढ़ ।

महुछा* [संज्ञा पु.] (हिं) महोत्सव ।

महुला+ [वि.] (हिं.) [स्त्री महुली] महुए के रंग का ।
[संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसा बैल जिसके शरीर पर लाल और काले रंग के बाल हों ।

महुवरि [संज्ञा स्त्री.] (हि.) महुअर नामक बाजा ।

महुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महुआ' ।

महूख* [संज्ञा पु.] (हि.) १–महुआ । २–मुलेठी

महूम* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुहिम' ।

महूरत, महूरति [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुहूर्त्त'

महेंद्र, महेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु । २–इन्द्र । ३–महेंद्राचल नामक पर्वत ।

महेंद्रवारुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ा इन्द्रायण ।

महेंद्राल, महेन्द्राल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक नदी का नाम ।

महेंद्री, महेन्द्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुजरात की एक नदी का नाम ।

महेर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महेरा' । [संज्ञा पु.] (देश.) झगड़ा । बखेड़ा । किसी बात या काम मे महेर डालना–झगड़ा डालना । २–देर लगाना । [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देखो 'महेरी' ।

महेरा [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. महेर, महेरी] १–दही पकाकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का व्यंजन । २–एक प्रकार का भोज्यपदार्थ जो खेसारी आटे को दही में उबालने से बनता है । ३–मही । मठा । ४–देखो 'महेला' ।

महेरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महेरा नामक खाद्य पदार्थ ।

महेरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक मिर्च से खाते हैं । [वि.] (हि.) अड़चन डालने वाला ।

महेला [संज्ञा पु.] (हि.) पशुओं को खिलाने का एक पदार्थ ।

महेलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–महिला । रमणी २–बड़ी इलायची ।

महेश [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव । २–ईश्वर ।

महेशबंधु, महेशबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) बैल ।

महेशान [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. महेशानी] शिव

महेशानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पार्वती ।

महेशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पार्वती ।

महेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री.महेश्वरी] १–शिव महादेव । २–ईश्वर । ३–स्वर्ण । सोना । ४–सफेद मदार ।

महेश्वरी [संज्ञा पु.] (हिं.) पश्चिम भारत के बनियों की भाषा ।

महेषु [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा बाण या तीर ।

महेषुधि [वि.] (सं.) बड़ा धनुर्धारी ।

महेष्वास् [वि.] (सं.) बड़ा धनुर्धारी ।

महेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महेश' ।

महेसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) अगहनी धान विशेष

महेसुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महेश्वर' ।

महैकोद्दिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का श्राद्ध ।

महैतरेय [संज्ञा पु.] (सं.) ऐतरेय उपनिषद् ।

महैरंड, महैरण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बड़ा रेंड ।

महैला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची ।

महैश्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) महाशक्ति । बड़ा बलवान ।

महोक [संज्ञा पु.] (हि.) 'देखो महोखा' ।

महोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा बैल ।

महोख, महोखा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का भूरे रंग का कौवे के आकार का पक्षी जो तेजी से दौड़ सकता है पर दूर तक उड़ नहीं सकता

महोगनी [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष । इसकी लकड़ी पुष्ट, टिकाऊ और कीमती होती है ।

महोच्च [वि.] (सं.) बहुत ऊंचा ।

महोच्छव* [संज्ञा पु.] (हिं.) महोत्सव । बड़ा उत्सव ।

महोछा+ [संज्ञा पु.] (हि.) १–देखो 'महोत्सव' । २–क्षत्रियों द्वारा किया जाने वाला अपने किसी महात्मा का पूजन जो श्रावणमास के कृष्णपक्ष में होता है ।

महोटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बृहती । भटैया ।

महोती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) महुवे का फल ।

महोल्का [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी उल्का । महोल्का

महोत्पल [संज्ञा पु.](सं.) १-सारसपक्षी । २-पद्म

महोत्संग, महोत्सङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सब से बड़ी संख्या ।

महोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा उत्सव ।

महोत्साह [संज्ञा पु.] (सं.) १–कठिन उद्यम । २–विष्णु ।

महोदधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र । सागर ।

महोदय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) [स्त्री. महोदया] १–महाशय । २–कान्यकुब्ज देश । ३–स्वर्ग । ४–आधिपत्य । ५–महाफूल । ६–स्वामी ।

महोदया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–महिलाओं के लिए एक आदरसूचक शब्द । २–नागबला ।

महोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक नाग का नाम । २–एक राक्षस का नाम । ३–शिव । ४–धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । [वि.] जिसका पेट बड़ा हो ।

महोद्यम, महोद्योग [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा उद्योग या यत्न ।

महोना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पशुओं के एक रोग का नाम ।

महोन्नत [वि.] (सं.) जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो [संज्ञा पु.] नारियल का पेड़ ।

महोन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारी उन्नति । बड़ी उन्नति ।

महोन्मद [वि.](सं.) अति उन्मत्त । बड़ा पागल ।

महोबा [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तर-प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक भाग ।

महोबिया, महोबिहा, महोबी [वि:] (हिं.) महोबे का ।

महोरग [संज्ञा पु](सं.) १–बड़ा सांप । २–तगर-पेड़ । ३–एक प्रकार के देवताओं का नाम ।

महोरस्क [वि.] (सं.) विशाल वक्षःस्थल वाला ।

महोला* [संज्ञा पु.] (हिं.) १–हीला । बहाना । २–धोखा । छल ।

महोविशीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम ।

महोष्ठ [वि.] (सं.) जिसका ओठ लम्बा और मोटा हो ।

महौघ [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्री तूफान । समुद्र की बाढ़ ।

महौज [वि.] (हि.) अति तेजस्वी । [संज्ञा पु.] एक असुर जो काल का पुत्र था ।

महौजस्क [वि.] (सं.) अति तेजस्वी ।

महौदवाहि [संज्ञा पु.] (सं.) एक आचार्य का नाम ।

महौली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पापड़ी नामक वृक्ष ।

महौषध [संज्ञा पु.] (सं.) १–लहसुन । २–सोंठ । ३–भूम्याहुल्य । ४–वाराहीकन्द । गोंठी । ५–वत्सनाभ । बछनाग । ६–अतीस । ७–पीपल ।

महौषधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–संजीवनी । २–लजालू । ३–दूब । ४–कुछ विशिष्ट औषधियों का समूह ।

महौषधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद भटकटैया। २-ब्राह्मी। ३-कुटकी। ४-अतिबला। ५-हिलमोचिका।

महत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

महो* [संज्ञा पु.] (हिं.) मठा। छाछ।

माँ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) माता। जननी। *माँ-जाया*-सगा भाई। [अव्य.] में।

माँकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'मकड़ी'। २-कमखाब बुनने वालों का एक औजार। ३-पतवार के ऊपरी छोर पर लगी हुई दोनों ओर निकली हुई वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर वे रस्सियां बँधी होती हैं, जिनकी सहायता से पतवार घुमाते हैं।

माँखण [संज्ञा पु.] (डिं.) मक्खन। नवनीत।

माँखना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'माखना'। [वि.] देखो 'माखना'।

माँखी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मक्खी'।

माँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माँगने की क्रिया या भाव। २-चाह। आवश्यकता। ३-वह बात जिसके लिए किसी से याचना, प्रार्थना या आग्रह किया जाय। डिमांड। ४-किसी पदार्थ का सिरा या छोर। ५-सिल का वह ऊपरी भाग जो कूटा हुआ नहीं होता तथा जिसपर पिसी हुई वस्तु रखी जाती है। ६-नाव का गावदुमा सिरा। ७-देखो 'माँगी'। ८-सिर के बालों के मध्य की, जो बालों को कंघी से दो ओर विभक्त करके बनाई जाती है। सीमंत। यौ०-*माँग-चोटी*-स्त्रियों का केश-विन्यास। *माँग जली*-विधवा। राँड़। *माँग कोख से सुखी रहना या जुड़ाना*-सौभाग्यवती और संतान वाली रहना। *माँग पट्टी करना*-केशविन्यास करना। *माँग पारना या फारना* बालों के बीच में माँग निकालना। *माँग बाँधना*-कंघी-चोटी करना।

माँग-टीका [संज्ञा पु.] (हिं.) माँग पर पहनने का एक गहना।

माँगन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-माँगने की क्रिया या भाव। २-याचक। भिक्षुक। भिखमंगा।

माँगना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी से यह कहना कि अमुक वस्तु मुझे दो। २-किसी से कुछ लेने के लिये इच्छा प्रकट करना। ३-चाहना

माँगफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माँग-टीका'।

माँगलगीत [संज्ञा पु.](हिं.) विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाये जाने वाले मङ्गल गीत।

मांगलिक, माङ्गलिक [वि.] (सं.) शुभ। मङ्गल करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में मङ्गल पाठ करने वाला पात्र।

मांगलिकता, माङ्गलिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मङ्गल का भाव।

मांगल्य, माङ्गल्य [वि.] (सं.) मङ्गलकारक। शुभ। [संज्ञा पु.] (सं.) मङ्गल का भाव। माङ्गलिकता।

मांगल्यकाया, माङ्गल्यकाया [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दूब। २-हलदी। ३-ऋद्धि। ४-गोरोचन। ५-हर्रे।

मांगल्यकुसुमा, माङ्गल्यकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी।

मांगल्यप्रवरा, माङ्गल्यप्रवरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वच।

मांगल्या, माङ्गल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शमीवृक्ष। २-गोरोचन। ३-जीवंती।

माँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) अपने व्यवहार के लिये किसी से कोई वस्तु कुछ समय के लिये माँगकर लेने की क्रिया या भाव। उधार। मङ्गनी।

माँगी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) धुनकी पर की वह लकड़ी जिस पर तांत कसी रहती है।

माँच [संज्ञा पु.](देश.) १-पाल के कोने पर बंधा हुआ रस्सा जिससे पाल आगे या पीछे हटाई जाती है। २-पाल के हवा लगने के लिये चलते हुए जहाज का रुख कुछ तिरछा करना।

माँचना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-आरम्भ या शुरू होना। २-प्रसिद्ध होना।

माँचा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. माँची] १-खाट। मंझा। २-खाट के समान बुनी हुई। छोटी पीढ़ी। ३-मचान।

माँचिस [संज्ञा पु.] (अं.) दीयासलाई की डिब्बी

माँची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैलगाड़ी आदि में गाड़ीवान के बैठने की जगह लगी हुई जालीदार झोली।

माँछ [संज्ञा पु.] (हिं.) मछली।

माँछना [क्रि. अ.] (हिं.) घुसना। धँसना। पैठना

माँछर, माँछली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मछली।

माँछी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मक्खी'।

माँज [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-दलदली भूमि। २-तराई। ३-गंगबरार।

माँजना [क्रि. स.] (हिं.) १-जोर से मलकर किसी वस्तु को साफ करना। रगड़कर मैल छुड़ाना। २-थपुवे के तवे पर पानी देकर उसे ठीक करने के लिये उसके किनारे झुकाना (कुम्हार)। ३-माँझा देना। ४-पके हुए सरेस के पानी से तानी के सूत रंगना। [क्रि. अ.] १-अभ्यास करना। २-बार-बार आवृत्ति करके पक्का करना (गीत या छन्द)।

माँजर*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हड्डियों की ठठरी। पंजर।

माँजा [संज्ञा पु.] (देश.) पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक होता है।

माँ-जाया [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. माँ-जाई] सगा भाई।

मांजिष्ठ, माञ्जिष्ठ [वि.] (सं.) १-मजीठ का-सा। २-मजीठ के रंग का।

माँझ*+ [अव्य.] (हिं.) भीतर। मध्य। बीच। अन्दर। *[संज्ञा पु.] १-अन्तर। फरक। २-नदी के बीच में पड़ी हुई रेतीली भूमि। माँझ पड़ना या होना-अन्तर पड़ना।

माँझा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नदी के बीच का टापू या जमीन। २-पगड़ी पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण। ३-वृक्ष का तना। ४-विवाह के अवसर पर पहनने के पीले कपड़े। ५-पतंग की डोर पर उसे दृढ़ करने के लिये सरेस और शीशे की बुकनी का मसाला लगाने की क्रिया। ६-इसके लिए बना हुआ मसाला।

माँझिल* [वि.] (हिं.) बीच का। बीच वाला।

माँझी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नौका खेने वाला। केवट। २-मध्यस्थ। ३-जोरावर। बलवान।

माँट* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मटका। २-घर का ऊपरी भाग। अटारी।

माँठ [संज्ञा पु.](हिं.) १-मटका। मिट्टी का बड़ा बरतन। २-नील घोलने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

माँठी* [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार की चूड़ी। २-मिट्टी या मठरी नामक पकवान।

माँड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पानी जो भात पकने पर निकलता है। पसाव। [संज्ञा स्त्री.] माँड़ने की क्रिया या भाव। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का रोग।

माँड़ना* [क्रि. स.] (हिं.) १-मलना। मसलना। २-गूंधना। ३-लेप करना। पोतना। ४-अन्न की बालों में से दाने झाड़ना। ५-मचाना। ६-चलना। ७-कुचलना। रौंधना।

मांडना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-लिखना। २-अंकित या चित्रित करना।

माँडनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संजाफ। गोट। किनारा।

माँड़यो*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अभ्यागतों के अतिथियों के ठहरने का स्थान। अतिथिशाला। २-विवाह का मंडप।

मांडलिक, माण्डलिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी मंडल या प्रांत का शासक। २-किसी बड़े राजा को कर देने वाला छोटा राजा। ३-शासनकार्य।

माँड़व [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विवाह आदि का मंडप। २-अतिथिशाला।

मांडवी, माण्डवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रामचंद्र के भाई भरत की पत्नी।

मांडव्य, माण्डव्य [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्राचीन ऋषि। २-एक प्राचीन जाति। ३-एक प्राचीन नगर।

माँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आँख का एक रोग जिसमें पुतली पर झिल्ली पड़ जाती है। २-मंडप। ३-एक प्रकार की रोटी।

माँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़े या सूत में लगाया जाने वाला कलफ। २-भात का

पसावन।

मांडूक, माण्डूक [संज्ञा पुं.] (सं.) प्राचीनकाल के एक ब्राह्मण।

मांडूकायनि, माण्डूकायनि [संज्ञा पु.](सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

मांडूक्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद का नाम [वि.] (सं.) मंडूक-संबंधी।

मांड़ो* [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह का मंडप। मँडवा।

माँड़्यौ*[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माँड़यौ'।

मांड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'माँड़व'।

माँत* [वि.] (हिं.) १-मस्त। उन्मत्त। बेसुध। २-पागल। दीवाना। ३-बेरौनक। उदास। ४-हारा हुआ। ५-पराजित। मात।

मातना* [क्रि. अ.] (हि.) पागल होना। उन्मत्त

माँता* [वि.] (हिं.) मत्त। मतवाला।

मांत्र, मान्त्र [वि.] (सं.) मंत्र-सम्बन्धी।

मांत्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो मंत्रों का पाठ करने में दक्ष हो। २-तंत्र-मंत्र का काम करने वाला व्यक्ति।

मांथ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) माथा। सर।

माँथबंधन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रियों के सिर के बाल बाँधने की सूत या ऊन की डोरी। २-वह कपड़ा जो सिर पर लपेटा, या बांधा जाय।

मांद [वि] (हि) १-श्रीहीन। उदास। फीका। २-अपेक्षाकृत बुरा या हल्का। ३-मात। पराजित। हारा हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-गोबर का वह ढेर जो पड़ा-पडा सूख जाता है। २-हिंसक जंतुओं के रहने का गढ़ा या विवर। खोह।

मांद, मान्द [संज्ञा पु.](सं.) १-तालाब का पानी २-ग्रहों की सूर्य अथवा चन्द्र-संबंधी मन्दोच्च गति।

मांदगी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-रोग। बीमारी। २-थकावट।

मांदर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का मृदग जिसे मर्दल कहते हैं।

मांदा [वि.] (हि.) १-थका हुआ। २-बचा हुआ। बाकी। [संज्ञा पु.] बीमार। रोगी।

मांदार, मान्दार [वि.] (सं.) मंदार-सम्बन्धी।

मांदार्य, मान्दार्य [संज्ञा पु.] (सं.) वीतराग।

मांद्य, मान्द्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमी। न्यूनता। २-मंद होने की क्रिया या भाव। ३-रोग। बीमारी।

मांधाता, मान्धाता [संज्ञा पु] (हि) एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा। यह युवानाश्व का पुत्र था और अयोध्या इसकी राजधानी थी।

मांपना*+ [क्रि अ.] (हि.) नशे मे चूर होना। [क्रि स] देखो 'मापना'।

माँयँ [अव्य.] (हि.) में। मध्य। बीच।

मांस [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर में हड्डियों तथा चमड़े के बीच का मुलायम और लचीला लाल रंग का पदार्थ। २-कुछ पशुओं के उक्त अंश जिसका लोग भक्षण करते है। गोश्त। यौ.-*मास का घी*-चरबी। (हि.) देखो 'मास'।

मांसकच्छप [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जो तालू में होता है (सुश्रुत)।

मांसकारी [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त। लहू।

मांसकीलक [संज्ञा पु.] (सं.) बवासीर का मस्सा

मांसकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा घोड़ा जिसके पैरों में मांस के गुटले निकलते हों।

मांसखंड, मांसखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मांस का टुकड़ा।

मांसखोर [संज्ञा पु.] (हि) मांस खाने वाला। मांसभक्षी।

मांसग्रंथि, मांसग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मांस की गांठें जो शरीर के भिन्न अंगों में निकलती हैं।

मांसच्छ [संज्ञा स्त्री.] (सं) मांसरोहिणी या मांसीलता।

मांसज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो मास से उत्पन्न हो। २-शरीर की चरबी।

मांसजाल [संज्ञा पु.] (सं.) मांस की झिल्ली।

मांसतान [संज्ञा पु.] (सं.) गले मे होने वाला एक भयंकर रोग जिसमे सूजन होती और कंठ की नाली रुकने से रोगी दम घुटकर मर जाता है।

मांसतेज [संज्ञा पु.] (सं.) चर्बी।

मांसद्रावी [संज्ञा पु.](सं.) अम्लबेत।

मांसधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर के चमड़े की सातवीं स्थूल तह।

मांसपाक [संज्ञा पु.] (सं.) लिंग का मास फट जाने का एक रोग।

मांसपिंड, मांसपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर। देह।

मांसपिंडी, मांसपिण्डी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मांस की गांठ, जो शरीर के भीतर होती है।

मांसपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) हड्डी।

मांसपुष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का सुन्दर फूलों वाला पौधा।

मांसपेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर के भीतर होने वाला मांस। पिंड। पट्ठा। २-गर्भधारण के सात दिन बाद की अवस्था।

मांसफल [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

मांसफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिंडी।

मांसभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांसाहारी। २-एक दैत्य जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है

मांसभक्षी, मांसभोजी [संज्ञा पु.] (सं) मांस खाने वाला। मांसहारी।

मांसमंड, मांसमण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मांस का झोल। शोरवा।

मांसमासा [संज्ञा स्त्री.] (सं) माषपर्णी।

मांसयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त और मांस से उत्पन्न जीव।

मांसरक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांसरोहिणी।

मांसरज्जु [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-शरीरस्थ स्नायु जिससे मांस बंधा रहता है (सुश्रुत)। २-मांस का झोल। शोरवा।

मांसरस [संज्ञा पु.] (सं.) मांस का रसा। अखनी शोरबा।

मांसरुहा, मांसरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का जङ्गली वृक्ष जिसमें एक टहनी में खिरनी के आकार के सात पत्ते लगते हैं। यह दवा के काम में आती है।

मांसल [वि.](सं.) १-मांस से भरा हुआ। मांसपूर्ण। २-मोटाताजा। पुष्ट। ३-मजबूत। दृढ़। [संज्ञा पु.] (सं.) १-काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण। २-उड़द।

मांसलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मांसल होने का भाव। २-स्थूलता और पुष्टि।

मांसलफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भिंडी। २-तरबूज।

मांसलिप्त [संज्ञा पु.] (सं.) हड्डी।

मांसवारुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक के अनुसार हिरन के मांस आदि से बनने वाली मदिरा।

मांसविक्रयी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मांस बेचने वाला। कसाब। २-धन के लिये अपनी कन्या या पुत्र को बेचने वाला व्यक्ति।

मांसवृद्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.) शरीर के किसी अंग के मांस का बढ़ जाना।

मांससंवात [संज्ञा पु.] (सं.) तालू में दूषित मांस बढ़ जाने का एक रोग।

मांससमुद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चरबी।

मांससार [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के अन्तर्गत मेद नामक धातु। २-वह जो दुष्ट हो।

मांसस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) चरबी।

मांसहासा [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़ा।

मांसाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-मांस खाने वाला।

मांसारि [संज्ञा पु.] (सं.) अम्लबेत।

मांसार्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिंग पर फुंसियां होने का एक रोग। २-वह सूजन जो शरीर में मुक्के के आघात से हो जाती है।

मांसाशन [संज्ञा पु.] (सं.) मांस भक्षण। मांस खाना।

मांसाशी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांसाहारी। २-राक्षस।

मांसाष्टका [संज्ञा स्त्री.](सं.) माघकृष्णा-अष्टमी।

मांसाहारी [संज्ञा पु.] (सं) १-मांस खाने वाला मांसभोजी। २-दूसरे जीव जन्तुओं का मांस

खाकर निर्वाह करने वाला ।

मांसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामांसी ।

माँसी [वि.] (हि.) उर्द का सा हरा रंग । [संज्ञा पु.] उर्द का सा हरा रंग ।

मांसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामासी । २-काकोली । ३-मांसरोहिणी । ४-चन्दन आदि का तेल । ५-इलायची ।

माँसु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मांस' ।

माँह*+ [अव्य.] (हिं.) में । बीच । भीतर ।

माँहा*+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'माँह' ।

माँहिं, माँहीं, माँहै [अव्य.] (हिं.) देखो 'माँह' ।

मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी । २-माता । जननी । ३-ज्ञान । ४-प्रकाश । दीप्ति ।

माइँ, माईं [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-मामा की स्त्री । मामी । २-पुत्री । कन्या । ३-छोटा पूत्रा जिस से विवाह में मातृपूजन होता है । *माइँन से थापना*-पितरों के समान आदर करना ।

माइ*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'माई' ।

माइका [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री के लिए उसके मा-बाप का घर । नैहर । (अ.) अबरक । अभ्रक ।

माइनारिटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-अल्पसंख्यक । २-वह दल जिसके वोट कम हों ।

माई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माता । जननी । माँ । २-बड़ी या बूढ़ी स्त्री के लिए आदरसूचक शब्द ।

माईलार्ड [संज्ञा पु.] (अ.) लाटों अथवा हाई-कोर्ट के जजों को संबोधन करने का शब्द ।

माउंट-पुलिस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) घुड़सवार पुलिस

माउल्लहम [संज्ञा पु.] (अ.) मांस का अर्क जो हिकमत में पुष्टिकारक माना जाता है ।

माकंद, माकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम का वृक्ष । २-मानकन्द ।

माकंदी, माकन्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आँवला । २-पीला चन्दन । ३-महाभारतकालीन एक गांव का नाम ।

माकरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरुआ ।

माकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघशुक्ला-सप्तमी ।

माकल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक लता जिसे इन्द्रायन भी कहते हैं ।

माकलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र के सारथी का नाम । २-चन्द्रमा ।

माकुली [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सर्प ।

माकूल [व.] (अ.) १-उचित । ठीक । वाजिब । २-अच्छा । बढ़िया । ३-तर्क मे परास्त । कायल । ४-यथेष्ट । पूरा ।

माक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शहद । मधु । २-सोनामाखी । ३-रूपामाखी ।

माक्षिकज [संज्ञा पु.] (सं.) मोम ।

माक्षिकांत, माक्षिकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) महुए की शराब ।

माक्षिकाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मोम ।

माक्षीक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'माक्षिक' ।

माख* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अप्रसन्नता । २-नाराजगी । २-घमंड । अभिमान । ३-अपने दोष को ढकना । ४-पछतावा ।

माखन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मक्खन' ।

माखनचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण ।

माखना* [क्रि. अ.] (हिं.) अप्रसन्नता या नाराज होना ।

माखी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मक्खी । २-सोनामाखी ।

माखो [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-शहद की मक्खी २-*लोगों में फैलने वाली चर्चा । जनश्रुति । जनरव ।

मागध [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जाति जिसका काम राजाओं की विरुदावली वर्णन करना था । भाट । २-जरासंध का एक नाम । [वि.] मगधदेश का ।

मागधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाट । २-मगधदेश का निवासी ।

मागधपुर [संज्ञा पु.] (सं.) मगधदेश की पुरानी राजधानी ।

मागधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी पीपल ।

मागधिक [वि.] मगधदेश का । मगध-सम्बन्धी ।

मागधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी पीपल ।

मागधी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मगधदेश की राजकुमारी । २-मगधदेश की प्राचीन प्रकृत भाषा । ३-छोटी पीपल । ४-सफेद खांड । ५-जुही । जूथिका । ६-जीरा । ७-छोटी इलायची ।

माघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूस के बाद आने वाला माह का महीना । २-संस्कृत के एक कवि का नाम । ३-उपर्युक्त कवि का बनाया काव्य-ग्रंथ । [संज्ञा पु.] (हिं.) कुन्द के फूल ।

माघवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वदिशा ।

माघवन [वि.] (सं.) [स्त्री. माघवनी] इन्द्र का ।

माघी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माघमास की पूर्णिमा जिस दिन मघानक्षत्र का योग होता है ।

माघ्य [संज्ञा पु.] (सं) कुंदपुष्प । कुंद का फूल

माच [संज्ञा पु.] (सं.) मार्ग । रास्ता । *+[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मचान' ।

माचना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मचना' ।

माचल* [वि.] (हिं.) १-मचाने वाला । हठी । जिद्दी । २-मचला । [संज्ञा पु.] (सं) १-ग्रह । २-बीमारी । ३-कैदी । ४-चोर ।

माचा+ [संज्ञा पु.] (हि.) छोटी खाट या बड़ी मचिया ।

माचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मक्खी । २-अमड़ा का पेड़ ।

माची+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-हल जोतने का जुआ । २-बैलगाड़ी में की वह जगह जहां गाड़ीवान बैठता है । ३-खाट के समान बुनी हुई पीढ़ी ।

माचीक [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार ।

माचीपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुरपर्ण नामक

माछ+ [संज्ञा पु.] (हि.) मछली ।

माछी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मक्खी । की मछिया । ३-मछली । [वि.] (हि.) 'मछिया' ।

माजरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वृत्तान्त । घटना ।

माजू [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार जिसकी आकृति सरो की-सी होती है । डालियों पर एक प्रकार का गोंद

माजून [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-औषध आने वाला कोई मीठा अवलेह । अवलेह या बरफी जिसमें भांग मिली हो ।

माजूफल [संज्ञा पु.] (फा.) माजू नामक गोंद जो औषध और रंगाई आता है ।

माट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मटका । रंगरेज के रंग बनाने का मिट्टी का बरतन ।

माट बिगड़ जाना-किसी का स्वभाव बिगड़ जाना कि उसका सुधार असंभव [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की जिसकी तरकारी बनाकर खाई जाती है ।

माटा [संज्ञा पु.] (हि.) लाल च्यूँटी ।

माटी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-देखो 'मिट्टी' मृत शरीर । शव । ३-साल भर की या उसकी मेहनत । ४-देह । ५-पंचतत्त्व से पृथ्वीतत्व । ६-धूल । रज ।

माठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की २-मटका ।

माठर [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यासजी का २-ब्राह्मण । ३-कलवार । ४-सूर्य का

माठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मट्ठा' बेटा (स्नेह में) । [संज्ञा पु.] (हि.) कंजूस ।

माठी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का

माठू [संज्ञा पु.] (देश.) १-बन्दर । २-मूर्ख पुत्र (गाली) ।

माड़ [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ की जाति का विशेष । [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मांड़' ।

माड़ना* [क्रि. अ.] (हि.) मचाना । [क्रि. स.] (हिं.) १-मंडित करना । २-पहनना । धारण भूषित करना । ३-आदर करना । पूजना । ४-मलना लना ।

माड़व [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मंडप' । (सं.) पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति

माड़ा [वि.] (हि.) १-खराब । निकम्मा । दुर्बल । ३-बीमार रोगी ।

माढ़ा* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मढ़ी'

स्त्री.] (सं.) दाँतों का मूल।

माढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मञ्च। मचिया।

माण, माणक [संज्ञा पु.] (सं.) मानकंद।

माणतुंडिक, माणतुण्डिक [संज्ञा पु.](सं.) एक जलचर पक्षी।

माणव [संज्ञा पु.] (सं.) १-लड़का जो सोलह वर्ष की अवस्था तक हो। छोकरा। २-मनुष्य। ३-सोलह लड़ों वाला हार।

माणवक [संज्ञा पु.](सं.) १ सोलह वर्ष की अवस्था का लड़का। २-सोलह या बीस लड़ों वाला हार। ३-धर्मशास्त्र पढ़ने वाला विद्यार्थी। ४-निंदित या नीच व्यक्ति।

माणवक्रीड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण एक तगण और दो लघु होते हैं।

माणवविद्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) जादू-टोना।

माणवीन [वि.] (सं.) लड़कपन। बचपन।

माणव्य [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों की टोली।

माणिक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माणिक्य'।

माणिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) आठ पल के बराबर की एक तौल।

माणिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल। पद्मराग। चुन्नी (रत्न)। २-एक प्रकार का केला (भाव प्रकाश)। [वि] सर्वश्रेष्ठ। परम आदरणीय।

माणिक्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिपकली।

माणिबंध, माणिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधा नमक।

माणिमंथ, माणिमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधा नमक।

मातंग, मातङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-चांडाल। ३-एक ऋषि का नाम। ४-अश्वत्थ ५-संवर्तक मेघ का एक नाम। ६-एक नाग का नाम।

मातंगनक्र, मातङ्गनक्र [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का जलजन्तु।

मातंगी, मातङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कश्यप की एक कन्या। २-दस महाविद्याओं में से नवीं

मात [संज्ञा स्त्री.](हिं.) माता। माँ। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पराजय। हार। [वि.] (अ.) पराजित। *[वि.] (हिं.) मतवाला।

मातदिल [वि.] (हि.) बहुत गरम न बहुत ठंडा। शीतोष्ण।

मातना* [क्रि. अ.] (हिं.) मस्त होना। नशे में हो जाना।

मातबर [वि.] (अ.) विश्वास के योग्य।

मातबरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) विश्वसनीयता। मातबर होने का भाव।

मातम [संज्ञा पु.] (अ.) १-मृत का शोक। २-किसी दुःखदायिनी घटना के कारण उत्पन्न शोक।

मातमपुर्सी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मृतक के सम्बन्धियों के पास जाकर उन्हें सांत्वना देना।

मातमी [वि.](फा.) शोकसूचक। मातम-सम्बन्धी

मातमुख [वि.] (डिं.) मूर्ख।

मातरिपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) अपने घर में अपनी माता के सम्मुख अपनी वीरता की डींग हांकने वाला और बाहर कुछ भी न कर सकता हो।

मातरिश्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १-पवन। हवा। वायु। २-अग्नि विशेष।

मातलि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र के सारथी का नाम।

मातलिसूत [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

मातहत [वि.](अ.) किसी की अधीनता या देख-रेख में काम करने वाला। अधीनस्थ कर्मचारी

मातहती [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मातहत या अधीन होने काम या भाव।

माता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जन्म देने वाली स्त्री। जननी। माँ। २-कोई पूज्य अथवा आदरणीय बड़ी स्त्री। ३-गौ। ४-भूमि। ५-विभूति। ६-लक्ष्मी। ७-खेती। ८-इन्द्र-वारुणी। ९-जटामासी। १०-शीतला। [वि.] (हि) [स्त्री. माती] मतवाला।

मातामह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मातामही] माता का पिता। नाना।

मातामही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नानी।

मातु* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माता। मां।

मातुल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री मातुला, मातुलानी] १-माता का भाई। मामा। २-धतूरा। ३-एक प्रकार का धान। ४-एक प्रकार का सांप। ५-मदनवृक्ष।

मातुला, मातुलानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मामा की स्त्री। मामी। २-सन। ३-प्रियंगु। ४-भांग।

मातुलाहि [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प विशेष।

मातुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मामा की पत्नी। मामी। २-भाँग।

मातुलुंग, मातुलङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरा नीबू।

मातुलेय [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मातुलेयी] मामा का लड़का। ममेरा भाई।

मातृ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'माता'।

मातृक [वि.] (सं.) माता-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] माता का भाई। मामा।

मातृकच्छिद [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

मातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माता। २-उपमाता। विमाता। सौतेली मां। ३-धात्री। धाय। ४-तांत्रिकों की ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि सात देवियां। ५-वर्णमाला के वे अक्षर, जिनकी तांत्रिक लोग देवी के रूप में पूजा करते हैं। ६-ठोड़ी पर की आठ विशिष्ट नसें

मातृकाकुंड, मातृकाकुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) गुदा का एक फोड़ा जो बहुत छोटे बच्चों को होता है

मातृकुल [संज्ञा पु.] (सं.) माता अथवा नाना का कुल या वंश।

मातृकेशट [संज्ञा पु.] (सं.) मामा

मातृगंधिनी, मातृगन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विमाता। सौतेली माँ। २-पिता की उपपत्नी।

मातृगण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के परिवार।

मातृघात, मातृघातक, मातृघाती [संज्ञा पु.] (सं.) माता की हत्या करने वाला। मातृहंता।

मातृचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) मातृकाओं का समूह।

मातृतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली में सब से छोटी अँगुली के नीचे का स्थान।

मातृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) माँ होने का भाव। माँपन।

मातृदेव [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपनी माता ही को अपना इष्टदेव मानता हो।

मातृदेवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) तांत्रिकों की एक देवी का नाम।

मातृदेश [संज्ञा पु.] (सं.) मातृभूमि।

मातृनंदन, मातृनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्तिकेय। २-महाकरंज का पेड़।

मातृनंदा, मातृनन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शाक्तों की एक देवी का नाम।

मातृनिंदक, मातृनिन्दक [वि.] (सं.) माता की निंदा करने वाला।

मातृपालित [संज्ञा पु.](सं.) एक दानव का नाम

मातृपूजन [संज्ञा पु.] (सं.) माता की पूजा।

मातृपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह की एक रीति जिसमें विवाह के एक दिन पहले पितरों का पूजन किया जाता है।

मातृपोत [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज जिसके आधीन टार्पीडो-बोट, सी-प्लेन इत्यादि वाहक जहाज रहते हैं। मदर-शिप।

मातृबंधु, मातृबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) माता के सम्बन्ध का कोई आत्मीय।

मातृबांधव, मातृबान्धव [संज्ञा पु.] (सं.) मातृबन्धु।

मातृभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह भाषा जो बालक बचपन में माता के पास रहकर बोलना सीखता है। मादरी-जबान।

मातृभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह भूमि या देश जिसमें किसी का जन्म हुआ हो।

मातृमंडल, मातृमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मातृकाओं का समुदाय। २-दोनों नेत्रों के बीच का स्थान।

मातृमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नानी। २-दुर्गा

मातृमातृ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

मातृयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) मातृकाओं के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ।

मातृरिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार संतान जन्म का वह लग्न जिसमें माता पर संकट आवे या उसके प्राण चले जायँ।

मातृवत् [वि.] (सं.) माता के समान।

मातृवत्सल [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

मातृशासित [वि.] (सं.) मूर्ख।

मातृष्वसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मौसी। मां की बहन।

मातृष्वसेय [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मातृष्वसेयी] माँ की बहन का लड़का। मौसेरा भाई।

मातृसपत्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) विमाता। सौतेली माँ।

मात्र [अव्य.] (सं.) केवल। भर। सिर्फ।

मात्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह निश्चित मात्रा या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाब से उस मोल की शेष वस्तुओं की गिनती अथवा कल्पना की जाय। इकाई। यूनिट। २-एक प्रकार की बहुत सी वस्तुओं के योग से बने हुए किसी वर्ग में की प्रत्येक वस्तु। ३-किसी का वह अंग जो कुछ दिशाओं में स्वतंत्र रूप से भी एक अलग सत्ता के रूप में माना जाता हो। यूनिट।

मात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परिणाम। मिकदार। २-एक बार खाने भर की औषध। ३-एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण-काल। ४-बारहखड़ी लिखते समय वह स्वरसूचक चिह्न या रेखा जो अक्षर के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है। ५-किसी वस्तु का कोई निश्चित छोटा भाग। ६-एक आभूषण जो कान में पहना जाता है। ७-इन्द्रिय जिसके द्वारा विषयों का अनुभव होता है। ८-परिच्छेद। ९-शक्ति। १०-अवयव। अंग। ११-रूप। १२-संगीत में गीत तथा वाद्य का समय निरूपित करने के लिए उतना काल जितना एक स्वर के उच्चारण में लगता है।

मात्रापताका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छन्दशास्त्र के अनुसार मात्रा का लघु-गुरु का ज्ञान कराने का पताका यंत्र।

मात्रावस्ति [संज्ञा पु.] (सं.) दस्त लाने के लिए दवा का मिश्रण पिचकारी में चढ़ने की क्रिया।

मात्रावृत्त [संज्ञा पु.](सं.) आर्या आदि छंदों का भेद।

मात्रासमक [संज्ञा पु.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में एक गुरु होता है।

मात्रिक [वि.](सं.) १-मात्रा-संबन्धी। मात्रा का २-जिसमें मात्राओं की गणना अथवा विचार हो।

मात्सर्य [संज्ञा पु.] (सं.) मत्सर का भाव। ईर्ष्या डाह। जलन।

मात्स्य [वि.] (सं.) मछली-संबन्धी। मछली का

मात्स्यिक [संज्ञा पु.] (सं.) मछुआ। धीवर।

माथ*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माथा'।

माथना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मथना'।

माथा [संज्ञा पु.] (हि.) १-सिर का ऊपरी और सामने वाला भाग। मस्तक। २-किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग।

माथा कूटना-सिर पर हाथ मारकर बहुत अधिक दुःख या शोक करना। *माथा घिसना*-नम्रता प्रकट करना। मिन्नत खुशामद करना *माथा खपाना या खाली करना*-मगजपच्ची करना। सिर खपाना। *माथा टेकना*-प्रणाम करना। *माथा ठनकना*-अनिष्ट की आशंका होना। (किसी के आगे) *माथा झुकाना या नवाना*-अतिशय नम्रता या अधीनता प्रकट करना। *माथा धुनना*-सिर पर हाथ मारकर बहुत अधिक दुःख अथवा शोक करना। *माथा पीटना*-देखो 'माथा कूटना'। *माथा रगड़ना*-मिन्नत खुशामद करना। *माथे चढ़ाना या धरना*-सादर स्वीकार करना। शिरोधार्य करना। *माथे टीका होना*-किसी प्रकार की विशेषता या बहुलता होना। *माथे पड़ना*-उत्तरदायित्व आ पड़ना। *माथे पर चढ़ना*-सिर पर चढ़ना। *माथे पर बल पड़ना*-आकृति से क्रोध या असंतोष के लक्षण प्रकट होना। *माथे भाग होना*-भाग्यवान् होना। *माथे मढ़ना*-गले मढ़ना। जबरदस्ती देना। +*माथे मानना*-शिरोधार्य करना। आदरसहित स्वीकार करना। *माथे मारना*-बहुत तुच्छ भाव से किसी को कुछ देना। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

माथापच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसा कार्य जिसमें मस्तिष्क की अधिक शक्ति व्यय हो। सिर खपाना।

माथापिट्टन [संज्ञा पु.](हिं.) मगज पच्ची करना सिर खपाना।

माथुर [संज्ञा पु.](सं.)[स्त्री. माथुरानी] १-ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। २-कायस्थों की एक जाति। ३-वैश्यों की एक जाति। ४-मथुरा-प्रान्त। ५-मथुरा का निवासी। [वि.] (सं.) मथुरा का। मथुरा-सम्बन्धी।

माथे [क्रि. वि.] (हिं.) १-माथे या मस्तक पर। सर पर। २-भरोसे।

माथैं*+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'माथे'।

माद [संज्ञा पु] (सं.) १-अभिमान। घमंड। शेखी। २-हर्ष। प्रसन्नता। ३-मस्ती। [संज्ञा पु.] (देश.) छोटा रस्सा।

मादक [वि.] (सं.) नशा पैदा करने वाला। नशीला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीनकाल का अस्त्र विशेष जिसके प्रयोग करते ही शत्रु पक्ष में प्रमाद उत्पन्न हो जाता था। २-ऐसा पदार्थ जिसके खाने में नशा उत्पन्न हो ३-एक प्रकार का हिरन।

मादकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नशीलापन। मादक होने का भाव।

मादन [वि.](सं.) १-मादक। २-भ्रम करने वा [संज्ञा पु.](सं.) १-कामदेव के पांच बाणों में से एक। २-लौंग। मदनवृक्ष। धतूरा।

मादनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) भाँग।

मादनीय [वि.] (सं.) मादक। नशीला।

मादर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) माता। माँ। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मादल'।

मादरजाद [वि.] (फा.) १-जन्म का। पैदाइशी। २-सहोदर या सगा (भाई)। ३-बिलकुल

मादरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मादर'।

मांदरी [वि.] (फा.) मादर अथवा माता-संबंधी। माता का।

मादरीजबान [संज्ञा स्त्री.](फा.) मातृभाषा।

मादल [संज्ञा पु.] (हि.) बंगाल में कीर्तन में बजाया जाने वाला पखावज के ढंग का एक बाजा।

मादा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्त्री-जाति का प्राणी या जीव। 'नर' का उलटा।

मादिक* [वि.] (हिं.) मादा। नशीला।

मादिकता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मादकता'।

मादिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मादा'।

मादी, मादीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मादा'।

माद्दा [संज्ञा पु.] (अ.) १-मूलतत्व। २-योग्यता। सामर्थ्य। ३-मवाद। पीब। ४-शब्द की व्युत्पत्ति। शब्द का मूल।

माद्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा परीक्षित की स्त्री का नाम।

माद्रिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) नकुल और सहदेव।

माद्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा पांडु की स्त्री तथा नकुल और सहदेव की माता का नाम। २-अतीस।

माद्रेय [संज्ञा पु.] (सं.) माद्रीपुत्र नकुल और सहदेव।

माधव [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-वैशाख मास। ३-वसंतऋतु। ४-महुआ का पेड़। ५-काला उर्द। ६-मल्लार, विलावल और नटनारायण के योग से बनने वाला एक संकर राग। ७-एक राग का नाम। ८-एक वर्णवृत्त जिसके चरण में आठ जगण होते हैं।

माधवक [संज्ञा पु.] (सं.) महुए की शराब।

माधविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माधवी-लता।

माधवी [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध लता जो चमेली का एक भेद है। इसमें इसी नाम के सुगंधित फूल लगते हैं। २-एक प्रकार की मदिरा।, ३-तुलसी। ४-दुर्गा। ५-कुंद। ६-शहद की चीनी। ७-सवैया छंद का एक भेद। ८-औड़व जाति की एक रागिनी।

माधवी-लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माधवी नामक लता जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं।

माधवोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) खिरनी का पेड़।

माधी [संज्ञा पु.] (देश.) भैरवराग के एक पुत्र का नाम।

माधुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वर्णसंकर जाति जिसे मैत्रेयक भी कहते हैं। २-महुए की बनी शराब।

माधुपार्किक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पदार्थ जो मधुपर्क देने के समय दिया जाता है।

माधुर [संज्ञा पु.] (सं.) मल्लिका। चमेली।

माधुरई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मधुरता। मिठास

माधुरता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिठास। मीठापन।

माधुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिठास। २-माधुर्य। शोभा। ३-मदिरा। शराब। ४-मिठाई।

माधुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुर होने का भाव। मधुरता। २-लावण्य। सौन्दर्य। ३-मिठाई। मिठास। ४-पाँचाली। रीति के अन्तर्गत काव्य की एक विशेषता जिससे चित्त बहुत प्रसन्न होता है। ५-बिना किसी शृङ्गार आदि के ही नायक का सुन्दर जान पड़ना। ६-वाक्य में एक से अधिक अर्थों का होना।

माधुर्य-प्रधान [संज्ञा पु.] (सं.) गाने का वह ढंग जिसमें माधुर्य का अधिक ध्यान रखा जाय तथा उसके शुद्ध रूप के बिगड़ने की चिन्ता या परवा न की जाय।

माधूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति का नाम।

माधवा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माधव'।

माधो [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-रामचन्द्रजी।

माधौ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माधव'।

माध्यंदिन, माध्यन्दिन [संज्ञा पु.] (सं.) मध्याह्न। दोपहर।

माध्यंदिनी, माध्यन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुक्ल-यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यंदिनीय, माध्यन्दिनीय [संज्ञा पु.] (सं.) नारायण। परमेश्वर।

माध्यम [वि.] (सं.) [स्त्री. माध्यमी] बीच का। बिचले भाग का। [संज्ञा पु.] १-कार्यसिद्धि का उपाय या साधन। २-वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय।

माध्यमक [वि.] (सं.) [स्त्री. माध्यमिका। बीच का। केन्द्रवर्ती।

माध्यमिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्धों का एक भेद। २-मध्यदेश का निवासी। [वि.] [स्त्री. माध्यमिकी] मध्य। बीच का।

माध्यस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो मनुष्यों या पक्षों के बीच में पड़कर निपटारा करने वाला। पंच। मध्यस्थ। २-दलाल। ३-कुटना। ४-विवाह कराने वाला ब्राह्मण।

माध्यस्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मध्यस्थता। २-तटस्थता। ३-निरपेक्षता। ४-बीच-बचाव।

माध्याकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के भाग का वह आकर्षण जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है, तथा जिसके कारण पदार्थ ऊपर से भूमि पर गिरते हैं। ग्रैविटेशन।

माध्याह्निक [संज्ञा पु.] (सं.) ठीक मध्याह्न या दोपहर के समय किया जाने वाला (विशेषतः धार्मिक) कृत्य।

माध्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-मध्वाचार्य का चलाया हुआ संप्रदाय। २-उक्त संप्रदाय का अनुयायी। ३-महुए की मदिरा। ४-मधुरकंटक नाम की मछली।

माध्वक [संज्ञा पु.] (सं.) महुए की शराब।

माध्वी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मदिरा। शराब। २-महुए की बनी शराब। ३-मधुरकंटक मछली। ४-एक नदी का नाम (पुराण)।

माध्वीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-महुए की बनी शराब। २-मधु। मकरंद। ३-दाख की शराब। ४-सेम।

माध्वीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम।

माध्वी-मधुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीठी खजूर।

मान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का भार, तौल, नाप, मूल्य आदि। परिमाण। मिकदार। २-नापने या तौलने का साधन। पैमाना। ३-अभिमान। घमंड। ४-प्रतिष्ठा। सम्मान। इज्जत। ५-साहित्य के अनुसार मन में होने वाला वह विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति के किसी दोष या अपराध के कारण कुछ समय के लिए उदासीनता आ जाती है। रूठना। ६-पुष्करद्वीप के एक पर्वत का नाम। ७-सामर्थ्य। शक्ति। ८-उत्तर दिशा के एक देश का नाम। ९-ग्रह। १०-मंत्र। ११-ताल में का विराम जो सम, विषम, अतीत और अनागत चार प्रकार का होता है (संगीत)। *मान मथना*-शेखी तोड़ना। मान या गर्व चूर्ण करना। *मान मानना*-रूठे हुए को मनाना। *मान रखना*-इज्जत रखना।

यौ०-मान-महत-१-आदर-सत्कार। २-इज्जत प्रतिष्ठा।

मानकंद, मानकन्द [संज्ञा पु.] (हि.) १-बंगाल में होने वाला एक प्रकार का मीठा कंद। २-एक प्रकार की मिस्री जिसे सालिबमिस्री भी कहते हैं।

मानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मानकंद। २-वह निश्चित या स्थिर किया हुआ सर्वमान्य अथवा माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान अथवा कल्पना की जाय। मान-दंड। स्टैंडर्ड

मानकच्चू [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मानकंद'।

मानकलह [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईर्ष्या। डाह। २-प्रतिद्वंद्विता।

मानकीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही जैसी बहुत वस्तुओं का मानक स्थिर करना। स्टैंडर्डाइजेशन।

मानक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छंद।

मानगृह [संज्ञा पु.] (सं.) रूठ कर बैठने का घर या स्थान। कोपभवन।

मानग्रंथि, मानग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराध। जुर्म।

मानचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश अथवा स्थान का नकशा।

मानज [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध।
[वि.] (सं.) मान से उत्पन्न।

मानतरु [संज्ञा पु.] (सं.) खेतपापड़ा।

मानता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मन्नत। मनौती।

मानदंड, मानदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह डंडा या लकड़ी जिससे कोई चीज नापी जाय २-देखो 'मानक'।

मानद [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मानदेय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति को कोई कार्य करने पर उसके बदले में सम्मानपूर्ण पारिश्रमिक के रूप में दिया जाने वाला धन। ऑनरेरियम।

मानद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल का पेड़।

मान-धन [वि.] (सं.) जो अपने मान अथवा प्रतिष्ठा को ही धन समझता हो।

मानधाता [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मांधाता'।

मानधानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

मानना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सहमत होना। राजी होना। २-प्रसन्न होना। ३-ध्यान में लाना समझना। ४-ठीक मार्ग पर आना। अनुकूल होना। [क्रि. स.] (हिं.) १-कही हुई बात, दी हुई आज्ञा अथवा किये हुए आग्रह आदि का पालन करना। स्वीकार या अङ्गीकार करना २-धार्मिक विचार से किसी बात पर श्रद्धा अथवा विश्वास करना। ३-देवता आदि की भेंट या पूजा करने का संकल्प करना। मन्नत करना। ४-दक्ष या पारंगत समझना ५-ध्यान में लाना, समझना। ६-स्वीकृत करके अनुकूल काम करना। ७-किसी के साथ बहुत प्रेम करना।

माननीय [वि.] (सं.) [स्त्री. माननीया] जो मान या सम्मान करने के योग्य हो। आदरणीय। मान्य। [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ विशिष्ट व्यक्तियों तथा उच्च राजकीय अधिकारियों और राज्य के मन्त्रियों आदि के नाम के आगे लगने वाली एक उपाधि। आनरेबुल।

मान-परेखा* [संज्ञा पु.] (?) आशा। भरोसा।

मानपात [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मानकंद'।

मानभाव [संज्ञा पु.] (सं.) चोचला। नखरा।

मान-मंदिर, मान-मन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भवन। २-वेधशाला।

मानमनौती [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-मन्नत । मानता २-रूठने और मानने की क्रिया । ३-पारस्परिक प्रेम ।

मानमरोर*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं:) मनमुटाव ।

मानमान्यता [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रतिष्ठा । इज्जत ।

मानमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य के अनुसार रूठे हुए प्रिय को मनाने के छः उपाय । यथा—साम, दाम, भेद, प्रणति, उपेक्षा तथा प्रसग-विध्वंस ।

मानरंध्रा, मानरन्ध्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) जलघड़ी जिससे प्राचीन काल में समय जाना जाता था ।

मानव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य । आदमी । मनुज । २-चौदह मात्राओं के छंदों की संज्ञा ।

मानवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाटा या बौना आदमी । २-तुच्छ आदमी ।

मानवत् [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मानवती] रूठा हुआ ।

मानवता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मनुष्यत्व । आदमीपन । इनसानियत । २-संसार के समस्त मनुष्यों का समूह या समाज । *ह्यूमैनिटी* ।

मानवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो अपने नायक या पति से मान कराती है । मानिनी ।

मानवदेव [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

मानवदयावाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह विचार-प्रणाली जिसमें मानव, मानव के दुःखों के प्रति सदय रहकर और उसको दुःखों से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न करे । *ह्यूमैनिटेरिइज्म* ।

मानवदयावादी [संज्ञा पु.] (सं.) मानवदयावाद सिद्धान्तों का मानने वाला । *ह्युमैनिटेरियन* ।

मानव-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मानव या मनुष्य का मनुष्य के प्रति क्या कर्त्तव्य है । यह समझाने वाला धर्म ।

मानव-धर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो मानवधर्म को मानता हो ।

मानवपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

मानवर्जित [वि.] (सं.) नीच । अप्रतिष्ठित ।

मानवर्त्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम जो पूर्वदिशा में था ।

मानववाद [संज्ञा पु.](सं.) वह वाद या सिद्धान्त जिसके द्वारा ऐसा समझा जाता है कि मध्ययुग से आधुनिक युग तक निरन्तर मनुष्य का मानसिक विकास होता रहा है और होता रहेगा ।

मानववादी [संज्ञा पु.] (सं.) मानववाद सिद्धान्त का मानने वाला ।

मानवशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य की उत्पत्ति, विकास विभेद आदि का विवेचन करने वाला सिद्धान्त ।

मानवाचल [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम ।

मानवास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक प्रकार का अस्त्र ।

मानवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री । औरत । २-मनु की कन्या का नाम । पुराण ।

मानवीय [वि.] (सं.) मानव-सम्बन्धी

मानवेंद्र, मानवेन्द्र, मानवेश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

मानव्य [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'मानव' ।

मानस [संज्ञा पु.](सं.) १-मन । हृदय । २-मानसरोवर । ३-कामदेव । ४-संकल्प । ५-एक नाग का नाम । ६-मनुष्य । आदमी । ७-दूत । चर । ८-शाल्मलीद्वीप के एक वर्ष का नाम । [वि.] १-मनोभव । मन से उत्पन्न । २-मन का विचारा हुआ । [क्रि. वि.] मन के द्वारा ।

मानचारी [संज्ञा पु.] (सं.) मानसरोवर में होने वाला एक प्रकार का हंस ।

मानसता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मानस या मन का भाव अथवा स्थिति । २-मन की वह विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके वशवर्त्ती होकर मनुष्य कोई विचार अथवा कार्य करता है । *मेंटैलिटी* ।

मानसतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह मन जो राग, द्वेष आदि से परे हो ।

मानसपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुत्र अथवा संतान जिसकी उत्पत्ति इच्छामात्र से हुई हो (पुराण) ।

मानस-पूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन ही मन की-जाने वाली पूजा, जिसमें अर्घ्य, पाद्य आदि बाह्य उपकरणों की आवश्यकता न रहे ।

मान-सर, मानसरोवर [संज्ञा पु.](सं.) हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध तथा परमपवित्र मानी जाने वाली बड़ी झील । कहते हैं कि ब्रह्मा ने अपनी इच्छामात्र से इनका निर्माण किया है

मानस-व्रत [संज्ञा पु.] (सं.) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि व्रत ।

मानस-शास्त्र [संज्ञा पु.](सं.) वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मन किस प्रकार कार्य करता है तथा उसकी वृत्तियाँ किस प्रकार उत्पन्न होती हैं । मनोविज्ञान ।

मानस-संताप, मानससन्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) आंतरिक दुःख ।

मानस-संन्यासी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के संन्यासी जो मन में वैराग्य उत्पन्न होने पर गृहस्थ आश्रम को त्याग जंगल में जा रहते हैं और तपस्या करते हैं ।

मानस-सर, मानस-सरोवर [संज्ञा पु.] (सं.) मानसरोवर ।

मानसहंस [संज्ञा पु.] (सं) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण, जगण, भगण, रगण होते हैं ।

मानसांक, मानसाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) केवल मन में, बिना पढ़े-लिखे गणित करने की

मानसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक का नाम ।

मानसालय [संज्ञा पु.] (सं.) हंस ।

मानसिक [वि.] (सं.) १-मन से उत्पन्न । २-मन-संबंधी । मन का [संज्ञा पु.] विष्णु ।

मानसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन ही मन की जाने वाली पूजा । २-एक विद्याधरी का (पुराण) । [वि.] मन का । मन से उत्पन्न ।

मानसीगंगा [संज्ञा स्त्री.] (सं) गोवर्धन पर्वत के पास के एक तालाब का नाम ।

मानसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) करधनी ।

मानसून [संज्ञा पु.] (अं.) भारतीय महासागर से बहने वाली एक वायु जिसके भारत में वर्षा होती है ।

मानहंस [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण, जगण, भगण और रगण होते हैं ।

मान-हानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई ऐसा काम बात करना जिससे किसी का मान अथवा प्रतिष्ठा घटे । अपमान । अप्रतिष्ठा । बेइज्जती । डिफेमेशन ।

मानहुँ+ [अव्य.] (हि.) देखो 'मानों' ।

माना [संज्ञा पु.] (इब.) एक प्रकार का निर्यास । (हिं.) अन्न आदि नापने का प्रकार का पात्र । ॐ+ [क्रि. स.] १-नापना तौलना । २-जांचना । परखना । ॐ[क्रि. अ.] देखो 'समाना' । या 'अमाना' ।

मानाथ* [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मी के पति विष्णु

मानिंद [वि.] (फा.) समान । सदृश । तुल्य ।

मानिक [संज्ञा पु.](हिं.) पद्मराग या चुन्नी रत्न । लाल । शोणरत्न । [संज्ञा पु.](सं.) आठपल का एक मान [वि.] (सं) १-मान या परिमाण से सम्बन्ध वाला । २-जिसका कुछ मान या परिमाण परिमाण वाला । क्वान्टिटेटिव ।

मानिकखंभ [संज्ञा पु.] (हि.) १-मलखम्भ । मालखंभ । ३-वह खंभा जो विवाह में के बीच में गाड़ा जाता है ।

मानिकचंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साधारण छोटी सुपारी ।

मानिकजोड़ [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार बड़ा बगुला जिसकी चोंच और टाँगें होती हैं ।

मानिकजोर [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'मानिकजोड़'

मानिकरेत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मानिक का जिससे गहने साफ किये जाते हैं तथा चमक लाई जाती है ।

मानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मद्य । पल या साठ तोले का एक मान ।

मानिटर [संज्ञा पु.] (अं.) स्कूल या पाठशाला

किसी कक्षा का वह प्रधान विद्यार्थी जो अपने अन्य सहपाठियों की पढ़ने लिखने आदि के सम्बन्ध में देखभाल करता हो।

मानित [वि.] (सं.) सम्मानित। प्रतिष्ठित। आदृत।

मानिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आदर। सम्मान। २-गौरव। ३-गर्व। अहंकार।

मानिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-मान या गर्व करने वाली। २-रूठने वाली। रुष्टा। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो नायक के दोष को देखकर उससे रूठ गई हो (साहित्य)।

मानी [वि.] (हिं.) [स्त्री. मानिनी] १-अहंकारी। घमंडी। २-गौरवान्वित। सम्मानित। ३-मनोयोगी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिंह। २-साहित्य में वह नायक जो अपमानित होने के कारण रूठ गया हो। [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कुंभ। घड़ा। २-प्राचीन काल का एक प्रकार का मानपात्र जिसमें आठ पल समाता था। ३-चक्की के ऊपर के पाट में लगी हुई वह लकड़ी जिसके बीच के छेद में कील रहती है। ४-कुदाल, बसूली आदि का छेद जिसमें बेंट लगाई जाती है। ५-किसी वस्तु में बनाया हुआ छेद जिसमें कुछ जड़ा जाय। ६-सोलह सेर का एक मान। ७-साधारण छंद। [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-अर्थ। तात्पर्य। मतलब। २-तत्व। रहस्य। ३-प्रयोजन। ४-कारण। हेतु।

मानुस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मनुष्य। आदमी।

मानुष [वि.] (सं.) [स्त्री० मानुषी] मनुष्य-संबंधी। मनुष्य का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य। २-यज्ञवलक्य स्मृति के अनुसार प्रमाण के दो भेदों में से एक।

मानुषक [वि.] (सं.) मनुष्य-संबंधी। मनुष्य का।

मानुषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनुष्य का भाव या धर्म। मनुष्यता। आदमीयत।

मानुषराक्षस [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षसी प्रकृति-वाला मनुष्य। २-मनुष्य का शत्रु।

मानुषिक [वि.] (सं.) मनुष्य-संबंधी। मनुष्य का।

मानुषिबुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य शरीरधारी बुद्ध।

मानुषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। औरत। २-तीन प्रकार की चिकित्साओं में से एक।

मानुषोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार एक पर्वत का नाम।

मानुष्य [वि.] (सं.) मनुष्य का।

मानुष्यक [वि.](सं.) मनुष्य-संबंधी। मनुष्य का।

मानुस [संज्ञा पु.] (हि.) मनुष्य। आदमी।

माने [संज्ञा पु] (अ.) मतलब। आशय। अर्थ।

मानो [अव्य.] (हि.) जैसे। मानलो कि यह ऐसा है या होगा। गोया।

मानोमी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

मानौं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'मानों'।

मान्य [वि.] (सं.) [स्त्री. मान्या] १-मानने योग्य २-माननीय। सम्मान के योग्य। पूजनीय। पूज्य। प्रार्थनीय। [संज्ञा पु.] १-विष्णु। २-शिव। ३-मैत्रा वरुण। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मान'।

मान्यक [वि.] (सं.) किसी प्रतिष्ठित पद पर बिना वेतन लिये कार्य करने वाला। आनरेरी।

मान्यता [संज्ञा स्त्री.)(सं.) मान्य होने की क्रिया या भाव। मान लिया जाना।

मान्यमान [वि.] (सं.) अधिक मान या सम्मान के योग्य।

मान्यवती [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह स्त्री जो सम्मानने के योग्य हो।

मान्यस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) आदर या मान का कारण।

मान्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूजनीया। आदर के योग्य।

माप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मापने की क्रिया या भाव। नाप। २-वह मान जिससे कोई वस्तु मापी जाय। ३-वह जो मापता हो।

मापक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिससे कुछ मापा या नापा जाय। २-वह जो नापता या मापता हो। ३-मान। पैमाना।

मपना [क्रि. स.](हिं.) १-किसी पदार्थ के विस्तार, आयात या वर्गत्व तथा घनत्व का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना। २-किसी मान या पैमाने में भरकर अन्न आदि पदार्थों को नापना। ३-किसी पदार्थ के परिमाण को जानने के लिए कोई क्रिया करना। नापना। * [क्रि अ.] मतवाला होना।

माप-मान [संज्ञा पु.] (सं.) मानक। मानदंड।

माफ [वि.] (अ.) क्षमा किया हुआ। *माफ करना*-क्षमा करना।

माफकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अनुकूलता। २-मेल। मैत्री।

माफल [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का खट्टा नीबू।

माफिक+ [वि.] (अ.) १-अनुकूल। अनुसार। २-योग्य।

माफिकत [संज्ञा स्त्री] देखो 'माफकत'।

माफी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-वह भूमि जिसका कर राज्य की ओर से माफ हो। २-वह भूमि जिसपर कोई कर न लिया जाता हो। ३-क्षमा *माफी चाहना या मांगना*-क्षमा मांगना।

माफीदार [संज्ञा पु.] (फा.) वह जिसको माफी की जमीन मिली हो।

माम* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ममता। ममत्व। २-प्रेम। ३-अहंकार। ४-कोई कार्य करने की शक्ति अथवा अधिकार।

मामता [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-आत्मीयता। अपनापन। २-प्रेम। अनुराग।

मामरी [संज्ञा स्त्री.] देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

मामलत, मामलति* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मामला'।

मामला [संज्ञा पु.] (अ.) १-काम। व्यापार। २-व्यवहार। ३-झगड़ा। विवाद। ४-व्यवहार या विवाद की बात या विषय। ५-मुकदमा। ६-प्रधान विषय। ७-पक्की या तै की हुई बात। *मामला बनाना*-१-काम साधना। २-बात पक्की करना। *मामला करना*-१-बात पक्की करना। २-फैसला करना।

मामा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मामी] माता का भाई। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-माता। मां। २-रोटी पकाने वाली स्त्री। ३-बुड्ढी स्त्री। ४-नौकरानी। दासी। *मामागीरी*-दूसरों की रोटी बनाने का काम।

मामिला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मामला'।

मामी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) अपने दोष पर ध्यान न देना। * *मामी पीना*-मुकर जाना।

मामूँ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) [स्त्री. ममानी] मां का भाई। मामा।

मामूर [वि.] (अ.) भरा हुआ। पूर्ण।

मामल [संज्ञा पु.] (अ.) १-परिपाटी। रीति। प्रथा। २-टेव। लत। ३-वह धन जो किसी को रीति-रिवाज आदि के कारण दिया जाता हो।

मामूली* [वि.](अ.) १-नियमित। २-सामान्य। साधारण।

माय* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-माता। मां। जननी। २-बड़ी-बूढ़ी स्त्रियों के लिए आदरसूचक संबोधन। ३-देखो 'माया'। [अव्य.] देखो 'महिं'। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीतांबर। २-असुर।

मायक [संज्ञा पु.] (सं.) माया करने वाला। मायावी। + देखो 'मायका'।

मायका [संज्ञा पु.] (हि.) नैहर। पीहर।

मायण [संज्ञा पु.] (सं.) वेद के भाष्यकार सायण के पिता का नाम।

मायन* [संज्ञा पु.] (हि.) विवाह से पूर्व मातृका का पूजन तथा पितृ-निमंत्रण का कार्य।

मायल [वि.] (फा.) १-प्रवृत्त। झुका हुआ। २-मिश्रित। मिलाहुआ।

मायव [संज्ञा पु.] (सं.) मायु के गोत्रज।

माया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-धन। संपत्ति। ३-अविद्या। अज्ञानता। ४-छल। कपट। ५-सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण। प्रकृति। ६-ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जिससे समस्त सृष्टि का कार्य चलता है। ७-जादू। इन्द्रजाल। ८ इन्द्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद। ९-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, तगण, सगण और एक गुरु

होता है। १०-मयदानव की कन्या का नाम १०-किसी भी देवता की कोई लीला, शक्ति, इच्छा या प्रेरणा। ११-गौतमबुद्ध की माता का नाम। १२-कोई भी आदरणीय स्त्री। १३-दुर्गा के एक नाम। १४-बुद्धि। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माता। मां। जननी। २-ममत्व। अपनापन। ३-कृपा। दया। अनुग्रह

मायाकार [संज्ञा पु.](सं.) जादूगर। ऐंद्रजालिक।

मायाक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण के एक तीर्थ का नाम।

मायाचार [संज्ञा पु.] (सं.) मायावी।

मायाजीवी [संज्ञा पु.](सं.) जादू के करतब दिखाकर जीवन निर्वाह करने वाला। जादूगर।

मायातंत्र, मायातन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) तंत्रविशेष

मायाद [संज्ञा पुं.] (सं.) मगर। कुंभीर।

मायादेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्ध देव की माँ का नाम।

मायाधर, मायापटु [संज्ञा पु.] (सं.) मायावी।

मायापति [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

मायापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) धनवान। अमीर।

मायापुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी नाम।

मायाफल [संज्ञा पु.] (सं.) माजूफल।

मायामोह [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु के शरीर से निकला एक कल्पित पुरुष (पुराण)।

मायायंत्र, मायायन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को मोहने की विद्या।

मायारवि [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

मायावत् [संज्ञा पु.](सं.) १-मायावी। २-असुर। राक्षस। ३-कंस का एक नाम।

मायावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामदेव की पत्नी का एक नाम।

मायावाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसके अनुसार ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य तथा सत्य माना जाता है, भ्रम के कारण जगत् सत्य प्रतीत होता है

मायावादी [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर के अतिरिक्त प्रत्येक पदार्थ को अनित्य मानने वाला। वह जो मायावाद सिद्धांत को मानता हो।

मायाविनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छल कपट करने वाली स्त्री। ठगिनी।

मायावी [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री मायाविनी] १-छलिया। फरेबी। २-धूर्त। ३-जादूगर। ४-एक दानव का नाम जो मय का पुत्र था। ५-परमात्मा। ६-बिल्ली।

मायाबीज [संज्ञा पु.] (सं.) 'ह्रीं' नामक तांत्रिक मन्त्र।

मायासीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कल्पित सीता जिसकी सृष्टि सीताहरण के समय अग्नि के योग से हुई थी (पुराण)।

मायासुत [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

मायास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कल्पित अस्त्र जिसे विश्वामित्र ने श्रीराम को सिखाया था।

मायिक [संज्ञा पु.] (सं.) माजूफल।
[वि.] (सं.) १-माया से बना हुआ। बनावटी। जाली। २-मायावी। माया करने वाला।

मायी [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-माया करने वाला व्यक्ति। ३-जादूगर।

मायु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पित्त। २-शब्द। ३-वाक्य।

मायुक [वि.] (सं.) शब्द करने वाला।

मायुराज [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के एक पुत्र का नाम।

मायुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मयूर या मोर जो रथ को चलाते हों। २-मयूर। मोर।
[वि.] (सं.) मोर या मयूर-संबंधी। मोर का

मायूरक [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली मोरों को पकड़ने वाला।

मायूरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठूमर।

मायूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा।

मायूस [वि.] (फा.) निराश। नाउम्मेद।

मायूसी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निराशा। नाउम्मेदी

मायोभाव [संज्ञा पु.](सं.) १-शुभ। अच्छा। २-सौभाग्य।

मार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-विष। जहर। ३-धतूरा। ४-विघ्न। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मारने या पीटने की क्रिया या भाव २-आघात। चोट। ३-लक्ष्य। निशाना। ४-मारपीट। ५-लड़ाई। ❀६-माला। [अव्य.] (हिं.) अत्यन्त। बहुत। [संज्ञा स्त्री.] (दे श.) काली मिट्टी की जमीन। मरवा भूमि।

मारकंडेय, मारकण्डेय [संज्ञा पु.](हिं) पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। *मारकंडेय की आयु होना*–दीर्घजीवी होना।

मारक [वि.](सं.)१-मार डालने वाला। २-जिससे किसी का प्रभाव दूर या नष्ट हो। ३-प्रबल विष के वेग आदि को दबाकर उनका नाश करने वाला।

मारका [संज्ञा पु.] (अं.) १-निशान। चिह्न। २-किसी प्रकार का चिह्न जिससे कोई विशेषता सूचित हो। *मारके की बात या काम*–कोई महत्वपूर्ण बात या काम।

मारकाट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-युद्ध। लड़ाई। २-मारने-काटने का काम या भाव।

मारकायिक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार मार के अनुचर।

मारकीन [संज्ञा स्त्री.] (अं. नैनकिन) एक प्रकार का कोरा कपड़ा।

मारकेश [संज्ञा पु.](सं) किसी की जन्मकुंडली में ग्रहों का वह योग जो उसके लिए घातक होता है।

मारखोर [संज्ञा पुं.] (फा.) एक प्रकार की [illegible] या भेड़ जो अफगानिस्तान में पाई [illegible]

मारग* [संज्ञा पु.] (हि.) रास्ता। पथ। मार्ग। *मारग मारना*–रास्ते में पथिक को लूट लेना। *मारग लगना या लेना*–चला जाना।

मारगन* [संज्ञा पु.] (हि.) १-[illegible] भिखमंगा।

मारजन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मार्जन'।

मारजनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मार्जनी'।

मारजार [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मार्जार'।

मारजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसने [illegible] पर विजय प्राप्त की हो। २-बुद्ध।

मारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार डालना। [illegible] लेना। हत्या करना। २-एक तांत्रिक [illegible] जो किसी को मार डालने के लिये होता है।

मारतंड [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मार्तंड'।

मारतंडमंडल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो '[illegible] मंडल'।

मारतंडसुत [संज्ञा पु.] (हि.) देखो '[illegible]

मारतौल [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का [illegible] हथौड़ा।

मारना [क्रि. स.] (हि.) १-प्राण लेना। [illegible] करना। चोट पहुँचाने के लिये किसी वस्तु [illegible] पीटना या प्रहार करना। पीटना। [illegible] में विपक्षी को पछाड़ना। ४-[illegible] ५-शस्त्र आदि चलाना। फेंकना। [illegible] कर देना। ७-आवेग या मनोविकार [illegible] रोकना। ८-नष्ट कर देना। [illegible] ९-आखेट या शिकार करना। १०-[illegible] फूंककर उनका भस्म तैयार करना। [illegible] परिश्रम के अथवा अनुचित रीति [illegible] रखना। १२-बल अथवा प्रभाव [illegible] १३-चलाना या संचालित करना। [illegible] करना। लगाना। जैसे-गोता मारना। [illegible] जीतना। १६-ताश, शतरंज आदि [illegible] विपक्षी के पत्ते अथवा गोट आदि को [illegible] १७-बल अथवा प्रभाव कम करना। [illegible] डसना। जैसे—डंक मारना। [illegible] जैसे—टाँका मारना। [illegible] संभोग करना। *दे मारना*–१-पटकना। [illegible] पछाड़ना। *वह मारा*–जो चाहते थे, हो [illegible] गया। *गाल मारना*–बढ़-बढ़ कर बातें [illegible] *कुछ पढ़कर मारना*–कोई वस्तु किसी पर [illegible] पढ़कर या फूंककर फेंकना। *गोली मारना*–१-किसी पर बंदूक की [illegible] चलाना। २-उपेक्ष्य या तुच्छ [illegible] जाने देना। *जादू मारना*–किसी पर [illegible] तंत्र करना। *डींग मारना*–शेखी [illegible] *मंत्र मारना*–जादू करना।

मारपीट [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह लड़ाई [illegible] लोग मारे या पीटे जायँ।

मारपेच [संज्ञा पु.] (हि.) धूर्तता। चालबाजी।

मारफ़त [अव्यय] (अ.) ईश्वरीय ज्ञान।

मारव [संज्ञा पु.] १-मरु देवता। २-एक प्राचीन देश का नाम।

मारवा [संज्ञा पु.] (देश.) १-तिलवाड़ा पर बजाया जाने वाला एक प्रकार का ख्याल। २-एक सङ्कर-राग।

मारवाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मेवाड़ राज्य। २-मेवाड़ के आसपास का प्रदेश जिसमें जोधपुर और बीकानेर के राज्य हैं।

मारवाड़ी [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. मारवाड़िन] मारवाड़ देश का निवासी। मारवाड़ देश की भाषा। [वि.] (हि.) मारवाड़ देश-संबंधी मारवाड़ देश का।

मारवीज [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मंत्र।

मारा* [वि.] (हिं.) १-मारा हुआ। निहत। २-जिस पर मार पड़ी हो। *मारा मारा फिरना*-बुरी दशा में इधर-उधर घूमना।

मारात्मक [वि.] (सं.) १-हिंसक। २-दुष्ट। ३-प्राणनाशक।

माराभिभू [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध देव।

मारामार [क्रि. वि.] (हि.) बहुत जल्दी। अत्यन्त शीघ्रता से। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मार-पीट'।

मारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मार डालना। २-मरी (रोग)।

मारिच* [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'मारिच'। २-देखो 'मार्च'।

मारित [वि.] (सं.) १-मारा हुआ। निहित। २-जो भस्म कर दिया गया हो (वैद्यक)।

मारिष [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाटक का सूत्रधार। २-प्रतिष्ठित। माननीय। (नाटकीय सम्बोधन)। ३-मरसा नामक साग।

मारिषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष की माता।

मारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसा कोई सक्रामक रोग जिससे एक साथ बहुत से आदमी मरें। महामारी। [संज्ञा पु.] (सं.) हत्या करने वाला। घातक। [संज्ञा स्त्री.] १-चंडी। २-माहेश्वरी शक्ति। ३-मरी (रोग)।

मारीच [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बनाकर सीताजी को धोखा दिया था। २-बड़े डील-डौल का हाथी।

मारीचपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सरलवृक्ष।

मारीचवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिर्च का पौधा।

मारीची [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का देवता।

मारीच्य [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निश्वाता।

मारीष [संज्ञा पु.] (सं.) मरसा नामक साग।

मारुंड, मारुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) सांप का अंडा।

मारु*+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मार'।

मारुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पवन। हवा। २-वायु का अधिपति देवता।

मारुततनय, मारुतनंदन, मारुतनन्दन, मारुतसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीम।

मारुतापह [संज्ञा पु.] (सं.) वरुणवृक्ष।

मारुतात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीम।

मारुताशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्तिकेय। २-सांप।

मारुति [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-भीम।

मारुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन पर्वत का नाम।

मारुध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम

मारू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-युद्ध के समय बजाया और गाया जाने वाला एक राग। २-बहुत बड़ा नगाड़ा। जंगी धौंसा। ३-मरुदेशवासी। मारवाड़ी। (देश.) १-एक प्रकार का शाहबलूत वृक्ष। २-काकरेजी रंग। [वि.] (हि.) १-मारने वाला। २-हृदयवेधक।

मारूत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घोड़ी के पिछले पैरों की एक भौंरी। [संज्ञा पु.] (हिं.) हनुमान।

मारे [अव्य.] वजह से।

मार्क [संज्ञा पु.] (अं.) जर्मनी में चलने वाला चाँदी का सिक्का जो भारत के बारह आने के बराबर होता है।

मार्कंड [संज्ञा पु.] देखो 'मार्कंडेय'।

मार्कंडेय, मार्कण्डेय [संज्ञा पु.] (सं.) मृकंड ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से मृत्यु को परास्त करके चिरंजीवी हुए।

मार्क [संज्ञा पु.] (अं.) १-देखो 'मार्का'। २-एक जरमनी चाँदी का सिक्का जो भारतीय बारह आने मूल्य के बराबर होता है। [संज्ञा पु.] (सं.) भृङ्गराज। भँगरैया।

मार्कर, मार्कव [संज्ञा पु.] (सं.) भृङ्गराज। भँगरैया।

मार्का [संज्ञा पु.] (अं.) कोई अंक या चिह्न जो किसी विशेष बात का सूचक है। संकेत। छाप।

मार्केट [संज्ञा पु.] (अं.) बाजार। हाट।

मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-रास्ता। पंथ। २-अगहन का महीना। ३-मृगशिरानक्षत्र। ४-विष्णु। ५-लाल अपामार्ग। ६-गुदा। ७-कस्तूरी। [वि.] मृग-सम्बन्धी।

मार्गक [संज्ञा पु.] (सं.) अगहन का महीना।

मार्ग-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो पथिकों या यात्रियों से किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जाता है। *टोल-टैक्स*।

मार्गण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्वेषण। ढूंढ़ना। २-प्रेम। ३-भिखमंगा।

मार्गद [संज्ञा पु.] (सं.) केवट। मांझी।

मार्गधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक योजन का परिमाण।

मार्गन* [संज्ञा पु.] (हि.) तीर। बाण।

मार्ग-निरोध [संज्ञा पु.] (हि.) मार्ग में अड़चन खड़ी करना। मार्ग रोकना।

मार्गप, मार्गपति [संज्ञा पु.] (सं.) मार्गों का निरीक्षण करने वाला राज्य-कर्मचारी।

मार्गव [संज्ञा पु.] (सं.) एक संकर जाति।

मार्गवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राह चलने वालों की रक्षक देवी।

मार्गवेद [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषिकुमार

मार्गशिर, मार्गशिरस [संज्ञा पु.] देखो 'मार्गशीर्ष'।

मार्गशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अगहन का महीना।

मार्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पथिक। यात्री। २-मृगों को मारने वाला व्याध।

मार्गित [वि.] (सं.) १-खोजा हुआ। २-अभिलषित।

मार्गितव्य [वि.] (सं.) खोजने योग्य।

मार्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्ग पर चलने वाला आदमी (यौ० के अन्त में)। २-पथिक। यात्री। बटोही। [संज्ञा स्त्री.] संगीत मे एक मूर्छना।

मार्गीयव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान

मार्गेश [संज्ञा पु.] (सं.) मार्गपति।

मार्ग्य [वि.] (सं.) मार्जन करने योग्य। मार्जनीय

मार्च [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी वर्ष का तीसरा महीना जो ३१ दिन का होता है।

मार्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्जन। २-धोबी। ३-विष्णु।

मार्जक [वि.] (सं.) [स्त्री. मार्जिका] साफ करने वाला। माँजने वाला।

मार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-साफ या स्वच्छ करने का भाव। २-सफाई। ३-लोध का वृक्ष। ४-लोध। ५-अपने आपको पवित्र करने के लिए तीर्थ आदि का जल अपने ऊपर छिड़कना। ६-भूल दोष आदि का परिहार।

मार्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफाई। २-क्षमा। माफी। [संज्ञा पु.] धोबी।

मार्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-झाड़ू। बुहारी। २-संगीत में मध्यम स्वर की चार श्रुतियों में से अन्तिम।

मार्जनीय [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। [वि.] (सं.) मार्जन करने योग्य।

मार्जार [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मार्जारी] १-बिलार बिल्ली। २-लाल चीता नामक वृक्ष। ३-पूतिसारवा।

मार्जारक [संज्ञा पु.] (सं.) मोर।

मार्जारक-कर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चामुंडा का एक नाम।

मार्जारगंधा, मार्जारगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुद्गपर्णी।

मार्जारपाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बुरे लक्षण वाला घोड़ा।

मार्जारालक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न।

मार्जारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कस्तूरी। २-गंधनाकुली।

मार्जारीटोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

मार्जारीय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विल्ली। २-शूद्र।

मार्जालीय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विल्ली। २-शिव ३-शूद्र। ४-एक प्राचीन ऋषि का नाम।

मार्जित [वि.] (सं.) स्वच्छ या साफ किया हुआ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन खाद्य-पदार्थ।

मार्तंड, मार्तण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। मदार। ३-सूअर। ४-सोनामाखी।

मार्तंडवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्यपत्नी छाया का एक नाम।

मार्त्तिकावत [संज्ञा पु.] (सं.) १-चेदिराज्य के एक प्राचीन नगर का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। २-उस देश का निवासी।

मार्दव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अहंकार या अभिमान का त्याग। २-दूसरों के कष्ट को देखकर दुखी होना। ३-सरलता। ४-एक प्राचीन संकर जाति।

मार्दीक [संज्ञा पु.] (सं.) अङ्गूर की शराब।

मार्फत [अव्यय] (अ.) द्वारा। जरिए से।

मार्मिक [वि.] (सं.) १-मर्म स्थान पर प्रभाव डालने वाला। प्रभावशाली। २-मर्मज्ञ।

मार्मिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मार्मिक होने का भाव। २-मर्म तक पहुँचने का भाव। पूर्ण अभिज्ञता।

मार्शल [संज्ञा पु.] (अ.) एक उच्च सैनिक अधिकारी जो प्रधान सेनापति या समर-सचिव के अधीन होता है।

मार्शल-लॉ [संज्ञा पु.] (अ.) १-सैनिक व्यवस्था या शासन। फौजी क़ानून। २-फौजी क़ानूनों तथा अधिकारियों का शासन, जो बहुत कठोर होता है।

मार्ष [संज्ञा पु.] देखो 'मारिष'।

माल [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षेत्र। २-कपट। ३-जङ्गल। वन। ४-विष्णु। ५-एक प्राचीन अनार्य जाति। ६-एक देश का नाम। ७-हरताल। ※ [संज्ञा पु.] (हि) कुश्ती लड़ने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-माला। हार। २-वह डोरी जिससे चरखे में का तकला घूमता है। ३-पंक्ति। कतार। [संज्ञा पु.] (अ.) १-धन। सम्पत्ति। २-सामग्री। सामान। ३-क्रयविक्रय की वस्तुए ४-कर के रूप में राज्य को मिलने वाला धन अथवा उपज का भाग। ५-उत्तम तथा सुस्वादु भोजन। ६-कोई अच्छी तथा बढ़िया वस्तु। ७-वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बनी हो। सामग्री। ८-गणित में वर्ग का घात। वर्ग-अंक। ९-सुन्दर और युवती स्त्री (गुण्डों की बोली में)। *माल उड़ाना*-१-धन का अपव्यय करना। २-दूसरे की सम्पत्ति को हड़प लेना। ३-अच्छे-अच्छे और सुस्वादु भोजन करना। *माल काटना*-१-अनुचित रूप से किसी के धन पर अधिकार करना। २-माल चुराना। *माल चीरना या मारना*-दूसरे की सम्पत्ति या धन दबा बैठना। यौ०-*मालमता*-माल-असबाब। *मालटाल*-धन-संम्पत्ति।

मालकँगनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वृक्षों पर फैलने वाली एक पहाड़ी लता जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है।

मालकँगुनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मालकँगनी'।

मालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थलपद्म। २-नीम। +[संज्ञा पु.] (हि.) मालिक।

मालकगुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मालकँगनी'।

मालका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माला।

मालकुंडा, मालकुण्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कूड़ा जिसमें नील रखा जाता है।

मालकोश [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जो शरद् ऋतु में रात के पिछले पहर में गाया जाता है किसी ने शिशिर तथा वसंत में गाने का उल्लेख किया है।

मालकोस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मालकोश'।

मालखंभ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का खंभा जिस पर कई प्रकार की कसरतें की जाती हैं। २-इस प्रकार के खम्भे पर की जाने वाली कसरत।

मालखाना [संज्ञा पु.] (फा.) वह राजकीय या विभागीय स्थान जहां माल-असबाब जमा रहता हो। भंडार।

मालगाड़ी [संज्ञा पु.] (हि.) रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल-असबाब भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।

मालगुजार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह व्यक्ति जो मालगुजारी दे। २-मध्यप्रदेश में एक प्रकार के जमींदार जो किसानों से लगान वसूल कर के सरकार को मालगुजारी देते हैं।

मालगुजारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह भूमि-कर जो जमींदार सरकार को देता है। २-लगान।

मालगुर्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

मालगोदाम [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह स्थान जहां व्यापारिक माल रखा जाता है। २-रेल के स्टेशनों पर का वह स्थान जहां द्वारा भेजा जाने वाला माल रखा है।

मालचक्रक [संज्ञा पु.] (सं.) कूल्हा।

मालजातक [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धमार्जार।

मालटा [संज्ञा स्त्री.] (अं. माल्टा) तरह का एक फल।

मालति ※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

मालतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मातृका का नाम।

मालती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसिद्ध और उसके सुगन्धित फूल। २- की एक वर्णवृत्ति का नाम जिसके में क्रमशः नगण, जगण, जगण और होता है। ३-छः अक्षरों का इसके प्रत्येक चरण में दो जगण होते मत्तगयंद सवैया का एक नाम। ६-चाँदनी। ज्योत्स्ना। ७-रात्री। पाठा। पाढ़ा। ९-जायफल का पेड़।

मालतीक्षारक, मालतीजात [संज्ञा पु.] सोहागा।

मालतीटोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सम्पूर्ण एक रागिनी।

मालती-तीरज [संज्ञा पु.] (सं.) सोहागा।

मालतीपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जावित्री।

मालतीफल [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल।

मालद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह प्रदेश जिसे ने उजाड़ा था। २-एक अनार्य जाति जिसका उल्लेख मार्कण्डेयपुराण में

मालदह [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक भागलपुर के पास है तथा जहां अच्छा होता है। २-उक्त स्थान का

मालदही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक नाव। २-एक प्रकार का (कपड़ा)।

मालदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मालदह'।

मालदार [वि.] (फा.) धनी। संपन्न।

मालद्वीप [संज्ञा पु.] (हिं.) भारतीय के पास का एक द्वीपपुंज।

मालन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माली की मालीजाति की स्त्री।

मालन्यायालय [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसमें केवल माल-विभाग से वाले, अर्थात् भूमि के लगान विषयक का विचार होता है। रेविन्यू-कोर्ट।

मालपुआ, मालपूआ, मालपूवा [संज्ञा एक प्रकार का मीठा पकवान।

मालवर्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूरत से एक प्रकार की ईख।

मालभंजिका, मालभञ्जिका [संज्ञा प्राचीन काल में खेले जाने वाले

नाम।

मालभंडारी, मालभण्डारी [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज का वह कर्मचारी जिसके अधिकार में लदे हुए माल रहते हैं।

मालभूमि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रदेश का नाम जो नैपाल के पूर्व में है।

मालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंदन। २-गरुड़ के पुत्र का नाम। ३-व्यापारियों का झुण्ड। [वि.] मालय-संबंधी।

मालव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मालव देश। २-मालव-देशवासी। ३-एक राग का नाम। यह रात के समय १६ दंड से बीस दंड तक गाया जाता है। ४-सफेद लोध। [वि.] मालवे का

मालवक [वि.](सं.) मालवा देश-संबंधी। मालवे देश का। [संज्ञा पु.] मालव देश का निवासी

मालवगौड़ [संज्ञा पु.] (सं.) षड्व जाति का एक संकर राग जो सायंकाल के समय गाया जाता है।

मालवर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जाति का नाम।

मालवश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो सायंकाल के समय गाई जाती है। इसे मालश्री या मालसी भी कहते हैं।

मालवा [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्राचीन देश का नाम जो अब मध्य भारत में है। [संज्ञा स्त्री.] एक प्राचीन नदी का नाम।

मालविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

मालविटपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुम्भी नामक वृत्त

मालवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रीराग की एक रागिनी। २-पाढ़ा। [वि.] देखो 'मालवीय'

मालवीय [वि.] (सं.) १-माल देश-सम्बन्धी। मालव देश का। २-माल देश का निवासी।

मालश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मालवश्री'।

मालसी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मालवश्री'।

मालहायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

मालांक, मालाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) भूस्तृण।

माला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। अवली। २-फूलों का हार। गजरा। ३-सूत में पिरोये हुए मनके। ४-समूह। झुण्ड। ५-दूब। ६-एक नदी का नाम। ७-काठ की लंबी डोकिया। ८-भुंई आँवला। ९-उपजाति छन्द का एक भेद। माला फेरना-किसी का नाम जपना या किसी को भजना।

मालाकंठ, मालाकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपामार्ग। २-एक गुल्म का नाम।

मालाकंद, मालाकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कन्द।

मालाकार [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मालाकारी] १-माली। २-एक वर्णसंकर जाति का नाम

मालागिरी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक रंग का नाम। [वि.] (हि.) मालागिरी रंग में रंगा हुआ।

मालागुण [संज्ञा पु.] (सं.) गले का हार।

मालागुणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक असाध्य रोग जिसे लूता भी कहते हैं।

मालातृण [संज्ञा पु.] (सं.) भूस्तृण।

मालादीपक [संज्ञा पु.] (सं.) एक अर्थालंकार जिसमें पूर्व कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।

मालादूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दूब जिसमें बहुत सी गांठें होती हैं और जिसे गंडदूर्वा भी कहते हैं।

मालाधर [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण, जगण, सगण, और यगण तथा अन्त में लघु गुरु होते हैं।

मालाधार [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के एक देवता का नाम। [वि.] (सं.) माला धारण करने वाला।

मालाप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम।

मालाफल [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष।

मालामंत्र, मालामन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मन्त्र।

मालामणि [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष।

मालामनु [संज्ञा पु.] (सं.) मालामन्त्र।

मालामाल [वि.] (फा.) बहुत सम्पन्न।

मालारिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाटीलता जिसके पत्तों की गणना सुगंधित द्रव्य में होती है।

मालालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असबरग। पृक्का

मालाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मालालिका'।

मालावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक सङ्कर रागिनी।

मालिंद्य, मालिन्द्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन पर्वत का नाम।

मालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माली। २-एक प्रकार की चिड़िया। ३-धोबी। रजक। [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. मालिकिन] १-ईश्वर। २-स्वामी ३-पति। खसम।

मालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। २-माला ३-एक आभूषण का नाम जो गले में पहना जाता है। ४-पक्के मकान का ऊपरी खंड। ५-अंगूर की शराब। ६-अलसी। ७-चमेली ८-मद्य। ९-पुत्री। १०-मालिन। ११-सप्तला सातला। १२-मुरा।

मालिकाना [संज्ञा पु.] (फा.) १-स्वामी का अधिकार या स्वत्व। स्वामित्व। २-वह कर, दस्तूरी, हक आदि जो मालिक अदना ताल्लुकेदार को देते हैं। [क्रि. स.] (हिं.) मालिक के समान। मालिक की भाँति।

मालिकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मालिक होने का भाव। २-मालिक का स्वत्व।

मालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मालिन। २-चंपा नगरी। ३-स्कंद की सात माताओं में से एक ४-गौरी। ५-वह नदी जिसके तट पर मेनका के गर्भ से शकुन्तला का जन्म हुआ था। ६-गङ्गा। ७-कलियारी। ८-दुरालभा। जवासा। ९-एक राक्षसी का नाम। १०-रौच्यमनु की माता का नाम। ११-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, भगण, यगण, यगण होते हैं। मंदिरा नामक एक वृत्ति का नाम।

मालिन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलीनता। मैलापन। २-अन्धकार। अंधेरा।

मालिमंडन, मालिमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

मालियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मूल्य। कीमत। २-धन। संपत्ति। ३-मूल्यवान पदार्थ।

मालिया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की गाँठ जो मोटे रस्सों में दी जाती है।

मालिवां* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मल्यावान'।

मालिवान* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'माल्यावान'

मालिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मलने की क्रिया या भाव। मलाई। मर्दन।

माली [संज्ञा पु.] (हिं.) [मालिन, मालन, मालिनि मालिनी] १-बाग के पौधों की देखभाल करने और सींचने वाला व्यक्ति। वह जो पौधे लगाने और उनकी रक्षा आदि की विद्या में निपुण हो। २-एक जाति विशेष जिसके लोग फलों और फूलों का व्यवसाय करते हैं। ३-सुकेश राक्षस का पुत्र। ४-एक छन्द। [वि.] (हि.) [स्त्री मालिनी] जो माला धारण किये हो। [वि.] (फा.) आर्थिक। धन-संबंधी

मालीगौड़ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मालवगौड़'।

मालीद [संज्ञा पु.](अं. मालिबडेना) एक धातु जो चांदी से भी उजली और चमकदार होती है।

मालीदा [संज्ञा पु.] (फा.) १-मलीदा। चूरमा। २-एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

मालु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक लता का नाम। २-नारी।

मालुंक [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजहंस जो मटमैले रंग का होता है।

मालुकाच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) बहेड़ा।

मालुद [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम (बौद्ध)।

मालुधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का सांप २-आठ नागों में से एक। ३-महापथ।

मालुधानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लता का नाम

मालू [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बेल।

मालूक [संज्ञा पु.] (सं.) काली तुलसी।

मालूम [वि.] (अ.) जाना हुआ। विदित। ज्ञात। [संज्ञा पु.] (अ.) जहाज का अधिकारी।

मालूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेल का पेड़। २-कैथ।

मालोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के भिन्न-भिन्न धर्मों वाले अनेक उपमान बतलाये जाते हैं।

माल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूल। २-माला।

माल्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दौना। २-माला।

माल्यजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) माला बनाने वाला माली।

माल्यपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) सन का पेड़।

माल्यवंत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'माल्यवान्'।

माल्यवत् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'माल्यवान्'। [वि.] (सं.) जो माला पहने हो।

माल्यवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] माला पहने हुई।

माल्यवान् [संज्ञा पु.](सं.) १-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २-एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। [वि.] (सं.) [स्त्री. माल्यवती] जो माला पहने हो।

माल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की घास।

माल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वर्णसंकर जाति। २-देखो 'मल्ल'।

माल्लवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लों की विद्या या कला।

माल्ह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'माल'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मल्ल'।

मावत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महावत'।

मावली [संज्ञा पु.] (देश.) दक्षिण भारत की एक जाति का नाम।।

मावस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अमावस'।

मावा [संज्ञा पु.] (हि.) १-माँड़। २-सत। सार ३-दूध जलाकर बनाया हुआ खोया। ४-अंडे के भीतर का पीला रस। ५-चन्दन का इत्र। ६-तमाखू में डालने का खमीर। ७-हीरे की बुकनी। ८-मसाला। ९-प्रकृति। १०-वह दूध जो गेहूँ आदि को भिगोकर या कच्चा मलकर निचोड़ने से निकलता है।

मावासी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मवासी'।

माविजा [संज्ञा पु.] देखो 'मुआवजा'।

माश [संज्ञा पु.] (डिं.) देखो 'माष'।

माशकी [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'भिश्ती'।

माशा [संज्ञा पु.] (हिं.) आठ रत्ती का प्रसिद्ध मान या तौल।

माशाअल्लाह [संज्ञा पु.](अ.) एक प्रशंसासूचक पद। बहुत अच्छा है। क्या कहना।

माशी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कालापन लिये हरा रंग। २-भूमि की एक नाप २४० वर्ग गज की होती है। [वि.] (हि.) उड़द के रंग का।

माशूक [संज्ञा स्त्री.] (फा.) [स्त्री. माशूका] प्रेमपात्र। प्रिय।

माशूकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) माशूक होने का भाव

माष [संज्ञा पु.] (सं.) १-उड़द। २-माशा। ३-
[वि.](सं.) मूर्ख। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'माख'।

माषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माशा (तौल)। २-उड़द।

माषतैल [संज्ञा पु.] (सं.) (वैद्यक) एक तेल जो अर्द्धाङ्ग, कंप आदि रोगों में लाभदायक है।

माषना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'माखना'।

माषपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी।

माषपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली उड़द। वन-माष।

माषवटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उड़द की बनी हुई बड़ी।

माषभक्तबलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की बलि जो तांत्रिक लोग दुर्गा, काली आदि को चढ़ाते हैं।

माषयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पापड़।

माषरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांड़। पीच।

माषरवि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

माषवर्द्धक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णकार। सुनार।

माषाद [संज्ञा पु.] (सं.) कछुआ।

माषाश [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

माषीण [संज्ञा पु.] (सं.) माष का खेत।

माष्य [संज्ञा पु] (सं.) वह खेत जो माष या उड़द बोने के योग्य हो।

मास् [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-महीना। मास।

मास [संज्ञा पु.] (सं.) काल के एक विभाग का नाम जो (प्रायः तीस दिनों का) वर्ष के बारहवें भाग के बराबर का होता है। महीना। *[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मांस'।

मासक [संज्ञा पु.] (सं.) महीना। मास।

मासचारिक [वि.](सं.) जो एक मास तक कर्त्तव्य हो।

मासजात [वि.] (सं.) जिसे उत्पन्न हुए केवल एक महीना हुआ हो।

मासज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनमुर्गी। २-एक प्रकार का हिरन।

मासताला [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा

मासन [संज्ञा पु.] (सं.) सोमराज के बीज।

मासना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) मिलना। [क्रि. स.] (हि.) मिलाना।

मासप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) महीने का आरम्भ होना।

मासभृत [संज्ञा पु.] (सं.) वह मजदूर जिसे मासिक वेतन मिलता हो।

मासप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) महीने का आरम्भ होना।

मासफल [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें पूरे महीने भर का शुभाशुभ फल ज्योतिष के अनुसार लिखा हो।

मासर [संज्ञा पु.] (सं) १-एक प्रकार का मादक पेय-पदार्थ। २-काँजी।

मासल [वि.] (सं.) देखो 'मांसल'।

मासवर्त्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतङ्ग जाति का एक पक्षी।

मासस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

मासांत, मासान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-महीने का अन्त। २-अमावस्या। ३-संक्रान्ति।

मासा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'माशा'।

मासाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) मास का स्वामी ग्रह। मासेश।

मासानुमासिक [वि.] (सं) प्रति मास-संबंधी। प्रति मास का।

मासिक [वि.] (सं.) १-मास-सम्बन्धी। महीने का। २-हर महीने में एक बार होने वाला। [संज्ञा पु.] १-प्रति मास मिलने वाला वेतन। २-प्रतिमास निकलने या प्रकाशित होने वाला पत्र। ३-प्रति मास होने वाला स्त्रियों का रजोधर्म।

मासिक-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों का प्रति मास होने वाला स्राव या रजोधर्म।

मासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मां की बहन। मौसी।

मासीन [वि.] (सं.) एक महीने का। जो महीने भर का हो।

मासुरकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) मसुरकर्ण का

मासुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में चीरफाड़ के एक शस्त्र या औजार का नाम (सुश्रुत)।

मासूम [वि.] (अ.) अपराध या दोषरहित। बेगुनाह।

मासेष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रति मास होने वाला यज्ञ।

मासोपवास [संज्ञा पु.] (सं.) एक मास का अनशन व्रत।

मास्टर [संज्ञा पु.] (अ.) १-स्वामी। मालिक। २-शिक्षक। अध्यापक। गुरु। ३-किसी विषय में परम-प्रवीण। ४-बालकों के लिए व्यवहृत एक शब्द।

मास्टरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-अध्यापक का पढ़ाने का काम। २-मास्टर का भाव।

मास्य [वि.](सं.) जो महीने भर का हो।

माहँ*+ [अव्य.] (हिं.) बीच में।

माह* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-माघ। २-उड़द। ३-मास। महीना।

माहकस्थलक [वि.] (सं.) १-माहकस्थली का वाला। २-माहकस्थली में उत्पन्न। स्थली का।

माहकस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन पद का नाम।

नाहकि [संज्ञा पु.] (सं.) १-महकऋषि के २-एक आचार्य का नाम।

माहत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महत्व। बढ़ाई।

माहताब [संज्ञा पु.] (फा.) १-चन्द्रमा। २-देखो 'महताबी'।

माहताबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-देखो 'महताबी'। २-एक प्रकार का कपड़ा। ३-आँगन का ऊँचा और खुला चबूतरा। ४-तरबूज। ५-नकोतरा नीबू।

माहन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

माहना* [क्रि. अ., स.] (हिं.) देखो 'उमाहना'।

माहनीय [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

माहर [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्रायन। [वि.] (हिं.) देखो 'माहिर'।
माहर का फल–सुन्दर पर दुर्गुणयुक्त।

माहली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेवक विशेषतः अन्तःपुर का। महली। खोजा। २-नौकर। सेवक। दास।

माहवार [क्रि. वि.] (फा.) प्रति मास। हर महीने [वि.] (फा.) मासिक। प्रतिमास या महीने का। [संज्ञा पु.] महीने का वेतन।

माहवारी [वि.] (फा.) हर महीने का। मासिक। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्त्रियों का मासिक धर्म।

माहाँ*+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'महँ'।

माहात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-महिमा। महत्व। २-आदर। मान।

माहिं* [अव्य.] (हिं.) १-भीतर। अन्दर। २-अधिकरण कारक का चिह्न, में या पर।

माहिक [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक जाति का नाम।

माहित [संज्ञा पु.] (सं.) महितऋषि के गोत्रज पुरुष।

माहित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम जिसका उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

माहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) महितऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

माहित्र [संज्ञा पु.] (सं.) मनुस्मृति में वर्णित एक ऋचा का नाम।

माहियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-तत्व। भेद। २-प्रकृति। ३-विवरण।

माहियाना [वि.] (फा.) माहवार। [संज्ञा पु.] मासिक वेतन।

माहिर [वि.] (अ.) ज्ञाता। जानकार। [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

माहिला+* [संज्ञा पु.] (अ.) मांझी। मल्लाह.

माहिष [वि.] (सं.) १-भैंस का (दूध आदि)। २-भैंस-सम्बन्धी।

माहिषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-इस देश में रहने वाली एक जाति का नाम।

माहिषवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काला विधारा।

माहिषवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिरहटी।

माहिषस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी या जनपद का नाम।

माहिषाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसागुगल।

माहिषिक [संज्ञा पु.] (सं.) कुलटा स्त्री का पति २-वह व्यक्ति जो भैंस से जीवन निर्वाह करता है।

माहिषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

माहिष्मती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण के एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर का नाम।

माहिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्मृतियों में वर्णित एक संकर जाति का नाम।

माहीं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'मांहि'।

माही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मछली। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खंभात की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी का नाम।

माहीगीर [संज्ञा पु.] (फा.) मछली पकड़ने वाला मछुआ।

माहीपुश्त [वि.] (फा.) मछली की पीठ की भांति बीच में से उभरा हुआ। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का कारचोबी काम।

माहीमरातिब [संज्ञा पु.] (फा.) राजाओं के आगे हाथी पर चलने वाले बड़े झंडे।

माहुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) विष। जहर। *माहुर की गांठ*–१-बहुत विषैला पदार्थ। २-भारी दुष्ट या चालबाज आदमी।

माहुल [संज्ञा पु.] (सं.) महुल गोत्रोत्पन्न पुरुष।

माहूँ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

माहू [संज्ञा पु.] (देश.) कनसलाई नामक बरसाती कीड़ा जो कान में घुस जाता है।

माहेंद्र, माहेन्द्र [वि.] (सं.) १-महेंद्र-सम्बन्धी। २-जिसका देवता महेंद्र हो। [संज्ञा पु.] १-एक अस्त्र का नाम। २-चार के अनुसार भिन्न दंडों में पड़ने वाला एक योग जिसमें यात्रा करने का विधान है। ३-सुश्रुत के अनुसार एक देवग्रह जिसके आक्रमण से ग्रह-ग्रस्त पुरुष में माहात्म्य, शौर्य, शास्त्र-बुद्धिता, भृत्य-भरण आदि गुण एक-एक आ जाते हैं। ४-जैनियों के एक देवता जो कल्पभाव नामक वैमानिक देवगण में हैं। ५-जैनों के मतानुसार चौथे स्वर्ग का नाम।

माहेंद्रवाणी, माहेन्द्रवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

माहेंद्री, माहेन्द्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-इन्द्रायणी। २-गाय। ३-सात मातृकाओं में से एक। ४-इन्द्रायन। ५-इन्द्र की शक्ति।

माहेताबा [संज्ञा पु.] (फा.) चिलमची।

माहेय [वि.] (सं.) मिट्टी का बना हुआ। [संज्ञा] मूँगा। विद्रुम।

माहेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाय। २-माही-नदी।

माहेल [संज्ञा पु.] (सं) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

माहेश [वि.] (सं.) महेश-सम्बन्धी। महेश का।

माहेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

माहेश्वर [वि.] (सं.) महेश्वर-सम्बन्धी। महेश्वर का।

माहेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-एक मातृका का नाम। ३-एक पीठ का नाम। ४-एक नदी का नाम। ५-वैश्यों की एक जाति।

माहोँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'माहूँ'।

मिं [संज्ञा स्त्री.] (चीनी) चीनदेश की एक जाति का नाम।

मिंगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेंगनी'।

मिंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मींगी'।

मिंट [संज्ञा पु.] (अं.) १-टकसाल। २-एक प्रकार का बढ़िया सोना। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिनट'।

मिंड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मीड़ने या मींजने की क्रिया या भाव। २-मीड़ने की मजदूरी। ३-हाथ से छापी जाने वाली छींट में की एक क्रिया।

मिंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मित्र'।

मिंबर [संज्ञा पु.] (अ.) मसजिद में का वह ऊँचा चबूतरा जिस पर बैठकर मुल्ला आदि नमाज पढ़वाते, उपदेश करते या खुतबा पढ़ते हैं।

मिंहदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेंहदी'।

मिआद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मीआद'।

मिआदी [वि.] (हिं.) देखो 'मीआदी'।

मिआन [वि.] (हिं.) देखो 'मियान'।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मियान'।

मिक़द [संज्ञा स्त्री.] (फा.) गुदा। मलद्वार।

मिक़दार [संज्ञा स्त्री.] (अ.) परिमाण। मात्रा।

मिक़नातीस [संज्ञा पु.] (फा.) चुम्बक पत्थर।

मिकाडो [संज्ञा पु.] (जापानी) जापानी सम्राट की उपाधि।

मिक्सचर [संज्ञा पु.] (अं.) मिश्रित तरल औषध।

मिचकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-आँखों का बार-बार खुलना और बंद होना। २-पलकों का झपकना या बन्द होना।

मिचकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) बारबार पलकें खोलना और बन्द करना।

मिचकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आँखें मिचकाने की क्रिया या भाव। २-आँख का इशारा या संकेत। +[संज्ञा स्त्री.] (?) छलांग। उछाल

मिचना [क्रि. अ.] (हिं.) आँखों का बन्द होना

मिचराना [क्रि. अ.] (हिं.) इच्छा न होते हुये भी भोजन करना (बालकों के लिये)।

मिचलाना [क्रि. अ.] (हिं.) कै या उलटी होने को होना। मिचली आना।

मिचली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जी मिचलाने की

क्रिया। कै या वमन करने की इच्छा।

मिचवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को मीचने या आंखें बन्द करने में प्रवृत्त करना।

मिचिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

मिचौनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'आंख-मिचौली

मिचौलना+ [क्रि. स.] (हिं.) मीचना।

मिच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध स्थविर का नाम।

मिछा*+ [वि.] (हिं.) देखो 'मिथ्या'।

मिजराब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) तार का बना हुआ एक प्रकार का नुकीला छल्ला जिससे सितार बजाई जाती है।

मिजवानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेजवानी'।

मिजाज [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी पदार्थ का स्थाई तथा मूलगुण। प्रकृति। तासीर। २-स्वभाव। प्रकृति। ३-मन की अवस्था। तबीयत। ४-गर्व। घमंड। शेखी।
मिजाज खराब होना-१-मन में ग्लानि या अप्रसन्नता आदि होना। २-अस्वस्थता होना। *मिजाज बिगड़ना*-देखो 'मिजाज खराब होना' *मिजाज बिगाड़ना*-किसी के मन में क्रोध मनोविकार आदि उत्पन्न होना। *मिजाज पाना*-१-किसी के स्वभाव से परिचित होना। २-किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। *मिजाज पूछना*-तबियत या स्वास्थ्य का हाल पूछना। *मिजाज न मिलना*-घमंड के कारण किसी से भली प्रकार व्यवहार न किया जाना। *मिजाज मे आना*-समझ में आना। *मिजाज आना*-अभिमान होना।

मिजाजआली [पद] (अ.) आप अच्छे तो हैं।

मिजाजदार [वि.] (अ., फा.) घमंडी। अभिमानी

मिजाजपीटा [वि.] (अ., हिं.) [स्त्री. मिजाजपीटी] बहुत घमंडी या अभिमानी।

मिजाजपुरसी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) तबियत या स्वास्थ्य का हाल पूछना।

मिजाजशरीफ (अ.) आप अच्छे तो हैं? आप सकुशल तो है।

मिजाजी+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. मिजाजो] अभिमानी। घमण्डी।

मिजाजो+ [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] अभिमान करने वाली। घमंडी।

मिझोना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हल के खड़े बल में लगी हुई लकड़ी।

मिटका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मटका'।

मिटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी अङ्कित चिह्न आदि का नष्ट होना। २-न रह जाना।

मिटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना। २-नष्ट करना। न रहने देना। ३-खराब या चौपट करना। ४-रद्द करना।

मिटिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मटकी। [वि.] मिट्टी का।

मिटियाना [क्रि. स.] (हिं.) मिट्टी लगाकर साफ करना।

मिटिया-फूस [वि.] (हिं.) जो तनिक सा भी पक्का न हो। बहुत ही कमजोर।

मिटिया-महल [संज्ञा पु.] (हिं., फा.) मिट्टी का मकान। झोंपड़ी (व्यंग्य)।

मिटिया-साँप [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का काली चित्तियों वाला मटमैला साँप।

मिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पृथ्वी। भूमि। जमीन। २-वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी तल पर प्रायः सब जगह पाया जाता है। धूल। खाक। ३-शरीर। वदन। ४-मृत शरीर। शव। लाश। ५-शारीरिक गठन या बनावट *मिट्टी करना*-नष्ट या चौपट करना।
मिट्टी के मोल-बहुत सस्ता। *मिट्टी खराब करना*-१-बुरी हालत करना। २-नष्ट करना। *मिट्टी खराब होना*-१-दुर्दशा होना। २-इज्जत जाना। *मिट्टी खराबी*-नाश। बरबादी *मिट्टी ठिकाने लगाना*-शव को गाड़ा या जलाया जाना। *मिट्टी डालना*-१-किसी बात को जाने देना। छोड़ देना। २-दोष छिपाना या उन पर परदा डालना। *मिट्टी ढह जाना*-बुढ़ापे के चिह्न होना। *मिट्टी पकड़ना*-जमीन पर जम जाना। *मिट्टी पलीत करना*-दुर्दशा करना। *मिट्टी मे मिल जाना या मिलना*-१-मरना। २-बरबाद होना। *मिट्टी होना*-१-खराब होना। २-गंदा या मैला होना।
यौ०-*मिट्टी का पुतला*-माव शरीर। *मिट्टी खराबी*-दुर्दशा। दुर्गति।

मिट्टी-का-तेल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जो दीपक, लालटेन आदि जलाने के काम में आता है।

मिट्टी-का-फूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी या जमीन पर जमता है जिससे कपड़े धोये जाते और शीशा बनाया जाता है। रेह।

मिट्टी-खरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'खड़िया'

मिट्ठा+ [वि.] (हिं.) [संज्ञा पु.] देखो 'मीठा'।

मिट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुम्बक। चूमा। (बालकों के लिए स्त्रियों द्वारा बोला जाने वाला शब्द।

मिट्ठू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मीठा बोलने वाला। २-तोता।
अपने मुँह आप मियाँ मिट्ठू बनना-अपने मुख से आप प्रशंसा करना। [वि.] (हिं.) १-न बोलने वाला। २-मधुर भाषी। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मिट्ठी'।

मिट्ठो [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'मिट्ठी'।

मिठ [वि.] (हिं.) मीठा का संक्षिप्त रूप जो यौगिक के आरम्भ में लगता है।

मिठबोलना, मिठबोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मीठी-मीठी बातें बोलने वाला। मधुरभाषी। २-मन में कपट और ऊपर से मीठी बातें करने वाला।

मिठरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मठरी'।

मिठलोना [संज्ञा पु.] (हिं.) कम या थोड़े नमक वाला।

मिठाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मीठे होने का भाव मिठास। माधुरी। २-कोई मीठा खाने की वस्तु। ३-कोई अच्छा पदार्थ या बात।

मिठाना [क्रि. अ.] (हिं.) मीठा होना।

मिठास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मीठे होने का भाव मीठापन। माधुर्य।

मिठौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीसे हुए उरद या चने की बनी बड़ी।

मिड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिड़ाई'।

मिडिल [वि.] (अं.) बीच। मध्य। [संज्ञा पु.] शिक्षाक्रम में एक छोटी कक्षा जो एंट्रेंस से कम होती है।

मिडिलची [संज्ञा पु.] (हिं.) मिडिल परीक्षा में उत्तीर्ण। मिडिल पास।

मिडिल-स्कूल [संज्ञा पु.](अं.) वह स्कूल जिसमें केवल मिडिल तक पढ़ाई होती है।

मितंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

मित [वि.] (सं.) १-जिसकी सीमा बंधी हुई हो। परिमित। २-थोड़ा। कम।

मितद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

मितभाषी [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा या कम बोलने वाला। समझ-बूझकर बात कहने वाला।

मितमति [संज्ञा पु.] (सं.) कम अक्ल वाला। थोड़ी बुद्धि वाला।

मितविक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मात्रा... बेचना।

मितव्यय [संज्ञा पु.] (सं.) कम खर्च... किफायत।

मितव्ययता [संज्ञा स्त्री.](सं.) कम खर्च... भाव।

मितव्ययी [संज्ञा पु.](सं.) थोड़ा या कम खर्च करने वाला। किफायतसार।

मिताई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मित्रता। दोस्ती।

मिताक्षरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञवल्क्य... की विज्ञानेश्वरकृत टीका।

मितार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह दूत जो बुद्धि... पूर्वक थोड़ी बातें कहकर अपना कार्य... करे।

मिताशन [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा खाना।

मिताशी [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. मिताशिनी] थोड़ा भोजन करने वाला।

मिताहार [संज्ञा पु] (सं.) थोड़ा भोजन।

मिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मान। परिमाण। २-सीमा। हद। ३-काल की अवधि। मियाद।

आयु के दिन पूरे होना।

मिती [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-चन्द्रमास की तिथि या तारीख। २-दिन। दिवस। मिती चढ़ाना तिथि या तारीख लिखना। मिती पुगन या पूजना-हुँडी के भुगतान का दिन आना। मिती काटना–सूद काटना।

मिती-काटा [संज्ञा पु.] (हि.) एक-एक दिन और एक-एक रकम का सूद जोड़ने का एक सरल महाजनी ढंग।

मित्त, मित्तर* [संज्ञा पु.](हि.) मित्र। दोस्त।

मित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सब बातों में सहायक और शुभचिंतक हो। सखा। दोस्त २-सूर्य। ३-भारतीय आर्यों के एक प्राचीन देवता। ४-अतीस। ५-बारह आदित्यों में प्रथम। ६-वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ७-भारत के एक प्रसिद्ध प्राचीन देश का नाम। ८-पुराणानुसार मरुद्गण में से पहले मरुत का नाम।

मित्रकरण [संज्ञा पु.] (सं.) दोस्ती करना।

मित्रकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

मित्रघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-मित्र का हत्यारा। २-विश्वासघातक। ३-एक दैत्य का नाम।

मित्रघ्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

मित्रज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञ में विघ्न डालने वाले एक राक्षस का नाम।

मित्रता [संज्ञा स्त्री.](सं.) मित्र होने का भाव या धर्म।

मित्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता।

मित्रदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २-महाभारतानुसार एक राजा का नाम। ३-मित्र नामक आदित्य।

मित्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मित्रराष्ट्र'।

मित्रद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) मित्र से द्रोह या बैर करना।

मित्रपंचक, मित्रपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) घी, शहद, गुंजा, सुहागा और गुग्गुल इन पाँचों का समूह (वैद्यक)।

मित्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो मित्र का जीवन निर्वाह करता हो।

मित्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

मित्रप्रकृति [संज्ञा पु.] (सं.) विजेता के चारों ओर रहने वाले मित्रराष्ट्र अथवा राजा।

मित्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। २-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

मित्रभानु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजकुमार जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

मित्रभाव [संज्ञा पु] (सं.) मित्र का धर्म। मित्रता

मित्रभेद [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रों में झगड़ा या वैमनस्य कराने वाला।

मित्रराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह देश या राष्ट्र जो विपत्ति के समय मित्र भाव से परस्पर सहयोग दें। मित्रदेश।

मित्रराष्ट्रसंघ [संज्ञा पु.] (सं.) मित्र देशों या राष्ट्रों का संघ या सभा जिसमें विश्वशांति और अन्य प्रकार की समस्याओं का निपटारा शांतिपूर्ण ढंग से बातचीत द्वारा किये जाने का प्रयत्न किया जाता है।

मित्रलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) दोस्तों का मिलना।

मित्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।

मित्रवन [संज्ञा पु.] (सं.) मुलतान नगर (पाकिस्तान) का एक प्राचीन नाम।

मित्रवर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक राजा का नाम।

मित्रवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. मित्रवती] जिसके मित्र हों।
[संज्ञा पु.](सं.) १-दैत्य का नाम। २-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३-बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

मित्रवाह [संज्ञा पु.] (सं) बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

मित्रविंद, मित्रविन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३-बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

मित्रविंदा, मित्रविन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

मित्रविद् [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्तचर। जासूस।

मित्रवैर [संज्ञा पु.] (सं.) मित्र से वैर या द्वेष रखने वाला।

मित्रसप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मार्गशीर्ष शुक्ला-सप्तमी।

मित्रसह [संज्ञा पु.] (सं.) कल्माशपाद राजा का एक नाम।

मित्रसाहसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग की एक देवी का नाम।

मित्रसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-एक बुद्ध का नाम। ३-बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम। ४-एक बुद्ध का नाम

मित्रहिंसक [वि.](सं.) मित्र की हत्या करने वाला

मित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मित्र नामक देवता की पत्नी का नाम। २-शत्रुघ्न की माता सुमित्रा का एक नाम। ३-एक अप्सरा का नाम जिसका वर्णन् महाभारत में मिलता है। ४-पराशर के शिष्य मैत्रेय की माता का नाम।

मित्राई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मित्रता। दोस्ती।

मित्राक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) छंद के रूप में बना-हुआ पद।

मित्रायु [संज्ञा पु] (सं.) राजा दिवोदास के एक पुत्र का नाम।

मित्रावरुण [संज्ञा पु.] (सं) मित्र तथा वरुण नामक देवता।

मित्रावसु [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वावसु के एक पुत्र का नाम।

मित्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) दशरथ की पत्नी सुमित्रा

मित्रेयु [संज्ञा पु.] (सं) राजा दिवोदास के एक पुत्र का नाम।

मिथनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

मिथि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार राजनिमि के एक पुत्र जनक का नाम।

मिथिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

मिथिल [संज्ञा पु.](सं.) राजा जनक का एक नाम

मिथिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम जिसमें राजा जनक राज करते थे। २-इस प्रदेश की प्राचीन राजधानी।

मिथु [संज्ञा पु.] (सं.) असत्य। मिथ्या।

मिथुन [संज्ञा पु.](सं.) १-स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २-समागम। मेल। ३-मेष आदि बारह राशियों में से तीसरी राशि।

मिथुनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मिथुन का भाव या धर्म।

मिथुनेचर [संज्ञा पु.] (सं.) चक्रवाक पक्षी।

मिथोयोध [संज्ञा पु.] आपस में लड़ने वाला।

मिथ्या [वि.] (सं.) असत्य। झूठ।

मिथ्याग्रह, मिथ्याग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) समझने की भूल या समझने में भूल।

मिथ्याचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झूठा या कपट व्यवहार।

मिथ्याचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपटपूर्ण आचरण। २-वह जो कपटपूर्ण आचरण करता हो

मिथ्याज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रम। भूल।

मिथ्यात्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिथ्या होने का भाव। २-माया। ३-जैनमतानुसार अठारह दोषों में से एक।

मिथ्यादर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दर्शन जिसमें झूठी बातें लिखी गई हों। २-नास्तिकता।

मिथ्यादृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नास्तिकता।

मिथ्याध्यवसिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक काव्यालंकार जिसमें किसी एक असंभव बात को मानकर, दूसरी बात कही जाती है।

मिथ्यानिरसन [संज्ञा पु] (सं.) सौगंध खाकर किसी बात को अस्वीकार करना।

मिथ्यापंडित, मिथ्यापण्डित [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो कुछ न जानते हुए भी झूठमूठ का पंडित बनने का ढोंग करे।

मिथ्यापुरुष [संज्ञा पु] (सं) छायापुरुष ।

मिथ्याप्रतिज्ञ [वि.] (सं.) झूठा वादा करने वाला । दगाबाज । विश्वासघाती।

मिथ्याभिधान [संज्ञा पु.] (सं) झूठ बकना । झूठ कहना ।

मिथ्याभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पर झूठ-मूठ अभियोग लगाने की क्रिया । झूठा आरोप ।

मिथ्याभिशंसन [संज्ञा पु.](सं.) किसी पर झूठा इलजाम लगाना । झूठा दोष मढ़ना ।

मिथ्याभिशाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-झूठा दावा । २-मिथ्या भविष्यद्वाणी ।

मिथ्यामति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भ्रांति । धोखा । भूल ।

मिथ्यायोग [संज्ञा पु.] (सं.) आयुर्वेद के अनुसार वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो। जैसे-मल, मूत्र आदि का वेग रोकना शरीर का मिथ्यायोग है।

मिथ्यावाद [संज्ञा पु.] (सं.) झूठी बात ।

मिथ्यावादी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मिथ्यावादिनी] झूठ बोलने वाला । असत्यवादी। झूठा ।

मिथ्याविहार [संज्ञा पु.] (सं.) झूठमूठ इधर-उधर घूमना ।

मिथ्याव्यवहार [संज्ञा पु.](सं.) किसी विषय को न जानते हुए भी उसमें दखल देना । अनधिकार चर्चा ।

मिथ्यासाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) झूठा गवाह ।

मिथ्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) अनुचित अथवा प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना ।

मिथ्योत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार में चार प्रकार के उत्तरों में से एक प्रकार का उत्तर। अभियुक्त का अपना अपराध छिपाने के लिए मिथ्या बयान ।

मिथ्योपचार [संज्ञा पु.](सं.) बनावटी या दिखाने के लिये परिचर्या अथवा सेवा या बनावटी कृपा ।

मिदुराना* [क्रि. अ.] (हिं.) मृदु अथवा मधुर होना । कोमल होना ।

मिनकना+ [क्रि. अ.] (हि.) बहुत ही दबकर अथवा धीरे से कुछ बोलना ।

मिनजालिक [संज्ञा पु.] (?) व्यय किया जानेवाला धन अथवा उसका खाता । खरच की मद ।

मिनट [संज्ञा पु.] (अं.) एक घंटे का साठवाँ भाग जो साठ सेकंड के बराबर होता है । *मिनटों मे*-बात की बात में । तुरन्त ।

मिनती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विनति' । [संज्ञा पु.] मक्खी की बोली का सा, धीमा, कुछ नाक से निकला हुआ स्वर।

मिनमिन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मक्खी के भनभनाने के समान मन्द शब्द ।

मिनमिना [वि.] (हिं.) १-नाक से बोलने वाला २-थोड़ी सी बात पर कुढ़ने वाला । ३-सुस्त । मट्ठर ।

मिनमिनाना [क्रि. अ.](हिं.) १-नाक से बोलना। नकियाना । २-किसी काम को बहुत सुस्ती से करना ।

मिनवाल [संज्ञा पु.] (अ.) करघे में का कपड़ा लपेटने का बेलन।

मिनहा [वि.] (अ) किसी में से काटा या घटाया हुआ । मुजरा किया हुआ ।

मिनारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मीनार'।

मिनिट-बुक [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह वही, पंजी अथवा पुस्तक जिसमें किसी सभा, समिति के अधिवेशनों और बैठकों में सम्पन्न हुए कार्य का विवरण लिखा जाता है।

मिनिस्टर [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक प्रकार का पादरी अथवा ईसाई धर्माधिकार। २-राज्य अथवा प्रांत के शासन में किसी विभाग का मन्त्री । *प्राइम-मिनिस्टर*-प्रधानमन्त्री ।

मिनिस्टरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मिनिस्टर का काम पद या भाव ।

मिनूजानिब [क्रि. वि.] (अ.) ओर से । तरफ से।

मिनूजुमला [क्रि. वि.](अ.) सबमें से । कुल में से

मिन्नत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-विनय। विनती । २-दीनता । यौ०-*मिन्नत-खुशामद*-दीनतापूर्वक की हुई प्रार्थना ।

मिमत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

मिमयाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बकरी । २-देखो 'मोमियाई'।

मिमियाना [क्रि. अ.] (हिं.) बकरी या भेड़ का बोलना ।

मियाँ [संज्ञा पु.] (फा.) १-स्वामी । मालिक । २-पति । खसम । ३-महाशय (मुसलमान)। ४-शिक्षक । उस्ताद । ५-बच्चों के लिये एक प्रकार का सम्बोधन। ६-पहाड़ी राजपूतों की एक उपाधि ।

मियाँमिट्ठू [संज्ञा पु.] (हि.) १-मधुरभाषी । २-तोता । ३-मूर्ख । बेवकूफ। *अपने मुह मियाँमिट्ठू बनना*-स्वयं अपनी प्रशंसा करना । *मियाँ मिट्ठू बनाना*-तोते के समान रटाना ।

मियाद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मियाद'।

मियाना [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'म्यान' । [संज्ञा पु.] (फा.) मध्य भाग । यौ०-*दरमियान*-मध्य में ।

मियानतह, मियानतही [संज्ञा स्त्री.](हि.) किसी अच्छे कपड़े के नीचे उसकी रक्षा के लिये लगाया हुआ अस्तर का कपड़ा ।

मियान [वि.](फा.) मध्यम आकार का । [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह खेत जो गांव के मध्य में हों । २-गाड़ी का बम । ३-एक प्रकार पालकी । ४-कच्ची चीनी।

मियानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पाजामे में के बीच का कपड़ा।

मियार, मियाल+ [संज्ञा पु.](हि.) पर रखी हुई लकड़ी।

मियेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशु। २-

मिरंगा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) प्रवाल। मूँगा।

मिरकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चौपायों के होने वाली एक प्रकार की बीमारी।

मिरखंभ, मिरखम [संज्ञा पु.] (हि.) की वह लकड़ी जिस पर बैठता है।

मिरग* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मृग'।

मिरगचिड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) एक छोटा पक्षी।

मिरगछाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

मिरगिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसे का रोग हो।

मिरगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रसिद्ध रोग जिसमें रोगी अचानक बेसुध पड़ता है। अपस्मार।

मिरघ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी (बौद्ध)।

मिरचा [संज्ञा पु.] (हिं.) लालमिर्च।

मिरचाई [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-देखो देखो 'कालादाना'।

मिरचियागंध [संज्ञा पु.] (हिं.)

मिरची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लाल मिर्च और बहुत तेज होती है।

मिरजई [संज्ञा स्त्री.](फ़ा.) एक प्रकार कुरता जो प्रायः पूरी बांह का होता है ।

मिरज़ा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-मीर या लड़का । २-राजकुमार। ३-मुगलों उपाधि । [वि.] (फ़ा.) कोमल । (व्यक्ति)।

मिरजाई [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मिरज़ा या पद । २-नेतृत्व। सरदारी। ३- घमंड। ४-देखो 'मिरजई'।

मिरजान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) प्रवाल। मूँगा।

मिरजामिजाज [वि.] (फ़ा.) नाजुक

मिरत* [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो

मिरदंग [संज्ञा पु.] (हि.) देखो

मिरदंगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटा २-मृदंग के आकार की एक प्रकार बाजी। ३-एक प्रकार का शीशे का जिसमें मोमबत्ती जलती है।

मिरवना*+ [क्रि. स.] (हि.) देखो

मिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूर्वा । २-मदिरा । शराब ।

मिरासी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मीरासी' ।

मिरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता ।

मिरिच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिर्च' ।

मिरिचियाकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) रोहिस घास ।

मिरियास* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) किसी के मरने के उपरांत उसके उत्तराधिकारी को मिलने वाली संपत्ति ।

मिर्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिरगी' ।

मिर्च [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों तथा फलियों का एक वर्ग जिसमें काली मिर्च, लाल मिर्च और उनकी कई जातियां हैं। २-इस वर्ग की एक प्रसिद्ध तिक्त फली जो व्यंजनों में मसाले की तरह पड़ती है। ३-एक प्रकार का प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना जिसे काली मिर्च' अथवा 'गोलमिर्च' कहते हैं । [वि.] (हिं.) उग्र, तीव्र या कटु स्वभाव का।

मिर्चन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झड़बेरी के फलों का चूर्ण जिसमें नमक मिर्च मिलाकर चाट के रूप में बेचा जाता है ।

मिर्चिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रोहिस घास ।

मिल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-अनाज, गल्ले या दाने आदि पीसने की चक्की जो बिजली या तेल आदि से चलती है। २-रुई ओटनें, सूत कातने तथा कपड़ा आदि का कारखाना।

मिलक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जमीन-जायदाद । २-जागीर।

मिलकना* [क्रि. अ.] (?) जलना ।

मिलकी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जमींदार । २-धनवान । अमीर ।

मिलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिलने की क्रिया या भाव ।.मिलाप । भेंट । २-मिश्रण । मिलावट ।

मिलनसार [वि.] (हिं.) सबसे प्रेमपूर्वक मिलने-जुलने वाला ।

मिलनसारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सबसे प्रेमपूर्वक मिलने का गुण ।

मिलनस्थान [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिलने की जगह

मिलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सम्मिलित होना । मिश्रित होना । २-दो अलग-अलग पदार्थों का एक होना । बीच में का अन्तर मिटना । ३-समूह या समुदाय के भीतर होना। ४-साथ लगना। सटना। ५-बहुत कुछ समान होना । ६-सामना, भेंट या मुलाकात होना । ७-मेल-मिलाप होना । ८-संभोग या मैथुन करना । ९-लाभ होना। १०-आलिंगन करना । भेंटना। ११-पता लगना। १२-बजने से पूर्व बाजों का सुर अथवा आवाज ठीक होना । चिपकना जुड़ना। मिलाजुला-१-मिश्रित । २-सम्मिलित । मिलताजुलता-एक जैसा। समान ।

+* [क्रि. स.] (हिं.) १-प्राप्त या हस्तगत होना । २-गाय आदि का दूध दुहना ।

मिलनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवाह की एक रस्म जिसमें कन्यापक्ष के लोग वरपक्ष के लोगों से गले मिलकर उन्हें कुछ धन देते हैं। २-कैदी का जेल में अपने इष्टमित्रों आदि से मिलना। ३-देखो 'मिलन' ।

मिलपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अश्मंतकवृक्ष ।

मिलवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मिलाना' ।

मिलवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिलने की क्रिया या भाव । २-वह धन अथवा पुरस्कार जो मिलवाने के बदले में दिया जाय ।

मिलवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को मिलने में प्रवृत्त करना । २-भेंट या परिचय कराना। ३-मेल कराना ।

मिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिलने की क्रिया या भाव । २-मिलाने की मजदूरी । ३-विवाह की मिलनी नामक रसम । ४-जेल में कैदियों का अपने घरवालों से भेंट या मुलाकात ।

मिलान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिलाने की क्रिया या भाव । २-तुलना । मुकाबला । ३-ठीक होने की वह जाँच जो संबद्ध वस्तुओं को मिलाकर की जाय ।

मिलाना [क्रि. स.] (हिं) १-एक वस्तु दूसरी वस्तु अथवा वस्तुएँ डालकर सब को एक करना । सम्मिलित या मिश्रित करना । २-दो अलग-अलग पदार्थों को एक करना ३-जोड़ना । चिपकाना । ४-तुलना करना । मुकाबला करना । ५-यह देखना कि प्रतिलिपि आदि मूल के अनुसार है अथवा नहीं । ठीक होने की जाँच करना । ६-भेंट अथवा परिचय कराना । ७-दो व्यक्तियों में आपसी विरोध या द्वेष दूर करके उनमें मेल कराना । सुलह अथवा संधि कराना । ८-किसी को अपने पक्ष में करना । ९-बजाने से पूर्व बाजों का सुर अथवा आवाज ठीक करना । १०-स्त्री तथा पुरुष का संयोग कराना ।

मिलाप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिलने की क्रिया या या भाव । २-मेल अथवा सद्भाव होना । मित्रता । ३-भेंट । मुलकात । ४-एक साथ बजने वाले बाजों का एक सुर में होना । ५-संयोग । संभोग । ६-देखो 'मिलाई' ।

मिलाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिलने की क्रिया या भाव । २-मिलाप ।

मिलावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिलाये जाने का भाव । मिश्रण । २-बढ़िया वस्तु में घटिया का मिश्रण । ३-वह वस्तु जो इस प्रकार मिलाई जाय । मेल । खोट ।

मिलावा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मिलावट' ।

मिलिंद, मिलिन्द [संज्ञा पु.] (सं) भ्रमर । भौंरा ।

मिलिंदक, मिलिन्दक [संज्ञा पु](सं.) एक प्रकार का सर्प ।

मिलिक* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-जमींदार । २-जागीर ।

मिलिटरी [वि.] (अं.) १-सेना-संबंधी । फौजी । सैनिक । २-सामरिक । युद्ध-सम्बन्धी । ३-लड़ाका । योद्धा ।

मिलित [वि.] (सं.) मिला हुआ । युक्त ।

मिलिशा, मिलिशिया [संज्ञा स्त्री.] (अं.) ऐसे जवानों का दल जिन्हें किसी सीमा अथवा स्थान की रक्षा करने के निमित्त शिक्षा दी गई हो तथा जिनसे समय-समय पर रक्षा का कार्य लिया जाता हो । (इसका संघटन स्थाई नहीं होता) ।

मिलेठी+ [संज्ञा पु.] (हि.)देखो 'मुलेठी' ।

मिलोना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'मिलाना' । २-गाय को दुहना । [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बढ़िया जमीन जिसमें कुछ बालू भी मिला होता है ।

मिलौनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मिलाई । २-मिलावट ।

मिल्क [संज्ञा पु.] (अ.) १-जमींदार । २-जागीर ३-धनसंपत्ति । ४-अधिकार । ५-भूमि पर एक प्रकार का मालिकाना हक़ ।

मिल्कियत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-मालिक अथवा स्वामी होने का अधिकार या भाव । २-वह वस्तु, सम्पत्ति आदि जिसपर मालिकों के समान अथवा स्वामित्व का अधिकार हो । ३-धन-संपत्ति ।

मिल्की [संज्ञा पु.](अ.) १-जमींदार । २-जागीरदार ।

मिल्लत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मेलजोल । घनिष्टता । मिलाप । २-मिलनसारी । समूह । मंडली । *मिल्लत का*- मिलनसार । [संज्ञा स्त्री.] (अ.) संप्रदाय । मजहब । मत । पंथ ।

मिशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह व्यक्ति अथवा मण्डली जो किसी विशेष कार्य के निमित्त कहीं पर भेजा जाय । २-उद्देश्य । ३-वह संस्था विशेषतः ईसाई मतावलम्बियों की संघटित रूप से धर्म प्रचार का उद्योग करती है । ४-ऐसी संस्था का केन्द्र या कार्यालय आदि ५-राजनीतिक उद्देश्य से भेजाहुआ दूतमंडल

मिशनरी [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह ईसाई पादरी जो अनेक स्थान पर धर्म प्रचार के कार्य के निमित्त मिशन का सदस्य होकर जाता है । २-ईसाइयों का कोई धर्म-पुरोहित । पादरी ।

मिशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामाँसी । २-मधुरिका । सोआ ।

मिश्र [वि.] (सं.) १-मिलाहुआ । जुड़ाहुआ । संयुक्त । २-श्रेष्ठ । बड़ा । ३-जिसमें कोई अलग-अलग तरह की रकमों की (जैसे-रुपया आना, पाई, मन, सेर, छटाँक आदि) संख्या हो । [संज्ञा पु.] १-हाथियों की चार जातियों में से एक । २-कुछ ब्राह्मणों के वर्ग की उपाधि

३-रक्त। लहू। ४-सन्निपात। ५-मूली। ६-ज्योतिष के मत से उग्र आदि सात प्रकार के गणों में से अन्तिम।

मिश्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खारी नमक। २-जस्ता। ३-मूली। ४-नंदनवन। ५-वैद्यक में एक प्रकार का वंग अथवा राँगा जिसे खुरा भी कहते हैं। [वि.] १-मिलाने वाला। २-मूलक।

मिश्रक-स्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार एक औषध जो त्रिफला, दशमूल तथा दंती की जड़ आदि से बनाई जाती है।

मिश्रकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेनका की सखी एक अप्सरा का नाम।

मिश्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो अलग जातियों के मिश्रण से बना अथवा उत्पन्न हुआ हो। २-खच्चर।

मिश्रजाति [त्रि.] (सं.) वर्णसंकर। दोगला।

मिश्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो अथवा दो से अधिक वस्तुओं को एक में मिलाने की क्रिया या भाव। मिलावट। २-गणित में जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना।

मिश्रणीय [वि.] (सं.) मिलाने या मिश्रण करने योग्य।

मिश्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिलने या मिलाने का भाव।

मिश्रधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) कई प्रकार के धान का एक में मिलाना।

मिश्रपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

मिश्रवन [संज्ञा पु.] (सं.) भंटा।

मिश्रवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला अगरु। २-गन्ना। पौंडा।

मिश्रव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) गणित की एक क्रिया।

मिश्रशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) खच्चर।

मिश्रित [वि.] (सं.) एक में मिले हुए।

मिश्रिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मंदा आदि सात प्रकार की संक्रांतियों में से एक।

मिश्री [संज्ञा पु.](सं.) १-मिलाने या मिश्रण करने वाला। २-एक नाग का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'मिसरी'।

मिश्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) मिलाने या मिश्रण करने की क्रिया।

मिश्रीतुत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) खपरिया। खर्पर।

मिश्रेया [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मधुरिका। मौरी। २-एक प्रकार का साग। ३-शतपुष्पा। बालपर्ण।

मिश्रोदन [संज्ञा पु] (सं) खिचड़ी।

मिष [संज्ञा पु.] (सं.) १-छल। कपट। २-हीला। बहाना। ३-डाह। ईर्ष्या। ४-द्रोह। स्पर्द्धा। ५-दर्शन। ६-सीचना। सेचन।

मिषि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जटामाँसी। २-सोआ ३-सौंफ। ४-अजमोदा। ५-खस। उशीर।

मिषिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सौंफ। २-सोआ ३-ज़टामाँसी। ४-अजमोदा। ५-खस। उशीर।

मिषी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिषि'।

मिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा रस। [वि.] १-मीठा। मधुर। २-सेंका, भूना या पकाया हुआ।

मिष्टनिंब, मिष्टनिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा नीम।

मिष्टनिंबु, मिष्टनिम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा नीबू। जमीरी नीबू।

मिष्टपाक [संज्ञा पु.] (सं.) मुरब्बा।

मिष्टपाचक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अच्छा, स्वादिष्ट भोजन बनाता हो।

मिष्टभाषी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो मीठा बोलता हो। मधुरभाषी।

मिष्टवातांद [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा बादाम।

मिष्टान्न [संज्ञा पु.] (सं.) मिठाई।

मिस [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहाना। हीला। २-पाखंड। आडम्बर। (फा.) ताँबा। *मिसगर*-ताँबे का काम करने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कुँआरी लड़की। कुमारी।

मिसकना [क्रि. अ.] (हिं.) मिस-मिस से अस्फुट शब्द में धीरे-धीरे बोलना। मिनमिनाना।

मिसकी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मिस्की'।

मिसकीन [वि.] (अ.) १-बेचारा। दीन। २-गरीब। निर्धन। ३-सीधा-सादा।

मिसकीनता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दीनता। गरीबी। नम्रता।

मिसकीनी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मिसकीन होने का भाव। या दरिद्र होने का भाव।

मिसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बालू मिलीहुई मिट्टी की भूमि।

मिसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मिश्रित होना। मिलना। २-मींजा या मला जाना।

मिसर [संज्ञा पु.] १-देखो 'मिस्र'। २-देखो 'मिश्र'।

मिसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) उर्दू, फारसी की कविता का कोई चरण या पद। *मिसरा लगाना*-किसी एक मिसरे में रचना करके अपनी ओर से दूसरा मिसरा जोड़ना।

मिसरा-तरह [संज्ञा पु.](अ., फा.) उर्दू या फारसी की कविता की पूर्ति के लिए दी हुई समस्या।

मिसरावहर [संज्ञा पु.] देखो 'मिसरा-तरह'।

मिसरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिश्रदेश का निवासी। २-मिस्रदेश की भाषा। ३-साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी। *मिसरी की डली*-बहुत ही मधुर या मीठी वस्तु।

मिसरोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिस्से आटे की बनाई हुई रोटी। २-बाटी। अंगाकड़ी।

मिसल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सिक्खों के वे दल समूह जो भिन्न-भिन्न नायकों की अधीनता में स्वतंत्र हो गये थे।

मिसहा+ [वि.] (हि.) १-बहानेबाज। २-कपटी। ढोंगी।

मिसाल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-उपमा। २-उदाहरण। ३-लोकोक्ति। कहावत।

मिसि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामांसी। बालछड़ २-सौंफ। ३-सोआ। ४-अजमोदा। ५-खस।

मिसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मिसरी'।

मिसिल [वि.] (अ.) समान। तुल्य। बराबर। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-किसी एक विषय अथवा मुकदमे से सम्बन्ध रखने वाले कुछ कागज-पत्रों आदि का समूह। २-किसी पुस्तक के अलग-अलग छपे फार्म जो सिलाई आदि के काम के लिए क्रम से लगाकर रखे गए हों

मिसिली [वि.] (हिं.) १-जिसके सम्बन्ध में अदालत में कोई मिसिल बन चुकी हो। २-जिसे अदालत से सजा मिल चुकी हो। *मिसिली चोर या बदमाश*-अदालत की मिसिलों तक से प्रमाणित किया जा सकने वाला चोर या बदमाश।

मिसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिसि'।

मिसीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मशीन'।

मिस्कला [संज्ञा पु.] (अ.) सिकलीगरों का एक औजार जिससे वह सिकली करते हैं।

मिस्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धीरे-धीरे अथवा मिनमिनाते हुए बोलने की क्रिया या भाव। २-गाने का वह ढंग जिसमें पूरी तरह से गला खोलकर तथा ऊँचे स्वर से नहीं, बल्कि बहुत धीरे से तथा धीमी आवाज से गाते हैं। साँसी।

मिस्कीन [संज्ञा पु.] (अ.) १-दीन। बेचारा। २-निर्धन। गरीब। ३-सीधासादा।

मिस्कीन-सूरत [वि.] (अ., फा.) जो देखने में सीधासाधा अथवा दीन पर वस्तुतः दुष्ट हो।

मिस्कीनी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दीनता। २-गरीबी। ३-सुशीलता।

मिस्कोट [संज्ञा पु.] (अ.) १-गुप्त परामर्श। २-एक साथ बैठकर खाने वालों का समूह। ३-भोजन।

मिस्टर [संज्ञा पु.] (अं) महाशय।

मिस्तर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजगीरों का पलस्तर करने का एक औजार। २-वह बत जिसमें नील की टिकिया बनाई जाती है। ३-मेहतर। [संज्ञा पु.] (अ.) दफ्ती का वह बड़ा टुकड़ा जिसमें समानान्तर पर डोरे लपेटे अथवा सिले हुए होते हैं जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिये यह लिखे

जाने वाले कागज के नीचे रख लिया जाता है।

मिस्तरी [संज्ञा पु.] (हि.) वह जो काठ, धातु, मकान आदि बनाने का अच्छा कारीगर हो।

मिस्तरीखाना [संज्ञा पु.] (हि.) वह स्थान जहां पर बढ़ई, लोहार आदि बैठकर अपना-अपना कार्य करते हैं।

मिस्ता+ [संज्ञा पु.](देश.) १-वह मैदान जिसमें किसी प्रकार की हरियाली न हो। बंजर। २-अनाज-दाने के निमित्त तैयार की हुई भूमि।

मिस्र [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रसिद्ध देश का नाम यह अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है। बहुत प्राचीन काल में यह अपनी सभ्यता तथा उन्नति के लिये बहुत विख्यात था।

मिस्रा [संज्ञा पु.](हि.) देखो 'मिसरा'।

मिस्री [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मिसरी'।

मिस्ल [वि.] (अ.) समान। तुल्य। बराबर।

मिस्सा [संज्ञा पु.] (हि.) १-मूँग, मोठ आदि का भूसा जो भेड़ों और ऊँटों के खाने के लिये बहुत अच्छा समझा जाता है। २-कई प्रकार की दालों अथवा अन्नों का पिसा हुआ आटा जिसकी रोटी गरीब लोग खाते हैं। मिस्साकुस्सा–मोटे अन्नों का मिश्रण या उसका बना हुआ खाद्यपदार्थ।

मिस्सी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जिसे सधवा स्त्रियाँ लगाती हैं। २-किसी वेश्या का प्रथम बार पुरुष से समागम होना (मुसलमान वेश्या)।

मिह [संज्ञा पु.] (सं.) बरसता हुआ बादल। मेंह।

मिहचना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मीचना'।

मिहतर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेहतर'।

मिहदार [संज्ञा पु.].(फा.) वह मजदूर जिसे नकद मजदूरी दी जाती है।

मिहनत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'मेहनत'।

मिहनताना [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'मेहनताना।

मिहनती [वि.] (अ.) देखो 'मेहनती'।

मिहना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेहना'।

मिहमान [संज्ञा पु.](फा.) देखो 'मेहमान'।

मिहमानदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'मेहमानदारी'।

मिहमानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'मेहमानी'।

मिहर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'मेहर'।

मिहरबान [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'मेहरबान'।

मिहरबानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'मेहरबानी'

मिहरा [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'मेहरा'। २-देखो 'महरा'।

मिहराब [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'मेहराब'।

मिहरारू+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मेहरारू'।

मिहानी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) मथानी। रई।

मिहिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कोहरा। पाला। २-ओस। ३-कपूर।

मिहिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-बादल। ३-चन्द्रमा। ४-पवन। ५-वृद्धजन। ६-आक। मदार। ७-राजा। ८-देखो 'वराहमिहिर'। [वि.] (सं.) वृद्ध। बुड्ढा।

मिहिरकुल [संज्ञा पु.] (सं.) शाकल-प्रदेश के प्रसिद्ध राजा तोरमाण के पुत्र का नाम।

मिहिराण [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी का एक नाम।

मिहीं [वि.] (हिं.) महीन। बारीक।

मिही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मोटे दानों वाली अरहर जो मध्यप्रदेश में होती है।

मिहीन+ [वि.] (हिं.) देखो 'महीन'।

मींगणी, मींगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेंगनी'।

मींगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बीज में का गूदा। गिरी

मींजना+ [क्रि. स.] (हि.) १-हाथों से मलना। मसलना। २-मर्दन करना। ३-आँखें मूंदना या बन्द करना।

मींड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुन्दरता से कहना कि जिससे दोनों स्वरों के मध्य का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाय, तथा यह न जान पड़े कि गाने वाला एक स्वर से कूदकर अन्य स्वर पर चला गया है।

मींडक* [संज्ञा पु.] (हिं.) मेंढक।

मींडना+ [क्रि. स.] (हि.) हाथों से मलना या मसलना।

मीड़ासींगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेढ़ासींगी'

मीआद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अवधि। मीयाद। *मीआद काटना*–सजा भुगतना। *मीआद बोलना*–अपराधी को सजा देना।

मीआदी [वि.] (हिं.) १-जिसके लिए कोई समय अथवा अवधि नियत हो। २-जो कारागार में रह चुका हो।

मीआदी बुखार [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बुखार जो नियत अवधि पर बिना दवा के अपने आप उतर जाता हैं।

मीआदी-हुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह हुण्डी जिसका भुगतान नियत समय या अवधि पर किया जाता है।

मीच* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृत्यु। मौत।

मीचना+ [क्रि. स.] (हि.) (आँखें) मूंदना या बन्द करना।

मीचु*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृत्यु। मौत।

मीजा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अनुकूलता। २-स्वभाव। ३-सम्मति। राय। *मीजा पटना या मिलना*–स्वभाव मिलने के कारण मेल होना

मीजान [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-तुला। तराजू। २-तुलाराशि।

मीटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मीचना'।

मीटर [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह यन्त्र जिसके द्वारा घरों में आने वाला पानी नापा जाता है। २-घरों में या कारखानों आदि में खर्च होने वाली बिजली नापने का यंत्र। ३-वह यन्त्र जिससे किसी चलने वाली वस्तु की गति आदि नापी जाती है। ४-एक प्रकार की लंबाई की नाप जो ३९.३७ इंच के बराबर होती हैं।

मीटिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अधिवेशन। सभा।

मीठा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. मीठी] १-जो स्वाद में चीनी या शहद का सा हो। मधुर। २-स्वादिष्ट। जायकेदार। ३-धीमा। सुस्त। ४-साधारण या मध्यम श्रेणी का। ५-तीव्र या अधिक न हो। मद्धिम। हलका। ६-नामर्द। नपुंसक। ७-जो बहुत सुशील हो। ८-प्रिय। रुचिकर। [संज्ञा पु.] १-मिठाई। मिष्ठान्न। २-गुड़। ३-हलुआ। ४-मीठा नीबू।

मीठा-अमृतफल [संज्ञा पु.] (हिं.) मीठ चकोतरा।

मीठा-आलू [संज्ञा पु.] (हिं.) शकरकंद।

मीठा-इन्द्रजौ [संज्ञा पु.] (हि.) कुटज।

मीठा-कद्दू [संज्ञा पु.] (हि.) कुम्हड़ा।

मीठा-गोखरू [संज्ञा पु.] (हि) छोटा गोखरू।

मीठा-चावल [संज्ञा पु.] (हि.) चीनी या गुड़ के शरबत में पकाया हुआ चावल।

मीठा-जहर [संज्ञा पु.] (हि.) वत्सनाभ (विष)।

मीठा-जीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) काला जीरा।

मीठा-ठग [संज्ञा पु.] (हिं.) मीठा-मीठा बोलकर धोखा देने वाला मित्र।

मीठा-तेल [संज्ञा पु.] (हि.) १-तिल का तेल। २-पोस्त के दाने या खसखस का तेल।

मीठा-तेलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) बछनाग। वत्सनाभ।

मीठा-नीबू [संज्ञा पु.] (हि.) चकोतरा। जमीरीनीबू।

मीठा-नीम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसमें से एक प्रकार की मीठी गंध निकलती है।

मीठा-पानी [संज्ञा पु.] (हिं.) नीबू का सत मिला जो बोतलों में बन्द होता है। लेमनेड।

मीठा-पोइया [संज्ञा पु.] (हि.) घोड़े की मध्यम चाल।

मीठा-प्रमेह [संज्ञा पु.] (हि.) मधुमेह।

मीठा-बरस [संज्ञा पु.] (हि.) स्त्रियों की अवस्था का अठारहवाँ बरस।

मीठा-बुखार [संज्ञा पु.] (हिं.) हलका पर बराबर रहने वाला ज्वर।

मीठा-भात [संज्ञा पु](हि.) देखो 'मीठा-चावल'

मीठा-विष [संज्ञा पु.] (हिं.) बछनाग। वत्सनाभ

मीठा-साल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मीठा-बरस'

मीठी-खरखोड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) पीली जीवंती। स्वर्ण-जीवंती।

मीठी-छुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊपर से मित्र बनकर अन्दर-अन्दर घात करने वाला। विश्वासघातक। २-कपटी। कुटिल।

मीठी-तूँबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कद्दू।

मीठी-दियार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महापीलु का वृक्ष।

मीठी-मार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसी मार जिसकी चोट भीतर हो। भीतरीमार।

मीठी-लकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुलेठी।

मीढ़ [वि.] (सं.) १-पेशाब किया हुआ। २-मल-मूत्र के समान।

मीढुष्टम [संज्ञा पु.] (सं) १-शिव। २-सूर्य। ३-चोर।

मीत [संज्ञा प.] (हिं.) मित्र। दोस्त।

मीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली। २-एक राशि का नाम (ज्योतिष)। ३-मेष आदि बारह लग्नों में से अंतिम।

मीनक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुरमा या नयनांजन।

मीनकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कनेर।

मीनकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मछलियों का पालन-पोषण अथवा संवर्द्धन करने की क्रिया या विद्या। फिशरी। २-उक्त कार्य करने वाला विभाग।

मीनकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

मीनक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं) १-वह क्षेत्र जिसमें मछलियां विशेष रूप से सुरक्षित रखकर पाली जाती हैं। और उनकी नसल बढ़ाई जाती हैं। २-वह राजकीय-विभाग जिसके अधीन मछलियों के पालनपोषण, संवर्द्धन, क्रयविक्रय निर्यात आदि की व्यवस्था होती है। फिसरीज

मीनगंधा, मीनगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मत्स्यगंधा। सत्यवती।

मीनगोधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलाशय तालाब अथवा झील आदि।

मीनघाती [संज्ञा पु.] (हिं.) बगला।

मीननाथ [संज्ञा पु.] (सं.) गोरखनाथ के गुरु मछन्दरनाथ का एक नाम।

मीननेत्र [संज्ञा स्त्री.] (सं) गाडर दूब।

मीनपंणौं, मीनपर्णौं [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मीनकी'।

मीनपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) कुटकी।

मीन-मेख [संज्ञा पु.](हिं.)१-सोचविचार। आगा-पीछा। असमंजस। २-दूसरे के किये हुए काम में छोटा-मोटा दोष ढूँढ़ना।

मीनरंक, मीनरङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) जलकौवा। मुरगाबी।

मीनरंग, मीनरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली खाने वाला एक पक्षी जिसे मछरंग भी कहते हैं। २-जलकौवा।

मीनर [संज्ञा पु.] (सं.) शाखोटवृक्ष।

मीनांड़ी मीनाण्डी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार की शक्कर।

मीना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उषा की कन्या का नाम [संज्ञा पु.] (देश.) राजस्थान की एक जाति का नाम। [संज्ञा पु] (फा.) १-एक प्रकार का नीले रङ्ग का कीमती पत्थर। २ कीमिया। ३-सोने, चाँदी आदि पर किया जाने वाला एक प्रकार का रंगबिरंगा काम। ४-रंग-बिरंगा शीशी। ५-शराब रखने का कटर या सुराही।

मीनाकार [संज्ञा पु.] (फा.) सोने, चाँदी आदि पर मीना करने वाला।

मीनाकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सोने, चाँदी आदि पर होने वाला मीना। २-किसी कार्य में निकाली अथवा की हुई बहुत बड़ी बारीकी *मीनाकारी छाँटना* व्यर्थ दोष निकालना।

मीनाक्ष [वि.](सं.) मछली की-सी सुन्दर आंखों वाला। [संज्ञा पु.](सं.) एक राक्षस का नाम।

मीनाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुबेर की कन्या का नाम। २-गाड़र दूब। ३-ब्राह्मीबूटी। ४-शक्कर। चीनी।

मीनाबाजार [संज्ञा पु.] (फा.) बहुत सुन्दर तथा सजा हुआ। बढ़िया बाजार।

मीनाभ्रीण [संज्ञा पु.] (सं.) खंजन पक्षी।

मीनार [संज्ञा पु.] (अ.) बहुत ऊंचा और गोलाकार स्तम्भ। लाट। धरहरा।

मीनारा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मीनार'।

मीनालय [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

मीमांसक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो किसी बात की मीमांसा या विवेचना करता हो। २-मीमांसा-शास्त्र का जानकार। मीमांसा का पंडित। ३-मध्वाचार्य का एक नाम। ४-कुमारिलभट्ट का एक नाम। ५-सूत्रकार जैमिनीऋषि। ६-रामानुज का एक नाम। ७-भाष्यकार शबरस्वामी का एक नाम।

मीमांसन [संज्ञा पु.](सं.) किसी प्रश्न की मीमांसा अथवा निर्णय करने का कार्य।

मीमांसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-अनुमान तथा तर्कवितर्क द्वारा यह निश्चय करना कि कोई बात वास्तव में कैसी है। २-हिन्दुओं के छः दर्शनों में से पूर्व-मीमांसा तथा उत्तर-मीमांसा नामक दो दर्शन। ३-जैमिनिकृत पूर्व-मीमांसा तथा उत्तर-मीमांसा जो वेदांत के नाम से प्रसिद्ध है।

मीमांसित [वि.] (सं.) जिसकी मीमांसा की जा-चुकी हो।

मीमांस्य [वि.] (सं.) १-मीमांसा करने योग्य। २-जिसकी मीमांसा करनी हो।

मीयाद [संज्ञा स्त्री] (अ.) किसी काम के लिए नियत समय। अवधि।

मीयादी [वि.] (अ.) जिसकी कुछ नियत अवधि निश्चित हो।

मीयादी-बुखार [संज्ञा पु.] (हि.) देखो झिरा'।

मीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। ३-जल। ४-पर्वत का एक भाग। (फा.) १-सरदार। नेता। २-मुसलमानों सैयद जाति या वर्ग की एक उपाधि। जो प्रतियोगिता का काम सब से पहले करे। ४-ताश में का सब से बड़ा पत्ता। बड़े सरदार या रईस का लड़का।

मीरअर्ज़ [संज्ञा पु.] (फा., अ.) सेवा में लोगों के निवेदन-पत्र उपस्थित वाला कर्मचारी।

मीरआतिश [संज्ञा पु.] (फा.) वह जिसकी अधीनता में तोपखाना हो।

मीरज़ा [संज्ञा पु.] (फा.) १-अमीरज़ादा। मुगल राजकुमारों की एक उपाधि। मुसलमानों की एक उपाधि।

मीरज़ाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मीरज़ा होने भाव, पद या उपाधि। २-सरदारी। ३-अमीरों अथवा शाहज़ादों के समान दिमाग़ होना। ४-शेखी। घमण्ड। 'मिरजई'।

मीरफ़र्श [संज्ञा पु.] (फा.) वे गोल, चिकने पत्थर जो बड़े-बड़े फरशों के कोनों पर लिए रखे जाते हैं कि हवा से फ़र्श उड़ न जायँ।

मीरबख्शी [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानी काल में वेतन बाँटने वाला प्रधान कर्मचारी।

मीरबहर, मीरबहरी [संज्ञा पु.](फा.) राजत्वकाल में जलसेना का प्रधान २-बंदरगाहों आदि का निरीक्षण प्रधान कर्मचारी।

मीरबार [संज्ञा पु.] (फा.) मुसलमानी काल का वह अधिकारी जो लोगों सरदार अथवा बादशाह के सामने होने से पूर्व उन्हें देखता था।

मीरभुचड़ी [संज्ञा पु.] (फा., देश.) एक पुरुष जिसे हीजड़े अपना आदिगुरु आचार्य मानते हैं।

मीरमंज़िल [संज्ञा पु.] (फा., अ.) बादशाह लशकर आदि के पहुँचने से पूर्व या पड़ाव की व्यवस्था करने वाला

मीरमजलिस [संज्ञा पु.] (फा.) सभा वेशन का प्रधान। सभापति।

मीरमहल्ला [संज्ञा पु.] (फा., अ.) किसी का मुखिया।

मीरमुंशी [संज्ञा पु.] (फा., अ.) सब से मुंशी।

मीरशिकार [संज्ञा पु.] (फा.) अमीरों

शाहों के शिकार की व्यवस्था करने वाला प्रधान कर्मचारी।

मीरसामान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) अमीरों या बादशाहों की पाकशाला का प्रधान व्यवस्थापक।

मीरहाज [संज्ञा पु.] (फ़ा., अ.) हाजियों के समूह का प्रधान।

मीरास [संज्ञा स्त्री.] (अ.) उत्तराधिकार में मिली हुई संपत्ति। बपौती।

मीरासी [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. मिरासिन] एक मुसलमान जाति जो गाने-बजाने और भाँड़ों का काम करती है।

मीरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मीर होने का भाव। २-खेल में किसी लड़के का सर्वप्रथम होना। ३-खेल में लड़कों का अपना दाँव खेलकर अलग हो जाना।

मील [संज्ञा पुं.](सं.) वन। जंगल। (अं.) लम्बाई या दूरी की नाप जो १७६० गज की होती है

मीलक [संज्ञा पु.] (सं.) रोहित मछली। रोहू।

मीलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूँदना। बंद करना। २-सिकोड़ना। संकुचित करना।

मीलित [त्रि.] (सं.) १-मूँदा हुआ। बंद किया हुआ। २-सिकोड़ा हुआ। [संज्ञा पु.] एक अलंकार जिसमें कि उपमेय और उपमान एक होने के कारण उनमें कोई भेद न होने का उल्लेख होता है।

मीवग [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।

मीवर [वि.] (सं.) १-हिंसक। २-पूज्य। [संज्ञा पु.] सेनानायक। चमूपति।

मीवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पेंट में का कीड़ा। २-वायु। हवा। ३-सार। तत्व।

मीशान [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

मुँगना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सहिजन। मुनगा।

मुँगरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) [स्त्री. मुँगरी] काठ का बड़ा हथौड़ा। २-नमकीन बुंदिया।

मुँगवन [संज्ञा पु.] (हिं.) मोठ या वनमूँग नामक कदन्न।

मुँगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी जिसका उल्लेख पुराणों में है।

मुँगिया [संज्ञा पु.] (हिं.) चारखानें का या धारीदार एक कपड़ा।

मुँगौछी, मुँगौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूँग की बनी हुई बरी।

मुँचना* [क्रि. अ.] (हि.) मुक्त होना।

मुंज [संज्ञा पु.] (हि.) मूँज।

मुंजक, मुञ्जक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों की आँख का एक रोग।

मुंजकेतु, मुञ्जकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक राजा का नाम।

मुंजकेश, मुञ्जकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-एक राजा का नाम। (महाभारत)

मुंजकेशी, मुञ्जकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मुंजग्राम, मुञ्जग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम।

मुंजजालक, मुञ्जजालक [संज्ञा पु.] (सं.) मुंजक नामक रोग का उस समय का नाम जब वह बहुत बढ़ जाता है।

मुंजपृष्ठ, मुञ्जपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो हिमालय पर था।

मुंजमणि, मुञ्जमणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुखराज।

मुंजमेखला, मुञ्जमेखला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मूँज की मेखला जो यज्ञोपवीत के समय धारण की जाती है।

मुंजमेखली, मुञ्जमेखली [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव।

मुंजर, मुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल की जड़ २-मृणाल। कमल की नाल।

मुंजवट, मुञ्जवट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

मुंजवान्, मुञ्जवान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की सोमलता। २-महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम जो कैलास पर्वत के पास थां।

मुंजातक, मुञ्जातक [संज्ञा पु.] (सं.) मूँज। २-मुजराकंद।

मुंजाद्रि, मुञ्जाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एंक पर्वत का नाम।

मुंजारा, मुञ्जारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कंद।

मुंड, मुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-खोपड़ी। सिर। २-कटा हुआ सिर। ३-राहुग्रह। ४-नाई। हज्जाम। ५-वृक्ष का ठूँठ। ६-उस उपनिषद् का नाम। ७-बोल नामक गंधद्रव्य। ८-गायों का समूह या मंडल। ९-मंडूर। १०-राजा बलि के एक सेनापति का नाम जो दैत्य था। ११-एक दैत्य का नाम जो शम्भू का सेनापति था। [वि.] १-मुंडा हुआ। बिना बाल का। २-अधम। नीच।

मुंडक, मुण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक। सिर। २-हज्जाम। ३-एक उपनिषद् का नाम।

मुँडकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुटनों में सिर देकर बैठना या सोना (दुःख आदि के कारण) ·मुडकरी मारना–दुःख कारण घुटनों में सिर देकर बैठना।

मुंडकिट्ट, मुण्डकिट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) मंडूर।

मुंडचणक, मुण्डचणक [संज्ञा पु.] (सं.) चना।

मुंड़चिरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार के अड़कर बैठने वाले फकीर जो भिक्षा न देने पर अंगों को घायल करते हैं। २-लेनदेन या बहुत हुज्जत या हठ करने वाला व्यक्ति।

मुंडचिरापन [संज्ञा पु.] (हिं.) लेन-देन में बहुत हुज्जत और हठ।

मुंडधान्य, मुण्डधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शालिधान्य।

मुंडन, मुण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उस्तरे से सिर के बाल उतारने या मूँड़ने की क्रिया। २-हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँड़ा जाता है।

मुंडनक, मुण्डनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुंडशालिधान्य। २-वटवृक्ष।

मुँड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मूँड़ाजाना। उस्तरे आदि में सिर के बालों की सफाई होना। २-लूटा या ठगा जाना। ३-हानि उठाना।

मुंडनिका, मुण्डनिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) मुंडशालि। बोरोधान।

मुंडप्लष्ठ, मुण्डप्लष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

मुंडफल, मुण्डफल [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल।

मुंडमंडली, मुण्डमण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अशिक्षित सेना।

मुंड-माल, मुण्ड-माल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मुंडमाला'।

मुंड-माला, मुण्ड-माला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला जो शिव, कालीदेवी आदि के गले में होती है। २-एक नदी का नाम जो बंगाल में है।

मुंडमालिनी, मुण्डमालिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) गले में मुंडमाला धारण करने वाली, काली।

मुंडमाली, मुण्डमाली [संज्ञा पु.] (सं.) गले में मुंडमाला धारण करने वाले, शिव।

मुंडलोह, मुण्डलोह [संज्ञा पु.] (सं.) मंडूर।

मुंडवेदांग, मुण्डवेदाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नागासुर का नाम।

मुंडशाली, मुण्डशाली [संज्ञा पु.] (सं.) बोरोधान।

मुंडा [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. मुंडी] १-वह जिसके सिर के बाल न हों अथवा मुँड़े हुए हों। २-वह जो सिर मुँड़ाकर किसी साधु अथवा जोगी का शिष्य हो गया हो। ३-बिना सींग का पशु। ४-वह अथवा उसके इधर-उधर के अङ्ग न हों। ५-महाजनी लिपि जिसमें मात्राएँ नहीं होती। ६-एक प्रकार का जूता। ७-लड़का। लौंडा (पंजाबी)।

मुंड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मूँड़ने या मुड़ाने की क्रिया या भाव। २-मूंडने या मुंडाने के बदले में मिला हुआ धन।

मुंडाख्या, मुण्डाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुण्डी।

मुंडासन, मुण्डासन [संज्ञा पु.] (सं.) योग मे एक प्रकार का आसन।

मुँडासा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सिर पर बाँधने का साफा।

मुँडासाबंद [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो मुड़ासा

या पगड़ी बाँधने का काम करता हो। दस्तारबंद।

मुँडा-हिरन [संज्ञा पु.] (हिं.) पाठीमृग।

मुंडित, मुण्डित [वि.] (सं.) मुँड़ा हुआ। [संज्ञा पु.] लोहा।

मुंडितिका, मुण्डितिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) गोरखमुण्डी।

मुंड़िनी, मुण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरीमृग।

मुंडिभ, मुण्डिभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि।

मुँड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिर। मूँड़। २-सिर मुँड़ा साधु या योगी। ३-महाजनी लिपि जिसमें मात्राएं नहीं होती।

मुंडी, मुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्त्री जिसका सिर मुँडा हो। २-राँड़। विधवा। ३-एक प्रकार की जूती। ४-बिना मात्रा की महाजनी भाषा। (सं.) गोरखमुण्डी। [संज्ञा पु.] १-मुँडा हुआ। २-नापित। नाई। ३-संन्यासी।

मुंडीरिका, मुण्डीरिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) गोरखमुण्डी।

मुँडेर [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-मुँडेरा। २-खेत के चारों ओर की मेंड़ या ढोला।

मुँडेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छत की दीवार का ऊपरी उठा हुआ भाग। २-किसी प्रकार का बाँधा हुआ पुश्ता।

मुँडेरी [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'मुँडेर'।

मुँडो [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सिरमुँडी स्त्री। २-राँड़ (गाली)। मुँडो का-एक प्रकार की बाजारी गाली जिसका अर्थ होता है 'विधवा से उत्पन्न' अर्थात् हरामी।

मुँढ़िया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बैठने का छोटा मोढ़ा।

मुंतकिल [वि.] (अ.) एक स्थान से दूसरे स्थान गया हुआ। *मुंतकिल करना*-दूसरे को देना।

मुंतजिम [संज्ञा पु] (अ.) प्रबंध करने वाला। व्यवस्थापक।

मुंतजिर [वि] (अ.) प्रतीक्षा करने वाला।

मुँदना [क्रि अ] (हिं.) १-खुली हुई वस्तु का बंद होना। २-छिपना। लुप्त होना। ३-छिद्र आदि का पूर्ण होना।

मुँदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जोगियों के कान में पहनने का एक प्रकार का कुण्डल। २-कान का एक आभूषण।

मुँदरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सादा छल्ला जो उंगली में पहना जाता है। २-अंगूठी।

मुँशियाना [वि.] (अ) मुंशियों का सा।

मुंशी [संज्ञा पु.] (अ.) १-लिखने का काम करने वाला। २-मुहर्रिर। लेखक। ३-फारसी आदि के सुन्दर अक्षर लिखने वाला।

मुंशीखाना (अ., फा.) वह स्थान जहां पर मुंशी बैठकर काम करते हैं।

मुंशीगिरी [संज्ञा स्त्री.](अ., फा.) मुंशी का काम या पद।

मुंसरिम [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रबंधक। इन्तजाम करने वाला। २-कचहरी का एक प्रधान कर्मचारी जो मिसलें ठीक करता और ठिकाने से रखता है।

मुंसलिक [वि.] (अ.) साथ में बंधा हुआ।

मुंसिफ [संज्ञा पु.] (अ.) १-न्याय या इन्साफ करने वाला। २-दिवानी-विभाग न्यायाधीश जो छोटे-छोटे मुकदमों का फैसला करता है।

मुंसिफी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-न्याय या इन्साफ का काम। २-न्यायकर्ता या मुंसिफ का काम या पद। ३-मुंसिफ की अदालत या कचहरी।

मुँह [संज्ञा पु] (हिं.) १-प्राणियों का वह अंग जिससे वह बोलते और खाते हैं। मनुष्य का यह अङ्ग। ३-सिर का अग्रभाग जिसमें माथा, आँख, कान, नाक, मुंह गाल आदि अङ्ग होते हैं। चेहरा। ४-किसी वस्तु का ऊपरी कुछ खुला हुआ भाग। ५-छिद्र। छेद। ६-व्यवहार अथवा सम्बन्ध का ध्यान। मुलाहजा। सामने की या ऊपरी सतह। सामना। ८-साहस। हिम्मत।

मुँह आना-१-मुंह में छाले पड़ना। २-हुज्जत करना। मुँह उजला होना-प्रतिष्ठा या इज्जत रह जाना। मुँह उजाले-बहुत सबेरे। मुँह उठकर कहना-जो मुँह में आवे कह देना। मुँह उठाये चले जाना-बेधड़क चले जाना। मुँह उतरना-१-उदासी छाना। २-चेहरे पर रौनक न रहना। मुँह करना-मुलाहजा या लिहाज करना। मुँह का कच्चा-१-घोड़ा जो लगाम का झटका न सह सके। २-जिसकी बात का कोई विश्वास न हो। ३-हर एक बात सबसे कह देने वाला। मुँह का कड़ा-१-घोड़ा जो सवार या हांकने वाले की इच्छा अनुसार चले। २-सख्त। तेज। उद्दंडता से बातें करने वाला। (अपना) मुँह काला करना-१-व्यभिचार करना। २-बदनामी करना। (दूसरे का) मुँह काला करना-उपेक्षापूर्वक दूर करना या हटाना। मुँह की खाना-अपमानित या लज्जित होना। २-मुँह सामने बुरा उत्तर सुनना। थप्पड़ खाना। ४-धोखा खाना ५-बुरी तरह हारना। मुँह की बात छीनना-जो बात कोई और कहना चाहता हो वही आप कह देना। मुँह की मक्खी न उड़ा सकना-बहुत कमजोर हो जाना।

मुँह कीलना-बोलने से रोकना। मुँह के बल गिरना-१-बहुत धोखा खाना। २-ठोकर खाना। मुँह खराब करना-गंदी या भद्दी बात जबान से कहना। मुँह खुलना-उद्दंडता से बोलने की आदत पड़ना। मुँह खुलवाना-किसी को उद्दंडतापूर्वक करने के लिए बाध्य

करना। मुँह फक होना-१-...
सूखना अथवा काँटे पड़ना। डर ...
के मारे चेहरा फीका पड़ना। ...
रह जाना-कहते-कहते शरमा ...
खोलना-१-बोलना। २-गाली ...
कहना। ३-घूँघट हटाना। ...
चढ़ाना-उद्दंड बनाना। ...
चलना-१-भोजन खाना। ...
बनाना। मुँह चलाना-१-भोजन ...
बकना। ३-गाली देना। ४-दाँत से ...
मुँह चाटना-खुशामद करना। ...
किसी को चिढ़ाने के निमित्त उसकी ...
हाव-भाव अथवा कथन की बहुत ...
नकल करना। मुँह चूमकर छोड़ ...
या शर्मिंदा करके छोड़ देना। ...
छुआना-१-नाममात्र को कहना। ...
टोकना। २-दिखौआ बात करना। ...
होना-मुँह कड़वा होना। मुँह जुठारना-...
मात्र को खाना या चखना। ...
कानाफूसी करना। मुँह जोहना-आशा ...
की ओर देखना। मुँह झटक ...
उतरना। मुँह झुलसना-१-मुँह में ...
लगाना (स्त्रियों की गाली)। ...
करना। मुँह टेढ़ा करना-आकृति से ...
प्रकट करना। मुँह डालना-१-किसी ...
आदि का खाद्यपदार्थ पर मुँह ...
मर्गों का आपस में लड़ना। ...
मरने पर रोना (मुसलमान)। ...
१-जबान पर आना या कही जाना। ...
लब भरना।
मुँह ताकना-१-पाने की आशा से ...
२-टकटकी लगाकर देखना। ...
देखना। ४-शर्मिन्दा होकर देखना। ...
न करना। मुँह तो देखो-योग्यता तो ...
मुँहतोड़ जवाब देना-ऐसा जवाब ...
बोल न सके। मुँह थकना या ...
कहते थक जाना। मुँह थुथराना-...
मुँह-दर-मुँह कहना-सामने ...
दिखाना-सामने आजाना। ...
खाट से उठते ही दर्शन होना। ...
जाना। ३-आश्चर्य से देखना। ...
देखना। मुँह देख कर बात करना ...
खुशामद करते हुए कुछ कहना। ...
रखना या मुँह धो लेना-कुछ पाने की ...
छोड़ बैठना। मुँह न देखना-१-...
२-न मिलना-जुलना। मुँह न फेरना-१-...
खड़े रह जाना। २-ना, न करना। ...
का-दिली नहीं केवल दिखावटी। ...
आना-रोग दुर्बलता या लाज से चेहरा ...
जाना। मुँह पकड़ना-न बोलने देना। ...
पड़ना-साहस या हिम्मत होना। ...
सामने। मुँह पर जाना-१-कहने का ...
करना। २-बात का विश्वास करना। ...
थूकना-बेइज्जत या शर्मिन्दा करना। ...
न रखना-स्वाद भी न लेना। मुँह पर ...

होना-शर्म न होना। मुँह पर पानी फिर जाना-चेहरा खुश होना। मुँह पर फेंकना या मारना-नाराजी से देना। मुँह पर बरसना-चेहरे आकृति से देखना। मुँह पर वसंत फूलना या खिलना-चेहरा पीला, भयभीत या उदास होना। मुँह पर बात आना-१-कहना चाहना। २-कुछ कहना। मुँह पर मुरदनी छाना-१-चेहरा पीला होना। २-मौत के आसार होना। ३-भय, लाज या उदासी मुँह पर छा जाना। मुँह पर मोहर करना-बोलने से रोकना। मुँह पर रखना-सामने रखना। २-तमाचा मारना। मुँह पर लाना-मुँह से कहना। वर्णन करना। मुँह पर हवाई उड़ना-लाज, भय आदि के कारण मुख पीला पड़ना। मुँह पर हाथ रखना-बोलने से जबरदस्ती रोकना या मना करना। मुँह पसार कर दौड़ना-कुछ पाने की लालसा से उत्सुकतापूर्वक आगे बढ़ना। मुँह पसार कर रह जाना-हक्काबक्का हो जाना। आश्चर्य से चकित रह जाना। २-लज्जित होकर रह जाना। मुँह पाना-रुख या इच्छा देखना। मुँह पेट चलना-कै-दस्त होना। मुँह फक होना-लाज या भय से मुख पीला पड़ना। मुँह फटना-चूने आदि के कारण मुख में घाव होना। मुँह फाड़कर कहना-बेहयाई से कहना। मुँहफट होना-अनुचित, ओछी और कड़वी कहने से न चूकना। मुँह फिरना या फिर जाना-१-मुँह टेढ़ा या कुरूप हो जाना। २-लकवा मार जाना। ३-बराबरी या सामना करने योग्य न रहना। मुँह फुलाना या फुलाकर बैठना-चेहरे से अप्रसन्नता प्रकट करना अप्रसन्नता प्रकट करने वाली आकृति बनाकर बैठना। मुँह फूंकना-१-मुँह में आग लगाना (गाली)। २-दे लेकर दूर करना। ३-मुरदा जलाना (उपेक्षा)। मुँह फूलना-अप्रसन्नता या नाराजगी होना। मुँह फेरना-१-हराना। २-पीठ करना। ३-उपेक्षा जताना। ४-हटाना। मुँह फैलाना-१-मुँह फाड़ना या खोलना। २-अधिक लेने की इच्छा या हठ करना। ३-जंभाई लेना। ४-बुरी तरह हंसना मुँह फाड़कर कहना-बेशरमी से कहना। मुह फाड़कर खाना-बेशरम होकर खाना (स्त्री)। मुँह बंद करना, कर लेना या होना-चुप करना या होना। मुँह बनना या बन जाना-ऐसी मुखाकृति जिससे अप्रसन्न या नाराजी दीखे। मूँह बनवाना-योग्यता या सुन्दरता प्राप्त करना। मुँह बाँधकर बैठना-चुपचाप बैठना। मुँह बाना-१-मुँह खोलना। २-जँभाई लेना। ३-बेहूदेपन से हँसना। ४-अपनी हीनता सिद्ध होने पर भी हँसना। मुँह बिगड़ना-१-मुँह का स्वाद खराब होना। २-आकृति या चेहरा खराब होना। मुँह बिगाड़ना-१-स्वाद खराब करना। २-मारपीटकर चेहरा बिगाड़ना। ३-असंतोष या अप्रसन्नता जताना। ४-लज्जित करना। ५-मारपीट कर चेहरा बिगाड़ना। मुँह भर आना-१-कै आना २-मुँह में पानी भर आना। मुँह भर के-१-जी चाहे जितना। २-लबालब। ३-पूर्णतया। मुँह भरना-१-रिश्वत देना। २-खिलाना। ३-न बोलने देना। मुँह भर बोलना-भलीभाँति बोलना। अच्छी तरह। मुँह भराई देना-रिश्वत देना। मुँह बुरा बनाना-चेहरे से अप्रसन्नता या नाराजी प्रकट करना। मुँह मांगी मुराद पाना-मन चाही इच्छा पूरी होना। मुँह मारना-१-खाने की वस्तु में मुँह लगाना। २-दाँत से काटना। ३-जल्दी-जल्दी खाना। ४-चुप करना। ५-रिश्वत देना। ६-कान काटना। बढ़कर होना। मुँह मीठा करना-१-मिठाई खिलाना। २-देकर खुश करना। मुँह मीठा होना-१-मिठाई मिलना। २-सगाई होना। ३-लाभ होना। मुँह मुलाहिजे का-जान-पहचान का। परिचित। बात मुँह में आना-कहने की प्रवृत्ति या इच्छा होना। मुँह में कालिख लगना-बहुत बदनामी होना मुँह में खून लगना-चस्का पड़ना। मुँह में जबान न होना-बोलने की शक्ति न होना। मुँह में तिनका लेना-दीनता या अधीनता प्रकट करना। बात मुँह में पड़ना-बात का मुँह से निकलना या कहा जाना। मुँह में पानी भर आना-१-जी ललचाना। २-ईर्ष्या होना। मुँह में बोलना-धीरे बोलना। मुँह में लगाम देना-थोड़ा, ठीक तरह या सोच-समझकर बोलना। मुँह में लगाम न होना-बे-समझे बक देना। मुँह मोड़ना-१-काम करने में आगा पीछा करना। २-विमुख या विरुद्ध होना। मुँह रखना-लिहाज, ध्यान या इज्जत रखना। मुँह लगना-१-सिर चढ़ना। २-सामने बोलना। मुँह लगाना-१-देखो 'मुँह चढ़ाना'। २-अधिक आदर करना। मुँह लाल करना-गुस्से में मुँह लाल पड़ना। मुँह सँभालना-व्यर्थ बकने अथवा गाली-गलौज करने से जबान को रोकना। (अपना) मुँह सीना-मुँह से बात न निकालना। मुँह सफेद होना-देखो 'मुँह फक होना'। मुँह सुजाना-१-मुँह फुलाना। २-थप्पड़ मारकर लाल करना। मुँह सूखना-१-प्यास या रोग आदि के कारण गला खुश्क होना। २-डर या लाज से चेहरा फीका पड़ना। मुँह से दूध की बू आना या मुँह से दूध टपकना-बहुत ही अनजान या बालक होना (परिहास)। मुँह से निकालना-कहना। मुँह से फूटना-बोलना। कहना। मुँह से फूल झाड़ना-मुँह से अत्यन्त सुन्दर और प्रिय बातें निकलना। मुँह से बात छीनना-किसी के कहते-कहते उसकी बात कह देना। मुँह से बात न निकालना-क्रोध अथवा भय के मारे कुछ बोल न जाना। मुँह से भाप न निकालना-भय या डर से सन्न होना। मुँह से लार गिरना या टपकना-बहुत लालच होना। मुँह से लाल झड़ना-अतिशय सुन्दर, शुद्ध एवं प्यारे-प्यारे शब्द निकलना। मुँह लेकर रह जाना-काम न होने पर लज्जित होना। मुँहामुँही होना-१-कहा-सुनी होना। २-परस्पर चूमना।

मुँहअखरी* [वि.] (हिं.) जबानी। शाब्दिक।

मुँह-काला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। २-बदनामी। ३-एक प्रकार की गाली

मुँह-चंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुरचंग'।

मुँह-चटौवल [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-चूमाचाटी। चुम्बन। २-बकझक। बकवाद।

मुँह-चोर [वि.] (हिं) जो औरों के सामने जाने में हिचकता हो।

मुँह-छुआई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) केवल मुँह छूने के लिए, ऊपरी मन से कुछ कहना।

मुँह-छुट [वि] (हिं.) अनुचित या कटु बातें कहने में संकोच न करने वाला। मुँहफट।

मुँहजोर [वि.] (हिं.) १-बहुत अधिक बोलने वाला। बकवादी। २-मुँहफट। ३-जो शीघ्रता से किसी के वश में न आता हो। तेज, उद्दण्ड।

मुँहजोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुँहजोर होने की क्रिया या भाव। २-उद्दण्डता। तेजी।

मुँह-दिखाई, मुँह-दिखलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पहली बार सुसराल में आने पर नई वधू का मुँह देखने की रस्म। मुँह देखनी। २-वह धन जो इस अवसर पर वधु को दियाजाता है

मुँहदेखनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुँह-दिखाई'

मुँहदेखा [वि.] (हिं.) १-केवल सामना होने पर संकोच वश होने वाला (काम या व्यवहार)। २-सदा आज्ञा की प्रतीक्षा में रहने वाला।

मुँह-नाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धातु की बनी वह छोटी नली जो हुक्के की सटक के अग्रभाग में लगी होती है, जिसको मुँह में रखकर धूआँ खींचा जाता है। २-तलवार की म्यान के सिरे पर लगी हुई धातु की सामी।

मुँहपड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो सब की जबान या मुँह पर हो। प्रसिद्ध। विख्यात।

मुँहफट [वि.] (हिं.) जो अनुचित या कटु बातें कहने में संकोच न करता हो।

मुँहबंद [वि.] (हिं.) १-जिसका मुँह बन्द हो खुला न हो। २-कुंआरी। अक्षत योनि। (गुण्डों की बोली)।

मुँहबँधा [संज्ञा पु.] (हिं.) जैनसाधु जो मुंह पर कपड़ा बांधे रहते हैं।

मुँहबोला [वि.] (हिं.) (संबंधी) जो वास्तव में न होने पर भी मुंहसे कहकर बनाया गयाहो

मुँहभराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुंह भरने की क्रिया या भाव। २-किसी का मुंह बन्द करने के लिए, उसे कुछ कहने अथवा करने से रोकने के लिए दिया जाने वाला धन। रिश्वत। घूंस

मुँहमाँगा [वि.] (हिं.) अपनी इच्छा के अनु-

सार। मनोकूल।

मुँहामुँह [क्रि. वि.] (हिं.) मुंह तक। लबालब। भरपूर।

मुँहासा [संज्ञा पु.] (हिं.) युवावस्था में निकलने वाले मुंह पर के दाने या फुंसियां।

मुअज्जन [संज्ञा पु.] (अ.) वह जो मसजिद से नमाज के लिए सब को पुकारता है।

मुअत्तल [वि.] (अ.) १-जिसके पास काम न हो। खाली। २-जो अपराध अथवा अभियोग लगने पर जांच अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने स्थान से हटा दिया गया हो।

मुअत्तली [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-मुअत्तल होने का भाव। २-काम से कुछ समय के लिए अलग कर दिया जाना।

मुअम्मा [संज्ञा पु.] (अ.) १-रहस्य। भेद। २-पहेली। ३-ऐसी बात जो शीघ्र समझ में न आये। *मुअम्मा खुलना या हल होना*-रहस्य खुलना।

मुअल्लिम [संज्ञा पु.] (अ.) शिक्षक।

मुआफ [वि.] (अ.) देखो 'माफ'।

मुआफ़कत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अनुकूलता। २-मेल-जोल। दोस्ती।

मुआफ़िक [वि.] (अ.) १-अनुकूल। २-सदृश। समान। ३-ठीक-ठीक। ४-इच्छानुसार।

मुआफिकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अनुरूपता। २-अनुकूलता। ३-मित्रता। दोस्ती।

मुआफी [संज्ञा स्त्री.] (अ) देखो 'माफी'।

मुआमला [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'मामला'।

मुआयना [संज्ञा पु.] (अ.) निरीक्षण।

मुआलिज [संज्ञा पु.] (अ.) चिकित्सक।

मुआलिजा [संज्ञा पु.] (अ.) चिकित्सा।

मुआवजा [संज्ञा पु.] (अ.) १-बदला। पलटा। २-हानि आदि के बदले मिलने वाला धन।

मुआहिदा [संज्ञा पु.] (अ.) करार।

मुकंद, मुकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्याज। २-कुँदरू। ३-साठी धान।

मुकंदक, मुकन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्याज। २-साठी धान विशेष।

मुकट [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मुकुट'।

मुकटा [संज्ञा पु.] (देश.) पूजन या भोजन के समय पहनी जाने वाली रेशम की धोती।

मुकतई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुक्ति। २-छुटकारा।

मुकता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मुक्ता'। २-देखो 'मंगती'। [वि.] [स्त्री. मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ट।

मुकताली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुक्तावली'

मुकति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुक्ति'।

मुकत्ता [वि.] (अ.) १-ठीक प्रकार से बनाया हुआ। २-सभ्य। शिष्ट।

मुकदमा [संज्ञा पु.] (अ.) १-अपराध, अधिकार या लेनदेन आदि से सम्बन्ध रखने वाला वह विवाद जो न्यायालय के सम्मुख किसी पक्ष की ओर से विचारार्थ रखा जाय। अभियोग। २-दावा। नालिश। ३-ग्रन्थ की भूमिका। *मुकदमा लड़ना*-अभियोग में अपने पक्ष में प्रयत्न करना।

मुकदमेबाज [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह व्यक्ति जो प्राय: मुकदमे लड़ता रहता हो।

मुकदमेबाजी [संज्ञा स्त्री] (अ., फा.) मुकदमा लड़ने का कार्य।

मुकद्दम [वि.] (अ.) १-प्राचीन। पुराना। २-सर्वश्रेष्ठ। ३-आवश्यक। [संज्ञा पु.] १-मुखिया। नेता। २-रान का ऊपरी भाग (कसाई)।

मुकद्दमा [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'मुकदमा'।

मुकद्दर [संज्ञा पु.] (अ.) भाग्य। प्रारब्ध।

मुकद्दस [वि.] (अ.) पवित्र।

यौ० *मुकद्दस-किताब*-धार्मिक पुस्तक जो मनुष्य कृत न हो।

मुकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मुक्त होना। छूटना २-समाप्त होना। खतम होना।

मुकम्मल [वि.] (अ.) पूर्ण। पूरा किया हुआ।

मुकरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कोई बात कह कर उससे फिर जाना। नटना। *२-मुक्त होना। [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो कह कर मुकर जाय

मुकरनी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'मुकरी'।

मुकराना [क्रि. स.] (हि.) १-दूसरे को मुकरने में प्रवृत्त करना। २-दूसरों को झूठा बनाना। ३-मक्त कराना।

मुकरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मकरी'।

मुकरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह कविता जिसमें पहले कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही बात बना कर कही जाय। इसे हम 'कह-मकरी' भी कहते हैं।

मुकर्रर [वि.] (अ.) १-निश्चित। नियत। २-नियुक्त। [क्रि. वि.] (अ.) १-दोबारा। फिर से। २-अवश्य ही। *मुकर्रर-सिकर्रर*-दूसरी तथा तीसरी बार फिर।

मुकर्ररी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-नियुक्त। २-मालगुजारी। ३-नियत वेतन या वृत्ति।

मुकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमलतास। २-गुग्गुल

मुकलाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-खोलना। २-छोड़ना।

मुकव्वी [वि.] (अ.) बलवर्धक। पुष्टिकारक।

मुकाबला [संज्ञा पु.] (अ.) १-सामना। २-मुठभेड़। ३-तुलना। ४-मिलान। ५-विरोध। *मुकाबले पर आना*-प्रतिद्वंद्विता के लिए सामने आना।

मुकाबा [संज्ञा पु.] (देश.) संदूक के आकार का छोटा सिंगारदान।

मुकाबिल [क्रि. वि.] (अ.) सम्मुख। [वि. अ.] १-सामने वाला। [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रतिद्वंद्वी।

मुकाम [संज्ञा पु.] १-स्थान। जगह। टिकान। ३-ठहरने की क्रिया। मौका। ५-संगीत में सरोद का कोई *मुकाम बोलना*-अधिकारी का चारियों को ठहरने की आज्ञा देना। *देना*-किसी की मृत्यु पर उसके घर प्रकट करने जाना।

मुकामी [वि.] (अ.) स्थानीय। स्थानिक।

मुकियल [संज्ञा पु.] (देश.) विधुली वाँस नामक एक प्रकार का बाँस।

मुकियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-बारबार किसी शरीर पर मुक्कियों से आघात करना। गुँधे हुए आटे को बारबार मुक्कियों से दबाना। ३-मुक्का लगाना या मारना। लगाना।

मुकिर [वि.] (अ.) १-प्रतिज्ञा करने वाला। किसी दस्तावेज आदि का लिखने वाला।

मुकुंटी, मुकुण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काल का एक प्रकार का अस्त्र।

मुकुंद, मुकुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। पुराणानुसार एक प्रकार की निधि। ४-कुंदरू। ५-सफेद कनेर। ६-पोई साग। ७-गंभारी। ८-एक प्रकार का रत्न।

मुकुंदक, मुकुन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) २-साठी धान।

मुकु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुक्ति। मोक्ष। कारा।

मुकुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध जिसे प्राचीनकाल में राजा आदि करते थे। २-पुराणों के मत से एक नाम। [संज्ञा स्त्री.] एक मातृगण।

मुकुटी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसने मुकुट किया हो।

मुकुटेकार्षापण [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन वह राजकर जो मुकुट बनवाने के लिए जाता था।

मुकुटेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन २-एक शिवलिंग का नाम।

मुकुट्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के एक प्राचीन जाति का नाम।

मुकुता* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुक्ता'।

मुकुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शीशा। दर्पण। ३-कुम्हार का चाक चलाने का डंडा। बकुल का वृक्ष। ५-मोतिया। ६-बेर का

मुकुरित [वि.] (सं.) खिला हुआ।

मुकुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कली। २-शरीर। आत्मा। ४-एक प्रकार का छन्द। गोटा। ६-पृथ्वी। एक प्रकार का जो प्राचीनकाल में होता था।

मुकुलक [संज्ञा पु.] (सं.) दंतीवृक्ष।

मुकुलाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अस्त्र जो प्राचीनकाल में होता था।

मुकुलित [वि.] (सं.) १-जिसमें कलियां निकली हों। २-कुछ खिली हुई (कली) ३-कुछ-कुछ खुला। ४-झपकता हुआ (नेत्र)।

मुकुली [संज्ञा पु.] (सं) वह जिसमें कलियां आई हों।

मुकुष्ठ, मुकुष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) मोठ।

मुकेश* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुक्कैश'।

मुक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मुक्की] आघात, प्रहार आदि के लिए बांधी हुई मुट्ठी। *मुक्का चलाना या मारना*-मुक्के से आघात करना। *मुक्का-सा लगना*-हार्दिक पीड़ा होना।

मुक्की [संज्ञा पु.] (हि.) १-मुक्का। घूंसा। २-मुक्कों की मार या लड़ाई। ३-मुट्ठी बांधकर किसी के शरीर पर थकावट दूर करने के लिये धीरे-धीरे आघात करना। ४-गुंधे हुये आटे को नरम करने के लिये बार-बार मुट्ठियों से दबाना।

मुक्केबाजी [संज्ञा स्त्री] (हिं) मुक्कों की लड़ाई घूंसेबाजी।

मुक्कैश [संज्ञा पु.] (अ.) १-बदला। २-जरी का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

मुक्कैशी [संज्ञा पु.] (अ.) १-बदले का बना हुआ। २-जरी या ताश का बना हुआ।

मुक्कैशी गोखरू [संज्ञा पु.](हिं) तारों को मोड़कर बनाया हुआ एक प्रकार का महीन गोखरू।

मुक्खी [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का कबूतर २-वह कबूतर जिसका शरीर काला, लाल या हरा हो, पर जिसके डैनों पर एक या दो सफेद पर हों।

मुक्त [वि.] (सं.) १-जिसे मुक्ति मिल गई हो। २-जो बन्धन से छुटकारा पा गया हो। ३-चलाने के लिए छोड़ा या फेंका हुआ। ४-स्वच्छन्द। बन्धनरहित। [संज्ञा प.] एक प्राचीन ऋषि का नाम। *[संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मुक्ता'।

मुक्तकंचुक, मुक्तकञ्चुक [संज्ञा पु.] (सं.) वह सर्प जिसने अभी केंचुली छोड़ी हो।

मुक्तकंठ, मुक्तकण्ठ [वि.] (सं.) १-बिलकुल स्पष्टरूप से, बिना किसी संकोच अथवा दबाव के तथा कृतज्ञतापूर्वक कहा हुआ। २-जो जोर से बोलता हो।

मुक्तक [संज्ञा पु.] (सं) १-एक प्रकार का काव्य जो एक ही पद्य में पूरा हो। २-फुटकर कविता। ३-एक प्रकार का अस्त्र।

मुक्तऋण [संज्ञा पु.] (सं) जुबानी बातचीत पर दिया हुआ ऋण।

मुक्तकच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध का नाम।

मुक्तकर [वि.] (सं.) देखो 'मुक्तहस्त'।

मुक्तकेश [वि.] (सं.) जिसका जूड़ा खुला हो।

मुक्तकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कालीदेवी का एक नाम।

मुक्तचंदन, मुक्तचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चन्दन।

मुक्तचंदा, मुक्तचन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक साग जिसे चंचु कहते हैं।

मुक्तचचु [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मुक्तचेता [संज्ञा पु.] (सं.) जिसमें मोक्ष प्राप्त करने की बुद्धि आ गई हो।

मुक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुक्ति। मोक्ष। २-छुटकारा।

मुक्तनिर्म्मोक [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'मुक्तकंचुक'

मुक्तपत्राढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) तालीश।

मुक्तपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसकी आत्मा मुक्त या मोक्ष को प्राप्त हो गई हो।

मुक्तबंधना, मुक्तबन्धना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोतिया। २-बेला।

मुक्तबुद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्तचेता।

मुक्तमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीप। शुक्ति।

मुक्तरस [वि.] (सं.) जिसका रस बह गया हो।

मुक्तरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रासना।

मुक्तलज्ज [वि.] (सं.) १-जिसने लाज शर्म उठा धरी हो। २-निर्लज्ज। बेहया।

मुक्तवर्च्चा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अदित मंजरी।

मुक्तवर्षीय [संज्ञा पु.] (सं.) कुप्पा।

मुक्तवसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। २-नंगा रहने वाला। ३-जैनसाधु।

मुक्तवास [संज्ञा पु.] (सं.) सीप।

मुक्तवेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-द्रौपदी। २-प्रयाग का त्रिवेणी-संगम।

मुक्तव्यापार [संज्ञा पु.](सं.) दूसरे देशों के साथ होने वाला ऐसा व्यापार जिसमें आयात और निर्यात-संबंधी विशेष बाधाएँ न हों। *फ्री-ट्रेड*

मुक्तभृंग, मुक्तभृङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) रोहू मछली

मुक्तसंग, मुक्तसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) १-विषय-वासना-रहित व्यक्ति। २-परिव्राजक।

मुक्तसंशय [वि.] (सं.) जिसका संदेह दूर हो गया हो।

मुक्तसार [संज्ञा पु.] (सं.) केले का पेड़।

मुक्तहस्त [वि.] (सं.) जो खुले हाथों और उदारतापूर्वक दान करता हो। उदार।

मुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोती। २-रासना।

मुक्ताकलाप [संज्ञा पु.] (सं.) मोतियों का हार।

मुक्ताकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बैंगन

मुक्तागार [संज्ञा पु.](सं.) सीपी, जिसमें से मोती निकलता है।

मुक्तागृह [संज्ञा पु.] (सं.) सीपी।

मुक्तात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वह आत्मा जो मोक्ष को प्राप्त हो गई हो।

मुक्तापात [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की झाड़ी जिसके डंठलों की सीतलपाटी नामक चटाई बनाई जाती है।

मुक्तापुष्प [संज्ञा पु.](सं.) कुन्द का फूल या पौधा

मुक्ताप्रसू [संज्ञा पु.] (सं.) सीप।

मुक्ताफल [संज्ञा पु.](सं.) १-मोती। २-कपूर। ३-एक प्रकार का छोटी जाति का लिसोढ़ा। ४-लावनी फल।

मुक्ताभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रिपुरमल्लिका।

मुक्तामणि [संज्ञा पु.] (सं.) मोती।

मुक्तामाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीप।

मुक्तामोदक [संज्ञा पु.] (सं.) मोतीचूर के लड्डू।

मुक्तालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोतियों का हार।

मुक्तावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोतियों की माला या लड़ी।

मुक्तावास [संज्ञा पु.] (सं.) सीप।

मुक्तासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो अपने आसन से उठ खड़ा हो। २-योग-प्रक्रिया का एक आसन।

मुक्तास्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) सीप। शुक्ति।

मुक्ताहल* [संज्ञा पु.] (हिं.) मोती।

मुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बन्धन, अभियोग आदि से छूटने का भाव। छुटकारा। रिहाई। *रिलीज*। २-नियम, परभार आदि से छुटकारा पाने की क्रिया या भाव। *एक्जेम्पशन*। ३-धार्मिक विश्वास के अनुसार वह दशा जिसमें मनुष्य बार-बार जन्मग्रहण करने से छुटकारा पा लेता है तथा उसकी आत्मा ईश्वर में मिल अथवा स्वर्ग पहुँच जाती है। मोक्ष।

मुक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम जिसमें मुक्ति-विषयक विवेचन है।

मुक्तिक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-काशी। २-कावेरी नदी के पास का क्षेत्र।

मुक्तितीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मुक्तिप्रद [संज्ञा पु.] (सं.) हरा मूंग।

मुक्तिफौज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युरोपियन समाज-सेवकों का एक सङ्गठन जिसका उद्देश्य जनता की धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना है। *सैलवेशन आर्मी*।

मुक्तिमती [संज्ञा पु.] (सं.) एक नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

मुक्तिमुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस।

मुक्तिसाधन [संज्ञा पु] (सं.) मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा से ईश्वर तथा आत्मा के स्वरूप का चिन्तन करना।

मुक्तेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक शिवलिंग का नाम

मुखंडा, मुखण्डा [संज्ञा पु.] (हिं) टोंटीदार बर्तनों का वह छेद जिसमें टोंटी जड़ी रहती

मुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुँह। आनन। २-घर का दरवाजा। ३-नाटक में एक प्रकार की सन्धि जहाँ से अर्थों और रसों के व्यंजक बीज की उत्पत्ति या सूत्रपात होता है। ४-आदि। आरम्भ। ५-किसी वस्तु का सामने वाला ऊपरी खुला भाग। ६-आगे या पहले आने वाली चीज। ७-नाटक। ८-नाटक का पहला शब्द। ९-शब्द। १०-वेद। ११-पक्षी की चोंच। १२-जीरा। १३-आदि। आरंभ। १४-बडद्दर। [वि.] (सं.) प्रधान। मुख्य।

मुखक्षुर [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत।

मुखगंधक, मुखगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज।

मुखचंद, मुखचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा के समान मुख की शोभा।

मुखचपल [संज्ञा पु.] (सं.) १-जो बहुत अधिक या बढ़कर बोलता हो। २-कटुवचन बोलने वाला।

मुखचपलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहुत अधिक अथवा बढ़कर बोलना। २-कटु भाषण।

मुखचपला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्याछन्द का एक भेद।

मुखचपेटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कान के भीतर का एक अवयव। २-गाल पर तमाचा या थप्पड़ मारना।

मुख-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर अथवा आरम्भ में दिया हुआ चित्र।

मुख-चीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीभ। जिह्वा।

मुखज [वि.] (सं.) मुँह से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

मुखड़ा [संज्ञा पु] (हिं.) मुख। चेहरा। (सुन्दरता-सूचक)

मुख़्तार [संज्ञा पु.] (अं.) १-जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई कार्य करने का अधिकार दिया हो। २-एक प्रकार का कानूनी सलाहकार या कार्यकर्त्ता।

मुखतारआम [संज्ञा पु.] (अं.) वह कर्मचारी अथवा प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने, विशेषत: मुकदमे आदि लड़ने का अधिकार दिया गया हो।

मुखतारकार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह जो किसी कार्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया हो।

मुख़तारकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुखतारकार का काम या पद। २-देखो 'मुखतारी'।

मुखतार-ख़ास [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह जो किसी विशिष्ट कार्य अथवा मुकदमे के लिए प्रतिनिधि-रूप में नियुक्त किया गया हो।

मुखतारनामा (अ., फा.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी ओर से अदालती कार्रवाई करने का अधिकार मिला हो।

मुखतारनामा-आम (अ., फा.) वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा किसी को मुखतार-आम नियुक्त किया जाय।

मुखतारनामा-खास [संज्ञा पु.] (अ., फा) वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा किसी को मुखतार खास नियुक्त किया जाय।

मुखतारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुखतार होकर दूसरे के मुकदमे लड़ने का कार्य। २-मुख़तार का पेशा। ३-प्रतिनिधित्व।

मुखताल [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी गीत का पहला पद।

मुखदूषण [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज।

मुखदूषिका [संज्ञा पु.] (सं.) मुँहासा।

मुखदूषी [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

मुखधौता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भारंगी। भार्गी २-ब्राह्मण यष्टिका।

मुखन्नस [वि.] (अं.) नपुंसक।

मुखपाक [संज्ञा पु.] (सं.) मुख पर छोटे-छोटे घाव हो जाने का रोग जो मनुष्यों और घोड़ों को होता है।

मुखपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसकी आड़ में रहकर कोई कार्य किया जाय।

मुखपान [संज्ञा पु.] (हिं.) पान के आकार का किसी धातु कटा हुआ टुकड़ा।

मुखपिंड, मुखपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह पिंड जो मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसकी अन्त्येष्टि क्रिया से पहले किया जाता है।

मुखपिड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुहाँसा।

मुखपूरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुल्ला। २-वह पानी जो मुँह में कुल्ली के लिए लिया जाय।

मुखपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पुस्तक में सब से ऊपर का पृष्ठ।

मुखप्रसेक [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेष्मा के विकार उत्पन्न होने वाला एक रोग (भाव प्रकाश)।

मुखप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वादिष्ट। २-नारंगी। ३-ककड़ी।

मुखफ़्फ़फ़ [वि.] (अं.) जो घटाकर कम किया गया हो। [संज्ञा पु.] किसी पदार्थ अथवा शब्द आदि का संक्षिप्त रूप।

मुखबंद, मुखबन्द [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ों का मुँह बन्द हो जाने का एक रोग।

मुखबंध, मुखबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी ग्रंथ की भूमिका। प्रस्तावना।

मुखबंधन, मुखबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) भूमिका। प्रस्तावना।

मुखबिर [संज्ञा पु.] (अं.) खबर देने वाला। जासूस।

मुखबिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुप्तरूप से भेद देना। मुखबिर का काम।

मुखभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) पान। तांबूल।

मुखभेड़* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुठभेड़'।

मुखमंडनक, मुखमण्डनक [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का पौधा।

मुखमंडल, मुखमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) चेहरा।

मुखमंडिका, मुखमण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का मुख रोग। २-इस रोग की अधिष्ठात्री देवी।

मुखमंडितिका, मुखमण्डितिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रोग जो बालकों होता है।

मुखमसा [संज्ञा पु.] (अ.) झगड़ा। झमेला।

मुखमाधुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जो श्लेष्मा के विकार से होता है।

मुखमोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सलई नामक वृक्ष। २-काला सहिजन।

मुखम्मस [वि.] (अ.) जिसमें पांच कोने या अङ्ग आदि हो। [संज्ञा पु.] (अ.) उर्दू फारसी की एक प्रकार की कविता जिसमें एक साथ पाँच पद या चरण होते हैं।

मुखयंत्रण [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े या बैल की लगाम।

मुखर [वि.] (सं.) [स्त्री. मखरा.] १-अप्रिय या कटु बोलने वाला। २-बहुत बोलने वाला। बकवादी। ३-प्रधान। अग्रगण्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौवा। काक। २-शंख।

मुखरित [वि.] (सं.) शब्दों या ध्वनियों से युक्त बोलता हुआ।

मुखरिन [वि.] (सं.) शब्दायमान।

मुखरोग [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार मुख के ६७ प्रकार के रोग जो ओठ, दाँत, जीभ, तालू या गले आदि में होते हैं।

मुखलांगल, मुखलाङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

मुखलिसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) छुटकारा।

मुखलेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लेप जो मुख पर शोभा के लिये लगाया जाय। २-कफ का का मुखरोग।

मुखवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनार का पेड़। २-स्वादिष्ट।

मुखवाचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंबष्ठा।

मुखवाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख से फूँककर बजाया जाने वाला बाजा। २-मुख से निकला बम-बम शब्द।

मुखवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंधतृण। २-बूज की बेल।

मुखवासन [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंधित औषधियों का एक प्रकार का चूर्ण। जिससे मुख की दुर्गंध दूर होती है तथा उसमें सुगन्ध आती।

मुखविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्याछन्द का एक भेद।

मुखविलुंठिका, मुखविलुण्ठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकरी।

मुखविष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेलचट्टा या

किरवा नामक कीड़ा।

मुखवैंदल [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत में वर्णित एक कीड़ा जिसके काटने से पीड़ा होती है।

मुखव्यंग, मुखव्यङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मुख पर पड़ने वाले छोटे-छोटे दाग।

मुखव्यादन [संज्ञा पु.] (सं.) जमुहाई।

मुखशफ [संज्ञा पु.] (सं.) कटुवचन बोलने वाला। मुखर।

मुखशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुंह साफ करना। २-भोजन के बाद पान-सुपारी आदि खाकर मुंह साफ करना।

मुखशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख को शुद्ध करने वाला पदार्थ। २-दालचीनी। ३-तज। [वि.] चरपरा।

मुखशोधी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पदार्थ जिसके सेवन से मुख शुद्ध होता है। २-जंबीरी नीबू

मुखशोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्यास। २-प्यास अथवा गरमी के कारण मुंह सूखना।

मुखसंधि, मुखसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक में एक प्रकार की संधि जहां से अर्थों और रसों के व्यंजक बीज की उत्पत्ति या सूत्रपात होता है।

मुखसंभव, मुखसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-पुष्करमूल।

मुखसिंचन-मंत्र, मुखसिञ्चन-मन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मन्त्र जिससे जल फूंककर उस व्यक्ति के मुख पर छींटे दिये जाते हैं, जिसके पेट में किसी प्रकार का विष उतर जाता है।

मुखसुर [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ी।

मुखसूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमड़े का वृक्ष।

मुखस्थ [वि.] (सं.) कंठस्थ। जबानी।

मुखस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूक। २-मुंह से अधिक लार बहने का बालकों का एक रोग, जो कफ से दूषित स्तन पीने से होता है

मुखाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दावानल। २-मृतव्यक्ति को चिता पर रखकर पहले उसके मुँह में आग लगाने की क्रिया।

मुखाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओंठ। २-किसी वस्तु का अगला भाग। [वि.] कंठस्थ। जो जबानी याद हो।

मुखातिब [वि.] (सं.) जिससे कुछ कहा या कुछ बात की जाय।

मुखापेक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो आश्रय सहायता आदि के लिए दूसरों का मुंह ताकता हो

मुखापेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूसरों का मुँह ताकना। दूसरों के आश्रित रहना।

मुखापेक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दूसरों की कृपा-दृष्टि के भरोसे रहता हो। आश्रित।

मुखामय [संज्ञा पु.] (सं.) मुख का रोग।

मुखामृत [संज्ञा पु] (सं.) १-मुख की शोभा। २-छोटे बच्चों के मुंह की लार।

मुखार्जक [संज्ञा पु.] (सं.) बनतुलसी।

मुखालिफ [वि.] (अ.) १-विरोधी। २-शत्रु। ३-प्रतिद्वंद्वी।

मुखालिफत [वि.] (अ.) १-विरोध। २-शत्रुता।

मुखालु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कंद जो बहुत मीठा होता है इसे स्थूलकंद भी कहते हैं।

मुखासव [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूक। २-लार। अधरामृत।

मुखास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

मुखास्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-(मुख से बहने वाली) थूक। २-लार।

मुखिक [संज्ञा पु.] (सं.) मोखा नामक वृक्ष।

मुखिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रधान। नेता। सरदार। २-अगुआ। ३-वल्लभ संप्रदाय के मन्दिरों का वह कर्मचारी जो मूर्त्ति का पूजन करता तथा भोग आदि लगाता है।

मुखुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की एक देवी का नाम।

मुखेंदु, मुखेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा जैसा मुख।

मुखोछ्वास [संज्ञा पु.] (सं.) सांस।

मुखोल्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दावानल।

मुख्तलिफ [वि.] (अ.) १-भिन्न। अलग। पृथक २-अनेक प्रकार का।

मुख्तसर [वि.] (अ.) १-संक्षिप्त। २-छोटा। ३-अल्प। थोड़ा।

मुख्तार [संज्ञा पु.](अ.) देखो 'मुखतार'। (इसके यौगिक शब्दों के लिए देखो 'मुखतार' के यौगिक)।

मुख्य [वि.] (सं.) १-सब में बड़ा, ऊपर अथवा आगे रहने वाला। प्रधान। २-जिसमें और की अपेक्षा बहुत अधिक विशेषता अथवा महत्व हो। अधिक महत्व वाला। ३-अपने वर्ग अथवा विभाग में सब से बड़ा या प्रधान। चीफ।

मुख्य-अधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रांत का सर्वोच्च न्यायालय। हाईकोर्ट।

मुख्य-आयुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश के केन्द्र-अधीन प्रांत का शासक। किसी छोटे प्रांत का प्रधान शासक। चीफ कमिशनर।

मुख्य-करणिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्यालय के करणिकों या लिपिकों की देखभाल करने वाला प्रधान लिपिक। प्रधान लिपिक या मुंशी। हैड क्लर्क।

मुख्य-कार्याधिकारिक [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी राजकीय विभाग या कार्यालय का प्रधान अधिकारी। चीफ-ऑफिसर। २-किसी राज्य अथवा संस्था के प्रबन्ध, शासन या कार्य साधन से सम्बन्ध रखने वाला प्रधान अधिकारी। चीफ-एक्जिक्यूटिव।

मुख्य-चांद्र, मुख्यचान्द्र [संज्ञा पु.](सं.) चांद्रमास के दो विभागों में से एक। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्यातक का काल।

मुख्यतः [क्रि. वि.] (सं.) मुख्य रूप से। खास तौर पर।

मुख्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुख्य होने का भाव प्रधानता। श्रेष्ठता।

मुख्यदंडधर, मुख्यदण्डधर [संज्ञा पु.] (सं.) सिपाहियों के एक वर्ग का प्रधान। हैड-कांस्टेबल।

मुख्य-निर्वाचन-आयुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य या देश के निर्वाचन कराने वाले आयुक्तों का प्रधान अधिकारी। चीफ-इलेक्शन-कमिशनर।

मुख्य-न्यायाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रांत के सर्वोच्च या मुख्य अधिकरण अथवा न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश या प्रधान-विचारपति। चीफ-जस्टिस।

मुख्य-न्यायाधीश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी ज़िले या मंडल के न्यायालय का प्रधान निर्णायक जो ज़िले भर के मुकदमे में सुनता तथा उन पर पुनर्विचार करता है। चीफ-जज।

मुख्य-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी अदालत या कचहरी। चीफ-कोर्ट।

मुख्य-प्रदेष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मुख्य-आयुक्त'।

मुख्य-बलाधिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) प्रधान सेना अध्यक्ष। प्रधान-सेनापति। कमांडर-इन-चीफ

मुख्यमंत्री, मुख्यमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य का वह मन्त्री जो और सब मन्त्रियों में प्रधान या मुख्य होता है। प्रधानमन्त्री प्राइम-मिनिस्टर।

मुख्यसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) स्थावर सृष्टि।

मुख्यावास [संज्ञा पु.](सं.) वह मुख्य या प्रधान स्थान जहां कोई बड़ा अधिकारी नियमित रूप से रहता तथा जहां उसका सबसे बड़ा कार्यालय हो। हेडक्वार्टर।

मुगदर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भारी मुंगरी का जोड़ा जिसका उपयोग व्यायाम के लिये होता है। जोड़ी।

मुगना [संज्ञा पु] (हिं.) सहिजन।

मुगरा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'मोगरा'।

मुगरेला [संज्ञा पु.](हिं.) कलौंजी या मँगरेला नाम का दाना।

मुग़ल [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री मुगलानी] १-मङ्गोल देश का निवासी। २-तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश में रहता था। ३-मुसलमानों के चार वर्गों में से एक।

मुग़लई [वि.] (फा.) मुगलों का-सा। मुगलों की

तरह का। [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुग़लपठान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का खेल जो भूमि पर खाने खैंचकर सोलह कंकड़ियों से खेला जाता है।

मुगलाई [वि.](फ़ा.) देखो 'मुगलई'। [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) देखो 'मुग़लई'।

मुगलानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मुगलजाति की स्त्री। २-दासी। ३-कपड़ा सीने वाली स्त्री।

मुगली [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) पसली का एक रोग जो बच्चों को होता है।

मुगवन [संज्ञा पु.] (हिं.) बनमूंग। मोठ।

मुगवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिस्रवा।

मुगालता [संज्ञा पु.] (अ.) छल। कपट। धोखा

मुगूह [संज्ञा पु.] (सं.) १-पपीहा। २-एक प्रकार का हिरन।

मुग्घम [वि] (देश.) बहुत खोलकर या स्पष्टरूप से न कही जाने वाली (बात)। (बात) जो संकेत रूप में कही गई हो।

मुग्ध [वि.] (सं.) १-मोह या भ्रम में पड़ा हुआ मूढ़। २-सुन्दर। ३-नवीन। नया। ४ आसक्त मोहित।

मुग्धकर [वि.] (सं.) [स्त्री मग्धकारी] मुग्ध या मोहित करने वाला।

मुग्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुग्ध होने का भाव। मूढ़ता। २-सुन्दरता। खूबसूरती। ३-मोहित या आसक्त होने का भाव।

मुग्धबुद्धि [वि.] (सं.) भ्रांतबुद्धि। बेवकूफ। मूर्ख

मुग्धभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धिहीनता। २-सरलता।

मुग्धमति [वि.] (सं.) १-मूर्ख। मूढ़। २-सीधा-साधा।

मुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य में वह युवती-नायिका जिसमें अभी काम करने की चेष्टा उत्पन्न न हुई हो।

मुचंगड़ [वि.] (हिं.) मोटा और भद्दा।

मुचक [संज्ञा पु.] (सं.) लाख। लाह। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मोच'।

मुचकुंद [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगन्धित फूलों वाला एक बड़ा वृक्ष।

मुचना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मोचन होना। २-किसी अंग में मोच आना।

मुचलका [संज्ञा पु.] (तु.) वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा कोई अनुचित कार्य न करने अथवा नियत तिथि पर न्यायालय में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो और प्रतिज्ञा पूरी न होने पर कुछ अर्थ दंड देना पड़े।

मुचिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाता। उदार। २-धर्म। ३-वायु। ४-देवता।

मुचिलिंग, मुचिलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुचकुन्द नामक वृक्ष। २-तिलपुष्पी नामक पौधा। ३-एक नाग का नाम। ४-एक पर्वत का नाम।

मुचुक [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मोच'।

मुचुकुन्द, मुचुकुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुचकुन्द नामक वृक्ष। २-मानधाता के एक पुत्र का नाम जिसकी नेत्राग्नि से कालयवन को श्रीकृष्ण जी ने भस्म करवाया था (भागवत)।

मुचुटी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-उँगली मटकाने की क्रिया। २-मुट्ठी।

मुच्चा [संज्ञा पु.] (देश.) मांस या गोश्त का लोथड़ा।

मुछंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जिसकी मूँछें बड़ी-बड़ी हों। २-बड़े-बड़े बालों के कारण कुरूप। ३-मूर्ख। भोंदू।

मुछियल [वि.] (हिं.) बड़ी-बड़ी मूछों वाला।

मुज़क्कर [वि.] (अ.) पुलिंग।

मुजमिल+ [क्रि. वि.] (हिं.) सब मिलाकर। कुल मिलाकर। [संज्ञा पु.] (हिं.) दो या दो से अधिक संख्याओं का जोड़।

मुजम्मा [संज्ञा पु.] (अ.) चमड़े अथवा रस्सी का वह फेरा जो घोड़े को आगे बढ़ने से रोकने के लिये उसकी दुमची में पिछाड़ी की रस्सी के साथ लगा रहता है।

मुजम्मा लगाना-रोक या आड़ लगाना। *मुजम्मा लेना*-आड़े हाथों लेना।

मुजरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी रकम में से काटी हुई रकम या कुछ रकम काटना। २-वह जो जारी किया गया हो। ३-किसी बड़े के सामने पहुँचकर उसे अभिवादन करना। ४-वेश्या का वह गाना जिसमें नाच न हो, केवल बैठकर गाये।

मुजराई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-काटी या मुजरा ली-हुई रकम। २-मुजरा या अभिवादन करने की क्रिया। ३-मुजरा या अभिवादन करने वाला ४-मरसिया पढ़ने वाला व्यक्ति। ५-काटने अथवा घटाने की क्रिया।

मुजराकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तर भारत में होने वाला एक प्रकार का कंद।

मुजरिम [संज्ञा पु.] (अ.) वह जिस पर कोई जुर्म या अभियोग लगाया गया हो। अभियुक्त।

मुजर्रद [वि.] (अ.) १-अकेला। एकाकी। २-बिन ब्याहा। ३-जिसने संसार का त्याग कर दिया हो।

मुजर्रब [वि.] (अ.) आजमाया हुआ। परीक्षित।

मुजल्लद [वि] (अ.) जिसकी जिल्द बँधी हो। सजिल्द।

मुजस्सिम [वि.] (अ.) स शरीर। प्रत्यक्ष।

मुजारिया [वि.] (अ.) जो जारी या प्रचलित किया अथवा कराया गया हो।

मुजावर [संज्ञा पु.] (अ.) किसी पीर की क

दरगाह आदि पर बैठ
चढ़ावा लेने वाला।

मुज़ाहिम [वि.] (अ.) १-बाधक। २-
करने वाला।

मुज़ाहिमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-रोकने
बाधा डालने की क्रिया या भाव। २-
करने की क्रिया या भाव।

मुज़िर [वि.] (अ.) हानिकारक।

मुझ [सर्व.] (हिं.) 'मैं' का वह रूप जो
संबंधकार को छोड़कर बाकी विभक्ति
से पहले होता है।

मुझे [सर्व.] (हिं.) एक पुरुषवाचक
जो उत्तमपुरुष एकवचन तथा उभयलिं
और वक्ता अथवा उसके नाम
संकेत करता है। मुझको।

मुटकना+ [वि.] (हिं.) आकार में छोटा
साधारण, पर सुन्दर।

मुटका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का
वस्त्र।

मुटकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कुलथी नामक

मुटमुरी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का
नामक धान।

मुटाई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोटापन।
२-पुष्टि। ३-अहंकार। घमंड। ४-
वाही अथवा घमंड जो भरपूर भोजन
अथवा धन हो जाने से हो जाय।
मुटाई चढ़ना-बहुत अधिक घमंड
मुटाई झड़ना-शेखी या अभिमान चूर्ण

मुटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-स्थूल या
जाना। २-अहंकारी या घमंडी हो
शेखीबाज हो जाना।

मुटासा [वि.] (हिं.) वह जो भरपूर भोजन
जाने या कुछ धन कमा लेने से
घमंडी हो गया हो।

मुटिया [संज्ञा पु.] (हिं.) मजदूर।

मुटियार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जवान
२-पति। खसम। आदमी।

मुट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घास-फूस
पूला। २-कागजों आदि का गोल
पुलंदा। ३-यंत्र या शस्त्र आदि का
दस्ता। ४-बेलन के आकार का
एक औजार। ५-कपड़े की गद्दी जो
पहलवान आदि बाहों पर मोटाई
सुन्दरता प्रदर्शित करते हैं।

मुट्ठामुहेर [संज्ञा स्त्री.] (देश.) युवती स्त्री।

मुट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ की
की वह मुद्रा या रूप जो मोड़कर
दबाने से बनती है। २-उतनी वस्तु
इस प्रकार हाथ में आवे। ३-चौड़ाई
बराबर का विस्तार या लंबाई। ४-
ऊंचाई की एक नाप जो दोनों मुट्ठियों

फैले हुए अंगूठों के बराबर होती है। ५-मुक्की से किसी के शरीर पर, उसकी थकावट दूर करने के लिए, धीरे-धीरे आघात करना। मुट्ठी गरम करना-कुछ धन देना। मुट्ठी में-अधिकार में। वश में। मुट्ठी बंद या बंधी होना-घर का भेद किसी पर प्रकट न होना। मुट्ठी में रखा होना-पास होना।

मुठभेड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-टक्कर। भिड़ंत। २-भेंट। सामना।

मुठिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुट्ठी। २-मुक्का। घूंसा।

मुठिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दस्ता। बेंट। २-धुनकी की तांत पर आघात करने का औजार। ३-किसी वस्तु का वह भाग जो हाथ में पकड़ा जाता है।

मुठी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुट्ठी'।

मुठकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का खिलौना जो काठ का होता है।

मुड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुरक'।

मुड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुरकना'।

मुड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घूम अथवा बल खाकर किसी ओर फिरना। २-दबाव या आघात से झुक जाना। ३-टेढ़ा होकर भिन्न दिशा में प्रवृत्त होना। ४-किसी धारदार अथवा नोक का एक ओर झुक जाना। ५-घूम जाना ६-देखो 'मुँड़ना'।

मुड़ला*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. मुड़ली] जिसके सिर पर बाल न हों। मुंडा।

मुड़वाना [क्रि. स.] (हिं.) १-उस्तरे से बाल या रोए दूर कराना। २-मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना। ३-देखो 'मुड़वाना'।

मुड़वारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुँडेरा। २-सिरहाना। ३-वह पार्श्व जिधर किसी पदार्थ का सिरा अथवा ऊपरी भाग हो।

मुड़हर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रियों की साड़ी या चादर का सिर पर का भाग। २-सिर का अगला भाग।

मुड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) मुंडन कराना। मुँड़ाना

मुड़िया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मुँड़े हुए सिर वाला व्यक्ति।

मुड़ेरा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो मुँडेरा'।

मुतअल्लिक [वि.] (अ.) १-सम्बद्ध। २-सम्मिलित। [क्रि. वि.] सम्बन्ध में। विषय में।

मुतक्का [संज्ञा पु.] (देश.) १-मुँडेरा। २-छोटा खंभा। ३-मीनार। लाट।

मुतदयरा [वि.] (अ.) जो दायर किया गया हो (मुकदमा आदि)।

मुतफन्नी [वि.] (अ.) धोखेबाज। चालाक।

मुतफर्रकात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-फुटकर वस्तुएं २-फुटकर व्यय की मद। ३-भूमि के वह अलग-अलग भाग जो किसी एक ही गाँव के अन्तर्गत हों।

मुतफर्रिक [वि.] (अ.) १-विविध। कई प्रकार का २-अलग-अलग।

मुतबन्ना [संज्ञा पु.] (अ.) दत्तक पुत्र।

मुतमौवल [वि.] (अ.) धनवान। अमीर।

मुतरज्जिम [संज्ञा पु.] (अ.) अनुवादक।

मुतलक [क्रि. वि.] (अ.) कुछ भी। तनिक भी। जरा भी। [वि.] बिलकुल। निपट। निरा।

मुतवज्जह [वि.] (अ.) जिसने किसी ओर तवज्जह की हो। प्रवृत्त।

मुतवफ्फा [वि.] (अ.) परलोकवासी। मृत।

मुतवल्ली [संज्ञा पु.] (अ.) किसी नाबालिग और और उसकी संपत्ति का रक्षक। वली।

मुतवातिर [क्रि. वि.] (हिं.) निरंतर। लगातार।

मुतसद्दी [संज्ञा पु.] (अ.) १-लेखक। मुनशी। २-प्रबंधकर्त्ता। ३-उत्तरदायी। ४-मुनीम। ५-पेशकार। दीवान।

मुतसिरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोतियों की माला या कंठी।

मुतहम्मिल [वि.] (अ.) सहनशील। सहिष्णु।

मुताबिक [क्रि. वि.] (अ.) अनुसार। [वि.] (अ.) अनुकूल।

मुतालबा [संज्ञा पु.] (अ.) प्राप्तव्य धन। पावना।

मुतास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूतने की इच्छा।

मुताह [संज्ञा पु.] (सं.) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुताही [वि.] (हिं.) १-वह जिसके साथ मुताह किया गया हो। २-रखेली (स्त्री)।

मुतिलाडू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मोतीचूर का लड्डू

मुतेहरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक गहना जो कलाई में पहना जाता है।

मुत्तफिक [व.] (अ.) सहमत।

मुत्तसिल [वि.] (अ.) निकट। पास। [क्रि. वि.] (अ.) निरन्तर। लगातार।

मुत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूत्र। पेशाब। (बालक)

मुद [संज्ञा पु.] (सं.) हर्ष। आनन्द।

मुदगर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुगदर'।

मुदरा [संज्ञा पु.] (देश.) अफीम, भाँग, शराब, और धतूरे के योग से बनने वाला मादक पेय पदार्थ।

मुदर्रिस [संज्ञा पु.] (अ.) अध्यापक।

मुदर्रिसी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अध्यापन। २-मुदर्रिस का पद।

मुदवंत* [वि.] (हिं.) प्रसन्न। खुश।

मुदा* [अव्य.] (हिं.) १-तात्पर्य यह है कि। २-मगर। लेकिन। परन्तु।

मुदाम [क्रि. वि.] (फा.) १-सदैव। हमेशा। सदा। २-निरंतर। लगातार। +३-ठीक-ठीक।

मुदामी [वि.] (फा.) सदा होता रहने वाला।

मुदावसु [संज्ञा पु.] (सं.) प्रजापति के एक पुत्र का नाम।

मुदिन [वि.] (सं.) [स्त्री. मुदिता] प्रसन्न। खुश [संज्ञा पु.] एक प्रकार का मैथुनोपयोगी आलिंगन।

मुदिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साहित्य में वह परकीय नायिका जो पर-पुरुष प्रीति-संबंधी कामना की आकस्मिक प्राप्ति से प्रसन्न होती है। २-हर्ष। आनन्द। ३-योगशास्त्र में समाधि योग्य संस्कार उत्पन्न करने वाला एक परिकर्म।

मुदिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल। २-मेंढक। ३-कामुक।

मुदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदनी। जुन्हाई।

मुद्ग [संज्ञा पु.] (सं) १-मूंग। अन्न। २-गिलाफ। आच्छादन। ३-एक समुद्री पक्षी।

मुद्गगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) अधुनिक मुंगेर तथा उसके आसपास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

मुद्गदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनमूंग। मुद्गपर्णी

मुद्गपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनमूंग।

मुद्गभोजी [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

मुद्गर [संज्ञा पु.] (सं.) १-काठ का बना एक प्रकार का गावदुम दंड जो मूठ की ओर पतला तथा आगे की ओर बहुत भारी होता है। इसको घुमाने से कलाइयों और हाथों में बल आता है। २-प्राचीनकाल का अस्त्र।

मुद्गरांक, मुद्गराङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल में धोबियों के वस्त्रों का वह चिह्न जिस पर मुद्गर का निशान होता था। इस चिह्न वाले वस्त्र ही धोबी पहनते थे।

मुद्गल [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोहिस नामक तृण। २ एक उपनिषद् का नाम।

मुद्गवटक [संज्ञा पु.] (सं.) मूंग का बना बड़ा

मुद्गष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) बनमूंग।

मुद्दआ [संज्ञा पु.] (अ.) अभिप्राय। तात्पर्य।

मुद्दई [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. मद्दइया] १-वादी २-शत्रु। वैरी।

मुद्दत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अवधि। २-बहुत दिन। मुद्दत काटना--थोक माल का मूल्य अवधि से पहले चुकाने पर अवधि के बाकी दिनों का सूद काटना (कोठीवाला)।

मुद्दती [वि.] (अ.) जिसकी कोई मुद्दत या अवधि नियत हो।

मुद्दती-हुँडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह हुण्डी जिस का रुपया निश्चित समय पर देना पड़े

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह [संज्ञा पु.] (अ.) वह जिस पर दीवानी दावा हो। प्रतिवादी।

मुद्ध* [वि.] (हिं) देखो 'मुग्ध'।

मुद्धा [संज्ञा पु.] (देश.) पिंडली के नीचे का गाँठ वाला भाग। टखना।

मुद्धी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रस्सी की वह गांठ

जिसमें से उसका सिरा इधर-उधर हो सके।

मुद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छापने वाला। २-समाचारपत्र आदि का वह अधिकारी जिस पर उसके छापने का भार होता है। प्रिंटर।

मुद्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु पर अक्षर आदि अंकित करना। छपाई। २-ठप्पे आदि की सहायता से अंकित करके मुद्रा तैयार करना। ३-ठीक प्रकार से कार्य संचालन करने के लिए नियम आदि बनाना और लगाना।

मुद्रणयंत्र, मुद्रणयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिसकी सहायता से साधारण समाचार-पत्र पुस्तिकें आदि छापी जाती हैं।

मुद्रणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अँगूठी।

मुद्रणालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां मुद्रणयंत्र द्वारा समाचारपत्र पुस्तकें आदि छपती हैं। प्रिन्टिंग-प्रेस।

मुद्रांक, मुद्राङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुद्रा पर का चिह्न। २-देखो 'अंकपत्र'।

मुद्रांकशुल्क, मुद्राङ्कशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) अंकपत्र पर दिया जाने वाला शुल्क। स्टाम्प ड्यूटी

मुद्रांकन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुद्रा की सहायता से अङ्कित करने का काम। २-छापने का कार्य। छपाई।

मुद्रांकित [वि.] (सं.) मोहर किया हुआ। जिस पर मुद्रा या मोहर लगी हो।

मुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी के नाम की छाप। मोहर। सील। २-रुपया पैसा आदि। सिक्का। ३-अँगूठी। छल्ला। ४-सीसे के ढले हुए अक्षर जिनसे छपाई होती है। टाइप। ५-कान में पहनने का वलय जो काँच या स्फटिक का होता है। इसे गोरखपंथी पहनते हैं। ६-खड़े होने बैठने आदि में शरीर के अंगों की कोई स्थिति। ठवन। पोस्चर। ७-विष्णु के शंख, चक्र आदि आयुधों के चिह्न जिन्हें भक्तजन अपने शरीर पर दगवाते हैं। छाप। ८-हठयोग में ये अंगविन्यास-खेकरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। ९-मुख की आकृति या चेष्टा। १०-तांत्रिकों के मत से कोई भूना हुआ अन्न। ११-अगस्त्य-ऋषि की पत्नी, लोपमुद्रा। १२-वह अलङ्कार जिसमें प्रकृत अथवा प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय नाम निकलते हैं। १३-कहीं जाने का परवाना या आज्ञापत्र

मुद्राकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में राजा की मोहर रहती है। २-मुद्रा या मोहर बनानेवाला। ३-मुद्रण कार्य करने वाला।

मुद्राकार [संज्ञा पु.] (सं.) मोहर बनाने वाला।

मुद्रा-कान्हड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

मुद्राक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहर पर खुदे हुए अक्षर। २-छपाई के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर। टाइप।

मुद्राटोरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की रागिनी

मुद्रातत्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से उस देश की ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं। न्यूमिज मैटिक्स।

मुद्राध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कहीं जाने का परवाना देने वाला अधिकारी।

मुद्राबल [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम (बौद्ध)।

मुद्राबाहुल्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मुद्रा-स्फीति'

मुद्रामार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक के भीतर का वह रंध्र जहाँ से योगियों का प्राणवायु बाहर निकलता है। ब्रह्मरंध्र।

मुद्रायंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मुद्रण-यंत्र'।

मुद्राविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान जिसमें पुराने सिक्कों के आधार पर ऐतिहासिक घटनाएँ जानी जाती हैं। न्यूमिज मैटिक्स।

मुद्राविज्ञानी [संज्ञा पु.] (अं.) मुद्राविज्ञान का जानकार।

मुद्राविस्फीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृत्रिम रूप से बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन अथवा स्फीति को घटाकर काम करना या साधारण स्थिति में लाना। 'मुद्रास्फीति' का उलटा। डिफ्लेशन।

मुद्राविस्तार, मुद्रावृद्धिकरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मुद्रा-स्फीति'।

मुद्राशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मुद्रातत्व'।

मुद्रा-स्फीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश में कागजी मुद्रा अथवा नोटों आदि का आवश्यकता से अधिक प्रचलन होने पर या कृत्रिम रूप से मुद्रा के बहुत बढ़ जाने की स्थिति, जिससे मुद्रा का मूल्य बहुत घट और वस्तुओं का मूल्य पर्याप्त बढ़ जाता है।

मुद्रिक, मुद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोहर छाप वाली अँगूठी। २-अँगूठी। ३-कुश की बनी अँगूठी। पवित्री। पैंती। ४-मुद्रा। सिक्का।

मुद्रित [वि.] (सं.) १-जिसका मुद्रण हुआ हो। छपा हुआ। २-जिस पर कोई मुद्रा अंकित हुई हो। मोहर किया हुआ। सील्ड। ३-मुँदा हुआ। मुँहबन्द। ४-त्यागा या छोड़ा हुआ।

मुधा [क्रि. वि.] (सं.) व्यर्थ। बेफायदा।

[वि.] (सं.) १-व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। २-मिथ्या। झूठ।

[संज्ञा पु.] (सं.) असत्य। मिथ्या।

मुनक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी किशमिश। सूखा हुआ बड़ा अंगूर।

मुनगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सहिंजन।

मुनब्बतकारी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पत्थर पर उभरे हुए बेल-बूटों का काम।

मुनमुना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पकवान।

मुनरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना। जो कान में पहना जाता है।

मुनरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुँदरी'।

मुनशी [संज्ञा पु.] (अं.) लेख आदि लिखने वाला। लेखक। २-पंडित। विद्वान।

मुनसरिम [संज्ञा पु.] (अं.) १-प्रबन्ध करने वाला। २-अदालत के कार्यालय का वह अधिकारी जो मिसलें यथास्थान रखता है।

मुनसिफ [संज्ञा पु.] (अं.) १-न्यायविभाग का एक अधिकारी। २-न्याय या इन्साफ करने वाला व्यक्ति।

मुनसिफी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मुनसिफ का काम या पद।

मुनहसर [वि.] (अं.) अवलंबित। आश्रित।

मुनादी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) ढोल आदि पीटकर की जाने वाली घोषणा। ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफा [संज्ञा पु.] (अं.) लाभ। नफा।

मुनारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मीनार'।

मुनाल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का सुन्दर पक्षी।

मुनासिब [वि.] (अं.) उचित। योग्य। ठीक।

मुनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो मनन करे। ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य प्रभृति सूक्ष्म विषयों का विचार करने वाला व्यक्ति। २-तपस्वी। त्यागी। ३-सात की संख्या। ४-जिन। ५-पलासवृक्ष। ६-पियालवृक्ष। ७-कुरु के एक पुत्र का नाम। ८-दौना। दमनक

मुनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मी का क्षुप।

मुनिचीर [संज्ञा पु.] (सं.) वल्कल।

मुनिच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) मेथी।

मुनितरु [संज्ञा पु.] (सं.) बक्कम। पतंग।

मुनिद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्योनाक वृक्ष। २-बक्कम। पतंग।

मुनिधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) तिन्नी का चावल

मुनिपट [संज्ञा पु.] (सं.) वल्कल।

मुनिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दौना। दमनक।

मुनिपादक [संज्ञा पु.] (सं.) बक्कम। पतंग।

मुनिपित्तल [संज्ञा पु.] (सं.) ताँबा।

मुनिपुंगव, मुनिपुङ्गव [संज्ञा पु.] (सं.) मुनिश्रेष्ठ

मुनिपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दमनक। दौना।

मुनिपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) खंजन पक्षी।

मुनिपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) विजयसार का वृक्ष

मुनिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षिराज नामक धान्य। २-पिंडखजूर। ३-चिरौंजी का पेड़।

मुनिभक्त [संज्ञा पु.] (सं.) तिन्नी नामक चावल

मुनिभेषज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त का वृक्ष। २-हड़। हर्रे। ३-लंघन। उपवास।

मुनिभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मुनिभक्त'।

मुनियाँ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) लाल नामक पक्षी की

मादा । [संज्ञा पु.] एक प्रकार का अगहनियाँ धान ।

मुनिवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुंडरीक वृक्ष । २-दौना ।

मुनिवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) विजयसार ।

मुनिवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग के एक देवता ।

मुनिवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बक्कम । पतंग ।

मुनिव्रत [संज्ञा पु.](सं.) मुनियों के योग्य, तपस्या

मुनिशस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) सफेदकुश ।

मुनिसत्र [संज्ञा पु.] (सं) एक यज्ञ का नाम ।

मुनिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) दमनक । दौना ।

मुनिसुव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) एक जैन तीर्थंकर का नाम ।

मुनिहत [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्यमित्र राजा की एक उपाधि ।

मुनींद्र, मुनीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋषि श्रेष्ठ । २-बुद्धदेव । ३-पुराणानुसार एक दानव ।

मुनी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुनि' ।

मुनीब [संज्ञा पु.] (अ.) मुनीम ।

मुनीम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सहायक । नायब । २-आय-व्यय का हिसाब लिखने वाला लिपिक

मुनीमखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) मुनीमों के बैठने का स्थान ।

मुनीमी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मुनीम का कार्य या पद

मुनीश, मुनीश्वर [संज्ञा पु.] (सं) १-मुनियों में श्रेष्ठ । २-बुद्धदेव का एक नाम । ३-विष्णु ।

मुन्ना, मुन्नू [संज्ञा पु.] (देश.) १-छोटों के लिए प्रेमसूचक शब्द । २-प्रिय । प्यारा ।

मुन्यन्न [संज्ञा पु.](सं.) मुनियों के खाने का अन्न

मुन्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ ।

मुन्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

मुफ़लिस [वि.] (अ) निर्धन । गरीब ।

मुफ़लिसी [संज्ञा स्त्री] (अ) गरीबी । निर्धनता ।

मुफ़सिद [संज्ञा पु.] (अ.) झगड़ालू आदमी ।

मुफ़स्सल [वि] (अ.) विस्तृत । ब्योरेवार । [संज्ञा पु.] (अ.) केंद्रस्थ नगर के आसपास का स्थान ।

मुफ़ीद [वि.] (अ) लाभदायक ।

मुफ़्त [वि.] (अ.) बिना दाम या मूल्य का । सेंत का । *मुफ़्त में*-१-बिना दाम के । २-व्यर्थ । [क्रि वि] (अ) व्यर्थ । बेफायदा ।

मुफ़्तखोर [वि] (अ , फ़ा.) मुफ़्त का माल खाने-वाला ।

मुफ़्तखोरी [संज्ञा स्त्री.] (अ , फ़ा.) मुफ़्त का माल खाने का काम या भाव ।

मुफ़्ती [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमान धर्मशास्त्री । [संज्ञा स्त्री] (अ.) वर्दी पहनने वाले अधिकारी सैनिकों, सिपाहियों आदि के सादे और साधारण कपड़े । [वि.] (अ.) मुफ़्त का ।

मुब्तिला [वि.] (अ.) फँसा हुआ । ग्रस्त ।

मुबलिग [संज्ञा पु.](अ.) धन की संख्या । रकम ।

मुबादिला [वि.] (अ.) बदला । पलटा । एवज ।

मुबारक [वि.] (अ.) १-जिससे बरकत हो । २-शुभ । मंगलमय ।

मुबारकबाद [संज्ञा पु.] (अ., फ़ा.) बधाई ।

मुबारकबादी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फ़ा.) १-'मुबारक' कहने की क्रिया । बधाई । २-बधाई देने के लिए गाये जाने वाले मंगलगीत ।

मुबारकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बधाई । मुबारकबाद

मुबालिगा [संज्ञा पु.] (अ.) अत्युक्ति ।

मुबाहिसा [संज्ञा पु.] (अ.) किसी विषय के निर्णय के लिये होने वाला विवाद । बहस ।

मुमकिन [वि.] (अ.) जो हो सकता हो । सम्भव

मुमतहिन [संज्ञा पु.] (अ.) परीक्षा लेने वाला । परीक्षक ।

मुमानियत [संज्ञा पु.] (अ.) मनाही ।

मुमुक्षा [संज्ञा स्त्री.](सं) मुक्ति या मोक्ष की इच्छा

मुमुक्षु [वि.] (सं.) मुक्ति या मोक्ष पाने का इच्छुक

मुमुक्षुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुमुक्षु का भाव या धर्म ।

मुमुचान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो मुक्त हो गया हो । २-मेघ । बादल ।

मुमुच्छु* [वि.] (हिं.) देखो 'मुमुक्षु' ।

मुमूर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरने की इच्छा ।

मुमूर्षु [वि.](सं.) जो मरने ही वाला हो । मरणासन्न ।

मुयस्य [वि.] (अ.) देखो 'मयस्सर' ।

मुरंगिका, मुरङ्गिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) मूर्वा ।

मुरंडा, मुरण्डा [संज्ञा पु.] (देश.) भूने हुये गरमागरम गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू । *मुरंडा करना*-१-समेटकर लड्डू सा बना देना २-भून डालना । ३-बहुत मारना पीटना । ४-मोह लेना । [वि.] (देश.) सूखा हुआ । *मुरंडा होना*-१-सूखकर कांटा हो जाना । २-मुग्ध होना ।

मुरंदला [संज्ञा स्त्री] (सं.) नर्मदा नदी का एक नाम ।

मुर [संज्ञा पु.] (सं) १-वेष्टन । २-एक दैत्य का नाम । [अव्यय] (सं.) फिर । दोबारा ।

मुरई+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'मूली' ।

मुरक [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मुरकने की क्रिया या भाव ।

मुरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दबकर किसी ओर झुकना । मुड़ना । २-फिरना । घूमना । ३-लौटना । वापस होना । ४-मोच खाना । ५-हिचकना । रुकना । ६-विनष्ट या चौपट होना ।

मुरका [संज्ञा पु.] (देश.) १-बड़े-बड़े दातों वाला बहुत ऊँचा और सुन्दर हाथी । २-वह भोज जो गड़रिया अपनी बिरादरी को देते हैं ।

मुरकाना [क्रि. स.] (हिं) १-फेरना । घुमाना । २-लौटाना । घुमाना । वापस करना । ३-किसी अङ्ग में मोच लगना । ४-नष्ट या चौपट करना ।

मुरकी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-संगीत में किसी स्वर को बहुत कोमलता तथा सुन्दरतापूर्वक घुमाते हुए दूसरे स्वर पर ले जाने की क्रिया २-एक प्रकार की बाली जो कान में पहनी जाती है ।

मुरकुल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की लता जिसे बेरी भी कहते हैं ।

मुरखाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्खता । बेवकूफी ।

मुरगा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) [स्त्री. मुरगी] १-एक प्रसिद्ध पक्षी जो बहुत सबेरे बोलता है । २-पक्षी । चिड़िया । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूर्वा' ।

मुरगाबी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) मुरगे की तरह का एक पक्षी जो जल पर तैरता और मछलियाँ पकड़ कर खाता है ।

मुरगाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्वा ।

मुरचंग [संज्ञा पु] (हिं.) लोहे का एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है । *मुरचंग झाड़ना*-आनन्द-चैन करना ।

मुरचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोर्चा' ।

मुरची [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम जो पश्चिम दिशा में था ।

मुरछना* [क्रि. अ.] (हि.) १-शिथिल होना २-मूर्च्छित होना ।

मुरछल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोरछल'

मुरछा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूर्च्छा' ।

मुरछाना* [क्रि. अ.] (हिं.) मूर्च्छित होना ।

मुरछावंत* मुरछित* [वि.] (हिं.) देखो 'मूर्च्छित' ।

मुरज [संज्ञा पु.] (सं.) मृदंग । पखावज ।

मुरजफल [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का वृक्ष

मुरजित् [संज्ञा पु.] (सं.) मुर नामक दैत्य को जीतने वाले, श्रीकृष्ण । मुरारि ।

मुरझना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'कुम्हलाना' ।

मुरझाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-फूल, पत्ते आदि का कुम्हलाना । २-सुस्त या उदास हो जाना ।

मुरड़ [संज्ञा पु.] (डि.) गर्व । अभिमान । +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि उसमें पीड़ा होने लगे । मोच खाना ।

मुरड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) किसी अंग में मोच हो जाना ।

मुरड़की+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मरोड़'।

मुरतंगा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का ऊंचा पेड़।

मुरतहिन [संज्ञा पु.] (अं.) जिसके पास बंधक रखा जाय। रेहनदार।

मुरता [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जंगली झाड़।

मुरदर [संज्ञा पु.] (सं.) मुरारि। श्रीकृष्ण।

मुरदा [संज्ञा पु.] (हिं.) प्राणरहित शरीर। शव। *मुरदा उठाना*–१-मर जाना (गाली)। २-अंत्येष्टि क्रिया के लिए जाना। *मुरदे से शर्त्त बाँधकर सोना*–बहुत अधिक सोना। *मुरदे का माल*–वह माल जिसका कोई वारिस न हो। [वि.] (हिं.) १-मरा हुआ। मृत। २-जिसमें कुछ भी शक्ति न हो। बे-दम। ३-मुरझाया हुआ।

मुरदार [वि.](फा.) १-मरा हुआ। मृत। २-अपवित्र। ३-अशक्त। बे-दम। [संज्ञा पु.] अपनी मौत मरा हुआ पशु।

मुरदारी [वि.] (फा.) अपनी मौत मरे हुए का। जैसे–मुरदारी चमड़ा।

मुरदासंख [संज्ञा पु.] (हिं.) एक औषध जो फूंके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।

मुरदासन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुरदासंख'।

मुरदासिंघी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुरदासंख'

मुरधर [संज्ञा पु.] (हिं.) मारवाड़ का प्राचीन नाम

मुरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुड़ना'।

मुरपरना [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बकुचा जिसमें सौदा रखकर फेरी वाले बेचते हैं।

मुरब्बा [संज्ञा पु.] (अं.) १-फल, मेवे आदि का पाक जो चीनी या मिश्री की चाशनी में सुरक्षित किया जाता है। २-चार बराबर भुजों वाला चतुष्कोण। ३-किसी अंक को उसी अंक से गुणन करने से प्राप्त फल। वर्ग। [वि.] उसी अंक से गुणन द्वारा प्राप्त।

मुरब्बी [संज्ञा पु.] (अं.) १-पालन करनें वाला। २-रक्षक। आश्रयदाता। ३-सहायक। मददगार।

मुरमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) मुरारि। श्रीकृष्ण।

मुरमुरा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का भुना हुआ चावल या ज्वार जो भीतर से पोला होता है करवी। लावा।

मुरमुराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-चूर-चूर हो जाना। चुरमुर होना। २-कड़ी या खरी वस्तु का टूटने पर शब्द करना।

मुररिपु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। मुरारि।

मुररिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुर्री'।

मुरल [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीनकाल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था। २-एक प्रकार की मछली।

मुरला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नर्मदा नदी। २-केरलदेश की एक नदी जिसे काली भी कहते हैं

मुरलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुरली। बाँसुरी।

मुरलिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुरली। बाँसुरी। वंशी।

मुरली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाँसुरी। वंशी। २-एक प्रकार का चावल जो आसाम में होता है

मुरलीधर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

मुरली-मनोहर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

मुरलीवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

मुरवा [संज्ञा पु.] (देश.) १-पैर का गिट्टा। २-एक प्रकार की कपास। +[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोर'।

मुरवी* [संज्ञा स्त्रीं.] (हिं.) धनुष की डोरी। चिल्ला।

मुरवैरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) श्रीकृष्ण। मुरारि।

मुरव्वत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुरौवत'।

मुरशिद [संज्ञा पु.] (अं.) १-गुरु। पथप्रदर्शक। २-पूज्य। ३-धूर्त्त। चालाक।

मुरसुत [संज्ञा पु.] (सं.) मुर नामक दैत्य का पुत्र जिसे वत्सासुर कहते हैं।

मुरस्सा [वि.] (अं.) जड़ा हुआ। जड़ाऊ।

मुरस्साकार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) गहनों में नग आदि जड़ने वाला। जड़िया।

मुरस्साकारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) गहनों में नग आदि जड़ने का काम।

मुरहा [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। +[वि.] (हिं.) १-मूलनक्षत्र में उत्पन्न होने वाला। २-अनाथ। यतीम। ३-नटखट। उपद्रवी। +[संज्ञा पु.] (हिं.) चलते हुए कोल्हू में गंडेरियाँ डालने वाला व्यक्ति।

मुरहारी [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

मुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एकांगी नामक गंधद्रव्य २-चन्द्रगुप्त की माता का नाम।

मुराड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) जलती हुई लकड़ी।

मुराद [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-अभिलाषा। कामना। २-आशय। अभिप्राय। यौ० *मुराद दावा*–नालिश या दावा करने का अभिप्राय। *मुराद पाना-आना*–अभिलाषा पूर्ण होना। *मुराद माँगना*–मनोरथ मनोरथ पूर्ण होना। *मुराद माँगना*–मनोरथ सिद्ध होने की अभिलाषा अथवा प्रार्थना करना। *मुराद मानना*–मनौती या मन्नत मानना। *मुरादों के दिन*–युवावस्था।

मुरादी [संज्ञा पु.] (फा.) अभिलाषी। आकांक्षी।

मुराना* [क्रि. स] (हिं.) १-देखो 'चुंभलाना'। २-देखो 'मोड़ना'।

मुराफा [संज्ञा पु.] (अं.) छोटी अदालत में हार जाने की अवस्था में बड़ी अदालत में फिर से दावा उपस्थित करना। अपील।

मुरार [संज्ञा पु.](हिं.) १-कमलनाल। २-*देखो 'मुरारि'।

मुरारि [संज्ञा पु.] (सं) १-मुर नामक दैत्य के शत्रु श्रीकृष्ण या विष्णु। २-पिंगल में कगण के तीसरे भेद की संज्ञा जिसका रूप [illegible] होना है।

मुरारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुरारि'।

मुरारे [संज्ञा पु] (सं.) हे मुरारि! (संबोधन)।

मुरासा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कर्णफूल। २-देखो 'मुँडासा'।

मुरासिला [संज्ञा पु.] (अ) १-पत्र। चिट्ठी। २-वह पत्र जो राजदरबार से भेजा जाता है। खरीता।

मुरीद [संज्ञा पु.] (अ.) १-शिष्य। चेला। २-अनुगामी। अनुयायी।

मुरु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुर'।

मुरुआ [संज्ञा पु.] (देश) पैर का गट्टा। एड़ी के ऊपर का घेरा।

मुरुकुटिया+ [वि.] (हिं.) देखो 'मरकट'।

मुरुख* [वि.] (हिं.) देखो 'मूर्ख'।

मुरुछना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुरझाना'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूर्च्छना'।

मुरुझना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुरझाना'।

मुरेठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साफा। पगड़ी। २-देखो 'मुरैठा'।

मुरेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मरोड़'।

मुरेरना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मरोड़ना'।

मुरेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मुँडेरा'। २-देखो 'मरोड़'।

मुरैठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव की लम्बाई के चारों ओर घूमी हुई गोट। यह मोटे रस्से से बनाई जाती है।

मुरौअत, मुरौवत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-शील। संकोच। लिहाज। २-भलमनसी। *मुरौवत तोड़ना*–रुखाई का व्यवहार या आचरण करना।

मुर्ग [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'मुरगा'।

मुर्गकेश [संज्ञा पु.] (हिं.) मरसे की जाति का एक पौधा। इसमें मुरगे की चोटी से गहरे लाल रंग के फूल लगते हैं।

मुर्गखाना [संज्ञा पु.] (फा.) मुरगों के रहने का घर। दरबा।

मुर्गबाज [संज्ञा पु.] (फा.) मुरगे लड़ाने वाला।

मुर्गा [संज्ञा पु.] देखो 'मुरगा'।

मुर्गाबी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुरगाबी'।

मुर्चा [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'मोरचा'।

मुर्तकिब [वि.] (अ.) अपराधी।

मुर्दनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चेहरे या आकृति पर दिखाई देने वाले मृत्यु के लक्षण। २-शव की अंत्येष्टिक्रिया के लिए लोगों का उसके साथ जाना।

मुर्दावली [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुर्दनी'। [वि.] (हिं) मृतक के सम्बन्ध का।

मुर्दासिंगी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुरदासंख'।

मुर्मुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-भूसी या तुष की आग। ३-सूर्य के रथ के घोड़े।

मुर्री [संज्ञा पु] (हिं.) १-मरोड़फली (औषध)। २-पेट में की मरोड़। ३-पेट का दर्द। [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की भैंस जो हिसार और दिल्ली की तरफ होती है।

मुर्रातिसार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मरोड़'।

मुर्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़े, डोरे आदि का सिरा मोड़कर लगाई हुई गांठ। २-कपड़े आदि में लपेटकर उसमें डाली हुई ऐंठन या बल। ३-कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती। ४-एक प्रकार की जंगली लकड़ी। *मर्री देना*-कपड़ा फाड़ने का एक ढंग।

मुर्री-का-नैचा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का नैचा जिसमें कपड़े की मुर्री अथवा बत्ती कसकर लपेटते जाते हैं।

मुर्रीदार [वि.] जिसमें मुर्री पड़ी हो। ऐंठनदार

मुर्वा [संज्ञा पु.] (सं.) एक जंगली पौधा जिसे गोरचकरा भी कहते हैं।

मुर्वी [वि.] (सं.) धनुष की प्रत्यंचा।

मुर्शिद [संज्ञा पु.] (अं.) १-गुरु। २-श्रेष्ठ। ३-चतुर। ४-धूर्त्त (व्यंग्य)।

मुलि+ [अव्य.] (देश.) १-मगर। लेकिन। पर। २-तात्पर्य यह है कि (पश्चिम)। [संज्ञा स्त्री.] मदिरा। शराब।

मुलक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुल्क'।

मुलकना* [क्रि. स] (हिं.) १-पुलकित होना। २-मुस्कराना। ३-मचकना।

मुलकाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे को पुलकित करना। २-किसी को मुस्कराने में प्रवृत्त करना। ३-मचकाना।

मुलकित* [वि.] (हिं) १-मुस्कराता हुआ। २-प्रसन्न। खुश।

मुलकी [वि.] (हिं.) देखो 'मुल्की'।

मुलजिम [वि.] (अं) अभियुक्त।

मुलतवी [वि.] (अं.) स्थगित।

मुलतानी [वि.] (हिं) मुलतान का। मुलतान-सम्बन्धी। [संज्ञा स्त्री.] १-एक रागिनी जिसके गाने का समय २१ से २४ दंड तक है। २-एक प्रकार की चिकनी मिट्टी जो मुलतान से आती है। *मुलतानी करना*-छींट छापने से पूर्व कपड़े को मुलतानी मिट्टी से रंगना।

मुलना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मौलवी। मुल्ला।

मुलमची [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने या चाँदी का किसी वस्तु पर मुलम्मा करने वाला।

मुलम्मा [संज्ञा पु.] (अं.) १-सोने, चाँदी आदि की चढ़ाई हुई हलकी रंगत या तह। गिलट। कलई। २-ऊपरी तड़क-भड़क। [वि.] १-चमकता हुआ। २-सोना या चाँदी चढ़ाया हुआ।

मुलम्मासाज [संज्ञा पु.] (फा., अ.) मुलम्मा करने-वाला। मुलमची।

मुलहठी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुलेठी'।

मुलहा+ [वि.] (हिं.) १-मूलनक्षत्र में जन्मा-हुआ। २-उपद्रवी।

मुलाँ+ [संज्ञा पु.] (अ.) मुल्ला। मौलवी।

मुलाक़ात [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-आपस में मिलना। मिलन। भेंट। २-मेल-मिलाप। ३-रतिक्रीड़ा

मुलाक़ाती [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह जिससे जान-पहचान हो। परिचित। २-मुलाकात या भेंट करने के लिए आने वाला। *मुलाकाती कार्ड*-वह कार्ड जो कोई मुलाकाती या भेंट करने-वाला अपने आने की सूचना या तथा परिचय देने के निमित्त भेजता है।

मुलाजिम [संज्ञा पु.] (अं.) नौकर। चाकर।

मुलाजिमत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) नौकरी। चाकरी

मुलाम+ [वि.] (हिं.) देखो 'मुलायम'।

मुलायम [वि.] (अ.) १-जो कड़ा या सख्त न हो। २-नरम। हलका। ३-सुकुमार। नाजुक। ४-कठोरता या खिचाव जिसमें न हो। यौ०-*मुलायम चारा*-वह जो सहज में दबाया या अधीन किया जा सके।

मुलायमत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-मुलायम होने का भाव। २-सुकुमारता। कोमलता। ३-नज़ाकत।

मुलायमरोआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद तथा लाल रोआँ जो मुलायम होता है।

मुलायमियत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) नर्मी। २-कोमलता।

मुलायमी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'मुलयमित।

मुलाहजा [संज्ञा पु.] (अं.) १-निरीक्षण। २-संकोच। ३-रियायत।

मुलुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुल्क'।

मुलेठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घुँघची या गुंजा नामक लता की जड़ जो औषध रूप में प्रयुक्त होती है।

मुल्क [संज्ञा पु.] (अं.) १-देश। २-प्रदेश। प्रांत ३-संसार।

मुल्कगीरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुल्क जीतना।

मुल्की [वि.] (अं.) १-देश-सम्बन्धी। देशी। २-शासन अथवा व्यवस्था-सम्बन्धी।

मुल्तवी [वि.] (अं.) स्थगित।

मुल्लह [संज्ञा पु] (देश.) और पक्षियों को आकर्षित करने के लिये जाल में छोड़ा हुआ पक्षी। [वि.] (देश.) सीधा-साधा। मूर्ख।

मुल्ला [संज्ञा पु.] (अं.) मुसलमानों का धर्माचार्य पुरोहित। मौलवी।

मुवक्किल [संज्ञा पु.] (सं.) अपने किसी कार्य के लिये वकील नियुक्त करने वाला व्यक्ति।

मुवना* [क्रि. अ.] (हिं.) मरना।

मुशज्जर [संज्ञा पु.](अ.) एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा।

मुशफ़िक़ [वि.](अ.) १-दयालु। रहम-दिल। २-मित्र।

मुशल [संज्ञा पु.] (सं.) धान आदि कूटने का डंडा। मूसल।

मुशली [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

मुशायरा [संज्ञा पु.] (सं.) वह कवि-सम्मेलन जिसमें उर्दू की कवितायें पढ़ी जाएँ।

मुशाहरा [संज्ञा पु.] (फा.) वेतन।

मुश्क [संज्ञा पु.] (फा.) १-मृगमद। कस्तूरी। २-बू। [संज्ञा स्त्री.](देश.) कंधे और कोहनी के बीच का मांसल भाग। भुजा। बाँह। *मुश्कें कसना या बाँधना*-(अपराधियों आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर ले जाकर रस्सी से बांधना।

मुश्कदाना [संज्ञा पु] (फा.) एक प्रकार की लता का बीज। यह इलायची के दाने सा होता है और इस में कस्तूरी की सुगन्ध आती है।

मुश्कनाफ़ा [संज्ञा पु.] (फा.) कस्तूरी का नाफ़ा जिसमें से कस्तूरी निकलती है।

मुश्कनाभ [संज्ञा पु.] (हिं.) कस्तूरी मृग।

मुश्कबिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगन्धित होता है।

मुश्कमेंहदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बागों की शोभा के निमित्त लगाया जाने वाला एक पौधा।

मुश्किल [वि.] (अं.) कठिन। दुष्कर। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कठिनता। दिक्कत। २-विपत्ति। *मुश्किल आसान होना*-आया हुआ संकट टलना।

मुश्की [वि.] (फा.) १-कस्तूरी के से रङ्ग का। श्याम। २-जिसमें मुश्क मिला हो। [संज्ञा पु.] काले रङ्ग का घोड़ा।

मुश्त [संज्ञा पु.] (फा.) मुट्ठी। यौ०-*एकमुश्त*-एक साथ।

मुश्तबहा [वि.] (अ.) सन्दिग्ध। संदेह के योग्य

मुश्तरका [वि.] (अ.) जिसमें कई आदमी शरीक हो। साझे का।

मुश्तहिर [वि.] (अ.) जिसका इश्तहार दिया गया हो। जो प्रसिद्ध किया गया हो।

मुश्ताक़ [वि.] (अ.) १-इच्छा रखने वाला। २-प्रेमी। आशिक़।

मुषल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूसल। २-विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

मुषली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तालमूलिका। २-छिपकली।

मुषित [वि.] (सं.) १-चुराया हुआ। २-ठगा हुआ

मुषीवन् [संज्ञा पु.] (सं.) चोर।

मुषुर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गूंजने का शब्द। गुंजार।

मुष्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। २-अंडकोष। ३-मोखा नामक वृक्ष। ४-ढेर। राशि। [वि.] मांसल।

मुष्कक [संज्ञा पु.] (सं.) मोखा नामक वृक्ष।

मुष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंडकोष। २-पुरुष की मूत्रेंद्रिय।

मुष्कशून्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बधिया। अंडकोष निकाला हुआ। २-वह जो इस क्रिया के बाद अन्तःपुर में काम करने के लिए नियुक्त हो।

मुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) चोरी।

मुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुट्ठी। २-मुक्का। घूसा। ३-मूँठ। बेंत। ४-मोखा वृक्ष। ५-चोरी। ६-अकाल। दुर्भिक्ष। ७-एक प्राचीन परिमाण जो किसी के मत से तीन तोले का और किसी के मत से आठ तोले का होता है। ८-ऋद्धि नामक औषध। ९-कंस के दरबार का एक मल्ल।

मुष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंस के दरबार के एक पहलवान का नाम। २-मुक्का। घूसा। ३-एक नाप जो चार अंगुल की होती है। ४-मुट्ठी। ५-सुनार। ६-तांत्रिकों के मत से एक उपकरण जो बलिदान के योग्य होता है।

मुष्टिकांतक, मुष्टिकान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) बलदेव। बलराम।

मुष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-मुक्का। घूँसा। २-मुट्ठी।

मुष्टिदेश [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष का मध्य भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है।

मुष्टिमेय [वि.] (सं.) मुट्ठीभर। बहुत थोड़ा सा।

मुष्टियुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्के या घूँसों की लड़ाई। घूँसेबाजी।

मुष्टियोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुछ हठयोग की क्रियायें जिनके करने से रोग हटता है और शरीर में बल आता है। २-किसी बात का कोई छोटा और सहज उपाय।

मुष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सरसों। राई।

मुसक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुश्क'।

मुसकनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुस्कराहट।

मुसकनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुस्कान'।

मुसकराना [क्रि. अ.] (हिं.) बहुत मंदरूप से हंसना। होठों में हंसना।

मुसकराहट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मुस्कराने की क्रिया या भाव। मधुर मन्दहास।

मुसका [संज्ञा पु.] (हिं.) रस्सी की बनी जाली जो बैलों के मुँह पर बाँधी जाती है।

मुसकान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुसकराहट'।

मुसकाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुसकराना'।

मुसकानि [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'मुसकराहट'।

मुसकिराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुसकराना'।

मुसकिराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुसकराहट'।

मुसकुराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुसकराना'।

मुसकुराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुसकराहट'।

मुसक्यान [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'मुसकराहट'

मुसक्याना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुसकराना'

मुसखोरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेत में चूहों की अधिकता होना।

मुसजर [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा।

मुसटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुहिया।

मुसंदी+ [संज्ञा स्त्री.](देश.) मिठाई बनाने का साँचा।

मुसद्दिका [वि.] (अ.) जाँचा हुआ। परीक्षित।

मुसना [क्रि. अ.] (हिं.) अपहृत होना। चुराया-जाना। घर *मुसना*–घर में चोरी होना।

मुसन्ना [संज्ञा पु.] (अ.) १-असल लेख की दूसरी नकल। प्रतिलिपि। २-रसीद आदि का वह आधा तथा दूसरा भाग जो रसीद देनें वाले के पास रह जाता है। प्रतिपर्ण।

मुसन्निफ़ [संज्ञा पु.](अ.) पुस्तक रचयिता। ग्रंथकर्त्ता।

मुसब्बर [संज्ञा पु.] (अ.) सुखाया हुआ घीकुवाँर का रस जो औषध रूप में प्रयुक्त होता है।

मुसमर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया जो खेत में चूहों को पकड़कर खाती है।

मुसमरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुसमर नामक चिड़िया। २-एक जाति के लोग जो चूहों को खाते हैं। मुसहर।

मुसमुंद*+ [वि.] (देश.) ध्वस्त। नष्ट।

मुसमुंध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुसमंद'।

मुसम्मा [वि.] (अ.) [स्त्री. मुसम्मात] नामक। नामधारी।

मुसम्मात [वि.] (अ.) [स्त्री. प्र.] नाम्नी। नामधारिणी। [संज्ञा स्त्री.] औरत। स्त्री।

मुसम्मी [वि.] (अ.) नाम वाला। नामक। नामधारी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बढ़िया मीठा नीबू।

मुसरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मूसला'।

मुसरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चूहे का बच्चा मुसटी। २-देखो 'मूसला'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काँच की चूड़ियां बनाने का सांचा।

मुसल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मूसल'।

मुसलधार [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'मूसलाधार'।

मुसलमान [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. मुसलमानी] मुहम्मदसाहब के चलाये हुए सम्प्रदाय का अनुगामी।

मुसलमानी [वि.] (फा.) मुसलमान-संबंधी। मुसलमान का। [संज्ञा स्त्री.] छोटे बालक की इन्द्री के अग्रभाग का चमड़ा काटने की मुसलमानों की एक रसम जो पक्का मुसलमान होने का चिह्न समझी जाती है। सुन्नत।

मुसली [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुशली'। [संज्ञा स्त्री.] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ें दवा के काम में आती हैं।

मुसल्लम [वि.] (फा.) अखंड। साबुत। पूरा। [संज्ञा पु.] देखो 'मुसलमान'।

मुसल्ला [संज्ञा पु.](अ.) [स्त्री. मुसल्ली] १- दरी या चटाई जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है। २-बड़े दीये के आकार का एक पात्र। +[संज्ञा पु.] (हिं.) मुसलमान (तिरस्कार-सूचक)।

मुसवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-लुटवाना। २- चोरी कराना।

मुसव्विर [संज्ञा पु.] (अ.) १-चित्रकार। २-बेल-बूटे बनाने वाला।

मुसव्विरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चित्रकारी। २-बेलबूटे बनाने का काम।

मुसहर [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्तर-भारत की एक जंगली जाति का नाम।

मुसहिल [वि.] (अ.) दस्तावर। रेचक (औषध)। [संज्ञा पु.] जुलाब।

मुसाफ़िर [संज्ञा पु.] (अ.) यात्री। पथिक।

मुसाफ़िरखाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-यात्रियों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। २-रेलवे स्टेशन पर बना हुआ यात्रियों के ठहरने का स्थान। यात्रीगृह।

मुसाफ़िरत, मुसाफ़िरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुसाफ़िरों की दशा। यात्रा।

मुसाहब [संज्ञा पु.](अ.) धनवान या राजा आदि का पार्श्ववर्त्ती। सहवासी।

मुसाहबत, मुसाहबी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मुसाहब का पद या काम।

मुसीका+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'मुसका'।

मुसीबत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-कष्ट। तकलीफ। २-विपत्ति। संकट।

मुसुकाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुसकाना'।

मुसुकाहट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुसकराहट'।

मुस्कराना [क्रि. अ.](हिं.) बहुत ही मंद रूप से हँसना।

मुस्कराहट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मुस्कराने की क्रिया या भाव। मधुर-मन्दहास।

मुस्काना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मुस्कराना'।

मुस्किल [वि., संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'मुश्किल'।

मुस्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुस्कराहट'।

मुस्क्यान*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुस्कराहट'।

मुस्टंडा [वि.](हिं.) १-मोटाताज़ा। हट्टाकट्टा। २-गुंडा। बदमाश।

मुस्त [संज्ञा पु] (सं) नागरमोथा।

मुस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा।

मुस्तक़िल [वि.] (अं.) १-स्थिर। अटल। २-दृढ़ मज़बूत।

मुस्तग़ीस [संज्ञा पु.] (अं.) १-फरियादी। २-मुद्दई। दावेदार।

मुस्तनद [वि.] (अं.) प्रामाणिक।

मुस्तहक़ [वि.] (अं.) १-अधिकारी। हकदार। २-उपयुक्त पात्र।

मुस्ताद [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली सूअर।

मुस्तैद [वि.] (अं.) १-सन्नद्ध। तत्पर। २-चुस्त। चालाक।

मुस्तैदी [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-प्रसन्नता। तत्परता २-उत्साह।

मुस्तौफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) आयव्यय परीक्षक। वह पदाधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के हिसाब की जाँच-पड़ताल करता हो।

मुस्लिम [संज्ञा पु.] (अं.) मुसलमान।

मुस्लिम-लीग [संज्ञा स्त्री](अ., अं.) मुसलमानों का एक राजनैतिक दल जिसने भारत विभाजन की मांग की थी।

मुहकम [वि.] (अं.) दृढ़। पक्का।

मुहकमा [संज्ञा पु.] (अं.) विभाग। सरिश्ता।

मुहतमिम [संज्ञा पु.] (अं.) प्रबन्धक। व्यवस्थापक।

मुहतरफ़ा [संज्ञा पु.] (?) वाणिज्य-व्यापार आदि पर लगाया जाने वाला कर।

मुहताज [वि.] (अं.) १-जिसको ऐसे पदार्थ की आवश्यकता हो जो उसके पास बिलकुल न हो। २-निर्धन। गरीब। ३-आश्रित। निर्भर। ४-आकांक्षी। चाहने वाला।

मुहताजी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-मुहताज होने की क्रिया, भाव या अवस्था। २-दरिद्रता। ३-परवशता।

मुहरनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नारंगी की तरह का एक फल।

मुहब्बत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-प्रेम। प्रीति। प्यार २-मित्रता। ३-इश्क। लगन। ४-स्नेह। *मुहब्बत उछलना*–प्रेम का आवेश होना।

मुहम्मद [संज्ञा पु.] (अं.) अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी संप्रदाय चलाया।

मुहम्मदी [संज्ञा पु.] (अं.) मुहम्मदसाहब का अनुयायी। मुसलमान।

मुहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मोहर'।

मुहरा [संज्ञा पु.](हिं.) १-सामने का भाग। आगा २-निशाना। मुखाकृति। ३-शतरंज की कोई गोटी। ४-वह शीशा जिससे पन्नी घोटी जाती है। ५-घोड़े के मुँह में पहनने का एक साज। *मुहरा लेना*–मुकाबला करना।

मुहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'मोरी'। २-देखो 'मोहरी'।

मुहर्रम [संज्ञा पु.] (अं.) १-अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमामहुसैन शहीद हुए थे। २-इस महीने इमामहुसैन के प्रति शोक मनाने के दस दिन। *मुहर्रम की पैदाइश होना*–सदा दुःखी और चिंतित रहना।

मुहर्रमी [वि.] (अं.) १-मुहर्रम-संबंधी। मुहर्रम का। २-शोकसूचक। ३-मनहूस। यौ०-*मुहर्रमी-सूरत*–रोनी सूरत। मनहूस सूरत

मुहर्रिर [संज्ञा पु.] (अं.) लेखक। मुन्शी।

मुहर्रिरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मुहर्रिर का काम या भाव।

मुहलत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'मोहलत'।

मुहलैठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुलेठी'।

मुहल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुहल्ला'।

मुहसिन [वि.] (अं.) एहसान या अनुग्रह करने-वाला।

मुहसिल [संज्ञा पु.] (अं.) १-कर उगाहने वाला। २-प्यादा। फेरीदार। ३-कर, लगान आदि से प्राप्य धन।

मुहाफ़िज़ [वि.] (अं.) संरक्षक। रखवाले। हिफाजत करने वाला।

मुहाफिजखाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) अदालत में वह स्थान जहाँ सब तरह की मिसलें रखी रहती हैं।

मुहाफिज-दफ्तर [संज्ञा पु.](अं.) मुहाफिजखाने का निरीक्षण करने वाला अधिकारी।

मुहाल [वि.] (अं.) १-असंभव। २-कठिन। दुःसाध्य। दुष्कर। [संज्ञा पु.] १-देखो 'महाल'। २-देखो 'महल्ला'।

मुहाला [संज्ञा पु.] (हिं.) पीतल की चूड़ी जो हाथी के दाँत पर शोभा के लिए चढ़ाई जाती है

मुहावरा [संज्ञा पु.](अं.) १-किसी विशिष्ट भाषा में प्रचलित वह वाक्य अथवा पद जिसका अर्थ लक्षण या व्यंजना द्वारा निकलता हो। वह अर्थ जो शब्दों के प्रत्यक्ष अथवा शाब्दिक अर्थ से भिन्न तथा विलक्षण हो। २-अभ्यास। मश्क।

मुहावरेदार [वि.](अ., फा.) (भाषा) जिसमें मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग हुआ हो।

मुहावरेदारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) १-मुहावरों के ठीक-ठीक प्रयोग का ज्ञान। २-मुहावरों से युक्त होने की दशा।

मुहासिब [संज्ञा पु.] (अं.) १-हिसाब जानने-वाला। गणितज्ञ। २-हिसाब लिखने वाला। आंकने वाला।

मुहासिबा [संज्ञा पु.] (अं.) १-हिसाब। लेखा। २-पूछताछ।

मुहासिरा [संज्ञा पु.] (अं.) शत्रु की सेना अथवा किले को युद्ध के समय घेरने का काम। घेरा

मुहासिल [संज्ञा पु.] (अं.) १-आय। आमदनी। २-लाभ। नफा। ३-उगाहने पर मिला हुआ धन (कर, चंदा आदि)।

मुहिं* [सर्व.] (हिं.) देखो 'मोहिं'।

मुहिब्ब [संज्ञा पु.] (अं.) मित्र। दोस्त।

मुहिम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कोई विकट या बड़ा काम। २-युद्ध। लड़ाई। ३-फौज की चढ़ाई सैनिक आक्रमण। अभियान।

मुहिर [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव। [वि.] मूर्ख।

मुहीम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुहिम'।

मुहु [अव्य.] (सं.) बारबार। फिरफिर।

मुहुपुची [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का छोटा काले रङ्ग का कीड़ा जो मूँगफली की उपज को चौपट कर देता है।

मुहूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन-रात का तीसवाँ भाग। २-निर्दिष्ट क्षण या समय। ३-फलित ज्योतिष के अनुसार निकाला हुआ वह समय जब कोई शुभ कार्य किया जाय।

मूँग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है। *छाती पर मूँग दलना*–बहुत कष्ट या तकलीफ देना। किसी के सामने उसे जलाने का काम करना। *मूँग की दाल खाने वाला*–डरपोक। निर्बल।

मूँगफली [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जिसका फल बादाम का सा, पर भूमि के अन्दर होता है। इसकी खेती प्रायः सारे भारत में की जाती है।

मूँगारी [संज्ञा स्त्री (देश.) एक प्रकार की तोप।

मूँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार के समुद्र में रहने वाले कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में होती है। प्रवाल। विद्रुम। २-एक प्रकार का रेशम का कीड़ा। यह आसाम में होता है। [संज्ञा स्त्री.] एक ऊख जिसका गुड़ अच्छा बनता है।

मूँगिया [वि.] (हिं.) मूंग का सा। मूंग के-से रङ्ग का। गहरे हरे रङ्ग का।

मूँछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊपरी ओंठ पर के बाल जो केवल पुरुषों के होते हैं।
मूछें उखाड़ना–गर्व दूर करके दंड देना (गाली)
मूछों पर ताव देना–अभिमान से मूँछ मरोड़
मूछें नीची होना–अप्रतिष्ठा या बेइज्जती होना
मूछों पर हाथ फेरना–वीरता की अकड़ दिखाना
मूछों का कूँडा करना–एक मुसलमानी रसम जो पुत्र की मूँछें निकलने पर होती है।

मूँछी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कढ़ी जिसमें सेव या पकौड़ियाँ डालते हैं।

मूँज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का क्षुप जिसमें टहनियों के स्थान पर पतली-पतली पत्तियाँ होती हैं।

मूँठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूठ'।

मूँड़+ [संज्ञा पु.](हिं.) सिर। माथा। *मूड़ चढ़ाना*–सिर चढ़ाना। *मूड़ मारना*–बहुत हैरान होना। *मूड़ मुँड़ाना*–संन्यासी होना।

मूँड़न [संज्ञा पु] (हिं.) पहली बार बालक का सिर मुड़ाने का संस्कार। चूड़ाकरण संस्कार।

मूँड़ना [क्रि स](हिं.) १-उस्तरे से हजामत करना सिर के बाल बनाना। २-धोखा देकर धन या माल लेना। ठगना। ३-किसी को चेला बनाना। ४-भेड़ के शरीर पर से कतरकर ऊन उतारना।

मूँड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सिर। मस्तक। २-किसी वस्तु का ऊपरी भाग जो मूंड़ के आकार का हो। मूड़ी काटे-'मूंड़ी या सिर कटा जाय' इस आशय की एक गाली जो स्त्रियाँ बोलचाल में पुरुषों को देती हैं। मूड़ी मरोड़ना-१-गला दबाकर मार डालना। २-धोखा देकर हानि पहुँचाना।

मूँड़ीबँध [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेंच।

मूँदना [क्रि. स.] (हिं.) १-आच्छादित करना। ढांकना। २-द्वार, मुंह आदि पर कुछ रखकर उसे बन्द करना।

मूँदर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुँदरी।

मूआ [संज्ञा पु.] (हिं.) मृत। मराहुआ।

मूक [वि.] (सं.) १-गूँगा। अवाक्। जो बोलता न हो। २-दीन। विवश। लाचार। ३-जो चुप हो। अवाक्।

मूकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गूंगापन।

मूकना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-दूर या अलग करना। छोड़ना। त्यागना। २-बन्धन खोलना ३-बन्धन से छुड़ाना।

मूकांबिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा का एक नाम। २-एक प्राचीन नगरी का नाम।

मूका+ [संज्ञा पु.](हिं.)१-किसी दीवार के आर-पार बना हुआ छेद। २-छोटा गोल झरोखा मोखा। ३-मुक्का। घूंसा।

मूकिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूकता। गूंगापन।

मकू* [वि.] (हिं.) अपना दोष जानते हुए भी चुप रहने वाला। मचला।

मूखना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मूसना'।

मूचना* [क्रि. स] (हिं.) देखो 'मोचना'।

मूज़ी [संज्ञा पु.] (अं.) दुष्ट। खल। दुर्जन।

मूठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मुट्ठी। मुष्टि। २-किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ या मुट्ठी में पकड़ा जाता है। मुठिया। दस्ता। ३-उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ४-एक प्रकार का जूआ जिसमें मुट्ठी में कौड़ियाँ बन्द करके बुझाते हैं। ५-यंत्रतंत्र का प्रयोग। जादू। टोना। *मूठ चलाना या मारना*-जादू या टोना करना। मंत्र का प्रयोग करना। *मूठ लगाना*-तंत्रमंत्र का प्रभाव होना

मूठना* [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट होना। मरमिटना।

मूठा [संज्ञा पु.](हिं.) घास-फूस आदि का बांधा हुआ पूला।

मूठाली [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) तलवार।

मूठि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'मूठ'। २-देखो 'मुट्ठी'।

मूठी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मुट्ठी'।

मूड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मूँड़'।

मूढ़ [वि] (सं) १-मूर्ख। बेवकूफ। २-स्तब्ध। चकित। ३-जिसके समझ में यह न आता हो कि अब क्या करना चाहिये। [संज्ञा पु.] योग में चित्त की पाँच वृत्तियों अथवा अवस्थाओं में से एक। इसमें चित्त तमोगुण के कारण निद्रायुक्त अथवा स्तब्ध रहता है।

मूढ़गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) बिगड़ा हुआ गर्भ। यह चार प्रकार का होता है-कील, प्रतिखुर, बीजक और परिघ।

मूढ़ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्खता। अज्ञान।

मूढ़मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्ख। मंदबुद्धि।

मूढ़वात [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कोश में रुकी या बंधी हुई वायु।

मूढ़वाताहत [वि.] (सं.) तूफान में पड़ा हुआ (जहाज)।

मूढ़ाग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) मूढ़तापूर्वक किया जाने वाला आग्रह। अनुचित हठ। दुराग्रह।

मूढ़ाग्रही [वि.] (सं.) अनुचित हठ करने वाला। दुराग्रही।

मूढ़ात्मा [वि.] (सं.) मूर्ख।

मूत [संज्ञा पु] (हिं.) १-प्राणियों के उपस्थ मार्ग से निकलने वाला जल। २-सन्तान (तिरस्कार)। *मूत निकल पड़ना*-भय के मारे बुरी अवस्था होना। *मूत से निकलकर गू में पड़ना*-पहले से भी बुरी दशा हो जाना। *मूत में दीये जलना*-लोगों पर धन आदि के कारण प्रभाव होना।

मूतना [क्रि. अ.](हिं.) पेशाब करना। *मूत मारना* मूत देना। *मूत देना*-भय से घबराना।

मूतरी [संज्ञा पुं.] (देश.) महालत नामक जङ्गली कौवा।

मूत्र [संज्ञा पुं.](सं.) वह विषैला तरल पदार्थ जो प्राणियों के उपस्थ मार्ग या जननेंद्रिय से निकलता है। पेशाब। मूत।

मूत्रकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) पेशाब का वह रोग जिसमें बड़े कष्ट से रुक-रुककर मूत्र निकलता है।

मूत्रकोश [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्राशय।

मूत्रक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्राघात नामक रोग का एक भेद।

मूत्रग्रंथि [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्राघात रोग का एक भेद।

मूत्रग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों का मूत्रसंग रोग

मूत्रजठर [संज्ञा पु.](सं.) मूत्राघात से उत्पन्न एक दोष।

मूत्रदशक [संज्ञा पु.] (सं.) दस प्राणियों के मूत्रों का समूह--हाथी, मेढ़ा, ऊंट, गाय, बकरा, घोड़ा, भैंसा, गदहा, मनुष्य और स्त्री।

मूत्रदोष [संज्ञा पु.](सं.) मूत्रकृच्छ् रोग। की बीमारी।

मूत्रनिरोध [संज्ञा पु.] (सं.) पेशाब का रुक या बंद हो जाना।

मूत्रपतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूत्र गिरना। गंधबिलाव।

मूत्रपथ [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्र निकलने का

मूत्रपरीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिकित्सा में के मूत्र या पेशाब की परीक्षा करने की

मूत्रप्रसेक [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्र नाली।

मूत्रफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

मूत्रमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पेशाब निकलने रास्ता। मूत्रद्वार।

मूत्ररोध [संज्ञा पु.] (सं.) एकबारगी पेशाब जाने का रोग।

मूत्रला [वि.] (सं.) पेशाब या मूत्र लाने औषध। [संज्ञा स्त्री.] ककड़ी।

मूत्रविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र मूत्र परीक्षा करने की अनेक प्रणालियों विवेचन हो। २-आयुर्वेद का एक जातुकर्णऋषि का बनाया हुआ है।

मूत्राघात [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्र या पेशाब होने का रोग जो बारह प्रकार का होता

मूत्राशय [संज्ञा पु.] (सं.) नाभि के नीचे भीतरी भाग जिसमें मूत्र संचित रहता मसाना। फुकना।

मूत्रासाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक मूत्राघात

मूत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलाई

मूना [संज्ञा पु.] (देश.) १-पीतल अंकुसी जो टेकुवे पर जड़ी रहती है। एक झाड़ी जिसके फल बेर जैसे होते [क्रि. अ.](हिं.) मरना। [वि.] देखो

मूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मूल। जड़। ३-मूलधन। असल। ४-मूल

मूरख* [वि.] (हिं.) देखो 'मूर्ख'।

मूरखताई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मूर्खता। नासमझी।

मूरचा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोरचा'।

मूरछना* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-देखो २-देखो 'मूर्च्छा'। [क्रि. अ.] (हिं.) मूर्च्छित या बेहोश

मूरछा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूर्छा'।

मूरत, मूरती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

मूरतिवंत* [वि.] (हिं.) मूर्त्तिमान। देखो

मूरध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मूर्द्धा'।

मूरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मूली।

मूरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मूल जड़। बूटी। वनस्पति।

मूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मूली। २-मूल

मूरख* [वि.] (हिं.) देखो 'मूर्ख'।

मूर्ख [वि.] (सं.) जिसमें समझ न हो अथवा बहुत कम हो। बेवकूफ। मूढ़। अज्ञ। [संज्ञा पु.] १-उर्द। २-वन मूँग।

मूर्खता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ना समझी। बेवकूफी। मूर्ख होने का भाव।

मूर्खत्व [संज्ञा पु.] (सं.) नासमझी। नादानी।

मूर्खराज [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्खों का राजा। बिलकुल मूर्ख। बहुत भारी मूर्ख।

मूर्खिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूढ़ा स्त्री। बेवकूफ औरत।

मूर्छन [संज्ञा पु.] (सं.) १-संज्ञा अथवा चेतना का लोप होना। २-मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग। ३-कामदेव का एक वाण। ४-वैद्यक में पारे का तीसरा संस्कार।

मूर्छना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में सातों स्वरों के आरोह-अवरोह का क्रम।

मूर्च्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोग, भय, शोक आदि के कारण उत्पन्न प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उसे किसी बात का ज्ञान नहीं होता, वह निश्चेष्ट पड़ा रहता है। संज्ञा का लोप। अचेत या बेहोश होना।

मूर्च्छित, मूर्छित [वि.] (सं.) १-जिसे मूर्च्छा आगई हो। अचेत। बेसुध। २-मारा या भस्म किया हुआ (पारा या कोई रस अथवा धातु)।

मूर्त [वि.] (सं.) १-जिसका कोई रूप या आकार हो। साकार। २-कठिन। ठोस। ३-मूर्च्छित

मूर्त्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्त्त होने का भाव।

मूर्त्तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्त्त होने की क्रिया या भाव। मूर्त्तता।

मूर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर। देह। २-कठिनता। ठोसपन। ३-आकृति। स्वरूप। सूरत शकल। ४-किसी की आकृति के अनुरूप गढ़ी हुई आकृति। प्रतिमा। विग्रह। ५-चित्र। तसवीर। ६-ब्रह्मसावर्णि के एक पुत्र का नाम

मूर्त्तिकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कला या विद्या जिसमें मूर्त्ति या प्रतिमा आदि बनाना या गढ़ना बताया जाता है।

मूर्त्तिकार [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्त्ति बनाने वाला। २-तसवीर बनाने वाला।

मूर्त्तित [वि.](सं.) मूर्ति के रूप में गढ़ा या बनाया हुआ।

मूर्त्तिप [संज्ञा पु.] (सं.) पुजारी।

मूर्त्तिपूजक [संज्ञा पु.](सं.) मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करने वाला व्यक्ति। मूर्त्ति पूजने वाला।

मूर्त्तिपूजा [संज्ञा स्त्री.] मूर्त्ति में ईश्वर अथवा देवता की भावना से करके उसे पूजना।

मूर्त्तिभंजक, मूर्त्तिभञ्जक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो मूर्त्तियों को व्यर्थ समझकर तोड़ता हो। २-मुसलमान।

मूर्त्तिमंत [वि.] (हिं.) देखो 'मूर्त्तिमान्'।

मूर्त्तिमान् [वि.] (सं.)[स्त्री. मूर्त्तिमती] १-जो मूर्त्ति अथवा शरीर के रूप में हो। स-शरीर। २-प्रत्यक्ष। गोचर। साक्षात्।

मूर्त्तिविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्त्ति या प्रतिमायें आदि बनाने की विद्या।

मूर्द्ध, मूर्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सिर।

मूर्द्धक, मूर्धक [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रिय।

मूर्द्धकर्णी, मूर्धकर्णी [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह वस्तु जो धूप, पानी आदि से बचाने के लिये सिर पर रखी जाय। छाता।

मूर्द्धकपारी* मूर्धकपारी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूर्द्धकपर्णी। छतरी।

मूर्द्धक-कर्परी, मूर्धक-कर्परी [संज्ञा स्त्री] (सं.) छाता। छतरी।

मूर्द्धखोल, मूर्धखोल [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'मूर्द्धकर्णी'।

मूर्द्धज, मूर्धज [वि.] (सं.) सिर से उत्पन्न होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-केश। बाल। २-सिंह या घोड़े की गर्दन के बाल। अयाल।

मूर्द्धज्योति, मूर्धज्योति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मरंध्र (योग)।

मूर्द्धन्य, मूर्धन्य [वि.] (सं.) १-मूर्द्धा से सम्बन्ध रखने वाला। २-मस्तक में स्थित। [संज्ञा पु.] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्धा से होता है जैसे-ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धन्यवर्ण, मूर्धन्यवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वह वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा-ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धन्यवान्, मूर्धन्यवान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धर्व का नाम। २-ऋग्वेद के दशम मंडल के अष्टम सूक्त के द्रष्टऋषि वामदेव।

मूर्द्धपिंड, मूर्धपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गजकुम्भ।

मूर्द्धपुष्प, मूर्धपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) शिरीषपुष्प।

मूर्द्धरस, मूर्धरस [संज्ञा पु.] (सं.) भात का फेन

मूर्द्धा, मूर्धा [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक। सिर।

मूर्द्धाभिषिक्त, मूर्धाभिषिक्त [वि.](सं.) जिसके सिर पर अभिषेक किया गया हो। [संज्ञा पु.] १-राजा। २-क्षत्रिय। ३-ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक मिश्रजाति।

मूर्द्धाभिषेक, मूर्धाभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) सिर पर अभिषेक या जल सिंचन होना (ऐसा राजगद्दी पर बैठने के अवसर पर होता है)।

मूर्वा, मूर्विका, मूर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरोड़फली नाम की बेल जिसके रेशे निकालकर धनुष के रोंदे की डोरी और क्षत्रिय का कटिसूत्र बनाया जाता है।

मूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी के नीचे रहने वाला वृक्ष आदि का वह भाग जिससे उनका पोषण तथा वर्द्धन होता है। जड़। २-खाई जाने वाली मोटी जड़। कंद। ३-आरम्भ। प्रारम्भ। शुरुआत। ४-उत्पत्ति का हेतु। आदि कारण। ५-उत्पत्ति का स्थान। उद्भव स्थल। ६-असल जमा या धन। पूंजी। ७-आधार। नींव। ८-स्वयं ग्रन्थाकार का लिखा वाक्य या लेख, जिस पर टीका की जाती है। ९-किसी राजा का निजू राज्य। १०-सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवाँ नक्षत्र। ११-पड़ोस। सामीप्य। १२-निकुंज। १३-जिमींकंद। १४-पिप्पलीमूल। १५-पुष्करमूल। १६-दुर्गराष्ट्र। १७-किसी देवता आदि का मंत्र या बीज। [वि.] मुख्य। प्रधान।

मूलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूली। २-खाने योग्य जड़। कंदमूल। ३-चौंतीस प्रकार के स्थावर विषों में से एक प्रकार का विष। ४-मूलस्वरूप। [वि.] (सं.) १-उत्पन्न करने वाला। जनक। २-जो मूल में हो अथवा जिसके मूल में कुछ हो।

मूलकपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहिंजन का पेड़।

मूलकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रजाल। जादू। टोना। टोटका। २-प्रधान कर्म।

मूलकारण [संज्ञा पु.] (सं.) उपादानकारण।

मूलकारिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मूलग्रंथ के पद्य २-मूलधन की एक विशेष प्रकार की वृद्धि। ३-चंडी।

मूलकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का व्रत जिसमें मूली आदि जड़ों के क्वाथ को पीकर एक मास तक व्रत रखना पड़ता है।

मूलकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रंथकार के हाथ की लिखी हुई कृति या लेख आदि।

मूलकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) नीबू।

मूलखानक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वर्णसंकर जाति का नाम।

मूलग्रंथ, मूलग्रन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) असल ग्रंथ जिसका भाषांतर टीका आदि की गई हो।

मूलच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-जड़ से नाश। २-पूर्ण नाश।

मूलज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पौधा जो जड़ बोने से उत्पन्न होता है, बीज से नहीं। २-अदरक

मूलजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रधान वंश। २-किसी देश की आदिवासी जाति।

मूलत्रिकोण [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य आदि ग्रहों की कुछ विशेष राशियों में स्थिति।

मूलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मूल का भाव या धर्म।

मूलद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूलधन। पूँजी। २-वे आदिम-द्रव्य या भूत, जिनसे सब द्रव्य-पदार्थ बने हैं।

मूलद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) सिंहद्वार। प्रधान द्वार।

मूलद्वारावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वारावतीनगरी

का प्राचीन अंश जो आधुनिक द्वारका से थोड़ी दूर पर है।

मूलधन [संज्ञा पु.] (सं.) वह असल धन जो किसी के पास हो या व्यापार में लगाया जाय। पूँजी।

मूलधातू [संज्ञा पु.] (सं.) मज्जा।

मूलपाठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी भाषा की प्रारंभिक पुस्तक का पहला पाठ। २-किसी ग्रंथाकार की मूलकृति में बिना किसी प्रकार के परिवर्तन के जैसा है वैसा पाठ।

मूलपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वंश का आदि-पुरुष या सबसे पहला पुरखा जिससे वंश चला हो।

मूलपुष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करमूल।

मूलपोती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी पोय का साग

मूलप्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संसार की वह आदिम-सत्ता जिसका कि यह संसार परिणाम या विकास है।

मूलफलद [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल।

मूलबंध, मूलबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-हठयोग की एक क्रिया। २-तंत्रोपचार पूजन में एक प्रकार का अंगुलिन्यास।

मूलबर्हण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूलनक्षत्र। २-मूलोच्छेदन।

मूलभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) कंसराज।

मूलभव [वि.] (सं.) जो मूल से उत्पन्न हो।

मूलभूत [वि.] (सं.) किसी वस्तु के मूल अथवा तत्व से सम्बन्ध रखने वाला। असल।

मूलभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुश्तैनी नौकर।

मूलमंत्र, मूलमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) बीजमन्त्र।

मूलरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) राजधानी या शासन के केन्द्रस्थान की रक्षा।

मूलरस [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्वालता।

मूलवचन [संज्ञा पु.] (सं.) मूलग्रंथ के पद्य।

मूलवित्त [संज्ञा पु.] (सं.) मूलधन। पूंजी।

मूलविभुज [संज्ञा पु.] (सं.) रथ।

मूलविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारह अक्षर का एक मन्त्र।

मूलविष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पौधा जिसकी जड़ विषैली हो। जैसे-कनेर।

मूलव्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) वध का दंड। मारण

मूलशाकट [संज्ञा पु.](सं.) वह खेत जिसमें मूली गाजर आदि मोटी जड़ वाले पौधे बोये जाते हैं।

मूलशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) पुंडरीक वृक्ष।

मूलसर्वास्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों का एक संप्रदाय।

मूलस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थाला। आलवाल।

मूलस्थान [संज्ञा पु.](सं.) १-वह स्थान जहां बाप-दादे रहते आये हों। पूर्वजों का स्थान। २-प्रधान स्थान। ३-भीत। दीवार। ४-ईश्वर। ५-शासन का मुख्य केन्द्र। राजधानी।

मूलस्थायी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

मूलहर [संज्ञा पु.] (सं.) फजूल खर्च राजा।

मूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूलनक्षत्र। २-सतावर। ३-पृथ्वी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक बेल जो वृक्षों पर चढ़कर उन्हें बहुत हानि पहुँचाती है। मौला।

मूलाधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाभि। २-योगानुसार मानव शरीर के षटचक्रों में से एक, जो गुदा और शिश्न के बीच में है।

मूलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) मूली।

मूलाबाधक [संज्ञा पु.] (सं.) राष्ट्र शक्ति के केन्द्र को घेरने वाला।

मूलायतन [संज्ञा पु.] (सं.) असली रहायस का मकान।

मूलाशी [वि.] (सं.) जड़ को खाकर रहने वाला।

मूलिक [वि.] (सं.) १-मूल-सम्बन्धी। २-कंद-खाकर रहने वाला (साधु)।

मूलिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) औषधियों की जड़। जड़ी।

मूलिन [वि.] (सं.) जड़ से उत्पन्न होने वाला।

मूलिनीवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह प्रकार के मूल या जड़ें-नागदंती, श्वेतवचा, श्यामा, त्रिवृत्, वृद्धदारका, सप्तला, श्वेतापराजिता, मूषकपर्णी, गोडुंवा, ज्योतिष्मती, विम्बी, शणपुष्पी, विषाणिका, अश्वगंधा, द्रवंती और क्षीरिणी।

मूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मोटी, मीठी और चरपरी जड़ वाला एक प्रसिद्ध पौधा। यह साधारणतः उत्तेजक, मूत्रकारक और अश्मरी नाशक होती है। मूत्रकृच्छ्र आदि रोगों में इसका व्यवहार हितकर है। २-एक प्रकार का बांस। ३-जड़ी-बूटी। (किसी को) *गाजर-मूली समझना*-बहुत तुच्छ या हीन समझना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ज्येष्ठी। २-छिपकली। ३-एक प्राचीन नदी का नाम।

मूलोच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) जड़ से नाश। सर्व-नाश।

मूलोत्पाटन [संज्ञा पु.] (सं.) जड़ से उखाड़ना।

मूलोदेय [संज्ञा पु.] (सं.) ब्याज का बढ़कर मूल-धन के बराबर हो जाना।

मूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु को खरीदने पर उसके बदले में दिया जाने वाला धन। दाम। कीमत। प्राइस। २-वह गुण या तत्व जिसके कारण किसी वस्तु का महत्व या मान होता है।

मूल्यकरण [संज्ञा पु.] (सं.) दाम ठीक करना।

मूल्यन [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी वस्तु का मूल्य निश्चित या स्थिर करना। दाम आँकना।

मूल्यनिरूपण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का सोच समझकर निश्चित या स्थिर किया हुआ मूल्य। दाम। मोल। वैल्युएशन।

मूल्यनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मूल्यनिर्धारण'।

मूल्यनिर्धारण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का मूल्य निश्चित करना या ठहराना।

मूल्यपात [संज्ञा पु.](सं.) किसी वस्तु का निश्चित मूल्य विशेषतः विनिमय आदि के लिए सिक्कों आदि का मूल्य या दर घटाकर कम करना। अवमोल।

मूल्यवान् [वि.] (सं.) जिसका मूल्य या दाम अधिक हो। कीमती।

मूल्यांकन, मूल्याङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी का मूल्य या महत्व आँकना अथवा समझना। एप्रिसिएशन।

मूल्यानुसार [क्रि. वि.] (सं.) (वस्तुओं पर उनके) मूल्य के विचार अथवा अनुपात से लगने वाला (आयात या निर्यात कर)। एड-वैलोरम

मूशली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालमूली।

मूष, मूषक [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा।

मूषककर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी लता।

मूषकवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) श्री गणेशजी।

मूषकमारी [संज्ञा स्त्री.](सं.) श्वेतश्रेणी नामक लता

मूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.). १-सोना आदि गलाने की घरिया। २-देवताड़ नामक वृक्ष। ३-गोखरू। ४-गवाक्ष। झरोखा।

मूषाकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी नामक लता।

मूषातुत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) नीलाथोथा।

मूषिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूहा। २-एक प्राचीन जनपद का नाम (महाभारत)।

मूषिकपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का दूब जो जल में होता है।

मूषिकसाधन [संज्ञा पु.](सं.) एक साधन जिसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य चूहे की भाषा समझने लगता है और उससे शुभाशुभ फल कह सकता है (तंत्र)।

मूषिकांक, मूषिकाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

मूषिकांचन, मूषिकाञ्चन [संज्ञा पु.](सं.) गणेश।

मूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा चूहा। चुहिया। २-मूसाकानी नामक लता।

मूषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोना आदि गलाने की घरिया। २-बड़ा चूहा।

मूषीकरण [संज्ञा पु.](सं.) घरिया में धातु गलाने की क्रिया।

मूष्यायण [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके बाप का पता न हो। दोगला।

मूस [संज्ञा पु.] (हिं.) चूहा।

मूसदानी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह पिंजड़ा जिसमें फँसाकर चूहे पकड़े जाते हैं।

मूसना [क्रि. स.] (हिं.) छीन या चुरा के उठा ले जाना।

मूसर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मूसल'। २-गँवार। अपढ़। असभ्य।

मूसरचंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हट्टा-कट्टा, पर निकम्मा पुरुष। २-असभ्य। गँवार।

मूसल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लंबा-मोटा डंडा जिससे धान कूटते हैं। २-एक प्राचीन अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे। ३-राम या कृष्ण के पद का एक चिह्न।

मूसलचंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मूसरचन्द'।

मूसलधार [क्रि. वि.] (हिं.) मूसल के समान मोटी धार से (वर्षा)।

मूसला [संज्ञा पु.] (हिं.) वह मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर शाखाएं नहीं होती।

मूसली [संज्ञा पु.] (हिं.) हलदी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

मूसा [संज्ञा पु.] (हिं.) चूहा। [संज्ञा पु.] (इबरानी) यहूदी लोगों के एक पैगंबर का नाम।

मूसाकानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लता जिसके पत्ते चूहे के कान के समान होते हैं। यह औषध रूप में प्रयुक्त होती है।

मूहन [संज्ञा पु.] (अ. नियोन) वायुमंडल में रहने वाला एक प्रकार का वाष्प।

मृकंडु [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि जिनके पुत्र मार्कण्डेयऋषि थे।

मृग [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री मृगी] १-चौपाया मात्र। पशु। २-हिरन। ३-एक जाति का हाथी। ४-अगहन का महीना। ५-मृगशिरस नक्षत्र। ६-एक यज्ञ का नाम। ७-मकरराशि ८-खोज। अन्वेषण। ९-कस्तूरी का नाफा। १०-वह पुरुष जो मधुरभाषी, बड़ी आँखों वाला, भीरु, चपल, सुन्दर तथा तेज चलने वाला होता है। ११-एक प्रकार का वैष्णवों का तिलक। १२-ज्योतिष में शुक्र की नौ वीथियों में से आठवीं, जो अनुराधा, जेष्ठा तथा मूल में पड़ती है।

मृगकानन [संज्ञा पु.] (सं) मृगिया या शिकार के लिए उपयुक्त कानन या वन।

मृगक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन का दूध।

मृगगामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृग के समान चलने वाली। २-एक औषध।

मृगघर्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कस्तूरी का नाफा। २-जवादि गंधद्रव्य।

मृगचर्म [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन का चमड़ा जो पवित्र समझा जाता है।

मृगचेटक [संज्ञा पु.] (सं.) गंधबिलाव।

मृगछाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृगचर्म।

मृगजरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध।

मृगजल [संज्ञा पु.] (सं.) मृगतृष्णा की लहरें।

मृगजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

मृगजृंभ, मृगजृम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) खोए अथवा चोरी हुए धन की खोज।

मृगतृषा, मृगतृष्णा, मृगतृष्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल अथवा जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी-कभी ऊसर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है। मृग मरीचिका।

मृगदंश, मृगदंशक [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

मृगदाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वन जिसमें पर्याप्त मृग हों। २-काशी के पास का सारनाथ नामक स्थान।

मृगदृश [वि.] (सं.) हिरन जैसी आंखों वाला।

मृगधर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

मृगधूम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम

मृगधूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल।

मृगनयना [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह स्त्री जिसके मृग के समान नेत्र हों।

मृगनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मृगनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी।

मृगनाभिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

मृगनेत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृगशिरानक्षत्र से युक्त रात्री।

मृगनैनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसकी आंखें हिरन की आँखों के समान सुन्दर होती हैं। बहुत सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री।

मृगपति [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मृगपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृग के पैर। २-मृग के खुर का चिह्न अथवा गढ़ा।

मृगपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी मृग।

मृगपिप्लु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

मृगप्रभु [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

मृगप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूतृण। २-जलकदली।

मृगभक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामासी। २-इन्द्रायण।

मृगभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) हाथियों की एक जाति।

मृगमंदा, मृगमन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कश्यप-ऋषि की एक कन्या का नाम।

मृगमंद्र, मृगमन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) हाथियों की एक जाति।

मृगमद [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी।

मृगमदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

मृगमरीचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृगतृष्णा।

मृगमातृक [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी मृग।

मृगमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

मृगमेद [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी।

मृगया [संज्ञा पु.] (सं.) शिकार। आखेट।

मृगयावन [संज्ञा पु.] (सं.) आखेट या शिकार खेलने का जंगल।

मृगयू [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिकारी। २-गीदड़। ३-ब्रह्मा।

मृगरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेवी। महाबला।

मृगराज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

मृगराटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवंती।

मृगरोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक घातक रोग जो घोड़े को होता है।

मृगरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी।

मृगलांछन, मृगलाञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा

मृगलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा का धब्बा।

मृगलोचना [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] मृग के समान सुन्दर नेत्रों वाली।

मृगलोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके हिरन के समान सुन्दर नेत्र हों।

मृगव [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम (बौद्ध)।

मृगवन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिकार का जंगल।

मृगवारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृगतृष्णा का जल २-झूठी आशा दिखाने वाली वस्तु।

मृगवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) वायु।

मृगवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार शुक्र की नौ वीथियों में से एक।

मृगशाव [संज्ञा पु.] (सं.) हरिण का बच्चा।

मृगशिरा [संज्ञा पु.] (सं.) सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवा।

मृगशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मृगशिरानक्षत्र।

मृगसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) उन्नीस दिन का एक सत्र

मृगांक, मृगाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-स्वर्ण और रत्नादि से बनने वाला एक रस।

मृगांगना, मृगाङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिरनी। हिरणी।

मृगांकरस, मृगाङ्करस [संज्ञा पु.] (सं.) रसौषध विशेष।

मृगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेई नामक पौधा।

मृगाक्षी [वि.] (सं.) देखो 'मृगनैनी'।

मृगाजीव [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कस्तूरी। २-वारुणी लता।

मृगाद् [संज्ञा पु.] (सं.) मृगों को खाने वाले जन्तु। यथा—सिंह, चीता, बाघ आदि।

मृगादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इन्द्रायन। २-सहदेई। ३-ककड़ी।

मृगाधिप, मृगाधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मृगाराति [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

मृगारि [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मृगाश, मृगाशन [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

मृगित [वि.] (सं.) अन्वेषित।

मृगिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हरिणी

मृगी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मृग या हिरन की मादा। हरिणी। हिरनी। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण होता है। ३-कश्यपऋषि की एक कन्या का नाम। ४-एक प्रकार की कौड़ी जो पीले रंग की होती है। ५-कस्तूरी। ६-अपस्मार रोग।

मृगीपति [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

मृगेंद्र, मृगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

मृगेंद्रचटक, मृगेन्द्रचटक [संज्ञा पु.] (सं.) बाज-पक्षी।

मृगेंद्रमुख, मृगेन्द्रमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।

मृगेंद्रास्य, मृगेन्द्रास्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

मृगेक्षण [वि.] (सं.) मृग के समान आँख वाला।

मृगेक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृगनैनी।

मृगेश, मृगेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

मृगेर्वारु [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद इन्द्रायन।

मृगोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) मृगशिरानक्षत्र।

मृग्य [वि.] (सं.) खोजने लायक।

मृच्छकटिक [संज्ञा पु.](सं.) संस्कृत का एक प्रसिद्ध नाटक।

मृज [संज्ञा पु.] (सं.) मुरज नामक बाजा।

मृज्य [वि.] (सं.) मार्जन करने योग्य।

मृड़ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. मृडानी] शिव। महादेव।

मृड़ानी [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुर्गा। पार्वती। भवानी

मृडीक [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन।

मृणाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमलनाल। कमल का डंठल जिसमें फूल आता है। २-कमल की जड़। भसीड़। ३-उशीर। खस।

मृणालकंठ, मृणालकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जलपक्षी।

मृणालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमलनाल।

मृणालिनी [संज्ञा स्त्री:] (सं) १-कमलिनी। २-वह स्थान जहाँ कमल हों। ३-कमलों का समूह।

मृणाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमल का डंठल।

मृण्मय [वि.](सं.) [स्त्री. मृण्मयी] मिट्टी का बना हुआ।

मृण्मूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिट्टी की बनी हुई मूर्ति।

मृत [वि] (सं.) [स्त्री. मृता] १-मरा हुआ। २-जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।

मृतकंबल, मृतकम्बल [संज्ञा पु.] (सं.) कफन।

मृतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरा हुआ प्राणी या उसका शरीर। २-मरण का अशौच।

मृतककर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मरे हुए पुरुष की सद्गति के लिये किया जाने वाला कृत्य। अंत्येष्टि।

मृतधूम [संज्ञा पु.] (सं.) राख। भस्म।

मृतकल्प [वि.] (सं.) जो मरा न हो पर, मरे के समान हो।

मृतकांतक, मृतकान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़ शृगाल।

मृतजात [वि.] (सं.) जो मरा हुआ ही पैदा हुआ हो। जो जन्मने से पहले ही मर गया हो। डेडबॉर्न।

मृतजीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरा हुआ प्राणी। २-तिलकवृक्ष।

मृतजीवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विद्या जिस से मुरदे को जिलाया जाता है।

मृतधर्मा [वि.] (सं.) नष्ट हो जाने वाला। नश्वर।

मृतप्राय [वि.] (सं.) जो मरा तो न हो पर मरे हुए के समान हो। बे-दम।

मृतभाषा [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह भाषा जो भाषाविज्ञान की दृष्टि से ठीक न हो। २-किसी लेख आदि की वह भाषा जो व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध हो। ३-वह भाषा जिसमें उन्नत साहित्य न हो।

मृतमत्त [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़। शृगाल।

मृतलेख-प्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) वसीयतनामे को प्रमाणित करने का आज्ञापत्र। प्रो-बेट।

मृतवत्सा [वि.](सं.) [स्त्री. प्र.] (वह स्त्री) जिस की सन्तान मर जाती हो।

मृतसंजीवनरस, मृतसञ्जीवनरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध जिसका व्यवहार ज्वर में होता है।

मृतसंजीवनी, मृतसञ्जीवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की बूटी जिसके सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है। २-एक औषध जो सुरा के रूप में होती है और ज्वर में दी जाती है।

मृतसंजीवनी-सुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वाजीकरण औषध।

मृतसूत [संज्ञा पु.] (सं.) रससिंदूर।

मृतसूतक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जिसके मरी हुई सन्तान उत्पन्न होती हो। २-भस्म किया हुआ पारा।

मृतस्नात [वि.] (सं.) १-वह शव जिसे दाहकर्म से पहले स्नान कराया गया हो। २-किसी सजाति अथवा बन्धु के मरने पर उसके उद्देश्य से स्नान किया हो।

मृतस्नान [संज्ञा पु] (सं.) १-मृतक का स्नान। २-किसी रिश्तेदार या भाई-बन्धु के मरने पर किया जाने वाला स्नान।

मृतांग, मृताङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शव। लाश।

मृतांगार, मृताङ्गार [संज्ञा पु.] (सं.) मुरदे की भस्म।

मृतामद [संज्ञा पु.] (सं.) तुत्थ। तूतिया।

मृतालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की मिट्टी जिसे गोपीचन्दन भी कहते हैं। २-अरहर।

मृताशन [वि.] (सं.) मुरदा खाने वाला।

मृताशौच [संज्ञा पु.] (सं.) वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।

मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरण। मृत्यु।

मृतोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। महासागर।

मृत्कपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-खपड़ा। २-की मिट्टी।

मृत्कर [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्हार।

मृत्किरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुंघरू।

मृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिट्टी। खाक। २-अरहर।

मृत्तिका-लवण [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का लोना

मृत्तिकावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नगरी का नाम जो नर्मदा के किनारे थी।

मृत्पांडु, मृत्पाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी खाने से होने वाला पांडुरोग।

मृत्पात्र [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का बना हुआ बरतन।

मृत्युंजय, मृत्युञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। २-शिव का एक मन्त्र।

मृत्युंजयरस, मृत्युञ्जयरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध जो ज्वर में उपयोगी होती है।

मृत्यु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरीर से प्राणों का निकल जाना। मरण। मौत। २-यमराज। ३-ब्रह्मा। ४-विष्णु। ५-ग्यारह रुद्रों में से एक। ६-माया। ७-कलि। ८-फलितज्योतिष में आठवाँ ग्रह। ९-कामदेव। १०-एक साम। ११-बौद्धदेवता पद्मपाणि के एक अनुचर।

मृत्युकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमराज की लड़की।

मृत्युकर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो राज्य की ओर से किसी के मरने पर लिया जाता है।

मृत्युकालीन-प्रघोषणा [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम कथन।

मृत्युकालीन-प्रस्थाप [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तिम कथन।

मृत्यु-दूत [संज्ञा पु.] (सं.) यम के दूत।

मृत्यु-द्वार [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के नौ छिद्र जिनमें से होकर प्राणवायु निकलता है।

मृत्युनाशक [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

मृत्युपा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

मृत्युपाश [संज्ञा पु.] (सं.) यम का बंधन।

मृत्युपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्ना। २-केला।

मृत्युफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-केला। २-एक लता जिसे महाकाल भी कहते हैं।

मृत्युबंधु, मृत्युबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) यम।

मृत्युबीज [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस।

मृत्युरूपी [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमदूत । २-वर्णमाला का 'श' अक्षर ।

मृत्युलेख-कार्याधिकार [संज्ञा पु.](सं.)वह व्यक्ति जो किसी की वसीयत में लिखी बातों का पालन या व्यवस्था करने का अधिकारी बनाया गया हो । एक्जिक्यूटर ।

मृत्युलेखप्रवर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मृत्युलेख-कार्याधिकार' ।

मृत्युलोक [संज्ञा पु.](सं.) १-यमलोक । २-मर्त्यलोक

मृत्युसुत [संज्ञा पु.] (सं.) केतुग्रह ।

मृत्युसूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केकड़े की मादा ।

मृत्स [वि.] (सं.) चिपचिपा ।

मृत्सन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्तम भूमि । २-गीली मिट्टी जिससे बरतन बनते हैं ।

मृथा* [क्रि. वि.] (हिं.) १-देखो 'वृथा' । २-देखो 'मृषा' ।

मृद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृत्तिका । २-मिट्टी का ढेला । ३-एक प्रकार की गंधदार मिट्टी ।

मृदंग, मृदङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लम्बा होता है । २-बाँस ।

मृदंगक, मृदङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं ।

मृदंगफल, मृदङ्गफल [संज्ञा पु.](सं.) कटहल ।

मृदंगफलिनी, मृदङ्गफल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तोरई ।

मृदंगी, मृदङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरोई । तोरई

मृदर [संज्ञा पु.] (सं.) रोग । व्याधि ।

मृदव [संज्ञा पु.] (सं.) नाट्यशास्त्रानुसार नाटक की भाषा में गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन ।

मृदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृत्तिका । मिट्टी ।

मृदाकर [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र ।

मृदित [वि.] (सं.) चूर्ण किया हुआ । पीसा हुआ ।

मृदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अच्छी मिट्टी । २-गोपीचन्दन ।

मृदु [वि.] (सं.) [स्त्री. मृद्वी] १-कोमल । मुलायम नरम । २-जो सुनने में मधुर और प्रिय हो । ३-सुकुमार । नाजुक । ४-धीमा । मन्द । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घृतकुमारी । २-जाही नामक फूल का पौधा । [संज्ञा पु.] (सं.) शनिग्रह ।

मृदुकंटक, मृदुकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) कटसरैया ।

मृदुकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मुलायम या नरम करने का काम ।

मृदुखुर [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों के खुर का एक रोग ।

मृदुगण [संज्ञा पु.] (सं) नक्षत्रों का एक गण जिसमें चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा और रेवती यह चार नक्षत्र हैं ।

मृदुगमना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धीमी चाल से चलने वाली ।

मृदुच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजपत्र का पेड़ । २-पीलूवृक्ष । ३-लाल लजालू ।

मृदुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोमलता । २-धीमापन ।

मृदुत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकमल ।

मृदुदर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कुश ।

मृदुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) शिरीष वृक्ष ।

मृदुफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारियल । २-विकंकत नामक वृक्ष ।

मृदुल [वि.] (सं.) [स्त्री. मृदुला] १-कोमल । नरम । २-कोमलहृदय । ३-दयामय । कृपालु । ४-नाजुक । सुकुमार । [संज्ञा पु.] १-जल । २-अंजीर ।

मृदुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोमलता । २-सुकुमारता । ३-नरमी ।

मृदुलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोमलता । सुकुमारता ।

मृदुलोमक [संज्ञा पु.] (सं.) खरगोश । खरहा । शशक ।

मृदुवात [संज्ञा पु.] (सं.) मन्द-मन्द चलनेवाल पवन ।

मृदुहृदय [वि.] (सं.) दयालु । कृपालु ।

मृद्वंग, मृद्वङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कोमल शरीर ।

मृद्वी [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) १-कोमला । २-कोमलांगी । [संज्ञा स्त्री.] कपिल द्राक्षा । सफेद अंगूर ।

मृद्वीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपिल द्राक्षा । २-अंगूर की शराब ।

मृद्वीकासव [संज्ञा पु.] (सं.) अंगूर की शराब ।

मृध [संज्ञा पु.] युद्ध । लड़ाई ।

मृधा [अव्य.] (सं.) झूठमूठ ।

मृनाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मृणाल' ।

मृन्मय [वि] (सं) मिट्टी का बना हुआ ।

मृन्मान [संज्ञा पु.] (सं.) कूप । कूआँ ।

मृषा [अव्य.] (सं) झूठमूठ । व्यर्थ । [वि.] असत्य । झूठ ।

मृषाज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) झूठी समझ ।

मृषात्व [संज्ञा पु.] (सं.) असत्यता । झूठपन ।

मृषाभाषी [वि.] (सं.) झूठ बोलने वाला । झूठा ।

मृषालक [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़ ।

मृषावाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-झूठ बोलना । २-झूठ बात ।

मृषावादी [संज्ञा पु.] (सं.) झूठा आदमी ।

मृष्ट [वि.] (सं.) साफ किया हुआ । पवित्र किया हुआ । शोधित । [संज्ञा पु.] मिर्च ।

मृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफाई । पवित्रता । शोधन ।

में [अव्य.] (हिं.) अधिकरणकारक का चिह्न जो किसी शब्द के अन्त में लगकर उसके भीतर, उसके बीच या चारों ओर होना सूचित करता है । [संज्ञा स्त्री.] बकरी के बोलने का शब्द ।

मेंगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी-छोटी गोलियों के आकार की भेड़, बकरी, चूहे आदि की विष्ठा ।

मेंड़ [संज्ञा स्त्री](हिं.) १-खेतों आदि की सीमा की सूचक मिट्टी की ऊंची रेखा अथवा बांध । २-सीमा । हद । ३-सम्मान या गौरव की सीमा । मर्यादा । डाँड़-मेड़-कूल । किनारा ।

मेंड़-बंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मेंड़ बनाने का काम या भाव ।

मेंडरा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. मेंडरी) १-कोई गोल चक्कर जो घेरकर बनाया गया हो । २-ऐंडुआ । गेडुरी । ३-किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा । ४-किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा ।

मेंडराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मँडराना' । [क्रि. स.] घेरकर गोल चक्कर बनाना ।

मेंढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-माथे के ऊपरी भाग के दोनों ओर के वे थोड़े से बाल जिन्हें स्त्रियाँ तीन लड़ों में गूंथकर जूड़े की तरफ ले जाकर बाँधते हैं । २-तीन लड़ियों में गूंथी हुई चोटी या बाल । ३-घोड़ों के माथे पर की एक भौंरी

मेंबर [संज्ञा पु.] (अं.) सभासद । सदस्य ।

मेंह [संज्ञा पु.] (हिं.) आकाश से बरसने वाला पानी ।

मेक [संज्ञा पु.] (सं.) बकरा ।

मेकदार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) परिमाण । मात्रा । अंदाज ।

मेकल [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम जिसे मेखल भी कहते हैं ।

मेकलकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर्मदानदी ।

मेकलसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर्मदा नदी ।

मेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) चम्मच के आकार का एक यज्ञपात्र ।

मेख [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-लकड़ी का खूँटा । २-कील । काँटा । ३-पच्चड़ । ४-घोड़े का लंगड़ापन जो नाल जड़ते समय किसी कील के ऊपर ठुक जाने से होता है । *मेख ठोकना*-१-बहुत कड़ा दंड देना । २-हराना । दबाना । *तोप के मुंह में मेख ठोकना*-तोप का मुँह बंद करके उसे चलने लायक न रखना । *मेख मारना*-१-कील ठोककर चलना अथवा हिलना बन्द करना । २-भाँजी मारना । ३-चलते हुए काम में रुकावट डालना । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेष' ।

मेखचू [संज्ञा पु] (फा.) मेख ठोंकने की हथौड़ी ।

मेखड़ा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बाँस की फट्टी का घेरा जो झाबे के मुँह पर बाँध देते हैं ।

मेखल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-करधनी। किंकिणी २-वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु को बीच में से उसे चारों ओर घेरती हो।

मेखला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरने वाली डोरी, शृङ्खला, रेखा आदि। २-करधनी। तगड़ी। किंकिणी। ३-मंडल। मँडरा। ४-पर्वत का मध्य भाग। ५-वह कपड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफ़नी। अलफी। ६-नर्मदा नदी। ७-यज्ञवेष्टन सूत्र। ८-गोल घेरा। मंडलाकार वस्तु। ९-हवनकुंड के ऊपर चारों ओर बना हुआ मिट्टी का घेरा। १०-वह पेटी या कमरबन्द जिसमें तलवार बाँधी जाती है।

मेखलाल [संज्ञा पु.] (सं) शिवजी।

मेखली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पहनावा जिसको गले में डालने से पेट और पीठ ढकी रहती है। और दोनों हाथ खुले रहते हैं।

मेखवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रास्ते में गड़ा खूँटा। (कहार)।

मेगज़ीन [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह स्थान जहाँ सेना के लिए बारूद रखी जाती है। २-मासिकपत्र

मेघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है। बादल। २-एक राग का नाम। ३-मोथा। मुस्तक। ४-तंडुलीय शाक। ५-राक्षस।

मेघकर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्कंदानुचर मातृभेद।

मेघकाल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाऋतु।

मेघगर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) बादल की गरज।

मेघज [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा मोती।

मेघजीवक, मेघजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) चातक पक्षी।

मेघज्योति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली।

मेघडंबर, मेघडम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल की गरजन। २-बड़ा शामियाना।

मेघडंबर-रस, मेघडम्बर-रस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध।

मेघतिमिर [संज्ञा पु.] (सं) वह दिन, जिस दिन बादल घिरे हों।

मेघदीप [संज्ञा पु.] (सं.) बिजली।

मेघदुंदुभि, मेघदुन्दुभि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ-गर्जन। २-एक राक्षस।

मेघदूत [संज्ञा पु.] (सं.) महाकवि कालीदास प्रणीत एक खंडकाव्य।

मेघद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश। व्योम।

मेघधनु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

मेघनाट [संज्ञा पु] (सं.) एक राग जो मेघराग का पुत्र माना जाता है।

मेघनाथ [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्र।

मेघनाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ का गर्जन। २-वरुण। ३-रावण के पुत्र इन्द्रजीत का नाम। ४-पलाशवृक्ष। ५-एक दैत्य। ६-बिल्ली। ७-मोर।

मेघनादमूल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौलाई की जड़।

मेघनाद-रस [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वर में दी जाने वाली एक रस औषध।

मेघनिर्घोष [संज्ञा पु.] (सं.) बादलों की गर्जन।

मेघनीलक [संज्ञा पु.] (सं.) तालीश वृक्ष।

मेघपटल [संज्ञा पु.] (सं) बादल की घटा।

मेघपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

मेघपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का घोड़ा। २-श्रीकृष्ण के रथ के चार घोड़ों में से एक। ३-का सींग। ४-नागरमोथा।

मेघपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जल। २-बेत। ३-ओला।

मेघष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) क्रौंचद्वीप में स्थित एक खंड।

मेघफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादल के वर्ण को देखकर वर्ष के शुभाशुभ का निर्णय। २-विकंकत वृक्ष।

मेघभूति [संज्ञा पु.] (सं.) बिजली।

मेघमंडल, मेघमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश

मेघमल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) संपूर्ण जाति का एक राग।

मेघमाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बादलों की घटा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्कि के पुत्र का नाम जो रंभा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २-एक दैत्य का नाम। ३-एक पर्वत जो प्लक्षद्वीप में है।

मेघमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बादलों की घटा। २-स्कंद की एक अनुचरी का नाम।

मेघमाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक राक्षस। २-स्कंध के एक अनुचर का नाम।

मेघरवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्कन्द की एक मातृका का नाम।

मेघराग [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में छः प्रकार के रागों में से एक।

मेघराज [संज्ञा पु.] (सं.) मेघों के नायक, इन्द्र।

मेघराजि, मेघलेखा [संज्ञा स्त्री] (सं.) बादलों की घटा।

मेघवर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील का पौधा।

मेघवर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकाल के मेघों में से एक का नाम।

मेघवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

मेघवन्हि [संज्ञा पु.] (सं.) बिजली।

मेघवाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बादलों की घटा।

मेघवान् [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के अनुसार पश्चिम दिशा का एक पर्वत।

मेघवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-एक राजा का नाम जो बौद्ध था।

मेघवितान [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक छन्द का नाम। २-मेघ। समूह।

मेघविस्फूर्जिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेघों की गड़गड़ाहट। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, ठगण, रगण और एक गुरु होता है।

मेघवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) व्योम। आकाश।

मेघश्याम [वि.] (सं.) बादलों का सा काला। [संज्ञा पु.] श्रीकृष्ण।

मेघसार [संज्ञा पु.] (सं.) चीनियाकपूर। घन-सार।

मेघसुहृद [संज्ञा पु.] (सं.) मोर।

मेघस्वन [वि.] (सं.) बादलों के समान गरजने वाला। [संज्ञा पु.] बादलों की गड़गड़ाहट।

मेघस्वनांकुर, मेघस्वनाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) वैदूर्यमणि।

मेघस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

मेघह्लाद [संज्ञा पु.] (सं.) बादलों की गड़गड़ाहट

मेघांत, मेघान्त [संज्ञा पु.] (सं.) शरत्काल।

मेघा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मेढक। मंडूक।

मेघागम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्षाकाल। २-धारा-कदम्ब।

मेघाच्छन्न [वि.] (सं.) बादलों से ढका हुआ।

मेघाच्छादित [वि.] (सं.) बादलों से ढका हुआ

मेघाडंबर, मेघाडम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बादलों की गड़गड़ाहट। २-बादल का फैला

मेघानंद, मेघानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। २-बगला।

मेघाभा [संज्ञा पु.] (सं.) बनजामुन।

मेघारि [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। हवा।

मेघावरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बादलों की घटा।

मेघास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) ओला।

मेच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पलंग। पर्यंक। २-ऐसी खाट जो बेंत की बुनी हुई हो। ३-देखो 'मेज'। [संज्ञा पु.] (देश.) आसाम की एक पहाड़ी जाति।

मेचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्धकार। अँधेरा। २-नीलांजन। ३-मोर की चन्द्रिका। ४-धूआँ। ५-बादल। ६-सहिंजन। ७-पीतशाल। ८-काला नमक। ९-एक छोटी जाति का बिच्छू। [वि.] (सं.) श्यामल। काला।

मेचकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कालापन।

मेचकताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेचकता'

मेज [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जो हिमालय पर ५००० फुट की ऊँचाई पर होती है।

मेज़ [संज्ञा स्त्री] (फ़ा.) लिखने पढ़ने या खाने आदि के लिए बनी ऊँची चौकी। टेबुल।

मेज़पोश [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चौकी या मेज पर

बिछाने का कपड़ा।

ज़बान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह जिसके यहाँ कोई मेहमान या अतिथि आकर ठहरे। २-वह जो लोगों को अपने यहाँ किसी कार्य, विशेषतः भोजन, जलपान आदि के लिए निमंत्रित करे। आतिथ्य करने वाला।

बानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मेजबान का भाव या धर्म। २-वे खाद्यपदार्थ जो बरात आने पर पहले-पहल लड़कीवालों की ओर से बरातियों के लिए भेजे जाते हैं।

[संज्ञा पु.] (अं.) फौज का एक अफसर।

जनरल [संज्ञा पु.] (अं.) वह सैनिक अधिकारी जिसका दर्जा या पद लेफ्टेनेंट जनरल के बाद ही है।

[संज्ञा पु.] (हिं.) मेढक।

[संज्ञा स्त्री.] (अं.) बहुसंख्यक। अधिकांश।

[संज्ञा पु.] (अं.) १-मजदूरों का सरदार। २-जहाज के अधिकारी का सहायक कर्मचारी। संगी। साथी।

[संज्ञा पु.] (हिं.) मिटाने वाला। नाशक

हार, मेटनहारा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मिटाने वाला। हटाने वाला।

[क्रि. स.] (हिं.) १-मिटाना। घिसकर साफ करना। २-दूर करना। ३-नष्ट करना।

[संज्ञा पु.] (हिं.) मटका।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घड़े से छोटा मिट्टी का बरतन। मटकी।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेटिया।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मटकी'।

[वि.] (हिं.) उपकार न मानने वाला। कृतघ्न।

[संज्ञा पु.] (सं.) महावत। फीलवान।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेंड़'।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेंड़बंदी'।

[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेढक'।

[संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. मेड़री] १-किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। २-किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा।

[क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'मँडराना'।

[क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। २-चक्की के चारों ओर का वह स्थान जहाँ आटा पिसकर गिरता है।

[संज्ञा पु.] (अं.) सोने चाँदी की बनी हुई मुद्रा जो किसी विशेष कार्य करने के लिए या विशेष निपुणता दिखाने के लिए दिया जाता है। पदक।

[वि.] (अं.) पाश्चात्य औषध और चिकित्सा से संबंध रखने वाला। डाक्टरी-सम्बन्धी।

[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मंडप। छोटा घर।

मेडिसन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-औषध । दवा। २-चिकित्सा-विज्ञान ।

मेढक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध बरसाती जल स्थल-चारी छोटा जन्तु। यह बरसात के दिनों में नालाबों आदि में टर्राता है। दादुर।

मेढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. भेड़] भेड़ की तरह का एक चौपाया।

मेढ़ासिंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

मेढ़ी+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-तीन लड़ों में सिर के बालों की गूँथी हुई चोटी। २-घोड़े के माथे पर की एक भौंरी।

मेढ्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिंग। २-मेढ़ा।

मेथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

मेथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है। वैद्यक के अनुसार यह कटु, उष्ण, अरुचिनाशक, दीप्तिकारक वातघ्न और रक्त, पित्त-प्रकोपन मानी जाती है।

मेथौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह मूंग या उर्द की बरी जिसमें मेथी का साग मिला रहता है।

मेद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चरबी। २-मोटाई या चरबी बढ़ने का रोग। ३-कस्तूरी। ४-रत्न परीक्षा के अनुसार नीलम की एक छाया। ५-एक अंत्यज जाति। [संज्ञा स्त्री.] मेदा नाम की एक सुगन्धित जड़।

मेदनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यात्रियों का वह दल जो झंडा लेकर किसी तीर्थ अथवा देवस्थान को जाता है।

मेदपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) दुम्बा मेढ़ा।

मेदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक औषध जो ज्वर और राजयक्ष्मा के लिए लाभदायक होती है। [संज्ञा पु.] (अं.) पेट का वह भीतरी भाग जिसमें अन्न पचता है। पक्वाशय।
मेदा कड़ा होना–शीघ्र दस्त न होना। *मेदा साफ होना*–मलशुद्धि होना।

मेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। धरती। २-मेदा।

मेदिनीज [संज्ञा पु] (सं.) मंगल-ग्रह।

मेदिनीपति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

मेदुर [वि.] (सं.) चिकना। स्निग्ध।

मेदुरित [वि.] (सं.) गाढ़ा या घना किया हुआ।

मेदोज [संज्ञा पु.] (सं.) अस्थि। हड्डी।

मेदोधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर की झिल्ली जिसमें मेद या चरबी रहती है।

मेदोर्बुद [संज्ञा पु] (सं.) १-मेद वाली गाँठ या गिल्टी जिसमें पीड़ा हो। २-ओठ का एक रोग

मेदोवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चरबी का बढ़ना। मोटाई। २-अंडवृद्धि।

मेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ। २-हवि। ३-यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु

मेधज [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

मेधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बात को स्मरण रखने और समझने की मानसिक शक्ति। धारणाशक्ति। २-दक्षप्रजापति की कन्या का नाम। ३-सोलह मातृकाओं में से एक। ४-छप्पयछंद का एक भेद।

मेधाजित् [संज्ञा पु.] (सं.) कात्यायनमुनि।

मेधातिथि [संज्ञा पु.] (सं.) १-काण्व वंशोत्पन्न एक ऋषि का नाम। २-महाभारत के अनुसार कण्वमुनि के पिता का नाम। ३-भट्टवीर स्वामी के पुत्र का नाम जो मनुसंहिता के प्रसिद्ध भाष्यकार हैं। ४-शाकद्वीप के अधिप का नाम जो प्रियव्रत के पुत्र थे। ५-कर्दम-प्रजापति के पुत्र का नाम।

मेधावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २-महाज्योतिष्मती नामक लता।

मेधावान् [वि.] (सं.) [स्त्री. मेधावती] जिसकी धारणा तीव्र हो। बुद्धिमान।

मेधावी [वि.] (सं.) (स्त्री. मेधावनी) १-जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। बुद्धिमान्। २-पंडित। विद्वान। [संज्ञा पु.] १-शुक। तोता। २-मद्य। मदिरा। ३-कश्यप के एक पुत्र का नाम। ४-च्यवनऋषि के एक पुत्र का नाम।

मेधि [संज्ञा पु.] (सं.) वह खंभा जिसके चारों ओर फसल डाल दी जाती है और उससे बैलों को बाँध दिया जाता है। यह बैल चारों ओर घूमकर पैरों से डंठलों के दाने झाड़ते हैं।

मेधिर [वि.] (सं.) मेधावी।

मेध्य [वि.] (सं.) १-यज्ञ-सम्बन्धी। २-पवित्र। [संज्ञा पु.] १-कत्था। २-जौ। ३-बकरा।

मेनका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-स्वर्ग की एक अप्सरा जो शकुन्तला की माता थी। २-पार्वती की माता जो हिमवान् की स्त्री थी।

मेनकात्मजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शकुन्तला। २-पार्वती।

मेनकाहित [संज्ञा पु.] (सं.) रासक नामक नाटक का एक भेद।

मेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पितरों की मानसी कन्या, मेनका। २-हिमवान् की पत्नी जो पार्वती की माता थी। ३-स्त्री। ४-ऋग्वेदानुसार वृषणश्च की मानसी कन्या। ५-वाक्। [क्रि. स] (हिं.) १-पकवान आदि में मोयन डालना। २-मिलाना।

मेनाद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बिल्ली। २-बकरी। ३-मोर।

मेनाधव [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

मेम [संज्ञा स्त्री.] (अं. मैडम) १-युरोप, अमेरिका आदि पाश्चात्य देश की स्त्री। २-बीबी या रानी नामक ताश का पत्ता।

मेमना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भेड़ का बच्चा। २-

घोड़े की एक जाति।

मेमार [संज्ञा पु.] (अ.) भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। मकान बनाने वाला कारीगर। राज

मेमोरियल [संज्ञा प.] (अं.) १-किसी बड़े अधिकारी के पास विचारार्थ भेजा जाने वाला प्रार्थनापत्र। २-स्मारक चिन्ह। यादगार।

मेमोरेंडम [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह पत्र जिसमें कोई बात स्मरण रखने के लिये लिखी गई हो। स्मरण-पत्रक। २-वक्तव्य। अभिमत।

मेमोरेंडम-आफ-एसोसियेशन [संज्ञा पु.] (अं.) सम्मिलित पूँजी से खुलने वाली कंपनी के उद्देश्य की पत्रिका।

मेय [वि.] (सं.) १-जिसकी नाप हो सके। २-जो नापा-जोखा जाने वाला हो।

मेयना [क्रि. स.] (हिं.) १-पकवान आदि में मोय डालना या देना। २-मिलाना।

मेयर [संज्ञा पु.] (अं.) म्यूनिस्पल कारपोरेशन का अध्यक्ष।

मेर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेल'।

मेरक [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर जिसे विष्णु ने मारा था।

मेरठी [संज्ञा पु.] (हिं.) गन्ने की एक जाति।

मेरवन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मिलाने की क्रिया या भाव। मिलान।

मेरवना+ [क्रि. स.](हिं.) १-मिलाना। २-मिलाप करना।

मेरा [सर्व.] (हिं.) [स्त्री. मेरी] 'मैं' के सम्बन्ध-कारक का एक रूप। *[संज्ञा पु.] देखो 'मेला'।

मेराउ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेराव'।

मेराना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'मिलाना'।

मेराव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मेल। मिलाप।

मेरी [सर्व.] (हिं.) 'मेरा' का स्त्री रूप। [संज्ञा स्त्री.] अहंकार।

मेरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार एक पर्वत जो सोने का बताया जाता है। २-जपमाला के बीच का बड़ा दाना। ३-एक प्रकार का देवमन्दिर। ४-वीणा का एक अंग। ५-पिंगल या छन्द-शास्त्र की वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने-कितने लघु, गुरु के कितने-कितने छंद हो सकते हैं।

मेरुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत बराबर करने के पाटे के सिरे का भाग जिससे रस्सियाँ बंधी होती हैं।

मेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईशानकोण में स्थित एक देश का नाम। २-यज्ञधूप। धूना।

मेरुकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

मेरुग्रंथि, मेरुग्रन्थि [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्क। गुरदा।

मेरुज्योति [संज्ञा स्त्री.](सं.) उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों में दिखाई पड़ने वाली वह चित्र-विचित्र तथा नाना वर्णों की ज्योति जो वायुमंडल में व्याप्त द्युति के कारण उत्पन्न होती है।

मेरुदंड, मेरुदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीठ के मध्य की हड्डी। रीढ़। २-पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के मध्य की सीधी कल्पित रेखा।

मेरुदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णु के अवतार ऋषभदेव की माता, जो मेरुकन्या और नाभि की पत्नी थी।

मेरुधामा [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी का एक नाम।

मेरुपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्योम। आकाश। २-स्वर्ग।

मेरुभूत [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति का नाम।

मेरुभूतसिंधु, मेरुभूतसिन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश जिसे पह्लव भी कहते हैं।

मेरुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ का निचला भाग।

मेरुयंत्र, मेरुयन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) १-चरखा। २-एक प्रकार का चक्र।

मेरुशिखर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेरु की चोटी। २-हठयोग के अनुसार मस्तक के छः चक्रों में से सब से ऊपर का चक्र।

मेरुश्रीगर्भ [संज्ञा पु.](सं.) एक बोधिसत्व का नाम

मेरुसावर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) ग्यारहवें मनु का एक नाम।

मेरे [सर्व.] (हिं.) १-'मेरा' का बहुवचन। २-'मेरा' का वह रूप जो उसके बाद की संज्ञा में विभक्ति लगने पर होता है।

मेल [संज्ञा पु.](सं.) १-मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। समागम। २-एक साथ प्रीतिपूर्वक रहने का भाव। एकता। सुलह। ३-मित्रता। दोस्ती। ४-संगति। अनुकूलता। अनुरूपता। ५-जोड़। टक्कर। समता। ६-ढङ्ग। चाल। तरह। ७-मिश्रण। मिलावट। *मेल करना*-सुलह या सन्धि करना। *मेल खाना, बैठना या मिलना*-१-पटरी बैठाना। सङ्ग-साथ निभना। २-दो वस्तुओं का परस्पर उपयुक्त होना। *मेल होना*-सन्धि या सुलह होना। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-डाक। २-डाकगाड़ी।

मेलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-संग-साथ पहचान। २-मिलान। ३-समूह। जमावड़ा। ४-वर तथा कन्या की राशि, नक्षत्र आदि का विवाह के लिए किया जाने वाला मिलान।

मेल-जोल [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रायः मिलते रहने से उत्पन्न सम्बन्ध। मेल-मिलाप। घनिष्टता।

मेलट्रेन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह रेलगाड़ी जो बहुत तेज चाल से चलती है और केवल बड़े-बड़े स्टेशनों पर ठहरती है और जिसके द्वारा डाक भेजी जाती है।

मेलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ होना। मिलन २-जमावड़ा। ३-मिलाने की क्रिया या भाव।

मेलना* [क्रि. स.](हिं.) १-मिलाना। २-डालना। रखना। ३-पहनना। धारण करना। [क्रि. अ.] (हिं.) इकट्ठा या एकत्र होना।

मेलमल्लार [संज्ञा पु.] (सं.) एक रागिनी।

मेलमिलाप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मेलजोल'।

मेलांधु, मेलान्धु [संज्ञा पु.] (सं.) दवात।

मेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत से लोगों का एक स्थान पर जमा हो जाना। भीड़। २-उत्सव, त्यौहार आदि के समय होने वाला बहुत से लोगों का जमावड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहुत से लोगों का जमावड़ा। २-समागम। मिलाप। ३-अंजन। ४-स्याही। रोशनाई। ५-महानील।

मेलाठेला [संज्ञा पु.] (हिं.) भीड़भाड़ और धक्का

मेलनंदा, मेलानन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दवात।

मेलान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ठहराव। २-पड़ाव। डेरा।

मेलाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-मेलना का प्रेरणार्थक। २-रेहन या गिरवी रखी वस्तु को रुपया देकर छुड़ाना।

मेली [वि.] (हिं.) १-जिससे मेलमिलाप हो। २-जल्दी हिलमिल जाने वाला। ३-मिलनसार। ४-संगी। साथी।

मेल्टिंग-केट्ल [संज्ञा पु.] (अं.) छापाखाने वालों के सरेस पकाने की देगची।

मेल्हना [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की नाव। +[क्रि. अ.] (हिं.) १-विकल होना। छटपटाना। २-कोई काम करने में आनाकानी करके समय बिताना।

मेव [संज्ञा पु.] (देश.) (स्त्री. मेवनी) भरतपुर राज्य और गुड़गांवा जिले में बसने वाली एक जाति जिन्हें मुसलमान राजत्वकाल में हिंदू से मुसलमान बना लिया था। मेवाती।

मेवड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) संभालू।

मेवा [संज्ञा पु.] (फा.) किशमिश, बादाम आदि के सुखाये हुए बढ़िया फल। (देश.) [illegible] एक गन्ने की जाति।

मेवाटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मेवे भरकर पकाया जाने वाला एक प्रकार का पकवान।

मेवाड़ [संज्ञा पु.] (देश.) १-राजस्थान का एक प्रदेश जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड़ और उदयपुर थी। २-एक राग।

मेवाड़ी [संज्ञा पु.](हिं.) मेवाड़ प्रदेश का निवासी। [वि.] मेवाड़ में होने वाला। मेवाड़ का।

मेवात [संज्ञा पु.] (सं.) राजस्थान और दिल्ली के मध्य के प्रदेश का नाम।

मेवाती [संज्ञा पु.] (हिं.) मेवात का रहने वाला।

मेवाफरोश [संज्ञा पु.] (फा.) फल या मेवे बेचने वाला।

मेवासा* [संज्ञा पु] (हिं.) १-गढ़। किला। २-सुरक्षित स्थान। ३-घर।

मेवासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घर का मालिक। २-किले में रहने वाला। [वि.] सुरक्षित और प्रबल।

मेष [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भेड़। २-बारह राशियों में से पहली राशि। २-एक लग्न जो सूर्य के मेषराशि में रहने पर माना जाता है। ४-एक औषध। ५-सुसना। जीवनाशक। *मेष करना*-आगापीछा करना। संकल्प-विकल्प करना।

मेषकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड का पौधा।

मेषपाल [संज्ञा पु.] (सं.) गड़रिया।

मेषपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासिंगी।

मेषलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड।

मेषवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासिंगी।

मेषविषाणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासिंगी।

मेषवृषण [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

मेषशृंग, मेषशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सिंगिया नामक स्थावर विष।

मेषशृंगी, मेषशृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेढ़ासिंगी।

मेषसंक्रांति, मेषसंक्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य के मेषराशि पर आने का योग या काल।

मेषहृत [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

मेषांड, मेषाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

मेषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुजराती इलायची। २-लाल भेड़ की खाल से बनने वाला एक प्रकार का चमड़ा।

मेषालु [संज्ञा पु.] (सं.) बनतुलसी।

मेषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भेड़। मादा मेष। २-जटामासी। ३-तिनिशा वृक्ष।

मेसू [संज्ञा पु.] (?) बेसन की बनी हुई बरफी।

मेस [संज्ञा पु.] (अं.) वह स्थान जहाँ विद्यार्थियों के लिए उचित मूल्य पर भोजन का प्रबंध किया जाता है।

मेषूरण [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में दशम लग्न जो कर्मस्थान कहा जाता है।

मेस्मराइजर [संज्ञा पु.] (अं.) वह जो अपनी इच्छाशक्ति के द्वारा किसी को अचेत कर देता हो। सम्मोहक।

मेस्मेरिज्म [संज्ञा पु.] (अं.) वह विद्या या शक्ति जिससे कोई मनुष्य अचेत कर वश में किया तथा जो अपनी इच्छानुसार परिचालित किया जा सके। सम्मोहिनी विद्या। सम्मोहन

मेहँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक झाड़ी जिसकी पत्तियों को पीसकर स्त्रियाँ हथेली या तलवे रंगने के लिए लगती है। *क्या पैर में मेहँदी लगी है?* क्या पैर काम में नहीं ला सकते जो उठ कर नहीं आते। *मेहँदी रचाना*-मेहँदी लगाना। *मेहँदी रचना*-मेहँदी का रङ्ग अच्छा आना। *मेहँदी बांधना*-मेहँदी की पत्तियाँ पीसकर लगाना। *मेहँदी लगाना*-पिसी हुई मेहदी हथेली या तलवों में लगाना।

मेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूत्र। २-प्रमेह रोग। ३-मेष। मेढ़ा। +[संज्ञा पु.] (हिं.) १-मेघ। बादल। २-मेह। वर्षा।

मेहतर [संज्ञा पु.] (फा.) [मेहतरानी] मुसलमान भंगी। हलालखोर।

मेहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिशन। लिंग। २-मूत्र। मूत।

मेहनत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) परिश्रम।

मेहनताना (अ., फा.) किसी काम की मजदूरी। पारिश्रमिक।

मेहनती [वि.] (हिं.) परिश्रमी।

मेहना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। औरत।

मेहमान [संज्ञा पु.] (फा.) अतिथि। पाहुना।

मेहमानदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) अतिथि-सत्कार

मेहमानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अतिथि-सत्कार। आतिथ्य। मेहमान बनकर रहने का भाव। *मेहमानी करना*-मारना-पीटना (व्यंग्य)।

मेहर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कृपा। अनुग्रह। दया।

मेहरबान [वि.] (फा.) कृपालु। दयालु।

मेहरबानगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेहरबानी'।

मेहरबानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कृपा। दया। अनुग्रह।

मेहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रियों की-सी प्रकृति वाला। जनखा। २-स्त्रियों में बहुत रहने वाला। ३-जुलाहों की चरखी का घेरा। ४-खत्रियों की एक जाति।

मेहराना+ [क्रि. स.] (हिं.) वर्षा आदि होने पर नमकीन तथा कुरकुरे पकवानों का सील जाना सील की मुलायमत से उनका कुरकुरापन दूर हो जाना।

मेहराब [संज्ञा स्त्री.] (अ.) द्वार आदि के ऊपर की अर्ध मंडलाकार रचना।

मेहराबदार [वि.](अ., फा.) ऊपर की ओर गोलाकार कटा हुआ (द्वार)

मेहरारू+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री। औरत।

मेहरिया*, **मेहरी** [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्री। औरत। २-पत्नी। जोरू।

मेहल [संज्ञा पु.] (देश.) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी की छड़ियाँ और हुक्के की निगालियाँ बनती हैं।

मैं [सर्वनाम] (हिं.) सर्वनाम उत्तमपुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद। * [अव्यय] (हिं.) देखो 'में'।

मैंढल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मैनफल।

मै [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मद्य। मदिरा। शराब। * [अव्य.] (हिं.) देखो 'मय'।

मैका [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मायका'।

मैगनाकार्टा [संज्ञा पु.](अं.) वह राजकीय आज्ञापत्र जिसमें राजा की ओर से प्रजाजनों को कोई स्वत्व या अधिकार देने की बात हो। शाही-फरमान।

मैगल [संज्ञा पु.] (हिं.) मत्त हाथी। मस्त हाथी। [वि.] मत्त। मस्त। (हाथी के लिए)।

मैच [संज्ञा पु.] (अं.) खेल की प्रतियोगिता।

मैजल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उतनी दूर जितनी कोई व्यक्ति सारे दिन भर चलकर तै करे। मंजिल। २-सफर। यात्रा।

मैजिक [संज्ञा पु.] (अं.) जादू का खेल। जादू।

मैजिक-लालटैन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की लालटैन जिसके आगे शीशे पर बने हुए चित्र लगाये जाते हैं उनकी परछाँई सामने लगे कपड़े पर पड़ती है जिसे दर्शकगण देखते हैं।

मैड़* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मेंड़'।

मैडम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) विवाहिता स्त्री के लिए आदरसूचक शब्द। श्रीमती।

मैत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुराधानक्षत्र। २-सूर्यलोक। ३-गुदा। मलद्वार। ४-ब्राह्मण। ५-प्राचीन वर्णसंकर जाति का नाम। ६-वेद की एक शाखा। ७-मित्रता। ८-सूर्योदय के उपरांत उससे तीसरा महूर्त्त। [वि.] मित्र-सम्बन्धी। मित्र का।

मैत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता। दोस्ती।

मैत्रभ [संज्ञा पु.] अनुराधानक्षत्र।

मैत्राक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रेत।

मैत्राक्षज्योतिक [संज्ञा पु.] मनु के मत से एक योनि जिसमें कर्त्तव्यभ्रष्ट वैश्य जाता है।

मैत्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन ऋषि जो गृह्यसूत्र के प्रणेता थे। २-मैत्र नामक वैदिक शाखा।

मैत्रायणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम

मैत्रावरुणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोलह ऋत्वजों में से पाँचवाँ। २-मित्र और वरुण के पुत्र अगस्त्य।

मैत्रि [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य।

मैत्रिक [वि.] (सं.) मित्रता-सम्बन्धी।

मैत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मित्रता। दोस्ती।

मैत्रीबल [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध का एक नाम '

मैत्रेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बुद्ध का नाम जो अभी होने वाले हैं। २-पाराशर के शिष्य एक ऋषि का नाम। ३-प्राचीन समय की एक वर्णसंकर जाति। ४-सूर्य।

मैत्रेयी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम। २-अहिल्या का एक नाम।

मैत्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता। दोस्ती।

मैथिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिथिला देश का निवासी। २-राजा जनक का एक नाम। [वि.

१-मिथिला देश का। २-मिथिला-सम्बन्धी।

मैथिली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जानकी। सीता।

मैथुन [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री के साथ पुरुष का समागम। रतिक्रीड़ा। संभोग।

मैथुनिक [वि.] (सं.) १-मैथुन से सम्बन्ध रखने वाला। २-स्त्रीलिंग और पुंलिंग अथवा दोनों के आपसी व्यवहार या संपर्क से सम्बन्ध रखने वाला। सैक्सुअल।

मैथुन्य [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्व विवाह।

मैदा [संज्ञा पु.] (फा.) बहुत महीन पिसा हुआ आटा जिसमें से चोकर निकाल दिया जाता है।

मैदान [संज्ञा पु.] (फा.) १-लम्बा-चौड़ा खाली स्थान। सपाट भूमि। २-वह लंबी-चौड़ी समतल भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३-युद्धक्षेत्र। रणभूमि। ४-किसी वस्तु का विस्तार। ५-रत्न या जवाहिर आदि का विस्तार। *मैदान करना*-१-लड़ना। युद्ध करना। २-ढा देना। ३-खुली जगह छोड़ना। *मैदान छोड़ना*-लड़ाई से हटना।
मैदान मारना-१-खेल प्रतियोगिता आदि में जीतना। २-विजय करना। *मैदान में आना*-मुकाबले पर आना। *मैदान साफ होना*-मार्ग में बाधा या रुकावट न आना। *मैदान हाथ आना या पाना*-युद्ध में विजयी होना।

मैदा-लकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की जड़ी जो दवा के काम में आती है।

मैन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कामदेव। २-मोम।

मैन-कामिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कामदेव को स्त्री, रति।

मैनफर+, मैनफल [संज्ञा पु.] (हिं.) मंझोले आकार का एक काँटेदार वृक्ष जिसके गोल फल औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं।

मैनमय* [वि.] (हिं.) कामासक्त।

मैनर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मैनफल'।

मैनशिल, मैनसिल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है। इसे शोधकर अनेक प्रकार के रोगों पर काम में लाते हैं।

मैनस्क्रिप्ट [संज्ञा पु.] (अं.) वह पुस्तक अथवा कागज जो हाथ से लिखा हो। हस्तलिखित प्रति।

मैना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध चिड़िया जिसका रंग काला होता है और मनुष्यों की-सी बोली बोलती है। सारिका। २-पार्वती जी की माता का नाम। मेनका। [संज्ञा पु.] (देश.) राजस्थान की 'मीना' नामक जाति।

मैनाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना है। २-हिमालय की एक ऊँची चोटी का नाम।

मैनावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चार तगण होते हैं।

मैनिफेस्टो [संज्ञा पु.] (अं.) किसी व्यक्ति, संस्था या सरकार का किसी सार्वजनिक विषय, नीति या कार्य पर अभिमत, वक्तव्य या घोषणा।

मैमंत* [वि.] (हिं.) १-मतवाला। मदोन्मत्त। २-अभिमानी। अहंकारी।

मैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माता। माँ।

मैयार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की मटियार जमीन जो बहुत खराब होती है।

मैर+ [संज्ञा पु.] (देश.) सुनारों की एक जाति। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साँप के विष की लहर।

मैरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खेत के बीच में बना वह मचान जिस पर बैठकर किसान खेती की रक्षा करते हैं।

मैरीन [संज्ञा पु.] (अं.) १-लड़ाका जहाज पर काम करने वाला सैनिक। २-किसी देश या राष्ट्र की समस्त नौसेना। ३-किसी देश के समस्त जहाज। [वि.](सं.) नौ-सेना-सम्बन्धी

मैरेय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मदिरा। शराब। २-प्राचीन काल में गुड़ और धौ से बनाने वाली एक प्रकार की मदिरा। ३-आसव, मद्य और शहद का मिश्रण।

मैलंद, मैलन्द [संज्ञा पु.] (प्राकृत) भ्रमर। भौंरा

मैल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु पर पड़ी हुई अथवा जमी हुई गर्द, धूल आदि। २-दोष। विकार।
हाथ पैर की मैल-तुच्छ वस्तु। *मन में मैल रखना*-मनमें दुर्भाव या वैमनस्य रखना। [वि.](हिं.) मलिन। मैला। [संज्ञा पु.](देश.) हाथी को चलाने का आदेशसूचक शब्द।

मैलखोरा [वि.] (हिं.) (रंग आदि) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह वस्तु जो शरीर की मैल से बाकी कपड़ों की रक्षा करने के लिये भीतर पहना जाय। २-काठी या जीन के नीचे रखा जाने वाला नमदा। ३-वह खुदरा पकी हुई मिट्टी का उपकरण जिससे रगड़ कर हाथ पैर की मैल छुड़ाई जाती है। ४-साबुन।

मैला [वि.] (हिं.) १-जिस पर मैल जमी हो। मलिन। अस्वच्छ। २-विकारयुक्त। ३-गंदा दुर्गन्धयुक्त। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विष्ठा। गू। २-कूड़ा-कर्कट।

मैलकुचैला [वि.] (हिं.) बहुत मैला। गंदा।

मैलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मलिनता। गंदापन।

मैलाघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ गूभरा या रखा जाता हो। पेल-डिपो।

मैहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घी या मक्खन के तपाने पर निकला हुआ मट्ठा। २-देखो 'नैहर'।

मों* [अव्य.] (हिं.) देखो 'मैं'।

मोंगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मोगरी] १-काठ का बड़ा हथौड़ा। २-देखो 'मोगरा'। २-देखो 'मुँगरा'।

मोंगला [संज्ञा पु.] (देश.) मध्यम श्रेणी का साधारणतः बाजार में मिलने वाला

मोंछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूँछ'।

मोंढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कंधा। २-तरह का एक प्रकार का ऊँचा आसन जो बांस या सरकंडे का बना है। यौ०-सीना मोंढ़ा-छाती और कंधा।

मो* [सर्व.](हिं.) १-मेरा। २-अवधी और भाषा में 'मैं' का वह रूप जो उसे के सिवा दूसरे कार का चिह्न लगाने पर होता है।

मोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घी में सना हुआ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की जड़ी मारवाड़ में होती है।

मोकदमा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुकदमा'।

मोकना* [क्रि. स.] (हिं.) १-छोड़ना। त्याग करना। २-फेंकना। क्षिप्र करना।

मोकल* [वि.] (हिं.) छूटा हुआ। मुक्त। छन्द।

मोकला+ [वि.](हिं.) १-लम्बा-चौड़ा। २-छूटा या खुला हुआ। +[संज्ञा पु.] तायत। ज्यादती।

मोका [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी न तो फटती है टेढ़ी होती है। +[संज्ञा पु.] (हिं.) १-'मोखा'। २-देखो 'मौका'।

मोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्धन से छुटकारा। २-जीव का आवागमन से छुटकारा। मुक्ति। ३-मृत्यु। पतन। गिरना। ५-पाँडर का वृक्ष।

मोक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोक्षवृक्ष। २- देने वाला।

मोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष देने की क्रिया

मोक्षणीय [वि.] (सं.) मोक्ष देने के योग्य।

मोक्षद [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष वाला।

मोक्षदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहन सुदी दशी।

मोक्षद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २- तीर्थ।

मोक्षपति [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के भेदों में से एक।

मोक्षपुरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) काशी आदि जो मोक्ष की देने वाली हैं।

मोक्षविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदांत-शास्त्र

मोक्षशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों का

मोक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहन सुदी तिथि।

मोक्षित [वि.] (सं.) मोक्ष को प्राप्त। हो गई हो

क्ष:

मोक्ष्य [वि.] (सं.) जो मोक्ष के योग्य हो। मोक्ष का अधिकारी।

मोख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोक्ष'।

मोखा [संज्ञा पु.] (हिं.) दीवार में बना हुआ छोटा छेद।

मोगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का बहुत बढ़िया और बड़ा बेला (पुष्प)। २-देखो 'मोंगरा'।

मोगल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुगल'।

मोगली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक जंगली वृक्ष जो गुजरात में अधिकता से पाया जाता है।

मोगा [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का रेशम। २-इस रेशम का बना हुआ कपड़ा।

मोघ [वि.] (सं.) १-जो अपना प्रभाव या फल दिखा सके। २-जो न होने के समान हो। जिसके होने का कोई फल या महत्व न हो। ३-रद्द या व्यर्थ किया हुआ। नल्ल।

मोघन [संज्ञा पु.] (सं.) न किये हुए के समान करने की क्रिया या भाव। रद्द या व्यर्थ करना। नलिफिकेशन।

मोंघिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चौड़ी मोटी नरिया जो खपरैल की छाजन में लगाई जाती है।

मोघ्य [संज्ञा पु.] (सं.) विफलता। नाकामयाबी।

मोच [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेमल का पेड़। २-केला। ३-पाँड़र का पेड़। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर के किसी अङ्ग के जोड़ का इधर-उधर हट जाना।

मोचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छुड़ाने वाला। २-केला। ३-सेमल का पेड़। ४-विषय-वासना से मुक्त, संन्यासी।

मोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्धन आदि खोल कर मुक्त करना। २-दूर करना। हटाना। ३-छीन लेना।

मोचना [क्रि. स.] (हिं.) १-छोड़ना। २-गिराना। ३ बन्धन से मुक्त करना या कराना। ४-बहाना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नापित या हज्जामों का बाल उखाड़ने की चिमटी। २-लोहारों का छोटे-छोटे लोहे के टुकड़े उठाने का औजार।

मोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भटकटैया।

मोचनीय [वि.] (सं.) मुक्त करने योग।

मोचरस [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल नामक वृक्ष का गोंद।

मोचसार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मोचरस'।

मोचा [संज्ञा पु.] (हिं.) केला।

मोचाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-केला। २-केले का गाभ।

मोचिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पोई का पौधा।

मोची [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मोचिन] जूते आदि बनाने वाला कारीगर। [वि.] (सं.) [स्त्री. मोचिनी] १-छुड़ाने वाला। २-दूर करने वाला

मोच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोक्ष

मोछ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मूँछ' *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोक्ष'।

मोजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुजरा'।

मोजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-पैर में पहनने का पायताबा। जुर्राब। २-कुश्ती का एक पेंच। ३-पिंडली के नीचे का भाग।

मोट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गठरी। [संज्ञा पु.] चमड़े का बड़ा थैला जिससे कुएँ से पानी निकाल कर खेत सींचते हैं। चरसा। *[वि.] १-मोटा। २-कम मोल का। साधारण।

मोटकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

मोटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा। २-मलना रगड़ना या पीसना।

मोटनक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, जगण. एक लघु और एक गुरु होते हैं।

मोटर [संज्ञा पु.] (अं.) एक विशेष प्रकार की कल या यंत्र जिससे किसी अन्य यंत्र आदि का संचालन किया जाता है। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह गाड़ी जो पैट्रौल से इस यंत्र द्वारा चलती है।

मोटरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) गठरी।

मोटा [वि.] (हिं.) [स्त्री. मोटी] १-जिसके शरीर में आवश्यकता से अधिक माँस हो। स्थूल शरीर वाला। २-दलदार। 'पतला' का उलटा ३-साधारण से अधिक घेरे या मान वाला। ४-जिसके कण महीन या बारीक न हों। दरदरा। ५-साधारण या घटिया। ६-भद्दा। बेडौल ७-भारी या कठिन। ८-घमंडी। अहंकारी। *मोटा आसामी*-धनवान। *मोटा झोटा*-घटिया खराब। *मोटा दिखाई देना*-कम दीखना। *मोटा पेट होना*-धनवान होना। *मोटा भाग्य*-सामान्य। *मोटी बात*-साधारण बात। मामूली बात। *मोटी भूल*-भारी भूल। *मोटे तौर पर*-साधारणतया। *मोटे हिसाब से*-अन्दाज या अटकल से। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मारवाँ ज़मीन। मार। २-बोझ। गट्ठड़।

मोटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मोटे होने का भाव। स्थूलता। २-शरारत। पाजीपन। *मोटाई उतरना*-शेखी किरकिरी होना। *मोटाई चढ़ना*-शरारती या घमंडी होना।

मोटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मोटा होना। २-घमंडी होना। ३-धनवान् हो जाना। [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को मोटा करना।

मोटापन [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटाई। स्थूलता।

मोटापा [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटा होने का भाव। स्थूलता। मोटाई।

मोटा-मोटी [क्रि. वि.] (हिं.) मोटे हिसाब से। * अनुमानतः।

मोटिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोटा देशी कपड़ा। खद्दर। २-मजदूर। बोझा ढोने वाला।

मोट्टायित [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में वह हा जिसमें नायिका अपने आंतरिक प्रेम को कट भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने प भी नहीं छिपा सकती।

मोठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मूँग की तरह का एक मोटा अन्न।

मोठस [वि.] (?) मौन। चुप।

मोड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रास्ते में वह स्थान जहाँ से मुड़ा जाता है। २-वह स्थान जहाँ रास्ता किसी ओर को मुड़ता हो। ३-मुड़ने की क्रिया या भाव।

मोड़तोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) रास्तों या मार्गों में पड़ने वाला घुमाव-फिराव। चक्कर।

मोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को मुड़ने में प्रवृत्त करना। २-फेरना। लौटाना। ३-कुछ अंश उलट या समेटकर विस्तार कम करना। ४-कुंठित करना। ५-किसी छड़ जैसी वस्तु का कुछ अंश दूसरी ओर फेरना। *मुँह मोड़ना* विमुख होना।

मोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) [स्त्री मोड़ी] लड़का। बालक।

मोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश) १-घसीट या शीघ्र लिखने की लिपि। २-दक्षिण भारत की एक लिपि।

मोण [संज्ञा पु] (सं.) १-सूखा फल। २-मगर। ३-मक्खी। ४-टोकरा। झाबा। पिटारा

मोतदिल [वि.] (अं.) देखो 'मातदिल'

मोतबर [वि.] (अं.) १-जिस पर विश्वास किया जा सके। २-विश्वासपात्र।

मोतियदाम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण होते हैं।

मोतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का बेला। २-एक प्रकार का सलमा। ३-ताजा उगी हुई रूसा घास। ४-मोती के से रंग वाली एक चिड़िया। [वि.] १-पीले और गुलाबी हलके रंग का। २-मोती की तरह छोटे गोल दाने का।

मोतियाबिंद [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख का एक रोग जिसमें पुतली के आगे एक गोल झिल्ली पड़ जाती है।

मोती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छिछले समुद्रों या रेतीले तटों के पास सीपी से निकलने वाला एक बहुमूल्य रत्न। २-कसेरों का एक औजार *मोती गरजना*-मोती चटकना या तड़क जाना। *मोती ढलकाना*-रोना। *मोती पिरोना*-१-बहुत सुन्दर और प्रिय भाषण करना। २-सुन्दर और स्पष्ट अक्षर लिखना। ३-रोना (व्यंग्य)। *मोती बींधना*-१-मोती पिरोने के लिए उसके बीच में छेद करना। २-कुमारी का कौमार्य भंग करना। *मोती रोलना*-बिना परिश्रम बहुत अधिक धन पाना। *मोतियों से मुँह भरना*-बहुत धन देना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाली जिसमें

बड़े-बड़े मोती होते हैं।

मोतीचूर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटी बुंदियों का लड्डू। २-एक अगहनिया धान। ३-कुश्ती का एक पेंच। *मोतीचूर आँख*-छोटी, गोल और उभरी हुई चमकदार आँख।

मोतीज्वर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह ज्वर जो चेचक या माता निकलने से पहले आता है।

मोतीझिरा [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटी शीतला का रोग। मंथज्वर।

मोतीबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बेले का वह भेद जिसे मोतिया कहते हैं।

मोतीभात [संज्ञा पु.] (हिं.) एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीलड्डू [संज्ञा पु.] (हिं.) मोती चूर का लड्डू।

मोतीसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोतियों की माला या कंठी।

मोथरा+ [वि.] (हिं.) जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। कुन्द।

मोथा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नागरमोथा। २-नागरमोथे की जड़ जो दवा के काम आती है।

मोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-आनन्द। हर्ष। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पांच भगण, एक मगण एक सगण और एक गुरु वर्ण होता है। सुगन्ध। महक।

मोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लड्डू। २-औषध का बना लड्डू। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं। ४-एक वर्णसंकर जाति। [वि.] (सं.) मोद या आनन्ददायक।

मोदकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन मुनि का नाम।

मोदकार [संज्ञा पु.] (सं.) मिठाई बनाने माला। हलवाई।

मोदकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की गदा। २-मूर्वा।

मोदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रसन्न करना। २-महकाना। सुगन्धि फैलाना।

मोदना※ [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रसन्न या आनंदित होना। २-सुगन्धि फैलाना। [क्रि. स.](हिं.) प्रसन्न या खुश होना।

मोदनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद जूही।

मोदनीय [वि.] (सं.) आनन्द करने योग्य।

मोदवंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वनमल्लिका।

मोदा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-अजमोदा। २-सेमलवृक्ष

मोदाक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक वृक्ष का नाम।

मोदाकी [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

मोदाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

मोदाढ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अजमोदा। २-प्रसन्न रहने वाली स्त्री।

मोदाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

मोदित [वि.] (सं.) हर्षित। प्रसन्न।

मोदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अजमोदा। २-मल्लिका। ३-यूथिका। ४-कस्तूरी। ५-मदिरा शराब।

मोदी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आटा, दाल, चावल आदि बेचने वाला बनिया। २-वह जिसका कार्य नौकरों को भरती करना हो।

मोदीखाना [संज्ञा पु.] (हिं.) अन्न आदि रखने का भंडार।

मोधुक [संज्ञा पु.] (हिं.) मछली पकड़ने वाला। मछुआ।

मोधू+ [वि.] (हिं.) मूर्ख। बेवकूफ।

मोन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोनस'।

मोनशेनयर [संज्ञा पु.] (फ्रैं.) फ्रांस में राजकुमार पादरी तथा प्रतिष्ठित लोगों के नाम के आगे लगने वाला आदरसूचक शब्द। श्रीमान्।

मोनस [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

मोना※ [क्रि. स.] (हिं.) भिगोना। तर करना। [संज्ञा पु.] (हिं.) ढक्कनदार झाबा या पिटारा।

मोनाल [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का महोक पक्षी जिसे 'नीलमोर' भी कहते हैं।

मोनिया※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा मोना या पिटारी।

मोपला [संज्ञा प.] (देश) मदरास में पाई जाने वाली एक मुसलमान जाति।

मोम [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह चिकना, कोमल पदार्थ जिससे शहद की मक्खियों का छत्ता बना होता है। २-रूप, रङ्ग, और गुण में इससे मिलता-जुलता पदार्थ। ३-रसायनिक प्रक्रिया द्वारा निकाला हुआ इस प्रकार का पदार्थ।

यौ०—*मोम की नाक*-१-अस्थिरमति। २-जरासी बात में मिजाज बदलने वाला व्यक्ति। *मोम की मरियम*-अत्यंत सुकुमार स्त्री। *मोम करना या मोम बनाना*-द्रवीभूत कर लेना। *मोम होना*-कठोरता छोड़ देना।

मोमजामा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हो।

मोमती※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ममत्व'।

मोमदिल [वि.] (फ़ा.) मोम के समान कोमल हृदय वाला। बहुत ही कोमल हृदय वाला।

मोमना+ [वि.] (हिं.) मोम का सा। अत्यन्त कोमल।

मोमबत्ती [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मोम आदि की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमिन [संज्ञा पु.] (अ.) १-धर्मनिष्ठ मुसलमान २-जुलाहों की एक जाति।

मोमियाई [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-नकली शिलाजीत। २-प्राचीन मिश्र में मृतकों के शरीर जो विशेष प्रक्रिया द्वारा तैयार किये जाते थे। ३-मोमसी मुलायम एक काले रंग की दवा जो घाव भरने के लिये प्रसिद्ध है। *मोमियाई निकालना*-१-किसी से कठिन परिश्रम लेना। २-किसी को खूब मारना-पीटना।

मोमी [वि.] (फ़ा.) १-मोम का बना हुआ। २-मोम का सा।

मोयन [संज्ञा पु.] (हिं.) गूंधे हुए आटे में डाला जाने वाला घी या तेल आदि जिससे बनने वाली वस्तु मुलायम और खसखसी हो।

मोरंग [संज्ञा पु.] (देश.) नैपाल देश का पूर्वी भाग।

मोर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मोरनी] १-एक अत्यंन्त सुन्दर बड़ा पक्षी। २-नीलम की आभा जो मोर के पर के समान होती है। ※[सर्व.] देखो 'मेरा'। [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) सेना की अगली पंक्ति।

मोरचंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मुरचंग'।

मोरचंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोरचंद्रिका'।

मोरचंद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोर के पंख पर की चंद्राकार बूटी।

मोरचा [संज्ञा पु.](फ़ा.) १-लोहे पर चढ़ने वाला वह काला अंश जो हवा और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है। जंग। २-शीशे, दर्पण आदि पर जमी हुई मैल। ३-वह गड्ढा जो किले के चारों ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। ४-वह स्थान जहाँ से गढ़ या नगर की रक्षा की जाती है। द्वन्द्व या प्रतियोगिता में होने वाला सामना।

मोरचा जीतना या मारना-विजय प्राप्त करना। *मोरचा लेना*-१-युद्ध करना। २-द्वन्द्व या प्रतियोगिता में सामने आना।

मोरचाबंदी [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु पर आक्रमण करने अथवा अपनी रक्षा के निमित्त मोरचा बनाना।

मोरछड़※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोरछल'।

मोरछल [संज्ञा पु.] (हिं.) मोर की पूँछ के को इकट्ठा बाँधकर बनाया चँवर।

मोरछली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'मौलसिरी'। २-मोरछल हिलाने वाला।

मोरछाँह※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मोरछल'।

मोरजटना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जटित सोने का आभूषण जो माथे पर बेंदे के स्थान पर पहना जाता है।

मोरट [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊख की जड़। २- अंकोल का फूल। ३-प्रसव से सातवीं रात के बाद का दूध। ४-एक प्रकार की लता।

मोरटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद खैर। २- देखो 'मोरट'।

मोरटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब।

मोरध्वज [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौराणिक प्रसिद्ध भक्त राजा।

मोरन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मोड़ने की क्रिया या भाव। मोड़ना। २-बिलोया हुआ दही जिसमें सुगंधित वस्तुएं डाली गई हों। शिखरन।

मोरना* [क्रि. स.](हिं.) १-दही मथकर मक्खन निकालना। २-देखो 'मोड़ना'।

मोरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मोर पक्षी की मादा। २-नथ में लगने वाला मोर के आकार का एक छोटा टिकड़ा :

मोरपंख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोर का पर। २-मोर के पर की कलगी।

मोरपंखी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-वह नाव जिसका एक सिरा मोर पङ्ख के समान होता है। २-मालखम्भ की एक कसरत। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहरा चमकीला नीला रंग। [वि.] मोर के पंख के रंग का। गहरा चमकीला। नीला।

मोरपखा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोर का पर। २-मोरपंख की कलंगी।

मोरपाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) जंगी जहाजों के बावर्चीखाने की मेज पर खड़ा हुआ लोहे का छड़ जिसमें मांस के बड़े-बड़े टुकड़े लटकाते हैं।

मोरमुकुट [संज्ञा पु.](हिं.) मोर के पंखों का बना-हुआ मुकुट।

मोरवा* [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'मोर'। (देश.) नाव की किलवटी में बाँधने की रस्सी जिससे पतवार का काम लिया जाता है।

मोरशिखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक जड़ी जिसकी पत्तियां मोर की कलगी के आकार की होती हैं

मोरा [संज्ञा पु.] (देश.) अकीक नामक रत्न का एक भेद। * [वि] (हि.) देखो 'मेरा'।

मोराना* [क्रि स.](हिं.) १-चारों ओर घूमना। फिरना। २-ऊख की अंगारी को कोल्हू में दबाना।

मोरियां+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोल्हू की कतरी की बाँस की शाखा।

मोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी वस्तु के निकलने का का तंग द्वार। २-गंदा पानी बहाने की नाली। ३-देखो 'मोहरी'। * ४-मोर की मादा। मोरनी। *मोरी छूटना*-पतला दस्त आना। *मोरी पर जाना*-पेशाब करने को जाना। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) क्षत्रियों की एक जाति जो चौहान जाति के अंतर्गत है।

मोर्चा [संज्ञा पु.] देखो 'मोरचा'।

मोल [संज्ञा पु.] (हिं.) कीमत। दाम। मूल्य। यौ०-*मोलचाल*-१-अधिक दाम। २-किसी वस्तु का दाम घटा-बढ़ाकर दाम तै करना। *मोलकरना*-१-किसी वस्तु को उचित मूल्य से अधिक कहना। २-घटा-बढ़ाकर दाम तै करना

मोलना+ [संज्ञा पु] (हिं.) मौलवी। मुल्ला।

मोलवी+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'मौलवी'।

मोलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मोल पूछने या तै करने की क्रिया या भाव। मोल भाव कहना या ठीक करना।

मोलाना* [क्रि. स.](हिं.) मूल्य या दाम पूछना या तै करना।

मोवना* [क्रि. स.](हिं.) देखो 'मोना'।

मोशिये [संज्ञा पु.] (फ्रॉ.) फ्रांस देश में नाम के आगे लगाया जाने वाला आदरसूचक शब्द। महाशय।

मोष [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मोक्ष'। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोरी। २-लूटना। ३-वध। हत्या। ४-दंड देना।

मोषक [संज्ञा पु.] (सं.) चोर।

मोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लूटना। २-चोरी करना। ३-छोड़ना। ४-वध करना। ५-वह जो चोरी करता या डाका डालता हो।

मोह [संज्ञा पु.](सं.) १-अज्ञान। २-भ्रम। भ्रांति। ३-ईश्वर का ध्यान छोड़कर शरीर तथा सांसारिक वस्तुओं को अपना तथा सब कुछ समझना। ४-प्रेम। प्यार। ५-तैंतीस संचारी भावों में से एक जो भय, दुःख, घबराहट, अत्यन्त चिन्ता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ६-मूर्छा। बेहोशी।

मोहक [वि.] (सं.) १-मोह उत्पन्न करने वाला। २-मन को लुभाने वाला।

मोहकार [संज्ञा पु.] (हि.) घड़े का मोहड़ा।

मोहठा [संज्ञा पु.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन रगण और एक गुरु होता है।

मोहड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २-किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग। ३-मुँह। ४-देखो 'मोहरा'। *मोहड़ा लगाना*-अनाज के बोरे का मुंह खोलना। *मोहड़ा मारना*-किसी काम को सबसे पहले करना।

मोहताज [वि.] (अ.) १-निर्धन। गरीब। २-जिसे किसी बात की अपेक्षा हो। विशेष कामना रखने वाला।

मोहताजी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मोहताज होने की क्रिया या भाव।

मोहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहित करने की क्रिया या भाव। २-किसी को मूर्च्छित करने का एक तांत्रिक प्रयोग। ३-श्रीकृष्ण। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण और एक जगण होता है। ५-बारह मात्राओं का एक ताल। ६-कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ७-प्राचीनकाल का एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था। ८-कोल्हू में का वह स्थान जहाँ पर दबाने के लिए ऊख लगाई जाती है। ९-धतूरे का पौधा। [वि.] (सं.) [स्त्री. मोहनी] मोह उत्पन्न करने वाला।

मोहनभोग [संज्ञा पु.] (हि.) १-एक प्रकार का हलुआ। २-एक प्रकार का आम। ३-एक प्रकार का केला।

मोहनमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने के दानों की बनी हुई माला।

मोहना [क्रि. अ.] (हिं) १-मोहित होना। रीझना। २-मूर्च्छित या बेहोश होना। [क्रि. स.] (हिं.) १-मोहित या मुग्ध करना। लुभालेना। २-भ्रम में डालना। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमेली विशेष। २-तृण।

मोहनास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक अस्त्र जिसके प्रभाव से शत्रु मूर्च्छित हो जाता था।

मोहनिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोहरूपी निद्रा। २-उत्कट आत्मविश्वास।

मोहनिशा [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह कालरात्रि जब सारा संसार नष्ट हो जायगा।

मोहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विष्णु का एक रूप जो अमृत बांटने के समय असुरों को मोहित करने के लिए उनको रखना पड़ा था। २-वैशाखसुदी-एकादशी। ३-एक प्रकार की मिठाई। ४-वशीकरण का मंत्र। लुभाने का प्रभाव। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं। ६-माया। ७-पोई का साग। *मोहनी डालना*-१-मोह या माया के वश में करना। २-किसी को अपने ऊपर मोहित करना। *मोहनी लगाना*-मोहित होना। लुभाना। [वि.] (सं.) (स्त्री. प्र.) लुभाने या मोहित करने वाली। अत्यन्त सुन्दरी।

मोहनीय [वि.] (सं.) मोह लेने योग्य।

मोहफिल [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'महफिल'।

मोहब्बत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'मुहब्बत'।

मोहमंद, मोहमन्द [संज्ञा पु.] (सं.) मोह उत्पन्न करने वाला मन्त्र।

मोहयिता [वि.] (सं.) मोहकारक।

मोहर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अक्षर, चिह्न आदि छाप लेने अथवा उन्हें दबाकर अङ्कित करने का ठप्पा। २-उक्त ठप्पे की छाप। ३-स्वर्ण-मुद्रा। अशरफी।

मोहरबंद [वि.] (हिं.) जिसे बन्द करके ऊपर से मोहर लगाई गई हो।

मोहरा [संज्ञा पु.](हिं.)[स्त्री. मोहरी] १-किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। २-किसी पदार्थ का ऊपरी अथवा अगला भाग। ३-सेना की अगली पंक्ति। ४-गाय, भैंस आदि के मुख पर बाँधने की जाली। ५-कोई छेद अथवा द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। ६-शतरंज की कोई गोटी। ७-ढलाई के काम में आने आला मिट्टी का साँचा। ८-वह घोटना जिससे रेशमी वस्त्र घोटे जाते हैं। ९-सींघिया विष। १०-दुआली। ११-जहरमोहरा। *मोहरा लेना*-१-सेना का मुकाबला

करना। २-भिड़ जाना।

मोहरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह कालरात्रि जब सारा संसार नष्ट हो जायगा। २-भाद्रपद कृष्णाअष्टमी।

मोहराना [संज्ञा पु.] (हिं.) मोहर लगाने की मजदूरी।

मोहरिल* [संज्ञा पु.](हिं.) वह आदमी जो किसी आसामी के साथ इसलिए रख दिया जाता है कि जब तक वह ऋण न चुकावे, तब तक कहीं जा न सके।

मोहरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-पात्र आदि का छोटा मुँह या खुला भाग। २-पाजामे का वह भाग जिसमें टांगें रहती है। ३ देखो 'मोरी'। (देश.) एक प्रकार की मधुमक्खी।

मोहरिंर [संज्ञा पु.] (अ.) लेखक। मुंशी।

मोहलत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-अवकाश। छुट्टी। २-अवधि।

मोहल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'महल्ला'।

मोहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-द्वार। २-मुंहड़ा। अगला भाग। ३-बड़ी मधुमक्खी। सारंग। ४-मधु का छत्ता। ५-भौंरा।

मोहारनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाठशाला के बालकों का एक साथ खड़े होकर पहाड़े पढ़ना

मोहाल [संज्ञा पु.] (अ.) किसी एक या अनेक गाँवों का बन्दोबस्त जो किसी नम्बरदार के हाथ किया गया हो। (हिं.) १-एक जाति की मधुमक्खी। मोहार। २-मधुमक्खी का छत्ता

मोहिं* [सर्व.] (हिं.) मुझे। मुझको।

मोहित [वि.] (सं.) [स्त्री. मोहिता] १-मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २-आसक्त। लुब्ध। लुभाया हुआ।

मोहिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] मोहने वाली। [संज्ञा स्त्री.] १-बेला का फूल। २-विष्णु का एक अवतार जो अमृत बाँटने के समय असुरों को मोहित करने के लिए धारण करना पड़ा था। ३-एक अप्सरा का नाम। ४-माया। जादू। ५-वैशाखशुक्ला-एकादशी। एक अर्ध समवृत्ति का नाम जिसके पहले और तीसरे चरण में बारह तथा दूसरे और चौथे चरण में सात मात्राएँ होती हैं। ६-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं।

मोही [वि.] (हिं.) [स्त्री. मोहिनी] मोहित या मुग्ध करने वाला। [वि.] (हिं.) १-प्रेम करने वाला। २-लोभी। लालची। ३-भ्रम में पड़ा हुआ। अज्ञानी।

मोहेला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चलता गाना।

मोहेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली।

मोहोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अलंकार का नाम

मौं* [अव्य.](हिं.) ब्रजभाषा में अधिकरणकारक का चिह्न। में।

मौंगा* [वि.] (हिं.) मौन। चुप।

मौंगी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चुप्पी। मौन।

मौंज, मौञ्ज [वि.] (सं.) [स्त्री. मौंजी] मूंज का बना।

मौंजकायन, मौञ्जकायन [संज्ञा पु.](सं.) मुंजक-ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

मौंजवान [वि.] (हिं.) १-मुंजवान् नामक पर्वत में उत्पन्न। २-उक्त पर्वत-सम्बन्धी।

मौंजिबंधन, मौञ्जिबन्धन [संज्ञा पु.](सं.) जनेऊ

मौंजी [संज्ञा स्त्री.](सं.) मूंज की बनी हुई मेखला। [वि.] (सं.) १-मूंज की मेखला पहना हुआ। २-देखो 'मौंजीय'।

मौंजीपत्रा, मौञ्जीपत्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) बल्वजा

मौंजीय, मौञ्जीय [वि.] (सं.) मूंज का बना हुआ।

मौंड़ा* [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. मौंड़ी] १-लड़का २-देखो 'मोहड़ा'।

मौका [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह स्थान जहाँ कोई घटना घटी हो। २-अवसर। समय। ३-स्थान। जगह। *मौका देना*-अवकाश देना। *मौका देखना या ताकना*-उपयुक्त अवसर की टोह में रहना। *मौका पाना*-१-अवकाश पाना। २-उपयुक्त अवसर पाना। ३-दाँव या घात पाना।

मौकुल [संज्ञा पु.] (सं.) कौआ।

मौकूफ [वि.] (अ.) १-रोका या स्थगित किया हुआ। २-बरखास्त। काम से हटाया हुआ। ३-रद्द किया किया हुआ। ४-अवलंबित। आश्रित।

मौकूफी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मौकूफ होने की क्रिया या भाव। २-प्रतिबंध। रुकावट। ३-बरखास्तगी।

मौक्तिक [वि.] (सं.) १-मोतियों का। २-मुक्ता-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ता। मोती।

मौक्तिक-तंडुल, मौक्तिक-तण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद मक्का।

मौक्तिकदाम [संज्ञा पु.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण होते हैं।

मौक्तिकमाला [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं और पहला, चौथा, पांचवां, दसवाँ और ग्यारहवाँ अक्षर गुरु तथा शेष लघु होते हैं।

मौक्तिकावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोती की माला

मौक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान।

मौख [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पाप जो मुख से हो। २-एक प्रकार का मसाला।

मौखर [संज्ञा पु.] (सं.) मुखरता। मुँहजोरी।

मौखरी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन राजवंश का नाम।

मौखर्य [संज्ञा पु.] (सं.) मुखरता। वाचालता। मुँहजोरी।

मौखिक [वि.](सं.) १-मुख का। २-मुँह से कहा हुआ। जबानी।

मौखिक-परीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परीक्षा जिसमें प्रश्नों का उत्तर जबानी ही दिया जाता है।

मौगा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. मौगी] १-मूर्ख। २-हिजड़ा।

मौगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री। औरत।

मौज [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लहर। तरंग। २-मन की उमंग। ३-धुन। ४-सुख। आनन्द। मजा। ५-विभूति। विभव। *मौज मारना*-लहराना। *मौज खाना*- मारना। *मौज उठाना*-मनमें उमंग उठना। *(किसी की) मौज पाना*-इच्छा या मनोवृत्ति से अवगत होना।

मौजा [संज्ञा पु.] (अ.) गाँव। ग्राम।

मौजी [वि.] (हिं.) १-जो मन में आवे वही करने वाला। २-सदा प्रसन्न रहने वाला। आनंदी।

मौजूँ [वि.] (अ.) उपयुक्त।

मौजूद [वि.] (अ.) १-उपस्थित। विद्यमान। २-प्रस्तुत। तैयार। *मौजूद रहना*-१-उपस्थित रहना। २-ठहरे रहना।

मौजूदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) उपस्थिति। विद्यमानता।

मौजूदा [वि.] (अ.) १-वर्त्तमान काल का। २-उपस्थित। वर्त्तमान।

मौडा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मौंड़ा'।

मौत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मरण। मृत्यु। २-मरने का समय। काल। ३-वह जो प्राणियों के प्राण निकालता है। ४-वह कष्ट या वेदना जो मरने के समय होता है। *मौत आना*-मरने को होना। *मौत का पसीना आना*-मृत्यु के लक्षण दीख पड़ना। *मौत सिर पर खेलना*-मृत्यु या भारी संकट समीप होना। *मौत के मुँह में*-भारी संकट में। *मौत के दिन* करना-जैसे-तैसे अपने दुःख के दिन बिताना। *मौत का तमाचा*-मृत्यु का स्मरण दिलाने वाला कार्य अथवा घटना। *मौत बुलाना*-ऐसा कार्य करना जिससे मृत्यु निश्चित हो। *अपनी मौत मरना*-स्वाभाविक या प्राकृतिक नियमानुसार मरना।

मौताद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मात्रा।

मौदक [वि.] (सं.) मोदक-सम्बन्धी।

मौद्गल [संज्ञा पु.](सं.) मुद्गलऋषि का गोत्र

मौद्गलि [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौवा।

मौद्गल्य [संज्ञा पु.] (सं.) मुद्गलऋषि के पुत्र का नाम। २-मुद्गलऋषि के गोत्रज।

मौद्गल्यायन [संज्ञा पु.](सं.) गौतमबुद्ध के प्रधान शिष्य का नाम।

मौद्गीन [संज्ञा पु] (सं.) वह खेत जिसमें मूँग उत्पन्न हो।

मौन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुनियों का व्रत अथवा चर्या। २-चुप रहना। न बोलना। चुप्पी। ३-फागुन महीने का पहला पक्ष। ४-बरतन। पात्र। ५-डब्बा। ६-मूँज का बना पिटारा। *मौन गहना या ग्रहण करना*-चुप रहना अथवा चुप्पी साधने का संकल्प करना। *मौन खोलना* चुप रहने के बाद बोलना। *मौन तजना*-चुप्पी तोड़ना। *मौन धारण करना*-न बोलना या न बोलने का संकल्प करना। *मौन बाँधना*-चुप रहना। *मौन लेना या साधना*-चुप होना। *मौन सँभारना*-चुप होना। [वि.] (हिं.) जो न बोले। चुप।

मौनता [संज्ञा स्त्री.] (सं) मौन या चुप रहने का भाव। चुप्पी।

मौनव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) मौन धारण करने का संकल्प।

मौना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मौनी] १-एक प्रकार का बरतन जिसमें घी या तेल रखते हैं। २-काँस या मूँज का टोकरा। पिटारी।

मौनी [वि.] (हिं.) १-मौन धारण करने वाला। चुप रहने वाला। २-मुनि। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काँस या मूँज की बनी कटोरे के आकार की टोकरी।

मौनेय [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्वों और अप्सराओं का एक मातृक गोत्र।

मौर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मौरी] १-विवाह के समय वर को सिर पर पहनाने का मुकुट। २-शिरोमणि। प्रधान। ३-मंजरी। बौर। ४-गरदन।

मौर बाँधना-विवाह के समय सिर पर मौर पहनना।

मौर बँधना-मंजरी लगना।

मौरना* [क्रि. स.] (हिं.) वृक्षों पर मंजरी लगना।

मौरसिरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मौलसिरी'।

मौरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वधू के सिर का मौर जो वर के मौर से छोटा होता है।

मौरूसी [वि.] (अ.) बाप दादा के समय से चला आया हुआ। पैतृक (धन संपत्ति)।

मौर्ख्य [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्खता।

मौर्य [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों के एक वंश का नाम जिसमें सम्राट चन्द्रगुप्त और अशोक हुए थे।

मौर्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनुष की डोरी। ज्या।

मौल [वि.] (सं.) १-मूल संबंधी। २-मूल का। ३-बिलकुल आरम्भिक या आदिकाल से चला आया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के मन्त्री जो प्राचीन काल में होते थे। २-भूस्वामी। बड़ा जमींदार।

मौलबल [संज्ञा पु.](सं.) बड़े जमींदारों की अथवा उनके द्वारा एकत्र की हुई सेना।

मौलवी [संज्ञा पु.](अ.) १-अरबी भाषा का पंडित २-मुसलमान धर्म का आचार्य।

मौलसिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसमें छोटे-छोटे सुगंधित फूल आते हैं। बकुल।

मौला [संज्ञा पु.] (अ.) १-मित्र। दोस्त। २-सहायक। मददगार। ३-स्वामी। मालिक। ४-ईश्वर।

मौलाना [संज्ञा पु.] देखो 'मौलवी'।

मौलि [संज्ञा पु.](सं.) १-चोटी। सिरा। २-मस्तक सिर। ३-किरीट। ४-जूड़ा। ५-अशोक वृक्ष ६-सरदार। ७-भूमि। जमीन।

मौलिक [वि.] (सं.) १-मूल से सम्बन्ध रखने वाला। २-असली। ३-(कोई ग्रंथ या विचार) जो किसी की नकल या आधार पर न हो बल्कि अपनी उद्भावना से निकला हो।

मौलिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मौलिक होने का भाव।

मौलिमंडन, मौलिमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आभूषण जो सिर पर धारण किया जाता है।

मौली [वि.] (सं.) जिसके सिर पर मुकुट हो। मुकुटधारी। [संज्ञा स्त्री.] वह सूत जो पूजा के लिए रंगा गया हो।

मौल्य [वि.] (सं.) मूल्य-सम्बन्धी।

मौषल [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम।

मौषिकापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) शतपथब्राह्मण के अनुसार एक आचार्य का नाम।

मौष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं) घूसंघूसा। मुक्कामुक्की।

मौष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) चोरी।

मौसम [संज्ञा पु.] देखो 'मौसिम'।

मौसर* [वि.] (हिं.) १-सुगमतापूर्वक। सुप्राप्य। २-प्राप्त। उपलब्ध। *मौसर आना*-मिल सकना + [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी के मर जाने पर किया जाने वाला जातिभोज।

मौसल [वि.] (सं.) मूसल-सम्बन्धी। मूसल का।

मौसली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मौलसिरी'।

मौसा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. मौसी] माता की बहिन का पति। मौसी का पति।

मौसिम [संज्ञा पु.] (अ.) १-उपयुक्त समय। २-ऋतु।

मौसिमी [वि.] (फा.) १-समयोपयोगी। २-ऋतु-सम्बन्धी।

मौसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'मौसा'। [वि.] मौसी के सम्बन्ध का।

मौसियाउत+ [वि.] (हिं.) मौसेरा।

मौसियायत [वि.] (हिं.) मौसेरा।

मौसी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) माता की बहिन। मासी

मौसेरा [वि.] (हिं.) मौसी के संबंध का।

मौहूर्त [संज्ञा पु.] (सं.) मुहूर्त बतलाने वाला, ज्योतिषी।

मौहूर्त्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुहूर्त्त बतलाने वाला, ज्योतिषी। २-दक्ष की कन्या से उत्पन्न एक देवगण।

म्याँवँ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बिल्ली की बोली। *म्याँवँ-म्याँवँ करना*-दीनतापूर्वक और बहुत धीरे से बोलना।

म्यान [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार कटार आदि का फल रखने का खाना।

म्याना* [क्रि. स.] (हिं.) म्यान में रखना। * [संज्ञा पु.] देखो 'मियाना'।

म्यानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) पायजामे में का वह टुकड़ा जो रान के बीच में जोड़ा जाता है।

म्युनिनिपैल्टी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी नगर के नागरिकों की वह प्रतिनिधि सभा जो नगर के स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि का प्रबन्ध करती है।

म्यूज़ियम [संज्ञा पु.] (अ.) अजायबघर।

म्यों [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बिल्ली की बोली।

म्योंढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सदाबहार झाड़ जिसमें केसरिया रङ्ग के छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।

म्रक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपने दोषों को छिपाना। मक्कारी। २-तेल लगाना। ३-मसलना।

म्रजाद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मर्यादा'।

म्रदिमा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोमलता। मृदुता। २-नम्रता।

म्रदिष्ठ [वि.] (सं.) अत्यंत कोमल।

म्रातन [संज्ञा पु.] (सं.) कैवर्तीमुस्तक।

म्रियमाण [वि.] (सं.) मरे हुए के समान। मरा हुआ सा।

म्लान [वि.] (सं.) १-कुम्हलाया हुआ। मलिन। २-दुर्बल। ३-मैला। मलिन। [संज्ञा पु.] (सं.) ग्लानि।

म्लानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-म्लान होने का भाव। मलिनता। २-ग्लानि।

म्लानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'म्लानता'।

म्लायी [वि.] (हि.) १-ग्लानियुक्त। २-दुःखी।

म्लिष्ट [वि.] (सं.) १-अस्पष्ट। जो साफ न ह २-जो स्पष्ट रूप से न बोलता हो। ३-म्लान

म्लेच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिन्दुओं के मतानुस वे जातियाँ जिन में वर्णाश्रम धर्म न हो। २-हींग। [वि.] १-नीच। २-पापी।

म्लेच्छकंद, म्लेच्छकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) लहसन।

म्लेच्छभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गेहूँ। २-यावक। बोरो।

म्लेच्छमुख [संज्ञा पु.] (सं.) ताँबा।

म्हा* [सर्व.] (हि.) देखो 'मुझ'।

म्हारा* [सर्व.] (हि.) देखो 'हमारा'

य

य हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर। इसका उच्चारण स्थान तालु है। यह स्पर्श वर्ण और ऊष्मवर्ण के बीच का वर्ण कहा जाता है। इसीलिए इसे अन्तःस्थवर्ण कहते हैं

यंत, यंता [संज्ञा पु.] (डि.) सारथी।

यंति, यन्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दमन।

यंत्र, यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार के कोष्टक आदि। जंतर। २-वह उपकरण जो कोई विशेष कार्य करने अथवा कोई वस्तु बनाने के लिए हो। कल। *मशीन*। ३-बाजा। वाद्य। ४-ताला। ५-बन्दूक। ६-वाद्य-संगीत। ७-वीणा। बीन ८-ताला। ६-नियंत्रण। १०-एक प्रकार का बरतन।

यंत्रक, यन्त्रक [संज्ञा पु.](सं.)१-सुश्रुत के मतानुसार घाव आदि पर बाँधा जाने वाला कपड़े का बन्धन। पट्टी। २-यंत्र की सहायता से वस्तुएं तैयार करने वाला शिल्पकार। ३-वह जो वशीकरण करता हो।

यंत्रकरंडिका, यन्त्रकरण्डिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) बाजीगरों की पेटी जिससे वह कई प्रकार के खेल दिखाते हैं।

यंत्रगृह, यन्त्रगृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ यंत्र लगे हों और उनकी सहायता से कोई वस्तु तैयार की जाती हो। २-वेधशाला ३-वह स्थान जहाँ प्राचीनकाल में अपराधियों आदि को रखकर कई तरह की यंत्रणा दी जाती थी।

यंत्रण, यन्त्रण [संज्ञा पु.](सं.) १-रक्षा करना। २-बाँधना। नियंत्रण या नियम में रखना।

यंत्रणा, यन्त्रणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्लेश। यातना। २-दर्द। पीड़ा। वेदना।

यंत्रनाल, यन्त्रनाल [संज्ञा पु.] (सं.) वह नल जिसके द्वारा कूएं आदि से जल निकाला जाता है।

यंत्रपेषणी, यन्त्रपेषणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चक्की

यंत्रमंत्र, यन्त्रमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) जादू-टोना। टोटका।

यंत्रमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौसठ कलाओं में से एक जिसमें कई तरह के यन्त्र या कलें आदि बनाना और उनसे काम लेना सम्मिलित है।

यंत्रयुक्त, यन्त्रयुक्त [वि.] (सं.) देखो 'यंत्र-सज्ज'।

यंत्रराज, यन्त्रराज [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में वह यन्त्र जिससे ग्रहों और तारों की गति जानी जाती है।

यंत्र-विद्या, यन्त्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विद्या जिससे कलें या यन्त्र आदि चलाये और बनाये जाते हैं।

यंत्रशाला, यन्त्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहां अनेक प्रकार के यन्त्र रखे हों अथवा बनते हों। २-वेधशाला।

यंत्रशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यंत्रविद्या'।

यंत्र-सज्ज [वि.] (सं.) मशीनगनों तथा टैंकों आदि से युक्त और आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सजी हुई (सेना)।

यंत्रसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह सूत्र जिसके द्वारा कठपुतली नचाई जाती है।

यंत्रापीड़, यन्त्रापीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिससे शरीर में बहुत पीड़ा होती है।

यंत्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहां यन्त्र या कल आदि हों। २-छापाखाना। प्रेस।

यंत्राश, यन्त्राश [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग जो हिंडोलराग का पुत्र माना जाता है।

यंत्रिका, यन्त्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री की छोटी बहन। छोटी साली। [संज्ञा पु.] (सं.) ताला।

यंत्रित, यन्त्रित [वि.] (सं.) यन्त्र के द्वारा रोका या बन्द किया हुआ। ताले में बन्द।

यंत्री, यन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-यन्त्र-मन्त्र करने वाला। तांत्रिक। २-बाजा बजाने वाला ३-यन्त्र या मशीन की सहायता से काम करने वाला। ४-देखो 'यांत्रिक।

यंद [संज्ञा पु.] (डि.) स्वामी।

य [संज्ञा पु.] (सं.) १-यश। २-योग। ३-यान। सवारी। ४-संयम। ५-छन्दशास्त्रानुसार यगण का संक्षिप्त रूप और सूचक अक्षर। ६-यव। जौ। ७-यम। ८-प्रकाश। ६-त्याग।

यक [वि.] (हिं) देखो 'एक'।

यकअंगी [वि.] (हिं.) १-एक अङ्ग वाला। २-एक के साथ रहने वाला। ३-एक ही के आश्रित। एकनिष्ठ। ४-देखो 'एकांगी'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'एकांगी'।

यकक़लम [क्रि. वि.] (फा.) १-एक ही बार कलम चलाकर या कलम से लिखकर। २-एकाएक। एकबारगी।

यकता [वि.] (फा.) अद्वितीय। जो अपनी विद्या अथवा विषय में एक ही हो।

यकताई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) यकता या अद्वितीय होने का भाव। अद्वितीयता।

यकपरा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का कबूतर।

यक-बयक [क्रि. वि.] (हिं.) एकाएक। एक बारगी सहसा।

यक-बारगी [क्रि. वि.] (फा.) अचानक। सहसा।

यकसाँ [वि.] (फा.) एक समान। बराबर।

यकायक [क्रि. वि.] (फा.) अचानक। एकाएक। सहसा।

यकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'य' स्वरूप वर्ण।

यकीन [संज्ञा पु.] (अ.) विश्वास। एतबार।

यकीनन् [क्रि. वि.] (अ.) अवश्य। निःसंदेह। बेशक।

यकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेट में दाहिनी ओर की वह थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। २-तापतिल्ली नामक रोग। ३-पक्वाशय।

यकृदात्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झींगुर।

यक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-देवयोनि विशेष, जिनके राजा कुबेर हैं। यह लोग भी कुबेर के धनागारों की रखवाली करते हैं। २-कुबेर का नाम ३-इन्द्र के राजभवन का नाम।

यक्षकर्दम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुगंधित अङ्गलेप।

यक्षग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक प्रकार का कल्पित ग्रह जिसके आक्रमण से मनुष्य पागल हो जाता है।

यक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूजन करना। २-भक्षण करना। खाना।

यक्षतरु [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।

यक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यक्ष का भाव या धर्म।

यक्षत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यक्षता'।

यक्षधूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-गूगल। लोबान। २-तारपीन का तेल।

यक्षनायक [संज्ञा पु.] (सं) १-कुबेर। २-वर्तमान अवसर्पिणी के अर्हत के चौथे अनुचर का नाम। (जैन)

यक्षप [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

यक्षपति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

यक्षपुर [संज्ञा पु.] (सं.) अलकापुरी।

यक्षभृत् [वि.] (सं.) जिसका पूजन किया गया है

यक्षरस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ। मध्वासव।

यक्षराज [संज्ञा पु.] (सं.) यक्षों का राजा, कुबेर।

यक्षरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिक मास की पूर्णिमा जो यक्षों की रात मानी जाती है।

यक्षलोक [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोक जहाँ यक्ष निवास करते हैं।

यक्षवित्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके पास विपुल धन राशि तो हो, पर वह उसमें से व्यय एक कौड़ी भी न करे।

यक्षसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष की उपासना।

यक्षस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम। (पुराण)।

यक्षांगी, यक्षाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन

नदी का नाम।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

यक्षामलक [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडखजूर।

यक्षावास [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष। (वटवृक्ष पर यक्षों का निवास माना जाता है)।

यक्षिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यक्ष की पत्नी। २-कुबेर की पत्नी। ३-दुर्गा की एक अनुचरी का नाम। ४-यक्षजाति की स्त्री।

यक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर की पत्नी। २-यक्ष की स्त्री। [संज्ञा पु.] यक्ष का उपासक या साधक।

यक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो यज्ञ करता हो। २-एक वैदिक कालीन जनपद का नाम। ३-इस जनपद का निवासी।

यक्षेंद्र, यक्षेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

यक्षेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) यक्षों के स्वामी, कुबेर।

यक्ष्मग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष्मा नामक रोग।

यक्ष्मघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाख। अंगूर।

यक्ष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) क्षय नामक रोग। तपेदिक

यक्ष्मी [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष्मा रोग का रोगी। तपेदिक का बीमार।

यख़नी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-उबाले हुए मांस का रसा या शोरबा। २-केवल लहसन, प्याज, धनिया, अदरख और नमक डालकर उबाला हुआ मांस।

यगण [संज्ञा पु.] (सं.) छंदशास्त्र में आठ गणों में से वह जिसमें एक लघु और दो गुरु मात्राएँ होती हैं।

यगाना [वि.] (फ़ा.) १-आत्मीय। नातेदार। २-अकेला। फर्द। ३-अनुपम। अद्वितीय।

[संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-भाईबन्द। २-परममित्र।

यगर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी कालेरंग की होती है।

यग्य [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यज्ञ'।

यच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यक्ष'।

यच्छन [वि.] (सं.) दान देने वाला। चित्त हटाने वाला।

यच्छिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यक्षिणी'।

यजंत, यजन्त [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

यजत [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋत्विक्। २-एक वैदिक ऋषि का नाम।

यजति [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यज्ञ'।

यजत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्निहोत्री। २-वह जो यज्ञ करता हो।

यजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधिवत् यज्ञ करना। २-वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो।

यजनकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ अथवा हवन करने वाला।

यजमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ करन वाला। २-ब्राह्मणों की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उससे अपने धार्मिक कृत्य कराता है। ३-महादेव की आठ प्रकार की मूर्तियों में से एक।

यजमानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यजमान का भाव या धर्म।

यजमानत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यजमानता'।

यजमानलोक [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोक जिसमें यज्ञ करके मरनेवालों का निवास माना जाता है।

यजमानी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-यजमान का भाव या धर्म। २-पुरोहित की यजमानता के प्रति वृत्ति। ३-वह स्थान जहाँ किसी विशेष पुरोहित के यजमान रहते हों।

यजाक [वि.] (सं.) दान देने वाला।

यजिष्णु [वि.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

यजी [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

यजु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यजुर्वेद'।

यजुर्विद् [संज्ञा पु.] (सं.) यजुर्वेद का ज्ञाता। यजुर्वेद का जानकार।

यजुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से एक जिसमें यज्ञ कर्मों का विधान और विवरण है।

यजुर्वेदी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यजुर्वेद का ज्ञाता। यजुर्वेद का जानकार। २-यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करने वाला ब्राह्मण।

यजुश्रुति [संज्ञा पु.] (सं.) यजुर्वेद।

यजुष्पति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यजुष्पात्र [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में काम आने वाला पात्र विशेष।

यजुष्य [वि.] (सं.) यज्ञ-सम्बन्धी।

यजूवर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

यज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होते थे। मख। याग। २-विष्णु।

यज्ञक [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ। २-यज्ञ करने वाला।

यज्ञकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाला। याजक। यजमान।

यज्ञकर्म [संज्ञा पु] (सं.) यज्ञ का काम।

यज्ञकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञकाम [वि.] (सं.) यज्ञ की इच्छा करने वाला

यज्ञकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञादि के लिए शास्त्रों द्वारा निर्दिष्ट समय। २-पूर्णमासी।

यज्ञकीलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह खंभा जिसमें यज्ञीय पशु बाँधा जाता है।

यज्ञकुंड, यज्ञकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) हवन करने की वेदी या कुण्ड।

यज्ञकृत् [वि.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

यज्ञकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ की क्रियाओं का ज्ञाता। २-एक राक्षस का नाम।

यज्ञकोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ से द्वेष करने-वाला व्यक्ति। २-एक राक्षस जो रावण के दल में था।

यज्ञक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यज्ञ के काम। २-कर्मकांड।

यज्ञगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

यज्ञगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध का नाम।

यज्ञघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो यज्ञ विध्वंस करता हो। २-राक्षस।

यज्ञज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो यज्ञों के विधान का जानकार हो।

यज्ञछाग [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ-बलि देने का बकरा

यज्ञत्राता [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की रक्षा करने वाले, विष्णु।

यज्ञदक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दक्षिणा जो यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ करने वाले पुरोहित को दी जाती है।

यज्ञदत्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुत्र जो यज्ञ के प्रासादस्वरूप प्राप्त हुआ हो।

यज्ञद्रुह [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

यज्ञधर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञधूप [संज्ञा पु.] (सं.) धूना का वृक्ष।

यज्ञनेमि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यज्ञपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-यजमान

यज्ञपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यज्ञ की पत्नी, दक्षिणा। २-पुराणानुसार यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों की स्त्रियाँ।

यज्ञपथ [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की प्रणाली।

यज्ञपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम (पुराण)।

यज्ञपशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पशु जिसे यज्ञ में बलि चढ़ाया जाय। २-घोड़ा। ३-बकरा।

यज्ञपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) काठ के बरतन जो यज्ञ में काम आते हैं।

यज्ञपादप [संज्ञा पु.] (सं.) कंटकी नामक वृक्ष।

यज्ञपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

यज्ञपाल [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की रक्षा करने वाला

यज्ञपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का शेष।

यज्ञपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञफलद [संज्ञा पु] (सं.) विष्णु।

यज्ञबंधु, यज्ञबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञकर्म के सहकारी।

यज्ञबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि का एक नाम। २-शल्मलिद्वीप के एक राजा का नाम (पुराण)

यज्ञभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ का भाग या अंश, जो देवताओं को दिया जाता है। २-वे देवता जिनको यज्ञ का भाग मिलता है।

यज्ञभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञपात्र।

यज्ञभावन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञभूमि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञक्षेत्र।

यज्ञभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) कुश।

यज्ञभोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञमंडप, यज्ञमण्डप [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ मंडप।

यज्ञमंडल, यज्ञमण्डल [संज्ञा पु.](सं.) वह स्थान जो करने के लिए घेरा गया हो।

यज्ञमंदिर, यज्ञमन्दिर [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञशाला

यज्ञमय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञमहोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) वह भारी उत्सव जो यज्ञ के लिए किया गया हो।

यज्ञमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध जैनसाधु का नाम।

यज्ञमुख [संज्ञा पु.] (सं) यज्ञ का आरम्भ।

यज्ञमेनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

यज्ञयूप [संज्ञा पु.] (सं.) वह खंभा जिससे यज्ञ का बलि पशु बाँधा जाता है।

यज्ञयोग [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर का पेड़।

यज्ञरस [संज्ञा पु.] (सं.) सोम।

यज्ञराज [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

यज्ञरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

यज्ञलिंग, यज्ञलिङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) श्रीकृष्ण का नाम।

यज्ञवर्द्धन, यज्ञवर्धन [वि.] (सं.) यज्ञ को बढ़ाने वाला।

यज्ञवराह [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञवल्क [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञवल्क्यऋषि के पिता का नाम।

यज्ञवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

यज्ञवाट [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञमंडप का हाता.

यज्ञवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १–यजमान। २–कुमार कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

यज्ञवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १–यज्ञ करने वाला। २–ब्राह्मण। ३–शिव। ४–विष्णु।

यज्ञवाही [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञ का सब काम करने वाला।

यज्ञवीर्य [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

यज्ञवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १–बड़ का पेड़। २–विकंकत।

यज्ञव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाला.

यज्ञशत्रु [संज्ञा पु.](सं.) १–राक्षस। २–खर राक्षस के एक सेनापति का नाम (रामायण)।

यज्ञशाला [संज्ञा स्त्री.](सं.) यज्ञ करने का स्थान

यज्ञशास्त्र [संज्ञा पु.](सं.) वह शास्त्र जिसमें यज्ञों और उनके कृत्यों आदि का विवेचन हो। मीमांसा।

यज्ञशाल [वि.](सं.) यज्ञ करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

यज्ञशूकर [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञवराह। विष्णु।

यज्ञशेष [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने के बाद बचा हुआ उपस्कर।

यज्ञश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ का धन।

यज्ञश्रेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

यज्ञसंस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञभूमि। यज्ञस्थान

यज्ञसंस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ का आकार।

यज्ञसदन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञस्थान।

यज्ञसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १–यज्ञ का रक्षक। २–विष्णु।

यज्ञसाधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

यज्ञसार [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर का पेड़।

यज्ञसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ की समाप्ति।

यज्ञसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञोपवीत। जनेऊ।

यज्ञसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १–विदर्भ के एक राजा का नाम। २–विष्णु। ३–एक दानव का नाम

यज्ञस्तंभ, यज्ञस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) वह खंभा जिससे बलिपशु बाँधा जाता है।

यज्ञस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञमंडप।

यज्ञस्थाणु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यज्ञस्तभ'।

यज्ञस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञशाला।

यज्ञहृदय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञहोता [संज्ञा पु.] (सं.) १–यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला। २–उत्तम मनु के एक पुत्र का नाम।

यज्ञांग, यज्ञाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १–विष्णु। २–खैर का पेड़। ३–गूलर का वृक्ष।

यज्ञांगा, यज्ञाङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमलता।

यज्ञागार [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञशाला।

यज्ञात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञपुरुष। विष्णु।

यज्ञारि [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–राक्षस।

यज्ञार्थ [अव्य.] (सं.) यज्ञ के लिए।

यज्ञाशन [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

याज्ञिक [संज्ञा पु.] (सं.) १–यज्ञ के प्रसादस्वरूप प्राप्त पुत्र। २–पलास का पेड़।

यज्ञीय [वि.] (सं.) यज्ञ-सम्बन्धी। यज्ञ का। [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर का पेड़।

यज्ञेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यज्ञेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिस नामक घास।

यज्ञोपकरण [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञ के काम में आने वाली वस्तु।

यज्ञोपवीत [संज्ञा पु] (सं.) १–जनेऊ। २–उपनयन संस्कार।

यज्ञोपासक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो यज्ञ करता हो।

यज्य [वि.] (सं.) यजन करने योग्य।

यज्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १–यजमान। २–यजुर्वेदी ब्राह्मण।

यज्वा [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

यडर [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का पक्षी।

यत [वि.] (सं.) १–रोका हुआ। काबू में किया हुआ। संयत। २–नियंत्रित। नियमित। ३–दमन किया हुआ शासित।

यतन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रयत्न। उद्योग।

यतनीय [वि.] (सं.) यत्न करने के योग्य

यतमान [संज्ञा पु.] (सं.) १–यत्न करता हुआ। २–अनुचित विषयों का त्याग और उचित विषयों में मंद प्रवृत्ति के निमित्त यत्न करने वाला।

यतव्य [वि.] (सं.) प्रयत्न करने वाला।

यतव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो संयम से रहता हो।

यतः [अव्य.] (सं) इस कारण से कि। जब कि ऐसी अवस्था है। चूंकि। (इसका संबंधपूरक 'अतः' है)।

यति [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करली हो और जो सांसारिक जाल से विरक्त हो। त्यागी। संन्यासी। २–ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ३–नहुष के एक पुत्र का नाम। ४–छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें ५ गुरु और १४२ लघु मात्राएं या किसी-किसी के मतानुसार ५ गुरु और १३६ लघु मात्राएँ होती हैं। [संज्ञा स्त्री.] छन्दों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ विराम होता है। विश्राम। विराम। विरति।

यतिचांद्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) चांद्रायणव्रत विशेष जिसका विधान यतियों के लिए है।

यतित्व [संज्ञा पु.] (सं.) यति का भाव, धर्म या कम।

यतिधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यास।

यतिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–संन्यासी। २–विधवा।

यतिभंग, यतिभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) छन्द की रचना में वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है और जिसके कारण पढ़ने में छन्द की लय बिगड़ जाती है।

यतिभ्रष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह छन्द जिसमें यति-भंग दोष हो।

यतिसांतपन, यतिसान्तपन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चांद्रायणव्रत।

यती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–रोक। थाम। नियंत्रण। २–छन्द में विराम-स्थान। यति। ३–विधवा। ४–संधि। ५–मनोविकार। ६–विधवा। ७–शलकराग का एक भेद। [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. यतिनी] १–यति। संन्यासी। २

द्रिय। ३-श्वेतांबर जैनसाधु।

यतीम [संज्ञा पु.] (अ.) १-अनाथ। २-कोई अनुपम तथा अद्वितीय रत्न। ३-एक सीप में एक ही निकलने वाला बड़ा मोती।

यतीमखाना [संज्ञा पु.] (अ.,फा.) अनाथालय।

यतुका [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड़ का पौधा।

यत्किंचित्, यत्किञ्चित् [क्रि. वि.] (सं.) थोड़ासा। बहुत कम। कुछ।

यत्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्योग। प्रयत्न। कोशिश २-उपाय। तदबीर। ३-रक्षा का प्रबन्ध। हिफ़ाज़त। ४-चिकित्सा। उपचार। ५-नैयायिकों के मत से २४ गुणों के अंतर्गत एक गुण जो तीन तरह का होता है प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवनयोनि।

यत्नवान् [वि.] (सं.) प्रयत्न में लगा हुआ। यत्न करने वाला।

यत्नाक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) अलंकार शास्त्रानुसार आक्षेप का एक भेद।

यत्र [क्रि. वि.] (सं) जिस जगह। जहाँ। [संज्ञा पु.] (सं.) सामान्य यज्ञ।

यत्रतत्र [क्रि. वि.] (सं.) १-इधर-उधर। जहाँ-तहाँ। २-जगह-जगह। कई स्थानों में।

यत्रस्थ [वि.] (सं.) जहां-तहां रहने वाला.

यत्रु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छाती के ऊपर तथा गले के नीचे की मंडलाकार हड्डी। हँसली।

यथार्य [अव्य.] (सं.) यथा समय।

यथांश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के लिए निश्चित किया हुआ भाग जो उसे दिया जाय अथवा उससे लिया जाय। कोटा।

यथा [अव्य.] (सं.) जिस तरह। जैसे।

यथाकर्तव्य [वि.] (सं.) कर्तव्य के अनुसार जैसा करना चाहिए।

यथाकर्म [क्रि. वि.] (सं.) कर्म के अनुसार।

यथाकाम [वि.] (सं.) इच्छानुसार।

यथाकामी [वि.] (सं.) स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करने वाला।

यथाकामीविध्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति को यह घोषित करके छोड़ देना कि इसे जो चाहे, मार डाले। (चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल का एक दंड जो उस व्यक्ति को दिया जाता था जो बार बार चोरी अथवा गाँठ काटने के अपराध में पकड़ा गया हो)।

यथाकाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) यथेष्ट।

यथाकाय [अव्य.] (सं.) आकृति के समान।

यथाकार्य [वि.] (सं.) जैसा करने योग्य।

यथाकाल [संज्ञा पु.] (सं.) उपयुक्त समय में।

यथाकुल [अव्य.] (सं.) कुलधर्म के अनुसार।

यथाकुलधर्म [अव्य.] (सं.) जिस कुल का जैसा नियम हो उसी के अनुसार।

[illegible] [अन्य.] (सं.) रीति के अनुसार।

यथाक्रम [क्रि. वि.] (सं.) क्रमानुसार। क्रमशः।

यथाक्षम [अव्य.](सं.) अपनी सामर्थ्य भर। यथाशक्ति।

यथाख्यात-चरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) सब कषायों (काम, क्रोधादि पातकों) का जिन साधुओं ने क्षय किया हो, उनका चरित्र (जैनधर्म)।

यथाख्यान [संज्ञा पु.] [अव्य.] (सं.) आख्यान या कथा के अनुसार।

यथागत [वि.] (सं.) जैसा आया है वैसा।

यथागम [अव्य.] (सं.) शास्त्र के अनुरूप।

यथागात्र [अव्य.] (सं.) प्रत्येक शरीर में। हर एक देह में।

यथागुण [अव्य.] (सं.) गुण के अनुरूप।

यथागृह [अव्य.] (सं.) घर के समान।

यथाग्नि [अव्य.] (सं.) अग्नि जैसा।

यथाचार [अव्य.] (सं.) रीति के अनुसार।

यथाचारी [वि.] (सं.) पूर्व आचार के अनुसार चलने वाला।

यथाचिंतित, यथाचिन्तित [वि.] (सं.) चिन्तानुसार।

यथाजात [वि.] (सं.) १-मूर्ख। बेवकूफ। २-नीच।

यथाजाति [अव्य.] (सं.) जाति के अनुसार।

यथाज्ञप्त [वि.] (सं.) जैसी आज्ञा दिया गया हो

यथाज्ञान [अव्य.] (सं.) ज्ञान के अनुसार।

यथातत्व [अव्य.] (सं.) यथार्थ।

यथातथ [वि.] (सं.) जैसा हो, वैसा ही। ज्यों का त्यों।

यथातथशैली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्त्ति, चित्र, काव्यादि की रचना की वह शैली जिसमें प्रत्येक वस्तु ज्यों की त्यों तथा अपने मूलरूप में बिना अपनी ओर से घटाये-बढ़ाये दिखाई जाती है।

यथा-तथ्य [अव्य.] (सं.) ज्यों का त्यों। जैसा हो ठीक उसी के अनुसार अथवा वैसा ही।

यथात्मक [वि.] (सं.) प्रकृति के अनुसार।

यथादत्त [वि.] (सं.) जिस प्रकार का दिया गया हो।

यथादर्शन [अव्य.] (सं.) देखने के अनुसार।

यथादिष्ट [वि.] (सं.) जिस प्रकार कहा गया हो।

यथादीक्षा [अव्य.] (सं.) दीक्षा के अनुसार।

यथादृष्ट [अव्य.] (सं.) जैसा देखा गया हो।

यथाधर्म [अव्य.] (सं.) धर्मानुसार।

यथानियम [अव्य.] (सं.) नियमानुसार।

यथानुक्रम [क्रि. वि.] (सं.) क्रमानुसार। यथाक्रम।

यथान्याय [अव्य.] (सं.) न्यायानुसार। जो कुछ न्याय हो। वैसा।

यथापराध [अव्य.] (सं.) अपराध के अनुसार।

यथापूर्व [अव्य.] (सं.) १-जैसा पहले था, वैसा ही। २-ज्यों का त्यों।

यथाप्रदिष्ट [वि.] (सं.) जैसी आज्ञा दी गई हो।

यथाप्राण [अव्य.](सं.) शक्ति के अनुसार।

यथाप्रार्थित [अव्य.] (सं.) जैसी प्रार्थना की गई हो।

यथाप्रीति [अव्य.] (सं.) प्रेम के अनुसार।

यथाबल [अव्य.] (सं.) शक्ति के अनुसार। भरसक।

यथाबुद्धि [अव्य.] (सं.) बुद्धि के अनुसार।

यथाभक्ति [अव्यय] (सं.) भक्ति के अनुसार।

यथाभक्षित [वि.] (सं.) जिस प्रकार खाया गया हो।

यथाभाग [अव्यय] (सं.) १-भाग के अनुसार जितना चाहिये उतना। हिस्से के मुताबिक। २-यथोचित।

यथाभाजन [अव्यय] (सं.) पात्र के अनुसार।

यथाभिकाम [अव्यय] (सं.) रुचि के अनुसार।

यथाभिरुचित [अव्यय](सं.) इच्छा के अनुसार।

यथाभिलिखित [अव्यय] (सं.) लिखे के अनुसार।

यथाभिलषित [अव्यय] (सं.) इच्छानुसार।

यथामति [अव्यय] (सं.) बुद्धि या समझ के अनुसार।

यथामुख्य [अव्यय] (सं.) प्रधानता से।

यथाम्नाय [अव्यय] (सं.) वेदों के अनुसार।

यथायथ [क्रि. वि.] (सं.) जैसा चाहिये, वैसा। [वि.] (सं.) पूर्ववर्त्तियों का अनुयायी।

यथायुक्त [अव्यय] (सं.) यथोचित।

यथायुक्ति [अव्यय] (सं.) युक्ति के अनुसार।

यथायोग्य [अव्यय] (सं.) जैसा उचित हो, वैसा उपयुक्त। मुनासिब।

यथारंभ, यथारम्भ [अव्यय] (सं.) जिस प्रकार आरम्भ किया गया हो।

यथारथ* [अव्यय] (हि.) देखो 'यथार्थ'।

यथारुचि [अव्यय] (सं.) पसंद के मुताबिक।

यथारूप [अव्यय] (सं.) रूप के समान।

यथार्थ [अव्यय](सं.) १-ठीक। उचित। २-जैसा है वैसा। ३-सत्य।

यथार्थतः [अव्यय] (सं) यथार्थ में। वास्तव में सचमुच।

यथार्थता [अव्यय](सं.) यथार्थ का भाव। सचाई सत्यता। सच्चापन।

यथार्थवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्य कथन। २-एक पाश्चात्य साहित्यक-सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी पदार्थ का यथार्थरूप में वर्णन किया जाता है। रियलिज़्म।

यथार्थवादी [संज्ञा पु] (सं.) १-यथार्थ या सत्य

कहने वाला। २-वह जो साहित्य में यथार्थ-वाद-सिद्धान्त को माने। रियलस्ट।

यथार्हण [अव्यय] (सं.) योग्यतानुसार।

यथालब्ध [वि.] (सं.) जितना प्राप्त हो, उसीके अनुसार।

[संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार, जो कुछ मिल जाय उसी से संतुष्ट रहने की वृत्ति।

यथालाभ [वि.](सं.) जो कुछ मिले उसी के अनुसार।

यथावकास [अव्य.] (सं.) छुट्टी के मुताबिक।

यथावत् [अव्य.] (सं.) १-जैसा था, वैसा ही। २-जैसा चाहिए वैसा। पूर्ण रीति से। ३-अच्छी तरह।

यथावस्थित [अव्य.] (सं.) १-जैसा था, वैसा ही। २-सत्य। ठीक। ३-स्थिर। अचल।

यथाविध [अव्य.] (सं.) जिस प्रकार से।

यथाविधि [अव्य.] (सं.) विधि के अनुसार। विधिवत्।

यथाविहित [अव्य.] (सं.) जैसा विधान हो वैसा ही। विधि के अनुसार।

यथाशक्ति [अव्य.] (सं.) शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार। जहां तक हो सके। भरसक।

यथाशक्य [अव्य.] (सं.) जहाँ तक संभव हो। जहाँ तक हो सके। सामर्थ्य-भर। भरसक।

यथाशास्त्र [अव्य.] (सं.) शास्त्र के अनुसार। जैसा शास्त्रों में वर्णित है, वैसा।

यथाश्रय [अव्य.] (सं.) आश्रयस्थान के अनुरूप

यथाश्रुत [अव्य.] (सं.) यथाशास्त्र। शास्त्र के अनुकूल।

यथाश्रुति [अव्य.] (सं.) यथाश्रुत।

यथासंकल्पित, यथासङ्कल्पित [वि.] (सं.) जैसा मन में दृढ़ संकल्प किया गया हो।

यथासंख्य [अव्य.] (सं.) मित्रता भाव से।

यथासंदिष्ट, यथासन्दिष्ट [अव्य.] (सं.) जैसा कहा गया हो।

यथासंपद, यथासम्पदा [अव्य.] (सं.) शक्ति के अनुसार।

यथासंभव, यथासंभव [अव्य.] (सं.) जहाँ तक हो सके।

यथासंहित [अव्य.] (सं.) संहिता के अनुसार।

यथासमय [अव्य.] (सं.) १-ठीक समय पर। नियत समय पर। २-समयानुसार। जैसा समय हो वैसा।

यथासाध्य [अव्य.] (सं.) जहां तक हो सके। यथाशक्ति।

यथास्तुत [अव्य.] (सं.) जैसी स्तुति की गई हो।

यथास्थान [अव्य.] (सं.) ठीक जगह पर।

यथास्थित [वि.] (सं.) जैसा है वैसा ही रहने-वाला।

यथास्थित-समझौता [संज्ञा पु.](हिं.) वह समझौता जो अब तक चली आई हुई स्थिति को उसी रूप में बनाये रखने तथा चलाये चलने के लिए हो। स्टैंडस्टिल-एग्रिमेंट।

यथास्मृति [अव्य.] (सं.) स्मृति के प्रमाण के अनुसार।

यथास्व [अव्य.] (सं.) इच्छानुसार।

यथास्वैर [अव्य.] (सं.) चित्त के अनुसार।

यथाहार [अव्य.] (सं.) भोजन के अनुसार।

यथेच्छ [अव्य.](सं.) इच्छा के अनुसार। जितना अथवा जैसा चाहिए, उतना या वैसा।

यथेच्छक [वि.](सं.) मनमाना काम करने वाला।

यथेच्छाचार [संज्ञा पु.] (सं.) मनमाना काम करना। जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।

यथेच्छाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनमाना काम करने वाला। २-जो कुछ जी में आवे वही करने वाला। मनमौजी।

यथेच्छित [वि.] (सं.) इच्छानुसार। मनचाहा।

यथेप्सित [अव्य.] (सं.) जैसी इच्छा हो वैसा।

यथेष्ट [वि.] (सं.) जितना चाहिए उतना। भरपूर। पर्याप्त।

यथेष्टचारी [वि.] (सं.) इच्छानुसार घूमने वाला

यथेष्टाचरण, यथेष्टाचार [संज्ञा पु] (सं.) इच्छा के अनुसार व्यवहार करना। मनमाना काम करना।

यथेष्टाचारी [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मन के अनुसार व्यवहार करने वाला।

यथोक्त [अव्य.] (सं.) कहे हुए के अनुसार।

यथोक्तकारी [वि.] (सं.) १-शास्त्रों में जो कुछ कहा, वही करने वाला। २-आज्ञाकारी।

यथोक्तवादी [वि.] (सं.) उचित बोलने वाला।

यथोचित [वि.] (सं.) जैसा या जितना उचित हो वैसा या उतना।

यथोत्तर [अव्य.] (सं.) उत्तर के अनुसार।

यथोत्साह [अव्य.] (सं.) सामर्थ्य के अनुसार।

यथोदित [अव्य.] (सं.) कहने के मुताबिक।

यथोदिष्ट [वि.] (सं.) जैसा कहा गया हो।

यथोपदेश [अव्य.] (सं.) उपदेश के अनुसार।

यथोपपन्न [अव्य.] (सं.) जिस प्रकार प्राप्त हुआ हो।

यथोपपाद [अव्य] (सं.) यथासंभव।

यथोपयोग [अव्य.] (सं.) उपयुक्त प्रयोग।

यथोपाधि [अव्य] (सं.) उपाधि के अनुसार।

यदपि* [अव्य.] (हिं.) देखो 'यद्यपि'।

यदर्थ [वि.] (सं.) जिस कारण से।

यदा [अव्य.] (सं.) १-जिस समय। जब। २-जहाँ।

यदाकदा [अव्य.] (सं.) जबतब। कभी-कभी।

यदि [अव्य.] (सं.) अगर। जो।

यदिंच, यदिचेत् [अव्य.] (सं.) यद्यपि। अग

यदु [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा ययाति के ज्ये पुत्र का नाम जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ। २-पुराणानुसार हर्यश्व राजा के पु का नाम।

यदुध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक ऋषि का नाम।

यदुनंदन, यदुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-यदु कुल को आनन्द देने वाले। श्रीकृष्णचन्द्र। २-कृष्णचैतन्य के एक साथी भक्त।

यदुनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यदुपति, यदुभूप [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यदुराई* [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

यदुराज, यदुराट् [संज्ञा पु.](सं.) यदुकुल के रा श्रीकृष्ण।

यदुवंश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा यदु का कुल खानदान।

यदुवंशमणि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र।

यदुवंशी [संज्ञा पु.] (सं.) यदुकुल में उत्पन्न यादव।

यदुवर, यदुवीर, यदूत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) श्री कृष्णचन्द्र।

यदृच्छया [क्रि. वि.] (सं.) १-अकस्मात्। अचा नक। २-दैव संयोग से। ३-मनमाने ढंग से

यदृच्छायाभिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) [illegible] पांच भेदों में से एक। वह साक्षी जो घट के समय अकस्मात् आ गया हो।

यदृच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वेच्छाचार। मनमानापन। २-आकस्मिक संयोग। इ फाक।

यद्भविष्य [संज्ञा पु.] (सं.) अदृष्टवादी।

यद्वातद्वा [अव्य.] (सं.) कभी-कभी।

यद्यपि [अव्य.] (सं.) यदि ऐसा है ही। अगर्चे गोकि।

यम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ उत्पन्न दो का जोड़। यमज। २-दक्षिण दिशा के दि पाल। ३-इन्द्रियों को वश में रखना। नि ४-चित्त को धर्म में स्थिर रखने वाले क का साधन। ५-मृत्यु के देवता। यमराज। ६- कौआ। ७-शनि। ८-वायु। ९-विष्णु। १०- दो की संख्या। ११-यमज। जोड़े।

यमक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्दालंकार में प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द क बार भिन्न-भिन्न अर्थों में आता है। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येकचरण में एक न और दो लघुमात्राएँ होती हैं। ३-एक प्र का सैनिक व्यूह या जमाव। ४-एक उत्पन्न होने वाले दो बालक। यमज। ५- संयम।

यमकात, यमकातर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-

छुरा। २-एक प्रकार की तलवार।

यमकिंकर, यमकिङ्कर [संज्ञा पु.](सं.) यमदूत।

यमकीट [संज्ञा पु.] (सं.) केंचुवा।

यमकील [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यमक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) मरण। मृत्यु।

यमघंट, यमघण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलित-ज्योतिष के अनुसार एक दुष्टयोग जिसमें शुभ कार्य करना मना है। २-कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा। दीपावली के बाद का दिन।

यमचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज का अस्त्र।

यमज [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ जन्मे हुए दो बच्चों का जोड़ा। जुड़वाँ बच्चे। २-अश्विनीकुमार। ३-वह घोड़ा जिसका एक ओर का अंग हीन या दुर्बल हो तथा दूसरी ओर का वही अंग ठीक हो।

यमजात [संज्ञा पु.] देखो 'यमज'।

यमजातना [संज्ञा स्त्री] देखो 'यमयातना'।

यमजित् [संज्ञा पु.](सं.) मृत्यु जीतने वाले, मृत्युञ्जय।

यमत्व [संज्ञा पु.] (सं.) यम का भाव या धर्म।

यमदंड, यमदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज का डंडा। कालदंड।

यमदंष्ट्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक के मत से आश्विन, कार्त्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्टकाल, जिसमें रोग तथा मृत्यु का अधिक भय होता है।

यमदग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम के पिता का नाम।

यमदुतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यमद्वितीया।'

यमदूतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौआ। २-यम के दूत।

यमदूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

यमदेवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भरणीनक्षत्र जिसके देवता यम माने जाते हैं।

यमद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मलि या सेमर का पेड़।

यमद्वितीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिक-शुल्का द्वितीया। भाईदूज।

यमधार [संज्ञा पु.] (सं.) दुधारी तलवार।

यमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नियम से बाँधना। प्रतिबन्ध या निरोध करना। २-बन्धन। बांधना। ३-ठहराना। ४-रोकना। ५-यमराज

यमन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यवन'।

यमनकल्याण [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'एमन'।

यमनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं) भरणीनक्षत्र जिसके देवता यम माने जाते हैं।

यमनगर [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुरी।

यमनाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) यमराज।

यमनिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'यवनिका'।

यमनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

यमपट [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज के यहां पापियों को मिलने वाली यातनाओं के चित्र जिन्हें दिखाकर प्राचीनकाल में लोग घर-घर भीख मांगते फिरते थे।

यमपुर [संज्ञा पु.] (सं.) यमलोक।
यमपुर पहुंचना-मार डालना।

यमपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमलोक। यमपुर।

यमपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमराज। २-यम के दूत।

यमप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के दक्षिण में था।

यमप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।

यमभागिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना नदी

यममार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्युपथ।

यमयन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

यमया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष में एक नक्षत्र योग।

यमयातना [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-नरक की यातना या पीड़ा। २-मृत्यु के समय होने वाला शारीरिक या मानसिक कष्ट।

यमरथ [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा।

यमराज [संज्ञा पु.] (सं.) यमों के राजा धर्मराज जो मरने के बाद प्राणियों के कर्मों का विचार करके उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।

यमराज्य, यमराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) यमलोक।

यमल [संज्ञा पु.] (सं.) १-युग्म। जोड़ा। २-एक साथ उत्पन्न दो बालक। यमज।

यमलच्छद [संज्ञा पु] (सं.) कचनार।

यमदत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनेर। २-अशमंतक।

यमलसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो बच्चे एक साथ देने वाली गाय।

यमला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक प्रकार का हिचकी का रोग। २-एक प्राचीन नदी का नाम। ३-तांत्रिकों की एक देवी।

यमलार्जुन [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के दो पुत्रों का नाम जो नारद के शाप से गोकुल में अर्जुनवृक्ष हो गये थे जिनका उद्धार श्रीकृष्ण ने किया।

यमली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक में मिली दो वस्तुएँ। जोड़ी। २-स्त्रियों का घाघरा और चोली।

यमलोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह लोक जहाँ मरने पर लोग जाते हैं। यमपुरी। २-नरक।
यमलोक भेजना या पहुँचाना-मार डालना।

यमवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा।

यमवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल का पेड़।

यमव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का निष्पक्षपात शासन।

यमसदन [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुर।

यमसू [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। [संज्ञा स्त्री.] जिसके एक-ही गर्भ सेएक साथ दो बच्चों का जन्म हो।

यमसूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा घर जिसके पश्चिम उत्तर में शाला हो।

यमस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक दिन में संपन्न होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

यमस्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यमुना। २-दुर्गा।

यमहंता, यमहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) काल का विनाश करने वाला।

यमांतक, यमान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव

यमातिरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ जो ४६ दिनों में संपन्न होता है।

यमादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का एक रूप।

यमानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन।

यमानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन।

यमानुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमराज की छोटी बहिन, यमुना।

यमारि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

यमालय [संज्ञा पु.] (सं.) यमपुर।

यमिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

यमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यम की बहिन जो बाद में यमुना नदी के रूप में बही। [संज्ञा पु.] (हिं.) संयमी।

यमुंड, यमुण्ड [संज्ञा पु.] सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

यमुना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यम की बहन यमी। २-उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी जिसे हिन्दू लोग यम की बहन यमी का स्वरूप मानते हैं। ३-दुर्गा।

यमुनाभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम जिन्होंने अपने हल से यमुना के दो भाग किये थे।

यमुनोत्तरी [संज्ञा पु.] (सं.) गढ़वाल के पास का एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकली है।

यमेरुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समयसूचक वह घड़ियाल जो प्राचीनकाल में एक घड़ी के बाद बजाया जाता था।

यमेश [संज्ञा पु.] (सं.) भरणीनक्षत्र।

यमेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

ययाति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा नहुष के एक पुत्र का नाम जिसका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के साथ हुआ था।

ययातिपतन [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

ययातीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

ययावर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'यायावर'।

ययी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-घोड़ा। ३-मार्ग।

ययु [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-अश्वमेधयज्ञ

का घोड़ा।

यलधीस, यलनाथ [संज्ञा पु.] (डिं.) राजा।

यला [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पृथ्वी।

यलाइंद, यलापत [संज्ञा पु.] (डिं.) राजा।

यव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक अन्न जिसे जौ कहते हैं। २-बारह सरसों अथवा एक जौ की तौल ३-एक जौ या एक बटा तीन इंच की एक नाप। ४-वह वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो। ५-वेग। तेजी। ६-सामुद्रिक शास्त्रानुसार जौ के आकार की एक रेखा, जो अँगूठे में होती है जो बहुत शुभ मानी जाती है।

यवकंठक, यवकण्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) खेतपापड़ा।

यवक [संज्ञा पु.] (सं.) जौ।

यवकलश [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजौ।

यवक्रीत [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम जो भारद्वाज के पुत्र थे।

यवक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जिस का उल्लेख महाभारत में है।

यवक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) जौ के पौधे को जलाकर निकाला हुआ क्षार।

यवचतुर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैशाखसुदी-चौथ

यवज [संज्ञा पु.] (सं.) १-यवक्षार। २-गेहूँ का पौधा। ३-अजवायन।

यवतिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शंखनी नामक लता। २-चौलाई या मरसे का साग।

यवदोष [संज्ञा पु] (सं.) रत्न में पड़ी हुई जौ के आकार की एक रेखा जिससे वह दूषित समझा जाता है।

यवद्वीप [संज्ञा पु.](सं.) आधुनिक जावाद्वीप का प्राचीन नाम।

यवन [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. यवनी] १-यूनान देश का निवासी। २-मुसलमान। ३-तेज घोड़ा। ४-वेग। तेज।

यवनप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च।

यवनाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) यवन जाति का एक ज्योतिषाचार्य।

यवनानी [वि.] (सं.) यवन या यूनान देश-संबंधी यूनान का। [संज्ञा स्त्री.] १-यूनान की भाषा २-यूनान की लिपि।

यवनारि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यवनाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जुआर का पौधा। २-जुआर। ३-जौ के डंठल।

यवनालज [संज्ञा पु.](सं.) जवाखार। यवक्षार।

यवनाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) मिथलादेश के एक प्राचीन राजा का नाम।

यवनिका [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनात। २-नाटक का परदा।

यवनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-यवन की स्त्री। २-यवन जाति की स्त्री।

यवनेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीसा। २-मिर्च। ३-लहसुन। ४-नीम। ५-प्याज। ६-गाजर। ७-शलजम।

यवफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रजौ। २-कुटज। ३-प्याज। ४-जटामासी। ५-बाँस। ६-प्लक्ष या पाकड़वृक्ष।

यवबिंदु, यवबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) बिंदुसहित रेखा वाला हीरा।

यवमंड, यवमण्ड [संज्ञा पु.](सं.) जौ का मांड

यवमंथ, यवमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) जौ का सत्तू।

यवमती [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके विषम चरणों में से एक रगण और दो जगण होते हैं तथा समचरणों में जगण, रगण और एक गुरु होता है।

यवमद्य [संज्ञा पु.] (सं.) जौ की बनी हुई शराब

यवमध्य [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का चांद्रायण-व्रत।

यवलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मांस।

यवलास [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार।

यववर्णाभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

यवशाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साग।

यवशूक [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार।

यवश्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का श्राद्ध।

यवस [संज्ञा पु.] (सं.) भूसा।

यवसुर [संज्ञा पु.] (सं.) जौ की शराब।

यवागू [संज्ञा पु.] (सं.) जौ या चावल के माँड़ की काँजी।

यवाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) जौ का भूसा।

यवाग्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-यवक्षार। २-अजवायन।

यवान [वि.] (सं.) तेज। क्षिप्र।

यवानिका, यवानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवायन

यवाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) जौ की काँजी।

यवाश [संज्ञा पु.] (सं.) जौ की फसल को हानि पहुँचाने वाला। एक प्रकार का कीड़ा।

यवास [संज्ञा पु.] (सं.) जवासा नामक काँटेदार क्षुप।

यविष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा भाई। २-अग्नि ३-ऋग्वेद के एक मंत्र के द्रष्टा ऋषि का नाम [वि.] सब से छोटा।

यवीनर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अजमीढ़ के एक पुत्र का नाम। २-द्विमीढ़ के एक पुत्र का नाम।

यवीयुध [वि.] (सं.) रणप्रिय।

यवोदर [संज्ञा पु.] (सं.) जौ का मध्य भाग।

यवोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार।

यव्यावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैदिककालीन एक नदी। २-वैदिककालीन एक नगरी।

यश [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अच्छा काम करने से होने वाला नाम या ख्याति। नेकनामी। कीर्ति। २-प्रशंसा। बड़ाई। यश कमाना या लूटना–प्रसिद्धि प्राप्त करना। यश गाना–प्रशंसा करना। २-एहसान मानना। यश मानना–कृतज्ञ होना। एहसान मानना।

यशद [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की धातु। २-जस्ता।

यशब, यशम [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का हरा पत्थर जो चीन और लंका में होता है।

यशःशेष [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु। [वि.] मृत। मरा हुआ।

यशस्कर [वि.] (सं.) कीर्तिकारक।

यशस्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यश बढ़ाने वाली विद्या।

यशस्काम [वि.] (सं.) यश की कामना करने वाला।

यशस्कृत [वि.] (सं.) बड़ाई करने वाला।

यशस्यु [वि.] (सं.) यश चाहने वाला।

यशस्वान [वि.](हिं.) [स्त्री. यशस्वती] यशस्वी। कीर्तिमान्।

यशस्विनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वनकपास। २-गंगा। ३-महाज्योतिष्मती।

यशस्वी [वि.] (सं.) जिसका खूब यश हो।

यशी [वि.] (सं.) कीर्त्तिमान्। यशस्वी।

यशील [वि.] (हिं.) यशस्वी।

यशुमति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'यशोदा'

यशोघ्न [वि.] (सं.) यश का नाश करने वाला।

यशोद [संज्ञा पु.] (सं.) पारा। [वि.] यश देने वाला।

यशोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। २-दुलीप की माता का नाम। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक जगण और दो गुरु वर्ण होते

यशोधन [वि.] (सं.) यश ही जिसका एक धन है।

यशोधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो रुकमणि के गर्भ से उत्पन्न था। २-जैनियों के उत्सर्पिणी के एक का नाम। [वि.] यशस्वी।

यशोधरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-गौतमबुद्ध की स्त्री का नाम। २-सावनमास की चौथी रात।

यशोधरेय [संज्ञा पु.] (सं.) यशोधरा का पुत्र राहुल।

यशोधा [वि.] (सं.) यशस्वी।

यशोधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहिष्णु की स्त्री जो कामदेव की माता थी।

यशोभाग्य [वि.] (सं.) कीर्तिमान्। यशस्वी।

यशोभृत् [वि.] (सं.) यशस्वी।

यशोमती [संज्ञा स्त्री.](सं.) यशस्विनी।

यशोमत्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक जाति जिसका उल्लेख मार्कण्डेयपुराण में मिलता है।

यशोमाधव [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

यशोवर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

यष्टव्य [वि.] (सं.) यज्ञ के योग्य ।

यष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छड़ी । लाठी । २-पताका का डंडा । ३-टहनी । शाखा । डाल । ४-मुलेठी । ५-मोतियों की माला । ६-ताँत । ७-लता । वेल । ८-बहू । बाँह ।

यष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीतर पक्षी । २-मजीठ । ३-डंडा ।

यष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथ में रखने की लाठी या छड़ी । २-मुलेठी । ३-बावली । ४-हार, जो गले में पहना जाता है ।

यष्टिकाभरण [संज्ञा पु.] (सं.) जल को ठंडा करने का उपाय विशेष जो सुश्रुत में लिखा है ।

यष्टिमधु [संज्ञा पु.] (सं.) मुलेठी ।

यष्टियंत्र, यष्टियन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) धूप में समय ज्ञात करने के लिए छड़ी गाड़कर बनाया हुआ यंत्र विशेष ।

यष्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोतियों की माला जिसमें बीच-बीच में मणि भी हो । २-मुलेठी

यष्टीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आभूषण जो कान में पहना जाता है ।

यह [सर्व.] (हिं.) एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त निकटवर्त्ती सभी संज्ञाओं या बातों के लिए होता है ।

यहाँ [क्रि. वि.] (हिं.) इस स्थान पर । इस जगह

यहि [सर्व.] (हि.) १-पुरानी हिन्दी में 'यह' का वह रूप जो उसे कोई विभक्ति लगाने से पहले प्राप्त होता है । २-इसको । इसे ।

यही [अव्य.] (हिं.) 'यह ही' का संक्षिप्त रूप । निश्चित रूप से यह ।

यहूद [संज्ञा पु.] (इब्रानी) वह देश जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुये थे ।

यहूदी [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. यहूदिन] १-यहूद देश का निवासी । २-शामी जाति के अन्तर्गत एक जाति जो आर्यजाति से भिन्न थी

यहूयहू [संज्ञा पु.] (देश.) कबूतर की एक जाति ।

याँ+ [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'यहाँ' ।

यांचना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'याचना' । ※ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'याचना' ।

यांचा, याच्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सविनय मांगना ।

यांत्रिक, यान्त्रिक [वि.] (सं.) यन्त्र-सम्बन्धी । यंत्र या यंत्रों का । [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो यंत्रों का बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो । यंत्र विद्या का जानकार । मेकैनिक ।

यांत्रीकरण, यान्त्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-यन्त्रों आदि से युक्त या सज्जित करना । २-कल कारखाने आदि स्थापित करना ।

या [अव्य.] (फा.) विकल्पसूचक शब्द । यदि यह न हो । अथवा । वा । [सर्वनाम, वि.] (हि.) ब्रजभाषा में 'यह' का कारक चिह्न लगाने के पहले का रूप । [संज्ञा पु.] (सं.) १-योनि २-गति । चाल । ३-रथ । गाड़ी । ४-रोक । अवरोध । ५-लाभ । प्राप्ति । ६-ध्यान ।

याक [संज्ञा पु.] (हि.) हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल, जिसकी पूँछ का चमर बनता है +[वि.] (हिं.) देखो 'एक' ।

याक़ूत [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का लाल रंग बहुमूल्य पत्थर । लाल ।

याग [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ ।

यागकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का कार्य ।

यागकाल [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने का उपयुक्त समय ।

यागमंडप, यागमण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ-मंडप । यज्ञशाला ।

यागसंतान, यागसन्तान [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र के पुत्र जयंत का एक नाम ।

यागसिद्ध [वि.] (सं.) यज्ञ द्वारा सिद्धि प्राप्त ।

यागसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञोपवीत ।

याचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-याचना करने या मांगने वाला । २-भिखारी ।

याचना [क्रि. स.] (हि.) कुछ पाने के लिये विनती या प्रार्थना करना । माँगना । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांगने की क्रिया ।

याचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो । निवेदन-पत्र । प्रार्थनापत्र । पिटिशन ।

याचित [वि.] (सं.) माँगा हुआ ।

याचितक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी से कुछ दिन के लिये मांगी हुई चीज ।

याच्य [वि.] (सं.) मांगने योग्य ।

याज् [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करने वाला । याजक ।

याज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न । २-एक ऋषि का नाम ।

याजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ करने वाला । २-राजा का हाथी । ३-मस्त हाथी ।

याजन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करना ।

याजनीय [वि.] (सं.) यज्ञ करने योग्य ।

याजमान [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में यजमान का किया हुआ काम ।

याजयिता [वि.] (सं.) यज्ञ करने वाला । पुरोहित

याजि, याजी [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ करना ।

याजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूजा के समय दिया जाने वाला उपहार ।

याजुष [वि.] (सं.) [स्त्री. याजुषी] यजुर्वेद-संबंधी

याजुषी-अनुष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) सात वर्णों का एक वैदिक छन्द ।

याजुषी-उष्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) सात वर्ण का एक वैदिक छन्द ।

याजुषी-गायत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छः वर्णों का एक वैदिक छन्द का नाम ।

याजुषीजगती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारह वर्णवाला एक वैदिक छंद का नाम ।

याजुषीत्रिष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) ग्यारह वर्ण का एक वैदिक छंद ।

याजुषीपंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद जिसमें दस वर्ण होते हैं ।

याजुषीबृहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौ वर्णों वाला एक वैदिक छंद ।

याज्य [वि.] (सं.) १-यज्ञ कराने योग्य । २-जो यज्ञ में दिया जाय । ३-जो यज्ञ से प्राप्त हो (दक्षिणा) ।

याज्ञ [वि.] (सं.) यज्ञ-संबंधी । यज्ञ का ।

याज्ञतूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम ।

याज्ञदत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर ।

याज्ञवल्क्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशम्पायन के शिष्य थे । २-एक ऋषि जो राजा जनक के दरबार में रहते थे । ३-योगीश्वर याज्ञवल्क्य के वंशधर एक स्मृतिकार ।

याज्ञसेनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रौपदी का एक नाम ।

याज्ञिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ करने या कराने वाला । २-गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

याज्ञिय [वि.] (सं.) यज्ञ-संबंधी ।

यात [वि.] (सं.) १-लब्ध । पाया हुआ । २-ज्ञात । जाना हुआ ।

यातन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परिशोध । बदला । २-पारितोषिक । इनाम ।

यातना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तकलीफ़ । पीड़ा । २-दंड की वह पीड़ा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है ।

यातव्य [वि.] (सं.) १-आक्रमण के योग्य (शत्रु) । २-जिस पर आक्रमण किया जाने वाला हो ।

याता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पति के भाई की पत्नी । देवरानी या जिठानी । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सारथी । २-जाने वाला । ३-मार डालने वाला

यातायात [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने की क्रिया या साधन कम्यूनिकेशन ।

यातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-आने वाला । २-पथिक । ३-राक्षस । ४-काल । ५-वायु । हवा । ६-कष्ट । यातना । ७-हिंसा । ८-अस्त्र

यातुघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुल ।

यातुधान [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस ।

यातुमत् [वि.] (सं.) हिंसायुक्त ।

यातुविद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऐंद्रजालिक । जादूगर ।

यातुहन् [वि.] (सं.) इन्द्रजाल को नष्ट करने वाला ।

यातृक [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक । बटोही ।

यातोपयात [संज्ञा पु.] (सं.) आनाजाना ।

यात्निक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों का एक सम्प्रदाय।

यात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया। सफर। २-धार्मिक उद्देश्य अथवा श्राद्धभक्ति से पवित्र स्थान पर दर्शन, पूजा आदि के लिये जाना। ३-प्रस्थान। प्रयाण। ४-उत्सव। ५-व्यवहार ६-एक प्रकार का अभिनय जिसमें नाचना, गाना दोनों होते हैं।

यात्राकार [संज्ञा पु.] (सं) यात्रा करने वाला।

यात्रानाल [संज्ञा पु.](हि.) यात्रियों को देवदर्शन कराने वाला पंडा।

यात्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-यात्रा का प्रयोजन। २-पथिक। यात्री। ३-यात्रा की सामग्री। [वि.] १-यात्रा-सम्बन्धी। २-जो बहुत समय से चला आया हो। प्रथानुकूल।

यात्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-यात्रा करने वाला। मुसाफिर। २-तीर्थापटन करने वाला।

याथाकामी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इच्छानुसार काम करने वाला।

याथाकाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छानुसार।

याथातथ्य [संज्ञा पु.](सं.) यथातथ होने का भाव ज्यों का त्यों होना।

याथात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मानुरूपता।

याथार्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) यथार्थ होने का भाव। वास्तविकता।

यादःपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-वरुण।

याद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-स्मरणशक्ति। मेधाशक्ति। २-स्मरण करने की क्रिया। [संज्ञा पु.] (हि.) जलजन्तु।

यादईश [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-वरुण।

यादगार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) स्मृति चिह्न। स्मारक

याददाश्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-स्मरणशक्ति। २-स्मरण रखने के लिए लिखी हुई बात।

यादव [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. यादवी] १-यदु के वंश के लोग। २-श्रीकृष्ण। [वि.] यदु-सम्बन्धी।

यादवक [संज्ञा पु.] (सं.) यदु के वंशज।

यादवगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

यादवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यदुकुल की स्त्री। २-दुर्गा।

यादवेंद्र, यादवेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

यादु [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। पानी। २-कोई तरल पदार्थ।

यादुविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भौतिकविद्या।

यादुर [वि.] (सं.) वीर्यवान्।

यादृश [वि.] (सं.) जिस प्रकार का। जैसा।

यादृच्छिक-आधि [संज्ञा स्त्री.](सं.) गिरवी रखी हुई वस्तु जो बिना ऋण चुकाये [illegible] लौटाई जाय।

याद्व [वि.] (सं.) १-यदुवंशी। २-यदु-संबंधी।

यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी भी तरह की सवारी। वाहन। २-विमान। ३-शत्रु पर आक्रमण करना। ४-गति।

यानपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज।

यानभंग, यानभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जहाज नष्ट होना।

यान-भत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) वह भत्ता जो किसी को कहीं आने-जाने के लिए, सवारी के खर्च के रूप में मिले। कन्वेयेन्स एलाउएन्स।

यानवाह [संज्ञा पु.] (सं.) रथ हाँकने वाला।

यानशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान या घर जहां रथ, गाड़ी आदि रखे जाते हैं।

यानी, याने [अयय](अ.) तात्पर्य यह है। अर्थात्

यापक [वि.] (सं.) १-प्राप्त करने वाला। २-वह जिसके नाम कोई वस्तु भेजी और जिसका नाम उस पर लिखा हो। ऐड्रेसी।

यापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलाना। वर्तन। २-विताना। व्यतीत करना। ३-निबटाना। ४-छोड़ना। परित्याग। ५-मिटाना।

यापना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चलाना। हाँकना। २-दिन काटना। ३-व्यवहार। ४-जीविका चलाने के निमित्त दिया जाने वाला धन।

यापनीय [वि.] (सं.) यापना करने के योग्य।

यापित [वि.](सं.) विताया या व्यतीत किया हुआ (समय)।

याप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटा।

याप्य [वि.] (सं.) १-निंदित। २-यापन करने के योग्य। ३-छिपाने के योग्य। गोपनीय। ४-रक्षा करने के योग्य। रक्षणीय। [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा रोग जो साध्य न हो, पर चिकित्सा से प्राणघातक न होने पावे।

याबू [संज्ञा पु.] (फा.) टट्टू। छोटे आकार का घोड़ा।

याभ [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन।

याम [संज्ञा पु.](सं.) १-एक पहर या तीन घंटे का समय। २-काल। समय। ३-एक प्रकार के देवगण। [वि.] (सं.) यम-सम्बन्धी। ❀ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रात।

यामक [संज्ञा पु.] (सं.) पुनर्वसुनक्षत्र।

यामकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुलवधू। २-पुत्रवधू। ३-बहिन।

यामघोष [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्गा।

यामघोषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समय सूचित करने के लिये बजाया जाने वाला घंटा। घड़ियाल।

यामतूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह तुरही जो समय की सूचना देने के लिये बजाई जाती हो।

यामदुंदुभि, यामदुन्दुभि [संज्ञा पु.] (सं.) नगाड़ा।

यामनाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समय बताने वाली घड़ी।

यामनेमि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

यामल [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुड़वां बच्चे। यम सन्तान। २-एक प्रकार का तन्त्रग्रन्थ।

यामवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

यामश्रुत [वि.] (सं.) जो जल्दी से सुना गया हो

यामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चांदनी रात।

यामाता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'जामाता'।

यामायन [संज्ञा पु.] (सं.) यम का गोत्र।

यामार्द्ध, यमार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक पहर का आधा भाग।

यामि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुलवधू। २-बहिन। ३-रात। ४-धर्म की एक स्त्री का नाम। ५-पुत्री। ६-पुत्रवधु। ७-दक्षिण दिशा।

यामिक [संज्ञा पु.] (सं.) पहरेदार।

यामिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

यामित्र [संज्ञा पु.] देखो 'जामित्र'।

यामित्रवेध [संज्ञा पु.] देखो 'जामित्रवेध'।

यामिन, यामिनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'यामिनी'।

यामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात। २-हल्दी। ३-कश्यप की एक पत्नी का नाम।

यामिनीचर [संज्ञा पु] (सं.) १-निशाचर। २-उल्लू पक्षी। ३-गुग्गुल।

यामिनीपति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

यामीर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

यामीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात।

यामुंदायनि [संज्ञा पु.] (सं.) यामुंद ऋषि के गोत्र में उत्पन्न अत्य।

यामुन [वि.] (सं.) यमुनानदी-विषयक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-यमुनातट पर बसने वाले २-एक पर्वत का नाम। ३-एक तीर्थ का नाम। ४-सुरमा। अंजन। ५-एक वैष्णव आचार्य का नाम जो रामानुजाचार्य के गुरु थे। हिता के अनुसार एक जनपद का नाम।

यामुनेष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा।

यामेय [संज्ञा पु.](सं.) १-भानजा। २-धर्म के पुत्र का नाम जो यामी से उत्पन्न हुआ था।

याम्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंदन। २-शिव। विष्णु। ४-यमदूत। ५-अगस्त्यमुनि। [वि.] (सं.) १-यम-सम्बन्धी। यम का। दक्षिण का।

याम्यदिग्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

याम्यद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल का वृक्ष।

याम्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्षिण दिशा। भरणीनक्षत्र।

याम्यायन [संज्ञा पु] (सं.) दक्षिणायन।

याम्नोत्तर दिगंश [संज्ञा पु.] (सं.) लंबांश। दिगंश।

याम्योत्तर-रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कल्पित रेखा जो सुमेरू और कुमेरू से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है।

यायावर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अश्वमेध का घोड़ा २-घूमता-फिरता रहने वाला साधु या संन्यासी ३-याचना। ४-साग्नि ब्राह्मण। ५-याचना। ६-मुनियों के एक गण का नाम।

यायी [वि.] (सं.) [यायिनी] जाने वाला। जो जा रहा हो।

यार [संज्ञा पु.] (फा.) १-मित्र। दोस्त। २-किसी स्त्री का उपपति। जार।

यारकंद [संज्ञा पु.] (तु.) एक प्रकार का बेलबूटा जो गलीचे पर बनाया जाता है।

यारबाश [वि.] (अ.) मित्रमंडली में रहकर समय बिताने वाला। रसिक।

याराना [संज्ञा पु.] (फा.) १-मित्रता। मैत्री। २-स्त्री तथा पुरुष की अनुचित रूप से की हुई मैत्री।

यारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मित्रता। मैत्री। २-स्त्री तथा पुरुष की अनुचित-सम्बन्ध वाली मैत्री।

यार्कायन [संज्ञा पु.] (सं.) यर्क ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष।

याल [संज्ञा स्त्री.] (तु.) घोड़े की गरदन के ऊपरी बाल। अयाल।

याव [संज्ञा पु.] (सं.) १-जौ का सत्तू। २-लाख ३-महावर। [वि.] १-यव या जौ का बनाया हुआ। २-यव का। यव-सम्बन्धी।

यावक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जौ। २-जौ का सत्तू। ३-बोरोधान। ४-साठी धान। ५-उड़द। माष। ६-लाख। ७-महावर।

यावच्छक्य [अव्य.] (सं.) यथाशक्ति।

यावच्छस्त्र [अव्य.] (सं.) जहां तक शस्त्र जा सके

यावच्छेष [अव्य.] (सं.) जितना बच गया हो।

यावच्छ्रेष्ठ [वि.] (सं.) बहुत बढ़िया।

यावज्जन्म [अव्य.] (सं.) जीवनभर। जन्मभर।

यावज्जीवन [क्रि. वि.] (सं.) जब तक जीवन रहे। जन्मभर।

यावत् [अव्य.] (सं.) १-जब तक। जिस समय तक। २-सब। कुल। [वि.] १-जितना। २-सब। कुल।

यावत्काम [अव्य.] (सं.) इच्छा के अनुसार।

यावत्सत्त्व [अव्य.] (सं.) यथा बल। यथाशक्ति।

यावत्प्रमाण [अव्य.] (सं.) जहांतक।

यावदंत, यावदन्त [अव्य.] शेष तक।

यावदर्थ [वि.] (सं.) आवश्यकता के अनुसार।

यावदायुष् [अव्य.] (सं.) आजीवन।

यावदीप्सित [अव्य.] (सं.) जितनी इच्छा हो।

यावदुक्त [अव्य.] (सं.) कथनानुसार। कहे के मुताबिक।

यावदुत्तम [अव्य.] (सं.) शेष सीमा तक।

यावद्गम [अव्य.] (सं.) जितना शीघ्र जाना संभव हो।

यावद्बल [अव्य.] (सं.) शक्ति के अनुसार।

यावद्भाषित [अव्य.] (सं.) जितना कहा गया हो

यावद्वेद [अव्य.](सं.) जहां तक जाना गया हो।

यावद्व्यांप्ति [अव्य.] (सं.) अन्त तक।

यावन [संज्ञा पु.] (सं.) लोबान। [वि.] [स्त्री. यावनी] यवन का। यवन-सम्बन्धी।

यावनक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल अरण्डी।

यावनकल्क [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस।

यावनल [संज्ञा पु.] (सं.) मक्का। ज्वार।

यावनाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मक्का या ज्वार की बनी चीनी।

यावनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ईख। रसाल। [वि.] [स्त्री. प्र.] यवन-संबंधी।

यावनीकरण [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी वस्तु कार्य आदि को यावनी रूप में लाना। २-मुसलमानों का अन्य धर्मावलम्बी लोगों को अपने धर्म का अनुयायी अथवा मुसलमान बनाना।

यावन्मात्र [अव्य.] (सं.) थोड़ा-थोड़ा।

यावर [वि.] (फा.) सहायक। मददगार।

यावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मित्रता। मैत्री।

यावशूक [संज्ञा पु.] (सं.) यवक्षार। जवाखार।

यावस [संज्ञा पु.] (सं.) घास डंठल आदि का पूला।

याविक [संज्ञा पु.] (सं.) मक्का (अन्न)।

यावी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शंखिनी। २-यवतिक्तालता।

याव्य [संज्ञा पु.] (सं.) यवाक्षार। जवाखार।

याष्टीक [संज्ञा पु.] (सं.) लठबंध योद्धा। लठैत

यास [संज्ञा पु.](सं.) लाल धमासा।

यासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोयल। २-मैना।

यासु* [सर्व.] (हिं.) देखो 'जासु'।

यास्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रसिद्ध ऋषि जो वैदिक निरुक्त के रचयिता थे। २-यस्कऋषि के गोत्रज।

यास्कायनि [संज्ञा पु.] (सं.) यास्त्र गोत्रोत्पन्न पुरुष।

याहि*+ [सर्व.] (हिं.) इसको। इसे।

यियक्षु [वि.] (सं.) यज्ञ करने का इच्छुक।

यियासु [वि.] (सं.) जाने की इच्छा रखने वाला

युजन, युञ्जन [क्रि. अ.] (सं.) कर्मों से जुड़ना। कर्मों से युक्त होना।

युजान, युञ्जान [संज्ञा पु.] (सं.) १-सारथी। २-विप्र। ३-दो प्रकार के योगियों में से वह जो समाधि लगाकर सब बातें जान लेता है।

युजानक, युञ्जानक [संज्ञा पु.] (सं.) युंजान नामक योगी।

युक्त [वि.] (सं.) १-किसी के साथ जुड़ा या मिला हुआ। संयुक्त। २-सम्मिलित। ३-नियुक्त। मुकर्रर। ४-आसक्त। ५-सम्पन्न पूर्ण। ६-उचित। संगत। ठीक। मुनासिब। [संज्ञा पु.] १-योगाभ्यास किया हुआ योगी। २-चार हाथ का एक मान। रैवतमनु के पुत्र का नाम।

युक्तकारी [वि.] (सं.) ठीक काम करने वाला।

युक्तदंड, युक्तदण्ड [वि.] (सं.) उपयुक्त सजा। ठीक सजा।

युक्तरथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध जिसका प्रयोग वस्तिकरण में किया जाता है।

युक्तरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंध रास्ना। गंधनाकुली। २-रासन। रास्ना।

युक्तरूप [अव्य.] (सं.) ठीक।

युक्तश्रेयसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधरास्ना।

युक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एलापर्णी। २-एक वर्णवृत्त जिसमें दो नगण और एक मगण होता है।

युक्तायस् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लोहे का अस्त्र जो प्राचीनकाल मे होता था।

युक्तार्थ [वि.] (सं.) ज्ञानी।

युक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपाय। तरकीब। ढंग। २-कौशल। चातुरी। ३-चाल। रीति। प्रथा। ४-न्याय। नीति। ५-अनुमान। अंदाजा। ६-हेतु। कारण। ७-तर्क। ८-उचित विचार। ठीक तर्क। ९-योग। मिलन। १०-साहित्य में एक अलंकार जिसमें अपने मर्म को छिपाने के लिए दूसरे को किसी क्रिया अथवा युक्ति द्वारा वंचित करने का वर्णन होता है।

युक्तिकर [वि.] (सं.) जो तर्क या दलील के अनुसार ठीक हो। उचित विचारपूर्ण। युक्तिसंगत।

युक्तिज्ञ [वि.] (सं.) ठीक युक्ति या तर्क जानने वाला।

युक्तियुक्त [वि.] (सं.) युक्ति अथवा तर्क के अनुसार ठीक। तर्कसंगत। वाजिब।

युक्तिशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमाणशास्त्र।

युगंधर, युगन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कूबर। हरस। २-गाड़ी का बम। ३-एक पर्वत का नाम। ४-हरिवंश के मतानुसार तूणि के पुत्र का नाम।

युग [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ा। युग्म। २-जुआ। जुआठ। ३-ऋद्धि और सिद्धि नामक दो औषधियां। ४-पुश्त। पीढ़ी। ५-पांसे के खेल की वे दो गोटियां जो एक घर में साथ बैठें। ६-समय। जमाना। ७-पुराणानुसार काल के यह चार परिमाण या विभाग सतयुग त्रेता, द्वापर और कलि। ८-इतिहास का कोई ऐसा बड़ा काल मान जिसमें बराबर एक ही प्रकार के कार्य, घटनाएँ आदि होती रही हों। एक

युगयुग-बहुत काल तक। *युगधर्म*-समयानुसार चाल या व्यवहार। [वि.] (सं.) गिनती में दो

युगकीलक [संज्ञा पु.] (सं.) बम या जुए के छेद में डालने का डंडा। सैल। सैला।

युगक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) युग का नाश।

युगति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'युक्ति'।

युगप [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्व।

युगपत् [अव्य.] (सं.) एक ही समय में। एक ही क्षण में साथ-साथ।

युगपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कचनार। २-पहाड़ी आबनूस। ३-वह वृक्ष जिसमें दो-दो पत्तियाँ आमने-सामने निकलती हों। युग्मपर्ण।

युगपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीशम का पेड़।

युग-पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) अपने समय का सब से बड़ा आदमी जिसके जोड़ा का उस युग में और कोई न हुआ हो।

युगबाहु [वि.] (सं.) जिसके बाहु या हाथ लंबे हों

युगम* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'युग्म'।

युगल [संज्ञा पु.] (सं.) युग्म। जोड़ा।

युगलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह कुलक (गद्य) जिसमें दो श्लोकों अथवा पद्यों का एक साथ मिलकर अन्वय हो।

युगलाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) बबूल का पेड़।

युगांत, युगांत [संज्ञा पु.](सं.) १-युग का अन्त २-प्रलय।

युगांतक, युगान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रलय-काल। २-प्रलय।

युगांतर, युगान्तर [संज्ञा पु.](सं.) १-दूसरा युग २-दूसरा समय और जमाना। *युगांतर उपस्थित करना*-किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा (या उसका समय) लाना। पुरातन बातों को हटाकर नवीन बातें अथवा नया युग चलाना।

युगांशक [संज्ञा पु.] (सं.) वत्सर। वर्ष। [वि.] युग का विभाजक।

युगाद्विगंधा, युगाद्विगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधारा।

युगादि [संज्ञा पु.] (सं.) युगसृष्टि का आरम्भ। [वि.] पुरातन। पुराना। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'युगाद्या'।

युगादिकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

युगाद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह तिथि जिससे कोई युग आरम्भ हुआ हो। यथा-वैशाख-शुक्ला-तृतीया, सतयुग की आरंभ-तिथि, कार्तिकशुक्ला-नवमी, त्रेता की आरम्भ-तिथि और पूस की अमावस्या, कलियुग की आरंभ तिथि माना जाता है। यह श्रेष्ठ और शुभ-मानी जाती हैं।

युगेश [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति के साठ वर्ष के राशिचक्र में गति के अनुसार पाँच-पाँच वर्ष के युगों के अधिपति।

युगोरस्य [संज्ञा पु.] (सं.) सेना के सन्निवेश का एक भेद।

युग्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ा। युग। २-द्वंद्व। ३-मिथुनराशि। ४-युगलक।

युग्मकंटका, युग्मकण्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेर।

युग्मक [संज्ञा पु.] (सं.) जोड़ा। युग्म।

युग्मज [संज्ञा पु.] (सं.) जुड़वां बच्चे। यमज। यमल।

युग्मधर्मा [वि.] (सं.) १-जो स्वभावतः मिलता हो। मिलनशील। २-मिथुनधर्मा।

युग्मपत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-कचनारवृक्ष। २-सतिवन। ३-एक शाखा में दो पत्ते वाला वृक्ष। ४-भोजपत्र का वृक्ष।

युग्मपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कचनारवृक्ष। २-छतिवन। ३-युग्मपत्र।

युग्मपर्णा, युग्मफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृश्चिकाकाली।

युग्मफलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुधिया। गुदनी

युग्मांजन, युग्माञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) स्रोतांजन और सौवीरांजन इन दोनों का समूह।

युग्मविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छंद

युग्य [संज्ञा पु] (सं.) १-दो घोड़ों वाली गाड़ी। २-वे दो पशु जो किसी गाड़ी में जोते जाते हैं। [वि.] १-जो जोता जाने के योग्य हो। २-जो जोता जाने को हो।

युग्यवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ी हांकने वाला २-गाड़ीवान। सारथी।

युज्य [वि.] (सं.) १-संयुक्त। मिला हुआ। २-मिलाने के योग्य। [संज्ञा पु.] १-मिलाप। २-एक प्रकार का साम।

युत [वि.] (सं.) १-युक्त। सहित। २-मिलित। मिलाहुआ। [संज्ञा पु.] चार हाथ की एक नाप।

युतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-संदेह। संशय। २-युग। जोड़ा। ३-अंचल। दामन। ४-एक प्रकार का वस्त्र जो प्राचीनकाल में पहना जाता था। ५-मैत्रीकरण। ६-संश्रय। ७-सूप के दोनों ओर के उठे हुए किनारे।

युतबंध [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष के अनुसार एक योग का नाम।

युति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग। मिलन। मिलाप।

युत्कार [वि] (सं.) लड़ाई करने वाला।

युद्ध [संज्ञा पु] (सं.) दो पक्षों के सैनिकों में होने वाली लड़ाई। रण। संग्राम। *युद्ध माँड़ना*-लड़ाई ठानना।

युद्धक [वि.] (सं.) १-युद्ध करने वाला। २-युद्ध-सम्बन्धी।

युद्धकवायुयान [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाकू हवाई जहाज।

युद्धकारी [वि.] (सं.) लड़ाई करने वाला।

युद्धगीत [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध के समय का गी सांग-ऑफ-वार।

युद्धघोषणा [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के प्रति की गई युद्धि की घोषणा। लड़ाई ऐलान। डिक्ले-रेशन-आफ-वार।

युद्धपरिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'युद्ध-समिति'।

युद्धपोत [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई का जहाज।

युद्धप्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) समरक्षेत्र।

युद्धप्राप्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो संग्राम में पकड़ा गया हो।

युद्धभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्ध के योग्य भूमि।

युद्धमंत्रालय, युद्धमन्त्रालय [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धमंत्री के विभाग का कार्यालय और अधिकारी वर्ग।

युद्धमंत्री, युद्धमन्त्री [संज्ञा·पु.](सं.) देखो 'युद्ध-सचिव'।

युद्धमनोवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्ध समय की लोगों की मनोभावना या मन की स्थिति। सामरिक मनोभावना। वार-मेन्टेलिटी।

युद्धमय [वि.] (सं.) १-युद्ध-सम्बन्धी। २-युद्ध-प्रिय।

युद्धमान [वि.] (सं.) युद्ध करने वाला।

युद्धमुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

युद्धमेदनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रणभूमि।

युद्धरंग, युद्धरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्तिकेय। २-युद्धस्थल। लड़ाई का मैदान।

युद्धरत [वि.] (सं.) लड़ाई लगा हुआ। युद्ध में जूझा हुआ।

युद्धविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लड़ाई की विद्या।

युद्धविमान [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई में काम आने वाले हवाई जहाज। वार प्लेन।

युद्धविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश का वह महकमा जो लड़ाई से सम्बन्धित बातों की देख-भाल करता हो और जो एक युद्ध के अधीन हो। वार डिपार्टमेंट।

युद्धवीर [संज्ञा पु.] (सं.) रण करने में निपुण।

युद्धशाली [वि.] (सं.) साहसी। वीर।

युद्धसचिव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य का वह मन्त्री जिसके जिम्मे युद्ध विभाग हो।

युद्धसमिति [संज्ञा पु](सं.) युद्ध विषयक मन्त्रणा पर विश्वास करने वाली परिषद् या समिति। वार-काउंसिल।

युद्धसार [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

युद्धस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) रणभूमि। समरक्षेत्र।

युद्धाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धविद्या की शिक्षा देने वाला। युद्ध सिखलाने वाला।

युद्धाजि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि जो अंगिरा

गोत्र में उत्पन्न हुये थ .

युद्धाध्वन [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध का मार्ग।

युद्धावसान [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध का शेष।

युद्धोन्मत्त [वि.](सं.) १–लड़ाका। २-युद्ध करने के लिये उतावला।

युद्धोपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध की सामिग्री।

युध् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्ध। लड़ाई।

युद्धांश्नौष्ठि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम

युधाजि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'युद्धाजि'।

युधाजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १–केकयराज के पुत्र का नाम। २–श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३–क्रोष्टु नामक राजा के पुत्र का नाम।

युधान [संज्ञा पु.] (सं.) १–क्षत्रिय। २–शत्रु।

युधामन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम जो महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़ा था।

युधासार [संज्ञा पु.] (सं.) नंद राजा का एक नाम

युधिक [वि.] (सं.) योद्धा।

युधिष्ठर [संज्ञा पु.](सं.) पांच पांडवों में सब से बड़े का नाम, जो सत्यवादी और धर्मपरायण थे।

युध्म [संज्ञा पु.] (सं.) १–युद्ध। संग्राम। २–धनुष। ३–वाण। ४–अस्त्र-शस्त्र। ५–योद्धा। ६–शरम।

युध्य [वि.] (सं.) जिसके साथ युद्ध किया जाय।

युनिवर्सिटी [संज्ञा स्त्री.](अं.) देखो 'यूनिवर्सिटी'

युयु [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

युयुत्रखुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाघ जो छोटा होता है।

युयुचमान [वि.](सं.) १–मिलन या संयोग चाहने वाला। २–ईश्वर में लीन होने की कामना रखने वाला।

युयुत्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लड़ने या युद्ध करने की इच्छा। २–शत्रुता। विरोध।

युयुत्सु [वि.](सं.) जो लड़ने की इच्छा रखता हो [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

युयुधान [संज्ञा पु.] (सं.) १–इन्द्र। २–क्षत्रिय। ३-योद्धा। ४–सात्यकी जो महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़ा था।

युरेशियन [संज्ञा पु.] (अं.) वह जिसके माता-पिता में से कोई एक युरोप का और दूसरा एशिया का हो।

युरोप [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'यूरोप'।

युरोपियन [वि.] (अं) देखो 'यूरोपियन'।

युवक [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह वर्ष से लेकर पैंतीस वर्ष तक की अवस्था वाला। जवान। युवा।

युवगंड, युवगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मुहाँसा।

युवति, युवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जवान स्त्री। २–प्रियंगु। ३–हलदी। ४–सोनजुही।

युवतिष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनजुही।

युवनाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्यवंशी प्रसेनजित् के पुत्र का नाम। २-धुंधमार के पुत्र का नाम (रामायण)।

युवन्यु [वि.] (सं.) जवान।

युवपलित [वि.] (सं.) जिसके जवानी में ही बाल पक गये हों।

युवराई* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'युवराजी'।

युवराज [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. युवराजी) राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।

युवराजत्व [संज्ञा पु.] (सं.) युवराज का भाव या धर्म।

युवराजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) युवराज का पद या भाव। यौवराज्य।

युवराज्ञी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युवराज की पत्नी।

युवरानी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) युवराज की पत्नी। युवराज्ञी।

युवा [वि.] (हिं.) (स्त्री. युवती) युवक। जवान।

युवानपिड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुहाँसा।

यूँ+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'यों'।

यू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पकी हुई दाल का पानी।

यूक [संज्ञा पु.] (सं.) जूँ। चीलर। ढील।

यूका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–एक प्रकार का परिमाण जो एक जौ का आठवाँ भाग होता है। २–जूँ। चीलर। ढील। ३–खटमल। ४–अजवायन। ५–गूलर।

यूगंधर, यूगन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम जो पंजाब में था (महाभारत)।

यूत [संज्ञा पु.] (सं.) मिलावट। मिश्रण।

यूति [संज्ञा स्त्री.](सं.) मिलाने की क्रिया। मिश्रण। मेल।

यूथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–समूह। झुण्ड। २–सेना। फौज।

यूथग [संज्ञा पु.] (सं.) चाक्षुष मन्वन्तर के एक प्रकार के देवता।

यूथनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १–सेनापति। सेनाध्यक्ष। २–यूथ का स्वामी। सरदार।

यूथप [संज्ञा पु] (सं.) १–सरदार। २–सेनापति। ३–जंगली हाथियों का सरदार।

यूथपति [संज्ञा पु.](सं.) १–दल का सरदार। २–सेनापति।

यूथपाल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'यूथपति'।

यूथहत [वि.] (सं.) अपने दल से अलग।

यूथिका [संज्ञा स्त्री.] जूही का पौधा और उसका फूल।

यूथिकापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तालीशपत्र।

यूथी [संज्ञा स्त्री.] यूथिका।

यून [संज्ञा पु.] (सं.) रस्सी। डोर।

यूनक [संज्ञा पु.] (?) गरी की खली।

यूनाइटेड [वि.] (अं.) संयुक्त। मिला हुआ।

यूनाइटेड-स्टेट्स [संज्ञा पु.] (अं.) अनेक छोटे-छोटे राज्यों का एक बड़ा संयुक्त-राज्य।

यूनान [संज्ञा पु.] (हिं.) एशिया के सबसे पास का यूरोप का प्रदेश।

यूनानी [वि.] (हिं.) यूनान देश का। [संज्ञा स्त्री.] १–यूनान देश की भाषा। २–यूनान देश की चिकित्सा प्रणाली। [संज्ञा पु.] यूनान देश का निवासी।

यूनियन [संज्ञा पु.] (अं.) संघ।

यूनिवर्सिटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह संस्था जो विद्यार्थियों को सब प्रकार की उच्चकोटि की शिक्षाएँ देती, उनकी परीक्षाएँ लेती और उन्हें उपाधियाँ आदि प्रदान करती है।

यूनीफार्म [संज्ञा पु.](अं.) एक ही तरह की पोशाक या पहनावा जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों अथवा नौकरों के लिए नियत हो। वरदी।

यूप [संज्ञा पु.] (सं.) १–यज्ञ में वह खंभा जिसमें बलि दिया जाने वाला पशु बाँधा जाता था। २–वह स्तंभ जो किसी विजय या कीर्ति आदि की स्मृतिस्वरूप बनाया गया हो।

यूपक [संज्ञा पु.] (सं.) पाकर का वृक्ष।

यूपकटक [संज्ञा पु.] (सं) लोहे अथवा लकड़ी का कड़ा या छल्ला जो यूप के सिरे पर या नीचे होता था।

यूपकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) यूप का वह भाग जो घी से अभिषिक्त किया जाता था।

यूपकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) भूरिश्रवा का एक नाम।

यूपदारु [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर की लकड़ी।

यूपद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) खैर का पेड़।

यूपध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ।

यूपा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जूआ। द्यूतकर्म।

यूपाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रावण की सेना का एक मुख्य नायक।

यूपाहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कृत्य जो यज्ञ में यूप गाड़ने के समय किया जाता है।

यूप्य [संज्ञा पु.] (सं.) पलास।

यूरप [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'यूरोप'।

यूराल [संज्ञा पु.] (?) १–एशिया और यूरोप के बीच का पहाड़। २–इस पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

यूरेशियन [संज्ञा पु.](अं.) वह जिसके माता-पिता में से कोई एक यूरोप का तथा दूसरा एशिया-वासी हो।

यूरोप [संज्ञा पु.] (अं.) पूर्वी गोलार्ध के तीन महाद्वीपों में से सबसे छोटा द्वीप, जो एशिया के पश्चिम में काकेशस और यराल के उस पार से आरम्भ होता है।

यूरोपियन [वि.] (अं.) यूरोप-सम्बन्धी। यूरोप का। [संज्ञा पु.] (अं.) यूरोप महादेश के किसी देश का निवासी।

यूरोपीय [वि.] (हिं.) यूरोप-सम्बन्धी। यूरोप का

यूष [संज्ञा पु.] (सं.) मूंग आदि का जूस।

यूह+ [संज्ञा पु.] (हिं.) समूह। झुण्ड। यूथ।

ये [सर्व.] (हिं.) १-देखो 'यह'। २-'यह' का बहुवचन। यह सब।

येई* [सर्व.] (हिं.) यही।

येऊ* [सर्व.] (हिं.) यह भी।

येतो* [वि.] (हिं.) देखो 'एतो'।

येह+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'यह'।

येहू* [अव्य.] (हिं.) यह भी।

यों [अव्य.] (हिं.) इस प्रकार से। इस भांति। ऐसे

योंही [अव्य.] (हिं.) १-इसी प्रकार से। ऐसे ही। २-बिना किसी कार्य अथवा कारण के। व्यर्थ ही। ३-बिना विशेष प्रयोजन अथवा उद्देश्य के।

यो+ [सर्व.] (हिं.) देखो 'यह'।

योगंधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अस्त्र-शस्त्र आदि के शोधन के लिये पढ़ा जाने वाला एक मंत्र। २-पीतल।

योग [संज्ञा पु.] (सं.) १-संयोग। मिलान। मेल २-उपाय। तरकीब। ३-ध्यान। ४-संगति। ५-प्रेम। ६-छल। धोखा। ७-प्रयोग। ८-दवा। औषध। ९-धन। १०-लाभ। फायदा ११-नैयायिक। १२-दूत। चर। १३-नाम। १४-कौशल। चतुराई। १५-बैलगाड़ी। १६-परिणाम। नतीजा। १७-नियम। कायदा। १८-उपयुक्तता। १९-दगाबाज। २०-नाव आदि की सवारी। २१-उपयुक्तता। २२-साम, दाम, दंड और भेद यह चारों उपाय। २३-वशीकरण। २४-सम्बन्ध। २५-सूत्र। २६-सद्भाव। २७-धन और सम्पत्ति प्राप्त करना और बढ़ाना। २८-कोई शुभ काल। २९-मेलमिलाप। ३०-वैराग्य। ३१-गणित में दो अथवा दो से अधिक राशियों का जोड़। ३२-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १२, ८ के विश्राम से २० मात्राएँ तथा अन्त में यगण होता है। ३३-सुभीता। जुगाड़। सुयोग। ३४-फलित ज्योतिष में वे विशिष्ट-काल जो सूर्य अथवा चन्द्रमा के कुछ विशिष्ट स्थानों में आने के कारण हैं। यह संख्या में २७ होते हैं। ३५-फलित ज्योतिष के मत से कुछ विशिष्ट तिथियों, वारों और नक्षत्रों आदि का एक साथ अथवा किसी निश्चित नियमानुसार पड़ना। यथा-सिद्धयोग। ३६-मुक्ति या मोक्ष का उपाय। ३७-चित्त को एकाग्र करने का उपाय या शास्त्र। ३८-शत्रु के लिये की जाने वाली यन्त्र, मन्त्र, पूजा, छल, कपट आदि की युक्ति।

योगकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यशोदा के गर्भ से उत्पन्न वह कन्या जिसे वसुदेव लेजाकर देवकी के पास रख आये थे और जिसे कंस ने मार डाला था।

योगकाल [संज्ञा पु.] (सं.) वह समय जो दो कालों को परस्पर मिलाता है। ज्वॉइनिंग टाइम

योगकुंडलिनी, योगकुण्डलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

योगक्षेम [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राप्ति या लाभ तथा उसकी रक्षा। २-जीवन-निर्वाह। गुजारा। ३-कुशलमंगल। खैरियत। ४-राष्ट्र की शान्ति तथा सुव्यवस्था। पीस-एण्ड-आर्डर ५-दूसरे के धन या जायदाद की रक्षा। ६-लाभ। ७-ऐसी वस्तु जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग न हो।

योगचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

योगचर [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान।

योगज [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग-साधन की एक अवस्था जिसके प्राप्त करने से योगी में अलौकिक वस्तुओं को प्रत्यक्ष कर दिखलाने की शक्ति आ जाती है। २-अगर की लकड़ी।

योगजफल [संज्ञा पु.] (सं.) दो या अधिक अंकों का जोड़। योग। मीजान।

योगतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन दस उपनिषदों के अतिरिक्त एक उपनिषद का नाम।

योगतल्प [संज्ञा पु.] (सं.) योगनिद्रा।

योगतारका, योगतारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी नक्षत्र का प्रधान तारा।

योगत्व [संज्ञा पु.] (सं.) योग का भाव।

योगदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) पतंजली ऋषि का दर्शन जिसमें चित्त को एकाग्र करने और ईश्वर में लीन करने का विधान है।

योगदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आसाम की एक नदी का नाम।

योगदान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य में साथ देना अथवा सहायक होना।

योगधर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) योगी।

योगधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी का नाम।

योगनंद, योगनन्द [संज्ञा पु.] (सं.) मगध के नौ नंदों में से एक।

योगनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

योगनाविक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

योगनिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोने और जागने के बीच की दशा। २-युगांत में होने वाली विष्णु की निद्रा। ३-योग की समाधि। ४-रणक्षेत्र में वीरों की मृत्यु।

योगनिद्रालु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

योगनिलय [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

योगपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक पहनावा जो पीठ पर से जाकर कमर में बांधा जाता था और जिससे घुटनों तक का भाग ढका रहता था।

योगपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु का एक नाम २-शिव।

योगपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योगमाता।

योगपथ [संज्ञा पु.] (सं.) योग का मार्ग।

योगपदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चार अंगुल चौड़ा उत्तरीय वस्त्र जो पूजा के समय पहना जाता था।

योगपाद [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के अनुसार वह कृत्य जिससे अभिमत की प्राप्ति हो।

योगपारंग, योगपारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव २-पूर्ण योगी।

योगपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का योगासन।

योगपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) मतलब निकालने के लिए साधा हुआ आदमी।

योगप्राप्त [वि.] (सं.) योग से पाया हुआ।

योगफल [संज्ञा पु.] (सं.) दो या दो से अधिक संख्याओं का जोड़।

योगबल [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग की साधना से प्राप्त शक्ति। तपोबल। २-ऐन्द्रिजालिक शक्ति।

योगभ्रष्ट [वि.] (सं.) जिसकी योग की साधना पूरी न हुई हो।

योगमय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। [वि] योग-स्वरूप।

योगमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-पीवरी।

योगमाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-योग की अलौकिक शक्ति। २-भगवान की सृजनशक्ति। ३-भगवती।

योगमूर्तिधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-पितृ विशेष।

योगयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यात्रा के लिए शुभ युक्त योग (फलित-ज्योतिष)।

योगयोगी [संज्ञा पु.] (सं.) योगासन पर बैठा हुआ योगी।

योगरंग, योगरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी।

योगरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) जादूगरी से तैयार किया हुआ रत्न।

योगरथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह साधन जिससे योग की प्राप्ति हो।

योगराज-गुग्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) कई द्रव्यों के योग से बनी हुई प्रसिद्ध औषध।

योगरूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) दो शब्दों के योग से बनने वाला वह शब्द जो अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतलावे।

योगरूढ़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'योगरूढ़'।

योगरोचना [संज्ञा स्त्री] (सं.) इन्द्रजाल करने वालों का एक प्रकार का लेप।

योगवह [वि.] (सं.) मिलावट से तैयार किया हुआ।

योगवान् [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. योगवती] योगी

योगवाणी [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय के एक तीर्थ का नाम।

योगवाशिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देवर्षि वशिष्ठ का बनाया हुआ एक ग्रंथ जिसमें वेदांत तत्व का वर्णन् है।

योगवाह [संज्ञा पु.] (सं.) अनुस्वार और विसर्ग।

योगवाही [संज्ञा पु.] (सं.) भिन्न गुणों की दो अथवा कई औषधियों को एक में मिलाने योग्य करने वाली औषधि या द्रव्य। [संज्ञा स्त्री.] १-पारा। २-सज्जीखार।

योगविक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) धोखे या बेईमानी के साथ की हुई विक्री।

योगविद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-योगशास्त्र का ज्ञाता २-शिव। ३-बाजीगर। ४-वह जो औषधों के मिश्रण से दवाई बनाता हो।

योगवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग द्वारा प्राप्त चित्त की शुभवृत्ति।

योगशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शक्ति जो योगसाधन के द्वारा प्राप्त होती है। तपोबल।

योगशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) वह योगिक शब्द जो योगरूढ़ि न हो परन्तु धातु के अर्थ का बोधक हो।

योगशरीरी [संज्ञा पु.] (सं.) योगी।

योगशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) पंतजलिऋषि का बनाया हुआ योगसाधन पर एक ग्रंथ।

योगशास्त्री [संज्ञा पु.] (सं) योगशास्त्र का जानकार।

योगशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम इसे योगशिखा भी कहते हैं।

योगसत्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह नाम जो किसी को किसी प्रकार के योग के कारण प्राप्त हुआ हो।

योगसार [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपाय या साधन जिससे मनुष्य सदा के लिए रोग से मुक्त हो जाय।

योगसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धिप्राप्त व्यक्ति। योगी।

योगसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्रों का संग्रह।

योगांग, योगाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पतंजलि के मत से योग के आठ अङ्ग, जो यह हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि।

योगांजन, योगाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आँखों का अंजन या लेप। सिद्धांजन

योगांत [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार मंगलग्रह की कक्षा के सातवें भाग का एक अंश

योगांतराय, योगान्तराय [संज्ञा पु.] (सं.) योग में विघ्न डालने वाली आलस्य आदि दस बातें।

योगांता, योगान्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) मूल-पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों से होती हुई बुद्ध की गति जो आठ दिन तक रहती है।

योगांबर, योगाम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के एक देवता का नाम।

योगाकर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वह आकर्षण शक्ति जिसके कारण परमाणु मिले रहते हैं और अलग नहीं होते।

योगागम [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्र।

योगाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग का आचरण। २-बौद्धों का एक संप्रदाय, जिनका मत है कि जो बाह्यपदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं, वे शून्य हैं

योगाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शिक्षक जो इन्द्रजाल की विद्या सिखाता हो। २-योगाभ्यास की शिक्षा देने वाला अध्यापक।

योगात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) योगी।

योगानुशासन [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्र।

योगापत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचलित प्रथाओं या आचार-व्यवहार आदि के कारण उत्पन्न होने वाला संस्कार।

योगाभ्यास [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्रानुसार योग का साधन।

योगाभ्यासी [संज्ञा पु.] (सं.) योग की साधना करने वाला। योगी।

योगारंग, योगारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) नारङ्गी।

योगाराधन [संज्ञा पु.] (सं.) योग का अभ्यास करना। योगसाधन।

योगारूढ़ [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसने चित्त-वृत्तियों का निरोध कर लिया हो। योगी।

योगासन [संज्ञा पु.](सं.) योग-साधन के आसन अर्थात् बैठने का ढंग विशेष।

योगित [वि.](सं.) १-जो मंत्र आदि की सहायता से वश में कर लिया गया हो। २-जिस पर इन्द्रजाल या मंत्र आदि का प्रयोग किया गया हो।

योगिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) योगी का भाव या धर्म

योगित्व [संज्ञा पु.] (सं.) योग का भाव या धर्म।

योगिदंड, योगिदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत।

योगिनिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने और जागने के बीच की दशा। झपकी।

योगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-योग साधन करने वाली तपस्विनी। २-रण-पिशाचिनी। ३-एक लोक का नाम। ४-आषाढ़कृष्णा-एकादशी। ५-आवर्ण देवता। ६-दुर्गा की सहचरी जिनकी संख्या आठ है। ७-देवी। योगमाया। ८-काली की एक सहचरी का नाम। ९-तिथि विशेष में दिग्विशेषावस्थिति योगिनी। १०-तत्काल योगिनी

योगिनीचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तांत्रिकों का एक प्रकार का चक्र जिससे वे योगिनियों का साधन करते हैं। २-ज्योतिषी का वह चक्र जिससे वह इस बात का पता लगाता है कि योगिनी किस दिशा में है।

योगिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संपूर्ण जाति का एक राग। २-देखो 'योगी'।

योगिराज [संज्ञा पु.](सं.) योगियों में श्रेष्ठ योगी

योगींद्र, योगीन्द्र [संज्ञा पु.](सं.) बहुत बड़ा योगी

योगी [संज्ञा पु.] (सं.) १-आत्मज्ञानी। २-योग का साधन या अभ्यास करने वाला। ३-शिव

योगीकुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) हिमालय के एक तीर्थ का नाम।

योगीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। शङ्कर।

योगीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा या श्रेष्ठ योगी २-योगियों के स्वामी। ३-याज्ञवल्क्य का एक नाम।

योगीश्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-योगियों में श्रेष्ठ। २-याज्ञवल्क्यमुनि का एक नाम। ३-शिव।

योगीश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

योगेंद्र, योगेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा योगी। २-वह जिसने अलौकिक शक्ति संपादन करली हो। वैद्यक में रससिंदूर से बनने वाली एक रसौषध।

योगेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा योगी। २-याज्ञवल्क्य का एक नाम।

योगेश्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-श्रीकृष्ण। २-शिव। ३-देवहोत्र के एक पुत्र का नाम। ४-वह जिसने अलौकिक शक्ति संपादन करली हो। ५-बड़ा योगी। ६-एक तीर्थ का नाम।

योगेश्वरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) योगेश्वर होने का भाव या धर्म।

योगेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-शाक्तों की एक देवी।

योगोपनिषद् [संज्ञा पु.](सं.) १-एक उपनिषद् का नाम। २-छल, कपट और गुप्त रीति से शत्रु को मारने की युक्ति।

योग्य [वि.] (सं.) १-उपयुक्त अधिकारी। लायक पात्र। २-समर्थ। ३-श्रेष्ठ। ४-उचित। ५-सुन्दर। दर्शनीय। ६-आदरणीय। माननीय। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्यनक्षत्र। २-ऋद्धि नामक औषध। ३-रथ। शकट। गाड़ी। ४-चन्दन।

योग्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह गुण अथवा शक्ति जिससे कोई कार्य करने योग्य होता है। लियाकत। २-बुद्धिमता। ३-सामर्थ्य। ४-अनुकूलता। ५-उपयुक्तता।

योग्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग्यता। २-प्रवीणता।

योग्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काम करने का

अभ्यास। मश्क। २-सुश्रुत के अनुसार चीर-फाड़ करने का अभ्यास। ३-जवान स्त्री। युवती।

योजक [वि.] (सं.) १-मिलाने या जोड़ने वाला। २-योजना करने अथवा बनाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) भू-डमरूमध्य।

योजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग। २-संयोग। मिलाना। ३-परमात्मा। ४-दूरी का एक नाम जो आठ कोस तक बताई जाती है। ५-धन संपत्ति आदि अपने काम में ले आना अथवा अपना लेना। एप्रो-प्रिएशन।

योजन-गंधा, योजनगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यास की माता और शांतनु की पत्नी का नाम सत्यवती।

योजनगंधिका, योजनगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'योजनगंधा'।

योजनपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

योजनवल्ली [संज्ञा पु.] (सं.) मजीठ।

योजना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रयोग। व्यवहार। २-मिलान। मेल। ३-बनावट। रचना। ४-किसी बड़े कार्य को करने का विचार या आयोजन। भावी कार्यों के सम्बन्ध में व्यवस्थित विचार। स्कीम। ५-घटना। ६-स्थिति। ७-कोई काम अथवा उद्देश्य सिद्ध करने के उपाय, साधन, व्यवस्था आदि की निश्चित की हुई रेखा। प्रेजेक्ट, प्लान।

योजनीय [वि.] (सं.) १-संयोग या मिलान करने योग्य। २-जो कहीं प्रयुक्त हो सकता हो। योग का प्रयोग करने अथवा काम में लाने योग्य। एप्लिकेबुल।

योजन्य [वि.] (सं.) योजन-सम्बन्धी। योजना का

योजित [वि.] (सं.) १-जिस की योजना की गई हो। २-जोड़ा या मिलाया हुआ। ३-नियमबद्ध किया हुआ। ४-रचा या बनाया हुआ।

योज्य [वि.] (सं.) देखो 'योजनीय'। [संज्ञा पु.] (सं.) (गणित में) जोड़ी जाने वाली संख्याएँ।

योत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह बन्धन जो जुए को बैलों की गरदन में जोड़ता हो। जोत।

योद्धव्य [वि.] (सं.) जिससे युद्ध करना हो।

योद्धा [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो युद्ध करता हो। २-युद्ध में लड़ने वाला सिपाही।

योध, योधक [संज्ञा पु.] (सं.) योद्धा। सिपाही। सैनिक।

योधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध की सामग्री। २-युद्ध। लड़ाई।

योधा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'योद्धा'।

योधिवन [संज्ञा पु.] एक प्राचीन जङ्गल का नाम।

योधी [संज्ञा पु.] (हिं.) योद्धा। वीर।

योधेय [संज्ञा पु.] (सं.) योद्धा। सैनिक।

योध्य [वि.](सं.) जिसके साथ युद्ध किया जा सके

योनल [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वार। मक्का।

योनि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-उत्पत्ति स्थान। उद्गम २-स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ३-कुशद्वीप की एक नदी का नाम। ४-जल। पानी। ५-शरीर देह। ६-गर्भाशय। ७-अन्तःकरण। ८-प्राणियों की जातियाँ जिनकी कुल संख्या चौरासी लाख कही गई है।

योनिकंद, योनिकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) योनि में होने वाला एक रोग।

योनिज [वि.] (सं.) जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो। [संज्ञा पु] (सं.) जो योनि से उत्पन्न हुआ हो। (अंडे से उत्पन्न न हुआ हो) जिसने स-शरीर और जीवित रूप में माता के गर्भ से जन्म लिया हो।

योनिदेवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र

योनिदोष [संज्ञा पु.](सं.) उपदंश रोग जिसे गरमी या आतशक भी कहते हैं।

योनिफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) योनि के भीतर की वह गाँठ जिसके ऊपर एक छेद होता है। यही छेद गर्भाशय के लिए वीर्य ग्रहण करता है।

योनिभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) योनि का एक रोग जिसमें गर्भाशय अपने स्थान से हट जाता है।

योनिमुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) जो जन्म लेने से मुक्त हो गया हो। जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया हो।

योनिमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की एक प्रकार की मुद्रा।

योनियंत्र, योनियन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) गया आदि तीर्थ स्थानों पर बनी हुई तंग गली जिसके सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि जो इस गली में से निकल जाता है उसे मोक्ष मिलती है।

योनिरंजन, योनिरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) रजस्वला धर्म।

योनिलिंग, योनिलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) भगांकुर

योनिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक देश का प्राचीन नाम।

योनिशूल [संज्ञा पु.] (सं.) योनि का एक रोग।

योनिशूलघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतपुष्पा।

योनिसंकर, योनिसङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) नियम विरुद्ध संयोग से जातियों का संकरत्व। वर्णसंकर। दोगला।

योनिसंकोचन, योनिसङ्कोचन [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-योनि को फैलाने और सिकोड़ने की क्रिया २-वह औषधि जिससे योनि का मुख सिकुड़ जाता है।

योनिसंभव, योनिसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'योनिज'।

योनिसंवरण [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भवती स्त्रियों के गर्भाशय का द्वार रुक जाने का रोग।

योन्यर्श [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों का योनिकंद नामक रोग।

योम [संज्ञा पु.](अं.) १-दिन। २-तिथि। तारीख।

योरोप [संज्ञा पु.] देखो 'यूरोप'।

योरोपियन [संज्ञा पु.] देखो 'यूरोपियन'।

योषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुश्चरित्रा स्त्री।

योषा, योषित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। औरत।

योषित्प्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलदी।

योषिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री। औरत।

यौं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'यों'।

यौ [सर्व.] (हिं.) यह।

यौक्ताश्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

यौक्तिक [वि.] (सं.) [स्त्री. यौक्तिकी] १-यु सम्बन्धी। २-युक्तिसंगत। ठीक।

यौगंधर, यौगन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अस्त्र जो अन्य अस्त्रों को निष्फल कर देता है।

यौगंधरायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-युगन्धर गोत्रोत्पन्न व्यक्ति। राजा उदयन के एक मन्त्री का नाम।

यौग [संज्ञा पु.] (सं.) योगदर्शन के मतानुसार चलने वाला।

यौगक [वि.] (सं.) योग-सम्बन्धी। योग का।

यौगपद, यौगपद्य [संज्ञा पु.] (सं.) समकालीनता।

यौगिक [वि.] (सं.)१-योग-सम्बन्धी। योग का। २-किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ। [संज्ञा पु.] १-प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। २-दो शब्दों के मेल से बना हुआ शब्द। ३-अट्ठाईस मात्राओं के छन्दों की संज्ञा।

यौजनिक [वि.] (सं.) एक योजन तक जाने वाला

यौतक, यौतुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह धन जो विवाह के अवसर पर वर और कन्या को दिया जाता है। दहेज। २-अन्नप्राशन आदि संस्कारों के अवसर उसको मिलने वाला धन जिसका संस्कार होता है।

यौथिक [वि.] (सं.) १-यूथ या समूह-सम्बन्धी। २-झुण्ड या दल बांधकर रहने वाला।

यौद्धिक [वि.] (सं.) युद्ध-सम्बन्धी। युद्ध का।

यौध [संज्ञा पु.] (सं.) योद्धा। सिपाही।

यौधेय [संज्ञा पु.](सं.) १-योद्धा। २-एक प्राचीन देश का नाम। ३-उस देश में बसने वाली एक प्राचीन योद्धाजाति। ४-युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम।

यौन [वि.] (सं.) १-योनि-सम्बन्धी। २-वैवाहिक।

जौवत [संज्ञा पु](सं.) १-युवती स्त्रियों की टोली। २-युवा-स्त्री होने का भाव। ३-लास्यनृत्य का दूसरा भेद।

यौवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाल्यावस्था

वृद्धावस्था के बीच की अवस्था। २-जवानी। ३-देखो 'जोबन'। ४-स्त्रियों के स्तन।

यौवनकंटक, यौवनकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) मुँहासा।

यौवनक [संज्ञा पु.](सं.) जवानी। यौवनावस्था।

यौवनदर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-जवानी का अभिमान। २-अविवेक।

यौवनपिड़का [संज्ञा पु] (सं.) मुँहासा।

यौवनमत्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सोलह वर्ण वाला एक छन्द।

यौवनलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जवानी के चिह्न। २-स्त्रियों की छाती या स्तन। कुच। ३-मनोहरता। सौंदर्य। लावण्य।

यौवनाधिरूढ़ा [वि.] (सं) जवान। युवती (स्त्री)

यौवनाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) मानधाता राजा का एक नाम।

यौवनिक [वि.](सं) यौवन-सम्बन्धी। यौवन का

यौवनोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

यौवराजिक [वि.] (सं) युवराज-सम्बन्धी। युवराज का।

यौवराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-युवराज का पद। २-युवराज होने का भाव।

यौवराज्याभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन समय का वह अभिषेक तथा उसके सम्बन्ध का कृत्य और उत्सव जो किसी राजा के उत्तराधिकारी पुत्र के युवराज बनाये जाने के समय होता है

र

हिन्दी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यंजन-वर्ण, जिसका उच्चारण जीभ के अग्रभाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है। यह स्पर्शवर्ण तथा ऊष्मवर्ण के मध्य का वर्ण है।

रंक, रङ्क [वि.](सं) १-दरिद्र। कंगाल। धनहीन २-कृपण। कंजूस। ३-सुस्त। आलसी।

रंकु, रङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का हिरन जिसकी पीठ पर चित्तियाँ होती हैं।

रंग, रङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-रांगा नामक धातु। २-नृत्यगीत। नाच-गाना। ३-वह स्थान जहां नृत्य या अभिनय होता है। ४-रणक्षेत्र। युद्धस्थल। ५-खदिरसार। ६-पदार्थ का उस के आकार से भिन्न वह गुण जिसका ज्ञान केवल दृष्टि द्वारा होता है। ७-वह वस्तु जिस से कोई वस्तु रंगी जाती है। ८-शरीर और चेहरे की रंगत। वर्ण। कौम्प्लक्शन। ९-युवावस्था। जवानी। १०-सौन्दर्य। छवि। ११-प्रभाव। असर। १२-आतंक। धाक। रोब। १३-क्रीड़ा। आनन्द उत्सव। १४-युद्ध लड़ाई। १५-उमंग। मौज। १६-आनन्द। मजा। १७-हालत। दशा। १८-अद्भुत व्यापार। दृश्य। कांड। १९-कृपा। दया। २०-प्रेम। अनुराग। २१-ढब। ढंग। चाल। तर्ज २२-भांति। प्रकार। तरह। *रंग आना या चढ़ना*-१-चेहरे पर रौनक आना। २-कपड़ा आदि रंगीन होना। ३-मजा मिलना। *रंग उखड़ना*-१-रोब या धाक न रहना। २-आनन्द का नाश होना। *रंग उड़ना या उतरना*-१-रंग का फीका पड़ना। २-नशा दूर होना। ३-चहकाने में न रहना। ४-भय या लाज के कारण चेहरे पर रौनक न रहना। *रंग कटना*-आनंद मनाया जाना। *रंग खेलना*-रंग डालना। *रंग चढ़ना*-प्रभाव पड़ना *रंग जमना*-१-दृढ़ प्रभाव पड़ना। २-धाक बैठना। *रंग काछना*-१-चाल चलना। ढंग अख्तियार करना। २-रंग चढ़ना। ३-ठीक जँचना। ४-बाहर आना। ५-मस्ती होना। ६-जीत की गोटी बैठना।

रंग जमाना-१-रंग चढ़ाना। २-बुनियाद डालना। ३-प्रभाव डालना। रोब में लाना। ४-असर डालना। *रंग चूना*-१-रंग झलकना २-यौवन उभड़ना। *रंग टपकना*-देखो 'रंग चूना'। *रंग डालना या फेंकना*- (होली में) पानी में रंग घोलकर किसी पर डालना। *रंग ढंग देखना*- चालढाल परखना। *रंग दिखाना*-सङ्कट में फँसाना। *रंग दिखना*-परिणाम सोचना। *रंग देना*-फँसाने के लिये प्रेम जताना। *रंग निकलना या निखरना*-रंग चटकीला होना। २-मुखाकृति या चेहरे का रंग गोरा होना। *रंग पकड़ना या रंग पर आना*-जवानी पर आना। *रंग फीका पड़ना या होना*-१-रंग हलका होना। २-चेहरे की रौनक न रहना। *रंग फीका रहना*-पूरा प्रभाव न पड़ना *रंग बँधना*-रौब गांठना। *रंग बदलना*-१-नाराज होना। २-हालत बदल जाना। *रंग बरसना*-खूब शोभा होना। *रंग बाँधना*-१-क्रुद्ध होना। २-झूठा ढोंग रचना। *रंग बिगड़ना*-१-बुरा हाल होना। २-रंग खराब हो जाना। ३-रौब न रहना। ४-शेखी किरकिरी होना। *रंग मचाना*-१-खूब युद्ध करना। २-धूम मचाना। *रंग मारना*-खेल में दूसरे रंग की गोटी मारना। *(किसी के) रंग में ढलना*-किसी के विचारानुसार चलना। किसी के प्रभाव में आना। *रंग में भंग करना*-आनन्द या मजा बिगड़ना। *रंग में भंग पड़ना*-आनन्द में बाधा होना। *रंग रचना*-उत्सव करना। २-रंगीन करना। *रंग लाना*-१-प्रभाव या गुण दिखलाना। २-बुराई करना। ३-जाल फैलाना। ४-तंग करना। *रंग हटाना*-प्रभाव दूर करना। *रंग है*-वाह, शाबाश।

रंग रलियाँ-आमोद-प्रमोद। मौज। *रंगढंग*-१-दशा। हालत। २-चालढाल। ३-बरताव ४-लक्षण।

रंगई+ [संज्ञा पु.] (हि.) कपड़ा छापने वालों की एक जाति।

रंगकाष्ठ, रङ्गकाष्ठ [संज्ञा पु.](सं.) पतंग नामक लकड़ी। बक्कम।

रंगक्षेत्र, रङ्गक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिनय करने का स्थान। रंगस्थल। २-वह स्थान जो किसी उत्सव आदि के लिए सजाया जाय।

रंगगृह, रङ्गगृह [संज्ञा पु.] (सं.) रंगभूमि।

रंगचर, रङ्गचर [संज्ञा पु.] (सं) नाटक का अभिनेता। नट।

रंगज, रङ्गज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

रंगजननी, रङ्गजननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाक्षा। लाख।

रंगजीवक, रङ्गजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रकार। २-अभिनेता। नट।

रंगत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रंग। वर्ण। २-दशा। अवस्था। *रंगत आना*-मजा होना। आनन्द होना।

रंगतरा [संज्ञा पु](हि.) मीठी और बड़ी नारंगी। संगतरा।

रंगद, रङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोहागा। २-खदिरसार।

रंगदलिका, रङ्गदलिका [संज्ञा स्त्री](सं.) नागबेल।

रंगदा, रङ्गदा [संज्ञा स्त्री] (सं.) फिटकरी।

रंगदायक, रङ्गदायक [संज्ञा पु.] (सं) कुंकुष्ठ नामक पहाड़ी मिट्टी।

रंगदृढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं) फिटकरी।

रंगदेवता [संज्ञा पु.](सं) रंगभूमि का एक कल्पित अधिष्ठाता देवता।

रंगन [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का मझोला वृक्ष।

रँगना [क्रि. स.](हिं.) १-किसी वस्तु को घुले हुए रंग में डालकर या डुबाकर रंगीन करना। २-किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ३-अपने अनुकूल करना। *रँगे हाथों या रँगे हाथ* किसी को अपराध करते हुए उसी अवस्था में या उसके प्रमाणसहित। [क्रि. अ.] (हिं.) किसी पर आसक्त होना।

रंगपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलीवृक्ष।

रंगपुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक प्रकार की छोटी नाव।

रंगपुष्पी, रङ्गपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं) नीलीवृक्ष

रंगप्रवेश, रङ्गप्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) अभिनय करने के लिए किसी अभिनेता का रंगभूमि में आना या प्रवेश करना।

रंगबदल [संज्ञा पु.] (हिं) साधु।

रंगबाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर पर लगाने के लिए सुगंधित वस्तुओं की बत्ती।

रंगबिरंग, रंगबिरङ्ग [वि.](हिं.) १-कई रंगों का। २-भाँतिभाँति के। अनेक प्रकार के।

रंगबिरंगा [वि.] (हिं.) १-अनेक रङ्गों वाला। २-अनेक प्रकार का। कई तरह का।

रंगभरिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रङ्ग करने वाला। रङ्गसाज।

रंगभवन, रङ्गभवन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आमोद-प्रमोद अथवा भोगविलास करने का स्थान। रङ्गमहल।

रंगभूति, रङ्गभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन की पूर्णिमा।

रंगभूमि, रङ्गभूमि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-खेल तमाशे या उत्सव का स्थान। २-नाट्यशाला। ३-समरभूमि। रणक्षेत्र। ४-वह स्थान जहाँ कुश्ती होती है। अखाड़ा।

रंगमीन* [संज्ञा पु.] (हिं.) रङ्गमहल।

रंगमंच, रङ्गमञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाट्यशाला, विशेषतः उसमें का वह स्थान जिसपर अभिनेता अभिनय करते हैं। स्टेज। २-देखो 'रङ्गभूमि'।

रंगमंडप, रङ्गमण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) रङ्गभूमि।

रंगमध्य, रङ्गमध्य [संज्ञा पु.] (सं.) रङ्गमंच। रङ्गस्थल।

रंगमल्ली, रङ्गमल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीणा।

रंगमहल, रङ्गमहल [संज्ञा पु.] (हिं.) आमोद-प्रमोद या भोगविलास करने का स्थान।

रंगमाता, रङ्गमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटनी २-लाक्षा। लाख।

रंगमातृका, रङ्गमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाक्षा लाख।

रंगमार [संज्ञा पु.] (हिं.) ताश का एक खेल।

रंगरली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आमोदप्रमोद। आनन्द-क्रीड़ा।

रङ्ग रलिया मचाना या करना–आनन्द-मंगल और आमोद प्रमोद करना।

रंगरस, रङ्गरस [संज्ञा पु.] (हिं.) आनन्द-मंगल आमोद-प्रमोद।

रंगरसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) भोगविलास करने वाला आदमी।

रंगराज [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक।

रँगराता* [वि.] (हिं.) [स्त्री. रँगराती] १-भोग-विलास में लगा हुआ। ऐश-आराम में मस्त। २-अनुरागपूर्ण। प्रेमयुक्त।

रंगरूट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होने वाला सिपाही। २-किसी काम में पहले-पहल आकर लगा हुआ व्यक्ति। नौसिखुआ।

रंगरेज [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. रँगरेजिन] कपड़ा रंगने का व्यवसाय करने वाला। कपड़ा रंगने वाला।

रंगरेजी [संज्ञा पु.] (फा.) १-रंगरेज का काम। २-कपड़ा रँगने का काम।

रंगरेली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रंगरली'।

रंगरेनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लाल रंग की चुनरी।

रंगलता, रङ्गलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरोड़फली

रंगलासिनी, रङ्गलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शेफालिका।

रंगवल्लिका, रङ्गवल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली।

रँगवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) चौपायों का एक रोग।

रँगवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रंगाई'।

रँगवाना [क्रि. स.] (हिं.) रंगने का काम दूसरे से कराना।

रंगविद्याधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। २-अभिनेता। नट। ३-वह जो नाचने में प्रवीण हो।

रंगवीज, रङ्गवीज [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी।

रंगशाल, रङ्गशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रंगभूमि।

रंगसाज [संज्ञा पु.] (फा.) १-चीजों पर रङ्ग चढ़ाने वाला। २-रङ्ग बनाने वाला।

रंगसाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रङ्गसाज का काम। रँगने का काम।

रंगस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रंगभूमि'।

रंगांगा, रङ्गाङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकरी।

रंगांगण, रङ्गाङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) रङ्गस्थल। नाट्यशाला।

रँगाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रङ्गने की किया या भाव। २-रङ्गने की मजदूरी।

रंगाजीव, रङ्गाजीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-रङ्गसाज। २-रङ्गरेज।

रँगाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को रङ्गने में प्रवृत्त करना।

रंगामेजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कई रङ्गों का मिलान

रंगाभरण, रङ्गाभरण [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

रंगारंग, रङ्गारङ्ग [वि.] (हिं.) १-अनेक रंगों वाला। २-अनेक प्रकार का। तरह-तरह का।

रंगार [संज्ञा पु.] (देश.) १-वैश्यों की एक जाति २-राजपूतों की एक जाति।

रंगारि, रङ्गारि [संज्ञा पु.] (सं.) करवीर। कनेर।

रंगालय, रङ्गालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रंगभूमि'।

रँगावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रंगने की क्रिया या भाव। रंगाई।

रंगावतारक, रङ्गावतारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रङ्गरेज। २-अभिनेता। नट।

रंगावतारी [संज्ञा पु.] (हिं.) अभिनयपात्र। नट।

रँगिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रङ्गरेज। २-रङ्गसाज।

रंगी, रङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रामभूली। २-कैवर्त्तिका नामक लता। [वि.] (हिं.) १-मौजी। आनन्दी। रंगीला। २-रंगीन। रङ्गों वाला।

रंगीन [वि.] (फा.) १-रङ्गा हुआ। रङ्गदार। २-विलासप्रिय। ३-चमत्कारपूर्ण। मजेदार।

रंगीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रङ्गीन होने का भाव। २-सजावट। बनावसिंगार। ३-रसिकता। रङ्गीलापन। ४-बांकापन।

रंगीरेटा [संज्ञा पु.] (देश.) एक जङ्गली वृक्ष।

रँगीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. रँगीली] १-रसिया। रसिक। मौजी। २-सुन्दर। खूबसूरत। ३-प्रेमी। अनुरागी।

रँगीला-टोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

रँगैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रङ्गने वाला।

रंगोपजीवी, रङ्गोपजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नाटक आदि में अभिनय करके जीविका कमाने वाला व्यक्ति। अभिनेता। नट।

रंच, रंचक* [वि.] (हिं.) अल्प। थोड़ा। तनिक

रंज [संज्ञा पु.] (फा.) १-दुःख। खेद। २-शोक।

रंजक, रञ्जक [संज्ञा पु] (सं.) १-रङ्गरेज। २-रङ्गसाज। ३-हिंगुल। ४-मेंहदी। ५-भिलावाँ ६-सुश्रुत के मतानुसार पेट की एक अग्नि जो पित्त के अंतर्गत मानी जाती है। [वि] (सं.) १-रङ्गने वाला। २-आनन्ददायक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बत्ती लगाने के लिए बन्दूक की प्याली पर रखी जाने वाली बारूद २-गाँजे, सुलफे, तमाखू आदि की दम। ३-किसी को भड़काने या उत्तेजित करने के लिए कही जाने वाली बात। ४-कोचपपटा चूर्ण।

रंजक उड़ाना–१-बन्दूक या तोप की प्याली में बत्ती लगाने के लिये बारूद रखकर उड़ाना २-पादना। *रंजक चाटना*–तोप या बन्दूक की प्याली में रखी हुई बारूद का यों ही उड़कर रह जाना। *रंजक पिलाना*–बन्दूक या तोप की प्याली में बन्दूक रखना। *रंजक देना*–सुलफे, गाँजे आदि की दम लगाना।

रंजन, रञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रङ्गने की क्रिया २-पित्त। ३-लाल चन्दन। ४-छप्पय छन्द का एक भेद। ५-वे पदार्थ जिनसे रङ्ग बनते हैं। ६-मूंज। ७-सोना। ८-जायफल। ९-कमीलावृक्ष।

रंजनक, रञ्जनक [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल।

रंजनकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलीवृक्ष।

रंजना* [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रसन्न करना। २-भजना। स्मरण करना। ३-रङ्गना। ४-किसी का मनोरंजन करना।

रंजनी, रञ्जनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-संगीत में ऋषभ स्वर की तीन श्रुतियों में से दूसरी। २-नीलीवृक्ष। ३-मजीठ। ४-हलदी। ५-पर्पटी। ६-नागवली। ७-जतुकालता।

जनीपुष्प, रञ्जनीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) पूति-करंज।

जनीय, रञ्जनीय [वि.] (सं.) १-जो रंगने के योग्य हो। २-आनंद दे सकने वाला।

जा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली।

ंजित [वि.] (सं.) १-रंगा हुआ। २-प्रसन्न। आनन्दित। ३-अनुरक्त।

जिश [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-रंज होने का भाव। २-किसी के मन में होने वाली अप्रसन्नता। मनमुटाव।

ंजीदगी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-रंजीदा होने का भाव। २-रंजिश।

ंजीदा [वि.] (फ़ा.) १-जिसे रंज हो। दुःखित। २-अप्रसन्न। असन्तुष्ट।

ंड, रण्ड [वि.] (सं.) १-चालाक। धूर्त्त। २-विकल। बेचैन।

ंडक, रण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृक्ष जिसमें फल न लगते हों।

ंडा, रण्डा [वि.] (सं.) राँड़। विधवा।

ँडापा [संज्ञा पु.] (हिं.) राँड़ या विधवा होने का भाव या अवस्था। विधवापन। वैधव्य।

ंडाश्रमी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो अड़तालीस वर्ष की आयु के बाद रंडुआ हो।

ंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। *रंडी रखना*–किसी वेश्या को अपने पास संभोग के लिए रखना।

ंडीबाज़ [संज्ञा पु.](हिं.) रंडियों से सम्भोग करने वाला व्यक्ति। वेश्यागामी।

ंडीबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रंडीबाज होने का भाव। वेश्यागमन।

ँडुआ, रँडुवा [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. राँड़] वह आदमी जिसकी स्त्री मर गई हो।

ँडोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रँडोरी] रंडुवा।

ंता+* [वि] (हिं.) अनुरक्त।

ंति, रन्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केलि। क्रीड़ा। २-विराम।

ंतिदेव, रन्तिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बड़े दानी राजा का नाम (पुराण)। २-विष्णु। ३-कुत्ता।

ंतिनदी, रन्तिनदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्बल नदी।

ंतु, रन्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सड़क। २-नदी

ंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रोशनदान। मकान की दीवारों में का वह छेद जो प्रकाश और हवा आने के लिए रखा जाता है। २-किले की दीवारों में का वह मोखा जिसमें से बाहर की ओर तोप या बन्दूक चलायी जाती है।

ंदना [क्रि. स.] (हिं.) रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी और साफ करना।

ंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह औज़ार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलकर चिकनी और साफ करता है।

ंधक, रन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसोइया। २-नाशक।

रंधन, रन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-राँधना। पाक करना। २-नष्ट करना।

रंधित [वि.] (सं.) १-रांधा या पकाया हुआ। २-नष्ट।

रंध, रन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-छेद। सूराख। २-भग। योनि। ३-दोष। छिद्र।

रंध्रागत, रन्ध्रागत [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों के गले का एक रोग।

रंबा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'रंभा'। २-जुलाहों का एक औज़ार।

रंभ, रम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बांस। २-एक प्रकार का बाण। ३-पुराणानुसार महिषासुर के एक पिता का नाम। ४-भारी शब्द।

रंभण, रम्भण [संज्ञा पु.] (सं.) १-गले लगाना। आलिंगन करना। २-रँभाना।

रंभन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रंभण'।

रंभा, रम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केला। २-गौरी ३-गाय का रँभाना या चिल्लाना। ४-उत्तर दिशा। ५-वेश्या। ६-एक अप्सरा जिसका उल्लेख पुराणों में है।

रंभातृतीया, रम्भातृतीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया।

रंभाना [क्रि. अ.] (हिं.) गाय का शब्द करना। [क्रि. स.] (हिं.) गाय को शब्द करने में प्रवृत्त करना।

रंभापति, रम्भापति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

रंभाफल, रम्भाफल [संज्ञा पु.] (सं.) केला।

रंभित, रम्भित [वि.] (सं.) १-बोला या हुआ। शब्द किया हुआ। २-बजाया हुआ।

रंभिनी, रम्भिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी

रंभी, रम्भी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृद्ध आदमी। २-द्वारपाल। दरबान। ३-वह जो हाथ में डंडा या लाठी लिये हो।

रंभोरु, रम्भोरु [वि.] (सं.) १-(वह स्त्री) जिसकी जाँघें केले के वृक्ष के समान उतार चढ़ाव वाली हों। २-सुन्दर।

रंह [संज्ञा पु.] (हिं.) गति। तेजी। वेग।

रँहचटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी मनोरथ की सिद्धि के लिये लालसा। २-चस्का। लालच।

र [संज्ञा पु.](सं.) १-पावक। अग्नि। २-कामाग्नि। ३-झुलसना। ४-सितार का एक बोल। ५-गरमी। ताप।

रअय्यत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-प्रजा। २-काश्तकार।

रइअत [संज्ञा स्त्री] देखो 'रअय्यत'।

रइकौ* [क्रि. वि.] (हिं.) तनिक भी। जरा भी।

रइनि* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) रात। रात्रि। निशि।

रई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-एक प्रकार की लकड़ी जिससे दही मथा जाता है। मथानी। २-गेहूँ का मोटा आटा। ३-सूजी। ४-चूर्णमात्र। [वि.] [स्त्री. प्र.] १-डूबी हुई। पगी हुई। २-अनुरक्त। ३-युक्त। सहित। संयुक्त। मिली हुई।

रईस [संज्ञा पु.] (अ.) अमीर। धनी। बड़ा आदमी।

रउताई* [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वामित्व। प्रभुत्व।

रउरे+ [सर्व.] (हिं.) आप।

रऐयत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रजा। रिआया।

रकछ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्तों की पकौड़ी। पतौड़।

रकत+ [संज्ञा पु.](हिं.) रक्त। खून लोहू। [वि.] लाल। सुर्ख।

रकतकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रवाल। मूँगा। २-रक्तालु। रतालू।

रकतांक* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्रवाल। मूँगा। २-कुंकुम। केसर। ३-रक्तचन्दन।

रकबा [संज्ञा पु.] (अ.) क्षेत्रफल।

रकबाहा [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों का एक भेद।

रकमंजनी, रकमञ्जनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा।

रकम [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-धन। सम्पत्ति। २-गहना जेवर। ३-धन की राशि। ४-प्रकार। भाँति। ५-धनवान। मालदार। ६-चलतापुर्ज़ा। चालाक। धूर्त्त। ७-लगान की दर। ८-जवान और सुन्दर स्त्री (गुंडों की बोली)।

रक़मी [संज्ञा पु.] (अ.) वह किसान जिसके साथ कोई खास रिआयत की जाय।

रकाब [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-सवारी के घोड़ों की काठी या जीन में लटकाने वाला पावदान २-रकाबी। तश्तरी। *रकाब परपैर रखना*-चलने के लिये उद्यत होना।

रकाबदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह जो मुरब्बा, मिठाई आदि बनाता हो। हलवाई। २-वह जो रकाबियों में खाना चुनने और लगाने का काम करता हो। खानसामाँ। ३-वह सेवक जो बादशाहों के साथ खाना लेकर चलता है खासाबरदार। वह नौकर जो रकाब पकड़कर घोड़े पर सवार कराता है। साईस।

रकाबा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) बड़ी थाली। परात।

रकाबी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) तश्तरी।

रकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'र' वर्ण का बोधक अक्षर र।

रक़ीक़ [वि.] (अ.) १-तरल। द्रव। २-कोमल नरम।

रक़ीब [संज्ञा पु.] (अ.) प्रेमिका का दूसरा प्रेमी

रकेबी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रकाबी'।

रक्खना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'रखना'।

रक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो शरीर की नसों में बहता है। खून। रुधिर। लहू। २-कुंकुम। केसर। ३-तांबा। ४-कमल। ५-सिंदर ६-हिंगुल।

सिंगरफ । ७–लाल चंदन । ८–लाल रंग । ६–कुसुंभ । १०–हिङ्जल । ११–एक प्रकार की मछली । १२–एक प्रकार का मेंढक जो विषैला होता है । १३–एक प्रकार का बिच्छू । १४–पतंग की लकड़ी । १५–पुराना और पका हुआ आंवला । १६–गुलदुपहरिया । बंधूक । [वि.] (सं.) १–रङ्गा हुआ । २–अनुरक्त । २–लाल । ४–ऐयाश । ५–शोधित । शुद्ध ।

रक्तआमातिसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें लहू के दस्त होने लगते ह ।

रक्तकंगु, रक्तकङ्गु [संज्ञा पु.](सं.) साल का वृक्ष

रक्तकंटा, रक्तकण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विकंकत वृक्ष ।

रक्तकंठ, रक्तकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १–कोयल । २–भंटा । बैंगन । [वि.] जिसका कंठ लाल हो

रक्तकंद, रक्तकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १–मूँगा । विद्रुम । २–प्याज । ३–रतालू ।

रक्तकंदल, रक्तकन्दल [संज्ञा पु.] (सं.) मूँगा । विद्रुम ।

रक्तकंवल, रक्तकम्वल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल । कूँई ।

रक्तक [संज्ञा पु] (सं.) १–गुलदुपहरिया नामक पौधा और फूल । २–लाल सहिंजन का वृक्ष । ३–लाल रेंड़ । ४–लाल रङ्ग का घोड़ा । ५–लाल कपड़ा । [वि.] १–लाल रङ्ग का । २–अनुरागी । प्रेम करने वाला । ३–विनोदी । मसखरा ।

रक्तकदंव, रक्तकदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) कदंव वृक्ष विशेष जिसमें लाल फूल आते हैं ।

रक्तकदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंपा-केला ।

रक्तकमल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल ।

रक्तकरवीर [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रङ्ग की कनेर ।

तकांचन, रक्तकाञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार का वृक्ष ।

तकांता, रक्तकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल पुनर्नवा ।

रक्तका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पानी आँवला ।

रक्तकाश [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें फेफड़े से मुँह के रास्ते खून निकलता है ।

रक्तकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) पतंग की लकड़ी ।

रक्तकुमुद [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल । नीलोफर

रक्तकुरुंडक, रक्तकुरुण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कटसरैया ।

रक्तकुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) विसर्प नामक रोग ।

रक्तकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) १–कचनार । २–आक । ३–धामिन नामक वृक्ष । ४–पारिभद्र वृक्ष ।

रक्तकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनार का पेड़ ।

रक्तकृमिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल । लाह ।

रक्तकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) पारिभद्रक वृक्ष ।

रक्तकेशी [वि.] (हिं.) लाल रङ्ग के बालों वाला ।

रक्तकैरव [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कुमुद ।

रक्तकोकनद [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल ।

रक्तकोप [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त या खून का विकार ।

रक्तक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) रक्तस्राव । लहू बहना ।

रक्तक्षयशोशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में रक्त कम हो जाने के कारण उत्पन्न होने वाला यक्ष्मा रोग ।

रक्तखदिर [संज्ञा पु.] (सं.) रक्तसार ।

रक्तखांडव, रक्तखाण्डव, रक्तखाड़व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का खजूर का वृक्ष ।

रक्तगंधक, रक्तगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) बोल नामक गंधद्रव्य ।

रक्तगंधा, रक्तगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असगंध

रक्तगतज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्वर जो रोगी के रक्त में समा गया हो ।

रक्तगर्भा [संज्ञा स्त्री] (सं.) मेंहदी का पेड़ ।

रक्तगुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय में रक्त की गांठ बंध जाती है ।

रक्तगैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णगैरिक । गेरू ।

रक्तग्रंथि, रक्तग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लाल लज्जावंती । २–एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में लहू की गांठें बन्ध जाती हैं ।

रक्तग्रीव [संज्ञा पु.] (सं) १–कबूतर । २–राक्षस ।

रक्तघ्न [संज्ञा पु] (सं.) रोहितक वृक्ष । [वि.] (सं.) जिससे रक्त का नाश हो ।

रक्तघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की दूब ।

रक्तचंचु, रक्तचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) तोता । शुक ।

रक्तचंदन, रक्तचन्दन[संज्ञा पु.] (सं.) लाल रङ्ग का चंदन ।

रक्तचाप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त वेग अथवा चाप साधारण की अपेक्षा घट या बढ़ जाता है । ब्लड प्रेशर ।

रक्तचित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रङ्ग का चित्रक नामक वृक्ष ।

रक्तचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १–सिंदूर । २–कमीला ।

रक्तच्छर्दि [संज्ञा स्त्री.](सं.) खून की कै या वमन होना ।

रक्तजंतुक, रक्तजन्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा

रक्तज [वि.] (सं.) १–जो रक्त या लहू से उत्पन्न हो । २–रक्त विकार से उत्पन्न होने वाला (रोग) ।

रक्तजकृमि [संज्ञा पु.](सं.) रक्त विकार के कारण उत्पन्न होने वाला रोग ।

रक्तजपा [संज्ञा पु.] (सं.) अड़हुल । जवा । देवी-फल ।

रक्तजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह । शेर । [वि.] (सं.) लाल रंग की जीभ वाला ।

रक्तजूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वार । जोन्हरी ।

रक्ततर [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णगैरिक । गेरू ।

रक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ललाई । लालिमा ।

रक्ततुंड, रक्ततुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शुक । तोता [वि.] (सं.) जिसका मुख लाल रंग का हो ।

रक्ततुंडक, रक्ततुण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) सीस धातु ।

रक्ततृण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लालरंग का तृण ।

रक्ततृणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तृण जिसे गो मूत्रिका भी कहते हैं ।

रक्तदंतिका, रक्तदन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी का वह रूप जो उन्होंने शुम्भ और निशुम्भ को खाने के समय धारण किया था चंडिका ।

रक्तदंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रक्तदंतिका' ।

रक्तदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नलिका नामक गंध-द्रव्य ।

रक्तदूषण [वि.] (सं.) रक्त दूषित करने वाला । जिससे खून खराब या दूषित हो ।

रक्तदृग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोयल । [वि.] (सं.) जिसके नेत्र लाल हों । लाल आँखों वाला ।

रक्तद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) लाल बीजासन वृक्ष ।

रक्तधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांस के भीतर की झिल्ली जिसमें रुधिर बहता है ।

रक्तधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १–गेरू । २–तांबा ।

रक्तनयन [संज्ञा पु.] (सं.) १–कबूतर । २–चकोर ।

रक्तनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रोग जो दाँतों की जड़ में होता है ।

रक्तनाल [संज्ञा पु.] (सं.) जीवनाशक । सुसना ।

रक्तनासिक [संज्ञा पु] (सं.) उल्लू ।

रक्तनिर्यास [संज्ञा पु.](सं.) लाल रंग का बीजा-सन वृक्ष ।

रक्तनील [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का विषैला बिच्छू ।

रक्तनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–सारस पक्षी । २–कबूतर । ३–चकोर । [वि.] (सं.) जिसकी आँखें लाल हों ।

रक्तप [संज्ञा पु.] (सं) राक्षस । [वि.] (सं.) रक्त पीने वाला ।

रक्तपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ ।

रक्तपट [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो लालरंग के कपड़े धारण करता हो । श्रमण ।

रक्तपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पिंडालू ।

रक्तपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–लाल गदहपूरना । २–नाकुली ।

रक्तपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लजालू ।

रक्तपर्णा [संज्ञा पु.] (सं.) १–लाल गदहपूरना । २–नाकुली ।

रक्तपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) अशोकवृक्ष ।

रक्तपा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जोंक। २-डाकिनी।

रक्तपाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बृहती नामक लता।

रक्तपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूनखराबी। मार-काट। २-लहू का गिरना या बहना। ३-ऐसा प्रहार जिससे किसी का रक्त बहे।

रक्तपाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

रक्तपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोता। २-बरगद।

रक्तपायी [वि.] (सं.) [स्त्री. रक्तपायिनी] रक्त या खून पीने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) मरकुण। खटमल।

रक्तपारद [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगुल। शिंगरफ। ईंगुर।

रक्तपाषाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल पत्थर। २-गेरू।

रक्तपिंड, रक्तपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) जवा का फूल।

रक्तपिंडक, रक्तपिण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रतालू। २-जवा।

रक्तपिंडालु, रक्तपिण्डालु [संज्ञा पु.] (सं.) रतालू।

रक्तपिटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल फोड़ा।

रक्तपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह रोग जिसमें मुँह नाक आदि से रक्त निकलता है। २-नाक से खून बहना। नकसीर।

रक्तपित्तहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रतघ्नी नामक दूब।

रक्तपित्ती [संज्ञा पु.] (सं.) जिसे रक्तपित्त रोग हो

रक्तपिपासु [वि.] (सं.) खून का प्यासा। हिंस्र।

रक्तपुच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रेंगने वाला कीड़ा।

रक्तपुनर्नवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल रङ्ग की पुनर्नवा।

रक्तपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनेर। २-अनार का पेड़। ३-गुल दुपहरिया। ४-पुन्नाग।

रक्तपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलास का पेड़। २-सेमल का पेड़।

रक्तपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेमल का पेड़। शाल्मली। २-पुनर्नवा। ३-सिंदूरी। ४-नागदौना। ५-चम्पाकेला।

रक्तपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लाल पुनर्नवा। २-लजालू। लाजवंती।

रक्तपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जवा। अड़हुल। २-धौ। ३-नागदौन। ४-आवर्त्तकी नामक लता। ५-पाँडर।

रक्तपूतिका [संज्ञा स्त्री](सं.) लाल रङ्ग की पूतिका या पोई।

रक्तपूय [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

रक्ताम्रक [संज्ञा पु.] (सं.) इमली।

रक्तपोस्त [संज्ञा पु.] (सं.) लाल पोस्त।

रक्तप्रतिश्याय [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिश्याय का जुकाम का एक भेद जिसमें नाक से खून आता है। बिगड़ा हुआ जुकाम।

रक्तप्रदर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों की योनि से रक्त बहता है

रक्तप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जो पुरुषों को होता है और जिसमें गरम दुर्गंधियुक्त, खारा और खून के रङ्ग का मूत्र आता है।

रक्तप्रवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला रोग।

रक्तप्रसव [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल कनेर। २-मुचकुन्द वृक्ष।

रक्तफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शाल्मलि। २-वट-वृक्ष।

रक्तफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुन्दरू। तुण्डी। २-स्वर्णवल्ली।

रक्तफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जवापुष्प। २-पलाश का वृक्ष।

रक्तफेनज [संज्ञा पु.] (सं.) फेफड़ा।

रक्तबीज [संज्ञा पु.](सं.) १-दाड़िम। अनार। २-शुम्भ और निशुम्भ का एक सेनापति जिसको दुर्गा ने मारा था।

रक्तबीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंदूरपुष्पी।

रक्तभव [संज्ञा पु.] (सं.) मांस। गोश्त।

रक्तमंजर, रक्तमञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत की लता। २-नीम का पेड़।

रक्तमंजरी रक्तमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल कनेर।

रक्तमंडल, रक्तमण्डल [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का सर्प। २-लाल कमल। ३-एक प्रकार जहरीला पशु।

रक्तमंडलिका, रक्तमण्डलिका[संज्ञा स्त्री.](सं.) लाल लज्जावन्ती।

रक्तमत्त [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त पीकर तृप्त होने-वाला।

रक्तमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की लाल रङ्ग की मछली।

रक्तमस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सिर वाला सारस पक्षी।

रक्तमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तन्त्र के अनुसार रोग विशेष। २-वह रस नामक धातु जिसकी उत्पत्ति पचे हुए भोजन से होती है और जिससे रक्त बनता है (वैद्यक)।

रक्तमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोहू मछली। २-यष्टिक धान्य।

रक्तमूर्द्धा [संज्ञा पु.] (सं.) सारस।

रक्तमूलक [संज्ञा पु.](सं.) देवसर्षप नामक सरसों का पेड़।

रक्तमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लजालू। लज्जावंती

रक्तमेह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रक्तप्रमेह'।

रक्तमोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार दूषित रक्त को बाहर निकालने की क्रिया।

रक्तमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का खून निकालना। फस्द।

रक्तयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

रक्तरंगा, रक्तरङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेहँदी

रक्तरंजित, रक्तरञ्जित [संज्ञा पु.] (सं.) हत्या का अपराधी। [वि.] रक्त में रंगा या सना हुआ।

रक्तरज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

रक्तरस [संज्ञा पु.] (सं.) बिजैसार।

रक्तरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना

रक्तराजि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्षपिका नामक कीड़ा जिसका उल्लेख सुश्रुत में है।

रक्तरेणु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंदूर। २-पुन्नाग।

रक्तरैवतक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का खजूर का पेड़।

रक्तरोग [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त के दूषित होने से उत्पन्न होने वाला रोग।

रक्तला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-काकतुंडी। २-गुंजा घुँघची।

रक्तलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) कबूतर।

रक्तवटी [संज्ञा स्त्री.](सं.) शीतला रोग। चेचक

रक्तवरटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीतला। चेचक।

रक्तवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अनार, लाख, ढाक, हलदी, दारुहल्दी, कुसुम के फूल, मजीठ और गुलदुपहरिया के फूल इन सबका समूह। (यह सब रंगने के काम में आते हैं।)

रक्तवर्ण [संज्ञा पु.](सं.) १-बीरबहूटी। २-गोमेद लहसुनिया नग। ३-मूँगा। ४-कमीला।

रक्तवर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल बटेर।

रक्तवर्त्मा [संज्ञा पु.] (सं.) मुरगा।

रक्तवर्द्धन, रक्तवर्धन [वि.] (सं.) रक्त बढ़ाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) बैगन।

रक्तवर्षाभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल पुनर्नवा।

रक्तवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ। २-दंडोत्पल नामक पौधा। ३-नलिका। पयारी। ४-एक प्रकार की लता जिसे पित्ती कहते हैं।

रक्तवसन [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यासी।

रक्तवात [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वात-रोग जिसे वातरक्त भी कहते हैं।

रक्तवालुक [संज्ञा पु.] (सं) सिंदूर।

रक्तविंदु, रक्तविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) १-लहू की बूँद। २-लाल चिचड़ा। ३-वह लाल दाग या धब्बा जो रत्नों में पड़ता है।

रक्तविद्रधि [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त के प्रकोप से होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।

रक्तविस्फोटक [संज्ञा पु.] (सं.) रोग विशेष जिससे सारे शरीर में गुंजा के समान लाल रंग के फफोले हो जाते हैं।

रक्तबीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-दाड़िम। अनार। २-रीठा। ३-एक राक्षस जो शुम्भ और निशुम्भ का सेनापति था।

रक्तबीजका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरदी नामक कटीला पेड़।

रक्तबीजा [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूरपुष्पी।

रक्तवृंतक, रक्तवृन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) पुनर्नवा।

रक्तवृंता, रक्तवृन्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) शेफालिका।

रक्तवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना।

रक्तव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा फोड़ा जिसमें मवाद के स्थान पर रक्त बहता हो।

रक्तशमन [संज्ञा पु.] (सं.) कमीला।

रक्तशालि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चावल जो लाल रंग का होता है। और जिसे शाली या दाऊदखानी कहते हैं।

रक्तशालुक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल की जड़

रक्तशासन [संज्ञा पु.] (सं) सिंदूर।

रक्तशिग्रु [संज्ञा पु.] (सं) लाल सहिंजन।

रक्तशीर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा। २-सारस।

रक्तशोषक [वि.] (सं.) रक्त या खून का शोषण करने वाला। [संज्ञा पु.] जोंक।

रक्तशृंग, रक्तशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय की एक चोटी का नाम।

रक्तशृंगिक, रक्तशृङ्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) विष जहर।

रक्तशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) पुन्नाग।

रक्तश्वेत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विषैला बिच्छू जिसका उल्लेख सुश्रुत में मिलता है।

रक्तष्ठीवि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का घातक सन्निपात।

रक्तसंकोच, रक्तसङ्कोच [संज्ञा पु.] (सं.) कुसुम का फूल।

रक्तसंज्ञक [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकुम। केसर।

रक्तसंदेशिक, रक्तसन्देशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

रक्तसंवरण [संज्ञा पु.] (सं.) सुरमा।

रक्तसर्षप [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सरसों।

रक्तसार [संज्ञा पु.] (सं) १-लालचन्दन। २-पतंग। ३-अमलबेत। ४-खैर। ५-बाराहीकंद। ६-रक्तबीजासन।

रक्तस्तंभन, रक्तस्तम्भन [संज्ञा पु.] (सं) बहते हुए रक्त को रोकने की क्रिया।

रक्तस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर के किसी अंग के कट जाने के कारण उसमें से रक्त या खून बहना। हैमरेज। २-घोड़ों को होने वाला एक रोग जिसमें उनके नेत्रों से लाल पानी या रक्त बहता है।

रक्तहंसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सङ्गीत में एक रागिनी

रक्तहर [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

रक्तांक, रक्ताङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) मूँगा।

रक्तांग, रक्ताङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगलग्रह। २-कमीला। ३-मूंगा। ४-खटमल। ५-केसर ६-लालचन्दन।

रक्तांगी, रक्ताङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ २-जीवन्ती। ३-कुटकी।

रक्तांड, रक्ताण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जो घोड़े के अंडकोष में होता है।

रक्तांबर, रक्ताम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-लालरंग का वस्त्र। २-गेरुआ वस्त्र धारण करने वाला संन्यासी।

रक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सङ्गीत में पंचमस्वर की चार श्रुतियों में से दूसरी का नाम। २-गुंजा। घुँघची। ३-लाख। ४-मजीठ। ५-ऊंटकटारा। ६-एक प्रकार की सेम। ७-एक कंद जिसे लक्षण भी कहते हैं। ८-बच। ९-कान के पास की एक शिरा या नस का नाम। १०-एक प्रकार की मकड़ी।

रक्ताकार [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगा।

रक्तावत [संज्ञा पु.] (सं.) लालचन्दन। [वि.] (सं.) १-रक्त लगा हुआ। २-लाल रङ्गा हुआ ३-खून करने वाला। खूनी। हत्यारा। ब्लडी

रक्ताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकोर। २-सारस। ३-कबूतर। ४-भैंस। ५-साठ सम्वत्सरों में से अट्ठावनवें का नाम।

रक्ताणु [संज्ञा पु.] (सं.) वह जीवाणु जो प्राणियों के रक्त में मिल जाते हैं। ब्लड-कॉर्पसलस।

रक्तातिसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें लहू के दस्त आते हैं।

रक्तधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किन्नरी।

रक्तधार [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़ा।

रक्ताधिमंथ, रक्ताधिमन्थ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्त विकार से होने वाला एक प्रकार का अधिमंथ रोग।

रक्तापह [संज्ञा पु.] (सं.) बोल नामक गंधद्रव्य।

रक्ताब्ज [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

रक्ताभ [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी। [वि.] (सं.) लाल रङ्ग की आभा से युक्त। ललाई लिये हुए।

रक्ताभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लालजवा।

रक्ताभिष्यंद, रक्ताभिष्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) भावप्रकाश के अनुसार आँखों का एक रोग।

रक्ताभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) लाल अभ्रक।

रक्ताम्लान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा जिसमें लाल रङ्ग के फूल आते हैं।

रक्तारि [संज्ञा पु.] (सं.) एक क्षुप जिसे महाराष्ट्री भी कहते हैं।

रक्तारुण [संज्ञा पु.] (सं) लहू के समान लाल।

रक्तार्क [संज्ञा पु] (सं) लाल चन्दन

रक्तार्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक रोग जिसमें देह से पकने और बहने वाली गाँठें निकलती हैं। २-शुक्रदोष के कारण होने वाला एक रोग।

रक्तार्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक आँख का रोग।

रक्तार्श [संज्ञा पु.] (सं.) खूनी बवासीर।

रक्तालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

रक्तालु [संज्ञा पु.] (सं.) रतालू नाम का कंद।

रक्तावरोधक [वि.] (सं) बहते हुए खून को रोकने वाला।

रक्तावसेचन [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का खून निकलवाना।

रक्ताशय [संज्ञा पु.] (सं.) शरीरस्थ वे कोठे जिनमें रक्त रहता है। जैसे-फेफड़ा, हृदय, यकृ आदि।

रक्ताशोक [संज्ञा पु.] (सं) लाल अशोक का वृ

रक्ताश्वारि [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कनेर।

रक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रेम। अनुराग। २-आठ सरसों के बराबर का एक परिमाण। रत्ती।

रक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुंजा। घुंघची।

रक्तिभ [वि.] (सं.) लाल रंग का।

रक्तिम [वि.] (सं.) ललाई लिये हुये। सुर्खीमायल

रक्तिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं) ललाई। लाली। सुर्खी

रक्तेक्षु [संज्ञा पु.] (सं) लाल रंग का ऊख।

रक्तोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

रक्तोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोहू मछली। २-एक प्रकार का विषैला बिच्छू।

रक्तोपदंश [संज्ञा पु] (सं.) आतशक रोग।

रक्तोपल [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू नामक लाल मिट्टी

रक्तोदन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चावल का भात

रक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षक। रखवाला। २-रक्षा। हिफाजत। ३-लाख। लाह। ४-छप्पय छन्द के साठवें भेद का नाम जिसमें ११ गुरु और १३० लघु मात्राएँ या ११ गुरु और १२६ लघु मात्राएँ होती हैं।

रक्षईश [संज्ञा पु.] (हिं.) राक्षस। [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

रक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षा करने वाला। बचाने वाला। २-पहरेदार। ३-पालन करने वाला।

रक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षा या हिफाजत करना। पालन करने की क्रिया। पालनपोषण। २-रक्षक। ३-रखवाला।

रक्षणकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षा करने वाला।

रक्षणारक [संज्ञा पु.] (सं) मूत्रकृच्छ्र रोग।

रक्षणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाणा-लता।

रक्षणीय [वि.] (सं.) [स्त्री. रक्षणीया] जिसकी रक्षा करना उचित हो। रक्षा करने के योग्य।

रक्षन* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'रक्षण'।

रक्षना* [क्रि स.] (हिं.) रक्षा या हिफाजत करना। बचाना। सँभालना।

रक्षपाल [संज्ञा पु.] (सं.) रक्षक।

रक्षमाण [वि.] (सं.) देखो 'रक्ष्यमाण'।

रक्षस* [संज्ञा पु.] (हिं.) असुर। दैत्य। निशाचर।

रक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आपत्ति, आक्रमण, हानि, नाश आदि से बचाना। बचाव। २-वह सूत्र या यंत्र जो बालकों को भूतप्रेत, रोग, नजर आदि की बाधा से बचाने के लिये बाँधा जाता है। ३-गोद। ४-भस्म।

रक्षाइद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राक्षसपन।

रक्षाकवच [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह सूत्र या यंत्र जो बालकों को भूत-प्रेत, रोग, नजर आदि की बाधा से बचाने के लिए बाँधा जाता है। २-सुरक्षण। संरक्षण। अभिरक्षा। सेफगॉर्ड।

रक्षागृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रसूतिकागृह। जच्चाखाना। २-वह सुरक्षित स्थान जिसमें हवाई हमले या इसी प्रकार की अन्य आपत्ति में शरण ली जाती है।

रक्षातिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) नियम-भंग। कानून-कायदा तोड़ना।

रक्षाधिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का वह अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा और उसका शासन करना होता था।

रक्षापति [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का वह राज्य-कर्मचारी जिसका काम राज्य की रक्षा करना होता था।

रक्षापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजपत्र। २-सफेद सरसों।

रक्षापुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) पहरेदार। संतरी।

रक्षापेक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहरेदार। २-अंतःपुर का पहरेदार। ३-अभिनेता। नट।

रक्षाप्रदीप [संज्ञा पु.] (सं) भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षा करने के लिए जलाया हुआ दीपक (तंत्र)।

रक्षाबंधन, रक्षाबन्धन [संज्ञा पु.] (सं) श्रावण-शुक्ला पूर्णिमा को होने वाला हिन्दुओं का एक त्यौहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है। राखीपूनो। सलोनो।

रक्षाभूषण [संज्ञा पु.] (सं) वह भूषण या जंतर जिसमें किसी प्रकार का कवच आदि हो तथा जिसको भूत-प्रेत की बाधा से रक्षित रहने के लिए पहना जाय।

रक्षामंगल, रक्षामङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) भूत-प्रेत आदि की बाधा से बचने के लिए किया हुआ धार्मिक अनुष्ठान।

रक्षामणि [संज्ञा पु.] (सं.) वह मणि अथवा रत्न आदि जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचने के लिए पहना जाय।

रक्षारत्न [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'रक्षामणि'।

रक्षि, रक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्षा करने वाला बचाने वाला। २-पहरेदार। संतरी।

रक्षिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) रक्षा। हिफाजत।

रक्षित [वि.](सं) [स्त्री. रक्षिता] १-जिसकी रक्षा या हिफाजत की गई हो। २-पालापोसा-हुआ। ३-किसी व्यक्ति या काम के लिए अलग किया हुआ। *रिजर्व्ड*।

रक्षित-निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी कार्य के लिए अलग की हुई निधि। *रिजर्व फण्ड*।

रक्षित-राज्य [संज्ञा पु.](सं.) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य अथवा साम्राज्य के संरक्षण में हो और जिसे साम्राज्य से बहुत से परिमित अधिकार प्राप्त हों। *प्रोटेक्टरेट*।

रक्षित-वन [संज्ञा पु.] (सं.) वह वन जो किसी कार्य के लिए अलग किया गया हो और जिसे नष्ट करने का किसी को अधिकार न हो। *रिजर्व्ड-फॉरेस्ट*।

रक्षित-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश का वह सैनिक बल जो संकटकाल के लिये हो। *रिजर्व्ड-पावर*।

रक्षित-सेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संकटकाल के लिए रक्षित की हुई सेना।

रक्षित-स्थान [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी राज्य या देश में वर्गविशेष के लिये अलग नियत किये गये अनुपात के विचार से नौकरियों में पद। *रिजर्व्ड-पोस्टस*। २-किसी राज्य या देश में वर्गविशेष के लिये अलग से नियत किये गये अनुपातानुसार संसद या राज्य-सभाओं में स्थान। *रिजर्व्ड-सीटस*।

रक्षिता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-रक्षा। हिफाजत। २-एक अप्सरा का नाम। ३-बिना विवाह किये ही रखी हुई स्त्री। रखेली।

रक्षी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राक्षसों की पूजा करने वाले। राक्षसों के उपासक। २-रक्षा करने वाला। ३-पहरेदार।

रक्षोगण [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षसों का समूह।

रक्षोघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंग। २-भिलावें का पेड़। ३-सफेद सरसों। ४-रखकर खट्टा किया हुआ चावल का माँड़ या पानी।

रक्षोघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बच। बचा।

रक्षोजननी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-राक्षसों की माता २-रात। रात्रि।

रक्षोहन् [वि.] (सं.) राक्षस को मारने वाला।

रक्ष्य [वि.] (सं.) रक्षा करने के योग्य। रक्षणीय।

रक्ष्यमाण [वि.] (सं.) १-जिसकी रक्षा हो सके। २-जिसकी रक्षा होती हो।

रक्सेताऊस [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह नृत्य जिसमें पेशवाज के दो कोने दोनों स्थानों से पकड़कर कमर तक उठा लिये जाते हैं, जिससे नृत्य करने वाले की आकृति मोर के समान बन जाती है। २-एक प्रकार का चक्कर देते हुए नाचना।

रख, रखा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह भूमि जो पशुओं के चरने के लिए छोड़ी हुई हो।

रखटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की ऊख जिसका गुड़ बनता है। लखड़ा।

रखड़ा [संज्ञा पु.] देखो 'रखटी'।

रखना [क्रि. स.](हिं.) १-स्थित करना। ठहराना। धरना। टिकाना। २-रक्षा या हिफाजत करना। नष्ट न होने देना। ३-एकत्र करना। संग्रह करना। ४-सौंपना या सुपुर्द करना। ५-रेहन (बन्धक) करना। ६-अपने अधिकार में लेना। ७-पालन-पोषण, मनोविनोद अथवा व्यवहार आदि के विचार से अपनी अधीनता में लेना ८-नियुक्त करना। ९-पकड़ या रोक लेना। १०-आघात करना। चोट पहुंचाना। जड़ना। ११-स्थगित करना। १२-उपस्थित न करना। १३-धारण करना। १४-जिम्मे लगाना। मढ़ना। १५-ऋणी होना। १६-मन में धारण करना। अनुभव करना। १७-निवास कराना। ठहराना। १८-उपपत्नी बनाना। १९-उपपति बनाना। २०-गर्भ धारण कराना। २१-पक्षियों आदि का अंडे देना। २२-बचाना। सम्भोग करना (गुंडों की बोली में)। *रख लेना*-किसी वस्तु को दबा लेना वापस न करना। *हाथ रखना*-ऐसी बात कहना जिससे कोई दबे चिढ़े या अहसान माने। (*किसी पर*) *रखकर कहना*-लक्ष्य बनाकर कहना। *रखकर कहना*-किसी बात को पूरी न कहकर उसका कुछ अंश बचा लेना। यौ०-*रखरखाव*-रक्षा। हिफाजत।

रखनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रखी हुई स्त्री। रखेली। उपपत्नी।

रखया [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] रक्षा करने वाली।

रखला+ [संज्ञा पु.] देखो 'रहँकला'।

रखवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेतों की रखवाली २-रखवाली करने की मजदूरी। ३-रखवाली करने की क्रिया या भाव। ४-रखने की क्रिया ढंग या मजदूरी।

रखवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रखने की क्रिया दूसरे से कराना। २-देखो 'रखना'।

रखवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रखवाला। २-चौकीदार।

रखवारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रखवाली'।

रखवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रक्षा करने वाला रक्षक। २-पहरेदार। चौकीदार।

रखवाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

रखशी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का मद्य जिसका सेवन पहाड़ी लोग करते हैं।

रखाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) रखने की क्रिया, भाव

या मजदूरी।

रखाना+ [संज्ञा स्त्री.](सं.) पशुओं के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि। चरी।

रखाना [क्रि. स.] (हि.) रखने की क्रिया दूसरे से कराना। [क्रि. अ.] रखवाली या रक्षा करना नष्ट होने से बचाना।

रखार+ [संज्ञा पु.] (देश.) खेत बराबर करने का एक प्रकार का पाटा जिसका व्यवहार बंबई प्रांत में होता है।

रखाव+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोचरभूमि।

रखिया* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रक्षक। २-रखने वाला। ३-गाँव के पास का वह पेड़ जो पूजनार्थ रक्षित रहता है।

रखियाना [क्रि. स.] (हि.) बरतन आदि को राख से माँजना।

रखी [संज्ञा पु.] (डि.) ऋषि। मुनि।

रखीराज [संज्ञा पु.] (डि.) ऋषिराज। नारदमुनि

रखीसर* [संज्ञा पु.] (हि.) १-नारदऋषि। २-ऋषिवर। बड़ा ऋषि।

रखेड़िया+ [संज्ञा पु.] (हि.) ढोंगी साधु।

रखेल, रखेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विधिवत् विवाह किये बिना ही घर में रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। सुरेतिन।

रखैया+ [संज्ञा पु.] (हि.) १-रखने वाला। २-रक्षा करने वाला।

रखौंड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) राखी। रक्षासूत्र।

रखौंत, रखौंना [संज्ञा पु.] (हि.) गोचरभूमि। चरी।

रगंड़ [संज्ञा पु.] (डि.) हाथी का कपोल।

रग [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शरीर में की नस या नाड़ी। २-पत्तों में दिखाई पड़ने वाली नसें। *रग उतरना*-१-क्रोध उतरना। २-हठ दूर होना। ३-तांत उतरना। *रग खड़ी होना*-शरीर की किसी रग का फूल जाना। *रग चढ़ना*-१-क्रोध या गुस्सा आना। २-हठ के वश होना। *रग दबना*-किसी के अधीन या अधिकार में होना। *रग फड़कना*-अनिष्ट की आशंका होना। *रग-रग फड़कना*-बहुत अधिक उत्साह या चंचलता होना। *रग-रग में*-सारे शरीर में।

रगड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। २-हलके घर्षण से उत्पन्न होने वाला साधारण चिह्न। ३-हुज्जत। झगड़ा। ४-भारी श्रम या मेहनत। *रगड़ पड़ना*-भारी परिश्रम उठाना पड़ना।

रगड़ना [क्रि. स.] (हि.) १-घर्षण करना। घिसना। २-पीसना। ३-किसी से बहुत परिश्रम लेना। ४-तंग या परेशान करना। ५-अभ्यास आदि के लिए बार-बार कोई काम करना। ६-स्त्री के साथ प्रसंग करना(गुण्डों की बोली में)। [क्रि. अ.] बहत मेहनत करना।

रगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रगड़ने की क्रिया या भाव। २-अत्यधिक परिश्रम। ३-निरन्तर या बराबर चलता रहने वाला झगड़ा। यौ०-*रगड़ा-झगड़ा-लड़ाई-झगड़ा।*

रगड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रगड़ने की क्रिया या भाव। २-जी तोड़ मेहनत। कठिन परिश्रम। ३-रगड़ने की मजदूरी।

रगड़ान [संज्ञा स्त्री.] (हि) रगड़ने की क्रिया या भाव। रगड़ा। *रगड़ान देना*-रगड़ना। घिसना।

रगडी+ [वि.] (हिं.) रगड़ा करने वाला। झगड़ालू।

रगण [संज्ञा पु.](सं.) छन्द-शास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह जिसका पहला और तीसरा वर्ण गुरु और बीच का लघु होता है (SIS).

रगत* [संज्ञा पु.] (डिं.) रक्त। रुधिर। लहू।

रगदना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'रगेदना'।

रगदल* [वि.] (डि.) कुबड़ा।

रगपट्ठा [संज्ञा पु.] (हि.) १-शरीर के अन्दर की रगें और माँस-पेशियाँ। २-किसी के विषय की भीतरी और सूक्ष्म बातें। *रग पट्ठे से परिचित या वाकिफ होना*-स्वभाव तथा व्यवहार आदि से पूर्ण परिचित होना। भली प्रकार जानना।

रग़बत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चाह। इच्छा। २-रुचि। प्रवृत्ति।

रगर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रगड़'।

रगरा+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'रगड़ा'।

रग-रेशा [संज्ञा पु.] (फा.) १-नसें। २-शरीर के अन्दर का प्रत्येक ढंग। ३-किसी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात। *रग रेशे में*-शरीर के अंग-अंग में। *रग रेशे से परिचित या वाकिफ होना*-भली प्रकार जानना।

रगवाना* [क्रि. स.] (हिं.) चुप कराना। शान्त कराना।

रगा+ [संज्ञा पु.] (देश.) मोर।

रगाना+ [क्रि. अ.] (देश.) चुप या शान्त होना [क्रि. स.] (हिं.) चुप या शान्त करना।

रगी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार का मोटा अन्न जो मैसूर में होता है। २-देखो 'रागी'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रगीला'।

रगीला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रगीली] १-हठी जिद्दी। २-दुष्ट। पाजी।

रगेद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दौड़ने या भगाने की क्रिया। २-पक्षियों आदि की संभोग की प्रवृत्ति या अवसर।

रगेदना [क्रि. स.] (हि) भगाना। खदेड़ना। दौड़ाना।

रग्गा [संज्ञा पु.] (देश.) रगी नामक मोटा अन्न जो मैसूर में होता है। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अधिक वर्षों के बाद होने वाली के लिये लाभप्रद होती है।

रघु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अयोध्या के सूर्यवंशी राजा जो दिलीप के पुत्र रामचन्द्र के परदादे थे। २-रघु के उत्पन्न कोई व्यक्ति।

रघुकुल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा रघु का वंश।

रघुकुलचंन्द्र, रघुकुलचन्द्र, पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

रघुनंद, रघुनन्द [संज्ञा पु.] (सं.)

रघुनंदन, रघुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रजी।

रघुनाथ, रघुनायक, रघुपति [संज्ञा पु.] श्रीरामचन्द्रजी।

रघुराई* [संज्ञा पु.] (हि.) श्रीरामचन्द्रजी।

रघुराज [संज्ञा पु.] (सं.) रघुकुल के राजा,

रघुराय* रघुरैया* [संज्ञा पु.] (हि.) के राजा, श्रीरामचन्द्र।

रघुवंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाराज रघु या कुल। २-महाकवि कालिदास हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।

रघुवंशकुमार, रघुवंशतिलक, पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

रघुवंशी [वि.] (सं.) रघु के वंश का। में उत्पन्न। [संज्ञा पु.] क्षत्रियों के एक जाति का नाम।

रघुवर, रघुवीर, रघुत्तम, रघूद्वह [संज्ञा पु.] श्रीरामचन्द्र।

रघ्नती [संज्ञा पु.] (डि.) संतोष। सब्र।

रचक [संज्ञा पु.] (सं.) रचना करने या बनाने रचयिता। [वि.] (हि.) देखो 'रंचक'।

रचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रचने या बनाने क्रिया या भाव। निर्माण। बनाव। का ढंग अथवा कौशल। ३-रची या हुई वस्तु। सृजित या निर्मित पदार्थ। से माला या गुच्छे आदि बनाना। करना। ६-उद्यम। कार्य। ७- केशविन्यास। ८-साहित्यिक कृति। [क्रि. (हि.) १-निर्माण करना। बनाना। करना। निश्चित करना। ३-ग्रंथ ४-कल्पना से प्रस्तुत करना। ५-सवारना। सजाना। ६-अनुष्ठान ठानना। ७-उत्पन्न करना। ८- ६-रँगना। रंजित करना। *रचिरंचि*-बहुत ध्यानपूर्वक या (किसी काम को करना) [क्रि. अ.] अनुरक्त होना। २-रंग चढ़ना।

रचनात्मक [वि.] (सं.) १-जो किसी रचना अथवा निर्माण से सम्बन्ध तथा उसमें सहायक हो। २-किसी देश समाज की उन्नति तथा संपन्नता में

होने वाला। कन्स्ट्रक्टिव।

रचनात्मकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रचनात्मक होने का भाव।

रचनीय [वि.] (सं.) रचना करने योग्य।

रचयिता [संज्ञा पु.] (सं.) रचना करने अथवा बनाने वाला।

रचवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रचाने के काम में दूसरे को प्रवृत्त करना। तैयार कराना। बनवाना। २-महावर या मेंहदी लगवाना।

रचाना* [क्रि. स.] (सं.) १-आयोजन अथवा अनुष्ठान करना या कराना। बनाना। २-रंगना। ३-हाथ पैरों आदि में मेंहदी या महावर आदि लगवाना।

रचित [वि.] (सं.) रचा या बनाया हुआ। रचना किया हुआ।

रची+ [वि.] (हिं.) अल्प। थोड़ा।

रचौहाँ* [वि.](हिं.) १-रचा हुआ। २-रँगा हुआ ३-अनुरक्त।

रच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.] देखो 'रच'।

रच्छक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रक्षक'।

रच्छन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रक्षण'।

रच्छनहार* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रक्षक'।

रच्छस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राक्षस'।

रच्छा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रक्षा'।

रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्रियों की जननेन्द्रिय से निकलने वाला रक्त। कुसुम। ऋतु। २-फूलों का पराग। ३-प्रकृति के तीन गुणों में से एक गुण। ४-आकाश। ५-पाप। ६-जल। पानी ७-प्राचीन समय का एक प्रकार का बाजा, जिस पर चमड़ा मढ़ा जाता है। ८-जोता हुआ खेत। ९-माप। १०-बादल। ११-भुवन। लोक। १२-पापड़ा। १३-स्कन्द की एक सेना का नाम। १४-पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धूल। गर्द। २-रात। ३-ज्योति। प्रकाश। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चाँदी। धोबी। रजक।

रजक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. रजका, रजकी] धोबी

रजका, रजकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धोबिन।

रजगीर [संज्ञा पु.] (देश.) फकरा। कूट्ट। कोट्ट।

रजगुण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रजोगुण'।

रजतंत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वीरता।

रजत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चाँदी। रूपा। २-हाथी दाँत। ३-हार। ४-लहू। रक्त। ५-सोना। [वि.] (सं.) १-सफेद। शुक्ल। २-लाल।

रजतकूट [संज्ञा पु.] (सं.) मलयपर्वत की एक चोटी का नाम।

रजतजयंती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी व्यक्ति, संस्था अथवा महत्वपूर्ण कार्य आदि के जन्म या आरम्भ से पच्चीसवें वर्ष होने वाली जयन्ती। सिलवर जुबिली।

रजतद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान।

रजतनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक यक्ष का नाम।

रजतनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के एक वंशधर का नाम।

रजत-पट [संज्ञा पु.] (सं.) वह परदा जिस पर (सिनेमा) चल चित्र आदि दिखाये जाते हैं। सिलवर-स्क्रीन।

रजतपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी का बरतन।

रजतप्रतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने या चाँदी की बनी हुई प्रतिमा।

रजतप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) कैलाशपर्वत।

रजतभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) चांदी का बना हुआ पात्र।

रजतमय [वि.] (सं.) चांदी का बना हुआ।

रजतवाह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

रजताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेदी। श्वेतता।

रजताचल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चांदी का कृत्रिम पहाड़, जो नवाँ महादान है। २-कैलाश पर्वत

रजताद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) कैलाश पर्वत।

रजतोपम [संज्ञा पु.] (सं.) रूपामाखी।

रजधानी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'राजधानी'।

रजन [संज्ञा स्त्री.] (अं. रेजिन) राल।

रजना* [क्रि. अ.] (हिं.) रँगा जाना। [क्रि. स.] रङ्ग में डुबाना। रँगना। [संज्ञा स्त्री.] संगीत की एक मूर्च्छना।

रजनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रात। रात्रि। निशा। २-हल्दी। ३-जतुका-लता। पहाड़ी। ४-नील। ५-दारुहल्दी। ६-लाख। लाह। ७-एक नदी का नाम।

रजनीकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

रजनीगंधा, रजनीगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात के समय फूलने वाला एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल।

रजनीचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-चन्द्रमा [वि.] रात के समय चलने या घूमने-फिरने वाला।

रजनीजल [संज्ञा पु.] (सं.) कुहिरा।

रजनीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) संध्या। सायंकाल।

रजनीरमण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

रजनीश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

रजपूत*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रजपूतिन] देखो 'राजपूत'।

रजपूती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्षत्रिय होने का भाव। क्षत्रियत्व। २-शूरता। वीरता।

रजबली [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा।

रजबहा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी बड़ी नदी अथवा नहर से निकला हुआ बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे-छोटे नाले निकलते हैं।

रजलवाह [संज्ञा पु.](हिं.) मेघ। बादल।

रजवंती, रजवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला।

रजवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-क्षत्रियत्व। २-वीरता।

रजवाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राज्य। देशी रियासत। २-राजा।

रजवार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा का दरबार। राजद्वार।

रजस् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'रज'।

रजस्वला [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसका रज प्रवाहित होता हो। रजवती। ऋतुमतीं।

रजा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मरजी। इच्छा। २-छुट्टी। ३-अनुमति। आज्ञा। हुक्म। स्वीकृति।

रजाइ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आज्ञा। २-देखो 'रजा'।

रजाइस* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आज्ञा। हुक्म।

रजाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का रुई भरा ओढ़ना जिसका उपयोग जाड़े में होता है २-राजा होने का भाव। राजापन।

रजाकार [संज्ञा पु.] (फा.) १-स्वयंसेवक। २-दक्षिण हैदराबाद की एक मुसलिम संस्था, उसके सदस्य तथा स्वयंसेवक जिन्होंने सन् १९४८ में वहाँ के हिन्दुओं पर भारी अत्याचार करने तथा अराजकता फैलाने में विशेष ख्याति प्राप्त की थी।

रजाना [क्रि. स.] (हिं.) १-राज्यसुख का भोग करना। २-बहुत अधिक सुख देना।

रजामंद [वि.] (फा.) सहमत।

रजामंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सहमति। स्वीकृति।

रजाय*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रजा'।

रजायस, रजायसु*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) आज्ञा हुक्म।

रजिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अन्न नापने का प्रायः डेढ़ सेर का एक मान।

रजिस्टर [संज्ञा पु.] (अं.) वह बही या किताब आदि जिसमें किसी मद का आय-व्यय अथवा किसी विषय का विस्तृत विवरण आदि लिखा होता है।

रजिस्टरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-किसी लिखित प्रतिज्ञापत्र को कानून के अनुसार सरकारी रजिस्टरों में दर्ज कराने का काम। २-चिट्ठी, पारसल आदि डाक द्वारा भेजने के समय डाकखाने के रजिस्टर में उसे दर्ज कराने का काम, जिसके लिए कुछ अतिरिक्त फीस या दाम टिकट के रूप में लगाना पड़ता है।

रजिस्ट्रार [संज्ञा पु.](अं.) १-वह अधिकारी जिसका काम लोगों के लिखित प्रतिज्ञापत्रों अथवा दस्तावेजों की कानून के अनुसार रजिस्टरी करना। २-वह उच्च अधिकारी जो किसी विश्वविद्यालय में मन्त्री का कार्य करता हो।

रजिस्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'रजिस्टरी'।

रजीडंट [संज्ञा पु.] देखो 'रेजिडेंट'।

रजील [वि.] (अ.) नीच। छोटी जाति का।

रजु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रज्जु'।

रजोकुल* [संज्ञा पु.] (हिं.) राजवंश। राजा का घराना।

रजोगुण [संज्ञा पु.] (सं.) जीवधारियों की प्रकृति का यह स्वभाव जिससे उनमें भोगविलास तथा बनावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।

रजोगोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

रजोदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) रजस्वला होना। स्त्रियों का मासिकधर्म।

रजोधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों का मासिकधर्म

रजोबल [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार।

रजोभक [संज्ञा पु.] (सं.) बुरी बात से रोकने वाला।

रजोमेघ [संज्ञा पु.] (सं.) धूल का बादल।

रजोरस [संज्ञा पु.] (सं.) अंधकार।

रजोहर [संज्ञा पु.] (सं.) धोबी। रजक।

रज्जु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रस्सी। जेवरी। २-स्त्रियों के सिर की चोटी।

रज्जुकंठ, रज्जुकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन आचार्य का नाम।

रज्जुदालक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जलचर पक्षी।

रज्जुवाल [संज्ञा पु.] (सं.) मनु के मत से एक प्रकार का पक्षी।

रझना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रंगरेजों के रंगे हुए कपड़े निचोड़ने का पात्र।

रटंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रटने की क्रिया या भाव। रटाई।

रटंती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघ के महीने के कृष्ण-की चतुर्दशी जो एक पुण्यतिथि मानी जाती है

रट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोई शब्द या बात बार-बार कहने की क्रिया या भाव।

रटन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रटने की क्रिया या भाव। रट। * [संज्ञा पु.] (सं.) बोलना। कहना।

रटना [क्रि. स.] (हिं.) १-कोई बात या शब्द बार-बार कहना। २-कण्ठस्थ करने के लिए बार-बार कहना या पढ़ना। ३-बार-बार शब्द करना।

रठ+ [वि.] (?) रूखा। शुष्क।

रढ़ना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'रटना'।

रढ़िया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का देशी कपास जो साधारण कोटि की होती है।

रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लड़ाई। युद्ध। जंग। २-रमण। ३-शब्द। ४-गति। ५-दूंबा नामक भेड़ा।

रणअभियान [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई या युद्ध के लिए की जाने वाली सैनिक-यात्रा।

रणकुशल [वि.] (सं.) बड़ा योद्धा।

रणकारी [वि.] (सं.) लड़ाई या युद्ध करने वाला।

[illegible] [वि.] (सं.) लड़ाई करने वाला।

रणक्षिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्धभूमि।

रणक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई का मैदान।

रणक्षेत्र-अभियान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रण-अभियान'।

रणक्षेत्र-तोपखाना [संज्ञा पु.] (हिं) जङ्गी तोपखाना।

रणक्षेत्राधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धक्षेत्र में कार्य करने वाला सैनिक अधिकारी। फील्ड ऑफीसर

रणक्षेत्री [वि.] (हिं.) रणक्षेत्र-सम्बन्धी। रणक्षेत्र में होने या रहने वाली।

रणक्षेत्री-दूरबीन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह दूरबीन जिससे रणभूमि में अपने तथा विपक्षी सैनिक दलों की और लड़ाकू वायुयानों की गतिविधि का पता लगाया जाता है।

रणक्षेत्री-तोप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह तोप जिससे समर-भूमि में शत्रु पक्ष पर घातक आक्रमण किया जाता है।

रणक्षेत्रीय [वि.] (सं.) रणक्षेत्र-सम्बन्धी।

रणखेत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रणक्षेत्र'।

रण-चंडी, रणचण्डी [संज्ञा स्त्री] (सं.) रणक्षेत्र में मारकाट करने वाली देवी।

रणछोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण का एक नाम

रणतूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई का डंका।

रणत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-खड़खड़। झंकार। २-शब्द। ३-गुंजार।

रणदुंदुभि, रणदुन्दुभि [संज्ञा पु.] (सं.) मारू-बाजा। युद्ध का नगाड़ा।

रणन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द या गुंजार करना २-बजना।

रणप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-बाजपक्षी ३-खस।

रणभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लड़ाई का मैदान।

रणभंडा [संज्ञा स्त्री.] (डि.) पृथ्वी।

रणमत्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

रण-मार्शल [संज्ञा पु.] (सं., अं.) सेना का सर्वोच्च सेनापति।

रणमुख [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ने वाली सेना का सब से अगला भाग।

रणमुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) कुचिला।

रणमूर्धजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासिंघी।

रणरंक, रणरङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के बाहिरी दोनों दाँतों के बीच का भाग।

रणरंग, रणरङ्ग [[संज्ञा पु.] (सं.) १-लड़ाई का उत्साह। २-युद्धक्षेत्र। युद्ध। लड़ाई।

रणरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याकुलता। घबराहट २-रंज। पछतावा।

रणरणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-उत्कंठा ३-व्यग्रता। घबराहट।

रणरोज* [संज्ञा पु.] (हिं.) वन में बैठकर व्यर्थ रोना (जिसका कोई फल नहीं होता)। अरण्य-रोदन।

रणलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजयलक्ष्मी।

रणवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) सैनिक। सिपाही।

रणशिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लड़ाई की शि युद्धाभ्यास।

रणशूर [संज्ञा पु] (सं.) वह जो युद्ध में दिखाता हो।

रणसिंघा [संज्ञा पु.] (हिं.) तुरही। नरसिंघा।

रणसिंहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रणसिंघा'।

रणस्तंभ, रणस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध जीतने के स्मारक के रूप में बनवाया हुआ स्तम्भ।

रणस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) रणभूमि।

रण-स्थान [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई का मैदान।

रणस्वामी [संज्ञा पु] (सं.) १-शिव। २-युद्ध प्रधान संचालक या सेनापति।

रणहंस [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जि प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण, और रगण होते हैं।

रणांगण, रणाङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई मैदान। युद्धक्षेत्र।

रणांगन, रणाङ्गन [संज्ञा पु.] (सं.) रणक्षे समरभूमि।

रणाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध का आरम्भ।

रणाजिर [संज्ञा पु.] (सं.) समरभूमि। युद्ध

रणातोद्य [संज्ञा पु.] (सं.) मारूबाजा।

रणापेत [वि.] (सं.) रणभूमि से भागने वा

रणाभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध करना। ल

रणावनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समरभूमि।

रणि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात्र। रात।

रणित [संज्ञा पु.] (सं.) झंकार।

रणेचर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

रणेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु

रणोत्कट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय के अनुचर का नाम। २-एक दानव का

रत [वि.] (सं.) [स्त्री. रता] १-अनुरक्त। लि २-(कार्य आदि में) लगा हुआ। लि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मैथुन। २-योनि लिंग। ४-प्रेम। प्रीति। * [संज्ञा पु.] रक्त। लहू। खून।

रतकील [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

रतकूजित [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन के सम सिसकारी।

रतगिरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) गुंजा। घुंघची।

रतगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) पति। खसम।

रतजगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी उत्सव विहार आदि के उपलक्ष में सारी रात ज [illegible] देना। २-रात भर होने वाला

त्सव। ३-भाद्रपदकृष्णा दूज को होने वाला त्यौहार जिसमें स्त्रियां कजली गाती हैं।

रतज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौवा।

रतताली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटनी।

रतन [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'रत्न'।

रतनजोत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की मणि। २-एक प्रकार का क्षुप जो काश्मीर और कुँमाऊ में अधिकता से होता है। ३-बड़ी दंती।

रतनपुरुष [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार की छोटी झाड़ी।

रतनाकर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'रत्नाकर'। २-देखो 'रतनजोत'।

रतनागर* [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र।

रतनागरभ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी। भूमि।

रतनार [वि.] (हिं.) देखो 'रतनारा'।

रतनारा [वि.] (हिं.) कुछ लाल। सुर्खी लिये हुये

रतनारी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान। [संज्ञा स्त्री.] लाली। लालिमा। [वि.] देखो 'रतनारा'।

रतनारीच [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-कुत्ता ३-आवारा।

रतनालिया* [वि.] (हिं.) देखो 'रतनारा'।

रतनावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रत्नावली'

रतनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) खंजन पक्षी। ममोला

रतबंध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रतिबंध'।

रतमुहाँ* [वि.] (हिं.) [स्त्री. रतमुही] लाल मुँह वाला। [संज्ञा पु.] बन्दर।

रतल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रत्तल'।

तवाँस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों और घोड़ों का वह चारा जो उन्हें रात के समय दिया जाता है।

तवा [संज्ञा पु.] (देश.) खर नामक घास जिसे घोड़े बहुत चाव के साथ खाते हैं।

रतवाई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पहले दिन कोल्हू चलने पर उसका रस लोगों में बांटने की प्रथा।

रतव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

रतशायी [संज्ञा पु.] (हिं.) कुत्ता।

तहिंडक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्रियों का अपहरण करने वाला व्यक्ति। २-लंपट। आवारा

तांजली, रताञ्जली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल चन्दन।

तांदुक, रतान्दुक [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

रता+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भुकड़ी, जो अनेक वस्तुओं पर प्रायः बरसात के दिनों में या सील की जगह में लग जाती है।

रताना* [क्रि. अ.] (हिं.) रत होना। [क्रि. स.] किसी को अपनी ओर रत करना।

रतायनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

ताल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पिंडालू नामक कंद २-धाराहीकंद। गेंठी।

रति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कामदेव की पत्नी जो परम रूपवती मानी जाती है। २-मैथुन। कामक्रीड़ा। ३-प्रेम। प्रीति। ४-शोभा। छवि ५-सौभाग्य। ६-साहित्य में शृंगार रस का स्थाई भाव। ७-जैनमतानुसार वह कर्म जिसका उदय होने से किसी रमणीक वस्तु से मन प्रसन्न होता है। ८-गुप्त भेद। रहस्य। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'रत्ती'। २-रात रात्रि। [वि.] देखो 'रती'।

रतिक*+ [क्रि. वि.] (हिं.) रत्ती भर। बहुत थोड़ा।

रतिकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामी। २-एक प्रकार की समाधि। [वि.] (हिं.) १-जिससे आनन्द की वृद्धि हो। २-जिससे प्रेम की वृद्धि हो।

रतिकर्म, रतिकलह [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन। संभोग।

रतिकांत, रतिकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋषभस्वर की तीन श्रुतियों में से एक।

रतिकुहर [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

रतिकेलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संभोग। भोग-विलास।

रतिक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैथुन। संभोग।

रतिक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संभोग। मैथुन।

रतिगर+ [क्रि. वि.] (हिं.) सवेरे। प्रातःकाल।

रतिगृह [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

रतिजनक [वि.] (सं.) प्रीति उत्पन्न करने वाला।

रतिज्ञ [वि.] (सं.) १-वह जो रतिक्रिया में चतुर हो। २-वह जो किसी स्त्री के मन में अपनी प्रीति-प्रेम उत्पन्न करने में निपुण हो।

रतितस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो स्त्रियों को अपने साथ संभोग करने के लिए प्रवृत करता हो।

रतिताल [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

रतिदान [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग। मैथुन।

रतिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-कुत्ता। ३-चन्द्रवंशीय राजा का नाम।

रतिधन [संज्ञा पु.] (सं.) वह अस्त्र जिससे अन्य अस्त्रों का नाश होता है।

रतिनाग [संज्ञा पु.] (सं.) कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रतिबंध।

रतिनाथ, रतिनायक [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रतिनाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) कामदेव।

रतिपति [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रतिपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण और एक सगण होता है।

रतिपाश [संज्ञा पु.] (सं.) रतिनाग नामक रतिबंध

रतिप्रय [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव। [वि.] कामुक

रतिप्रिया [वि.] (सं.) (वह स्त्री) जिसे मैथुन बहुत प्रिय हो। [संज्ञा स्त्री.] १-शक्ति की एक मूर्ति का नाम। २-दाक्षायिणी का एक नाम।

रतिप्रीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैथुन से प्रसन्न होने वाली नायिका। कामिनी।

रतिबंध, रतिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग या मैथुन करने का एक प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं।

रतिभवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भग। योनि। २-प्रेमी और प्रेमिका के संभोग और क्रीड़ा करने का स्थान।

रतिभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री-पुरुष या नायक-नायिका का परस्पर आकर्षण। दांपत्यभाव। २-प्रीति। प्रेम।

रतिभौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रतिभवन'।

रतिमंदिर, रतिमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भग। योनि। २-वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलकर क्रीड़ा करते हैं।

रतिमदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

रतिमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रतिबंध या आसन।

रतियाना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) प्रेम करना। अनुरक्त होना।

रतिरमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-मैथुन।

रतिरस [संज्ञा पु.] (सं.) सहवास का सुख।

रतिराइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) रतिराज। कामदेव।

रतिराज [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रतिलंपट, रतिलम्पट [वि.] (सं.) संभोगप्रिय

रतिलील [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ताल का एक भेद।

रतिलोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम

रतिवंत [वि.] (हिं.) सुन्दर।

रतिवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-रति के अभिप्राय से किसी स्त्री से की जाने वाली भेंट

रतिवर्द्धन, रतिवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामशक्ति बढ़ाने वाला। २-वह औषध जिससे कामशक्ति बढ़े।

रतिवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रेम। प्रीति।

रतिवाही [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का राग

रतिशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रमण या सहवास करने का बल।

रतिशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें रति की क्रियाओं का वर्णन हो। कामशास्त्र।

रतिसंयोग [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन। संभोग।

रतिसंहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रमण करने की

'योग्यता।

रतिसत्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असबरग।

रतिसमर [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग। मैथुन।

रतिसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) लिंग। शिश्न।

रतिसुंदर, रतिसुन्दर [संज्ञा पु.] (सं) कामशास्त्रानुसार एक प्रकार का रतिबंध।

रती*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कामदेव की स्त्री रति। २-सौंदर्य। शोभा। ३-तेज। कांति। ४-सम्भोग। मैथुन। ५-घुँघची। गुञ्जा। ६-ढाई जौ या आठ चावल का एक मान। [वि.] थोड़ा। कम। अल्प। [क्रि. वि.] जरा सा। रत्तीभर।

रतीक*+ [क्रि. वि.] (हि) देखो 'रतिक'।

रतुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

रतून [संज्ञा पु.] (देश.) पेड़ी की ईख या गन्ना जो काट लेने पर फिर उसी जड़ से निकलता है।

रतोपल* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लाल कमल। २-लाल सुरमा। ३-लाल खड़िया। ४-गेरू।

रतौंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रोग जिसमें रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता।

रत्त* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रक्त'।

रत्तक [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का पत्थर जो कुछ लाल रङ्ग का होता है और ग्वालियर में पाया जाता है।

रत्तल [संज्ञा स्त्री.] (देश) एक तौल जो लगभग आधा सेर की होती है।

रत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आठ चावल की एक तोल। २-वह बाट जो तौल में इतने मान का हो। ३-घुँघची का दाना। ४-शोभा। छवि। रत्ती भर-जरा सा। [वि] (हिं.) बहुत थोड़ा। किंचित्।

रत्थी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अरथी'।

रत्न [संज्ञा पु.] (सं) १-बहुमूल्य, चमकीले प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं। मणि। जवाहिर। नगीना। २-मानिक। लाल। ३-जैनमतानुसार साम्यक्दर्शन, साम्यक्ज्ञान, और साम्यक्चरित्र। [वि.] (सं.) सर्वश्रेष्ठ या बहुत अच्छा।

रत्नकंदल, रत्नकन्दल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवाल मूँगा।

रत्नकर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर का एक नाम।

रत्नकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का जड़ाऊ गहना जो प्राचीनकाल में कान में पहना जाता था।

रत्नकलश [संज्ञा पु.] (सं.) रत्न का बना हुआ कलश।

रत्नकीर्ति [संज्ञा पु.] (सं) एक बुद्ध का नाम।

रत्नकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत का नाम। २-एक बोधिसत्व का नाम।

रत्नकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बुद्ध का नाम। २-एक बोधिसत्व का नाम।

रत्नकोटि [संज्ञा पु.] (सं.) असंख्य रत्न।

रत्नखचित [वि.] (सं.) जिसमें रत्न जड़े हों।

रत्नखानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रत्न की खान। २-समुद्र।

रत्नगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर। समुद्र। ३-एक बुद्ध का नाम।

रत्नगर्भा [संज्ञा स्त्री] (सं.) भूमि। पृथ्वी।

रत्नगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिहार के एक पर्वत का प्राचीन नाम। २-वैद्यक में एक प्रकार का रस।

रत्नगृह [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के स्तूप के बीच की कोठरी जिसमें धातु आदि रक्षित रहती थी

रत्नचंद्र, रत्नचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देवता जो रत्नों के अधिष्ठाता माने जाते हैं। २-एक बोधिसत्व का नाम।

रत्नचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम

रत्नत्रय [संज्ञा पु.](सं.) जैन-मतानुसार साम्यक्दर्शन, साम्यक्ज्ञान और साम्यक्चरित्र, इन तीनों का समूह।

रत्नदाम [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रत्नों की माला। २-राजा जनक की पत्नी का नाम (गर्गसंहिता)

रत्नदीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-रत्न का दीपक। २-एक कल्पित रत्न जिससे पाताल में उजाला रहता है।

रत्नद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) मूँगा।

रत्नद्वीप [संज्ञा पु.](सं.) एक द्वीप जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

रत्नधर [संज्ञा पु.] (सं.) धनवान्। अमीर।

रत्नधार [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोल्लिखित एक पर्वत का नाम।

रत्नधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणवर्णित एक नदी का नाम।

रत्नधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान के निमित्त रत्नों की बनाई हुई गाय। पुराणानुसार इसकी गणना महादानों में होती है।

रत्नध्वज [संज्ञा पु.](सं.) एक बोधिसत्व का नाम

रत्ननाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

रत्ननिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-खंजन-पक्षी। ३-विष्णु। ४-मेरुपर्वत।

रत्नपरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) रत्नों को परखने वाला। जौहरी।

रत्नपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरुपर्वत।

रत्नपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

रत्नपारखी* [संज्ञा पु.] (हि.) रत्न-परीक्षक। जौहरी।

रत्नपीठ [संज्ञा पु.](सं.) तांत्रिकों के मत से एक तीर्थ का नाम।

रत्नप्रदीप [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक के समान चमकने वाला रत्न।

रत्नप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के देवता।

रत्नप्रभा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पृथ्वी। २-जैन मतानुसार एक नरक का नाम।

रत्नबाहु [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

रत्नमंजरी, रत्नमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्याधर का एक भेद।

रत्नमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मणियों की माला या हार। २-राजा बलि की कन्या का नाम।

रत्नमाली [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के देवता।

रत्नमुकुट [संज्ञा पु] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

रत्नमुख्य [संज्ञा पु] (सं.) हीरा।

रत्नराजि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रत्नों का समूह।

रत्नराशि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

रत्नवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-राजा वीरकेतु की कन्या का नाम।

रत्नवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगा।

रत्नशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ रत्न रखे जायें। २-जड़ाऊ महल।

रत्नशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शिला जिसमें अनेक रत्न जड़े हों।

रत्नसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं) रत्नों का समुदाय।

रत्नसंभव, रत्नसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बोधिसत्व का नाम। २-इस नाम का एक ध्यानी बुद्ध।

रत्नसागर [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र या वह स्थान जहाँ से रत्न निकलते हैं।

रत्नसानु [संज्ञा पु] (सं.) सुमेरु पर्वत का एक नाम।

रत्नसू, रत्नसूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

रत्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणवर्णित एक नदी का नाम।

रत्नाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-वह स्थान जहाँ से रत्न मणियाँ निकलती हैं। ३-रत्नसमूह। ४-बुद्ध का नाम। ५-एक बोधिसत्व का नाम। ६-वाल्मीकि मुनि का पहले का नाम।

रत्नागिरि [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'रत्नगिरि'।

रत्नाचल [संज्ञा पु.] (सं.) दान के निमित्त रत्नों का वह ढेर जो पहाड़ के रूप में होता है। पुराणानुसार यह दान स्वर्ग की कामना से किया जाता है।

रत्नाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

रत्नाधिपति [संज्ञा पु] (सं.) कुबेर।

रत्नाभरण [संज्ञा पु.] (सं.) रत्न का गहना।

रत्नाभूषण [संज्ञा पु.] (सं) जड़ाऊ गहना।

रत्नावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मणियों की श्रेणी या माला। २-एक रागिनी। ३-एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ और वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं।

रत्नासन [संज्ञा पु.] (सं.) जड़ाऊ आसन।

रत्नेंद्र, रत्नेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) रत्नों में श्रेष्ठ रत्न।

रत्नोत्तमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की एक देवी का नाम।

रत्नोल्का [संज्ञा स्त्री] (सं.) तांत्रिक के अनुसार एक देवी का नाम।

रथंकर, रथङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक कल्प का नाम। २-एक प्रकार की अग्नि। ३-एक प्रकार का साम।

रथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की सवारी या गाड़ी जो दो या चार पहिये की होती थी। बहल। स्यंदन। २-शरीर। ३-पैर। ४-शतरंज का एक मोहरा, जिसे ऊँट कहते हैं। ५-विहार करने का स्थान। ६-तिनिस का पेड़।

रथकर [संज्ञा पु.] (सं.) रथ बनाने वाला।

रथकल्पक [संज्ञा पु.](सं.) राजा की रथशाला का अधिकारी।

रथकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ बनाने वाला। २-एक जाति विशेष।

रथकारत्व [संज्ञा पु.] (सं) बढ़ई का काम।

रथकुटुंबिक, रथकुटुम्बिक [संज्ञा पु.](सं.) रथवान। सारथी।

रथकुटुंबी, रथकुटुम्बी [संज्ञा पु.] (सं.) रथवान सारथी।

रथकूबर [संज्ञा पु.] (सं.) रथ का वह अगला लम्बा भाग जिसमें जुआ बंधा रहता है।

रथकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) रथ पर लगी हुई ध्वजा

रथक्रांत, रथक्रान्ति [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में ताल विशेष।

रथक्रांता, रथक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्राचीनकाल में एक जनपद का नाम।

रथक्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) रथ में बैठकर चलने पर अनुभव होने वाला झटका।

रथगर्भक [संज्ञा पु.] (सं.) डोली। पालकी।

रथगुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रथ के किनारे या चारों ओर लगा हुआ काठ या लोहे का ढाँचा जो रथ को दूसरे रथ से टकराने से बचाता था।

रथचरण [संज्ञा पु.](सं.) १-रथ के पहिये। २-चक्रवाक। चकवा।

रथचित्रा [संज्ञा स्त्री.](सं) एक प्राचीन नदी का नाम।

रथद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत। २-तिनिश का पेड़।

रथपति [संज्ञा पु.] (सं.) रथ का नायक। रथी।

रथपथ [संज्ञा पु] (सं.) वह मार्ग जिस पर रथ चल सके।

रथपर्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिनिश। २-बेंत।

रथपाद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रथचरण'।

रथस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

रथबंध, रथबन्ध [संज्ञा पु.] (सं) रथ का साज या सामान।

रथमहोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) रथयात्रा नामक उत्सव।

रथयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आषाढ़शुक्ला-द्वितीया को मनाया जाने वाला उत्सव जिसमें लोग प्रायः जगन्नाथजी, बलरामजी और सुभद्राजी की प्रतिमाओं को रथपर सवार कर निकालते हैं। बौद्ध और जैनों में भी उनके देवता रथपर सवार कराकर निकालते हैं।

रथयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) रथ में बैठकर की जाने वाली लड़ाई।

रथयूथ [संज्ञा पु.] (सं.) रथों का दल या झुण्ड।

रथवान् [संज्ञा पु.] (सं.) सारथी।

रथवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सारथी। २-घोड़ा।

रथवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो रथ हाँकता हो

रथवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) रथ में का वह चौकोर ऊपरी ढांचा जो पहियों के ऊपर जड़ा होता है

रथवीथि [संज्ञा पु.] (सं.) सड़क।

रथशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अस्तबल। गाड़ीखाना

रथशिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रथ चलाने का कौशल

रथसप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघशुक्ला-सप्तमी

रथसूत [संज्ञा पु.] (सं.) रथ हांकने वाला। सारथी

रथसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) रथ बनाने का नियम।

रथस्थ [वि] (सं.) रथ पर बैठा हुआ।

रथस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) रथ का शब्द।

रथांग, रथाङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) १-रथ का पहिया २-चक्र नामक अस्त्र। ३-चकवा पक्षी।

रथांगधर, रथाङ्गधर [संज्ञा पु] (सं.) १-श्रीकृष्ण २-विष्णु।

रथांगपाणि, रथाङ्गपाणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णु

रथांगवर्त्ती, रथाङ्गवर्त्ती [संज्ञा पु.] (सं.) चक्रवर्ती सम्राट्।

रथांगी, रथाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं) ऋद्धि नामक औषध।

रथाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ का पहिया या धुरा २-चार-सौ अंगुल का एक प्राचीन परिमाण। ३-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

रथाग्र [संज्ञा पु.](सं.) वह जो बहुत बड़ा योद्धा हो

रथाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत।

रथारूढ़ [वि.] (सं.) रथ पर बैठा हुआ।

रथारोह, रथारोही [वि.] (सं.) रथ पर बैठकर युद्ध करने वाला।

रथावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

रथाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) रथ में जोतने का घोड़ा।

रथिक [संज्ञा पु.](सं.) १-देखो 'रथी'। २-तिनिश का पेड़।

रथी [संज्ञा पु](सं.) १-वह जो रथ पर सवार हो २-रथ पर चढ़कर लड़ने वाला योद्धा। ३-वह योद्धा जो अकेला एक हजार से युद्ध करे। [वि.] (सं.) रथ पर सवार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह ढाँचा जिस पर मुरदों को रखकर अंत्येष्ठि क्रिया के लिए ले जाते हैं। टिकठी। तावूत।

रथोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) रथयात्रा का उत्सव।

रथोद्धता [संज्ञा स्त्री.](सं.) ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः रगण नगण, रगण और एक लघु और एक गुरु होता है।

रथोरग [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

रथोष्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक नदी का नाम।

रथौघ [संज्ञा पु.] (सं.) रथ का वेग।

रथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ में जोड़ा जाने वाला घोड़ा। २-रथ चलाने वाला। ३-पहिया।

रथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रथों के आने-जाने का रास्ता या सड़क। २-वह स्थान जहाँ कई एक सड़कें एक दूसरे को काटती हों। ३-कई एक रथ या गाड़ियाँ। ४-नाली। ५-चौक।

रथ्यायान [संज्ञा स्त्री.](सं.) बड़े नगरों में सड़कों पर बिछी हुई बिजली द्वारा लाईनों पर चलने वाली गाड़ी। ट्रामकार।

रद [संज्ञा पु.] (सं.) दंत। दाँत। [वि.] (अ.) १-नष्ट। खराब। २-तुच्छ या निरर्थक।

रदच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) ओंठ। ओष्ठ।

रदछद* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ओंठ। ओष्ठ २-रति के समय दाँतों के लगने का चिह्न।

रददान [संज्ञा पु.] (सं.) रति के समय दाँतों को ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।

रदन [संज्ञा पु.] (सं.) दशन। दांत।

रदनच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) अधर। ओष्ठ।

रदनी [वि.] (हिं.) दांत वाला।

रदपट [संज्ञा पु.] (सं.) होंठ। ओष्ठ।

रदबदल [क्रि. वि.] (फा.) परिवर्त्तन।

रदी [संज्ञा पु.] (सं) हाथी। गज।

रदीफ [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-घोड़े पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति। २-पीछे की ओर रहने वाली सेना। ३-गजलों आदि में प्रत्येक काफ़िए या अंत्यानुप्रास के बाद बार-बार आने वाला शब्द।

रदीफ़वार [क्रि. वि.](अ., फा.) वर्णमाला के क्रमानुसार। अक्षर क्रम से

रद्द [वि.] (अ.) १-बदला हुआ। परिवर्तित। २-खराब या निकम्मा ठहराया हुआ। रद्द-बदल-परिवर्त्तन। रद्द करना-लोपन। मंसूखी।

रद्दा [संज्ञा पु.] (देश.) १-दीवार पर चुनी हुई ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक तह। २-थाली में चुनी हुई मिठाइयों का स्तर। ३-तह। स्तर। ४-कुश्ती का एक पेंच। ५-चमड़े

की वह मोहरी जो भालुओं के मुख पर बांधते हैं।

रद्दी [वि.] (फा.) निकम्मा। बेकार। [संज्ञा स्त्री.] पुराने और न काम आने वाले कागज।

रद्दीखाना [संज्ञा पु.](फा.) वह स्थान जहां खराब चीजें फैंक दी जाती हैं।

रधार+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ओढ़ने का दोहरा वस्त्र। दोहर।

रन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रण। युद्ध। लड़ाई। २-जङ्गल। वन। [संज्ञा पु.](?) १-झील। ताल २-समुद्र का छोटा खंड।

रनकना* [क्रि. अ.](हिं.) घुँघरू आदि का धीमा शब्द होना।

रनकाना* [क्रि. स.](हिं.) घुँघरू आदि का धीमा शब्द करना।

रनछोर [संज्ञा पु.] (हिं.) रणछोड़। श्रीकृष्ण।

रनना* [क्रि. अ.] (हिं.) झनकार होना। बजना।

रनबँका* [वि.] (हिं.) शूरवीर। बहादुर।

रनबरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नेपाल के जङ्गलों में होने वाली एक प्रकार की भेड़।

रनबाँकुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) शूरवीर बहादुर।

रनलंपिका [संज्ञा स्त्री.] (डि.) गौ। गाय।

रनवादी* [वि.] (हिं.) योद्धा। शूर।

रनवास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रानियों के रहने का महल। अन्तःपुर। २-जनानखाना।

रनवासन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की रुली।

रनसाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) युद्ध या लड़ाई छेड़ना।

रनित* [वि] (हिं.) बजता हुआ।

रनिवास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रनवास'।

रनी* [संज्ञा पु.] (हिं.) वीर। योद्धा।

रनेत [संज्ञा पु.] (डिं.) भाला।

रपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रपटने की क्रिया या भाव। फिसलना। २-दौड़। ३-ढाल। उतार [संज्ञा स्त्री.] (अं. रिपोर्ट) किसी घटना की वह सूचना जो थाने में लिखाई अथवा किसी अधिकारी को दी जाती है। आख्या।

रपटना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-फिसलना। २-तेजी से चलना। झपटना। [क्रि. स.] १-कोई काम झटपट करना। २-मैथुन करना (गुण्डों की बोली में)।

रपटाना [क्रि. स] (हिं.) १-फिसलाना। २-चटपट पूरा कराना। ३-किसी को रपटने में प्रवृत्त करना।

रपट्टा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-फिसलने की क्रिया। फिसलाव। २-झपट्टा। चपेट। ३-दौड़-धूप। *रपट्टा मारना*–१-फिसलना। २-झपटना। *रपट्टा लगाना*–दौड़ना।

रपती [संज्ञा स्त्री.] (डि) तलवार।

रपुर [संज्ञा पु] (डि) स्वर्ग।

रफ [वि.] (अं.) १-जो साफ और ठीक न हो। २-खुरदरा।

रफते-रफते [क्रि. वि.] (हिं.) धीरे-धीरे।

रफल [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'राइफल'। २-ऊनी चादर।

रफा [वि.] (अ.) १-दूर किया हुआ। निवारित। २-दबा हुआ या शांत।

रफादफा [वि.](अ.) १-मिटाया हुआ। २-शांत। निवृत्त।

रफीदा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह गद्दी जिस पर जीन कसा जाता है। २-गोल पगड़ी। ३-वह गद्दी जिसे लगाकर नानबाई तँदूर में रोटी चिपकाते हैं। काबुक।

रफू [संज्ञा पु.] (अ.) १-फटे या कटे हुए कपड़े के छेद में बुनावट की तरह के तागे भरकर उसे बन्द करना। २-इस प्रकार बन्द किया हुआ छेद। *रफू करना*–कही हुई दो असंगत बातों में सामंजस्य स्थापित करना।

रफूगर [संज्ञा पु.] (फा.) रफू करने वाला।

रफूगरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रफूगरों का काम।

रफूचक्कर [वि.] (हिं.) चम्पत। गायब। *रफूचक्कर बनना या होना*–गायब हो जाना।

रफ्तनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-जाने की क्रिया या भाव। २-माल की निकासी।

रफ्तार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चलने का ढङ्ग या भाव। चाल। गति।

रफ्ता-रफ्ता [क्रि. वि.] (फा.) धीरे-धीरे।

रब [संज्ञा पु.] (अ.) ईश्वर। परमेश्वर।

रबड़ [संज्ञा पु.] (अं. रबर] १-बट की जाति का एक वृक्ष। २-इस वृक्ष के दूध का बनने वाला लचीला पदार्थ जिसकी बहुत सी वस्तुएँ बनती हैं। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्यर्थ का श्रम या हैरानी। २-गहराश्रम। रगड़। ३-घुमाव। चक्कर।

रबड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-घुमाव। चलाना। २-फेंटना। [क्रि. अ] (हिं.) घूमना। फिरना।

रबड़छंद [संज्ञा पु.] (हिं.) कविता का ऐसा छंद जिसमें मात्राओं आदि की गिनती का कुछ विचार न हो (व्यंग्य)।

रबड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) औटा कर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई जाती है। बसौंधी।

रबदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह श्रम जो कहीं बार-बार आने जाने से होता है। २-कीचड़। *रबदा पड़ना*–खूब पानी बरसना।

रबर [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'रबड़'।

रबरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'रबड़ी'।

रबाना [संज्ञा पु] (देश.) एक प्रकार का छोटा डफ।

रबाब [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का बाजा जो सारंगी की तरह का होता है।

रबाबिया, रबाबी [संज्ञा पु](हिं.) वह जो रबाब बजाना जानता हो।

रबी [संज्ञा स्त्री] (अ) १-वसंतऋतु। २-वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फसल।

रबील [संज्ञा स्त्री] (देश) एक प्रकार का जिसके डैने भूरे, सिर और छाती चोंच काली तथा पैर खाकी रंग के होते हैं।

रब्त [संज्ञा पु.](अ) १-अभ्यास। २-विशेष या सम्बन्ध। मेलजोल। घनिष्टता।

रब्ध [वि.](सं.) [स्त्री रब्धा] आरम्भ किया हुआ। शुरू किया हुआ।

रब्ब [संज्ञा पुं.] (अ.) देखो 'रब'।

रब्बा+ [संज्ञा पु.](हिं) १-तोप लादने की गाड़ी। २-वह गाड़ी या रथ जिसे बैल खींचते हैं।

रब्बाब [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'रबाब'।

रभस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेग। २-हर्ष। प्रेमोत्साह। ४-उत्सुकता। ५-संभ्रम। ७-एक राक्षस का नाम। ८-शत्रु के चलाये हुये अस्त्र को निष्फल करने की विद्या जो विश्वामित्र ने रामचन्द्रजी को सिखाई थी।

रभसान [वि.] (सं.) जल्दी करने वाला।

रभेणक [संज्ञा पु.](सं.) सांप के रूप में रहने वाले एक राक्षस का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-लाल अशोक। ३-प्रेमी। पति।

रमक [संज्ञा पु] (सं.) १-प्रेमी। २-उपपति। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झूले की पेंग। तरंग। झकोरा। (अ.) १-अन्तिम सांस। हलका प्रभाव। ३-स्वल्प भाग। [वि.] सा। थोड़ा सा।

रमकजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जो भादों में पकता है।

रमकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हिंडोले पर मारना। २-झूमते या इतराते हुए

रमचकरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बेसन की रोटी।

रमजा+ [संज्ञा पु.](हिं.) छोटी कटारी।

रमज़ान [संज्ञा पु] (अ.) एक नाम जिसमें मुसलमान लोग रोजा रखते हैं।

रमझोल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर में पहनने का घुँघरूदार गहना।

रमझोला [संज्ञा पु.](डि.) पैर में पहनने का नूपुर।

रमठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-हींग। २-एक देश और उसके निवासी।

रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विलास। मैथुन। ३-नामक। ४-पति। जघन। ७-अण्डकोष।

सारथी। १०-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं। [वि.] १-सुन्दर। मनोहर। २-प्रिय। आनंददायी। ३-रमने वाला। विलास या क्रीड़ा करने वाला।

रमणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंबूद्वीप के अंतर्गत एक वर्ष या खंड का नाम। २-वीतहोत्र के पुत्र का नाम।

रमणगमना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य में वह नायिका जो यह समझकर दुःखी होती है कि संकेत-स्थान पर नायक आया होगा और मैं वहां उपस्थित न थी।

रमणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'रमणी'।

रमणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर युवती स्त्री। २-स्त्री।

रमणीक [वि.] (सं.) सुन्दर। मनोहर।

रमणीय [वि.] (सं.) सुन्दर। मनोहर।

रमणीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दरता। २-साहित्यदर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे अथवा क्षण-क्षण में नया रूप धारण करे।

रमता [वि.](हिं.) जो बराबर घूमता फिरता रहता हो।

रमति [संज्ञा पु.] (सं.) १-नायक। २-स्वर्ग। ३-कौवा। ४-काल। ५-कामदेव।

रमदी+ [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का अगहनिया धान।

रमन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रमण'। [वि.] देखो 'रमण'।

रमनक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रमणक'।

रमनसोरा [संज्ञा पु.] (देश.) कँवलसोरा नामक मछली।

रमना [क्रि. अ.](हिं.) १-भोगविलास के निमित्त कहीं जाकर ठहरना अथवा रहना। २-आनंद करना। मजा उड़ाना। ३-व्याप्त होना। ४-अनुरक्त या लीन होना। ५-घूमना-फिरना। ६-चलदेना। गायब हो जाना। ७-विहार करना। विचरना। [संज्ञा पु.] १-वह स्थान या घेरा जिसमें पाले हुए पशु चरने के लिए छोड़ दिये जाते हैं। २-बाग। ३-कोई सुन्दर और रमणीक स्थान। ४-घेरा। हाता।

रमनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रमणी'।

रमनीक* [वि.] (हिं.) देखो 'रमणीक'।

रमनीय* [वि.] (हिं.) देखो 'रमणीय'।

रमल [संज्ञा पु.] (अ.) वह विद्या जिसके द्वारा पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना या बतलाया जाता है।

रमली [वि.](अ.) पासे फेंककर शुभाशुभ फल बतलाने वाला।

रमसरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रामशर'।

रमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

रमाकांत, रमाकान्त, रमाधव [संज्ञा पुं.] (सं.) विष्णु।

रमानरेश+ [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्णु।

रमाना [क्रि. स.] (हिं.) १-अनुरक्त या लीन करना लुभाना। २-अपने अनुकूल बनाना। ३-ठहराना। ४-जोड़ना। संयुक्त करना।

रास रमाना-रास रचाना। *भभूत रमाना*-शरीर में भभूत लगाना। *मन रमाना*-मन बहलाना।

रमानिवास [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्णु।

रमापति, रमारमण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

रमाली [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का महीन धान।

रमाबीज [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मीबीज नामक एक तांत्रिक मंत्र।

रमावेष [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीवासचन्दन जिससे तारपीन नामक तेल निकलता है।

रमास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रवाँस'।

रमित* [वि.] (हिं.) जिसका मन किसी में रमा हो। मुग्ध।

रमी [संज्ञा स्त्री.] (मलाय.) सुमात्रा आदि द्वीपों में होने वाली एक प्रकार की घास।

रमूज़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-कटाक्ष। २-सैन। इशारा। ३-पहेली। गूढ़ार्थ। ४-श्लेष। ५-रहस्य। भेद।

रमेश, रमेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

रमैती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-वह रीति जिसमें एक किसान आवश्यकता पड़ने पर दूसरे के खेत में काम करता है और उसके बदले में वह भी काम करा लेता है इस प्रकार दोनों मजदूरी से बच जाते हैं। २-यह दिन जिस दिन इस प्रकार काम किया जाय।

रमैनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कबीरदासजी के बीजक का वह भाग जिसमें दोहे और चौपाइयाँ हैं।

रमैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राम। २-ईश्वर।

रम्माल [संज्ञा पु.] (अ.) पासा फेंककर शुभाशुभ फल बताने वाला।

रम्य [वि.] (सं.) [स्त्री. रम्या] १-सुन्दर। २-मनोरम। [संज्ञा पु.] १-चम्पा का पेड़। २-बक का पेड़। ३-परवल की जड़। ४-वीर्य। ५-अग्निध्र के एक पुत्र का नाम। ६-वायु के सात भेदों में से एक।

रम्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंबूद्वीप के नौ खंडों में से एक। २-महानिंब। बकायन।

रम्यक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) महानिंब। बकायन

रम्यग्राम [संज्ञा पु.](सं.) एक गाँव जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

रम्यता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सुन्दरता। मनोहरता २-रमणीयता।

रम्यपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल का फल।

रम्यफल [संज्ञा पु.] (सं.) कुचिला।

रम्यश्री [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

रम्यसानु [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ के शिखर पर की समतल भूमि।

रम्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रात्रि। रात। २-गङ्गा-नदी। ३-स्थल पद्मनी। ४-इन्द्रायन। ५-लवणाकन्द। ६-मेरु की कन्या का नाम। ७-धैवत-स्वर की तीन श्रुतियों में से अन्तिम। ८-एक रागिनी का नाम।

रम्याचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

रम्यामली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुई आँवला।

रम्याना [क्रि. अ.](हिं.) गाय का बोलना। रँभाना।

रय* [संज्ञा पु.] (हिं.) धूल। गर्द। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेग। तेजी। २-ऐल के छः पुत्रों में से चौथे का नाम।

रयणपत [संज्ञा पु.] (डि.) चन्द्रमा।

रयन*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात।

रयना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-अनुरक्त होना। २-मिलना। संयुक्त होना। ३-बोलना। *[क्रि. स.] (हिं.) रंगना।

रयनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात्रि। रात।

रयबारा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रजबाड़ा'।

रयासत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'रियासत'।

रयिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर। २-अग्नि। ३-एक साम।

रय्यत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रजा।

ररंकार [संज्ञा पु.] (हिं.) रकार की ध्वनि।

रर** [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रटन। रट। [संज्ञा स्त्री] (देश.) बिना चूने गारे की वह दीवार जो एक पर एक यों-ही बड़े-बड़े पत्थर रखकर उठाई गई हो।

ररक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कसक। टीस। साल।

ररकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) कसकना। टीसना। पीड़ा देना।

ररना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'रटना'।

ररिहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ररने वाला। २-रुरुआ नामक पक्षी। ३-बार-बार गिड़गिड़ा कर मांगने वाला। हठी भिखमंगा।

ररी [वि.] (हिं.) झगड़ालू। [संज्ञा पु.] १-गिड़-गिड़ा कर मांगने वाला हठी भिखमंगा। २-अधम। नीच।

रलक [संज्ञा पु.] (सं. एक प्राचीन देश का नाम।

रलना* [क्रि. अ.] (हिं.) मिलना। *रलना-मिलना*-घुलना-मिलना।

रलाना* [क्रि. स.] (हिं.) मिलाना। सम्मिलित करना।

रलिका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रली'।

रली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विहार। क्रीड़ा। २-प्रसन्नता। आनन्द। यौ०-*रंगरली*-आनन्दपूर्ण विहार। [संज्ञा स्त्री.](देश.) चेना नामक अन्न।

रल्ल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रेला। हल्ला।

रल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मृग।

रव [संज्ञा पु.](सं.) १-ध्वनि। गुंजार। नाद। २-

आवाज। शब्द। ३-शोर। गुल। [संज्ञा पु.] (हिं.) रवि। सूर्य। [संज्ञा पु.] (देश.) जहाज की गति या चाल।

रवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वे मोती जो एक धारण में तीस चढ़ते हों। २-तीस मोतियों का लच्छा जो तोल ३२ रत्ती हो। [संज्ञा पु.] (देश.) रेंड नामक वृक्ष।

रवकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दौड़ना। लपकना। २-उमगना। उछलना।

रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँसा नामक धातु। २-कोयल। ३-रव शब्द। ४-ऊँट। ५-विदूषक या भाँड़। [वि.] १-शब्द करता हुआ। २-गरम। तप्त। ३-चंचल। अस्थिर।

रवणरेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यमुना तट की वह रेतीली भूमि जहाँ श्रीकृष्ण ग्वालों के साथ खेला करते थे।

रवताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-राजा या रावत होने का भाव। २-प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवथ [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

रवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पति। स्वामी। [वि.] (हिं.) रमण करने वाला।

रवना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-क्रीड़ा करना। रमण करना। २-बोलना। शब्द करना। [संज्ञा पु.] देखो 'रावण'।

रवनि, रवनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रमणी। सुन्दरी। २-पत्नी। भार्या। स्त्री।

रवन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह नौकर जो स्त्रियों के काम काज करने या सौदा-सुलफ लाने के निमित्त ड्योढ़ी पर रहता है (मुसल०)। २-वह कागज जिसपर भेजे हुए माल का ब्यौरा लिखा रहता है। ३-वह पत्र जिसके द्वारा किसी मार्ग से जाने का अधिकार मिलता है। ट्रानजिट-पास। [वि.] देखो 'रवाना'।

रवाँ [वि.] (फा.) १-प्रवाहित। वहता हुआ। २-चलता हुआ। ३-घोटा हुआ। ४-अभ्यास। ५-पैना। तेज। ६-देखो 'रवाना'।

रवाँस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लोबिया जिसकी तरकारी पकाई जाती हैं।

रवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा। कण। दाना। २-सूजी। ३-वारूद का दाना। ४-घुँघरुओं में शब्द करने के लिए डालने के छर्रे। [वि.] (फा.) १-ठीक। उचित २-प्रचलित। चलनसार।

रवा भर–बहुत थोड़ा। जरा-सा।

रवाज [संज्ञा स्त्री.] (फा.) परिपाटी। प्रथा। चलन *रवाज देना*–प्रचलित या जारी करना। *रवाज पकड़ना*–धीरे-धीरे प्रचार पा जाना।

रवादक [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जिसने गिरवी रखे धन को हजम कर लिया हो।

रवादार [वि.] (फा.) १-संबंध या लगाव रखनेवाला। २-शुभचिंतक। हितैषी। (हिं.) दानेदार। जिसमें कण हों

रवानगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) प्रस्थान।

रवाना [वि.] (फा.) १-जो कहीं से किसी अन्य स्थान के लिए चल पड़ा हो। प्रस्थित। २-भेजा हुआ।

रवानी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-रवाँ होने का भाव। प्रवाह। वहाव। २-विदाई।

रवाव [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'रवाव'।

रवाविया [संज्ञा पु.] देखो 'रवाविया'। (देश.) लाल वलुआ पत्थर।

रवायत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-कहानी। २-कहावत।

रवारवी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शीघ्रता। जल्दी। २-दौड़ादौड़।

रवासन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

रवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-आक। ३-अग्नि। ४-नायक। सरदार। ५-लाल अशोक-वृक्ष। ६-पुराणानुसार एक आदित्य का नाम। ७-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ८-इस नाम का एक पर्वत।

रविकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकिरण।

रविकांतमणि, रविकान्तमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकांतमणि।

रविकीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) आक। मदार।

रविकुल [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यवंश।

रविचंचल, रविचञ्चल [संज्ञा पु.](सं.) लोलार्क नामक तीर्थ-स्थान जो काशी में है।

रविचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य के चारों ओर दिखाई पड़ने वाला लाल गोला। २-सूर्य के रथ का पहिया। ३-फलित-ज्योतिष में वह चक्र जिससे वालक के जीवन की शुभाशुभ वातें जानी जाती हैं।

रविज [संज्ञा पु.] (सं.) शनैश्चर।

रविजकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के पुच्छल-तारे जिनकी उत्पत्ति सूर्य से मानी जाती है।

रविजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) यमुना।

रविजात [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य की किरण।

रविजेंद्र, रविजेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के एक आचार्य का नाम।

रवितनय [संज्ञा पु.](सं.) १-यमराज। २-सावर्णिमनु। ३-वैवस्तमनु। ४-शनैश्चर। ५-सुग्रीव। ६-कर्ण। ७-अश्विनीकुमार।

रवितनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

रवितनुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

रवितीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम (पुराण)।

रविदिन [संज्ञा पु.] (सं) रविवार।

रविनंद, रविनंदन, रविनन्द, रविनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्ण। २-यम। ३-अश्विनीकुमार। ४-सुग्रीव। ५-सावर्णिमनु। ६-वैवस्वतमनु। ७-शनि।

रविनंदिनी, रविनन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (स यमुना।

रविनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) पद्म। कमल।

रविपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रविनंदन'।

रविपूत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रविनंदन'।

रविप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल कमल। २-तांवा। ३-लाल कनेर। ४-आक। मदार। ५-लकुच या लकुट नामक वृक्ष या फल।

रविप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवी की एक मूर्ति।

रविविंब, रविविम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १- मंडल। २-मानिक।

रविमंडल, रविमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) सू के चारों ओर दिखाई देने वाला लाल गो

रविमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकांतमणि।

रविरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकांतमणि।

रविरत्नक [संज्ञा पु.] (सं.) माणिक्य।

रविमूल [संज्ञा पु.] (सं.) आक की जड़

रविलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

रविलौह [संज्ञा पु.] (सं.) ताँवा।

रविवंश [संज्ञा पु] (सं.) सूर्यकुल।

रविवंशी [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकुलोत्पन्न। सूर्यवंशी।

रविवाण [संज्ञा पु.](सं.) वह वाण जिसके चलने से सूर्य के समान प्रकाश होता है।

रविवार [संज्ञा पु.](सं.) इतिवार। आदित्यवार। शनिवार के वाद और सोमवार के पहले पड़ने वाला दिन।

रविवासर [संज्ञा पु.] (सं.) रविवार। इतवार।

रविश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गति। चाल। २-तरीका। ढंग। ३-वाग की क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

रविसंक्रांति, रविसङ्क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जा

रविसंज्ञक [संज्ञा पु.] (सं.) ताँवा।

रविसारथि [संज्ञा पु.] (सं.) अरुण।

रविसुंदर, रविसुन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के रस विशेष जो भगंदर रोग के लिये उपकारी माना जाता है।

रविसुअन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अश्विनीकुमार। २-देखो 'रविनंद'।

रविसुत, रविसूनु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रविनंदन'।

रवींद्र, रवीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) पद्म। कमल।

रवीला [वि.](हिं.) जिसमें कण या रवे हों। रवेदार।

रवीशु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चलन। चाल-चलन। २-तरीका। ढंग। यौ०-रंग रवैया-रंग-ढंग

रशना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करधनी। ❀[संज्ञा स्त्री.] देखो 'रसना'।

रशनाकलाप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की करधनी जो प्राचीनकाल में स्त्रियाँ कमर में पहनती थी।

रशनागुण [संज्ञा पु.] देखो 'रशनाकलाप'।

रशनोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रसनोपमा नामक अलंकार।

रश्क [संज्ञा पु.] (फा.) ईर्ष्या। डाह।

रश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) १-किरण। २-घोड़े की लगाम। बाग। ३-पलक के रोएँ। बरौनी।

रश्मिकलाप [संज्ञा पु.] (सं.) ५४ या ६४ लड़ियों वाला मोतियों का हार।

रश्मिकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक राक्षस का नाम २-कृत्तिकानक्षत्र में स्थित होकर उदित होने वाला पुच्छलतारा।

रश्मिक्रीड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम जिसका उल्लेख रामायण में मिलता है।

रश्मिप्रभास [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

रस [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसना या जीभ के द्वारा मुख में डाले हुए पदार्थों का अनुभव। खाने की वस्तु का स्वाद जो छः प्रकार का होता है। यथा-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय। २-छः की संख्या। ३-वैद्यक के मत से शरीरस्थ सात धातुओं में से पहली। ४-किसी पदार्थ का सार या तत्व। ५-साहित्य के अनुसार वह आनंदात्मक चित्तवृत्ति अथवा अनुभव जो विभाव, अनुभाव तथा संचारी से युक्त किसी स्थायीभाव के व्यंजित होने से उत्पन्न होता है। रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, आश्चर्य तथा निर्वेद इन नौ स्थायीभावों के अनुसार नौरस माने गये हैं जो इस प्रकार हैं-शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत। इन नौ रसों के अतिरिक्त कोई-कोई 'वात्सल्यरस' को दसवां रस मानते हैं। ६-नौ की संख्या। ७-सुख का अनुभव (विशेषतः यौवन का)। आनन्द। मजा। ८-प्रेम। प्रीति। ९-काम। क्रीड़ा। विहार। १०-उमंग। जोश। वेग। ११-गुण। १२-किसी विषय का आनन्द। १३-कोई तरल या द्रव-पदार्थ। १४-जल। पानी। १५-रस। शोरवा। १६-वनस्पतियों, फलों आदि का तरल अंश जो उनको कूटने या निचोड़ने से प्राप्त होता है। १७-शरबत। १८-वृक्ष का निर्यास। १९-लासा। लुआब। २०-वीर्य। २१-एक रोग जो घोड़ों और हाथियों को होता है। इसमें इनके पैरों में विषैला पानी बहता है। २२-विष २३-राग। २४-पारा। २५-शिलारस। २६-गन्धरस। २७-हिंगुल। २८-वैद्यक के अनुसार धातुओं को फूंककर बनाया हुआ भस्म इसका व्यवहार औषध रूप में होता है। २९-पहले सिवाय का शोरा। ३०-उपनिषद के अनुसार आनन्दस्वरूप ब्रह्म। ३१-केशव-कवि के मतानुसार रगण और सगण। ३२-मन की तरंग। ३३-भाँति। तरह। ३४-एक प्रकार की भेड़। ३५-बोल नामक गन्धद्रव्य। यौ०-*रस रंग*-१-प्रेम के द्वारा उत्पन्न होने वाला आनन्द या मजा। २-प्रेमक्रीड़ा। केलि *रस भीजना या भीनना*-यौवन का आरम्भ और संचार होना।

रसक [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिटकरी। २-खपरिया

रसककार-वेल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) पतला खपरिया।

रसकपूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक सफेद उपधातु जो औषध रूप में प्रयुक्त होती है।

रसकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक की वह प्रक्रिया जिससे पारे की सहायता से रस आदि तैयार किया जाता है।

रसका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षुद्रकुष्टरोग विशेष।

रसकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुशद्वीप की एक नदी का नाम।

रसकेलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विहार। २-क्रीड़ा। ३-हँसी ठट्ठा। दिल्लगी।

रसकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

रसकेसरी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की रसौषध जो विसूचिका आदि रोगों में उपयोगी मानी जाती है।

रसकोरा [संज्ञा पु.] (सं.) रसगुल्ला (मिठाई)।

रसखर्पर [संज्ञा पु.] (सं.) खपरिया।

रसखीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मीठा भात। शर्बत या ऊख के रस के रस में पकाये हुये चावल।

रसगंध, रसगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रस-गन्धक'।

रसगंधक, रसगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंधक २-बोल गंधद्रव्य। ३-रसौत। रसायन। ४-शिगरफ। हिंगुल।

रसगतज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर की रस धातु में समाया हुआ ज्वर (वैद्यक)।

रसगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसौत। रसांजन। २-हिंगुल। ईंगुर।

रसगुनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काव्य अथवा संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

रसगुल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) छेने से बनने वाली एक बंगला मिठाई।

रसग्रह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीभ।

रसघन [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्दघन श्रीकृष्ण। [वि.] जो बहुत अधिक स्वादिष्ट हो।

रसघ्न [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुहागा।

रसछन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रसछन्नी] गन्ने का रस छानने की चलनी।

रसज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुड़। २-रसौत। ३-शराब की तलछट।

रसजात [संज्ञा पु.] (सं.) रसौत। रसांजन।

रसज्ञ [वि.] (सं.) १-रस का जानने वाला। २-काव्य अथवा साहित्य का मर्म तथा गुण समझने वाला। ३-निपुण। कुशल। ४-रसावनी।

रसज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रसज्ञ होने का भाव।

रसज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंगा। २-जीभ।

रसज्येष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुर या मीठा रस। २-शृङ्गार रस।

रसडली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रसवली नामक गन्ना

रसतम [संज्ञा पु.] (सं.) उत्कृष्ट रस।

रसतन्मात्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पांच मात्राओं में से चौथे तत्व जल की तन्मात्रा।

रसता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रस का भाव या धर्म।

रसतालेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक रस औषध जो कुष्ट रोग में व्यवहृत होती है।

रसतेज [संज्ञा पु.] (हिं.) लहू। खून।

रसत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार दूध, दही, घी, तेल, मीठा, पकवान आदि स्वादिष्ट पदार्थों का त्याग करना, जो एक प्रकार का नियम या आचार माना जाता है।

रसत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रसता'।

रसद [वि.] (सं.) १-स्वादिष्ट। २-सुखद। [संज्ञा पु.] चिकित्सक। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह जो बांटने पर हिस्से के अनुसार मिले। २-कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो (भोजन के लिये)। ३-सेना का वह खाद्य-पदार्थ जो उसके साथ रहता है।

रसदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सँभालू।

रसदार [वि.] (हिं.) १-जिसमें किसी प्रकार का रस हो। रसवाला। २-स्वादिष्ट।

रसदालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गन्ना।

रसद्रावी [संज्ञा पु.] (सं.) जँबरी नीबू।

रसधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा। २-शरीर की रस नामक धातु।

रसधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार दान के निमित्त बनाई हुई गुड़ आदि गौ।

रसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चखना। स्वाद लेना। २-ध्वनि। ३-जीभ। जबान। ४-कफ का एक नाम। [वि.] (हिं.) पसीना लाने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) रस्सा

रसना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीभ। जिह्वा। २-जीभ से अनुभव होने वाला स्वाद। ३-नागदौनी नामक औषध। ४-करधनी। ५-गंध-भद्रा-लता। ६-लगाम। ७-रस्सी। ८-चन्द्रहार। *रसना खोलना*-बोलना आरम्भ करना। *रसना तालू से लगना*-चुप होना। [क्रि. अ.] (हिं.) १-धीरे-धीरे बहाना या टपकना। २-किसी वस्तु का गीला या तर होकर जल या रस छोड़ना या टपकाना। ३-तन्मय या मग्न होना। ४-प्रेम में अनुरक्त होना। ५-स्वाद लेना। ६-प्रफुल्लित होना

रस-रस या रसे-रसे -धीरे-धीरे ।

रसनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) पारा ।

रसनाभ्द [संज्ञा पु.] (सं.) नितम्ब । चूतड़ ।

रसनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) रसौत ।

रसनायक [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव । पारा ।

रसनारद [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी । (बोलने के लिए इनके केवल जीभ होती है, दाँत नहीं होते ।)

रसनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष ।

रसनीय [वि.] (सं.) १-स्वाद लेने या चखने योग्य । २-स्वादिष्ट । मजेदार ।

रसनेंद्रिय, रसनेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीभ । जिह्वा ।

रसनेत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैनसिल ।

रसनेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) ऊख । गन्ना ।

रसनोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा-अलङ्कार का एक भेद । जिसमें मात्राओं की एक शृङ्खला बँधी होती है तथा पहले कहा उपमेय आगे चलकर उपमान हो जाता है ।

रसपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-पारा । ३-शृङ्गाररस । ४-राजा ।

रस-परित्याग [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार दूध दही, चीनी आदि या इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं का सेवन न करना चाहिए ।

रसपर्पटी [संज्ञा स्त्री.](सं.) वैद्यक में एक रसौषध जिसे संग्रहणी, बवासीर, ज्वर, गुल्म, जलोदर आदि में सेवन करते हैं ।

रसपाकज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुड़ । २-चीनी ।

रसपाचक [संज्ञा पु.] (सं.) रसोइया ।

रसपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धक, नमक और पारे से बनने वाली एक औषध ।

रसपूर्त्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शतावर । २-मालकँगनी ।

रसप्रबंध, रसप्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाटक । २-वह कविता जिसमें एक ही विषय बहुत सम्बद्ध पद्यों में वर्णित हो ।

रसफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँवला । २-नारियल का वृक्ष ।

रसबंधकर, रसबन्धकर [संज्ञा पु.](सं.) सोमलता

रसबंधन, रसबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार शरीरस्थ नाड़ी के एक अंश का नाम ।

रसबत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुराने ढङ्ग की तोपों और बन्दूकों को चलाने का एक प्रकार का पलीता ।

रसबरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रसभरी' ।

रसभरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का स्वादिष्ट फल जो वसन्तऋतु में आता है ।

रसभव [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त । खून ।

रसभस्म [संज्ञा पु.] (सं.) पारे का भस्म ।

रसभीना [वि.](हिं.) [स्त्री. रसभीनी] १-आनन्द-मग्न । २-तर । गीला ।

रसभेद [संज्ञा पु.] (सं.) पारे से तैयार होने वाली एक वैद्यक औषध ।

रसभेदी [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा पका हुआ फल जो रसाधिक्य के कारण फट जाय और जिसमें से रस चूने या बहने लगे ।

रसभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) तरल पदार्थ का सेवन

रसमंडूर, रसमण्डूर [संज्ञा पु.](सं.) वैद्यक में एक रसौषध जो शूलरोग में काम आती है ।

रसम [संज्ञा स्त्री.] देखो 'रस्म' ।

रसमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में वह प्रक्रिया जिससे पारे को मारा या भस्म किया जाता है

रसमल [संज्ञा पु.](सं.) वह मल जो शरीर से निकलते हैं । जैसे—पसीना, गू, मूत्र, थूक आदि ।

रसमसा [वि.](हिं.) [स्त्री. रसमसी] १-आनन्द-मग्न । अनुरक्त । २-गीला । तर । ३-पसीने से भरा । श्रांत ।

रसमाणिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल से बनने वाली एक वैद्यक औषध ।

रसमाता* [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) जीभ ।

रसमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीभ ।

रसमारण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में पारे को मारने या शुद्ध करने की क्रिया ।

रसमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिलारस नामक सुगंधित द्रव्य ।

रसमि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किरण । २-आभा चमक ।

रसमुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक बंगला मिठाई का नाम ।

रसमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकृत छन्द का एक भेद ।

रसमैत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो ऐसे रसों का मिलना जिनके मिश्रण से स्वाद में वृद्धि हो ।

रसयति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चखना ।

रसयिता [वि.] (सं.) चखने वाला ।

रसयोग [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक औषध का नाम ।

रसरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रसरी] रस्सा ।

रसराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा । २-शृंगाररस । ३-रसौत । रसांजन । ४-वैद्यक में एक औषध जिसका व्यवहार तिल्ली और बरवट आदि में होता है ।

रसराय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रसराज' ।

रसरी*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी ।

रसल [वि.] (हिं.) जिसमें रस हो । रसयुक्त । रसीला ।

रसलह [संज्ञा पु.] (सं.) पारा ।

रसवंत [संज्ञा पु.] (हिं.) रसिक । रसिया । रसज्ञ [वि.] (हिं.) जिसमें रस हो । रसीला ।

रसवंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रसौत । रसांजन ।

रसवट [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव के छेद भरने का मसाला ।

रसवत् [वि.] (सं.) [स्त्री. रसवती] जिसमें रस हो । रसवाला । [संज्ञा पु.] वह काव्यालंकार जिसमें एक रस किसी अन्य रस या भाव का अंग होकर आता है ।

रसवत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रसौत । २-

रसवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रसोईघर । २- संपूर्ण जाति की एक रागिनी ।

रसवत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रसीलापन । २- मिठास । ३-सुन्दरता ।

रसवर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) अनार का फूल, का फूल, कुसुम का फूल, लाख, हलदी, आदि द्रव्य जिन से रङ्ग निकलता है ।

रसवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का

रसवाद [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेम या आनन्द की रसीली बातचीत । २-प्रेमपूर्ण विवाद या झगड़ा । ३-बकवाद ।

रसवान् [संज्ञा पु.] (सं.) वह पदार्थ जिसमें ऐसा गुण या शक्ति हो कि जब उस पदार्थ के रसना से संयुक्त हों, उस समय किसी प्रतिबंधक हेतु के न रहने से विशेष प्रकार अनुभव हो ।

रसवास [संज्ञा पु.] (सं.) ढगण के पहले भेद (IS) की संज्ञा ।

रसवाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक के अनुसार वह नाड़ी जो खाये हुए भोजन से बने हुए पदार्थ को फैलाती है ।

रसविक्रयी [संज्ञा पु.] (हिं.) शराब बेचने वाला

रसविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुश्रुत के अनुसार कुछ मतों का ठीक मेल न होना । २-साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति

रसविरोधक [संज्ञा पु.] (सं.) सोना ।

रसशार्दूल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस ।

रसशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) रसायनशास्त्र ।

रसशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रस जो उपदंश आदि रोगों के लिए उपकारी माना जाता है ।

रसशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह क्रिया जिससे पारे को शुद्ध किया जाता है । २-सुहागा ।

रससंभव, रससम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त । खून ।

रससंरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक की वह क्रियाएँ जिनसे पारे को शुद्ध करना, मूर्छित करना, बाँधना और भस्म करना है ।

रससंस्कार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में वे अठारह संस्कार जिनसे पारे को मूर्छित आदि किया जाता है ।

रससागर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणवर्णित सात समुद्रों में से एक ।

रससाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में

चिकित्सा करने से पूर्व यह देखना कि शरीर में कौनसा रस अधिक तथा कौनसा कम है।

रसमार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधु। २-विष।

रससिंदूर [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में हरगौरी नामक रस।

रसस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगुल।

रसस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) अम्लवेत।

रसांगक, रसाङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीवेष्ठ (वृक्ष)।

रसांजन, रसाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसौत। २-सुरमा।

रसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पृथ्वी। २-जीभ। ३-नदी। ४-रसातल। ५-शिलारस। ६-मेदा। ७-अंगूर। ८-शल्लकी। ९-रासना। १०-पाढ़ा। पाठा। ११-काकोली। १२-आम। १३-एक मोटा अन्न जिसे कंगनी भी कहते हैं [संज्ञा पु.] (हिं.) तरकारी आदि का पका हुआ तरल अंश। झोल। शोरवा।
यौ०-*रसेदार*-शोरवेदार।

रसाइन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रसायन'

रसाइनी* [संज्ञा पु.](हिं.) १-रसायन विद्या का ज्ञाता। २-रसायन बनाने वाला। कीमियागर।

रसाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुंच।

रसाखन [संज्ञा पु.] (सं.) मुरगा।

रसाग्रज [संज्ञा पु.] (सं.) रसौत।

रसाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा। २-रसौत।

रसाज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन करने पर भी उसके रस का अनुभव न करना।

रसाढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) अमड़ा।

रसाढ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना।

रसातल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छटा (पुराण)। *रसातल में पहुँचाना*-मटियामेट कर देना। *रसातल में जाना*-नष्ट होना।

रसदार [वि.] (हिं.) झोलदार। शोरबेदार।

रसधार [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

रसाधिक [संज्ञा पु.] (सं.) सुहागा।

रसाधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किशमिश।

रसाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का वह राज्य-कर्मचारी जिसका काम मादकद्रव्यों की जाँच-पड़ताल तथा उनकी बिक्री आदि की व्यवस्था करता था।

रसाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-रसपूर्ण करना। २-प्रसन्न करना।

रसापति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

रसापायी [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीभ से पानी पीने वाला जंतु। २-कुत्ता।

रसाभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-साहित्य में किसी रस का ऐसे अवसर पर अथवा स्थान पर उपयोग, जहां वह उचित या उपयुक्त न हो। २-एक प्रकार का अलंकार जिसमें उक्त ढंग का वर्णन होता है।

रसामग्न [संज्ञा पु.] (सं.) बोल नामक गंधद्रव्य

रसामृत [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रस जो रक्तपित्त और ज्वर आदि में लाभप्रद होता है

रसाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमलबेद। २-वृक्षाम्ल। ३-चुक नामक खटाई।

रसाम्लक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास।

रसाम्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पलाशी नामक लता

रसायक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास।

रसायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-तक्र। २-कटि। कमर ३-विष। ४-वैद्यक के अनुसार वह औषध जो मनुष्य को सदा स्वस्थ और पुष्ट बनाये रखता है। ५-ताँबे से सोना बनाने का एक कल्पित योग। ६-पदार्थों के तत्वों का ज्ञान। ७-वायबिडङ्ग। ८-धातुविद्या जिसमें धातुओं को भस्म करने अथवा एक धातु को दूसरी धातु में परिवर्तित करने की क्रिया या वर्णन रहता है।

रसायनज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) रसायन क्रिया या विद्या का जानकार।

रसायनफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हड़। हर्रे।

रसायनवर [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

रसायनवरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कँगनी। २-काकजंघा।

रसायनविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वैज्ञानिक उपाय से तत्वों का ज्ञान।

रसायनशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के तत्वों और भिन्न-भिन्न दशाओं में उनमें होने वाले विकारों का विवेचन होता है। कैमिस्टरी।

रसायनश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

रसायनिक [वि.](सं.) देखो 'रासायनिक'।

रसायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुढ़ापे को रोकने या दूर करने वाली औषध। २-गुडुच। ३-मकोय। ४-महाकरंज। ५-गोरखदुद्धी। ६-मांसरोहिणी। ७-मजीठ। ८-एक लता जिसे कनफोड़ा कहते हैं। ९-कौंछ। १०-सफेद निसोथ। ११-शंखपुष्पी। १२-कंदगिलोय। १३-नाड़ी।

रसार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रसाल'।

रसाल [संत्रा पु.] (सं.) १-आम। २-गन्ना। ३-गेहूँ। ४-कटहल। ५-अम्लवेत। ६-कुन्दुर-तृण। ७-शिलारस। ८-बोल नामक गंध-द्रव्य [वि.] १-मधुर। २-रसीला। ३-सुन्दर। ४-स्वादिष्ट। ५-शुद्ध। ६-रसिक। रसिया। * (हिं.) कर। राजस्व।

रसालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम का पेड़। २-वह स्थान जहां रस आदि बनते हों। ३-आमोद-प्रमोद का स्थान।

रसालशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गन्ने या ऊख के रस से बनी हुई चीनी।

[illegible] [संज्ञा पु.] (हिं.) कौतुक।

रसालसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गन्ना। २-गेहूँ ३-एक घास जिसे कुन्दुर कहते हैं।

रसाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिखरन। श्रीखंड। २-वह सत्तू जिसमें दही मिला हो। ३-एक प्रकार की चटनी जो प्राचीन काल में होती थी। ४-दूब। ५-दाख। ६-जीभ। ७-गन्ना। ८-विदारीकन्द। [संज्ञा पु] देखो 'रिसाला'।

रसालाम्र [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़िया कलमी आम।

रसालिका [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] सरस। मधुर। मृदु। [संज्ञा स्त्री.] १-छोटा आम। २-सातला।

रसालिहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

रसाली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भोग-विलास में रस या आनन्द लेने वाला। रसिक। २-गन्ना। ३-चना।

रसालेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) गन्ना।

रसाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रसने की क्रिया या भाव। २-इस प्रकार निकला हुआ अंश। ३-खेत को जोतकर और पाटे से बराबर करके कई दिनों तक यों ही छोड़ देना।

रसावर, रसावल [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'रसौर

रसावा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊख का कच्चा रस रख का मिट्टी का बरतन।

रसावे [संज्ञा पु.] (सं.) गंधाबिरोजा।

रसाश [संज्ञा पु.] (सं) मद्य पीने की क्रिया।

रसाशी [संज्ञा पु.] (हिं.) शराबी।

रसाश्वासा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पलाशी नामक लता.

रसाष्टक [संज्ञा पु.](सं.) आठ महारसों का समूह जो इस प्रकार हैं—पारा, ईंगुर, कांतिसार-लोहा, सोनामाखी, रूपामाखी, वैक्रांतमणि और शङ्ख।

रसास्वादी [वि.] (सं.) [रसास्वादिनी] १-रस चखने या स्वाद लेने वाला। २-आनन्द या मजा लेने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) भौंरा। भ्रमर।

रसाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) गंधाबिरोजा।

रसाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सतावर। २-रास्ना।

रसिआउर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुड़ के शर्बत या ऊख के रस में पका हुआ चावल। २-विवाह की एक रीति में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत।

रसिआवर, रसिआवल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रसिआउर'।

रसिक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. रसिका, रसिकिनी] १-रस या आनन्द लेने वाला। २-काव्य का मर्मज्ञ। ३-सहृदय। ४-क्रीड़ा आदि का प्रेमी। रसिया। ५-प्रेमी। सहृदय। ६-सारस पक्षी। ७-घोड़ा। ८-हाथी। ९-एक प्रकार का छन्द।

रसिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रसिक होने का भाव या धर्म। २-हँसी। ठट्ठा।

रसिकबिहारी [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

रसिकाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रसिकता'।

रसिकेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

रसित [वि.] (सं.) १-ध्वनि करता हुआ। २-बहता हुआ। टपकता हुआ। ३-रसयुक्त। ४-जिसके ऊपर मुलम्मा चढ़ा हो। [संज्ञा पु.] १-ध्वनि। शब्द। २-द्राक्षासव।

रसिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रसिक। २-फागुन में गाया जाने वाला एक प्रकार का गाना जो ब्रज में गाया जाता है।

रसियाव [संज्ञा पु.] (हिं.) गन्ने के रस में पका-हुआ चावल।

रसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बिहार तथा उत्तर-प्रदेश में बसने वाली एक प्रकार की सब्जी।
* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रसिक'।

रसीद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-किसी वस्तु की प्राप्ति या पहुँच। २-किसी वस्तु के प्राप्त होने अथवा पहुँचने के प्रमाणरूप में लिखा हुआ पत्र। प्राप्तिका। ३-खबर। पता। *रसीद करना*-थप्पड़, मुक्का आदि लगाना या जड़ना। *रसीद काटना*-किसी को रसीद लिखकर देना।

रसील [वि.] (हिं.) देखो 'रसीला'।

रसीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. रसीली] १-रसयुक्त २-स्वादिष्ट। ३-रस लेने वाला। ४-भोग-विलास का प्रेमी। ५-बांका। छबीला। सुन्दर।

रसीलापन [संज्ञा पु.](हिं.) रसीला होने का भाव या धर्म।

रसुन [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

रसूख [संज्ञा पु.] (अ.) १-धैर्य। २-अध्यवसाय। ३-किसी के यहाँ तक होने वाली पहुँच। ४-विश्वास। एतबार।

रसूम [संज्ञा पु.] (अ.) १-नियम। कानून। २-प्रचलित प्रथा अथवा विधान के अनुसार दिया जाने वाला धन। नियत शुल्क या देय। ३-वह धन जो जमींदारों को किसानों की ओर से भेंट में दिया जाता था। ४-वह धन जो राज्य को किसी काम के बदले में राजकीय नियमानुसार दिया जाता हो।

रसूम-अदालत [संज्ञा पु.] (अ.) वह धन जो अदालत में कोई मुकदमा आदि दायर करने के समय कानून के अनुसार सरकारी व्यय के रूप में दिया जाता है।

रसूल [संज्ञा पु.] (अ.) ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसूली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-एक प्रकार का गेहूँ। २-एक प्रकार का जौ। ३-एक प्रकार की काली मिट्टी। [वि.] रसूल-सम्बन्धी। रसूल का।

रसेंद्र, रसेन्द्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पारा। २-लोबिया। ३-एक रसौषध।

रसेंद्रवेधक [संज्ञा पु.] (सं.) सोना।

रसेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा। २-एक रसौषध। ३-एक दर्शन का नाम (यह छः दर्शनों में नहीं है)।

रसेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-लवण नमक। ३-पारा।

रसोइया [संज्ञा पु.] (हिं.) रसोई या भोजन बनाने वाला।

रसोईं, रसोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पकाई हुई खाने की वस्तु। २-वह स्थान जहां भोजन बनता है। चौका।
कच्ची रसोई-देखो 'सखरी'। *पक्की रसोई*-देखो 'निखरी'। *रसोई चढ़ाना*-भोजन पकाना। *रसोई तपना*-भोजन पकाना।

रसोईखाना, रसोईघर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां भोजन पकाया जाता है। पाकशाला।

रसोईदार [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रसोईदारिन] भोजन पकाने वाला। रसोइया।

रसोईदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भोजन बनाने या पकाने का काम। २-रसोईदार का पद।

रसोईबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) भोजन ले जाने वाला। भोजनवाहक।

रसोत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रसौत'।

रसोदर [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगुल।

रसोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिंगरफ। २-रसौत।

रसोद्भूत [संज्ञा पु.] (सं.) रसौत।

रसोन [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

रसोपल [संज्ञा पु.] (सं.) मोती।

रसोय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रसोई। भोजन।

रसौत, रसौत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक औषध जो दारुहलदी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तथा इसमें से निकले हुए रस को गाढ़ा करके तैयार की जाती है। रसराज। रसाग्रज।

रसौता [संज्ञा पु.] देखो 'रसौती'।

रसौती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक विशेष प्रकार की धान की बोआई।

रसौर [संज्ञा पु.] (हिं.) गन्ने के रस में पके हुए चावल।

रसौल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी कंटीली लता।

रसौला [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रोग विशेष जिसमें आँखों के ऊपर भँवों के पास बड़ी गिलटी निकल आती है।

रस्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रास्ता'।

रस्तोगी [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

रस्म [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मेलजोल। २-औपचारिक प्रथा या परिपाटी। रवाज। यौ०-*राह-रस्म*-मेलजोल। घनिष्टता।

रस्मि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रश्मि'।

रस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्त। खून। २-शरीर में का मांस।

रस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रास्ना। २-पाठा।

रस्सा [संज्ञा पु.] (हिं.)[स्त्री. रस्सी] १-मोटी रस्सी। २-भूमि की एक नाप जो ... हाथ लंबी और ७५ हाथ चौड़ी होती है। ३-एक रोग जो घोड़ों के पैर में होता है।

रस्सी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) रूई, सन आदि को बट-कर बनाई हुई बांधने के काम में आने वाली चीज। डोरी।

रस्सीबाट [संज्ञा पु.] (हिं.) रस्सी बटने वाला।

रहँकला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार की हलकी गाड़ी। २-एक प्रकार की तोप। ३-तोप लादने की गाड़ी।

रहँचटा [संज्ञा पु.] (हिं.) उत्सुकतापूर्ण चाह या उत्कंठा। चसका।

रहँट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कुएँ में से पानी निकाला जाता है।

रहँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) सूत कातने का चरखा।

रहँटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपास ओटने की चरखी। २-रुपया उधार लेने का ढंग विशेष, जिसमें प्रति मास किश्तों में रुपया वसूल किया जाता है।

रहचटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रहँचटा'।

रहचह [संज्ञा स्त्री.](हिं.) चिड़ियों की चहचहाहट

रहठा [संज्ञा पु.] (?) अरहर के पौधे के सूखे डंठल।

रहठान* [संज्ञा पु.] (हिं.) निवास स्थान। रहने की जगह।

रहतिया [वि.] (हिं.) (बिक्री का माल) जो बहुत दिनों से न बिकने के कारण यों-ही पड़ा हो। रखाऊ।

रहन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रहने की क्रिया या भाव। २-आचार। व्यवहार।

रहन-सहन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जीवन बिताने और काम करने का ढंग।

रहना [क्रि. अ.] (हिं.) १-स्थित होना। ठहरना। २-प्रस्थान न करना। रुकना। थमना। ३-निवास करना। ४-कोई चालू काम बन्द करके रुकना या ठहरना। ५-विद्यमान होना। ६-समय बिताना। ७-नौकरी करना। ८-जीवित रहना। जीना। ९-बाकी बचना। ... छूट जाना। १०-कामकाज करना। नौकरी करना। ११-स्थित होना। स्थापित होना। १२-समागम करना। यौ०-*रहासहा*-बचाबचाया। *रह चलना या जाना*-१-रुक जाना। २-चकित हो जाना। *रहने देना*-१-हस्तक्षेप न करना। २-कुछ ध्यान न देना। *रह जाना*-१-... होना। २-कोई कार्रवाई न करना। ३-... होना। ४-पीछे छूट जाना। ५-शेष रहना। *(अंग आदि) रह जाना*-१-थक जाना। शिथिल हो जाना। २-शेष रहना।

रहनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आचरण। चाल-ढाल। २-प्रेम। प्रीति। लगन।

रहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रहनि'।

रहम [संज्ञा पु.](अ.) १-दया। करुणा। २-कृपा। अनुग्रह। रहमदिल-कृपालु।

रहमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कृपा। दया।

रहमान [वि.] (अ.) बड़ा दयावान्। [संज्ञा पु.] (अ.) ईश्वर (मुसलमान)।

रहर, रहरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'अरहर'।

रहरू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खाद ढोने की देहाती गाड़ी।

रहरुद्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांसारिक झंझटों का परित्याग कर एकांत स्थान में निवास करना। २-संसार का परित्याग कर इस प्रकार एकान्तवास करने वाला।

रहंठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रहठा। अरहर के सूखे डंठल।

रहल [संज्ञा स्त्री.](अ.) एक विशेष प्रकार की छोटी चौकी जिसपर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है। इसकी दो पटरियाँ परस्पर जुड़ी होती हैं और खुलने पर इसका आकार × ऐसा हो जाता है।

रहलू* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रहरू'।

रहवाल [संज्ञा स्त्री.] (फा.) घोड़े की एक चाल।

रहस् [संज्ञा पु.](सं.) १-गुप्तभेद। २-क्रीड़ा। खेल ३-सुख। ४-गूढ़तत्व। मर्म। ५-एकांतता। एकांत स्थान।

रहस [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-स्वर्ग। *[संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'रहस्य'। २-लीला। क्रीड़ा। ३-आनन्द। ४-गुप्त या एकांत स्थान।

रहसना [क्रि. स.] (हिं.) प्रसन्न होना। आनन्दित होना।

रहसबधावा [संज्ञा पु.](हिं.) विवाह की एक रीति जिसमें नवविवाहिता वधू को वर अपने साथ जनवासे में लाता है। यहाँ सब गुरुजन उस समय वधू का मुँह देखते हैं और उसे वस्त्राभूषण आदि देते हैं।

रहसि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रहस'।

रहसू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) व्यभिचारिणी। बदचलन औरत।

रहस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुप्त भेद। छिपी हुई बात। २-मर्म या भेद की बात। ३-गूढ़तत्व। ४-हँसी। ठट्ठा। मजाक।

रहस्यवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसके अनुसार अव्यक्त अथवा अज्ञात को विषय अथवा लक्ष्य बनाकर उसके प्रति प्रणय, विरह आदि के भाव व्यक्त करते हैं।

रहस्यवादी [वि] (सं.) १-रहस्यवाद-सम्बन्धी। २-रहस्यवाद सिद्धांत को मानने या उसके अनुसार कविता करने वाला।

रहस्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-एक प्राचीन नदी का नाम। २-रास्ता। ३-पाठा। पाड़ी।

रहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रहने की क्रिया या भाव। २-कल। चैन। आराम।

रहाऊ+ [संज्ञा स्त्री.](देश) गीत का पहला पद। स्थायी। टेक।

रहाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो किसी तरह की सलाह देता हो। २-मंत्री। आमात्य। ३-प्रेतात्मा।

रहाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-होना। २-रहना।

रहावन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्थान जहाँ पर सारे गाँव के पशु एकत्र खड़े हों।

रहासहा [वि.] (हिं.) बचाखुचा। बचाबचाया।

रहित [वि.] (सं.) किसी वस्तु, गुण आदि से खाली या हीन। विना। बगैर।

रहितत्व [संज्ञा पु.](सं.) १-रहित या खाली होने का भाव। २-नियम, बन्धन, भार आदि से मुक्त या रहित किये जाने का भाव। एग्जेम्पशन।

रहिला [संज्ञा पु.] (?) चना।

रहीम [वि.](अ.) दयालु। कृपालु। [संज्ञा पु.] १-एक हिन्दी कवि का उपनाम। २-परमेश्वर का नाम (मुसलमान)।

रहुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) दूसरे के यहाँ केवल रोटियों पर रहने वाला। रोटी-तोड़।

रहूगण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंगरिस् गोत्र में एक शाखा या गण। २-इस वंश का मनुष्य।

रहोगत [वि] (सं.) निर्जन स्थान में स्थित।

राँक+ [वि.] (हिं.) देखो 'रंक'।

राँकड़+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कँकरीली और ऊँची-नीची भूमि जिनमें बहुत कम अन्न पैदा होता है।

रांकव, राङ्कव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृगों के रोएं से बना हुआ कपड़ा। २-पशम। मुलायम ऊन।

राँग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राँगा'।

राँगड़ी [संज्ञा पु.] (देश.) पंजाब में उपजने वाला एक प्रकार का चावल।

राँगा [संज्ञा पु.](हि.) सीसे के रंग की एक धात जो बहुत मुलायम होती है।

राँच* [अव्य.] (हिं.) देखो 'रंच'।

राँचना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चाहना। अनुरक्त होना। २-रंग पकड़ना। ३-रचा जाना। बनना। [क्रि. स.] रँगना। रंग चढ़ाना।

राँजना+ [क्रि. अ.] (हिं.) काजल लगाना (आँख में)। [क्रि. स.] १-रंजित करना। रँगना। २-फूटे हुए बरतन को टांके से टांके लगाना।

राँटा+ [संज्ञा पु.] (देश.) टिटिहरी चिड़िया। (हि.) देखो 'रहँटा'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) यारों की सांकेतिक भाषा।

राँड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विधवा। २-वेश्या।

राँढ़ [संज्ञा पु.] (देश.) बंगाल में उपजने वाला एक प्रकार का चावल।

राँढ़ना+ [क्रि. स.] (हिं.) विलाप करना। रोना।

राँध [संज्ञा पु.] (हि.) १-निकट। पास। समीप। २-पड़ोस। बगल.

राँधना [क्रि. स.] (हिं.) भोजन पकाना।

राँधपड़ोस [संज्ञा पु.] (हिं.) आसपास। पड़ोस। प्रतिवेश।

राँपी [संज्ञा स्त्री](देश.) चमड़ा काटने या तराशने का औजार जो खुरपी के आकार का होता है।

राँभना [क्रि. अ.] (हि.) गाय का बोलना या चिल्लाना।

राआ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'राजा'।

राइ* [संज्ञा पु.](हि.) छोटा राजा। [वि] उत्तम। श्रेष्ठ।

राइफल [संज्ञा स्त्री] (अं.) एक प्रकार की बन्दूक जो पैदल सैनिकों के पास रहती है।

राई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की छोटी सरसों। २-बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण। ३-राजपन। राजसी। *राई भर*-थोड़ा-सा। *राई रत्ती करके*-छोटी से छोटी रकम या तौल के हिसाब से। *राई नोन उतारना*-एक प्रकार का टोना जिसमें से नजर लगी हो, उस पर से राई और नमक उतारकर आग में डालते हैं *राई से पर्वत करना*-बात को बहुत बढ़ा देना *राई-काई करना*- टुकड़े-टुकड़े कर डालना। *राई-काई होना*-टुकड़े-टुकड़े होना। *राई लोन उतारना*-देखो 'राई नोन उतारना' [संज्ञा पु.] (हि.) १-राजापन। राजसी। २-राजा। [वि.] (हिं.) सर्वश्रेष्ठ।

राईता [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'रायता'।

राईरंगा+ [संज्ञा पु.] देखो 'रामदाना'।

राउ* [संज्ञा पु.] (हि.) राजा।

राउत+ [संज्ञा पु.] (हि) १-राजवंश का कोई व्यक्ति। २-क्षत्रिय। ३-बहादुर।

राँउर* [संज्ञा पु.] (हि.) महल का अन्तःपुर। रनवास। [वि.] (हिं.) श्रीमान् का। आपका

राउल* [संज्ञा पु.](हि.) १-राजा। २-राजकुलोत्पन्न व्यक्ति।

राकस* [संज्ञा पु.] (हि.) राक्षस।

राकसगहा [संज्ञा पु.] (हि.) कदंब नामक बेल और उसकी जड़ जिसका लेप गठिया के रोगी की गाँठ पर चढ़ाया जाता है।

राकसताल [संज्ञा पु.] (हि.) एक झील का नाम जो तिब्बत में कैलास के उत्तर की ओर है।

राकसपत्ता [संज्ञा पु.] (हि.) जंगली कुँवार जो बबूर के नाम से प्रसिद्ध है।

राकसिनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) राक्षसी।

राका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पूर्णिमा की रात। २-पूर्णिमासी। ३-खुजली का राग। ४-वह स्त्री जिसको पहली बार रजोदर्शन हुआ हो। ५-चन्द्रमा।

राकापति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

राकेट [संज्ञा पु.](अं.) पटाके के सिद्धान्त पर बना हुआ बमगोला जो ठहर-ठहर कर फूटता रहता है ।

राकेश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

राक्षस [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राक्षसी] १-दैत्य असुर । २-कुबेर के धनकोश के रक्षक । ३-कोई दुष्ट प्राणी । ४-आठ संवत्सरों में से एक । ५-वैद्यक में एक रस । ६-विवाह की वह प्रणाली जिसमें वधू या कन्या के लिये युद्ध करना पड़ता है ।

राक्षसपति [संज्ञा पु.] (सं.) रावण ।

राख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जले हुए पदार्थ का बचा हुआ अंश । भस्म । खाक ।

राखना* [क्रि. स.](हिं.) १-रक्षा करना । बचाना २-रखवाली करना । ३-छिपाना । कपट करना । ४-जाने न देना । रोक रखना । ५-आरोप करना । बताना । देखो 'रखना' ।

राखी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-रक्षाबन्धन त्यौहार पर कलाई पर मंगलसूत्र बांधना । रक्षाबन्धन का डोरा । २-देखो 'राख' ।

राग [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रिय या अभिमत वस्तु के प्रति मन में होने वाला भाव या झुकाव । २-ईर्ष्या और द्वेष । मत्सर । ३-प्रेम । अनुराग ४-कष्ट । पीड़ा । ५-मोह ६-अंगराग । ७-एक वर्णवृत्त जिससे प्रत्येक चरण में क्रमशः रगण जगण, रगण, जगण और एक गुरु होता है । ८-रंग, विशेषतः लाल रंग । ९-मन प्रसन्न करने की क्रिया । १०-राजा । ११-सूर्य । १२-चन्द्रमा । १३-महावर । १४-संगीत में स्वरों के विशेष प्रकार तथा क्रम अथवा निश्चित योजना बना हुआ गीत का ढांचा । *अपना राग अलापना*-अपने ही विषय की बातें करना ।

रागचूर्ण [संज्ञा पु.](सं.) १-कामदेव । २-खैर का पेड़ ।

रागच्छन्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव । २-रामचन्द्र ।

रागदारी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) भारतीय संगीतशास्त्र के नियमानुसार राग-रागनियां या पक्के गाने गाना ।

रागना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-अनुरक्त होना । २-रंगा जाना । रंजित होना । ३-निमग्न होना । [क्रि. स] गाना । अलापना ।

रागपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) गुलदोपहरिया ।

रागपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवा ।

रागप्रसव [संज्ञा पु.] (सं.) गुलदुपहरिया ।

रागबंध, रागबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) अनुराग का चिह्न ।

रागभंजन, रागभञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) एक विद्याधर का नाम ।

रागमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रागों का समूह ।

रागयुज [संज्ञा पु.] (सं.) मानिक । माणिक्य ।

रागरज्जु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

रागलता [संज्ञा स्त्री.](सं.) कामदेव की पत्नी, रति

रागलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंदन आदि का चिह्न ।

रागविवाद [संज्ञा पु.] (सं.) गालीगलौज ।

रागवृंत, रागवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

रागषाड़व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो प्राचीनकाल में अनार और दाख से बनता था । २-आम का मुरब्बा ।

रागसागर [संज्ञा पु.] (सं.) रागों का समूह ।

रागसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैनसिल ।

रागांगी, रागाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ ।

रागान्वित [वि.] (सं.) १-जिसे राग या प्रेम हो । २-क्रोधी ।

रागारु [वि.] (सं.) किसी को कुछ देने का आश्वासन देकर भी न देने वाला ।

रागाशनि [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

रागिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदग्धा स्त्री । २-मेना की बड़ी कन्या का नाम । ३-जयश्री नामक लक्ष्मी । ४-संगीत में किसी राग की पत्नी ।

रागी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अनुरागी । प्रेमी । २-राग-रागिनी गाने वाला गवैया । [वि.] १-रँगा हुआ । २-लाल । सुर्ख । ३-विषय-वासना में फँसा हुआ । विषयासक्त । ४-रँगने वाला । *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राजा की पत्नी रानी ।

राघव [संज्ञा पु.] (सं.) १-रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति । २-रामचन्द्रजी । ३-दशरथ । ४-अज ५-समुद्र में पाई जाने वाली एक प्रकार की बहुत बड़ी मछली ।

राचना* [क्रि. स.] (हिं.) रचना । बनाना । [क्रि. अ.] १-रचा जाना । बनना । २-रंगा जाना । ३-अनुरक्त होना । ४-मग्न होना । लीन होना । ५-प्रसन्न होना । ६-शोभा देना । ७-प्रभावान्वित होना ।

राछ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कारीगर का औजार । २-लकड़ी के भीतर का पक्का अंश । ३-एक औजार जो जुलाहे के करघे में ताने का तागा ऊपर-नीचे उठाता और गिराता है । ४-बरात । जलूस । ५-चक्की के बीच का खूंटा । ६-लोहार का बड़ा हथौड़ा । *राछ घुमाना*-विवाह में वर को पालकी पर सवार कराकर किसी जलाशय अथवा कूएँ की परिक्रमा कराना ।

राछबँधैया [संज्ञा पु.] (हिं.) राछ बाँधने का काम करने वाला व्यक्ति ।

राछस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राक्षस' ।

राज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राज्य । शासन । २-राजा द्वारा शासित प्रदेश । राज्य । ३-पूर्ण अधिकार । प्रभुत्व । ४-राज्य या शासन का काल । ५-बड़ी जमींदारी या भू-संपत्ति । एस्टेट । ६-राजा । ७-देखो 'राजगीर' । *राज-काज*-राज्य का प्रबन्ध । *राज देना*-राज्य का अधिकार सौंपना । *राज पर बैठना*-सिंहासन पर बैठना । *राजपाट*-१-राज्य । २-राजसिंहासन । *राज रजना*-१-राज्य करना । २-राजाओं का-सा सुख भोगना । *राज राजना*-बहुत सुख देना ।

राज़ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) रहस्य । गुप्त बात ।

राजअभिभावक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा के नाबालिग रहने पर शासन करने वाला ।

राज-ऋण [संज्ञा पु.](सं.) १-देश या राष्ट्र के [illegible] पर तथा उसके कार्यों के लिए सरकार द्वारा लिया हुआ ऋण । सरकारी ऋण । २-[illegible] जो इस प्रकार का ऋण लेने पर उसके [illegible] स्वरूप उन व्यक्तियों को दिया जाता है जिन से ऋण लिया जाता है । स्टॉक ।

राजक [वि.](सं.) चमकने वाला । [संज्ञा पु.] १-राजा । २-काला अजगर ।

राजकथा [संज्ञा स्त्री.](सं.) इतिहास ।

राजकदंब, राजकदम्ब [संज्ञा पु.](सं.) कदम्ब विशेष जिसके फल बड़े और स्वादिष्ट होते

राजकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा की पुत्री । २-केवड़े का फूल ।

राजकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा या राज्य की ओर से वह कर जो जनता से लिया जाता २-राजस्व ।

राजकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-न्यायालय । अदालत । २-राजनीति ।

राजकर्कटी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार की ककड़ी

राजकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी की सूँड़ ।

राजकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो किसी को राजगद्दी पर यथेच्छ बैठाने तथा उतारने की क्षमता रखता हो ।

राजकला [संज्ञा स्त्री] (सं.) चन्द्रमा की [illegible] कलाओं में से एक ।

राजकशेरु [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा ।

राजकीय [वि.] (सं.) राजा या राज से सम्बन्ध रखने वाला ।

राजकुँअर* [संज्ञा पु.] (हिं.) [राजकुँआरी, राजकुँआरी] राजकुमार ।

राजकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राजकुमारी] राजा का पुत्र ।

राजकुल [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं का [illegible] खानदान ।

राजकुलक [संज्ञा पु.] (सं.) परवल की [illegible]

राजकुष्मांड, राजकुष्माण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) [illegible]

राजकोल [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा बेर ।

राजकोलाहल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में [illegible] मुख साठ भेदों में से एक ।

राजकोष [संज्ञा पु.] (सं.) वह विभाग [illegible]

राज-कर जमा होता है। राज-धनागार। ऍक्स-चैकर।

राजकोषातक [संज्ञा पु.] (सं.) घीयातोरई।

राजकोषाधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्यायालय जिसमें राजकोष विषयक मामलों पर विचार किया जाता है। एक्सचेकर कोर्ट।

राजक्षवक [संज्ञा पु.] (सं.) राई।

राजखर्जुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंडखजूर।

राजग [संज्ञा पु.] (हिं.) नगर की वह भूमि जो किसी प्रकार राज्य को मिल गई हो तथा जिसकी व्यवस्था राज्य की ओर से होती हो। नजूल।

राजगद्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-राजसिंहासन। २-राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ३-राज्याधिकार।

राजगवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) गाय की जाति का एक पशु।

राजगामी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी संपत्ति का उत्तराधिकारी न होने की अवस्था में राज्य को मिलना। एस्चीट्।

राजगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत का नाम जो मगध में है। २-बथुआ। ३-देखो 'राजगृह'।

राजगी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राजा का पद।

राजगीर [संज्ञा पु.] (हिं.) मकान बनाने वाला कारीगर। राज। थवई।

राजगीरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राजगीरी का पद या कार्य।

राजगृह [संज्ञा पु](सं.) १-राजा का महल। राजप्रासाद। २-एक प्राचीन स्थान का नाम जो बिहार में पटने के पास है।

राजग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

राजघ [वि.] (सं.) राजा की हत्या करने वाला। [वि.] (सं.) तीक्ष्ण। तेज।

राजचंपक, राजचम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) पुन्नाग का फूल।

राजचिह्नक [संज्ञा पु.](सं.) शिश्न। उपस्थ।

राजचूड़ामणि [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ताल के आठ भेदों में से एक।

राजजंबू, राजजम्बू [संज्ञा पु.](सं.) १-बड़ा जामुन २-पिंड खजूर।

राजजामुन [संज्ञा पु.] (हिं.) जामुन की जाति का मझोले आकार का वृक्ष विशेष, जो देहरादून, अवध, और गोरखपुर के जङ्गलों में पाया जाता है।

राजजीरक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जीरा।

राजतंत्र, राजतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य का शासन और व्यवस्था। राज्य-प्रबंध। पॉलिटी २-वह शासनप्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबंध केवल राजा के हाथ में हो और उसमें प्रजा या उसके प्रतिनिधियों का कोई नियंत्रण न हो। मानर्की।

राजत [वि.] (सं.) रजत या चाँदी का बना हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) रजत। चांदी।

राजतरंगिणी, राजतरङ्गिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संस्कृत में कल्हणकृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध इतिहास-ग्रंथ।

राजतरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्णिकार का वृक्ष। २-अमलतास।

राजतरुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का कुजक या सफेद गुलाब। वर्णपुष्प। सुवर्णपुष्प।

राजता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा होने का भाव या पद।

राजताल [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का पेड़।

राजतिमिश [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

राजतिलक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजसिंहासन पर किसी नये राजा के बैठने की रीति। राज्याभिषेक। २-नवीन राजा के गद्दी पर बैठने का उत्सव।

राजतेमिष [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

राजत्व [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का पद, भाव या काम।

राजदंड, राजदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह दंड जो राजा के पास उसके राजत्व के सूचक चिह्न के रूप में रहता है। २-राज्य या राजा की आज्ञा से दी जाने वाली सजा।

राजदंत, राजदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) दांतों की पंक्ति के बीच का वह दांत जो और दांतों से बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का दर्शन।

राजदुहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा की कन्या।

राजदूत [संज्ञा पु.] (सं.) वह दूत जो किसी राज्य या देश की ओर से किसी दूसरे राज्य या देश में भेजा या नियुक्त किया जाता है। एम्बैसेडर।

राजदूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की दूब।

राजदृषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चक्की।

राजदेशीय [वि.] (सं.) राजा से कुछ ही कम।

राजद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

राजद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) राजा या राज्य के प्रति किया हुआ द्रोह। बगावत। सेडिशन।

राजद्रोही [वि.] (सं.) राज्य से द्रोह करने वाला बागी।

राजद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा का द्वार। राजा के महल की ड्योढ़ी। २-न्यायालय।

राजधत्तूरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का धतूरा। २-कनक धतूरा।

राजधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा का कर्तव्य। २-महाभारत के शांतिपर्व के एक अंश का नाम

राजधर्मा [संज्ञा पु] (हि.) कश्यप के एक पुत्र का नाम।

राजधानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश अथवा राज्य का वह प्रधान नगर जहाँ से उसका शासन होता है तथा जहाँ उसके प्रमुख कार्यालय और अधिकारी रहते हैं।

राजधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

राजधुस्तूरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का धतूरा। २-कनकधतूरा।

राजनय [संज्ञा पु.] (सं.) राजनीति।

राजना* [कि. अ.] (हिं.) १-उपस्थित होना। रहना। २-सोहना। शोभित होना।

राजनामा [संज्ञा पु.] (हिं.) परवल।

राजनीति [संज्ञा स्त्री.](सं.) राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन तथा पालन और अन्य राज्यों से व्यवहार होता है।

राजनीतिक [वि.] (सं.) राजनीति-सम्बन्धी।

राजनीतिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) राजनीति का अच्छा जानकार। पॉलिटीशियन।

राजनील [संज्ञा पु.] (सं.) मरकतमणि। पन्ना।

राजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षत्रिय। २-अग्नि ३-खिरनी का पेड़। ४-राजा।

राजन्यबंधु, राजन्यबन्धु [संज्ञा पु.](सं.) क्षत्रिय

राजपंखी [संज्ञा पु.] (हिं.) राजहंस।

राजपंथ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'राजपथ'।

राजपटोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का परवल

राजपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) चुंबक पत्थर।

राजपट्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चातक पक्षी।

राजपति [संज्ञा पु.] (सं.) सम्राट्।

राजपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रानी। २-पीतल (धातु)।

राजपथ [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी सड़क।

राजपद [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का पद या स्थान।

राजपद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजनीति।

राजपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारणीलता।

राजपलांडु, राजपलाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) लाल प्याज।

राजपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) विधायिका सभाओं आदि में वे आसन जिसपर राज्य के सचिव तथा विभागीय मन्त्री आदि बैठते हैं। ट्रेजरी-बेंचेज।

राजपीलु [संज्ञा पु.] (सं.) महापीलू नाम वृक्ष।

राजपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राजपुत्री] १-राजकुमार। २-एक वर्णसंकर जाति का नाम। ३-बड़े आम का एक भेद। ४-बुधग्रह। ५-एक पद या उपाधि जो राज्य की ओर से मिलती थी।

राजपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राजपुत्रिका] १-राजकुमार। २-देखो 'राजपुत्र'।

राजपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजकन्या। २-

सफेद जुही। ३-पीतल। ४-एक पक्षी जिसे शशारि भी कहते हैं।

राजपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा की पुत्री। राजकन्या। २-मालती। ३-रेणुका। ४-जूही का फूल। ५-छछूँदर। ६-कड़ुवा कद्दू।

राजपुरुष [संज्ञा पु.](सं.) राज्य का कोई कर्मचारी या कार्यकर्त्ता। २-राज्य या शासन की नीति और व्यवहार का ज्ञाता। स्टेट्समैन।

राजपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनकचंपा। २-नागकेसर।

राजपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वनमल्लिका। २-जातीपुष्प। ३-करुणी का फूल।

राजपूजित [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका राजा की ओर से सत्कार होता हो।

राजपूज्य [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। [वि.] राजा का पूजनीय।

राजपूत [संज्ञा पु.](सं.) १ क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश। २-देखो 'राजपुत्र'।

राजपूताना [संज्ञा पु.] (हिं.) राजस्थान प्रदेश।

राजप्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजपुरुष।

राचप्रासाद [संज्ञा पु.] (सं.) राजा के रहने का महल। राजमहल।

राजप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल प्याज। २-करुणी का फूल।

राजप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'राजप्रिय'। २-धान विशेष जो लाल रंग का होता है। तिलवासिनी।

राजप्रेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजकर्मचारी।

राजफणिज्झक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की नारंगी।

राजफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पटोल। २-बड़ा-आम।

राजफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जामुन।

राजफल्गु [संज्ञा पु.] (सं.) कठगूलर।

राजबंदी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जिसे राजा अथवा राज्य ने विना मुकदमा चलाये किसी संदेह में कैद कर लिया हो।

राजबदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैवंदीबेर। २-लाल आंवला। ३-लवण। नमक।

राजबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसारिणी-लता।

राजबाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-राजा की वाटिका २-राजमहल। राजभवन।

राजबाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रधान या बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी-छोटी नहरें खेतों को सींचने के लिये निकाली जाती हैं।

राजभंडार, राजभण्डार [संज्ञा पु.](सं.) खजाना राजकोष।

राजभक्त [वि.](सं.) जो अपने राजा अथवा राज्य के प्रति भक्ति तथा निष्ठा रखता हो। लॉयल

राजभक्ति [संज्ञा स्त्री..](सं.) अपने राजा या राज्य के प्रति भक्ति, निष्ठा और प्रेम।

राजभट्टिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक जलपक्षी जिसे गोभंडीर भी कहते हैं। पकरीट। हायुत्री।

राजभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिभद्रक। २-निंब नीम। ३-कुष्ठ। कुड़ा। ४-सफेद आक। ५-कुँदरू।

राजभय [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का भय या डर।

राजभवन [संज्ञा पु.](सं.) राजा का महल। राजप्रासाद।

राजभाषा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी देश में प्रचलित वह भाषा जिसका व्यवहार प्रायः सभी राजकीय कार्यों तथा न्यायालयों आदि में होता है। स्टेट-लैंग्वेज।

राजभूय [संज्ञा पु.] (सं.) राजत्व।

राजभृत् [संज्ञा पु.](सं.) राजा का वेतनभोगी भृत्य

राजभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का नौकर।

राजभोग [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का महीन धान जो अगहन में होता है। २-वह उत्तम वस्तुएँ जिनका उपभोग राजा लोग करते हैं।

राजभोगी [वि.] (सं.) उत्तम भोजन करने वाला

राजभोग्य [वि.] (सं.) राजा के भोजन के योग्य। [संज्ञा पु.] १-जावित्री। २-चिरौंजी। ३-एक प्रकार का धान।

राजभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का भोजन।

राजभ्रातृ [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का भाई।

राजमंडल, राजमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसे राजाओं का राज्य जो किसी राज्य के आस-पास हो।

राजमंडूक, राजमण्डूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बड़ा मेंढक।

राजमंदिर, राजमन्दिर [संज्ञा पु.](सं.) राजभवन राजमहल।

राजमणि [संज्ञा पु.] (सं.) बहुमूल्य रत्न।

राजमराल [संज्ञा पु.] (सं.) राजहंस।

राजमहल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजा का महल या प्रासाद। २-एक पर्वत का नाम।

राज-महिषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पटरानी।

राजमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश के राजा अथवा शासक की माता।

राजमात्र [वि.] (सं.) जो नाम-मात्र का राजा हो।

राजमानुष [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो राजा के अधीन हो।

राजमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) राजपथ। चौड़ी सड़क

राजमाष [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा उड़द।

राजमाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह खेत जिसमें माष बोया जाता है।

राजमुद्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मूँग जो सुनहले रंग का होता है।

राजमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा या राज्य की वह मोहर जो राजकीय पत्रों आदि पर अंकित की जाती है। रायल-सील।

राजमुनि [संज्ञा पु.] (सं.) राजर्षि।

राजमृगांग, राजमृगाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) ए मिश्र रस का नाम जो यक्ष्मा रोग में दिया जाता है।

राजयक्ष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) क्षय नामक रोग। तपेदिक।

राजयक्ष्मी [वि.] (सं.) जिसे राजयक्ष्मा या तपेदिक रोग हुआ हो।

राजयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का किया हुआ यज्ञ।

राजयान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पालकी। २-वह सवारी जो राजा के लिए हो। ३-राजा की सवारी का निकलना।

राजयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलित-ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का एक योग विशेष जिसके जन्मकुण्डली में पड़ने से राजा अथवा राजा के तुल्य होता है। २-वह योग विशेष जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है।

राजयोग्य [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

राजरंग, राजरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी।

राजरथ [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की सवारी का

राजराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाराज। सम्राट्। २-कुबेर। ३-चन्द्रमा।

राजराजता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा का प २-साम्राज्य।

राजराजेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राजेश्वरी] १-राजाओं का राजा। अधिराज। २-एक रसौषध।

राजराजेश्वरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-राजेश्वर की पत्नी। सम्राज्ञी। २-दस महाविद्याओं में से एक। भुवनेश्वरी।

राजरानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सम्राज्ञी।

राजरीति [संज्ञा पु.] (सं.) काँसा। कसकुट।

राजरोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा रोग जो असाध्य हो। २-क्षयरोग। राजयक्ष्मा।

राजर्षि [संज्ञा पु.] (सं.) वह ऋषि जो राजा अथवा क्षत्रियकुलोत्पन्न हो।

राजल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

राजलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) सामुद्रिक के अनुसार वे चिह्न जिनके होने से मनुष्य राजा होता है।

राजलक्ष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजचिह्न। २-युधिष्ठिर। ३-वह व्यक्ति जो राजाओं के लक्षण रखता हो।

राजलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजश्री। २-राजा की शोभा।

राजलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लिपि जो किसी देश के राजकार्यों में काम आवे।

राजलोक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राजव

राजवंत [वि.] (हिं.) राजाओं से संयुक्त।

राजवंश [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का कुल या वंश।

राजवंश्य [वि.](सं.) जो राजकुल में उत्पन्न हुआ हो।

राजवर्चस् [संज्ञा पु.](सं.) १-राजशक्ति। २-राजपद।

राजावर्त्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वह सड़क जो लंबी और चौड़ी हो। राजमार्ग। राजपथ।

राजवला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधप्रसारिणी।

राजवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-खिरनी। २-बड़ा आम। ३-पैंवदी बेर। ४-एक मिश्र औषध।

राजवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेले का पेड़।

राजवसति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा का महल। राजमहल।

राजवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) राजद्वार।

राजवारुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का मद्य

राजवाह [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

राजवाह्य [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

राजवि [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकंठ।

राजविजय [संज्ञा पु.] (सं.) संपूर्ण जाति का एक राग।

राजविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजनीति।

राजविद्रोह [संज्ञा पु.] (सं.) बगावत।

राजविद्रोही [संज्ञा पु.](सं.) वह जो राजा अथवा राज्य के प्रति विद्रोह करे। बागी।

राजविनोद [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक ताल का नाम।

राजवीजी [वि.] (सं.) राजवंशी।

राजवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौड़ी सड़क।

राजवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-आरग्वध का वृक्ष। २-अमलतास का पेड़। ३-भद्रचूड़ नामक वृक्ष जो लंका में होता है। ४-श्योनाक वृक्ष।

राजवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का चरित्र।

राजवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का भवन।

राजवेष [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की पोशाक।

राजशण [संज्ञा पु.] (सं.) पटसन।

राजशफर [संज्ञा पु.] (सं.) हिलसा मछली।

राजशब्दोपजीवीगण [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक प्रकार का गण या प्रजातंत्र।

राजशाक [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ नाम का शाक

राजशाकनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बथुआ शाक।

राजशालि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जड़हन धान।

राजशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) नीतिशास्त्र।

राजशिंबी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सेम

राजशुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तोता जो लाल रंग का होता है।

राजशुकन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

राजश्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-राजलक्ष्मी। २-राजा की शोभा।

राजसंसद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजसभा। २-वह धर्माधिकरण जिसमें राजा स्वयं उपस्थित हो

राजस [वि.] (सं.) [स्त्री. राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी। [संज्ञा पु.] क्रोध। आवेश।

राजसत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजशक्ति। २-वह सत्ता जो किसी देश अथवा जाति के भरणपोषण, वर्द्धन तथा रक्षण के लिए स्थापित की जाती है।

राजसत्तात्मक [वि.] (सं.) (वह शासनप्रणाली) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो। 'प्रजासत्तात्मक' का उलटा।

राजसत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजसत्ता। २-राजशक्ति।

राजसदन, राजसद्म [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का घर।

राजसफर [संज्ञा पु.] (सं.) हिलसा नामक मछली।

राजसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा का दरबार। २-राजाओं की सभा।

राजसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजाओं का दरबार या समाज। २-राजालोग।

राजसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बड़ा साँप।

राजसर्षप [संज्ञा पु.] (सं.) राई।

राजसायुज्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजत्व।

राजसारस [संज्ञा पु.] (सं.) मोर।

राजसिंहासन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

राजसिक [वि.] (सं.) १-रजोगुण से उत्पन्न। राजस। २-राजाओं का सा।

राजसिरी* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) राजलक्ष्मी। राजश्री।

राजसी [वि.] (हि.) १-राजाओं के योग्य या राजाओं की सी शान वाला। २-देखो 'राजस' [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

राजसुत [संज्ञा पु.] (सं.) राजपुत्र। राजकुमार।

राजसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजकुमारी। राजा की कन्या।

राजसूनु [संज्ञा पु.] (सं.) राजकुमार।

राजसूय [संज्ञा पु.] (सं.) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट को होता है।

राजसूयिक [वि.] (सं.) राजसूययज्ञ-सम्बन्धी।

राजसूयी [संज्ञा पु.](सं.) राजसूययज्ञ करने वाला पुरोहित।

राजसूयेष्टिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजसूययज्ञ।

राजस्कंध, राजस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

राजस्तंब, राजस्तम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

राजस्थलक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्राचीन स्थान का नाम।

राजस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

राजस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) कई राज्यों का एक संयुक्त प्रदेश जिसमें अलवर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, कोटा और टोंक रियासत सम्मिलित हैं। यह उत्तर प्रदेश के पश्चिम और पूर्वी पंजाब के दक्षिण में स्थित है।

राजस्थानिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक उच्चाधिकारी राजकीय पद। हाकिम। वायसराय।

राजस्थानी [वि.](हि.) राजस्थान का। राजस्थान-सम्बन्धी। [संज्ञा स्त्री.] राजस्थान की भाषा।

राजस्थानीय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'राजस्थानिक'।

राजस्व [संज्ञा पु.] (सं.) कर, शुल्क आदि के रूप में राजा या राज्य को होने वाली आय। रेविन्यू।

राजस्व-कर [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि आदि का वह कर जो राजा या राज्य को दिया जाय। रेविन्यू टैक्स।

राजस्व-करणिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह करणिक या लिपिक जो राजस्वविभाग में काम करता हो। रेविन्यू-क्लर्क।

राजस्व-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) राजस्व-संबंधी मामलों का निपटारा करने वाली अदालत। रेविन्यू कोर्ट।

राजस्व-पुनरावेदन [संज्ञा पु.] (सं.) माल के मामलों की अपील। रेविन्यू अपील।

राजस्वमुक्त [वि.] (सं.) करमुक्त।

राजस्वर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) राजधतूरा।

राजस्व-लेखा [संज्ञा पु.] (हिं.) राजस्व का लेखा या हिसाब। राजस्वविभाग के आय-व्यय आदि का विवरण। रेविन्यू अकाउन्ट।

राजस्व-वाद [संज्ञा पु.] (सं.) माल के मुकदमे। रेवन्यू-केसेज।

राजस्व-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) महकमा माल।

राजस्व-शुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'राजस्वकर'।

राजस्वाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) राजस्व-विभाग में काम करने वाला अधिकारी। रेवन्यू ऑफीसर।

राजस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

राजहंस [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राजहंसी] १-एक प्रकार का बड़ा हंस। २-एक संकर राग का नाम।

राजहर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजप्रासाद।

राजहार [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञों में सोमरस लाने वाला व्यक्ति।

राजहासांक, राजहासाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) कतला नामक मछली।

राजा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. राज्ञी, रानी] १-किसी देश या जाति का प्रधान शासक और

स्वामी। २-अधिपति। स्वामी। मालिक। ३-एक उपाधि जो अङ्गरेजी राजत्वकाल में बड़े रईसों, जमींदारों या अपने कृपापात्रों को प्रदान करती थी। ४-धनी या समृद्धिशाली व्यक्ति। ५-प्रेमपात्र।

राजाकोशक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा की अनुचित शब्दों में आलोचना करने वाला।

राजाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा का कोप।

राजाज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज या राज्य की आज्ञा।

राजातन [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी का पेड़। पयार

राजात्यवर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) लाजवर्द पत्थर।

राजादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खिरनी। २-चिरौंजी ३-टेसू।

राजादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खिरनी।

राजाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत का नाम। २-बड़ा अदरक। बवादा।

राजाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) राजत्व। राजपद।

राजाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो न्यायालय में बैठकर न्याय करता हो। विचारपति।

राजाधिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'राजाधिकारी'

राजाधिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) सूर जाति का एक क्षत्रिय वीर।

राजाधिदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूरसेन की एक कन्या का नाम।

राजाधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं का राजा। बहुत बड़ा राजा।

राजाधिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजधानी। २-वह नगर जहाँ राजा का महल हो।

राजाध्व [संज्ञा पु.] (सं.) राजपद। चौड़ी सड़क।

राजानक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा राजा। सामंत।

राजान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा का अन्न। २-एक प्रकार का शालिधान।

राजाजीवी [वि.] (सं.) राजकार्य करके अपनी जीविका चलाने वाला।

राजाभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का अपनी प्रजा पर दबाव डालकर उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करने के लिए विवश करना। राजा का प्रजा से बलात् कोई कार्य कराना।

राजाभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का अभिषेक जिसके होने पर वह राजदंड ग्रहण करता है

राजाम्र [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम जाति का आम।

राजाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) अमलबेद।

राजार्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह मदार या आक जिसमें सफेद फूल आते हों।

राजार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगर। २-कपूर। ३-जामुन का वृक्ष।

राजार्हण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारी उपहार। २-राजा का दान।

राजालाबु [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का कद्दू जो खाने में मीठा और आकार में बड़ा होता है।

राजालुक [संज्ञा पु.] (सं.) मूली।

राजावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) लाजवर्द नामक रत्न।

राजासंदी, राजासन्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काठ की चौकी या पीढ़ा जिस पर यज्ञ के समय सोम रखा जाता है।

राजासन [संज्ञा पु.] (सं.) सिंहासन। राजाओं के बैठने का आसन।

राजाहि [संज्ञा पु.] (सं.) दो मुँह वाला साँप।

राजि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पंक्ति। कतार। २-रेखा। लकीर। ३-राई। [संज्ञा पु.] (सं.) आयु के पुत्र का एक नाम।

राजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। कतार। २-रेखा। लकीर। ३-राई। ४-क्यारी। ५-लाल सरसों। ६-महुआ। ७-कठूमर। ८-एक परिमाण। ९-एक प्रकार का क्षुद्र रोग।

राजिकाचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप जिसके ऊपर सरसों के समान छोटी-छोटी बुन्दकिया होती हैं।

राजित [वि.] (सं.) १-शोभित। फबता हुआ। २-मौजूद। विराजा हुआ।

राजिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीनाककड़ी।

राजिमान् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

राजिल [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प विशेष जिसकी देह पर सीधी रेखायें होती हैं।

राजिलफला [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का तरबूज या ककड़ी।

राजिव* [संज्ञा पु] (हिं.) कमल।

राजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। श्रेणी। २-राई। ३-लाल सरसों।

राज़ी [वि.](अं.) १-सहमत। अनुकूल। २-निरोग स्वस्थ। ३-प्रसन्न। खुश। ४-सुखी। यौ० *राजीखुशी*-१-सही-सलामत। २-कुशलमङ्गल *[संज्ञा स्त्री.](अं.) रजामन्दी। अनुकूलता।

राज़ीनामा [संज्ञा पु.] (फा.) १-वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी आपस में एकमत या अनुकूल होकर अभियोग को न्यायालय से उठा लेते हैं। वह लेख जिसे प्रमाण तथा निश्चय के रूप में मान कर दो विरोधी पक्ष परस्पर मेल करते हैं। २-स्वीकार-पत्र।

राजीफल [संज्ञा पु.] (सं.) परवल।

राजीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। पद्म। २-नील कमल। ३-रैया मछली। ४-एक प्रकार का मृग जिसकी पीठ पर धारियाँ होती हैं। ५-हाथी। एक प्रकार का सारस पक्षी। [वि.](सं.) जिस पर धारियाँ हो। धारीदार।

राजीवगण [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्रायें होती हैं, और नौ-नौ मात्राओं पर विराम पड़ता है।

राजीविनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमलिनी।

राजुक [संज्ञा पु] (सं) मौर्य्यों के राजत्वकाल का एक अधिकारी जो एक प्रांत का प्रबंध करता था

राजुदल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष।

राजू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रज्जू'।

राजेंद्र, राजेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजाओं के राजा। २-राजगिरि नामक पर्वत।

राजेय [संज्ञा पु.] (सं.) पटोल। परवल।

राजेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. राजेश्वरी] राजाओं का राजा। महाराज।

राजेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजान्न नामक धान। २-राजभोग्य। ३-लाल प्याज।

राजेष्टा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-केला। २-पिंडखजूर

राजोपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) राजचिह्न।

राजोपजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजकर्मचारी। २-वह व्यक्ति जिसकी जीविका राजा की सेवा करने से चलती हो।

राजोपसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा की सेवा।

राजोपसेवी [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का सेवक।

राज्ञी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रानी। राजमहिषी। २-सूर्य की स्त्री का नाम। ३-नीलवृक्ष।

राज्य [संज्ञा पु.](सं.) १-राजा का काम। शासन २-एक राजा या एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा शासित देश। स्टेट राज्य की सरकार-किसी राज्य का शासन करने वाली संस्था या सत्ता।

राज्यक्षेत्र [संज्ञा पु](सं.) १-भूमि का वह टुकड़ा प्रदेश। २-किसी देश का वह भू-भाग जो किसी सत्ता के अधीन सीमा के अन्तर्गत हो। २-किसी राज्य की भूमि का वह भाग जो किसी शासन के अधीन हो पर, उस सीमा में पूर्ण जनतन्त्रीय अधिकार प्राप्त न हुवे हो

राज्यक्षेत्रातीत-प्रवतन [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा के बाहर का कार्य-संपादन।

राज्यक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं) रायता।

राज्यच्युत [वि.](सं.) राज्य की शासनप्रणाली।

राज्यच्युति [संज्ञा स्त्री.](सं.) राजा का राजसिंहासन से उतार दिया जाना।

राज्यतंत्र, राज्यतन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) राज्य की शासनप्रणाली।

राज्य-त्याग [संज्ञा पु.](सं.) राजा का अपना राज्य त्याग देना। छोड़ देना। एबडिकेशन।

राज्यद्रव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपकरण जिसकी आवश्यकता राज्याभिषेक में पड़ती है। राजतिलक की सामग्री।

राज्यधर [संज्ञा पु.] (सं.) राज्यपालक।

राज्यधुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्यशासन।

राज्य-निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी राज्य की निधि या खजाना।

राज्यपाल [संज्ञा पु.](सं) किसी प्रदेश अथवा प्रान्त का सबसे बड़ा अधिकारी और शासक। गवर्नर।

राज्य-परिषद् [संज्ञा स्त्री.](सं.) किसी राज्य के

वह बड़ी परिषद् जो सा[illegible]-प्रतिनिधियों की वह बड़ी परिषद् जो साधारण विधायिका से ऊँची होती और उसके निर्णयों पर पुनर्विचार करती है। काउन्सिल ऑफ़ स्टेट।

राज्य-परिभ्रष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) राज्यच्युत।

राज्यप्रद [वि.] (सं.) राज्य देने वाला।

राज्यभंग, राज्यभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का नाश।

राज्यभार [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य के शासन का भार।

राज्यभेदकर [वि.] (सं.) राज्य का नाश करने वाला।

राज्यभोग [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य-शासन।

राज्यभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का नाश।

राज्यभ्रष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'राज्यच्युत'।

राज्यरक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य की रक्षा का काम।

राज्यलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजश्री। २-विजयकीर्त्ति।

राज्यलीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा का खेल।

राज्यलोभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य प्राप्त करने की आकांक्षा। २-बहुत बड़ा लोभ। उच्चाशा।

राज्यवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य की वृद्धि करने वाला राजा।

राज्यव्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नियम अथवा व्यवस्था जिसके अनुसार प्रजा के शासन का विधान किया जाता है। राज्य-नियम।

राज्यव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.)-राजकार्य।

राज्य-श्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य की शोभा तथा वैभव।

राज्य-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'राज्य-परिषद्'।

राज्यसुख [संज्ञा पु.](सं.) राजत्व का आनन्द।

राज्य-सूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सूची या तालिका जिसमें राज्यों के नाम अंकित होते हैं। स्टेट-लिस्ट।

राज्यस्थ [वि.] (सं.) राज्य में स्थित।

राज्यस्थायी [संज्ञा पु.] (सं.) राजा। शासक।

राज्यहार [वि.] (सं.) राज्य का नाश करने वाला

राज्यांग, राज्याङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) राज के साधक आठ अङ्ग जो इस प्रकार हैं—स्वामी, आमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल और सुहृद।

राज्याधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का अधिकार।

राज्याधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का अधिपति, राजा।

राज्याभिषिक्त [वि.] (सं.) जिसका राज्याभिषेक हुआ हो।

राज्याभिषेक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राजा के राजसिंहासन पर बैठने के समय होने वाला औपचारिक कृत्य अथवा उत्सव। राज्यारोहण।

राज्यारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राजा का पहली बार राजगद्दी पर बैठकर राज्य का अधिकार प्राप्त करना।

राज्येश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का अधिपति।

राज्यैश्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) राज्यरूपी ऐश्वर्य।

राज्योपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) राजचिह्न।

राट् [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। बादशाह। २-सरदार। श्रेष्ठ पुरुष।

राटुल, रातुल [संज्ञा पु.] (हि.) लोहा, लकड़ी आदि तोलने का बड़ा तराजू जो लट्ठा गाड़कर लटकाया जाता है।

राठ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राज्य। २-राजा।

राठवर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राठौर'।

राठौर [संज्ञा पु.] (हिं.) मारवाड़ी राजपूतों की एक शाखा।

राड़ [वि.] (हि.) १-नीच। निकम्मा। २-कायर +[संज्ञा स्त्री.] झगड़ा (राजस्थानी)।

राड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) सरसों।

राढ़ [वि.] (हिं.) देखो 'राड़'। [संज्ञा स्त्री.] झगड़ा। तकरार।

राढ़ा [संज्ञा पु.](हि.) वंगदेश के उत्तरी भाग का पुराना नाम। [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की कपास। [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कान्ति। दीप्ति २-शोभा। छवि।

राढ़ि [संज्ञा पु.] (सं.) वंगदेश के उत्तरी भाग का नाम।

राढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जो मोटी होती है।

राणा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. राणी] राजा।

रातंग [संज्ञा पु.] (डिं.) गीध। गिद्ध।

रात [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक का समय। रात्रि। निशा। शर्वरी। विभावरी। रजनी। यौ०-*रात-दिन*-सदा। सर्वदा। *रात राजा*-उल्लू।

रातड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात। रात्रि।

रातना* १-लाल रंग से रँग जाना। २-अनुरक्त होना। ३-रंगीन होना।

रातरानी [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-एक पौधा जिसका फूल रात्रि के समय फूलता है और बहुत सुगंधित होता है। २-इस पौधे का सुगन्धित फूल। रजनीगन्धा।

रातरी* [संज्ञा स्त्री.](हि.) रात्रि। रात।

राता* [वि.] (हिं.) [स्त्री. राती] १-लाल। २-रंगा हुआ।

राति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रात। रात्रि।

रातिचर* [संज्ञा पु.](हिं.) निशाचर। राक्षस।

रातिब [संज्ञा पु.] (अ.) पशुओं का दैनिक भोजन २-हाथियों आदि का खाना।

रातुल [वि.] (हि.) लाल।

रातैल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा लाल का कीड़ा जो जुआर को हानि पहुँचाता है

रात्रिंचर, रात्रिञ्चर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री रात्रिंचरी.] निशाचर। राक्षस।

रात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक का समय। निशा। रात। २-हलदी। ३-क्रौंचद्वीप की एक नदी का नाम यौ०-*रात्रिंदिवा*-रातदिन। सदा।

रात्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बिच्छू।

रात्रिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

रात्रिकाल [संज्ञा पु.] (सं.) रात का समय।

रात्रिकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) रात में किया जाने वाला काम।

रात्रिचर [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर। राक्षस।

रात्रिचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात में करने का कर्तव्य।

रात्रिचारी [संज्ञा पु.] (सं.) रात को विचरने वाला।

रात्रिज [संज्ञा पु.] (सं.) नक्षत्र, तारे आदि।

रात्रिजल [संज्ञा पु.] (सं.) कुहरा।

रात्रिजागर [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

रात्रिजागरण [संज्ञा पु.] (सं.) रतजगा।

रात्रिजागरद [संज्ञा पु.] (सं.) मच्छर।

रात्रितरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गहरी रात।

रात्रितिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुक्लपक्ष की रात

रात्रिदोष [संज्ञा पु.] (सं.) रात में होने वाला अपराध।

रात्रिनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

रात्रिपाठशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पाठशाला जिसमें दिन के समय काम करने वाले लोगों को रात के समय लिखना पढ़ना सिखाते हैं। *नायट स्कूल*।

रात्रिपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

रात्रिपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पूजन जो रात के समय किया जाय।

रात्रिबल [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

रात्रिभोजन [संज्ञा पु.] (सं) रात में खाना।

रात्रिमट [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

रात्रिमणि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

रात्रिम्मन्य [वि.] (सं.) रात्रि का ज्ञान।

रात्रियोग [संज्ञा पु.] (सं) रात्रि का आगमन।

रात्रिरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) चौकीदार।

रात्रिराग [संज्ञा पु.] (सं.) अन्धकार। अँधेरा।

रात्रिवास [संज्ञा पु.] (हि.) १-अन्धकार। २-रात के समय पहनने का वस्त्र।

रात्रिविग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। तड़का।

रात्रिवेद [संज्ञा पु.] (सं.) मुरगा।

रात्रिसाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

रात्रिसूक्त [संज्ञा पु.](सं.) ऋग्वेद के एक सूक्त का नाम।

रात्रिहास [संज्ञा पु.] (सं.) कुमुद।

रात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात। २-हलदी।

रात्र्यंध, रात्र्यन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे रात के समय न दिखाई देता हो। वह जिसे रतौंधी रोग हो। २-वे पशु और पक्षी जिन्हें रात को न दिखाई देता हो।

रात्र्यंधता, रात्र्यन्धता [संज्ञा स्त्री.](सं.) रतौंधी-रोग।

रात्र्यट [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर। राक्षस।

राथकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो रथकार ऋषि के गोत्र में उत्पन्न हो।

राद्ध [वि.](सं.) १-राँधा या पकाया हुआ। २-ठीक किया हुआ। सिद्ध। ३-पूरा किया हुआ।

राद्धांत, राद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धान्त। उसूल।

राद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिद्धि। सफलता।

राध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैशाख का महीना। २-संपत्ति। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) पीब। मवाद।

राधन [संज्ञा पु.](सं.) १-साधने की क्रिया। साधन २-मिलना। प्राप्ति। ३-सन्तोष। तुष्टि। ४-वह वस्तु जिससे कोई कार्य किया जाय।

राधना*+ [क्रि. स.](हिं.) १-आराधना या पूजा करना। २-(कोई काम) सिद्ध या पूरा करना। ३-काम निकलना। साधना।

राधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रीति। प्रेम। २-वैशाख की पूर्णिमा। ३-वृषभानुगोप की कन्या जो श्रीकृष्ण की प्रेयसी थी। राधिका। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः रगण, तगण, मगण, यगण और एक गुरु होता है। ५-विशाखानक्षत्र। ६-बिजली। ७-आँवला ८-विष्णुक्रांतालता। ९-धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ की पत्नी का नाम।

राधाकांत, राधाकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण

राधाकुंड, राधाकुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रसिद्ध सरोवर जो गोवर्द्धन के पास है।

राधाकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) राधा और कृष्ण।

राधातंत्र, राधातन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) एक तन्त्र का नाम जिसमें मन्त्रों आदि के अलावा राधा की उत्पत्ति का रहस्यमय वर्णन है।

राधातनय [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण।

राधामोहन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

राधारमण [संज्ञा पु.] (सं.) राधा में रमण करने वाले कृष्ण।

राधावल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

राधावल्लभी [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

राधाविनोद [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

राधाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादोंसुदी-अष्टमी

राधासुत [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण।

राधिक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा जयसेन का पुत्र।

राधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृषभानु गोप की कन्या का नाम। २-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १३ और ९ के विराम से २२ मात्राएं होती हैं।

राधेय [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण।

राधेश, राधेश्वर [संज्ञा पु] (सं.) श्रीकृष्ण।

राध्य [वि.] (सं.) आराध्य।

रान [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जाँघ। जंघा।

रानतुरई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कड़ुई तोरई।

राना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राणा'। ※ [क्रि. अ.] (हिं.) अनुरक्त होना।

रानापति [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

रानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-राजा की पत्नी। २-स्वामिनी। मालकिन। ३-स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द।

रानीकाजर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

रापती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नैपाल के पहाड़ों से निकलकर सरयू में गिरने वाली एक नदी का नाम।

रापरंगाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य

रापी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जूता बनाने वालों का एक औजार।

राब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राबड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रबड़ी। बसौंधी।

रावना [क्रि. स.] (हिं.) खेत में सूखी पत्तियां आदि जलाकर फिर उसकी राख समेत जमीन को जोतना।

राम [संज्ञा पु.](सं.) १-परशुराम। २-बलराम। बलदेव। ३-राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र। ४-तीन की संख्या। ५-ईश्वर। ६-वरुण। ७-घोड़ा। ८-अशोकवृक्ष। ९-बथुआ नामक साग। १०-तेजपत्ता। ११-मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ९ और ८ के विराम से १७ मात्राएँ होती हैं। *राम शरण होना*-१-साधु होना। विरक्त होना। २-मर जाना। *राम जाने*-१-मुझे नहीं मालूम। २-यदि मैं भूल करता होऊं तो उसके साक्षी भगवान हैं। *राम-राम करना*-१-अभिवादन करना। २-परमात्मा का नाम जपना। *राम नाम सत्य है*-'एक ईश्वर का नाम सच्चा है बाकी संसार असार और मिथ्या है' इस आशय को लेकर यह वाक्य कुछ हिन्दू लोग मृतक को श्मशान ले जाते समय बोलते हैं। *राम-राम करके*-बहुत कठिनता से। *राम-राम होना*-भेंट होना। *राम-राम हो जाना*-मर जाना

रामअंजीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पाकरवृक्ष।

रामकजरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का अगहनिया धान।

रामकपास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देवकपास। नरमा

रामकली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संपूर्णजाति की एक रागिनी जिसके गाने का समय प्रातःकाल १ दंड से ५ दंड तक है।

रामकाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बबूल।

रामकिरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम

रामकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) लव और कुश।

रामकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम और कृष्ण।

रामकेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक उत्तम श्रेणी का केला। २-एक प्रकार का बढ़िया आम।

रामक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण देश का एक प्राचीन तीर्थ।

रामखंड, रामखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणा-नुसार एक प्राचीन तीर्थ।

रामगंगा, रामगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी जो कन्नौज के आगे गङ्गा में मिलती है।

रामगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) मेघदूत के अनुसार नाग-पुर जिले की एक पहाड़ी का नाम।

रामगिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रामकली'।

रामगीता [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ३६ मात्राएँ होती हैं।

रामचंगी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की तो

रामचंद्र, रामचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो दस अवतारों में माने जाते हैं।

रामचक्र+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बरा नामक पकवान जो उड़द की पीठी से बनता है। २-बड़ी और मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी।

रामचना [संज्ञा पु.] (हिं.) खटुआ बेल। मत्स्यपर्णी।

रामचर [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

रामचरित [संज्ञा पु.] (सं.) दशरथ के पुत्र रा की जीवनी।

रामचरितमानस [संज्ञा पु.] (हिं.) गोस्वामी तुलसीदासजी का प्रसिद्ध ग्रंथ।

रामचिड़िया [संज्ञा पु.] (सं.) मछरंगा नामक जल पक्षी जो चिड़िया पकड़कर खाता है।

रामज [संज्ञा पु.] (सं.) राम के पुत्र।

रामजननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कौशल्या। २-बलराम की माता। ३-रेणुका।

रामजना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रामजनी] १-एक संकर जाति। इस जाति की कन्याएँ वेश्यावृत्ति और नाचगाने का काम करती हैं। २-वह जिसके माता-पिता का कुछ पता न हो।

रामजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रामजना जाति की स्त्री। २-रंडी। वेश्या। ३-वह जिसके पिता का पता न हो।

रामजमानी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत बारीक चावल।

रामजयंती, रामजयन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.)

की एक मूर्ति का नाम।

रामजामुन [संज्ञा पु.] (हि) एक प्रकार का जामुन का वृक्ष जो मझोले आकार का होता है।

रामजौ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की जई।

रामझोल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पैर में पहनने का एक गहना। पाजेब।

रामटेक [संज्ञा पु.] (हिं.) नागपुर जिले की पहाड़ी जहाँ श्रीरामचन्द्रजी का मन्दिर है।

रामटोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक संकर-रागिनी।

रामठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अखरोट का वृक्ष। २-पैनफल। ३-हींग। ४-चिचड़ा। ५-बृहत्संहिता में वर्णित एक देश जो पश्चिम में है। ६-इस देश का निवासी।

रामठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हींग।

रामण [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदू का वृक्ष।

रामणीयक [संज्ञा पु.] (सं.) मनोहरता। [वि.] (सं.) रमणीय। मनोहर।

रामतरुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीताजी। २-सेवती।

रामतरोई [संज्ञा स्त्री.] (सं) भिंडी जिसकी तरकारी बनती है।

रामता [संज्ञा स्त्री.] (सं) राम का गुण।

रामतापनी [संज्ञा स्त्री] (सं) एक उपनिषद् का नाम।

रामतारक [संज्ञा पु.] (सं) रामजी का तारक मंत्र जो यह है—रां-रामायनमः।

रामति*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भीख मांगने के लिये इधर-उधर घूमना। भिक्षुकों की फेरी।

रामतिल [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का तिल।

रामतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं) रामगिरि नामक स्थान

रामतुलसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रामातुलसी'

रामतेजपात [संज्ञा पु.] (हि) तेजपात की जाति का वृक्ष विशेष।

रामत्व [संज्ञा पु.] (सं.) राम का भाव। रामता।

रामदल [संज्ञा पु.](सं.) १-रामचन्द्रजी की बन्दरों वाली सेना। २-बहुत बड़ी और प्रबल सेना।

रामदाना [संज्ञा पु.] (हि.) १-मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा। २-एक प्रकार का धान।

रामदास [संज्ञा पु.] (सं.) १-हनुमान। २-एक प्रकार का धान। ३-दक्षिण-भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति शिवाजी के गुरु थे।

रामदूत [संज्ञा पु.] (सं) हनुमानजी।

रामदूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की तुलसी। २-नागदंती। ३-नागपुष्पी।

रामदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-रामचन्द्र। २-एक सम्प्रदाय जो राजस्थान में प्रचलित है।

रामद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जेठसुदी-द्वादशी।

रामधनुष [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्रधनुष।

रामधाम [संज्ञा पु.](सं) साकेतलोक जहाँ भगवान नित्य रामरूप में विराजमान माने जाते हैं।

रामननुआ+ [संज्ञा पु] (हिं.) १-घीया। २-लौकी। कद्दू।

रामनवमी [संज्ञा स्त्री] (सं.) चैत्रसुदी-नवमी जो रामचन्द्रजी की जन्मतिथि है।

रामना* [क्रि. अ.] (हिं.) घूमना। फिरना।

रामनामी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-वह कपड़ा जिस पर 'राम-राम' छपा रहता है। २-एक प्रकार का हार जो गले में पहना जाता है. जो प्रायः सोने का होता है।

रामनौमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रामनवमी'।

रामपात [संज्ञा पु.] (हिं.) नील-जाति की एक प्रकार की झाड़ी।

रामपुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-अयोध्या।

रामफटाका [संज्ञा पु.] (हि.) वह लम्बा तिलक जो रामानुज-सम्प्रदाय के लोग लगाते हैं।

रामफल [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीफा। सीताफल।

रामबँटाई [मंज्ञा स्त्री.](हिं.) आधे-आध की बँटाई

रामबबूल [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का बबूल या कीकर।

रामबाँस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का मोटा बाँस। २-केतकी या केवड़े की जाति का एक पौधा।

रामबाण [त्रि] (सं) १-अचूक। अमोघ। २-तुरन्त लाभकारी (औषध)।

रामबान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का नरसल। २-देखो 'रामबाण'।

रामबिलास [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान

रामभक्त [संज्ञा पु.] (सं.) हनूमान। [वि.] (सं.) रामचन्द्रजी का उपासक।

रामभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) रामचन्द्र

रामभोग [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का चावल २-एक प्रकार का आम।

राममंत्र, राममन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रामतारक'।

रामरक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) रामजी का एक स्तोत्र। इसके मन्त्रों से अभिमंत्रित किया हुआ व्यक्ति पूर्णतया सुरक्षित रहता है।

रामरज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैष्णवों के तिलक लगाने की पीली मिट्टी।

रामरतन [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

रामरस [संज्ञा पु.] (हि.) १-नमक। २-घोटी हुई भाँग।

रामरसढाली [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की ऊख

रामराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यन्त सुखदायक राज्य या शासन। २-श्रीरामचन्द्र का शासन-काल जो प्रजा के लिए अत्यन्त सुखदायक था। २-मैसूरदेश।

रामराम [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रणाम। नमस्कार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मुलाकात। सामना।

रामरौला [संज्ञा पु.] (हिं.) व्यर्थ का हुल्ला या शोरगुल।

रामल [वि.] (सं.) रामल-सम्बन्धी। रमल का।

रामलवण [संज्ञा पु.] (सं.) साँभर नमक।

रामलीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रीरामचन्द्र के चरित्रों का अभिनय। २-एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं और अन्त में जगण होता है।

रामवल्लभी [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णवों का एक संप्रदाय।

रामवाण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रसौषध जो अजीर्ण के लिए परम उपयोगी माना जाता है। [वि.] देखो 'रामबाण'।

रामवीणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वीणा

रामशर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।

रामशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गया की एक पहाड़ी जिसे लोग तीर्थ मानते हैं।

रामश्री [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का राग।

रामसंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

रामसखा [संज्ञा पु.] (सं.) सुग्रीव।

रामसनेही [संज्ञा पु.] (हिं) वैष्णवों का एक संप्रदाय। [वि.] राम से स्नेह करने वाला।

रामसर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

रामसीता [संज्ञा पु.] (हिं.) सीताफल।

रामसुंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की नाव।

रामसेतु [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत की अंतिम सीमा पर रामेश्वर तीर्थ के पास पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

रामसेनक [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल।

रामसेवक [वि.] (सं.) राम का सेवक या उपासक [संज्ञा पु.] हनुमान।

रामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-नदी। ३-लक्ष्मी। ४-सीता। ५-राधा। ६-गायन कला में प्रवीण स्त्री। ७-कार्तिकबदी एकादशी। ८-हींग। ९-ईंगुर। १०-नदी। ११-सफेद भटकटैया। १२-घीकुआर। १३-शीतला। १४-अशोक। १५-गोरोचन। १६-सुगन्धबाला। १७-गेरू। १८—त्रायमाण लता। १९-तमालपत्र। २०-एक उपजाति वृत्ति जो इन्द्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बना है। इसमें प्रथम दो चरण इन्द्रवज्रा के तथा अन्तिम दो चरण उपेंद्रवज्रा के होते हैं। २१-आर्याछन्द का एक भेद जिसमें ११ गुरु एवं ३५ लघु होते हैं। २२-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, यगण और दो लघु वर्ण होते हैं।

रामातुलसी [संज्ञा स्त्री.](सं.)एक प्रकार की तुलसी जिसके डंठल का रंग सफ़ेदी लिये हरा होता है

रामानंद, रामानन्द [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जिनका चलाया हुआ रामायत नामक सम्प्रदाय अब तक प्रचलित है।

रामानंदी* [वि.] (हिं.) १-रामानंद-सम्बन्धी। २-रामानंद के सम्प्रदाय का अनुयायी।

रामानुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-राम के छोटे भाई, लक्ष्मण। २-वैष्णव मत के एक प्रसिद्ध आचार्य और श्रीवैष्णव-सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक

रामप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) दारचीनी।

रामायण [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो।

रामायणी [संज्ञा पु.](हिं.) १-रामायण की कथा कहने वाला। २-वह जो रामायण का विशेष रूप से जानकार और पंडित हो। [वि.] रामायण-सम्बन्धी। रामायण का।

रामायन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रामायण'।

रामायुध [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष।

रामावत [संज्ञा पु.] (सं.) रामानंद का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।

रामिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-रमण। २-कामदेव। ३-पति। स्वामी। ४-प्रेमपात्र।

रामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) काँस नामक घास।

रामेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण-भारत में समुद्र तट पर का एक स्थान जहां पर श्रीरामचन्द्र का स्थापित एक शिवलिंग है।

रामेषु [संज्ञा पु.](सं.) १-रामशर। २-एक प्रकार की ईख।

रामोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

रामोपनिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् का नाम।

राम्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

राय [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजा। २-सरदार। ३-भाटों की उपाधि। ४-गंधर्वों की उपाधि। [वि.] (हिं.) १-बड़ा। २-बढ़िया। (यौगिक शब्दों के अन्त में)। [संज्ञा स्त्री.](फा.) सलाह सम्मति। *राय कायम करना*–निर्णय करना।

रायकरौंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा करौंदा जिसके फल बेर के बराबर होते हैं।

रायकवाल [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति

रायज [वि.](अ.) जिसका रवाज हो। चलनसार

रायता [संज्ञा पु.](हिं.) दही में पड़ा हुआ कद्दू बुंदिया आदि।

रायबहादुर [संज्ञा पु.] (हिं., फा.) अंगरेजों के राजत्वकाल में दी जाने वाली एक उपाधि।

रायबेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लता जिसमें बहुत ही सुन्दर और सुगन्धित दोहरे फूल आते हैं।

रायभोग [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

रायमुनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लाल नामक पक्षी की मादा।

रायरायन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजाधिराज। २-एक उपाधि जो मुगलों के राजत्वकाल में रईसों, जमींदारों और राजकर्मचारियों आदि को दी जाती थी।

रायरासि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राजा का कोष।

रायल [वि.](अं.) १-रायकीय। शाही। २-छापने की कलों या कागजों की एक नाप जो २० इंच चौड़ी और २६ इंच लम्बी होती है।

रायल्टी [संज्ञा स्त्री] (अं.) देखो 'स्वामित्व'।

रायसा [संज्ञा पु.](हिं.) वह काव्य जिसमें किसी राजा का जीवन-चरित्र वर्णित हो। रासो।

रायसाहब [संज्ञा पु.](हिं) एक उपाधि जो अंग्रेजों के राजत्वकाल में रईसों और राजकर्मचारियों को दी जाती थी।

रार [संज्ञा स्त्री.] (हिं) झगड़ा। विवाद।

राल [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक प्रकार का वृक्ष। २-इस वृक्ष का निर्यास। ३-चौपायों का एक रोग ४-वह पतला लसदार थूक जो प्रायः बच्चों एवं बूढ़ों के मुख से स्वतः बहा करता है। *राल गिरना, चूना या टपकना*–कुछ पाने के लिए बहुत लालच या लालसा होना। [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का कंबल।

राली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का बाजरा जिसके दाने बहुत छोटे होते हैं।

राव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजा। २-सरदार। ३-भाट। ४-धनाढ्य। ५-कच्छ और राजस्थान के राजाओं की एक पदवी। [संज्ञा पु.] (देश.) एक पेड़ जो छोटे आकार का और जिसकी लकड़ी कुछ ललाई लिये होती है।

रावचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) रागरङ्ग। २-प्यार। दुलार

रावट+ [संज्ञा पु.] (हिं.) महल। राजभवन।

रावटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कपड़े का बना छोटा घर या डेरा। २-किसी वस्तु का बना हुआ छोटा घर। ३-बारहदरी।

रावण [वि.] (सं.) जो दूसरों को रुलाता हो। [संज्ञा पु.] (सं.) लंका का प्रसिद्ध राक्षस राजा जिसे रामचन्द्र ने मारा था।

रावणगंगा, रावणगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंहल-द्वीप की एक नदी का नाम।

रावणारि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

रावणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण का पुत्र। २-मेघनाद।

रावत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा राजा। २-वीर। बहादुर। ३-सेनापति। ४-सरदार।

रावन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रावण'।

रावनगढ़ [संज्ञा पु.] (हिं.) लंका।

रावना* [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।

रावबहादुर [संज्ञा पु.](हिं.) एक उपाधि जो अंग्रेजों के राजत्वकाल में दक्षिण भारत के रईसों को देती थी।

रावर* [संज्ञा पु.] (हि.) रनिवास। अंतःपुर।

रावरखा [संज्ञा पु] (देश.) हिमालय पर पाया जाने वाला एक प्रकार का बहुत बड़ा औ ऊँचा वृक्ष।

रावरा [सर्व.] (हि.) देखो 'रावर'।

रावल [संज्ञा पु] (हिं.) १-रनिवास। २-[स्त्री रावलि, रावली] राजा। ३-राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि। ४-सरदार। प्रधान। ५-एक आदरसूचक संबोधन। ६-श्रीबद्री नारायण के प्रधान पंडे की उपाधि। ७-मथुरा के पास के एक गांव का नाम।

रावसाहब [संज्ञा पु.] (हिं., फा.) अंग्रेजों के राजत्वकाल में दी जाने वाली एक उपाधि।

रावी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पंजाब की एक नदी का नाम।

राशन [संज्ञा पु.](अं. रैशन) १-खाने-पीने आदि के लिये मिलने वाली सामग्री। विशेषतः अन्न और चीनी। २-वह राजकीय व्यवस्था जिसमें लोगों को खाने-पीने या अन्य आवश्यकता की वस्तुओं का वितरण नियत मात्रा में एवं नियत काल पर होता है।

राशनकार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) प्रत्येक व्यक्ति को दिया हुआ वह कार्ड जिसको दिखाकर वह निर्धारित परिमाण में सामग्री प्राप्त कर सकता है।

राशनिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं. रैशनिंग) खाद्य पदार्थ या उनके उपयोग की अन्य वस्तुओं के वितरण की वह व्यवस्था जिसमें कुछ निश्चित नियमानुसार, निश्चित मात्रा में एवं निश्चित समय पर ही वे वस्तुएँ दी जाती हैं।

राशनी [वि.] (हिं.) राशन-सम्बन्धी। राशन का।

राशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का ढेर। पुंज। २-किसी का उत्तराधिकारी। ३-क्रांतिवृत्ति में पड़ने वाले तारों के बारह समूह। यथा—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन। *राशि बैठना*–गोद बैठना। *राशि आना*–अनुकूल होना। *राशि मिलना*–१-दो व्यक्तियों का एक ही राशि में जन्म होना। २-मेल मिलना।

राशिचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) मेष, वृष आदि बारह राशियों का मंडल। भ-चक्र।

राशिनाम [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी का वह नाम जो उसके जन्म समय की राशि के अनुसार होता है।

राशिप [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राशि का अधिपति देवता।

राशिभाग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राशि का भाग या अंश (ज्योतिष)।

राशिभोग [संज्ञा पु.](सं.) १-उतना समय जितना

राशा

किसी ग्रह का किसी राशि में रहने में लगता है। २-किसी ग्रह का किसी राशि में कुछ काल तक रहना।

राशी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'राशि'। [वि] (अ.) घूसखोर।

राष्ट [संज्ञा पु.] (?) फारसी संगीत में १२ [illegible] में से एक।

राष्ट्र [संज्ञा पु.](सं.) १-राज्य। २-देश। ३-पुराण वर्णित पुरूरवा के वंशज काशी के पुत्र का नाम। ४-वह बाधा जो सम्पूर्ण देश में उपस्थित हो। ५-वह लोक-समुदाय जो एक ही देश में बसता हो या जो एक ही राज्य या शासन में रहता हुआ एकताबद्ध हो। नेशन

राष्ट्र-ऋण [संज्ञा पु.](सं.) राष्ट्र के नाम पर और उसके कार्यों के लिए सरकार द्वारा लिया हुआ ऋण।

राष्ट्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य। २-देश। [वि] राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का।

राष्ट्रकर्षण [संज्ञा पु] (सं.) राजा या शासक का प्रजा पर अत्याचार करना।

राष्ट्रकुल [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी देश की संपूर्ण प्रजा। २-कोई देश और उसके उपनिवेशों का संघ। ३-अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से ब्रिटेन और उसके उपनिवेशों तथा स्वतन्त्र भारत का गुट्ट। कॉमनवैल्थ।

राष्ट्रकुलीय [वि] (सं.) राष्ट्रकुल का। राष्ट्रकुल-सम्बन्धी।

राष्ट्रकूट [संज्ञा पु] (सं.) दक्षिण-भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश जिन्हें आजकल राठौर कहते हैं।

राष्ट्रगुप्ति [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य की रक्षा।

राष्ट्रगोप [संज्ञा पु] (सं.) १-राजा। २-राजा का प्रतिनिधि कोई बड़ा शासक। [वि.] राज्य की रक्षा करने वाला।

राष्ट्रतंत्र, राष्ट्रतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश का झंडा।

राष्ट्रनिर्माण [संज्ञा पु.] (सं.) राष्ट्र को सब ओर से उन्नत करने या बनाने का काम। इसमें कल-कारखाने खेतीबारी और सिंचाई के साधन आदि सम्मिलित होते हैं।

राष्ट्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधुनिक प्रजातंत्र-प्रणाली में देश का सर्वप्रधान शासक। २-किसी राष्ट्र का स्वामी।

राष्ट्रपतिप्रसादपर्यंत, राष्ट्रपतिप्रसादपर्यन्त [पद] (सं.) जब तक राष्ट्रपति की इच्छा हो।

राष्ट्र-परिषद [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी राष्ट्र के मुख्य लोगों अथवा प्रतिनिधियों की सभा। कउंसिल-ऑफ-स्टेट।

राष्ट्रपाल [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

राष्ट्रभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राष्ट्र के प्रति होने वाली भक्ति, श्रद्धा, आदरभाव या उत्कट प्रेम

राष्ट्रभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश अथवा राष्ट्र में प्रचलित वह प्रधान भाषा जिसका व्यवहार उस देश अथवा राष्ट्र के रहने वाले अन्य भाषाभाषी भी सार्वजनिक पारस्परिक कार्यों में करते हैं। नेशनल-लैंग्वेज।

राष्ट्रभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-शासक। ३-प्रजा। ४-राजा भरत के एक पुत्र का नाम

राष्ट्रभृति [संज्ञा स्त्री] (सं.) राज्य का पालन करने की विधि।

राष्ट्रभृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य-रक्षा अथवा शासन करने वाला। २-प्रजा।

राष्ट्रभेद [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन राजनीति के अनुसार वह उपाय जिसके द्वारा कि शत्रु-राजा के राज्य में उपद्रव अथवा विद्रोह खड़ा किया जाता था।

राष्ट्र-मंडल, राष्ट्रमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ ऐसे राष्ट्रों का समूह जिसमें सब को समान अधिकार प्राप्त हों एवं सब के कुछ निश्चित कर्त्तव्य तथा उत्तरदायित्व हों। फ़ेडरेशन।

राष्ट्रमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राष्ट्र की वह मुद्रा अथवा मोहर जो राष्ट्रीय कागज-पत्रों पर अंकित की जाती है। स्टेट-सील।

राष्ट्रलिपि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह लिपि जिसमें किसी राष्ट्र अथवा देश की राष्ट्रभाषा लिखी जाती है।

राष्ट्रवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा दशरथ और रामचन्द्र के एक मन्त्री का नाम।

राष्ट्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सब से अधिक प्रधानता दी जाती है।

राष्ट्रवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपने राष्ट्र अथवा देश की एकता, महत्ता एवं कल्याण का पक्षपाती हो। नैशनलिस्ट।

राष्ट्रवासी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री राष्ट्रवासिनी] १-राष्ट्र में रहने वाला। २-परदेसी। विदेशी।

राष्ट्रविप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) देश में होने वाला विप्लव या विद्रोह। बलवा।

राष्ट्र-संघ [संज्ञा पु.] (सं.) संसार के कुछ प्रमुख राष्ट्रों का एक संघ जो दूसरे युरोपीय महा-युद्ध के बाद बनाया था और जिसका उद्देश्य संसार में शान्ति बनाये रखना है।

राष्ट्रांतपालक, राष्ट्रान्तपालक [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य की सीमा की रखवाली करने वाला।

राष्ट्रिक [वि] (सं.) राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का। [संज्ञा पु.] जातीय, धार्मिक, राजनीतिक आदि सूत्रों से बंधे हुए किसी राष्ट्र अथवा देश का निवासी या किसी राष्ट्र का अङ्ग अथवा सदस्य। नैशनल।

राष्ट्रिकता [संज्ञा स्त्री.](सं.) जातीय, धार्मिक, राजनीतिक आदि सूत्रों से बंधे हुए किसी संगठित राष्ट्र के निवासी, अङ्ग अथवा सदस्य होने का भाव या स्थिति। राष्ट्रिक होने की अवस्था। नैशनैलिटी।

राष्ट्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंटकारि। भटकटैया।

राष्ट्रिय [वि.] (सं.) १-राष्ट्र का। राष्ट्र-सम्बन्धी। २-अपने राष्ट्र की महत्ता तथा उन्नति आदि से सम्बन्ध रखने वाला। नैशनल।

राष्ट्रियता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'राष्ट्रीयता'।

राष्ट्री [संज्ञा पु.](हिं.) १-राजा। २-प्रधान शासक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रानी।

राष्ट्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'राष्ट्रीयकरण'।

राष्ट्रीय [वि.] (सं.) १-राष्ट्र-सम्बन्धी। राष्ट्र का २-अपने राष्ट्र की एकता, महत्ता और उन्नति आदि से सम्बन्ध रखने वाला। नैशनल। [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन संस्कृत नाटकों की भाषा में राजा का साला।

राष्ट्रीय-ऋण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'राष्ट्रऋण'।

राष्ट्रीयकरण [संज्ञा पु.] (सं.) खानगी कारखानों आदि पर राष्ट्रीय सरकार का इस आशय से अधिकार करना कि उनका उपयोग राष्ट्र के हित के लिये हो सके। नैशनलाइजेशन।

राष्ट्रीय-गीत [संज्ञा पु.] (सं.) राष्ट्रीय पर्वों या उत्सवों पर गाया जाने वाला प्रधान गीत।

राष्ट्रीय-मांग [संज्ञा स्त्री] (हिं) किसी राष्ट्र या देश की मांग।

राष्ट्रीय-राज्य [संज्ञा पु] (सं.) जातीय राज्य।

राष्ट्रीय-शक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) जातीय शक्ति या बल।

राष्ट्रीय-संपत्ति, राष्ट्रीय-सम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.](सं) किसी राष्ट्र अथवा देश की संपत्ति। नैशनल-वैल्थ।

राष्ट्रीय-संसद [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी राष्ट्र या देश की राज्यसभा।

राष्ट्रीय-समाजवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसमें किसी राष्ट्र के उत्पादन और श्रम के साधनों पर से वैयक्तिक अधिकार को हटाकर सामूहिक अधिकार प्रस्थापित किया जाय। नैशनल-सोशलिज्म।

राष्ट्रीयस्वभाव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राष्ट्र या देश से सम्बन्ध रखने वाला चरित्र। नैशनल करक्टर।

राष्ट्रीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी राष्ट्र के विशेष गुण। २-अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।

रास [संज्ञा पु.] (सं.) कोलाहल। हल्ला। [संज्ञा स्त्री.] १-गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें वे सब घेरा बांधकर नाचते थे। २ श्री कृष्ण की इस प्रकार की क्रीड़ा उसका अभिनय ३-एक प्रकार का चलता गाना। ४-शृङ्खला। जंजीर। ५-विलास। ६-लास्य नामक नृत्य। ७-नाचने वालों का समाज। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) लगाम। बागडोर। रास कड़ी करना-

घोड़े की लगाम अपनी ओर खींचे रहना। *रास में लाना*-अधिकार में लाना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ढेर। समूह। २-ज्योतिष की राशि। ३-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण के आठ, आठ और छः के विराम से बाईस मात्राएँ एवं अन्त में सगण होता है। ४-जोड़। ५-पशुओं का झुण्ड। ६-एक अगहनिया धान। ७-दत्तक। ८-सूद। *रास बैठना या लेना*-गोद बैठाना। [वि.] (हिं.) अनुकूल। ठीक।

रासक [संज्ञा पु.] (सं.) हास्यरस का एक प्रकार का एकांकी नाटक।

रासचक्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'राशिचक्र'।

रासताल [संज्ञा पु.] (सं.) एक ताल जिसमें १३ मात्राएँ होती हैं।

रासधारी [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण की लीला का अभिनय करने वाला व्यक्ति।

रासन [वि.] (सं.) स्वादिष्ट। [संज्ञा पु.] स्वाद लेना। चखना।

रासनशीन [संज्ञा पु.] (हिं) १-गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक। २-उत्तराधिकारी।

रासना [संज्ञा पु.] (सं.) रास्ना नामक लता जो दवा के काम में आती है।

रासनृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) गति के अनुसार नाच का एक भेद।

रासपूर्णिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मार्गशीर्ष की पूर्णिमा इसी दिन श्रीकृष्ण ने रासक्रीड़ा की थी।

रासभ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. रासभी] १-गधा। खर। २-खच्चर। ३-एक दैत्य जो बलदेवजी ने ब्रज के तालवन में मारा था।

रासभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ रासक्रीड़ा होती हो।

रासमंडल, रासमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-रासक्रीड़ा करने का स्थान। २-रासक्रीड़ा करने वालों की मंडली। ३-रासधारियों का अभिनय। ४-रासधारियों का समाज।

रासमंडली, रासमण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रासधारियों की मंडली या समाज।

रासयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुराणानुसार शरत्पूर्णिमा को होने वाला एक प्रकार का उत्सव। २-चैत्र पूर्णिमा को होने वाला एक उत्सव जो शक्ति के उद्देश्य से किया जाता है।

रासलीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह क्रीड़ा या नृत्य जो श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया था। २-रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय।

रासविलास [संज्ञा पु.] (सं.) १-रासक्रीड़ा। २-आनन्दमङ्गल।

रासविहारी [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

रासायन [वि.] (सं.) रासयन-सम्बन्धी। रसायन का

रासायनिक [वि.] (सं.) रसायन-शास्त्र से संबंध रखने वाला। रसायन का। [संज्ञा पु.] रसायनशास्त्र का ज्ञाता।

रासायनिक-परीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी पदार्थ के रासायनिक तत्वों का विश्लेषण अथवा जाँच करके उनका ठीक पता लगता हो। *केमिकल-इग्जामिनर*।

रासायनिक-शाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ किसी पदार्थ के रासायनिक तत्वों की परीक्षाएँ अथवा प्रयोग होते हैं।

रासि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'राशि'।

रासी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-तीसरी बार खैंची हुई शराब। २-सज्जी। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'राशि'।

रासु*+ [वि.] (हिं.) १-सीधा। सरल। २-ठीक

रासेरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोष्ठी। २-रासक्रीड़ा। ३-शृङ्गार। ४-उत्सव। ५-हँसी-मजाक। ठट्टा

रासेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राधा।

रासो [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी राजा के वीरतापूर्ण युद्धों के विवरणोंयुक्त पद्य में लिखा हुआ जीवन-चरित्र।

रास्त [वि.] (फा.) १-सीधा। सरल। २-दुरुस्त। ठीक। सही। ३-उचित। ४-अनुकूल।

रास्तगो [वि.] (फा.) सत्यवक्ता।

रास्तबाज़ [वि.] (फा.) निष्कपट। सच्चा।

रास्तबाज़ी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सत्यता। सचाई। ईमानदारी।

रास्ता [संज्ञा पु.] (फा.) १-मार्ग। राह। पथ। २-प्रथा। रीति। चाल। ३-उपाय। तरकीब। *रास्ता काटना*-किसी के चलने के समय उसके आगे से होकर निकल जाना। *रास्ता देखना*-प्रतीक्षा करना। *रास्ता पकड़ना*-१-मार्ग का अवलंबन करना। २-चल देना। *रास्ता बताना*-१-चलता करना। धता बताना। २-युक्ति बताना। *रास्ते पर लाना*-सुमार्ग पर चलाना।

रास्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आसाम, लंका, जवा आदि में अधिकता से पाया जाने वाला गंधनाहुली नामक कंद। २-एलापर्णी नामक औषध। ३-रुद्र की प्रधान पत्नी का नाम।

रास्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रास्ना।

रास्य [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

राह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'राहु'। २-देखो 'रोहू'। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मार्ग। रास्ता। २-प्रथा। चाल। रीति। नियम। कायदा। कोल्हू की नाली। *राह देखना या ताकना*-प्रतीक्षा करना। *राह पड़ना*-१-डाका पड़ना। २-रास्ते पर आना।
राह लगना-१-रास्ते से जाना। २-अपना काम देखना।

राहखर्च [संज्ञा पु.] (फा.) यात्रा के समय रास्ते में होने वाला खर्च। मार्गव्यय।

राहगीर [संज्ञा पु.] (फा.) पथिक। मुसाफिर।

राहचलता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पथिक। २- ३-जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध न हो। गैर।

राहचौरंगी [संज्ञा पु.] (हिं.) चौरस्ता। चौमुहानी

राहज़न [संज्ञा पु.] (फा.) डाकू। लुटेरा।

राहज़नी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) डकैती। लूट।

राहड़ी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का घटिया कम्बल।

राहत [संज्ञा स्त्री] (अ.) आराम। सुख। चैन।

राहदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रास्ते का महसूल सड़क का कर। २-चुङ्गी महसूल। *राहदारी का परवाना*-रवन्ना।

राहना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-पीसने योग्य बनाने के लिए चक्की के पाटों को खुरदरा करना। २-रेतने के योग्य बनाने के लिए रेती आदि को खुरदरा करना। *[क्रि. अ.] देखो 'रहना'

राहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अरहर जिसकी दाल बनती है।

राहरीति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्यवहार। लेन देन। २-परिचय। जान-पहचान।

राहा [संज्ञा पु.] (हिं.) मिट्टी का वह चबूतरा जिस पर चक्की का पाट जमाया जाता है।

राहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-रहित का भाव अभाव। खालीपन। २-देखो रहित्व।

राहिन [वि.] (अ.) कोई वस्तु किसी के पास रेहन या बन्धक रखने वाला।

राही [संज्ञा पु.] (फा.) पथिक। मुसाफिर। *राही करना*-चलता करना। *राही होना*-चल देना। हट जाना।

राहु [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक। [संज्ञा पु.] (हिं.) रोहू नामक मछली।

राहुग्रसन [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण। उपराग।

राहुग्रास [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण।

राहुच्छत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अदरक।

राहुदर्शन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रहण।

राहुभेदी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

राहुमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राहु की माता, सिंहिका

राहुरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) गोमेदमणि।

राहुल [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध के पुत्र का नाम।

राहुसंस्पर्श [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य या चन्द्रग्रहण।

राहुसूतक [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण।

राहुस्पर्श [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण। उपराग।

राहुहन् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

राहूच्छिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

राहेल [संज्ञा पु.] (यहू.) यहूदियों की एक जाति का नाम।

रिंखण, रिङ्खण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फिसलना। २-विचलित होना। डिगना। ३-रेंगना।

रिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-अंगूठी। छल्ला। २-घेरा। मंडल। ३-किसी प्रकार की बड़ी गोल चूड़ी।

रिंगण, रिङ्गण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेंगना। २-मरकना। ३-डिगना।

रिंगन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रेंगना। घुटनों के बल चलना।

रिंगना* [क्रि. अ.] (हिं.) रेंगना। घुटनों के बल चलना।

रिंगनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का ज्वर।

रिंगाल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की पहाड़ी बाँस।

रिंगाना*+ [क्रि. स] (हिं.) १-रेंगने में दूसरे को प्रवृत्त करना। २-धीरे-धीरे चलाना। ३-घुमाना। फिराना।

रिंगिन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) जहाज के मस्तूल आदि बांधने की रस्सी।

रिंद [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह व्यक्ति जो धार्मिक विषय में बहुत ही स्वच्छन्द और उदार विचार रखता हो। २-स्वेच्छाचारी और स्वच्छन्द व्यक्ति। मनमौजी आदमी। [वि.] १-मतवाला। २-मस्त।

रिंदा [वि.] (फ़ा.) उद्दंड। निरंकुश।

रिअना [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की कीकर।

रिआयत [संज्ञा स्त्री.](फ़ा.) १-कोमल एवं दयापूर्ण व्यवहार। नरमी। २-कृपा। अनुग्रह। ३-छूट। कमी।

रिआया [संज्ञा पु] (अ.) प्रजा।

रिकवँछ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) उड़द की पीठी एवं अरुई के पत्तों से बना हुआ एक खाद्य पदार्थ।

रिक़शा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'रिक्शा'।

रिकसा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लीख।

रिकाब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रकाब'।

रिकाबी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'रकाबी'।

रिक्त [वि.](सं.) १-खाली। शून्य। गरीब। निधन [संज्ञा पु.] (सं.) वन। जङ्गल।

रिक्तकुंभ, रिक्तकुम्भ [संज्ञा पु.](सं.) ऐसी बोली जो किसी के समझ में न आवे।

रिक्तकृत [वि.] (सं.) खाली किया हुआ।

रिक्तता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रिक्त या खाली होने का भाव। २-किसी अधिकारी अथवा कर्मचारी के हट जाने पर उसका पद या स्थान खाली होना। वैकेन्सी।

रिक्तपाणि [वि.] (सं.) खाली हाथ वाला।

रिक्तभांड, रिक्तभाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धिहीन।

रिक्तमति [वि.] (सं.) शून्यचित्त।

रिक्त-स्थान [संज्ञा पु.](सं.) किसी अधिकारी या कर्मचारी के हट जाने पर खाली होने वाला स्थान। वैकेन्सी।

रिक्तहस्त [वि.] (सं.) जिसके पास एक भी पैसा न हो।

रिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियाँ।

रिक्तार्क [संज्ञा पु.](सं.) रविवार को पड़ने वाली रिक्ता तिथि।

रिक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रिक्त अथवा खाली होने की क्रिया या भाव। खाली होना। २-वह खाली स्थान जो किसी अधिकारी या कर्मचारी के हट जाने से हुआ हो। वैकेन्सी।

रिक्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-भू-सम्पत्ति या धन दौलत। *प्रॉपर्टी*। २-वह पूँजी जो सम्पत्ति आदि के रूप में हो, या वह धन जो किसी कारवार में लगा हो और डूबने वाला न हो। *एसेट्स*।

रिक्थग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) धन या संपत्ति का उत्तराधिकारी।

रिक्थजात [संज्ञा पु.] (सं.) मृत व्यक्ति की सब सम्पत्ति।

रिक्थभागी [संज्ञा पु.] (सं.) संपत्ति का उत्तराधिकारी।

रिक्थहर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सम्पत्ति का अधिकारी हो।

रिक्थहार [संज्ञा पु.] (सं.) धनभागी।

रिक्थहारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री रिक्थहारिणी] १-वह जिसे उत्तराधिकार-धनसम्पत्ति मिले २-मामा।

रिक्थी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. रक्थिनी] धन-सम्पत्ति का उत्तराधिकारी।

रिक्शा [संज्ञा पु.](*जापानी*) एक प्रकार की छोटी और हलकी गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं।

रिक्ष [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऋक्ष'।

रिक्षपति [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'ऋक्षपति'।

रिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लिक्षा। लीख। २-त्रिसरेणु।

रिखभ*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'ऋषभ'।

रिखू+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का गन्ना

रिग* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'ऋक्'।

रिचा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऋचा'।

रिचीक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऋचीक'।

रिच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) भालू।

रिज़्क [संज्ञा पु.](अ.) जीविका। *रिजक मारना*-रोज़ी में बाधा डालना।

रिज़र्व [वि.] (अं.) किसी विशेष कार्य के लिये निश्चित अथवा रक्षित किया हुआ।

रिजर्वफोर्स [संज्ञा पु.] (अं.) ऐसी सेना जिसके सिपाही शांतकाल में घर पर रहते हैं परन्तु युद्धकाल में आवश्यकता होने पर सेना में शामिल होने के लिये बुला लिये जाते हैं।

रिजर्विस्ट [संज्ञा पु.](अं.) वे सैनिक जिन्हें आपत्काल के लिये रक्षित रखे जाते हैं।

रिज़ल्ट [संज्ञा पु.] (अं) परीक्षा फल। *रिजल्ट आउट होना*-परीक्षाफल प्रकाशित होना।

रिज़ाली [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) निर्लज्जता।

रिजु [वि.] (हिं.) देखो 'ऋजु'।

रिझकवार*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी गुण पर प्रसन्न होने वाला। रीझने वाला।

रिझवार+ [संज्ञा पु.](हि.) १-प्रसन्न या मोहित होने वाला। २-अनुरागी। प्रेमी। ३-गुणग्राहक। कदरदान।

रिझाना [क्रि. स.] (हि.) १-किसी को अपने ऊपर प्रसन्न या मोहित कर लेना। २-लुभाना

रिझायल* [वि.] (हिं.) रीझने वाला।

रिझाव [संज्ञा पु.] (हिं.) रीझने की क्रिया या भाव।

रिझावना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'रिझाना'।

रिटर्निंगऑफीसर [संज्ञा पु.] (अं.) वह अधिकारी जो निर्वाचन के समय मतों (वोटों) को गिनता है तथा अधिक मत प्राप्त करके नियमानुसार कौन निर्वाचित हुआ, इसकी घोषणा करता है।

रिटायर [वि.] (अं. *रिटायर्ड*) जिसने काम से अवसर ग्रहण कर लिया हो। अवसर-प्राप्त

रिढ़ना [क्रि. अ] (हिं.) घसिटते हुए चलना।

रित [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऋतु'।

रितवना* [क्रि. स.](हिं.) रिताना। खाली करना

रिताना [क्रि. अ.] (हिं.) रिक्त या खाली होना। [क्रि. स.] रिक्त या खाली करना।

रितु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऋतु'।

रितुवंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रजस्वला स्त्री।

रिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऋद्धि'।

रिद्धिसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ऋद्धिसिद्धि'

रिधम [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-वसंत।

रिन [संज्ञा पु.] (हिं.) ऋण।

रिनबंधी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कर्जदार। ऋणी।

रिनिआँ+ [वि.] (हिं.) ऋणी।

रिनियाँ, रिनी [वि.] (हिं.) ऋणी। कर्जदार।

रिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथ्वी। २-शत्रु। ३-हिंसा।

रिपु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। दुश्मन। बैरी। २-जन्मकुण्डली में लग्न से छठा स्थान। ३-पुराणानुसार ध्रुव के पोते का नाम।

रिपुघाती [वि.](सं.) शत्रुओं का नाश करने वाला

रिपुघ्न [वि.] (सं.) शत्रुओं का नाश करने वाला

रिपुता [संज्ञा स्त्री] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी। बैर

रिपोर्ट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-किसी घटना का बढ़

विस्तार से वर्णन जो किसी को सूचना देने के निमित्त किया जाय। २-किसी संस्था आदि के कार्यों का विस्तृत विवरण। ३-किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध की जानने योग्य बातों का ब्योरा।

रिपोर्टर [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी समाचार-पत्र में घटनाओं का वर्णन भेजने वाला। २-वह जो किसी सभा अथवा समिति का विवरण तथा व्याख्यान लिखता हो। ३-वह जो सरकार की ओर से अदालत या किसी सभा, समिति अथवा राज्यपरिषद् आदि की कारवाई एवं व्याख्यान लिखता हो।

रिप्र [संज्ञा पु.] (सं.) पातक।

रिप्रवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिससे पाप का नाश होता हो।

रिफार्म [संज्ञा पु.] (अं.) दोष अथवा त्रुटियों का दूर किया जाना। सुधार। संस्कार। परिवर्तन

रिफार्मर [संज्ञा पु.] (अं.) वह जो धार्मिक, सामाजिक अथवा राजनीतिक सुधार या उन्नति के लिए प्रयत्न या आंदोलन करता हो। सुधारक

रिफार्मेटरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह संस्था अथवा स्थान जहां बालक कैदी रखे जाते हैं और उन्हें औद्योगिक शिक्षा दी जाती है जिससे वे वहां से निकलकर जीविका-निर्वाह कर सकें एवं भले नागरिक बन कर रहें। चरित्र-संशोधनालय।

रिफार्मेटरी-स्कूल [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'रिफार्मेटरी'।

रिम [संज्ञा पु.] (डिं.) शत्रु। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'रिम'।

रिमझिम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्षा की छोटी-छोटी बूंदें गिरना। फुहार। [क्रि. वि.] छोटी बूंदों के रूप में (वर्षा)।

रिमहर [संज्ञा पु.] (डिं.) शत्रु।

रिमिका [संज्ञा स्त्री.] (?) काली मिर्च की लता।

रियासत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-राज्य। अमलदारी २-अमीरी। रईसी। ३-वैभव। ऐश्वर्य।

रियासती [वि.] (अ.) रियासत-सम्बन्धी। रियासत का।

रियाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर के अन्दर की वायु बाई।

रिर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हठ। जिद।

रिरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) गिड़गिड़ाना।

रिरिहा+ [वि.] (हिं.) गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक माँगने वाला।

रिरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीतल नामक धातु।

रिलना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मिल जाना। हिलमिलकर एक हो जाना। २-पैठना। घुसना।

रिलना-मिलना-१-भलीभाँति मिलना। २-मलमिलाप करना।

रिल-मिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मेलजोल। मेल-मिलाप।

रिलीफ [संज्ञा पु.] (अं.) दीन-दुखियों को दी जाने वाली सहायता।

रिवाज [संज्ञा पु.] (अ.) प्रथा। रस्म। चलन।

रिवाल्वर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ भरने की जगह होती है और वे गोलियाँ क्रमशः एक साथ छोड़ी जा सकती हैं।

रिव्यू [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-किसी नवीन पुस्तक की आलोचना। २-किसी निर्णय का पुनर्विचार। ३-सामयिक पत्र, पत्रिका जिसमें सामाजिक धार्मिक आदि विषयों पर आलोचना रहती है

रिश्ता [संज्ञा पु.] (फा.) सम्बन्ध। नाता।

रिश्तेदार [संज्ञा पु.] (फा.) नातेदार। सम्बन्धी।

रिश्तेदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रिश्ता होने का भाव सम्बन्ध। नाता।

रिश्तेमंद [संज्ञा पु.] (फा.) सम्बन्धी। नातेदार।

रिश्य [संज्ञा पु.] (सं) मृग।

रिश्वत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) घूस। उत्कोच।

रिश्वतखोर [संज्ञा प.] (अ., फा.) वह जो रिश्वत लेता हो। घूस लेने या खाने वाला।

रिश्वतखोरी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) रिश्वत या घूस लेने या खाने का काम।

रिश्वती [वि.] (अ.) १-रिश्वत का। रिश्वत-सम्बन्धी। २-रिश्वत खाने वाला। घूसखोर।

रिषभ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऋषभ'।

रिषि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऋषि'।

रिषीक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [वि.] हानि पहुँचाने वाला।

रिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्याण। मंगल। २-अमंगल। ३-अभाव। ४-नाश। ५-पाप। ६-खड्ग। [वि.] नष्ट। बरबाद। *[वि.] (हिं.) १-प्रसन्न। २-मोटा ताजा।

रिष्यमूक [संज्ञा पु.] (हि.) दक्षिण का वह पर्वत जहाँ राम और सुग्रीव की मित्रता हुई थी।

रिस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्रोध। गुस्सा।

रिस मारना-क्रोध को रोकना।

रिसना+ [क्रि. स.] (हिं.) बहुत बारीक छिद्रों द्वारा छनकर बाहर निकलना। रसना।

रिसवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'रिसाना'।

रिसहा+ [वि.] (हिं.) क्रोधी। गुस्सेवर।

रिसहाया+ [वि.] (हिं.) (स्त्री. रिसहाई) कुपित क्रुद्ध। नाराज।

रिसान [संज्ञा पु.] (हिं.) ताने के सूतों को फैलाकर साफ करने का काम।

रिसाना [क्रि. अ.] (हिं.) क्रुद्ध होना। [क्रि. स.] दूसरे को क्रुद्ध करना।

रिसाल [संज्ञा पु.] (फा.) राज्यकर।

रिसालदार [संज्ञा पु.] (फा.) १-घुड़सवार से का अधिकारी। २-रिसाल या राज्यकर के जाने वालों का प्रधान संचालक।

रिसाला [संज्ञा पु.] (फा.) घुड़सवार सेना।

रिसि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रिस। क्रोध। गुस्सा

रिसिआना [क्रि. अ.] (हिं.) कुपित या क्रुद्ध हो [क्रि. स.] दूसरे को कुपित या क्रुद्ध करना।

रिसिक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलवार।

रिसियाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) क्रुद्ध होना। [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को क्रुद्ध करना।

रिसौहाँ [वि.] (हिं.) १-क्रुद्ध सा। थोड़ा नाराज। २-क्रोध से भरा।

रिस्क् [संज्ञा स्त्री.] (अं.) उत्तरदायित्व। जवाबदेही।

रिस्टवाच [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कलाई पर बाँधने की छोटी घड़ी।

रिहननामा [संज्ञा पु.] (फा.) वह लेख जिसमें किसी वस्तु को रेहन रखे जाने का उल्लेख हो।

रिहर्सल् [संज्ञा पु.] (अं.) १-नाटक के अभिनय का अभ्यास। २-वह अभ्यास जो किसी कार्य को ठीक समय पर करने से पूर्व किया जाय।

रिहल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) काठ की बनी हुई कैंची-नुमा (×) चौकी, जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ी जाती है।

रिहा [वि.] (फा.) १-बंधन आदि से छूटा हुआ मुक्त। २-किसी बाधा अथवा संकट से छूटा हुआ।

रिहाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मुक्ति। छुटकारा।

रिहाण [संज्ञा पु.] (सं.) सेवा करना।

रिहाना* [क्रि. स.] (हिं.) रिहा या मुक्त करना

रिहायस [संज्ञा पु.] (सं.) चोर। ठग।

रींधना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'राँधना'।

री [अव्य.] (हि.) सखियों के लिए सम्बोधनसूचक शब्द। अरी। एरी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १- गति। २-वध। हत्या। ३-शब्द। र।

रीगन [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का

रीछ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रीछनी] भालू।

रीछराज* [संज्ञा पु.] (हिं.) जामवंत।

रीजेंट [संज्ञा पु.] (अं.) किसी राजा की नाबालिगी अनुपस्थिति अथवा अयोग्यता की अवस्था में राज्य का प्रबन्ध या शासन करने वाला व्यक्ति।

रीजेंसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) रीजेंट का शासन अधिकार।

रीज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घृणा। २-निंदा भर्त्सना।

रीझ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रीझने की क्रिया या भाव। किसी बात पर प्रसन्न होना। २-मोहित या मुग्ध होने का भाव।

रीझना [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रसन्न होना। २-मोहित या मुग्ध होना।

रीठ* [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) १-तलवार। २-युद्ध। [वि.] (हिं.) १-अशुभ। २-बुरा। खराब।

रीठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक जंगली वृक्ष। २-इस वृक्ष का फल जो कपड़े धोने के काम में आता है। ३-चूने का कंकर फूँकने का भट्टा।

रीठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रीठा'।

रीडर [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह जो पढ़े। पाठक। २-किसी कालेज अथवा विश्वविद्यालय का अध्यापक अथवा व्याख्याता। ३-वह जो लेख अथवा पुस्तकों का प्रूफ पढ़ता या संशोधन करता है।

रीढ़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीठ के बीच की लम्बी खड़ी हड्डी। मेरुदंड।

रीत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रीति'।

रीतना* [क्रि. स.] (हिं.) रिक्त या खाली करना। [क्रि. अ.] (हिं.) रिक्त या खाली होना।

रीता [वि.] (हिं.) खाली। रिक्त।

रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोई काम करने का ढंग। ढब। तरह। २-रस्म। रिवाज। ३-नियम। कायदा। ४-लोहे की मैल। ५-पीतल ६-जले हुए सोने की मैल। ७-सीसा। ८-गति ९-स्वभाव। १०-प्रशंसा। स्तुति। ११-साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह योजना जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता है।

रीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जस्ते की भस्म।

रीतिपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) जस्ते का भस्म।

रीम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कागज की वह गड्डी जिसमें बीस दस्ते होते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (देश) पीब। मवाद।

रीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रीढ़'। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

रीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीतल।

रीषमूक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ऋष्यमूक'।

रीस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'रिसि'। २-डाह ३-स्पर्द्धा। बराबरी।

रीसना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रुद्ध होना।

रीसा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की झाड़ी जिसकी छाल के रेशों से रस्सियां बनती हैं।

रुंज [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाजा।

रुंड, रुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर कट जाने पर खाली बचा हुआ धड़। कबंध। २-वह शरीर जिसके हाथ पैर कट गये हों।

रुंडिका, रुण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्धक्षेत्र। रणभूमि।

रुंदवाना [क्रि. स.] (हिं.) पैरों से कुचलवाना। रौंदवाना।

रुंधती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वशिष्ठ मुनि की स्त्री का नाम।

रुँधना [क्रि. अ.](हिं.) १-मार्ग रुकना या घिरना २-उलझना। ३-घेरा जाना। ४-किसी काम में लगना।

रु* [अव्यय] (हिं.) और। [संज्ञा पु.] १-शब्द २-वध। ३-गति।

रुआँली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रूई की पूनी या पौनी जिससे चरखे पर सूत काता जाता है।

रुआ* [संज्ञा पु.] (हिं.) रोम। रोआं।

रुआ-घास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की सुगन्धित घास। २-इस घास से बसा हुआ तेल।

रुआना* [क्रि. स.] (हिं.) रुलाना।

रुआब [संज्ञा पु.] (अं.) १-धाक। रोब। २-भय आतंक। डर।

रुई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक छोटा वृक्ष जिसकी छाल और पत्तियां रंगाई के काम में आती हैं

रुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रूई'।

रुईदस्त [संज्ञा पु.] (फा.) कुश्ती का एक पेंच।

रुईदार [वि.] (हिं.) देखो 'रूईदार'।

रुएँदा+ [वि.] (हिं.) देखो 'रोआसा'।

रुकना [क्रि अ.] (हिं.) १-मार्ग आदि न मिलने के कारण ठहर जाना। अटकना। अवरुद्ध होना। २-आगे न बढ़ना। ३-किसी काम या चलते हुये काम का बीच में बन्द हो जाना।

रुकमंगद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो रुक्मांगद'।

रुकमंजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जो बाग में सजावट के लिये लगाया जाता है।

रुकमिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रुक्मणी'।

रुकरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गन्ना।

रुकवाना [क्रि. स.] (हिं.) रुकने का काम दूसरे से कराना।

रुकाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रुकने की क्रिया या भाव। रुकावट। रोक। २-मलावरोध। कब्ज ३-स्तंभन।

रुकावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रुकने की क्रिया या भाव। रोक। अवरोध। २-विघ्न। बाधा। ३-रोकने वाली बात या चीज।

रुकुम* [संज्ञा पु.] देखो 'रुक्म'

रुकुमी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रुक्मी'।

रुक्का [संज्ञा पु.](अं.) १-छोटा पत्र। पुरजा। परचा। २-वह लेख जो हुँडी या कर्ज लेने वाला लिखकर महाजन को रुपया लेती समय दे देता है।

रुक्ख* [संज्ञा पु.] (हिं.) वृक्ष। रूख।

रुक्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-धतूरा। ३-लोहा। ४-नागकेसर। ५-रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

रुक्मकारक [संज्ञा पु.](सं.) सुनार।

रुक्मकेश [संज्ञा पु.] (सं.) विदर्भ के राजा भीष्मक के छोटे पुत्र का नाम।

रुक्मपाश [संज्ञा पु.] (सं.) सूत का बना हुआ वह फंदा जिसकी सहायता से गहने आदि पहने जाते हैं।

रुक्मपुर [संज्ञा पु.] (सं.) वह नगर जहाँ गरुड़ निवास करते हैं।

रुक्ममय [वि.] (सं.) सोने का बना हुआ।

रुक्ममाली [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्मक के एक पुत्र का नाम (पुराण)।

रुक्ममाहु [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्मक के एक पुत्र का नाम।

रुक्मरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने का रथ। २-द्रोणाचार्य। ३-शल्य के एक पुत्र का नाम। ४-भीष्मक के एक पुत्र का नाम।

रुक्मवती [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, मगण, सगण और एक गुरु होता है।

रुक्मवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोणाचार्य।

रुक्मसेन [संज्ञा पु.] (सं.) रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मांगद [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

रुक्मिण [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'रुक्मिणी'।

रुक्मिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की रानी।

रुक्मिदर्प [संज्ञा पु.] (सं.) बलदेव।

रुक्मिदारी [संज्ञा पु.] (हिं.) बलदेव।

रुक्मी [संज्ञा पु] (हि.) विदर्भ देश के राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई था।

रुक्ष [वि.] (सं.) १-जिसमे चिकनाहट न हो। रूखा। २-जिसमे घी, तेल आदि कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या लगी हो। ३-खुरदरा। ४-नीरस। शुष्क। ५-शीलरहित। [संज्ञा पु] १-वृक्ष। पेड़। २-नरकट नामक घास।

रुक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रूखापन। रुखाई।

रुख़ [संज्ञा पु.] (फा.) १-कपोल। गाल। २-मुख ३-आकृति। चेष्टा। ४-चेहरे या आकृति से प्रकट होने वाली मन की इच्छा। ५-कृपा दृष्टि। ६-सामने का भाग। ७-अंग। पार्श्व *रुख देना*-ध्यान देना। *रुख फेरना या बदलना*-१-प्रवृत्त न होना। २-नाराज होना। *रुख मिलाना*-मुँह सामने करना। [क्रि. वि.] १-तरफ। २-सामने। [संज्ञा पु] (हि) १-देखो 'रूख'। २-एक प्रकार की घास। [वि.] (हि.) देखो 'रूखा'।

रुखचढ़ना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बन्दर। २-पेड़ पर रहने वाला भूत।

रुखदार [वि.] (फा.) घटता हुआ (बाजार का भाव)।

रुखसत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) छुट्टी। अवकाश। [वि.] जो कहीं से चल पड़ा हो। विदा या रवाना हो जाने वाला।

रुखसताना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह इनाम जो किसी के रुखसत होने के समय राजा अथवा रईस आदि के यहाँ से सत्कारार्थ दिया जाता है

रुखसती [वि.] (अ.) जिसको छुट्टी मिली हो। [संज्ञा स्त्री.] १-विदाई, विशेषतः दुलहिन की। २-वह धन जो विदाई के समय दिया जाता है।

रुखसार [संज्ञा पु.](फ़ा.) कपोल। गाल।

रुखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रूखापन। २-शुष्कता। खुश्की। ३-व्यवहार की कठोरता। शील का अभाव। बे-मुरौवती।

रुखान+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रुखानी'।

रुखानल* [संज्ञा पु.] (डिं.) क्रोधाग्नि।

रुखाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-रूखा होना। २-नीरस होना। सूखना।

रुखानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बढ़इयों का एक औजार। २-संगतराशों की एक टाँकी।

रुखावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'देखो 'रुखाई'।

रुखाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रूखापन। रुखाई।

रुखिता* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मान करने या रूठने वाली नायिका।

रुखिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पेड़ों से छाई हुई भूमि।

रुखुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चबैना। २-बहुत छोटा पौधा।

रुखौंहाँ [वि.] (हिं.) (स्त्री. रुखौंहीं) रूखा-सा। रुखाई लिये हुए।

रुगना+ [संज्ञा पु.](हिं.) पशुओं का टपका नामक रोग।

रुगिया+ [वि.] (हिं.) देखो 'रोगी'।

रुगौना+ [संज्ञा पु.] (देश.) घलुआ। घाल।

रुग्दाह-सन्निपातज्वर [संज्ञा पु.](सं.) बीस दिन तक रहने वाला एक प्रकार का ज्वर।

रुग्न [वि.] (सं.) १-रोगग्रस्त। रोगी। बीमार। २-झुका हुआ। टेढ़ा। ३-टूटा हुआ। ४-बिगड़ा हुआ।

रुग्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीमारी।

रुग्मी [संज्ञा पु.] (सं.) जंबूद्वीप के एक पर्वत का नाम।

रुच*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रुचि'।

रुचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सज्जीखार। २-घोड़ों का साज। ३-माला। ४-काला नमक। ५-मांगल्यद्रव्य। ६-रोचना। ७-बायबिड़ङ्ग। ८-नमक। ९-बिजौरा नीबू। १०-दाँत। ११-कबूतर। १२-दक्षिण दिशा। १३-हरिवर्ष के एक पर्वत का नाम। १४-ऐसा घर जिसके चारों ओर के अलिंद (चबूतरा या परिक्रमा) में पूर्व तथा पश्चिम का सब नष्ट हो गया हो। १५-चौकोर खंभा। १६-निष्क नामक सिक्का जो प्राचीन काल में होता था। [वि.] १-पसंद आने वाला। २-स्वादिष्ट।

रुचदान+ [वि.] (हिं.) अच्छा या भला लगने योग्य।

रुचना [क्रि. अ] (हिं.) रुचि के अनुकूल होना। पसंद आना। रुच-रुच-बहुत रुचि से।

रुचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकाश। २-शोभा। ३-इच्छा। ४-तोते, मैना, बुलबुल आदि का बोलना।

रुचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन की प्रवृत्ति। २-प्रेम। चाह। ३-किरण। ४-शोभा। कांति। ५-खाने की इच्छा। भूख। ६-स्वाद। ७-साहित्य या कला की कृति को पसंद करने या न करने वाली मन की वृत्ति। ८-कामशास्त्रानुसार एक आलिंगन जिसमें नायिका-नायक के सामने उसके घुटने पर बैठकर उसे गले लगाती है। ९-एक अप्सरा का नाम [वि.] (सं.) शोभा के अनुकूल। फबता हुआ [संज्ञा पु.] एक प्रजापति का नाम जो रौच्य-मनु के पिता थे।

रुचिकर [वि.] (सं.) रुचि उत्पन्न करने वाला। दिलपसंद।

रुचिकारक [वि.](सं.) १-रुचिकर। २-स्वादिष्ट।

रुचिकारी [वि.] (सं.) १-रुचिकर। २-स्वदिष्ट। ३-मनोहर।

रुचित [संज्ञा पु.](सं.) १-मीठी वस्तु। २-इच्छा। अभिलाषा। [वि.] जिसे जी चाहता हो।

रुचिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोचकता। २-अनुराग। ३-सुन्दरता। ४-अतिजगतीवृत्त का एक भेद।

रुचिधाम [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

रुचिप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक दैत्य का नाम।

रुचिफल [संज्ञा पु.] (सं.) नासपाती।

रुचिभर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-स्वामी। [वि.] सुखकर।

रुचिमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उग्रसेन की पत्नी और श्रीकृष्णचन्द्र की नानी का नाम।

रुचिमान [वि.] (हिं.) मनोहर। सुन्दर। रुचिर।

रुचिर [वि.] (सं.) १-सुन्दर। २-मीठा। [संज्ञा पु.] १-मूली। २-केसर। ३-लौंग। ४-सेनजित् के एक पुत्र का नाम।

रुचिरकेतु [संज्ञा पु.](सं.) एक बोधिसत्व का नाम

रुचिरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दरता। २-मिठास।

रुचिर-वदन [वि.] (सं.) सुन्दर मुख वाला।

रुचिरवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्र के प्रहार का संहार।

रुचिरश्रीगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

रुचिरांजन, रुचिराञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) शोभांजन।

रुचिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्राचीन नदी का नाम। २-केसर। ३-लौंग। ४-मूली। ५-मात्रिक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरण में १६ तथा दूसरे और चौथे पदों में १४ मात्राएँ और अन्त में दो गुरु होते हैं। ६-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, भगण, सगण, जगण और अन्त में एक गुरु होता है।

रुचिराई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सुन्दरता। मनोहरता।

रुचिराश्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर घोड़ा।

रुचिरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साग।

रुचिवर्द्धक, रुचिवर्धक [वि.] (सं.) १-रुचि उत्पन्न करने वाला। २-भूख बढ़ाने वाला।

रुचिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा खाद्यपदार्थ। [वि.] (सं.) जिस पर रुचि हो। जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो।

रुची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रुचि'।

रुच्छ* [वि.] (हिं.) १-रूखा। २-क्रुद्ध। नाराज। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रूख'।

रुच्य [वि.] (सं.) १-रुचिकर। २-सुन्दर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंधा नमक। २-शालिधान्य। ३-पति। स्वामी।

रुच्यकंद, रुच्यकन्द [संज्ञा पु.](सं.) सूरन।

रुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग। २-कष्ट। ३-घाव। क्षत। ४-भाँग। भंग। ५-एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा बाजा जो प्राचीनकाल में होता था।

रुजगार+ [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'रोजगार'।

रुजग्रस्त [वि.] (सं.) रोगग्रस्त। बीमार।

रुजस्कर [वि.] (सं.) पीड़ा देने वाला।

रुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोग। २-भाँग। भंग। ३-कुष्ट। कोढ़। ४-भेड़ी। ५-पीड़ा।

रुजाकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग उत्पन्न करने वाला। २-रोग। ३-कमरख नामक फल।

रुजाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोगों या कष्टों का समूह।

रुजी [वि.] (हिं.) अस्वस्थ। बीमार।

रुजू [वि.] (अ.) प्रवृत्त।

रुझना* [क्रि. अ.](हिं.) १-घाव आदि का भरना। २-उलझना।

रुझनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक छोटी चिड़िया जिसकी पीठ काली, छाती सफ़ेद और चोंच लम्बी होती है।

रुझान [संज्ञा पु.](अ.) १-किसी ओर प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव। २-साधारण या हल्की प्रवृत्ति।

रुठ [संज्ञा पु.] (हिं.) क्रोध। अमर्ष। गुस्सा।

रुठना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'रूठना'।

रुठाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को रूठने में प्रवृत्त करना। नाराज करना।

रुण [संज्ञा स्त्री.] (सं) महाभारत के अनुसार सरस्वती नदी की एक शाखा का नाम।

रुणित [वि.] (सं.) बजता हुआ।

रुत [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'ऋतु'। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलरव। २-ध्वनि। शब्द।

रुतबा [संज्ञा पु.] (अ.) १-पद। ओहदा। २-प्रतिष्ठा।

रुदंतिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'रुदंती'।

रुदंती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छोटा क्षुप।

रुदथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ता। २-छोटा बच्चा

रुदन [संज्ञा पु.] (सं.) रोने की क्रिया। रोना। क्रंदन।

रुदना* [क्रि. अ.] (हिं.) रोना।

रुद्राछ*+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'रुद्राक्ष'।

रुदित [वि.] (सं.) रोता हुआ।

रुदित [वि.] (हिं.) रोता हुआ।

रुदुवा+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक अगहनिया धान।

रुद्ध [वि.](सं.) १-घेरा हुआ। रोका हुआ। आवृत्त २-मुँदा हुआ। बंद। ३-जिसकी गति रोक ली गई हो।

रुद्धकंठ, रुद्धकण्ठ [वि.] (सं.) जिसका गला रुँध गया हो। जो प्रेम आदि मनोवेगों के कारण बोलने में असमर्थ हो। जिसका गला भर आया हो।

रुद्धक [संज्ञा पु.] (सं.) नमक।

रुद्धमूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्रकृच्छ्र नामक रोग।

रुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में ग्यारह हैं। २ ग्यारह की संख्या ३-शिव का एक रूप। ४-विश्वकर्मा के एक पुत्र का नाम। ५-एक प्रकार का बाजा जो प्राचीनकाल में होता था। ६-आक। मदार। ७-रौद्ररस। [वि.] (सं.) भयंकर। भयानक। डरावना।

रुद्रक्ष+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रुद्राक्ष।

रुद्रकमल [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष।

रुद्रकलस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कलस जिसका उपयोग ग्रहों आदि की शांति के समय होता है।

रुद्रकाली [संज्ञा स्त्री.](सं.) शक्ति या दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।

रुद्रकुंड, रुद्रकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रज के एक तीर्थ का नाम।

रुद्रकोटि [संज्ञा पु.](सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम

रुद्रगण [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार शिव का पारिषद्।

रुद्रगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

रुद्रज [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

रुद्रजटा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-ईसरमूल। २-सौंफ ३-तीन चार हाथ ऊँचा एक प्रकार का क्षुप।

रुद्रट [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य का नाम।

रुद्रतनय [संज्ञा पु.] (सं.) तीसरे श्रीकृष्ण का एक नाम। (जैन-हरिवंश)।

रुद्रताल [संज्ञा पु.] (सं.) मृदंग में एक ताल।

रुद्रतेज [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

रुद्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्र का भाव या धर्म।

रुद्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

रुद्रपत्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दुर्गा। २-अलसी

रुद्रपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के मतानुसार एक तीर्थ का नाम।

रुद्रपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बारहवें मनु रुद्रसावर्णि का एक नाम।

रुद्रप्रमोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ से शिवजी ने त्रिपुरासुर पर बाण चलाया था।

रुद्रप्रयाग [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ जो गढ़वाल जिले में है।

रुद्रप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-हर्रे।

रुद्रभद्र [संज्ञा पु.](सं.) एक नद का नाम (पुराण)

रुद्रभू [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान। मरघट।

रुद्रभूमि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-श्मशान। मरघट। २-ज्योतिष में भूमि विशेष।

रुद्रभैरवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुर्गा की एक मूर्त्ति का नाम।

रुद्रमाल्य [संज्ञा पु.](सं.) तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ।

रुद्रयज्ञ [संज्ञा पु] (सं.) रुद्र के उद्देश्य से किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

रुद्रयामल [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ।

रुद्ररेता [संज्ञा पु.] (सं) पारद। पारा।

रुद्ररोदन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

रुद्ररोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

रुद्रलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुद्रजटा नामक क्षुप।

रुद्रलोक [संज्ञा पु.](सं.) वह लोक जिसमें शिव और रुद्रों का निवास माना जाता है।

रुद्रवंती, रुद्रवन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वनौषधि जिसकी गणना दिव्यौषधि वर्ग में होती है

रुद्रवट [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

रुद्रवत् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रुद्रवान्'।

रुद्रवदन [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव के पाँच मुख। [वि.] (सं.) पाँच (संख्या)।

रुद्रवान् [वि] (सं.) रुद्रगणों से युक्त। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोम। २-अग्नि। ३-इन्द्र

रुद्रविंशति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रभाव आदि साठ संवत्सरों अथवा वर्षों में से अन्तिम बीस वर्षों का समूह।

रुद्रवीणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वीणा जो प्राचीनकाल में होती थी।

रुद्रसर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम

रुद्रसावर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) बारहवें मनु का नाम

रुद्रसुंदरी, रुद्रसुन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवी की एक मूर्ति का नाम।

रुद्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके ग्यारह पुत्र उत्पन्न हुए हों।

रुद्रस्वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रुद्रलोक'।

रुद्रहिमालय [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

रुद्रहृदय [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम

रुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रुद्रजटा नाम का क्षुप। २-विद्रुमलता। ३-अदितमंजरी।

रुद्राक्रीड़ा [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान। मरघट।

रुद्राक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष २-इस वृक्ष के गोल बीज जिनकी माला बनती है।

रुद्राणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-रुद्रजटा नामक लता। ३-एक प्रकार की रागिनी।

रुद्रारि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रुद्रावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक प्राचीन तीर्थ।

रुद्रावास [संज्ञा पु] (सं.) काशीक्षेत्र, जिसमें रुद्र (शिव) का निवास माना जाता है।

रुद्रिय [वि.](सं.) १-रुद्र-सम्बन्धी। रुद्र का। २-आनन्ददायक।

रुद्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुद्रवीणा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेद के रुद्रानुवाक अथवा अघमर्षण सूक्त की ग्यारह वृत्तियाँ।

रुद्रैकादशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'रुद्री'।

रुद्रोपस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम (पुराण)।

रुधिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शोणित। लहू। २-केसर। ३-मंगलग्रह। ४-एक प्रकार का रत्न ('रुधिर' के मुहावरों के लिए देखो 'खून' के मुहावरे)।

रुधिरगुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) पेट में शूल और दाह का एक रोग जो स्त्रियों को होता है। इसमें पेट में एक गोला सा घूमता है।

रुधिरपायी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. रुधिरपायिनी] १-लहू या रक्त पीने वाला। २-राक्षस।

रुधिरपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) नकसीर। रोग।

रुधिरप्लीहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्लीहा रोग का एक भेद।

रुधिरवृद्धिदाह [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें रक्त की अधिकता से सारे शरीर में धूआं-सा निकलता है।

रुधिरांध, रुधिरान्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक

रुधिराक्त [वि.] (सं.) १-खून से भरा हुआ। २-लहू का सा लाल।

रुधिराख्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न या मणि।

रुधिरानन [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष में मंगलग्रह की एक वक्रगति।

रुधिरामय [संज्ञा पु.] (सं.) रक्तपित्त रोग।

रुधिराशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खर का सेनापति २-राक्षस।

रुधिराशी [वि.] (सं.) रक्तपान करने वाला।

रुधिरोद्गारी [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से एक।

रुनझुन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नूपुर आदि के बजने का शब्द। झनकार।

रुनाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अरुणता। लाली। सुरखी।

रुनित* [वि.] (हि.) बजता हुआ।

रुनी [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़े की एक जाति।

रुनकझुनक [संज्ञा स्त्री] (हि.) नुपुर आदि का रुनझुन शब्द।

रुनुझुनु [संज्ञा पु.] (हि.) रुनझुन। झनकार।

रुनुल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बेत जो झाड़-रूप में होता है।

रुपना [क्रि. अ.] (हि.) १-रोपा जाना। गाड़ा या लगाया जाना। २-अड़ना। डटना।

रुपमनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दर स्त्री। रूपवती स्त्री।

रुपया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भारत में प्रचलित एक सिक्का जो सोलह आने का होता है। २-धन। सम्पत्ति। *रुपया उठाना*-रुपया खर्च करना। *रुपया ठीकरी करना*-रुपये का अपव्यय करना। *रुपया उड़ाना*-खूब धन खर्च करना। *रुपया जोड़ना*-धन इकट्ठा करना। *रुपया पानी में फेंकना*-व्यर्थ धन खर्च करना। यौ०-*रुपया-पैसा*-धन-सम्पत्ति।

रुपहरा+ [वि.] (हि.) देखो 'रुपहला'।

रुपहला [वि.] (हिं.) (स्त्री. रुपहली) चाँदी के रंग का।

रुपहलारंग [संज्ञा पु.](हिं.) भड़भाँड का काँटा। (कहार)।

रुपा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रुपया'।

रुपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आक। मदार।

रुपैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रुपया।

रुपौला+ [वि.] (हिं.) देखो 'रुपहला'।

रुबाई [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-उर्दू या फारसी की कविता विशेष जिसमें चार चरण होते हैं। २-एक प्रकार का चलता गाना।

रुबाईएमन [संज्ञा पु.] (अ.) एक राग जिसके साथ कव्वाली का ठेका बजाया जाता है।

रुमंच* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'रोमांच'।

रुमण [संज्ञा पु.] (सं.) एक वानर जो सौ करोड़ वानरों का यूथपति था (रामायण)।

रुमन्वान [संज्ञा पु.](हि.) १-महाभारत में वर्णित एक प्राचीन ऋषि का नाम। २-एक पर्वत का नाम।

रुमांचित [वि.] (हिं.) देखो 'रोमांचित'।

रुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुग्रीव की पत्नी का नाम

रुमाल [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'रूमाल'।

रुमाली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-एक प्रकार का लंगोट। २-मुगदर हिलाने का एक ढंग।

रुमावली* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रोमावली'

रुराई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सुन्दरता।

रुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कस्तूरी मृग। २-एक दैत्य का नाम। ३-पुराणानुसार जंतु विशेष। ४-एक प्रसिद्ध ऋषि जो च्यवन के पौत्र थे। ५-विश्वदेवा के अन्तर्गत देवताओं का एक गण ६-एक भैरव का नाम। ७-सावर्णिमनु के सप्तर्षियों में से एक। ८-एक भैरवराग का नाम। ९-एक फलदार वृक्ष का नाम।

रुरुआ [संज्ञा पु.] (हि) एक प्रकार का बड़ा उल्लू।

रुरुक्ष [वि.] (सं.) रूक्ष। रूखा।

रुरुत्सु [वि.] (सं.) विघ्न करने वाला।

रुरुभैरव [संज्ञा पु.](सं.) तांत्रिकों के अनुसार एक भैरव का नाम।

रुरुमुंड, रुरुमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

रुलना+ [क्रि. अ.](हिं.) इधर-उधर मारा फिरना ठोकरें खाना या रौंदा जाना।

रुलाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) रोने की क्रिया या भाव। रोना।

रुलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-दूसरे को रोने में प्रवृत करना। २-इधर-उधर रुलने देना। ३-खराब करना।

रुल्ल, रुल्ला [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वह भूमि जिसकी उपजाऊ शक्ति कम हो गई हो।

रुल्ली [संज्ञा स्त्री.] (देश) रोहिणी की तरह की एक प्रकार की वनस्पति जो उससे कुछ छोटी होती है।

रुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) सेमल के फूल का घूआ।

रुवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रुलाई'।

रुवाब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'रोब'।

रुशंगु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम

रुशद्गु [संज्ञा पु.] देखो 'रुशंगु'।

रुशना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुद्र की एक पत्नी का नाम।

रुष [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध। गुस्सा। (हिं.) देखो 'रुख'।

रुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रोध। कोप।

रुषित [वि.] (सं.) १-क्रुद्ध। नाराज। २-रंजीदा। दुखी।

रुष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भिलावां। २-कस्तूरी-बूटी।

रुष्ट [वि.] (सं.) कुपित। नाराज। अप्रसन्न।

रुष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुष्ट होने का भाव अप्रसन्नता।

रुष्टपुष्ट [वि.] (हिं.) देखो 'हृष्टपुष्ट'।

रुष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं) क्रोध। गुस्सा।

रुसना* [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'रूसना'।

रुसवा [वि.] (फा.) निंदित। जलील।

रुसवाई [संज्ञा स्त्री.](फा.) अपमान और दुर्नाम।

रुसा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'रूसा'। [संज्ञा पु.] देखो 'अडूसा'।

रुसित* [वि.] (हि) रुष्ट। नाराज। अप्रसन्न।

रुसूम [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'रसूम'।

रुस्ट* [वि.] (हिं.) देखो 'रुष्ट'।

रुस्तम [संज्ञा पु.] (अ.) १-फारसदेश का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २-बहुत वीर। पद-*छिपारुस्तम*-देखने में सीधा-सादा पर वास्तव में बहुत गुणी या वीर। *रुस्तम का साला*-बहुत बड़ा वीर (व्यंग्य)।

रुहक [संज्ञा पु.] (सं.) छेद। सूराख।

रुहठि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रूठने की क्रिया या भाव।

रुहा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दूब। २-अतिबला। ३-मांसरोहिणीलता। ४-लजालू।

रुहिर [संज्ञा पु] (हिं.) लहू। खून। रक्त।

रुहेलखंड, रुहेलखण्ड [संज्ञा पु] (सं.) भारत के पश्चिमोत्तर भाग का एक प्रदेश।

रुहेला [संज्ञा पु.](हिं.) रुहेलखंड में बसनेवाले पठानों की एक जाति।

रूँख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रूख'।

रूँखड़ [संज्ञा पु.](हि.) अलख कहकर भीख माँगने वाले भिक्षुक। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रूख'

रूँगटा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'रोंगटा'।

रूँगटाली+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) भेड़। गाडर।

रूँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) घलुआ। घूँगा। घाल।

रूँदना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'रौंदना'।

रूँध [वि.] (हि) रुका हुआ। अवरुद्ध।

रूँधना [क्रि. स.] (हि.) १-कँटीले झाड़ आदि से कोई स्थान घेरना। २-चारों ओर से घेरना। ३-गमनागमन का मार्ग बन्द करना। रोकना।

रू [संज्ञा पु.] (फा.) १-मुँह। चेहरा। २-ऊपरी भाग। ३-आशा। ४-सिरा। ५-सामना। ६-कारण। ७-... आगा। यौ० *रू-पुश्त*-आगेपीछे। दोनों ओर। *रू-रिआयत*-१-पक्षपात। २-मुरौवत। ... अनुसार।

रूई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-कपास के डोडे में से निकला हुआ रेशेदार घूआ जिसे कातकर सूत बनाते या जो गद्दे, रजाई आदि में भरा जाता है। २-रूई के समान प्रकार का कोई रूआँ, विशेषतः बीजों के ऊपर का रोंआँ। *रूई का गाला*-रूई के गाले के समान मुलायम और सफेद। *रूई की तरह तूम डालना*-१-भली प्रकार नोचना। २-खूब मारपीट करना। ३-गालियाँ देना। ४-...

प्रकार छानबीन करना। रूई की तरह धुनना-बुरी तरह मारना। रूई सा-रूई की तरह मुलायम। अपनी रूई सूत में उलझना या लिपटना-अपने काम में लगना या फँसना।

रूईदार [वि.] (हि.) जिसमें रूई भरी हो।

रूक [संज्ञा स्त्री.] (डि.) तलवार। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भूँगा। घलुआ। घाल। २-एक प्रकार का पेड़ जिसके पत्ते दवा के काम में आते हैं।

रूक्ष [वि.] (सं.) [स्त्री रूक्षा] जो चिकना या कोमल हो। स्निग्ध का उलटा। रूखा।

रूख [संज्ञा पु.] (हिं.) वृत्त। पेड़। [वि.] देखो 'रूखा'।

रूखड़ा, रूखड़ो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वृत्त। पेड़।

रूखना* [क्रि. अ.] (हिं.) रूठना। रूसना।

रूखरा* [संज्ञा पु.] (हिं) वृत्त। पेड़। [वि.] (हि.) देखो 'रूखा'।

रूखा [वि.] (हिं.) १-जो चिकना न हो। रुत्त। २-जिसमें तेल, घी आदि चिकनी वस्तु न मिली या पड़ी हो। ३-स्वादरहित। फीका। ४-सूखा। नीरस। ५-खुरदुरा। ६-जिसमें प्रेम या स्नेह न हो। ७-शील-संकोच न करने वाला। शीलरहित। ८-विरक्त। उदासीन। यौ०-रूखासूखा-१-जिसमें चिकना अथवा सरस पदार्थ न हो। २-साधारण भोजन। रूखा माल-नक्काशी किया हुआ बरतन (कसेरा)। रूखा पड़ना या होना-१-शील संकोच का त्याग करना। २-रोष प्रकट करना। [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की छेनी।

रूखापन [संज्ञा पु.] (हि.) १-रूखा होने का भाव रुखाई। २-खुश्की। नीरसता। ३-(व्यवहार में) कठोरता। ४-स्वादहीन। ५-उदासीनता

रूचना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'रुचना'।

रूज [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार की लाल बुकनी जिससे सोने चांदी पर चमक लाई जाती है।

रूझना* [क्रि. अ] (हिं.) देखो 'उलझना'।

रूठ* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-रूठने की क्रिया या भाव। २-क्रोध।

रूठन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रूठने की क्रिया या भाव। नाराजगी।

रूठना [क्रि. अ.] (हिं.) अप्रसन्न होकर उदासीन, चुप या अलग हो जाना। रूसना।

रूठनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रूठन'।

रूढ़, रूढ़ो [वि.] (डि.) [स्त्री. रूढ़ी] श्रेष्ठ। उत्तम

रूढ़ [वि.] (सं.) [स्त्री. रूढ़ा] १-चढ़ा हुआ। आरूढ़। २-उत्पन्न। जात। ३-प्रसिद्ध। ४-गँवार। ५-कठोर। ६-अकेला। अविभाज्य। [संज्ञा पु.] (सं.) यौगिक शब्द जिसके खण्ड करने पर कोई अर्थ न निकले। जैसे-कुब्जा घोड़ा आदि।

रूढ़प्रणय [वि.] (सं.) अत्यधिक प्रेम

रूढ़यौवना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'आरूढ़ यौवना'।

रूढ़वंश [वि.] (सं.) प्रसिद्ध वंश।

रूढ़ा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह लक्षणा जो प्रचलित चली आती हो और जिसका व्यवहार प्रसिद्ध से भिन्न अभिप्राय व्यंजना के लिए न हो।

रूढ़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चढ़ाई। चढ़ाव। २-वृद्धि। बढ़ती। ३-उभार। उठान। ४-जन्म उत्पत्ति। ५-ख्याति। प्रसिद्धि। ६-विचार। निश्चय। ७-रूढ़ शब्द की शक्ति जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है। ८-बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा। रीति। चाल। कस्टम।

रूढ़िवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें बहुत दिनों से चली आई रीति रिवाजों पर ही अन्धविश्वास हो।

रूढ़िवादी [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दिनों से या परंपरागत चली आई प्रथाओं का अंधभक्त।

रूदाद [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-हाल। समाचार। २-दशा।,अवस्था। ३-विवरण। कैफियत। ४-व्यवस्था। ५-अदालती कार्रवाई। मुकद्मे का रंग-ढंग।

रूनी [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों की एक जाति।

रूप [संज्ञा पु.](सं.) १-शकल। सूरत। २-स्वभाव प्रकृति। ३-सौन्दर्य। सुन्दरता। ४-देह। शरीर। ५-वेष। भेस। ६-दशा। अवस्था. ७-समान। तुल्य। सदृश। अनुरूप। ८-भेद। विकार। ९-चिह्न। लक्षण। १०-*चाँदी। ११-रूपक। १२-शब्द अथवा वर्ण का वह स्वरूप या उसका रूपांतर जो उसमें विभक्ति प्रत्यय आदि विकारों के लगने से बन जाता है १३-प्रार्थना, विवरण आदि से सम्बन्ध रखने वाले पत्रों आदि का वह निश्चित रूप जिसमें भिन्न-भिन्न बातें भरने के लिए प्रायः कोष्टक आदि बने रहते हैं। फॉर्म। [वि.] (सं.) रूप-वाला। खूबसूरत।

रूपक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूर्त्ति। प्रतिकृति। २-वह काव्य जो पात्रों द्वारा खेला जाता है। इसके दस प्रधान भेद हैं। यथा—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग अंक, बीथी, और प्रहसन। ३-एक परिमाण का नाम। ४-चांदी। ५-रुपया। ६-सङ्गीत में सात मात्राओं का एक दो-ताला ताल। ७-केवल दिखाने के लिए बनाया हुआ रूप। ८-एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमान का उपमेय में आरोप किया जाता है। ९-प्रार्थना विवरण आदि में सम्बन्ध रखने वाले पत्रों आदि का वह निश्चित रूप जिसमें भिन्न-भिन्न बातें भरने के लिए कोष्ठक आदि बने होते हैं। फॉर्म।

रूपकताल [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में एक ताल।

रूपकरण [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ों की एक जाति।

रूपकर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

रूपकातिशयोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाया जाता है।

रूपकार [संज्ञा पु] (सं.) मूर्त्ति बनाने वाला।

रूपकृत [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

रूपक्रांता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अन्त में एक गुरु तथा एक लघु मात्रा होती है।

रूपगर्विता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व या अभिमान हो।

रूपग्रह [वि.] (सं.) जिसका रूप-रंग सुन्दर हो।

रूपघनाक्षरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दंडक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस वर्ण होते हैं तथा जिसके अंक में आठ-आठ वर्णों पर विश्राम होना आवश्यक है।

रूपघात [संज्ञा पु.](सं.) सूरत बिगाड़ने का अपराध।

रूपचतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिककृष्णा चतुर्दशी इस दिन लोग शरीर में उबटन आदि भी करते हैं।

रूपज [वि.] (सं.) रूप से उत्पन्न।

रूपजीविनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

रूपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आरोप करना। २-प्रमाण। परीक्षा।

रूपतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-शील। २-स्वभाव।

रूपतम [वि.] (सं.) अत्यधिक सुन्दर।

रूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रूप का भाव या धर्म। २-सुन्दरता। खूबसूरती।

रूपदर्शक [वि.](सं.) १-प्राचीन काल का सिक्कों की परीक्षा करने वाला। २-सराफ।

रूपधर [वि.] (सं.) सुन्दर।

रूपधारी [संज्ञा पु.](सं.) रूप धारण करने वाला। बहुरूपिया।

रूपनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लू।

रूपपति [वि.] (सं.) विश्वकर्मा।

रूपभेद [संज्ञा पु.] (सं.) चित्रकला में हर प्रकार की आकृति तथा उसकी विशेषताओं का विभेद, जो भारतीय चित्रकला के छः अङ्गों में से है।

रूपमंजरी, रूपमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का फूल। २-एक प्रकार का धान।

रूपमनी+ [वि.] (हिं.) रूपवती।

रूपमय [वि.] (हिं.) [स्त्री. रूपमयी] अतिशय सुन्दर।

रूपमान* [वि.] (हि.) [स्त्री. रूपमनी] रूपवान

रूपमाला [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १४ तथा १० के

विश्राम से दस मात्राएं होती हैं।

रूपमाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन मगण होते हैं।

रूपया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रुपया'।

रूपयौवन [संज्ञा पु.] (सं.) रूप और जवानी।

रूपरूपक [संज्ञा पु.] (सं) रूपक अलंकार का एक भेद।

रूप-रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी बनाये जाने वाले काम का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार आदि का परिचय होता है। प्लान। २-वह चित्र जो केवल रेखाओं के रूप में हो स्केच।

रूपवंत [वि.] (हिं.) [स्त्री. रूपवती] सुन्दर। रूपवान।

रूपवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गौरी नामक छंद २-चंपकमालावृत्ति का एक नाम। [वि.] [स्त्री. प्र.] सुन्दरी। खूबसूरत (स्त्री)।

रूपवान्, रूपवान [वि.] (सं.) [स्त्री. रूपवती] सुन्दर। खूबसूरत।

रूपविपर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) कुरूपता। बदसूरती।

रूपशाली [वि.] (सं.) [स्त्री. रूपशालिनी] सुन्दर खूबसूरत।

रूपश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

रूपसंपद्, रूपसम्पद् रूपसंपत्ति, रूपसम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तम रूप। सुन्दरता। सौंदर्य।

रूपसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

रूपसेन [संज्ञा पु.] (सं.) एक विद्याधर का नाम।

रूपस्थ [वि.] (सं.) सुन्दर।

रूपस्वी [वि.] (हिं.) सुन्दर रूपवान्।

रूपहानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रूप का नाश।

रूपांकन, रूपाङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी होने वाले कार्यस्वरूप आदि के सम्बन्ध में पहले से की जाने वाली कल्पना। २-किसी कलात्मक कृति, रचना, सजावट आदि के सम्बन्ध की वह मूल कल्पना अथवा रूप-रेखा जिसके अनुसार उसका बाकी काम पूरा होता है। नमूना। ३-किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक तथा सुन्दर ढंग या प्रकार तर्ज। डिजाइन।

रूपा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चाँदी। २-घटिया चाँदी ३-सफेद घोड़ा। नुकरा। ४-सफेद रंग का बैल।

रूपाजीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

रूपाधिबोध [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तु का ज्ञान।

रूपावचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्धमतानुसार एक प्रकार के देवता। २-चित्त का एक भेद जिससे रूपलोक का ज्ञान प्राप्त होता है। ३-योग में ध्यान की एक भूमिका का नाम।

रूपावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्दों की विभक्तियों का वर्णन।

रूपाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर पुरुष।

रूपास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

रूपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह आक जिसमें सफेद फूल आते हों।

रूपित [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का उपन्यास जिसमें ज्ञान वैराग्य आदि पात्र बनाये जाते हैं।

रूपी [वि.] (हिं.) [स्त्री रूपिणी] १-रूपधारी। रूपवाला। २-तुल्य। समान। ३-सुन्दर। खूबसूरत।

रूपेंद्रिय, रूपेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँख। चक्षु।

रूपेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. रूपेश्वरी] एक देवी का नाम।

रूपोपजीविनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

रूपोपजीवी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. रूपोपजीविनी] बहुरूपिया।

रूपोश [वि.] (फा.) १-छिपा हुआ। २-छिपकर भागा हुआ। फरार।

रूपोशी [संज्ञा स्त्री] (फा.) मुँह छिपाने की क्रिया

रूप्य [वि.] (सं.) १-सुन्दर। २-उपमेय। [संज्ञा पु.] चाँदी। रूपा।

रूप्यक [संज्ञा पु.] (सं.) रुपया।

रूप्यकूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार हिरण्यवतवर्ष की एक नदी का नाम।

रूप्याध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) टकसाल का प्रधान अधिकारी।

रूबकार [संज्ञा पु.] (फा.) १-पेशी। २-अदालत का आदेश या हुक्म। ३-आज्ञापत्र। हुक्मनामा। ४-कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में किसी को अदालत में उपस्थित होने के लिए लिखित आज्ञापत्र।

रूबकारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मुकदमे की पेशी। २-मुकदमे की कार्रवाई।

रू-बरू [क्रि. वि.] (फा.) सम्मुख। सामने।

रूबल [संज्ञा पु.] (रूसी) रूस का चांदी का एक सिक्का जो भारतीय तेरह आने के लगभग का होता है।

रूबुक [संज्ञा पु.] (सं.) एरंड वृक्ष।

रूम [संज्ञा पु.] (फा.) टर्की या तुर्कीदेश का एक नाम। (अं.) कमरा। बड़ी कोठरी।

रूमना* [क्रि. स.] (हिं) झूमन। झूलना।

रूमाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ मुँह पोंछने का चौकोर टुकड़ा। २-चौकोना। शाल या चिकन का टुकड़ा जिसके चारों ओर बेल और बीच में काम बना होता है। ३-पाजामे की मियानी

रूमाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रुमाली'।

रूमी [वि.] (फा.) १-रूम देश-सम्बन्धी। रूम का। २-रूम देश में होने वाला। [संज्ञा स्त्री] रूमदेश की भाषा।

रूर [वि.] (सं.) १-जो गरम हो गया हो। २- दग्ध। जला हुआ।

रूरना* [क्रि. अ.] (हिं.) चिल्लाना। जोर से शब्द करना।

रूरा [वि.] (हिं.) [स्त्री. रूरी] १-श्रेष्ठ। उत्तम। २-सुन्दर। ३-बहुत बड़ा।

रूल [संज्ञा पु.] (अं.) १-नियम। कायदा। २-लकीर खींचने का डंडा। ३-सीधी खींची हुई लकीर। यौ०-रूलदार-जिस पर लकीर खिंची हुई हो।

रूलर [संज्ञा पु.] (अं.) १-सीधी लकीर खींचने की पट्टी या डंडा। २-शासक।

रूष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रूख'।

रूषक [संज्ञा पु.] (सं.) रूसा। अडूसा। वासक

रूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १ भूषित करना। २-अनुलेपन। ३-आच्छादन।

रूषा* [वि.] (हिं.) देखो 'रूखा'।

रूषित [वि.] (सं.) खंडित। टूटा हुआ।

रूस [संज्ञा पु.] (अं. रशा) एक बहुत बड़ा देश जो यूरोप तथा ऐशिया में फैला हुआ है। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चाल।

रूसना [क्रि. अ.] (हिं.) रोष करना। रूठना। नाराज होना।

रूसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'अडूसा'। एक घास जिसमें से गुलाब की सी गंध आती है तथा इसका तेल निकाला जाता है।

रूसी [वि.] (अं. रशा) १-रूसदेश का रहने वाला। २-रूसदेश में उत्पन्न। ३-रूसदेश का। [संज्ञा स्त्री.] रूसदेश की भाषा। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सिर के ऊपर की वह पतली झिल्ली जो बहुत छोटे टुकड़ों के या कटकर निकलती है।

रूह [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-आत्मा। जीव। सत्त। सार। ३-एक प्रकार का इत्र।

रूहड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुरानी रुई जो कपड़े आदि में भरी जा चुकी हो।

रूहना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चढ़ना। २-उमड़ना। ३-चारों ओर से घिरना। [क्रि. स.] देखो 'रूँधना'।

रूही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) वृक्ष विशेष जो हिमालय पर्वत के नीचे रावीनदी के पूर्व में मध्यभारत और मद्रास में पाया जाता है।

रूहीमूल [संज्ञा पु.] (हिं.) रूहीवृक्ष की जड़।

रेंकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-गधे का बोलना। भद्दे या बेसुर ढंग से गाना या बोलना।

रेंगटा [संज्ञा पु.] (हिं.) गदहे का बच्चा।

रेंगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-धीरे-धीरे चलना। धीरे-धीरे और जमीन से रगड़ खाते हुए

रेंगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भटकटैया।

रेंट [संज्ञा पु.] (देश.) नाक का मल।

रेंटा [संज्ञा पु.] (देश.) लिसोड़े का फल।

रेंड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौधा जो छः सात हाथ ऊँचा होता है। इसके बीजों से तेल निकलता है।

रेंड़खरबूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) पपीता!

रेंड़ना+ [क्रि. अ.](हिं.) फसल के पौधे का बढ़ना।

रेंड़मेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) पपीता।

रेंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की ईख।

रेंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रेंड़ का बीज।

रेंदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ककड़ी या खरबूजे का छोटा फल।

रें रें [संज्ञा पु.] (हि.) बच्चों के रोने का शब्द। *रें रें करना*–बच्चों का धीरे-धीरे रोना।

रे [अव्य.](सं.) छोटे या तुच्छ आदमियों के लिए सम्बोधन। [संज्ञा पु.](हिं.) संगीत में ऋषभ-स्वर का सूचक संक्षिप्त रूप। जैसे–सा, रे, ग

रेउँछा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रेवँछा'।

रेउड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रेवड़ा'।

रेउड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'रेवड़ी'।

रेउरा+ [संज्ञा पु.] देखो 'रेवरा'।

रेउता [संज्ञा पु.](हि.) [स्त्री. रेउती] १-व्यंजन। २-पक्षा।

रेउती [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'रेवता'।

रेक [संज्ञा पु.](सं.) १-दस्त लाना। विरेचन। २– २-नीच। ३-शंका।

रेकान [संज्ञा पु.] (देश.) वह भूमि जो नदी के पानी की पहुँच के बाहर हो।

रेकार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी सरकारी अथवा संस्था के कागज-पत्र। २-अदालत की मिसल ३-तवे के आकार की चूड़ी जो ग्रामोफोन बाजे पर रखकर बजाई जाती है।

रेक्टर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी शिक्षा संस्था आदि का प्रधान।

रेख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रेखा। लकीर। २-चिह्न। निशान। ३-गिनती। गणना। ४-मूछों का आभास। नई निकलती हुई मूछें। ५-हीरे के पाँच दोषों में से वह जिसमें महीन-महीन लकीरें दिखाई पड़ती हैं। *रेख आना, भीजना या भीनना*–मूछें निकलना आरम्भ होना। *रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना*–१-प्रतिज्ञा करना। २-जोर देकर अथवा दृढ़ता पूर्वक कुछ कहना।

रेखता [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार की गजल २-उर्दू भाषा का आरम्भिक रूप और नाम।

रेखना [क्रि. स.](हिं.) १-रेखा या लकीर खींचना २-खरोंचना।

रेखांकन, रेखाङ्कन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्र की रूपरेखा बनाने के लिये रेखाएँ अंकित करना खतकशी। स्कैचिंग। २-देखो 'रेखा-चित्र'।

रेखांश [संज्ञा पु.](सं.) यामोत्तरवृत्त का एक अंश

रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पतला और लम्बा चिह्न। लकीर। २-वह जिसमें लम्बाई तो हो, पर चौड़ाई या मोटाई न हो (रेखागणित)। ३-गणना। गिनती। ४-रूप। आकार। ५-हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें जिनसे सामुद्रिक में मनुष्य के शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है। ६-वह लकीर जो हीरे के बीच में दिखाई पड़ती है जिससे हीरा दोषयुक्त मानाजाता है। यौ०–*कर्मरेखा*–भाग्य का लेख

रेखाकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रेखांकन'।

रेखाकार [वि.] (सं.) डंडी की तरह के आकार वाला।

रेखागणित [संज्ञा पु.] (सं.) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये जाते हैं।

रेखा-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु का केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र। खाका। स्केच

रेखा-चित्रण [संज्ञा पु.] (सं.) रेखाचित्र बनाने का काम।

रेखित [वि.] (हिं.) १-खिंचा हुआ। अंकित। लिखित। २-जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो। ३-मसका हुआ।

रेग [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बालू। रेत।

रेगमाल [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का खुरदरा कागज जिस पर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर धातुएँ या लकड़ियां साफ की जाती हैं।

रेगर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रैगर'।

रेगिस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) मरुस्थल। मरुप्रदेश

रेगुलेशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-वे नियम अथवा कायदे जो राजपुरुष अपने अधीन देश के सुशासन के लिए बनाते हैं। २-वे नियम जो किसी विभाग अथवा संस्था के सुसंचालन और नियंत्रण के लिए बनाये जाते हैं। नियम कायदे।

रेग्यूलेटर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी यंत्र या कल का वह भाग या पुर्जा जो उसकी गति का नियंत्रण करता है।

रेचक [वि.] (सं.) जिसके खाने से दस्त आवे। [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमालगोटा। २-पिचकारी। ३-जवाखार। ४-प्राणायाम में खींची हुई सांस को पुनः विधिपूर्वक बाहर निकालने का काम।

रेचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दस्त लाना। २-जुल्लाब

रेचनक [संज्ञा पु.] (सं.) कंपिल्लक। कमीला।

रेचना※ [क्रि. स.] (हिं.) वायु या मल को बाहर निकालना। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमीला वृक्ष।

रेचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमीला। २-दंती। ३-कालांजली। ४-वटपत्री।

रेचित [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ों की एक चाल। २-नाचने में हाथ हिलाने का ढंग।

रेच्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुल्लाब। २-प्राणायाम में बाहर छोड़ी हुई वायु।

रेजगारी, रेजगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटे सिक्के। जैसे–इकन्नी, दुवन्नी, चवन्नी आदि। २-छोटे टुकड़े या कतरन आदि। ३-किसी के कई छोटे-छोटे बच्चे (व्यंग्य)।

रेजस, रेजराक्षीमा [संज्ञा पु.] (हि.) घोड़ों का जुकाम।

रेजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-बहुत छोटा टुकड़ा। २-कपड़ों, रत्नों आदि में का कोई एक खण्ड या स्थान। ३-सुनारों का एक औजर। ४-सीनाबंद।

रेज़िश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) जुकाम।

रेजीडेंट [संज्ञा पु.] (अं.) वह अधिकारी जो किसी देश की ओर से अन्य दूसरे देश या राज्य में प्रतिनिधि के रूप में रहता है।

रेजीमेंट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) सेना का एक भाग।

रेजू [संज्ञा पु.](हि.) एक प्रकार का रेशा जिससे ब्रुश बनाई जाती है।

रेजोल्यूशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह नियमित प्रस्ताव जो किसी व्यवस्थापिका-सभा अथवा अन्य किसी सभा, संस्था के अधिवेशन मे विचार और स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाय। प्रस्ताव। २-किसी व्यवस्थापिका-सभा या दूसरी किसी सभा, संस्था का किसी विषय पर किया गया निश्चय जो एक मत या बहुमत से किया गया हो।

रेट [संज्ञा पु.] (अं.) १-भाव। निर्ख। २-चाल। गति।

रेडियम [संज्ञा पु.] (अं.) एक उज्ज्वल मूल धातु जिसमें बहुत शक्ति संचित रहती है।

रेडियो [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रसिद्ध विद्युत यंत्र जिसमें विना तार के सम्बन्ध के बहुत दूर से कही हुई बातें सुनाई देती हैं।

रेडियोबम [संज्ञा पु.] (अं.) ऐसे बम जिनका विस्फोट रेडियो द्वारा होता है।

रेणु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धूल। २-बालू। ३-पृथ्वी। ४-अत्यधिक लघु परिमाण। कणिका। ५-संभालू के बीज।

रेणुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बालू। रेत। २-रज। धूल। ३-पृथ्वी। ४-परशुराम की माता का नाम। ५-संभालू के बीज। ६-सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ।

रेणुकासुत [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

रेणुगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषोक्त होरा-निर्णायक यंत्र।

रेणुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) रेणु का भाव या धर्म।

रेणुपदवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) धूल से भराहुआ रास्ता

रेणुमत् [संज्ञा पु.] (सं.) रेणु के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

रेणुरुषित [संज्ञा पु.] (सं.) गदहा।

रेणुवास [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा।

रेणुसार [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

रेतःकुल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नरक का नाम

रेत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वीर्य। २-रज। ३-पारा। [संज्ञा स्त्री.] १-बालू। बलुआ मैदान।

रेतकुंड, रेतकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेतःकुल्या नामक नरक। २-एक तीर्थ-स्थान जो हिमालय पर कुमाऊँ में है।

रेतन [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्य। शुक्र।

रेतना [क्रि. स.] (हिं) रेती से रगड़कर काटना या छीलना।

रेतल [संज्ञा पु.] (देश.) भूरे रंग का पक्षी।

रेतला [वि.] (हिं.) देखो 'रेतीला'।

रेतस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीर्य। २-जल। ३-पारा

रेता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बालू। २-धूल। ३-बालुआ मैदान।

रेतिया [संज्ञा पु.] (हिं.) रेतने वाला।

रेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध औजार जिसे किसी धातु आदि पर रगड़ने से धातु के महीन कण कटकर गिरते हैं। २-रेतीली या बलुई भूमि। ३-नदी के बीच की भूमि।

रेतीला [वि.] (हिं.) [स्त्री रेतीली] बालुकामय। बालुआ जिसमें या जहाँ रेत हो।

रेतोधा [वि.] (सं.) गर्भवती।

रेतोमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्य निकलने का छेद

रेत्य [संज्ञा पु.] (सं.) पीतल।

रेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीर्य। २-अमृत। ३-पटवास।

रेना+ [क्रि. स] (देश.) डालकर या टिकाकर लटकाना।

रेनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह वस्तु जिससे रंग निकलता हो। २-वह अलगनी जिस पर रंगरेज लोग कपड़ा रंगकर सुखाते हैं।

रेनु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रेणु'।

रेनुका* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रेणुका'।

रेप [वि.] (सं.) १-निंदित। २-कृपण। क्रूर।

रेफ [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी अक्षर के ऊपर आने वाला हलंत रकार। जैसे-सर्प, हर्ष। २-रकार (र)। ३-राग। ४-शब्द। [वि.] कुत्सित अधम।

रेफरी [संज्ञा पु.] (अं.) झगड़ा निपटाने वाला पंच।

रेफविपुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छन्द।

रेफ्यूज [संज्ञा पु.] (अं.) वह संस्था जिसमें निराश्रितों और अनाथों को अस्थाई रूप में आश्रय मिलता है।

रेफ्यूजी [संज्ञा पु.] (अं.) शरणार्थी।

रेभ [वि.] (सं.) कठोर वचन बोलने वाला। [संज्ञा पु.] १-एक वैदिक ऋषि। २-कश्यपवंशीय एक दूसरे ऋषि।

रेरिहान [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-असुर। ३-चोर।

रेरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी को 'रे' 'तू' आदि कहकर बातें करना।

रेरुआ, रेरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा उल्लूपक्षी

रेल [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह लोहे की पटरी जिसपर रेलगाड़ी के पहिये चलते हैं। २-भाप के इंजन के द्वारा चलने वाली गाड़ी। रेलगाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बहाव। धारा। २-आधिक्य। भरमार।

रेलठेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रेलपेल'।

रेलना [क्रि. स.] (देश.) धक्के या दबाव से आगे बढ़ाना। ढकेलना। [क्रि. अ.] (हिं.) ठसाठस भरा होना। अधिक होना।

रेलपेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भारी भीड़। २-भरमार। बहुत अधिकता।

रेलवे [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-रेलगाड़ी की सड़क २-रेल का महकमा या विभाग।

रेला [संज्ञा पु.] (देश.) १-तेज बहाव। तोड़। २-समूह द्वारा चढ़ाई। धावा। ३-जन समूह समूह का जोरों से आगे बढ़ना। ४-तबले पर महीन और सुन्दर बोलों को बजाने की रीति। ५-देखो 'रेलपेल'।

रेवंछा [संज्ञा पु.] (देश.) एक द्विदल अन्न।

रेवंत, रेवन्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य के पुत्र।

रेवंद [संज्ञा पु.] (फा.) एक पहाड़ी वह जिसकी जड़ और लकड़ी दवा के काम में आती है। रेवंद चीनी।

रेवट [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूकर। २-बांस की छड़ी। ३-विषवैद्य। ४-दक्षिणावर्त्त शंख।

रेवड़ [संज्ञा पु.] (देश.) भेड़, बकरियों आदि का झुण्ड। लेंहड़ा। गल्ला।

रेवड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) पगी हुई चीनी या गुण के लम्बे-लम्बे टुकड़े जिन पर तिल चिपका होता है।

रेवड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश) छोटी टिकिया के रूप में तिल या चीनी की बनी एक मिठाई।

रेवत [संज्ञा पु] (सं.) १-बिजौरा नीबू। जँभीरी। २-अमलस। ३-बलराम के ससुर का नाम।

रेवतक [संज्ञा पु.] (सं.) पारावत। कबूतर।

रेवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सत्ताईसवें नक्षत्र का नाम। २-बलराम की स्त्री का नाम। ३-गाय ४-दुर्गा। ५-रेवतमनु की माता का नाम। ६-एक बालग्रह।

रेवतीभव [संज्ञा पु.] (सं.) शनि।

रेवतीरमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बलराम। २ विष्णु।

रेवतीश [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

रेवना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'रेना'।

रेवरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रेवड़ा'। [स स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की ईख।

रेवरेंड [संज्ञा पु.] (अं.) पादरियों की एक सम्मान- सूचक उपाधि।

रेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नर्मदानदी का ए नाम। २-रति। ३-नील का पौधा। ४-ए प्रकार का साम। ५-एक प्रकार की मछ ६-दीपक राग की एक रागिनी। ७- खंड।

रेवाउतन [संज्ञा पु.] (डिं.) हाथी।

रेवेन्यू [संज्ञा पु.] (अं.) किसी राज्य या राज्य वार्षिक आय जो मालगुजारी, आबका आयकर, कस्टम ड्युटी आदि के रू में होती है।

रेवेन्यूबोर्ड [संज्ञा पु.] (अं.) कई उच्च अधि रियों का वह बोर्ड या समिति जिसके किसी प्रदेश के राजस्व का प्रबंध तथा नि त्रण हो।

रेवोल्यूशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-समाज में उलटफेर अथवा परिवर्तन जिससे संस्कार आचार-विचार, राजनीति, आदि का अस्तित्व न रहे। आमूल परि २-देश अथवा राज्य की शासनप्रणाली सरकार को उलट देना। राज्यक्रांति।

रेवोल्यूशनरी [वि.] (अं.) १-राज्यक्रांति २-क्रांति-सम्बन्धी।

रेशम [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का महीन कीला तथा दृढ़ तंतु अथवा रेशा जिससे बुने जाते हैं।

रेशमी [वि.] (फा.) रेशम का बना हुआ।

रेशा [संज्ञा पु.] (फा.) महीन सूत। तंतु।

रेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षति। हानि। २- ॐ[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रेख'।

रेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़े का हिनहि २-बाघ का गुर्राना।

रेषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़े की हिनहिन

रेस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-दौड़ में करना। २-घुड़दौड़।

रेसकोर्स [संज्ञा पु.] (अं.) घुड़दौड़ का

रेसग्राउंड [संज्ञा पु.] (अं.) घुड़दौड़ का

रेसमान [संज्ञा पु.] (फा.) डोरी। सुत

रेह [संज्ञा स्त्री.] (?) खार मिली ऊसर मैदान में पाई जाती है।

रेहन [संज्ञा पु.] (फा) किसी के पास इस शर्त पर रखना कि जब ऋण चु आयगा, तब वह वस्तु लौटाली

बंधक। गिरवीं।

रेहनदार [संज्ञा पु.] (फा.) वह जिसके पास कोई वस्तु रेहन रखी जाय।

रेहननामा [संज्ञा पु.](फा.) वह कागज जिसपर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रेहना [क्रि. स.] (हिं.) सिल, चक्की आदि को छेनी से खुरदरा करना।

रेहल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'रिहल'।

रेहुआ [वि.] (हिं.) जिसमें रेह अधिक हो।

रेहू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रोहू'।

रैंगलर [संज्ञा पु.] (अं.) इङ्गलैंड में प्रचलित सर्वोच्च गणित परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्ति।

रैअति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रैयत'।

रैक [संज्ञा पु.] (अं.) लकड़ी का खुला हुआ वह ढाँचा जिसमें पुस्तकें रखने के लिये खाने बने होते हैं।

रैकेट [संज्ञा पु.] (अं.) टैनिस खेलने का वर्तुलाकार बल्ला जो तांत से बुना हुआ होता है।

रैगर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जाति जो राजस्थान में रहती है।

रैडक्रास [संज्ञा पु.] (अं.) लाल रंग के धन चिह्न (+) से अंकित मोटर, जहाज आदि जिसमें रोगी और घायल सिपाही रहते हैं और इनकी चिकित्सा का प्रबंध रहता है।

रैतिक [वि.] (सं.) पीतल का। पीतल-सम्बन्धी।

रैतुआ [संज्ञा पु.] देखो 'रायता'।

रैदास [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध भक्त जो चमार जाति के थे। २-चमार।

रैदासी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रैदासभक्त के सम्प्रदाय का। २-मोटा जड़हन धान विशेष।

रैन, रैनि* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) रात्रि। रात।

रैनिचर* [संज्ञा पु.] (हिं.) निशाचर। राक्षस।

रैनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चाँदी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिये बनाई जाती है

रैमुनिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की अरहर

रैयत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) प्रजा। रिआया।

रैयाराव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छोटा राजा। २-सरदार।

रैवता [संज्ञा पु.] (डि.) घोड़ा।

रैवत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साम मंत्र। २-एक पर्वत जो गुजरात में है। ३-शिव। ४-वर्त्तमान कल्प के पाँचवें मनु। ५-मेघ। बादल। ६-एक दैत्य जो बालग्रहों में से है। ७-आनर्त्तदेश का राजा।

रैवतक [संज्ञा पु.] (सं.) गुजरात का एक पर्वत जिसे आजकल गिरनार कहते हैं। इसी पर्वत पर अर्जुन ने सुभद्रा का हरण किया था।

रैवत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-साम विशेष। २-धन सम्पत्ति।

रैशनिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह व्यवस्था जिसमें लोगों को खाद्यपदार्थ अथवा उनके उपयोग की अन्य वस्तुएँ कुछ निश्चित नियमानुसार, निश्चित मात्रा में तथा निश्चित समय पर ही दी जाती है।

रैसा+ [संज्ञा पु.] (हिं) झगड़ा। कलह।

रैहर [संज्ञा पु.] (हिं.) झगड़ा। लड़ाई।

रैहाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की वनस्पति।

रोंग [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर पर का बाल। लोम।

रोंगटा [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर पर के बहुत छोटे और पतले बाल। रोम।

रोंगटे खड़े होना-कोई भयानक बात देखकर बहुत भय या क्षोम होना।

रोंगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेल में बेईमानी करना

रोंटा [संज्ञा पु.] (देश.) कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक। आम फली।

रोंव [संज्ञा पु.] (हिं.) शरीर के बाल। रोम।

रोंसा+ [संज्ञा पु.] (देश.) लोबिया की फली।

रोआँ [संज्ञा पु.] (हि.) १-शरीर के बहुत छोटे और कोमल बाल। रोम। २-वनस्पति आदि पर के ऐसे तंतु। *रोएँ खड़े होना*-कोई भयानक बात देखकर बहुत क्षोभ या भय होना।

रोआब+ [संज्ञा पु.] (हि.) प्रभाव। आतंक।

रोआसा [वि.] (हिं.) जिसे रुलाई आना चाहती हो। रोने को उद्यत।

रोइँसा [संज्ञा पु.] (देश.) रूसा घास।

रोइया [संज्ञा पु] (देश.) वह काठ का गड़ा हुआ कुन्दा जिस पर गन्ने के टुकड़े काटे जाते हैं।

रोईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत छोटा रोआँ, जैसा तरकारियों और फलों आदि पर होता है।

रोउँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रोआं'।

रोएँदार [वि.] (हिं) १-जिसके शरीर पर बहुत से रोएँ हों। २-जिस पर रोएँ के समान सूत रेशे आदि हों।

रोक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २-नियंत्रण में रखने वाली बात। प्रतिबंध। चेक। ३-मनाही निषेध। ४-रोकने वाली चीज या बात। [वि.] रुपये-पैसे आदि के रूप में। नकद। कैश। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नकद रुपया। २-नकद व्यवहार या सौदा। ३-नौका। ४-दीप्ति। ५-छिद्र।

रोकझोंक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रोकटोक'।

रोक-टीप [संज्ञा स्त्री] (हिं.) वह चिट अथवा पावती जो बेचने वाला कोई वस्तु बेचने पर खरीदार को उस बिक्री के प्रमाणस्वरूप देता है और जिस पर बेची हुई वस्तु का नाम और मूल्य लिखा होता है। कैसमेमो।

रोक-टोक [संज्ञा स्त्री.] (हिं) वह जांच या पूछताछ जो कहीं आने-जाने अथवा कुछ करने के समय बीच में हो। मनाही। निषेध।

रोकड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नकद रुपया-पैसा आदि। कैश। २-जमा। धन। पूँजी। *रोकड़ मिलाना*-आय-व्यय का जोड़ लगाकर यह देखना कि रकम घटती है या बढ़ती।

रोकड़बही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बही जिस पर प्रतिदिन का आय-व्यय लिखा जाता है। कैशबुक।

रोकड़बाकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) आय-व्यय आदि निकल जाने पर बाकी बची हुई रकम। क्लोजिंग बैलेन्स।

रोकड़बिक्री [संज्ञा स्त्री.](हिं.) नकद दाम पर की हुई बिक्री।

रोकड़िया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और आमद-खर्च का हिसाब रहता है। कैशियर।

रोक-थाम [संज्ञा स्त्री.](हिं.) किसी अनुचित या अनिष्ट कार्य को रोकने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न।

रोकना [क्रि. स.](हि.) १-किसी को आगे बढ़ने न देना। २-कहीं जाने से मना करना। ३-चली आती हुई बात को बन्द करना। ४-अपने ऊपर कोई भार लेकर बीच में बाधक होना। ५-मना करना। ६-अड़चन या बाधा डालना। ७-मार्ग में इस प्रकार पड़ना कि दूसरी ओर जा न सके। ८-वश या काबू में रखना। ९-बढ़ती हुई सेना अथवा दल का सामना करना।

रोख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रोष'।

रोग [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर को अस्वस्थ रखने वाली शारीरिक प्रक्रिया। व्याधि। मर्ज। बीमार।

रोगकारक [वि.] (सं.) बीमारी पैदा करने वाला।

रोगकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) बक्कम की लकड़ी

रोगग्रस्त [वि] (सं.) रोग से पीड़ित।

रोगघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) औषधि। दवा। [वि.] (सं.) रोग हटाने वाला।

रोगज्ञ [संज्ञा पु] (सं.) वैद्य।

रोगद [वि.] (सं.) दुःख देने वाला।

रोगदई, रोगदैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अन्याय २-बेईमानी।

रोगन [संज्ञा पु.] (फा.) १-तेल। चिकनाई। २-वह चिकना लेप जो कोई वस्तु चमकाने के लिए उस पर लगाया जाता है। पालिश। वार्निश। ३-लाख आदि से बना मसाला। ४-कुसुम या बर्रे के तेल से बनाया हुआ मसाला जिससे चमड़ा मुलायम किया जाता है।

रोगनदार [वि.](फा.) जिस पर रोगन किया गया हो।

रोगनाशक [वि.] (सं.) बीमारी दूर करने वाला।

रोगनिदान [संज्ञा पु.] (सं.) रोग के लक्षण और

उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान।

रोगनी [वि.](फ़ा.) रोगन किया हुआ। रोगनदार

रोगपति [संज्ञा पु.] (सं.) ज्वर। बुखार।

रोगपरीसह [संज्ञा पु.] (सं.) उग्र रोग होने पर ध्यान न करके उसको सहन करना (जैन)।

रोगप्रद [वि.] (सं.) रोग उत्पन्न करने वाला।

रोगभाज [वि.] (सं.) रोगी। बीमार।

रोगभू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देह। शरीर।

रोगमुक्त [वि.](सं.) रोग से छुटकारा पाया हुआ

रोगमुरारि [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध जो ज्वर में दी जाती है।

रोगराज [संज्ञा पु.] (सं.) क्षयरोग।

रोगलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) रोग का निदान।

रोगविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान जिसमें रोग पहचानने आदि के नियमों का विवेचन होता है।

रोगविनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) रोग का निर्णय।

रोगशांति, रोगशान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोग-मुक्ति।

रोगशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैनसिल। मनःशिला।

रोगशिल्पी [संज्ञा पु.] (सं.) सोनालू का पेड़।

रोगहं [संज्ञा पु.] (सं.) औषध। दवा।

रोगहारी [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्य। चिकित्सक।

रोगहृत [वि.] (सं.) रोग का नाश करने वाला।

रोगहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) रोग का कारण।

रोगाक्रांत, रोगाक्रान्त [वि.] (सं.) व्याधिग्रस्त।

रोगातुर [वि.] (सं.) रोग से घबराया हुआ।

रोगार्त्त [वि.] (सं.) रोग से दुःखी।

रोगाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) कुष्ठौषध। कुट।

रोगिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'रोगी'।

रोगित [वि.] (सं.) पीड़ित। रोग से दुःखी। [संज्ञा पु.] कुत्ते का पागलपन।

रोगितरु [संज्ञा पु.] (सं.) अशोकवृक्ष।

रोगिया [संज्ञा पु.] (हिं.) रोगी। बीमार।

रोगी [वि.] (हिं.) [स्त्री. रोगिणी, रोगिनी] जो किसी रोग से पीड़ित हो। जो स्वस्थ न हो। बीमार।

रोचक [वि.](सं.) १-अच्छा लगने वाला। रुचिकारक। २-मनोरंजक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूख। २-केला। ३-लाल प्याज। ४-ग्रंथिपर्णीविशेष। ५-काँच की कुप्पी या शीशी बनाने वाला।

रोचकता [संज्ञा स्त्री.](सं.) रोचक होने का भाव। मनोरंजकता। दिलचस्पी।

रोचकद्वय [संज्ञा पु.](सं.) विट और सैंधव दोनों लवण (वैद्यक)।

रोचकी [वि.] (सं.) इच्छा करने वाला।

रोचन [वि.] (सं.) १-रुचने वाला। रोचक। २-शोभा देने वाला। ३-प्रिय लगने वाला। ४-लाल। [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला सेमर। २-कमीला। ३-सफेद सहिंजन। ४-प्याज। ५-अमलतास। ६-करंज। ७-अंकोट। ८-अनार ९-हरिवंश के मतानुसार रोगों के एक अधिष्ठाता देवता। १०-मार्कण्डेय पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ११-कामदेव के पाँचबाणों में से एक। १२-रोली। १३-गोरोचना। १४-स्वारोचिष मन्वंतर के इन्द्र।

रोचनक [संज्ञा पु.](सं.) १-वंशलोचन। २-जँबीरी-नीबू।

रोचनफल [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरा नीबू।

रोचनफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

रोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लाल कमल। २-श्रेष्ठ स्त्री। ३-गोरोचन। ४-वसुदेव की पत्नी ५-आकाश। ६-काला सेमर। ७-वंशलोचन।

रोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आँवला। २-मैनसिल। ३-गोरोचन। ४-सफेद निशोथ। ५-दंती। ६-तारा। तारका। ७-कमीला।

रोचमान [वि.] (सं.) १-चमकीला। दीप्तमान्। २-सुन्दर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़े के गरदन पर की भँवरी। २-स्कंद के एक अनुचर का नाम।

रोचि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्रभा। दीप्ति। २-प्रकट होती हुई शोभा। ३-किरण। रश्मि।

रोचित [वि.] (हिं.) शोभित।

रोचिष्णु [वि.] (सं.) १-चमकीला। २-अच्छे अच्छे वस्त्राभूषण पहने हुए।

रोचिस् [संज्ञा पु.] (सं.) चमक। दमक। तेज।

रोची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिलमोचिका।

रोज* [संज्ञा पु.](हिं.) १-रुदन। २-रोना-पीटना। विलाप। स्यापा।

रोज़ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) दिन। दिवस। [अव्य.] प्रतिदिन। नित्य।

रोजगार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-व्यापार २-तिजारत। व्यवसाय। कारबार। *रोजगार चमकना*-व्यवसाय में खूब लाभ होना। *रोजगार छूटना*-जीविका न रहना। *रोजगार चलाना*-कारबार में लाभ होना। *रोजगार लगना*-जीविका का प्रबन्ध होना। *रोजगार लगाना*-जीविका का कोई प्रबन्ध करना। *रोजगार से होना*-गुजर बसर के लिए किसी में काम लगना।

रोजगारी [संज्ञा पु.] (फ़ा.) व्यापारी।

रोजनामचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-वह बही या पुस्तक जिस पर प्रतिदिन का काम लिखा जाता है। २-प्रतिदिन का जमाखर्च लिखने की बही। खाता।

रोजमर्रा [अव्य.] (फ़ा.) नित्य। प्रतिदिन। [संज्ञा पु.] नित्य के व्यवहार में आने वाली

रोज़ा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-उपवास। २-रमज़ान मास में तीस दिन तक होने वाले उपवास (मुसलमान)। *रोजा टूटना*-व्रत खंडित हो जाना। *रोजा तोड़ना*-व्रत खंडित करना। *रोजा खोलना*-उपवास का समय पूरा होने पर कुछ खाना।

रोज़ाना [क्रि. वि.] (फ़ा.) नित्य। प्रतिदिन।

रोजी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-रोज़ या नित्य का भोजन। २-जीवन-निर्वाह का सहारा। ३-जीविका। रोज़गार। ४-एक कर विशेष जिसमें व्यापारियों के पशुओं को एक-एक दिन राज्य का कार्य करना पड़ता था। *रोजी चलना*-निर्वाह के लिए भोजन वस्त्र मिलना आरम्भ। *रोजी चलाना*-भोजन-वस्त्र आदि का ठिकाना करना। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की कपास जो गुजरात में होती है।

रोजीदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) वह जिसे प्रतिदिन खर्च के लिए कुछ मिलता हो।

रोज़ीना [वि.] (फ़ा.) नित्य का। रोज़ का। [संज्ञा पु.] (फ़ा.) दैनिक वृत्ति या मज़दूरी।

रोजी-बिगाड़ [संज्ञा पु.](फ़ा.,हिं.) किसी की लगी हुई रोजी बिगाड़ने वाला।

रोझ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) नील गाय।

रोट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत मोटी और बड़ी रोटी। लिट। २-हनुमान आदि देवताओं को चढ़ाने की मीठी रोटी या पुआ।

रोटका [संज्ञा पु.] (देश.) बाजरा।

रोटा* [वि.] (हिं.) पिसा हुआ।

रोटिका+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी रोटी। फुलकी

रोटिहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह नौकर जो केवल भोजन पर काम करता हो।

रोटिहान+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चूल्हे के पास का चबूतरा जिस पर रोटियाँ सेंककर रखते हैं।

रोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुँधे हुए आटे की लोई या टिकिया बेलकर या बढ़ाकर बनाई हुई चपाती। २-भोजन। खाना। रसोई। *रोटी पोना*-गुँधे हुये आटे को बढ़ाकर आँच पर सेकना। *रोटी कमाना*-जीविका उपार्जन करना। *रोटी को रोना*-भूखों मरना। *रोटी का मारा*-भूखा। *किसी बात की रोटी खाना*-किसी बात से रोजी कमाना। *किसी के घर की रोटियाँ तोड़ना*-किसी के घर रहकर उसके अन्न से निर्वाह करना। *किसी की रोटियाँ लगना*-भर पेट भोजन पाने से इतराना। *दाल रोटी से खुश*-जिसे खाने-पीने का अच्छा सुभीता हो। *रोटी दाल चलना*-गुजर-बसर होना। *रोटी का पेट*-रोटी का वह तल जो गरम तवे पर डाला जाता है। *रोटी की पीठ*-रोटी का वह पार्श्व जो उलटने पर सेका जाता है। यौ०-*रोटी कपड़ा*-खाने-पहनने की सामग्री या व्यय।

रोटीफल [संज्ञा पुं.] (हिं.) १-एक प्रकार का स्वादिष्ट फल। २-इस फल का पेड़।

रोठा* [संज्ञा पु.] देखो 'रोड़ा'।

रोड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) १-ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। बड़ा कङ्कड़। २-विना सींचे उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का धान जो पंजाव में होता है। *रोड़ा अटकाना या डालना*-विघ्न या बाधा उपस्थित करना।

रोद्* [संज्ञा पु.] (हिं.) मुसलमान।

रोदन [संज्ञा पु.] (सं.) रोना। विलाप करना।

रोदस [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि। २-स्वर्ग।

रोदा [संज्ञा पु.](हिं.) १-धनुष की डोरी। चिल्ला २-सितार के परदे बाँधने की बारीक तांत।

रोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकावट। रोक। २-तट। किनारा। ३-बारी।

रोधक [संज्ञा पु.] (सं.) रोकने वाला।

रोधकृत् [संज्ञा पु.](सं.) साठ संवत्सरों में से एक

रोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोक। रुकावट। अवरोध। २-दमन। *[संज्ञा पु.] (हिं.) रोना। विलाप करना।

रोधना* [क्रि. स.] (हिं.) रोकना।

रोधस्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

रोधी [वि.] (सं.) रोकने वाला।

रोध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। २-अपराध। जुर्म ३-लोध्र। लोध।

रोना [क्रि अ.] (हिं.) १-दुःखी होकर आंसू बहाना। रुदन करना। २-बुरा मानना। चिढ़ना। ३-पछताना। *रोना-पीटना*-बहुत विलाप करना। *रोना कलपना या रोना धोना*--विलाप करना। *रो बैठना*-(किसी वस्तु या काम के लिए निराश होकर रह जाना। *रो-रोकर*-बहुत कठिनता से। *रो-रोकर घर भरना*-बहुत रोना-पीटना। *किसी वस्तु को रोना*-किसी वस्तु का दुःख मानना। यौ०- *रोना-गाना*-गिड़गिड़ाना। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दुःख। खेद। २-अपने दुःख का वर्णन। [वि.] (हिं.) जरा-सी वात पर भी रो पड़नेवाला।

रोनीधोनी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] दुःख या शोकसूचक चेष्टा बनाये रहने वाली। मुहर्रमी। [संज्ञा स्त्री.] रोने-धोने की वृत्ति। शोक या दुःख की चेष्टा।

रोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकावट। २-बुद्धि फेरना। ३-छेद। सूराख। ४-बाण। तीर। [संज्ञा पु.] (देश.) हल की एक लकड़ी।

रोपक [वि.] (सं.) रोपने वाला।

रोपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर रखना या स्थापित करना। २-लगाना। जमाना। ३-स्थित करना। उठाना। ४-मोहित करना। मोहन। ५-घाव पर पपड़ी बँधना। ६-घाव पर लेप लगाना।

रोपणीय [वि.] (सं.) रोपने योग्य।

रोपना [क्रि. स.] (हिं.) १-जमाना। लगाना। २-पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३-अड़ाना। ठहराना। दृढ़ता के साथ रखना। ४-बीज रखना या बोना। ५-कुछ लेने के लिए हाथ पसारना। ६-रोकना। *हाथ रोपना*-कुछ लेने के लिए हाथ फैलाना।

रोपनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रोपने का काम।

रोपित [वि.] (सं.) १-लगाया या जमाया हुआ। २-रखा हुआ। स्थापित। ३-मोहित। भ्रांत। ४-उठाया या खड़ा किया हुआ।

रोप्य [वि.] (सं.) रोपने योग्य।

रोब [संज्ञा पु.](अं.) शक्तिशाली होने या बड़प्पन की धाक। प्रभाव। आतंक। दबदबा। *रोब जमाना*-आतंक उत्पन्न करना। *रोब मिट्टी मे मिलना*-प्रभाव नष्ट होना। *रोब दिखाना*-शक्तिशाली होने का या बड़प्पन का प्रभाव डालना। *रोब में आना*-किसी के आतंक के कारण दब या झुक जाना।

रोबदार [वि.] (अं.) रोबीला।

रोबीला [वि.] (अं.) रोबदाबवाला। प्रभावशाली

रोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-देह के बाल। रोआँ। लोम। २-छेद। छिद्र। ३-जल। ४-ऊन। ५-इटली की राजधानी। *रोम-रोम मे*-सारे शरीर में। *रोम-रोम से*-शुद्ध और पूर्ण हृदय से।

रोमक [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँभरझील का नाम। २-रोमनगर का वासी। ३-रोमनगर या देश। ४-ज्योतिष सिद्धांत का एक भेद।

रोमकर्णक [संज्ञा प.] (सं.) खरगोश। खरहा।

रोमकूप [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के वे छेद जिनमें से रोएँ निकलते हैं।

रोमकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) चँवर। चामर।

रोमगर्त [संज्ञा पु.] (सं.) रोमकूप। लोमछिद्र।

रोमगुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) चँवर। चामर।

रोमत्त्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके रोएँ न हों।

रोमद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रोमकूप'।

रोमन [वि.] (अं.) रोम नगर या राष्ट्र का। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लिपि जिसमें अंगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमनकैथलिक [संज्ञा पु.] (अं.) ईसाइयों का प्राचीन संप्रदाय।

रोमपाट [संज्ञा पु.] (सं) ऊनी कपड़ा।

रोमपाद [संज्ञा पु.] (सं.) अङ्गदेश के एक प्राचीन राजा का नाम।

रोमपुलक [संज्ञा पु.] (सं.) रोमांच।

रोमफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तितिंश। डेंड़सी।

रोमबद्ध [वि.] (सं.) जो रोयों से बँधा हो। [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्त्र जो रोयों से बँधा या बुना हो।

रोमभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़ा।

रोमरंध्र, रोमरन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रोमकूप'।

रोमराजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोमावलि। रोयों का पंक्ति।

रोमलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरेट पर की रोमावली

रोमवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवांच। कपिकच्छ

रोमविकार, रामविभेद [संज्ञा पु.] (सं.) रोंगटे खड़े होना। रोमांच।

रोमश [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेष। भेड़ा। २-सुअर। शूकर। ३-एक ऋषि का नाम।

रोमशमूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलदी।

रोमशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृहस्पति की कन्या का नाम।

रोमशातन [संज्ञा पु.] (सं.) बालों को काटना।

रोमहरण [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

रोमहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रोंगटों का खड़ा होना। पुलक। रोमांच।

रोमहर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अचानक बहुत अधिक आनन्द अथवा भय से रोएं खड़े होना रोमांच। सिहरन। २-व्यासदेव के एक शिष्य का नाम। [वि.] (सं.) भयंकर। भीषण।

रोमहर्षित [वि.] (सं.) पुलकित।

रोमांच, रामाञ्च [संज्ञा पु.] (सं) आनन्द या भय से रोएँ खड़े होना।

रोमांचित, रोमाञ्चित [वि.] (सं.) १-पुलकित २-भय से जिसके रोंगटे खड़े हों।

रोमांतिकामसूरिका, रोमान्तिकामसूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चेचक की तरह का एक रोग।

रोमाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) रोएँ की नोक।

रोमाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रोमावली। रोयों की पंक्ति।

रोमावलि, रोमावली [संज्ञा स्त्री.](सं.) रोमों की पंक्ति जो पेट के बीचों बीच नाभि के ऊपर की ओर गई हो।

रोमिल [वि.] (हिं.) रोएँदार।

रोमोद्गम, रोमोद्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) रोंगटों का खड़ा होना।

रोयाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) लोम। रोम। *एक रोयाँ न उखड़ना*-कुछ भी हानि न होना। *रोयाँ खड़ा होना*-हर्ष अथवा भय से रोमकूपों का उभरना। *रोयाँ पसीजना*-हृदय में दया उत्पन्न होना।

रोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोलाहल। रौला। हल्ला। २-उपद्रव। उत्पात। बहुत से लोगों के रोने-चिल्लाने का शब्द। [वि.] १-प्रचंड तेज। २-उपद्रवी। उद्धत।

रोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चूर। गाँजा। २-देखो 'रोर'।

रोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रोली जिसका तिलक लगाते हैं। २-चहल-पहल। धूम। [वि.] सुन्दर। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का रत्न।

रोरुदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विलाप। रुदन।

रोलंध, रोलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-भौंरा। २-सूखी जमीन। [वि.] (सं.) विश्वास न करने वाला।

रोल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कोलाहल। २-शब्द ध्वनि।

[संज्ञा पु.] (हिं.) पानी का तोड़ या बहाव। [संज्ञा पु.] (देश.) बरतन की नक्काशी की जमीन साफ करने का औजार। [संज्ञा पु.] (सं.) हरा अदरक। [संज्ञा पु.] (अं.) नामों की तालिका या फहरिश्त।

रोलनंबर [संज्ञा पु.] (अं.) नामों की तालिका या सूची का क्रम।

रोलर [संज्ञा पु.](अं.) १-बेलन। २-छापे की कल का स्याही देने का बेलन।

रोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शोरगुल। कोलाहल। २-घमासान युद्ध। [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११ और १३ के विश्राम से २४ मात्राएं होती हैं। +[संज्ञा पु.] (देश.) झूठे बरतन माँजने का काम।

रोली [संज्ञा स्त्री.](हिं.) तिलक लगाने की प्रसिद्ध लाल बुकनी।

रोवनहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रोने वाला। २-किसी के मर जाने पर उसका शोक मनाने वाला कुटुम्बी।

रोवना [क्रि. अ.](हिं.) देखो 'रोना'। [वि.](हिं.) [स्त्री. रोवनी] १-तुरन्त रो पड़ने वाला। २-चिढ़ने वाला।

रोवनिहारा* [वि.] (हिं) देखो 'रोवनहारा'।

रोवनीधावनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रोने-धोने की वृत्ति या चेष्टा। मनहूसी।

रोवाँ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रोयाँ'।

रोवासा [वि.] (हिं.) [स्त्री. रोवासी] जो रो देने को हो। जो रो देने पर तैयार हो।

रोशन [वि.] (फा.) १-जलता हुआ। प्रदीप्त। २-चमकदार। ३-प्रसिद्ध। ४-प्रकट। जाहिर। *किसी पर रोशन होना*-प्रकट होना।

रोशनचौकी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शहनाई।

रोशनदान [संज्ञा पु.] (फा.) दीवार पर के ऊपरी भाग में प्रकाश आने का छेद। झरोखा।

रोशनाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-लिखने की स्याही २-प्रकाश। उजाला।

रोशनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-उजाला। प्रकाश। २-दीपक। दीया। ३-दीपमाला का प्रकाश।

रोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोध। गुस्सा। २-चिढ़ ३-कुढ़न। ४-वैर विरोध। ५-लड़ने का आवेश। जोश।

रोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारा। कसौटी। २-ऊसर भूमि। [वि.] क्रुद्ध।

रोषणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रोध। गुस्सा।

रोषान्वित [वि.] (सं.) क्रोध या गुस्से में भरा हुआ।

रोषित, रोषी [वि.] (सं.) क्रोधी। गुस्सावर।

रोस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रोष'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'रौस'।

रोसनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रोशनाई'।

रोसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रोशनी'।

रोसा [संज्ञा पु.](हिं.) रूसा नामक घास जो सुगंधित होती है।

रोह [संज्ञा पु.](सं.) १-चढ़ना। चढ़ाई। २-कली ३-अंकुर। [संज्ञा पु.] (देश.) नीलगाय।

रोहक [संज्ञा पु.](सं.) १-चढ़ने वाला। २-सवार

रोहग [संज्ञा पु.] (सं.) सिंहलद्वीप का एक पर्वत जो अब 'आदम की चोटी' के नाम से प्रसिद्ध है।

रोहज* [संज्ञा पु.] (डिं.) नेत्र।

रोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर चढ़ना। २-अंकुरित होना (पौधे आदि)। ३-शुक्र। वीर्य ३-एक राजा का नाम। ४-रोहणपर्वत।

रोहन [संज्ञा पु.](देश.) सूमी नामक वृक्ष विशेष

रोहना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चढ़ना। २-ऊपर की ओर जाना। ३-सवार होना। [क्रि. स.] १-चढ़ाना। २-सवार कराना। ३-पहनना।

रोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) आँख की पलक के भीतर दाने पड़ जाने का रोग।

रोहि [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष। २-बीज। ३-तपस्वी।

रोहिण [संज्ञा पु.] (सं) १-पीपल। २-गूलर। ३-रोहिस घास। ४-दिन का दूसरा पहर।

रोहिणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रोध से लाल स्त्री।

रोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाय। २-बिजली। ३-कुटकी। ४-करंज। ५-रीठा। ६-वसुदेव की पत्नी का नाम जो बलराम की माता थी। ७-महाश्वेता। ८-सत्ताईस नक्षत्रों में से एक ९-जैनियों की विद्यादेवी। १०-काश्मरी। ११-धैवतस्वर की तीन श्रुतियों में से दूसरी १२-नौ वर्ष की कन्या की संज्ञा। १३-छोटी लम्बी और पीली हड़। १४-पांच वर्ष की कुमारी। १५-जड़ीबूटी। १६-त्वचा की छटी परत। १७-गले का एक रोग। १८-एक प्रकार की मछली। १९-मजीठ।

रोहिणीकांत, रोहिणीकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

रोहिणीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-वसुदेव।

रोहिणीयोग [संज्ञा पु.] (सं.) अषाढ़ के कृष्णपक्ष में रोहिणी का चन्द्रमा के साथ योग।

रोहिणीवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'रोहिणी पति'।

रोहिणीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-बुध देव।

रोहित् [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृगी। २-लाल रंग की घोड़ी। ३-गौ। ४-एक लता।

रोहित [वि.] (सं.) लाल रंग का। [संज्ञा पु.] १-लाल रङ्ग। २-एक प्रकार का हिरन। ३-केसर ४-रक्त। लहू। खून। ५-रोहू नामक मछली। ६-कुसुम का फूल। ७-कुंकुम। केसर। ८-इन्द्रधनुष। ९-गंधर्वों की एक जाति।

रोहितक [संज्ञा पु.] (सं.) कूटशाल्मली।

रोहितवाह [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

रोहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हैमवत की एक नदी का नाम (जैन)।

रोहिताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) लाल आंख।

रोहिताश्व [संज्ञा पु.]. (सं.) १-अग्नि। २-राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम। ३-एक प्राचीन गढ़ का नाम।

रोहितास्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) जैनों के अनुसार हैमवत की एक नदी का नाम।

रोहिनी* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'रोहिणी'।

रोहिश [संज्ञा पु.] (सं.) रूसा घास।

रोहिष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रूसा घास। २-रोहू मछली। ३-एक प्रकार का मृग।

रोही [वि.] (हिं.) [स्त्री. रोहिणी] चढ़ने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पीपल का वृक्ष। २-गूलर का पेड़। ३-एक प्रकार का मृग। ४-रोहिस नामक घास। ५-कूटशाल्मली। [संज्ञा पु.] (देश.) एक हथियार।

रोहुन [संज्ञा पु.] (देश.) रोहन नामक पेड़।

रोहू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की बड़ी मछली। २-एक वृक्ष का नाम।

रौंग [संज्ञा पु.] (देश.) सफेद कीकर।

रौंट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हँसी में या खेल में हुई मानना या रोना। २-चिढ़कर बेईमानी करना

रौंद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रौंदने की क्रिया या भाव। २-चक्कर। गश्त (सिपाही)। *रौंद पर जाना*-गश्त लगाने के लिए निकलना।

रौंदन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) रौंदने की क्रिया या भाव। मर्दन।

रौंदना [क्रि. स.](हिं.) १-पैरों से कुचलना। मर्दन करना। २-लातों से मारना। खूब पीटना।

रौंदी+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) पशुओं या चौपायों के रहने का बाड़ा।

रौंसा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कैंवांच। २-कैंवांच के बीज। ३-लोबिया। ४-लोबिया के बीज।

रौ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गति। चाल। २-वेग। तेजी। ३-पानी का बहाव। ४-किसी बात का

काम की धुन। ५-चाल। ढंग। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रव'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पेड़।

रौक्म [वि.] (सं.) १-रुक्म-संबंधी। २-सोने का बना हुआ।

रौक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) रुखाई। रुक्षता। रूखापन

रौखर+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बाढ़ की बालू पड़ने से खराब होने वाली भूमि।

रौग़न [संज्ञा पु.] (अ.) १-तेल। २-लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग। यह चलाने के लिये चीजों पर पोता जाता है।

रौग़नी [वि.] (अ.) १-तेल का। २-रोगन फेरा-हुआ।

रौचनिक [वि.] (सं.) गोरोचन या रोली से रंगा हुआ।

रौच्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह संन्यासी जो विल्व दंड धारण करता है।

रौज़न [संज्ञा पु.] (फा.) १-छिद्र। सूराख। २-दरार। ३-गवाक्ष। रोशनदान।

रौज़ा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह कब्र जिसपर इमारत बनी हो। समाधि। २-बाग। बगीचा

रौत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ससुर।

रौताइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्रियों के लिये आदरसूचक सम्बोधन। २-राव या रावत की स्त्री। ठकुराइन।

रौताई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) राव या रावत का पद या भाव। सरदारी। ठकुराई।

रौदा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रोदा'।

रौद्र [वि.] (सं.) १-रुद्र-सम्बन्धी। २-प्रचंड। उग्र। ३-क्रोधपूर्ण। [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोध। २-काव्य के नौ रसों में से एक, जिसमें क्रोध सूचक बातों का वर्णन् होता है। ३-ग्यारह मात्राओं के छन्दों की संख्या। ४-धूप। घाम ५-यमराज। ६-साठ संवत्सरों में से एक का नाम। ७-एक प्रकार का अस्त्र। ८-एक केतु।

रौद्रकर्म [संज्ञा पु.] (सं) भयंकर काम।

रौद्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक केतु जो आकाश के पूर्व-दक्षिण मार्ग में शूल के अग्रभाग के समान ताम्रवर्ण किरणों वाला होता है।

रौद्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भयंकरता। डरावनापन। २-प्रचंडता। प्रखरता। उग्रता।

रौद्रदर्शन [वि.] (सं.) भयंकर या भीषण आकृति और चेष्टा वाला। देखने में डरावना।

रौद्रार्क [संज्ञा पु.] (सं.) २३ मात्राओं के छन्दों की संख्या।

रौद्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रुद्र की पत्नी। गौरी। देवी। २-गांधार स्वर की दो श्रुतियों में से पहली।

रौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रमण'।

रौनक [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चमकदमक। दीप्ति। प्रफुल्लता। ३-शोभा। सुहावनापन।

रौना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) गौना। मुकलावा। द्विरागमन। देखो 'रोना'।

रौनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रमणी'।

रौप्य [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी। रूपा। [वि.] चाँदी का।

रौप्यमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदी का सिक्का।

रौमक [संज्ञा पु.] (सं.) साँभरझील का नमक।

रौमलवण [संज्ञा पु.] (सं.) साँभर नमक।

रौरव [वि.] (सं.) [स्त्री. रौरवी] १-भयंकर। डरावना। २-बेईमान। ३-चंचल। ४-रुरु मृग-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] इक्कीस नरकों में से एक का नाम।

रौरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रौला'। [सर्व.] [स्त्री. रौरी] आपका।

रौराना+ [क्रि. स.] (हिं.) व्यर्थ प्रलाप करना। बकना।

रौरे+ [सर्व.] (हिं.) आप (आदरसूचक संबोधन)

रौला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोलाहल। हल्ला। शोर। २-ऊधम। हलचल।

रौलि+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धौल। चपत। तमाचा।

रौशन [वि.] (फा.) देखो 'रोशन'।

रौशनदान [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'रोशनदान'।

रौशनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'रोशनी'।

रौस [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-गति। चाल। २-रंग-ढंग। तौर-तरीका। ३-बाग की क्यारियों के बीच का रास्ता।

रौसली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिकनी उपजाऊ मिट्टी।

रौसा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रौंसा'।

रौहाल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-घोड़े की एक जाति। २-घोड़े की एक प्रकार की चाल।

रौहिण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्दन। २-वटवृक्ष।

रौहिणेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-बलराम। २-गाय का बछड़ा। ३-बुधग्रह। ४-मरकतमणि। पन्ना

रौहिष [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मृग। २-एक प्रकार की घास।

रौही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृगी। हिरनी।

र्‌यासद+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'रियासत'।

र्‌योरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'रेवड़ी'।

ल (ल)

ल व्यंजन-वर्ण का अट्ठाईसवाँ अल्पप्राण वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत है।

लंक, लङ्क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमर। कटि। (हिं.) लंकाद्वीप।

लंकटंकटा, लङ्कटङ्कटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुकेश नामक राक्षस की माता का नाम। २-संध्या की कन्या का नाम।

लंकनाथ, लङ्कनाथ, लंकनायक, लङ्कनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण। २-विभीषण।

लंकपति, लङ्कपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण। २-विभीषण।

लंकलाट [संज्ञा पु.] (अं. लाग क्लाथ) एक प्रकार का घुला हुआ चिकना बढ़िया कपड़ा।

लंका, लङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण राज्य करता था। २-शिवीधान्य। ३-असबरग। ४-काला चना। ५-शाखा। डाली।

लंकादाही, लङ्कादाही [संज्ञा पु.] (सं) हनुमान।

लंकाधिपति, लङ्काधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

लंकापति, लङ्कापति [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण। २-विभीषण।

लंकायिक, लङ्कायिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) असबरग।

लंकारि, लङ्कारि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

लंकाल, लङ्काल [संज्ञा पु.] (डिं.) सिंह। शेर।

लंकिनी, लङ्किनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी जिसे हनुमानजी ने लङ्का प्रवेश के समय मारा था।

लंकेश, लङ्केश [संज्ञा पु.] (सं.) १-रावण। २-विभीषण।

लंकेश्वर, लङ्केश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) रावण।

लंकोई [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लंकोदक'।

लंकोदक [संज्ञा पु] (सं.) असबरग।

लंग [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'लाँग'। [संज्ञा पु.] लंगड़ापन।

लंग, लङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) उपपति। जार।

लंगक, लङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री का उपपति। यार।

लँगटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लंगोटी'।

लँगड़ [वि.] (हिं.) लंगड़ा। यौ०-लँगड़दीन-एक पैर का। लंगड़ा (व्यंग्य)।

लँगड़ा [वि.] (हिं.) १-जिसका एक पैर काम न देता हो या टूट गया हो। २-जिसका एक पाया टूट गया हो। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बढ़िया आम।

लँगड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) लँगड़े होकर चलना

लँगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक टाँग से चलने की क्रिया। २-एक प्रकार का छन्द। [वि.] (डिं.) बलवान्। जोरावर।

लंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोहे का बना हुआ एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जो जहाज या बड़ी नावों को एक स्थान पर ठहराने के लिये

उपयोग किया जाता है। इसके कड़े में मोटा रस्सा बाँधकर पानी में फेंक देते हैं और इसकी नुकीली शाखा मिट्टी में धँस जाती है। २-लकड़ी का वह कुंदा जो नटखट गाय या बैल के गले में बाँधा जाता है। ३-लटकती हुई कोई भारी वस्तु। ४-जहाजों का मोटा और बड़ा रस्सा। ५-लोहे की मोटी और भारी जंजीर। ६-पैर में पहनने का चाँदी का तोड़ा। ७-किसी पदार्थ के नीचे का वह अंश जो नीचा और भारी हो। ८-कमर के नीचे का भाग। ९-पहलवानों का लंगोट। १०-वे टाँके जो पक्की सिलाई के पहले डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ११-वह स्थान जहाँ दरिद्रों को भोजन मिलता है। १२-अंडकोश (बाजारू)। १३-वह उभड़ी हुई रेखा जो अंडकोष के नीचे के भाग से होकर गुदा तक जाती है। १४-वह स्थान जहाँ बहुत से लोगों का भोजन एक साथ पकता हो। *लंगर बाँधना*-१-पहलवानी करना। २-ब्रह्मचर्य धारण करना। *लंगर लंगोट कसना या बाँधना*-लड़ने को उद्यत होना। *लंगर लंगोट (किसी को) देने या आगे रखना*-लड़ने को तैयार होना। [वि.] (हिं.) १-भारी। वजनी। २-नटखट। पाजी ३-देखो 'लंगड़ा'। *लंगर करना*-शरारत करना।

लँगरई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ढिठाई। शरारत।

लंगरखाना [संज्ञा पु.] (फा) वह स्थान जहाँ गरीबों को पकाया हुआ भोजन बाँटा जाता है

लंगरगाह [संज्ञा पु] (फा.) किनारे पर का वह स्थान जहाँ लँगर डालकर जहाज ठहराये जाते हैं।

लँगराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरारत। ढिठाई।

लँगराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लँगड़ाना'।

लंगी+ [वि.] (हिं.) लंगड़।

लंगूर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक विशेष प्रकार का बन्दर जिसका मुँह काला तथा पूंछ लम्बी होती है। २-बन्दर। ३-(बन्दर की) पूंछ। दुम।

लँगूरफल [संज्ञा पु.] (हिं.) नारियल।

लँगूरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-घोड़े की एक चाल। २-चोरी गये मवेशियों का पता लगाने वाले को दिया जाने वाला इनाम।

लंगूल [संज्ञा पु.] (हिं.) दुम। पूंछ।

लँगोचा [संज्ञा पु.] (देश.) कुलमा। गुलमा।

लँगोट, लँगोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लंगोटी] कमर में बांधने का वह पहनावा जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढके रहते हैं। रूमाली। यौ०-*लंगोट बन्द*-ब्रह्मचारी।

लँगोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा लंगोट। कोपीन यौ०-*लँगोटियादार*-बचपन का साथी या मित्र *लँगोट में फाग खेलना*-गरीब होने पर भी बहुत व्यय करना। *लँगोटी बंधवाना*-बहुत गरीब कर देना। *लँगोटी बिकवाना*-कतई कंगाल कर देना।

लँघक, लङ्घक [वि.] १-अतिक्रमण करने वाला लांघने वाला। २-नियम का भंग करने वाला।

लंघन, लङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लांघने की क्रिया या भाव। डाँकना। २-अतिक्रमण। ३-उपवास। फाका। घोड़े की एक चाल। ४-वह उपाय जिससे किसी काम में सुभीता हो

लंघनक, लङ्घनक [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जिसके द्वारा लांघा जाय। २-पुल। सेतु।

लंघना* [क्रि. स.] (हिं.) लाँघना।

लंघना, लङ्घना [संज्ञा स्त्री.](सं.) उपेक्षा। लापरवाही।

लंघनीय, लङ्घनीय [वि.] (सं.) १-लाँघने के योग्य। २-उलंघन करने योग्य।

लंज, लञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पैर। पाँव। २-पूँछ। ३-काछ। ४-लम्पटता। ५-स्रोत। सोता। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

लंजिका, लञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

लंठ [वि.] (हिं.) मूर्ख।

लंड, लण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) पुरीष। गू। [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरुष की मूत्रेंद्रिय। शिश्न।

लँडूरा [वि.] (हिं.) बिना पूंछ का। कटी हुई पूंछ वाला। पशु या पक्षी।

लंतरानी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) शेखी।

लंप [संज्ञा पु.] (अं.) दीपक। चिराग।

लंपक, लम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों का एक सम्प्रदाय।

लंपट, लम्पट [वि.] (सं.) व्यभिचारी। विषयी। बदचलन। [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री का यार। उपपति।

लंपटता, लम्पटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लंपट होने का भाव। दुराचार। कुकर्म।

लंपाक, लम्पाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लंपट। दुराचारी। २-मुरंड नामक देश जिसका उल्लेख पुराणों में है।

लंब, लम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी रेखा पर सीधी और खड़ी गिरने वाली रेखा। २-प्रलम्बासुर नामक राक्षस। ३-नाचने वाला। ४-पति। ५-अंग। ६-एक दैत्य का नाम। ७-एक मुनि का नाम। ८-शुद्ध राग का एक भेद। ९-वह रेखा जो विषुवतरेखा के समानांतर होती है। ज्योतिष में ग्रहों की एक प्रकार की गति। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विलंब'। [वि.] (सं.) लम्बा।

लंबक, लम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुस्तक का एक अध्याय। २-ज्योतिष में योग विशेष। ३-मुख का एक रोग।

लंबकर्ण, लम्बकर्ण [संज्ञा पु.](सं.) १-बकरा २-हाथी। ३-अंकोर वृक्ष। ४-राक्षस। ५-बाज पक्षी। ६-खरगोश। ७-गधा। खर। [वि.] (सं.) लम्बे कान वाला।

लंबग्रीव, लम्बग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

लंबतड़ंग [वि.] (हिं.) लंबे कद का। बहुत लंबा।

लंबदंता, लम्बदन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंह देश की पिप्पली।

लंबन, लम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गले में पहनने का वह हार जो नाभि तक लटकता हो। २-झूलने की क्रिया। ३-अवलंब। सहारा। ४-कफ। ५-लंघा करना। ६-कुछ समय के लिए कोई काम या बात टली रहना। पेंडेंस

लंबपयोधरा, लम्बपयोधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका नाम।

लंबर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नम्बर'।

लंबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नम्बरदार'।

लंबा [वि.] (हिं.) १-जो एक ही दिशा में दूर तक चला गया हो। २-जिसकी ऊंचाई अधिक हो। ३-(समय) जिसका विस्तार बहुत हो। ४-दीर्घ। बड़ा। *लंबा करना*-१-चलता करना २-भूमि पर पटक देना। चित्त करना। *लंबा बनना या होना*-चल देना। (परिहास) यौ०-*लंबाचौड़ा*-जिसका आयत तथा विस्तार दोनों बहुत अधिक होना।

लंबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लंबा होने का भाव। लम्बापन।

लंबान [संज्ञा पु.] (हिं.) लम्बाई।

लंबायमान [वि.] (हिं.) १-बहुत लम्बा। २-लेटा हुआ।

लंबिका, लम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गले के अन्दर की घंटी।

लंबित, लम्बित [वि.] (सं.) १-लम्बा। २-विचार निश्चय आदि के लिए कुछ समय तक रोका या टाला हुआ। पेंडिंग। [संज्ञा पु.] मांस।

लंबी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] लम्बा का स्त्री. रू *लंबी तानना*-सो जाना। *लंबी सांस लेना*-ठंडी साँस लेना।

लंबुक, लम्बुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नाग। २-ज्योतिष में योग विशेष।

लंबू [वि.] (हिं.) लम्बा (व्यंग में आदमी के लिये)

लंबोतरा [वि.] (हिं.) लम्बे आकार वाला। जो अपेक्षाकृत कुछ लम्बा हो।

लंबोदर, लम्बोदर [संज्ञा पु.] (सं.) गणेशजी। [वि.] (सं.) बड़े पेट वाला।

लंबोष्ठ, लम्बोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊंट। २-एक प्रकार के क्षेत्रपाल देवता।

लंभन, लम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ध्वनि। २-लांछना।

ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-पृथ्वी।

लउआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'घीया'।

लउकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'घीया'।

लउटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लकुटी'।

लकड़बग्घा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक जंगली हिंसक

पशु जो भेड़िये से कुछ बड़ा होता है। यह कुत्तों का मांस बहुत पसंद करता है।

लकड़हारा [संज्ञा पु.] (हिं.) जङ्गल से लकड़ी काटकर बेचने वाला आदमी।

लकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) लकड़ी का मोटा कुंदा लक्कड़।

लकड़ी [संज्ञा पु] (हिं.) १-वृक्ष का कटा हुआ काठ वाला कोई ठोस अङ्ग। २-ईंधन। ३-छड़ी। लाठी। ४-गतका। *लकड़ी चलना*-परस्पर लाठियों के प्रहार होना। *लकड़ी देना*-मृतक को जलाना। *लकड़ी-सा*-लकड़ी के समान दुबला पतला। *लकड़ी होना*-१-सूखकर कांटा होना। २-सूखकर बहुत कड़ा हो जाना

लक़ब [संज्ञा पु.] (अ.) उपाधि। पदवी। खिताब

लकरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लकड़ी'।

लक़लक़ [संज्ञा पु.] (अ.) एक जलपक्षी जिसकी गरदन लम्बी होती है।

लकवा [संज्ञा पु.] (अ.) एक वात रोग जिसमें कोई अङ्ग सुन्न या बेकार हो जाता है। फालिज *लकवा मारना या मार जाना*-शरीर के किसी अङ्ग में लकवे का रोग हो जाना।

लकसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फाल आदि तोड़ने की लग्गी जिसके सिरे पर लोहे का चंद्राकार फल लगा होता है।

लकाटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गंधबिलाव।

लकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'ल' स्वरूप वर्ण।

लकीर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक सीध में लगी हुई आकृति। रेखा। खत। २-दूर तक रेखा के समान बना हुआ चिह्न। ३-धारी। ४-पंक्ति। सतर। *लकीर का फकीर होना, पीटना या चलना*-पुरानी प्रथा पर चलना।

लकुच [संज्ञा पु.] (सं.) बड़हर का वृक्ष। (हिं.) देखो 'लकुट'।

लकुट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाठी। छड़ी। (सं.) १-मध्यम आकार का वृक्ष विशेष। २-इस वृक्ष का फल जो प्रायः गुलाबजामुन का सा होता है। लुकाठ। लखोट।

लकुटी+ [संज्ञा स्त्री.] लाठी। छड़ी।

लकोटा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा।

लक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) काठ या लकड़ी का मोटा कुन्दा।

लक्का [संज्ञा पु.] (अं) एक प्रकार का कबूतर।

लक्का-कबूतर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाच की एक गत। २-देखो 'लक्का'।

लक्खी [वि.] (हिं.) १-लाख के रंग का। लाखी। २-लाखों से सम्बन्ध रखने वाला। [संज्ञा पु.] १-लखपती। २-घोड़े की एक जाति।

लक्खन [वि.] (हिं.) लाल। सुर्ख।

लक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलता, जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं। २-चीथड़ा।

लक्तकर्मा [संज्ञा पु.] (सं) लाल लोध।

लक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिपकली। बिस्तुइया।

लक्ष [वि.] (सं.) एक लाख। सौ-हजार।

[संज्ञा पु.] (सं.) १-एक लाख की संख्या। २-किसी उद्देश्य से किसी वस्तु या बात पर दृष्टि रखना। ३-देखो 'लक्ष्य'। ४-अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ५-पैर। ६-चिह्न। निशान

लक्षक [वि.] (सं.) लक्ष कराने वाला। जता देनेवाला। [संज्ञा पु.] (सं.) वह शब्द जो संबंध अथवा प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करे।

लक्षण [संज्ञा पु.] (सं) १-किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जाय। २-रोग की पहचान। ३-नाम। ४-परिभाषा। परिभाषा। ५-दर्शन। ६-सारसपक्षी। ७-शरीर पर का कोई शुभ या अशुभ चिह्न। सामुद्रिक। ८-चालढाल। रङ्गढङ्ग। ९-शरीर में होने वाला एक प्रकार का काला दाग जो बालक के गर्भ में रहने के समय सूर्य या चन्द्रग्रहण पड़ने के कारण लग जाता है। लच्छन। १०-देखो 'लक्ष्मण'।

लक्षणज्ञ [संज्ञा पु.](सं) वह जो लक्षण जानता हो

लक्षणत्व [संज्ञा पु.](सं.) लक्षण का भाव या धर्म

लक्षणलक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्षण का एक भेद।

लक्षणवत् [वि.] (सं.) लक्षणयुक्त।

लक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अर्थ लक्षित हो। शब्द की वह शक्ति जिससे उसका साधारण से भिन्न और वास्तविक अर्थ प्रकट हो। यह शक्ति दो प्रकार की होती है—निरूढ़ और प्रयोजनवती। २-मादा हंस। ३-मादा सारस। ४-महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम। ५-छोटी भटकटैया।

लक्षणी [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई लक्षण या चिह्न हो। २-लक्षण जानने वाला।

लक्षणीय [वि.] (सं.) लक्षण द्वारा जाना हुआ।

लक्षण्य [वि.] (सं.) १-चिह्न का काम देने वाला २-जिसके अच्छे चिह्न हों। अच्छे चिन्हों वाला।

लक्षना* [क्रि. स.] (हिं.) लखना। देखना।

लक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लाख की संख्या।

लक्षि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'लक्ष्मी'।

लक्षित [वि.] (सं.) १-बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २-देखा हुआ। लक्ष्य किया हुआ। ३-अनुमान से समझा या जाना हुआ। ४-जिस पर कोई लक्षण या चिह्न बना हो। ५-लक्षणाशक्ति के द्वारा समझ में आने वाला (अर्थ)।

लक्षितव्य [वि.] (सं.) बतलाया हुआ।

लक्षितलक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लक्षणा।

लक्षिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जिसका पर पुरुष से होने वाला संबंध और लोग जानते हों।

लक्षितार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह अर्थ जो शब्द की लक्षणाशक्ति से निकलता है।

लक्षी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके चरण में आठ रगण होते हैं।

लक्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) लक्षण। चिह्न। निशान।

लक्ष्मण [संज्ञा पु.] (सं.) १-महाराज दशरथ के एक पुत्र का नाम जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुये थे। २-दुर्योधन के एक पुत्र का नाम। ३-चिह्न। निशान। ४-नाग। ५-सारस। [वि.] (सं.) १-लक्षणयुक्त। २-भाग्यवान्। खुशकिस्मत। ३-समृद्धशाली। हर प्रकार से भरा पूरा।

लक्ष्मणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के आठ पटरानियों में से एक। २-दुर्योधन की पुत्री का नाम। ३-एक पुत्र या जड़ी। पुत्रकंदा।

लक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धन की अधिष्ठात्री देवी जो विष्णु की पत्नी मानी जाती है। रमा। कमला। २-धन। संपत्ति। दौलत। ३-शोभा। छवि। ४-घर की मालकिन। गृहस्वामिनी। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो रगण, एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। ६-सीताजी का एक नाम ७-ऋद्धि नामक औषध। ८-वृद्धि नामक औषध ९-दुर्गा का एक नाम। १०-वीर स्त्री। ११-आर्याछंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में २७ गुरु और तीन लघु वर्ण होते हैं। १२-हलदी। १३-शमीवृक्ष। १४-ऐसा वृक्ष जो फलता हो। १५-मोती। १६-कमल। १७-सफेद तुलसी। १८-मेढ़ासिंगी। १९-मोक्ष की प्राप्ति।

लक्ष्मीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनी। अमीर। २-भाग्यवान्।

लक्ष्मीकांत, लक्ष्मीकान्त [संज्ञा पु.](सं) विष्णु भगवान्।

लक्ष्मीगृह [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

लक्ष्मीजनार्दन [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का शालग्राम जो बहुत काले रंग के होते हैं तथा जिन पर एक ओर चार चक्र रहते हैं।

लक्ष्मीटोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक संकररागिनी

लक्ष्मीताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-संगीत में अठारह मात्राओं का एक ताल। २-एक प्रकार का ताड़ का पेड़।

लक्ष्मीतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मी का भाव या धर्म। ऐश्वर्य।

लक्ष्मीधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्राग्विणी छन्द का दूसरा नाम। २-विष्णु।

लक्ष्मीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

लक्ष्मीनारायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लक्ष्मी और नारायण। २-वह शालग्राम शिला जिस पर चक्र बना रहता है।

लक्ष्मीनिधि [संज्ञा पु.] (सं) राजा जनक के पुत्र

का नाम।

लक्ष्मीनिवास [संज्ञा पु.](सं.) लक्ष्मी का निवास स्थान।

लक्ष्मीनृसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) वे शालग्राम शिला जिन पर दो चक्र और एक वनमाला बनी होती है।

लक्ष्मीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-राजा ३-कृष्ण। ४-लौंगवृक्ष। ५-सुपारीवृक्ष।

लक्ष्मीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनवान। अमीर। २-घोड़ा। ३-कामदेव। ४-सीता के पुत्र लव और कुश।

लक्ष्मीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-माणिक। लाल। २-कमल।

लक्ष्मीपूजन [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मीजी का उस समय का पूजन जिस समय वर और वधू पहली बार (वर के) घर में प्रवेश करते हैं।

लक्ष्मीफल [संज्ञा पु.] (सं.) बेल। श्रीफल।

लक्ष्मीरमण [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीविष्णुभगवान्

लक्ष्मीवत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-कटहल। ३-अश्वत्थ का वृक्ष। [वि.] १-अमीर धनवान्। २-भाग्यवान्।

लक्ष्मीवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

लक्ष्मीवसति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल कमल का पुष्प।

लक्ष्मीवहिष्कृत [वि.] (सं.) निर्धन। गरीब।

लक्ष्मीवेष्ट [संज्ञा पु] (सं.) ताड़पीन। तारपीन।

लक्ष्मीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-आम का वृक्ष।

लक्ष्मीश्रेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थलपद्मिनी।

लक्ष्मीसख [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मीप्रिय।

लक्ष्मीसहज, लक्ष्मीसहोदर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

लक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिस पर किसी प्रकार का निशान लगाया जाय। निशाना। २-वह जिस पर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाय। उद्दिष्ट पदार्थ या बात। ३-वह जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप हो। ४-वह जिस का अनुमान किया जाय। अनुमेय। ५-वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षणाशक्ति के द्वारा निकलता हो। ६-अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। [वि.] देखने योग्य। दर्शनीय।

लक्ष्यक्रम [वि.] (सं.) जिस आज्ञाविधि से उद्दिष्ट वस्तु का आकार और चेष्टा जानी जाय।

लक्ष्यज्ञत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह ज्ञान जो चिह्नों को देखकर उत्पन्न हो। २-वह ज्ञान जो दृष्टांत द्वारा हो।

लक्ष्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्य का भाव या धर्म।

लक्ष्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्यता।

लक्ष्यपोत [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदमारी का जहाज

लक्ष्य-भेद [संज्ञा पु.] (सं.) चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना साधना या लगाना।

लक्ष्यवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्रह्मलोक का मार्ग। २-वह विधि जिससे जीवन का उद्देश्य सिद्ध हो।

लक्ष्यवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) उड़ते या तेजी से चलते हुए पदार्थों या जीवों पर ठीक निशाना लगाने वाला।

लक्ष्यसुप्त [वि.] (सं.) लक्ष्यवेध करने वाला।

लक्ष्यहन् [वि.](सं.) ठीक निशाना लगाने वाला।

लक्ष्यार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) लक्षण से निकलने वाला अर्थ।

लखधर* [संज्ञा पु.](हिं.) लाख का घर। लाक्षागृह जिसमें पांडवों को जलाने की चेष्टा की गई थी।

लखन* [संज्ञा पु.] (सं.) राम के भाई लक्ष्मण। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लखने की क्रिया या भाव

लखना*+ [क्रि. स.] (हिं.) १-लक्षण देखकर अनुमान करना या समझना। ताड़ना। २-देखना।

लखपती [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसके पास लाखों रुपये की संपत्ति हो।

लख-पेड़ा [वि.] (हिं.) जिसमें बहुत अधिक वृक्ष हों (बाग)।

लखमीतात [संज्ञा पु.] (डिं.) समुद्र।

लखमीवर [संज्ञा पु.] (डिं.) विष्णु।

लखर [संज्ञा पु.] (देश.) काकड़ासिंगी का पेड़।

लखलखा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-कोई सुगंधित द्रव्य। २-सुगंधित द्रव्य विशेष जिसे सुँघाकर मूर्छित व्यक्ति को होश में लाते हैं।

लखलुटा [वि.] ((हिं.) लाखों रुपए यों ही लुटा देने वाला। अपव्ययी।

लखाउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लक्षण। पहचान। चिह्न। २-निशानी के रूप में दी हुई वस्तु। ३-देखो 'लाक्षागृह'।

लखाना* [क्रि. अ.](हिं.) दिखाई पड़ना। [क्रि. स.] १-दिखलाना। २-अनुमान करा देना।

लखाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लखाउ'।

लखिमी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लक्ष्मी'।

लखिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो लखता हो।

लखी [संज्ञा पु.] (हिं.) लाख के रंग का घोड़ा।

लखुआ+[संज्ञा पु.](हिं.) १-गेहूँ के पौधों का एक रोग जिसे लाखा या लाही कहते हैं। २-लाल मुंह वाला बन्दर। ३-देखो 'लखिया'।

लखुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लखुआ'।

लखेदना* [क्रि. स.] (हिं.) खदेड़ना।

लखेरा [संज्ञा पु.](हिं.) लाख चूड़ियाँ आदि बनाने वाला कारीगर या उसकी जाति।

लखोट, लखोठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लखौट'

लखौट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्रियों के हाथ पहनने की लाख की चूड़ी।

लखौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्दन, केसर आदि से बनाया जाने वाला उबटन। २-वह डिब्बा जिसमें स्त्रियां सिंदूर आदि रखती हैं। ३-लिखावट।

लखौरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-एक प्रकार की भौंरी (कीड़े) का घर। भृङ्गी का घर। २-पुरानी चाल की पतली छोटी ईंट। ३-किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियां या फूल चढ़ाना।

लगंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लगन होने की क्रिया या भाव। २-लगने या स्त्री-प्रसंग करने की क्रिया या भाव।

लग* [क्रि. वि.] (हिं.) १-तक। पर्यन्त। तईं। २-निकट। समीप। पास। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लगन। लौ। [अव्य.](हिं.) १-लिए। वास्ते। २-साथ।

लगढग [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'लगभग'।

लगण [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जिसमें पलक पर एक छोटी, चिकनी, कड़ी गांठ हो जाती है।

लगदी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बच्चों के नीचे बिछाने का पोतड़ा। कथरी।

लगन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी व्यक्ति अथवा कार्य की ओर पूर्णतया ध्यान लगाना। लौ। २-लगने की क्रिया या भाव। लगाव। संबंध स्नेह। [संज्ञा पु.] १-विवाह का मुहूर्त। २-वे दिन जिनमें विवाह आदि होते हों। ३-देखो 'लग्न'।
[संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-एक प्रकार की थाली। २-मुसलमानों में विवाह की एक रीति।

लगनपत्री [संज्ञा स्त्री.](हिं.) विवाह के मुहूर्त का पत्र जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भेजता है।

लगनवट* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लगन। प्रेम। मुहब्बत।

लगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-आपस के दो पदार्थों के तल मिलना। सटना। २-एक दूसरे से संलग्न होना। मिलना। जुड़ना। ३-किसी वस्तु के तल पर पड़ना। ४-किसी वस्तु पर कुछ सीया, टांका, चिपकाया, जड़ा या मढ़ा जाना। ५-सम्मिलित या शामिल होना। मिलना। ६-उत्पन्न होना। उगना। ७-ठिकाने पर पहुंचना। ८-क्रमानुसार रखा जाना। ९-खर्च होना। १०-जान पड़ना। मालूम होना। ११-स्थापित होना। १२-रिश्ते में कुछ होना। १३-चोट या आघात पहुँचाना। १४-टक्कर खाना। टकराना। १५-मला या पोता जाना। १६-जलन, चुनचुनाहट आदि मालूम होना। १७-आंच की अधिकता से पकने के समय

खाद्यपदार्थ का बरतन के तल पर जमना। १८-किसी प्रकार की प्रवृत्ति आदि का आरंभ होना। जैसे—चसका लगना। १९-आरंभ होना। २०-काम या उपयोग में आना। २१-आवश्यक होना। २२-जारी होना। चलना। २३-एक वस्तु का किसी अन्य वस्तु के साथ रगड़ खाना। २४-सड़ना। गलना। २५-ऐसे काम का आरम्भ होना जिसमें बहुत से लोगों के एकत्र होने की आवश्यकता पड़े। जैसे—महफिल लगना। २६-प्रभाव या असर होना। २७-देना निश्चित होना। जैसे—कर लगना। २८-जलना। २९-आरोप होना। ३०-उपयुक्त या ठीक होना। ३१-गणित की क्रिया पूरी होना। जैसे—जोड़ लगना। ३२-साथ होना। पीछे-पीछे चलना। ३३-चिमटना। ३४ कार्य में रत होना। ३५-छूना। ३६-दुधारू पशुओं का दूहा जाना। ३७-गड़ना या चुभना। धँसना। ३८-बदले में जाना। ३९-पास पहुँचना। ४०-छेड़छाड़ करना। ४१-बन्द होना। ४२-दांव पर रखा जाना। बदना। ४३-अंकित या चिह्नित होना। ४४-किसी धारदार वस्तु की धार का तेज किया जाना। ४५-घात या ताक में रहना। ४६-किसी जगह पर एकत्र होना। ४७-अपने नियत स्थान पर पहुँचना। ४८-परचना। सधना। ४९-दाम आंका जाना। ५०-सम्भोग में रत होना। ५१-फैलना। बिछना। ५२-पाल का खींचकर चढ़ाया जाना ५३-एक जहाज का दूसरे जहाज के बराबर आना। ५४-जहाज का किनारे के पास आना। *लगे हाथ या लगे हाथों*-कोई काम करते रहने की अवस्था में या उसे पूरा करके निश्चिंत होने से पहले। *लगती बात कहना*-मर्मभेदी बात कहना। *लग चलना*-किसी के पीछे होना। [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का जंगली मृग।

लगनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गलन'।

लगनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तश्तरी। २-पानदान में की वह छोटी तश्तरी जिसमें पान रखे जाते हैं। ३-परात।

लगभग [क्रि. वि.] (हिं.) प्रायः। बहुत कुछ (संख्या, समय आदि के सम्बन्ध में)।

लगमात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्वरों के वह चिह्न जो उच्चारण के लिए व्यंजनों में जोड़े जाते हैं।

लगर* [संज्ञा पु.] (देश.) एक शिकारी पक्षी जो चील की तरह होता है। लग्घड़।

लगलग [वि.] (हिं.) बहुत दुबला-पतला। अति सुकुमार।

लगव* [वि.] (हिं.) १-असत्य। मिथ्या। झूठ। २-व्यर्थ। बेकार।

लगवाना [क्रि. स.] (हिं.) लगवाने का काम दूसरे से कराना।

लगवार, लगवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्री का यार। जार।

लगहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पासंग वाला काँटा या तराजू।

लगातार [क्रि. वि.] (हिं.) निरन्तर। बराबर। बिना क्रम टूटे।

लगाद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रेम। प्रीत।

लगान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २-खेतीबारी की भूमि पर लगने वाला कर। पोत। रेन्ट। ३-वह स्थान जहाँ पर मजदूर अपना बोझ उतारकर सुस्ताते हैं। ४-वह स्थान जहाँ पर नावें आकर ठहरती हैं। ५-एक मकान से दूसरे मकान का मिला हुआ ऊपरी भाग।

लगाना [क्रि. स.] (हिं.) १-एक वस्तु के तल पर अन्य वस्तु का तल रखना। सटाना। २-दो वस्तुओं को आपस में संलग्न करना। मिलाना। जोड़ना। ३-किसी वस्तु के तल पर कोई वस्तु गिराना। चिपकाना। ४-किसी एक वस्तु पर अन्य वस्तु सीना, टाँकना, चिपकाना या जोड़ना। ५-शामिल या सम्मिलित करना। साथ में मिलना। ६-वृत्त आदि आरोपित करना। जमाना। ७-किसी ठीक जगह पहुँचाना। ८-क्रम से यथास्थान रखना। चुनना। ९-व्यय या खर्च करना। १०-मालूम करना। ११-स्थापित करना। १२-आघात या चोट पहुँचाना। १३-लेप करना। पोतना। १४-किसी में कोई नई प्रवृत्ति, व्यसन, चसका आदि उत्पन्न करना। १५-उपयोग या काम में लाना। १६-सड़ाना। गलाना। १७-ऐसा काम करना जिससे बहुत सारे लोग एकत्र या सम्मिलित हों। १८-दातव्य या देना निश्चित करना। १९-दोष या अभियोग का आरोप करना। २०-प्रज्वलित करना। २१-यथा-स्थान बैठाना। जड़ना। २२-गणित या हिसाब करना। २३-किसी के पीछे नियुक्त करना। २४-साथ में सम्बन्ध करना। २५-चुगली खाना। शिकायत करना। २६-किसी को अपने पीछे लेचलना। २७-कार्य में संलग्न करना। २८-दुधारू पशुओं को दूहना। २९-गाड़ना। धँसाना। ३०-सटाना। ३१-छुआना। ३२-बन्द करना। ३३-दाँव पर धन आदि रखना। ३४-किसी बात या काम में अपने आपको औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ समझना। ३५-धारण करना। ३६-बदले में लेना। ३७-अङ्कित या चिह्नित करना। ३८-धारवाली वस्तु को सान पर चढ़ाना। ३९-दाम आँकना। ४०-परचाना। सधाना। ४१-उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना। ४२-फैलाना। बिछाना। ४३-संभोग की क्रिया करना। ४४-करना। ४५-पाल को खींचकर चढ़ाना। ४६-जहाज को पार लाना। ४७-एक जहाज जो दूसरे जहाज के सामने या बराबर लेजाना। *किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना*-किसी को बिचौला बनाकर किसी प्रकार का आरोप करना। यौ०-*लगाना-बुझाना*-दो व्यक्तियों मे वैमनस्य उत्पन्न करना।

लगाम [संज्ञा स्त्री.] (फा.) घोड़े के मुँह में लगाया जाने वाला वह ढाँचा जिसके दोनों ओर (घोड़े को चलाने के लिये) रस्से अथवा चमड़े बँधे होते हैं। रास। बाग। *लगाम चढ़ाना या देना*-कोई काम करने से विशेषतः बोलने से रोकना। *लगाम लिए फिरना*-बराबर ढूँढ़ते फिरना। *जबान या मुँह मे लगाम न होना*-बिना सोचे-समझे बोलने की आदत होना।

लगार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नियमानुसार नित्य अथवा निरंतर कार्य करना। बंधी। बंधेज। २-लगाव। सम्बन्ध। ३-सिलसिला क्रम। ४-लौ। लगन। ५-वह जो किसी की ओर से भेद लेने के लिए नियुक्त किया गया हो। ६-मेली। सम्बन्धी। ७-मार्ग में का वह स्थान जहाँ से जुआरी लोग जूआ खेलने के स्थान तक पहुँचाए जाते हैं।

लगालगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लाग। लगन। प्रेम। प्रीति। २-सम्बन्ध। मेलजोल।

लगाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लगे होने का भाव। २-सम्बन्ध। वास्ता।

लगावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सम्बन्ध। वास्ता २-प्रेम। प्रीति।

लगावन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लगाव। सम्बन्ध वास्ता।

लगावना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लगाना'।

लगि* [अव्य.] (हिं.) देखो 'लग'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लग्गी'।

लगी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लग्गी'।

लगु* [अव्य.] (हिं.) 'लग'।

लगुड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाठी। डंडा। २-एक विशेष प्रकार का डंडा जो प्राचीनकाल मे सिपाही रखते थे। ३-लाल कनेर।

लागुल [संज्ञा पु.] (हिं.) शिश्न।

लगुवा+ [वि.] (हिं.) पीछे लगने वाला। पीछे-पीछे चलने वाला।

लगूर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूंछ। दुम।

लगूल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूंछ। दुम।

लगे+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'लग'।

लगेलगे+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बन्दर।

लगौंहाँ* [वि.] (हिं.) जो किसी से लगन लगाने के लिये उत्सुक या उद्यत हो।

लग्गत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लागत'।

लग्गा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लम्बा बाँस। २-अँकुसी लगा वह लम्बा बाँस जिससे फल तोड़े जाते हैं। लकसी। ३-लम्बे बाँस में फरसा लगा औजार जिससे घास या कीचड़ आदि हटाते हैं। ४-कार्य का सूत्रपात या आरम्भ काम में हाथ लगाना। ५-किसी दाँव पर जुआरी के अतिरिक्त अन्य लोगों का लगने का लगने वाला धन या दाँव।

लग्गी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लग्गा' १,२,३,४।

लग्गू [वि.] (हिं.) १-सम्भोग करने वाला। २-उपपति। यार। जार।

लग्घड़ [संज्ञा पु.] (देश.) १-बाज। २-चीते की तरह का एक छोटा पशु। लकड़बग्घा।

लग्घा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लग्गा'।

लग्घी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'लग्गी'।

लग्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष में उतना समय जितने में कोई राशि किसी विशिष्ट स्थान में वर्त्तमान रहती है। २-शुभ कार्य का मुहूर्त्त। साइत। ३-विवाह का महूर्त्त। ४-विवाह। शादी। ५-विवाह के दिन। सहालग। ६-बंदीजन। सूत। [वि.] १-लगा हुआ। मिला-हुआ। २-लज्जित। ३-आसक्त। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लगत'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लगन'।

लग्नकंकण, लग्नकङ्कण [संज्ञा पु.] (सं.) वह मंगलसूत्र अथवा कंकण जो विवाह के अवसर पर वर और कन्या के हाथ में बाँधा जाता है।

लग्नक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो जमानत करे प्रतिभू। जामिन। २-एक राग।

लग्नकाल [संज्ञा पु.] (सं.) लग्न का समय।

लग्नकुंडली, लग्नकुण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह चक्र या कुण्डली जिससे यह पता चलता है कि जन्म के समय कौन-कौन से ग्रह किस किस राशि में थे।

लग्नग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) लग्न में स्थित ग्रह।

लग्नदंड, लग्नदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में स्वरों का परस्पर मिलाप।

लग्नदिन [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के लिए निश्चित दिन।

लग्नपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्रिका जिसमें विवाह तथा उससे सम्बन्ध रखने वालों दूसरे कृत्यों का लग्न स्थिर करके ब्योरेवार लिखा जाता है।

लग्नपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लग्नपत्र'।

लग्नवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं) लग्न का समय।

लग्नायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लग्न के अनुसार स्थिर की हुई आयु। (फलित ज्योतिष)

लग्नेश [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष में वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो।

लग्नोदय [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी लग्न के उदय होने का समय। २-लग्न के उदय होने का काम।

लघड़बग्गा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लकड़बग्घा'

लघमीपुष्प [संज्ञा पु.] (डि.) माणिक्य। लाल।

लघित्र [संज्ञा पु.] (हिं.) प्राचीनकाल का एक प्रकार का धारदार अस्त्र।

लघिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लघु का भाव। लघुता। २-अष्ट सिद्धियों में से चौथी जिसके प्राप्त होने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है।

लघीयस् [वि.] (सं.) अपेक्षाकृत बहुत छोटा या हलका।

लघिष्ठ [वि.] (सं.) सबसे हलका। सब से नीचा

लघु [वि.] (सं.) १-शीघ्र। जल्दी। २-छोटा। ३-संक्षिप्त। ४-हलका। ५-निःसार। ६-थोड़ा कम। ७-नीच। ८-दुबला। दुर्बल। [संज्ञा पु.](सं.) १-काला अगर। २-खस। ३-समय का एक परिमाण। ४-तीन प्रकार के प्राणायामों में से एक। ५-व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है। ६-हस्त, अश्विनी तथा पुष्य ये तीन नक्षत्र जो ज्योतिष में छोटे माने गये हैं। ७-वह अक्षर जिसमें एक ही मात्रा हो। गुरु का उलटा। इसका चिह्न यह होता है '।'। ८-वह जिसका रोग छूट गया हो। ९-चांदी। १०-असवरग।

लघुकंकोल, लघुकङ्कोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कंकोल जो साधारण की अपेक्षा छोटा होता है।

लघुकंटकी, लघुकण्टकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लजालू।

लघुकटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'कंटकारी'।

लघुकण [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद जीरा।

लघुकर्कंधु [संज्ञा पु.] (सं.) भुंई। बेर।

लघुकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूर्वा।

लघुकाम [संज्ञा पु.] (सं.) बकरी।

लघुकाय [संज्ञा पु.] (सं.) नाटे कद का।

लघुकाश्मर्य [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का वृक्ष।

लघुकिन्नरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा जो प्राचीनकाल में होता था और जिसमें तार लगे होते थे।

लघुक्रम [संज्ञा पु.] (सं) जल्दी-जल्दी चलने की क्रिया।

लघुक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुच्छ कार्य।

लघुगण [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विन, पुष्य और हस्त इन तीनों नक्षत्रों का समूह।

लघुगर्ग [संज्ञा पु] (सं.) १-खैरा नामक मछली २-त्रिकंटक नामक मछली।

लघुचंदन, लघुचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) अगर नामक सुगन्धित लकड़ी।

लघुचित्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-हल के मन का। २-चंचल चित्त।

लघुचित्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मन के बहुत ही दुर्बल या चंचल होने का भाव।

लघुचेता [संज्ञा पु.] (सं.) तुच्छ या बुरे विचारों वाला। नीच।

लघुच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी शतावर।

लघुजल [संज्ञा पु.] (सं.) लवा नाम का एक पक्षी

लघुजांगल, लघुजाङ्गल [संज्ञा पु.](सं.) लवापक्षी

लघुतर [वि.] (सं.) बहुत छोटा।

लघुता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-लघु होने का भाव। छुटाई। लाघव। २-हलकापन। छोटापन।

लघुतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) मुरदासंग।

लघुतुपक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिस्तौल।

लघुत्तम, लघुत्तमसमापवर्त्य [संज्ञा पु.](सं.) वह सब से छोटी संख्या जो छोटी अथवा अधिक संख्याओं से बिना शेष के विभाजित हो सके।

लघुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'लघुता'।

लघुदंती, लघुदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी दंती

लघुदुंदुभी, लघुदुन्दुभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की छोटी दुंदुभी। डुग्गी।

लघुद्राक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किशमिश मेवा।

लघुद्रावी [वि.] (सं.) सहज में पिघलने वाला।

लघुनामकर्म [संज्ञा पु.](सं.) जैनमतानुसार वह कर्म जिससे जीव का शरीर न तो बहुत भारी होता है और न बहुत हलका होता है।

लघुनामा [संज्ञा पु.] (हिं.) अगर नामक सुगंधित लकड़ी।

लघुपंचक, लघुपञ्चक [संज्ञा पु.](सं.) पाँच जड़ों का समूह (शालिपर्णी, पिठवन, कटाई, छोटी, कटेहरी, और गोखरू)।

लघुपंचमूल, लघुपञ्चमूल [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'लघुपंचक'।

लघुपत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-कमीला। २-वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय लिखा हो।

लघुपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वत्थवृक्ष।

लघुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मरोड़फली। २-सतावर।

लघुपाक [संज्ञा पु.] (सं.) सहज में पचने वाला खाद्यपदार्थ।

लघुपाकी [संज्ञा पु.] (सं.) चेना नामक अन्न।

लघुपाती [संज्ञा पु.] (सं.) कौवा।

लघुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) भुईंकदंब।

लघुपुष्पा [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णकेतकी।

लघुप्रयत्न [संज्ञा पु.] (सं.) आलसी।

लघुफल [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर।

लघुबदर [संज्ञा पु.] (सं.) छोटा बेर।

लघुभव [संज्ञा पु.] (सं.) निकृष्ट जन्म।

लघुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) सहज में होने वाला काम।

लघुभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) हलका खाना।

लघुमंथ, लघुमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी गनियारी।

लघुमति [वि.] (सं.) कम समझ। मूर्ख।

लघुमांस [संज्ञा पु.] (सं.) तीतरपक्षी।

लघुमांसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी जटामांसी।

लघुमान [संज्ञा पु.] (सं.) नायिका का वह मान

या अल्परोष जो नायक को किसी अन्य स्त्री के साथ बात करते देखकर उत्पन्न होता है।

लघुराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी संख्या।

लघुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-करेले की बेल। २-अनन्तमूल।

लघुलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-खस। उशीर। २-लामज नामक घास।

लघुलोणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोनी का साग।

लघुवासस् [वि.] (सं.) हलका पतला वस्त्र पहनने वाला।

लघुवृत्ति [वि.] (सं.) छोटा काम करने वाला।

लघुवेधी [वि.] (सं.) शीघ्र वेधने वाला।

लघुसमुत्थ (राजा) [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजा या राज्य जो युद्ध के लिए जल्दी तैयार किया जा सके।

लघुशंका, लघुशङ्का [संज्ञा पु.] (सं.) पेशाव करना।

लघुशंख, लघुशङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) घोंघा।

लघुशिखर [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक प्रकार का ताल।

लघुशीत [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़ा।

लघुसत्व [वि.] (सं.) क्षुद्र प्रकृति का।

लघुसार [वि.] (सं.) जिसमें थोड़ा सार हो।

लघुस्थानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंचलता।

लघुहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) कुशल तीरन्दाज।

लघुहस्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल्दी से बाण फेंकना।

लघुहृदय [वि.] (सं.) चंचल चित्तवाला।

लघूकरण [संज्ञा पु.] (सं.) काटना। छाँटना।

लघूक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संक्षिप्त रूप से कहने का ढंग।

लध्वानंद, लध्वानन्द [वि.] (सं.) कम आनंद का।

लघ्वाशी [वि.] (सं.) कम खाने वाला।

लघ्वाहार [संज्ञा पु.] (सं.) हलका भोजन।

लची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नजाकत से भरी औरत कोमलांगी स्त्री। २-छोटी गाड़ी। ३-असबरग। ४-बेर नामक फल।

लच [संज्ञा पु.] (हिं.) लचकने की क्रिया या भाव लचक।

लचक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लचकने की क्रिया या भाव। २-वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु दबती या झुकती हो। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की नाव।

लचकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दबने पर बीच से झुकना। लचना। २-स्त्रियों का कोमलता या नखरे के कारण चलते समय रह रहकर झुकना

लचकनि॥ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लचीलापन। २-लचक।

लचका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गोटा।

लचकाना [क्रि. स.] (हिं.) लचने में प्रवृत्त करना। झुकाना।

लचकीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. लचकीली] लचकने योग्य। लचकदार।

लचकौहाँ॥ [वि.] (हिं.) देखो 'लचीला'।

लचन, लचनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लचक'

लचना [क्रि. अ.] (हिं.) लचकाना। झुकाना।

लचलचा [वि.] (हिं.) लचीला। लचकने वाला।

लचलचापन [संज्ञा पु.] (हिं.) लचीले होने का भाव। लचीलापन।

लचकेदार [वि.] (हिं.) मजेदार। बढ़िया।

लचाना [क्रि. स.] (हिं.) लचकाना। झुकाना।

लचार॥+ [वि.] (हिं.) देखो 'लाचार'।

लचारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लाचारी'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-भेंट। नजर। २-एक प्रकार का गीत। ३-एक प्रकार का आम का अचार।

लचाव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लचक'।

लचीला [वि.] (हिं.) (स्त्री. लचीली) १-लचकदार। २-जिसमें सहज में परिवर्त्तन, उतार, चढ़ाव या कमीबेशी हो सकती हो।

लचीलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) लचीला होने का भाव।

लचुई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मैदे की पतली और मुलायम पूरी।

लच्छ॥ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहाना। मिस। व्याज। २-ताक। निशाना। ३-एक लाख की संख्या। [संज्ञा स्त्री.] लक्ष्मी।

लच्छण [संज्ञा पु.] (डिं.) स्वभाव। ॥[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लक्षण'।

लच्छन॥ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लक्षण'। २-देखो 'लक्ष्मण'।

लच्छना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लक्षणा'। ॥[क्रि. स.] भली प्रकार देखना। लखना।

लच्छमण [वि.] (डिं.) धनी। अमीर।

लच्छमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लक्ष्मी'।

लच्छा [संज्ञा पु.] (हिं.) (स्त्री. लच्छी) १-गुच्छे के रूप में गुथे हुए सूत या तार। २-सूत की तरह के लम्बे और पतले कटे हुए टुकड़े। ३-हाथ या पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४-एक प्रकार का घटिया केसर। ५-एक प्रकार की मिठाई।

लच्छागृह॥ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लाक्षागृह'।

लच्छासाख [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक संकर-रागिनी।

लच्छि॥ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लक्ष्मी। [संज्ञा पु.] एक लाख की संख्या।

लच्छित॥ [वि.] (हिं.) १-देखा हुआ। २-निशान लगा हुआ। चिह्नित। अंकित।

लच्छिनाथ [संज्ञा पु.] (डिं.) लक्ष्मी के पति, विष्णु।

लच्छिनिवास॥ [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्णु।

लच्छी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'लक्ष्मी'। २-सूत, रेशम, ऊन आदि की गुच्छी। अट्टी। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का घोड़ा।

लच्छेदार [वि.] (हिं.) १-(खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे पड़े हों। लच्छों वाला। २-चिकनी-चुपड़ी और मजेदार (बात)।

लछन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लक्षण'। २-देखो 'लक्ष्मण'।

लछना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लखना'।

लछमन [संज्ञा पु.] (हिं.) लक्ष्मण। [संज्ञा पु.] देखो 'लक्ष्मणा' (४)।

लछमनझूला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बदरीनारायण के मार्ग पर एक स्थान। २-एक प्रकार का पुल जो रस्सों या तारों के सहारे बीच में झूले की तरह नीचे लटकता है। ३-एक प्रकार की बेल।

लछमना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लक्ष्मण।

लछमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लक्ष्मी।

लछारा॥ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लंबा'।

लज॥ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाज। शर्म। हया।

लजना [क्रि. अ.] (हिं.) लजाना। लज्जित होना।

लजनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लजालू का पौधा।

लजवाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को लज्जित करना।

लजाधुर+ [वि.] (हिं.) जो बहुत लज्जा करे शर्मीला। [संज्ञा पु.] (हिं.) लजालू नाम पौधा।

लजाना [क्रि. अ.] (हिं.) लज्जित होना। शरमिंदा होना। [क्रि. स.] लज्जित करना।

लजारू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लजालू का पौधा।

लजालू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से कुछ सिकुड़ या मुरझा-सी जाती हैं।

लजावन [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लजवाना'।

लजियाना॥ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लजाना'। [क्रि. स.] देखो 'लजवाना'।

लजीज [वि.] (अ.) स्वादिष्ट (खाद्यपदार्थ)।

लजीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. लजीली] जिसमें लाज हो। लज्जाशील।

लजुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कूएँ से पानी निकालने की रस्सी।

लजोर॥ [वि.] (हिं.) लज्जाशील। जिसमें लज्जा हो।

लजोहा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. लजोही] लजीला। शर्मीला।

लजौहाँ+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. लजौंही] लज्जाशील।

लज्जका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनकपास।

लज्ज़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) स्वाद। मजा।

लज्ज़तदार [वि.] (अ., फा.) स्वादिष्ट। जायकेदार

लज्जरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) लजालू नामक लता ।

लज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अंतःकरण की वह अवस्था जिसमें स्वभावतः या संकोच आदि के कारण दूसरों के सामने सिर उठाने या बोलने नहीं देता । शर्म । हया । २-मानमर्य्यादा । इज्जत । (*किसी बात की*) *लज्जा करना*-मर्यादा या इज्जत का विचार करना ।

लज्जाकर [वि.] (सं.) लज्जा उत्पन्न करने वाला

लज्जान्वित [वि.] (सं.) लजीला । लज्जाशील ।

लज्जाप्रद [वि.] (सं.) जिससे लज्जा उत्पन्न हो ।

लज्जाप्राया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुग्धानायिका के चार भेदों में से एक ।

लज्जालु [वि.] (सं.) लजीला । शर्मीला । [संज्ञा पु.] लजालू या लज्जावंती का पौदा ।

लज्जावंत, लज्जावन्त [वि.] (सं.) लजीला । शर्मीला । [संज्ञा पु.] लजालू का पौधा ।

लज्जावती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] शर्मीली । लजीली । [संज्ञा स्त्री.] लजालू का पौधा ।

लज्जावान् [वि.] (सं.) [स्त्री लज्जावती] लज्जाशील । शर्मदार ।

लज्जाशील [वि.] (सं.) जिसे स्वभावतः जल्दी लाज लगती हो ।

लज्जाशून्य [वि.] (सं.) जिसे लाज शर्म न हो । बेहया ।

लज्जाहीन [वि.] (सं.) बेहया । बेशर्म ।

लज्जित [वि.] (सं.) लज्जा से वशीभूत । शर्माया हुआ ।

लटंग [संज्ञा पु.] (देश.) बरमा में होने वाला एक प्रकार का बांस ।

लट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके । अलक । केशलता । २-एक में उलझे हुए वालों का लच्छा । ३-आसाम की ओर होने वाला एक प्रकार का बेंत । ४-सूत जैसे वे महीन कीड़े जो मनुष्य की आंतों में पड़ जाते हैं और मल के साथ निकलते हैं । ५-लपट । लौ । अग्निशिखा । *लट छिटकाना*-सिर के वालों को खोलकर इधर-उधर छितराना । *लट पड़ना*-वालों का परस्पर उलझ जाना

लटक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लटकने की क्रिया या या भाव । २-अङ्गों की कोमल, लचीली और मनोहर चेष्टा । अङ्गभंगी । ३ ढालुवाँ जमीन ।

लटकन [संज्ञा पु.] (हिं) १-लटकने की क्रिया या भाव । २-लुभावनी चाल । ३-लटकने वाली वस्तु । ४-एक गहना जो नाक में पहना जाता है । ५-कलगी या सिरपेंच में लगे रत्नों का एक गुच्छा । ६-मालखम्भ की एक कसरत । ७-एक प्रकार की वनस्पति के दाने जिनसे बढ़ियाँ और सुगन्धित वसन्ती अथवा गेरुआ रङ्ग निकलता है । ८-इन दानों को उबालकर निकाला हुआ रङ्ग ।

लटकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ऊपर टिके रहने पर भी कुछ अंश का नीचे की ओर कुछ दूर तक बिना आधार के अधर में झुका रहना । झूलना । २-खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना । ३-काम का कुछ समय तक अधूरा पड़ा रहना ।

लटकवाना [क्रि. स.](हिं.) लटकाने का काम दूसरे से कराना ।

लटकहर [संज्ञा पु.] (देश.) तेली ।

लटका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ढंग । ढब । २-बनावटी । कोमल चेष्टा तथा बातचीत । हावभाव ३-उपचार आदि की छोटी और सहज युक्ति । टोटका । ४-कोई शब्द अथवा वाक्य जिसके बार-बार प्रयोग का किसी को अभ्यास पड़ गया हो । ५-एक प्रकार का चलता गाना ।

लटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी ऊँचे स्थान से टिकाकर शेष भाग नीचे तक इस प्रकार ले जाना कि ऊपर का छोर किसी आधार पर टिका हो और नीचे का निराधार हो । २-किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकाना कि टके या अड़े हुए छोर के अतिरिक्त और सब भाग अधर में हों । टांगना । ३-किसी खड़ी वस्तु को किसी ओर झुकाना । लचकाना । ४-किसी का कोई काम पूरा न करके उसे दुविधा में डालना । आसरे में रखना । ५-देर करना ।

लटकीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. लटकीली] झूमता हुआ, बल खाता हुआ । लचकदार ।

लटकू [संज्ञा पु.](देश.)एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल से रङ्ग निकाला जाता है ।

लटकौवा [वि.] (हिं.) लटकने वाला । *लटकौवा मालखम्भ*-ऊपर से लटकाई हुई मालखंभ की लकड़ी ।

लटजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चिचड़ा । अपामार्ग । २-एक जड़हन धान जो अगहन में तैयार होता है ।

लटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-थककर गिर जाना या बेकाम होना । २-दुवला । ३-दुवला और अशक्ति हो जाना । ४-ढीला या मन्द पड़ना । ५-शिथिल होना या थकजाना । ६-विकल होना । ७-लुभाना । ललचाना । ८-लिप्त या लीन होना ।

लटपट, लटपटा [वि.] (हिं.) [स्त्री. लटपटी]१-लड़खड़ाता हुआ । २-ढीलाढाला । ३-अस्तव्यस्त । ४-(शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले । टूटाफूटा । ५-थककर गिर हुआ । अशक्त । ६-जो न पानी सा तरल हो न बहुत अधिक गाढ़ा हो । मलादला हुआ । जिसमें सिलवट पड़ी हों (कपड़ा आदि) ।

लटपटान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लटपटाने की क्रिया या भाव । लड़खड़ाहट । २-मनोहर गति या चाल । लचक ।

लटपटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लड़खड़ाना । गिरपड़ना । २-स्थिर न रहना । विचलित होना । ३-लुभाना । ४-लिप्त या लीन होना । अनुरक्त होना ।

लटा+ [वि.](हिं.) [स्त्री लटी] १-लोलुप । लंपट २ लुच्चा । नीच । ३-तुच्छ । हीन । ४- बुरा । खराब ।

लटापटी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-लटपटाने की क्रिया या भाव । २-लड़ाई-झगड़ा ।

लटापोट* [वि.] (हिं.) मोहित । मुग्ध ।

लटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूत आदि का छोटा लच्छा । आँटी । लच्छी । *लटिया करना*-सूत को लपेटकर आँटी के रूप में करना ।

लटियासन [संज्ञा पु.] (हिं.) पटसन ।

लटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गप । झूठी बात । २-बुरी बात । ३-साधुनी । भक्त स्त्री । ४-वेश्या । रंडी । *लटी मारना*-गप हाँकना ।

लटुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लट्टू' ।

लटुक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लटुक नामक वृक्ष । २-इस वृक्ष का फल ।

लटुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लटूरी' ।

लटू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लट्टू' ।

लटूरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कुप्पा ।

लटूरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बालों की एक लट । अलक ।

लटोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसके फलों में लसदार गूदा होता है ।

लट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्जन । दुष्ट आदमी ।

लट्टपट्ट [वि.] (हिं.) देखो 'लथपथ' ।

लट्टू [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-गोल बट्टे के आकार का वह खिलौना जिसमें सूत लपेटकर उसे जमीन पर फेंककर नचाया जाता है । २-शीशे का वह गोला जिसमें बिजली का प्रकाश होता है । बल्ब । *(किसी पर) लट्टू होना*-१-मोहित या आसक्त होना । २-प्राप्ति के लिये व्याकुल होना ।

लट्टूदार-पगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) इस प्रकार बंधी हुई पगड़ी जिसके ऊपर गोला-सा बना हो और आगे छज्जा-सा निकला हो ।

लट्ठ [संज्ञा पु.] (हिं.) साधारण लाठी की अपेक्षा बड़ी, मोटी और मजबूत लाठी । बड़ा डंडा । *किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे लठ लिए फिरना*-किसी का बराबर विरोध करना ।

लट्ठबाज [वि.] (हिं.) लाठी चलाने या उससे लड़ने वाला । लठैत ।

लट्ठबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाठी की लड़ाई या मारपीट ।

लट्ठमलट्ठा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़ाई । झगड़ा । ऐसी लड़ाई जिसमें दोनों ओर लाठियों का प्रयोग हो ।

लट्ठमार [वि.] (हिं.) १-लट्ठ मारने वाला । लठैत । २-अप्रिय और कठोर बात ।

लट्ठर+ [वि.] (हिं.) कठोर । कर्कश ।

लट्ठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी का बड़ा बल्ला । २-एक प्रकार का कपड़ा । ३-धरन । शहतीर ।

कड़ी। लकड़ी का खंभा।

लट्ठबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जमीन की साधारण नाप जो लट्ठे से की जाय।

लट्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-एक राग।

लट्वा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-करंज विशेष। २-एक प्रकार का बाजा। ३-गौरा नामक पक्षी। ४-कुसुंभ। ५-तूलिका। ६-बालों की लट। अलक। ७-व्यभिचारिणी स्त्री।

लठ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लठिया] बड़ी लाठी। लट्ठ।

लठियल [वि.] (हिं.) लाठी चलाने वाला। लठैत

लठिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाठी।

लठैत [संज्ञा पु.] (हिं) लाठी की लड़ाई में निपुण व्यक्ति। लट्ठबाज।

लड़ंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़ाई। भिड़ंत। २-सामना। मुकाबला।

लड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक जैसी चीजों की श्रेणी या माला। २-रस्सी या डोर के कई तारों में का एक तार। ३-पंक्ति। पाँत। ४-पंक्ति में लगे फूलों या मंजरियों का छड़ी के आकार का गुच्छा। (*किसी के साथ*) *लड़ मिलाना*-मेल या मित्रता करना। (*किसी की*) *लड़ में रहना*-दल या पक्ष में रहना।

लड़इता+ [वि.] (हिं.) देखो 'लड़ैता'।

लड़कई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़कपन। बाल्यावस्था। २-नादानी। चंचलता। चपलता।

लड़कखेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बच्चों का खेल। २-सहज या सरल काम। साधारण बात।

लड़कखेलवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लड़कखेल।

लड़कपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाल्यावस्था। २-लड़कों की सी चंचलता। ३-नासमझी।

लड़कबुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बालकों की सी समझ। अपरिपक्व बुद्धि। नासमझी।

लड़का [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लड़की] १-छोटी अवस्था का मनुष्य। छोकरा। २-पुत्र। बेटा *लड़कों का खेल*-सहज या सरल काम या बात *राह बाट का लड़का*-अज्ञात बालक जो रास्ते में पड़ा पाया हो। *लड़की-लड़का*-संतान। यौ०-*लड़काबाला*-१-संतति। संतान। २-कुनबा।

लड़काई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लड़कपन। २-चंचलता। ३-नादानी।

लड़किनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लड़की'।

लड़की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटी अवस्था की (स्त्री)। बालिका। २-पुत्री। बेटी।

लड़कीवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) कन्या का पिता या कोई संरक्षक।

लड़कौरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जिसकी गोद में लड़का हो। बच्चेवाली।

लड़खड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भलीभांति चल या खड़े न रह सकने के कारण इधर-उधर झुकना या गिरना। डगमगाना। २-झोंका खाकर नीचे आना। *जीभ लड़खड़ाना*-१-मुँह से टूटे-फूटे शब्द या वाक्य निकालना। २-मुँह से रुकरुककर शब्द निकलना।

लड़खड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लड़खड़ाने की क्रिया या भाव। डगमगाहट।

लड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दूसरे को चोट या हानि पहुँचाना। भिड़ना। २-झगड़ा या तकरार करना। ३-कुश्ती या मल्लयुद्ध करना। ४-विवाद या बहस करना। ५-व्यवहार आदि में सफलता के लिए एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। ६-मेल मिलजाना। उपयुक्त उतरना। ७-मुवाफिक या अनुकूल जान पड़ना। ८-बिच्छु, भिड़ आदि का डंक मारना। ९-किसी वस्तु से संयुक्त होना। जैसे-आँख-लड़ना। १०-टकराना।

लड़बड़ा [वि.] (हिं.) १-जो न बहुत गाढ़ा हो और न पतला हो। २-नपुंसक।

लड़बड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लड़खड़ाना'।

लड़बावर [वि.] (हिं.) [लड़बावरी] १-अल्हड़। २-मूर्ख। नासमझ। ३-अनाड़ी। गँवार।

लड़बावला [वि.] (हिं.) [स्त्री. लड़बावली] १-अल्हड़। २-मूर्ख। ३-गँवार। अनाड़ी।

लड़बौरा [वि.] (हिं) [स्त्री. लड़बौरी] लड़बावला।

लड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक दूसरे से लड़ने या चोट पहुँचाने की क्रिया या भाव। भिड़न्त। युद्ध। २-मल्लयुद्ध। कुश्ती। ३-सेनाओं का परस्पर घात-प्रतिघात। युद्ध। जंग। ४-वाग्युद्ध। झगड़ा। तकरार। ५-बहस। वादविवाद। ६-टक्कर। ७-व्यवहार में सफलता के लिए एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। ८-अनबन। बैर। विरोध। *लड़ाई का मैदान*-रणक्षेत्र। युद्धभूमि। *लड़ाई पर जाना*-सैनिक के रूप में रणक्षेत्र में जाना।

लड़ाका [वि.] (हिं.) [स्त्री. लड़ाकी] १-योद्धा। सिपाही। २-झगड़ालू।

लड़ाकू [वि.](हि.) १-युद्ध में काम आने वाला। २-देखो 'लड़ाका'।

लड़ाना [क्रि. स.](हिं.) १-लड़ने में प्रवृत्त करना। २-झगड़े या कलह के लिए उद्यत करना। ३-टक्कर खिलाना। भिड़ाना। ४-लक्ष्य पर पहुँचना। ५-परस्पर उलझाना। ६-सफलता प्राप्त करने के लिए व्यवहार में लाना। ७-लाड़-प्यार या दुलार करना। प्रेम से पुचकारना।

लड़ायता+ [वि.] (हिं.) देखो 'लड़ैता'।

लड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लड़'।

लड़ीला* [वि.] (हिं.) देखो 'लाड़ला'।

लड़ुआ, लड़ुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) मोदक। लड्डू।

लड़ैता [वि.] (हिं.) [स्त्री. लड़ैती] १-लाड़ला। दुलारा। २-जो लाड़-प्यार के कारण बहुत बिगड़ गया हो। धृष्ट। शोख। ३-प्रिय। प्यारा। ४-लड़ने वाला। वीर। योद्धा।

लड्डू [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रसिद्ध गोल बँधी हुई मिठाई। मोदक। *लड्डू खिलाना*-दावत करना। *लड्डू मिलना*-भारी लाभ होना। *लड्डू बँटना*-लाभ या प्राप्ति होना। *ठग के लड्डू खाना*-धोखे में आकर नासमझी करना। *मन के लड्डू खाना या फोड़ना*-किसी बड़े सुख अथवा लाभ की व्यर्थ या निराधार कल्पना या आशा करना।

लड्याना* [क्रि. स.] (हिं) लाड़ प्यार करना। दुलार करना।

लढ़ंत [संज्ञा पु.] (हिं) कुश्ती का एक पेंच।

लढ़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बैलगाड़ी।

लढ़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बैलगाड़ी।

लत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुरी आदत। कुटैव

लतखोर [वि.] (हिं)[स्त्री लतखोरिन] १-प्राय लात खाने वाला या दुर्दशा भोगने वाला। २-नीच। कमीना।

लतखोरा [वि] (हिं) [स्त्री. लतखोरिन] देखो 'लतखोर'। [संज्ञा पु.] पैर पोंछने का बिछावन। पायँदाज।

लतड़ी [संज्ञा स्त्री] (देश.) केसारी नामक अन्न

लतपत [वि] (हिं.) देखो 'लथपथ'।

लतमर्दन [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-पैरों से रौंदने की क्रिया या भाव। २-लातों की मार। पदाघात।

लतर [संज्ञा स्त्री.] (हिं) बेल। वल्ली।

लतरा [संज्ञा पु](देश.) एक प्रकार का मोटा अ

लतरी [संज्ञा स्त्री] (देश) एक प्रकार की घास या पौधा जिसके चिपटी फलियाँ आती हैं। [संज्ञा स्त्री](हिं.) एक प्रकार की हलकी जूती

लतहा+ [वि] (हिं) [स्त्री लतही] लात मारने वाला (पशु)।

लतांगी, लताङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ासींगी

लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह पौधा जो या तो जमीन पर फैलता है या किसी आधार पर चढ़ता है। २-प्रियंगु। ३-कोमलकांड या शाखा। ४-स्पृक्का। ५-अशनपर्णी। ६-माधवी। ७-ज्योतिष्मती। ८-दूब। ९-कैवर्त्तिका। १०-सारिवा। ११ जाती पुष्प का पौधा १२-सुन्दर स्त्री।

लताकरंज, लताकरञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) कंट करंज।

लताकर [संज्ञा पु.] (सं.) नाचने में हाथ हिलाने का एक ढंग।

लताकस्तूरिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) दक्षिण-भारत में होने वाला एक पौधा।

लताकुंज, लताकुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) लताओं से छाया हुआ स्थान।

लतागण [संज्ञा पु.] (सं.) सूत या डोरी के रूप में फलने वाले पौधों का वर्ग।

लतागृह [संज्ञा पु.] (सं.) लताओं से घिरा और घर के रूप में बना हुआ स्थान।

लताजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

लताड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लताड़ने की क्रिया या भाव। २-देखो 'लथाड़'।

लताड़ना [क्रि. स.] (हिं.) पैरों से कुचलना या रौंदना। २-लातों से मारना। ३-तंग करना।

लतातरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारंगी का पेड़। २-ताड़वृक्ष। ३-शाल या साखूवृक्ष।

लताताल [संज्ञा पु.] (सं.) हिंतालवृक्ष।

लतानन [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य में हाथ हिलाने का एक ढंग।

लतापता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पेड़-पत्ते। २-पौधों की हरियाली। ३-जड़ीबूटी। ४-रद्दी चीजें।

लतापनस [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

लतापर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

लतापर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौंफ। २-तालमूला।

लतापाश [संज्ञा पु.] (सं.) लतासमूह। लताजाल

लताप्रतान [संज्ञा पु.] (सं.) लता या बेल का सूत

लताफल [संज्ञा पु.] (सं.) परवल।

लताभवन [संज्ञा पु.] (सं.) लतागृह।

लतामंडप, लतामण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) लताओं से बना मंडप या घर।

लतामंडल, लतामण्डल [संज्ञा पु.](सं.) लताओं से घिराहुआ स्थान।

लतामणि [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवाल। मूँगा।

लतामरुत् [संज्ञा पु.] (सं.) पृक्का।

लतामृग [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दर।

लतायष्ठि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मजीठ।

लतायावक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवाल। मूँगा।

लतारसन [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

लतार्क [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज का पौधा।

लतालक [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

लतालय [संज्ञा पु.] (सं.) लतागृह।

लतावलय [संज्ञा पु.] (सं.) लतागृह।

लतावृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सलई का पेड़।

लतावेष्ट [संज्ञा पु] (सं.) १-कामशास्त्र के अनुसार सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक। २-एक पवत का नाम।

लतावेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आलिंगन।

लताशंख [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

लतासाधन [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र की एक साधना

लतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी लता।

लतियर, लतियल [वि.] (हिं.) देखो 'लतखोर'।

लतियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पैरों से दबाना। २-पदाघात करना। लातें मारना।

लतिहर, लतिहल [वि.] (हिं.) लतखोर।

लतीफ़ [वि.] (अ.) १-स्वादिष्ट। मजेदार। २-बढ़िया। मनोहर।

लतीफ़ा [संज्ञा पु.] (अ.) १-चुटकुला। २-हँसी की बात। ३-चमत्कारपूर्ण बात।

लत्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़ा। २-कपड़े का टुकड़ा। ३-फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा। यो०-*कपड़ालत्ता*-पहनने का वस्त्र। *लत्तेलेना*-आड़ों हाथों लेना।

लत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोधा। गोह।

लत्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पशुओं का पदप्रहार या लात। २-लात मारने की क्रिया। ३-कपड़े की लम्बी धज्जी। ४-कबूतरबाजों के बाँस में लगी कपड़े की धज्जी, जिससे वे कबूतर उड़ाते हैं। ५-पतंग की दुम। पुछल्ला।

लथपथ [वि.] (हिं.) १-भीगा हुआ। तर। २-जो कीचड़ आदि लगने के कारण भारी हो गया हो।

लथाड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जमीन पर घसीटने की क्रिया। २-झिड़की। ३-पराजय। ४-हानि *लथाड़ खाना*-१-पछाड़ खाना। २-झिड़की या घुड़की सुनना। *लथाड़ पड़ना*-डाँटा या झिड़का जाना। *लथाड़ मे पड़ना*-कठिन स्थिति में पड़ना।

लथाड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'लथेड़ना'। २-देखो 'लताड़ना'।

लथेड़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-कीचड़ आदि से लपेटना। २-धूल, मिट्टी लगाकर गन्दा या मैला करना। ३-जमीन पर पटककर घसीटना। ४-तंग करना। ५-डाँटना। डपटना।

लदन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लदाव।

लदना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बोझ या भार ऊपर लेना। २-आच्छादित या पूर्ण होना। ३-बोझ से भर जाना या भरा जाना। ४-किसी भारी वस्तु का अन्य किसी वस्तु पर होना या रखाजाना। ५-सामान ढोने वाले वाहन पर वस्तुओं का रखा जाना। ६-परलोक सिधारना। मर जाना। ७-कैद होना।

लदलद [क्रि. वि.] (हिं.) किसी गीली वस्तु के गिरने का अनुकरण।

लदवाना [क्रि. स.] (हिं.) लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाऊ* [वि.] (हिं.) जो लादने को हो। [संज्ञा पु.] लदाव। भराव।

लदान [संज्ञा पु.] (सं.) लादने का सा सामान।

लदाना [क्रि. स.](हिं.) लादने का काम दूसरे से कराना।

लदाफँदा [वि.] (हिं.) बोझ से भरा या लदा-हुआ।

लदाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लादने की क्रिया या भाव। २-भार। बोझ। ३-छत का एक प्रकार का पटाव जिसमें बिना धरन के ईंटों की जड़ाई होती है।

लदुवा, लद्दू [वि.] (हिं.) बोझ ढोने वाला।

लद्धड़ [वि.] (हिं.) मोटा होने के कारण सुस्त। काहिल। आलसी।

लद्धड़पन [संज्ञा पु.] (सं.) काहिली। सुस्ती।

लद्धना* [क्रि. स.](हिं.) प्राप्त करना। हासिल करना।

लनटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

लना [संज्ञा पु.] (देश.) १-वृक्ष विशेष जिससे सज्जी निकाली जाती है। २-शोरा।

लनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-पान की वाटिका की क्यारी। २-वृक्ष विशेष जिससे सज्जी निकाली जाती है। यह वृक्ष पंजाब में होता

लप [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लपलपाने की क्रिया या भाव। २-छुरी, तलवार आदि की चमक की गति। *लप से*-झट से। तुरन्त। [संज्ञा पु.] (देश.) १-सुराटी नाम की घास। २-अँजली।

लपक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लपट। लौ। ज्वाला २-चमक। कांति। ३-लपट अथवा लौ के समान निकलने की तेजी। वेग। ४-चलने का वेग। झपट।

लपकना [क्रि. अ.] (हिं.) झपटकर या तेजी से आगे बढ़ना। *लपक कर*-१-तुरन्त तेजी से जाकर। २-झट से।

लपकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सिलाई।

लपचा [संज्ञा पु.] (देश.) एक जंगली जाति का नाम जो सिक्कम के पहाड़ों में रहती है।

लपझप [वि.] (हिं.) १-चंचल। चपल। २-निरर्थक इधर-उधर की बातें करने वाला। ३-तेज। फुरतीला। *लपझप चाल*-बेढंगी पर चपल चाल

लपट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-आग की लौ। ज्वाला। २-गरम हवा का झोंका। ३-किसी प्रकार की गंध से भरा हुआ हवा का झोंका। +४-देखो 'लिपट'।

लपटना+ [क्रि. अ.](हिं.) १-लिपटना। चिमटना २-सटना। लग जाना। ३-फंसना। उलझना ४-लगा रहना। रत रहना।

लपटा [संज्ञा पु.](हिं.) १-गाढ़ी गीली वस्तु। २-लपसी। ३-कढ़ी। ४-थोड़ा-बहुत सम्बन्ध या लगाव।

लपटाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-लिपटाना। चिपटाना। २-गले लगाना। ३-लपेटना। ४-घेरना। परिवेष्ठित करना। [क्रि. अ.] १-संलग्न। सटना। २-उलझना। फंसना

लपटौआँ [वि.] (हिं.) १-लिपटने या चिपटने वाला। २-सटाहुआ।

लपन [संज्ञा पु.](सं.) १-मुख। मुंह। २-भाषण। कथन।

लपना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-झोंक के साथ

उधर लचना। २-झुकना। ३-लपकना। लल-चना।

लपलपाना [क्रि अ.] (हिं.) १-बेंत, छड़ी आदि का एक ओर से हिलाये जाने पर इधर उधर झुकना। लचना। लपना। २-छुरी, तलवार आदि का चमकना। [क्रि. स.] (हिं.) १-बेंत छड़ी आदि को एक छोर से पकड़ कर इधर-उधर झुकाना। लपाना। २-लम्बी नरम वस्तु को इधर-उधर हिलाना-डुलाना। ३-छुरी तलवार आदि को निकालकर चमकाना।

लपलपाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लपलपाने की क्रिया या भाव। २-चमक। झलक।

लपसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का पतला हलुआ। २-गीली गाढ़ी वस्तु।

लपहा [संज्ञा पु.] (देश) पान का एक रोग।

लपाना [क्रि. स.] (हिं) १-लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना। २-नरम और लम्बी वस्तु को डुलाना। ३-आगे बढ़ाना।

लपित [वि.] (सं.) कहाहुआ। कथित।

लपिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शर्ङ्गिका नामक पक्षी की एक जाति।

लपेट [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-लपेटने की क्रिया या भाव। २-लपेटकर डाला हुआ घुमाव या फेरा। बल। ऐंठन। ३-घेरा। परिधि। ४-उलझन। ५-बँधी हुई गठरी में कपड़े की तह की मोड़।

लपेटन [संज्ञा स्त्री.] हिं.) १-लपेटने की क्रिया या भाव। लपेट। २-वल। फेरा। ३-ऐंठन। मरोड़। ४-उलझन। फँसाव। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लपेटने वाली वस्तु। २-किसी वस्तु के चारों ओर घुमाकर बाँधने की वस्तु। ३-बाँधने का कपड़ा। बेठन। वेष्ठन। ४-पैरों में उलझने वाली वस्तु। ५-जुलाहों का कपड़ा लपेटने का बेलन।

लपेटना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी सूत, डोरी या कपड़े आदि का किसी वस्तु को अन्य वस्तु के चारों ओर घुमाकर बांधना। ७-किसी वस्तु के चारों ओर लेजाकर घेरना। परिवेष्ठित करना। ३-फैली हुई वस्तु को अच्छे या गट्ठर के रूप में करना। ४-कपड़े आदि के अन्दर बांधना। ५-किसी वस्तु से आवृत करना। ६-उलझन या झंझट आदि में किसी के साथ सम्मिलित करना। ७-गीली गाढ़ी वस्तु पोतना

लपेटनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जुलाहों की तूर।

लपेटवाँ [वि.] (हिं.) १-जिसे लपेट सकें। २-जो लपेटकर बना हो। ३-जिसमें सोने-चाँदी के तार लपेटे हों। ४-जिसका अर्थ छिपा हो। गूढ़। व्यंग्य। ५-घुमाव-फिराव का। चक्करदार।

लपेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लपेट'।

लपेत [संज्ञा पु.](सं.) बाल रोग के एक अधिष्ठाता देवता।

लप्पड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थप्पड़'।

लप्पा [संज्ञा पु.](हिं.) १-छत की धरन में लगाई हुई लकड़ी। २-एक प्रकार का गोटा।

लप्सिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लप्सी।

लफंगा [वि.] (हिं.) १-लंपट। व्यभिचारी। २-शोहदा।

लफटंट [संज्ञा पु.] (अं. लेफटनेंट) सेना का एक छोटा अधिकारी।

लफटंटगवर्नर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी प्रांत का प्रधान शासक।

लफना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लपना'।

लफलफानि* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) लपलपाहट।

लफाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लपाना'।

लफ्ज़ [संज्ञा पु.] (अं.) १-शब्द। २-बोल।

लब [संज्ञा पु] (फा.) ओष्ठ। होठ।

लबगुर्रानिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) गहरे बैंगनी रंग के रतालू की लता जिसकी जड़ खाई जाती है

लबझना* [क्रि. अ.] (हिं) उलझना। फँसना।

लबड़धोंधों [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-व्यर्थ का गुलगपाड़ा। २-अँधेर। गड़बड़ी। ३-कुव्यवस्था। बदइन्तजामी। ४-बेईमानी की चाल। लबड़-धोंधो चलना-बेईमानी की चाल सफल होना।

लबड़ना* [क्रि. अ] (हिं.) १-झूठ बोलना। २-गप हाँकना।

लबदा [संज्ञा पु.] (हिं.) मोटा। बेडौल डंडा।

लबदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) पतली छड़ी। हलकी लाठी।

लबनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-ताड़ के पेड़ों मे बांधने की मिट्टी की लबी हांडी या मटकी। २-कड़ाह से शीरा निकालने का डौवा। डाई

लबरा [वि.] (हिं.) [स्त्री लबरी] १-झूठ बोलने वाला। २-गप हांकने वाला। गप्पी।

लबरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] झूठ बोलने वाली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लबड़ी'।

लबलबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बन्दूक के घोड़े की कमानी।

लबलहका+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. लबलहकी] १-अधीर और लालची। २-चपल। चंचल।

लबादा [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'चोगा'।

लबार+ [वि.] (हिं.) १-झूठा। २-गप्पी।

लबारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झूठ बोलने का काम। [वि.] १-झूठा। २-चुगलखोर।

लबालब [क्रि. वि.] (हिं.) ऊपर या किनारे तक भरा हुआ। छलकता हुआ।

लबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऊख का पका हुआ गाढ़ा रस। राब।

लबेद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वेद के विरुद्ध वचन। दंतकथा। २-लोकाचार की भद्दी अथवा भोंडी बात या प्रथा।

लबेदा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लबेदी] मोटा और बड़ा डंडा।

लबेदी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-छोटा डंडा। लाठी। २-जबरदस्ती।

लबेरा [संज्ञा पु.](देश.) लसोड़े का पेड़ या फल

लब्ध [वि] (सं.) १-मिलाहुआ। प्राप्त। २-उपार्जित। कमाया हुआ [संज्ञा पु.] १-गणित में भाग करने पर आया हुआ फल। २-दस प्रकार के दासों में से एक।

लब्धकाम [वि.] (सं.) जिसकी कामना सिद्ध हो गई हो। सफल मनोरथ।

लब्धकीर्ति [वि.] (सं.) १-जिसने यश पाया हो २-प्रसिद्ध। विख्यात।

लब्धचेतन [वि] (सं.) जिसने पुनः ज्ञान प्राप्त किया हो।

लब्धचेता [वि.] (हिं.) होश में आया हुआ।

लब्धजन्मा [वि.] (सं.) जिसने जन्म ग्रहण किया हो। उत्पन्न।

लब्धदास [संज्ञा पु.] (सं.) वह दास जो दूसरे से मिला हो।

लब्धधन [वि.] (सं.) धनी। अमीर।

लब्धनाम [वि.] (सं.) नामवर। प्रसिद्ध।

लब्धनाश [संज्ञा पु.] (सं.) जो पास हो उसका नाश होना या खो जाना।

लब्धप्रतिष्ठ [वि.] (सं.) जिसने प्रतिष्ठा प्राप्त की हो। प्रतिष्ठित। सम्मानित।

लब्धप्रशमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिले हुए धन का सत्पात्र को दान। २-उपार्जित धन की रक्षा।

लब्धलक्ष, लब्धलक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका निशाना ठीक बैठा हो। २-निशाना लगाने में निपुण।

लब्धवर [वि] (सं.) जिसने वर प्राप्त किया हो।

लब्धवर्ण [वि] (सं.) १-विद्वान्। पंडित। २-प्रसिद्ध। प्रख्यात।

लब्धविद्या [वि.] (सं) शिक्षित।

लब्धव्य [वि.] (सं.) प्राप्त करने योग्य।

लब्धशब्द [वि.] (सं.) प्रसिद्ध। प्रख्यात।

लब्धसिद्धि [वि.] (सं.) जो किसी कला में पूर्ण निपुणता प्राप्त कर चुका हो।

लब्धांक, लब्धाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) गणित करने पर जो अङ्क प्राप्त हो। जवाब। उत्तर।

लब्धांतर, लब्धान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो गया हो। २-वह जिसे अवसर प्राप्त हुआ हो।

लब्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विप्रलब्धा नायिका।

लब्धावकाश [वि.] (सं.) जिसने छुट्टी पाई हो।

लब्धावसर [वि.](सं.) जिसने पेन्शन पाई या प्राप्त की हो।

लब्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्राप्ति। लाभ। २-हिसाब का जवाब।

लब्धोदय [वि.] (सं.) १-उत्पन्न। २-वह जिसका

भाग्य उदय हुआ हो। सौभाग्यप्राप्त।

लभधर+ [संज्ञा पु.] (देश.) कुदाल के मुंह पर का टेढ़ा भाग।

लभन [संज्ञा पु.] (सं.) प्राप्त करना। पाना।

लभस [संज्ञा पु.](सं.) १-घोड़े के बांधने की रस्सी। पिछाड़ी। २-धन-दौलत। ३-याचक।

लभ्य [वि.] (सं.) १-पाने योग्य। जो मिल सके २-उचित। मुनासिब। ३-न्यायसंगत।

लभ्यांश [संज्ञा पु.](सं.) व्यापार या क्रय-विक्रय आदि में होने वाला आर्थिक लाभ। मुनाफा प्रौफिट।

लम [प्रत्यय] (हिं.) 'लंबा' का संक्षिप्त रूप जो प्राय: यौगिक शब्दों के आगे लगाया जाता है। जैसे-लमतड़ङ्ग।

लमई+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मधु-मक्खी।

लमक+ [संज्ञा पु.](सं.) १-उपपति। जार। २-लंपट। विलासी।

लमकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लपकना। २-उत्कंठित होना। ३-लटकना।

लमगजा [संज्ञा पु.] (देश.) इकतारा। ठठवा।

लमगिरदा [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे की दानेदार मोटी रेती।

लम-गोड़ा+ [वि.] (हिं.) लम्बी टाँगों वाला।

लमघिचा [वि.] (हिं.) जिसकी गरदन लंबी हो।

लमचा [संज्ञा पु.] (देश) बरसात में होने वाली घास।

लम-छड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बरछी। भाला। २-कबूतरबाजों की लग्गी। ३-पुरानी चाल की बन्दूक। [वि.] पतला और लम्बा।

लम-छुआ [वि.] (हिं.) देखो 'लम्बोतरा'।

लमजक [संज्ञा पु.] (हिं.) ज्वरांकुश नामक घास जिससे सुन्दर महक आती है।

लमज्जुक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लमजक'।

लमटंगा [वि.] (हिं.) लम्बी टाँगों वाला। [संज्ञा पु.] सारसपक्षी।

लमढींक, लमढींग [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का जङ्गली जानवर। [वि.] (हिं.) लम्बे आकार वाला।

लम-तड़ंग [वि.] (हिं.) [स्त्री. लम-तड़ङ्गी] बहुत लम्बा या ऊँचा।

लमधी* [संज्ञा पु.] (हिं.) समधी का दूसरा समधी।

लमाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-लम्बा करना। २-दूर तक आगे बढ़ना। [क्रि. अ.](हिं.) १-लंबा होना। २-दूर निकल जाना।

लय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक का दूसरे में समाना। विलीन होना। २-ध्यान में लीन होना। ३-अन्त में सारी सृष्टि या जगत का होने वाला विनाश। प्रलय। ४-नाश। विनाश। ५-गूढ़ अनुराग। प्रेम। ६-मिल जाना। संश्लेष। ७-स्थिरता। विश्राम। ८-मूर्छा। बेहोशी। [संज्ञा स्त्री.] १-गीत गाने का विशेष और सुन्दर ढंग। धुन। २-संगीत में स्वर और ताल का ठीक रूप में निर्वाह। *लय देखना*-ठीक लय में गाना।

लयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्राम। शांति। २-आश्रय। ३-आड़ लेना।

लर* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लड़'।

लरकई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़कपन।

लरकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लटकना। २-झुकना ३-नीचे खिसकना।

लरकिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लड़की'।

लरखरना* [क्रि. अ.] (हिं) लड़खड़ाना।

लरखरनि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।

लरखराना [क्रि. अ.] (हिं.) लड़खड़ाना।

लरजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-काँपना। २-हिलना ३-डर जाना। दहल जाना।

लरज़ा [संज्ञा पु.] (फा.) १-कँपकँपी। थरथराहट। २-भूकंप। भूचाल। ३-एक प्रकार का ज्वर।

लरझर* [वि.] (हिं.) बहुत अधिक परिमाण में। प्रचुर।

लरना* [क्रि अ.] (हिं.) लड़ना।

लरनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-लड़ाई। २-लड़ने का ढब।

लराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़ाई।

लराका* [वि.] (हिं.) देखो 'लड़ाका'।

लरिकई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़कपन। २-लड़कों का व्यवहार। ३-चपलता। चंचलता

लरिक-सलोरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़कों का खेल। खेलवाड़।

लरिका* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लरिकिनी] लड़का।

लरिकाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लड़कपन'।

लरिकिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लड़की।

लरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लड़ी'।

लर्ज [संज्ञा पु.](हिं.) सितार में का पीतल के तार का नाम।

ललांतिका, ललन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह माला या हार जो नाभि तक लटके। २-गोह

ललक [संज्ञा स्त्री.](हिं.) प्रबल अभिलाषा। गहरी चाह।

ललकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लालसा करना। ललचना। २-प्रेम या चाह से भरना।

ललकार [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-ललकारने की क्रिया या भाव। २-उच्च स्वर से युद्ध के लिए आह्वान। प्रचारण। हाँक। ३-लड़ने का बढ़ावा।

ललकारना [क्रि. स.] (हिं.) १-अपने साथ लड़ने के लिये चिल्लाकर बुलाना। २-लड़ने के लिए उकसाना या बढ़ावा देना।

ललकित* [वि.] (हिं.) गहरी चाह से भरा हुआ।

ललचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लालच करना। २-लालसा से अधीर होना। ३-मोहित होना। *जी ललचना*-मन में पाने की अभिलाषा उत्पन्न होना।

ललचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ऐसा काम करना कि दूसरे के मन में लालच उत्पन्न हो। २-किसी को कुछ दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना। ३-लुभाना। *जी या मन ललचाना*-लुभाना। *[क्रि. अ.] देखो 'ललचना'।

ललचौहाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. ललचौंही] लालच से भरा हुआ।

ललजिह्व [वि.] (सं.) १-जीभ लपलपाता हुआ। २-भयंकर। खूंखार। [संज्ञा पु.] १-कुत्ता। २-ऊँट।

ललदेया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

ललन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्यारा बालक। २-नायक या पति। ३-क्रीड़ा। ४-लड़का। ५-साल या साखू का पेड़। ६-चिरौंजी का पेड़ प्रियाल।

ललना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। कामिनी। २-जिह्वा। जीभ। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, नगण और दो सगण होते हैं। *[संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'ललन'।

ललनाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कदंब वृक्ष। २-हीवेर।

ललनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ललना। स्त्री।

लला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लली] १-प्यारा तथा दुलारा लड़का। २-लड़का। ३-नायक या पति के लिए प्यार का शब्द।

ललाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ललिमा। लाली।

ललाक [संज्ञा पु.] (सं.) लिंगेन्द्रिय। शिश्न।

ललाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक। माथा। २-भाग्य या किस्मत का लिखा। *ललाट में लिखा होना*-भाग्य या किस्मत में होना।

ललाट-पटल [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक या माथे का तल।

ललाट-फलक [संज्ञा पु.] (सं.) ललाट-पटल।

ललाट-रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपाल का लेख। भाग्यलेख।

ललाटाक्ष [संज्ञा पु] (सं.) शिव।

ललाटाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

ललाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माथे पर का टीका। तिलक। २-टीका नामक माथे का गहना।

ललाटूल [वि.] (सं.) जिसका ललाट ऊँचा हो।

ललाना* [क्रि. अ.] (हिं.) लोभ करना। ल चना।

ललाम [वि.](सं.) १-रमणीय। सुन्दर। २- रंग का। सुर्ख। ३-श्रेष्ठ। बड़ा। [संज्ञा पु.]

१-अलंकार। गहना। २-रत्न। ३-चिह्न। ४-ध्वज। ५-सींग। शृङ्ग। ६-घोड़ा। ७-घोड़े अथवा गाय के माथे पर का चिह्न। ८-घोड़े या सिंह की गरदन के बाल। अयाल। ९-प्रभाव। १०-घोड़े का गहना।

ललामक [संज्ञा पु.] (सं.) माथे पर लपेटते की माला।

ललमगु [संज्ञा पु.] (सं.) शिश्न। लिंगेन्द्रिय।

ललामी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान में पहनने का एक गहना। (हिं) १-सुन्दरता। २-लालिमा। लाली।

ललित [वि.](सं.) १-सुन्दर। मनोहर। २-अभिलषित। मनचाहा। ३-हिलता-डोलता हुआ। कपकपा। [संज्ञा पु.] १-शृङ्गाररस में सुकुमारता से अंग हिलाना। मनोहर अंगभंगी। २-एक विषम वर्णवृत्त जिसके प्रथम चरण में क्रमशः सगण, जगण, सगण एवं लघु, दूसरे चरण में नगण, सगण, जगण तथा गुरु, तीसरे में नगण, सगण, सगण और चौथे में सगण, जगण, सगण, जगण होता है। ३-एक अलंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु (बात) के स्थान पर उसका प्रतिबिंब वर्णन किया जाता है। ४-षाड़व जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है।

ललितई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'ललिताई'

ललितक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल के एक तीर्थ का नाम।

ललित-कला [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह कला जिसके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौन्दर्य की अपेक्षा होती है। जैसे-संगीत, चित्रकला आदि। फ़ाइन-आर्ट्स।

ललितकांता, ललितकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

ललितचरय [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का सुन्दर मन्दिर।

ललिततल [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक प्रकार का ताल।

ललितपद [वि.](सं.) जिसमें सुन्दर पद या शब्द हों। [संज्ञा पु.] अट्ठाईस मात्रा वाला एक छन्द। इसमें १६ और १२ पर विश्राम होता है तथा अन्त में दो गुरु रखे जाते हैं।

ललितपुराण [संज्ञा पु.](सं.) बौद्धों का 'ललित-विस्तार नामक ग्रंथ।

ललितप्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) प्यार की थपथपी।

ललित-ललित [वि.](सं.) बहुत सुन्दर।

ललितलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर नेत्र।

ललितवनिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

ललितव्यूह [संज्ञा पु.](सं.) १-बौद्धशास्त्रानुसार एक समाधि। २-एक बोधिसत्व का नाम।

ललिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रमणी। २-स्वेच्छाचारिणी स्त्री। ३-कस्तूरी। ४-दुर्गा। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण मगण, जगण और रगण होते हैं। ६ राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक। ७-एक रागिनी। ८-पुराणानुसार एक नदी का नाम

ललिताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दरता। सौंदर्य लालित्य।

ललितापंचमी, ललितापञ्चमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विनशुक्ला-पंचमी जिसमें ललिता-देवी का पूजन होता है।

ललिता षष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों के महीने की कृष्णषष्ठी या छठ। इस दिन स्त्रियाँ पुत्र-कामना से या पुत्र-हितार्थ देवी की पूजा करतीं और व्रत रखती हैं।

ललिता-सप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं) भाद्रमास के शुक्लपक्ष की सप्तमी।

ललितोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालंकार उपमेय तथा उपमान की सेवा जताने के लिये सम, समान, तुल्य, लों, इव आदि शब्दों का व्यवहार न करके ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या आदि का भाव प्रकट हो।

ललिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल रंग का बैल

लली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-'लड़की' के प्यार का शब्द। २-दुलारी लड़की। लाड़ली लड़की। ३-नायिका या प्रेयसी के लिये प्यार का शब्द प्रेमिका।

ललीतिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ।

ललौहाँ* [वि] (हिं.) [स्त्री. ललौहीं] लाली लिये हुए।

लल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लल्ली] देखो 'लला'।

लल्लो [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जीभ। जबान।

लल्लो-चप्पो, लल्लोपत्ती [पत्तो] [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी को प्रसन्न करने के लिये कही जाने वाली चिकनी-चुपड़ी बातें। ठकुरसुहाती

लल्हरा+ [संज्ञा पु.](देश.) एक पौधा या घास जो साग के रूप में काम आता है।

लवंग, लवङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौंग का वृक्ष २-इस वृक्ष की सूखी कली।

लवंग-कलिका, लवङ्ग-कलिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) लौंग।

लवंग-लता, लवङ्गलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लौंग का पेड़ या उसकी शाखा। २-राधिका की एक सखी का नाम। ३-एक प्रकार की बंगला मिठाई।

लवंगादि-चूर्ण, लवङ्गादिचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध चूर्ण जो संग्रहणी, अतिसार आदि में दिया जाता है।

लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत थोड़ी मात्रा। २-दो काष्ठा या छत्तीस निमेष का समय। ३-लवा नामक पक्षी। ४-जातीफल। ५-लवंग ६-उवरांकुश नामक तृण। ७-काटना। छेदन। ८-विनाश। ९-सुरगाय की पूँछ के बाल। १०-ऊन। बाल (पशुओं के)। ११-रामचन्द्र जी के दो पुत्रों में से एक।

लवण [संज्ञा पु.](सं.) १-नमक। २-एक असुर का नाम। इसे शत्रुघ्न ने मारा था। ३-पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक। [वि.] १-नमकीन। खारा। २-लावण्ययुक्त सलोना। सुन्दर।

लवणखानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नमक की खानि।

लवण-जल [संज्ञा पु.](सं.) १-खारा पानी। २-वह पानी जिसमें नमक मिला हो।

लवण-जलधि [संज्ञा पु.] (सं.) लवण-समुद्र।

लवणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नमक का भाव या धर्म। नमकपन। २-लावण्यता। सलोनापन।

लवणतृण [संज्ञा पु](सं) १-अमलोनी या लोनी नामक घास। लोनिया। २-कुलफा नामक साग।

लवणतोय [संज्ञा पु.] (सं.) लवणसमुद्र।

लवणत्व [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'लवणता'।

लवणत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) सैंधव, विड् और सचल इन तीन प्रकार के नमकों का समूह।

लवणधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाय के रूप में कल्पित, नमक का ढेर जिसके दान का पुराणों में बड़ा माहात्म्य है।

लवणभास्कर [संज्ञा पु.](सं) वैद्यक में एक प्रसिद्ध चूर्ण का नाम जो पेट की अपच आदि बीमारियों में दिया जाता है।

लवणमेद [संज्ञा पु.] (सं.) खारी नमक।

लवणमेह [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के मतानुसार प्रमेह रोग का एक भेद।

लवणयंत्र, लवणयन्त्र [संज्ञा पु] (सं) एक यंत्र विशेष जो दो मुँहदार बरतन को जोड़कर बनाया जाता है।

लवणवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त कुशद्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष या खंड।

लवणव्यापत् [संज्ञा स्त्री.] (सं) घोड़ों की वह गहरी पीड़ा जो अधिक नमक खाने से होती है

लवणसमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) खारे पानी का समुद्र

लवणांतक, लवणान्तक [संज्ञा पु.] (सं) १-लवणासुर को मारने वाले शत्रुघ्न। २-नीबू।

लवणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आभा। दीप्ति। २-महाज्योतिष्मतीलता। ३-चुक। ४-चंगेरी। ५-अमलोनी शाक। ६-एक नदी का नाम। लूनी

लवणाचल [संज्ञा पु.](सं.) पर्वत के रूप में कल्पित नमक का ढेर जिसके दान का महात्म्य पुराणों में लिखा है।

लवणाब्धि [संज्ञा पु.] (सं.) खारे पानी का समुद्र

लवणारज [संज्ञा पु.] (सं.) खारी नमक।

लवणार्णव [संज्ञा पु.] (सं.) खारे पानी का समुद्र

लवणालय [संज्ञा पु.] (सं.) लवणासुर की बसाई मधुपुरी जो मथुरा के नाम से प्रसिद्ध है।

लवणासुर [संज्ञा पु.] (सं.) मधु नामक दैत्य का पुत्र जो मथुरा में रहता था और जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।

लवणोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधा नमक।

लवणोत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष्मतीलता।

लवणोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पानी जिसमें मिला हो। २-खारा समुद्र।

लवणोदधि [संज्ञा पु.] (सं.) लवण समुद्र।

लवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काटना। छेदना। २-खेत की कटाई। ३-खेत काटने की मजदूरी में दिया हुआ अन्न। लौनी।

लवना* [क्रि. स.] (हिं.) पके हुए अन्न के पौधों को खेतों से काटकर एकत्र करना। [वि.] (हिं.) 'लोनी'।

लवनाई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लावण्य। सुन्दरता।

लवनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेत में अनाज की पकी फसल काटने की क्रिया। २-वह अन्न जो खेत काटने वालों को मजदूरी के रूप में दिया जाता है।

लवनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'लवनि'। २-* नवनीत। मक्खन। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीफे का पेड़ या फल।

लवर+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) अग्नि की लपट। ज्वाला

लवलासी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रेम की लगावट।

लवली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरफारेवरी नामक वृक्ष और फल जिसे खाते हैं। २-एक विषम वर्णवृत्त जिसके प्रथम चरण में १६, दूसरे में १२, तीसरे में आठ और चौथे में २० वर्ण होते हैं।

लवलीन [वि.] (हिं.) तन्मय। तल्लीन। मग्न।

लवलेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यन्त अल्प मात्रा २-जरा-सा लगाव या संसर्ग।

लवहर+ [संज्ञा पु.] (देश.) यमज बालक। जोड़वां बच्चे।

लवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अन्न का दाना जो भूनने से फूल गया हो। २-तीतर की जाति का एक पक्षी जो आकार में तीतर से बहुत छोटा होता है।

लवाई [वि.] (देश.) हाल की ब्याई हुई गाय। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-खेत की फसल की कटाई २-फसल की कटाई की मजदूरी।

लवाजमा [संज्ञा पु.] (अ.) १-बड़े आदमियों के साथ रहने वाले लोग और साज-सामान। २-आवश्यक सामग्री।

लवाजमात [संज्ञा पु.] (अ.) उपकरण। सामग्री।

लवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) गाय का बच्चा। [वि.] आवारा।

लवासी* [वि.] (हिं.) १-बकवादी। २-लंपट। बदचलन।

लशकर [संज्ञा पु.] (फा.) १-सेना। फौज। २-सेना की छावनी। ३-जहाज पर काम करने वाले आदमी।

लशकरी [वि.] (फा.) १-फौज का। सैनिक। २-जहाज पर काम करने वाला। जहाजी। ३-जहाज से संबंध रखने वाला। [संज्ञा पु.] १-सिपाही। सैनिक। २-जहाजी आदमी। ३-जहाजियों की बोली।

लशकारना [क्रि. स.] (हिं.) शिकार पकड़ने के लिए शिकारी कुत्तों को उत्साहित करना।

लशुन, लशून [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

लषण [संज्ञा पु.] (सं.) चाह।

लषन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लखन'।

लषना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लखना'।

लषित [वि.] (सं.) चाहा हुआ। अभिलषित।

लष्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिनयकर्ता। नट। २-नचैया।

लष्पन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लक्खन'।

लस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह गुण अथवा तत्व जिससे कोई वस्तु किसी से चिपकती है। लासा। २-चित्त या मन लगने की बात। आकर्षण।

लसक [संज्ञा पु.] (सं.) नाचने वाला। नचैया। नर्त्तक।

लसकर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लशकर'।

लसदार [वि.] (हिं.) जिसमें चिपकने या चिपकाने का गुण हो। लसीला।

लसना [क्रि. स.] (हिं.) चिपकाना। * [क्रि. अ.] (हिं.) १-चपकना। २-शोभित होना। फबना। ३-विद्यमान होना। विराजना।

लसनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्थिति। विद्यमानता। २-शोभित होने की क्रिया या भाव। शोभा। छटा।

लसम [वि.] (देश.) दागी। दूषित। खोटा।

लसरका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संबंध। लगाव (लखनऊ)। २-पत्थर आदि पर कोई वस्तु पीसने के लिए लगाई गई एक रगड़ (राजस्थानी)।

लसलसा [वि.] (हिं.) लसदार। चिपचिपा।

लसलसाना [क्रि अ.] (हिं.) चिपचिपा होना। लस से युक्त होना।

लसलसाहट [संज्ञा पु.] (हिं.) लसदार या चिपचिपा होने का भाव। चिपचिपाहट।

लसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केसर। २-हलदी।

लसिका [संज्ञा स्त्री.] थूक। लार।

लसित [वि.] (सं.) सुन्दर जान पड़ता हुआ। सुशोभित।

लसी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-लस। चिपचिपाहट। २-चित्त या मन लगने की बात। आकर्षण। ३-लोभ का योग। ४-संबंध। लगाव। ५-दूध और पानी मिला शरबत।

लसीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-थूक। २-मवाद। पीव। ३-शरीर के अंगों में से निकलने वाला रक्त की तरह का एक तरल पदार्थ जिसका व्यवहार चिकित्सा-विषयक कार्यों में होता है। लिम्फ।

लसीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. लसीली] १-जिसमें लस हो। लसदार। चिपचिपा। २-सुन्दर। शोभायुक्त।

लसुन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लहसुन'।

लसुनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लहसुनिया'।

लसोढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसमें बेर के समान गोल फल होते हैं। यह दवा के काम में आते हैं।

लसौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) बहेलियों का बाँस का चोंगा जिसमें बहेलिए चिड़िया फँसाने का लासा रखते हैं।

लस्टम-पस्टम [क्रि. वि.] (देश.) धीरे-धीरे। किसी तरह से। जैसे-तैसे।

लस्त [वि.](सं.) १-क्रीड़ित। २-शोभायुक्त। (हिं.) १-शिथिल। थका हुआ। २-असक्त। यौ०-लस्तपस्त-बहुत शिथिल।

लस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष का मध्यम भाग। मूठ।

लस्सी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छाछ। तक्र। मठा। २-दही घोलकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ ३-देखो 'लसी'। यौ०-कच्ची-लस्सी-अधिक पानी मिला हुआ दूध।

लहँगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्रियों का कमर के नीचे का भाग ढाँपने का घेरदार पहरावा। २-इस आकार का कपड़ा जो स्त्रियाँ साड़ी के नीचे पहनते हैं। साया। अस्तर।

लहक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लहकने की क्रिया या भाव। २-आग की लपट। ३-चमक। द्युति। ४-शोभा। छवि।

लहकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-लहराना। २-आग सुलगाना। ३-लपकना। ४-हवा का बहना। उत्कंठित होना। ललकना।

लहकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-झोंका खिलाना। २-आगे बढ़ाना। ३-लपकाना। ४-आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करना। ५-किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिए भड़काना।

लहकारना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिए भड़काना। २-उत्साह दिलाकर आगे बढ़ाना। ३-कुत्ते को उत्साहित या क्रुद्ध करके किसी के पीछे लगाना।

लहकौर, लहकौरि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह की रीति जिसमें दुलहा-दुलहिन एक दूसरे के मुख में कौर देते हैं।

लहजा [संज्ञा पु.] (अ.) १-गाने या बोलने

ढंग। स्वर। लय। २-अल्पकाल। क्षण। लहजा-भर-क्षण-भर।

लहटना+ [क्रि. अ.] (देश.) परचना।

लहटन [संज्ञा पु.] (देश.) कंजा नामक कंटीली झाड़ी।

लहनदार [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जो किसी से अपना दिया हुआ ऋण लेने का अधिकारी हो। महाजन।

लहना [क्रि. स.] (हिं.) १-प्राप्त करना। २-काटना ३-छीलना। कतरना।

लहना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उधार दिया हुआ धन या बाकी रुपया जो मिलने को हो। २-भाग्य किस्मत। *लहना चुकाना या साफ करना*-लिया हुआ कर्ज या ऋण दे देना।

लहनाबही [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बही जिसमें ऋण लेने वालों के नाम और रकमें लिखी जाती हैं, और जिसके अनुसार वसूली होती है।

लहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-प्राप्ति। २-फलभोग ३-वह औजार जिससे ठठेरे बरतन छीलते हैं

लहबर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का चोगा २-ऊँचा लम्बा झंडा। ३-एक प्रकार का तोता जिसकी गरदन बहुत लम्बी होती है।

लहमा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) निमेष। पल। क्षण।

लहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नदी आदि में ऊपर उठने वाली जल की राशि। हिलोर। तरंग। २-उमंग। जोश। ३-मन की मौज। ४-रोग या पीड़ा आदि का रह-रहकर होने वाला वेग ५-टेढ़ी तिरछी चाल या रेखा। ६-स्वर का कंप जो वायु में उत्पन्न होता है। ७-आनन्द की उमंग। ८-हवा का झोंका। ९-महक। लपट। *लहर देना या मारना*-रह-रहकर किसी प्रकार की पीड़ा उठाना। *साँप काटने की लहर*-साँप के काटे की वह अवस्था जिसमें मूर्छा के बीच-बीच में वह जाग उठता है। *लहर आना*-आनन्द आना। *लहर लेना या मारना*-आनन्द भोगना। *लहर मारना या देना*-इधर-उधर मुड़ते हुये जाना। यौ०-लहर-बहर-सब प्रकार का आनन्द और सुख।

लहरदार [वि.](हिं.) जो बल खाता हुआ गया हो

लहरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लहराना'।

लहरपटोर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रेशमी धारीदार कपड़ा।

लहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लहर। तरंग। २-मौज आनन्द। ३-नाच या गाना शुरू होने से पहले सारंगी, तबले आदि की साजों पर बजने वाली गत। एक प्रकार की घास।

लहराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हवा के झोंके से लहरों की तरह इधर-उधर हिलना-डोलना। लहरें खाना। २-बहना या हिलोर मारना। ३-सीधे न चलकर सर्प के समान इधर-उधर मुड़ते या झोंका खाते चलना। ४-उमंग या उल्लास में होना। ५-प्राप्त करने की इच्छा से अधीर होना। ६-दहकाना। भड़कना। ७-शोभित होना। लसना। [क्रि. स.] १-हवा के झोंके में लहरों के समान इधर-उधर हिलना। २-टेढ़ी चाल से चलाना या लेजाना।

लहरि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लहर'।

लहरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लहर के समान टेढ़ी-मेढ़ी गई हुई लकीरों की श्रेणी। २-एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। ३-वह कपड़ा जिसकी रँगाई टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों के रूप में हो ४-जरी के कपड़ों के किनारे पर बनी हुई बेल। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लहर'।

लहरियादार [वि.] (हिं.) जिसमें लहरिया या लहरिया की सी टेढ़ीमेढ़ी लकीरें हों।

लहरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लहर। तरंग। मौज। +[वि.] (हिं.) मनमौजी। आनन्दी।

लहल [संज्ञा पु.] (?) एक राग।

लहलह [वि.] (हिं.) १-हराभरा। लहलहाता हुआ २-हर्ष से फूला हुआ। प्रफुल्लित।

लहलहा [वि.] (हिं.) [स्त्री. लहलही] १-लहलहाता हुआ। हराभरा। २-प्रफुल्ल। ३-हृष्टपुष्ट।

लहलहाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हरियाली पत्तियों से युक्त या हराभरा होना। २-प्रफुल्लित या प्रसन्न होना। ३-सूखे पेड़ अथवा पौधे का फिर से पत्तियों से युक्त होना। पनपना।

लहलही [वि.] (हि.) [स्त्री. प्र.] देखो 'लहलहा'

लहली+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) किसी जलाशय के सूख जाने पर रहने वाली दलदल।

लहसुआ+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'लसोड़ा'।

लहसुन [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक पौधा जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती है और मसाले के काम में आती है। २-मानिक का एक दोष।

लहसुनिया [संज्ञा पु.](हिं) एक प्रकार का रत्न। यह धूमिल रंग का होता है।

लहसुनीहींग [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार की बनावटी हींग।

लहसुवा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का साग।

लहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लाह'।

लहाछेह [संज्ञा पु] (?) १-नाचने में एक प्रकार की गति। २-नाचने में फुरती और झपट।

लहाना* [क्रि. स.](हिं.) १-प्राप्त कराना। दिलाना। २-ऐसे ढंग से बात करना कि काम बन जाय

लहालह*+ [वि.] (हिं.) देखो 'लहलहा'।

लहालोट [वि.] (हिं.) १-हँसी से लोटता हुआ। २-बहुत मोहित। ३-आनन्द के मारे उछलता हुआ।

लहास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृत शरीर।

लहासन [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की काली भेड़।

लहासी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाव या जहाज बाँधन की मोटी रस्सी। २-मार्ग में निकली हुई जड़।

लहि+ [अव्य.] (हिं.) तक। पर्यन्त।

लहिला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'रहिला'।

लहु*+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'लौं'।

लहुरा+ [वि.](हिं.) [स्त्री. लहुरी] छोटा। कनिष्ठ

लहुरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] छोटी। कनिष्ठा।

लहू [संज्ञा पु.] (हिं.) रक्त। खून। रुधिर। *लहूलुहान*-खून से तरबतर होना। *लहू का प्यासा*-भारी शत्रु।

लहेर [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्राह्मण।

लहेरा [संज्ञा पु.] (देश.) छोटे आकार का एक सदाबहार वृक्ष।

लहेसना+ [क्रि. स.] (देश.) साँचे के पल्लों को गाभे पर बैठाना।

लाँक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ताजी कटी हुई फसल। २-भूसा। ३-कमर। कटि। ४-परिमाण। मिकदार।

लाँकड़ो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक देवता।

लाँग+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) धोती का वह भाग जो पीछे खोंसा जाता है। काछ।

लाँगड़ो [संज्ञा पु.] (डिं.) हनुमानजी।

लांगल, लाङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हल जिससे खेत जोता जाता है। २-चन्द्रमा का अर्द्धोन्नत शृंग। ३-शिश्न। लिंग। ४-ताड़ का पेड़। ५-एक प्रकार का फूल।

लांगलक, लाङ्गलक [संज्ञा पु.] (सं.) हल के आकार का घाव जो भगंदर रोग में गुदा में शस्त्रचिकित्सा करके किया जाता है।

लांगलकी, लाङ्गलकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियारी नामक पौधा जो जहरीला होता है।

लांगलग्रह, लाङ्गलग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) कृषक। किसान।

लांगलचक्र, लाङ्गलचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चक्र जिसकी सहायता से खेती से सम्बन्ध रखने वाले शुभाशुभ फल जाने जाते हैं।

लांगलध्वज, लाङ्गलध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

लागलाख्य, लाङ्गलाख्य [संज्ञा पु.] (सं) कलियारी पौधा।

लांगलि, लाङ्गलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलियारी नामक पौधा। २-मजीठ। ३-जलपीपल। ४-पिठवन। ५-कौंछ। केवाँच। ६-गजपीपल ७-चव्य। ८-मराठी नामक लता। ९-ऋषभक।

लांगलिक, लाङ्गलिक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का स्थावर विष।

लांगलिका, लाङ्गलिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लांगलि'।

लांगलिकी, लाङ्गलिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियारी।

लांगलिनी, लाङ्गलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियारी।

लांगली, लाङ्गली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बलराम। २-नारियल। ३-सर्प। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुराणोक्त एक नदी का नाम। २-कलियारी। ३-मजीठ। ४-पिठवन। ५-देखो 'लांगलि'।

लांगलीश, लाङ्गलीश [संज्ञा पु.] (सं.) एक शिवलिंग का नाम।

लांगलीशाक [संज्ञा पु.] (सं.) जलपीपल।

लांगलीषा, लाङ्गलीषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलका लट्ठा।

लांगुल, लाङ्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुम। पूँछ। २-लिंग।

लांगुली, लाङ्गुली [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दर। २-पिठवन। ३-ऋषभ नामक औषध। ४-पिठवन।

लांगुलीका, लाङ्गुलीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

लांगूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुम। पूँछ। २-लिंग

लांगूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केवाँच। कौंछ। २-पिठवन।

लांगूली [संज्ञा पु.] (सं.) वानर। [संज्ञा स्त्री.] १-ऋषभ नामक औषध। २-पिठवन। ३-केवाँच

लाँघ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बाधा। रुकावट।

लाँघना [क्रि. स.] (हिं.) १-इस पार से उस पार जाना। २-किसी चीज़ को उछलकर पार करना।

लाँघनी-उड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत।

लाँच [संज्ञा स्त्री.] (देश.) रिश्वत। घूस।

लाँचुल, लाञ्चुल [संज्ञा पु.] (सं.) धान्य। धान

लांछन, लाञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिह्न। निशान। २-दाग। ३-दोष। कलंक।

लांछना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लांछन'।

लांछनित* [वि.] (हिं.) देखो 'लांछित'।

लांछित, लाञ्छित [वि] (सं.) जिसे लांछन लगा हो। जिसे दोष लगा हो। कलंकित।

लाँजी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

लाँड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लंड। शिश्न।

लांतकज, लान्तकज [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक प्रकार के देवताओं का गण।

लांतव, लान्तव [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार सातवें स्वर्ग का नाम।

लांपट्य, लाम्पट्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लम्पटता। २-व्यभिचारी।

लाँबा*+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. लाँबी] देखो 'लंबा'।

लाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि। आग।

लाइक [वि.] (हिं.) देखो 'लायक'।

लाइची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इलायची'।

लाइटहाऊस् [संज्ञा पु.] (अं.) वह स्तम्भ या मीनार जिसकी शिखा पर तीव्र प्रकाश रहता है कि यह जहाजों को दुर्घटना से बचाने के लिए बनाया जाता है।

लाइन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कतार। पंक्ति। २-सतर। ३-रेखा। लकीर। ४-रेल की सड़क। ५-घरों की वह पंक्ति जिसमें सैनिक रहते हैं ६-बैरिक। लैन। ७-व्यवसाय। पेशा।

लाइनक्लियर [संज्ञा पु.] (अं.) रेलगाड़ी के ड्राइवर को दिया जाने वाला वह संकेत जो यह सूचित करने के लिए दिया जाता है कि लाइन साफ है, तुम रेलगाड़ी को आगे ले जा सकते हो।

लाइफबॉय् [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का यंत्र जो जल में नहीं डूबता, तैरता रहता है और डूबते हुए व्यक्ति के प्राण बचाने के काम आता है।

लाइफबोट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की नौका जो समुद्र में लोगों की जान बचाने के काम में आती है।

लाइब्रेरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पुस्तकालय।

लाइसेंस [संज्ञा पु.] (अं.) वह प्रमाणपत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को अधिकार प्रदान किया जाता है। अधिकारपत्र।

लाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धान का लावा। २-चुगली। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २-एक प्रकार की ऊनी चादर। ३-शराब की तलछट। यौ०-*लाई-लुतरी*-१-चुगली। २-चुगलखोर स्त्री।

लाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) लौकी। कद्दू।

लाकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लकड़ी'।

लाकिन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की एक योगिनी का नाम।

लाकुच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लकुच'।

लाकेट [संज्ञा पु.] (अं.) वह लटकन जो घड़ी की या और किसी प्रकार की पहनने की जंजीर में शोभा के लिए लगाया जाता है।

लाक्षकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता।

लाक्षण [वि.] (सं.) लक्षण-सम्बन्धी। लक्षण का

लाक्षणिक [वि.] (सं.) १-जिससे लक्षण प्रकट हो। २-लक्षण-सम्बधी। ३-लक्षण के रूप में होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह छन्द जिसमें ३२ मात्राएँ हों। २-लक्षण जानने वाला।

लाक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाख। लाह।

लाक्षागृह [संज्ञा पु.] (सं.) लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पाँडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।

लाक्षातरु [संज्ञा पु.] (सं.) पलास का पेड़।

लाक्षातैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक का एक तेल जो दाह और ज्वर का नाशक माना जाता है।

लाक्षादितल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक का एक तेल जो जीर्ण ज्वर, राजयक्ष्मा आदि रोगों को करने वाला और बलवर्द्धक माना जाता है।

लाक्षाप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) पठानीलोध।

लाक्षाप्रसादन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल लोध।

लाक्षारस [संज्ञा पु] (सं.) महावर।

लाक्षावृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलास। २-

लाक्षिक [वि.] (सं.) १-लाक्षा या लाख-सम्बन्धी। २-लाख का बना हुआ। लाखी।

लाक्ष्मण [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मण की सन्तान।

लाख [वि.] (हिं.) १-सौ-हजार। २-बहुत लाख से लीख होना-सम्पन्न से कुछ न रह जाना। लाख का घर खाक होना-भारी समृद्ध घर का नाश होना। [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार का प्रसिद्ध लाल पदार्थ पलास, पीपल आदि के वृक्षों पर कीड़े है। २-लाल रंग के वह छोटे-छोटे कीड़े उक्त पदार्थ बनाते हैं।

लाखना* [क्रि. अ.] (हिं.) बन्द करने के लिए किसी छेद पर लाख लगाया जाना। [क्रि. स.] (हिं.) लखलेना। जानलेना।

लाखपती [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लखपती'।

लाखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का का बना हुआ रंग। २-गेहूँ के पौधों में वाला एक रोग। ३-एक प्रसिद्ध हरि भक्त।

लाखागृह* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लाक्षागृह'।

लाखापती [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लखपती'।

लाखामंदिर [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'लाक्षागृह'।

ला-खिराज [वि.] (अ.) वह जमीन जिस लगान (खिराज) न देना पड़े।

ला-खिराजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह भूमि जिस पर कोई कर न देना पड़ता हो।

लाखी [वि.] (हिं.) १-लाख के रंग का। लाल। २-लाख का बना हुआ। [संज्ञा पु.] (हिं.) लाख के रंग का घोड़ा।

लाखीणा [संज्ञा पु.] (हिं.) लखपती।

लाग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सम्पर्क। लगाव। २-प्रेम। प्रीति। ३-मन की लगन। ४-उपाय। युक्ति। तरकीब। ५-स्वाँग जिसमें कोई ऐंद्रजालिक कौशल ६-प्रतिस्पर्धा। प्रतियोगिता। ७-बैर। ८-जादू। टोना। ९-टीका लगाने का १०-वह नियत धन जो मंगल कार्यों के ब्राह्मण, नाई, भाटों आदि को दिया जाता ११-धातुओं को फूँककर तैयार किया रस। १२-भस्म। १३-दैनिक भोजन १४-लगान। भू-कर। १५-एक प्रकार नृत्य।

*[क्रि. वि.] (हिं.) तक। पर्यन्त

लागडाँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शत्रुता। वैर। २-प्रतियोगिता। प्रतिस्पर्धा। ३-नृत्य की एक क्रिया।

लागत [संज्ञा स्त्री.] (हिं) वह खर्च जो किसी वस्तु के बनाने या तैयार करने का व्यय हो। कॉस्ट।

लागना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लगना'। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी की टोह में लगा रहने वाला व्यक्ति। २-शिकार करने वाला। अहेरी।

लागि* [अव्य.](हिं.) १-कारण। हेतु। २-निमित्त वास्ते। लिए। ३-से। द्वारा। *[क्रि. वि.] (हिं.) तक। पर्यन्त।

लागुडिक [वि.] (सं.) १-जिसके हाथ में लाठी हो २-पहरा देने वाला।

लागू [वि.] (हिं.) १-जो लग सकता हो या लगने योग्य हो। २-जो लगाया गया हो या लगाया जा सके।

लागे+ [अव्य.] (हिं.) वास्ते। लिए। निमित्त।

लाघरक [संज्ञा पु.] (सं.) हलीमक नामक रोग।

लाघव [संज्ञा पु.] (सं.) १-लघुता। छोटापन। २-कमी। न्यूनता। अल्पता। ३-हाथ की सफाई। तेजी। फुरती। ४-नपुंसकता। ५-निरोगता। आरोग्यता। [अव्य.] (सं) फुरती से। जल्दी से।

लाघविक [वि](सं.) १-थोड़ा। २-संक्षिप्त।

लाघवी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीघ्रता। फुरती।

लाचार [वि.](फा.) १-जिसका कुछ वश न चले। विवश। मजबूर। २-जो शारीरिक असमर्थता के कारण कुछ कर न सकता हो। असमर्थ। [क्रि. वि.](हिं.) विवश होकर। मजबूरी से।

लाचारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) विवशता। मजबूरी।

लाची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इलायची'।

लाचीदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) इलायचीदाना।

लाछन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लांछन'।

लाज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लज्जा। शर्म। हया। *लाज रखना*-प्रतिष्ठा बचाना। [संज्ञा पु.] (सं.) १-खस। २-खील धान की। ३-भीगा हुआ चावल।

लाजक [संज्ञा पु.](हिं.) धान का भुना हुआ लावा

लाजना* [क्रि. अ.](हिं.) उत्तेजित होना। शरमाना।

लाजपेया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खोई या लावा उबलने से निकलने वाला माँड़।

ला-जबाव [वि.] (फा.) अनुपम। बे-जोड़।

लाजभक्त [संज्ञा पु.] (सं.) खोई या लावा का पकाया हुआ भात।

लाजमंड, लाजमण्ड [संज्ञा पु.](सं.) लावा पकाकर निकाला हुआ माँड़।

लाजवंत [वि.](हिं.) [स्त्री. लाजवंती] जिसे लाज या शर्म हो। हयादार।

लाजवंती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) लजालू का पौधा। जिसे छुईमुई भी कहते हैं।

लाजवर्द [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रसिद्ध कीमती पत्थर।

लाजवर्दी [वि.](फा.) लाजवर्द के रंग का। हलका नीला।

ला-जवाव [वि.] (फा.) १-अनुपम। बेजोड़। २-निरुत्तर। खामोश। चुप।

लाजशक्तु [संज्ञा पु.] (सं.) खोई या लावा का सत्तू।

लाजहोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का होम जो प्राचीन काल में होता था जिसमें धान का लावा आहुति में दिया जाता था।

लाजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चावल। २-धान की खील। लावा।

लाज़िम [वि.] (अं.) १-आवश्यक। जरूरी। २-उचित। वाजिब। मुनासिब।

लाज़िमी [वि.] (हिं.) आवश्यक। जरूरी।

लाट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बहुत बड़ा ऊँचा और मोटा खम्भा। २-इस आकार की कोई इमारत या बनावट। [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी प्रांत या देश का सब से बड़ा शासक। गवर्नर २-बहुत सी वस्तुओं का वह विभाग अथवा समूह जो एक ही साथ रखा, बेचा या नीलाम किया जाय। [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्राचीन देश। २-इस देश का निवासी। ३-किसी मैदान के पानी के बहाव को रोकने के लिए बनाया हुआ बाँध। ४-एक अनुप्रास।

लाटपत्र, लाटपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) दारचीनी।

लाटरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह योजना जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठाकर, उनके भाग्य के अनुसार धन बाँटा या कोई बहुमूल्य वस्तु दी जाती है।

लाटा+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार के लड्डू जो भूने हुए महुओं और तिलों को कूटकर बनाये जाते हैं। २-भुना हुआ महुआ।

लाटानुप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) एक शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परन्तु अन्वय में हेरफेर करने से अर्थ बदल जाता है

लाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य में चार प्रकार की रचनाओं में से एक प्रकार की रचना या रीति जिसमें वैदर्भी और पांचाली दोनों ही रीतियों का कुछ-कुछ अनुसरण किया जाता है। इसमें छोटे-छोटे पद और छोटे-छोटे समास हुआ करते हैं।

लाटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह अवस्था जिसमें मुँह का थूक और होंट सूख जाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'लाटिका'।

लाठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लाट'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लाट'।

लाठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बड़ा डंडा। लकड़ी। *लाठी चलना*-लाठियों से मारपीट होना। *लाठी चलाना*-लाठी से मारपीट होना। *लाठी बाँधना*-लाठी धारण करना।

लाठी-चार्ज [संज्ञा पु.] (हिं., अं.) पुलिस आदि का भीड़ न हटने पर लोगों पर लाठियों से प्रहार करना।

लाठी-वर्षा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'लाठीचार्ज'।

लाड़, लाड [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों के साथ किया जाने वाला प्रेमपूर्ण व्यवहार।

लाड़लड़ा [संज्ञा पु.] (देश) सर्प विशेष जो प्राय: वृक्षों पर रहता है।

लाड़-लड़ैता [वि] (हिं) लाड़ला। प्यारा। दुलारा।

लाड़ला [वि](हिं) [स्त्री लाड़ली] जिससे लाड़ किया जाय। दुलारा।

लाड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लाड़ी] वर। दूल्हा।

लाडू+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-लड्डू। मोदक। २-दक्षिणी नारंगी।

लाढ़िया [संज्ञा पु.] (देश) दूकानदार से मिला हुआ दलाल।

लाढ़ियापन [संज्ञा पु.](हिं) १-धूर्तता। चालाकी २-लाढ़िया का काम।

लात [संज्ञा स्त्री.] (?) १-पैर। पद। पाँव। २-पैर से किया जाने वाला आघात या वार। पाद प्रहार। पदाघात। *लात खाना*-१-पदाघात सहना। २-मारखाना। *लात चलाना*-लात से आघात करना या मारना। *लात जाना*-दुधारू पशु का दूहते समय दूहने वाले को लात मारकर दूर हट जाना। *लात मारना*-तुच्छ समझकर त्याग देना।

लातर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुराना जूता।

लाद [[संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-लादने की क्रिया या भाव। २-पेट। ३-आँत। अँतड़ी। ४-ढेंकी के दूसरे सिरे पर रखा हुआ बोझ। *लाद निकलना*-तोंद निकलना।

यौ०-लादफाँद-लादने की क्रिया।

लादना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी के ऊपर बहुत सी वस्तुएँ रखना। २-ढोने अथवा ले जाने के लिए वस्तुओं को भरना। ३-किसी के ऊपर किसी (देन आदि का) भार का भार रखना। ४-कुश्ती में प्रतियोगी को कमर पर उठा लेना

ला-दावा [वि.] (अं.) जिसका कोई दावा न रह गया हो। जो अधिकार से वंचित रह गया हो

लादिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो किसी पर बोझ लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल ले जाता या पहुँचाता हो।

लादी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पशु पर लादी हुई गठरी या बोझ।

लाधना* [क्रि. स.] (हिं.) पाना या प्राप्त करना। हासिल करना।

लानंग [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का अँगूर।

लान [संज्ञा पु.] (अं.) हरी घास का बड़ा मैदान जिस पर गेंद आदि खेलते हैं।

लान-टेनिस [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का गेंद का खेल जो छोटे से मैदान में खेला जाता है

लानत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) धिक्कार। भर्त्सना।

लानती [संज्ञा पु.] (हिं.) सदा फटकार सुनानेवाला।

लाना [क्रि. स.] (हिं.) १–कहीं से कोई वस्तु लेकर आना। २–उपस्थित करना। सामने रखना। ३–देना या सामने रखना। ✻[क्रि. स.] १–आग लगाना। २–लगाना।

लाने✻ [अव्य.] (हिं.) १–जिसका पता न लगे या न हो। २–गुप्त। गायब।

ला-पता [वि.] (हिं.) १–जिसका पता न लगे या न हो। २–गुप्त। गायब।

ला-परवा, ला-परवाह [वि.] (अ., फा.) १–जिसे किसी प्रकार की परवाह या चिंता न हो। बेफिक्र। २–असावधान।

ला-परवाही [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा) १–बेफिक्री। लापरवाह होने का भाव। २–असावधानी।

लापसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लपसी'।

लापी [वि.] (सं.) कहने वाला।

लापु [संज्ञा पु.] (सं.) रुदन्ती।

लाचर✻ [वि.] (हिं.) देखो 'लचार'।

लाबी [संज्ञा स्त्री.] (अं) विधायिका सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा जिसमें उसके सदस्य बैठकर आपस में बातचीत करते और बाहर के लोगों से मिलते-जुलते हैं।

लाभ [संज्ञा पु.] (सं.) १–मिलना। प्राप्ति। हाथ में आना। २–उपकार। भलाई। ३–कारोबार आदि में होने वाला नफा। मुनाफा। प्रॉफिट।

लाभकारक, लाभकारी [वि] (सं) जिससे लाभ होता हो। फायदेमन्द। लाभजनक।

लाभक्षायिक [संज्ञा पु] (सं.) जैनमतानुसार वह अनन्त लाभ जो समस्त कर्मों का नाश हो जाने पर आत्मा की शुद्धता के कारण प्राप्त होता हैं

लाभजनक, लाभदायक [वि.] (सं.) जिससे लाभ हो। गुणकारी।

लाभमद [संज्ञा पु.] (सं.) वह मद जिससे मनुष्य अपने आपको लाभ वाला और दूसरे को हीनपुण्य समझे (जैन)।

लाभलिप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाभ की अभिलाषा। लोभ। लालच।

लाभलिप्सु [वि.] (सं.) लाभ की इच्छा रखने वाला। लोभी। लालची।

लाभस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली में लग्न से ग्यारहवाँ स्थान।

लाभांतराय, लभान्तराय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वह अन्तराय कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य के लाभ में विघ्न पड़ता है।

लाभांश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यापार से होनेवाले आर्थिक लाभ का वह अंश जो उस व्यापार में रुपये लगाने वाले सब हिस्सेदारों को उनके हिस्से के अनुसार मिलता है। डिविडेन्ड।

लाभालाभ [संज्ञा पु.] (सं.) लाभ और हानि। प्रॉफिट-एंड-लॉस।

लाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सेना। फौज। २–बहुत से लोगों का समूह। *लाम बाँधना*–१–चढ़ाई के लिए सेना तैयार करना। २–बहुत से लोगों को एकत्र करना। ३–बहुत सा सामान जमा करना। +[क्रि. वि.] (हिं.) फासले पर। दूर।

लामज [संज्ञा पु.] (हिं.) खस की तरह की एक घास।

लामज्जक [संज्ञा पु.] (सं.) १–लामज नामक तृण। २–खस। उशीर।

लामन✻ [संज्ञा पु.] (देश.) लहँगा।

लामय [संज्ञा पु.] (देश.) ऊसर भूमि में होनेवाली एक प्रकार की घास।

लामा [संज्ञा पु.] (तिब्बती) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य। [संज्ञा पु.] (*पेरू देश की भाषा*) घास खाने और पागुर करने वाला एक जन्तु जो ऊंट जैसा होता है। [वि.] (हिं.) देखो 'लंबा'।

लामी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लम्बा फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

लामें [क्रि. वि.] (हिं.) दूर। अन्तर पर। फासले पर।

लाय✻ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–लपट। ज्वाला। २–अग्नि। आग।

लायक [वि.] (अ.) १–उचित। ठीक। २–उपयुक्त मुनासिब। ३–सुयोग्य। गुणवान्। ४–समर्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लाजक'।

लायकी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १–लायक होने का भाव या धर्म। २–सुयोग्यता। काबिलीयत।

लायची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इलायची'।

लायन✻ [संज्ञा प.] (हिं.) बेची या रेहन रखी हुई वस्तु।

लायल [वि.] (अं.) राजभक्त।

लायलटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) राजभक्ति।

लार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–मुँह से निकलने वाला पतला लसदार थूक। २–कतार। पंक्ति। ३–लासा। लुआब। *मुख से लार टपकना*–मुँह में पानी भर आना। [क्रि. वि.] (हिं.) १–साथ। २–पीछे। *लार लगाना*–फँसाना।

लारी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह लंबी मोटरगाड़ी जिस पर बहुत से आदमियों के बैठने तथा माल लादने की जगह होती है।

लार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १–ईश्वर। २–मालिक। स्वामी। ३–जमींदार। ४–इंगलैंड के बड़े-बड़े जमींदारों और रईसों की एक उपाधि।

लार्ड-सभा [संज्ञा स्त्री.] (अं.,सं.) ब्रिटिश संसद् की वह शाखा या सभा जिसमें ताल्लुकेदारों और अमीरों के प्रतिनिधि रहते हैं। हाउस ऑफ लार्डस।

लाल [संज्ञा पु.] (हिं.) १–बेटा। पुत्र। २–छोटा और प्यारा बच्चा। ३–प्रिय व्यक्ति। ४–श्रीकृष्ण का एक नाम। ५–दुलार। लाड़। प्यार। ६–लार। ७–भूरापन लिये लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया। इसकी मादा को 'मुनियां' कहते हैं। ८–चौपायों के मुँह का एक रोग। ९–यह शब्द आजकल सोवियट् रूस, बोलशेविक और बोलशेविक-क्रांति के लिए प्रयोग में लाया जाता है। रेड्। १०–क्रांति का सूचक चिह्न। रेड्। ✻इच्छा। चाह। लालसा। [वि.] १–लहू आदि के रंग का। सुर्ख। २–जिसकी आकृति से गुस्सा मालूम होता है। बहुत अधिक क्रुद्ध। ३–(चौपड़ के खेल में वह गोटी) जो अपने निश्चित स्थान पर पहुँच गई हो और चलने के लिए चाल बाकी न हो। ४-(चौपड़ के खेल में खिलाड़ी) जिसकी सारी गोटियां बीच के घर में पहुँच गई हों। ५–(वह खिलाड़ी) जो खेल में औरों से पहले जीत गया हो। *लाल आँखें निकालना या दिखाना*–क्रोध से आँखें लाल करना। *लाल पड़ना या होना*–क्रुद्ध होना *लाल पीले होना*–क्रोध में भर जाना। *लाल हो जाना*–गुस्से में होना। *लाल होना*–१–क्रुद्ध होना। २-अत्यधिक संपत्ति पाकर सम्पन्न होना।

यौ०–*लाल अंगारा, लाल भभूका*–जो जलने आदि के कारण अंगारों के समान लाल हो गया हो। *लाल बिंब*–बहुत अधिक। [संज्ञा पु.] (फा.) मानिक या माणिक्य नामक रत्न *लाल उगलना*–मीठी और प्यारी बातें कहना।

लालअंबारी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार का पटुआ जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

लाल-अगिन [संज्ञा पु.] (हिं.) भूरे रंग का एक प्रकार का पक्षी जिसका गला नीचे की ओर सफेद होता है।

लाल-आलू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रतालू। २-अरुई।

लाल-इलायची [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बड़ी इलायची।

लालक [वि.] (सं.) प्यार करने वाला।

लाल-कच्चू [संज्ञा पु.] (हिं.) बंडा। गजकर्ण आलू।

लाल-कलमी [संज्ञा पु.](हिं.) गुल चांदनी नामक पौधा या उसका फूल।

लालकीन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नानकीन'।

लाल-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) साम्यवाद या साम्यवाद समर्थकों का क्षेत्र।

लाल-घास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गोमूत्र नामक तृण।

लालचन्दन [संज्ञा पु.](हिं.) वह चन्दन जिसके घिसने से लाल रंग का सार निकलता है।

लालच [संज्ञा पु.] (हिं.) कुछ पाने की बहुत अधिक और अनुचित इच्छा। लोभ। *लालच देना*-किसी के मन में लालच उत्पन्न करना।

लाल-चकवी [संज्ञा पु.] (डिं.) भैंसा।

लालचहा+ [वि.](हिं.) लोभी। लालची।

लालचाँच [संज्ञा पु.] (डिं.) तोता। शुक।

लालची [वि.] (हिं.) जिसे बहुत अधिक लालच हो।

लालचीता [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल फूल का चित्रक या चीता।

लालचीन [संज्ञा पु.] (हिं.) साम्यवादी चीन देश

लालचीनी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कबूतर।

लालटेन [संज्ञा स्त्री.] (अं. लन्टर्न) प्रकाश का वह आधार जिसमें तेल और बत्ती रहती है और जिसके चारों ओर गोल शीशा लगा होता है।

लालड़ी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का नगीना जो लाल रंग का होता है।

लालदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) पोस्ते का लाल रंग का दाना।

लालन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमपूर्वक बालकों को प्रसन्न करना। लाड। [संज्ञा पु] (हिं.) १-प्रिय पुत्र। २-कुमार। बालक। [क्रि. अ.] (हिं.) लाड या प्यार करना। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चिरौंजी। पियाल।

लालना* [क्रि. स.] (हिं.) लाड या दुलार करना

लालनीय [वि.](सं.) दुलार या प्यार करने योग्य

लाल-पानी [संज्ञा पु.] (हिं.) शराब। मद्य।

लालपिलका [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल रंग का एक प्रकार का कबूतर।

लालपेठा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुम्हड़ा।

लालबुझक्कड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) बातों का अटकलपच्चू और मूर्खतापूर्ण मतलब लगाने या अनुमान करने वाला।

लालबेग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का परवाला कीड़ा जो लाल रंग का होता है। २-मुसलमान भंगियों के एक कल्पित पीर का नाम।

लालबेगी [संज्ञा पु.] (हिं.) लालबेग पीर का अनुयायी। भंगी। मेहतर।

लालभरेंड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा झाड़ जिसके बीजों से तेल निकलता है।

लालमन [संज्ञा पु] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-एक प्रकार का तोता।

लालमिर्च [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'मिर्च'।

लालमी [संज्ञा पु.] तरबूज।

लालमुँहा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का लाल निनवाँ जो मुख में हो जाता है। [वि.] जिसका लाल मुँह हो।

लाल-मुरगा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पक्षी जिसका शिकार किया जाता है। २-गुलमखमली नामक पौधा। ३-मयूरशिखा।

लालमूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शलजम।

लालरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लालड़ी'।

लाललाडू [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार की नारंगी जो दक्षिण-भारत में होती है।

लालशक्कर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खाँड़।

लालस [वि.] (सं.) ललचाया हुआ। लोलुप।

लालसफरी [संज्ञा पु.] (हिं.) अमरूद।

लालसमुद्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लालसागर'।

लालसर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर और गर्दन लाल होती है।

लालसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कुछ पाने की बहुत इच्छा। उत्कट अभिलाषा। लिप्सा। २-उत्सुकता। ३-गर्भावस्था में स्त्री की अभिलाषा। दोहद। [वि.] चंचल।

लालसाग [संज्ञा पु.] (हिं.) मरसा नामक साग।

लालसागर [संज्ञा पु.] (हिं.) भारतीय महासागर का वह भाग जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है और स्वेज नहर तक फैला है।

लालसिखी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) मुर्गा। अरुणचूड़।

लालसिरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लाल सिर वाली बत्तख।

लालसी* [वि.] (हिं.) लालसा या इच्छा रखने वाला।

लालसीक [संज्ञा पु.] (सं.) गिलगिला।

लाल-सेना [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-क्रांतिकारी सेना २-बोल्शेविक सेना। ३-सोवियट रूस की (लाल झंडे वाली) सेना। रेड्आर्मी।

लाला [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक प्रकार का आदरसूचक सम्बोधन। महाशय। २-कायस्थ और बनिया जाति का वाचक शब्द। ३-बच्चों के लिये सम्बोधन। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लार। थूक। [संज्ञा पु.] (फा.) गुलेलाला। [वि.] (हिं.) लाल रंग का।

लालाप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमेह जिसमें लार-सा तार बाँधकर पेशाब आता है।

लालाभक्ष [संज्ञा पु.](सं.) पुराणोक्त एक नरक का नाम।

लालामेह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'लालाप्रमेह'।

लालायित [वि.] (सं.) [स्त्री. लालायिता] जिसे बहुत लालसा हो। लोलुप।

लालाविष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जन्तु जिसकी लार में विष हो।

लालासव [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) मकड़ी।

लालास्रव [संज्ञा पु.](सं.) १-मुँह से लार बहना २-मकड़ी।

लालास्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख से थूक या लार गिरना। २-मकड़ी का जाला।

लालिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भैंस।

लालित [वि.] (सं.) [स्त्री. लालिता] १-जिसका लालन हो। दुलारा। प्यारा। २-जो पालापोसा गया हो।

लालित्य [संज्ञा पु.](सं.) ललित का भाव। सौंदर्य सुन्दरता। मनोहरता।

लालिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाली। अरुणता। ललाई।

लाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लाल होने का भाव अरुणता। २-प्रतिष्ठा। इज्जत। ३-पिसी हुई ईंट। सुरखी। ४-आसाम की एक नदी का नाम।

लालील [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

लालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का हार जो गले में पहना जाता है।

लाले [संज्ञा पु.] (हिं.) लालसा। अभिलाषा। *किसी चीज के लाले पड़ना*-अप्राप्य वस्तु के अभाव में उसके लिये बहुत तरसना।

लाल्य [वि] (सं.) दुलार करने योग्य।

लाल्हा+ [संज्ञा पु] (हिं.) मरसा नामक साग

लाव [संज्ञा पु] (सं.) १-लावा नामक पक्षी। २-लौंग। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग। अग्नि। २-चरसा खींचने का मोटा रस्सा। ३-रस्सी।

लाव चलाना-कूएँ से चरसे की सहायता से पानी खींचकर खेत सींचना। [संज्ञा पु.](हिं.) रेहन की चीज के बदले दिया गया ऋण।

लाव उठाना-१-चीज रेहन रखकर रुपया उधार देना। २-तकावी बाँटना।

लावक [संज्ञा पु.] (सं.) लावा पक्षी। (देश.) १-चावल की वह फसल जो जाड़े में होती है। २-चरसा। ३-मोट या चरसा खींचने में बैलों के एक बार जाने और आने का काल।

लावज [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।

लावण [संज्ञा पु.](सं.) सुँघनी। [वि.] १-लवण द्वारा संस्कारित। २-नमकीन। लवण का। + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पहने हुए कपड़े का विशेषतः लहँगे का नीचे का लटकता हुआ भाग।

लावणा [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति

लावणिक [वि.](सं.) १-लवण या नमक-संबंधी। लवण का। २-लवण द्वारा संस्कारित। [संज्ञा पु.] १-नमक बेचने वाला। २-नमकदान।

लावणी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-फसल काटने और इकट्ठा करने का काम। २-देखो 'लावनी'

लावण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लवण का भाव या धर्म। २-अत्यन्त सुन्दरता। ३-स्वभाव का अच्छापन।

लावण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मीबूटी।

लावदार [वि.] (हिं.) (वह तोप) जो छोड़ी जाने

या रंजक देने के लिए तैयार हो। [संज्ञा पु.] (सं.) तोप में बत्ती लगाने वाला। तोपची।

लावनता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अत्यधिक सुन्दरता। खूबसूरती।

लावना* [क्रि. स.](हिं.) १-लाना। २-लगाना। स्पर्श करना। ३-जलाना। आग लगाना।

लावनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सौंदर्य। लावण्य। सुन्दरता।

लावनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का छन्द जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है।

ला-वबाली [संज्ञा पु.] (अ.) १-बे-फिक्र। २-वह जिससे विचार धार्मिक दृष्टि से बहुत ही स्वतंत्र और उच्छृङ्खल हों। [संज्ञा स्त्री.] १-अविचार। २-ला-परवाही। उपेक्षा। [वि.] १-आवारा। २-ला-परवाह।

लाव-लश्कर [संज्ञा पु.](फा.) वह सेना जो सदल-बल और सब प्रकार के सैनिक सामानसहित हो।

ला-वल्द [वि.] (फा.) संतान-रहित। उसके कोई लड़का-वाला न हो।

ला-वल्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) निःसंतान होने का भाव या अवस्था।

लावा [संज्ञा पु.](सं.) लावा नाम का पक्षी। (हिं.) धान, ज्वार, रामदाने आदि के दाने जो भूनने पर फूल जाते हैं। खील। लाई। (अं.) राख पत्थर और धातु आदि मिलाहुआ वह द्रव पदार्थ जो प्रायः ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से विस्फोट होने पर निकलता है।

लावानक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

लावाणक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

लावापरछन [संज्ञा पु.] (हिं.) हवन और सप्तपदी के बाद होने वाली विवाह की एक रीति जिसमें वर के आगे कन्या को खड़ा किया जाता है उसके हाथ में एक डलिया दी जाती है। कन्या का भाई उसी डलिया में धान का लावा डालता है।

ला-वारिस [संज्ञा पु.](अ.) १-वह व्यक्ति जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो। २-वह वस्तु या सम्पत्ति जिसका कोई मालिक न हो।

ला-वारिसी [वि.] (अ.) १-जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो। २-(वस्तु) जिसका कोई मालिक न हो।

लाविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लवा (पक्षी)।

लावु+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कद्दू। घिया।

लाश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) किसी प्राणी का मृत शरीर। लोथ। शव।

लाष* [संज्ञा पु.](हिं.) लाख या लाह नामक लाल द्रव्य।

लाषना*+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लखना'।

लाषुक [संज्ञा पु.] (सं.) लोभी। लालची।

लास [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक प्रकार का नाच। २-मटक। [संज्ञा पु.](सं.) जूस। रसा। शोरबा [संज्ञा पु.] (?) उस छड़ के दोनों कोने जिसे पाल बाँधने के लिए मस्तूल में लटकाते हैं।

लासक [संज्ञा पु.](सं.) १-मोर। मयूर। २-नर्त्तक। नाचने वाला। ३-मटका। घड़ा। [वि.](सं.) चमकने वाला।

लासकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाचने वाली स्त्री।

लासन [संज्ञा पु.] (अं. लैशिंग) जहाज बांधने का मोटा रस्सा।

लासा [संज्ञा पु.](हिं.) १-कोई लसदार या लसीली चीज। २-वह लसदार पदार्थ जो बहेलिये चिड़िया फँसाने के लिए उनके परों में लगाने के विचार से बनाते हैं। ३-किसी को जाल या फंदे में फँसाने का साधन। *लासा लगाना*-किसी प्रकार का लालच या धोखा देकर फँसाना। *लासा होना*-पीछा न छोड़ना।

लासानी [वि.](अ.) अनुपम। बे-जोड़। अद्वितीय

लासि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लास्य'।

लासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाचने वाली स्त्री। नर्तकी।

लासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाचने वाली स्त्री।

लासी [संज्ञा स्त्री.](देश.) गेहूँ की उपज को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो जूं जैसा होता है। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लस्सी'।

लासु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लास्य'।

लास्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नृत्य। नाच। २-शृङ्गार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करने वाला कोमल तथा स्त्रियों का सा नृत्य।

लास्यक [संज्ञा पु.] (सं.) नृत्य। नाच।

लास्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाचने वाली स्त्री।

लाह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाख। चपड़ा। [संज्ञा पु.] (हिं.) लाभ। नफा। [संज्ञा स्त्री.] (?) चमक। दीप्ति।

लाहन [संज्ञा पु.] (देश.) १-मद्य खींचने के बाद बचा हुआ महुआ। २-वह खमीर जो जूसी और महुए को मिलाकर उठाया गया हो। ३-किसी पदार्थ या प्रकार का खमीर। ४-गाय के ब्याने पर दिया जाने वाला काढ़ा। ५-अनाज ढोने की उजरत।

लाहल [संज्ञा पु.] देखो 'लाहौल'।

लाही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लाख उत्पन्न करने वाला कीड़ा। २-इसी तरह का एक कीड़ा जो माघ या फागुन में उपज को हानि पहुँचाता है ३-लावा। खील। *लाही का सत्तू*-धान की खीलों का सत्तू। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-सरसों। २-काली सरसों। ३-वह शोरा जो तीसरी बार साफ किया हो।

लाहु* [संज्ञा पु.] (हिं.) लाभ। नफा। प्राप्ति।

लाहौरी-नमक [संज्ञा पु.] (हिं.) सेंधा नमक।

लाहौल [संज्ञा पु.] (अ.) एक अरबी वाक्य का

पहला शब्द जिसका प्रयोग मुसलमान प्रायः भूत-प्रेत आदि भगाने अथवा प्रकट करने के लिए करते हैं। पद०-लाहौल वला कूव्वत इल्ला ईश्वर के सिवा और किसी में कोई नहीं। लाहौल पढ़ना-१-उपरोक्त उच्चारण करना। २-अत्यधिक करना।

लाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उल्लू नामक पक्षी।

लिंग, लिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिह्न। लक्षण। २-पुरुष की गुप्तेंद्रिय। ३-शिव की इस आकार की मूर्ति। व्याकरण के अनुसार वह तत्व जिससे और स्त्री के भेद का पता लगता है। जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो। हेतु। ६-सांख्य के मतानुसार मूल प्रकृति। ७-मीमांसा में छः लक्षण जिनके लिंग का निर्णय होता है। वह इस प्रकार है- उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, और उपपत्ति। ८-अठारह पुराणों में से एक।

लिंगक, लिङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ या का पेड़।

लिंगजोत्री, लिङ्गजोत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) विशेष प्रकार से गढ़ा हुआ शिवलिंग। ज्योतिलिंग।

लिंगदेह, लिङ्गदेह [संज्ञा पु.] (सं.)

लिंगनाश, लिङ्गनाश [संज्ञा पु.] (सं.) चान के चिह्न का नाश। अंधकार। २-आंखों का एक रोग।

लिंगपुराण, लिङ्गपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों में से एक जिसमें शिव का और लिंग की पूजा की महिमा का वर्णन है।

लिंगविपर्यय, लिङ्गविपर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) परिवर्तन।

लिंगवर्धिनी, लिङ्गवर्धिनी [संज्ञा स्त्री.] चिचड़ा। अपामार्ग।

लिंगवस्ति-रोग [संज्ञा पु.] (सं.) रोग।

लिंगवान, लिङ्गवान [संज्ञा पु.] (सं.) वाला। लक्षण वाला। २-शैव लोगों का यत नामक संप्रदाय।

लिंगवृत्ति, लिङ्गवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) बाज। आडंबरी।

लिंगवेदी, लिङ्गवेदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह जिस पर शिव की पिंडी स्थापित की जाती है।

लिंगशरीर, लिङ्गशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर।

लिंगस्थ, लिङ्गस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) (मनुस्मृति)

लिंगांकित, लिङ्गांकित [संज्ञा पु.] (सं.) यत नामक शैव संप्रदाय।

लिंगाग्र, लिङ्गाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) लिंग का अगला भाग।

लिंगानुशासन, लिङ्गानुशासन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण के वे नियम जिनके द्वारा शब्द के लिंगों का ज्ञान प्राप्त होता है।

लिंगायत, लिङ्गायत [संज्ञा पु.] (सं.) एक शैव-संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।

लिंगार्चन, लिङ्गार्चन [संज्ञा पु.] (सं.) महादेवजी की पिंडी की पूजा।

लिंगिनी, लिङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंचगुरिया नामक लता। २-वह स्त्री जो बहुत धर्मध्वजी बनती है।

लिंगी, लिङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिह्न वाला। निशान वाला। २-आडंबरी। धर्मध्वजी। ३-हाथी।

लिंगेंद्रिय, लिङ्गेन्द्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

लिंट [संज्ञा पु.] (अं.) तूतिये में रंगा मुलायम कपड़ा जो घाव पर मरहम लगाकर बाँधा जाता है।

लिंपाक, लिम्पाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का नीबू। २-खर। गदहा।

लिंफ [संज्ञा पु.] (अं.) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काम में आता है।

लिए हिंदी का एक संप्रदानकारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है।

लिकिन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जो मटमैले रंग की होती है।

लिकुच [संज्ञा पु.] (सं.) बड़हर का पेड़। लकुच।

लिक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूँ का अंडा। लीख।

लिक्खाड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) बहुत बड़ा लेखक (व्यंग्य)।

लिक्विडेटर [संज्ञा पु.] (अं.) वह अधिकारी जो किसी कम्पनी या फर्म का कारबार उठाने, उसकी ओर से मामला मुकदमा लड़ने अथवा दूसरे आवश्यक कार्य करने के लिये नियुक्त किया जाता है।

लिक्विडेशन [संज्ञा पु.] (अं.) सम्मिलित पूंजी से चलने वाली कम्पनी अथवा फर्म का कारबार बन्दकर उसकी संपत्ति से लेहनदारों का देना निपटाना और बची हुई रकम को हिस्सेदारों में बाँट देना।

लिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जूँ का अंडा। लीख २-एक सूक्ष्म परिमाण।

लिखत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लिखी हुई बात लेख। २-दस्तावेज। ३-लिखित पत्र। *लिखत-पढ़त होना*-लिखापढ़ी होना।

लिखधार* [संज्ञा पु.] (हिं.) लिखने वाला। लेखक।

लिखन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लिखावट। लिपि या लेख। २-भाग्य या कर्म की रेखा।

लिखना [क्रि. स.] (हिं.) १-कलम और स्याही से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध करना। २-चित्रित या अंकित करना। चित्र बनाना। ३-पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना। *किसी के नाम लिखना*-यह लिखना कि अमुक वस्तु किसके जिम्मे है। *लिखना-पढ़ना*-विद्योपार्जन करना। *लिखापढ़ा*-शिक्षित।

लिखनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलम।

लिखवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लिखाई'।

लिखवाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लिखाना'।

लिखवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) लिखने वाला। लेखक'।

लिखाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लिखने का कार्य या भाव। २-लिखने का ढंग। लिखावट। ३-लिखने का पारिश्रमिक। ४-लेख। लिपि। *लिखाई-पढ़ाई*-विद्योपार्जन।

लिखाना [क्रि. स.](हिं.)१-लिपिबद्ध कराना। २-दूसरे से लिखने का काम कराना। *लिखाना-पढ़ाना*-शिक्षा देना।

लिखापढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्र व्यवहार २-लिखने और पढ़ने का काम। ३-किसी बात या व्यवहार का लिखकर निश्चित और पक्का होना।

लिखावट [संज्ञा स्त्री.](हिं.)१-लिखने की क्रिया या भाव। २-लिखे हुए अक्षर आदि। ३-लिखने का ढंग। लेखप्रणाली। लेख-शैली।

लिखित [वि.] (सं.) १-लिखा हुआ। अंकित। २-जो लेख या लेख्य के रूप में हो। *डॉक्यूमेंटरी*। [संज्ञा पु.] १-लिखी हुई बात या लेख। २-लिखी हुई सनद। प्रमाणपत्र। ३-एक स्मृतिकार ऋषि।

लिखितक [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार के प्राचीन चौखूटे अक्षर जो मध्य एशिया के शिलालेखों में पाये गये हैं।

लिखेरा, लिखैया [संज्ञा पु.](हिं.) लिखने वाला लेखक।

लिख्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जूं का अंडा। लीख २-एक परिमाण।

लिगदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटी और कमजोर घोड़ी।

लिगु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन। २-मूर्ख। ३-मृग ४-भू-प्रदेश।

लिचेन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास।

लिच्छवि [संज्ञा पु.] (सं.) एक इतिहास प्रसिद्ध राजवंश जिसका राज्य किसी समय में नैपाल मगध और कौशल में था।

लिटरेचर [संज्ञा पु.] (अं.) साहित्य।

लिटरेरी [वि.] (अं.) साहित्य।

लिटाना [क्रि. स.](हिं.) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त कराना।

लिट्ट [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. लिट्टी] वह मोटी रोटी जो बिना तवे के आग पर सेंकी जाय। बाटी। अंगाकड़ी।

लिठोर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पकवान जो नमकीन होता है।

लिडारे [संज्ञा पु.] (देश.) गीदड़। [वि.] डरपोक। कायर।

लिडौरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अनाज के वे दाने जो पीटने के पीछे बाल में लगे रह जाते हैं।

लिपटना [क्रि. अ.](हिं.) १-चारों ओर से घेरते हुए सटना या लगना। २-गले लगना। आलिंगन करना। ३-काम में पूरी मेहनत से लगना। ४-चिपकना।

लिपटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-संलग्न करना। चिपटाना। २-आलिंगन करना। गले लगाना।

लिपड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) कपड़ा। [वि.] लेई-सा गीला और चिपचिपा।

लिपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लेई-सा गीला और चिपचिपा पदार्थ। २-देखो 'लिबड़ी'।

लिपना [क्रि. अ.](हिं.) १-लीपा या पोता जाना। २-रंग या गीली वस्तु का फैल जाना। यौ०-*लिपापुता*-साफ-सुथरा।

लिपवाना [क्रि. अ.] (हिं.) लीपने का काम किसी से कराना।

लिपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २-दीवार या भूमि पर घुली हुई मिट्टी आदि की तह फैलाना।

लिपाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रंग या किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना। पुताना। २-घुली हुई मिट्टी गोबर आदि का लेप कराना।

लिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अक्षर वर्णों के अंकित चिह्न। २-वर्णमाला के अक्षर लिखने की कोई प्रणाली। करेक्टर३-लिखी हुई बात। लेख।

लिपिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिखने वाला। २-कार्यालय आदि में लिखा पढ़ी का काम करने वाला। लेखक। क्लर्क।

लिपिकर [संज्ञा पु.] (सं.) लिखने वाला। लेखक।

लिपिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) लिपि। लिखावट।

लिपिकार [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक। लिखने वाला।

लिपिज्ञ [वि.] (सं.) शुद्ध और सुन्दर लिखने वाला।

लिपिन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) लेखनकला।

लिपिफलक [संज्ञा पु.](सं.) १-वह पट्टी या दस्ती जिसपर कागज रखकर लिखा जाय। २-पत्थर। तख्ती, धातुपत्र आदि जिनपर अक्षर खोदे जायँ।

लिपिबद्ध [वि.] (सं.) लिखा हुआ। लिखित।

लिपिशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहां

लिखना सिखाया जाय । पाठशाला ।

लिपिसज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लिखने की सामग्री

लिप्त [वि.] (सं.)१-लिपा या पुता हुआ । चर्चित २-कार्य में लगा हुआ । खूब तत्पर । लीन ।

लिप्तक [संज्ञा पु.] (सं.) विष का बुझा तीर ।

लिप्तहस्त [वि.] (सं.) जिसका हाथ रुधिर से लतपथ हो ।

लिप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार काल का एक मान ।

लिप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोभ । लालच । चाह । पाने की इच्छा ।

लिप्सु [संज्ञा पु.] (सं.) प्राप्ति की इच्छा वाला । लोभी । लोलुप ।

लिप्सुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाने की इच्छा ।

लिफाफा [संज्ञा पु.] (फा.) १-कागज का वह चौकोर घर या थैली जिसके भीतर चिट्ठी या कागज-पत्र रखकर भेजेजाते हैं । २-दिखावटी तड़कभड़क । आडंबर । *लिफाफा खुल जाना*-१-असली रूप प्रकट होना । २-भेद खुल जाना । *लिफाफा बदलना*-भड़कीली पोशाक पहनना।

लिफाफा बनाना-१-ठाटबाट बनाना । २-आडंबर करना ।

लिबडना [क्रि. अ.](हिं.) कीचड़ आदि में लथपथ होना । [क्रि. स.] कीचड़ आदि में लथपथ करना ।

लिबड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़ा-लत्ता ।

लिबड़ी-बरताना [संज्ञा पु.] (हिं.) साधारण या तुच्छ गृहस्थी अथवा निर्वाह का सब सामान· सारी सामग्री या असबाब । तुच्छतासूचक।

लिबरल [वि.] (अं.) उदार नीति वाला । [संज्ञा इंगलैंड का एक राजनीतिक दल जिसकी नीति अधीनस्थ देशों की व्यवस्था के सम्बन्ध में और दूसरे राज्यों के साथ व्यवहार करने में उदार कही जाती है ।

लिबास [संज्ञा पु.](अ.) पहनने के वस्त्र । पोशाक

लिबिंकर, लिबिंकर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिलिपि या लेख की नकल करनेवाला लेखक । नकलनवीस ।

लिबि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लिपि । लिखावट ।

लियाकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-योग्यता । २-सामर्थ्य ।

लिलाट* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ललाट' ।

लिलार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाल । माथा । २-कूएँ का वह सिरा जहाँ चरसे का पानी उलटते हैं ।

लिलारी+ [संज्ञा पु.](हिं.) नीलगर । रंगरेज ।

लिलाही [संज्ञा पु.] (देश.) हाथ का बटा हुआ देशी सूत ।

लिलोही+ [वि.] (हिं.) बहुत लोभी । लालची ।

लिव* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लगन ।

लिवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-लेने का काम दूसरे से कराना । २-लाने का काम दूसरे से कराना। *लिवालाना*-साथ ले आना ।

लिवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) लेने वाला । लेवाल ।

लिवैया+ [वि.] (हिं.) लेने वाला या लिवा लेजाने वाला ।

लिष्व [संज्ञा पु.] (सं.) नर्त्तक । नचैया ।

लिसोड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) एक मझोले के आकार का वृत्त जिसके बेर के बराबर के फल गुच्छे के रूप में लगते हैं ।

लिस्ट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) तालिका । फेहरिस्त ।

लिह [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाटने की क्रिया । २-चुसक-चुसककर पीना । [वि.] चाहने वाला ।

लिहाज [संज्ञा पु.] (अ.) १-व्यवहार अथवा बरताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्ण ध्यान । मुलाहिजा । २-शीलसंकोच । ३-सम्मान या मर्यादा का ध्यान । ४-लाज । शर्म । ह्या । ५-पक्षपात । तरफदारी । *लिहाज उठना या टूटना*-लिहाज न रहना ।

लिहाड़ा [वि.] (देश.) १-नीच । गिरा हुआ । २-निकम्मा । खराब ।

लिहाड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-उपहास । २-निंदा । *लिहाड़ी लेना*-१-उपहास या ठट्ठा करना । २-निंदा करना ।

लिहाफ [संज्ञा पु.] (अ.) जाड़े के दिनों में ओढ़ने का एक प्रकार का रूई भरा दोहरा कपड़ा । भारी रजाई ।

लिहित [वि.] (हिं.) चाटता हुआ ।

लीक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लकीर । रेखा । २-गहरी पड़ी हुई लकीर । ३-वह लकीर जो गाड़ी के पहिये से पड़ती है । ४-चलते-चलते बना हुआ रास्ते का निशान । ५-प्रतिष्ठा । ६-बँधी हुई मर्यादा या क्रम । लोकनियम । ७-प्रथा । चाल । ८-सीमा । हद । ६-कलंक । लांछन । *लीक करके*-इस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा करके कि ऐसा ही होगा । *लीक खींचना*%-१-किसी बात का दृढ़ और अटल होना । २-मर्यादा या साख बँधना । *लीक खींचकर*-दृढ़तापूर्वक । जोर देकर । *लीक पकड़ना*-पगडंडी पर होना ।

लीक पीटना-चली आती हुई प्रथा या रीति का ही अनुसरण करना । *लीकलीक चलना*-बंधी-हुई रीति या प्रणाली पर ही चलना ।

[संज्ञा स्त्री.] (देश.) मटियाले रंग की एक चिड़िया ।

लीख [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जूँ का अंडा । २-लिक्षा नामक एक छोटा परिमाण ।

लीग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कुछ विशिष्ट दलों का आपस में मिलना । २-बहुत बड़ी सभा या संस्था । ३-लम्बाई की एक नाप जो स्थल के लिए तीन मील की तथा समुद्र के लिए साढ़े तीन मील की होती है ।

लीगलरिमैंब्रैंसर [संज्ञा पु.](अं.) वह अधिकारी जो सरकार के कानूनी कागज-पत्र रखता है (इनका दर्जा एडवोकेट-जनरल के बाद होता है । इनका काम सरकारी मामले मुकदमे के कागज-पत्र रखना और तैयार करना है)।

लीगी [वि.] (अं.) लीग का । [संज्ञा पु.] लीग का सदस्य ।

लीचड़ [वि.] (देश.) १-सुस्त । आलसी । २-निकम्मा । ३-जल्दी पीछा न छोड़ने वाला । ४-जिसका लेनदेन ठीक न हो ।

लीची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक सदाबहार पेड़ जिसका फल मीठा होता है ।

लीझी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-मलने पर रगड़ के साथ छूटी हुई मैल की बत्ती । २-वह गूदा या रेशा जिसका रस निचोड़ लिया हो । सीठी । [वि.] १-नीरस । २-निकम्मा ।

लीडर [संज्ञा पु.] (अं.) अगुआ । मुखिया । नेता

लीडर-ऑफ-दी-हाउस [संज्ञा पु.](अं.) संसद या व्यवस्थापिका-सभा का मुखिया जो प्रधान मन्त्री या मन्त्रीमंडल का बड़ा सदस्य विशेषकर स्वराष्ट्र सदस्य होता है और जिसका काम विरोधी पक्ष को उत्तर देना तथा सरकारी कामों का समर्थन करना होता है ।

लीडरी [संज्ञा पु.] (अं, लीडर.) १-लीडर होने का भाव । २-लीडर का पद । नेतागीरी ।

लीडिंगआर्टिकल [संज्ञा पु.] (अं.) किसी समाचार पत्र में उसके सम्पादक का हुआ सम्पादकीय लेख ।

लीथो [संज्ञा पु.] (अं.) पत्थर का छापा जिसमें हाथ से लिखकर अक्षर या चित्र छापे जाते हैं

लीथोग्राफ [संज्ञा पु.](अं.) पत्थर का छापा जिस पर हाथ से लिखकर अथवा चित्र खींचकर छापा जाता है ।

लीथोग्राफर [संज्ञा पु.] (अं.) वह जो लीथोग्राफ का काम करता हो ।

लीथोग्राफी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) लीथो की छपाई में एक विशेष प्रकार के पत्थर पर हाथ से अक्षर लिखने तथा खींचने की कला ।

लीद [संज्ञा स्त्री.] (देश.) घोड़े, गधे, ऊँट, हाथी आदि पशुओं का मल । *लीद करना*-घोड़े आदि पशु का मलत्याग करना ।

लीन [वि.] (सं.) १-किसी में समाया हुआ । २-काम में पूर्णरूप से लगा हुआ । तन्मय । मग्न । ३-ध्यानमग्न आदि ।

लीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तन्मयता । २-ऐसा संकुचित होकर रहना जिसमें किसी को दुःख न पहुँचे (जैन) ।

लीनो-टाइप-मशीन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की कल जिसमें टाइप या अक्षर कम्पोज होने के समय ढलता है ।

लीपना [क्रि. स.] (हिं.) गीली वस्तु का पतला

लेप चढ़ाना। पोतना। लीप पोतकर बराबर करना-किसी काम को बिगाड़ना। लीपना पोतना-सफाई करना।

लीफलेट [संज्ञा पु.] (अं.) छोटी पुस्तक। परचा।

लीवर※ [वि.](हिं.) कीचड़ आदि से भरा अथवा सना हुआ।

लीम [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का चीड़ का वृक्ष।

लील [वि.] (हिं.) नीले रंग का। नीलवर्ण। [संज्ञा पु.] नील।

लीलकंठ+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'नीलकंठ'।

लीलक [संज्ञा पु.](हिं.) जूतों की नोंक पर लगाने का हरा चमड़ा। [वि.] नीला।

लीलगऊ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नीलगाय।

लीलगर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'नीलगर'।

लीलना [क्रि. स.](हिं.) गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।

लीलया [क्रि. वि.] (सं.) १-खेल या खिलवाड़ में। २-बहुत सहज में।

लीला [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-केवल मनोरंजन के हेतु किया जाने वाला काम या व्यापार। क्रीड़ा। खेल। २-प्रेम का खेलवाड़। प्रेम-विनोद। ३-एक मात्रिक छन्द जिसमें बारह मात्राएं होती हैं और अन्त में एक जगण होता है। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, नगण और एक गुरु होता है ५-सात, सात, सात और तीन के विराम से चौबीस मात्राओं का एक छन्द जिसके अंत में एक सगण होता है। ६-साहित्य में नायिका का एक हाव जिसमें वह प्रिय के भेस या बोलचाल आदि की नकल करती है। ७-विचित्र काम। ८-अवतारों या देवताओं के चरित्र का अभिनय। [संज्ञा पु.] (हिं.) काला घोड़ा। ※[वि.] (हिं.) देखो 'नीला'।

लीलाकमल [संज्ञा पु.](सं.) कमल का फूल जिसे क्रीड़ा के लिये हाथ में लिये हों।

लीलाकर [संज्ञा पु.] (सं.) छन्द विशेष।

लीलाकलह [संज्ञा पु.] (सं.) बनावटी झगड़ा।

लीलाखेल [वि.] (सं.) खेलने वाला।

लीलागार, लीलागृह [संज्ञा पु.] (सं.) खेल का घर।

लीलागेह [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द भवन। क्रीड़ागार।

लीलातनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्वांग जो खेल दिखाने के लिए धारण किया जाता है।

लीलातमरस [संज्ञा पु.] (सं.) खिलवाड़ करने के लिए खिलौने की तरह हाथ में लिया हुआ कमल का फूल।

लीलादग्ध [वि.] (सं.) जो अपनी इच्छा से भस्म हो गया हो।

लीलाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) लीलाचल।

लीलानटन [संज्ञा पु.] (सं.) कौतुक का नाच।

लीलापद्म [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'लीलातामरस'

लीलापर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) लीलाचल।

लीलापुरुषोत्तम [संज्ञा पु] (सं.) श्रीकृष्ण।

लीलाब्ज [संज्ञा पु.] (सं.) लीला कमल।

लीलामनुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) छद्मवेशी मनुष्य।

लीलामय [वि.] (सं.) क्रीड़ा के भावों से परिपूर्ण क्रीड़ायुक्त।

लीलामात्र [अव्य.] (सं.) खेलते-खेलते।

लीलावतार [संज्ञा पु.] (सं.) लीला करने के लिए धारण किया हुआ विष्णु भगवान् का अवतार

लीलावधूत [वि.] (सं.) स्वच्छन्द विचरने वाला।

लीलावती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] क्रीड़ा करने करने वाली। विलासवती। [संज्ञा स्त्री.] १-प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी का नाम जिसने लीलावती नामक गणित की पुस्तक बनाई थी। २-संपूर्ण जाति की एक रागिनी। ३-एक मात्रिक छंद जिसमें १०, ८ और १४ के विराम से ३२ मात्राएँ होती है।

लीलावेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द-भवन।

लीलासाध्य [वि.] (सं.) सहज में होने वाला।

लीलास्थल [संज्ञा पु.] (सं.) क्रीड़ा करने का स्थान

लीली [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] नीले रंग की। नीली।

लीलोद्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-आनन्द बाग। २-देवताओं का उद्यान।

लीलोपवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होते हैं।

लीव [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अवकाश। छुट्टी।

लीवर [संज्ञा पु.] (अं.) यकृत्। जिगर।

लीस् [संज्ञा पु.] (अं.) जमीन या किसी अन्य स्थावर संपत्ति के भोगमात्र का अधिकार-पत्र जो किसी को जीवन पर्यन्त या निश्चित काल के लिए दिया जाय। पट्टा।

लुंग, लुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मातुलंग वृक्ष।

लुंगा [संज्ञा पु.] (सं.) १-धान रोपने की एक रीति या ढंग। २-देखो 'लुङ्गाड़ा'।

लुंगाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) लुच्चा। शोहदा। लफंगा।

लुंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का एक प्रकार का अंगोछा। तहमद। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जिसकी चोंच भूरी, अगला भाग काला और लाल होता है।

लुंचन, लुञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चुटकी से पकड़कर झटके के साथ उखाड़ना। नोचना। उत्पादन। २-काटना। तराशना। ३-जैन यतियों की वह क्रिया जिसमें उनके बाल नोचे जाते हैं।

लुंचित, लुञ्चित [वि.] (सं.) नोचा या उखाड़ा हुआ। उत्पाटित।

लुंचितकेश, लुञ्चितकेश [संज्ञा पु.] (सं.) जैन यति, जो अपने सिर के बालों को नोचे रहते हैं

लुंज, लुंजा [वि.] (हिं.) १-बिना हाथ पैर का। लँगड़ा-लूला। २-बिना पत्ते का। ठूँठ (पेड़)।

लुंठक, लुण्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) लुटेरा।

लुंठन, लुण्ठन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लुढ़कना। २-लूटना। चुराना।

लुंठा, लुण्ठा संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लूट। डाँका। २-लुढ़कपुढ़क।

लुंठाक, लुण्ठाक [संज्ञा पु.] (सं) १-डाकू। २-कौआ।

लुंठि, लुण्ठि, लुंठी, लुण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लूट का माल। २-घोड़े का लोटना।

लुंठित, लुण्ठित [वि.] (सं.) १-जमीन पर गिरा हुआ। २-जो लूटा खसोटा गया हो।

लुंड, लुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) चोर। [संज्ञा पु.] (हिं.) बिना सिर का धड़। कबंध रुंड।

लुंडमुंड [वि.] (हिं.) १-जिसके सिर, हाथ, पैर आदि अङ्ग कटे हों केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २-बिना पत्ते का। ठूँठ (पेड़)। ३-लूला-लंगड़ा। ४-योंही गठरी की तरह लपेटा हुआ।

लुंडा [वि.] (हिं.) [स्त्री. लुंडी] १-(वह पक्षी) जिसकी दुम और पर झड़ गये हों। २-जिसकी पूंछ पर बाल न हों (बैल)। [संज्ञा पु.] (हिं) लपेटे हुए सूत की पिंडी। कुकुड़ी।

लुंडिका, लुण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) लपेटे हुए सूत की पिंडी या गोली।

लुंडियाना+ [क्रि. स.] (हिं.) सूत या रस्सी आदि को पिंडी के रूप में लपेटना।

लुंडी, लुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लुंडिका'। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] जिसकी पूंछ या पर झड़ गये हों।

लुंबिका, लुम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का बाजा।

लुंबिनी, लुम्बिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपिल वस्तु के पास का उपवन जहाँ गौतमबुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लुआठी] सुलगती या जलती हुई लकड़ी।

लुआठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जलती हुई लकड़ी।

लुआब [संज्ञा पु.] (अं.) लसदार या चिपचिपा गूदा।

लुआबदार [वि.] (अ., फा.) १-लसदार। चिपचिपा २-जिसमें लसदार गूदा हो।

लुआर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लू'।

लुकंजन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लोपांजन'।

लुकंदर+ [वि.] (हिं.) छिपने वाला।

लुक [संज्ञा पु.](हिं.) १-चमकदार रोगन। वार्निश २-आग की लपट। लौ। ज्वाला। ३-भूतप्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। ४-दलदलों और जङ्गलों में रहरहकर दिखाई पड़ने वाला प्रकाश। उल्कामुख प्रेत।

लुकटी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह लकड़ी जिसका एक छोर जल गया हो या जल रहा हो।

लुकना [क्रि. अ.] (हिं.) आड़ में होना। छिपना। लुकछिपकर-अप्रकट या गुप्त रूप से।

लुकमा [संज्ञा पु.] (अ.) ग्रास। कौर। निवाला।

लुकमाज़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पकाया या कमाया हुआ और चमकीला किया हुआ चमड़ा।

लुकाट [संज्ञा पु.](हिं.) एक वृक्ष जिसके खटमीठे फल आमड़े के बराबर होते हैं।

लुकाठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लुकाट'। २-देखो 'लुआठ'।

लुकाना [क्रि. स.] (हिं.) आड़ में करना। छिपाना।

लुकार* [क्रि. अ.] (हिं.) लुकना। छिपना। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'लुक'।

लुकारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मशाल के समान जलती हुई लकड़ी।

लुकेठा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) जलती हुई लकड़ी। लुआठा।

लुक्क+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लुक'।

लुक्का+ [वि.] (हिं.) देखो 'लुच्चा'।

लुक्कायित [वि.] (सं.) लुका या छिपा हुआ। अदृश्य।

लुख [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास जो सरपत के समान होती है।

लुखना+ [क्रि. अ.] (हिं.) लुकना। छिपना।

लुखाना+ [क्रि. स.] (हिं.) लुकाना। छिपाना।

लुखिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-धूर्त स्त्री। २-व्यभिचारिणी स्त्री। छिनाल। ३-वेश्या। रंडी

लुगड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) वस्त्र। कपड़ा।

लुगडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लूगड़ी'।

लुगदा [संज्ञा पु.] (देश.) [स्त्री. लुगदी] गीला पिंडा। लोंदा।

लुगदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) छोटा गीला पिंडा।

लुगरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़ा। वस्त्र। ओढ़नी। २-जीर्ण वस्त्र। लत्ता। [संज्ञा पु.] (देश.) चुगलखोर।

लुगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फटी पुरानी धोती। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) चुगली।

लुगाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री। औरत।

लुगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा कपड़ा। २-फटी पुरानी धोती। ३-लहँगे की संजाफ।

लुग्गा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लूगा'।

लुघड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लुढ़कना'।

लुचकना* [क्रि. स.] (हिं.) झटके से छीनना।

लुचगुंडा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लुचगुंडी] लुच्चा और गुण्डा। भारी लफंगा या बदमाश।

लुचवाना [क्रि. स.] (हिं.) नोचवाना। उखड़वाना।

लुचुई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मैदे की पतली और मुलायम पूरी।

लुच्चा [वि.] (हिं.) [स्त्री. लुच्ची] १-दूसरे के हाथ से वस्तु लुचककर भागने वाला। २-दुराचारी। कुमार्गी। ३-शोहदा। बदमाश। कमीना।

लुच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लुचुई।

लुज्जा [संज्ञा पु.] (देश.) समुद्र में वह स्थल जो बहुत गहरा हो।

लुटंत* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लूट।

लुटकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लटकना'।

लुटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दूसरे के द्वारा लूटा जाना। २-तबाह होना। बरबाद होना। ३-देखो 'लुठना'। घर लुटना-घर का माल चोरी जाना।

लुटरना [क्रि. अ.] (हिं.) लुढ़कना।

लुटाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लूटने की क्रिया या भाव।

लुटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-कोई वस्तु लोगों के सम्मुख इस प्रकार रखना कि वे उसे लूटें। दूसरों को लूटने देना। २-बहुत सस्ते दाम पर बेचना। ३-व्यर्थ बहुत अधिक व्यय करना। ४-अंधाधुन्ध बाँटना, खरचना या दान करना।

लुटावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लुटाना'।

लुटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जल भरने या रखने का धातु का छोटा बरतन। छोटा लोटा।

लुटेरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी।

लुटेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) लूटने वाला। डाकू। दस्यु।

लुट्टूर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान कटी हुई भेड़।

लुठन [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े का भूमि पर लोटना

लुठना* [क्रि. अ.] (हिं.) जमीन पर गिरकर लोटना।

लुठाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भूमि पर डालकर लोटाना। २-लुढ़काना।

लुड़कना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लुढ़कना'। यौ० लुड़कपुड़क-भूमि पर पहिये के समान लुढ़कते हुए।

लुड़काना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लुढ़काना'।

लुड़की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लुढ़की'।

लुड़खुड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लड़खड़ाना'।

लुढ़कना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भूमि पर ऊपर नीचे फिरते हुए बढ़ना या चलना। २-गिरकर ऊपर नीचे होते हुए आना। लुढ़कना-पुड़कना-भूमि पर पहिये के समान ऊपर नीचे फिरते हुए जाना।

लुढ़काना [क्रि. स.] (हिं.) इस प्रकार छोड़ना या धकेलना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय। ढुलकाना।

लुढ़की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाढ़े दही में छानी हुई भाँग या भङ्ग।

लुढ़ना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-लुढ़कना। २-गिरना

लुढ़ाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लुढ़काना'।

लुढ़ियाना [क्रि. स.] (हिं.) गोलबत्ती के समान उभरी हुई सिलाई करना। गोल तुरपना।

लुतरा [वि.] (देश.) [स्त्री लुतरी] १-चुगलखोर २-नटखट। शरारती।

लुतरी [वि.](देश.) [स्त्री. प्र] उलटी-सीधी लगाकर झगड़ा कराने वाली स्त्री। चुगलखोर स्त्री

लुत्थ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोथ'।

लुत्फ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-कृपा। मेहरबानी। २-खूबी। उत्तमता। ३-मजा। आनन्द। ४-रोचकता। लुत्फ़ उठाना-मजा पाना।

लुदकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाढ़े दही में छानी हुई भाँग। लुढ़की।

लुदरा [संज्ञा पु.] (देश.) एक अगहनिया धान।

लुनना [क्रि. स.] (हिं.) १-खेत से पकी फसल काटना। २-नष्ट करना। हटाना।

लुनाई [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सुन्दरता। लावण्य २-देखो 'लवनी'।

लुनेरा [संज्ञा प.] (हिं.) १-खेत की फसल काटने वाला। २-लोनिया नामक जाति।

लुन्ही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मँजकर तैयार की हुई पाई।

लुपना* [क्रि. अ.] (हिं.) छिपना। आड़ में होना। गुप्त होना।

लुप्त [वि.] (सं.) १-छिपा हुआ। गुप्त। २-गायब। [संज्ञा पु.] चोरी का माल।

लुप्तोपम [वि.] (सं.) जिसमें उपमा न हो। उपमारहित।

लुप्तोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा अलंकार जिसमें उसके चार अङ्गों में से उपमा कोई अङ्ग लुप्त हो।

लुवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल। तलछट।

लुबुध* [वि.] (हिं.) देखो 'लुब्ध'।

लुबुधना+ [क्रि. अ.] (हिं.) लुब्ध होना। लुभाना।

लुबुधा* [वि.] (हिं.) १-लोभी। लालची। २-चाहने वाला। इच्छुक। प्रेमी।

लुब्ध [वि.] (सं.) १-पूरी तरह से लुभाया हुआ। २-मोहित। [संज्ञा पु.] शिकारी। बहेलिया।

लुब्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिकारी। बहेलिया। २-लोभी या लालची आदमी। ३-दक्षिणी गोलार्ध का एक बहुत तेजवान तारा।

लुब्धता [संज्ञा स्त्री.](सं.) लुब्ध का भाव या धर्म

लोभ।

लुब्धना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लुबुधना'।

लुब्धापति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्रौढ़ा नायिका जो पति और कुल के सब लोगों की लज्जा करे।

लुब्बेलुबाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी बात का तत्व। सारांश। २-गूदा। सार।

लुभाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-मोहित होना। रीझना २-लालच में पड़ना। ३-तन मन की सुध भूलना। [क्रि. स.] १-मोहित करना। रिझाना २-किसी के मन में कुछ पाने की गहरी चाह उत्पन्न करना। ३-मोह में डालना। भ्रांत करना

लुभित [वि.] (सं.) लुभाया हुआ।

लुरकना* [क्रि. अ.] (हिं.) अधर में टँककर झूलना। लटकना।

लुरका [संज्ञा पु.] (हिं.) झुमका।

लुरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कान में पहनने की बाली या मुरकी। २-देखो 'लुदकी'।

लुरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-झूलना। लहराना। २-ढल पड़ना। झुक पड़ना। ३-कहीं से एकबारगी आजाना। ४-आकर्षित होना। प्रवृत्त होना।

लुरियाना [क्रि. अ.] (हिं.) प्रेमपूर्वक स्पर्श करना या अङ्क पर अङ्क रखना। प्यार करना।

लुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाल की ब्याई हुई गाय

लुलन [संज्ञा पु.] (सं.) लटकते हुए इधर-उधर हिलना-डोलना। झूलना।

लुलना* [क्रि. अ.] (हिं.) लटकते हुए हिलना-डोलना। लहराना। दोलित होना।

लुलित [वि.] (सं.) लटकता या झूलता हुआ।

लुवार [वि.] (हिं.) देखो 'लू'।

लुशई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) आसाम और कछार में होने वाली एक प्रकार की चाय।

लुहँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ऐसी लाठी जिसके सिरे पर लोहा जड़ा हो।

लुहना* [क्रि अ.] (हिं.) लुभाना। ललचना। मोहित होना।

लुहनी+ [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का अगहनिया धान।

लुहार [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लुहारिन, लुहारी] १-लोहे के काम करने या लोहे की चीजें बनाने वाला। २-वह जाति जो उक्त काम करती है।

लुहारिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लुहार जाति की स्त्री

लुहारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लोहे की चीजें बनाने का काम। २-लुहार जाति की स्त्री।

लुहुर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटे कानों वाली भेड़।

लूँबरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोमड़ी'।

लू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरमी के दिनों में चलने वाली तपी हुई हवा। तप्त-वायु। *लू मारना या लगना*-शरीर में तप्त-वायु लगने के कारण ज्वर आदि उत्पन्न होना।

लूक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग की लपट। २-जलती हुई लकड़ी। ३-टूटा हुआ तारा। उल्का। ४-गरमी के दिनों में चलने वाली तपी हुई हवा। लू।

लूकट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लुआठ'।

लूकना* [क्रि. स.](हिं.) आग लगाना। जलाना *[क्रि. अ.] देखो 'लुकना'।

लूका [संज्ञा पु.] (हिं.)[स्त्री. लूकी] १-आग की लपट या लौ। २-सिरे पर से जलती हुई लकड़ी। *लू का लगाना*-जलाना। *मुँह में लू का लगना*-मुँह झुलसना या जलाना (गाली)। [संज्ञा पु.] (देश.) मछली फँसाने का एक प्रकार का जाल।

लूकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २-लकड़ी या तिनके का जलता हुआ सिरा। लूका। *लूकी लगना*-आग लगना

लूखा* [वि.] (हिं.) जो चिकना न हो। रूखा।

लूगड़+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वस्त्र। कपड़ा। २-चादर। ओढ़नी। ३-पुरानी रजाइयों में से निकाला हुआ पुराना रूया।

लूगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ओढ़नी।

लूगा+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-वस्त्र। कपड़ा। २-धोती।

लूघा [संज्ञा पु.] (देश.) कब्र खोदने वाला।

लूट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लूटने की क्रिया या भाव। २-किसी का धन-सम्पत्ति जबरदस्ती छीन ले जाना। ३-लूटने से मिला हुआ माल *लूटखंद, लूटपाट, लूटमार*-लोगों को मारना-पीटना और उनका धन छीनना।

लूटक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लूटने वाला। २-डाकू लुटेरा। ३-कांति हरने वाला। शोभा में बढ़ जाने वाला।

लूटखूँद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोगो को मारपीट कर उनका धन छीन या लूट लेना। लूटपाट

लूटना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को डरा धमका या मारकर उसका धन ले लेना। २-अनुचित रूप से ले लेना। ३-बहुत दाम लेना। ठगना ४-मोहित या मुग्ध करना। *लूट खाना*-दूसरे का धन किसी न किसी तरह ले लेना। *(किसी को) लूट खाना*-अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना।

लूटि* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'लूट'।

लूत [संज्ञा पु.] (*इबरानी*) यहूदियों के एक पुराने पैगम्बर का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मकड़ी

लूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मकड़ी। च्यूंटी। ३-मकड़ी के मूतने से होने वाला फफोला। मर्म व्रण। वृक्का।
[संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लूती] लूका। लुआठा *लूता लगाना*-आग लगाना।

लूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लुआठी। *लूती लगाना*-आग लगाना।

लून [वि.] (सं.) छिन्न। कटा हुआ। [संज्ञा पु.] (हिं.) लोन। नमक।

लूनक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सज्जीखार। २-अमलोनी का साग।

लूनना* [क्रि. स] (हिं.) देखो 'लुनना।

लूम [संज्ञा पु.] (सं.) पूँछ। दुम। [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। यह रात को ११ दंड से १५ दंड तक गाया जाता है। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कलाबत्तू की लच्छी। [संज्ञा पु.] (अं.) कपड़ा बुनने का करघा। यौ० हैंडलूम-वह करघा जिससे हाथ से कपड़ा बुना जाय।

लूमड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोमड़ी'।

लूमना* [क्रि. अ.] (हिं.) लटकना।

लूमर [वि.] (देश.) सयाना। युवा। जवान। (व्यंग्य या तिरस्कार)।

लूरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लुरना'।

लूला* [वि.](हिं.) [स्त्री. लूली] १-जिसका हाथ कटा हो। लुंजा। टुंडा। २-असमर्थ। बे-काम

लूलू [वि.] (हिं.) मूर्ख। बेवकूफ। *लूल बनाना*-१-बातों में मूर्ख प्रमाणित करना। २-उपहास-करना मखौल उड़ाना।

लूसन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का फलदार वृक्ष।

लूह, लूहर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लू'।

लेंगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लहँगा'।

लेंड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लेंड़ी] बँधे हुए मल की बत्ती। बंधा मल।

लेंड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बँधा मल। २-बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंडुआ+ [संज्ञा पु.] (देश.) कागज का एक खिलौना जो उछालकर फेंकने पर खड़ा हो जाता है।

लेंडौरी [संज्ञा पु.] (देश.) पशुओं को दाना या चारा खिलाने का बरतन।

लेंस [संज्ञा पु.](अं.) शीशे का ताल जो प्रकाश की किरनों को एकत्र या केंद्रीभूत करे।

लेंहड़, लेंहड़ा [संज्ञा पु.](देश.) पशुओं का झुंड गल्ला।

ले [अव्य.] (हिं.) १-आरम्भ होकर। शुरू होकर। २-तक। पर्यन्त। [क्रि. स.] (हिं.) लेना।

लेइ+ [अव्य] (हिं.) तक। पर्यन्त।

लेई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी चूर्ण का गाढ़ा लसीला रूप। अवलेह। २-लपसी। ३-गाढ़ा उबाला हुआ मैदा जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है। ४-वह गीला चूना या मसाला जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है। यौ० लेई पूँजी-सारी सम्पत्ति। सर्वस्व।

लेऊ [वि.] (हिं.) देखो 'लेवाल'।

लेक्चर [संज्ञा पु.] (अं.) व्याख्यान।

लेक्चरर [संज्ञा पु.] (अं.) व्याख्यानदाता।

लेक्चरबाजी [संज्ञा स्त्री.](अं., फा.) खूब लेक्चर देने की क्रिया।

लेख [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिखित अक्षर। लिपि। २-लिखावट। लिखाई। ३-किसी विषय पर लिखकर प्रकट किये हुए विचार। मजमून ४-देव। देवता। ५-कोई ऐसी लिखी हुई आज्ञा अथवा आदेश जो विधान के अनुसार किसी बड़े अधिकारी ने प्रचलित किया हो। रिट। *[वि.] (हिं.) लिखने योग्य। लेख्य। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पक्की बात।

लेखक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. लेखिका] १-लिखनेवाला। लिपिकार। २-ग्रंथ लिखने वाला। ग्रन्थकार। ३-देखो 'लिपिक'। ४-एक प्रेत का नाम।

लेखन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिखने की क्रिया या भाव। २-लिखने की कला या विद्या। ३-चित्र बनाने का काम। ४-हिसाब लगाना। लेखा करना। ५-वमन या उलटी करना। ६-औषध द्वारा रसादि सप्त धातुओं अथवा वातादि दोषों को शोषण करके पतला करना ७-इस काम के लिए उपयुक्त औषध। ८-भोजपत्र जिस पर प्राचीनकाल में लिखा जाता था। ९-खाँसी।

लेखन-वस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रसादि सप्तधातु अथवा वातादि त्रिदोष और वमन आदि को पतला कर देने वाली पिचकारी।

लेखन-सामग्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कागज, कलम, आदि लिखने की सामग्री।

लेखनहार* [वि.] (हिं.) लिखने वाला।

लेखना* [क्रि. स.] (हिं.) १-लिखना। २-हिसाब संख्या या परिमाण आदि निश्चित करना। ३-सोचना विचारना। समझना। यौ०-*लेखना-जोखना*-१-ठीक-ठीक अन्दाज करना। हिसाब करना। २-परीक्षा करना।

लेखनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लिखने का साधन, कलम। मुहा०-*लेखनी उठाना*-लिखना आरंभ करना।

लेखनीय [वि.] (सं.) लिखने योग्य।

लेख-पत्र [संज्ञा पु] (सं.) लिखा हुआ पत्र।

लेख-पत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लिखे हुए आवश्यक कागज-पत्र।

लेखप्रणाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लेखनशैली। लिखने का ढंग।

लेखभंडारी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह अधिकारी जिसकी देख-रेख में किसी कार्यालय के अभिलेख या लेख्य आदि रहते हों। रिकॉर्डकीपर।

लेखर्षभ [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र

लेखशैली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लिखने की शैली। लेख-प्रणाली।

लेखहारक, लेखहारी [संज्ञा पु.] (सं.) पत्रवाहक चिट्ठी ले जाने वाला।

लेखा [संज्ञा पु] (हिं.) १-गणना। हिसाब-किताब २-आय-व्यय अथवा घटना आदि का विवरण। ३-अनुमान। विचार। मुहा०-*लेखा जाँचना*-यह देखना कि हिसाब ठीक है या नहीं। *लेखा ड्योढ़ा या डेवढ़ करना*-१-हिसाब चुकता करना। २-हिसाब बराबर करना। ३-चौपट करना। *लेखा पूरा या साफ करना*-हिसाब साफ करना। *लेखा डालना*-लेनदेन के व्यवहार को बही में लिखना। *किसी के लेखे*-किसी के विचार के अनुसार। किसी की समझ से। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लिपि। लिखावट। २-रेखा। लकीर ३-चित्र। ४-श्रेणी। पंक्ति। ५-रश्मि। किरण

लेखाकर्म [संज्ञा पु] (सं.) आय-व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम। एकाउन्टेन्सी।

लेखापरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं) वह जो किसी के आय-व्यय के लेखे की जाँच-पड़ताल करता हो। ऑडिटर।

लेखापरीक्षा [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-भलीभाँति जाँचकर यह देखना कि आय-व्यय का लेखा तैयार किया गया है, वह ठीक है या नहीं। ऑडिटिंग। २-लेखेक्षण।

लेखाबही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बही जिसमें आय-व्यय आदि का हिसाब लिखा जाता है एकाउंट बुक।

लेखिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लिखने वाली। २-ग्रंथ या पुस्तक बनाने वाली।

लेखित [वि.] (सं.) लिखवाया हुआ।

लेखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खाते में लिखी जाने वाली रकम। एन्ट्री।

लेखेक्षक [संज्ञा पु.](सं.) लेखा परीक्षक। ऑडिटर

लेखेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) आय-व्यय के लेखे का परीक्षण या निरीक्षण करना। ऑडिट।

लेखेक्षा-न्यायालय [संज्ञा पु.](सं) जाँच पड़ताल करने वाली अदालत।

लेख्य [वि.] (सं.) १-लिखा जाने योग्य। २-जो लिखा जाने को हो। [संज्ञा पु.](सं.) १-लिखी हुई वस्तु या पत्र आदि। लेखा। २-किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई बातें। रेकार्ड। ३-वह लेख जो विधिक क्षेत्र में साक्ष्य के रूप में काम आवे या आ सके। दस्तावेज। डॉक्यूमेंन्ट।

लेख्यगत [वि.](सं.) १-लिखा हुआ। चित्र किया-हुआ। २-चित्र खींचा हुआ।

लेख्य-दायक [संज्ञा पु.] (सं.) लेख्यागार का वह कर्मचारी जो लेख्य या अभिलेखों को निकाल देने का काम करता हो। रिकॉर्ड

लेख्य-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिखने
२-ताड़ का पेड़।

लेख्य-पत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह
लिखने को हो। २-ताड़पत्र।

लेख्य-पाल [संज्ञा पु.](सं.) वह अधिकारी
देखरेख में किसी कार्यालय के
आदि रहते हों। रेकॉर्डकीपर।

लेख्य-प्रापक [संज्ञा पु.] (सं.) लेख्यागार का
कर्मचारी जिसका काम लेख्य या
के सम्बन्ध में यह बताना होता है कि
लेख्य अमुक स्थान पर है। रिकॉर्ड

लेख्यमय [वि.] (सं.) लिखाहुआ।

लेख्य-रक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो

लेख्यस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान
लिखने-पढ़ने का काम होता है।

लेख्यागार [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान
जहाँ लेख्य या अभिलेख सुरक्षित
जाते हैं। रेकॉर्ड रूम।

लेख्यारूढ़ [वि.] (सं.) जिसके सम्बन्ध में
पढ़ी हो गई हो। दस्तावेजी।

लेख्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो

लेज+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रस्सी। डोरी।

लेज़म [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह कमान
धनुष चलाने का अभ्यास करते हैं।
करने की वह भारी कमान जिसमें
जंजीरें लगी होती है।

लेजरंग [संज्ञा पु.] (हिं.) मरकत या
रंगत जो उसका गुण समझी जाती है।

लेजिस्लेटिव [वि.] (अं.) व्यवस्था
सम्बन्धी।

लेजिस्लेटिव-ऐसेम्बली [संज्ञा स्त्री.]
स्थापिका-परिषद्।

लेजिस्लेटिव-काउंसिल, लेजिस्लेटिव
[संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह सभा जो
कानून बनाती है।

लेजु, लेजुर [संज्ञा स्त्री.](सं.) कूएँ से
की रस्सी।

लेजुरा [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'लेजुर'।
(देश.) एक प्रकार का

लेजुरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो

लेट [संज्ञा पु.] (देश.) चूने, सुरखी
जो गच या छत पर डाली जाती है।
(अं.) जो ठीक या निश्चित समय से
आवे, रहे या हो।

लेटना [क्रि. अ.](हिं.) १-पीठ को
पर लगाकर सारा शरीर उस पर
बगल की ओर झुककर जमीन
२-मर जाना। खेती लेट
पानी के कारण फसल का
झुककर जमीन पर गिर

नत होना। गुड़ लेट जाना–ताव बिगड़ जाने के कारण गुड़ का गीला और चिपचिपा हो जाना।

लेटपेट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चाय

लेट-फी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह फीस जो निश्चित समय के बाद डाकखाने में किसी वस्तु को दाखिल करने में देनी पड़ती है।

लेटर [संज्ञा पु.] (अं.) चिट्ठी। पत्र।

लेटर-पेटेन्ट [संज्ञा पु.] (अं.) वह राजकीय आज्ञा-पत्र जिसके द्वारा किसी को पद स्वत्व आदि देने अथवा कोई संस्था स्थापित करने की आज्ञा मिलती है।

लेटरबाक्स [संज्ञा पु.] (अं.) डाकखाने का वह सन्दूक जिसमें लोग कहीं भेजने के लिए चिट्ठियाँ डालते हैं।

लेटा [संज्ञा पु.] (देश.) गल्ले का बाजार। मंडी

लेटाना [क्रि. स.] (हिं.) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लेड [संज्ञा पु.] (अं.) १–सीसा नामक धातु। २–प्रायः दो अंगुल चौड़ी सीसे की ढली हुई पत्तर की तरह की पटरी जो छापेखाने में अक्षरों की पंक्तियों के मध्य में इसलिये लगाई जाती है कि अक्षर ऊपर नीचे न हों।

लेडमोल्ड [संज्ञा पु.] (अं.) छापेखाने में अक्षरों की पंक्तियों के बीच में रखने के लिए सीसे की पटरियाँ ढालने का साँचा। लेड ढालने का साँचा।

लेडी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १–भले घर की स्त्री। महिला। २–लार्ड या सरदार की पत्नी।

लेथो [संज्ञा पु.] देखो 'लीथो'।

लेद* [संज्ञा पु.] (देश.) फागुन में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत।

लेदा+ [संज्ञा पु.] (देश.) खेत में होने वाली एक प्रकार की ककड़ी। फूट।

लेदार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया

लेदी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १–एक प्रकार की छोटी चिड़िया जो जलाशयों के किनारे रहती है। २–घास का पूला जिसे हल के नीचे के भाग में इसलिये बाँध देते हैं जिसमें चौड़ी कूँड़ बने।

लेन [संज्ञा पु.] (हिं.) १–लेने की क्रिया या भाव २–लहना। पावना।

लेनदार [संज्ञा पु.] (हिं.) जिसका कुछ धन या पावना बाकी हो। महाजन। लहनेदार।

लेनदेन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–लेने और देने का व्यवहार। आदान-प्रदान। २–बिक्री का माल अथवा रुपया उधार देने और लेने का व्यवहार। लेन देन न होना–सम्बन्ध या प्रयोजन न होना।

लेनहार [वि.] (हिं.) लेनेवाला। लेनदार।

लेना [क्रि. स.] (हिं.) १–किसी के हाथ से अपने हाथ में करना। ग्रहण करना। २–थामना। पकड़ना। ३–मोल लेना। खरीदना। ४–अपने अधिकार में करना। ५–जीतना। ६–घेरना। ७–अगवानी या अभ्यर्थना करना। ८–भार ग्रहण करना। जिम्मे लेना। ९–सेवन करना। पीना। १०–धारण करना। ११–स्वीकार करना। १२–किसी को उपहास द्वारा लज्जित करना। १३–काटकर अलग करना। काटना। १४–पुरुष या स्त्री के साथ सम्भोग करना। १५–संचय करना। एकत्र करना।

ऊपर लेना–१–सिर या कंधे पर रखना। २–जिम्मे लेना। ले चलना। १–उठाकर चलना २–साथ में लेना। लेजाना–लेकर जाना। ले-डालना–१–नाश करना। २–हटाना। ३–पूरा करना। ले डूबना–दूसरे का भी नाश करना। ले-देना–किसी को मोल लेकर देना। आड़े हाथों लेना-गूढ़ व्यंग्य द्वारा खरी खोटी सुनाकर लज्जित करना। ले-दे करना–हुज्जत या तकरार करना। ले आना–साथ लाना। ले उड़ना–१–लेकर भाग जाना। २–थोड़ी बात-को बहुत बना लेना। लेने के देने पड़ना–१–बहुत कठिन समय आना। प्राणों पर आ पड़ना २–लाभ की जगह हानि होना। ले-देकर–१–कठिनता से प्राप्त। २–कुल मिलाकर। लेना देना–१–लेने और देने का व्यवहार। २–रुपया उधार लेने और देने का व्यवसाय। लेना-देना होना–मतलब या प्रयोजन होना। लेनां एक न देना दो–कोई सरोकार या संबंध न रखना। ले निकलना–१–ले-ही लेना। २–लेकर चल देना। ले पालना–गोद लेना। ले बैठना–१–सङ्गी को भी नष्ट कर देना। २–(नाव आदि का) बोझ लिये डूब जाना। ३–सब नष्ट करना। ले भागना–कुछ लेकर भाग जाना। ले रखना–रख छोड़ना। ले मरना–अपने साथ नष्ट या बरबाद करना। काम में लेना–सुनना। ले–(इस शब्द का अर्थ किसी को संबोधन करने इन अर्थों का बोध कराने के लिए होता है) १–अच्छा जो तू चाहता है, वही होता है। २–अच्छा यदि तू नहीं मानता तो मैं यहाँ तक करता हूँ। ३–(किसी के विरुद्ध कोई बात हो जाने पर उसे चिढ़ाने अथवा लज्जित करने के लिए) देख! कैसा फल मिला।

लेप [संज्ञा पु.] (हिं.) १–वह वस्तु जो लीपी, पोती या चुपड़ी जाय। २–ऐसी वस्तु की वह तह जो किसी चीज पर चढ़ाई जाय। ३–उबटन। बटना। ४–लगाव। सम्बन्ध।

लेपक [वि.] (सं.) लेप करने, पोतने या लगाने-वाला।

लेपची [संज्ञा पु.] (देश.) नैपालियों की एक जाति

लेपन [संज्ञा पु.] (सं.) लेई जैसी चीज की तह चढ़ाना।

लेपना [क्रि. स.] (हिं.) गाढ़े गीले पदार्थ की तह चढ़ाना।

ले-पालक [संज्ञा पु.] (हिं.) गोद लिया हुआ पुत्र दत्तक पुत्र।

लेपी [वि.] (हिं.) लेप करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक। लिपिकार।

लेप्य [वि.] (सं.) लेप करने योग्य। लेपनीय।

लेप्यनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वह स्त्री जो उबटन या चन्दन आदि का लेप लगाये हो। २–पत्थर या मिट्टी की बनी हुई स्त्री की मूर्ति

लेप्यमयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–गुड़िया। २–कठपुतली।

लेप्य-स्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके अंग पर चन्दन आदि का लेप लगा हो।

लेफ्टिनेंट [संज्ञा पु.] (अं.) १–वह सहायक कर्मचारी जिसे यह अधिकार हो कि अपने से उच्च कर्मचारी की आज्ञानुसार अथवा उसकी आज्ञा के अभाव में यथा अभिमत कोई कार्य कर सके। २–सेना का वह अध्यक्ष जो कप्तान के आधीन होता है। तथा उसकी अनुपस्थित में सेना पर पूर्ण अधिकार रखता है।

लेफ्टिनेंट-कर्नल [संज्ञा पु.] (अं.) वह सैनिक अधिकारी जिसका पद कर्नल के बाद होता है

लेफ्टिनेंट-जनरल [संज्ञा पु.] (अं.) वह सैनिक अधिकारी जिसका पद जनरल के बाद होता है

लेवरना+ [क्रि. स.] (हिं.) ताने में माड़ी लगाना

लेबुल [संज्ञा पु.] (अं.) पते अथवा विवरण आदि की सूचक वह चिट जो पुस्तकों, औषध आदि की पुड़ियों, बोतलों अथवा गठरियों आदि पर लगाई जाती है।

लेबोरेटरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह शाला अथवा मन्दिर जिसमें वैज्ञानिक परिक्षायें की जाती हों, किसी प्रक्रिया की जाँच की जाती हो या रासायनिक पदार्थ, औषधें आदि बनाई अथवा तैयार की जाती हों। प्रयोगशाला।

लेमनेड [संज्ञा पु.] (अं.) गैस मिला हुआ नीबू का शर्बत।

लेमर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का जन्तु जो पेड़ों पर रहता है।

लेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लहर'।

लेरुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लड्डू'।

लेरुआरी+[संज्ञा पु.] (हिं.) वह भेड़ जिसके गले में बालों की लट लटकती रहती है।

लेरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) बछड़ा।

लेलिह [संज्ञा पु.] (सं.) १–साँप। सर्प। २–जूं। लीख।

लेलिहान [संज्ञा पु.] (सं.) १–सर्प। साँप। २–शिव। महादेव।

लेव [संज्ञा पु.] (हिं.) १–लेप। २–दीवार पर लगाने का गिलावा। ३–आग पर चढ़ाने से पहले हाँड़ी या मिट्टी के बरतनों की पेंदी पर जलने से बचाने के लिए चढ़ाया हुआ मिट्टी का लेप। ४–देखो 'लेवा'।

लेव चढ़ना-मोटाई आना।

लेवक [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष।

लेवड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लेव। लेप।

लेवा [संज्ञा पु.] (हिं) १-मिट्टी का वह लेप जो बरतनों की पेंदी को आग से जलने से बचाने के लिए चढ़ाया जाता है। २-लेप। ३-नाव की पेंदी का वह तख्ता जो सिरे से पतवार तक लगाया जाता है। ४-पानी का इतना बरसना कि जोतने पर खेत की मिट्टी और पानी मिलकर गिलावा बन जाय। ५-गाय, भैंस आदि का थन। [वि.] लेने वाला।
यौ०-लेवादेई-लेन-देन।

लेवार [संज्ञा पु.] (सं.) अग्रहार। +[संज्ञा पु.] (हिं.) लेव। गिलावा।

लेवारना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लेबरना'।

लेवाल [संज्ञा पु.] (हिं.) लेने या खरीदने वाला।

लेवी [संज्ञा पु.] (अं) किसी खास उद्देश्य से खड़ी की हुई पलटन।

लेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अणु। २-छोटाई। सूक्ष्मता। ३-चिह्न। निशान। ४-संसर्ग। लगाव। ५-एक प्रकार का गाना। ६-एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग अथवा अंश में रोचकता आती है। [वि.] अल्प। थोड़ा।

लेश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकाश। उजाला। २-जैन-धर्मानुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण से कर्म जीव को बाँधता है।

लेष [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लेश'। २-देखो 'लेख'।

लेषना* [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'लखना'। २-देखो 'लिखना'।

लेषनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'लेखनी'।

लेषे* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लेखे'।

लेष्टु [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का ढेला।

लेस+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लेश'। २-मिट्टी का गिलावा। ३-चेप। लस। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कलाबत्तू या किनारे पर टाँकने का फीता। गोटा। २-बेल।

लेसदार [वि.] (हिं.) जिसमें लेस हो। चिपचिपा लसीला।

लेसना [क्रि. स.] (हिं.) १-जलाना। २-पोतना। ३-चिपकाना। सटाना। ४-चुगली खाना। ५-दो आदमियों में विवाद उत्पन्न करने के लिये उन्हें उत्तेजित करना।

लेसी+ [संज्ञा पु.] (देश.) छः ढोली पान का गड्डा।

लेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाटकर खाने का पदार्थ अवलेह। २-भोज्य पदार्थ। भोजन। ३-ग्रहण का एक भेद जिसमें पृथ्वी की छाया (या राहु) सूर्य अथवा चन्द्रबिम्ब को जीभ के समान चाटता हुआ प्रतीत होता है। [संज्ञा पु.] (?) लोध नामक वृक्ष।

लेहन [संज्ञा पु.] (सं) १-चखना। २-चाटना।

लेहना [संज्ञा पु.](हिं.) १-खेत में कटी हुई फसल का वह अंश जो मजदूरों को दिया जाता है। २-देखो 'लहना'।

लेहसुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

लेहसुर [संज्ञा पु.] (देश.) कुम्हारों का एक औजार पाँसु।

लेहाजा [क्रि. वि.] (अ.) इसलिये। इस कारण। इस वास्ते।

लेहाड़ा+ [वि.] (हिं.) देखो 'लिहाड़ा'।

लेहाड़ापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लिहाड़ापन'।

लेहाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अप्रतिष्ठा। अपमान।

लेहाफ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लिहाफ'।

लेहिन [संज्ञा पु.] (हिं.) सुहागा।

लेह्य [वि.] (सं.) जो चाटा जाता हो। चाटने योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वस्तु जो चाटकर खाई जाय। २-अवलेह।

लैंगिक, लैङ्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैशेषिक-दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण। २-मूर्ति बनाने वाला। [वि.] १-लिंग सम्बन्धी। लिंग का। २-स्त्री तथा पुरुष के लिंग अथवा जननेंद्रिय से सम्बन्ध रखने वाला। योनि। से वसुअल।

लैंडो [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की टपदार घोड़ागाड़ी।

लैंप [संज्ञा पु.] (अं.) दीपक। चिराग।

लैंसर [संज्ञा पु.](अं.) रिसाले के सवारों के तीन भेदों में से एक जो भाला लिये रहते हैं और जिनके घोड़े भारी होते हैं।

लैं* [अव्य.] (हिं.) तक। पर्यन्त।

लैटिन [संज्ञा स्त्री.] एक भाषा का नाम। यह पूर्वकाल में इटली देश में बोली जाती थी। किसी समय में यह विद्वानों तथा पादरियों की भाषा थी। इस भाषा का साहित्य बहुत उन्नत था, इसी कारण अब भी कुछ लोग इसका अध्ययन करते हैं।

लैन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-सीधी लकीर। २-सीमा की लकीर। ३-कतार। पंक्ति। ४-पैदल सिपाहियों की सेना। ५-सिपाहियों के रहने की जगह। यौ०-लैनडोरी-पेशखेमा।

लैया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह धान जो अगहन में कटता है।

लैरु [संज्ञा पु.] (?) १-बछड़ा। २-बच्चा।

लैवेंडर [संज्ञा पु.] (अं.) एक सुगन्धित तरल पदार्थ।

लैसंस [संज्ञा पु] (अं.) वह प्रमाणपत्र जिसके द्वारा किसी मनुष्य को कोई अधिकार दिया जाता है।

लैस [वि.] (अं. लेस) १-हथियारों आदि से सजा हुआ। २-सब प्रकार से तैयार। [संज्ञा पु.] कपड़े पर लगाने का सुनहला फीता। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार सिक्का। २-कमानी। [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का बा

लों [अव्य.] (हिं.) देखो 'लौं'।

लोंडी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान का लोलक।

लोंदा [संज्ञा पु.](हिं.) डले के रूप में गीले पदार्थ का बँधा हुआ पिंड।

लो [अव्य.] (हिं.) इस शब्द का प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लि सम्बोधन रूप में होता है।

लोइ* [संज्ञा पु.](हिं.) लोग। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-प्रभा। दीप्ति। २-लौ। शिखा।

लोइन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लावण्य' २-देखो 'लोयन'।

लोई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-गुँधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेलकर रोटी बनाई जाती है। २-एक प्रकार की ऊनी चादर।

लोकंजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लोपांजन'।

लोकंदा+ [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. लोकंदी] विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कन्या के पहले-पहल सुसराल जाते समय भेजी हुई दासी।

लोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को हो अथवा जिसकी उसने कल्पना की हो। उपनिषदों में दो लोक माने गये हैं—इहलोक और परलोक। २-संसार। जगत्। ३-स्थान। निवास। ४-प्रदेश। दि ५-लोग। जन। ६-समाज। ७-प्राणी। ८-यश। कीर्ति। [वि.] (सं.) सब लोग या सर्व साधारण जनता से संबंध रखने वाला।

लोक-अधिसूचना [संज्ञा स्त्री.](सं.) सार्वजनिक विज्ञापना। जन-संज्ञप्ति।

लोक-कंटक, लोककण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) देहे बात जिससे जनसाधारण को कष्ट पहुँचे पब्लिक नुएन्जेन्स।

लोक-कंप, लोककम्प [वि.](सं.) लोगों को डराने वाला।

लोक-कथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्ध प्राचीन कहानी।

लोक-कर्ता [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव। २-विष्णु,

लोक-कल्प [वि.](सं.) संसार की स्थिति के समान

लोककांत, लोककान्त [वि.] (सं.) लोकप्रिय

लोककार [संज्ञा पु.] (सं.) लोककर्ता।

लोककृत, लोककृत्नु [संज्ञा पु.] (सं.) संसार को रचने या बनाने वाला।

लोकक्षिति [संज्ञा पु.](सं.) स्वर्गलोक का निवासी

लोक-गति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवन यात्रा।

लोकगाथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रचलित री २-जनश्रुति। अफवाह।

लोकगीत [संज्ञा पु.] (हिं.) गांव, देहातों में गाये जाने वाले जनसाधारण के गीत। फोक-लोर।

लोकगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) जगद्गुरु।

लोकचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

लोकचर [वि.] (सं.) संसार में घूमने वाला।

लोक-चरित्र [संज्ञा पु.](सं.) मनुष्य के जीवन का इतिहास।

लोक-चारित्र [संज्ञा पु.] (सं.) संसार का ढंग।

लोक-जननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मीजी का नाम

लोकजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धदेव। २-कोई भी संसार-विजयी।

लोकज्ञ [वि.] (सं.) संसार का ज्ञाता।

लोकज्येष्ठ [संज्ञा पु.](सं.) बुद्धदेव की एक उपाधि

लोकटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोमड़ी'।

लोक-तंत्र, लोक-तन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) वह शासन प्रणाली जिसमें राष्ट्र की अधिकांश जनता या समाज मताधिकार के कारण शासन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेता हो। वह शासन जो लोगों के द्वारा लोगों के लिए अथवा सर्वसाधारण के द्वारा सब के लिए संचालित किया जाता है। सर्वसाधारण जनता अथवा लोगों का अधिकांश भाग अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाने वाला शासन। जन-तन्त्र। लोक-सत्तात्मक राज्य। डेमोक्रेसी।

लोक-तंत्र-वादी, लोक-तन्त्र-वादी [संज्ञा पु.](सं.) १-लोक-तन्त्र सिद्धांत को मानने वाला। २-अमेरिका के लोकतन्त्री दल का सदस्य। डेमोक्रेट।

लोकतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मानवतत्त्व।

लोकतुषार [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

लोकत्रय [संज्ञा पु.](सं.) तीनों लोक। स्वर्ग, मृत्यु और पाताल तीनों लोकों का समष्टि।

लोकदंभक, लोकदम्भक [संज्ञा पु.](सं.) ठग। वंचक।

लोकद्वार [संज्ञा पु.](सं.) स्वर्ग का द्वार।

लोकधाता [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी का नाम।

लोक-धारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

लोकधुनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अफवाह। जनरव। जनश्रुति।

लोकना [क्रि. स.] (हिं.) १-ऊपर से गिरती हुई वस्तु हाथों में रोकना। २-बीच में ही उड़ा या ले जाना।

लोकनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-लोकपाल ३-बुद्ध।

लोक-नृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह नृत्य या नाच जो गाँव या देहात में नाचे जाते हैं।। फोक-डान्स।

लोकनेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकप्रिय नेता। २-शिव।

लोकप, लोकपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-लोकपाल। ३-राजा।

लोकपथ [संज्ञा पु.](सं.) सार्वजनिक व्यवहार या कार्य करने का ढंग।

लोकपद [संज्ञा पु.] (सं.) लोक अथवा सर्वसाधारण जनता से सम्बन्ध रखने वाला पद पब्लिक-आफिस।

लोक-पद्धति [संज्ञा स्त्री.](सं.) सार्वजनिक व्यवहार या कार्य करने का ढंग।

लोकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिक्पाल। पुराणानुसार आठ दिशाओं के आठ लोकपाल हैं। यथा-पूर्व दिशा का इन्द्र, दक्षिण-पूर्व का अग्नि, दक्षिण का यम, दक्षिण-पश्चिम का सूर्य, पश्चिम का वरुण, उत्तर-पश्चिम का वायु, उत्तर का कुबेर और उत्तर-पूर्व का सोम है। २-शिव। ३-विष्णु। ४-राजा। ५-अलोकितेश्वर बोधिसत्व का एक नाम।

लोकपालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोकपाल का धर्म

लोकपितामह [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्मा।

लोकप्रकाशक, लोकप्रकाशन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

लोकप्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो संसार में सब जगह मिलता हो।

लोकप्रदीप [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध।

लोकप्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) जिसे संसार के सभी लोग कहते और समझते हों। साधारण बात

लोकप्रसिद्ध [वि.] (सं.) विश्वविख्यात।

लोकबंधु, लोकबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सूर्य।

लोकबांधव, लोकबान्धव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब का मित्र। २-सूर्य।

लोकबाह्य [वि.] (सं.) १-समाज से खारिज या निकाला हुआ। २-संसार से निराला। ३-जातिच्युत।

लोकमत [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय में लोक या जनता की राय। समाज के बहुत से लोगों का मत। पब्लिक-ओपीनिअन।

लोकमय [वि.] (सं.) जगदाधार।

लोकमर्यादा [संज्ञा स्त्री.](सं.) लौकिक व्यवहार लौकिक चलन या रस्म।

लोकमाता [संज्ञा स्त्री.](सं.) लोक की जननी, लक्ष्मी।

लोकमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौकिक चलन। प्रचलित रीति। २-साधारण पंथ।

लोकयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यवहार। २-व्यापार। ३-आजीविका।

लोकरंजन, लोकरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) जनता को प्रसन्न करने वाला। सर्वप्रियता।

लोकरक्षक [संज्ञा पु] (सं.) नृप। राजा।

लोकरव [संज्ञा पु.] (सं.) अफवाह। प्रवाद।

लोकरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) चीथड़ा।

लोकल [वि.] (अं.) १-प्रांतिक। प्रादेशिक। २-किसी एक ही स्थान या नगर आदि से संबंध रखने वाला। स्थानीय।

लोकलबोर्ड [संज्ञा पु.](सं.) वह स्थानीय समिति जिसके सभ्यों का निर्वाचन किसी स्थान के कर-दाता करते हों तथा जिसके अधिकार में उस स्थान की सफाई आदि की व्यवस्था हो।

लोकलाज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लौकिक लाज या हया।

लोकलीक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोक की मर्यादा।

लोकलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

लोकवचन [संज्ञा पु.] (सं.) अफवाह। प्रवाद।

लोकवत् [वि.] (सं.) लोक के सदृश या समान।

लोकवर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य-चरित्र।

लोकवाद, लोकवार्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अफवाह। किंवदन्ती।

लोकवास्तु [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य आदि का वह विभाग जो लोक के कल्याण अथवा उपयोग के लिए सड़कें, कूएं, नहरें आदि बनाता है। पब्लिकवर्क्स।

लोकवाह्य [वि.] (सं.) १-जाति या समाज से निकाला हुआ। २-संसार से निराला। अकेला

लोक-विज्ञात [वि.] (सं.) प्रसिद्ध। प्रख्यात।

लोक-विद्विष्ट [वि.] (सं.) वह जो सब को नापसंद हो या जिसको सब नापसंद करें।

लोक-विधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रचलित पद्धति। २-संसार का रचियता।

लोकविश्रुत [वि.] (सं.) संसार भर में प्रसिद्ध।

लोकविश्रुति [संज्ञा पु.] (सं.) जनश्रुति। अफवाह।

लोकविसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जगत। सृष्टि।

लोकविस्तार [संज्ञा पु.] (सं) संसार में प्रसिद्ध।

लोकवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकरीति। लौकिक आचार। २-थोड़ी बातचीत।

लोकवृत्तांत, लोकवृत्तान्त [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य-चरित्र। इतिहास।

लोकव्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वसाधारण में प्रचलित रीति।

लोकव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य-समाज की प्रचलित रीति।

लोकशासन [संज्ञा पु] (सं.) लोक तंत्र। जनतंत्र

लोकश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जनश्रुति। अफवाह। २-जगप्रसिद्धि या कीर्ति।

लोकसंकर, लोकसङ्कर [संज्ञा पु] (सं.) संसार की गड़बड़ी। गोलमाल।

लोकसंक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) संसार का नाश।

लोकसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार के लोगों को प्रसन्न करना। २-संसार का कल्याण या

सबकी भलाई।

लोकसत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार जनता के हाथ में हो।

लोकसत्तात्मक-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य जिसमें अधिकांश जनता मताधिकार के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेती हो।

लोकसभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रतिनिधि-सत्तात्मक राज्यों में साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है। भारतीय संविधान में उक्त प्रकार की सभा। हाउस आफ पीपुल।

लोकसमाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्वसाधारण जनता का समुदाय। मंडली। २-बिरादरी। जाति। कॉम्यूनिटी।

लोकसाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-अग्नि ३-सूर्य।

लोकसात् [अव्य.] (सं.) सर्व-साधारण की भलाई के लिए।

लोकसाकृत [वि.] (सं.) जन कल्याण के लिए किया हुआ।

लोकसाधक [वि.] (सं.) संसार की सृष्टि करने वाला।

लोकसिद्ध [वि.] (सं.) प्रचलित। प्रसिद्ध।

लोकसुंदर, लोकसुन्दर [वि.] (सं.) जिसको समान्य लोग अच्छा कहते हों।

लोकसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो जनता के हित के काम अथवा सेवा करता हो। २-वह जो राज्य की ओर से लोक अथवा जनता की सेवा के लिए नियत हो। पब्लिक सर्वेण्ट।

लोकसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जनसाधारण के हित अथवा उपकार के लिए सेवाभाव से किये जाने वाले काम। २-राज्य की सेवा या नौकरी, जो वस्तुतः जनसाधारण के हित के लिए होती है। पब्लिकसरविस।

लोकसेवा-योग [संज्ञा पु.] (सं.) जनसाधारण के हित के अथवा उपकार के लिए सेवाभाव से किये जाने वाले कार्य के लिए दिया जाने वाला अधिकार-पत्र। पब्लिक सरविस कमीशन

लोकस्कंद, लोकस्कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) तमाल-वृक्ष।

लोकस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) दैनिक घटना।

लोकस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रचलित नियम

लोकस्वास्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) सामूहिक रूप से सब लोगों के स्वास्थ्य और निरोग रहने की अवस्था अथवा व्यवस्था। पब्लिक हेल्थ।

लोकहाँदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की हल्दी

लोकहार [वि.] (हिं.) संसार को नष्ट करने वाला

लोकहित [संज्ञा पु.] (सं.) संसार की भलाई।

लोकहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलथी।

लोकांतर, लोकान्तर [संज्ञा पु.] (सं) वह लोक जहां मरने पर जीव जाता है।

लोकांतरित, लोकान्तरित [वि.](सं.) १-जो इस लोक से दूसरे लोक में चला गया हो। २-मराहुआ। मृत। स्वर्गीय।

लोकाकाश [संज्ञा पु.](सं.) शून्य स्थान। आकाश

लोकाचार [संज्ञा पु.] (सं.) जनता में प्रचलित व्यवहार। लोक व्यवहार।

लोकाट [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसके बड़े बेर के बराबर खटमिट्ठे फल होते हैं।

लोकातिग [वि.] (सं.) अद्भुत। सामान्य।

लोकातिशय [संज्ञा पु.](सं.) दैनिक प्रथा के बाहर।

लोकात्मा [संज्ञा पु.](सं.) जगत् के आत्मा, विष्णु

लोकादि [संज्ञा पु.] (सं.) संसार के आदि कर्ता, ब्रह्मा।

लोकाधिक [वि.] (सं.) साधारण। सामान्य।

लोकाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकपाल। २-बुद्ध।

लोकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) अधर में फेंकना। उछालना।

लोकानुराग [संज्ञा पु.] (सं.) मानवजाति का प्रेम। सार्वजनिक प्रेम। लोकहितैषिता। उदारता।

लोकापवाद [संज्ञा पु.] (सं.) लोकनिंदा।

लोकाभ्युदय [संज्ञा पु.] (सं.) जनता की उन्नति।

लोकायत [संज्ञा पु.](सं.) १-वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २-चारवाकदर्शन जिसमें परलोक या परोक्षवाद का खण्डन है। ३-दुर्मिल नामक छन्द।

लोकायतिक [संज्ञा पु.] (सं.) नास्तिक। चार्वाक।

लोकायन [संज्ञा पु.] (सं.) नारायण का नाम।

लोकालोक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पौराणिक पर्वत जो भूमंडल के चारों ओर और मधुर जल पूरित सागर के परे है।

लोकावेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) संसार की भलाई चाहना।

लोकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-लोकपाल। ३-इन्द्र। ४-पारा। ५-राजा। ६-ईश्वर।

लोकेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकपाल। २-ईश्वर

लोकैषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग-सुखप्राप्ति की कामना।

लोकोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कहावत। मसल २-वह अलङ्कार जिसमें कहावत के द्वारा कुछ चमत्कार लाया जाता है।

लोकोत्तर [वि.] (सं.) ऐसा अद्भुत जैसा इस संसार में न होता हो। अलौकिक।

लोकोत्तरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोकोत्तर होने का भाव। अलौकिकता।

लोखड़ी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोमड़ी'।

लोखर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नाई के उस्तरा, कैंची नहानी आदि औजार। २-बढ़इयों या लोहारों आदि के औजार।

लोग [संज्ञा पु.] (हिं.) आसपास के सब आदमी। जनसमूह।

लोगचिरकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का फूल

लोगाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री।

लोच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लचलचाहट। लचक। २-कोमलतापूर्ण सौन्दर्य। ३-अच्छा ढंग ४-अभिलाषा। ५-जैन साधुओं का अपने सिर के बाल उखाड़ना।

लोचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँख की पुतली। २-दीपक की कालिख या काजल। सुर्मा। अंजन ३-एक प्रकार का कान का आभूषण। ४-काला या आसमानी रंग का वस्त्र। ५-धनुष का रोदा। ६-साँप की केंचुली। ७-झुर्रियाँ पड़ा हुआ चर्म। ८-झुरीं पड़ी हुई भौंएँ। ९-केले का पेड़। १०-शीशफूल। ११-मूर्ख आदमी।

लोचन [संज्ञा पु.] (सं.) आँख। नयन।

लोचन भर आना-नेत्रों में आंसू डबडबा आना

लोचन-गोचर, लोचन-पथ, लोचन-मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टि की दौड़। दृष्टिमार्ग।

लोचनहित [वि.] (सं.) नेत्रों के लिए लाभदायक

लोचनहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलाथोथा। तूतिया।

लोचना [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रकाशित करना। चमकाना। २-रुचि उत्पन्न करना। ३-इच्छा या अभिलाषा करना। [क्रि. अ.] १-अभिलाषा या कामना करना। २-शोभा देना। ३-ललचना। तरसना। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाई। हज्जाम। २-शीशा। दर्पण।

लोचशिर [संज्ञा पु.] (सं.) अजमोदा।

लोचारक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक नरक का नाम।

लोचून [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोहे का चूरा। २-लोहे की कीट का चूर्ण।

लोजंग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की नाव।

लोट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-उतार। घाट। २-त्रिवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोटने की क्रिया या भाव लुढ़कना।

मुहा०-*लोट मारना*-१-लेटना। सोना। २-किसी के प्रेम में बेसुध होना। *लोट होना या होजाना*-१-आसक्त होना। २-व्याकुल होना।

लोटन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का हल। २-एक प्रकार का कबूतर। ३-मार्ग की वे छोटी कंकड़ियां जो वायु चलने से इधर-उधर लुढ़कती है।

लोटनसज्जी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की सज्जी।

लोटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-भूमि या किसी आधार पर चित्त या पट होते हुए इधर-उधर होना।

लोटा

२-लुढ़कना। ३-कष्ट से करवटें बदलना। तड़पना। ४-विश्राम करना। लेटना। ५-मुग्ध या चकित होना। मुहा०-लोट जाना-१-बेसुध होकर पड़ या लेट जाना। २-मरजाना। लोटपोट करना-

लोटफेरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विवाह में वर-वधू के पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। २-बाजी या दांव का उलटफेर।

लोटपोट [संज्ञा स्त्री](हिं.) लेटने अथवा विश्राम करने की क्रिया या भाव। [वि.](हिं.)१-हँसी के कारण लेट जाने वाला। २-अत्यधिक प्रसन्न।

लोटा [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. लुटिया] पानी रखने का एक प्रसिद्ध गोल पात्र जिसमें पानी रखा जाता है। लोटा या लुटिया डुबाना-१-सर्वनाश करना। २-कलंक लगाना।

लोटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं) छोटा लोटा।

लोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा लोटा। २-वह पात्र जिससे तमोली पान सींचते हैं।

लोहागी-लंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाजी या बड़े लंगर से छोटा और केज-लंगर से बड़ा लंगर

लोड़ना+ [क्रि. स.] (हिं) आवश्यकता होना। जरूरत होना।

लोढ़कना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'लुढ़कना'।

लोढ़ना [क्रि. स.] (हिं.) १-चुनना। तोड़ना। २-ओटना।

लोढ़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री लोढ़िया] वह पत्थर का टुकड़ा जिससे सिल पर चीजें पीसते हैं। बट्टा। लोढ़ा डालना-बराबर करना। लोढ़ा-ढाल-चौपट। सत्यानाश।

लोढ़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा लोढ़ा।

लोण [संज्ञा पु.] (सं.) लोनी साग। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लोन'।

लोथ, लोथि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृत शरीर। शव। लाश। लोथ गिरना-मारा जाना। लोथ डालना-मार गिराना। लोथपोथ-लथपथ। थकने से चूर।

लोथड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) मांसपिंड।

लोथारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाव को कम पानी में धीरे-धीरे खेते हुए किनारे लगाना। २-लोथारीलंगर डालकर पानी की तह का पता लेते हुए मार्ग से किनारे की ओर बढ़ाना।

लोथारीलंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) सब से छोटा लंगर।

लोद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोध'।

लोध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल तथा लकड़ी औषध रूप में प्रयुक्त होती है।

लोधा [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार का जापानी तांबा।

लोदी [संज्ञा स्त्री.] (?) पठानों की एक जाति।

लोध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'लोध'। २-एक जाति का नाम। [संज्ञा पु.] (हिं.) जापानी ताँबा।

लोध्रतिलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद माना जाता है।

लोध्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) महुए का वृक्ष।

लोध्रपुष्पिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटे घव का फूल।

लोन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-नमक। २-लावण्य। सौंदर्य। *किसी का लोन खाना*-अन्न खाना। *किसी का लोन निकलना*-अकृतज्ञता या नमकहरामी का फल मिलना। *किसी का लोन न मानना*-किसी का उपकार न मानना। *जले पर लोन लगाना या देना*-दु:ख पर दु:ख देना। *किसी बात का लोन सा लगना*-अरुचिकर होना

लोनहरामी+ [वि.] (हिं.) कृतघ्न। नमकहराम।

लोना [वि] (हिं) नमकीन। सलोना। २-सुन्दर [संज्ञा पु] १-ईंट, पत्थर और मिट्टी को लगने वाला एक रोग जिससे दीवार झड़ने लगती हैं और कमजोर हो जाती हैं। २-दीवार से झड़ने वाली नमकीन मिट्टी। ३-नमकीन मिट्टी, जिससे शोरा बनाया जाता है वह क्षार जो चने की पत्तियों पर इकट्ठा होता है। ५-एक प्रकार का कीड़ा जो घोंघे की जाति का होता है। ६-अमलोनी नामक घास [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक कल्पित चमारी जो जादू टोने में बहुत दक्ष मानी गई है। [क्रि स.] (हिं) फसल काटना।

लोनाई [संज्ञा स्त्री] (हि.) लावण्य। सुन्दरता।

लोनार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह स्थान जहाँ नमक का उत्पादन होता है। २-वह स्थान जहाँ से नमक आता है।

लोनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोनी नामक साग।

लोनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति। -नोनियाँ। [संज्ञा स्त्री.] लोनी नामक साग।

लोनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कुल्फे की जाति का एक प्रकार का साग। २-वह क्षार जो चने की पत्ती पर होता है। ३-वह मिट्टी जिससे लोनिया लोग शोरा बनाते है। ४-देखो 'लोना'।

लोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाश। क्षय। २-गायब होना। अन्तर्द्धान। ३-अभाव। अदर्शन। ४-व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द-साधन में कोई वर्ण निकाल या छोड़ देते हैं। ५-विच्छेद। कर्म का लोप होना।

लोपक [वि.] (सं.) विघ्न या बाधा डालने वाला

लोपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लुप्त करना। २-नष्ट करना।

लोपना* [क्रि. स.] (हिं.) १-लुप्त करना। मिटाना २-छिपाना। [क्रि. अ.] १-लुप्त होना। २-छिपना। ३-नष्ट होना।

लोपांजन, लोपाञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) एक कल्पित अंजन जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि इसे लगाने से आदमी दूसरों को दिखाई नहीं देता।

लोपाक, लोपापक [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल। गीदड़। सियार।

लोपापिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) मादा गीदड़। सियारन।

लोपामुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदर्भाधिपति की कन्या तथा महर्षि अगस्त्य की पत्नी का नाम २-दक्षिण में अगस्त्य-मंडल के पास उदय होने वाले एक तारे का नाम।

लोपायक [संज्ञा पु.] (सं.) सियार। गीदड़।

लोपाश, लोपाशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शृगाल। गीदड़। २-नर लोमड़ी।

लोपाशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सियारन।

लोपी [वि](सं.) १-हानिकारक। अनिष्टकारक। २-वर्णलोप करने योग्य।

लोप्ता [वि.] (सं.) १-नियम भंग करने वाला। २-हानि पहुँचाने वाला।

लोप्त्र [संज्ञा पु.] (सं) चोरी का माल।

लोप्य [वि] (स) नाश करने योग्य।

लोबा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोमड़ी।

लोबान [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का सुगन्धित गोंद जो जलाने और दवा के काम में आता है

लोबिया [संज्ञा पु] (हि) एक प्रकार का घोड़ा जो सफेद रंग का तथा बहुत बड़ा होता है।

लोबिया-कंजई [संज्ञा पु.](हि.) गहरा हरा रंग।

लोभ [संज्ञा पु.] (सं) १-लालच। लिप्सा। २-कृपणता। कंजूसी। ३-जैनदर्शन के अनुसार वह मोहनीय कर्म जिसके कारण मनुष्य किसी पदार्थ को त्याग नहीं सकता।

लोभन [संज्ञा पु.] (सं) १-लोभ। लालच। २-सुवर्ण। सोना।

लोभना* [क्रि. अ.] (हि.) मुग्ध या मोहित होना। [क्रि. स.] (हि.) मुग्ध या मोहित करना।

लोभनीय [वि.] (सं.) १-जिस पर लोभ हो सके। सुन्दर। २-जो लुभाया जा सके। जो आकर्षित किया जा सके।

लोभ-विजय [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजा जो लड़ाई न करना चाहता हो पर कुछ धन चाहता हो।

लोभाना* [क्रि. स.](हि.) मोहित या मुग्ध करना [क्रि. अ.] (हि.) मोहित या मुग्ध होना।

लोभार+ [वि.] (हि.) लुभाने वाला।

लोभित [वि.] (हिं.) लुभाया हुआ। मुग्ध।

लोभी [वि.](हिं.) १-जिसे बहुत लोभ या लालच हो। २-लुब्ध। लुभाया हुआ।

लोभ्य [वि.] (सं.) लोभ या लालच करने योग्य।

लोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोआं। २-बाल।

[संज्ञा पु.] (हिं.) नर लोमड़ी।

लोमक [वि.] (सं.) रोमयुक्त।

लोमकरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जटामासी। २-माँसी नामक घास।

लोमकर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा।

लोमकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) खरगोश।

लोमकीट [संज्ञा पु.] (सं.) जूँ।

लोमकूप [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में का वह छिद्र जो रोएँ की जड़ में होता है। लोमगर्त।

लोमगर्त [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'लोमकूप'।

लोमघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) गंज नामक रोग।

लोमड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जङ्गली जन्तु।

लोमपाद [संज्ञा पु.] (सं.) अङ्गदेश के एक राजा का नाम। यह राजा दशरथ के मित्र थे।

लोमपादपुर [संज्ञा पु.] (सं.) चम्पानगरी जिसे अब भागलपुर कहते हैं।

लोममणि [संज्ञा पु.] (सं.) लोमनिर्मित कवच।

लोमरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लोमड़ी'।

लोमविवर [संज्ञा पु.] (सं.) रोमकूप।

लोमश [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणोक्त ऋषि का नाम २-मेष। मेढ़ा। [वि.] (सं.) अधिक और बड़े रोएँ वाला।

लोमशकोडा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

लोमशपर्णी, लोमशपर्णिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी नामक औषध।

लोमशपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) सरिस।

लोमशमार्जार [संज्ञा पु.] गंधबिलाव।

लोमशा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वैदिककालीन एक स्त्री जो मंत्रों की रचयिता मानी जाती है। २-काकजङ्घा। ३-बच। ४-अतिबला। ५-कौंछ। ६-कसीस। ७-लोमड़ी। ८-सियारन।

लोमशातन [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

लोमशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

लोमश्य [संज्ञा पु.] (सं.) रोयों की अधिकता।

लोमसंहर्षण [संज्ञा पु.] (सं) रोमांच।

लोमस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'लोमश'।

लोमसार [संज्ञा पु.] (सं.) मरकतमणि।

लोमसिक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सियारिन।

लोमहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोमांच। पुलक। २-एक राक्षस का नाम।

लोमहर्षण [वि.] (सं.) ऐसा भीषण जिससे रोंगटे खड़े हो जायँ। भयानक। [संज्ञा पु.] १-पुराणोक्त व्यास के एक शिष्य का नाम। २-रोमांच।

लोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वचा। वच।

लोमाशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सियारिन। गीदड़ी

लोय* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोग। २-आंख। नयन। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लौ। लपट। ज्वाला। [अव्य.] (हिं.) देखो 'लौं'।

लोयन* [संज्ञा पु.] (हिं.) आंख। नेत्र।

लोर+ [वि.] (हिं.) १-लोल। चंचल। २-उत्सुक इच्छुक। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कान का कुंडल २-आंसू। ३-लटकन।

लोरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चंचल होना। २-लपकना। ३-लिपटना। ४-झुकना। ५-लोटना।

लोरा+ [संज्ञा पु.] (?) आंसू। अश्रु।

लोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह गीत जो स्त्रियां छोटे बच्चों को सुलाते समय गाती हैं। २-तोते की एक जाति।

लोल [वि.] (सं.) १-हिलता-डोलता। कंपायमान २-चंचल। ३-परिवर्तनशील। ४-क्षणभंगुर क्षणिक। ५-उत्सुक। अति इच्छुक। [संज्ञा पु.] लिंगेन्द्रिय।

लोलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नथों, बालियों आदि में का लटकन। २-कान-कील। लोलकी। ३-घंटी में का लटकन।

लोलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कान के नीचे का लटकता हुआ भाग।

लोलजट [संज्ञा पु.] (सं.) ईशानकोण का एक राज्य

लोलादिनेश [संज्ञा पु.] (सं.) लोलार्क नामक सूर्य

लोलना* [क्रि अ.] (हिं.) हिलना-डोलना।

लोला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीभ। २-लक्ष्मी। ३-मधुदैत्य की माँ का नाम। ४-एक योगिनी का नाम। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, मगण, भगण और अन्त में दो गुरु होते हैं। ६-एक नाव जो ६४ हाथ लम्बी आठ हाथ चौड़ी और ६$\frac{२}{५}$ हाथ ऊँची होती है। [संज्ञा पु.] (देश.) लड़कों का एक खिलौना। [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरुषेंद्रिय। शिश्न।

लोलाक्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसकी आंखें नाचती हों।

लोलार्क [संज्ञा पु.] (सं.) काशी के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम।

लोलित [वि.] (सं.) शिथिल। ढीला।

लोलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंचल प्रकृति की स्त्री।

लोलुप [वि.] (सं.) १-लोभी। लालची। २-परम उत्सुक।

लोलुपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लालच।

लोलुभ [वि.] (सं.) अत्यधिक लोभी या लालची।

लोलुव [वि.] (सं.) बारंबार काटने वाला।

लोलोर [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

लोवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोमड़ी। [संज्ञा पु.] (हिं.) तीतर की जाति का एक पक्षी

लोशन [संज्ञा पु.] (अं.) अधिक जल में घोली हुई औषध।

लोष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिट्टी का ढेला। २-पत्थर।

लोष्टघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) खेत के ढेले फोड़ने का औजार।

लोष्टमय [वि.] (सं.) ढेले के समान।

लोष्टु [संज्ञा पु.] (सं.) मिट्टी का ढेला।

लोहँड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोहे की छोटी कड़ाही। २-तसला।

लोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध काले रंग की धातु जिसके हथियार और यन्त्र आदि बनते हैं। २-रक्त। ३-लाल बकरा।

लोह-कवचित [वि.] (सं.) बख्तरबंद।

लोहकांत, लोहकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) चुम्बक।

लोहकार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहार।

लोहकिट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का मोर्चा।

लोहगंध, लोहगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक जाति का नाम।

लोहगिरि [संज्ञा पु] (सं.) एक पर्वत का नाम।

लोहघातक [संज्ञा पु.] (सं) लोहार।

लोहचोलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार का लोहे का बकतर।

लोहचून, लोहचूर [संज्ञा पु.] (हि.) लोहचूर्ण।

लोहचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का चूरा। लोहे का बुरादा।

लोहज [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहे का चूरा जो लोहे से निकले। लोहचूर्ण। २-कांसा। फूल।

लोहजाल [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का कवच या बख्तर।

लोहजित् [संज्ञा पु.] (सं.) हीरा।

लोहदारक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

लोहद्रावी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोहागा। २-अम्लवेल।

लोहनाल [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का तीर।

लोहपंचक, लोहपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार पाँच धातु, वह ये हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, रांगा और सीसा।

लोहपाश [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की जंजीर।

लोहप्रतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोहे की [illegible] प्रतिमा या मूर्त्ति।

लोह-बद्ध [वि.] (सं.) लोहे से जड़ा हुआ या जिसकी नोक पर लोहा जड़ा हो।

लोहवान [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'लोबान'।

लोहमय [वि.] (सं.) लोहे का बना हुआ।

लोहमुक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल रंग का [illegible]

लोहमेखल [वि.] (सं) लोहे की मेखला पहने [illegible]

लोहलंगर [संज्ञा पु.] (हि.) १-जहाज का [illegible]

२-बहुत भारी वस्तु।

लोहल [वि.] (सं.) अव्यक्त बातचीत।

लोहवत् [वि.] (सं.) लोहे के समान।

लोहवर [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

लोहवर्म [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का बना कवच या बखतर।

लोहशंकु, लोहशङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोहे का खूँटा। २-पुराणोक्त एक नरक का नाम।

लोहश्लेषण, लोहश्लेष्मक [संज्ञा पु.] (सं.) सुहागा

लोहसंकर, लोहसङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) नीले रङ्ग इस्पात (लोहा)।

लोहसार [संज्ञा पु.] (सं.) फौलाद।

लोहहारक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम (मनु)

लोहाँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह छड़ी जिसके किनारे पर लोहा लगा रहता है।

लोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध काली धातु जिसके हथियार, बरतन, यंत्र आदि बनते हैं। २-अस्त्र। हथियार। ३-लोहे की बनी हुई वस्तु। ४-लाल रंग का बैल।

लोहे के चने-अत्यन्त कठिन कार्य। *लोहा गहना*-युद्ध के निमित्त हथियार उठाना। *लोहा बजना*-युद्ध होना। *लोहा बरसना*-तलवार चलना। *किसी का लोहा मानना*-किसी विषय में किसी का प्रभुत्व या अधिकार स्वीकार करना। *लोहा लेना*-१-युद्ध करना। २-किसी प्रकार की लड़ाई करना। *लोहे की स्याही*-एक प्रकार की स्याही जो रंगाई के काम में आती है।

लोहाकार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की खान।

लोहाकर्ण [वि.] (सं.) लाल कान वाला।

लोहाना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे की वस्तु में खाद्यपदार्थ रखने से लोहे का रङ्ग या स्वाद आजाना। [संज्ञा पु.] (दे श.) एक जाति का नाम।

लोहार [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लोहारिन, लोहाइन] लोहे का काम करने वाली एक प्रसिद्ध जाति। *लोहार की स्याही*-कसीस।

लोहारी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) लोहार का काम।

लोहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोहे का बरतन।

लोहित [वि.] (सं.) रक्त। लाल। [संज्ञा पु.] (हिं.) मंगलग्रह।

लोहितक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल मणि। २-मंगलग्रह। ३-धान विशेष। ४-आधुनिक रोहतकनगर का प्राचीन नाम।

लोहितकल्माष [वि.] (सं.) चितकबरा।

लोहितकृष्ण [वि.] (सं.) गाढ़ा लाल रंग।

लोहितक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) रक्त का नाश।

लोहितग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

लोहितचंदन, लोहितचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लाल चन्दन।

लोहित्व [संज्ञा पु.] (सं.) लालिमा। ललाई।

लोहित-मृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गेरू।

लोहित-शतपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल का फूल।

लोहितशबल [वि.] (सं.) चितकबरा।

लोहितांग, लोहिताङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मङ्गलग्रह

लोहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो क्रोध से लाल हो गई हो।

लोहिताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-कोकिल। कोयल। [वि.] (सं.) जिसकी आंखें लाल हों

लोहिताक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसकी आंखें लाल हों।

लोहितानन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नेवला। २-वह जिसका मुख लाल हो।

लोहितायस [संज्ञा पु.] (सं.) ताँबा।

लोहितार्ण [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

लोहितार्द्र [वि.] (सं.) रुधिर से लथपथ।

लोहितास्य [वि.] (सं.) लाल मुंह वाला। मुख में रुधिर लगा हुआ।

लोहिताहि [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रंग का साँप।

लोहितिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्त-प्रवाहिनी नाड़ी

लोहितीभूत [वि.] (सं.) जो लाल हो गया हो।

लोहितेक्षण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल आंखें।

लोहितोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

लोहितोद [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

लोहितोर्ण [वि.] (सं.) लाल रंग की ऊन वाला।

लोहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लालिमा। ललाई। २-ब्रह्मपुत्र नदी का नाम। ३-कुशद्वीप के पास के एक समुद्र का नाम। ४-एक प्राचीन गाँव का नाम।

लोहित्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक नदी का नाम २-एक अप्सरा का नाम।

लोहिनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका लाल रंग हो।

लोहिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोहे की चीजों का व्यवसाय करने वाला। २-बनियों तथा मारवाड़ियों की एक जाति। ३-लोहे की बनी हुई गोली। ४-लाल रंग का बैल।

लोही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) उषाकाल या प्रभात के समय की लाली।

लोहू [संज्ञा पु.] (हिं.) रक्त।

लौं [अव्य.] (हिं.) १-तक। पर्यन्त। २-समान। तुल्य। बराबर।

लौकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-दिखाई देना। २-चमकना। ३-आँखों में चकाचौंध होना।

लौंग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक झाड़ की कली जिसे सुखाकर मसाले और दवा के काम में लेते हैं। २-लौंग के आकार का कान या नाक में पहनने का एक आभूषण।

लौंगचिड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बेसन मिलाकर बनाया हुआ कबाब। २-फुलकी। रोटी।

लौंगमुश्क [संज्ञा पु.] (हिं.) एक फूल का नाम।

लौंगरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की घास।

लौंगिया-मिर्च [संज्ञा स्त्री.] (हिं) एक प्रकार की बहुत कड़ुवी मिर्च।

लौंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लौंडी, लौंडिया] १-छोकरा। लड़का। २-खूबसूरत लड़का। [वि.] (सं.) १-अबोध। २-छिछोरा।

लौंडापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लौंडा होने का भाव २-लड़कपन। ३-छिछोरापन।

लौंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दासी।

लौंडेबाज [वि.] (सं.) १-(वह पुरुष) जो सुन्दर लड़कों से अप्राकृतिक कर्म करने के लिए प्रेम करता हो। २-(वह स्त्री) जो कम उमर युवकों से वासना तृप्ति के लिए प्रेम रखती हो।

लौंडेबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लौंडों के साथ लौंडेबाज का अप्राकृतिक कर्म।

लौंद [संज्ञा पु.] देखो 'मलमास'।

लौंदरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पानी जो ग्रीष्मऋतु में वर्षा आरंभ होने से पूर्व बरसता है। दौंगरा।

लौंदा* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लौंदा'।

लौंदी [संज्ञा स्त्री.] (दे श.) वह करछी जिससे खंडसार में पाक चलाया जाता है।

लौंन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'लवन'। २-देखो 'लौंद'।

लौ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-आग की लपट। ज्वाला। २-दीपशिखा। ३-लगन। चाह। ४-चित्त की वृत्ति। ५-आशा।

लौ-लीन-किसी के ध्यान में या किसी काम में लगा हुआ। तन्मय।

लौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) कद्दू। घीआ।

लौकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) दिखाई पड़ना।

लौका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लौकी] कद्दू।

लौकिक [वि.] (सं.) १-इस लोक अथवा संसार से सम्बन्ध रखने वाला। २-व्यवहारिक। [संज्ञा पु] (सं.) सात मात्राओं के छन्दों का नाम जो इक्कीस होते हैं।

लौकिक-ज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहारिक ज्ञान

लौकिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोक-व्यवहार। शिष्टता।

लौकिकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) लौकिकता।

लौकिक-न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) लोक में पाला-जाने वाला नियम।

लौकिक-विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह विवाह जो ऐसे वर या वधू में होता है कि किसी धर्म अथवा संप्रदाय का बंधन नहीं मानते,

तथा केवल विधि द्वारा निश्चित नियमों के अनुसार विवाह बंधन में बंधते हैं। सिविल-मैरेज।

लौकिकाचार [संज्ञा पु.] (सं.) लोकाचार। कुलाचार।

लौकिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ख्याति। प्रसिद्धि।

लौकिकीयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोक-व्यवहार

लौकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कद्दू। २-काठ की वह नली जिससे मद्य चुवाई जाती है।

लौक्य [वि.] (सं.) १-सांसारिक। पार्थिव। मानवी। २-साधारण मामूली।

लौगाक्षि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन आचार्य का नाम।

लौज [संज्ञा पु.] (अ.) १-बादाम। २-एक प्रकार की मिठाई।

लौ-जात की गोठ–वह ऐंठ की गोट जो समोसे के जोड़ों पर बनाई जाती है।

लौजोरा* [संज्ञा पु.] (हिं.) धातु की चीजें जोड़ने या बनाने वाला।

लौट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लौटने की क्रिया, भाव या ढंग।

लौटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कहीं से वापस आना पलटना। २-इधर से उधर मुँह फेरना। पीछे की ओर घूमना। [क्रि. स.] पलटना। उलटना।

लौटपौट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वह छपाई जिसमें उलटा सीधा न हो। २-उलटने-पुलटने की क्रिया। ३-देखो 'लोटपोट'।

लौटफेर [संज्ञा पु.] (हिं.) उलटफेर। हेरफेर। भारी परिवर्त्तन।

लौटान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लौटने की क्रिया या भाव।

लौटाना [क्रि. स.] (हिं.) १-पलटाना। २-वापस करना। ३-किसी को उलटे मुँह फेरना। ४-ऊपर से नीचे करना।

लौटानी [क्रि. वि.] (हिं.) लौटते समय। लौटती बार।

लौड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरुष की मूत्रेंद्रिय। शिश्न।

लौद, लौदरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लौदड़ी, लौदरी] अरहर आदि की नरम डाली।

लौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) नमक।

लौनहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. लौनहारिन] खेत काटने वाला।

लौना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पशु का एक अगला और एक पिछला पैर बांधने की रस्सी। २-ईंधन। फसल काटने का काम। *[वि.] [स्त्री लौनी] सुन्दर। लावण्ययुक्त।

लौनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-फसल की कटनी। कटाई। २-अँकोरा। लहना। ३-नवनीत। नैनू।

लौमना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लौना'।

लौमनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'लौना'। २-देखो 'लौनी'।

लौरी [संज्ञा स्त्री.] (?) गाय की बछिया।

लौल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंचलता। अस्थिरता। २-अव्यवस्थित चित्तता। ३-उत्सुकता। ४-उत्कट कामना।

लौल्यता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अधिक या उत्कट इच्छा। २-चंचलता।

लौल्यवत् [वि.] (सं.) इच्छुक। अर्थलोलुप।

लौह [संज्ञा पु.] (सं.) लोहा नामक धातु।

लौहकांतक, लौहकान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) कांत-लोहा।

लौहकार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहार।

लौहकिट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) मंडूर।

लौहज [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'लोहज'।

लौहचारक [संज्ञा पु] (सं.) एक भीषण नरक का नाम।

लौह-पुरुष [संज्ञा पु.](सं.) लोहे का या लोहे का-सा आदमी। ऐसा आदमी जिसके विचार या संकल्प लोहे के समान बे-लचक हों। आइरन-मैन।

लौह-बंध, लौहबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की जंजीर।

लौह-भांड, लौहभाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे के बरतन।

लौहमय [वि.] (सं.) लोहे का बना हुआ।

लौह-मल [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का मुर्चा या जंग।

लौहयंत्र, लौहयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की बनी कल।

लौह-युग [संज्ञा पु.] (सं) इतिहास में सभ्यता के विचार से वह युग जब अस्त्र-शस्त्र, औजार आदि लोहे के बनते थे। आइरन-एज।

लौह-रक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) रूमानिया की नाजी संस्था का नाम। आइरन गार्ड।

लौहशंकु, लौहशङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की कील।

लौहसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लवण जो लोहे से बनाया जाता है।

लौह-स्वतिक [संज्ञा पु.] (सं.) जरमनी का एक तमगा। आइरन क्रॉस।

लौहा [संज्ञा पु.] देखो 'लोहा'।

लौहाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) धातुओं के तत्व को जानने वाला आचार्य।

लौहात्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोहे का बना हुआ कड़ाहा।

लौहायस [वि.] (सं.) लोहे या तांबे का बना हुआ

लौहासव [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक आसव जो लोहे के योग से बनता है।

लौहि [संज्ञा पु.](सं.) अष्टक के एक पुत्र का नाम

लौहित [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव का त्रिशूल।

लौहिता [संज्ञा पु.] (हिं.) वैश्यों की एक जाति। लोहिया।

लौहितायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्र का नाम।

लौहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल सागर। २-एक प्रकार का धान। ३-एक तीर्थ का नाम। ४-ब्रह्मपुत्र नदी। ५-एक पर्वत का नाम। [वि.] (सं.) १-लोहे का। २-लाल रंग का।

लौहेष [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे का बना हल।

ल्याना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लाना'।

ल्यारी [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़िया।

ल्याव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लुआब'।

ल्यावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'लाना'।

ल्वारि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लूह'।

ल्हासा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लासा'।

ल्हीक+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'लीख'।

व

व हिंदी वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन वर्ण। यह वर्ण उकार का विकार और अंतस्थ व्यंजन माना गया है। यह दाँत और ओठ की सहायता से उच्चारण किया जाता है, अतः इसे दन्त्यौष्ठ कहते हैं।

वंक, वङ्क [वि.] (सं.) कुछ झुका हुआ। टेढ़ा। [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का मोड़।

वंकट [वि.](हिं.) १-वक्र। टेढ़ा। २-जो सीधा न हो। कुटिल। ३-विकट। दुर्गम।

वंकनाल, वङ्कनाल [संज्ञा पु.](सं.) शरीर की एक नाड़ी का नाम।

वंकनाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुषुम्ना नामक नाड़ी जो मध्य में मानी गई है।

वंकर, वङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का मोड़।

वंकसेन, वङ्कसेन [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त का वृक्ष।

वंका, वङ्का [संज्ञा स्त्री.](सं.) चारजामें की अगली मेंढ़ी।

वंकाटक, वङ्काटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

वंकाला, वङ्काला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंगाल की एक प्राचीन राजधानी का नाम।

वंकिम, वङ्किम [वि.] (सं.) टेढ़ा। वक्र।

वंकिल, वङ्किल [संज्ञा पु.] (सं.) कंटक। काँटा।

वंक्रा, वङ्क्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पशुओं की पसली की हड्डी। २-काँड़ी। कड़ी। ३-एक बाजा जो प्राचीनकाल में होता था।

वंक्षण [संज्ञा पु.](सं.) मूत्राशय और जंघास्थि का सन्धिस्थान।

वंक्षु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम। यह हिन्दूकुश पर्वत से निकलती है।

वंग, वङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बंगाल प्रदेश। २-राँगा (धातु)। ३-रांगे का भस्म (वैद्यक)। ४-कपास। बैंगन। भंटा।

वंगज, वङ्गज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंदूर। २-पीतल। [वि.] (सं.) १-बंगाल में उत्पन्न होने वाला। २-बंगाली।

वंगजीवन, वङ्गजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) चांदी।

वंगन, वङ्गन [संज्ञा पु.] (सं.) बैंगन।

वंगमल, वङ्गमल [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक धातु।

वंगसेन, वङ्गसेन [संज्ञा पु.](सं.) लाल फूल वाला अगस्त।

वंगारि, वङ्गारि [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

वंगाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भैरवराग की एक रागिनी का नाम।

वंगाष्टक, वङ्गाष्टक [संज्ञा पु.](सं.) एक रसौषध जो प्रमेह रोग में दी जाती है।

वंगेश्वर, वङ्गेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध रस का नाम।

वंचक, वञ्चक [वि.] (सं.) १-धूर्त्त। धोखेबाज। २-ठग। ३-खल। दुष्ट। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीदड़। २-चोर। ठग। ३-सेंधियार।

वंचन, वञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धोखा। छल। २-धोखा देना। ठगना। ३-किसी की प्राप्य अथवा भोग्य वस्तु उसे प्राप्त करने अथवा भोगने से रहित करना। प्राइवेशन।

वंचना, वञ्चना [संज्ञा स्त्री.](सं.) धोखा। जाल। फरेब। ❀[क्रि. स.](हिं.) १-ठगना। धोखा-देना। २-पढ़ना। बाँचना।

वंचित, वञ्चित [वि.](सं.) १-जो ठगा गया हो। २-अलग किया हुआ। ३-विमुख। रहित। हीन। ४-जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो अथवा न की गई हो।

वंजुल, वञ्जुल [संज्ञा पु.](सं.) १-बेंत। २-तिनिश का पेड़। ३-अशोक वृक्ष। ४-स्थलपद्म। ५-एक पक्षी का नाम।

वंजुला, वञ्जुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुधारी गाय। २-पुराणोक्त एक नदी का नाम।

वंजुलावती, वञ्जुलावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम।

वंट, वण्ट [संज्ञा पु.](सं.) १-बाँट। भाग। २-मूठ। बेंठ। ३-लँडूरा। बिना पूँछ का। ४-अविवाहित व्यक्ति।

वंटक, वण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) भाग। बाँट। [वि.] बाँटने वाला। विभाजक।

वंटन, वण्टन [संज्ञा पु.] (सं.) नियत करना। निश्चित करना। निस्थापन करना। अलॉट।

वंटाल, वण्टाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूरों का युद्ध। २-नौका। ३-खोदने का औजार।

वंठ, वण्ठ [वि.] (सं.) जिसका कोई अङ्ग खंडित हो। [संज्ञा पु.] १-अविवाहित पुरुष। २-दास। ३-बौना। वामन। ४-कुन्त। भाला।

वंठर, वण्ठर [संज्ञा पु.] (सं) १-ताड़ के वृक्ष की कोंपल। २-बाँस के कल्ले का वह मोटा पत्ता जो उसे छिपाये रहता है। ३-कुत्ते की पूंछ। ४-बकरी, गाय आदि बांधने की रस्सी। ५-स्तन। थन। ६-मेघ। ७-कुत्ता।

वंठाल, वण्ठाल [संज्ञा पु.] देखो 'वंटाल'।

वंड, वण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-वह पुरुष जिसकी लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर का वह चमड़ा न हो, जो सुपारी को ढके रहता है। २-ध्वज-भंग नामक रोग। [वि.] १-बिना पूंछ का। बाँडा। २-हीनांग।

वंडर, वण्डर [संज्ञा पु.](सं.) १-कंजूस आदमी। २-नपुंसक आदमी।

वंडा, वण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुंश्चली या व्यभिचारिणी स्त्री। छिनाल औरत।

वंदक, वन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रशंसक। भाट। वन्दीजन।

वंदथ, वन्दथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी की स्तुति करे। भाट। बन्दीजन।

वंदन, वन्दन [संज्ञा पु.](सं.) स्तुति और प्रणाम

वंदनमाल, वन्दनमाल, वंदनमाला, वन्दनमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वन्दनवार।

वंदनवार [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह माला जो सजावट के लिए घर के द्वार पर अथवा मंडप के चारों ओर उत्सव या मंगल अवसर पर बांधी जाती है।

वंदना, वन्दना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तुति। २-प्रणाम। वंदन। ३-होम के समय यज्ञ के अन्त में लगाया जाने वाला। तिलक। ❀ [क्रि. स.] (हिं.) वन्दना या स्तुति करना।

वंदनी, वन्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तुति। २-एक अर्क जिससे मृतक भी जीवित हो जाता है। ३-गोरोचन। ४-शरीर पर के तिलक आदि के चिह्न। ५-याचना। ६-वटी।

वंदनीय, वन्दनीय [वि.] (सं.) जिसकी वंदना करना उचित हो। जो वन्दना के योग्य हो।

वंदनीया, वन्दनीया [संज्ञा स्त्री.](सं.) हरताल।

वंदा, वन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भिखारिनी। २-एक प्रकार का पौधा जो दूसरे पेड़ों के ऊपर उनके रस से पलता है।

वंदारु, वन्दारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तोत्र। २-वन्दाक। वांदा। [वि.] १-प्रशंसा करने-वाला। २-श्रद्धेय। माननीय।

वंदिग्राह, वन्दिग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) डाकू।

वंदित, वन्दित [वि.] (सं.) [स्त्री. वंदिता] १-जिसकी वन्दना की जाय। २-पूज्य।

वंदी, वन्दी [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. वन्दिता] देखो 'बंदी'।

वंदीक, वन्दीक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वंदीगृह, वन्दीगृह [संज्ञा पु.] (सं.) जेलखाना।

वंदीजन, वन्दीजन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जाति जो राजाओं की कीर्त्ति का वर्णन करते थे। चारण।

वंदी-पाल [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दीगृह का रक्षक।

वंद्य [वि.] (सं.) वंदनीय। आदरणीय। पूजनीय

वंद्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंदन का भाव।

वंधु [संज्ञा पु.] देखो 'बंधु'।

वंधुर, वन्धुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ अथवा गाड़ी का आश्रय जिसमें दोनों हरसे तथा धुरा प्रधान है। २-रथ या गाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान।

वंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस। २-पीठ की हड्डी रीढ़। ३-नाक की हड्डी। बाँसा। ४-बाँसुरी ५-परिवार। खानदान। ६-बारह हाथ का एक मान। ७-एक प्रकार की ईख। ८-खड्ग के मध्य का भाग जो ऊँचा होता है। ९-बाहु आदि की लम्बी हड्डियाँ। १०-युद्ध-सामग्री। ११-विष्णु। १२-फूल। १३-वंशलोचन।

वंश-ऋषि [संज्ञा पु.] (सं.) वे ऋषि जिनके नाम वंश ब्राह्मण में आये हैं।

वंशक [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी जाति का बाँस।

वंश-कठिन [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस का जंगल।

वंशकपूर [संज्ञा पु.] (हिं.) वंसलोचन।

वंशकर [संज्ञा पु] (सं.) वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरम्भ हुआ हो। मूलपुरुष।

वंशकरा [संज्ञा पु.] (सं.) महेंद्र पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम।

वंशकर्पूर [संज्ञा पु.] (सं.) बंशलोचन।

वंशकर्पूर-रोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशलोचन।

वंशकार [संज्ञा पु.] (सं.) गंधक।

वंशकीर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंश का गौरव।

वंशकृत [संज्ञा पु.] (सं.) वंशस्थापक। मूलपुरुष

वंश-क्रम [संज्ञा पु.](सं.) किसी वंश की परम्परा

वंशक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) बंश का नाश।

वंशक्षीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंसलोचन।

वंशघटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का खेल।

वंश-चरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वंश का चरित्र या इतिहास।

वंशचितक, वंशचिन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वंशावली जानने वाला।

वंशछेत्ता [वि.] (सं) जिसके वंश का गौरव नष्ट हो गया हो। [संज्ञा पु.] बढ़ई।

वंशज [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के वंश में उत्पन्न। सन्तान। औलाद। २-पुत्र। ३-

बाँस का बियाया चावल।

वंशजा [संज्ञा पु.] (सं.) १–बंसलोचन। २–कन्या

वंशतंडुल, वंशतण्डुल [संज्ञा पु.] (हिं.) बाँस में का चावल।

वंशतिलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक छन्द का नाम।

वंशदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा पुरु की एक स्त्री का नाम।

वंशधर [संज्ञा पु.] (सं.) १–वंशज। सन्तान। २–वंश की मर्यादा रखने वाला।

वंशधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम। यह महेंद्र पर्वत से निकलती है।

वंश-धान्य [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस का चावल।

वंशनर्ती [संज्ञा पु.] (सं.) १–भाँड़। २–मसखरा विदूषक।

वंशनाडका, वंशनालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँस की नली।

वंशनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वंश का प्रधान पुरुष।

वंशनाश [संज्ञा पु.] (सं.) १–वंश का लोप। २–फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग।

वंशनेत्र [संज्ञा पु.](सं.) गन्ने के अंकुर वाले डंठल जिन्हें भूमि में गाड़ने से पौधा उत्पन्न होता है

वंशपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–हरताल। २–बांस का पत्ता। ३–नरकुल। सरपत।

वंशपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १–हरताल। २–सफेद पौंडा या गन्ना। ३–नरकुल। सरपत ४–एक प्रकार की मछली।

वंशपत्रपतित [संज्ञा पु.](सं.) एक छन्द का नाम

वंशपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रकार की हींग २–बांसा नामक घास।

वंशपरंपरा, वंशपरम्परा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रमानुसार सूची।

वंशपीत [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुल।

वंशपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहदेवी-लता।

वंशपूरक [संज्ञा पु.] (सं.) ईख की आंख।

वंशबीज [संज्ञा पु.] (सं.) बांस का चावल।

वंशब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद के ब्राह्मणों में से एक जिसमें सामवेदी ब्राह्मणों के वंशकार ऋषियों की नामावली है।

वंशमय [वि.] (सं) बाँस का बना हुआ।

वंशमर्यादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशपरम्परा से प्राप्त गौरव।

वंशयव [संज्ञा पु.] (सं.) बांस का चावल।

वंशराज [संज्ञा पु.] (सं.) सब से बड़ा बांस।

वंशरोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंसलोचन।

वंशलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) वंसलोचन।

वंशवर्धन [वि.] (सं.) कुल का गौरव या मर्यादा बढ़ाने वाला।

वंशतति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–खान्दान। कुल। २–बांस का वन।

वंशविदल [संज्ञा पु.] (सं.) बांस की बनी हुई चिमटी।

वंशविस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) वंशपरंपरा।

वंशवृत्त [संज्ञा पु.](सं.) वह लेख जो किसी वंश के मूलपुरुष से लेकर उसके परवर्ती विकास तथा उस वंश में होने वाले सब लोगों के स्थान आदि सूचित करता है।

वंशवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंश का विस्तार।

वंशशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंसलोचन।

वंशशलाका [संज्ञा स्त्री.](सं.) वीणा के नीचे के भाग में लगायी जाने वाली बांस की छोटी परेग।

वंशस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसमें क्रमशः जगण, तगण, जगण, और रगण होते हैं। इसका व्यवहार संस्कृत काव्यों में अधिक पाया जाता है।

वंशस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वंश का चिरस्थायीकरण।

वंशहीन [वि.] (सं.) १–जिसके वंश में कोई न हो २–अपुत्र।

वंशांकुर, वंशाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) १–बाँस की छड़ी की नोक। २–बाँस का अंकुर या अँखुआ

वंशागत [वि.] (सं.) परम्परा से चला आया हुआ

वंशाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस की कोंपल।

वंशानुकीर्ति, वंशानुक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) वंशावली।

वंशानुचरित [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी वंश या खानदान का इतिहास। २–प्राचीन राजवंशों की कथा।

वंशावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी वंश के लोगों की कालक्रम से बनी हुई सूची।

वंशाह्व [संज्ञा पु.] (सं) वंशलोचन।

वंशिक [संज्ञा पु.] (सं.) १–अगर की लकड़ी। २–काला गन्ना।

वंशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–वंशी। मुरली। २–अगर की लकड़ी। ३–पिप्पली।

वंशी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–मुँह से फूँककर बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। मुरली। २–चार कर्ष या आठ तोले का एक मान। ३–बंसलोचन।

वंशीधर [संज्ञा पु.] (सं.) १–श्रीकृष्ण। २–वंशी बजाने वाला।

वंशीधारी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वंशीधर'।

वंशीय [वि.] (सं.) वंश या कुल में उत्पन्न।

वंशीवट [संज्ञा पु.] (सं.) वृन्दावन का वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्णजी वंशी बजाया करते थे।

वंशीवादन [संज्ञा पु.] (सं.) वंशी बजाना।

वंशोद्भव [वि.] (सं.) वंशज। कुल में उत्पन्न।

वंशोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंसलोचन।

वंश्य [वि.] (सं.) वंशज। [संज्ञा पु.] (सं.) १–रीढ़ की हड्डी। मेरुदंड। २–छाजन के नीचे की बँड़ेर।

व [संज्ञा पु.] (सं.) १–वायु। २–वारुण। ३–[illegible] ४–बाहु। ५–मंत्रण। ६–कल्याण। ७–सांत्वना। ८–वस्ती। ९–समुद्र। १०–शार्दूल। ११–[illegible] का कंद। १२–वस्त्र। १३–वे कन्द जो जल में उत्पन्न होते हैं। १४–अस्त्र। १५–चन्द्रमा। १६–तलवारधारी पुरुष। १७–मूर्वालता। १८–वृक्ष। १९–मद्य। २०–प्रचेता। २१–[illegible] से उत्पन्न ध्वनि। [वि.](सं.) बलवान। [अव्य] (फा.) और।

वक [संज्ञा पु.] (सं.) १–बगला नामक पक्षी। २–अगस्त का पेड़ या फूल। ३–एक दैत्य का नाम। ४–एक राक्षस जो भीम के हाथों मारा गया था। ५–कुबेर। ६–एक जाति का साग। ७–एक यक्ष का नाम।

वककच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम यह नर्मदा के किनारे था।

वकचिंचिक, वकचिञ्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

वकजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १–श्रीकृष्ण। २–भीमसेन।

वकनख [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वकपंचक, वकपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक की पांच तिथियां।

वकयंत्र, वकयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) अर्क उतारने का भभका।

वकवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धोखा देकर काम साधने की घात में रहने की वृत्ति। कदाचार।

वकव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) कपटी मनुष्य।

वकालत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दूत का काम। २–किसी पक्ष को पुष्ट करने के लिये उसके अनुकूल बातचीत करना। ३–न्यायालय में किसी मामले में वादी या प्रतिवादी की ओर से प्रश्नोत्तर अथवा वाद-विवाद करने का काम। वकील का काम या पेशा। ४–दूसरे के किसी काम का भार लेना। वकालत करना–किसी का पक्ष पुष्ट करने के लिए उसके अनुकूल बातचीत करना। वकालत चलना या चमकना–वकालत के काम में आमदनी होना। वकालत जमना–वकालत के धंधे में प्राप्ति होने लगना।

वकालतन [क्रि. वि.] (अ.) वकील के द्वारा।

वकालतनामा [संज्ञा पु.](अ., फा.) वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी ओर से न्यायालय में मुकदमा लड़ने के लिए नियत करता है।

वकासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस जो पूतना का भाई और कंस का अनुचर था।

वकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी का नाम।

वकील [संज्ञा पु.] (अ.) १-दूत। २-राजदूत। एलची। ३-प्रतिनिधि। ४-वह जो दूसरे के पक्ष का समर्थन करे। ५-वह जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में किसी की ओर से बहस करे।

वकुल [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त का वृक्ष या फूल।

वकुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी नामक औषध।

वकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकोली नामक औषध। २-वकुल। मौलसिरी।

वकूअ [संज्ञा पु.] (अ.) घटित होना।

वकूफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-जानकारी। २-बुद्धि। समझ। यौ०-बे-वकूफ-मूर्ख।

वक्त [संज्ञा पु.](सं.) १-समय। काल। २-अवसर। मौका। ३-अवकाश। फुरसत। ४-मरने का नियत समय। मृत्युकाल। *वक्त काटना*-१-किसी प्रकार समय बिताना। २-जी बहलाना। *वक्त की चीज*-१-किसी समय विशेष अथवा ऋतु में मिलने वाली वस्तु। २-वह गीत या राग जो किसी समय विशेष में गाया जाता है। *वक्त पर*-अवसर आने पर। *वक्त ताकना*-मौका देखना। *वक्त हाथ से जाना*-अवसर चूकना।

वक्तन्-फौवक्तन् [क्रि. वि.] (अ.) १-यदाकदा। कभी-कभी। २-यथा-समय।

वक्तव्य [वि.] (सं.) १-कहने योग्य। २-कुछ कहने-सुनने लायक। ३-हीन। तुच्छ। [संज्ञा पु.] किसी विषय में कही हुई कोई बात, विशेषतः ऐसी बात जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिये हो। स्टेटमेंट।

वक्तव्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी बात के सम्बन्ध में वक्तव्य अथवा उत्तर देने का भार। उत्तरदायित्व। ऐनसरेबिलिटी।

वक्ता [वि.] (सं.) १-बोलने वाला। २-भाषण करने वाला। [संज्ञा पु.] कथा कहने वाला। व्यास।

वक्तृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाक्-पटुता। २-भाषण देने की योग्यता या शक्ति। ३-व्याख्यान। भाषण।

वक्तृत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वक्तृता देने की योग्यता या शक्ति। वाग्मिता।

वक्त्र [संज्ञा पु] (सं.) १-मुख। २-तगर की जड़ ३-एक प्रकार का छन्द। ४-कार्य का आरम्भ

वक्त्रज [संज्ञा पु.] (सं.) (मुख से उत्पन्न) ब्राह्मण।

वक्त्रताल [संज्ञा पु.] (सं.) वह ताल जो मुँह से उत्पन्न किया जाय।

वक्त्रतुंड, वक्त्रतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

वक्त्रदल [संज्ञा पु.] (सं.) तालू।

वक्त्रदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

वक्त्रद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) मुख विवर।

वक्त्रपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें घोड़ा चारा खाता है। तोबड़ा।

वक्त्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) वाराहीकंद।

वक्त्रभेदी [वि.] (सं.) तीता। मुख फाड़ने वाला

वक्त्ररंध्र, वक्त्ररन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) मुख का छेद।

वक्त्ररुह [वि.](सं.) मुख से उत्पन्न होने वाला।

वक्त्ररोग [संज्ञा पु.] (सं.) मुंह की बीमारी।

वक्त्रवास [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी।

वक्त्रशल्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) गुंजा। घुँघची।

वक्त्रासव [संज्ञा पु.] (सं.) थूक। लार।

वक्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री-वक्ता।

वक्फ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-धर्मार्थ दान की हुई सम्पत्ति। २-किसी के लिये कोई चीज छोड़ देना।

वक्फ़नामा [संज्ञा पु.] (अ., फा.) दानपत्र।

वक्फ़ा [संज्ञा पुं.] (अ.) १-अवकाश। अन्तर। २-काम करने से विराम।

वक्र [वि.] (सं.) १-टेढ़ा। बाका। तिरछा। २-कुटिल। ३-झुका हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी का मोड़। २-तगरपादुका। ३-शनैश्चर। ४-मंगल। ५-रुद्र। ६-पर्पट। ७-त्रिपुरासुर। ८-एक राक्षस का नाम। ९-वक्रीग्रह।

वक्र-कंटक, वक्र-कण्टक [संज्ञा पु.](सं.) बेर का वृक्ष।

वक्रगति [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगल। भौम। २-वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवे, छठे, सातवें हों। (ग्रहलाघव)।

वक्रगल [संज्ञा पु.] (हिं.) मुँह से बजाया जाने वाला एक बाजा।

वक्रगामी [वि.] (सं.) १-टेढ़ी चाल चलने वाला २-शठ। कुटिल।

वक्रगुल्फ, वक्रग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

वक्रचंचु, वक्रचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) तोता।

वक्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्रूरता।

वक्रताल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजता है।

वक्रतुंड, वक्रतुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-गणेशजी २-तोता।

वक्रदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

वक्रदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्रोध की दृष्टि। २-टेढ़ी दृष्टि। ३-मंद दृष्टि।

वक्रधर [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव।

वक्रनक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-चुगलखोर। २-तोता

वक्रनाल [संज्ञा पु.] (सं.) मुँह से बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा।

वक्रनास [वि.] (सं.) टेढ़ी नाक वाला।

वक्रनासिक [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लू। [वि.] (सं.) टेढ़ी नाक वाला।

वक्रपाद [वि.] (सं.) लंगड़ा।

वक्रपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

वक्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त वृक्ष। २-पलाश।

वक्रभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-टेढ़ापन। २-कुटिलता।

वक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मूल्य। कीमत।

वक्ररेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टेढ़ी लकीर।

वक्रलांगूल, वक्रलाङ्गूल [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

वक्र-वक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

वक्रशल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कडुवा कद्दू। २-लालफूल की विषलांगली।

वक्रभृंग, वक्रभृङ्ग [वि.] (सं.) टेढ़े सींग वाला

वक्रांग, वक्राङ्ग [वि.] (सं.) टेढ़े अङ्ग वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-हँस। २-सर्प।

वक्रित [वि.] (सं.) जो टेढ़ा हो गया हो।

वक्रिम [वि.] (सं.) १-टेढ़ा। २-कुटिल।

वक्री [वि.] (सं.) अपने मार्ग को छोड़ कर पीछे लौटने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसके अङ्ग जन्म से ही टेढ़े हों। २-वक्रग्रह। ३-जैनी या बौद्ध।

वक्रीकृत [वि.] (सं.) टेढ़ा किया हुआ।

वक्रीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) टेढ़ापन। धोखेबाजी

वक्रोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का कुछ और अर्थ निकलता है। २-काकूक्ति। ३-वह उक्ति जिसमें चमत्कार हो।

वक्रोष्टि [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. वक्रोष्टिका] मंद मुसकान।

वक्वस [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का मद्य।

वक्षःस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) छाती।

वक्ष [संज्ञा पु.] (हिं.) १-छाती। उरस्थल। २-बैल

वक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्निशिखा।

वक्षु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वंक्षु'।

वक्षोग्रीव [संज्ञा पु.](सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वक्षोज, वक्षोरुह [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन। कुच।

वक्ष्यमाण [वि.] (सं.) १-वक्तव्य। २-जिसे कह रहे हों।

वगलामुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक देवी विशेष।

वगाह [संज्ञा पु.] (सं.) जल में हलकर स्नान।

वगैरह [अव्य.] (अ.) इत्यादि। आदि।

वचंडी, वचण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सारिका मैना। २-बत्ती। ३-एक शस्त्र का नाम।

वच [संज्ञा पु.](सं.) १-तोता। २-सूर्य। ३-कारण [संज्ञा पु.] (हिं.) वचन। वाक्य।

वचन [संज्ञा पु.](सं.) १-मनुष्य के मुख से निकलन

वाले सार्थक शब्द । वाणी । २-कही हुई बात । उक्ति । कथन । ३-व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप से एक या अनेक का बोध होता है ।

वचनकर [वि] (सं.) अपने वचन पर दृढ़ रहने वाला ।

वचनकारी [वि.] (सं.) आज्ञाकारी ।

वचनक्रम [संज्ञा पु.](सं.) संवाद । कथनोपकथन ।

वचनगुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाणी का ऐसा संयम जिससे वह अशुभ वृत्ति में प्रवृत्त न हो (जैन) ।

वचनगोचर [वि](सं.) जो वचन से प्रत्यक्ष हुआ हो ।

वचनग्राही [वि.] (सं.) वचन के अनुसार काम करने वाला ।

वचनपटु [वि.] (सं.) बोलने में प्रवीण ।

वचनपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो ऋण लेते समय उसे नियत समय पर चुका देने की प्रतिज्ञा का सूचक होता है । *प्रॉमिसरी-नोट* ।

वचन-बंध, वचन-बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिज्ञा-पत्र । अहदनामा । इकरारनामा । एन्गेजमेन्ट ।

वचन-लक्षिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसके उपपति को उसका प्रेम प्रकट होता है ।

वचन-विदग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से अपने उपपति का प्रेम साध लेती है ।

वचन-विरुद्ध [वि.] (सं.) शास्त्र विरुद्ध ।

वचनविरोध [वि.] (सं.) शास्त्र वाक्य जो प्रमाण के विरुद्ध हो ।

वचनव्यक्ति [वि.] (सं.) मौलिक कथा ।

वचनशत [वि.] (सं.) बहुवाक्य ।

वचनसहाय [संज्ञा पु.](सं.) बातचीत करने वाला साथी ।

वचनानुग [वि.] (सं.) वचन के अनुसार चलने वाला ।

वचनीकृत [वि.] (सं.) तिरस्कार किया हुआ ।

वचनीय [वि.] (सं.) निंदा । शिकायत ।

वचनीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोकापवाद ।

वचनेस्थित [वि.](सं.) जो अपने वचन पर दृढ़ हो

वचनोपक्रम [संज्ञा पु.](सं.) आरंभिक वक्तव्य ।

वचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुर्गा । २-दुष्ट । शठ ।

वचस्कर [वि.] (सं.) १-वचन के अनुसार काम करने वाला । २-आज्ञाकारी ।

वचस्य [वि.] (सं.) प्रख्यात । मशहूर ।

वचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वच नामक औषध ।

वचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-वचन । २-नाम ।

वच्छ [संज्ञा पु.] (हिं.) छाती ।

वजन [संज्ञा पु.] (अं.) १-भार । बोझ । २-तौल । ३-मान-मर्यादा । गौरव । ४-चित्रकला में वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अङ्ग दूसरे से न्यून या विषम हो जाय ।

वज़नी [वि.] (अं.) १-जिसमें अधिक बोझ हो । भारी । २-जिसका कुछ असर हो । मानने योग्य ।

वजह [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कारण । हेतु । २-प्रकृति । ३-तत्व ।

वजा [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-बनावट । रचना । २-चालढाल । सजधज । ३-रूप । आकृति । ४-दशा । अवस्था । ५-रीति । प्रणाली । ६-मुजरा । मिनहा ।

वजादार [वि.] (अ., फा.) जिसकी बनावट या ढंग बहुत सुन्दर हो । तरहदार ।

वजादारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) १-कपड़े आदि पहनने का सुन्दर ढंग । *फैशन* । २-सजावट का उत्तम ढंग । ३-मर्यादा आदि का भलीभांति निर्वाह ।

वजारत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-वजीर या मन्त्री का कार्य । २-मन्त्री का कार्यालय ।

वजीफा [संज्ञा पु.](अं.) १-विद्वानों, छात्रों आदि की दी जाने वाली आर्थिक सहायता । वृत्ति । २-वह जप या पाठ जो मुसलमान लोग प्रतिदिन करते हैं ।

वजीफादार [वि.](अ., फा.) जिसे वजीफा मिलता हो ।

वजीर [संज्ञा पु.] (अं.) १-मन्त्री । २-शतरंज की एक गोटी ।

वजीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वजीर का काम या पद [संज्ञा पु.] बलूचिस्तान के घोड़ों की एक जाति ।

वजू [संज्ञा पु.] (अं.) नमाज पढ़ने से पूर्व हाथ-पांव धोने का काम ।

वजूद [संज्ञा पु.] (अं.) १-अस्तित्व । मौजूदगी । २-देह । शरीर । ३-सृष्टि । अभिव्यक्ति । *वजूद पकड़ना*-अस्तित्व में आना । *वजूद में आना*-प्रकट होना । *वजूद में लाना*-उत्पन्न करना । यौ०-*वा-वजूद*-इतना होने पर भी ।

वजूहात [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कारणों का समूह (बहुवचन शब्द) ।

वज्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का प्रधान अस्त्र जो पुराणानुसार भाले के फल के समान बताया गया है । कुलिशपवि । २-विद्युत । बिजली । ३-हीरा । ४-भाला । बरछा । ५-एक प्रकार का लोहा । ६-धात्री । अभ्रक । ७-कोकिलाक्षवृक्ष । ८-श्वेतकुश । ९-काँजी । १०-वज्रपुष्प । ११-धात्री । १२-सेहुँड़ । १३-कृष्ण के पुत्र अनिरुद्ध के पुत्र का नाम । १४-ज्योतिष बौद्धमत में चक्राकार चिह्न । १५-विष्णु में २२ व्यातीपात योगों में से एक । १६-अकलबीर नामक के चरण का एक चिह्न । १६-अकलबीर नामक पौधा । १७-वास्तुविद्या के अनुसार वह स्तम्भ जिसका मध्य भाग अष्टकोण हो । १८-विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम । *वज्र पड़े*-सत्यानाश हो (स्त्रियां गाली के रूप में) । [वि.] (सं.) १-बहुत कठिन, कड़ा और मजबूत । २-घोर । विकट । भीषण ।

वज्रकंकट, वज्रकङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान का एक नाम ।

वज्रकंटक, वज्रकण्टक [संज्ञा पु.](सं.) १-थूहर सेहुँड़ । २-कोकिलाक्षवृक्ष ।

वज्रकंटशाल्मली, वज्रकण्टशाल्मली [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त २८ नरकों में से एक ।

वज्रकंद, वज्रकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमीकंद २-शकरकद । ३-ताल के वृक्ष का फूल ।

वज्रक [संज्ञा पु.](सं.) १-वज्रक्षार । २-सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक ।

वज्रकपाली [संज्ञा पु.] (सं.) महायान-शाखा के अनुसार एक बुद्ध का नाम ।

वज्रकारक [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक सुगंधित द्रव्य ।

वज्रकालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्ध की माता का एक नाम ।

वज्रकीट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा जो पत्थर या काठ में छेद कर देता है ।

वज्रकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत का नाम । २-एक प्राचीन नगर जो हिमालय की चोटी पर था ।

वज्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस जो नरक का राजा था (मार्कण्डेय पुराण) ।

वज्रक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रासायनिक योग जिसका व्यवहार उदर रोगों में होता है

वज्रगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम

वज्रगोप [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी ।

वज्रघोष [वि.] (सं.) १-बिजली की कड़क । २-भारी शब्द ।

वज्रचंचु, वज्रचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) गीध ।

वज्रचर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) गैंड़ा ।

वज्रजित् [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ का एक नाम ।

वज्रज्वलन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली ।

वज्रज्वाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विरोचन दैत्य की पुत्री का नाम । २-कुम्भकर्ण की पत्नी का नाम ।

वज्रडाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिक बौद्धों की उपास्य डाकिनियों का एक वर्ग, यह संख्या में आठ है-माला, लास्या, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीप और गंधा ।

वज्रतुंड, वज्रतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-गीध । २-मच्छर । डांस । ३-गरुड़ । ४-गणेश ५-थूहर ।

वज्रदंड, वज्रदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक अस्त्र का नाम जो अर्जुन ने इन्द्र से प्राप्त किया था ।

वज्रदंत, वज्रदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूहा। २-सूअर।

वज्रदंती, वज्रदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

वज्रदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीरबहूटी। २-भागवत के अनुसार एक असुर का नाम।

वज्रदेह [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

वज्रद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर। सेंहुड़।

वज्रधर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वज्रनख [संज्ञा पु.] (सं.) नृसिंह।

वज्रनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण का चक्र २-एक दानवराज। ३-स्कंद के एक अनुचर का नाम। ४-राजा उक्त के पुत्र का नाम।

वज्रनिर्घोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-बादलों की गड़गड़ाहट।

वज्रनिष्पेष [संज्ञा पु.] बादल की गड़गड़ाहट।

वज्रपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-ब्राह्मण। ३ एक बोधिसत्व। ४-बौद्धशास्त्रों के मत से एक प्रकार की देवयोनि।

वज्रपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिजली का गिरना। २-सहसा कोई संकट आना।

वज्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) तिल्ली का फूल।

वज्रप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक विद्याधर का नाम।

वज्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-रुद्र। ३-अग्नि।

वज्रभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) महायान शाखा के बौद्धों के एक देवता।

वज्रमणि [संज्ञा पु.] (सं.) हीरा।

वज्रमुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-जंगली सूरन। एक राक्षस का नाम।

वज्रमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी। जंगली उड़द।

वज्रयोगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रानुसार एक देवी।

वज्ररथ [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रिय।

वज्ररद [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। शूकर।

वज्ररूप [वि.] (सं.) वज्र के समान आकृति वाला

वज्रलेप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मसाला या पलस्तर जिसके प्रयोग से दीवार, मूर्ति आदि अथवा उनके जोड़ मजबूत हो जाते हैं

वज्रलौह, वज्रलौहक [संज्ञा पु.] (सं.) चुम्बक।

वज्रवारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणों के मतानुसार वह पाँच ऋषि (जैमिनि, सुमंत, वैशंपायन, पुलस्त्य और पुलह) जिनका नाम लेने से वज्रपात का भय नहीं रहता। २-धातु की वह छड़ी जो मकानों पर बिजली गिरने से रोकने के लिए ऊपर से नीचे तक लगाई जाती है। लाइटिंग अरस्टर।

वज्रवाराही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बौद्धों की एक देवी का नाम। २-बुद्ध की माता (मायादेवी) का एक नाम।

वज्रविष्कंभ, वज्रविष्कम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

वज्रवीर [संज्ञा पु.] (सं.) महाकालरुद्र का एक नाम

वज्रवेग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक राक्षस का नाम। २-एक विद्याधर का नाम।

वज्रव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सेना की रचना।

वज्रशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमत के एक संप्रदाय का नाम।

वज्रशृंखला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार सोलह महाविद्याओं में से एक।

वज्रसंघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीमसेन। २-एक प्रकार का पत्थर जोड़ने का मसाला।

वज्रसंहत [संज्ञा पु.] (सं.) ललितविस्तार के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

वज्रसमाधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की समाधि।

वज्रसार [संज्ञा पु.] (सं.) हीरा।

वज्रसूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

वज्रहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वज्रांग, वज्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-हनुमान।

वज्रांगी, वज्राङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गवेधुक। २-हड़जोड़ नामक लता।

वज्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-थूहर। २-गुडुच। ३-दुर्गा।

वज्राकर [संज्ञा पु.] (सं.) हीरे की खान।

वज्राघात [संज्ञा पु.] (सं.) आकस्मिक दुर्घटना।

वज्राचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) नैपाली बौद्धों के मतानुसार तांत्रिक बौद्ध आचार्य जिसे तिब्बत में लामा कहते हैं।

वज्राभिषवन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अनुष्ठान जिसमें तीन दिन तक जौ का सत्तू पीया जाता था।

वज्राभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का काले रङ्ग का अभ्रक।

वज्राभ्यास [संज्ञा पु.] (सं.) गणित में गुणा करने की एक विधि।

वज्रायुध [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वज्रावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक मेघ का नाम।

वज्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हठयोग के चौरासी आसनों में से एक। २-वह शिला जिस पर बैठकर बुद्ध ने ज्ञानलाभ किया था।

वज्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-एक प्रकार की ईंट। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-थूहर। २-तिधारा नरसेज।

वज्रेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बौद्धों की एक देवी २-एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसके प्रयोग से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

वज्रोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक राक्षसी का नाम।

वज्रोली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हठयोग की एक मुद्रा।

वट [संज्ञा पु.] (सं.) बरगद का पेड़।

वटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ी टिकिया या गोल बट्टा। २-बड़ा। पकौड़ा। ३-आठ माशे की एक तौल।

वटच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद बनतुलसी।

वटपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृत्तमल्लिका नामक फूल का पौधा।

वटपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाषाणभेद।

वटर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। २-मुर्गा। ३-चटाई। ४-पगड़ी। ५-रई। मथानी।

वटवासी [वि.] (सं.) वटवृक्ष पर रहने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष।

वट-सावित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक व्रत जिसमें स्त्रियां वट का पूजन करती हैं।

वटारक [संज्ञा पु.] (सं.) रस्सी। डोरी।

वटिका, वटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी गोली या टिकिया।

वटु, वटुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालक। लड़का २-ब्रह्मचारी। ३-एक भैरव (देवता)।

वटोदका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भागवत के अनुसार एक नदी जो पवित्र मानी जाती है।

वठर [वि.] (सं.) १-सुस्त। काहिल। २-दुष्ट शठ। ३-मन्द। [संज्ञा पु.] १-एक वर्णसंकर जाति। २-शब्दाकार।

वड़व [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वड़वा] घोड़ा।

वड़भी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'धरहरा'।

वडवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घोड़ी। २-अश्विनी नामक अप्सरा जिसने घोड़ी का रूप धरकर सूर्य से दो पुत्र उत्पन्न करवाये थे। वे दोनों अश्विनीकुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं। ३-दासी। ४-रंडी। वेश्या। ५-ब्राह्मणी।

वडवाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) बड़वानल।

वडवानल [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र के भीतर रहने वाली अग्नि।

वडवामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़वानल। २-शिव का नाम।

वड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उर्द की पीठी का बना बड़ी पूड़ीनुमा पदार्थ विशेष।

वडिश [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली फँसाने की बंसी २-वैद्यक में एक चीरफाड़ का औजार।

वणिक् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो वाणिज्य के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता है। व्यापारी। २-वैश्य। बनिया।

वणिक्पथ [संज्ञा पु.] (सं.) वाणिज्य। व्यवसाय

वणिक्-पोत [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापारिक जहाज।

वत् [अव्य.] (सं.) समान। तुल्य। सदृश्य।

वतंस [संज्ञा पु.] (हिं.) अवतंस।

वत [संज्ञा पु.] (सं.) १-खेद। २-अनुकंपा। ३-असंतोष। ४-विस्मय। ५-आमंत्रण।

वतन [संज्ञा पु.] (अ.) जन्मभूमि।

वतीरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-रीति। ढंग। २-चाल-ढाल। ३-लत। टेव।

वत्स [संज्ञा पु.] (सं.) १-बछड़ा। २-बच्चा। बालक। ३-वत्सर। वर्ष। ४-कंस का एक अनुचर। ५-छाती। ६-इन्द्रजौ। ७-एक देश का नाम।

वत्सक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा बछड़ा। २-बच्चा। ३-कुटज का पौधा। ४-पुष्पकसीस ५-इन्द्रजौ। ६-निर्गुण्डी।

वत्सकाम [वि.] (सं.) बच्चों की कामना रखने वाला।

वत्सकामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसको पुत्र की कामना हो।

वत्सघोष [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश का नाम जो नक्षत्रों के प्रथम वर्ग में है।

वत्सतंत्री, वत्सतन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बछड़ा बाँधने की रस्सी।

वत्सतर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वत्सतरी] जवान बछड़ा जो जोता न गया हो।

वत्सतरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह बछिया जिसकी वय तीन वर्ष की हो।

वत्सनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष विशेष। २-बछनाभ नामक विष जो मीठा होता है।

वत्सपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बछड़ा पालने वाला २-श्रीकृष्ण या बलराम।

वत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्ष। साल। २-विष्णु का नाम।

वत्सर-ऋण [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर्ज जिसका चुकाना वर्ष के अन्त में आवश्यक हो।

वत्सरांतक, वत्सरान्तक [संज्ञा पु] (सं.) फागुन-मास।

वत्सल [वि.] (सं.) [स्त्री. वत्सला] १-संतान के प्रेम या प्रीति से भरा हुआ। २-छोटों से अत्यन्त स्नेह और उन पर कृपा रखने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में (किसी-किसी के मत से) दसवाँ रस जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम दिखाया जाता है।

वत्सलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वात्सल्यता।

वत्सला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जिसका अपने बच्चे पर पूर्ण अनुराग हो।

वत्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बछिया।

वत्साक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरबूज।

वत्सादन [संज्ञा पु.] (सं.) वृक। भेड़िया।

वत्सादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुडुच। गिलोय।

वत्सासुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर जो कंस का अनुचर था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

वदंती, वदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कथा। बात।

वदक [संज्ञा पु.] (सं.) वक्ता। कहने वाला।

वदतोव्याघात [संज्ञा पु.] (सं.) कथन का वह दोष जिसमें कोई बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाय।

वदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चेहरा। मुख। २-बात कहना। बोलना। ३-अगला भाग। सामना।

वदन-रोग [संज्ञा पु] (सं.) मुँह में होने वाला रोग।

वदन्य, वदान्य [वि.] (सं.) १-बहुत बड़ा दानी। उदार। २-मधुरभाषी।

वदाम [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'बादाम'।

वदावद [वि] (सं.) १-वक्ता। २-गप्पी।

वदि [संज्ञा पु.] (हिं.) कृष्णपक्ष।

वदितव्य [वि.] (सं.) कहने लायक।

वदुसाना* [क्रि. स.] (हिं.) दोष देना। भला-बुरा कहना।

वध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मनुष्य को किसी उद्देश्य से जान-बूझकर मार डालना। मारण।

वधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वध करने वाला। २-व्याध। शिकारी। ३-जल्लाद।

वधकर्माधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) जल्लाद। वधिक।

वधजीवी [संज्ञा पु] (सं.) १-व्याध। बहेलिया। २-कसाई।

वधदंड, वधदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-शारीरिक दण्ड। २-प्राणदण्ड।

वधत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्र। हथियार।

वधभूमि, वधस्थली [संज्ञा स्त्री] (सं) १-वह स्थान जहाँ प्राणदण्ड दिया जाय। २-कसाई-खाना।

वधस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वधभूमि।'

वधस्तंभ, वधस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) फाँसी लगाने का खम्भा।

वधस्न [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का वज्र।

वधांगक, वधाङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) कारागार। जेलखाना।

वधाई [वि.] (सं.) प्राणदण्ड पाने योग्य।

वधिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'वधक'। २-वह जो प्राणदण्ड पाने वालों का वध करता है। फाँसी चढ़ाने वाला। एग्जिक्यूशनर।

वधित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-सहवास या मैथुन करने की इच्छा।

वधुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुत्र की पत्नी। बहू। २-दुलहन।

वधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नवविवाहिता स्त्री। दुलहन। २-पत्नी। भार्या। ३-पुत्र की बहू।

वधूटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नवविवाहिता स्त्री। दुलहन। २-पत्नी। भार्या। ३-पुत्र-वधू।

वधूत* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अवधूत'।

वधू-वस्त्र [संज्ञा पु.] (सं) वह कपड़े जो विवाह के समय कन्या धारण करती है।

वध्य [वि.] (सं.) मार डालने योग्य।

वध्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वध करने का भाव।

वध्य-पटह [संज्ञा पु.] (सं.) वह ढोल जो किसी को प्राणदण्ड देते समय बजाया जाय।

वध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) हत्या। कत्ल।

वध्र, वध्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक धातु

वध्रि [संज्ञा पु.] (सं.) बधिया।

वध्रिका [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुरुष जो बधिया हो खोजा।

वध्र्यश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-आखता घोड़ा। २-एक प्राचीन राजा का नाम।

वन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंगल। २-बगीचा। बाग ३-जल। ४-घर। ५-दश नामी साधुओं में से एक वर्ग की उपाधि। ६-रश्मि। ७-फूलों का गुच्छा।

वनकंद, वनकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली सूरन

वनकणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनपिप्पली।

वनकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलाई का पेड़।

वनकर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गल का अफसर। फारेस्टर।

वनकाम [वि.] (सं.) जङ्गल में घूमने वाला।

वनकुंजर, वनकुञ्जर [संज्ञा पु] (सं) जङ्गली हाथी।

वन-कुंडल, वन-कुण्डल [संज्ञा पु.] (सं) अच्छी जाति का जमीकन्द।

वनकुक्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली मुरगा।

वनकोकिल [संज्ञा पु.] (सं) सोलह अक्षर वाला एक छन्द।

वनक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह खेल जो जङ्गल में किया जाता है।

वनखंड, वनखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गल।

वनग [वि.] (सं.) जङ्गल में जाने वाला।

वनगज [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली हाथी।

वनगव [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली गाय।

वनगहन [संज्ञा पु.] (सं.) वन का वह भाग जो वह अति सघन हो।

वनगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) भेदिया। गुप्तचर।

वनगुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली झाड़ी।

वनगो [संज्ञा स्त्री] (सं.) नीलगाय।

वनगोचर [संज्ञा पु.] (सं.) व्याध। बहेलिया। [वि.] (सं.) वन में रहने वाला।

वनचंदन, वनचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दे दारु वृक्ष। २-अगरकाष्ठ।

वनचंद्रिका, वनचन्द्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लिका।

वनचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन में विचरने भ्रमण करने वाला। २-वनवासी। ३-वन पशु। ४-शरभ नामक वनजन्तु।

वनचारी [वि.] (सं.) वन में घूमने वा रहने वा

वनचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वन में घूमने का

वन-छाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-जङ्गली बकरा। शूकर।

वनज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन (जङ्गल या पानी) में उत्पन्न होने वाला पदार्थ। २-कमल। ३-जङ्गली विजौरा की जाति का नीबू। ४-मोथा। ५-तुंबुरु का फल। ६-वनकुलथी।

वनजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुगदपर्णी। २-निर्गुण्डी। ३-सफेद कंटकारि। ४-वन तुलसी ५-अश्वगन्धा। ६-वनकपासी।

वनजीर [संज्ञा पु.] (सं.) काली जीरी।

वनजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) लकड़हारा।

वनतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) हरीतकी। हड़।

वनतिक्तिका [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाठा। २-पथरी नाग का शाक।

वनद [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वनदमन [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली दौना।

वनदह [संज्ञा पु.] (सं.) दावानल।

वनदाह [संज्ञा पु.] (सं.) आग से जङ्गल जलाना।

वनदीप [संज्ञा पु.] (सं.) वनचंपक।

वनदुर्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्रोक्त देवी की मूर्ति

वनदेव, वनदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) वन का अधिष्ठाता देवता।

वनदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वन की अधिष्ठात्री देवी।

वनद्विप [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली हाथी।

वनधेनु [संज्ञा पु.] (सं.) नीलगाय।

वनप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनवासी। २-लकड़हारा।

वनपन्नग [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली सर्प।

वनपांसुल [संज्ञा पु.] (सं.) शिकारी। बहेलिया।

वन-पादप [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली वृक्ष।

वनपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) जंगल के आसपास का स्थान।

वनपाल [वि.] (सं.) जंगल का रक्षक।

वनपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी पीपल।

वनप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोकिल। २-बहेड़े का वृक्ष। ३-कपूरकचरी। ४-सांभर हिरन।

वन-बर्हिण [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली मोर।

वन-मल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवती नामक पौधा या फूल।

वनमानुष [संज्ञा पु.] (हिं.) बिना पूंछ का बड़ा बन्दर जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता है।

वनमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जंगली फूलों की माला। २-एक विशेष प्रकार की माला जो सब ऋतुओं में होने वाले अनेक प्रकार के फूलों से बनती और घुटने तक लम्बी होती है। ३-अठारह अक्षर का एक छन्द।

वनमालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली का फूल।

वनमाली [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। [वि.] वनमाला धारण करने वाला।

वनमूत [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वनमूर्द्धजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जंगली बिजौरा नीबू। २-काकड़ासिंगी।

वनमोचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली केला।

वनराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह। २-अश्मंतक वृक्ष।

वनराजि, वनराजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वनसमूह। वृक्षसमूह। २-वह पगडण्डी जो जंगल में से होकर गई हो। ३-वसुदेव की एक दासी का नाम।

वनरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल का फूल।

वनलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वनश्री। वन की शोभा। २-केला। कदली।

वनवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन या जंगल का रहना। २-बस्ती छोड़कर जंगल में रहने का विधान या दंड। *वनवास देना*–जंगल या वन में रहने की आज्ञा देना।

वनवास लेना–बस्ती छोड़कर जंगल में रहना स्वीकार करना।

वनवासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शाल्मलीकंद। २-एक प्राचीन नगर जो कादम्ब राजाओं की राजधानी थी।

वनवासी [वि.] (सं.) [स्त्री वनवासिनी] बस्ती छोड़कर जंगल में रहने वाला। [संज्ञा पु.] १-ऋषभ नामक औषध। २-वाराहीकंद। ३-शाल्मलीकंद। ४-नील-महिषकंद। ५-बड़ा काला कौआ। द्रोणकाक। ६-एक प्राचीन नगर जो कादंब राजाओं का प्रधान नगर था।

वनविलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी-लता

वनशूकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपिकच्छु। केवाँच। २-जङ्गली मादा शूकर।

वनशृंगार, वनशृङ्गार [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू

वनसंकट, वनसङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) मसूर।

वनस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन में रहने वाला। २-वानप्रस्थ। ३-मृग।

वनस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं) वनभूमि।

वनस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीपल का पेड़।

वनस्पति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल फल ही हों। २-पेड़-पौधे। ३-वटवृक्ष। [संज्ञा पु.] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वनस्पति-घी [संज्ञा पु.] (सं., हिं.) मूंगफली के तेल में नारियल बिनौले आदि को साफ करके यांत्रिक उपकरणों से जमाया हुआ तेल।

वनस्पति-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें पेड़ पौधों की जातियों अंगों आदि का विवेचन होता है। बोटैनी।

वनस्पति-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वनस्पति-विज्ञान'।

वनहरि [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

वनहास [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँस। २-कुंद का फूल।

वनहुताशन [संज्ञा पु.] (सं.) वनाग्नि।

वनांत, वनान्त [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली भूमि या मैदान।

वनायु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-इस देश में रहने वाली एक जाति। ३-पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

वनायुज [संज्ञा पु.] (सं.) वनायु देश का घोड़ा।

वनालक्त [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू।

वनालय [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गल में रहने का घर।

वनालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हस्तीशुंडी नामक लता।

वनाश्रमी [वि.] (सं.) वानप्रस्थ धर्मालम्बी।

वनाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) काला कौआ। डोमकौआ

वनाश्रित [वि.] (सं.) जिसने वानप्रस्थ आश्रम धारण किया हो।

वनिका [संज्ञा स्त्री.] (स.) छोटा वन।

वनित [वि.] (सं.) माँगा हुआ। याचित।

वनिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। औरत। २-प्रियतमा। ३-छः वर्णों की एक वृत्ति।

वनिताद्विष् [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों से घृणा करने वाला।

वनितामाजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागकन्या।

वनितामुख [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार मनुष्यों की एक जाति।

वनिताविलास [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री संभोग की इच्छा।

वनिन [वि.] (सं.) वनवासी। जङ्गल में रहने वाला।

वनी [संज्ञा पु.] (हिं.) वानप्रस्थ। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा वन या जङ्गल।

वनीयक [वि.] (सं.) भिक्षुक। मांगने वाला।

वनेकिंशुक [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्तु जो वैसे ही बिना माँगे मिले।

वनेचर [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली आदमी। वन में फिरने वाला व्यक्ति।

वनेजा [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम। २-पापड़ा।

वनोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंदिर कूआँ आदि बनाकर जनसाधारण के लिए दान करना। २-ऐसे अथवा उत्सर्ग की विधि।

वनोद्देश [संज्ञा पु.] (सं.) वन के बीच का स्थान

वनोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली कपास।

वनौकस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनवासी। २-बंदर।

वनौघ [संज्ञा पु.] (सं.) वनसमूह।

वनौषध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली जड़ीबूटी।

वन्य [वि.] (सं.) १-वन में उत्पन्न होने वाला। २-जङ्गली। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वनसूरन। २-क्षीरविदारी। ३-वाराहीकंद। ४-शंख।

वन्यदमन [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली दौन का फूल।

वन्यद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली हाथी।

वन्यधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) तिन्नी का चावल।

वन्यपक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली चिड़िया।

वन्यवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का पेड़।

वन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुद्गपर्णी। २-गोपालककड़ी। ३-गुंजा। ४-भद्रमुस्ता। ५-अश्वगंध।

वन्याशन [वि.] (सं.) जंगली फल खाने वाला।

वन्याश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वनाश्रम'।

वपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-केशमुंडन। २-बीजबोना

वपनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह स्थान जहां जुलाहे कपड़ा बुनते हैं।

वपनीय [वि.] (सं.) बोने योग्य।

वपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेद। चरबी। २-बाँबी

वपित [वि.] (सं.) (बीज) बोया हुआ।

वपिल [संज्ञा पु.] (सं.) पिता। जनक।

वपु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। देह। २-रूप।

वपुमान [संज्ञा पु.] (हिं.) सुन्दर और हृष्टपुष्ट शरीर वाला।

वपुष्टमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पद्मचारिणीलता। २-हरिवंश के अनुसार काशीराज की एक कन्या।

वप्तव्य [वि.] (सं.) बोने योग्य।

वप्ता [वि.] (सं.) बीज बोने वाला। [संज्ञा पु.] १-पिता। २-कवि। ३-नाई।

वप्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिट्टी की दीवार। शहर पनाह। २-खेत। ३-धूल। रेणु। ४-मिट्टी का धुस। टीला। ५-पहाड़ का उतार। ६ चोटी शिखर। ७-किसी भवन की नींव। ८-प्रजापति। ९-द्वापर युग के एक व्यास। १०-चौदहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

वप्रक [संज्ञा पु.] (सं.) वृत्त की परिधि। चक्कर।

वप्रक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'वप्रक्रीड़ा'।

वप्रक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिट्टी के टीले या ढेर को हाथी, साँड़ आदि का दाँतों या सींगों से मारना, जो उनकी एक क्रीड़ा है।

वप्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ। २-जैनों के इक्कीसवें तीर्थङ्कर की माता का नाम।

वप्रि [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्षेत्र। खेत। २-समुद्र। ३-स्थान की दुर्गमता।

वप्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बांबी। वल्मीक।

वफ़ा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-वादा पूरा करना। २-निर्वाह। पूर्णता। ३-मुरौवत। सुशीलता।

वफ़ादार [वि.] (अ., फा) १-वचन या कर्त्तव्य का पालन करने वाला। २-अपने काम को ईमानदारी से करने वाला। ३-सच्चा।

वफ़ादारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) वफादार का भाव या धर्म।

वफ़ात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मरण। मृत्यु।

वव [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में ग्यारह करण के अन्तर्गत प्रथम करण।

वबा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-महामारी। मरी। २-छूत का रोग।

वबाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-बोझ। भार। २-आपत्ति। कठिनाई। ३-घोर विपत्ति। आफत। ४-ईश्वरीय प्रकोप। पाप का फल। *किसी का बवाल पड़ना*–दुखिया की आह पड़ना।

वभ्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का सर्प। २-एक यदुवंशीय योद्धा।

वभ्रुवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बभ्रुवाहन'।

वम [संज्ञा पु.] (सं.) वमन। उलटी। कै।

वमथु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कै। वमन। २-वह जिसे हाथी अपनी सूँड में भरकर फेंकता है।

वमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कै करना। उलटी करना २-वमन या कै किया हुआ पदार्थ। ३ आहुति ४-पीड़ा।

वमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) जोंक।

वमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वमन का रोग। २-अग्नि।

वमित [वि] (सं.) वमन या कै किया हुआ।

वम्र, वम्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीमक।

वम्रीकूट [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दीमक का बनाया हुआ टीला जिसमें वह रहती है।

वयं* [सर्वनाम] (सं.) हम।

वय:क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) क्रमागत जीवन-काल। उम्र।

वय:संधि, वय:सन्धि [संज्ञा स्त्री] (सं) जवानी और लड़कपन के बीच का काल।

वय:सम [वि.] (सं) समान वय का।

वय [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-बीता हुआ जीवन। उम्र। अवस्था। २-बल। ३-पक्षी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुलाहा। २-बयापक्षी। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जुलाहों के करघे में सूत का एक जाल।

वयन [संज्ञा पु] (सं.) बुनने का काम। बुनाई।

वयस [संज्ञा पु.] (सं.) १-बीता हुआ जीवनकाल अवस्था। उम्र। २-पक्षी।

वयस्क [वि.] (सं.) [स्त्री. वयस्का] १-उमर या अवस्था वाला। २-पूरी अवस्था को पहुँचा, हुआ। बालिग।

वयस्कता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वयस्क होने का भाव। २-विधि या कानून के अनुसार पूर्ण वयस्क होना।

वयस्क-मताधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के सभी वयस्क निवासियों को बिना किसी भेदभाव के प्राप्त होता है। एडल्ट-सफरेज।

वयस्कृत [वि] (सं.) जीवन देने वाला।

वयस्थ [वि.] (सं.) [स्त्री: वयस्था] १-प्राप्त व्यस्क। २-युवा। युवक। ३-समवयस्क। [संज्ञा पु.] समवयस्क व्यक्ति।

वयस्था [संज्ञा स्त्री] (सं) १-आंवला। २-हड़। ३-गुडुच। ४-छोटी इलायची। ५-काकोली। ६-सेमल। ७-युवती।

वयस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) यौवन।

वयस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-समवयस्क। हमजोली। २-मित्र। दोस्त। सखा।

वयस्यक [संज्ञा पु.] (सं.) मित्र। दोस्त।

वयस्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वयस्य का भाव या धर्म।

वयस्यभाव [संज्ञा पु.] (सं.) बन्धुता। मित्रभाव। सख्यभाव।

वयस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सखी। २-ईंट।

वयोगत [संज्ञा पु.] (सं.) बुढ़ापा।

वयोधा [वि.] (सं.) १-शक्ति। २-युवा। ३-अन्नदाता।

वयोवृद्ध [वि.] (सं.) जो अवस्था में बड़ा हो। बड़ाबूढ़ा।

वरंच, वरञ्च [अव्य.] (सं.) १-अपितु। बल्कि। २-परन्तु। लेकिन।

वरंड, वरण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-वंसी की डोर। २-समूह। ३-मुहाँसा। ४-घास का गट्ठा। ५-हाथीखाने की वह दीवार जो दो लड़ाके हाथियों के बीच में लड़ाई बचाने के उद्देश्य से बनाई जाती है।

वरंडक, वरण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिट्टी का भीटा। २-हाथी की पीठ पर का हौदा। ३-दो लड़ाके हाथियों के बीच की दीवार।

वरंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बरामदा'। [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कटारी। २-बत्ती।

वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता आदि से मांगा हुआ मनोरथ। २-किसी बड़े या देवता से मिला हुआ मनोरथ का फल या सिद्धि। ३-वह जिसके साथ कन्या का विवाह निश्चित हो। ४-पति। दूल्हा। ५-गुग्गुल। ६-कुंकुम केसर। ७-दालचीनी। ८-बालक। ९-अदरक। १०-सुगन्धतृण। ११-सेंधा नमक। १२-पियाल या चिरौंजी का पेड़। १३-मौलसिरी। १४-हलदी। १५-गौरापक्षी। [वि.] १-श्रेष्ठ। उत्तम। २-उच्चकोटि का।

वरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधारण वस्त्र। २-नाव का आच्छादन। ३-वनमूंग। ४-प्रियंगु। ५-जङ्गली बेर। झड़बेरी।

वरक़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ। २-पत्र। ३-धातु का पतला पत्तर।

वरक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वरकोद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार का पेड़।

वरचंदन, वरचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला चन्दन। ३-देवदारु।

वरज [वि.] (सं.) ज्येष्ठ। बड़ा।

वरजिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) व्यायाम।

वरजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति

वरट [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंस। २-भिड़। बर्रें। ३-कुंद का फूल।

वरटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मादा हंस। हंसी। २-गांधिया कीड़ा। ३-बर्रे। ततैया।

वरटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हंसी। २-गांधिया कीड़ा।

वरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को किसी काम के लिए चुनना। सेलेक्शन। २-मङ्गल कार्य के विधान में होता आदि कार्यकर्ताओं को नियुक्त करके उनका सत्कार करना। ३-विवाह में वर को अङ्गीकार करने की रीति। ४-पूजा अर्चना। ढकनें या लपेटने की वस्तु। आवरण ५-किसी स्थान के चारों ओर घेरी हुई दीवार ६-ऊँट। ७-वरुण वृत्त। ८-पुल। सेतु।

वरणक [संज्ञा पु.] (सं.) आवरण। आच्छादन। [वि.] (सं.) वरण करने वाला।

वरणमाल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह के समय पहनाने की माला।

वरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक छोटी नदी जो काशी के उत्तर में बहती है। २-पंजाब की एक नदी का नाम। ३-अरहर।

वरणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मङ्गलकार्य में नियत किये हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान।

वरणीय [वि.] (सं.) १-पूज्य। २-श्रेष्ठ।

वरतंतु, वरतन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

वरतनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-बारह अक्षरों का एक छन्द।

वरत्वच [संज्ञा पु.] (सं.) नीम का पेड़।

वरद [वि.](सं.) [स्त्री. वरदा] १-वर देने वाला। २-शुभ।

वर-दक्षिणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह धन जो वर को विवाह के समय लड़की वालों से मिलता है। दहेज।

वरदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक नदी का नाम। २-क्वारी कन्या। ३-अश्वगंध। ४-अड़हुल ५-वाराहीकंद। [वि.] वर देने वाली।

वरदा-चतुर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघशुक्ला-चतुर्थी

वरदाता [वि.] (सं.) वर देने वाला।

वरदान [संज्ञा पु.] (सं.) देवता या बड़ों का प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि प्रदान करना।

वरदानिक [वि.] (सं.) वरदान-सम्बन्धी।

वरदानी [संज्ञा पु.] (सं.) मनोरथ पूर्ण करने वाला

वरदी [संज्ञा स्त्री.](अं.) वह परिधान या पहनावा जो किसी विशेष विभाग के कार्यकर्त्ताओं के लिए नियत हो। परिच्छद। यूनिफॉर्म।

वरद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) अगर का वृक्ष।

वरधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) श्रेष्ठ कर्म

वरन [अव्य.] (हिं.) बल्कि।

वरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को किसी काम के लिए चुनना या नियत करना। वरण करना २-विवाह के समय कन्या का वर को अङ्गीकार करना। ३-ग्रहण या धारण करना। [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊँट। [अव्य.] (अं.) नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो।

वरनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

वरनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) पति चुनना।

वरपक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-बरात। २-लड़के वाले

वरपक्षीय [वि.] (सं.) लड़के वालों से सम्बन्ध रखने वाला।

वरपीत [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

वरप्रद [वि.](सं.) [स्त्री. वरप्रदा] १-वर देने वाला २-प्रसन्न।

वरप्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) मनोरथ पूर्ण करना। वर देना।

वरप्रभ [वि.] (सं.) बहुत चमकता हुआ।

वरप्रस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) बरात। वरयात्रा।

वरफल [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल।

वरम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वर्म'।

वरमेल्हो [संज्ञा पु.] (पुर्त.) एक प्रकार का लाल-चन्दन।

वरयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह के लिए वर का अपने इष्टमित्रों तथा संबंधियों के साथ कन्या के घर जाना। बरात।

वरयिता [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरण करने वाला। २-पति। भर्त्ता।

वरयोग्य [वि.](सं.) आशीर्वाद दिये जानेया उपहार पाने योग्य।

वररुचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक अत्यन्त प्रसिद्ध पंडित जो व्याकरण और काव्य के मर्मज्ञ थे।

वर-वत्सला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सास।

वरलब्ध [संज्ञा पु.] (सं.) चंपा का पेड़।

वरला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंसी।

वरवराह [संज्ञा पु.] (सं) घुँघराले बालों वाला जंगली आदमी।

वरवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

वरवर्णिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-लाख। ३-लक्ष्मी। ४-दुर्गा। ५-सरस्वती। ६-प्रियंगुलता।

वरवह्लीक [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकम। केसर।

वरशिख [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम जिसे इन्द्र ने सपरिवार मारा था।

वर-सुंदरी, वर-सुन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।

वरस्रज् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह माला जो दुलहिन दूल्हा को पहनाती है।

वरहक [संज्ञा पु.] (सं.) एक जनपद का नाम।

वरही* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'वर्ही'। २-टीका (गहना)। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'बरही'

वरांग, वराङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मस्तक। २-गूदा। ३-योनि। ४-हस्ती। ५-विष्णु। ६-दालचीनी ७-पेट की टहनी का सिरा। ८-३२४ दिनों का एक नक्षत्र-वत्सर या वर्ष।

वरांगक, वराङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) दारचीनी।

वरांगना, वराङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

वरांगी, वराङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-अमलबेत।
[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हल्दी। २-मजीठ। ३-नागदंती।

वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-त्रिफला। २-रेणुका नामक एक गन्धद्रव्य। ३-गुरुच। ४-मेदा। ५-ब्राह्मी। ६-विड़ंग। ७-पाठा। ८-हल्दी। ९-बैंगन। १०-अड़हुल। ११-देवीफूल। १२-मद्य। १३-सोमराजी। १४-श्वेता-पराजिता। १५-शतमूली।

वराक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-युद्ध। ३-पापड़ा। [वि.] १-शौचनीय। २-नीच।

वराट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौड़ी। २-रस्सी। डोरी ३-पद्मबीज।

वराटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौड़ी। २-कमलगट्टा ३-रस्सी। डोरी।

वराटकरजा [संज्ञा पु.] (हिं.) नागकेसर का पेड़

वराटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कौड़ी। २-नागकेसर। ३-तुच्छ वस्तु।

वराड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी का नाम।

वराण [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-वरुणवृक्ष।

वराणसी [संज्ञा स्त्री] (सं.) देखो वाराणसी।

वरानना* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

वराम्न [संज्ञा पु.] (सं.) दला हुआ उत्तम अन्न।

वराम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) करौंदा।

वरारक [संज्ञा पु.] (सं.) हीरा।

वराराणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माता।

वरारोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु का एक नाम। २-एक प्रकार का पक्षी।

वरार्द्धक [संज्ञा पु.] (सं.) पूजा की वह सामग्री जिसमें चन्दन, कुंकुम और जल समभाग में होता है।

वराल, वरालक [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग। लवंग।

वरालि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

वरालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

वराशि [संज्ञा पु.] (सं.) मोटा कपड़ा।

वरासत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-वारिस होने का भाव। २-उत्तराधिकार। ३-उत्तराधिकार से मिला हुआ धन। तरका।

वरासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठ आसन। ऊँचा आसन। २-विवाह के समय वर के बैठने

का आसन या पाटा। ३-देवीफूल। अड़हुल ४-खोजा। नपुंसक। ५-द्वारपाल।

वरासि [संज्ञा पु.] (सं.) मोटा कपड़ा।

वराह [संज्ञा पु.](सं.) १-सूअर। शुकर। २-मोथा ३-एक मान। ४-विष्णु का एक अवतार। ५-एक पर्वत का नाम। ६-वराहीकंद।

वराहकंद, वराहकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) बराहीकन्द।

वराहक [संज्ञा पु.](सं.) १-हीरा। २-सूँस नामक जलजन्तु।

वराहकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

वराहकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वगन्धा। असगंध।

वराहकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) वह काल जब भगवान ने वराह अवतार धारण किया था।

वराहकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुरहुर नामक वृक्ष

वराहक्रांता, वराहक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वराही। २-लजालु।

वराहपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असगंध।

वराहमिहिर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनकी बनाई बृहत्संहिता बहुत प्रसिद्ध है।

वराहमुक्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का मोती

वराहव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सेना की रचना जो प्राचीनकाल में वराह के आकार की होती थी।

वराहशिला [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक विचित्र पवित्र शिला जो हिमालय के शिखर पर है।

वराहशैल [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

वराहशृंग, वराहशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

वराहसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वराहमिहिर रचित ज्योतिष की वृहत्संहिता नामक प्रसिद्ध पुस्तक।

वराहांगी, वराहाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षुद्रदंती।

वराहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपिकच्छु। कौंच।

वराही [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शूकरी। सूअरी। २-नागरमोथा। ३-बराहीकंद। ४-अश्वगंधा। ५-एक प्रकार का पक्षी। ६-देखो 'वाराही'।

वरिशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कँटिया।

वरिष [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष।

वरिषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्षा।

वरिषा-प्रिय [संज्ञा पु.](सं.) चातक नामका पक्षी

वरिष्ठ [वि.](सं.) १-श्रेष्ठ। बड़ा। २-उच्चकोटि का। [संज्ञा पु.](सं.) १-तीतर पक्षी। २-नारंगी का पेड़। ३-ताँबा। ताम्र। ४-मिर्च। ५-चाक्षुप मनु के पुत्र का नाम। ६-उरुतमस ऋषि का एक नाम। ७-धर्मसावर्णि मन्वंतर के सप्त ऋषियों में से एक।

वरिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हलदी। २-हुरहुर का पौधा।

वरिहिष्ठ [संज्ञा पु.](सं.) खस। २-सुगन्ध वाला

वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य-पत्नी छाया का नाम। २-शतावरी का पौधा। ३-शुल्क। ड्यूटी

वरीधरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक छन्द जिसके पहले दूसरे और चौथे चरण ग्यारह अक्षर होते हैं।

वरीयान् [वि.] (सं.) १-श्रेष्ठ। बड़ा। २-अतियुवा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलित ज्योतिष में सत्ताईस योगों में से अठारहवाँ। २-पुलह ऋषि के एक पुत्र का नाम।

वरीषु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

वरुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है। २-जल। पानी। ३-सूर्य। ४-एक ऋषि का नाम। ५-हमारे सौर जगत का सब से दूरस्थ ग्रह जिसका पता सन् १८४६ में लगाया था। नेपचून।

वरुणग्रस्त [वि.] (सं.) जल में डूबा हुआ।

वरुणग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों का एक रोग।

वरुणघृत [संज्ञा पु.] (सं.) अश्मरी या पथरी के काम में आने वाली एक औषध जो घी में बनती है।

वरुणदेव [संज्ञा पु.] (सं.) शतभिषानक्षत्र।

वरुणपाश [संज्ञा पु.](सं.) १-समुद्र में रहने वाला एक भयङ्कर जलजन्तु। नाक। शार्क। २-वरुण का अस्त्रपाश या फन्दा।

वरुणप्रघास [संज्ञा पु.] (सं.) एक व्रत या कृत्य जो अषाढ़ या श्रावणपूर्णिमा के दिन किया जाता है।

वरुणप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के पश्चिम में था।

वरुणमंडल, वरुणमण्डल [संज्ञा पु.](सं.) नक्षत्रों का मण्डल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढ़ा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तराभाद्रपद और शतभिषा हैं।

वरुणात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा। शराब। सुरा।

वरुणादिगण [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुश्रुत के अनुसार पेड़ों और पौधों का एक गण या वर्ग जिसमें वरुन, नीलझिंटी, सहिंजन, जयती, मेढ़ासींगी। पूतिका, नाटकरंज, अग्निमन्थ, चीता, शतमूली, बेल, अजशृङ्गी, डाभ, बृहती और कंटकारी हैं।

वरुणानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वरुण की पत्नी।

वरुणालय, वरुणावास [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

वरुणोद [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वरुणेश [संज्ञा पु.] (सं.) शतभिषानक्षत्र।

वरूथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-तनुत्राण। बकतर। २-ढाल। ३-लोहे की चद्दर या सांकलों का बना हुआ आवरण जो शत्रु के आघात से रथ को रक्षित रखने के लिये उसके ऊपर डाला जाता था। ४-सेना। फौज। ५-रामायण में वर्णित एक गांव का नाम।

वरूथाधिप, वरूथाधिपति [संज्ञा पु.](सं.) सेनापति।

वरूथिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेना। फौज।

वरूथी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वरूथिनी] १-रथ। २-रक्षक। ३-हाथी की काठी।

वरेंद्र, वरेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-इंद्र। ३-बंगाल का एक भाग।

वरेण्य [वि.] (सं.) १-प्रधान। मुख्य। २-पूजनीय श्रेष्ठ। [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव। २-भृगु के एक पुत्र का नाम। ३-कुंकुम। केसर।

वरेय [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

वरेयु [वि.] (सं.) विवाह के लिये कन्या मांगने वाला।

वरेश [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

वरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

वरोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरुवा। २-मरुवा के फूल।

वरोरु [वि.] (सं.) १-सुन्दर जाँघ वाली (स्त्री)। २-सुन्दरी।

वरोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की बर्रे।

वरोह-शाखी [संज्ञा पु.] (सं.) पाकर का वृक्ष।

वर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी का बंधन जो लकड़ी का बना हुआ और काँटेदार होता है। २-कील। ३-अर्गल।

वर्कण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवान बकरी।

वर्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बकरी का बच्चा। मेमना। २-भेड़ का बच्चा। ३-बकरा। ४-जवान। ५-आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। विहार।

वर्कराट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटाक्ष। २-स्त्री के कुच पर लगे हुये नखों का घाव या खरौंट।

वर्किंगकमिटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कार्यकारिणी समिति।

वर्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) कील। पिन।

वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ही तरह की अनेक वस्तुओं का समूह। कोटि। श्रेणी। २-सामान्य धर्म अथवा स्वरूप रखने वाले पदार्थों का समूह। यूथ। ३-परिच्छेद। अध्याय। ४-दो समान अंकों या संख्याओं का घात अथवा गुणनफल। ५-वह चौकोर क्षेत्र जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और चारों कोने बराबर हों। स्क्वेयर। ६-शब्दशास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होने वाले स्पर्श अक्षर वर्णों का समूह। जैसे-कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग आदि।

वर्गघन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वर्ग राशि का घनफल।

वर्गचर [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ना नामक मछली।

वर्गाघात [संज्ञा पु.] (सं.) गुणन। घात।

वर्गपद [संज्ञा पु.] (सं.) वह अङ्क जिसके घात से कोई वर्गांक बना हो। वर्गमूल।

वर्ग-फल [संज्ञा पुं.] (सं.) वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।

वर्ग-मूल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वर्ग का वह अङ्क जिसे उसी अङ्क से गुणा करने पर वही वर्गाङ्क आता है। जैसे २५ का मूल ५ है।

वर्गलाना [क्रि. स.] (फ़ा.) १-उकसाना। २-बहकाना। फुसलाना।

वर्ग-वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ग का वर्गफल।

वर्गांक, वर्गाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अङ्क या संख्या को उसी अङ्क या संख्या से गुणा करने पर प्राप्त होने वाला गुणनफल।

वर्गीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत सी वस्तुओं अथवा व्यक्तियों को उनके अलग-अलग वर्गानुसार छाँटकर अलग-अलग करना। क्लैसिफ़िकेशन।

वर्गीकृत [वि.] (सं.) वर्गीकरण किया हुआ।

वर्गीय [वि.] (सं.) वर्ग-सम्बन्धी।

वर्गोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में राशियों के वे श्रेष्ठ अंश जिनमें स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

वर्ग्य [वि.] (सं.) एक ही श्रेणी का। [संज्ञा पु.] सहपाठी। साथी।

वर्चःस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) पाखाना।

वर्चस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-रूप। २-तेज। कांति ३-अन्न। ४-विष्ठा।

वर्चस्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीप्ति। तेज। २-विष्ठा।

वर्चस्य [वि.] (सं.) तेजवर्द्धक।

वर्चस्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेज। २-श्रेष्ठता।

वर्चस्वन् [वि.](सं.) [स्त्री. वर्चस्वती] तेजवान्। दीप्तियुक्त।

वर्चस्वी [वि.] (सं.) [स्त्री. वर्चस्विनी] तेजस्वी। दीप्तियुक्त। [संज्ञा पु.] चन्द्रमा।

वर्जक [वि.] (सं.) त्याग करने वाला।

वर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्याग। छोड़ना। २-कुछ करने से रोकना। मनाही। मुमानियत। ३-हिंसा। मारण।

वर्जना [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'वर्जन'। ⊛[क्रि. स.] मना करना।

वर्जनीय [वि.] (सं.) १-त्यागने या छोड़ने योग्य। २-निषेध के योग्य। मना।

वर्जयिता [वि.](सं.) वर्जन करने वाला। त्यागने-वाला।

वर्जित [वि.](सं.) १-त्यागा या छोड़ा हुआ। २-जिसके सम्बन्ध में मनाही हुई हो। निषिद्ध।

वर्ज्य [वि.](सं.) १-छोड़ने योग्य। त्याज्य। २-जिसका निषेध कियागया हो। जो मना हो।

वर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पदार्थों के काले, पीले आदि भेदों के नाम। रंग। २-हिन्दुओं के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ३-मनुष्य जाति के गोरे, काले, भूरे, पीले और लाल ये पाँच भेद। ४-भेद। प्रकार। किस्म। ५-अकारादि अक्षरों के चिह्न या संकेत। अक्षर। ६-गुण। ७-यश। कीर्ति ८-स्तुति। बड़ाई। ९-स्वर्ण। सोना। १०-मृदंग का एक ताल। ११-अंगराग। १२-रूप सूरत। १३-कुंकुम। केसर। १४-चित्र। तस्वीर।

वर्णकंट, वर्णकण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) नीलाथोथा। तूतिया।

वर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरताल। २-उबटन। ३-चन्दन। ४-पिसी हुई हल्दी आदि जो देवताओं पर चढ़ाई जाती है। ५-मण्डल। ६-चरण। ७-रङ्ग। ८-चित्रकार। ९-अभिनेता का परिधान या परिच्छद। १०-वास्तविक रूप छिपाने के लिए ऊपर से धारण किया जाने वाला कोई और रूप या आवरण।

वर्णक-दंडक, वर्णक-दण्डक [संज्ञा पु.](सं.) १-चित्रकार की कूँची। तूलिया। २-एक प्रकार का छन्द।

वर्ण-कूपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दवात।

वर्ण-क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्णव्यवस्था। २-अक्षरक्रम।

वर्ण-खंडमेरु, वर्ण-खण्डमेरु [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगल अथवा छंदशास्त्र में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए मेरु का काम निकल जाता है अर्थात् यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त में कितने गुरु तथा कितने लघु वर्ण होंगे।

वर्णगत [वि.] (सं.) वर्ण-सम्बन्धी।

वर्णचारक [संज्ञा पु.] (सं.) चितेरा। चित्रकार।

वर्णच्छटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखें मूँद लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है। २-प्रकाश में के रङ्ग, जो कुछ विशेष प्रक्रिया द्वारा विश्लेषण आदि के लिए किसी परदे पर डालकर देखे जाते हैं। स्पेक्ट्रम।

वर्णज्येष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

वर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्ण का भाव या धर्म।

वर्णतूलि, वर्णतूलिका, वर्णतूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चित्रों आदि में रङ्ग भरने की कूँची या बुरुश।

वर्णत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ण का भाव या धर्म।

वर्णद [वि.] (सं.) रङ्ग देने वाला। रङ्गसाज। [संज्ञा पु.] सुगन्धयुक्त एक प्रकार का पीला काठ।

वर्णदाता [वि.] (सं.) वर्णदायक

वर्णदात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

वर्णदूत [संज्ञा पु.] (सं.) लिपि।

वर्णदूषक [संज्ञा पु.] (सं.) अपने संसर्ग से दूसरे को जाति-भ्रष्ट करने वाला।

वर्णधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) प्रत्येक जाति या वर्ण के कर्म विशेष। वर्णाश्रम धर्म।

वर्णधातु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गेरू, इङ्गर आदि रंग के काम में आने वाली धातु।

वर्णन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सविस्तार कहा जाने वाला हाल। बयान। २-चित्रण। रँगना।

वर्णनष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगलशास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के अमुक सङ्ख्यक भेद का रूप लघु गुरु वर्ण के अनुसार किस प्रकार का होगा।

वर्णना [संज्ञा स्त्री.](सं.) गुणकथन। सराहना।

वर्णनातीत [वि.] (सं.) जिसका वर्णन न हो सके। वर्णन के बाहर।

वर्णनाश [संज्ञा पु.] (सं.) निरुक्तकार के मतानुसार शब्द में किसी वर्ण का नष्ट हो जाना। जैसे-पृषोदर शब्द में 'पृषतोदर' शब्द का 'त' नष्ट हो गया है।

वर्णनीय [वि.] (सं.) वर्णन करने योग्य।

वर्णपताका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौनसा (पहला, दूसरा या तीसरा आदि) ऐसा है, जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे।

वर्णपात [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अक्षर का लोप होना।

वर्णपाताल [संज्ञा पु.] (सं.) छन्द या पिङ्गलशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक संख्या के वर्णों के कुल इतने वृत्त हो सकते हैं तथा उन वृत्तों में से कितने लघ्वादि और कितने लघ्वंत, कितने गुर्वादि तथा कितने गुर्वंत एवं कितने सर्वगुरु तथा कितने सर्वलघु होंगे।

वर्णपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पात्र जिसमें चित्रकार रंग रखता है।

वर्णपुर [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्ध राग का एक भेद।

वर्णप्रकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रंग की उत्तमता।

वर्णप्रत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) पिङ्गल या छन्दशास्त्र में वे क्रियाएँ जिनके द्वारा यह जानाजाता है कि अमुक संख्या के वर्णवृत्तों के कितने भेद हो सकते हैं, उनके स्वरूप क्या होंगे। आदि

वर्ण-प्रसादन [संज्ञा पु.] (सं.) अगर की लकड़ी।

वर्ण-प्रस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगल या छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।

वर्णमर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंगल या छन्द-शास्त्र में वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं, जिनमें इतने गुर्वादि, गुर्वंत तथा इतने लघ्वादि होंगे, और सब वृत्तों को मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिंड (दोकल) होंगे।

वर्णभेद [संज्ञा पु.](सं.) १-हिन्दू लोगों में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य आदि चारों वर्णों में होने वाला विभाग, भेदभाव या ऊँच-नीच का विचार। २-गोरी, पीली, काली आदि जातियों में शरीर के वर्ण की दृष्टि से होने वाला भेदभाव या ऊँच-नीच का विचार।

वर्णमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं) सरस्वती।

वर्णमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी लिपि के सब अक्षरों की क्रम से लिखित सूची। एल्फाबेटस

वर्णयितव्य [वि.] (सं.) वर्णन करने योग्य।

वर्णराशि [संज्ञा पु.] (सं.) अक्षरों के रूपों की श्रेणी या लिखित सूची।

वर्णरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खड़िया।

वर्णलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अक्षरों को प्रकाशित करने और लिखने की प्रणाली या ढंग।

वर्णवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

वर्णवर्ति, वर्णवर्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चितेरे या चित्रकार की कूँची। २-कलम। लेखनी।

वर्णवादी [वि] (सं.) प्रशंसा करने वाला।

वर्णविकार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निरुक्त के अनुसार शब्दों में एक वर्ण का बिगड़ कर दूसरा वर्ण बन जाना। जैसे-'हल्दी' शब्द में हरिद्रा के 'र' का 'ल' बन गया या हो गया है।

वर्णविचार [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधुनिक व्याकरण का वह भाग जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण तथा संधि आदि के नियमों का वर्णन हो प्राचीन वेदांग में इस विषय को 'शिक्षा' कहते थे और व्याकरण से बिलकुल स्वतंत्र माना जाता था।

वर्णविपर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) निरुक्त के अनुसार शब्दों में वर्णों का उलटफेर।

वर्णविलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

वर्णविलोड़क [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दूसरे के लिखे हुए लेख को अपना बतलाता हो। लेख-चोर।

वर्णवृत्त [संज्ञा पु.](सं.) वह छन्द या पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम एक से होते हैं।

वर्णव्यवस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्णव्यवस्था

वर्णश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

वर्णसंकर, वर्णसङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो दो अलग-अलग जातियों के यौन सम्बन्ध से उत्पन्न हुआ हो। दोगला।

वर्णसंघाट [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णमाला।

वर्णसंघात [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णसमूह। वर्णमाला।

वर्णसंयोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही जाति के लोगों में वैवाहिक सम्बन्ध। सवर्ण विवाह।

वर्णसंसर्ग [संज्ञा पु.](सं.) अलग-अलग जाति के लोगों में वैवाहिक सम्बन्ध। असवर्ण-विवाह।

वर्णसंहार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिमुख संधि के तेरह अङ्गों में से एक। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चारों वर्णों के लोगों का एक स्थान पर सम्मेलन।

वर्णसमाम्नाय [संज्ञा पु.](सं.) वर्णमाला।

वर्णसूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंगल या छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिससे वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता उनके भेदों आदि अन्त लघु और गुरु आदि अंत गुरु की संख्या मानी जाती है।

वर्णस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ण का उच्चारण स्थान।

वर्णांका, वर्णाङ्का [संज्ञा पु.] (सं.) लेखनी। कलम।

वर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरहर।

वर्णाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रकार। २-गवैया।

वर्णात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द।

वर्णाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार ब्राह्मण आदि वर्णों के अधिपति ग्रह।

वर्णापसद [संज्ञा पु.] (सं.) जातिच्युत।

वर्णापेत [वि.] (सं.) जो किसी भी जाति में न हो। जाति-बहिष्कृत।

वर्णाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) चारों वर्णों का आश्रम

वर्णाश्रम-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारों वर्ण आश्रम में रहकर जिस कर्म द्वारा ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण प्राप्त करते हैं।

वर्णार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) मूँग।

वर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-वलि

वर्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक।

वर्णिक-वृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृत्त या छन्द जिसके प्रत्येक चरण के वर्णों की संख्या एवं गुरु लघु के स्थान समान हों। वर्णवृत्त।

वर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खड़िया। २-स्याही। ३-सोने का पानी। ४-चन्द्रमा। ५-विलेपन। ६-कुछ विशिष्ट रङ्गों का समवाय जो किसी चित्र अथवा शैली में विशेष रूप से बरता जाय (चित्रकला)।

वर्णित [वि.] (सं.) १-कहा हुआ। कथित। २-जिसका वर्णन हो चुका हो।

वर्णी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लेखक। २-चित्रकार। ३-ब्रह्मचारी। ४-मुख्य चार वर्णों में से किसी वर्ण का पुरुष।

वर्णु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नदी का नाम। २-बन्नू नामक देश।

वर्णोद्दिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) छन्दशास्त्र में वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक संख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौनसा भेद है

वर्ण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्तुत विषय। २-उपमेय। ३-कुङ्कुम। केसर। ४-वनतुलसी। [वि.] १-वर्णन के योग्य। २-जिसका वर्णन हो रहा हो। जो वर्णन का विषय हो।

वर्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बटुवा। २-नर बटेर। ३-घोड़े का खुर।

वर्तका, वर्तकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बटेर।

वर्तन [संज्ञा पु.](सं.) १-बरताव। व्यवहार। २-व्यवसाय। जीवनोपाय। वृत्ति। रोजी। ३-फेरना। घुमाना। ४-परिवर्त्तन। ५-स्थिति। ठहराव। ६-स्थापन। रखना। ७-सिलबट्टे से पीसना। ८-वर्त्तमान। ९-चरखे की वह लकड़ी जिसमें तकला लगा रहता है। १०-बटलोई। ११-बरतन। १२-घाव या नासूर आदि की गहराई का पता लगाने के लिए घाव में सूई डालकर हिलाना-डुलाना। शल्यकंपन कर्म। १३-विष्णु। १४-कोश।

वर्तना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बरतना'। [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बरतना'।

वर्त्तनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्वदिशा या देश। २-रास्ता। मार्ग। ३-शुद्धराग का एक भेद।

वर्त्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बटने या पिसने की क्रिया। पेषण। २-रास्ता।

वर्त्तमान [वि.](सं.) १-जो इस समय हो या चल रहा हो। एग्जिस्टिंङ्ग। २-उपस्थित। विद्यमान मौजूद। प्रेजेन्ट। ३-आधुनिक। आजकल का। हाल का। ४-साक्षात्। [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जिससे सूचित होता है कि कार्य अभी हो रहा है, समाप्त नहीं हुआ। २-वृतांत। समाचार। ३-चलता व्यवहार।

वर्त्तमानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मौजूदगी।

वर्त्तरुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नदी का नाम। २-कौवे का घोंसला। ३-द्वारपाल।

वर्त्तलोह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लोहा।

वर्त्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बत्ती। २-अंजन। ३-वह बत्ती जो चिकित्सक घाव में देता है। ४-औषध बनाना। ५-उबटन। अनुलेपन। ६-गोली। वटी।

वर्त्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) बटेर।

वर्त्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बटेर। २-अजशृंगी। ३-बत्ती। ४-सलाई।

वर्त्तिकाबिंदु [संज्ञा पु.] (सं.) हीरे का एक दोष।

वर्तित [वि.] (सं.) १-सम्पादित। किया हुआ। २-चलाया हुआ। ३-दुरुस्त किया हुआ।

वर्तिर [संज्ञा पु.](सं.) बटेर।

वर्तिष्णु [वि.] (सं.) १-घूमने वाला। २-गोल। चक्करदार।

वर्ती [वि.] (हिं.)[स्त्री. वर्त्तिनी] १-बरतने वाला। २-स्थित रहने वाला। [संज्ञा स्त्री.] १-बत्ती। २-शलाका। सलाई।

वर्तुल [वि.] (सं.) गोल। वृत्ताकर। [संज्ञा पु.] १-मटर। २-गाजर। ३-सुहागा। ४-गुंडवृत्त।

वर्तुल-कारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बंदियों के दैनिक जीवन की निरक्षण योजना।

वर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-पथ। मार्ग। २-गाड़ी के पहिये का मार्ग। लीक। ३-किनारा। ४-आँख की पलक। ५-आधार।

वर्त्मकर्दम [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त और रक्त के प्रकोप से आंखों में कीचड़ भर जाने का रोग

वर्त्मबंध, वर्त्मबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पलक सूज जाने का एक रोग।

वर्त्माविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनामाखी।

वर्त्मरोग [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का एक रोग जिसमें पलकों में विकार उत्पन्न हो जाता है तथा आँखों के खोलने से बड़ी पीड़ा होती है

वर्त्मशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पलकों में छोटी या बड़ी फुंसी हो जाने का एक रोग।

वर्त्मस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँखों का रोग विशेष।

वर्त्मार्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) पलकों में गांठ उत्पन्न हो जाने का एक रोग।

वर्त्मारोध [संज्ञा पु.] (सं.) पलकों में होने वाला एक रोग।

वर्दी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'वरदी'।

वर्द्ध, वर्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीसा नामक धातु। २-भारङ्गी। ३-काटना। तराशना। ४-पूर्त्ति। पूरण।

वर्द्धक, वर्धक [वि.] (सं.) १-बढ़ाने वाला। २-काटने वाला।

वर्द्धकी, वर्धकी [संज्ञा पु.] (सं.) (हिं.) लकड़ी का काम करने वाला। बढ़ई।

वर्द्धन, वर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बढ़ाना। २-वृद्धि। बढ़ती। ३-पशुओं आदि को पालपोसकर उनकी उन्नति और वृद्धि करना। ब्रीडिंग। ४-काटना। छीलना। तराशना। छेदना।

वर्द्धनी, वर्धनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-झाड़ू। बुहारी। २-विशिष्ट रूप सम्पन्न। जलघट। कमंडलु।

वर्द्धनीय, वर्धनीय [वि.] (सं.) बढ़ाने योग्य।

वर्द्धमान, वर्धमान [वि.] (सं.) १-बढ़ता हुआ २-बढ़ाने वाला। [संज्ञा पु.] १-मिट्टी का प्याला। सकोरा। २-बङ्गाल के एक जिले का नाम। ३-विष्णु का एक नाम। ४-जैनियों के चौबीसवें जिन महावीर का नाम। ५-एक वर्णिक वृत्त जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न होती है। (१४, १३, १८ और १५) इसके चारों चरण क्रमशः इस प्रकार हैं-पहला चरण—मगण, सगण, जगण, भगण और दो गुरु। दूसरा चरण-सगण, नगण, जगण, रगण और एक गुरु। तीसरा चरण—नगण, नगण, सगण, नगण, नगण और सगण। चौथा चरण-नगण, नगण, नगण, जगण और यगण होते हैं।

वर्द्धमानक, वर्धमानक [संज्ञा पु.] (सं.) तश्तरी। मिट्टी का प्याला। सकोरा।

वर्द्धापक, वर्धापक [वि.] (सं.) कान बींधने वाला।

वर्द्धापन, वर्धापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्णवेध। कनछेदन। २-वर्षगांठ का उत्सव। ३-नाड़ा या नाल काटने की क्रिया या संस्कार विशेष

वर्द्धित, वर्धित [वि.] (सं.) १-बढ़ा या बढ़ाया-हुआ। २-पूर्ण। ३-कटा हुआ।

वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु [वि.] (सं.) बढ़ने वाला।

वर्द्धीणस [संज्ञा पु.] (सं.) लम्बे और सफेद कान वाला वह बकरा जिसके कान नदी मे पानी पीते समय छू जायँ।

वर्द्ध्र, वर्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़ा। खाल।

वर्द्धिका, वर्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमड़े की रस्सी। बद्धी। २-एक प्रकार का आभूषण।

वर्द्ध्री, वर्ध्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'वर्द्धिका'।

वर्ध्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-आँत उतरने का रोग। २-वह फोड़ा जो जांघ के मूल में संधि स्थान में निकलता है।

वर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-कवच। बकतर। २-घर मकान। ३-पित्तपापड़ा।

वर्मकंटक, वर्मकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) पित्त-पापड़ा।

वर्मक [संज्ञा पु.](सं.) आधुनिक बरमा का प्राचीन नाम।

वर्मकषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सप्तला। सातला।

वर्मण [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी का पेड़।

वर्मवत् [वि.] (सं.) बख्तर पहरे हुये।

वर्महर [वि.] (सं.) कवचधारी।

वर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों की उपाधि।

वर्मि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

वर्मिक, वर्मित [वि.] (सं.) कवचधारी।

वर्य [वि.] (सं.) १-श्रेष्ठ। २ प्रधान। [संज्ञा पु.] कामदेव।

वर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह लड़की जो स्वयं अपना पति वरण करे। २-कन्या। ३-अरहर।

वर्या-घटक [संज्ञा पु.] (सं.) उम्मेदवार की ओर से काम करने वाला व्यक्ति। पोलिंग एजेंट।

वर्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-एक देश का नाम। २-इस देश का असभ्य निवासी जो घुँघराले बालों वाला होता है। ३-पामर। नीच। ४-घुंघराले बाल। ५-काली बन तुलसी। ६-हिंगुल ७-पीला चन्दन।

वर्व्वट [संज्ञा पु.] (सं.) लोबिया।

वर्व्वणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली मछली।

वर्व्वरक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का चन्दन।

वर्व्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बनतुलसी। २-एक प्रकार की मक्खी।

वर्व्वरीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारंगी। २-बनतुलसी। ३-महाकाल।

वर्व्वूर [संज्ञा पु.] (सं.) बबूल।

वर्ष [संज्ञा पु] (सं.) १-बारह मास या महीनों का समूह। जो काल-गणना में एक प्रसिद्ध मान है। बरस। साल। २-पुराणानुसार सात द्वीपों का समूह या विभाग। ३-वृष्टि। जल बरसना।

वर्षक [वि.] (सं.) १-जल की वर्षा करने वाला। २-बरसाने वाला।

वर्षकर [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ।

वर्षकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झिल्ली। झींगुर

वर्षकाम [वि.] (सं.) वृष्टि या वर्षा की कामना करने वाला।

वर्षकामेष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा होने के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ।

वर्षकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीरा।

वर्षकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) लाल पुनर्नवा।

वर्षकोश, वर्षकोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिदैवज्ञ। २-मास। उड़द।

वर्षगाँठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जन्मदिन का उत्सव

वर्षघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-पवन। २-ग्रहों का एक योग जिससे वर्षा नष्ट हो जाती है।

वर्षज [वि.](सं.) वर्षा या वृष्टि से उत्पन्न।

वर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृष्टि। बरसना। २-छिड़काव।

वर्षणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृष्टि। वर्षा। २-यज्ञीयकर्म। ३-क्रिया। ४-व्यवहार।

वर्षधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-अंतःपुर-रक्षक। नपुंसक।

वर्षधर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर की रक्षा करने वाला।

वर्षप, वर्षपति [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष के अधिपति ग्रह।

वर्षपाकी [संज्ञा पु.] (हिं.) आमड़ा।

वर्षप्रतिबंध, वर्षप्रतिबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) सूखा। अनावृष्टि।

वर्षप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) चातक पक्षी।

वर्षफल [संज्ञा पु.] (सं.) फलित-ज्योतिष के अनुसार किसी व्यक्ति के वर्षभर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण।

वर्षवृद्ध [वि.] (सं.) जो उम्र में बड़ा हो।

वर्षवृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वर्षगाँठ। २-वय की वृद्धि।

वर्षशत [संज्ञा पु.] (सं.) सौ वर्ष।

वर्षसहस्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक हजार वर्ष।

वर्षांक, वर्षाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) संख्या क्रम से किसी सन् या संवत् के वर्षों के निश्चित किये हुए नाम जो अङ्कों के रूप में होते हैं।

वर्षांग, वर्षाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष का अंश, मास। महीना।

वर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है। बरसात। २-पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि। ३-किसी चीज का अत्यधिक मात्रा में ऊपर से गिरना अथवा चारों ओर से आना। *(किसी वस्तु की) वर्षा होना*-१-अत्यधिक परिमाण में ऊपर से गिरना अथवा चारों ओर से आना। २-बहुत अधिक संख्या में मिलना।

वर्षाकाल [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा की ऋतु। बरसात।

वर्षाकालीन [वि.] (सं.) बरसाती।

वर्षागम [संज्ञा पु.](सं.) वर्षाऋतु का आगमन। वर्षारम्भ।

वर्षाचर [वि.] (सं.) बरसात में घूमने वाला।

वर्षाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रह जो संवत्सर के वर्ष का अधिपति हो।

वर्षाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) चातक। पपीहा।

वर्षाबीज [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वर्षाभव [वि.] (सं.) वर्षा में उत्पन्न।

वर्षाभू [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेंढक। २-इन्द्रगोप नामक कीड़ा। ३-लाल रङ्ग की पुनर्नवा। ४-कीड़े-मकोड़े। [वि.] वर्षा में उत्पन्न होने वाला।

वर्षामद [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

वर्षायस [वि.] (सं.) नब्बे साल से ऊपर की उम्र वाला। अतिवृद्ध।

वर्षारात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाकाल की रात।

वर्षार्ची [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

वर्षाल [संज्ञा पु.] (सं.) फतिंगा।

वर्षावत् [वि.] (सं.) वर्षा के समान।

वर्षावसान [संज्ञा पु.] (सं.) शरद्ऋतु।

वर्षासमय [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षाकाल।

वर्षाहिक [संज्ञा पु.] (सं) बरसाती साँप।

वर्षित [वि.] (सं.) बरसा हुआ।

वर्षिष्ठ [वि] (सं.) १-बहुत बूढ़ा। २-बहुत मजबूत। ३-बहुत बड़ा।

वर्षुक [वि.] (सं.) [स्त्री. वर्षुकी] बरसने वाला

वर्षुकानंद, वर्षुकानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) जल बरसाने वाला, बादल।

वर्षुकांबुज, वर्षुकाम्बुज [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो जल बरसाये। बादल।

वर्षेश [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष का स्वामी।

वर्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर। देह।

वर्ष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। देह। २-माप। उँचाई। ३-सुन्दर रूप।

वर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोरपंख। २-ग्रन्थिपर्णी। ३-पत्र। पत्ता।

वर्हण [संज्ञा पु.] (सं.) पत्र। पत्ता।

वर्हा [संज्ञा पु.](सं.) १-अग्नि। २-दीप्ति। ३-यज्ञ ४-कुश। ५-चित्रक। ६-एक राजा का नाम।

वर्हिण [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

वर्हिणवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

वर्हिषद् [संज्ञा पु.] (सं.) एक पितर का नाम।

वर्ही [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोर। मयूर। २-तगर। ३-कश्यपऋषि के एक पुत्र का नाम।

वलंब, वलम्ब [संज्ञा पु.](सं.) अवलम्ब। सहारा

वल [संज्ञा पु.] (सं) १-मेघ। २-एक असुर का नाम।

वलक [संज्ञा पु.](सं.) तामस मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक।

वलती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मंडप जो घर के शिखर पर बना हो।

वलद्विष् [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घुमाव। फिराव। २-फेरा। ३-विपथगमन। विचलन। ४-ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्र आदि का सत्यनांश से हटकर चलना या विचलन।

वलनाश [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का अयनांश से हटकर चलने की या वक्रगति की दूरी का अंश।

वलनाशन, वलनिसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वलभी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सदर फाटक। तोरण २-छत के ऊपर का कमरा। अटारी। ३-काठियावाड़ प्रांत की एक प्राचीन नगरी का नाम।

वलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंडप। घेरा। २-कंकड़ ३-चूड़ी।

वलयावरण [संज्ञा पु.] (सं.) चक्कर का घेरा।

वलयावरण-नीति [संज्ञा स्त्री.](सं.) घेरने की नीति

वलायित [वि.] (सं.) घिरा हुआ।

वलवला [संज्ञा पु.] (अ.) उमंग। आवेश।

वलसूदन, वलहंता, वलहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वलहिष [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वलाक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वलाका] बगला।

वलाट [संज्ञा पु.] (सं.) मूँग।

वलाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-पर्वत। ३-एक दैत्य का नाम। ४-साँपों की एक जाति। ५-मोथा। मुस्तक। ६-श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम। ७-एक पर्वत का नाम जो कुशद्वीप में है। ८-एक नदी का नाम।

वलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेखा। लकीर। २-चन्दन आदि से बनाई हुई रेखा। ३-सिकुड़न के कारण पड़ी हुई लकीर। ४-पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा। बल। ५-देवता को चढ़ाई जाने वाली वस्तु अथवा उसके उद्देश्य से चढ़ाया या मारा जाने वाला पशु। ६-एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार धारण करके छला था। ७-श्रेणी। पंक्ति ८-बवासीर का मस्सा। ९-छाजन की ओलती १०-गंधक। ११-एक प्रकार का बाजा।

वलिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'ओलती'।

वलित [वि.] (सं.) १-लचका या बलखाया हुआ २-मोड़ा या झुकाया हुआ। ३-परिवृत। घेरा हुआ। ४-जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों। ५-लिपटा हुआ। ६-आच्छादित। ढका हुआ। ७-मिला हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-काली मिर्च। २-नृत्य में हाथ मोड़ने की एक मुद्रा।

वलिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-वानर। २-वह विकार जो गरम दूध में मठा मिलाने से उत्पन्न होता है।

वली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-झुर्री। सिलवट। २-श्रेणी। पंक्ति। ३-रेखा। लकीर। [संज्ञा पु.] (अ.) १-मलिक। स्वामी। २-शासक। ३-साधू। फकीर। ४-अल्प-वयस्क बालक की देखरेख करने वाला। अभिभावक। *वली खंगर*-साधू होने का झूठा दावा रखने वाला।

वलीअहमद [संज्ञा पु.] (अं.) १-युवराज। २-टिकैत।

वलीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओलती। २-सरकंडा शर।

वलीमुख, वलीवदन [संज्ञा पु.] (सं.) बंदर।

वलूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल की जड़। २-एक प्रकार का पक्षी।

वल्क [संज्ञा पु.] (सं.) बक्कल। छाल।

वल्करु [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का वृक्ष।

वल्क-द्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र का वृक्ष।

वल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष की छाल। २-वृक्ष की छाल का वस्त्र। ३-ऋग्वेद की वाष्कल नामक शाखा।

वल्कलसंवीत [वि.] (सं.) वल्कल वस्त्र धारण करने वाला।

वल्कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का सफेद पत्थर। शिलावल्का। २-तेजबल।

वल्कली [वि.] (हिं.) वल्कल वस्त्र धारण करने वाला

वल्कलोध

वल्कलोध्र [संज्ञा पु.] (सं) पठानीलोध्र ।

वल्कवत् [वि.] (सं) (मछली) जिसके शरीर पैरे पपड़ी हो ।

वल्किल [संज्ञा पु.] (सं) काँटा ।

वल्कुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाल । २-गूदा ।

वल्गन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़े का दुलकी चाल से चलना । २-बहुत सी इधर-उधर की बातें कहना ।

वल्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लगाम ।

वल्गु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छाग । बकरा । २-बौद्धों के बोधिद्रुम के चार अधिष्ठाता देवताओं में से एक । [वि.] सुन्दर ।

वल्गुजंघ, वल्गुजङ्घ [संज्ञा पु.] (सं) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

वल्गुज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री वल्गुजा] छाग । बकरा ।

वल्गु-पत्र [संज्ञा पु.] (सं) वनमूँग ।

वल्गुशोदिका [संज्ञा स्त्री] (सं) १-लहसुआ नामक साग । २-एक प्रकार की लता ।

वल्गुल [संज्ञा पु.] (सं) शृगाल । गीदड़ ।

वल्गुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बकुची । २-चमगादड़ ।

वल्गुलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कत्थई रङ्ग का पतंग जाति का कीट, जिसका दूसरा नाम तैलपायी है । २-पेटी । पिटारी । मंजूषा ।

वल्गुली [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-चमगादड़ । २-मंजूषा । पेटारा ।

वल्द [संज्ञा पु.] (अ.) औरस पुत्र । बेटा ।

वल्दियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पिता के नाम का परिचय या पता ।

वल्मीक [संज्ञा पु.] (सं) १-दीमकों के रहने की बांबी । बिमौट । २-वाल्मीकि मुनि । ३-वह मेघ जिस पर सूर्य की किरणें पड़ती हों । ४-एक प्रकार का रोग ।

वल्मीकशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) स्रोतांजन । लाल सुरमा ।

वल्मीकि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वल्मीक' ।

वल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीन गुंजा या एक रत्ती का मान । २-ओसाना । बरसाना । ३-निषेध ४-आवरण । ५-सलई नामक वृक्ष । ६-चौरा ।

वल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जन्तु जो समुद्र में रहता है ।

वल्लकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वीणा । २-सलई का पेड़ ।

वल्लभ [वि.] (सं) [स्त्री. वल्लभा] प्रियतम । प्यारा । [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-पति । स्वामी । २-अध्यक्ष । मनिक । ३-अत्यधिक प्रिय व्यक्ति । नायक । ४-सुन्दर लक्षणों वाला घोड़ा । ५-एक प्रकार की सेम । ६-वैष्णव-संप्रदाय प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य ।

वल्लभा [संज्ञा स्त्री] (सं) प्रेमिका । प्रेयसी ।

वल्लभाचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) वल्लभाचारी नामक वैष्णव-संप्रदाय के प्रतिष्ठाता एक आचार्य ।

वल्लभी [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'वलभी' ।

वल्लरि, वल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वल्ली । लता । २-मंजरी । ३-मेथी । ४-बच । ५-एक प्रकार का बाजा ।

वल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वल्लवी] १-गोप २-रसोइया ।

वल्लाह [अव्य.] (अ.) ईश्वर की शपथ है । सचमुच

वल्लि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेल । २-मिट्टी ।

वल्लिकंटकारिका, वल्लिकण्टकारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शोला । अग्निदमनी ।

वल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लता । २-बेला । ३-पोई नामक लता ।

वल्लिज [संज्ञा पु] (सं.) मिर्च ।

वल्लिदूर्वा [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार की घास ।

वल्लिशूरण [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यम्लपर्णी लता ।

वल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लता । २-केवटी-मोथा । ३-शोला । अग्निदमनी । ४-काल अपराजिता ।

वल्लीज [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च ।

वल्लीवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं) शालवृक्ष ।

वल्लुर [संज्ञा पु] (सं.) १-लताकुंज । लतामंडप । २-पवन । ३-मंजरी । ४-अनजुता खेत । ५-वीरा । जङ्गल । ६-सूखी मछली ।

वल्लूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-धूप में सुखाया हुआ मांस । २-जङ्गली सूअर का मांस । ३-ऊसर । ४-वीरान । उजाड़ ।

वल्वग [संज्ञा पु.] (सं.) आंवला ।

वल्वज [संज्ञा पु.] (सं.) ओखली ।

वल्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का तृण या घास ।

वल्वल [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम जिसे बलराम ने मारा था ।

वव [संज्ञा पु.](सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार ग्यारह कारणों में से एक ।

वव्र [वि.] (सं.) वेष्टित । घेरा हुआ ।

वशंवद [वि.](सं.) १-वशीभूत । २-आज्ञाकारी ।

वश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अधिकार । काबू । २-शक्ति या अधिकार की सीमा । काबू । ३-अधिकार । कब्जा । ४-इच्छा । चाह । ५-जन्म ६-रंडियों का चकला । वेश्यालय । *(किसी का किसी के) वश में होना*-१-अधिकार या काबू में होना । २-कहे में होना । *किसी पर वश होना*-किसी पर अधिकार या प्रभाव होना । *वश का*-१-जो इच्छानुसार चलाया जा सके २-इच्छा के अधीन । *वश चलना*-शक्ति या सामर्थ्य का अपना फल या प्रभाव दिखाना ।

वशकर [वि.] (सं.) वशीभूत ।

वशका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आज्ञाकारिणी स्त्री ।

वशक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वशकरण ।

वशग [वि.] (सं.) वशीभूत ।

वशगत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वशता' ।

वशगमन [संज्ञा पु.] (सं.) वशीभूत होना ।

वशगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो किसी के वशीभूत हो ।

वशगामी [वि.] (सं.) वश में लाया हुआ ।

वशता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वश का भाव, धर्म या अवस्था ।

वशनीय [वि.] (सं.) वश मे करने योग्य ।

वशवर्त्ती [वि.] (सं.) किसी के वश या अधिकार में रहने वाला । अधीन ।

वशा [संज्ञा स्त्री.](सं) १-बध्या या बाँझ स्त्री । २-पत्नी । ३-गाय । ४-हथिनी । ५-ननद । ६-बंध्या गाय ।

वशाकु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की चिड़िया ।

वशाद्यक [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुमार या सूँस नामक जलजंतु ।

वशानुग [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञाकारी । अधीन । [वि.] (सं.) वशीभूत ।

वशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) अगरु । अगर की लकड़ी ।

वशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-अधीनता । ताबेदारी । २-मोहने की क्रिया या भाव । मोहन

वशित्व [संज्ञा पु.](सं) योग के अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक ।

वशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष ।

वशिमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) योग की आठ सिद्धियों में से एक ।

वशिर [संज्ञा पु] (सं.) १-समुद्र लवण । २-वृक्ष विशेष । ३-लाल मिर्च ।

वशिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वसिष्ठ' ।

वशी [वि.] (सं.) [स्त्री. वशिनी] १-अपने को वश में रखने वाला । २-वश में किया हुआ ।

वशीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वश में लाने की क्रिया । २-मंत्र-तन्त्र के द्वारा किसी को वश में करना ।

वशीकार [संज्ञा पु.] (सं.) वश में करना ।

वशीकृत [वि](सं.) १-किसी प्रकार वश में किया-हुआ । २-मन्त्र द्वारा वश में किया हुआ । ३-मुग्ध । मोहित ।

वशीभूत [वि.] (सं.) १-वश में आया हुआ । अधीन । २-दूसरे की इच्छा के अधीन ।

वश्य [वि.] (सं.) वश में आने या रहने वाला । [संज्ञा पु.] १-सेवक । दास । २-मातहत ।

वश्यता [संज्ञा स्त्री.](सं.) वश में होने की अवस्था या भाव । अधीनता ।

वश्यमित्र (राष्ट्र या राजा) [संज्ञा पु.] (सं.) वह मित्र जिसका बहुत प्रकार से उपयोग किया जा

सके।

वश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लगाम। २-नीला पराजिता। ३-गोरोचन।

वषट् [अव्यय](सं.) इस शब्द का उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय यज्ञ में किया जाता है।

वषट्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ। २-वेदवर्णित तेतीस देवताओं मे से एक।

षट्कृत [वि.] (सं.) देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में डाला हुआ। होम किया हुआ। हुत।

षट्कृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) होम।

ाष्कयणी, वष्कयिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकेना गाय।

वसंत, वसन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऋतुओं में वह सर्वप्रधान ऋतु जो चैत और वैशाख के महीने में मानी जाती है। बहार का मौसम। २-शीतला या चेचक नामक रोग। ३-संगीत में ६ रागों में से दूसरा। ४-अतीसार रोग। ५-संगीत में एक ताल। ६-फूलों का गुच्छा। मसूरिका नामक रोग।

वसंतक, वसन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) श्योनाक। सोनापाढ़ा।

वसंत-घोषी, वसन्त-घोषी [संज्ञा पु.](सं.) कोकिल

वसंतजा, वसन्तजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वासंती या माधवी लता। २-सफेद जूही। ३-वसंतोत्सव।

ंततिलक, वसन्ततिलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के फूल का नाम। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण, भगण और दो गुरु होते हैं। इसमें सब मिलाकर चौदह वर्ण होते हैं।

वसंततिलका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) 'वसंततिलक' नामक चौदह वर्णों का एक छंद।

वसंतदूत [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोयल। २-चैत्र-मास। ३-आम का वृक्ष। ४-पंचम राग।

वसंतदूती, वसन्तदूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोयल। २-पटोली वृक्ष। ३-माधवी लता।

वसंतद्रु, वसन्तद्रु, वसंतद्रुम, वसन्तद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

वसंतपंचमी, वसन्तपञ्चमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघ महीने की शुक्लपञ्चमी।

संत-बंधु, बसन्त-बन्धु [संज्ञा पु.](सं.) कामदेव

वसंतभैरवी, वसन्तभैरवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक रागिनी का नाम।

वसंतमहोत्सव, वसन्तमहोत्सव [संज्ञा पु.](सं.) १-वसंत-पञ्चमी के दूसरे दिन कामदेव और वसंत की पूजा के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला एक उत्सव। २-होलिकोत्सव।

वसंतमारू, वसन्तमारू [संज्ञा पु.] (सं.) संपूर्ण जाति का एक राग।

वसंतयात्रा, वसन्तयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वसंतोत्सव।

वसंतवाक्, वसन्तवाक [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत दामोदर के अनुसार चौदह तालों में से एक।

वसंतव्रत, वसन्तव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) कोकिल।

वसंतसख, वसन्तसख, वसंतसखा, वसन्तसखा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

वसंता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सुन्दर चिड़िया जिसका कण्ठ और सिर लाल तथा शेष शरीर हरे रंग का होता है।

वसंतार्त्त, वसन्तार्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) विभीतक नामक वृक्ष।

वसंती [संज्ञा पु.](हिं.) सरसों के फूल सा हलका पीला रंग। [वि.] हलके पीले रंग का।

वसंतोत्सव, वसन्तोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) एक उत्सव जो प्राचीनकाल में वसंत-पञ्चमी के दूसरे दिन मनाया जाता था।

वसअत [वि.] (अं.) १-बिस्तार। फैलाव। २-समाई। ३-चौड़ाई। ४-सामर्थ्य। शक्ति।

वसति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वास। रहना। २-घर। ३-वस्ती। आबादी। ४-जैन साधुओं का मठ। ५-रात। रात्रि।

वसती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वास। रहना। २-रात। ३-घर।

वसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्त्र। कपड़ा। २-रहना या बसना। निवास। ३-स्त्रियों की कमर का एक आभूषण। ४-आवरण। आच्छादन। तेजपत्ता।

वसना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्रियों की कमर का एक आभूषण।

वसनार्णवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी। भूमि।

वसमा [संज्ञा पु.] (अं.) १-नील का पत्ता। २-खिजाब। ३-उबटन। ४-एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा जो चांदी के वर्क लगाकर छापा जाता है।

वसवास [संज्ञा पु.] (अं.) १-शंका। भ्रम। संदेह २-प्रलोभन या मोह।

वसवासी [वि.] (अं.) १-विश्वास न करने वाला शक्की। २-भुलावे में डालने वाला।

वसह* [संज्ञा पु.] (हिं.) बैल। वृषभ।

वसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेद। २-चरबी।

वसाकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धूमकेतु।

वसाढ्य, वसाढ्यक [संज्ञा पु.] (सं.) सूँस। शिशुमार (जलजंतु)।

वसातनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीला शीशम।

वसाति [संज्ञा पु.](सं.) १-एक जनपद का अधिवासी। २-जन्मेजय के एक पुत्र का नाम। ३-इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। [संज्ञा स्त्री.] उत्तर के एक जनपद का नाम।

वसादनी [संज्ञा पु.] (सं.) पीला शीशम।

वसापायी [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

वसापावन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के वैदिक देवता।

वसाप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ चरबी मिलकर निकलती है।

वसाभूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक जनपद का नाम।

वसामेह [संज्ञा पु.] (सं.) वसा प्रमेह।

वसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-इच्छा। २-वश। ३-अभिप्राय।

वसारोह [संज्ञा पु.] (सं.) कुकरमुत्ता। खुमी।

वसि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अस्त्र। २-वासा। डेरा रहने का स्थान।

वसिक [वि.] (सं.) शून्य।

वसित [वि.] (सं.) १-पहना हुआ। धारण किया हुआ। २-बसा हुआ। ३-जमा किया हुआ (अन्न)।

वसिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्री नमक। २-गजपिप्पली। ३-लाल चिचड़ा। ४-जलनीम

वसिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित थे। २-एक स्मृतिकार ऋषि का नाम। ३-सप्तर्षि मंडल का तारा।

वसिष्ठनिहव [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

वसिष्ठपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण जिसका उल्लेख देवीभागवत में है।

वसिष्ठप्राची [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल के एक जनपद का नाम।

वसिष्ठशफ [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

वसिष्ठसंसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का संन्यासी।

वसिष्ठसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक स्मृति का नाम।

वसिष्ठसिद्धांत, वसिष्ठसिद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष का एक सिद्धांत ग्रंथ।

वसिष्ठांकुश, वसिष्ठाङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

वसिष्ठानुपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

वसिष्ठापवाद [संज्ञा पु.] (सं.) सरस्वती नदी के किनारे का एक प्राचीन स्थान।

वसीका [संज्ञा पु.] (अं.) १-सरकारी खजाने में जमा किये हुए धन का वह सूद जो जमा करने वालों के वंशजों को मिलता है। वृत्ति। २-मुसलमानी धर्म-शास्त्रानुसार वह धन जो विधर्मी या काफिर से नकद रुपये के मुनाफे के तौर पर लिया जाता।

वसीयत [संज्ञा स्त्री.](सं.) इस प्रकार लिखना या कहना कि मेरे मरने पर मेरी संपत्ति का विभाग या प्रबन्ध इस तरह हो। दित्सा।

वसीयतनामा [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह लेख या पत्र जिसमें वसीयत की सब शर्तें लिखी हों। दित्सापत्र।

वसीला [संज्ञा पु.](अं.) १-सम्बन्ध। २-आश्रय, सहायता। ३-किसी काम की सिद्धि का मार्ग

ला पैदा करना–१–किसी काम की सिद्धि
का मार्ग निकालना। २–आमदनी आदि का
रास्ता निकालना। वसीला रखना–१–संबंध-
रखना। २–आसरा रखना।

धा, वसुन्धरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–पृथ्वी।
२–श्वफलक की कन्या।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–वैदिक देवताओं का एक
गण। २–आठ की संख्या। ३–रत्न। ४–
न। ५–अगस्त का पेड़। ६–अग्नि। ७–
रिम। ८–जल। ९–सोना। स्वर्ण। १०–
जोत। ११–कुबेर। १२–पीली मूँग। १३–
वृक्ष। पेड़। १४–शिव। १५–सूर्य। १६–
विष्णु। १७–मौलसिरी। १८–सज्जन या
साधु व्यक्ति। १९–सरोवर। तालाब। २०–
नृग राजा के पुत्र का नाम। २१–छप्पय छंद
का ६६ वाँ भेद। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–दीप्ति।
आभा। २–वृद्धौषध। ३–दक्ष प्रजापति की
एक कन्या। [वि.] सब में बसने या वास
करने वाला।

क [संज्ञा पु.] (सं.) १–साँभर नमक। २–
पांशुलवण। रेह। ३–वथुआ नामक शाक।
४–काला अगर। ५–क्षारलवण। ६–मदार-
वृक्ष। ७–बड़ी मौलसिरी।

र्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि।

क्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

दर [संज्ञा पु.] (सं.) तालीशपत्र।

क [संज्ञा पु.](सं.) एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम

चरण [संज्ञा पु.](सं.) पिंगल में डगण के चौथे
भेद का नाम जिसके आदि में गुरु और फिर
दो लघु होते हैं।

त्क [संज्ञा पु.] (सं.) सोना।

च्छिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा।

[संज्ञा पु.] (सं.) १–कुबेर। २–विष्णु।

दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पृथ्वी। २–स्कंद-
माताओं में से एक। ३–माली नामक राक्षस
की पत्नी।

दान [संज्ञा पु.](सं.) १–विदेहराज के पुत्र का
नाम। २–बृहद्रथ के एक पुत्र का नाम।

दामा [संज्ञा पु.] (सं.) बृहद्रथ के एक पुत्र का
नाम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्कंदमाताओं में से
एक का नाम।

देव [संज्ञा पु.] (सं.) १–श्रीकृष्ण के पिता का
नाम। २–धनिष्ठानक्षत्र।

देवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिष्ठानक्षत्र।

देव-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

देव्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिष्ठानक्षत्र।

दैवत [संज्ञा पु.] (सं.) धनिष्ठानक्षत्र।

द्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर।

धर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार
एक राजा का नाम।

धर्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) बिल्लौर। स्फटिक।

वसुधा [संज्ञा स्त्री.](सं) पृथ्वी। [वि.] (सं.) वसु या धन देने वाला।

वसुधाधर [संज्ञा पु.] (सं.) १–पर्वत। २–विष्णु।

वसुधाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

वसुधान [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी।

वसुधार [संज्ञा पु.] (सं.) मार्कण्डेय पुराणोक्त एक पर्वत का नाम।

वसुधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जैनों की एक देवी का नाम। २–कुबेर की अलकापुरी। ३–एक तीर्थ का नाम। ४–एक नदी का नाम। ५–नंदी-मुख श्राद्ध का कृत्य विशेष।

वसुधारी [वि.] (सं.) सम्पत्तिशाली।

वसुधार्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–स्फटिक। बिल्लौर। २–संगमरमर।

वसुधासुत [संज्ञा पु.] (सं.) नरकासुर।

वसुनीत [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

वसुनीथ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

वसुपति [संज्ञा पु.] (सं.) धनपालक।

वसुपाल [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वीपति। राजा।

वसुप्रद [संज्ञा पु.] (सं.) १–शिव। २–कुबेर। ३ स्कन्द के एक अनुचर का नाम।

वसुप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

वसुप्राण [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निदेव।

वसुबंधु, वसुबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) महायान शाखा के अनुयायी एक प्राचीन बौद्ध आचार्य

वसुभ [संज्ञा पु.] (सं.) धनिष्ठानक्षत्र।

वसुभरित [वि.] (सं.) धन से पूर्ण।

वसुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–पृथ्वी। २–एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण और सगण होते हैं।

वसुमना [संज्ञा पु.] (सं) पुराणोक्त एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम।

वसुमान [संज्ञा पु.] (सं) पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वसुमित्र [संज्ञा पु.](सं.) महायान शाखा के एक बौद्ध आचार्य का नाम।

वसुरक्षित [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्धाचार्य का नाम।

वसुरात [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

वसुरुच [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का देवता।

वसुरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गन्धर्व का नाम।

वसुरूप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वसुरेता [संज्ञा पु.] (हिं.) १–शिव। २–अग्नि।

वसुरोधी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वसुल [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

वसुवन [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के अनुसार ईशानकोण में स्थित एक देश का नाम।

वसुवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १–एक ऋषि का नाम। २–धनी।

वसुविद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि।

वसुश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्कंद की एक अनुचरी का नाम।

वसुश्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) एक अग्निहोत्री ऋषि का नाम।

वसुश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) चांदी।

वसुसारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुबेर की राजधानी। अलका।

वसुस्थली [संज्ञा स्त्री] (सं.) अलकापुरी।

वसुहंस [संज्ञा पु.] (सं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

वसुहोम [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त अङ्गदेश के एक राजा का नाम।

वसूक [संज्ञा पु.] (स.) अगस्त का पेड़।

वसूज [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद के एक सूक्त के द्रष्टा ऋषि का नाम।

वसूया [संज्ञा पु] (सं.) धन की कामना।

वसूल [वि] (अ) १–मिला या लिया हुआ। प्राप्त। २–उगाहा हुआ।

वसूल पाना–दूसरे से जो प्राप्त होना हो वह मिल जाना।

वसूली [संज्ञा स्त्री] (अ.) दूसरे से अपना प्राप्त धन या वस्तु लेने की क्रिया या भाव। उगाही

वस्त [संज्ञा पु.] (सं) बकरा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'वस्तु'।

वस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) बनाया हुआ नमक।

वस्तकर्ण [संज्ञा पु] (सं.) साखू या शालवृक्ष।

वस्तमोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं) अजमोदा।

वस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १–नाभि के नीचे का स्थान। पेड़ू। २–मूत्राशय। ३–पिचकारी।

वस्ति-कर्म [संज्ञा पु] (सं.) लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी लगाना।

वस्ति-कुंडलिका, वस्तिकुण्डलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रोग जिसमें मूत्राशय में गांठ पड़ जाती है।

वस्तिवात [संज्ञा पु.](सं.) वायु-विकार से उत्पन्न होने वाला एक मूत्ररोग।

वस्तिशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १–मूत्राशय साफ करने वाली दवा। २–मदन या मैनफल का वृक्ष। ३–मदनफल।

वस्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं) १–वास्तविक या कल्पित सत्ता। चीज। २–सत्य। ३–वे साधन या सामग्री जिनसे कोई चीज बनी हो। ४–किसी नाटक या काव्य का कथानक। ५–इतिवृत्त।

वस्तुकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वथुआ नामक साग।

वस्तुज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १–किसी वस्तु की पहचान। २–मूलतथ्य का बोध। तत्वज्ञान।

वस्तुतः [अव्य.] (सं.) १–वास्तव में। २–सचमुच।

वस्तुनिर्देश [संज्ञा पु] (सं.) नाटक के मंगलाचरण का एक भेद जिसमें उसकी कथा की एक झलक दिखलाई जाती है।

वस्तुबल [संज्ञा पु.] (सं) किसी वस्तु या चीज का गुण।

वस्तु-भाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) ढुलाई या लदाई का भाड़ा। फ्रेट्।

वस्तुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या चीज का धर्म अथवा गुण।

वस्तुभेद [संज्ञा पु.] (सं.) वस्तु का प्रकार।

वस्तुवाद [संज्ञा पु.] (सं) वह दार्शनिकवाद या सिद्धांत जिसमें जगत जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है।

वस्तुविचार [संज्ञा पु.](सं.) वस्तु का गुण निर्धारण।

वस्तुशासन [संज्ञा पु.] (सं.) वस्तुनिर्णय।

वस्तुशून्य [वि.] (सं.) द्रव्यहीन।

वस्तु-स्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वास्तविक स्थिति या परिस्थिति।

वस्तुपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमा-अलङ्कार का एक भेद।

वस्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसने का स्थान, घर। २-डेरा। वासा।

वस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़ा।

वस्त्रकुट्टिम [संज्ञा पु.] (सं.) १-तम्बू। डेरा। खेमा। २-छाता।

वस्त्रगृह [संज्ञा पु.] (सं) कपड़े का बना घर, खेमा।

वस्त्रग्रंथि, वस्त्रग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धोती की गाँठ जो नाभि के पास लगती है। २-नीवी। नाड़ा। इजारबन्द।

वस्त्रघर्घरी [संज्ञा स्त्री](सं.) एक प्रकार का बाजा

वस्त्रद [वि.] (सं.) वस्त्र देने वाला।

वस्त्रनिर्णेजक [संज्ञा पु.] (सं.) धोबी।

वस्त्रप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणोक्त एक तीर्थ-स्थान। २-प्राचीनकाल में राजाओं का वह कर्मचारी जो ऊन, रेशम आदि सब प्रकार के वस्त्र पहचानने और उनके भाव आदि का पता रखता था।

वस्त्रपरिधान [संज्ञा पु.] (सं.) पोशाक पहनना।

वस्त्रपूत [वि.] (सं.) कपड़े से छानकर शुद्ध किया हुआ।

वस्त्रपुत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) गुड़िया। पुतली।

वस्त्रबंध, वस्त्रबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) नीवी। नाड़ा।

वस्त्रभवन [संज्ञा पु] (सं.) कपड़े का बना हुआ घर।

वस्त्रभूषण [संज्ञा पु.] (सं) रक्तांजन।

वस्त्रभूषणा [संज्ञा स्त्री] (सं.) मजीठ।

वस्त्रभेदक, वस्त्रभेदी [संज्ञा पु] (सं) दर्जी।

वस्त्रयोनि [संज्ञा पु.] (सं) रुई या उससे बना कपड़ा।

वस्त्ररंजन, वस्त्ररञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) कुसुम का वृक्ष।

वस्त्ररंजनी, वस्त्ररञ्जनी [संज्ञा स्त्री.](सं.)मजीठ

वस्न [संज्ञा पु.] (सं) १-वेतन। २-मूल्य। ३-वसन। ४-द्रव्य। वस्तु। ५-धन। ६-त्वक्। छाल।

वस्नक [संज्ञा पु.] (सं) कटिभूषण।

वस्फ [संज्ञा पु.](अ.) १-प्रशंसा। स्तुति। २-विशेषता।

वस्ल [संज्ञा पु.] (अ.) मिलन। मिलाप।

वहंत, वहन्त [संज्ञा पु.](सं.) १-वायु। २-बालक।

वह [सर्व.] (हिं.) १-एक शब्द जिसके द्वारा वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। २-दूर के पदार्थों का संकेत करने वाला या परोक्ष वस्तुओं का सूचक शब्द। [वि.] (हिं.) बोझा उठाकर ले जाने वाला। वाहक। (यौगिक के अन्त में)। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल का कंधा। २-घोड़ा ३-वायु। ४-मार्ग। पथ। ५-नद।

वहत [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल। २-मार्ग। रास्ता।

वहतांत्री, वहतान्त्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) छागलाद्री नामक क्षुप।

वहति [संज्ञा पु.] (सं) १-वायु। २-सचिव।

वहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाय। २-नदी।

वहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खींच या ढो-कर एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाना। २-ऊपर लेना उठाना। ३-कंधे या सिर पर लेना। ४-खंभे के नौ भागों में से सब से नीचे का भाग। (वास्तुविद्या)।

वहन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं) वह पत्र जो किसी जहाज का प्रधान अधिकारी अपने जहाज पर लादे हुए माल की रसीद के रूप में माल भेजने वाले को देता है और जिसके अनुसार वह प्रेषिती को माल पहुँचाने का भार लेता है। बिल-ऑफ़-लेडिंग।

वहनीय [वि.] (सं.) १-उठा या खींचकर ले जाने योग्य। २-ऊपर लेने योग्य।

वहम [संज्ञा पु.] (अ) १-मन में होने वाली मिथ्या धारणा। २-भ्रम। धोखा। ३-झूठी शंका या सन्देह।

वहमी [वि.] (अ.) १-वहम करने वाला। २-झूठे खयाल में पड़ा रहने वाला। ३-वृथा सन्देह द्वारा उत्पन्न।

वहल [संज्ञा पु.] (सं) नौका। नाव। [वि.] दृढ़ मजबूत।

वहलगंध, वहलगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शंबर चन्दन।

वहलचक्षु [संज्ञा पु.] (सं) मेढ़ासींगी।

वहलत्वच् [संज्ञा पु.] (सं.) लोध।

वहला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शतपुष्पा। २-बड़ी इलायची। ३-दीपकराग की एक रागिनी।

वहशत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-असभ्यता। जंगलीपन। २-उजड्डपन। ३-पागलपन। ४-चि की चंचलता। अधीरता। ५-विकलता। ६-उदासी। ७-डरावनापन। वहशत उछलना-१-सनक सवार होना। २-धुन होना। वहशत बरसना-१-उदासी छाना। २-असभ्यता प्रक होना।

वहशी [वि.] (अ.) १-जंगली। २-असभ्य।

वहाँ [अव्यय] (हिं.) उस जगह। उस स्थान पर

वहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

वहाबी [संज्ञा पु.](अ.) मुसलमानों का एक संप्रदाय जिसको अब्दुलवहाब नज्दी ने चलाया था, इस सम्प्रदाय का अनुयायी।

वहिः [अव्यय] (सं) जो भीतर न हो। बाहर।

वहिःशुल्क [संज्ञा पु](सं) वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आने वाले तथा देश से बाहर जाने वाले पदार्थों पर लगाया जाता है कस्टम-ड्यूटी।

वहित [वि.] (सं.) १-प्रसिद्ध। मशहूर। २-प्रा

वहित्र, वहित्रक [सज्ञा पु.] (सं.) नाव। जहाज। पोत।

वहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाव। नौका।

वहिरंग, वहिरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-देह या शरीर का बाहरी या ऊपरी भाग। २-किसी वस्तु का बाहरी भाग। ३-वह व्यक्ति जो अपने दल या पक्ष का न हो। ४-पूजा में वह कृत्य जो आदि में किया जाय। [वि.] (सं.) १-ऊपरी या बाहरी। २-अनावश्यक। फालतू। ३-जो सार रूप न हो।

वहिरिंद्रिय, वहिरिन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कर्मेन्द्रिय। २-वाह्यिकरण मात्र।

वहिर्गत [वि.] (सं.) बाहर निकाला हुआ। बाहर का।

वहिर्गमन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम से घर के बाहर जाना।

वहिर्देश [संज्ञा पु.](सं.) १-बाहर का स्थान। २-विदेश। ३-अज्ञात स्थान। ४-द्वार।

वहिर्द्वार [संज्ञा पु.] (सं.) मकान का बाहरी सदर फाटक। तोरण।

वहिर्ध्वजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुर्गादेवी का एक ना

वहिर्भव [वि] (सं.) बाह्यप्रकृति।

वहिर्भवन [संज्ञा पु.] (सं) बाहर का घर।

वहिर्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) बाह्यभाव।

वहिर्भूत [वि.] (सं.) वहिर्गत।

वहिर्मनस [वि.] (सं) मन के बाहर।

वहिर्मुख [वि.] (सं.) विमुख।

वहिर्योग [संज्ञा पु.] (सं.) हठयोग।

वहिर्लंब, वहिर्लम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) रेखागणि में वह लंब जो किसी क्षेत्र के बाहर गिरता है

वहिर्लापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई ऐसा प्रश्न या वाक्य जिसका उत्तर बतलाने के लिए श्रोता से कहा जाय। पहेली।

वहिश्चर [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

वहिष्करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाँच वाह्येंद्रियाँ। २-निकाल वाहर करने का काम।

वहिष्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाहर करना। निकालना।-२-सब प्रकार का सम्बन्ध छोड़ देना।

वहिष्कार्य [वि.] (सं.) छोड़ने योग्य।

वहिष्कृत [वि.] (सं.) १-वाहर किया या निकाला हुआ। २-छोड़ा या त्यागा हुआ।

वहिष्कृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वहिष्कार।

वहिष्ठ [वि.] (सं.) अधिक भार उठाने वाला।

वहिष्प्राण [संज्ञा पु.](सं) १-जीवन। २-श्वास वायु। ३-अर्थ।

वहीं [अव्य] (हिं.) उसी जगह।

वही [सर्व.] (हि.) १-जिसका उल्लेख हुआ हो, वह ही। पूर्वोक्त ही। २-निर्दिष्ट व्यक्ति ही, और कोई नहीं।

वहीरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्तप्रवाहिनी नाड़ियों का वर्ग विशेष। २-स्नायु। मांसपेशी।

वहूदक [संज्ञा पु.] (सं) चार पकार के संन्यासियों में से एक।

वहेलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक व्याधजाति।

वह्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-वह शक्ति जिससे खाया हुआ अन्न पचता है। भूख। हाजमा। ३-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ४-तुर्वसु के पुत्र का नाम। ५-कुक्कुर वंशी एक यादव का नाम। ६-चित्रक। ७-भिलावाँ। ८-तीन की संख्या। ६-एक सेनापति बन्दर का नाम जो राम की सेना में था।

वह्निकर [संज्ञा पु] (सं) १-विद्युत। बिजली। २-जठराग्नि। ३-चकमक।

वह्निकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धौ का फूल।

वह्निकुमार [संज्ञा पु.] (सं) भुवनपति-देवगण में से एक।

वह्निकुंड, वह्निकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं) अग्निकुण्ड

वह्निकोण [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण पूर्व का कोना

वह्निगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस।

वह्निगृह [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निशाला।

वह्निचक्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलिहारी या कलियारी नामक विष।

वह्निचूड़ [संज्ञा पु.] (सं.) आग की लपट।

वह्निजाया [संज्ञा स्त्री] (सं) स्वाहादेवी।

वह्निज्वाला [संज्ञा स्त्री] (सं) धव का पेड़।

वह्निद [वि] (सं) अग्निदायक।

वह्निदग्ध [वि.] (सं.) आग से जला हुआ।

वह्निदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) कुसुम का पेड़।

वह्निदीपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोद।

वह्निनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रक। २-भिलावां

वह्निनाशक [वि.] (सं.) अग्नि का प्रकोप दूर करने वाला।

वह्निनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी।

वह्निनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध से लाल आँखें होना।

वह्निपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निपुराण।

वह्निपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धव का वृक्ष।

वह्निबीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-तंत्र में 'र' बीज।

वह्निभूतिक [संज्ञा पु] (सं.) चांदी।

वह्निभोग [संज्ञा पु.] (सं.) घी।

वह्निमंथ, वह्निमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) गनियारी का पेड़।

वह्निमंथन, वह्निमन्थन [संज्ञा पु.] (सं.) गनियारी का पेड़।

वह्निमय [वि.] (सं.) अग्निस्वरूप।

वह्निमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) हवा। वायु।

वह्निमुख [संज्ञा पु] (सं.) देवता।

वह्निरस [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि की ज्वाला।

वह्निरेता [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव।

वह्निलोह [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा।

वह्निलोहक [संज्ञा पु.] (सं.) कांस्य। कांसा।

वह्निवक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलियारी नामक विष।

वह्निवर्ण [वि.] (सं) लाल रङ्ग।

वह्निशाला [संज्ञा स्त्री] (सं) अग्निशाला।

वह्निशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कलियारी नामक विष। २-धव का पेड़। ३-काकुन नामक अन्न। ४-गजपिप्पली।

वह्निशुद्ध [वि] (सं) अग्नि द्वारा शुद्ध किया हुआ

वह्निश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वाहा। २-लक्ष्मी।

वह्निसंस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि-संस्कार।

वह्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाहन। यान। २-गाड़ी।

वह्यक [वि] (सं.) वाहक। ढोने वाला।

वाँ+ [अव्य] (हिं.) वहाँ। उस जगह।

वांछनीय, वाञ्छनीय [वि.] (सं.) १-चाहने योग्य। २-जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो। इष्ट। ३-जिसका होना अनुचित न हो।

वांछा, वाञ्छा [संज्ञा स्त्री] (सं.) इच्छा। अभिलाषा।

वांछित, वाञ्छित [वि](सं.) चाहा हुआ। अभिलषित।

वांत, वान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वमन। उलटी। कै

वांताद, वान्ताद [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

वांताशी, वान्ताशी [वि.](सं.) वमन खाने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ता। २-भोजन के लिए अपने कुल या गोत्र की प्रशंसा करने वाला। ब्राह्मण।

वांति, वान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वमन। कै।

वांतिका, वान्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

वांतिकृत, वान्तिकृत [संज्ञा पु.](सं.) मदन-वृक्ष

वांतिदा, वान्तिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

वांतिशोधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीरक। जीरा।

वा:किटि [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुमार। सूँस।

वा:पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लवंग। लौंग।

वा [अव्य.] (सं.) या। अथवा।

❀+ [सर्वनाम] (हिं.) ब्रजभाषा में प्रथम पुरुष के एकवचन का वह रूप जिसमें कारक के चिह्न लगाये जाते हैं। जैसे—वाने, वाको आदि।

वाह❀+ [सर्वनाम.] (हिं.) देखो 'वाहि'।

वाइदा [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'वादा'।

वाइन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मदिरा। शराब।

वाइस [वि.] (अं.) सहायक।

वाइस-चान्सलर [संज्ञा पु.] (अं.) विश्वविद्यालय का वह उच्चअधिकारी जो चान्सलर के सहायतार्थ हों तथा उसकी अनुपस्थिति में उसके समस्त कार्यों को उसी की भांति कर सकता हो

वाइस-चेयरमैन [संज्ञा पु.] (अं) वह जिसका पद सभाध्यक्ष के बाद होता है और जो उसकी अनुपस्थित में उसका कार्य करता है। उपाध्यक्ष। उपसभापति।

वाइस-प्रेसिडेंट [संज्ञा पु.] (अं.) वह जो पद, मर्यादा आदि में सभापति के बाद होता है तथा उसकी अनुपस्थिति में सभा का संचालन करता है।

वाइसराय [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजों के राजत्वकाल में भारत का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो (ब्रिटेन) सम्राट के प्रतिनिधिस्वरूप यहां रहता था।

वाउचर [संज्ञा पु.] (अं.) वह कागज अथवा बही जिसमें किसी प्रकार के हिसाब का ब्योरा हो

वाक् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाणी। २-सरस्वती। ३-बोलने की इन्द्रिय।

वाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बगलों का समूह। २-वाक्य। ३-वेद का एक भाग। ४-खेत की वह कूत जो बिना खेत नापे की जाती है।

वाक़ई [अव्यय] (अं.) वस्तुतः। सचमुच।

वाकफियत [वि.] (अं.) यथार्थ। वास्तव। सच। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-जानकारी। २-परिचय

वाक़या [संज्ञा पु.] (अं.) १-कोई बात जो घटित

हो। घटना। २-वृतांत। समाचार। यौ०-वक़ाया-नवीस-मुसलमानी राजत्वकाल का वह कर्मचारी जिसका कार्य इतिहास के रूप में घटनाओं को लिखना होता था।

वाक़ा [संज्ञा पु.](अ.) १-होने वाला। घटने वाला २-प्रतिष्ठित।

वाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तंत्र के अनुसार एक देवी का नाम।

वाक़िफ़ [वि.](अ.) १-जानकार। ज्ञाता। २-अनुभवी।

वाक़िफ़कार [वि.](अ., फ़ा.) किसी काम को समझने-बूझने वाला। कार्याभिज्ञ।

वाकुची [संज्ञा स्त्री.] (सं) बकुची।

वाकोवाक [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत।

वाकोवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बातचीत। २-३-आपसी तर्क। ४-तर्कविद्या।

वाक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी जिसका उल्लेख चरक में मिलता है।

वाक्चपल [वि.] (सं.) १-बहुत बातें करने वाला। मुँहजोर। २-भड़भड़िया।

वाक्छल [संज्ञा पु.](सं.) बातों या शब्दों का कुछ का कुछ अर्थ लगाकर धोखा देना।

वाक्पटु [वि.] (सं.) बातें करने में चतुर।

वाक्पटुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाक्पटु होने का भाव। वाक्चातुरी।

वाक्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति। २-विष्णु ३-निर्दोष बात।

वाक्पतिराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा यशोवर्मा के आश्रित एक कवि। २-मालवा का एक परमार राजा।

वाक्पारुष्य [संज्ञा पु.](सं.) १-वचन की कठोरता २-मुँहजोरी।

वाक़फ़ियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-जानकारी। २-पहचान।

वाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण के नियमानुसार क्रम से लगा हुआ सार्थक शब्दसमूह जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता है।

वाक्यकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक की बात दूसरे से कहने वाला। दूत। २-बातें बनाने वाला।

वाक्यकार [संज्ञा पु.] (सं.) रचना करने वाला।

वाक्यगर्भित [वि.] (सं.) सुन्दर पदों से युक्त।

वाक्यपद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाक्यरचना की विधि।

वाक्यपूरण [संज्ञा पु.] (सं.) वाक्य की समाप्ति।

वाक्यप्रलाप [संज्ञा पु.] (सं.) असंबद्ध-वार्ता।

वाक्यप्रसारी [वि.] (सं.) बात बढ़ाने वाला।

वाक्यभेद [संज्ञा पु.] (सं.) मीमांसा के एक ही वाक्य का एक ही समय में परस्पर विरोधी अर्थ करना।

वाक्यमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाक्यसमूह।

वाक्यशेष [संज्ञा पु.] (सं.) वाक्य का अंत।

वाक्यसंयोग [संज्ञा पु.] (सं) बातों की मिलान।

वाक्यस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) बोलने का शब्द।

वाक्यालंकार, वाक्यालङ्कार [संज्ञा पु.] (सं.) वाक्य की शोभा।

वाक्यैकवाक्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मीमांसा के अनुसार एक वाक्य को दूसरे वाक्य से मिलाकर उसके सुसंगत अर्थ का बोध करना

वाक्संयम [संज्ञा पु.] (सं.) व्यर्थ बातें न करना

वाक्सिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं) इस प्रकार की सिद्धि अथवा शक्ति कि जो बात मुख से निकले, वह ठीक घटे।

वाक्स्वातंत्र्य, वाक्स्वातन्त्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश अथवा राज्य में जनसाधारण के लिए बोलने या व्याख्यान द्वारा अपने विचार प्रकट करने विषयक स्वतन्त्रता। बोलकर अपने विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता। फ़्रीडम-ऑफ़-स्पीच।

वागतीत [संज्ञा पु.] (सं.) बीती हुई बात।

वागर [संज्ञा पु.] (सं) १-वारक। २-सान। ३-निर्णय। ४-भेड़िया। ५-निर्भय। ६-पंडित। ७-मुमुक्षु।

वांगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लगाम।

वागारु [संज्ञा पु.](सं.) आशा देकर निराश करने वाला। विश्वासघाती।

वागाशनि [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

वागीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति। २-ब्रह्मा। ३-कवि। [वि.] अच्छा बोलने वाला।

वागीशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

वागीश्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-बृहस्पति। २-ब्रह्मा। ३-कवि। मंजुघोष बोधिसत्व। [वि.] अच्छा बोलने वाला।

वागीश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

वागुंजार, वागुन्जार [संज्ञा पु.](सं) एक प्रकार की मछली।

वागुजी [संज्ञा स्त्री.] (सं) बकुचि नामक औषध

वागुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमरख। २-बैंगन।

वागुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृगों को फँसाने का जाल।

वागुरिक [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन फँसाने वाला शिकारी।

वागुलि [संज्ञा पु.] (सं.) डिब्बा। पानदान।

वागुलिक [संज्ञा पु.] (सं.) राजाओं को पान खिलाने वाला सेवक। खवास।

वाग्गुद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

वाग्गुलि [संज्ञा पु.] (सं.) वागुलिक। खवास।

वाग्जाल [संज्ञा पु.] (सं.) बातों का ऐसा आडंबर जिसमें अर्थ या तथ्य बहुत कम हो।

वाग्दण्ड, वाग्दण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) भला बु कहने का दंड। डाँट-फटकार।

वाग्दत्त [वि.](सं.) जिसे दूसरों को देने का वचन दिया जा चुका हो।

वाग्दत्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ पक्की हो चुकी हो।

वाग्दल [संज्ञा पु.] (सं.) ओठ।

वाग्दान [संज्ञा पु.](सं.) १-कुछ देने अथवा करने का वचन। वादा। प्रॉमिस। २-कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी लड़की तुम्हें ब्याह दूँगा।

वाग्दुष्ट [वि.] (सं.) १-कटुभाषी। २-जिसे किसी ने शाप दिया हो। अभिशप्त।

वाग्देवता [संज्ञा पु.] (सं.) वाणी। सरस्वती।

वाग्देवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

वाग्दैवत्यचरु [संज्ञा पु] (सं.) वह चरु जो सरस्वती के उद्देश्य से पकाया गया हो।

वाग्दोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोलने की त्रुटि। २-व्याकरण विषयक त्रुटि या दोष। ३-निन्दा या गाली।

वाग्भट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंहगुप्त के पुत्र जो अष्टांगहृदय-संहिता नामक वैद्यकग्रंथ के रचियता थे। २-पदार्थचंद्रिका, भावप्रकाश आदि के रचियता। ३-निघंटु नामक वैद्यक ग्रंथ के रचियता। एक जैन पंडित जो नेमिकुमार के पुत्र थे।

वाग्मी [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा वक्ता। २-पंडित। विद्वान्। ३-बृहस्पति। ४-एक पुरुवंशी राजा।

वाग्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिमित भाषी। २-निर्वेद।

वाग्यमन [संज्ञा पु.] (सं.) बोलने में संयम।

वाग्वज्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कठोर वाक्य। २-शाप।

वाग्वादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

वाग्विदग्ध [वि.] (सं.) बोलचाल में प्रवीण।

वाग्विदग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो बातचीत करने में बड़ी चतुर हो।

वाग्विलास [संज्ञा पु.] (सं.) परस्पर प्रेम और सुख से बातें करना।

वाग्विसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बात बन्द करना।

वाग्वैदग्ध्य [संज्ञा पु.](सं.) १-बात करने में नि णता। २-सुन्दर अलंकार तथा चमत्कारपूर्ण उक्तियों की निपुणता।

वाङ्मती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी जो नैपाल में है।

वाङ्मय [वि.] (सं.) १-वचन-सम्बन्धी। २-वचन द्वारा किया हुआ। ३-जो पठन-पाठन का विषय हो। [संज्ञा पु.] साहित्य।

वाङ्मयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती ।

वाङ्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) उपन्यास ।

वाचंयम [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुनि । २-मौनव्रत धारण करने वाला पुरुष ।

वाच् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाणी । वाक्य । वाचा ।

वाच [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली ।

वॉच [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कलाई पर बाँधने या जेब में रखने की छोटी घड़ी ।

वाचक [वि.] (सं.) बताने वाला । कहने वाला । द्योतक । सूचक । बोधक । [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाम । संज्ञा । २-वह जो किसी बड़े अधिकारी को कागज आदि पढ़कर सुनाने के लिये नियुक्त हो । पेशकार । रीडर ।

वाचकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाचक का भाव या धर्म ।

वाचकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वाचकता' ।

वाचकधर्मलुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो ।

वाचकलुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा-अलंकार जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप होता है ।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा जिसमें वाचक-शब्द, उपमान और धर्म तीनों लुप्त हों, केवल उपमेय भर हो ।

वाचकोपमानलुप्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह उपमा अलंकार जिसमें वाचक तथा उपमान का लोप होता है ।

वाचकोपमेयलुप्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) उपमा-अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक और उपमेय का एक भेद होता है ।

वाचक्नवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गार्गी ।

वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पढ़ने का काम । पठन । २-विधायिका-सभा में किसी विधेयक (बिल) के उपस्थित होने पर उसका तीन बार पढ़ा जाना । आवृत्ति । रीडिंग । ३-कहना । बताना ४-प्रतिपादन ।

वाचनक [संज्ञा पु.] (सं.) पहेली ।

वाचनालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए समाचारपत्र पुस्तकें आदि रहती हैं । रीडिंगरूम ।

वाचयिता [वि.] (सं.) बाँचने वाला ।

वाचसांपति, वाचसाम्पति [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति ।

वाचस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-बृहस्पति । २-वाणी ३-वचन । ४-बहुत बड़ा विद्वान् ।

वाचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणी । २-वचन । शब्द ।

वाचाट [वि.] (सं.) १-वाचाल । २-बकवादी ।

वाचापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिज्ञापत्र ।

वाचाबंध* [वि.] (हिं.) प्रतिज्ञा या वचन से बँधा हुआ ।

वाचाबंधन, वाचाबन्धन [संज्ञा पु.](सं.) प्रतिज्ञा-बद्ध होना ।

वाचाल [वि.] (सं.) १-बोलने में तेज । २-व्यर्थ बकने वाला ।

वाचालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहुभाषिता । बहुत बोलने का भाव । २-बातचीत में निपुणता ।

वाचावृद्ध [वि.] (सं.) बातचीत करने में निपुणता

वाचास्तेन [वि.] (सं.) झूठ बोलने वाला ।

वाचिक [वि.] (सं.) १-वाणी-सम्बन्धी । २-वाणी से किया हुआ । ३-संकेत से कहा हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) अभिनय का वह भेद जिसमें केवल बातचीत और उसके ढङ्ग से ही अभिनय का सारा तात्पर्य समझा जाता है ।

वाची [वि.] (हिं.) प्रकट करने वाला । सूचक । वाचक । जैसे-भाववाची ।

वाच्य [वि.] (सं.) १-कहने योग्य । जो कथन में आवे । २-शब्द संकेत द्वारा जिसका बोध हो ३-जिसे लोग भला-बुरा कहें । [संज्ञा पु.] (सं.) १-अभिधेयार्थ । २-प्रतिपादन ।

वाच्यार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो ।

वाच्यावाच्य [संज्ञा पु.](सं.) भली-बुरी या कहने न कहने योग्य बात ।

वाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-घृत । घी । २-यज्ञ । ३-अन्न । ४-जल । ५-संग्राम । ६-बल । ७-वह पंख जो बाण में पीछे लगा रहता है । ८-पलक । ९-वेग । १०-मुनि । ११-शब्द । आवाज ।

वाज़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-शिक्षा । २-धार्मिक उपदेश । कथा ।

वाजदावर्षा [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम ।

वाजपति [संज्ञा पु.](सं.)१-अग्नि । २-अन्नपति

वाजपेई* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वाजपेयी' ।

वाजपेय [संज्ञा पु.](सं.) सात श्रौतयज्ञों में पाँचवां

वाजपेयी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि । २-अत्यंत कुलीन व्यक्ति । ३-वह व्यक्ति जिसने वाजपेययज्ञ किया हो

वाजप्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि ।

वाजबी [वि.] देखो 'वाजिबी' ।

वाजभर्म्मीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम

वाजभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम ।

वाजवत [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि ।

वाजश्रव [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम ।

वाजश्रवस [संज्ञा पु.](सं.) १-वाजश्रवा ऋषि के गोत्रज । २-नचिकेता के पिता का नाम ।

वाजश्रवा [संज्ञा पु.](सं.) १-अग्नि । २-एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

वाजस [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम ।

वाजसनि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य ।

वाजसनेय [संज्ञा पु.](सं.) यजुर्वेद की एक शाखा का नाम ।

वाजसाम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक साम का नाम ।

वाजस्रजाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) वेणी राजा का नाम

वाजि [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा ।

वाजिगंधा, वाजिगन्धा [संज्ञा पु.] (सं.) असगन्ध ।

वाजिदंत, वाजिदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) अड़ूसा ।

वाजिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घोड़ी । २-अश्वगन्धा ।

वाजिब [वि.] (अ.) उचित । मुनासिब ।

वाजिबी [वि.](अ.) उचित । ठीक । *वाजिबी बात*-ठीक या सत्य बात । *वाजिबी खर्च*-आवश्यक खर्च ।

वाजिबुल्अदा [वि.](अ.) (वह धन) जिसके देने का समय आ गया हो ।

वाजिबुल्-अर्ज [संज्ञा पु.] (अ.) वह शर्त जो कानूनी बन्दोबस्त के समय गाँव के रिवाज आदि के विषय में लिखी गई हो ।

वाजिबुल्-वसूल [वि.] (अ.) (वह धन) जिसके वसूल करने का समय आगया हो । [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा धन या रकम ।

वाजिभ [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीनक्षत्र ।

वाजिभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) चना या मूँग ।

वाजिभत [संज्ञा पु.] (सं.) परवल ।

वाजिमेध [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेध ।

वाजिराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-उच्चैःश्रवा । २-विष्णु ।

वाजिवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) तेईस अक्षरों का एक छन्द ।

वाजिशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का पेड़ ।

वाजिशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुड़साल । अस्तबल ।

वाजिशिरा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु के एक अवतार का नाम । २-एक दैत्य का नाम ।

वाजी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घोड़ा । २-अड़ूसा । ३-फटे हुये दूध का पानी । ४-हवि ।

वाजीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रयोग जिससे मनुष्य का वीर्य बढ़ता है ।

वाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्ग । रास्ता । २-वास्तु । ३-मंडप ।

वाटधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक जनपद का नाम जो काश्मीर के नैऋत्यकोण में बताया जाता है । २-एक वर्णसंकर जाति का नाम ।

वाटर [संज्ञा पु.] (अ.) जल । पानी ।

वाटरप्रूफ [वि.] (अ.) जिस पर पानी का असर

या प्रभाव न हो।

वाटर-वर्क्स [संज्ञा पु.](सं.) १-नगर में कल आदि के द्वारा पानी पहुँचाने की कल। २-जलकल।

वाटरशूट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पानी में कूदकर तैरने की क्रीड़ा।

वाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाग। बगीचा। २-इमारत। ३-हिंगुपत्री।

वाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह भू-खंड जिसपर कोई भवन खड़ा हो। २-घर। डेरा। ३-आँगन। सहन। ४-मार्ग। सड़क। ५-कुञ्ज। उपवन।

वाटुक [संज्ञा पु.] (सं.) भुना हुआ जौ।

वाट्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बला। खिरौंटी। २-भुना हुआ जौ।

वाट्यपुष्प [संज्ञा पु.](सं.) १-चन्दन। २-कुङ्कुम। केसर।

वाट्यमंड, वाट्यमण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) बिना भूसी या छिलके के भुने हुए और दले हुए जौ का मांड।

वाट्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बरियारा।

वाट्याल, वाट्यालक [संज्ञा पु.] (सं.) बरियारा। बीजबन्द।

वाट्यालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा बरियारा।

वाड़व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बाड़व'।

वाड़वाग्नि [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह कल्पित अग्नि जो समुद्र में जलती हुई मानी गई है।

वाढम [अव्य.] (सं.) बस। बहुत हो चुका।

वाण [संज्ञा पु.] (सं.) छड़ी के आकार का सिरे पर फल लगा वह अस्त्र जो धनुष की सहायता से चलाया जाता है।

वाणावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणों की अवली या कतार। २-तीरों की लगातार वर्षा। ३-एक साथ बने हुए पांच श्लोक।

वाणिजित् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वाणिज्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापार। रोजगार।

वाणिज्य-दूत [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य का वह दूत दूसरे देश में व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रखने तथा बढ़ाने के लिए रखा जाता है। *कॉन्सल*।

वाणिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नर्त्तकी। २-मत्त-स्त्री। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण तथा रगण और एक गुरु होता है।

वाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती। २-मुख से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। ३-वाक् शक्ति। ४-जीभ। रसना। ५-स्वर।

वाणी फुरना-मुख से शब्द निकालना।

वातंड, वातण्ड [संज्ञा पु] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वातंड्य, वातण्ड्य [संज्ञा पु] (सं) [स्त्री वातण्ड्यायिनी] वातण्ड ऋषि के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

वात [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा। २-वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर की वह वायु जिसके विकार से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

वातकंटक, वातकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) वह रोग जिसमें पांव की गांठों में वायु के घसने के कारण जोड़ों में बड़ा दर्द होता है।

वातक [संज्ञा पु.] (सं.) अशनपर्णी।

वातकुंडलिका, वातकुण्डलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक मूत्र रोग जिसमें वायु गोलाकार होकर पेड़ू में घुसता रहता है।

वातकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) धूल। गर्द।

वातकेलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रेमरसपूर्ण बातचीत। २-उपपति के दाँतों या नखों का घाव

वातगंड, वातगण्ड [संज्ञा पु](सं.) वात-विकार से उत्पन्न गलगंड रोग जिसमें गले की नसें काली या लाल और कठोर हो जाती हैं तथा बहुत दिनों में पकती हैं।

वातगाती [संज्ञा पु] (सं.) पक्षी। चिड़िया।

वातगुल्म [संज्ञा पु] (सं) वात-प्रकोप से उत्पन्न एक प्रकार का गुल्म रोग।

वातघ्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शालपर्णी। २-असगन्ध।

वातचक्र [संज्ञा पु.](सं.) १-ज्योतिष में एक योग २-चक्रवात। बवंडर।

वातचटक [संज्ञा पु] (सं.) तीतरपक्षी।

वातज [वि] (सं.) वायु द्वारा उत्पन्न।

वातजात [संज्ञा पु.] (सं) हनूमान। पवनसुत।

वातज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ज्वर।

वाततूल [संज्ञा पु.] (सं.) बारीक तागा जो कभी-कभी आकाश में इधर उधर उड़ता दिखाई देता है।

वातध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ।

वातनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वायु-प्रकोप से होने-वाला वह नासूर जो दाँत की जड़ में होता है

वातपट [संज्ञा पु.] (सं.) पताका। ध्वजा

वातपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिशा।

वातपर्यय [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्ररोग जिसमें कभी भौं और कभी आँखें धसने से बड़ी पीड़ा होती है।

वातपुत्र [संज्ञा पु.] (सं) १-हनुमान। २-भीम।

वातपोथ, वातपोथक [संज्ञा पु.] (सं.) पलाश-वृक्ष।

वातप्रकृति [वि.](सं.) जिसकी प्रकृति वायु प्रधान हो।

वातप्रकोप [संज्ञा पु.](सं.) वात या वायु का बढ़ जाना।

वापप्रमी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हिरन। २-नेवला ३-घोड़ा।

वातप्रशमिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आखुपुखाप।

वातमज [संज्ञा पु.] (सं.) वातमृग।

वातमृग [संज्ञा पु.](सं.) जिधर की हवा हो मुख करके दौड़ने वाला मृग।

वातरंग, वातरङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) पीपल (वृक्ष)।

वातरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जिसमें कुपथ्य तथा अयुक्ताहार विहार से वायु से दूषित हो जाता है।

वातरथ [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वात्तरायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकम्मा आदमी २-कांड। ३-लोटा (पात्र)। ४-उन्मत्त व्य ५-सीधा पेड़। ६-कुट।

वातरूप [संज्ञा पु.](सं.) १-इन्द्रधनुष। २-उत्कोच। घूस।

वातरोहिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रोग जिसमें जीभ पर चारों ओर काँटे की तरह मांस उभर आता है।

वातार्द्धि [संज्ञा पु.] (सं.) काठ और लोहे का पात्र।

वातल [संज्ञा पु.] (सं.) चना। [वि.] (सं.) वा या वायु बढ़ाने वाला। वायुवर्द्धक।

वातवैरी [संज्ञा पु.] (सं.) बादाम।

वातव्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गठिया रोग।

वातशख [संज्ञा पु.] (सं) अग्नि।

वातशीर्ष [संज्ञा पु] (सं.) पिचकारी।

वातसार [संज्ञा पु.] (सं.) बेल। विल्व।

वातसारथि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

वातस्कंध, वातस्कन्ध [संज्ञा पु] (सं.) आकाश का वह भाग जहां वायु चलती रहती है।

वातस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

वातांड, वाताण्ड [संज्ञा पु] (सं.) अंडकोश का एक रोग।

वाताट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य का घोड़ा। २-हिरन।

वातात्मज [संज्ञा पु.] (सं) हनुमान।

वाताद [संज्ञा पु.] (सं.) बादाम।

वातापि [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का ना

वाताप्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-सोम।

वाताम [संज्ञा पु.] (सं.) बादाम।

वातामोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

वातायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-झरोखा। २-घोड़ा। ३-एक जनपद जिसका उल्लेख रामायण में है। ४-एक मन्त्रदृष्टा ऋषि का नाम।

वातायु [संज्ञा पु.] (सं.) हिरन।

वातारि [संज्ञा पु] (सं.) १-एरंड। २-शतमूली। ३-निर्गुंडी। ४-अजवायन। ५-थूहर। ६-बायबिडङ्ग। ७-जिमींकंद। ८-भिलावां। ९-सतावर। १०-तिलक वृक्ष। ११-नील का पौधा।

वातावरण [संज्ञा पु.] (सं) १-वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर घेरा हुआ है। २

आस-पास की परिस्थिति, जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता है। एटमॉ-स्फियर।

वाताष्ठीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाभि के नीचे वायु की गांठ पड़ जाने का एक उदर रोग।

वाति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-हवा। ३-चन्द्रमा।

वातिंग, वातिगम [संज्ञा पु.] (सं.) भंटा। बैंगन

वातिक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का छोटा पक्षी

वातुल [वि.] (सं.) १-वायु-प्रधान। २-जिसकी बुद्धि वायु-प्रकोप के कारण ठिकाने न हो। [संज्ञा पु.] बावला आदमी।

वातोदर [संज्ञा पु.](सं.) वात-विकार से उत्पन्न होने वाला एक रोग।

वातोर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, तगण तथा अंत में दो गुरु होते हैं।

वातोलंबन, वातोलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

वात्स [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक गोत्रकार ऋषि। २-एक साम का नाम।

वात्सक [संज्ञा पु.](सं.) बछड़ों की हेड़।

वात्सरिक [वि.] (सं.) वार्षिक। सालाना। [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी।

वात्सल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेम। स्नेह। २-वह स्नेह जो माता-पिता का संतान पर होता है। प्रेम।

वात्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-एक गोत्र।

वात्स्यायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामसूत्र के बनाने वाले एक प्रसिद्ध ऋषि। २-न्यायसूत्र पर भाष्य-रचयिता का नाम। ३-एक ऋषि का नाम।

वाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी तथ्य या तत्त्व के निर्णय के लिए होने वाला तर्क। शास्त्रार्थ। २-तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित कोई मत या सिद्धांत या किसी प्रकार की विचारधारा या कार्य-प्रणाली। इज्म। ३-बहस। विवाद। ४-न्यायालय में उपस्थित किया हुआ अभियोग मुकदमा। सूट।

वादक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाजा बजाने वाला। २-वक्ता। ३-तर्क या शास्त्रार्थ करने वाला।

वादग्रस्त [वि.] (सं.) जिसके सम्बन्ध में विवाद या मतभेद हो।

वादचंचु, वादचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रार्थ करने में पटु।

वाददंड, वाददण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) सारङ्गी आदि बाजों के बजाने की कमानी।

वादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाजा बजाना। २-बाजा।

वादनक [संज्ञा पु.] (सं.) बाजा।

वादपद, वाद-पद [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय मे किसी के विरुद्ध होने वाली फरियाद। अभियोग। नालिश। प्लैयन्ट।

वादप्रतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रीय विषयों में परस्पर होने वाला वाद-विवाद। बहस।

वादमूल [संज्ञा पु.] (सं.) वह कारण या हेतु जिससे कोई कार्य या व्यवहार (मुकदमा) न्यायालय के सामने विचार के लिए उपस्थित किया जाता है। कॉज-ऑफ-ऐक्शन।

वादयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रीय झगड़ा।

वादरंग, वादरङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) अश्वत्थ का वृक्ष

वादर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूती कपड़ा। २-कपास का पेड़। ३-बेर का पेड़।

वादरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपास का पौधा।

वादरायण [संज्ञा पु.](सं.) व्यासदेव। वेदव्यास

वादरायणि [संज्ञा पु.](सं.) १-व्यास के पुत्र शुकदेव। २-व्यासदेव।

वादरिक [संज्ञा पु.] (सं.) बेर बीनने वाला।

वादल [संज्ञा पु.] (सं.) मुलेठी।

वाद-विवाद [संज्ञा पु.] (सं.) किसी पक्ष के खंडन और मंडन में होने वाली बातचीत। तर्क-वितर्क। बहस। कॉन्ट्रोवर्सी।

वादविषय [संज्ञा पु.] (सं.) वह विषय जिसपर विवाद किया जाय।

वादसाधन [संज्ञा पु.](सं.) १-अपकार करना। २-तर्क करना।

वादहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यवहार या दीवानी मुकदमे में वे विचारणीय बातें जिनका एक पक्ष स्थापन करता हो और जिन्हें दूसरा पक्ष न मानता हो तथा जिसके आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे का निर्णय होने को हो। इश्यू।

वादा [संज्ञा पु.](अ.) १-वचन। इकरार। २-नियत समय या घड़ी। *वादा आना*-१-नियत समय का प्राप्त होना। २-मौत की घड़ी आना। *वादा पूरा करना*-प्रतिज्ञा या इकरार पूरा करना। *वादा पूरा होना*-जीवन की अवधि समाप्त होना। *वादा खिलाफी करना*-बात पूरी न करना *वादा रखाना*-वचन या प्रतिज्ञा लेना।

वादानुवाद [संज्ञा पु.](सं.) तर्कवितर्क। शास्त्रार्थ। बहस।

वादाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली जिसे सहस्रदंष्ट्र भी कहते हैं।

वादि [संज्ञा पु.] (सं.) विद्वान्। [अव्यय] देखो 'बादि'।

वादिक [संज्ञा पु.] (सं.) तार्किक।

वादित [वि] (सं.) बजाया हुआ। नादित।

वादित्र [संज्ञा पु.] (सं.) बाजा। वाद्य

वादिराज [संज्ञा पु.] (सं) मंजुघोष।

वादींद्र, वादीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) मंजुघोष।

वादी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वक्ता। बोलने वाला। २-न्यायालय में कोई वाद अथवा मुकदमा प्रस्तुत करने वाला। फरियादी। मुद्दई। प्लैन्टिफ। २-विचार के लिये कोई तर्क उपस्थित करने वाला।

वादुलि [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

वाद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाजा। २-बजाना।

वाद्यक [संज्ञा पु.] (सं.) बाजा बजाने वाला।

वाद्यभांड, वाद्यभाण्ड [संज्ञा पु.](सं.) मुरज आदि बाजे।

वाधू [संज्ञा पु.] (सं) १-नाव। नौका। २-नाव चलाने का डाँड़।

वाधूल [संज्ञा पु.] (सं) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वाधूस्यश्व [संज्ञा पु] (सं.) अग्नि।

वान [संज्ञा पु.] (सं.) १-चटाई। २-पानी में लगने वाला वायु का झोंका। ३-गति। ४-सुरंग। ५-सौरभ। सुगंध। ६-सूखा फल। ७-बाना। (हिं) देखो 'बाण'।

वानदंड, वानदण्ड [संज्ञा पु] (सं) वह लकड़ी जिसमें बाना लपेटकर बुना जाता है।

वानप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें पचास वर्ष के हो जाने पर वन मे जाकर रहने का विधान है। २-महुये का पेड़ ३-पलासवृक्ष।

वानप्रस्थी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो वानप्रस्थ आश्रम में रहता हो।

वानर [संज्ञा पु.] (सं) १-बन्दर। २-दोहे का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में १० गुरु और २८ लघु होते हैं।

वानरकेतन, वानरकेतु [संज्ञा पु] (सं) अर्जुन।

वानरप्रिय [संज्ञा पु.](सं.) खिरनी।

वानरी [संज्ञा स्त्री](सं.)१-केवाँच। २-बन्दर की मादा।

वानरेंद्र, वानरेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुग्रीव।

वानल [संज्ञा पु.] (सं.) काली बनतुलसी।

वानवासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौपाई छन्द का एक भेद जिसमें नवीं और बारहवीं मात्राएं लघु पड़ती है।

वानस्पत्य [वि](सं.) वनस्पति-सम्बन्धी। वनस्पति का। [संज्ञा पु.] वनस्पतियों के तत्त्वों, वृद्धि तथा पोषण आदि से सम्बन्ध रखने वाला शास्त्र या विद्या। आरबोरिकल्चर।

वाना [संज्ञा स्त्री.] (सं) बटेर नामक पक्षी।

वानायुज [संज्ञा पु.] (सं) वनायुज नामक देश का घोड़ा।

वानीय [संज्ञा पु.] (सं) कैवटीमोथा।

वानीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत। २-पाकड़ व पेड़।

वानीरक [संज्ञा पु.] (सं) मूंज। तृण।

वानेय [संज्ञा पु.] (सं.) कैवतमुस्तक। मुस्ता।

वाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-बीज बोना। २-मुंडन। ३-क्षेत्र। खेत।

वापक [संज्ञा पु.] बीज बोने वाला।

वापन [संज्ञा पु.] (सं.) बीज बोना।

वापस [वि.] (फा.) १-लौटकर फिर अपने स्थान पर आया हुआ (व्यक्ति)। २-मालिक को फेरा या लौटाया हुआ। *वापस आना*-फिर अपने स्थान पर लौट आना। *वापस करना*-१-लौटाना। २-कोई वस्तु खरीदकर दुकानदार को फिर दे देना।
वापस जाना-जहाँ से आया था लौटकर जाना। *वापस होना*-१-लौट जाना। २-वस्तु आदि का फेरा जाना।

वापसी [वि.] (फा.) १-फेरा या लौटाया हुआ। २-जिसमें वापस आने का परिव्यय जुड़ा हो। [संज्ञा स्त्री.] लौटने या लौटाने की क्रिया या भाव।

वापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटा जलाशय। बावली।

वापित [वि.] (सं.) १-बोया हुआ। २-मुण्डित। मूँड़ा हुआ।

वापी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वापिका। बावली।

वाप्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुट। २-बावली का पानी। ३-बोवारी धान।

वाम [वि.] (सं.) १-बायां। 'दहिना' का उलटा। २-प्रतिकूल। विरुद्ध। ३-टेढ़ा। वक्र। ४-खोटा। दुष्ट। ५-जो अच्छा न हो। बुरा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-वामदेव। ३-वरुण। ४-कुच। स्तन। ५-धन। ६-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ७-चन्द्रमा के रथ के एक घोड़े का नाम। ८-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और एक यगण होता है। ९-एक प्रकार का नाटे आकार का घोड़ा। १०-हनु के एक पुत्र का नाम

वामक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अङ्गभङ्गी का एक भेद। २-बौद्धग्रंथों के अनुसार एक चक्रवर्ती राजा।

वामकच [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वामदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। महादेव। २-गौतमगोत्रीय एक ऋषि।

वामदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-सावित्री

वामदेव्य [संज्ञा पु] (सं.) १-एक साम का नाम। २-शाल्मलिद्वीप के एक पर्वत का नाम। ३-एक ऋषि का नाम।

वामन [वि.] (सं.) १-छोटे डील या कद का। बौना। २-छोटा। नाटा। ह्रस्व।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु का एक अवतार जो राजा बलि को छलने के लिए हुआ था। २-विष्णु। ३-शिव। ४-अठारह पुराणों में से एक। ५-एक नाग का नाम। ६-गरुड़वंशी एक पक्षी का नाम। ७-एक प्रकार का नाटे आकार का घोड़ा। ८-हनु के एक पुत्र का नाम

वामनक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जो क्रौंचद्वीप में है।

वामनद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाद्रशुक्ल द्वादशी इसी दिन विष्णु भगवान् ने वामनावतार लिया था।

वामना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

वामनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्कन्द की अनुचरी का नाम। २-बौनी स्त्री।

वामपंथ, वामपन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय में बहुत उग्र विचार रखने वालों का सिद्धांत या वर्ग। लेफ्टविंग।

वामपंथी [वि.] (हिं.) उग्र विचार या मत रखने वाला।

वाममार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि के सेवन का विधान है।

वाममार्गी [संज्ञा पु.] (हिं.) वाममार्ग सिद्धान्त को मानने वाला या चलने वाला व्यक्ति।

वामरथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि।

वामलूर [संज्ञा पु.] (सं.) वाल्मीक। बाँबी।

वामलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

वामांगिनी, वामाङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी

वामांगी, वामाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी। स्त्री। भार्या।

वामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। २-दुर्गा। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अन्त में एक गुरु होता है।

वामाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-दीर्घ 'ई'कार।

वामाचार [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिक मत का एक भेद

वामापीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) पीलू का पेड़।

वामावर्त्त [वि.] (सं.) १-बाँई ओर घूमा हुआ २-बाँई ओर से आरम्भ होने वाला।

वामल [वि.] (सं.) पाखंडी। दंभी।

वामिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंडिका।

वामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का योनि रोग।

वामी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शृगाली। गीदड़ी। २-घोड़ी। ३-गधी।

वामेतर [वि.] (सं.) बाँयें का उलटा। दाहिना।

वामोरु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर उरु वाली स्त्री।

वाम्न [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक गोत्रकार स्त्री।

वाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) वामदेवऋषि के घोड़े का नाम।

वाम्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

वाय [संज्ञा पु] (सं.) १-बुनना। २-साधन।

वायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुनने वाला। २-तंतुवाय। जुलाहा।

वायदंड, वायदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) जुलाहों की दरकी।

वायन [संज्ञा पु.] (सं.) देवपूजा या विवाह आदि के लिये बनने वाला पकवान।

वायदा [संज्ञा पु.] (अ.) वचन। इकरार।

वायदा-बाजार [संज्ञा पु.](अ., फा.) वह बाजार जिसमे भविष्य के लिए सौदे तय किये जाते है। फ्यूचर-मार्केट।

वायनरज्जु [संज्ञा पु.] (सं.) जुलाहों के करघे की बै।

वायविक [वि.] (सं.) वायु-सम्बन्धी। वायु का। [संज्ञा पु.] वे बाँस और तार आदि जिनकी सहायता से रेडियो वायु में से ध्वनि, शब्द आदि ग्रहण करता है। एरियल।

वायवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तर-पश्चिम का कोण

वायव्य [वि.] (सं.) १-वायु-सम्बन्धी। वायु का। २-वायु से बना हुआ। ३-जिसका देवता वायु हो। [संज्ञा पु.] १-उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २-एक प्रकार का अस्त्र। ३-वायुपुराण।

वायल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौआ। २-अगर का पेड़।

वायसतंतु, वायसतन्तु [संज्ञा पु] (सं.) १-ह के दोनों जोड़। २-कौआठोंठी।

वायसांतक, वायसान्तक [संज्ञा पु] (सं.) उलूक।

वायसाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कौआठोंठी। २-महाज्योतिषमती नामक लता।

वायसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकमाची। २-महाज्योतिष्मती। ३-काकतुण्डी। ४-सफेद घुँघची। ५-काकजंघा। ६-महाकरंज।

वायसेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) काँस नामक तृण।

वायसोलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकोली। २-महाज्योतिष्मती-लता।

वायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हवा। बात।

वायुकोण [संज्ञा पु.] (सं.) पश्चिमोत्तर दिशा।

वायुगुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-बातचक्र। बवंडर। २-पेट का बायगोला नामक रोग।

वायुजित [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पर वायु का असर न हो सके। एयर-प्रूफ।

वायुदंच, वायुदञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) वह करण या पिचकारी जिससे हवा भरी जाती है। एयर-पंप।

वायुदारु [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वायु-पथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश में हवाई जहाजों के आने-जाने के रास्ते। एयरवेज।

वायु-पुत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-हनुमान। २-भीम

वायुपोत [संज्ञा पु.] (सं.) वायु या हवा से चलने वाला पोत या जहाज। हवाई जहाज। एयर-शिप।

वायुप्रतिरोधक [वि.] (सं.) जिसमें हवा न

अवाहक

सकं। वायुरुद्ध। एयर-टाइट।

वायुप्रवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) मकानों की वायु शुद्ध करने की तरकीब या यन्त्र। वेंटीलेटर।

वायुफल [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्रधनुष।

वायुबल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश की हवाई सेना के पास कितने हवाई जहाज हैं, इस विचार से कूती जाने वाली शक्ति। हवाई ताकत। एयरफोर्स।

वायुभक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। साँप।

वायुभट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) तांबा आदि गलाकर शुद्ध करने की भट्टी।

वायुमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) हवाई जहाजों के आने-जाने के मार्ग या रास्ते। एयररूट।

वायुमंडल, वायुमण्डल [संज्ञा पु.] (सं) १-आकाश। २-देखो 'वातावरण'।

वायुमरुलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ललितविस्तार के अनुसार एक लिपि का नाम।

वायुयात्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) हवाई जहाजों के द्वारा डाक, मुसाफिर, सामान आदि का एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। *सिविल-एविएशन।*

वायुयान [संज्ञा पु.] (सं.) हवामें उड़ने वाला यान। हवाई जहाज। *एयरोप्लेन।*

वायुयान-प्रतिध्वंसकतोप [संज्ञा स्त्री] (हिं) हवामार तोप। हवाई जहाजों को गोला मारकर भूमि पर गिराने वाली तोप। *अन्टि-एयरक्राफ्ट-गन।*

वायुयान-प्रतिवारक [संज्ञा पु] (सं) हवाई हमले से बचने का अवरोध। हवाई हमला निवारक-बांध। *अन्टि-एअरक्राफ्ट-बीरेंज।*

वायुयान-वाहक-पोत [संज्ञा पु] (सं.) अनेक हवाई जहाजों को लेजाने वाला जल-जहाज जिसकी चौरस छत पर से हवाई जहाज दौड़ान लगाकर उड़ सकता और उतर सकता है। इसमें हवाई जहाजों की मरम्मत कारखाना और तेल का गोदाम भी रहता है। बचाव के लिये इसमें हवामार तोपें भी लगी रहती हैं। यह एक प्रकार का चलता-फिरता समुद्री हवाई अड्डा होता है। *एयरक्राफ्ट-करियर।*

वायुयामा [संज्ञा स्त्री.] (सं) रात।

वायुलोक [संज्ञा पु] (सं) १-पुराणोक्त एक लोक का नाम। २-आकाश।

वायुवाहन [संज्ञा पु] (सं) धूआँ। धूम्र।

वायुवाहित-चमू [संज्ञा स्त्री] (सं) हवाई जहाज से भेजी जाने वाली पैदल सेना। *एयर-बोर्न ट्रूप्स।*

वायुसंस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) हवाई जहाजों के ठहरने का स्थान। *एयर-बेस।*

वायुसख [संज्ञा पु] (सं) अग्नि।

वायुसेना-नायक [संज्ञा पु.] (सं) हवाई सेना का सेनापति। *एयर कमाण्डर।*

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) एक द्वीप का नाम।

वारंक, वारङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

वारंग, वारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) १-तलवार की मूठ। २-अँकुड़े के आकार का एक अस्त्र। (सुश्रुत)।

वारंट [संज्ञा पु.](अं) न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को वह काम करने का अधिकार प्राप्त हो जाय, जिसे वह अन्यथा करने में समर्थ हो जाय।

वारंट-गिरफतारी [संज्ञा पु.](अं., फा.) न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह अमुक आदमी को पकड़कर न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करे।

वारंट-तलाशी [संज्ञा पु.](अं., फा.) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी राजकीय कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह अमुक स्थान पर जाकर तलाशी ले।

वारंट-रिहाई [संज्ञा पु.] (अं., फा.) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी राजकर्मचारी को यह आज्ञा और अधिकार मिले कि वह अमुक व्यक्ति को जो कारागार, हवालात या गिरफतारी मे हो छोड़ दे, अथवा किसी माल या जायदाद को, जो कुर्क हो या किसी की सुपुर्दगी मे हो, उसके स्वामी को लौटा दे।

वारंवार [अव्य.] (हिं.) देखो बारंबार।

वार् [संज्ञा पु.] (सं) जल। पानी। (अं) युद्ध। समर। जंग।

वार [संज्ञा पु.](सं) १-द्वार। दरवाजा। २-रोक। रुकावट। अवरोध। ३-आवरण। ४-अवसर। दफा। मरतबा। ५-क्षण। ६-सप्ताह का दिन। ७-मदिरा का प्याला। ८-कुज वृक्ष। ९-वाण। तीर। १०-बारी। दाँव। ११-शिव का एक नाम। १२-नदी या समुद्र का किनारा। *वार मिलना*-फुरसत मिलना। [संज्ञा पु.] (हिं) चोट। आघात। आक्रमण। हमला। *वार खाली जाना*-१-चलाया हुआ अस्त्र व लगना। २-युक्ति सफल न होना।

वारक [वि](सं) १-वारण या निषेध करने वाला। २-दूर करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं) १-घोड़े का कदम। २-घोड़ा। ३-कष्ट। ४-बाधा का स्थान। स्थान। ५-एक सुगंधित तृण

वारकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

वारकी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। २-समुद्र। ३-पत्ते खाकर रखने वाला तपस्वी।

वारकीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-साला। २-द्वारपाल ३-वाड़वाग्नि। ४-जूँ। ५-लड़ाई का घोड़ा। ६-कंघी।

वारण [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी बात को न कहने का संकेत या आज्ञा। निषेध। मनाही। २-रोक। रुकावट। बाधा। ३-कवच। बकतर। ४-हाथी। ५-अंकुश। ६-हरताल। ७-काला सीसम। ८-परिभद्र। ९-सफेद कोरया का का फूल। १०-छप्पय छंद का एक भेद।

वारणकणा [संज्ञा स्त्री.] (सं) गजपिप्पली।

वारणकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह कृच्छ्रव्रत जिसमें एक महीने तक पानी में जौ का सत्तू घोलकर पीना पड़ता है।

वारणवुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कदली। केला।

वारणावत [संज्ञा पु.] (सं) गङ्गा के किनारे का एक प्राचीन जनपद जहाँ पर पांडवों को जलाने के लिए दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था।

वारणीय [वि.] (सं.) निषेध करने योग्य।

वारणेंद्र वारणेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर हाथी।

वारतिय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्या। रंडी।

वारद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) बादल।

वारदात [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-भीषण या निकट दुर्घटना। २-मारपीट। दंगा-फसाद।

वारधान [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक जनपद का नाम।

वारन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निछावर। बलि। [संज्ञा पु] देखो 'बन्दनवार'।

वारना [क्रि. स] (हिं.) निछावर या उत्सर्ग करना [संज्ञा पु.] (हिं.) निछावर। उत्सर्ग *वारने जाना*-निछावर होना।

वारनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

वारनिश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह रोगन जिसे किसी चीज पर लगाने से चमक आये।

वारपार [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'आरपार'। [अव्य] (हिं.) १-इस किनारे से उस किनारे तक। २-एक बगल से दूसरी बगल तक। *वारपार करना*-१-पूरा विस्तार तै करना। २-इस ओर से उस ओर तक धँसाना। *वारपार होना*-पूरा विस्तार तै होना।

वारफेर [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-निछावर। बलि। २-वह रुपया-पैसा जो किसी के ऊपर चारों ओर घुमाकर दिया जाता है।

वार-बधू [संज्ञा स्त्री] (सं) वेश्या। रंडी।

वारमुखी [संज्ञा स्त्री] (सं) वेश्या। रंडी।

वारयिता [संज्ञा पु] (सं.) पति. स्वामी।

वारयुवती [संज्ञा स्त्री] (सं.) वेश्या।

वारलीक [संज्ञा पु.] (सं.) बनकस।

वारवधू [संज्ञा पु.] (सं.) वेश्या। रंडी।

वारवाण [संज्ञा पु.] (सं) कवच। बखतर।

वारवाणि [संज्ञा पु] (सं.) १-नफीरी बजाने वाला। बाजा बजाने वाला। २-वर्ष। ३-न्यायकर्त्ता। जज।

वारवाणी, वारविलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) वेश्या। रंडी।

वारसुंदरी, वारसुन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या रंडी।

वारसेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्यापन। छिनाल

वारांगणा, वाराङ्गणा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वेश्या। रंडी।

वारांगना, वाराङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'वारांगणा'।

वारांनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारा [संज्ञा पु.](हिं.) १-लाभ। फायदा। २-खर्च की बचत। किफायत। ३-इधर या इस ओर का किनारा। वार। [वि.] (हिं.) [स्त्री वारी] १-निछावर या उत्सर्ग किया हुआ। २-सस्ता किफायत। *वारा होना*-निछावर या कुरबान जाना (प्यार में)।

वाराणसी [संज्ञा स्त्री.](सं.) काशीनगरी का प्राचीन नाम।

वारान्यारा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी बात का पूरी तरह से इधर या उधर होने का निश्चय। निपटारा।

वारालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

वारावस्कंदी, वारावस्कन्दी [संज्ञा पु.](सं.) अग्नि

वाराह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वाराही] देखो 'वराह'।

वाराहपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असगंध।

वाराहांगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दंती का पेड़।

वाराही [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक मातृका का नाम २-एक योगिनी का नाम। ३-वाराहीकंद। ४-कँगनी। ५-श्यामा पक्षी। ६-सफेद कुष्मांडा।

वाराहीकंद, वाराहीकन्द [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का बड़ा कंद जो गैंठी कहलाता है।

वारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। पानी। २-तरल पदार्थ। ३-ह्रीबेर। ४-सुगन्धवाला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणी। सरस्वती। २-हाथी बाँधने की जंजीर आदि। ३-वह स्थान जहाँ हाथी बाँधा जाय। ३-छोटा गगरा या कलसा

वारिकफ [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारिकुंज, वारिकुञ्ज, वारिकुंजक, वारिकुञ्जक [संज्ञा पु.] (सं.) सिंघाड़ा।

वारिकोल [संज्ञा पु.] (सं.) कच्छप। कछुआ।

वारिगर्भोदर [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वारिचर [संज्ञा पु.](सं.) १-जलजन्तु। २-मछली मत्स्य। ३-शंख।

वारिचत्वर [संज्ञा पु] (सं.) सिंघाड़ा।

वारिचामर [संज्ञा पु.] (सं.) शैवाल। सेवार।

वारिज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-द्रोणी-लवण। ३-मछली। ४-शंख। ५-घोंघा। ६-कौड़ी। ७-उत्तम सुवर्ण।

वारिजात [वि.](सं.) जल में उत्पन्न। [संज्ञा पु.] देखो 'वारिज'।

वारित [वि.] (सं.) जिसका वारण या मनाही की गई हो। वर्जित। निवारित।

वारितर [संज्ञा पु.] (सं.) उशीर। खस।

वारितस्कर [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वारिद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-नागरमोथा।

वारिधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-नागरमोथा।

वारिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण। २-समुद्र ३-मेघ। बादल।

वारिनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलकुम्भी। २-पानी की काई।

वारिपृश्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलकुम्भी।

वारिमुच् [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वारियंत्र, वारियन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) फौआरा। जलयंत्र।

वारियाँ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) निछावर। बलि। *वारियाँ जाऊँ*-तुझ पर निछावर हूँ।

वारिराशि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

वारिलोमा [संज्ञा पु] (सं.) वरुण।

वारिवंद, वारिवन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद।

वारिवर [संज्ञा पु] (सं.) करौंदा।

वारिवर्त* [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मेघ का नाम।

वारिवास [संज्ञा पु.] (सं.) कलवार। कलार।

वारिवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। २-मोथा।

वारिश [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वारिशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष का एक ग्रन्थ जो गर्गमुनि का रचा हुआ कहा जाता है। इसमें वर्षा-सम्बन्धी बातें लिखी हैं

वारिस [संज्ञा पु.] (अ.) १-उत्तराधिकारी। २-दायद।

वारिसार [संज्ञा पु.](सं.) भागवतपुराण के अनुसार चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।

वारींद्र, वारीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथी के बाँधने की जंजीर। गजबंधन। २-कलसी। छोटा गगरा। [वि.] (हिं) देखो 'वारा'।

वारीट [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

वारीफेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) किसी प्रियजन के ऊपर कुछ द्रव्य या और कोई वस्तु घुमाकर इसलिये छोड़ना या उत्सर्ग करना, जिससे उसकी सारी बाधाएं दूर हो जायँ। निछावर

वारीश [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वारुंड, वारुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँपों का राजा। २-वह बरतन जिससे नाव में पानी निकाला जाता है। ३-कान का मैल। ४-आँख का कीचड़।

वारु [संज्ञा पु.] (सं.) विजयहस्ती जिस प विजयपताका चलती है।

वारुठ [संज्ञा पु.](सं.)१ अन्तशय्या। मरणशय्या २-अरथी।

वारुड [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-शतभिषा नक्षत्र। ३-एक अस्त्र का नाम। ४-हरताल ५-एक उपपुराण का नाम। ६-वरुना नामक पेड़।

वारुणक [संज्ञा पु.] (सं.) एक जनपद का नाम।

वारुणकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) कुआँ, बावली आदि बनवाने का काम।

वारुणकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) पानी घुला सत्तू एक मास तक खाकर रहने का व्रत।

वारुणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त्यमुनि। २-भृगु। ३-वशिष्ठ। ४-दँतैला हाथी। ५-वरुणवृक्ष। ६-एक जनपद का नाम। ७-वनिता के एक पुत्र का नाम।

वारुणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मदिरा। शराब। २-वरुण की पत्नी। ३-कदंब के फलों से बना मद्य। ४-एक पर्वत का नाम। ५-भूमिआमला। ६-शतभिषानक्षत्र। ७-उपनिषद् विद्या। ८-पश्चिम दिशा। ९-घोड़े की एक चाल। १०-हथनी। ११-एक नदी का नाम। १२-इन्द्रवारुणी नामक लता। १३-वृंदावन के एक कदंब का रस जो वरुण की कृपा से बलराम के लिए निकला था।

वारुणीवर [संज्ञा पु.](सं.) जैनों के अनुसार एक द्वीप और उसके समुद्र का नाम।

वारुण्य [वि.] (सं.) वरुण-सम्बन्धी।

वारूढ़ [संज्ञा पु] (सं.) अग्नि। आग।

वारेंद्र, वारेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) गौड़देश के एक प्राचीन जनपद का नाम।

वार्कजंभ, वार्कजम्भ [संज्ञा पु.](सं.) १-एक साम का नाम। २-वृकजंभऋषि का गोत्रज।

वार्कार्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक यज्ञकर्म।

वार्क्ष [वि.] (सं.) वृक्ष-सम्बन्धी। वृक्ष का बना हुआ।

वार्क्षी [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रचेतागण की स्त्री मारिषा का नाम।

वार्क्ष्य [वि.] (सं.) वृक्ष-सम्बन्धी।

वार्च [संज्ञा पु.] (सं.) हंस।

वार्ड [संज्ञा पु.] (अं.) १-रक्षा। हिफाजत। २-किसी विशिष्ठ कार्य के लिए घेरकर बनाया हुआ स्थान। ३-नगर मे मुहल्लों का समुदाय जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए अलग किया गया हो। ४-जेल या अस्पताल के अंदर के अलग-अलग विभाग

वार्डर [संज्ञा पु.] (अं.) १-रक्षक। २-जेल का पहरेदार।

वार्तक, वार्तिक

वार्तक, वार्तिक [संज्ञा पु] (सं) वैद्यक।

वार्त्त [संज्ञा पु] (सं) १-आरोग्य। निरामय। २-कामकाजी आदमी।

वार्त्तक [संज्ञा पु] (सं) बटेरपक्षी।

वार्ता [संज्ञा स्त्री] (सं) १-जनश्रुति। अफवाह। २-संवाद। वृत्तांत। हाल। ३-विषय। प्रसंग। ४-दुर्गा। ५-कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा आदि वैश्यों के काम। ६-अन्य के द्वारा क्रय, विक्रय होना। ७-बातचीत।

वार्ताक [संज्ञा पु.] (सं) २-बैंगन। बटेरपक्षी।

वार्त्ताकी, वार्त्ताकु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैंगन।

वार्तायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूत। एलची। २-गूढ़ पुरुष। ३-वह सामयिक पत्र जिसमें किसी राज्य या विभाग आदि से सम्बन्ध रखने वाली बातें प्रकाशित होती हैं। गजट।

वार्तायित [वि.] (सं.) जिसका उल्लेख वार्तायन में हो चुका हो। गजटेड।

वार्तालाप [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत।

वार्त्तावह [संज्ञा पु.](सं.) १-संदेश पहुँचाने वाला दूत। हरकारा। २-नीतिशास्त्र का वह भाग, जो अपव्यय से संबंध रखता है।

वार्त्ताशस्त्रोपजीवी [संज्ञा पु.](सं.) केवल वाणिज्य या युद्ध-व्यवसाय में लगे रहने वाले।

वार्त्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी ग्रंथ की टीका या व्याख्या। १-वृत्ति या आचारशास्त्र का अध्ययन करने वाला। ३-दूत। चर।

वार्त्रघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन। २-जयंत।

वार्त्रतुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

वार्द [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

वार्दर [संज्ञा पु.] (सं) १-दक्षिणावर्त्त शंख। २-जल। ३-आम की गुठली। ४-रेशम। ५-जल। ६-काकचिचा। ७-घोड़े के गले पर की भौंरी जो दाहिनी ओर हो।

वार्द्धक [संज्ञा पु.] (सं) बुढ़ापा।

वार्द्धक्य [संज्ञा पु.] (सं) १-बुढ़ापा। २-बढ़ती।

वार्धि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वार्द्धुषि [संज्ञा पु.](सं) बहुत अधिक ब्याज लेने वाला।

वार्द्धुषिक [संज्ञा पु.] (सं) सूदखोर।

वार्द्धुष्य [संज्ञा पु.] (सं) व्यवसाय।

वार्ध्रीणस [संज्ञा पु.](सं.) १-गैंडा। २-एक प्रकार का पक्षी। ३-वह बधिया बकरा जिसका रंग सफेद हो और जिसके कान पानी पीते समय लंबेपन होने के कारण पानी में भीगें।

वार्मट [संज्ञा पु.] (सं.) घड़ियाल।

वार्मुच [संज्ञा पु.] (सं) १-बादल। २-मोथा।

वार्य [वि.] (सं) १-जो रोका जा सके। २-जिसे रोकना हो।

वार्वोका [संज्ञा स्त्री] (सं) जोंक।

वार्राशि [संज्ञा पु.] (सं) समुद्र।

वार्षट [संज्ञा पु.] (सं) नौका। नाव।

वार्वणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीले रंग की मक्खी।

वार्षक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त पृथ्वी के दस भागों में से एक।

वार्षगण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के वैदिक आचार्य।

वार्षाहर [संज्ञा पु.] (सं) एक साम का नाम।

वार्षिक [वि] (सं) १-वर्ष-सम्बन्धी। २-जो प्रतिवर्ष होता हो। ईयरली।

वार्षिक-वित्त-विवरण [संज्ञा पु.] (सं.) वार्षिक आर्थिक प्रकथन। वार्षिक आय-व्यय विवरण *एनुअल-फाइनेनशियल-स्टेटमेन्ट*।

वार्षिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-प्रतिवर्ष दी जाने वाली वृत्ति या अनुदान। ऐनुइटी। २-प्रतिवर्ष होने वाला कोई प्रकाशन। ३-बेले का फूल।

वार्षिला [संज्ञा स्त्री.] (सं) ओला। पत्थर।

वार्ष्ण, वार्ष्णेय [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णचन्द्र।

वार्हद्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) जरासंध।

वालंटियर [संज्ञा पु.](अं.) १-वह व्यक्ति जो बिना किसी पुरस्कार अथवा वेतन के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वयंसेवक। २-वह सैनिक जो बिना वेतन के अपनी इच्छा से सेना में सिपाही या अधिकारी का कार्य करे। बल्लमटेर।

वालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वालछड़। २-कंकण। कङ्गन।

वालदैन [संज्ञा पु.] (अ.) माता-पिता।

वालव [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में एक करण का नाम।

वाला [संज्ञा स्त्री.](सं.) इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के योग से बनने वाले सोलह प्रकार के वृत्तों में से एक, जिसके पहले तीन चरणों में दो तगण, एक जगण तथा दो गुरु होते हैं, एवं चौथे चरण में उपरोक्त होता है केवल प्रथम वर्ण लघु होता है। [प्रत्य.] (?) [स्त्री. वाली] कर्तृत्व, स्वामित्व, सम्बन्ध आदि का सूचक प्रत्यय।

वालाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं) आँख के आकार के फूलों का एक पौधा।

वालाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) आठ रज के बराबर का एक प्राचीन मान।

वालिका [संज्ञा स्त्री] (सं) १-देखो 'बालिका'। २-बालू। बालुका। ३-कान की बाली (गहना) ४-इलायची।

वालिखिल्ल [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'बालखिल्य'

वालिद [संज्ञा पु.] (अ) पिता। बाप।

वाली [संज्ञा पु.] (सं) सुग्रीव का बड़ा भाई और अङ्गद का पिता।

वालु [संज्ञा पु.] (सं.) एक गन्धद्रव्य।

वालुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक गन्धद्रव्य। २-पनियालू।

वालुका [संज्ञा स्त्री.](सं) १-रेत। बालू। २-शाखा ३-हाथ पैर। ४-कपूर। ५-ककड़ी।

वालुकाप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नरक का नाम

वालुकायंत्र, वालुकायन्त्र [संज्ञा पु.](सं) औषध बनाने का एक प्रकार का यन्त्र।

वालुकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की ककड़ी।

वालूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विष।

वालेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-गदहा। गर्दभ। २-पुत्र। ३-एक प्रकार का करंज।

वाल्क [संज्ञा पु.] (सं.) क्षौमादि वस्त्र।

वाल्कल [वि] (सं.) वल्कल या छाल का।

वाल्कली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा।

वाल्मीकि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि हैं।

वाल्मीकीय [वि.] (सं.) १-वाल्मीकि-सम्बन्धी। २-वाल्मीकि की बनाई हुई।

वावदूक [वि.] (सं.) १-अच्छा बोलने वाला वक्ता। २-बकवादी।

वावैला [संज्ञा पु.] (अ.) १-विलाप। रोना-कलपना। २-कोलाहल। हल्ला। शोर।

वाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अड़ूसा। २-एक साम का नाम। [वि.] (सं.) १-बहुत रोने वाला। २-निवेदित।

वाशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिल्लाने वाला। २-रोने वाला। ३-अड़ूसा।

वाशन [वि.] (सं) १-चिल्लाने वाला। २-चहचहाने वाला। ३-भिनभिनाने वाला। [संज्ञा पु](सं) १-पक्षियों का बोलना। २-मक्खियों का भिनभिनाना।

वाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अड़ूसा।

वाशि [संज्ञा पु.] (सं) अग्नि। आग

वाशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अड़ूसा।

वाशित [संज्ञा पु.] (सं) पशु, पक्षी आदि का बोलना।

वाशिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-स्त्री। २-हथिनी।

वाशिष्ठ [संज्ञा पु.](सं.) १-एक उपपुराण का नाम २-एक प्राचीन तीर्थ का नाम। [वि] (सं.) वशिष्ठ-सम्बन्धी। वशिष्ठ का।

वाशिष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोमती नदी।

वाश्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन्दिर। २-चौराहा।

वाष्प [संज्ञा पु](सं.) १-भाप। भाफ। २-आँसू। ३-लोहा। ४-भटकटैया।

वाष्प-ऊष्मक [संज्ञा पु.] (सं.) वस्तुओं को भाप की गरमी से गरम करने का उपकरण। स्टीम-बाथ।

वाष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) मरसा नामक साग।

वाष्प-कड़ाह [संज्ञा पु.] (हिं.) भाप से गरम होने वाले कड़ाह। स्टीम-पैनस्।

वाष्पचालित-घन [संज्ञा पु.] (सं.) भाप की शक्ति से चलने वाला वजनी हथौड़ा। स्टीम-हम्मर।

वाष्प-नौका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाप के इंजन से चलने वाली नाव। स्टीम-बोट।

वाष्पप्रकोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) इंजन के बॉयलर का वह भाग जिसमें भाप बन-बनकर इकट्ठी होती रहती है। स्टीम-डॉम।

वाष्प-रोधक [संज्ञा पु.] (सं.) भाप में मिली हुई पानी की बूँदों को अलग करने का उपकरण।

वाष्पागार [संज्ञा पु.] (सं.) भाप को आवश्यकता अनुसार उपयोग के लिए एकत्रित करके रखने का पात्र। स्टीम-अक्कुमुलटॉर।

वाष्पाति-तापक [संज्ञा पु.] (सं.) भाप को गरम करने का उपकरण।

वाष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंगुपत्री।

वाष्पीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु को कुछ विशेष प्रकिया से भाप के रूप में लाना। एवोपोरेशन।

वासंत, वासन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊँट। २-कोकिल। ३ मलयवायु। ४-मूँग। ५-मैनफल।

वासंतक, वासन्तक [वि.] (सं.) १-वसंत संबंधी २-वसन्तऋतु में बोया हुआ।

वासंतिक, वासन्तिक [वि.] (सं.) वसन्त संबंधी वसन्त का वसन्ती।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-विदूषक। २-नर्त्तक।

वासंती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मायावी-लता। २-जूही। ३-वसंतोत्सव। मदनोत्सव। ४-दुर्गा ५-गनियारी पुष्प। ६-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, तगण, नगण मगण और दो गुरु होते हैं। [वि.] वसंत-सम्बन्धी। वसन्त का।

वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-निवास। रहना। २-घर मकान। ३-अड़ूसा। ४-सुगन्ध। बू।

वासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अड़ूसा। २-गान का एक अंग। ३-दिन। वासर। ४-शालक-राग का भेद।

वासक-सज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो अपने प्रियतम से मिलने के लिये शृंगार करके उसकी वाट देखती है।

वासका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अड़ूसा।

वासकेट [संज्ञा पु.] (अं.) बिना आस्तीन की एक प्रकार की कमर तक की कुरती जो गले के पास खुली होती है। जवाहर-वासकेट-एक प्रकार की देशी वासकेट जो गले के पास से बन्द होती है।

वासगृह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने का कमरा। शयनागार। २-अन्तःपुर। जनानखाना।

वासगेह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वासगृह'।

वासत [संज्ञा पु.] (सं.) गर्दभ। गधा।

वासतेय [वि.] (सं.) बसती के योग्य। रहने लायक।

वासतेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

वासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगंधित करना। २-वस्त्र। ३-वास। ४-ज्ञान।

वासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रत्याशा। २-ज्ञान ३-जन्म-जन्मांतर के प्रभाव से उत्पन्न मानसिक सुख-दुःख की भावना। संस्कार। स्मृति हेतु। ४-कुछ पाने या करने की इच्छा। कामना। ५-दुर्गा। ६-अर्क की स्त्री का नाम। ७-मिथ्या विचार या खयाल।
[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बासना'।

वासप्रासाद [संज्ञा पु.] (सं.) रहने लायक महल।

वासभवन [संज्ञा पु.] (सं.) वासगृह।

वासभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वासस्थान।

वासर [संज्ञा पु.] (सं.) दिन। दिवस।

वासरकन्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात।

वासरकृत [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

वासरमणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। सूरज।

वासरसंग, वासरसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल

वासराधीश, वासरेश [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

वासव [संज्ञा पु.] १-इन्द्र। २-धनिष्ठानक्षत्र।

वासवज [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन।

वासवि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का पुत्र अर्जुन।

वासवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यास की माता का नाम। सत्यवती। मत्स्यगंधा।

वासवेय [संज्ञा पु.] (सं.) वासवी के पुत्र, वेद व्यास।

वासवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) रहने का घर।

वासस् [संज्ञा पु.] (सं.) वस्त्र। कपड़ा।

वासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वासक। अडूसा। २-माधवीलता।

वासि [संज्ञा पु.] (सं.) बसूला।

वासित [वि.] (सं.) १-सुगन्ध से युक्त या सुगन्धित किया हुआ। २-वस्त्राच्छादित। ३-बासी। जो ताजा न हो।

वासिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। २-हथिनी। ३-आर्याछन्द का एक भेद।

वासिल [वि.] (अं.) १-मिला अथवा पहुँचा हुआ प्राप्त। २-जो वसूल हुआ हो। वासिल बाकी-वसूल की हुई और बाकी रकम।

वासिलात [वि.] (अ.) कुल धन जो वसूल हुआ हो।

वासिष्ठ [वि.] (सं.) वसिष्ठ-सम्बन्धी।
[संज्ञा पु.] (सं.) रुधिर। रक्त। लहू।

वासी [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी स्थान पर रहने या बसने वाला। निवास करने वाला।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बढ़ई के लकड़ी छीलने का बसूला।

वासु [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-परमात्मा। ३-पुनर्वसुनक्षत्र।

वासुकी [संज्ञा पु.] (सं.) आठ नागराजों में से दूसरा।

वासुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसुदेव के पुत्र श्री-कृष्णचन्द्र। २-पीपल का पेड़।

वासुदेवक [संज्ञा पु.] (सं.) वासुदेव या श्रीकृष्ण का उपासक।

वासुभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

वासुमंद, वासुमन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

वासुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। २-रात। ३-भूमि। ४-हथिनी।

वासू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटकों की परिभाषा में स्त्रियों के लिए सम्बोधन का शब्द।

वास्कट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) बिना बाँह की कुरती।

वास्त [संज्ञा पु.] (सं.) बकरा।

वास्तव [वि.] (सं.) यथार्थ। प्रकृत। असली। वास्तव में-सचमुच। दरअसल।

वास्तवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यथार्थता। असलियत

वास्तविक [वि.] (सं.) जो वास्तव में हो या हुआ हो। बिलकुल ठीक। ऐक्चुअल।

वास्तविकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वास्तविक का भाव। यथार्थता। २-सत्यता।

वास्तव्य [वि.] (सं.) १-रहने या बसने योग्य। २-अधिवासी। [संज्ञा पु.] बस्ती। आबादी

वास्ता [संज्ञा पु.] (अं.) १-सम्बन्ध। लगाव। २-मित्रता। ३-स्त्री पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। वास्ता पड़ना-काम पड़ना। वास्ता पैदा करना-सम्बन्ध जोड़ना। वास्ता रखना-लगाव या सम्बन्ध रखना।

वास्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ घर बनाया जाय। २-घर। मकान। ३-ईंट, पत्थर आदि से बनी वस्तु। इमारत।

वास्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बथुआ का साग। २-पुनर्नवा।

वास्तु-कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वास्तु या भवन आदि बनाने की कला या विद्या।

वास्तुकालिंग, वास्तुकालिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूजा।

वास्तु-काष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) वास्तुशास्त्र ही सूखी लकड़ी जो इमारत और मेज, कुर्सी आदि बनाने में काम आती है। इमारती लकड़ी टिम्बर।

वास्तुप, वास्तुपति [संज्ञा पु.] (सं.) वह का देवता जिसमें घर बना हो।

वास्तुपरीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भवन निर्माण कार्य की जांच पड़ताल। २-वास्तु का शुभाशुभ विचार।

वास्तुपूजा [संज्ञा स्त्री (सं.) नवीन गृह-प्रवेश

समय की जाने वाली पूजा।

वास्तुयाग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नये घर में प्रवेश के समय किया जाने वाला यज्ञ।

वास्तुविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वस्तु या इमारत-सम्बन्धी सब बातों का परिज्ञान कराने वाली विद्या। भवननिर्माण कला।

वास्तुवृक्ष [संज्ञा पु.](सं.) वह वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती काम में आती है।

वास्तुशांति, वास्तुशान्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) नये घर में प्रवेश करते समय किये जाने वाले शान्ति आदि कर्म।

वास्तुशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें भवननिर्माण-कला का विवेचन होता है।

वास्तूक [संज्ञा पु.] (सं.) वथुआ नामक साग।

वास्ते [अव्य.](अ.) १-लिए। निमित्त। २-हेतु। कारण।

वास्तोष्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-वास्तुपति। ३-देवता-मात्र।

वास्य [वि.] (सं.) जल में रहने वाला।

वाष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरमी। ऊष्मा। २-लोहा। ३-भाप।

वाष्पेय [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

वाह [अव्य.] (फा.) १-प्रशंसा या आश्चर्यसूचक शब्द। धन्य। २-घृणा या तिरस्कार-सूचक शब्द। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाहन। सवारी। २-खींच या लादकर ले चलने वाला। ३-घोड़ा। ४-बैल। ५-भैंसा। ६-वायु। ७-प्राचीनकाल का एक तोल जो चार माण का होता था।

वाहक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वाहिका] १-वोझ खींचने या ढोने वाला। २-भारवाहक।

वाहन [संज्ञा पु.] (सं.) सवारी।

वाहनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाहन का कार्य या धर्म।

वाहनप [संज्ञा पु.] (सं.) वाहनपति।

वाहना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'वाहना'।

वाहनिक [वि.](सं.) वोझ ढोकर जीविका निर्वाह करने वाले।

वाहनीय [वि.](सं.) वहन करने योग्य।

वाहरिपु [संज्ञा पु.](सं.) भैंसा।

वाहवाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लोगों की प्रशंसा। स्तुति। साधुवाद। *वाहवाही लेना या लूटना*-लोगों की प्रशंसा का का पात्र वनना।

वाहि* [सर्व.] (हिं.) उसको। उसे।

वाहिक [संज्ञा पु.](सं.) गाड़ी। छकड़ा। ढक्का।

वाहित [वि.] (सं.) १-वहन किया हुआ। ढोया-हुआ। ढोया हुआ। २-विताया हुआ। ३-वंचित।

वाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेना। फौज। २-सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते हैं।

वाहिनीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेनापति। २-वाहिनी नामक सेना का सेनापति।

वाहियात [वि.] (अ., फा.) १-व्यर्थ। फजूल। २-वुरा। खराव।

वाही [वि.] (अ.) १-सुस्त। ढीला। २-निकम्मा। ३-मूर्ख। ४-आवारा। ५-वेहूदा। ६-वेठिकाने का।

वाहीतवाही [वि.] (अ.) १-वेहूदा। आवारा। २-वेसिर-पैर का। अंडवंड। [संज्ञा स्त्री.] अंड-वंड बातें। गाली-गलौज।

वाहु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भुजदंड। २-रेखागणित में त्रिकोणादि क्षेत्रों के किनारे की (पार्श्व) रेखा या भुजा।

वाहुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) काँख।

वाहुल [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिक का महीना।

वाहुल्य [संज्ञा पु.] (सं.) अधिकता। आधिक्य।

वाहुवार [संज्ञा पु.] (सं.) वहेड़े का वृक्ष।

वाह्य [वि.] (सं.) १-वहन करने योग्य। २-जो वहन करता हो। [क्रि. वि.] १-वाहर। २-अलग। पृथक। [संज्ञा पु.] रथ। यान। सवारी।

वाह्यआतिथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) वाहर से आया हुआ विदेशी माल।

वाह्यक [संज्ञा पु.] (सं.) गाड़ी। छकड़ा।

वाह्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वाह्य का भाव या धर्म।

वाह्यांतर, वाह्यान्तर* [वि.] (सं.) भीतर और वाहर का। [क्रि. वि.] (सं.) भीतर और वाहर

वाह्येंद्रिय, वाह्येन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर की पाँच इन्द्रियाँ जो वाह्य विषयों को ग्रहण करती हैं। यथा-आँख, कान, जिह्वा और त्वचा।

वाह्लीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर का एक प्राचीन जनपद। २-इस देश का घोड़ा। ३-कुंकुम। केसर। ४-एक गंधर्व का नाम। ५-हींग।

विंगेश [संज्ञा पु.] (?) अग्नि। आग।

विंजामर, विञ्जामर [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का वह भाग जो सफेद होता है।

विंजाली, विञ्जाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रेणी। पंक्ति।

विंद, विन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवंती नामक राजा। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३-दिन का एक विशेष भाग। ४-प्राप्ति। लाभ *[संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'वृंद'। २-देखो 'विंदु'।

विंदक* [संज्ञा पु.] (?) १-पाने या प्राप्त करने वाला। २-जानने वाला। ज्ञाता।

विंदु, विन्दु [संज्ञा पु.](सं.) १-जलकण। बूँद। २-विंदी। ३-वह विंदी जो हाथी के मस्तक पर शोभा के लिये बनाई जाती है। ४-शून्य। ५-अनुस्वार। ६-दाँत का लगा हुआ क्षत। ७-कण। कनी। ८-रेखागणित में वह जिस का स्थान तो हो, पर जिसके विभाग न हो सकें। पॉइन्ट। ९-एक रत्नदोष। १०-मूंज या सरकंडे का धूँआँ। [वि.] १-ज्ञाता। वेत्ता। २-दाता। ३-जानने योग्य।

विंदुचित्रक, विन्दुचित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद चित्तियों वाला हिरन।

विंदुजाल, विन्दुजाल [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी के के मस्तक और सूंड पर बनाई हुई सफेद विंदियों का समूह।

विंदुतंत्र, विन्दुतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौपड़ आदि की बिसात। २-तुरंगक।

विंदुतीर्थ [संज्ञा पु.](सं.) पंचनद तीर्थ जो काशी में है और जिसमें विंदुमाधव का मंदिर है।

विंदुत्रिवेणी, विन्दुत्रिवेणी [संज्ञा पु.] (सं.) गाने में स्वर-साधन की एक प्रणाली।

विंदुपत्र, विन्दुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

विंदुमति, विन्दुमति, विंदुमती, विन्दुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शशिविंदु नामक राजा की कन्या का नाम।

विंदुमाधव, विन्दुमाधव [संज्ञा पु.] (सं.) काशी की एक प्रसिद्ध मूर्ति का नाम।

विंदुर [संज्ञा पु.] (हिं.) छोटे चिह्न। बुँदकी।

विंदुराजि, विन्दुराजि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सर्प।

विंदुल, विन्दुल [संज्ञा पु.](सं.) एक कीड़ा जिसके छूने से शरीर में फफोले हो जाते है। अगिया

विंदुसर, विन्दुसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक सरोवर जहां भागीरथ ने गंगा के लिये तप किया था। २-एक प्राचीन सरोवर जो उड़ीसा में है

विंध* [संज्ञा पु.] (हिं.) विंध्यपर्वत। विंध्याचल विन्धपत्र।

विंधपत्र, विन्धपत्र [संज्ञा पु.] सं.) वेलसोंठ।

विंधपत्री, विन्धपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेलसोंठ

विंध्य, विन्ध्य [संज्ञा पु.] (सं.) भारत के मध्य में पूर्व-पश्चिम में फैली हुई प्रसिद्ध पर्वतश्रेणी

विंध्यकूट, विन्ध्यकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-विंध्य-पर्वत। २-अगस्त्यमुनि का नाम।

विंध्यचूलक, विन्ध्यचूलक [संज्ञा पु.] (सं.) विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।

विन्ध्यचूलिक, विन्ध्यचूलिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विंध्यचूलक'।

विंध्यवासिनी, विन्ध्यवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मिर्जापुर जिले में विन्ध्य के एक टीले पर स्थित देवी की प्रसिद्ध मूर्ति।

विंध्यवासी, विन्ध्यवासी [संज्ञा पु.](सं.) एक मुनि का नाम।

विंध्यशक्ति, विन्ध्यशक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक यवन राजा का नाम।

विंध्यस्थ, विन्ध्यस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) व्याड़ी-मुनि का एक नाम।

विंध्या, विन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम। [संज्ञा पु.] देखो 'विंध्य'।

विंध्याचल, विन्ध्याचल [संज्ञा पु.] (सं.) १-विंध्यपर्वत। २-वह बस्ती जहाँ विंध्यवासिनी देवी का नाम है।

विंध्यावली, विन्ध्यावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा-बलि की स्त्री का नाम।

विंश [वि.] (सं.) बीसवाँ।

विंशत [वि.] (सं.) बीसवाँ।

विंशति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीस की संख्या।

विंशतिप [संज्ञा पु.] (सं.) बीस गांवों का अधिपति

विंशतिबाहु [संज्ञा पु] (सं.) रावण।

विंशतीश [संज्ञा पु] (सं.) बीस गांव का स्वामी

विंशतीशी [संज्ञा पु] (हिं.) विंशतीश।

विंशोत्तरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की रीति।

विःकुंधिका, विःकुन्धिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मेंढकों की बोली। २-कर्कश ध्वनि। टर्राहट।

वि [उप.] (सं.) एक उपसर्ग जो शब्द के पूर्व जोड़े जाने पर यह अर्थ देता है—१-विशेष। जैसे विहीन। २-अनेकरूपता। जैसे—विविध। ३-निषेध या विपरीतता। जैसे—विक्रय। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न। २-आकाश। ३-आँख। चक्षु। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पक्षी। २-घोड़ा।

विकंकट, विकङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू।

विकंकत, विकङ्कत [संज्ञा पु.] (सं.) किंकिणी नामक एक जङ्गली वृक्ष। बंज।

विकंकता, विकङ्कता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिबला

विकंटक, विकण्टक [संज्ञा पु] (सं.) १-जवासा। २-विकंकट।

विकंपन, विकम्पन [संज्ञा पु.] (सं) एक राक्षस का नाम।

विकंपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँपना। २-एक राक्षस का नाम।

विकंपित, विकम्पित [वि.] (सं.) कांपता हुआ।

विक [संज्ञा पु] (सं.) हाल की ब्याई गाय का दूध। पेउस। पीयूष।

विकच [वि] (सं.) १-खिला हुआ। विकसित। २-जिसके कच या बाल न हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालों की लट। २-एक प्रकार के धूमकेतु जिसकी संख्या ६५ है। ३-ध्वजा। ४-क्षपणक।

विकच्छ [वि.] (सं.) (नदी) जिसके किनारे पर दलदल या गीली जमीन न हो।

विकट [वि] (सं.) १-भयङ्कर। भीषण। २-कठिन मुश्किल। ३-दुर्गम। ४-वक्र। टेढ़ा। ५-विशाल। ६-दुसाध्य। ७-बिना चटाई का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विस्फोटक। २-सोमलता। ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विकटत्व [संज्ञा पु.] (सं.) विकटता।

विकटमूर्ति [वि.] (सं.) भयङ्कर आकृति वाला।

विकटवदन [संज्ञा पु.] (सं.) भयङ्कर मुख।

विकटविषाण [संज्ञा पु.] (सं.) संबर मृग।

विकटा [संज्ञा स्त्री.] (सं) बुद्धदेव की माता का एक नाम।

विकटानन [संज्ञा पु.] (सं) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विकत्थन [संज्ञा पु.] (सं) झूठी प्रशंसा।

विकत्थना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनी बड़ाई।

विकत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आत्मप्रशंसा।

विकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुरी कथा।

विकद्र [संज्ञा पु] (सं.) यादवों का एक भेद।

विकनिकाहिक [संज्ञा पु] (सं.) एक साम का नाम

विकर [संज्ञा पु.] (सं) १-रोग। व्याधि। २-तलवार के ३२ हाथों में से एक। ३-कुछ विशेष अवस्थाओं में या विशिष्ट पदार्थों पर लगाने वाला कर। अबवाब। सेस।

विकरार* [वि.] (हिं) १-विकराल। भयंकर। २-विकल। बेचैन।

विकराल [वि.] (सं.) भीषण। भयानक। डरावना।

विकरालता [संज्ञा स्त्री.] (सं) भीषणता। भयानकता।

विकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुर्योधन के भाई का नाम। २-कर्ण के पुत्र का नाम। ३-एक साम का नाम। ४-एक प्रकार का वाण।

विकर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का व्याड़ी नामक वाणी। २-एक प्रकार का गँठिवन।

विकर्णिक [संज्ञा पु] (सं) सारस्वत प्रदेश।

विकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यज्ञ की वेदी की ईंट। २-एक साम का नाम।

विकर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-मंदार। आक।

विकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) निषिद्ध कर्म।

विकर्मस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वेदविरुद्ध आचरण करने वाला व्यक्ति।

विकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वाण। तीर।

विकर्षण [संज्ञा पु] (सं.) १-आकर्षण। खिंचाव २-प्राचीन काल का एक शस्त्र जिसमें किसी को अपनी ओर खींचने अथवा अपने पर अनुरक्त करने की विद्या का वर्णन है। ३-न रहने देना। एबॉलिशन। ४-वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई बना हुआ विधान समाप्त कर दिया जाता है। विधान आदि का रद्द करना। रिपील,

विकल [वि.] (सं) १-व्याकुल। बेचैन। विह्वल। २-जिसमें 'कला' न हो। ३-टूटा-फूटा। खंडित। ४-अपूर्ण। अधूरा। ५-अस्वाभाविक। ६-असमर्थ। [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'विकला'।

विकलता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-विकल या व्याकुल हो जाने की अवस्था या भाव। व्याकुलता। बेचैनी। २-कलाहीनता।

विकलन [संज्ञा पु.] (सं) खाते या रोकड़बही में किसी के नाम उसे दिया हुआ धन लिखना। किसी के नाम अथवा खर्च की मद में लिखना। डेबिट।

विकलांग, विकलाङ्ग [वि.] (सं) जिसका कोई अङ्ग टूटा या खराब हो। अङ्गहीन।

विकला [संज्ञा स्त्री] (सं) १-चन्द्रमा की कला का सोलहवाँ भाग। २-वह स्त्री जिसका रजोदर्शन होना बन्द हो गया हो। ३-गणित में समय का एक छोटा मान। ४-बुधग्रह का नाम।

विकलना* [क्रि. अ.] (हिं) व्याकुल या बेचैन होना। घबराना। [क्रि. स.] व्याकुल या बेचैन करना।

विकलास [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का [illegible] बाजा।

विकलित [वि] (सं) १-जिसका मन अशान्त हो। व्याकुल। बेचैन। २-दुःखी। पीड़ित।

विकली [संज्ञा स्त्री] (सं) वह स्त्री जिसे रजोदर्शन न होता हो।

विकलेंद्रिय, विकलेन्द्रिय [वि.] (सं) १-जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में न हों। २-[illegible]

विकल्प [संज्ञा पु] (सं) १-धोखा। भ्रम। २-मन में पहले कोई बात सोचकर फिर उसके विरुद्ध और-और बातें सोचना। ३-विपर्यय वा विरुद्ध कल्पना। ४-योग के अनुसार एक प्रकार की चित्तवृत्ति। ५-एक प्रकार की समाधि। ६-आवांतरकल्प। ७-एक काव्यालंकार जिसमें दो विरोधी बातें रखकर कहा जाता है कि या तो यह होगा या वह। ८-व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण। ९-वह अवस्था जिसमें सम्मुख आये हुए कई विषयों अथवा बातों में से कोई एक विषय या बात करने के लिये चुनने का अधिकार रहता है, ऑप्शन। १०-कई प्रकार की विधियों का मिलना। ११-विलक्षणता। वैचित्र्य।

विकल्प-आपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह आपत्ति जो दूसरे मार्ग के अवलंबन से बचाई जा सकती हो।

विकल्पन [संज्ञा पु.] (सं) १-सन्देह में पड़ना। २-अनिश्चय।

विकल्पसंप्राप्ति, विकल्पसम्प्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) वैद्यक के अनुसार वातादि दोषों की मिश्रित अवस्था में प्रत्येक के [illegible]

कल्पना करना।

विकल्पसम [संज्ञा पु.] (सं) न्याय-दर्शन में २४ जातियों में से एक जिसमें वादी के दिये हुए दृष्टांत में अन्य धर्म की योजना करते हुए साध्य में भी उसी धर्म का आरोप करके या दृष्टांत को असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का मिथ्याखण्डन किया जाता है।

विकल्पित [वि.](सं) १-जिसके संबंध में निश्चय हो। संदिग्ध। २-अनियमित।

विकल्पी [वि.] (सं.) विकल्पयुक्त।

विकल्मष [वि.] (सं.) पापरहित। कलंकशून्य। निरपराध।

विकवच [वि.] (सं.) कवचरहित।

विकस्वर [वि.](सं.) १-खिलने वाला। २-स्पष्ट समझ में आने वाला।

विकषा [संज्ञा स्त्री] (सं.) मजीठ।

विकस [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

विकसन [संज्ञा पु] (सं.) १-विकसित होने की क्रिया या भाव। विकास होना। २-(कलियो आदि का) खिलना।

विकसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-विकसित होना। विकास को प्राप्त होना। २-(कलियों आदि का) खिलना। ३-(चित्त का) प्रसन्न होना।

विकसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-विकसित करना। २-(कलियों आदि का) खिलना या प्रस्फुटित करना। ३-(मन को) प्रसन्न करना।

विकसित [वि.] (सं) १-जिसका विकास हुआ हो। विकास को प्राप्त होने वाला। २-खिला हुआ।

विकस्वर [वि.] (सं) देखो 'विकश्वर'। [संज्ञा पु.] काव्य में वह अलंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर फिर साधारण बात से उसकी पुष्टि की जाती है।

विकस्वरा [संज्ञा स्त्री] (सं.) लाल रंग की पुनर्नवा।

विकार [संज्ञा पु.](सं.) १-वह दोष जिसके कारण किसी वस्तु का रूप रंग बदल जाता है और वह खराब होने लगती है। बिगाड़। २-दोष। बुराई। ३-मन में उत्पन्न होने वाला प्रबल प्रभाव या वृत्ति। ४-व्याकरण में उसके नियमानुसार किसी शब्द का रूप बदलना। ५-वेदांत और सांख्यदर्शन के अनुसार किसी के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम। ६-उपद्रव। हानि।

विकारित [वि] (सं.) बदला हुआ। बिगड़ा हुआ।

विकारी [वि.] (सं) १-जिसमें किसी प्रकार का विकार या बिगाड़ हो। २-जिसके मन में राग-द्वेष आदि विकार उत्पन्न हुए हों। [संज्ञा पु.] १-व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप कुछ विशेष नियमानुसार अथवा कुछ विशेष अवस्थाओं में बदलता हो। २-साठ संवत्सरों में से एक का नाम।

विकाल [संज्ञा पु.] (सं) १-अतिकाल। देर। २-ऐसा समय जब देवकार्य अथवा पितृकार्य करने का समय बीत गया हो। शाम। संध्याकाल।

विकालत [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'वकालत'।

विकालिक [संज्ञा पु] (सं.) सायंकाल का समय

विकालिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) जलघड़ी की कटोरी

विकाश [संज्ञा पु.] (सं) १-प्रकाश। रोशनी। २-विस्तार। फैलाव। ३-खिलना। प्रस्फुटन। ४-आकाश। ५ काव्य में एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज आधार छोड़े अत्यन्त विकसित होना वर्णन किया जाता है। ६-किसी वस्तु की वृद्धि के लिए उसके रूप आदि में उत्तरोत्तर परिवर्त्तन होना। ७-विषमगति।

[वि.] (सं.) निर्जन। एकांत।

विकाशक [वि.] (सं) [स्त्री. विकाशिका] १-प्रकट करने वाला। २-खिलने वाला।

विकाशन [संज्ञा पु](सं) किसी वस्तु में अच्छी अच्छी बातें बढ़ाकर उसे उन्नत करना। अच्छी उन्नत या संपन्न दशा की ओर ले जाना। डेवलपमेट।

विकाशी [वि.] (सं) [स्त्री विकासिनी] १-प्रकट होने वाला। २-खिलने वाला। फूलने वाला।

विकास [संज्ञा पु.](सं) १-किसी वस्तु का फैलना या बढ़ना। प्रसार। फैलाव। २-(फूलों आदि का) खिलना प्रस्फुटित होना। ३-किसी वस्तु का उत्पन्न होकर अन्त या आरम्भ मे भिन्न-भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना। ४-विज्ञान में मानी जाने वाली वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी आरम्भिक सामान्य अवस्था से धीरे धीरे बढ़ती, फैलती और सुधरती हुई उन्नत और पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है। इवोल्यूशन। [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की घास।

विकासना※ [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रकट करना। २-विकसित या प्रस्फुटित करना। खिलने मे प्रवृत्त करना। [क्रि. अ.] १-खिलना। विकसित होना। २-प्रकट होना।

विकासवाद [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं का एक प्रसिद्ध सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि आरम्भ में पृथ्वी पर एक ही मूल तत्व था तथा सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीवजंतु, मनुष्य आदि क्रमशः उसी से निकले, फैले और बढ़े हैं।

विकासवादी [संज्ञा पु] (सं.) वह जो विकासवाद सिद्धान्त को मानता हो।

विकिर [संज्ञा पु.] (सं) १-पक्षी। चिड़िया। २-कूआँ। ३-अक्षत।

विकिरण [संज्ञा पु.](सं.) बहुत-सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना या होना।

विकिष्क [संज्ञा पु] (सं.) प्राचीनकाल का बढ़इयों का एक प्रकार का गज जो ४२इंच का होता था

विकीरण [संज्ञा पु.] (सं) आक। मदार।

विकीर्ण [वि] (सं.) १-चारों ओर बिखेरा या फैलाया हुआ। २-प्रसिद्ध। मशहूर।

[संज्ञा पु](सं) स्वर के उच्चारण का एक दोष

विकीर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताप को फैलाने वाला यन्त्र। २-ठण्डा करने वाला यन्त्र। रेडियेटर।

विकीर्णरोम [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का सुगन्धित पौधा।

विकुंज, विकुञ्ज [संज्ञा पु] (सं) एक जाति-का नाम। (महाभारत)।

विकुंठ, विकुण्ठ [वि.](सं) जो कुण्ठित न हो। तेजधार वाला। ※[संज्ञा पु] (हिं) वैकुण्ठ।

विकुंठन, विकुण्ठन [संज्ञा पु] (सं) दुर्बलता। कमजोरी।

विकुंडल, विकुण्डल [वि] (सं) कुण्डलरहित

विकुंभांड, विकुम्भाण्ड [संज्ञा पु](सं) पुराणानुसार एक दैत्य का नाम।

विकुक्षि [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्या के राजा कुक्षि के पुत्र का नाम। [वि.](सं) जिसका पेट फूला या आगे निकला हुआ हो।

विकुत्सा [संज्ञा स्त्री] (सं.) विशेष निन्दा।

विकुर्वाण [वि] (सं.) १-परिवर्त्तन करने वाला। २-प्रसन्न। आल्हादित।

विकुर्वित [वि] (सं) विस्मयजनक व्यापार।

विकुस्र [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

विकूजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलरव। चहक। गुंजार। २-गुड़गुड़ाहट।

विकूणन [संज्ञा पु] (सं.) कटाक्ष। कनखियों से देखना।

विकूणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नासिका। नाक।

विक्वर [वि] (सं) सुन्दर। मनोहर।

विकृत [वि.] (सं) १-जिसमें किसी तरह का विकार हो गया हो। बिगड़ा हुआ। २-जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। ३-असाधारण। अस्वभाविक। ४-अपूर्ण। अधूरा। ५-रोगी। बीमार। ६-जो युक्ति तर्क अथवा बुद्धि के अनुसार ठीक न हो बल्कि उसके विपरीत अनुचित या भ्रमपूर्ण हो। परवर्स।

विकृत-चित्त [वि.] (सं.) किसी प्रकार के मानसिक विकार अथवा नशे आदि के कारण जिसका चित्त या बुद्ध ठिकाने न हो। अन. साउन्ड माइंड।

विकृत-दृष्टि [संज्ञा पु.] (सं) ऐंचाताना। भेंड़ा।

विकृत-स्वर [संज्ञा पु.] (सं) सङ्गीत में वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी जगह पहुँचता हो

विकृता [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक योगिनी का नाम

विकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिगाड़। विकार। खराबी। २-किसी वस्तु का बिगड़ा हुआ रूप ३-रोग। बीमारी। ४-सांख्य में मूल प्रकृति का वह रूप जो मूलधातु में विकार होने पर उसे प्राप्त होता है। ५-मूलधातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप। ६-तेईस वर्णों वाला एक छन्द। ७-शत्रुता। ८-मन में होने वाला क्षोभ। ९-सत्य, औचित्य, न्याय, तर्क नियम, विधान आदि के सिद्धांतों से विपरीत या विरुद्ध होने की अवस्था। परवर्शन, परवर्सिटी।

विकृष्ट [वि.] (सं.) १-खींचा या खिंचा हुआ। आकृष्ट। २-(विधान, आज्ञा आदि) जिसका अन्त कर दिया गया हो।

विकेंद्रीकरण, विकेन्द्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) सत्ता आदि को एक केन्द्र से हटाकर आस-पास के भिन्न-भिन्न अङ्गों में बाँटना।

विकेटडोर [संज्ञा पु.](अं.) वह छोटा चक्करदार दरवाजा जो बागों आदि में बड़े दरवाजे के पास होता है। इसमें से आदमी तो जा सकते हैं पर पशु नहीं जा सकते।

विकेश [वि.] (सं.) [स्त्री. विकेशी] १-जिसके बाल खुले हों। २-गंजा। [संज्ञा पु.] १-एक प्राचीन ऋषि का नाम। २-पुच्छलतारा। ३-एक प्रकार के प्रेत।

विकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जिसके केश खुले हों। २-गंजी स्त्री। ३-केशों की छोटी-छोटी लपटों को मिलाकर बनाई हुई चोटी या वेणी। ४-शिव पत्नी का नाम। ५-एक प्रकार की राक्षसी।

विकोक [संज्ञा पु.] (सं) वृकासुर के पुत्र और कोक के छोटे भाई का नाम।

विकोश, विकोष [वि.](सं.) १-म्यान से निकली-हुई (तलवार) २-जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।

विक्टोरिया [संज्ञा स्त्री.] (अं.) फिटन के आकार की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

विक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराक्रम। वीरता। २-बल। शक्ति। ३-विष्णु। ४-गति। ५-प्रकार। ढंग। ६-साठ संवत्सरों में से एक। ७-वेद-पाठ की वह प्रणाली जिसमें क्रम का अभाव हो। ८-देखो 'विक्रमादित्य'। [वि.] श्रेष्ठ। उत्तम।

विक्रमक [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के एक गण का नाम।

विक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) चलना। कदम रखना

विक्रमाजीत [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा का नाम। विक्रम-संवत् इसका ही चलाया हुआ है।

विक्रमाब्द [संज्ञा पु] (सं) विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ संवत्।

विक्रमार्क [संज्ञा पु.] देखो 'विक्रमादित्य'।

विक्रमी [वि] (सं) १-जिसमें विक्रम या वीरता हो। २-विक्रम का। विक्रम-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शेर।

विक्रमी-संवत्, विक्रमी-सम्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) भारत का एक प्रसिद्ध सम्वत् जिसे महाराज विक्रम ने चलाया था।

विक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) मूल्य लेकर कोई वस्तु देना। बेचना। बिक्री।

विक्रयक [संज्ञा पु.](सं.) वह जो मूल्य लेकर किसी को कोई वस्तु दे। विक्रेता।

विक्रय-कर [संज्ञा पु](सं.) वह राजकीय कर जो ग्राहकों से उनके हाथ बेची हुई वस्तुओं पर लिया जाता है। सेल्स टैक्स।

विक्रयण [संज्ञा पु.](सं) बेचने की क्रिया। विक्रय बिक्री।

विक्रयपत्र [संज्ञा पु] (सं) वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि अमुक वस्तु अमुक व्यक्ति के नाम इतने मूल्य पर बेची गई। बैनामा।

विक्रय-प्रतिक्रोष्टा [संज्ञा पु.](सं) वह जो बोली बोलकर माल बेचे। नीलाम करने वाला।

विक्रयिक [संज्ञा पु.] (सं) वह जो मूल्य लेकर किसी के हाथ कोई वस्तु बेचे। विक्रेता। सेल्समैन।

विक्रयिका [संज्ञा स्त्री] (सं) वह पुरजा जो खरीदने वाले को नकद माल बेचने पर विक्रेता लिखकर देता है। नकद बिक्री या पुरजा। कैशमेमो।

विक्रयी [संज्ञा पु.] (सं) वह जो बेचता हो या जिसने बेचा हो। बेचने वाला।

विक्रांत, विक्रान्त [संज्ञा पु](सं) १-वीर। योद्धा। २-सिंह। ३-वैक्रान्तमणि। ४-व्याकरण में एक प्रकार की सन्धि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है। ५-शौर्य। वीरता। एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ। ६-एक प्रजापति का नाम। ७-पुराणोक्त कुवलयाश्व के पुत्र का नाम [वि.] (सं.) १-तेजस्वी। प्रतापी। २-जिसकी क्रांति नष्ट हो गई हो।

विक्रांता, विक्रान्ता [संज्ञा स्त्री](सं) १-अरणी २-जयंती। ३-मूसाकानी। ४-अपराजिता। ५-अड़हुल। ६-लाल लजालू। ७-एक लता जिसे हंसपदी कहते हैं।

विक्रांति, विक्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गति २-घोड़े की सरपट चाल। ३-बल। विक्रम। ४-वीरता। बहादुरी।

विक्रानुशय [संज्ञा पु] (सं) किसी वस्तु की खरीदारी की शर्त या आज्ञा को रद्द करना।

विक्रायक [संज्ञा पु.] (सं) विक्रेता। बेचने वाला

विक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं) १-विकार। खराबी २-किसी क्रिया के विरुद्ध होने वाली क्रिया।

विक्रियोपमा [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक उपमालङ्कार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया अथवा उपाय का अवलम्बन का वर्णन होता है।

विक्री [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-बेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। २-वह धन जो बेचने पर प्राप्त हो।

विक्री-कर्त्ता [संज्ञा पु.] (हि.) बेचने वाला। विक्रेता।

विक्रीत [वि.] (सं.) बेचा हुआ। जो बेच दिया गया हो।

विक्रुष्ट [संज्ञा पु] (सं) निर्दय। निष्ठुर।

विक्रेता [संज्ञा पु.] (सं.) बिक्री करने वाला। बेचने वाला।

विक्रेय [वि.](सं) जो बिकने को हो। बेचा जाने वाला। बिकाऊ।

विक्रोशन [संज्ञा पु.](सं) १-गाली। २-चीखना चिल्लाहट।

विक्लव [वि] (सं.) बेचैन। विह्वल।

विक्लिन्न [वि] (सं) १-सड़ा गला हुआ। २-जीर्ण। ३-मुरझाया हुआ।

विक्लिष्ट [संज्ञा पु](सं) १-उच्चारण का दोष। २-घायल। [वि] बहुत थका हुआ।

विक्षत (वि.) (सं) १-चोट खाया हुआ। घायल। २-जिसे खराश पड़ी हो।

विक्षय [संज्ञा पु](सं) अधिक मद्यपान करने से होने वाला एक रोग।

विक्षिप्त [वि] (सं.) १-फैला, बिखरा या छितराया हुआ। २-त्यक्त। ३-पागल। ४-घबराया हुआ। पागलों का सा। [संज्ञा पु] १-जिसके मस्तिष्क में विकार हो गया हो। पागल। २-योग के अनुसार चित्त की वह अवस्था जिसमें कभी वह स्थिर और कभी वह चंचल होता है।

विक्षिप्तक [संज्ञा पु](सं.) वह शव जिसे जलाया या गाड़ा न गया हो बल्कि उसे यों ही फेंक दिया हो।

विक्षिप्तता [संज्ञा स्त्री] (सं.) पागलपन।

विक्षीणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिवगणों का मुखिया। २-देवसभा।

विक्षीर [संज्ञा पु] (सं.) आक या मदार का पेड़।

विक्षीरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुद्धी।

विक्षुब्ध [वि.] (सं.) जिसके मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ हो। क्षुब्ध।

विक्षुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छाया का नाम।

विक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर या इधर-उधर फेंकना या डालना। २-मन का इधर-उधर भटकना। ३-प्राचीनकाल का एक प्रकार का अस्त्र। ४-बाधा। विघ्न। ५-एक प्रकार का रोग। ६-सेना का पड़ाव। छावनी। ७-

की डोरी खैंचना। चिल्ला चढ़ाना।

विक्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर या इधर-उधर फेंकने की क्रिया। २-हिलाने अथवा झटका देने की क्रिया। ३-धनुष की डोरी खींचने की क्रिया। ४-विघ्न। बाधा।

विक्षेपलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की प्राचीन लिपि जिसका उल्लेख ललितविस्तार में मिलता है।

विक्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन की चंचलता। उद्वेग। २-किसी अप्रिय अथवा अनिष्ट घटना के कारण मन में होने वाला विकार।

विक्षोभण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणोक्त एक दैत्य का नाम। २-मन में अत्यधिक क्षोभ उत्पन्न होना या करना।

विक्षोभी [वि.] (सं.) [स्त्री. विक्षोभिणी] जिससे क्षोभ उत्पन्न हो।

विखंडी, विखण्डी [वि.] (सं.) दो टुकड़े कर देने वाला।

विख [वि.] (सं.) बिना नाक वाला। नासिका-रहित। जिसके नाक न हो। ❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विष'।

विखनन [संज्ञा पु.] (सं.) खोदने का काम।

विखनस् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

विखहा [संज्ञा पु.] (हिं.) गरुड़।

विखादितक [संज्ञा पु.] (सं.) वह शव जिसे पशुओं ने खा डाला हो।

विखान❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) सींग। विषाण।

विखानस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैखानस'।

विखायँध [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कड़वी गंध। विखायँध।

विखु [वि.] (सं.) बिना नाक का। नकटा।

विखुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-चोर।

विख्यात [वि.](सं.) जिसकी ख्याति हो। प्रसिद्ध। मशहूर।

विख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रसिद्ध। शोहरत।

विख्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) कोई बात सब की जानकारी के लिए सार्वजनिक रूप से कहना या प्रकाशित करना। एनाउन्समेंट।

विगंध, विगन्ध [वि.] (सं.) १-जिसमें गंध हो। २-बदबूदार।

विगंधक, विगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) इंगुदी या हिंगोट का पेड़।

विगंधिका विगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाऊ बेर। २-अजगंधा।

विगणन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिनती। गणना। हिसाब लगाना। २-विचार। मनन। ३-ऋण की अदायगी। कर्ज चुकाना।

विगत [वि.] (सं.) १-बीता हुआ (समय)। २-जो अभी तुरंत बीता है। ३-रहित। विहीन। ४-जिसकी चमक आदि जाती रही हो। निष्प्रभ। ५-जो कहीं इधर-उधर चला गया हो

विगतकल्मष [वि.] (सं.) पापरहित। शुद्ध।

विगतज्वर [वि.] (सं.) जिसका ज्वर उतर गया हो।

विगनयन [वि] (सं.) जिसकी आंखें नष्ट हो गई हों।

विगतभय [वि.] (सं.) निडर। निःशंक। बेख़ौफ।

विगतलक्षण [वि.] (सं.) अशुभ। अभागा।

विगतश्री [वि.] (सं.) श्रीरहित। असुन्दर।

विगतशोक [वि.] (सं.) शोकरहित।

विगतसप्ताह [संज्ञा पु.] (सं.) गत सप्ताह से पहले का सप्ताह।

विगतस्पृह [वि.] (सं.) देखो 'निःस्पृह'।

विगता [वि.](सं.) [स्त्री. प्र.] १-जो विवाह करने के योग्य न रह गई हो। २-जो पर-पुरुष से प्रेमक रती हो।

विगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विगत का भाव। २-दुर्गति। खराबी।

विगद्धव [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

विगम [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रस्थान। चला जाना २-अंत। समाप्ति। ३-नाश। ४-मोक्ष।

विगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका गर्भपात हुआ हो।

विगर्ह [संज्ञा पु.] (सं.) निंदा। शिकायत।

विगर्हण [संज्ञा पु.] (सं.) भर्त्सना करना। डाँटना।

विगर्हणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भर्त्सना। डाँट। फटकार।

विगर्हित [वि.] (सं.) १-बुरा। खराब। २-जिसे डाँटा-फटकारा गया हो। ३-निषिद्ध।

विगर्ही [वि.] (सं.) निंदाकारक।

विगर्ह्य [वि.](सं.) जो डाँटने-फटकारने या निंदा करने के योग्य हो।

विगलन [संज्ञा पु.](सं.) १-जीर्ण वस्तु का गलना या सड़ना। २-शिथिल होना। ढीला पड़ना। ३-खराब होना। बिगड़ना। ४-बह या गिरकर अलग होना या गिरना।

विगलित [वि.] (सं.) १-चूया टपककर निकाला हुआ। २-गिरा हुआ। ३-ढीला पड़ा हुआ। शिथिल। ४-बिगड़ा हुआ।

विगाथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आर्याछन्द का एक भेद जिसके विषम पदों में १२, दूसरे में १५ और चौथे में १२ मात्राएँ होती हैं और अंत का वर्ण गुरु होता है। इसे 'विग्गाहा' तथा 'उद्गीति' भी कहते हैं।

विगान [संज्ञा पु.] (सं.) १-भर्त्सना। गाली-गलौज। २-खंडनात्मक कथन।

विगाह [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान। गोता।

विगीत [वि] (सं) १-भर्त्सित। गाली दिया हुआ। २-असंगत। विरोधी।

विगीति [वि.] (सं.) १-निकम्मा। २-गुणविहीन।

विगुण [वि.] (सं.) जिसमें कोई गुण न हो।

विगुणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुणहीनता।

विगूढ़ [वि.] (सं.) १-गुप्त। छिपा हुआ। २-भर्त्सित।

विगृहीत [वि.] (सं.) १-विभाजित। घुला हुआ। २-पकड़ा हुआ। ३-जिसके साथ मुठभेड़ हुई हो।

विगृह्य [वि.] (सं.) अलग किया हुआ।

विगृह्यगमन [संज्ञा पु.] (सं.) चारों ओर से मित्रों तथा शत्रुओं से घिरकर पानी में से भागना।

विगृह्यास [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु के बल की कोई चिन्ता न करते हुए की जाने वाली अन्धाधुन्ध चढ़ाई।

विगृह्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु को छोड़कर अथवा उसकी भूमि आदि छीनकर चुपचाप बैठना। २-शत्रु स्थित दुर्ग को जीतने में असमर्थ होकर घेरा डालकर बैठना।

विग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूर या अलग करना। २-विभाग। ३-यौगिक शब्दों या समस्त पदों की व्याख्या अथवा विश्लेषण के लिए प्रत्येक शब्द को अलग-अलग करना। (व्याकरण)। ४-कलह। झगड़ा। ५-युद्ध। समर। ६-शत्रुओं या विपत्तियों में फूट डालकर कलह उत्पन्न करना। ७-आकृति। शकल। ८-शरीर। ९-मूर्त्ति। १०-सजावट। शृङ्गार। ११-सांख्य के अनुसार कोई तत्व। १२-शिव का नाम। १३-स्कंद के एक अनुचर का नाम। १४-दूसरे के प्रति हानिकारक उपायों का प्रत्यक्ष प्रयोग।

विग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) रूप धारण करना।

विग्रही [संज्ञा पु.] (सं.) १-लड़ाई-झगड़ा करने वाला। २-युद्ध करने वाला। ३-युद्धविभाग का मंत्री या सचिव।

विग्राह्य [वि.] (सं.) जिसके साथ युद्ध हो सके।

विघटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घटित करने वाले या संयोजक अङ्गों को अलग-अलग करना। डिस्सोल्यूशन। २-बिगाड़ना। ३-नष्ट करना। ४-तोड़ना-फोड़ना।

विघटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक घड़ी का साठवाँ अंश जो चौबीस सैकण्ड के बराबर होता है।

विघटित [वि.] (सं.) १-जिसके संयोजक अङ्ग अलग-अलग किये गये हों। २-जो तोड़ा-फोड़ा गया हो। ३-नष्ट।

विघट्टन [संज्ञा पु.](सं.) १-खोलना। वियोजित करना। २-पटकना। ३-रगड़ना। ४-देखो 'विघटन'।

विघट्टित [वि.] (सं.) १-खुला हुआ। २-तोड़ा-फोड़ा हुआ।

विघन [संज्ञा पु.](सं.) १-चोट पहुँचाना। आघात करना। २-एक बड़े आकार का हथौड़ा। घन। ३-इन्द्र। * (हिं.) देखो 'विघ्न'।

विघर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) भली-भाँति रगड़ने या घिसने की क्रिया।

विघस [संज्ञा पु.] (सं.) १-आहार। भोजन। २-अधचबाया हुआ कौर। उच्छिष्ट। ३-देवता, पितर, गुरु या अतिथि आदि के खाने के उपरांत बचा हुआ अन्न।

विघट्टन [संज्ञा पु.](सं.) १-रगड़ना। २-हिलना। डुलाना।

विघात [संज्ञा पु.](सं.) १-चोट। आघात। २-नाश। ३-हत्या। ४-विफलता। ५-बाधा।

विघातक [संज्ञा पु.] (सं.) बाधक। विघ्न डालने वाला।

विघातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विघात या प्रहार करने की क्रिया। २-मार डालना। हत्या करना

विघाती [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विघातिनी] १-विघात या प्रहार करने वाला। २-बाधा डालने वाला। ३-हत्या करने वाला। घातक।

विघूर्णन [संज्ञा पु.] (सं.) चारों ओर घुमाना। चक्कर देना।

विघूर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाक। नासिका।

विघूर्णित [वि.] (सं.) चारों ओर घुमाया हुआ।

विघृष्ट [वि.] (सं.) १-अत्यन्त मला हुआ। २-पीड़ा। दर्द।

विघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाधा। रुकावट। अड़चन। २-पाक़फल।

विघ्नक, विघ्नकर [वि.](सं.) वह जो विघ्न या बाधा डालने वाला हो।

विघ्नकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो विघ्न या बाधा डालता हो।

विघ्नजित, विघ्ननायक, विघ्ननाशक, विघ्ननाशन, विघ्नपति, विघ्नराज, विघ्नविनायक, विघ्नेश [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीगणेशजी।

विघ्नित [वि.] (सं.) विघ्न डाला हुआ।

विघ्नेशकांता, विघ्नेशकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

विघ्नेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश।

विचकित [वि.] (सं.) घबराया हुआ।

विचकिल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मल्लिका या चमेली। मदनक।

विचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक दानव का नाम।

विचक्षण [वि.] (सं.) १-चमकता हुआ। २-जो स्पष्ट दिखाई दे। ३-निपुण। ज्ञाता। ४-पंडित। ५-चतुर या भारी विद्वान्।

विचक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदंती।

विचक्षु [वि.] (सं.) अंधा। दृष्टिहीन।

विचच्छन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विचक्षण'।

विचय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एकत्र करना। २-जाँच-पड़ताल या परीक्षा करना।

विचयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इकट्ठा करना। २-जाँचना। परीक्षा करना।

विचरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलना। २-घूमना-फिरना।

विचरन* [क्रि. अ.] (हिं.) चलना-फिरना। घूमना

विचरना* [संज्ञा पु.] (हिं.) चलने-फिरने या विचरण करने की क्रिया या भाव।

विचर्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का रोग जिसमें दाने निकलते और खुजली होती है। ३-छोटी फुन्सी।

विचल [वि.] (सं.) १-जो बराबर हिलता रहता हो। अस्थिर। २-डिगा हुआ। स्थान से हटा हुआ। ३-प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ। *चल विचल होना*-चित्त का चंचल होना।

विचलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विचल होने की क्रिया या भाव। चंचलता। अस्थिरता। २-घबराहट।

विचलना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-अपने स्थान से हटकर इधर-उधर होना। २-घबराना। ३-प्रतिज्ञा या संकल्प से हट जाना या उस पर दृढ़ न रहना।

विचलाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-अपने स्थान से हटाकर इधर-उधर करना। २-ऐसा कोई काम करना जिससे कोई घबरा जाय या स्थिर न रह सके।

विचलित [वि.] (सं.) १-अस्थिर। चंचल। २-अपने स्थान, प्रतिज्ञा, सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।

विचार [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जो मन में सोचा या सोचकर निश्चित किया जाय। संकल्प। २-मन में उठने वाली कोई बात। भावना। ख़याल। ३-किसी बात के सब अङ्ग देखना या सोचना-समझना। ४-मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारक [संज्ञा पु.](सं.) १-विचार करने वाला। २-न्यायविभाग का वह अधिकारी जो अर्थ-सम्बन्धी व्यवहार या मुकदमों का विचार करता है। ३-पथप्रदर्शक। ४-गुप्तचर। जासूस

विचारकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोचने-विचारने वाला। २-वह जो अभियोग आदि सुनकर उनका निर्णय करता हो। न्यायाधीश।

विचारज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो विचार करना जानता हो। २-वह जो अभियोग आदि का निर्णय या निपटारा करता हो।

विचारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विचार करने की क्रिया या भाव। २-अभियोग विवाद आदि के संबन्ध में न्यायालय का किया हुआ निर्णय जजमेंट।

विचारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विचारण'।

विचारणीय [वि.] (सं.) [स्त्री. विचारणीया] १-जिस पर कुछ विचार करना आवश्यक या उचित हो। २-जिसके ठीक होने में सन्देह हो। संदिग्ध।

विचारना [क्रि. अ.] (हिं.) विचार करना। गौर करना।

विचारपति [संज्ञा पु.](सं.) न्याय-विभाग का वह उच्च अधिकारी जो किसी व्यवहार या मुकदमे पर विधि या कानून तथा न्यायानुसार विचार करके अपना निर्णय देता है। जज।

विचारवान [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारशील।

विचारशक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय।

विचारशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) मीमांसा-शास्त्र।

विचारशील [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें अच्छी तरह विचार करने की शक्ति हो। विचारवान

विचारशीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विचारशील होने का भाव या धर्म। बुद्धिमत्ता।

विचारस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहां किसी विषय पर विचार होता हो। २-न्याया-लय। अदालत।

विचाराध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो न्यायालय का प्रधान हो। प्रधान-विचारक।

विचारार्थ-प्रस्ताव [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रस्ताव जो विचार के लिए हो।

विचारालय [संज्ञा पु.](सं.) वह स्थान जहां अभियोगों आदि का विचार होता हो। न्यायालय

विचारिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वह स्त्री जो अभियोगों आदि का विचार करती हो। २-प्राचीन काल की वह दासी जो घर में लगे हुए फूल पौधों की देखभाल और इसी प्रकार के अन्य कार्य करती थी।

विचारित [वि.] (सं.) विचारा हुआ। जिस पर विचार किया गया हो।

विचारी [संज्ञा पु.](हिं.) १-वह जो विचार करता हो। विचार करने वाला। २-कबंध के एक पुत्र का नाम। ३-विचरण करने वाला।

विचारु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

विचार्य्य [वि.] (सं.) विचारणीय।

विचालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हटाना या चलाना। २-नष्ट करना।

विचिंतन, विचिन्तन [संज्ञा पु.] (सं.) विचार करना। सोचना।

विचिंतनीय, विचिन्तनीय [वि.] (सं.) जो विचार करने या सोचने योग्य हो।

विचिंता, विचिन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोच विचार।

विचिंत्य, विचिन्त्य [वि.] (सं.) १-जो चिंतन करने या सोचने योग्य हो। २-संदिग्ध।

विचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीची। तरङ्ग। लहर।

विचिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सन्देह। शक २-वह सन्देह जो किसी विषय में कुछ करने के पूर्व उत्पन्न हो तथा जिसे दूर करके कुछ निश्चय किया जाय।

विचित [वि.] (सं.) जिसका अन्वेषण किया जाय

विचिति [वि.] (सं.) १-सोचना। २-अनुसन्धान

विचित्त [वि.] (सं.) १-अचेत। बेहोश। २-जिसका चित्त ठिकाने न हो।

विचित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेहोशी। २-वह व्यवस्था जिस में मनुष्य का चित्त ठिकाने न रहे।

विचित्र [वि.] (सं.) १-कई रङ्गों वाला। २-विलक्षण। ३-चकित या विस्मित करने वाला। ४-सुन्दर। [संज्ञा पु.] १-पुराणानुसार रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। २-एक अर्थालंकार जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिए कोई उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख होता है।

विचित्रक [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र वृक्ष।

विचित्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रंग-बिरंगा होने का भाव। २-विलक्षणता।

विचित्रदेह [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

विचित्रवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र का नाम।

विचित्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजायबघर।

विचित्रांग, विचित्राङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-मोर। २-बाघ।

विचित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

विचित्रित [वि.](सं.) जो कई प्रकार के रंगों आदि से बना हो।

विचिलक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का जहरीला कीड़ा। (सुश्रुत)।

विची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीची। लहर। तरंग।

विचूर्ण [वि.] (सं.) अच्छी तरह पीसा या चूर्ण किया हुआ।

विचूर्णन [संज्ञा पु.] (सं.) बुकनी करना।

विचूर्णित [वि.] (सं.) अच्छी तरह चूर्ण किया हुआ।

विचेतन [वि.](सं.) १-बेसुध। बेहोश। २-विवेकहीन।

विचेता [वि.](सं.) १-घबराया हुआ। २-बेहोश। ३-जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान न ४-दुष्ट। मूर्ख।

विचेष्ट [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार की चेष्टा न हो।

विचेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) पीड़ा आदि से तड़पना

विचेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुँह बनाना या हाथ पर पटकना।

विचेष्टित [वि] (सं) विशेष चेष्टायुक्त। [संज्ञा पु.] क्रिया। व्यापार।

विछंदक, विछन्दक [संज्ञा पु] (सं) १-देवालय। २-महल।

विच्छत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सुसनी का साग।

विच्छर्दक [संज्ञा पु.](सं.) १-राजभवन। महल। २-देवालय।

विच्छर्दन [संज्ञा पु] (सं) वमन। कै।

विच्छर्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वमन। कै।

विच्छर्दित [वि.] (सं) १-वमन किया हुआ। उगला हुआ। २-भूला हुआ। ३-छोटा या कम किया हुआ।

विच्छल [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत की लता।

विच्छाय [संज्ञा पु.](सं) १-पक्षियों की छाया। २-मणि। ३-वह जिसकी छाया न पड़ती हो [वि.] कांतिहीन। श्री-हीन।

विच्छित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काटकर अलग या टुकड़े करना। २-विच्छेद। अलगाव। ३-कमी। त्रुटि। ४-वेश-भूषा आदि में होने वाली लापरवाही या बेढंगापन। ५-कविता में यति। ६-एक प्रकार का हार। ७-साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री साधारण शृङ्गार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है

विच्छिन्न [वि.] (सं.) १-काटकर अलग किया हुआ। विभक्त। २-अलग। ३-जिसका विच्छेद हुआ हो। ४-कुटिल। ५-जिसका अंत हुआ हो। [संज्ञा पु] योग में अस्मिता राग, द्वेष तथा अभिनिवेश इन चार क्लेशों की वह दशा जिसमें बीच में उनका विच्छेद होता है।

विच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-काटकर अलग करना २-बीच से क्रम टूटना। ३-टुकड़े-टुकड़े करना या होना। ४-नाश। ५-वियोग। विरह ६-अध्याय। परिच्छेद। ७-अवकाश। ८-स्नानान्तरकरण। ९-कविता में यति। १०-तोड़ने की क्रिया।

विच्छेदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो विच्छेद करता हो। २-वह जो काटकर अलग करता हो। ३-विभाजक।

विच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं) १-काटकर अलग करने की क्रिया। २-नष्ट या बरबाद करना।

विच्छेदनीय [वि.] (सं.) १-काटकर अलग करने योग्य। २-जो विच्छेद करने के योग्य हो।

विच्छेदी [संज्ञा पु.](हिं.) वह जो विच्छेद करता हो।

विच्छेद्य [वि.] (सं.) विच्छेद करने, काटने या विभाग करने के योग्य हो।

विच्युत [वि.] (सं.) अपने स्थान आदि से गिरा हुआ। च्युत।

विच्युति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-किसी वस्तु का अपने स्थान से हट या गिर जाना। २-गर्भपात।

विछलना [क्रि अ.] (हिं.) १-फिसलना। २-विचलित होना।

विछेद* [संज्ञा पु.] (हिं.) वियोग। बिछोह।

विछोई* [संज्ञा पु.] (हिं.) वियोगी।

विछोह*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वियोग।

विजंघ [वि.] (हिं) १-बिना जाँघ का। २-जिस में धुरी और पहिये आदि न हों।

विजई* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'विजयी'।

विजन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जिसमें जन या मनुष्य न हों। २-एकान्त। निराला। [संज्ञा पु] हवा करने का पंखा।

विजनता [संज्ञा स्त्री] (सं) विजन होने का भाव।

विजनन [संज्ञा पु] (सं) जनन की क्रिया प्रसव।

विजना* [संज्ञा पु] (हिं) हवा करने का पंखा।

विजन्मा [संज्ञा पु.] (हिं) १-किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके उपपति या यार से उत्पन्न हुआ हो। दोगला। २-एक वर्णसंकर जाति। ३-जातिच्युत व्यक्ति।

विजन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती। गर्भिणी।

विजयंत, विजयन्त [संज्ञा पु] (सं) इन्द्र का एक नाम।

विजयंतिक, विजयन्तिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक योगिनी का नाम।

विजयंती, विजयन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-एक अप्सरा का नाम। २-ब्राह्मीबूटी।

विजय [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-युद्ध, विवाद, प्रतियोगिता आदि में होने वाली जीत। जय। २-सवैया मतगयंद नामक भेद। ३-भोजन करना। ४-जैनियों के मत से पांच अनुचरों में से पहला या सब से ऊपर का स्वर्ग। ५-विष्णु के एक पार्षद का नाम। ६-अर्जुन का नाम। ७-यम का नाम। ८-जैनियों के एक जिन का नाम। ९-कल्कि के एक पुत्र का नाम। १०-भैरववंशी कल्पराज के पुत्र का नाम। ११-विमान। १२-संजय के एक पुत्र का नाम। १३-एक प्रकार का शुभ मुहूर्त्त। १४-जयद्रथ के एक पुत्र का नाम।

विजयकंटक, विजयकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.)

विजयक [संज्ञा पु.] (सं.) सदा जीतने वाला।

विजयकुंजर, विजयकुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा की सवारी का हाथी। २-लड़ाई के मैदान में जाने वाला हाथी।

विजयकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) विजयपताका।

विजयडिंडिम, विजयडिण्डिम [संज्ञा पु] (सं) लड़ाई का बड़ा ढोल।

विजय-तीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक तीर्थ का नाम।

विजयदंड, विजयदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-सदा विजय प्राप्त करनेवाला सैनिक-समूह। २-सेना का एक विशिष्ट विभाग जिस पर विजय विशेष रूप से निर्भर करती है।

विजयदशमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विजया-दशमी'।

विजयनंदन, विजयनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) इक्ष्वाकुवंशीय राजा जय का एक नाम।

विजयपताका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विजय प्राप्त करने के समय फहराई जाने वाली पताका। २-कोई विजयसूचक चिह्न।

विजयपर्पटी [संज्ञा स्त्री] (सं.) वैद्यक में एक औषध जो संग्रहणी रोग में दी जाती है।

विजयपूर्णिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजयादशमी के उपरान्त पड़ने वाली पूर्णिमा।

विजयभैरव [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषधि।

विजयभैरव-तैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक तेल जो वायुनाशक माना जाता है।

विजयमर्द्दल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बड़ा ढोल जो प्राचीनकाल में होता था।

विजययात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजय प्राप्त करने के विचार से की जाने वाली यात्रा।

विजय-रस [संज्ञा पु.] (सं.) अजीर्ण रोग में दी जाने वाली रसौषधि (वैदिक)।

विजयलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजय की अधिष्ठात्री तथा विजय प्राप्त कराने वाली देवी।

विजयशील [संज्ञा पु.] (सं.) सदा जीतने वाला।

विजयश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजय की अधिष्ठात्री देवी जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयसार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी अनेक कामों में लाई जाती है।

विजया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-पार्वती की एक सखी का नाम। ३-यम की पत्नी का नाम। ४-हर्रे। ५-बच। ६-जयंती। ७-मजीठ। ८-एक प्रकार की शमी। ९-अरणी। १०-भांग। ११-एक योगिनी का नाम। १२-दक्ष की एक कन्या का नाम। १३-वर्तमान अपसर्पिणी के दूसरे अर्हत की माता का नाम १४-कृष्ण की माला का नाम। १५-इन्द्र की पताका पर की एक कुमारी का नाम। १६-एक प्रकार का बड़ा खेमा जो प्राचीनकाल में होता था। १७-दस मात्राओं के एक छन्द का नाम १८-आठ अक्षरों का एक वर्णवृत्त। १९-काश्मीर के एक पवित्र क्षेत्र का नाम। २०-विजयादशमी।

विजया-एकादशी [संज्ञा स्त्री] (सं.) आश्विन-शुक्ला-एकादशी।

विजयादशमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विनशुक्ला-दशमी जो हिन्दुओं का बड़ा त्यौहार है।

विजयानंद, विजयानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। २-एक औषध जो कुष्टरोग में दी जाती है (वैद्यक)।

विजयार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक पर्वत का नाम।

विजयावटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार की वटिका।

विजयासप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी मास के शुक्लपक्ष की वह सप्तमी जो रविवार को पड़े (फलित ज्योतिष)।

विजयी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विजयिनी] १-वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। २-अर्जुन।

विजयेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

विजयोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) १-विजयादशमी का उत्सव। २-वह उत्सव जो किसी पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में हो।

विजर [वि.] (सं.) १-जिसे जरा या बुढ़ापा न आता हो। २-नवीन। नया।

विजरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मलोक की एक नदी का नाम।

विजल [वि.] (सं.) जलरहित। [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा का अभाव। अवर्षण।

विजला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चेंच नामक साग।

विजल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-सच, झूठ और तरह-तरह का ऊटपटाँग वार्तालाप। बकवाद। २-द्वेषपूर्ण या निन्दात्मक वार्तालाप।

विजल्पित [वि.] (सं.) १-जिसके विषय में बातचीत हो चुकी हो या की गई हो। २-बकबक किया हुआ।

विजाग* [संज्ञा पु.] (हिं.) वियोग।

विजात [वि.] (सं.) १-वर्णसंकर। दोगला। २-हरामजादा। [संज्ञा पु.] (सं.) सखीछंद का एक भेद।

विजाता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-वह स्त्री जिसके हालही में सन्तान हुई हो। जच्चा। २-जारज-लड़की। दोगली।

विजाति [वि.] (सं.) १-भिन्न या दूसरी जाति का २-दूसरी किस्म या प्रकार का।

विजातीय [वि.] (सं.) दूसरी जाति का।

विजानना* [क्रि. स.] (हिं.) अच्छी तरह जानना

विजानु [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक।

विजार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मटिया भूमि।

विजारत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मंत्रित्व।

विजिगीषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विजय प्राप्त करने की इच्छा। २-सब से आगे बढ़ जाने की अभिलाषा। ३-व्यवहार। ४-वह इच्छा जिसके अनुसार मनुष्य यह चाहता है कि मुझे कोई यह न कह सके कि मैं अपना पेट पालने में असमर्थ हूँ।

विजिगीषु [वि.] (सं.) १-विजयाभिलाषी। २-ईर्षालु।

विजिगीषुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विजिगीषु होने का भाव या धर्म।

विजिज्ञासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्पष्ट या साफ बात जानने का अभिलाषी।

विज़िट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-भेंट। मुलाकात। २-डाक्टर का रोगी को देखने आना। ३-डाक्टर की फीस।

विजिटर्स-बुक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी सार्वजनिक संस्था की वह पुस्तक या पंजी जिसमें वहां के आने जाने वाले अपना नाम तथा उस संस्था के सम्बन्ध में अपनी सम्मति लिखते हैं

विजिटिंग-कार्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह छोटा सा कार्ड जिस पर लोग अपना नाम, पद और पता छपवा लेते हैं, तथा जब किसी से भेंट करने जाते हैं, तब उसे अपने आगमन की सूचना एवं परिचय के लिए यह कार्ड उसके पास भिजवाते हैं। परिचय-पत्र।

विजित [वि.] (सं.) जीता हुआ। [संज्ञा पु.] १-वह जिस पर विजय प्राप्त की हो। २-जीता हुआ प्रदेश। ३-फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो युद्ध में किसी दूसरे ग्रह से बल में कम होता है।

विजितात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [वि.] जितेन्द्रिय।

विजितारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक राक्षस का नाम। २-वह जिसने अपने शत्रु को पराजित कर दिया हो।

विजिताश्व [संज्ञा पु.] (सं.) पृथु राजा के पुत्र का नाम।

विजिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीत। विजय। २-प्राप्ति।

विजित्वर [वि.] (सं.) जिसने विजय प्राप्त की हो। विजेता।

विजित्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम

विजिन, विजिल [संज्ञा पु.] (सं.) चटनी।

विजिहीर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विहार करने की इच्छा।

विजिह्म [वि.] (सं.) १-टेढ़ामेढ़ा। मुड़ा या घूमा हुआ। २-बेईमान।

विजीप [वि.] (सं.) जिसे जय प्राप्त करने की इच्छा हो।

विजुल [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मलिवृक्ष।

विजुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणोक्त एक देवी का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'बिजली'।

विजृंभण, विजृम्भण [संज्ञा पु] (सं) १-किसी पदार्थ का मुख खोलना। २-जँभाई लेना। ३-धनुष की डोरी खींचना। ४-भौं-सिकोड़ना।

विजृंभा, विजृम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं) उबासी। जँभाई।

विजेतव्य [वि] (सं.) जो जीतने के योग्य हो।

विजेता [संज्ञा पु] (सं.) विजय प्राप्त करने वाला विजयी।

विजेय [वि.](सं.) जिस पर विजय प्राप्त की जाने को हो।

विजै* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विजय'।

विजैसार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

विजैसाल [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'विजयसार'।

विजोर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विजौरा'। [वि.] निर्बल। कमजोर।

विजोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं।

विज्जन, विज्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की चटनी। २-एक विशेष प्रकार का बाण या तीर।

विज्जु* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) विद्युत। विजली।

विज्जुल [संज्ञा पु.] (सं) १-त्वचा। छिलका। २-दारचीनी।

विज्जुलता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विद्युत। विजली।

विज्जुलिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) जतुका नामक लता।

विज्जोहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विजोहा'।

विज्ञ [वि.] (सं.) १-जानकार। २-बुद्धिमान्। समझदार। ३-विद्वान्। पंडित।

विज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विज्ञ होने का भाव जानकारी। २-विद्वत्ता। पांडित्य। ३-बुद्धिमत्ता।

विज्ञत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विज्ञता'।

विज्ञप्त [वि.] (सं.) बतलाया या सूचित किया हुआ।

विज्ञप्ति [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) १-जतलाने या सूचित करने की क्रिया। नोटिफिकेशन। २-विज्ञापन। इश्तहार।

विज्ञप्तिका [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) प्रार्थना। निवेदन

विज्ञशुद्धि [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) जटामासी।

विज्ञात [वि.] (सं.) १-जाना या समझा हुआ। २-प्रसिद्ध। मशहूर।

विज्ञातव्य [वि] (सं.) जो जानने या समझने के योग्य हो।

विज्ञाता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो जानता या समझता हो।

विज्ञाति [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) १-ज्ञान। समझ। २-जानकारी। ३-गाय नामक देवयोनि। ४-शुक्र कल्प का नाम।

विज्ञान [संज्ञा पु] (सं) १-ज्ञान। जानकारी। २-किसी विषय की जानी हुई बातों और तत्वों का वह विवेचन जो एक स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में हो। साइन्स। ३-किसी विषय का अनुभवजन्य पूरा और अच्छा ज्ञान। कार्य-कुशलता। ४-कर्म। ५-अविद्या अथवा माया नामक वृत्ति। ६-बौद्धों के मतानुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। ७-आत्मा। ८-ब्रह्म। ९-मोक्ष। १०-आकाश। ११-निश्चयात्मिका बुद्धि।

विज्ञानकोश [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि।

विज्ञानता [संज्ञा स्त्री.] (सं) विज्ञान का भाव या धर्म।

विज्ञानापात [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो परम ज्ञानी हो।

विज्ञानपाद [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास का एक नाम।

विज्ञानमयकोष [संज्ञा पु.] (सं.) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का समूह।

विज्ञानमातृक [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव का नाम।

विज्ञानवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता दिखलाई जाती है। २-वह सिद्धांत जिसमें आधुनिक विज्ञान की बातें मान्य की गई हों।

विज्ञानवादी [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग मार्ग का अनुयायी। योगी। २-वह जो आधुनिक विज्ञान का पक्षपाती हो।

विज्ञानिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसे ज्ञान हो। २-विज्ञ। पंडित। ३-देखो 'वैज्ञानिक'।

विज्ञानिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विज्ञानी का भाव या धर्म।

विज्ञानी [संज्ञा पु] (हिं.) १-वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। वैज्ञानिक। २-बहुत बड़ा ज्ञानी। ३-विज्ञानवेत्ता।

विज्ञानीय [वि.](सं.) विज्ञान-सम्बन्धी।

विज्ञापक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो विज्ञापन करता हो।

विज्ञापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जानकारी कराना। सूचना देना। २-वह सूचनापत्र जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाती है। इश्तहार। ३-बिक्री आदि के माल या किसी बात की वह सूचना जो सब लोगों को विशेषतः सामयिक पत्रों द्वारा दी जाती है। एडवरटाइजमेंट।

विज्ञापना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विज्ञापित करना। बतलाना।

विज्ञापनीय [वि.] (सं.) विज्ञापन के योग्य।

विज्ञापित [वि.] (सं.) १-जिसका विज्ञापन किया गया हो। एडवरटाइज्ड। २-जिसकी सूचना दी गई हो। नोटिफाइड।

विज्ञापित-क्षेत्र [संज्ञा पु.](सं.) स्थानिक स्वशासन तथा प्रबन्ध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र। नोटिफाइड-एरिया।

विज्ञापी [वि.] (हिं.) सूचना देने वाला। बतलाने वाला।

विज्ञाप्ति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'विज्ञप्ति'।

विज्ञाप्य [वि] (सं.) सूचित करने योग्य।

विज्ञेय [वि.] (सं.) जानने या समझने योग्य।

विज्वर [वि.] (सं.) १-जिसका ज्वर या बुखार उतर गया हो। २-निश्चिंत। बे-फिक्र। ३-जो सब प्रकार के क्लेशों आदि से मुक्त हो।

विटंक, विटङ्क [वि.] (सं.) सुन्दर। मनोहर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब से ऊँचा शिखर या स्थान। २-कबूतर का दरबा। ३-बड़ी कक्षी

विट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामुक। लंपट। २-वह जिसने किसी वेश्या को रख लिया हो। ३-धूर्त। चालाक। ४-साहित्य में वह धूर्त तथा स्वार्थी नायक जो भोग-विलास में अपनी सब सम्पत्ति गँवा चुका हो। ५-एक पर्वत का नाम। ६-एक प्रकार का खैर। ७-नारंगी का वृक्ष। ८-चूहा। ९-सांचर नमक। १०-गू। मल।

विटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीनकाल की एक जाति का नाम। २-पुराणानुसार एक प्राचीन देश। ३-घोड़ा।

विटकारिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का पक्षी

विटकृमि [संज्ञा पु.](सं.) बच्चों की गुदा में उत्पन्न होने वाला चुनचुना नामक कीड़ा।

विटप [संज्ञा पु.](सं.)१-वृक्ष। पेड़। २-वृक्ष अथवा लता की नई शाखा। कोंपल। ३-आदित्यपत्र

विटपक [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्ट। पाजी।

विटपी [संज्ञा पु.](हिं.) १-वृक्ष। पेड़। २-वटवृक्ष ३-कोंपल। ४-अंजीर का पेड़।

विटपीमृग [संज्ञा पु.] (सं.) बन्दर।

विटप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) मोगरा नामक फूल या उसका पौधा।

विटभूत [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक दैत्य का नाम।

विटमाक्षिक [संज्ञा पु.](सं.) सोनामाखी (खनिज द्रव्य)।

विटलवण [संज्ञा पु.] (सं.) साँचर नमक।

विटवल्लभा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पाटलीवृक्ष।

विटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लालचन्दन।

विट् [संज्ञा पु.] (सं.) साँचर लवण।

विट्क [संज्ञा पु.] (सं.) विष।

विट्घात [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्राघात नामक रोग।

विट्चर [संज्ञा पु.] (सं) गाँव का सूअर।

विट्ठल [संज्ञा पु.] (हिं.) दक्षिण भारत की विष्णु

की एक मूर्त्ति का नाम।

विट्पति [संज्ञा पु.] (सं.) जमाई। दामाद।

विट्प्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) सूँस। (जलजंतु)।

विट्शूल [संज्ञा पु.] (सं.) एक शूल का रोग। (सुश्रुत)

विट्संग [संज्ञा पु.] (सं.) मलरोध।

विट्सारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

विठल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विट्ठल'।

विड़ंग, विड़ङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बायबिड़ङ्ग।

विडंबक, विडम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठीक-ठीक अनुकरण या नकल करने वाला। २-नकल करके चिढ़ाने वाला। ३-निंदा या हास परिहास करने वाला।

विडंबन, विडम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नकल करना। २-भाँड़पन करना। ३-निंदा या उपहास करना।

विडंबना, विडम्बना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी को चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिए उनकी नकल करना। २-हँसी उड़ाना। उपहास करना।

विडंबनीय, विडम्बनीय [वि.] (सं.) १-नकल उतारने योग्य। २-चिढ़ाने या उपहास करने योग्य।

विडंबित, विडम्बित [वि.] (सं.) १-नकल उतारा हुआ। ५-हँसी उड़ाया हुआ।

विडंबी, विडम्बी [संज्ञा पु.] (सं.) विडंबना करने वाला।

विड [संज्ञा पु.] (सं.) विट् या सांचर। नमक।

विड़गंड, विडगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) साँचर नमक

विडरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-तितर-बितर होना। २-भागना। दौड़ना।

विडराना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'विडारना'।

विडारक [संज्ञा पु.] (सं.) बिलाव।

विडारना [क्रि. स.] (हिं.) १-तितर-बित्तर करना। २-दौड़ाना। भगाना।

विड़ाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्ली। २-गन्ध-बिलाव। ३-हरताल। ४-आँख का पिंड। ५-एक प्रकार की दवा जिसका आँख पर लेप किया जाता है।

विड़ालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्ली। २-हरताल

विड़ालपद [संज्ञा पु.] (सं.) दो तोले का परिमाण

विड़ालाक्ष [संज्ञा पु.](सं.) महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

विड़ाली [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-बिल्ली। २-बिदारी-कन्द।

विड़ीन [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों की उड़ान का एक भेद।

विड़ौजा [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का एक नाम।

विड्गंध, विड्गन्ध [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का नमक।

विड्ग्रह [संज्ञा पु.](सं.) कोष्ठबद्धता। कब्जियत।

विड्घात [संज्ञा पु.] (सं.) मलमूत्र का अवरोध।

विड्ज [संज्ञा पु.] (सं.) वह कीड़े जो विष्ठा में उत्पन्न होते हैं।

विड्बंध [संज्ञा पु.] (सं.) कोष्ठबद्धता। कब्जियत

विड्भंग, विड्भङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दस्त होना।

विड्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दस्त होना।

विड्भोजी [संज्ञा पु.] (सं.) दस्तावर दवा।

विड्लवण [संज्ञा पु.] (सं.) सांचर नमक।

विड्वराह [संज्ञा पु.] (सं.) वह सूअर जो गाँवों में रहते हैं।

विड्विघात [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्राघात रोग विशेष

वितंड, वितण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

वितंडा, वितण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दूसरे की बातों की उपेक्षा करते हुए अपनी बात कहते चले जाना। २-व्यर्थ का विवाद या कहा-सुनी।

वितंडावाद, वितण्डावाद [संज्ञा पु.] (सं) १-व्यर्थ का विवाद या कहा-सुनी। २-साधारण-सी बात को व्यर्थ की कहा-सुनी में बढ़ा देना

वितंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) बिना तार का बाजा।

वितंस [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षियों या छोटे-छोटे पशुओं के फँसाने का जाल।

वित* [वि.] (हिं.) १-जानकार। ज्ञाता। २-चतुर। निपुण।

वितघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी अरणी।

वितत [वि.] (सं.) विस्तृत। फैला हुआ। [संज्ञा पु.] १-वीणा या उस जैसा कोई और बाजा २-ढोल-मृदङ्ग आदि से निकलने वाले शब्द।

विततना* [क्रि अ.] (हिं.) व्याकुल या बेचैन होना।

वितति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विस्तार। फैलाव।

वितथ [वि.] (सं) १-मिथ्या। झूठ। २-व्यर्थ। निरर्थक। [संज्ञा पु.] आज्ञा, निश्चय, आभार आदि के निर्वाह या पालन का अनुचित या दंडनीय अकरण या अभाव। डिफॉल्ट।

वितथता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वितथ का भाव। मिथ्यात्व।

वितथी [संज्ञा पु.](हिं.) वह जो आज्ञा, निश्चय, आभार आदि का ठीक समय पर और उचित रूप से पालन न कर सका हो। डिफॉल्टर।

वितथ्य [वि.] (सं.) असत्य। झूठ।

वितद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) झेलमनदी का नाम।

वितन* [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

वितनु [वि.] (सं.) जो बहुत सूक्ष्म हो।

वितपन्न* [संज्ञा पु.] (हिं.) व्युत्पन्न। दक्ष प्रवीण। [वि](हिं.) घबराया हुआ। विकल बेचैन।

वितनस्क [वि.](सं.) १-अंधकार-रहित। २-जिसमें तमोगुण न हो।

वितरक [संज्ञा पु.] (सं) १-बाँटने वाला। वितरण करने वाला। २-वह जो किसी के अभिकर्त्ता के रूप में उसकी तैयारी की हुई वस्तुएँ ग्राहकों अथवा थोक व्यापारियों को देता हो। डिस्ट्रिब्यूटर।

वितरण [संज्ञा पु.](सं.) १-देना। अर्पण करना। २-बाँटना। डिस्ट्रिब्यूशन।

वितरन+ [संज्ञा पु] (हिं.) १-वितरणकर्त्ता। बाँटने वाला। २-देखो 'वितरण'।

वितरना* [क्रि. स.](हिं.) बाँटना। वितरण करना।

वितरिक्त* [अव्यय] (हिं.) अतिरिक्त। सिवा।

वितरित [वि.] (सं.) बाँटा हुआ।

वितरेक* [क्रि. वि.] (हिं.) छोड़कर। सिवा।

वितर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी तर्क के उत्तर में दिया जाने वाला दूसरा तर्क। २-एक तर्क के उत्तर में उपस्थित किया जाने वाला दूसरा तर्क। आर्गुमेंट। ३-सन्देह। शक। ४-वह अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के संदेह अथवा वितर्क का उल्लेख होता है तथा कुछ निर्णय नहीं होता।

वितर्क्य [वि.] (सं.) १-जिसमें किसी प्रकार के वितर्क अथवा संदेह का स्थान हो। २-जो देखने में बहुत विचित्र।

वितर्दि, वितर्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेदी। मंच

वितल [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त सात पातालों में से तीसरा।

वितलिन [संज्ञा पु.] (सं.) बलदेव।

वितस्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) झेलम नदी का प्राचीन नाम।

वितस्ताख्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक तक्षक नाग का निवास-स्थान।

वितस्ताद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम। (राजतरंगिनी)।

वितस्ति [संज्ञा पु.] (सं.) बारह अंगुल या एक बालिश्त का परिमाण।

विताड़न [संज्ञा पु.] देखो 'ताड़ना'।

वितान [संज्ञा पु.](सं.) १-विस्तार। फैलाव। बड़ा तम्बू या खेमा। ३-यज्ञ। ४-समूह। ५-सिर पर के आघात या घाव आदि पर बाँधा जाने वाला बन्धन। ६-अवसर। अवकाश। ७-घृणा। ८-शून्य। खाली स्थान। ९-अग्निहोत्र आदि कर्म। १०-एक प्रकार का छन्द। ११-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, भगण और दो गुरु होते हैं। [वि.](सं.) १-धीमा। मन्द। २-खाली।

वितानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनिया। २-बड़ा चँदवा या खेमा। ३-समूह। जमावड़ा। ४-धन। सम्पत्ति।

वितानना* [क्रि. स.] (हि.) १-खेमा या शामियाना। २-कोई वस्तु तानना।

वितानमूल [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

वितानमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

वितामस [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकाश। उजाला। [वि.] (सं.) तमोगुणरहित।

वितारा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का केतु या पुच्छलतारा।

वितारक [संज्ञा पु.] (सं.) एक जड़ी जिसे विधारा कहते हैं।

वितिक्रम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यतिक्रम'।

वितिमिर [वि.] (सं.) अंधकाररहित।

वितिहोतर [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि।

वितीत* [वि.] (हि.) देखो 'व्यतीत'।

वितीपाती+ [संज्ञा पु.] (हिं) शरारती। उपद्रव करने वाला (लड़का)।

वितीर्ण [संज्ञा पु.] देखो 'वितरण'। [वि.] (हि.) देखो 'उत्तीर्ण'।

वितुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी।

वितु* [संज्ञा पु.] (हिं) वित्त। धन-संपत्ति।

वितुत्थ [संज्ञा पु.] (सं) नीलाथोथा।

वितुद [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार की भूतयोनि।

वितुन्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुनना नामक साग २-सेवार।

वितुन्नक [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनिया। २-तूतिया। ३-कैवर्त्तमुस्तक। ४-भुइँ आंवला।

वितुन्नका, वितुन्नभूता, वितुन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुइँ आंवला।

वितुष्ट [वि.] (सं.) असंतुष्ट।

वितृण [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां तृण या घास आदि न होती हो।

वितृप्त [वि.] (सं.) जो तृप्त न हो।

वितृप्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वितृप्त या असंतुष्ट होने का भाव।

वितृष [संज्ञा पु.] (सं.) तृष्णारहित।

वितृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) निस्पृह। उदासीन।

वितृष्णता [संज्ञा स्त्री] (सं.) निस्पृहता।

वितृष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं) तृष्णा का अभाव।

वित्त [संज्ञा पु.] (सं) १-धन। संपत्ति। २-राज्य-संस्था आदि के आय और व्यय की व्यवस्था। आर्थिक प्रबन्ध। फाइनान्स। [वि.] (सं.) १-सोचा या विचारा हुआ। २-जाना हुआ। ३-मिला हुआ। प्राप्त। ४-प्रसिद्ध। प्रख्यात।

वित्तकोश [संज्ञा पु.] (सं.) वह थैली जिसमें रुपये-पैसे रखते हैं।

वित्तगोप्त [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर के भंडारी का नाम।

वित्तदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक अनुचरी मातृका का नाम।

वित्तनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर का एक नाम।

वित्तप [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन का रक्षक। भंडारी। २-कुबेर का एक नाम।

वित्तपति [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर का एक नाम।

वित्तपाल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वित्तपति'।

वित्तपुरी [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर की अलकापुरी।

वित्तमंत्री, वित्तमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य या प्रांत के अर्थ विभाग का वह प्रधान अधिकारी या मंत्री जो आर्थिक विषयों की देख-भाल करता है। *फाइनान्स-मिनिस्टर*।

वित्त-विधेयक [संज्ञा पु.] (सं.) राज्य का विधेयक (बिल) जो आगामी वर्ष के आयव्यय आदि से संबंध रखता तथा विधायिका में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाता है। *फाइनान्स-बिल*।

वित्त-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वित्तमंत्री'

वित्तहीन [संज्ञा पु.] (सं.) धनहीन। गरीब।

वित्तायोग [संज्ञा पु.] (सं.) आर्थिक-प्रबन्ध के लिए नियुक्त जन। *फाइनान्स-कमीशन*।

वित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विचार। २-लाभ प्राप्ति। ३-ज्ञान। ४-संभावना।

वित्तीय [वि.] (सं.) वित्त से संबंध रखने वाला। वित्त का। *फाइनैन्शल*।

वित्तीयभार [संज्ञा पु.] (सं.) वित्त या अर्थ से संबंध रखने वाला भार। *फाइनैन्शल-ऑब्लिगेशन*।

वित्तीय-विवरण [संज्ञा पु.] (सं.) आर्थिक विवरण। माली ब्यौरा। *फाइनैन्शल-स्टेटमेन्ट*।

वित्तेश, वित्तेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

वित्रप [वि.] (सं.) निर्लज्ज। बेहया।

वित्रास [संज्ञा पु.] (सं.) भय। डर।

वित्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) वेत्ता होने का भाव।

वित्सन [संज्ञा पु.] (सं.) बैल।

विथक [संज्ञा पु.] (हिं.) पवन।

विथकना*+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-थकना। शिथिल होना। २-मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।

विथकित* [वि.] (हिं.) १-थका हुआ। शिथिल। २-जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण कुछ न बोल सकता हो।

विथराना* [क्रि. स.] (हिं.) १-फैलाव। २-इधर-उधर करना। बिखराना। छितराना।

विथा*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-व्यथा। पीड़ा। २-रोग। बीमारी।

विथारना* [क्रि. स] (हि.) फैलाना। छितराना

विथित* [वि.] (हिं.) व्यथित। दुःखी।

विथुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। २-राक्षस। ३-क्षय। नाश। [वि.] १-अल्प। थोड़ा। कम। २-व्यथित। दुःखी।

विथुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विरहिणी।

विथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोभी।

विदंता, विदन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की कौड़ी।

विद [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिलपुष्पी। तिलक। २-जानकार। जानने वाला। ३-पंडित।

विदक्षिण [वि.] (सं.) दक्षिणारहित।

विदग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसिक। २-विद्वान्। पंडित। ३-चतुर। होशियार। ४-रूसा नामक घास। [वि.] जला हुआ।

विदग्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पांडित्य। विद्वता।

विदग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परकीया नायिका जो बड़ी चतुरता से पर-पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।

विदग्धाजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तप्रकोप से उत्पन्न होने वाला अजीर्ण रोग।

विदग्धाम्लदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं) आँखों का एक प्रकार का रोग जो अधिक खटाई खाने से होता है।

विदथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-योगी। २-यज्ञ। ३-पंडितजन।

विदथी [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि का नाम

विदमान* [अव्य.] (हिं.) सामने। सम्मुख।

विदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंकारी। विश्वसारक। २-फाड़ना।

विदरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फाड़ना। २-विद्रधि नामक रोग।

विदरना* [क्रि. अ.] (हिं.) फटना। विदीर्ण होना। [क्रि. स.] विदीर्ण करना। फाड़ना।

विदर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधुनिक बरार प्रदेश का पुराना नाम। २-एक प्राचीन राजा का नाम जिसके नाम पर इस देश का नाम पड़ा था। ३-मसूढ़ा फूलने का रोग।

विदर्भजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अगस्त्य ऋषि की स्त्री लोपमुद्रा का नाम। २-दमयंती का एक नाम। ३-रुकमणी का एक नाम।

विदर्भराज [संज्ञा पु.] (सं.) दमयन्ती के पिता जो विदर्भ के राजा थे।

विदर्भि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विदर्व्य [संज्ञा पु.] (सं.) बिना फन वाला साँप।

विदल [संज्ञा पु.] (सं) १-सोना। स्वर्ण। २-लाल रंग का सोना। ३-बाँस का बना हुआ

दौरा या और कोई पात्र । ४-अनारदाना । ५-चना । ६-पीठी । [वि] (सं.) १-जिसमें दल न हो । २-खिला हुआ ।

विदलन [संज्ञा पु.](सं.) १-मलने-दलने या दाबने आदि की क्रिया । २-फाड़ना । टुकड़े-टुकड़े करना । इधर-उधर करना ।

विदलना* [क्रि. स.](हिं.) दलित करना । नष्ट-करना ।

विदलान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकाई हुई दाल । २-वह अन्न जिसमें दो दल हों ।

विदलित [वि.] (सं.) १-जिसका भली प्रकार दलन किया गया हो । २-रौंदा हुआ । मला-हुआ । ३-टुकड़े-टुकड़े किया हुआ । ४-फाड़ा-हुआ ।

विदा [संज्ञा स्त्री] (सं.) बुद्धि । ज्ञान । [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रवाना होना । प्रस्थान । २-कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति । [वि.] (सं) प्रस्थित । रवाना ।

विदाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विदा होने की क्रिया या भाव । २-विदा होने की आज्ञा या अनुमति । ३-विदा होने के समय दिया जाने वाला धन आदि ।

विदाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विसर्जन । २-प्रस्थान । ३-जाने की अनुमति । ४-दान ।

विदायी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो भली प्रकार से चलाता या रखता हो । २-दान करने वाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विदाई' ।

विदार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीरना । फाड़ना । २-युद्ध । समर ।

विदारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी के नीचे की पहाड़ी या वृक्ष । २-पानी निकालने के लिए नदी के गर्भ में खोदा हुआ कूप जैसा गढ़ा । ३-नौसादर । [वि.] (सं.) फाड़ने वाला ।

विदारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फाड़ना । २-हत्या-करना । ३-युद्ध । संग्राम । ४-कनेर का पेड़ । ५-खपरिया । ६-नौसादर ।

विदारना* [क्रि. स.] (हिं.) फाड़ना ।

विदारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की डाकिनी जो घर से बाहर अग्निकोण में रहती है । २-गम्भारी वृक्ष । ३-विदारीकन्द । ४-कड़वी तूँबी । ५-शालपर्णी ।

विदारिगंधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी ।

विदारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंभारी ।

विदारित [वि.](सं.) फाड़ा या विदीर्ण किया हुआ

विदारी [वि.] (हिं.) फाड़ने वाला । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालपर्णी । २-भुइँकुम्हड़ा । ३-एक प्रकार का कण्ठरोग । ४-कान का एक रोग । ५-एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें काँख में फुंसी निकलती है । ६-कान का एक रोग । ७-क्षीर-काकोली । ८-मेढ़ासींगी, सफेद पुनर्नवा, देवदारु, अनन्तमूल, बृहती आदि औषधियों का एक गण ।

विदारीकंद, विदारीकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) भुइं-कुम्हड़ा ।

विदारीगंधा, विदारीगन्धा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शालपर्णी । २-भुई कुम्हड़ा, शालपर्णी, गोखरू शतमूली, अनन्तमूल, जीवंती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि औषधियों का एक गण ।

विदारु [संज्ञा पु.] (सं.) गिरगिट ।

विदाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जलन जो पित्त-प्रकोप के कारण हो । २-किसी कारण से हाथ-पैर में होने वाली जलन ।

विदाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो विदाह उत्पन्न करता हो । २-देखो 'विदाह' ।

विदाही [संज्ञा पु.] (हिं.) दाह या जलन उत्पन्न करने वाला ।

विदित [वि.] (सं.) जाना हुआ । ज्ञात । [संज्ञा पु.] (सं.) कवि ।

विदिथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पंडित । विद्वान । २-योगी ।

विदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वर्तमान भेलसा नामक नगर का पुराना नाम । २-मालवा की एक नदी का नाम ।

विदिश् [संज्ञा स्त्री.](सं.) दो दिशाओं के बीच का कोना ।

विदीधिति [वि.] (सं.) किरणहीन ।

विदीर्ण [वि.] (सं.) १-फाड़ा या फटा हुआ । २-टूटा हुआ । ३-मार डाला हुआ । निहत ।

विदु [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी के मस्तक के बीच का भाग । २-घोड़े के कान के नीचे का भाग

विदुत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सब बातें जानता हो । २-विष्णु का एक नाम ।

विदुर [वि.] (सं.) चतुर । [संज्ञा पु.] (सं.) १-जानकार । ज्ञाता । २-पंडित । ज्ञानी । ३-पांडु के छोटे भाई का नाम ।

विदुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत । २-जलबेंत । ३-गन्धरस नामक गन्धद्रव्य । ४-अम्लवेत ।

विदुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का थूहर २-विटखदिर ।

विदुष [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विदुषी] विद्वान । पंडित ।

विदुषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्वान स्त्री ।

विदूर [वि.] (सं.) जो बहुत दूर हो । [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत का नाम । २-एक देश का नाम । ३-देखो 'वैदूर्य' (मणि) ।

विदूरज [संज्ञा पु.] (सं.) वैदूर्यमणि ।

विदूरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दूर होने का भाव

विदूरथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुरुक्षेत्र का एक नाम २-एक राजा का नाम ।

विदूरभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विदूर नामक देश ।

विदूरविगत [संज्ञा पु.] (सं.) अन्त्यज ।

विदूषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामुक । २-अपने वेष, चेष्टा, बातचीत आदि से दूसरों को हँसाने वाला । मसखरा । ३-साहित्य में चार प्रकार के नायकों में से एक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है । ४-नाटकों में का वह पात्र जो नायक का अन्तरङ्ग मित्र या सखा होता है । ५-भाँड़ ।

विदूषण [संज्ञा पु.] (सं.) दोष लगाना ।

विदूषना [क्रि. स.] (हिं.) १-सताना । २-दोष लगाना । [क्रि. अ] (हिं.) दुःखी होना ।

विदृश [वि.] (सं.) अन्धा ।

विदेघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन ऋषि का नाम । २-देखो 'विदेह' ।

विदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस । २-यज्ञ ।

विदेश [संज्ञा पु.] (सं.) अन्य देश । परदेश ।

विदेशज [संज्ञा पु.] (सं.) विदेश या अन्य देश का बना हुआ या उत्पन्न ।

विदेश-मंत्री, विदेश-मन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश या राष्ट्र का वह मन्त्री जिसके पास विदेश विभाग हो । फारेन-मिनिस्टर ।

विदेश-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश का वह राजकीय विभाग जो दूसरे देशों से सम्बन्ध रखने वाले राजनैतिक, आर्थिक मामलों और विदेश में रहने वाले अपने देशवासियों के लिए कार्य करता है । वह उस मन्त्री के आधीन होता है ।

विदेशी [वि.] (हिं.) १-दूसरे देश या देशों से सम्बन्ध रखने वाला फॉरेन । २-विदेश का निवासी । परदेशी ।

विदेशीय [वि.] (सं.) दूसरे देश का । दूसरे देश से सम्बन्ध रखने वाला ।

विदेशीय-कार्य [संज्ञा पु.] (सं.) विदेशी या दूसरे देशों से सम्बन्ध रखने वाले मामले । फॉरेन अफेयरस् ।

विदेशीय-विनमय [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे देश या राष्ट्रों के सिक्कों से अपने देश के सिक्कों में बदलने का कार्य । फॉरेन-एक्सचेंज ।

विदेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा जनक । २-प्राचीन मिथला देश । ३-इस देश का निवासी । [वि.] (सं.) १-जो शरीर या देहरहित हो । २-बेसुध ।

विदेहक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक पर्वत का नाम ।

विदेहकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीता ।

विदेहकूट [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम (जैन) ।

विदेहकैवल्य [संज्ञा पु.] (सं.) जीवनमुक्त को मरने पर प्राप्त होने वाला निर्वाण या मोक्ष ।

विदेहत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदेह होने का भाव । २-मौत । मृत्यु ।

विदेहपुर [संज्ञा पु.] (सं.) जनकपुर।

विदेहा [संज्ञा पु.] (सं.) मिथला प्रदेश और नगर का एक नाम।

विदेही [वि.] (हिं.) [स्त्री. विदेहिनी] देखो 'विदेह'।

विदोष [वि.] (सं.) दोष या ऐबरहित।

विद् [वि.] (सं.) १-जानकार। २-पंडित। ज्ञानी [संज्ञा पु.] (सं.) १ बुधग्रह। २-तिल का पौधा।

विद्ध [वि.] (सं.) १-बीच में से छेद किया हुआ। २-फेंका हुआ। ३-घायल। ४-टेढ़ा। ५-सटा हुआ।

विद्धक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन यंत्र जिससे मिट्टी खोदी जाती थी।

विद्ध-व्रण [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के अङ्ग की वह सूजन जो काँटे की नोक के समान होती है।

विद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलने का रोग।

विद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आघात करना। मारना।

विद्यमान [वि.] (सं.) उपस्थित। मौजूद।

विद्यमानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिक्षा आदि के द्वारा उपार्जित या प्राप्त ज्ञान। २-मोक्ष की प्राप्ति या परम-पुरुषार्थ की सिद्धि करने वाला ज्ञान। ३-वे शास्त्र जिनमें ज्ञान की बातों का विवेचन होता है। ४-ज्ञान के विशेष विभाग। ५-गुण। ६-दुर्गा। ७-देवी का मन्त्र। ८-आर्या-छंद का पाँचवाँ भेद जिसमें २३ गुरु और ११ लघु मात्राएँ होती हैं।

विद्यागम [संज्ञा पु] (सं.) विद्या की प्राप्ति या लाभ।

विद्यागुरु [संज्ञा पु.] (सं) पढ़ाने वाला। शिक्षक

विद्यागृह [संज्ञा पु] (सं) विद्यालय। पाठशाला

विद्यातीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम (महाभारत)।

विद्यात्व [संज्ञा पु] (सं.) विद्या का भाव।

विद्यादल [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र का पेड़।

विद्यादाता [संज्ञा पु.] (सं.) विद्या देने वाला, गुरु।

विद्यादान [संज्ञा पु.] (सं.) विद्या पढ़ना। शिक्षा देना।

विद्यादेवी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरस्वती। २-जैनियों की सोलह जिन देवियों में से एक।

विद्याधन [संज्ञा पु] (सं.) १-विद्यारूपी धन। २-अपनी विद्या द्वारा कमाया हुआ धन।

विद्याधर [संज्ञा पु] (सं) १-देवयोनि। विशेष। २-एक प्रकार का रतिबंध। ३-वैद्यक में एक प्रकार का यंत्र।

विद्याधर-रस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस जो वैद्यक में परम उपयोगी माना जाता है।

विद्याधरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्याधर नामक देवता की स्त्री।

विद्याधरेन्द्र, विद्याधरेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) जाम्बुवान का नाम।

विद्याधरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक शिव लिंग का नाम।

विद्याधार [संज्ञा पु.] (सं.) पंडित। विद्वान्।

विद्याधारी [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं।

विद्याधिदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिक्षक। २-पंडित विद्वान्।

विद्याधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो परम पंडित हो।

विद्याध्र [संज्ञा पु.] (सं.) विद्याधर नामक देवयोनि।

विद्या-पीठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिक्षा का बड़ा केंद्र। महाविद्यालय।

विद्यामाण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विद्याधन'।

विद्यामय [संज्ञा पु.] (सं) वह जो पूर्ण पंडित हो

विद्यामार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष का मार्ग। श्रेयःमार्ग।

विद्यारंभ, विद्यारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) बालक की पढ़ाई अथवा शिक्षा आरम्भ करने का संस्कार।

विद्याराज [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु की एक मूर्ति का नाम।

विद्याराशि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

विद्यार्थी [संज्ञा. पु.] (सं.) [स्त्री. विद्यार्थिनी] विद्या पढ़ने वाला। छात्र।

विद्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।

विद्यावान् [संज्ञा पु.] (सं.) विद्वान्। पंडित।

विद्याविद् [संज्ञा पु.] (सं.) विद्वान। पंडित।

विद्याविरुद्ध [वि.] (सं.) विद्या या ज्ञान के विपरीत।

विद्यावेश्म [संज्ञा पु] (सं.) विद्यालय।

विद्याव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) गुरु के घर रहकर विद्या पढ़ने के विचार से धारण किया हुआ व्रत।

विद्याव्रतस्नातक [संज्ञा पु.] (सं.) गुरु के घर रहकर वेद और विद्याव्रत दोनों समाप्त करके घर लौटा हुआ विद्यार्थी या स्नातक।

विद्यासागर [वि.] (सं.) सब शास्त्रों को जानने-वाला।

विद्या-स्नातक [संज्ञा पु.] (सं) गुरु के घर रहकर वेदाध्ययन समाप्त करके लौटा हुआ स्नातक।

विद्युज्जिह्व [संज्ञा पु.] (सं) १-शूर्पणखा के पति का नाम। २-एक यक्ष का नाम।

विद्युज्जिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

विद्युता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्युत्। बिजली। २-एक अप्सरा का नाम (महाभारत)।

विद्युताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

विद्युत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। २-संध्या ३-एक प्रकार की उल्का। ४-एक प्रकार की वीणा। [संज्ञा पु.] एक प्राचीन ऋषि का नाम [वि.] बहुत चमकदार या चमकीला।

विद्युत्कण [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक वैज्ञानिकों के मतानुसार प्रत्येक परमाणु के गर्भ में धन-विद्युत् से आविष्ट कण, जिसके चारों ओर ऋण-विद्युत् से आविष्ट अनेक कण चक्कर लगाते रहते हैं। इलेक्ट्रन।

विद्युत्-केश [संज्ञा पु.] (सं.) हेति नामक राक्षस का पुत्र।

विद्युत्-चालक [वि] (सं.) (वह पदार्थ) जिसके एक सिरे पर विद्युत् लगाते ही उसके दूसरे सिरे तक पहुँच जाय।

विद्युत्-चालकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत् स्पर्श करने पर किसी पदार्थ में विद्युत् दौड़ने का भाव।

विद्युत्-चिकित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं) बिजली द्वारा रोग की चिकित्सा। इलेक्ट्रोपेथी।

विद्युत्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) विद्युत् का भाव या धर्म

विद्युत्-दर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) बोतल के आकार का एक उपकरण जिसके द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि कोई पिंड विद्युत् आविष्ट है या नहीं। इलेक्ट्रोस्कोप।

विद्युत्पताक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकाल के सात मेघों से से एक।

विद्युत्पर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

विद्युत्पात [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिजली का गिरना

विद्युत्पुंज, विद्युत्पुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) विद्युन्माला।

विद्युत्प्रभ [वि.] (सं.) बिजली के समान चमक वाला। [संज्ञा पु.] १-एक ऋषि का नाम। २-एक असुर का नाम।

विद्युत्प्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दैत्यराज बलि की पौती का नाम। २-अप्सराओं का एक गण।

विद्युत्प्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) काँसा नामक धातु जिसकी ओर बिजली जल्दी खिंचती है।

विद्युतमापक [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिसके द्वारा बिजली के बल, प्रवाह आदि के विषय में जाना जाता है।

विद्युतमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली के जलते हुए लट्टुओं की पंक्ति। २-बिजली का समूह

३-एक यांत्तणी का नाम । ४-एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ गुरु वर्ण होते हैं ।

विद्युत्माली [संज्ञा पु] (सं) १-पुराणोक्त एक राक्षस का नाम । २-महाभारत के अनुसार एक दैत्य का नाम । एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, मगण और अन्त में दो गुरु होते हैं ।

विद्युत्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के उपग्रह ।

विद्युत्य [वि] (सं.) बिजली से उत्पन्न ।

विद्युत्वन् [संज्ञा पु] (सं) मेघ । बादल ।

विद्युत्वाहन [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाहन जो विद्युत शक्ति द्वारा चलाये जाते हैं । जैसे--रेल, ट्राम आदि ।

विद्युत्शक्ति-मापक-यंत्र [संज्ञा पु] (सं.) बिजली की मशीनों या कलों की कार्यक्षमता नापने का यन्त्र ।

विद्युल्लता [संज्ञा स्त्री] (सं.) बिजली ।

विद्युल्लेखा [संज्ञा स्त्री](सं) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते है ।

विद्येश [संज्ञा पु] (सं.) शिव का एक नाम ।

विद्योत् [संज्ञा स्त्री] (सं) १-विद्युत् । बिजली । २-प्रभा । चमक । ३-एक अप्सरा का नाम ।

विद्योतन [वि.] (सं) दीप्तियुक्त ।

विद्योती [वि] (सं) प्रभावशाली ।

विद्र [संज्ञा पु] (सं) छिद्र । छेद ।

विद्रध [वि] (सं.) १-मोटा । ताजा । २-दृढ़ । मजबूत । ३-जो किसी कार्य के लिए भली प्रकार तैयार हो । [संज्ञा पु] देखो 'विद्रधि'

विद्रधि [संज्ञा पु., स्त्री.] (सं) पेट में का एक घातक फोड़ा ।

विद्रधिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) प्रमेह रोग के बहुत दिनों तक रहने पर उठने वाला एक प्रकार का फोड़ा (सुश्रुत) ।

विद्रधिघ्न [संज्ञा पु] (सं) शोभांजन । सहिजन

विद्रव [संज्ञा पु] (सं) १-भागना । २-बुद्धि । ३-भय । डर । ४-नाश । ५-युद्ध । ६-बहना । ७-पिघलना । ८-निंदा ।

विद्राव [संज्ञा पु] (सं) १-बहना । क्षरण । २-पिघलना । ३-गलना ।

विद्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिघलना । २-भागना । ३-गलना । ४-उड़ना । ५-फाड़ना । ६-नष्ट करने वाला । ७-एक दैत्य का नाम ।

विद्राविणी [संज्ञा स्त्री] (सं) कौवाठोठी ।

विद्रावी [संज्ञा पु] (सं) १-भागने वाला । २-गलने वाला । ३-फाड़ने वाला ।

विद्रुत [वि] (सं) १-भागा हुआ । २-गला हुआ ३-पिघला हुआ ।

विद्रुति [संज्ञा स्त्री] (सं) १-भागना । २-गलना ३-पिघलना । ४-नष्ट होना ।

विद्रुधि [संज्ञा पु.] देखो 'विद्रधि' ।

विद्रुम [संज्ञा पु] (सं) १-प्रवाल । मूँगा । २-मुक्ताफल नामक वृक्ष । ३-कोंपल ।

विद्रुमफल [संज्ञा पु.] (सं.) कुंदरु नाम की एक सुगन्धित गोंद ।

विद्रुमलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नलिका नामक गन्धद्रव्य । २-मूँगा ।

विद्रोह [संज्ञा पु.](सं.) १-द्वेष । २-वह भारी उपद्रव जिसका उद्देश्य राज्य को हानि पहुँचाना, उलटना या नष्ट करना हो । बलवा । बगावत

विद्रोही [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वेष करने वाला । २-बलवा करने वाला । बागी ।

विद्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम ।

विद्वत्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) पांडित्य ।

विद्वत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पांडित्य । विद्वत्ता ।

विद्वान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो । २-वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो । ३-सर्वज्ञ ।

विद्विष [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु । दुश्मन ।

विद्विष्ट [वि.](सं) जिसके साथ विद्वेष या शत्रुता की जाय ।

विद्विष्टता [संज्ञा स्त्री] (सं.) विद्विष्ट होने का भाव ।

विद्विष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता । दुश्मनी ।

विद्वेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रुता । वैर । २-विरोध । विपरीतता ।

विद्वेषक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो द्वेष रखता हो । शत्रु ।

विद्वेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रुता । वैर । २-एक तन्त्रोक्त क्रिया जिसके द्वारा दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है । ३-शत्रु । वैरी । ४-दुष्टता ।

विद्वेषिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यक्ष की अन्तिम कन्या का नाम (पुराण) ।

विद्वेषिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता । दुश्मनी ।

विद्वेषी, विद्वेष्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु । वैरी

विद्वेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसके साथ विद्वेष किया जाय । २-द्वेष का पात्र या भाजन । ३-कंकोल ।

विधंस* [संज्ञा पु.] (हिं.) विध्वंस । नाश ।

विधंसना* [क्रि.. स.] (हिं.) नष्ट या बरबाद करना ।

विध* [संज्ञा पु] (हिं.) ब्रह्मा । [संज्ञा स्त्री.] विधि । प्रकार । तरह ।

विधत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) ब्रह्मा की शक्ति ।

विधन [वि.] (सं) निर्धन । गरीब ।

विधनता [संज्ञा स्त्री] (सं) निर्धनता । गरीबी ।

विधना [क्रि स] (हिं) अपने साथ लगाना । प्राप्त करना । [संज्ञा स्त्री] १-विश्व को

विधान करने वाली शक्ति । २-होनी । हो-हार । भवितव्यता । [संज्ञा पु] ब्रह्मा ।

विधमन [संज्ञा पु.] (सं) नल या धौंकनी हवा पहुँचाकर आग सुलगाना । धौंकना ।

विधया [क्रि. वि.] (हिं.) १-विधि के अनुसार । २-विधि के रूप में ।

विधर+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'उधर' ।

विधरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोकना । पकड़ना । २-देखो 'विधृत' ।

विधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराया या दूसरे का धर्म । २-अपने धर्म को छोड़कर दूसरे का धर्म ग्रहण करना । [वि.] १-जिसकी शास्त्र में निंदा की गई हो । २-जिसमें गुण न हो ।

विधर्मिक [वि.] (सं.) १-धर्म-विरुद्ध आचरण करने वाला । २-जो दूसरे धर्म का मानने वाला हो ।

विधर्मी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अधर्म करने वाला । धर्मभ्रष्ट । २-वह जो पराये या दूसरे धर्म का अनुयायी हो ।

विधवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो । रांड ।

विधवापन [संज्ञा पु.] (सं.) वैधव्य । रंडापा ।

विधवाश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) वह आश्रम या स्थान जहाँ अनाथ विधवाओं के पालन-पोषण तथा शिक्षा आदि का प्रबंध हो ।

विधस [संज्ञा पु.] (सं.) मोम ।

विधाँसना [क्रि. स.] (हिं.) १-नष्ट या बरबाद करना । २-अस्त-व्यस्त करना ।

विधातव्य [वि.] (सं.) १-विधान के योग्य । विधेय । २-करने योग्य । कर्तव्य ।

विधाता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विधात्री] १-विधान करने वाला । २-उत्पन्न करने वाला । जन्म देने वाला । ३-सृष्टि की रचना करने वाला । ब्रह्मा । ईश्वर ।

विधातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधान करने वाली

विधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रचने या बनाने वाली । २-व्यवस्था या प्रबन्ध करने वाली । ३-पिप्पली । पीपल ।

विधान [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी काम का आयोजन । अनुष्ठान । २-व्यवस्था । प्रबन्ध । कार्य करने की रीति या प्रणाली । निर्माण । ५-उपाय । ढंग । ६- जितना हाथी एक बार मुख में हाथी का ग्रास । ७-पूजा । अर्चना । में वह स्थल जहाँ किसी पात्र द्वारा साथ सुख और दुःख प्रकट किया ९-धन । सम्पत्ति । १०-राज्य या द्वारा किसी विशेष विषय में बनाये नियमों का समूह । कानून । एक्ट ।

विधानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधान ।

२-विधि या रीति जानने वाला ।

विधान-परिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह सभा या परिषद् जिसमें देश के लिये कानून-कायदे आदि बनते हैं । व्यवस्थापिका-सभा । लेजिस्लेटिव-कौंसिल । २-देखो 'संविधान-परिषद्'

विधान-मंडल, विधान-मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) लोकतन्त्री-शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नये विधान अथवा कानून बनाती और पुराने विधानों में संशोधन, परिवर्तन आदि करती है । लेजिसलेचर ।

विधानवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसके अनुसार विधान या राजनियम ही सर्व प्रधान माना जाता हो तथा उसके विरुद्ध कुछ न किया जाता हो ।

विधानवादी [संज्ञा पु.] (सं) विधानवाद को मानने वाला । विधान या राजनियमानुसार ही सब कार्य करनेवाला । कांस्टिट्यूशनलिस्ट

विधानसप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघमास की शुक्लासप्तमी ।

विधानसप्तमी-व्रत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघशुक्ला सप्तमी को किया जाने वाला व्रत ।

विधान-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लोकतन्त्री-शासन में जनता के प्रतिनिधियों की वह सभा या परिषद् जिसमें देश के लिए कानून कायदे आदि बनते हैं । लेजिस्लेटिव-असेम्बली ।

विधानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बृहती ।

विधानी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विधान का ज्ञाता या जानकार । २-विधिपूर्वक कार्य करने वाला ।

विधायक [वि.] (सं.) [स्त्री. विधायिका] १-विधान करने वाला । कार्य करने वाला । २-बनाने वाला । रचने वाला । ३-यह बताने वाला कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए ४-(वह पत्र, आज्ञा आदि) जिसके द्वारा कोई विधान किया या आज्ञा दी जाय । मैनडेटरी ।

विधापन [संज्ञा पु.] (सं) १-विधान करना या बनाना । २-राज्य, शासन अथवा विधायिका-सभा का कोई नया विधान अथवा कानून बनाना । एनैक्टमैण्ट ।

विधायिका, विधायिका-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विधानमण्डल' ।

विधायित [वि.] (सं.) १-जिसका विधान किया गया हो । २-विधान अथवा कानून के रूप में लाया हुआ । एनैक्टेड ।

विधायिनी शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधान या कानूननिर्माण-सम्बन्धी अधिकार । लेजिसलेचर पावर ।

विधायी [वि] देखो 'विधायक' ।

विधारणा [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी विवादास्पद या अप्रमाणित बात या विषय में पहले से स्थिर की हुई विपरीत, विकृत या पक्षपातपूर्ण धारणा प्रिजुडिस ।

विधारा [संज्ञा पु.] (सं.) एक लता जो दवा के काम आती है ।

विधारित [वि.] (हिं.) १-जिसने अपने मन में किसी विषय में कोई विकृत या पक्षपातपूर्ण धारणा बनाली हो । २-जिसके विषय में उक्त धारणा बनी या हुई हो । प्रिजुडिस्ड ।

विधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोई काम करने का ढंग या रीति । प्रणाली । रीति । २-व्यवस्था । प्रबन्ध । ३-किसी शास्त्र अथवा प्रामाणिक ग्रंथ में लिखी हुई व्यवस्था । शास्त्रोक्त विधान ४-किसी शास्त्र अथवा धर्मग्रंथ की यह आज्ञा कि मनुष्य को अमुक कार्य अवश्य करने चाहिएँ । ५-व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है । ६-मनुष्यों के आचार-व्यवहार के लिए राज्य द्वारा स्थिर किये हुए वे नियम या विधान, जिनका पालन सबके लिए आवश्यक तथा अनिवार्य होता है एवं जिसका उल्लंघन करने से मनुष्य को दंड दिया जाता या दिया जा सकता है । कानून । लॉ । ७-साहित्य में वह अलंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है । ८-प्रकृति या नियति । ९-भाँति । *विधि बैठना*-१-मेल खाना । २-इच्छानुकूल व्यवस्था होना । *कुण्डली की विधि मिलाना*-फलित ज्योतिष द्वारा बताई हुई बात ठीक घटना । *गति विधि*-चेष्टा तथा कार्रवाई । [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

विधिक [वि.] (सं) १-विधि अथवा कानून से सम्बन्ध रखने वाला । २-जो विधि के विचार से ठीक हो । वैध । *लीगल* ।

विधि-कर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) विधि या कानून बनाने वाला ।

विधिक-व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं) वह कार्य या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार अथवा मुकदमे में विधि अथवा कानून के अनुसार होती है । *लीगल-प्रोसीडिंग* ।

विधिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं) १-विधि का जानकार । २-वह जिसने विधि अथवा कानून का अच्छा अध्ययन किया हो तथा जो दूसरों के व्यवहारों के सम्बन्ध में न्यायालय मे प्रतिनिधि के रूप में काम करता हो । *लॉइयर* ।

विधितः [क्रि. वि.] (सं.) विधि या कानून के अनुसार ।

विधिदर्शी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पुरुष जो यज्ञ में यह देखने के लिए नियुक्त होता है कि आचार्य आदि ठीक विधि के अनुकूल काम कर रहे हैं या नहीं ।

विधिना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्मा ।

विधि-पत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती ।

विधिपाट [संज्ञा पु.] (सं.) मृदंग के चार वर्णों में से एक ।

विधिपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) नारद ।

विधिपुर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मलोक ।

विधिपूर्वक [वि.] (सं.) नियम या विधि के अनुसार ।

विधिप्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) नियम का विनियोग

विधि-प्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) विधि या कानून से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्न । *क्वेश्चन-ऑफ-लॉ* ।

विधिबोधित [वि] (सं.) शास्त्रविधि द्वारा बताया हुआ ।

विधिभंग, विधिभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा कार्य करना जिससे कोई विधि या कानून टूटता हो । *ब्रीच-ऑफलॉ* ।

विधिमान्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कानूनी मुद्रा । प्राह्यमुद्रा । *लीगलटेंडर* ।

विधियज्ञ [संज्ञा पु] (सं.) वह यज्ञ जिसके करने की विधि हो ।

विधिरानी* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सरस्वती ।

विधिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मलोक ।

विधि-वक्ता [संज्ञा पु.] (सं) वह व्यक्ति जिसने विधिशास्त्र या कानून का अच्छा अध्ययन किया हो तथा जो दूसरों के व्यवहार के सम्बन्ध में न्यायालय में प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता हो । जैसे वकील, बैरिस्टर आदि *लॉइयर* ।

विधिवत् [क्रि. वि] (सं) विधि या नियम के अनुसार ।

विधिवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती ।

विधिवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा की सवारी, हंस

विधिविहित [वि.] (सं.) विधि अथवा नियम के अनुसार ।

विधिशास्त्र [संज्ञा पु] (सं) किसी देश या राष्ट्र की सामान्य विधि (कॉमन-लॉ) और प्रविधियों की समष्टि ।

विधिसेध [संज्ञा पु.] (सं) विधि और निषेध ।

विधिहीन [वि] (सं) विधिरहित । शास्त्रविरुद्ध । अंटसंट ।

विधुंतुद, विधुन्तुद [संज्ञा पु] (सं) राहु ।

विधु [संज्ञा पु] (सं.) १-चन्द्रमा । २-वायु । ३-कपूर । ४-ब्रह्मा । ५-विष्णु । ६-एक दैत्य का नाम । ७-आयुध । ८-जलस्नान । ९-पाप छुड़ाना ।

विधुक्रांत, विधुक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं) संगीत का एक ताल ।

विधुदार [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा की पत्नी, रोहिणी ।

विधुपंजर, विधुपञ्जर [संज्ञा पु.] (सं) खाँड़ा । खड्ग ।

विधुप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी । २-कुमुदिनी ।

विधुबंधु, विधुबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) कुमुद का फूल।

विधुबैनी* [संज्ञा स्त्री] (हिं) विधुवदनी। चन्द्रमुखी।

विधुर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री विधुरा] १-दुःखी २-व्याकुल। ३-असमर्थ। ४-वह पुरुष जिस की पत्नी मर गई हो। रँडुआ।

विधुरा [वि] (सं) (स्त्री प्र.) १-व्याकुल। २-एक स्नायु-ग्रंथि जो कानों के पीछे होती है।

विधुवदनी [संज्ञा स्त्री] (सं) चाँद से मुखड़े वाली स्त्री। सुन्दर स्त्री।

विधूत [वि] (सं.) १-काँपता हुआ। हिलता हुआ। २-छोड़ा हुआ। व्यक्त। ३-दूर किया या हटाया हुआ।

विधूनन [संज्ञा पु] (सं) काँपना।

विधूनित [संज्ञा पु] (सं.) काँपता हुआ।

विधूम [वि] (सं) धूमरहित। बिना धूएँ का।

विधूम्र [वि](सं) मटमैले रंग का। धूसर वर्ण।

विधूवन [संज्ञा पु.] (सं) कंपन। कांपना।

विधेय [वि] (सं) १-जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। जिसका करना उचित हो। २-जो नियम या विधि द्वारा किया जाय। ३-जिसका विधान होने को हो। ४-वचन या आज्ञा के वशीभूत। अधीन। ५-वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय (व्याकरण)।

विधेयक [संज्ञा पु] (सं) किसी विधान या कानून का वह पूर्व या प्रस्तावित रूप जो पारित होने के लिये विधायिका में उपस्थित किया जाता है। कानून का मसौदा। बिल।

विधेयता [संज्ञा स्त्री.](सं) १-विधान की योग्यता २-अधीनता।

विधेयत्व [संज्ञा पु] (सं) विधेयता।

विधेयात्मा [संज्ञा पु] (सं) विष्णु भगवान् का एक नाम।

विधेयाविमर्श [संज्ञा पु.] (सं) साहित्य में वह वाक्यदोष, जो विधेय अंश को अप्रधान अंश प्राप्त होने पर होता है। कही जाने वाली मुख्य बात का वाक्यरचना के बीच में दब जाना।

विध्य [वि] (सं) १-विंधने योग्य। २-जो बेधा या छेदा जाने वाला हो।

विध्यपाश्रय [वि](सं) वह जो विधि का आश्रय लेता हो।

विध्याभास [संज्ञा पु] (सं) वह अर्थालङ्कार जिसमे किसी अनिष्ट या आपत्ति की संभावना होते हुए विवश होकर किसी बात की सम्मति दी जाती है।

विध्वंस [संज्ञा पु] (सं) नाश। बरबादी।

विध्वंसक [वि] (सं) नाश करने वाला। [संज्ञा पु] एक प्रकार का तीव्र गति वाला लड़ाई का जहाज। डिस्ट्रायर।

विध्वंसक-पोत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विध्वंसक'

विध्वंसक-बम [संज्ञा पु.] (हिं.) पुलों आदि को तोड़ने के काम में आने वाला बम। यह बहुत भारी होता है और इसमें तेज विस्फोटक पदार्थ भरे रहते हैं। डमालेशन-बॉम।

विध्वंसन [संज्ञा पु.] (सं.) नाश करना। बरबाद-करना।

विध्वंसित [वि.] (सं.) नष्ट या बरबाद किया हुआ।

विध्वंसी [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री विध्वंसिनी] नाश या बरबाद करने वाला। नाशकारी।

विध्वस्त [वि] (सं.) नष्ट किया हुआ।

विन* [सर्व.] (हिं.) उस।
[अव्य] (हिं.) बिना।

विनत [वि.] (सं.) १-झुका हुआ। २-नम्र। ३-शिष्ट ४-संकुचित। ५-वक्र। टेढ़ा पड़ा हुआ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-बन्दर का एक नाम जो सुग्रीव की सेना में था।

विनतक [संज्ञा पु] (सं) एक पर्वत का नाम।

विनतड़ी* [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'विनति'।

विनता [वि] (सं.) [स्त्री प्र] कुबड़ी।
[संज्ञा स्त्री] (सं.) १-दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम। २-बहुमूत्र के रोगियों को होने वाला एक फोड़ा। ३-व्याधि लाने वाली एक राक्षसी। ४-सीता को समझाने के लिये रावण द्वारा नियुक्त की हुई एक दासी।

विनतासून [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

विनति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-झुकाव। २-नम्रता सुशीलता। ३-प्रार्थना। विनती। ४-विनियोग ५-शासन। दंड।

विनती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विनति'।

विनद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पेड़।

विनमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नम्र करना। झुकाना २-लचाना।

विनम्र [वि.] (सं.) १-झुका हुआ। २-विनीति। सुशील। [संज्ञा पु.] (सं.) तगर का फूल।

विनय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रणति। नम्रता। २-प्रार्थना। अनुनय। ३-शासन। ४-नीति। ५-शिक्षा।

विनयकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनय-विद्या। २-शिक्षाज्ञान।

विनयग्रही [वि.] (सं.) किसी की इच्छा के अधीन। वश्य।

विनयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विनय का भाव या धर्म।

विनयधर [संज्ञा पु.] (सं.) पुरोहित।

विनयन [संज्ञा पु.] (सं) १-विनय। नम्रता। २-शिक्षा। ३-निर्णय। निराकरण। ४-दूरकरना मोचन।

विनय-पत्र [संज्ञा पु](सं) प्रार्थना-पत्र। दरखास्त

विनय-पिटक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों का एक आदि ग्रन्थ। यह पाली भाषा में लिखा है।

विनयवान् [वि.](सं.) [स्त्री विनयवती] जिसमें नम्रता हो। शिष्ट।

विनयशील [वि.] (सं) नम्र। शिष्ट। सुशील।

विनयस्थ [वि] (सं.) आज्ञाकारी।

विनयिता [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

विनयी [वि.](हिं.) विनययुक्त। विनयशील। नम्र

विनवन [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'विनवना'।
[क्रि स] देखो 'विनवना'।

विनशन [संज्ञा पु.] (सं) नष्ट होना। बरबादी।

विनशना [क्रि अ] (हिं) नष्ट होना। नाश। बरबादी।

विनशाना [क्रि. स] (हिं.) १-नष्ट करना। २-बिगाड़ना। [क्रि. अ] देखो 'विनसना'।

विनश्वर [वि] (सं) बहुत दिन न रहने वाला। अनित्य।

विनश्वरता [संज्ञा स्त्री] (सं) अनित्यता।

विनष्ट [वि.] (सं) १-नष्ट। ध्वस्त। २-मृत ३-बिगड़ा हुआ। ४-भ्रष्ट। पतित।

विनष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं) १-नाश। २-लोप। ३-पतन।

विनस [वि.] (सं.) नकटा। बिना नाक का।

विनसना* [क्रि अ] (हिं) नष्ट होना।

विनसाना* [क्रि. स.] (हिं) १-नष्ट करना। २-बिगाड़ना। [क्रि. स] नष्ट होना।

विना [अव्य] (सं.) न रहने की अवस्था में। अभाव में। बगैर।

विनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक घड़ी का साठवां भाग। पल।

विनाती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) विनति

विनाथ [वि.] (सं.) अनाथ।

विनाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-झुकाव। टेढ़ापन। २-किसी पीड़ा द्वारा शरीर का झुक जाना।

विनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। २-गरुड़ ३-विघ्न। बाधा। ४-गुरु। ५-बुद्धदेव। ६-देवी का स्थान।

विनायक-केतु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

विनायक-चतुर्थी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघसुदी चौथ। गणेश चतुर्थी।

विनाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाश। २-लोप। ३-बिगाड़। खराबी। ४-तबाही। ५-हानि।

विनाशक [वि.] (सं.) [स्त्री. विनाशिका] १-विनाश करने वाला। २-बिगाड़ने वाला।

विनाशन [संज्ञा पु.] (सं) १-नष्ट या ध्वस्त करना। २-संहार करना। ३-खराब करना। ४-एक दैत्य का नाम जो काल का पुत्र था।

विनाशित [वि.] (सं.) १-नष्ट या ध्वस्त किया हुआ। २-मारा हुआ। ३-बिगाड़ा हुआ।

विनाशी [वि.] (हिं.) [स्त्री. विनाशिनी] १-नष्ट या ध्वस्त करने वाला। २-मारने वाला। ३-बिगाड़ने वाला।

विनाश्य [वि.] (सं.) विनाश योग्य।

विनास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विनाश'।

विनासन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विनाशन'।

विनासना* [क्रि. स.](हिं.) १-नष्ट करना। २-वध करना। ३-बिगाड़ना। [क्रि. अ.] नष्ट होना।

विनाह [संज्ञा पु.](सं.) कुए के मुख पर का ढकना

विनिंदक, विनिन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) अत्यन्त निंदा करने वाला।

विनिंदा, विनिन्दा [संज्ञा स्त्री.](सं.) बहुत बुराई

विनिंदित, विनिन्दित [वि.] (सं.) जिसकी बहुत निंदा हुई हो। लांछित।

विनिःसृत [वि] (सं.) निकला हुआ।

विनिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपराध। २-क्षति

विनिक्षिप्त [वि.] (सं.) छोड़ा हुआ। परित्यक्त।

विनिगमक [वि.] (सं.) दो पक्षों में से किसी एक एक पक्ष को सिद्ध करने वाला।

विनिगमना [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-दो परस्पर विरुद्ध पक्षों में से किसी एक पक्ष का युक्ति और प्रमाण द्वारा निश्चय। २-वेदांत। नतीजा।

विनिग्रह [संज्ञा पु] (सं.) १-प्रतिबंध। बंधेज। २-संयम। ३-बाधा। ४-अवरोध। रुकावट

विनिघ्न [वि] (सं.) १-नष्ट। बरबाद। २-गुणा किया हुआ। गुणित।

विनिद्र [संज्ञा पु.](सं.) अस्त्र का एक संहार जिससे निद्रित अथवा मूर्छित व्यक्ति की नींद या बेहोशी दूर होती है। [वि] १-निद्रारहित। जागा हुआ। २-खिला या फूला हुआ।

विनिधान [संज्ञा पु.](हिं.) १-निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से यह बतला देना कि अमुक काम इस रूप में ही या अमुक अमुक वस्तुओं का प्रयोग इस प्रकार हो। २-इस प्रकार के निर्देश या सूचना से युक्त लेख। प्रेसक्रिप्शन

विनिधित [वि.] (हिं.) जिसका निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से विनिधान हुआ हो प्रेसक्राइब्ड।

विनिपात [संज्ञा पु.] (सं) १-विनाश। २-वध। हत्या। ३-अपमान। अनादर।

विनिपातक [संज्ञा पु.](सं.) १-विनाशकारी। २-संहार करने वाला। ३-अपमान करने वाला।

विनिमय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक चीज के बदले दूसरी चीज देने का व्यवहार। अदल-बदल। परिवर्त्तन। २-वह प्रक्रिया जिसके अनुसार अलग अलग देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होते है तथा जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं। एक्सचेन्ज। ३-वह प्रक्रिया जिसके अनुसार अलग-अलग पक्षों या देशों का लेन-देन विनिमय-पत्रों के अनुसार होता है। *एक्सचेन्ज*। पद०-*विनिमय-दर*-वह दर जिससे एक देश के सिक्के दूसरे देश के सिक्कों में बदले जाते हैं।

विनिमय-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी आर्थिक देन या प्राप्य का सूचक होता है तथा जिसके द्वारा आपसी लेन-देन का भाव तै होता है। *बिल-ऑफ-एक्सचेंज*।

विनिमेष [संज्ञा पु.](सं.) आंख के झपने की क्रिया

विनियंत्रण, विनियन्त्रण [संज्ञा पु.](सं.) नियंत्रण (कंट्रोल) का हटाया अथवा दूर किया जाना। *डि-कंट्रोल*।

विनियंत्रित, विनियन्त्रित [वि.] (सं.) नियंत्रण को हटाया दूर किया हुआ।

विनियम [संज्ञा पु.](सं.) १-वह नियम जो किसी विशेष आज्ञा या निश्चय के अनुसार किसी प्रकार की व्यवस्था या प्रबन्ध के लिए बना हो। *रेगुलेशन*। २-साधारण नियम से अधिक महत्व का वह नियम जो किसी विधायन के अधीन न बना हो, बल्कि उसकी परिभाषा में ही आता हो। *रेगुलेशन*।

विनियमन [संज्ञा पु.] (सं.) नियमित करना। व्यवस्थापित करना। अनुशासन करना। *रेगुलेट*।

विनियुक्त [वि.] (सं) १-नियोजित। काम में लगाया हुआ। २-प्रेरित। ३-अर्पित।

विनियोग [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। प्रयोग। २-वैदिक कृत्यों में होने वाला मंत्र का प्रयोग। ३-प्रेषण भेजना। ४-व्यापार में पूँजी लगाना। *इन्वेस्टमेंट*। ५-सम्पत्ति आदि किसी प्रकार (विक्रय या दान आदि से) दूसरे को देना। *डिस्पोजल* ६-देखो 'उपयोजन'।

विनियोग-विधेयक [संज्ञा पु.] (सं.) विनियोग या उपयोजन-सबन्धी विधेयक।

विनियोगिका (वृत्ति) [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विनियोग करने में सूक्ष्मबुद्धि या वृत्ति। *डिस्पोजिग-माइन्ड*।

विनियोजक [वि.] (सं.) १-विनियोग करने वाला। २-व्यापार में पूंजी लगाने वाला। ३-अपनी सम्पत्ति किसी को देने वाला।

विनियोजित [वि.] (सं.) १-लगाया हुआ। २-अर्पित। ३-प्रेरित।

विनिर्गत [वि] (सं.) १-निकला हुआ। बहिर्गत २-गया हुआ। निष्क्रांत। ३-बीता हुआ। अतीत।

विनिर्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलना। बाहर होना। २-प्रस्थान। चला जाना।

विनिर्घोष [संज्ञा पु.] (सं.) घोर शब्द।

विनिर्जय [संज्ञा पु.] (सं) सब प्रकार से या पूर्ण रूप से विजय।

विनिर्णय [संज्ञा पु.](सं.) १-पूर्णरूप से निपटारा या फैसला। २-निश्चय। ३-निर्धारित नियम

विनिर्दिष्ट [वि.](सं.) विशेष रूप से निर्दिष्ट किया या बतलाया हुआ। *स्पेसिफाइड*।

विनिर्देश [संज्ञा पु.] (सं.) विशेष रूप से किया हुआ कोई निर्देश या निश्चत रूप से बतलाई हुई कोई बात। *स्पेसिफिकेशन*।

विनिर्बंध, विनिर्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-अटलता। दृढ़ता। २-आग्रह। जिद।

विनिर्भय [वि.] (सं.) भयरहित।

विनिर्भोग [संज्ञा पु] (सं) एक कल्प का नाम।

विनिर्माण [संज्ञा पु.] (सं.) विशेष रूप से निर्माण। अच्छी तरह बनाना।

विनिर्मित [वि.] (सं.) विशेष रूप से बनाया हुआ।

विनिर्मुक्त [वि.] (सं.) १-बाहर निकाला हुआ। २-जो ढका न हो। अनाच्छन्न। ३-छूटा हुआ

विनिर्मुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोक्ष। उद्धार।

विनिर्मोक [वि.] (सं.) वस्त्ररहित। परिधानशून्य

विनिर्यान [संज्ञा पु.] (सं.) गमन। जाना।

विनिवर्त्तन [संज्ञा पु] (सं) लौटना।

विनिवर्त्तित [वि.] (सं.) लौटा हुआ।

विनिवर्त्ती [संज्ञा पु] (सं) लौटने वाला।

विनिवृत्त [वि] (सं) १-लौटा हुआ। २-रोका हुआ। ३-कार्यत्याग किया हुआ।

विनिवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-रोक। बन्दी। २-अन्त। समाप्ति।

विनिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवेश। घुसना।

विनिवेशन [संज्ञा पु.] (सं) १-घुसने का काम। २-अधिष्ठान। वास। रहायश।

विनिवेशित [वि.] (सं.) १-घुसा हुआ। प्रविष्ट २-अधिष्ठित। स्थापित। ३-बसा हुआ।

विनिवेशी [वि.] (सं.) [स्त्री. विनिवेशिनी] १-घुसने वाला। प्रवेश करने वाला। २-रहने वाला। बसने वाला।

विनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय में, विशेषतः किसी सभा समिति अथवा न्यायालय में, होने वाला निर्णय या निश्चय। *डिसीजन*।

विनिश्चल [वि.] (सं.) विशेष रूप से स्थिर।

विनिश्चायक [वि.] (सं.) विनिश्चय या निर्णय करने वाला। *डिसाइसिव*।

विनिश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) जोर से सांस। उसाँस। आह।

विनिष्कंप, विनिष्कम्प [वि] (सं.) कंपरहित।

विनिष्पात [संज्ञा पु.] (सं) आघात। चोट।

विनिष्पेष [संज्ञा पु] (सं) कुचलना। पीस डालना

विनिहत [वि] (सं) १-चोट खाया हुआ। २-

विनिष्ट । ३-मारा हुआ । मृत । ४-लुप्त ।

विनीत [वि] (सं.) [स्त्री विनीता] १-विनयी । सुशील । २-शिष्ट । नम्र । ३-धर्म या नीतिपूर्वक व्यवहार करने वाला । ४-जितेन्द्रिय । ५-संयमी । ६ ग्रहण किया हुआ । ७-हटाया हुआ । ८-लेगया हुआ । ९-शासित । १०-धार्मिक । ११-साफ-सुथरा । [संज्ञा पु] १-बनिया । वणिक् । २-निकाला हुआ घोड़ा । ३-दमनक । ४-पुलस्य के एक पुत्र का नाम ।

विनीतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विनीत होने का भाव । नम्रता ।

विनीति [संज्ञा स्त्री](सं) १-विनय । सुशीलता । २-सम्मान । ३-सद्व्यवहार ।

विनु※ [अव्य] (हिं) देखो 'विना' ।

विनुक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) प्रशंसा ।

विनूठा+ [वि](हिं) अनूठा । सुन्दर । बढ़िया ।

विनेता [संज्ञा पु] (सं) १-शिक्षक । २-शासनकर्त्ता ।

विनेत्र [संज्ञा पु.] (सं) शिक्षक ।

विनेयकार्य [संज्ञा पु] (सं) दंडकार्य । दंड देने का काम ।

विनोक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) वह काव्यालङ्कार जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है ।

विनोद [संज्ञा पु] (सं) १-कौतूहल । तमाशा । २ खेल-कूद । क्रीड़ा । ३-प्रमोद । परिहास । ४-प्रमोदगृह । ५ प्रसन्नता । हर्ष । ६ कामशास्त्रानुसार एक प्रकार का आलिंगन ।

विनोदन [संज्ञा पु] (सं) १-आमोद-प्रमोद करना । २-हँसी-दिल्लगी करना । ३-आनन्द करना ।

विनोदित [वि] (सं.) १-हर्षित । प्रसन्न । २-कुतूहलयुक्त ।

विनोदी [वि.] (हिं) [स्त्री विनोदनी] १-कुतूहल करने वाला । २-चुहलबाज । ३-आनंदी । ४-क्रीड़ाशील ।

विन्यस्त [वि] (सं.) १-रखा हुआ । स्थापित । २-यथास्थान बैठाया हुआ । जड़ा हुआ । ३-करीने से लगा हुआ । ४-डाला हुआ । क्षिप्त ।

विन्याक [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का पौधा जिसे बरियारा भी कहते हैं ।

विन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थापन । रखना । २-सजाना । रचना । ३-जड़ना । ४-किसी स्थान पर डालना ।

विपंची, विपञ्ची [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-एक प्रकार की वीणा । २-मुरली । बाँसुरी । [वि] जिससे मनोहर शब्द निकले ।

विपक्व [वि] (सं.) १-खूब पका हुआ । २-पूर्ण व्यवस्था को प्राप्त । ३-जो पका न हो । कच्चा

विपक्ष [संज्ञा पु](सं) १-विरोध या दूसरा पक्ष । २-विरोध या खण्डन । ३-शत्रुपक्ष । विरोधी । प्रतिद्वंद्वी । ४-विरोध । खंडन । ५-व्याकरण में किसी नियम के विरुद्ध व्यवस्था । ६-न्याय अथवा तर्कशास्त्र में वह पक्ष जिसमें साध्य का भाव हो । [वि] १-विरुद्ध । प्रतिकूल । २-उलटा । विपरीत । ३-जिसका कोई तरफ़दार न हो । ४-पक्षहीन ।

विपक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-विरुद्ध पक्ष का अवलंबन । २-विपक्ष होने की क्रिया या भाव । खिलाफ होना ।

विपक्षी [संज्ञा पु] (सं) १-वह जो विरुद्ध में हो । २-विरोधी । शत्रु । ३-प्रतिद्वंद्वी । ४-प्रतिवादी ।

विपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-दुःख । संकट । आफत । २-दुःख स्थिति या अवस्था । बुरे दिन । ३-कठिनाई । *विपत्ति उठाना*-संकट या कष्ट सहना । *विपत्ति काटना*-संकट के दिन बिताना । *विपत्ति झेलना*-कष्ट या शोक सहना (किसी पर) *विपत्ति डालना*-दुःख की अवस्था में करना ।
विपत्ति में पड़ना-शोक, दुःख या संकट की अवस्था को प्राप्त होना । *विपत्ति भुगतना या भोगना*-शोक दुख या संकट सहना । *विपत्ति मोल लेना*-स्वयं बखेड़े में पड़ना । *विपत्ति सिर पर लेना*-व्यर्थ संकट में पड़ना ।

विपत्ति-जनक [वि] (सं) जिससे विपत्ति उत्पन्न होती या हो सकती हो । डेनजरस ।

विपथ [संज्ञा पु] (सं) १-कुमार्ग । बुरा रास्ता । २-बगल वाला रास्ता । ३-बुरी चाल । ४-एक प्रकार का रथ ।

विपथगामी [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री विपथगामिनी] १-कुमार्गी । २-चरित्रहीन । बदचलन ।

विपद् [संज्ञा स्त्री.] (सं) विपत्ति । आफत ।

विपदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विपत्ति । आफत ।

विपन्न [वि] (सं) [स्त्री. विपन्ना] १-विपत्ति या मुसीबत में पड़ा हुआ । २-दुःखी । आर्त । ३-कठिनाई या झंझट में पड़ा हुआ । ४-भूला या भ्रम में पड़ा हुआ । ५-मृत ।

विपन्नता [संज्ञा स्त्री] (सं.) विपन्न का भाव । संकट । विपत्ति ।

विपराक्रम [वि] (सं) पराक्रमरहित ।

विपरिणाम [संज्ञा पु] (सं) १-परिवर्त्तन । २-रूपपरिवर्त्तन । रूपांतर ।

विपरिधान [संज्ञा पु] (सं.) परिधान या वस्त्र का अभाव ।

विपरिभ्रंश [संज्ञा पु] (सं.) विनाश ।

विपरिवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं) खूब घुमाना-फिराना ।

विपरीत [वि.] (सं) १-जो अनुकूल या हितसाधन में सहायक न हो । प्रतिकूल । विरुद्ध २-उलटा । [संज्ञा पु] १-एक अर्थालंकार जिसमें स्वयं साधक ही किसी कार्य की सिद्धि का बाधक दिखलाया जाता है । २-सोलह प्रकार के रतिबन्धों में से एक ।

विपरीतता [संज्ञा स्त्री] (सं) विपरीत होने का भाव ।

विपरीत-रति [संज्ञा स्त्री] (सं) वह संभोग क्रिया जिसमें पुरुष नीचे की ओर चित लेटा रहता है और स्त्री उस पर पट लेट कर संभोग करती है ।

विपरीता [संज्ञा स्त्री] (सं) दुश्चरित्रा स्त्री ।

विपरीतार्थ [वि] (सं) जिसका अर्थ उलटा हो ।

विपरीति [संज्ञा स्त्री] देखो 'विपरीत' ।

विपरीतोपमा [संज्ञा स्त्री] (सं) वह अलंकार जिसमें भाग्यवान व्यक्ति की हीनता वर्णन की जाय और वह हीन अवस्था में दिखाया जाय ।

विपर्ण [संज्ञा पु] (सं) एक साथ या आमने सामने लगी रसीदों आदि का वह बाहरी भाग जो भर कर किसी को दिया जाता है । आउटर-फायल ।

विपर्णक [वि] (सं) पूर्णरहित । बिना पत्तों का [संज्ञा पु] (सं) पलाश का पेड़ । टेसू ।

विपर्यय, विपर्य्यय [संज्ञा पु] (सं) १-एक वस्तु का दूसरी के स्थान पर और दूसरी का पहली के स्थान पर होना । उलटपलट । २-कुछ का कुछ समझना । भ्रम । ३-भूल । गलती । ४-उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि में आना । रिवर्शन । ५-गड़बड़ी । व्यवस्था

विपर्यस्त, विपर्य्यस्त [वि] (सं) १-जिसका विपर्यय हुआ हो । जो उलट-पलट गया हो । २-जिसे ठीक या मान्य न समझकर उलट या रद्द कर दिया गया हो । ओवररूल्ड ।

विपर्यास, विपर्य्यास [संज्ञा पु] (सं) १-विपर्यय । उलटपलट । व्यतिक्रम । २-एक वस्तु दूसरी वस्तु के स्थान पर होना । ३-और का और । ४-और का और समझना ।

विपल [संज्ञा पु] (सं) एक पल का ६० वाँ भाग

विपलायी [वि.] (हिं) भागने वाला ।

विपलाश [वि] (सं.) जिसके पत्ते न हो ।

विपवन [संज्ञा पु] (सं) साफ या विशुद्ध हवा । [वि](सं) विशेष रूप से पवित्र करने वाला

विपशी [संज्ञा स्त्री](सं.) एक बुद्ध का नाम ।

विपशु [वि] (सं.) पशुरहित ।

विपश्चित् [संज्ञा पु.] (सं.) पंडित । बुद्धिमान् ।

विपश्यन [संज्ञा पु] (सं) प्रकृत ज्ञान । यथार्थ बोध ।

विपश्यी [संज्ञा पु.] (सं) एक बुद्ध का नाम ।

विपस् [संज्ञा पु](सं) १-मेधा । बुद्धि । २-ज्ञान । समझ ।

विपांडु, विपाण्डु [संज्ञा पु.] (सं.) [illegible] लकड़ी ।

विपांडुरा, विपाण्डुरा [संज्ञा स्त्री] (सं) महामेदा।

विपाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिपक्व होना। पकना। २-पूरी अवस्था को पहुँचना। ३-परिणाम। फल। ४-पचना। ५-कर्मफल। ६-दुर्गति। दुर्दशा। ७-स्वाद। जायका।

विपाट [संज्ञा पु] (सं) एक प्रकार का बाण।

विपाटन [संज्ञा पु] (सं) उखाड़ना। खोदना।

विपाटल [वि] (सं) जिसका रङ्ग थोड़ा लाल हो

विपाटित [वि] (सं.) उखाड़ा हुआ।

विपाठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लम्बा तीर।

विपात [संज्ञा पु] (सं) नाश। बरबादी।

विपातक [संज्ञा पु] (सं) नाश करने वाला। नाशक।

विपातन [संज्ञा पु] (सं) १-गलाना। २-नाश करना।

विपादन [संज्ञा पु] (सं) वध। हत्या।

विपादिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-एक प्रकार का कुष्टरोग। २-प्रहेलिका। पहेली।

विपादित [वि] (सं) नष्ट किया हुआ।

विपाप [वि] (सं.) पापरहित।

विपाषा [संज्ञा स्त्री] (सं.) महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम।

विपाल [वि] (सं.) जिसका पालने वाला कोई न हो। बिना मालिक का।

विपाश [वि] (सं.) पाशरहित।

विपाशा, विपासा [संज्ञा स्त्री] (सं.) पंजाब की व्यासनदी का प्राचीन नाम।

विपिन [संज्ञा पु] (सं) १-वन। जङ्गल। २-उपवन। वाटिका। [वि.] भयानक। डरावना।

विपिनचर [संज्ञा पु](सं) १-वन में रहने वाला। २-जङ्गली आदमी। ३-पशु-पक्षी आदि।

विपिनतिलका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण नगण और दो रगण होते हैं।

विपिनपति [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह।

विपिनविहारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वन में विहार करने वाला। २-श्रीकृष्ण।

विपुंसक [वि] (सं.) जिसमें पुंसत्व या पुरुषत्व न हो।

विपुंसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुरुषों के समान स्वभाव चेष्टा या आकृति वाली स्त्री।

विपुत्र [वि.] (सं) (स्त्री. विपुत्रा) जिसके पुत्र ना हो। पुत्रहीन।

विपुल [वि.] (सं.) (स्त्री. विपुला) १-संख्या परिमाण आदि में बहुत अधिक। २-बृहत्। अगाध। [संज्ञा पु.] १-सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २-मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह के पास की एक पहाड़ी। ३-हिमालय। ४-एक देवी का प्रधान स्थान। ५-रोहिणी मे उत्पन्न वासुदेव के एक पुत्र का नाम।

विपुलक [वि.] (सं) १-बहुत चौड़ा। २-जिसे रोमांच या पुलक न हो।

विपुलता [संज्ञा स्त्री.](सं) आधिक्य। बहुतायत

विपुलपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं) एक पर्वत का नाम

विपुलमति [वि] (सं.) बहुत बुद्धिमान्। [संज्ञा पु] एक बोधिसत्व का नाम।

विपुलस्कंध, विपुलस्कन्ध [संज्ञा पु] (सं) अर्जुन का एक नाम।

विपुला [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पृथ्वी। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं। ३-आर्याछन्द के तीन भेदों में से एक जिसके पहले चरण में १८, दूसरे में १२, तीसरे में १४ और में १३ मात्राएँ होती हैं। ४-विपुल पर्वत की अधिष्ठात्री देवी। ५-बहुला नामक प्रसिद्ध सती।

विपुलाई* [संज्ञा स्त्री] (हिं) विपुलता। अधिकता।

विपुलास्रवा [संज्ञा स्त्री] (सं) घृतकुमारी। ग्वारपाठा।

विपुष्ट [वि] (सं) बड़ा पुष्ट या दृढ़।

विपुष्प [वि] (सं) बिना फूल का।

विपुष्पित [वि] (सं) हर्षित। प्रफुल्ल।

विपूय [संज्ञा पु.] (सं) मूंज। मुंजतृण।

विपोहना* [क्रि स] (हिं) १-पोतना। लीपना। २-नाश करना। ३-देखो 'पोहना'।

विप्र [संज्ञा पु] (सं) १-ब्राह्मण। २-पुरोहित। ३-वेद मंत्रों का ज्ञाता। ४-सिरिस का पेड़। ५-पीपल का पेड़। ६-पापर का पौधा। [वि] (सं) बुद्धिमान्।

विप्रकर्ष [संज्ञा पु.] (सं) दूर से खींच लेना।

विप्रकर्षण [संज्ञा पु.] (सं) १-दूर से खींचने की क्रिया। २-किसी कर्म या कृत्य का अंत।

विप्रकर्षणशक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) वह शक्ति जिससे परमाणु हटे रहते है।

विप्रकार [संज्ञा पु.] (सं) १-तिरस्कार। अनादर। २-उपकार। [अव्य.](सं.) विविध प्रकार से।

विप्रकाष्ठ [संज्ञा पु] (सं.) नरमा या कपास का पौधा।

विप्रकीर्ण [वि.] (सं.) १-बिखरा या छितरा हुआ। २-अस्तव्यस्त।

विप्रकृत [वि.] (सं.) तिरस्कार या अनादर किया हुआ।

विप्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विप्रकार।

विप्रकृष्ट [वि.] (सं.) १-खींच कर दूर किया हुआ २-जो दूरी पर हो।

विप्रचरण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु की छाती पर का भृगुमुनि की लात का चिह्न।

विप्रचित्, विप्रचित्ति [संज्ञा पु](सं) एक दानव जिसके पुत्र का नाम राहु था।

विप्रजन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण। पुरोहित।

विप्रता [संज्ञा स्त्री] (सं.) ब्राह्मणत्व।

विप्रतारक [वि.] (सं) बहुत धोखा देने वाला।

विप्रतिपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-विरोध। २-परस्पर विरुद्ध वाक्य। ३-किसी बात का बिलकुल उलटा निरूपण। ४-प्रसिद्ध का अभाव। ५-कुख्याति। बदनामी। ६-किसी कृत्य अथवा पूजन की वह विकृति जो प्रतिनिधि द्रव्य का नाम लेने से होता है।

विप्रतिपद्यमान [वि] (सं.) पापात्मा।

विप्रतिपन्न [वि.] (सं.) १-संदेहयुक्त। २-अस्वीकृत। ३-असिद्ध।

विप्रतिषिद्ध [वि] (सं) १-निषिद्ध। २-अस्वीकृत ३-निवारित। वर्जित।

विप्रतिषेध [संज्ञा पु] (सं) दो बातों का परस्पर विरोध। मेल न बैठना।

विप्रतिसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुताप। पछतावा। २-क्रोध।

विप्रतीप [वि] (सं) प्रतिकूल। विरुद्ध।

विप्रत्व [संज्ञा पु] (सं.) ब्राह्मणत्व।

विप्रथित [वि] (सं) विख्यात। मशहूर।

विप्रदुष्ट [वि] (सं.) १-पापरत। २-कामी। ३-मन्द। ४-नष्ट।

विप्रदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

विप्रधावन [संज्ञा पु.] (सं.) इधर-उधर तेज़ी से भागे फिरना।

विप्रधुक् [वि] (सं.) लाभप्रद। हितकर।

विप्रनष्ट [वि] (सं.) विशेष रूप से नष्ट।

विप्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विप्रचरण'।

विप्रपात [संज्ञा पु.] (सं) १-बिलकुल गिर जाना। २-ऊंचा ढालवाँ टीला। ३-खाई।

विप्रप्रिय [संज्ञा पु.] (सं) पलासवृक्ष।

विप्रबंधु, विप्रबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपने कर्म से च्युत ब्राह्मण। २-गोपायन गोत्रीय एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

विप्रबुद्ध [वि.] (सं.) १-जगा हुआ। २-ज्ञानप्राप्त।

विप्रमत्त [वि] (सं.) अति प्रमत्त।

विप्रमनस [वि.] (सं.) अन्यमनस्क। अनमना

विप्रमाथी [वि.](सं.) [स्त्री. विप्रमाथिनी] १-खूब मथन करने वाला। २-नष्ट करने वाला। ३-आकुल करने वाला।

विप्रमुक्त [वि.] (सं.) १-छुटकारा पाया हुआ। २-(गोली, गोला, तीर आदि) फेंका या चलाया हुआ।

विप्रमोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) मोक्ष। मुक्ति (जैन)।

विप्रयाण [संज्ञा पु.] (सं.) भागना। पलायन।

विप्रयुक्त [वि.] (सं.) १-वियोजित। अलगाया हुआ। २-बिछड़ा हुआ। ३-मुक्त किया हुआ। छोड़ा हुआ। ४-जिसका विभाग न हुआ हो।

विप्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पार्थिक्य। विलगाव २-(प्रेमियों का) वियोग। बिछोह। ३-झगड़ा। मनमुटाव।

विप्रराम [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम।

विप्रलंभ, विप्रलम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रिय वस्तु अथवा व्यक्ति का न मिलना। २-वियोग। विरह। ३-छल। धोखा। ४-धूर्त्तता। ५-बुरा काम।

विप्रलंभक, विप्रलम्भक [संज्ञा पु.] (सं.) धूर्त्त या धोखेबाज आदमी। वंचक।

विप्रलंभी [संज्ञा पु.] (सं.) धोखेबाज। धूर्त्त।

विप्रलब्ध [वि.] (सं.) १-जिसे चाही हुई वस्तु न मिली हो। २-जिसे प्रिय का समागम न प्राप्त हुआ हो। ३-प्रतारित।

विप्रलब्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो संकेत स्थान में प्रिय को न पाकर दुःखी होती है। वियोगिनी।

विप्रलय [संज्ञा पु.] (सं.) समूल नाश। विनाश

विप्रलाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यर्थ की बकबक। २-विवाद। झगड़ा। ३-बुरा वचन।

विप्रलीन [वि.] (सं.) बिखरा हुआ। इधर-उधर पड़ा हुआ।

विप्रलुंपक, विप्रलम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत लोभी या लालची। २-उत्पीड़क। ३-अधिक कर लेने वाला।

विप्रलुप्त [वि.] (सं.) १-अपहृत। जो उड़ा लिया गया हो। २-जिसके कार्य में विघ्न या बाधा डाली गई हो।

विप्रलोक [संज्ञा पु.] (सं.) व्याध। शिकारी।

विप्रलोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिलकुल लोप। २-नाश।

विप्रलोभी [वि.] (सं.) १-भारी लालची। २-ठग।

विप्रवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १ बुरे वचन। २-व्यर्थ बकवाद। ३-कलह। झगड़ा। विवाद।

विप्रवसित [वि.] (सं.) विदेश या परदेश गया-हुआ।

विप्रवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदेश या परदेश में रहना। २-संन्यास आश्रम में वह अपराध जो अपने कपड़े दूसरों को देने से होता है।

विप्रवीर [वि.] (सं.) बड़ा पराक्रमी।

विप्रव्रजनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो दो पुरुषों से सम्बन्ध रखती हो।

विप्रश्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रश्निक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री विप्रश्निका] दैवज्ञ। ज्योतिषी।

विप्रष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक यादव जो बलराम का छोटा भाई लगता था।

विप्रहरण [संज्ञा पु.] (सं.) फैलाना।

विप्रहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्याग। २-मुक्ति।

विप्रहीण [वि.] (सं.) रहित। विहीन।

विप्रिय [वि.] (सं.) १-अप्रिय। २-कटु। ३-अतिशय प्रिय। ४-वियोग। [संज्ञा पु.] अपराध। कसूर।

विप्रुप [संज्ञा पु.] (सं.) जलकण। बूँद। कतरा।

विप्रुद्धोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पूजन।

विप्रेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) भली प्रकार देखना।

विप्रेक्षित [वि.] (सं.) देखा हुआ।

विप्रेत [वि.] (सं.) जो बीत गया हो।

विप्रेषित [वि.] (सं.) बाहर भेजा हुआ।

विप्रोषित [वि.] (सं.) १-प्रवास में गया हुआ। २-अनुपस्थित।

विप्रोषित-भर्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी प्रवास में हो।

विप्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपद्रव। अशान्ति। २-विद्रोह। बलवा। ३-उथल-पुथल। हलचल ४-आफत। विपत्ति। ५-नदी आदि की बाढ़ ६-दूसरे राष्ट्र द्वारा उपस्थित अशान्ति। ७-विनाश। ८-डाँटडपट या भभकी। ९-नाव का डूबना। १०-वेदों के अपूर्ण ज्ञान द्वारा उनका निरादर। ११-घोड़े की बहुत तेज चाल

विप्लवी [वि.] (सं.) विप्लव या विद्रोह करने वाला।

विप्लाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी की बाढ़। २-घोड़े की बहुत तेज चाल।

विप्लावक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विप्लव या उपद्रव मचाने वाला। २-राज्य में उपद्रव खड़ा करने वाला। बलवाई। ३-जल की बाढ़ लाने वाला

विप्लावी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विप्लाविनी] १-उपद्रव करने वाला। २-जल की बाढ़ लाने वाला।

विप्लुत [वि.] (सं.) १-बिखरा हुआ। २-घबराया हुआ। ३-दुखी। व्यग्र। ४-पतित। भ्रष्ट। ५-नियम प्रतिज्ञा आदि से गिरा हुआ। ६-व्यसन या लत के कारण किसी वस्तु के अभाव में व्याकुल।

विप्लुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्रियों की योनि में पीड़ा रहने की व्याधि।

विप्लुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलचल। उपद्रव। विप्लव।

विप्लुष् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विप्रुट्'।

विप्सा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वीप्सा'।

विफल [वि.] (सं.) १-जिसमें फल न लगा या आया हो। २-जिसका कोई फल या परिणाम न निकला हो। व्यर्थ। निष्फल। ३-व्यक्ति जिसे प्रयत्न में सफलता न हुई हो। ४-विषय अथवा निश्चय। जो न होने के समा हो अथवा ऐसा कर दिया गया हो।

विफलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असफलता।

विफला [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-बिना फल के फलरहित। २-जिसका परिणाम या नतीजा कुछ न निकले। ३-जो प्रयत्न में कृतकार्य न हुई हो। [संज्ञा स्त्री.] केतकी।

विबंध, विबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब जकड़न २-कोष्ठबद्धता। मलावरोध। कब्जियत।

विबंधन, विबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार पेट, पीठ, छाती आदि के घाव अथवा फोड़े को कपड़े से विशेष रूप से बांधने की युक्ति या क्रिया।

विबंधवर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़ों के पेशाब बंद होने का एक रोग।

विबंधु, विबन्धु [वि.] (सं.) १-जिसके भाई-बन्धु न हों। २-अनाथ।

विबल [वि.] (सं.) १-बलरहित। २-दुर्बल अशक्त। ३-विशेष बलवान्।

विबाध [वि.] (सं.) बाधारहित।

विबुद्ध [वि.] (सं.) १-जागा हुआ। जाग्रत। २-विकसित। खिला हुआ। ३-ज्ञान प्राप्त सचेत।

विबुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धिमान जन। पंडित २-देवता। ३-चन्द्रमा। ४-शिव। ५-एक राजा का नाम।

विबुधतटिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

विबुधतरु [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

विबुधधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामधेनु।

विबुधपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

विबुधप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवी। भगवती।

विबुधविलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवांगना २-अप्सरा।

विबुधबेलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कल्पलता।

विबुधवैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

विबुधवन [संज्ञा पु.] (सं.) नन्दन कानन।

विबुधाकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

विबुधाधिप, विबुधाधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के राजा, इन्द्र।

विबुधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पंडित। आचार्य। २-देवता।

विबुधापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

विबुधावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-देव मन्दिर।

विबुधेतर [संज्ञा पु.] (सं.) असुर। दैत्य।

विबुधेश [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

विबोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागरण। जागना। २-अच्छा ज्ञान। ३-सचेत होना। सावधान होना। ४-होश में आना। ५-विकास। प्रफुल्लता।

विबोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जागना। २-आँख खोलना। ३-समझाना-बुझाना।

विबोधित [वि.](सं.) १-जगाया हुआ। २-ज्ञापित ३-विकसित।

विभंग, विभङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-गठन या रचना २-टूटना। ३-विभाग। ४-क्रम या परपरा का टूटना। ५-भौं की चेष्टा। ६-मुख का भाव या चेष्टा। ७-चोट या आघात से शरीर की कोई हड्डी टूटना। फ्रैक्चर।

विभंज, विभञ्ज [वि.] (सं.) १-टूटना। फूटना। २-ध्वंस। नाश।

विभक्त [वि.] (सं.) १-विभाजित। बँटा हुआ। २-अलग किया हुआ।

विभक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विभाजित या अलग होने की क्रिया या भाव। विभाग। २-अलगाव। पार्थक्य। ३-शब्द के आगे लगा-हुआ वह प्रत्यय अथवा चिह्न जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या सम्बन्ध है (व्याकरण)।

विभग्न [वि.] (सं.) १-टूटा-फूटा हुआ। २-अलग हुआ।

विभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन। सम्पत्ति। २-ऐश्वर्य। शक्ति। ३-सौंदर्य। ४-बहुतायत। आधिक्य। ५-मोक्ष। ६-साठ संवत्सरों में से एक।

विभव-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो किसी से उसकी धन-सम्पत्ति या वैभव के विचार लिया जाता हो। सरकमस्टैनसेज-टैक्स।

विभवमद [संज्ञा पु.](सं.) धन का मद या अहंकार

विभववान् [वि.] (सं.) [स्त्री. विभववती] १-धनी। अमीर। २-शक्तिशाली।

विभवशाली [वि.] (सं.) १-धनी। २-ऐश्वर्य वाला।

विभांडक, विभाण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

विभांडिका, विभाण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आहुल्यवृक्ष।

विभांडी, विभाण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीला-पराजिता।

विभाँति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रकार। भेद। किस्म। [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का। [अव्य.] (सं.) अनेक प्रकार से।

विभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रभा। चमक। दीप्ति २-प्रकाश। रोशनी। ३-किरण। रश्मि। ४-शोभा। सुन्दरता।

विभाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश वाला। २-सूर्य। ३-अग्नि। ४-राजा। ५-आक। मदार चित्रक (वृक्ष)।

विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। २-अंश। हिस्सा। ३-पुस्तक का प्रकरण। अध्याय। ४-सुभीते या प्रबन्ध के विचार से कार्य का अलग किया हुआ क्षेत्र। मुहकमा। डिपार्टमेंट। ५-पैतृक सम्पत्ति का अंश जो किसी को नियमानुसार दिया जाय।

विभागक [वि.] (सं.) विभाग करने वाला। बाँटने-वाला।

विभाग-भिन्न [संज्ञा पु.] (सं.) तक्र। छाछ।

विभागवत् [वि.] (सं.) विभाग के तुल्य।

विभागशः [क्रि. वि.] (सं.) विभाग के अनुसार

विभागात्मक-नक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिणी, आर्द्रा आदि आठ प्रकाशमय नक्षत्र।

विभागी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विभागिनी] १-विभाग करने वाला। २-विभाग या हिस्सा पाने वाला। हिस्सेदार।

विभाजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विभाग या टुकड़े करने वाला। २-बाँटने वाला। ३-गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या को भाग दें।

विभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विभाग करने या बाँटने की क्रिया या भाव। २-पात्र। बरतन

विभाजनीय [वि.] (सं.) विभाग करने या बाँटने योग्य।

विभाजित [वि.](सं.) जो बाँटा गया हो। विभक्त

विभाज्य [वि.](सं.) १-बाँट जाने के योग्य। २-विभाग करने योग्य।

विभात [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। सबेरा।

विभाति [संज्ञा पु.] (हिं.) शोभा। सुन्दरता।

विभाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-चमकना। झलकना। २-शोभा पाना। [क्रि. स.] १-चमकना। २-शोभित करना।

विभारना* [क्रि. अ] (हिं.) चमकना। झलकना

विभाव [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में रति आदि भावों को उनके आश्रय में उत्पन्न या उद्दीप्त करने वाली वस्तु या बात। रसविधान में भाव का उद्बोधक।

विभावन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विशेष रूप से चिंतन। २-किसी को देखकर यह कहना कि यह वही है। शिनाख्त। आइडेन्टिफिकेशन।

विभावन-पत्र [संज्ञा पु.](सं.) वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। आइडेन्टिटी-कार्ड।

विभावना [संज्ञा स्त्री] (सं) १-साहित्य में एक अर्थालङ्कार जिसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबंध होते हुए भी कार्य की सिद्धि, अथवा जो जिस कार्य का कारण नहीं नहीं हुआ करता, उससे उस कार्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति अथवा कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई जाती है। २-स्पष्ट धारणा या कल्पना। ३-निर्णय। ४-प्रमाण।

विभावनीय [वि.] (सं.) भावना या चिंतन करने योग्य।

विभावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात्रि। रात। २-वह रात जिसमें तारे चमकते हों। ३-हल्दी। ४-कुटनी। दूती। ५-बहुत बढ़-बढ़कर बोलने वाली स्त्री।

विभावरीश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

विभावसु [वि.] (सं.) जिसमें प्रकाश की अधिकता हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसुओं के एक पुत्र। २-सूर्य। ३-आक। मदार। ४-अग्नि ५-चित्रकवृक्ष। ६-चाँद। एक प्रकार का कंठहार। ७-नरकासुर के पुत्र का नाम। ८-एक ऋषि का नाम। ९-एक गंधर्व।

विभावित [वि.] (सं.) १-चिंतन किया हुआ। २-कल्पित। ३-निश्चित। ४-स्वीकृत।

विभाव्य [वि] (सं.) जिसके होने की आशा या संभावना हो। जो हो सकता हो। प्रोबेबुल।

विभाव्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विभाव्य का भाव

विभाषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संस्कृत व्याकरण में वे स्थल जहाँ ऐसे वचन पाये जाँय कि 'ऐसा न होता' तथा 'ऐसा हो भी सकता है'। २-विकल्प।

विभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-चमक। तेज। २-एक राग जो सवेरे गाया जाता है। ३-सप्तऋषियों में से एक। ४-एक देवयोनि।

विभासक [वि.] (सं.) [स्त्री. विभासिका] १-चमकने वाला। २-चमकाने वाला। ३-प्रकाशित करने वाला।

विभासना* [क्रि. अ.] (हिं.) चमकना। झलकना।

विभासिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] चमकने वाली

विभासित [वि.] (सं.) १-चमकता हुआ। २-प्रकट। जाहिर।

विभिन्न [वि.] (सं.) १-बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २-अनेक प्रकार का। ३-उलटा। ४-हताश। निराश। ५-कटा हुआ।

विभिन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्थक्य। अलगाव

विभीत [वि.] (सं.) डरा हुआ। [संज्ञा पु] (सं) बहेड़े का वृक्ष।

विभीतक [संज्ञा पु.] (सं.) बहेड़े का वृक्ष।

विभीति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-डर। भय। २-शंका। सन्देह।

विभीषक [वि] (सं) डराने वाला। भयानक।

विभीषण [वि] (सं) बहुत भयानक या डरावना [संज्ञा पु] (सं) १-रावण का भाई जिसे रामचन्द्रजी ने (रावण को मारकर) लंका का राजा बनाया था। २-नरसल का पौधा।

विभीषणा [वि.](सं.)(स्त्री. प्र.) डरावनी। भयानक। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक महूर्त का नाम।

विभीषिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-भयभीत करना डराना। २-भयानक कांड या दृश्य।

विभु [वि.](सं) १-सर्वव्यापक। २-बहुत बड़ा। महान्। ३-सदा बना रहने वाला। नित्य। ४-बलवान्। ५-चिरस्थायी। अचल। दृढ़। [संज्ञा पु.] १-ब्रह्म। २-आत्मा। ३-प्रभु। स्वामी। ४-ईश्वर। ५-शिव। ६-विष्णु। ७-भृत्य।

विभुक्ततु [वि.] (सं) शत्रु को डराने वाला।

विभुग्न [वि.] (सं.) कुछ टूटा हुआ।

विभुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सर्वव्यापकता। २-ऐश्वर्य। ३-प्रभुता। ४-अधिकार।

विभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अधिकता। बढ़ती २-विभव। ऐश्वर्य। ३-धन। सम्पत्ति। ४-दिव्य या अलौकिक शक्ति। ५-शिव के अंग में लगाने की राख या भस्म। ६-लक्ष्मी। ७-सृष्टि। ८-प्रभुत्व। बड़ाई। ९-एक दिव्यास्त्र जो राम को विश्वामित्र ने दिया था।

विभूतिमान [वि.] (सं.) (स्त्री. विभूतिमती) १-शक्तिसम्पन्न। २-धनवान्।

विभूमा [वि.] (सं.) शक्तिशाली। ऐश्वर्यवान्। [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

विभूरसि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि की एक मूर्त्ति

विभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूषण। गहना। २-गहनों आदि से सजाना। ३-मंजुश्री का एक नाम (बौद्ध)।

विभूषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गहनों आदि की सजावट। २-शोभा।

विभूषना* [क्रि. स.](हिं.) १-गहनों से सजाना २-सुशोभित करना।

विभूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गहनों आदि की सजावट। २-गहना। भूषण। ३-शोभा।

विभूषित [वि.] (सं.) १-अलंकृत। २-(अच्छी वस्तु, गुण आदि से)युक्त। सहित। ३-शोभित

विभूष्णु [वि.] (सं.) विभूतियुक्त। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विभूष्य [वि.] (सं.) १-सजाने योग्य। २-जिसे गहनों आदि से सजाना हो।

विभेंटन* [संज्ञा पु.] (हिं) गले मिलना। भेंटना

विभेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-विभिन्नता। अन्तर। फरक। २-अनेक भेद। कई प्रकार। ३-विशेष रूप से किया हुआ भेद या अलगाव। डिस्क्रिमिनेशन। ४-भेद न करना। ५-एक रूपता से अनेक रूपता की प्राप्ति। ६-कटाव। दरार। ७-मिश्रण।

विभेदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेदन करने वाला। २-एक से दूसरी में विशेषता प्रकट करने वाला। ३-बहेड़ा।

विभेदकारी [वि.](सं.) [स्त्री. विभेदकारिणी] १-काटने वाला। २-भेद या फरक करने वाला। ३-फूट डालने वाला।

विभेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काटना, छेदना या तोड़ना। २-धँसना। ३-काटकर दो या कई खंडों में करना। ४-अलग-अलग करना। ५-भेद या फरक दिखाना या डालना।

विभेदना* [क्रि. स.] (हिं.) १-भेद न करना। काटना। छेदना। २-प्रवेश करना। घुसना। ३-भेद या फरक डालना।

विभेदनीय [वि.] (सं.) १-भेदने, छेदने या काटने योग्य। २-प्रवेश करने योग्य। घुसने योग्य। ३-भेद या फरक डालने योग्य।

विभेदिनी [वि.] (सं) [स्त्री. प्र.] १-भेदने या छेदने वाली। २-घुसने वाली। ३-भेद या फरक करने वाली।

विभेदी [वि.] (सं) [स्त्री. विभेदिनी] १-काटने या छेदने वाला। २-धँसने वाला। ३-भेद या फरक करने वाला।

विभेद्य [वि.] (सं.) भेदने या छेदने योग्य।

विभो [संज्ञा पु.] (हिं.) हे प्रभु !

विभोर [वि.] (हिं.) १-विह्वल। विकल। २-मग्न लीन। ३-मत्त। मस्त।

विभौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विभव'।

विभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनाश। ध्वंस। २-पतन। अवनति। ३-ऊँचा कगार। ४-पहाड़ की चोटी के ऊपर का समतल मैदान।

विभ्रंशित [वि.] (सं.) १-विनष्ट। ध्वस्त। २-पतित।

विभ्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-भ्रमण। चक्कर। २-भ्रम। धोखा। ३-सन्देह। संशय। ४-घबराहट। अस्थिरता। ५-स्त्रियों का एक भाव जिसमें वे प्रियतम के आगमन आदि के समय हर्ष या अनुराग के कारण वस्त्राभूषण उलटे-पुलटे पहन लेती हैं। ६-शोभा।

विभ्रमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुढ़ापा।

विभ्रमी [वि.] (सं.) विभ्रमयुक्त।

विभ्रांत, विभ्रान्त [वि.] (सं.) १-भ्रम में पड़ा हुआ। २-घूमता या चक्कर खाता हुआ।

विभ्रांति, विभ्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चक्कर फेरा। २-भ्रम। सन्देह। ३-घबराहट।

विभ्राट् [संज्ञा पु.] (सं.) १-आपत्ति। संकट। २-उपद्रव। बखेड़ा। [वि.] प्रकाशमान्। दीप्तिमान्।

विमंडन, विमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गहनों से सजाना। २-शृङ्गार करना। ३-भूषण। गहना। अलंकार।

विमंडित, विमण्डित [वि.] (सं.) १-सजा हुआ। २-सुशोभित। ३-सहित। युक्त।

विमंथन, विमन्थन [संज्ञा पु.] (सं.) खूब मथना

विमत [संज्ञा पु.] (सं.) १-विपरीत सिद्धांत। २-विरुद्ध या विपक्ष में दिया जाने वाला मत। [वि.] विरुद्ध मत वाला।

विमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह मत जो विरुद्ध या विपक्ष में दिया जाय। डिसेन्ट। २-विचार। ३-अस्वीकृति। असम्मति।

विमत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) अधिक अहंकार या घमंड। [वि.] अहंकारशून्य।

विमद [वि.] (सं.) १-जो मतवाला न हो। मद-रहित। २-(वह हाथी) जिसके मद न हो।

विमन [वि.](सं.) १-अनमना। २-उदास। खिन्न

विमनस्क [वि.](सं.) १-अनमना। अन्यमनस्क। २-उदास।

विमन्यु [वि.] (सं.) १-क्रोधशून्य। २-शोक-रहित।

विमय [संज्ञा पु.] (सं.) अदल-बदल। विनिमय।

विमर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना। २-शरीर में उबटन करना। ३-स्पर्श। ४-नाश। बरबादी। ५-मुठभेड़। युद्ध। ६-सूर्य-चन्द्र का समागम। ७-ग्रहण।

विमर्दक [वि.](सं.) १-मर्दन करने वाला। मसल डालने वाला। २-चूर-चूर करने वाला। ३-ध्वस्त करने वाला।

विमर्दन [संज्ञा पु.](सं.) १-अच्छी तरह मसलना-दलना। २-कुचलना। पीस डालना। ३-नष्ट या बरबाद करना। ४-मार डालना। ५-पीड़ित करना। ६-स्फुरण। प्रस्फुटन।

विमर्दनीय [वि.] (सं.) मर्दन करने के योग्य।

विमर्दित [वि.](सं.) १-मला या दला हुआ। २-नष्ट किया हुआ। ३-पीड़ित। ४-अपमानित। ५-कुचला हुआ।

विमर्दी [वि.](सं.) [स्त्री. विमर्दिनी] १-अच्छी तरह मर्दन करने वाला। २-कुचलने या पीसने वाला। ३-नष्ट करने वाला। ४-वध करने वाला। मारने वाला।

विमर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी बात का विचार या विवेचन। २-आलोचना। समीक्षा। ३-परीक्षा। परखने का काम। ४-परामर्श। सलाह। ५-अधीरता। असंतोष।

विमर्शन [संज्ञा पु.](सं.) आलोचना या विवेचन करना।

विमर्श-संधि, विमर्श-सन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाट्यशास्त्र के अनुसार पाँच प्रकार की सन्धियों में से एक।

विमर्शी [वि.] (सं.) आलोचना या विवेचन करने वाला।

विमर्ष [संज्ञा पु] (सं) १-विचार या विवेचन। २-आलोचना। ३-परीक्षा। जाँच। ४-परामर्श। ५-नाटक की पाँच सन्धियों में से एक जिसमें बीज का अधिक विकास हो, परन्तु फल प्राप्ति से पहले

आदि के रूप में विघ्न होने लगते हैं। ६-नाटक का एक अंग। इसके अन्तर्गत अपवाद, संकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद, प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान और छादन का निरूपण होता है।

विमल [वि.] (सं.) [स्त्री. विमला] १-स्वच्छ। निर्मल। २-पवित्र। निर्दोष। ३-सुंदर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक उपधातु। २-चाँदी ३-गत उत्सर्पिणी के पाँचवें और वर्तमान अवसर्पिणी के तेरहवें तीर्थंकर (जैन)। ४-पद्मकाठ। ५-सेंधानमक। अबरक।

विमलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नग या मूल्यवान् पत्थर।

विमलकीर्ति [संज्ञा पु.](सं.) महायान पंथ के एक बौद्धाचार्य।

विमलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २-पवित्रता। ३-निर्दोषता। ४-सुन्दरता।

विमलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विमलता'।

विमलदान [संज्ञा पु.] (सं.) केवल ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए दिया हुआ दान। देवता का चढ़ावा।

विमलध्वनि [संज्ञा पु.](सं.) छः चरणों वाला एक छन्द जो एक दोहे तथा समान सवैया से मिलकर बनता है।

विमलमणि [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक।

विमला [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] निर्मल। स्वच्छ। [संज्ञा स्त्री.] १-सप्तला का वृक्ष। २-एक प्रकार की भूमि। ३-एक देवी का नाम। ४-सरस्वती।

विमलात्मा [वि.] (सं.) शुद्ध हृदय या मन वाला।

विमलापति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विमलादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

विमलार्थक [वि.] (सं.) स्वच्छ। साफ।

विमलाशोक [संज्ञा पु.](सं.) संन्यासियों का एक भेद।

विमलीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विमल या शुद्ध करने की क्रिया। २-मन में विचारकर ज्योतिमंत्र से तीनों मलों का नाश करना।

विमलोदका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

विमांस [संज्ञा पु.] (सं.) अशुद्ध, अपवित्र या न खाने योग्य मांस। जैसे-कुत्ते आदि का।

विमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह माता जो अपनी माँ के स्थान पर पिता के घर आये। सौतेली-माँ।

विमातृज [संज्ञा पु.] (सं.) सौतेला भाई।

विमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश मार्ग से गमन करने वाला रथ। उड़नखटोला। २-वायुयान। हवाई जहाज। ३-मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो धूमधाम से निकाली जाती है। ४-रथ। ५-घोड़ा। ६-सात खंड या मंजिल का मकान। ७-परिमाण। ८-अनादर। असम्मान।

विमान-केंद्र, विमान-केन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ से हवाई जहाज आक्रमण करने के लिए भेजे जाते हैं और आक्रमण करके फिर उसी स्थान पर लौट आते हैं। *एयरोप्लेन बेस*

विमान-चालक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो विमान या हवाई-जहाज चलाने का काम करता हो। *एयरमैन*।

विमानना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपमान। तिरस्कार

विमान-पत्तन [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ से हवाई जहाज उड़ान करते हैं और आकर उतरते हैं। हवाई अड्डा।

विमान-परिवहन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विमान-संचालन'।

विमान-पूर्वावधानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हवाई हमले से हिफाजत। *एयर प्रिकॉशन्स*।

विमानपोत [संज्ञा पु.] (सं.) हवाई जहाज।

विमान-प्रैष [संज्ञा पु.] (सं.) वह चिट्ठियां, पारसल आदि जो हवाई-जहाज द्वारा डाकखाने वाले एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजते हैं। हवाई-डाक। *एयरमेल*।

विमान-यातायात [संज्ञा पु.] (सं.) वायुयान या हवाई जहाज द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को (व्यक्ति, माल आदि) लेजाना। *एयर ट्रांसपोर्ट*।

विमान-बल [संज्ञा पु.](सं.) किसी राष्ट्र की हवाई शक्ति। *एयरफोर्स*।

विमान-रक्षा [संज्ञा स्त्री.](सं.) हवाई आक्रमण के समय किया जाने वाला बचाव। *एयरडिफेन्स*

विमान-वाहक, विमान-वाहक-पोत [संज्ञा पु.] (सं.) अनेक हवाई जहाजों को ले जाने वाला समुद्री जहाज जिसकी बहुत लम्बी-चौड़ी चौरस छत पर से हवाई जहाज दौड़ लगाकर उड़ सकते हैं। यह एक प्रकार का चलता फिरता हवाई अड्डा होता है। *एयरक्राफ्ट-कैरियर*।

विमान-वाहिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) राष्ट्र की हवाई शक्ति। हवाई सेना। *एयर फोर्स*।

विमान-वेधी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार की तोप जो हवाई जहाजों को गोला मार कर भूमि पर गिरा देती है। *एन्टी-एयरक्राफ्टगान*।

विमान-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र या पुस्तक जिसमें हवाई-जहाज बनाने या उसके कल पुरजे जोड़ने के संबंध में बातें लिखी होती हैं।

विमान-संचालन, विमान-सञ्चालन [संज्ञा पु.] (सं.) हवाई जहाज चलाने की विधि। *एयर-नेविगेशन*।

विमानाक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) वायुयानों द्वारा किसी नगर पर हवाई हमला। *एयर-रेड*।

विमानाक्रमण-चेतावनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) हवाई हमले की चेतावनी। *एयर-रेड-वार्निंग*।

विमानाक्रमण-शरण [संज्ञा पु.] (सं.) हवाई हमले के समय नागरिकों के छिपने के लिए बना हुआ रक्षा-स्थान। *एयर-रेड-शेल्टर*।

विमानाक्रमण-सूचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हवाई हमले के समय नगरवासियों को खतरे से सचेत हो जाने की सूचना। *एयर-रेड-अलार्म*

विमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १बुरा रास्ता। २-कदाचार। बुरी चाल। ३-झाड़ू।

विमित [संज्ञा पु.] (सं.) १-चार खंभों पर टकी हुई चौकोर शाला या इमारत। २-बड़ा कमरा [वि.] (सं.) जिसकी सीमा या हद हो। परिमित।

विमिश्र [वि.] (सं.) १-मिला हुआ। मिश्रित। २-मिला-जुला।

विमिश्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृगशिरा आर्द्रा, मघा और श्लेष नक्षत्र में बुध की गति का नाम।

विमिश्रित [वि.] (हिं.) १-मिलाया हुआ। २-मिलाजुला।

विमुक्त [वि.](सं.) १-अच्छी तरह मुक्त। २-जो बंधन से अलग हुआ हो। ३-स्वतन्त्र। स्वच्छन्द। ४-दंड आदि से बचा या छूटा हुआ। ५-त्यक्त। ६-बरी।

विमुक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विमोचन।

विमुक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-छुटकारा। रिहाई। २-मुक्ति। मोक्ष। ३-अभियोग से मुक्त होना या छूटना।

विमुख [वि.] (सं.) १-जिसके मुँह न हो। २-जिसने किसी से मुख मोड़ लिया हो। विरत ३-जो अनुरक्त न हो। ४-जो किसी के प्रतिकूल हो। विरुद्ध। ५ अप्राप्त मनोरथ। निराश ६-अप्रसन्न।

विमुखता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी बात से दूर रहना। विरति। विपरीतता। अप्रसन्नता

विमुग्ध [वि.] (सं.) १-मोहित। आसक्त। २-भ्रम में पड़ा हुआ। भ्रांत। ३-घबराया हुआ डराया हुआ। ४-मतवाला। ५-पागल। ६-बेसुध।

विमुग्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहित करने वाला २-एक प्रकार का छोटा अभिनय या नकल।

विमुग्धकारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विमुग्धकारिणी] १-मोहने वाला। २-भ्रम में डालने वाला।

विमुद [वि.] (सं.) उदास। खिन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) एक बड़ी संख्या का नाम।

विमूढ़ [वि.] (सं.) [स्त्री. विमूढ़ा] १-विशेष रूप से मुग्ध या मोहित। २-मोह या भ्रम में पड़ा ३-बेसुध। अचेत। ४-ज्ञान-रहित। ५-नादान मूर्ख। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की सङ्गीतकला।

विमूढ़गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) वह गर्भ जिसमें

बच्चा मरा या बेहोश हो।

विमूल [वि.] (सं.) १-बिना मूल या जड़ का। २-निर्मूल। ३-नष्ट। बरबाद।

विमूलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जड़ से उखाड़ना। २-ध्वंस। विनाश।

विमूल्यन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अवमूल्यन'।

विमृश्य [वि.] (सं.) १-आलोचना या समीक्षा के योग्य। २-जिस पर विवेचना या विचार करना हो।

विमृष्ट [वि.] (सं.) १-जिस पर तर्क-वितर्क या सम्यक् विचार न हुआ हो। २-जिसकी पूरी आलोचना या समीक्षा हुई हो। ३-परिच्छन्न

विमोक [वि.] (सं.) १-मलरहित। रागरहित। २-ऊपरी आवरणरहित। ३-स्पष्ट। साफ। [संज्ञा पु.] मुक्ति। रिहाई।

विमोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्त करने वाला।

विमोक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-बन्धन या गाँठ आदि का खुलना। २-मुक्ति। छुटकारा। रिहाई। ३-जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति। निर्वाण। ४-ग्रहण का हटना। उग्रह। ५-प्रक्षेपण। ६-मेरुपर्वत का एक नाम।

विमोक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ति देने वाला।

विमोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बंधन आदि खोलना। २-मुक्त करना। प्रक्षेपण।

विमोघ [वि.] (सं.) न चूकने वाला। अमोघ।

विमोचक [वि.] (सं.) १-मुक्त करने वाला। २-बन्धन खोलने वाला। ३-छोड़ने वाला।

विमोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्धन आदि से छूटना या छोड़ना। २-संतोषजनक प्रमाण के अभाव में अभियुक्त का अभियोग से मुक्त होना। *एक्विटल*। ३-किसी आवर्त्तक भार या देन से छूटने के लिये एक ही बार में कुछ इकट्ठा धन दे देना। *रिडम्पशन*। ४-गाड़ी से बैल आदि को खोलना। ५-निकालना। बाहर करना। ६-गिराना। ढालना।

विमोचनभार [संज्ञा पु.] (सं.) वह भार या उत्तरदायित्व जो देन से छुटकारा पाने के लिये लिया जाय। *रिडम्पशन-चार्ज*।

विमोचना* [क्रि. स.] (हिं.) १-बन्धन आदि खोलना। २-छुटकारा देना। ३-निकालना। ४-गिराना। टपकाना।

विमोचनीय [वि.] (सं.) छोड़ने योग्य।

विमोचित [वि.] (सं.) १-खुला हुआ। २-मुक्त किया हुआ।

विमोच्य [वि.] (सं.) १-छोड़ने या मुक्त करने योग्य। २-जिसे छोड़ना, खोलना या मुक्त करना हो।

विमोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोह। अज्ञान। २-बेहोशी। ३-एक नाटक का नाम।

विमोहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहित या मुग्ध करने वाला। लुभावना। २-ललचाने वाला। ३-ज्ञान या सुध हरने वाला। ४-एक राग।

विमोहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहित या मुग्ध करना। २-दूसरे का मन वश में करना। ३-सुधबुध भूलना। ४-कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ५-एक नरक का नाम।

विमोहनशील [वि.] (सं.) १-धोखा देने वाला। २-लुभाने वाला।

विमोहना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मोहित होना। २-बे-सुध होना। ३-धोखे में आना। [क्रि. स.] (हिं.) १-मोहित करना। लुभाना। २-बेसुध करना। ३-धोखे में डालना।

विमोहा [संज्ञा स्त्री.] (?) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं।

विमोहित [वि.] (सं.) १-मुग्ध। लुभाया हुआ। २-तनमन की सुध भूला हुआ। ३-मूर्च्छित।

विमोही [वि.] (सं.) [स्त्री. विमोहिनी] १-मोहित करने वाला। २-सुधबुध भुलाने वाला। ३-मूर्च्छित या बेहोश करने वाला। ४-भ्रम में डालने वाला। ५-निष्ठुर। कठोर हृदय।

विमौट [संज्ञा पु.] (हिं.) वल्मीक। बाँबी।

विमौन [वि.] (सं.) मौनरहित।

विमौली [वि.] (सं.) शिरोभूषारहित।

वियंग* [वि.] (हिं.) शिव।

विय* [वि.] (हिं.) १-दो। जोड़ा। २-दूसरा।

वियत* [संज्ञा पु.] (हिं.) आकाश।

वियत् [संज्ञा पु.](सं.) १-आकाश। २-वायुमंडल [वि.] (सं.) गमनशील।

वियत्पताका [संज्ञा स्त्री.](सं.) बिजली। विद्युत्

वियद्ग [वि.] (सं.) आकाशगामी।

वियद्गंगा, वियद्गङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

वियद्भूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंधकार।

वियन्मणि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

वियम [संज्ञा पु.] (सं.) १-संयम। २-दुःख। ३-यातना।

वियात [वि.] (सं.) १-पथभ्रष्ट। २-गया। बीता। ३-निर्लज्ज। बेहया।

वियाम [संज्ञा पु.] (सं.) संयम। इन्द्रियनिग्रह।

वियुक्त [वि.] (सं.) १-जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २-अलग। ३-रहित। *माइनस*।

वियुग्म [वि.] (सं.) १-जो युग्म या जोड़ा न हो। अकेला। २-जिसे दो से भाग देने पर एक बचे। ३-जो साधारण, निश्चित या स्वाभाविक से कुछ भिन्न और अलग हो। विलक्षण। अनोखा। ऑड।

वियुत [वि.] (सं.) १-अलग। २-रहित।

वियो* [वि.] (हिं.) दूसरा। अन्य।

वियोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलग होना। २-प्रिय व्यक्ति से मिलन न होना। ३-प्रिय से अलग होने का दुःख। विरह। ४-घटा या कम किया जाना।

वियोगांत, वियोगान्त [वि.] (सं.)(ऐसा नाटक या उपन्यास आदि) जिसकी कथा का अन्त दुःखपूर्ण हो।

वियोगिन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'वियोगिनी'।

वियोगिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जो अपने नायक या प्रेमी से बिछुड़ी हुई हो।

वियोगी [वि.] (सं.) [स्त्री वियोगिनी] जो अपनी प्रेमिका या पत्नी से बिछुड़ा हुआ हो। विरही। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरही व्यक्ति। २-चकवा।

वियोजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथक या अलग करना। २-गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी संख्या में से घटाना हो।

वियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु के संयोजक अंगों को या कुछ मिले तत्वों को अलग करना। २-युद्ध काल में बढ़ाये हुए सैनिकों को सैनिक सेवा से हटाना। *डिमॉबिलाइजेशन*। ३-गणित में बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने की क्रिया। बाकी।

वियोजनीय [वि.] (सं.) वियोजन के योग्य।

वियोजित [वि.] (सं.) १-पृथक या अलग किया हुआ। २-रहित। शून्य।

वियोज्य [वि.] (सं.) १-वियोजन के योग्य। २-जिसे अलग या जुदा करना हो। [संज्ञा पु.] गणित में वह संख्या जिसमें से कोई संख्या घटनी हो।

विरंग [वि.] (हिं.) १-बुरे रङ्ग का। बदरंग। २-अनेक रंगों का। कई वर्णों का।

विरंगकाबुली [संज्ञा पु.] (फा.) बायविडंग।

विरंच, विरञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

विरंचि, विरञ्चि [संज्ञा पु.] (सं.) सृष्टि रचने वाला, ब्रह्मा।

विरंचिसुत, विरञ्चिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विरंजन, विरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु में के सब रंग निकल जायें रंगों से रहित करना। २-धोकर साफ करना *ब्लीचिंग*।

विरंजनफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान

विरक्त [वि.] (सं.) १-विमुख। २-उदासीन। ३-अप्रसन्न। खिन्न। [संज्ञा पु.] ऐसे बाजे जो केवल ताल देने के काम में आते हैं।

विरक्तता [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरक्त होने का भाव। २-उदासीनता।

विरक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विराग। विमुखता। २-उदासीनता। ३-अप्रसन्नता। खिन्नता।

विरचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रचने या बनाने का

काम। निर्माण। २-तैयारी।

विरचना* [क्रि. स.] (हिं.) १-निर्माण करना। बनाना। २-सजाना। [क्रि. अ.](हिं.) विरक्त होना।

विरचनीय [वि.] (सं.) जो रचने या बनाने को हो।

विरचयिता [संज्ञा पु.](सं.) रचने या बनाने वाला।

विरचित [वि.] (सं.) १-बनाया या रचा हुआ। निर्मित। २-रचा हुआ। लिखित।

विरज [वि.] (हिं.) १-सुख-वासना आदि से मुक्त। २-निर्मल। स्वच्छ। साफ। ३-निर्दोष। बे-ऐब। ४-जिसका रजोधर्म बंद हो गया हो [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

विरजप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

विरजमंडल, विरजमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम जो उड़ीसा में है।

विरजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कपित्थानी का पौधा। २-श्रीकृष्ण की एक प्रेमिका सखी।

विरजाच [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जो मेरु के उत्तर की ओर है।

विरजाक्षेत्र [संज्ञा पु.](सं.) उड़ीसा का एक तीर्थ-स्थान।

विरट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंधा। २-अगर का पेड़।

विरण [संज्ञा पु.] (सं.) वारिन या वीरन नामक घास।

विरत [वि.](सं.) १-जो अनुरक्त न हो। विमुख। २-जो काम छोड़कर अलग हो गया हो। निवृत्त। ३-विरक्त। वैरागी। ४-कार्य, पद, सेवा आदि से हटा हुआ। रिटायर्ड। ५-बिलकुल लीन।

विरति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनुराग या चाह का अभाव। २-उदासीनता। ३-विरत होने की क्रिया या भाव। ४-कार्य, पद, सेवा आदि से अलग होना। रिटायर्डमेंट।

विरथ [वि.](सं.) १-जिसके पास रथ या सवारी न हो। २-रथ से गिरा हुआ। ३-पैदल।

विरथीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु का युद्ध में रथ नष्ट करके उसे बिना रथ का कर देना।

विरद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ा नाम। २-ख्याति प्रसिद्धि। यश। कीर्ति। [वि.] (सं.) बिना दाँत का।

विरदावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यश या कीर्ति की गाथा। प्रशंसा के गीत।

विरदैत* [वि.](हिं.) बड़े नाम वाला। कीर्ति या यश वाला।

विरमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकना। ठहरना। २-रम जाना।

विरमना* [क्रि. अ.](हिं.) १-अनुरक्त हो जाना। २-ठहरना। रुकना। ३-मोहित होकर रुक जाना। ४-वेग आदि का थमना या कम होना।

--देखो 'विलखना'।

विरमाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-अनुरक्त करना। २-मोहित करके रोकना। ३-फंसा रखना। ४-भुलावे में रखना। ५-देखो 'विलंबाना'।

विरल [वि.](सं.) १-जो घना न हो। २-जो पास-पास न हों। ३-जो अधिकता से न मिले। दुर्लभ। ४-जो गाढ़ा न हो। पतला। ५-शून्य निर्जन। ६-अल्प। थोड़ा।

विरलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतलापन।

विरलिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का महीन या झीना वस्त्र। जो प्राचीनकाल में होता था।

विरलीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) सघन को विरल करना।

विरव [वि.] (सं.) शब्दरहित। नीरव। [संज्ञा पु.] अनेक प्रकार के शब्द।

विरस [वि.] (सं.) १-नीरस। फीका। २-अप्रिय। अरुचिकर। ३-(वह काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हुआ हो। [संज्ञा पु.] काव्य में रस-भंग।

विरसता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीरसता। फीकापन। २-रसभंग। मजा किरकिरा होना।

विरह [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी से रहित या अलग होने का भाव। २-वियोग। जुदाई। ३-वियोग का दुःख। [वि.] रहित। शून्य। बगैर।

विरहा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गीत जिसे अहीर गड़रिये गाते हैं।

विरहिणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसे अपने प्रिय या पति का वियोग हो।

विरहित [वि.] (सं.) रहित। शून्य। बिना।

विरही [वि.] (हिं.) वियोगी।

विरहोत्कंठिता, विरहोत्कण्ठिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जिसका दृढ़ विश्वास हो कि उसका पति या नायक अमुक समय में आवेगा परन्तु कारणवश वह न आवे।

विराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुचि या इच्छा का अभाव। २-उदासीन भाव। ३-वैराग्य। ४-एक में मिले हुए दो राग।

विरागित [वि.] (सं.) विरागयुक्त।

विरागी [वि.] (हिं.) १-जिसे चाह न हो। उदासीन। २-संसार त्यागी। विरक्त।

विराजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शोभित होना। २-वर्त्तमान होना। रहना।

विराजना [क्रि. अ.](हिं.)१-शोभित होना। फबना २-बैठना। ३-विद्यमान होना (आदर-सूचक)

विराजमान [वि.] (सं.) १-प्रकाशमान। चमकता हुआ। २-उपस्थित। मौजूद। ३-बैठा हुआ।

विराजित [वि.] (सं.) सुशोभित। २-प्रकाशित। विद्यमान। उपस्थित।

विराट् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वरूप ब्रह्म। २-विश्व। ३-क्षत्रिय। ४-कांति। दीप्ति। [वि.] बहुत बड़ा या बहुत भारी।

विराट्स्वराज [संज्ञा पु.] (सं.) एक दिन में होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

विराट [संज्ञा पु.] (सं.) १-मत्स्य देश। २-इस देश के राजा जिनके यहाँ अज्ञातवास के समय पांडव नौकरी करते थे। ३-महाभारत का एक पर्व। ४-संगीत में एक ताल का नाम

विराटक [संज्ञा पु.] (सं.) राजपट्ट। राजवर्त्त। घटिया हीरा।

विराटज [संज्ञा पु.] (सं.) कम मूल्य का हीरा। घटिया हीरा।

विराणी [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

विरातक [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुनवृक्ष।

विराध [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोध। २-अपमान। छेड़छाड़। ३-एक बलवान राक्षस जिसे श्रीरामचन्द्र ने दण्डकवन में मारा था।

विराधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनिष्ट या अपकार करना। २-तंग करना।

विराम [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकना। ठहरना। २-विश्राम। ३-वाक्य में वह स्थान जहाँ बोलते समय कुछ काल ठहरना पड़ता है। ४-छन्द के चरणों में वह स्थान जहां पढ़ते समय कुछ काल के लिये ठहरना पड़े। यति। ५-पद, सेवा, कार्य आदि से अवकाश ग्रहण करना। रिटायरमेंट।

विराम-काल [संज्ञा पु.] (सं.) वह समय या छुट्टी जो विराम करने या सुस्ताने के लिये मिलती है। वैकेशन।

विराम-चिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) लेख, छापे आदि में प्रयुक्त होने वाले वे विशिष्ट चिह्न जो कई प्रकार के विरामों के सूचक होते हैं। पंक्चुएशन। जैसे—, ; — . आदि।

विरामब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक।

विराम-संधि, विराम-सन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सन्धि जो अन्तिम अथवा पक्की सन्धि होने से पहले उसकी शर्तें तै करने के लिये होती हैं। ट्रूस।

विराल [संज्ञा पु.] (सं.) बिड़ाल। बिल्ली।

विराव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द। बोली। कलरव। २-हल्लागुल्ला। [वि.] शब्दरहित।

विराविणी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-शब्द करने वाली। २-रोने चिल्लाने वाली। [संज्ञा स्त्री.] झाड़ू।

विरावी [वि.] (सं.) [स्त्री. विराविणी] १-बोलने वाला। २-रोने-चिल्लाने वाला।

विरास* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विलास'।

विरासत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वरासत'।

विरासी* [वि.] (हिं.) देखो 'विलासी'।

विरिंचि, विरिञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-

विष्णु । ३-शिव ।

विरिंचन, विरिञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

विरिक्त [वि.](सं.) १-जिसे विरेचन दिया गया हो । २-जिसे दस्त आ रहे हों ।

विरुख [वि.] (हिं.) देखो 'बेरुख' ।

विरुज [वि.] (सं.) निरोग । स्वस्थ ।

विरुझना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'उलझना' ।

विरुत [वि.] (सं.) कूजित । रवयुक्त । गूँजता-हुआ ।

विरुद [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजाओं की स्तुति या प्रशंसा । यश वर्णन । प्रशस्ति । २-प्राचीन राजाओं की कीर्त्तिसूचक पदवी । ३-यश ।

विरुदावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुण, पराक्रम, उदारता आदि का विस्तार-पूर्वक होने वाला वर्णन । २-गुणावली ।

विरुद्ध [वि.] (सं.) १-प्रतिकूल । खिलाफ । २-अप्रसन्न । ३-अनुचित । ४-विपरीत । [क्रि. वि.] प्रतिकूल स्थिति में । खिलाफ ।

विरुद्धकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरुद्ध कर्म करने वाला । विपरीत या बुरे आचरण का मनुष्य । २-श्लेष अलङ्कार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाये जाते है ।

विरुद्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विरुद्ध होने का भाव । २-विपरीतता । उलटापन ।

विरुद्धरूपक [संज्ञा पु.] (सं.) रूपक अलङ्कार का एक भेद जिसमें कही हुई कोई बात देखने में असंबद्ध जान पड़ती हैं । परन्तु विचार करने पर संगत ठहराती है ।

विरुद्धहेत्वाभास [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में वह हेत्वाभास जहाँ साध्य के साधक होने के स्थान पर साध्य के अभाव का साधक हेतु हो

विरुद्धार्थदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक अलङ्कार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है ।

विरुधिर [वि.] (सं.) जिसमें रुधिर या रक्त का अभाव हो ।

विरूक्ष [वि.] (सं.) जो रूखा न हो ।

विरूक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रूखा करने की क्रिया । २-कब्ज पैदा करने वाला । ३-कलंक । भर्त्सना । ४-शाप ।

विरूढ़ [वि.] (सं.) १-चढ़ा हुआ । आरूढ़ । २-उगा हुआ । ३ बीज से फूटा हुआ । अंकुरित । ४-खूब गड़ा या धँसा हुआ ।

विरूढ़क [संज्ञा पु.](सं.) १-इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम । २-एक राजा का नाम जो शल्यवंश का था । ३-एक लोकपाल का नाम ।

विरूढ़िनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैशाखकृष्णा-एकादशी ।

विरूप [वि.](सं.) [स्त्री. विरूपा] १-अनेक रंग-रूपों का । २-कुरूप । भद्दा । ३-परिवर्त्तित । ४-शोभा-हीन । वि-श्री । ५-विरुद्ध । ६-बिलकुल भिन्न । [संज्ञा पु.] पिपरामूल ।

विरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विरूप होने का भाव । २-कुरूपता । ३-भद्दापन । बे-ढंगापन

विरूप-परिणाम [संज्ञा पु.] (सं.) एकरूपता से अनेकरूपता । एक मूलप्रकृति से अनेक विकृतियों की ओर गति ।

विरूपा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] कुरूप । बदसूरत । [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दुरालभा । २-अतिविषा ३-यम की स्त्री का नाम ।

विरूपाक्ष [वि.] (सं.) जिसकी आंखे भद्दी या डरावनी हों । [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव । २-शिव के एक गण का नाम । ३-रावण का एक सेनानायक । ४-एक दैत्य जिसे सुग्रीव ने राम-रावण युद्ध में मारा । ५-रावण के एक मन्त्री का नाम । ६-एक नाग । ७-एक दिग्गज ।

विरूपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुरूप स्त्री ।

विरूपी [वि.] (हिं.) [स्त्री. विरूपिणी] १-कुरूप । २-भयंकर या डरावनी सूरत वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) गिरगिट ।

विरेक [संज्ञा पु.] (सं.) विरेचन । जुलाब ।

विरेचक [वि.] (सं.) दस्तावर ।

विरेचन [संज्ञा पु.](सं.) १-दस्तावर दवा । जुलाब २-दस्त लाना । ३-निकालना ।

विरेचित [वि.] (सं.) दस्त कराये हुए ।

विरेच्य [वि.](सं.) जो दस्तावर दवा देने के योग्य हो ।

विरेफ [संज्ञा पु.] (सं.) १-नदी । जलस्रोत । २-'र' ।

विरोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चमक । दीप्ति । २-रश्मि । किरन । ३-छिद्र । छेद । ४-चन्द्रमा । ५-विष्णु ।

विरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-चन्द्रमा । ३-अग्नि । ४-प्रह्लाद के पुत्र और राजा बलि के पिता का नाम । ५-सूर्य की किरण । ६-आक । मदार । ७-रोहितवृक्ष । ८-श्योनाक-वृक्ष । ९-करंज का पेड़ । रश्मि । किरण । १०-छिद्र । छेद । ११-चमकना । १२-प्रकाशमान ।

विरोचन-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) राजा बलि ।

विरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल न होना । विपरीत भाव । २-शत्रुता । बिगाड़ । ३-दो विपरीत बातें का एक साथ न हो सकना । व्याघात ४-किसी कार्य को रोकने के लिए अथवा उसके विपरीत प्रयत्न । ५-भिन्न-भिन्न विचारों या तथ्यों में होने वाला पारस्परिक विपरीत भाव रिपग्नेन्सी । ६-उलटी स्थिति । ७-नाश । ८-नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है । ९-एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है ।

विरोधक [वि.] (सं.) विरोध करने वाला । [संज्ञा पु.](सं.) नाटक में वह विषय जिसका वर्णन निषिद्ध हो ।

विरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोध करना । २-नाश । बरबादी । ३-नाटक में विमर्श का एक अङ्ग जो उस समय होता है जब किसी कारण से कोई कार्य नाश होता हुआ दिखाया जाता है ।

विरोधना* [क्रि. स.] (हिं.) विरोध, शत्रुता या लड़ाई करना ।

विरोधपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) विधायिका सभाओं आदि में वे आसन जिन पर राजकीय पक्ष या बहुमत दल के विरोधी लोग बैठते है । अपोजीशन बेंचज ।

विरोधाचरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खिलाफ कार्रवाई । २-शत्रुता का व्यवहार ।

विरोधाभास [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो बातों में दीख पड़ने वाला विरोध । २-एक अर्थालङ्कार जिसमें जाति, गुण, क्रिया आदि का विरोध दिखाया जाता है ।

विरोधित [वि.] (सं.) जिसका विरोध किया हुआ हो ।

विरोधिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विरोध । वैर । शत्रुता । २-फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि ।

विरोधिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-विरोध करने वाली । २-विरोध या झगड़ा करने वाली ।

विरोधी [वि.] (हिं.) १- विरोध करने वाला । २-विपक्षी । ३-शत्रु । बैरी । [संज्ञा पु.] (सं.) साठ संवत्सरों में से एक ।

विरोधीश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) श्लेष-अलंकार का एक भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है ।

विरोधोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उपमालंकार का एक भेद जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है ।

विरोध्य [वि.] (सं.) १-विरोध के योग्य । २-जिसका विरोध करना हो ।

विरोपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लेपन । लेस करना । २-लीपना-पोतना । ३-जमीन में पौधा लगाना

विरोपणीय [वि.] (सं.) १-(पौधा) जो रोपने या लगाने को हो । २-लीपने या पोतने को हो ।

विरोपित [वि.] (सं.) पौधा जो रोपा या लगाया हुआ ।

विरोम [वि.] (सं.) बिना रोम या रोएँ का ।

विरोष [वि.] (सं.) रोष या क्रोध का अभाव ।

विरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान में लगाना।

विरोहणीय [वि.] (सं.) जो विरोहण के योग्य हो।

विरोहित [वि.] (सं.) एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया हुआ।

विरोही [वि.] (हिं.) [स्त्री. विरोहिणी] रोपनेवाला। पौधा लगाने वाला।

विरौनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बाजरा, कोदों आदि की एक प्रकार की जोताई जो उनके पौधे कुछ ऊंचे होने पर की जाती है।

विर्त्ति+ [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वृत्ति'।

विलंघन, विलङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कूद कर पार करने की क्रिया। लाँघकर पार करना। २-किसी वस्तु के भोग से अपने को वंचित रखना।

विलंघनीय, विलङ्घनीय [वि.] (सं.) १-लाँघने या पार करने योग्य। २-परातत करने योग्य।

विलंघित, विलङ्घित [वि.] (सं.) १-परास्त किया हुआ। २-जो विफल हुआ हो।

विलंघ्य, विलङ्घ्य [वि.] (सं.) १-पार करने योग्य। २-परास्त होने योग्य। ३-करने योग्य। सहज।

विलंब, विलम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत काल साधारण या नियत से अधिक समय। देर। अतिकाल।

विलंबन, विलम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विलंब या देर करना। २-लटकना। टँगना। ३-सहारा पकड़ना। टेकना।

विलंबना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-देर करना। २-लटकना। ३-सहारा लेना। ४-देखो 'विरमना'।

विलंबिका, विलम्बिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रोग। कोष्ठबद्धता। कब्जियत।

विलंबित, विलम्बित [वि.] (सं.) १-लटकता हुआ। २-जिसमें विलंब या देर हुई हो। ३-देर लगाकर और मन्दगति से गाया जानेवाला (गाना)। [संज्ञा पु.] वह पशु जो चलने में सुस्त हो। जैसे-हाथी, गैंड़ा, भैंस आदि।

विलंबितगति, विलम्बितगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।

विलंबिता, विलम्बिता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] देर करने वाली।

विलंबी, विलम्बी [वि.] (सं.) [स्त्री. विलंबिनी] देर करने वाला।

विलंभ, विलम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदारता। २-दान। ३-उपहार। भेंट।

विल [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिद्र। २-कंदरा।

विलक्ष [वि.] (सं.) १-आश्चर्यचकित। २-लज्जित ३-व्यस्त। घबराया हुआ।

विलक्षण [वि.] (सं.) १-अद्भुत। अनोखा। २-असाधारण।

विलक्षणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विलक्षण होने का भाव। अपूर्वता। अनोखापन।

विलखना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दुखी होना। बिलखना। २-*पता पाना। ३-देखना।

विलखाना [क्रि. स.] (हिं.) विकल करना। बिलखाना।

विलग [वि.] (हिं.) अलग। पृथक। [संज्ञा पु.] (हिं.) अंतर। फरक। भेद।

विलगाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अलग या पृथक् होना। २-विभक्त या अलग दिखाई देना। [क्रि. स.] (हिं.) अलग या पृथक् करना। बिलगाना।

विलग्न [वि.] (सं.) १-चिपटा हुआ। लगा हुआ। २-घुमाया हुआ। ३-बीता हुआ। ४-पतला। नाजुक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमर। २-कूल्हा। ३-नक्षत्रोदय।

विलच्छण+ [वि.] (हिं.) देखो 'विलक्षण'।

विलज्ज [वि.] (सं.) निर्लज्ज। बेशर्म। बेहया।

विलपन [संज्ञा पु.] (सं.) विलाप। रुदन।

विलपना* [क्रि. अ.] (हिं.) विलाप करना। रोना

विलपाना* [क्रि. स.] (हिं.) रुलाना।

विलपित [वि.] (सं.) विलाप करते हुए।

विलब्ध [वि.] (सं.) १-दिया हुआ। २-अलग किया हुआ।

विलम* [क्रि. अ.] (हिं.) देर। अबेर। विलंब।

विलमना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिलमना'।

विलय, विलयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लव या लीन होना। २-एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर समा जाना। ३-घुल या गल जाना। फ्यूजन। ४-विघटित होना। ५-किसी देशी राज्य या रियासत का आस-पास के सरकारी अथवा अन्य बड़े राष्ट्र या राज्य में मिलकर एक हो जाना। मर्जर।

विलयीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विलय करना। २-किसी राज्य या राष्ट्र का किसी छोटे राज्य को अपने में मिला लेना। मर्जर।

विलसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चमकने की क्रिया। २-क्रीड़ा। प्रमोद।

विलसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-शोभा पाना। २-क्रीड़ा करना। ३-आनन्द मनाना।

विलसाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिलसाना'।

विलहबंदी [संज्ञा स्त्री.] (?) जिले के बंदोबस्त का संक्षिप्त ब्योरा।

विलाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की चिड़िया

विलाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'बिलाना'।

विलाप [संज्ञा पु.] (सं.) रोकर दुःख प्रकट करना। रुदन। रोना।

विलापना* [क्रि. अ.] (हिं.) विलाप या शोक करना। [क्रि. स.] वृक्ष रोपना या लगाना।

विलायत [संज्ञा पु.] (अ.) १-विदेशी। २-दूर का देश।

विलायती [वि.] (अ.) १-विलायत का। विदेशी। २-दूसरे देश का बना हुआ परदेशी।

विलायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीनकाल का अस्त्र।

विलावली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी।

विलास [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रसन्न करने वाली क्रिया। २-मनोविनोद। ३-आनंद। हर्ष। ४-स्त्रियों की पुरुषों के प्रति अनुरागसूचक चेष्टाएँ। ५-कोई मनोहर चेष्टा। ६-किसी वस्तु का मनोहर रूप में हिलना-डोलना। ७-यथेष्ट सुखभोग।

विलासक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विलासिका] इधर-उधर फिरने वाला।

विलासभवन [संज्ञा पु.] (सं.) नाचघर। क्रीड़ाघर।

विलासमंदिर, विलासमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विलासभवन'।

विलासविपिन [संज्ञा पु.] (सं.) क्रीड़ावन।

विलासवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) क्रीड़ागृह।

विलासशील [वि.] (सं.) विलास करने वाला।

विलासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एकांकी रूपक। इसका विषय संक्षिप्त और साधारण होता है [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] आनन्द देने वाली।

विलासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दरी युवा स्त्री। कामिनी। २-वेश्या। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण और दो गुरु होते हैं।

विलासी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. विलासिनी] १-सुख-भोग में लगा रहने वाला पुरुष। २-कामी। कामुक। ३-क्रीड़ाशील। विनोदप्रिय। ४-आरामतलब। ५-वरुणवृक्ष।

विलास्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

विलिखित [वि.] (सं.) लिखा हुआ।

विलिगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का सांप।

विलिप्त [वि.] (सं.) लिपा-पुता हुआ।

विलिष्ट [वि.] (सं.) १-टूटा हुआ। २-अस्तव्यस्त

विलीक* [वि.] (हिं.) अनुचित।

विलीन [वि.] (सं.) १-अदृश्य। लुप्त। २-मिला या घुला हुआ। ३-छिपा हुआ। ४-नष्ट।

विलुंपक, विलुम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) चोर। ठग

विलुप्त [वि.] (सं.) १-अदृश्य। लुप्त। २-नष्ट।

विलुप्तयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का योनि रोग।

विलुमित [वि.] (सं.) चचल।

विलुलक [संज्ञा पु.] (सं.) नाश करने वाला।

विलून [वि.] (सं.) कटा हुआ। अलग किया हुआ

विलेख [संज्ञा पु.] (सं.) वह कारण या साधन-पत्र जिसमें दो पक्षों में होने वाली संविदा, पणाया अथवा अनुबंध लिखा हो जो निष्पादक के द्वारा हस्ताक्षरित होकर दूसरे पक्ष को दिया गया हो। डीड।

विलेप [संज्ञा पु.](सं.) १-लेप। २-पलस्तर। गारा

विलेपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लेप करने या लगाने की क्रिया। २-लेप करने का पदार्थ।

विलेशय [संज्ञा पु.](सं.) १ वह जीव जो बिल या दरार में रहता है। २-सांप। सर्प।

विलोक [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टि।

विलोकना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखना। २-अवलोकन करना।

विलोकनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विलोकना'

विलोकनीय [वि.] (सं.) देखने योग्य।

विलोकित [वि.](सं.) १-देखा हुआ। २-जाँचा-हुआ। ३-विचारा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) झलक। चितवन।

विलोचन [संज्ञा पु.](सं.) १-नेत्र। नयन। आंख २-पुराणोक्त एक नरक का नाम। ३-आँखें फोड़ने की क्रिया।

विलोटक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

विलोड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिलाना। डुलाना। आंदोलित करना। २-बिलोना। मथना।

विलोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिलोड़ना'।

विलोडित [वि.](सं.) १-हिलाया हुआ। २-मथा-हुआ। बिलोया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) छाछ मठा। तक्र।

विलोना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'बिलोना'।

विलोप [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया। २-रुकावट। ३-विघ्न। बाधा। ४-आघात। ५-नाश। लोप। ६-हानि नुकसान।

विलोपक [वि.] (सं.) १-नाश करने वाला। २-लेकर भाग जाने वाला। ३-दूर करने वाला।

विलोपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विलोप करने की क्रिया। लुप्त या गायब करना। २-कुछ समय के लिए भङ्ग या समाप्त करना। डिस्सोल्यूशन

विलोपना* [क्रि. स.](हिं.) १-लुप्त या नष्ट करना २-लेकर भागना।

विलोपभृत [संज्ञा पु.] (सं.) वह सेना जो केवल लूटमार का लालच देकर इकट्ठी की गई हो।

विलोपी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विलोपिनी] विलोप या नाश करने वाला।

विलोप्य [वि.] (सं.) विलोप करने या होने-योग्य।

विलोभ [संज्ञा पु] (सं.) १-प्रलोभन। २-मोह। माया। [वि.] जिसके मन में किसी प्रकार का लालच न हो।

विलोभन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोभ दिलाने की क्रिया। २-मोहित या आकर्षित करना। ३-ललचाना।

विलोम [वि.] (सं.) विपरीत। उलटा। [संज्ञा पु.] १-ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम २-सर्प। ३-वरुण। ४-कुत्ता। ५-रहट।

विलोमक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह क्रिया जो अन्त से आदि की ओर जाय। विपरीत क्रिया।

विलोमज, विलोमजात [वि] (सं.) विपरीत क्रम से उत्पन्न अर्थात् ऐसी माता से उत्पन्न जिसकी जाति उसके पति से ऊँची हो।

विलोमजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

विलोमन [संज्ञा पु.] (सं.) मुखसंधि के बारह अङ्गों में से वह जिसमें नायक का मन नायिका की ओर या नायिका का मन नायक की ओर आकृष्ट करने के लिये उसके गुणों का कथन।

विलोमवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वर्णसंकर जाति।

विलोमविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विलोमक्रिया'।

विलोमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँवला।

विलोल [वि.] (सं.) १-चंचल। २-सुन्दर।

विल्व [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पेड़।

विल्वतैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का तेल।

विल्वपत्र [संज्ञा प.] (सं.) बेलपत्र।

विल्वमंगल, विल्वमङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसिद्ध भक्त कवि सूरदास का अन्धे होने से पहले का नाम।

विल्वेश [संज्ञा पु.](सं.) भेलसा नगर का प्राचीन नाम।

विवंधक, विवन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोष्ठबद्धता। कब्जियत। २-रोकने वाला।

विवंश [वि.] (सं.) वंशरहित।

विव* [वि.] (हिं.) देखो 'बिवि'।

विवक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बोलने वाला। २-स्पष्ट बोलने वाला। ३-वक्ता।

विवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-कहने वाला। २-किसी बात को प्रकट करने वाला। ३-संशोधन करने वाला।

विवक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कहने की इच्छा। २-अर्थ। आशय। तात्पर्य। ३-फल या परिणाम के रूप में अथवा अनुषंगिक रूप से होने वाली बात। इम्प्लिकेशन।

विवक्षित [वि.] (सं.) १-जिसके कहने की इच्छा हो। २-इच्छित। अपेक्षित।

विवक्षु [वि.] (सं.) बोलने या कोई बात कहने की इच्छा करने वाला।

विवचन [संज्ञा पु.] (सं.) कथन।

विवत्सा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह गाय जिसका न हो।

विवदना* [क्रि. अ.](हिं.) विवाद करना। झगड़ा।

विवदमान [वि.] (सं.) झगड़ालू।

विवध [संज्ञा पु.](सं.) १-वह लकड़ी जो बैलों के कंधों पर बोझ खींचने के लिए रखी जाती है जुआठा। २-राजमार्ग। आम रास्ता। ३-बोझ ४-अनाज की राशि। ५-घड़ा। जलकुम्भ।

विवधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोझा ढोने वाला कुली। २-फेरी लगाकर सौदागरी माल बेचने वाला। फेरी वाला।

विवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिद्र। छेद। २-बिल ३-दरार। गर्त्त। ४-गुफा। कंदरा।

विवरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी बात अथवा कार्य से सम्बन्ध रखने वाली मुख्य बातों का उल्लेख या वर्णन। वृत्तान्त। हाल। २-किसी वस्तु को स्पष्ट रूप से समझाने की क्रिया। विवेचन। व्याख्या। ३-टीका। भाष्य।

विवरणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सभा संस्थाओं अथवा घटनाओं आदि का वह विवरण जो सूचना के लिये किसी को भेजा जाय। रिपोर्ट

विवरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'विवरना'।

विवर्जन [संज्ञा पु.](सं.) १-परित्याग। २-अनादर। उपेक्षा।

विवर्जित [वि.] (सं.) १-वर्जित। निषिद्ध। २-उपेक्षित। ३-वंचित। रहित।

विवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में वह भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण नायक या नायिका का मुखरंग बदल जाता है। [वि.] १-जिसका रंग बिगड़ गया या फीका पड़ गया हो। बदरंग। २-कान्ति हीन। ३-नीच। कमीना। ४-नीच जाति का ५-नीच पेशा या व्यवसाय करने वाला। ६- कुजाति।

विवर्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। समुदाय। २-नाच। नृत्य। ३-रूपांतर। ४-आकाश। ५-भ्रम।

विवर्तकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल्प जिसमें लोक क्रमशः उन्नति से अवनति को होते हैं।

विवर्तन [संज्ञा पु.](सं.) १-घूमना। चक्कर लगाना २-घूमना-फिरना। टहलना। ३-नाच। नृत्य

विवर्तवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत का वह सिद्धांत जिसके द्वारा संसार को माया ब्रह्मा को सृष्टि का उत्पत्ति-स्थान मानते हैं

विवर्तस्थायी-कल्प [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल्प

जब लोक अवनति की पराकाष्ठा को पहुँचकर शून्य दशा में रहता है। प्रलय।

विवर्तित [वि.] (सं.) १-परिवर्तित। २-घूमा हुआ। ३-उखड़ा या सरका हुआ। ४-मोच आया हुआ (अंग)।

विवर्तितत्त्व [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्गा।

विवर्द्धन, विवर्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बढ़ाना। २-किसी छोटी वस्तु के प्रतिबिंब आदि को कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से बड़ा करना। *मैगनिफिकेशन*।

विवर्द्धित [वि.] (सं.) १-बढ़ा हुआ। २-उन्नत।

विवश [वि.] (सं.) १-बेबस। मजबूर। २-पराधीन। परवश। ३-जो काबू में न आवे। ४-अशक्त।

विवशता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेबसी। मजबूरी। २-पराधीनता।

विवशन [संज्ञा पु.] (सं.) विवश करने की क्रिया का भाव।

विवशीकृत [वि.] (सं.) विवश किया हुआ।

विवस [वि.] (हिं.) देखो 'विवश'।

विवसन [वि.] (सं.) [स्त्री. विवसना] वस्त्ररहित नग्न। नंगा।

विवस्त्र [वि.] (सं.) [स्त्री विवस्त्रा] नग्न। नंगा।

विवस्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्यनगरी।

विवस्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-अर्कवृक्ष। ३-सूर्य का सारथी, अरुण। ४-पंद्रहवें प्रजापति का नाम।

विवाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शास्त्रार्थ में निर्णयकर्ता। न्यायधीश। २-मध्यस्थ।

विवाक्य [वि.] (सं.) वाक्यहीन।

विवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसी बात जिसके विषय में दो या अधिक विरोधी पक्ष हों तथा जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो *डिस्प्यूट*। २-कहासुनी। वाक्युद्ध। ३-झगड़ा। कलह। ४-दीवानी या फौजदारी मुकदमा। केस, सूट। विवाद उठना-झगड़ा उठना।

विवादक [संज्ञा पु.] (सं.) झगड़ालू।

विवादास्पद [वि.] (सं.) जिस पर या जिसके विषय में विवाद हो। विवादयुक्त। *डिस्प्यूटेड*।

विवादी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-झगड़ा करने वाला। २-मुकदमा लड़ने वालों में से कोई एक पक्ष। ३-संगीत में वह स्वर जो किसी में लगकर उसका स्वरूप विकृत कर देता हो।

विवाधिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विवाधिक'।

विवास्य [वि.] (सं.) निकाल देने योग्य।

विवास, विवासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रवास। २-निर्वासन। देशनिकाला।

विवासित [वि.] (सं.) निकाला हुआ। देश से निकाल बाहर किया हुआ।

विवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह धार्मिक अथवा सामाजिक कृत्य या प्रक्रिया जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष पत्नी तथा पति का सम्बन्ध स्थापित होता है। पाणि-ग्रहण। ब्याह। शादी।

विवाहना [क्रि. स.] (हिं.) विवाह करना।

विवाह-विच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) पति और पत्नी का वैवाहिक संबंध तोड़ देना। तलाक। *डाइवोर्स*।

विवाहित [वि.] (सं.) [स्त्री. विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो। ब्याहा हुआ।

विवाहिता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसका विवाह हो चुका हो। ब्याही हुई।

विवाही [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] ब्याही हुई।

विवाह्य [वि.] (सं.) ब्याहने लायक। विवाह करने योग्य।

विवि* [वि.] (हिं.) १-दो। २-दूसरा।

विविक्त [वि.] (सं.) १-अलग किया हुआ। २-बिखरा हुआ। ३-पवित्र। ४-निर्जन। ५-त्यक्त। [संज्ञा पु.] [स्त्री विविक्ता] संन्यासी। त्यागी।

विविक्त-चरित [वि.] (सं.) शुद्ध चरित्र वाला।

विविक्त-नाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणोक्त हिरण्यरेता के सात पुत्रों में से एक का नाम। २-इसके द्वारा शासित वर्ष का नाम।

विविक्त-शय्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार वह आचार जिसमें त्यागी सदा किसी एकांत स्थान में रहता और सोता है।

विविचार [वि.] (सं.) १-विचाररहित। विवेकरहित। २-आचाररहित।

विविचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विविचारिणी] १-मूर्ख। २-दुश्चरित्र।

विवित्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जानने की इच्छा।

विवित्सु [वि.] (सं.) जानने के लिए उत्सुक।

विविध [वि.] (सं.) अनेक प्रकार का। कई तरह का।

विविर [संज्ञा पु.] (सं.) १-खोह। गुफा। २-बिल ३-दरार।

विवीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जो चारों ओर से घिरा हो। २-पशुओं के चरने का वह स्थान जो चारों ओर से घिरा हो।

विवीताध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का वह कर्मचारी जो चरागाहों की देखभाल करता था।

विबुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-पंडित। ज्ञानी।

विबुधपुर [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

विबुधप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, सगण, जगण, भगण और रगण होते हैं।

विबुधवन [संज्ञा पु.] (सं.) नन्दनवन।

विबुधवैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) अश्विनीकुमार।

विबुधेश [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का राजा, इन्द्र।

विवृत [वि.] (सं.) १-विस्तृत। फैला हुआ। २-खुला हुआ। [संज्ञा पु.] ऊष्म स्वरों के उच्चारण में होने वाला एक प्रकार का प्रयत्न (व्याकरण)।

विवृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह कथन या वक्तव्य जो अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जाने पर उसके स्पष्टीकरण के लिए हो। कैफियत। *एक्सप्लेनेशन*। २-चक्र के समान घूमने की क्रिया। ३-टीका। भाष्य।

विवृतोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं प्रकट कर देता है।

विवेक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली-बुरी बातें सोचने समझने की शक्ति या ज्ञान। *डिस्क्रीशन*। २-मन की वह शक्ति जिससे भले-बुरे का ठीक और स्पष्ट ज्ञान होता है। *कॉन्शेन्स*। ३-बुद्धि ४-सत्यज्ञान। ५-प्रकृति और पुरुष की विभिन्नता का ज्ञान। ६-एक प्रकार का बरतन जिसमें पानी रखते हैं। ७-जैनमतानुसार बहुत ही प्रिय पदार्थ का त्याग।

विवेकज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) भले बुरे का ज्ञान रखने वाला। बुद्धिमान।

विवेकज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) तत्वज्ञान। सच्चाज्ञान

विवेकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ज्ञान। २-सत् और असत् का विचार।

विवेकवान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-भले-बुरे को पहचानने वाला। २-बुद्धिमान। अक्लमन्द।

विवेकाधीन [वि.] (सं.) जो किसी के विवेक या भले-बुरे के ज्ञान पर आश्रित हो। *डिस्क्रीशनरी*

विवेकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला। २-बुद्धिमान। ३-ज्ञानी। ४-न्यायशील। न्यायाधीश।

विवेचक [संज्ञा पु.] (सं.) विवेचना करने वाला। विवेकी।

विवेचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु को भली-भांति जाँचना या परीक्षा करना। २-विचारपूर्वक निर्णय करना। मीमाँसा। ३-तर्क-वितर्क ४-अनुसंधान। ५-परीक्षा। ६-सत्-असत् का विचार। ७-मीमाँसा।

विवेचना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विवेचन'।

विवेचनीय [वि.] (सं.) विवेचन या विचार करने लायक।

विवेचित [वि.] (सं.) १-जिसकी विवेचना की गई हो। २-तै किया हुआ।

विव्वोक [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य के अनुसार वह हाव जिसमें स्त्रियां संयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशंक, विशङ्क [वि.] (सं.) निर्भय। निडर।

विशंकट, विशङ्कट [वि.] (सं.) १-विशाल । २-भयानक । डरावना ।

विशंकनीय, विशङ्कनीय [वि.] (सं.) डरने-योग्य ।

विशंका, विशङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भय । डर । २-आशंका का अभाव ।

विशंकी, विशङ्की [वि.] (सं.) जिसको किसी का भय हो ।

विशंक्य, विशङ्क्य [वि.] (सं.) भय या आशंका करने योग्य ।

विश [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृणाल । २-चाँदी । ३-आदमी । [संज्ञा स्त्री.] कन्या । लड़की ।

विशद [वि.](सं.) १-स्वच्छ । विमल । २-साफ । स्पष्ट । ३-व्यक्त । ४-सफेद । ५-प्रसन्न । ६-सुन्दर । मनोहर । ७-अनुकूल । [संज्ञा पु.] १-सफेद रंग । २-जयद्रथ के एक पुत्र का नाम । ३-कसीस । ४-बनभंटा ।

विशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-संशय । सन्देह । शक २-आश्रय । सहारा।

विशयी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे किसी तरह की शंका हो । सन्देहयुक्त ।

विशर. विशरण [संज्ञा पु.] (सं.) मार डालना । वध करना ।

विशरद [संज्ञा पु] देखो 'विशारद' ।

विशल्य [वि.] (सं.) कष्ट और चिन्ता से रहित ।

विशल्यकरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर के व्रण आदि में से विष का प्रभाव दूर करने वाली प्रक्रिया या दवा ।

विशल्यकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्विषी ।

विशल्यकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पलासी लता । २-हरपरवाली नामक लता ।

विशल्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-गुडुच । २-दंती-वृक्ष । ३-नाग दंती । ४-रामदंती नामक तुलसी । ५-लक्ष्मण की स्त्री का नाम । ६-निशोथ । ७-पटला । ८-खेसारी । ९-अग्नि-शिखा नाम का एक वृक्ष । १०-एक नदी का नाम ।

विशस [संज्ञा पु.](सं.) १-हत्या करना । २-खडग

विशसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार डालना । २-एक नरक का नाम । ३-खड्ग ।

विशस्त [वि.] (सं.) १-जिसे मार डाला गया हो २-काटा हुआ । जिसे किसी प्रकार का भय न हो ।

विशस्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-हत्या करने वाला । २-चाण्डाल ।

विशस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हत्या ।

विशस्पति, विशांपति, विशाम्पति [संज्ञा पु.] (सं.) राजा ।

विशाकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भद्रचूड़ । २-पाडर का पेड़ । ३-हाथीशुंडी । ४-दंती ।

विशाख [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय । २-शिव ३-याचक । ४-गदहपूरना । ५-पुराणोक्त एक देवता का नाम । ६-स्कंद नामक ग्रह के प्रकोप से होने वाला अपस्मार रोग । ७-धनुष चलाते समय एक पैर आगे और एक उससे कुछ पीछे रखना । ८-कार्तिकेय के छोटे भाई का नाम । [वि.] (सं.) जिसमें शाखाएं आदि न हों ।

विशाखग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का वृक्ष ।

विशाखज [संज्ञा पु.] (सं.) नारंगी का पेड़ ।

विशाखपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक रोग जो बालकों को होता है ।

विशाखयूप [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक विशाख पत्तन का प्राचीन नाम ।

विशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ । २-कौशांबी के पास का एक प्राचीन जनपद । ३-सफेद गदहपूरन । ४- काली अपराजिता ।

विशाखिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गदहपूरना । २-नीली अपराजिता । ३-फरेला ।

विशाप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

विशाय [संज्ञा पु.](सं.) पहरेदारों का बारी-बारी से सोना ।

विशायक [संज्ञा पु.] (सं) विशाकर नामक लता।

विशारद [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जो किसी विषय का अच्छा जानकार हो । पंडित । २-वह जो किसी कार्य में बहुत निपुण हो । दक्ष । ३-वह जिसे अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा हो । ४-मौलसिरी । [वि.] १-प्रसिद्ध । २-श्रेष्ठ । ३-घमंडी ।

विशारदा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-केवाँच । २-धमासा ।

विशाल [वि.](सं.) १-जो बहुत बड़ा और विस्तृत हो । लंबा-चौड़ा । २-जो देखने में सुन्दर और भव्य हो । शानदार । ३-प्रसिद्ध । मशहूर । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृगविशेष । २-पक्षी । चिड़िया । ३-पेड़ । वृक्ष । ४-राजा इक्ष्वाकु के पुत्र का नाम । ५-पुराणोक्त एक पर्वत ।

विशालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कैथ । २-गरुड़ । ३-एक यक्ष का नाम ।

विशालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विशाल या बड़ा होने का भाव ।

विशालत्वक् [संज्ञा पु.] (सं.) छतिवन ।

विशालदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता

विशालनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम ।

विशालपत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-श्रीतालवृक्ष । २-मानकच्चू ।

विशालफलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निष्पावी । बरसेमा ।

विशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-इन्द्रायन । २-महद्रवारुणी । ३-पुराणोक्त एक तीर्थ । ४-दक्ष की एक कन्या का नाम । ५-पोई का साग । ६-मुरामांसी । ७-कलगा नामक घास

विशालाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-विष्णु । ३-गरुड़ । ४-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम । [वि.] (सं.) जिसकी आँखें बड़ी और सुन्दर हों ।

विशालाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी और सुन्दर आँखों वाली स्त्री । २-पार्वती । ३-देवी का एक रूप या मूर्त्ति । ४-चौंसठ योगिनियों में से एक । ५-नागदंती ।

विशाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अजमोदा । २-पलाशी-लता ।

विशिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) बालू । रेत ।

विशिख [संज्ञा पु.] (सं.) १-रामसर नामक घास २-बाण । तीर । ३-वह जगह जहां रोगी रहता हो । [वि] १-चोटी या शिखारहित । २-जिसके सिर पर कलँगी न हो ।

विशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह राजमार्ग जिस पर जौहरियों और सुनारों की दुकानें हों ।

विशिरस्क [संज्ञा पु.] (सं) मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत ।

विशिष्ट [वि] (सं) १-जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो । २-मिला हुआ । ३-विलक्षण । अद्भुत । ४-जो बहुत अधिक शिष्ट हो । ५-असाधारण । ६-मुख्य । प्रधान । [संज्ञा पु] सीसा (धातु) ।

विशिष्टचरित्र [संज्ञा पु] (सं) एक बोधिसत्व का नाम ।

विशिष्टता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-विशिष्ट भाव या धर्म । २-विशेषता ।

विशिष्टपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रंथिपर्णी ।

विशिष्टाद्वैत [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न ही माने गये हैं ।

विशिष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं) शंकराचार्य की माता का नाम ।

विशीर्ण [वि] (सं.) १-सूखा हुआ । २-दुबला पतला । ३-जीर्ण ।

विशीर्णपर्ण [संज्ञा पु] (सं.) नीम का पेड़ ।

विशील [वि.] (सं.) १-जिसका शील या चरित्र बुरा हो । २-दुष्ट । पाजी ।

विशुंडी, विशुण्डी [संज्ञा पु.] (सं) कश्यप के एक पुत्र का नाम ।

विशुद्ध [वि.](सं.) १-बिना किसी प्रकार की मिलावट का । जो बिलकुल शुद्ध हो । २-सत्य । सच्चा । [संज्ञा पु.] हठयोग के अनुसार शरीर के अंदर के छः चक्रों में से पाँचवाँ जो कं के पास माना गया है ।

विशुद्ध-गणित [संज्ञा पु.] (सं.) वह गणित जिस

के पदार्थ का कोई संबंध रखते हुए केवल राशि का विचार किया जाता है।

विशुद्धचरित्र [वि] (सं.) जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो।

विशुद्धचारी [संज्ञा पु.] (सं) जिसका चालचलन शुद्ध हो।

विशुद्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं) विशुद्ध होने की क्रिया या भाव। पवित्रता।

विशुद्धि [संज्ञा स्त्री] (सं.) शुद्धता। पवित्रता।

विशूचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विसूचिका'

विशृंखल, विशृङ्खल [वि.] (सं.) १-जिसमें क्रम या शृङ्खला न हो। २-जो किसी तरह रोका न जा सके।

विशृंग, विशृङ्ग [वि.](सं.) जिसके शृङ्ग या सींग न हों। बिना सींग का।

विशेष [संज्ञा पु.] (सं) १-अन्तर। फरक। २-प्रकार। ढंग। तरह। ३-साधारण के अतिरिक्त तथा उससे कुछ आगे बढ़ा हुआ। जितना होना चाहिए अथवा होता हो, उससे कुछ अधिक या उसके सिवा। एक्स्ट्रा। ४-किसी विषय में उसके स्पष्टीकरण के लिए अथवा अपनी सम्मति के रूप में कही जाने वाली बात। रिमार्क। ५-साहित्य में एक अलंकार जिसमें विना आधार के आधेय, थोड़े परिश्रम से बहुत प्राप्ति या एक ही वस्तु के कई स्थानों में होने का वर्णन होता है। ६-विचित्रता। ७-सार। ८-मुनासिबत। ९-अवयव। अङ्ग। १०-वस्तु। ११-तिल का पौधा। १२-वैशेषिकदर्शन के मतानुसार सात प्रकार के पदार्थों में से एक।

विशेषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माथे का टीका। तिलक। २-तिलकवृक्ष। ३-चित्रक। ४-साहित्य में वह पद्य जिसमें तीन श्लोकों या पदों की एक ही क्रिया होती है। [वि.] विशिष्ट। विलक्षण।

विशेषज्ञ [संज्ञा पु](सं.) १-वह जो किसी विषय का विशेष ज्ञान रखता हो। स्पेशलिस्ट। २-देखो 'विचक्षण'।

विशेषण [संज्ञा पु] (सं.) १-वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २-व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी संज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो।

विशेषता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-विशेष का भाव या धर्म। खासियत। २-विलक्षणता।

विशेषना* [क्रि. स.] (हिं.) १-विशेष रूप देना २-विशिष्टता उत्पन्न करना। [क्रि. अ.] निश्चय करना।

विशेषमति [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

विशेषित [वि.] (सं.) १-जो खासतौर पर अलग किया गया हो। २-जिसमे विशेषण लगा हो

विशेषी [वि.] (हिं) जिसमें कोई खास बात हो। विशेषता लिये हुए।

विशेषोक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं) काव्य में वह अलङ्कार जिसमें पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है।

विशेष्य [संज्ञा पु.] (सं) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।

विशेष्यासिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

विशोक [वि.] (सं.) जिसे किसी प्रकार का शोक न हो। [संज्ञा पु.] १-युधिष्ठिर के एक अनुचर का नाम। २-ब्रह्मा के एक मानसपुत्र का नाम।

विशोकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शोकरहित होने का भाव या धर्म।

विशोकषष्ठी [संज्ञा स्त्री](सं) चैत्रशुक्ला-षष्ठी।

विशोका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योगदर्शन के मतानुसार वह चित्तवृत्ति जो संप्रज्ञात समाधि से पहले होती है।

विशोध [वि.] (सं.) विशुद्ध या साफ करने योग्य

विशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभांति साफ करना। २-विष्णु।

विशोधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-ब्रह्मपुरी। २-नागदंती। ३-नीली (पौधा)। ४-पान। तांबूल

विशोधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदंती। २-नीली नामक पौधा। ३-जमालगोटा।

विशोधिनीबीज [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

विशोधी [वि] (सं) बिलकुल विशुद्ध करने वाला

विशोध्य [वि.] (सं.) साफ करने योग्य।

विशोष [संज्ञा पु.] (सं.) नीरसता। शुष्कता।

विशोषण [संज्ञा पु] (सं.) अच्छी तरह सोखना

विशोषी [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह सोखने वाला।

विश् [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वह जिसने जन्म लिया हो। २-कन्या। लड़की।

विश्पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। २-वैश्यों का पंच या मुखिया

विश्यापर्णी [संज्ञा पु.](सं) एक प्रकार का यज्ञ।

विश्रंभ, विश्रम्भ [संज्ञा पु.](सं.)१-दृढ़ विश्वास पूरा एतबार। कॉन्फिडेन्स। २-प्रेमी और प्रेमिका में सभोग के समय होने वाला झगड़ा। ३-प्रेम। ४-स्वच्छन्दतापूर्वक घूमना-फिरना।

विश्रंभी, विश्रम्भी [वि.] (सं.) १-दृढ़ या पक्का विश्वास रखने वाला। कॉन्फिडेन्ट। २-जो इस बात का विश्वास रखकर किसी को बतलाया जाय कि वह दूसरे किसी को न बतलावेगा। गोप्य। कॉन्फिडेन्शल।

विश्रब्ध [वि.] (सं.) १-शांत। २-विश्वास के योग्य। ३-निर्भय। निडर।

विश्रब्ध-नवोढा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ-कुछ अनुराग और थोड़ा-थोड़ा विश्वास होने लगा हो।

विश्रम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विश्राम'।

विश्रयी [वि.] (सं.) विशेष प्रकार से सेवा करने वाला।

विश्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) पुलस्त्यऋषि के पुत्र और रावण के पिता का नाम।

विश्रांत, विश्रान्त [वि.] (सं.) १-जो विश्राम करता हो। २-रुका या ठहरा हुआ। ३-थका हुआ।

विश्रांति, विश्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ विश्राम। आराम। २-पुराणोक्त एक तीर्थ का नाम। ३ थकावट। ४-देखो 'विराम'।

विश्राम [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। २-ठहरने का स्थान। सुख। चैन। आराम।

विश्रामालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ यात्री विश्राम करते हों। रेस्टहाउस।

विश्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अधिक प्रसिद्धि शोहरत। २-ध्वनि। ३-बहना या रसना। क्षरण।

वि-श्रि [वि.] (सं.) १-जिसकी श्री या कांति जाती रही हो। २-भद्दा। कुरूप।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मौत। मृत्यु।

विश्रुत [वि.] (सं.) १-प्रसिद्ध। विख्यात। २ जो जाना या सुना हुआ हो।

विश्रुतात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रसिद्ध। शोहरत २-झरना या रसना। ३-कोई बात सब लोगों में प्रसिद्ध करने अथवा सबको जतलाने की क्रिया या भाव। पब्लिसिटी।

विश्रुति-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो ऋण लेते समय उसे नियत स्थान पर चुका देने की प्रतिज्ञा का सूचक होता है। प्रॉमिसरी नोट।

विश्लिष्ट [वि.] (सं.) १-जिसका विश्लेषण हुआ हो। २-विकसित। ३-प्रकाशित। ४-मुक्त ५-शिथिल।

विश्लिष्ट-संधि, विश्लिष्ट-सन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-एक प्रकार से हड्डी का टूटना। २-चोट आदि के कारण शरीर की किसी संधि का टूट जाना।

विश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलग या पृथक् होना। २-वियोग। बिछोह। ३-शिथिलता। थकावट। ४-किसी की ओर से मन हट जाना। ५-विकास।

विश्लेषक [संज्ञा पु] (सं.) वह जो रासायनिक या इसी तरह का कोई और विश्लेषण करता

हो। एनालिस्ट।

विश्लेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों अथवा किसी बात के सब अंगों या तथ्यों को परीक्षा, आदि के लिये अलग-अलग करना। एनेलेसिस।

विश्वंतर, विश्वन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव का एक नाम।

विश्वंभर, विश्वम्भर [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २-विष्णु। ३-एक उपनिषद् का नाम।

विश्वंभरा, विश्वम्भरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी

विश्वंभरेश्वर, विश्वम्भरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय के एक शिवलिंग का नाम।

विश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-समस्त ब्रह्मांड। २-संसार। जगत्। दुनिया। ३-दस देवताओं का एक गण। ४-विष्णु। ५-शरीर। देह। ६-जीवात्मा। ७-सोंठ। ८-बोला नामक गंध-द्रव्य। [वि.] (सं.) १-पूरा। सब। कुल २-बहुत।

विश्वैक [वि.] (सं.) समस्त। पूरा।

विश्वकद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिकारी कुत्ता। २-दुष्ट। पाजी। ३-शब्द। आवाज।

विश्वकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

विश्वकर्म [संज्ञा पु] (सं.) वह जो सब प्रकार के कार्य करने में निपुण हो।

विश्वकर्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की पत्नी का एक नाम।

विश्वकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-ब्रह्मा। ३-एक प्रसिद्ध देवता जो शिल्पशास्त्र के सर्व प्रथम आचार्य तथा आविष्कर्त्ता माने जाते हैं। ४-बढ़ई। ५-लोहार। ६-मेमार। राज। ७-शिव।

विश्वकर्मेश [संज्ञा पु.] (सं.) एक शिवलिंग का नाम।

विश्वकाय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वकाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

विश्वकारक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विश्वकारु [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'विश्वकर्मा'।

विश्वकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की सात प्रधान ज्योतियों का वर्ग।

विश्वकूट [संज्ञा पु.] (सं) हिमालय की एक चोटी का नाम।

विश्वकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

विश्वकृष्टि [संज्ञा पु] (सं.) वह जो सब लोगों को अपने सगे सम्बन्धी के समान समझता हो

विश्वकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनिरुद्ध का एक नाम। २-एक पर्वत का नाम (पुराण)।

विश्वकोश, विश्वकोष [संज्ञा पु.] (सं) वह ग्रंथ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत विवरण रहता है।

विश्वक्शेन [संज्ञा पु] (सं) १-विष्णु। २-पुराणानुसार तेरहवें मनु का नाम। ३-कलिका-पुराण के अनुसार एक चतुर्भुज देवता।

विश्वक्शेना [संज्ञा स्त्री] (सं) प्रियंगु नामक वृक्ष

विश्वक्षय [संज्ञा पु.] (सं) प्रलय।

विश्वगंगा, विश्वगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छोटी नदी जो बरार प्रदेश में है।

विश्वगंध, विश्वगन्ध [संज्ञा पु] (सं.) १-बोल नामक गंधद्रव्य। २-प्याज।

विश्वगंधा, विश्वगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी

विश्वगंधि, विश्वगन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) पृथु के पुत्र का नाम।

विश्वग [संज्ञा पु] (सं.) १-ब्रह्मा। २-मरीचि के पुत्र का नाम।

विश्वगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-रैवत के एक पुत्र का नाम।

विश्वगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वगोप्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-इन्द्र। ३-सारे विश्व का पालनकर्त्ता।

विश्वग्रंथि, विश्वग्रन्थि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-हंसपदी नामक लता। २-लाल लजालू।

विश्वग्वात, विश्वग्वायु [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह वायु जो सब जगह समान रूप से चलती हो

विश्वचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बारह प्रकार के महादानों में से एक। २-संसाररूपी चक्र।

विश्वचक्रात्मा [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

विश्वचक्षु [संज्ञा पु.] (सं) ईश्वर।

विश्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोंठ।

विश्वजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का यज्ञ। २-वरुणपाश। ३-एक प्रकार की अग्नि। ४-एक दानव का नाम। ५-सत्यजित् के पुत्र का नाम। ६-वह जिसने समस्त विश्व पर विजय प्राप्त की हो।

विश्वजीव [संज्ञा. पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वज्योतिष [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम

विश्वतनु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वतुलसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनतुलसी।

विश्वतृप्त [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वतोया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा-नदी।

विश्वदासा [संज्ञा स्त्री] (सं.) अग्नि के सात जिह्वाओं में से एक का नाम।

विश्वदृष्ट [वि.] (सं.) जिसने सारे समस्त संसार का दर्शन किया हो।

विश्वदेव [संज्ञा पु] (सं.) वह देवता जिसकी पूजा नांदीमुख श्राद्ध में होती है।

विश्वदेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागबला। २-लाल दंडोत्पल।

विश्वदैव, विश्वदैवत [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विश्वधर [संज्ञा पु] (सं) विष्णु।

विश्वधाम [संज्ञा पु] (सं.) १-ईश्वर। २-स्वदेश।

विश्वधार [संज्ञा पु.] (सं.) शाकद्वीप के राजा मेधातिथि का नाम।

विश्वधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणोक्त एक नदी का नाम।

विश्वधारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) पृथ्वी।

विश्वधेनु [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्वनाथ [संज्ञा पु.] (सं) १-विश्व का स्वामी। २-शिव। ३-काशी का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग का नाम।

विश्वनाभ [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

विश्वनाभि [संज्ञा स्त्री] (सं) विष्णु का चक्र।

विश्वपति [संज्ञा पु] (सं) १-ईश्वर। २-श्रीकृष्ण।

विश्वपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं) भुई आँवला।

विश्वपा [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वपाणि [संज्ञा पु] (सं) एक बोधिसत्व।

विश्वपावन, विश्वपूजिता [संज्ञा स्त्री] (सं) तुलसी।

विश्वप्रकाशक [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य।

विश्वप्रबोध [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

विश्वप्स [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-चन्द्रमा ३-सूर्य। ४-देवता। विश्वकर्मा।

विश्वबंधु, विश्वबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्व के अधिकांश लोग जिसे बंधु समझते हों। २-शिव।

विश्वबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव

विश्वबोध [संज्ञा पु.] (सं.) भगवान बुद्ध।

विश्वभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सर्वतोभद्र'।

विश्वभर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वभव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म जिससे समस्त संसार की सृष्टि हुई है।

विश्वभाव, विश्वभावन [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

विश्वभुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २-इन्द्र।

विश्वभुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणोक्त एक देवी का नाम।

विश्वभेषज [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ।

विश्वमया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विश्वमहेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विश्वमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं) दुर्गा।

विश्वमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं) पार्वती

विश्वमूर्ति, विश्वमोहन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

विश्वरथ [संज्ञा पु.] (सं.) गाधि राजा के एक पुत्र का नाम।

विश्वरद [संज्ञा पु.] (सं.) भोजक ब्राह्मणों का एक ग्रंथ जिसे वे अपना वेद मानते थे।

विश्वरश्मियाँ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्यन्त सूक्ष्म तथा कठोर (भेदनशील) रश्मियाँ, जो पृथ्वी के वातावरण में पाई जाती हैं।

विश्वरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देवयोनि। २-एक दानव का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विश्वरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-पुराणोक्त त्वष्टा के एक पुत्र का नाम। ४-श्रीकृष्ण का वह रूप जो उन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश करते समय दिखाया था।

विश्वरूपी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साग

विश्वलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य और चन्द्रमा

विश्वलोप [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि।

विश्ववर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुई आँवला।

विश्ववार [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में सोम का एक संस्कार।

विश्ववारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अत्रिगोत्र की एक स्त्री का नाम।

विश्ववास [संज्ञा पु.] (सं.) संसार। दुनिया।

विश्वविद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार की समस्त बातों का ज्ञाता। २-ईश्वर।

विश्वविद्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती हो, परीक्षा ली जाती हो तथा लोगों को विद्या सम्बन्धी उपाधियां आदि प्रदान करती हो। यूनिवर्सिटी।

विश्ववृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वव्यापी [वि.] (सं.) जो सारे संसार या विश्व में फैला हुआ हो। [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

विश्वव्यापी-सुखवाद [संज्ञा पु.] (सं.) सुखवाद का वह सिद्धांत जिसकी सीमा व्यक्तिगत सुख तक ही नहीं है, पर जो अखिल मानव-जाति के सुख को लक्ष्य में रखता है। सार्वजनिक-सुखवाद।

विश्वश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि जो कुबेर, रावण आदि के पिता थे।

विश्वसंभव, विश्वसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

विश्वसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वास। एतबार। २-वह स्थान जहां ऋषि-मुनि विश्राम करते हों।

विश्वसनीय [वि.] (सं.) जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके। विश्वस्त।

विश्वसनीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विश्वस्त होने की क्रिया या भाव।

विश्वसहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विश्वसाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वसाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि

विश्वसारक [संज्ञा पु.] (सं.) कंकारी नामक वृक्ष

विश्वसित [वि.] (सं.) विश्वसनीय। विश्वस्त।

विश्वसृज् [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वस्त [वि.] (सं.) जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वस्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विधवा।

विश्वस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावर।

विश्वहर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विश्वहेतु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विश्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्ष की एक कन्या का नाम। २-बीस पल के बराबर का एक मान। ३-अतीस। ४-शतावर। ५-सोंठ। ६-पीपल। ७-शंखिनी। चोरपुष्पी।

विश्वाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैदिककालीन एक अप्सरा का नाम। २-एक प्रकार का रोग।

विश्वातीत [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

विश्वात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-शिव ३-विष्णु। ४-ब्रह्मा।

विश्वाद् [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

विश्वादि [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक में एक प्रकार का कषाय।

विश्वाधार, विश्वाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर

विश्वानर [संज्ञा पु.] देखो 'वैश्वानर'।

विश्वाभू [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

विश्वामित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो बड़े क्रोधी थे। यह गाधिज, गाधेय और और कौशिक भी कहलाते हैं।

विश्वामित्र-प्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का पेड़।

विश्वामित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

विश्वायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्व की सब बातें जानने वाला। सर्वज्ञ। २-ब्रह्मा।

विश्वारज [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

विश्वावसु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणोक्त एक गंधर्व २-विष्णु। ३-एक संवत्सर का नाम। [संज्ञा स्त्री.] रात।

विश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) यह निश्चय कि ऐसा ही होगा या है, अथवा अमुक आदमी ऐसा ही करता है या करेगा। एतबार। *विश्वास जमाना*-किसी के मन में विश्वास उत्पन्न करना। *विश्वास दिलाना*-किसी के मन में विश्वास उत्पन्न करना।

विश्वासकारक [वि.] (सं.) १-विश्वास करने वाला २-जिससे विश्वास उत्पन्न हो।

विश्वासघात [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के विश्वास के विरुद्ध की हुई क्रिया।

विश्वासघातक [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वास करने पर भी धोखा देने वाला। धोखेबाज।

विश्वासन [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वास। एतबार।

विश्वासपात्र, विश्वासभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वासस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वासनीय। विश्वासपात्र।

विश्वासिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पर भरोसा या विश्वास किया जाय।

विश्वासी [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वास करने वाली २-वह जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वास्य [वि.] (सं.) १-विश्वास करने योग्य। २-जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोंठ।

विश्वेदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-देवताओं का एक गण। ३-पुराणानुसार एक दानव का नाम।

विश्वेभोज [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

विश्वेवेद [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

विश्वेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-उत्तराषाढ़ानक्षत्र।

विश्वेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमेश्वर। २-शिव की एक मूर्त्ति।

विश्वैकसार [संज्ञा पु.] (सं.) कश्मीर के एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विश्वौषध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोंठ।

विषंग, विषङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-परस्पर मिले हुए तत्वों, अंगों आदि का अलग या पृथक् होना। २-अपने में से किसी को काटकर या और किसी प्रकार अलग कर देना। *डिस्सोसिएशन*।

विषंड, विषण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) मृणाल। कमल की नाल।

विष [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पदार्थ जिसके खाने अथवा शरीर में पहुँचने से प्राणी मर जाता है। जहर। गरल २-किसी की सुख-शांति अथवा स्वास्थ्य आदि में बाधक वस्तु। ३-अतीस। ४-बछनाग। ५-कलिहारी। *विष की गाँठ*-खराबी पैदा करने वाला।

विषकंट, विषकण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) इंगुदी।

विषकंटक, विषकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) दुरालभा।

विषकंटका, विषकण्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंध्या

कर्कोटी ।

विषकंटकी, विषकण्टकी [संज्ञा स्त्री] (सं.) बाँझ-ककोटी ।

विषकंठ, विषकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

विषकंठिका, विषकण्ठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बगला ।

विषकंद, विषकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-भैंसाकंद २-हिंगोट ।

विषकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीनकाल में वह युवती जिसके शरीर में बाल्यावस्था से ही इसलिए विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ संभोग करने वाला मर जाय ।

विषकृत [वि.] (सं.) विष मिला हुआ ।

विषगंधक, विषगन्धक [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का तृण जिसमें मधुर मंद गंध आती है

विषगंधा, विषगन्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) काली अपराजिता ।

विषगिर [संज्ञा पु.] (सं.) वह पहाड़ जिस पर विषाक्त पेड़ पौधे उगते हों ।

विषघ [वि.] (सं.) विषनाशक ।

विषघा [संज्ञा पु.] (सं.) गुडुच ।

विषघातक [संज्ञा पु.](सं.) वह जिससे विष का प्रभाव हटता या दूर होता है ।

विषघाती [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट होता हो । २-सिरस नामक वृक्ष ।

विषघ्न [वि] (सं.) विषनाशक । [संज्ञा पु.] १-सिरिस । २-भिलावाँ । ३-चंपा का पेड़ । ४-भू-कदंब । ५-गंधतुलसी ।

विषघ्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस ।

विषघ्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चिचड़ा ।

विषघ्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हिलंच नामक साग। २-बनतुलसी । ३-इन्द्रवारुणी । ४-भुई-आँवला । ५-गदहपूरना। ६-हलदी । ७-महा-करंज। ८-देवदाली-लता। ९-वृश्चकाली लता

विषचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर पक्षी ।

विषजिह्व [संज्ञा पु.] (सं) देवताड़ नामक वृक्ष ।

विषज्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी विष के कारण उत्पन्न होने वाला ज्वर। २-भैंसा ।

विषणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साँप ।

विषण्ण [वि.] (सं.) दुःखी । खिन्न ।

विषण्णता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-विषण्ण या खिन्न होने का भाव । २-मूर्खता ।

विषण्णांग [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

विषतंत्र, विषतन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) वैद्यक में एक प्रक्रिया जिससे सर्प आदि का विष दूर किया जाता है ।

विषतरु [संज्ञा पु.] (सं.) कुचला ।

विषता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जहरीलापन ।

विषतिंदु, विषतिन्दु [संज्ञा पु.](सं.) १-कुचला । २-कुपीलु ।

विषतैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक तेल जो कुष्ठ आदि रोगों में काम आता है ।

विषदंत, विषदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ली ।

विषदंतक, विषदन्तक [संज्ञा पु](सं.) सर्प । सांप

विषदंश [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ली ।

विषदंष्ट्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साँप का जहर वाला दाँत । २-सर्पकंकालिका लता । ३-नाग-दमनी ।

विषद [संज्ञा पु.](सं.) १-हीराकसीस । २-अतीस ३-सफेद रंग । ४-बादल । [वि.](सं.) स्वच्छ साफ ।

विषदमूला [संज्ञा स्त्री.](सं.) माकंदी नामक पौधा

विषदा [संज्ञा स्त्री.] (सं) अतीस ।

विषदाता [वि.] (सं.) विष देने वाला ।

विषदुष्ट [वि.](सं.) जिसे या जिसमें विष मिला-कर खराब कर दिया गया हो ।

विषदूषण [वि.] (सं.) विष दूर करने वाला ।

विषद्रुम [संज्ञा पु.] (सं) कुचले का पेड़ ।

विषधर [संज्ञा पु.] (सं.) साँप ।

विषधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मनसादेवी का एक नाम ।

विषध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) नागरमोथा ।

विषनाशक [वि.](सं.) विष का प्रभाव नष्ट करने-वाला ।

विषनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरिस का पेड़ । २-मानकन्द । [वि.] (सं.) विषनाशक ।

विषनाशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सर्पकंकाली नामक लता । २-बाँझककोटी ।

विषपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी विषाक्त बीज का छिलका । २-कोई जहरीला पत्ता ।

विषपन्नग [संज्ञा पु.] (सं.) जहरीला साँप ।

विषपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. विषपुच्छी] बिच्छू ।

विषपुष्प [संज्ञा पु.](सं.) १-नीलापद्म । २-अलसी का फूल । ३-मदनवृक्ष ।

विषपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल ।

विषप्रशमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँझककोड़ी ।

विषप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम ।

विषभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी दंती ।

विषभद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी दंती ।

विषभिषज् [संज्ञा पु.] (सं.) विष उतारने वाला वैद्य ।

विषभुजंग, विषभुजङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) जहरीला साँप ।

विषमंत्र, विषमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष का प्रभाव नष्ट करने का मन्त्र । २-सँपेरा ।

विषम [वि.] (सं.) १-जो समान या बराबर न हो । असमान । २-(वह संख्या) जो दो पर भाग देने पर पूरी-पूरी न बँट सके । ३-बहुत कठिन । ४-बहुत तीव्र या तेज । ५-भयङ्कर । [संज्ञा पु.] १-सङ्गीत में ताल का एक भेद । २-वह छन्द जिसके चारों चरणों में अक्षरों की संख्या समान न हो । ३-एक अर्थालङ्कार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं के सम्बन्ध या औचित्य का अभाव बतलाया जाता है । ४-पहली, तीसरी, पाँचवीं आदि तक संख्याओं पर पड़ने वाली राशियाँ । ५-चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक । ६-सङ्कट । आफत ।

विषमकर्ण [संज्ञा पु.] (सं) समकोण चतुर्भुज में किसी दो बराबर के कोणों के सामने की रेखा ।

विषमकर्म [संज्ञा पु.] (सं) असदृश कार्य ।

विषमकोण [संज्ञा पु] (सं) समकोण से भिन्न कोई कोण ।

विषमचतुरस्त्र [संज्ञा पु.](सं) वह असमान बाहु का चतुष्कोण क्षेत्र जिसके आमने-सामने की भुजा समानांतर हो ।

विषमचतुष्कोण [संज्ञा पु] (सं) विषम कोण वाला चतुष्कोण ।

विषमच्छद [संज्ञा पु] (सं) छतिवन नाम का पेड़ ।

विषमज्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-वैद्यक के मत से वह ज्वर जो होता तो रोज है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता । २-जूड़ी बुखार । ३-क्षयी रोग में होने वाला बुखार

विषमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-असमानता । २-वैर । विरोध ।

विषमत्रिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान न हों ।

विषमत्व [संज्ञा पु.] (सं.) विषमता ।

विषमदलक [संज्ञा पु.] (सं.) वह सीप जिसके दोनों दल समान न हों ।

विषमनयन, विषमनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

विषमपलाश [संज्ञा पु.] (सं.) छतिवन का वृक्ष ।

विषमभाग [संज्ञा पु.] (सं.) असमान भाग या अंश ।

विषमय [वि.] (सं.) जहरीला ।

विषमराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अयुग्म राशि जैसे—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, और कुंभ ।

विषमरूप [वि.] (सं.) जो समरूप का न हो ।

विषमर्दनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधनाकुली

विषम-वल्कल [संज्ञा पु.](सं.) नारंगी ।

विषमवाण, विषमविशिख [संज्ञा पु.] (सं.) काम-देव का एक नाम ।

विषमवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह छंद जिसके असमान चरण या पद हों।

विषमवेग [संज्ञा पु.] (सं.) वह वेग जो न्यूनाधिक हो।

विषमव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) समव्यूह का उलटा व्यूह।

विषमशिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) प्रायश्चित आदि के सम्बन्ध में व्यवस्था देने का वह दोष जो भारी पर हलका और साधारण पाप पर भारी प्रायश्चित करने की व्यवस्था दीजाती है

विषमशील [वि.] (सं) उद्धत। उद्दंड।

विषमसंधि, विषमसन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) वह संधि जिसमें शक्ति के अनुसार तत्काल सहायता न दी जाय।

विषमसाहस [वि.] (सं.) बहुत साहस।

विषमा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-झरबेरी। २-वत्सनाग विशेष।

विषमाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विषमाग्नि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार की जठराग्नि।

विषमाधुर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रंगीविष।

विषमायुध [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

विषमाशन [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यकमतानुसार ठीक नियत समय पर भोजन न करना।

विषमुष्कक [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल।

विषमुष्टि [संज्ञा. पु.] (सं.) १-बकायन। २-जीवंती। ३-घोड़ानीम। ४-कुचला। ५-कलिहारी।

विषमुष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकायन।

विषमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिर आँवला।

विषमृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर पत्ती।

विषमेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विषमेषु [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

विषय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा या विचार किया जाय। सबजेक्ट। २-मजमून। ३-स्त्री-संभोग। ४-संपत्ति। ५-बड़ा प्रदेश या राज्य। ६-वह जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करें। जैसे-नाक विषय गन्ध या नेत्र का विषय रूप है।

विषयक [अव्य.] (सं.) किसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला। सम्बन्धी।

विषयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विषय का भाव या धर्म।

विषय-निर्द्धारिणी-समिति, विषय-निर्वाचनी-समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विषय समिति'

विषयपति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी छोटे प्रांत या जनपद का राजा या शासक।

विषय-प्रवेश [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रंथ की भूमिका अथवा उसके विषय का परिचायक कथन।

विषयवासी [संज्ञा पु.] (सं.) जनपद का निवासी

विषय-समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुछ विशिष्ट सदस्यों की वह समिति जो किसी सम्मेलन या महासभा में उपस्थित किये जाने वाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तुत करती है। सब्जेक्ट कमेटी।

विषयांत, विषयान्त [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रांत की सीमा।

विषयात्मक [वि.] (सं) विषयरूप।

विषयाधिप [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'विषयपति'

विषयानुक्रमणिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विषयसूची।

विषयी [संज्ञा पु.] (हिं) १-भोगविलास में आसक्त रहने वाला। विलासी। कामी। २-कामदेव। ३-धनवान्। ४-राजा।

विषयेंद्रिय, विषयेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.](सं.) शब्द आदि ग्राहक इन्द्रियाँ।

विषरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अतीस। २-घोड़ा नीम। ३-खेकसा।

विषल [संज्ञा पु.] (सं.) विष। जहर।

विषलता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-इन्द्रावारुणी नामक लता। २-कमलनाल। मृणाल।

विषलांगल, विषलाङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) कलिहारी।

विषवंचिक, विषवञ्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिच्छू नामक पौधा।

विषवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रवारुणी लता।

विषविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह विद्या जिसमें मन्त्र आदि की सहायता से झाड़-फूँककर विष का प्रभाव दूर किया जाता है।

विषविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन व्यवहारशास्त्रानुसार एक प्रकार की परीक्षा अथवा दिव्य जिससे यह जाना जाता था कि अमुक व्यक्ति दोषी है या नहीं।

विषवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर।

विषवैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) तंत्र-मंत्र आदि की सहायता से विष उतारने वाला चिकित्सक।

विषवैरिणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) निर्विषी नामक घास

विषशालुक [संज्ञा पु.] (सं.) कमलकंद। भसीड़।

विषशूक, विषभृंगी, विषभृङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) भीमरोल नाम का कीड़ा।

'विषसंयोग [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

विषसूचक [संज्ञा पु.] (सं.) चकोर नामक पत्ती।

विषहंता, विषहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सिरस का पेड़। [वि.] विषनाशक।

विषहंत्री, विषहन्त्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-अपराजिता। २-निर्विषी।

विषह [वि.] (सं.) जो विष का नाश करता हो। [संज्ञा पु.] (सं) १-देवदाली। २-निर्विषी।

विषहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष-नाशक मन्त्र या औषध। २-चोरक। भटेउर।

विषहरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवदाली। २-निर्विषी। ३-मनसादेवी।

विषहा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-देवदाली। २-निर्विषी

विषहारक [संज्ञा पु] (सं) भुइँकदम्ब।

विषहारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्विषी।

विषांकुर, विषाङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं) बाण। तीर।

विषांगना, विषाङ्गना [संज्ञा स्त्री] (सं) देखो 'विषकन्या'।

विषांतक, विषान्तक [संज्ञा पु.] (सं) १-वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट हो। २-शिव।

विषा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-अतीस। २-कलिहारी ३-कड़वी तरोई। ४-काकोली। ५-बुद्धि।

विषाक्त [वि] (सं) विषयुक्त। जहरीला।

विषाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) अतीस।

विषाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुट नामक औषध। २-हाथी दाँत। ३-पशु का सींग। ४-मेढ़ासिंगी। ५-वाराहीकन्द। ६-ऋषभक नामक औषध। ७-सूअर का दाँत। ८-इमली।

विषाणांत, विषाणान्त [संज्ञा पु.](सं) गणेशजी का दांत।

विषाणिका [संज्ञा स्त्री](सं) १-मेढ़ासिंगी। २-सातला। ३-काकड़ासिंगी। ४-भगवतवल्ली ५-सिंघाड़ा। ६-ऋषभक।

विषाणी [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जिसके सींग हों। सींगवाला। २-बैल। ३-हाथी। ४-सूअर। ५-सिंघाड़ा। ऋषभक। [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-क्षीर काकोली। २-मेढ़ासिंगी। ३-वृश्चिकाली ४-इमली। ५-सिंघाड़ा। ६-विष। ७-आवर्त्तकी नामक लता।

विषाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-खेद। दुःख। २-जड़ या निश्चेष्ट होने का भाव। ३-काम करने की बिलकुल इच्छा न होना। ४-मूर्खता।

विषादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-पलाशी नामक लता। २-इन्द्रवारुणी।

विषादिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विषद का भाव या धर्म।

विषादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पलासी नामक लता। २-इन्द्रवारुणी।

विषादी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसको विषाद हो

विषाद् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

विषानन [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प।

विषान्न [संज्ञा पु] (सं) विष मिला हुआ भोजन

विषापवादी [वि.] (सं.) निन्दावाक्य का प्रयोग करने वाला।

विषापह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोखावृक्ष। २-वह जिससे विष नष्ट हो।

विषापहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इंद्राइन। २-निर्विषी। ३-नागदमान। ४-अर्कपत्रा। ५-सर्पकंकाली। ६-सर्पदंष्ट्रा। ७-त्रिपर्णी नामक कंद।

विषायका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्विषी।

विषायुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-जहर से बुझा अस्त्र।

विषार [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

विषाराति [संज्ञा पु.] (सं.) काला धतूरा।

विषारि [वि.] (सं.) विषनायक। [संज्ञा पु.] १-चेंच नामक साग। २-घीकरंज।

विषाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली

विषास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प। २-वह अस्त्र जो जहर में बुझाया हुआ हो।

विषास्य [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

विषास्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिलावाँ।

विषी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जहरीली वस्तु। २-जहरीला सर्प। [वि.] जहरीला।

विषुण [संज्ञा पु.] देखो 'विषुव'।

विषुद्रुह [संज्ञा पु.] (सं.) तीर। बाण।

विषुप [संज्ञा पु.] देखो 'विषुव'।

विषुव [संज्ञा पु.] (सं.) वह समय जब सूर्य के विषुवत् रेखा पर पहुँचने से दिन और रात बराबर होते हैं। (यह साल में दो बार होता है-एक तो २० मार्च को और दूसरा २२ या २३ सितम्बर को।)

विषुवत्रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वीतल के पूरे मान-चित्र पर उसके ठीक मध्यभाग में पूर्व से पश्चिम में चारों ओर जाती हुई मानी-जाती है। ईक्वेटर।

विषुवरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विषुवत्-रेखा'।

विषुचक [संज्ञा पु.] (सं.) विसूचिका रोग।

विषूचिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'विसूचिका'।

विषौषधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदंती।

विष्कंध, विष्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो गति को रोकता है। २-विघ्न। बाधा।

विष्कंधाजीर्ण, विष्कन्धाजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

विष्कंभ, विष्कम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलित-ज्योतिष के मतानुसार सत्ताईस योगों में से पहला। २-विस्तार। ३-विघ्न। ४-बाधा। ५-नाटक का वह अंक जिसमें मध्यम पात्रों द्वारा बहुत्से को अथवा आने वाली कथा की सूचना दी जाती है। ६-योगियों का बंध विशेष। ७-एक पर्वत जिसका उल्लेख वाराह-पुराण में आता है। ८-अर्गल। व्योंड़ा।

विष्कंभक, विष्कम्भक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निष्कंभ'।

विष्कंभित, विष्कम्भित [वि.] (सं.) अवरुद्ध। रोका हुआ।

विष्कंभी, विष्कम्भी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-अर्गल। व्योड़ा।

विष्क [संज्ञा पु.] (सं.) बीस वर्ष की अवस्था का हाथी।

विष्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। २-अर्गल। व्योंड़ा। ३-एक दैत्य का नाम।

विष्कल [संज्ञा पु.] (सं.) शूकर। सूअर।

विष्कलन [संज्ञा पु.] (सं.) आहार। भोजन।

विष्किर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। २-नखों से कुरेदकर खाने वाले पक्षी। जैसे-कबूतर, मुरगा आदि। ३-एक प्रकार का सर्प।

विष्कुंभ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विष्कंभ'।

विष्टप [संज्ञा पु.] (सं.) भुवन। लोक।

विष्टप् [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्गलोक।

विष्टंभ, विष्टम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाधा। रुकावट। २-एक प्रकार का रोग। ३-आक्रमण चढ़ाई।

विष्टंभन, विष्टम्भन [संज्ञा पु.] सं.) १-रोकने या संकुचित करने की क्रिया। २-रोकने वाला संकुचित करने वाला।

विष्टंभी, विष्टम्भी [संज्ञा पु.] (सं.) पेटा का मल रोकने वाला पदार्थ।

विष्टर [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक। मदार। २-वृक्ष पेड़। ३-पीठ। ४-कुश का आसन।

विष्टरश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

विष्टरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुंडासिनी नामक घास

विष्टराश्व [संज्ञा पु.] (सं.) पृथु राजा के एक पुत्र का नाम।

विष्टरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली केतकी।

विष्टारपंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक छंद।

विष्टारबृहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद का नाम।

विष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह काम जो बिना पारिश्रमिक दिये कराया जाय। बेगार। २-वेतन। ३-काम। ४-वर्षा। ५-फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवां।

विष्टिकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीनकाल का वह राज्य का सैनिक अधिकारी जिसे अपनी सेना रखने के लिए जागीर मिला करती थी। २-अत्याचारी।

विष्टिभद्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवां करण।

विष्टिव्रत [संज्ञा पु] (सं.) पुराणोक्त एक व्रत।

विष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल। गू। पाखाना।

विष्ठाभुक्, विष्ठाभुक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

विष्ठारुहा [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) पीली केतकी।

विष्ठेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी।

विष्णु [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंदुओं का एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि के पालन-पोषण करने वाले माने जाते हैं। २-अग्नि। ३-वसुदेवता। ४-बारह आदित्यों में से पहला। ५-एक प्राचीन ऋषि।

विष्णुऋक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) श्रवणनक्षत्र का एक नाम।

विष्णुकंद, विष्णुकन्द [संज्ञा पु.] (सं) कोंकण-प्रदेश में होने वाला एक प्रकार का बड़ा कंद।

विष्णुकांची, विष्णुकाञ्ची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण के एक प्राचीन तीथ का नाम।

विष्णुकांता, विष्णुकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) नीली अपराजिता।

विष्णुकांती, विष्णुकान्ती [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विष्णुकाक [संज्ञा पु.] (सं.) नीली अपराजिता।

विष्णुक्रांत, विष्णुक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) इराक पेचाँ नाम की लता या उसका फूल। २-संगीत में एक प्रकार का ताल।

विष्णुक्रांता, विष्णुक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-नीली अपराजिता। २-वाराहीकंद। ३-नीले फूल की शङ्खाहुली।

विष्णुक्रांति, विष्णुक्रान्ति [संज्ञा स्त्री] (सं. नीली अपराजिता।

विष्णुक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल के एक तीर्थ का नाम।

विष्णुगंगा, विष्णुगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

विष्णुगंधि, विष्णुगन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल फूल वाली शङ्खाहुली।

विष्णुगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो लोक में कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे। २-चाणक्य का असली नाम। ३-बड़ी मूली। ४-विष्णुकंद।

विष्णुगुप्तक [संज्ञा पु.] (सं) बड़ी मूली।

विष्णुचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुदर्शनचक्र।

विष्णुतिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एकादशी, और द्वादशी, यह दोनों तिथियाँ।

विष्णुतैल [संज्ञा पु.] (सं.) वातरोगों में काम आने वाला एक तेल। (वैद्यक)

विष्णुत्व [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु का भाव या धर्म।

विष्णुदैवत [संज्ञा पु.] (सं.) श्रवणनक्षत्र।

विष्णुद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) एक द्वीप का नाम। (पुराण)

विष्णुधर्मोत्तर [संज्ञा पु](सं) एक उपपुराण का नाम।

विष्णुधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २-हिमालय से निकली हुई एक नदी का नाम।

विष्णुपंजर, विष्णुपञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक कवच जिसके धारण करने से सब प्रकार के भय दूर हो जाते हैं।

विष्णुपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-अदिति का एक नाम।

विष्णुपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-आकाश

विष्णुपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गङ्गा नदी। २-वृष, वृश्चिक, कुम्भ और सिह इनमें से प्रत्येक की संक्रांति।

विष्णुपरायण [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णव।

विष्णुपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

विष्णुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुईं आँवला।

विष्णुपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक पीठ या तीर्थ-स्थान का नाम (तांत्रिक)।

विष्णुपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं) वैकुण्ठ।

विष्णुप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-तुलसी (पौधा)।

विष्णुमाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

विष्णुयशा [संज्ञा पु.] (सं.) होने वाले कल्कि अवतार का पिता।

विष्णुरथ [संज्ञा पु.] (सं) गरुड़।

विष्णुरात [संज्ञा पु.] (सं.) परीक्षित राजा का एक नाम।

विष्णुलिंगी, विष्णुलिङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बटेर।

विष्णुलोक [संज्ञा पु.] (सं.) वैकुण्ठ। गोलोक।

विष्णुवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी का पौधा

विष्णुवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

विष्णुवृद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विष्णुशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

विष्णुशिला [संज्ञा स्त्री.] (सं) शालग्राम।

विष्णुशृंखल, विष्णुशृङ्खल [संज्ञा पु.] (सं.) वह द्वादशी जो श्रवणनक्षत्र में हो।

विष्णुश्रुत [संज्ञा पु] (सं.) १-एक प्राचीन ऋषि का नाम। २-'विष्णु तुम्हारा मङ्गल करे' इस आशय का आशीर्वाद वचन।

विष्णुसंहिता [संज्ञा स्त्री.](सं) एक प्रसिद्ध स्मृति का नाम।

विष्णुसर्वज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) सायण के गुरु का नाम।

विष्णुस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रसिद्ध स्मृति

विष्णुहिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-तुलसी का पौधा २-महमा।

विष्पश्री [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

विष्पर्धा [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग। [वि.] जिसे किसी प्रकार की स्पर्धा न हो।

विष्फार [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष की टंकार।

विष्य [वि.] (सं) जो विष या जहर देकर मार डालने योग्य हो।

विष्वक् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सर्वदा इधर-उधर घूमता-फिरता हो। २-देखो 'विषुव'।

विष्वक्पर्णी [संज्ञा स्त्री.](सं.) भुइँआँवला।

विष्वक्सेन [संज्ञा. पु.] (सं.) १-विष्णु। २-एक मनु का नाम। ३-शिव। ४-एक प्राचीन ऋषि का नाम। ५-पुराणानुसार शंकर के एक पुत्र का नाम।

विष्वक्सेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगु।

विसंकट, विसङ्कट [संज्ञा पु.] (सं) १-हिङ्गोट का पेड़। २-सिंह। शेर। [वि.] विशाल। बड़ा।

विसंगत, विसङ्गत [वि.] (सं.) जो संगत या सम्बद्ध न हो। असङ्गत। ससम्बद्ध।

विसंज्ञ [वि.] (सं.) बेहोश।

विसंधिक, विसन्धिक [वि.](सं.) जिनकी संधि न हो सकती हो।

विसंभूत, विसम्भूत [वि.](सं.) सहसा या अचानक ऐसे रूप में सामने आने वाला, जिसकी कोई आशा अथवा सम्भावना न हो। एमर्जेन्ट।

विसंभूति, विसम्भूति [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह घटना या बात जो सहसा ऐसे रूप में सामने आवे जिसकी पहले से कोई आशा, सम्भावना अथवा कल्पना न हो। *एमर्जेन्सी।*

विसंवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-डाँट। डपट। २-विरोध। [वि.] विलक्षण। अद्भुत।

विसंशय [वि.] (सं.) संशयरहित।

विसंस्थित [वि.] (सं) अपूर्ण।

विस [संज्ञा पु.](सं.) कमलनाल। मृणाल। * [सर्व.] (हिं.) देखो 'उस'।

विसकंठिका, विसकण्ठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का छोटा बगला।

विसकुसुम [संज्ञा पु.] सं.) कमल।

विसग्रंथि, विसग्रन्थि [संज्ञा पु] (सं.) कमल की जड़। भसींड।

विसज [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

विसदृश [वि.] (सं.) १-उलटा। विपरीत। २-असमान। ३-विलक्षण।

विसनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) कमलिनी।

विसप्रसून [संज्ञा पु.] (सं) कमल।

विसम [वि.] (हिं.) देखो 'विषम'।

विसमता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'विषमता'।

विसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-दान। २-छोड़ना। त्यागना। ३-व्याकरण में वह चिह्न जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है। यह (:) उच्चारण में आधे 'ह' के समान होता है। ४-मोक्ष। ५-मृत्यु। ६-प्रलय। ७-वियोग। ८-चमक। ९-सूर्य का एक अयन। १०-वर्षा-शरद और हेमंत यह तीन ऋतुएँ।

विसर्गिक [वि.](सं.) आकर्षण करने वाला। खींचने वाला।

विसर्गी [वि.] (सं.) १-खींचने वाला। २-दान देने वाला।

विसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोड़ना। परित्याग। २-विदा या रवाना करना। ३-किसी को यह कहकर भेजना कि तुम जाकर अमुक कार्य करो। ४-दान। ५-षोडशोपचार पूजन में अन्तिम उपचार। ६-किसी कर्मचारी पर कोई दोष लगाकर उसे उसके पद से अलग करना। *डिसमिसल।* ७-न्यायालय में मुकदमा आदि खारिज होना। *डिसमिसल।*

विसर्प [संज्ञा पु] (सं.) एक रोग जिसमें ज्वर के साथ-साथ सारे शरीर में छोटी-छोटी फुंसियां निकल आती हैं।

विसर्पण [संज्ञा पु] (सं) १-फैलना। २-फोड़े आदि का फूटना। ३-फेंकना।

विसर्पिका [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) विसर्प रोग।

विसर्पी [वि] (हिं.) फैलने वाला।

विसल [संज्ञा पु.] (सं) वृक्ष का नया पत्ता।

विसल्यकृत [संज्ञा पु] (सं.) भद्रवल्ली।

विसवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आंखों की पलकें सूज जाने और छोटी-छोटी फुंसियां हो जाने का एक रोग।

विसवासह, विसवासा [संज्ञा स्त्री](सं) जाविश्री

विसशालूक [संज्ञा पु.](सं.) कमल की जड़। भसीड़

विसामान्य [वि.] (सं.) जो सामान्य से कुछ घटकर हो। *सब-नार्मल।*

विसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली। २-निकालना। ३-फैलाव। विस्तार। ४-प्रवाह। बहाव। ५-उत्पत्ति!

विसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी।

विसारित [वि.] (सं.) फैलाया हुआ।

विसिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमलिनी। + [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'व्यसनी।

विसुकृत [संज्ञा पु.] (सं) पाप। गुनाह।

विसूचिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्राचीनकाल का एक रोग जिसे कुछ लोग 'हैजा' मानते हैं।

विसूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विसूचिका रोग।

विसूरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुःख। रंज। २-चिन्ता। ३-वैराग्य।

विसूर्य [वि.] (सं) सूर्यरहित।

विसृत [वि](सं.) १-विस्तृत । चौड़ा । २-निकाला हुआ । ३-कहा हुआ ।

विसृष्ट [वि.] (सं.) १-विशेष रूप से बनाया हुआ । २-छोड़ा हुआ । व्यक्त । ३-भेजा हुआ [संज्ञा पु.] (सं.) विसर्ग (:) ।

विसोंटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अड़ूसा ।

विसोम [वि.] (सं.) चन्द्रशून्य ।

विसौरभ [वि.] (सं.) दुर्गंध । बदबू ।

विस्तर [वि.] (सं.) १-बड़ा और लम्बा-चौड़ा । विस्तृत । २-बहुत अधिक । [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'विस्तार' । २-प्रेम । ३-समूह । ४-आसन । ५-संख्या । ६-आधार । ७-शिव का एक नाम ।

विस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) विस्तार करने या बढ़ाने की क्रिया या भाव ।

विस्तरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत अधिक होने का भाव ।

विस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) १-लंबाई और चौड़ाई फैलाव । २-पेड़ की शाखा । ३-गुच्छा । ४-शिव । ५-विष्णु ।

विस्तारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विस्तार करना । २-फैलाना ।

विस्तारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विस्तार का भाव । फैलाव ।

विस्तारना* [क्रि. स.] (हिं.) विस्तार करना ।

विस्तारित [वि.] (सं.) जिसका विस्तार किया किया गया हो । बढ़ाया हुआ । ऐक्सटेंडेड ।

विस्तारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसका विस्तार अधिक हो । २-बरगद । बड़ ।

विस्तीर्ण [वि.] (सं.) १-विस्तृत । २-विशाल । बहुत बड़ा । ३-विपुल । अत्यधिक ।

विस्तीर्णकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी ।

वितीर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विस्तार । फैलाव ।

वितीर्णपर्णी [संज्ञा पु.] (सं.) मानकंद ।

वितीर्णभेद [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम ।

विस्तृत [वि.] (सं.) १-लंबा-चौड़ा । विस्तार वाला । २-यथेष्ठ विवरण वाला । ३-दूर तक फैला हुआ या विशाल ।

विस्तृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विस्तार । फैलाव । २-व्याप्ति । ३-वृत्त का व्यास ।

विस्फार [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष की टंकार । २-धनुष की डोरी । ३-विस्तार । फैलाव । ४-तेज़ी । स्फुर्ति । ५-विकास । ६-कांपना ।

विस्फारक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर ।

विस्फारण [संज्ञा पु.](सं.) १-खोलना । फैलाना २-फाड़ना ।

विस्फारित [वि.] (सं.) १-भली प्रकार खोला या फैलाया हुआ । २-फाड़ा हुआ । ३-कँपाया हुआ । ४-(धनुष को) टङ्कारा हुआ ।

विस्फीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृत्रिम रूप से फूले हुए पदार्थ अथवा बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन को फिर से पूर्व स्थिति में लाना । 'स्फीति' का उलटा । डिफ्लेशन ।

विस्फुरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तिंदुक नामक वृक्ष

विस्फुरित [वि.] (सं.) १-कांपता हुआ । कंपित । २-सूजा या फूला हुआ ।

विस्फुलिंग, विस्फुलिङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-आग की चिनगारी । शोला । २-एक प्रकार का विष

विस्फूर्जन [संज्ञा पु.](सं.) किसी वस्तु का फैलना या बढ़ना । विकास ।

विस्फूर्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'विस्फुरणी' ।

विस्फूर्जित [वि.] (सं.) बढ़ता या फैलता हुआ । विकसित ।

विस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पदार्थ का अन्दर की गरमी से बाहर फूट पड़ना । २-कोई जहरीला और बहुत खराब फोड़ा ।

विस्फोटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जहरीला फोड़ा । २-गरमी या आग के कारण भड़क उठने वाला पदार्थ । एक्सप्लोजिव । ३-शीतला का रोग । चेचक ।

विस्फोटक-गोला [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'बम' ।

विस्फोटक-यंत्र [संज्ञा पु.] (सं.) धड़ाका करने वाला बारूद भरा हुआ पटाखा । डेटानेटॉर ।

विस्फोटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पदार्थ का उबाल आदि के कारण फूट बहना । २-जोर का शब्द ।

विस्मय [संज्ञा पु.] (सं.) १-आश्चर्य । ताज्जुब । २-साहित्य में अद्‌भुत रस का एक स्थायी भाव जो विलक्षण पदार्थ के वर्णन से चित्त में उत्पन्न होता है । ३-गर्व । अभिमान । ४-संदेह । शक । [वि.](सं.) जिसका गर्व चूर्ण हो गया हो ।

विस्मयनीय [वि.] (सं.) विस्मय के योग्य ।

विस्मयान्वित [वि.] (सं.) आश्चर्ययुक्त ।

विस्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) भूल जाना ।

विस्मापन [वि.](सं.) [स्त्री. विस्मापनी] आश्चर्यप्रद । [संज्ञा पु.] १-गंधर्वों की नगरी । २-कामदेव । ३-कोई भी वस्तु जो आश्चर्य में डाले ।

विस्मारक [वि.] (सं) भुला देने वाला ।

विस्मारण [संज्ञा पु.] (सं.) लीन हो जाना । नष्ट हो जाना ।

विस्मित [वि.] (सं.) जिसे आश्चर्य या विस्मय हुआ हो । चकित ।

विस्मृत [वि.] (सं.) भूला हुआ ।

विस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भूल जाना ।

विस्रंभ, विस्रम्भ [संज्ञा पु.](सं.) १-विश्वास । एतबार । २-झगड़ा । ३-वध । हत्या ।

विस्रंसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ में आहु देने का उपकरण (प्राचीन) ।

विस्र [संज्ञा पु.](सं.) १-बड़ी मूली । २-चिरायं

विस्रगंध, विस्रगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्याज २-गोदंती हरताल ।

विस्रगंधा, विस्रगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १- विस्रगंध । २-हवुषा ।

विस्रगंधि, विस्रगन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) गोदं हरताल ।

विस्रसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृद्धावस्था । बुढ़ापा

विस्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाऊ बेर । २-चर्ब

विस्राम*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'विश्राम' ।

विस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) भात का मांड़ ।

विस्राव्य [वि.] (सं.) गिराने लायक ।

विस्रुत [वि.] (सं.) भूला हुआ ।

विस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द । ध्वनि ।

विस्वर [वि.] (सं.) बेसुरा ।

विहंग, विहङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-पत्ती । चिड़िया २-बाण । तीर । ३-मेघ । बादल । ४-सूर्य । ५-चन्द्रमा । ६-ग्रह ।

विहंगम, विहङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) पत्ती ।

विहंगमा, विहङ्गमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहँगी की वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर बोझ बांधकर लटकाया जाता है । २-सूर्य की एक किरण ।

विहंगराज, विहङ्गराज [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़

विहंगिका, विहङ्गिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहँगी

विहँसना* [क्रि. अ.] (हिं.) हँसना ।

विहग* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विहंग' ।

विहत [वि.] (सं.) १-पूरी तरह से आहत कि हुआ । मारा या वध किया हुआ । २-टूटा हुआ । ३-विफल ।

विहति [संज्ञा पु.] (सं.) मित्र । सखा । [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) नाश । बरबादी ।

विहनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंसा । हत्या । २-चोट । ३-धुनिये की धुनकी ।

विहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वियोग । विछोह । २-देखो 'विहार' ।

विहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-घूमना-फिरना । २-वियोग । विछोह । ३-फैलना । ४-विहार करना ।

विहरना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-विहार करना । २-घूमना-फिरना ।

विहव [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ । २-युद्ध । लड़ाई

विहसन, विहसित [संज्ञा पु.](सं.) मंदहास । मुसकराहट । मुसकान ।

विहस्त [वि.] (सं.) १-व्याकुल । २-टूटे हुए हा का । करहीन । [संज्ञा पु.](सं.) पंडित । ज्ञानी

विहान [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रातःकाल । सवेरा

विहायगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाश में चलने की क्रिया या शक्ति।

विहायस [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-दान ३-पक्षी।

विहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-टहलना। घूमना। २-मनोविनोद तथा सुख प्राप्ति के लिए होने वाली क्रीड़ा। ३-वह स्थान जहां रतिक्रीड़ा की जाय। ४-रतिक्रीड़ा। ५-बौद्ध भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ। संघाराम।

विहारक [वि.] (सं.) विहार करने वाला।

विहारगृह, विहारस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) रतिक्रीड़ा करने का स्थान।

विहारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैन या बौद्धमठ। संघाराम।

विहारी [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। [वि.] (सं.) [स्त्री. विहारिणी] विहार करने वाला।

विहास [वि.] (सं.) हास्यरहित।

विहिंसक [वि.] (सं.) नाश करने वाला।

विहित [वि.] (सं.) १-जिसका विधान किया गया हो। प्रेस्क्राइब्ड। २-नियमानुसार उचित या ठीक।

विहिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोई काम करने की आज्ञा। विधान।

विहीन [वि.] (सं.) १-रहित। बिना। २-त्यागा-हुआ।

विहीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विहीन होने का भाव

विहीनर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विहुंडन, विहुण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक अनुचर का नाम।

विहून* [वि.] (हिं.) देखो 'विहीन'।

विहृत [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलंकारों में से एक (साहित्य)।

विहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बलपूवक कुछ ले-लेना या कोई काम करना। २-विहार। क्रीड़ा ३-खोलने की क्रिया।

विह्वल [वि.] (सं.) घबराया हुआ। व्याकुल। बे-चैन।

विह्वलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याकुलता। घबराहट

विह्वली [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो बहुत घबरा गया हो।

वीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। २-पक्षी। ३-मन

वीकाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-एकान्त स्थान। २-प्रकाश।

वीक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दृष्टि।

वीक्षण [संज्ञा पु.](सं) देखने की क्रिया। निरीक्षण।

वीक्षणीय [वि.] (सं.) देखने योग्य। दर्शनीय।

वीक्षा [संज्ञा स्त्री] (सं) देखने की क्रिया। वीक्षण।

वीक्षित [वि.] (सं.) भलीभांति देखा हुआ।

वीक्ष्य [वि.](सं.) १-देखने योग्य। २-जो दिखलाई न पड़े। [संज्ञा पु.] १-आश्चर्य। विस्मय। २-दृश्य। ३-नर्त्तक। ४-घोड़ा।

वीचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लहर। तरङ्ग। २-अवकाश। ३-सुख। ४-चमक।

वीचितरंगन्याय, वीचितरङ्गन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्याय जिसमें एक के उपरांत दूसरी इस क्रम से बराबर आने वाली तरंगों के समान ही ककारादि वर्णों की उत्पत्ति।

वीचिमाली [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

वीची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लहर। तरंग।

वीचीकाक [संज्ञा पु.] (सं.) जलकौआ।

वीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूल कारण। २-शुक्र। वीर्य। ३-तेज। ४-तांत्रिक मन्त्र। ५-देखो 'बीज'।

वीजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विजयसाल। २-बिजौरानीबू। ३-बीज। ४-सफेद। सहिंजन। ५-देखो 'बीजक'।

वीजकर [संज्ञा पु.] (सं) उड़द की दाल।

वीजकर्कटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

वीजका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुनक्का।

वीजकाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरानीबू (पेड़)।

वीजकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्यवर्धक औषध।

वीजकोश [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमलगट्टा। २-सिंघाड़ा। ३-वह फल जिसमें बीज रहते हैं।

वीज-गणित [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रक्रिया जिससे सांकेतिक अक्षरों की सहायता से गणना करके अभीष्ट राशियां निकाली जाती हैं (गणित का एक अङ्ग)।

वीजगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) परवल।

वीजगुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम।

वीजद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) विजयसार नामक वृक्ष।

वीजधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) धनियां।

वीजन [संज्ञा पु.] (स.) १-पंखा झलना। २-पङ्खा। ३-चकोर। ४-चँवर। ५ लोध का पेड़

वीजपादप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पियासाल। विजयसार। २-भिलावां।

वीजपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वंश का आदि पुरुष।

वीजपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरुआ। २-मैनफल। ३-ज्वार।

वीजपूर [संज्ञा पु.](सं.)१-बिजौरानीबू। २-चकोतरा। ३-गलगल।

वीजपर्णी [संज्ञा पु.](सं)१-चकोतरा। २-बिजौरानीबू।

वीजपेशिका [संज्ञा स्त्री] (सं) अण्डकोश।

वीजफलक [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरानीबू।

वीजमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कमलगट्टा।

वीजमार्गी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के वैष्णव यह पश्चिमी भारत में होते हैं।

वीजरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द की दाल।

वीजरेचक, वीजरेचन [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

वीजवर [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द। माष।

वीजवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वीजवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पियासाल। २-भिलावां।

वीजसार [संज्ञा पु.] (सं.) बायविड़ङ्ग।

वीजसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

वीजस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) पलास। ढाक।

वीजांकुरन्याय, वीजाङ्कुरन्याय [संज्ञा पु.](सं.) 'बीज से अङ्कुर है या अंकुर से बीज' न बीज के बिना अंकुर हो सकता है न अंकुर के बिना बीज। (दो सम्बन्धयुक्त वस्तुओं के नित्य प्रवाह के दृष्टान्त में वेदांती लोग इस न्याय का प्रयोग करते हैं)।

वीजाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटा।

वीजाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) महादा। वृक्षाम्ल।

वीजाविक [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

वीजी [संज्ञा पु.] (सं.) १-पिता। २-चौलाई का साग। ३-वह जिसमें बीज हों।

वीजोदक [संज्ञा पु.] (सं.) ओला। बिनौरी।

वीज्य [वि.] (सं.) १-जो बोने योग्य हो। २-कुलीन।

वीटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटे बच्चों का खेल जो प्राचीनकाल में लकड़ी के छोटे-छोटे डंडों से खेला जाता था।

वीटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान का बीज।

वीटिका, वीटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान का बीड़ा।

वीटो [संज्ञा पु.] (अं.) किसी सभा के बहुमत द्वारा प्रस्ताव या मंतव्य को अस्वीकृत करने का अधिकार।

वीणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध बाजा जो सब बाजों में श्रेष्ठ माना गया है। बीन। २-विद्युत। बिजली।

वीणादंड, वीणादण्ड [संज्ञा पु.](सं.) वीणा का लंबा डंडा जो मध्य में होता है।

वीणापाणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

वीणाप्रसेव [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा पर चढ़ाने का गिलाफ।

वीणाभिद् [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की वीणा

वीणावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती। २-एक अप्सरा का नाम।

वीणावरा [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्रकार की मूर्च्छना।

वीणावाद, वीणावादक [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा बजने वाला।

वीणावादन [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा बजाना।

वीणास्य [संज्ञा पु.] (सं.) नारद।

वीणाहस्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वीतंस [संज्ञा पु.](सं.) १-पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। २-चिड़ियाघर।

वीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा या हाथी जो लड़ाई के काम के अयोग्य हो। २-हाथी को अंकुश से गोदकर और पैरों की मार से मारने की क्रिया। ३-सांख्यक के अनुसार अनुमान के दो प्रकारों में से एक। [वि.] १-जो छोड़ दिया गया हो। २-मुक्त। ३-जो समाप्त हो चुका हो। ४-जो (किसी बात से) रहित हो। ५-सुन्दर।

वीतदंभ, वीतदम्भ [वि.] (सं.) जिसने अहंकार त्याग दिया हो।

वीतभय [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु। [वि.] जिसका भय छूट गया हो।

वीतभीत [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

वीतमल [वि.] (सं.) १-पापरहित। २-विमल।

वीतराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसने सांसारिक वस्तुओं तथा सुखों के प्रति राग अथवा आसक्ति बिलकुल छोड़ दी हो। २-जैनियों के एक प्रधान देवता का नाम। ३-बुद्ध का एक नाम।

वीतशोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसने शोक आदि का त्याग किया हो। २-अशोक नामक वृक्ष।

वीतसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जनेऊ।

वीतहव्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंगिरा के वंश के एक ऋषि। २-शुनक के पुत्र का नाम।

वीतहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वीतहोत्र'।

वीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गति। चाल। २-दीप्ति। चमक। ३-गर्भ धारण की क्रिया। ४-खाना-पीना। ५-यज्ञ। ६-घोड़ा।

वीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुलेठी। २-नीलिका।

वीतिहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य। ३-प्रियव्रत राजा के पुत्र का नाम। ४-वह जो यज्ञ करता हो।

वीती [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम।

वीथिका, वीथी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दृश्यकाव्य में रूपक का एक भेद। इसमें एक ही अङ्क और एक ही नायक होता है। २-मार्ग। रास्ता। ३-आकाश में सूर्य के चलने का मार्ग। ४-आकाश में नक्षत्रों के रहने के कुछ विशिष्ट स्थान।

वीथ्यंग, वीथ्यङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) रूपक में वीथी के अंग जो संख्या में १३ हैं।

वीध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। २-अग्नि। ३-वायु।

वीनाह [संज्ञा पु.] (सं.) कुएं के ऊपर का ढकना।

वीपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत। बिजली।

वीभत्स वि.] (सं.) १-जिसे देखने से घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २-क्रूर। ३-पापी। [संज्ञा पु.](सं.) साहित्य में नौ रसों में से सातवाँ रस। इसमें रक्त, माँस आदि घृणित् वस्तुओं का वर्णन। होता है जिनसे अरुचि एवं घृणा उत्पन्न होती है।

वीभत्सता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीभत्स या घृणा का भाव।

वीरंकरा, वीरङ्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणोक्त एक नदी का नाम।

वीरंधर, वीरन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। २-पशुओं के साथ लड़ाई। ३-चमड़े की जाकेट या निमास्तीन। ४-एक नदी का नाम। (प्राचीन)।

वीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहादुर। बलवान। २-योद्धा। सिपाही। ३-उत्साह या साहस का कोई काम करने वाला। ४-एक संबोधन जो भाई, पति, पुत्र आदि के लिये होता है। ५-साहित्य में एक रस जिसका स्थायीभाव उत्साह है। ६-विष्णु। ७-जिन। ८-तांत्रिक के मतानुसार साधना के तीन भावों में से एक। ९-कुशल। निपुण। १०-कर्मठ। ११-यज्ञ की अग्नि। १२-काली मिर्च। १३-पुष्करमूल। १४-काँजी। १५-खस। उशीर। १६-आलूबुखारा। १७-पीली कटसरैया। १८-चौलाई का साग। १९-वाराहीकंद। २०-कनेर। २१-लताकरंज। २२-अर्जुनवृक्ष। २३-काकोली। २४-सिन्दूर। २५-शालिपर्णी। २६-लोहा। २७-नरसल। २८-कुश। २९-तरोई। ३०-ऋषभक औषध।

वीरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद कनेर। २-निंदित देश का निवासी। ३-पुराणानुसार एक मनु का नाम।

वीरकरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीरंकरा नामक नदी।

वीरकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वीरोचित काम करने वाला।

वीरकाम [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्र की कामना या इच्छा करने वाला।

वीरकुक्षि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीर पुत्र जनने वाली स्त्री।

वीरकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) पांचाल के एक राजकुमार का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वीरकेशरी [संज्ञा पु.] (सं.) वीरों में सिंह के समान वीर। अतिश्रेष्ठ वीर।

वीरकेसरी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वीरकेशरी'।

वीरगति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होने वाली गति जो श्रेष्ठ मानी गई है। २-स्वर्ग।

वीरचक्र [संज्ञा पु.](सं.) भारत गणराज्य की ओर से युद्धक्षेत्र में वीरता दिखाने वाले सैनिकों को दिया जाने वाला एक पदक। यौ०-परम वीरचक्र-भारत राष्ट्र का एक सर्वोच्च पदक जो बहुत वीरता दिखाने वाले सैनिक को दिया जाता है। महावीरचक्र-भारतराष्ट्र का एक पदक जो बहुत वीरता दिखाने वाले सैनिक को दिया जाता है। यह मध्यमश्रेणी का पदक है।

वीरचक्रेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वीरण [संज्ञा पु.] (सं) १-कुश, दूब आदि जाति के तृण। २-उशीर। खस। ३-एक प्रजापति का नाम। ४-एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वीरणक [संज्ञा पु.] (सं) महाभारत में वर्णित एक नाग का नाम।

वीरतर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तीर। बाण। २-उशीर। खस।

वीरतरु [संज्ञा पु.] (सं) १-अर्जुन वृक्ष। २-तालमखाना। ३-भिलावाँ। ४-शर नामक वृक्ष। ५-पियासार।

वीरता [संज्ञा स्त्री] (सं) शूरता। बहादुरी।

वीरद्युम्न [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजकुमार का नाम (महाभारत)।

वीरधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव का एक नाम

वीरनायक [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

वीरपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल में युद्ध के समय पहनने की एक प्रकार की पोशाक।

वीरपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वैदिककालीन नदी। २-वीर आदमी की पत्नी।

वीरपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भाँग। २-महाकंद। धारणी।

वीरपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सुरपर्णी।

वीरपान [संज्ञा पु.] (सं.) वह पेय पदार्थ जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिए पान करते हैं।

वीरपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाबला। २-सिंदूरपुष्पी।

वीरप्रमोक्षा [संज्ञा पु.](सं.) महाभारत में वर्णित एक तीर्थ।

वीरप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो वीर संतान उत्पन्न करती है।

वीरबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३-रावण के एक पुत्र का नाम।

वीरभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २-खस। उशीर। शिव के एक प्रसिद्ध गण का नाम।

वीरभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

वीरभद्र-रस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस।

वीरभुवित [संज्ञा स्त्री.] (सं) आधुनिक वीरभूमि का प्राचीन नाम।

वीरमंगल [संज्ञा पु.] (देश.) हाथी।

वीरमणि [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक प्राचीन राजा का नाम जो देवपुर में राज्य करता था।

वीरमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण में वर्णित एक प्राचीन जाति का नाम।

वीरमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम (पुराण)।

वीरमर्दल [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध में बजाने का एक ढोल (प्राचीन)।

वीरमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीर पुत्र को उत्पन्न करने वाली स्त्री। वीर-जननी।

वीरमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

वीरमुद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पैर की बिचली उँगली में पहनने की छल्ली।

वीररज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

वीरराघव [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

वीररेणु [संज्ञा पु.] (सं.) भीमसेन।

वीरललित [संज्ञा पु.] (सं.) वीरोचित, पर कोमल स्वभाव।

वीरलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

वीरवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक लता का नाम। मांसरोहिणी। २-वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हों।

वीरवर [वि.] (सं.) अत्यधिक वीर।

वीरवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवदाली-लता।

वीरवह [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ। २-वह जो घोड़ों द्वारा खींचकर जाय।

वीरविप्लावक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो शूद्रों के धन से हवन करता हो।

वीरवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुनवृक्ष। २-भिलावे का पेड़। ३-महाशालि। ४-सावाँ। ५-शालवृक्ष।

वीरवेतस [संज्ञा पु.] (सं.) अमलबेंत।

वीरव्रत [वि.] (सं.) दृढ़ संकल्प। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह ब्रह्मचारी जो बहुत ही निष्ठा और आचार सहित रहता हो। २-मधु के एक पुत्र का नाम।

वीरशय [संज्ञा पु.] (सं.) वीरों के सोने का स्थान। रणभूमि।

वीरशय्या, वीरशयन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्धक्षेत्र

वीरशाक [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ साग।

वीरशैव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के उपासकों का एक भेद।

वीरसू [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] वीरों को उत्पन्न करने वाली।

वीरसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा नल के पिता का नाम। २-आरूक नामक जड़ी। ३-आलूबुखारा।

वीरस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु।

वीरस्थान [संज्ञा पु] (सं.) स्वर्ग।

वीरहा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-आलसी अग्निहोत्री ब्राह्मण। [वि.] वीरों को मारने वाला।

वीरहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम।

वीरांतक, वीरान्तक [वि] (सं) १-वीरों का नाश करने वाला। २-अर्जुनवृक्ष।

वीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों। २-मुरामांसी। ३-क्षीरकाकोली ४-भुइँआँवला। ५-एलुवा। ६-केला। ७-काकोली। ८-शतावर। ९-घीकुआँर। १०-ब्राह्मी। ११-अतीस। १२-मदिरा। १३-शीशम का पेड़। १४-पिठवन। १५-खरेंटी। १६-कुटकी। १७-जटामांसी। १८-आँवला। १९-गम्भारी। २०-एक पौराणिक नदी का नाम।

वीराचारी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के वाममार्गी जो वीरभाव से उपासना करते हैं।

वीराद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुनवृक्ष।

वीरान [वि.] (फा.) उजाड़।

वीराना [संज्ञा पु] (फा.) उजाड़ जङ्गल।

वीरानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वीरान या उजाड़ होने का भाव।

वीराम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) अमलबेत।

वीरारुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक जड़ी का नाम। आरूक।

वीराशंसन [संज्ञा पु.] (सं) भीषण या भयानक युद्धभूमि।

वीराष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वीरासन [संज्ञा पु.] (सं.) साधकों के एक प्रकार से बैठने का आसन या मुद्रा।

वीरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वीरण प्रजापति कन्या २-पुत्रवती स्त्री। ३-एक प्राचीन नदी।

वीरुध [संज्ञा पु.] (सं.) १-औषध। २-लता। ३-पौधा।

वीरुधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) औषधि।

वीरेश, वीरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वीरोपजीविक [संज्ञा पु.] (सं.) लोगों के यज्ञ आदि कराकर जीवन-निर्वाह करने वाला।

वीर्य, वीर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर की वह धातु जिससे उसमें शक्ति, तेज तथा कांति आती और संतान उत्पन्न होती है। शुक्र। रेत। २-देखो 'रज'। ३-बल। पराक्रमी। ४-अन्न आदि का बीज।

वीर्यकृत, वीर्य्यकृत [संज्ञा पु] (सं) बलवान।

वीर्यकृत्, वीर्य्यकृत् [वि.] (सं) बलकारक।

वीर्यज, वीर्य्यज [संज्ञा पु.] (सं) लड़का। पुत्र।

वीर्यतम, वीर्य्यतम [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अति पराक्रमी।

वीर्यधर, वीर्य्यधर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के पौराणिक क्षत्रिय जो प्लक्षद्वीप में रहते थे।

वीर्यवत्, वीर्य्यवत् [वि] (सं) १-बलवान। २-मांसल।

वीर्यशुल्क, वीर्य्यशुल्क [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री. वीर्यशुल्का] वह प्रण या प्रतिज्ञा जो वीर्य-संबंधी हो।

वीर्यसह, वीर्य्यसह [संज्ञा पु.] (सं) सूर्यवंशी राजा सौदास के पुत्र का एक नाम।

वीर्यहारी, वीर्य्यहारी [संज्ञा पु] (सं) एक यक्ष का नाम।

वीर्यांतराय, वीर्य्यान्तराय [संज्ञा पु] (सं) जैनमतानुसार वह पापकर्म जिसका उदय होने से जीव हृष्ट-पुष्ट अङ्ग होते हुए भी शक्तिरहित हो जाता है तथा कुछ पराक्रमी नहीं कर सकता।

वीर्या, वीर्य्या [संज्ञा स्त्री] देखो 'वीर्य'।

वीहार [संज्ञा पु.] देखो 'विहार'।

वृंत, वृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-कच्चा और छोटा फल। २-स्तन का अग्रभाग। ३-चौंड़ी। ढेंडी।

वृंताक, वृन्ताक [संज्ञा पु] (सं) १-बैंगन। २-पोई नामक साग।

वृंताकी, वृन्ताकी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-बैंगन। २-वनभण्टा।

वृंद, वृन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। झुंड। २-सौ करोड़ की संख्या। ३-एक मुहूर्त्त का नाम।

वृंदा, वृन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-तुलसी। २-राधिका का एक नाम।

वृंदाक, वृन्दाक [संज्ञा पु.] (सं.) परगाछा नामक वृक्ष।

वृंदार, वृन्दार [वि.] (सं.) सुन्दर : मनोहर।

वृंदारक, वृन्दारक [संज्ञा पु.] (सं) १-देवता। २-श्रेष्ठ व्यक्ति।

वृंदारण्य, वृन्दारण्य, वृंदावन, वृन्दावन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्णचन्द्र की क्रीड़ाभूमि का एक नाम जो उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में है।

वृंदावनेश्वर, वृन्दावनेश्वर [संज्ञा पु] (सं.) श्रीकृष्ण।

वृंदावनेश्वरी, वृन्दावनेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राधिका।

वृंहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बलवर्धक या पुष्टिकारक पदार्थ। २-एक प्रकार का धूम्रपान। ३-असगन्ध। ४-मुनक्का। ५-भुइँ कुम्हड़ा। ६-शूकर के मांस में पकाया हुआ जौ का सत्तू (चरक)।

बृंहणवस्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की वस्ति।

वृक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेड़िया। २-गीदड़। ३-कौवा। ४-चोर। ५-क्षत्रिय। ६-वज्र। ७-अगस्त नामक वृक्ष। ८-गन्धाबिरोजा।

वृककर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

वृकखंड, वृकखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

वृकदंत, वृकदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

वृकदंस [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

वृकदीप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकदेव [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त वसुदेव का एक पुत्र।

वृकदेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वसुदेव की पत्नी देवकी का एक नाम।

वृकधूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनेक सुगंधित द्रव्यों के मिश्रण से तैयार की हुई धूप। २-तारपीन (वृक्ष)।

वृकधूर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़।

वृक-निवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकबंधु, वृकबन्धु [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृकरथ [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण के एक भाई का नाम (पुराण)।

वृकल [संज्ञा पु.] (सं.) श्लिष्टि के एक पुत्र का नाम (पुराण)।

वृकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाड़ी।

वृकवंचिक, वृकवञ्चिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक-कालीन ऋषि का नाम।

वृकायु [संज्ञा पु.](सं) १-जंगली कुत्ता। २-चोर

वृकाराति, वृकारि [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

वृकाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल के एक ऋषि का नाम।

वृकाश्विक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम जो गोत्रप्रवर्त्तक थे।

वृकास्य [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

वृकोदर [संज्ञा पु.] (सं.) भीमसेन।

वृक्क [संज्ञा पु.] (सं.) गुरदा।

वृक्कक [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्राशय। गुरदा।

वृक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हृदय।

वृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़। दरख्त। २-वृक्ष के समान वह आकृति जिसमे कोई मूल वस्तु और उसकी शाखाएँ आदि दिखाई गई हों।

वृक्षकंद, वृक्षकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) विदारीकंद।

वृक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा पेड़। २-पेड़। दरख्त। ३-कुटज का पेड़।

वृक्षचर [संज्ञा पु] (सं.) बन्दर।

वृक्षतक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) गिलहरी।

वृक्षधूप [संज्ञा पु.] (सं.) चीड़ का पेड़।

वृक्षनाथ [संज्ञा पु] (सं.) बड़ का पेड़।

वृक्षनिर्यास [संज्ञा पु.](सं.) पेड़ से निकलने वाला रस।

वृक्षपाक [संज्ञा पु.] (सं.) वट या बड़ का पेड़।

वृक्षपाल [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली शाल।

वृक्षप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पुण्य फल की प्राप्ति के लिए अश्वत्थ आदि के वृक्ष लगाना।

वृक्षभक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परगाछा नामक पौधा। २-बदाक। बंदा।

वृक्षभेदी [संज्ञा पु.] (सं.) कुल्हाड़ी।

वृक्षमूल [संज्ञा पु.] (सं.) पेड़ की जड़।

वृक्षमूलिक [वि.] (सं.) वृक्ष की जड़ या मूल-संबन्धी।

वृक्षराज [संज्ञा पु.] (सं.) परजाता।

वृक्षराज् [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का पेड़।

वृक्षरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परगाछा नामक पौधा। २-रुद्रवंती। ३-अमरबेल। ४-जतुका नामक लता। ५-विदारीकंद। ६-कंघी नामक पौधा। ७-पुष्करमूल।

वृक्षवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाग। बगीचा।

वृक्षशायिक [संज्ञा पु] (सं.) लंगूर।

वृक्षसंकट, वृक्षसङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) घने वृक्षों के बीच की पगडंडी।

वृक्षसारक [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोणपुष्पी।

वृक्षस्नेह [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष से निकलने वाला निर्यात या तरल पदार्थ।

वृक्षादन [संज्ञा पु.](सं.) १-कुल्हाड़ी। २-अश्वत्थ वृक्ष। ३-पियाल का पेड़। ४-मधुमक्खी का छत्ता।

वृक्षादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदारीकंद। २-बंदाक।

वृक्षामय [संज्ञा पु.] (सं.) लाखा।

वृक्षाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-इमली। २-आमड़ा ३-अमलबेत। ४-अम्लकटा। ५-चुक नामक खटाई।

वृक्षायुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें वृक्षों की चिकित्सा का विवेचन होता है।

वृक्षार्हा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा।

वृक्षालय [संज्ञा पु.] (सं.) पक्षी।

वृक्षोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) कनियारी का पेड़।

वृक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) पेड़ का फल।

वृज [संज्ञा पु.] देखो 'व्रज'। (वृज के यौ० के लिये 'व्रज' के यौ० देखो।

वृजन [संज्ञा पु](सं.) १-आकाश। आसमान। २-पाप। ३-युद्ध। ४-निपटारा। ५-बल। शक्ति। ६-बत्त। ७-शत्रु। [वि.] कुटिल। टेढ़ा।

वृजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो परम साधु हो

वृजि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रजभूमि। २-मिथिल प्रदेश।

वृजिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाप। गुनाह। २-दुःख। ३-त्वचा। खाल। ४-लहू। ५-बाल। [वि.] १-कुटिल। २-पापयुक्त।

वृत [वि.] (सं.) १-नियुक्त। २-ढका हुआ। ३-स्वीकृत। ४-गोल। ५-जिसके सम्बन्ध प्रार्थना की गई हो।

वृतपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्रदात्री नामक लता

वृताच [संज्ञा पु.] (सं.) मुरगा।

वृतिंकर [संज्ञा पु.] (सं.) विकंकतवृक्ष।

वृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घेरने या ढकने की वस्तु। २-नियुक्ति। ३-छिपाने की क्रिया।

वृत्त [संज्ञा पु.] (सं) १-वृत्तांत। हाल। २-चरित्र। ३-जीविका का साधन। वृत्ति। ४-वर्णिकछन्द। ५-वह क्षेत्र जो ऐसी रेखा से घिरा हो, जिसका प्रत्येक विंदु उस क्षेत्र के मध्य विंदु से समान अन्तर पर हो। गोला। मण्डल। ६-घेरा। ७-वेदों और शास्त्रों के अनुसार आचार रखना। ८-आचार। चाल चलन। ९-स्तन का अग्रभाग। १०-बीस वर्ण वाला एक छन्द। [वि.] १-बीता या गुजरा हुआ। २-दृढ़। मजबूत। ३-गोलाकार ४-मृत। ५-जात। ६-निष्पन्न। सिद्ध। ७-ढका हुआ।

वृत्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छन्द। २-वह गद्य जिसमें कोमल और मधुर अक्षरों तथा छोटे छोटे समासों का व्यवहार किया गया हो।

वृत्तकर्कटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खरबूजा।

वृत्तकोशा, वृत्तकोष [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवदाली लता।

वृत्तखंड, वृत्तखण्ड १-किसी वृत्त का कोई अंश। २-मेहराब।

वृत्तगंधि, वृत्तगन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गद्य जिसमें पद्य का सा आनन्द आता हो।

वृत्तगुंड, वृत्तगुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गोंदला नामक घास।

वृत्तचेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वभाव। प्रकृति मिजाज। २-आचरण। चालचलन।

वृत्ततंडुल, वृत्ततण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) ब्र नाल।

वृत्तपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्रदात्री नामक लता।

वृत्तपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पाढ़ा। २-बड़ी शणपुष्पी।

वृत्तपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरस का पेड़। २-कदम्ब का पेड़। ३-जलबेंत। ४-भुईकदम्ब। ५-सेवती।

वृत्तफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोलाकार फल। २-कालीमिर्च। ३-अनार। ४-कैथ। ५-बेर। ६-

लाल चिचड़ा। ७-करञ्ज। ८-तरबूज। ९-खरबूजा।

वृत्तफला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बैंगन। २-आँवला। ३-कड़वी ककड़ी।

वृत्तबंध, वृत्तबन्ध [संज्ञा पु.] (सं) वृत्त या छंद में बांधा हुआ।

वृत्तभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) गण्डीर नामक साग

वृत्तमल्लिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सफेद आक। २-त्रिपरमल्लिका।

वृत्तवत् [वि.] (सं.) सदाचारी।

वृत्तबीज [संज्ञा पु.] (सं.) १-भिंडी। २-लोबिया।

वृत्तबीजका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अरहर नामक दाल। २-पाण्डुर फली।

वृत्तबीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरहर नामक अन्न।

वृत्तशाली [वि] (सं.) सदाचारी।

वृत्तश्लाघी [वि.] (सं.) जिसे अपने काम पर गर्व हो। [संज्ञा पु.] क्षत्रिय।

वृत्तांत, वृत्तान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-समाचार। हाल। २-प्रक्रिया। ३-सम्पूर्णता। ४-प्रस्ताव ५-आख्यान। ६-अवसर। मौका। ७-भाव।

वृत्ता [संज्ञा पु] (सं) १-झिंझरीट नामक क्षुप। २-रेणुका। ३-प्रियंगु। ४-मांसरोहिणी। ५-सफेद सेम। ६-नागदमनी। ७-ननुआ।

वृत्तानुवर्ती [वि.] (सं.) सदाचारी।

वृत्ति [संज्ञा स्त्री](सं.) १-कोई ऐसा काम जिसमें मनुष्य कुशल हो एवं जिसके सहारे वह अपना निर्वाह करता हो। जीविका। रोजी। पेशा। प्रोफेशन। २-किसी दरिद्र अथवा योग्य छात्र आदि को उसके सहायतार्थ दिया जाने वाला धन। स्टाइपेंड। ३-सूत्रों आदि की व्याख्या। ४-साहित्य में शब्दयोजना की वह विशेषता जिससे रचना में माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि गुण आते हैं। ५-नाटक में विषय के विचार से भारती, सरस्वती, कौशिकी और आरभटी ये चार वर्णनशैलियां ६-व्यापार। कार्य। ७-स्वभाव। प्रकृति। ८-एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ९-योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पांच प्रकार की मानी गई है। १०-कर्त्तव्य। ११-वह जो दूसरे पर अवलम्बित हो।

वृत्तिकर [संज्ञा पु.] (सं.) वृत्ति या जीविका (रोजी) पर लगने वाला कर या शुल्क। प्रोफेशन-टैक्स।

वृत्तिकार [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्र ग्रन्थ पर वृत्ति लिखने वाला लेखक।

वृत्तिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृत्ति का भाव या धर्म

[illegible] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुद्र की एक स्त्री का नाम।

वृत्तिस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो अपनी वृत्ति पर स्थित हो। २-गिरगिट।

[illegible] [संज्ञा पु] (सं.) खरबूजे की बेल।

वृत्य [वि.] (सं.) जो नियुक्त करने के योग्य हो।

वृत्यनुप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) वह शब्दालङ्कार जिसमें कुछ व्यंजन वर्ण एक या कई रूपों में बार-बार आते हैं।

वृत्युपाय [संज्ञा पु.](सं.) अपने या अपने कुटुम्ब के भरण-पोषण का उपाय।

वृत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्धेर। २-बादल। ३-शत्रु। ४-पुराणानुसार त्वष्टा के पुत्र एक दानव का नाम, जो इन्द्र के हाथ से मारा गया था। ५-एक पर्वत का नाम।

वृत्रखाद [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वृत्रघ्न [संज्ञा पु.](सं.) १-इन्द्र। २-वैदिककालीन एक देश का नाम।

वृत्रघ्नी [संज्ञा. स्त्री.] (सं) पुराणानुसार एक नदी का नाम।

वृत्रतूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। लड़ाई।

वृत्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुता।

वृत्रनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वृत्रभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) गंडीर नामक साग।

वृत्रवैरी [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वृत्रशंकु, वृत्रशङ्कु [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का पत्थर का बना खम्भा।

वृत्रशत्रु, वृत्रहा, वृत्रारि [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वृत्रासुर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वृत्र' (४)।

वृथा [वि] (सं.) व्यर्थ। फजूल। [क्रि वि.](सं.) बिना मतलब का। बे-फायदा।

वृथात्व [संज्ञा पु.] (सं.) व्यर्थ होने का भाव या धर्म।

वृथामांस [संज्ञा पु.] (सं.) निषिद्ध मांस।

वृद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-साठ वर्ष से अधिक अवस्था वाला आदमी। २-वह जो साधारण की अपेक्षा बड़ा और श्रेष्ठ हो। एल्डर। ३-बुड्ढा। ४-पंडित। ज्ञानी। शैलज नाम गंध-द्रव्य।

वृद्धकुंट, वृद्धकण्ट [संज्ञा पु.](सं.) इंगुदी का पेड़

वृद्धकाक [संज्ञा पु.] (सं.) द्रोणकाक।

वृद्धकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बुढ़ापा।

वृद्धकावेरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

वृद्धकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) कृच्छ्ररोग विशेष।

वृद्धकेशव [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की एक मूर्त्ति का नाम।

वृद्धगंगा, वृद्धगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिमालय की एक छोटी नदी का नाम।

वृद्धगोनस [संज्ञा पु.] (सं.) सर्पविशेष। सुश्रुत।

वृद्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुढ़ापा। २-पांडित्य

वृद्धतिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाढ़ा। पाठा।

वृद्धत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वृद्धता'।

वृद्धदार, वृद्धदारक [संज्ञा पु.] (सं.) विधारा नामक क्षुप।

वृद्धद्युम्न [संज्ञा पु] (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृद्धधूप [संज्ञा पु.] (सं) १-सरलवृक्ष। २-सिरस्

वृद्धधूमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लिसोड़ा।

वृद्धनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) तोंदल। निकली तोंद वाला।

वृद्धपराशर [संज्ञा पु.] (सं.) एक धर्मशास्त्रकार।

वृद्धप्रपितामह [संज्ञा पु.] (सं.) दादा का दादा।

वृद्धबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाबला। २-ककही नामक पेड़।

वृद्धबृहस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) एक धर्मशास्त्र का नाम।

वृद्धबौधायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक धर्मशास्त्रकार का नाम।

वृद्धयुवती [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुटनी। २-धात्री दाई।

वृद्धराज [संज्ञा पु.] (सं.) अमलवेत।

वृद्धवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गीदड़।

वृद्धवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

वृद्धविभीतक [संज्ञा पु.] (सं) आमड़ा।

वृद्धश्रवा [संज्ञा पु] (सं.) इन्द्र।

वृद्धश्रावक [संज्ञा पु.] (सं.) कापालिक।

वृद्धसूचक [संज्ञा पु.] (सं.) कपास।

वृद्धांगुलि, वृद्धाङ्गुलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंगूठा।

वृद्धांत, वृद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं) वह जो आदर या सम्मान के योग्य हो।

वृद्धा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-बुड्ढी स्त्री। बुढ़िया। २-अँगूठा। ३-महाश्रावणिका।

वृद्धाचल [संज्ञा पु] (सं.) एक तीर्थ स्थान जो मदरास में है।

वृद्धावस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बुढ़ापा। २-मनुष्यों में साठ वर्ष से अधिक की अवस्था।

वृद्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वृद्ध होने की क्रिया या भाव। २-बढ़ने की क्रिया। बढ़ती। आधिक्य। ३-ब्याज। सूद। ४-वह अशौच जो संतान उत्पन्न होने पर सगे सम्बन्धियो को होता है। ५-अभ्युदय। समृद्धि। ६-वेतन में होने वाली बढ़ती या अधिकता। ७-फलित-ज्योतिष में विष्कम्भ आदि २७ योगों में से ग्यारहवाँ।

वृद्धिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) नांदीमुख या वृद्धि नामक श्राद्ध।

वृद्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऋद्धि नामक औषध। २-अर्कपुष्पी। ३-सफेद अपराजित।

वृद्धिजीवक [संज्ञा पु.](सं.) वह जो सूद या ब्याज से निर्वाह करता हो।

वृद्धिद [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवक नाम क्षुप। २-शूकरकन्द। वृद्धि देने वाला।

वृद्धिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चीर-फाड़ के काम का एक शस्त्र (सुश्रुत)।

वृद्धियोग [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में एक योग।

वृद्धिश्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'नांदीमुख'।

वृश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अडूसा। २-चूहा। (हिं.) देखो 'वृष'।

वृशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) औषध विशेष।

वृश्चन [संज्ञा पु.] (सं.) वृश्चिक। बिच्छू।

वृश्चि [संज्ञा पु.] (सं.) लाल गदहपूरन।

वृश्चिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिच्छू। २-बारह राशियों में से आठवीं। ३-अगहनमास। ४-शूककीट।

वृश्चिकपत्रिका, वृश्चिकप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पोई नामक साग।

वृश्चिककर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

वृश्चिक-विषापहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नकुल-कंद। २-रास्ना।

वृश्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिछुला घास। २-पिठवन। ३-सफेद पुनर्नवा।

वृश्चिकाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिच्छू नामक लता।

वृश्चिकेश [संज्ञा पु.] (सं.) वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता।

वृश्चिपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूतिका। पोई।

वृश्चिपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृश्चिकाली। २-मेढ़ासिंगी।

वृश्ची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुनर्नवा।

वृश्चीर [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद पुनर्नवा।

वृश्चीव [संज्ञा पु.] (सं.) पुनर्नवा।

वृष [संज्ञा पु.] (सं.) १-गौकानर। साँड़। २-श्रीकृष्ण। ३-बारह राशियों में से एक दूसरी। ४-कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ५-पति। ६-गेहूँ। ७-मोर का पङ्ख। ८-चूहा। ९-अडूसा।

वृषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांड़। २-आम विशेष ३-चूहा। ४-ऋषभक औषध। ५-भिलावां। गेहूँ।

वृषकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुदर्शनलता। २-विधारा।

वृषका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीनकाल की एक नदी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

वृषकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। २-शिव।

वृषकेतु [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव। २-कर्ण के पुत्र का नाम। ३-लाल गदहपूरना।

वृषक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वृषखादि [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान करने वाला।

वृषगंधा, वृषगन्धा, वृषगंधिका, वृषगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ककही। २-विधारा।

वृषगण [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक ऋषियों का एक गण।

वृषचक्र [संज्ञा पु.](सं.) फलित ज्योतिष में एक चक्र विशेष।

वृषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-सांड़। ३-अंडकोश। ४-कर्ण। ५-विष्णु। ६-घोड़ा।

वृषणकच्छु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंडकोश के पास होने वाली फुंसियां।

वृषणाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र के घोड़े का नाम।

वृषदर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-शिव के एक पुत्र का नाम (पुराण)।

वृषध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-गणेश। ३-पुण्यात्मा व्यक्ति।

वृषध्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

वृषध्वांक्षा, वृषध्वांक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागरमोथा।

वृषनामा [संज्ञा पु.] (सं.) अडूसा।

वृषनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बायबिडङ्ग। २-श्रीकृष्ण।

वृषपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-हिजड़ा।

वृषपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छागलांची नामक औषध।

वृषपर्णिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) भारंगी।

वृषपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूसाकानी। २-दंती। सुदर्शनलता।

वृषपर्व्वा [संज्ञा पु] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-एक दैत्य। ४-कसेरू। ५-तृण विशेष। ६-भँगरा।

वृषप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वृषभ [संज्ञा पु.](सं.) १-साँड़ या बैल। २-कामशास्त्रानुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक ३-साहित्य में वैदभी रीति का एक भेद।

वृषभकेतु [संज्ञा पु.] (सं) शिव।

वृषभगति [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-वह वाहन जो बैल से खींचा जाता हो।

वृषभधुज* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वृषध्वज'।

वृषभध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक प्राचीन पर्वत।

वृषभपल्लव [संज्ञा पु.] (सं.) अडूसा।

वृषभवीथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य-वीथियों में से एक।

वृषभांक, वृषभाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वृषभाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वृषभाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रवारुणीलता।

वृषभान* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वृषभानु'।

वृषभानु [संज्ञा पु.] (सं.) राधिका के पिता का नाम।

वृषभानुनंदनी, वृषभानुनन्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृषभान की कन्या, राधिका।

वृषभापा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरावती।

वृषभेक्षण [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु।

वृषमूल [संज्ञा पु.] (सं.) अडूसे की जड़।

वृषय [संज्ञा पु.] सं.) आश्रय।

वृषरवि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वृषभानु'।

वृषरुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वृषल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूद्र। २-शूद्र पत्नी या दासी के गर्भ से उत्पन्न पुरुष। ३- ४-घोड़ा। ५-गाजर। ६-शलगम। ७-सम्राट चन्द्रगुप्त का एक नाम।

वृषलांछन, वृषलाञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

वृषली [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वह कन्या जो रजस्वला हो गई हो, पर जिसका विवाह न हुआ हो। २-पर-पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री। ३-शूद्र जाति की स्त्री। ४-रजस्वला स्त्री। ५-मरी हुई सन्तान उत्पन्न करने वाली स्त्री।

वृषलीपति [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्रा स्त्री का पति।

वृषलीसेवन [संज्ञा पु.] (सं.) वृषली स्त्री के साथ संसर्ग।

वृषलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा।

वृषवत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत (पुराण)।

वृषवासी, वृषवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वृषशत्रु [संज्ञा पु.] (स) विष्णु।

वृषस्कंध, वृषसन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वृषांक, वृषाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २- साधु। ३-भिलावाँ। ४-नपुंसक। ५-मोर।

वृषांकज, वृषाङ्कज [संज्ञा पु.](सं.) डमरू।

वृषांचन, वृषाञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वृषांतक, वृषान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वृषा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मूसाकानी। २-केवाँच ३-दन्ती। ४-बड़ी दन्ती। ५-असगंध। ६-मालकँगनी। ७-गाय।

वृषाकपायी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीवंती। २-शतावर। ३-लक्ष्मी। ४-गौरी। ५-शची।

वृषाकपि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु ३-अग्नि। ४-इन्द्र। ५-सूर्य।

वृषाकार [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द। माष।

वृषाकृति, वृषाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वृषाणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-शिव के एक अनुचर का नाम।

वृषादनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) इन्द्रवारुणी।

वृषादर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक पुत्र का नाम

वृषाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) केरल देश के एक पर्वत का नाम।

वृषायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-गौरैया

वृषारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

वृषारव [संज्ञा पु.] (सं.) कर्कश स्वर में बोलने वाले जन्तु।

वृषाशील [संज्ञा पु.] देखो 'वृषल'।

वृषाश्रिता [संज्ञा स्त्री.] (सं) गङ्गा।

वृषासुर [संज्ञा पु.] (सं.) भस्मासुर नामक दैत्य।

वृषाहार [संज्ञा पु] (सं.) बिल्ली।

वृषाही [संज्ञा पु.] (हिं) विष्णु।

वृषी [संज्ञा पु] (सं.) मोर।

वृषेंद्र, वृषेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँड़। २-बैल

वृषोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मृत्त पूर्वज के नाम पर बछड़े को दाग कर और उसे साँड़ बनाकर छोड़ना।

वृषोत्साह, वृषोदर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त कुकुर के एक पुत्र का नाम।

वृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वर्षा। मेह। बारिश। २-ऊपर से बहुत सी वस्तुओं का एक साथ गिरना या गिराया जाना। ३-किसी क्रिया का कुछ काल तक अबाधगति से होना।

वृष्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शणपुष्पी।

वृष्टिघ्नी [संज्ञा स्त्री] (सं.) छोटी इलायची।

वृष्टिजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-चातकपक्षी। २-वह देश जहाँ पर खेती-बारी केवल वर्षा के भरोसे की जाती हो।

वृष्टिभू [संज्ञा पु.] (सं) मेंढक।

वृष्टिमान [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई है

वृष्टिवैकृत [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के मतानुसार अत्यधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना जो उपद्रवादि का सूचक समझा जाता है।

वृष्णि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-यादव वंश। ३-श्रीकृष्ण। ४-इन्द्र। ५-अग्नि। ६-वायु। ७-ज्योति। ८-गौ। ९-मेढ़ा। [वि.] १-उग्र। तेज। २-नीच। पामर।

वृष्णिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृष्णिक-गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

वृष्य [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्य।

वृष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-बल और वीर्यवर्धक वस्तु। २-वह वस्तु जिसके सेवन से मन का आनन्द बढ़ता है। ३-गन्ना। ४-उड़द की दाल। ५-ऋषभ औषध। ६-आँवला। ७-कमलनाल। मृणाल।

वृष्यकंद, वृष्यकन्द [संज्ञा स्त्री](सं.) १-विदारीकंद। २-मूली।

वृष्यगंधा, वृष्यगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विधारा। २-ककही। अतिबला।

वृष्यगंधिका, वृष्यगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककही। अतिबला।

वृष्यचंडी, वृष्यचण्डी [संज्ञा स्त्री] (सं.) मूसाकानी।

वृष्यपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुइँकुम्हड़ा।

वृष्यफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँवला।

वृष्यवल्लिका, वृष्यवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विदारीकंद।

वृष्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-ऋद्धि नामक औषध। २-शतावर। ३-आँवला। ४-केवाँच। कौंछ। ५-विदारीकंद। ६-भुइँ आँवला। ७-अतिबला। ८-बड़ी दंती।

वृहच्चंचु, वृहच्चन्चु [संज्ञा पु.] (सं.) महाचंचु नाम का साग।

वृहच्चक्रभेद [संज्ञा पु.] (सं.) जैंत।

वृहच्चित्त [संज्ञा पु] (सं) बिजौरा नीबू।

वृहच्छद [संज्ञा पु.] (सं) अखरोट।

वृहच्छफरी [संज्ञा स्त्री.] (सं) सफरी मछली।

वृहच्छल्लक [संज्ञा पु] (सं) झींगा-मछली।

वृहच्छालपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाशालपर्णी।

वृहच्छिंबी, वृहच्छिम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम।

वृहज्जीरक [संज्ञा. पु](सं.) मँगरैल।

वृहज्जीवंती, वृहज्जीवन्ती, वृहज्जीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी जीवंती।

वृहतिक, वृहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कण्टकारी २-बनभंटा। ३-बैंगन। ४-एक मर्मस्थान जो छाती के पीछे पीठ में दोनों ओर होता है। ५-विश्वावसु गंधर्व की वीणा का नाम। ६-वाक्य। ७-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और सगण होता है।

वृहतीपति [संज्ञा पु.] (सं) वृहस्पति।

वृहतीफल [संज्ञा पु.] (सं) बनभंटा।

वृहत् [वि.] (सं.) बहुत बड़ा। भारी। महान्।

वृहत्कंद, वृहत्कन्द [संज्ञा पु.] (सं) १-गाजर। २-विष्णुकन्द।

वृहत्कालशाक [संज्ञा पु.] (सं.) महाकासमर्द नामक क्षुप।

वृहत्काश [संज्ञा पु.] (सं.) उलूक नामक तृण।

वृहत्कुक्षि [वि.] (सं) बड़े पेट वाला। तोंदल।

वृहत्कोशातकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तरोई।

वृहत्खर्जूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छुहारा।

वृहत्ताल [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीताल नामक वृक्ष।

वृहत्तिक्त [संज्ञा पु.](सं.) छोटा पाठा।

वृहत्तिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाठा। पाढ़ा।

वृहत्तृण [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस।

वृहत्त्वक् [संज्ञा पु.] (सं.) सतिवनवृक्ष।

वृहत्त्वच [संज्ञा पु.] (सं.) नीम।

वृहत्पंचमूल, वृहत्पञ्चमूल [संज्ञा पु.] (सं.) बेल, सोनापाठा, गम्भारी, पाँडर और गनियारी इन पाँचों का समूह।

वृहत्पत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-हाथीकंद। २-कासमर्द

वृहत्पत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रिपर्णीकंद।

वृहत्पर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) पठानीलोध।

वृहत्पर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाशणपुष्पी।

वृहत्पाटली [संज्ञा पु] (सं.) धतूरा।

वृहत्पाद [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ का पेड़। बरगद।

वृहत्पारेवत [संज्ञा पु.](सं.) बड़ा पारेवत (वृक्ष)।

वृहत्पाली [संज्ञा पु.] (सं.) काली जीरी।

वृहत्पीलु [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ी अखरोट।

वृहत्पुष्प [संज्ञा पु.](सं.) १-केला। २-पेठ। सफेद कुम्हड़ा।

वृहत्पुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शणपुष्पी।

वृहत्पुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सन। सनई।

वृहत्फल [संज्ञा पु.](सं.) १-कुम्हड़ा। २-कटहल ३-जामुन। ४-चिचड़ा।

वृहत्फला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कद्दू। लौकी। २-कड़वी लौकी। ३-महेन्द्रवारुणी। ४-सफेद कुम्हड़ा। पेठा। ५-बड़ा जामुन।

वृहदंग, वृहदङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) हाथी।

वृहदम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) कमरख का पेड़।

वृहदेला [संज्ञा स्त्री] (सं.) बड़ी इलायची।

वृहद्गोल [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

वृहदंती, वृहदन्ती [संज्ञा स्त्री] (सं) बड़ीदंती।

वृहद्दल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पठानी लोध। २-सतिवन। ३-हिंताल नामक वृक्ष। ४-लाल लहसुन। ५-लजालू।

वृहद्दला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लजालू।

वृहद्द्रोणी [संज्ञा स्त्री.](सं) द्रोण नामक परिमाण

वृहद्धान्य [संज्ञा पु.](सं.) ज्वार।

वृहद्बदर [संज्ञा पु] (सं.) बड़ा बेर।

वृहद्बला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-पीतपुष्पा। २-पठानीलोध। ३-लजालू।

वृहद्बीज [संज्ञा पु.] (सं.) अमड़ा।

वृहद्भंडी, वृहद्भण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाणालता।

वृहद्भट्टारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

वृहद्रथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-यज्ञपात्र ३-सामवेद के एक अंश का नाम। ४-भागवत के अनुसार शतधन्वा के एक पुत्र का नाम। ५-एक प्रकार का मंत्र।

वृहद्रथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

वृहद्राय [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लूपक्षी।

वृहद्वर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामाखी।

वृहद्वल्क, वृहद्वल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पठानीलोध। २-सप्तपर्ण। सतिवन।

वृहदवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करेला।

वृहद्वात [संज्ञा पु.] (सं.) देवधान्य। पुनेरा।

वृहद्वारुणी [संज्ञा पु.] (सं.) महेंद्रवारुणी।

वृहन्नल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाहु। बाँह। २-अर्जुन।

वृहन्नला [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन का अज्ञातवास के समय का नाम।

वृहन्नाल [संज्ञा पु.] (सं.) नरकट। नरसल।

वृहन्निंब वृहन्निम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) महानिंब। बकायन।

वृहत्भरिच [संज्ञा पु.] (सं.) गोलमिर्च।

वृहल्लोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुल्ला नामक साग

वृहस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) अंगिरा के पुत्र जो देवताओं के गुरु हैं।

वृही [संज्ञा पु.] (सं.) साठी धान्य।

वेंकटगिरि, वेङ्कटगिरि, वेंकटाचल, वेङ्कटाचल [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।

वे [वि.] (हिं.) 'वह' का बहुवचन या सम्मानसूचक शब्द।

वेकट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की मछली। २-युवक। ३-मशखरा। विदूषक। ४-जौहरी

वेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह से खोजना या ढूढ़ना।

वेग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहाव। प्रवाह। २-मल-मूत्र आदि की शरीर से बाहर निकलने की प्रवृत्ति। ३-जोर। तेजी। ४-शीघ्रता। जल्दी। ५-प्रसन्नता। आनन्द। ६-दृढ़प्रतिज्ञा या पक्का निश्चय। ७-उद्योग। उद्यम। ८-न्यायानुसार चौबीस गुणों में से एक।

वेगगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

वेगदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) एक बंदर का नाम। (रामायण)

वेतधारण [संज्ञा पु.] (सं.) मल, मूत्र आदि का वेग या उन्हें निकलने से रोकना।

वेगनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) कफ। श्लेष्मा।

वेगनिरोध, वेगरोग [संज्ञा पु.] (सं.) वेग-धारण

वेगवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जो दक्षिण भारत में है।

वेगवान् [वि.] (सं.) तेज चलने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वेगविघात [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर से निकलते हुए मल-मूत्र आदि वेगों को सहसा रोक लेना जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक समझा जाता है।

वेगसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेज चलने वाला घोड़ा। २-खच्चर।

वेगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाज्योतिष्मती।

वेगित [वि.] (सं.) जिसमें वेग हो।

वेगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की नाव जो १७६ हाथ लम्बी २२ हाथ ऊँची और १७½ हाथ चौड़ी होती है।

वेगिहिरण [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकारी मृग।

वेगी [वि.] (हिं.) जिसमें वहुत वेग हो।

वेजाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमराजी।

वेटेरिनरी [वि.] (अं.) बैल, घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा सम्बन्धी।

वेटेरिनरी-हास्पिटल [संज्ञा पु.] (अं.) पशुचिकित्सालय।

वेट् [संज्ञा पु.] (सं.) स्वाहा।

वेट्टचंदन, वेट्टचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) मलयागिरि चन्दन।

वेढ़मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उड़द की पीठी भरी रोटी या कचौड़ी।

वेण [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन वर्णसंकर जाति २-सूर्यवंशी राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणयोनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लता विशेष।

वेणधी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसके पास वेणु या वंशी हो। २-शिव।

वेणा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १ पर्णासा नामक नदी जिस का उल्लेख रामायण में मिलता है। २-खस। उशीर।

वेणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवदाली।

वेणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जनपद। २-इस देश का निवासी।

वेणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्रियों के बाल की गूँथी हुई चोटी। वेणी। २-नरसल का बना बेड़ा।

वेणिवेधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

वेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्रियों के सिर के बालों की गूँथी हुई चोटी। २-जल का प्रवाह या बहाव। ३-भीड़-भाड़। ४-देवदाली। ५-एक प्राचीन नदी का नाम। ६-भेड़। ७-देवताड़।

वेणीग [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

वेणीफल [संज्ञा पु.] (सं.) देवदाली का फल।

वेणीमूल, वेणीमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

वेणीर [संज्ञा पु.](सं.) १-नीम का वृक्ष। २-रीठा

वेणीस्कंध, वेणीस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

वेणु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस। २-बाँसुरी। ३-देखो 'वेण'।

वेणुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाय, बैल आदि को हाँकने की छड़ी। २-अंकुश। ३ छोटी बाँसुरी। ४-इलायची।

वेणुकर [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का पेड़।

वेणुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाँसुरी। २-वृक्ष विशेष जिसका फल बहुत जहरीला होता है। ३-एक प्रकार का दंड जिससे प्राचीनकाल में हाथी चलाते थे।

वेणुकार [संज्ञा पु.] (सं.) बाँसुरी बनाने वाला।

वेणुकीय [वि.] (सं.) वेणु-सम्बन्धी। वेणु का।

वेणुग्रध [संज्ञा पु.] (सं.) औषध विशेष।

वेणुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस का बीज। २-बाँस से उत्पन्न वस्तु। ३-गोल मिर्च।

वेणुजमुक्ता [संज्ञा स्त्री.] बाँस में होने वाला एक प्रकार का गोल दाना।

वेणुदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेणुदारि [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजकुमार जिसका उल्लेख महाभारत में आता है।

वेणुन [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च।

वेणुनिर्लेखन [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस की छाल।

वेणुप [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-इस देश का निवासी।

वेणुपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प विशेष जिसका उल्लेख सुश्रुत मे मिलता है।

वेणुपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) वंशपत्री।

वेणुपुर [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक बेलगाँव का प्राचीन नाम।

वेणुबीज [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस का चावल।

वेणुमंडल ,वेणुमण्डल [संज्ञा पु] (सं.) महाभारत में वर्णित कुश-द्वीप के एक वर्ष का नाम

वेणुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक नदी का नाम।

वेणुमय [वि.] (सं.) बांस का बना।

वेणुमान [संज्ञा पु.](सं.) १-पुराणोक्त एक वर्ष का नाम। २-पुराणोक्त एक पर्वत का नाम।

वेणुमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तांत्रिक मुद्रा।

वेणुयव [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बांस का चावल।

वेणुवंश [संज्ञा पु.](सं.) एक राजा का नाम जिस का वर्णन पुराणों में मिलता है।

वेणुवन [संज्ञा पु.] (सं.) राजगृह के पास का एक वन जहां राजा बिंबसार ने गौतमबुद्ध को बुलाकर ठहराया था।

वेणुवाद, वेणुवादक [संज्ञा पु.] (सं.) बाँसुरी बजाने वाला।

वेणुवादन [संज्ञा पु.] (सं.) बाँसुरी बजाना।

वेणुवीणाधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक मातृका का नाम।

वेण्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक नदी का नाम।

वेण्वातट [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेण्वा नदी के पास वाले प्रदेश का नाम। २-इस प्रदेश का निवासी।

वेत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'बेंत'।

वेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी का कोई रहने के बदले में दिया जाने वाला तनखाह। महीना। १-सैलरी। २-पारि

[illegible]। ३-चाँदी।

वेतन-कल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तनख्वाह या महीना नियत करना।

वेतनकालानिपातन [संज्ञा पु.] (सं.) तनख्वाह देने में देर करना।

वेतननाश [संज्ञा पु.] (सं.) तनखाह जब्त हो जाना।

वेतन-भोगी [संज्ञा पु.] (सं.) वेतन लेकर काम करने वाला।

वेतस [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेंत। २-जलबेंत। ३-वड़वानल।

वेतसक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

वेतसपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) चीरफाड़ के काम का एक प्रकार शस्त्र (सुश्रुत)।

वेतसाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) अम्लबेत।

वेतसिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणोक्त एक नदी का नाम।

वेतसी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वेतस'।

वेतसु [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन एक असुर।

वेता [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वेतन'।

वेताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल। २-शिव के गणों में से एक प्रधान गण। ३-एक प्रकार की भूतयोनि। ४-छप्पयछन्द के छठे भेद का नाम।

वेतालग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का भूत-ग्रह।

वेत्ता [वि.] (सं.) ज्ञाता। जानने वाला।

वेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत।

वेत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सरपत। रामसर।

वेत्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत का सामान बनाने वाला।

वेत्रकीय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां बेंत अधिकता से उगता हो।

वेत्रकूट [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय की एक चोटी का नाम।

वेत्रगंगा, वेत्रगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिमालय से निकली हुई एक नदी का नाम।

वेत्रधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल। २-लठैत।

वेत्रमूला [संज्ञा स्त्री] (सं.) यवत्तिका। शङ्खिनी।

वेत्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेतवानदी।

वेत्रहा [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

वेत्रावती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वेत्रावती'।

वेत्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) (किसी भी तरह का) बेंत का बना हुआ आसन।

वेत्रासुर [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक दानव का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था।

वेत्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जनपद जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है। २-इस जनपद का नागरिक। ३-द्वारपाल।

वेत्री [संज्ञा पु.] (सं.) १-द्वारपाल। २-चोबदार।

वेदंड, वेदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सच्चा और वास्तविक ज्ञान २-भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान तथा सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ जो संख्या में चार हैं-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ३-वृत्त। ४-वित्त। ५-यज्ञांग।

वेदक [वि.] (सं.) परिचय कराने वाला।

वेदकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों का रचयिता २-सूर्य। ३-शिव। ४-विष्णु। ५-वरपक्ष के बड़े-बूढ़े आदमी।

वेदकार [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने वेदों की रचना की।

वेदकुंभ, वेदकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

वेदकौलयक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वेदगंगा, वेदगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्षिण-भारत की एक नदी का नाम।

वेदगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-ब्राह्मण।

वेदगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरस्वती नदी। २-रैवानदी।

वेदगर्भापुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ स्थान का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

वेदगाथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम। (पुराण)।

वेदगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-पाराशर के एक पुत्र का नाम।

वेदगुह्य [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वेदजननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सावित्री।

वेदज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों को जानने वाला। २-ब्रह्मज्ञानी।

वेदतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

वेदत्रय, वेदत्रयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋक्, ऋजु और साम इन तीनों वेदों का समुच्चय।

वेदत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वेद का भाव या धर्म।

वेददर्श [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुनि का नाम। (पुराण)।

वेददर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो देखने में वेदों का स्वरूप जान पड़े।

वेददर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो वेदों का ज्ञाता हो।

वेददान [संज्ञा पु] (सं.) वेद पढ़ाना।

वेददीप [संज्ञा पु.] (सं.) महीधरकृत आयुर्वेद का भाष्य।

वेदन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वेदना'।

वेदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीड़ा, विशेषतः हार्दिक या मानसिक। व्यथा। २-बौद्धों के मतानुसार पाँच स्कंधों में से एक। ३-चिकित्सा। ४-चमड़ा।

वेदनिंदक, वेदनिन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों की निंदा करने वाला। २-नास्तिक।

वेदनीय [वि.] (सं.) १-जानने योग्य। २-कष्ट देने वाला।

वेदपारग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदविद्या निष्णात। २-वैदिक कर्मों का जानकार।

वेदफल [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक कर्म से प्राप्त फल।

वेदबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-पुलस्त्य

वेदबीज [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

वेदभू [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं के एक गण का नाम।

वेदभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम

वेदमंत्र, वेदमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों में आये हुए मन्त्र। २-एक जनपद और उसके निवासी (पुराण)।

वेदमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सावित्री। २-दुर्गा। ३-सरस्वती।

वेदमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गायत्री।

वेदमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य।

वेदमुंड, वेदमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

वेदमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-वेदों का पूर्ण ज्ञाता।

वेदयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वेदपाठ।

वेदरहस्य [संज्ञा पु.] (सं.) उपनिषद्।

वेदवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुशाध्वज की कन्या का नाम। २-परिपात्र नामक पर्वत की एक नदी का नाम। ३-अप्सरा। ४-दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

वेदवदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-व्याकरण

वेदवाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी प्रामाणिक बात जिससे खण्डन या तर्क की गुंजायश न हो।

वेदवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वेदों का पूर्ण ज्ञाता या पंडित।

वेदवास [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

वेदवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वेदों का जानकार पंडित

वेदवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

वेदविद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदज्ञ। २-विष्णु।

वेदव्यास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्यास' (१)।

वेदव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) वेदों का अध्ययनकर्त्ता

वेदशिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृशाश्व के एक पुत्र का नाम। २-पुराणोक्त अस्त्र विशेष। ३-मार्कंडेय के एक पुत्र का नाम (पुराण)।

वेदशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक पर्वत।

वेदश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि।

वेदश्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

वेदश्रुति [संज्ञा स्त्री.](सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

वेदसम्मत [वि.] (सं.) वेदोक्त मत के अनुसार।

वेदसार [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

वेदसिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पुराणोक्त नदी का नाम।

वेदस्पर्श [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

वेदस्मृता, वेदस्मृति [संज्ञा स्त्री.](सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम।

वेदांग, वेदाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों के अङ्ग जो संख्या में छः हैं। यथा—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंदशास्त्र। २-सूर्य। ३-एक आदित्य का नाम।

वेदांत, वेदान्त [संज्ञा पु.](सं.) १-वेदों के अंतिम भाग।(उपनिषद् तथा आरण्यक आदि) जिसमें आत्मा, ईश्वर, जगत् आदि का विवेचन है। आध्यात्म। ब्रह्मविद्या। २-छः दर्शनों में से एक जिसमें परमार्थिक सत्ता का विवेचन है। अद्वैतवाद।

वेदांतसूत्र, वेदान्तसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) महर्षि बादरायण के रचे हुए सूत्र जो वेदांतशास्त्र के मूल माने जाते हैं।

वेदांती, वेदान्ती [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत का अच्छा जानकार या पंडित। ब्रह्मवादी।

वेदाग्रणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

वेदात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-सूर्य।

वेदादिवीज [संज्ञा पु.] (सं.) प्रणवमंत्र।

वेदाधिदेव [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

वेदाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) चारों वेदों के अधिपति ग्रह। (ऋक् के बृहस्पति, यजु के शुक्र, साम के मङ्गल और अथर्व के बुध)।

वेदाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

वेदार [संज्ञा पु.] (सं.) गिरगिट।

वेदाश्व [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नदी।

वेदि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-वेदी। २-नामांकित अंगूठी। ३-वह भूमि जो किसी कार्य के लिए बनाकर तैयार की गई हो। ४-उँगली की एक प्रकार की मुद्रा। ५-अंबष्ठा।

वेदिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेदी। २-वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है

वेदिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्रौपदी।

वेदित [वि.] (सं.) १-जो बतलाया या सूचित किया गया हो। निवेदित। २-जो देखा गया हो

वेदितव्य [वि.] (सं.) जानने योग्य। ज्ञातव्य।

वेदित्व [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान।

वेदिष्ठ [वि.] (सं.) सर्वज्ञ।

वेदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुभ अथवा धार्मिक कृत्य के लिए बनाई हुई छायादार भूमि। २-सरस्वती। [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. वेदिनी] १-पंडित। ज्ञानी। २-जानकार। ३-ब्रह्मा। ४-विवाद करने वाला।

वेदीतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

वेदीश [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

वेदुक [वि.] (सं.) १-जानने वाला। २-पाने वाला ३-जिसे कुछ मिला हो।

वेदेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

वेदोक्त [वि.] (सं.) वेदों में कहा हुआ।

वेदोदय [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

वेदोपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांग।

वेदोपनिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

वेद्धव्य [वि.] (सं.) वेधा जाने योग्य। वेध्य।

वेद्य [वि.] (सं.) १-जानने या समझने योग्य। २-कहने योग्य। ३-स्तुति के योग्य। ४-प्राप्त करने योग्य।

वेद्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) जानकारी। ज्ञान।

वेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेधना। छेदना। २-दूरदर्शक यंत्रों आदि से ग्रहों, नक्षत्रों, तारों आदि की गति विधि देखना। ३-गहरापन। गंभीरता। ४-ब्रह्मा। ५-विष्णु। ६-शिव। ७-सूर्य। ८-पंडित। ज्ञानी। ९-सफेद मदार। १०-दक्ष आदि प्रजापति।

वेधक [वि.] (सं.) १-वेध करने वाला। २-छेदने वाला। [संज्ञा पु.] १-धनिया कपूर। २-अम्लवेंत।

वेधनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मणियों आदि में छेद करने का औजार।

वेधनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेधनिका। २-हाथी हाँकने का अंकुश।

वेधमुख्य [संज्ञा पु.] (सं.) कचूर।

वेधमुख्यक [संज्ञा पु.] (सं.) हलदी का पौधा।

वेधमुख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

वेधशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ ग्रहों, नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी तथा गति जानने के यंत्र हों। आँबजर्वेटरी।

वेधस [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली में अँगूठे की जड़ के पास का स्थान।

वेधसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

वेधा [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव। ४-सूर्य। ५-पंडित। ६-सफेद मदार। ७-दक्ष आदि प्रजापति। ८-एक यादव का नाम।

वेधालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वेधशाला'।

वेधित [वि.] (सं.) जो वेदा या छेदा गया हो।

वेधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जोंक। २-मेथी। [वि.] (सं.) वेधने या छेदने वाली।

वेधी [वि.] (हिं.) [स्त्री वेधिनी] १-वेध करने वाला। २-छेदने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) अम्लवेंत।

वेध्य [वि.] (सं.) १-जिसे वेध किया जाय। २-जो वेध करने के योग्य हो।

वेन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक पवित्र नदी का नाम।

वेन्य [वि.] (सं.) सुन्दर। कमनीय।

वेपथु [संज्ञा पु.] (सं.) कँपकपी। कंप।

वेपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँपना। कंप। २-वात-रोग।

वेमक [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि।

वेर [संज्ञापु.] (सं.) १-शरीर। देह। २-कुंकुम। केसर।

वेरक [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

वेरट [संज्ञा पु.](सं.) बेर नामक फल। [वि.] १-मिलाया हुआ। २-नीच।

वेरि [संज्ञा स्त्री.](सं.) बेंत आदि का बनाया हुआ पहनावा या बकतर।

वेल [संज्ञा पु.] (सं.) उपवन। बाग।

वेलन [संज्ञा पु.] (सं.) हींग।

वेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काल। समय। २-लहर। ३-तट। सीमा। ४-मर्यादा। ५-वाणी। ६-भोजन। ७-मसूड़ा। ८-रोग।

वेलाकूल [संज्ञा पु.] (सं.) ताम्रलिप्त नामक देश

वेलाज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) मरने के समय आने वाला ज्वर।

वेलाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) दिन मान के आठवें भाग के अधिपति देवता।

वेलायनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि।

वेलावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'बिलावल'।

वेलावित्त [संज्ञा पु.] (सं.) राजतरंगिणी के अनुसार एक प्रकार के राजकर्मचारी।

वेलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी तट के आस-पास का प्रदेश।

वेल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) विड़ङ्ग।

वेल्लगिरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगु।

वेल्लज [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च।

वेल्लन [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि पर लोटना। लेटना।

वेल्लनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माला दूब।

वेल्लभव [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च।

वेल्लरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-माला दूब। २-काला विधारा।

वेल्लहल [संज्ञा पु.] (सं.) लम्पट। बदचलन।

वेल्लि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लता। बेल।

वेल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पोई का साग।

वेल्लिकाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेलफल।

वेल्लितकि

गूढ़ा। २-बेल का पेड़।

वेल्लितक [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प विशेष।

वेल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेल। लता।

वेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्त्रादि पहनने का ढङ्ग। २-पहनने के वस्त्र। पोशाक। ३-खेमा तम्बू। ४-घर। मकान। ५-वेश्या का घर। ६-देखो 'प्रवेश'। किसी का वेश धारण करना-किसी के ढङ्ग के कपड़े-लत्ते पहनना।

वेशकुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुलटा स्त्री। २-वेश्या।

वेशता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश का भाव या धर्म।

वेशत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वेशता।

वेशधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो वेश बदले हुए हो। छद्मवेशी। २-जैनियों का एक सम्प्रदाय।

वेशधारी [वि.] (सं.) १-वेश धारण करने वाला। २-कपट रूपधारी। [संज्ञा पु.] पुराणोक्त एक वर्णसंकर जाति।

वेशन [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवेश करना।

वेशनद [संज्ञा पु.] (सं.) एक नदी का नाम।

वेशभाव [संज्ञा पु.] (सं.) वेशसज्जा की परिपाटी

वेशभूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहनने के कपड़े और ढङ्ग।

वेशयुवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रण्डी। वेश्या।

वेशवधू, वेशवनिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रण्डी।

वेशवार [संज्ञा पु.](सं.) नमकमिर्च आदि मसाले

वेशवास [संज्ञा पु.] (सं.) वेश्या का घर।

वेशस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

वेशिक [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ की कारीगरी। शिल्पविद्या।

वेशी [वि.] (हिं.) वेशधारण करने वाला।

वेशीजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्रदात्री नामक लता

वेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) घर। मकान।

वेश्मकलिंग, वेश्मकलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) गौरैया (पक्षी)।

वेश्मकूल [संज्ञा पु.] (सं.) चिचड़ा।

वेश्मनकुल [संज्ञा पु.] (सं.) छछुंदर।

वेश्म-पुरोधक [संज्ञा पु.] (सं.) मकान में सेंध लगाकर चोरी करने वाला।

वेश्मभू [संज्ञा पु.] (सं.) मकान बनाने के लिये उपयुक्त भूमि।

वेश्मवास [संज्ञा पु] (सं.) निवास स्थान। रहने का घर।

वेश्मस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रंडी।

वेश्मांत, वेश्मान्त [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर। जनानखाना।

वेश्मादीपक [संज्ञा पु.] (सं.) मकान में आग लगाने वाला।

वेश्य [संज्ञा पु.] (सं.) वेश्या का घर।

वेश्यांगना, वेश्याङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बद-चलन स्त्री।

वेश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो गाने बजाने तथा धन लेकर संभोग कराने का काम कराती हो। रंडीं।

वेश्याचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) रंडियों का दलाल। भडुआ।

वेश्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान या घर जहाँ वेश्याएँ पेशा कमाती हों। चौंथल।

वेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) गदहा।

वेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'वेश'। २-नेपथ्य। ३-वेश्या का मकान। ४-कर्म। ५-काम चलाना

वेषकार [संज्ञा पु.] (सं.) वेठन। वेष्टन।

वेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसौंदी। २-परिचर्या

वेषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनियाँ।

वेषधारी [संज्ञा पु.] देखो 'वेशधारी'।

वेषवार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वेशवार'।

वेष-श्री [वि.] (सं.) जिसमें सुन्दर तथा ललित वाक्य हों।

वेषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली।

वेषी [संज्ञा पु.] देखो 'वेशी'।

वेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष का निर्यास। २-गोंद। ३-धूपसरल। ४-गंधाबिरोजा। ५-मुख का एक रोग। ६-वेष्टन।

वेष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा। २-गोंद। ३-वृक्ष का निर्यास। ४-सफेद कुम्हड़ा ५-कुम्हड़ा। ६-छाल। ७-पगड़ी। ८-पर-कोटा। प्राचीर। [वि.] (सं.) चारों ओर से ढकने या आवृत्त करने वाला।

वेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वेष्टनी] १-घेरना या लपेटना। २-कोई वस्तु लपेटने का कपड़ा। बेठन। ३-मुकुट। ४-पगड़ी। ५-गूगल। ६-कान का छेद।

वेष्टनक [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री प्रसंग करने का एक ढङ्ग।

वेष्टनवेष्टक [संज्ञा पु.](सं.) एक तरह का रतिबंध

वेष्टवंश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाँस।

वेष्टव्य [वि.] (सं.) वेष्टन या वेठन से लपेटने योग्य।

वेष्टसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंधाबिरोजा। २-धूपसरल।

वेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हर्रे।

वेष्टित [वि.] (सं.) १-चारों ओर से घिरा हुआ। २-लपेटा हुआ। ३-रोका हुआ। अवरुद्ध।

वेसन [संज्ञा पु.] देखो 'वेसन'।

वेसर [संज्ञा पु.] (सं.) गदहा।

वेसवार [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'वेशवार'। २-पकाया हुआ मांस विशेष।

वैंकि, वैङ्कि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि।

वैंदवी, वैन्दवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन जाति का नाम।

वैंध्य, वैन्ध्य [वि.] (सं.) विंध्यपर्वत या प्रांत का

वै* [वि.] (हिं.) १-देखो 'वे'। २-देखो 'दो'।

वैकंकत, वैकङ्कत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विकं-कत'। [वि.] विकङ्कत की लकड़ी आदि से बना।

वैकक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह हार या माला जो जनेऊ की तरह पहना जाय। २-इस तरह पहनने का ढंग।

वैक्रटिक [संज्ञा पु.] (सं.) जौहरी। [वि.] त्रिकट-सम्बन्धी।

वैकट्य [संज्ञा पु.] (सं.) विकटता।

वैकतिक [संज्ञा पु.] (सं.) रत्न-परीक्षक। जौहरी

वैकथिक [संज्ञा पु.] (सं.) शेखीबाज।

वैकरंज, वैकरञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) एक संकर जाति का सर्प।

वैकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वात्स्यमुनि। २-एक प्राचीन जनपद।

वैकर्णायन [संज्ञा पु.] (सं.)वैकर्णमुनि के कुल में उत्पन्न व्यक्ति।

वैकर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य पुत्र का नाम। २-कर्ण। ३-सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम। ४-सूर्यवंश में उत्पन्न व्यक्ति। [वि.] सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का।

वैकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) दुष्कृत्य।

वैकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-विकल्प का भाव। २-असमञ्जसता। ३-अनिश्चयता।

वैकल्पिक [वि.] (सं.) १-किसी एक पक्ष में होने वाला। एकांगी। २-जो अपनी इच्छा के अनुसार चुनकर ग्रहण किया जा सके। ऑप्शनल। ३-उन दो या कई में से एक जिसे अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके। ऑल्टरनेटिव।

वैकल्पिक-परितुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) पेश की हुई दो माँगों में से एक की मांग। ऑल्टरनेटिव-रिलीफ।

वैकल्पिक-प्रार्थना [संज्ञा स्त्री.](सं.) पेश की हुई दो मांगों में से एक मांग की प्रार्थना। ऑल्टर-नेटिव प्रेयर।

वैकल्पिक-मत [संज्ञा पु.] (सं.) दो या दो से अधिक उम्मेदवारों में से किसी एक को अपनी इच्छा के अनुसार दिया जाने वाला मत या राय। ऑल्टरनेटिव-वोट।

वैकल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विकलता। घबराहट। २-कातरता। ३-टेढ़ापन। ४-अङ्गहीन होने का भाव। ५-न्यूनता। कमी। ६-अभाव। न होना। [वि.] अधूरा। अपूर्ण।

वैकायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि।

वैकारिक [वि.] (सं.) बिगड़ा हुआ। विकृत। [संज्ञा पु.] (सं.) विकार। बिगाड़।

वैकार्य [संज्ञा पु.] (सं) विकार का भाव या धर्म। [वि.] (सं.) विकार के योग्य।

वैकाल [संज्ञा पु.] (सं.) सायंकाल। मध्याह्नोत्तर।

वैकालिक [वि.] (सं.) (स्त्री. वैकालिनी) उपयुक्त समय पर न होने वाला।

वैकुंठ, वैकुण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-विष्णु का निवास स्थान या लोक। ३-स्वर्ग ४-इन्द्र। ५-सफेद पत्तों वाली तुलसी।

वैकुंठीय, वैकुण्ठीय [वि.] (सं.) वैकुंठसंबन्धी वैकुंठ का।

वैकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-विकार। खराबी। २-वीभत्स रस। ३-वीभत्स रस का आलंबन। [वि.] (सं.) १-जो विकार से उत्पन्न हुआ हो २-दुःसाध्य।

वैकृतज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्वर जो ऋतु के अनुकूल न हो।

वैकृत्तिक [वि.] (सं.) नैमित्तिक।

वैकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) वीभत्स रस।

वैक्रम, वैक्रमीय [वि.] (सं.) देखो 'विक्रमी'।

वैक्रांत, वैक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) चुन्नी नामक एक मणि।

वैक्रिय [वि.] (सं.) जो बिकने को हो। बिक्री का

वैखरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वाणी का व्यक्त रूप २-व्यक्त और स्पष्ट वाणी। ३-वाक्शक्ति। ४-वाग्देवी।

वैखानस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाणप्रस्थी। २-एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो प्रायः वन में रहते थे।

वैखानसि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वैखानसीय [संज्ञा पु.] (सं) एक उपनिषद् का नाम।

वैगंधिक, वैगन्धिक [संज्ञा पु] (सं.) गंधक।

वैगन [संज्ञा पु.] (अं.) मालगाड़ी का डब्बा जिस में भरकर माल बाहर भेजा जाता है।

वैगलेय [संज्ञा पु.] (सं.) भूतों का एक गण (पुराण)।

वैगुण्य [संज्ञा पु.] (सं) १-गुणहीनता। २-दोष अपराध। ३-नीचता।

वैग्रहिक [संज्ञा पु](सं.) विग्र या शरीर से सम्बन्ध रखने वाला।

वैघात्य [संज्ञा पु.] (सं) वह जो घात करने या मार डालने के योग्य हो।

वैचक्षण्य [संज्ञा पु](सं.) विचक्षणता। निपुणता होशियारी।

वैचारिक [वि](सं.) १-विचार से सम्बन्ध रखने वाला। २-न्याय विभाग तथा उसके विचार अथवा व्यवहार दर्शन सम्बन्धी। *जुडिशल*।

वैचारिक-अवेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विषय में न्याय-विभाग अथवा वैचारिकी के द्वारा होने वाली अवेक्षा या उस पर दिया जाने वाला ध्यान। *जुडिशल-नोटिस*।

वैचारिक-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें व्यवहारों या मुकदमों के विचार से सम्बन्ध रखने वाले मूल सिद्धांतों का वर्णन होता है। *लीगलज्युरिस-प्रूडेन्स*।

वैचारिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्याय-विभाग में कार्य करने वाले अधिकारियों का वर्ग या समुदाय। *जुडीशिअरी*।

वैचित्य [संज्ञा पु.] (सं) भ्रम। अन्यमनस्कता।

वैचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) विचित्रता। विलक्षणता

वैचित्र्य [संज्ञा पु.] (सं) १-विचित्रता। २-विभिन्नता। फर्क। भेद। ३-सुन्दरता। खूबसूरती।

वैचित्रवीर्य [संज्ञा प.] (सं.) धृतराष्ट्र, पाँडु और विदुर आदि विचित्रवीर्य की संतान।

वैच्युत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि।

वैजनन [संज्ञा पु.] (सं.) वह मास जिसमें किसी स्त्री को सन्तान उत्पन्न हो।

वैजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) विजनता। एकांत।

वैजयंत, वैजयन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का राजभवन। २-इन्द्र का झंडा। ३-घर। ४-जैनियों के मत से एक लोक जो सातों स्वर्गों से भी ऊपर है। ५-अग्निमंथवृक्ष।

वैजयंतिका, वैजयंती, वैजयन्तिका, वैजयन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पताका। झंडी। २-एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रङ्गों के फुल होते हैं।

वैजयिक [वि] (सं.) विजय-सम्बन्धी। विजय का।

वैजयी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'विजयी'।

वैजवन [संज्ञा पु.] (सं) वैदिक शाखा के प्रवर्त्तक एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैजात्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विजातीय होने का भाव। २-विलक्षणता। ३-बदचलनी। लंपटता।

वैजिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आत्मा। २-हेतु। कारण। [वि.] १-बीज-सम्बन्धी। २-वीर्य-सम्बन्धी।

वैज्ञानिक [संज्ञा पु.] (सं.) विज्ञान का ज्ञाता। [वि] (सं.) विज्ञान-सम्बन्धी। विज्ञान का।

वैड़ालव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधु बने रहना।

वैड़ालव्रती [संज्ञा पु.] (सं.) पाखंडी साधू। ढोंगी तपस्वी।

वैडूर्य [संज्ञा पु] देखो 'वैदूर्य'।

वैण [वि.] (सं.) वेणु या बाँस-संबंधी। बाँस का

वैणव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस का फल। २-बाँसुरी। ३-बाँस का वह डंडा जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। [वि.] (सं.) वेणु या बांस सम्बन्धी। बांस का

वैणविक [संज्ञा पु.] (सं.) वेणु या बांसुरी बजाने वाला।

वैणवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशलोचन। [संज्ञा पु] १-वेणु या बांसुरी बजाने वाला। २-शिव। महादेव।

वैणिक [संज्ञा पु.] (सं.) वीणा बजाने वाला। बीनकार।

वैणुक [संज्ञा पु.] (सं) १-वेणु या बंसी बजाने वाला। २-हाथी का अंकुश।

वैणुकीय [वि.] (सं.) वेणु-सम्बन्धी। वेणु का।

वैणेय [संज्ञा पु.](सं.) वेद की एक शाखा का नाम

वैण्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजा वेणु के पुत्र का एक नाम।

वैतंडिक, वैतण्डिक [संज्ञा पु] (सं.) व्यर्थ का वितंड या झगड़ा अथवा बहस करने वाला।

वैतंडी, वैतण्डी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैतांसिक [संज्ञा पु.] (सं.) मांस बेचने वाला। कसाई।

वैतथ्य [संज्ञा पु] (सं.) विफलता।

वैतनिक [संज्ञा पु.] (सं) वह जो वेतन पर काम करता हो। *सैलरीड*।

वैतरणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-नरक स्थित एक नदी का नाम। २-कलिंग देश की एक नदी का नाम

वैतस [संज्ञा पु.](सं.) १-पुरुषेन्द्रिय। लिंग। २-अम्लवेंत।

वैतसेन [संज्ञा पु.](सं.) राजा पुरूरवा का एक नाम

वैताढ्य [संज्ञा पु.](सं.) एक पर्वत का नाम।

वैतानिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह हवन या यज्ञ आदि जो श्रौतविधानानुसार हो। २-वह अग्नि जिससे अग्निहोत्र आदि कृत्य किये जायं

वैताल [संज्ञा पु] (सं) स्तुतिपाठक। भाट। [वि.] (सं) बेताल-सम्बन्धी। बेताल का।

वैतालकि [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद की शाखा के प्रवर्त्तक एक आचार्य का नाम।

वैताल-रस [संज्ञा पु.] (सं) वैद्यक में एक रसौषध जो सन्निपात ज्वर और मूर्च्छा आदि में उपयोगी मानी जाती है।

वैतालिकि [संज्ञा पु.] (सं.) बंदीजन। भाट।

वैताली [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वैतालीय [संज्ञा पु.](सं.) एक वर्णिक वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरण में चौदह तथा दूसरे और चौथे चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं। [वि.] (सं.) बेताल-सम्बन्धी। बेताल का

वैतृष्ण्य [संज्ञा पु.] (सं.) तृष्णा से रहित होने का भाव।

वैत्तिक [वि.] (सं.) आय-व्यय आदि की व्यवस्था से सम्बन्ध रखने वाला। वित्त-सम्बन्धी। फाइनेन्शल।

वैदंभ, वैदम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

वैद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
[वि.] (सं.) विद्वान् या पंडित-सम्बन्धी।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैद्यक'।

वैदक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैद्यक'।

वैदग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांडित्य। विद्वत्ता। २-कार्यकुशलता। ३-चतुरता। ४-रसिकता। ५-शोभा। ६-हावभाव।

वैदग्ध्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पांडित्य। विद्वत्ता। २-हाजिरजवाबी।

वैदर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विदर्भ का राजा या शासक। २-दमयंती के पिता का एक नाम। ३-रुकमणी के पिता का एक नाम। ४-बातचीत करने की चतुरता। ५-मसूड़े फूल जाने का एक रोग। [वि.] १-विदर्भ देश में उत्पन्न २-विदर्भ देश का।

वैदर्भक [संज्ञा पु.] (सं.) विदर्भ देश का निवासी

वैदर्भी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काव्य की एक प्रकार की रीति या शैली जिसमें कोमल वर्णों से मधुर रचना की जाती है।

वैदिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों का अनुयायी। २-वेदों का पंडित।
[वि.] (सं.) वेद-सम्बन्धी। वेद या वेदों का

वैदिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनजामुन।

वैदिश [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो विदिशा का निवासी हो।

वैदुल [संज्ञा पु.] (सं.) बेंत की जड़।

वैदुष [संज्ञा पु.] (सं.) विद्वान्। पण्डित। ज्ञानी।

वैदुष्य [संज्ञा पु.] (सं.) विद्वत्ता। पांडित्य।

वैदूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुनिया (रत्न)।

वैदेशिक [वि.] (सं.) १-विदेश से सम्बन्ध रखने वाला। विदेश का। २-दूसरों देशों या राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने वाला। फॉरेन।

वैदेशिक-कार्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक दृष्टि से दूसरे देशों या राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने वाले मामले। फॉरेन-अफेयरस्।

वैदेशिक-कार्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक-क्षेत्र में अपने राष्ट्र से भिन्न, दूसरे या बाहरी राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने वाला कार्यालय। फॉरेन-ऑफिस।

वैदेशिक-नीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश या राष्ट्र की दूसरे देशों या राष्ट्रों के लिए निधारित अपने राष्ट्र की नीति। फॉरेन-पॉलिसी।

वैदेशिक-मंत्री, वैदेशिकमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे देशों या राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने वाला मन्त्री। परराष्ट्र मन्त्री या सचिव। फॉरेन-मिनिस्टर।

वैदेशिक-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) परराष्ट्र-मन्त्री के अधीन काम रखने वाला विभाग। फॉरेन-डिपार्टमेंट।

वैदेशिक-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) वैदेशिक मंत्री। परराष्ट्र-सचिव।

वैदेश्य [वि.] (सं.) देखो 'वैदेशिक'।

वैदेह [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा निमि के पुत्र का नाम। २-पैदायशी व्यापारी। जन्मजात वणिक्। ३-एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।

वैदेहक-व्यंजन, वैदेहक-व्यञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) व्यापारी के वेश में गुप्तचर।

वैदेहिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वैदेह'।

वैदेही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीता। २-वैदेह जाति की स्त्री। ३-रोचना। ४-पिप्पली। पीपल।

वैद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-पण्डित। २-वह चिकित्सक जो वैद्यकशास्त्र के अनुसार चिकित्सा करता हो। ३-बंगाल की एक जाति। ४-वासकवृक्ष।
[वि.] (सं.) वेद-सम्बन्धी। वेद का।

वैद्यक [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें रोगों की पहचान और चिकित्सा आदि का विवेचन होता है। चिकित्साशास्त्र। आयुर्वेद।

वैद्यनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) बंगाल के संथाल परगने का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान।

वैद्यबंधु, वैद्यबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास का वृक्ष।

वैद्यमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अडूसा।

वैद्यराज [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अच्छा वैद्य हो

वैद्यसिंही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वासकवृक्ष।

वैद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री-चिकित्सक। २-काकोली।

वैद्यानि [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककाल के एक ऋषिपुत्र का नाम।

वैद्युत् [वि.] (सं.) विद्युत-सम्बन्धी। बिजली का

वैद्युत्-आघात [संज्ञा पु.] (सं.) बिजली से लगने वाला झटका या धक्का। *इलेक्ट्रिक-शॉक।*

वैद्युत्-तापक [संज्ञा पु.] (सं.) वह यंत्र जिससे तापा जाता और कमरा गरम किया जाता है। *हीटर।*

वैद्युत्-तापन [संज्ञा पु.] (सं.) बिजली से वस्तुओं को गरम करना। *इलेक्ट्रिक-हीटिंग।*

वैद्युतांक, वैद्युताङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) विद्युत् या बिजली के परिमाण नापने की इकाइयां। *इलेक्ट्रिक यूनिट।*

वैद्रुम [वि.] (सं.) विद्रुम-सम्बन्धी। मूँगे का।

वैध [वि.] (सं.) १-जो विधि या कानून के अनुसार हो। *लीगल।* २-जो विधान अथवा संविधान के अनुसार ठीक हो। *कॉंस्टिट्यूशनल।*

वैधर्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधर्मी होने का भाव २-वह जो अपने धर्म के अलावा और भी धर्मों का अच्छा ज्ञाता हो। ३-नास्तिकता।

वैधव [संज्ञा पु.] (सं.) बुध।

वैधवेय [संज्ञा पु.] (सं.) विधवा का पुत्र।

वैधव्य [संज्ञा पु.] (सं.) विधवापन। रँडापा।

वैधस [संज्ञा पु.] (सं.) राजा हरिश्चन्द्र।

वैधातनिक, वैधात्र [संज्ञा पु.] (सं.) विधाता के पुत्र सनत्कुमार।

वैधात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मीबूटी।

वैधानिक [वि.] (सं.) १-विधान या सङ्घटन के नियमों से सम्बन्ध रखने वाला। *कांस्टिट्यूशनल।* २-जो विधान के रूप में हो। *स्टैट्यूटरी।*

वैधानिक-परामर्शदाता [संज्ञा पु.](सं.) विधि या कानून-सम्बन्धी मामलों में सलाह देने वाला *लीगल-एडवाइजर।*

वैधुमाग्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी का नाम।

वैधूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विधुर होने का भाव। २-भ्रम। सन्देह। ३-कम्पित होने का भाव।

वैधृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो विधृति का पुत्र या सन्तान हो। २-ग्यारवें मन्वन्तर के एक इन्द्र का नाम।

वैधृतवाशिष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम

वैधृति [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से एक। २-एक देवता जो विधृति के पुत्र थे।

वैधेय [वि.] (सं.) १-विधि-सम्बन्धी। विधि का २-सम्बन्धी। मूर्ख।

वैध्यत [संज्ञा पु.] (सं.) यम के एक प्रतिहार का नाम।

वैन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा बेन के पुत्र पृथु का नाम।

वैनतक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञपात्र।

वैनतेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनता की सन्तान। २-गरुड़। ३-अरुण।

वैनतेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक शाखा का नाम।

वैनत्य [वि.] (सं.) विनीत या नम्र स्वभाव का।

वैनद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

वैनभृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि का नाम। २-एक वैदिक शाखा का नाम।

वैनयिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनय। प्रार्थना। २-वह जो शास्त्रों आदि का अध्ययन करता हो। ३-प्राचीन काल का एक प्रकार का रथ।
[वि] (सं.) विनय-सम्बन्धी। विनय का।

वैनायक [वि] (सं.) विनायक या गणेश संबन्धी [संज्ञा पु.] (सं) भागवत के अनुसार भूतों का एक गण।

वैनायिक [वि.] (सं) विनायक-संबन्धी। [संज्ञा पु.] (सं) बौद्धधर्म का अनुयायी।

वैनाशिक [संज्ञा पु] (सं.) १-फलित ज्योतिष में जन्मनक्षत्र से सत्ताईसवाँ नक्षत्र। २. बौद्ध। [वि.] (सं.) १-विनाश-संबन्धी। २-पराधीनता।

वैनीतक [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी सवारी जिसे आदमी मिलकर उठाते हैं। जैसे—डोली, पालकी आदि।

वैनेय [संज्ञा पु.](सं) एक वैदिकशाखा का नाम।

वैन्य [संज्ञा पु.] (सं.) राजा वेन के पुत्र का एक नाम।

वैपरीत्य [संज्ञा पु.] (सं.) विपरीतिता। प्रतिकूलता

वैपश्चित [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि का नाम जो विपश्चित् ऋषि के वंशज थे।

वैपश्यत [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

वैपादिका [संज्ञा पु] (सं.) विपादिका नामक रोग

वैपार [संज्ञा पु.] देखो 'व्यापार'।

वैपारी [संज्ञा पु.] देखो 'व्यापारी'।

वैपित्र [संज्ञा पु.] (सं.) वे भाई बहन जिनकी माँ एक होकर पिता भिन्न हों।

वैपुल्य [संज्ञा पु.] (सं.) विपुलता। अधिकता।

वैफल्य [संज्ञा पु.] (सं.) विफल होने का भाव। विफलता। नाकामयाबी। निल्लिटी।

वैबाध [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की सिक्कड़ २-वह अश्वत्थ वृक्ष जो खैर के वृक्ष में से निकला हो।

वैबोधिक [संज्ञा पु.](सं.) रात के समय पहरा देने घंटा बजाने और सोये हुए लोगों को जगाने वाला।

वैभंडि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वैभव [संज्ञा पु.] (सं.) १-धन-सम्पत्ति। विभव। २-ऐश्वर्य।

वैभवशाली [संज्ञा पु.] (सं.) जिसके पास बहुत धन हो। मालदार। अमीर।

वैभविक [संज्ञा पु.] (सं.) समर्थ।

वैभांडिक, वैभाण्डिक [संज्ञा पु.](सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

वैभार [संज्ञा पु.] (सं.) राजगृह के पास के एक पर्वत का नाम।

वैभाषिक [वि.] (सं.) १-विभाषा-सम्बन्धी। २-वैकल्पिक। [संज्ञा पु.] (सं.) एक बौद्ध सम्प्रदाय का नाम।

वैभिन्य [संज्ञा पु.] (सं) विभिन्नता।

वैभूतिक [वि.] (सं.) विभूति सम्बन्धी।

वैभोज [संज्ञा पु] (सं) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैभ्राज [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग का उपवन या बाग। २-सुपार्श्व पर्वत के एक वन का नाम। ३-स्वर्ग में स्थित एक लोक का नाम।

वैमनस्य [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी।

वैमल्य [संज्ञा पु.] (सं.) विमलता।

वैमात्र, वैमात्रेय [वि.] (सं.) [स्त्री. वैमात्रा, वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैमानिक [वि.] (सं.) विमान-सम्बन्धी। [संज्ञा पु](सं.) १-वह जो विमान पर सवार हो। २-हवाई जहाज चलाने वाला। ३-वह जो उड़ सकता हो।

वैमित्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

वैमुख्य [संज्ञा पु] (सं.) १-विमुखता। २-विपरीतता।

वैभृध [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध करने वाले, इन्द्र।

वैभृध्य [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धविद्या में कुशल।

वैमेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना। विनिमय।

वैम्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वैयक्तिक [वि.] (सं.) किसी एक व्यक्ति-सम्बन्धी व्यक्तिगत। पर्सनल।

वैयक्ति-सुखवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जो केवल व्यक्तिगत सुख तक ही सीमित है।

वैयग्र, वैयग्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विकलता। घबड़ाहट। २-किसी विषय में लीनता या एकाग्रता।

वैयमक [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैयर्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्यर्थता।

वैयधिकरण्य [संज्ञा पु.] (सं.) भिन्न-भिन्न संबंधों या अवस्थितियों में होने की दशा।

वैयशन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

वयश्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि का नाम।

वैयसन [वि.] (सं.) व्यसन से होने वाला। व्यसन का।

वैयाकरण [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण का पंडित। [वि.] [स्त्री. वैयाकरणी] व्याकरण-सम्बन्धी व्याकरण का।

वैयाख्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याख्या।

वैयाघ्र [वि.] (सं.) व्याघ्र-सम्बंधी। व्याघ्र का। [संज्ञा पु.] व्याघ्र की खाल मढ़ा एक प्रकार का रथ जो प्राचीनकाल में होता था।

वैयाघ्रपद्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वैयाघ्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) आसन विशेष।

वैयास [वि.] (सं.) व्यास-सम्बन्धी। व्यास का।

वैयासकि [संज्ञा पु.] (सं.) व्यास का गोत्रज।

वैयासिक [वि.] (सं.) व्यास का बनाया हुआ।

वैयास्क [संज्ञा पु.](सं.) एक वैदिक छन्द का नाम

वैरंडेय, वैरण्डेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन गोत्रप्रवृर्त्तक ऋषि का नाम।

वैर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रुता। दुश्मनी। २- प्रतिहिंसा।

वैरकर, वैरकारक [वि.](सं) दुश्मनी करने वाला

वैरकारिता [संज्ञा स्त्री] (सं) शत्रुता। दुश्मनी

वैरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) विरक्तता। वैराग्य।

वैरत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जाति का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

वैरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी।

वैरदेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रुता के बदले में उत्पन्न शत्रुता या वैर। २-वैदिककालीन एक असुर का नाम।

वैरपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु। दुश्मन।

वैरभाव [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी।

वैरल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरलता। २-एकांत।

वैरशुद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) वैर का बदला चुकाना

वैरस्य [संज्ञा पु.](सं.) १-विरसता। २-अनिच्छा

वैराग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'वैराग्य'।

वैरागिक [वि.](सं.) जिसके मन मे विराग उत्पन्न हो।

वैरागी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे वैराग्य हुआ हो। विरक्त। २-एक प्रकार के वैष्णव साधु।

वैराग्य [संज्ञा पु.] (सं.) सांसारिक कामों और सुख भोगों या किसी विशेष बात से होने वाली विरक्ति।

वैराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमात्मा। २-एक साम। ३-सत्ताईसवें कल्प का नाम। ४-देखो 'वैराज्य'। ५-अजीत के पिता का नाम (भागवत)।

वैराजक [संज्ञा पुं.] (सं.) उन्नीसवें कल्प का नाम

वैराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ही देश या राज में दो राजाओं या शासकों का शासन। २-वह देश या राज्य जहाँ इस प्रकार की प्रणाली हो। ३-विदेशियों का शासन।

वैराट [वि.] (सं.) १-विराट-सम्बन्धी। विराट का। २-विस्तृत। लम्बा-चौड़ा। [संज्ञा पु] १ बीर बहूटी। २-महाभारत का विराट पर्व।

वैराटक [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर मे निकलने वाली जहरीली गांठ।

वैराट्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों की एक विद्या देवी का नाम।

वैरातंक, वैरातङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुनवृक्ष

वैराम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जाति का नाम

वैरंचि, वैरिञ्चि [वि.] (सं.) विरिंचि या ब्रह्मा-सम्बन्धी।

वैरंच्य, वैरिञ्च्य [संज्ञा पु.] (सं.) सनकादि ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं।

वैरि, वैरिण [संज्ञा पु.] (सं.) वैरी। शत्रु। दुश्मन

वैरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुश्मनी। शत्रुता।

वैरित्व [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुता। दुश्मनी।

वैरी [संज्ञा पु.] (हिं.) शत्रु। दुश्मन।

वैरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि। २-एक प्रकार का साम।

वैरूपाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो विरूपाक्ष गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

वैरूप्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरूपता। २-विकृत होने का भाव।

वैरेचन [वि.] (सं.) विरेचन-सम्बन्धी। विरेचन का।

वैरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्ध का एक नाम। २-राजा बलि का एक नाम। ३-सूर्यपुत्र का नाम। ४-अग्निपुत्र का एक नाम।

वैरोचनि [संज्ञा पु] (सं.) १-बुद्ध। २-राजा बलि ३-सूर्य के पुत्र का एक नाम।

वैरोचि [संज्ञा पु.] (सं.) बलि राजा के एक पुत्र का नाम।

वैरोट्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों की सोलह देवियों में से एक।

वैरोद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) वैर का बदला चुकाना

वैल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेलवृक्ष। २-बेलफल।

वैलक्षण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विलक्षणता। २-विभिन्नता।

वैलक्ष्य [संज्ञा पु.](सं.) १-लज्जा। संकोच। २-आश्चर्य। ताज्जुब। ३-स्वभाव की विलक्षणता

वैलस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) मरघट। श्मशान।

वैल्व [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीफल। [वि.] (सं.) बेलफल-सम्बन्धी।

वैवधिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-घूम-घूमकर माल बेचने वाला। फेरी वाला। २-बँहगी उठाने वाला।

वैवर्ण्य [संज्ञा पु.](सं.) १-मलिनता। २-सौन्दर्य का अभाव। ३-स्त्रियों के आठ सात्विक भावों में से एक।

वैवर्त [संज्ञा पु.](सं.) किसी पदार्थ को चक्कर खाते हुए घूमना।

वैवश्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विवशता। लाचारी। २-दुर्बलता। कमजोरी।

वैवस्वत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सातवें मनु का नाम। २-यमराज। ३-शनिग्रह। ४-एक रुद्र का नाम। ५-मनु का वर्तमान मन्वन्तर।

वैवस्वतद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) सोगरा चावल।

वैवस्वती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दक्षिण दिशा। २-यमुना नदी का एक नाम।

वैवाह [वि.](सं.) विवाह-सम्बन्धी। विवाह का।

वैवाहिक [संज्ञा पु.](सं.) वधू का पिता या दामाद का पिता। ससुर। [वि.] (सं.) विवाह से सम्बन्ध रखने वाला। विवाह का।

वैवाह्य [वि.] (सं.) १-विवाह-सम्बन्धी। विवाह का। २-जो विवाह के योग्य हो। [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के अवसर पर होने वाला समारोह या उत्सव।

वैवृत्त [संज्ञा पु.](सं.) उदात्त आदि स्वरों का क्रम

वैशंपायन, वैशम्पायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशद्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-विशदता। २-निर्मलता

वैशली [संज्ञा स्त्री.] देखो 'वैशाली'।

वैशस [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसाईपन। २-अत्याचार।

वैशस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अ-रक्षता। २-शासनतन्त्र।

वैशाख [संज्ञा पु.] (सं.) १-चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना। २-मथानी का डंडा ३-ग्रह विशेष जिसका प्रभाव घोड़ों पर पड़ता है। यौ०-वैसाखनन्दन-गधा।

वैशाखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैशाख मास की पूर्णमासी। २-पुराणोक्त वसुदेव की एक पत्नी का नाम।

वैशाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैशारद [संज्ञा पु.] (सं.) विशारद। पंडित।

वैशाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीन बौद्धकाल की एक प्रसिद्ध नगरी जो आधुनिक मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ़ नामक गाँव के स्थान पर थी

वैशालीय [संज्ञा पु.] (सं.) जैनधर्म के प्रवर्त्तक महावीर का एक नाम।

वैशालेय [संज्ञा पु.] (सं.) तक्षक। (यह विशाल के वंशज थे)।

वैशिक [संज्ञा पु.] (सं.) वेश्यागामी नायक। (साहित्य)। [वि.](सं.) वेश-संबंधी। वेश का

वैशिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जाति। (पुराण)।

वैशिजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्रदात्री नामक लता

वैशिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) असाधारण। विशिष्टता।

वैशीपुत्र [संज्ञा पु.] वेश्या का पुत्र।

वैशेषिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छः दर्शनों में से एक इसके आचार्य कणाद थे। २-वैशेषिक दर्शन का ज्ञाता या अनुयायी। [वि.] (सं.) १-वैशेषिक दर्शन-सम्बन्धी। २-किसी विशेष विषय आदि से सम्बन्ध रखने वाला।

वैशेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) विशेषता।

वैश्य [संज्ञा पु.] (सं.) भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा, जिसका काम कृषि, गोरक्षा, और वाणिज्य है।

वैश्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैश्य का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'वैश्यता'।

वैश्यभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की वैश्या और भद्रा नामक दो देवियाँ।

वैश्यसव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

वैश्यस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

वैश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैश्या जाति की एक स्त्री। २-हलदी।

वैश्रंभक, वैश्रम्भक [संज्ञा पु.](सं.) देवताओं का एक बाग।

वैश्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर। २-शिव।

वैश्रवणालय, वैश्रवणावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर के रहने का स्थान। २-वटवृक्ष। बड़ का पेड़।

वैश्रवणोदय [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष। बड़ या बरगद का पेड़।

वैश्व [वि.] (सं.) विश्व-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] उत्तराषाढ़ा-नक्षत्र।

वैश्वजनीन [वि.] (सं.) समस्त संसार के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला। [संज्ञा पु.] समस्त विश्व के लोगों का कल्याण करने वाला।

वैश्वज्योतिष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम

वैश्वदेव [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ।

वैश्वदेवत [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तराषाढ़ा-नक्षत्र।

वैश्वदेविक [वि.](सं.) विश्वदेव-सम्बन्धी। विश्वदेव का।

वैश्वमनस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

वैश्वयुग [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के मतानुसार बृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत् आदि पाँच संवत्सरों का युग या समूह।

वैश्वानर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-चित्रकवृक्ष। ३-पित्त। ४-परमात्मा। चेतन।

वैश्वानर-चूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में से एक प्रकार का चूर्ण।

वैश्वानर-मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निकोण जो वैश्वानर का मार्ग माना जाता है।

वैश्वानरवटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार की गोली जो पेट के रोगों में उपकारी मानी जाती है।

वैश्वानरविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

वैश्वासिक [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसपर विश्वास किया जाय। विश्वस्त।

वैश्वी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

वैषम, वैषम्य [संज्ञा पु.] (सं.) विषमता।

वैषयिक [वि.](सं.) विषय-सम्बन्धी। विषय का। [संज्ञा पु.] विषयी। लंपट।

ा [संज्ञा पु.] (सं.) विषुवसंक्रांति।

र [संज्ञा पु.] (सं.) चारों ओर घूम-फिरकर आहार प्राप्त करने वाला पशु या पक्षी।

वैष्टंभ, वैष्टम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

[संज्ञा पु.] (सं.) होम की भस्म।

वैष्ट् [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-वायु। ३-विष्णु।

वैष्णव [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. वैष्णवी] १-विष्णु का उपासक तथा भक्त। २-हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध विष्णुउपासक संप्रदाय। [वि.] विष्णु-सम्बन्धी। विष्णु का।

वैष्णवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैष्णव होने का भाव या धर्म।

वैष्णवत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णव होने का भाव या धर्म। वैष्णवता।

वैष्णवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विष्णु की शक्ति। २-दुर्गा। ३-गंगा। ४-तुलसी। ५-अपराजिता-लता। ६-पृथ्वी। ७-श्रवणनक्षत्र। ८-एक साम का नाम।

वैष्णव्य [वि.] (सं.) १-विष्णु-सम्बन्धी। २-विष्णु का।

वैसर्गिक [वि.] (सं.) जो विसर्जन करने योग्य हो। त्याज्य।

वैसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विसर्जन या उत्सर्ग करने की क्रिया। २-वह जिसको विसर्जित या उत्सर्ग किया जाय। ३-यज्ञ की बलि।

वैसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) विसर्प नामक रोग।

वैसा [वि.] (हिं.) उस तरह का।

वैसादृश्य [संज्ञा पु.] (सं.) असमानता। विषमता

वैसारिण [संज्ञा पु.] (सं.) मछली।

वैसूचन [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में पुरुषों का स्त्री-वेश धारण करना।

वैसूप [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम (पुराण)

वैसे [क्रि. वि.] (हिं.) उस तरह। उस प्रकार।

वैस्तारिक [वि.] (सं.) विस्तार-सम्बन्धी।

वैस्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर या विकृत होना।

वैहंग, वैहङ्ग [वि.] (सं.) विहङ्ग-सम्बन्धी। विहङ्ग का।

वैहायस [वि.] (सं.) [स्त्री. वैहायसकी] व्योम या आकाश-सम्बन्धी। आकाशी। आसमानी

वैहार [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जो मगध में राजगृह के पास है।

वैहार्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिससे मजाक किया जाय। (जैसे-साला या ससुराल का अन्य कोई ऐसा ही रिश्तेदार)।

वैहासिक [संज्ञा पु.] (सं.) मसखरा। विदूषक। भाँड़।

[संज्ञा पु.] (?) ओर। तरफ।

स [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश का नाम। २-इस देश का निवासी।

वोट [संज्ञा पु.] (अं.) निर्वाचन में किसी उम्मेदवार के पक्ष में दी जाने वाली राय या मत।

वोट-ऑफ-सेंशर [संज्ञा पु.] (सं.) निंदा का प्रस्ताव। निंदात्मक प्रस्ताव।

वोट-दाता [संज्ञा पु.] (अं., सं.) वह जो प्रतिनिधि निर्वाचित करने या उसमें निर्वाचन के सम्बन्ध में मत देने का अधिकारी हो। वोटर।

वोटर [संज्ञा पु.] (सं.) मतदाता। वोटदाता।

वोटर-लिस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) वह सूची जिसमें किसी विषय में वोट देने के अधिकारियों के नाम और पते आदि लिखे रहते हैं।

वोटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दासी। मजदूरनी।

वोटिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी चुनाव के लिए वोट या मत लिया या दिया जाना।

वोड् [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोह (जंतु)। २-एक प्रकार की मछली।

वोढ् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वोढू ऋषि। २-कदंबवृक्ष

वोढव्य [वि.] (सं.) ढोने योग्य।

वोढ़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋषभक औषध।

वोढू [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम

वोद [वि.] (सं.) तर। आर्द्र। गीला।

वोदार [संज्ञा पु.] (सं.) मुरदासिंगी।

वोदाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

वोरक [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक।

वोरठ [संज्ञा पु.] (सं.) कुन्द का फूल या पौधा।

वोरव [संज्ञा पु.] (सं.) बोरोधान।

वोल [संज्ञा पु.] (सं.) गुग्गुल।

वोल्लाह [संज्ञा पु.] (सं.) पीले अयालों और पीले रंग की पूँछ वाला घोड़ा।

वोंदित्थ [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी नाव। जहाज।

व्यंकुश [वि.] देखो 'निरंकुश'।

व्यंग, व्यङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द का व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट होने वाला अर्थ। २-गूढ़ अर्थ। ३-ताना। बोली। चुटकी। ४-मेंढक। ५-एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह पर छोटी-छोटी फुन्सी या काले दाने निकल आते हैं। ६-विकलांग।

व्यंगक, व्यङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत।

व्यंगता, व्यङ्गता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यंग का भाव।

व्यंगत्व, व्यङ्गत्व [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अङ्ग का खंडित होना।

व्यंगार्थ, व्यङ्गार्थ [संज्ञा पु.] देखो 'व्यंग्य'।

व्यंगित, व्यङ्गित [वि.] (सं.) विकल। घबड़ाया-हुआ।

व्यंगीकृत, व्यङ्गीकृत [वि.] (सं.) खंड कियाहुआ

व्यंग्य, व्यङ्ग्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द का व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट होने वाला अर्थ। २-गूढ़ अर्थ। ३-ताना। बोली। चुटकी।

व्यंग्य-चित्र, व्यङ्ग्य-चित्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्यक्ति या घटना का वह चित्र जो व्यंग्यपूर्वक उसका उपहास करने के लि बना हो। कार्टून।

व्यंजक, व्यञ्जक [वि.] (सं.) व्यक्त प्रकट या सूचित करने वाला।

व्यंजन, व्यञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। २-चावल रोटी आदि के साथ खाये जानेवाले पदार्थ। ३-पका हुआ भोजन। ४-वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जासके। (हमारी वर्ण माला में 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यंजन हैं)। ५-चिह्न। निशान। ६-अङ्ग। अवयव। ७-मूँछ। ८-दिन। ९-उपस्थ। १०-गुप्तचर या गुप्तचरों का मंडल

व्यंजनहारिका, व्यञ्जनहारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की अमंगलकारणी शक्ति जो विवाहिता लड़कियों के बनाये हुए खाद्य पदार्थ उठा ले जाती है (पुराण)।

व्यंजना, व्यञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया या भाव। २-शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के सिवा कुछ विशेष अर्थ निकलते हैं।

व्यंतर, व्यन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के मत से एक प्रकार के पिशाच और यक्ष आदि।

व्यंश [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार विप्रचित्ति के पुत्र का नाम।

व्यंशक [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़। पर्वत।

व्यंस [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम। [वि.] (सं.) स्कंधहीन। छिन्नबाहु।

व्यंसक [संज्ञा पु.] (सं.) धूर्त। चालाक।

व्यंसन [संज्ञा पु.] (सं.) ठगना या धोखा देना।

व्यक्त [वि.] (सं.) १-जो प्रकट किया या सामने लाया गया हो। जिसका व्यंजन हुआ हो। २-साफ। स्पष्ट। ३-स्थूल। बड़ा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-मनुष्य। आदमी। ३-कृत्य। काम। ४-सांख्यमतानुसार प्रधान, अहंकार, इन्द्रियाँ, तन्मात्र आदि चौबीस तत्व जो पुरुष से उद्भूत माने गये हैं।

व्यक्तगंधा, व्यक्तगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीली अपराजिता। २-सोनजुही। ३-पिप्पली

व्यक्तगणित [संज्ञा पु.] (सं.) व्यक्त होने का

व्यक्तदृष्टार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो देखी हुई बात कहे।

व्यक्तभुज [संज्ञा पु.] (सं.) समय। काल।

व्यक्तराशि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंकगणित में वह राशि या अंक जो बतला दिया गया हो।

व्यक्तरूप [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

व्यक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकट होना। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य। आदमी। २-जाति या समूह में से कोई एक।

व्यक्तिकृत [वि.] (सं.) व्यक्त या प्रकट किया हुआ।

व्यक्तिगत [वि.] (सं.) किसी व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाला। वैयक्तिक।

व्यक्तिभूत [वि.] (सं.) देखो 'व्यक्तिकृत'।

व्यक्तित्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यक्ति का गुण या भाव। २-वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतन्त्र सत्ता सूचित होती है। पर्सनैलटी।

व्यक्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) व्यक्ति स्वातंत्र्य-वाद।

व्यक्तिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो व्यक्तिवाद का समर्थन करता है। इन्डिविड्युअलिष्ट।

व्यग्र [वि.] (सं.) १-विकल। घबराया हुआ। २-डरा हुआ। भयभीत। ३-काम में लगा हुआ। व्यस्त।

व्यक्तोदित [वि.] (सं.) साफ-साफ कहा हुआ।

व्यग्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यग्र होने का भाव। २-व्याकुलता। घबराहट।

व्यजन [संज्ञा पु.] (सं.) हवा करने का पंखा।

व्यडंबक, व्यडम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) रेंड का पेड़।

व्यड [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्याड़ि'।

व्यति [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा।

व्यतिकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिश्रण। मिलावट २-संसर्ग। सम्बन्ध। लगाव। ३-आघात। ४-विनाश। बरबादी। ५-समूह। झूंड। ६-व्याप्ति।

व्यतिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रिया या प्रतिक्रिया के रूप में होना या करना। २-संपादन करना। ३-बीच में बाधा के रूप में होना। बाधक होना। इंटरफियरेन्स। ४-देखो 'हस्तक्षेप'।

व्यतिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रमभङ्ग। उलट-फेर। २-बाधा। विघ्न।

व्यतिक्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम या सिलसिले में उलटफेर करना।

व्यतिक्रांत, व्यतिक्रान्त [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिसमें विपर्यय हुआ हो। अतिक्रम किया हुआ। भंग किया हुआ।

व्यतिक्रांति, व्यतिक्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यतिक्रम।

व्यतिचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-पापकर्म करना। २-दोष। ऐब।

व्यतिपात [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत भारी उत्पात।

व्यतिरिक्त [क्रि. वि.] (सं.) अतिरिक्त। अलावा। [वि.] (सं.) १-भिन्न। अलग। २-बढ़ा हुआ

व्यतिरिक्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भिन्नता।

व्यतिरेक [संज्ञा पु] (सं.) १-अभाव। २-भेद। अंतर। ३-भिन्नता। ४-अतिक्रम। ५-एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ विशेषता बतलाई जाती है।

व्यतिरेकव्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जिसमें जो गुण नहीं है उसमें उसी को दिखलाना।

व्यतिरेकी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो किसी पदार्थ में भिन्नता उत्पन्न करता हो। २-वह जो किसी को अतिक्रमण करके जाता हो।

व्यतिषंग, व्यतिषङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिलना। २-विनिमय। बदला।

व्यतिषक्त [वि.] (सं.) १-मिला हुआ। २-आसक्त

व्यतिहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनिमय। बदला २-मारपीट। ३-गालीगलौज।

व्यतीकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यसन। २-विनाश ३-मिश्रण।

व्यतीत [वि.] (सं.) बीता हुआ। गत।

व्यतीतना [क्रि. अ.] (हिं.) बीतना।

व्यतीपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत भारी उत्पात या उपद्रव। (जैसे— भूकम्प, उल्कापात आदि) २-अपमान। बेइज्जती। ३-ज्योतिष-शास्त्र में सत्ताइस योगों में से सत्रहवाँ योग। ४-योग विशेष जो अमावस्था के दिन रविवार या श्रवण, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा या मृगशिरा-नक्षत्र होने पर होता है।

व्यत्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यतिक्रम। २-उल्लघन। ३-रोक। अड़चन।

व्यत्यस्त [वि.] (सं.) १-औंधा किया हुआ। उलटा। २-विरुद्ध। विपरीत। ३-असंलग्न। ४-आड़ा। तिरछा।

व्यत्यास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्यतिक्रम'।

व्यथक [संज्ञा पु.] (सं.) व्यथा की पीड़ा देने वाला

व्यथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यथा। पीड़ा। २-व्यथा या पीड़ा देने वाला।

व्यथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पीड़ा। वेदना। २-दुःख। क्लेश। ३-भय। डर।

व्यथित [वि.] (सं.) [स्त्री. व्यथिता] १-जिसे किसी प्रकार की वेदना या कष्ट हो। २-दुःखित। ३-भयभीत। ४-व्याकुल। विकल।

व्यथ्य [वि.] (सं.) १-व्यथा या पीड़ा देने योग्य २-भय उत्पन्न करने वाला।

व्यधन [संज्ञा पु.] (सं.) बेधने की क्रिया। बींधना

व्यधिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) निंदा। शिकायत।

व्यपकृष्ट [वि.] (सं.) हटाया हुआ। स्थानांतरित किया हुआ।

व्यपगत [वि.] (सं.) १-गया हुआ। २-असावधानी के कारण छूटा या भूला हुआ। ३-(वह अधिकार या सुभीता) जो ठीक समय पर उपयोग में न आने के कारण हाथ से निकल गया हो और फिर शीघ्र न मिल सकता हो। लैप्स्ड।

व्यपगति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वह साधारण-सी या छोटी भूल जो असावधानी के कारण हुई हो। २-नियत समय तक किसी अधिकार या सुभीते का उपयोग न करने के कारण उसका हाथ से निकल जाना। लैप्स।

व्यपगम [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्थान।

व्यपत्रप [वि.] (सं.) निर्लज्ज। बेहया।

व्यपदिष्ट [वि.] (सं.) १-नामांकित। २-बतलाया-हुआ। निर्दिष्ट।

व्यपदेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-निंदा। शिकायत। २-व्याख्या। विवरण।

व्यपनय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनाश। बरबादी २-छोड़ देना। त्याग।

व्यपनयन [संज्ञा पु.] (सं.) छोड़ देना। त्याग।

व्यपनीत [वि.] (सं.) दूर किया हुआ।

व्यपरोपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जड़ से उखाड़कर फेंक देने की क्रिया। २-निकाल बाहर करना। हटाना। ३-झुकाना। ४-काटना।

व्यपवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-अलग होना। २-छोड़ना। त्याग।

व्यपवर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोड़ना। २-निवारण। ३-देना

व्यपवर्जित [वि.] (सं.) १-छोड़ा हुआ। व्यक्त। २-निवारित। ३-दिया हुआ।

व्यपाय [संज्ञा पु.] (सं.) समाप्ति।

व्यापाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवलम्ब। आश्रय। २-निर्भरता। ३-एक के बाद एक होना।

व्यपेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अभिलाषा। आकांक्षा २-आग्रह। अनुरोध। ३-अपेक्षा।

व्यपोह [संज्ञा पु.] (सं.) विनाश। बरबादी।

व्यभिचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुरा या दूषित आचार। दुश्चरित्रता। २-किसी पुरुष या स्त्री का क्रमात् पर-स्त्री या पर-पुरुष में अनुचित सम्बन्ध। छिनाला।

व्यभिचारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'व्यभिचार'।

व्यभिचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) असती स्त्री। छिनाल औरत। व्यभिचार कराने वाली स्त्री

व्यभिचारी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. व्यभिचारिणी] १-व्यभिचार करने वाला। २-वह जो अपने पथ से भ्रष्ट हुआ हो। ३-पर-स्त्रीगामी ४-देखो 'संचारी' (भाव)।

व्यभिचारीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में वे भाव जो रस के उपयोगी होकर जलतरङ्गवत् उसमें संचरण करते हैं और समय-समय पर मुख्य भाव का रूप भी धारण कर लेते हैं।

संचारीभाव।

व्यय [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का विशेषतः धन आदि का इस प्रकार काम में आना कि वह समाप्त हो जाय। खर्च। *एक्सपेंडिचर* २-खपत। ३-नाश। बरबादी।

व्ययक [संज्ञा पु.] (सं.) व्यय करने वाला।

व्ययकर [वि.] (सं.) खर्च करने वाला।

व्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खर्च करना। २-नष्ट या बरबाद करना।

व्ययशील [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अत्यधिक खर्च करता हो। खर्चीले स्वभाव का।

व्ययित [वि.] (सं.) खर्च या व्यय किया हुआ।

व्यर्थ [वि.] (सं.) १-बिना मतलब का। अर्थरहित। २-जिससे कोई लाभ न हो। निरर्थक ३-जिसका कोई फल न हो। विफल। *नल्ल* [क्रि. वि.] (सं.) बिना मतलब के। यों ही।

व्यर्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यर्थ होने का भाव।

व्यर्थन [संज्ञा पु.] (सं.) आज्ञा, निर्णय आदि रद्द अथवा व्यर्थ करना। *नलिफिकेशन*।

व्यर्थीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्यर्थन'।

व्यलीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम के आवेग के कारण उत्पन्न होने वाला अपराध। २-अपराध। कसूर। ३-डाँट-डपट। फटकार। ४-दुःख। कष्ट। ५-पीठमर्द। विट। ६-विलक्षणता। [वि.] १-अप्रिय। २-कष्टदायक। ३-अपरिचित। ४-विलक्षण। ५-कपट। छल

व्यवकलन [संज्ञा पु.] (सं.) गणित में घटाने या बाकी निकालने की क्रिया।

व्यवकलित [वि.] (सं.) घटाया हुआ। बाकी निकाला हुआ।

व्यवकीर्ण [वि.] (सं.) अलग किया हुआ। निकाला हुआ।

व्यवक्रोशन [संज्ञा पु.] (सं.) आपस में गालीगलौज करना।

व्यवच्छिन्न [वि.] (सं.) १-अलग। जुदा। २-विभाग करके अलग किया हुआ। विभक्त। ३-निर्धारण किया हुआ।

व्यवच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पृथकता। अलगाव २-विभाग। खण्ड। हिस्सा। ३-ठहरना। ४-छुटकारा।

व्यवच्छेदक [वि.] (सं.) अलग करने वाला।

व्यवदान [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु को शुद्ध और साफ करना।

व्यवधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह जो बीच में हो २-पर्दा। ३-छिपाव। दुराव।

व्यवधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओट। परदा। २-रुकावट। बाधा। ३-विभाग। खण्ड। ४-विच्छेद। ५-परदा।

व्यवधायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिपने वाला। गायब होने वाला। २-आड़ करने या छिपाने वाला।

व्यवधारण [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभाँति अवधारण या निश्चय करना।

व्यवधि [संज्ञा पु.] (सं.) परदा। ओट।

व्यवशाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोड़ देना। २-त्याग। ३-पीछे की ओर गिरना अथवा हटना

व्यवसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पदार्थ को बाँटना। २-मुक्ति। छुटकारा।

व्यवसाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीविका निर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य। धंधा। पेशा। *आकुपेशन*। २-रोजगार। व्यापार। ३-कामधंधा। ४-निश्चय। ५-प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। ६-विचार। ७-अभिप्राय। मतलब। ८-शिव। विष्णु।

व्यवसायी [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवसाय करनेवाला। २-रोजगार या व्यापार करने वाला। ३-वह जो किसी काम का अनुष्ठान करता हो

व्यवसित [वि.] (सं.) १-जिसका अनुष्ठान किया गया हो। व्यवसाय किया हुआ। २-उद्यत। तत्पर। ३-निश्चय।

व्यवसिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यवसाय। रोजगार

व्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी काम का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निर्धारित हुआ हो। २-प्रबन्ध। इन्तजाम। ३-स्थिर होने का भाव। स्थिरता।

व्यवस्थाता [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवस्था या इंतजाम करने वाला। २-शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला।

व्यवस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-परस्पर होने वाला समझौता या सन्धि। २-संघटित सभा या संघ। *कम्पैक्ट*। ३-व्यवस्था। इन्तजाम। ४-विष्णु।

व्यवस्थान-प्रज्ञप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम (बौद्ध)।

व्यवस्थापक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला। २-प्रबन्धकर्त्ता।

व्यवस्थापक-मंडल, व्यवस्थापक-मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) वह समाज जिसे कानून-कायदे बनाने या रद्द करने का अधिकार हो।

व्यवस्थापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था अथवा वैचारिक विधान लिखा हो।

व्यवस्थापन [संज्ञा पु] (सं.) १-व्यवस्था देने अथवा करने का काम या भाव। २-किसी विषय में कुछ निश्चय निर्धारण या निरूपण करना।

व्यवस्थापनीय [वि.] (सं.) व्यवस्थापन करने के योग्य।

व्यवस्थापिकापरिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देश के प्रतिनिधियों की वह परिषद् जिसमें देश के लिए कानून कायदे बनाये जाते हैं। बड़ी व्यवस्थापिका सभा। *लोअरहाउस*।

व्यवस्थापिका-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कानून कायदे बनाने वाली वह सभा जिसमें देश के चुने हुए प्रतिनिधि हों। लेजिस्लेटिव कौंसिल

व्यवस्थापति [वि.] (सं.) १-व्यवस्था किया हुआ। २-नियमित। ३-जो नियमानुसार रखा, लगाया या किया गया हो।

व्यवस्थाप्य [वि.] (सं.) व्यवस्थापन करने के योग्य हो।

व्यवस्थित [वि.] (सं.) जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। नियमित।

व्यवस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उपस्थित अथवा स्थिर होना। २-प्रबन्ध। व्यवस्था।

व्यवहरण [संज्ञा पु.] (सं.) अभियोगों आदि का नियमानुसार विचार। मुकदमे की सुनवाई। व्यवहार।

व्यवहर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अभियोग आदि पर व्यवहारशास्त्र के अनुसार विचार करने वाला। न्यायकर्त्ता।

व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्य। काम। २-सामाजिक सम्बन्ध में औरों के साथ किया जाने वाला आचरण। बरताव। कॉन्डक्ट। ३-रुपये पैसे आदि के लेने-देने का काम। लेन-देन। डीलिंग। ४-दो पक्षों में होने वाला वह झगड़ा (दीवानी) जिसका फैसला अदालत में हो। सिविल। ५-व्यापार। रोजगार। ६-न्याय। ७-शर्त। पण।

व्यवहार-अदालत [संज्ञा स्त्री.] (सं., अ.) देखो 'व्यवहार न्यायालय'।

व्यवहारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो न्याय या वकालत आदि करता हो। २-बालिग। वयस्क

व्यवहारजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार या वकालत आदि के द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।

व्यवहारज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहारशास्त्र का ज्ञाता। २-पूर्णवयस्क। बालिग।

व्यवहारतः [क्रि. वि.] (सं.) १-व्यवहार की दृष्टि से। २-उपयोग के विचार से।

व्यवहारत्व [संज्ञा पु] (सं.) व्यवहार का भाव या धर्म।

व्यवहार-दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहारों या मुकदमों का विचार या सुनवाई करना। *ट्रायल-ऑफ़-केसेज*।

व्यवहार-निरीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी जो छोटे या साधारण मुकदमों में सरकार की ओर से पैरवी करता है। कोर्टइन्स्पेक्टर।

व्यवहार-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह न्यायालय जिसमें केवल अर्थ-सम्बन्धी बातों पर विचार किया जाता है। दीवानी-कचहरी। *सिविल-कोर्ट*।

व्यवहारपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यवहार के पूर्व पक्ष, उत्तर, क्रियापाद और निर्णय इन चारों का समूह। २-इन चारों में से कोई एक

व्यवहार का एक अंश माना जाता है।

व्यवहार-प्रक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अर्थ न्यायालय या दीवानी अदालत द्वारा होने वाली प्रक्रिया या कार्य। *सिविल-प्रोसीजर।*

व्यवहार-प्रक्रिया-संहिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) अर्थ-विध-संहिता। दीवानी व्यवहार विधि। दीवानी कानून। *सिविल-प्रोसीजर-कोड।*

व्यवहार-मातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यवहार-शास्त्र के अनुसार होने वाली कार्रवाइयाँ।

व्यवहार-मूल [संज्ञा पु.] (सं.) अकरकरा। अकरकरहा।

व्यवहार-लाना [क्रि. स.] (हिं.) व्यवहार या मुकदमा चलाना। वाद डालना।

व्यवहार-वाद [संज्ञा पु.] (सं.) यह वाद या मुकदमा जो केवल अर्थ या साधन से सम्बन्ध रखता हो। दीवानी मामला। *सिवलसूट।*

व्यवहार-विधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार-सम्बन्धी बातों का उल्लेख हो

व्यवहार-विषयक-अपकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह दोष या अपकृत्य जो अर्थ या साधन से सम्बन्ध रखने वाला हो। *सिविल रॉंग।*

व्यवहार-विषयकदोष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्यवहार-विषयक-अपकृत्य'।

व्यवहार-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाले अधिकार। २-मुल्की अधिकार।

व्यवहार-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें विधान के निर्णय और अपराधों के दंड का विवेचन होता है। धर्मशास्त्र।

व्यवहार-सिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यवहार-शास्त्र के अनुसार अभियोगों का निर्णय करना।

व्यवहारस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार का विषय या पद। लेन-देन, इकरारनामें आदि के सम्बन्ध में यह निर्णय कि वे उचित रूप में हुए हैं या नहीं।

व्यवहारालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्यवहार-न्यायालय'।

व्यवहारासन [संज्ञा पु.] (सं.) वह आसन जिस पर अभियोगों का विचार करते समय विचार कर्त्ता बैठता है। न्यायासन।

व्यवहारास्पद [संज्ञा पु.] (सं.) नालिश। फरियाद

व्यवहारिक [वि.] (स.) १-जो व्यवहार के लिए ठीक हो। २-इंगुदी। हिंगोट।

व्यवहारिक-जीव [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांत के मतानुसार विज्ञानमय कोष जो ज्ञानेन्द्रिय के साथ बुद्धि के संयुक्त होने से होता है।

व्यवहारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संसार में रहकर उसके सब व्यवहार या कार्य करना। २-इंगुदी का पेड़। ३-झाड़ू।

व्यवहारी [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहार करने वाला

व्यवहार्य [वि.] (सं.) १-व्यवहार या काम में लाने या लाने योग्य। २-जिसे क्रियात्मक रूप दिया जा सके। *प्रैक्टिल।*

व्यवहित [वि.] (सं.) जिसके आगे किसी प्रकार का परदा पड़ गया हो।

व्यवहृत [वि.] (सं.) १-व्यवहार या काम में लाया हुआ। २-जिसका व्यवहार या प्रयोग होता हो।

व्यवहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यापार में होने वाला लाभ। २-वाणिज्य। व्यापार। ३-कुशलता। होशियारी।

व्यवाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेज। २-स्त्री-प्रसङ्ग सम्भोग। ३-शुद्धि। ४-परिणाम। नतीजा। ५-आड़। ओट। परदा। ६-विघ्न। बाधा।

व्यवाय-शोष [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत अधिक स्त्री-प्रसङ्ग के कारण होने वाला राजयक्ष्मा या तपेदिक रोग।

व्यवायी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामुक। २-आड़ या ओट करने वाला। ३-वह औषध जो शरीर में पहुँचकर पहले सब नाड़ियों में फैल जाय और तब पचे।

व्यश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि का नाम। २-महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

व्यष्टका [संज्ञा स्त्री] (सं.) कृष्णपक्ष की प्रतिपदा

व्यष्टि [संज्ञा पु.] (सं) समष्टि का कोई एक पृथक् एवं विशिष्ट अंश। समष्टि का उलटा। व्यक्ति।

व्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विपत्ति। २-कोई बुरा शौक। कोई बुरी लत। ३-कोई बुरी या अमांगलिक बात। ४-विषयों के प्रति आसक्ति। ५-किसी काम या बात का शौक। ६-दुःख। कष्ट। ७-व्यर्थ का उद्योग। ८-दुर्भाग्य। ९-अयोग्य या असमर्थ होने का भाव। १०-काम या क्रोध आदि विकारों से उत्पन्न दोष।

व्यसनार्त्त [वि.] (सं.) आपद्ग्रस्त। सङ्कटापन्न।

व्यसनिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यसनी होने का भाव या धर्म।

व्यसनी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसे किसी काम या बात का व्यसन हो। २-वेश्यागामी। रंडीबाज।

व्यस्त [वि.] (सं.) १-घबड़ाया हुआ। व्याकुल। २-काम में लगा या फँसा हुआ। ३-फैला या छाया हुआ। व्याप्त। ४-फेंका हुआ। ५-स्थानान्तरित किया हुआ।

व्यस्तक [वि.] (सं.) बिना हड्डी का।

व्यस्तपद [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवहारशास्त्र में नालिश होने पर ऋण न चुकाना बल्कि कुछ उज्र करना।

व्यह्न [संज्ञा प.] (सं.) बीता हुआ दिन। कल।

व्याकरण [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है।

व्याकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

व्याकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुछ निश्चित अवधि तक होने वाले आय व्यय आदि का पहले से किया जाने वाला अनुमान। २-इस प्रकार अनुमान से तैयार किया हुआ लेखा। बजट।

व्याकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का बिगड़ा या बदला हुआ आकार। २-व्याख्या

व्याकीर्ण [वि.] (सं.) जो चारों ओर अच्छी प्रकार फैलाया गया हो।

व्याकुल [वि.] (सं.) १-घबड़ाया हुआ। २-बहुत उत्कंठित। ३-कातर।

व्याकुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्याकुल होने का भाव। विकलता। घबराहट। २-कातरता

व्याकुलित [वि.] (सं.) घबड़ाया हुआ। विकल।

व्याकूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छल। धोखा।

व्याकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रकाश में लाने का काम। २-व्याख्यान। ३-शक्ल की बदलौवल। ४-वाक्य में शब्दों का क्रम, जिसके आधार पर उसका अर्थ निकलता है। *कान्स्ट्रक्शन।* ५-शब्दों के क्रम के विचार से निकलने वाला शब्द या वाक्य का अर्थ। *रीडिंग*

व्याकोश [संज्ञा पु.](सं.) १-विकास। २-खिलना

व्याक्रोश [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी का तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना। २-चिल्लाना।

व्याक्रोशक [वि.] (सं.) चिल्लाने वाला।

व्याक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-विलंब। देर। २-व्याकुलता।

व्याख्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-किसी जटिल वाक्य के अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका। *एक्सप्लेनेशन।* २-वर्णन। कहना।

व्याख्यागम्य [संज्ञा पु.] (सं.) वादी के अभियोग का सही-सही उत्तर न देकर इधर-उधर की बातें कहना। [वि.] (सं.) जो व्याख्या या टीका आदि की सहायता से समझा जा सके

व्याख्यात [वि.] (सं.) जिसकी व्याख्या की गई हो।

व्याख्यातव्य [वि.] (सं.) व्याख्या के योग्य।

व्याख्याता [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याख्या करने करने वाला। २-भाषण करने वाला।

व्याख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याख्यान या वर्णन् करने का कार्य। २-वक्तृता। भाषण।

व्याख्यान-पीठ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी सभा का वह मंच जहाँ से व्याख्यान दिया जाता है। सभामंच।

व्याख्यान-शाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान या भवन जो केवल व्याख्यान या भाषण देने के लिए हो।

व्याख्यान-स्वर [संज्ञा पु.] (सं.) न बहुत ऊँचा न बहुत नीचा स्वर। मध्यमस्वर।

व्याख्यापक [वि.](सं.) १-व्याख्या करने वाला।

२-जो व्याख्या के रूप में हो। एक्सप्लेनेटरी

व्याख्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याख्यान करना।

व्याख्येय [वि.](सं.) व्याख्यान देने या समझाने योग्य।

व्याघट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह रगड़ने का काम। २-बिलोना। मथना।

व्याघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-विघ्न। बाधा। २-मार। ३-किसी के अधिकार या स्वत्व पर होनेवाला आघात या उसमें पड़ने वाली बाधा। इन्फ्रिजमेन्ट। ४-ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से तेरहवाँ योग जो अशुभ माना जाता है। ५-वह काव्यालङ्कार जिसमें एक ही उपाय के द्वारा या एक ही साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र [संज्ञा पु.](सं.) १-बाघ। शेर। २-लालरेंड ३-करंज।

व्याघ्रकड [संज्ञा पु.] (सं.) लालरेंड़।

व्याघ्रग्रीव [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-इस देश का निवासी।

व्याघ्रघंटा, व्याघ्रघण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किंकिणी नामक लता।

व्याघ्र-चर्म [संज्ञा पु.] (सं.) बाघ की खाल।

व्याघ्रतरु [संज्ञा पु.](सं.) लालरेंड़।

व्याघ्रतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-लालरेंड़। २-नख नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रतला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

व्याघ्रता [संज्ञा स्त्री.](सं.) व्याघ्र का भाव या धर्म

व्याघ्रदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गुल्म।

व्याघ्रदल [संज्ञा पु.] (सं.) १-नख नामक गंधद्रव्य। २-लालरेंड़।

व्याघ्रदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'व्याघ्रदल'।

व्याघ्रनख [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाघ का नाखून। २-नख नामक गंधद्रव्य। ३-थूहर। ४-एक प्रकार का कन्द।

व्याघ्रनखक [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याघ्रनख। २-नाखून की खरोंच। नखक्षत।

व्याघ्रनखी [संज्ञा स्त्री.](सं.) नख नामक गंधद्रव्य

व्याघ्रनादक [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़।

व्याघ्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पेड़।

व्याघ्रपद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का गुल्म २-वशिष्ठ गोत्र के एक प्राचीन ऋषि का नाम

व्याघ्रपाद [संज्ञा पु.](सं.) १-कंटाई वृक्ष। २-एक प्राचीन ऋषि।

व्याघ्रपादपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विकंटक।

व्याघ्रपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) रेंड़।

व्याघ्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं) नख नामक गन्धद्रव्य।

व्याघ्रपुष्पि [संज्ञा पु.](सं) १-एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्तक ऋषि का नाम। २-एक देश का नाम।

व्याघ्रभट [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

व्याघ्रमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्ली। २-एक पर्वत का नाम। ३-एक देश का नाम। ४-इस देश के निवासी।

व्याघ्ररूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनककोड़ा।

व्याघ्रलोम [संज्ञा पु.] (सं.) मूँछ।

व्याघ्रवक्त, व्याघ्रवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-बिल्ली।

व्याघ्रसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़।

व्याघ्रहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रेंड़।

व्याघ्राक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २-एक दैत्य का नाम।

व्याघ्राजिन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्राट [संज्ञा पु.] (सं.) लवा नामक पक्षी।

व्याघ्रादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

व्याघ्रायुध [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गन्धद्रव्य।

व्याघ्रास्य [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ली।

व्याघ्रिस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बौद्धदेवी का नाम।

व्याघ्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बाघ की मादा। २-कण्टकारी। ३-नख नामक गन्धद्रव्य। ४-एक प्रकार की कौड़ी।

व्याघ्रीयुग [संज्ञा पु.](सं.) बनभंटा और कंटकारी इन दोनों का समूह।

व्याज [संज्ञा पु.] (सं.) १-छल। मिस। बहाना। २-बाधा। विघ्न। ३-विलम्ब। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ब्याज'।

व्याज-निंदा, व्याज-निन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी बहाने या ढङ्ग से की जाने वाली निंदा जो साधारणतः देखने में निंदा न जान पड़े। २-वह काव्यालङ्कार जिसमें इस प्रकार निंदा की जाती है।

व्याजमय [वि.] (सं.) छल-कपट से भरा हुआ।

व्याज-स्तुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्तुति जो किसी बहाने से की जाय, जो साधारणतः देखने में स्तुति न जान पड़े। २-वह काव्यालंकार जिसमें इस प्रकार स्तुति की जाती है।

व्याजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिक्री में माप या तौल के ऊपर कुछ थोड़ा सा और देना।

व्याजोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कपट भरी बात २-एक अलंकार जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिए किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।

व्याडंब, व्याडम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) लाल रेंड।

व्याड़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प। २-बाघ। ३-इन्द्र। [वि.] धूर्त्त। चालाक।

व्याड़ायुध [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य

व्याडि [संज्ञा पु.] (सं.) संस्कृत साहित्य के एक प्रसिद्ध ग्रंथकार जिनके बनाये हुए व्याकरण और शब्दकोश प्रसिद्ध हैं।

व्यात्युक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलक्रीडा।

व्यात्त [वि.] (सं.) फैला हुआ। पसरा हुआ।

व्यादान [संज्ञा पु.] (सं.) १-फैलाव। विस्तार। २-उद्घाटन।

व्यादिश [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु की एक उपाधि

व्याध [संज्ञा पु.] (सं.) १-जंगली पशुओं को मार कर जीवन निर्वाह करने वाला। शिकारी। बहेलिया। २-इस काम को करने वाली एक जाति। ३-शवर नामक एक प्राचीन जाति। [वि.] (सं.) दुष्ट। पाजी।

व्याधभीत [संज्ञा पु.] (सं.) मृग। हिरन।

व्याधाम, व्याधाव [संज्ञा पु.] (सं.) इंद्र का वज्र।

व्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रोग। बीमारी। २-विपत्ति। आफत। ३-झंझट। बखेड़ा। ४-साहित्य में एकसंचारी-भाव।

व्याधिखड्ग [संज्ञा पु.](सं.) नख नामक गंधद्रव्य

व्याधिग्रस्त [वि.] (सं.) रोगी। बीमार।

व्याधिघात [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

व्याधिघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिससे किसी प्रकार की व्याधि का नाश हो। २-अमलतास

व्याधित [वि.] (सं.) रोगी। बीमार।

व्याधिनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) चोबचीनी।

व्याधिरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमलतास। २-कर्णिकर नामक अमलतास।

व्याधिविपरीत [संज्ञा पु.](सं.) व्याधि के विपरीत गुण करने वाली औषध।

व्याधिस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर। देह।

व्याधिहंता, व्याधिहन्ता [वि.] (सं.) रोग नाशक [संज्ञा पु.] (सं.) वराहीकंद।

व्याधिहर [वि.] (सं.) व्याधि या रोग दूर करने वाला।

व्याधी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'व्याधि'।

व्याधूत [वि.] (सं.) काँपता हुआ। कंपित।

व्याध्य [संज्ञा पु] (सं.) शिव। (सं.) व्याधि-सम्बन्धी।

व्यान [संज्ञा पु.] (सं.) शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में व्याप्त रहती है।

व्यानदा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह शक्ति जो व्यान वायु प्रदान करती है।

व्यापक [वि.] (सं.) १-चारों ओर फैला हुआ। २-भरा या छाया हुआ। ३-घेरने या ढकने वाला।

व्यापकन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के अनुसार किसी देवता का मूलमंत्र पढ़ते हुए सिर से पैर तक न्यास करना।

व्यापत्ति, व्यापद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृत्यु। मौत

व्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याप्त होना। फैलना।

व्यापना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु के अंदर व्याप्त होना या फैलाना।

व्यापनीय [वि.] (सं.) व्यापन करने योग्य।

व्यापन्न [वि.] (सं.) १-आफत में फँसा हुआ। संकटापन्न। २-मरा हुआ। मृत।

व्यापाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी की बुराई सोचना। २-मार डालना। ३-नष्ट या बरबाद करना।

व्यापादक [वि.] (सं.) १-दूसरों की बुराई की इच्छा रखने वाला। २-हत्या या विनाश करने वाला।

व्यापादन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्यापाद'।

व्यापादनीय [वि.] (सं.) मार डालने या कष्ट करने योग्य।

व्यापादित [वि.] (सं.) मारा हुआ। मृत।

व्यापार [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्य। काम। २-क्रियात्मक रूप धारण करने का भाव। काम करना। आँपरेशन। ३-चीजें खरीद कर बेचने का काम। ट्रेड। ४-सहायता। मदद।

व्यापार-कर [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापारिक वस्तुओं पर लगने वाला कर।

व्यापार-चिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह विशेष चिह्न जो व्यापारी माल पर, उसे अन्य व्यापारियों के माल से पृथक् सूचित करने के लिये अंकित करते हैं। ट्रेडमार्क।

व्यापारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आज्ञा देना। २-किसी काम में नियुक्त करना।

व्यापारसंघ [संज्ञा पु.] (सं.) कल कारखानों आदि में काम करने वाले मजदूरों के हितों की रक्षा तथा उनकी व्यवस्था के सुधार के उद्देश्य से बनाया जाता है। ट्रेड-यूनियन।

व्यापारिक [वि.] (सं.) व्यापार-सम्बन्धी। रोजगार का।

व्यापारी [संज्ञा पु.](हिं.) व्यवसाय, व्यापार या रोजगार करनेवाला। रोजगारी। डीलर,ट्रेडर [वि.] (हिं.) व्यापार-सम्बन्धी।

व्यापी [वि.] (हिं.) व्याप्त होने या चारों ओर फैलने वाला।

व्यापृत [वि.] (सं.) किसी काम में लगा हुआ।

व्याप्त [वि.] (सं.) १-किसी वस्तु या स्थान में भरा, फैला या छाया हुआ। २-सीमा में या अन्तर्गत आया हुआ।

व्याप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्याप्त होने की क्रिया, भाव अथवा सीमा। २-न्यायशास्त्र में किसी पदार्थ का एक या पूर्णरूप से मिला या फैला हुआ होना। ३-आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

व्याप्तिज्ञान [संज्ञा पु.](सं.) न्यायशास्त्र के अनुसार वह ज्ञान जो साध्य को देखकर साध्यवान् के अस्तित्व के सम्बन्ध में होता है।

व्याप्तित्व [संज्ञा पु.] (सं.) व्याप्त का भाव या धर्म।

व्याप्तिमत् [वि.] (सं.) व्याप्तयुक्त।

व्याप्य [वि.] (सं.) व्याप्त करने के योग्य। [संज्ञा पु.] १-साधन। हेतु। २-कुट नामक औषध। ३-देखो 'व्याप्त'।

व्याम, व्यामन [संज्ञा पु.](सं.) दोनों हाथ फैलाने पर एक हाथ की उङ्गलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उङ्गलियों की दूरी तक के बराबर की एक नाप।

व्यामिश्र [वि.] (सं.) मिश्रित। मिला हुआ।

व्यामिश्र-व्यूह [संज्ञा पु.](सं.) वह व्यूह जिसमें पैदल, हाथी, घोड़े और रथ भी सम्मिलित हों

व्यामिश्रा-सिद्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.) शत्रु तथा दोनों की स्थिति का अपने अनुकूल होना।

व्यामोह [संज्ञा पु.] (सं.) मोह। अज्ञान।

व्यामोहक [वि.] (सं.) मोह जाल में फँसने वाला

व्यामोही [वि.] (हिं.) १-अज्ञानी। २-व्यामोह-सम्बन्धी।

व्यायत [वि.] (सं.) अतिशय। दीर्घ।

व्यायाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-केवल बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाने वाला शारीरिक श्रम कसरत। एक्सरसाइज। २-पौरुष। ३-परिश्रम ४-काम। ५-युद्ध की तैयारी। ६-सैनिक कवायद।

व्यायाम-युद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आमने-सामने की लड़ाई।

व्यायामिक [वि.](सं.) व्यायाम-सम्बन्धी। व्यायाम का।

व्यायामी [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यायाम या कसरत करने वाला। २-परिश्रमी। मेहनती।

व्यायुध [वि.] (सं.) निःशस्त्र।

व्यायोग [संज्ञा पु.] (सं.) रूपक या दृष्यकाव्य का एक भेद जो एक अंक का होता है और जिसकी कथा ऐतिहासिक या पौराणिक होती है।

व्यारोष [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध। गुस्सा।

व्यालंब, व्यालम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) लालरेंड़।

व्याल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. व्याली] १-साँप। २-बाघ। ३-राजा। ४-विष्णु। ५-दण्डक-छंद का एक भेद। [वि.] १-दूसरों का अपकार करने वाला। २-दुष्ट।

व्यालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुष्ट या उपद्रवी हाथी। २-हिंसक जंतु।

व्यालकरज, व्यालखड्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

व्यालगंधा, व्यालगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नकुली नामक कंद।

व्यालग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) सँपेरा।

व्यालग्राही [संज्ञा पु.] (हिं) सँपेरा।

व्यालग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश का नाम। २-इस देश का निवासी।

व्यालजिह्वा [संज्ञा स्त्री.](सं.) कंघी नामक पौधा

व्यालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याल का भाव या धर्म।

व्यालत्व [संज्ञा पु.] (सं.) व्यालता।

व्यालदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) गोखरू का पौधा।

व्यालनख [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य

व्यालपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) खेतपापड़ा।

व्यालपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेतपापड़ा।

व्यालपाणिज [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

व्यालप्रहण, व्यालबल [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

व्यालमृग [संज्ञा पु.] (सं.) बाघ। शेर।

व्यालसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

व्यालायुध [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंध द्रव्य।

व्यालि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्याड़ि'।

व्यालिक [संज्ञा पु.] (सं.) सँपेरा।

व्यालीढ़ [संज्ञा पु.](सं.) साँप के काटने का एक ढंग जिसमें हलके से दो दाँत लगे हों और घाव में से खून बहा हो।

व्यालुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) साँप का जोर से काटना जिसमें घाव से खून निकलता हो।

व्यालू+ [संज्ञा उभय.] (हिं.) वह भोजन जो रात के समय किया जाय।

व्यालोल [वि.] (सं.) १-काँपने वाला। २-अस्त-व्यस्त।

व्यावर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) विभक्त करना। बाँटना

व्यावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-चकवँड़। २-नाभि-कण्टक।

व्यावर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) पीछे की ओर लौटने वाला।

व्यावर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घेरने या चारों ओर से छेक लेने की क्रिया। २-घूमने या चक्कर खाने की क्रिया। ३-लपेट। पट्टी।

व्यावहारिक [वि.](सं.) १-व्यवहार या बरताव-सम्बन्धी। २-व्यवहार में आने या लाने योग्य [संज्ञा पु.] १-व्यवहार-शास्त्र के अनुसार अभियोगों का विचार करने वाला। २-किसी राजा या राज्य का वह मन्त्री जिसके अधिकार में भीतरी और बाहरी समस्त प्रकार के कार्य हों।

व्यावहारिक-ऋण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कारबार के लिए लिया हुआ ऋण।

व्यावहारी [वि.] (सं.) परस्पर पकड़ने वाले।

व्यावहासिक [वि.] (सं.) एक दूसरे को चिढ़ाने या उपहास करने वाले।

व्यावृत्त [वि.] (सं.) १-छूटा हुआ। निवृत्त। २-

मना किया हुआ। वर्जित। ३-टूटा हुआ। खंडित। ४-अलग किया हुआ। विभाजित। ५-मनोनीत। ६-चारों ओर से घेरा हुआ। ७-ढका हुआ। आच्छादित। ८-सराहा हुआ। प्रशंसित। ९-घुमाया हुआ।

व्यावृत्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-खंडन। २-आवृत्ति। ३-मन से पसन्द करने का काम। ४-बचत। *सेविंगज*। ५-चारों ओर से फेरना। ६-प्रशंसा। ७-निषेध। ८-बाधा। खलल। ९-निराकरण। १०-नियोग।

व्यासंग, व्यासङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत अधिक आसक्ति। २-बहुत अधिक भक्ति या अनुराग।

व्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाराशर के पुत्र कृष्ण-द्वैपायन, जिन्होंने वेदों का संग्रह तथा संपादन किया था और जो पुराणों के रचियता माने जाते हैं। २-पुराणों आदि की कथा सुनाने वाला ब्राह्मण। कथावाचक। ३-वह सीधी सरल रेखा जो किसी वृत्त अथवा गोल क्षेत्र के बीचों बीच होती हुई गई हो तथा जिसके दोनों सिरे वृत्त की परिधि से मिले हों। विस्तार। ४-फैलाव। विस्तार।

यौ०-*व्यास-समास*-घटाना-बढ़ाना। २-काट-छाँट।

व्यासकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदव्यास के महाभारत में आये हुये कूटश्लोक। २-सीताहरण के समय रामचन्द्रजी द्वारा माल्यवान् पर्वत पर कहे हुए कूट-श्लोक।

व्यासक्त [वि.](सं.) १-जो बहुत अधिक आसक्त हुआ हो। २-एक ही वर्ग या प्रकार के अंतर्गत होने के कारण परस्पर संबद्ध या सदृश *एलाइड*।

व्यासक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह समानता जो अनेक वस्तुओं में उनके एक ही प्रकार या वर्ग के अंतर्गत होने के कारण होती है। *एफिनिटी*।

व्यास-गीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

व्यासता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यास का भाव या धर्म।

व्यासतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

व्यासत्व [संज्ञा पु.](सं.) व्यासता।

व्यास-मूर्ति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव की एक उपाधि

व्यास-वन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वन का नाम (महाभारत)।

व्यास-सूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वेदांतसूत्र।

व्यास-स्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन पवित्र तीर्थ का नाम।

व्यासारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) व्यासवन।

व्यासार्द्ध, व्यासार्ध [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग। *रेडिअस*।

व्यासासन [संज्ञा पु.] (सं.) कथावाचक का वह आसन जिस पर बैठकर वह कथा कहता है।

व्याससिद्ध [वि.] (सं.) १-मना किया हुआ। २-रुका हुआ। अवरुद्ध। ३-किसी विशेष कार्य, पद, व्यक्ति आदि के लिये मुख्य रूप से अलग या सुरक्षित किया हुआ। *रिजर्व्ड*।

व्यासीय [वि.] (सं.) व्यास-सम्बन्धी। व्यासका

व्यासेध [संज्ञा पु.](सं.) किसी विशिष्ट व्यक्ति, पद कार्य आदि के लिए मुख्य रूप से अलग करने की क्रिया या भाव। *रिजर्वेशन*।

व्याहत [वि.] (सं.) १-मना किया हुआ। वर्जित २-बुरा। निषिद्ध। ३-व्यर्थ।

व्याहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाधा डालना।

व्याहरण [संज्ञा पु.] (सं.) कथन। उक्ति।

व्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) वाक्य।

व्याहृत [वि.] (सं.) कहा हुआ। कथित।

व्याहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कथन। उक्ति। २-भूः, भुवः, स्वः इन तीनों का मंत्र।

व्युच्छित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विनाश। बरबादी।

व्युच्छेत्ता [संज्ञा पु.] (सं.) बरबाद करने वाला।

व्युत्क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) क्रम में उलटफेर।

व्युत्क्रांता, व्युत्क्रान्ता [संज्ञा पु.] (सं.) पहेली

व्युत्थान [संज्ञा पु.] १-स्वतन्त्र या स्वाधीन हो कर कार्य करना। २-विरुद्ध या खिलाफ आचरण करना। ३-रुकावट डालना। रोकना। ४-समाधि। ५-एक नृत्य विशेष। '६-योग के अनुसार चित्त की तीन अवस्थाएँ।

व्युत्पत्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-उद्गम या उत्पत्ति का स्थान। २-शब्द का वह मूलरूप जिससे वह निकला या बना हो। *डेरिवशन*। ३-शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न [वि.] (सं.) १-जिसका संस्कार हो चुका हो। २-किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित

व्युत्पन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्युत्पन्न का भाव

व्युत्पादक [वि.] (सं.) उत्पन्न करने वाला।

व्युत्पादन [संज्ञा पु.] (सं.) व्युत्पत्ति।

व्युत्पादित [वि.] (सं.) उत्पन्न किया हुआ।

व्युत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के मोह या चिंता का परित्याग (जैन)।

व्युत्त [वि.] (सं.) भीगा हुआ। तर।

व्युदस्त [वि.] (सं.) फेंका हुआ।

व्युपदेश [संज्ञा पु.](सं.) ठगने या धोखा देने की क्रिया।

व्युपरम [संज्ञा पु.] (सं.) १-शांति। २-छुटकारा। ३-स्थिति।

व्युपशम [संज्ञा पु.] (सं.) अशांति।

व्युष [संज्ञा पु.] (सं.) प्रातःकाल। सबेरा।

व्युषिताश्व [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक राजा का नाम।

व्युष्ट [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रभात। तड़का। २-दि ३-फल। [वि.](सं.) जला हुआ। झुलसा हुआ

व्युष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तड़का। भोर। २-फल। परिणाम। ३-प्रशंसा। ४-प्रकाश। उजाला। ५-कामना। इच्छा। ६-दाह। जलन

व्यूक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्राचीन देश और उसके निवासी।

व्यूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो व्यूह बनाकर खड़ा हो। २-वह जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित। [वि.] (सं.) १-स्थूल। मोटा। २-उत्तम। बढ़िया। ३-तुल्य। समान। ४-दृढ़। मजबूत।

व्यूदि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सनावट। २-धूनन

व्यूत [वि.] बुना हुआ।

व्यूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुनाई।

व्यूह [संज्ञा पु.](सं.) १-समूह। झुंड। २-निर्माण रचना। ३-शरीर। ४-सेना। ५-युद्ध के समय की जाने वाली सेना की स्थापना। ६-परिणाम ७-किसी विपत्ति अथवा आक्रमण आदि से रक्षित रहने के लिए की हुई ऊपरी योजनायें।

व्यूहन [संज्ञा पु.](सं.) १-युद्ध के समय सेना की भिन्न-भिन्न स्थानों में नियुक्ति करने की क्रिया २-शरीर के अङ्ग प्रत्यांगों की बनावट। ३-मिलाना।

व्यूहमति [संज्ञा पु.] (सं.) देवपुत्र का एक नाम (ललितविस्तार)।

व्यूहराज [संज्ञा पु.](सं.) एक बोधिसत्व का नाम

व्योम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आकाश। २-मेघ। बादल। ३-जल। पानी।

व्योमकेश, व्योमकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

व्योमगंगा, व्योमगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगङ्गा।

व्योमगमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाश में उड़ने की विद्या।

व्योमचर [वि.] (सं.) आकाश में विचरण करने वाला।

व्योमचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो आकाश में विचरण करता हो। २-देवता। ३-पक्षी।

व्योमधूम [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

व्योमनासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारती नामक पक्षी।

व्योमपाद [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

व्योममंडल, व्योममण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आकाश। आसमान। २-पताका। ध्वजा।

व्योममुद्गर [संज्ञा पु.](सं.) बहुत जोर से वायु चलने से उत्पन्न शब्द। झोंका।

व्योमयान [संज्ञा पु.] (सं.) हवाई जहाज।

व्योमरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

व्योमवल्लिका, व्योमवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (

२ अमरबेल।

व्योमसद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-गंधर्व आत्मा

व्योमसरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगङ्गा।

व्योमस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी। जमीन।

व्योमस्पृश् [वि.] (सं.) बहुत ऊँचा।

व्योमाम [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध।

व्योमारि [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वेदेवता।

व्योमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा का जल।

व्योमिक [वि.] (सं.) व्योम-सम्बन्धी। व्योम का

व्योष [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिकुट।

[संज्ञा पु.] (सं.) आपस का प्रेम।

व्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाना या चलना। २-समूह। झुण्ड। ३-मथुरा तथा वृन्दावन के आसपास का क्षेत्र जो श्रीकृष्ण की लीला भूमि था। अहीरों का टोला या बाड़ा।

व्रजक [संज्ञा पु.] (सं.) तपस्वी।

व्रजकिशोर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

व्रजन [संज्ञा पु.] (सं.) गमन। चलना।

व्रजनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

[संज्ञा पु.] (सं.) पशुओं की गणना।

व्रजभाषा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध भाषा जो मथुरा, आगरे आदि में बोली जाती है। इसी में ही सूर तुलसी बिहारी आदि अनेक कवियों के ग्रंथ रत्न हैं।

[संज्ञा पु.] (सं.) केलिकदम्ब।

[वि.] (सं.) व्रज में उत्पन्न।

व्रजमंडल, व्रजमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) व्रज और इसके आसपास का प्रदेश।

व्रजमोहन, व्रजराज, व्रजलाल, व्रजवर, व्रजवल्लभ, व्रजस्पति [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

व्रजांगना, व्रजाङ्गना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्रज की स्त्री। २-गोपी।

व्रजिन [संज्ञा पु.] (सं.) पाप।

व्रजेश, व्रजेन्द्र, व्रजेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण

व्रज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घूमना-फिरना। २-जाना। ३-आक्रमण। ४-एक स्थान पर एक जैसी बहुत सारी वस्तुएँ एकत्रित करना। ५-दल। ६-रंगभूमि।

व्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फोड़ा। २-घाव।

व्रणकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

व्रणग्रंथि, व्रणग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फोड़े के ऊपर होने वाली गाँठ।

[संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

व्रणरोपण [संज्ञा पु.] (सं.) फोड़े का घाव भरना।

व्रणशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) कमीला।

व्रणशोष [संज्ञा पु.] (सं.) फोड़े या घाव की सूजन।

व्रणह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेंड़ का वृक्ष।

व्रणहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुडुच।

व्रणहृत् [संज्ञा पु.] (सं.) कलियारी नामक वृक्ष।

व्रणायाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक असाध्य वातरोग।

व्रणारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-बोल-गंधद्रव्य। २-अगस्त वृक्ष।

व्रणी [संज्ञा पु.] (हिं.) व्रण का रोगी।

व्रणीय [वि.] (सं.) व्रण या फोड़े से सम्बन्ध रखनेवाला।

व्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन करना। खाना। २-पुण्य या धार्मिक अनुष्ठान के लिए नियमपूर्वक उपवास करना। ३-सङ्कल्प। प्रतिज्ञा।

व्रतचर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी प्रकार का व्रत करने अथवा रखने का काम।

व्रतचारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्रतचारी होने का भाव या धर्म।

व्रतचारी [वि.] (सं.) व्रत करने वाला।

व्रतती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विस्तार। फैलाव। २-लता।

व्रतधर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने व्रत धारण किया हो।

व्रतपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-आषाढ़ मास का शुक्लपक्ष। २-एक प्रकार का साम।

व्रतपारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्रत की समाप्ति। २-प्रतिज्ञाभङ्ग।

व्रतभिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह भिक्षा जो बालक को यज्ञोपवीत के समय मांगनी पड़ती है।

व्रतपारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'व्रतपारण'।

व्रतसंग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाने वाली दीक्षा।

व्रतस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्रतधर। ब्रह्मचारी।

व्रतस्नातक [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में से (एक) वह जिसने गुरु के निकट रहकर व्रत तो समाप्त कर लिया हो, किन्तु वेदाध्ययन पूरा किये बिना ही घर चला आया हो।

व्रतादेश [संज्ञा पु.] (सं.) उपनयन-संस्कार।

व्रतादेशन [संज्ञा पु.] (सं.) उपनयन-संस्कार के बाद ब्रह्मचारी को दिया जाने वाला वेदों का उपदेश

व्रतिक [संज्ञा पु.] (सं.) व्रतधर।

व्रती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसने व्रत धारण किया हो। २-यजमान। ३-ब्रह्मचारी। ४-एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्रतेयु [संज्ञा पु.] (सं.) रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम (पुराण)।

व्रतेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

व्रतोपह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

व्रत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्रतधर। २-ब्रह्मचारी।

व्रश्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुनार की छेनी। २-कुल्हाड़ी। ३-छेदना। काटना। ४-चीरनेवाला बुरादा।

व्राचड़ [संज्ञा स्त्री.] (अप.) १-अपभ्रंश भाषा का एक भेद जो सिंध (पाकिस्तान) में प्रचलित था। २-पैशाचिक भाषा का एक भेद।

व्राज [संज्ञा पु.] (सं.) १-दल। समूह। २-कुत्ता ३-जाना।

व्राजपति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी दल या समूह का नायक।

व्रात [संज्ञा पु.] (सं.) वह परिश्रम जो जीविका के लिए किया जाय।

व्रातजीवन [संज्ञा पु.] (सं.) शारीरिक श्रम करके निर्वाह करने वाला।

व्रात्य [वि.] (सं.) व्रत-सम्बन्धी। व्रत का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २-वह जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो। ३-वर्णसंकर। दोगला।

व्रात्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्रत्य का भाव या धर्म

व्रात्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) व्रात्यता।

व्रात्ययाजक [संज्ञा पु.] (सं.) व्रात्यों को यज्ञ कराने वाला।

व्रात्यस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकालीन एक यज्ञ, जिसे व्रात्यलोग अपना व्रात्यत्व दूर करने के लिए किया करते थे।

व्रीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) लज्जा। शर्म।

व्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाज। शर्म।

व्रीहि [संज्ञा पु.] (सं.) १-धान। २-चावल।

व्रीहिकांचन, व्रीहिकाञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) मसूर।

व्रीहितुंदिका, व्रीहितुन्दिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवधान्य।

व्रीहिद्रोण [संज्ञा पु.] (सं.) गुल्म विशेष।

व्रीहिपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालिपर्णी

व्रीहिभेद [संज्ञा पु.] (सं.) चेना धान।

व्रीहिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) चिकित्सा में काम आने वाला एक प्रकार का शस्त्र।

व्रीहिराजक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'व्रीहिभेद'।

व्रीहिवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरत्काल।

व्रीहिश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शालिधान्य।

व्रीही [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह खेत जिसमें धान बोया हो।। २-देखो 'व्रीहि'।

व्रीह्यगार [संज्ञा पु.] (सं.) धान का गोदाम।

व्रीह्यपूय [संज्ञा पु.] (सं.) चावल को पीसकर बनाया हुआ पूआ। प्राचीन।

व्रैहेय [संज्ञा पु.] (सं.) वह खेत जिसमें धान उग सके। [वि.] (सं.) १-चावल के योग्य। २-धान के साथ बोया हुआ।

श (श)

श हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण स्थान प्रधानतया तालु है। अतः इसे तालव्य 'श' कहते हैं। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है इसलिये यह उष्म-वर्ण भी कहलाता है।

शं [संज्ञा पु.] (सं.) १-मङ्गल। कल्याण। २-सुख। ३-शांति। ४-वाह्य वस्तुओं से वैराग्य ५-शस्त्र। [वि.] शुभ।

शंक, शङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-भय। डर। २-शंका। ३-बैल।

शंकना* [क्रि. अ.] (हिं.) शंका या सन्देह करना २-डरना।

शंकनी, शङ्कनीय [वि.] (सं.) १-शङ्का करने योग्य। २-भय के योग्य।

शंकर, शङ्कर [वि.] (सं.) १-मङ्गलकारक। शुभ २-लाभदायक। [संज्ञा पु.]१-शिव। २-देखो 'शंकराचार्य'। ३-भीमसेनी कपूर। ४-कबूतर ५-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ और १० के विश्राम से २६ मात्राएं होती हैं और अन्त में गुरु लघु होता है। ६-एक राग जो रात्रि के समय गाया जाता है। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संकर'। यौ०-शंकर की लकड़ी-कहारों की बोली में ऊख। शंकर का फूल-शङ्खोदरी। गलपरी।

शंकरचूर, शङ्करचूर [संज्ञा पु.](सं.) सर्प विशेष जो ६ या १० हाथ लम्बा होता है।

शंकरजटा, शङ्करजटा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-रुद्र-जटा। २-साबूदाना। ३-एक प्रकार की पिठवन।

शंकरताल, शङ्करताल [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में एक ताल जिसमें ११ मात्राएं होती हैं।

शंकरतीर्थ, शङ्करतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम (पुराण)।

शंकरप्रिय, शंङ्करप्रिय [संज्ञा पु.](सं.) १-तीतर-पक्षी। २-धतूरा। ३-द्रोणपुष्पी।

शंकरमत्त, शङ्करमत्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लोहा।

शंकरवाणी, शङ्करवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सदा ठीक घटने वाली बात।

शंकरशुक्र, शङ्करशुक्र [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

शंकरशैल, शङ्करशैल [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास-पर्वत।

शंकरस्वामी, शङ्करस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शंकराचार्य'।

शंकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक राग। २-सफेद कीकर। ३-मजीठ। ४-शिवा। पार्वती। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] मङ्गल या कल्याण करने वाली।

शंकराचारी, शङ्कराचारी [संज्ञा पु.] (सं.) शंकराचार्य के शैवधर्म का अनुयायी।

शंकराचार्य, शङ्कराचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) अद्वैत-मत के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य।

शंकरादि, शङ्करादि [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद आक। मदार।

शंकरालय, शङ्करालय, शंकरावास, शङ्करावास [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास।

शंकरावास-कर्पूर, शङ्करावास-कर्पूर [संज्ञा पु.] (सं.) भीमसेनी कपूर।

शंकराह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष।

शंकरी, शङ्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-मजीठ। ३-शमीवृक्ष। ४-एक रागिनी।

शंकर्षण, शङ्कर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-रोहिणी के पुत्र का नाम।

शंकव, शङ्कव [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सकुची नामक मछली।

शंका, शङ्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनिष्ट का भय। डर। खटका। २-सन्देह। संशय। शक। ३-काव्य में एकसञ्चारी-भाव।

शंकाअतिचार, शङ्काअतिचार [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार जिन-वचन में शंका करने से लगने वाला पाप या अतिचार।

शंकित, शङ्कित [वि.] (सं.) [स्त्री. शंकिता] १-डरा हुआ। भयभीत। २-जिसे सन्देह हुआ हो। ३-अनिश्चित। [संज्ञा पु.] चोरक नामक गन्धद्रव्य।

शंकितवर्णक, शङ्कितवर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) चोट।

शंकु, शङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई नुकीली वस्तु। २-मेख। कील। ३-खूंटी। ४-भाला ५-विष। ६-शिव। ७-राक्षस। ८-हंस। ९-वाल्मीक। बाँबी। १०-पाप। ११-वह खूंटी जिससे प्राचीनकाल में सूर्य या दीये की छाया नापी जाती थी। १२-ऐसा खंभा जिसका ऊपरी भाग नुकीला और नीचे का मोटा हो। १३-दसलाख कोटि की एक संख्या शंख। १४-कामदेव। १५-एक प्रकार का बाजा। १६-पत्तों की नसें। १७-नख नामक गंधद्रव्य। १८-विक्रमादित्य के नवरत्नों में में से एक। १९-दाँव। २०-बारह अंगुल का एक नाप।

शंकुकर्ण, शङ्कुकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नुकीले कानों वाला। २-गधा। ३-एक नाग का नाम

शंकुकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शिव।

शंकुचि, शङ्कुचि [संज्ञा स्त्री.](सं.) सकुची मछली

शंकुच्छाया, शङ्कुच्छाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक बारह अंगुल की खूंटी जिससे प्राचीन काल में इसकी छाया से समय का परिमाण मालूम किया जाता था।

शंकुतरु, शङ्कुतरु [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

शंकुद्वार, शङ्कुद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) गुजरात के पास के एक छोटे टापू का नाम।

शंकुनारायण, शङ्कुनारायण [संज्ञा पु.] (सं.) शंकुद्वार नामक टापू में की नारायण की मूर्ति का नाम।

शंकुफणी, शङ्कुफणी [संज्ञा पु.] (सं.) जल-जन्तु जलचर।

शंकुफलिका, शङ्कुफलिका, शंकुफली, शङ्कुफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद कीकर।

शंकुमती, शङ्कुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वैदिक छंद का नाम।

शंकुमुख, शङ्कुमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-मगर। २-चूहा।

शंकुमुखी, शङ्कुमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

शंकुर, शङ्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाव (पुराण)। [वि.] (सं.) भीषण। भयंकर।

शंकुला, शङ्कुला [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुपारी काटने का सरौता।

शंकुवृक्ष, शङ्कुवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शाल का वृक्ष

शंकुशिर, शङ्कुशिर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम (भागवत)।

शंकोच, शङ्कोच, शंकोचि, शङ्कोचि [संज्ञा पु.] (सं.) सकुची मछली।

शंकोशिक, शङ्कोशिक [वि.] (सं.) नैमित्तिक। (सांख्य)।

शंख, शङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का बड़ा घोंघा जिसका कोष परम पवित्र माना जाता है। यह देवताओं के आगे और मंगल अवसरों पर बजाया जाता है। २-सौ-पद्म की संख्या जो अठारहवें स्थान पर पड़ती है। ३-कनपटी। ४-हाथी का गंडस्थल ५-चरणचिह्न। ६-एक दैत्य का नाम। ७-नख नामक गंधद्रव्य। ८-एक निधि। ९-विराट राजा के पुत्र का नाम। १०-एक मन्त्री का नाम। ११-कुबेर की निधि के देवता। १२-छप्पयछन्द के ७१ भेदों में एक जिसमें १५२ मात्राएँ अथवा १४६ वर्ण होते हैं, इनमें तीन गुरु और बाकी लघु होते हैं। १३-दंडकवृत्त के अन्तर्गत प्रचित का एक भेद। १४-कपाल। १५-वायु के झोंके से होने वाला शब्द।

शंखकंद, शङ्खकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) शंखालु साँक।

शंखक, शङ्खक [संज्ञा पु.](सं.) १-त्रिदोष के बिगड़ने से उत्पन्न एक रोग। २-हवा के

शब्द। ३-हीराकसीस। ४-मस्तक। माथा। ५-कङ्कण। वलय। ६-नौ निधियों में से एक

शंखकार, शङ्खकार [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति। इस जाति के लोग शङ्ख की चीज़े बनाने का काम करते हैं।

शंखकुसुमा, शङ्खकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शङ्खपुष्पी। २-सफेद अपराजिता।

शंखकूट, शङ्खकूट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नाग का नाम। २-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम

शंखक्षीर, शङ्खक्षीर [संज्ञा पु.](सं.) शङ्ख का दूध, असम्भव और अनहोनी बात।

शंखचरी, शङ्खचरी, शंखचर्ची, शङ्खचर्ची [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-ललाट पर का चन्दन का तिलक २-भाल। ललाट।

शंखचूड़, शङ्खचूड़ [संज्ञा पु] (सं.) १-कंस द्वारा श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजे गये एक राक्षस का नाम। २-कुबेर के दूत और सखा का नाम। ३-एक प्रकार का ज़हरीला सांप। ४-एक यक्ष का नाम। ५-एक तीर्थ स्थान। ६-द्वारिकावासी एक गृहस्थ का नाम।

शंखज, शङ्खज [संज्ञा पु.] (सं.) शङ्ख से निकलने वाला बड़ा मोती।

शंखजीरा, शङ्खजीरा [संज्ञा पु.](सं.) सङ्गजराहत

शंखण, शङ्खण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवृद्ध के पुत्र का नाम (रामायण)।

शंखतीर्थ, शङ्खतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

शंखदारक, शङ्खदारक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शंखकार'।

शंखद्राव, शङ्खद्राव, शंखद्रावक, शङ्खद्रावक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अर्क जिसमें शङ्ख भी गल जाता है (वैद्यक)। [वि.] (सं.) शङ्ख को भी गला डालने वाला (तीक्ष्ण रस)।

शंखद्रावी [संज्ञा पु.] (हिं.) अमलवेत।

शंखद्वीप, शङ्खद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) एक द्वीप का नाम (पुराण)।

शंखधर, शङ्खधर [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। [वि.] (सं.) शङ्ख धारण करने वाला।

शंखधरा, शङ्खधरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) हिलमोचिका।

शंखधवना, शङ्खधवना [संज्ञा स्त्री.](सं.) यूथिका जूही।

शंखन, शङ्खन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्माषपाद के एक पुत्र का नाम। २-वज्रनाभ के पुत्र का नाम

शंखनख, शङ्खनख [संज्ञा पु.](सं.) १-घोंघा। २-नख नामक गंधद्रव्य।

शंखनाभी, शङ्खनाभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शङ्खपुष्पी। शङ्खाहुली।

शंखनारी, शङ्खनारी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसमें प्रत्येक चरण में दो यगण होते हैं

शंखनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शंखिनी'।

शंखपलीता [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ जो ज्वालामुखी पर्वतों से निकलता है।

शंखपाणि, शङ्खपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शंखपाल, शङ्खपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शकरपारा नामक मीठा पकवान। २-एक प्रकार का साँप। ३-एक नाग का नाम। ४-कर्दम के एक पुत्र का नाम।

शंखपाषाण, शङ्खपाषाण [संज्ञा पु.] (सं.) संखिया।

शंखपुष्पिका, शङ्खपुष्पिका, शंखपुष्पी, शङ्खपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद अपराजिता २-शंखाहुली।

शंखप्रस्थ, शङ्खप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा का कलंक।

शंखभस्म, शङ्खभस्म [संज्ञा पु.] (सं.) चूना।

शंखभृत, शङ्खभृत [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शंखमालिनी, शङ्खमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखाहुली।

शंखमुक्ता, शङ्खमुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखज नामक मोती।

शंखमुख, शङ्खमुख [संज्ञा पु.] (सं.) कुंभीर। घड़ियाल।

शंखमूलक, शङ्खमूलक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूली।

शंखयूथिका, शङ्खयूथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) जूही।

शंखरी, शङ्खरी [संज्ञा पु.] (सं.) शंख की चूड़ी बनाने का काम करने वाला।

शंखलिखित, शङ्खलिखित [वि.] (सं.) निर्दोष। बे-ऐब। [संज्ञा पु.] १-न्यायशाली राजा। २-शंख और लिखित नामक दो ऋषि जिन्होंने मिलकर एक स्मृति बनाई थी। [संज्ञा स्त्री.] शंख और लिखित ऋषियों की स्मृति।

शंखवटी, शङ्खवटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार की वटी या गोली।

शंखवटी-रस, शङ्खवटी-रस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शंखवटी'।

शंखवात, शङ्खवात [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर की पीड़ा। २-देखो 'शंखक' (१)।

शंखविष, शङ्खविष [संज्ञा पु.] (सं.) संखिया।

शंख-वेलान्याय, शङ्ख-वेलान्याय [संज्ञा पु.] एक प्रकार का न्याय जिसमें एक कार्य के होने से किसी दूसरी बात का वैसे ही ज्ञान होता है, जैसे शंख बजाने से समय का ज्ञान होता है।

शंखशुक्तिका, शङ्खशुक्तिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) सीप।

शंखसंकाश, शङ्खसङ्काश [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद शकरकन्द।

शंखस, शङ्खस [संज्ञा पु.] (सं.) शंख की चूड़ी या कड़ा।

शंखाख्य, शङ्खाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) बगनखा नामक गंधद्रव्य।

शंखारु, शङ्खारु, शखालु, शङ्खालु, शंखालुक शङ्खालुक [संज्ञा पु.](सं.) सफेद शकरकन्द।

शंखावर्त्त, शङ्खावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का भगन्दर रोग।

शंखासुर, शङ्खासुर [संज्ञा पु] (सं.) १-एक दैत्य का नाम। यह ब्रह्मा से वेद चुराकर समुद्र के गर्भ में जा छुपा था। २-मुर दैत्य के पिता का नाम।

शंखास्थि, शङ्खास्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिर की हड्डी। २-पीठ की हड्डी।

शंखाहुली, शङ्खाहुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शंखपुष्पी। कौड़ियाला। २-सफेद अपराजिता।

शंखिका, शङ्खिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोरपुष्पी।

शंखिन, शङ्खिन [संज्ञा पु.] (सं) सिरस (वृक्ष)

शंखिनिका, शङ्खिनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गठिवन।

शंखिनी, शङ्खिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की वनौषध। २-कामशास्त्र के अनुसार पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक। ३-गुदाद्वार की नस। ४-मुँह की नाड़ी। ५-एक देवी का नाम। ६-सीप। ७-बौद्धों की एक शक्ति। ८-एक तीर्थस्थान का नाम। ९-एक प्रकार की अप्सरा।

शंखिनी-डंकिनी, शङ्खिनी-डङ्किनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का उन्माद।

शंखिनीवास, शङ्खिनीवास [संज्ञा पु] (सं.) शाखोट नामक वृक्ष।

शंखिया [संज्ञा पु.] देखो 'संखिया'।

शंखी [संज्ञा पु.](हिं.) १-विष्णु। २-समुद्र। ३-सर्प विशेष।

शंखोदधिमल, शङ्खोदधिमल [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन।

शंखोदरी, शङ्खोदरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का मध्यम आकार वृक्ष जो बागों में शोभा के लिये लगाते हैं।

शंगजराहत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'संगजराहत'।

शंगर [संज्ञा पु.] (देश.) मदरास और सुन्दर वन में होने वाला एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

शंजरफ [संज्ञा पु.] देखो 'शिंगरफ'।

शंठ, शण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विवाहित। २-नपुंसक। हीजड़ा। ३-मूर्ख।

शंड, शण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-नपुंसक। हीजड़ा २-वंध्या पुरुष। ३-साँड़। ४-पागल। ५-कमलिनी।

शंडता, शण्डता [संज्ञा स्त्री.](सं.) नपुंसकत्व। हीजड़ापन।

शंडा, शण्डा [संज्ञा पु.] (सं.) १-फटा हुआ

खट्टा दूध या दही । २-शुक्राचार्य का पुत्र । ३-एक यक्ष का नाम ।

शंडाकी-मद्य [संज्ञा स्त्री.](हिं) राई, मूली आदि की बनी शराब ।

शंडामर्क, शण्डामर्क [संज्ञा पु.](सं.) शंड और मर्क नाम के दो साथी दैत्य ।

शंडील, शण्डील [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

शंतनु [संज्ञा पु.] देखो 'शांतनु' ।

शंतनुसुत [संज्ञा पु.] (हिं.) भीष्मपितामह ।

शंपा, शम्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली । २-कमर । कटि ।

शंपाक, शम्पाक, शंपात, शम्पात [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास ।

शंब, शम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का वज्र । २-लोहे की जंजीर । ३-प्राचीनकाल की नापने की एक माप । ४-नियमित रूप से हल जोतने की क्रिया ।

शंबर, शम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दैत्य का नाम २-युद्ध । समर । ३-मछली । ४-एक प्रकार का मृग । ५-एक पर्वत का नाम । ६-चित्रकवृक्ष ७-लोधवृक्ष । ८-अर्जुनवृक्ष । ९-तालवृक्ष । १०-सांबरहिरन । ११-मुश्कजमी । [वि.] १-बहुत बढ़िया । २-भाग्यवान् । ३-सुखी ।

शंबरकंद, शम्बरकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) बाराही-कंद ।

शंबरचंदन, शम्बरचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) गंध-काष्ठ या कैरात नामक चंदन ।

शंबरमाया, शम्बरमाया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जादू । २-शक्ति ।

शंबरसूदन, शम्बरसूदन [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।

शंबरारि, शम्बरारि [संज्ञा पु.] (सं.) मदन । कामदेव ।

शंबराहार, शम्बराहार [संज्ञा पु.] (सं.) झरबेरी

शंबरी, शम्बरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूसाकानी २-बड़ीदंती । ३-माया ।

शंबरीगंधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनतुलसी ।

शंबरोद्भव, शम्बरोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद लोध ।

शंबल, शम्बल [संज्ञा पु.] (सं.) १-संबल । पाथेय । २-तट । ३-कुल । ४- द्वेश । ईर्ष्या । ५-देखो 'शंबर' ।

शंबसादन, शम्बसादन [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य जिसे केशरी बानर ने मारा था (रामायण)

शंबा, शम्बा [संज्ञा पु.] (सं.) शनिवार । शनैश्चर ।

शंबु, शम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीपी । घोंघा ।

शंबुक, शम्बुक, शम्बुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोंघा । २-छोटा शंख ।

शंबुकपुष्पी, शम्बुकपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी ।

शंबुकावर्त्त, शम्बुकावर्त्त [वि.] (सं.) घोंघे की भँवरी सा घूमा हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का भंगदर रोग ।

शंबूका, शम्बूका [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक तपस्वी शूद्र का नाम ।२-घोंघा । ३-शंख । ४-एक दैत्य का नाम । ५-हाथी के सूड़ का अगला भाग । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीपी ।

शंभु, शम्भु [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव । २-ग्यारह रुद्रों में से एक । ३-एक दैत्य का नाम (रामायण) । ४-एक वर्णवृत्त नाम जिसके प्रत्येक चरण में सगण, तगण, यगण, भगण, दो मगण और एक गुरु होता है । ५-ब्रह्मा । ६-विष्णु । ७-पारा । ८-सफेद आक । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वायंभुव' ।

शंभुकांता, शम्भुकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती । २-दुर्गा ।

शंभुगिरि, शम्भुगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास-पर्वत ।

शंभुतेज, शम्भुतेज [संज्ञा पु.](सं.) पारद । पारा

शंभुभूषण, शम्भुभूषण [संज्ञा पु.](सं.) चन्द्रमा ।

शंभुमनु, शम्भुमनु [संज्ञा पु.] (सं.) स्वायंभुव-मन्वन्तर जो सब से पहला मन्वन्तर है ।

शंभुलोक, शम्भुलोक [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास ।

शंस [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रतिज्ञा । २-शपथ । ३-जादू । ४-प्रशंसा । ५-इच्छा । ६-चापलूसी । ७-घोषणा । ८-वक्तृता ।

शंसन [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रशंसा करना । २-कहना वर्णन करना । ३-पाठ करना ।

शंसनीय [वि.] (सं.) शंसन के योग्य ।

शंसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यक्ति अथवा घटना के सम्बन्ध में आलोचना के रूप में प्रकट किया हुआ संक्षिप्त विचार । *रिमार्क* ।

शंसित [वि.] (सं.) १-प्रशंसित । २-कथित । ३-अभिलषित । ४-विचारित । ५-मिथ्या दोष लगाया हुआ ।

शंस्य [वि.] (सं.) १-प्रशंसा के योग्य । २-चाहा-हुआ ।

श [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव । २-मङ्गल । कल्याण ३-शस्त्र । हथियार ।

शअबान [संज्ञा पु.] (अ.) आठवाँ अरबी महीना

शऊर [संज्ञा पु.](अ.) भली प्रकार कार्य करने की योग्यता या ढङ्ग । २-बुद्धि ।

शऊर पकड़ना-ढंग सीखना ।

शऊरदार [संज्ञा पु.](अ., फा.) जिसमें शऊर हो । समझदार ।

शक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जाति का नाम । यह म्लेच्छों में गिनी जाती थी । २-शकाब्द । ३-तातार देश । ४-जल । ५-मल । ६-वह राजा जिसके नाम से कोई संवत चले । (अ.) शङ्का । सन्देह ।

शककारक [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसने कोई नया संवत् चलाया हो ।

शकट [संज्ञा पु.](सं.) १-छकड़ा । बैलगाड़ी । २-भार । बोझ । ३-शकटासुर । ४-तिनिश वृक्ष । ५-धव नामक वृक्ष । धौ । ६-शरीर । देह । ७-दो हजार पल की तौल । ८-रोहिणी नक्षत्र ।

शकटकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाड़ी हाँकने या चलाने का काम । २-गाड़ी या गाड़ी की सामग्री बनाकर बेचने का कार्य ।

शकटधूम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह धूआं जो गोबर या उपले आदि से हो । २-एक नक्षत्र का नाम ।

शकटव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना की बनावट ऐसी करना कि उसके आगे पतला और पीछे का मोटा हो । २-वह भोगव्यूह जिसके भीतर उपस्थ में दो पंक्तियाँ हों और पक्ष स्थिर हों ।

शकटहा [संज्ञा पु.] (सं.) शकटासुर को मारने वाले, श्रीकृष्ण ।

शकटाक्ष [संज्ञा पु] (सं.) गाड़ी का धुरा ।

शकटाख्य, शकटाख्यक [संज्ञा पु.](सं.) धौ या धव का वृक्ष ।

शकटार [संज्ञा पु.] (सं.) १-महानन्द का प्रधान मन्त्री । २-एक प्रकार की शिकारी चिड़िया ।

शकटारि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण ।

शकटाल [संज्ञा पु.] देखो 'शकटार' ।

शकटासुर [संज्ञा पु.](सं.) कंस का भेजा हुआ दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

शकटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी गाड़ी ।

शकटिक [वि.] (सं.) शकट-सम्बन्धी ।

शकटिका, शकटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी बैलगाड़ी । २-बच्चों के खेलने की गाड़ी ।

शकठ [संज्ञा पु.] (हिं.) मचान ।

शकर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शक्कर' ।

शकरकंद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार प्रसिद्ध मीठा कंद ।

शकरखोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा सुन्दर पक्षी ।

शकरपारा [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक फल जो नींबू से बड़ा होता है । २-एक प्रकार की चौकोर मिठाई । ३-इस आकार की चौकोर सिलाई जो रूईदार कपड़े में होती है ।

शकरपाला [संज्ञा पु.] देखो 'शकरपारा' ।

शकरपीटन [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार की कँटीली झाड़ी ।

शकरबादाम [संज्ञा पु.] (फा.) खुबानी नामक फल ।

शकरी [संज्ञा पु.] (फा.) फालसा नाम का एक

शकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्वचा । चमड़ा । छाल । ३-आँवला । ४-दालचीनी । ५-

नाल। ६-खाँड। शक्कर। ७-टुकड़ा। खंड। ८-एक प्राचीन देश का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-मुख की आकृति। चेहरा। स्वरूप। २-मुख का भाव। चेष्टा। ३-बनावट। गढ़न ४-उपाय। ढंग। रास्ता। शकल बिगाड़ना-बहुत मारपीट करना। शकल बनाना-कोई वस्तु बनाकर उसका स्वरूप तैयार करना। सूरतशकल-मुखाकृति।

शकली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सकुची नामक मछली

शकलेंदु, शकलेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) अपूर्ण चन्द्रमा।

शकलोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) गोबर का पिंड।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) राजहंस।

शकांतक, शकान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) शकजाति का अन्त करने वाला।

शकाकुल [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़ कन्द रूप में होती है तथा शकाकुल मिश्री के नाम से बिकती है।

शकादित्य [संज्ञा पु.] (सं.) शालिवाहन राजा।

शकाब्द [संज्ञा पु.] (सं.) राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक-सम्वत्।

शकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-शकवंश का व्यक्ति। २-राजा की रखैल या बिन ब्याही स्त्री का भाई। ३-संस्कृत नाटकों की भाषा में राजा का वह साला जो नीच जाति का हो। ४-'श' स्वरूप वर्ण।

शकारि [संज्ञा पु.] (सं.) शकजाति का शत्रु, विक्रमादित्य।

शकील [वि.] (फा.) अच्छी शक्ल वाला। सुन्दर

शकुंत, शकुन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। २-एक प्रकार का कीड़ा। ३-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

शकुंतक, शकुन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

शकुंतला, शकुन्तला [संज्ञा स्त्री](सं.) १-राजा दुष्यन्त की पत्नी, राजा भरत की माता और मेनका अप्सरा की लड़की का नाम। २-महाकवि कालिदास के एक प्रसिद्ध नाटक का नाम।

शकुंतिका, शकुन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी चिड़िया। २-प्रजा।

शकुंद, शकुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कनेर।

शकुची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सकुची'।

शकुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी विशेष कार्य के आरम्भ में दिखाई देने वाले शुभ या अशुभ लक्षण। सगुन। २-शुभ महूर्त्त। ३-शुभ-महूर्त्त में होने वाला कार्य। ४-वह गीत जो मङ्गल अवसरों पर गाये जाते हैं। शकुन देखना या विचारना-काम करने से पहले यह देखना कि इस काम का परिणाम शुभ होगा या अशुभ।

शकुनज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) वह जो शकुनों का शुभाशुभ फल जानता हो।

शकुनज्ञा [संज्ञा पु.] (हिं.) गिरगिट।

शकुनद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) शकुनशास्त्र के मत से एक साथ शुभाशुभ शकुन होना जो यात्रा के लिए श्रेष्ठ समझा जाता है।

शकुन-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक ग्रंथ विशेष जिसमें शकुनों के शुभाशुभ फलों का विवेचन हो।

शकुनाहृत [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का चावल २-एक प्रकार की मछली। ३-एक बालग्रह।

शकुनाहृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का चावल। २-चिड़ियों द्वारा लाई हुई वस्तु।

शकुनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। चिड़िया। २-गिद्ध नामक पक्षी। ३-एक नाग का नाम। ४-एक दैत्य का नाम। ५-दुर्योधन के मामा का नाम। ६-बड़ा दुष्ट आदमी। ७-फलित ज्योतिष के मत से बव आदि ग्यारह करणों में से आठवाँ करण।

शकुनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम।

शकुनिग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) स्कन्द के एक अनुचर का नाम (पुराण)।

शकुनिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) उषाकाल के समय चिड़ियों का चहचहाना।

शकुनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-श्यामपक्षी। २-गौरैया पक्षी। ३-एक पूतना का नाम। ४- सुश्रुत के अनुसार एक बालग्रह। [संज्ञा पु.] (हिं.) शकुनज्ञ।

शकुनी-मातृका [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की व्याधि जो बालकों को होती है।

शकुनीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

शकुल, शकुलगंड, शकुलगण्ड[संज्ञा पु.] (सं.) सौरी मछली।

शकुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटकी।

शकुलाक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-सफेद दूब। २-गाँडर दूब।

शकुलाक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शकुलाक्ष'।

शकुलाची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाँडर दूब।

शकुलादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटकी। २-जलपीपल। ३-जलचौलाई। ४-कायफल। ५-गजपीपल। ६-गाँडरदूब। ७-जटामासी ८-केंचुआ।

शकुलार्भक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली

शकुलाहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपीपल।

शकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सकुची मछली। २-पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। गू। २-गोबर

शकृत्करि [संज्ञा पु.] (सं.) गाय का बछड़ा।

शकृद्देश [संज्ञा पु.] (सं.) मलद्वार। गुदा।

शक्कर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-चीनी। २-खाँड़। [संज्ञा पु.] (सं.) बैल। वृष।

शक्करि [संज्ञा पु.] (सं.) बैल। वृष।

शक्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरों वाले छन्दों की संज्ञा। २-एक प्राचीन नदी का नाम।

शक्की [वि.] (अ.) हर बात में शक या सन्देह करने वाला।

शक्त [संज्ञा पु.] (सं.) समर्थ। ताकतवर।

शक्तव [संज्ञा पु.] (सं.) भुना हुआ अन्न या आटा। सत्तू।

शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोई ऐसा तत्व जो कोई काम करता, कराता या क्रियात्मक रूप में अपना प्रभाव दिखाता हो। बल। ताकत। एनर्जी। २-वे साधन या तत्व जिससे कोई काम अथवा अभीष्ट सिद्ध होता है। ३-बड़ा और पराक्रमी राज्य, जिसमें यथेष्ट धन और सोना आदि हो। पॉवर। ४-वह संबन्ध जो, शब्द और उसके अर्थ में होता है। ५-प्रकृति। माया। ६-किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी उपासना करने वाले शाक्त कहलाते हैं (तन्त्र)। ७-एक प्रकार का शस्त्र। ८-किसी देवता का पराक्रम अथवा बल जो कुछ विशिष्ट कार्यों का साधक माना जाता है ९-दुर्गा। १०-गौरी। ११-लक्ष्मी। १२-स्त्री की मूत्रेंद्रिय। भग। १३-तलवार। १४-वश अधिकार।

[संज्ञा पु.] (सं.) पाराशर के पिता का नाम।

शक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धक।

शक्तिकर [वि.] (सं.) शक्ति या बल देने वाला।

शक्तिग्रह [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव। २-कार्त्तिकेय ३-बल्लमधारी। ४-शब्द का अर्थ बताने वाली शक्ति या वृत्ति का ज्ञान। [वि.] शक्ति को ग्रहण करने वाला।

शक्तिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्ति का भाव या धर्म।

शक्तिधर [संज्ञा पु.] (सं.) स्कन्द। कार्त्तिकेय। [वि.] (सं.) ताकतवर। बलवान।

शक्तिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

शक्तिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) छतिवन। सतिवन।

शक्तिपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय। स्कन्द।

शक्तिपूजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शक्ति का उपासक। शाक्त। २-तांत्रिक।

शक्तिपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्ति का शाक्त द्वारा होने वाला पूजन।

शक्तिपूर्व [संज्ञा पु.] (सं.) पराशर।

शक्तिबोध [संज्ञा पु.](सं.) शब्द के अर्थ का बोध

शक्तिभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय। स्कन्द।

शक्तिमंत्र, शक्तिमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) शक्ति के उपासकों का मन्त्र।

शक्तिमत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्तिमान् होने का

भाव या धर्म । ताकत ।

शक्तिमत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शक्तिमत्ता ।

शक्तिमय [वि.] (सं.) शक्तिपूर्ण ।

शक्तिमान् [वि.] (सं.) बलवान । ताकतवर ।

शक्तिवन [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणों में वर्णित एक वन का नाम ।

शक्तिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) शक्ति की उपासना करने वाला ।

शक्तिवीर [संज्ञा पु.] (सं.) वाममार्गी ।

शक्तिवैकल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमजोरी । २ असमर्थता ।

शक्तिशाली [वि.](सं.) शक्तिसम्पन्न । ताकतवर

शक्तिशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) शक्तों का एक संस्कार ।

शक्तिष्ठ [वि.] (सं.) जिसमें शक्ति हो । ताकतवर ।

शक्ति-संतुलन, शक्ति-सन्तुलन [संज्ञा पु.] (सं.) दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना । बैलेंस-ऑफ-पॉवर ।

शक्तिसंपन्न, शक्तिसम्पन्न [वि.](सं.) बलवान् । ताकतवर ।

शक्तिहर [वि.](सं.) शक्ति का हरण करने वाला । कमजोर करने वाला ।

शक्तिहीन [वि.] (सं.) १-निर्बल । असमर्थ । २-हीजड़ा । नपुंसक ।

शक्ती [संज्ञा पु.] (सं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १८ मात्राएँ होती हैं । २-शक्तिवाला ।

शक्तु [संज्ञा पु.] (सं.) सत्तू ।

शक्तुक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का तीव्र और उग्रविष ।

शक्तुफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष ।

शक्तुफलिका, शक्तुफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष ।

शक्त्यपेक्ष-दायन [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा थोड़ा करके ऋण चुकता करना ।

शक्त्रि [संज्ञा पु.](सं.) वशिष्ठमुनि के बड़े पुत्र का नाम ।

शक्य [वि.] (सं) १-क्रियात्मक रूप से हो सकने योग्य । सम्भव । २-जिसमें शक्ति हो ।

शक्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्य होने की क्रिया या भाव । क्रियात्मकता ।

शक्यप्राप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) न्यायदर्शनानुसार प्रमाता के वे प्रमाण जिनसे प्रमेय सिद्ध होता है ।

शक्र [संज्ञा पु] (सं.) १-इन्द्र । २-कुटज वृक्ष । ३-अर्जुनवृक्ष । ४-इन्द्र-जौ । ५-ज्येष्ठा-नक्षत्र । ६-रगण के चौथे भेद अर्थात (SIIS) की संज्ञा । [वि.] समर्थ । योग्य ।

शक्रकार्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष ।

शक्रकुमारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्रमातृका ।

शक्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रध्वज ।

शक्रक्रीडाचल [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरुपर्वत ।

शक्रगोप [संज्ञा पु.] (सं.) वीरबहूटी ।

शक्रचाप [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष ।

शक्रज, शक्रजात [संज्ञा पु.] (सं.) काकपक्षी ।

शक्रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रवारुणी ।

शक्रजानु [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण में वर्णित एक वानर ।

शक्रजाल [संज्ञा पु.] देखो 'इन्द्रजाल' ।

शक्रजित् [संज्ञा पु.] (सं.) मेघनाद ।

शक्रतरु [संज्ञा पु.] (सं.) भाँग का पेड़ ।

शक्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शक्र का भाव या धर्म

शक्रदारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदारु । २-साखू का पेड़ ।

शक्रदिश [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्वदिशा ।

शक्रदेव [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

शक्रदैवत [संज्ञा पु.] (सं.) जेष्ठानक्षत्र ।

शक्रद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदारु वृक्ष । २-बकुल वृक्ष ।

शक्रधनु, शक्रधनुष [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष

शक्रध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रध्वज ।

शक्रनंदन, शक्रनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन ।

शक्रनेमी [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदार । २-मेढासिंगी । ३-कुटजवृक्ष ।

शक्रपर्याय, शक्रपादप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुटज वृक्ष । २-देवदार ।

शक्रपुर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रपुरी, अमरावती ।

शक्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजौ ।

शक्रपुष्पा, शक्रपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अग्निशिखा नामक वृक्ष । २-कलिहारी । ३-नागदमनी ।

शक्रप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रप्रस्थ ।

शक्रबीज [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजौ ।

शक्रभवन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग ।

शक्रभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) मेघनाद ।

शक्रभूभवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रायण । इन्द्रवारुणी लता ।

शक्रभूरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कुटजवृक्ष ।

शक्रमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्र की माता भार्गी

शक्रमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इन्द्रध्वज । २ भार्गी ।

शक्रमूर्द्धा [संज्ञा पु] (सं.) वाल्मीक । बाँबी ।

शक्रयव [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रजौ ।

शक्रलोक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रलोक । स्वर्ग ।

शक्रवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रवारुणी नामक लता ।

शक्रवापी [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम । (महाभारत) ।

शक्रवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) मेघ । बादल ।

शक्रवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कुटज ।

शक्रशरासन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष ।

शक्रशाखी [संज्ञा पु.] (सं.) कुटजवृक्ष ।

शक्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञभूमि में वह स्थान जहाँ इंद्र के उद्देश्य से बलि दी जाती है

शक्रशिर [संज्ञा पु.] (सं.) वल्मीक । बाँबी ।

शक्रसारथी [संज्ञा पु.] (सं.) इंद्र का सारथी, मातलि ।

शक्रसुत [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का पुत्र वालि ।

शक्रसुधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुँदरू ।

शक्रसृष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी ।

शक्राख्य [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लू ।

शक्राग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) विशाखानक्षत्र ।

शक्राणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शची । इन्द्राणी । २-निगुंडी ।

शक्रात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन ।

शक्रादन [संज्ञा पु.] (सं.) भाँग ।

शक्रानिल [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभव आदि साठ संवत्सरों के बारह युगों में से दसवें युग के अधिपति ।

शक्रावर्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम (महाभारत) ।

शक्राशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाँग । २-कौरैया । ३-इन्द्रजौ ।

शक्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का आसन । २-सिंहासन ।

शक्राह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्रजौ । २-कुटज वृक्ष ।

शक्राह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शक्राह्व' ।

शक्रि [संज्ञा पु.](सं.) १-मेघ । बादल । २-वज्र । ३-हाथी । ४-पर्वत । पहाड़ ।

शक्रेंद्र, शक्रेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) वीरबहूटी ।

शक्रोत्थान, शक्रोत्सव [संज्ञा पु.](सं.) इन्द्रध्वज नामक उत्सव ।

शक्ल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शकल' ।

शक्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल । २-आचरण ।

शक्वरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-उँगली । २-मेखला । ३-गाय । ४-एक छन्द । शाक्वरी । ५-एक प्राचीन नदी का नाम ।

शक्वा [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी । गज ।

शखस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शख्स' ।

शख्स [संज्ञा पु.](अ.) व्यक्ति । मनुष्य । आदमी

शख्सियत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) व्यक्तित्व ।

शख्सी [वि.] (अ.) व्यक्तिगत ।

शगल [संज्ञा पु.] (अ) १-व्यापार । काम-धंधा । २-मनोविनोद ।

शगुन [संज्ञा पु.](हिं.) १-शकुन। २-भेट। नजराना। ३-विवाह की बातचीत पक्की होने की रसम। ४-बहली में हाँकने वाले के बैठने का स्थान।

शगुनियाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) शकुन का विचार करने वाला, साधारण ज्योतिषी।

शगून [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शगुन'।

शगूनियाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शगुनियाँ'।

शगूफा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-कली। २-पुष्प। फूल। ३-कोई नई और विलक्षण घटना या बात। *शगूफा खिलना*-कोई नई और विलक्षण घटना घटित होना। *शगूफा खिलाना*-नई और विलक्षण बात कर बैठना।

शचि, शची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इन्द्र की पत्नी का नाम। २-सतावर। ३-असबरग। ४-वक्तृत्व शक्ति। ५-प्रज्ञा। बुद्धि।

शचीतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शचीपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

शचीबल [संज्ञा पु.](सं.) नाटक में इन्द्र के समान वेषभूषा धारण करने वाला पात्र।

शचीश [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

शजर [संज्ञा पु.] (अ.) वृक्ष।

शजरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वंशवृक्ष। २-वृक्ष। ३-पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा।

शट [संज्ञा पु.] (सं.) १-खटाई। २-एक प्राचीन देश का नाम।

शटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटा।

शटि, शटी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कचूर। २-कपूरकचरी। ३-अमियाहल्दी। ४-नेत्रबाला।

शटुक [संज्ञा पु.](सं.) घी और पानी में सना हुआ चावल का आटा जिसका व्यवहार वैद्यक में किया जाता है।

शठ [वि.] (सं.) १-धूर्त्त। चालाक। २-लुच्चा। बदमाश। ३-दुष्ट। पाजी। ४-मूर्ख। [संज्ञा पु.] १-साहित्य में वह नायक जो किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने का कपट रचता है। २-तगर का फूल। ३-केसर। ४-लोहा। ५-फौलाद। ६-धतूरे का वृक्ष। ७-चित्रक। ८-सालवृक्ष।

शठता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शठ का भाव या धर्म। धूर्त्तता। २-बदमाशी। पाजीपन।

शठत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शठता।

शठांब, शठाङ्ग, शठाम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मणी-लता।

शठिका, शठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कचूर। २-गंधपलाशी। ३-पेड़। बन अदरक।

शठिरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्दगिलोय।

शठोदरक [वि.] (सं.) धोखेबाज। धूर्त।

शण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सन नामक पौधा। २-भंग। ३-बनसनई।

शणकंद, शणकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) चर्मकषा नामक सुगंधित-द्रव्य।

शणकंदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सातला नामक थूहड़।

शणक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शणघंटा, शणघण्टा, शणघंटिका, शणघण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शणपुष्पी-लता

शणचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सनई का बचा हुआ भाग जो उसे कूटकर सन निकालने पर बच रहता है।

शणपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की वनस्पति जो साधारणतः बनसनई कहलाती है। २-अरहर।

शणशिफा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सन की जड़।

शणसमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शणपुष्पी।

शणसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पवित्रक।

शणाल, शणालुक [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास का वृक्ष।

शणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शणपुष्पी।

शणीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोननदी के मध्य का उपजाऊ भाग। २-दर्दरी-तट।

शत [वि.] (सं.) सौ।

शतक [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. शतिका) १-सौ का समूह। २-एक ही तरह की सौ वस्तुओं का संग्रह। ३-सौ वर्ष का समूह। शताब्दी। सेनचुरी। ४-विष्णु का एक नाम।

शतकपालेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव की एक मूर्त्ति का नाम।

शतकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शनिग्रह।

शतकिरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की समाधि।

शतकीर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक भावी अर्हत् का नाम (जैन)।

शतकुंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह महायज्ञ जिस में एक साथ सौ-कुण्डों में यज्ञ होता है।

शतकुंत, शतकुन्त, शतकुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कनेर।

शतकुंभ, शतकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन पर्वत का नाम। २-सफेद कनेर। ३-सुवर्ण। सोना।

शतकुंभा, शतकुम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

शतकुलीरक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का कीड़ा (सुश्रुत)।

शतकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

शतकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्ष पर्वत का नाम (भागवत)।

शतकोटि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौ करोड़ की संख्या। २-इन्द्र का वज्र। हीरा। हीरक।

शतकौंभ, शतकौंभक [संज्ञा पु] (सं) स्वर्ण। सोना।

शतक्रतु [संज्ञा पु.] (सं) १-इन्द्र। २-वह जिसने सौ यज्ञ किये हों।

शतक्रतुद्रुम [संज्ञा पु.](सं) कालीकुड़ा। कृष्ण-कुटज।

शतक्रतुयव [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्रजौ।

शतखंड, शतखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-सोने की बनी हुई कोई वस्तु।

शतगु [वि.] (सं.) सौ गाय रखने वाला।

शतगुण [वि.] (सं.) सौगुना।

शतग्रंथि, शतग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद दूब। २-नीली दूब।

शतग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की भूतयोनि

शतघ्नी [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र। २-वृश्चिकाली। ३-एक प्रकार की घास ४-करंज का पेड़। ५-एक प्राणघातक रोग जो गले में होता है।

शतच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-कठफोड़वा नामक पक्षी। २-सौ पत्तों वाला कमल।

शतजटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर। मूली।

शतजित् [संज्ञा स्त्री.](सं) १-विष्णु। २-विराज के पुत्र का नाम जिसका उल्लेख भागवत में आया है। ३-एक यक्ष का नाम।

शतजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

शततारा [संज्ञा स्त्री.](सं.) शतभिषा नामक नक्षत्र जिसमें सौ तारे हैं।

शतदंतिका, शतदन्तिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) नखी नामक गन्धद्रव्य।

शतदल [संज्ञा पु.] (सं.) पद्म। कमल।

शतदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतपत्री।

शतद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) सतलज नदी का प्राचीन नाम।

शतधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक योद्धा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २-एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शतधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब।

शतधामा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शतधार [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

शतधारवन [संज्ञा पु] (सं.) प्राचीनकाल का एक तीर्थ।

शतधृति [संज्ञा पु.](सं.) १-इन्द्र। २-ब्रह्मा। ३-स्वर्ग।

शतनेत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावर।

शतपति [संज्ञा पु.](सं.) सौ आदमियों का मालिक या सरदार।

शतपत्र [वि.] (सं.) १-सौ दलों या पत्तों वाला। २-सौ पङ्खों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल

२-शतपत्री। ३-मोर। ४-कठफोड़वा पक्षी। ५-सारस। ६-मैना। ७-बृहस्पति।

शतपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कठफोड़वा पक्षी। २-एक विषैला कीड़ा। ३-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शतपत्र निवास [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

शतपत्र-भेद-न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्य के मतानुसार वह न्याय जिसमें सौ पत्ते एक साथ रखकर छेदने से जान पड़ता है कि सब एक साथ एक ही समय में छिद गये, पर वास्तव मे एक पत्ता भिन्न-भिन्न समय में छिदा। कलांतर की सूक्ष्मता के कारण इसका ज्ञान नहीं हुआ। इस प्रकार जहाँ बहुत से कार्य भिन्न-भिन्न समय में होते हुए भी एक ही समय में हुए जान पड़ते हैं।

शतपत्रयोनि [संज्ञा पु] (सं.) ब्रह्मा।

शतपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब।

शतपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार का गुलाब।

शतपत्री-केसर [संज्ञा पु.] (सं.) गुलाब-केसर।

शतपथ [वि.] (सं.) सैकड़ों मार्ग या शाखा वाला।

शतपथ-ब्राह्मण [संज्ञा पु.] (सं.) यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसमें कर्मकांड का विस्तृत वर्णन् है।

शतपथिक [वि.] (सं.) १-शतपथ ब्राह्मण का जानने या पढ़ने वाला। २ बहुत से मतों का अनुयायी

शतपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनखजूरा। २-च्यूँटी

शतपदचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में सौ कोष्ठों वाला एक प्रकार का चक्र।

शतपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कनखजूरा। २-शतमूली। सतावर। ३-मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधर। ४-नीली कोयल नामक लता

शतपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कमल।

शतपपरिवार [संज्ञा पु.] (सं.) समाधि का एक भेद

शतपर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाँस। २-गन्ना। ३-दूब। ४-वच। ५-कुटकी। ६-सुगन्धित द्रव्य ७-भार्गव की पत्नी का नाम। ८-कलम्बी

शतपर्व्विका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दूब। २-वच ३-जौ। यव।

शतपाद [संज्ञा पु.] देखो 'शतपद'।

शतपादिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकोली नामक अष्टवर्गीय औषध। २-कनखजूरा।

शतपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शतपुतिया तरोई। २-सतावर।

शतपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) साठी धान्य।

शतपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोआ नामक साग २-सौंफ। ३-गवेधुक।

शतपुष्पादल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौंफ का साग। २-शताह्व।

शतपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शतपुष्पा'।

शतपोद, शतपोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का वातजन्य भगन्दर। २-वात और रक्त के कुपित होने से होने वाला एक रोग, जिसमें लिंग पर अनेक छेद हो जाते हैं।

शतपोरक, शतपौर [संज्ञा पु.] (सं.) गन्ना।

शतप्रसूना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शतपुष्पा'।

शतप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का वृक्ष।

शतफल [संज्ञा पु.] (सं.) बाँस।

शतबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

शतबलाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

शतबलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली। २-एक बन्दर का नाम (रामायण)।

शतबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा। २-भागवत के अनुसार एक असुर का नाम। बौद्धों के अनुसार मार के पुत्र का नाम। [वि.] सौ-भुजा वाला।

शतबुद्धि [वि.] (सं.) बड़ा बुद्धिमान्।

शतभिष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शतभिषा'।

शतभिषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्विनी आदि सताईस नक्षत्रों में से चौबीसवाँ।

शतभीरु [संज्ञा पु.] (सं.) चमेली।

शतमख [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-उल्लू।

शतमन्यु [वि.] (सं.) १-क्रोधी। २-उत्साही। [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-उल्लू।

शतमयूख [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शतमल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) संखिया।

शतमान [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौ मन की तौल या बाट। २-रूपामाखी या तारमाक्षिक नामक उपधातु।

शतमार्ज [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्र आदि बनाने या ठीक करने वाला।

शतमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी सतावर। २-वच। ३-नीली दूब।

शतमूलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आखुकर्णी नामक लता। २-बड़ी दंती।

शतमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शतावरी। २-तालमूली। ३-वच।

शतयष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) सौ लड़ों वाला हार।

शतयातु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वैदिक-ऋषि का नाम।

शतरंज [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर बत्तीस गोटों से खेला जाता है।

शतरंजबाज [संज्ञा पु.] (फा.) शतरंज का खिलाड़ी

शतरंजबाजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शतरंज खेलने का व्यवसन। २-शतरंज खेलने का भाव या काम।

शतरंजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रङ्ग-बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी या बिछावन। २-शतरञ्ज खेलने की बिसात। ३-शतरंज का अच्छा खिलाड़ी। ४-मिस्सी रोटी।

शतरथ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम।

शतरात्र [संज्ञा पु.] (सं.) सौ-रातों में समा होने वाला यज्ञ विशेष।

शतरुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुद्र का एक रू जिसके सौ मुँह माने जाते हैं। २-शैवदर्शन के मतानुसार एक शक्ति जो आत्मा की उत्पादक कही गई है।

शतरुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिमालय की एक नदी

शतरुद्रिय, शतरुद्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-यज्ञ की हवि। २- यजुर्वेद का एक अंश।

शतरूप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शतरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी का नाम।

शतर्च्ची [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद के प्रथम मंडल के मंत्रद्रष्टा ऋषियों की उपाधि।

शतलोचन [वि.] (सं.) जिसके सौ-लोचन या नेत्र हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्कन्द के एक अनुचर का नाम। २-एक असुर का नाम। (पुराण)।

शतवनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

शतवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीली दूब। २-आकोली नामक अष्टवर्गीय औषध।

शतवादन [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत से बाजों का एक साथ बजना।

शतवार [संज्ञा पु.] (सं.) एक कवच का नाम जो अथर्ववेद में है।

शतवार्षिक [वि.] (सं.) हर सौ साल पर होने वाला।

शतवार्षिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनावृष्टि।

शतवाही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो अपने पिता के घर से बहुत सा धन लेकर ससुराल आई हो।

शतवीर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

शतवीर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शतावर। २-सफेद दूब। ३-मुनक्का। ४-सफेद मूसली ५-किशमिश।

शतवृषभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक मुहूर्त का (ज्योतिष)।

शतवेधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चूका या चां नामक साग।

शतवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमलबेंत। २- नामक साग।

शतशलाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छत्र।

शतशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २- प्रकार का अभिमन्त्रित अस्त्र (रामायण)।

शतशीर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वासुकी देवी

नाम।

शतशः [वि.] (सं.) १-सैकड़ों। २-सौ गुना।

शतशृंग, शतशृङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शतसंख्य [संज्ञा पु.] (सं.) दसवें मन्वन्तर का नाम।

शतसहस्रक [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शतसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर।

शतह्रद [संज्ञा पु.] (सं.) हरिवंश के अनुसार एक असुर का नाम।

शतह्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्युत्। बिजली। २-वज्र। ३-दक्ष की एक कन्या का नाम। ४-विराध राक्षस की माता का नाम।

शतांग, शताङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ। २-तिनिश। [वि.] (सं.) सौ अङ्गों या अवयवों वाला।

शतांगुल, शताङ्गुल [संज्ञा पु.] (सं.) ताल या ताड़ का वृक्ष।

शतांश [संज्ञा पु.] (सं.) सौ हिस्सों में से एक। सौवाँ भाग।

शता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावर।

शताकरा [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक किन्नरी का नाम

शताकारा [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक गन्धर्वपत्नी का नाम।

शताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) हरिवंश के अनुसार एक दैत्य का नाम।

शताक्षी [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) १-रात। रात्रि। २-सौंफ। ३-पार्वती। ४-दुर्गा।

शतानंद, शतानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-कृष्ण। ४-गौतम मुनि। ५-राजा जनक के एक पुरोहित का नाम।

शतानंदा, शतानन्दा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। २-पुराणोक्त एक नदी का नाम।

शतानक [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान। मरघट।

शतानना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम।

शतानीक [संज्ञा पु.](सं.) १-बुड्ढा आदमी। २-एक मुनि जो व्यास जी का शिष्य था। ३-ससुर। ४-पुराणानुसार चौथे युग में चन्द्रवंश का द्वितीय राजा ५-सुदास राजा के पुत्र का नाम। ६-नकुल के पुत्र का नाम (महाभारत)। ७-एक असुर का नाम। ८-सौ सिपाहियों का नायक।

शताब्द [वि.](सं.) सौ वर्ष का। [संज्ञा पु.](सं.) सौ वर्ष।

शताब्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौ वर्ष का समय २-किसी सम्वत् में सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय।

शतामघ [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्र का एक नाम।

शतायु [वि.] (सं.) सौ वर्ष की आयु वाला।

शतायुध [वि.] (सं.) जो अस्त्र धारण करता हो।

शतायुधा [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक किन्नरी का नाम

शतार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वज्र। २-सुदर्शनचक्र

शतारु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कोढ़।

शतारुषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शतारु'।

शतावधान [संज्ञा पु.] (सं.) वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बाते सुनकर उन्हें ठीक क्रम से याद रख सकता और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो।

शतावधानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शतावधान का काम।

शतावर [संज्ञा पु.] (सं.) सतावर नामक औषध

शतावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सतावर। २-कचूर। ३-शची। इन्द्राणी।

शतावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-महादेव ३-एक पवित्र वन का नाम (हरिवंश)।

शतावर्त्ती [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शताशिन [संज्ञा पु.] (सं.) वज्र।

शताह्वया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौंफ। २-सतावर। ३-सोआ। मधूरिका।

शताह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौंफ। २-सतावर ३-अजमोदा। ४-एक प्राचीन नदी का नाम। ५-एक तीर्थ का नाम।

शतिक [वि.] (सं.) सौ-सम्बन्धी। सौ का।

शती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सौ का समूह। सैकड़ा। २-शताब्दी।

शतेर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। २-घाती। ३-हिंसा।

शतेश [संज्ञा पु.] (सं.) सौ गाँव का अधिपति।

शतोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-शिव का एक गण। ३-एक शस्त्र का नाम।

शतोदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शतौदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक यज्ञीय कृत्य।

शत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैरी। दुश्मन। २-एक असुर का नाम। ३-नागदवन नामक वनस्पति।

शत्रुकंटक, शत्रुकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी

शत्रुकंटका, शत्रुकण्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुपारी।

शत्रुघाती [वि.] (सं.) शत्रु का नाश करने वाला

शत्रुघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-राम के एक छोटे भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। २-स्वफल्क का एक पुत्र। ३-देवश्रवा के एक पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) शत्रु को मारनेवाला अरि को नष्ट करने वाला।

शत्रुघ्नी [संज्ञा पु.] (सं.) हथियार।

शत्रुजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-दैत्य का नाम। [वि.] (सं.) शत्रु को जीतने वाला

शत्रु-तपन [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव। २-एक दैत्य का नाम।

शत्रुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुश्मनी। वैरभाव।

शत्रुताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शत्रुता'।

शत्रुत्व [संज्ञा पु.] (सं) शत्रुता। दुश्मनी।

शत्रुदमन [वि.] (सं.) दुश्मनों को वश में करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) राम के भाई का का शत्रुघ्न।

शत्रुद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) अमलबेंत।

शत्रुभंग [संज्ञा पु.] (सं.) मूज नामक तृण।

शत्रुभूमिज [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों में लगाने का सुरमा।

शत्रुमर्दन [संज्ञा पु.](सं.) १-दशरथ पुत्र शत्रुघ्न २-कुवलयाश्व के पत्र का नाम। [वि.] (सं.) शत्रु का नाश करने वाला।

शत्रुविनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव की एक उपाधि।

शत्रुसाल [वि.](हिं.) शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करने वाला।

शत्रुहंता, शत्रुहन्ता [वि.] (सं.) शत्रु का नाश करने वाला।

शत्रुहा [संज्ञा पु.] (हिं.) दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम। [वि.] शत्रु का नाश करने वाला।

शत्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात्रि। रात।

शद [संज्ञा पु.] (सं.) १-फलमूलादि। २-कर। लगान। ३-तरकारी।

शदक [संज्ञा पु.] (सं.) बिना भूसी निकाला हुआ अनाज।

शदीद [वि.](अ.) बहुत ज्यादा। भारी। सख्त।

शदेवी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सहदेवा'।

शद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-हाथी [संज्ञा स्त्री.] १-खंड। टुकड़ा। २-बिजली।

शद्रु [वि.] (सं.) गिराने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु।

शद्वला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम (पुराण)।

शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शान्ति। २-चुप्पी। खामोशी। (हिं.) देखो 'सन (पौधा)'।

शनक [संज्ञा पु.] (सं.) शंबर के एक पुत्र का नाम।

शनकावलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपीपल।

शनपर्णी [संज्ञा स्त्री.](सं.) कटुकी नामक औषध।

शनपुष्पी, शनहुली [संज्ञा स्त्री.](सं.) बनसनई।

शनि [संज्ञा पु.] (सं) १-सौर जगत के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। (यह फलित-ज्योतिष में अशुभ माना जाता है)। २-दुर्भाग्य। बदकिस्मती। ३-देखो 'शनिवार'।

शनिचक्र [संज्ञा पु.](सं.) फलित-ज्योतिष में एक प्रकार का चक्र।

शनिज [संज्ञा पु.] (सं) काली मिर्च।

शनिप्रदोष [संज्ञा पु] (सं) जब शनिवार को

"शुक्ला त्रयोदशी पड़े तब प्रदोष कहलाता है और उस दिन शिवपूजन का विशेष माहात्म्य है।

शनिप्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शनि की माता, छाया

शनिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम। नीलमणि।

शनिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) भैंसा।

शनिवार [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्रवार और रविवार के बीच का दिन या वार।

शनिश्चर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शनि'।

शनैः [अव्य.] (सं.) धीरे। आहिस्ता। शनैःशनैः-धीरे-धीरे। [संज्ञा पु.] देखो 'शनिवार'।

शनैःप्रमेह, शनैर्मेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेहरोग।

शनैर्मेही [संज्ञा पु.] (सं.) शनैः प्रमेह से पीड़ित रोगी।

शनैश्चर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शनि'।

शपथ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कसम। सौगन्ध। २-दृढ़तापूर्ण कथन। प्रतिज्ञा (मुहावरों के लिए देखो 'कसम' के मुहावरे)।

शपथ-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बात की सत्यता प्रस्थापित करने के समय शपथ-पूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाने वाला पत्र। हलफनामा। एफिडेविट।

शपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शपथ। कसम। २-गाली।

शप्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-उलप नामक तृण। २-वह व्यक्ति जिसे शाप दिया गया हो।

शप्ता [वि.] (हिं.) शाप देने वाला।

शफ [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़ की जड़। २-पशुओं का खुर। ३-नखी नामक गन्धद्रव्य।

शफ़क़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रातःकाल या सायंकाल के समय आकाश में दिखाई पड़ने वाली ललाई, विशेषतः संध्या समय की लालिमा जो अतीव सुन्दर होती है।

शफ़क़ फूलना-प्रातः या सायं आकाश में लाली फैलना।

शफ़क़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-कृपा। दया। २-प्रेम। प्यार।

शफ़गोल [संज्ञा स्त्री.] देखो 'इसबगोल'।

शफ़तालू [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक प्रकार का बड़ा आड़ू।

शफर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पोठिया नामक मछली

शफराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) हिलसा जाति की मछली।

शफरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

शफरुक [संज्ञा पु.] (सं) १-सन्दूक। २-पात्र। बरतन।

शफ़ा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आरोग्यता। २-तन्दुरुस्ती (किसी को) शफ़ा देना-(किसी का) रोग दूर करना।

शफ़ाख़ाना [संज्ञा पु.] (अ., फ़ा.) चिकित्सालय। अस्पताल।

शफारु [वि.] (सं.) जिसकी जाँघ गाय के खुर के समान हो। [संज्ञा स्त्री.] गाय के खुर के समान जांघ वाली स्त्री।

शब [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) रात्रि। रात।

शबनम [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-ओस। तुषार। २-एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।

शबबराता [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) मुसलमानी के आठवें मास की चौदहवीं या पन्द्रहवीं रात। इस दिन मुसलमान लोग अपने मृत पूर्वजों के उद्देश्य से प्रार्थना करते, हलुवा-पूरी बाँटते रोशनी करते और आतिशबाजी छोड़ते हैं।

शबर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक जंगली जाति जो दक्षिण में है। २-जङ्गली। हबसी। ३-शुद्र तथा भील। ४-लोधवृक्ष। ५-शिव। [वि.] १-चितकबरा। २-रङ्ग-बिरङ्गा।

शबरक [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. शबरिका) जङ्गली हबशी।

शबरचंदन, शबरचन्दन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चन्दन।

शबरजंबु, शबरजम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम।

शबरलोध [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद लोध।

शबल [वि.] (सं.) १-चितकबरा। २-रङ्गबिरङ्गा बहुरङ्गा। [संज्ञा पु.] १-एक नाग। २-बौद्धों का धार्मिक कृत्य विशेष। ३-अगिया घास। ४-चित्रक।

शबलक [वि.] (सं.) १-चितकबरा। २-रंगबिरङ्गा

शबलचेतन [संज्ञा पु] (सं.) पीड़ा या कष्ट आदि के कारण घबड़ाया हुआ व्यक्ति।

शबलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रङ्गबिरङ्गापन। २-मिलावट।

शबलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शबलता।

शबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चितकबरी गौ। २-कामधेनु।

शबलाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम (महाभारत)।

शबलाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन ऋषि का नाम। २-दक्ष के एक पुत्र का नाम।

शबलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी

शबलित [वि.] (सं.) चितकबरा। रङ्गबिरङ्गा।

शबली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कामधेनु। २-चितकबरी गाय।

शबाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-यौवनकाल। २-पूर्ण विकसित या सुन्दर जान पड़ने वाली अवस्था ३-अत्यधिक सौन्दर्य।

शबाहत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-समानता। अनुरूपता। २-सूरत। आकृति।

शबीह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-चित्र। तसवीर। २-समानता। अनुरूपता।

शबोरोज [अव्य.] (फ़ा.) रातदिन। हर समय।

शब्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-ध्वनि। आवाज। २-सार्थक ध्वनि। ३-सन्तों के बनाये हुए पद।

शब्दकार [वि.] (सं.) ध्वनिकारक।

शब्दकारी [वि.] (सं.) शब्द करने वाला।

शब्द-कोष [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रन्थ जिसमें अक्षर-क्रम से शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची शब्दों का संग्रह किया गया हो। डिक्शनरी।

शब्दग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-कान। २-एक प्रकार का काल्पनिक बाण। [वि.] (सं.) शब्द को ग्रहण करने वाला।

शब्दचातुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) बोलचाल की प्रवीणता। वाग्मिता।

शब्दचालि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य

शब्दचित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्दों में किसी विषय अथवा बात की ऐसी स्पष्ट और विस्तृत चर्चा जो देखने में उसके चित्र के समान जान पड़े। २-अनुप्रास नामक अलंकार।

शब्दजाल [संज्ञा पु.] (सं.) साधारण बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और जटिल वाक्यों का प्रयोग। शब्दाडंबर।

शब्दता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द का भाव या धर्म।

शब्दत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दता।

शब्दनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दनिर्धारण।

शब्दनृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

शब्दपति [संज्ञा पु.] (सं.) वह नेता जिसके अनुयायी न हों।

शब्दप्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा प्रमाण जिसका आधार किसी का कथन हो।

शब्दप्राश [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द के अर्थों का अनुसन्धान।

शब्दबोध [संज्ञा पु.] (सं.) वह ज्ञान जो जबानी गवाही से प्राप्त हो।

शब्दब्रह्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेद। २-ब्रह्म और जीव का ज्ञान। आध्यात्मिक ज्ञान।

शब्दभेद [संज्ञा पु.] देखो 'शब्द-बेध'।

शब्दभेदी [संज्ञा पु.] देखो 'शब्द-बेधी'। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मलद्वार। गुदा।

शब्दमय [वि.] (सं.) शब्दयुक्त।

शब्दमहेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

शब्दमात्र [संज्ञा पु.] (सं.) केवल शब्द।

शब्दमाल [संज्ञा पु.] (सं) पोला बाँस।

शब्दमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं) शब्दसमूह।

शब्दयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) केवल शब्दगत यु

शब्दयोजना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी बात या कथन के लिए उपयुक्त शब्द बैठाना। २-इस प्रकार बैठाये हुए शब्दों का क्रम या रूप। वर्डिंग।

शब्दयोनि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जड़। मूल। २-शब्द की उत्पत्ति। ३-वह शब्द जो अपने मूलरूप में हो।

शब्दरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास

शब्दवत् [अव्य] (सं) शब्द के समान।

शब्दवारिधि [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दों का समूह

शब्दविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याकरण।

शब्दविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द-सम्बन्धी तत्वज्ञान जाना जाता है।

शब्दविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) वह विरोध जो वास्तविक या तात्पर्य सम्बन्धी न हो, बल्कि केवल शब्दों में जान पड़ता हो। केवल शब्द-गत विरोध।

शब्दवेध [संज्ञा पु.] (सं) बिना देखे हुए केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारना।

शब्दवेधी [संज्ञा पु.](सं.) १-केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारने वाला व्यक्ति। २-अर्जुन। ३-दशरथ।

शब्दशक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उस शब्द से कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।

शब्दशासन [संज्ञा पु.](सं.) व्याकरण के नियम

शब्दशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण।

शब्दशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द का शुद्ध प्रयोग।

शब्दश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) वह शब्द जो दो या अधिक अर्थों में व्यवहृत किया जाय।

शब्दसंग्रह [संज्ञा पु] (सं.) शब्दकोष।

शब्दसंभव, शब्दसम्भव [संज्ञा पु.](सं.) वायु।

शब्दसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण का वह अङ्ग जिसमें शब्दों के व्युत्पत्ति, भेद, रूपांतर आदि का विवेचन होता है।

शब्दसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द का पूर्ण व्यवहार।

शब्दसौंदर्य, शब्दसौन्दर्य [संज्ञा पु.](सं.) शब्दों के उच्चारण की सुगमता।

शब्दसौष्ठव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी लेख अथवा शैली में प्रयुक्त किये हुये शब्दों की सुन्दरता या कोमलता।

शब्दस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द का स्मरण।

शब्दहीन [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दों का वह प्रयोग जिसे आचार्यों ने प्रयुक्त न किया हो।

शब्दाकर [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दों का उत्पत्ति स्थान।

शब्दाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) ध्वनिपूर्वक उच्चरित 'ओम्' शब्द।

शब्दाक्षेप [वि.] (सं.) जोर से या चिल्लाकर कहा जाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) जबानी सन्देशा या पैगाम।

शब्दाडंबर, शब्दाडम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) बड़े-बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की कमी न हो।

शब्दाढ्य [संज्ञा पु.] (सं.) काँसा (धातु)।

शब्दतिग [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शब्दातीत [संज्ञा पु] (सं.) वह जो शब्दों से परे हो, ईश्वर।

शब्दाधिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) कान।

शब्दाध्याहार [संज्ञा पु.] (सं.) वाक्य जो पूरा करने के लिये अपनी ओर से शब्द जोड़ना।

शब्दानुकरण [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द की नकल।

शब्दानुशासन [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण।

शब्दायमान [वि.] (सं.) शब्द करता हुआ।

शब्दार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) किसी शब्द का अर्थ

शब्दालंकार, शब्दालङ्कार [संज्ञा पु.](सं.) काव्य में वह अलंकार जिसमें प्रयुक्त होने वाले शब्दों से चमत्कार उत्पन्न हो, उनके स्थान पर उनके पर्याय रखने से वह चमत्कार न रहे।

शब्दावली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विषय अथवा कार्य-सम्बन्धी शब्द या सूची। २-किसी वाक्य कथन अथवा रचना में प्रयुक्त शब्दों का प्रकार या क्रम। वर्डिंग।

शब्दित [वि.] (सं.) १-जिसमें शब्द उत्पन्न होता हो। २-बोलता हुआ।

शब्देंद्रिय, शब्देन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान।

शम [संज्ञा पु.] (सं.) १-शांति। २-मोक्ष। ३-अंतःकरण और इन्द्रियाँ वश में रखना। ४-क्षमा। ५-निवृत्ति। ६-हाथ। ७-शांतरस का स्थायीभाव। ८-तिरस्कार। ९-आचार।

शमक [वि.] (सं.) शांतिकारक।

शमठ [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का तूत। २-गंडीर नामक शाक।

शमता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शम का भाव या धर्म

शमत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शमता।

शमथ [संज्ञा पु.] (सं.) शान्ति। मंत्री।

शमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ के निमित्त पशुओं का बलिदान। २-यम। ३-मृग विशेष। ४-हिंसा। ५-शांति। ६-दोष, विकार, उपद्रव आदि दबाना। ७-अन्न। ८-मटर। ९-तिरस्कार। १०-आघात। चोट। ११-दमन। १२-वह औषधि जो वातादि दोषों को दूर करे १३-वैद्यक में एक प्रकार का धूम्रपान। १४-एक प्रकार का वस्तिकर्म। १५-रात। रात्रि।

शमनवस्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का वस्ति-कर्म।

शमनस्वसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

शमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

शमनीय [वि.] (सं.) शमन करने योग्य।

शमनीषद् [संज्ञा पु] (सं.) निशाचर। राक्षस।

शमल [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्ठा। गू। २-पाप।

शमशम [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

शमशेर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शेर की पूँछ या नख जैसा हथियार। २-तलवार।

शमातक, शमान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

शमा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मोमबत्ती।

शमादान [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह आधार जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।

शमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिंबीधान्य। २-शमी। [संज्ञा पु.] १-यज्ञ। २-उशीनर के एक पुत्र का नाम।

शमिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष।

शमिज [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कुलथी।

शमिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लाल कुन्थी। २-शिंबीधान्य।

शमित [वि.] (सं.) १-शांत किया हुआ। २-जिसका शमन किया गया हो।

शमिता [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो यज्ञ में पशु का बलिदान करता हो।

शमिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) लजालू नामक-लता।

शमिपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शमिपत्र'।

शमिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शमीवृक्ष। २-सोमराजी।

शमिरोह [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

शमिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली की जाति का एक पौधा।

शमिष्ठ [वि.] (सं) बिलकुल शांत।

शमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पंजाब, राजस्थान, गुजरात आदि स्थानों पर पाया जाने वाला एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। सफेद कीकर। छोंकर। [वि.] (हिं.) शांत।

शमीक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि का नाम।

शमीगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-अग्नि।

शमीधान, शमीधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिंबीधान्य।

शमीपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लजालू नामक लता

शमीर [संज्ञा पु.] (सं.) शमीवृक्ष।

शमीरकंद, शमीरकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) वाराहीकन्द।

शम्याक [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

शयंड, शयण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जनपद। २-इसके निवासी।

शयंडक, शयण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) गिरगिट।

शय [संज्ञा पु.] (सं) १-शय्या। २-साँप। ३-निद्रा। ४-पण। ५-हाथ। [संज्ञा स्त्री.] (अ.)

१-वस्तु। पदार्थ। २-भूत। प्रेत। ३-देखो 'शाह'

शयत [संज्ञा पु] (सं) निद्रालु व्यक्ति।

शयतान [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'शैतान'।

शयतानी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'शैतानी'।

शयथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँप। २-सूअर। शूकर। ३-मछली। मीन। ४-गाढ़ी नींद। ५-मौत। ६-यम।

शयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-निद्रा लेने की क्रिया। सोना। २-शय्या। बिछौना। ३-मैथुन। सम्भोग।

शयन-आरती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता की वह आरती जो रात्रि के समय की जाती है।

शयनकक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का कमरा या घर।

शयनगृह, शयनप्रकोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का घर। शयनागार।

शयनबोधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

शयन मंदिर, शयन-मन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का स्थान। शयनगृह।

शयन-स्थान [संज्ञा पु.] (सं.) सोने की जगह।

शयनवास [संज्ञा पु.] (सं.) सोने के समय पहनने के कपड़े।

शयनागार, शयनालय [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का स्थान या घर। शयनगृह।

शयनीय [वि.] (सं.) सोने के योग्य।

शयनैकादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी जो विष्णु भगवान के सोने का दिन माना जाता है।

शयांड, शयाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश और उसके निवासी।

शयांडक, शयाण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) गिरगिट

शयान [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सोया हो।

शयानक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प। २-गिरगिट

शयालु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे नींद आई हो। २-अजगर। ३-कुत्ता। ४-शृगाल। गीदड़।

शयित [संज्ञा पु.] (सं.) १-अजगर। २-लिसोड़ा [वि.] १-सोया हुआ। निद्रित। २-शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।

शयितव्य [वि.] (सं.) सोने लायक।

शयिता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सोया हुआ हो

शयु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अजगर। २-वैदिक-कालीन ऋषि का नाम।

शयुन [संज्ञा पु.] (सं.) साँप।

शय्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिस्तर। बिछौना। २-पलङ्ग। खाट।

शय्यागत [वि.] (सं.) बिछौने पर सोने वाला।

शय्याच्छादन [संज्ञा पु.] (सं.) वह चादर जो पलङ्ग पर बिछती है।

शय्यादान [संज्ञा पु.] (सं.) मृतक के उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, ओढ़ना-बिछौना, बरतन आदि दान देना।

शय्यापालक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो राजाओं के शयनागार की व्यवस्था करता हो।

शय्यामूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिछौने पर पेशाब कर देने का रोग जो बालकों को होता है।

शय्यावेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) शयनागार।

शरंड, शरण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षी। विहंग २-धूर्त्त। चालाक। ३-एक प्रकार का आभूषण। ४-छिपकली।

शर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाण। तीर। २-सरकंडा। ३-सरपत। ४-दूध की मलाई। ५-दही की मलाई। ६-सामुद्रिक के अनुसार शरीर में का एक चिह्न। ७-खस। उशीर। ८-भाले का फल। ९-चिता। १०-हिंसा। ११-पाँच की संख्या। १२-पुराणानुसार एक असुर का नाम

शरअ [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-कुरानशरीफ में बतलाया हुआ विधान। २-दस्तूर। परिपाटी। ३-मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरई [वि.] (अ.) शरअ या मुसलमानी धर्म के अनुसार। यौ०-*शरईपाजामा*-टखनों से ऊंचा पाजामा। *शरई दाढ़ी*-खूबलम्बी दाढ़ी।

शरकांड, शरकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) सरपत। सरकंडा।

शरकार [संज्ञा पु.] (सं.) तीर बनाने वाला कारीगर।

शरखंगक, शरखङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) उलूक-तृण।

शरगुल्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरपत। २-एक यूथपति बन्दर (रामायण)।

शरघात [संज्ञा पु.] (सं.) तीर की चोट।

शरच्चंद्र, शरच्चन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) शरदृऋतु की चाँदनी।

शरच्छखी [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

शरज [संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन। नवनीत।

शरजन्म [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

शरज्योत्सना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरदऋतु के चाँद की चाँदनी।

शरट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुसुंभ नीमक साग। २-गिरगिट। ३-करंज।

शरटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लज्जालुक।

शरण [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रक्षा। आश्रय। पनाह। २-बचाव की जगह। ३-घर। मकान

शरण-गृह [संज्ञा पु.] (सं.) भूमि के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ हवाई हमले से बचने के लिये छिपकर रहते हैं।

शरणद [वि.] (सं.) शरण देने वाला।

शरणदान [संज्ञा पु.] (सं.) शरण में आए हुये को अभयदान देना।

शरणस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शरणगृह'।

शरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधप्रसारिणी लता।

शरणागत, शरणापन्न [वि.] (सं.) शरण मे आया हुआ।

शरणार्थी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो कहीं शरण या आश्रय पाना चाहता हो। २-वह जो अपने निवास-स्थान से बलात् हटा दिया गया हो तथा दूसरी जगह शरण पाकर रहना चाहता हो। रिफ्यूजी।

शरणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रास्ता। मार्ग। २-पृथ्वी। ३-हिंसा।

शरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंधप्रसारिणी लता। २-पथ। मार्ग। ३-जयन्ती। [वि.] शरण देने वाली।

शरण्य [वि.] (सं.) शरण में आये हुए की रक्षा करने वाला।

शरण्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरण्य का भाव।

शरण्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

शरण्यु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-वायु। हवा। [संज्ञा स्त्री.] सूर्य की स्त्री।

शरत [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शर्त'।

शरतिया [क्रि. वि.] देखो 'शर्तिया'।

शरत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक ऋतु जो आश्विन और कार्त्तिक में होती है। २-वर्ष। साल।

शरत्कामी [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

शरत्काल [संज्ञा पु.] शरदृऋतु।

शरत्पद्म [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेतपद्म।

शरत्पर्व [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विनमास की पूर्णिमा

शरत्समय [संज्ञा पु.] (सं.) शरत्काल।

शरदंड, शरदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाबुक। २-सरकंडा।

शरदंडा, शरदण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्राचीन नदी का नाम। २-एक प्राचीन देश का नाम।

शरदंत, शरदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) (शरदृऋतु का अन्त) हेमन्तऋतु।

शरद [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शरत्'।

शरदई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरदई'।

शरदपूर्णिमा [संज्ञा पु.] (सं.) कुआर के महीने की पूनो।

शरदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शरदृऋतु। २-वर्ष। साल।

शरदिज [वि.] (सं.) शरत् में उत्पन्न होने वाला।

शरदुद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) वृत्तपत्र नामक साग

शरदेंदु, शरदेन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) शरच्चन्द्र।

शरदूचंद्र, शरदचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) शरत्ऋतु का चन्द्रमा।

शरद्वत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरत्ऋतु। २-एक प्राचीन ऋषि।

शरद्वसु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शरद्वीप [संज्ञा पु.](सं.) पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

शरधान [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश और उसके निवासी।

शरधि [संज्ञा पु.] (सं.) तूणीर। तरकश।

शरपंख [संज्ञा पु.] (सं.) हिगुआ। घमास।

शरपट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अस्त्र।

शरपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

शरपुंख, शरपुङ्ख [संज्ञा पु.](सं.) १-सरफोंका। २-बाण या तीर में लगा हुआ पंख। ३-सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यन्त्र।

शरबत [संज्ञा पु.](अ.) १-कोई मधुर पेय पदार्थ। २-चीनी आदि में पकाकर तैयार किया हुआ किसी औषध का रस। ३-वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड घुली हो। ४-मुसलमानों में एक सगाई की रसम।

शरबतपिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह धन जो वर और कन्यापक्ष के लोग एक दूसरे को देते हैं।

शरबती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का पीला रंग जिसमें साधारण लाली भी होती है। २-उक रंग का एक प्रकार का नगीना। ३-मीठा नामक नीबू चकोतरा। ४-एक प्रकार का कपड़ा। ५-एक प्रकार का मीठा फालसा। [वि.] रसीला। रसदार।

शरबती-नीबू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चकोतरा। २-जंबीरीनीबू। ३-गलगल।

शरवार [संज्ञा पु.] (हिं.) अगिया-घास।

शरबीज [संज्ञा पु](सं.) १-चारुक। २-भद्रमुंज

शरभंग, शरभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक महर्षि का नाम।

शरभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक यूथपति बन्दर जो राम की सेना में था। २-टिड्डी। ३-विष्णु। ४-हाथी का बच्चा। ५-ऊँट। ६-एक प्रकार का पक्षी। ७-एक कल्पित मृग जो आठ पैरों वाला बताया जाता है। कहते हैं कि यह सिंह से भी बलवान होता है। ८-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है। ९-दोहे का एक भेद जिसमें बीस गुरु और आठ लघु मात्राएँ होती हैं। १०-सिंह। ११-दनुज के पुत्र का नाम। १२-महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शरभता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरभ का भाव या धर्म।

शरभत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शरभता।

शरभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुष्क अवयवों वाली विवाह के अयोग्य कन्या। २-लकड़ी का एक प्रकार का यंत्र।

शरभू [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

शरभेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक शिवलिंग का नाम

शरम [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लज्जा। हया। २-लिहाज। संकोच। प्रतिष्ठा। इज्जत।

शरम रखना-लाज या इज्जत रखना। *शरम रहना*-प्रतिष्ठा या आबरू रहनी। *मारे शरम के गड़ जाना या पानी-पानी होना*-बहुत लज्जित होना।

शरमल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मैना। २-धनुर्धारी

शरमसार [वि.] (फा.) १-जिसे शरम हो। २-लज्जित।

शरमसारी [संज्ञा पु.] (फा.) लज्जा।

शरमहजूरी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) मुँह देखे की लाज। [संज्ञा पु.] (फा.) मुँह देखे की लाज करने वाला।

शरमाऊ [वि.] (हिं.) शरमीला। लज्जालु।

शरमाना [क्रि. अ.] (हिं.) लज्जित या शर्मिन्दा होना। [क्रि. स.] लज्जित या शर्मिन्दा करना।

शरमालू [वि.] (हिं.) देखो 'शरमाऊ'।

शरमाशरमी [क्रि. वि.] (हिं.) लाज के कारण।

शरमिंदगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) लाज। झेंप।

शरमिंदगी उठाना-ऐसा कार्य करना जिसमें लज्जित होना पड़े।

शरमिंदा [वि.] (फा.) लज्जित।

शरमीला [वि.](हिं.) [स्त्री. शरमीली] जिसे जल्दी लाज आती हो। लजीला। लज्जालु।

शरमुख [संज्ञा पु.] (सं.) बाण का अग्रभाग।

शरयू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सरयू'।

शरल [वि] (सं.) देखो 'सरल'।

शरलक [संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी।

शरलोमा [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शरवत् [वि.] (सं.) बाण जैसा।

शरवनोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

शरवाणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तीर का फल। बाण का अग्रभाग। [संज्ञा पु.](सं.) १-तीर चलाने वाला सिपाही। २-पैदल सिपाही।

शरवारण [संज्ञा पु.] (सं.) ढाल।

शरवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाणों की वर्षा।

शरव्य [संज्ञा पु.](सं) वह जिसे तीर का निशाना बनाया जाय। लक्ष्य।

शरशय्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) बाणों की बनी शय्या।

शरस [संज्ञा पु.] (सं) बाण। तीर।

शरस्तंब, शरस्तम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन स्थान जिसका उल्लेख महाभारत में आता है। २-एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम।

शरह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-किसी बात को स्पष्ट करने के लिए कही हुई बात। २-टीका। भाष्य ३-दर। भाव। ४-देखो 'शरह-लगान'।

शरह-बंदी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'दर-बंदी'।

शरह-लगान [संज्ञा स्त्री] (अ., हिं.) भू-कर की दर। बिघौती।

शरा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शरह'।

शराकत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) साझा।

शराकतनामा [संज्ञा पु.](अ., फा.) वह पत्र जिस पर शराकत या साझे की शर्तें लिखी रहती हैं।

शराघात [संज्ञा पु.](सं.) शर या बाण का आघात

शराटि, शराडि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टिटिहरी।

शराटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-टिटिहरी। २-लजालू। लाजवन्ती।

शराध+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'श्राद्ध'।

शराप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शाप'।

शरापना* [क्रि. अ.] (हिं.) शाप देना।

शराफ [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'सराफ'।

शराफत [संज्ञा स्त्री.](अ.) सज्जनता। भलमनसी

शराफा [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'सराफा'।

शराफी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सराफी'।

शराब [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-मदिरा। सुरा। २-शरबत (हकीम)।

शराबखाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) शराब बनने और बिकने का स्थान।

शराबखोरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मदिरापान। २-मदिरा पीने की लत।

शराबख्वार [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा पीने वाला।

शराबी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो मदिरापान करता हो। शराब पीने वाला।

शराबोर [वि.] (फा.) बिल्कुल भीगा हुआ। लथपथ। तरबतर।

शरारत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दुष्टता। पाजीपन। नटखटी।

शरारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक यूथपति बन्दर जो राम की सेना में था। २-देखो 'शरारिमुख'।

शरारिमुख [संज्ञा पु.](सं.) टिटहरी नामक चिड़िया।

शरारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टिटहरी।

शरारोप [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष। कमान।

शराली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) टिटहरी।

शराव [संज्ञा पु.](सं.) १-मिट्टी का पुरवा या कुल्हड़ २-चौंसठ तोले या एक सेर की तोल (वैद्यक)

शरावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाणगङ्गा नामक नदी। २-एक प्राचीन नगर जो लव की राजधानी था।

शरावर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढाल। २-कवच। वर्म

शरावरण [संज्ञा पु.] (सं.) ढाल जिससे तीर का वार रोका जाता है।

शरावाप [संज्ञा पु.] (सं) धनुष। कमान।

शराविका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-ऊपर से ऊँची और नीचे से गहरी फुन्सी। २-एक प्रकार का फोड़।

शरासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष। २-धृतराष्ट्र

के एक पुत्र का नाम ।

शरास्य [संज्ञा पु.] (सं.) धनुष ।

शरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का प्रासाद ।

शरिष्ठ* [वि] (हिं.) देखो 'श्रेष्ठ' ।

शरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोथा नामक तृण ।

शरीअत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।

शरीक [वि] (अ.) १-किसी कार्य में साथ देने वाला । २-मिला हुआ । शामिल । सम्मिलित [संज्ञा पु.] १-साथी तथा सहायक । २-साझी हिस्सेदार । ३-सहायक । ४-रिश्तेदार । सम्बन्धी ।

शरीकत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) साझा । शराकत ।

शरीफ [संज्ञा पु.] (अं.) १-भला आदमी । सज्जन । २-कुलीन । ३-मक्के के प्रधान की एक उपाधि ।

शरीफा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मझोले आकार का एक प्रसिद्ध वृक्ष । २-इस वृक्ष का फल । श्रीफल ।

शरीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राणियों के सब अङ्गों का समूह । देह । तन । बदन । काया । २-किसी वस्तु का सारा विस्तार अथवा ढांचा जिसमें उसके सब अङ्ग सम्मिलत हों । फ्रेम । [वि.] (अं.) दुष्ट । पाजी । नटखट ।

शरीरकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर (शरीर को बनाने वाला) ।

शरीरज [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोग । बीमारी । २-कामदेव । ३-पुत्र । बेटा ।

शरीरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर का भाव या धर्म ।

शरीरत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु । मौत ।

शरीरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शरीरता ।

शरीरपतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धीरे-धीरे शरीर क्षीण होना । २-मृत्यु । मौत ।

शरीरपाक [संज्ञा पु.] (सं.) धीरे-धीरे शरीर क्षीण होना ।

शरीरपात [संज्ञा पु.] (सं.) मौत । मृत्यु ।

शरीरप्रभ [संज्ञा पु] (सं.) शरीर से उत्पन्न ।

शरीरबंधक, शरीरबन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रतिभू । जामिन ।

शरीरभाज् [वि.] (सं.) शरीर धारण करने वाला ।

शरीरभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो शरीर धारण किये हो । २-विष्णु । ३-जीवात्मा ।

शरीररक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) अङ्गरक्षक ।

शरीरवान् [वि.] (सं.) देहधारी ।

शरीरवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह सौंदर्यवर्धक पदार्थ जो शरीर के लिए आवश्यक हो ।

शरीरविज्ञान [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'शरीरशास्त्र'

शरीरवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर का पालनपोषण । जीविका ।

शरीरशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें शरीर के अङ्गों की बनावट तथा उनके कार्यों का विवेचन होता है ।

शरीरशुश्रूषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देह की सेवा ।

शरीरशोधन [संज्ञा पु.] (सं.) कुपित मल, पित्त और कफ को हटाकर अधो मार्ग से निकालने वाली औषध ।

शरीरशोषण [संज्ञा पु.] (सं.) देह का क्षय ।

शरीर-संस्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर की शोभा और मार्जन । २-गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के वेदविहित सोलह संस्कार ।

शरीरस्थ [वि.] (सं.) १-शरीर में रहने वाला । २-जीवित ।

शरीरांत, शरीरान्त [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु । मौत देहान्त ।

शरीरार्पण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य में अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना ।

शरीरावरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खाल । चमड़ा । २-ढाल । वर्म । ३-शरीर को ढकने वाली कोई वस्तु ।

शरीरास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) कंकाल । पिंजर ।

शरीरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शरीरधारी । प्राणी । २-जीव । आत्मा । ३-प्राणी । जीवधारी । [वि.] (सं.) शरीर वाला ।

शरीरिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़ ।

शरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्रोध । गुस्सा । २-वज्र ३-वाण । तीर । ४-हथियार । आयुध । ५-हिंसा । हत्या । ६-हिंसक । ७-एक गन्धर्व का नाम । [वि.] (सं.) १-बहुत पतला । २-जिसका अगला भाग अत्यधिक छोटा या नुकीला हो ।

शज [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय ।

शरेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) आम । आम्र ।

शर्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंकड़ । २-बालू का कण । ३-एक प्रकार का प्राणी जो जल में उत्पन्न होता है । ४-एक देश का नाम । ५-इस देश का निवासी । ६-देखो 'शर्करा' ।

शर्करक [संज्ञा पु.] (सं.) मीठा नीबू ।

शर्करकंद, शर्करकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शकरकन्द' ।

शर्करजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) चीनी ।

शर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चीनी । शक्कर । खाँड़ । २-बालू । ३-पथरी रोग । ४-कंकड़ ५-ठीकरा । ६-पुराणानुसार एक देश का नाम ७-एक प्रकार का रोग ।

शर्कराक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शर्कराचल [संज्ञा पु.] (सं.) दान के निमित्त बनाया हुआ चीनी का पहाड़ (पुराण) ।

शर्कराधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दान के उद्देश्य से बनाई खाँड़ की गौ (पुराण) ।

शर्कराप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार एक नरक का नाम ।

शर्कराप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ शरीर की शर्करा भी निकल जाती है ।

शर्करार्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें त्रिदोष के कारण मांस, शिरा और स्नायु में गाँठ उत्पन्न होती हैं ।

शर्करावत् [संज्ञा पु.] (सं.) शरबत ।

शर्करासप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैशाखशुक्ला सप्तमी ।

शर्करासव, शर्करासुरभि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मद्य या शराब जो चीनी से बनता है ।

शर्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चौदह अक्षरों वाली वृत्ति का वर्णवृत्त जिसके कुल १६३८४ भेद होते हैं । २-नदी । ३-मेखला । ४-कलम । लेखनी ।

शर्करीय [वि.] (सं.) शर्करा-सम्बन्धी । चीनी या खाँड़ का ।

शर्करोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरबत । २-एक प्रकार का शरबत जिसमें इलायची, लौंग, कपूर और गोल मिर्च मिली हो ।

शर्कोटि [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प । साँप ।

शर्ट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कमीज ।

शर्णचापिलि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

शर्त्त [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-किसी विषय के ठीक होने के सम्बन्ध में दृढ़तापूर्वक कुछ कहने का वह प्रकार जिसमें सत्य अथवा असत्य सिद्ध होने पर हार-जीत और कुछ लेन-देन भी हो । दाँव । बाजी । २-किसी कार्य के पूरा होने के लिये बन्धन या नियंत्रण के रूप में होने वाली आवश्यक बात या काम । कन्डिशन ।

शर्त्तिया [क्रि. वि.] (अं.) शर्त्त बदकर । निश्चय पूर्वक । [वि.] (अं.) बिलकुल ठीक । निश्चित

शर्त्ती [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'शर्त्तिया' ।

शर्दि [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन नगर का नाम ।

शर्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेज । २-पदना ।

शर्द्धन [संज्ञा पु.] (सं.) अधोवायु । पाद ।

शर्बत [संज्ञा पु.] देखो 'शरबत' ।

शर्बती [संज्ञा पु.] 'शरबती' ।

शर्म [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शरम' ।

शर्म्म [संज्ञा पु.] १-सुख । आनन्द । २-वह जो

सुखी हो। ३-घर। गृह।

शर्म्मद [वि.] (सं.) [स्त्री. शर्म्मदा] आनन्द-दायक। [संज्ञा पु.] विष्णु।

शर्म्मन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शर्म्मा'।

शर्म्मर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वस्त्र।

शर्म्मरा, शर्म्मरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

शर्म्मा [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मणों की एक उपाधि।

शर्म्माख्य [संज्ञा पु.] (सं.) मसूर।

शर्म्माना [क्रि. अ.] (अ.) देखो 'शरमाना'।

शर्मिंदगी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'शरमिंदगी'।

शर्मिंदा [वि.] (अ.) देखो 'शरमिंदा'।

शर्मिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या का नाम। यह देवयानी की सखी थी।

शर्मीला [वि.] (अ.) देखो 'शरमीला'।

शर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वाण। २-योद्धा। ३-उँगली।

शर्यण [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककाल में एक जनपद का नाम।

शर्यणावत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन सरोवर का नाम जो शर्यण नामक जनपद के पास था और तीर्थ माना जाता था।

शर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात्रि। रात।

शर्यात [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य। आदमी।

शर्याति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक राजा का नाम। २-भागवत के अनुसार वैवस्वत मनु के एक पुत्र नाम।

शर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु।

शर्वक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शर्वपत्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पार्वती। २-लक्ष्मी

शर्वपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास।

शर्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्धकार। अँधेरा। २-कामदेव। ३-संध्या।

शर्वराक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

शर्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात। निशा। २-साँझ। संध्या। ३-हल्दी। ४-स्त्री। औरत। [संज्ञा पु.] बृहस्पति के साठ सम्वत्सरों में से एक जिसमें अकाल का भय लिखा है।

शर्वरीक [वि.] (सं.) हानि करने वाला।

शर्वरीकर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शर्वरीदीपक [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शर्वरीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-शिव

शर्वरीश [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शर्वाचल [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास।

शर्वाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शर्वारीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंसक। २-खल। ३-पीड़ा। ४-अग्नि।

शलंकट, शलङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलंकु, शलङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलंग, शलङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकपाल। २-नमक विशेष।

शलंदा [संज्ञा पु.] (देश.) छिरेंटा। छिरहटा।

शल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंस के एक मल्ल का नाम। २-ब्रह्मा। ३-ऊँट। ४-एक प्रकार का वृक्ष। ५-शल्यराज। ६-भाला। ७-भृङ्गी। ८-साही का काँटा। ९-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। १०-कंस के एक आमात्य का नाम। ११-वासुकी वंश का एक नाग।

शलक [संज्ञा पु.](सं.)१-मकड़ी। २-ताड़ का पेड़ ३-साही का काँटा।

शलकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम (महाभारत)।

शलगम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शलजम'।

शलजम [संज्ञा पु.] (फा.) गाजर की तरह का एक प्रसिद्ध कन्द। शलगम।

शलभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरभ। टिड्डी। २-पतंगा। फतिंगा। ३-छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें ४० गुरु और ७२ लघु, कुल ११२ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं।

शलभता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शलभ का भाव या धर्म।

शलभत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शलभता।

शलल [संज्ञा पु.] (सं.) साही का काँटा।

शलवार [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सलवार'।

शलाकधूर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़ीमार। बहेलिया।

शलाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सलाई। सींख सलाख। २-वाण। तीर। ३-निर्वाचन आदि में छोटी-छोटी रङ्गीन गोलियों अथवा कागजों की सहायता से गुप्त रूप से दिया जाने वाला मत। ४-इस प्रकार मत देने की प्रणाली। बैलट। ५-अस्थि। हड्डी। ६-घाव की गहराई नापने की सलाई। ७-मैनफल। ८-सलईवृक्ष। ९-जूआ खेलने का पासा। १०-बच। बचा। ११-नली की हड्डी। १२-मैनापक्षी। १३-एक प्राचीन नगरी का नाम (रामायण)।

शलाका-पद्धति [संज्ञा पु.] (सं.) निर्वाचन में वह पद्धति या प्रणाली जिसमें रङ्गीन गोलियों अथवा कागजों की सहायता से गुप्त रूप से मत दिया जाता है। बैलट।

शलाका-पुरुष [संज्ञा पु.](सं.) १-व्यवस्थापिका-सभा में मत गिनने वाला। गणना-पुरुष। टैल्लर। २-बौद्धों का एक दैव-पुरुष।

शलाख [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सलाख'।

शलाट [संज्ञा पु.] (सं.) दो हजार पल का एक परिमाण या तौल। शकट।

शलाटु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कच्चा फल। २-बेल बिल्व।

शलातुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

शलाथल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलाभोलि [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

शलालु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य।

शली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साही नामक जंतु।

शलीता [संज्ञा पु.] देखो 'सलीता'।

शलूका [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की कुरती जो आधी बाँह की होती है।

शल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-टुकड़ा। खंड। २-छिलका। वल्कल। ३-मछली का छिलका।

शल्कली [संज्ञा पु.] (सं.) मछली।

शल्प [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाढ़। २-भरमार। ३-धड़ाका। कड़ाका।

शल्पदा, शल्पपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेदा नामक अष्टवर्गीय औषध।

शल्मलि, शल्मली [संज्ञा पु.] (सं.) सेमल।

शल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शस्त्रचिकित्सा। २-हड्डी अस्थि। ३-शलाका। ४-गाँस नामक अस्त्र। ५-गाली। दुर्वचन। ६-मद्रदेश के राजा का नाम जो माद्री का भाई था और नकुल तथा सहदेव का मामा था। ७-एक प्रकार का वाण ८-छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें १५ गुरु तथा १२२ लघु, कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ९-मैनफल। १०-सफेद खैर। ११-शिलिंद नामक मछली। १२-लोध १३-बेल। १४-साही नामक जन्तु। १५-पाप १६-वे वस्तुएँ जिनसे शरीर में किसी प्रकार की पीड़ा या रोग आदि उत्पन्न होती है।

शल्यकंठ, शल्यकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) साही नामक जन्तु।

शल्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-साही नामक जन्तु। २-मैनफल। ३-सफेद खैर। ४-लाल खैर। ५-एक प्रकार की मछली। ६-लोध नामक वृक्ष। ७-बिल्व।

शल्यकर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण के अनुसार एक जनपद।

शल्यकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्र चिकित्सा करने वाला।

शल्यकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शल्यकंठ।

शल्यक्रिया [संज्ञा स्त्री.](सं.) चीरफाड़ का इलाज शस्त्र चिकित्सा।

शल्यजनाड़ी-व्रण [संज्ञा पु.](सं.) नाड़ी में होने वाला एक प्रकार का व्रण या घाव।

शल्यजमूत्रकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मूत्रकृच्छ्र रोग।

शल्यतंत्र, शल्यतन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) आठ प्रकार

के यंत्रों में से एक (सुश्रुत)।

शल्यदा, शल्यपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेदा-नामक औषध।

शल्यलोम [संज्ञा पु] (सं.) साही नामक जंतु का काँटा।

शल्यशालक [संज्ञा पु.] (सं.) फोड़ों आदि को चीरने-फाड़ने का काम।

शल्यशास्त्र [संज्ञा पु] (सं.) वह शस्त्र जिसमें शरीर में के फोड़े का चीरफाड़ के द्वारा चिकित्सा करने का विधान होता है।

शल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेदा नामक औषध २-नागवल्ली-लता। ३-विकङ्कतवृत्त।

शल्यारि [संज्ञा पु.] (सं.) (शल्य को मारने वाले) युधिष्ठिर।

शल्योद्धार [संज्ञा पु.](सं.) १-शस्त्रचिकित्सा द्वारा काँटा या अन्य कोई नुकीली वस्तु जो शरीर में घुस गई हो, निकालने की क्रिया। २-नया मकान बनवाने के समय जमीन साफ करवाना

शल्ल [संज्ञा पु.](सं.) १-त्वचा। चमड़ा। २-वृत्त की छाल। ३-मेंढ़क। [वि.] (अं.) दुर्वलता या थकावट आदि के कारण बिलकुल सुस्त या सुन्न।

शल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सलई। २-साही नामक जन्तु। ३-चमड़ा।

शल्लकी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सलई वृत्त। २-साही नामक जन्तु।

शल्लकीद्रव, शल्लकीरस [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस। सिल्हक।

शल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाव। नौका।

शल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शल्लकी।

शल्व [संज्ञा पु.] देखो 'शाल्व'।

शव [संज्ञा पु.] (सं.) प्राणरहित देह या शरीर। मुर्दा। लाश।

शवकाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

शवक्रुत [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

शवदाह [संज्ञा पु.] (सं.) मनुष्य के मृतशरीर को जलाने की क्रिया।

शवधान [संज्ञा पु.] (सं.) शरधान नामक प्रदेश जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

शवपरीक्षा [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी मृत व्यक्ति के शव या लाश की वह जाँच जो उसकी मृत्यु के कारण जानने के लिए होती है। पोस्टमॉरटेम।

शवभस्म [संज्ञा पु.] (सं.) चिता की भस्म या राख

शवमंदिर, शवमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान। मरघट।

शवयान [संज्ञा पु.] (सं.) शव ले जाने की अरथी

शवर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शवरी] १-एक प्राचीन जङ्गली जाति। २-शिव। ३-जल।

शवरक्षा [संज्ञा पु.] (सं.) मृत शरीर पर ऐसे मसाले लगाना जिसके प्रभाव से वे हजारों वर्ष तक बिगड़ने न पावें। एम्बलमिंग।

शवरथ [संज्ञा पु.] (सं.) शवयान। अरथी।

शवरलोध [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद लोध।

शवरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शवर जाति की स्त्री। २-शवर जाति की श्रमणा नामक तपस्विनी जिसने राम की अभ्यर्थना की थी।

शवल [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रक। २-जल। पानी [वि.] चितकबरा। चीतल।

शवला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चितकबरी गाय।

शवलित [वि.] (सं.) मिश्रित। मिला हुआ।

शवली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शवला।

शववाह [संज्ञा पु.] (सं.) शव या मुर्दा ढोनेवाला।

शवशयन [संज्ञा पु.] (सं.) श्मशान। मरघट।

शवसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) शव के ऊपर बैठकर तंत्रोक्त मन्त्र को सिद्ध करना।

शवसान [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक। यात्री।

शवाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) शवदाह की अग्नि।

शवाच्छादन [संज्ञा पु.] (सं.) कफन।

शवान्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा अन्न जो मनुष्य के खाने लायक न रहा गया हो। खराब अन्न २-मृत शरीर का मांस।

शवाश]वि.] (सं) मुर्दा खाने वाला।

शव्य [संज्ञा पु.](सं.) शव को अन्त्येष्टि क्रिया के लिये ले जाने के समय किया जाने वाला कृत्य

शव्वाल [संज्ञा पु.] (सं.) मुसलमानों का दसवाँ महीना।

शश [संज्ञा पु.](सं.) १-खरगोश। २-चन्द्रमा का कलंक। ३-लोध्र। ४-कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक। ५-बोल नामक गंधद्रव्य।

शशक [संज्ञा पु.](सं.) १-खरगोश। खरहा। २-देखो 'शश'।

शशगानी [संज्ञा पु.] (फा.) चाँदी का एक प्रकार का सिक्का। यह फीरोजशाह के राज्य में प्रचलित था।

शशघातक, शशघाती [संज्ञा पु.] (सं.) बाज या श्येन नामक पत्ती।

शशधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

शशविंदु, शशबिन्दु [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्णु। २-चित्ररथ के एक पुत्र का नाम।

शशभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

शशमाही [वि] (फा.) छ:माही। अर्द्धवार्षिक।

शशमुंड, शशमुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस।

शशमौलि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शशयान [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम। (महाभारत)।

शशलक्षण, शशलांछन, शशलाञ्छन [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

शशशिंबिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवती। डोडी।

शशभृंग, शशशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) (खरगोश के सींग होना) असम्भव और अनहोनी बा

शशस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

शशांक, शशाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

शशांकज, शशाङ्कज [संज्ञा पु.] (सं.) (चन्द्रमा का पुत्र) बुध।

शशांकमुकुट, शशाङ्कमुकुट शशांकशेखर, शशाङ्कशेखर [संज्ञा पु.](सं.) शिव। महादेव।

शशांकसुत, शशाङ्कसुत [संज्ञा पु.] (सं.) बुध।

शशांकार्द्ध, शशाङ्कार्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

शशांकोपल, शशाङ्कोपल [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकांतमणि।

शशांडुलि, शशाण्डुलि [संज्ञा स्त्री.](सं.) कड़ुई ककड़ी।

शशा [संज्ञा पु.] देखो 'शश'।

शशाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाज। श्येनपक्षी। २-इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम।

शशादन [संज्ञा पु.] (सं.) बाज। श्येनपक्षी।

शशि [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा। २-छप्पय छंद का एक भेद जिसमें १७ गुरु और ११८ लघु, कुल १३५ वर्ण अथवा १५२ मात्राएँ होती हैं। ३- रगण के दूसरे भेद (IISS) की संज्ञा। ४-मोती ५-छः की संख्या।

शशिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जनपद का नाम। २-इस जनपद के निवासी।

शशिकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा की रश्मि या किरण।

शशिकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रमा की कला। २-मणि गुण नामक एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है

शशिकांत, शशिकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रकांतमणि। २-कुमुद।

शशिकुल [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रवंश।

शशिकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

शशिखंड, शशिखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-चन्द्रकला। ३-एक विद्याधर का नाम।

शशिखंडिक, शशिखण्डिक [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक देश का नाम।

शशिगुह्याँ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुलेठी।

शशिज, शशितनय [संज्ञा पु.] (सं.) बुध।

शशितिथि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूर्णमासी।

शशिदैव [संज्ञा पु.] (सं.) मृगशिरा नक्षत्र।

शशिधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-

का नाम (प्राचीन)।

शशिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम। (पुराण)।

शशिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) परवल। पटोल।

शशिपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बुधग्रह।

शशिपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कमल। पद्म।

शशिपोषक [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्लपक्ष।

शशिप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमुद। २-मुक्ता। मोती। [वि.] चन्द्रमा के समान प्रभा वाला।

शशिप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योत्स्ना। चाँदनी

शशिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमुद। २-मुक्ता। मोती।

शशिप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्ताईस नक्षत्र जो चन्द्रमा की पत्नियाँ मानी जाती हैं।

शशिभागा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुचकुन्द राजा की कन्या का नाम।

शशिभाल, शशिभूषण, शशिभृत [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

शशिमंडल, शशिमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा का मण्डल या घेरा।

शशिमणि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकांतमणि।

शशिमुख [वि.] (सं.) [स्त्री. शशी] शशि या चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाला।

शशिमौलि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

शशिरस [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत।

शशिरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रकला।

शशिलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चन्द्रकला। २-सोमराजी। ३-गिलोय।

शशिवदन [वि.] (सं.) देखो 'शशिमुख'।

शशिवदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक यगण होता है। [वि.] [स्त्री. प्र.] शशि या चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली।

शशिवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुनर्नवा। गदहपूरना।

शशिविमल [वि.] (सं.) चन्द्रमा के समान स्वच्छ

शशिशाला [संज्ञा स्त्री.] (फा., सं.) शीशमहल।

शशिशिखामणि, शशिशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव महादेव।

शशिशोषक [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णपक्ष।

शशिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) बुधग्रह।

शशिहीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रकांतमणि।

शशी [संज्ञा पु.] देखो 'शशि'।

शशांकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकिरण।

शशांश [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-कार्त्तिकेय।

शश्वत [वि.] (सं.) देखो 'शाश्वत'।

शष्कुल [संज्ञा पु.] (सं.) करंज।

शष्कुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कान का छेद। २-पूरी पक्वान्न आदि। ३-सौरी नामक मछली

शष्प [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नई घास। २-नीली दूब।

शसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ के लिये पशुओं की हत्या करना। २-वह स्थान जहाँ पशुओं का बलिदान होता हो।

शसा* [संज्ञा पु.] (हिं.) खरगोश। खरहा।

शसि*, शसी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शशि'।

शस्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। देह। २-मंगल कल्याण। [वि.] १-उत्तम। श्रेष्ठ। २-प्रशस्त ३-मरा हुआ। निहत। ४-कल्याणयुक्त। मङ्गलकारक। [संज्ञा पु.] (फा.) १-तीर चलाने के समय अँगूठे में पहनने का हड्डी या धातों का छल्ला। २-लक्ष्य। निशाना। ३-मछली पकड़ने का काँटा। ४-जमीन की पैमाइश करने वालों का एक यन्त्र जिससे जमीन की सीध देखी जाती है। *शस्त बाँधना या लगाना*-निशाना साधना।

शस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़े का दस्ताना। अंगुलि-त्राण।

शस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रशंसा। तारीफ।

शस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वे साधन जिनसे युद्ध के समय शत्रु पर आक्रमण और आत्मरक्षा की जाती है। *आर्म्स*। २-वे उपकरण जिनसे शत्रु पर आक्रमण किया जाता है। हथियार। *वेपन*। ३-कार्य सिद्धि करने का उपाय, ढंग या साधन। ४-वह उपकरण जिससे चिकित्सक फोड़े आदि की चीरफाड़ करता है।

शस्त्रक [संज्ञा पु.] (सं.) लोहा।

शस्त्रकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) फोड़ों आदि को चीरने-फाड़ने की क्रिया।

शस्त्रकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का केतु जो पूर्व में उदय होता है।

शास्त्रकोशतरु [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा मैनफल।

शस्त्रक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फोड़ों आदि की चीरफाड़।

शस्त्रगृह [संज्ञा पु.] (सं.) हथियारघर। शस्त्रशाला।

शस्त्रग्राही [वि.] (सं.) शस्त्र या हथियार धारण करने वाला।

शस्त्रचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) मंडूर।

शस्त्रजीवी [संज्ञा पु.] (हिं.) योद्धा। सैनिक।

शस्त्रदेवता [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध का अधिष्ठाता देवता।

शस्त्रधर [संज्ञा पु.] (सं.) योद्धा। सैनिक।

शस्त्रधारी [वि.] (सं.) [स्त्री. शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करने वाला। हथियारबन्द। [संज्ञा पु.] (सं.) १-योद्धा। सैनिक। २-सिलहपोश नामक जन्तु। ३-एक प्राचीन देश का नाम।

शस्त्रपाणि [वि.] (सं.) शस्त्र से सुसज्जित।

शस्त्रपूत [वि.] (सं.) शस्त्र से पवित्र किया हुआ। युद्ध में शस्त्र से मारे जाने के कारण पापों से छूटा हुआ।

शस्त्रप्रहार [संज्ञा पु.] (सं.) हथियार साफ करने वाला।

शस्त्रबंध, शस्त्रबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्रद्वारा बन्धन।

शस्त्रभृत [वि.] (सं.) शस्त्रधारी।

शस्त्रवत् [वि.] (सं.) शस्त्र के समान।

शस्त्रवार्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम।

शस्त्रविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हथियार चलाने की विद्या। २-देखो 'धनुर्वेद'।

शस्त्रवृत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) योद्धा। सैनिक। सिपाही।

शस्त्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शस्त्रागार। हथियारघर।

शस्त्रशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र जिसमें हथियार चलाने आदि का विवेचन हो। २-धनुर्वेद।

शस्त्रशिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथियार चलाने की विद्या।

शस्त्रहत [वि.] (सं.) हथियार से मारा हुआ।

शस्त्रहत-चतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्विन कृष्णा-चतुर्दशी तथा कार्तिक कृष्णा-चतुर्दशी इस दिन उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी हत्या शास्त्रों द्वारा होती है।

शस्त्रहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) सिपाही। योद्धा।

शस्त्रांगा, शस्त्राङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमलोनी साग। चांगेरी।

शस्त्राख्य [संज्ञा पु.] (सं.) वृहत्संहिता के अनुसार एक केतु।

शस्त्रागार [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्र रखने का स्थान। शस्त्रशाला। सिहलखाना।

शस्त्राभ्यास [संज्ञा पु.] (सं.) हथियार चलाने का अभ्यास।

शस्त्रायस [संज्ञा पु.] (सं.) वह लोहा जिससे शस्त्र बनाये जाते हैं।

शस्त्रायुध [वि.] (सं.) शस्त्रधारी।

शस्त्रास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह हथियार जो फेंककर चलाये जाँय। २-शस्त्र और अस्त्र जिनसे युद्ध में आक्रमण एवं आत्मरक्षा की जाती है। *आर्म्स-एन्ड-वेपन्स*।

शस्त्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाकू।

शस्त्री [वि.] (हिं.) १-शस्त्र चलाने वाला। २-शस्त्र रखने वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छुरी। चाकू।

शस्त्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) सेना अथवा राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्त्रोपजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) पेशेवर सिपाही।

शस्त्रोद्यम [संज्ञा पु.] (सं.) प्रहार करने को हथियार उठाना।

शस्त्रोपकरण [संज्ञा पु.] (सं.) हथियार आदि लड़ाई का सामान।

शस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न। अनाज। २-फसल। ३-नई घास। ४-किसी वृक्ष का फल या उसकी पैदावार। ५-सद्गुण।

शस्यक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न।

शस्यघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोरपुष्पी।

शस्यध्वंसी [संज्ञा पु.] (सं.) तूर्ण वृक्ष। [वि.] जिससे अन्न का नाश हो।

शस्यसंवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शालवृक्ष। २-अश्वकर्णवृक्ष।

शस्यारु [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी शमी।

शहंशाह [संज्ञा पु.](फा.) महाराजाधिराज। बादशाहों का बादशाह।

शहंशाही [वि.] (फा.) शाहों का सा। राजसी। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शाहंशाह का भाव या धर्म। २-शाहंशाह का पद। ३-लेनदेन का खरापन। (बाजारू भाषा)।

शह [वि.] (फा.) बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठतर। (यौगिक शब्दों में) जैसे शहसवार, शहजोर। [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसी जगह पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किश्त। २-भड़काने अथवा बढ़ावा देने की क्रिया या भाव।

शहचाल [संज्ञा स्त्री.](फा., हिं.) शतरंज में बादशाह की वह चाल जो और मोहरों के मारे जाने पर चली जाती है।

शहजादा [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. शहजादी] १-राजकुमार। २-युवराज।

शहजोर [वि.] (फा.) बली। बलवान।

शहजोरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बल। ताकत। २-जबरदस्ती।

शहत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शहद'।

शहतीर [संज्ञा पु.] (फा.) लकड़ी का बड़ा और लम्बा लट्ठा जो प्रायः इमारत में काम आता है

शहतूत [संज्ञा पु.] (फा.) मझोले आकार का एक पेड़ जिसकी फलियां मीठी होती हैं। तूत।

शहद [संज्ञा पु.] (अ.) मधुमक्खियों द्वारा फूलों से संग्रह करके छत्तों में संचित शीरे की तरह का प्रसिद्ध मीठा पदार्थ। मधु। *शहद लगाकर चाटना*-किसी बेकार वस्तु को यों ही लिये रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना (व्यंग्य)। *शहद लगाकर अलग होना*-झगड़े की जड़ पैदा करके अलग हो जाना।

शहनगी [संज्ञा पु.](अ.) १-शस्यरक्षक का कार्य २-चौकीदारी।

शहना [संज्ञा पु.] (अ.) १-शासक। २-कोतवाल। ३-कर संग्रह करने वाला। ४-खेत का रखवाला।

शहनाई [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अलगोजे के आकार का मुँह से फूंक कर बजाया जाने वाला बाजा। नफीरी। २-देखो 'रोशनचौकी'

शहबाला [संज्ञा पु.] (फा.) वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी या घोड़े पर बैठकर जाता है।

शहबुलबुल [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की बुलबुल।

शहमात [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शतरंज के खेल में बादशाह को शह या किश्त देखकर मात करना।

शहर [संज्ञा पु.] (फा.) नगर। पुर।

शहरपनाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शहर या नगर के चारों ओर बनी हुई पक्की दीवार। प्राचीर परकोटा।

शहरी [वि.] (फा.) शहर का। शहर-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (फा.) नगर-निवासी। नागरिक।

शहवत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कामवासना।

शहवती [वि.] (फा.) कामुक।

शहादत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-गवाही। २-सबूत प्रमाण।

शहाना [वि.] (फा.) [स्त्री. शहानी] १-शाही। राजसी। २-उत्तम। बहुत बढ़िया। [संज्ञा पु.] (फा.) विवाह के समय वर का पहनने का जोड़ा। [संज्ञा पु.] (देश) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

शहानाकान्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कान्हड़ा राग।

शहाब [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का लाल गहरा रंग।

शहाबा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'अगियाबैताल'।

शहाबी [वि.] (हिं.) गहरे लाल रंग का।

शहिजदा* [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री शहिजदी] देखो 'शहजादा'।

शहिद [संज्ञा पु.] (अ.) किसी शुभ प्रयत्न में अपने प्राण देने वाला व्यक्ति।

शांकर, शाङ्कर [वि.] (सं.) १-शंकर-सम्बन्धी। २-शंकराचार्य का। [संज्ञा पु.] १-साँड़। शंकराचार्य का मतानुयायी। ३-आर्द्रानक्षत्र। ४-एक छन्द का नाम। ५-सोमलता का एक भेद

शांकरि, शाङ्करि [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। २-कार्त्तिकेय। ३-अग्नि। ४-एक मुनि का नाम ५-शमीवृक्ष।

शांकरी, शाङ्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिवसूत्र।

शांकित, शाङ्कित [संज्ञा पु.] (सं.) चोरक नामक गन्धद्रव्य।

शांकुची, शाङ्कुची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शाकुची मछली।

शांख, शाङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) शंख की ध्वनि [वि.] (सं.) शंख-सम्बन्धी। शंख का बना।

शांखायन, शाङ्खायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गृह्य और श्रौत सूत्रकार ऋषि का नाम।

शांखारि, शाङ्खारि [संज्ञा पु] (सं) शंख बेचने वाली जाति।

शांखिक, शाङ्खिक [वि.] (सं.) [स्त्री शांखिकी] १-शंख-सम्बन्धी। २-शंख का बना हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शंख बनाने तथा बेचने वाला। २-शंख बजाने वाला व्यक्ति।

शांख्य, शाङ्ख्य [वि.] (सं) १-शंख-सम्बन्धी २-शंख का बना।

शांगुष्ठा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सांगुष्ठा'।

शांची, शाञ्ची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शाक।

शांडदूर्वा, शाण्डदूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की दूब।

शांडाकी, शाण्डाकी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार का पशु।

शांडिक, शाण्डिक [संज्ञा पु.] (सं.) साँडा नामक जन्तु।

शांडिली, शाण्डिली [संज्ञा स्त्री.] (सं) महाभारत के अनुसार एक ब्राह्मणी जो अग्नि की माता मानकर पूजी जाती थी।

शांडिल्य, शाण्डिल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीफल। बेल। २-अग्नि। ३-एक स्मृति के रचयिता। मुनि। ४-शांडिल्य कुलोत्पन्न पुरुष। ५-सरयूपारी ब्राह्मणों के तीन प्रधान गोत्रों में से एक।

शांत, शान्त [वि] (सं.) १-मन। जिसमें क्षोभ, चिंता, दुःख उद्वेग आदि न हों। राग आदि से रहित तथा स्वस्थ। २-हो-हल्ले आदि से रहित। ३-वेग, गति, क्रिया आदि से रहित। निश्चल। ४-जिसके दुष्ट विकारों का अन्त हो गया हो। ५-मृत। मरा हुआ। ६-(वह समाज अथवा देश) जिसमें उपद्रव, आंदोलन झगड़े-बखेड़े आदि न हों। सभी विघ्न-बाधाओं से रहित। ७-धीर और सौम्य। ८-मौन। चुप। ९-अप्रभावित। १०-बुझा हुआ [illegible] होगई हो। ११-जिसकी घबराहट दूर होगई हो। १२-उत्साह या तत्परतारहित। [संज्ञा पु.] १-काव्य के नौ रसों में से एक जिसका आलंबन संसार की असारता का ज्ञान या परमात्मा के स्वरूप का चिंतन होता है। २-विरक्त व्यक्ति। ३-मनु का एक पुत्र।

शांतता, शान्तता [संज्ञा स्त्री] (सं) १-शांति। २-नीरवता। खामोशी। ३-विराग। ४-[illegible]चल या उपद्रव आदि का अभाव।

शांतनव, शान्तनव [संज्ञा पु.](सं) [स्त्री. शांतनवी] १-भीष्म। २-मेधातिथि का पुत्र।

शांतनु, शान्तनु [संज्ञा पु.] (सं.) १-[illegible] के इक्कीसवें चन्द्रवंशी राजा का नाम [illegible] भीष्मपितामह के पिता थे। २-[illegible]

शांता, शान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-[illegible] शृङ्ग की पत्नी का नाम। २-रेणुका।

दूब । ४-शमी । ५-आँवला । ६-संगीत में एक श्रुति ।

शांति, शान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन की वह अवस्था जिसमें वह क्षोभ, चिन्ता, दुःख आदि से रहित रहता है । चित्त की स्वस्थता । २-वेग, गति, क्रिया आदि का अभाव । निश्चलता । ३-चीख-पुकार या हो-हल्ले का अभाव । ४-स्तब्धता । सन्नाटा । ५-युद्ध, मारकाट आदि का अभाव । *पीस* (उक्त समस्त अर्थों के लिए) । ६-बाधा अमंगल आदि दूर करने वाला धार्मिक उपचार या कृत्य । ७-दुर्गा । ८-विराग । ९-एक गोपी का नाम । १०-गंभीरता । सौम्यता ।

शांतिक [वि.](सं.) शांति-सम्बन्धी । शांति का । [संज्ञा पु.] शांतिकर्म ।

शांतिकर, शान्तिकर [वि.] (सं.) शान्ति करने वाला ।

शांतिकर्म, शान्तिकर्म [संज्ञा पु.](सं.) पाप, प्रेत-बाधा, दुष्टग्रह आदि द्वारा होने वाले अमंगल के निवारण का उपचार ।

शांतिगृह, शान्तिगृह [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ के अन्त में पाप एवं अशुभ आदि की शांति के निमित्त स्नान करने का स्नानागार ।

शान्तिद, शान्तिद [वि.] (सं.) [स्त्री. शांतिदा] शांति देने वाला । [संज्ञा पु.] विष्णु ।

शांतिदाता, शान्तिदाता [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. शांतिदात्री] शांति देने वाला ।

शांतिदायक, शान्तिदायक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री शान्तिदायिका] वह जो शांति दे ।

शांतिदायी, शान्तिदायी [वि.] (सं.) [स्त्री. शांतिदायिनी] शांति देने वाला ।

शांतिनाथ, शान्तिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैन-मतानुसार एक अर्हत् या तीर्थङ्कर का नाम ।

शांतिपर्व, शान्तिपर्व [संज्ञा पु.](सं.) महाभारत का बारहवाँ पर्व ।

शांतिपात्र, शान्तिपात्र [संज्ञा पु.](सं.) वह पात्र जिसमें ग्रह, पाप आदि की शांति के निमित्त जल रखा जाय ।

शांतिप्रद, शान्तिप्रद [वि.] (सं) शांतिदायी ।

शांतिभंग, शान्तिभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) कोई ऐसा उपद्रव अथवा अनुचित कार्य जिससे जन-साधारण के सुख और शांतिपूर्वक रहने से बाधा होती है । ब्रीच ऑफ पीस ।

शांतिमय, शान्तिमय [वि.] (सं.) [स्त्री. शांतिमयी] शांति से पूर्ण या भरा हुआ ।

शांतिवाचन, शान्तिवाचन [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रह, प्रेतबाधा, पाप आदि से होने वाले अमंगल के निवारणार्थ मन्त्र पाठ ।

शांतिवाद, शान्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धान्त जो युद्ध और संघर्ष का विरोध करता है तथा संसार के लिए शान्ति चाहता है । पैसिफिज्म ।

शांतिवादी, शान्तिवादी [वि.] (सं.) शांतिवाद सिद्धांत को मानने और शांति के लिए प्रयत्न करने वाला ।

शांतिसद्म, शान्तिसद्म [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'शान्तिगृह' ।

शांत्वति, शान्त्वति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारङ्गी । बभनेटी ।

शांब, शाम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक राजा का नाम । २-देखो 'सांब' ।

शांवर, शाम्बर [वि.] (सं.) १-शंवर दैत्य से सम्बन्ध रखने वाला । २-साँभर मृग का । [संज्ञा पु.] (सं.) लोध्रवृक्ष ।

शांवरशिल्प, शाम्बरशिल्प [संज्ञा पु.](सं.) इन्द्रजाल । २-जादू ।

शांवरिक, शाम्बरिक [संज्ञा पु.](सं.) मायावी । जादूगर ।

शांबरी, शाम्बरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माया । इन्द्रजाल । । २-जादूगरनी । मायाविनी । [संज्ञा पु.](सं.) १-चन्दन विशेष । २-लोध्र । ३-मूषाकानी नामक लता ।

शांबविक, शाम्बविक [संज्ञा पु.] (सं.) शङ्ख का व्यापार करने वाला ।

शांबुक, शाम्बुक [संज्ञा पु.] (सं.) घोंघा ।

शांबूक, शाम्बूक [संज्ञा पु.] (सं.) घोंघा ।

शांभर, शाम्भर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजस्थान की एक झील जिसमें नमक होता है । साँभर-झील । [संज्ञा पु.] (सं.) सांभर नमक ।

शांभव, शाम्भव [वि] (सं.) शंभू या शिव-सम्बन्धी । [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदार । २-कपूर । ३-शिवमल्लिका नामक पौधा । ४-गुग्गुल । ५-एक विष । ६-शैव । ७-शिव पुत्र

शांभवी, शाम्भवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा । २-नीली दूब ।

शाइस्तगी[संज्ञा स्त्री.](फा.) १-शिष्टता । सभ्यता २-भलमनसी ।

शाइस्ता [वि.](फा.) १-शिष्ट । सभ्य । २-विनम्र । विनीत । ३-शिक्षित ।

शाकंट, शाकण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ नामक साग ।

शाकंभरी, शाकम्भरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.)१-दुर्गा । २-साँभर नमक । नगर ।

शाकंभरीय, शाकम्भरीय [वि.] (सं.) साँभरझील से उत्पन्न । [संज्ञा पु.] (सं.) साँभर नमक ।

शाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भाजी । तरकारी । पत्ती फूल, फल आदि जो पकाकर खाये जायँ । साग २-सगोन नामक वृक्ष । ३-भोजन । ४-सिरस-वृक्ष । ५-सातद्वीपों में से एक । (पुराण) ६-शक-राजा शालिवाहन का सम्वत् । ७-शक्ति । बल । [वि.] (सं) १-शकजाति-सम्बन्धी । २-शक राजा का ।

शाक [वि.] (अ.) १-भारी । दूभर । कठिन । २-दुःखदायी । कड़ा (काम) ।

शाककलंबक, शाककलम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्याज । २-लहसुन ।

शाकचुक्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नोनिया या अमलोनी का साग । २-इमली ।

शाकट [वि.] (सं) शकट या गाड़ी-सम्बन्धी । गाड़ी का । [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाड़ी या हल में जुतने वाला बैल । २-गाड़ी का बोझ । ३-लिसोड़ा । ४-धववृक्ष । ५-खेत ।

शाकटपोतिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) पोई या पोय का पौधा ।

शाकटायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शकट का पुत्र । २-एक बहुत प्राचीनी वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि और यास्क ने किया है ।

शाकटिक [वि.](सं.)[स्त्री. शाकटिका] १-छकड़ा-सम्बन्धी । २-छकड़े में बैठकर जाने वाला । ३-छकड़ा हांकने वाला ।

शाकटीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाड़ी का बोझा । २-प्राचीन समय की एक तौल जो बीस तुला अथवा दो हजार पल के बराबर होती थी ।

शाकद्रुम [संज्ञा पु.](सं.) १-वरुण नामक वृक्ष । २-सागौन का वृक्ष ।

शाकद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुराणानुसार सात द्वीपों से एक । २-ईरान तथा तुर्किस्तान के मध्य का वह प्रदेश जिसमें पहले शकजाति के लोग रहते थे ।

शाकद्वीपीय [वि.] (सं.) शाकद्वीप में रहने वाला [संज्ञा पु.] ब्राह्मणों का एक भेद ।

शाकपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सहिजनवृक्ष ।

शाकबिल्व, शाकबिल्वक [संज्ञा पु.](सं.) बैंगन भंटा ।

शाकभक्ष्य [वि.] (सं.) शाकाहारी ।

शाकयोग्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिया ।

शाकराज [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ ।

शाकरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शाकरी' ।

शाकल [वि.] (सं.) (स्त्री. शाकली) १-शाकल नामक द्रव्य-सम्बन्धी । शाकल द्रव्य में रङ्गा हुआ । २-खण्ड या अंश-सम्बन्धी । [संज्ञा पु.] (सं) १-खंड । टुकड़ा । २-एक प्रकार का साँप । ३-ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता ४-लकड़ी का तावीज । ५-मद्र देश के एक नगर का नाम । ६-वाहिक (पंजाब) देश का एक गाँव । ७-हवन सामग्री ।

शाकल-शाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋग्वेद की वह संहिता जो शाकल्यऋषि के गोत्रजों में चली ।

शाकली [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली ।

शाकल्य [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद की एक शाखा

के प्रचारक ऋषि का नाम।

शाकत्वर [संज्ञा पु.] (सं.) जीवशाक।

शाकवरा [संज्ञा पु.] (सं.) जीवन्तीलता।

शाकवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लताकरंज।

शाकवालेय [संज्ञा पु.] (सं.) बभनेटी। भारङ्गी।

शाकविंदक, शाकविन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पेड़।

शाकवीर [संज्ञा पु.](सं.)१-बथुआ। २-गदहपूरना ३-जीवशाक।

शाकशाल [संज्ञा पु.] (सं.) बकायन।

शाकश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) बथुआ।

शाकश्रेष्ठा [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवन्ती। २-डोडी शाक। ३-भंटा। बैंगन। ४-पेठा। ५-तरबूज।

शाकांग, शाकाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) काली मिर्च

शाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी। हड़।

शाकाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) सागौन का पेड़।

शाकान्न [संज्ञा पु.] (सं.) साग मिला हुआ भात

शाकाम्ल [संज्ञा पु.](सं.) १-इमली। २-महादा। वृक्षाम्ल।

शाकाम्ल-भेद [संज्ञा पु.] (सं.) चुक। चुक्र।

शाकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शकजाति के लोगों की भाषा या प्राकृत का एक भेद।

शाकाष्टका, शाकाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फाल्गुन कृष्णपक्ष की अष्टमी।

शाकाहार [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न या शाक, फल-फूल आदि का भोजन। मांसाहार का उलटा

शाकाहारी [वि.] (सं.) (स्त्री. शाकाारिणी) सागह भाजी या अन्न खाने वाला।

शाकिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-वह जमीन जिसमें साग बोया जाय। २-डाइन। चुड़ैल।

शाकिर [वि.] (अं.) १-कृतज्ञ। २-सन्तोषी।

शाकी [वि.] (सं.) १-शिकायत करने वाला। २-नालिश करने वाला। ३-चुगलखोर।

शाकुंतलेय, शाकुन्तलेय [संज्ञा पु.] (सं.) (शकुन्तला का पुत्र) भरत।

शाकुंतिक, शाकुन्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) चिड़ीमार।

शाकुन [वि.](सं.) १-पक्षी-सम्बन्धी। २-सगुनवाला। [संज्ञा पु.] १-बहेलिया। २-शकुन। सगुन।

शाकुनि [संज्ञा पु.] (सं.) बहेलिया।

शाकुनी [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछुआ। २-प्रेत विशेष। ३-सगुन विचारने वाला।

शाकुनेय [वि.] (सं.) पक्षी-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] १-बकासुर। २-एक प्रकार का छोटा उल्लू। ३-एक मुनि का नाम।

शाकुलिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मछली पकड़ने वाला। मछुआ। २-मछलियों का समूह।

शाकेश्वर [संज्ञा पु] (सं.) वह राजा जिसके नाम पर संवत् चले।

शाकोल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की लता।

शाक्कर [संज्ञा पु] (सं.) बैल।

शाक्त [वि.] (सं.) शक्ति-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) शक्ति का उपासक या पूजक। तन्त्र-पद्धति से शक्ति की पूजा करने वाला।

शाक्तागम [संज्ञा पु.] (सं.) तन्त्रशास्त्र।

शाक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शक्ति का उपासक २-भालाधारी।

शाक्तीक [संज्ञा पु.] (सं.) भालाधारी। [वि.] (सं.) शक्ति या भाला-सम्बन्धी।

शाक्तेय, शाक्तय [संज्ञा पु.] (सं.) शक्ति का उपासक।

शाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नैपाल की तराई में रहती थी और जिसमें गौतमबुद्ध का जन्म हुआ था।

शाक्यमुनि, शाक्यसिंह [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध की एक उपाधि।

शाक्र [संज्ञा पु.] (सं.) ज्येष्ठानक्षत्र।

शाक्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-इन्द्राणी।

शाक्रीय [वि.] (सं.) शक्र-सम्बन्धी।

शाक्वर [वि.] (सं.) शक्तिशाली। बलवान। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल। २-इन्द्र। ३-इन्द्र का वज्र। ४-एक प्राचीन रीति का संस्कार।

शाख [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय। २-भाग। ३-करंज।

शाख़ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-टहनी। डाली। २-सींग। ३-लगा हुआ टुकड़ा। खण्ड। फांक। ४-नदी आदि में से निकली हुई छोटी धारा। *शाख लगाना*--१ कलम या टहनी लगाना। २-सिंगी लगाना। ३-पर बढ़ाना। सम्मान करना। *शाखलगना*-इतराना। *शाख निकलना*-दोष देना। *शाख निकलना*-ऐब या दोष निकलना।

शाख़दार [वि.] (फा.) १-जिसमें शाख या टहनियां हों। २-सींगवाला।

शाखांग शाखाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर का अवयव या अंग।

शाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृक्षों आदि के धड़ या तने से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी २-किसी मूल पदार्थ से इसी रूप में अथवा इसी प्रकार निकले हुए अङ्ग। ३-किसी मूल-पदार्थ के वे अङ्ग जो स्वतन्त्र विभाग के रूप में हों अथवा हो गये हों। ४-किसी संस्था का वह अङ्ग जो दूर रहकर भी उसके अधीन तथा उसके अनुसार कार्य करता हो। ब्रान्च। ५-वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रम भेद।

शाखाकंट, शाखाकण्ट [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर। स्नुही वृक्ष।

शाखाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) शाखा का अगला भाग, अंगुली।

शाखा-चंक्रमण, शाखा-चङ्क्रमण[संज्ञा पु.](सं.) १-एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद जाना २-एक विषय अधूरा छोड़ कर दूसरा विषय हाथ में लेना। ३-किसी विषय का पूर्ण अध्ययन न करके थोड़ा यह थोड़ा वह पढ़ना।

शाखाचन्द्र-न्याय, शाखाचन्द्र-न्याय[संज्ञा पु] (सं.) एक न्याय अथवा कहावत जो ऐसी बात के विषय में कही जाती है जो केवल देखने में जान पड़ती है, पर वास्तव में नहीं होती।

शाखादंड, शाखादण्ड [संज्ञा पु.] देखो 'शाखारंड'।

शाखांद [संज्ञा पु.](सं.) वृक्षों की टहनियाँ आदि खाने वाले पशु। जैसे—गाय, बकरी, हाथी आदि।

शाखानगर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर का प्रांत भाग।

शाखापित्त [संज्ञा पु.] (सं.) रोग विशेष जिसमें हाथ और पैर में जलन और सूजन होती है।

शाखापुर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी नगर के आस-पास फैली हुई बस्ती। उपनगर।

शाखाप्रकृति [संज्ञा पु.] (सं.) अपने राज्य के पड़ोसी आठ प्रकार के राजा, जिनका विचार कर कि किस राजा को युद्ध में रखना चाहिए।

शाखामृग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दर। २-गिलहरी।

शाखाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) जलबेंत।

शाखाम्ला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

शाखारंड, शाखारण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शाखादंड।

शाखाल [संज्ञा पु.] (सं.) जलबेंत।

शाखावात [संज्ञा पु.](सं.) हाथ-पैर मैंहोने वाला बात रोग।

शाखाशिफा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह डाल जो नीचे की ओर बढ़कर जड़ पकड़ ले तथा एक पृथक वृक्ष के रूप में हो जाय।

शाखिमूल [संज्ञा पु.] (सं.) रँधिवृक्ष।

शाखी [वि.](सं.) शाखा वाला। [संज्ञा पु] १-वृक्ष। २-वेद। ३-वेद की किसी शाखा का अनुयायी। ४-पीलू का पेड़। ५-तुर्किस्तान का निवासी।

शाखोच्चार [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के अवसर पर होने वाला वंशावली का बखान।

शाखोट [संज्ञा पु.] (सं.) सिहोर का पेड़। पीठवृक्ष।

शागिर्द [संज्ञा पु.] (फा.) शिष्य। चेला। *शागिर्द करना*-किसी को कुछ सिखाने का भार अपने ऊपर लेना। चेला बनाना।

शागिर्दपेशा [संज्ञा पु.](फा.) १-कर्मचारी। २-मातहत। ३-सेवक। ४-बड़ी कोठी के पास

के नौकरों के घर।

शागिर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-शिष्यता। २-सेवा। टहल।

शाचि [संज्ञा पु.] (सं.) भूसी निकला हुआ जौ।

शाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपड़े का टुकड़ा। २-धोती। ३-एक प्रकार की कुरती। ४-ढीला-ढाला पहनावा।

शाटक [संज्ञा पु.] (सं.) वस्त्र। पट।

शाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साड़ी। धोती। २-कचूर।

शाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साड़ी। धोती।

शाट्यायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शाट्यायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

शाठ्य [संज्ञा पु.](सं.) १-शठता। दुष्टता। २-कपट। छल।

शाड्वल [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शाद्वल'।

शाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हथियारों की धार तेज करने का पत्थर। सन। २-कसौटी। ३-एक तौल जो चार माशे की होती है। ४-सन का कपड़ा। भँगरा। [वि.] १-सन (पौधे) संबंधी। २-सन का बना।

शाणवास [संज्ञा पु] (सं.) १-सन का बना वस्त्र पहनने वाला। २-एक अर्हत् का नाम।

शाणि [संज्ञा पु.] (सं.) पटुआ।

शाणित [वि.] (सं.) १-सान पर धार तेज़ किया हुआ। २-कसौटी पर कसकर देखा हुआ।

शाणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सन के रेशे का बना कपड़ा। २-चीथड़ा। ३-यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी के पहनने का छोटा कपड़ा। ४-सान। ५-कसौटी। ६-छोटा खेमा या पर्दा।

शात [वि.] (सं.) १-सान पर तेज किया हुआ। २-क्षीण। दुबला-पतला। [संज्ञा पु.] धतूरा।

शातकुंभ, शातकुम्भ [संज्ञा पु.](सं.) १-कचनार का वृक्ष। २-धतूरा। ३-कनेर। ४-स्वर्ण। सोना।

शातकौंभ, शातकौम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

शातक्रतव [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

शातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सान पर रखकर धार तेज करना। २-पेड़ आदि कटवाना। ३-नष्ट कराना। ४-काटना। ५-सतह बराबर करना रंदना।

शातपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रिका। चाँदी।

शातभीरु [संज्ञा पु.] (सं.) भद्रवल्ली।

शातला [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सातला'।

शातवाहन [संज्ञा पु.](सं.) राजा शालिवाहन का एक नाम।

शातातप [संज्ञा पु.](सं.) एक स्मृतिकार का नाम

शातिर [वि.] (अ.) १-चालाक। काइयाँ। २-निपुण। दक्ष। [संज्ञा पु.] १-शतरंज का खिलाड़ी। २-दूत।

शातोदर [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. शातोदरी) १-वह जिसकी कमर पतली हो। २-क्षीण। पतला।

शात्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रुता। २-शत्रु। ३-शत्रुओं का समूह।

शाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरना। पड़ना। २-घास। दूब। ३-कीचड़। [वि.] (फ़ा.) १-खुश प्रसन्न। २-भरापूरा। परिपूर्ण।

शादमन [वि.] (फ़ा.) प्रसन्न।

शादमनी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) प्रसन्नता। खुशी।

शादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईंट।

शादाब [वि.] (फ़ा.) हराभरा। सरसब्ज।

शादियाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-खुशी का बाजा। २-वह धन जो विवाह के अवसर पर किसान जमींदार को देता है। ३-बधावा। बधाई।

शादी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-विवाह। २-आनन्दोत्सव।

शाद्वल [वि.] (सं.) हराभरा। [संज्ञा पु.] १-हरी घास। २-बैल। ३-मरु प्रदेश के बीच की वह छोटी हरियाली जहां कुछ हलकी बस्ती भी हो।

शाद्वलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का हरा कीड़ा।

शान [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-तड़क-भड़क। ठाटबाट २-शक्ति। करामात। ऐश्वर्य। *शान जाना*-मान भङ्ग होना। *शान घटाना*-इज्जत में कमी होना। *शानमारी जाना*-बड़प्पन में कमी होना। *शान में बट्टा लगना*-शान घटना। *किसी की शान में*-किसी बड़े के सम्बन्ध में। [संज्ञा पु.] (सं) शाण। सान।

शानदार [वि.](अ., फ़ा.) १-तड़कभड़क या ठाटबाट वाला। २-भव्य। विशाल। ३-वैभवपूर्ण। ४-ठसक वाला।

शानपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्दन घिसने का पत्थर। २-पारिपात्र नामक पर्वत।

शान-शौकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) तड़क-भड़क। ठाटबाट।

शाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-कङ्घा। कङ्घी। २-कंधा

शानी [संज्ञा स्त्री] (सं.) इन्द्रवारुणी।

शाप [संज्ञा पु.](सं.) १-वह शब्द या वाक्य जो किसी की अनिष्ट की कामना से कहा जाय। २-धिक्कार। भर्त्सना। ३-ऐसी शपथ जिसके न पालन करने का कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय।

शापग्रस्त [वि.] (सं.) जिसे शाप दिया गया हो। शापित।

शापज्वर [संज्ञा पु.](सं.) बड़ों के शाप के कारण आने वाला ज्वर।

शापटिक [संज्ञा पु.] (सं.) मोर।

शापना* [क्रि. स.] (हिं.) शाप देना।

शापामुक्त [वि.](सं.) जिसका शाप छूट गया हो

शापांबु, शापाम्बु [संज्ञा पु.](सं.) वह जल जिसे हाथ में लेकर शाप दिया जाय।

शापास्त्र [संज्ञा पु.](सं.) १-शाप रूपी अस्त्र। २-वह जिसके पास अस्त्रों के स्थान पर शाप ही हों।

शापित [वि.](सं.) जिसे किसी ने शाप दिया हो। शापग्रस्त।

शापोत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शाप देना।

शापोद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) शाप अथवा उसके प्रभाव से छुटकारा।

शाफरिक [संज्ञा पु.] (सं.) मछली पकड़ने वाला। मछुआ।

शाफेय [संज्ञा पु.] (सं.) यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

शाबर [वि.] (सं.) दुष्ट। पाजी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-बुराई। हानि। २-लोध्र-वृक्ष। ३-ताँबा। ४-अन्धकार। ५-एक प्रकार का चन्दन।

शाबरभाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) मीमांसा-सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या।

शाबरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जोंक

शाबरी [संज्ञा प.] (सं.) शबरों की भाषा जो प्राकृत का एक भेद है।

शाबस्त [संज्ञा पु.] (सं.) राजा युवनाश्व का एक पुत्र जिसके श्रावस्ती नगरी बसाई थी।

शाबस्ती [संज्ञा स्त्री.] देखो 'श्रावस्ती'।

शाबाश [अव्य.] (फ़ा.) एक प्रशंसासूचक शब्द। वाहवाह। धन्य हो।

शाबाशी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) किसी श्रम की प्रशंसा वाह-वाही। साधुवाद।

शाबास [अव्य.] (फ़ा.) देखो 'शाबाश'।

शाबासी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) देखो 'शाबाशी'।

शाब्द [वि] (सं.) [स्त्री. शाब्दी] १-शब्द-संबंधी २-शब्द विशेष पर निर्भर।
[संज्ञा पु.] (सं.) शब्दशास्त्री। वैयाकरण।

शाब्दबोध [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दों के प्रयोग के द्वारा अर्थ का ज्ञान।

शाब्दव्यंजन, शाब्दव्यञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह व्यंजना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर निर्भर होती है, अर्थात् यदि उसका पर्यायवाची शब्द व्यवहृत किया जाय तो वह न रह जाय।

शाब्दिक [वि.] (सं.) १-शब्द-सम्बन्धी। २-शब्दों में (कहा हुआ)। [संज्ञा पु.] वैयाकरण

शाब्दिकयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वह युद्ध या लड़ाई जिसमें केवल शब्दों के द्वारा ही एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाये जायें। जबानी लड़ाई।

शाब्दी [वि.](सं.) [स्त्री. प्र.] १-शब्द से सम्बन्ध रखने वाली। २-केवल शब्द विशेष निर्भर रहने वाली।

शाब्दी-व्यंजना, शाब्दी-व्यञ्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शाब्दव्यंजना'।

शाम [संज्ञा स्त्री.](फा.) सांझ। संध्या। ॐ[वि.] (हिं.) देखो 'श्याम'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्याम'। [वि.] (सं.) शम-सम्बन्धी। शम का। [संज्ञा पु.] (सं.) सामगान। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धातु या पीतल का छल्ला जो छड़ियों और दस्ते आदि में लगाया जाता है [संज्ञा पु.] (देश.) अरब के उत्तर का एक प्राचीन देश जिसे अब सीरिया कहते हैं।

शामकरण [संज्ञा पु.](हिं) श्याम या काले कान वाला घोड़ा।

शामत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-दुर्भाग्य। २-विपत्ति दुर्दशा। *शामत का घेरा या मारा*-जिसका दुर्भाग्य समीप आ गया हो। *शामत सवार होना या सिर पर खेलना*-दुर्दशा का समय निकट आना।

शामतज़दा [वि.] (अ., फा.) अभागा।

शामती [वि.] (अ.) जिसकी दुर्दशा होने को हो।

शामन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शमन। २-शांति। ३-मारना। हत्या करना।

शामनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दक्षिण दिशा। २-शांति। स्तब्धता। ३-अन्त। समाप्ति। ४-वध। हत्या।

शामा [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार का पौधा। [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'श्याम'।

शामित्र [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-यज्ञ में मांस पकाने के लिये प्रज्वलित की हुई अग्नि। २-ऐसी अग्नि प्रज्वलित करने का स्थान। ३-यज्ञ। ४-यज्ञपात्र। ५-यज्ञ के निमित्त पशु की वलि

शामियाना [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का बड़ा तम्बू या खेमा।

शामिल [वि.] (फा.) सम्मिलित।

शामिल-हाल [संज्ञा पु.] (अ.) साथी।

शामिलात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) साझा।

शामी [संज्ञा पु.] (शाम.) मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग जिसमें यहूदी, अरब, मिस्री आदि जातियाँ हैं। सेमेटिक। [संज्ञा स्त्री.] प्राचीन शाम देश की भाषा। सेमेटिक। [वि.] शाम-देश सम्बन्धी। [संज्ञा स्त्री.] (देश) देखो 'शाम'।

शामीकवाब [संज्ञा पु.] (हिं.) मांस मसाले के के साथ भूनने के बाद पीसकर गोलियों या टिकियों के रूप में बनाया हुआ कवाब।

शामील [संज्ञा पु.] (सं.) राख। भस्म।

शामीली [संज्ञा स्त्री.] (सं) माला।

शामुल्य [संज्ञा पु.] (सं) कोई ऊनी कपड़ा जो गले में पहना जाय।

शामूल [संज्ञा पु.] (सं.) ऊनी कपड़ा।

शामेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

शाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शम का भाव। २-बन्धुत्व। भाईचारा। ३-शांति।

शाम्यप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की बलि।

शायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाण। तीर। २-तलवार।

शायक [वि.] (अ.) १-शौकीन। २-इच्छुक। आकांक्षी।

शायद [अव्य.] (फा.) कदाचित्। सम्भव है।

शायर [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. शायरा] कवि।

शायरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-कविताएँ रचना या बनाना। २-काव्य। कविता।

शाया [वि.] (अ.) १-प्रकट। २-प्रकाशित। छपा-हुआ।

शायिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो शय्या के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो।

शायित [वि.] (सं.) [स्त्री. शायिता] १-सुलाया या लेटाया हुआ। २-गिरा हुआ। पतित।

शायिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शयन। सोना।

शायी [वि.] (हिं.) सोने वाला (यौगिक के अन्त में)।

शारंग, शारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सारंग'।

शारंगक, शारङ्गक [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का पक्षी।

शारंगधनुष, शारङ्गधनुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-कृष्ण।

शारंगपाणि, शारङ्गपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-राम।

शारंगपानि [संज्ञा पु.](हि.) देखो 'शारंगपाणि'।

शारंगभृत, शारङ्गभृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु २-कृष्ण।

शारंगवत, शारङ्गवत [संज्ञा पु.] (सं.) कुरुवर्ष नामक देश।

शारंगष्ठा, शारङ्गष्ठा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मकोय २-लताकरंज।

शारंगी, शारङ्गी [संज्ञा स्त्री.](सं.) सारङ्गी नामक बाजा।

शारंगेष्टा, शारङ्गेष्टा [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शारंगष्ठा'।

शारंबर, शारम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

शार [वि.](सं.) १-चितकबरा। २-पीला। ३-हरे रङ्ग का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का पासा। २-वायु। हवा। ३-हिंसा। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुश।

शारणिक [संज्ञा पु.] (सं.) शरणागत की रक्षा करने वाला। रक्षक।

शारद [वि](सं.) १-शरद्काल का। २-नवीन। नया। लज्जावान। [संज्ञा पु] (सं) १-वर्ष। साल। २-बादल। मेघ। ३-सफेद कमल। ४-मौलसिरी। ५-कासतृण। ६-हरी मूँग। ७-एक प्रकार का रोग।

शारदांबा, शारदाम्बा [संज्ञा स्त्री.](सं.) सरस्वती

शारदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की वीणा २-ब्राह्मी। ३-अनन्तमूल। ४-सरस्वती। ५-दुर्गा। ६-एक प्राचीन लिपि।

शारदिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरद्ऋतु में होने वाला ज्वर। २-रोग। बीमारी। ३-श्राद्ध।

शारदी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जलपीपल। २-छतिवन। ३-आश्विन मास की पूर्णिमा। [वि.] (सं.) शरद्काल का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोयल। २-श्वेतकमल। ३-अन्न या फल आदि।

शारदीय [वि.] (सं.) शरद्काल का।

शारदीय-महापूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरद्काल के नवरात्र में की दुर्गापूजा।

शारद्य [वि.] (सं.) शरद्काल का।

शारि [संज्ञा पु.] (सं.) पासा आदि खेलने की गोट। [संज्ञा स्त्री.] १-मैना। २-छल। कपट। ३-एक प्रकार का गीत।

शारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मैना नामक चिड़िया। २-शतरंज या चौपड़ खेलने की क्रिया। ३-वह कमानी जिससे सारंगी आदि बजाई जाती है। ४-वीणा या सरङ्गी आदि बजाने की क्रिया। ५-दुर्गादेवी का एक नाम।

शारिका-कवच [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्गा का एक कवच जो रुद्र यामल तन्त्र में है।

शारित [वि.] (सं.) रङ्गीन। चित्रविचित्र।

शारिपट्ट, शारिफल [संज्ञा पु.] (सं.) शतरंज या की बिसात।

शारिवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनन्तमूल। २-जवासा।

शारिशृंग, शारिशृङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का पासा या गोटी जिससे जूआ खेलते हैं।

शारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुशा। २-एक प्रकार का पक्षी। ३-मूँज। [संज्ञा पु.] १-शतरंज की गोट। २-गेंद।

शारीर [वि.] (सं.) १-शरीर-सम्बन्धी। २-शरीर से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १-बैल। २-शरीर को होने वाले दुःख।

शारीरक [वि.](सं.) शरीर से युक्त। शरीरधारी। [संज्ञा पु.] जीवात्मा।

शारीरक-भाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मसूत्र का शंकराचार्य का किया हुआ भाष्य।

शारीरक-मीमांसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वेदांतदर्शन।

शारीरक-सूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास का बनाया हुआ वेदांतसूत्र।

शारीर-तत्व [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें शरीर के तत्वों और रचना आदि का विवेचन

होता है।

शारीर-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र जिसमें जीवों की उत्पत्ति एवं वृद्धि का विवेचन हो। २-वह शास्त्र जिसमें शरीर के अंगों की बनावट तथा उनके कार्यों का विवेचन हो

शारीर विधान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शरीर-विज्ञान'।

शारीर-व्रण [संज्ञा पु.] (सं.) वात, पित्त, कफ और रक्त से उत्पन्न रोग।

शारीरशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शरीर-विज्ञान'।

शारीरिक [वि.] (सं.) शरीर-सम्बन्धी। शरीर का

शारीरित [वि.] (सं.) शरीर के रूप में लाया लाया हुआ। जिसे शरीर का रूप दिया गया हो।

शारुक [वि.] (सं.) १-हत्या करने वाला। २-कष्ट देने वाला।

शार्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीनी। शकर। २-एक प्राचीन गोत्रकार ऋषि।

शार्कक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध का फेन। २-चीनी या शक्कर का ढेला। गोश्त का टुकड़ा।

शार्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध का फेन। २-लोध वृक्ष। ३-वह स्थान जहां पर कंकर पत्थर हों [वि.] (सं.) १-कँकरीला। पथरीला। २-शक्कर या चीनी का बना हुआ।

शार्करक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंकरीली, पथरीली जगह। २-वह स्थान जहाँ चीनी बहुत होती हो। [वि.] (सं.) कंकरीला। पथरीला।

शार्करमद्य [संज्ञा पु.] (सं.) जो प्राचीनकाल में घी से बनाया जाता था।

शार्कराधान [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर दिशा का एक प्राचीन देश।

शार्ग, शार्ङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष। २-विष्णु का धनुष। ३-अदरक। ४-एक प्रकार का साम।

शार्गक, शार्ङ्गक [संज्ञा पु.](सं.) पक्षी। चिड़िया।

शार्गधर, शार्गपाणि, शार्गभृत, शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि, शार्ङ्गभृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण।

शार्गवैदिक, शार्ङ्गवैदिक [संज्ञा पु.] (सं.) स्थावर विष विशेष जो देखने में सोंठ जैसा होता है।

शार्गेष्टा, शार्ङ्गेष्टा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-काकजंघा। २-घुंघची।

शार्गेष्ठा, शार्ङ्गेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाकरंज। २-लताकरंज।

शार्गायुध, शार्ङ्गायुध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शार्गधर'। २-वह जो धनुष धारण करता हो

शार्गी, शार्ङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शार्गायुध'

शार्दूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाघ। चीता। २-राक्षस। ३-एक प्रकार की चिड़िया। ४-यजुर्वेद की एक शाखा का नाम। ५-दोहे का एक भेद जिसमें ६ गुरु और ३६ लघु मात्राएँ होती हैं। ६-चित्रकवृक्ष। [वि.] सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम (यौगिक के अन्त में)।

शार्दूलकंद, शार्दूलकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गली प्याज।

शार्दूलकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिशंकु के एक पुत्र का नाम।

शार्दूलज [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गन्धद्रव्य

शार्दूल-ललित [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण और सगण होता है।

शार्दूल-लसित [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शार्दूल-ललित'।

शार्दूलवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के पच्चीस पूर्व जिनों में से एक।

शार्दूलविक्रीड़ित [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण. सगण, तगण और एक गुरु होता है।

शार्यात [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वैदिककालीन राजर्षि का नाम। २-एक प्रकार का साम।

शार्वर [संज्ञा पु.] (सं.) घना अन्धकार।

शार्वरिक [वि.] (सं.) रात्रि-सम्बन्धी।

शार्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रात्रि। रात। २-लोध। [संज्ञा पु.] साठ सम्वत्सरों में से एक।

शालंकटांकट, शालङ्कटाङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) सुकेशी नामक राक्षस।

शालंकायन, शालङ्कायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २-नदी।

शालंकायनजा, शालङ्कायनजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) सत्यवती जो व्यास की माता थी।

शालंकायनि, शालङ्कायनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

शालंकि, शालङ्कि [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिनिऋषि का एक नाम।

शालंकी, शालङ्की [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुड़िया २-कठपुतली।

शाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध वृक्ष का नाम। साखू। २-एक प्रकार की मछली। ३-वृक्ष। पेड़। ४-एक नदी का नाम। ५-राजा शालिवाहन का एक नाम। ६-राल। धूना। ७-वृक के एक पुत्र का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की ऊनी चादर। दुशाला।

शालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पटुआं। नाड़ीशाक। २-मसखरा। भाँड़।

शालकटंकट, शालकटङ्कट [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस जिसे घटोत्कच ने मारा था (महाभारत)।

शालकल्याणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का साग।

शालग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु की गोल पत्थर की एक प्रकार की मूर्त्ति। २-गण्डक-नदी के पास का एक गाँव जहां नदी में शालग्राम शिलायें पाई जाती हैं।

शालग्रामगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराणोक्त पर्वत जहां शालग्राम की मूर्तियाँ मिलती हैं।

शालज [संज्ञा पु.] (सं.) शाल नामक मछली।

शालदोज [संज्ञा पु.] (फा.) शाल के किनारे पर बेल-बूटे बनाने वाला कारीगर।

शालनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) राल। धूना।

शालपत्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) शालपर्णी।

शालपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मुरा नामक गन्धद्रव्य। २-एकांगी नामक औषध।

शालपर्णी [संज्ञा स्त्री.](सं.) सरिवन नामक वृक्ष।

शालबाफ़ [संज्ञा पु.] (फा.) १-शाल-दुशाले बुनने वाला कारीगर। २-एक प्रकार का लालरङ्ग का रेशमी कपड़ा।

शालबाफी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) दुशाला बुनने का काम।

शालभंजिका, शालभञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कठ पुतली। २-वेश्या। रंडी।

शालभ [संज्ञा पु.] (सं.) पतंगे के समान विपत्ति में कूद पड़ने वाला। [वि.] (सं.) शलभ-सम्बन्धी।

शालमत्स्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली

शालमर्कट, शालमर्कटक [संज्ञा पु.] (सं.) अनार का वृक्ष। दाड़िम।

शालयुग्म [संज्ञा पु.](सं.) सर्ज वृक्ष और विजय-सार नामक दोनों शाल।

शालरस [संज्ञा पु.] (सं.) राल।

शालव [संज्ञा पु.] (सं.) लोध्र। लोध।

शालवदन [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम। (पुराण)।

शालवानक [संज्ञा पु] (सं.) १-एक देश। २-उसके निवासी।

शालवाहन [संज्ञा पु.] देखो 'शालिवाहन'।

शालवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) राल। धूना।

शालशाक [संज्ञा पु.] (सं.) पटुआ।

शालशृंग, शालशृङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) दीवार का ऊपर वाला भाग।

शालसार [संज्ञा पु.](सं.) १-हींग। २-राल। ३-शाल या साखू नामक वृक्ष। ४-वृक्ष।

शालांकी, शालङ्की [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुतली। गुड़िया।

शालांचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शांति नामक साग।

शाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घर। मकान। २-जगह। स्थान। ३-एक वर्णवृत्त जिसके

तीसरा चरण उपेन्द्रवज्रा और शेष तीनों चरण इन्द्रवज्रा के होते हैं। ४-शाखा। डाल।

शालाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-झाड़। झंखाड़। २-झाड़-झंखाड़ जलाकर उत्पन्न की हुई अग्नि।

शालाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाक, कान, मुख, आँख आदि रोगों का चिकित्सक। २-आयुर्वेद में वह प्रकरण जिसमें उक्त रोगों की चिकित्सा का वर्णन है।

शालाक्यशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें कान, नाक, आँख आदि रोगों और उनकी चिकित्सा का विवेचन हो।

शालाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक-काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शालातुरीय [संज्ञा पु.] (सं.) पाणिनि का एक नाम

शालात्व [संज्ञा पु.] (सं.) शाला का भाव या धर्म।

शालानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरिवन। शालपर्णी।

शालामर्कटक [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी मूली।

शालामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का चावल। २-घर का सामान।

शालामृग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ता। २-गीदड़।

शालार [संज्ञा पुं.] (सं.) १-हाथी का नाखून। २-सीढ़ी। सोपान। ३-पक्षियों का पिंजड़ा। ४-दीवार में लगी खूँटी।

शालालुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य।

शालावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विश्वमित्र की एक कन्या का नाम।

शालावत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शालावृक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दर। २-कुत्ता। ३-लोमड़ी। ४-बिल्ली। ५-हिरन। मृग।

शालिंच, शालिञ्च [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साग।

शालिंची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शालिंच'।

शालि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जड़हन धान। २-बासमती चावल। ३-काला जीरा। ४-गन्ना। ५-गन्धबिलाव। ६-एक यक्ष का नाम।

शालिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुलाहा। २-कर। महसूल।

शालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदारीकंद। २-मैना। शारिका। ३-घर। मकान। ४-शालपर्णी।

शालिगोप [संज्ञा पु.] (सं.) धान के खेत का रखवाला।

शालिधान, शालधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) बासमती चावल।

शालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक यगण, दो तगण और अन्त में दो गुरु होते हैं। २-भसींड। ३-मेथी।

शालिनीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) तिरस्कार।

शालिपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'एकांगी' (३)।

शालिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मेदा नामक औषध। २-पिठवन। ३-वनउरदी। ४-शालपर्णी।

शालिपिंड, शालिपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

शालिपिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक।

शालिराट् [संज्ञा पु.] (सं.) हंसराज चावल।

शालिवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रसिद्ध शक जाति का राजा जिसने 'शक' संवत् चलाया था।

शालिहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-पशुओं का चिकित्साशास्त्र। ३-पुराणानुसार एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

शालिहोत्री [संज्ञा पु.] (सं.) पशुओं और पक्षियों की चिकित्सा करने वाला वैद्य। वेटेरिनरी-डॉक्टर।

शालिहोत्रीय [वि.] (सं.) पशुओं और पक्षियों की चिकित्सा से सम्बन्ध रखने वाला। वेटेरिनरी

शाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काला जीरा। २-मेथी। ३-दुरालभा। शालपर्णी।

शालीकि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन आचार्य का नाम।

शालीन [वि.] (सं.) १-विनीत। नम्र। २-लज्जाशील। ३-अच्छे आचार-विचार वाला। ४-धनवान्। ५-दक्ष। चतुर।

शालीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालीन का भाव या धर्म। २-लज्जा। शरम। ३-नम्रता। ४-अधीनता।

शालीनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौंफ। २-सोवा नामक साग।

शालीय [वि.] (सं.) १-शाला या घर-सम्बन्धी। २-शालवृक्ष का।
[संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम

शालु [संज्ञा पु.] (सं.) १-भसींड़। २-चोरक नामक औषध। ३-कषाय द्रव्य। ४-मेंढक। ५-एक प्रकार का फल।

शालुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भसीड़। २-जायफल।

शालूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेंढक। २-जायफल ३-भसीड़। ४-एक रोग।

शालूकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

शालूर [संज्ञा पु.] (सं.) मेंढक।

शालूरक [संज्ञा पुं.] (सं.) अंतड़ियों में पीड़ा उत्पन्न करने वाला कीटाणु।

शालेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौंफ। २-शालीधान का खेत। ३-मूली। [वि.] (सं.) शालवृक्ष-सम्बन्धी।

शालेया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

शाल्मल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेमल का पेड़। २-मोचरस। ३-देखो 'शाल्मलि'।

शाल्मलि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेमल का पेड़। २-पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। पुराणानुसार एक नरक का नाम।

शाल्मलिक [संज्ञा पु.] (सं.) रोहितक वृक्ष।

शाल्मलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमल का पेड़।

शाल्मलि-पत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सतिवन (वृक्ष)

शाल्मली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेमल। शाल्मलि। [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

शाल्मलीकंद, शाल्मलीकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मलि या सेमल की जड़।

शाल्मली-फल [संज्ञा पु.] (सं.) तेजफल।

शाल्मली-फलक [संज्ञा पु.] (सं.) छुरे की धार तेज करने की पट्टी।

शाल्मलीद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

शाल्मलीवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं) सेमल का गोंद।

शाल्मलीस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मली-द्वीप।

शाल्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश का नाम। २-उस देश का राजा।

शाल्वकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम (रामायण)।

शाल्वगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन पर्वत का नाम।

शाल्वण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फोड़ा पकाने का लेप। पुलटिस। २-भरता। चोखा।

शाल्वसेनी [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश। २-उस देश का निवासी।

शाल्विक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

शाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बच्चा, विशेषकर पशु का। २-मृतक। मुरदा। ३-भूरा रङ्ग। ४-सूतक जो किसी की मृत्यु के उपरांत उसके सम्बन्धियों को लगता है। ५-मरघट। श्मशान। [वि.] शव-सम्बन्धी। शव का।

शावक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी भी पशु या पक्षी का बच्चा।

शावर [संज्ञा पु.] (सं) १-पाप। २-अपराध। ३-लोध्रवृक्ष। ४-शावरस्वामी-कृत भाष्य। ५-एक तन्त्र का ग्रन्थ। [वि.] शवर-सम्बन्धी। शवर का।

शवरक [संज्ञा पु.] (सं.) पठानीलोध।

शावरचंदन, शावरचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चन्दन।

शावरभेदाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) तांबा।

शावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंछ। केवांच।

शाश्वत [वि.] (सं.) जो सदा बना रहे। कभी नष्ट न होने वाला। नित्य। एटर्नल। [संज्ञा पु.] १-वेदव्यास। २-शिव। ३-स्वर्ग। ४-अन्तरिक्ष।

शाश्वत-उत्तराधिकार [संज्ञा पु.](सं.) सर्वकालिक या सदा बना रहने वाला उत्तराधिकार।

शाश्वतिक [वि.] (सं.) स्थायी। नित्य।

शाश्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

शाष्कुल [वि.] (सं.) मांसाहारी। गोश्तखोर।

शास [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुशासन। २-स्तुति।

शासक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री शासिका] १-वह जो शासन करता हो। रूलर। २-हाकिम।

शासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आज्ञा। आदेश। हुक्म। २-अधिकार अथवा वंश में या उचित सीमा अथवा मर्यादा के भीतर रखना। नियन्त्रण। ३-राज्य के कार्यों की व्यवस्था और संचालन। हुकूमत। गवर्नमेन्ट। ४-राज्य का संचालन करने वाले मुख्य अधिकारियों का समूह अथवा मंडल। ऑथारटी। ५-राजत्व-काल। ६-वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय। पट्टा। ७-दंड। सजा। ८-राजा की दान की हुई भूमि। ९-किसी के कार्यों आदि का नियन्त्रण करना।

शासन-अभिभाषक [संज्ञा पु.] (सं.) सरकार की ओर से नियुक्त वकील। सरकारी वकील।

शासनदेवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) जैनमतालम्बियों की एक देवी।

शासनधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शासक। २-राजदूत।

शासनपत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-राजा के हस्ताक्षरों मे निकाली हुई राजाज्ञा। फरमान। २-वह ताम्रपत्र जिस पर राजाज्ञा लिखी या खोदी गई हो।

शासनवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोगों तक राजाज्ञा पहुँचाने वाला। २-राजदूत।

शासनशिला [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह शिला जिस पर कोई राजाज्ञा लिखी या खोदी हुई हो।

शासनहर, शासनहारक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शासनवाहक'।

शासनहारी [संज्ञा पु.] (सं.) राजदूत।

शासनिक [वि.] (सं.) १-शासन-सम्बन्धी। शासन का। २-शासन-विभाग का।

शासनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्म उपदेश करने वाली स्त्री।

शासनीय [वि.] (सं.) १-शासन करने योग्य। २-सुधारने के योग्य। ३-दंड या सजा देने के योग्य।

शासित [वि.](सं.) [स्त्री शासिता] १-जिस पर शासन किया जाय। २-जिसे दंड दिया जाय। दंडित। [संज्ञा पु.] १-प्रजा। २-निग्रह। संयम।

शासी [संज्ञा पु.] (सं.) शासन करने वाला। शासक। (इसका प्रयोग यौगिक शब्दों में ही होता है)।

शासी-निकाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शासन करने वाली सभा या परिषद्। २-राज्य का संचालन करने वाले मुख्य अधिकारियों का समूह। गवर्निंग बॉडी।

शास्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-शासक। २-राजा। ३-पिता। ४-गुरु।

शास्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शासन। २-दंड। सजा। ३-दण्ड अथवा हरजाने के रूप में लिया जाने वाला धन या कार्य। पेनैल्टी।

शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्व साधारण के हित के लिए विधान बतलाने वाले धार्मिक ग्रन्थ। २-किसी विषय का सारा ज्ञान जो क्रम से एकत्र किया गया हो। विज्ञान।

शास्त्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्र बनाने वाला।

शास्त्रकृत [संज्ञा पु.](सं.) १-(शास्त्र बनाने वाले) ऋषि। मुनि। २-आचार्य।

शास्त्रचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्याकरण। २-ज्ञानी। पंडित।

शास्त्रचरण [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रों का अच्छा ज्ञाता। शास्त्रदर्शी।

शास्त्रज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रों का जानकार। शास्त्रवेत्ता।

शास्त्रतत्वज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) गणक। ज्योतिषी।

शास्त्रत्व [संज्ञा पु.](सं.) शास्त्र का भाव या धर्म

शास्त्रदर्शी, शास्त्रदृष्टि [संज्ञा पु.](सं.) शास्त्रज्ञ

शास्त्रवक्ता [वि.] (सं.) शास्त्रों का उपदेश करनेवाला।

शास्त्रविद् [वि.] (सं.) शास्त्रों को जानने वाला।

शास्त्रविधान, शास्त्रविधि [संज्ञा पु.](सं.) शास्त्र की आज्ञा।

शास्त्रविप्रतिषेध [संज्ञा पु.](सं.) १-धर्मशास्त्र की आज्ञाओं में परस्पर विरोध। २-कोई कार्य जो धर्मशास्त्र के विरुद्ध हो।

शास्त्र-विमुख [वि.] (सं) धर्मशास्त्र के अध्ययन से पराङ्मुख।

शास्त्र-विरुद्ध [वि.] (सं.) धर्मशास्त्र की आज्ञाओं के विरुद्ध या बरखिलाफ।

शास्त्रविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शास्त्र-विप्रतिषेध'।

शास्त्रशिल्पी [संज्ञा पु.] (सं.) १-काश्मीर देश। २-भूमि। जमीन।

शास्त्रसिद्ध [वि.] (सं.) धर्मशास्त्र के अनुसार। धर्मशास्त्र प्रतिपादित।

शास्त्रातिक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्र की आज्ञा का उल्लंघन।

शास्त्रानुष्ठान [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्री की आज्ञा का पालन।

शास्त्रावर्त्त-लिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन लिपि जिसका उल्लेख ललितविस्तार में मिलता है।

शास्त्री [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. शास्त्रिणी] १-शास्त्रों का ज्ञाता। २-धर्मशास्त्र का ज्ञाता। ३-एक उपाधि जो इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय से दी जाती है।

शास्त्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय को शास्त्र का रूप देना।

शास्त्रीय [वि.](सं.) शास्त्र-सम्बन्धी। शास्त्र का

शास्त्रोक्त [वि.](सं.) शास्त्रों में कहा या बतलाया हुआ।

शास्य [वि.](सं.) १-शासन करने के योग्य। २-दंड देने के योग्य। ३-सुधारने के योग्य।

शाहंशाह [संज्ञा पु.] (फा.) बहुत बड़ा बादशाह। महाराजधिराज।

शाहंशाही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शाहंशाह का कार्य या भाव। २-व्यवहार का खरापन।

शाह [संज्ञा पु.] (फा.) १-महाराज। बादशाह। २-मुसलमान फकीर। [वि.] (फा.) बड़ा। महान्।

शाह-खर्च [वि.] (फा.) बहुत अधिक खर्च करनेवाला।

शाह-खर्ची [संज्ञा स्त्री.](फा.) बहुत अधिक खर्च करने का भाव।

शाहजादा [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री. शाहजादी] बादशाह का पुत्र। महाराजकुमार।

शाहजादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बादशाह की लड़की। राजकुमारी। २-कमल के फूल का पीला जीरा।

शाहतरा [संज्ञा पु.] (फा.) पित्तपापड़ा।

शाहदरा [संज्ञा पु.] (फा.) किसी महल या किले के नीचे बसी हुई आबादी।

शाहबलूत [संज्ञा पु.] देखो 'बलूत'।

शाहबाज [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का शिकारी पक्षी जो सफेद रङ्ग का होता है।

शाहबाला [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'शहबाला'।

शाहराह [संज्ञा पु.] (फा.) राजमार्ग।

शाहाना [वि.] (फा.) राजसी। [संज्ञा पु.] १-विवाह का जामा जो दूल्हे को पहनाया जाता है। २-शहाना नामक राग।

शाहिद [संज्ञा पु.] (अ.) साक्षी। गवाह। [वि.] (अ.) सुन्दर। खूबसूरत।

शाही [वि.] (फा.) बादशाहों का। [संज्ञा स्त्री.] कुम्भ आदि पर्वों पर साधु-महात्माओं की निकलने वाली सवारी।

शाहीन [संज्ञा पु.] (फा) १-देखो 'शाहबाज'। २-तराजू की डंडी के मध्यभाग में लगी हुई सूई।

शिंगरफ [संज्ञा पु.] (फा.) ईंगुर। हिंगुल।

शिंगरफी [वि.] (फा.) शिंगरफ के रङ्ग का। लाल

शिंघण, शिङ्घण; शिंघाण, शिङ्घाण [संज्ञा

पु.] (सं.) १-लौहमल। २-नाक में चेप जिससे झिल्ली तर रहती है। ३-काँच का बरतन ४-दाढ़ी। ५-फूला हुआ अंडकोष।

शिघाणक, शिङ्घाणक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शिंघाणिका] १-नाक में का चेप। २-कफ। बलगम।

शिंघाणी, शिंघान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाक।

शिंघित, शिङ्घित [वि.] (सं.) सूँघा हुआ।

शिंघिनी, शिङ्घिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाक।

शिंजजिका, शिञ्जजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करधनी।

शिंजन, शिञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुर ध्वनि। २-आभूषणों की झंकार।
[वि.] (सं.) मधुर ध्वनि करने वाला।

शिंजा, शिञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आभूषणों की झनकार। २-धनुष की डोरी।

शिंजित, शिञ्जित [वि.] (सं.) झनकार करता या बजाता हुआ।

शिंजिनी, शिञ्जिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ नूपुर। पैंजनी। २-अँगूठी। ३-धनुष की डोरी।

शिंडाकी, शिण्डाकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूली के पत्तों के रस में राई और नमक डाल कर या सरसों के रस में चावल का चूर्ण डालकर बनाई जाने वाली काँजी।

शिंब [संज्ञा पु.] (सं.) १-फली। छीमी। २-चकवँड़।

शिंबा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फली। छीमी। २-सेम। ३-द्विदल-अन्न। दाल।

शिंबि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शिंबी'।

शिंबिक, शिम्बिक [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगफली।

शिंबिका, शिम्बिका [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) १-फली छीमी। २-सेम।

शिंबिजा, शिम्बिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्विदल-अन्न दाल।

शिंबिनी, शिम्बिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कृष्ण-चटक। २-बड़ी सेम।

शिंबिपर्णिका, शिंबिपर्णी, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनमूग।

शिंबी, शिम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छीमी। फली। २-सेम। ३-कौंध। ४-बनमूंग।

शिंबी-धान्य, शिम्बी-धान्य [संज्ञा पु.] (सं.) दो दल वाला अन्न। दाल।

शिंबीफल, शिम्बीफल [संज्ञा पु.] (सं.) आहुल्य नामक क्षुप।

शिंश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का फलदार वृक्ष

शिंशपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शीशम का पेड़। २-अशोकवृक्ष।

शिंशुपा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिंशपा'।

शिंशुमार [संज्ञा पु.] (सं.) सूंस नाम का जलजंतु

शिंहान [संज्ञा पु.] (सं.) काँच का बरतन।

शि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सुख। सौभाग्य ३-शांति। ४-धैर्य।

शिकंजा [संज्ञा पु.] (सं.) १-दबाने, कसने आदि का यन्त्र। २-वह यन्त्र जिसमें दबाकर जिल्दसाज किताबों के पन्ने काटते हैं। ३-एक प्रकार का प्राचीन यन्त्र जिसमें अपराधी की टाँग कस दी जाती थी। ४-रुई दबाने का पेंच। ५-कोल्हू।
शिकंजे में खिंचवाना-घोर यंत्रणा दिलाना। *शिकंजे में खींचना*-घोर यंत्रणा देना।

शिकन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सिलवट।

शिकम [संज्ञा पु.] (फा.) पेट। उदर।

शिकमी [वि.] (फा.) १-पेट-सम्बन्धी। २-किसी के अन्तर्गत रहने वाला।

शिकमी-काश्तकार [संज्ञा पु.] (फा.) वह किसान जो दूसरे काश्तकार से खेत लेकर जोतता है।

शिकरम [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार की गाड़ी।

शिकरा [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का बाजपक्षी

शिकवा [संज्ञा पु.] (फा.) शिकायत। उलाहना।

शिकस्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पराजय। हार। २-टूटना। ३-विफलता। असिद्धि। *शिकस्त देना*-पराजित करना। *शिकस्त खाना*-पराजित होना।

शिकस्ता [वि.] (फा.) टूटा हुआ। भग्न।
[संज्ञा स्त्री.] (फा.) उर्दू या फारसी की घसीट लिखावट।

शिकायत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-निंदा। २-चुगली ३-उलाहना। ४-रोग। बीमारी।
शिकायत रफा करना-रोग दूर करना।

शिकार [संज्ञा पु.] (फा.) १-आखेट। मृगया। २-वह पशु जो मारा जाय। ३-गोश्त। मांस ४-आहार। खाद्य। ५-वह जिसके फँसने या हाथ में आने से बहुत आय अथवा लाभ हो। आसामी।
शिकार आना-१-मृगया के लिए पशु मिलना २-किसी ऐसे व्यक्ति का मिलना जिससे लाभ हो।
शिकार करना-१-कोई पशु मारना। २-किसी से खूब लाभ उठाना। *शिकार खेलना*-शिकार करना। *किसी का शिकार होना*-१-किसी के जाल में फँसना। २-मारा जाना।

शिकारगड़हा [संज्ञा पु.] (फा., हिं.) शिकारी द्वारा पशु को फँसाने के निमित्त खोदा हुआ गड्ढा

शिकारगाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शिकार खेलने की जगह।

शिकारबंद [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े के चारजामे के पीछे सामान बाँधने का तस्मा।

शिकारी [संज्ञा पु.] (फा.) शिकार करने वाला अहेरी। [वि.] शिकार से सम्बन्ध रखने या शिकार में काम आने वाला। *शिकारी ब्याह*-गांधर्व-विवाह।

शिकाल [संज्ञा पु.] (फा.) वह घोड़ा जिसका अगला दाहिना पैर और पिछला बाँया पैर सफेद हो ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

शिक्थ [संज्ञा पु.] (सं.) मोम।

शिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शिक्या'।

शिक्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छींका। सिकहर। २-बहँगीके दोनों सिरों पर बँधा हुआ रस्सी का जाल, जिस पर बोझ रखते हैं। ३-तराजू की डोरी।

शिक्याकृत [वि.] (सं.) छींके में लटकाया हुआ २-बंहगी में रखा हुआ।

शिक्यिन् [संज्ञा पु.] (सं.) रस्सी। डोरी।

शिक्व [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धर्वों का एक नायक।

शिक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) (स्त्री. शिक्षका, शिक्षिका) १-शिक्षा देने वाला। २-विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला। गुरु। उस्ताद।

शिक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) पढ़ाने का काम। तालीम शिक्षा।

शिक्षण-विज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने आदि की शिक्षा किस प्रकार दी जाय।

शिक्षण-महाविद्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह महाविद्यालय जिसमें ऊँची कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण-विज्ञान के सिद्धांत एव शिक्षा देने की प्रणाली सिखलाई जाती है। ट्रेनिंग-कालेज।

शिक्षण-विद्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह विद्यालय जिसमें देशी भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षण-विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। नॉर्मल-स्कूल।

शिक्षणालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाती हो। विद्यालय।

शिक्षणीय [वि.] (सं.) शिक्षा के उपयुक्त। शिक्षा देने योग्य।

शिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्या पढ़ने अथवा कला सीखने की क्रिया। तालीम। २-उपदेश नसीहत। ३-एक वेदांग जिसमें वेदों के वर्णों, स्वरों, मात्राओं आदि का विवेचन है ४-पाठ। सबक। ५-परामर्श। सलाह। ६-शासन। दबाव।

शिक्षाकर [संज्ञा पु.] (सं.) व्यास।

शिक्षाक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) वह काव्यालंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है।

शिक्षागुरु [संज्ञा पु.] (सं.) विद्या पढ़ाने वाला गुरु।

शिक्षाग्राहक [संज्ञा पु.] (सं.) विद्यार्थी। छात्र।

शिक्षादंड, शिक्षादण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) किसी चाल को छुड़ाने के लिये दिया जाने वाला दंड।

शिक्षानर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र ।

शिक्षापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुस्तक जिससे विद्यालाभ होता है ।

शिक्षापद [संज्ञा पु.] (सं.) १-उपदेश। २-बौद्धों विनयपटिका का एक प्रकरण ।

शिक्षा-परिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिक्षा या पढ़ाई का प्रबन्ध करने वाली सभा या समिति २-वैदिककालीन शिक्षासंस्था अथवा विद्यालय जो एक ऋषि या आचार्य के आधीन होता था एवं उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था।

शिक्षा-मंत्री, शिक्षा-मन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शिक्षा-सचिव' ।

शिक्षार्थी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शिक्षार्थिनी] वह जो किसी विद्या, कला या कार्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसमें लगा हो ।

शिक्षालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाय । विद्यालय ।

शिक्षावल्ली [संज्ञा स्त्री.](सं.) तैत्तिरीय-उपनिषद् का पहला अध्याय ।

शिक्षा-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबन्ध होता है। एजुकेशन डिपार्टमेंट ।

शिक्षाव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) जैन धर्मानुसार गार्हस्थ धर्म का एक प्रधान अङ्ग ।

शिक्षाशक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) शिक्षा प्राप्त करने की शक्ति। मेधा।

शिक्षा-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) वह सचिव या मन्त्री जिसके अधीन किसी राज्य अथवा देश का शिक्षाविभाग होता है । एजुकेशन मिनिस्टर

शिक्षा-सचिवालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जिसमें किसी देश या राज्य के शिक्षा-सचिव और विभागीय अधिकारियों का कार्यालय होता है।

शिक्षाहीन [वि.] (सं.) अशिक्षित । बे-पढ़ा।

शिक्षित [वि.](सं.) [स्त्री. शिक्षिता] जिसने शिक्षा प्राप्त की हो। पढ़ा लिखा ।

शिक्षितव्य [वि.] (सं.) शिक्षा के योग्य ।

शिक्षिताक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने शिक्षा पढ़ी हो।

शिखंड, शिखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर की पूँछ।२-चोटी। शिखा। ३-काकपक्ष। काकुल

शिखंडक, शिखण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-काकपक्ष। २-मोर की पूँछ ।

शिखंडिक, शिखण्डिक [संज्ञा पु.](सं.) १-मुर्गा २-मानिक विशेष (रत्न) ।

शिखंडिका, शिखण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिखा। चोटी।

शिखंडिनी, शिखण्डिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोरनी। मयूरी। २-जूही। ३-गुंजा । ४-मुर्गी ५-द्रुपदराज की कन्या जो कुरुक्षेत्र के युद्ध में पुरुष के रूप में होकर लड़ी थी। ६-कश्यप की पुत्री ।

शिखंडी, शिखण्डी [संज्ञा पु] (सं.) १-स्वर्ण-यूथिका । २-घुँघची । गुञ्जा। ३-मोर । ४-मुर्गी । ५-मोर की पूँछ। ६-वाण। ७-विष्णु। ८-शिव। ९-बालों की चोटी। १०-श्रीकृष्ण ११-द्रुपद का एक पुत्र जिसे महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने आगे करके भीष्म का वध किया था। १२-राम की सेना का एक बन्दर १३-बृहस्पति ।

शिख* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिखा'।

शिखक [संज्ञा पु.] (सं.) लेखक । मुहर्रिर।

शिखर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरा। चोटी। २-पहाड़ की चोटी। ३-मन्दिर या मकान के ऊपर का नुकीला भाग । कलश । कँगूरा। ४-मंडप। गुंबद।

शिखरणी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शिखरिणी'।

शिखरदशना [वि.](सं.)[स्त्री. प्र.] कुन्द की कली के समान दाँतों वाली ।

शिखरन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दही का बनाया हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ ।

शिखरवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।

शिखरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मरोड़फली। २-एक गदा का नाम जिसे राम को विश्वामित्र ने दी थी ।

शिखराद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम ।

शिखरिचरण [संज्ञा पु.] (सं.) चिचड़े की जड़।

शिखरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रसाल । २-नारीरत्न। ३-रोमावली । ४-मल्लिका । ५-नेवारी नामक पौधा। ६-किशमिश । ७-मूर्वा मरोड़फली। ८-दही तथा चीनी का रस। ९-सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसके छठे और ग्यारहवें वर्ण पर यति लगती है।

शिखरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पर्वत। २-पहाड़ी। दुर्ग। ३-वृक्ष। ४-अपामार्ग। ५-बन्दाक। ६-कुंदरु नाम का एक गन्धद्रव्य। ७-लोबान। ८-काँकड़ासिंगी। ९-ज्वार। मक्का। १०-एक प्रकार का मृग। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक गदा जो राम को विश्वामित्र ने दी थी।

शिखलोहित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुकुरमुत्ता।

शिखांडक, शिखाण्डक [संज्ञा पु.](सं.)काकपक्ष

शिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चोटी। चुटिया। २-पक्षियों के सिर पर उठे हुये पंख। कलगी चोटी। ३-आग की लपट। ४-दीपक की लौ ५-प्रकाश-किरण। ६-नुकीला छोर। नोक। ७-वस्त्र का अंचल। दामन। ८-देखो 'शिखर'। ९-स्तन का अग्रभाग। १०-पैर के पंजे का सिरा। ११-पेड़ की जड़। १२-डाली। शाखा १३-जटामासी। १४-कलियारी विष। १५-एक वर्णवृत्त जिसके विषम चरणों में २८ लघु मात्राएँ एवं अन्त में एक गुरु होता है तथा सम पादों में ३० लघु मात्राएँ और अन्त में एक गुरु होता है। यौ०-*शिखासूत्र*-चोटी और यज्ञोपवीत जो द्विजों के प्रधान चिह्न हैं।

शिखाकंद, शिखाकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) शलगम। शलजम।

शिखातरु [संज्ञा पु.] (सं.) दीवट।

शिखाधर, शिखाधार [संज्ञा पु.] (सं) मोर। मयूर।

शिखापाश [संज्ञा पु.] (सं.) चोटी। चुंदी।

शिखापित्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ और पैर की अंगुलियों में सूजन और जलन होने का एक रोग ।

शिखाबंधन, शिखाबन्धन [संज्ञा पु.](सं.) चोटी बाँधना ।

शिखाभरण [संज्ञा पु.] (सं.) मुकुट ।

शिखामणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर पर पहनने का रत्न। २-श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिखामूल [संज्ञा पु.] (सं.) वह कंद जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा हो।

शिखाल [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

शिखालु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। मयूर। २-शिखा।

शिखावत् [वि.] (सं) शिखावाला। (सं.) १-अग्नि। आग। २-मोर। मयूर।

शिखावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरोड़फली।

शिखावर [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल का वृक्ष।

शिखावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यक्ष।

शिखावल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मयूर। २-कटहल

शिखावान् [वि.] (सं.) [स्त्री. शिखावती] शिखावाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। मयूर। २-अग्नि। ३-चित्रकनक्षत्र-वृक्ष। ४-केतुग्रह।

शिखावृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) दीवट।

शिखावृद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह ब्याज जो प्रतिदिन बढ़ता जाय। सूद-दरसूद। २-वह ब्याज जो प्रतिदिन के हिसाब से नित्य वसूल किया जाता हो। रोजही।

शिखि [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। मयूरी। २-अग्नि। ३-कामदेव। ४-तीन की संख्या। ५-तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

शिखिकंठ, शिखिकण्ठ [वि.] (सं.) [पु. प्र.] मोर के कण्ठ जैसा। [संज्ञा पु.] (सं.) तूतिया नीलाथोथा।

शिखिकुंद, शिखिकुन्द [संज्ञा पु.](सं.) कुंदरु। बिरोजा।

शिखिग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलाथोथा। २-एक प्रकार का नीला पत्थर।

शिखिध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-धूम्र। धूआँ। २-

कार्त्तिकेय। ३-वह जिस पर अग्नि अथवा मोर का चिह्न बना हो। ४-मयूरध्वज नाम का राजा।

शिखिनी [संज्ञा स्त्री](सं.) १-मोरनी। २-मुर्गी। ३-जटाधारी नामक पौधा।

शिखिप्रिय[संज्ञा पु.] (सं.) जंगली बेर।

शिखिमंडल, शिखिमण्डल[संज्ञा पु.](सं.)वरुण-वृक्ष।

शिखिमोदा [संज्ञा स्त्री.](सं.) अजमोदा।

शिखियूप [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकारी नामक मृग।

शिखिवर्द्धक [संज्ञा पु.] (सं.) गोल कद्दू।

शिखिवाहन [संज्ञा पु.] (सं) कार्त्तिकेय।

शिखिहिंटी, शिखिहिण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाबला। सहदेई।

शिखींद्र, शिखीन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेंदू का पेड़। २-नूस का पेड़।

शिखी [वि.] (सं.) [स्त्री. शिखिनी] शिखा या चोटी वाला। [संज्ञा पु.] १-मोर। मयूर। २-मुर्गा। ३-सारस विशेष। ४-बैल। ५-घोड़ा। ६-अग्नि। ७-चित्रकवृक्ष। ८-तीन की संख्या। ६-दीपक। १०-पुच्छलतारा। ११-पित्त। १२-मेथी। १३-बाण। तीर। १४-सतावर। १५-ब्राह्मण। १६-वृक्ष। १७-पर्वत। १८-जटाधारी साधू। १६-इन्द्र। २०-बगला २१-एक नाग का नाम। २२-अपामार्ग। चिचड़ा। २३-विष विशेष।

शिगा [संज्ञा पु.] (फा.) १-नश्तर। चीरा। २-दरार। दर्ज। ३-छेद। सूराख। ४-कमल के बीच का चिराव।

शिगाफ देना या लगाना–१-कमल को चीरना। २-नश्तर या चीरा लगाना।

शिगूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक जङ्गली क्षुप या पौधा।

शिगूफा [संज्ञा पु.] (फा.) १-कली। २-फूल। ३-चुटकुला।

शिगूफा खिलाना–बात खड़ी करना। *शिगूफा खिलना*–ऐसी बात होना जिससे मनोरंजन हो। *शिगूफा फूलना*–१-अनोखी बात निकलना। २-मामला खड़ा होना। *शिगूफा छोड़ना*–१-कोई नई या विचित्र बात कहना। २-मनोरंजन के लिए कोई बात पैदा करना।

शिग्रु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शोभांजन। २-साग। शाक।

शिग्रुज [संज्ञा पु.] (सं.) शोभांजन का बीज।

शिच् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जूए की रस्सी। २-बहंगी का छींका जिस में बोझ रखते हैं।

शित [वि.] (सं.) १-कृश। दुर्बल। २-नुकीला। पतला। ३-धारदार। [संज्ञा पु.] विश्वामित्र के एक गोत्रज ऋषि। * [वि.] (हिं.) देखो सित।

शितद्रु [संज्ञा स्त्री](सं.) १-सवलज। २-मोरट

शितनिगुंडी, शितनिगुण्डी [संज्ञा स्त्री.](सं.) शेफालिका।

शितपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) मोथा।

शितवर, शितवार [संज्ञा पु.] (सं.) शारियारी नामक साग।

शितशाक [संज्ञा पु.] (सं.) शांति नामक साग।

शिताद्रिकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराजिता लता।

शिताफल [संज्ञा पु.] (सं.) सीताफल।

शिताब [क्रि. वि.] (फा.) शीघ्र। जल्द।

शिताबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-शीघ्रता। जल्दी। २-तेजी। हड़बड़ी।

शितावर [संज्ञा पु.](हिं.) १-सतावर। २-बकुची। ३-शिरियारी।

शिति [वि.] (सं.) १-श्वेत। सफेद। २-काला। कृष्ण। [संज्ञा पु.] भोजपत्र।

शितिकंठ, शितिकण्ठ [संज्ञा पु.](सं.) १-दात्यूह-पक्षी। जलकाक। मुर्गाबी। २-चातक। पपीहा। ३-मोर। ४-नागदेवता। ५-शिव।

शितिकुंभ, शितिकुम्भ[संज्ञा पु.](सं.) कनेर का वृक्ष।

शितिकेश [संज्ञा पु.] (सं.) स्कन्द के एक अनुचर का नाम।

शितिचंदन, शितिचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी।

शितिचार [संज्ञा पु](सं.) शिरिखारी नामक साग

शितिच्छ, शितिपच्च [संज्ञा पु.] (सं.) हंस।

शितिपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग जो यज्ञ में मैत्रावरुण बना था।

शितिमूलक [संज्ञा पु.] (सं) खस। उशीर।

शितिरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम।

शितिवासस् [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

शितिसार, शितिसारक [संज्ञा पु.] (सं.) तिंदुक-वृक्ष।

शितीषु [संज्ञा पु.] (सं.) उशाना नामक वैदिक देवता का नाम।

शितुपुट [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्ली की जाति का एक पशु। २-एक प्रकार का काला भँवरा।

शिथिल [वि.] (सं.) १-जो भलीभाँति बँधा, कसा या जकड़ा हुआ न हो। ढीला। २-जो थकावट आदि के कारण धीमा पड़ गया हो। ३-सुस्त। धीमा। ४-आज्ञा अथवा विधान। जिसका भली प्रकार से अथवा पूर्णतया पालन न हो। ५-(वाक्य) जिसकी शब्द-योजना ठीक न हो।

शिथिलता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-शिथिल होने का भाव। २-वाक्य में शब्दों की ठीक तथा सङ्गतयोजना न होना।

शिथिलाई*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिथिलता'।

शिथिलाना* [क्रि. अ.] (हि.) १-शिथिल या ढीला होना। २-थकना या श्रांत होना। [क्रि. स.] (हिं.) शिथिल या ढीला करना।

शिथिलित [वि.] (सं.) शिथिल या ढीला पड़ा हुआ।

शिथिलीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) शिथिल या ढीला करना।

शिथिलीकृत [वि.] (सं.) शिथिल या ढीला किया हुआ।

शिथिलीभूत [वि.] (सं.) जो शिथिल हो गया हो

शिद्दत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-तेजी। उग्रता। प्रचंडता। २-अधिकता। ज्यादती।

शिना [संज्ञा पु.] (सं.) भुइँआँवला।

शिनाख्त [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पहचान। २-परख।

शिनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-गर्गऋषि के पुत्र का नाम। २-क्षत्रियों का एक भेद। ३-एक यादव का नाम।

शिनिबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) एक नदी का नाम।

शिपि [संज्ञा पु.] (सं.) रश्मि। किरण। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमड़ा। खाल।

शिपिविष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कोढ़ी।

शिपुगड्डी [संज्ञा स्त्र.] (सं.) एक प्रकार का पौधा

शिप्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत की एक झील का नाम।

शिप्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिप्रझील से निकलने वाली एक नदी, जिसके तट पर उज्जयनी नगरी है।

शिफर* [संज्ञा पु.] (हिं.) डाल।

शिफा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वृक्ष की रेशेदार जड़ जिससे प्राचीनकाल में कोड़े बनते थे। २-कोड़े की फटकार या मार। ३-माता। ४-हरिद्रा। हलदी। ५-भसींड़। ६-लता। ७-नदी। ८-एक प्राचीन नदी का नाम। ९-जटामांसी। १०-शिखा। चोटी। ११-कोड़ा। बेंत। यौ०-*शिफादंड*-कोड़े मारने का दंड।

शिफाकंद, शिफाकन्द, शिफाक [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की जड़। भसींड़।

शिफाधर [संज्ञा पु.](सं.) शाखा। डाल।

शिफारुह [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।

शिमाल [संज्ञा स्त्री.] (अ.) उत्तरदिशा।

शिमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम।

शिमृड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चंगोनी नामक पौधा।

शिया [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'शीया'।

शिरःकपाली [संज्ञा पु.](सं.) कापालिक संन्यासी

शिरःखंड, शिरःखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) माथे या कपाल की हड्डी।

शिरःपीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिर या माथे की पीड़ा।

शिरःफल [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल ।

शिरःशूल [संज्ञा पु.] (सं) सिर का दर्द ।

शिर [संज्ञा पु.] (सं) १-सिर । २-माथा । ३-सिरा । चोटी । ४-शिखर । ५-सेना का अगला भाग । ६-पद्य के चरण का आरम्भ । ७-मुखिया । ८-पिप्पलीमूल । ९-शय्या । १०-बिस्तर ११-अजगर ।

शिरकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-साझा । २-किसी काम में योग । ३-शरीक या सम्मिलित होने का भाव ।

शिरखिस्त [संज्ञा पु.] (फा.) एक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम में आता है ।

शिरगोला [संज्ञा पु.] (देश.) एक वृक्ष जिसे दुग्धपाषाण कहते हैं ।

शिरज [संज्ञा पु] (सं.) केश । बाल ।

शिरत्रान [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिरस्त्राण' ।

शिरनेत [संज्ञा पु.](देश.) गढ़वाल के आसपास का एक प्रदेश।

शिरपेंच [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सरपेंच' ।

शिरफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिर में पहनती हैं । सीसफूल ।

शिरमौर [संज्ञा पु] (हिं.) १-शिरोभूषण । मुकुट । २-श्रेष्ठ व्यक्ति । ३-अधिपति । नायक ।

शिरश्चंद्र, शिरश्चन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

शिरसिज, शिरसिरुह [संज्ञा पुं.] (सं) केश । बाल ।

शिरस्क [वि] (सं.) मस्तक-सम्बन्धी ।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध के समय सिर पर पहनने की लोहे की टोपी ।

शिरहना [संज्ञा पु.] (हिं) १-तकिया । २-सिराहना ।

शिरा [संज्ञा स्त्री](सं.) १-शरीर में रक्त की छोटी नस, विशेषतः वह नस जिसके द्वारा शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से रक्त चलकर हृदय तक पहुँचता है । २-इस आकार या प्रकार की कोई नली । ३-पृथ्वी के अन्दर बहने वाला पानी का सोता । [संज्ञा पु.](देश.) एक भूरे रंग का पक्षी ।

शिराकत [संज्ञा स्त्री.] (अ) १-साझा । २-किसी काम में सम्मिलित होना ।

शिराकतनामा [संज्ञा पु.] (अ., फा) वह पत्र जिसपर साझे की शर्तें लिखी हों ।

शिराग्रह [संज्ञा पु] (सं) एक वातरोग ।

शिराज [संज्ञा स्त्री](देश) चमड़े का काम करने वाली जाति ।

शिराजाल [संज्ञा पु] (सं) १-रक्त की छोटी-छोटी नाड़ियों का समूह । २-आँख का एक रोग ।

शिरापत्र [संज्ञा पु] (सं) १-पीपल का पेड़ । २-हिंताल । ३-कपित्थ ।

शिरापिड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँख का एक रोग ।

शिराप्रहर्ष [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का नेत्र रोग

शिराफल [संज्ञा पु.](सं.) १-नारियल । २-अंजीर

शिरामूल [संज्ञा पु.] (सं.) नाभि ।

शिरायु [संज्ञा पु.] (सं) रीछ । भालू ।

शिरालक [वि.] (सं.) बहुत सी नसों या नाड़ियों वाला ।

शिराला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का पौधा २-कमरख ।

शिराविका-पीड़िका [संज्ञा स्त्री.](सं.) प्रमेहपीड़िका

शिरावृत्त [संज्ञा पु] (सं.) सीसा नामक धातु ।

शिराहर्ष [संज्ञा पु.] (सं) १-नसों का झनझनाना २-एक नेत्ररोग ।

शिरि [संज्ञा पु.] (सं) १-तलवार । २-शर । ३-शलभ । ४-टिड्डी ।

शिरियारी [संज्ञा स्त्री.] (देश) एक जङ्गली बूटी या शाक जो दवा के काम में आता है । सुसना

शिरीष [संज्ञा पु.] (सं.) सिरस का वृक्ष ।

शिरीषक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरस वृक्ष । २-एक साग का नाम ।

शिरीषपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) सफेद कटभी नामक पौधा ।

शिरीषी [संज्ञा पु.](सं.) विश्वमित्र के पुत्र का नाम

शिरुआरी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शिरियारी' ।

शिरोगुहा [संज्ञा स्त्री.](सं) सिर के भीतर का भाग

शिरोगृह, शिरोगेह [संज्ञा पु] (सं) कोठा । अट्टालिका ।

शिरोग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) सिर का एक वात रोग ।

शिरोज [संज्ञा पु.] (सं.) बाल । केश ।

शिरोदाम [संज्ञा पु.](सं.) पगड़ी । साफा ।

शिरोधरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधाम [संज्ञा पु.] (सं.) चारपाई का सिराना ।

शिरोधार्य्य [वि.] (सं.) आदरसहित ग्रहण करने योग्य । *शिरोधार्य्य करना*–१-सिर-माथे चढ़ाना २-आदर स्वीकार करना ।

शिरोधि [संज्ञा स्त्री] (सं) ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधिजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) शिरा । नस । नाड़ी ।

शिरोपाव [संज्ञा पु.] देखो 'सिरोपाव' ।

शिरोभाग [संज्ञा पु.] (सं) १-अग्रभाग । २-मस्तक का भाग ।

शिरोभूषण [संज्ञा पु.] (सं) १-शिर धारण करने का गहना । २-मुकुट । ३-शिरोमणि ।

शिरोभ्यंग, शिराभ्यङ्ग [संज्ञा पु] (सं) सिर में तेल लगाना ।

शिरोमणि [संज्ञा पु] (सं) १-सिर पर पहनने का रत्न । २-माला में सुमेरु । [वि.] (सं) सर्वश्रेष्ठ । सबसे अच्छा ।

शिरोमर्म्म [संज्ञा पु] (सं) जंगली सूअर ।

शिरोमाली [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

शिरोमौली [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर पर पहनने का रत्न । २-श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोरक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) सदा राजा के साथ रहने वाला रक्षक ।

शिरोरत्न [संज्ञा पुं] (सं) सिर पर पहनने का रत्न ।

शिरोरुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं) सतिवन ।

शिरोरुह [संज्ञा पु.](सं) सिर के बाल ।

शिरोवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुरगे या मोर की चोटी । कलगी ।

शिरोवस्ती [संज्ञा पु] (सं) वात का विकार उत्पन्न सिर के दर्द का एक उपचार ।

शिरोवृत्त [संज्ञा पु] (सं) गोलमिर्च । काली मिर्च

शिरोवृत्तफल [संज्ञा पु.] (सं) लाल चिचड़ा या ओंगा ।

शिरोवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं) पगड़ी । साफा ।

शिरोहर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिर का दर्द ।

शिलंडी [संज्ञा स्त्री](देश) एक प्रकार की घास बीड़ ।

शिलंधिर, शिलन्धिर [संज्ञा पु](सं) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

शिलंब, शिलम्ब [संज्ञा पु](सं) १ जुलाहा । २-समझदार ।

शिल [संज्ञा पु] (सं.) १-देखो 'उंछ' । २-परिपात्र के एक पुत्र का नाम । [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'शिला' । २-देखो 'सिल' ।

शिलक [संज्ञा पु] (सं) वैदिककालीन एक ऋषि का नाम ।

शिलगर्भज [संज्ञा पु] (सं) पाषाणभेद ।

शिलज [संज्ञा पु] (सं) भूरि छरीला ।

शिलरति [संज्ञा पु.] (सं) उंछवृत्ति के द्वारा जीवन निर्वाह करने वाला ।

शिलवट [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'सिलवट' ।

शिलवाहा [संज्ञा स्त्री](हिं) देखो 'सिलाबहा' ।

शिलांजनी, शिलाञ्जनी [संज्ञा स्त्री] (सं) काली कपास ।

शिलांत, शिलान्त [संज्ञा पु.](सं) अश्मंतकवृक्ष

शिला [संज्ञा स्त्री](सं.) १-पाषाण । पत्थर । २-सिल । चट्टान । ३-मनःशिला । ४-कपूर । ५-शिलाजीत । ६-गेरू । ७-नील का पौधा । ८-हरीतकी । ९-गोरोचन । १०-दूब । ११-पत्थर की पटिया । १२-उंछवृत्ति ।

शिलाकर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) सलई (वृक्ष) ।

शिलाकुट्टक [संज्ञा पु.] (सं) पत्थर तोड़ने की छेनी ।

शिलाकुसुम [संज्ञा पु] (सं) शिलाजीत।

शिलाक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) चूना।

शिलाचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) शालग्राम की मूर्त्ति।

शिलाचय [संज्ञा पु.] (सं) पर्वत। पहाड़।

शिलाज [संज्ञा पु.] (सं) १-छरीला। २-लोहा। ३-शिलाजीत।

शिलाजतु [संज्ञा पु] (सं) शिलाजीत।

शिलाजा [संज्ञा स्त्री] (सं.) संगमरमर।

शिलाजीत [संज्ञा स्त्री] (हिं) पहाड़ों की चट्टानों से निकलने वाली एक प्रसिद्ध पौष्टिक काली औषध। मोमियाई।

शिलाटक [संज्ञा पु.](सं) १-बहुत बड़ा मकान। २-चौबारा। ३-मकान की चाहरदीवार। ४-गड्ढा।

शिलाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल गदहपूरना।

शिलात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) लोहा।

शिलात्मिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने या चाँदी गलाने की घरिया।

शिलात्व [संज्ञा पु] (सं) शिला का भाव या धर्म

शिलात्वच [संज्ञा पु](सं) शिला या वल्का नामक औषध।

शिलाद [संज्ञा पु] (सं) एक प्राचीनकाल ऋषि का नाम।

शिलादद्रु [संज्ञा पु] (सं) १-छरीला। २-शिलाजीत।

शिलादान [संज्ञा पु] (सं) ब्राह्मण को शालग्रह की मूर्त्ति का दान (पुराण)।

शिलादित्य [संज्ञा पु] (सं) देखो 'हर्षवर्धन'।

शिलाद्रंद्र, शिलाद्रुन्द्र [संज्ञा पु] (सं.) छरीला।

शिलाधातु [संज्ञा पु] (सं.) १-सोनगेरू। २-खड़िया मिट्टी। ३-चीनी। शक्कर।

शिलानिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शिलानीड़ [संज्ञा पु.] (सं) गरुड़।

शिलान्यास [संज्ञा पु] (सं) नींव का पत्थर रखा जाना।

शिलापट्ट [संज्ञा पु] (सं) १-पत्थर की चट्टान। २-मसाला पीसने की सिल।

शिलापुत्र [संज्ञा पु] (सं) सिल पर मसाला पीसने का बट्टा।

शिलापुष्प [संज्ञा पु] (सं.) १-छरीला। २-शिलाजीत।

शिला-प्रमोच [संज्ञा पु.] (सं) लड़ाई में पत्थर फेंकना या लुढ़काना।

शिलाप्रसून [संज्ञा पु.] (सं) छरीला।

शिलाबंध, शिलाबन्ध [संज्ञा पु] (सं) पत्थरों का परकोटा या प्राचीर।

शिलाभद्र [संज्ञा पु] (सं.) छरीला।

शिलाभाव [संज्ञा पु] (सं.) पाषाणत्व।

शिलाभेद [संज्ञा पु.] (सं) १-पाषाणभेद। २-पत्थर तोड़ने की छेनी।

शिलामय [वि] (सं) पत्थर का बना हुआ।

शिलामल [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शिलायु [संज्ञा पु.] (सं) गले का एक रोग।

शिलायूप [संज्ञा पु] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

शिलारंभा, शिलारम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठकेला।

शिलारस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सुगन्धित गोंद जो लोहबान की तरह होता है।

शिलारोपण [संज्ञा पु] (सं) नींव का पत्थर रखा जाना।

शिला-लेख [संज्ञा पु] (सं.) पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख।

शिलावर्षी [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम। [वि.] पत्थर बरसाने वाला।

शिलावल्का [संज्ञा स्त्री.](सं) शिलजा या श्वेता नामक औषध।

शिलावह [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्राचीन जनपद २-उसका निवासी।

शिलावहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

शिला-वृष्टि [संज्ञा स्त्री.](सं) आकाश से ओले गिरना।

शिलावेश्म [संज्ञा पु.](सं.) १-गुफा। २-पत्थर का बना मकान।

शिलाव्याधि [संज्ञा पु.] (सं) शिलाजीत।

शिलाशस्त्र [संज्ञा पु](सं.) पत्थर का बना हुआ हथियार।

शिलासन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शैलेय नाम का गन्धद्रव्य। २-पत्थर का बना आसन। ३-शिलाजीत।

शिलासार [संज्ञा पु.] (सं.) लोहा।

शिलास्थि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गरदन में की वह हड्डी जिस पर कपाल स्थिर रहता है।

शिलास्तंभ, शिलास्तम्भ [संज्ञा पु] (सं.) पत्थर का खम्भा।

शिलास्वेद [संज्ञा पु.] (सं) शिलाजीत।

शिलाहरि [संज्ञा पु.] (सं.) शालिग्राम की मूर्त्ति।

शिलाहारी [संज्ञा पु.](हिं) उञ्छवृत्ति से निर्वाह करने वाला।

शिलाह्व, शिलाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शिलिंद, शिलिन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

शिलि [संज्ञा पु.] (सं) भोजपत्र। [संज्ञा स्त्री.] चौखट के नीचे की लकड़ी। देहली।

शिलिन [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन एक ऋषि।

शिलींध, शिलीन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-केले का फूल। २-ओला। ३-शिलिंद नामक मछली। ४-कुकरमुत्ता। ५-कठकेला।

शिलींध्रक [संज्ञा पु.] (सं) कुकुरमुत्ता।

शिली [संज्ञा स्त्री](सं.)१-देहलीज। २-केंचुआ। ३-बाण। ४-भोजपत्र। ५-भाला। ६-मेंढ

शिलीपद [संज्ञा पु.] (सं) फीलपाँव नामक रोग।

शिलीपृष्ठ [संज्ञा पु](सं.) तलवार।

शिलीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-भ्रमर। भौंरा। २-बाण। तीर। ३-युद्ध। लड़ाई। ४-मूर्ख।

शिलु [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोढ़ा।

शिलूष [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाट्यशास्त्र के एक प्राचीन आचार्य। २-बेल का वृक्ष।

शिलेय [वि.] (सं.) शिला-सम्बन्धी। शिला का। [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शिलोंछ, शिलोञ्छ, शिलोंछन, शिलोञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) फसल कट जाने पर खेत में गिरे-पड़े दाने चुनकर जीवन निर्वाह करने की वृत्ति।

शिलोच्चय [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत। पहाड़।

शिलोत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-छरीला। २-शिलाजीत।

शिलोद्भव [संज्ञा पु.](सं.) १-शैलेय। छरीला। २-पीला चन्दन।

शिलोद्भिदा [संज्ञा स्त्री] (सं) पाषाणभेद।

शिलौका [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो पर्वत पर होता हो। २-गरुड़।

शिल्प [संज्ञा पु](सं.) १-कोई वस्तु हाथ से बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। कारीगरी। २-कला-सम्बन्धी व्यवसाय।

शिल्पकर [संज्ञा पु.] देखो 'शिल्पकार'।

शिल्पकला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथ से वस्तुएँ बनाकर तैयार करने की कला। कारीगरी। दस्तकारी।

शिल्पकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ से अच्छी-अच्छी चीजें बनाकर तैयार करने वाला। शिल्पी। २-राज। मेमार।

शिल्पकारी [संज्ञा पु.](सं.) शिल्प का कार्य करने वाला। दस्तकार। कारीगर।

शिल्पगृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पकार कार्य करते हों। कारखाना।

शिल्पगेह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिल्पगृह'।

शिल्पजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) दस्तकार। शिल्पी।

शिल्पज्ञ [वि] (सं.) [पु. प्र.] शिल्प जानने वाला।

शिल्पता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिल्प का भाव या धर्म।

शिल्पत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्पता।

शिल्प-प्रजापति [संज्ञा पु.](सं.) विश्वक नाम।

शिल्पलिपि [संज्ञा स्त्री] (सं) पत्थर या तांबे आदि पर अक्षर खोदने की विद्या।

शिल्पविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें हाथ से चीजें बनाने का निरूपण हो। टेकनोलोजी।

शिल्पविज्ञानी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो शिल्प-विज्ञान का ज्ञाता हो।

शिल्पविद्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हाथ से वस्तुएँ बनाकर तैयार करने की विद्या। २ गृहनिर्माण-कला।

शिल्पशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिल्पगृह'।

शिल्पशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह शास्त्र जिसमें शिल्पकला का विवेचन होता है। २-गृहनिर्माणशास्त्र।

शिल्पशिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिल्पकार्य का सिखाना। टेक्नीकल-एजुकेशन।

शिल्पिक [संज्ञा पु.](सं.) १-शिल्पी। दस्तकार। २-नाटक का एक भेद। ३-शिव का एक नाम

शिल्पिका [संज्ञा स्त्री](सं.) एक प्रकार का तृण।

शिल्पिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिल्पी का स्त्री-लिंग रूप। २-एक प्रकार की घास।

शिल्पिशाला [संज्ञा स्त्री] (सं.) शिल्पगृह।

शिल्पी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शिल्प का कार्य करने वाला। २-किसी शिल्प का अच्छा जानकार टेक्नीशिअन। ३-नखी नामक गंधद्रव्य। ३-राज। थवई। ४-चित्रकार। [वि.] (हिं.) शिल्प-सम्बन्धी। शिल्प का।

शिल्पीकरण [संज्ञा पु.](सं.) देश के लिये शिल्प-कार्य के लिये बढ़ावा देना। देश में शिल्प की उन्नति करना।

शिल्पी-शिक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) शिल्प-सम्बन्धी शिक्षा देना। टेक्निकल-ट्रेनिंग।

शिह्ल, शिह्लक [संज्ञा पु.](सं) देखो 'शिलारस'

शिवंकर, शिवङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मङ्गल करने वाला, शिव। २-तलवार। ३-शिव का एक गण। ४-एक रोग फैलाने वाला असुर। ५-एक बालग्रह।

शिवंतिका, शिवन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) गुल-दाऊदी।

शिवंसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) शस्य का वह भाग जो अन्न काटने के समय शैवसाधुओं के लिये अलग कर दिया जाता है।

शिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगल। कल्याण। २-मोक्ष। ३-रुद्र। ४-परमेश्वर। ५-हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करने वाले माने जाते हैं। ६-जल। पानी। ७-सेंधा नमक। ८-फिटकरी। ९-सुहागा। १०-चाँदी ११-चन्दन। १२-लोहा। १३-मिर्च। १४-पारा। १५-वेद। १६-खूंटा। १७-गुग्गुल। १८-पुंडरीक वृक्ष। १९-शुभग्रह। २०-एक प्रकार का मृग। २१-लिंग। २२-एक प्रकार का नृत्य। २३-एक प्रकार की गुड़ की शराब २४-एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ५, ६ के विश्राम से ११ मात्राएँ और अन्त में सगण रगण, नगण में से कोई एक होता है इसकी तीसरी, छटी, और नवीं मात्राएँ लघु होती हैं। २५-तिल का फूल। २६-नीलकण्ठ पक्षी २७-कौआ। २८-मौलसिरी। २९-विष्कम्भ आदि २७ योगों में से एक। ३०-समुद्र लवण ३१-गीदड़। ३२-जम्बूद्वीप के एक वर्ष का नाम

शिवक [संज्ञा पु.](सं.) १-कील। काँटा। २-खूंटा।

शिवकर [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों का चौबीस जिनों में से एक।

शिवकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मात्रिका का नाम।

शिवकांची, शिवकाञ्ची [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध नगर।

शिवकांता, शिवकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा

शिवकारिणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुर्गा का एक नाम [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] मङ्गल करने वाली।

शिवकारी [वि.] (सं.) मङ्गल या कल्याण करने वाला।

शिव-किंकर, शिवकिङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का गण।

शिवकीर्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शैव। २-विष्णु ३-शिव का द्वारपाल।

शिवकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गुल्म

शिवक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास।

शिवगंग, शिवगङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक पवत का नाम जो मैसूर राज्य में है।

शिवगंगा, शिवगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव-मन्दिर के पास का जलाशय या नदी।

शिवगण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का अनुचर।

शिवगति [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक अर्हत् का नाम।

शिवगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास पर्वत।

शिवगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) शङ्कराचार्य के पिता का नाम।

शिवघर्मज [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

शिवचतुर्दशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिवरात्रि।

शिवजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पचगुरिया नामक लता

शिवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिव का भाव या धर्म। २-मोक्ष।

शिवतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) काशी जो शिव का प्रधान तीर्थ माना जाता है।

शिवतेज [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

शिवदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) सुदर्शनचक्र।

शिवदारु [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार नामक वृक्ष।

शिवदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ईशानकोण।

शिवदूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका।

शिवदूती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-आठ योगिनियों में से एक।

शिवदैव [संज्ञा पु.] (सं.) आर्द्रानक्षत्र।

शिवद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ववृक्ष।

शिवद्विष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केतकी। केवड़ा।

शिवधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारद। पारा। २-गोदन्ती नामक मणि।

शिवनंदन, शिवनन्दन [संज्ञा पु.](सं.) गणेशजी

शिवनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

शिवनाभि [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का शिवलिंग जो श्रेष्ठ समझा जाता है।

शिवनामी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) वह चादर जिस पर 'शिव' या 'जयशिव' छपा होता है।

शिवनारायणी [संज्ञा पु.] (सं) हिंदुओं का एक सम्प्रदाय।

शिवनिर्माल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव पर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ग्रहण करने के योग्य नहीं होता। २-परम अग्राह्य वस्तु।

शिवनृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

शिव-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) लालकमल।

शिव-पुत्र [संज्ञा पु.] पारद। पारा।

शिवपुर [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों का स्वर्ग। मोक्ष-शिला।

शिवपुराण [संज्ञा पु.](सं.) अठारह पुराणों में से एक।

शिवपुरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) काशीनगरी।

शिवपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) आक। मदार।

शिवप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुद्राक्ष। २-अगस्त-वृक्ष। ३-भाँग। ४-धतूरा। ५-स्फटिक।

शिवप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

शिवप्रीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेल का वृक्ष।

शिवबीज [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का वीर्य, पारा।

शिवब्राह्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शंखपुष्पी।

शिवभक्त [संज्ञा पु.](सं.) वह जो शिव का उपासक हो।

शिवमय [वि.] (सं.) शिव के समान।

शिवमल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुनवृक्ष।

शिवमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वसु नामक पुष्पवृक्ष। २-आक। मदार। ३-अगस्तवृक्ष। ४-शिवलिंगी। ५-श्रीवल्ली।

शिवमात्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या (बौद्ध)।

शिवयोषिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिव की पत्नी, दुर्गा।

शिवराजी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़े

आकार का कबूतर।

शिवरात्र [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'शिवरात्रि'।

शिवरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं) फाल्गुनकृष्णा-चतुर्दशी।

शिवरानी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पार्वती।

शिवलिंग, शिवलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शिव या महादेव की पिंडी जिसकी पूजा होती है।

शिवलिंगी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रसिद्ध लता जो चौमासे में जङ्गल में झाड़ियों पर बहुत अधिक होती है।

शिवलोक [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास।

शिववल्लभ [संज्ञा पु.] (सं) आम का पेड़।

शिववल्लभा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-पार्वती। २-सेवती। शतपत्री।

शिववल्लिका, शिववल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिवलिंगी।

शिववाहन [संज्ञा पु] (सं.) बैल।

शिववीय [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

शिववृषभ [संज्ञा पु.] (सं.) बैल, जो शिव की सवारी है।

शिवशंखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देवी की एक मूर्त्ति का नाम।

शिवशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शिवशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वकवृक्ष। २ धतूरा। ३-चन्द्रमा। ४-सफेद मदार।

शिवशैल [संज्ञा पु.] (सं.) कैलाशपर्वत।

शिवसायुज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव में लीन होने पर प्राप्त होने वाली मोक्ष। २-मृत्यु। मौत।

शिवसुंदरी, शिवसुन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा

शिवांक, शिवाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त का पेड़

शिवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-पार्वती। ३-मुक्ति। मोक्ष। ४-हड़। हरीतकी। ५-सोआ का साग। ६-सफेद कीकर। ७-आँवला। ८-हल्दी। ९ धव। १०-अनन्त-मूल ११-शृगाली। १२-दूब। १३-गोरोचन। १४-श्यामा नामक-लता।

शिवाकु [संज्ञा पु.] (सं) एक गोत्रकार ऋषि।

शिवाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष।

शिवाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वल्ली दूब।

शिवाघृत [संज्ञा पु.] (सं) वैद्यक में एक घृत जो पागलपन के लिए परम उपकारी माना जाता है।

शिवाची [संज्ञा स्त्री.] (सं) वंशपत्री।

शिवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वंशपत्री नामक तृण। २-पुनर्नवा। ३-हिंगुपत्री। ४-कठूमर।

शिवात्मक [संज्ञा पु.] (सं) सेंधा नमक।

शिवाधूत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शतद्रु'

शिवानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-जयन्ती-वृक्ष।

शिवापीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्तवृक्ष।

शिवाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं) १-शिव। २-बकरा।

शिवाफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष।

शिवाबलि [संज्ञा पु.](सं.) वह नैवेद्य जो रात के समय देवी के सामने रखा जाता है और जिसमें मांस की प्रधानता होती है (तांत्रिक)।

शिवायतन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शिवालय'।

शिवाराति [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता।

शिवारुत [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़ के बोलने का शब्द।

शिवालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव का मन्दिर। २-कोई देवमन्दिर। ३-लाल तुलसी। ४-श्मशान।

शिवाला [संज्ञा पु.](हिं.) शिव का मंदिर। देव-मन्दिर।

शिवालु [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़। सियार।

शिवास्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जयन्ती नामक वृक्ष।

शिवाह्लाद [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्तवृक्ष।

शिवाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारद। पारा। २-वटवृक्ष। ३-आक। मदार।

शिवाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रुद्रजटा।

शिवि [संज्ञा पु.](सं.) १-हिंसक पशु। २-भोजपत्र। ३-राजा उशीनर के पुत्र का नाम। यह बड़े धर्मात्मा और दानी थे।

शिविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) डोली। पालकी।

शिविपिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) महादेव।

शिविर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना के ठहरने का स्थान। पड़ाव। २-वह स्थान जहाँ कुछ लोग मिलकर किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से रहें। कैंप। ३-डेरा। खेमा। ४-दुर्ग। किला। कोट। ५-एक प्रकार का तृणधान्य।

शिविरगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम

शिविर-नायक [संज्ञा पु.] (सं.) वह सैनिक अधिकारी जो किसी शिविर के सैनिकों की रसद का प्रबन्ध करता है। क्वार्टर मास्टर।

शिवीरथ [संज्ञा पु.] (सं.) पालकी। डोली। शिविका।

शिवेश [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़। शृंगाल।

शिवेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्तवृक्ष। २-श्रीफल बेल।

शिवेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूब।

शिवोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम (महाभारत)।

शिवोपनिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

शिश्न [संज्ञा पु.] १-देखो 'सेश्न'। २-देखो 'शिश्न'।

शिशिर [संज्ञा पु] (सं) १-माघ और फा मास की ऋतु। २-जाड़ा। शीतकाल। ३- ४-विष्णु। ५-सूर्य। ६-एक अस्त्र। ७- चन्दन। [वि.] (सं.) शीतल। ठंडा।

शिशिरकर, शिशिरगु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्र

शिशिरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिशिर का भाव धर्म।

शिशिरमयूख [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शिशिरांत, शिशिरान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वसन्त।

शिशिरांशु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शिशिराद्रि [संज्ञा पु.] एक पर्वत का नाम (पुराण)

शिशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-छोटा बालक, विशेष आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा। २-पशुओं आदि का बच्चा। ३-कार्तिकेय का एक नाम।

शिशुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूँस नामक जलजंतु २-शिशु। बच्चा। ३-एक प्रकार का वृक्ष। ४-सर्प विशेष।

शिशुकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बचपन।

शिशुकृच्छ्र [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का चान्द्रायण व्रत।

शिशुगंध, शिशुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोतिया।

शिशुचांद्रायण, शिशुचान्द्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चान्द्रायणव्रत।

शिशुता [संज्ञा स्त्री.] (सं) शिशु का भाव या धर्म। बचपन।

शिशुताई* [संज्ञा स्त्री.](हिं) शिशुता। बचपन।

शिशुत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुता। बचपन।

शिशुनाग [संज्ञा पु.](सं.) १-एक राक्षस का नाम। २-एक राजा। ३-देखो 'शैशुनाग'।

शिशुनामा [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊँट।

शिशुपन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिशुता'।

शिशुपाल [संज्ञा पु.](सं.) चेदि देश का राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शिशुपालक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दमघोष का पु शिशुपाल। २-नीम।

शिशुपालवध [संज्ञा पु.] (सं.) महाकवि मा रचित एक प्राचीन काव्य जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के मारे जाने की कथा का वर्णन है।

शिशुपालहा [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

शिशुमार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूँस नामक जल जन्तु। २-देखो 'शिशुमार-चक्र'। ३- आकृति वाला नक्षत्रमण्डल। ४-श्रीकृष्ण ५-विष्णु।

शिशुमार-चक्र [संज्ञा पु.] (सं.) सब ग्रहों सूर्य। सौरजगत्।

शिशुमारमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्तिकेय

एक मातृका का नाम।

शिशुवाहक, शिशुवाह्यक [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली बकरा।

शिशूल [संज्ञा पु.] देखो 'शिशु'।

शिश्न [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष की उपस्थेंद्रिय। लिंग।

शिष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिष्य'। [संज्ञा-स्त्री.] १-शिक्षा। सीख। २-वह बाल जो मुण्डन के समय सिर पर छोड़े जाते हैं।

शिषर* [संज्ञा पु.] (हिं.) अपामार्ग। चिचड़ा। [वि.] शिखर वाला।

शिषा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिखा'।

शिषि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिष्य'।

शिषी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिखी'।

शिष्ट [वि.] (सं.) १-अच्छे स्वभाव, व्यवहार और आचरण वाला। भला आदमी। सभ्य। २-धर्मशील। ३-धीर। शांत। ४-श्रेष्ठ। उत्तम। ५-आज्ञाकारी।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-मन्त्री। २-सभ्य। ३-सभासद्।

शिष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सभ्यता। भलमनसाहत। २-उत्तमता। श्रेष्ठता।

शिष्टत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शिष्टता'।

शिष्ट-मंडल, शिष्ट-मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ शिष्ट लोगों का वह दल जो किसी विशिष्ट कार्य के निमित्त कहीं भेजा जाता है डेपुटेशन।

शिष्ट-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजसभा। राज्य-परिषद्।

शिष्ट-समाज [संज्ञा पु.] (सं.) भले आदमियों का समाज। सभ्यसमाज।

शिष्टाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिष्ट या सभ्य पुरुषों का सा आचरण। उत्तम व्यवहार। २-आने वाले का आदर-सम्मान। आवभगत। ३-दिखावटी और ऊपरी सभ्य व्यवहार। ४-विनय। नम्रता।

शिष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आज्ञा। २-शासन हुकूमत। ३-दण्ड। सजा। ४-सुधार। ५-सहायता।

शिष्ण [संज्ञा पु] देखो 'शिश्न'।

शिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शिष्या] १-वह जिसे किसी ने पढ़ाया या लिखाया हो। चेला शागिर्द। २-वह जो हाल में श्रावक बना हो (जैन)।

शिष्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शिष्य होने का भाव या धर्म।

शिष्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शिष्यता।

शिष्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं।

शिस्त [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मछली पकड़ने का कांटा। २-निशाना। लक्ष्य। ३-दूरबीन की तरह का एक प्रकार का यन्त्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है। ४-अँगूठा।
शिस्त बाँधना–निशाना साधना।
[वि] (सं.) अनुशासनात्मक। अनुशासन-सम्बन्धी।

शिस्तबाज [संज्ञा पु.] (फा.) १-निशानेबाज। २-शिस्त लगा कर मछली पकड़ने वाला।

शिह्लक [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस।

शी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शांति। २-शयन। सोना। ३-भक्ति।

शीकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ओस। तुषार। शबनम। २-वायु। हवा। ३-जलकण। ४-शीत जाड़ा। ५-वर्षा की छोटी-छोटी बूंदें। फुहार ६-धूप नामक सुगन्धितद्रव्य। ७-गन्धाविरोजा।

शीघ्र [क्रि. वि.] (सं.) बिना विलम्ब या देर के। चटपट। जल्द। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। हवा। २-लभज तृण। ३-चक्रांग। ४-वह अन्तर जो पृथ्वी के दो भिन्न-भिन्न स्थानों से ग्रहों को देखने से होता है। ५-कुरुवंशीय अग्निवरुण के पुत्र का नाम।

शीघ्रकारी [वि.] (सं.) १-जल्दी से काम करने वाला। २-शीघ्र प्रभाव उत्पन्न करने वाला। ३-तीव्र। कड़ा। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

शीघ्रकोपी [वि.] (सं.) १-जल्दी गुस्सा होने वाला। २-चिड़चिड़ा।

शीघ्रग [वि.] (सं.) शीघ्र चलने वाला। [संज्ञा पु.] १-सूर्य। २-वायु। ३-खरगोश। ४-अग्निवरुण के पुत्र का नाम।

शीघ्रगामी [वि.] (सं.) जल्दी या तेज चलने वाला।

शीघ्रचेतन [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता। [वि.] किसी बात को जल्दी समझने वाला।

शीघ्रजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) कंटकरंज।

शीघ्रजीर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।

शीघ्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीघ्र का भाव या धर्म। जल्दी। फुरती।

शीघ्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शीघ्रता।

शीघ्रपतन [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री-प्रसंग के समय वीर्य का जल्दी स्खलित हो जाना।

शीघ्रपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) वायु।

शीघ्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्य नामक वृक्ष।

शीघ्रयान [वि.] (सं.) तेजी से जाने वाला।

शीघ्रवह [वि.] (सं.) तेजी से ढोने वाला।

शीघ्रवाही [वि.] (सं.) जल्दी से ले जाने वाला।

शीघ्रवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) जल्दी बाण चलाने-वाला।

शीघ्र-संचारी [वि.] (सं.) देखो 'शीघ्रगामी'।

शीघ्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक नदी का नाम। २-दंतीवृक्ष।

शीघ्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-बिल्लियों का लड़ना।

शीत [वि.] (सं.) १-ठंडा। शीतल। २-शिथिल। सुस्त। [संज्ञा पु.] १-जाड़ा। सर्दी। २-शीत या जाड़े की ऋतु जो अगहन, पूस और माघ में होती है। ३-जुकाम। सरदी। ४-जल। पानी। ५-ओस। तुषार। ६-दालचीनी ७-बेंत। ८-लिसोड़ा। ९-नीम। १०-कपूर। ११-पित्तपापड़ा। १२-एक प्रकार का चन्दन।

शीतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शीतकाल। जाड़े के दिन २-बिच्छू। ३-बनसनई। ४-हर एक काम में देर लगाने वाला व्यक्ति। ५-एक देश का नाम। ६-एक प्रकार का चन्दन। ७-सुस्त। आलसी। ८-सन्तोषी पुरुष।

शीतकटिबंध, शीतकटिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के वे दो विभाग जो भूमध्यरेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद तथा २३½ अंश दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जिनमें बहुत सरदी पड़ती है।

शीतकण [संज्ञा पु.] (सं.) जीरा।

शीतकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।
[वि.] (सं.) शीतल या ठंडा करने वाला।

शीतकषाय [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक के अनुसार किसी काष्ठौषध का वह कषाय (रस) जो उसे छः गुने ठंडे पानी में रात भर भिगो रखने से बनता है।

शीतकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-हेमंतऋतु। २-जाड़े का मौसम।

शीतकिरण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शीतकुंभ, शीतकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर।

शीतकुंभिका, शीतकुम्भिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) जलकुंभी नामक लता।

शीतकुंभी, शीतकुम्भी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीतली-जटा नामक लता जो जल में उत्पन्न होती है

शीतकूर्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बला। खरैंटी।

शीतकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का व्रत।

शीतक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्ध सोहागा।

शीतगंध, शीतगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

शीतगात्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

शीतगु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

शीतचंपक, शीतचम्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्पण। आइना। २-दीपक। दीया।

शीतछाया [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।
[वि.] (सं.) शीतल छाया वाला।

शीतज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) जाड़े से चढ़ने वाला

बुखार । मलेरिया ।

शीत-तरंग, शीत-तरङ्ग [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीतकाल में किसी स्थान पर बहुत अधिक सरदी अथवा बरफ पड़ने पर उसके प्रभाव से किसी दिशा में बढ़ने वाली शीत की वह तरंग जिससे तीन या चार दिन के लिए सरदी बहुत बढ़ जाती है । कोल्ड-वेव ।

शीतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शीत का भाव या धर्म ठंडक ।

शीतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शीतता । ठंडक ।

शीतदंत, शीतदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) दाँतों में ठंडी हवा या ठण्डे जल का लगना या एक प्रकार की पीड़ा उत्पन्न करना ।

शीतदंतिका, शीतदन्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदंती ।

शीतदीधिति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

शीतदीप्य [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद जीरा ।

शीतदूर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब ।

शीतद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

शीतद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'मोरट' ।

शीतपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद लाजवंती ।

शीतपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अर्कपुष्पी ।

शीतपल्लवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी जामुन ।

शीतपाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकोली नामक अष्टवर्गीय औषध । २-घुँघची । ३-अतिबला ।

शीतपित्त [संज्ञा पु.] (सं.) जुड़-पित्ती नामक रोग

शीतपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-छरीला । २-केवटी मोथा । ३-सिरिस ।

शीतपुष्पक [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक । मदार । २-छरीला । ३-केवटीमोथा ।

शीतपुष्पा, शीतपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिबला ।

शीतपूतना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का बाल रोग ।

शीतप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) कर्पूर । कपूर ।

शीतप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तपापड़ा ।

शीतफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गूलर । २-पीलू । ३-अखरोट । ४-आंवला । ५-लिसोड़ा ।

शीतबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककही । महासमंगा

शीतभानु [संज्ञा पु.] (सं) चन्द्रमा ।

शीतभीरु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मल्लिका । मोतिया २-देखो 'निर्गुंडी' ।

शीतभीरुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मल्लिका । २-एक प्रकार का शालिधान्य । ३-काली निर्गुंडी ।

शीतमंजरी, शीतमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शेफालिका । निर्गुंडी ।

शीतमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) खस । उशीर ।

शीतमयूख, शीतमरीचि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।

शीतमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह-रोग ।

शीतमेही [संज्ञा पु.] (हिं.) वह रोगी जिसे शीत प्रमेह हो ।

शीतयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) दो विरोधी विचार धारा वाले राष्ट्र या उन राष्ट्रों के गुट्ट में होने वाला वह वाक्युद्ध जिसमें एक दूसरे पर दोष मढ़ते और भर्त्सना करते हैं, जिससे जनसाधारण को ऐसा आभास होने लगता है कि अब महायुद्ध होने को है । कोल्ड-वार ।

शीतरम्य [संज्ञा पु.] (सं.) दीपक । दीआ ।

शीतरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर

शीतरस [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की मदिरा जो ईख के कच्चे रस से बनती है ।

शीतरुच [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

शीतरुह [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कमल ।

शीतल [वि.] (सं.) १-ठण्डा । सर्द । 'गरम' का उलटा । २-क्षोभ अथवा उद्वेगरहित । शांत । ३-प्रसन्न । सन्तुष्ट । [संज्ञा पु.] (सं.) १-उशीर । खस । २-छरीला । ३-कसीस । ४-चन्दन । ५-मोती । ६-वनसनई । ७-लिसोड़ा ८-चम्पा । ९-राल । १०-पीतचन्दन । ११-पदुमकाठ । १२-हिम । बर्फ । १३-भीमसेनी कपूर । १४-शालवृक्ष । १५-चन्द्रमा । १६-मटर । १७-जैनियों का एक प्रकार का व्रत ।

शीतलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरुआ । २-कुमुद ।

शीतलचीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कबाबचीनी ।

शीतलच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) चम्पा । चम्पक ।

शीतलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ठंडापन । सर्दी । २-अमृतवल्ली । ३-जड़ता ।

शीतलताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शीतलता'

शीतलप्रद [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन ।

शीतलवातक [संज्ञा पु.] (सं.) अपराजिता । विष्णुक्रांता ।

शीतला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-चेचक नामक रोग । २-इस रोग की अधिष्ठात्री देवी । ३-अर्कपुष्पी । ४-नीली दूब । ५-आराम-शीतला ।

शीतलाष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघसुदी-छठ ।

शीतलाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चैत्रमास के कृष्णपक्ष की अष्टमी ।

शीतली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक पौधा जो जल में उगता है । २-श्रीवल्ली । ३-चेचक ।

शीतवर [संज्ञा पु.] (सं.) शंरियारी । गुठवा ।

शीतवरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककही नामक पौधा ।

शीतवल्क [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर ।

शीतवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तपापड़ा ।

शीतवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली दूब ।

शीतवासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूही । यूथिका ।

शीतवीर्य [संज्ञा पु.](सं.) १-पदुमकाठ । २-पाषाण-भेद । ३-पित्तपापड़ा । ४-पाकड़ । ५-नीली दूब । ६-वच । बचा । [वि.](सं.) ठंडी तासीर वाला ।

शीतवृक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुरहुर नामक वृक्ष ।

शीतशिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंधा नमक । २-छरीला । ३-सोआ । ४-शमीवृक्ष । ५-कपूर ।

शीतशिवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शमीवृक्ष । २-सौंफ ।

शीतशूक [संज्ञा पु.] (सं.) जौ । यव ।

शीतशैल [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत ।

शीतसंवासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जूही । यूथिका ।

शीत-सन्निपात [संज्ञा पु.](सं.) पत्त । पात । [illegible]

शीतसह [संज्ञा पु.] (सं.) पीलू । [illegible]

शीतसहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निर्गुंडी । शेफालिका । २-नेवारी । ३-एक प्रकार की मल्लिका मोतिया बेला । ४-चमेली । ५-पीलू ।

शीतांग, शीताङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शीत सन्निपात

शीतांगी, शीताङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंसपदी नामक लता ।

शीतांबु, शीताम्बु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुद्धी नामक घास ।

शीतांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।

शीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरदी । ठंड । २-दूब का एक भेद । ३-शिलिपका नामक घास । ४-तरवर की छाल । ५-अमलतास ।

शीताद [संज्ञा पु.] (सं.) दान्त के मसूड़ों का एक रोग ।

शीताद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत ।

शीताद्य [संज्ञा पु.] (सं.) जाड़े से आने वा बुखार । शीतज्वर ।

शीताबला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककही । महास मङ्गा ।

शीताभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर

शीतार्त्त [वि.] (सं.) शीत से पीड़ित ।

शीताल [संज्ञा पु.] (सं.) हिंताल नामक वृक्ष ।

शीताश्म [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकांतमणि ।

शीतीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-शीतलता । २-शांति । शम । ३-मोक्ष । मुक्ति ।

शीतोदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम ।

शीत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सीत्कार' ।

शीधु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मदिरा जो ऊख के पके हुए रस से बनती है । सीधु ।

शीधुगंध, शीधुगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १- गंध । २-मौलसिरी ।

शीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मूर्ख । २-अजगर [वि.] (सं.) जमा हुआ ।

शीभर [संज्ञा पु.] (सं.) वर्षा की झड़ी।

शीभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-बैल।

शीया [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानों का एक सम्प्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है।

शीर [वि.] (सं.) नुकीला। तेज। [संज्ञा पु.] (सं.) अजगर। [संज्ञा पु.] (फा.) क्षीर। दूध

शीरखिश्त [संज्ञा पु.] (फा.) एक रेचक औषध। (हकीमी)।

शीरखोरा [संज्ञा पु.] (फा.) १-दूधमुँहा बच्चा। २-अनजान बालक।

शीरमाल [संज्ञा स्त्री.](फा.) एक प्रकार की खमीरी रोटी।

शीरा [संज्ञा पु.] (फा.) १-शरबत। २-चाशनी।

शीराजा [संज्ञा पु.] (फा.) १-बना हुआ रंगीन या सफेद फीता। २-प्रबंध। इन्तजाम। ३-सिलसिला।

शीराजा खुलना या टूटना-१-टाँका खुलजाना २-प्रबन्ध बिगड़ जाना।

शीराजी [वि.] (फा.) शीराज नगर का। [संज्ञा पु.] १-एक प्रकार का कबूतर। २-एक प्रकार की मदिरा।

शीरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्त की नाड़ी।

शीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशपत्री-तृण।

शीरी [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुश। कुशा। २-मूँज। ३-कलिहारी। [वि.] (फा.) १-मीठा। मधुर। २-प्रिय। प्यारा।

शीरीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मिठास। मीठापन। २-मिठाई। मिष्टान्न। ३-बताशा। सिरनी।

शीर्ण [वि.] (सं.) १-छितराया हुआ। २-गिरा-हुआ। च्युत। ३-जीर्ण। फटा-पुराना। ४-दुबला। पतला। ५-मुरझाया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) थुनेर नामक गंधद्रव्य।

शीर्णदल [संज्ञा पु.] (सं.) नीम।

शीर्णपत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-कर्णिकार। २-पठानी-लोध। ३-नीम का पेड़।

शीर्णपाद [संज्ञा पु.] (सं.) यमराज।

शीर्णपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सौंफ। २-सोआ।

शीर्णपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

शीर्णमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

शीर्णरोमक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का गठिवन।

शीर्णवृंत, शीर्णवृन्त [संज्ञा पु.] (सं) तरबूज।

शीर्णांघ्रि [संज्ञा पु] (सं.) यम।

शीर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) तोड़ने-फोड़ने की क्रिया। खण्डन।

शीर्य [वि.](सं.) टूटने-फूटने योग्य। [संज्ञा पु.] एक प्रकार की दूब।

शीर्वि [वि.] (सं.) १-अपकारक। २-जंगली। बर्बर। ३-हिंसक।

शीर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर। कपाल। २-माथा। मस्तक। ३-सिरा। चोटी। ४-सामने या आगे वाला भाग। ५-खाते आदि की मद या विभाग का नाम। हेड। ६-काला अगर। ७-एक पर्वत का नाम। ८-एक प्रकार की घास।

शीर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'शीर्ष'। २-वह शब्द अथवा वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख या प्रबन्ध के ऊपर लिखा जाय।

शीर्षण्य [संज्ञा पु.](सं.) १-टोप। २-सुलझे हुए साफ बाल। ३-चारपाई का सिरहाना।

शीर्ष-नाम [संज्ञा पु.] (सं.) लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरम्भ में रहता है। सिरनामा। *टाइटिल*।

शीर्षपट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) मस्तक पर बाँधने की पट्टी।

शीर्षपदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर पर लपेटने का कपड़ा। २-पगड़ी। साफा।

शीर्ष-बिंदु, शीर्ष-बिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिर के ऊपर की ओर ऊँचाई में सब से ऊपर का स्थान। २-मोतियाबिन्द।

शीर्षभार [संज्ञा पु.] (सं.) माथे पर का बोझ।

शीर्षरक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शिरस्त्राण'।

शीर्षरक्षण [संज्ञा पु] (सं.) पगड़ी। साफा।

शीर्षवर्त्तन [संज्ञा पु.](स.) अभियोग चलाने वाले का उस दशा में दण्ड सहने के लिए तैयार होना जब कि अभियुक्त ने दिव्य परीक्षा देकर अपने को निर्दोष प्रमाणित कर दिया हो।

शील [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वभाव की प्रवृत्ति या रुख। मिजाज। चाल-ढाल। *डिस्पोजीशन*। २-उत्तम स्वभाव और आचरण। सद्वृत्ति। ३-संकोच। मुरौवत। ४-कोमल हृदय। ५-अजगर। *शील तोड़ना*-मुरौवत न रखना। [वि.] (सं.) तत्पर। प्रवृत्त। (यौगिक के अन्त में जैसे—दानशील)।

शीलता [संज्ञा स्त्री](सं.) शील का भाव। साधुता

शीलत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) शीलता छोड़ना।

शीलधारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी।

शीलन [संज्ञा पु.] (सं.) अभ्यास।

शीलभ्रंश [संज्ञा पु.] (सं.) शीलता का त्याग।

शीलवंचना, शीलवञ्चना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सदाचार का नाश करना।

शीलवान् [वि.] (हिं.) १-अच्छे आचरण का। २-सुशील।

शीलवृत्त [वि.] (सं.) सुशील।

शीलशाली [वि.] (सं.) अच्छे स्वभाव का।

शीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौडिन्य मुनि की स्त्री का नाम।

शीली [वि.] (सं.) शीलयुक्त।

शीवल [संज्ञा पु.] (सं.) १-छरीला। २-सेवार।

शीवा [संज्ञा पु.] (सं.) अजगर।

शीश* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शीर्ष'।

शीशम [संज्ञा पु.] (सं.) एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के और सजावटी सामान बनाने के काम में आती है।

शीश-महल [संज्ञा पु.](फा.+अ.)१-वह कमरा या मकान जिसकी दीवारों में बहुत से शीशे जड़े हों। २-काँच का मकान।

शीशमहल का कुत्ता-पागलों के समान बकने या उछलकूद करने वाला।

शीशा [संज्ञा पु.] (फा.) १-काँच नामक पारदर्शी मिश्र धातु। २- इस धातु के एक पार्श्व पर रसायिनिक प्रक्रिया से लेप करके बनाया हुआ वह रूप जिसमें दूसरे पार्श्व पर सामने की वस्तु का प्रतिबिंब दीख पड़ता है। दर्पण। आइना। ३-झाड़फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान।

शीशा वाशा-बहुत नाजुक चीज। *शीशे में उतारना*-१-प्रेत बाधा से छुटाना। २-वश में या मोहित करना।

शीशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) शीशे का लम्बोत्तरा छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं। काँच की लम्बी कुप्पी।

शीशी सुंघाना-दवा सुंघाकर बेहोश करना।

शुंग, शुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वटवृक्ष। २-आँवला। ३-पाकड़। ४-कोंपल। ५-फूल के नीचे का आधार या कटोरी। ६-एक क्षत्रीय वंश।

शुंगी, शुङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाकर। २-वट वृक्ष।

शुंठि, शुण्ठि, शुण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोंठ।

शुंड, शुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी की सूँड़। २-हाथी का मद।

शुंडक, शुण्डक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भेरी (रणवाद्य)। २-मद्य उतारने या बेचने वाला।

शुंडरोह, शुण्डरोह [संज्ञा पु.] (स.) भूषण।

शुंडा, शुण्डा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सूँड़। २-मदिरा पीने का स्थान। ३-मदिरा। ४-वेश्या ५-कुटनी।

शुंडादंड, शुण्डादण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी की सूँड।

शुंडार, शुण्डार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी की सूँड २-साठ साल का हाथी। ३-मद्य बनाने या बेचने वाला।

शुंडाल, शुण्डाल [संज्ञा पु] (सं.) हाथी।

शुंडिका, शुण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ मद्य बिकता है। २-एक प्राचीन

जाति का नाम।

शुंडिमूषिका, शुण्डिमूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छछुँदर।

शुंडी, शुण्डी [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-कलवार। [संज्ञा स्त्री.] १-एक पौधा जिसे हाथी-सूँडी कहते हैं। २-गले का कौआ। घाटी।

शुंभ, शुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम इसे दुर्गा ने मारा था।

शुंभघातिनी, शुम्भघातिनी, शुंभमर्दिनी, शुम्भमर्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

शुंभपुरी, शुम्भपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुंभ नामक राक्षस की पुरी।

शुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगा। तोता। २-एक प्रकार की गठिवन। ३-सिरिस नामक वृक्ष। ४-सोनापाठा। ५-लोधवृक्ष। ६-तालीशपत्र। ७-भरभण्डा। ८-रावण के दूत का नाम ९-वस्त्र। १०-कपड़े का आंचल। ११-पगड़ी १२-शुकदेव।

शुककर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा

शुककीट [संज्ञा पु.] (सं.) एक फतिंगा जो हरे रङ्ग का होता है।

शुककूट [संज्ञा पु.] (सं.) दो खम्भों के मध्य की वह माला जो शोभा के लिए लगाई जाय।

शुकच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुक या तोते का पर। २-गठिवन। ३-तेजपात।

शुकजिह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पौधा जिसे सुआटोठी भी कहते हैं।

शुकतरु [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिस नामक वृक्ष।

शुकतुंड, शुकतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोते की चोंच। २-तांत्रिकों की एक पूजन के समय की हाथ की एक मुद्रा।

शुकतुंडी, शुकतुण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुकजिह्वा (पौधा)।

शुकदेव [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास के पुत्र का नाम।

शुकद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिस का पेड़।

शुकनालिका-न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) तोता जिस तरह फँसाने की नली (नलनी) में लोभ के कारण फँस जाता है, वैसे ही फँसने की रीति

शुकनामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुकजिह्वा नामक पौधा।

शुकनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) चकवँड़।

शुकनास [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपिच्छु। केवांच। २-शुकजिह्वा। ३-नलिका। ४-छोंकरवृक्ष। ५ गम्भीर। ६-सोनापाठा। ७-अगस्त नामक पेड़।

शुकपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धक।

शुकपुच्छक [संज्ञा पु.] (सं.) थुनेर।

शुकपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-थुनेर। २-सिरिस। ३-गन्धक। ४-अगस्त नामक वृक्ष।

शुकप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरिस। २-कमरख।

शुकप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नीम। २-जामुन

शुकफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आक। मदार। २-सेमर।

शुकवई [संज्ञा पु.] (सं.) गठिवन।

शुकरान [संज्ञा पु.] (देश.) वृक्ष विशेष जिसके फल कड़ुए होते हैं।

शुकराना [संज्ञा पु.] (अ.) १-धन्यवाद। शुक्रिया २-किसी का कोई काम कर देने पर उसे धन्यवाद सहित दिया जाने वाला धन।

शुकरूप [वि.] (सं.) जिसका रंग शुक के समान हो।

शुकवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) अनार। दाड़िम।

शुकवाह [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

शुकवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिस का पेड़।

शुकशालक [संज्ञा पु.] (सं.) बकायन।

शुकशिंबा, शुकशिम्बा [संज्ञा स्त्री.](सं.) किवाँच

शुकशीर्षा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-थुनेर। २-तालीस ३-तेजपत्ता।

शुकाख्या [संज्ञा पु.](सं.) सुआटोंटी नामक पौधा

शुकादन [संज्ञा पु.] (सं.) अनार।

शुकानना [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुआटोंठी नामक पौधा

शुकायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्ध। २-अर्हत।

शुकाह्व, शुकाह्वय [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-मादा तोता। २-कश्यप की पत्नी का नाम।

शुकी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-तोते की मादा। सुग्गी। २-कश्यप की पत्नी का नाम।

शुकेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिसवृक्ष।

शुकोदर [संज्ञा पु.] (सं.) तालीशवृक्ष।

शुक्त [वि.] (सं.) १-सड़ाकर खट्टा किया हुआ। ३-खमीर उठाया हुआ। २-अम्ल। खट्टा। ३-कठोर। ४-अप्रिय। ५-निर्जन। उजाड़। ६-मिला हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँजी। २-एक प्रकार का खट्टापेय पदार्थ। ३-मांस। ४-सिरका। ५-कठोर वचन। ६-वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

शुक्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-चूका नामक पौधा। २-काँजी।

शुक्ताम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) चुक का साग।

शुक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीपी। सीप। २-शङ्ख। ३-घोंघा। ४-एक तौल जो दो कर्ष या चार तोले की होती है। ५-नखी नामक गंधद्रव्य। ६-बवासीर। अर्श। ७-बेर। ८-आंख का एक रोग। ९-कपाल जो काली के हाथ में रहता है। १०-हड्डी। ११-घोड़े की गरदन या छाती की भौंरी।

शुक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नेत्र रोग। २-गन्धक।

शुक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीप। सीपी। २-चुक नामक साग। ३-एक नेत्र रोग जिसमें सफेद ढेले के ऊपर मांस की एक झिल्ली-सी निकल आती है।

शुक्तिज [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ता। मोती।

शुक्तिपत्र, शुक्तिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) छतिवन।

शुक्तिबीज, शुक्तिमणि [संज्ञा पु.] (सं.) मोती।

शुक्तिमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक नदी का नाम। २-चेदिदेश की राजधानी।

शुक्तिमान् [संज्ञा पु.] (सं.) आठ कुल-पर्वतों में से एक।

शुक्तिवधू [संज्ञा स्त्री.](सं.) सीप। सीपी।

शुक्त्यंगी, शुक्त्यङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) संभालू। मेउड़ी।

शुक्र [वि.] (सं.) १-चमकीला। २-स्वच्छ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-एक प्रसिद्ध ग्रह जो पुराणों में दैत्यों का गुरु कहा गया है। ३-पुरुष का वीर्य। मनी। ४-जेठ का महीना। ५-स्वच्छ तथा शुद्ध सोम। ६-चित्रकवृक्ष। चीता। ७-बल। पौरुष। ८-बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच में पड़ने वाला दिन या वार। ९-आँख में का फूला नामक रोग। १०-एरण्डवृक्ष। ११-स्वर्ण। सोना। १२-धन। सम्पत्ति। [संज्ञा पु.] (अ.) धन्यवाद।

शुक्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) (वीर्यकारक) मज्जा।

शुक्रकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) मूत्रकृच्छ्र या सूजाक नामक रोग।

शुक्र-गुजार [वि.] (अ.+फा.) आभारी। कृतज्ञ।

शुक्र-गुजारी [संज्ञा स्त्री.] (अ.+फा.) कृतज्ञता।

शुक्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-जैन देवताओं का एक भेद।

शुक्रद [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ। गोधूम।

शुक्रदोष [संज्ञा पु.] (सं.) नपुंसकता। क्लीवत्व

शुक्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कटसरैया। २-सफेद अपराजिता।

शुक्रप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) धातुक्षीणता नामक एक रोग।

शुक्रभुज [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

शुक्रभू [संज्ञा पु.] (सं.) मज्जा।

शुक्रमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बभनेटी। भारंगी।

शुक्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) धातु गिरने का रोग।

शुक्रल [वि.] (सं.) १-जिसमें वीर्य हो। २-वीर्य उत्पन्न करने वाला।

शुक्रला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उच्चटा। ओलझा। उटंगन के बीज।

शुक्रवार [संज्ञा पु.](सं.) बृहस्पतिवार और शनिवार के बीच में पड़ने वाला दिन या वार।

शुक्रशिष्य [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्य। असुर।

शुक्रस्तंभ, शुक्रस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) स्व
भंग अथवा नपुंसकता विशेष, जो बहुत दि

तक ब्रह्मचर्य पालन करने से होता है।

शुक्रांग, शुक्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

शुक्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंसलोचन।

शुक्राचार्य [संज्ञा पु.] (सं.) दैत्यों के गुरु, जो महर्षि भृगु के पुत्र थे।

शुक्राश्मरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का अश्मरी रोग।

शुक्रिय [वि.] (सं.) १-शुक्र सम्बन्धी। शुक्र का। २-जिसमें शुद्ध रस हो।

शुक्रिया [संज्ञा पु.] (फा.) धन्यवाद।

शुक्ल [वि.] (सं.) उजला। सफेद। [संज्ञा पु.] १-ब्राह्मणों की एक पदवी। २-शुक्लपक्ष। सुदी। ३-सफेद रेंड़ का पेड़। ४-एक नेत्र-रोग। ५-कुन्द नामक पुष्पवृक्ष। ६-सफेद-लोध। ७-मक्खन। ८-चाँदी। रजत। ९-धव का पेड़। १०-योग। ११-विष्णु।

शुक्लकंठ, शुक्लकण्ठ, शुक्लकंठक, शुक्लकण्ठक [संज्ञा पु] (सं) मुर्गाबी। जलकाक।

शुक्लकंद, शुक्लकन्द [संज्ञा पु] (सं.) १-भैंसाकंद। २-शंखालू। ३-अतीस।

शुक्लकंदा, शुक्लकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सफेद अतीस। २-विदारीकंद।

शुक्लक [संज्ञा पु] (सं.) १-शुक्लपक्ष। २-खिरनी का वृक्ष।

शुक्लकर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद रङ्ग का केकड़ा।

शुक्लकुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर पर सफेद-सफेद चकत्ते हो जाते हैं।

शुक्लक्षीर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकोली।

शुक्लक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) पवित्र स्थान। तीर्थ स्थान।

शुक्लता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेतता। सफेदी।

शुक्लतीर्थ [संज्ञा पु] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ-स्थान का नाम।

शुक्लत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्लता। सफेदी।

शुक्लदुग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सिघाड़ा।

शुक्लधातु [संज्ञा पु.] (सं.) खरिया मिट्टी।

शुक्लपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के १५ दिन।

शुक्लपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-छत्रकवृक्ष। २-कुंदफूल का पौधा। ३-मरुआ। ४-सफेद तालमखाना। ५-मनफल। ६-विडारी।

शुक्लपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथीशुंडी क्षुप। २-शीतलीलता। ३-कुन्द।

शुक्लपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदन्ती। २-कुन्दफूल का पौधा।

शुक्लपृष्ठक [संज्ञा पु.] (सं) सँभालू। सिधुआर।

शुक्लफल [संज्ञा पु.] (सं) आक। मदार।

शुक्लफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमी। २-मदार।

शुक्लफेन [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन।

शुक्लबल [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक जिनदेव का नाम।

शुक्लमंजरी, शुक्लमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद निर्गुंडी।

शुक्लमंडल, शुक्लमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों में का पुतली के चारों ओर का सफेद भाग।

शुक्लमेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह रोग (चरक)।

शुक्लवंश [संज्ञा पु] (सं) सफेद बाँस।

शुक्लवायस [संज्ञा पु.] (सं.) बगुला।

शुक्लवृक्ष [संज्ञा पु] (सं.) धव नामक वृक्ष।

शुक्लशाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरिनिंब। २-सफेद शाल का वृक्ष।

शुक्लसारंग, शुक्लसारङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) सफेद रङ्ग का पपीहा।

शुक्लांग, शुक्लाङ्ग [संज्ञा प.] (सं.) चोबचीनी

शुक्लांगा, शुक्लाङ्गा, शुक्लांगी, शुक्लाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शेफालिका। निर्गुंडी।

शुक्ला [संज्ञा स्त्री.](सं) १-सरस्वती। २-शक्कर। चीनी। ३-काकोली। ४-विदारी। ५-शूकरकन्द। ६-शेफालिका।

शुक्लाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

शुक्लापांग, शुक्लापाङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) मोर। मयूर।

शुक्लाम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) चूका नामक साग।

शुक्लायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीनकाल के ऋषि का नाम।

शुक्लार्क [संज्ञा पु.] (सं) सफेद आक या मदार

शुक्लार्म [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों का एक प्रकार का रोग।

शुक्लाहिफेन [संज्ञा पु.] (सं.) पोस्ते का पेड़।

शुक्लोदन [संज्ञा पु.] (सं.) महाराज शुद्धोधन के भाई का नाम (ललितविस्तार)।

शुक्लोपला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शक्कर। चीनी।

शुक्लौदन [संज्ञा पु.] (सं.) अरवा चावल।

शुक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवा। पवन। २-तेज। ३-चित्र।

शुचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुःख। शोक। २-देखो 'शुचि'।

शुचि [संज्ञा पु.](सं.) १-अग्नि। २-चित्रकवृक्ष। ३-गरमी। ग्रीष्म। ४-ज्येष्ठमास। ५-आषाढ़मास। ६-चन्द्रमा। ७-शुक्र। ८-ब्राह्मण। ९-अंधक के एक पुत्र का नाम। १०-कार्त्तिकेय। [संज्ञा स्त्री.] १-पवित्रता। शुद्धता। २-स्वच्छता। ३-कश्यप की एक कन्या का नाम। [वि.] १-शुद्ध। पवित्र। २-स्वच्छ। साफ। ३-निर्दोष।

शुचिकर्मा [वि.] (हिं.) पवित्र करने वाला। सदाचारी।

शुचिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक अप्सरा का नाम।

शुचिकापुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) केवड़ा। केतकी।

शुचिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पवित्रता। २-वह स्वच्छता और शुद्धता जो स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आवश्यक होती है। सैनिटेशन।

शुचिद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल।

शुचिप्रणी [संज्ञा पु.] (सं.) आचमन।

शुचिमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नवमल्लिका। नेवारी।

शुचिरोची [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

शुचिवाच [संज्ञा पु.](सं.) पुराणोक्त एक पर्वत का नाम।

शुचिवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम।

शुचिश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शुची [वि.] (सं.) १-शुद्ध। पवित्र। २-स्वच्छ। साफ।

शुचीरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वीर्य।

शुचीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्य।

शुजा [वि.] (अ.) बहादुर। वीर।

शुजाअत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) बहादुरी। वीरता।

शुटीर [संज्ञा पु.] (सं.) वीर। नायक।

शुटीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) वीर्य।

शुतुद्रि, शुतुद्रु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतलजनदी का पुराना नाम।

शुतुर [संज्ञा पु.] (अ.) ऊँट।

शुतुरगाव [संज्ञा पु.] (फा.) जिराफ नामक जन्तु।

शुतुरमुर्ग [संज्ञा पु.] (फा.) एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट के समान लम्बी होती है

शुदनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नियति। होनी। होनहार। भावी।

शुद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुदी'।

शुद्ध [वि] (सं.) १-पवित्र। २-स्वच्छ। साफ। ३-जिसमे भूलें, त्रुटियाँ आदि न हों। ठीक। सही। ४-जिसमें मिलावट न हो। खालिस। ५-जिसमें से लागत व्यय आदि निकाले जा चुके हों। निर्दोष। बे-ऐब। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंधा नमक। २-काली मिर्च। ३-रूपा। चाँदी। ४-गुंडा नामक साग। ५-सङ्गीत में राग के भेदों में से एक। ६-शिव। ७-चौदहवें मन्वंतर के सप्त ऋषियों में से एक।

शुद्ध-आय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाभ आदि के रूप में प्राप्त होने वाला धन। नेट-इनकम।

शुद्धजंघ, शुद्धजङ्घ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गधा। गर्दभ।

शुद्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पवित्रता। २-स्वच्छता। ३-निर्दोषता।

शुद्धत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्धता।

शुद्ध-पक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्लपक्ष।

शुद्धपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तीर्थ का स्थान जो दक्षिण भारत में है।

शुद्धमांस [संज्ञा पु.] (सं.) वह पकाया हुआ मांस जिसके साथ हड्डी आदि न हो।

शुद्ध-मूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह मूल्य जिसमें लाभ आदि सम्मिलित न किये गये हों। नेट प्राइस।

शुद्ध-लाभ [संज्ञा पु.] (सं.) वह लाभ जिसमें लागत व्यय आदि निकाले जा चुके हों। नेट-प्राफिट।

शुद्ध-वल्लिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) गिलोय।

शुद्ध-व्यूह [संज्ञा पु] (सं.) वह व्यूह जिसमें उरस्य में हाथी, बीच में तेज घोड़े और पक्ष में व्याल (मतवाले हाथी) हों।

शुद्धसाध्यवासन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शब्द की एक लक्षण शक्ति।

शुद्धहार [संज्ञा पु.] (सं.) वह हार जिसमें एक शीर्षक का मोती हो।

शुद्धांत, शुद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर।

शुद्धांतपालक, शुद्धान्तपालक [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर का द्वार-रक्षक।

शुद्धांता, शुद्धान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रानी।

शुद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रजव।

शुद्धात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [वि.] (हिं.) पवित्र स्वभाव वाला।

शुद्धापह्नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक काव्यालङ्कार जिसमें उपमेय को असत्य ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की असत्यता स्थापित की जाती है।

शुद्धावास [संज्ञा पु] (सं.) स्वर्ग।

शुद्धाशुद्धीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम

शुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शुद्ध होने का काम या भाव। २-स्वच्छता। सफाई। ३-वह धार्मिक कृत्य अथवा संस्कार जो किसी धर्म च्युत, विधर्मी या अशुचि व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए होता है। ४-दुर्गा।

शुद्धिकंद, शुद्धिकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) लहसुन।

शुद्धिपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्त का वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है। एर्राटा। २-वह व्यवस्थापत्र जो प्रायश्चित के पीछे शुद्धि के प्रमाणस्वरूप पण्डितों द्वारा दिया जाता है।

शुद्धिपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें अशुद्धियाँ और उनका शुद्ध रूप होता है। *कॉरेक्शन-स्लिप*।

शुद्धोद [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

शुद्धोदन [संज्ञा पु.] (सं.) भगवान् बुद्धदेव के पिता का नाम।

शुद्धोदनि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु का एक नाम।

शुनःशेफ [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक-कालीन एक ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

शुनःसख [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुनःस्कर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ता। २-वायु। ३-सुख।

शुनक [संज्ञा पु.](सं.) १-कुत्ता। २-एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

शुनकचंचुका, शुनकचञ्चुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चेंच नामक साग।

शुनकचिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बथुआ।

शुनकचिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बथुआ।

शुनहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन ऋषि का नाम। २-भरद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम।

शुनामुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रदेश का प्राचीन नाम जो हिमालय के उत्तर में था।

शुनाशीर, शुनासीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-वायु और सूर्य। ३-इन्द्र तथा वायु।

शुनासीरी [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

शुनासीरीय [वि.] (सं.) १-इन्द्र-सम्बन्धी। इन्द्र का। २-वायुदेवता-सम्बन्धी। ३-सूर्यदेवता सम्बन्धी।

शुनि [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री शुनी] कुत्ता।

शुनोलांगूल, शुनोलाङ्गूल [संज्ञा पु.] (सं.) शुनःशेफ के छोटे भाई का नाम।

शुफा [संज्ञा पु.] (अ.) पड़ोसी। पार्श्ववर्त्ती। *हक्कशुफा*-किसी मकान अथवा जमीन को खरीदने का वह अधिकार जो उसके पड़ौसी को औरों से पहले प्राप्त होता है।

शुबहा [संज्ञा पु.] (फा.) १-शक। सन्देह। २-धोखा। भ्रम।

शुभंकर, शुभङ्कर [वि.] (सं.) शुभ या मङ्गल करने वाला।

शुभंकरी, शुभङ्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती २-शमीवृक्ष।

शुभ [वि.] (सं.) १-अच्छा। भला। २-कल्याणकारी। मङ्गलप्रद। [संज्ञा पु.] १-मङ्गल। कल्याण। भलाई। २-फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से एक। ३-पदमकाठ। ४-चाँदी। ५-बकरा।

शुभकर [वि.] (सं.) मङ्गलप्रद। कल्याण करने-वाला।

शुभकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शुभकूट [संज्ञा पु.] (सं.) लङ्का का एक प्रसिद्ध पर्वत।

शुभकृत्स्न [संज्ञा पु.](सं.) बौद्धदेवता का एक वर्ग

शुभगंधक, शुभगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धवाला।

शुभग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा फल देने वाला ग्रह।

शुभचिंतक, शुभचिन्तक [वि.] (सं.) शुभ या कल्याण चाहने वाला। हितैषी।

शुभदंता, शुभदन्ता [संज्ञा स्त्री] (सं.) पुष्पदंत नामक हाथी की हथनी का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में है।

शुभद [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का पेड़। [वि.] शुभदायक।

शुभदर्शन [वि.] (सं.) जिसका मुख देखने से कोई शुभ काम या बात हो। २-सुन्दर। खूबसूरत।

शुभदायक [वि.] (सं.) शुभप्रद।

शुभदायी [वि.] (हिं.) शुभ या मङ्गल करने वाला

शुभनामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी मास के शुक्लपक्ष की पंचमी, दशमी अथवा पूर्णिमा तिथि।

शुभपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी।

शुभ-प्रद [वि.] (सं.) शुभ या मङ्गल करने वाला

शुभभावना [संज्ञा स्त्री.](सं.) मङ्गलजनक भावना

शुभमय [वि.] (सं.) मङ्गलमय।

शुभमस्तु [अव्य.] (सं.) शुभ हो। अच्छा फल देने वाला हो (शुभकामना)।

शुभमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश के प्रधान सेनापति, राज्यपाल आदि कुछ विशिष्ट उच्च अधिकारियों के नाम के आगे लगने वाली प्रतिष्ठासूचक उपाधि। हिज एक्सेलेंसी।

शुभवक्त्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शुभविमलगर्भ [संज्ञा पु] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

शुभव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकशुक्ला पंचमी का एक व्रत।

शुभशैल [संज्ञा पु](सं.) तांत्रिकों के मत से एक कल्पित पर्वत का नाम।

शुभसूचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम

शुभस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पवित्र स्थान। २-यज्ञभूमि।

शुभस्रवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शुभांगी, शुभाङ्गी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कुबेर की पत्नी का नाम। २-कामदेव की स्त्री रति का नाम। ३-राजा कुरु की पत्नी का नाम।

शुभांजन, शुभाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शोभांजन'।

शुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शोभा। २-कांति। चमक। ३-देवसभा। ४-इच्छा। ५-वंशलोचन ६-गोरचन। ७-सफेद कीकर। ८-बकरी। ९-अरारोट। १०-पुरइन की पत्ती। ११-सो १२-सफेद वच। १३-असबरग। १४-एक नदी का नाम जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

शुभाकांची [वि.] (सं.) [स्त्री शुभाकांचिणी]

या कल्याण चाहने वाला । हितैषी ।

शुभाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भुइँ आँवला ।

शुभाचल [संज्ञा पु.](सं.) पुराणानुसार एक कल्पित पर्वत का नाम ।

शुभाचारा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पार्वती की एक सखी का नाम ।

शुभाशय [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसके आशय या विचार शुभ अथवा अच्छे हों ।

शुभ्र [वि.] (सं.) श्वेत । सफेद । उजला । [संज्ञा पु.](सं.) १-अबरक । २-सांभर नमक ३-रूपा । चान्दी । ४-खस । उशीर । ५-कसीस । ६-पद्माख । ७-चरबी । ८-रूपामाखी ९-सेंधा नमक । १०-वंसलोचन । ११-फिटकिरी । १२-चीनी । १३-सफेद विसारा ।

शुभ्रतरु [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिस का वृक्ष ।

शुभ्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेतता । सफेदी । उज्ज्वलता ।

शुभ्रदंती, शुभ्रदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्पदंत नामक दिग्गज की हथनी का नाम (पुराण) ।

शुभ्रपर्ण [संज्ञा पु] (सं.) सफेद पान ।

शुभ्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) खस । उशीर ।

शुभ्रभानु, शुभ्ररश्मि [संज्ञा पु.](सं.) चन्द्रमा ।

शुभ्रवेष्ट [संज्ञा पु] (सं.) शाल्मली । सेमल ।

शुभ्रांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा । २-कपूर ।

शुभ्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-वंसलोचन । २-फिटकरी ।

शुभ्रालु [संज्ञा पु.](सं) १-भैंसाकंद । २-शंखालु ।

शुभ्रि [संज्ञा पु.] (सं) ब्रह्मा ।

शुभ्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) शहद की बनाई हुई चीनी ।

शुमार [संज्ञा पु.] (फा) १-गिनती । गणना । २-हिसाब । लेखा ।

शुरबा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शोरबा' ।

शुरू [संज्ञा पु.] (अ.) आरम्भ । प्रारम्भ ।

शुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह देन जो किसी विधि, नियम अथवा परिपाटी के अनुसार आवश्यक रूप से दिया या लिया जाय डयूटी २-आयात-निर्यात, विक्रय आदि वस्तुओं पर राज्य की ओर से लगने वाला एक प्रकार का कर । डयूटी । ३-वह धन जो किसी काम के बदलेमें लिया जाय । चार्जफीस । ४-किराया भाड़ा । ५-वह धन जो कन्या को दहेज के रूप में दिया जाता है ।

शुल्कता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुल्क का भाव या धर्म ।

शुल्क-शाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ घाट या मार्ग आदि का महसूल चुकाया जाता हो । २-वह स्थान जहाँ पर किसी प्रकार का महसूल चुकाया जाता हो ।

शुल्कसीमांत, शुल्कसीमान्त [संज्ञा पु] (सं) वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आने वाले तथा देश से बाहर जाने वाले पदार्थों पर लगता है । फ्रान्टियरस डयूटी ।

शुल्कस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ पर आने जाने वालों को शुल्क चुकाना पड़ता हो

शुल्काध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) चुङ्गी का उच्च अधिकारी या अध्यक्ष ।

शुल्कार्ह [वि.] (सं.) जिस पर शुल्क लग सकता हो । शुल्क लगाये जाने योग्य । डयूटीएबुल ।

शुल्ल [संज्ञा पु.] (सं) १-रस्सी । २-ताँबा ।

शुल्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताँबा । २-रज्जु । रस्सी ३-यज्ञकर्म । ४-आचार ।

शुल्वारि [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धक ।

शुश्रू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माता । माँ । जननी ।

शुश्रूषक [संज्ञा पु.] (सं) शुश्रूषा या सेवा करने वाला । सेवक ।

शुश्रूषण [संज्ञा पु.] (सं) शुश्रूषा या सेवा का काम । परिचर्या ।

शुश्रूषा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सेवा । टहल । २-रोगी की परिचया । ३-खुशामद । ४-कथन । ५-किसी से कुछ सुनने की इच्छा ।

शुश्रूषाध्यक्षा [संज्ञा स्त्री](सं) किसी चिकित्सालय के रोगियों की देख-रेख करने वाली परिचारिकाओं की अध्यक्षा । लेडी-सुपरिइन्टेंडैंट-आफ नर्सिंग ।

शुश्रूषु [वि] (सं.) १-शुश्रूषा या सेवा करने की कामना रखने वाला । २-आज्ञाकारी । ३-४-सुनने की अभिलाषी ।

शुश्रूष्य [वि] (सं.) शुश्रूषा या सेवा के योग्य ।

शुषिर [संज्ञा पु.] (सं) १-लौंग । २-अग्नि । ३-चूहा । ४-बिल । विवर । ५-आकाश । ६-मुख से फूँक कर बजाया जाने वाला बाजा ।

शुषिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नदी । २-धरणी । ३-नली नामक गंधद्रव्य ।

शुष्क [वि] (सं.) १-जिसमें गीलापन या तरी न हो । सूखा । खुश्क । २-नीरस । रसहीन । ३-जिससे मनोरंजन न होता हो । ४-निरर्थक । व्यर्थ । ५-स्नेह आदि से रहित । निर्मोही । [संज्ञा पु.] काला अगर ।

शुष्ककंठ, शुष्ककण्ठ [वि.] (सं.) प्यासा ।

शुष्कक्षेत्र [संज्ञा पु](सं.) एक पर्वत का नाम जो वितस्ता नदी के किनारे था ।

शुष्कगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) वायुप्रकोप से स्त्रियों का गर्भ सूख जाने का रोग ।

शुष्कता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सूखापन । २-रसहीनता । ३-स्नेह-हीनता ।

शुष्करेवती [संज्ञा स्त्री] (सं) १-पुराणानुसार एक मातृका का नाम । २-एक बाल ग्रह जिसके प्रभाव से बालकों के अङ्ग सूखने लगते हैं ।

शुष्कल [संज्ञा पु.] (सं) १-मांस । गोश्त । २-मांसभक्षी ।

शुष्कला [संज्ञा स्त्री.] (सं) मांस । गोश्त ।

शुष्कवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) धव का वृक्ष । धौ ।

शुष्कव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) योनिकन्द नामक रोग जो स्त्रियों को होता है ।

शुष्कांग [संज्ञा पु.] (सं.) धव का वृक्ष ।

शुष्कांगी, शुष्काङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी । २-गोह । गोधिका ।

शुष्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुष्कव्रण ।

शुष्काक्षिपाक [संज्ञा पु.] (सं.) आँखों का एक प्रकार का रोग ।

शुष्कार्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सोंठ ।

शुष्काश [संज्ञा पु.] (सं) एक आँख का रोग ।

शुष्काशुष्क [संज्ञा पु] (सं.) समुद्रफेन ।

शुष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-अग्नि ; ३-बल ।

शुष्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेज । पराक्रम । २-अग्नि ३-सूर्य । ४-पक्षी । ५-वायु ।

शुष्मा [संज्ञा पु.] (सं) १-अग्नि । २-तेज । पराक्रम । ३-चित्रक । चीता ।

शूंडल [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का वृक्ष जो मझोले आकार का होता है ।

शूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्न की बाल या सींका २-यव । जौ । ३-एक प्रकार का कीड़ा । ४-एक प्रकार का तृण । ५-लिंगवर्धक औषधों के लेप करने से उत्पन्न रोग । ६-कागज नत्थी करने की सूई । आलपिन । पिन ।

शूकक [संज्ञा पु] (सं.) शरीर का रस नामक धातु

शूककीट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा जो रोएँदार होता है ।

शूकज [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार । यवक्षार ।

शूकतृण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की घास ।

शूकदोष [संज्ञा पु.](सं.) एक रोग जो लिंगवर्धक औषधों के लेप के कारण होता है ।

शूकधानी [संज्ञा स्त्री.](सं) वह गद्दीदार डिबिया या आधार जिसमें शूक या लाल पिनें खोंसकर रखी जाती हैं । पिनकुशन ।

शूकधान्य [संज्ञा पु.](सं.) वह अन्न जिसके दाने बालों अथवा सींकों में लगे रहते हैं । जैसे- जौ, गेहूँ आदि ।

शूकपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिना विष वाला सर्प ।

शूकपाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) जवाखार ।

शूकपिंड, शूकपिण्ड, शूकपिंडी, शूकपिण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किवाछ । कौंछ ।

शूकर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शूकरी] सूअर । वाराह ।

शूकरकंद, शूकरकन्द [संज्ञा पु] (सं.) वाराहीकंद ।

शूकरक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं) एक तीर्थस्थान जहाँ विष्णु ने वाराह अवतार धारण किया था। यह स्थान आजकल सोरों के नाम से प्रसिद्ध है।

शूकरदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर डाढ़ नामक एक रोग।

शूकरपादिका, शूकरशिंबी, शूकरशिम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेम की फली।

शूकरक्रांता, शूकरक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाराहक्रांता।

शूकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूअर की मादा। सूअरी। २-वाराहक्रांता। ३-वाराहीकंद। ४-सूँस नामक जलजन्तु। ५-विधारा।

शूकरेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) कसेरू।

शूकरोग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शूकदोष'।

शूकल [संज्ञा पु.](सं.) चमकने या भड़कने वाला घोड़ा।

शूकवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंछ। किवाँछ।

शूकशिंबा, शूकशिम्बा, शूकशिंबिका, शूकशिम्बिका, शूकशिंबी, शूकशिम्बी, शूका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंछ। किवाँछ।

शूकाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिस।

शूकाढ्य [संज्ञा पु.](सं.) शूक या शूकड़ी नामक तृण।

शूकापह [संज्ञा पु.] (सं.) कहरुवा नामक गोंद।

शूकामय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शूकदोष'।

शूकुल [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार की मछली। २-एक प्रकार की सुगन्धित घास।

शूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) सिरका।

शूक्ष्म [वि.] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'।

शूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूई।

शूतिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

शूद्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शूद्रा, शूद्री] १-आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण जिसका काम शेष तीनों वर्णों की सेवा करना बताया गया है। २-इस वर्ण का मनुष्य। ३-निकृष्ट। ४-दास। सेवक। ५-एक देश जो नैर्ऋत्यकोण में था।

शूद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृच्छकटिक का रचियता जो विदिशानगरी का राजा था। २-शूद्र। ३-रामचन्द्रजी के राजत्वकाल का शूद्र-जाति का तपस्वी जिसका रामचन्द्रजी ने सिर कटवा डाला था।

शूद्रकेश्वर [संज्ञा पु] (सं.) एक शिवलिंग का नाम।

शूद्रक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) काले रंग की भूमि जिसमें घास, तृण, बबूल के वृक्ष तथा अनेक प्रकार के धान उत्पन्न हों।

शूद्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूद्र का भाव या धर्म। शूद्रपन।

शूद्रत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्रता।

शूद्रद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) नीला रंग जो शूद्रवर्ण का माना जाता है।

शूद्रपात [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्रों का सरदार।

शूद्रप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज।

शूद्रप्रेष्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य जो शूद्र की नौकरी या सेवा करता हो।

शूद्रा, शूद्राणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूद्रजाति की स्त्री। शूद्री।

शूद्रार्त्ता [संज्ञा. स्त्री.] (सं.) प्रियंगु नामक वृक्ष।

शूद्रावेदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूद्रों के अतिरिक्त वह व्यक्ति जिसने किसी शूद्राणी के साथ विवाह कर लिया हो।

शूद्रासुत [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्रा माता और द्विज पिता से उत्पन्न सन्तान।

शूद्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शूद्रजाति की स्त्री। २-३-शूद्र की पत्नी।

शून [वि.] (हिं.) देखो 'शून्य'।

शूनचंचु, शूनचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) चेंच नामक साग।

शूना [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-गृहस्थ के घर में वह स्थान जहाँ पर अनजान में अनेक जीवों की हत्या होती है। (यह पांच बताये गये हैं। यथा—चूल्हा, चक्की, झाड़ू- ऊखली और जल-पात्र)। २-तालू के ऊपर की छोटी जीभ। गलशुण्डी। ३-थूहर।

शून्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जिसके भीतर कुछ भी न हो। खाली जगह। वैकुम। २-आकाश। ३-एकांत स्थान। ४-विंदू। बिंदी। ५-अभाव। राहित्य ६-विष्णु। ७-स्वर्ग। ८-ईश्वर। [वि.] (सं.) १-जिसके भीतर कुछ न हो। खाली। २-निराकार। ३-असत्। ४-विहीन। रहित।

शून्यगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) पपीता नामक फल। [वि.] (सं.) १-जिसमें कुछ न हो २-सार या तत्वरहित। ३-मूर्ख। बेवकूफ।

शून्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शून्य का भाव या धर्म।

शून्यत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शून्यता।

शून्यपदवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मरंध्र।

शून्यपाल [संज्ञा पु.] (सं.) किसी के रिक्त स्थान पर अस्थाई रूप से कार्य करने वाला। एवजी

शून्यबहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पांव का सुन्न हो-जाना।

शून्यमध्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्तु जिसके बीच का भाग खाली हो।

शून्यमूल [संज्ञा पु.] (सं.) सेना की एक प्रकार की बनावट।

शून्यवाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक (बौद्धों का) सिद्धांत जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता।

शून्यवादी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शून्यवाद सिद्धांत को मानने वाला। २-बौद्ध। ३-नास्तिक।

शून्यहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकाश। उजाला। २-स्वर्ण। सोना।

शून्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नलिका नामक एक गन्धद्रव्य। २-बांझ औरत। ३-थूहर।

शून्यालय [संज्ञा पु.] (सं.) एकांत स्थान।

शून्याशून्य [संज्ञा पु.] (सं.) जीवन्मुक्ति।

शूप [संज्ञा पु.] (हिं.) शूर्प। सूप। फटकनी।

शूपकार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूपकार'।

शूम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूम'।

शूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीर। बहादुर। २-योद्धा सूरमा। ३-सूर्य। ४-सिंह। ५-सूअर। ६-चीता। ७-शालवृक्ष। ८-बड़हर। ९-मसूर। १०-चित्रकवृक्ष। ११-आक। मदार। १२-कृष्ण के पितामह का नाम। १३-उत्तरदिशा के एक देश का नाम।

शूरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमींकन्द। सूरन। २-श्योनाकवृक्ष।

शूरणोद्भुन [संज्ञा पु.] (सं.) हरियल नामक पक्षी

शूरता [संज्ञा स्त्री.](सं.) शौर्य। बहादुरी। वीरता

शूरताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शूरता'।

शूरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) शूरता। वीरता।

शूरदेव [संज्ञा पु] (सं.) जैनियों के चौबीस अर्हतों में से एक।

शूरन [संज्ञा पु.] (हिं.) 'सूरन'।

शूरपुत्रा [संज्ञा पु.] (सं.) अदिति का एक नाम।

शूरभू, शूरभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं) भागवत के अनुसार उग्रसेन की कन्या का नाम।

शूरमानी [संज्ञा पु.] (सं) अपनी वीरता पर अभिमान करने वाला। वह जिसे अपनी बहादुरी पर बहुत भरोसा हो।

शूरवाणेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

शूरविद्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) युद्ध आदि करने की विद्या।

शूरवीर [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा वीर और योद्धा। सूरमा।

शूरवीरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शौर्य। बहादुरी।

शूरश्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) वीरों के साहसपूर्ण कृत्यों की कहानी।

शूरसेन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता का नाम। २-मथुरा के आस-पास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

शूरसेनप [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय। [वि.] (सं.) वीरों की सेना का पालन करने वाला।

शूरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) क्षीरकाकोली ।
+[संज्ञा पु.] (हिं.) १-वीर । सूरमा । २-सूर्य ।
शूरिमृग [संज्ञा पु.] (सं.) वाराह आदि जङ्गली पशु
शूर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूप । २-एक प्राचीन तौल जो ३२ सेर की होती थी ।
शूर्पक [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम ।
शूर्पकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी । २-गणेश । ३-एक प्राचीन देश । ४-उसका निवासी । ५-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।
शूर्पकाराति, शूर्पकारि [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव ।
शूर्पणखा, शूर्पणखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रावण की बहिन जिसके नाक-कान लक्ष्मण ने काटे थे
शूर्पणाय [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन एक ऋषि का नाम ।
शूर्पनखा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शूर्पणखा' ।
शूर्पपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनमूँग ।
शूर्पश्रुति [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी ।
शूर्पा [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार का खिलौना ।
शूर्पाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम ।
शूर्पारक [संज्ञा पु.] (सं.) बम्बई प्रांत के थाना जिले के सोपरा नामक स्थान का प्राचीन नाम
शूर्म [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री शूर्म्मि] १-लोहे की मूर्त्ति । २-विहाई ।
शूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र । २-बड़ा लम्बा और नुकीला काँटा । ३-वायु के प्रकोप से होने वाली एक प्रकार की वेदना । ४-पीड़ा । दर्द । ५-सूली, जिसमे अपराधियों को प्राचीनकाल में प्राणदण्ड दिया जाता था । ६-फलित ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक । ७-मृत्यु । मौत । ८-झण्डा । पताका । [वि.] (सं.) काँटे के समान नुकीला ।
शूलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भड़कने वाला घोड़ा । २-एक ऋषि का नाम (पुराण) ।
शूलकार [संज्ञा पु.](सं.) एक जाति जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है ।
शूलगजकेसरी-रस [संज्ञा पु.](सं.) १-वैद्यक में एक रसौषध जो शूलरोग में दी जाती है । २-शूलरोग में दी जाने वाली एक प्रकार की वैद्यक गोली या वटी ।
शूलगन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।
शूलगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जो मदरास प्रान्त में है ।
शूलग्रंथि, शूलग्रन्थि [संज्ञा स्त्री.](सं.) मालादूब
शूलग्रह, शूलग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।
शूलघातन [संज्ञा पु.] (सं.) लौहकिट्ट ।
शूलघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) तुम्बरुवृक्ष ।
शूलघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जीमिट्टी ।
शूलदावानल-रस [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध (वैद्यक) ।
शूलद्विट् [संज्ञा पु.] (सं.) हींग ।
शूलधन्वा, शूलधर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।
शूलधरा, शूलधारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा ।
शूलधारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।
शूलना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-शूल या काँटे के समान गड़ना । २-दुःख या पीड़ा देना ।
शूलनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौवर्चल लवण २-हींग । ३-पुष्करमूल । ४-वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो शूलरोग में दिया जाता है
शूलनाशिनी-वटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार की वटी ।
शूलनाशी [संज्ञा पु.] (सं.) हींग ।
शूल-निर्मूलन [संज्ञा पु.](सं.) शिव । महादेव ।
शूलपत्री, शूलपर्णी [संज्ञा स्त्री.](सं.) शूली नामक घास ।
शूलपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।
शूलपानि [संज्ञा पु.] (हिं.) शूलपाणि । शिव ।
शूलप्रोत [संज्ञा पु.] (सं.) नरक के एक भाग का नाम ।
शूलमर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) तालमखाना ।
शूलशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) रेंड़ का पेड़ ।
शूलशब्द [संज्ञा पु.] (सं.) पटे में की गड़गड़ाहट का शब्द ।
शूल-स्तूप [संज्ञा पु.] (सं.) वह विशेष प्रकार का स्तूप जो शूल के आकार का होता है ।
शूलहंत्री, शूलहन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजवाइन ।
शूलहर [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्करमूल ।
शूलहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।
शूलहृत [संज्ञा पु.] (सं.) हींग ।
शूलांक, शूलाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव
शूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वेश्या । २-सलाख । सीख । छड़ । ३-सूली जिससे प्राचीनकाल में अपराधियों को प्राणदंड दिया जाता था ।
शूलाकृत [संज्ञा पु.] (सं.) लोहे की सलाख में खोंसकर भूना हुआ मांस ।
शूलारि [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगोट ।
शूलि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।
शूलिक [संज्ञा पु.](सं.) १-खरगोश । खरहा । २-सूली देने वाला । ३-कबाब ।
शूलिका, शूलिकाप्रोत [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कबाब
शूलिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भांडीर नामक वृक्ष । २-गूलर का पेड़ ।
शूलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा । २-पान । ३-[illegible] ।
शूली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शिव । २-खरगोश । ३-शूलरोग का रोगी । ४-एक नरक का नाम [संज्ञा स्त्री.] १-देखो 'सूली' । २-पीड़ा । शूल । ३-एक प्रकार की घास ।
शूलोत्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमराजी नामक लता ।
शूल्य, शूल्यपाक, शूल्यमांस [संज्ञा पु.] (सं.) कबाब ।
शूल्यवाण [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन भूतयोनि ।
शृंखल, शृङ्खल [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमर में पहनने की मेखला । २-साँकल । जंज़ीर । ३-हथकड़ी । बेड़ी । ४-नियम ।
शृंखलक, शृङ्खलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊँट । २-देखो 'शृङ्खल' ।
शृंखलता, शृङ्खलता [संज्ञा स्त्री.](सं.) क्रमबद्ध या सिलसिलेवार होने का भाव ।
शृंखला, शृङ्खला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्रम । सिलसिला । २-जंजीर । साँकल । ३-श्रेणी । कतार । ४-कटिवस्त्र । मेखला । ५-कमर में पहनने की चाँदी की तगड़ी । करधनी । ६-एक अलङ्कार जिसमें पहले कहे हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन किया जाता है (साहित्य) ।
शृंखलाबद्ध, शृङ्खलाबद्ध [वि.](सं.) १-जो क्रम से हो । सिलसिलेवार । २-जो शृङ्खला-सम्बन्धी हुआ हो ।
शृंखलि, शृङ्खलि [संज्ञा पु.] (सं.) तालमखाना ।
शृंखलित, शृङ्खलित [वि.] (सं.) १-क्रमबद्ध । सिलसिलेवार । २-पिरोया हुआ ।
शृंग, शृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत की चोटी । शिखर । २-गाय, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग । ३-कँगूरा । ४-सिंगी नामक बाजा । ५-कमल । ६-जीवक औषध । ७-सोंठ । ८-अदरक । ९-अगर । १०-प्रभुत्व । ११-काम की उत्तेजना । १२-चिह्न । १३-स्तन छाती । १४-एक प्राचीन ऋषि का नाम । १५-पानी का फौव्वारा । [वि.] तीक्ष्ण । तेज ।
शृंगकंद, शृङ्गकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) सिंघाड़ा ।
शृंगक, शृङ्गक [संज्ञा पु.] (सं.) जीवकवृक्ष । २-सिंगिया विष ।
शृंगकूट, शृङ्गकूट, शृंगगिरि, शृङ्गगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम ।
शृंगग्राहिता-न्याय, शृङ्गग्राहिता-न्याय [संज्ञा पु.] (सं.) एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है, जब किसी कठिन कार्य का एक भाग हो जाने पर शेष अंश का सम्पादन उसी प्रकार सहज हो जाता है, जिस तरह सींग मारने वाले बैल का सींग पकड़ लेने पर दूसरा सींग भी पकड़ लेना सहज हो जाता है
शृंगज, शृङ्गज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगर । २-शर । तीर ।

शृंगनाभ, शृङ्गनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विष।

शृंगनाम्नी, शृङ्गनाम्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकड़ासिंगी।

शृंगपुर, शृङ्गपुर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शृंगबेरपुर'।

शृंगभेदी, शृङ्गभेदी [संज्ञा पु.] (सं.) गुन्दा नामक तृण।

शृंगमूल, शृङ्गमूल [संज्ञा पु.] (सं.) सिंघाड़ा।

शृंगमोही, शृङ्गमोही [संज्ञा पु.] (सं.) चंपकवृक्ष

शृंगरुह, शृङ्गरुह [संज्ञा पु.] (सं.) चम्पकवृक्ष।

शृंगला, शृङ्गला [संज्ञा स्त्री] (सं.) मेढासिंगी।

शृंगवत्, शृङ्गवत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जो कुरुवर्ष की सीमा पर है। पुराण।

शृंगवृष, शृङ्गवृष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शृंगवेर, शृङ्गवेर [संज्ञा पु.] (सं.) १-अदरक। २-सोंठ। ३-एक नाग का नाम। ४-देखो 'शृङ्गवेरपुर'।

शृंगवेरक, शृङ्गवेरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोंठ। २-अदरक।

शृंगवेरपुर, शृङ्गवेरपुर [संज्ञा पु.] (सं.) रामायण के अनुसार एक नगर का नाम जो रामचन्द्रजी के राजत्वकाल में निषादराजा गुह की राजधानी थी।

शृंगवेराभमूल, शृङ्गवेराभमूल [संज्ञा पु.] (सं.) गुन्दा नामक तृण।

शृंगवेरिका, शृङ्गवेरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोभी

शृंगसुख, शृङ्गसुख [संज्ञा पु.] (सं.) सिंघा नामक बाजा।

शृंगाट, शृङ्गाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंघाड़ा। २-गोखरू। ३-कँटाई। ४-चौराहा। ५-एक पर्वत जो कामरूप देश में है।

शृंगाटक, शृङ्गाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मांस से बनने वाला एक प्राचीन खाद्य पदार्थ। २-मस्तक पर का एक मर्मस्थान। ३-देखो 'शृंगाट'

शृंगार, शृङ्गार [संज्ञा पु.](सं.) १-सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २-साहित्य के नौ रसों में से सब से अधिक प्रसिद्ध प्रधान रस, जिसमें नायिक-नायिका के मिलन अथवा संयोग से उत्पन्न सुख या वियोग के कारण होने वाले कष्टों का वर्णन होना है। यह दो प्रकार का होता है--संयोग और वियोग अथवा विप्रलम्भ। ३-स्त्रियों का वस्त्राभूषण आदि से अपने आप को सजाना। ४-वह जिससे किसी वस्तु की शोभा बढ़े। ५-एक प्रकार के भक्त जो अपने इष्ट देवता को पति और स्वयं को पत्नी मानते हैं। ६-लौंग। ७-अदरक। ८-सेंदूर। ९-चूरन। चूर्ण। १०-काला अगर। ११-सोना। १२-रति। मैथुन।

शृंगारक, शृङ्गारक [संज्ञा पु.](सं.) १-सिंदूर। २-लौंग। ३-अदरक। ४-काला अगर। ५-प्रेम। प्रीति।

शृंगारजन्मा, शृङ्गारजन्मा [संज्ञा पु.](सं.) कामदेव।

शृंगारण, शृङ्गारण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमप्रदर्शन मुहब्बत जतलाना (स्त्री के प्रति।

शृंगारना* [क्रि. स.](हिं.) शृङ्गार करना। सजाना

शृंगार-भूषण, शृङ्गार-भूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंदूर। २-हरताल।

शृंगार-मंडल, शृङ्गार-मण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रज का वह स्थान जहां पर श्रीकृष्ण ने राधिका का शृङ्गार किया था। २-वह स्थान जहां पर नायक तथा नायिका कामक्रीड़ा करते हैं।

शृंगारयोनि, शृङ्गारयोनि [संज्ञा पु.](सं.) कामदेव

शृंगारवेश, शृङ्गारवेश [संज्ञा पु.](सं.) वह सुन्दर वेश जिसे पहन कर प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है।

शृंगार-हाट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वेश्याओं के रहने का बाजार। चकला।

शृंगारिक, शृङ्गारिक [वि.] (सं.) शृंगार-सम्बंधी

शृंगारिणी, शृङ्गारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शृंगार करने वाली स्त्री। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।

शृंगारित, शृङ्गारित [वि.] (सं.) शृंगार किया हुआ। सजा या सँवारा हुआ।

शृंगारिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो देवमूर्तियों आदि का शृंगार करता है। २-वह जो अनेक प्रकार का भेस बनाता हो। बहुरूपिया।

शृंगारी, शृङ्गारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुपारी। २-हाथी। ३-मानिक।

शृंगारुहा, शृङ्गारुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंघाड़ा

शृंगालिका, शृङ्गालिका, शृंगाली, शृङ्गाली [संज्ञा स्त्री] (सं.) विदारीकन्द।

शृंगाह्व, शृङ्गाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवक औषध। २-सिंघाड़ा।

शृंगाह्वा, शृङ्गाह्वा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो शृंगाह्व

शृंगि, शृङ्गि [संज्ञा पु.] (सं.) सिंगी नामक मछली। [संज्ञा पु.] (हिं.) सींगों वाला पशु

शृंगिक, शृङ्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) सिंगिया विष

शृंगिका, शृङ्गिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिंगी नामक एक प्राचीन बाजा जो फूंक कर बजाया जाता था। २-अतीस। ३-काकड़ासिंगी। ४-मेढ़ासिंगी। ५-पीपल।

शृंगिणी, शृङ्गिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाय गौ। २-मल्लिका। मोतिया। ३-मालकंगनी। लता। ४-अतीस।

शृंगी, शृङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-वृक्ष। ३-पर्वत। ४-सींगवाला पशु। ५-एक प्रकार का बाजा जो सींग का बनता था। ६-शिव। महादेव। ७-बरगद। ८-पाकड़। ९-भ्रमर। १०-ऋषभक नामक अष्टवर्गीय औषध। ११-सींगिया विष। १२-एक प्राचीन देश का नाम। १३-एक ऋषि का नाम जिनके शाप से परीक्षित को सांप ने डसा था। १४-जीवक नामक औषध। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अतीस। २-काकड़ासिंगी। ३-सिंगी नामक मछली। ४-मजीठ। ५-आँवला। ६-पोई का साग। ७-विष। जहर। ८-वह स्वर्ण जिससे आभूषण बनते हैं।

शृंगीक, शृङ्गीक [संज्ञा पु.] (सं.) काकड़ासिंगी।

शृंगीकनक, शृङ्गीकनक [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्वर्ण जिससे आभूषण बनते हैं।

शृंगीगिरि, शृङ्गीगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) वह पर्वत जिसपर शृङ्गीऋषि तप करते थे।

शृंगेरी, शृङ्गेरी [संज्ञा पु.] (सं.) शंकराचार्य के एक प्रधान मठ का नाम जो दक्षिण भारत में है।

शृंगोन्नति, शृङ्गोन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्रहों और नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति।

शृकाल [संज्ञा पु] देखो 'शृगाल'।

शृग* [संज्ञा पु.] देखो 'शृगाल'।

शृगाल [संज्ञा पु.](सं.) १-गीदड़। सियार। २-एक दैत्य का नाम। ३-वासुदेव। [वि.] १-भीरु। डरपोक। २-निष्ठुर। निर्दय। ३-खल। दुष्ट।

शृगालकंटक, शृगालकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) भरभाँड़ नामक कँटीला क्षुप।

शृगालकोलि [संज्ञा पु.] (सं.) उन्नाव।

शृगालघंटी, शृगालघण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालमखाना।

शृगालजंबु, शृगालजम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोमाककड़ी। २-उन्नाव। ३-तरबूज।

शृगालविन्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

शृगालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदारीकंद। २-पिठवन। ३-सियारन। गीदड़ी। ४-लोमड़ी।

शृगाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तालमखाना। २-विदारीकंद। ३-गीदड़ी।

शृणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अंकुश।

शृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-काढ़ा। क्वाथ। २-औटाया हुआ दूध।

शृतशीत [संज्ञा पु.] (सं.) औटाया हुआ पानी।

धु [संज्ञा पु.](सं.) १-गुदा। मलद्वार। २-

शृधू [वि.] (सं.) कुत्सित। खराब।

[संज्ञा पु.] (सं.) गुदा। मलद्वार।

शृष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) कंस के एक भाई का नाम

शेख [संज्ञा पु.](अ.) [स्त्री. शेखानी] १-

साहब के वंशजों की उपाधि । २-मुसलमानों के चार वर्गों में से प्रथम तथा श्रेष्ठ वर्ग । ३-आचार्य । पीर । बड़ा-बूढ़ा ।

शेख* [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'शेष' ।

शेख चिल्ली [संज्ञा पु] (अ , हि) १-एक कल्पित महामूर्ख व्यक्ति । २-बैठे बैठे व्यर्थ के बड़े-बड़े मन्सूबे बांधने वाला । ३-मूर्ख मसखरा ।

शेखर [संज्ञा पु](सं) १-शीर्ष । सिर । २-मुकुट । किरीट । ३-पहाड़ की चोटी । शिखर । ४-सिर पर धारण करने की माला । ५-रगण के पांचवें भेद की संज्ञा (।।S।) । ६-सङ्गीत में ध्रुव अथवा स्थायी पद का एक भेद । [वि] (सं) सब से अच्छा या श्रेष्ठ ।

शेखरापीड़-योजन [संज्ञा पु](सं) चौंसठ कलाओं में से एक का नाम ।

शेखरी [संज्ञा स्त्री](सं) १-बन्दा । २-लौंग । ३-सहिंजन की जड़ ।

शेखसद्दो [संज्ञा पु](अ , देश) मुसलमान स्त्रियों के एक उपास्य पीर जो कभी-कभी भूत के समान उनके सिर पर आते हैं ।

शेखावत [संज्ञा स्त्री](हिं) क्षत्रियों की एक जाति का नाम ।

शेखी [संज्ञा स्त्री.] (फा) १-गर्व । घमण्ड । २-ऐंठ । शान । अकड़ । ३-बढ़-बढ़कर बातें करना । डींग । *शेखी बघारना या हाँकना*-बढ़-बढ़कर बातें करना ।
शेखी झड़ना या निकलना-गर्वचूर्ण होना ।

शेख़ीबाज [वि] (फा). १-घमंडी । अभिमानी । २-डींग मारने वाला व्यक्ति ।

शेज [संज्ञा पु.] (देश.) अघौरी नामक वृक्ष ।

शेणघंटा, शेणघण्टा [संज्ञा स्त्री] (सं.) दंती ।

शेप [संज्ञा पु.] (सं) पुरुष की इन्द्रिय । लिंग ।

शेपाल [संज्ञा पु] (सं.) शैवाल ।

शेफ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शेप' ।

शेफालि, शेफालिका, शेफाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नील सिंधुवार का पौधा । निर्गुंडी ।

शेयर [संज्ञा पु.] (अं.) १-हिस्सा । भाग । साझा २-किसी धंधे में लगी हुई पूँजी का एक भाग जो उसमें सम्मिलित होने वाला प्रत्येक आदमी लगाता है ।

शेयर-होल्डर [संज्ञा पु.] (अं.) वह व्यक्ति जिसके पास सम्मिलित मूलधन अथवा पूँजी से चलने वाले किसी उद्योग धन्धे या कम्पनी के शेयर या हिस्से हों ।

शेर [संज्ञा पु.] (फा.) [स्त्री शेरनी] १-बिल्ली की जाति का एक बड़ा और हिंसक पशु । बाघ । नाहर । २-बहुत भारी वीर तथा साहसी व्यक्ति ।
चिराग शेर करना-बत्ती बढ़ाकर प्रकाश तीव्र करना । *शेर होना*-निर्भय धृष्ट अथवा अत्यंत प्रबल होना ।

शेरगुलाबी [संज्ञा पु.] (फा) गहरा गुलाबी रङ्ग ।

शेरदहाँ [वि.] (फा.) १-शेर के से मुख वाला । २-जिसके छोरों पर शेर का मुख बना हो । [संज्ञा पु.] (फा.) १-पुराने ढंग की एक प्रकार की बन्दूक । २-वह मकान जिसका अगला भाग चौड़ा और पिछला पतला हो ।

शेरपंजा [संज्ञा पु.] (फा., हिं.) शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र । बघनहाँ ।

शेरबच्चा [संज्ञा पु.] (फा., हिं.) १-शेर का बच्चा । २-वीर या साहसी पुरुष की सन्तान । ३-एक प्रकार की तोप ।

शेर-बबर [संज्ञा पु.] (फा.) सिंह । केसरी ।

शेरमर्द [वि.] (फा.) वीर । बहादुर ।

शेरमर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वीरता । बहादुरी ।

शेरवानी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) घुटने तक का एक प्रकार का लम्बा लंङ्गा ।

शेरिफ [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक विशिष्ट राजकीय उच्च अधिकारी जो भिन्न-भिन्न देशों में न्याय, शान्ति रक्षा आदि कार्यों के लिये अवैतनिक तथा सम्मानित रूप से नियुक्त अथवा निर्वाचित होता है । २-देखो 'सुमान्य' ।

शेल [संज्ञा पु.] देखो 'सेल' ।

शेलक [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़ा (वृक्ष) ।

शेलमुख [संज्ञा पु.] (सं) १-बिल्ववृक्ष । २-एक प्रकार का फल ।

शेलु [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिसोड़ा । २-मेथी । ३-लोधवृक्ष ।

शेलुका [संज्ञा प] (सं) बनमेथी ।

शेलुष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लिसोड़ा ।

शेवंतिका, शेवन्तिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) गुलदाउदी ।

शेव [संज्ञा पु.] (सं) १-ऊँचाई । २-उन्नति । ३-धन । दौलत । ४-शिश्न । लिंग । ५-मछली । ६-सर्प । ७-अग्नि का एक नाम । [संज्ञा पु.] (अं) हजामत बनाने का काम ।

शेवधि [संज्ञा पु.] (सं) निधि । खजाना ।

शेवल [संज्ञा पु.] (सं) शैवाल । सेवाल ।

शेवलिनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी ।

शेवाल [संज्ञा पु] (सं) सेवार । शैवाल ।

शेवाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जटामासी ।

शेष [संज्ञा पु.](सं.)१-बची हुई वस्तु । बाकी । २-गणित घटाने से बची हुई संख्या या रकम बाकी बैलेन्स । ३-समाप्ति । अन्त । ४-शेषनाग । ५-लक्ष्मण, जो शेषनाग के अवतार माने जाते हैं । ६-परिणाम । फल । ७-स्मारक वस्तु ८-मरण । नाश । ९-वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय । १०-बलराम । ११-परमेश्वर १२-एक दिग्गज । १३-एक प्रजापति का नाम १४-हाथी । १५-जमालगोटा । १६-टगण के पाँचवें भेद का नाम । १७-एक छप्पयछन्द जिस में ४६ गुरु, ६० लघु, कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं । [वि] (सं) १-बचा हुआ । अवशिष्ट । बाकी । २-अन्त तक पहुँचा हुआ । समाप्त ।

शेषजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गणित में बचे हुए अंक को लेने की क्रिया ।

शेषधर [संज्ञा पु.] (सं) शिव । महादेव ।

शेषनाग [संज्ञा पु.] (सं) पुराणानुसार सहस्र फनों वाला वह नाग जिसके फनों पर यह पृथ्वी ठहरी है ।

शेष-भाग [संज्ञा पु.] (सं) बचा हुआ भाग या हिस्सा ।

शेषभूषण [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु ।

शेषर*+ [संज्ञा पु.] देखो 'शेखर' ।

शेषराज [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं ।

शेषरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात का अंतिम पहर

शेषवत् [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में एक प्रकार का अनुमान जिसमें कार्य को देखकर कारण का अनुमान किया जाता है ।

शेषशायी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

शेषांश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाकी बचा हुआ अंश । २-अन्तिम अंश ।

शेषा [संज्ञा स्त्री] (सं.) देवता को चढ़ा हुआ नैवेद्य जो प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है ।

शेषाचल [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण के एक पर्वत का नाम ।

शेषोक्त [वि] (सं.) अन्त में कहा हुआ ।

शैक्य [संज्ञा पु.] (सं.) छींका । सिकहर । [वि.] दृढ़ ।

शैक्यायस [संज्ञा पु.] (सं) इस्पात लोहा ।

शैक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह विद्यार्थी जिसने पढ़ना आरंभ किया हो । २-नौसिखिया ।

शैक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) शिक्षा में पटु या निपुण

शैक्षिक [वि.] (सं.) शिक्षा का विषय जानने वाला ।

शैख [संज्ञा पु.] (सं.) पतित ब्राह्मण की सन्तान

शैखरिक, शैखरेय [संज्ञा पु] (सं) ओंगा । चिचड़ा ।

शैग्रव [संज्ञा पु.] (सं) सहिंजन के बीज ।

शैघ्र, शैघ्रय [संज्ञा पु] (सं) शीघ्रता । जल्दी । [वि.] (सं.) ज्योतिष के योग से सम्बन्ध रखने वाला ।

शैतान [संज्ञा पु.] (अ) १-ईसाई इस्लाम आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्य को ईश्वर के विरुद्ध चलाता तथा मार्गभ्रष्ट करता है । २-भूत । प्रेत । ३-बहुतभारी दुष्ट या पाजी । ४-बहुत ही नटखट या शरारती मनुष्य ।

शैतान कान में फूकना-दुर्वृत्ति या बुरे मनुष्य द्वारा बहकाया जाना। शैतान का धक्का-बुरी प्रेरणा। शैतान चढ़ना या लगना-भूत-प्रेत का आवेश होना। शैतान की खाला-बहुत दुष्ट या पापी स्त्री। यौ०-शैतान की आँत-बहुत लम्बा।

शैतानी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) दुष्टता। पाजीपन। [वि] (अ.) १-शैतान-सम्बन्धी। शैतान का। २-दुष्टतापूर्ण।

शैत्य [संज्ञा पु.] (सं.) शीत। ठंडक।

शैथिल्य [संज्ञा पु.] (सं) १-शिथिलता। ढिलाई २-सुस्ती।

शैनेय [संज्ञा पु.] (सं) श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम।

शैन्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिनि के वंश वाले जो क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये थे।

शैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) नीले फूल की कटसरैया

शैल [वि.] (सं.) १-शिला-सम्बन्धी। २-पत्थर का २-पथरीला। ३-कड़ा। कठोर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पर्वत। पहाड़। २-चट्टान। ३-छरीला। ४-रसौत। ५-शिलाजीत। ६-लिसोड़ा।

शैलकंपी, शैलकम्पी [संज्ञा पु.](सं.) १-स्कन्द के एक अनुचर का नाम। २-एक दानव का नाम

शैलक [संज्ञा पु.] (सं.) छरीला।

शैलकटक [संज्ञा पु] (सं) पहाड़ की ढाल।

शैलकन्या, शैलकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शैलगंगा, शैलगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्रीकृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था।

शैलगंध, शैलगन्ध [संज्ञा पु.](सं.) वर्बर चंदन

शैलगर्भाह्वा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सिंहलीपीपल। २-पाखानभेद।

शैलज [संज्ञा पु.] (सं.) छरीला।

शैलजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-गज-पिप्पली। ३-सिंहपिप्पली। ४-पाषाणभेद।

शैलजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोल मिर्च। काली मिर्च। २-गजपिप्पली।

शैलतटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहाड़ की तराई।

शैलतनया, शैलदुहिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) पार्वती

शैलधन्वा [संज्ञा पु.] (सं) शिव।

शैलधर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

शैलधातुक, शैलधातुज [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शैलनंदिनी, शैलनन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शैलनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शैलपति [संज्ञा पु] (सं.) हिमालय-पर्वत।

शैलपथ [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ी रास्ता।

शैलपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ववृक्ष।

शैलपुत्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पार्वती। २-नौ दुर्गाओं में से एक। ३-गङ्गानदी।

शैलपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शैलबीज [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

शैलभेद [संज्ञा पु.] (सं.) पखानभेद।

शैलमल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुटज।

शैलरंध्र, शैलरन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) गुफा।

शैलराज [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालयपर्वत।

शैलरोही [संज्ञा पु.] (सं.) मोगरा चावल।

शैलवल्कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाषाणभेद।

शैलशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं

शैलशिविर [संज्ञा पु.] (सं) समुद्र। सागर।

शैलशृंग, शैलशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत का शिखर।

शैलसंभव, शैलसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शैलसंभूत, शैलसम्भूत [संज्ञा पु.] (सं.) गेरू।

शैलसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शैलसेतु [संज्ञा पु.] (सं.) पत्थर का फूल।

शैलाख्य [संज्ञा पु.] (स) छरीला।

शैलाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) पर्वत का शिखर।

शैलाट [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़ी आदमी। २-किरात। ३-सिंह। स्फटिक।

शैलादि [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के गण।

शैलाधिप, शैलाधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत।

शैलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वदेवा में से एक।

शैलाली [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाली। नट।

शैलासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शैलाह्व, शैलिक [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

शैली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चाल। ढब। ढंग। २-प्रणाली। तर्ज। ३-रीति। प्रथा। रवाज। ४-वाक्य रचना का वह ढंग जो लेखक की भाषा सम्बन्धी निजि विशेषताओं का सूचक होता है। स्टाइल। ५-समूह जिनकी विशेषताओं में उनके कर्त्ताओं की मनोवृत्ति की एकरूपता के कारण सामान्य हो कलम।

शैलू [संज्ञा पु] (देश.) लिसोड़ा। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चटाई।

शैलूक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिसोड़ा। २-कमल की जड़। भसींड़।

शैलूकी [संज्ञा स्त्री.](सं.) कमल की जड़। भसींड़

शैलूष [संज्ञा पु.](सं.) १-नाटक अथवा अभिनय करने वाला। नट। २-धूर्त्त। चालाक। ३-बिल्ववृक्ष।

शैलूषभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

शैलूषिक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शैलूषिकी] वृत्त द्वारा जीवन निर्वाह करने वाली नट।

शैलेंद्र, शैलेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

शैलेंद्रस्थ, शैलेन्द्रस्थ [संज्ञा पु.](सं.) भोजपत्र

शैलेय [वि] (सं.) १-पथरीला। २-पहाड़ी। पत्थर से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) १- २-शिलाजीत। ३-तालपर्णी। ४-सेंधानमक। ५-सिंह। ६-भ्रमर।

शैलेयक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शैलेय'।

शैलेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

शैलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

शैलोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाषाणभेद।

शैल्य [वि.] (सं.) १-पत्थर का। पथरीला। २-कठोर। कड़ा।

शैव [वि.] (सं.) शिव-सम्बन्धी। शिव का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव का उपासक। २-शिव के उपासकों का एक सम्प्रदाय। ३-धतूरा। ४-अड़ूसा। ५-जैनियों के पांचवें कृष्ण। वासुदेव। ६-पाशुपत-अस्त्र।

शैवपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्ववृक्ष के पत्ते जो शिव पर चढ़ते हैं।

शैवपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) शिवपुराण।

शैवमल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पँचगुरिया नामक लता।

शैवल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पद्मकाष्ठ। २-सेवार ३-एक पर्वत। ४-एक नाग का नाम।

शैवलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

शैवाल [संज्ञा पु.] (सं.) सेवार।

शैवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-मनसा-देवी। ३-मङ्गल। कल्याण।

शैव्य [वि.] (सं.) शिव अथवा शिवी-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] १-पांडवों का एक सेनापति। २-श्रीकृष्ण का एक घोड़ा।

शैशव [वि.] (सं.) १-शिशु-सम्बन्धी। छोटे बच्चों का। २-बाल्यावस्था का। [संज्ञा पु.] १-वह अवस्था जब तक कोई शिशु रहता है। बच-पन। २-बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन

शैशिर [वि.] (सं.) १-शिशिर-सम्बन्धी। २-में होने वाला। [संज्ञा पु.] १-एक ऋषि। २-काले रङ्ग का पपीहा।

शैशिरीय [शाखा] [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋग्वेद की साकल शाखाओं में से एक।

शैशुनाग [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुनाग के वंश वाला

शैसीक [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल की एक जाति का नाम।

शोक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या वियोग से अथवा दुःखदायी घटना के कारण मन में होने वाला परम कष्ट। सोग। रंज

शोककारक [वि] (सं.) शोक उत्पन्न करने वाला।

शोकघ्न, शोकनाशक [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक-वृत्त।

शोकहर [सज्ञा पु.](सं.) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक पद में ८, ८, ८, ६ के विश्राम से तीस मात्राएं होती हैं। इसके अन्त में गुरु होना चाहिए और प्रत्येक पद के दूसरे, चौथे तथा छठे चौकल में जगण न पड़े। इसे 'शुभङ्गी'। भी कहते हैं।

शोकहारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजगन्धा।

शोकाकुल, शोकातुर, शोकाभिभूत [वि.](सं.) शोक से व्याकुल।

शोकारि [संज्ञा पु.] (सं.) कदम्ववृत्त।

शोकार्त्त, शोकाविष्ट [वि.] (सं.) शोक से व्याकुल।

शोकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात्रि। रात।

शोकोपहत [वि.] (सं.) शोक से विकल।

शोख [वि.] (फा.) १-धृष्ट। ढीट। २-नटखट। पाजी। ३-चपल। चञ्चल। चुलवुला। ४-गहरा और चमकदार (रङ्ग)।

शोखी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-धृष्टता। ढिठाई। २-नटखटपन। ३-चञ्चलता। चुलवुलापन। ४-चटकीलापन। तेजी।

शोच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दुःख। अफसोस। २-चिंता। खटका।

शोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शोक या रंज करना। २-चिंता करना।

शोचनीय [वि.] (सं.) १-जिसकी दशा देखकर दुःख अथवा चिन्ता हो। २-बहुत हीन या बुरा।

शोचि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लौ। लपट। २-चमक। दीप्ति। ३-वर्ण। रङ्ग।

शोचितव्य [वि.] (सं.) शोक करने योग्य।

शोचिष्केश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य। ३-चित्रकवृत्त।

शोच्य [वि.] (सं.) १-सोचने या विचार करने के योग्य। २-देखो 'शोचनीय'।

शोटीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पराक्रम।

शोठ [वि.] (सं.) १-मूर्ख। २-नीच। ३-आलसी

शोण [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल रङ्ग। २-लाली। अरुणता। ३-अग्नि। ४-रक्त। लहू। ५-सोन नामक नदी। ६-पद्मराग मणि। ७-लाल गदहपूरना। ८-सोनापाठा। ९-लाल गन्ना।

शोणक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोनापाठा। २-लाल गदहपूरना। ३-लाल गन्ना।

शोणगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पहाड़ी का नाम। यहाँ पर मगधदेश की पुरानी राजधानी थी।

शोणझिंटिका, शोणझिंटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली कटसरैया।

शोणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) लाल गदहपूरना।

शोणपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

शोणपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार।

शोणपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंदूरपुष्पी।

शोणभद्रा [संज्ञा पु.] (सं.) सोननदी।

शोणमणि, शोणरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) मानिक। लाल।

शोणसंभव, शोणसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) पिपलामूल।

शोणांबु, शोणाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) प्रलयकाल के मेघों में से एक।

शोणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोननदी। २-लाल-कटसरैया।

शोणित [वि.] (सं.) लाल। सुर्ख। [संज्ञा पु.] (सं) १-रक्त। खून। लहू। रुधिर। २-पौधों का रस। ३-केसर। ४-ईंगुर। ताँबा। (धातु)। ६-तृणकेशर।

शोणितचंदन, शोणितचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लालचन्दन।

शोणितपुर [संज्ञा पु.](सं.) वाणासुर की राजधानी

शोणितमेह [संज्ञा पु.] (सं.) लालप्रमेह।

शोणित-शर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शहद की बनी चीनी।

शोणितार्बुद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शूकरोग।

शोणितार्श [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्ररोग जिसमें पलकों की कोर पर कोमल और लाल रङ्ग का मांस का अंकुर उत्पन्न होता है।

शोणिताह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) कुंकुम। केसर।

शोणितोपल, शोणोपल [संज्ञा पु.] (सं.) मनिक लाल।

शोथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूजन। वरम। २-अङ्ग सूज जाने का एक।

शोथक [संज्ञा पु.] १-देखो 'शोथ'। २-मुरदासन

शोथघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) २-गदहपूरना। २-शालपार्णी।

शोथजित [संज्ञा पु.] (सं.) १-भिलावाँ। २-पुनर्नवा।

शोथहृत् [वि.] (सं.) सूजन दूर करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

शोथारि [संज्ञा पु.] (सं.) गदहपूरना।

शोद्धव्य [वि.] (सं.) शोधने योग्य।

शोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुद्ध करने वाला संस्कार २-ठीक या दुरुस्त किया जाना। दुरुस्ती। ३-चुकता या अदा होना (ऋण)। ४-जाँच। परीक्षा। ५-खोज। तलाश।

शोधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शोधने वाला। २-सुधार करने वाला। ३-ढूँढ़ने वाला।

शोधन [संज्ञा पु.] (सं) १-शुद्ध करना। २-दुरुस्त या ठीक करना। सुधारना। ३-औषधियों का वह संस्कार जिससे वे व्यवहार के योग्य होती हैं। ४-छानबीन। जांच। ५-तलाश करना। ढूँढ़ना। ६-ऋण चुकाना। पेमेन्ट। ७-किसी पाप से शुद्ध होने का संस्कार। प्रायश्चित। ८-चाल सुधारने के निमित्त दण्ड। सजा। ९-साफ करना। १०-दस्त की दवा से पेट साफ करना। विरेचन। ११-मुरदासङ्ग। १२-मल। विष्टा। १३-हीराकसीस। १४-गणित में घटाने की क्रिया। १५-नीबू।

शोधनक [संज्ञा पु.](सं.) एक कर्मचारी जो प्राचीन काल के न्यायालय अथवा धर्मसभा का स्थान साफ करता था।

शोधना [क्रि. स.] (हिं.) १-शुद्ध या साफ करना २-ठीक या दुरुस्त करना। सुधारना। ३-औषध के लिए धातु का संस्कार करना। ४-खोजना। ढूँढ़ना।

शोधनाक्षम [वि.] (सं.) जिसमें ऋण चुकाने की क्षमता न हो। दिवालिया।

शोधनाक्षमता [संज्ञा पु.](सं.) वह आर्थिक हीन-अवस्था जिसमें ऋण चुकाने की क्षमता न हो दिवाला।

शोधनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-झाड़ू। २-ताम्रवल्ली ३-नील। ४-ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध

शोधनीवीज [संज्ञा पु.] (सं.) जमालगोटे का बीज

शोधनीय [वि.] (सं.) १-शुद्ध करने योग्य। २-चुकाने योग्य। ३-ढूँढ़ने योग्य।

शोधवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-शोधने का काम कराना। २-तलाश कराना। ढुँढ़वाना।

शोधित [वि.] (सं.) १-शुद्ध किया हुआ। २-जिसका या जिसके सम्बन्ध में शोध में हुआ हो।

शोधैया [वि.] (हिं.) शोधने वाला।

शोफ [संज्ञा पु.] (सं) शोथ। सूजन।

शोफघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्तपुनर्नवा।

शोफनाशक [संज्ञा पु.] (सं) नील का वृत्त !

शोफहारी [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली बर्बरी नामक पौधा।

शोफहृत [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

शोफारि [संज्ञा पु.] (सं.) हाथीकन्द।

शोबदा [संज्ञा पु.] (अ.) जादू।

शोबदेबाज [संज्ञा पु.] (अ., फा.) धूर्त। चालाक

शोभ [वि] (सं.) सजीला। सुन्दर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के देवता। २-एक प्रकार के नास्तिक। ❀ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शोभा'।

शोभक [वि.] (सं.) सुन्दर। सजीला।

शोभन [वि.] (सं.) १-सुन्दर। सजीला। २-सुहावना। रमणीय। ३-उत्तम। श्रेष्ठ। ४-

उचित। उपयुक्त। ५-शुभ। मंगलदायक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-शिव। ३-दृष्टियोग। ४-ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक। ५-ग्रह। ६-वृहस्पति का ग्यारहवां सम्वत्सर।७-एक मात्रिक जिसके प्रत्येक चरण में १४ और १० के विश्राम से २४ मात्राएँ होती हैं तथा अन्त में जगण होता है। ८-एक राग जो मालकोस का पुत्र माना जाता है। ९-कमल। १०-राँगा। ११-आभूषण। १२-धर्म। पुण्य। १३-सौंदर्य। १४-सिंदूर। १५-कंकुष्ठ।

शोभनक [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन का वृक्ष।

शोभना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-हलदी। ३-गोरोचन। ४-स्कन्द की अनुचरी एक मातृका। ❀[क्रि. अ.] (हिं.) सोहना। शोभा देना।

शोभनिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नट। या अनिभयकर्त्ता।

शोभनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

शोभनीय [वि.] (सं.) देखो 'शोभन'।

शोभनीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

शोभांजन,शोभाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन का पेड़।

शोभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कांति। चमक। २-छवि। सुन्दरता। ३-सजावट। ४-उत्तमगुण ५-वर्ण। रंग। ६-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में यगण, मगण, दो नगण, दो नगण एवं दो गुरु होते हैं और ६, ७, ७ पर यति होती है। ७-हलदी। ८-गोरोचन। ९-दलाली का धन (दलाल)।

शोभाकर [वि.] (सं.) शोभा करने वाला।

शोभानक [संज्ञा पु.] (सं.) शोभांजनवृक्ष।

शोभान्वित [वि.] (सं.) सुन्दर। सजीला।

शोभायमान [वि.] (सं.) शोभा देने या बढ़ाने वाला। सुन्दर।

शोभावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चौदह वर्णों का का एक छन्द।

शोभित [वि.] (सं.) १-सुन्दर। २-सजता हुआ। ३-विद्यमान।

शोर [संज्ञा पु.] (फा.) १-जोरों की आवाज। कोलाहल। २-प्रसिद्ध। धूम।

शो[illegible] [संज्ञा पु.] (फा.) उबली हुई तरकारी या पके हुये मांस का रस। जूस। रसा।

शोरा [संज्ञा पु.] (फा.) मिट्टी से निकलने वाला एक प्रसिद्ध क्षार।

यौ०-*शोरे की पुतली*-बहुत गोरी स्त्री।

शोराआलू [संज्ञा पु.] (हिं.) बनआलू।

शोरापुश्त [वि.] (फा.) लड़ाका। फसादी।

शोरिश [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-खलबली। हलचल २-बलवा। बगावत।

शोरी [संज्ञा पु.] (फा.) १-फारसी सङ्गीत में एक मुकाम का पुत्र। २-एक पंजाबी प्रसिद्ध गवैया जिसने ठप्पा नामक गीत निकाला था।

शोला [संज्ञा पु.] (देश.) एक छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत हलकी होती है। (अ.) आग की लपट। ज्वाला।

शोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनहल्दी।

शोलेष [संज्ञा पु.] (सं.) एक वस्त्र का नाम।

शोशा [संज्ञा पु.] (फा.) १-निकली हुई नोक। २-चुटकुला। ३-झगड़ा खड़ा करने वाली बात। ४-व्यंग्य।

शोष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूखने या खुश्क होने का भाव। २-छीजने का भाव। क्षय। ३-शरीर का घुलना अथवा क्षीण होना। ४-एक एक प्रकार का राजयक्ष्मा रोग। क्षयी। ५-सुखण्डी रोग जो बच्चों को होता है। ६-सूखापंन। खुश्की।

शोषक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. शोषिका] १-शोषण करने या सोखने वाला। २-सुखाने वाला। ३-क्षीण करने वाला। ४-दूसरों का धन हरण करने वाला। *एक्स्प्लॉयटर*।

शोषण [संज्ञा पु.](सं.) १-सोखना। २-सुखाना। ३-नाश करना। ४-दुर्बल या अधीनस्थ के परिश्रम, आय आदि से अनुचित लाभ उठाना। *एक्सलॉयटेशन*। ५-कामदेव का एक बाण। ६-सोंठ। ७-सोनापाठा। ८-पिप्पली

शोषण-पद्धति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निम्न श्रेणी के मजदूरों को बहुत ही कम वेतन पर (इतना कम कि जीविका भी न चल सके) काम करने की रीति। *स्वीटिंगसिस्टम*।

शोषणीय [वि.] (सं.) शोषण करने योग्य।

शोषयितव्य [वि.] (सं.) १-जिसका शोषण किया जाने वाला हो। २-जिसे सुखाना हो।

शोषसंभव, शोषसम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) पिपलामूल।

शोषहा [संज्ञा पु.] (सं.) ओंगा। अपामार्ग।

शोषापहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुलेठी।

शोषित [वि.](सं.) १-जिसका शोषण किया गया हो। २-जो सोखा गया हो।

शोषी [वि.] (हिं.) [स्त्री. शोषणी] शोषक।

शोहदा [संज्ञा पु.] (अ.) १-लुच्चा। बदमाश। गुण्डा। २-लम्पट। व्यभिचारी। ३-छैल-चिकनिया। बहुत बनाव-सिंगार करने वाला

शोहदापन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुण्डापन। २-छैलापन।

शोहरत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रसिद्धि। ख्याति।

शोहरा [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रसिद्धि। ख्याति। २-खूब फैली हुई खबर।

शौंग, शौङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) भारद्वाज ऋषि का एक नाम।

शौंगिपुत्र, शौङ्गिपुत्र [संज्ञा पु.](सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

शौंगेय, शौङ्गेय [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-श्येन या बाजपक्षी।

शौंड, शौण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुर्गा। २-देवधान्य। ३-मत्त। मदिरा में मस्त।

शौंडता, शौण्डता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मत्तता। बदमस्ती।

शौंडायन, शौण्डायन [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन काल की एक योद्धा जाति का नाम।

शौंडिक, शौण्डिक [स्त्री. शौंडिका] १-मदिरा बनाने और बेचने वाली जाति। कलवार। २-पिप्पलीमूल।

शौंडिकागार, शौण्डिकागार [संज्ञा पु.] (सं.) शराब की दुकान। मदिरालय।

शौंडि, शौण्डि [संज्ञा पु.](सं.) शौंडिक या कलवार जाति। [संज्ञा स्त्री.] १-पीपल। पिप्पली। २-चव्य। चविका। ३-मिर्च।

शौंडीर, शौण्डीर [वि.] (सं.) अभिमानी।

शौक़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-किसी वस्तु की प्राप्ति अथवा सुख के भोग की अभिलाषा या लालसा। २-व्यसन। चसका। ३-प्रवृत्ति। झुकाव। *शौक करना*-किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। *शौक चर्राना या पैदा होना*-मन में तीव्र लालसा होना (व्यंग्य)। *शौक पूरा करना या मिटाना*-प्रबल कामना की पूर्ति करना। *शौक फरमाना*-शौक करना। शौक से-प्रसन्नतापूर्वक।

शौक [संज्ञा पु.] (सं.) शुक या तोतों का झुण्ड।

शौकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'शान'।

शौकर, शौकरव [संज्ञा पु.] देखो 'शूकरक्षेत्र'।

शौकि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि।

शौकिया [क्रि. वि.] (अ.) शौक पूरा करने के लिये। [वि.] शौक से भरा हुआ।

शौकीन [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह जिसे किसी बात का शौक हो। २-सदा बनाठना रहने वाला। छैला।

शौकीनी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-शौकीन होने का भाव या काम। २-तमाशबीनी। ३-ऐयाशी। रंडीबाजी।

शौकेय [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शौक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम।

शौक्तिक, शौक्तिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) मोती। मुक्ता।

शौक्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीप।

शौक्र [वि.] (सं.) शुक्र-सम्बन्धी। शुक्र का।

शौक्ल [वि.] (सं.) शुक्ल-सम्बन्धी। शुक्ल का।

शौग्र [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन का बीज।

शौच [संज्ञा पु.](सं.) १-शुद्धता। पवित्रता। २-

सब प्रकार से पवित्र जीवन बिताना । ३-मलत्याग. कुल्ला-दातुन आदि कृत्य जो सवेरे उठकर सब से पहले किये जाते हैं । ४-पाखाने या टट्टी जाना । ५-देखो 'अशौच' ।

शौचविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल-मूत्र त्यागने की क्रिया ।

शौचादिरेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शौचिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णसंकर जाति (प्राचीन) ।

शौची [वि.] (सं.) विशुद्ध । पवित्र ।

शौचेय [संज्ञा पु.] (सं.) धोबी ।

शौटीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीर । बहादुर । २-त्यागी । ३-अभिमानी ।

शौटीरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वीरता । २-त्याग । ३-गर्व ।

शौटीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीर्य । २-अभिमान ३-वीरता ।

शौत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौत' ।

शौद्धोदनि [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव ।

शौद्र [संज्ञा पु.] (सं.) शूद्रा माता और द्विज पिता से उत्पन्न सन्तान ।

शौध* [वि] (हिं.) निर्मल । पवित्र ।

शौधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लालकँगनी ।

शौन [संज्ञा पु.] (सं.) बचने के लिये रखा हुआ मांस । [वि.] श्वान-सम्बन्धी । कुत्ते का ।

शौनक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वैदिक आचार्य का नाम ।

शौनकायन [संज्ञा पु.] (सं.) शुनक वंश में उत्पन्न व्यक्ति ।

शौनकीपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन एक आचार्य का नाम ।

शौनायख [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि ।

शौनिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसाई । मांस-विक्रेता । २-शिकार । मृगया ।

शौनिकशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें शिकार खेलने, घोड़ों आदि पर चढ़ने तथा पशुओं आदि को लड़ाने की विद्या का विवेचन होता है ।

शौभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिकनी सुपारी । २-देवता । ३-आकाश में की एक कल्पित नगरी जो राजा हरिश्चन्द्र की मानी जाती है ।

शौभांजन, शौभाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन का वृक्ष ।

शौभायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक योद्धा जाति जो प्राचीनकाल में थी ।

शौभिक [संज्ञा पु.] (सं.) जादूगर ।

शौभ्रायण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देश । २-उसका निवासी ।

शौरसेन [संज्ञा पु.] (सं.) आजकल के व्रजमंडल का प्राचीन नाम । यहाँ पहले राजा शूरसेन का राज्य था । [वि.] शूरसेन-सम्बन्धी । शूरसेन का ।

शौरसेनिका, शौरसेनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शौरसेन प्रदेश की प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो 'नागर' भी कहलाती थी ।

शौरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु । २-कृष्ण । ३-बलदेव । ४-वसुदेव । ५-शनैश्चरग्रह ।

शौरिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) हीरा ।

शौरिरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम ।

शौर्पारिक [संज्ञा पु.] (सं.) शूर्पारक प्रदेश में पाया जाने वाला काले रङ्ग का हीरा ।

शौर्य, शौर्य्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूर का भाव । शूरता । वीरता । पराक्रम । २-शूर का धर्म । ३-नाटक में आरभटी नामक वृत्ति ।

शौल [संज्ञा पु.] (सं.) हल की फार या फाल ।

शौलायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

शौलिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश । २-उसका निवासी ।

शौलिकि [संज्ञा पु.] (सं.) योगशास्त्र में धौति, नेति आदि छः प्रकार के कर्मों में से एक ।

शौल्क [वि.] (सं.) शुल्क सम्बन्धी । शुल्क का । [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम ।

शौल्कायनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शौल्किक [वि.] (सं.) शुल्क-सम्बन्धी । शुल्क का । [संज्ञा पु.] चुङ्गी विभाग का दरोगा । शुल्काध्यक्ष ।

शौल्किकेय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विष

शौल्फ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौंफ । २-सुलफा नामक साग ।

शौल्विक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन वर्णसंकर जाति का नाम । २-ठठेरा । कसेरा ।

शौवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ते का मांस । २-कुत्तों का झुण्ड । [वि.] श्वान-सम्बन्धी । कुत्ते का ।

शौवस्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्तु जो भविष्य में व्यवहार करने के विचार से संग्रह करके रखी जाय ।

शौहर [संज्ञा पु.] (फा.) स्त्री का पति । खाविंद ।

श्नुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन 'समय' का एक परिमाण ।

श्नौष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक साम का नाम ।

श्मशान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं । मसान । मरघट ।

श्मशान-कालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिकों की एक देवी जिसका पूजन मांस, मछली खाकर, मदिरा पीकर और नग्न अवस्था में किया जाता है ।

श्मशान-पति [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । महादेव २-एक प्रकार के ऐंद्रजालिक ।

श्मशानपाल [संज्ञा पु.] (सं.) चांडाल ।

श्मशान-भैरवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा । २-तांत्रिकों के मत से श्मशान में रहने वाली देवियाँ ।

श्मशानयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शव या मृतदेह का श्मशान ले जाया जाना । रथी का श्मशान जाना ।

श्मशानवासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली ।

श्मशानवासी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-चाँडाल ।

श्मशानवेताल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की भूतयोनि ।

श्मशानवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) शिव । महादेव ।

श्मश्रु [संज्ञा पु.] (सं.) दाढ़ी । मूँछ ।

श्मश्रुकर [संज्ञा पु.] (सं.) नापित । नाई ।

श्मश्रुकर्म [संज्ञा. पु.] (सं.) दाढ़ी बनवाने का काम ।

श्मश्रुमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके दाढ़ी मूँछें हों ।

श्मश्रुल [वि.] (सं.) दाढ़ी मूछों वाला ।

श्मश्रुवर्द्धक, श्मश्रुवर्धक [संज्ञा पु.] (सं.) नाई हज्जाम ।

श्मश्रुशेखर [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का वृक्ष ।

श्यापीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक शाखा का नाम ।

श्याम [संज्ञा पु.] (सं) १-श्रीकृष्ण । २-प्रयाग के अक्षयवट का नाम । ३-साँवाधान्य । ४-एक राग जो संध्या के समय १ दण्ड से ५ दंड तक है । ५-सेंधानमक । ६-धतूरा । ७-विधारा । ८-बादल । ९-दमनक । १०-एक गंधतृण । ११-कालीमिर्च । १२-पीलूवृक्ष । १३-कोयल । १४-स्याम नामक देश । १५-एक प्राचीन देश जो कन्नौज में था । [वि.] (सं.) १-काला और नीला मिला हुआ (रंग) । २-साँवला ।

श्यामकंठ, श्यामकण्ठ [संज्ञा पु.](सं.) १-मोर । मयूर । २-नीलकण्ठ पक्षी ॥ ३-शिव ।

श्यामकंदा; श्यामकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस ।

श्यामक [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँवाँ चावल । २-गन्धतृण । ३-स्याम देश का नाम ।

श्यामकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) काले कान वाला सफेद घोड़ा ।

श्यामकांडा, श्यामकाण्डा, श्यामकांता, श्यामकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाँडरदूब ।

श्यामचटक [संज्ञा पु.] (सं.) श्यामा नाम का पक्षी ।

श्यामचूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्यामचटक।

श्यामजीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का धान। काला जीरा।

श्यामटीका [संज्ञा पु.] (हिं.) वह काला टीका जो नजर से बचाने के लिये बच्चों के लगाया जाता है।

श्यामता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कालापन। साँवलापन। कृष्णता। २-मलिनता। उदासी।

श्यामतीतर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पक्षी जो प्रायः डेढ़ बालिश्त लम्बा होता है।

श्यामपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) तमालवृक्ष।

श्यामपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जामुन का पेड़।

श्यामपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सिरिसवृक्ष।

श्यामपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाय का पौधा।

श्यामपूरबी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक संकरराग का नाम।

श्यामभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) मिर्च।

श्याममंजरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह काली मिट्टी जिसका वैष्णव लोग माथे पर तिलक लगाते हैं। यह जगन्नाथजी के आसपास की भूमि में पाई जाती है।

श्यामल [वि.] (सं.) [स्त्री. श्यामला] १-कृष्णवर्ण का। काला। २-कुछ-कुछ काला। साँवला। [संज्ञा पु.] १-पीपल। २-सिरिस। ३-एक प्रकार का जहरीला बिच्छू।

श्यामलचूड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घुँघची।

श्यामलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कालापन। २-साँवलापन।

श्यामला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-असगन्ध। ३-जामुन। ४-कटभी। ५-कस्तूरी

श्यामलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली।

श्यामलेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) काले रङ्ग की ईख।

श्यामवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) एक नेत्ररोग जिसमें पलकें सूजकर काली पड़ जाती हैं।

श्याम-श्वल [संज्ञा पु.] (सं.) यम के दो अनुचर जो कुत्ते थे।

श्यामशर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की ईख।

श्यामशालि [संज्ञा पु.] (सं.) काला शालिधान्य

श्यामसार [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णखदिर वृक्ष।

श्यामसुंदर, श्यामसुन्दर [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।

श्यामांग, श्यामाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) बुधग्रह। [वि.] (सं.) काले या साँवले वर्ण का।

श्यामांगी, श्यामाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली दूब।

श्यामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राधा। राधिका। २-एक गोपी का नाम। ३-एक प्रसिद्ध पक्षी जो काला होता है, जिसका स्वर बहुत मधुर होता है। ४-सोलह वर्ष की युवती। ५-काले रङ्ग की गाय। ६-यमुनानदी। ७-रात्रि। रात। ८-स्त्री। ९-कबूतरी। १०-काली निसोथ। ११-प्रियंगु। १२-बकुची। १३-नील। १४-गूगल। १५-सोमलता। १६-भद्रमोथा। १७-गिलोय। १८-बन्ध्या। बंझा। १९-कस्तूरी। २०-पाषाणभेदी। २२-पिप्पली। २२-हल्दी। २३-हरी दूब। २४-तुलसी। २५-क्षुप। २७-कमलगट्टा। २७-विधारा। २९-शीशम। ३०-साँवाँ अन्न। ३१-काला गदहपूरना। ३२-गोलोचन। ३३-गुन्दा नामक घास। ३४-लता-कस्तूरी। ३५-मेढासिंगी। ३६-हरीतकी। ३७-छाया। ३८-कालिकादेवी।
[वि.] (सं.) १-तपाये हुये सोने के से रंग वाली। २-सांवले या काले रङ्ग की।

श्यामाक [संज्ञा पु.] (सं.) साँवा (अन्न)।

श्यामाढकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काले फूल वाली अरहर।

श्यामायन [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

श्यामायनी [संज्ञा पु.] (सं.) वैशंपायन के शिष्यों का सम्प्रदाय।

श्यामालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्णशारिवा।

श्यामाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली।

श्यामिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काला रङ्ग। २-कालापन। ३-मलिनता। उदासी।

श्यामेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) काला ऊख।

श्याल [संज्ञा पु.] (सं.) १-साला। २-बहनोई। [संज्ञा पु.] (हिं) गीदड़। सियार।

श्यालक [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. श्यालिका] साला

श्यालकांटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'भरभाँड़'।

श्यालकी, श्यालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साली।

श्याव [वि.] (सं.) काला और पीला मिला हुआ (रङ्ग)। [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का बिच्छू

श्यावक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन ऋषि का नाम।

श्यावता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्याव (रङ्ग) का भाव

श्यावतैल [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

श्यावदंत, श्यावदन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-काले दाँत पड़ जाने का रोग। २-वह जिसके दाँत स्वभावतः काले रङ्ग के हों।

श्यावनाय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्यावरथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक ऋषि।

श्याववर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'श्यामवर्त्म'।

श्यावाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्येत [वि.](सं.) श्वेत। सफेद।

श्येतकोलक [संज्ञा पु.](सं.) एक तरह की मछली

श्येन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिकरा या बाज नामक एक शिकारी पक्षी। २-दोहे का एक भेद जिसमें १९ गुरु तथा १० लघु मात्राएं होती हैं। ३-पीला रङ्ग।

श्येनकरण [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. श्येनकरणिका] किसी कार्य को उतनी ही तेज़ी से करना जितनी फुर्ती से बाजपक्षी अपने शिकार पर झपटता है।

श्येनगामी [वि.] (सं.) तेज या फुर्ती से जाने वाला। [संज्ञा पु.] एक राक्षस का नाम (रामायण)।

श्येनघंटा, श्येनघण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दंती वृक्ष।

श्येनचित [संज्ञा पु.] (सं.) बाजपक्षी के आकार की वेदी।

श्येनजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) बाजपक्षी पकड़ कर और उन्हें बेच निर्वाह करने वाला।

श्येनाहृत [संज्ञा पु] (सं.) सोमलता।

श्येनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः रगण, जगण रगण और लघु गुरु होते हैं। २-बाजपक्षी की मादा।

श्येनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'श्येनिका'। २-कश्यप की एक कन्या का नाम।

श्यैनिक [संज्ञा पु.](सं.) एक दिन में होने वाला एक याग।

श्यैनेय [संज्ञा पु.] (सं.) जटायु का एक नाम।

श्योनाक [संज्ञा पु.] १-सोनापाढ़ा वृक्ष। २-लोध।

श्योरा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी मेख।

श्रग* [संज्ञा पु.] (डिं.) देखो 'शृंग'। [संज्ञा पु.] (सं.) गमन। जाना।

श्रंथ, श्रन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-बन्धन। ३-मोक्ष।

श्रंथित, श्रन्थित [वि.] (सं.) १-बंधा हुआ। २-मुक्त। ३-खुला।

श्रंसन [संज्ञा पु.] (सं.) पेट में जमे हुये मल को बाहर निकालने वाली औषध।

श्रथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वध। हत्या। २-खोलना। ३-यत्न।

श्रद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ईश्वर, धर्म अथवा बड़ों के प्रति आदरपूर्ण और पूज्यभाव। आस्था। २-कर्दममुनि की एक कन्या जिसका विवाह अत्रि ऋषि से हुआ था। ३-वैवस्वत मनु की पत्नी का नाम।

श्रद्धातव्य [वि.] (सं.) श्रद्धा के योग्य।

श्रद्धादेय [वि. स.] श्रद्धासहित दिया जाने वाला।

श्रद्धादेव [संज्ञा पु.] (सं.) वैवस्वत मनु जो श्रद्धा के पति थे।

श्रद्धान [संज्ञा पु.] (सं) श्रद्धा।

श्रद्धामय [वि.] (सं.) श्रद्धास्वरूप।

श्रद्धालु [वि.] (सं.) जिसके मन में श्रद्धा हो। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दोहदमती।

श्रद्धावान् [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रद्धालु पुरुष। २-धर्मनिष्ठ।

श्रद्धास्पद [वि.] (सं.) जिसके प्रति श्रद्धा करना उचित हो। श्रद्धेय। पूजनीय।

श्रद्धी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसके मन में श्रद्धा हो।

श्रद्धेय [वि.] (सं.) श्रद्धास्पद।

श्रपण, श्रपणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उबलवाना। उबाल।

श्रपित [वि.] (सं.) उबाला हुआ।

श्रपिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँवल का मांड़।

श्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर को थकाने वाला काम। परिश्रम। मेहनत। २-धनोपार्जन के निमित्त किया जाने वाला इस प्रकार का काम लेबर। ३-थकावट। क्लान्ति। ४-साहित्य में कोई काम करते-करते सन्तुष्ट एवं शिथिल हो जाना, जो एक संचारीभाव है। ५-दौड़धूप ६-क्लेश। दुःख। ७-व्यायाम। ८-शस्त्रों का अभ्यास। ९-चिकित्सा। १०-खेद। ११-तप १२-प्रयास।

श्रम पाना-परिश्रम करना।

श्रम-कण [संज्ञा पु.] (सं.) पसीने की बूंदें। स्वेद-बिंदु।

श्रमघ्न [वि.] (सं.) श्रम या थकावट दूर करने वाला।

श्रमच्छिद् [वि.] (सं.) श्रम को दूर करने वाला।

श्रम-जन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रमजीवी।

श्रम-जल [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। प्रस्वेद।

श्रमजित् [वि.] (सं.) परिश्रम करने पर भी न थकने वाला।

श्रमजीवी [वि.] (सं.) श्रम या मजदूरी करके जीविका चलाने वाला। लेबरर। [संज्ञा पु.] मजदूर।

श्रमजीवी-क्रांति, श्रमजीवी-क्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह क्रान्ति जो श्रमजीवी-राज्यसत्ता प्राप्त करने के लिए करते हैं।

श्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बौद्ध-संन्यासी। २-यति। मुनि।

श्रमणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुदर्शना नामक औषध। २-जटामांसी। ३-मुंडी। घुंडी। ४-शबरजाति की स्त्री। ५-संन्यासिनी।

श्रम-दिन [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रम का साधारण दिन जो प्रत्येक अवस्था में आठ घण्टे से अधिक न हो। नार्मल-डे-ऑफ-लेबर।

श्रममंत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) श्रम-सचिवालय।

श्रममंत्री, श्रममन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) श्रम-सचिव।

श्रम-मूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम्यवादी सिद्धांत जो यह प्रतिपादित करता है कि वस्तुओं का मूल्य उनके उत्पादन में किये गये श्रम के अनुपात से आंका जाना चाहिए। लेबर-वैल्यू।

श्रम-विंदु, श्रम-विन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। स्वेद।

श्रम-विभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी काम के अलग अलग अङ्गों के सम्पादन के लिए अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त करना। डिस्ट्रीब्यूशन-ऑफ-लेबर। २-किसी देश या राज्य का वह विभाग जो कि सुख और कल्याण की व्यवस्था करता है लेबर-डिपार्टमेंट।

श्रम-विभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम के भिन्न-भिन्न अंगों के सम्पादन के लिये, अलग-अलग व्यक्तियों की नियुक्ति। डिविजन आफ-लेबर।

श्रमव्ययक-मूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) लागतमूल्य।

श्रम-शीकर [संज्ञा पु.] (सं.) श्रमकण।

श्रम-सचिव [संज्ञा पु] (सं.) किसी राज्य या देश के श्रम-विभाग का मन्त्री जो श्रमजीवियों के सुख और कल्याण की व्यवस्था करता है। लेबर-मिनिस्टर।

श्रम-सचिवालय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश या राज्य के श्रम-सचिव के विभागीय अधिकारियों का प्रधान कार्यालय।

श्रम-समय [संज्ञा पु.] (सं.) साम्यवादियों का सिद्धान्त विशेष, जिसमें मूल्य की इकाई मुद्रा नहीं वरन् श्रम का परिमाण होनी चाहिये। इस पद्धति के अनुसार प्रत्येक मजदूर अपनी की गई मजदूरी के परिमाण का एक नोट पायेगा और उस नोट से उसे उतनी ही वस्तुएँ मिल जायेंगी जितना कि उसने परिश्रम किया है। लेबर-टाइम।

श्रम-सहिष्णु [वि.] (सं.) मेहनती। परिश्रमी।

श्रमसाध्य [वि.] (सं.) जो सहज में या बिना परिश्रम सध सके।

श्रमसीकर [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। श्रमकण।

श्रमिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो शारीरिक श्रम करके अपनी गुजर-बसर करता हो। मजदूर। [वि.](सं.) श्रम-सम्बन्धी। शारीरिक श्रम का

श्रमिकआंदोलन, श्रमिक-आन्दोलन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का आंदोलन जो श्रमजीवी या मजदूर अपने वर्ग के हित के लिये अथवा समाजवाद के प्रचार के निमित्त करते हैं। लेबर मूवमेंट।

श्रमिक-दल [संज्ञा पु.] (सं.) इङ्गलैंड का राजकीय दल विशेष जिसकी स्थापना ईस्वी सन् १८९३ में हुई थी। इसका उद्देश्य मजदूर दल के स्वार्थों और हितों की रक्षा करना है। लेबर-पार्टी।

श्रमिकवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शारीरिक श्रम करके पेट पालने वालों का वर्ग या श्रेणी। लेबरिंग-क्लास।

श्रमिक-शासन [संज्ञा पु.] (सं.) मजदूर-सरकार।

श्रमिक-संघ, श्रमिक-सङ्घ [संज्ञा पुं.] (सं.) कल-कारखानों आदि में कार्य करने वाले मजदूरों का वह सङ्घ जो मजदूरों के हितों की रक्षा तथा उनकी अवस्थाओं के सुधार के उद्देश्य से बनता है। लेबर यूनिअन।

श्रमित [वि.] (सं.) थका हुआ।

श्रमी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मेहनती। परिश्रमी। २-श्रमजीवी।

श्रयण [संज्ञा पु.] (सं.) आश्रय।

श्रवंतिनी, श्रवन्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

श्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कान। २-शब्द।

श्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय। कान। कर्ण। २-सुनना। ३-धार्मिक कथाएँ तथा देवताओं के चरित्र आदि सुनना एक प्रकार की भक्ति है। ४-बाईसवाँ नक्षत्र। ५-अंधक् मुनि के पुत्र का नाम। ६-राजा मेघध्वज के पुत्र का नाम।

श्रवणद्वादशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भादों के महीने के शुक्लपक्ष की द्वादशी जो श्रवणनक्षत्र से युक्त हो।

श्रवणपथ [संज्ञा पु.] (सं) कान।

श्रवणविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विद्या जो श्रवणेंद्रिय के सम्पर्क से मानसिक तृप्ति प्रदान करती है। जैसे संगीतविद्या।

श्रवणविभ्रम [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुनने की भूल।

श्रवणविषय [संज्ञा पु.] (सं.) श्रवण योग्य दूरत्व

श्रवणव्याधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कान का रोग।

श्रवणशीर्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोरखमुंडी।

श्रवणहारी [वि.] (सं.) जो सुनने में अच्छा लगे कर्ण-मधुर।

श्रवणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवां। २-बड़ी मुण्डी। पुण्डेरी।

श्रवणाह्वया [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-निर्विषी नामक तृण। २-जलचौलाई।

श्रवणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पुण्डेरी। २-गोरखमुण्डी।

श्रवणीय [वि. सं.] सुनने लायक।

श्रवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) कान।

श्रवना* [क्रि. स.] (हिं.) १-बहना। २-चूना। टपकना। ३-रसना। ४-गिरना। ५-बहना।

श्रवित* [वि.] (हि.) बहा हुआ।

श्रविष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन ऋषि का नाम।

श्रविष्ठा [संज्ञा स्त्री] (सं.) धनिष्ठानक्षत्र।

श्रविष्ठाज, श्रविष्ठाभू [संज्ञा पु.] (सं.) बुधग्रह

श्रविष्ठाभरण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्रव्य [वि सं.] १-जो सुना जा सके। २-सुनने-

योग्य।

श्रव्य-काव्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह काव्य जो केवल सुना जा सके पर जिसका अभिनय न हो सकता हो।

श्रांत, श्रान्त [वि.] (सं.) १-थका हुआ। २-शांत ३-दुःखी। खिन्न। ४-निवृत्त। ५-जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो। ६-जितेन्द्रिय।

श्रांति, श्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-थकावट। २-परिश्रम। मेहनत। ३-खेद। दुःख। ४-विश्राम। आराम।

श्राण [वि.] (सं.) घी, दूध या जल में पका हुआ।

श्राणा [संज्ञा स्त्री] (सं.) मांड़ की कांजी।

श्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला काम। २-वह जो शास्त्रविधि के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। ३-पितृ-पक्ष।

श्राद्धकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो श्राद्ध करता हो।

श्राद्धत्व [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध का भाव या धर्म

श्राद्धदेव [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्मराज। २-यमराज। ३-श्राद्ध में निमन्त्रित ब्राह्मण। ४-वैवस्वत मनु का एक नाम। ५-पितृलोक।

श्राद्ध-पक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पितृपक्ष का।

श्राद्धभोक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध में भोजन करने वाला ब्राह्मण।

श्राद्धशाक [संज्ञा पु.] (सं.) नाड़ीशाक।

श्राद्धसूतक [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध के उद्देश्य से बनाया हुआ भोजन।

श्राद्धिक [वि.] (सं.) श्राद्ध-सम्बन्धी। श्राद्ध का। [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से भोजन करने वाला।

श्राद्धी [संज्ञा पु.] (सं.) श्राद्धिक।

श्राद्धीय [वि.](सं.) श्राद्धसम्बन्धी। श्राद्ध का।

श्राप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शाप'।

श्रापी [संज्ञा पु.] (हिं.) रसोइया।

श्राम [संज्ञा पु.] (सं.) १-मास। महीना। २-मंडप। घर। ३-समय। काल

श्राय [संज्ञा पु.] (सं.) आश्रय।

श्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कान। २-गन्धाविरोजा ३-देखो 'स्रवण'।

श्रावक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. श्राविका] १-बौद्ध सन्यासी या भिक्षु। २-जैनधर्म का अनुयायी जैनी। ३-नास्तिक। ४-दूर का शब्द। ५-काक। ६-शिष्य। छात्र। [वि.] (सं.) सुनने वाला।

श्रावग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रावक'।

श्रावगी [संज्ञा पु.] (हिं.) जैनी।

श्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) १-आषाढ़ के बाद आने वाला मास। २-सुनने की क्रिया या भाव। ३-शब्द। आवाज। ४-पाखण्ड। [वि.] (सं.) १-श्रवणनक्षत्र सम्बन्धी। श्रवणनक्षत्र का २-श्रवण या कानों अथवा सुनने से सम्बन्ध रखने वाला। ऑडिटरी।

श्रावणिक [वि.](सं.) श्रवण-सम्बन्धी। श्रवण का [संज्ञा पु.] (सं.) १-सावन। २-अग्नि विशेष

श्रावणिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) मुण्डी।

श्रावणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रवणनक्षत्र-युक्त सावन के महीने की पूर्णिमा जो रक्षाबन्धन का दिन है। २-मुंडी। घुंडी। ३-भुंइ-कदम्ब। ४-ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषधि ५-वृद्धिनामक अष्ठवर्गीय औषध।

श्रावन* [क्रि. स.] (हिं.) गिराना।

श्रावयितव्य [वि.] (सं.) सुनाने योग्य।

श्रावस्त [संज्ञा पु.] (सं.) राजा श्राव के पत्र का नाम।

श्रावस्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी जो उत्तर कोशल में गङ्गातट पर बसी हुई थी।

श्रावा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांड़। पीच।

श्रावित [वि.] (सं.) १-सुना हुआ। २-जो सुन कर मान्य कर लिया गया हो। ३-लेख या दस्तावेज) जिसे सुनकर लिखने वाले ने उस पर अपनी स्वीकृति के सूचक हस्ताक्षर कर दिये हों। एटेस्टेड।

श्रावी [संज्ञा पु.] (हिं.) सज्जी।

श्राव्य [वि.] (सं.) सुनने योग्य।

श्रित [वि.] (सं.) १-रक्षा के लिए समीप आया हुआ। २-चिपटा हुआ। संयुक्त। ३-रक्षित ४-सम्भावित। ५-परिचर्या किया हुआ। ६-सहकारी। ७-ढकाहुआ। आच्छादित। ८-सम्पन्न। ९-एकत्रित। १०-अधिकृत।

श्रिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आश्रय।

श्रियंमन्य [वि.] (सं.) [स्त्री. श्रियंमन्या] १-अपने को योग्य समझने वाला। २-अभिमानी।

श्रिय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मङ्गल। कल्याण। २-शोभा। प्रभा।

श्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लक्ष्मी।

श्रियावास [संज्ञा पु.] (सं.) धनी। अमीर।

श्रियावासी [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव।

श्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विष्णु की पत्नी। लक्ष्मी। कमला। २-सरस्वती। ३-धन। सम्पत्ति। ४-विभूति। ऐश्वर्य। ५-शोभा। छटा। ६-एक आदरसूचक शब्द पुरुषों के पहले लगाया जाता है। ७-कांति। चमक। ८-धूप सरलवृक्ष। ९-चन्दन। १०-ऋषि नामक अष्टवर्गीय औषध। ११-उपकरण। १२-अधिकार। १३-सिद्धि। १४-वृद्धि। १५-एक प्रकार का पदचिह्न। १६-स्त्रियों का बेंदी नामक आभूषण। १७-ऊर्ध्वपुण्ड्र के मध्य की लम्बी नोकदार लाल रङ्ग की रेखा। १८-लोंग। लवंग। १९-बिल्ववृक्ष। २०-धर्म, काम और अर्थ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। ४-वैष्णवों का एक सम्प्रदाय। ५-एक वर्णवृत्त का नाम। ६-सम्पूर्ण जाति का एक राग। [वि.] (सं.) १-योग्य। २-सुन्दर। ३-श्रेष्ठ। ४-शुभ।

श्रीकंठ, श्रीकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

श्रीकंठसखा, श्रीकण्ठसखा [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

श्रीकंदा, श्रीकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेखसा। बन परवल।

श्रीकर [संज्ञा पु] (सं.) १-विष्णु। २-लालकमल ३-नौ उपनिषदों में से एक। [वि.] (सं.) शोभा या सौन्दर्य बढ़ाने वाला।

श्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कलम। लेखनी। २-कायस्थों की एक उपजाति।

श्रीकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

श्रीकांत, श्रीकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

श्रीकारी [संज्ञा पु.] (सं.) कुरंग। मृग विशेष।

श्रीकीर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

श्रीकुंज, श्रीकुञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थस्थान जो सरस्वतीनदी के तट पर था।

श्रीकुंड, श्रीकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक प्राचीन तीर्थ स्थान का नाम।

श्रीकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक व्रत जिसमें श्रीफल खाकर रहते हैं।

श्रीकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) यदुवंशी वसुदेव के पुत्र का नाम।

श्रीक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) जगन्नाथपुरी और उसके आस-पास के प्रदेश का नाम।

श्रीखंड, श्रीखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-मलयागिरि चन्दन। २-देखो 'शिखरण'।

श्रीखंड-शैल, श्रीखण्ड-शैल [संज्ञा पु.] (सं.) मलयपर्वत।

श्रीगंध, श्रीगन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद चन्द

श्रीगदित [संज्ञा पु.](सं.) साहित्य में उपरूपक का एक भेद। इसका दूसरा नाम श्रीरसिका है।

श्रीगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-तलवार।

श्रीगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) वैश्यों की एक जाति का नाम।

श्रीगेह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

श्रीगोंड [संज्ञा पु.] (?) वैश्यों की एक जाति।

श्रीग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ पर चिड़ियों के पानी पीने का प्रबन्ध हो।

श्रीघन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दधि। दही। २-बुद्धदेव। ३-बौद्ध-सन्यासी।

श्रीचंदन, श्रीचन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद

श्रीचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों की वि

सुन्दरी नामक देवी का एक प्रकार का पूजा-यन्त्र।

श्रीचमरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक प्रकार का हिरन

श्रीज [संज्ञा पु] (सं.) १-कामदेव। २-शाङ्ख का एक नाम।

श्रीटंक, श्रीटङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में एक राग।

श्रीदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात्रि। राति।

श्रीतरु [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

श्रीतल [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

श्रीताल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष जिसे हिंताल भी कहते हैं। यह ताड़वृक्ष से मिलता जुलता होता है।

श्रीतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणोक्त एक तीर्थ-स्थान

श्रीतेज [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्धदेव का नाम।

श्रीद [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर। [वि] (सं.) १-श्री या शोभा बढ़ाने वाला। २-धन देने वाला।

श्रीदयित [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

श्रीदाम [संज्ञा पु.] (सं.) सुदामा, जो श्रीकृष्ण के सखा थे।

श्रीदेवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुदेवा का एक नाम जो वसुदेव की पत्नी थी।

श्रीधन्वी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थस्थान का नाम।

श्रीधर [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-एक जैन-तीर्थङ्कर का नाम। [वि.] तेजस्वी।

श्रीधाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैकुण्ठ। २-पद्म।

श्रीनंदन, श्रीनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

श्रीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

श्रीनिकेत [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-लाल-कमल। ३-स्वर्ण। सोना। ४-गन्धाविरोजा।

श्रीनिकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-स्वर्ग। ३-गन्धाविरोजा।

श्रीनितंबा, श्रीनितम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राधा

श्रीनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

श्रीनिवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-स्वर्ग।

श्रीनिवासक [संज्ञा पु.] (सं.) कटसरैया।

श्रीपंचमी, श्रीपञ्चमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघ-शुक्लपञ्चमी जो वसन्तपञ्चमी का दिन है।

श्रीपत [संज्ञा पु.] (डिं.) विष्णु।

श्रीपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-रामचन्द्र। ३-कृष्ण। ४-कुबेर। ५-नृप। राजा।

श्रीपथ [संज्ञा पु.] (सं.) राजमार्ग। राजपथ।

श्रीपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मल्लिका। बेला।

श्रीपद्म [संज्ञा पु] (सं.) श्रीकृष्ण।

श्रीपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-अग्निमंथ वृक्ष। अरनी।

श्रीपर्णिका [संज्ञा स्त्री] (सं) १-कायफल। २-गम्भारी। ३-गनियारी। ४-पिठवन। ५-सेमल का पेड़।

श्रीपाद [संज्ञा पु] (सं.) १-पूज्यपाद। श्रेष्ठ २-धनवान्।

श्रीपिष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) तारपीन।

श्रीपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-कामदेव।

श्रीपुर [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण का मणिद्वीप नामक स्थान।

श्रीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौंग। लवंग। २-पद्मकाष्ठ। ३-श्वेतकमल। पुण्डेरी।

श्रीप्रद [वि.] (सं.) ऐश्वर्य देने वाला।

श्रीप्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राधा।

श्रीप्रसून [संज्ञा पु.] (सं.) लवंग। लौंग।

श्रीप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

श्रीफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेल। २-नारियल। ३-खिरनी का पेड़। ४-आँवला। ५-कच्ची चिकनी सुपारी। ६-धन। द्रव्य।

श्रीफलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-करेली। २-महानीली का पौधा।

श्रीफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आँवला। २-नील। ३-बड़ी मालकँगनी।

श्रीबंधु, श्रीबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत।

श्रीबीज [संज्ञा पु.] (सं.) ताड़ (वृक्ष)।

श्रीभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देवता के सामने रखने का मधुपर्क।

श्रीभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) मोथा। मुस्तक।

श्रीभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भद्रमोथा। भद्रमुस्तक

श्रीभान [संज्ञा पु.] (सं.) भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

श्रीभानु [संज्ञा पु.] (सं) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

श्रीभ्राता [संज्ञा पु.] (सं.) अश्व, चन्द्र, अमृत आदि चौदह रत्न जो समुद्र से उत्पन्न होने के कारण श्री या लक्ष्मी के भाई कहे जाते हैं।

श्रीमंगल, श्रीमङ्गल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीमंजरी, श्रीमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुलसी।

श्रीमंजु, श्रीमञ्जु [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

श्रीमंडप, श्रीमण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) एक पहाड़ का नाम।

श्रीमंत, श्रीमन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का शिरोभूषण। २-स्त्रियों के सिर की मांग। ३-किसी फर्म के नाम से पहले लिखा जाने वाला शब्द। मैसर्ज। [वि.] श्रीमान्। धनाढ्य। धनवान्।

श्रीमत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिलपुष्प। २-अश्वत्थ-वृक्ष। पीपल। ३-विष्णु। ४-शिव। ५-कुबेर। ६-हल्दी का पौधा। ७-ऋषभक नामक अष्टवर्गीय औषध।

श्रीमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-'श्रीमान्' का स्त्री-लिङ्ग रूप, जिसका प्रयोग स्त्रियों के नाम के के पहले होता है। २-पत्नी का वाचक शब्द। ३-लक्ष्मी। ४-राधा। ५-मुंडी। मुंडिका।

श्रीमत्कुंभ, श्रीमत्कुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) सोना

श्रीमत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-'श्रीमान्' होने का भाव या धर्म। २-सम्पन्न। अमीरी।

श्रीमय [संज्ञा पु.] विष्णु।

श्रीमलापहा [संज्ञा स्त्री.] (सं) तमाखू।

श्रीमस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लहसुन। २-लाल आलू।

श्रीमहिमा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

श्रीमान् [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनवान्। सम्पन्न। अमीर। २-एक आदरसूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले विशेषण के रूप में लगाया जाता है। श्रीयुत। ३-शिव। ४-विष्णु। ५-कुबेर। ६-पीपल। अश्वत्थवृक्ष। ७-तिलपुष्पी। ८-हल्दी।

श्रीमाल [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में पहनने का एक आभूषण।

श्रीमुख [संज्ञा पु.] (सं) १-शोभित अथवा सुन्दर मुख। २-वेद। ३-साठ संवत्सरों में से एक। ४-सूर्य।

श्रीमूर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विष्णु की मूर्त्ति।

श्रीयुक्त, श्रीयुत [वि.] (सं.) १-जिसमें श्री य. शोभा हो। २-एक आदरसूचक विशेषण, जो पुरुषों के नाम के पहले लगाया जाता है।

श्रीरंग, श्रीरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) १-विष्णु। २-ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

श्रीरंगपट्टन, श्रीरङ्गपट्टन [संज्ञा पु] (सं.) दक्षिण में मैसूर राज्य में एक तीर्थस्थान का नाम।

श्रीरमण [संज्ञा पु.] (सं) १-एक सङ्कर राग। २-विष्णु।

श्रीरवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्णु।

श्रीरस [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धाविरोजा।

श्रीराग [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

श्रीरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राधा।

श्रीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी मालकँगनी।

श्रीवंत, श्रीवन्त [वि] (सं) ऐश्वर्यवान्। सम्पत्तिशाली।

श्रीवत्स [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-विष्णु की छाती पर का वह चिह्न, जो भृगु के लात मारने से हुआ था। ३-जैनों के अनुसार अर्हतों का एक चिह्न।

श्रीवराह [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

श्रीवर्द्धन, श्रीवर्धन [संज्ञा पु] (सं.) १-एक राग का नाम। २-शिव का एक नाम।

श्रीवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक कटीली लता जिसका व्यवहार औषध रूप में होता है।

श्रीवह [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

श्रीवाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पान।

श्रीवारक [संज्ञा पु.] (सं.) सितावर शाक।

श्रीवास, श्रीवासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा। २-तारपीन का तेल। ३-गूगल। ४-देवदारु। ५-राल। धूप। ६-चन्दन। ७-शिव ८-विष्णु। ९-कमल।

श्रीवासच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरलवृक्ष। २-चन्दन। ३-पद्मकाष्ठ।

श्रीवाससार [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाविरोजा। २-तारपीन का तेल।

श्रीवासा [संज्ञा पु.] (हिं.) गन्धाविरोजा।

श्रीवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-अश्वत्थवृक्ष। पीपल २-बिल्ववृक्ष।

श्रीवृक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़े की छाती पर की भँवरी जो शुभ मानी जाती है। २-एक व्रत का नाम।

श्रीवृद्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.) ललितविस्तार के अनुसार बोधिद्रुम पर की एक देवी।

श्रीवेष्ट, श्रीवेष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाविरोजा। २-तारपीन का तेल।

श्रीवैष्णव [संज्ञा पु.] (सं.) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

श्रीश [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु।

श्रीसंज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग। लवंग।

श्रीसंपदा, श्रीसम्पदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध।

श्रीसंभूता, श्रीसम्भूता [संज्ञा स्त्री.](सं.) ज्योतिष में कर्ममास की छठी रात्रि।

श्रीसदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजनी। रात्रि।

श्रीसमाध [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग।

श्रीसहोदर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्रीहट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक सिलहट का प्राचीन नाम।

श्रीहत [वि.] (सं.) १-शोभाहीन। २-निस्तेज। प्रभाहीन।

श्रीहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-नैषधकाव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित। २-रत्नावली, नागानन्द और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता।

श्रीहस्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदन्ती। २ सूर्यमुखी पौधा।

श्रुग्वारु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंज नामक वृक्ष।

श्रुघ्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जीखार।

श्रुतंधर, श्रुतन्धर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मंडप।

श्रुत [वि.] (सं.) १-सुना हुआ। २-जो परम्परा से सुनते चले आये हों। ३-प्रसिद्ध।

श्रुतकीर्ति [वि.] (सं.) जिसकी कीर्त्ति प्रसिद्ध हो। [संज्ञा पु.] अर्जुन के एक पुत्र का नाम। [संज्ञा स्त्री.] राजा जनक के भाई कुशध्वजा की कन्या का नाम जो शत्रुघ्न की पत्नी थी।

श्रुतकेवली [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार एक प्रकार के अर्हत जो छः बताये जाते हैं।

श्रुतदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

श्रुतधर [संज्ञा पु.](सं.) १-कान। २-पुराणानुसार शाल्मलिद्वीप के ब्राह्मणों की संज्ञा।

श्रुतनिगदी [वि.] (सं.) एक बार सुने हुये पद्य आदि को ज्यों का त्यों कह सके।

श्रुत-पूर्व [वि.] (सं.) जो पहले सुना गया हो।

श्रुतशील [वि.] (सं.) विद्वान् और सदाचारी। [संज्ञा पु.] विद्या और सदाचार।

श्रुतान्वित [वि.] (सं.) शास्त्रों का जानने वाला।

श्रुतायु [संज्ञा पु.] (सं.) एक सूर्यवंशी राजा जो राम के पुत्र कुश के वंशज थे।

श्रुतायुध [संज्ञा पु.](सं.) एक राजा, जिसके पिता वरुण थे। इनके पास एक ऐसी गदा थी जो युद्ध करने वाले पर फैंकने से उसे अवश्य मार डालती थी, पर युद्ध न करने वाले पर चलाने से वह लौटकर चलाने वाले ही को मार डालती थी।

श्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुनना। श्रवण करना २-कान। सुनने की इन्द्रिय। ३-सुनी हुई बात। ४-सृष्टि के आरम्भ से चला आया पवित्र ज्ञान। ५-चार की संख्या। ६-सङ्गीत में किसी सप्तक के बाईस भागों में से एक। ७-त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। ८-नाम। अभिधान। ९-विद्या। १०-विद्वता ११-अत्रिऋषि की कन्या का नाम।

श्रुतिकट [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प। २-तप।

श्रुतिकटु [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य रचना में एक दोष जो कर्कशवर्णों के व्यवहार से होता है

श्रुतिकीर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'श्रुतकीर्त्ति'।

श्रुतिजीविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धर्मशास्त्र। स्मृति।

श्रुतिदुष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) श्रुतिकटु।

श्रुति-पथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुनने की इन्द्रिय। कान। २-वेदविहित मार्ग। *श्रुति-पथ में आना*–सुनाई देना।

श्रुतिमाल [संज्ञा पु.] (सं.) चार सिर वाले, ब्रह्मा।

श्रुतिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) चार मुख वाले, ब्रह्मा। [वि.] (सं.) जिसका मुख वेद है।

श्रुतिवर्जित [वि.] (सं.) १-बहिरा। २-वेद के अभ्यास से रहित।

श्रुतिविंद, श्रुतिविन्द [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम जो कुशद्वीप में है।

श्रुतिवेध [संज्ञा पु.] (सं.) कर्णवेध-संस्कार।

श्रुतिस्फोटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कनफोड़ा। २-कर्णस्फोटा-लता।

श्रुतिहारी [वि.] (सं.) कानों को मधुर लगने वाला

श्रुत्य [वि.] (सं.) १-सुना जाने लायक। २-प्रसिद्ध ३-प्रशस्त।

श्रुत्यनुप्रास [संज्ञा पु.] (सं.) अनुप्रास अलंकार के पाँच भेदों में से एक जिसमें एक ही स्थान से बोले जाने वाले शब्द दो या दो से अधिक बार आते हैं।

श्रुव [संज्ञा पु.] देखो 'स्रुव'।

श्रुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कसौंदा।

श्रेटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पहाड़।

श्रेणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'श्रेणी'।

श्रेणिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजदंत। २-मगध-देश के राजा बिबसार का नाम।

श्रेणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खेमा। डेरा। तम्बू। २-एक छन्द। ३-एक तृण।

श्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पंक्ति। अवली। पाँति २-क्रम। शृङ्खला। परम्परा। ३-एक ही तरह का व्यापार करने वाले व्यापारियों का संघात कॉरपोरेशन। ४-योग्यता, कर्तव्य आदि की दृष्टि से किया हुआ विभाग। दरजा। क्लास ५-सीढ़ी। ६-किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग। ७-पानी भरने का डोल।

श्रेणीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत सी वस्तुओं को अलग-अलग श्रेणियों में बाँटना अथवा रखना। क्लेसिफिकेशन। २-व्यापारियों आदि की संस्था को विधि अथवा कानून के अनुसार श्रेणी का रूप देना। इन्कॉरपोरेशन।

श्रेणीकृत [वि.] (सं.) (वह संस्था या समूह) जिसे विधि के अनुसार श्रेणी का रूप दिया गया हो। इन्कॉरपोरेटेड।

श्रेणीधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) व्यवसायियों की मंडली अथवा पंचायत की रीति या नियम।

श्रेणीपाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह राष्ट्र या राज्य जिसमें श्रेणियों अथवा पंचायतों की प्रधानता हो।

श्रेणीप्रमाण [संज्ञा पु.] (सं.) वह शिल्पी अथवा व्यापारी जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत हो तथा उसके मन्तव्यों के अनुसार कार्य करता हो।

श्रेणीबद्ध [वि.] (सं.) श्रेणी अथवा पंक्ति के रूप में लगा या रखा हुआ।

श्रेय [वि] (हि.) [स्त्री. श्रेयसी] १-अधिक अच्छा। बेहतर। २-श्रेष्ठ। उत्तम। ३-शुभ कल्याणकारी। ४-यश देने वाला। [संज्ञा पु.] १-अच्छापन। २-मङ्गल। कल्याण। ३-शुभ और शुद्ध आचरण। सदाचार। ४-किसी काम के लिए मिलने वाला यश। कीर्ति। ५-ज्योतिष में दूसरा मुहूर्त्त। ६-जैनियों के वर्त्तमान अवसर्पिणी के ग्यारहवें अर्ह

श्रेयसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हड़ । हर्रे । २-पाठा । ३-गजपीपल । ४-रास्ना । ५-प्रियंगु ।

श्रेयस्कर [वि.] (सं.) श्रेय देने अथवा श्रेष्ठ बनाने वाला ।

श्रेयस्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी । हर्रे ।

श्रेयस्काम [संज्ञा पु.] (सं.) मङ्गल चाहने वाला

श्रेयांसनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के वर्त्तमान अवसर्पिणी के ग्यारहवें अर्हत् या तीर्थंकर का नाम ।

श्रेयोमय [वि.] (सं.) मङ्गलमय । शुभमय ।

श्रेष्ठ [वि.] (सं.) [स्त्री. श्रेष्ठा] १-सर्वोत्तम । २-मुख्य । प्रधान । ३-पूज्य । ४-वृद्ध । ज्येष्ठ ५-कल्याणभाजन । [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर । २-विष्णु । ३-द्विज । ब्राह्मण ।

श्रेष्ठकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं) १-सागौन । सागवान । २-मकानों में लगा प्रधान खम्भा ।

श्रेष्ठतम [वि.] (सं.) सबसे श्रेष्ठ ।

श्रेष्ठतर [वि.] (सं.) जो दो व्यक्तियों अथवा पदार्थों में श्रेष्ठ या मुख्य हो ।

श्रेष्ठतः [अव्यय] (सं.) विशेष करके ।

श्रेष्ठता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रेष्ठ होने का भाव विशिष्टता । २-प्रधानता । ३-उत्तमता । ४-

श्रेष्ठलवण [संज्ञा पु.](सं.) सेंधा नमक ।

श्रेष्ठवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अरुणवृक्ष ।

श्रेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहुत उत्तम स्त्री । २-स्थलकमल । ३-त्रिफला । ४-मेदा नामक एक अष्टवर्गीय औषध ।

श्रेष्ठि-चत्वर [संज्ञा पु.] (सं.) सरकारी हुण्डी बेचने अथवा खरीदने का स्थान । स्कन्ध-विनिमय । स्टॉक ऐक्सचेंज ।

श्रेष्ठी [संज्ञा पु.] (सं.) महाजन । सेठ ।

श्रोण [वि.] (सं.) पंगु । खंज । ※[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोण' ।

श्रोणा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कांजी । भात का मांड । २-श्रवणनक्षत्र ।

श्रोणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कटि । कमर । २-नितम्ब । चूतड़ । ३-पथ । मार्ग । ४-यज्ञ की वेदी का किनारा ।

श्रोणिकपाल [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्घास्थि ।

श्रोणिका [संज्ञा स्त्री.] देखो 'श्रोणि' ।

श्रोणित※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोणित' ।

श्रोणिबिंब, श्रोणिबिम्ब [संज्ञा स्त्री.] (सं.) करधनी ।

श्रोणिसूत्र [संज्ञा पु] (सं.) करधनी । मेखला ।

श्रोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-कटि । कमर । २-नितम्ब । चूतड़ । ३-मध्य-भाग । कटिप्रदेश ।

श्रोतःआपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धशास्त्रानुसार मुक्ति अथवा निर्वाण साधना की प्रथम अवस्था जिसमें बंधन ढीले होने लगते हैं ।

श्रोतःआपन्न [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धशास्त्रानुसार मुक्ति अथवा निर्वाण की साधना में प्रथम अवस्था को प्राप्त जिसमें क्रमशः बन्धन ढीले होने लगते हैं ।

श्रोत [संज्ञा पु.] (हिं.) सुनने की इन्द्रिय । कान ।

श्रोतक [वि.] (सं.) १-सुनने योग्य । २-जिसे सुनना हो ।

श्रोता [संज्ञा पु.] (हिं.) सुनने वाला ।

श्रोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-कान । २-वेदज्ञान ।

श्रोत्रकांता, श्रोतकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दवा के काम में आने वाला एक पौधा ।

श्रोत्रज्ञ [वि.] (सं.) जो सुनने में तेज हो ।

श्रोत्रमूल [संज्ञा पु.] (सं) कर्णमूल ।

श्रोत्रहीन [वि.] (सं.) बहिरा ।

श्रोत्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया हो । २-ब्राह्मणों का एक वर्त्तमान भेद ।

श्रोत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रोत्रिय' ।

श्रोन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोण' ।

श्रोनित※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोणित' ।

श्रौत [वि.] (सं.) १-श्रवण-सम्बन्धी । २-श्रुति-सम्बन्धी । ३-जो वेदों के अनुसार हो ।

श्रौतश्रव [संज्ञा पु.] (सं.) शिशुपाल का एक नाम

श्रौतसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञादि के विधान वाले सूत्र ।

श्रौत्रहोम [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद का एक परिशिष्ट ।

श्रौत्रकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ ।

श्रौत्रजन्म [संज्ञा पु.] (हिं.) द्विजों का उपनयसंस्कार जिसमें वे वेद के अधिकारी होकर दूसरा जन्म प्राप्त करते हैं ।

श्रौन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रवण' ।

श्याह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल । २-गन्धाबिरोजा ।

श्लक्ष्ण [वि.] (सं.) १-कोमल । सुकुमार । २-चिकना । चमकदार । पालिश किया हुआ । ३-छोटा । सूक्ष्म । ४-खूबसूरत । मनोहर । ५-ईमानदार ।

श्लक्ष्णक [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी । पुङ्गीफल ।

श्लक्ष्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोमलता । २-चिकनापन । ३-सुन्दरता । ४-सूक्ष्मता । ५-ईमानदारी ।

श्लथ [वि.] (सं.) १-शिथिल । ढीला । २-मन्द । धीमा । ३-दुर्बल । कमजोर । छूटा हुआ ।

श्लथबंधन, श्लथबन्धन [वि.] (सं.) जिसके बन्धन ढीले हो गये हों ।

श्लाघन [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी प्रशंसा करना । डींग हांकना । [वि.] अपनी प्रशंसा करने वाला ।

श्लाघनीय [वि.] (सं.) १-प्रशंसा के योग्य । २-उत्तम श्रेष्ठ ।

श्लाघनीयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्लाघा । खुशामद ।

श्लाघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रशंसा । तारीफ । २-स्तुति । बड़ाई । ३-खुशामद । चापलूसी । ४-चाह । इच्छा । ५-आज्ञापालन ।

श्लाघित [वि.] (सं.) १-प्रशंसित । २-श्रेष्ठ । उत्तम ।

श्लाघ्य [वि.] (सं.) १-प्रशंसनीय । २-श्रेष्ठ । अच्छा ।

श्लिषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संयुक्त होना । जुड़ना । २-आलिंगन । परिरम्भण ।

श्लिष्ट [वि.] (सं.) १-मिला या जुड़ा हुआ । २-चिपका हुआ । ३-आलिंगित । ४-(साहित्य में) जिसके दो अर्थ हों । श्लेषयुक्त ।

श्लिष्टरूपक [संज्ञा पु.](सं.) वह अलङ्कार जिसमें श्लिष्ट शब्द द्वारा रूपक अलङ्कार होता है

श्लिष्टाक्षेप [संज्ञा पु.](सं.) वह अलङ्कार जिसमें श्लिष्ट पद के प्रयोग से आक्षेप रहता है ।

श्लिष्टि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जोड़ । मिलान । २-आलिंगन । परिरम्भण । [संज्ञा पु.](सं.) ध्रुव के एक पुत्र का नाम ।

श्लीपद [संज्ञा पु.] (सं.) फ़ीलपाँव नामक रोग ।

श्लीपदापह [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्रजीव वृक्ष ।

श्लीपदी [वि.] (सं.) जिसे श्लीपद या फ़ीलपाँव रोग हो ।

श्लील [वि.] (सं.) १-उत्तम । बढ़िया । २-शुभ । ३-शिष्टों और सभ्यों के योग्य । सभ्योचित

श्लीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्लील का भाव ।

श्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-संयोग । मिलना । २-जुड़ना । ३-भेंटना । आलिंगन । ४-वह अलङ्कार जिसमें एक शब्द के दो अथवा अधिक अर्थ लिये जाते है ।

श्लेषक [वि.] (सं.) मिलाने वाला । जोड़ने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'श्लेष' ।

श्लेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिलाना । जोड़ना । २-आलिंगन ।

श्लेषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आलिंगन । भेंटना ।

श्लेषोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अर्थालङ्कार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हो जिनके अर्थ उपमेय तथा उपमान दोनों में लग जाते हों ।

श्लेष्म, श्लेष्मक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'श्लेष्मा'

श्लेष्मघन [संज्ञा पु.] (सं.) १-केतकी । २-चमेली या जूही ।

श्लेष्मघ्ना, श्लेष्मघ्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-त्रिपुरमल्लिका । २-मल्लिका या मोतिया का एक भेद । ३-केतकी । केवड़ा । ४-महाज्योतिष्मती लता । ५-त्रिकटु ।

श्लेष्मण [वि.] (सं.) कफ प्रकृति वाला ।

श्लेष्मणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पौधा ।

श्लेष्मल [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़ा ।

[वि.] (सं.) कफ प्रकृति वाला।

श्लेष्महर [संज्ञा पु.] (सं.) कायफल।

श्लेष्मांतक, श्लेष्मान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़ा।

श्लेष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कफ। बलगम। २-बाँधने की रस्सी। ३-लिसोड़े का फल।

श्लेष्मातक [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़ा।

श्लेष्मातकवन [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार वह जङ्गल जिसमें शिव एक बारहसिंघे के रूप में छिपे थे।

श्लेष्मी [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा। २-लोबान।

श्लैष्मिक [वि.] (सं.) श्लेष्म सम्बन्धी।

श्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द। ध्वनि। २-पुकार। आह्वान। ३-स्तुति। प्रशंसा। ४-नाम कीर्त्ति। ५-अनुष्टुपछन्द। ६-संस्कृत का कोई पद्य।

श्वः [अव्य.] (सं.) आने वाले दूसरे दिन। कल

श्वकंटक, श्वकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) व्रात्य और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुरुष।

श्वक [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़िया।

श्वग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बालग्रह। २-एक प्रेत जो बच्चों को कष्ट देता है।

श्वचिल्ली [संज्ञा पु.] (सं.) कुकुरबन्दा।

श्वदंष्ट्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ते के दाँत। २-गोखरू।

श्वधूर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) गीदड़।

श्वन् [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. शुनी] कुत्ता।

श्वपच [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. श्वपचा, श्वपची] १-चांडाल। २-कुत्ते का मांस पकाकर खाने वाला।

श्वपाक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. श्वयाकी] चांडाल

श्वपामन [संज्ञा पु.] (सं.) पपरी नामक पौधा। काकच्छर्दि।

श्वपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) बिच्छू।

श्वपुच्छा [संज्ञा पु.] (सं.) पिठवन।

श्वफल [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरा नीबू।

श्वफल्क [संज्ञा पु.] (सं.) अक्रूर के पिता का नाम

श्वभीरु [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल। गीदड़।

श्वभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दरार। छेद। २-एक नरक। ३-वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

श्वमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक जङ्गली जाति।

श्वय, श्वयथु [संज्ञा पु.] (सं.) सूजन। शोथ।

श्ववृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निकृष्ट नौकरी द्वारा निर्वाह।

श्वशुर [संज्ञा पु.] (सं.) पति या पत्नी का पिता। ससुर।

श्वशुर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पति या पत्नी का भाई। देवर या साला।

श्वश्रू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ससुर की पत्नी। सास

श्वसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्वास या साँस लेना २-हाँफना। ३-फूँकना। ४-फुफकारना। ५-आह भरना। ६-पवन। ७-मैनफल। ८-एक वसु का नाम।

श्वसनाशन [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। सांप।

श्वसनेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुनवृक्ष।

श्वसनोत्सुक [संज्ञा पु.] (सं.) सांप। सर्प।

श्वसित [वि.] (सं.) १-जो श्वास लेता हो। २-जीवित। [संज्ञा पु.] (सं.) निश्वास। ठंढा सांस।

श्वसुन [संज्ञा पु.] (सं.) कुकुन्दर।

श्वस्तन [वि.] (सं.) कल या आने वाले दिन का [संज्ञा पु.] (सं.) कल या आने वाला दूसरा दिन।

श्वस्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आने वाला दिन। कल।

श्वास्थि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न।

श्वान [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. श्वानी] १-कुत्ता। २-दोहे का एक भेद इसमें दो गुरु और ४४ लघु होते हैं। ३-छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें ५६ गुरु ४० लघु कुल ९६ वर्ण १५२ मात्राएँ होती हैं।

श्वानचिल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बथुआ नामक शाक।

श्वाननिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलकी नींद। झपकी

श्वान्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भारङ्गी।

श्वापद [संज्ञा पु.] (सं.) हिंसक पशु।

श्वाविध [संज्ञा पु.] (सं.) एक जन्तु जिसे साही भी कहते हैं।

श्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाक से प्राणियों का हवा खींचना और बाहर निकालना। साँस। २-दम फूलने का रोग। दमा।

श्वासकास [संज्ञा पु.] (सं.) १-दमा और खाँसी। २-दमे की खाँसी। दमा।

श्वासकुठार [संज्ञा पु.] (सं.) एक रसौषध जो श्वास रोग में उपकारी होती है।

श्वासधारण [संज्ञा पु.] (सं.) श्वास को रोक रखने की क्रिया।

श्वासयंत्र, श्वासयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) साँस लेने की वायु को शुद्ध करने का यन्त्र। रेसपिरेटॉर।

श्वासरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-साँस रोकना। २-दम घुटना।

श्वासरोधक-वायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक विषाक्त गैस जो गहरे गड्ढों और खानों में एकत्रित हो जाती है।

श्वासहेति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निद्रा। नींद।

श्वासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साँस। दम। २-प्राणवायु।

श्वासारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्करमूल। २-[illegible] नामक पौधा।

श्वासोच्छ्वास [संज्ञा पु.] (सं.) वेग से सांस लेना और छोड़ना।

श्वित्र [वि.] (सं.) १-सफेद। श्वेत। २-सफेद कोढ़ वाला। [संज्ञा पु.] सफेद दाग वाला कोढ़।

श्वित्रघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृश्चिकाली।

श्वित्रारि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमराजी। बकुची।

श्वित्री [वि.] (सं.) [स्त्री. श्वित्रिणी] सफेद कोढ़ वाला।

श्वेत [वि.] (सं.) १-सफेद। धौला। चिट्टा। २-शुभ्र। उज्ज्वल। साफ। ३-गोरा। ४-निष्कलङ्क। [संज्ञा पु.] १-सफेद रङ्ग। २-चांदी। रूपा। ३-कौड़ी। ४-शङ्ख। ५-सफेद जीरा। ६-सफेद घोड़ा। ७-श्वेतवराह। ८-सफेद बादल। ९-शुक्रग्रह। १०-शरीर के चमड़े की तीसरी तह। ११-एक पुराणोक्त द्वीप। १२-शिव। १३-सिहजन का वृक्ष। १४-स्कन्द के एक अनुचर का नाम।

श्वेतकंद, श्वेतकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज।

श्वेतकंदा, श्वेतकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस नामक औषध।

श्वेतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चाँदी। रजत। २-कौड़ी। कपर्दक। ३-काँसा। ४-एक नाग का नाम।

श्वेतकपोत [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का चूहा। २-एक प्रकार का सर्प।

श्वेतकांडा, श्वेतकाण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

श्वेतकाक [संज्ञा पु.] (सं.) (सफेद कौआ) असम्भव बात।

श्वेतकुंजर, श्वेतकुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत नामक हाथी जो सफेद बताया जाता है।

श्वेतकुक्षि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली

श्वेतकुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद दागों वाला कोढ़।

श्वेतकृष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद और काला २-यह पक्ष और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात। ३-एक प्रकार का विषैला कीड़ा

श्वेतकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २-गौतमबुद्ध का बोधिसत्व की अवस्था का नाम। ३-एक प्रकार का केतु ग्रह।

श्वेतकेश [संज्ञा पु.] (सं.) लाल फूल का सहिजन पेड़।

श्वेतगज [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत नामक हाथी

श्वेतघंटा, श्वेतघण्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाग दन्ती।

श्वेतच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बनतुलसी। २-हंस।

श्वेतजीरक [संज्ञा पु.] (सं.), सफेद जीरा।

श्वेतटंकण, श्वेतटङ्कण [संज्ञा पु.](सं.) सोहागा।

श्वेतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेदी। उज्ज्वलता।

श्वेतद्युति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्वेतद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वरुण-वृक्ष।

श्वेतद्विप [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेतगज।

श्वेतद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीरसागर के पास का एक द्वीप जहाँ विष्णुभगवान् निवास करते हैं (पुराण)।

श्वेतधातु [संज्ञा पु.] (सं.) खड़िया।

श्वेतधामा [संज्ञा पु.] १-चन्द्रमा। २-कपूर। ३-समुद्र-फेन। ४-अपराजिता। ५-चिचड़ा। अपामार्ग।

श्वेतनील [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ।

श्वेतपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) हंस।

श्वेतपटल [संज्ञा पु.] (सं.) जस्ताधातु।

श्वेतपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंस। २-सफेदपत्र या कागज पर छपी हुई कोई राजकीय विज्ञप्ति विशेषतः ऐसी विज्ञप्ति जिसमें किसी विषय का उज्ज्वल पक्ष प्रतिपादित हुआ हो। ह्वाइट-पेपर।

श्वेतपर्णा [संज्ञा स्त्री] (सं.) जलकुम्भी।

श्वेतपाद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक गण का नाम।

श्वेतपिंगल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह। २-शिव।

श्वेतपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुंडी।

श्वेतपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागपुष्पी। २-तरोई। ३-सन। ४-सम्भालु। ५-सफेद-अपराजिता। ६-नागदंती।

श्वेतपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पुत्रदात्री लता। २-बड़ी सनपुष्पी।

श्वेतप्रदर [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों को होने वाला प्रदर रोग जिसमें उनकी योनि से सफेद रङ्ग की धातु गिरती है।

श्वेतफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद भंटा।

श्वेतबर्बर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चंदन।

श्वेतभानु [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

श्वेतभुजंग [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्मा का एक अवतार

श्वेतमंडल, श्वेतमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प-विशेष।

श्वेतमध्य [संज्ञा पु.] (सं.) मुस्तक। मोथा।

श्वेतमयूख [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्वेतमरिच [संज्ञा पु.] १-सहिंजन के बीज। २-सफेदमिर्च।

श्वेतमाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेघ। बादल। २-धुआँ।

श्वेतमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुनर्नवा-भेद।

श्वेतयावरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋग्वेद में वर्णित एक नदी।

श्वेतरंजन, श्वेतरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा-धातु।

श्वेतरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक।

श्वेतरथ [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्रग्रह।

श्वेतराजी [संज्ञा स्त्री.](सं.) चिचिंडा (एक तरकारी)

श्वेतरावक [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुंडी।

श्वेतरस [संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन।

श्वेतरोचिस् [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्वेतरोहित [संज्ञा पु.](सं.) १-गरुड़। २-एक प्रकार का पौधा।

श्वेतलोध [संज्ञा पु.] (सं.) पठानीलोध।

श्वेतवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) स्कन्द के एक अनुचर का नाम।

श्वेतवचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद बच। २-अतिविषा। अतीस।

श्वेतवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर।

श्वेतवह [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. श्वेतौही] इन्द्र।

श्वेतवाजी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद घोड़ा। २-चन्द्रमा। ३-अर्जुन।

श्वेतवाराह [संज्ञा पु.](सं.) १-एक कल्प जो ब्रह्मा के मास का पहला दिन बताया जाता है। २-एक तीर्थ का स्थान। ३-वराह अवतार की एक मूर्त्ति।

श्वेतवाह [संज्ञा पु] (सं.) १-इन्द्र। २-अर्जुन।

श्वेतवाहन [संज्ञा पु.](सं.) १-चन्द्रमा। २-अर्जुन ३-समुद्र का एक मकर। ४-शिव का एक रूप

श्वेतशुंग, श्वेतशुङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) जौ। यव।

श्वेतसर्प [संज्ञा पु.](सं.) १-वरुणवृक्ष। २-सफेद सर्प।

श्वेतसर्षप [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली सरसों।

श्वेतसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैर। कत्था। २-अनाजों, तरकारियों आदि का वह सफेद सत्त जो प्रायः कपड़ों पर कलफ लगाने या दवाओं आदि में काम आता है। मांड़ी। कलफ। स्टार्च

श्वेतसिंही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शाक विशेष।

श्वेतसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) स्कन्ध का एक अनुचर

श्वेतसुरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद फूल की निर्गुंडी।

श्वेतहनु [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प विशेष।

श्वेतहय [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र का घोड़ा। २-अर्जुन।

श्वेतहस्ती [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत।

श्वेतांग, श्वेताङ्ग [वि.] (सं.) जिसके अङ्ग का वर्ण या रङ्ग सफेद हो। सफेद रङ्ग के शरीर वाला।

श्वेतांबर, श्वेताम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद वस्त्र धारण करने वाला। २-जैनियों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक। ३-शिव का एक रूप या मूर्त्ति। [संज्ञा पु.] गोरी जाति का कोई आदमी। जैसे—युरोपियन, अमेरिकन आदि।

श्वेतांशु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्वेता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २-कौड़ी। ३-भोजपत्र का पेड़। ४-काष्ठपाटला। ५-शंख नामक हस्ती की माता। ६-अतीस। ७-अपराजिता-लता। ८-सफेद बन-भंटा। ९-भटकटैया। १०-पाषाणभेद। ११-वंशलोचन। १२-श्वेत-पुनर्नवा। १३-शिलावाक। १४-फिटकरी। १५-मिस्त्री। १६-शक्कर। चीनी। १७-पर्व-मूला। १८-सफेदवच। १९-स्कंध की एक मातृका का नाम। २०-कश्यप की एक कन्या का नाम।

श्वेताक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सोमलता

श्वेताम्लि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

श्वेतारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ स्थान जो कावेरी नदी के पास माना गया है।

श्वेतार्चि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

श्वेताद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) कैलाशपर्वत।

श्वेतालु [संज्ञा पु.] (सं.) महिषकन्द।

श्वेताश्वर [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्णयजुर्वेद की एक शाखा।

श्वेताह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद पाटला।

श्वेतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

श्वेतेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गन्ना।

श्वेतोदर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुबेर का एक नाम। २-सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप। ३-एक पर्वत का नाम जिसका उल्लेख मार्कण्डेय-पुराण में मिलता है।

श्वेतौही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्र की पत्नी शची का नाम।

श्वेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कोढ़।

श्वैत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेदी। श्वेतता। २-सफेद कोढ़।

श्वैत्र, श्वैत्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कोढ़।

ष

ष हिन्दी वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णों में ३१ वाँ अक्षर। मूर्द्धा इसका उच्चारण स्थान है, इसीलिए यह मूर्द्धन्य 'ष' कहलाता है। इसका उच्चारण 'श' के समान भी और 'ख' के समान भी होता है। हिन्दी की प्राचीन लिखावट में इस अक्षर का व्यवहार क वर्गीय 'ख' के स्थान पर होता था। [संज्ञा पु.] १-विद्वान् पुरुष। २-कुच-चूचक। ३-नाश। ४-शेष।

घाकी। ५-मुक्ति। मोक्ष। ६-स्वर्ग। ७-अन्त। अवधि। ८-गर्भ। ९-सहिष्णुता। [वि.] उत्तम। श्रेष्ठ।

षंजन, षञ्जन [संज्ञा पु.] (सं) १-आलिंगन। २-समागम। मिलना।

षंड, षण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) १-राशि। समूह। २-झाड़ी। ३-साँड़। ४-नपुंसक। हीजड़ा। ५-कमलसमूह। ६-शिव। ७-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

षंडत्व, षण्डत्व [संज्ञा पु.] (सं) नामर्दी। हीजड़ापन।

षंडयोनि, षण्डयोनि [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह स्त्री जिसे मासिकधर्म न होता हो और जो पुरुष समागम के अयोग्य हो।

षंडामर्क, षण्डामर्क [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

षंडाली, षण्डाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह छोटी घरिया जिसमें एक छटांक वस्तु आसके। २-दुश्चरित्रा स्त्री। ३-ताल। तलैया।

षंडी, षण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'षंडयोनि'।

षंढ [संज्ञा पु.] देखो 'षंड'।

षंढा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसकी चेष्टा पुरुषों के समान हो।

षट् [वि.](सं.) छः (गिनती में)। [संज्ञा पु.] १-छः की संख्या। २-षाडव जाति का एक राग

षट्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-छः की संख्या। २-छः वस्तुओं का समुदाय।

षट्कर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की वीणा जिसमें छः कान होते हैं।

षट्कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण के छः कर्म या काम (पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना दान लेना, दान देना)। २-वे छः कर्म जो ब्राह्मण को जीविका के लिये विहित बतलाये गये हैं (उंछ, दान लेना, भिक्षा, व्यापार, पशुपालन और खेती)। ३-तन्त्र द्वारा किये जाने वाले छः कर्म (शांति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेष, उच्चाटन और मरण)। ४-झगड़ा। ५-झञ्झट।

षट्कर्मा [संज्ञा पु.](सं.) १-कर्मनिष्ठ ब्राह्मण। २-तांत्रिक।

षट्कला [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक।

षट्कसंपत्ति, षट्कसम्पत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) छः प्रकार के कर्म (शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान)।

षट्कार [संज्ञा पु.] (सं.) 'षट्' शब्द का उच्चारण

षट्कोण [वि.] (सं.) छः कोण या कोने वाला।

षट्कोप [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराने आचार्य का नाम।

षट्चक्र [संज्ञा पु.](सं.) १-हठयोग में माने हुए कुण्डलिनी के ऊपर के छः चक्र। २-षड्यन्त्र

षट्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमर। भौंरा। [वि.] छः पैर वाला।

षट्तक्रतैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक तेल जिसमें छः गुना तक्र या मट्ठा मिलता है।

षट्ताल [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृदङ्ग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है। २-एक प्रकार का ख्याल।

षट्तिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माघमास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

षट्पद [वि.] (सं.) [स्त्री. षट्पदी] छः पैर वाला [संज्ञा पु.] १-भौंरा। भ्रमर। २-किलनी।

षट्प्रिय [संज्ञा पु.](सं.) १-कमल। २-नागकेशर-वृक्ष।

षट्पदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भौंरी। भ्रमरी।

षट्पदातिथि [संज्ञा पु.] (सं.)१-आम्रवृक्ष। २-चम्पक। चम्पा।

षट्पदानंदवर्द्धन [संज्ञा पु.](सं.) किंकिरात नामक वृक्ष जो भ्रमर के आनन्द को बढ़ता है।

षट्पदी [वि] (सं.) [स्त्री. ष.] छः पैर वाली। [संज्ञा स्त्री.] १-भ्रमरी। भौंरी। २-छप्पय-छन्द।

षट्पिता-पुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में ताल का एक भेद।

षट्प्रज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता। २-कामुक। ३-उच्छृङ्खल।

षट्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

षट्रस [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'षड्रस'।

षट्राग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सङ्गीत में छः राग जो इस प्रकार हैं-भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २-बखेड़ा। जञ्जाल। ३-झञ्झट।

षट्रिपु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'षड्रिपु'।

षट्शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'षड्दर्शन'।

षट्शास्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) छः दर्शनों का ज्ञाता।

षट्वांग, षट्वाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) खट्वाङ्ग नामक राजर्षि जिनको दो घड़ी की साधना से मुक्ति मिली थी।

षटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-छः की संख्या। २-वस्तुओं का समूह।

षडंग, षडङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेद के ये छः अङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष)। २-शरीर के ये छः अङ्ग (दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़)। [वि.] छः अङ्ग या अवयव वाला।

षडंगजित्, षडङ्गजित् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

षडंगी [वि.] (हिं.) छः अङ्ग या अवयव वाला।

षडंघ्रि, षडङ्घ्रि [संज्ञा पु.] (सं) भ्रमर। भौंरा

षडक्षरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णवों का मुख्य मन्त्र।

षट्क्षीण [संज्ञा पु.] (सं) मछला।

षडग्नि [संज्ञा स्त्री] (सं.) छः प्रकार की अग्नि जो कर्मकाण्ड में बताई गई हैं (गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य तथा औपसन्यग्नि)।

षडभिज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्ध या बोधिसत्त्व।

षडश्व [वि.] (सं.) छः घोड़ों वाली गाड़ी या र

षडस्र [वि.] (सं.) जिसमें छः कोने हों।

षडात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

षडानन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय। २-सङ्गीत में स्वरसाधन की एक प्रणाली। [वि.] छः मुख वाला।

षड्ग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'षड्ज'।

षड्गुण [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें छः गुण हों (ऐश्वर्य, ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य और धर्म)।

षड्ग्रंथ, षड्ग्रन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) मीठी बच।

षड्ग्रंथा, षड्ग्रन्था [संज्ञा स्त्री.](सं.) हरसा की जड़ जो काबुल तथा काश्मीर से आती है।

षड्ग्रंथिका, षड्ग्रन्थिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीपलामूल।

षड्ज [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत के सात स्वरों में से प्रथम जिसका सङ्केत 'स' है।

षड्दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) हिंदुओं के छः दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत)।

षड्दर्शनी [संज्ञा पु.] (हिं.) छःओं दर्शनों का जानने वाला।

षड्बिंदु, षड्बिन्दु [संज्ञा पुं] (सं.) विष्णु।

षड्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-दर्शन के अनुसार छः पदार्थ (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष तथा समवाय)। २-ज्योतिष के मतानुसार छः भाव (लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित, और क्षोभित)।

षड्भुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खरबूजा। २-दुर्गा का एक रूप।

षड्यंत्र, षड्यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी के विरुद्ध गुप्तरूप से की जाने वाली कार्रवाई। भीतरी चाल। कॉन्सपिरेसी। २-कपटपूर्ण आयोजन।

षड्योनि [संज्ञा पु.] (सं.) शिलाजीत।

षड्रस [संज्ञा पु.](सं.) मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल अर्थात मीठा, नमकीन, तीता, कड़ुवा, कसैला तथा खट्टा ये छः प्रकार के रस या स्वाद।

षड्रिपु [संज्ञा पु.] (सं.) काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह तथा अहंकार मनुष्य के ये छः विकार।

षड्रेखा [संज्ञा स्त्री] (सं.) खरबूजा।

षड्वक्त्र, षड्वदन [संज्ञा.पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

षड्वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) छः वस्तुओं का समुदाय।

षड्बिंदु, षड्बिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-एक प्रकार का गुबरीला कीड़ा।

षड्बिंदुतैल, षड्बिन्दुतैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिक में एक प्रकार का तेल।

षड्विंश [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद का एक ब्राह्मण

षड्विकार [संज्ञा पु.](सं.) १-प्राणी के छः विकार या परिणाम (उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालपन प्रौढ़ता वृद्धता और मृत्यु)। २-देखो 'षड्रिपु'

षण्मुख [संज्ञा पु.] (सं.) 'कार्त्तिकेय'। [वि.] (सं. छः मुख वाला।

षर्षपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की चिड़िया

षष्ट [वि.] (सं) साठ की संख्या का।

षष्ट्यंशक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यन्त्र जिससे जहाज पर नक्षत्रों की स्थिति देख कर यह स्थिर करते है कि जहाज पृथ्वी के किस भाग में है।

षष्टि [वि.] (सं.) साठ। ६०।

षष्टिक [वि] (सं.) १-साठवाला। २-जो साठपर खरीदा जाय। [संज्ञा प] (सं.) साठीधान।

षष्टितंत्र, षष्टितन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) सांख्यशास्त्र जिसमें साठ पदार्थों का विचार किया गया है

षष्टिविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांख्यविद्या।

षष्ठ, षष्ठक [वि.] (सं.) छठा।

षष्ठान्न [संज्ञा पु.] (सं.) वह भोजन जो तीन दिन के बीच में केवल एक बार किया जाय।

षष्ठान्नकाल [संज्ञा पु.] (सं.) व्रत विशेष जिसमें तीन दिन में केवल एक बार भोजन करने का विधान है।

षष्टिमत्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

षष्टिहायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-साठीधान।

षष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठी तिथि। २-दुर्गा। ३-सम्बन्धकारक (व्याकरण) ४-बालक के जन्म से छठा दिन और उस दिन का उत्सव। छठी।

षष्ठीप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

षांड, षाण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

षांड्य, षाण्ड्य [संज्ञा पु.] (सं.) नपुंसकता।

षाड़व [संज्ञा पु.](सं.) १-वह राग जिसमें केवल छः स्वर लगते हों। २-मिठाई। ३-हलवाई का काम। ४-मनोविकार।

षाड्गुण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-षड्गुण। २-छः से गुणा करने से प्राप्त गुणनफल।

षाड्रसिक [संज्ञा पु.] (सं.) छओं रसों का ज्ञाता।

षाण्मातुर [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसकी छः माताएं हैं। कार्तिकेय।

षाण्मासिक [वि.](सं.) १-छःमाही। २-छः मास का। छः मास पुराना।

षाद्तर [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में वह समावटी सप्तक जो मन्द्र से भी कम होता है।

षाष्ठिक [वि.] (सं.) षष्ठि-सम्बन्धी।

षिंग, षिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामुक। २-शूर वीर।

षोड़त् [संज्ञा पु.](सं) छः दाँत का बैल जो जवान माना जाता है।

षोड़श [वि.] (सं.) सोलह। [संज्ञा पु.] सोलह की संख्या।

षोड़श-कला [संज्ञा स्त्री.](सं.) चन्द्रमा की सोलह कला।

षोड़शगण [संज्ञा पु.] (सं.) पाँच ज्ञानेंद्रिय, पाँच कर्मेंद्रिय, पाँच भूत और एक मन इन सबका समुदाय।

षोड़श-दान [संज्ञा पु.](सं.) सोलह प्रकार के दान जो इस प्रकार हैं--भूमि, आसन, पानी, कपड़ा दीपक, अन्न, पान, छत्र, सुगन्धि, फूलमाला, फल, सेज, गाय, खड़ाऊँ, सोना तथा चाँदी।

षोड़श-पूजन [संज्ञा पु.] (सं.) षोडशोपचारसहित पूजन।

षोड़श-मातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की देवियाँ जो संख्या में सोलह मानी जाती हैं--गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः और आत्मदेवता।

षोड़शविध [वि.] (सं.) सोलह प्रकार का

षोड़श-शृंगार, षोड़श-शृङ्गार [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्ण शृङ्गार जो सोलह अङ्गों वाला कहा गया है।

षोड़श-संस्कार [संज्ञा पु.](सं.) गर्भाधान से मृतकर्म के सोलह वैदिकसंस्कार।

षोड़शांग-चूर्ण, षोड़शाङ्ग-चूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो विषमज्वर में दिया जाता है।

षोड़शांघ्रि, षोड़शाङ्घ्रि [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

षोड़शांशु [संज्ञा पु.] (सं.) शुक्रग्रह।

षोड़शार [संज्ञा पु.] (सं.) वेदी के ऊपर बनाने का एक प्रकार का चक्र।

षोड़शावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) शंख।

षोड़शाश्रि [संज्ञा पु.](सं.) वह घर या मन्दिर जो सोलह कोनों का हो।

षोड़षिक [वि.](सं.)[स्त्री. षोड़शिकी] सोलह-गुना

षोड़षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः सोलह माशे का होता था।

षोड़शी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-सोलहवीं। २-सोलह वर्ष की (युवती)। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोलह साल की स्त्री। नवयौवना स्त्री। २-दस महाविद्याओं में से एक। ३-एक यज्ञ-पात्र। ४-एक प्राचीन तौल। ५-इन सोलह पदार्थों का समूह--ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म और नाम। ६-हिन्दुओं में [illegible]-सम्बन्धी वह कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।

षोड़शोपचार [संज्ञा पु.] (सं.) पूजन के पूर्ण अङ्ग जो सोलह माने गये हैं वह इस प्रकार हैं--अवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वन्दना।

ष्ठीवन [संज्ञा पु.] (सं.) थूकना।

ष्ठीवित [वि.] (सं.) जो थूका गया हो।

ष्ठेवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-थूकने की क्रिया। २-थूक।

ष्ठ्यूत [वि.] (सं.) थूका हुआ।

स

स हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण स्थान दंत है, इसलिए दंती या दन्त्य कहा जाता है।

सं [अव्य.] (सं.) एक अव्यय जिसका व्यवहार समानता, सङ्गति, उत्कृष्टता, निरन्तरता, औचित्य आदि सूचित करने के लिए लगता है। यथा-संयोग, सन्ताप, सन्तुष्ट आदि।

सँइतना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-लीपना। पोतना। २-संचय करना। ३-सहेजना।

सँउपना॥ [क्र. स] (हिं.) देखो 'सौंपना'।

संक॥ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शङ्का'।

संकट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विपत्ति। आफत। २-दुःख। कष्ट। ३-जल अथवा स्थल के दो बड़े विभागों को बीच से जोड़ने वाला तङ्ग रास्ता या संकीर्ण अङ्ग। ४-दो पहाड़ों के बीच का तङ्ग या संकीर्ण मार्ग।
गिरिसङ्कट-पहाड़ का दर्रा। जलसङ्कट-जलडमरूमध्य। स्थलसङ्कट-स्थलडमरूमध्य। [वि.] (हिं.) १-एकत्र किया हुआ। २-घनीभूत। ३-तङ्ग। ४-दुर्लंघ्य। ५-भयानक। दुःखदायी। ६-सँकरा। सङ्कीर्ण।

संकट-चौथ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) माघ के महीने के कृष्णपक्ष की चतुर्थी। इस दिन गणेश-देवता का व्रत किया जाता है।

संकटमय [वि.] (सं.) जोखिम भरा।

संकटस्थ, सङ्कटस्थ [वि.] (सं.) १-सङ्कट या विपत्ति में पड़ा हुआ। २-दुखी।

संकटा, सङ्कटा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सङ्कट हरने वाली एक देवी का नाम। २-आठ योगिनियों में से एक (ज्योतिष)।

संकटाक्ष, सङ्कटाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) धौ का पेड़

संकत॥ [संज्ञा पु.] (हिं.; देखो 'संकेत'।

संकना॥ [क्रि. अ.] (हिं.) शंका या सन्देह करना २-डरना।

संकर, सङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो वस्तुओं का

आपस में मिलना अथवा मिलकर एक हो जाना। २-वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के माता तथा पिता से हुई हो। दोगला। ३-जो दो अथवा कई प्रकार की वस्तुओं के योग से बना हो। ४-आग के जलने का शब्द। ५-वह धूल जो झाड़ू देने से उड़ती है। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शंकर'

संकर-घरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पार्वती।

संकरता, सङ्करता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सङ्कर होने का भाव या धर्म। मिलावट।

संकर-समास, सङ्कर-समास [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसे दो शब्दों का समास जिनमें से एक शब्द किसी भाषा का हो। जैसे—अछूत (हिं.)+ उद्धार (सं.) अछूतोद्धार।

सँकरा+ [वि.] (हिं.) [स्त्री सँकरी] पतला और कम चौड़ा। तङ्ग। ※[संज्ञा स्त्री.] शृङ्खला। साँकल। जञ्जीर। [संज्ञा पु.] देखो 'शंकराभरण'।

सँकराना※ [क्रि. अ.] (हिं.) सँकरा या संकुचित होना। [क्रि. स.] सँकरा या संकुचित करना।

संकराश्व, सङ्कराश्व [संज्ञा पु.] (स.) खच्चर।

संकरित, सङ्करित [वि.] (सं.) मिला हुआ।

संकरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का हाथी।

संकरी [संज्ञा पु.] (हिं.) सङ्कर। दोगला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शंकरी'।

संकरीकरण, सङ्करीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नौ प्रकार के पापों में से एक। २-दो चीजों को एक में मिलाने का काम।

संकर्षण, सङ्कर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खींचना २-हल जोतना। ३-कानून में अधिकार अथवा उत्तरदायित्व के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर दूसरी वस्तु अथवा व्यक्ति का चढ़ाया जाना। सबरोगेशन ४-बलराम। ५-एक रुद्र का नाम। ६-वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

संकल, सङ्कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-संकलन। २-मिलाना। +[संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'साँकल'

संकलन, सङ्कलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-संग्रह करना। जमा करना। २-संग्रह। ढेर। ३-गणित में जोड़ करना। ४-अनेक ग्रन्थों अथवा स्थानों से अच्छे-अच्छे विषय या बातें चुनने की क्रिया। ५-इस प्रकार चुनकर तैयार किया हुआ ग्रन्थ, संग्रह अथवा और कोई चीज। कम्पाइलेशन।

संकलप [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'संकल्प'।

संकलपना※ [क्रि. स] (हिं.) १-किसी बात का दृढ़निश्चय करना। २-सङ्कल्प का मन्त्र पढ़कर धार्मिक काम या कोई वस्तु दान करने का निश्चय करना। [क्रि. अ.] १-सङ्कल्प या विचार करना। २-दृढ़निश्चय करना।

संकला [संज्ञा पु.] (हि.) शाक नामक द्वीप।

संकलित [वि.] (सं.) १-चुना हुआ। २-इकट्ठा किया हुआ। ३-जोड़ा हुआ। योजित।

संकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई काम करने का पक्का विचार या इरादा। २-दान, पुण्य अथवा और कोई देवकार्य करने से पहले एक निश्चित मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़निश्चय प्रकट करना। ३-इस प्रकार उच्चारण किया हुआ मन्त्र। ४-सभा, समिति आदि में किसी विषय में विचारपूर्वक किया हुआ दृढ़निश्चय। रिजोल्यूशन।

संकल्पना, सङ्कल्पना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सङ्कल्प करना। २-इच्छा। अभिलाषा [क्रि. स, अ.] (हिं.) देखो 'संकलपना'।

संकल्पभव, सङ्कल्पभव, संकल्पयोनि, सङ्कल्पयोनि [संज्ञा पु] (सं.) कामदेव।

संकल्पा, सङ्कल्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष की एक कन्या का नाम।

सँकाना※ [क्रि. अ.] (हिं.) शंकित होना। डरना [क्रि. स.] (हिं.) डराना।

संकार, सङ्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-झाड़ू देने पर उड़ने वाली धूल। २-आग के जलने का शब्द। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संकेत। इशारा

संकारना [क्रि. स.] (हिं.) संकेतकरना।

संकाश, सङ्काश [अव्यय](सं.) १-समान। सदृश २-समीप। पास। [संज्ञा पु.] (?) प्रकाश चमक।

संकारित+ [वि.] (हिं.) सँकरा। कम चौड़ा।

संकीर्ण, सङ्कीर्ण[वि.](सं.) १-कम चौड़ा। सँकरा २-सकुचित 'उदार' का उल्टा। ३-क्षुद्र। तुच्छ छोटा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सङ्करराग। २-साहित्य में एक प्रकार की गद्य जिसमें कुछ वृत्तगन्धि और कुछ अवृत्तिगन्धि का मेल होता है।

संकीर्णता, सङ्कीर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सकीर्ण होने का भाव। तंगी। सँकरापन। नीचता। क्षुद्रता।

संकीर्त्तन, सङ्कीर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो कीर्त्तन

संकील, सङ्कील [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

संकुचन, सङ्कुचन[संज्ञा पु.](सं.) देखो 'संकोच'

सँकुचना [क्रि. अ.] देखो 'सकुचना'।

सँकुचाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सकुचाना'।

संकुचित, सङ्कुचित [वि.] (सं.) १-जिसे संकोच हो। हिचकता हुआ। २-सिकुड़ा हुआ। ३-सँकरा। तङ्ग। ४-जो दूसरों के विचार ग्रहण न करे। अनुदार।

संकुल, सङ्कुल [वि.] (सं.) १-सङ्कीर्ण। तङ्ग। २-भरा हुआ। परिपूर्ण। [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध। लड़ाई। २-झुण्ड। समूह। ३-भीड़। ४-परस्पर विरोधी वाक्य। ५-असङ्गत वाक्य

संकुलता, सङ्कुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सङ्कुलित होने का भाव।

संकुलित, सङ्कुलित [वि.] (सं.) १-घना। सङ्कीर्ण। २-परिपूर्ण भरा हुआ।

संकुश, सङ्कुश[संज्ञा पु.](सं.) शंकु नामक मछली

संकेत, सङ्केत [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपना भाव प्रकट करने वाली कोई शारीरिक चेष्टा। इङ्गित। इशारा। २-प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का पूर्व निर्दिष्ट स्थान। ३-शृंगारचेष्टा। ४-पते की बातें। ५-चिह्न। निशान।

सँकेत+ [वि.] (हिं.) देखो 'सँकरा'।

संकेत-चिह्न, सङ्केत-चिह्न [संज्ञा पु.](सं.) वाक्यों, पद, नामा आदि के सूचक वे चिह्न जो संकेत के रूप में होते हैं। जैसे-उत्तरप्रदेश का उ० प्र०। एब्रीविएशन।

संकेतना※[क्रि.स.](हि) सङ्कट या कष्ट में डालना

संकेत-लिपि, सङ्केत-लिपि [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी लिपि के अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त संकेत अथवा चिह्न बनाकर तैयार की हुई लेख-प्रणाली जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी लिखे जाते हैं। शार्टहैंड।

सँकेलना+[क्रि. स.] (हिं.) समेटना।

संकोच, सङ्कोच [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिकुड़ने की क्रिया या भाव। २-हल्की या थोड़ी लज्जा या शर्म। ३-आगापीछा। हिचक। ४-कमी ५-भय। ६-केसर। ७-बहुत सी बातों को थोड़े में कहना। ८-एक अलङ्कार जिसमें किसी वस्तु के अत्यधिक सङ्कोच का वर्णन होता है

संकोचन, सङ्कोचन [संज्ञा पु.](सं.) सिकुड़ने की

सँकोचना [क्रि.स.] (हिं.) सकोच करना।

संकोचनी, सङ्कोचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लजालु लता।

संकोचपत्रक, सङ्कोचपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्षों के पत्तों के सिकुड़ जाने का रोग।

संकोचपिशुन, सङ्कोचपिशुन [संज्ञा पु.] (सं) केसर।

संकोचित, सङ्कोचित [वि.] (सं.) १-जिसमें सङ्कोच हो। २-अप्रफुल्लित। ३-लज्जित। [संज्ञा पु.] (सं.) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक।

संकोची [संज्ञा पु.] (हि) १-सङ्कोच या शर्म करने वाला। २-सिकुड़ने वाला।

संकोपना※ [क्रि. अ] (हिं.) क्रुद्ध होना।

संक्रंदन, सङ्क्रन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-मनु के एक पुत्र का नाम। ३-देखो 'क्रंदन'

संक्रम, सङ्क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-संप्रवेश। कठिनता से आगे बढ़ाने की क्रिया। २-किसी स्थान में पुल आदि बनाकर प्रवेश करना। ३-पुल। सेतु। ४-प्राप्ति। ५-संक्रमण। संक्रान्ति

संक्रमण, सङ्क्रमण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जाना या चलना। गमन। २-एक अवस्था से धीरे धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना।

ट्रांज़िशन। ३-सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी में प्रवेश करना। ४-घूमना। पर्यटन।

संक्रमणिका, सङ्क्रमणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीढ़ियों की पंक्ति।

संक्रमित, सङ्क्रमित [वि] (सं.) १-स्थापित। २ प्रतिबिंबित।

संक्रांत, सङ्क्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह धन जो कई पीढ़ियों से चला आया हो। २-सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।

संक्रांति, सङ्क्राति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना। २-ठीक वह समय जब सूर्य एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करता है। (हिन्दुओं का पर्व)।

संक्रांतिचक्र, सङ्क्रान्तिचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र।

संक्रामक, सङ्क्रामक [वि] (सं.) संसर्ग या छूत से फैलने वाला (रोग)।

संक्रामी [संज्ञा पु.] (हिं) रोग फैलाने वाला।

संक्रोन* [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'संक्रांति'।

संक्रोश, सङ्क्रोश [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिल्लाना २-एक साम।

संक्षमण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी दोष अथवा अपराध के लिए किसी को जानबूझकर और उसके दोष या अपराध पर ध्यान न देते हुए क्षमाकर देना। कन्डोन।

संक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विनाश। बरबादी। २-प्रलय।

संक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सङ्क्रम। २-एक साम का नाम।

संक्षिप्त [वि.] (सं.) १-जो संक्षेप में कहा या लिखा गया हो। खुलासा। २-थोड़ा। अल्प। ३-छोड़ा या फेंका हुआ।

संक्षिप्त-आलेख [संज्ञा पु.] (सं.) वह संक्षिप्त रूप जो किसी बड़े लेख या वक्तव्य से तैयार किया गया हो। एब्रिविएचर।

संक्षिप्त-लिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'संकेत-लिपि'।

संक्षिप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ज्योतिष में बुधग्रह की सात प्रकार की गतियों में से एक।

संक्षिप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक में चार प्रकार की आरभटियों में से एक।

संक्षिप्तक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी शब्द अथवा नाम के वे आरम्भिक अक्षर जो उस नाम के अभिसामयिक सूचक बन जाते हैं। एब्रिविएशन जैसे—अखिल भारतीय सङ्गीत सभा को अ० भा० सं० स० लिखते हैं।

संक्षिप्तीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विषय कथन आदि को संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव।

संक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई बात थोड़े में कहना २-बहुत सी बातों को दिया जाने वाला छोटा रूप। सार। ३-समाहार। समास। ४-चुम्बक

संक्षेपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करना। एब्रिजमेन्ट। २-काँट-छाँट करने की क्रिया।

संक्षेपतः, सक्षेपतया [अव्यय] (सं.) संक्षेप में। थोड़े में।

संक्षेपदोष [संज्ञा पु.] (सं.) सविस्तार लिखने वाली बात को थोड़े में लिखना जो साहित्य के अनुसार एक दोष माना जाता है।

संक्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-चञ्चलता। २-काँपना ३-विप्लव। ४-गर्व। ५-उलटपुलट।

संख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शंख'।

संखनारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण होते हैं।

संखहुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शङ्खपुष्पी।

संखा [संज्ञा पु.] (हि.) चक्की के ऊपरी पाट में लगी हुई लकड़ी।

संखार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

संखिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सफेद उपधातु जो बहुत तीव्र विष होता है।

संख्य, सङ्ख्य [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। लड़ाई। समर।

संख्यक, सङ्ख्यक [वि.] (सं.) संख्या वाला।

संख्यता, सङ्ख्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संख्या का भाव या गुण।

संख्या, सङ्ख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक, दो, तीन आदि की गिनती। तादाद। २-वह अङ्क जो किसी वस्तु की गिनती में परिमाण बतलाये। अदद। ३-सामयिक पत्र का अङ्क। ४-वैद्यक में सम्प्राप्ति के पाँच भेदों में से एक। ५-बुद्धि। ६-विचार।

संख्याता, सङ्ख्याता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी प्रकार का (आय-व्यय आदि) हिसाब लिखता हो। एकाउन्टेन्ट।

संख्यान, सङ्ख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-संख्या। गिनती। २-लेनदेन या आय-व्यय का लिखा हुआ हिसाब। एकाउन्ट।

संख्यान-कर्म, सङ्ख्यानकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) आय-व्यय अथवा लेनदेन का हिसाब लिखने का काम। एकाउन्टेन्सी।

संख्या-लिपि, सङ्ख्या-लिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लेखनप्रणाली जिसमें वर्णों के स्थान पर संख्यासूचक चिह्न या अङ्क लिखे जाते हैं।

संग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मिलना। मिलन। २-साथ रहना। सहवास। सोहबत। ३-सांसारिक विषयों में अनुराग। आसक्ति। ४-नदियों का सङ्गम। *संग सोना*—समागम करना (किसी के) *संग लगना*—पीछे लगना। (किसी को) *संग लेना*—साथ लेना। [क्रि. वि.] (हि.) साथ। सहित। [संज्ञा पु.] (फा.) पत्थर। पाषाण। [वि] (फा.) पत्थर के समान कठोर। जैसे—सङ्गदिल।

संग-अंगूर [संज्ञा पु.] (हि) गिरीबूटी। देवराज।

संग-अबसद [संज्ञा पु.] (फा., अ.) काले रङ्ग का एक प्रसिद्ध पत्थर।

संगकूषी [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार की वनस्पति जिसका उपयोग औषध रूप में होता है।

संगखारा [संज्ञा पु.] (फा.) नीलापन लिये भूरे रंग का एक प्रकार का पत्थर।

संग-जराहत [संज्ञा पु.] (फा., अ.) एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर।

संगठन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संघटन'।

संगठित [वि.] (हि.) देखो 'संघटित'।

संगणना [क्रि. स.] (हिं.) परिगणन करना। हिसाब करना।

संगत, सङ्गत [वि.] (सं.) पूर्वा-पर के विचार से या और प्रकार से ठीक बैठने या मेल खाने वाला। कन्सिस्टेंट। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-संग रहना। साथ। सोहबत। २-उदासी अथवा निरमले साधुओं के रहने का मठ। ३-सम्बन्ध। संसर्ग। ४-बाजा बजाकर गाने वाले के काम में सहायता या योग देना। ५-देखो 'संगति'। *संगत करना*—ठीक तरह से तबला सारंगी आदि गाने वाले के साथ बजाना।

संगतरा [संज्ञा पु.] (पुर्त.) सन्तरा।

संग-तराश [संज्ञा पु.] (फा.) पत्थर काटने या गढ़ने वाला कारीगर।

संगतसंधि, सङ्गतसन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छे के साथ की गई सन्धि जो अच्छे और बुरे दिनों में एक सी बनी रहती है।

संगति, सङ्गति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २-संग। साथ। ३-सम्बन्ध। ४-प्रसंग। मैथुन। ५-सम्बंध। ताल्लुक। ६-ज्ञान। ७-आगे पीछे कहे जाने वाले वाक्यों आदि का अर्थ के विचार से अथवा कार्यों आदि का पूर्वा-पर के विचार से ठीक बैठना या मेल खाना। कन्सिस्टेंसी।

संगतिया, संगती [वि.] (हि.) १-साथी। २-गवैया के साथ बाजा बजाने वाला।

संगथ, सङ्गथ [संज्ञा पु.] (सं.) संग्राम। युद्ध।

संगदिल [वि.] (फा.) कठोर हृदय।

संगदिली [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सङ्गदिल होने का भाव। निर्दयता।

संगपुश्त [संज्ञा पु.] (फा.) कछुआ।

संगबसरी [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी जो दवा के काम में आती है।

संगम, सङ्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल। मिलाप सम्मेलन। २-वह स्थान जहाँ दो नदियाँ मिलें। ३-सङ्ग। साथ। सोहबत। मैथुन। ४-ज्योतिष में ग्रहों का योग। ५-दो या अधिक वस्तुओं के एक जगह मिलने का भाव

संगमन, सङ्गमन [संज्ञा पु.] (सं.) संयोग। मेल।

संगमग [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

संगमरमर [संज्ञा पु] (फा., अ.) एक प्रकार का प्रसिद्ध सफेद पत्थर, जो बहुत चिकना और मुलायम होता है।

संगमूसा [संज्ञा पु.] (फा.) सङ्गमरमर की तरह का काला पत्थर जिसकी मूर्त्तियां बनती हैं।

संगयशब [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पत्थर जो हरापन लिये होता है।

संगर, सङ्गर [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध। संग्राम। २-विपत्ति। ३-नियम। [संज्ञा पु.] (फा.) १-सेना की रक्षा के निमित्त बनी हुई चारों ओर की खाई या धुस। २-मोरचा।

संगरण, सङ्गरण [संज्ञा पु.] (सं.) पीछा करना।

सँगरा [संज्ञा पु.] (फा.) पत्थर आदि उठाने का मोटे और मजबूत बांस का छोटा टुकड़ा।

संगराम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संग्राम'।

संगरासिख [संज्ञा पु.] (?) तांबे की मैल जो खिज़ाब बनाने के काम में आती है।

संगरेजा [संज्ञा पु.] (फा.) पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े।

संगल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का रेशम।

संगव [संज्ञा पु.](हि.) गौओं को चराने के लिए ले जाने का समय।

संगसार [संज्ञा पु.] (फा.) अपराधी को जमीन में आधा गाड़कर फिर लोगों द्वारा पत्थरों से मार-मार कर हत्या करने का एक दण्ड, जो अरब आदि देशों में प्राचीनकाल में दिया जाता था। [वि.] (फा.) नष्ट। चौपट।

संगसाल [संज्ञा पु.](फा.) पहाड़ को काटकर बनाई हुई एक बड़ी मूर्त्ति का नाम जो अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा पर है।

संगसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सँड़सी'।

संगसुरमा [संज्ञा पु](फा.) एक काले रङ्ग की उपधातु जिसे पीसकर सुरमा बनाया जाता है।

संगसुलेमानी [संज्ञा पु.] (फा., अ.) एक प्रकार का रङ्गीन पत्थर।

संगाती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साथी। सङ्गी। २-दोस्त। मित्र।

संगिनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सहचारी। २-पत्नी भार्या।

संगी [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. संगिनि, संगिनी] १-साथी। २-मित्र। दोस्त। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। [वि.] (फा.) पत्थर का। सङ्गीन।

संगीत, सङ्गीत [संज्ञा पु.] (सं.) लय, ताल, स्वर आदि के नियमों के अनुसार किसी पद्य का मनोरञ्जक रूप से उच्चारण जिसके साथ कभी कभी नृत्य और प्रायः वाद्य भी होता है। गाना।

संगीत-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'संगीत-शास्त्र'।

संगीत-शास्त्र, सङ्गीत-शास्त्र [संज्ञा पु.](सं.) वह शास्त्र जिसमें सङ्गीतविद्या का विवेचन होता है

संगीतज्ञ, सङ्गीतज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) वह जो सङ्गीत-विद्या में निपुण हो। गवैया।

संगीति, सङ्गीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वार्त्तालाप २-देखो 'संगीत'।

संगीन [संज्ञा पु.] (फा.) वह बरछी जो बन्दूक के सिरे पर लगी रहती है। [वि.] १-पत्थर का बना हुआ। २-मोटा या भारी। ३-विकट। ४-पेचीदा।

संगीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सङ्गीन का भाव। २-विकटता।

संगुप्त, सङ्गुप्त [संज्ञा पु.](सं.) एक बुद्ध का नाम

संगृहीत, सङ्गृहीत [वि.] (सं.) संग्रह किया हुआ। सङ्कलित।

संगृहीता, सङ्गृहीता [संज्ञा पु.](सं.) वह जो संग्रह करता हो।

संगोतरा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार की नारङ्गी। संतरा।

संगोपन, सङ्गोपन [संज्ञा पु.] (सं.) छिपाना।

संगोपनी, सङ्गोपनीय [वि.] (सं.) छिपाने योग्य

संग्रसन, सङ्ग्रसन [संज्ञा पु.](सं.) बहुत अधिक खाना।

संग्रह, सङ्ग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-जमा करना। सङ्कलन। सञ्चय। २-वह पुस्तक जिसमें अनेक विषय एकत्रित किए गये हों। कलेक्शन। ३-ग्रहण करना। ४-मन्त्र बल से फेंके हुए अस्त्र को अपने पास लौटाने की क्रिया। ५-सूची। ६-सोमयाग। ७-संयम। निग्रह। ८-रक्षा। ९-कब्ज। १०-शिव। ११-विवाह। १२-जमघट। १३-सभा।

संग्रह-ग्रहणी, सङ्ग्रह-ग्रहणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'संग्रहणी'।

संग्रहण, सङ्ग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री को हरण कर ले जाना। २-ग्रहण। ३-प्राप्ति। ४-नग जड़ना। ५-सहवास। ६-व्यभिचार। ७-स्त्री के कपोल, स्तन आदि वर्ज्य स्थानों का स्पर्श।

संग्रहणी, सङ्ग्रहणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें पतले दस्त आते हैं।

संग्रहणीय, सङ्ग्रहणीय [वि.] (सं.) संग्रह करने योग्य।

संग्रहना* [क्रि. स.] (हिं.) संग्रह करना। संचय करना।

संग्रहाध्यक्ष [संज्ञा पु.](सं.) वह जो किसी संग्रह अथवा संग्रहालय का अध्यक्ष हो। क्यूरेटर।

संग्रहालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां एक या अनेक तरह की वस्तुओं का संग्रह हो। म्यूजियम।

संग्रही [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो संग्रह करता हो। २-कर या लगान आदि उगाहने वाला कर्मचारी।

संग्रहीता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो संग्रह करता हो

संग्राम, सङ्ग्राम [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। लड़ाई।

संग्रामजित्, सङ्ग्रामजित् [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

संग्राम-पटह, सङ्ग्राम-पटह [संज्ञा पु.] (सं.) रणभेरी।

संग्रामभूमि, सङ्ग्रामभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्धक्षेत्र।

संग्राह, सङ्ग्राह [संज्ञा पु.] (सं) १-पकड़ने का दस्ता। मूठ। २-बँधी हुई मुट्ठी। मुक्का।

संग्राहक, सङ्ग्राहक [संज्ञा पु.] (सं.) संग्रह करने वाला। संग्रहकर्त्ता।

संग्राही, सङ्ग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल और तरल पदार्थों को खींचता हो। २-कब्जियत करने वाली वस्तु। ३-कुटजवृक्ष।

संग्राह्य, सङ्ग्राह्य [वि.] (सं.) संग्रह करने योग्य।

संघ, सङ्घ [संज्ञा पु.] (सं) १-समूह। समुदाय। २-संघटित समाज। ३-वह सभा या समाज जिसे कानून के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में कार्य करने का अधिकार हो। कॉरपोरेशन। ४-प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। ५-आजकल ऐसे राज्यों का समूह जो अपने क्षेत्र में कुछ स्वतन्त्र हों पर कुछ विशिष्ट कार्य के लिए किसी केंद्रियशासन के अधीन हों। यूनियन। फेडरेशन। ६-बौद्ध-भिक्षुओं आदि का धार्मिक समाज या निवास-स्थान।

संघगुप्त, सङ्घगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) वाग्भट के पिता का नाम।

संघचारी, सङ्घचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुमत के अनुसार आचरण करने वाला। २-वे जो झुण्ड या समुदाय में चलते हों। जैसे-मृग, हाथी आदि। ३-मछली।

संघट, सङ्घट [संज्ञा पु.] (सं.) १-संघटन। मिलन। २-युद्ध। लड़ाई। झगड़ा। ३-समूह। ढेर।

संघटन, सङ्घटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल। संयोग। २-नायक और नायिका का मिलाप। ३-रचना बनावट। ४-बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाकर उन्हें किसी कार्य के लिए तैयार करना। ५-इस उद्देश्य से बनाई हुई संस्था। ऑरगनिजेशन।

संघटित, सङ्घटित [वि.] (सं.) जिसका संघटन हुआ हो। आर्गनाइज्ड।

संघट्ट, सङ्घट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-रचना। बनावट। गठन। २-सङ्घर्ष।

संघट्टचक्र, सङ्घट्टचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धफल विचारने का नक्षत्रों का चक्र (फलितज्योतिष)

संघट्टन, सङ्घट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रचना।

बनावट । २-घटना । ३-देखो 'संघटन'।

संघट्टा, सङ्घट्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लता । बेल ।

संघट्टित, सङ्घट्टित [वि.] (सं.) १-इकट्ठा किया हुआ । २-गठित । निर्मित । रचित । ३-चालित । चलाया हुआ । ४-घर्षित ।

संघति, सङ्घति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो या दो से अधिक दलों, संस्थाओं, राज्यों आदि का मिलकर इस प्रकार हो जाना कि सब एक दल संस्था या राज्य के रूप में काम करें ।

संघती [संज्ञा पु.] देखो 'संघाती' ।

संघपति, सङ्घपति [संज्ञा पु.] (सं.) किस सङ्घ या समूह का मुखिया । नायक । दलपति ।

संघपुष्पी, सङ्घपुष्पी [संज्ञा स्त्री] (सं.) धौ । धातकी ।

संघरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-संहार या नाश करना । २-मार डालना ।

संघर्ष, सङ्घर्ष; संघर्षण, सङ्घर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रगड़ खाना । रगड़ । घिस्सा । २-प्रतियोगिता । होड़ । ३-एक वस्तु की दूसरी वस्तु के साथ होने वाली रगड़ । *फ्रिक्शन* । ४-दो दलों में होने वाला वह विरोध जिसमें दोनों एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते हैं *कॉन्फ्लिक्ट* ।

संघवाद, सङ्घवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसमें मार्क्स द्वारा कथित समाजवाद का खण्डन करते हैं और कहते हैं कि उससे श्रमजीवी लोग अनुशासित तथा विनीत सेना के समान हो जाते हैं । *फ्यूडलिज्म* ।

संघवादी, सङ्घवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सङ्घवाद सिद्धांत पर चलता या मानता हो । *फ्यूडलिस्ट* ।

संघवृत्ति, सङ्घवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहयोग

संघसूची, सङ्घसूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी सङ्घ में सम्मिलित राज्यों की सूची । *यूनियन-लिस्ट* ।

संघ-स्थविर, सङ्घ-स्थविर [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्घाराम का प्रधान बौद्धभिक्षु ।

संघाट, सङ्घाट [संज्ञा पु.](सं.) वह जो दल बाँध कर रहता हो ।

संघाटिका, सङ्घाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का स्त्रियों का पहनावा जो प्राचीनकाल में पहनती थी । २ प्रेमी-प्रेमिकाओं को मिलाने वाली स्त्री । दूती । कुटनी । ३-जोड़ा । युग्म । ४-सिंघाड़ा । ५-कुम्भी ।

संघाटी, सङ्घाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का वस्त्र जिसे बौद्ध-भिक्षु धारण करते थे ।

संघाणक, सङ्घाणक [संज्ञा पु.](सं.) कफ । श्लेष्मा

संघात, सङ्घात [संज्ञा पु.](सं.) १-समूह । झुण्ड २-कुछ लोगों का ऐसा समूह जो मिलकर कोई काम करने के लिए बना हो अथवा कोई काम करता हो । बॉडी । ३-निवास-स्थान । रहने की जगह । ४-गहरी या भारी चोट । ५-मार डालना । वध । ६-एक नरक का नाम ७-नाटक में एक प्रकार की गति । ८-शरीर । [वि.] (सं.) घना । सघन । निविड़ ।

संघातक, सङ्घातक [संज्ञा पु.](सं.) १-प्राण लेने वाला । २-नष्ट या बरबाद करने वाला ।

संघातचारी, सङ्घातचारी [संज्ञा पु.](सं.) वह जो अपने वर्ग के तथा प्राणियों अथवा लोगों के साथ मिलकर या उनका सङ्घ बनाकर रहता हो

संघातपत्रिका, सङ्घातपत्रिका [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपने वर्ग के तथा प्राणियों अथवा लोगों के साथ मिलकर या उनका सङ्घ बनाकर रहता हो ।

संघातबलप्रवृत्त, सङ्घातबलप्रवृत्त [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का आधिभौतिक और आगंतुक रोग

संघाती [संज्ञा पु.] (हि.) १-साथी । २-मित्र । ३-प्राणनाशक । सङ्घातक ।

संघात्मक-साम्राज्य, सङ्घात्मक-साम्राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारतीय जनतंत्र में वह साम्राज्य जिसमें कई एक एकतन्त्र राज्य होते थे

संघार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संहार' ।

संघारना* [क्रि. स.](हिं.) १-संहार करना । २-हत्या करना ।

संघाराम, सङ्घाराम [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल के वे मठ जिनमें बौद्ध-साधु रहते थे । विहार

संघावशेष सङ्घावशेष [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का पाप (बौद्ध) ।

संघेरना+ [क्रि. स] (हिं) दो गौओं के पैर आपस में बांध देना जिससे वे दूर न भाग जावें ।

सँघेरा [संज्ञा पु.] (सं.) वह रस्सी जिससे दो गौवों के पैर आपस में बाँधे जाते हैं । सघेरने की रस्सी ।

संघेला+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-साथी । २-मित्र ।

संघोष, सङ्घोष [संज्ञा पु.] (सं.) जोर का शब्द । घोष ।

संच* [संज्ञा पु.] (हिं) १-सञ्चय । २-देखभाल रक्षा । [संज्ञा पु.] (सं.) लिखने की स्याही ।

सचकर* [संज्ञा पु.] (हिं.)१-सञ्चय या एकत्रित करने वाला । २-कृपण । कंजूस ।

संचना* [क्रि. स.] (हिं.) १-सञ्चय या एकत्र करना । २-रक्षा करना ।

संचय, सञ्चय [संज्ञा पु.] १-समूह । ढेर । २-संग्रह करना । एकत्रीकरण । ३-अधिकता ।

संचयन, सञ्चयन [संज्ञा पु.](सं.) संग्रह करना जमा करना ।

संचयिक, सञ्चयिक [संज्ञा पु.] (सं.) सञ्चय करने वाला । जमा करने वाला ।

संचयी [संज्ञा पु.] (हि.) १-संचय या जमा करने वाला । २-कंजूस । कृपण ।

सचर, सञ्चर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलना । २-पुल । सेतु । ३-पथ । मार्ग । ४-स्थान । जगह ५-पानी निकलने का रास्ता । ६-शरीर । देह । ७-साथी ।

संचरण, सञ्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) संचार ।

संचरना* [क्रि. स .] (हिं.) १-सञ्चार करना । फैलना । २-प्रचार करना । ३-जन्म देना ।

संचरित, सञ्चरित [वि.] (सं.) जिसमें अथवा जिसका सञ्चार हुआ हो ।

संचल, सञ्चल [संज्ञा पु.](सं.) साँचर लवण ।

संचलन, सञ्चलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिलना-डोलना । २-चलना-फिरना । ३-काँपना ।

संचलनाड़ी, सञ्चलनाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नस । धमनी ।

संचान, सञ्चान [संज्ञा पु.] (सं.) बाज । शिकरा

संचाय, सञ्चाय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज ।

संचार, सञ्चार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलना । गमन । २-फैलना, विशेषतः किसी के भीतर । ३-कष्ट । विपत्ति । ४-मार्गप्रदर्शन । ५-चलाने की क्रिया । ६-सांप की मणि । ७-नक्षत्र या ग्रहों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना । ८-देश । ९-उत्तेजन । १०-रति-मन्दिर की अवधि । ११-एक स्थान से दूसरे स्थान को (व्यक्ति माल आदि) आने जाने की क्रिया या साधन । *कम्यूनिकेशन* ।

संचारक, सञ्चारक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संचारिणी] १-संचार करने वाला । २-दलपति । नायक । ३-चलाने वाला ।

संचारना* [क्रि. स.] (हिं.) १-संचार करना । फैलाना । २-प्रचार करना । ३-जन्म देना ।

संचार-साधन, सञ्चार-साधन [संज्ञा पु.] (सं.) यातायात से सम्बन्ध रखने वाले साधन । *मीनस-ऑफ-कम्यूनिकेशन* ।

संचारिका, सञ्चारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटनी । दूती । २-नाक । ३-जोड़ा । युग्म ।

संचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हंसपदी नामक लता । २-लाल लजालू ।

संचारित, सञ्चारित [वि.](सं.) जिसका संचार किया गया हो ।

संचारी, सञ्चारी [संज्ञा पु.](सं.) १-साहित्य में वे भाव जो मुखभाव की पुष्टि या सहायता करते हैं । २-वायु । हवा । ३-धूप नामक गंध-द्रव्य । ४-सङ्गीतशास्त्र के अनुसार किसी गीत के चार चरणों में से तीसरा । ५-आगंतुक । [वि.] [स्त्री. संचारिणी] संचरण करने वाला । गतिशील ।

संचाल [संज्ञा पु.] (हि.) १-कम्पन । २-चलना ।

संचालक, सञ्चालक [संज्ञा पु.] [स्त्री. संचालिका] १-चलाने अथवा गति प्रदान करने वाला । परिचालक । २-कार्य अथवा कार्यालय आदि का काम चलाने वाला ।

संचालन, सञ्चालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गति

देना। चलाना। २-ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था करना। जिससे कोई काम चलता या होता रहे। कन्डक्ट।

संचालित, सञ्चालित [वि.](सं.) जिसका संचालन किया गया हो। चलाया हुआ।

संचाली, सञ्चाली [संज्ञा स्त्री.](सं.) घुँघची। गुञ्जा।

संचिका, सञ्चिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह नत्थी जिसमें पत्र अथवा कागज आदि इकट्ठे करके रखे जाते हैं। नत्थी। फाइल।

संचित, सञ्चित [वि.] (सं.) १-एकत्र किया हुआ। २-ढेर लगाया हुआ। ३-सञ्चिका में लगाया हुआ। फाइल्ड।

संचितनिधि, सञ्चितनिधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विशेष कार्य के लिये इकट्ठा या जमा किया हुआ धन। कॉन्सोलेटेड-फण्ड।

संचिता, सञ्चिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वनस्पति।

संचिति, सञ्चिति [संज्ञा स्त्री.](सं) एक पर एक रखना।

संचित्रा, सञ्चित्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) मूसाकानी

संचोदक, सञ्चोदक [संज्ञा पु.] (सं.) एक देवपुत्र का नाम।

संछर्दन, सञ्छर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) ग्रहण में एक प्रकार का मोक्ष।

संज, सञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-ब्रह्मा

संजन, सञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँधना। २-बन्धन। ३-बिखरे हुए अङ्गों को मिलाकर एक करना।

संज्ञुनी, सञ्जनी [संज्ञा स्त्री](सं.) एक प्रकार का वैदिककालीन अस्त्र।

संजम* [संज्ञा पु.] (हिं.) संयम।

संजमनी [संज्ञा स्त्री.](डिं.) यमराज की नगरी।

संजनीपति [संज्ञा पु.] (डिं.) यमराज।

संजमी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संयमी। २-व्रती। जितेंद्रिय।

संजय, सञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) १-धृतराष्ट्र के मन्त्री का नाम। २-सुपार्श्व का पुत्र। ३-राजन्य के पुत्र का नाम। ४-ब्रह्मा। ५-शिव

संजा, सञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकरी।

संजात, सञ्जात [वि.] (सं.) १-उत्पन्न। २-प्राप्त। [संज्ञा पु.] पुराणानुसार एक जाति का नाम।

संजाफ [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कपड़े पर टँकी हुई झालर। गोट। मगजी।
[संज्ञा पु.](फा.) रङ्ग के विचार से एक प्रकार का घोड़ा।

संजाफी [वि.] (हिं.) जिसमें सजाफ लगी हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) आधा लाल और आधा हरे रंग का घोड़ा।

संजाब [संज्ञा पु.] (फा.) चूहे के आकार का एक जंतु जो प्राय: तुर्किस्तान में होता है। [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का घोड़ा।

संजीदगी [संज्ञा स्त्री.](फा) विचार या व्यवहार की गम्भीरता।

संजीदा [वि.](फा.) १-शांत। गम्भीर। २ समझदार। बुद्धिमान।

संजीव, सञ्जीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरे हुए को फिर से जिलाना। २-वह जो मरे हुए को जिलावे। ३-एक नरक का नाम।

संजीवक, सञ्जीवक [संज्ञा पु.] (स.) मुरदे को जिलाने वाला।

संजीवकरणी, सञ्जीवकरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत व्यक्ति जीवित हो जाता है। २-एक कल्पित औषध जिससे मृतक जीवित हो जाता है।

संजीवन, सञ्जीवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली प्रकार जीवन बिताना। २-जिलाने वाला। ३ एक नरक का नाम।

संजीवनी, सञ्जीवनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जीवन देने वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृतक को जीवित करने वाली एक कल्पित औषध या विद्या।

संजीवनी विद्या, सञ्जीवनी-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मरे हुये व्यक्ति को जिलाने की विद्या।

संजीवी, सञ्जीवी [संज्ञा पु.] (सं.) मृतकों को जिलाने वाला।

संजुक्त [वि.] (हिं.) देखो 'संयुक्त'।

संजुग* [संज्ञा पु.] (हिं.) संग्राम'। लड़ाई।

संजुत* [वि.] (हिं.) देखो 'संयुक्त'।

संजुता [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'संयुत' या 'समुता'।

सँजोई* [क्रि वि.] (हिं.) साथ में। सङ्ग में।

सँजोइल* [वि.] (हिं) १-सुसज्जित। २-एकत्र।

सँजोऊ* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तैयारी। उपक्रम। २-सामग्री।

सँजोग [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'संयोग'।

सँजोगिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संयोगिनी। वियोगिनी से विपरीत।

संजोगी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संयुक्त। मिले हुए २-संयोगी। प्रियासहित। ३-दो जुड़े हुए पिंजड़े।

संजोना [क्रि. सं.] (हिं.) सज्जित या अलंकृत करना। सजाना।

सँजोवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) सजाने का काम।

सँजोवना [क्र. स.] (हिं) संजोना। सजाना।

सँजोवल* [वि.](हिं.) १-सजा हुआ। २-सेनासहित। ३-सावधान।

सँजोवा+ [संज्ञा पु.](हिं.) १-सजावट। शृङ्गार २-जमाव। समघट।

सँजोह+ [संज्ञा पु.](हिं.) लकड़ी का वह चौखटा जिसको जुलाहा बुनते समय छत पर से लटका देते हैं।

संज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सब विषयों का अच्छा ज्ञाता हो। २-पीतकाष्ठ। [illegible]

संज्ञक [त्रि.] (सं.) संज्ञा वाला। जिसकी संज्ञा हो।

संज्ञपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वध। हत्या। २-विज्ञापन।

संज्ञप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'संज्ञपन'।

संज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चेतन। होश। २-बुद्धि। अक्ल। ३-ज्ञान। ४-नाम। आख्या। ५-व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी वास्तविक या कल्पित वस्तु का बोधक होता है। ६-सङ्केत। इशारा। ७-गायत्री। ८-सूर्य की पत्नी का नाम।

संज्ञाकरण-रस [संज्ञा पु.](सं.)चेतना लाने वाली एक औषध का नाम।

संज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्केत। इशारा।

संज्ञापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूसरों पर बात प्रकट करना। २-कथन।

संज्ञापुत्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) सूर्य की पुत्री यमुना का नाम।

संज्ञासुत [संज्ञा पु.] (सं.) शनिदेव।

संज्ञाहीन [वि.] (सं.) बेहोश। बेसुध।

संज्ञी [संज्ञा पु.] (सं.) जीव। चेतन।

संज्वर, सञ्ज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत तेज बुखार। २-बहुत तेज गरमी। ३-क्रोध आदि का बहुत आवेग।

संझला [वि.] (हिं.) १-साँझ या संध्या का। २-मँझले से छोटा और सब से छोटे से बड़ा

संझवाती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-संध्या के समय जलाया जाने वाला दीया। २-वह गीत जो ऐसे समय गाया जाता है। [वि.]संध्या-सम्बन्धी। सन्ध्या का।

संझा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूर्यास्त का समय। सन्ध्या। शाम।

सँझिया, सँझैया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रात्रि का भोजन।

संझाखा* [संज्ञा पु.] (हिं.) सन्ध्या समय।

सँठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शांति। खमोशी। २-धूर्त्त। शठ। ३-नीच। सँठ मारना-चुप्पी साधना।

संड [संज्ञा पु.] (हिं.) सांड।

संडमुसंड [वि.] (हिं.) मोटाताजा। हट्टाकट्टा।

सँड़सा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सँड़सी] एक प्रकार का लोहे का चिमटा या औजार जिससे गरम या कसी चीजें पकड़ी जाती हैं।

सँड़सी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा सँड़सा। जँबूरी

संडा [वि.] (हिं.) मोटाताजा। हृष्टपुष्ट। [संज्ञा पु.] मोटा और बलवान मनुष्य।

संड़ाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव के अभाव में नदी पार करने के लिये मशक की तरह

हुआ भैंस आदि का हवा भरा चमड़ा।

संडास [संज्ञा पु] (?) एक प्रकार का पाखाना जो जमीन में गहरा गढ़ा खोदकर बनाया जाता है। शौचकूप।

संत [संज्ञा पु.] (हि.) १-साधु, संन्यासी या महात्मा। २-ईश्वरभक्त। ३-२१मात्राओं का एक छन्द।

संतत, सन्तत [अव्य.] (सं.) १-सदा। हमेशा। २-निरन्तर। लगातार। ॐ+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'संतति'।

संततज्वर, सन्ततज्वर [संज्ञा पु] (सं.) सदा बना रहने वाला ज्वर।

संतति, सन्तति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाल बच्चे। औलाद। २-प्रजा। ३-गोत्र। ४-विस्तार। ५-दल। झुण्ड। ६ निरन्तर किसी बात का होना। ७-दक्ष की एक कन्या का नाम।

संतति-पथ, सन्तति-पथ [संज्ञा पु] (सं.) स्त्री की जननेन्द्रिय। भग।

संततिहोम, सन्ततिहोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन यज्ञ जो सन्तान की कामना से किया जाता था।

संततेयु, सन्ततेयु [संज्ञा पु.] (सं.) रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

संतनु, सन्तनु [संज्ञा पु.] (सं) १-अच्छी तरह तपने की क्रिया। २-अत्यधिक सन्ताप या दुःख देना।

संतपन, सन्तपन [संज्ञा पु] (सं) १-भली प्रकार तपने की क्रिया। २-अत्यधिक सन्ताप या दुःख देना।

संतप्त, सन्तप्त [वि] (सं.) १-जला हुआ। दग्ध। २-दुःखी। पीड़ित। ३-मलीन मन। ४-श्रांत। थका हुआ।

संतमस, सन्तमस् [संज्ञा पु] (सं.) १-तम। अंधकार। २-मोह।

संतरण, सन्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह से तारने या पार होने का काम। २-तारने वाला। तारक। ३-नाशक।

संतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ी नारङ्गी जो मीठी होती है।

संतरी [संज्ञा पु.] (अं. सेंटरी) पहरेदार।

संतर्जन, सन्तर्ज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-डराना। धमकाना। २-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

संतर्दन, सन्तर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) धृष्टकेतु के पुत्र का नाम।

संतर्पण, सन्तर्पण [संज्ञा पु.] (सं) १-वह जो भली प्रकार तृप्त करता हो। २-अच्छी तरह तृप्त करना। ३-एक प्रकार का चूर्ण।

संतस्थान, सन्तस्थान [संज्ञा पु] (सं.) साधुओं का निवासस्थान। मठ।

संतान, सन्तान [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालबच्चे। सन्तति। औलाद। २-वंश। कुल। ३-कल्पवृक्ष। ४-विस्तार। फैलाव। ५-एक प्रकार का का प्राचीन अस्त्र।

संतानक, सन्तानक [वि.] (सं.) फैला हुआ। विस्तृत। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कल्पवृक्ष। २-पुराणनुसार एक लोक जो ब्रह्मलोक से परे कहा गया है।

संतान-गणपति, सन्तान-गणपति [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक गणपति का नाम।

संतान-संधि, सन्तान-सन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपना लड़का या लड़की देकर की जाने वाली सन्धि।

संतानिका, सन्तानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-क्षीरसागर। २-चाकू का फल। ३-फेन। ४-मलाई। ५-मर्कटजाल नामक घास।

संताप, सन्ताप [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताप। जलन। आँच। २-मानसिक कष्ट या दुःख। मनोव्यथा। ३-ज्वर। ४-शत्रु। दुश्मन। ५-दाह नामक रोग।

संतापन, सन्तापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलाना। २-बहुत अधिक दुःख या कष्ट देना। ३-कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४-पुराणानुसार सन्ताप देने वाला एक अस्त्र।

संतापना* [क्रि. स.] (हिं.) दुःख या कष्ट पहुँचाना सताना।

संतापित, सन्तापित [वि.] (सं.) पीड़ित। सन्तप्त

संतापी, सन्तापी [वि.] (सं.) सन्ताप या दुःख देने वाला।

संताप्य, सन्ताप्य [वि.] (सं.) १-जलाने के योग्य २-कष्ट या दुःख देने वाला।

संति, सन्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दान। २-अवसान। अन्त।

संती* [अव्य.] (हि.) से द्वारा।

संतुलन, सन्तुलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आपेक्षिक तौल या भार बराबर और ठीक करना या होना। २-दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना।

संतुषित, सन्तुषित [संज्ञा पु.] (सं.) ललित-विस्तार के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

संतुष्ट, सन्तुष्ट [वि.] (सं.) १-जिसका सन्तोष हो गया हो। २-तृप्त।

संतुष्टीकरण, सन्तुष्टीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी को सन्तुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। एपीजमेन्ट।

संतोख [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'संतोष'।

संतोष, सन्तोष; संतोषण, सन्तोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सदा प्रसन्न रहना और किसी बात की कामना न करना। सब्र। २-जी भर आना तृप्ति। ३-किसी बात की चिन्ता, अपेक्षा, परवाह या शिकायत न होना।

संतोषणीय, सन्तोषणीय [वि] (सं.) संतोष करने के योग्य।

संतोषना* [क्रि स] (हि.) सन्तोष दिलाना। सन्तुष्ट करना। [क्रि. अ.] सन्तोष होना।

संतोषित [वि.] (हि.) सन्तुष्ट।

संतोषी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो सदा सन्तोष रखता हो।

संतोष्य, सन्तोष्य [वि.] (सं.) सन्तोष करने के योग्य।

संत्य, सन्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) अग्निदेव।

संत्रस्त, सन्त्रस्त [वि.] (सं.) १-डरा हुआ। भयभीत। २-व्याकुल। घबराया हुआ। व्याकुल ३-जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।

संत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संतरी'।

संथा [संज्ञा पु.] (हिं.) पाठ। सबक।

संदंश, सन्दंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-संड़सी। २-चिमटी। ३-एक विशेष प्रकार की चिमटी जो चीरफाड़ के समय नसों आदि को पकड़ने के काम में आती है।

संदंशिका, सन्दशिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सँडासी। २-चिमटी। ३-कैंची।

संद, सन्द+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छेद। दरार। बिल [संज्ञा पु.] (डि.) चन्द्रमा। [संज्ञा पु.] (?) दबाव।

संदर्भ, सन्दर्भ [संज्ञा पु] (सं.) १-रचना। २-निबन्ध। लेख। ३-वह पुस्तक जिसमें किसी अन्य पुस्तक में आई हुई किसी गूढ़ बात का स्पष्टीकरण हो। रेफरेंस बुक। ४-प्रकरण। प्रसङ्ग। कान्टेक्सट। ५-वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार की बातों का संग्रह हो। ६-विस्तार। फैलाव।

संदर्शन, सन्दर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवलोकन। २-परीक्षा। जांच। ३ ज्ञान। ४-आकृति ५-एक द्वीप का नाम।

संदल [संज्ञा पु.] (फा.) चन्दन।

संदली [वि.] (फा.) सन्दल या चन्दल का। [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का पीला रङ्ग २-एक प्रकार का हाथी। ३-घोड़े की एक जाति

संदान [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार की निहाई। अहरन। २-रस्सी। ३-बाँधने की सांकल आदि। ४-बांधने का काम। ५-हाथी की कनपटी जहां से उसका मद बहता है।

संदानिका, सन्दानिका [संज्ञा स्त्री] (सं) विट खदिर। बबुरी।

संदानिनी, सन्दानिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) गोशाला।

संदाव, सन्दाव [संज्ञा पु.] (सं.) पलायन। भागने की क्रिया।

संदास [संज्ञा पु.] (?) कहरुवा।

संदाह, सन्दाह [संज्ञा पु.] (सं) वैद्यक के मतानुसार मुख, तालू और होठों की जलन।

संदि [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सन्धि। मेल।

संदिग्ध, सन्दिग्ध [वि.] (सं.) १-जिसमें सन्देह हो सन्देहपूर्ण। २-जिस पर सन्देह हो। [संज्ञा

पु.] (सं.) १-मिथ्या उत्तर का एक लक्षण। २-एक प्रकार का व्यंग्य जिसमें यह नहीं प्रकट होता कि वाचक या व्यंजक में व्यंग्य है।

संदिग्धत्व, सन्दिग्धत्व [संज्ञा पु](सं) १-संदिग्ध होने का भाव या धर्म। २-अलङ्कार-शास्त्रानुसार एक दोष जो उस समय माना जाता है जबकि किसी उक्ति का ठीक-ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता अर्थ के सम्बन्ध में कुछ सन्देह बना रहता है।

संदिष्ट, सन्दिष्ट [वि] (सं.) कहा हुआ। कथित [संज्ञा पु.] (सं.) १-वार्ता। बातचीत। २-समाचार।

संदिष्टार्थ, सन्दिष्टार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) संदेसा ले जाने वाला।

संदी, सन्दी [संज्ञा स्त्री] (सं) पलङ्ग। खाट।

संदीपक, सन्दीपक [वि.] (सं.) उद्दीपन करने वाला। उद्दीपक।

संदीपन, सन्दीपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्दीपन। २-श्रीकृष्ण के गुरु का नाम। ३-कामदेव का एक बाण। [वि.] (सं) उद्दीपन या उत्तेजन करने वाला।

संदीपनी, सन्दीपनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सङ्गीत में पंचम स्वर की तीसरी श्रुति। [वि.] उद्दीप्त करने वाली।

संदीपित, सन्दीपित [वि.] (हिं.) १-उद्दीप्त। २-प्रज्वलित।

संदीप्य [संज्ञा पु](सं.) मयूरशिखा नामक वृक्ष। [वि.] संदीपन करने के योग्य।

संदूक [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. सन्दूकड़ी] लकड़ी या धातु की चौकोर पेटी। बक्स।

संदूकचा [संज्ञा पु.] (अ.) छोटा सन्दूक या पेटी

संदूकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) छोटा सन्दूक।

संदूख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संदूक'।

संदूर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंदूर'।

संदेव, सन्देव [संज्ञा पुं.] (सं.) देवक के एक पुत्र का नाम जिसका उल्लेख हरिवंश में मिलता है

संदेवा, सन्देवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वसुदेवक की स्त्री और देवक की कन्या का नाम।

संदेश, सन्देश [संज्ञा पु.] (सं.) १-समाचार। २-किसी के उद्देश्य से कही अथवा कहलवाई हुई कोई महत्वपूर्ण बात। मैसेज़। ३-एक बङ्गला मिठाई का नाम।

संदेशहर, सन्देशहर [संज्ञा पु.] (सं.) सन्देशा या समाचार ले जाने अथवा पहुँचाने वाला दूत। कासिद।

संदेशा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'संदेश'।

संदेशी [संज्ञा पु.] (हिं.) सन्देश लाने वाला। दूत।

संदेसा [संज्ञा पु.] (हिं.) जबानी कहलाया हुआ समाचार।

संदेसी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संदेशी'।

संदेह, सन्देह [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी विषय में यह धारणा कि यह ऐसा है या नहीं। निश्चय का अभाव। संशय। शङ्का। २-एक अर्थालङ्कार जिसमें कोई वस्तु देखकर भी उसके ठीक या सत्य होने की शङ्का का उल्लेख होता है।

संदेहवादी, सन्देहवादी [संज्ञा पु.] (सं.) जिस का मन किसी बात पर विश्वास न करे। संशयात्मा।

संदोल, सन्दोल [संज्ञा पु](सं.) कर्णफूल नामक गहना जो कान में पहना जाता है।

संदोह, सन्दोह [संज्ञा पु.] (सं.) समूह। झुण्ड।

संद्रव, सन्द्रव [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धक्षेत्र में भागना।

संध* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'संधि'।

संधना* [क्रि. अ.](हिं.) संयुक्त होना। मिलना

संधा, सन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्थिति। २-प्रतिज्ञा। करार। ३-सन्धि। मिलन। ४-साँझ का समय। ५-अनुसन्धान। तलाश।

संधान, सन्धान [संज्ञा. पु.] (सं.) १-निशाना बैठाना। २-ढूँढ़ने या पता लगाने का काम। ३-संयुक्त करना। मिलाना। ४-शराब बनाने का काम। ५-मदिरा। शराब। ६-लेखे, खाते आदि में लेनदेन का हिसाब ठीक और पूरा करना। जमाखर्च करना। ऐडजेस्टमेंट। ७-कोई ऐसा कार्य ठीक प्रकार से और उपयुक्त रूप में करना, जो सहज में ठीक तरह से न होता हो। मेल मिलाना या बैठाना। ऐडजेस्टमेंट। ८-दो वस्तुओं का मिलना। सन्धि ९-किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना। एलायन्स। १०-किसी वस्तु को सड़ाकर उस में खमीर उठाना। फर्मेन्टेशन। ११-काँजी। १२-अचार। १३-सञ्जीवन। १४-सौराष्ट्र या काठियावाड़ का एक नाम।

संधानना* [क्रि. स.] (हिं.) १-निशाना लगाना २-तीर चलाना। किसी अस्त्र को प्रयोग करने के लिये ठीक करना।

संधाना [संज्ञा पु.] (हिं.) अचार।

संधानिका, सन्धानिका [संज्ञा स्त्री.](सं.)अचार

संधानिनी, सन्धानिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोशाला। गायों के रहने की जगह।

संधानी, सन्धानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिलन २-प्राप्ति। ३-बन्धन। ४-अन्वेषण। तलाश ५-काँजी। ६-अचार। ७-वह स्थान जहाँ ढलाई की जाती है। देखो 'संधान'।

संधापगमन, सन्धापगमन [संज्ञा पु.] (सं.) समीपवर्ती शत्रु से सन्धि कर दूसरे शत्रु पर चढ़ाई करना।

संधि, सन्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-मेल। संयोग २-दो टुकड़ों या वस्तुओं के मिलने का स्थान जोड़। ३-राज्यों आदि में होने वाला यह निश्चय कि अब हम आपस में नहीं लड़ेंगे और मित्रतापूर्वक रहेंगे अथवा अमुक क्षेत्र में अमुक प्रकार से व्यवहार करेंगे। सुलह ट्रीटी। ४-व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से होता है। ५-नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्त्ती प्रयोजन के साथ होने वाला सम्बन्ध। ६-चोरी के विचार से दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ७-एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरम्भ का समय या स्थिति। ८-दो वस्तुओं के बीच की थोड़ी सी खाली जगह। अवकाश। ९-स्त्री की जननेंद्रिय। भग। १०-भेद। ११-साधन।

संधिक, सन्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सन्निपात रोग।

संधिकर्म, सन्धिकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सन्धि या सुलह करना।

संधिकुसुमा, सन्धिकुसुमा [संज्ञा स्त्री] (सं.)

संधिग, सन्धिग [संज्ञा पु.] देखो 'संधिज'।

संधिगुप्त, सन्धिगुप्त [संज्ञा पु.](सं.) वह स्थान जहाँ शत्रु की सेना पर छापा मारने के लिये सैनिक लोग छिपकर बैठते हैं।

संधिचौर, सन्धिचौर [संज्ञा पु.] (सं) सेंधिया-चोर।

संधिच्छेद, सन्धिच्छेद [संज्ञा पु.] (सं) वह पक्ष जो सन्धि के नियमों को भङ्ग करता हो।

संधिज, सन्धिज [संज्ञा पु.](सं.) १-मद्य, आसव आदि। २-वह फोड़ा जो शरीर की किसी सन्धि या गाँठ में हो।

संधिजीवक, सन्धिजीवक [संज्ञा पु.](सं.) स्त्रियों का दलाल। टाल। कुटना।

संधित, सन्धित [वि.] (सं) जिसमें सन्धि हो। [संज्ञा पु.] आसव। अर्क।

संधिनी, सन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गाभिन गाय। २-गाभिन होने पर भी दूध देने वाली गाय। ३-दोनों समय में एक बार दूध देने वाली गाय।

संधिप्रच्छादन, सन्धिप्रच्छादन [संज्ञा पु.](सं. सङ्गीत में स्वरसाधन की एक प्रणाली।

संधिबंध, सन्धिबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) भुंइचम्पा।

संधिबंधन, सन्धिबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) नस। नाड़ी।

संधिभंग, सन्धिभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के किसी अङ्ग के जोड़ का टूटना।

संधिभग्न, सन्धिभग्न [संज्ञा पु.] (सं.) सन्धियों या जोड़ों में पीड़ा होने का रोग।

संधिमोक्ष, सन्धिमोक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सन्धि तोड़ना।

संधिरंध्रिका, सन्धिरन्ध्रिका [संज्ञा स्त्री.] सेंध। सुरङ्ग।

संधिराग, सन्धिराग [संज्ञा पु.] (सं.)

संधिला, सन्धिल।

संधिला, सन्धिला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-सुरङ्ग। सेंध। २-मदिरा। शराब।

संधि-विग्रहिक, सन्धि-विग्रहिक [संज्ञा पु.](सं.) पर राष्ट्रों के साथ युद्ध अथवा सन्धि का निर्णय करने वाला मन्त्री या अधिकारी।

संधिविग्रही [संज्ञा पु.] देखो 'सिधि-विग्रहिक'।

संधि-विद्ध, सन्धि-विद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग।

संधिवेला, सन्धिवेला [संज्ञा स्त्री.](सं) सायंकाल

संधिसितासित, सन्धिसितासित [संज्ञा पु.](सं.) आंखों का एक प्रकार का रोग।

संधिहारक, सन्धिहारक [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधिया चोर।

संधेय, सन्धेय [वि.](सं) जिसके साथ सन्धि की जा सके।

संध्य, सन्ध्य [वि](सं) सन्धि-सम्बन्धी। सन्धि का।

संध्यर्क्ष, सन्ध्यर्क्ष [संज्ञा पु.](सं.) दो राशियों के बीच का नक्षत्र।

संध्या, सन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह समय जब दिन का अन्त और रात का आरम्भ होने को होता है। सायंकाल। शाम। २-आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सबेरे, दोपहर और सन्ध्या को होती है। ३-दो युगों के मिलने का समय। युगसन्धि। ४-एक प्राचीन नदी का नाम। ५-सीमा। हद। ६-सन्धान। ७-एक प्रकार का फूल।

संध्यानाटी, सन्ध्यानाटी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव

संध्यावधू, सन्ध्यावधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रात। रात्रि।

संध्याबल, सन्ध्याबल [संज्ञा पु.] (सं.) निशाचर

संध्याराग, सन्ध्याराग [संज्ञा पु.](सं.) १-श्याम-कल्याण राग। २-सिंदूर।

संध्याराम, सन्ध्याराम [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

संध्यासन, सन्ध्यासन [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रुओं का आपस में लड़कर कमजोर होकर बैठ जाना

संनिक्षेपता [संज्ञा पु.] (सं.) खज़ानची।

संन्यस्त [वि.](सं.) १-जिसने संन्यास लिया हो। २-पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ। निरत

संन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिन्दुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें त्यागी और विरक्त होकर सब कार्य निष्कामभाव से किये जाते हैं। २-अपने विधिक अथवा कानूनी अधिकारों का स्वेच्छापूर्वक त्याग। सिविल-सुइसाइड। ३-भावप्रकाश के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद। ४-जटामासी।

संन्यासी [संज्ञा पु.] (सं.) संन्यास-आश्रम में रहने वाला।

संपति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'संपत्ति'।

संपत्, सम्पत् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'संपद्'।

संपत्कुमार, सम्पत्कुमार [संज्ञा पु](सं) विष्णु

संपत्ति, सम्पत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धन दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो तथा जो खरीदी एवं बेची जा सकती हो। जायदाद। प्रापर्टी। २-ऐश्वर्य। वैभव। ३-प्राप्ति। लाभ। ४-अधिकता।

संपत्तिकर, सम्पत्ति-कर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कर जो किसी पर उसकी सम्पत्ति या जायदाद के विचार से लगाया जाय। प्रापर्टीटैक्स

संपत्ति-हस्तांतरण-पत्र, सम्पत्ति-हस्तान्तरण-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसके द्वारा किसी सम्पत्ति को दूसरे को सौंपा जाता है।

संपत्नीय, सम्पत्नीय [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों को जल देने का भेद।

संपद्, सम्पद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिद्धि। पूर्णता। २-ऐश्वर्य। वैभव। ३-सौभाग्य। ४-व्यापारिक मंडली या संस्था की व्यापार में लगी हुई पूंजी। ५-किसी व्यक्ति का वह धन अथवा पूंजी जो उसने किसी व्यापारिक संस्था में अपने हिस्से के रूप में लगाया हो ६-इस प्रकार लगी हुई पूंजी का सूचक प्रमाण-पत्र। ७-मोतियों का हार। ८-प्राप्ति। लाभ। ९-अधिकता।

संपदा, सम्पदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धन। दौलत। सम्पत्ति। २-वैभव। ऐश्वर्य।

संपदी, सम्पदी [संज्ञा पु.] (सं.) अशोक के एक पौत्र का नाम।

संपन्न, सम्पन्न [वि.] (सं.) १-पूरा किया हुआ। सिद्ध। २-सहित। [संज्ञा पु.] (सं.) सुस्वाद भोजन।

संपन्नक्रम, सम्पन्नक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की समाधि।

संपन्नता, सम्पन्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पन्न होने का भाव।

संपराय, सम्पराय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मृत्यु। मौत। २-युद्ध। लड़ाई। ३-आपत्ति। ४-भविष्य। ५-अनादिकाल से स्थिति।

संपरीक्षक, सम्परीक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) संपरीक्षण करने वाला। स्क्रूटिनाइजर।

संपरीक्षण, सम्परीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य, तथ्य, लेख आदि के सम्बन्ध में भली प्रकार देखकर यह जाँचना कि वह ठीक और नियमानुसार है या नहीं। स्क्रूटिनी।

संपर्क, सम्पर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-लगाव। सम्बन्ध। वास्ता। २-स्पर्श। सटना। ३-मिश्रण। मिलावट। ४-योग। जोड़। (गणित)

संपर्कित, सम्पर्कित [वि.] (सं.) जिसका या जिससे संपर्क हो। सम्बद्ध।

संपा, सम्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विद्युत। बिजली।

संपाक, सम्पाक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह पकना। २-अमलतास। ३-तर्क करने वाला। [वि.](सं.) १-लंपट। २-धूर्त। ३-अल्प। कम

संपाट, सम्पाट [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी त्रिभुज की बढ़ी हुई भुजा पर लंब का गिरना। २-तकला।

संपात, सम्पात [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ गिरना या पड़ना। २-संसर्ग। मेल। ३-समागम। ४-संगम स्थान। मिलने की जगह ५-वह स्थान जहां एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले। ६-टूट पड़ना। झपट। ७-प्रवेश। पहुंच। ८-घटित होना। ९-तलछट। १०-अवशिष्ट अंश या भाग।

संपाति, सम्पाति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक गीध जो जटायु का भाई था। २-माली नामक राक्षस का एक पुत्र। ३-राम की सेना का एक बन्दर।

संपाती, सम्पाती [वि.] (सं.) [स्त्री. सम्पातिनी] एक साथ कूदने या झपटने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सम्पाति'।

संपादक, सम्पादक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संपादिका] १-कार्य सम्पन्न या पूरा करने वाला। २-प्रस्तुत करने वाला। ३-किसी समाचार-पत्र अथवा पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालने वाला। एडीटर।

संपादकत्व, सम्पादकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) संपादन करने का भाव या अवस्था।

संपादकीय, सम्पादकीय [वि.](सं.) सम्पादक का

संपादन, सम्पादन [संज्ञा पु.] (सं) १-काम पूरा और ठीक तरह से करना। २-प्रस्तुत करना। ३-ठीक या दुरुस्त करना। ४-किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। एडिटिंग।

संपादनीय, सम्पादनीय [वि.] (सं.) सम्पादन करने योग्य।

संपादयिता, सम्पादयिता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सम्पादयित्री] सम्पादन करने वाला।

संपादित, सम्पादित [वि.] (सं.) १-पूर्ण किया हुआ। २-(पुस्तक, पत्र आदि को) क्रम पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। एडिट।

संपादी, सम्पादी [वि] (सं.) [स्त्री. सम्पादिनी] सम्पादन करने वाला।

संपाद्य, सम्पाद्य [वि.](सं.) १-जिसका सम्पादन करना हो या होना हो। २-(वह बात या सिद्धांत) जिसे विचारपूर्वक ठीक करने की आवश्यकता हो। प्रॉब्लेम।

संपित [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बांस।

संपीड़न, सम्पीड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब दबाना अथवा निचोड़ना। २-खूब पीड़ा देना। ३-अत्यधिक पीड़ा। ४-शब्द के उच्चारण का एक दोष।

संपुट, सम्पुट [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. संपुटी] १-पात्र के आकार की वस्तु। २-खप्पर। ठीकरा। ३-डिब्बा। ४-दोना। ५-अँजली। ६-कपड़े

और गीली मिट्टी से लपेटकर बन्द किया-हुआ वह बरतन जिसमें कोई रस या औषध का भस्म तैयार करते हैं (वैद्यक)। ७-फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो। कोश। ८-कटसरैया का फूल। ९-हिसाब में बाकी या उधार।

संपूर्ण, सम्पूर्ण [वि] (सं.) १-खूब भरा हुआ। २-समस्त। पूरा। ३-समाप्त। खतम। *संपूर्ण काम*-जिसकी सारी अभिलाषाएँ पूर्ण हुई हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २-आकाशभूत।

संपूर्णतः, सम्पूर्णतः [क्रि. स](सं.) पूरी तरह से

संपूर्णतया, सम्पूर्णतया [क्रि. वि.](सं.) पूरी तरह से।

संपूर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सम्पूर्ण होने का भाव। २-समाप्ति।

संपूर्णा, सम्पूर्णा [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक बहरी विशेष।

संपृक्त, सम्पृक्त [वि.](सं.) १-संसर्ग में आया-हुआ। २-मिला हुआ। ३-मेल में आया हुआ

सँपेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सँपेरिन] सांप पालने वाला। मदारी।

सँपै* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'संपत्ति'।

सँपोला [संज्ञा पु.] (हिं) सांप का बच्चा।

सँपोलिया [संज्ञा पु] (हिं.) सांप पकड़ने वाला।

संप्रक्षाल, सम्प्रक्षाल [संज्ञा पु.](सं.) १-पूर्णविधि से स्नान करने वाला। २-एक प्रकार के यति या साधु। ३-एक ऋषि जो प्रजापति के धोये हुए पैर के जल से उत्पन्न हुए थे।

संप्रक्षालन, सम्प्रक्षालन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली प्रकार से धोना। २-पूर्ण स्नान। ३-जलप्रलय

संप्रक्षालनी, सम्प्रक्षालनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जीविका या वृत्ति।

संप्रज्ञात, सम्प्रज्ञात [संज्ञा पु.](सं.) योग में समाधि के दो प्रधान भेदों में से एक।

संप्रति, सम्प्रति [अव्य.](सं.) इस समय। अभी [संज्ञा पु](सं.) १-पूर्व अवसर्पिणी के २४ वें अर्हत का नाम (जैन)। २-अशोक का पोता।

संप्रतिपत्ति, सम्प्रतिपत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहुँच। गुजर। २-प्राप्ति। लाभ। ३-ठीक-ठीक समय में आना। ४-समझ। बुद्धि। ५-एक मत। मतैक्य। ६-मंजूरी। स्वीकृति। ७-अभियुक्त का न्यायालय में सत्य बात का स्वीकार करना। ८-कार्य की पूर्णता। सिद्धि।

संप्रतिपन्न, सम्प्रतिपन्न [वि.] (सं.) १-पहुँचा हुआ। गया हुआ। उपस्थित। २-स्वीकृत। मंजूर। ३-तेज समझ वाला।

संप्रतिरोधक, सम्प्रतिरोधक [संज्ञा पु.] (सं) १-पूर्णरीत्या रोक या बाधा। २-बन्दीगृह। जेल

संप्रतीक्षा, सम्प्रतीक्षा [संज्ञा स्त्री] (सं) आशा उम्मेद।

संप्रतीत, सम्प्रतीत [वि.] (सं.) १-लौटाया हुआ २-भली भाँति विश्वास कराया हुआ। ३-सिद्ध किया हुआ। ४-प्रसिद्ध। माननीय। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भली प्रकार प्रतीत या विश्वास। २-ख्याति। कीर्ति।

संप्रत्य, सम्प्रत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वीकृति। मंजूरी। २-दृढ़विश्वास। ३-ठीक ठीक समझ ४-भावना। विचार।

संप्रदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सम्प्रदाय'।

संप्रदातन, सम्प्रदातन [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

संप्रदान, सम्प्रदान [संज्ञा पु.] (सं.) १-दान देने की क्रिया या भाव। २-दीक्षा। मन्त्रोपदेश। ३-भेंट। नजर। ४-किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। डेलिवरी। ५-व्याकरण में वह कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न को है

संप्रदाय, सम्प्रदाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई विशेष धार्मिक मत। सेक्ट। २-किसी मत के के अनुयायियों की मण्डली। ३-देने वाला। दाता। ४-मार्ग। पथ। ५-परिपाटी। रीति। चाल।

संप्रदायी [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री. सम्प्रदायिनी] १-देने वाला। २-सिद्ध करने वाला। ३-किसी-सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला। मतावलंबी

संप्रधान, सम्प्रधान [संज्ञा पु.] (सं.) निश्चय करना।

संप्रधारण, सप्रधारण [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. सम्प्रधारणा] १-विचार। २-किसी वस्तु के औचित्य अनौचित्य के विषय में निश्चय करने की क्रिया।

संप्रपद, सम्प्रपद [संज्ञा पु.] (सं.) भ्रमण।

संप्रभिन्न, सम्प्रभिन्न [वि.](सं.) १-चिरा या फटा-हुआ। २-मद में मत्त।

संप्रमोद, सम्प्रमोद [संज्ञा पु.] (सं.) अति हर्ष।

संप्रमोष, सम्प्रमोष [संज्ञा पु.] (सं.) हानि। नाश। विनाश।

संप्रयाण, सम्प्रयाण [संज्ञा पु.] (सं.) प्रस्थान। रवानगी।

संप्रयुक्त, सम्प्रयुक्त [वि.](सं.) १-जोड़ा या एक-साथ किया हुआ। २-जोता या नधा हुआ। ३-सम्बद्ध। ४-भिड़ा हुआ। ५-व्यवहार में लाया हुआ।

संप्रयोग, सम्प्रयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ने की क्रिया या भाव। २-मेल। मिलाप। ३-रति। रमण। ४-धनादि का विनियोग। ५-नक्षत्र में चन्द्रमा का योग। ६-इन्द्रजाल। ७-वशीकरण आदि कार्य।

संप्रयोगी, सम्प्रयोगी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सम्प्रयोगिनी] १-कामुक। लम्पट। २-इन्द्रजालिक।

संप्रयोजन, सम्प्रयोजन [संज्ञा पु] (सं) भली प्रकार जोड़ना या मिलाना।

संप्रयोजनीय, सम्प्रयोजनीय [वि.] (सं.) अच्छी तरह जोड़ने या मिलाने योग्य।

संप्रयोजित, सम्प्रयोजित [वि.](सं.) अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ।

संप्रयोज्य, सम्प्रयोज्य [वि.](सं.) सम्प्रयोजनीय

संप्रवर्त्तक, सम्प्रवर्त्तक [संज्ञा पु.](सं.) १-चलाने वाला। २-जारी करने वाला।

संप्रवर्त्तन, सम्प्रवर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गति देना। चलाना। २-घुमाना। ३-जारी करना। आरम्भ करना।

संप्रवृत्त, सम्प्रवृत्त [वि.] (सं.) १-अग्रसर। बढ़ा हुआ। २-उपस्थित। मौजूद। ३-आरम्भ किया हुआ।

संप्रवृत्ति, सम्प्रवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आसक्ति। २-अनुकरण करने की इच्छा। ३-परस्थिति। मौजूदगी। ४-सङ्घटन। मेल।

संप्राप्त, सम्प्राप्त [वि.] (सं.) १-पहुँचा हुआ। उपस्थित। २-पाया हुआ। ३-घटित। जो हुआ हो।

संप्राप्ति, सम्प्राप्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-प्राप्ति। लाभ। २-उपस्थिति। ३-घटित होना। ४-रोग का सन्निकृष्ट कारण।

संप्रेक्षक, सम्प्रेक्षक [संज्ञा पु] (सं) १-वह जो संप्रेक्षण करता हो। आय-व्यय या हिसाब-किताब आदि की जाँच करने वाला। ऑडिटर। २-दर्शक। देखने वाला।

संप्रेक्षण, सम्प्रेक्षण [संज्ञा पु] (सं) आय-व्यय आदि का लेखा। जाँचने का काम। ऑडिटिंग

संप्रेक्षित, सम्प्रेक्षित [वि.](सं.) आय-व्यय आदि का लेखा जाँचा हुआ। आडिटेड।

संप्रेक्ष्य, सम्प्रेक्ष्य [वि.](सं) संप्रेक्षण के योग्य।

संप्रेष [संज्ञा पु] देखो 'संप्रैष'।

संप्रेषण, सम्प्रेषण [संज्ञा पु.](सं.) १-अच्छी तरह भेजना। २-छुड़ाना। बरखास्त करना।

संप्रेषणी, सम्प्रेषणी [संज्ञा स्त्री] (सं) मृतक का एक कृत्य।

संप्रेषित, सम्प्रेषित [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह भेजा हुआ। २-छुड़ाया हुआ।

संप्रेष्य, सम्प्रेष्य [वि.] (सं) संप्रेषण के योग्य।

संप्रैष, सम्प्रैष [संज्ञा पु.](सं.) १-नियुक्ति। २-आमन्त्रण। आह्वान।

संप्रोक्षण, सम्प्रोक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी छिड़कना। २-खूब पानी छिड़ककर (मंदिर आदि) साफ करना। धोना।

संप्लव, सम्प्लव [संज्ञा पु.] (सं.) १-डुबाना या जल की बाढ़ में जलमग्न। २-भारी समूह। ३-हलचल। शोरगुल।

संप्लुत, सम्प्लुत [वि.] (सं.) जल से डूबा हुआ।

संफाल, सम्फाल [संज्ञा पु.] (सं.) मेष। भेड़।

संफेट, सम्फेट [संज्ञा पु.] (सं.) १-दो क्रुद्धजनों की लड़ाई। २-कहासुनी-तकरार।

संबंध, सम्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २-लगाव। सम्पर्क। वास्ता। कनेक्शन। ३-नाता। रिश्ता। ४-विवाह अथवा उसका निश्चय। ५-व्याकरण में वह कारक जिसमें एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ सम्बंध सूचित होता है। ६-गहरी मित्रता। ७-किसी सिद्धान्त का हवाला।

संबंधक, सम्बन्धक [वि.](सं.) १-सम्बन्ध करने वाला। २-योग्य। उपयुक्त। [संज्ञा पु.] १-मित्र। दोस्त। २-विवाह या जन्म से सम्बन्धी या नातेदार। ३-एक प्रकार की सन्धि।

संबंधातिशयोक्ति, सम्बन्धातिशयोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतिशयोक्ति अलङ्कार का एक भेद जिसमें असम्बन्ध में सम्बन्ध दिखाया जाता है।

संबंधित, सम्बन्धित [वि.] (सं.) देखो 'संबद्ध'

संबंधी, सम्बन्धी [वि.](सं.) [स्त्री. सम्बन्धिनी] १-सम्बन्ध रखने वाला। २-विषयक। ३-सिलसिले या प्रसङ्ग का। [संज्ञा पु.] १-रिश्तेदार। २-समधी।

संबंधु, सम्बन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-आत्मीय। भाई-बिरादर। २-नातेदार। रिश्तेदार।

संब [संज्ञा पु.] देखो 'शंब'।

संबत् [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संवत्'।

संबद्ध, सम्बद्ध [वि.] (सं.) १-बँधा या जुड़ा हुआ। २-सम्बन्धयुक्त। मिला हुआ। ३-बंद। ४-संयुक्त। सहित।

संबर, सम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शंबर'।

संबरण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संवरण'।

संबल, सम्बल [संज्ञा पु.] (सं.) १-रास्ते का भोजन। २-वह सामग्री, साधन आदि जिनके भरोसे कोई काम किया जाय। रिसोरसेज। ३-शाल्मलीवृक्ष। ४-गेहूँ की उपज में लगने वाला एक रोग।

संबाद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संवाद'।

संबाध [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाधा। अड़चन। २-भीड़। सङ्घर्ष। ३-भग। योनि। ४-कष्ट। पीड़ा। ५-नरक का पथ। [वि.] १-सङ्कीर्ण। तङ्ग। २-जनपूर्ण। ३-भरा। पूर्ण। संकुल।

संबाधक, सम्बाधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सताने वाला। २-बाधा पहुँचाने वाला।

संबाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-दबाव। रेलपेल। २-रोकना। ३-फाटक। रोक। ४-भग। योनि ५-शूलाग्र। ६-द्वारपाल।

संबी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) फली।

संबुक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शंबुक', 'शंबूक'।

संबुद्ध, सम्बुद्ध [संज्ञा पु.](सं.) १-जाग्रत। ज्ञान प्राप्त। २-ज्ञानी। ज्ञानवान्। ३-ज्ञात। ४-बुद्ध। ५-जिन।

संबुद्धि, सम्बुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूर्ण ज्ञान। बुद्धिमानी। होशियारी। २-आह्वान।

संबुल [संज्ञा पु.] (अं.) बालछड़। जटामासी।

संबुल-खताई [संज्ञा पु.](फा.) एक पौधा जो दवा के काम में आता है।

संबूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समूर'।

संबेसर [संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा। नींद।

संबोध, सम्बोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूरा ज्ञान या बोध। २-पूरी जानकारी। ३-धीरज। ढारस।

संबोधन, सम्बोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नींद से उठना। जागना। २-पुकारना। ३-किसी के उद्देश्य से कोई बात कहना। ४-व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने अथवा बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है। ५-नाटक में आकाश-भाषित। ६-समाधान करना।

संबोधना*[क्रि. स.] (हिं.) १-सम्बोधन करना। २-समझाना-बुझाना।

संबोध्य, सम्बोध्य [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जिसे सम्बोधन किया जाय। २-जिसे समझाया या जताया जाय।

संबौधिया [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति

संभक्ति, सम्भक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिस्सा लगाना। २-बाँटना।

संभग्न, सम्भग्न [वि] (सं.) १-बहुत या बिलकुल टूटा हुआ। २-हारा हुआ। ३-विफल। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

संभर, सम्भर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पोषण करने वाला। २-साँभरझील।

संभरण, सम्भरण [संज्ञा पु.](सं.) १-भरण-पोषण आदि की व्यवस्था या सामग्री। प्रॉविजन। २-यज्ञ की वेदी में लगने वाली एक प्रकार की ईंट।

संभरण-निधि, सम्भरण-निधि [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह निधि जिसमें किसी की वृद्धावस्था आदि के समय भरण-पोषण आदि के लिये धन एकत्र किया जाय। प्राविडेन्ट फंड।

संभरणी, सम्भरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमरस रखने का एक यज्ञ-पात्र।

सँभरना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सँभलना'।

संभल, सम्भल [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कन्या से विवाह की कामना रखने वाला व्यक्ति। २-दलाल।

सँभलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी बोझ आदि का थामा जा सकना। २-किसी सहारे पर रुका रह सकना। ३-होशियार या सावधान होना। ४-चोट अथवा हानि से बचा रहना बचा करना। ५-कार्य भार उठाया जाना। ६-चंगा होना। रोग से छूटकर स्वस्थता प्राप्त करना।

सँभला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बार बिगड़कर फिर सुधरीहुई फसल।

संभली, सम्भली [संज्ञा स्त्री.](सं.) कुटनी। दूती

संभव, सम्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पत्ति। २-मेल। संयोग। ३-सहवास। प्रसङ्ग ४-अँटना ५-हेतु। करण। ६-होना। ७-मुमकिन होना। हो सकने के योग्य होना। ८-परिमाण का एक होना। ९-उपयुक्तता। १०-एक लोक। ११-जैनियों के वर्त्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत्। १२-ध्वंस। नाश। १३-युक्ति। उपाय [वि.] (सं.) १-उत्पन्न। २-जो हो सकता हो हो सकने योग्य। मुमकिन। पॉसिबुल

संभवतः, सम्भवतः [अव्य.] (सं.) हो सकता है। संभव या मुमकिन है।

संभवन, सम्भवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पन्न होना। २-मुमकिन होना। ३-घटित होना। होना।

संभवना* [क्रि. स.] (हिं.) उत्पन्न करना। [क्रि. अ] (हिं.) १-उत्पन्न होना। २-संभव होना।

संभवनाथ, सम्भवनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के वर्त्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर का नाम।

संभवनीय, सम्भवनीय [वि.] (सं.) संभव। मुमकिन।

संभव्य, सम्भव्य [वि.] (सं) जो संभव या मुमकिन हो सके। [संज्ञा पु.] कपित्थ। कैथ।

सँभार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सँभाल'।
सार सँभार-पालन-पोषण और देखभाल।

संभार, सम्भार [संज्ञा पु.] (सं.) १-संचय। एकत्र करना। २-वह स्थान जहां एक ही प्रकार की बहुत सारी वस्तुएँ एकत्र करके या बिक्री के लिए रखी हों। भंडार। स्टोर। ३-तैयारी। साज-समाज। ४-धन। संपत्ति। ५-पालन पोषण।

सँभारना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सँभालना'।

संभाराधिप [संज्ञा पु.] (सं.) राजकीय पदार्थों का अध्यक्ष।

संभारी, सम्भारी [वि.] (सं.) [स्त्री. संभारिणी] भरा हुआ। पूर्ण।

सँभाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रक्षा। हिफाजत। २-पोषण या देख-रेख आदि का भार। ३-तन-बदन की सुध। ४-प्रबन्ध। इन्तजाम।

सँभालना [क्रि. स.] (हिं.) १-भार ऊपर लेना। २-रोककर वश में रखना। ३-गिरने न देना ४-रक्षा करना। ५-बुरी दशा में जाने से रोकना। ६-पालन-पोषण या देख रेख करना ७-निर्वाह करना। ८-यह देखना कि कोई वस्तु ठीक है या नहीं। सहेजना। ९-किसी मनोवेग को रोकना।

सँभाला [संज्ञा पु.](हिं.) मरने के पहले कुछ चेतनता-सी आना।

सँभालू [संज्ञा पु.] (हिं) श्वेत सिंधुवार' नामक वृक्ष। मेवड़ी।

संभावन, सम्भावन [संज्ञा पु.](सं.) १-कल्पना। अनुमान। २-जुटाना। एकत्र करना। ३-उपस्थित करना। ४-आदर। सम्मान। ५-प्रतिष्ठा का भाव। ६-योग्यता। अधिकार। ७-प्रसिद्धि ८-स्वीकार।

संभावना, सम्भावना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हो·सकना। मुमकिन होना। *पाँसिबिलिटी*। २-एक अलङ्कार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी के आश्रित होने का वर्णन् होता है ३-अनुमान। कल्पना। ४-प्रतिष्ठा। मान। इज्जत।

संभावनीय, सम्भावनीय [वि.] (सं.) १-जो हो सकता हो। मुमकिन। २-कल्पना के योग्य। ३-आदर-सत्कार के योग्य।

संभावयितव्य, सम्भावयितव्य [वि.] (सं.) देखो 'संभावितव्य'।

संभावित, सम्भावित [वि.] (सं.) १-कल्पित। विचारा हुआ। २-जिसके होने की संभावना हो। जो कभी हो सकता हो। मुमकिन। प्राबेबुल

संभावितव्य, सम्भावितव्य [वि.](सं.) १-कल्पना या अनुमान के योग्य। २-सत्कार के योग्य। ३-सम्भव। मुमकिन।

संभाव्य, सम्भाव्य [वि.] (सं.) १-जो हो सकता हो। मुमकिन। २-कल्पना या अनुमान के योग्य

संभाव्यतः, सम्भाव्यतः [क्रि. वि.](सं.) हो सकने के विचार से जिसकी आशा की जा सकती हो। बहुत करके। *लाइकली*।

संभाष, सम्भाष [संज्ञा पु.] (सं.) १-संभाषण। बातचीत। २-वादा। करार।

संभाषण, सम्भाषण [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत। कथनोपकथन।

संभाषणीय, सम्भाषणीय [वि.](सं.) जो बातचीत करने योग्य हो।

संभाषित, सम्भाषित [वि.] (सं.) १-भली प्रकार कहा हुआ। २-जिससे बातचीत हुई हो।

संभाषी, सम्भाषी [वि.] (सं.) [स्त्री. संभाषिणी] बातचीत करने वाला।

संभाष्य, सम्भाष्य [वि.] (सं.) जिससे बातचीत करना उचित हो।

संभिन्न, सम्भिन्न [वि.] (सं.) १-भलीभांति। अलग। २-बिलकुल टूटा हुआ। ३-संक्षोभित। चालित। ४-गठा हुआ। ठोस। ५-प्रस्फुटित।

संभिन्न-प्रलाप, सम्भिन्न-प्रलाप [संज्ञा पु.] (सं.) व्यर्थ की बातचीत।

संभु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शंभु'।

संभूत, सम्भूत [वि.] (सं.) १-एक साथ उत्पन्न करने वाले। २-उत्पन्न। पैदा। ३-युक्त। सहित।

संभूति, सम्भूति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-उत्पत्ति। २-बढ़ती। विभूति। ३-करामात। ४-क्षमता शक्ति। ५-उपयुक्तता। योग्यता।

संभूय, सम्भूय [अव्य.] (सं.) साझे में। एक साथ

संभूयकारी, सम्भूयकारी [संज्ञा पु.] (सं.) संघात में मिलकर कार्य करने वाला।

संभूयक्रय, सम्भूयक्रय [संज्ञा पु.] (सं.) थोक माल बेचना या खरीदना।

संभूयगमन, सम्भूयगमन [संज्ञा पु] (सं.) पूरी तैयारी के साथ स-दलबल चढ़ाई जिसमें सामन्त, तअल्लुकेदार आदि भी हों।

संभूयसमुत्थान, सम्भूयसमुत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-साझे का कारबार। २-साझियों में होने वाला वाद-विवाद।

संभूयसमुत्थायन, सम्भूयसमुत्थायन [संज्ञा पु.] (सं.) कम्पनी खोलना। साझे का व्यवसाय करना।

संभूयासन, सम्भूयासन [संज्ञा पु.](सं.) शत्रु से मेल करके तथा उसे उदासीन समझकर चुपचाप बैठजाना।

संभृत, सम्भृत [वि.] (सं.) १-एकत्र। इकट्ठा। २-पूर्ण। भरा हुआ। ३-युक्त। सहित। ४-पाला-पोसा हुआ। ५-सम्मानित। ६-प्रस्तुत। तैयार। ७-निर्मित। बना हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) उच्च स्वर। चीख।

संभृति, सम्भृति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एकत्र करने की क्रिया या भाव। २-सामान। सामग्री। ३-समूह। भीड़। ४-राशि। ढेर। ५-अधिकता। ६-खूब पालना-पोसना।

संभृष्ट, सम्भृष्ट [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह भुना या तला हुआ। २-कुरकुरा। करारा।

संभेद, सम्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब छिदना या भिदना। २-आपस में मिले हुए व्यक्तियों, पदार्थों, तत्वों आदि में होने वाला वियोग अलगाव या भेद। *क्लीवेज*।

संभेदन, सम्भेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब छेदना या आरपार घुसाना। २-मिलाना। जुटाना।

संभोग, सम्भोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का होने वाला भोग, उपभोग या व्यवहार। २-स्त्री के साथ होने वाली रतिक्रीड़ा। मैथुन ३-प्रेमी और प्रेमिका का होने वाला संयोग या मिलाप। ४-हाथी के मस्तक का एक भाग

संभोगी, सम्भोगी [वि.](सं.) [स्त्री. संभोगिनी] संभोग करने वाला।

संभोग्य, सम्भोग्य [वि.] (सं.) १-जिसका व्यवहार होने वाला हो। २-व्यवहार-योग्य।

संभोज, सम्भोज [संज्ञा पु.] (सं.) भोजन। खाना

संभोजक, सम्भोजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोजन करने वाला। २-भोजन परसने वाला।

संभोजन, सम्भोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भोज। दावत। २-खाने की वस्तु। खाना।

संभोजनीय [वि.] (सं.) १-जो खाया जाने वाला हो। २-खाने योग्य।

संभोज्य, सम्भोज्य [वि.] (सं.) सम्भोजनीय।

संभ्रम, सम्भ्रम [संज्ञा पु.](सं.) १-घूमना। चक्कर। फेरा। २-उतावली। ३-घबराहट। व्याकुलता ४-हलचल। धूम। ५-सिटपिटाना। ६-मान। गौरव।

संभ्रांत, सम्भ्रान्त [वि.](सं.) १-घुमाना या चक्कर दिया हुआ। २-भ्रम में पड़ा या घबराया हुआ ३-सम्मानित। प्रतिष्ठित।

संभ्रांति, सम्भ्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घबराहट। उद्वेग। २-आतुरता। हड़बड़ी। चकपकाहट।

संभ्राजना* [क्रि. अ] (हिं.) अच्छी तरह सुशोभित होना।

संमत [वि.](सं.) देखो 'सम्मत'।

संमान [संज्ञा पु.] देखो 'सम्मान'।

संमित [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सम्मित'।

संमेलन [संज्ञा पु.] देखो 'सम्मेलन'।

संयंता [संज्ञा पु.] (हिं) १-संयम करने वाला। निग्रही। २-शासक। नेता।

संय [संज्ञा पु.] (सं.) कङ्काल। पञ्जर।

संयत् [वि.] (सं.) १-सम्बद्ध। २-अखंडित। लगातार। [संज्ञा पु.] १-नियत स्थान। २-वादा। करार। लड़ाई। झगड़ा। ३-यज्ञ की वेदी में काम आने वाली ईंट।

संयत [वि.] (सं.) १-बद्ध। बँधा हुआ। २-दबाव में रखा हुआ। दमन किया हुआ। ३-क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ४-वासनाओं तथा मन को वश में रखने वाला। विग्रही। ५-उचित सीमा में रोककर रखा हुआ। [संज्ञा पु.] १-शिव। २-योगी।

संयतप्राण [वि.] (सं.) प्राणायाम करने वाला।

संयतात्मा [वि.](सं.) मन को वश में करने वाला

संयति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वश में रखना।

संयद्वसु [वि.] (सं.) धनवान। [संज्ञा पु.] सूर्य की सात किरणों में से एक।

संयम [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोक। दाब। २-मन और इन्द्रियों को वश में रखना। इन्द्रियनिग्रह। ३-बुरी वस्तुओं या बातों से बचना। ४-बाँधना। बंधन। ५-योग में ध्यान, धारणा तथा समाधि का साधन। ६-प्रयत्न। कोशिश। ७-प्रलय। ८-धूम्रांक्ष के एक पुत्र का नाम।

संयमन [संज्ञा पु.] (सं) १-रोक। २-दमन। निग्रह। ३-मन को वश में रखना। ४-बन्द या कैद रखना। ५-बन्धन में बांधना। ६-खींचना। तानना (लगाम आदि)। ७-यमपुर।

संयमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) यमपुरी।

संयमित [वि.] (सं.) १-रोक में रक्खा हुआ। २-दमन किया हुआ। ३-बंधा या कसा हुआ।

४-पकड़ में लाया हुआ। ५-जो मन को रोके हो

संयमी [वि.] (सं.) १-मन तथा वासनाओं को काबू में रखने वाला। आत्मनिग्रही। २-पथ्य में रहने वाला। परहेजगार। [संज्ञा पु] (सं.) शासक।

संयात [वि.] (सं.) १-एक साथ गया हुआ। २-पहुँचा हुआ। प्राप्त।

संयाति [संज्ञा पु.] (सं.) १-नहुष के एक पुत्र का नाम। २-बहुगव के पुत्र का नाम।

संयान [संज्ञा पु.] (सं.) १-साथ जाना। २-यात्रा सफर। ३-प्रस्थान। रवानगी। ४-शकट। गाड़ी। यो०—उत्तसंयान-मुरदे को ले जाना।

संयाव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पकवान या मिठाई। गोभिया।

संयुक्त [वि.] (सं.) १-जुड़ा, सटा या लगा हुआ सम्बन्ध। एनेक्स्ड। २-एक में मिला हुआ। ३-साथ रहकर या मिलकर बहुत कुछ समान भाव से कार्य करने वाला। ज्वाइन्ट। ४-समन्वित।

संयुक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र अथवा और कोई कागज जो किसी दूसरे पत्र आदि के के साथ लगा दिया गया हो। एनेक्शर।

संयुक्त-घोषणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो या दो से अधिक पक्षों या दलों की ओर से की जाने वाली मिली-जुली घोषणा। ज्वाइन्ट डिक्लेयरेशन।

संयुक्त-निर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'निर्वाचन'।

संयुक्तपरिवार [संज्ञा पु.] (सं.) वह परिवार जिसमें भाई-भतीजे आदि सब सम्मिलित रूप से रहते हों। ज्वाइन्ट फैमिली।

संयुक्त-सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी विभागीय सचिव के साथ रह कर अथवा मिलकर बहुत कुछ समान भाव से काम करनेवाला। ज्वाइन्ट सेक्रेटरी।

संयुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ आवर्तकीलता। २ एक छन्द का नाम।

संयुग [संज्ञा पु.](सं.) १-मेल। संयोग। मिलाप २-भिड़ना। ३-युद्ध। लड़ाई।

संयुत [वि.] (सं.) १-जुड़ा या मिला हुआ। बँधा हुआ। २-सम्बद्ध। ३-सहित। साथ। ४-समन्वित। [संज्ञा पु.] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण दो जगण और एक गुरु होता है।

संयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल। मिलान। २-लगाव। सम्बन्ध। ३-दो या कई बातों का अचानक एक साथ होना। इत्तिफाक। ४-स्त्री पुरुष का प्रसंग। सहवास। ५-मतैक्य। ६-दो या अधिक व्यंजनों का मेल। *संयोग से*-बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तिफाक से।

संयोग-पृथक्त्व [संज्ञा पु.](सं.) (न्याय में) ऐसा अलगाव जो नित्य न हो।

संयोगमंत्र, संयोगमन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) विवाह के समय पढ़ा जाने वाला वेदमन्त्र।

संयोगविरुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वे खाद्यपदार्थ जो मिलाकर खाये जाने पर अवगुण करें, अर्थात् रोगों की उत्पत्ति करें।

संयोगित [वि.] (सं.) मेल किया हुआ।

संयोगी [वि.] (हिं.) [स्त्री. संयोगिनी] १-संयोग करने वाला। २-मिलाहुआ। ३-जो अपनी प्रिया के साथ हो। ४-विवाह किया हुआ।

संयोजक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ने या मिलाने वाला। २-व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों अथवा वाक्यों के बीच में उन्हें जोड़ने या मिलाने के लिये आता है। ३-सभा-समिति आदि का वह मुख्य सदस्य जो उसकी बैठकें बुलाने तथा उसके अध्यक्ष के रूप में उसका कार्य चलाने के निमित्त नियुक्त होता है। कन्वीनर।

संयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ने अथवा मिलाने की क्रिया। २-चित्र अङ्कित करने में प्रभाव अथवा मेल लाने के लिये आकृतियों को ठीक स्थान पर बैठाना। जुड़ाना। ३-किसी बड़े राज्य का किसी छोटे राज्य अथवा प्रांत को बलपूर्वक अपने में मिला लेना। एनेक्सेशन।

संयोजना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-व्यवस्था। इन्तजाम २-मेल। मिलान। ३-सहवास। प्रसङ्ग। ४-भवबन्धन का कारण।

संयोजनीय [वि.] (सं.) देखो 'संयोज्य'।

संयोजित [वि.] (सं.) जोड़ा या मिलाया हुआ।

संयोज्य [वि.](सं.) १-सयोजन के योग्य। मिलाने योग्य। २-जो मिला अथवा जोड़ा जानेवाला हो

संयोधकवृक [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

संयोना* [क्रि. स] (हिं.) सजाना।

संरंभ, सरम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ग्रहण करना। पकड़ना। २-आतुरता। आवेग। ३-खलबली ४-उत्कंठा। ५-क्रोध। ६-शोक। ७-गर्व। ऐंठ। ८-फोड़े, घाव आदि का सूजना या लाल होना। ९-अधिकता। १०-आरम्भ। शुरू। ११-एक अस्त्र का नाम।

संरक्त [वि.](सं.) १-अनुरक्त। आसक्त। २-सुन्दर ३-आश्रय देने वाला।

संरक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संरक्षिका] १-देखरेख अथवा रक्षा करने वाला। २-पालन-पोषण कर्त्ता या आश्रय में रखने वाला। पेट्रन ३-देखो 'अभिभावक'।

संरक्षण [संज्ञा पु.](सं.) १-हानि विपत्ति आदि से बचाना। हिफाजत। २-देखरेख। निगरानी। ३-अधिकार। कब्जा। ४-दूसरों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा। प्रोटेक्शन

संरक्षणीय [वि.] (सं.) संरक्षण के योग्य।

संरक्षित [वि.] (सं.) १-सँभालकर अथवा अच्छी प्रकार बचाकर रखा हुआ। २ अपनी देखरेख अथवा संरक्षण में लिया हुआ।

संरक्षितव्य [वि.] (सं.) १-जिसका संरक्षण करना हो। २-जिसका संरक्षण उचित हो।

संरक्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. संरक्षिणी] १-संरक्षण करने वाला। २-देखभाल करने वाला।

संरक्ष्य [वि.] (सं.) १-जिसका संरक्षण करना हो। २-जिसका संरक्षण उचित हो।

संरब्ध [वि.] (सं.) १-खूब जुड़ा या मिला हुआ आश्लिष्ट। २-एक दूसरे को जोर से पकड़े हुए। ३-हाथ में हाथ मिलाये हुए। ४-क्षुब्ध उद्विग्न। ५-उत्तेजित। ६-क्रोध से भरा हुआ। ७-क्रुद्ध। नाराज। ८-सूजा हुआ।

संराग [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनुराग। स्नेह। २-क्रोध। कोप। ३-रक्त।

संराधक [संज्ञा पु.](सं.) पूजा या आराधन करने वाला।

संराधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रसन्न करना। २-पूजा करना। ३-जयजयकार। ४-ध्यान।

संराधनीय [वि.] (सं.) पूजा करने योग्य।

संराव [संज्ञा पु.](सं) १-कोलाहल। २-हलचल। धूम।

संरुग्ण [वि.] (सं.) टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। खंडित।

संरुद्ध [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह रोका हुआ। २-घेरा हुआ। ३-अच्छी तरह बन्द। ४-खूब भरा हुआ। परिपूर्ण। ५-मना किया हुआ। वर्जित।

संरूढ़ [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह चढ़ा हुआ। २-अच्छी तरह जमा या जड़ पकड़ा हुआ। ३-अंकुरित। ४-धृष्ट। प्रगल्भ। ५-प्रौढ़। दृढ़।

संरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

संरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुकावट। रोकटोक। घेरा। २-बन्धन। बेड़ी। ३-प्रक्षेप। फेंकना।

संरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाधा या रुकावट डालना। २-घेरना। ३-हद बाँधना। ४-मूंदना। ५-बन्दी बनाना।

संरोधनीय [वि.] (सं.) रोकने या घेरने योग्य।

संरोध्य [वि.] (सं.) १-जो रोका या घेरा जाने वाला हो। २-जिसे जमाना या लगाना उचित हो।

संरोपण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पेड़ पौधा लगाना। २-घाव सुखाना।

संरोपित [वि.] (सं.) अच्छी तरह लगाया य जमाया हुआ।

संरोप्य [वि.] (सं) १-जो जमाया या लगाया जाने वाला हो। २-जिसे जमाना या लगाना उचित हो।

संरोषित [वि.] (सं.) लीपा या पोता हुआ।

संरोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर छाना या बैठना २-घाव पर पपड़ी जमना। ३-अंकुरित होना ४-प्रकट होना।

संरोहण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर छाना। २-

घाव पर पपड़ी जमना। ३-पेड़, पौधा आदि जमना या लगना।

संलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-निशान लगाने की क्रिया। २-लखना। पहचानना। ताड़ना।

संलक्षित [वि.] (सं.) १-निशाना लगाया हुआ २-पहचाना या ताड़ा हुआ। ३-लक्षणों से जाना हुआ।

संलक्ष्य [वि.] (सं.) जो पहचाना जाय।

संलक्ष्यक्रम-व्यंग्य [संज्ञा पु.] (सं.) साहित्य में व्यंग्य के दो भेदों में से एक। वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित होता है।

संलग्न [वि.] (सं.) [स्त्री. संलग्ना] १-सटा हुआ मिला हुआ। २-सम्बद्ध। ३-किसी दूसरे के साथ अन्त में लगा, जुड़ा या सटा हुआ। अपेन्डेड।

संलपन [संज्ञा पु.] (सं.) इधर-उधर की बातचीत गपशप।

संलय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पक्षियों का उतरना या नीचे बैठना। २-प्रलय। ३-निद्रा। नींद।

संलयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लीन होना। २-पक्षियों का उतरना या नीचे बैठना। ३-नष्ट होना।

संलाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-बातचीत। २-नाटक में धीरतापूर्ण संवाद।

संलापक [संज्ञा पु.] (सं.) १-संलाप। २-एक प्रकार का उपरूपक।

संलिप्त [वि.] (सं.) १-भलीभांति लिप्त। लीन। २-खूब लगा हुआ।

संलीन [वि.](सं.) १-खूब लीन। २-आच्छादित। ३-संकुचित। सिकुड़ा हुआ।

संलेख [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्ण संयम (बौद्ध)। २-वह लेख जो विधिक क्षेत्र में नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रमाणिक माना जाता हो। वैलिड-डीड।

संलोड़न [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह मथना। २-झकझोरना। ३-उथलपुथल करना।

संलोड़ित [वि.] (सं.) १-मथा हुआ। २-झकझोरा हुआ। ३-उथलापुथला हुआ।

संलोभन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'प्रलोभन'।

संवत् [संज्ञा पु.](सं.) १-वर्ष। साल। २-संख्या के विचार से चलने वाली वर्षगणना में से कोई वर्ष। ३-वह वर्षगणना जो महाराज विक्रमादित्य के समय से चली आती है।

संवत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वर्ष। साल। २-शिव।

संवदन [संज्ञा पु.](सं.) १-बातचीत। २-संदेसा। ३-आलोचना। ४-जांच।

संवदना [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-वश में करने की क्रिया। २-किसी को मंत्र औषध आदि से वश में करना।

संवनन [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'संवदन'।

संवनना [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'संवदना'।

सँवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूर करना। २-इन्द्रिय निग्रह। ३-बौद्धों का एक व्रत। ४-बांध। ५-पुल। ६-चुनना या पसन्द करना। ७-कन्या द्वारा वर का चुना जाना।

❀[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्मरण। याद। २-वृतान्त। हाल।

संवरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पसन्द करना। चुनना २-दूर करना। हटाना। ३-समाप्त या अन्त करना। ४-विचार या इच्छा को दबाना। ५-कन्या का विवाह के लिए वर या पति चुनना

संवरणीय [वि.] (सं.) संवरण के योग्य।

सँवरना [क्रि अ.] (हिं.) १-बनना। २-सजना। +[क्रि. स.] (हिं.) याद करना। स्मरण करना।

सँवरा, सँवरिया [वि.] (हिं.) देखो 'साँवला'।

संवर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपनी ओर समेटना। २-भक्षण। ३-खपत। ४-एक दूसरे में समाजाना। ५-गुणनफल।

संवर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छीनना। ले लेना। २-खाजाना। उड़ाजाना।

संवर्त्त [संज्ञा पु] (सं.) १-लपेटने की क्रिया या भाव। २-(शत्रु से) भिड़ना। ३-घुमाव। चक्कर। ४-टिकिया। ५-पिंडी। ६-एक कल्प का नाम। ७-लपेटी या बटोरी हुई वस्तु ८-प्रलयकालीन सात मेघों में से एक। ९-इन्द्र का एक अनुचर मेघ। १०-मेघ। बादल ११-वर्ष। १२-एक दिव्यास्त्र। १३-एक केतु का नाम। १४-ग्रहों का एक योग। १५-बहेड़ा

संवर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लपेटने वाला। २-नाश करने वाला। ३-बलदेव। ४-बड़वानल ५-बहेड़ा। ६-प्रलय नामक मेघ। ७-एक नाग ८-एक ऋषि। ९-प्रलय मेघ की अग्नि।

संवर्त्तकल्प [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धमतानुसार प्रलय का एक भेद।

संवर्त्तकी [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

संवर्त्तकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक केतु का नाम।

संवर्त्तन [संज्ञा पु.](सं.) १-लपेटना। २-चक्कर देना। ३-किसी ओर फिरना। ४-पहुँचना। ५-हल नामक अस्त्र।

संवर्त्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रलय।

संवर्त्तनीय [वि.] (सं.) लपेटने योग्य।

संवर्त्ति, संवर्त्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लपेटी हुई वस्तु। २-बत्ती। ३-कमल का बँधा पत्ता। ४-हल जो बलराम का अस्त्र है।

संवर्त्तित [वि.] (सं) १-लपेटा हुआ। २-फेरा या घुमाया हुआ।

संवर्द्धक, संवर्धक [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़ाने वाला।

संवर्द्धन, संवर्धन [संज्ञा पु.](सं.) १-बढ़ना। २-पालन। पोसना। ३-उन्नत करना।

संवर्द्धनीय, संवर्धनीय [वि.] (सं.) १-बढ़ने या बढ़ाने योग्य। २-पालने-पोसने योग्य।

संवर्द्धित, संवर्धित [वि.](सं.) १-पाला-पोसा हुआ २-बढ़ा या बढ़ाया हुआ।

संवल [संज्ञा पु.] देखो 'संबल'।

संवेलन [संज्ञा पु.](सं.) १-(शत्रु से) भिड़ना। २-मेल। संयोग। ३-मिलावट। मिश्रण।

संवलित [वि.] (सं.) १-(शत्रु से) भिड़ा हुआ। २-मिला हुआ। ३-सहित। ४-घिरा हुआ।

संवसथ [संज्ञा पु.] (सं.) बस्ती। गांव या कस्बा।

संवह [संज्ञा पु.] (सं.) १-ले जाने वाला। २-आकाश के सात मार्गों में से तीसरे मार्ग में रहने वाली वायु। ३-अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

संवहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ले जाना। ढोना। २-दिखाना।

संवाच्य [संज्ञा पु.] (सं.) बातचीत करने अथवा कथा कहने का ढङ्ग।

संवाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंघाड़ा।

संवाद [संज्ञा पु] (सं.) १-बातचीत। वार्त्तालाप २-खबर। समाचार। ३-विवरण। हाल। रिपोर्ट। ४-कथा। प्रसङ्ग। ५-नियति। नियुक्ति ६-सहमति। एक-राय। ७-स्वीकार। रजामंदी

संवादक [संज्ञा पु.](सं.) १-बातचीत करने वाला २-सहमत या एक राय होने वाला। ३-स्वीकार करने वाला। ४-बचाने वाला।

संवादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बातचीत करना। २-सहमत होना। ३-राजी होना। ४-बजाना।

संवाददाता [संज्ञा पु.] (सं) १-समाचार या सम्वाद देने वाला। खबर देने वाला। २-वह जो किसी विशेष स्थान या समाचार लिखकर समाचारपत्र में छपने के लिये भेजता हो। कॉरिस्पान्डेन्ट-रिपोर्टर।

संवादिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कीड़ा। कीट। २-च्यूँटी।

संवादित [वि.](सं.) १-बातचीत में लगाया हुआ। २-राजी किया हुआ।

संवादिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सदस्य। सभा- नता। २-एक मेल का होना।

संवादी [वि.] (सं.)[स्त्री. संवादिनी] १-बातचीत करने वाला। २-सहमत या राजी होने वाला [संज्ञा पु.] सङ्गीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता और सह- यक होता है।

संवार [संज्ञा पु.](सं.) १-आच्छादन। छिपाना। २-शब्दों के उच्चारण में कण्ठ का दबाव। ३-उच्चारण के बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कंठ का आकुञ्चन होता है। ४-बाधा। अड़- चन।

सँवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सँवारने की क्रि भाव। २-हजामत। क्षौरकर्म। ३-एक प्र का शाप या गाली। ❀४-हाल। समाचार।

संवारण [संज्ञा पु] (सं.) १-हटाना । दूर करना २-रोकना । न आने देना । ३-मना करना । ४-छिपाना । ढाँकना ।

संवारणीय [वि.] (सं.) १-हटाने अथवा दूर करने योग्य । २ रोकने योग्य । ३-छिपाने या ढाँकने योग्य ।

सँवारना [क्रि स.] (हिं.) १-सजाना । अलंकृत करना । २-ठीक करना । ३-क्रम से रखना । ४-काम को सुचारु रूप से सम्पन्न करना । बिगड़ी सँवारना-बिगड़ी हुई बात बनाना ।

संवारित [वि.] (सं.) १-रोका हुआ । २-मना किया हुआ । ३-ढाँका हुआ ।

संवार्य [वि] (सं.) १-हटाने योग्य । २-मना करने योग्य । ३-ढाँकने या छिपाने योग्य ।

संवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगन्ध । खुशबू । २- २-श्वांस के साथ मुख से निकलने वाली दुर्गन्ध । ३-सार्वजनिक स्थान । ४-मकान । घर । ५-साथ बसना या रहना । ६-सहवास प्रसङ्ग ।

संवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-लेजाना । ढोना । २-सार्वजनिक बगीचा । ३-बाजार । मण्डी । ४-पीड़न । जुल्म ।

संवाहक [संज्ञा पु.] (सं.) १-लेजाने वाला । २-ढोने वाला । ३-बदन मलने वाला ।

संवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ढोना । २-लेजाना । ३-चलाना । ४-शरीर की मालिश ।

संवाहित [वि.] (सं.) १-ढोया हुआ । २-पहुँचाया हुआ । ३-चलाया हुआ । ४-शरीर पर मालिश कराया हुआ ।

संवाह्य [वि.] (सं.) १-वहन करने योग्य । २-मलने योग्य ।

संविग्न [वि] (सं.) १-उद्विग्न । २-घबराया हुआ ३-भीत । डरा हुआ ।

संविज्ञ [वि.] (सं.) अच्छी तरह से जानने वाला

संविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्णज्ञान । २-सहमति । एकमत । ३-स्वीकृति । मंजूरी ।

संवितिकाफल [संज्ञा पु.] (सं.) संब । संबीफल

संवित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रतिपत्ति । २-एकमत । ३-चेतना । संज्ञा । ४-अनुभव । ५-बुद्धि ।

संवित्पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें दो गावों या प्रदेशों के मध्य किसी बात के लिए मेल की प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो ।

संविद् [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-चेतना । ज्ञानशक्ति । २-बोध । ज्ञान । ३-समझ । बुद्धि । ४-संवेदन । अनुभूति । ५-वृत्तांत । हाल । ६-नाम । संज्ञा । ७-युद्ध । लड़ाई । ८-सम्पत्ति । जायदाद । ९-योग की एक भूमि जिसकी प्राप्ति प्राणायाम से होती है । १०-समझौता । ११-मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया गया हो । १२-युक्ति । उपाय । १३-वृत्तांत । हाल । १४-रीति । प्रथा । १५-नाम । १६-तोषण । तुष्टि । १७-भाँग । १८-युद्ध की ललकार ।

संविद [वि.] (सं.) चेतन । चेतनायुक्त । [संज्ञा पु.] समझौता । वादा ।

संविदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुछ निश्चित शर्तों के आधार पर दो पक्षों में होने वाला समझौता । कन्ट्रैक्ट ।

संविदा-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह कानून जिसमें संविदा या ठेके से संबंध रखने वाले नियमों का विवेचन हो । कन्ट्रैक्ट-डीड ।

संविदा-प्रविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह प्रविधि अथवा कानून जिसमें संविदा या ठेके से सम्बन्ध रखने वाले नियमों का विवेचन हो । लॉ-आफ-कन्ट्रैक्ट ।

संविदा-मंजरी, संविदा-मञ्जरी [संज्ञा स्त्री.](सं.) गाँजा ।

संविदित [वि.] (सं.) १-जानाबूझा हुआ । २-खोजा हुआ । ३-तै पाया हुआ । ४-वादा किया हुआ । ५-समझाया-बुझाया हुआ । उपदिष्ट ।

संविद्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक यूरोपीय दर्शन-सिद्धांत जिसमें वेदांत के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की परमार्थिक सत्ता नहीं स्वीकार की गई है ।

संविधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रहन-सहन । आचार-व्यवहार । २-व्यवस्था । प्रबन्ध ।

संविधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र अथवा संस्था का संघटन, संचालन और व्यवस्था होती है । कान्स्टिट्यूशन । २-व्यवस्था । ३-रीति । ४-रचना । ५-अनुष्ठापन ।

संविधानक [संज्ञा पु.] (सं.) अलौकिक घटना ।

संविधान-परिषद्, संविधान-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह परिषद् या सभा जो किसी देश, जाति या राष्ट्र के राजनैतिक शासन की नियमावली आदि बनाने के लिए संघटित हो कान्स्टिट्यूएन्ट-एसेम्बली ।

संविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विधान रीति । २-व्यवस्था । प्रबन्ध ।

संविधेय [वि.] (सं.) १-जिसका डौल या प्रबन्ध करना हो । २-जिसे करना हो । ३-जिसका प्रबन्ध उचित हो ।

संविभक्त [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह बँधा हुआ । २-सुडौल । ३-प्रदत्त । दिया हुआ ।

संविभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँट । २-साझा ।

संविभाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-बांट । बँटाई । २-प्रदान ।

संविषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस ।

संविष्ट [वि.] (सं.) १-प्राप्त । पहुँचा हुआ । २-विश्राम करता हुआ । ३-निविष्ट । बैठा हुआ ।

संवीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवलोकन । २-अन्वेषण । खोज ।

संवीत [वि] (सं.) १-आवृत । ढका हुआ । २-पहने हुए । ३-कवच धारण किये हुए । ४-रुका हुआ । रुद्ध । ५-अदृश्य । ६-अनदेखा किया हुआ । [संज्ञा पु.] १-पहनना । आच्छादन । २-सफेद कटभी ।

संवीती [वि.] (सं.) जो यज्ञोपवीत पहने हो ।

संवृक्त [वि.](सं.) २-छीना हुआ । २-उड़ाया हुआ

संवृत [वि.] (सं.) ढका हुआ । आच्छादित । २-रक्षित । ३-लपेटा हुआ । ४-दबाया हुआ । ५-(गला) रूँधा हुआ । ६-धीमा किया हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण देवता । २-गुप्त स्थान । ३-एक प्रकार का बेंत ।

संवृतकोष्ठ [संज्ञा पु.] कोष्ठबद्धता ।

संवृतमंत्र, संवृतमन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) गुप्त मंत्रणा

संवृति [संज्ञा स्त्री.](सं.) ढकने या छिपाने की क्रिया

संवृत्त [वि.](सं.) १-पहुँचा हुआ । प्राप्त । २-घटित ३-जो पूरा हुआ हो । ४-उत्पन्न । पैदा । ५-उपस्थित । [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुणदेवता । २-एक नाग का नाम ।

संवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिद्धि । २-एक देवी का नाम ।

संवृद्ध [वि.] (सं.) १-बढ़ा हुआ । २-उन्नत ।

संवृद्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बढ़ने की क्रिया या भाव २-समृद्धि । ३-किसी वस्तु के बाहरी अङ्गों में निरन्तर या बाद में होने वाली वृद्धि । एडीशन

संवेग [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्ण वेग या तेजी । २-उद्विग्नता । घबराहट । ३-भय । सहम । ४-जोर । अतिरेक ।

संवेजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-घबराना । २-डराना । ३-उत्तेजित करना । भड़काना । रोम संवेजन-रोंगटे खड़े होना । नेत्रसंवेजन-जर्राह का पिचकारी लगाना ।

संवेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुख दुःख आदि का जान पड़ना । ज्ञान । बोध ।

संवेदन [संज्ञा पु] (सं.) १-सुख दुःख आदि का अनुभव करना । ज्ञान । ३-जताना । प्रकट करना । ४-नकधिकनी घास ।

संवेदनसूत्र [संज्ञा पु.](सं.) सारे शरीर में फैले हुए तन्तुओं का वह जाल जिससे स्पर्श, शीत, ताप सुख, पीड़ा आदि का अनुभव होता है । स्नायु

संवेदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मन में होने वाला बोध या अनुभव । अनुभूत । २-किसी को कष्ट में देखकर मन में होने वाला दुःख । सहानुभूति ।

संवेदनीय [वि.] (सं.) १-अनुभव योग्य । २-जताने लायक ।

संवेदित [वि.] (सं.) १-अनुभव किया हुआ । २-बताया या जताया हुआ ।

संवेद्य [वि.] (सं.) १-सुख दुःख आदि का अनुभव करने योग्य । २-दूसरे को अनुभव कराने योग्य । स्वसंवेद्य-खुद या अपने ही अनुभव करने योग्य ।

संवेश [संज्ञा पु.] (सं) १-पहुँचना । २-प्रवेश । ३-बैठना । ४-लेटना । सोना । ५-कामशास्त्र में एक रतिबंध । ६-काष्ठासन । पीढ़ा । ७-अग्निदेवता ।

संवेशक [संज्ञा पु] (सं) ठीक ठिकाने से रखने वाला ।

संवेशन [संज्ञा पु] (सं.) १-बैठना । २-सोना । लेटना । ३-समागम । रमण । ४-प्रवेश करना घुसना ।

संवेश्य [वि] (सं) १-लेटने योग्य । २-घुसने योग्य ।

संवेष्ट [संज्ञा पु] (सं.) बेठन ।

संवेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) १-लपेटना । २-घेरना

संव्यवहार [संज्ञा पु] (सं.) १-अच्छा सलूक या व्यवहार । २-लगाव । संसर्ग । ३-मामला प्रसङ्ग । ४-उपयोग । इस्तेमाल । ५-व्यवसायी ६-प्रचलित शब्द ।

संव्यान [संज्ञा पु] (सं) १-उत्तरीय वस्त्र । चादर । २-वस्त्र । कपड़ा ।

[illegible]याप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्त्र । २-ओढ़ना ।

संशप्त [त्रि] (सं) १-जिसे शाप दिया गया हो २-जिसने किसी के साथ प्रतिज्ञा या शपथ खाई हो । वचनबद्ध ।

संशप्तक [संज्ञा पु] (सं) १-वह योद्धा जिसने लड़ाई में शत्रु को मारने रणक्षेत्र से न हटने या बिना सफलता प्राप्त किये न हटने की शपथ खाई हो । २-चुना हुआ योद्धा । ३-सहयोगी योद्धा । ४-वह षड्यन्त्रकारी जिसने किसी की हत्या करने का बीड़ा उठाया हो ।

संशब्द [संज्ञा पु] (सं.) १-ललकार । २-कथन । ३-प्रशंसा ।

संशम [संज्ञा पु] (सं) पूर्णशांति । पूर्णतुष्टि ।

संशमन [संज्ञा पु] (सं.) १-शांत करना । २-नष्ट करना । ३-वह औषध जो दोषों को बिना घटाये बढ़ाये शोधन करे ।

संशमनवर्ग [संज्ञा पु] (सं) संशमन करने वाली औषधियाँ ।

संशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा ज्ञान जिसमें पूरा निश्चय न हो । संदेह । शंका । शुबहा । २-आशङ्का । डर । ३-सन्देह नामक अलंकार

संशयगत [वि] (सं.) खतरे में पड़ा हुआ ।

संशयसम [संज्ञा पु.] (सं) वादी के दृष्टांत को लेकर उसमें साध्य और असाध्य दोनों धर्मों का आरोप करके वादी के साध्य विषय को संदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न (न्यायदर्शन)

संशयस्थ [वि] (सं.) सन्देहयुक्त ।

संशयाक्षेप [संज्ञा पु] (सं.) १-संशय का दूर होना । २-एक काव्यालङ्कार ।

संशयात्मक [वि.] (सं.) जिसमें सन्देह हो । सन्दिग्ध ।

संशयात्मा [संज्ञा पु] (सं) जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करे । सन्देहवादी ।

संशयापन्न [संज्ञा पु] (सं) सन्दिग्ध । अनिश्चयात्मक ।

संशयान, संशयालु [वि] (सं.) विश्वास न करने वाला । बात-बात में सन्देह करने वाला

संशयित [वि.] (सं) १-संशय या दुविधा में पड़ा हुआ । २-सन्दिग्ध ।

संशयिता [संज्ञा पु] (सं) संशय करने वाला ।

संशयी [वि] (हिं) सन्देह करने वाला । शक्की

संशयोपमा [संज्ञा स्त्री.](सं) वह उपमा-अलङ्कार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय रूप में कही जाती है ।

संशयोपेत [त्रि] (सं.) संदिग्ध । अनिश्चय ।

संशरण [संज्ञा पु] (सं.) १-चूर्ण करना । २-तोड़ना । ३-चढ़ाई या आक्रमण का उपक्रम । ४-शरण में जाना ।

संशरुक [वि.] (सं.) १-तोड़ने वाला । २-दलन या मर्दन करने वाला ।

संशासन [संज्ञा पु] (सं.) १-अच्छा शासन । २-आदेश-मन्त्र ।

संशित [वि.](सं) १-सान पर चढ़ाकर तेज किया हुआ । २-तत्पर । उद्यत । आमादा । ३-दक्ष । निपुण । ४-कर्कश । कठोर ।

संशितव्रत [संज्ञा पु] (सं) वह जिसने अपना व्रत पूरा कर डाला हो ।

संशिति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-संशय । सन्देह । २-खूब सान पर चढ़ाना ।

संशिष्ट [वि.] (सं.) बचा हुआ ।

संशित [वि.] (सं) १-ठंडा किया हुआ । २-ठंड से जमा हुआ ।

संशुद्ध [वि.] (सं.) १-शुद्ध किया हुआ । २-(ऋण आदि) चुकाया हुआ । ३-जाँचा हुआ । ४-अपराध से मुक्त किया हुआ ।

संशुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पूरी पवित्रता । २-शरीर की सफाई ।

संशुष्क [वि.](सं.) १-खुश्क । २-नीरस । ३-जो सहृदय न हो । अनुदार ।

संशोधक [संज्ञा पु] (सं.) १-संशोधन करने वाला । २-बुरी से अच्छी दशा में लाने वाला । ३-अदा करने वाला । चुकाने वाला ।

संशोधन [संज्ञा पु.] (सं) १-भूल, दोष आदि दूर करके ठीक या शुद्ध करना । २-सुधारना । ठीक करना । ३-प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाने-बढ़ाने का सुझाव । एमेन्डमेन्ट । ४-ऋण, देना आदि चुकता करना ।

संशोधनवाद [संज्ञा पु.] (सं.) समाजसुधारकों का वह सिद्धांत जिसमें वे वर्त्तमान समाजपद्धति का संशोधन करना चाहते हैं, न कि उसका नाश । रिफार्मिज्म ।

संशोधनीय [वि] (सं) सुधारने या ठीक करने योग्य ।

संशोधित [त्रि.](सं.) जिसका संशोधन हुआ हो । शुद्ध किया हुआ ।

संशोधी [वि.] (सं.) [स्त्री. संशोधिनी] १-सुधारने वाला । २-साफ करने वाला ।

संशोध्य [वि] (सं.) १-सुधारने या ठीक करने योग्य । २-जिसका सुधार करना हो ।

संशोषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-खूब सोखना । २-सुखाना ।

संशोषणीय [वि.] (सं.) सोखने योग्य ।

संशोषित [वि.] (सं.) सोखा हुआ ।

संशोष्य [वि.] (सं.) सोखने योग्य ।

संश्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-(शीत से) ठिठुरा या सिकुड़ा हुआ । २-जमा हुआ ।

संश्रय [संज्ञा पु] (सं.) १-संयोग । मेल । २-सम्बन्ध । समागम । सम्पर्क । ३-आश्रय । पनाह । ४-सहारा । अवलम्ब । ५-शरण-स्थान । ६-घर । ७-उद्देश्य । मतलब । ८-अंग

संश्रयण [संज्ञा पु.] (सं) १-सहारा लेना । २-शरण या पनाह लेना ।

संश्रयणीय [वि.] (सं) १-सहारा लेने योग्य । २-शरण लेने वाला ।

संश्रयी [संज्ञा पु.] (सं.) भृत्य । नौकर । [वि.] १-सहारा लेने वाला । २-शरण लेने वाला ।

संश्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुनना । कान देना । २-स्वीकार । अङ्गीकार । रजामंदी । ३-वादा । प्रतिज्ञा ।

संश्रांत, सश्रान्त [वि.](सं) बिलकुल थका हुआ । शिथिल ।

संश्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुनना । २-स्वीकार

संश्रावक [संज्ञा पु.] (सं) १-सुनने वाला । २-शिष्य । चेला ।

संश्रावित [वि.](सं.) जोर से पढ़कर सुनाया हुआ

संश्राव्य [वि.] (सं.) १-सुनाने योग्य । २-सुनाई [illegible]ने वाला ।

संश्रित [वि] (सं.) १-जुड़ा हुआ । संयुक्त । २-लगा हुआ । संलग्न । ३-टिका या ठहरा हुआ । ४-आलिंगित । ५-भागकर किसी की शरण में गया हुआ । ६-जिसने आश्रय ग्रहण किया हो । ७-आसरे या भरोसे पर रहने वाला । ८-जिसने सेवा स्वीकार की हो । [संज्ञा पु.] सेवक । नौकर ।

संश्लिष्ट [वि.] (सं.) १-जुड़ा या सटा हुआ । २-एक साथ किया हुआ । ३-मिश्रित । सम्मिलित । ४-एक में मिलाया हुआ । ५-आलिंगित । [संज्ञा पु.] (सं.) १-राशि । ढेर । २-एक प्रकार का चँदोवा या मण्डप ।

संश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल । मिलाप । २-सटाव । ३-भेंटना ।

संश्लेषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक में मिलाना । सटाना । २-लगाना । ३-[illegible] या जोड़ने वाली वस्तु । ४-काठ से [illegible]

नियम, सिद्धांत आदि से उनके फल अथवा परिणाम का विचार करना। मिलान मिलाना। सिन्थेसिस।

संश्लेषित [वि.] (सं.) १-जोड़ा या मिलाया हुआ २-लगाया या अटकाया हुआ। ३-आलिंगन किया हुआ।

संश्लेषी [वि.] (सं.) [स्त्री. संश्लेषिणी] १-जोड़ने या मिलाने वाला। २-आलिंगन करने वाला

संस*, संसइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) संशय। आशङ्का।

संसक्त [वि.] (सं.) १-किसी की सीमा के साथ लगा या सटा हुआ। कण्टिगुवस। २-सम्बद्ध ३-(किसी की ओर) अनुरक्त या प्रवृत्त। ४-(किसी विचार अथवा कार्य में) लीन।

संसक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-किसी के साथ सटे अथवा लगे होने का भाव। कंटिगुइटी। २-एक जैसे तत्वों या पदार्थों का आपस में मिल या सटकर एक रूप होना। कोहेशन। ३-लगाव। सम्बन्ध। ४-विशेष अनुराग अथवा आसक्ति। ५-लीनता। ६-प्रवृत्ति।

संसगर+ [वि.] (हिं.) १-जिसमें उपज या पैदावार अधिक हो। उपजाऊ। २-लाभदायक।

संसत्, संसद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सभा। समाज २-राजसभा। दरबार। ३-न्यायसभा। धर्मसभा। अदालत। एक यज्ञ जो चौबीस दिन में सम्पन्न होता है।

संसद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य अथवा शासन संबन्धी कार्यों में सहायता देने तथा पुराने विधानों में संशोधन करने और नये विधान बनाने के लिये प्रजा के प्रतिनिधियों की चुनी हुई सभा। पार्लमेंट।

संसरण [संज्ञा पु.] (सं) १-चलना। २-सेना की अबाध यात्रा। ३-संसार। जगत। ४-रास्ता राजमार्ग। ५-भवचक्र। ६-सराय। धर्मशाला ७-लड़ाई या युद्ध का आरम्भ। ८-वह मार्ग जिससे होकर बहुत दिनों से लोग या पशु आते-जाते हों।

संसर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-साथ या पास रहने से होने वाला सम्बन्ध। लगाव। २-मिलन। मिलाप। ३-सङ्गति। साथ। ४-स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध या सहवास। ५-घपला। ६-वात, पित्त और कफ में से एक साथ दो का प्रकोप। ७-इजमाल। ८-वह बिन्दु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो। ९-परिचय। घनिष्टता।

संसर्गदोष [संज्ञा पु.] (सं) सङ्गत से होने वाली बुराई या दोष।

संसर्गरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने वाले कुछ लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है। २-इस कार्य के निमित्त अलग किया हुआ स्थान। क्वारेण्टाइन।

संसर्गविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) व्यवहार-कुशलता

संसर्गाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसर्ग या संबंध का अभाव। २-न्याय में किसी वस्तु के सम्बन्ध में दूसरी वस्तु का अभाव।

संसर्गी [वि] (सं.) [स्त्री. संसर्गिणी] जिससे अथवा जिसका संसर्ग या लगाव हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मित्र। २-वह जो पैतृक संपत्ति का बँटवारा हो जाने पर भी अपने भाइयों अथवा कुटुम्बियों आदि के साथ रहता हो। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुद्धि। सफाई।

संसर्जन [संज्ञा पु.] (सं) १-मिलना। २-सम्बद्ध होना। ३-अपनी ओर मिलाना। ४-छोड़ना। हटाना।

संसर्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरकना। रेंगना। २-खिसकना। ३-वह अधिक-मास जो क्षयमास वाले वर्ष में होता है।

संसर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेंगना। सरकना। २-खिसकना। ३-चढ़ना। ४-सहसा आक्रमण।

संसर्पी [वि.] (सं.) [स्त्री. संसर्पिणी] १-सरकने या रेंगने वाला। २-संचार करने वाला। ३-पानी के ऊपर तैरने वाला।

संसा* [संज्ञा पु.] (हि.) संशय।

संसाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोष्ठी। जमावड़ा। २-सभा। मंडली। समाज।

संसादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एकत्र करना। २-क्रमबद्ध करना।

संसादित [वि.] (सं.) १-एकत्रित। जुटाया हुआ। २-तरतीब दिया हुआ।

संसाधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्पन्न करने वाला। अंजाम देने वाला। २-वश में करने वाला।

संसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूरा करना। अंजाम देना। २-तैयारी। आयोजन। ३-जीतना। वश में करना।

संसाधनीय [वि.] (सं.) १-साधन के योग्य। २-जीतने योग्य।

संसाध्य [वि.] (सं.) १-करने योग्य। २-जिसे वश में करना हो। ३-दमन करने योग्य। ४-पूरा करने योग्य।

संसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-जगत्। दुनिया। २-मर्त्यलोक। ३-घर। ४-आवागमन। भवचक्र ५-निरन्तर एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना। ६-मायाजाल। ७-विद्‍खदिर।

संसारगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार को उपदेश देने वाला। २-कामदेव।

संसारचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बारबार जन्म लेने की परम्परा। २-मायाजाल। ३-जगत् की दशा का उलट-फेर।

संसारण [संज्ञा पु] (सं) चलाना। सरकाना।

संसारतिलक [संज्ञा पु](सं) एक प्रकार का बढ़िया चावल।

संसार-पथ [संज्ञा पु.] (सं) १-संसार में प्रवेश करने का मार्ग। २-स्त्रियों की जननेंद्रिय।

संसार-भावन [संज्ञा पु.](सं.) संसार को दुःखमय समझना।

संसारमंडल, संसारमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) भूमण्डल।

संसार-मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) संसार-पथ।

संसार-यात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीवन का निर्वाह या यापन। २-जीवन। जिन्दगी

संसार-सागर [संज्ञा पु.] (सं.) संसार रूपी सागर

संसारसारथि [संज्ञा पु.] (सं.) १-संसार रूपी पथ को पार करने वाला। २-शिव।

संसारी [वि.](हिं.) [स्त्री. संसारिणी] १-संसार-संबंधी। लौकिक। २-संसार के झगड़ों में फँसा-हुआ। ३-लोक व्यवहार में कुशल। दुनियादार। ४-बारबार जन्म ग्रहण करने वाला।

संसिक्त [वि.](सं.) अच्छी तरह सींचा हुआ।

संसिद्ध [वि.](सं.) १-भलीभांति किया हुआ। २-प्राप्त। ३-अच्छी तरह पका हुआ (भोजन)। ४-चङ्गा। स्वस्थ। ५-तैयार। उद्यत। ६-कुशल निपुण। ७-जिसका योग सिद्ध हो गया हो। मुक्त।

संसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी काम का अच्छी तरह पूरा होना। २-सफलता। ३-स्वस्थता। ४-पकना। ५-सीझना। ६-मोक्ष। मुक्ति। ७-परिणाम। ८-पक्की या निश्चित बात ९-निसर्ग। प्रकृति। १०-स्वभाव। आदत। ११-मदमस्त स्त्री।

संसी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सँड़सी'।

संसुप्त [वि.] (सं.) अच्छी तरह से सोया हुआ।

संसूचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकट करने वाला। जताने वाला। २-भेद खोलने वाला। ३-डाँटने-डपटने वाला। ४-समझाने-बुझाने वाला।

संसूचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रकट करना। जताना २-बात खोलना। ३-कहना-सुनना। डांटना फटकारना।

संसूचित [वि.] (सं.) १-प्रकट किया हुआ। २-डांटा-डपटा हुआ।

संसूची [वि.] (सं) [स्त्री. संसूचिनी] १-प्रकट करने वाला। २-जताने वाला। ३-भला-बुरा कहने वाला।

संसूच्य [वि.] (सं.) १-प्रकट करने योग्य। २-जताने योग्य। ३-भला-बुरा कहने योग्य।

संसृति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-संसार। जगत। २-आवागमन। भवचक्र।

संसृष्ट [वि.] (सं) १-एक साथ उत्पन्न। २-मिश्रित। संश्लिष्ट। ३-संबद्ध। ४-अंतर्गत। शामिल। ५-बहुत परिचित। ६-बनाया हुआ ७-वमन आदि द्वारा शुद्ध किया हुआ। ८-संगृहीत। [संज्ञा पु] १-घनिष्टता। २-पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

संसृष्टत्व [संज्ञा पु] (सं) संसृष्ट होने का भाव २-संपत्ति का विभाजन हो जाने के पश्चात् फिर एक में होना।

संसृष्टहोम [संज्ञा पु] (सं) अग्नि तथा सूर्य की एक में मिली हुई आहुति।

संसृष्टि [संज्ञा स्त्री] (सं) १-एक साथ उत्पत्ति। २-मिश्रण। ३-परस्पर सम्बन्ध। लगाव। ४-हेलमेल। घनिष्टता। ५-संयोजन। रचना। ६-संग्रह। एकत्र करना। ७-एक ही श्लोक में दो या तीन अलंकारों का रहना।

संसेक [संज्ञा पु] (सं) अच्छी तरह पानी का छिड़काव।

संसेवक [संज्ञा पु.] (सं) १-नौकरी बजाना। २-खूब इस्तेमाल करना।

संस्करण [संज्ञा पु] (सं) १-ठीक या दुरुस्त करना। संस्कार करना। २-पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति। एडिशन। ३-परिष्कृत करना। ४-द्विजातियों के लिए विहित संस्कार करना।

संस्कर्त्ता [संज्ञा पु] (सं) संस्कार करने वाला।

संस्कार [संज्ञा पु] (सं) १-दोष आदि दूर करके ठीक करना। सुधार। दुरुस्ती। २-पूर्व जन्म, कुल मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता आदि का मन पर पड़ने वाला प्रभाव। ३-हिंदुओं में धार्मिक दृष्टि से शुद्ध और उन्नत करने के लिए होने वाले १६ विशिष्ट कृत्य। ४-मन, रुचि, आचार-विचार आदि को परिष्कृत तथा उन्नत करने का कार्य। कलचर। ५-मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया।

संस्कारक [संज्ञा पु] (सं) १-संस्कार करने वाला २-शुद्ध करने वाला।

संस्कारवर्जित [वि] (सं) (वह व्यक्ति) जिसका संस्कार न हुआ हो।

संस्कारहीन [वि] (सं) जिसका संस्कार न हुआ हो।

संस्कारी [वि] (हि) १-संस्कार वाला। २-एक छन्द जिसमे सोलह मात्राएँ होती हैं।

संस्कार्य [वि] (सं) १-संस्कार के योग्य। २-जिसकी सफाई या सुधार करना हो।

संस्कृत [वि] (सं) १-जिसका संस्कार हुआ हो। २-शुद्ध किया हुआ। ३-सँवारा हुआ। परमार्जित। ४-सुधार या ठीक किया हुआ। ५-पकाया हुआ। ६-जिसका उपनयन संस्कार हुआ हो।
[संज्ञा स्त्री.] (सं) भारतीय आर्यों की प्राचीन प्रसिद्ध भाषा। देववाणी।

संस्कृति [संज्ञा स्त्री] (सं) १-शुद्धि। सफाई। २-सुधार। संस्कार। ३-किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं। कलचर।

संस्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संस्कार। संस्कृति।

संस्खलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गिरना। च्युत होना २-भूल करना। चूकना।

संस्खलित [वि.] (सं.) १-गिरा हुआ। च्युत। २-भूला हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) भूल-चूक।

संस्तंभ, संस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-गति का साहसी अवरोध। २-निश्चेष्टता। ३-लकवा। ४-दृढ़ता। ५-हट। टेक। ६-आधार। सहारा

संस्तंभन, संस्तम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गति का सहसा रुकना। २-निश्चेष्ट करना। ३-बन्द करना। ४-सहारा देना।

संस्तब्ध [वि.] (सं) १-सहसा रुका हुआ। २-भौचक्का। ठक। ३-सहारा दिया हुआ।

संस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तह। पहल। २-छप्पर। घासफूस का छाजन। ३-तृणशय्या। ४-बिस्तर। शय्या। [वि.] (सं.) छितराया हुआ

संस्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिछाना। फैलाना। २-छितराना। बिखेरना। ३-तह चढ़ाना। परत फैलाना। ४-बिस्तर। शय्या।

संस्तव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशंसा। २-जिक्र। उल्लेख। ३-परिचय। जान-पहचान।

संस्तवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशंसा करना। २-यश गाना।

संस्तार [संज्ञा पु.] (सं.) १-तह। पहल। २-बिस्तर। शैय्या। ३-एक यज्ञ का नाम।

संस्ताव [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशंसा। २-एक स्वर से मिलकर गाना। ३-यज्ञ में स्तुति करने वाले ब्राह्मणों की अवस्थान भूमि। ४-परिचय। जान-पहचान।

संस्तीर्ण [वि.] (सं.) १-पसारा या फैलाया हुआ। २-बिखराया या छितराया हुआ।

संस्तुत [वि.] (सं.) १-जिसकी खूब स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २-परिचित। ३-ऐकमत्य।

संस्त्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-आघात। समूह। २-प्रसार। फैलाव। ३-घर। आवासस्थल। ४-परिचय।

संस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वदेशवासी। २-चर। दूत। [वि.] १-ठहराऊ। २-अचल। स्थिर। ३-समाप्त।

संस्थगन [संज्ञा पु.] (सं.) अनिश्चत समय के लिए बैठक को स्थगित करना। प्रॉगेशन।

संस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २-व्यवस्था। बँधा नियम। विधि। ३-मर्यादा। ४-अभिव्यक्ति। प्रकाश। ५-जत्था। गिरोह। ६-यज्ञ का मुख्य अङ्ग। ७-किसी धार्मिक, सामाजिक अथवा लोकोपकारी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिए सङ्गठित समाज या मण्डल। इन्स्टिट्यूशन। ८-किसी कार्यालय या विभाग में कार्य करने वाले सब लोगों का समूह या वर्ग। अधिष्ठान। एस्टैब्लिशमेन्ट। ९-राजनैतिक अथवा सामाजिक जीवन सम्बन्धी कोई नियम, विधान अथवा परम्परागत प्रथा। इन्स्टिट्यूशन।

संस्थागार-ज्ञाता, संस्थागार-विद् [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो संसद्-सम्बन्धी मामलों में चतुर हो।

संस्थागार-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'संसद्'

संस्थागारिक [संज्ञा पु] (सं.) संस्थागार-सभा या संसद्-सम्बन्धी।

संस्थाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापार का निरीक्षक। व्यापाराध्यक्ष।

संस्थान [संज्ञा पु.] (सं) १-ठहराव। स्थिति। २-बैठाना। स्थापना। ३-अस्तित्व। ४-पूरा अनुसरण। ५-देश। ६-सर्व-साधारण के इकट्ठे होने का स्थान। ७-किसी राज्य में की जागीर आदि। एस्टेट। ८-साहित्य, विज्ञान, कला आदि के उन्नति के लिए स्थापित समाज। इन्स्टिट्यूशन। ९-प्रबन्ध। व्यवस्था। १०-रूप। आकृति। ११-प्रकृति। स्वभाव। १२-चौराहा। १३-ढाँचा। डौल। १४-पड़ोस।

संस्थापक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संस्थापिका] १-स्थापित करने वाला। २-प्रवर्त्तक। ३-कोई सभा, समाज या सर्व-साधारण के उपयोगी कार्य खोलने वाला। ४-रूप या आकार देने वाला।

संस्थापन [संज्ञा पु] (सं) १-अच्छी तरह जमाकर बैठाना, लगाना या खड़ा करना। २-मंडली, संस्था आदि बनाना। ३ कोई नई बात चलाना ४-रूप या आकार देना।

संस्थापनीय [वि] (सं.) संस्थापन के योग्य।

संस्थापित [वि.] (सं.) संस्थापन किया हुआ।

संस्थाप्य [वि] (सं.) १-संस्थापन के योग्य। २-जिसका संस्थापन करना हो।

संस्थित [वि] (सं) १-उठाया हुआ। खड़ा। २-ठहरा या टिका हुआ। ३-बैठा या जमा हुआ। ४-निर्मित। ५-समाप्त। खतम। ६-मृत। मरा हुआ। ७-ढेर लगाया हुआ। बटोरा हुआ।

संस्थिति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-खड़े होने की क्रिया या भाव। २-ठहराव। जमाव। ३-बैठने की क्रिया या भाव। ४-ज्यों का त्यों रहने का भाव। ५-दृढ़ता। धीरता। ६-अस्तित्व। ७-रूप। आकृति। ८-व्यवस्था। ९-गुण। १०-प्रकृति। स्वभाव। ११-समाप्ति। १२-मृत्यु। मरण। १३-कोष्ठबद्धता। १४-राशि। ढेर।

संस्पर्द्धा, संस्पर्धा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-किसी के बराबर होने की प्रबल इच्छा। २-ईर्ष्या। डाह

संस्पर्द्धी, संस्पर्धी [वि.] (सं) [स्त्री. स्पर्द्धिनी] १-बराबरी की इच्छा करने वाला। २-ईर्ष्यालु

संस्पर्श [संज्ञा पु.] (सं) १-छुआव। लगाव। २-इन्द्रियों का विषय ग्रहण।

संस्पर्शन [संज्ञा पु] (सं) छूना। २-सटना। मिलना।

संस्पर्शा [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्रकार का सुगन्ध

युक्त पौधा।

संस्पर्शी [वि] (सं.) स्पर्श करने वाला।

संस्पृष्ट [वि.] (सं.) १-छूआ हुआ। २-सटा या मिला हुआ। ३-जुड़ा हुआ।

संस्फाल [संज्ञा पु.] (सं.) भेड़। मेष।

संस्फुट [वि.] (सं.) विकसित।

संस्फेट, संस्फोट [संज्ञा पु.](सं.) युद्ध। लड़ाई।

संस्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्मरण। खूब याद। २-अच्छी तरह सुमरना या नाम लेना। ३-संस्कारजन्य ज्ञान। ४-किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटनाएं या उनका उल्लेख। रिमिनिसेन्सेज।

संस्मरणीय [वि.](सं.) १-पूर्ण स्मरण करने योग्य २-महत्त्व का। ३-नाम जपने योग्य। ४-अतीत

संस्मारक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संस्मारिका] स्मरण कराने वाला।

संस्मारण [संज्ञा पु](सं.) १-स्मरण कराना। २-गिनना।

संस्मारित [वि.] (सं.) १-स्मरण कराया हुआ। २-याद किया हुआ।

संस्मृत [वि.] (सं.) स्मरण या याद किया हुआ।

संस्मृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूरी याद या स्मृति।

संस्रव [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संस्रवा] १-एक साथ बहना। २-पूरा बहाव। ३-बहती हुई वस्तु। ४-बहता हुआ जल। ५-एक प्रकार का पिंडदान। ६-किसी वस्तु का नोचा हुआ अंश। ७-चूना। झरना।

संस्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहना। २-झरना। चूना। यौ०-गर्भ-संस्रवण-गर्भ गिरना।

संस्रष्टा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) [स्त्री. संस्रष्ट्री] १-आयोजन करने वाला। २-मिलाने-जुलाने वाला। ३-रचने वाला। बनाने वाला। ४-भिड़ने वाला।

संस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहाव। २-मवाद या पीप का इकट्ठा होना। ३-तलछट।

संस्रावण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहाना। प्रवाहित करना। २-बहना। ३-चूना। टपकना।

संस्रावित [वि.] (सं.) १-बहाया हुआ। २-टपका हुआ।

संस्राव्य [वि.] (सं.) १-बहाने या टपकाने योग्य २-जिसे बहाना या टपकाना हो।

संस्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) स्वेद। पसीना।

संस्वेदज [वि.] (सं.) पसीने से उत्पन्न।

संहंता, संहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. संहंत्री] मारने या वध करने वाला।

संहत [वि.] (सं.) १-खूब मिला, जुड़ा या सटा हुआ। २-एक में मिला हुआ। ३-संयुक्त। सहित। ४-जो मिल कर ठोस हो गया हो। कड़ा। सख्त। ५-गठा हुआ। घना। ६-दृढ़ांग मजबूत। ७-एकत्र। ८-मिश्रित। मिला हुआ। ९-आहत। घायल। [संज्ञा पु] नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

संहतकुलीन [वि.] (सं.) सम्मिलित परिवार का।

संहतजानु [वि] (सं.) घुटने मिलाये या सटाये हुए।

संहतपत्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोआ। शतपुष्पा।

संहतबल [संज्ञा पु.] (सं.) संघटित सेना।

संहतांग, संहताङ्ग [वि.] (सं.) दृढ़ांग। मजबूत।

संहतांजलि, संहताञ्जलि [वि.] (सं.) हाथ जोड़े हुए। करबद्ध।

संहताख्य [संज्ञा पु.] (सं.) पवमान नामक अग्नि

संहति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिलान। मेल। २-इकट्ठा होने की क्रिया या भाव। ३-राशि। ढेर। ४-समूह। झुण्ड। ५-घनता। ठोसपन

संहतिपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोआ। शतपुष्पा।

संहनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जोड़ना। २-खूब मिलाकर घना या ठोस करना। ३-बध। मार डालना। ४-मेल-मिलावट। ५-दृढ़ता। ६-पुष्टता। ७-शरीर। देह। ८-कवच। ९-मालिश।

संहरण [संज्ञा प.](सं) १-बटोरना। संग्रह करना २-गूंथना। एक साथ बाँधना। ३-छीनना। ४-संहार करना। ५-प्रलय।

संहरना* [क्रि. अ.] (हिं.) नष्ट होना। संहार होना। [क्रि. स.] (हिं.) संहार करना।

संहर्त्ता [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. संहर्त्री] १-बटोरने या समेटने वाला। २-बध करने वाला। ३-नाश करने वाला।

संहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुलक। २-भय से रोंगटे खड़े होना। ३-स्पर्धा। होड़। ४-ईर्ष्या डाह। ५-रगड़। सङ्घर्ष। ६-शरीर की मालिश

संहर्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुलकित होना। २-स्पर्धा। होड़। [वि.] (सं.) [स्त्री. संहर्षिणी] पुलकित करने वाला।

संहर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पित्तपापड़ा।

संहर्षित [वि.] (सं.) पुलकित।

संहर्षी [वि.] (सं.) १-पुलकित होने या करने वाला। २-स्पर्द्धा या ईर्ष्या करने वाला।

संहात [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'सङ्घात'। २-शिव के एक गण का नाम। ३-एक नरक का नाम।

संहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-इकट्ठा करना। समेटना २-सङ्कोच। सिकुड़ना। ३-समेटकर बाँधना (बाल)। गूंथना। ४-छोड़ा हुआ बाण फिर अपनी ओर लौटाना। ५-नाश। ध्वंस। ६-(युद्ध आदि में) मार डालना। ७-प्रलय। ८-परिवार। रोक। ९-एक नरक का नाम।

संहारक [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री संहारिका] १-संहार या नाश करने वाला। २-संग्रहकर्त्ता

संहारकारी [वि.] (सं.) [स्त्री संहारकारिणी] संहार या नाश करने वाला।

संहारकाल [संज्ञा पु.] (सं.) विश्व के नाश का समय। प्रलयकाल।

संहारना* [क्रि. स] (हि) १-मार डालना। २-नाश करना।

संहारभैरव [संज्ञा पु.] (सं) कालभैरव।

संहारमुद्रा [संज्ञा स्त्री] (सं) तांत्रिकपूजन में अङ्गों की एक प्रकार की स्थिति।

संहारिक [वि] (सं.) संहार करने वाला।

संहार्य [वि.] (सं.) १-संग्रह करने योग्य। २-हटाने लायक। जिसे लेजाना हो। ३-रोकने योग्य। ४-जिसे रोकना हो। ५-स्थानांतरित करने योग्य।

संहित [वि.] (सं.) १-समेटा या बटोरा हुआ। २-सम्मिलित। ३-सम्बद्ध। ४-संयुक्त। सहित ५-मेल में आया हुआ।

संहितपुष्पिका [संज्ञा स्त्री](सं.) १-सोआ नामक साग। २-धनिया।

संहिता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-संहित या मिले हुए होने का भाव। २-मेल। मिलावट। ३-व्याकरण में सन्धि। ४-वह ग्रन्थ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। ५-वेदों का भाग। मुख्य वेद। ६-अधिकारियों द्वारा किया हुआ नियमों, विधियों आदि का संग्रह। कोड।

संहृत [वि.] (सं.) १-समेटा हुआ। २-संगृहीत। ३-नष्ट। ध्वस्त। ४-समाप्त। ५-निवारित।

संहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बटोरने या समेटने की क्रिया। २-संग्रह। ३-नाश। ४-प्रलय। ५-समाप्ति। ६-रोक। परिहार। ७-संक्षेप। खुलासा। ८-हरण। छीनना।

संहृष्ट [वि.] (सं.) १-उमङ्ग से खड़े हुए (रोएं)। पुलकित। २-जिसके भय से रोंगटे खड़े हों। डरा हुआ।

संह्राद [संज्ञा पु.](सं.) १-ऊँचा स्वर। कोलाहल २-एक दैत्य जो हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

संह्रादन [संज्ञा पु.] (सं.) चीखना। चिल्लाना।

स [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-शिव। ३-सर्प ४-पक्षी। ५-वायु। ६-जीवात्मा। ७-चन्द्रमा ८-भृगु। ९-कांति। चमक। १०-ज्ञान। ११-चिंता। १२-सड़क। १३-संगीत में षड्ज स्वर सूचक अक्षर। १४-छन्दशास्त्र में 'सगण' शब्द का संक्षिप्त रूप।

सइ* [अव्य.] (हिं.) से। साथ।

सइअन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सहिजन।

सइन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नासूर।

सइना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सेना। फौज।

सइयो*+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सखी। सहेली।

सइल+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाड़ी के कँधावर में लगाई जाने वाली खूंटी या गुल्ली। घुल्ला।

सइयर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) शैवाल। सेवार।

सई* [संज्ञा स्त्री.] (?) वृद्धि। बरकत। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) माल खींचने की गून को कड़ा करने की क्रिया। [संज्ञा स्त्री.] (अ.)

प्रयत्न । कोशिश ।

सईकंटा [संज्ञा पु] (?) वृक्ष विशेष ।

सईल [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'सइल' ।

सईस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'साईस' ।

सउँ * [अव्य.] (हिं.) देखो 'सौं' ।

सउख+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शौक' ।

सउजा+ [संज्ञा पु.] (हिं) शिकार । साउज ।

सउत+ [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'सौत' ।

सउतेला+ [वि.] (हिं.) देखो 'सौतेला' ।

सऊर [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शऊर' ।

सऋक्ष [वि.] (सं.) नक्षत्रसहित ।

सकंकूर [संज्ञा पु.] (हिं) गोह की तरह का एक जन्तु ।

सकंटक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-करंज वृक्ष । २-शैवाल । सेवार ।

सक*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साका । धाक । २-देखो 'शक' । ३-देखो 'शक्ति' या 'सकत' ।

सकट [संज्ञा पु] (हि) गाड़ी । छकड़ा । शकट । (सं.) शाखोट नामक वृक्ष ।

सकटान्न [संज्ञा पु.] (सं.) अशुद्ध अन्न ।

सकटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-गाड़ी । २-छोटा सग्गड़ ।

सकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सकरी' ।

सकत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बल । शक्ति । २-धन-सम्पत्ति । * [क्रि. वि.] (हिं.) जहाँ तक हो सके । यथाशक्ति ।

सकता [संज्ञा पु.] (हि) १-बेहोशी या उसकी बीमारी । २-स्तब्धता । भौचक्कापन । ३-कविता में विराम । यति-भङ्ग का दोष । *सकता पड़ना*-छन्द में यतिभङ्ग दोष होना ।

सकती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शक्ति । बल । २-शक्ति नामक अस्त्र ।

सकन [संज्ञा पु.] (देश.) लता कस्तूरी ।

सकना [क्रि. अ.](हि.) कोई कार्य करने में समर्थ होना । करने योग्य ।

सकपकाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'चकपकाना' ।

सकरकंदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शकरकंद' ।

सकरकन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शकरकंद' ।

सकरखंडी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खाँड । शक्कर ।

सकरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-स्वीकृत होना । २-कबूल जाना ।

सकरपाला [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शकरपारा' ।

सकरा [वि.] (हिं.) देखो 'सँकरा' ।

सकरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लाल शकरकन्द ।

सकरुंड [संज्ञा पु.] (गुज.) एक प्रकार का वृक्ष ।

सकरुण [वि.] (सं) दयाशील । जिसे करुणा हो

सकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सुनता हो । [वि.] कान वाला ।

सकर्याक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

सकर्मक [वि] (सं.) १-व्याकरण में कर्म संयुक्त २-काम में लगा हुआ ।

सकर्मक क्रिया [संज्ञा स्त्री](सं.)व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो ।

सकल [वि.](सं.) सब कुल । समस्त । [संज्ञा पु.] १-रोहिस घास । २-निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण प्रकृति । ३-पशु ।

सकलकल [वि.] (सं.) सोलह कलाओं से युक्त ।

सकलखोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सकरखोरा' (पक्षी) ।

सकलजननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रकृति ।

सकलप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सब को प्रिय हो । २-चना । चणक ।

सकललक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) धूना । राल ।

सकलसिद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे सब सिद्धियाँ प्राप्त हों ।

सकलसिद्धिदा [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के अनुसार एक भैरवी का नाम ।

सकलात [संज्ञा पु.] (?) १-ओढने की रजाई । दुलाई । २-भेंट । उपहार । सौगात । ३-मखमली कपड़ा ।

सकलाधार [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

सकली [संज्ञा स्त्री] (डिं.) मछली ।

सकलेंदु, सकलेन्दु [संज्ञा पु.] (सं) पूर्णिमा का चांद ।

सकलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु ।

सकवा+ [संज्ञा पु] (हिं.) शाल ।

सकस [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शख्स' ।

सकसकाना* [क्रि. अ.] (हिं.) डर से काँपना ।

सकसना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-डरना । भयभीत होना । २-अड़ना । ३-फँसना ।

सका+ [संज्ञा पु](अ.) १-पानी भरने वाला । २-वह जो पीठ पर मशक लादकर लोगों को घूम घूमकर पानी पिलाता हो ।

सकाकुल [संज्ञा पु.](?) १-एक प्रकार का कन्द । २-एक प्रकार की शतावर । ३ शकाकुल मिस्री

सकाकुलमिस्री [संज्ञा स्त्री.] (?) अम्बरकन्द ।

सकाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-शङ्का या सन्देह करना । २-हिचकना । ३-दुखी होना । [क्रि. स.] (हिं.) 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप ।

सकाम [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जिसके मन में कोई कामना या वासना हो । २-लब्धकाम । ३-कामुक । ४-वह जो फल की इच्छा से कार्य करे । ५-प्रेम करने वाला ।

सकामनिर्जरा [संज्ञा स्त्री] (सं.) जैनमतानुसार चित्त की वदवृत्ति ।

सकामा [संज्ञा स्त्री.](सं.) कामवती । काम-पीड़ित

सकामी [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जिसे किसी प्रकार की कामना हो । २-कामी । विषयी ।

सकार [संज्ञा पु.](सं.)१-'स' अक्षर । २-'स' वर्ण की सी ध्वनि ।

सकारना [क्रि अ.] (हि) १-स्वीकार करना । २-महाजन का अपने नाम पर आई हुण्डी मान्य करना । ऑनर-ए-बिल ऑर ड्राफ्ट ।

सकार-विपुला [संज्ञा स्त्री](सं.) एक छन्द का नाम

सकारा [संज्ञा पु.] (हिं.) महाजनी में वह धन जो हुण्डी सकारने और उसका समय फिर से बढ़ाने के लिए लिया जाता है ।

सकारे, सकारौ+ [वि.] (हि.) १-सवेरे । तड़के । २-शीघ्र । जल्दी ।

सक़ालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-गरिष्ठता । २-गुरुता । भारीपन ।

सकाश [अव्य.] (सं.) पास । निकट । समीप ।

सकिलना+ [क्रि. अ.] (हि.) १-फिसलना । सरकना । २-सिमटना । ३-पूरा होना ।

सकीन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जन्तु ।

सक़ील [वि. अ.] (हिं) १-गरिष्ठ । गुरुपाक । २-भारी । वज़नी ।

सकुच* [संज्ञा उभय.] (सं) सङ्कोच । लाज । शर्म ।

सकुचना [क्रि. अ] (हिं) १-सङ्कोच करना । २ (फूलों का) बन्द होना ।

सकुचाई* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सङ्कोच ।

सकुचाना [क्रि. अ.] (हिं.) सङ्कोच करना । [क्रि. स.] १-संकुचित करना । सिकोड़ना । २-लज्जित करना ।

सकुची [संज्ञा स्त्री.] (हिं) कछुवे के आकार की एक प्रकार की मछली ।

सकुचीला [वि.] (हिं) सङ्कोच करने वाला । शरमीला ।

सकुचीली (हिं.) लाजवन्ती ।

सकुचौंहा [वि] (हि) सङ्कोच करने वाला ।

सकुड़ना [क्रि. अ.] (हि) देखो 'सिकुड़ना' ।

सकुन* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पक्षी । चिड़िया । २-देखो 'शकुन' ।

सकुनी* [संज्ञा स्त्री.] (हि) पखेरू । पक्षी ।

सकुपना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सकोपना' ।

सकुरुंड [संज्ञा पु.] (गुज.) साकुरुंड नामक वृक्ष

सकुल [संज्ञा पु.](सं.) उत्तम कुल । अच्छा खानदान । [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सकुची' ।

सकुलज [वि] (सं.) एक ही कुल में उत्पन्न ।

सकुला [संज्ञा पु.] (हिं.) बौद्धभिक्षुओं का

सकुलादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गरेठी । २-कुटकी ।

सकुली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'सकुची' ।

सकुल्य [संज्ञा पु] (सं) सगोत्र ।

सकूतरा [संज्ञा पु.] (सं) एक द्वीप का नाम । यह अफरीका के पूर्वीतट के समीप सागर में है ।

सकूनत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) निवास स्थान। पता।

सकृत् [अव्य.] (सं.) १-एक बार। २-सदा। ३-साथ। [संज्ञा पु.] १-पशुओं का मल। २-काक। कौआ।

सकृत्प्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसके एक ही बच्चा हो। २-काक। कौआ।

सकृत्प्रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बांझपन। २-शेरनी।

सकृत्फल [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो केवल एक ही बार फलता हो।

सकृत्फला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक बार फलने वाली। २-कदली। केला।

सकृत्सू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसने अभी बच्चा प्रसव किया हो।

सकृद्गर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) खच्चर। अश्वतर।

सकृद्ग्रह [संज्ञा पु] (सं.) १-एक प्राचीन देश। २-इसका निवासी।

सकृद्दर्शन [अव्य.] (सं.) १-देखने पर तुरन्त। २-ऊपर से देखने पर। *प्राइमा-फेसी*।

सकृद्वीर [संज्ञा पु.] (सं.) अकलवीर नामक वृक्ष।

सकृन्नंदा, सकृन्नन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

सकेत* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'संकेत'। २-दुःख कष्ट। [वि.] संकुचित। संकीर्ण।

सकेतना* [क्रि. अ] (हिं.) संकुचित होना। सिकुड़ना।

सकेती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विपत्ति। कष्ट। आपत्ति।

सकेलंग [संज्ञा पु.] (अं. *सल्किंग*) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष।

सकेलना+ [क्रि. स.] (हिं.) इकट्ठा करना।

सकेला [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार की तलवार ७ [संज्ञा पु.] (अ.) एक प्रकार का लोहा।

सकोच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संकोच'।

सकोचना* [क्रि. स.] (हिं.) संकुचित करना।

सकोड़ना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सिकोड़ना'।

सकोतरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'चकोतरा'।

सकोपना* [क्रि. अ.] (हिं.) क्रोध या गुस्सा करना।

सकोपित [वि.] (हिं.) कुपित। क्रुद्ध।

सकोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सकोरी] मिट्टी का छोटा प्याला। कसोरा।

सक्करी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) 'शक्करी' नामक छन्द।

सक्का [संज्ञा पु.] (सं.) भिश्ती। सका।

सक्त [वि.] (सं.) १-देखो 'आसक्त'। २-मिला-हुआ।

सक्तचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह राष्ट्र जो चारों ओर शक्तिशाली राष्ट्रों से घिरा हो।

सक्तमूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब करने वाला व्यक्ति (चरक)।

सक्तसामंत, सक्तसामन्त [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राम समूह का जमींदार जो उसका सामन्त कहलाता था।

सक्ति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शक्ति'।

सक्तु [संज्ञा पु.] (सं.) सत्तू।

सक्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्तू। २-एक प्रकार का विष।

सक्तुकार [संज्ञा पु.] (सं.) सत्तू बनाने और बेचने वाला।

सक्तुपिंडी, सक्तुपिण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्तू का लड्डू।

सक्तुफला, सक्तुफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमीवृक्ष।

सक्थि [संज्ञा पु.] (सं.) एक मर्मस्थान (सुश्रुत)।

सक्थी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हड्डी। अस्थि। २-जाँघ। उरु। ३-छकड़े या बैलगाड़ी का एक अङ्ग।

सक्र* [संज्ञा पु.] (हिं.) शक्र। इन्द्र।

सक्रघण [संज्ञा पु.] (हि.) वज्र।

सक्रतु [वि.] (सं.) समान कर्म या प्रज्ञावाला।

सक्रपति [संज्ञा पु.] (हि.) विष्णु।

सक्रसन [संज्ञा पु.] (हिं.) कुटजवृक्ष।

सक्रसरोवर [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्रकुण्ड नामक स्थान जो ब्रज में है।

सक्रारि* [संज्ञा पु.] (हिं) मेघनाद।

सक्रिय [वि.] (सं.) १-जिसमें क्रिया भी हो। २-जो क्रियात्मक रूप में हो। ३-जिसमें कुछ करके दिखलाया जाय। ऐक्टिव।

सक्ष [वि.] (सं.) १-अतिक्रमण के योग्य। २-हारा हुआ। पराजित।

सक्षण [वि.] (सं.) हारा हुआ। पराभूत।

सक्षणि [वि.] (सं.) सेवा करने के योग्य।

सक्षम [वि.] (सं.) १-जिसमें क्षमता हो। २-समर्थ। ३-किसी कार्य के लिए पूर्णरूप से उपयुक्त तथा उसका अधिकारी। काम्पीटेन्ट।

सख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सखा। मित्र। साथी। २-वृक्ष विशेष।

सखत+ [वि.] (हिं) देखो 'सख्त'।

सखती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सख्ती'।

सखत्व [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता। दोस्ती। सखापन।

सखर [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम। + [वि.] (हिं.) देखो 'सखरा।

सखरच [वि.] (हिं.) देखो 'शाहखर्च'।

सखरण+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिखरन'।

सखरस [संज्ञा पु.] (?) मक्खन।

सखरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खारा। क्षारयुक्त। २-निखरा का उलटा। ३-कच्ची रसोई।

सखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दाल-रोटी आदि कच्ची रसोई। [संज्ञा स्त्री.] (डि.) छोटा पहाड़। पहाड़ी।

सखस+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शख्स।

सखसावन [संज्ञा पु] (हिं.) १-पालकी। २-आरामकुरसी। ३-पलङ्ग।

सखा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साथी। २-मित्र। ३-सहयोगी। ४-साहित्य में वह व्यक्ति जो 'नायक' का सहचर हो और जो सुख-दुःख में उसके समान सुख-दुःख को प्राप्त हो। ये चार प्रकार के होते हैं-पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

सखावत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-दानशीलता। २-उदारता।

सखित्व [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता। दोस्ती।

सखिपूर्व्व [संज्ञा पु.] (सं.) बन्धुता। मित्रता।

सखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सहेली। सहचरी। २-सङ्गिनी। ३-साहित्य में नायिका के साथ रहने वाली वह स्त्री जिससे वह अपने मन की सब बातें कहती हैं। ४-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राएँ और अन्त में एक मगण या एक यगण होता है। [वि.] (अ.) दाता। दानी।

सखीभाव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की भक्ति जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना और सेवा करता है।

सखुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) शालवृक्ष।

सखुन [संज्ञा पु.] (फा.) १-बातचीत। २-कथन। उक्ति। ३-कविता। काव्य। ४-कौल। वचन। *सखुन देना*-वचन हारना। *सखुन डालना*-१-कोई बात कहना। २-प्रश्न करना।

सखुनचीन [संज्ञा पु] (फा.) चुगुलखोर।

सखुनचीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) चुगुलखोरी।

सखुन-तकिया [संज्ञा पु.] (फा.) वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ा रहता है कि बातचीत करने में मुँह से निकला करता है। तकियाकलाम।

सखुनदाँ [संज्ञा पु.] (फा.) १-काव्यरसिक। २-बातचीत का मर्म भलीभांति समझने वाला।

सखुनदानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-बातचीत की समझदारी। २-काव्यरसिकता।

सखुनपरवर [संज्ञा पु.] (फा.) १-अपनी बात या जबान का धनी। २-हठी। जिद्दी।

सखुनशनास, सखुनसंज [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'सखुनदाँ'।

सखुनसंजी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सखुनसंज का भाव।

सखुनसाज [संज्ञा पु.] (फा.) १-कवि। शायर। २-वह जो सदा झूठी बातें गढ़ता हो।

सखुनसाजी [संज्ञा पु.] (फा.) १-सखुनसाज का भाव या काम। २-कवि होने का भाव या

काम। २-झूठी बातें गढ़ने का गुण या भाव।

सखोल [संज्ञा पु.](सं.)राजतरङ्गिणी में उल्लिखित एक प्राचीन नगर।

सख्त [वि.] (फा.) १-कठोर। कड़ा। २-कठिन। मुश्किल। ३-कठोर व्यवहार करने वाला। [क्रि वि.] बहुत अधिक।

सख्ती [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-कठोरता। कड़ाई २-कठिनता। क्रूरता।

सख्य [संज्ञा पु.](सं.) १-सखा का भाव। सखापन। २-मित्रता। दोस्ती। ३-भक्ति में वह भाव जिसमें इष्टदेव को, भक्त अपना सखा मानकर उसकी उपासना करता है।

सख्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'सख्य'।

सगंध, सगन्ध [वि.] (सं.) १-जिसमें गन्ध हो। २-अभिमानी। [संज्ञा पु.] जाति।

सगंधा, सगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बासमती चावल। [वि.] (हिं.) देखो 'सगा'।

सग [संज्ञा पु.] (फा.) कुत्ता।

सगजुबान [संज्ञा पु.](फा.) कुत्ते के समान पतली और लम्बी जीभ वाला घोड़ा।

सगड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा सग्गड़।

सगण [संज्ञा पु.] (सं.) पिंगल में एक गण जिस में (IIS) दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है

सगत+, सगती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पार्वती। २-शक्ति। बल।

सगदा [संज्ञा पु] (देश.) अनाज से बनने वाला मादक द्रव्य।

सगन [संज्ञा पु.](हि) १-देखो 'सगण'। २-देखो 'शकुन'।

सगनौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शकुनौती'।

सगपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सगापन'।

सगपहता [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सगपहिती'।

सगपहिती [संज्ञा स्त्री.](हिं.) साग मिलाकर बनाई हुई दाल।

सगपिस्ताँ [संज्ञा पु.] (फा.) लिसोड़ा।

सगपु [संज्ञा पु.](सं.) अमरल्ली।

सगबग [वि.] (हिं.) १-सराबोर। लथपथ। २-द्रवित। परिपूर्ण। [क्रि. वि] (हिं.) तेजी से। जल्दी से। चटपट।

सगबगाना [क्रि. अ.](हिं.) १-लथपथ होना। २-सकपकाना।

सगभत्ता+ [संज्ञा पु.](हिं.) साग मिलाकर पकाया हुआ साग।

सगर [संज्ञा पु.] (हि.) तगर का फूल या उसका पौधा। [संज्ञा पु.](सं.) एक सूर्यवंशी राजा।

सगरा+ [वि.](हिं.) [स्त्री. सगरी] सब। तमाम। कुल। [संज्ञा पु.] (हि.) १-तालाब। २-झील

सगरी [संज्ञा स्त्री.](सं)एक प्राचीन नगरी का नाम

सगर्भ [वि.] (सं.) सगा। एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर।

सगर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गर्भवती स्त्री। २-सगी बहन।

सगर्भ्य [वि.](सं.) एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर।

सगल* [वि.] (हिं.) देखो 'सकल'।

सगलगी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-किसी से बहुत लगापन या आपसदारी दिखलाना। २-खुशामद। चापलूसी।

सगला [वि.] (हिं.) सब। कुल। समस्त।

सगवती [संज्ञा स्त्री.] (?) खाने का मांस।

सगवा [संज्ञा पु.] (देश.) सहिंजन।

सगवारा+ [संज्ञा पु.](हिं.) गांव के आसपास की और उससे सम्बन्ध रखने वाली भूमि।

सगा [वि.](हिं.) [स्त्री सगी] १-एक ही माता से उत्पन्न। सहोदर। २-जो सम्बन्ध में अपने कुल का हो।

सगाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-विवाह का निश्चय। मँगनी। २-विधवा स्त्री के साथ पुरुष का वह सम्बन्ध जो कुछ जातियों में विवाह के समान ही माना जाता है। ३-रिश्ता। संबंध। नाता।

सगाना [संज्ञा पु.] (फा.) खञ्जनपक्षी।

सगापन [संज्ञा पु.] (हिं.) सगा होने का भाव।

सगाबी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-एक प्रकार का नेवला। २-ऊदबिलाव नामक जलजन्तु।

सगारत, सगारता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सगा होने का भाव। सगापन।

सगुण [संज्ञा पु.] (सं.) १-परमात्मा का वह रूप जिसमें सत्व, रज और तम तीनों हों। साकार-ब्रह्म। २-सगुणरूपक की पूजा करने वाला सम्प्रदाय। [वि.] (सं.) गुण वाला।

सगुणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सगुण होने का भाव

सगुणी [वि.] (हिं.) गुणवाला। गुणवान्।

सगुन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'शकुन'। २-देखो 'सगुण'।

सगुनाना [क्रि. स.] (हिं.) शकुन निकालना या देखना।

सगुनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सगुन विचारने तथा बतलाने वाला।

सगुनौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शकुन विचारने का काम।

सगृह [संज्ञा पु.] (सं.) घर-गृहस्थी वाला। सपत्नीक।

सगोती [संज्ञा पु.] (हि.) १-सगोत्र। २-भाई-बन्धु।

सगोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही गोत्र के लोग।

सगोनीमर [संज्ञा पु.] (हिं.) सागौन।

सगौती [संज्ञा स्त्री.] (देस.) खाने का मांस।

सग्गड़ [संज्ञा पु.](हिं.) बोझा ढोने की एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिसे आदमी खींचते या ढकेलते हैं।

सग्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहभोजन। एक

सग्म [संज्ञा पु.] (सं.) यजमान।

सघन [वि.] (सं.) १-घना। अविरल। २-ठोस। ठस।

सघनता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सघन होने का भाव। निविड़ता।

सच [वि.] (हिं.) १ जैसा हो वैसा ही (कहा हुआ) सत्य। २-वास्तविक। ३-ठीक।

सचकी [संज्ञा पु.] (हि.) सारथी।

सचन [संज्ञा पु.] (सं.) सेवा करने की क्रिया या भाव। सेवन।

सचना* [क्रि. स.] (हि.) १-संचय करना। बटोरना। २-पूरा करना। [क्रि. अ., स.] देखो 'सजना'।

सचनावत् [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

सचमुच [अव्य.] (हिं.) १-वास्तव में। वस्तुतः। २-अवश्य। निश्चय।

सचर [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कठसरैया।

सचरना [क्रि. अ.] (हि.) १-संचरित होना। फैलना। २-बहुत प्रचलित होना।

सचराचर [संज्ञा पु.] (सं) संसार के चर और अचर सभी पदार्थ और प्राणी।

सचल [संज्ञा पु.] (सं.) चर। जङ्गम। [वि.] १-जो अचल न हो। चलता हुआ। २-चंचल।

सचाई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सत्यता। सचापन। २-वास्तविकता। यथार्थता।

सचान [संज्ञा पु.] (हि.) बाजपक्षी।

सचारना* [क्रि. स.] (हि.) संचारित करना। फैलाना।

सचावट+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सत्यता। सचाई

सचिंक, सचिङ्क [वि.] (सं.) चेतनायुक्त।

सचिंत, सचिन्त [वि.] (सं.) जिसे चिन्ता या फिकर हो।

सचिक्कण [वि.] (सं.) बहुत चिकना।

सचिक्कन [वि.] (हि.) देखो 'सचिक्कण'।

सचित् [वि.] (सं.) जिसे ज्ञान या चेतना हो।

सचित्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका ध्यान एक ही ओर लगा हो।

सचित्र [वि.] (सं.) जिसमें चित्र हो। जो चित्रों से संयुक्त हो।

सचिल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) १-क्लिन्नचक्षु। २-जिसकी दृष्टि खराब हो।

सचिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-मित्र। दोस्त। २-सहायक। ३-वह प्रधान अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के या राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हों। मिनिस्टर। ४-धतूरे का पौधा।

सचिवता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सचिव होने का भाव

सचिवामय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पाँडु रोग । २-विसर्प रोग ।

सचिवालय [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जिसमें किसी राज्य, प्रांतीय सरकार आदि सचिवों मन्त्रियों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते हैं । सेक्रैटेरिअट ।

सची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-इन्द्र की पत्नी का नाम । २-अगर । अगरु ।

सचीसुत [संज्ञा पु.](सं) १-जयन्त । २-श्रीचैतन्य देव ।

सचु* [संज्ञा पु.] (?) १-सुख । आराम । २-प्रसन्नता । खुशी ।

सचेत [वि.] (हिं.) १-जो चेतनायुक्त हो । २-सावधान । होशियार । खबरदार । ३-समझदार ।

सचेतन [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें चेतना या ज्ञान हो । [वि.] (सं.) १-चैतन्य । चेतनायुक्त २-सावधान । होशियार । ३-चतुर । समझदार ।

सचेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सचेत होने का भाव । २-सावधानी । होशियारी ।

सचेष्ट [वि.](सं.) १-जिसमें चेष्टा हो । २-जो चेष्टा करे । [संज्ञा पु.] (सं.) आम्रवृक्ष ।

सचैयत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सचाई । सत्यता ।

सचोर [संज्ञा पु.] (देश.) गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति ।

सच्चरित, सच्चरित्र [वि.] (सं.) जिसका चरित्र अच्छा हो ।

सचर्या [संज्ञा स्त्री.](सं)उत्तम आचरण । अच्छा चाल-चलन ।

सच्चा [वि.] (हिं.) [स्त्री. सच्ची] १-सच बोलने वाला । सत्यवादी । २-वास्तविक । यथार्थ । ठीक । ३-असली । जो झूठा या बनावटी न हो । बिलकुल ठीक और पूरा ।

सचाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) 'सच्चा' होने का भाव सत्यता ।

सचापन [संज्ञा पु.] (हिं.) सत्यता । सचाई ।

सचार [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पत्ति का रक्षक ।

सचारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलदी ।

सचाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सत्यता । सचाई ।

सच्चिक्कन* [वि.] (हिं.) देखो 'सचिक्कण' ।

सचित् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

सच्चिदानंद, सच्चिदानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) (सत्‌चित् तथा आनन्द से संयुक्त) ब्रह्मा ।

सच्चिन्मय [वि.] (सं.) सत् और चैतन्य से युक्त

सच्ची-टिपाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्राचीन चित्रकला में चित्र बनाने के समय पहले रूपरेखा अङ्कित कर चुकने पर गेरू से होने वाला अङ्कन ।

सच्छंद* [वि.] (हिं.) देखो 'स्वच्छंद' ।

सच्छत* [वि.] (हिं.) घायल ।

सच्छी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साक्षी' । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'साक्षी' ।

सच्युति [संज्ञा स्त्री.](सं) स-दलबल चलना ।

सज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सजने की क्रिया या भाव । २-सजावट । ३-बनावट । गढ़न । डौल ४-शोभा । ५-सुन्दरता । [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का वृक्ष जो बहुत लम्बा होता है ।

सजग [वि.](हिं.) सावधान । सचेत । होशियार

सजड़ा*+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सहिंजन का वृक्ष ।

सजंदार [वि.] (हिं.) सुन्दर ।

सजधज [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बनावसिंगार । सजावट ।

सजन [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सजनी] १-सज्जन भला आदमी । २-पति । स्वामी । ३-प्रियतम [वि.] (सं.) जिसमें जन या लोग हों ।

सजना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सज्जित या अलंकृत होना । सजाया जाना । २-शोभित होना । ३-शस्त्रास्त्र से सुसज्जित होना । [क्रि. स.] देखो 'सजाना' । +[संज्ञा पु.] (हिं.) १-सजन । प्रियतम । २-सहिंजन ।

सजनीय [वि.] (सं.) प्रसिद्ध । मशहूर ।

सजबज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सजधज' ।

सजल [वि.] (सं) [स्त्री. सजला] १-जल से युक्त या पूर्ण । २-अश्रुपूर्ण (नेत्र) । आँसुओं से भरा (नेत्र) ।

सजला [वि.] (हिं.) चार सहोदरों में से तीसरा । [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जल से भरी हुई ।

सजवना* [क्रि. स] (सं.) सजाना ।

सजवाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सजवाने की क्रिया २-सजाने का भाव । ३-सजाने की मजदूरी ।

सजवाना [क्रि. स] (हिं.) सुसज्जित करवाना ।

सजा [वि.] (फ़ा.) १-दंड । २-कारागार में बन्द रखने का दंड ।

सजाइ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सजा । दंड ।

सजाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सजाने की क्रिया या भाव । २-सजाने की मजदूरी ।

सजागर [वि.] (सं.) देखो 'सजग' ।

सजात [वि.] (सं.) १-जो साथ में उत्पन्न हुआ हो । २-देखो 'सजाति' । [संज्ञा पु.] वे लोग जो एक ही स्थान में जनमें, पलें और रहते हों

सजाति, सजातीय, सजात्य [वि.] (सं.) एक ही जाति अथवा वर्ग के (लोग या पदार्थ) ।

सजान* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जानकार । ज्ञाता । २-चतुर । होशियार ।

सजाना [क्रि. स.] (हिं.) १-वस्तुओं को यथास्थान और यथाक्रम रखना । २-नवीन वस्तुएँ अथवा बातें जोड़ या रखकर सुन्दर बनाना । अलंकृत करना ।

सजाय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सजा' । [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह जो सपत्नी उपस्थित हो

सजायाफ़्ता [वि.] (फ़ा.) जो कैद की सजा पा चुका हो ।

सज़ायाब [वि.](फ़ा.) १-दण्डनीय । २-जो कानून के अनुसार दण्ड पा चुका हो ।

सजार, सजारु [संज्ञा पु.](हिं.) साहिल । शल्यक

सजाव [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का दही ।

सजावट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सजे हुए होने की क्रिया या भाव । २-शोभा । ३-तैयारी ।

सजावन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सजावट' ।

सजावल [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-सरकारी कर वसूल करने वाला । अधिकारी । तहसीलदार । २-राजकर्मचारी । ३-सिपाही । जमादार ।

सज़ावार [वि.] (फ़ा.) दंडनीय ।

सजिना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहिंजन' ।

सजीउ*+ [वि.] (हिं) देखो 'सजीव' ।

सजीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. सजीली] १-सजधज या बनठन कर रहने वाला । छैला । २-सुन्दर । मनोहर ।

सजीव [वि.] (सं.)१-जिसमें जीवन या प्राण हों । २-जिसमें ओज या तेज हो ।

सजीवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सजीव होने का भाव

सजीवन [संज्ञा पु] (हिं.) संजीवन नामक बूटी ।

सजीवन-बूटी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'संजीवन'

सजीवन-मूर, सजीवन-मूल [संज्ञा पु.] (हिं) संजीवन नामक बूटी ।

सजीवनी-मन्त्र [संज्ञा पु.](हिं) वह मन्त्र जिसके प्रभाव से मृत प्राणी भी जी उठता है ।

सजुग* [वि.](हिं.) सजग । सचेत । होशियार ।

सजुता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण तथा एक गुरु होता है ।

सजूरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की मिठाई

सजोना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सजाना' ।

सजोयल* [वि.] (हि.) देखो 'सँजोइल' ।

सजोष [वि.] (सं.) (वे) जिनमें समान प्रीति हो ।

सजोषण [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत दिनों से चली आई हुई समान प्रीति ।

सज्ज [वि.] (सं.) १-तैयार किया या कराया हुआ । २-सम्हारा या ठीक किया हुआ । ३-सब प्रकार से लैस । * [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साज' ।

सज्जक [संज्ञा पु.] (सं.) सज्जा । सजावट ।

सज्जण [संज्ञा पु.](डिं.) १-सेना की तैयारी । २-देखो 'सज्जन' ।

सज्जता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सजने का भाव । सजावट ।

सज्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब के साथ अच्छा, प्रिय तथा उचित व्यवहार करने वाला । भला आदमी । शरीफ । २-प्रियतम ।

सज्जनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जन होने का

भाव। भलमंसाहत। सौजन्य।

सज्जनताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सज्जनता'।

सज्जना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नायक या सरदार के चढ़ने का हाथी।

सज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २-बेश-भूषा। (हिं.) १-शय्या। २-शय्यादान। [वि.] दाहिना।

सज्जादा [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह कपड़ा जिस पर मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २-आसन। ३-फकीरों या पीरों आदि की गद्दी।

सज्जादानशीन [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-वह जो गद्दी और तकिया लगाकर बैठते हों। २-मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।

सज्जित [वि.] (सं.) [स्त्री. सज्जिता] १-सजा हुआ। अलंकृत। २-आवश्यक वस्तुओं अथवा सामग्रियों से युक्त।

सज्जी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध क्षार जिसमें वस्तुऐं धोई या साफ की जाती हैं।

सज्जीखार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सज्जी'।

सज्जीबूटी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक बनस्पति जिससे सज्जी निकाली जाती है।

सज्जुई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सजाव'।

सज्जुता [संज्ञा स्त्री.](हिं.) 'संयुक्ता' नामक छंद

सज्जुष्ठ [वि.](सं.) आनन्द देने वाला। सुखकारी

सज्जें+ [सर्व.] (हिं.) सब। सम्पूर्ण। बिलकुल [अव्यय] (हिं.) तमाम। सम्पूर्णतः।

सज्ञान [वि.] (सं.) १-ज्ञानवान्। २-चतुर। ३-बुद्धिमान।

सज्या* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'सज्जा'। २-देखो 'शय्या'।

सझ [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) १-सजावट। २-तैयारी

सझणु [संज्ञा पु.] (डिं.) सेना को सज्जित या तैयार करना।

सझनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी

सझिदार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सझिदारिन] हिस्सेदार। शरीक।

सझिदारी+ संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साझेदार होने का भाव। साझा।

सट [संज्ञा पु.] (सं.) जटा।

सटई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अनाज रखने का एक पात्र।

सटक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सटकने की क्रिया या भाव। २-धीरे से चल देना या चम्पत होना। ३-हुक्का पीने की लचीली नली। नैचा

सटकना [क्रि. अ.] (हिं.) धीरे से खिसक जाना। चम्पत होना। [क्रि. स.](हिं.) अनाज निकालने के लिए बालों को कूटना।

सटकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-छड़ी या कोड़े से सट-सट मारना। २-सड़-सड़ करके हुक्का पीना।

सटकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सटकाने की क्रिया या भाव।

सटकारना [क्रि. स.] (हिं.) १-छड़ी या कोड़े से सट-सट मारना। २-फटकारना।

सटकारा [वि.] (हिं.) चिकना, मुलायम और लंबा (बाल)।

सटकारी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) लचकदार पतली छड़ी

सटक्का [संज्ञा पु.] (हिं.) दौड़।

सटक्का मारना–एक साँस में दौड़ कर पहुँचना

सटना [क्रि. अ](हिं.) १-आपस में इस प्रकार मिलना कि दोनों के पार्श्व या तल एक दूसरे से मिल जायँ। २-चिपकना। ३-मारपीट होना। ४-सम्भोग होना (गुंडों की बोली)।

सटपट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सिटपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। २-शील। सङ्कोच। ३-सङ्कट।

सटपटाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सटपट की ध्वनि होना। देखो 'सिटपिटाना'। [क्रि. स.] (हिं.) सटपट शब्द उत्पन्न करना।

सटरपटर [वि.] (हिं.) १-छोटा-मोटा। तुच्छ। २-बहुत साधारण या मामूली। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उलझन का काम। २-व्यर्थ का या तुच्छ काम।

सटसट [क्रि. वि.] (हिं.) १-'सट' शब्द सहित। २-शीघ्र। तुरन्त।

सटांक, सटाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

सटा [संज्ञा स्त्री.] १ शिखा। २-जटा। ३-अयाल केशर।

सटाक [संज्ञा पु.] (हिं.) 'सट' शब्द।

सटाकी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) छड़ी में लगी हुई चमड़े की पट्टी।

सटान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सटने की क्रिया या भाव। मिलान। २-दो वस्तुओं के सटने या मिलने का स्थान। जोड़।

सटाना [क्रि. अ.](हिं.) १-दो वस्तुओं को आपस में मिलाना। जोड़ना। २-लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना। ३-सम्भोग कराना (गुंडों की बोली।

सटाय [वि.] (देश.) १-न्यून। कम। २-घटिया। (दलाल)।

सटाल [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। केसरी।

सटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कचूर। शटी।

सटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जङ्गली कचूर।

सटियल [वि.] (?) घटिया। रद्दी।

सटिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सोने या चांदी की एक प्रकार की चूड़ी। २-मांग में सिंदूर देने की चाँदी की कलम। ३-देखो 'साटी'।

सटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जङ्गली कचूर।

सटीक [वि.] (सं.) जिसमें मूल के अतिरिक्त टीका भी हो व्याख्यासहित। [वि.] (हिं.) बिलकुल ठीक। एक्यूरेट।

सटैला+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

सटोरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सट्टेबाज।

सट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) दरवाजे की चौखट में दोनों ओर की लकड़ियाँ। बाजू। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सट्टा'।

सट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राकृत भाषा में रचित छोटा रूपक। २-जीरा मिला हुआ मट्ठा।

सट्टा [संज्ञा पु.] (देश.) १-इकरारनामा। २-सामान्य व्यापार से भिन्न खरीद-बिक्री का वह भेद जिसमें केवल तेजी-मन्दी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता है। खेला। स्पेक्युलेशन। ३-हाट। बाजार। [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक प्रकार का पक्षी। २-बाजा।

सट्टाबट्टा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मेलमिलाप। हेल-मेल। २-चालबाजी। धूर्ततापूर्ण युक्ति। ३-अनुचित सम्बन्ध। *सट्टाबट्टा लड़ाना*-अपना काम करने के लिए किसी प्रकार की युक्ति करना

सट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बाजार जिसमें एक ही प्रकार की वस्तुएँ कुछ निश्चित समय पर आकर बिकती हैं। हाट। *सट्टी मचाना*-सट्टी बाजार का-सा शोर करना। *सट्टी लगाना*-चीजों को इधर-उधर बिखरा देना।

सट्टेबाज [संज्ञा पु.](हिं.) वह जो केवल तेजी-मन्दी के विचार से खरीद-बिक्री करता हो। सट्टा करने वाला। स्पेक्युलेटर।

सट्टेबाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सट्टे का काम या भाव।

सठ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शठ'।

सठई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शठता।

सठता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शठता। २-मूर्खता। बेवकूफी।

सठियाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-साठ वर्ष का होना २-बुढ़ापे के कारण बुद्धि का ठीक काम न देना

सठुरी+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) गठुरी। कूँटा। कूँटी

सठेरा [संज्ञा पु] (हिं.) संठा। सलई।

सठौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोंठौरा'।

सढ्ढो [संज्ञा पु.] (डिं.) ऊँट।

सड़क [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आने-जाने का चौड़ा और पक्का मार्ग।

सड़क्का [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सटक्का'।

सड़न [संज्ञा स्त्री.](हिं) सड़ने की क्रिया या भाव गलन।

सड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी वस्तु में ऐसा विकार होना जिससे उसके अङ्ग गलने लगें और उसमें दुर्गंध आने लगे। २-जल मिले पदार्थ में खमीर उठना या आना। ३-हीन अवस्था में पड़ा रहना।

सड़सठ [वि.] (हिं.) साठ और सात (६७)।

सड़सठवाँ [वि.] (हिं.) छियासठ के बाद का।

सड़सी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'सँड़सी'।

सड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) गौओं को बच्चा होने के अवसर पर पिलाई जाने वाली औषध।

सड़ाइंद [संज्ञा स्त्री] (हिं.) 'सड़ायँध'।

सड़ाक [संज्ञा पु.] (हि.) १-कोड़ा फटकारने से उत्पन्न शब्द। २-शीघ्रता। जल्दी।

सड़ान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सड़ने की क्रिया या व्यापार। सड़ना।

सड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।

सड़ायँध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी वस्तु के सड़ने पर उसमें से आने वाली दुर्गंध।

सड़ाव [संज्ञा पु.] (हिं.) सड़ने की क्रिया या भाव सड़ना।

सड़ासड़ [क्रि. वि.] (हिं.) १-सड़सड़ शब्द सहित २-जल्दी-जल्दी।

सड़ियल [वि.] (हिं.) १-सड़ाहुआ। २-निकृष्ट। रद्दी। खराब।

सढ़ [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

सण* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सन'।

सणगार [संज्ञा पु.] (डिं.) शृङ्गार। सजावट।

सणगारना* [क्रि. स.] (डिं.) शृङ्गार करना।

सणसूत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शणसूत्र'।

सत् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म।
[वि.] (सं.) १-सत्य। २-सज्जन। ३-नित्य स्थायी। ४-शुद्ध। पवित्र। ५-श्रेष्ठ। ६-पंडित ज्ञानी। ७-धीर।

सतंत* [अव्य.] (हिं.) देखो 'सतत'।

सत [वि.] (हिं.) देखो 'सत्'। [संज्ञा पु.] १-सत्यतापूर्ण धर्म। २-किसी पदार्थ का सार भाग। ३-जीवनी शक्ति। [वि.] १-देखो 'शत'। २-सात (संख्या)। जैसे-सत-मंजिला
सत पर चढ़ना-मृत पति के साथ सती होना।
सत पर रहना-पतिव्रता या सती रहना।

सतकार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सत्कार'।

सतकारना* [क्रि. स.] (हिं.) आदर या सत्कार करना।

सतकोन, सतकोना [वि.] (हिं.) सात कोनों वाला

सतगाँठिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनती है।

सतगुरु [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सच्चा और अच्छा गुरु। २-परमात्मा।

सतजीत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सत्यजित्'।

सतजुग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सत्ययुग'।

सतत [अव्य.] (सं.) १-सदा। हमेशा। २-निरंतर लगातार।

सततग [संज्ञा पु.] (सं.) १-हमेशा चलता रहने वाला। २-वायु। हवा।

सततगति [संज्ञा पु.] (सं.) पवन। हवा।

सततज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) दिन में दो बार आने वाला ज्वर।

सततसमिताभियुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

सतति [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जो सदा चला करे

सतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) स्वभाव। प्रकृति।

सतदंत [संज्ञा पु.] (हिं.) सात दाँत वाला पशु।

सतदल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कमल। २-सौ दलों वाला कमल।

सतध्रत [संज्ञा पु.] (डिं.) ब्रह्मा।
सतध्रत-सुत-नारदमुनि।

सतनजा [संज्ञा पु.] (हिं.) सात भिन्न-भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।

सतनामी [संज्ञा पु.] (हिं.) सात्विक भाव से रहकर ईश्वर का भजन करने वाला।

सतनी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सतिवन। २-एक प्रकार का वृक्ष।

सतपतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'सतपुतिया'। २-वह स्त्री जिसने सात पति किये हों। ३-पुंश्चली। छिनाल।

सतपदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सप्तपदी'।

सतपरब+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बाँस। २-गन्ना। ऊख।

सातपात [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल।

सतपुतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की तरोई।

सतपुरिया [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार की जङ्गली मधुमक्खी।

सतफेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह के अवसर पर होने वाला सप्तपदी नामक कर्म।

सतबरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) नैपाल में पाया जाने वाला वृक्ष विशेष।

सतभइया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मैना (पक्षी)।

सतभाय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सद्भाव'।

सतभाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सद्भाव। २-सीधापन। ३-सचाई।

सतभौंरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह के समय की हिन्दुओं की वह रीति जिसमें वरवधू अग्नि की सात बार प्रदक्षिणा करते हैं।

सतमख [संज्ञा पु.] (डिं.) (सौ यज्ञ करने वाला) इन्द्र।

सतमसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पुराणोक्त नदी का नाम।

संतमासा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गर्भ के सातवें महीने में उत्पन्न होने वाला बच्चा। २-गर्भाधान के सातवें महीने हिन्दुओं में होने वाला एक कृत्य।

सतमूली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सतावर। शतावरी

सतयुग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सत्युग'।

सतरंग, सतरंगा [वि.] (हिं.) सात रङ्गों वाला [संज्ञा पु.] इन्द्रधनुष।

सतरंज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शतरंज'।

सतरंजी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'शतरंजी'।

सतर [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-रेखा। लकीर। २-पंक्ति। कतार। अवली। ३-स्त्री या पुरुष की गुप्त-इन्द्रिय। ४-ओट। आड़।
[वि.] (अ.) १-वक्र। टेढ़ा। २-क्रुद्ध। नाराज

सतरकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सत्रहीं।

सतरह [वि.] (हिं.) देखो 'सत्तरह'।

सतराना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-क्रोध करना। कोप करना। २-चिढ़ना। कुढ़ना।

सतराहट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोप। गुस्सा।

सतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सर्पदंष्ट्रा नामक औषध

सतरौहाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. सतरौही] १-कुपित क्रुद्ध। २-कोपसूचक।

सतर्क [वि.] (सं.) १-तर्क या युक्तिसहित। दलील के साथ। २-सावधान। सचेत।

सतर्कता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सतर्क होने का भाव। सावधानी। होशियारी।

सतर्पना* [क्रि. स.] (हि.) भली प्रकार तृप्त करना। संतुष्ट करना।

सतर्ष [वि.] (सं.) प्यासा। तृषित।

सतलज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पंजाब की पांच नदियों में से एक नदी का नाम।

सतलड़ा [वि.] (हिं.) [स्त्री. सतलड़ी] सात लड़वाला।

सतलड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सात लड़ी वाली माला या हार।

सतवंती [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.) सती। पतिव्रता।

सतवर्ग [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सद्वर्ग',

सतसंग [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सत्संग'।

सतसंगति [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'सतसंग'।

सतसंगी [वि.] (हिं.) देखो 'सत्संगी'।

सतसई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी कवि के सातसौ पद्यों का संग्रह। सप्तशती।

सतसठ* [वि.] (हिं.) देखो 'सड़सठ'।

सतसल [संज्ञा पु.] (देश.) शीशम का पेड़।

सतह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल। २-रेखागणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लम्बाई और चौड़ाई हो, पर मोटाई न हो।
सतह चौरस या बराबर करना-समतल करना।

सतहत्तर [वि.] (हि.) सत्तर और सात (७७)।

सतहत्तरवाँ [वि.] (हि.) जिसका स्थान सतहत्तर पर हो।

सतांग [संज्ञा पु.] (हि.) रथ। यान।

सतानंद, सतानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमऋषि के पुत्र का नाम।

सताना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कष्ट पहुँचाना। २-तङ्ग करना।

सतारुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कुष्ट या कोढ़।

सतारू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सतारुक'।

सतालू [संज्ञा पु.](हिं.) एक वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं। शफ़लातू। आड़ू।

सतावना* [क्रि स.] (हिं.) देखो 'सताना'।

सतावर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली। नारायणी।

सतासी [वि.] (हि.) अस्सी और सात '८७'।

सतासीवाँ [वि.] (हि.) छियासी के बाद वाला।

सति* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सत्य'।

सतिवन [संज्ञा प] (हिं.) एक सदाबहार का बड़ा वृक्ष जिसकी छाल आदि दवा के काम में आती है। सप्तपर्णी। छतिवन।

सती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-पति के अलावा किसी अन्य पुरुष का ध्यान मन से न लाने वाली। २-साध्वी। पतिव्रता। [संज्ञा स्त्री] (सं) १-दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम। २-पतिव्रता स्त्री। ३-अपने पति की मृतदेह के साथ चिता में जलने वाली स्त्री। ४-मादा (पशु)। ५-सोंधी मिट्टी। ६ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है। ७-विश्वामित्र की पत्नी का नाम। ८-अंगिरा की पत्नी का नाम। *सती होना*–१-मृत पति के साथ चिता में जलना। २-किसी के पीछे मर मिटना।

सतीचौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर स्मारकस्वरूप बनाया जाता है।

सतीत्व [संज्ञा पु.] (सं) सती होने का भाव। पातिव्रत्य। *सतीत्व बिगाड़ना या नष्ट करना*–किसी स्त्री का सतीत्व हरण करना।

सतीत्वहरण [संज्ञा पु.] (सं) किसी सदाचारिणी स्त्री के साथ बलपूर्वक संभोग करना। स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।

सतीदोषोन्माद [संज्ञा पु.] (सं) स्त्रियों का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र करने के कारण माना जाता है।

सतीन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मटर। २-अपराजिता।

सतीपन [संज्ञा पु.] (हिं.) सती रहने का भाव। सतीत्व।

सतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही गुरु से पढ़ने-वाला। सहपाठी ब्रह्मचारी।

सतील [संज्ञा पु](सं.) १-बाँस। २-अपराजिता। ३-वायु।

सतीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपराजिता लता।

सतुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सत्तू।

सतुआन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सतुआ संक्रांति।

सतुआ-संक्रांति [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मेष की संक्रांति जो प्रायः वैशाख में पड़ती है।

सतुआ-सोंठ [संज्ञा स्त्री] (हिं) सोंठ की एक जाति।

सतून [संज्ञा पु.] (हिं.) स्तम्भ। खम्भा।

सतूना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) बाजपक्षी की झपट।

सतृण [वि.] (सं.) तृणयुक्त।

सतृष्ण [वि.] (सं.) तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण।

सतेज [वि.] (हिं.) तेजस्वी।

सतेर [संज्ञा पु.] (सं.) भुस। तुष।

सतेरक [संज्ञा पु.] (सं.) ऋतु। मौसम।

सतेरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मधुमक्खी।

सतोखना* [क्रि. स.] (हिं.) १-सन्तुष्ट करना। प्रसन्न करना। २-सन्तोष या ढारस दिलाना।

सतोगुण [संज्ञा पुं.] (हिं.) देखो 'सत्वगुण'।

सतोगुणी [संज्ञा पु.] (हिं.) सत्वगुण वाला। सात्विक।

सतोदर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शतोदर'।

सतौला [संज्ञा पु] (हिं.) प्रसूता का विधिपूर्वक होने वाला सातवें दिन का स्नान।

सतौसर [संज्ञा. पु.] (हिं.) सतलड़ा।

सत्कदंब, सत्कदम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कदम्ब।

सत्करण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्कार करना। २-मृतक की अन्त्येष्टि करना।

सत्करणीय [वि] (सं.) आदरणीय। पूज्य।

सत्कर्तव्य [वि] (सं.) १-सत्कार करने योग्य। २-जिसका सत्कार करना हो।

सत्कर्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्कार करने वाला। २-सत्कर्म करने वाला।

सत्कर्म [संज्ञा पु.](सं.) १-अच्छा कर्म। २-पुण्य कर्म। ३-अच्छा संस्कार।

सत्कांड, सत्काण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) चील।

सत्कायदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं) बौद्धमतानुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंगशरीर आदि के बने रहने का मिथ्या सिद्धांत।

सत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-आने वाले व्यक्ति का आदर या सम्मान। खातिरदारी। २-आतिथ्य। मेहमानदारी। ३-धन आदि भेंट देकर किसी का किया जाने वाला, आदर सम्मान या सेवा।

सत्कार्य्य [वि] (सं.) सत्कार करने योग्य। [संज्ञा पु.] उत्तम कार्य। अच्छा काम।

सत्कार्य्यवाद [संज्ञा पु] (सं.) सांख्य का एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह बताया जाता है कि बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती। किसी कारण में कार्य की सत्ता का सिद्धान्त।

सत्किष्कु [संज्ञा पु.] (सं) सवा गज के बराबर की लम्बाई की एक नाप।

सत्कीर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) यश। नेकनामी।

सत्कुल [संज्ञा पु.] (सं) उत्तम कुल। [वि.] (सं.) अच्छे कुल वाला। खानदानी।

सत्कृत [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह किया हुआ। २-आदृत। ३-अलंकृत। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्कार। आदर। २-सत्कर्म। पुण्य।

सत्कृति [संज्ञा पु.](सं.) वह जो अच्छे कार्य करता हो। सत्कर्मी। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) उत्तम कार्य। अच्छी कृति।

सत्क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुण्य। सत्कर्म। २-आदर। सत्कार। ३-आयोजन। तैयारी।

सत्त [संज्ञा पु.](हिं.) १-सार भाग। सत। २-देखो 'सत'।

सत्तम [वि.] (सं.) १-सर्वश्रेष्ठ। २-परम पूज्य। ३-परम साधु।

सत्तर [वि.] (हिं.) साठ और दस (७०)।

सत्तरवाँ [वि.] (हिं) [स्त्री. सत्तरवीं] जो क्रम में सत्तर के स्थान पर हो।

सत्तरह [वि.] (हिं.) दस और सात।

सत्तरहवाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. सत्तरहवीं] जो क्रम में सत्तरह के स्थान पर पड़े।

सत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-होने का भाव। अस्तित्व। २-शक्ति-सामर्थ्य। ३-वह शक्ति जो अधिकार, बल या सामर्थ्य का उपभोग करके अपना काम करती है। पावर। *सत्ता चलाना*–अधिकार जताना। [संज्ञा पु.] (हिं.) सात बूटियों वाला ताश का पत्ता।

सत्ताईस [वि] (हिं.) बीस और सात।

सत्ताईसवाँ [वि.] (हिं.) छब्बीस के बाद वाला।

सत्ताधारी [संज्ञा पु.] (स) जिसके हाथ में सत्ता हो। अधिकारी।

सत्तानवे [वि] (हि.) नब्बे और सात (९७)।

सत्तानवेवाँ [वि.] (हि.) जो क्रम में सत्तानवे के स्थान पर पड़ने वाला हो।

सत्तावन [वि.] (हिं.) पचास और सात (५७)।

सत्तावनवाँ [वि.] (हि.) जो क्रम में सत्तावन के स्थान पर हो।

सत्ताशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाश्चात्यदर्शन की वह शाखा जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

सत्तासामान्यत्व [संज्ञा पु.] (सं) अनेक द्रव्यों के भीतर एक सामान्य द्रव्य का अस्तित्व।

सत्तासी [वि.] (हिं.) अस्सी और सात (८७)।

सत्तासीवाँ [वि.] (हि) जो क्रम से सत्तासी के स्थान पर हो।

सत्तू [संज्ञा पु.] (हिं.) भुने हुए जौ चने आदि का आटा। *सत्तू बाँध कर पीछे पड़ना*–सब काम काज छोड़कर किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना।

सत्पथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम मार्ग। २-सदाचार। ३-उत्तम सिद्धांत।

सत्पशु [संज्ञा पु.] (सं) देवताओं की बलि के योग्य पशु।

सत्पात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दान आदि ग्रहण करने योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति या अधिकारी। २-श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। ३-अच्छा वर।

सत्पुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) सदाचारी पुरुष।

सत्पुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम या बढ़िया फूल।

सत्प्रतिपक्ष[वि.] (सं.) जिसके विपक्ष में बहुत कुछ कहा जा सके।

सत्फल [संज्ञा पु.] (सं.) दाड़िम। अनार।

सत्यंकार, सत्यङ्कार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वादा पूरा करना। २-वादा पूरा करने की जमानत के तौर पर कुछ पेशगी देना।

सत्य [वि.] (सं.) १-यथार्थ। ठीक। सही। २-जैसे हो, अथवा होना चाहिये, वैसा। ३-असल। वास्तविक। [संज्ञा पु.](सं.) १-यथार्थ तत्व। ठीक बात। २-न्यायसंगत और धर्म की बात। ३-ऊपर से सात लोकों में सबसे ऊपर वाला लोक। ४-परमार्थिक सत्ता। ५-नवें कल्प का नाम। ६-पीपल का पेड़। ७-विष्णु। ८-रामचन्द्र। ९-नांदीमुख श्राद्ध के अधिष्ठात्रा देवता। १०-शपथ। कसम। ११-प्रतिज्ञा। १२-चार युगों में से पहला। १३-एक दिव्यास्त्र।

सत्यकाम [वि.] (सं.) सत्य का प्रेमी।

सत्यकीर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) मंत्र-बल से चलाया जाने वाला एक अस्त्र।

सत्यकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्ध का नाम। २-केकय देश के एक राजा का नाम। ३-अक्रूर के एक पुत्र का नाम।

सत्यजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-वसुदेव का एक भतीजा। २-एक दानव। ३-एक यक्ष। ४-तीसवें मन्वंतर के इन्द्र का नाम।

सत्यज्ञ [वि.] (सं.) सत्य को जानने वाला।

सत्यतः [अव्य.] (सं.) सचमुच। वास्तव में।

सत्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वास्तविकता। २-सच्चाई। ३-नित्यता।

सत्यधन [संज्ञा पु.] (सं.) जिसका सत्य ही धन हो। जिसका सर्वस्व सत्य हो।

सत्यनारायण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु भगवान् का एक नाम।

सत्यनिष्ठ [वि.] (सं.) सदा सत्य पर दृढ़ रहने वाला। सत्यव्रत।

सत्यनिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्यनिष्ठ होने का भाव।

सत्यपर [वि.] (सं.) ईमानदार।

सत्यपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर। परमेश्वर।

सत्यप्रतिज्ञ [वि.] (सं.) अपनी बात या प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला।

सत्यप्रतिज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सच्ची प्रतिज्ञा।

सत्यफल [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीफल। बेल।

सत्यभामा [संज्ञा स्त्री] (सं.) श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।

सत्यभारत [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास।

सत्यभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) सत्य बात बोलना।

सत्ययुग [संज्ञा पु.] (सं.) पौराणिक काल की गणना के अनुसार चार युगों में से पहला जो सबसे अच्छा माना गया है।

सत्ययुगाद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैशाखशुक्ला-तृतीया, इस तिथि को ही सत्ययुग का आरंभ हुआ था।

सत्ययुगी [वि.](सं.) १-सत्ययुग का। सत्ययुग-सम्बन्धी। २-बहुत प्राचीन। ३-सच्चरित्र। धर्मात्मा।

सत्यरूप [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सत्यलोक [संज्ञा पु.] (सं.) सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा निवास करता है।

सत्यवचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सच कहना। २-प्रतिज्ञा। कौल। वादा।

सत्यवती [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-सच बोलने वाली। २-सत्य का पालन करने वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मत्स्यगन्धा नामक धीवर कन्या। २-शमीवृक्ष। ३-ऋचीक की पत्नी।

सत्यवती-सुत [संज्ञा पु.] (सं.) वेदव्यास।

सत्यवसु [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वदेवा में से एक।

सत्यवाच् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्य वचन। २-वादा। प्रतिज्ञा। ३-एक प्रकार का मन्त्रास्त्र। ४-काक।

सत्यवाद [संज्ञा पु.](सं.) १-सत्य बोलना। २-धर्म पर दृढ़ रहना।

सत्यवादिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दाक्षायणी का एक नाम। २-बोधिद्रुम की एक देवी। [वि.] सत्य बोलने वाली।

सत्यवादी [वि.] (सं.) [स्त्री. सत्यवादिनी] १-सत्य कहने वाला। प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने-वाला। ३-धर्म पर दृढ़ रहने वाला।

सत्यवान् [वि.] (हिं.) [स्त्री. सत्यवती] १-सत्य बोलने वाला। २-प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला [संज्ञा पु.](सं.) शाल्वदेश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र का नाम।

सत्यवाहन [वि.] (सं.) धर्म पर दृढ़ रहने वाला।

सत्यविक्रम [वि.] (सं.) सत्यवादी।

सत्यव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [वि.]सत्य का नियम पालन करने वाला।

सत्यशील [वि.](सं.) [स्त्री. सत्यशीला] सच्चा।

सत्यसंकल्प, सत्यसङ्कल्प [वि.] (सं.) दृढ़ संकल्प।

सत्यसंध, सत्यसन्ध [वि.] (सं.) [स्त्री. सत्यसन्धा] सत्य प्रतिज्ञा। अपने वचन का पालन करने वाला। [संज्ञा पु.] १-रामचन्द्रजी २-भरत। ३-जनमेजय। ४-स्कन्ध के एक अनुचर का नाम। ५-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सत्यसंधा, सत्यसन्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) द्रौपदी

सत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सत्यता। २-दुर्गा। ३-सीता। ४-सत्यवती।

सत्याग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) किसी सत्य अथवा न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शांतिपूर्वक हठ करना।

सत्याग्रही [संज्ञा पु.] (सं) वह जो सत्याग्रह करता हो।

सत्यानाश [संज्ञा पु.] (हिं.) सर्वनाश। ध्वंस। बरबादी।

सत्यानाशी [वि.](हिं.) [स्त्री. सत्यानाशिन] १-सत्यानाश करने वाला। २-अभागा। बद-किस्मत।

सत्यानास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सत्यानाश'।

सत्यानासी [वि.](हिं.)[स्त्री सत्यानासिन] देखो 'सत्यानाशी'। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का कँटीला पौधा।

सत्यानृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-झूठ-सच का मेल। २-व्यापार। दूकानदारी।

सत्यापन [संज्ञा पु.] (सं) १-कहकर सिद्ध करना कि यह ठीक है। सार्टिफिकेशन। २-मिलान या जाँच करके यह देखना कि यह ठीक या ज्यों का त्यों है न। वेरीफिकेशन। ३-लेख्य आदि पर उसके ठीक होने की बात लिखकर हस्ताक्षर करना। एटेस्टेशन।

सत्यापना [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी सौदे या इक-रार का पूरा होना।

सत्यायु [संज्ञा पु.](सं.) उर्वशी के एक पुत्र का नाम

सत्याषाढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृष्णयजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

सत्येतर [वि.] (सं.) सत्य से भिन्न। झूठा।

सत्योत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) सत्यबात को स्वीकार।

सत्योपपावन [संज्ञा पु.] (सं.) शरदंडा नदी के पश्चिम तट पर स्थित एक पवित्र फलप्रद वृक्ष

सत्रंग, सत्रङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का पौधा

सत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ। २-घर। ३-वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन बाँटा जाता है। सदावर्त। ४-निरंतर कुछ दिनों तक होने वाला संसद् आदि का एक बार का अधिवेशन। सेशन। ५-वह नियत काल जिसमें कोई कार्य-कर्त्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है। टर्म। ६-१३ या १००दिनों में पूरा होने वाला एक सामयाग। ७-तालाब। ८-जङ्गल। ९-धोखा। १०-परिवेषण। गोपन।

सत्र-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी जिले की वह बड़ी अदालत जहाँ जूरी या असेसरों की सहायता से डाकेजनी खून आदि फौजदारी के बड़े मामलों का विचार होता है। सेशनकोर्ट

सत्रह [वि.] (हिं.) देखो 'सत्तरह'।

सत्राई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शत्रुता'

सत्राजित [संज्ञा पु.](सं.) सत्यभामा के पिता जो श्रीकृष्ण के ससुर थे।

सत्राजिती [संज्ञा स्त्री] (सं.) सत्यभामा का एक नाम।

सत्रावसान [संज्ञा पु.](सं.) विधायिका सभाओं आदि के अधिवेशन को अधिकारिक रूप से अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना। *प्रोरोग*।

सत्रि [संज्ञा पु](सं.) १-बहुत यज्ञ करने वाला। २-हाथी। ३-मेघ। बादल।

सत्रिक [वि.] (सं) १-सत्र-सम्बन्धी। सत्र का। २-किसी सत्र या नियतकाल पर होता रहने वाला। पीरियॉडिक। ३-किसी शस्त्र अथवा नियत काल तक बराबर होता रहने वाला। *टरमिनल*।

सत्री [संज्ञा पु.] (हिं.) १-यज्ञ करने वाला। २-राजदूत। एलची।

सत्रु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शत्रु'।

सत्रुघन, सत्रुहन* [संज्ञा पु](हिं.) देखो 'शत्रुघ्न'।

सत्व [संज्ञा पु] (सं) १-सत्ता। अस्तित्व। २-सार। तत्व। ३-आत्मतत्व। चैतन्य। ४-जीवनीशक्ति। प्राण। ५-सांख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणों में से एक। ६-गर्भ। ७-भूत। प्रेत। ८ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ९-दृढ़ता। धीरता। साहस। १०-प्राणी। जीवधारी।

सत्वक [संज्ञा पु] (सं.) मृत की जीवात्मा। प्रेत

सत्वगुण [संज्ञा पु.](सं.) प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कामों की ओर प्रवृत्त करता है।

सत्वगुणी [वि.] (सं.) उत्तम प्रकृति वाला।

सत्वधाम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सत्वप्रधान [वि.] (सं.) जिसकी प्रकृति में सत्वगुण की प्रधानता हो।

सत्वभारत [संज्ञा पु.](सं.) वेदव्यास का एक नाम

सत्वर [अव्य] (सं.) शीघ्र। जल्द। तुरन्त। झटपट।

सत्वलक्षणा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] गर्भवती। हामिला।

सत्ववती [वि.] (सं) १-गर्भवती। २-सत्वगुण वाली। [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक तांत्रिक देवी। बौद्ध।

सत्ववान् [वि.] (सं) [स्त्री. सत्यवती] १-प्राणयुक्त। २-दृढ़तायुक्त। दृढ़। साहसी। धीर।

सत्वशाली [वि.] (सं.) [स्त्री. सत्वशालिनी] साहसी। धीर।

सत्वशील [वि.] (सं.) सदाचारी। धर्मात्मा।

सत्वस्थ [वि] (सं) १-अपनी प्रकृति में स्थिति। २-दृढ। धीर। ३-प्राणयुक्त। ४-सशक्त।

सत्वोद्रेक [संज्ञा पु.] (सं) १-उत्तम प्रकृति की अधिकता या उमङ्ग। २-साहस। उत्साह।

सत्संग, सत्सङ्ग [संज्ञा पु] (सं) १-साधुओं अथवा सज्जनों का सङ्ग साथ। भली संगति। २-वह समाज जिसमें धर्म अथवा अध्यात्म सम्बन्धी चरचा होती है।

सत्संगति, सत्सङ्गति [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'सतसंग'।

सत्संगी, सत्सङ्गी [बि.] (सं.) [स्त्री.सतसंगिनी] १-अच्छी सङ्गति में रहने वाला। २-मेलजोल रखने वाला। ३-धार्मिक सभा या समाज का सदस्य।

सत्समागम [संज्ञा पु.] (सं.) भले आदमियों का संसर्ग।

सत्सार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चित्रकार। चितेरा। २-कवि। ३-एक प्रकार का पौधा।

सथर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पृथ्वी। भूमि।

सथरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साथरी'।

सथिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्वस्तिक चिह्न 卐। २-भारतीय ढंग से फोड़ों की चीर फाड़ करने वाला। अस्त्रचिकित्सक।

सदंजन, सदञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अंजन जो पीतल से निकलता है।

सदंशक [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़ा।

सदंशवदन [संज्ञा पु.] (सं.) बगुला।

सद [संज्ञा पु.] वृक्ष के फल [अव्यय](हिं.) तुरंत तत्क्षण। तत्काल। [वि.] (हिं.) १-ताजा। २-नया। नवीन। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रकृति। आदत।

सदई* [अव्य] (हिं.) सदैव। सदा। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सभा। मंडली। २-एक प्रकार का छोटा मंडप जो यज्ञशाला पर बनाया जाता था। ३-एक प्रकार का गड़रियों का गीत।

सदक [संज्ञा पु.] (सं.) भूसी सहित अनाज।

सदका [संज्ञा पु.] (अ) १-दान। खैरात। २-निछावर। उतारा। ३-उतारन। उतारा। *सदके जाऊँ-बलि जाऊँ*।

सदचारी [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सदाचारी'।

सदन [संज्ञा पु] (सं.) १-घर। मकान। २-वह स्थान जिसमें किसी विषय पर विचार करने अथवा नियम, विधान आदि बनाने वाली सभा का अधिवेशन होता हो। ३-उक्त कार्यों के निमित्त होने वाली सभा अथवा उसमें उपस्थित होने वाले लोगों का समूह। ४-वह भवन जिसमें बहुत से लोग दर्शक या प्रेक्षक के रूप में उपस्थित हों। ५-उक्त प्रकार के स्थानों में उपस्थित होने वाले लोगों का समूह हाउस। ६-स्थिरता। ७-शैथिल्य। थकावट। ८-एक प्रसिद्ध कसाई जो भगवान का बड़ा भक्त था।

सदना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-छेद में से रसना या चूना। २-नाव के छेदों में से पानी आना।

सदबर्ग [संज्ञा पु.] (फा) हजारा गेंदा।

सदमा [संज्ञा पु.] (अ.) १-आघात। धक्का। चोट। २-मानसिक आघात।

सदय [वि.] (सं.) जिसके मन में दया हो। दयालु

सदर [वि.] (अ.) प्रधान। मुख्य। [संज्ञा पु.] १-वह स्थान जहाँ कोई बड़ा अधिकारी रहता हो अथवा किसी विभाग का प्रधान कार्यालय हो। केंद्रस्थल। २-सभापति। [वि.] (सं.) भययुक्त। डराहुआ।

सदरअदालत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रधान-विचारालय।

सदर-आला [संज्ञा पु.] (अ.) अदालत का वह बड़ा हाकिम जो जज के नीचे हो।

सदर-दरवाजा [संज्ञा पु.] (अ., फा) सामने का मुख्य द्वार। फाटक।

सदरनशीन [संज्ञा पु.] (अ., फा) प्रधानपद पर सुशोभित।

सदर-बाजार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-बड़ा या खास बाजार। २-छावनी का बाजार।

सदर-बोर्ड [संज्ञा पु.] (अ., अं.) माल की सबसे बड़ी अदालत।

सदरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार की बिना आस्तीन की कुरती।

सदर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-मुख्य विषय। असल बात। २-धनाढ्य पुरुष।

सदर्थना* [क्रि. स.] (हिं.) समर्थन करना।

सदश [वि.] (सं.) किनारेदार। हाशियेदार।

सदस् [वि.] (सं.) १-मकान। घर। २-सभा। समाज। ३-यज्ञशाला पर का छोटा मंडप (प्राचीन)।

सदसत् [वि.] (सं.) १-सच और झूठ। २-किसी वस्तु के होने तथा न होने का भाव। ३-बुरा और भला।

सदसद्विवेक [संज्ञा पु.] (सं.) भलेबुरे का ज्ञान।

सदिस [संज्ञा पु.] देखो 'सदस्'।

सदस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। मेंबर। २-यज्ञ करने वाला।

सदस्यता [संज्ञा स्त्री.](सं.) 'सदस्य' का भाव या पद। मेम्बरशिप।

सदह्रा [संज्ञा पु.] (सं.) १-याजक। २-सभासद [वि.] (फा.) सैकड़ों। [संज्ञा पु.] (देश.) अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी।

सदा [अव्य.] (सं.) १-नित्य। हमेशा। २-निरन्तर। [संज्ञा स्त्री.](अ) १-गूँज। प्रतिध्वनि २-शब्द। ध्वनि। आवाज। ३-पुकार। *सदा देना या लगाना*-भिखारी का भीख पाने के लिये आवाज लगाना।

सदाकत [संज्ञा स्त्री] (अ) सत्यता। सच्चाई।

सदाकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) धव। धातकी।

सदागति [संज्ञा पु.] (सं) १-वायु। पवन। वात। ३-सूर्य। ४-ब्रह्म।

सदागतिशत्रु [संज्ञा पु] (सं) एरंड या अंडी का पेड़।

सदागम [संज्ञा पु](सं) १-सज्जन का आगमन। २-अच्छा सिद्धांत।

सदाचरण [संज्ञा पु.](सं) उत्तम आचरण अच्छा चालचलन। यौ०-सदाचरण-पर्यंत-जब तक सदाचरण रक्खे।

सदाचार [संज्ञा पु.] (सं) १-अच्छा आचरण। सात्विक व्यवहार। २-शिष्ट व्यवहार। भलमनसाहत।

सदाचारिता [संज्ञा स्त्री] (सं) देखो 'सदाचरण'।

सदाचारी [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. सदाचारिणी] १-नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरण वाला मनुष्य। २-धर्मात्मा।

सदातन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सदादान [संज्ञा पु] (सं.) १-वह हाथी जिसके मद बहता हो। २-ऐरावत। ३-गणेश।

सदानंद, सदानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सदा आनन्द में रहे। २-शिव। ३-विष्णु। ४-परमेश्वर।

सदानर्त्त [वि.] (सं.) जो बराबर नाचता हो। [संज्ञा पु.] खञ्जन।

सदानीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं) करतोया नदी।

सदानोपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एलापर्णी।

सदापुर [संज्ञा पु.] (सं.) केवटीमोथा।

सदापुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारियल। २-आक। ३-कुन्द का फूल।

सदापुष्पी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-आक। २-लाल आक। ३-कपास। ४-मल्लिका।

सदाप्रसून [संज्ञा पु] (सं) १-रोहितक वृक्ष। २-आक। मदार। ३-कुन्द का पौधा।

सदाफर+ [वि.] (हिं.) देखो 'सदाफल'।

सदाफल [संज्ञा पु] (सं) १-गूलर। २-श्रीफल। बेल। ३-नारियल। ४-कटहल। ५-एक प्रकार का नीबू।

सदाफला, सदाफली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गुड़हर। २-एक प्रकार का बैंगन।

सदाबरत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सदावर्त'।

सदाबहार [वि.] (हिं.) १-जो सदा फूले। २-जो सदा हरा रहे। [संज्ञा पु] एक प्रकार के फूल का नाम।

सदाभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गँभारी का पेड़।

सदाभव [वि.] (सं.) सदा रहने वाला। चिरन्तन।

सदामंडलपत्रक, सदामण्डलपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद गदहपूरना।

सदामत्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के ह्नय।

सदामांसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांसरोहिणी।

सदायोगी [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सदा[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीफल। बिल्ववृक्ष।

सदावर्त [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह स्थान जहाँ भूखों और गरीबों को नित्य भोजन मिलता हो। २-वह अन्न या भोजन जो इस प्रकार भूखों और गरीबों को दिया जाय। ३-नित्य दिया जाने वाला दान।

सदावर्त्ती [संज्ञा पु.] (हिं) १-सदावर्त बाँटने वाला। २-बड़ा दानी।

सदाशय [वि] (सं.) सज्जन। भलामानस।

सदाशयता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सज्जनता। उदारता। भलमनसाहत।

सदाशिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सदा कल्याण करने वाला। २-सदा शुभ और मङ्गल। ३-महादेव

सदासुख [वि] (सं.) सर्वदा सुखी।

सदासुहागिन [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] जो सदा सुहागिन या सौभाग्यवती बनी रहे। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-वेश्या। रंडी। (विनोद में)। २-सिंदूरपुष्पी नामक पौधा। ३-एक प्रकार की छोटी चिड़िया। ४-एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो स्त्रियों के वेश में घूमते हैं

सदिया [संज्ञा स्त्री.](फा) एक प्रकार का लाल पक्षी

सदी [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-शताब्दी। २-किसी विशेष सौ वर्ष के मध्य का समय। ३-सैकड़ा।

सदुपदेश [संज्ञा पु] (सं.) १-अच्छा उपदेश। २-नेक सलाह।

सदुपयोग [संज्ञा पु.](सं.) अच्छा उपदेश। अच्छी तरह या अच्छे काम में लगना।

सदूर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो शार्दूल'।

सदृक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मिठाई।

सदृश [वि.](सं.) १-समान। अनुरूप। २-तुल्य। बराबर। ३-उपयुक्त। मुनासिब।

सदृशता [संज्ञा स्त्री.](सं.) अनुरूपता। समानता

सदेह [क्रि. वि.] (सं.) १-इसी शरीर से। बिना शरीर त्याग किये हुए। २-मूर्त्तिमान्। प्रत्यक्ष

सदैव [अव्य.] (सं.) सदा ही। सर्वदा।

सदोष [वि.](सं.) दोषसहित। अपराधी। दोषी।

सद्‌गति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मरने के बाद अच्छे लोक में जाना। २-उत्तम गति।

सद्‌गुण [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा गुण।

सद्‌गुणी [वि.] (सं.) अच्छे गुण वाला।

सद्‌गुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा गुरु। २-परमात्मा।

सद्‌ग्रंथ, सद्‌ग्रन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा ग्रंथ या सन्मार्ग बताने वाली पुस्तक।

सद* [संज्ञा पु.] (हिं.) शब्द। ध्वनि। [अव्य.] (हिं.) तुरन्त। फौरन।

सद्‌धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा या उत्तम धर्म २-बौद्धधर्म।

सद्‌भाव [संज्ञा पु.] (सं.) १ अच्छा भाव। २-मेलजोल। मैत्री। ३-निष्कपट भाव। सच्चा और अच्छा भाव या नीयत।

सद्म [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सद्मिनी] १-घर। मकान। २-युद्ध। ३-दर्शक। ४-पृथ्वी और आकाश।

साद्मिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हवेली। बड़ा मकान २-महल।

सद्य [अव्यय] (सं.) १-आज ही। २-अभी। इसी समय। ३ तुरन्त। शीघ्र। तत्काल। [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सद्यः [अव्यय] (सं.) देखो 'सद्य'।

सद्यःक्षत [वि.] (सं.) जो अभी घायल हुआ हो।

सद्यःपाक [वि.] (सं.) जिसका फल तुरन्त मिले। [संज्ञा पु.] (सं.) रात के चौथे पहर का स्वप्न

सद्यःप्रसूत [वि.] (सं.) हाल का जनमा। तुरन्त का उत्पन्न।

सद्यःप्रसूता [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसे अभी बच्चा हुआ हो।

सद्यःफल [वि.] (सं.) जिसका फल तुरन्त मिल जाय।

सद्यःशोथा [संज्ञा स्त्री.](सं.) कपिकच्छु। केवाँच

सद्योजात [वि.] (सं.) [स्त्री. सद्योजाता.] अभी का जनमा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव की एक मूर्ति। २- तुरन्त का उत्पन्न बछड़ा।

सद्रत्न [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम या अच्छा रत्न।

सद्रूप [वि.] (सं.) अच्छे स्वरूपवाला। सुन्दरता।

सद्रूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दरता।

सद्वंश [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम वंश या कुल।

सद्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की स्त्री का नाम

सद्विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्रह्मविद्या। ब्रह्मज्ञान

सद्‌वृत्त [वि.] (सं.) अच्छी वृति या आचरण वाला। सदाचारी।

सद्‌वृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छा चालचलन। उत्तम व्यवहार।

सद्‌व्रत [वि.] (सं.) [स्त्री. सद्‌व्रता] १-जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो। २-सदाचारी। नेक चाल-चलन [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम या शुभ व्रत।

सधना[क्रि.अ.](हिं.) १-काम सिद्धहोना। पूराहोना २-काम चलना। मतलब निकलना। ३-अभ्यस्त होना। मँजना। ४-प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल होना। ५-लक्ष्य ठीक होना। ६-हो सकना। ७-घोड़े आदि का शिक्षित होना।

सधर [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर का ओंठ।

सधर्म [वि.] (सं.) समान गुण या क्रिया वाला। ३-तुल्य। समान।

सधवा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।

सधाना [क्रि. स.] (हिं.) सधने का काम दूसरे से कराना।

सधावर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।

सधुक्कड़ी [वि.](हिं.) साधुओं का सा। साधुओं

की तरह। [संज्ञा स्त्री.] 'साधु' होने का भाव

सधूमवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सधूम्र [वि.] (सं.) धुवें के साथ।

सधौर [संज्ञा पु.] (हिं.) सधावर।

सध्रीची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सखी।

सनंक+ [संज्ञा पु] (हिं.) सन्नाटा। स्तब्धता। नीरवता।

सनंदन [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में से एक।

सन् [संज्ञा पु.] (अ.) १-वर्ष। साल। २-संवत्। कोई विशेष वर्ष।

सन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों से रस्सी और टाट बनता है। [संज्ञा स्त्री.] वेग से चलने या निकलने का शब्द। [वि.] देखो 'सन्न'। *जी सन्न होना*–चित्त घबरा जाना। ॐ[प्रत्य.] से। साथ।

सनअत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कारीगरी। शिल्प-कौशल।

सनई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी जात का सन।

सनक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पागलों की सी धुन, प्रवृत्ति या आचरण। झक। *सनक चढ़ना या सवार होना*–धुन होना। [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में से एक का नाम

सनकना [क्रि. अ] (हिं) १-पागल होना। पगलाना। २-पागलों की बातें अथवा आचरण करना।

सनकारनाॐ [क्रि. स.](हिं.) १-संकेत या इशारा करना। २-इशारे से बुलाना। ३-किसी काम के लिये इशारा करना।

सनकियाना [क्रि. स.](हिं.) १-संकेत या इशारा करना। २-सनकाना। [क्रि. अ.] देखो 'सनकना'।

सनकुरंगी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

सनट्टा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मँहदी का पौधा।

सनत् [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

सनत्कुमार [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों में से एक का नाम। २-जैनियों के तीसरे स्वर्ग का नाम। ३-बारह सार्वभौमों या चक्रवर्त्तियों में से एक (जैन)।

सनत्सुजात [संज्ञा पु.](सं.) ब्रह्मा का एक मानसपुत्र।

सनत्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) वह वृक्ष जिस पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं।

सनद [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रमाण। सबूत। २-प्रमाणपत्र। ३-भरोसा करने की वस्तु। ४-तकियागाह।

सनदयाफ्ता [वि.](अ., फा.) १-जिसे किसी बात का प्रमाणपत्र मिला हो। २-किसी परीक्षा में उत्तीर्ण।

सनना [क्रि. अ.] (हिं) १-गीला होकर किसी में मिलना। २-लीन होना।

सननी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी डालकर मिलाया हुआ पशुओं का चारा। सानी।

सनम [संज्ञा पु.] (अ.) प्रियतम। प्यारा।

सनमान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सम्मान'।

सनमाननाॐ [क्रि. स.](हिं.) सम्मान या सत्कार करना।

सनमुखॐ [अव्य.] (हिं.) देखो 'सम्मुख'।

सनसनाना [क्रि अ.] (हिं.)(हवा का) १-सनसन शब्द सहित चलना या बहना। २-खौलते हुए पानी में सनसन शब्द होना।

सनसनाहट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हवा बहने का शब्द। २-हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द। ३-खौलते हुए पानी का शब्द। ४-सनसनी।

सनसनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-शरीर के सम्वेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पन्दन जिसमें कोई अङ्ग जड़ होकर सनसन करता हुआ जान पड़ता है। झुनझुनी। २-किसी विकट घटना के कारण लोगों में फैलने वाली आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता अथवा उत्तेजना। उद्वेग। घबराहट *सेन्सेशन*।

सनहकी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मिट्टी का एक बरतन जो बहुधा मुसलमान काम में लाते हैं।

सनहाना (देश.) वह नाँद या बड़ा पात्र जिसमें भरे खटाई मिले जल में धोने के पूर्व बरतन फूलने के लिये डाले जाते हैं।

सना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सनाय'।

सनाढ्य [संज्ञा पु.] (हिं.) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।

सनातन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अत्यन्त प्राचीनकाल अनादिकाल। २-बहुत दिनों से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा। ३-ब्रह्मा। ४-विष्णु। ५-ब्रह्मा का एक मानसपुत्र। ६-जिसे सब श्राद्धों में भोजन कराना कर्त्तव्य हो। [वि.]१-अत्यन्त प्राचीन। बहुत पुराना २-बहुत दिनों से चला आया हुआ। ३-सर्वदा रहने वाला। नित्य। शाश्वत।

सनातन-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्राचीन या परम्परागत धर्म। २-आजकल का हिन्दू धर्म जिसमें पुराण, तन्त्र, मूर्त्तिपूजन आदि विहित और माननीय हैं।

सनातन-पुरुष [संज्ञा पु] (सं.) विष्णु।

सनातनी [संज्ञा पु.] (हिं.) सनातनधर्म का अनुयायी।
[वि.] (हिं) बहुत दिनों से चला आया हुआ

सनाथ [वि.] (सं.) [स्त्री. सनाथा]-जिसका कोई रक्षक या मददगार हो। *सनाथ करना*–सहायक होना।

सनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहोदर भाई। २-नजदीक का रिश्तेदार। २-सपिंड।

सनाभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ही कुल या वंश का पुरुष। सपिंड।

सनाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। स्वर्णपत्री।

सनासन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सनसन'।

सनाह [संज्ञा पु.] (हि.) कवच। बकतर।

सनिॐ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शनि'।

सनितॐ [वि.](हिं.) सना या एक में मिला हुआ। मिश्रित।

सनीचर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शनैश्चर'।

सनीचरी [संज्ञा पु.] (हिं.) शनि की दशा जिसमें दुःख, व्याधि आदि की अधिकता रहती है। *मीन की सनीचरी*–मीनराशि पर शनि की स्थिति की अवस्था जो राजा प्रजा दोनों के लिए अशुभ मानी जाती है।

सनीड़ [अव्य.] (सं.) १-पड़ोस में। बगल में। २-समीप। [वि.] १-पड़ोस में रहने वाला। २-पास का।

सनेस, सनेसा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'संदेश'।

सनेहॐ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्नेह'।

सनेहियाॐ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सनेही'।

सनेही [वि.] (हिं.) स्नेह या प्रेम करने वाला। प्रेमी। [संज्ञा पु.] प्रियतम। प्यारा।

सनैसनैॐ [अव्य.] (हिं.) देखो 'शनैःशनैः'।

सनोबर [संज्ञा पु.] (अ.) चीड़ का पेड़।

सन्न [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी का पेड़। [वि.] (हिं.) १-संज्ञाशून्य। स्तब्ध। जड़। २-ठक। ३-सहसा मौन या चुप। ४-डर या भय से चुप। *सन्न मारना*–सन्नाटा खींचना।

सन्नत [वि.] (सं.) १-झुका हुआ। २-नीचे गिरा हुआ। [संज्ञा पु.] राम की सेना के एक बंदर का नाम।

सन्नति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-झुकाव। २-नम्रता। विनय। ३-मन का झुकाव। ४-कृपादृष्टि। ५-दक्ष की कन्या जो क्रतु की पत्नी थी। ६-ध्वनि। आवाज।

सन्नद्ध [वि.] (सं.) १-तैयार। उद्यत। २-काम में पूरे तौर से लगा हुआ।

सन्नय [संज्ञा पु.] (सं.) समूह। झुण्ड।

सन्नयन [संज्ञा पु.](सं) १-ले जाना। २-लेख्य आदि के द्वारा किसी सम्पत्ति, विशेषतः अचल संपत्ति का एक हाथ से दूसरे के हाथ में जाना अथवा दिया जाना। हस्तान्तरण। *कन्वेयन्स*।

सन्नयनकार [लेखक] [संज्ञा पु] (सं.) वह जो सन्नयन सम्बन्धी लेख्य आदि लिखकर प्रस्तुत करता है। *कन्वेयन्सर*।

सन्नयन-लेखन [संज्ञा पु](सं) सन्नयन विषयक लेख्य आदि लिखने का काम। *कन्वेयन्सिंग*।

सन्नयन-विद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह विद्या अथवा शास्त्र जिसमें सन्नयन-सम्बन्धी लेखय आदि प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। *कन्वेयसिंग*।

सन्नाटा [संज्ञा पु.](हिं.) १-वह अवस्था जिसमें कहीं कुछ भी शब्द न हो। नीरवता। निस्तब्धता। २-निर्जनता। एकान्तता। ३-भौंचक्कापन। ४-पूरी तरह मौन। चुप्पी। ५-चहल-पहल आदि का अभाव। ६-जोर से हवा चलने का शब्द। *सन्नाटा खींचना या मारना*-बिलकुल चुप हो जाना। *सन्नाटा बीतना*-उदासी में समय कटना। *सन्नाटे का*-सनसन-शब्दसहित बहता हुआ। *सन्नाटे के साथ या सन्नाटे से*-बड़ी तेजी या वेग से। झोंक से। *सन्नाटे में आना*-स्तब्ध या हक्काबक्का हो जाना।

सन्नाद [संज्ञा पु.] (सं.) भीषण शब्द।

सन्नादन [संज्ञा पु.] (सं.) राम की सेना का एक बन्दर।

सन्नाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-कवच। बकतर। २-प्रयत्न।

सन्नाह्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का हाथी।

सन्निकट [अव्यय] (सं.) समीप। पास।

सन्निकर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्बन्ध। लगाव। २-नाता। रिश्ता। ३-समीपता। सामीप्य। ४-इन्द्रियों का विषय के साथ होने वाला सम्बन्ध।

सन्निकाश [वि.] (सं.) सदृश। समान।

सन्निध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सामीप्य। २-आमने सामने होना।

सन्निधाता [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीन भारतीय राजनीति में वह व्यक्ति जो राजकोष का मुख्य अधिकारी होता था।

सन्निधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकटता। समीपता। २-रखना। धरना। ३-स्थापित करना। ४-किसी वस्तु के रखने का स्थान। ५-वह स्थान जहाँ धन एकत्र किया जाय। निधि।

सन्निधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समीपता। २-पड़ोस ३-आमने-सामने की स्थिति।

सन्निपात [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ गिरना या पड़ना। २-जुटना। भिड़ना। ३-संयोग। ४-इकट्ठा होना। ५-एक रोग जिसमें कफ, वात और पित्त तीनों बिगड़ जाते हैं। त्रिदोष। सरसाम।

सन्निबंध, सन्निबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-जकड़ना। २-लगाव। सम्बन्ध। ३-प्रभाव। तासीर। ४-परिमाण। फल।

सन्निबद्ध [वि.] (सं.) १-एक में बँधा या जकड़ा हुआ। २-लगा या फँसा हुआ। ३-सहारे पर टिका हुआ।

सन्निभ [वि.] (सं.) सदृश। मिलता जुलता। समान।

सन्निभृत [वि.] (सं.) १-अच्छी प्रकार छिपा हुआ गुप्त। २-समझ-बूझकर बोलने वाला।

सन्निमग्न [वि.] (सं.) १-खूब डूबा हुआ। २-सोया हुआ। ३-(किसी काम या बात में) पूर्णतया लीन।

सन्निरुद्ध [वि.] (सं.) १-रोका हुआ। २-दबाया हुआ। ३-ठसाठस भरा हुआ।

सन्निरोध [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोक। रुकावट। बाधा। २-निवारण। ३-तंगी। संकोच। ४-सँकरी गली।

सन्निविष्ट [वि.] (सं.) १-किसी के अन्तर्गत आया या मिलाया हुआ। २-स्थापित। प्रतिष्ठित। ३-लगा या जड़ा हुआ। ४-समाया हुआ। ५-पास या समीप का।

सन्निवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ बैठना या स्थित होना। २-सजाया या जमा कर रखना ३-अँटना। समाना। ४-एकत्र होना। इकट्ठा होना। जुटना। ५-रहने की जगह। घर। ६-आधार। रखने की जगह। ७-चौपाल। ८-गढ़न। बनावट। ९-रचना। १०-स्तम्भ मूर्ति आदि की स्थापना।

सन्निवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को किसी अन्य वस्तु के अन्तर्गत लाना। सन्निविष्ट करना। मिलाना। २-सजा, जमा या लगाकर रखना। ३-स्थापित या प्रतिष्ठित करना। ४-टिकाना। ठहराना।

सन्निवेशित [वि.](सं) १ बैठाया या जमाया हुआ २-ठहराया हुआ। ३-स्थापित। ४-अँटाया हुआ।

सन्निहित [वि.] (सं.) १-साथ या पास रखा हुआ। २-पास का। ३-रखा या धरा हुआ ४-ठहराया या टिका हुआ। ५-उद्यत। तत्पर

सन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

सन्नोदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पशु हांकना। २-उकसाना। प्रेरित करना।

सन्मान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सम्मान'।

सन्मानना [क्रि. स] (हिं.) देखो 'सनमानता'।

सन्मुख [अव्यय] (हिं.) देखो 'सम्मुख'।

सन्यसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फेंकना। छोड़ना। २-सांसारिक विषयों का त्याग। ३-रखना। धरना। ४-बैठाना। जमाना। ५-खड़ा करना

सन्यस्त [वि.](सं.) १-फेंका या छोड़ा हुआ। २-रखा या धरा हुआ। ३-बैठाया या जमाया हुआ। ४-खड़ा किया हुआ।

सन्यास [संज्ञा पु.](सं.) १-छोड़ना। त्याग। २-सांसारिक प्रपंचों के त्याग की वृत्ति। वैराग्य ३-चतुर्थ-आश्रम। ४-सहसा शरीरत्याग। ५-एक दम थक जाना। ६-धरोहर। थाती। ७-वादा। इकरार। ८ बाजी। होड़। ९-जटामासी

सन्यासी [संज्ञा पु.](हिं.)[स्त्री. सन्यासिन, सन्यासिनी] १-सन्यास-आश्रम में प्रवेश करने वाला व्यक्ति। २-विरागी। त्यागी।

सपई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेट में पड़ने वाला केंचुवा नामक कीड़ा। २-बेला नामक फूल।

सपक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-अनुकूल पक्ष। २-सहायक। तरफदार। ३-न्याय के अन्तर्गत वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो। [वि.](सं.) १-तरफदार। २-समर्थक। पोषक

सपक्षता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पक्षावलम्बन। २-अनुकूलता।

सपक्षी [वि.] देखो 'सपक्ष'।

सपटा [संज्ञा पु.] (देश.) १-सफेद कचनार। २-एक प्रकार का टाट।

सपट्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्वार की चौखट में दोनों खड़ी लकड़ियाँ। बाजू।

सपड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सपरना'।

सपड़ाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सपराना'।

सपत्न [संज्ञा पु.] (सं) शत्रु। वैरी।

सपत्नजित् [वि.] (सं.) शत्रु को जीतने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम

सपत्नता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैर। शत्रुता।

सपत्नारि [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का ठोस बांस

सपत्नी [संज्ञा स्त्री.](सं.) पत्नी की दृष्टि से, उसके पति की दूसरी स्त्री। सौत। सौतिन।

सपत्नीक [वि.] (सं.) पत्नी के सहित।

सपथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शपथ'।

सपदि [अव्यय] (सं.) उसी समय। तुरन्त।

सपन+, सपना [संज्ञा पु.](हिं.) १-वह मानसिक दृश्य या घटना जो अच्छी तरह नींद न आने की अवस्था में दिखाई देती है। २-स्वप्न। *सपना होना*-देखने को भी न मिलना।

सपरदाई [संज्ञा पु.] (हिं.) वेश्या के साथ तबला या सारङ्गी बजाने वाला आदमी।

सपरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-काम का पूरा होना। निबटाना। २-काम का हो सकना। ३-तैयार होना। *सपरजाना*-मरजाना।

सपराना [क्रि. स.] (सं.) १-काम पूरा करना। निबटाना। २-पूरा कर सकना।

सपरिकर [वि.] (सं.) अनुचर वर्ग के साथ।

सपरिच्छद [वि.] (सं.) ठाटबाट के साथ।

सपर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पूजा। उपासना।

सपाट [वि.] (हिं.) जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। समतल।

सपाटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चलने या दौड़ने का वेग। २-तीव्रगति। दौड़। यौ०-*सैर सपाटा*-मनबहलाव के निमित्त घूमना। फिरना।

सपाद [वि.] (सं.) १-चरणसहित। २-जिसमें एक का चौथाई और मिला हो। यौ०-*सपादलक्ष*-सवा लाख।

सपिंड [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही कुल या खानदान

का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंड देते हों।

सपिंडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों या परिवार के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा लिया जाता है।

सपीतक [संज्ञा पु.] (सं.) घीया तुरई।

सपीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लम्बी घीया।

सपुलक [वि.] (सं.) पुलक अथवा हर्षसहित।

सपुर्द [वि.] (फा.) किसी के जिम्मे किया हुआ।

सपुर्दगी [संज्ञा स्त्री.](फा.) सपुर्द करने की क्रिया या भाव।

सपूत [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छा और योग्य पुत्र।

सपूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लायकी। २-योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता।

सपेत, सपेद* [वि.] (हिं) सफेद।

सपेती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सफेदी।

सपेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सँपेरा'।

सपेला, सपोला [संज्ञा पु.] (हिं.) साँप का बच्चा।

सप्त [वि.] (सं.) गिनती में सात।

सप्तऋषि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सप्तर्षि'।

सप्तक [संज्ञा पु.](सं.) सात वस्तुओं का समूह। २-सङ्गीत में सात स्वरों का समूह।

सप्तकी [संज्ञा स्त्री.](सं.) स्त्रियों का कमरबन्द।

सप्तकृत [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वदेव में से एक।

सप्तगुण [वि.] (सं.) सातगुना।

सप्तग्रही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक ही राशि में सात ग्रहों का इकट्ठा होना।

सप्तचत्वारिंश [वि.] (सं.) सैंतालीसवाँ।

सप्तचत्वारिंशत् [वि.] (सं.) सैंतालीस।

सप्तच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) छतिवन।

सप्तजिह्व [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

सप्तति [वि.] (सं.) सत्तर।

सप्ततिम [वि.] (सं.) सत्तरवाँ।

सप्तत्रिंश [वि.] (सं.) सैंतीसवां।

सप्तत्रिंशत् [वि.] (सं.) सैंतीस।

सप्तदश [वि.] (सं.) १-सत्तरहवां। २-सत्तरह।

सप्तदशम [वि.] (सं.) सत्तरहवां।

सप्तद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग (पुराण)।

सप्तधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र ये शरीर की सात धातुएँ या संयोजक द्रव्य। २-चन्द्रमा का एक घोड़ा। [वि.] सात धातुओं से बना-हुआ।

सप्तधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) सात अन्नों का मेल जो पूजा में काम आता है।

सप्तनाड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिघाड़ा।

सप्तनाड़ीचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में एक चक्र जिसमें सात टेढ़ी लकीरों में सब नक्षत्रों के नाम रहते हैं।

सप्तनामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आदित्यभक्ता नामक पौधा।

सप्तपंचाश, सप्तपञ्चाश [वि](सं.) सत्तावनवां।

सप्तपंचाशत् [वि.] (सं.) सत्तावन।

सप्तपत्र [वि.] (सं.) १-जिसमें सात पत्ते या दल हों। २-जिसके वाहन सात घोड़े हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोतिया। २-छतिवन। ३-सूर्य।

सप्तपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की सात परिक्रमाएँ करना। भांवर। भँवरी।

सप्तपदी-पूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पूजन जो विवाह के अवसर पर होता है।

सप्तपदार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ।

सप्तपराक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तप।

सप्तपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-छतिवन। २-एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लज्जालु।

सप्तपलाश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सप्तपर्ण'।

सप्तपाताल [संज्ञा पु.](सं.) अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतपुतिया नामक तरकारी।

सप्तपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जयिनी और द्वारका से सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्ष देने वाले कहे गये हैं।

सप्तप्रकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य के सात अङ्ग यथा--राजा, मंत्री, सामन्त, देश, कोश, गढ़ और सेना।

सप्तबाह्य [संज्ञा पु] (सं.) बलख।

सप्तभंगी, सप्तभङ्गी [संज्ञा स्त्री.](सं.) जैन-न्याय या तर्क के सात अवयव जिन पर स्याद्वाद की की प्रतिष्ठा है।

सप्तभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिरिस। २-नव-मल्लिका। ३-गुंजा। चिरमटी।

सप्तभुज [संज्ञा पु.] (सं.) सात भुजाओं वाला क्षेत्र

सप्तभुवन [संज्ञा पु.] (सं.) ऊपर के सात लोक।

सप्तभूम [संज्ञा पु.] (सं.) मकान के सप्तखंड या मंजिल। [वि.] (सं.) सतमंजिला।

सप्तम [वि.] (सं.) [स्त्री. सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात शक्तियाँ जिनका पूजन विवाह आदि शुभ अवसरों के पहले होता है। इनके नाम इस प्रकार हैं— ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुंडा।

सप्तमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चांद्रमास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २-अधिकरण कारक की विभक्ति। [वि.] [स्त्री. प्र.] सातवीं।

सप्तमुष्टिक [संज्ञा पु.] (सं.) कई द्रव्यों के योग से बनने वाली एक औषध जो ज्वर में दी जाती है।

सप्तमृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात स्थानों की मिट्टी जो शांतिपूजन के काम में आती है।

सप्तरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) हथेली, तलवा, जीभ, आंख या पलक का निचला भाग, तालू और ओठ।

सप्तराव [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

सप्तराशिक [संज्ञा पु.] (सं.) गणित की एक क्रिया जिसमें सात राशियाँ होती हैं।

सप्तरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

सप्तर्षि [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन सात ऋषियों का समूह या मंडल (शतपथ के अनुसार) गौतम भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि, या (महाभारत के अनु-सार)-मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। २-वे सात तारे जो साथ रह कर ध्रुव की परिक्रमा करते हुए उत्तर दिशा में दिखाई पड़ते हैं।

सप्तर्षिज [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सप्तला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सातला। २-चमेली ३-रीठा। ४-घुँघची।

सप्तवादी [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के अनुसार सप्त भंगी न्याय का अनुयायी।

सप्तविंश [वि.] (सं.) सत्ताईसवां।

सप्तविंशति [वि.] (सं.) सत्ताइस।

सप्तशत [वि.] (सं.) सात-सौ।

सप्तशती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सात सौ का समूह। २-सात-सौ पद्यों का समूह। सतसई

सप्तशिवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली।

सप्तशीर्ष [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

सप्तषष्ठ [वि.] (सं.) सड़सठवाँ।

सप्तषष्ठि [वि.] (सं.) सड़सठ।

सप्तसप्तत [वि.] (सं.) सतहत्तरवाँ।

सप्तसप्तति [वि.] (सं.) सतहत्तर।

सप्तसप्ति [वि.] (सं.) जिसके रथ में सात घोड़े हों। [संज्ञा पु.] सूर्य।

सप्तसागर-दान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दान जिसमें सात पात्रों में घी, दूध, दही आदि रखकर ब्राह्मण को देते हैं।

सप्तसिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पान। तांबूल।

सप्तस्पर्द्धा [संज्ञा स्त्री.](सं.) रामायण में वर्णित एक नदी का नाम।

सप्तस्वर [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत के सात स्वर-स, ऋ(रे), ग, म, प, ध, नि।

सप्तांशु [संज्ञा पु.] (सं.) शनिग्रह।

सप्तार्चि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-शनि। ३-चित्रकवृक्ष।

सप्तालु [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'शफतालू'।

सप्ताशीति [वि.] (सं.) सत्तासी।

सप्ताश्व [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सप्ताह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सात दिनों का काल। हफ्ता। २-सोमवार से रविवार तक के सात दिन। ३-भागवत, रामायण आदि की पूरी कथा सात दिनों में पढ़ना या सुनना।

सप्पन [संज्ञा पु] (देश.) बक्कम का पेड़।

सप्रभाव [वि.] (सं.) तेजस्वी। पराक्रमी।

सप्रमाण [वि.] (सं.) १-प्रमाणसहित। २-प्रामाणिक। ठीक।

सप्लाई [संज्ञा स्त्री] (अं.) व्यवहार या उपयोग के लिए कोई वस्तु उपस्थित करना।

सप्लायर [संज्ञा पु.] (अं.) वह जो किसी को वस्तुएँ पहुँचाने का कार्य करता हो।

सप्लीमेंट [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह पत्र जो किसी समाचारपत्र में अधिक विषय देने के उद्देश्य से अतिरिक्त रूप से लगाया जाय। अतिरिक्त पत्र। २-किसी वस्तु का अतिरिक्त अंश।

सफ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शफ'।

सफ़ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पंक्ति। कतार। २-लम्बी चटाई। ३-बिछावन।

सफगोल [संज्ञा पु.] देखो 'इसबगोल'।

सफतालू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटे कद का वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं।

सफर [संज्ञा पु.] (अ.) यात्रा।

सफरदाई [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सपरदाई'।

सफरमैना [संज्ञा स्त्री.] (अं. सैपरमाइनर) सेना के वे सिपाही जो खाई खोदने, जङ्गल काटने अथवा रास्ता साफ करने के लिये उसके आगे-आगे चलते हैं।

सफरा [संज्ञा पु.] (अ.) पित्त।

सफरी [वि.] (अ.) सफर में काम आने वाला (छोटा और हलका)। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सौरी नामक मछली। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धातु का एक प्रकार का पीला वरक या पन्नी।

सफरोल [संज्ञा पु.] (?) एक दवा या मसाला जो कपूर के लाल तेल से बनाई जाती है।

सफल [वि.] (सं.)[स्त्री. सफला] १-जिसमें फल लगा हो। २-जिसका कुछ फल या परिणाम हो। सार्थक। ३-जिसने प्रयत्न करके कार्य अथवा उद्देश्य सिद्ध कर लिया हो। कृतकार्य कामयाब।

सफलक [वि.] (सं.) जिसके पास ढाल हो।

सफलता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कामयाबी। सिद्धि २-पूर्णता।

सफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफल करना। २-सिद्ध करना। पूर्ण करना।

सफला [संज्ञा स्त्री.](सं.) पौषमास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

सफलीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफल करना। २-सिद्ध या पूर्ण करना।

सफलीभूत [वि.] (सं.) जो सफल हुआ हो।

सफहा [संज्ञा पु.] (अ.) १-सतह। तल। २-वरक पृष्ठ।

सफा [वि.] (अ.) १-साफ। स्वच्छ। निर्मल। २-पाक। ३-चिकना। [संज्ञा पु.] (अ.) पुस्तक का पृष्ठ।

सफाई [संज्ञा स्त्री] (अ.) १-साफ होने का भाव २-लड़ाई झगड़े आदि का निपटारा। दुर्भाव न रह जाना। ३ अभियुक्त का अपनी निर्दोषता प्रमाणित करना। *सफाई देना*-निर्दोषिता प्रमाणित करना।

सफाचट [वि.] (हिं.) १-एक दम स्वच्छ। २-जिस पर कुछ जमा या लगा न रह गया हो। ३-जो जमा या लगा न रहने दिया जाय।

सफाया [संज्ञा पु.] (अ.) १-कुछ भी बाकी न रह जाना। पूरी सफाई। २-पूर्ण विनाश।

सफीना [संज्ञा पु.] (अ.) १-बही। किताब। २-अदालती परवाना।

सफीर [संज्ञा स्त्री.] (?) १-चिड़ियों की आवाज २-पक्षियों को बुलाने के लिये दी जाने वाली सीटी। [संज्ञा पु.] (अ.) राजदूत।

सफील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) पक्की चहारदिवारी। परकोटा।

सफूफ [संज्ञा पु.] (अ.) चूर्ण। बुकनी।

सफेद [वि.] (फा.) १-उजला। धौला। श्वेत। २-सादा। कोरा। *किसी का रङ्ग सफेद पड़जाना*-विवर्णता होना। *स्याह-सफेद*-भलाबुरा।

सफेददाग [संज्ञा पु.] (हिं.) श्वेतकुष्ट।

सफेदधात्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

सफेदपलका [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद और कुछ काले रङ्ग का कबूतर।

सफेदपोश [संज्ञा पु.](फा.) १-साफ कपड़े पहनने वाला। २-साधारण गृहस्थ, पर भला आदमी

सफेदा [संज्ञा पु.](फा.) १-जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा के काम में आता है। २-एक प्रकार का बढ़िया आम। ३-एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष

सफेदार [संज्ञा पु.] (देश.) सीसम का पेड़।

सफेदी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-सफेद होने का भाव। धवलता। २-दीवार आदि पर चूने या सफेद रङ्ग की पुताई। *सफेदी आना*-बाल सफेद होना

सफ्तालू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सफतालू'।

सब [वि.] (हिं.) १-जितने हों वे कुल। समस्त। २-पूरा। सारा। *सब-मिलकर*-सब। कुल। [वि.] (अ.) छोटा। गौण। अप्रधान।

सबक [संज्ञा पु.](फा.) १-पाठ। २-शिक्षा। नसीहत।

सबकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) विशेषता प्राप्त करना।

सबज़ [वि.] (हिं.) देखो 'सब्ज'।

सबजज [संज्ञा पु.](अं.) छोटा जज या न्यायाधीश

सब-डिविजनल [वि.](अं.) उस भूभाग का जिसके अन्तर्गत बहुत से गांव और क़सबे हों। सब डिविजन-सम्बन्धी।

सब-डिवीजन [संज्ञा पु.](सं.) किसी जिले का वह छोटा भूभाग जिसके अन्तर्गत बहुत से गांव और क़सबे हों। परगना।

सबद* [संज्ञा पु.](हिं.) १-देखो 'शब्द'। २-किसी साधु महात्मा के वचन।

सबब [संज्ञा पु.](अ.) १-कारण। हेतु। २-साधन

सब-मैरीन [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का छोटा बोट जो पानी के भीतर चलता है। और युद्ध के समय शत्रु के जहाजों को नष्ट करने में काम आता है।

सबर [संज्ञा पु.] (अ.) सन्तोष। धैर्य। *किसी का सबर पड़ना*-किसी के चुपचाप सहन किये हुए मानसिक कष्ट का प्रकारान्तर से प्रतिफल मिलना।

सबल [वि.] (सं.) १-बलवान्। ताकतवर। २-जिसके साथ सेना हो।

सबलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सबल या ताकतवर होने का भाव।

सबा [संज्ञा स्त्री.] (अ.) प्रातःकाल के समय पूर्व की ओर से चलने वाली हवा।

सबार* [क्रि. वि.] (हिं.) शीघ्र। जल्दी।

सबार्डिनेट-जज [संज्ञा पु.] (अं.) दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो।

सबील [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-युक्ति। उपाय। तरकीब। २-पौसला। प्याऊ।

सबू [संज्ञा पु.] (फा.) मटका। गगरी।

सबूत [संज्ञा पु.] (अ.) प्रमाण।
[वि.] (अ.) जो टूटा न हो। पूरा।

सबेरा [संज्ञा पु.] देखो 'सवेरा'।

सब्ज [वि.] (फा.) १-कच्चा और ताजा (फल-फूल आदि) २-हरा। हरित (रङ्ग)। ३-शुभ *सब्जबाग दिखलाना*-अपना काम साधने या निकालने के लिए बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाना *यौ०-सब्ज-बख्त*-भाग्यशाली।

सब्ज-कदम [संज्ञा पु.] (फा.) वह जिसका आना अशुभ सिद्ध हो। मनहूस।

सब्जा [संज्ञा पुं.] (हिं.) १-हरियाली। २-भांग। विजया। ३-पन्ना नामक रत्न। ४-एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियां कान में पहनती हैं। ५-वह घोड़ा जिसका रङ्ग कालापन लिये सफेद हो।

सब्जी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-हरापन। २-हरि-

थाली । ३-हरी तरकारी । ४-सागभाजी

सब्र [संज्ञा पु.] (अं.) संतोष । धैर्य ।
किसी का सब्र पड़ना-किसी के धैर्यपूर्वक सहन किये हुए कष्ट का प्रतिफल होना । *सब्र कर बैठना या लेना*-कोई हानि होने पर उसे चुपचाप सह लेना । *सब्र समेटना*-किसी का शाप लेना ।

सब्रह्मचारी [संज्ञा पु.] (सं.) सम्बन्ध के विचार से परस्पर वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ एक ही गुरु के यहाँ रहकर शिक्षा ली हो ।

सभर्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सधवा ।

सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-परिषद् । गोष्ठी । समिति । २-वह संस्था जो कोई विशेष कार्य करने अथवा किसी विषय पर विचार करने के निमित्त बनी हो । ३-जूआ । द्यूत । ४-घर । मकान । ५-समूह । झुण्ड ।

सभाकार [संज्ञा पु.] (सं.) सभा करने वाला ।

सभागा [वि.] (हिं.) भाग्यवान् । होनहार ।

सभागृह [संज्ञा पु] (सं.) वह स्थान या भवन जहाँ किसी सभा या समिति का अधिवेशन होता है ।

सभाजन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने मित्र-सम्बन्धियों आदि के आने पर उनसे गले मिलना तथा परस्पर कुशल समाचार पूछना एवं सत्कार करना ।

सभानर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरिवंश के अनुसार कक्ष के एक पुत्र का नाम । २-अणु के एक पुत्र नाम (भागवत) ।

सभापति [संज्ञा पु.] (सं.) किसी का प्रधान, मुखिया, या नेता । प्रेसिडेन्ट ।

सभापरिषद् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साहित्य, राजनीति आदि विषय पर विचारार्थ बहुत से लोगों का एकत्र होना । २-सभागृह ।

सभाभवन [संज्ञा पु.] (सं.) सभागृह ।

सभा-मंडप, सभा-मण्डप [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ कोई सभा या समाज लगती हो । २-देव-मन्दिरों में गर्भ-गृह के सामने का वह स्थान जहाँ भक्त लोग बैठकर भजन, कीर्तन आदि करते हैं ।

सभाली [संज्ञा पु.] (सं.) जूएखाने का मालिक ।

सभासद [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी सभा का सदस्य हो । मेंबर ।

सभास्तार [संज्ञा पु.] (सं.) सभासद । सदस्य ।

सभिक, सभीक [संज्ञा पु.] (सं.) जूएखाने का मालिक ।

सभीत [वि.] (सं.) देखो 'भीत' ।

सभेद [संज्ञा पु.] (सं.) सभासद । सदस्य ।

सभोचित [संज्ञा पु.] (सं.) पण्डित । विद्वान् ।

सभ्य [वि.] (सं.) अच्छे आचार-विचार रखने वाला भलों का सा व्यवहार करने वाला । शिष्ट । सिविल । [संज्ञा पु.] १-सभासद । सदस्य । २-वह जिसका व्यवहार सज्जनों और भले आदमियों के समान हो ।

सभ्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सभ्य होने का भाव । २-सदस्यता । ३-शील और सज्जन होने की अवस्था या भाव । भलमनसाहत । शराफत । ४-किसी जाति अथवा राष्ट्र की वे सब बातें जो उसके सौजन्य और शिक्षित एवं उन्नत होने की सूचक होती हैं । सिविलिजेशन ।

समंगा, समङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ । २-लाजवन्ती । ३-वाराहक्रांता । ४-बाला ।

समंगिनी, समङ्गिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की एक देवी ।

समंजन, समञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठीक करना या बैठाना । २-लेनदेन का हिसाब या इसी प्रकार का और कोई कार्य करके बैठाना । ऐडजस्टमेन्ट । ३-लेखे, खाते आदि में लेन-देन का हिसाब ठीक और पूरा करना । जमा खर्च करना । ऐडजस्टमेंट । ४-कोई ऐसा काम ठीक प्रकार से तथा उपयुक्त रूप में करना जो सहज में ठीक तरह से न होता हो । मेल मिलाना या बैठाना । ऐडजस्टमेंट ।

समंजस, समञ्जस [वि.] (सं.) प्रसङ्ग, उल्लेख आदि के विचार से ठीक बैठाने वाला । उपयुक्त । ठीक ।

समंजित, समञ्जित [वि.] (सं.) समञ्जन किया हुआ । ठीक किया या बैठाया हुआ ।

समंठ, समण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) तरकारी बनाने के काम में आने वाले फल । जैसे-ककड़ी, पपीता आदि ।

समंत, समन्त [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा । किनारा । सिरा । [वि.] समस्त । सब । कुल ।

समंतकुसुम, समन्तकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) एक देवपुत्र का नाम जिसका उल्लेख ललितविस्तार में मिलता है ।

समंतगंध, समन्तगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धमतानुसार एक देवपुत्र का नाम ।

समंतदर्शी, समतदर्शी [वि.] (सं.) जिसे सब कुछ दिखाई देता हो । [संज्ञा पु.] गौतमबुद्ध का एक नाम ।

समंतदुग्धा, समन्तदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थूहर ।

समंतनेत्र, समन्तनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम ।

समंतपंचक, समंतपञ्चक [संज्ञा पु.] (सं.) कुरुक्षेत्र का एक नाम ।

समंतप्रभ, समन्तप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम ।

समंतप्रभास, समन्तप्रभास [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध का एक नाम ।

समंतप्रसादिक, समन्तप्रसादिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम ।

समंतभद्र, समन्तभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध का एक नाम ।

समंतभुज, समन्तभुज [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि ।

समंतर, समन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम । २-उसका निवासी ।

समंतरश्मि, समन्तरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम ।

समंतालोक, समन्तालोक [संज्ञा पु.] (सं.) ध्यान करने का एक प्रकार ।

समंतावलोकित, समन्तावलोकित [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम ।

समंद [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़ा । अश्व ।

समंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-समुद्र । सागर । २-बड़ा तालाब या झील । [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का कल्पित चूहा जिसकी उत्पत्ति आग से मानी जाती है ।

सम [वि.] (सं.) १-समान । तुल्य । बराबर । २-जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो । ३-(वह संख्या) जिसे दो से भाग देने पर कुछ न बचे जूस । [संज्ञा पु.] १-सम-संख्या पर पड़ने वाली राशि । जैसे-दो, चार, छः आदि । २-गणित में वह सीधी रेखा जो उस अंक के ऊपर बनाई जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है । ३-सङ्गीत में वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है तथा जहाँ गाने बजाने वालों का सिर हिलता अथवा आप से आप आघात सा करता है । ४-साहित्य में वह अर्थालङ्कार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग का वर्णन होता है । [संज्ञा पु.] (अं.) विष । जहर ।

समकक्ष [वि.] (सं.) समान । तुल्य ।

समकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्याहने योग्य अवस्था वाली लड़की ।

समकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव । २-गौतमबुद्ध ३-ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने-सामने वाले कोणों के ऊपर की रेखाएं ।

समकालीन [वि.] (सं.) जो एक ही समय में हुए हों ।

समकृत [संज्ञा पु.] (सं.) कफ । श्लेष्मा ।

समकोण [वि.] (सं.) ज्यामिति में ९० अंश का कोण जो किसी पड़ी रेखा पर बिलकुल खड़ी सीधी रेखा के आकार मिलने से बनता है । राइट-ऐंगिल । [वि.] (वह चतुर्भुज) जिसके आमने-सामने के सभी कोण समान हों ।

समकोल [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प । साँप ।

समकोश [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन देश का नाम ।

समक्वाथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह क्वाथ (काढ़ा) जिसका पानी जलकर आठवाँ भाग रह जाए ।

समक्ष [अव्य.] (सं.) सामने । सम्मुख ।

समगंधक, समगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.)

समगंधिक, समगन्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) खस। उशीर।

समग्री* [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सामग्री।

समग्र [वि.] (सं.) सब। सारा।

समचतुर्भुज [संज्ञा पु.] (सं.) वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज बराबर हों।

समचर [वि.] (सं.) समान आचरण या व्यवहार करने वाला।

समचित्त, समचेता [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके चित्त की अवस्था या वृत्ति सब जगह समान हो

समज [संज्ञा पु.] (सं.) १-जङ्गल। २-पशुओं का झुण्ड।

समज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यश। कीर्त्ति।

समझ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बुद्धि। अक्ल। २-ध्यान। खयाल।

समझ पर पत्थर पड़ना–बुद्धि नष्ट होना।

समझदार [वि.] (हिं.) बुद्धिमान्। अक्लमन्द।

समझना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी बात को अच्छी तरह जान लेना।

समझ-बूझकर–ज्ञानपूर्वक। *समझ रखना*–अच्छी तरह जान रखना। *समझ लेना*–१-प्रतिशोध या बदला लेना। २-समझौता करना

समझाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी बात को किसी के मन में अच्छी तरह बैठाना।

समझाव, समझावा [संज्ञा पु.] (हिं.) समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता [संज्ञा पु.] (हिं.) लेन देन, व्यवहार, झगड़े, विवाद आदि के सम्बन्ध में सब पक्षों में आपस में होने वाला निपटारा। *कम्प्रोमाइज*

समतट [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र के किनारे का देश। २-एक प्राचीन प्रदेश का नाम।

समतल [वि.] (सं.) जिसकी सतह या तल बराबर हों। सपाट।

समता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। *इक्वैलिटी*।

समतूल* [वि.] (हिं.) देखो 'समतोल'।

समतोल [वि.] (सं.) १-महत्व आदि के विचार से समान। २-बराबर।

समतोलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-महत्व आदि के विचार से सबको बराबर रखना। २-दोनों पलड़ों या पक्षों को बराबर या समान रखना *बैलेंसिंग*।

समत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) हरें, नागरमोथा और गुड़ इन तीनों के समान भागों का समूह।

समत्रिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) वह त्रिकोण जिसकी तीनों भुजा समान या बराबर हों।

समत्व [संज्ञा पु.] (सं.) समता। तुल्यता। बराबरी

समदन [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। लड़ाई। [संज्ञा स्त्री.] (?) भेंट। उपहार।

समदना* [क्रि. अ.] (?) प्रेमसहित मिलना। भेंटना। [क्रि स.] भेंट या उपहार देना। नजर करना।

समदर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) सबको एकसा देखना

समदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) सब को एकसा समझने या देखने वाला।

समदृश [संज्ञा पु.] (सं.) समदर्शी।

समदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समदर्शी की दृष्टि।

समद्वादशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह क्षेत्र आदि जिसके बारह समान भुज हों।

समद्विद्विभुज [संज्ञा पु.] (सं.) वह चतुर्भुज जिसके आमने-सामने के भुज बराबर हों।

समधिक [वि.] (सं.) बहुत। अधिक।

समधिगम [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभांति प्राप्ति।

समधिगमन [संज्ञा पु.] (सं.) जीतना। दमन करना

समधियाना [संज्ञा पु.] (हिं.) समधी का घर।

समधी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. समधिन] पुत्र या पुत्री का ससुर।

समध्व [वि.] (सं.) साथ-साथ यात्रा करना।

समनंतर, समनन्तर [वि.] (सं.) बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।

समन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'सम्मन'। *२-देखो 'शमन'।

समनगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। २-सूर्य-किरण।

समनुज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विषय की पुष्टि या समर्थन करते हुये मान्य करना। *सैंक्शन*।

समनुज्ञाता [वि.] (सं.) किसी विषय की पुष्टि या समर्थन करते हुये उसे मानने वाला।

समनुज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वीकृति। रजामंदी २-पूर्णतया पसन्दगी।

समन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

समन्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-विरोध का अभाव। मिलान। मिलाप। २-कार्य और कारण की सङ्गति या निर्वाह।

समन्वित [वि.] (सं.) १-मिला हुआ। संयुक्त। २-जिसमें कोई रुकावट न हो।

समपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनुष चलाते समय खड़े होने का एक ढंग। २-कामशास्त्रानुसार एक प्रकार का रतिबन्ध या आसन।

समपात [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजकीय प्रबन्ध जिसमें लोगों को खानेपीने या अन्य आवश्यकताओं की वस्तुऐं कुछ नियमित मात्रा में और कुछ नियत काल में दी जाती है। *रैशन*।

समपात-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रत्येक व्यक्ति को दिया हुआ पत्र (कार्ड) जिसको दिखलाकर वह निर्धारित परिमाण में सामग्री प्राप्त कर सकता है। *रैशन-कार्ड*।

समपाताधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी जिसकी देखरेख में लोगों को खाने पीने या अन्य आवश्यकताओं की वस्तुऐं कुछ नियत मात्रा में तथा नियत काल में दी जाती हैं। *रैशनिंग ऑफीसर*।

समपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'समपद'। २-वह छंद जिसके चारों चरण समान हों।

समबुद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसकी बुद्धि सुख दुःख, हानि लाभ सब में समान रहता हो।

समभाग [संज्ञा पु.] (सं.) समान भाग। बराबर का हिस्सा।

समभाव [संज्ञा पु.] (सं.) समानता। तुल्यता।

समभिहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-बराबरी का भाव २-अधिकता। ज्यादती।

सममति [संज्ञा पु.] (सं.) समबुद्धि।

समय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वक्त। काल। २-अवसर। मौका। ३-अवकाश। फुरसत। ४-अंतिम-काल। ५-कौलकरार। ६-रवाज। प्रथा ७-सामान्य रीति-रस्म। ८-सिद्धांत। ९-संविद १०-व्यवहार। *समय पर*–ठीक वक्त पर।

समय-क्रिया [संज्ञा पु.] (सं.) कौलकरार करना।

समयज्ञ [संज्ञा पु] (सं.) १-समयानुसार चलने वाला। २-विष्णु।

समयरिरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) संधि या किसी इकरारनामे की शर्तों पर चलने की क्रिया।

समय-व्यभिचार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी इकरार या कौलकरार को तोड़ना।

समय-व्यभिचारी [वि.] (सं.) कौल-करार को भंग करने वाला।

समय-सारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोष्ठकों की वह सारिणी जिसमें भिन्न-भिन्न समयों पर होने वाले कार्यों का विवरण सूची के रूप में होता है। *टाइम टेबुल*।

समयाचार [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म।

समयादेश [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कार्य-व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में राज्य द्वारा दिया या निकलाहुआ कोई अधिकारिक आदेश। *आर्डिनेन्स*।

समयाध्युषित [संज्ञा पु.] (सं.) वह समय जब न तो सूर्य और न तारे दिखाई दें। ठीक संध्या का समय।

समयानंद, समयानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के एक भैरव का नाम।

समर [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। लड़ाई।

समरक्षिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) युद्धक्षेत्र।

समरज्जु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीजगणित में वह रेखा जिससे दूरी जानी जाती है।

समरत [संज्ञा पु.] (सं.) कामशास्त्रानुसार एक प्रकार का आसन।

समरत्थ+, समरथ [वि.] (हिं.) देखो 'समर्थ'।

समरपोत [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई में काम आने वाला जहाज।

समरभू, समरभूमि, समरवसुधा [संज्ञा स्त्री] (सं.) युद्धक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

समरमूर्द्धा [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ने वाली सेना का अग्रभाग।

समरशायी [संज्ञा पु.](सं.) वह जो लड़ाई में मारा गया हो।

सम रस [वि.] (सं.) १-एक ही तरह के रस वाले (पदार्थ)। २-एक ही प्रकार अथवा विचार के ३-सदा एक सा रहने वाला।

समरांगण, समराङ्गण [संज्ञा पु.](सं) युद्धक्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

समराना* [क्रि. स.](हिं.) सजाना या सजवाना

सम-रेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीधी रेखा।

समरोद्देश [संज्ञा पु.] (सं.) लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र।

समर्घ [वि.] (सं.) कम मूल्य का। सस्ता।

समर्चन [संज्ञा पु.](सं.) अच्छी तरह पूजन करने का काम।

समर्चना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी तरह की जाने वाली पूजा या अर्चना।

समर्थ [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य या शक्ति हो। २-दूसरे पदार्थों, कामों आदि पर अपना प्रभाव डालने की शक्ति रखने वाला। एफेक्टिव। ३-काम में आने या प्रयुक्त होने के योग्य। [संज्ञा पु](सं.) हित। भलाई।

समर्थक [वि.] (सं.) समर्थन करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन की लकड़ी।

समर्थन [संज्ञा पु.](सं.) १-यह निश्चय करना कि अमुक बात, विचार, सुझाव या प्रस्ताव ठीक है या इसके अनुसार काम होना चाहिए। किसी मत का पोषण। सेकेंडिंग। २-विवेचन। मीमांसा।

समर्थना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-न होने योग्य काम के लिए प्रयत्न। २-देखो 'समर्थन'।

समर्थनीय [वि.] (सं.) जिसका समर्थन किया जा सके।

समर्थित [वि.](सं.) १-समर्थन किया हुआ। २-जिस पर भलीभांति विचार किया गया हो। ३-स्थिर किया हुआ। ४-जो सम्भव हो।

समर्थ्य [वि.](सं.) जिसका समर्थन किया जा सके

समर्द्धक [वि.] (सं.) अभीष्ट पूरा करने वाला। वरदाता।

समर्पक [वि.] (सं.) १-समर्पण करने वाला। २-कहीं पहुँचाने के लिए कोई माल देने वाला। कन्साइनर।

समर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को सादर कुछ देना। भेंट या नजर करना। २-धर्मभाव से श्रद्धा से अथवा श्रद्धा-भक्तिपूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना। डेडीकेशन। ३-अधिकार स्वामित्व, भार आदि देना। ४-जमा करने, सुरक्षापूर्वक रखने अथवा कहीं पहुँचाने के लिए किसी को देना। कन्साइनमेण्ट।

समर्पना* [क्रि. स.](हिं.) समर्पण करना। सौंपना

समर्पित [वि.](सं.) १-जो समर्पण किया गया हो २-(वह माल) जो कहीं भेजने के लिए दिया गया हो। कन्साइन्ड।

समर्पितक [संज्ञा पु.] (सं.) वह माल जो कहीं भेजने या पहुँचाने के लिए किसी को दिया गया हो। कन्साइन्मेन्ट।

समर्पिती [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे कुछ समर्पित या भेंट किया गया हो। २-वह जिसके नाम कोई माल भेजा गया हो।कन्साइनी।

समर्प्य [वि.] (सं.) जो समर्पण किया जा सके।

समर्याद [वि.](सं.) १-निकट। पास। २-अच्छे चरित्र वाला।

समल [संज्ञा पु.] (सं.) मल। गू। विष्ठा। [वि.] मलिन। मैला।

समवकार [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का वीररस प्रधान नाटक। इसकी कथावस्तु का आधार, किसी देवता या असुर के जीवन की कोई घटना होती है।

समवतार [संज्ञा पु.] (सं.) १-उतरने की जगह। उतार। २-उतरने की क्रिया। अवतरण।

सम-वयस्क [वि.] (सं.) समान वयस अथवा अवस्था वाला। बराबर की उमर का।

समवर्णोपधान [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़िया और कीमती माल में घटिया माल मिलाना।

समवर्ती [वि.] (सं.) किसी के साथ समान रूप तथा समान भाव से होने, रहने या चलने वाला। कॉन्करेंट।

समवर्ती-सूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाधिकार-सूची। सहायक-सूची। कॉन्करेंट-लिस्ट।

समवलंब, समवलम्ब [संज्ञा पु.](सं.) वह चतुर्भुज जिसकी दोनों लम्बी रेखाएं समान हों।

समवसरण [संज्ञा पु.](सं.)वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का धार्मिक उपदेश होता हो।

समवस्कंद, समवस्कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) किले की चहारदीवारी।

समवस्था [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-निर्धारित अवस्था २-समान हालत। ३-दशा। हालत।

समवस्थित [वि.] (सं.) अचल रहा हुआ। दृढ़।

समवाप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राप्ति। उपलब्धि।

समवाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। झुण्ड। २-न्याय में वह सम्बन्ध जो अवयवी के साथ अवयव का, गुणी के साथ गुण का अथवा जाति के साथ व्यक्ति का होता है। ३-विधि अथवा कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार व्यापारिक कार्य के लिये बनी हुई वह संस्था जिसके साझीदारों को अपनी लगाई हुई पूंजी के हिसाब से उस व्यापार से होने वाले लाभ का अंश मिलता है। कम्पनी।

समवाय-संस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उपभोक्ता, व्यवसायी आदि आपस में मिलकर सब के हित के लिये बनाते हैं, और जिसके द्वारा वे कुछ वस्तुएं बनाने, बेचने आदि की व्यवस्था करते हैं। कोऑपरेटिव-सोसाइटी।

समवायत्व [संज्ञा पु.] (सं.) समवाय का भाव या धर्म।

समवायी [वि.] (सं.) जिसमें समवाय या नित्य सम्बन्ध हो।

समवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृत्त या छन्द जिस के चारों चरण समान हों।

समवेक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभाँति देखना।

समवेत [वि.](सं.) १-इकट्ठा या जमा किया हुआ एकत्र। २-किसी एक के साथ श्रेणी में आया हुआ। ३-नित्य सम्बन्ध से बंधा हुआ। समवेत होना-एकत्रित होना। जमाव करना।

समव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) वह सेना जिसमें २२५ सवार ६७५ सिपाही और इतने ही घोड़े और रथ आदि के पादगोप हों।

समशंकु, समशङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) ठीक दोपहर का समय जब सूर्य सिर पर होता है।

समशीतोष्ण-कटिबंध, समशीतोष्ण-कटिबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण-कटिबन्ध के उत्तर में कर्करेखा से उत्तर वृत्त तक पड़ते हैं। इन स्थानों में न तो बहुत सर्दी पड़ती है और न बहुत गरमी।

समष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जितने हों, उन सब का समूह, जिसमें उसके समस्त अङ्गों या व्यष्टियों का समावेश या अन्तर्भाव होता है। २-साधुओं का वह भण्डारा जिसमें सभी स्थानिक साधु निमन्त्रित होते हैं

समष्टि-मत [संज्ञा पु.](सं.) सम्पूर्ण मत।

समष्टिवाद [संज्ञा पु.] (सं) आधुनिक राजनीति में वह सिद्धांत जिसमें हरएक को उसके कार्य के अनुपात से नहीं वरन् उसकी आवश्यकताओं के अनुपात से द्रव्य मिलना चाहिए। वह सब मनुष्यों के जीवन में आर्थिक समानता स्थापित करना चाहता है एवं संसार से पूँजीवाद को मिटाकर मजदूरों और गरीब आदमियों का शासन स्थापित करने का उद्देश्य रखता है। कम्यूनिज्म।

समष्टिवादी [संज्ञा पु.] (सं.) समष्टिवाद का सिद्धांत मानने वाला। कम्यूनिस्ट।

समष्टीकरण [संज्ञा पु.](सं.) एक समूह में बांधना या करना।

समष्ठिल, समष्ठिला [संज्ञा पु.](सं.) १-[illegible] नामक कँटीला पौधा। २-गण्डीर या गिडनी नामक साग।

समसंख्यात [वि.] (सं.) समान अङ्क वाला।

समसंधि, समसन्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.) दो

के बीच की वह सुलह जो बराबर की शर्तों पर हुई हो।

समसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मेल। संयोग। २-समसान्त शब्दों की बनावट। ३-सङ्कोचन।

समसुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह निद्रा जिसमें समस्त चराचर निद्राभिभूत हों। ऐसा कल्प के अन्त में होता है।

समस्त [वि.] (सं.) १-कुल। समग्र। २-समास के नियमों से मिला या मिलाया हुआ।

समस्थ [वि.] (सं.) १-समान। एकरूप। २-समतल।

समस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) असमान या ऊबड़-खाबड़ जगह।

समस्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा और यमुना के बीच का प्रदेश।

समस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह उलझन वाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसङ्ग। *प्रॉब्लेम*। २-सङ्घटन। ३-किसी श्लोक या छन्द आदि का वह अन्तिम चरण या पद जो पूरा छन्द बनाने के लिए कवियों के सम्मुख रखा जाता है।

समस्यापूर्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी समस्या के आधार पर कोई छन्द आदि बनाना। २-किसी विचारणीय विषय की पूर्ति होना।

समाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) समय। वक्त।

समाँ बँधना-(संगीत आदि कार्यों का) इतनी उत्तमता से संपन्न होना कि लोग स्तब्ध रह जायँ।

समांतक, समान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

समांतर, समान्तर [वि.] (सं.) (दो या अधिक रेखाएँ आदि) जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अन्तर पर रहें।

समांश [संज्ञा पु.] (सं.) बराबर का अंश का भाग

समांशभागी, समांशी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम या रोजगार में साझा रखने वाला। साझी।

समा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्ष। साल।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समाँ'।

समाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-समाने की क्रिया या भाव। २-सामर्थ्य। शक्ति। ३-औकात। बिसात।

समाकुल [वि.] (सं.) बहुत अधिक घबराया हुआ

समाक्रांत, समाक्रान्त [वि.] (सं.) व्याप्त। फैला हुआ।

समाख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यश। कीर्त्ति। २-संज्ञा। नाम।

समाख्यात [वि.] (सं.) १-भलीभांति वर्णित। २-प्रख्यात। प्रसिद्ध।

समाख्यान [संज्ञा पु.] (सं.) १-भली भाँति कहना। २-किसी घटना की सभी मुख्य-मुख्य बातें क्रम से कहना। *नैरेशन*।

समागत [वि.] (सं.) आया हुआ।

समागति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आगमन।

समागमन [संज्ञा पु.] (सं.) आगमन। आना।

समागम [संज्ञा पु.] (सं.) १-आगमन। आना। २-कुछ लोगों का आपस में मिलकर किसी उद्देश्य से सम्बद्ध होना। *एसोसियेशन*। ३-मिलना। ४-मैथुन। स्त्री के साथ संभोग करना

समाघात [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध। लड़ाई। २-जान से मार डालना। वध। हत्या।

समाचयन [संज्ञा पु.] (सं.) संचय या जमा करने की क्रिया।

समाचरण [संज्ञा पु.] (सं.) भली भाँति आचरण करना।

समाचार [संज्ञा पु.] (सं.) संवाद। खबर। हाल

समाचार-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जिसमें सब देशों के अनेक प्रकार के समाचार रहते हैं। *न्यूज पेपर*।

समाच्छन्न [वि.] (सं.) आच्छादित। ढपा हुआ।

समाज [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह। गिरोह। २-एक स्थान पर रहने वाला अथवा एक ही प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समूह। समुदाय। ३-किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। *सोसाइटी*।

समाजवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जो यह प्रतिपादित करता है कि राज्य को मानव-समाज में रही हुई संपत्ति की असमानता को दूर करने का अधिकार है और उसका (राज्य का) यह कर्त्तव्य है कि समाज में साम्पत्तिक-साम्यता स्थापित करने के लिए धन परिलुप्त लक्ष्मीवानों से धन लेकर उन लोगों को दिया जाय जो दरिद्र हैं अथवा जिनके पास बहुत ही कम धन है। वह सिद्धांत जिसके अनुसार भूमि और पूँजी पर समाज का अधिकार और नियंत्रण होना चाहिए। *सोशलिज्म*

समाजवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो समाजवाद का सिद्धांत मानता हो। *सोशलिस्ट*।

समाजविग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) वर्गयुद्ध।

समाज-शास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जो मनुष्यों को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज तथा संस्कृति की उत्पत्ति, विकाश आदि का विवेचन करता है। *सोशियालोजी*।

समाज-शास्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) समाजशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

समाजसत्तावाद, समाजस्वामित्ववाद [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समाजवाद'।

समाजाधिकारकरण, समाजिकरण [संज्ञा प.] (सं.) वह कार्य जिसमें उत्पादन के साधनों पर समाज का अधिकार होता है। (इस पद्धति में निजी और वैयक्तिक संपत्ति पर समाजिक अधिकार होता है)।

समाजी [संज्ञा पु.] (हि.) किसी समाज का विशेषतः आर्यसमाज का सदस्य।

समाज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यश। कीर्ति। बड़ाई।

समाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह जो माता के समान हो। २-बिमाता। सौतेली माँ।

समादर [संज्ञा पु.] (सं.) आदर। सम्मान।

समादरणीय [वि.] (सं.) आदर-सत्कार के योग्य

समादान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूरा-पूरा देना। २-उपयुक्त दान पाना। ३-जैनमतानुसार ग्रहण किये हुए व्रतों अथवा आचारों की उपेक्षा। ४-बौद्धों का सौगताह्निक नामक नित्य कर्म। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शमादान'।

समादिष्ट [वि.] (सं.) आज्ञा या आदेश दिया हुआ

समादृत [वि.] (सं.) जिसका खूब आदर हुआ हो। सम्मानित।

समादेय [वि.] (सं.) १-आदर या प्रतिष्ठा करने के योग्य। २-स्वागत अथवा अभ्यर्थना करने योग्य।

समादेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधिकार किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना। २-इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा। *कमांड*। ३-वह आज्ञा जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। *इनजंक्शन*।

समादेशक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे। २-वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेशानुसार सेना के सब कार्य होते हैं। *कमांडर*।

समाधा [संज्ञा पु.] (सं.) १-निराकरण। निपटारा २-विरोध दूर करना। ३-सिद्धांत। ४-देखो 'समाधान'।

समाधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी का संन्देह दूर करने वाली बात या काम। २-मतभेद या विरोध दूर करना। ३-निष्पत्ति। निराकरण। ४-समाधि। ५-नियम। ६-तपस्या। ७-अनुसंधान। अन्वेषण। ८-ध्यान। ९-मत की पुष्टि। समर्थन। १०-नाटक में कथाभाग की मुख्य घटना।

समाधानना* [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी का समाधान या सन्तोष करना। २-सांत्वना देना।

समाधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २-योग-साधन का चरम फल जिससे मनुष्य सब क्लेशों से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियां प्राप्त करता है। ३-वह स्थान जहां किसी का मृत शरीर अथवा अस्थियां आदि गाड़ी गई हों। ४-प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी संज्ञा तथा चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते। ५-एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से किसी कार्य के सुगमतापूर्वक होने का वर्णन होता है। ६-समर्थन। ७-नियम। ८-ग्रहण करना। ९-ध्यान। १०-आरोप। ११-प्रतिज्ञा। १२-प्रतिशोध। बदला। १३-विवाद या झगड़ों के

अन्त करना। १४-कोई असाध्य काम करने के लिये उद्योग करना। १५-चुप रहना। १६-निद्रा। नींद। १७-योग।

समाधिक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहां योगियों महात्माओं आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हैं। मुरदे गाड़ने की जगह। क़बरिस्तान

समाधिगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

समाधित [वि.] (सं.) जिसने समाधि लगाई हो। जो समाधि में लीन हो।

समाधित्व [संज्ञा पु.] (सं.) समाधि का भाव या धर्म।

समाधिदशा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह दशा जब योगी समाधि में परमात्मा में निमग्न और तन्मय होता है और अपने आप को भूलकर सब ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

समाधि-मोत्त [संज्ञा पु.](सं.) पुरानी संधि तोड़ना। सन्धिभङ्ग।

समाधिसमानता [संज्ञा स्त्री.](सं.) बौधों के अनुसार ध्यान का मत भेद।

समाधिस्थ [वि.](सं.) जो समाधि लगाये हुए हो

समाधिस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) समाधिक्षेत्र।

समाधेय [वि.] (सं.) जिसका समाधान हो सके।

समान [वि.](सं.) रूप, गुण, आकार, मान, मूल्य महत्व आदि के विचार से एक जैसे। बराबर। तुल्य। एक *समान*-एक जैसा। यौ०-*समानवर्ण* ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सत्। २-शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक। ॐ[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'समानता'।

समानकरण [संज्ञा पु.](सं.) दो वस्तु को समान आकार में लाना।

समानकर्म [संज्ञा पु.](सं.) एक ही तरह का व्यवसाय या काम करने वाले।

समानकालीन [संज्ञा पु.] (सं.) समकालीन।

समानगोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सगोत्र।

समानतंत्र, समानतन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) १-समान कर्म। हम-पेशा। २-वे जो वेद की किसी एक ही शाखा का अध्ययन करते हों एवं उसी के अनुसार यज्ञादि कर्म करते हों।

समानता [संज्ञा स्त्री.](सं.) समान होन का भाव। तुल्यता। बराबरी।

समानतावाद [संज्ञा पु.](सं.) वह सिद्धांत जिससें यह प्रतिपादित किया जाता है कि समाज में सब लोगों को समान वेतन मिले और सब के रहन-सहन का स्तर एक-जैसा हो।

समानतावादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यक्ति जो यह मानता हो कि समाज में सब लोगों को समान वेतन मिले और सबके रहन-सहन का स्तर बराबर हो। इक्युलिटेरियन।

समानत्व [संज्ञा पु.] (सं.) समानता। बराबरी।

समाननाम [संज्ञा पु.] (हिं.) नामरासी।

समानयन [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह या आदरपूर्वक आने की क्रिया।

समानयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही योनि या स्थान से पैदा होने वाले।

समानर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही ऋषि के वंशज

समानरूप [वि.] (सं.) एक-जैसे आकार वाला।

समानवय [वि.] (सं.) समवयस्क।

समानशय्य [वि.](सं.) एक-ही चारपाई पर सोने वाले।

समानशील [वि.] (सं.) एक-जैसे स्वभाव का।

समानस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां दिन और रात बराबर होते हों।

समानांतर,समानान्तर [वि.](सं.) देखो 'समांतर'

समाना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी वस्तु के अन्दर पहुँचकर भर जाना या उसमें लीन होना। भरना।

समानाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) स्वरवर्ण।

समानाधिकरण [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।

समानार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वे शब्द जिनका अर्थ एक ही हो अथवा एक-सा हो। पर्य्याय।

समानार्थक [वि.](सं.) समान अर्थ वाला।

समानिका, समानी [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण और एक गुरु होता है।

समानोदक [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा सम्बन्धी जिसे तर्पण में दिया हुआ जल मिले। जिसकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।

समानोदर्य [संज्ञा पु.] (सं.) सहोदर।

समानोपमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) उपमा-अलङ्कार का एक भेद।

समापक [वि.] (सं.) समाप्त करने वाला।

समापत्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक ही समय में तथा एक ही स्थान पर उपस्थित होना। २-युद्ध, दंगे, दुर्घटना आदि के कारण लोगों के प्राणों अथवा शरीर पर आने वाला सङ्कट। केजुऐलिटी।

समापन [संज्ञा पु.](सं.) १-काम समाप्त या पूरा करना। *डिस्पोजल*। २-विवाद, विचार आदि के समय उसका अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना। *वाइंडिंग-अप*। ३-मार-डालना। ४-समाधान।

समापनीय [वि.] (सं.) १-समाप्त या खतम करने योग्य। २-मार डालने योग्य।

समापन्न [वि.](सं.) १-समाप्त किया हुआ। २-मिलाया हुआ। । प्राप्त। ३-क्लिष्ट। कठिन। [संज्ञा पु.] (सं.) वध या हत्या करना। मार-डालना।

समापात [संज्ञा पु.] (सं.) दो कामों या बातों का संयोगवश साथ-साथ या एक ही समय में घटित होना। कॉयनसाइडेन्स।

समापिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त होना सूचित होता है।

समापिका-क्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'समापिका'।

समापित [वि.] (सं.) समाप्त या पूरा किया हुआ।

समापी [संज्ञा पु.](सं.) वह जो समाप्त या खतम करता हो।

समाप्त [वि.] (सं.) जो खतम या पूरा हो गया हो।

समाप्तलंभ, समाप्तलम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। बौद्ध।

समाप्त-सैन्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही ढंग की लड़ाई जानने वाली सेना।

समाप्ताल [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी। पति।

समाप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी काम या बात आदि का खतम या पूरा होना। २-प्राप्ति

समाप्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खतम या पूरा करने वाला। २-वह जो वेदों का अध्ययन कर चुका हो।

समाप्तिवाद [संज्ञा पु.](सं.) वह सिद्धांत, ध्येय या नीति जिसके द्वारा किसी प्रथा का अन्त किया जाय। एबोलिशिज्म।

समाप्य [वि.](सं.) समाप्त करने के योग्य।

समाप्लव [संज्ञा पु.](सं.) स्नान करने की क्रिया। नहाना।

समाप्लुत [वि.] (सं.) १-जल की बाढ़ में डूबा हुआ। २-परिपूर्ण।

समाभाषण [संज्ञा पु.] (सं.) वार्तालाप। संभाषण।

समाम्नान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुनरावृत्ति। २-गणना। ३-परंपरागत प्राप्त पाठ।

समाम्नाय [संज्ञा पु] (सं.) १-शास्त्र। २-समूह समष्टि।

समाम्नायिक [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रवेत्ता। [वि.] शास्त्र-सम्बन्धी। शास्त्र का।

समायुक्त [वि.] (सं.) आवश्यकता पड़ने पर दिया या पास पहुँचाया हुआ। सप्लायड।

समायुक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो समयोग करता हो। सप्लायर।

समायोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐसा प्रबन्ध करना कि लोगों की आवश्यकता की चीजें उन्हें मिल जायें या उनके पास पहुँच जायें। सप्लाई। २-संयोग। ३-बहुत से लोगों का एक साथ एकत्र होना।

समायोजक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो समायोग करता हो। सप्लायर।

समायोजन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समायोग'।

समारंभ, समारम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह आरम्भ होना। २-समारोह।

समारंभण, समारम्भण [संज्ञा पु.] (सं.) गले लगाना। आलिंगन।

समारंभ्य, सामारभ्य [वि.] (सं.) समारम्भ करने के योग्य।

समारना* [क्रि. स.] (हिं.) सँवारना।

समाराधन [संज्ञा पु.] (सं.) भली भाँति आराधना या उपासना करना।

समारोप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आरोप'।

समारोपण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'आरोपण'।

समारोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारी आयोजन। धूमधाम। २-धूमधाम से होने वाला उत्सव या कोई बड़ा काम।

समार्थ, समार्थक [संज्ञा पु.] (सं.) समान अर्थ वाला शब्द। पर्याय।

समालंब, समालम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिषतृण।

समालंबन, समालम्बन [संज्ञा पु.] (सं.) टेक। सहारा।

समालंबी, समालम्बी [वि.] (सं.) लटकने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) भू-तृण।

समालंभ, समालम्भ, समालंभन, समालम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर पर लेप करना। २-हत्या करना। मार डालना।

समालाप [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह से बातचीत करना।

समालोकन [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह देखना।

समालोकी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी वस्तु को अच्छी तरह देखता हो।

समालोचक [संज्ञा पु.] (सं.) समालोचना करने वाला।

समालोचन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समालोचना'

समालोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अच्छी तरह देखना-भालना जिसमें दोषों और गुणों का पूरा पता लगजाय। २-इस प्रकार देखे हुए गुणों और दोषों की विवेचना वाला लेख। आलोचना। रिव्यू।

समालोची [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो किसी वस्तु के गुण और दोष देखता हो। समालोचना करने वाला।

समावरोधन [संज्ञा पु.] (सं.) अपने सहयोगी श्रमजीवियों को काम करने से रोकना। रीट्लिंग।

समावर्त, समावर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वापस आना। लौटना। २-एक प्रकार का प्राचीन वैदिक संस्कार जो ब्रह्मचारी के अध्ययन समाप्त कर लेने पर गुरुकुल में उसके स्नातक बनकर लौटने के समय होता था। ३-आधुनिक विश्वविद्यालयों में वह सभा जिसमें उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को पदवियाँ प्रदान की जाती हैं। पदवी-दान-समारम्भ। कॉनवोकेशन।

समावर्त्तनीय [वि.] (सं.) १-लौटने योग्य। २-जो समावर्त्तन संस्कार करने के योग्य हो।

समावाय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समवाय'।

समावास [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'अधिवास'।

समाविद्ध [वि.] (सं.) जिसका संयोग या संघटन हुआ हो।

समाविष्ट [वि.] (सं.) १-सरमाया हुआ। २-एकाग्रचित्त।

समावृत [वि.] (सं.) अच्छी तरह ढका या छाया हुआ।

समावृत्त, समावृत्तक [संज्ञा पु.] (सं.) वह ब्रह्मचारी जो गुरुकुल से विद्याध्ययन पूर्ण कर, घर लौट आया हो।

समावृत्ति [संज्ञा स्त्री.] देखो 'समावर्त्तन'।

समावेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक साथ या एक जगह रहना। २-एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अंतर्गत होना।

समावेशित [वि.] (सं.) देखो 'समाविष्ट'।

समाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) १-आश्रय। सहारा। २-सहायता। मदद।

समाश्रित [वि.] (सं.) जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो।

समाश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) आलिंगन।

समाश्वास [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी कठिनाई से पार पाकर दम लेना। २-दम में दम आना। आश्वासन। ३-भरोसा। आसरा।

समाश्वासन [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह आश्वासन देना। उत्साहित करना।

समासंग, समासङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मिलन। मिलाप। मेल।

समास [संज्ञा पु.] (सं.) १-संक्षेप। २-समर्थन। ३-संग्रह। ४-पदार्थों का एक में मिलना। सम्मिलन। ५-व्याकरण में नियमानुसार दो शब्दों का मिलकर एक होना। हिन्दी और संस्कृत में समास चार प्रकार के होते है। यथा अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व।

समासपर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन नगर का नाम।

समासक्त [वि.] (सं.) संयुक्त। मिला हुआ।

समासन्न [वि.] (सं.) निकटस्थ। पास का।

समासादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-समीप या पास आना। २-पाना। मिलना। ३-पूर्ण करना। सम्पन्न करना।

समासादित [वि.] (सं.) १-पाया हुआ। प्राप्त। २-आक्रमण किया हुआ। ३-चुराया हुआ। ४-उद्धृत। ५-लाया हुआ।

समासोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अर्थालङ्कार जिसमें समान कार्य, समान लिंग एवं समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन् से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।

समाहरण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समाहार'।

समाहर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-समाहार करने वाला २-वह जो किसी वस्तु का संक्षेप करता हो। ३-मिलाने वाला।

समाहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक स्थान पर इकट्ठा करना। संग्रह। २-राशि। ढेर। ३-कर, चन्दा प्राप्यधन आदि उगाहना। कलेक्शन। ४-मिलाना। ५-क्रम नियमादि से सजकर अथवा ठीक ढङ्ग से इकट्ठा होना। फॉरमेशन।

समाहारद्वंद्व, समाहारद्वन्द्व [संज्ञा पु.] (सं.) द्वंद्व समास का एक भेद। वह द्वंद्व समास जिससे उसके पादों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित हो। जैसे—हाथ-पांव, दाल-रोटी आदि।

समाहित [वि.] (सं.) १-एक स्थान पर इकट्ठा किया हुआ, विशेषतः सुन्दर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया हुआ। केंद्रित। २-शांत ३-समास। ४-स्वीकृत।

समाहृत [वि.] (सं.) १-एक जगह किया हुआ। जमा किया हुआ। २-संक्षिप्त किया हुआ। खुलासा किया हुआ।

समाहृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संग्रह। २-संक्षेप

समाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) चुनौती। ललकार।

समाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-रण-निमन्त्रण। ललकार। २-लड़ाई जो केवल दो आदमियों में हो (समूह बाँधकर नहीं)। ३-जानवरों की लड़ाई जो आमोद-प्रमोद के लिये हो।

समाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाम। उपाधि। २-गोजिया नामक घास।

समाह्वान [संज्ञा पु.] (सं.) १-आह्वान। बुलाना २-जूआ खेलने के लिये किसी को बुलाना या ललकारना।

समिक [संज्ञा पु.] (सं.) भाला। बरछा। बल्लम।

समित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संग्राम। लड़ाई।

समिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बहुत बारीक पिसा-हुआ आटा। मैदा।

समितिंजय, समितिञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो युद्ध में विजयी हुआ हो। २-वह जिसने किसी सभा आदि में विजय प्राप्त की हो। ३-यम। ४-विष्णु।

समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सभा। समाज। २-वैदिककालीन वह सभा या संस्था जिसमें राजनैतिक विषयों पर विचार होता था। ३-किसी विशेष काम के लिये बनी हुई छोटी सभा। कमिटी। ४-सन्निपात नामक रोग।

समिथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-आहुति।

३-युद्ध । समर । लड़ाई ।

समिद्ध [वि.] (सं.) १-प्रज्वलित । २-भड़काया हुआ । उत्तेजित ।

समिद्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईंधन । २-जलाने की क्रिया । ३-उत्तेजना देना ।

समिध् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आग जलाने की लकड़ी । २-यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी ।

समिध [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि ।

समिर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समीर' ।

समिष [संज्ञा पु.](सं.) इन्द्र ।

समीक [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध । लड़ाई ।

समीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-समान या बराबर करना । २-गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञातराशि की सहायता से कोई अज्ञात-राशि जानी जाती है ।

समीकार [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी-बड़ी या ऊँची-नीची वस्तुओं को बराबर करने वाला ।

समीकृत [वि.] (सं.) समान या बराबर किया हुआ

समीकृति, समीक्रिया [संज्ञा स्त्री.](सं.) समीकरण

समीक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभाँति देखने की क्रिया । २-दर्शन । ३-जाँचपड़ताल । ४-विवेचन । ५-सांख्य-शास्त्र जिससे प्रकृति और पुरुष का ठीक-ठीक स्वरूप दिखाई देता है ।

समीक्षक [संज्ञा पु.] (सं) वह जो समीक्षा करता हो । छानबीन और जाँच-पड़ताल करने वाला समालोचक ।

समीक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखना । दर्शन । २-अन्वेषण । जाँच-पड़ताल । ३-आलोचना ।

समीक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छानबीन अथवा जाँच-पड़ताल करने के लिये कोई वस्तु या बात अच्छी तरह देखना । २-आलोचना । समालोचना । ३-मीमांसाशास्त्र ।

समीक्ष्य [वि.] (सं.) समीक्षा करने योग्य ।

समीक्ष्यवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी विषय को भलीभाँति जांच अथवा समझकर कोई बात कहता हो ।

समीच [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र ।

समीचक [संज्ञा पु.] (सं.) संयोग । मैथुन ।

समीची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मृगी । हिरनी । २-प्रशंसा । तारीफ ।

समीचीन [वि.] (सं.) १-उपयुक्त । ठीक । २-उचित । वाजिब । ३-न्यायसङ्गत ।

समीचीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समीचीन होने का भाव या धर्म ।

समीति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'समिति' ।

समीद [संज्ञा पु.] (सं.) गेहूँ का बहुत महीन आटा मैदा ।

समीन [वि.] (सं.) १-वार्षिक । सालाना । २-एक वर्ष के लिए भाड़े पर लिया हुआ ।

समीनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रति वर्ष ब्याने वाली गाय ।

समीप [वि.] (सं.) पास । निकट । नजदीक ।

समीपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समीप का भाव या धर्म । निकटता ।

समीपनयन [संज्ञा पु.] (सं.) पास में लाना ।

समीपवर्त्ती [वि.] [त्रि.] समीप या पास का । नजदीक का ।

समीपस्थ [वि.] (सं.) पास का ।

समीय [वि.] (सं.) सम-सम्बन्धी । सम का ।

समीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु । हवा । २-शमी-वृक्ष । ३-प्राणवायु ।

समीरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु । हवा । २-गन्धतुलसी । मरुआ । ३-पथिक । बटोही । ४-प्रेरणा ।

समीहन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

समीहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-प्रयत्न । उद्योग । कोशिश । २-इच्छा । ख्वाहिश । ३-जाँच । पड़ताल ।

समुंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समुद्र' ।

समुंदर-फल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष ।

समुंदरफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) विधारा नामक औषध ।

समुंदर-सोख [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का क्षुप जिसके बीज औषधियों में प्रयुक्त होते हैं

समुख [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अच्छी तरह बातें करना जानता हो ।

समुचित [वि.] (सं.) १-उचित । ठीक । २-जैसा चाहिए वैसा । उपयुक्त ।

समुच्चय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कछ वस्तुओं का एक में मिलना । कम्बिनेशन । २-समूह । राशि । ३-कुछ वस्तुओं या बातों का एक जगह एकत्र होना । क्यूमुलेशन । ४-साहित्य में एक अलङ्कार जिसमें कई भावों के एक साथ उदित होने अथवा कई कारणों से एक ही कार्य होने का वर्णन होता है । ५-वह आपत्ति जिसमें यह निश्चय हो कि इस उपाय के अलावा और उपायों से भी काम हो सकता है ।

समुच्चित [वि.] (सं.) १-ढेर लगाया हुआ । २-संगृहीत ।

समुच्छित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाश । बरबादी ।

समुच्छेद [संज्ञा प.] (सं.) १-जड़ से उखाड़ना । उन्मूलन । २-ध्वंस । नाश । बरबादी ।

समुच्छेदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जड़ से उखाड़ना २-नष्ट या बरबाद करना ।

समुज्ज्वल [वि.] (सं.) १-खूब उजला । चमकता हुआ । २-चमकीला ।

समुझ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'समझ' ।

समुत्कंठ, समुत्कण्ठ [वि.](सं.) व्यग्र । घबड़ाया हुआ ।

समुत्कर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-उन्नति । बढ़ती । २-अपनी जाति या वर्ग में से किसी अन्य ऊँची जाति या वर्ग में जाना ।

समुत्कीर्ण [वि.] (सं.) टूटा हुआ ।

समुत्क्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर चढ़ना । उन्नति करना । २-सीमोल्लंघन । मर्यादा लांघना ।

समुत्क्रोश [संज्ञा पु.](सं.) १-चिल्लाना । २-विकट कोलाहल । ३-कुररी नामक पक्षी ।

समुत्थ [वि.] (सं.) १-उठा हुआ । २-उत्पन्न । जात ।

समुत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-उठने की क्रिया या भाव । २-उत्पत्ति । ३-आरम्भ ।

समुत्पतन [संज्ञा पु.] (सं.) १-उठान । २-उड़ान ३-उद्योग ।

समुत्पत्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पैदायश । २-उत्पत्ति । ३-घटना ।

समुत्परिवर्त्रिम [संज्ञा पु.](सं.) बची हुई वस्तुओं में चालाकी से अन्य वस्तुएँ मिला देना ।

समुत्पाटित [वि.] (सं.) बिलकुल जड़ से उखाड़ा हुआ ।

समुत्पिंज, समुत्पिञ्ज, समुत्पिंजल, समुत्पिञ्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना जो हड़बड़ी में अस्त-व्यस्त हो गई हो । २-बड़ी भारी गड़बड़ ।

समुत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा उत्सव ।

समुत्सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्सर्ग । त्याग । २-मल का त्याग । दस्त होना ।

समुत्सारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाँक देना । २-पीछा करना ।

समुत्सुक [वि.] (सं.) १-अत्यन्त विकल या चिंतित । २-विशेष रूप से उत्सुक ।

समुदय [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदय । २-दिन । ३-युद्ध । लड़ाई । ४-ज्योतिष में लग्न । [वि.] समस्त । सब । कुल ।

समुदागम [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णज्ञान ।

समुदाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलमनसाहत का व्यवहार । २-अभिवादन । ३-अभिप्राय । मतलब ।

समुदाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-समूह । ढेर । २-झुण्ड । गिरोह । ३-जातिमण्डली । वर्ग । कम्यूनिटी । ४-युद्ध । समर । ५-उदय । ६-पीछे की ओर की सेना । ७-उन्नति ।

समुदाव* [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समुदाय' ।

समुदाहरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-उदाहरण । मिसाल । २-कथन । उच्चारण ।

समुदित [वि.](सं.) १-उठा हुआ । २-उन्नत । ३-उत्पन्न । जात ।

समुदीरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कथन । उच्चारण । २-दुहराना ।

समुदीरित [वि.] (सं.) उच्चारण किया हुआ ।

समुद्ग, समुद्गक [संज्ञा पु.] (सं.)

पिटारा या टोकरी।

समुद्गत [वि.] (सं.) १-उदित। २-उत्पन्न।

समुद्गम [संज्ञा पु.] (सं.) १-उगना। २-निकलना। ३-उत्पत्ति।

समुद्गार [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत अधिक कै या वमन होना।

समुद्गिरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वमन। कै। २-वह जो उगला गया हो।

समुद्धृत [वि.] (सं.) १-उठाया हुआ। ऊपर किया हुआ। २-उत्तेजित। उभाड़ा हुआ। ३-घमंड या अभिभाव में चूर। ४-दुष्ट व्यवहार करने वाला।

समुद्धरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-वमन करने पर पेट से निकला हुआ अन्न। २-ऊपर की ओर उठाने या निकालने की क्रिया। ३-उद्धार।

समुद्धर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो ऊपर की ओर उठता या निकलता हो। २-उद्धार करने वाला। ३-ऋण चुकाने वाला।

समुद्धार [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'समुद्धरण'।

समुद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पत्ति। जन्म। २-हवन के निमित्त अग्नि।

समुद्भूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्पत्ति। जन्म।

समुद्भेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्पत्ति। २-विकास

समुद्यत [वि.] (सं.) अच्छी तरह से तैयार।

समुद्यम [संज्ञा पु.] (सं.) १-उद्यम। चेष्टा। २-आरम्भ। शुरू।

समुद्योग [संज्ञा पु.] (सं.) क्रियात्मक उद्योग। उत्साह

समुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-खारे पानी की वह जलराशि जो पृथ्वी के स्थलभाग को चारों ओर से घेरे हुए है। सागर। अंबुधि। उदधि। २-किसी विषय अथवा गुण आदि का बहुत बड़ा आगार। ३-एक प्राचीन जाति का नाम।

समुद्रकफ [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन।

समुद्रकल्लोल [संज्ञा पु.] (सं.) सागर की गरज।

समुद्रकांची, समुद्रकाञ्ची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी जिसकी मेखला समुद्र है।

समुद्रकांता, समुद्रकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी (जिसका पति समुद्र हो)।

समुद्रगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नदी। २-गङ्गानदी

समुद्रगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्त राजवंशीय एक परम प्रतापी राजा का नाम।

समुद्रचुलुक [संज्ञा पु.] (सं.) अगस्त्यमुनि का एक नाम।

समुद्रज [वि.] (सं.) समुद्र से उत्पन्न।

समुद्रझाग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समुद्रफेन'।

समुद्रतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उन्नीस अक्षर का एक छंद।

समुद्रतीर [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र का किनारा।

समुद्रदयिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

समुद्रनवनीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमृत। २-चन्द्रमा।

समुद्रनेमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

समुद्रपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

समुद्रपर्यंत, समुद्रपर्यन्त [वि.] (सं.) समुद्र तक।

समुद्रपात [संज्ञा पु.] (हिं.) समुद्र सोख नामक एक झाड़दार लता।

समुद्रफल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

समुद्रफेन [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र के झाग जो उसके किनारे पर आया करते हैं तथा जिनका व्यवहार औषध के रूप में होता है।

समुद्रमंडूकी, समुद्रमण्डूकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सीप। सीपी।

समुद्रमथन [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र को मथना। २-पुराणानुसार एक दानव का नाम।

समुद्रमालिनी, समुद्रमेखला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

समुद्रयात्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) समुद्र मार्ग से अन्य देशों में जाना।

समुद्रयान [संज्ञा पु.] (सं.) पानी में चलने वाला जहाज।

समुद्र-रसना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

समुद्रलवण [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र के जल से तैयार होने वाला नमक।

समुद्र-वसना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

समुद्रवह्नि [संज्ञा पु.] (सं.) बड़वानल।

समुद्रवास [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

समुद्रवासी [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र में या समुद्र तट पर रहने वाला।

समुद्रसार [संज्ञा पु.] (सं.) मोती।

समुद्रसुभगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

समुद्रस्थली [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ जो समद्र तट पर था।

समुद्रांत, समुद्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र का किनारा। २-जायफल।

समुद्रांता, समुद्रान्ता [संज्ञा पु.] (सं.) १-दुरालभा २-कार्पासी। ३-पृक्का। ४-जवासा।

समुद्रांबरा, समुद्राम्बरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी

समुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शमी।

समुद्राभिसारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक कल्पित देवबाला जो समुद्रदेव की सहचरी मानी जाती है।

समुद्रायणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

समुद्रारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुंभीर नामक जलजन्तु। २-सेतुबन्ध। ३-एक प्रकार की मछली

समुद्रार्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

समुद्रावरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

समुद्रिय [वि.] (सं.) १-समुद्र सम्बन्धी। समुद्र का। २-समुद्र से उत्पन्न।

समुद्री [वि.] (हिं.) देखो 'समुद्रीय'।

समुद्रीय [वि.] (सं.) समुद्र-सम्बन्धी। समुद्र का।

समुद्रोन्मादन [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

समुद्वह [वि.] (सं.) १-उत्तम। बढ़िया। २-ढोने-वाला।

समुद्वाह [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह।

समुन्नत [वि.] (सं.) १-जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। २-बहुत ऊँचा। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का खम्भा (वास्तुविद्या)।

समुन्नति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पर्याप्त उन्नति। २-महत्व। ३-उच्चता।

समुन्नद [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम जिसका उल्लेख रामायण में मिलता है।

समुन्नद्ध [वि.] (सं.) १-जो अपने आपको बड़ा ज्ञानी समझता हो। २-अभिमानी। घमंडी। ३-उत्पन्न। [संज्ञा पु.] स्वामी। मालिक।

समुन्नयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऊपर की ओर उठाने अथवा ले जाने की क्रिया। २-प्राप्ति। लाभ।

समुन्नाद [संज्ञा पु.] (सं.) समूह का शब्द।

समुन्नाह [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँचाई।

समुन्नेय [वि.] (सं.) अधिकार में करने योग्य।

समुन्मुख [क्रि. वि.] (सं.) सामने।

समुन्मिश्र [वि.] (सं.) मिलाया हुआ।

समुन्मूलन [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्णरूप से नाश।

समुपश्लेष [संज्ञा पु.] (सं.) लगाव। संस्पर्श।

समुपचित [वि.] (सं.) १-बढ़ाया हुआ। २-लिया हुआ।

समुपभोग [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन।

समुपवेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-आदर। सत्कार। २-बैठने की क्रिया।

समुपवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ठीक ढङ्ग से बैठना। २-अभ्यर्थना।

समुपस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-समीपता। २-नैकट्य होना।

समुपह्वव [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का होम आदि द्वारा आमंत्रण करना।

समुपार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) एक साथ एक समय में प्राप्ति।

समुपालंभ, समुपालम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोधयुक्त

समुपेक्षक [वि.] (सं.) उपेक्षा करने वाला।

समुपेत [वि.] (सं.) आया हुआ।

समुपेप्सु [वि.] (सं.) अच्छी तरह पाने की इच्छा रखने वाला।

समुल्लसित [वि.] (सं.) १-आनन्दित। २-शोभित

समुल्लास [संज्ञा पु.] (सं.) १-उल्लास। आनन्द। २-ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

समुल्लेखन [संज्ञा पु.] (सं.) खनन। खोदना। छीलना।

समुहा† [वि.] (हि.) १-सामने का। आगे का। २-सामना। सीधा। [क्रि. वि.](हिं.) सामने।

समुहाना* [क्रि. अ.](हिं.) सामने आना। सम्मुख होना।

समूढ़ [वि.](सं.)१-ढेर लगाया हुआ। २-संचित संगृहीत। ३-पकड़ा हुआ। ४-भोगा हुआ। भुक्त। ५-विवाहित। ६-जो अभी उत्पन्न हुआ हो। संगत। ठीक।

समूर, समूरक, समूरु [संज्ञा पु.] (सं.) शंबर या साबर नामक हिरन।

समूल [वि.] (सं.) जिसका मूल या हेतु हो। [क्रि. वि.] जड़ से। मूलसहित।

समूलक [वि.] (सं.) समूल। मूलसहित।

समूह [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक जैसी बहुत सी चीजों का ढेर। २-समुदाय। झुण्ड। गिरोह

समूहगंध, समूहगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) मोतिया नामक फूल।

समूहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झाड़ू। बुहारी।

समूह-हितवादी [संज्ञा पु.] (सं.) जनता के हित-साधन में तत्पर रहने वाला।

समूहीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) इकट्ठा करना। एकत्रीकरण।

समूह्य [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की अग्नि।

समृद्ध [वि.] (सं.) सम्पन्न। धनवान्।

समृद्धि [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-धन, वैभव आदि की अधिकता। सम्पन्नता। २-सफलता। ३-प्रभाव।

समृद्धी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बराबर अपनी समृद्धि बढ़ाता रहता हो। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'समृद्धि'।

समेटना [क्रि. स.] (हि.) १-बिखरी या फैली हुई वस्तुए एकत्रित करना। २-अपने ऊपर लेना।

समेड़ी [संज्ञा स्त्री.](सं.)कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

समेत [वि.] (सं.) संयुक्त। मिला हुआ। [अव्य.] सहित। साथ।

समेध [संज्ञा पु](सं.)एक पर्वत का नाम (पुराण)

समै, समैया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समय'।

समोखना* [क्रि. स.] (हिं.) बहुत ताकीद से या जोर देकर कहना।

समोना* [क्रि. स.] (?) मिलाना।

समोह [संज्ञा पु.] (सं.) समर। युद्ध। लड़ाई।

समौ* [संज्ञा पु.] (हिं.) समय।

समौरिया* [वि.] (हिं.) समवयस्क।

सम्पदा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) धन। दौलत। ऐश्वर्य

सम्पदा-शुल्क [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह चुंगी या राजकर जो भू-सम्पत्ति पर लगता है। एस्टेट-ड्यूटी।

सम्पूर्ण [वि.] (सं.) खूब भरा हुआ। पूर्ण रूप से युक्त।

सम्पूर्ण-प्रभुत्वसम्पन्न-लोकतन्त्रात्मक-गणराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) पूरे अधिकारों से युक्त प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाने वाला जनता का राज्य।

सम्मंत्रव्य, सम्मन्त्रव्य [वि.] (सं.) १-मंत्रण करने योग्य। २-भलीभाँति मनन करने योग्य

सम्मत [वि.] (सं.) जिसकी राय मिलती हो। सहमत। एग्रीड।

सम्मति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सलाह। राय। २-आदेश। अनुज्ञा। ३-मत। अभिप्राय। ४-किसी विषय में कुछ लोगों का एक मत होना। एग्रीमेन्ट। ५-किसी के विचार अथवा प्रस्ताव को ठीक मानकर उसके निर्वाह के लिए दी जाने वाली अनुमति। कॉन्सेन्ट।

सम्मद [संज्ञा पु.](सं.) १-हर्ष। आमोद। २-एक प्रकार की मछली [वि.] सुखी। प्रसन्न।

सम्मन [संज्ञा पु.](अ.) न्यायालय का वह आज्ञा-पत्र जिसमें किसी को उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है।

सम्मर्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-युद्ध। लड़ाई। २-समूह। भीड़। ३-आपसी लड़ाई-झगड़ा।

सम्मर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी तरह मलने का काम। २-अच्छी तरह मलने वाला। ३-वासुदेव के पुत्रों में से एक।

सम्मर्दी [संज्ञा पु.] (सं.) भलीभांति मर्दन करने-वाला।

सम्मर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सहन। मर्ष।

सम्महा [संज्ञा पु.] (डि.) अग्नि।

सम्मा [वि.] (सं.) तुल्य। समान।

सम्मातृ [वि.](सं.) जिसकी माँ सती या पतिव्रता हो।

सम्माद [संज्ञा पु.] (सं.) पागलपन।

सम्मान [संज्ञा पु.](सं.) इज्जत। गौरव। प्रतिष्ठा [वि.] १-मानसहित। २-जिसका मान पूरा हो।

सम्मानना [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सम्मान'। * [क्रि. स.] (हि.) सम्मान करना। आदर करना।

सम्माननीय [वि.] (सं.) आदर या सम्मान के योग्य।

सम्मानित [वि.] (सं.) प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

सम्मान्य [वि.] (सं.) आदर करने योग्य।

सम्मार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रेष्ठपद प्राप्त करने का मार्ग या रास्ता। २-वह मार्ग जिससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सम्मार्जक [संज्ञा पु.] (सं.) १-झाड़ने वाला। मेहतर। भंगी। २-झाड़ू। बुहारन।

सम्मार्जन [संज्ञा पु.] (सं.) झाड़ना। बुहारना।

सम्मार्जनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) झाड़ू।

सम्मित [वि.] (सं) समान। सदृश्य।

सम्मिति [वि.] (सं.) उच्चाकांक्षा।

सम्मिलन [संज्ञा पु.] (सं.) मेल। मिलाप।

सम्मिलित [वि.] (सं.) मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।

सम्मिश्र [वि.] (सं.) मिला हुआ। संयुक्त।

सम्मिश्रक [संज्ञा पु.](सं.) १-वह जो किसी प्रकार का मिश्रण करता हो। २-औषधियों का मिश्रण करने, रोगियों के लिए दवा तैयार करने वाला व्यक्ति। कम्पाउंडर।

सम्मिश्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिलाने का काम। २-मेल। मिलावट। ३ कई तरह की औषधियाँ एक में मिलाकर रोगी के लिए नुसखा बनाना। कम्पाउंडिंग।

सम्मिश्रित [वि.] (सं.) मिला जुला।

सम्मुख [अव्य.] (सं.) सामने। समक्ष।

सम्मुखी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो सामने हो। २-दर्पण। आइना।

सम्मुखीन [वि.] (सं.) जो सम्मुख हो। सामने का।

सम्मूढ़ [वि.] (सं.) १-मुग्ध। मोहयुक्त। २-अज्ञान निर्बोध। ३-टूटा हुआ। भग्न। ४-ढेर लगाया हुआ।

सम्मूढ़पीड़िका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का शुक्ररोग।

सम्मूर्छन [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलीभाँति व्याप्त होने की क्रिया। २-मोह। मूर्छा। ३-वृद्धि। बढ़ती। ४-विस्तार।

सम्मृष्ट [वि.] (सं.) १-भलीभांति संशोधन किया हुआ। २-अच्छी तरह झाड़ा बटोरा हुआ।

सम्मेलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी विशेष उद्देश्य से या किसी विशेष विषय पर विचार करने के लिये एकत्र होने वाला (मनुष्यों का) समाज। कॉनफरेन्स। २-जमावड़ा। जमघट। ३ मिलाप सङ्गम।

सम्मोद [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रेम। प्रीति। २-हर्ष। प्रसन्नता।

सम्मोह [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोह। प्रेम। २-भ्रम सन्देह। ३-मूर्छा। बेहोशी। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु होता है।

सम्मोहक [संज्ञा पु.] (सं) १-मोहक। लुभावना। २-एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

सम्मोहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोहित या मुग्ध करना। २-वह जिससे मोह उत्पन्न हो। ३-एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४-कामदेव के पांच बाणों में से एक।

सम्यक् [वि.] (सं.) पूरा। सब। [क्रि. वि.] (सं.) १-सब तरह से। २-अच्छी प्रकार।

सम्यक्चरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के मतानुसार धर्मत्रय में से एक धर्म।

सम्यक्ज्ञान [संज्ञा पु] (सं.) १-पूरा ज्ञान। २-न्यायप्रमाण द्वारा प्रतिष्ठित सात अथवा नौ तत्वों का ठीक और पूरा ज्ञान (जैन)।

सम्यक्दर्शन [संज्ञा पु.](सं) रत्नत्रय, सात तत्वों तथा आत्मा आदि में पूर्ण श्रद्धा होना (जैन)।

सम्यक्दर्शी [संज्ञा पु] (सं) वह जिसे सम्यक् दर्शन प्राप्त हुआ हो।

सम्यक्योग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्पूर्ण योग। २-समाधि।

सम्यक्संबुद्ध, सम्यक्सम्बुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.)१-वह जिसे सब बातों का पूरा तथा ठीक ज्ञान प्राप्त हो गया हो। २-बुद्ध का नाम।

सम्यक्संबोध, सम्यक्सम्बोध [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

सम्यक्समाधि [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्रकार की समाधि (बौद्ध)।

सम्याना* [संज्ञा पु] (हि) देखो 'शामियाना'।

सम्राज्ञी [संज्ञा स्त्री] (सं) १-सम्राट् की पत्नी। २-किसी साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट् [संज्ञा पु] (सं) वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन बहुत से राजा अथवा राज्य हों। महाराजाधिराज। शाहंशाह। एम्परर।

सम्हलना [कि अ] (हिं) देखो 'संभलना'।

सयत्न [वि] (सं) यत्नसहित।

सयन [संज्ञा पु] (सं) १-बंधन। २-विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ❀ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'शयन'।

सयान* [संज्ञा पु] (हिं) १-देखो 'सयाना'। २-देखो 'सयानपन'।

सयानप [संज्ञा स्त्री] (हि) देखो 'सयानपन'।

सयानपत [संज्ञा स्त्री] (हि) चालकी। धूर्तता।

सयानपन [संज्ञा पु] (हि.) १-सयाना होने का भाव। २-चालाकी।

सयाना [संज्ञा पु] (हिं) १-अधिक या पूरी अवस्था वाला। वयस्क। २-बुद्धिमान्। ३-चतुर। चालाक। धूर्त। ४-झाड़फूंक या जन्तर-मंतर करने वाला। ओझा।

सयानाचारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गांव के मुखिया को मिलने वाली रसूम।

सयोनि [वि] (सं.) १-एक-ही योनि से उत्पन्न। २-एक ही जाति या वर्ग आदि के [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सयोनिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सयोनि होने का भाव या धर्म।

सयोनीयपथ [संज्ञा पु.] (सं.) खेतों में जाने वाला मार्ग।

सरंग, सरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) पंछी। चिड़िया।

सरंजाम [संज्ञा पु.] (अ.) १-कार्य की समाप्ति। २-व्यवस्था। प्रबन्ध। ३-सामग्री। सामान।

सरंडर [वि] (अं. सरएंडर्ड) जिसने दूसरे के सम्मुख आत्मसमर्पण किया हो।

सर [संज्ञा पु.] (सं) जलाशय। तालाब। ❀[संज्ञा पु.](हिं.)देखो 'शर'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चिता। [वि.](फा.) जीता हुआ। पराजित। अभिभूत। [संज्ञा पु] (फा) १-सिर २-सिरा। चोटी। *सर करना*-१-बन्दूक छोड़ना। २-जीतना। [संज्ञा पु.](अं) अङ्गरेजों के राजत्वकाल में उनके सहायकों और खुशामदियों को दी जाने वाली एक बड़ी उपाधि।

सर-अंजाम [संज्ञा पु] (अ.) देखो 'सरंजाम'।

सरकंडा [संज्ञा पु.] (हि.) सरपत की जाति का एक पौधा।

सरक [संज्ञा पु] (सं.) १-सरकने की क्रिया या भाव। २-मद्यपात्र। ३-गुड़ की बनी मदिरा। ४-मदिरा पीना। ५-यात्रियों का दल। ६-शराब की खुमार +[संज्ञा स्त्री] (हिं) बाँस आदि की छोटी और बारीक सींक जो खाल आदि में धँस जाती है।

सरकना [कि अ] (हिं) देखो 'खिसकना'।

सरकश [वि.](फा) १-उद्धत। उद्दंड। २-शासन न मानने वाला। ३-शरारती।

सरकशी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १ उद्दंडता। २-शरारत

सरकस [संज्ञा पु] (अं.) वह दल जिसमें पशु और कलाबाजी के खेल दिखाने वाले होते हैं।

सरकार [संज्ञा स्त्री] (फा) १-मालिक। प्रभु। २-देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता।

सरकारी (फा) १-सरकार या मालिक का। २-राज्य का। राजकीय। यौ०-*सरकारी कागज*-१-राज्य के कार्यालय का कागज। २-प्रामिसरी नोट। *सरकारी अभियाचना*-जनता को अपनी आवश्यकता बतलाते हुए राज्य से की जाने वाली माग। *पब्लिक-डिमांड*।

सरखत [संज्ञा पु] (फा.) १-वह कागज या दस्तावेज जिस पर मकान, दुकान आदि के किराये पर दिये की शर्तें लिखी होती हैं। २-दिये हुए या चुकाये हुए ऋण का ब्योरा। ३-परवाना। आज्ञापत्र।

सरग* [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'स्वर्ग'।

सरग-तिय* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अप्सरा।

सरगना [संज्ञा पु.] (फा.) सरदार। अगुवा।

सरगम [संज्ञा पु.] (हिं.) सङ्गीत में सात स्वरों के उतार-चढ़ाव का क्रम। स्वरग्राम।

सरगरदाँ [वि] (फा.) घबराया हुआ। चक्कर में पड़ा हुआ।

सरगर्दानी [संज्ञा स्त्री] (फा.) परेशानी। हैरानी

सरगर्म [वि] (फा) १-आवेशपूर्ण। जोशीला। २-उत्साही।

सरगर्मी [संज्ञा स्त्री] (फा.) १-जोश। आवेश। २-उमंग। उत्साह।

सर-घर [संज्ञा पु.] (हि) तरकश। तूणीर।

सरघा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मधुमक्खी।

सरज [संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन। नवनीत। [वि.] मलिन। मैला।

सरजना* [क्रि. स.] (हिं.) १-सृष्टि करना। २-रचना। बनाना।

सरजस्, सरजस्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला स्त्री।

सरजा [संज्ञा पु.](फा.) १-सरदार। २-सिंह।

सरजीवन+ [वि] (हिं.) १-संजीवन। २-उपजाऊ।

सरज़ोर [वि.] (फा.) १-जबरदस्त। २-उद्दण्ड। ३-बलवान्। ४-विद्रोही।

सरजोरी [संज्ञा स्त्री] (फा) १-उद्दंडता। २-जबरदस्ती।

सरट, सरटक [संज्ञा पु.](सं) १-छिपकली। २-गिरगिट।

सरण [संज्ञा पु] (सं) सरकना। खिसकना।

सरणी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-मार्ग। रास्ता। २-पगडण्डी। ३-लकीर। रेखा। ४ ढर्रा। ढंग।

सरताज [संज्ञा पु] (हि) देखो 'सिरताज'।

सरताबरता [संज्ञा पु] (हि) बाँट। बँटाई। *सरताबरता करना*-आपस में बाँट-बूँटकर काम चला लेना।

सरतारा* [वि] (हि) जो अपना काम करके निश्चित हो गया हो।

सरद [वि] (फा) देखो 'सर्द'।

सरदई [वि](फा) सरदे के रङ्ग का। हरापन लिये पीले रङ्ग का।

सरदर [कि वि] (फा) १-एक सिरे से। २-सब को एक मानकर उनके विचार मे। औसत में

सरदल [संज्ञा पु] (देश) दरवाजे का बाजू या साह। [क्रि. वि.] (हिं) देखो 'सरदर'।

सरदा [संज्ञा पु] (फा.) एक प्रकार का बढ़िया काबुली खरबूजा।

सरदार [संज्ञा पु](फा) १-अगुवा। नायक। २-किसी प्रदेश का शासक। ३-धनी। अमीर। ४-वह व्यक्ति जिसका किसी वेश्या के साथ संबंध हो (रंडियों की बोली में)।

सरदारतंत्र [संज्ञा पु.](हिं) एक प्रकार की सरकार जिसमें राजसत्ता अथवा शासनसूत्र सरदारों, बड़े-बड़े ताल्लुकेदारों अथवा धनी नागरिकों के हाथ में रहता है। कुलतंत्र। एरिस्टोक्रैसी।

सरदारी [संज्ञा स्त्री.](फा.) सरदार का पद या भाव

सरदाला [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बारहमासी घास।

सरदी [संज्ञा स्त्री] (फा.) देखो 'सर्दी'।

सरधन* [वि] (हि.) धनवान्।

सरधर* [संज्ञा पु.] (हि.) तरकश। तूणीर

सरधा+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'श्रद्धा'। [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सरदा'।

सरन* [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'शरण'।

सरनदीप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंहलद्वीप'।

सरना [क्रि. अ.](हिं.) १-चलना। सरकना। खिसकना। २-हिलना। डोलना। ३-काम चलना। ४-किया जाना। निबटना।

सरनाम [वि.] (फा.) प्रसिद्ध। मशहूर।

सरनामा [संज्ञा पु.] (फा.) १-शीर्षक। २-पत्र के आरम्भ का सम्बोधन। ३-लिफाफे आदि पर लिखा जाने वाला पता।

सरनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरणी'।

सरपंच [संज्ञा पु.] (हिं.) पंचों के मुख्य व्यक्ति। किसी पंचायत का सभापति।

सरपंजर* [संज्ञा पु.](हिं.) बाणों का बना पिंजड़ा या घेरा।

सरपट [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल। [क्रि. वि.](हिं.) घोड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए।

सरपत [संज्ञा पु.](हिं.) कुश की तरह की एक घास जिसमें बहुत लम्बी पत्तियाँ होती हैं। यह छप्पर आदि छाने के काम में आती है।

सरपरस्त [संज्ञा पु.] (फा.) १-अभिभावक। संरक्षक। २-रक्षा करने वाला व्यक्ति।

सरपरस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अभिभावकता। २-संरक्षा।

सरपेच [संज्ञा पु.] (फा.) पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ कलगी।

सरफराज [वि.] (फा.) १-उच्च पदस्थ। २-धन्य। कृतार्थ। सरफराज करना-वेश्या के साथ प्रथम बार संयोग करना।

सरफराना* [क्रि अ.] (हिं.) घबराना। व्याकुल होना।

सरफोका [संज्ञा पु.] देखो 'सरकंडा'।

सरबंधी* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तीरंदाज। धनुर्धर देखो 'संबंधी'।

सरब* [वि.] (हिं.) देखो 'सर्व'।

सरबराह [संज्ञा पु.] (फा.) १-प्रबन्धकर्त्ता। २-राज, मजदूरों आदि का जमादार। ३-मार्ग में ठहरने और भोजन का प्रबन्ध करने वाला।

सरबराहकार [संज्ञा पु.] (फा.) कारिंदा। प्रबन्धक

सरबराही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-प्रबन्ध। इन्तजाम २-सामान आदि की देखभाल। ३-सरबराह का काम या पद।

सरबस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सर्वस्व'।

सरबोर* [वि.] (हिं.) देखो 'सराबोर'।

सरमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवताओं की एक कुतिया का नाम। २-कुतिया। ३-कश्यप की एक पत्नी का नाम।

सरमात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ते का पिल्ला।

सरमाया [संज्ञा पु.] (फा.) १-मूलधन। पूँजी। २-धन-दौलत। संपत्ति।

सरमायादार [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'पूंजीपति'

सरमायादारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सरमायादार या पूँजीपति होने का भाव।

सरया [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का मोटा धान।

सरयू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध नदी।

सरर [संज्ञा पु.] (हिं.) बांस या सरकंडे की पतली छड़ी।

सरराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) हवा के बहने या हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने से उत्पन्न शब्द।

सरल [वि.] (सं.) [स्त्री. सरला] १-निश्छल। निष्कपट। सीधा-साधा। २-सहज। सुगम। ३-सच्चा। ईमानदार। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीड़ का पेड़ और इससे निकलनेवाला गन्धाबिरोजा। २-एक चिड़िया। ३-अग्नि। ४-एक बुद्ध का नाम।

सरलकद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी। पियालवृक्ष

सरलकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) चीड़ की लकड़ी।

सरलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीधापन। २-निष्कपटता। ३-सुगमता। आसानी। ४-सादगी। भोलापन। ५-सत्यता। सच्चाई।

सरलतृण [संज्ञा पु.] (सं.) भू-तृण। गन्धतृण।

सरलद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा। २-तारपीन का तेल।

सरल-निर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा २-तारपीन का तेल।

सरलपुंठी, सरलपुष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहिना नामक मछली।

सरलरका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विकंकत। कँटाई।

सरलरस, सरलस्यंद, सरलस्यन्द, सरलांग, सरलाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धाबिरोजा २-तारपीन का तेल।

सरला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चीड़ का पेड़। २-काली तुलसी। ३-मल्लिका। मोतिया। ४-सफेद निसोथ।

सरलित [वि.] (सं.) सरल या सहज किया हुआ।

सरलीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कठिन विषय को सरल करने की किया या भाव। सिम्प्लिफिकेशन।

सरवन [संज्ञा पु] (सं.) अंधकमुनि के पुत्र जो अपने पिता को बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रवण'।

सरवर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सरोवर'। [संज्ञा पु.] (फा.) सरदार। अधिपति।

सरवरि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बराबरी। समता २-प्रतियोगिता। होड़।

सरवरिया [वि.] (हिं.) सरवार या सरयू पार का [संज्ञा पु.] (हिं.) सरयूपारी।

सरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साला'।

सरवाक [संज्ञा पु] (हिं.) १-सम्पुट। प्याला। २-दीया। कसोरा।

सरवान* [संज्ञा पु.] (?) तम्बू। खेमा।

सरवाला [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ाबेल जिसकी जड़ को बिलाईकन्द कहते हैं।

सरविस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-नौकरी। २-सेवा।

सरवे [संज्ञा पु.] (अं.) १-जमीन की पैमाइश। २-जमीन की पैमायश करने वाला सरकारी विभाग।

सरसंभ्रत, सरसम्भ्रत [संज्ञा पु.] (सं.) तिधारा थूहर।

सरस् [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सरसी] सरोवर। तालाब।

सरस [वि.] (सं.) [स्त्री. सरसा] १-रसयुक्त। रसीला। २-तर। गीला। ३-हरा और ताजा। ४-सुन्दर। मनोहर। ५-मधुर। मीठा। ६-जिसमें मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। ७-छप्पयछन्द का एक भेद जिसमें ३६ गुरु ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ८-भावुक। रसिक।

सरसई* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सरस्वतीदेवी। २-सरस्वतीनदी। ३-सरसता। ४-पहले दिखाई पड़ने वाले फल के छोटे अंकुर या दाने।

सरसठ [वि.] (हिं) सड़सठ।

सरसठवाँ [वि.] (हिं.) सड़सठवाँ।

सरसना [क्रि. अ.](हिं.) १-हरा होना। पनपना। २-उन्नत होना। बढ़ना। ३-शोभित होना। सोहाना। ४-रसपूर्ण होना। ५-कोमल अथवा सरस भाव के आवेश में आना।

सरसब्ज [वि.] (फा.) १-हराभरा। लहलहाता। २-जहां हरियाली हो।

सरसर [संज्ञा पु.] (हिं) १-जमीन पर रेंगने का शब्द। २-वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

सरसराना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हवा का सरसर शब्द करते हुये चलना। सनसनाना। २-जल्दी-जल्दी कोई काम करना। ३-सांप या किसी कीड़े का रेंगना।

सरसराहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सांप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २-शरीर पर रेंगने का अनुभव। सुरसुराहट। ३-वायु बहने का शब्द।

सरसरी [क्रि. वि.] (फा.) १-भली प्रकार ध्यान लगाकर नहीं, बल्कि जल्दी में। २-स्थूल रूप से। मोटे तौर पर।

सरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद निशोथ।

सरसाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सरलता। २-शोभा। सुन्दरता। ३-अधिकता।

सरसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-रसपूर्ण करना। २-हराभरा करना। *[क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'सरसाना'। २-शोभित होना। सजना।

सरसाम [संज्ञा पु.] (फा.) सन्निपात। बाई।

सरसार+ [वि.] (हिं.) १-डूबा हुआ। मग्न। २-मदमस्त।

सरसिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिंगुपत्री । २-छोटा ताल । ३-बावली ।

सरसिज [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल । २-वह जो ताल में उत्पन्न हो ।

सरसिजयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा ।

सरसिरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल ।

सरसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा ताल । तलैया । २-पुष्करणी । बावली । ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, जगण, भगण, जगण, जगण, जगण और रगण होते हैं ।

सरसीक [संज्ञा पु.] (सं.) सारसपच्छी ।

सरसीरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल ।

सरसुलगोरंटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) सफेद कटसरैया ।

सरसेटना [क्रि. स.] (हिं.) फटकारना । भला-बुरा कहना ।

सरसों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है ।

सरसौहाँ* [वि.] (हिं.) सरस बनाया हुआ ।

सरस्वती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी । वाग्देवी । शारदा । २-विद्या । इल्म । ३-पंजाब की एक प्राचीन नदी का नाम । ४-एक रागिनी । ५-ब्राह्मीबूटी । ६-मालकंगनी । ७-सोमलता । ८-गौ । ९-एक छंद का नाम ।

सरस्वतीकंठाभरण, सरस्वतीकण्ठाभरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताल का एक भेद । २-राजा भोज कृत एक अलङ्कार-ग्रंथ । ३-परमारवंशी एक राजा द्वारा स्थापित पाठशाला ।

सरस्वतीपूजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वतीपूजा का उत्सव जो वसन्तपंचमी को होता है ।

सरहंग [संज्ञा पु.] (फा.) १-सेना का अधिकारी । २-पहलवान । ३-बलवान । ४-कोतवाल । ५-चोबदार । ६-पैदल सिपाही ।

सरहंगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सिपाहीगीरी । २-वीरता । ३-पहलवानी ।

सरह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पतङ्ग । २-टिड्डी ।

सरहज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साले की स्त्री ।

सरहटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नकुलकन्द ।

सरहत+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-खलिहान में फैला हुआ अन्न । २-बुहारने की झाड़ू ।

सरहतना+ [क्रि. स.] (देश.) अन्न को साफ करने के लिए फटकना ।

सरहद [संज्ञा स्त्री.] (फा., अ.) १-सीमा । २-चौहद्दी बताने वाली रेखा ।

सरहदी [वि.] (फा.) १-सरहद-सम्बन्धी । २-सरहद या सीमा पर रहने वाला ।

सरहना [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मछली के ऊपर का छिलका ।

सरहिंद [संज्ञा पु.] (फा.) पंजाब के एक स्थान का नाम ।

सराँग+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे की मोटी छड़ ।

सरा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिता । २-सराय । +[संज्ञा पु.] (हिं.) भुट्टा ।

सराई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सलाका । सलाई । २-सरकंडे की पतली छड़ी । ३-सकोरा । [संज्ञा स्त्री.] (?) पाजामा ।

सराग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोहे की सींख । नुकीली छड़ । २-वह लकड़ी जो कुलाबे के बीच में लगाई जाती है ।

सराजाम [संज्ञा पु.] (हिं.) सामग्री । सामान ।

सराध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्राद्ध' ।

सराना* [क्रि. स.] (हिं.) पूर्ण करना ।

सराप [संज्ञा पु.] देखो 'शाप' ।

सरापना* [क्रि. स.] (हिं.) १-शाप देना । कोसना २-गाली देना ।

सरापा [संज्ञा पु.] (फा.) नख-सिख ।

सराफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-सोने-चाँदी का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति । २-रुपये-पैसे रखकर बैठने वाला वह दुकानदार जिससे लोग रुपये, नोट आदि भुनाते हैं ।

सराफ़ा [संज्ञा पु] (अ.) १-सराफ का काम या व्यवसाय । २-सराफों का बाजार ।

सराफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सराफ का काम । २-वह लिपि जिसमें महाजन लोग लिखते हैं महाजनी । मुंडी । ३-नोट, रुपये आदि भुनाने का बट्टा ।

सराब [संज्ञा पु.] (अ.) १-मृगतृष्णा । २-धोखा देने वाली वस्तु । ३-धोखा । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शराब' ।

सराबोर [वि.] (हिं.) बिलकुल भीगा हुआ । तरबतर ।

सराय [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रहने का स्थान । २-यात्रियों के ठहरने का स्थान । *सराय का कुत्ता*–स्वार्थी । मतलबी । *सराय की भटियारी* निर्लज्ज और लड़ाका स्त्री । [संज्ञा पु.] (देश.) गुल्ला नामक पहाड़ी वृक्ष ।

सरार [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'घोड़ाबेल' ।

सराव* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मदिरापान करने का पात्र या प्याला । २-कसोरा । ३-दीया ।

सरावग, सरावगी [संज्ञा पु.] (हिं.) श्रावक धर्मावलम्बी । जैन ।

सरावन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करते हैं । २-देखो 'श्रावण' ।

सरावसंपुट [संज्ञा पु.] (हिं.) दो कसोरों के मुंह जोड़कर बनाया हुआ बरतन जो दवा फूंकने के काम आता है ।

सराविका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरावक' ।

सरासन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शरासन' ।

सरासर [अव्य.] (फा.) १-बिलकुल पूरा-पूरा । २-प्रत्यक्ष । साक्षात ।

सरासरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-आसानी । २-शीघ्रता । ३-मोटा अन्दाज । [क्रि. वि.] (फा.) १-जल्दी में । २-मोटे तौर पर ।

सराह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रशंसा । बड़ाई ।

सराहना [क्रि. स.] (हिं.) प्रशंसा या बड़ाई करना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रशंसा । तारीफ ।

सराहनीय* [वि.] (हिं.) १-प्रशंसा के योग्य । २-अच्छा । बढ़िया ।

सरि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झरना । निर्झर । *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नदी । २-बराबरी । समता । [वि.] समान । सदृश । बराबर ।

सरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिंगुपत्री । २-मोतियों की लड़ी । ३-मुक्ता । मोती । ४-रत्न । ५-छोटा ताल या सरोवर । ६-एक तीर्थ का नाम ।

सरिगम [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सरगम' ।

सरित्, सरित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी ।

सरिता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-धारा । २-नदी ।

सरित्कफ [संज्ञा पु.] (सं.) नदी का फेन ।

सरित्पति [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र ।

सरित्सुत [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्म ।

सरिदिही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह नजर जो किसान हर फसल या उपज पर जमींदार या उसके कारिंदे को देता है ।

सरिद्वरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा ।

सरिया+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-ऊँची जमीन । २-कोई छोटा सिक्का । [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सरई । २-पतली छड़ ।

सरियाना+ [क्रि. स.] (?) १-तरतीब लगाकर इकट्ठा करना । २-मारना । लगाना ।

सरिल [संज्ञा पु.] (सं.) सलिल । जल ।

सरिवन [संज्ञा पु.] (हिं.) शालपर्ण नामक पौधा जो दवा के काम में आता है ।

सरिवरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बराबरी । समता ।

सरिश्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कार्यों या कार्यालय का विभाग । महकमा । २-कार्यालय ।

सरिश्तेदार [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसी विभाग का प्रधान अधिकारी । २-अदालतों में मुकदमों की मिसलें रखने वाला कर्मचारी ।

सरिश्तेदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सरिश्तेदार का काम, भाव या पद ।

सरिस* [वि.] (हिं.) सदृश । समान ।

सरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा तालाब या जलाशय । २-झरना । सोता । चश्मा ।

सरीक+ [वि.] (हिं.) देखो 'शरीक' ।

सरीकत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिराकत' ।

सरीकता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साझा । हिस्सा ।

सरीखा+ [वि.] (हिं.) देखो 'सरीखा' ।

सरीखा [वि.] (हिं.) समान। सदृश।

सरीफा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक छोटा वृक्ष जिसका फल बहुत मीठा होता है।

सरीर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शरीर'।

सरीसृप [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेंगकर चलने वाले जंतु। २-सर्प। सांप। ३-विष्णु।

सरुच् [वि.] (सं.) शोभायुक्त। कांतिमान्।

सरुज [वि.] (सं.) रोगी।

सरुष [वि.] (सं.) कुपित। क्रोधयुक्त।

सरुहाना* [क्रि. स.] (हिं.) चंगा या अच्छा करना।

सरूप [वि.] (सं.) १-एक ही रूप-रङ्ग का। २-समान। मिलता-जुलता। ३-सुन्दर। ४-[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वरूप'।

सरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समानता। एकरूपता। २-चार प्रकार की मुक्तियों में से एक

सरूपत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सरूपत'।

सरूपा [संज्ञा स्त्री.](सं.) भूत की पत्नी जो असंख्य रुद्रों की माता बताई जाती है।

सरूपोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'समानोपमा'

सरूर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खुशी। आनन्द। २-मादकता। हलका नशा।

सरेख* [वि.] (हिं.) [स्त्री. सरेखी] अवस्था में बड़ा और समझदार।

सरेखा [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'श्लेषा'। [वि.] देखो 'सरेख'।

सरेखना [क्रि. सं.] (हिं.) देखो 'सहेजना'।

सरेदस्त [क्रि. वि.] (फा.) १-अभी। इसी समय। २-फिलहाल।

सरेफ [वि.] (सं.) रेफयुक्त।

सरे-बाजार [क्रि. वि.] (फा.) १-जनता के सम्मुख बाजार में। २-खुले आम। सब के सामने।

सरेरा, सरेला [संज्ञा पु.] (देश.) १-पाल में लगी हुई वह रस्सी जिसको ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २-मछली की बंसी की डोरी।

सरेस [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार की लसदार वस्तु जो चमड़े को उबालकर बनाई जाती है [वि.] (फा.) लसीला। चिपकाने वाला।

सरेसमाही [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का द्रव्य जो सफेद या काले गोंद के समान होता है।

सरोंट* [संज्ञा पु.] (हिं) कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट।

सरो [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सीधा पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता है।

सरोई [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी छाल से रङ्ग निकाला जाता है।

सरोकार [संज्ञा पु] (फा.) १-आपस के व्यवहार का सम्बन्ध। २-वास्ता।

सरोज [संज्ञा पु.] (सं) कमल।

सरोजना* [क्रि. स.] (?) पाना।

सरोजमुखी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] कमल के सदृश मुखवाली। सुन्दरी।

सरोजिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमलों से भरा जलाशय। २-कमलों का समूह। ३-कमल का फूल।

सरोजी [वि.] (हिं.) [स्त्री. सरोजिनी] १-कमल वाला। २-जिसमें या जहाँ कमल हों। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ब्रह्मा। २-बुद्ध।

सरोट* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिलवट'।

सरोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बक। २-सारस।

सरोद [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का बाजा जो बीन की तरह का होता है। २-नाचने-गाने की क्रिया।

सरोधा [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार की विद्या जिससे नाक नथने से निकलने वाले श्वास को देखकर भविष्य की बात बताई जाती हैं।

सरोविंदु, सरोविन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वैदिक गीत।

सरोरुह [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

सरोला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की मिठाई

सरोवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-तालाब। २-झील।

सरोष [वि.] (सं.) क्रोधयुक्त। कुपित। [क्रि. वि.] (सं.) रोष या क्रोधसहित। क्रोध से।

सरो-सामान [संज्ञा पु.] (फा.) सारी सामग्री या उपकरण।

सरोही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो सिरोही'।

सरौ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-प्याली। कटोरी। २-ढक्कन। ढकना। ३-देखो 'सरो'।

सरौता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सरौती] सुपारी कतरने या काटने का औजार।

सरौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा सरौता। २-एक प्रकार की ईख।

सर्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-मन। चित्त। २-वायु। ३-एक प्रजापति का नाम।

सर्कस [संज्ञा पु.](अं.) देखो 'सरकस'।

सर्का [संज्ञा पु.] (अ.) १-चोरी। २-साहित्यिक चोरी।

सर्कार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरकार'।

सर्कारी [वि.] (हिं.) देखो 'सरकारी'।

सर्किल [संज्ञा पु.] (अं.) कई महल्लों, गांवों या कसबों आदि का समूह जो किसी कार्य के लिए नियत हो।

सर्क्युट-हाउस [संज्ञा पु.] (अं.) जिले के प्रधान नगर में वह सरकारी मकान या कोठी जहां, दौरा करते हुए उच्च राज्यकर्मचारी अथवा बड़े अफसर लोग ठहरते हैं।

सर्क्युलर [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह पत्र, विज्ञप्ति अथवा सूचना जो बहुत से व्यक्तियों के नाम भेजी जाय। गश्ती चिट्ठी। २-सरकारी आज्ञा-पत्र जो सब दफ्तरों में घुमाया जाता है। ३-यह पत्र जिसमें किसी विषय की आवश्यक सूचनाएँ रहती हैं।

सर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-चलना या आगे की ओर बढ़ना। गमन। २-संसार। सृष्टि। ३-प्रवाह। बहाव। ४-छोड़ना। फेंकना। ५-छोड़ा या फेंका हुआ अस्त्र। ६-उद्गम। उत्पत्ति। ७-प्राणी। जीव। ८-संतान। औलाद। ९-स्वभाव। प्रकृति। १०-झुकाव। प्रवृत्ति। ११-प्रयत्न। १२-संकल्प। १३-अध्याय। प्रकरण। परिच्छेद। १४-मोह। मूर्च्छा। १५-शिव। १६-प्राकृतिक वस्तुओं, जीवों आदि का कोई स्वतन्त्र तथा पूरा समूह या वर्ग। किंगडम।

सर्गकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

सर्गपताली [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऐंचाताना। २-वह बैल जिसका एक सींग ऊपर की ओर उठा हो तथा दूसरा नीचे की ओर झुका हो।

सर्गपुट [संज्ञा .] (सं.) एक प्रकार का शुद्ध राग।

सर्गबंध, सर्गबन्ध [संज्ञा पु] (सं.) महाकाव्य।

सर्गुन* [वि.] (हिं.) देखो 'सगुण'।

सर्चलाइट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक तीव्र प्रकाश वाली बिजली की रोशनी जो हवाई अड्डों पर मार्ग-प्रदर्शन के लिए लगी रहती है। अन्वेषक प्रकाश। प्रकाशप्रक्षेपक।

सर्जंट [संज्ञा पु] (अं सार्जेंट) १-हवलदार। २-नाजिर। ३-प्रथम श्रेणी का वकील।

सर्ज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अजकर्णवृक्ष। २-राल। धूना। ३-सलाई का पेड़। ४-विजयसाल नामक वृक्ष। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

सर्जक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा शालवृक्ष। २-विजयसाल। ३-सलई नामक वृक्ष। ४-गरम दूध का फटाव।

सर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोई वस्तु चलाना, छोड़ना या फेंकना। २-कोई वस्तु बनाकर तैयार करना। क्रिएशन। ३-सृष्टि का उत्पन्न होना। ४-सेना का पिछला भाग। ५-साल का गोंद। [संज्ञा पु.] (अं.) अस्त्रचिकित्सक।

सर्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुदा की नलियों में से वह जो मल, पवन आदि निकलती है।

सर्जमणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेमल का गोंद। २-राल। धूना।

सर्जरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) चीरफाड़ के द्वारा चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या।

सर्जि, सर्जिका, सर्जिक्षार, सर्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जीखार।

सर्जु [संज्ञा पु.] (सं.) वणिक। व्यापारी। [संज्ञा स्त्री.] विद्युत। बिजली।

सर्जू [संज्ञा पु.] (सं.) १-वणिक। व्यापारी। २-गले का हार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो सर

सर्जूर [संज्ञा पु.] (सं.) दिन।

सर्टिफिकेट [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र। २-चाल-चलन स्वास्थ्य, योग्यता आदि का प्रमाण-पत्र।

सर्त [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शर्त्त'।

सर्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़ा।

सर्द [वि.] (फा.) १-ठंडा। शीतल। २-सुस्त। धीमा। मन्द। *सर्द होना*-१-ठंडा पड़ना। २-मन्द या धीमा हो जाना। ३-मरजाना। ४-उत्साहहीन होना।

सर्दबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथियों के पैर जकड़ जाने की बीमारी।

सर्दमिजाज [वि.](फा., अ.) १-मुरदादिल। २-रूखा। बेमुरौवत।

सर्दा [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'सरदा'।

सर्दार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सरदार'।

सर्दाबा [संज्ञा पु.] (हिं.) कब्र। समाधि।

सर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-ठंड। शीतलता। २-जाड़ा। शीत। ३-जुकाम।

सर्प [संज्ञा पु॰](सं.) [स्त्री॰ सर्पिणी] १-साँप। २-रेंगना। ३-ज्योतिष में एक अशुभ योग। ४-नागकेसर। ५-ग्यारह रुद्रों में से एक। ६-एक म्लेच्छ जाति।

सर्पकंकालिक, सर्पकङ्कालिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) सर्पलता।

सर्पकाल [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

सर्पगंधा, सर्पगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंधनाकुली। २-नकुलकन्द। ३-एक जड़ी जिसे नागदवन कहते हैं।

सर्पगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सांप की गति। २-कपट की चाल।

सर्पगृह [संज्ञा पु.] (सं.) बाँबी।

सर्पघातिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्पाक्षी। सरहँटी

सर्पघाती [वि.] (सं.) सांप मारने वाला।

सर्पच्छत्र [संज्ञा पु.] (सं.) खुमी। कुकुरमुत्ता।

सर्पछिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) सांप का बिल।

सर्पण [संज्ञा पु.] (सं.) १-रेंगना। २-छोड़े हुए तीर का भूमि से लगते हुए जाना।

सर्पतनु [संज्ञा पु.] (सं.) वृहती का एक भेद।

सर्पतृण [संज्ञा पु.] (सं.) नकुल नामक कन्द।

सर्पदंडा, सर्पदण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंहली-पीपल।

सर्पदंडी, सर्पदण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोरक्षी। २-नागबला।

सर्पदंता, सर्पदन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंहली-पीपल।

सर्पदंती, सर्पदन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदंती

सर्पदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांप का दांत। २-जमालगोटा।

सर्पदंष्ट्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दंती।

सर्पदंष्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वृश्चकाली। २-दन्ती। ३-बिछुआ।

सर्पद्विष [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

सर्पनिर्मोक [संज्ञा पु.] (सं.) सांप की केंचुली।

सर्पनेत्रा [[संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरहँट। २-गंधनाकुली।

सर्पपति [संज्ञा पु.] (सं.) शेषनाग।

सर्पपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नागदंती। २-बाँझ खखेसा।

सर्पप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन का वृक्ष।

सर्पफणज [संज्ञा पु.] (सं.) सर्पमणि।

सर्पफेण [संज्ञा पु.] (सं.) अहिफेन। अफीम।

सर्पबंध, सर्पबन्ध [संज्ञा पु.](सं.) कुटिल चाल।

सर्पबल [संज्ञा पु.] (सं.) विष।

सर्पबेलि [संज्ञी स्त्री.] (सं.) नागवल्ली। पान।

सर्पभक्षक [संज्ञा पु.] (सं.) १-नकुल। २-मोर। मयूर।

सर्पभुक्, सर्पभुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-नकुल। न्योला। २-मोर। मयूर। ३-सारसपक्षी।

सर्पमणि [संज्ञा पु.] (सं.) साँप के फण का रत्न।

सर्पमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरहँटी। सर्पाक्षी

सर्पमाली [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग [संज्ञा पु.] (सं.) राजा जनमेजय का नागों के संहार के लिये किया हुआ यज्ञ।

सर्पराज [संज्ञा पु.](सं.)१-शेषनाग। २-वासुकि

सर्पलता, सर्पवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागवल्ली पान।

सर्पविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साँप को पकड़ने अथवा वश में करने की विद्या।

सर्पव्यूह [संज्ञा पु॰] (सं.) सेना का वह व्यूह जिसकी रचना सर्प के आकार की हो।

सर्पशीर्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-यज्ञ की वेदी में लगने वाली ईंट। २-तांत्रिक पूजा में हाथ और पंजे की एक मुद्रा।

सर्पसत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सर्पयज्ञ।

सर्पसत्री [संज्ञा पु.](सं.) सर्प-यज्ञकर्त्ता राजा जनमेजय का एक नाम।

सर्पसुगंधा, सर्पसुगन्धा, सर्पसुगंधिका, सर्पसुगन्धिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्पगन्धा। गन्धनाकुली।

सर्पसहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरहँटी।

सर्पहा [संज्ञा पु.] (हिं.) नेवला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरहँटी।

सर्पांगी, सर्पाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरहँटी) २-सिंहलीपीपल। ३-नकुलकन्द।

सर्पा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सर्पिणी। २-फणिलता

सर्पाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुद्राक्ष। २-सरहँटी

सर्पाक्षी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सरहँटी। २-गंधनाकुली। ३-सर्पिणी। ४-श्वेत अपराजिता। ५-शङ्खिनी।

सर्पाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

सर्पादनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंधरास्ना। २-नकुलकन्द।

सर्पारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-नेवला। ३-मोर। मयूर।

सर्पावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्पों के रहने की जगह। २-चन्दन का वृक्ष।

सर्पाशन [संज्ञा पु.](सं.) १-मोर। मयूर। २-गरुड़

सर्पास्य [संज्ञा पु.](सं.) १-सांप के से मुख वाला। २-खर नामक राक्षस के एक सेनापति का नाम

सर्पि [संज्ञा पु.](सं.) १-घृत। घी। २-एक वैदिक ऋषि का नाम।

सर्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटा सांप। २-एक नदी।

सर्पिणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सांपिन। २-भुजगी नामक लता।

सर्पित [संज्ञा पु.] (सं.) सांप के काटने का घाव

सर्पिल [वि.] (सं.) १-सांप की चाल की तरह का टेढ़ा-तिरछा। २-सांप के समान कुण्डली मारे हुए।

सर्पिष्क, सर्पिस् [संज्ञा पु.] (सं.) घृत। घी।

सर्पी [वि.] (हिं.) [स्त्री. सर्पिणी] रेंगकर चलनेवाला। ❀ [संज्ञा पु.] देखो 'सर्पि'।

सर्पेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

सर्पोन्माद [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का उन्माद रोग जिसमें मनुष्य सर्प के समान लेटता, जीभ निकालता और क्रोध करता है।

सर्फ [संज्ञा पु.] (अं.) खर्च किया हुआ।

सर्फा [संज्ञा पु.] (अ.) खर्च। व्यय।

सर्बस [वि.] (हिं.) देखो 'सर्बस्व'।

सर्म [संज्ञा प.] (हिं.) देखो 'शर्म'।

सर्रक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सर्राते हुये आगे बढ़ने की क्रिया या भाव।

सर्रा [संज्ञा पु.] (हिं.) धुरी। धुरा।

सर्राटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हवा के जोर से चलने पर होने वाला सर्र-सर्र शब्द। २-इस प्रकार की तेजी से भागना कि सर्रसर्र शब्द हो। *सर्राटे भरना*-तेजी के साथ सर्रसर्र शब्द करते हुए इधर-उधर जाना।

सर्राफ [संज्ञा पु.] (अ.) १-सोने, चाँदी या रुपए पैसे का व्यापार करने वाला। २-बदलने के लिए पैसे, रुपए आदि लेकर बैठने वाला। ३ पारखी। ४-धनी। *सर्राफ के से टके*-वह सौदा जिसमें किसी तरह की हानि न हो।

सर्राफ-नानुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह आदि

शुभ अवसरों पर नौकर-चाकरों को रुपया-पैसा बाँटना।

सर्राफा [संज्ञा पु.] देखो 'सराफा'।

सर्राफी [संज्ञा स्त्री] देखो 'सराफी'।

सर्व [वि.] (सं) सब। समस्त। कुल। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-पारा। ४-रसौत। ५-शिलाजीत।

सर्वकर्त्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्रह्मा।

सर्वकाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब इच्छाएं रखनेवाला। २-शिव। ३-एक बौद्ध या अर्हत् का नाम।

सर्वकामद [वि.] (सं.) [स्त्री. सर्वकामना] समस्त कामनाएं पूरी करने वाला।

सर्वकाल [क्रि. वि.] (सं.) सब दिन। हर समय

सर्वकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) मौलसिरी।

सर्वक्षमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विशिष्ट कारण से अथवा विशिष्ट अवसर पर किसी प्रकार के सभी अपराधियों या बन्दियों को एक साथ क्षमा करके मुक्त कर देना। एमनेस्टी।

सर्वक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) मोरवा।

सर्वगंध [संज्ञा पु.] (सं.) १-दालचीनी। २-इलायची। ३-तेजपात। ४-नागकेसर। ५-शीतलचीनी। ६-लौंग। ७-अगरु। ८-शिलारस। ९-केसर।

सर्वग [वि.] (सं.) [स्त्री. सर्वगा] सर्वव्यापक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। पानी। २-जीव। आत्मा। ३-ब्रह्म। ४-शिव।

सर्वगण [संज्ञा पु.] (सं.) खारी मिट्टी। रेह।

सर्वगत [वि.] (सं.) सर्वव्यापक।

सर्वगति [वि.] (सं.) जिसकी शरण सब लोग लें।

सर्वगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगु वृक्ष।

सर्वगामी [वि.] (हिं.) देखो 'सर्वग'।

सर्वग्रंथि, सर्वग्रन्थि [संज्ञा पु.] (सं.) पीपलामूल

सर्वग्रंथिक, सर्वग्रन्थिक [संज्ञा पु.] (सं.) पीपलामूल।

सर्वग्रहापहा [संज्ञा स्त्री] (सं.) नागदमनी।

सर्वग्रास [संज्ञा पु.](सं) पूर्ण ग्रहण। खग्रास ग्रहण

सर्वचक्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की एक तांत्रिक देवी।

सर्वचारी [वि.] (सं.) [स्त्री. सर्वचारिणी] व्यापक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सर्वजनप्रिया [संज्ञा स्त्री.](सं.)ऋद्धि नामक औषध

सर्वजन-मताधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) मताधिकार की वह पद्धति जिसमें नाबालिग बच्चे, पागल आदि को छोड़कर सब को मत देने के अधिकार प्राप्त हों।

सर्वजनीन [वि.] (सं.) सार्वजनिक। सब का।

सर्वजया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवकली (पौधा)। २-स्त्रियों का एक प्राचीन पर्व जो मार्गशीर्ष मास में होता है।

सर्वजित् [वि.] (सं.) १-सब को जीतने वाला। २-उत्तम। [संज्ञा पु.](सं.) १-साठ संवत्सरों में से एक। २-मृत्यु। काल। ३-एक प्रकार का

सर्वजीवी [वि.] (सं.) जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनों जीते हों।

सर्वज्ञ [वि.](सं.) [स्त्री. सर्वज्ञा] सब कुछ जानने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) १-ईश्वर। २-देवता ३-शिव। ४-बुद्ध या अर्हत्।

सर्वज्ञता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वज्ञ होने का भाव

सर्वज्ञत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वज्ञता।

सर्वज्ञा [वि.](सं.)[स्त्री. प्र.] सब कुछ जानने वाली [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-दुर्गादेवी। २-एक योगिनी

सर्वज्ञनी [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वज्ञ।

सर्वज्यानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वनाश।

सर्वतंत्र, सर्वतन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्रकार के शास्त्र-सिद्धान्त। [वि.](सं.) जिसे सब शास्त्र मानते हों।

सर्वतः [अव्य.] (सं.) १-चारों ओर। २ सब प्रकार से। ३-पूरी तरह से। पूर्णतया।

सर्वतःशुभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कँगनी नामक अनाज।

सर्वतापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-कामदेव।

सर्वतिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भँटाकी। २-मकोय।

सर्वतोभद्र [वि.] (सं.) १-सब ओर से शुभ या मङ्गल। २-जिसके सिर, दाढ़ी, मूंछ आदि सब बाल मुंड़े हुये हों। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो देवताओं पर चढ़ाने के वस्त्र पर बनाया जाता है। २-एक प्रकार का चित्रकाव्य। ३-चारों ओर दरवाजे वाला चौखुंटा मन्दिर। ४-एक प्रकार की पहेली। ५-विष्णु का रथ। ६-बाँस। ७-एक गंधद्रव्य। ८-वह मकान जिसके चारों ओर परिक्रमा का स्थान हो। ९-हठयोग का एक आसन। १०-नीम का वृक्ष।

सर्वतोभद्रकच्छेद [संज्ञा पु.] (सं.) भगन्दर की चिकित्सा में लगाया हुआ एक प्रकार का चीरा

सर्वतोभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गम्भारी। २-नटी।

सर्वतोभद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गम्भारीवृक्ष।

सर्वतोभाव [अव्यय] (सं.) पूर्णरूप से। भलीभाँति

सर्वतोमुख [वि.] (सं.) १-जिसका मुख चारों ओर हो। २-सब जगह मिलने या होने वाला व्यापक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की व्यूहरचना। २-जल। पानी। ३-आत्मा। जीव। ४-ब्रह्मा। ५-शिव। ६-अग्नि। ७-स्वर्ग। ८-आकाश।

सर्वतोमुखी [वि.] (सं.) देखो 'सर्वतोमुख'।

सर्वतोवृत्त [वि] (सं.) सर्वव्यापक।

सर्वत्र [अव्य] सब जगह। हर जगह।

सर्वत्रग [वि.](सं.) सर्वव्यापक। [संज्ञा पु.](सं.) १-वायु। २-मनु के एक पुत्र का नाम। ३-भीमसेन के एक पुत्र का नाम।

सर्वत्रगामी [संज्ञा पु.] (सं.) वायु। हवा।

सर्वथा [अव्य.] (सं.) १-सब प्रकार से। २-सब बिलकुल।

सर्वदंडधर, सर्वदण्डधर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सर्वदंडनायक, सर्वदण्डनायक [संज्ञा पु.] (सं.) सेना या पुलिस का उच्च अधिकारी।

सर्वद [वि.] (सं.) सब कुछ देने वाला।

सर्वदर्शी [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. सर्वदर्शिणी] सब कुछ देखने वाला।

सर्वदल-सम्मेलन [संज्ञा पु.] (सं.) अलग-अलग विचारधारा वाले सभी दलों का एक स्थान पर एकत्र होकर किसी विषय पर किया जाने वाला विचार। ऑल-पार्टीज-कॉनफरेंस।

सर्वदा [अव्य.] (सं.) हमेशा। सदा।

सर्वदैव [अव्य.] (सं.) सदा ही। सदैव।

सर्वद्वारिक [वि.] (सं.) दिग्विजयी।

सर्वधातुक [संज्ञा पु.] (सं.) ताँबा नामक धातु।

सर्वधाम [संज्ञा पु] (सं.) जन्मभूमि।

सर्वधारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-साठ सम्वत्सरों में से एक। २-शिव।

सर्वनाम [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के नाम पर प्रयुक्त होता है। यथा-मैं, तू और वह।

सर्वनाश [संज्ञा पु.] (सं.) सत्यानाश। विध्वंस

सर्वनाशी [संज्ञा पु.] (सं) सर्वनाश करने वाला

सर्वनिधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब का नाश या वध। २-एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

सर्वनियंता, सर्वनियन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सब को वश में करने वाला।

सर्वनियोजक, सर्वपति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सर्वपा [वि.] (सं.) सब कुछ पीने वाला। [संज्ञा स्त्री.] दैत्यराज बलि की पत्नी का नाम

सर्वपाचक [संज्ञा पु.] (सं.) सुहागा।

सर्वपालक [वि.] (सं.) सब का पालन करने वाला

सर्वपूत [वि.] (सं.) सब तरह से पवित्र।

सर्वपूरक [वि.] (सं.) सब पूर्ण करने वाला।

सर्वपूर्व [क्रि. वि.] (सं.) सब से पहले।

सर्वपृष्ठ [वि.](सं.) सबके पीछे। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का यज्ञ।

सर्वप्रद [वि.] (सं.) सब कुछ देने वाला।

सर्वप्रिय [वि.] (सं.) जो सबको प्रिय या अच्छा लगे। पापुलर।

सर्वबल [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।

सर्वबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध करने का एक ढंग।

सर्वभक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकरी।

सर्वभक्षी [वि.] (सं.) [स्त्री. सर्वभक्षिणी] सब-कुछ खा जाने वाला। [संज्ञा पु.] अग्नि।

सर्वभवोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सर्वभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-संपूर्ण सत्ता। २-सम्पूर्ण आत्मा। ३-पूर्ण तुष्टि।

सर्वभावन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सर्वभूत [संज्ञा पु.] (सं.) चराचर। [वि.] जो सब कुछ हो या सब में हो।

सर्वभूतहित [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्राणियों की भलाई।

सर्वभूतांतक, सर्वभूतान्तक [संज्ञा पु.] (सं.) यम

सर्वभूतात्मक [वि.] (सं.) सर्वभूतस्वरूप।

सर्वभूतात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्राणियों की आत्मा।

सर्वभूताधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सर्वभूमिक [संज्ञा पु.] (सं.) दालचीनी।

सर्वभोग [संज्ञा पु.](सं.) वह वैश्य मित्र जो सेना, कोश तथा भूमि से सहायता करे।

सर्वभोगसह [संज्ञा पु.](सं.) सब प्रकार के कामों में समर्थ।

सर्वभोगी [वि.] (सं.) सबका भोग करने या आनन्द लेने वाला।

सर्वमंगला, सर्वमङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दुर्गा। २-लक्ष्मी। [वि.] सर्व प्रकार का मंगल करने वाली।

सर्वमात्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) विराज छन्द का एक भेद।

सर्वमूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कौड़ी। २-छोटा सिक्का।

सर्वमूषक [संज्ञा पु.] (सं.) काल।

सर्वमेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-सार्वजनिक सत्र। २-दस दिन में होने वाला एक सोमयाग।

सर्वयोगी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सर्वयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) सब का कारण।

सर्वरक्षण [संज्ञा पु.](सं.) सब तरह से रक्षा करना

सर्वरत्नक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनशास्त्रानुसार नौ निधियों में से एक।

सर्वरस [संज्ञा पु.] (सं.) १-राल। धूना। २-नमक ३-एक प्रकार का बाजा। ४-सब विद्याओं में निपुण व्यक्ति।

सर्वरसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) धान की खीलों का मांड़

सर्वरसोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) नमक। लवण।

सर्वरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शर्वरी'।

सर्वरूप [वि.] (सं.) सर्वस्वरूप। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की समाधि।

सर्वला [संज्ञा स्त्री.] लोहे की छड़।

सर्वलिंगी, सर्वलिङ्गी [संज्ञा पु.] (सं.) नास्तिक। [वि] (सं.) [स्त्री. सर्वलिंगिनी] पाखंडी।

सर्वलोकेश, सर्वलोकेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-ब्रह्मा। ३-विष्णु। ४-कृष्ण।

सर्वलोचना [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

सर्वलौह [संज्ञा पु.](सं.) १-ताँबा। २-बाण। तीर

सर्ववर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गँभारी का पेड़।

सर्ववल्लभा [संज्ञा स्त्री (सं.) कुलटा स्त्री।

सर्ववादी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [वि.] (सं.) सब कुछ बोलने वाला।

सर्ववास, सर्वविग्रह [संज्ञा पु.](सं.) शिव। महादेव

सर्वविज्ञानी [संज्ञा पु.](सं.) सब विज्ञान को जानने वाला।

सर्वविद् [वि.] (सं.) सर्वज्ञ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-ओंकार।

सर्वविद्य [वि] (सं.) सब विषय में विद्वान्।

सर्वविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब प्रकार की विद्या

सर्ववीर [वि.] (सं.) जिसके बहुत से पुत्र हों।

सर्ववेद [वि.] (सं.) सब वेदों का जानने वाला।

सर्ववेदस् [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपनी समस्त संपत्ति यज्ञ में दान करदे।

सर्ववेदस [संज्ञा पु.] (सं.) सारी संपत्ति।

सर्ववैनाशिक [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा आदि सबको नाशवान् मानने वाला। बौद्ध।

सर्वव्यापक, सर्वव्यापी [वि.] (सं.) [स्त्री. सर्वव्यापिनी] सब पदार्थों में व्याप्त रहने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-शिव।

सर्वशः [अव्य.] (सं.) १-पूरा-पूरा। २-समूचा। पूर्णरूप से।

सर्वशक्तिमान् [वि.] (सं.) [स्त्री. सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

सर्वशून्यवादी [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध।

सर्वशूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम

सर्वश्री [वि.] (सं.) एक आदरसूचक विशेषण जो बहुत से नामों का उल्लेख होने पर सबके साथ अलग-अलग 'श्री' न लगा कर उन सब के सामूहिक सूचक के रूप में, आरम्भ में लगाया जाता है।

सर्वश्रेष्ठ [वि.] (सं.) सबसे उत्तम।

सर्वश्वेता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

सर्वसंगत, सर्वसङ्गत [वि.] (सं) साठी धान।

सर्वसंस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) सब रूपों में रहने वाला।

सर्वसंहार [संज्ञा पु.] (सं.) काल।

सर्वस [वि.] (हिं.) देखो 'सर्वस्व'।

सर्वसत्ताधारी-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह राज्य-सत्ता जिसका अधिकार कानून और राजकीय दृष्टि से अनियमित और अबाधित हो तथा जिसके ऊपर कोई अन्य सत्ता न हो। एब्सोल्यूटिज्म।

सर्वसत्ताधारी-शासन [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन जो पूर्णरूप से स्वेच्छाचारी हो और जो किसी भी प्रकार की उच्च सत्ता के अधीन न हो। एब्सोल्यूट-गवर्नमेंट।

सर्वसर [संज्ञा पु.] (सं.) मुँह का एक रोग।

सर्वसह [संज्ञा पु.] (सं.) गूगल।

सर्वसाक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईश्वर। २-अग्नि। ३-वायु।

सर्वसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। २-धन। ३-शिव।

सर्वसाधारण [संज्ञा पु.](सं.) सभी लोग। जनता। आम लोग। [वि.] जो सब में पाया जाय। कॉमन।

सर्वसामान्य [वि.] (सं.) १-जो सब में समान रूप में पाया जाय। कॉमन। २-जो सब लोगों के लिये हो। पब्लिक।

सर्वसारंग, सर्वसारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक नाग का नाम।

सर्वसिद्धा [संज्ञा स्त्री.](सं.) तीन तिथियाँ, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी।

सर्वसिद्धार्थ [वि.](सं.) जिसका सब आशय सिद्ध हुआ हो।

सर्वसिद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब कार्यों तथा कामनाओं का पूर्ण होना। २-पूर्ण तक। ३-श्रीफल। बेल।

सर्वस्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का एकाह-यज्ञ।

सर्वस्व [संज्ञा पु.] (सं.) जो कुछ पास में हो वह सब कुछ। सारी सम्पत्ति या पूँजी।

सर्वस्व-संधि, सर्वस्व-सन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सब कुछ देकर शत्रु से की हुई सन्धि।

सर्वस्वार [संज्ञा पु.] (सं.) एक एकाह यज्ञ।

सर्वस्वी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सर्वस्विनी] एक वर्णसंकर जाति का नाम।

सर्वहर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब कुछ हर लेने-वाला। २-वह जो किसी की सारी सम्पति का उत्तराधिकारी हो। ३-शिव। ४-काल। ५-यमराज।

सर्वहारा [संज्ञा पु] (सं.) वह जिसके पास कुछ भी न हो। निर्धन व्यक्ति।

सर्वहारा-वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) गरीब श्रमजीवियों या मजदूरों का वर्ग। परोलेटरेट।

सर्वहारी [वि.](हिं.) [स्त्री. सर्वहारिणी] सब कुछ हरण करने वाला।

सर्वहित [संज्ञा पु.](सं.) १-गौतम-बुद्ध। २-मिर्च

सर्वहित-कर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सामाजिक समारोह, उत्सव या जलसा आदि।

सर्वांग, सर्वाङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-सम्पूर्ण शरीर।

२-समस्त अवयव या अंश। ३-सब वेदांग।

सर्वांगरूप, सर्वाङ्गरूप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सर्वांग-सुंदर, सर्वाङ्ग-सुन्दर [वि] (सं.) १-जिसका सारा शरीर सुन्दर हो। २-जिसके सब अवयव या अंश सुन्दर हों।

सर्वांतर्यामी, सर्वान्तर्यामी [संज्ञा पु.] (सं.) सबके मन की बात जानने वाला। ईश्वर।

सर्वांत्य, सर्वान्त्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह पद्य जिसके चरणों के अंत्याक्षर एक से हों।

सर्वाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

सर्वाक्षी [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुग्धिका। दुद्धी। (घास)

सर्वाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) पारा। पारद।

सर्वाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा। पार्वती।

सर्वातिथि [संज्ञा पु.](सं.) वह जो सब का आतिथ्य करे।

सर्वात्मा [संज्ञा पु] (सं.) १-सम्पूर्ण विश्व की आत्मा, ब्रह्म। २-शिव। ३-जिन। अर्हत।

सर्वाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तयार। २-सारे अधिकारी।

सर्वाधिकार-सुरक्षित [संज्ञा पु.](सं.) किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की किसी कृति की प्रतियाँ छापने का वह (समस्त) स्वत्व जो उसके कर्त्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। ऑल-राइटस् रिजर्वड।

सर्वाधिकारी [संज्ञा पु.](सं.) १-पूरा अधिकार या स्वत्व रखने वाला। २-हाकिम।

सर्वाधिपत्य [संज्ञा पु.](सं.) सबके ऊपर प्रभुत्व

सर्वानंद, सर्वानन्द [वि.] (सं.) जिसको सभी विषय में आनन्द हो।

सर्वानुभू [वि.] (सं.) सब विषयों का अनुभव करने वाला।

सर्वाप्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) सब विषयों की प्राप्ति

सर्वाभाव [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्रकार का अभाव

सर्वाभिसंधक, सर्वाभिसन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) सबको धोखा देने वाला।

सर्वाभिसार [संज्ञा पु.] (सं.) चढ़ाई के लिये सम्पूर्ण सेना की तैयारी।

सर्वामात्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी परिवार या गृहस्थी में रहने वाले घर के प्राणी, नौकर-चाकर आदि सब लोग।

सर्वायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद निसोथ।

सर्वार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सकल प्रयोजन।

सर्वार्थचिंतक, सर्वार्थचिन्तक [वि.] (सं.) सब विषय की चिंता करने वाला।

सर्वार्थसाधक [वि.] (सं.) सब कामों को करने वाला।

सर्वार्थसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) सब प्रयोजन या मतलब पूरे होना।

सर्वार्थसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धार्थ।

सर्वार्थसिद्धि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सकल मनोरथ की सिद्धि। २-जैनमतानुसार सबसे ऊपर का अनुत्तर अथवा स्वर्गों के ऊपर का लोक।

सर्वावसर [संज्ञा पु.] (सं.) आधी रात।

सर्वावसु [संज्ञा पु] (सं.) एक सूर्यकिरण का नाम

सर्वाशय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सबका शरण या आधारस्थान। २-शिव।

सर्वाशी [वि.] (हिं.) [स्त्री. स्वाशिनी] सब कुछ खाने वाला।

सर्वास्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तविक सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

सर्वास्तिवादी [वि.] (सं.) सर्वास्तिवाद सिद्धांत का मानने वाला। बौद्ध।

सर्वास्त्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनियों की सोलह विद्या-देवियों में से एक।

सर्वाह्न [संज्ञा पु.] (सं.) समस्त दिन। सारा दिन

सर्वे [संज्ञा पु.] (अं.) १-जमीन की पैमाइश। २-वह राजकीय विभाग जो भूमि को नापकर उसका नक्शा बनाता है।

सर्वेश, सर्वेश्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-सब का स्वामी २-ईश्वर। ३-शिव। ४-चक्रवर्ती राजा। ५-एक प्रकार की औषध।

सर्वेश्वरवाद [संज्ञा पु.](सं.) वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह विश्व के सभी प्राणियों और तत्वों में समान रूप से वर्त्तमान है। पैन्थिइज्म।

सर्वे-सर्वा [वि.] (सं.) जिसे किसी विषय अथवा कार्य में सब प्रकार के और पूरे अधिकार हों।

सर्वोच्च [वि.] (सं.) सब से ऊँची या बढ़कर।

सर्वोच्चसमादेश [संज्ञा पु] (सं.) सर्वोच्च सेना संचालन।

सर्वोत्तम [वि.] (सं.) सबसे उत्तम। सबसे बढ़कर या अच्छा।

सर्वोपरि [वि.] (सं.) सबसे ऊपर या बढ़कर।

सर्वौघ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्वाङ्गपूर्ण सेना। २-एक प्रकार का मधु या शहद।

सर्वौषधि [संज्ञा स्त्री.](सं.) वैद्यक में दस औषधियों का एक वर्ग।

सर्शफ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सर्षप'।

सर्षप [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरसों। २-सरसों भर का मान या तौल। ३-एक प्रकार का विष।

सर्षपकंद, सर्षपकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

सर्षपक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साँप।

सर्षपकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक विषैला कीड़ा।

सर्षपनाल [संज्ञा पु.] (सं.) सरसों का साग।

सर्षपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद सरसों।

सर्षपारुण [संज्ञा पु.] (सं.) असुरों का एक गण

सर्षपिक [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार एक जहरीला कीड़ा।

सर्षपिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का लिंग-रोग। २-मसूरिका रोग का एक भेद। ३-एक जहरीला कीड़ा।

सर्षपी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खविका। २-सफेद सरसों। ३-खंजन पक्षी। ४-एक प्रकार के छोटे दाने जो शरीर पर निकल आते हैं।

सर्सों [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरसों'।

सर्हद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरहद'।

सलंबानोन [संज्ञा पु.] (हिं.) कचिया नोन।

सल [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-सरलवृक्ष। ३-बोट नामक कीड़ा जो घास में रहता है।

सलई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चीढ़ का पेड़। २-चीढ़ का गोंद।

सलक [संज्ञा पु.] (अं.) चुकन्दर।

सलक्षण [वि.] (सं.) लक्षणयुक्त।

सलखपात [संज्ञा पु.] (?) कछुआ। कच्छप।

सलगम [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'शलजम'

सलगा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सलईवृक्ष।

सलज [संज्ञा पु.] (हिं.) पहाड़ी बरफ का पानी।

सलजम [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'शलजम'।

सलज्ज [वि.] (सं.) जिसे लज्जा हो। लज्जाशील [क्रि. वि.] लज्जापूर्वक। शरमाते हुए।

सलटुक [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।

सलतनत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-राज्य। २-साम्राज्य। ३-प्रबन्ध। ४-सुभीता। सलतनत बैठना-प्रबन्ध या इन्तजाम ठीक होना।

सलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-साला जाना। भेदा या छेदा जाना। [संज्ञा पु.] लकड़ी में छेद करने का बरमा। [संज्ञा पु.] (सं.) मोती।

सलपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) दालचीनी।

सलपन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की झाड़ी जो दवा के काम में आती है।

सलब [वि.] (अं.) नष्ट। बरबाद।

सलमह [संज्ञा पु.] (फा.) बथुआ नामक साग।

सलमा [संज्ञा पु.] (अं.) सोने या चाँदी का वह तार जो कपड़ों पर बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिलवट'।

सलवन [संज्ञा पु.] (हिं.) सरिवन।

सलवात [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-बरकत। २-रहमत ३-गाली।

सलवार [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-पाजामें के नीचे पहनने का जांघिया। २-एक प्रकार का बहुत ढीला पायजामा जो विशेषतः पंजाब और उसके पश्चिमी भागों में पहना जाता है (इसे स्त्री, पुरुष सब पहनते हैं जिनमें केवल पुरुष सफेद सलवार ही पहनते हैं)।

सलसलवोल [संज्ञा पु.] (अ.) मधुप्रमेह नामक रोग।

सलसलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-हलकी-हलकी खुजली सी अनुभव होना। २-गुदगुदी होना। ३-सरसराना। रेंगना। [क्रि. स.] १-खुजलाना। २-गुदगुदाना। ३-जल्दी से कोई काम करना।

सलसलाहट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सलसल शब्द २-खुजली। खारिश। ३-गुदगुदी।

सलसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बूक नामक वृक्ष।

सलहज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) साले की स्त्री।

सलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-काठ, धातु आदि की पतली छड़। २-दियासलाई। ३-सालने या छेदने की क्रिया या भाव। ४-सालने की मजदूरी। ५-सलई। ६-चीढ़ की लकड़ी। *सलाई फेरना*-१-आँखों में सुरमा आदि लगाना। २-अन्धा करने के लिए सलाई गरम करके आँखों में लगाना।

सलाक* [संज्ञा पु.] (हिं.) बाण। तीर।

सलाकना+ [क्रि. अ.] (हिं.) सलाई की सहायता से लकीर या चिह्न करना।

सलाख [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-धातु की मोटी लम्बी छड़। २-लकीर। खत।

सलाजीत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शिलाजीत'

सलाद [संज्ञा पु.] (अं. सैलाड) १-गाजर, मूली आदि का सिरके में बना अचार। २-एक प्रकार के कन्द के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाये जाते हैं।

सलाम [संज्ञा पु.] (अ.) प्रणाम। बन्दगी। *दूर से सलाम करना*-पास न जाना। दूर या अलग रहना। *सलाम है*-दूर रहना ही उचित है. *सलाम लेना*-बन्दगी का जवाब देना। *सलाम देना*-१-सलाम करना। २-सलाम कहलाना। *सलाम करके चलना*-किसी से रुष्ट होकर विदा होना। *सलाम फेरना*-१-नमाज़ समाप्त करना। २-अप्रसन्नता के कारण उसका अभिवादन स्वीकार न करना। यौ०-*सलाम-अलैक या सलाम-अलैकम*-अभिवादन।

सलामकराई [संज्ञा स्त्री.] (हि.) वह धन जो लड़की वाले मिलनी के समय लड़के वालों को देते हैं (मुसलमान)।

सलामत [वि.] (अ.) १-हानि अथवा आपत्ति से बचा हुआ। रक्षित। २-जीवित और स्वस्थ। सकुशल। ३-स्थित। कायम।

सलामती [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-तन्दुरुस्ती। स्वस्थता। २-कुशल। क्षेम। ३-जीवन। जिन्दगी। ४-एक प्रकार का मोटा कपड़ा। *सलामती से*-ईश्वर की कृपा से।

सलामी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सलाम करना। २-सैनिकों आदि की सलाम करने की प्रणाली। ३-इस ढङ्ग से (तोपें, बन्दूकें आदि छोड़कर) बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति का अभिवादन करना। ४-जमीन या मकान के किराये के अलावा अलग से लिया हुआ धन। पगड़ी *सलामी उतारना*-किसी बड़े अधिकारी के आने या जाने पर तोप, बन्दूके आदि छोड़कर अभिवादन करना।
[वि.] (अ.) थोड़ा ढालुआँ। (स्थान)

सलार+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

सलाह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सम्मति। राय। २-परामर्श।

सलाहकार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) वह जो परामर्श या सलाह देता हो।

सलाहकार-समिति [संज्ञा स्त्री] (हिं.) किसी उच्च अधिकारी को सलाह या राय देने वाली समिति। एडवाइजरी कॉमेटी।

सलाही [संज्ञा पु.] (अ.) सलाहकार।

सलिल [संज्ञा पु.] (सं.) जल। पानी।

सलिलकुंतल, सलिलकुन्तल [संज्ञा पु] (सं) शैवाल। सिवार।

सलिलक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलांजलि। प्रेत का तर्पण।

सलिलचर [वि.] (सं.) जलचर।

सलिलज, सलिलजन्मा [संज्ञा पुं.] (सं) १-कमल। २-जल में उत्पन्न होने वाला।

सलिलद [वि.] (सं.) जल देने वाला।
[संज्ञा पु.] (सं.) मेघ। बादल।

सलिलधर [संज्ञा पु.] (सं.) मोथा। मुस्तक।

सलिलनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। २-सरसी नामक एक छन्द।

सलिलपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण। २-समुद्र

सलिलप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। शूकर।

सलिलमय [वि.] (सं.) जलपूर्ण।

सलिलमुच् [संज्ञा पु.] (सं.) बादल। मेघ।

सलिलयोनि [संज्ञा पु] (सं.) १-ब्रह्मा। २-जल में उत्पन्न होने वाली वस्तु।

सलिलराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-वरुण। २-समुद्र.

सलिलस्थलचर [वि.] (सं.) जल, थल दोनों में समान रूप से चलने वाला।

सलिलांजलि, सलिलाञ्जलि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृतक के उद्देश्य से दी जाने वाली जलांजली

सलिलाकर [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र।

सलिलाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण, जो जल के अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं।

सलिलार्णव, सलिलालय [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र

सलिलाशन [वि.] (सं.) केवल जल पीकर रहने वाला।

सलिलाशय [संज्ञा पु.] (सं.) जलाशय। तालाब

सलिलाहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-केवल जल पीकर रहना। २-जल पीकर रहने वाला।

सलिलेंद्र, सलिलेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण।

सलिलेंधन, सलिलेन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) बाड़वानल।

सलिलेचर [संज्ञा पु] (सं.) जलचर जीव।

सलिलेश [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण।

सलिलेशय [वि.] (सं.) जल में सोने वाला।

सलिलोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमल। २-जल में उत्पन्न होने वाली कोई वस्तु या जीव।

सलिलोपजीवी [वि.] (सं.) केवल जल पीकर रहने वाला।

सलिलौका [संज्ञा पु.] (सं.) जौंक।

सलिलौदन [संज्ञा पु.] (सं.) पकाया हुआ अन्न।

सलीका [संज्ञा पु.] (अ.) १-ठीक तरह से काम करने का ढङ्ग। योग्यता। शऊर। २-हुनर। ३-शिष्टता।

सलीकामंद [वि.] (अ., फा.) १-जिसे सलीका हो। शऊरदार। २-हुनरमंद। ३-सभ्य।

सलीखा [संज्ञा पु.] (?) त्वक्पत्र। तज।

सलीता [संज्ञा पु.] (देश.) मारकीन या गजी की तरह का एक प्रकार का पकड़ा।

सलीपर [संज्ञा पु.] (अं. स्लिपर) १-वह जूता जिसका केवल पंजा ढका रहता है। २-रेल की पटरियों के नीचे बिछाने की लकड़ी का तख्ता। ३-पहिये पर चढ़ाने की हाल।

सलीमी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रकार का कपड़ा।

सलील [वि.] (सं) १-लीलायुक्त। २-क्रीड़ाशील खिलाड़ी। ३-कुतूहल-प्रिय। कौतुकी। ४-किसी प्रकार की भावभंगी से युक्त। ५-लीला या क्रीड़ा से युक्त।

सलीलगजगामी [संज्ञा पु.] (सं) बुद्ध।

सलीस [वि.] (सं.) १-सहज। सुगम। २-समतल। ३-चलती हुई और मुहावरेदार (भाषा)

सलूक [संज्ञा पुं.] (अ.) १-व्यवहार। बरताव। २-सद्भाव। ३-तौर। तरीका। ढंग। ४-उपकार भलाई।

सलूका [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की फतूही या बण्डी।

सलूग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार के बहुत छोटे कीड़े। २-जूँ। लीख।

सलूना [संज्ञा पु] (हिं) पकी हुई भाजी या तरकारी। [वि.] देखो 'सलोना'।

सलेक [संज्ञा पु.] (सं.) एक आदित्य का नाम।

सलैया+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सलई या चीढ़ का पेड़

सलोक [संज्ञा पु] (सं.) १-नगर। शहर। २-नागरिक।

सलोतर, सलोतरी [संज्ञा पु] (हिं) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला।

सलोना [वि.] (हि) [स्त्री. सलोनी] १-जिसमें नमक पड़ा हो। नमकीन। २-रसीला। सुन्दर

सलोनापन [संज्ञा पु.] (हिं) सलोना होने का भाव

सलोनो [संज्ञा पु.] (हिं.) हिन्दुओं का 'रक्षाबंधन' नामक त्योहार। राखीपूनो।

सल्ल [संज्ञा पु.] (हिं.) सरलवृक्ष।

सल्लकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–चीड़ का पेड़। सलई। २–चीड़ की गोंद।

सल्लक्षणतीर्थ+ [संज्ञा पु.](सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सल्लम [संज्ञा उभय.] (देश.) गज़ी। गाढ़ा। (कपड़ा)।

सल्लाह [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सलाह'।

सल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सलई।

सल्लू [वि.](देश.) मूर्ख। [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़े की डोरी।

सल्व [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शल्व'।

सवंशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृक्ष विशेष।

सव [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल। पानी। २–पुष्प-रस। ३–यज्ञ। ४-सूर्य। ५-संतान। ६–चंद्रमा [वि.] अनाड़ी। ※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो शव।

सवगात [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सौगात'।

सवजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बर्बरी। अजगंधा।

सवत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौत'।

सवत्स [वि.] (सं.) जिसके साथ बच्चा हो।

सवन [संज्ञा पु.] (सं.) १–प्रसव। बच्चा जनना। २–सोनापाठा। ३–यज्ञ-स्नान। ४–सोमपान। ५–यज्ञ। ६–चन्द्रमा। ७–पुराणानुसार भृगु के एक पुत्र का नाम। ८–रोहित मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक। ९–स्वायम्भुवमनु के एक पुत्र का नाम। १०–अग्नि। ११–वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

सवनकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञकार्य।

सवनमुख [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ का आरम्भ।

सवनिक [वि.] (सं.) सवन से सम्बन्ध रखनेवाला। सवन का।

सवयस्क [वि.] (सं.) समान वय या उमर वाले।

सवया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सखी। सहेली।

सवर [संज्ञा पु.] (सं.) १–जल। २–शिव।

सवररोध्र [संज्ञा पु.] (सं.) पठानी लोध।

सवर्ण [वि.](सं.) १–समान। सदृश। २–समान-वर्ण या जाति का।

सवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की स्त्री का एक नाम।

सवहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

सवाँग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वाँग'।

सवा [वि.] (हिं.) जिसमें पूरे के सिवा चौथाई और जुड़ा हो।

सवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १–वह ऋण जिसमें मूलधन का सवाया चुकाना पड़ता है। २–जयपुर के महाराजों की एक उपाधि। ३–मूत्र-यन्त्र-सम्बन्धी एक प्रकार का रोग। [वि.] देखो 'सवा'।

सवागी [संज्ञा पु.] (?) सुहागा।

सवाद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वाद'।

सवादिक※ [वि.] (हिं.) स्वाद देने वाला। स्वादिष्ट।

सवाब [संज्ञा पु.] (अ.) १–पुण्य। २–भलाई। *सवाब कमाना*–पुण्य काय करना।

सवाया [वि.] (हिं.) पूरे से एक चौथाई अधिक। सवागुना।

सवार [संज्ञा पु.] (फा.) १–वह जो घोड़े, गाड़ी या किसी वाहन पर चढ़ा हो। २–अश्वारोही सैनिक। [वि.] किसी चीज़ पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सँवारना'।

सवारा※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सवेरा'।

सवारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १–वह चीज जिसपर सवार हों। वाहन। २–वह व्यक्ति जो सवार हो। ३–जलूस। *सवारी लेना*–सवार होना।

सवाल [संज्ञा पु.] (अ.) १–पूछने की क्रिया। प्रश्न। २–कुछ पाने की प्रार्थना। माँग। ३–गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है। ४-परीक्षा या जाँच के समय उत्तर पाने के लिये किया या दिया जाने वाला प्रश्न।

सवाल-जवाब [संज्ञा पु] (अ.) १–बहस। वाद-विवाद। २–हुज्जत।

सविकल्प [वि.] (सं.) १–सन्देह-युक्त। संदिग्ध। २–जो किसी विषय के दोनों पक्षों अथवा मतों आदि को कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १–योग में वह समाधि जो किसी अवलंबन की सहायता से होती है। २–वेदांत के अनुसार ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

सविकार [वि.] (सं.) जिसमें विकार हो।

सविकास [वि.] (सं.) फैला या खिला हुआ।

सविग्रह [वि] (सं.) १–जिसका कुछ अर्थ हो। अर्थ वाला। २–झगड़ने वाला। झगड़ालू।

सविचार [संज्ञा पु.] (सं.) चार प्रकार की सविकल्प समाधियों में से एक।

सविडालंभ, सविडालम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) नाट्य-शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का परिहास।

सवितर्क [संज्ञा पु.](सं) एक प्रकार की सविकल्प समाधि।

सविता [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य। २–बारह की संख्या। ३–आक। मदार।

सवितातनय [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्यपाणि।

सवितादैवत [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्यनक्षत्र।

सवितापुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्यपाणि।

सविताफल [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम (पुराण)।

सवितासुत [संज्ञा पु.] (सं.) शनैश्चर।

सवित्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसव करना। जनना।

सवित्रिय [वि.] (सं.) सविता या सूर्य-सम्बन्धी

सवित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) १–धात्री। दाई। २–माता। माँ।

सविद्य [वि.] (सं.) पंडित। ज्ञानी।

सविध [वि.] (सं.) समीप। पास। निकट।

सविनय [वि.](सं.) विनयसहित। विनीतभाव से

सविनय-अवज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राज्य अथवा अधिकारी की अनुचित आज्ञा या कानून न मानकर उसकी अवज्ञा या उलङ्घन करना। सिविल डिसओबीडिएन्स।

यौ०–*सविनय-अवज्ञा-आंदोलन*–राज्य की किसी आज्ञा को न मानते हुये शांतिमय उपायों द्वारा किया जाने वाला आंदोलन।

सविनय-कानून-भंग [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'सविनय-अवज्ञा'।

सविभाल [संज्ञा पु.] (सं.) नख नामक गंधद्रव्य।

सविभास [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सविलास [वि.] (सं.) विलासी।

सविस्मय [वि.] (सं.) आश्चर्यचकित। विस्मित

सवीर्य [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतावर।

सवेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दिन निकलने का समय सुबह। प्रातःकाल। २–निश्चत या नियत समय के पहले का समय।

सवेश [वि.] (सं.) निकट। समीप।

सवेशीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

सवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) १–सवा सेर का बाट। २–वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है। ३–एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता।

सव्य [वि.] (सं.) १–वाम। बाँया। २–दक्षिण। दाहिना। ३–प्रतिकूल। विरुद्ध। [संज्ञा पु.] (सं.) १–यज्ञोपवीत। २–अङ्गिर के पुत्र का नाम। ३-चन्द्र अथवा सूर्य ग्रहण के दस प्रकार के ग्रासों में एक। ४–विष्णु।

सव्यचारी [संज्ञा पु.] (सं.) १–अर्जुन। २–अर्जुन वृक्ष।

सव्यभिचार [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायदर्शन के पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक।

सव्यसाची [संज्ञा स्त्री.](सं.) अर्जुन। (दायें और बायें दोनों हाथों से सुगमतापूर्वक तीर चला सकने के कारण ही अर्जुन का यह नाम पड़ा)

सव्याज [वि.] (सं.) चालाक। धूर्त।

सव्याधि [वि.] (सं.) व्याधियुक्त। पीड़ित।

सव्येष्ट [संज्ञा पु.](सं.) सारथी।

सव्रणशुक्ल [संज्ञा पु.] (सं.) आँख का एक रोग

सव्रत [वि.] (सं.) नियमयुक्त।

सशंक, सशङ्क [वि.] (सं.) १-जिसे शंका हो। २-भयभीत। ३-शंका उत्पन्न करने वाला।

सशंकना* [क्रि. अ] (हिं.) १-शंकायुक्त होना। २-डरना।

सशल्य [संज्ञा पु.](सं.) रीछ। भालू।

सशल्यव्रण [संज्ञा पु.](सं.) व्रणरोग का एक भेद

सशल्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदन्ती।

सशवी [संज्ञा पु.](?) काला जीरा।

सशस्त्रबल [संज्ञा पु.] (सं.) शस्त्रास्त्र से सुसज्जित सेना। आर्मड फोर्सेज।

सशाक [संज्ञा पु.] (सं.) अदरक।

सशोथपाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नेत्ररोग।

सश्मश्रु [वि.] (सं.) दाढ़ी वाला। दढ़ियल।)[संज्ञा स्त्री.] वह स्त्री जिसके दाढ़ी हो।

सश्रीक [वि.] (सं.) १-भाग्यवान्। २-सुन्दर। मनोहर।

सस* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा। २-खेतीबारी।

ससक [संज्ञा पु.] (हिं.) खरहा। खरखोश।

ससत्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गर्भवती स्त्री।

ससरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) खिसकना।

ससहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

ससा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खरगोश। २-खीरा

ससाना* [क्रि. अ.] (हिं) १-घबराना। २-काँपना।

ससि* [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

ससुर, ससुरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी के पति या पत्नी का पिता। श्वसुर। २-एक गाली।

ससुराल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ससुर का घर। २-जेलखाना (गुण्डों की बोली में)।

सस्ता [वि.] (हिं.) [स्त्री. सस्ती] १-साधारण से कम मूल्य का। २-साधारण। मामूली। ३-जिसका भाव कम हो गया हो। ४-जो महँगा न हो। सस्ता लगना-कम दाम पर बेचना। सस्ते छूटना-सहज में किसी बड़े काम या सङ्कट से छुटकारा पाना।

सस्ताना+ [क्रि. स.] (हिं.) भाव सस्ता करना। [क्रि. अ] सस्ता हो जाना।

सस्तापन [संज्ञा पु.] (हिं.) सस्ता होने का भाव। अल्पमूल्यता।

सस्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सस्तापन। महँगी का अभाव। २-वह समय जब चीजें सस्ते दाम पर मिलती हों।

सस्त्रीक [वि.] (सं.) स्त्री या पत्नी के साथ।

सस्नेह [वि.] (सं.) स्नेहसहित। प्रीतियुक्त।

सस्पेंड [वि.] (अं.) जो किसी काम से किसी अपराध पर, कुछ समय के लिये छुड़ा दिया गया हो। मुअत्तल।

सस्मित [वि.] (सं.) मुस्कराता या हँसता हुआ। [क्रि. वि.] मुस्कराकर। मुस्कराते हुए।

सस्य [संज्ञा पु.] (सं) १-धान्य। २-शस्त्र। ३-गुण। ४-वृक्षों का फल। ५-शस्य।

सस्यक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की मणि २-शालि। ३-तलवार। ४-साधु।

सस्मारीय [संज्ञा पु.] (सं.) मूसा। चूहा। [वि.] शस्य या अन्न का नाश करने वाला।

सस्यसंवत्सर [संज्ञा पु.] (सं.) शाल सासू।

सस्यसंवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-चीढ़ का पेड़। २-शाल का वृक्ष।

सस्यसंवरण [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

सस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अरनी। गनियल।

सहंडुक, सहण्डुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मांस का शोरबा।

सह [अव्य.] (सं.) सहित। समेत। [वि.] १-उपस्थित। मौजूद। २-सहनशील। ३-समथ [संज्ञा पु.] १-समानता। २-शक्ति। बल। ३-कलमी आम। ४-सहायक। ५-सहयोग।

सहकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगन्धित पदार्थ। २- आम का वृक्ष। ३-सहायक। ४-औरों के साथ मिलकर काम करने की वृत्ति क्रिया या भाव। सहयोग। कोऑपरेशन।

सहकारता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहायता। मदद।

सहकार-समिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह समिति अथवा संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उपभोक्ता, व्यवसायी आदि आपस में मिलकर सब के लाभ के लिये बनाते हैं तथा जिसके द्वारा वे कुछ वस्तुएँ बनाने, बेचने आदि की व्यवस्था करते हैं। कोऑपरेटिव-सोसाइटी।

सहकारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सहकारी या सहायक होने का भाव। २-सहायता। मदद ३-साथ मिलकर काम करना। कोऑपरेशन।

सहकारितावाद [संज्ञा पु.] (सं.) सब का मिलजुलकर सहकारिता के आधार पर काम करने की प्रणाली।

सहकारितावादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सहकारिता के आधार पर काम करता हो। कोऑपरेटिस्ट।

सहकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-साथ मिलकर काम करने वाला। सहयोगी। २-सहायक।

सहकारी-भंडार, सहकारी-भण्डार [संज्ञा पु.] (सं.) वह भंडार जो सहकारिता के आधार पर बना हो। कोऑपरेटिव-स्टोर।

सहकारी-संस्था, सहकारी-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सहकार-समिति'।

सहकारी-समाज [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'सहकार-समिति'।

सहगतक [संज्ञा पु.] (सं.) वे पत्र, कागज आदि जो किसी मुख्यपत्र के साथ नत्थी करके उसी लिफाफे में कहीं भेजे जाते हैं। एन्क्लोजर।

सहगमन [संज्ञा पु] (सं.) १-पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना। सती होना। २-साथ जाने की क्रिया।

सहगवन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहगमन'।

सहगान [संज्ञा पु.] (सं.) १-कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना। २-वह गाना जो इस प्रकार गाया जाय। कोरस।

सहगामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सहगमन करने वाली स्त्री। सती होने वाली स्त्री। २-पत्नी। ३-सहेली।

सहगामी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सहगामिनी] १-साथ चलने वाला। साथी। २-समवर्त्ती।

सहगौन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहगमन'।

सहचर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सहचरी] १-सङ्गी। साथी। २-सेवक। भृत्य। नौकर। ३-मित्र। सखा। ४-कटसरैया।

सहचरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली कटसरैया।

सहचराद्य-तैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का तेल जिसके सेवन से दाँत मजबूत हो जाते हैं।

सहचरी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-पत्नी। २-सखी। सहेली।

सहचार [संज्ञा पु.] (सं.) साथ। सङ्ग।

सहचारउपाधि-लक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लक्षणा जिसमें जड़ सहचरी के कहने से चेतन सहचरी का बोध होता है।

सहचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सहचरी'।

सहचारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहचारी होने का भाव।

सहचारित्व [संज्ञा पु.] (सं.) सहचारिता।

सहचारी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सहचारिणी] देखो 'सहचर'।

सहज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सहजा] १-सगा भाई। २-स्वभाव। [वि.] १-साथ उत्पन्न होने वाला। २-स्वभाविक। ३-सरल। सुगम ४-साधारण।

सहज-अरिप्रकृति [संज्ञा पु.](सं.) वह राजा जो विजेता का पड़ोसी तथा स्वभाव से शत्रुता रखने वाला हो।

सहजकृति [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना।

सहजक्लैव्य [संज्ञा पु.] (सं) वह नपुंसकता जो जन्म से ही हो।

सहजता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरलता। स्वाभाविकता।

सहजधारी [संज्ञा पु.] (हिं.) गुरु नानक का वह अनुयायी जो और लोगों के समान बाल मुड़वाता हो।

सहजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहिजन'।

सहजन्मा [वि.](सं.)१-जुड़वाँ (बच्चे)। यमज। २-सहोदर। सगा (भाई)।

सहजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

सहजन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम

सहज-पंथ [संज्ञा पु.] (हिं.) गौड़ीय वैष्णव-सम्प्रदाय का एक निम्न वर्ग।

सहज-बुद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीव जन्तुओं में होने वाली वह स्वाभाविक शक्ति अथवा ज्ञान जो उन्हें कोई काम करने की प्रेरणा करता है। इंस्टिंक्ट।

सहज-मित्र [संज्ञा पु.] (सं.) स्वाभाविक मित्र। जैसे–चचेरा, मौसेरा या फुफेरा भाई।

सहज-मित्रप्रकृति [संज्ञा पु.] (सं.) वह राजा जो विजेता का पड़ोसी, कुलीन और स्वभाव से ही मित्र हो।

सहजशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) शास्त्रानुसार चचेरा भाई जो संपत्ति के लिए झगड़ा कर सकता है

सहजात [वि.] (सं.) १–साथ साथ जन्म लेने या उत्पन्न होने वाले। कान्जेनिटल। २–यमज।

सहजातिक [वि.] (सं.) एक ही साथ या एक ही प्रकार के। होमोजीनियस।

सहजाधिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मकुण्डली के तीसरे स्थान का अधिपतिग्रह।

सहजानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी। जोरू।

सहजारि [संज्ञा पु] (सं.) सहज शत्रु।

सहजार्श [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का अर्शरोग।

सहजिया [संज्ञा पु.](हिं.) सहजपंथ का अनुयायी

सहजीवी [वि.] (हिं.) एक साथ जीवन धारण करने वाले। साथ रहने वाले।

सहजेंद्र, सहजेन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) सहजाधिनाथ

सहत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शहद'।

सहतमहत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रावस्ति'।

सहतरा [संज्ञा पु.] (हिं) पित्तपापड़ा।

सहताना* [क्रि. अ.] (हिं.) सुसताना। श्रम-मिटाना।

सहतूत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शहतूत'।

सहत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १–'सह' का भाव। २–एकता। ३–मेलजोल।

सहदइया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सहदेई'।

सहदान [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक में किया जाने वाला दान।

सहदानी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) निशानी। पहचान। खेह।

सहदूल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शार्दूल'।

सहदेई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) क्षुप जाति की एक वनौषध।

सहदेव [संज्ञा पु.] (सं.) पांडु के सब से छोटे पुत्र का नाम।

सहदेवा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–सहदेई। २–बरियारा बला। ३–दंडोत्पल। ४–अनन्तमूल। ५–सरहँटी। ६–प्रियंगु। ७–नील। ८–सोनबली नामक वनस्पति। ९–भागवत के अनुसार वसुदेव की पत्नी का नाम जो देवक की कन्या थी

सहदेवी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १–सहदेई। २–सरहँटी ३–महानील। ४–प्रियंगु।

सहदेवीगण [संज्ञा पु.] (सं.) सहदेई, बला आदि औषधियों का समूह जिनसे देव-प्रतिमाओं को स्नान कराया जाता है।

सहधर्मचरी, सहधर्मचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी। जोरू।

सहधर्मचारी [वि.](हिं.) एक साथ धर्म करने वाला

सहधर्मिणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) पत्नी। भार्या। जोरू

सहधर्मी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सहधर्मिणी] पति [वि.] (सं.) समान धर्म वाला।

सहन [संज्ञा पु.](सं.) १–सहने की क्रिया या भाव २–आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। एबाइड। ३–क्षमा। [संज्ञा पु.] (अ.) १–घर के मकान का आँगन। २–एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। ३–एक मोटा और गफ सूती कपड़ा।

सहनक [संज्ञा पु.](अं.) १–एक प्रकार की छिछली रकाबी। २–फातिहा (मुसलमान)।

सहनभंडार [संज्ञा पु.] (हिं.) १–कोष। खजाना। २–धनराशि। दौलत।

सहनशील [वि.](सं.) १-सहने या बरदाश्त करने करने वाला। सहिष्णु। २–सन्तोषी।

सहनशीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सहनशील होने का भाव। सहिष्णुता। २–सन्तोष।

सहना [क्रि. स](हिं.)१-झेलना। बरदाश्त करना। २-भार वहन करना। ३–परिणाम भोगना। * [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साहनी'।

सहनाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शहनाई'।

सहनायन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शहनाई बजाने वाली स्त्री।

सहनीय [वि.] (सं.) सहन करने योग्य। सह्य।

सहपति [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

सहपाठ [संज्ञा पु.] (सं.) एक साथ पढ़ना।

सहपाठी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।

सहपान [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा आदि का एक साथ पीना।

सहपिंड, सहपिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) सपिंड नाम की क्रिया।

सह-प्रतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह वाद अथवा मुकद्दमे का वह व्यक्ति जो मुख्य प्रतिवादी के साथ गौणरूप से उत्तरादयी बतलाया गया हो। को-डिफेंडेन्ट।

सहवाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शहवाला'।

सहभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) साथ भोजन करना।

सहभावी [संज्ञा पु.] (सं.) १–साथ-साथ होने, रहने या चलने वाला। कॉनकमिटेन्ट। २–सहोदर।

सहभुज् [वि.] (सं) एक साथ खाने वाला।

सहभू [वि.] (सं.) एक साथ उत्पन्न। सहज।

सह-भोज [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना।

सहभोजन [संज्ञा पु.](सं.) एक साथ बैठकर खाना

सहभोजी [वि.](हिं.) एक साथ बैठकर खाने वाला

सहम [संज्ञा पु.] (फा.) १–डर। भय। २–संकोच लिहाज। सहम चढ़ना–डर या भय होना।

सहमत [वि.](सं.) जिसकी राय दूसरे से मिलती हो। एक-राय या मत का। एग्रीड।

सहमति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहमत होने की क्रिया या भाव। किसी के साथ एकमत होना। एग्रिमेन्ट।

सहमना [क्रि. अ.] (हिं.) डरना।

सह-मरण [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सहगमन'।

सहमान [वि.] (सं.) मान या मर्यादासहित। [संज्ञा पु.] (सं.) ईश्वर।

सहमाना [क्रि. स.](हिं.) भयभीत करना। डराना

सहमृता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सहगमन करने वाली स्त्री। सती।

सहयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १–साथ मिलकर काम करने का भाव। २–बहुत लोगों के साथ मिल कर काम करने का भाव। कोऑपरेशन। ३-सहायता। मदद।

सहयोगवाद [संज्ञा पु.] (सं.) राजनैतिक क्षेत्र में सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धांत।

सहयोगवादी [संज्ञा पु.] (सं) सरकार के साथ मिलकर काम करने का सिद्धांत बनाने वाला।

सहयोगी [संज्ञा पु.] (सं.) १–साथ मिलकर वही या उसी तरह का काम करने वाला। २-सहकारी। साथी। ३-समकालीन। ४-आधुनिक भारतीय-राजनैतिकक्षेत्र में मिलकर काम करने वाला व्यक्ति।

सहर [संज्ञा पु.](अं.) प्रातःकाल। [संज्ञा पु.](हिं.) १–जादू। टोना। २–शहर। ३–देखो 'सिहोर' [क्रि. वि.] (हिं.) मन्दगति से। धीरे-धीरे।

सहरगाही [संज्ञा स्त्री.] (अ.+फा.) निर्जलव्रत आरम्भ करने से पूर्व बहुत तड़के उठकर किया जाने वाला हल्का भोजन। सहरी (मुसलमान)

सहरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सिहरना'।

सहरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनमूँग। मुद्गपर्णी।

सहरा [संज्ञा पु.] (अ.) १–वन। अरण्य। २-सियाहगोश नामक जन्तु।

सहराना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सहलाना'। [क्रि. अ.] (हिं.) भय से काँपना।

सहरि [संज्ञा पु.] (सं.) १–सूर्य। २–साँड़।

सहरिया [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का गेहूँ।

सहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सफरी नामक मछली। [संज्ञा स्त्री.] (अं) देखो 'सहरगाही'।

सहरुण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा के एक घोड़े का नाम।

सहल [वि.] (अं.) सरल। सुगम। सहज।

सहलगी+ [संज्ञा पु.] (सं.) रास्ते का साथी। हमराही।

सहलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी वस्तु या अङ्ग पर धीरे-धीरे हाथ फेरना। २-मलना। [क्रि. अ.] (हिं.) खुजलाना। गुदगुदी होना।

सहलोकधातु [संज्ञा पु.] (सं.) एक लोक का नाम (बौद्ध)।

सहवन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का अन्न जिसमें से तेल निकाला जाता है।

सहवसु [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद के अनुसार एक असुर का नाम।

सहवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वादविवाद। बहस।

सहवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-साथ रहना। २-मैथुन। सम्भोग।

सहवासी [संज्ञा पु.] (हिं.) संगी। साथी। मित्र।

सहव्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी। भार्या।

सहसंभव, सहसम्भव [वि.] (सं.) जो एक साथ उत्पन्न हुए हों। सहज।

सहस [वि.] (हिं.) देखो 'सहस्र'।

सहसकिरन, सहसगो* [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य।

सहसजीभ [संज्ञा पु.] (हिं.) शेषनाग।

सहसदल [संज्ञा पु.] (हिं.) कमल।

सहसनयन [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र।

सहसफण, सहसबदन [संज्ञा पु.] (हिं.) शेषनाग

सहसबाहु [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहस्रबाहु'।

सहसमुख, सहसवदन, सहससीस [संज्ञा पु.] (हिं.) शेषनाग।

सहसा [अव्य.] (सं.) एकाएक। अकस्मात्।

सहसाचि*, सहसाखी* [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र

सहसादृष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) गोद लिया हुआ लड़का

सहसान [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर। मयूर। २-यज्ञ

सहसानन* [संज्ञा पु.] (हिं.) शेषनाग।

सहस्त [वि.] (सं.) जिसके हाथ हों।

सहस्य [संज्ञा पु.] (सं.) पूस का महीना।

सहस्र [संज्ञा पु.] (सं.) दस-सौ की संख्या।

सहस्रकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सहस्रकांडा, सहस्रकाण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

सहस्रकिरण, सहस्रगु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सहस्रगुणित [वि.] (सं.) हजार से गुणा किया हुआ

सहस्रचक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सहस्रचरण, सहस्रचित्त [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सहस्रजित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-कस्तूरी। २ विष्णु। ३-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सहस्रणी [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्म।

सहस्रदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाठीन नामक मछली

सहस्रद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहुत बड़ा दानी। २-बोआरी मछली।

सहस्रदक्षिण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ

सहस्रदल [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

सहस्रदृश् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-इन्द्र।

सहस्रधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का हजार छेद वाला पात्र जिसका उपयोग देवताओं को स्नान कराने में होता है।

सहस्रधी [वि.] (सं.) बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

सहस्रधौत [वि.] (सं.) एक हजार बार धोया हुआ (घृत)।

सहस्रनयन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-इन्द्र

सहस्रनाम [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

सहँस्रनामा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव ३-अमलबेंत।

सहस्रनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-विष्णु।

सहस्रपति [संज्ञा पु.] (सं.) हजार गाँवों का स्वामी तथा शासक।

सहस्रपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कमलपत्र।

सहस्रपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का वृक्ष २-तीर।

सहस्रपर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

सहस्रपाद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम।

सहस्रपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-विष्णु। ३-सारस।

सहस्रबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-राजा कृतवीर्य के पुत्र हैहय। ३-राजा बलि के सब से बड़े पुत्र का नाम।

सहस्रभागवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवी की एक मूर्त्ति।

सहस्रभित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-अमलबेंत। २-कस्तूरी।

सहस्रभुज [संज्ञा पु.] (सं.) सहस्रबाहु।

सहस्रभुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा की एक मूर्त्ति का नाम।

सहस्रमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सहस्रमूर्द्धा [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव

सहस्रमूलिका, सहस्रमूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी शतावर। २-बड़ी दंती। ३-मूसाकानी। ४-बन मूँग। ५-कांडपत्री।

सहस्रमौलि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सहस्ररश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सहस्रलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सहस्रवाच् [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सहस्रवीर्य [वि.] (सं.) बहुत बड़ा बलवान।

सहस्रवीर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बड़ी शतावर। २-दूब।

सहस्रवेध [संज्ञा पु.] (सं.) १-चूक खटाई। २-हींग। ३-काँजी।

सहस्रवेधिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी।

सहस्रवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) १-हींग। २-कस्तूरी। ३-अमलबेंत।

सहस्रशः [अव्य.] (सं.) हजार बार।

शहस्रशाख [संज्ञा पु.] (सं.) वेद।

सहस्रशिखर [संज्ञा पु.] (सं.) विंध्यपर्वत।

सहस्रशीर्ष, सहस्रश्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु

सहस्रश्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जम्बूद्वीप के एक वर्ष-पर्वत का नाम।

सहस्रसाव [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेधयज्ञ।

सहस्रसाव्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अयन

सहस्रस्तुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम

सहस्रसोत [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

सहस्रहयाश्व [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का रथ।

सहस्रांगी, सहस्रसाङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मोरशिखा। २-पीलू।

सहस्रांश [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सहस्रांशुज [संज्ञा पु.] (सं.) शनिग्रह।

सहस्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मात्रिका। अम्बष्ठ/ २-मोरशिखा।

सहस्राक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-विष्णु।

सहस्रात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

सहस्राधिपति [संज्ञा पु.] (सं.) एक हजार गाँवों का शासनकर्त्ता।

सहस्रानन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सहस्रानीक [संज्ञा पु.] (सं.) शतनीक राजा के एक पुत्र का नाम।

सहस्राब्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी संवत् या सन् के हर एक से हर हजार तक के वर्षों का समूह। साहस्री। माइलीनियम।

सहस्रायुतीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम

सहस्रार [संज्ञा पु.] (सं.) १-हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक जो मस्तिष्क के ऊपरी भाग में माना गया है तथा जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार मन और उन गिलटियों का केन्द्र है जिनसे शरीर का विकास होता है। २-जैनियों के बारहवें स्वर्ग का नाम।

सहस्रारन [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के एक देवता का नाम।

सहस्रार्च्चिस् [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सूर्य

सहस्रावर्त्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराणोक्त तीर्थ का नाम।

सहस्रावर्त्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवी की एक मूर्त्ति का नाम।

सहस्री [संज्ञा पु.] (सं.) वह वीर जिसके पास

हजार योद्धा घोड़े या हाथी आदि हों।

सहांश [संज्ञा पु.] (सं.) अपने हिस्से अथवा अंश के रूप में किसी को दी जाने वाली कोई वस्तु या धन। कॉन्ट्रिब्यूशन।

सहांशिक [संज्ञा पु.] (सं.) अपने हिस्से अथव अंश के रूप में किसी को कुछ देता हो। कॉन्ट्रिब्यूट। [वि.] (सं.) सहांश के रूप में। कॉन्ट्रिब्यूटरी।

सहा [संज्ञा पु.] (सं.) १-घीकुआर। २-बनमूंग। ३-दण्डोत्पल। ४-सफेद कटसरैया। ५-कक्ही नामक वृक्ष। ६-सर्पिणी। ७-रासना। ८-सत्यानाशी। ९-सेवती। १०-अगहन मास ११-हेमन्तऋतु। १२-मेंहदी। १३-देवताड़-वृक्ष। १४-मषवन।

सहाइ, सहाई* [संज्ञा पु.](हिं.) सहायक। मददगार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहायता। मदद।

सहाउ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहाय'।

सहाचर [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीली कटसरैया। २ देखो 'संहचर'।

सहादर [अव्य.] (सं.) आदर के साथ।

सहाद्वय [संज्ञा पु.] (सं.) बनमूंग।

सहाध्यायी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो साथ पढ़ा हो। सहपाठी।

सहाना* [वि.] (हिं.) देखो 'शहाना'।

सहानी [वि.] (फा.) पीलापन लिये लाल रङ्ग का

सहानुगमन [संज्ञा पु.](सं.) सहगमन। सती होना

सहानुभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी का दुःख देखकर उससे दुखी होना। हमदर्दी।

सहाय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहायता। मदद। २ सहायक। ३-आश्रय। सहारा।

सहायक [वि.] (सं.) [स्त्री. सहायिका] १-सहायता करने वाला। २-(वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी से मिलती हो। ३-किसी की अधीनता में रह कर काम में उसकी सहायता करने वाला। सहकारी। असिस्टेन्ट।

सहायक-अनुदान [संज्ञा पु.] (सं.) कोई काम आगे बढ़ाने या चलता रखने के लिए दिया जाने वाला धन। ग्रांट-इन-एड।

सहायता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी के कार्य-संपादन में शारीरिक अथवा अन्य किसी प्रकार का योग देना। मदद। २-वह धन जो किसी का काम आगे बढ़ाने के लिए दिया जाय। एड।

सहायी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सहायक। मददगार २-सहायता। मदद।

सहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-आम्रवृक्ष। २-महाप्रलय। [संज्ञा पु.] १-सहनशीलता। बर्दाश्त २-सहन करने की क्रिया।

सहारना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-सहन करना। सहना। २-सँभालना। ३-गवारा करना।

सहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आश्रय। आसरा। २-भरोसा। ३-सहायता। *सहारा पाना*-सहायता या मदद पाना। *सहारा देना*-१-सहायता देना। २-टेक देना। ३-आसरा देना। ४-रोकना। *सहारा ढूँढ़ना*-आसरा ताकना।

सहार्द [वि.] (सं.) सस्नेह। प्रेमयुक्त।

सहालग [संज्ञा पु.] (हिं.) ब्याह-शादी के दिन। लगन (हिन्दू)।

सहावल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साहुल'।

सहिंजन, सहिञ्जन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लम्बी फलियों की तरकारी बनती है।

सहिजानी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) निशानी। पहचान चिह्न।

सहित [अव्यय] (सं.) साथ। समेत।

सहितत्व [संज्ञा पु.](सं.) सहित का भाव या धर्म

सहितव्य [वि.] (सं.) सहन करने योग्य।

सहिदान* [संज्ञा पु.] (हिं.) चिह्न। निशान।

सहिदानी* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-स्मृति के लिये किसी को दी हुई कोई वस्तु। निशानी। २-पहचान। चिह्न।

सहिबाला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शहबाला'।

सहिरिया+ [संज्ञा स्त्री.](देश.) बिना सींचे होने वाली वसंत की फसल।

सहिष्ठ [वि.] (सं.) बलवान्। ताकतवर।

सहिष्णु [वि] (सं.) बरदाश्त करने वाला। सहनशील।

सहिष्णुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहिष्णु होने का भाव। सहनशीलता।

सही [वि.] (फा.) १-सत्य। प्रमाणिक। २-शुद्ध। ठीक। ३-हस्ताक्षर। दस्तखत। *सही पड़ना*-ठीक उतरना। *सही भरना*-मान लेना।

सही-सलामत [वि.] (फा., अ.) १-स्वस्थ। भला-चंगा। २-जिसमें किसी प्रकार की बाधा न हुई हो। [क्रि. वि.](फा., अ.) सकुशल। कुशलतापूर्वक।

सहुँ* [अव्य.] (हिं.) १-सामने। २-तरफ। ओर

सहुरि [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य। [संज्ञा स्त्री.] पृथ्वी

सहूलियत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सुभीता।

सहृदय [वि.] (सं.) [स्त्री. सहृदया] १-दूसरों के दुःख सुख आदि समझने वाला। २-दयालु। ३-रसिक। भावुक।

सहृदयता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सहृदय होने का भाव। २-सौजन्य। ३-रसिकता। ४-दयालुता

सहेज+ [संज्ञा पु.] (देश.) दूध जमाने का जामन

सहेजना [क्रि. स.] (हिं.) १-यह देखना कि सारी चीजें ठीक या पूरी हैं या नहीं। सँभालना। २-सँभालने अथवा याद रखने के लिये कहना

सहेजवाना [क्रि. स.] (हिं.) सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेट [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहेत'।

सहेत* [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का पूर्व निर्दिष्ट गुप्त-स्थान।

सहेतु, सहेतुक [वि.] (सं.) जिसमें कुछ हेतु या उद्देश्य हो।

सहेरवा [संज्ञा पु.] (देश.) पारिजात नामक वृक्ष।

सहेल [संज्ञा पु.](देश.) वह सहायता जो काश्तकार अपने जमींदार के खेत जोतने, बोने में देता है।

सहेलवाल [संज्ञा पु.] (देश.) बनियों की एक जाति।

सहेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्त्री के साथ रहने वाली कोई अन्य स्त्री। संगिनी।

सहैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) सहायता करने वाला [वि.] (हिं.) सहन करने वाला।

सहोक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह काव्यालङ्कार जिसमें 'सह' 'संग' 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है तथा अनेक कार्य साथ ही होते दिखाये जाते हैं। ऐसे अलङ्कारों में क्रिया प्रायः एक ही होती है।

सहोजा [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-इन्द्र।

सहोटज [संज्ञा पु.] (सं.) ऋषियों आदि के रहने की पर्णकुटी।

सहोढ [संज्ञा पु.] (सं.) गर्भवती अवस्था में ब्याही हुई कन्या का पुत्र।

सहोदर [संज्ञा पु.]. (सं.) [स्त्री. सहोदरा] सगा भाई। [वि.] (सं.) एक-ही माता से उत्पन्न। सगा।

सहोर [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष जिसकी टहनियों की लोग दांतुन बनाते हैं। शाखोट।

सहोवर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सहोदर। सगाभाई।

सह्य [वि.] (सं.) १-सहने या बरदाश्त करने योग्य जो सहा जा सके। २-आरोग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सह्याद्रि। २-समानता। बराबरी। साम्य।

सह्याद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत जो पश्चिमी घाट का एक भाग है और जो समुद्र तट से कुछ हटकर है।

साँई [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्वामी। मालिक। २-ईश्वर। ३-पति। ४-मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

साँक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शंका'।

साँकड़+ [संज्ञा पु.](हिं.) १-शृङ्खला। जंजीर। २-दरवाजे की सिकड़ी। ३-देखो 'साँकड़ा'।

साँकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) पैर में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

साँकर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जंजीर। [संज्ञा पु.] संकट। विपत्ति। [वि.] १-सँकरा। तंग। संकीर्ण। २-दुःखमय। कष्टमय।

साँकरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'सँकरा'। [संज्ञा पु.] देखो 'साँकड़ा'।

साँकाहुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शंखाहुली'

सांकेतिक, साङ्केतिक [वि.] (सं.) जो संकेत के रूप में हो। इशारे का।

सांक्रामिक [वि.] (सं.) छूत से उत्पन्न होने वाला

सांक्षेपिक [वि.] (सं.) संक्षिप्त किया हुआ।

सांख्य [संज्ञा पु.] (सं.) महर्षि कपिलकृत एक प्रसिद्ध दर्शन जिसमें प्रकृति तथा चेतन पुरुष ही जगत् का मूल माना गया है।

सांख्यायन [संज्ञा पु.](सं.) एक प्राचीन आचार्य जिन्होंने ऋग्वेद के सांख्याय-ब्राह्मण की रचना की थी।

सांख्यिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी विषय की संख्याएं आदि एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धांत स्थिर करने अथवा निष्कर्ष निकालने की विद्या। स्टैटिस्टिक्स।

साँग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की बरछी २-भारी बोझ उठाने का डंडा। ३-स्वाँग।

सांग, साङ्ग [वि.] (सं.) सब अङ्गों से युक्त। सम्पूर्ण।

सांगम [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'संगम'।

सांगरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का रङ्ग जिससे कपड़े रंगे जाते हैं।

साँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बरछी। साँग। २-गाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान। ३-एक्के या गाड़ी के नीचे लगी हुई जाली। +[संज्ञा पु.] स्वाँग भरने वाला या स्वाँग भरकर खेल करने वाला।

सांगुष्ठा, साङ्गुष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गंजा। २-करंजनी।

सांगोपांग, साङ्गोपाङ्ग [अव्य.] (सं.) सब अङ्गों और उपायों से युक्त। सम्पूर्ण।

सांग्राम [संज्ञा पु.] देखो 'संग्राम'।

सांग्रामिक, साङ्ग्रामिक [वि.] (सं.) समर या युद्ध-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] सेनाध्यक्ष। सिपहसालार। कमांडर।

सांघाटिका, साङ्घाटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुटनी। दूती। २-प्रसंग। मैथुन। ३-वृक्ष विशेष।

सांघात, साङ्घात [संज्ञा पु.] (सं.) समूह। दल

सांघातिक, साङ्घातिक [वि.] (सं.) १-सङ्घात से सम्बन्ध रखने वाला। २-(चोट का प्रहार) जिससे आदमी मर सकता हो। घातक। फ़टल। ३-जिससे प्राणों पर संकट आ सकता हो। बहुत जोखिम का।

सांघिक, साङ्घिक [वि.] (सं.) सङ्घ-सम्बन्धी। संघ का।

साँच* [वि.] (हि.) [स्त्री. साँची] सत्य। यथार्थ। ठीक।

साँचला+ [वि.] (हि.) [स्त्री. साँचली] सच्चा। सत्यवादी।

साँचा [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह उपकरण जिसमें गीली वस्तु डालकर उसी के आकार की दूसरी और वस्तुएँ ढाली जाती हैं। २-किसी बड़ी आकृति का छोटा नमूना। ३-बेलबूटे छापने का ठप्पा। छापा। ४-जुलाहों के काम की वे दो लकड़ियाँ जिनके बीच में कूँच के साल को दबाकर कसते हैं। *साँचे में ढला*-सर्वांग सुन्दर और सुडौल। *साँचे में ढालना*-बहुत सुन्दर बनाना। [वि.] (हिं.) देखो 'सच्चा'।

साँचिया [संज्ञा पु.](हिं.) १-किसी वस्तु का साँचा बनाने वाला। २-साँचे में ढालने वाला।

साँची [संज्ञा स्त्री.] (?) पुस्तक की छपाई का वह ढङ्ग जिसमें पृष्ठ के बेड़े बल में पंक्तियाँ रहती हैं [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का खाने का पान

साँझ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) संध्या। सायंकाल।

साँझला [संज्ञा पु](हिं.) एक दिन में एक हल से जुत सकने वाली भूमि।

साँझा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साझा'।

साँझी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मन्दिर में भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई हुई बेल बूटों आदि की सजावट, जो प्रायः सावन में उत्सवों के समय होती है।

साँट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छड़ी। २-कोड़ा। ३-शरीर पर पड़ा हुआ कोड़े आदि की मार का दाग या निशान। ४-लाल गदहपूरना।

साँटा [संज्ञा पु.](हिं.) १-कोड़ा। चाबुक। २-गन्ना ३-करघे का वह डण्डा जिसकी सहायता से ताने के सूत ऊपर नीचे होते हैं। ४-ऐंड।

साँटिया [संज्ञा पु.] (हि.) डोंडी पीटने वाला।

साँटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पतली छोटी छड़ी। २-बाँस आदि की पतली कमची। ३-मेलमिलाप। ४-बदला। प्रतिकार।

साँटेमार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार के सिपाही जो हाथ में साँटा लेकर राजा की सवारी में हाथी के साथ चलते हैं।

साँठ [संज्ञा पु.] (देश.) १-देखो 'सांकड़ा'। २-गन्ना। ३-सरकंडा।

साँठ-गाँठ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-मेलमिलाप। २-छिपा और दूषित सम्बन्ध।

साँठना* [क्रि. स.] (हिं.) पकड़े रहना।

साँठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूँजी। धन। [संज्ञा-स्त्री.] (देश.) गदहपूरना। [संज्ञा पु.] (हिं.) साठी नामक धान।

साँड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-केवल सन्तान उत्पन्न कराने के लिए पाला हुआ गाय का नर। २-मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ा हुआ बैल। *साँड़ की तरह घूमना*-स्वतन्त्र और चिन्तारहित घूमना। *साँड़ की तरह डकराना*-बहुत जोर से चिल्लाना। [वि.](सं.)१-बलिष्ठ। २-आवारा

साँड़नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तेजचाल से चलने वाली ऊँटनी।

साँड़ा [संज्ञा पु](हि.) छिपकली की जाति का एक जङ्गली जन्तु जिसकी चरबी औषध रूप में प्रयुक्त होती है।

साँड़िया [संज्ञा पु.] (हि.) १-साँड़नी पर सवार करने वाला। २-तेज चलने वाला ऊँट।

साँढ़ियो [संज्ञा पु.] (डिं.) ऊँट।

साँढू [संज्ञा पु.] (हि.) किसी की साली का पति।

सांत, सान्त [वि.](सं.) १-जिसका अन्त अवश्य होता हो। २-अन्तयुक्त। [वि.] (हिं.) देखो 'शांत'।

सांतपनकृच्छ्र, सान्तपनकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का व्रत।

सांतानिक, सान्तानिक [वि.](सं.) संतान-संबंधी सन्तान का।

सांतापिक, सान्तापिक [वि.] (सं.) सन्ताप या कष्ट देने वाला।

सांति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शांति'।

सांत्वन, सान्त्वन [संज्ञा पु.] (सं.) १-आश्वासन। ढारस। २-सस्नेह कुशलमङ्गल पूछना तथा बातचीत करना। ३-प्रणय। प्रेम। ४-मिलन। सन्धि।

सांत्वना, सान्त्वना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आश्वासन। ढारस। २-सुख। ३-प्रेम। प्रणय।

सांत्ववाद, सान्त्ववाद [संज्ञा पु.](सं.) सांत्वना देने वाले वचन।

साँथड़ा [संज्ञा पु.] (?) बादिया का वह हिस्सा जो पेंच बनाने के लिए घुमाते हैं (लुहार)।

साँथरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चटाई। २-बिछौना

साँथा [संज्ञा पु.] (हिं.) चमड़ा कूटने का औजार जो लोहे का होता है।

साँथी [संज्ञा स्त्री] (देश.) १-ताने के सूतों का ऊपर नीचे होना। २-करघे में लगने वाली एक लकड़ी।

साँद, साँदा+ [संज्ञा पु.] (देश.) नटखट पशुओं के गले में लटकाया हुआ लकड़ी का कुन्दा। लङ्गर। ढेका।

सांदीपनि, सान्दीपनि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा देने वाले आचार्य।

सांदृष्टिक [वि.] (सं.) एक ही दृष्टि में होने वाला

सांदृष्टिकन्याय [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब किसी वस्तु को देखकर उस जैसी ही पहली देखी हुई, कोई दूसरी वस्तु याद आ जाती है।

सांद्र, सान्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) वन। जङ्गल। [वि.] (सं.) १-घना। घोर। गहरा। २-कोमल। मृदु। ३-स्निग्ध। चिकना। ४-सुन्दर खूबसूरत।

सांद्रता, सान्द्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांद्र होने का भाव।

सांद्रपुष्प, सान्द्रपुष्प [संज्ञा पु] (सं.) बहेड़ा।

सांद्रप्रसाद, सान्द्रप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कफज प्रमेह।

सांद्रमणि, सान्द्रमणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सांद्रमेह, सान्द्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सांद्रप्रसाद'।

साँध [संज्ञा पु.] (हिं.) लक्ष्य। निशाना।

सांध, सान्ध [वि.] (सं.) संधि-संबंधी। संधिका [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

साँधना* [क्रि. स.] (हिं.) १-निशाना साधना। लक्ष्य साधना। २-मिलाना। मिश्रित करना। ३-पूरा करना। साधना।

साँधा [संज्ञा पु.] (हिं.) दो रस्सियों में दी हुई गाँठ।

सांधिक, सान्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'शौंडिक'। २-सन्धि कराने वाला।

सांधिविग्रहिक, सान्धिविग्रहिक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रचीनकाल का राजाओं का वह अधिकारी जिसे सन्धि या विग्रह कराने का अधिकार होता था।

सांध्य, सान्ध्य [वि.] (सं.) संध्या-सम्बन्धी।

सांध्यकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संध्या के समय फूलने वाले पौधे, वृक्ष आदि।

साँप [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सांपिनी] एक प्रसिद्ध रेंगने वाला लम्बा कीड़ा जिसकी कुछ जातियां बहुत ही जहरीली और घातक होती हैं। भुजङ्ग। अहि। विषधर। *कलेजे पर साँप लोटना*-ईर्ष्या आदि के कारण अत्यन्त दुःख होना। *साँप सूँघ जाना*-निर्जीव होना। *साँप खेलाना*-सांप को पकड़ना और उससे क्रीड़ा या खेल करना। *साँप की तरह केंचुली झाड़ना*-पुराना भद्दा रूप छोड़कर नवीन सुन्दर रूप धारण करना। *साँप की लहर*-साप काटने का कष्ट। *साँप की लकीर* सांप के निकल जाने पर पड़ने वाली लकीर। *साँप के मुँह में*-बहुत जोखिम में। *साँप छछूँदर की दशा या गति*-बहुत असमञ्जस की अवस्था।

सांपत्तिक, साम्पत्तिक [वि.] (सं.) सम्पत्ति-संबंधी सम्पत्ति का।

साँपधरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव।

सांपरायिक, साम्परायिक [वि.] (सं.) १-पारलौकिक। २-युद्ध में काम आने वाला। ३-युद्ध-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध। समर

साँपा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिपाया'।

सांपातिक, साम्पातिक [वि.] (सं.) सम्पात-सम्बन्धी। सम्पात का।

साँपिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सांप की मादा। २-घोड़े के शरीर पर की एक प्रकार की अशुभ भौंरी।

साँपिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सांप से मिलता-जुलता काला रंग।

सांप्रत, साम्प्रत [अव्य.] (सं.) अभी। इसी समय। तत्काल। [वि.] युक्त। मिला।

सांप्रतिक, साम्प्रतिक [वि.] (सं.) १-वर्तमानकाल से सम्बन्ध रखने वाला। आधुनिक। २-जो इस समय चल रहा हो। करेन्ट।

सांप्रदायिक, साम्प्रदायिक [वि.] (सं.) किसी विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला।

सांप्रदायिकता, साम्प्रदायिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सांप्रदायिक होने का भाव। २-केवल अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता तथा हितों का विशेष ध्यान रखने वाला।

साँफा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साफा'।

सांबंधिक, साम्बन्धिक [वि.] (सं.) १-सम्बन्ध का। २-विवाह-सम्बन्धी। [संज्ञा पु] साला

सांब, साम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम जो जाम्बन्ती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

सांबपुर, साम्बपुर [संज्ञा पु.] (सं.) पाकिस्तान के मुलताननगर का प्राचीन नाम।

सांबपुराण, साम्बपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) एक उपपुराण का नाम।

सांबर, साम्बर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'साँभर' २-साँभर नमक। [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्बल। पाथेय। राहखर्च।

सांबरी, साम्बरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माया। जादूगरी।

साँभर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजस्थान की एक झील। २-उस के जल से बना नमक। ३-भारतीय मृगों की एक जाति। ॐ४-सम्बल। पाथेय।

सांभवी, साम्भवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल लोध।

सांभाष्य, साम्भाष्य [संज्ञा पु.] (सं.) संभाषण। बातचीत।

साँमुहें+ [अव्य.] (हिं) सामने। सम्मुख।

सांयुगिक [संज्ञा पु.] (सं.) योद्धा।

साँवक [संज्ञा पु.] (देश.) हलवाहों को दिया जाने वाला ऋण जिसके सूद के बदले में वह काम करते हैं। [संज्ञा पु.] (हिं.) साँवाँ (अन्न)।

साँवत+ [संज्ञा पु.] (हिं.) योद्धा। सामन्त। [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का राग।

साँवती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी के नीचे की वह जाली जिसमें घास आदि रखी जाती है।

सांवत्सर, सांवत्सरक [संज्ञा पु.] (सं.) गणक। ज्योतिषी।

सांवत्सरिक [वि.] (सं.) संवत्सर का। संवत्सर-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिषी।

साँवन [संज्ञा पु.] (देश.) मझोले आकार का एक वृक्ष।

साँवर [वि.] (हिं.) देखो 'साँवला'।

साँवरिया* [वि.] (हिं.) साँवले रङ्ग का। ॐ[संज्ञा पु.] (हिं.) श्रीकृष्ण।

साँवला [वि.] (हिं.) [स्त्री. साँवली] कुछ-कुछ काला हलके श्याम वर्ण का। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-पति या प्रेमी (गीतों में)।

साँवलापन [संज्ञा पु.] (हिं) साँवला (रङ्ग) होने का भाव।

साँवलिया+ [वि.] (हिं) सांवला। +[संज्ञा पु.] (हिं.) १-श्रीकृष्ण। २-ईश्वर।

साँवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) कँगनी या चेना जाति का एक घटिया अन्न।

सांव्यावहारिक [संज्ञा पु.] (सं.) किसी कम्पनी का हिस्सेदार होकर काम करने वाला व्यापारी।

साँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-नाक या मुख के द्वारा हवा खींचकर फेफड़ों में पहुँचाना तथा पुनः बाहर फेंकने की क्रिया। श्वास। दम। २-अवकाश। फुरसत। ३-गुंजाइश। समाई। ४-संधि या दरज। ५-दमें का रोग। *साँस अड़ना*-साँस रुकना। *साँस उखड़ना*-१-दमे का दौरा होना। २-मरते समय ऊपर-ऊपर बड़े कष्ट से साँस आना। *साँस उड़ना*-१-मरने के करीब होना। २-रुक-रुककर सांस आना। *उलटी साँस लेना*-१-गहरी सांस लेना। २-मरने के समय रोगी का कष्ट से साँस लेना। *साँस ऊपर नीचे होना*-सांस रुकना। *साँस खींचना*-१-साँस लेना। २-साँस या दम रोकना। *साँस चढ़ जाना*-१-हांफने लगना। २-जल्द थक जाना। ३-मरने के निकट होना। *साँस चढ़ना*-चिंता होना। *साँस तक न लेना*-कुछ न बोलना। *साँस रहते*-जीते जी। *(गहरी) साँस भरना या लेना, ठंडी या लम्बी साँस लेना*-१-अत्यधिक दुःख या शोक होना। २-सन्तोष या विश्राम का अनुभव करना। *साँस रुकना*-साँस लेने में बाधा होना। *साँस लेना*-कोई काम करते या चलते-चलते तनिक ठहर जाना।

साँसत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दम घुटने का-सा कष्ट। २-अत्यधिक कष्ट या पीड़ा। ३-झंझट। बखेड़ा।

साँसतघर [संज्ञा पु.] (हिं.) कालकोठरी।

सांसद [वि.] (सं.) (कथन व्यवहार अथवा आचरण) जो संसद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो। पूर्ण भद्रोचित। पार्लमेंटरी।

सांसदी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो संसद के रीति व्यवहारों का अच्छा ज्ञाता हो तथा उसमें बैठकर सब कार्य ठीक प्रकार से चलाने में पूर्ण पटु हो। पार्लमेंटेरियन।

साँसना [क्रि. स.] (हिं) १-दंड देना। २-डाँटना डपटना। ३-कष्ट या दुःख देना।

सांसर्गिक [वि.] (सं.) १-संसर्ग-सम्बन्धी। २-संसर्ग से उत्पन्न होने वाला।

साँसा चढ़ना-फिक्र या चिन्ता होना।

पड़ना-संशय या सन्देह होना।

साँसल [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का कम्बल २-बीज बोने की किया।

साँसा+ [संज्ञा पु] (सं.) १-सांस। श्वास। २-जीवन। जिन्दगी। ३-प्रमाण। ४-सन्देह। शक। भय। डर।

सांसारिक [वि.] (सं.) संसार का लौकिक। ऐहिक

साँसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिस्की'। (गाने का ढंग)।

सांस्कृतिक [वि.] (सं.) संस्कृति से सम्बन्ध रखनेवाला। संस्कृति-सम्बन्धी।

सांस्थानिक [वि.] (सं.) एक देश का।

सा [अव्य.] (हिं.) १-समान। तुल्य। बराबर। २-एक परिमाण सूचक शब्द। [संज्ञा पु.] सङ्गीत में षडज स्वर का सूचक शब्द। यथा सा, रे, ग आदि। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-पार्वती।

साइक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शायक'।

साइकिल [संज्ञा स्त्री] (अं) एक प्रसिद्ध दो पहिये वाली गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है। पैर-गाड़ी।

साइक्लोपीडिया [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'विश्व कोष'।

साइक्लोस्टाइल [संज्ञा स्त्री.] (अं.) अनेक प्रतिलिपियों को छापने वाला छोटा यन्त्र।

साइत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पल। क्षण। २-समय। ३-मुहूर्त्त। ४-शुभ समय।

साइनबोर्ड [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'नामपट्ट'।

साइन्स [संज्ञा स्त्री.] (अं.) विज्ञान।

साइवान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सायबान'।

साइयाँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साईं'।

साइर+ [संज्ञा पु.] (अ.) आमदनी के वह साधन जिन पर जमींदारों को लगान नहीं देना पड़ता

साईं [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साईं'।

साई [संज्ञा पु.] (हि.) १-वह धन जो पारिश्रमिक देकर कोई काम करने से पहले बातचीत पक्की करने के लिये दिया जाता है। पेशगी। बयाना अर्नेस्टमनी। २-वह सहायता जो किसान एक दूसरे को देते हैं। ३-देखो 'साईंकाँटा'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-एक प्रकार का कीड़ा २-वे छड़ जो गाड़ी के अग्रभाग में बेड़े बल में एक दूसरों को काटते हुए रखे जाते है।

साईंकाँटा [संज्ञा पु] (हिं.) एक वृक्ष जिसकी छाल से चमड़ा कमाया जाता है। मोगली। साईं।

साईस [संज्ञा पु] (हिं.) घोड़े की देखभाल करनेवाला नौकर।

साईसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) साईस का काम, भाव या पद।

साउज* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सवज'।

साकंभरी [संज्ञा पु.] (हिं.) साँभर झील अथवा उसके आसपास का प्रांत जो राजस्थान में है

साक [संज्ञा पु.] (हिं.) साक। सब्जी। तरकारी।

साकचेरि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) मेहँदी।

साकट [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शाक्त मत का मानने-वाला। २-वह जो मद्य-मांस आदि खाता हो ३-जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। निगुरा। ४-दुष्ट। पाजी।

साकर+ [वि.] (हिं.) संकीर्ण। तङ्ग। सँकरा। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-देखो 'साँकल'। २-देखो 'शक्कर'।

साकल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साँकल'।

साकल्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शाकल्य'।

साका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संवत्। शाका। २-ख्याति। प्रसिद्धि। ३-यश। कीर्त्ति। ४-धाक। रोब। ५-कीर्त्ति-स्मारक। ६-कोई साधारण कार्य जो सब लोग न कर सकें तथा जिसके कारण कर्त्ता की कीर्त्ति हो। ७-समय।

साका चलना-प्रभाव या रोब मान जाना। *साका चलाना*-रोब जमाना। *साका बाँधना*-धाक जमाना।

साकार [वि.] (सं.) १-रूप या आकार वाला। २-मूर्त्तिमान्। मूर्त्त। ३-स्थूल। [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्म का मूर्त्तिमान् रूप।

साकारता [संज्ञा स्त्री.](सं.) साकार होने का भाव

साकारोपासना [संज्ञा स्त्री.](सं.) ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकिन [वि.] (अ.) निवासी। रहने वाला।

साकी [संज्ञा पु.] (देश) कपूरकचरी।

साक़ी [संज्ञा पु.](सं.) १-मदिरापान कराने वाला २-वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। माशूक

साकुच [संज्ञा पु.] (सं.) सकुची नामक मछली।

साकुरुण्ड [संज्ञा पु.] देखो 'सकुरुंड'।

साकुश [संज्ञा पु.] (डिं.) घोड़ा। अश्व।

साकूत [वि.] (सं.) जिसका कुछ अर्थ हो। अभिप्राय सहित।

साकेत [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्यानगरी।

साकेतक [संज्ञा पु.](सं.) साकेत का निवासी। अयोध्यावासी।

साकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) अयोध्या। साकेत।

साकोह* [संज्ञा पु.] (हिं.) शालवृक्ष।

साक्तुक [वि.] (सं.) सत्तू सम्बन्धी। सत्तू का। [संज्ञा पु.] (सं.) जौ, जिससे सत्तू बनता हो।

साक्षर [वि.] (सं.) जो पढ़ना-लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षरता [संज्ञा स्त्री] (सं.) साक्षर या पढ़े लिखे होने का भाव।

साक्षात् [अव्य.](सं.) सामने। सम्मुख। प्रत्यक्ष। [वि.] (सं.) मूर्त्तिमान्। साकार। [संज्ञा पु.] (सं.) भेंट। मुलाकात।

साक्षात्कार [संज्ञा पु.] (सं) १-भेंट। मुलाकात २-पदार्थों का इन्द्रियों द्वारा होने वाला ज्ञान

साक्षात्कारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-साक्षात् करने वाला। २-भेंट या मुलाकात करने वाला।

साक्षिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साक्षी का काम गवाही।

साक्षिभूत [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

साक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. साक्षिणी] १-वह जिसने कोई घटना अपनी आंखों से देखी हो। २-साखी। गवाह। ३-दूर से देखने वाला। तटस्थदर्शक। [संज्ञा स्त्री.] गवाही। शहादत।

साक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-गवाही। शहादत। २-प्रमाण।

साक्ष्य-प्रविधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'साक्ष्य विधान'।

साक्ष्य-विधान [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रविधि या कानून जिसमें साक्षी देने के नियमों आदि की व्यवस्था हो। *लॉ-आफ-एविडेन्स*।

साख [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साक्षी। गवाह। २-गवाही। प्रमाण। ३-धाक। रोब। ४-मर्यादा ५-लेनदेन का खरापन या प्रामाणिकता। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साखा'।

साखना* [क्रि. स.] (हिं.) साक्षी देना। गवाही या शहादत देना।

साखर* [वि.] (हिं.) देखो 'साक्षर'।

साखा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-डाली। टहनी। २-वंश या जाति की शाखा। उपभेद। ३-चक्की का धुरा। ४-देखो 'शाखा'।

साखी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गवाह। २-गवाही। ३-ज्ञान सम्बन्धी दोहे या पद्य। ४-वृक्ष। पेड़

साखी पुकारना-गवाही देना।

साखू [संज्ञा पु.] (हिं.) शालवृक्ष।

साखोचारन* [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'गोत्रोच्चार'

साखोट [संज्ञा पु.] (हिं.) सिहोर वृक्ष।

साग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शाक। भाजी। २-तरकारी।

सागपात समझना-बहुत तुच्छ समझना।

यौ०-*सागपात*-१-रूखा-सूखा भोजन। २-तुच्छ और निकम्मी वस्तु।

सागर [संज्ञा पु.] (सं.) १-समुद्र। जलधि। २-बड़ा ताल या जलाशय। झील। ३-एक प्रकार के सन्यासी। ४-एक प्रकार का मृग।

सागरगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नदी। २-गङ्गा नदी।

सागरगामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) नदी।

सागरज [संज्ञा पु] (सं) समुद्रलवण।

सागरजमल [संज्ञा पु.] (सं) समुद्रफेन।

सागरधरा, सागरनेमि [संज्ञा स्त्री] (सं) पृथ्वी

सागरमुद्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) ध्यान या आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखल [संज्ञा स्त्री.] (सं) पृथ्वी।

सागरलिपि [संज्ञा स्त्री] (सं) एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

सागरवासी [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र में या समुद्र के किनारे रहने वाला।

सागरव्यूहगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

सागरांबरा, सागराम्बरा [संज्ञा स्त्री.] (सं) पृथ्वी।

सागरालय [संज्ञा पु.] (सं.) वरुण।

सागरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ का नाम।

सागरोत्थ [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रलवण।

सागरोदक [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र का जल।

सागवन, सागवान [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सागौन'।

सागू [संज्ञा पु] (हिं.) १-ताड़ की जाति का एक वृक्ष। २-देखो 'सागूदाना।

सागूदाना [संज्ञा पु] (हिं.) सागू नामक वृक्ष के तने के गूदे से तैयार किये हुए दाने जो शीघ्र पच जाते हैं। साबूदाना।

सागो [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सागू'।

सागौन [संज्ञा पु.] (सं.) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

साग्नि [वि.] (सं.) अग्नि के सहित। अग्नियुक्त।

साग्निक [वि] (सं.) अग्निहोत्र के लिये घर में जीवित रखने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नियमित रूप से अग्निहोत्रादि करता हो।

साग्र [वि] (सं) समस्त। कुल। सब।

साग्रह [क्रि. वि] (सं.) आग्रहसहित। जोर देकर

साचक [संज्ञा स्त्री.] (तु.) मुसलमानों में विवाह की एक रस्म।

साचरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

साचार [वि.] (सं.) आचारयुक्त।

साचित्य [संज्ञा पु.] (सं.) सचेत होने की क्रिया या भाव। सचेतता। कौशल।

साचिवारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद पुनर्नवा।

साचिव्य [संज्ञा पु] (सं.) १-सचिव का भाव या पद। सचिवता। २-सहायता।

साचीकुम्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

साचीकृत [वि.] (सं.) एकत्र किया हुआ।

सचीगुण [संज्ञा पु] (सं.) वैदिककाल के एक देश का नाम।

साज [संज्ञा पु] (सं) पूर्वाभाद्रपद-नक्षत्र।

साज़ [संज्ञा पु.] (फा.) १-सजावट। ठाठबाट। २-सजाने अथवा कसने की सामग्री। ३-वाद्य बाजा। ४-लड़ाई का हथियार। *साज छेड़ना*-बाजा बजाना आरम्भ करना। *साज मिलाना*-वाद्ययंत्र बजाने से पूर्व उसका वाद्ययंत्र ठीक करना। यौ०-*साज-बाज*-घनिष्टता। हेलमेल। [वि.] (फा.) मरम्मत करने या बनाने वाला। (यौगिक के अन्त में, जैसे—घड़ीसाज़)।

साजक [संज्ञा पु.] (सं.) बाजरा। बजरा।

साजगिरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) संपूर्ण जाति का एक राग।

साजड़ [संज्ञा पु.] (देश.) गुलू नामक वृक्ष।

साजन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पति। २-प्रेमी। ३-सज्जन। ४-ईश्वर।

साजना* [क्रि. स.] (हिं.) सजाना। [क्रि. अ.] सजना। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साजन'।

साजबाज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तैयारी। २-मेल-जोल।

साजर [संज्ञा पु.] (देश.) गुलू नामक वृक्ष।

साज-सामान [संज्ञा पु.] (फा.) १-सामग्री। उपकरण। २-ठाटबाट।

साजात्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक ही जाति वाला। एक ही प्रकार या तरह का।

साजिंदा [संज्ञा पु.] (फा.) १-साज या बाजा बजाने वाला। २-सपरदाई।

साज़िश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-किसी के विरुद्ध कोई काम करने मे सहायक होना। २-मेल। मिलाप।

साजुज्य* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सायुज'।

साझा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हिस्सेदारी। २-हिस्सा। भाग।

साझी, साझेदार [संज्ञा पु.] (हिं.) किसी काम या रोजगार में हिस्सा रखने वाला। हिस्सेदार।

साझेदारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साझेदार होने का भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

साट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साँट'।

साटक [संज्ञा पु.] (?) १-भूसी। छिलका। २-बिलकुल तुच्छ और निरर्थक वस्तु।

साटन [संज्ञा स्त्री.] (अं. सैटिन) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी वस्त्र।

साटना* [क्रि. स.] (हिं.) १-किसी को किसी काम के लिए गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना। २-देखो 'सटाना'।

साटनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भालू का नाच।

साटमार [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथियों को लड़ाने वाला।

साटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-पुनर्नवा। २-सामान। सामग्री। ३-कमची। साँटी।

साटे [अव्यय] (देश.) बदले में। परिवर्त्तन में।

साठ [वि.] (सं.) पचास और दस (६०)। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साठी'।

साठनाठ [वि] (हिं.) १-निर्धन। दरिद्र। २-नीरस। रूखा। तितरबितर।

साठसाती [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'साढेसाती'।

साठा [संज्ञा पु] (देश.) १-गन्ना। ऊख। २-साठी नामक धान। ३-वह खेत जो बहुत लम्बा-चौड़ा हो। ४-एक प्रकार की मधुमक्खी [वि] (हिं) साठ साल का।

साठी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान।

साड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) १-घोड़ों का एक प्राण घातक रोग। २-मल्लाहों के बैठने के स्थान के नीचे लगा बांस का टुकड़ा।

साड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-स्त्रियों के पहनने की धोती। २-देखो 'साढ़ी'।

साढ़साती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साढ़ेसाती'

साढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-असाढ़ में बोई जाने वाली फसल। असाढ़ी। २-दूध पर की मलाई ३-सालवृक्ष का गोंद। ४-देखो 'साड़ी'।

साढ़ू [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्नी की बहन का पति।

साढ़ेचौहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल की वह बांट जिसमें $\frac{1}{16}$ वां भाग जमींदार को तथा शेष $\frac{11}{16}$ वां भाग का काश्तकार को मिलता है

साढ़ेसाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शनिग्रह की अशुभ दशा या प्रभाव जो प्राय: साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात माह या साढ़े सात दिन तक रहता है। *साढ़े साती आना* या *चढ़ना*-विपत्ति के दिन आना।

सातंक, सातङ्क [क्रि. वि.] (सं.) आतंक या भय प्रदर्शन के साथ। आतंकपूर्वक।

सात् [वि.] (सं.) एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'मिलाहुआ' या 'रूप में आया हुआ' का अर्थ देता है। यथा-भूमिसात्।

सात [वि.] (हिं.) चार और तीन (७)। [संज्ञा पु.] चार और तीन के योग की संख्या। *सात-पाँच करना*-१-बहाना करना। २-झगड़े या उपद्रव करना। ३-चालबाजी करना। *सात परदे में रखना*-१-अच्छी तरह छिपा रखना। २-बहुत सम्भाल कर रखना। *सात समुद्र पार*-बहुत दूर। *सातों भूल जाना*-होश हवाश चला जाना। *सात राजाओं की साक्षी देना*-किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। *सात सींकें बनाना*-बच्चे के जन्म से छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं। यौ०-*सात-पाँच*-चालाकी धूर्तता।

सातत्य [संज्ञा पु] (सं.) सतत का भाव। सदा या निरन्तर होते रहना।

सातपूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सातपुतिया'।

सातफेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह के समय वर और वधू का अग्नि की सात बार परिक्र करना।

सातभाई [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'सतभइया'

सातला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का थूहर जिसका दूध पीले रंग का होता है।

सातवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) राजा शालिवाहन

सानिक* [वि.] (हि.) देखो 'सात्विक'।

सातिशय [वि.] (सं.) अतिशययुक्त।

साती [संज्ञा स्त्री] (देश.) सांप काटने के

प्रकार की चिकित्सा।

सातीन, सातीनक [संज्ञा पु.] (सं.) मटर।

सात्मक [वि.](सं.) आत्मा के सहित। आत्मायुक्त

सात्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सारूप्य। २-वैद्यक के अनुसार वह रस जिसके सेवन से शरीर को लाभ पहुँचता है। ३-ऋतु, काल, देश आदि के अनुकूल पड़ने वाला आहार-विहार आदि।

सात्यकि, सात्यकी [संज्ञा पु.] (सं.) एक यादव जो महाभारत युद्ध में श्रीकृष्ण के सारथी थे।

सात्यदूत [संज्ञा पु.](सं.) सरस्वती आदि देवी या देवताओं के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ

सात्ययज्ञ [संज्ञा पु.](सं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

सात्यरथि [संज्ञा पु.] (सं.) सात्यरथ का वंशज।

सात्यवत, सात्यवतेय [संज्ञा पु] (सं.) वेदव्यास

सात्यहव्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि का नाम जो वशिष्ठ के वंश के थे।

सात्रय [संज्ञा पु.] (?) गंधक।

सात्राजित [संज्ञा पु.] (सं.) सत्राजित के वंशज, राजा शतानीक।

सात्राजिती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्यभामा।

सात्व [वि.] (सं.) सात्विक।

सात्वत [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-बलराम ३-विष्णु। ४-यादव। ५-एक वर्णसंकर जाति। ६-एक प्राचीन देश का नाम।

सात्वती [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-शिशुपाल की माता का नाम। २-सुभद्रा।

सात्वती-वृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाटक में एक प्रकार की वृत्ति, जिसमें मुख्यत: दान, दया, शौर्य आदि वीरोचित कार्यों का वर्णन् होता है। इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत या शांतरसों में होता है।

सात्विक [वि.] (सं.) १-सतोगुणी। २-पवित्र। निर्मल। ३-सत्वगुण से उत्पन्न।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-साहित्य में सतोगुण से उत्पन्न ये अङ्ग विकार-स्तम्भ, स्वेद, रोमांच स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु तथा प्रलय। २-साहित्य के अनुसार एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार अद्भुत, वीर, शृङ्गार तथा शांत रसों में होता है। सात्विक वृत्ति। ३-ब्रह्मा। ४-विष्णु। ५-चार प्रकार के अभिनयों में से एक।

सात्विकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।
[स्त्री. प्र.] सत्वगुण से संबन्ध रखने वाली।

साथ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-संगति। सहचार। २-साथी। संगी। ३-घनिष्टता। ४-कबूतरों का झुण्ड। *साथ छूटना*-संगति से अलग होना। *साथ देना*-किसी काम में सहायता देना। *साथ लेना*-अपने संग रखना अथवा चलना। *साथ सोना*-समागम या सम्भोग करना। *साथ सोकर मुँह छिपाना*-अत्यधिक घनिष्टता होने पर भी सकोच या दुराव करना। *साथ का या साथ को*-तारकारी। भाजी। *साथ का खेला*-बचपन का दोस्त। [अव्य.] (हिं.) १-सहित से। २-विरुद्ध। से। ३-प्रति। से। ४-द्वारा *साथ ही साथ*-एक साथ। एक क्रम में।
यौ०-*साथ ही*-सिवा। अतिरिक्त।

साथरा+ [संज्ञा पु.] (?)[स्त्री. साथरी] १-चटाई २-बिस्तर। बिछौना। ३-कुश की बनी चटाई

साथी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. साथिन] १-वह जो एक साथ रहता हो। सङ्गी। २-दोस्त। मित्र।

सादगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सादापन। सरलता २-सीधापन। निष्कपटता।

सादरा [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का बढ़िया पक्का गाना।

सादा [वि.] (फा.) [स्त्री. सादी] १-साधारण बनावट का। २-जिसके ऊपर बेलबूटे, सजावट आदि का कोई काम न हो। ३-बिना विशेष मिलावट या आडम्बर के। ४-जिसके ऊपर लिखा न हो। ५-सीधा। सरल। ६-जिसके कोई रङ्ग न हो। सफेद।
सीधासादा-सरल हृदय।

सादापन [संज्ञा पु.] (फा.) सरलता। सादगी।

सादित [वि.] (सं.) छिन्नभिन्न। विध्वस्त।

सादी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। सदिया। २-बिना पीठी की पूरी। [संज्ञा पु.] (?) १-शिकारी। २-घोड़ा। ३-देखो 'शादी'।

सादूर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शार्दूल। सिंह। २-कोई हिंसक पशु।

सादृश्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-रूप, प्रकार आदि की समानता। एकरूपता। २-बराबरी। तुलना। ३-परस्पर विरोधी या भिन्न बातों के कुछ विशेष तत्वों में पाई जाने वाली समानता। अतिदेश। *एनालोजी*। ४-कुरङ्ग। मृग।

सादृश्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सदृश्य'।

साध [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साधु। महात्मा। २-सज्जन। ३-योगी। ४-एक जाति का नाम।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-इच्छा। अभिलाषा। २-स्त्री के गर्भवती होने के सातवें महीने होने वाला एक प्रकार का उत्सव। [वि.] उत्तम। अच्छा।

साधक [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री. साधिका] १-साधना करने वाला। २-योगी। ३-साधन। ज़रिया। ४-वह जो अनुकूल और सहायक हो। ५-ओझा। ६-पुत्रजीव नामक वृक्ष। ७-दौना। ८-पित्त।

साधन [संज्ञा पु.] (सं.) १-काम आरम्भ करके सिद्ध या पूरा कराना। २-निर्णय, आज्ञा आदि के अनुसार कार्य का रूप देना। पालन करना। ३-अपने कार्यों का निर्वाह या अपने पद के कर्तव्यों का पालन करना। ४-विधिक लेख्यों आदि में बतलाये हुए कार्य पूर्ण करना *एक्जिक्यूशन*। ५-कोई वस्तु तैयार करने की सामग्री। ६-वह जिसके द्वारा अथवा जिसकी सहायता से कोई काम सिद्ध हो। उपकरण। ७-उपाय। युक्ति। ८-धातुएँ आदि शोधने का काम। ९-कारण। हेतु। १०-आचार। संधान। ११-मृतक का अग्निसंस्कार। १२-जाना। गमन। १३-धन। दौलत। १४-पदार्थ वस्तु। १५-घोड़े, हाथी आदि जिनकी सहायता से युद्ध होता है। १६-सिद्धि। १७-प्रमाण। १८-तपस्या आदि के द्वारा मंत्र सिद्ध करना। साधना।

साधनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साधन का भाव या धर्म। २-साधने की क्रिया। साधना।

साधन-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'करण'। २ देखो 'साधिका'।

साधनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) साधनता।

साधनहार* [वि.] (हिं.) १-साधने वाला। २-जो साधा जा सके।

साधना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोई काम सिद्ध करने की क्रिया या भाव। सिद्धि। २-उपासना। आराधना। ३-देखो 'साधन'।
[क्रि. स.] (हिं.) १-पूरा करना। २-निशाना लगाना। ३-अभ्यास करना। ४-पक्का करना ठहराना। ५-एकत्र करना। ६-वश में करना ७-बनावटी को असल जैसा कर दिखाना। ८-शोधना। शुद्ध करना। ९-प्रमाणित करना

साधनिक [वि.] (सं.) किसी राज्य अथवा संस्था के प्रबन्ध, शासन अथवा कार्यसाधन से संबंध रखने वाला। *एक्जिक्यूटिव*।

साधनिक-अधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संस्था का वह अधिकारी जो उसके प्रबन्ध आदि का साधन या सञ्चालन करता है। *एक्जिक्यूटिव-ऑफिसर*।

साधनिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह राजकीय विभाग जो विधि-विधानों आदि का पालन करता और कराता है। *दि-एक्जिक्यूटिव*। २-विभाग के अधिकारियों का समूह या वर्ग *एक्जिक्यूटिव*।

साधनी [संज्ञा स्त्री.](हिं) भूमि चौरस करने का एक लोहे का औजार।

साधनीय [वि.] (सं) १-साधना करने योग्य। २-साधा जा सके।

साधयितव्य [वि.] (सं.) साधन करने के योग्य।

साधयिता [संज्ञा पु.] (सं.) साधन करने वाला।

साधर्म्य [संज्ञा पु.](सं.) समान धर्म अथवा गुण होने का भाव। एकधर्मता।

साधार [वि.] (सं.) जिसका कुछ आधार हो। आधारयुक्त।

साधारण [वि.] (सं.) १-जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। सामान्य। २-विशेषता अथवा उत्कृष्टता से रहित। मामूली। *आर्डिनरी*। ३-सब के समझने योग्य। सहज

सरल। सुगम। ४-सब अथवा बहुतों से सम्बन्ध रखने वाला। ५-सभी व्यक्तियों, अवसरों, अवस्थाओं से सम्बन्ध रखने वाला सार्वजनिक। आम। जनरल।

साधारणगांधार, साधारणगान्धार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का विकृत स्वर जो वज्रिका नामक श्रुति से आरम्भ होता है।

साधारणतः [अव्य.] (सं.) १-सामान्य रूप से। मामली तौर पर। २-बहुधा। प्रायः। अक्सर

साधारणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साधारण का भाव या धर्म। मामूलीपन।

साधारण-देश [संज्ञा पु.] (सं.) जिसमें कोई विशेषता न हो। सामान्य। मामूली।

साधारण-धर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह धर्म जो सब के लिए हो। २-वह धर्म जो साधारणतः एक ही प्रकार के सब पदार्थों में पाया जाय। ३-चारों वर्णों के कर्त्तव्य कर्म।

साधारण-निर्वाचन [संज्ञा पु.] (सं.) सार्वजनिक चुनाव। जनरल इलेक्शन।

साधारण-स्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

साधारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक अप्सरा का नाम। २-कुंजी। ताली। चाभी।

साधारणीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट तत्वों के आधार पर कोई ऐसा साधारण नियम अथवा सिद्धान्त स्थिर करना जो उन सब तत्वों पर समान रूप से प्रयुक्त न हो सके। २-किसी समान गुण या धर्म के आधार पर अथवा एक वर्ग में लाना। गुणों आदि के आधार पर अथवा एक वर्ग में लाना।

साधारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) साधारणता। मामूलीपन।

साधिका [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] सिद्ध करने वाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह लेख अथवा पत्र जिस पर किसी प्रकार के देने पावने का ठीक-ठीक हिसाब अथवा भेजे गये माल का पूरा विवरण लिखा रहता है। वाउचर।

साधिकार [क्रि. वि.] (सं.) अधिकारसहित। अधिकार से। ऑथारिटेटिवली।
[वि.] (सं.) जिसे अधिकार प्राप्त हो।

साधिक्षेप [क्रि. वि.] (सं.) ध्यान करते हुए। रिफ्लेक्टिवली।

साधित [वि.] (सं.) १-सिद्ध किया हुआ। साधा हुआ। २-जिसे किसी प्रकार का दण्ड दिया गया हो। ३-शुद्ध किया हुआ। शोधित। ४-जिसका नाश किया गया हो। ५-(ऋण आदि) जो चुकाया गया हो।

साधु [संज्ञा पु.] (सं.) १ कुलीन। आर्य। २-धार्मिक जीवन बिताने वाला व्यक्ति। संत। ३-भला आदमी। सज्जन। ४-जैन साधु। ५-जिन। ६-मुनि। ७-वरुणवृक्ष।
[वि.] (सं.) १-अच्छा। २-प्रशंसनीय। ३-उचित। ४-शिष्ट और शुद्ध (भाषा)।
[अव्य.] (सं.) ठीक है। अच्छी बात है।

साधुक [संज्ञा पु.] (सं.) कदम्ब का वृक्ष।

साधुकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा या भला काम

साधुकारी [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा या भला काम करने वाला।

साधुज [संज्ञा पु.] (सं.) कुलीन।

साधुजात [वि.] (सं.) १-सुन्दर। २-उज्वल। साफ

साधुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साधु होने का भाव या धर्म। २-साधुओं का आचरण। ३-सज्जनता भलमनसाहत। ४-भलाई। नेकी। ५-सीधापन

साधुदर्शी [वि.] (सं.) अच्छी तरह से देखने वाला

साधुदायी [वि] (सं) उत्तम वस्तु का दान करने वाला।

साधुधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार साधुओं का धर्म जो दस प्रकार का कहा गया है-क्षांति मार्दव, आर्जव, मुक्ति, तप, संयम, सत्य, शौच अकिंचन तथा ब्रह्म।

साधुधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अच्छी बुद्धि। २-सास।

साधुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलपद्म।

साधुभवन [संज्ञा पु.] (सं.) साधुओं के रहने की कुटी।

साधुभाव [संज्ञा पु.] (सं.) साधुता। सज्जनता।

साधुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-एक तांत्रिक देवी का नाम। २-दसवीं पृथ्वी का नाम (बौद्ध)।

साधुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) किसी का कोई भला काम करने पर 'साधुसाधु' कहकर उसकी प्रशंसा करना।

साधुवादी [वि.] (सं.) सच बोलने वाला।

साधुवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कदम्ब का पेड़। २-वरुणवृक्ष।

साधुवृत्त [वि.] (सं.) अच्छे स्वभाव और उत्तम चरित्र का।

साधुवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तम और श्रेष्ठ-वृत्ति।

साधुसाधु [अव्यय] (सं.) धन्यधन्य। वाह-वाह बहुत। खूब।

साधू [संज्ञा पु.] (हिं). १-धार्मिक व्यक्ति। सन्त महात्मा। २-भला आदमी। सज्जन। ३-सीधा या भोलाभाला आदमी। ४-देखो'साधू'

साधो [संज्ञा पु.] (सं.) धार्मिक पुरुष। सन्त। साधु।

साध्य [वि.] (सं.) १-सिद्ध करने योग्य। साधनीय। २-जो सिद्ध हो सके। ३-सहज। सरल। ४-जो प्रमाणित करना हो। ५-प्रतिकार करने के योग्य। ६-जानने के योग्य।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-गण देवता जो संख्या में बारह हैं। यथा-मनः, मंता, प्राण, नर, अपान, वीर्यवान, विनिर्भय, नय, दंस, नारायण, वृष तथा प्रभुंच। २-देवता। ३-ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से इकीसवां योग जो बहुत शुभ माना जाता है। ४-तन्त्र के अनुसार गुरु के लिए जाने वाले चार प्रकार के मंत्रों में से एक। ५-न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। ६-सामर्थ्य।

साध्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साध्य का भाव या धर्म।

साध्यवसानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्यदर्पण के अनुसार एक प्रकार की लक्षणा।

साध्यसम [संज्ञा पु.] (सं.) न्याय में वह हेतु जो साध्य की तरह साधनीय होता है।

साध्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) किसी व्यवहार या दीवानी मुकदमे में वे विचारणीय बातें जिनका एक पक्ष स्थापन करता हो तथा जिन्हें दूसरा पक्ष न मानता हो और उसके आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे का निर्णय होने को हो। इश्यू।

साध्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम।

साध्वस [संज्ञा पु.] (सं.) १-भय। २-डर। ३-व्याकुलता। ४-प्रतिभा।

साध्वाचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधुओं का सा आचरण। २-शिष्टाचार।

साध्वी [वि.] (सं.) पतिव्रता या पवित्र आचरण वाली (स्त्री)।

सानंद, सानन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिन्धदल। २-एक प्रकार की संप्रज्ञात समाधि। ३-सङ्गीत में सोलह प्रकार के ध्रुवों में से एक।
[क्रि. वि.] आनन्दपूर्वक। आनन्द सहित।

सानंदनी, सानन्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

सानंदुरी, सानन्दुरी [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराणोक्त तीर्थ का नाम।

सान [संज्ञा पुं.] (हिं.) वह पत्थर जिस पर रगड़ कर अस्त्रों आदि की धार तेज की जाती है।
सान देना, सान धरना-धार तेज करना।

सानना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। २-मिश्रित करना। मिलाना। ३-किसी के साथ दोष, अपराध आदि के लिये उत्तरदायी बनना। ४-सान पर चढ़ाकर धार तेज करना।

सानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशी। मुरली।

सानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चारे की सामग्री जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाई जाती है। २-कई पदार्थों का अनुचित रीति से किया हुआ मिश्रण (व्यंग्य)। ३-गाड़ी के पहिए में लगाने की गिट्टक। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सनई'। [वि.] (अ.) १-दूसरा। द्वितीय। २-मुकाबले का। यौ०-लासानी-अद्वितीय। बे-जोड़।

सानु [संज्ञा पु] (सं.) १-पर्वत की चोटी। २-सिरा। छोर। ३-समतल भूमि। ४-वन।

अङ्कल । ५-मार्ग । ६-पल्लव । पत्ता । ७-सूर्य । ८-ज्ञानी । पंडित ।

सानुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुंडेरी नामक वृक्ष । २-तुंबुरु ।

सानुमानक [संज्ञा पु.] (सं.) पुंडेरी नामक वृक्ष ।

सानुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

सानेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वंशी । मुरली ।

सानोक+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास

सान्नत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का साम ।

सान्नाय [संज्ञा पु.] (सं.) हवन का घी जो मन्त्रों से पवित्र किया हुआ हो ।

सान्नाहिक [संज्ञा पु.] (सं.) कवचधारी ।

सान्निध्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-समीपता । निकटता । २-एक प्रकार की मुक्ति या मोक्ष ।

सान्निध्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सान्निध्य का भाव या धर्म ।

सान्निपातिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रिदोष से उत्पन्न होने वाला एक योनि रोग ।

सान्निपातिक [वि.] (सं.) १-सन्निपात-सम्बन्धी । सन्निपात का । २-त्रिदोष से उत्पन्न होने वाला (रोग) ।

सान्यासिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने संन्यास लिया हो ।

साप* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शाप' ।

सापत्न [वि.] (सं.) [स्त्री. सापत्नी] १-सौत के कोख से उत्पन्न । २-सौत-सम्बन्धी ।

सापत्न्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौत की दशा । सौतिया भाव । २-प्रतिद्वंद्वता । वैर-भाव । ३-सौत का लड़का ।

सापन [संज्ञा पु.] (?) सिर के बाल गिरने का एक रोग ।

सापना* [क्रि. स.] (हिं.) १-शाप देना । २-दुर्वचन कहना । कोसना ।

सापराध [क्रि. वि.] (सं.) अपराधसहित ।

सापिंड्य, सापिण्ड्य [संज्ञा पु.] (सं.) सपिंड होने का भाव या धर्म ।

सापेक्ष [वि.] (सं.) १-एक दूसरे की अपेक्षा या आवश्यकता रखने वाले । २-किसी से अपेक्षा रखने वाला । ३-जो विचार, निर्णय अथवा आज्ञा की अपेक्षा में रुका पड़ा हो । पेंडिंग ।

सापेक्षता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सापेक्ष का भाव ।

सापेक्षवाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसमें दो चीजों या बातों का एक दूसरी का अपेक्ष्य माना जाता है ।

साप्ततंत्र, साप्ततन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक धार्मिक सम्प्रदाय जो प्राचीनकाल में था ।

साप्तपद [वि.] (सं.) [स्त्री. साप्तपदी] सात पग चलने से या सात वाक्य आपस में कहने सुनने से होने वाली (मैत्री या सम्बन्ध) । [संज्ञा पु.] १-भाँवर । फेरा । २-मैत्री । दोस्ती ।

साप्तपदीन [वि.] (सं.) सप्तपदी-सम्बन्धी । सप्तपदी का । [संज्ञा पु.] मित्रता । दोस्ती ।

साप्तपौरुष [वि.] (सं.) [स्त्री. सप्तपौरुषी] सात पीढ़ी तक या सात पीढ़ियों का ।

साप्तमिक [वि.] (सं.) सप्तमी सम्बन्धी । सप्तमी का ।

साप्तरथवाहनि [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन ऋषि का नाम ।

साप्ताहिक [वि.] (सं.) १-सप्ताह-सम्बन्धी । २-प्रति सप्ताह होने वाला । हफ्तेवार । वीकली

साफ [वि.] (अ.) १-जो मैला या गंदला न हो । स्वच्छ । निर्मल । २-शुद्ध । खालिस । ३-निर्दोष । ४-स्पष्ट । ५-उज्ज्वल । ६-जिसमें कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो । ७-निखरा हुआ । चमकीला । ८-निष्कपट । ९-सादा । कोरा । १०-जिसमें रद्दी अंश न हो । ११-खाली । १२-समतल । हमवार । १३-(लेनदेन) जो चुकता किया गया हो । १४-जिसमें कोई तत्त्व या सार न हो । *साफ-साफ सुनना*-खरी बात कहना । *साफ करना*-१-मार डालना । २-नष्ट करना । ३-खा जाना । [क्रि. वि.] (अ.) १-बिना किसी दोष या कलंक के । २-बिना किसी प्रकार की हानि के ; ३-इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे । ४-बिलकुल । परम ।

साफल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफलता । २-सिद्धि लाभ ।

साफा [संज्ञा पु.] (अ.) १-सिर पर बाँधने की पगड़ी । मुँडासा । २-कपड़े धोना । ३-शिकारी जानवरों को शिकार के लिये या कबूतरों को दूर तक उड़ाने के लिये तैयार करने के उद्देश्य से उपवास कराना । *साफा देना*-उपवास कराना ।

साफी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-भांग छानने या गाँजे की चिलम के नीचे लगाने का छोटा कपड़ा । २-हाथ में रखने का रूमाल । ३-लकड़ी साफ करने का रन्दा ।

साबत [संज्ञा पु.] (डि.) सरदार । सामन्त ।[वि.] (हिं.) देखो 'साबूत' ।

साबन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साबुन' ।

साबर [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'साँभर' । २-एक प्रकार का मुलायम चमड़ा जो मखमल जैसा होता है । ३-शबर जाति के लोग । ४-मिट्टी खोदने का एक औजार । ५-एक प्रकार का सिद्ध मन्त्र ।

साबल [संज्ञा पु] (हिं.) बरछी । भाला ।

साबस+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शाबाश' । [अव्यय] (हि.) वाह-वाह । धन्य । साधु-साधु

साबिक [वि.] (अ.) पहले का । पुराना । यौ०—*साबिक दस्तूर*-यथापूर्व । जैसे पहले था वैसा ही ।

साबिका [संज्ञा पु.] (अ.) १-जान पहचान । २-सम्बन्ध । सरोकार । *साबिका पड़ना*-१-काम या वास्ता पड़ना । २-लेनदेन होना । ३-मेल-मिलाप होना ।

साबित [वि.] (फा.) प्रमाणित । सिद्ध । [वि.] (अ.) १-साबूत । पूरा । २-ठीक । दुरुस्त ।

साबुत [वि.] (फा.) १-साबूत । संपूर्ण । २-दुरुस्त ३-स्थिर ।

साबुन [संज्ञा पु.] (अ.) तेल, क्षार आदि के मिश्रण से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और कपड़े आदि साफ किये जाते हैं ।

साबूत [वि.] (फा.) संपूर्ण । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सबूत' ।

साबूदाना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सागूदाना' ।

साब्दी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाख । द्राक्षा ।

साभार [क्रि. वि.] (सं) आभार मानते हुये । कृतज्ञतापूर्वक ।

सामंजस्य, सामञ्जस्य [संज्ञा पु] (सं.) १-औचित्य । २-अनुकूलता । ३-मेल । एकरसता

सामंत, सामन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वीर । योद्धा । २-शक्तिशाली जमींदार या सरदार । ३-समीपता । नजदीकी ।

सामंत-तंत्र, सामन्त-तन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य के अन्तर्गत वह प्रणाली जिसमें सामंतों या सरदारों तथा जमींदारों आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिकार या पूरे अधिकार होते हैं । *फ्यूडलसिस्टम* ।

सामंत-भारती, सामन्त-भारती [संज्ञा पु.] (सं.) एक सारङ्ग राग ।

सामंत-सारंग, सामन्त-सारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सारङ्ग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं ।

सामंती, सामन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक रागिनी का नाम । [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सामन्त का भाव या पद ।

सामंतेय, सामन्तेय [संज्ञा पु.] (सं) एक प्राचीन ऋषि ।

सामंतेश्वर, सामन्तेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) चक्रवर्ती सम्राट ।

साम [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाये जाने वाले वेदमंत्र । २-देखो 'सामवेद' । ३-राजनीति में शत्रु को को मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की नीति । [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'शाम' । २-देखो 'समान' ।

सामक [संज्ञा पु.] (हि.) साँवा । (अन्न) । [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्ज का असल रुपया । मूलधन । २-सान धरने का पत्थर । ३-वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो । ४-समान धन

सामकपुंख, सामकपुङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) सरफोंका ।

सामकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सांत्वना देने वाला २-एक प्रकार का सामगान ।

सामग [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. सामगी] १-सामवेद का ज्ञाता या पंडित । २-विष्णु ।

सामगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

सामगान [संज्ञा पु.](सं.) १-एक साम । २-सामवेद का अच्छा पंडित ।

सामगाय[संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सामगान का अच्छा ज्ञाता हो ।

सामग्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य में उपयोग होता है । २-असबाब । सामान । ३-आवश्यक द्रव्य । जरूरी सामान । ४-साधन ।

सामग्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-हथियार । २-भंडार । खजाना ।

सामज [वि.] (सं.) जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो । [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी ।

सामत [संज्ञा पु.] (हिं.) 'सामंत' ।
[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शामत' ।

सामत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) हर्रे, सोंठ तथा गिलोय इन तीनों का वर्ग ।

सामत्व [संज्ञा पु.] (सं.) साम का भाव या धर्म ।

सामना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-समक्ष या सम्मुख होने की क्रिया या भाव । २-भेंट । मुलाकात ३-आगे वाला भाग । ४-प्रतियोगिता । मुकाबला । सामने आना-सम्मुख या आगे आना । सामने का-१-जो अपनी आँखों के आगे हुआ हो । २-जो समक्ष हो । सामने करना-किसी के आगे उपस्थित करना । सामने पड़ना-दृष्टि के सम्मुख आना । *सामने होना*-(स्त्री का) बिना परदा किये समक्ष आ जाना । *सामना करना*-लिहाज न करके धृष्टता पर उतारू होना ।

सामने [क्रि. वि.](हिं.) १-समक्ष । सम्मुख । आगे २-उपस्थिति में । ३-सीधे आगे की ओर । ४-मुकाबले में । विरुद्ध ।

सामपुष्पि [संज्ञा पु.](सं.) एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि का नाम ।

सामयिक [वि.] (सं.) १-समय से सम्बन्ध रखने वाला । २-वर्त्तमान समय का । ३-समय को देखते हुए उपयुक्त या ठीक । समय के अनुसार

सामयिकता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सामयिक होने का भाव । वर्त्तमान समय, परिस्थिति आदि के विचार से युक्त दृष्टिकोण या अवस्था ।

सामयिक-पत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-कुछ निश्चित समय पर बारबार प्रकाशित होता रहने वाला पत्र । *पीरियॉडिकल* । २-वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमें बहुत से लोग अपना-अपना धन लगाकर किसी अभियोग की पैरवी के निमित्त लिखा पढ़ी करते हैं (शुक्रनीति) ।

सामयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा । २-हाथी ।

सामर [संज्ञा पु.](हिं) देखो 'समर' । [वि.](सं.) समर या युद्ध-सम्बन्धी । समर का ।

सामरथ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सामर्थ्य' ।

सामराधिप [संज्ञा पु.](सं.) सेना का प्रधान अधिकारी । सेनापति । कमांडर ।

सामरिक [वि.] (सं.) समर या युद्ध से सम्बन्ध रखने वाला । समर का ।

सामरिक-पोत [संज्ञा पु.] (सं.) जङ्गी जहाज ।

सामरिकवाद [संज्ञा पु.](सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें राष्ट्र के सामरिक कार्यों—सेना बढ़ाने, नित्य नये नये भयङ्कर और घातक युद्धोपकरण बनवाने आदि की ओर अधिकाधिक ध्यान दें ।

सामरेय [वि.] (सं.) देखो 'सामरिक' ।

सामर्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सामर्थ्य' ।

सामर्थी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सामर्थ्य रखने वाला २-जो किसी काम को करने की शक्ति रखता हो । ३-बलवान । पराक्रमी ।

सामर्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुछ कर सकने की शक्ति । २-योग्यता । ३-शब्द की व्यंजना-शक्ति । ४-व्याकरण में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध ।

सामवायिक [वि.] (सं.) १-समवाय-सम्बन्धी । २-समूह या झुण्ड-सम्बन्धी ।
[संज्ञा पु.] (सं.) मंत्री । वजीर ।

सामवायिक-राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वे राज्य जो किसी युद्ध के निमित्त मिल गये हों ।

सामविद् [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद का अच्छा ज्ञाता ।

सामविप्र [संज्ञा पु.] (सं.) सामवेद के विधानों के अनुसार कर्म करने वाला ब्राह्मण ।

सामवेद [संज्ञा पु.] (सं.) चार वेदों में से तीसरा जिसमें गाये जाने वाले स्तोत्र हैं ।

सामवेदिक, सामवेदीय [वि.] (सं.) सामवेद-सम्बन्धी । [संज्ञा पु.] सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी ।

सामश्रवा [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन ऋषि

सामसर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गन्ना ।

सामसाली [संज्ञा पु.] (हिं.) राजनीति के साम, दाम, दंड और भेद नामक अङ्गों को जानने वाला । राजनीतिज्ञ ।

सामसावित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का सावित्री मंत्र ।

सामसुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सामगान ।

सामस्तंबि, सामस्तम्बि [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन ऋषि का नाम ।

सामस्त [वि.] (हिं.) देखो 'समस्त' ।

सामहिं* [अव्य.] (हिं.) सामने । सम्मुख ।

सामाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साँवाँ । २-देखो 'सामान' । [संज्ञा स्त्री.] देखो 'श्यामा' ।

सामाजिक [वि.] (सं.) सारे समाज से सम्बन्ध रखने वाला । समाज का । *सोशल* । [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य नाटक आदि का श्रोता या दर्शक । सहृदय ।

सामाजिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सामाजिक का भाव । लौकिकता ।

सामाजिक-बहिष्कार [संज्ञा पु.] (सं.) समाज से निकाल बाहर करना । *सोशल बॉईकाट* ।

सामाजिक-बीमा [संज्ञा पु] (हिं.) समाज से सम्बन्ध रखने वाला बीमा । *सोशल इंश्योरेंस* ।

सामाजिक-रूढ़ि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) समाज विषयक रूढ़ि, प्रथा या चाल । *सोशल कस्टम* ।

सामाजिक-सेवा [संज्ञा पु.] (सं.) समाज के लिए की जाने वाली सेवा । *सोशल सर्विस* ।

सामाधान [संज्ञा पु.] (सं.) १-शमन करने की क्रिया । शांति । २-शंका का निवारण । ३-सम्पादन ।

सामान [संज्ञा पु.] (फा.) १-देखो 'सामग्री' । २-उपक्रम । आयोजन ।

सामानग्रामिक [वि.] (सं.) एक ही गाँव के रहने वाले ।

सामान्य [वि.] (सं.) १-जिसमें कोई विशेषता न हो । मामूली । २-साधारण । ३-देखो 'मध्यक' । [संज्ञा पु.] १-समानता । बराबरी २-किसी जाति या प्रकार की सब वस्तुओं अथवा बातों में पाया जाने वाला सामान्य गुण । ३-साहित्य में अलंकार विशेष । यह तब माना जाता है जब एक ही आकार की, दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है, जिसमें देखने में कुछ भी अन्तर नहीं जान पड़ता ।

सामान्य-छल [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायशास्त्रानुसार वह छल जिसमें संभावित अर्थ के स्थान में अति सामान्य योग से असंभूत अर्थ की कल्पना की जाती है ।

सामान्यज्वर [संज्ञा पु.] (सं.) वह बुखार जो साधारण हो ।

सामान्यतः, सामान्यतया [अव्य.] (सं.) साधारणतया । मामूली तौर से ।

सामान्यतोदृष्ट [संज्ञा पु.](सं.) १-तर्क तथा न्यायशास्त्रानुसार अनुमान-विषयक एक प्रकार की भूल जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसी वस्तु के द्वारा अनुमान करते हैं जो न कार्य होने के कारण से हो यथा-कोई आम को फलते देख यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी फलते होंगे । २-दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्य-कारण सम्बन्ध से भिन्न हो । जैसे बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुँच सकता ।

सामान्यभविष्यत [संज्ञा पु.] (सं.) भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है ।

सामान्यभूत [संज्ञा पु.] (सं.) भूतक्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है पर भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती । जैसे गया, खाया ।

सामान्य-मुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साधारण मुद्रा या मुहर। कॉमन-सील।

सामान्य-मुहर [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'सामान्य-मुद्रा'।

सामान्यलक्षणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देख कर उसी के अनुसार उस जाति के अन्य सब पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है।

सामान्य-वचन [संज्ञा पु.] (सं.) सामान्य या साधारण वाक्य।

सामान्य-वर्तमान [संज्ञा पु.](सं.) वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना सूचित होता है। यथा पढ़ता है, खाता है।

सामान्य-विधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म। २-किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश अथवा राष्ट्र के निवासियों का आचरण अथवा व्यवहार प्रचलित होता है। *कॉमन-लॉ*

सामान्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य के अनुसार वह नायिका जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।

सामायिक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के मत से एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर समभाव रखकर एकांत में बैठकर आत्म-चिंतन किया जाता है। [वि.] (सं.) मायायुक्त मायासहित।

सामाश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) वह भवन जिसके पश्चिम दिशा में सड़क हो।

सामासिक [वि.] (सं.) समास से सम्बन्ध रखने वाला। समास का।

सामि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निंदा। शिकायत।

सामिग्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सामग्री'।

सामित्य [संज्ञा पु] (सं.) समिति का भाव या धर्म। [वि.](सं.) समिति का। समिति-संबंधी

सामिधेनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–एक प्रकार का ऋक् मंत्र। २–समिधा। ईंधन।

सामिधेन्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सामिधेनी'।

सामियाना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शामियाना'

सामिल [वि.] (हिं.) देखो 'शामिल'।

सामिष [वि.] (सं.) आमिषसहित। निरामिष का उल्टा।

सामिष-श्राद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वह श्राद्ध जिसमें मांस मछली का प्रयोग होता हो।

सामी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वामी'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शामी'।

सामीची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्तुति। प्रशंसा।

सामीप्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–समीप का भाव : निकटता। २–एक प्रकार की मुक्ति।

सामीर [संज्ञा पु.] (डि.) समीर। पवन।

सामीर्य [वि.] (सं.) समीर या हवा-सम्बन्धी। समीर का।

सामुझि* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'समझ'।

सामुदायिक [वि.](सं.) समुदाय का। [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार बालक के जन्म-समय के अनुसार बालक के जन्म-समय के नक्षत्र से आगे अठारह नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं।

सामुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १–समुद्र से निकला नमक २–समुद्रफेन। ३–समुद्र-पथ से अन्य देशों से व्यापार करने वाला व्यवसायी। ४–नारियल ५–देखो 'सामुद्रिक'। [वि.] (सं.) १–समुद्र से उत्पन्न या निकला हुआ। २-समुद्र-संबंधी। समुद्र का।

सामुद्रक [संज्ञा पु.](सं.) १–देखो 'सामुद्रिक'। २–देखो 'सामुद्र'। [वि.] (सं.) समुद्र-सम्बन्धी। समुद्र का।

सामुद्रनिष्कूट [संज्ञा पु.](सं.) १–एक प्राचीन जनपद। २–उसका निवासी।

सामुद्रमत्स्य [संज्ञा पु.](सं.) समुद्र में होने वाली बड़ी मछलियाँ।

सामुद्रस्थलक [संज्ञा पु.](सं.) समुद्र के आसपास का प्रदेश।

सामुद्राद्यचूर्ण [संज्ञा पु.](सं.) वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जो बहुत पाचक होता है।

सामुद्रिक [वि.] (सं.) समुद्र-संबधी। [संज्ञा पु] (सं.) १–वह विद्या जिसमें मनुष्य के शारीरिक लक्षण, विशेषतः हथेली की रेखाएँ देखकर शुभाशुभ फल बतलाये जाते हैं। २–इस शास्त्र का ज्ञाता।

सामुद्रिक-विमान [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसा हवाई जहाज जो जल पर से उड़ सकता है तथा जल पर उतर भी सकता है। इसमें पहिये की जगह नौकायें रहती हैं। *सीप्लेन*।

सामुद्रिक-विमान-अड्डा [संज्ञा पु.](हिं.) सामुद्रिक या जलीय हवाई अड्डा। *सी-प्लेन-बेस*।

सामुद्रिक-विमान-वाहक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जल-जहाज जो सामुद्रिक विमानों को ढोता है *सी-प्लेन-करियर*।

सामुद्रिक-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश या राष्ट्र के पास कितने युद्धपोत, जलीय जहाज आदि हैं इस दृष्टि से कूती जाने वाली शक्ति। *सी-पावर*।

सामुहाँ* [अव्य.] (हिं.) सामने। सम्मुख। [संज्ञा पु.] अग्रभाग। सामना।

सामुहें* [अव्य.] (हिं.) सामने। सम्मुख।

सामूहिक [वि.](सं.) समूह से संबंध रखने वाला। समूह का।

सामृद्ध्य [संज्ञा पु.](सं.) समृद्धि का भाव या धर्म

सामोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

सामोपनिषद् [संज्ञा पु] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

साम्नी-अनुष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) चौदह वर्णों वाला एक वैदिक छन्द।

साम्नी-गायत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बारह वर्णों वाला एक वैदिक छन्द।

साम्नी-जगती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाईस वर्णों का एक वैदिक छन्द।

साम्नीत्रिष्टुप [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक छन्द जिसमें २२ सम्पूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी-पंक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बीस सम्पूर्ण वर्ण होते हैं।

साम्नी-बृहती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अट्ठारह सम्पूर्ण वर्ण का एक वैदिक छन्द।

साम्मत्य [संज्ञा पु.] (सं.) सम्मति का भाव।

साम्मुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सायंकाल तक रहने वाली तिथि।

साम्य [संज्ञा पु.] (सं.) समानता।

साम्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साम्य। समानता।

साम्यवाद [संज्ञा पु.](सं.) वह सिद्धान्त जो यह निर्देश करता है कि सब मनुष्यों के समान अधिकार और कर्त्तव्य हैं और अमीर एवं गरीब का भेद संसार से उठ जाना चाहिए। समानतावाद।

साम्यवादी [संज्ञा पु.] (सं) वह जो साम्यवाद सिद्धांत को मानता हो।

साम्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सामान्य न्यायानुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष तथा समान भाव से किया जाने वाला व्यवहार। समदर्शिता-पूर्ण व्यवहार। *ईक्विटी*।

साम्या-मूलक [वि.] (हिं.) जिसमें साम्य अथवा समदर्शिता का पूरा पूरा ध्यान रखा गया हो। *ईक्वटेबुल*।

साम्यावस्था [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह अवस्था अथवा स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी तुली हुई हों कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई विकार उत्पन्न न कर सकें *ईक्विलिब्रिअम*।

साम्राज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह बड़ा राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट का शासन हो। सार्वभौम-राज्य। *एम्पायर*। २–किसी क्षेत्र अथवा कार्य में किसी का पूर्ण अधिकार। आधिपत्य।

साम्राज्यलक्ष्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तन्त्र के मतानुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

साम्राज्यवाद [संज्ञा पु.](सं.) वह वाद या सिद्धांत जिसमें साम्राज्य को बनाये रखने तथा उसको निरन्तर बढ़ाते रहने की अभिलाषा होती है। *ईम्परियलिज्म*।

साम्राज्यवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो साम्राज्य की स्थापना और उसकी विस्तार वृद्धि का पक्ष पाती हो। इम्पिरियलिस्ट।

साम्राणिकर्द्दम [संज्ञा पु.] (सं.) जवादि नामक कस्तूरी।

साम्राणिज [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा पारेवत।

साम्हने+ [अव्य.] (हि.) देखो 'सामने'।

साम्हर [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'शाकंबर'। २-देखो 'साँभर'।

सायं [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन का अन्तिम भाग। संध्या। शाम। २-बाण। तीर।

सायंकाल, सायङ्काल [संज्ञा पु.] (सं.) दिन का अन्तिम भाग। संध्याकाल। शाम। संध्या।

सायंकालीन, सायङ्कालीन [वि.] (सं.) सन्ध्या के के समय का। शाम का।

सायंगृह, सायङ्गृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो संध्या समय जहाँ पहुँचता हो वहीं घर बना लेता हो

सायंतन, सायन्तन, सायंतनी, सायन्तनी [वि.] (सं.) देखो 'सायंकालीन'।

सायंभव, सायम्भव [वि.] (सं.) संध्या का। शाम का।

सायंसंध्या, सायंसन्ध्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सायंकाल के समय की जाने वाली संध्या। २-सरस्वतीदेवी।

सायंसंध्या-देवता, सायंसन्ध्या-देवता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती जिसकी उपासना संध्या के समय की जाती है।

सायंस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) विज्ञान।

साय [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिन का अन्त। संध्याकाल। २-बाण। तीर।

सायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाण। तीर। २-खड्ग। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। ४-पाँच की संख्या।

सायकपुंखा, सायकपुङ्खा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरपुङ्खा। सरफोका।

सायका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुंजदह। लाई।

सायण [संज्ञा पु.] (सं.) ऋग्वेद के एक सुप्रसिद्ध भाष्यकार का नाम।

सायणवाद [संज्ञा पु.] (सं.) आचार्य सायण का मत या सिद्धांत।

सायणीय [वि.] (सं.) सायण-सम्बन्धी। सायण का

सायत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) देखो 'साइत'। +[अव्य.] (हि.) देखो 'शायद'।

सायन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सायण'। [वि.] (सं.) जिसमें अयन हो (ग्रह आदि)। [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की एक गति।

सायब [संज्ञा पु.] (डिं.) १-पति। स्वामी। २-ईश्वर।

सायबान [संज्ञा पु.] (फा.) मकान के आगे धूप से बचने के लिए लगाया हुआ टीन आदि का छाजन। बरामदा।

सायमाहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह आहुति जो संध्या के समय दी जाय।

सायर+ [संज्ञा पु.] (हि.) सागर। समुद्र। [संज्ञा पु.] (अ.) १-वह जमीन जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २-अतिरिक्त और फुटकर आय। [वि.] प्रकीर्णक। फुटकर। [संज्ञा पु.] (देश.) १-देखो 'हिंगा'। २-चौपायों का रक्षक एक देवता।

सायल [संज्ञा पु.] (अ.) १-प्रश्नकर्त्ता। २-याचना करने वाला। ३-भिखारी। फकीर। ४-प्रार्थना करने वाला। ५-उम्मीदवार। ६-न्यायालय में फरियाद या किसी प्रकार की अर्जी देने वाला प्रार्थी। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का धान।

सायवस [संज्ञा पु.] (सं.) वैदिककालीन एक ऋषि

साया [संज्ञा पु.] (फा.) १-छाया। छाँह। २-परछाईं। ३-जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। ४-असर। प्रभाव।

साये में रहना-शरण या संरक्षण में रहना। *साये से भागना*-बहुत दूर रहना। *साया पड़ना* संगत का असर होना। *साया डालना*-१-कृपा करना। २-प्रभाव डालना। [संज्ञा पु.] (अं. शेमीज) १-एक जनाना पहनावा जो घाघरे का सा होता है। इसे पाश्चात्य विचार या देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। २-पेटीकोट जो साड़ी के नीचे पहना जाता है।

सायाबंदी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) मुसलमानों में विवाह के अवसर पर मंडप बनाने की क्रिया

सायास [क्रि. वि] (सं.) प्रयत्न अथवा परिश्रमपूर्वक। मेहनत से।

सायाह्न [संज्ञा पु] (सं.) संध्याकाल। शाम।

सायी [संज्ञा पु.] (सं.) घुड़सवार। अश्वारोही।

सायुज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-योग। मिलन। २-एक प्रकार की मुक्ति।

सायुज्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सायुज्य का भाव या धर्म।

सायुज्यत्व [संज्ञा पु.] सायुज्यता।

सारंग, सारङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का मृग या हिरन। २-कोयल। ३-श्येन। बाज। ४-सूर्य। ५-सिंह। ६-हंस। ७-मयूर। मोर ८-चातक। ९-घोड़ा। १०-छाता। छत्र। ११-हाथी। १२-शंख। १३-कमल। १४-भौंरा भ्रमर। १५-ताल। सर। १६-आभूषण। गहना १७-स्वर्ण। सोना। १८-मधुमक्खी विशेष। १९-विष्णु भगवान का धनुष। २०-कपूर। २१-श्रीकृष्ण। २२-चन्द्रमा। २३-जल। २४-सागर। २५-बाण। तीर। २६-दीपक। २७-पपीहा। २८-शिव। शंकर। २९-साँप। ३०-चन्दन। ३१-भूमि। ३२-बाल। केश। ३३-शोभा। ३४-स्त्री। ३५-रात्रि। रात। ३६-दिन। ३७-तलवार। (डि.) ३८-दीप्ति। चमक ३९-कबूतर। ४०-एक वर्णवृत्त जिसमें चार तगण होते हैं। ४१-छप्पय छंद का एक भेद जिसमें ४५-गुरु, ६२ लघु कुल १०७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ४५ गुरु, ५८ लघु, कुल १०३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं। ४२-मृग हिरन। ४३-मेघ। बादल। ४४-हाथ। ४५-खंजनपक्षी। ४६-ग्रह। नक्षत्र। ४७-आकाश गगन। ४८-मेंढक। ४९-पक्षी। ५०-सारंगी ५१-ईश्वर। ५२-कामदेव। ५३-विद्युत। बिजली। ५४-पुष्प। फूल। ५५-काजल। ५६-वस्त्र। कपड़ा। ५७-मोती (डिं.)। ५८-कौआ वायस। ५९-कुच। स्तन। ६०-सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं। [वि.] (सं.) १-रँगा हुआ। रंगीन। सुन्दर। मनोहर। ३-सरस। रसयुक्त।

सारंगचर, सारङ्गचर [संज्ञा पु.] (सं.) काँच। शीशा।

सारंगनट, सारङ्गनट [संज्ञा पु.] (सं.) एक संकर राग।

सारंगनाथ, सारङ्गनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सारनाथ'।

सारंगपाणि, सारङ्गपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु

सारंगपानि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सारङ्गपाणि'

सारंगलोचना, सारङ्गलोचना [वि.] (सं.) मृगनयनी। स्त्री।

सारंगा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की नाव २-एक रागिनी का नाम।

सारंगिक, सारङ्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चिड़ीमार। बहेलिया। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, यगण और सगण होते हैं।

सारंगिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'सारङ्गिक' २-देखो 'सारङ्गी'।

सारंगिया [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो सारंगी बजाता हो।

सारंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक अत्यन्त प्रसिद्ध बाजा जिसमें लगे हुये तार कमानी से रेतकर बजाये जाते हैं।

सारंड, सारण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) साँप का अण्डा

सार [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी पदार्थ का मुख्य या मूलभाग। तत्व। सत्त। २-तात्पर्य। निष्कर्ष। ३-अर्क। रस। ४-शारीरस्थ आठ स्थिर पदार्थ-त्वक्, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र तथा सत्व (मन)। (चरक)। ५-जल। ६-गूदा। मग्ज। ७-वह जमीन जिस पर दो फसलें होती हों। ८-दूध की मलाई। ९-लकड़ी का हीर। १०-परिणाम। नतीजा। ११-धन। १२-बल। शक्ति। १३-मज्जा। मींगी। १४-जुआ खेलने का पासा। १५-तलवार (डिं.)। १६-अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद जिसमें सोलहवीं मात्रा पर विराम और अंत में दो गुरु होते हैं। १७-'ग्वाल' नामक वर्णवृत्त। १८-एक अर्थालङ्कार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष दिखा

जाता है। १६-पतला शरबत। २०-चिरौंजी का पेड़। २१-अनार का पेड़। २२-क्वाथ। काढ़ा। २३-मुंग। [वि.] (सं.) १-उत्तम। श्रेष्ठ। २-दृढ़। मजबूत। ३-न्याय। *[संज्ञा पु.] (हिं.) १-सारिका। मैना। २-पालन। पोषण। ३-शय्या। पलङ्ग। ४-संभाल। हिफाजत। ५-पत्नी का भाई। साला।

सारखदिर [संज्ञा पु.](सं.)दुर्गन्धखदिर। बबुरी

सारखा [वि.] (हि.) सदृश। समान'।

सारगंध, सारगन्ध; सारगंधि, सारगन्धि [संज्ञा पु] (सं.) चन्दन।

सारगर्भित [वि.] (सं.) जिसमें सार या तत्व हो। तत्वपूर्ण।

सार-ग्राहिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सारग्राही का भाव

सारग्राही [वि.](सं.)[स्त्री. सारग्राहिणी] वस्तुओं या विषयों का तत्व या सार ग्रहण करने वाला।

सारघ [संज्ञा पु.] (सं.) शहद। मधु।

सारजंट [संज्ञा पु.] (अं.) एक पुलिस अधिकारी

सारज [संज्ञा पु.] (सं.) मक्खन। नवनीत।

सारजासव [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का आसव (वैद्यक)।

सारटिफिकेट [संज्ञा पु.](अं.) प्रशंसापत्र। सनद

सारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धद्रव्य विशेष। २-अमड़ा। ३-अतीसार। ४-भद्रबला। ५-पारा आदि रसों का संस्कार। ६-रावण के एक मन्त्री का नाम। ७-आँवला। ८-गन्धप्रसारिणी। ९-मक्खन। नवनीत। १०-गन्ध। महक।

सारणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पारे आदि रसों का संस्कार विशेष।

सारणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गन्धप्रसारणी। २-गदहपूरना। ३-छोटी नदी।

सारणिक [संज्ञा पु.] (सं.) पथिक। राहगीर।

सारणिकघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) डाकू। लुटेरा।

सारणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-छोटी नदी या नाला। २-एक पृष्ठ में अलग-अलग स्तम्भों अथवा खानों के रूप में दिये हुए शब्दों, पदों अंकों आदि का वह विन्यास जिससे उन शब्दों, पदों, अंकों आदि के पारस्परिक संबंध या कुछ विशिष्ट तथ्य सूचित करते होते हैं तथा जिसका उपयोग, अध्ययन, गणना आदि के लिए होता है। टेबुल।

सारतोरा [संज्ञा पु] (सं.) एक पर्वत का नाम।

सारतंदुल, सारतण्डुल [संज्ञा पु.] (सं) चावल

सारतरु [संज्ञा पु.] (सं) १-केले का पेड़। २-खैर का पेड़।

सारता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सार का भाव या धर्म

सारतैल [संज्ञा पु.] (सं) वैद्यक में एक तेल जिसका व्यवहार क्षुद्र रोगों में होता है।

सारथि [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ चलाने वाला। सूत। २-समुद्र। सागर।

सारथित्व [संज्ञा पु.] (सं.) सारथी का पद, काम भाव या धर्म।

सारथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) रथ, गाड़ी आदि का चलाना या हाँकना।

सारद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सरस्वती। शारदा। [वि.] (हिं.) शारद-सम्बन्धी। शारद। [संज्ञा पु.] स्थलपद्म। थल-कमल। [वि.] (सं) [स्त्री. प्र.] सार देनेवाली। जो सार दे।

सारदातीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सारदारु [संज्ञा पु.] (सं.) वह लकड़ी जिसमें सार भाग अधिक हो।

सारदासुंदरी, सारदासुन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

सारदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपीपल।
[वि.] (हिं.) देखो 'शारदीय'।

सारदूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शार्दूल'।

सारद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-खैर का पेड़। २-ऐसा वृक्ष जिसकी लकड़ी में सारभाग अधिक हो।

सारधाता [संज्ञा पु.] (सं.) ज्ञान या बोध उत्पन्न करने वाला।

सारधान्य [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम अथवा बढ़िया धान या चावल।

सारधू [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पुत्री। कन्या।

सारना [क्रि. स.] (हिं.) १-पूर्ण या समाप्त करना २-साधना। बनाना। ३-सुन्दर या सुशोभित करना। ४-सँभालना। ५-आँखों में सुरमा या अंजन आदि लगाना। ६-(अस्त्र.शस्त्र) चलाना। प्रहार करना।

सारनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) बनारस से चार मील उत्तर-पश्चिम में एक स्थान जहाँ पर शिव का मन्दिर तथा एक बहुत बड़ा बौद्ध स्तूप है।

सारपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्किर जाति का एक पक्षी। २-वह पत्त जिसमें सार अर्थात् खाद हो।

सारपाक [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार एक विषैला फल।

सारपाद [संज्ञा पु.] (सं.) धन्वंगवृक्ष।

सारफल [संज्ञा पु.] (सं.) जँबीरीनीबू।

सारबंधका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मेथी।

सारभांड, सारभाण्ड [संज्ञा पु.] (सं) १-व्यापारिक बहुमुल्य वस्तु। २-कस्तूरी। ३-खजाना। ४-असली माल।

सारभाटा [संज्ञा पु.] (हि.) समुद्र में ज्वार आने के बाद उसके पानी का फिर पीछे हटना।

सारभुक् [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

सारभृत [वि.] (सं.) सार ग्रहण करने वाला।

सारमंडूक, सारमण्डूक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

सारमहत् [वि.] (सं.) बहुत कीमती।

सारमिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेद। श्रुति।

सारमूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवदाली। बंदाल

सारमेय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) [स्त्री. सारमेयी] १-सरमा की सन्तान। २-कुत्ता। ३-अक्रूर के भाई का नाम।

सारमेयादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ते का भोजन २-एक नरक का नाम।

सारलोह [संज्ञा पु.] (सं.) इस्पात। लोहा।

सारल्य [संज्ञा पु] (सं.) सरलता।

सारवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण होते हैं।

सारवत्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.)सार ग्रहण करने का भाव

सारवर्ग [संज्ञा पु.](सं.) वे वृक्ष अथवा वनस्पतियाँ आदि जिनमें दूध निकलता है। क्षार-वृक्ष।

सारवर्जित [वि.] (सं.) साररहित। निःसार।

सारवाला [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार की जङ्गली घास।

सारवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) धन्वङ्गवृक्ष।

सारशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद खैर का पेड़।

सारस [संज्ञा पु.](सं)[स्त्री. सारसी] १-एक प्रकार का सुन्दर बड़ा पक्षी। २-हंस। ३-चन्द्रमा। ४-कमल। एक कटिभूषण जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं। ५-झील का जल। ६-छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ३४ गुरु, ८४ लघु, कुल ११८ वर्ण अथवा १५१ मात्राएं या ३४ गुरु, ८० लघु, कुल ११४ वर्ण अथवा १४८ मात्राएँ होती हैं।

सारसक [संज्ञा पु.] (सं.) सारस।

सारसन [संज्ञा पु.](सं.) १-करधनी (गहना)। २-तलवार की पेटी। कमरबन्ध।

सारसा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सालसा'।

सारसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक आर्याछन्द का एक भेद जिसमें पांच गुरु तथा ४८ लघु मात्राएँ होती हैं। २-सारस पक्षी की मादा।

सारसुता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यमुना।

सारसुती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सरस्वती'।

सारसैंधव [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधा नमक।

सारस्य [वि.] (सं.) बहुत रस वाला। [संज्ञा पु] (सं.) रसदार होने का भाव।

सारस्वत [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो पंजाब में सरस्वती नदी के तट पर था। २-इस प्रदेश के प्राचीन निवासी। ३-इस देश में रहने वाले ब्राह्मण।
[वि.](सं.)१-सरस्वती-सम्बन्धी। २-विद्वानों का। ३-सारस्वत देश का।

सारस्वत-व्रत [संज्ञा पु.] (सं) सरस्वतीदेवी के

उद्देश्य से किया जाने वाला एक व्रत।

सारस्वतीय [वि.] (सं.) सरस्वती-संबंधी। सरस्वती का।

सारस्वतोत्सव [संज्ञा पु] (सं.) सरस्वतीदेवी के पूजन का उत्सव।

सारस्वत्य [वि.] (सं.) देखो 'सारस्वतीय'।

सारांभस, साराम्भस [संज्ञा पु.] (सं.) नीबू का रस।

सारांश [संज्ञा पु.] (सं.) १-संक्षेप। सार। २-तात्पर्य। निष्कर्ष। ३-परिणाम। नतीजा।

सारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काली निसोथ। २-दूब। ३-थूहर। ४-शातला। ५-केला। ६-तालिसपत्र। [संज्ञा पु.] वह अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी वस्तु से बढ़कर कही जाती है ❀[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साला'। [वि] (हिं.) [स्त्री. सारी] समस्त। संपूर्ण।

साराम्ल [संज्ञा पु.] (सं) १-जँबीरी नीबू। २-धामिन।

साराल [संज्ञा पु.] (सं.) तिल।

सारावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारावली नामक छन्द।

सारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौपड़ खेलने वाला। २-जूआ खेलने का पासा। ३-गोटी।

सारिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सारिका'।

सारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैना नामक पक्षी।

सारिकामुख [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का कीड़ा।

सारिखा+ [वि.] (हिं.) देखो 'सरीखा'।

सारिणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-महाबला। २-कपास। ३-धमासा। ४-गन्धप्रसारिणी। ५-रक्त पुनर्नवा। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सारणी'।

सारीफलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-चौपड़ की गोटी २-चौपड़ का पासा।

सारिव [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का धन।

सारिवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनन्तमूल। २-काला अनन्तमूल।

सारिवाद्वय [संज्ञा पु.](सं.) अनंतमूल और श्यामलता।

सारिष्ट [वि.] (सं.) १-सब से सुन्दर। २-सब से श्रेष्ठ।

सारिसृक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन मंत्रद्रष्टा ऋषि।

सारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सारिका पक्षी। मैना। २-पासा। गोटी। ३-थूहर। [संज्ञा स्त्री.](हि.) देखो 'साड़ी' [संज्ञा पु.] (हिं.) अनुकरण करने वाला।

सारु❀ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सार'।

सारूप [संज्ञा पु] (सं.) समान रूप होने का भाव

सारूप्य [संज्ञा पु.](सं.) १-वह मुक्ति जिसमें भक्त या उपासक अपने उपास्यदेव का रूप प्राप्त कर लेता है। [illegible]। सरूपता।

सारूप्यता [संज्ञा स्त्री](सं.) सारूप्य का भाव या धर्म।

सारो+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का धान। ❀[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सारिका। मैना।

सारोदक [संज्ञा पु.] (सं.) अनन्तमूल का रस।

सारोपा [संज्ञा स्त्री.](सं.) साहित्य में वह लक्षणा जिसमें एक पदार्थ का दूसरे में आरोप होता है

सारोष्ट्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक विष।

सारौं❀ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सारिका। मैना।

सार्गल [वि.] (सं.) रोका हुआ। अवरुद्ध।

सार्गिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सृष्टि करने में समर्थ हो।

सार्ज [संज्ञा पु.] (सं.) राल। धूना।

सार्जनाक्षि [संज्ञा पु.](सं.) एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

सार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्तुओं का झुंड। २-वणिकों का वर्ग। ३-समूह। झुंड। ४-व्यापारी। ५-व्यापारिक माल। [वि.] (सं.) अर्थसहित।

सार्थक [वि.] (सं.) १-अर्थसहित। २-सफल। पूर्ण मनोरथ। उपकारी। गुणकारी।

सार्थकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सार्थक होने का भाव। २-सिद्धि। सफलता।

सार्थपति [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापारी। वणिक।

सार्थवत् [वि.] (सं.) १-अर्थयुक्त। २-यथार्थ। ठीक।

सार्थवाह [संज्ञा पु.] (सं.) वह व्यापारी जो अपना माल बेचने दूर तक जाता हो।

सार्थातिवाह्य [संज्ञा पु.] (सं.) माल का चालान

सार्थिक [वि.] (सं.) १-सार्थक। २-सफल।

सार्थी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सारथी'।

सार्दूल [संज्ञा पु.] (हि.) शार्दूल। सिंह।

सार्द्ध [वि.] (सं.) १-ड्यौढ़ा। २-सहित।

सार्द्र [वि.] (सं.) भीगा हुआ। गीला।

सार्प्य [संज्ञा पु.] (सं.) अश्लेषानक्षत्र। [वि.] (सं.) सर्प-सम्बन्धी। साँप का।

सार्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्ध। २-जिन। [वि.] (सं.) सबसे सम्बन्ध रखने वाला।

सार्वकालिक [वि.] (सं.) जो सब कालों में होता हो।

सार्वगुण [वि.] (सं.) सर्वगुण-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) खारी नमक।

सार्वजनिक [वि.] (सं.) सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला। सर्वसाधारण-सम्बन्धी।

सार्वजनिक-अधिसूचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वसाधारण को सूचित करने के लिये निकाली गई विज्ञप्ति। जनसंज्ञप्ति। पब्लिकनोटिफिकेशन

सार्वजनिक-अभियाचना [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'सरकारी-अभियाचना'।

सार्वजनिक-अवकाश [संज्ञा पु.] (सं.) वह अवकाश या छुट्टी जो सर्वसाधारण के लिये हो। आम छुट्टी। पब्लिक-हालीडे।

सार्वजनिक-आदेश [संज्ञा पु.](सं.) लोकव्यवस्था। लोकशान्ति। पब्लिक-ऑर्डर।

सार्वजनिक-आलोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सर्वसाधारण या जनता द्वारा की जाने वाली आलोचना अथवा नुक्ताचीनी। पब्लिक-क्रिटिसिज्म्।

सार्वजनिक-कल्याण [संज्ञा पु.] (सं.) वह कार्य जिसमें सर्वसाधारण का हित हो। लोकहित। कॉमन-गुड।

सार्वजनिक-कार्यकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वसाधारण की सेवा के विचार से कार्य करने वाला जनसेवक। पब्लिक-मैन।

सार्वजनिक-व्यवस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सार्वजनिक-आदेश'।

सार्वजनिक-संस्था [संज्ञा स्त्री.](सं.) सर्वसाधारण की भलाई के लिये जनता के धन से चलने वाली संस्था। पब्लिक-इंस्टिट्यूशन।

सार्वजनिक-स्वार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसमें सर्वसाधारण के हित की बात हो। पब्लिक इंटरेस्ट।

सार्वजनीन [वि.] (सं.) सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला। सर्वसाधारण-सम्बन्धी।

सार्वजन्य [वि.] (सं.) १-सब लोगों से संबंध रखने वाला। २-जिससे सब लोगों को लाभ हो।

सार्वज्ञ्य [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वज्ञता।

सार्वत्रिक [वि.] (सं.) सब स्थानों में होने वाला।

सार्वदेशिक [वि] (सं.) १-सब देशों से सम्बन्ध रखने वाला। २-सब देशों में होने वाला।

सार्वधातुक [वि.] (सं.) सब धातुओं में व्यवहृत होने वाला।

सार्वभौतिक [वि.] (सं) सब भूतों या तत्वों से संबंध रखने अथवा उनमें होने वाला।

सार्वभौम [संज्ञा पु.] (सं.) १-चक्रवर्ती राजा। २-हाथी। [वि.] समस्त पृथ्वी अथवा उसके सब देशों से सम्बन्ध रखने या उनमें होने वाला।

सार्वभौमिक [वि.] (सं.) देखो 'सार्वभौम'।

सार्वराष्ट्रीय [वि.] (सं.) सब या अनेक राष्ट्रों से सम्बन्ध रखने वाला। इन्टरनैशनल।

सार्वरुह [संज्ञा पु.] (सं.) शोथ।

सार्ववैदिक [वि.] (सं.) सब वेदों से सम्बन्ध रखने वाला।

सार्विक [वि.] (सं.) १-सर्व-सम्बन्धी। सब का। २-सब जगह समान रूप से होने या पाया जाने वाला। युनिवर्सल।

सार्वलौकिक [वि.] (सं.) सर्व संसार में व्याप्त।

सार्षप [संज्ञा पु.] (सं.) १-सरसों। २-सरसों का तेल। ३-सरसों का साग। [वि.] सरसों-सम्बन्धी। सरसों का।

सार्ष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सार्ष्टि'।

सार्ष्टि [संज्ञा-स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मुक्ति।

सालंक, सालङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में एक राग।

साल [संज्ञा पु.] (फा.) वर्ष। बरस। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छेद। सुराख। २-लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जाने वाला चौकोर छेद। ३-घाव। क्षत। ४-पीड़ा। वेदना। ५-देखो 'शाला'। + [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शालि' और 'शाल'। [संज्ञा पु] (सं.) १-जड़। मूल २-राल। धूना। ३-वृक्ष। ४-एक प्रकार की मछली। ५-सियार। ६-किला। कोट।

साल-अमोनिया [संज्ञा पु.] (अं.) नौसादर।

सालई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सलई'।

सालक [वि.] (हिं.) सालने वाला। कष्ट देने वाला।

सालकि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि।

सालगा+ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सलई'।

सालगिरह [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर्ष गिरह।

सालग्राम [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शालग्राम'।

सालग्रामी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंडकनदी।

सालज, सालिजक [संज्ञा पु.] (सं.) राल। धूना।

सालद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) सागौन।

सालन [संज्ञा पु.](हिं.) पकी हुई मसालेदार तरकारी [संज्ञा पु.] (सं.) सालवृक्ष की राल।

सालना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दुख मिलना। कसकना। २-चुभना। [क्रि. स.] (हिं.) १-दुःख पहुँचाना। २-चुभाना। ३-छेद करना। ४-लकड़ी आदि में छेद करके दूसरी लकड़ी का सिरा उसमें बैठाना।

सालनिर्यास [संज्ञा पु.] (सं.) सालवृक्ष की राल।

सालपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालपर्णी। सरविन

सालपान [संज्ञा पु.] (हिं.) एक क्षुप जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

सालपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थल-कमल। २-पुंडेरी।

सालभंजिका, सालभञ्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गुड़िया। पुतली।

सालममिश्री [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक पौधा जिसका कंद कसेरू के समान होता है, इसका प्रयोग पुष्टिकर औषधियों में होता है। सुधामूली।

सालर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सलई'।

सालरस [संज्ञा पु.] (सं.) राल। धूना।

सालशृंग, सालशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) दीवार के आगे का हिस्सा।

सालस [संज्ञा पु.] (अं.) दो पक्षों के झगड़े निपटाने वाला पंच।

सालसा [संज्ञा पु.] (अं.) खून साफ करने का एक प्रकार का काढ़ा।

सालहज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सलहज'।

साला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अपनी पत्नी का भाई २-इस सम्बन्ध को सूचित करने वाली एक गाली। *३-मैना। सारिका। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शाला'।

सालाना [वि.] (फा.) वार्षिक।

सालार [संज्ञा पु.](फा.) १-मार्गदर्शक। २-प्रधान नेता। अगुआ।

सालावृक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुत्ता। २-गीदड़। ३-भेड़िया।

सालि [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शालि'।

सालिग्राम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शालग्राम'।

सालिबमिश्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सालममिश्री'।

सालिम [संज्ञा पु.] (अं.) पूर्ण। पूरा। सम्पूर्ण।

सालियाना [वि.] (हिं.) देखो 'सालाना'।

सालिस [वि.](अं.) तीसरा। तृतीय। [संज्ञा पु.] (अं.) दो पक्षों में समझौता करने वाला तीसरा व्यक्ति। पंच।

सालिसनामा [संज्ञा पु.] देखो 'पंचनामा'।

सालिसिटर [संज्ञा पु.](अं.) एक प्रकार का वकील जो हाईकोर्टों में होने वाले मुकदमे लेता और उनके कागज-पत्र तैयार करके बैरिस्टर को देता है। यह हाईकोर्टों में बहस नहीं कर सकते पर और अदालतों में इन्हें बहस करने का पूर्ण अधिकार है।

सालिसी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दूसरों का झगड़ा निपटारा। पंचायत।

साली [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-वह भूमि जो सालाना देन के हिसाब से ली जाती है। २-खेती के औजार की सुधराई के लिए बढ़ई को दी जाने वाली सालाना उजरत। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पत्नी की बहन। [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'शालि

सालु* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईर्ष्या। २-कष्ट।

सालू [संज्ञा पु.] (देश.) १-एक प्रकार का लाल कपड़ा जिसका उपयोग मांगलिक कार्यों में होता है। २-सारी।

सालेया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौंफ।

सालै-गुग्गुल [संज्ञा पु.] (हिं.) गुग्गुल का गोंद या राल।

सालोक्य [संज्ञा पु] (सं.) १-दूसरे के साथ एक ही लोक या स्थान में निवास। २-वह मुक्ति जिसमें जीव को भगवान का लोक प्राप्त होता है।

साल्मली [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शाल्मली'।

साल्व [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शाल्व'।

साल्लेय [वि.] (सं.) साल्व या शाल्व-सम्बंधी [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश। २-उसका निवासी।

सावँकरन [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद रङ्ग का घोड़ा जिसके दोनों कान काले होते हैं।

सावंत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सामंत'।

साव [संज्ञा पु.] (डिं.) बालक। पुत्र। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साहु'।

सावक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'शावक'। २ देखो 'श्रावक'।

सावकाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अवकाश। छुट्टी २-मौका। अवसर। [क्रि. वि.](सं.) फुर्सत या सुभीते से।

सावगी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सरावगी'।

सावचेत* [वि.](हिं.) सतर्क। सावधान। होशियार।

सावचेती [संज्ञा पु.] (हिं.) सावधानी। सतर्कता।

सावज [संज्ञा पु.] (?) वह जंगली पशु जिसका शिकार किया जाता है। शिकार।

सावणिक [संज्ञा पु.] (डि.) सावन या श्रावण का महीना।

सावत [वि.] (हिं.) १-सौतिया डाह। २-डाह। ईर्ष्या।

सावद्य [वि.] (सं.) निंदनीय। आपत्तिजनक। [संज्ञा पु.] (सं.) तीन प्रकार की योग-शक्तियों में से एक।

सावधान [वि.] (सं.) सचेत। सतर्क। होशियार

सावधानता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सावधान या सतर्क रहने की क्रिया या भाव। होशियारी। सतर्कता।

सावधानी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सावधानता। सतर्कता।

सावधि [वि.] (सं.) जिसमें अथवा जिसकी कुछ अवधि हो। अवधियुक्त।

सावधि-आधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गिरवी जिससे छुड़ा लेने की अवधि हो।

सावन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आषाढ़ के बाद का महीना। श्रावण। २-इस महीने में गाया जाने वाला एक गीत। ३-कजली नामक गीत [संज्ञा पु.](सं.) १-यज्ञ की समाप्ति। २-यजमान। ३-वरुण। ४-पूरे एक दिन और एक रात का समय।

सावनी [वि.] (हिं.) सावन-सम्बन्धी। सावन का। [संज्ञा पु.] १-भादों में कटने वाला एक प्रकार का धान। २-सावन भादों में बोया जाने वाला तम्बाकू। ३-एक तरह का फूल। [संज्ञा स्त्री.] १-वह बायन जो श्रावण मास में वर-पक्ष से कन्या के यहाँ भेजा जाता है। २-देखो 'श्रावणी'। ३-सावन में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत। ४-कजली नामक गीत।

सावयव [वि.] (सं.) अवयवों अथवा अङ्गों या भागों से बना हुआ।

सावर [संज्ञा पु] (हि.) १-शिवकृत एक तन्त्र का नाम । २-एक प्रकार का लोहे का लम्बा औजार । ३-एक प्रकार का हिरन । [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोध्र का पेड़ । २-अपराध । ३-पाप ४-मृग विशेष ।

सावरक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद लोध ।

सावरणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह बुहारी जो जैन यति उठाये फिरते हैं ।

सावरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विषरहित जौंक ।

सावर्ण [वि.] (सं.) सवर्ण-सम्बन्धी ।
[संज्ञा पु.] देखो 'सावर्णि' ।

सावर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सावर्णि' ।

सावर्णलक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) चमड़ा ।

सावर्णि [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य के पुत्र जो आठवें मनु थे । २-एक मन्वन्तर । ३-एक गोत्र ।

सावर्ण्य [संज्ञा पु] (सं.) १-रङ्ग की समानता । २-श्रेणी अथवा जाति की एकरूपता । ३-सावर्णिमनु का मन्वन्तर ।

सावलेप [वि.] (सं.) अभिमानी । घमंडी ।

सावशेष [वि.] (सं.) १-जिसमें कुछ शेष हो । २-अपूर्ण । अधूरा ।

सावष्टंभ, सावष्टम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) वह मकान जिसके उत्तर-दक्षिण दिशा में सड़क हो । [वि.] १-दृढ़ । मजबूत । २-आत्मनिर्भर

सावाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साँवाँ' ।

सावित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य । २-शिव । ३-वसु । ४-ब्राह्मण । ५-सूर्य के पुत्र । ६-कर्ण । ७-गर्भ । ८-यज्ञोपवीत । ९-उपनयन संस्कार १०-एक प्रकार का अस्त्र ।

सावित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गायत्री । २-सरस्वती । ३-उपनयन के समय होने वाला एक संस्कार । ४-सत्यवान की पत्नी, जो अपने सतीत्व के लिये परम प्रसिद्ध है । ५-ब्रह्मा की की पत्नी । ६-धर्म की पत्नी का नाम । ७-कश्यप की पत्नी । ८-अष्टावक्र की कन्या । ९-यमुना नदी । १०-सरस्वती नदी । ११-प्लक्षद्वीप की एक नदी । १२-राजा भोज की पत्नी । १३-सधवा । सुहागिन । १४-आँवला

सावित्रीतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सावित्रीव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) पति की दीर्घायु की कामना से किया जाने वाला एक व्रत ।

सावित्रीसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञोपवीत ।

साशिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम । २-ऋषिपुत्र ।

साश्चर्य [वि.] (सं.) १-अद्भुत । विलक्षण । २-२-आश्चर्य चकित ।

साश्रु [क्रि. वि.] (सं.) आँखों में आँसू भरकर । [वि.] जिसमें आँसू भरे हों । अश्रुयुक्त ।

साश्रुधी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सास ।

साश्वत [वि.] देखो 'शाश्वत' ।

साष्टांग, साष्टाङ्ग [क्रि. वि.] (सं.) आठों अङ्गों से

साष्टांग-प्रणाम, साष्टाङ्ग-प्रणाम [संज्ञा पु](सं.) सिर, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वाचा तथा मन इन आठों से भूमि पर लेटकर किया जाने वाला प्रणाम । *साष्टांग प्रणाम करना*-दूर ही रहना (व्यंग्य) ।

साष्टांग-योग, साष्टाङ्ग-योग [संज्ञा पु.] (सं) वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि ये आठों अङ्ग हों ।

साष्टी [संज्ञा पु.] (देश.) एक टापू जो बम्बई राज्य के थाना जिले में है ।

सास [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पति या पत्नी की माता

सासण [संज्ञा पु.] (डि.) देखो 'शासन' ।

सासत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साँसत' ।

सासन [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शासन' ।

सासनलेट [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का जालीदार सफेद कपड़ा ।

सासना※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शासन' ।

सासरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ससुराल' ।

सासा※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सन्देह । शक । २-साँस । श्वास ।

सासु [वि.] (सं.) प्राणयुक्त । जीवित ।
※[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सास' ।

सासुर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ससुर । २-ससुराल

सास्ना [संज्ञा स्त्री.] (स.) गौओं आदि का गलकम्बल ।

सास्मित [संज्ञा पु.] (सं.) शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जाने वाली भावना ।

साह [संज्ञा पु.] (हिं.) १-साधु । भला आदमी । २-साहूकार । ३-धनी । सेठ । ४-लकड़ी या पत्थर का लम्बा टुकड़ा जो दरवाजे की चौखट में दोनों ओर लगा रहता है । ५-देखो 'शाह'

साहचर्य [संज्ञा पु] (सं.) १-सहचारता । साथ रहने का भाव । २-सङ्ग । साथ ।

साहजिक [वि.] (सं.) १-सहज बुद्धि अथवा स्वभाव से होने वाला । २-स्वाभाविक ।

साहजिक-धन [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो पारितोषिक, वेतन, विजय आदि में मिला हो ।

साहना+ [क्रि. अ.] (हिं.) भैंसों को दुहाना ।

साहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सेना । फौज । २-साथी । सङ्गी । ३-परिषद् । [संज्ञा पु.] एक प्रकार के राजकर्मचारी जो मध्यकालीन भारत में होते हैं ।

साहब [संज्ञापु.] (अ.) [स्त्री. साहबा] १-प्रभू । स्वामी । २-ईश्वर । ३-मित्र । साथी । ४-एक सम्मानसूचक शब्द । महाशय । ५-गोरी जाति का व्यक्ति । गोरा ।

साहबजादा [संज्ञा पु.] (अ., फा.) [स्त्री. साहबजादी] १-भले आदमी का लड़का । २-पुत्र । बेटा ।

साहबसलामत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आपस में मिलने के समय होने वाला अभिवादन । बन्दगी । सलाम । २-परस्पर अभिवादन का सम्बन्ध । मेल-जोल ।

साहबी [वि.] (अ.) साहब का । साहब-सम्बन्धी । [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-साहब होने का भाव २-प्रभुता । मालिकपन । ३-बड़ाई । बड़प्पन ।

साहबुलल [संज्ञा पु.] (अ., फा.) एक प्रकार का बुलबुल ।

साहस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मानसिक दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने में प्रवृत्त करती है । हिम्मत । २-बलपूर्वक दूसरे का धन लेना । लूटना । ३-कोई बुरा काम ।

साहसिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पराक्रमी । साहस करने वाला । २-डाकू । ३-चोर । ४-मिथ्यावादी । [वि.] १-निडर । निर्भीक । २-हठीला ।

साहसिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्भीकता ।

साहसी [वि.] (सं.) साहस या हिम्मत रखने वाला । दिलेर ।

साहस्र [वि.] (सं.) सहस्र-सम्बन्धी । हजार का ।

साहस्रवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) कस्तूरी ।

साहस्रिक [वि.] (सं.) सहस्र सम्बन्धी । हजार अ [संज्ञा पु.] (सं.) एक सहस्र भागों में से एक

साहस्री [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) किसी सन् या संवत् के हर एक हजार वर्षों का समूह । सहस्राब्दी

साहा [संज्ञा पु.] (हिं.) विवाह आदि के लिए शुभलग्न ।

साहाय्य [संज्ञा पु.] (सं.) सहायता । मदद ।

साहि※ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-राजा । २-देखो 'साहु'

साहिती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साहित्य' ।

साहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहित या साथ होने का भाव । एक साथ होना रहना या मिलना २-किसी भाषा या देश के उन समस्त (गद्य तथा पद्य) ग्रंथों, लेखों आदि का समूह अथवा सम्मिलित राशि, जिनमें स्थायी उच्च और गूढ़ विषयों का सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो । वाङ्मय । लिटरेचर । ३-वे सभी लेख ग्रंथ, आदि जिनका सौंदर्य, गुण रूप अथवा भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता है । ४-किसी विशेष कवि अथवा लेखक से सम्बन्ध रखने वाले समस्त ग्रंथों तथा लेखों आदि का समूह । ५-किसी विषय अथवा वस्तु से सम्बन्ध रखने वाली समस्त बातों का विस्तृत विवरण जो प्रायः उसके विज्ञापन के रूप में बँटता है । लिटरेचर । ६-गद्य एवं पद्य की शैली लेखों और कार्यों के गुण-दोष, भेद- सौन्दर्य या नायिका-भेद तथा अलंका

सम्बन्धित ग्रंथों का समूह ।

साहित्यकार [संज्ञा पु.](सं.) वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो ।

साहित्यिक [वि.] (सं.) साहित्य-सम्बन्धी । [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो (अशुद्ध प्रयोग) ।

साहिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साहनी' ।

साहिब [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साहब' ।

साहिबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साहबी' ।

साहियाँ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साँई' ।

साहिली [संज्ञा स्त्री.](अं.) एक प्रकार की बुलबुल

साही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रसिद्ध चौपाया जिसके शरीर पर लंबे काँटे होते हैं ।

साहु [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सज्जन । २-सेठ ।

साहुल [संज्ञा पु.](फा.) एक प्रकार का यंत्र जिससे दीवार की सीध नापी जाती है ।

साहू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साहु' ।

साहूकार [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ा महाजन या व्यापारी । कोठीवाल ।

साहूकारा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-महाजनी कारबार । २-वह स्थान या बाजार जहाँ ऐसा कारबार होता है ।

साहूकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साहूकार होने का भाव ।

साहेब [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साहब' ।

साहैं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भुजदंड । बाजू । [अव्य.] (हिं.) सामने । सम्मुख ।

सिंउ* [प्रत्य.] (हिं.) देखो 'स्यों' ।

सिंकना [क्रि अ.] (हिं.) सिकना । सेंका जाना ।

सिंकोना [संज्ञा पु.] (अं.) कुनैन का पेड़ ।

सिंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सींग' ।

सिंगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सिंगड़ी] एक प्रकार का बारूद रखने का बरतन जो सींग का बना होता है ।

सिंगरफ [संज्ञा पु.] (फा.) ईंगुर ।

सिंगरफी [वि.](फा) ईंगुर का या ईंगुर से बना

सिंगरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली

सिंगरौर [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रयाग के पास का एक स्थान जो शृङ्गवेरपुर माना जाता है जो निषाद राज गुह की राजधानी थी ।

सिंगल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली [संज्ञा पु.] देखो 'सिगनल' ।

सिंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) तुरही नामक बाजा । रण-सिंगा ।

सिंगार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सजावट । सज्जा । बनाव । २-शोभा । ३-शृङ्गार-रस । *[संज्ञा पु.] देखो 'हरसिंगार' ।

सिंगार-दान [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का छोटा सन्दूक जिसमें सीसा, कंघी आदि रखीजातीं हैं

सिंगारना [क्रि. स.] (हिं.) शृङ्गार करना । सजाना [क्रि. अ.](हिं.) सजाया या शृङ्गार किया जाना

सिंगार-मेज [संज्ञा स्त्री](हिं.)एक प्रकार की दराज-दार मेज जिस पर दर्पण लगा होता है । ड्रेसिंग-टेबुल ;

सिंगार-हाट [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह बाजार जिसमें (सजकर) वेश्यायें बैठती है ।

सिंगारहार [संज्ञा पु.](हिं.) हरसिंगार नामक फूल

सिंगारिया [वि.](हिं.) देवमूर्त्ति का शृङ्गार करने वाला ।

सिंगारी [वि.] (हिं.) शृङ्गार करने वाला ।

सिंगाल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा ।

सिंगासन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंहासन' ।

सिंगिया [संज्ञा पु.](हिं.) हल्दी की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ बड़ी विषैली होती है ।

सिंगी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है । २-घोड़ों का एक बुरा लक्षण [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की मछली । २-सींग की वह नली जिससे जर्राह शरीर का दूषित रक्त या मवाद चूसकर निकालते हैं ।

सिंगीमोहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंगियाविष ।

सिंगौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सींक का आकार २-बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण ३-सींग का बना हुआ घोटना । ४-वह छोटी पिटारी जिसमें स्त्रियां शृङ्गार की सामग्री रखती हैं ।

सिंघ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंह' ।

सिंघल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंहल' ।

सिंघाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पानी में फैलने वाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा होता है । पानीफल । २-सिंघाड़े के आकार का बेल-बूटा । ३-एक प्रकार की आतिशबाजी । ४-समोसा (पकवान) ।

सिंघाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह तालाब जिसमें सिंघाड़ा बोया जाता है ।

सिंघाण [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंहाण' ।

सिंघासन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंहासन' ।

सिंघिनी, सिङ्घिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नाक । नासिका । [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'सिंहिनी'

सिंघिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिंगिया' ।

सिंघी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-एक छोटी मछली । २-सोंठ ।

सिंघू [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जीरा ।

सिंघेला [संज्ञा पु.] (हिं.) शेर का बच्चा ।

सिंचन, सिञ्चन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल छिड़कना । २-सींचना ।

सिंचना [क्रि. अ.] (हिं.) सींचाजाना ।

सिंचाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सींचने का काम या मजदूरी ।

सिंचाना [कि. स.] (हिं.) १-पानी छिड़कवाना । २-सींचने का काम कराना ।

सिंचित, सिञ्चित [वि.] (सं.) १-सींचा हुआ । २-भीगा हुआ । तर ।

सिंचिता, सिञ्चिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली पीपर ।

सिंचौनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिंचाई' ।

सिंजा, सिञ्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'शिंजा'

सिंजालपारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'गावलीन'

सिंजित [संज्ञा स्त्री.](हिं.) शब्द । ध्वनि । झनक

सिंडिकेट [संज्ञा पु.] (अं.) १-विश्वविद्यालय की प्रबन्ध सभा के सदस्यों अथवा प्रतिनिधियों की समिति । २-धनी, व्यापारियों अथवा जानकार लोगों की ऐसी मंडली जो किसी काम को, विशेषतः अर्थ-सम्बन्धी उद्योग या योजना को अग्रसर करने के लिए बनी हो ।

सिंदन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्यंदन' ।

सिंदरबानी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की हल्दी ।

सिंदुक, सिन्दुक [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदुवार वृक्ष । संभालु ।

सिंदुररसना, सिन्दुररसना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा । शराब ।

सिंदुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बलूत की जाति का एक छोटा पेड़ ।

सिंदुवार [संज्ञा पु.] (सं.) सँभालू वृक्ष । निर्गुंडी

सिंदूर, सिन्दूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ईंगुर का पिसा हुआ चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागनें माँग में भरती हैं । २-बलूत की जाति का एक पहाड़ी वृक्ष ।

सिंदूरकारण, सिन्दूरकारण [संज्ञा पु] (सं.) सीसा नामक धातु ।

सिंदूरतिलक, सिन्दूरतिलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंदूर का तिलक ।

सिंदूरतिलका, सिन्दूरतिलका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सधवा स्त्री ।

सिंदूरदान, सिन्दूरदान [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह के अवसर पर वर का वधू की माँग में सिंदूर भरना ।

सिंदूरपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक पौधा जिसमें लाल फूल आते हैं ।

सिंदूरबंधन, सिन्दूरबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सिंदूरदान' ।

सिंदूर-रस, सिन्दूर-रस [संज्ञा पु.] (सं.) रस-सिंदूर ।

सिंदूरिया [वि.] (हिं.) सिंदूर के रङ्ग का । [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंदूरपुष्पी ।

सिंदूरी [वि.] (हिं.) सिंदूर के रङ्ग का । पीला

मिला गहरा लाल। [संज्ञा स्त्री] (सं) १-धव २-लाल हल्दी। ३-सिंदूरपुष्पी। ४-लाल वस्त्र। ५-कबीला।

सिंदोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंदूर रखने की डिबिया जिसे सधवा स्त्रियां रखती हैं।

सिंध [संज्ञा पु.] (हिं) १-पाकिस्तान का एक प्रांत २-पंजाब की एक नदी। ३-भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सैंधव'।

सिंधवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी का नाम।

सिंधसागर, सिन्धसागर [संज्ञा पु.] (सं.) जेहलम तथा सिंधुनदी के बीच का प्रदेश।

सिंधारा [संज्ञा पु.] (देश.) सावन के महीने की तीज को लड़की की सुसराल भेजा हुआ पकवान आदि।

सिंधिया [संज्ञा पु.] (हिं.) ग्वालियर की प्रसिद्ध मराठा राजवंश की उपाधि।

सिंधी [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सिंधप्रांत की भाषा। [संज्ञा पु.] १-सिंधदेश का निवासी। २-सिंधदेश का घोड़ा।

सिंधु, सिन्धु [संज्ञा पु.](सं.) १-नद। बड़ी नदी २-पंजाब के पश्चिमी भाग का एक प्रसिद्ध नद। ३-समुद्र। ४-सिंधप्रदेश। ५-चार की संख्या। ६-सात की संख्या। ७-ओठों का गीलापन। ८-गजमद। ९-हाथी की सूँड से निकला हुआ पानी। १०-खूब साफ सोहागा। ११-निर्गुंण्डी। १२-सम्पूर्ण जाति का एक राग। १३-सिंधप्रांत का निवासी। १४-गन्धर्वों के एक राजा का नाम। [संज्ञा स्त्री.] यमुना में मिलने वाली एक छोटी नदी।

सिंधुक, सिन्धुक [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुंण्डी।

सिंधुकन्या, सिन्धुकन्या [संज्ञा स्त्री](सं.)लक्ष्मी

सिंधुकफ, सिन्धुकफ [संज्ञा पु.](सं.) समुद्रफेन

सिंधुकर, सिन्धुकर [संज्ञा पु.] (सं.) सोहागा।

सिंधुकालक, सिन्धुकालक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रदेश का प्राचीन नाम जो नैर्ऋत्यकोण में था।

सिंधुखेल, सिन्धुखेल [संज्ञा पु.] (सं.) सिन्धप्रान्त

सिंधुज, सिन्धुज [वि.] (सं.) १-सागर में उत्पन्न २-सिंध देश में होने वाला। [संज्ञा पु.] १-शङ्ख। २-सेंधा नमक। ३-पारा। ४-सोहागा।

सिंधुजन्मा, सिन्धुजन्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-सेंधा नमक।

सिंधुजा, सिन्धुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। सीप।

सिंधुजात, सिन्धुजात [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोती २-सिंधी घोड़ा।

सिंधुड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी।

सिंधुनंदन, सिन्धुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सिंधुपर्णी, सिन्धुपर्णी [संज्ञा स्त्री](सं)गम्भारी वृक्ष।

सिंधुपिब, सिन्धुपिब [संज्ञा पु.] (सं) अगस्त्य ऋषि।

सिंधुपुत्र, सिन्धुपुत्र [संज्ञा पु] (सं) १-चन्द्रमा २-तिंदुक का पेड़।

सिंधुपुष्प, सिन्धुपुष्प [संज्ञा पु] (सं.) १-शङ्ख। २-कदम्ब। ३-मौलसिरी।

सिंधुमंथज, सिन्धुमन्थज [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधा नमक।

सिंधुमाता, सिन्धुमाता [संज्ञा स्त्री.](सं)सरस्वती नदी।

सिंधुर, सिन्धुर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सिंधुरा] १-हाथी। २-आठ की संख्या।

सिंधुरमणि, सिन्धुरमणि [संज्ञा पु] (सं.) गजमुक्ता।

सिंधुरवदन, सिन्धुरवदन [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश

सिंधुरागामिनी, सिन्धुरागामिनी [वि.] (सं.) गजगामिनी (स्त्री)।

सिंधुराव, सिन्धुराव [संज्ञा पु] (सं.) निर्गुंण्डी। सँभालू।

सिंधुलताग्र, सिन्धुलताग्र [संज्ञा पु.](सं.) मूँगा। प्रवाल।

सिंधुलवण, सिन्धुलवण [संज्ञा पु] (सं) सेंधा नमक।

सिंधुवार, सिन्धुवार [संज्ञा पु.] (सं.) निर्गुंण्डी।

सिंधुविष, सिन्धुविष [संज्ञा पु.](सं.) समुद्र मथने पर निकला हुआ हलाहल विष।

सिंधुवृष, सिन्धुवृष [संज्ञा पु.] (सं) विष्णु।

सिंधुवेषण, सिन्धुवेषण [संज्ञा पु.] (सं.) गंभारी वृक्ष।

सिंधुशयन, सिन्धुशयन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु

सिंधुसंभवा, सिन्धुसम्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकिरी।

सिंधुसर्ज, सिन्धुसर्ज [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष। साखू।

सिंधुसहा, सिन्धुसहा [संज्ञा स्त्री](सं.)निर्गुंण्डी सिंदुवार।

सिंधुसुत, सिन्धुसुत [संज्ञा पु.](सं.) जलंधर नामक राक्षस।

सिंधुसुता, सिन्धुसुता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-लक्ष्मी २-सीप।

सिंधुसुतासुत, सिन्धुसुतासुत [संज्ञा पु.] (सं) मोती।

सिंधूरा [संज्ञा पु.] (सं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग

सिंधूरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक रागिनी का नाम।

सिंधोरा [संज्ञा पु.](हिं) सिन्दूर रखने का डब्बा।

सिंब [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शिंब'।

सिंबा, सिम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिंबीधान। २-हृद्‌विलासिनी। ३-सौंठ।

सिंबी, सिम्बी [संज्ञा स्त्री] (सं) १-शिंबी। २-सेम। ३-वन मूंग।

सिंभालू [संज्ञा पु.] (हिं) निर्गुंण्डी।

सिंसपा [संज्ञा स्त्री] देखो 'शिंशपा'।

सिंह [संज्ञा पु.] (सं) १-बिल्ली की जाति में सब से अधिक बलवान् और हिंस्र जङ्गली जन्तु जिसके नर की गरदन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। मृगेन्द्र। केसरी। शेर बबर। २-बहुत बड़ा वीर। ३-ज्योतिष में बारह राशियों में से एक। ४-छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें ५५ गुरु, ४२ लघु, कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५-एक राग का नाम। ६-वर्त्तमान अवसर्पिणी के २४ वें अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथयात्रा के अवसर पर झंडों पर बनाते हैं। ७-बालों के माथे का एक आभूषण।

सिंहकर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं) बाण चलाते समय की दाहिने हाथ की एक मुद्रा।

सिंहकर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) वीर पुरुष।

सिंहकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम

सिंहकेलि [संज्ञा पु.] (सं.) मंजुश्री नामक बोधिसत्व का एक नाम।

सिंहकेशर, सिंहकेसर [संज्ञा पु.](सं) १-शेर की गरदन के बाल। २-मौलसिरी। ३-पेंड़ी नामक मिठाई।

सिंहग [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सिंहघोष [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

सिंहचित्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) माषपर्णी।

सिंहच्छदा [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद दूब।

सिंहतुंड, सिंहतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं) १-थूहर २-एक प्रकार की मछली।

सिंहदंष्ट्र [संज्ञा पु] (सं.) १-एक प्रकार का बाण २-शिव।

सिंहद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) किले, महल आदि का सदर और बड़ा फाटक।

सिंहध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

सिंहध्वनि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सिंहनाद'।

सिंहनंदन, सिंहनन्दन [संज्ञा पु.] (सं) संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

सिंहनाद [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिंह की गरज। २-युद्ध में वीरों की ललकार। ३-सत्यता के निश्चय के कारण किसी बात का निःशंक कथन। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, तथा एक गुरु होता है। ५-शिव। ६-रावण के पुत्र का नाम।

सिंहनादक [संज्ञा पु.] (सं) सिंघा नामक बाजा।

सिंहनादगुग्गुल [संज्ञा पु] (सं.) एक औषध जिसमें प्रधान योग गुग्गुल का होता

सिंहनादिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जवासा। दुरालभा।

सिंहनादी [वि.] (हि.) [स्त्री सिंहनादिनी.] सिंह के समान गरजने वाला।

सिंहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शेरनी। सिंह की मादा। २-एक मात्रिक छन्द जिसके चारों चरणों में क्रम से १२, १८, २०, और २२ मात्राएँ होती हैं। अन्त में एक गुरु तथा २० २० मात्राओं पर एक जगण होता है।

सिंहपत्रा, सिंहपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी

सिंहपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सैंहली।

सिंहपुच्छ [संज्ञा पु.] (सं.) पिठवन।

सिंहपुच्छी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी।

सिंहपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के एक वासुदेव का नाम।

सिंहपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

सिंहपौर [संज्ञा पु.] (हि.) सिंहद्वार।

सिंहमल [संज्ञा पु.] (सं.) पंचलौह (धातु)।

सिंहमुख [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक गण।

सिंहयाना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

सिंहल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक द्वीप जो भारत के दक्षिण में है जिसे लोग प्राचीन लंका मानते हैं। २-इस द्वीप का निवासी।

सिंहलक [संज्ञा पु.](सं.) १-पीपल। २-दालचीनी [वि.] (सं.) सिंहल-सम्बन्धी।

सिंहलद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सिंहल'।

सिंहलद्वीपी [वि.] (सं.) १-सिंहलद्वीप में होने वाला। २-सिंहलद्वीप का निवासी।

सिंहलस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंहलीपीपल।

सिंहलांगुली, सिंहलाङ्गुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

सिंहला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सिंहलद्वीप। २-राँगा ३-पीतल। ४-छाल। ५-दारचीनी।

सिंहलास्थान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ताड़

सिंहली [वि.](हि.) सिंहलद्वीप का। [संज्ञा पु.] (हि.) सिंहलदेश का निवासी। [संज्ञा स्त्री] सिंहलद्वीप की भाषा।

सिंहलीपीपल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की लता जिसके बीज औषध रूप में प्रयुक्त होते हैं

सिंहलीन [संज्ञा पु.](सं.) १-सङ्गीत में एक ताल। २-कामशास्त्र में एक रतिबन्ध।

सिंहवदना [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-अड़ूसा। २-माषपर्णी। ३-खारी मिट्टी।

सिंहवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अड़ूसा।

सिंहवाहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

सिंहवाहिनी [वि.] (सं.) सिंह पर चढ़ने वाली। [संज्ञा स्त्री.] दुर्गादेवी।

सिंहविक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-संगीत में एक ताल।

सिंहविक्रांत, सिंहविक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह की चाल। २-घोड़ा। ३-दो नगण तथा सात अथवा सात से अधिक यगणों के एक दण्डक का नाम।

सिंहविक्रांत-गामिता, सिंहविक्रान्त-गामिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बुद्ध के अस्सी अनुव्यंजनों में से एक।

सिंहविक्रीड़ [संज्ञा पु.] (सं.) ६ से अधिक यगण वाला दण्डक।

सिंहविक्रीड़ित [संज्ञा पु.](सं.) १-संगीत में एक ताल। २-एक प्रकार की समाधि। ३-एक छंद ४-एक बोधिसत्व।

सिंहविजृंभित, सिंहविजृम्भित [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

सिंहविस्फूर्जित [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह अक्षरों वाला एक छन्द।

सिंहविन्ना, सिंहवृत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी

सिंहस्थ [वि.] (सं.) १-सिंहराशि में स्थित। २-बृहस्पति के सिंहराशि में होने पर होने वाला एक पर्व।

सिंहस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गादेवी।

सिंहहनु [संज्ञा पु.] (सं.) गौतमबुद्ध के पिता का नाम। [वि.] जिसकी दाढ़ सिंह के समान हो

सिंहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाड़ीशाक। २-भटकटैया। ३-वनभंटा। [संज्ञा पु.] १-नागदेवता २-सिंहलग्न। ३-वह समय जब तक सूर्य इस लग्न में रहता है।

सिंहाक्ष [वि.] (सं.) सिंह के समान आँख वाला।

सिंहाण [संज्ञा पु.] (सं.) १-नाक का मल। रेंट २-लोहे का मुरचा या जङ्ग।

सिंहाणक [संज्ञा पु.] (सं.) नाक का मल। रेंट।

सिंहान [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिंहाण'।

सिंहानन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृष्ण निर्गुण्डी। २-वासक। अड़ूसा।

सिंहारहार* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'हरसिंगार'।

सिंहाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंहाली-पीपल।

सिंहावलोकन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २-संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन। ३-पद्य रचना में एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अन्त के कुछ शब्द या वाक्य से लेकर अगला चरण चलता है।

सिंहावलोकित [संज्ञा पु.](सं.) न्याय का वह भेद जिसमें पास का विषय न देखकर दूर का विषय देखा जाता है।

सिंहासन [संज्ञा पु] (सं.) १-राजा या देवता के बैठने का आसन। २-कमल के पत्ते के आकार का बना हुआ देवताओं का आसन। ३-सोलह रतिबंधों में से एक। ४-लौहकिट्ट। ५-एक प्रकार का चन्दन या रोली का तिलक जो दोनों भौंहों के मध्य में होता है।

सिंहासनचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष में मनुष्य के आकार का एक चक्र जिसमें नक्षत्रों के नाम भरे रहते हैं।

सिंहास्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वासक। अड़ूसा। २-कचनार। ३-एक प्रकार की बड़ी मछली।

सिंहिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राहु की माता जो एक राक्षसी थी। २-२४ मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त में एक जगण होता है तथा १४ और दस पर विराम लगता है। ३-दाक्षायणी देवी का एक रूप। ४-टेढ़े घुटनों वाली कन्या। ५-अड़ूसा। ६-कंटकारी ७-वनभंटा।

सिंहिकासूनु, सिंहिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) राहु।

सिंहिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) सिंह की मादा। शेरनी

सिंही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिंहिनी। शेरनी। २-अड़ूसा। ३-स्नुही। थूहर। ४-मुद्गपर्णी। ५-आर्य्याछन्द का एक भेद। ६-बृहतीलता। ७-सिंघा नामक बाजा। ८-पीली कौड़ी। ९-

सिंहीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैंगन। भंटा।

सिंहेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

सिंहोड़ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सेंहुड़ या थूहर'।

सिंहोदरी [वि.] (सं.) सिंह के समान पतली कमर वाली। स्त्री।

सिंहोन्नता [संज्ञा स्त्री.](सं.) वसंत तिलका नामक वृत्त।

सिअन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सीवन'।

सिअरा* [वि.](हि.) शीतल। ठंडा। [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाया। छांह। २-देखो 'सियार'।

सिआना [क्रि. स.] (हि.) सिलाना।

सिआमंग [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का बन्दर जो सुमात्राद्वीप में पाया जाता है।

सिआर [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. सिआरी] गीदड़

सिउरना [क्रि. स.] (देश.) छप्पर के लिये पूलों को कड़ियों पर बिछाकर रस्सी से बाँधना।

सिकंजबीन [संज्ञा स्त्री.] (फा.) नीबू के रस में चीनी डालकर बनाया हुआ शरबत।

सिकंजा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिकंजा'।

सिकंदरा [संज्ञा पु.] (फा.) रेल की लाइन के किनारे ऊंचे खम्भे पर लगा हुआ हाथ या डण्डा जो झुका कर आती हुई गाड़ी की सूचना देता है। *सिगनल*।

सिकटा [संज्ञा पु.](देश.) [स्त्री. सिकटी] खपड़े अथवा मिट्टी के बरतनों का टुकड़ा।

सिकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-किवाड़ की कुंडी साँकल। जंजीर। २-जंजीर के आकार का गहना। ३-करधनी। तगड़ी। ४-चारपाई की बुनावट में वह दावँनी जो एक दूसरे से गूंथ कर लगाई जाती है।

सिकड़ीपनवाँ+ [संज्ञा पु.] (हि.) गले में पहनने

की वह सिकड़ी जिसके बीच में पान-सी चौकी होती है।

सिकत* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सिकता'।

सिकता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बालू। रेत। २-एक प्रकार का प्रमेह। ३-चीनी। शर्करा। ४-लोणा साग।

सिकतामेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें पेशाब के साथ बालू के से कण निकलते हैं।

सिकतावर्त्म [संज्ञा पु.](सं.) आँख की पलक का एक रोग।

सिकतिल [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेतीला।

सिकत्तर [संज्ञा पु.] (अ. सेक्रेटरी) किसी संस्था अथवा सभा का मन्त्री।

सिकरवार [संज्ञा पु.] (देश.) क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकरी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सिकड़ी'।

सिकली [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अस्त्र आदि माँजकर साफ और तेज करने की क्रिया।

सिकलीगढ़ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिकलीगर'।

सिकलीगर [संज्ञा पु.] (हि.) तलवार और छुरी आदि पर धार देने वाला कारीगर।

सिकसोनी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) काकजङ्घा।

सिकहर [संज्ञा पु.] (हि.) छींका।

सिकहुली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कास या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया।

सिकाकोल [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दक्षिण की एक नदी।

सिकार+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिकार'।

सिकारी [वि., संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिकारी'।

सिकुड़न [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सिकुड़ने के कारण कुछ पड़ा हुआ बल। शिकन।

सिकुड़ना [क्रि. अ.] (हि.) १-संकुचित होना। सिमटना। २-बल या शिकन पड़ना। ३-तनाव के कारण छोटा होना।

सिकुरना* [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'सिकुड़ना'।

सिकोड़ना [क्रि. स.] (हि.) १-संकुचित करना। २-समेटना। ३-संकीर्ण या तङ्ग करना।

सिकोरना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'सिकोड़ना'।

सिकोरा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सकोरा'।

सिकोली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बांस के फट्टों, कांस, मूँज आदि की बनी डलिया।

सिकोही [वि.] (हि.) १-गर्वीला। २-वीर।

सिक्कक [संज्ञा पु.] (सं.) बांसुरी में लगाने की जीभी।

सिक्कड़ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सीकड़'।

सिक्कर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सीकड़'।

सिक्का [संज्ञा पु.] (हि.) १-मुहर। मुद्रा। छाप। ठप्पा। २-टकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का टुकड़ा जो वस्तु विनिमय का साधन होता है। मुद्रा। रुपया-पैसा आदि। ३-अधिकार। प्रभुत्व।
मुहा०–*सिक्का बैठना या जमना*–१-अधिकार या प्रभुत्व स्थापित होना। २-रोब या धाक जमना। *सिक्का बैठाना या जमाना*–१-अधिकार या प्रभुत्व जमाना। २-रोब जमाना। *सिक्का पड़ना*–सिक्का ढालना।

सिक्की [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-छोटा सिक्का। २-अठन्नी।

सिक्ख [संज्ञा पु.] (हि.) १-शिष्य। चेला। २-गुरु नानक के पंथ का अनुयायी।
*[संज्ञा स्त्री.]१-सीख। शिक्षा। २-शिखा। चोटी।

सिक्त [वि.](सं.) १-सींचा हुआ। २-भीगा हुआ। गीला। तर।

सिक्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-उबाले हुए चावल का दाना। २-भात का ग्रास या पिंड। ३-मोम। ४-मोतियों का गुच्छा। ५-नील।

सिक्थक [संज्ञा पु.] देखो 'सिक्थ'।

सिखंड [संज्ञा पु.] (हि.) मोर की पूँछ।

सिखंडी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिखंडी'।

सिख [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिक्ख'।
[संज्ञा स्त्री.] देखो 'सिक्ख'।

सिख-इमली [संज्ञा पु.] (हि.) भालू को नाचना सिखाने का एक ढङ्ग।

सिखना* [क्रि. स] (हि.) देखो 'सीखना'।

सिखर [संज्ञा पु.] (हि.) १-देखो 'शिखर'। २-देखो 'सिकहर'।

सिखरन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शिखरन'।

सिखलाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'सिखाना'।

सिखा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शिखा'।

सिखाना [क्रि. स.] (हि.) १-शिक्षा या उपदेश देना। २-पढ़ाना। ३-दंड देना। धमकाना। *सिखाना-पढ़ाना*–चालाकी की बातें बताना।

सिखापन [संज्ञा पु.] (हि.) १-शिक्षा। उपदेश। २-सिखाने का काम।

सिखावन [संज्ञा पु.] (हि.) सीख। शिक्षा।

सिखावना* [क्रि. स.] (हि.) देखो 'सिखाना'।

सिखिर* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिखर'।

सिखी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिखी'।

सिगनल [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'सिकंदरा'।

सिगरा* [वि.] (हि.) [स्त्री. सिगरी] सम्पूर्ण। सब। सारा।

सिगरेट [संज्ञा पु.] (अ.) तम्बाकू से भरा हुई कागज की बत्ती जिसका धूआँ लोग पीते हैं।

सिगरो. सिगरौ* [वि.] (हि.) देखो 'सिगरा'।

सिगा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सङ्गीत की चौबीस शोभाओं में से एक।

सिगार [संज्ञा पु.] (अं.) चुरुट।

सिगोती [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

सिचान* [संज्ञा पु.] (हि.) बाजपक्षी।

सिच्छा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शिक्षा'।

सिजदा [संज्ञा पु.] (अ.) प्रणाम। दण्डवत्।

सिजल [वि.] (हि.) जो देखने में अच्छा लगे।

सिजली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पौधा जो [illegible] के काम से आता है।

सिजादर [संज्ञा पु.] (हि.) नाव आदि में [illegible] चढ़ाने का रस्सा।

सिझना [क्रि. अ.] (हि.) आँच पर पकना।

सिझाना [क्रि. स.] (हि.) १-आँच पर पकाना। २-कष्ट देना।

सिटकिनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) किवाड़ बन्द करने के लिये लोहे अथवा पीतल का एक उपकरण। चिटकनी।

सिटनल [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिगनल'।

सिटपिटाना [क्रि. अ.] (हि.) १-दब जाना। मंद पड़ जाना। २-भयभीत या संकुचित होकर चुप होना।

सिटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) नगर। शहर।

सिट्टी [संज्ञा स्त्री.](हि.) बहुत बढ़-बढ़कर बोलना। डींग मारना। *सिट्टी भूलना*–घबराना या सिटपिटा जाना।

सिट्ठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सीठी'।

सिठनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली गाली। सीठना।

सिठाई [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-फीकापन। नीरसता। २-मन्दता।

सिड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-पागलपन की सी अवस्था। उन्माद। सनक। धुन। *सिड़ [illegible] होना*–सनक होना।

सिड़पन, सिड़पना [संज्ञा पु.] (हि.) १-पागलपन। २-सनक।

सिड़बिल्ला [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. सिड़बिल्ली] १- शरीर, वस्त्र आदि से गंदा और [illegible] २-मूर्ख। भोंदू।

सिड़िया [संज्ञा स्त्री.](हि.) डेढ़ हाथ लम्बी लकड़ी जिसमें बुनते समय बदला बँधा रहता है।

सिड़ी [वि.] (हि.) [स्त्री. सिड़िन] पागल। झक्की।

सितंबर [संज्ञा पु.](अं.) अङ्गरेज़ी साल का [illegible] महीना जो तीस दिन का होता है।

सित [वि.] (सं.) १-श्वेत। सफेद। २-उज्ज्वल। शुभ्र। ३-स्वच्छ। निर्मल। साफ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुक्रग्रह। २-शुक्राचार्य। ३-[illegible] ४-चीनी। ५-सफेद चनार। ६-[illegible] अनुचर का नाम। ७-मूली। ८-[illegible] भोजपत्र। १०-सफेद तिल। ११-[illegible]

सितकंगु, सितकङ्गु

सितकंगु, सितकङ्गु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राल।

सितकंठ, सितकण्ठ [वि.] (सं.) जिसकी गरदन सफेद हो। [संज्ञा पु.] (सं.) मुर्गाबी। [संज्ञा पु.] (हिं.) शिव। महादेव।

सितकटभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष

सितकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-भीमसेनी कपूर। २-चन्द्रमा।

सितकरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीली दूब।

सितकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अडूसा। वासक।

सितकाच [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्लौर। २-हलब्बी शीशा।

सितकारिका [संज्ञा स्त्री.] बला नामक पौधा।

सितकुंजर, सितकुञ्जर [संज्ञा पु.] (सं.) १-ऐरावत हाथी। २-इन्द्र।

सितकुंभी, सितकुम्भी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद पाडर का पेड़।

सितक्षार [संज्ञा पु] (सं.) सुहागा।

सितक्षुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेत कंटकारी।

सितगुंजा, सितगुञ्जा [संज्ञा स्त्री.](सं.) सफेद घुमची।

सितचंदन, सितचन्दन [संज्ञा पु.](सं.) श्रीखंड-चन्दन।

सितचिह्न [संज्ञा पु.] खैरा मछली।

सितच्छत्र [संज्ञा पु.] श्वेत राजछत्र।

सितच्छत्रा, सितच्छत्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सौंफ। २-सोवा।

सितच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंस। २-लाल सहिजन।

सितच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

सितज [संज्ञा पु.](सं.) मधु से निकली हुई शक्कर

सितजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मधुखंड।

सितजाफल [संज्ञा पु.] (सं.) मधुनारियल।

सितजाम्रक [संज्ञा पु.] (सं.) कलमी आम।

सितजीरक [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद जीरा।

सितता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेदी।

सिततुरांग [संज्ञा पु.] अर्जुन।

सितदर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेतकुश।

सितदीधिति [संज्ञा पु.](सं.) चन्द्रमा।

सितदीप्य [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद जीरा।

सितद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की लता।

सितद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन (वृक्ष)। २-मोरट।

सितद्विज [संज्ञा पु.] (सं.) हंस।

सितधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुक्लवर्ण की धातु २-खड़िया मिट्टी।

सितपक्ष [संज्ञा पु.](सं.) हंस।

सितपच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) हंस

सितपर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं) अर्कपुष्पी।

सितपुंखा, सितपुङ्खा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

सितपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-तगर का पेड़ या फूल। २-एक प्रकार का गन्ना। ३-सिरस का पेड़। ४-पिंडखजूर।

सितपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बला। २-कंघी का पौधा। ३-एक प्रकार की चमेली।

सितपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेतकुष्ठ।

सितपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्वेत अपराजिता २-कैवर्तमुस्तक। ३-काँसा नामक तृण। ४-नागदन्ती। ५-पान। नागवल्ली।

सितप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी।

सितभानु [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

सितम [संज्ञा पु.] (फा.) १-अनर्थ। २-अत्याचार जुल्म।

सितमगर [संज्ञा पु.] (फा.) अन्यायी। दुःखदायी।

सितमणि [संज्ञा स्त्री.](सं.) बिल्लौर। स्फटिक।

सितमरिच [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद मिर्च। २-सहिंजन के बीज।

सितमाष [संज्ञा पु.] (सं.) राजमाष। लोबिया।

सितरंज, सितरञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

सितरंजन, सितरञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) पीला रंग

सितरश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सितराग [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी।

सितरुचि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सितरुती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) कपूरकचरी।

सितलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमृतवल्ली।

सितली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बेहोशी या अधिक पीड़ा के समय आने वाला पसीना।

सितवराह [संज्ञा पु.](सं.) श्वेतवराह।

सितवराहपत्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

सितवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खिरनी।

सितवर्षाभू [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद पुनर्नवा।

सितवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जंगली जामुन।

सितवल्लीज [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद मिर्च।

सितवाजी [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन।

सितवार, सितवारक [संज्ञा पु.] (सं.) शालिच नामक शाक।

सितवारिक [संज्ञा पु.] (सं) सिंहली-पीपल।

सितशिंबिक, सितशिम्बिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गेहूँ।

सितशिव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेंधा नमक। २-शमी का पेड़।

सितशूक [संज्ञा पु.] (सं.) जौ। यव।

सितशूरण [संज्ञा पु.] (सं.) बनसूरण।

सितशृंगी, सितशृङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतीस

सितसप्ति [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन।

सितसागर [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीरसागर।

सितसार, सितसारक [संज्ञा पु.] (सं.) शालिंच शाक।

सितसिंधु, सितसिन्धु [संज्ञा पु.](सं.) १-क्षीरसागर।

सितसिंही [संज्ञा स्त्री.](सं.) श्वेत कंटकारी।

सितसिद्धार्थ [संज्ञा पु] (सं.) सफेद या पीली सरसों, यह मन्त्र या झाड़फूंक में काम लाई जाती है।

सितसूर्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) आदित्यभक्ता। हुरहुर

सितहूण [संज्ञा पु.] (सं.) हूणों की एक शाखा का नाम।

सितांक, सिताङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली।

सितांग, सिताङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) १-श्वेतरोहिक वृक्ष। २-रोहिड़ा सफेद। ३-बेला।

सितांबर, सिताम्बर [वि.] (सं.) सफेद वस्त्र धारण करने वाले। [संज्ञा पु.] श्वेताम्बर जैन

सितांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

सिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चीनी। शक्कर। २-ज्योत्सना। ३-मल्लिका या मोतिया का फूल ४-मदिरा। ५-शुक्लपक्ष। ६-श्वेत कंटकारी। ७-बकुची। ८-विदारीकंद। ९-सफेद दूब। १०-कुटुम्बिनी। नामक पौधा। ११-पिंगा। १२-त्रायमाणलता। १३-अंधाहुली। १४-बच १५-सिंहली-पीपल। १६-आमड़ा। १७-गोरोचन। वृद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध। १८-चाँदी। १९-श्वेत निसोथ। २०-त्रिसंधि नामक फूल का पेड़। २१-पुनर्नवा। २२-पहाड़ी अपराजिता। २३-सफेद पाडर। २४-सफेद सेम। २५-मूर्वालता।

सिताइश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-प्रशंसा। २-धन्यवाद। ३-शाबाशी।

सिताखंड, सिताखण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-शहद की बनी चीनी। २-मिस्री।

सिताख्य [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद मिर्च।

सिताख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

सिताग्र [संज्ञा पु.] (सं.) काँटा। कंटक।

सिताजाजी [ज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद मिर्च।

सितादि [संज्ञा पु.] (सं.) गुड़।

सितानन [वि.] (सं.) सफेद मुखवाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-बेल का पेड़।

सितापांग, सितापाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मोर। मयूर।

सितावं* [क्रि. वि.] (फा.) तुरन्त। जल्दी। झटपट।

सिताभ [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

सिताभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तक्रा। तक्राह्वा क्षुप।

सिताभ्र, सिताभ्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद बादल। २-कपूर।

सितामोधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद पाँडर।

सितायुध [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मछली

सितार [संज्ञा पु.] (हिं.) तारों का बना एक प्रसिद्ध बाजा।

सितारबाज [संज्ञा पु.] (हिं., फा.) सितार बजाने वाला।

सितारा [संज्ञा पु.] (फा.) १-नक्षत्र। तारा। २-भाग्य। प्रारब्ध। ३-चमकीले पत्तर की छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये कपड़ों आदि में टांगी जाती है। चमकी। *सितारा चमकना*-भाग्य या प्रारब्ध का बहुत प्रबल या अनुकूल होना। *सितारा बलन्द होना*-सितारा चमकना। *सितारा मिलना*-१-फलित ज्योतिष में ग्रह मैत्री मिलना। २-आपस में प्रेम होना। मन मिलना। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सितार'।

सितारापेशानी [वि.] (फा.) (ऐसा घोड़ा) जिसके माथे पर बिलकुल सफेद टीका हो।

सितारिया [संज्ञा पु.](हिं.) सितार बजाने वाला

सितारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा सितार।

सितारेहिंद [संज्ञा पु.] (फा.) अंग्रेजों के राजत्व-काल में सम्मानार्थ दी जाने वाली एक उपाधि

सितालक [संज्ञा पु.] (सं.) श्वेत अर्क।

सितालता [संज्ञा स्त्री](सं.) १-अमृतवल्ली। २-सफेद दूब।

सितालिकटभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद कटभी।

सितालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ताल की सीपी।

सिताव [संज्ञा स्त्री.](देश.) दवा के काम में आने वाला एक पौधा जो बरसात में उगता है।

सितावभेद [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक पौधे का नाम। इसके सब अङ्ग दवा के काम में आते हैं।

सितावर [संज्ञा पु.] (सं.) सुसना का साग।

सितावरी [संज्ञा स्त्री] (सं) बकची।

सिताश्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-अर्जुन। २-चन्द्रमा

सितासित [संज्ञा पु] (सं.) १-काला और सफेद २-बलदेव। ३-शुक्र के समेत शनि। ४-जमुना समेत गङ्गा।

सितासितरोग [संज्ञा पु.] (सं) एक नेत्र रोग।

सितासिता [संज्ञा स्त्री](सं) सोमराजी। बकची

सिताह्वय [संज्ञा पु.] (सं) १-शुभग्रह। २-श्वेत रोहित नामक वृक्ष। ३-सफेद फूलों का सहिजन। ४-सफेद या हरे डण्ठल की तुलसी।

सिति [वि.] (सं.) देखो 'शिति'।

सितिकंठ, सितिकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सितिमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) श्वेतता। सफेदी।

सितिवार, सितिवारक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुसना का साग। २-कुटजवृक्ष।

सितिवास [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

सितिसारक [संज्ञा पु.] (सं.) शांतिशाक।

सितुई, सितुही [संज्ञा स्त्री.](हि.) ताल की सीपी

सितून [संज्ञा पु.] (फा.) १-खम्भा। २-मीनार।

सितेतर [वि.] (सं.) (सफेद से भिन्न) काला या नीला। [संज्ञा पु.] १-काला धान। २-कुलथी

सितेतरगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि। आग।

सितोत्पल [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद कमल।

सितोदर [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

सितोदरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की कौड़ी

सितोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन। संदल। [वि.] (सं.) चीनी से उत्पन्न या बना हुआ।

सितोपल [संज्ञा पु.] (सं.) १-खड़िया मिट्टी। २-बिल्लौर।

सितोपला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मिस्री। २-चीनी शक्कर।

सिथिल* [वि.] (हिं.) देखो 'शिथिल'।

सिद [संज्ञा पु.] (देश.) बाकली।

सिदका [संज्ञा पु.] देखो 'सदका'।

सिदरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) वह कमरा या बरामदा जिसमें तीन दरवाजे हों।

सिदामा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रीदामा'।

सिदिक [वि.] (अ.) सत्य। सच्चा।

सिद्गुंड, सिद्गुण्ड [संज्ञा पु] (सं.) ब्राह्मण पिता तथा पराजकी माता से उत्पन्न वर्णशंकर पुरुष।

सिद्ध [वि.] (सं.) १-जिसकी आध्यात्मिक साधना पूर्ण हो चुकी हो। २-जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हुई हो चुकी हो। ३-जो योग की विभूतियां प्राप्त कर चुका हो। ४-सफल। ५-प्रमाणित। ६-सीझा, उबाला या पका हुआ। ७-कामयाब। कृतकार्य। ८-लक्ष्य पर पहुँचाया हुआ। ९-निर्णीत। फैसल। १०-शोधित। चुकता। ११-सङ्घटित। १२-कार्य साधन के उपयुक्त बनायाहुआ। तैयार। १३-बनाहुआ १४-प्रसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूर्ण योगी या ज्ञानी। २-पहुँचा हुआ संत या महात्मा। ३-एक प्रकार के देवता। ४-अर्हत। जिन। ५-ज्योतिष का एक योग। ६-व्यवहार। मुकद्मा। ७-काला धतूरा। ८-गुड़। ९-काली निर्गुंडी। १०-सफेद सरसों।

सिद्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शालवृक्ष। २-संभालू का पेड़।

सिद्धकज्जल [संज्ञा पु.] (सं) वह काजल जिसके लगाने से लोग वशीभूत होते हैं।

सिद्धकाम [वि] (सं.) १-जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। २-सफल।

सिद्धकामेश्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा की पांच मूर्त्तियों में से पहली।

सिद्धकारी [वि.] (सं.) [स्त्री. सिद्धकारिणी] धर्म शास्त्रानुसार आचरण करने वाला।

सिद्धक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धाश्रम। सिद्धपीठ।

सिद्धगंगा, सिद्धगङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्गगंगा। आकाशगंगा।

सिद्धगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार वे कर्म जिनके करने से मनुष्य सिद्ध होता है।

सिद्धगुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गुटिका जिसकी सहायत से रसायन बनाया अथवा इसी प्रकार की और कोई सिद्धि की जाता है

सिद्धग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेत विशेष जो उन्माद रोग करता है।

सिद्धजल [संज्ञा पु.](सं.) १-काँजी। २-औटाया हुआ जल।

सिद्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिद्ध होने की अवस्था। २-प्रमाणिकता। सिद्धि। ३-पूर्णता

सिद्धतापस [संज्ञा पु.] (सं) वह तपस्वी जिसने सिद्धि प्राप्त की हो।

सिद्धत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धता।

सिद्धदेव [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सिद्धदोष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसका अपराध प्रमाणित हो गया हो। कॉन्विक्टेड।

सिद्धधातु [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

सिद्धनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-गुलदु

सिद्धपक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी आज्ञा अथवा बात का वह अंश जो प्रमाणित हो चुका हो। २-प्रमाणित बात।

सिद्धपथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

सिद्धपात्र [संज्ञा पु] (सं). स्कन्द के एक अनुचर का नाम।

सिद्धपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ योग अथवा अध्यात्मिक या तांत्रिक साधन सहज में सम्पन्न होता हो।

सिद्धपुर [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष के अनुसार एक कल्पित नगर का नाम।

सिद्धपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर का पेड़।

सिद्धप्रयोजन [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद सरसों।

सिद्धभूमि [संज्ञा स्त्री] (सं.) सिद्धपीठ।

सिद्धमंत्र, सिद्धमन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) सिद्ध किया हुआ मन्त्र।

सिद्धमत [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्ध लोगों का मत।

सिद्धमातृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक देवी। २-एक लिपि।

सिद्धमानस [वि.](सं.) जिसकी अभिलाषा सिद्ध हुई हो।

सिद्धमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) तुरंजबीन की

सिद्धयामल [संज्ञा पु.] (सं.) एक तन्त्र

सिद्धयोग [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष

योग। २-एक यौगिक रसौषध।

सिद्धयोगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक योगिनी का नाम।

सिद्धयोगी [संज्ञा पु.] (सं) शिव।

सिद्धर [संज्ञा पु.] (?) कंस के आदेश पर श्रीकृष्ण को मारने के लिये आने वाला एक ब्राह्मण।

सिद्धरस [संज्ञा पु.] (सं) १-पारा। २-पारा सिद्ध करने वाला योगी।

सिद्धरसायन [संज्ञा पु.] (सं) दीर्घ जीवन तथा प्रभूत शक्ति देने वाली औषध।

सिद्धलक्ष्य [वि] (सं) जिसका निशाना कभी न चूकता हो।

सिद्धवस्ति [संज्ञा पु.] (सं) तैल आदि की पिचकारी।

सिद्धविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक महाविद्या का नाम।

सिद्धविनायक [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश की एक मूर्ति का नाम।

सिद्धशिला [संज्ञा स्त्री.](सं.) जैनमत के अनुसार ऊर्ध्वलोक का एक स्थान।

सिद्धसंकल्प, सिद्धसङ्कल्प [वि] (सं) जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हों।

सिद्धसंबंध, सिद्धसम्बन्ध [वि.] (सं.) जिसकी कामना सिद्ध हुई हो।

सिद्धसरित् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आकाशगङ्गा। २-गङ्गा।

सिद्धसलिल [संज्ञा पु.] (सं) काँजी।

सिद्धसाधक [संज्ञा पु.] (सं) कल्पवृक्ष।

सिद्धसाधन [संज्ञा पु] (सं) १-प्रमाणित बात को फिर से प्रमाणित करना। २-सिद्धि के निमित्त योग अथवा तन्त्र की क्रिया का अनुष्ठान। ३-सफेद सरसों।

सिद्धसाधित [वि] (सं.) जिसने व्यवहार द्वारा ही चिकित्सा का अनुभव प्राप्त किया हो, शास्त्र के अध्ययन द्वारा नहीं।

सिद्धसाध्य [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धसिंधु, सिद्धसिन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) आकाशगङ्गा।

सिद्धसुसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं) मंत्र विशेष।

सिद्धसेन [संज्ञा पु] (सं) कार्त्तिकेय।

सिद्धसेवित [संज्ञा पु] (सं) भैरव या शिव का एक रूप।

सिद्धस्थाली [संज्ञा स्त्री](सं) सिद्धि योगियों की बटलोई जिसमें जितनी आवश्यकता हो उतना भोजन निकाला जा सकता है।

सिद्धहस्त [वि] (सं) जिसका हाथ किसी कार्य को करने में खूब बैठा या मंजा हो। निपुण। कुशल।

सिद्धांगना, सिद्धाङ्गना [संज्ञा स्त्री] (सं) सिद्ध देवताओं की स्त्रियाँ।

सिद्धांजन, सिद्धाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) वह अंजन जिसके आँख में लगा देने से भूमि के नीचे की वस्तु दीखने लगती हैं।

सिद्धांत, सिद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-विचार एवं तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत। उसूल। प्रिंसिपल। २ किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित मत। वाद। थिअरी। ३-ऋषियों आदि के मान्य उपदेश। डॉक्ट्रिन। ४-सार की बात। तत्वार्थ।

सिद्धांतज्ञ, सिद्धान्तज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धांत को जानने वाला।

सिद्धांताचार, सिद्धान्ताचार [संज्ञा पु.] (सं) एकाग्रचित्त से शक्ति की उपासना।

सिद्धांतित, सिद्धान्तित [वि.] (सं.) तर्क द्वारा प्रमाणित।

सिद्धांती, सिद्धान्ती [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शास्त्रों आदि के सिद्धांत जानने वाला। २-अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहने वाला।

सिद्धांतीय, सिद्धान्तीय [वि.] (सं) सिद्धांतसम्बन्धी।

सिद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवाङ्गना। २-एक योगिनी। ३-ऋषि नामक जड़ी। ४-आर्याछंद का एक भेद जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई [संज्ञा स्त्री](हिं.) सिद्ध होने की अवस्था सिद्धपन।

सिद्धापगा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-आकाश गंगा। २-गङ्गा नदी।

सिद्धारि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मंत्र।

सिद्धार्थ [वि.] (सं.) जिसका अभीष्ट सिद्ध हो चुका हो। सफल मनोरथ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-गौतमबुद्ध। २-स्कन्द का एक गण। ३-राजा दशरथ का एक मन्त्री। ४-साठ संवत्सरों में से एक। ५-जैनधर्म के २४वें अर्हत् जो महावीर स्वामी के पिता थे।

सिद्धार्थक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद सरसों। २-अंजीर। ३-साठ संवत्सरों में से एक।

सिद्धार्थमति [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

सिद्धार्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद सरसों। २-देशी अंजीर। ३-साठ संवत्सरों में से एक। ४-चौथे अर्हत की माता का नाम (जैन)।

सिद्धार्थी [संज्ञा पु] (सं.) साठ संवत्सरों में से एक।

सिद्धासन [संज्ञा पु.](सं.) १-योगसाधन का एक प्रकार का आसन। २-सिद्ध पीठ।

सिद्धि [संज्ञा स्त्री](सं.) १-कार्य पूर्ण होना सफलता। २-प्रमाणित होना। ३-निश्चय। निर्णय ४-पकना। सीझना। ५-योग साधन के अलौकिक फल। योग की अष्ट सिद्धियां प्रसिद्ध हैं- अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य ईशित्व तथा वशित्व। ६-लक्ष्यवेध। निशाना मारना। ७-हल होना। ८-भाग्योदय। सुखसमृद्धि। ९-मुक्ति। मोक्ष। १०-भाँग। विजया ११-प्रभाव। असर। १२-नाटक के ३६ लक्षणों में से एक जिसमे अभिमत वस्तु की सिद्धि के लिये अनेक वस्तुओं का कथन होता है। १३-ऋद्धि या वृद्धि नामक औषध। १४-बुद्धि। १५-संगीत में एक श्रुति। १६-दुर्गा। १७-दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम जो धर्म की पत्नी थी। १८-गणेश की एक पत्नी का नाम। १९-मेढ़ासिंगी। २०-छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें तीस गुरु ९२ लघु कुल १२२ वर्ण या १५२ मात्राएें होती हैं। २१-राजा जनक की पुत्रवधू का नाम।

सिद्धिद [वि.] (सं.) सिद्धि देने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वटुकभैरव। २-बड़ा शालवृक्ष ३-पुत्रजीवी वृक्ष।

सिद्धिदाता [संज्ञा पु.] (सं.) गणेश। [वि.](सं.) [स्त्री. सिद्धिदात्री] सिद्धि देनेवाला।

सिद्धिप्रद [वि] (सं.) [स्त्री. सिद्धप्रदा]। सिद्धि देने वाला।

सिद्धिभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ योग या तप शीघ्र सिद्ध होता हो।

सिद्धियात्रिक [संज्ञा पु.] (सं) वह यात्री जो योग की सिद्धि प्राप्त करने के लिये यात्रा करता हो।

सिद्धियोग [संज्ञा पु] (सं.) एक शुभ योग (ज्योतिष)।

सिद्धियोगिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक योगिनी।

सिद्धिरस [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'सिद्धरस'।

सिद्धिराज [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत।

सिद्धिली [संज्ञा स्त्री.] (सं) छोटी चींटी।

सिद्धिसाधक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद सरसों। २-दमनक।

सिद्धिस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुण्य स्थान। तीर्थ। २-आयुर्वेद मे चिकित्सा का प्रकरण।

सिद्धीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक पुण्यक्षेत्र का नाम।

सिद्धेश्वर [संज्ञा पु.] (सं) [स्त्री. सिद्धेश्वरी] १-बड़ा सिद्ध। महायोगी। २-शिव। ३-गुलतुर्रा।

सिद्धोदक [संज्ञा पु.] (सं.) १-काँजी। २-एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सिद्धौघ [संज्ञा पु] (सं) तांत्रिकों के गुरुओं का एक वर्ग।

सिद्धौषध [संज्ञा पु.] (सं.) वह दवा जिसके सेवन करने से रोग अवश्य आराम होता है।

सिध [वि.] (हिं) देखो 'सिद्ध'। [संज्ञा स्त्री] चार हाथ लम्बी लकड़ी जिसमें सीढ़ियाँ बनी रहती हैं।

सिध्री [संज्ञा स्त्री](देश) एक प्रकार की मछली

सिधवाई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) गाड़ी का पहिया निकालने के लिये लगाई हुई टेक।

सिधवाना+ [क्रि स] (हिं) सीधा कराना।

सिधाई [संज्ञा स्त्री] (हि) सीधापन।

सिधाना* [क्रि. अ.] (हिं) देखो 'सिधारना'।

सिधारना [क्रि. अ.] (हि) १-जाना। गमन करना २-मरना। *[क्रि. स.] देखो 'सुधारना'।

सिधि* [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'सिद्धि'।

सिधिगुटका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिद्धि-गुटिका'।

सिधु [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'सीधु'।

सिधोई+ [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'सिधवाई'।

सिध्म [वि] (सं.) १-सफेद दाग वाला। २-श्वेत कुष्ट वाला।

सिध्मपुष्पिका [संज्ञा स्त्री] (सं) छीप। किलास

सिध्मल [वि.] (सं.) छीटा रोग वाला।

सिध्मला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूखी मछली।

सिध्य [संज्ञा पु.] (सं.) पुष्यनक्षत्र।

सिध्र [वि.] (सं.) १-साधु। २-सफल। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का वृक्ष।

सिन [संज्ञा पु.] (सं.) १-शरीर। देह। २-वस्त्र ३-ग्रास। ४-कुम्भी नामक वृक्ष। [वि.] १-काना। २-श्वेत। सित। [संज्ञा पु.](अ) उम्र अवस्था।

सिनक [संज्ञा स्त्री.](हि.) नाक से निकलने वाला मल। रेंट।

सिनकना [क्रि अ] (हि.) जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

सिनट [संज्ञा पु.](अ. सेनेट) १-शासन का समस्त अधिकार रखने वाली सभा। २-विश्वविद्यालय की प्रबन्ध करने वाली सभा।

सिनि [संज्ञा पु](हिं.) १-एक यादव जो सात्यकी का पिता था। २-क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।

सिनी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिनि'। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिनी वाली।

सिनीत [संज्ञा स्त्री.](देश.) वह रस्सी जो सात रस्सियों से बटकर बनी हो।

सिनीवाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वैदिक देवी। २-शुक्लपक्ष की प्रतिपदा। ३-अंगिरा की एक पुत्री का नाम। ४-दुर्गा। ५-एक नदी का नाम।

सिनेमा [संज्ञा पु] (अ) चलचित्र।

सिनो [संज्ञा पु.] (देश) खेत की पहली जोताई।

सिन्नी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-मिठाई। २-किसी खुशी में बाँटे जाने वाले बताशे या मिठाई। ३-पीर, देवता, गुरु आदि को चढ़ाई जाने वाली मिठाई।

सिपर [संज्ञा स्त्री.](फा) ढाल।

सिपरा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सिप्रा'।

सिपहगरी [संज्ञा स्त्री] (फा.) सिपाही का काम।

सिपहसालार [संज्ञा पु] (फा) सेनापति। सेनानायक।

सिपाई [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'सिपाही'।

सिपारस [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सिफारिश'।

सिपारसी+ [वि.] (हि.) देखो 'सिफारशी'।

सिपारा [संज्ञा पु.] (फा.) कुरान के तीस भागों में से एक।

सिपारिश [संज्ञा स्त्री.] देखो 'अनुशंसा'।

सिपाव [संज्ञा पु.] (फा.) लकड़ी आदि की एक प्रकार की टिकठी।

सिपावा-भाथी [संज्ञा स्त्री.] (फा., हि.) हाथ से चलाने की धौंकनी।

सिपास [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-धन्यवाद। २-प्रशंसा।

सिपासनाम [संज्ञा पु.] (फा.) बिदाई के समय दिया जाने वाला अभिनन्दन-पत्र।

सिपाह [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सेना। फौज।

सिपाहगिरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सिपाही का काम

सिपाहियाना [वि.] (फा) सिपाहियों का-सा।

सिपाही [संज्ञा पु.] (फा) १-सैनिक। योद्धा। २-पुलिस या रक्षा-विभाग का एक छोटा कर्मचारी। ३-पहरेदार। ४-वीर। बहादुर।

सिपुर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुपुर्द'।

सिप्पर [संज्ञा स्त्री.] (फा) देखो 'सिपर'।

सिप्पा [संज्ञा पु] (देश) १-निशाने पर किया हुआ वार। २-कार्य-साधन का उपाय। ३-कार्य-साधन का सुयोग। ४ रंग, प्रभाव, धाक सिप्पा जमाना या बैठाना-कार्य साधन की युक्ति या उपाय करना।

सिप्पी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सीपी'।

सिप्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक सरोवर का नाम। २-चन्द्र। ३-पसीना।

सिप्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भैंस। २-एक झील ३-स्त्री की करधनी। कमरपेटी। ४-उज्जैन के नीचे बहने वाली एक नदी।

सिफ़त [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-गुण। २-विशेषता

सिफर [संज्ञा पु.] (अ.) शून्य। सुन्ना। बिन्दी।

सिफलगी [संज्ञा स्त्री.](अ.)कमीनापन। ओछापन।

सिफ़ला [वि.] (अ.) १-नीच। २-छिछोरा।

सिफ़लापन [संज्ञा पु.] (अ., हि.) १-नीचता। २-छिछोरापन।

सिफ़ा [संज्ञा स्त्री] देखो 'शिफा'।

सिफारिश [संज्ञा स्त्री] (फा.) किसी के पक्ष में कुछ अनुकूल अनुरोध।

सिफ़ारिशी [वि] (सं) १-जिसमें सिफारिश हो २-सिफारिश करने वाला। ३-खुशामदी। यौ०-सिफारिशी टट्टू-जो केवल सिफारिश से या खुशामद करके किसी पद पर पहुँचा हो या काम निकालता हो।

सिचिका* [संज्ञा स्त्री] (हि) देखो 'शिविका'।

सिमंत [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सीमंत'।

सिमई [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'सिवंई'।

सिमट [संज्ञा स्त्री] (हि) सिमटने की क्रिया या भाव।

सिमटना [क्रि. अ](हि.) १-सिकुड़ना। संकुचित होना। २-शिकन या सलवट पड़ना। ३-बटोरा जाना। इकट्ठा होना। ४-व्यवस्थित होना। ५-निबटना। पूरा होना। ६-संकुचित या लज्जित होना। ७-सिटपिटा जाना।

सिमटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खेस की सी बुनावट का एक प्रकार का कपड़ा।

सिमरख+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिगरफ'।

सिमरगोला [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार की मेहराब।

सिमरना+ [क्रि. स] (हिं) देखो 'सुमिरना'।

सिमरख [संज्ञा स्त्री.] (देश) एक प्रकार की चिड़िया।

सिमल [संज्ञा पु.] (हिं) १-हल का जुआ। २-जुए में पड़ी खूंटी।

सिमसिमी [संज्ञा स्त्री](हिं) वह थोड़ा सा तरल पदार्थ जो प्रायः गीली लकड़ी जलने पर बुदबुदों के रूप में निकलता है।

सिमाना+ [संज्ञा पु.] (हिं) सिवाना। हद। *[क्रि. स] (हिं) देखो 'सिलाना'।

सिमिटना* [क्रि. अ] (हिं) देखो 'सिमटना'।

सिमिरिख* [संज्ञा पु] (हि) देखो 'शिगरफ'।

सिमृति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'स्मृति'।

सिमेंट [संज्ञा पु.] (अं) एक प्रकार का चूने का महीन चूर्ण। इसका लसदार गारा सूखने पर बहुत कड़ा और मजबूत हो जाता है।

सिमेटना* [क्रि. स] देखो 'समेटना'।

सिय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सीता। जानकी।

सियना* [क्रि. स.] (हिं) उत्पन्न करना। रचना। [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सीना'।

सियरा* [वि.] (हिं.) [स्त्री. सियरी] १-शीतल। ठंडा। २-कच्चा।

सियराई* [संज्ञा स्त्री.] (हि) शीतलता। ठंडक।

सियराना* [क्रि. अ.] (हिं.) ठंडा होना।

सियरी [वि.] (हिं.) देखो 'सियरा'।

सिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सीता। जानकी।

सियाना+ [वि.] (हि.) देखो 'सयाना'। [क्रि. स.] (हिं) देखो 'सिलाना'।

सियानाब [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का

सियापा [संज्ञा पु.] (हिं.) मृत व्यक्ति के शोक

कुछ काल तक बहुत सी स्त्रियों का प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की चाल।

सियार+ [संज्ञा पु.] (हि.) [स्त्री. सियारी, सियारिन] गीदड़।

सियार-लाठी [संज्ञा पु.] (देश.) अमलतास।

सियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह फावड़ा जिससे जुती हुई भूमि बराबर की जाती है।

सियाल [संज्ञा पु.] (हिं.) शृगाल। गीदड़।

सियाला [संज्ञा पु.] (हिं.) शीतकाल। जाड़े का मौसम।

सियालापोका [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बहुत छोटा कीड़ा। लोनपोका।

सियाली [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार का विदारीकन्द। [वि.] (देश.) जाड़े की ऋतु की फसल।

सियावड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सियावड़ी'।

सियावड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) वह काली हाँड़ी जो चिड़ियों को डराने के लिये खेत में रखी जाती है।

सियासत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देश का शासन प्रबंध और व्यवस्था। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दंड। २-कष्ट। यन्त्रणा।

सियाह [वि.] (हिं.) देखो 'स्याह'।

सियागोश [संज्ञा पु.] (फा.) १-काले कान वाला। २-वनबिलाव।

सियाहा [संज्ञा पु.] (फा.) १-आय-व्यय के लेखे की वही। रोजनामचा। २-मालगुजारी जमा करने की वही। सियाहा करना-हिसाब की किताब में लिखना या चढ़ाना।

सियाहनवीस [संज्ञा पु.] (फा.) सियाहा लिखने वाला मुंशी।

सियाही [संज्ञा स्त्री.] देखो 'स्याही'।

सिर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिर का सब से आगे या ऊपर का भाग। कपाल। खोपड़ी। २-शरीर में गरदन से ऊपर का भाग। ३-ऊपर का छोर सिरा। चोटी। सिर आँखों पर बैठाना या रखना-बड़ी इज्जत आवभगत से बैठाना। सिर आँखों पर होना-शिरोधार्य होना। सादर मान्य होना। (भूत प्रेत आदि का) सिर आना-भूत प्रेत का प्रभाव होना। सिर उठाना-१-विरोध में खड़ा होना। २-सामने आने के लिये उठना। ३-गर्व, साहस या प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। सिर उठाकर चलना-शान से ऐंठकर चलना। सिर उठाने की फुरसत न होना-तनिक भी फुरसत या अवकाश न होना। व्यस्त होना। सिर उतरवाना-सिर कटवाना। सिर उतारना-सिर काटना। (किसी का) सिर ऊँचा करना-इज्जत देना। (अपना) सिर ऊँचा करना-प्रतिष्ठा रखना। सिर ओखली में देना-आपत्ति में पड़ना। सिर औंधाकर पड़ना-फिक्र या रंज में नीचा किये पड़ना। सिर करना-१-गले मढ़ना। २-जिम्मे करना। ३-गूँथना। सिर काढ़ना-प्रसिद्ध होना। सिर का एक बाल न छोड़ना-सब कुछ ले लेना। सिर का न पाँव का-आदि का न अन्त का। बेठिकाने। सिर काटना-मार डालना। सिर का पसीना पैर तक आना-बहुत मेहनत पड़ना। सिर का बोझ टलना-निश्चिंतता होना। सिर का बोझ टालना-बेगार टालना। सिर के बल जाना-१-बहुत विनीत भाव से जाना। २-प्रसन्नतापूर्वक कष्ट सहकर जाना। सिर खपाना-१-बहुत समझाना। २-बहुत सोचना विचारना। सिर खाना-व्यर्थ की बातों से तंग करना।

सिर खाली करना-१-बहुत बोलना। २-बहुत सोचना। ३-बहुत समझाना। सिर खुजलाना-पिटने को जी चाहना। सिर चकराना-देखो 'सिर घूमना'। सिर गंजा करना-१-मार-मार कर सिर के बाल उड़ाना। २-कौड़ी न छोड़ना सिर घुटनों में देना-१-लज्जित होना। २-सोच-विचार में होना। सिर घूमना-१-सिर में चक्कर आना। २-घबराहट या चिन्ता से विभ्रम होना। सिर जोड़कर बैठना-मिलकर बैठना। सिर जोड़ना-१-एकत्र होना। २-एका करना। सिर झाड़ना-बालों में कंघी करना। सिर झुकाना या नीचा करना-१-नमस्कार करना। २-लज्जित करना। ३-आज्ञा मानना। ४-हार मानना। ५-नम्र बनना। सिर टकराना-बहुत ज्यादा परिश्रम करना। सिर टूटना-झगड़ा होना, सिर फटना। (किसी के) सिर डालना-सिर मढ़ना। सिर तोड़ना-१-सिर फोड़ना। २-बहुत मारना-पीटना। ३-वश में करना। सिर थाम के बैठना-अधिक दुःख में सिर पकड़कर बैठना सिर देना-प्राण देना। सिर धरना-१-सादर स्वीकार करना। २-जिम्मेदार बनना। सिर धुनना-पछताना। हाथ मलना।

सिर नङ्गा करना-१-सिर खोलना। २-इज्जत उतारना। सिर नवाना-१-सिर झुकाना। २-विनीत बनना। सिर नीचा करना-लज्जित होना या करना। (अपना) सिर नीचा करना-शर्माना। (दूसरे का) सिर नीचा करना-प्रतिष्ठा खोना। सिर नीचा करना-२-मान भङ्ग होना २-हार होना। ३-लज्जा होना। सिर पचाना-१-परिश्रम करना। २-सोचने-विचारने में हैरान होना। सिर पटक के मरना-बहुत कोशिश करते-करते थक जाना। सिर पटकना-अफसोस करना। सिर पर आ पड़ना-ऊपर आ बनना। सिर पर आजाना-बहुत पास आ जाना। सिर पड़ना-१-जिम्मे पड़ना। २-अपने ऊपर आना या बीतना। सिर पर आरे चलना १-जान पर बीतना। २-अन्याय या अत्याचार होना। सिर पर उठा लेना-धूम मचाना सिर पर कोई न होना-संरक्षक या देख भाल करने वाले का अभाव होना। सिर पर खड़ा रहना-सामने ही रहना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना-१-किसी को मार डालने पर उतारू होना। २-हत्या करके आपे में न रहना सिर पर खेलना-१-जान जोखों पर डालना। २-बहुत निकट होना। ३-भूत-प्रेत आदि का सिर पर होना। सिर पर चढ़ना या चढ़कर बोलना-स्वयं प्रकट होना। सिर पर छप्पर रखना-१-दबाव डालना। २-बाल बढ़ना। सिर पर जूँ न रेंगना-ध्यान, चेत या चिन्ता न होना। सिर पर पड़ना-१-जिम्मे पड़ना। २-अपने पर गुजरना। सिर पर पाँव रखकर भागना-तेजी से भागना। (किसी के सिरपर) पाँव रखवाना-किसी के साथ बहुत उद्दंडता का व्यवहार करना।

सिर पर पृथ्वी उठाना-बहुत उत्पात करना। सिर पर बीतना-सिर पर पड़ना। सिर पर मिट्टी डालना-१-रंजीदा होना। २-घृणा प्रकट करना। सिर पर रखना-आदर करना। सिर पर लेना-१-जिम्मे लेना। २-सहना। ३-स्वयं को संकट में डालना। सिर पर शैतान चढ़ना-गुस्सा आना। सिर पर सहना-स्वयं सहना। सिर पर सींग होना-कोई विशेषता होना। सिर पर सेहरा बँधना-बड़ाई या वाह-वाही मिलना। सिरपरस्ती करना-रक्षा करना सिर पर हाथ धरकर रोना-भाग्य को रोना। सिरपर हाथ धरना-१-रक्षा या सहायता होना सिर की कसम खाना। सिर पर हाथ फेरना १-पुचकारना। २-धोखे में डालना। सिर पर होना-रक्षक, पालक तथा सहायक होना। सिर पीटते फिरना-पश्चाताप या अफसोस जताते रहना। सिर पीटना-शोक मनाना। सिर पीट लेना-करम ठोक कर बैठ जाना। सिर फिरना-१-सिर घूमना। चकराना। २-पागल हो जाना। सिर फेरना-१-'ना' करना २-बहका कर विरुद्ध कर देना। सिर फोड़ना-१-कपालक्रिया करना। २-झगड़ना। सिर बाँधना-बाल बाँधना। सिर बेंचना-सेना में भरती हो जाना। सिर भिन्नाना-सिर में दर्द होना चकराना। सिर मढ़ना-जिम्मे करना। सिर माथे-सिर आँखों। सिर मारना-१-समझाना। २-उत्तेजित हो जाना। २-जान लड़ाना ३-बहुत खोजना।

सिर मुँड़ाते ओले पड़ना-आरम्भ में ही काम बिगड़ना। सिर मुँड़ाना-१-बाल बनवाना। २-जोगी बनना। सिर मूँड़ना-धोखे में फाँस कर ले लेना। सिर मे बाल होना-सहनशक्ति होना। सिर रंगना-सिर फोड़ना। सिर रहना-कहते ही रहना। सिर सफेद होना-बुढ़ापा आना। सिर से कफन बाँधना-मरने के लिये तैयार होना। सिर से खेलना-१-सिर पर भूत आना। २-लड़ाना। सिर से खेल जाना-प्राण दे देना। सिर से चलना-सिर के बल चलना, बहुत आदर करना। सिर से तिनका उतारना-प्रत्युपकार करना। सिर से

पानी गुजरना-सहने की हद होना। सिर से पैर तक-आरम्भ से अन्त तक। पूर्णरूप से। सिर से पैर तक आग लगना-अत्यन्त क्रोध आना। सिर से बोझ उतारना-१-एहसान का बदला देना। २-भारी काम कर डालना। ३-बेगार सी टालना। सिर पर सेहरा होना-१-मुख्य होना। २-वाहवाही मिलना। सिर सहलाना-प्यार या खुशामद करना। (सिर के) सिर होना-१-पीछे पड़ना। २-उलझ पड़ना। ३-तङ्ग करना। (किसी बात के) सिर होना-१-ताड़ जाना। २-सतत प्रयत्न करना ३-प्राप्त करना। (दोष आदि किसी के) सिर होना-जिम्मे होना। ऊपर पड़ना। सिर सूँघना-आशीष देना। सिर हिलाना-इन्कार करना।

सिरई [संज्ञा पु.] (हि.) चारपाई के सिराहने की पट्टी।

सिरकटा [वि.] (हिं.) १-जिसका सिर कट गया हो। २-अनिष्ट या बुराई करने वाला। अपकारी।

सिरका [संज्ञा पु.](फा.)धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस।

सिरकाकश [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का यन्त्र जिससे अरक खींचा जाता है।

सिरकी [संज्ञा स्त्री] (हि.) १-सरकंडे या सरई का छोटा छप्पर जो प्रायः बैलगाड़ियों पर आड़ करने के लिये रखते हैं। २-सरकंडा। सरई।

सिरखप [वि.] (हिं.) १-सिर खपाने वाला। २-परिश्रमी। ३-निश्चय का पक्का।

सिरखपी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-परिश्रम। हैरानी २-साहसपूर्ण कार्य।

सिरखिली [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

सिरखिस्त [संज्ञा पु.] (फा.) एक पदार्थ जो कुछ पेड़ों की पत्तियों पर ओस की तरह जम जाता है। यह दवा के काम में आता है। यवशर्करा।

सिरगा [संज्ञा स्त्री.](देश.) घोड़े की एक जाति।

सिरगिरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चोटी। कलगी २-चिड़ियों के सिर की कलगी।

सिरगोटी [संज्ञा स्त्री.] (?) गलगल नामक पक्षी

सिरगोला [संज्ञा पु.] (?) दुग्धपाषाण।

सिरगुरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्वरांकुश तृण।

सिरचंद [संज्ञा पु.] (हि.) हाथी के मस्तक का एक गहना जो अर्धचन्द्राकार होता है।

सिरजक* [संज्ञा पु.] (हि.) १-रचने या बनाने वाला। २-परमेश्वर। सृष्टिकर्त्ता।

सिरजनहार* [संज्ञा पु.] (हिं) सृष्टि की रचना करने वाला, परमेश्वर।

सिरजना* [क्रि. स.] (हिं.) १-रचना। बनाना। २-उत्पन्न या तैयार करना। ३-संचय करना।

सिरजित* [वि] (हि.) सिरजा या रचा हुआ।

सिरताज [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मुकुट। २-शिरोमणि। ३-सरदार।

सिरतान [संज्ञा पु](हिं.) १-काश्तकार। २-मालगुजार।

सिर-ता-पा [क्रि. वि](हिं.) १-सिर से पाँव तक नख से शिख तक। २-सम्पूर्ण। सरासर।

सिरती+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) लगान।

सिरत्राण [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिरत्राण'।

सिरदार* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सरदार'।

सिरदारी* [संज्ञा स्त्री] (हि.) देखो 'सरदारी'।

सिरदुआली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) घोड़े की लगाम में लगी हुई डोरी या चमड़े का तस्मा।

सिरधरा, सिरधरू [संज्ञा पु.] (हि.) संरक्षक। पृष्ठपोषक।

सिरनामा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सरनामा'।

सिरनेत [संज्ञा पु.] (हि.) १-पगड़ी। चीरा। २-क्षत्रियों की एक शाखा।

सिरपच्ची [संज्ञा स्त्री.] (हि.) माथापच्ची। सिर खपाना।

सिरपाव [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिरोपाव'।

सिर-पेच [संज्ञा पु.](हि.) १-पगड़ी। २-पगड़ी पर बाँधने का एक गहना। कलगी। ३-पगड़ी के ऊपर का कपड़ा।

सिरपोश [संज्ञा पु.] (सं) १-सिर पर का आवरण। टोप। कुलाह। २-बन्दूक के ऊपर का कपड़ा।

सिरफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

सिरफेंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) साफा। पगड़ी।

सिरबंद [संज्ञा पु.] (हि.) साफा।

सिरबंदी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का रेशमी कीड़ा।

सिरबोझी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार के पतले बांस।

सिरमनि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिरोमणि'।

सिरमौर [संज्ञा पु.] (हि.) १-सिर का मुकुट। २-सिरताज। शिरोमणि।

सिररुह [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शिरोरुह'।

सिरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह कपड़ा जिससे अनाज बरसाते समय हवा करते है। सिरवा मारना-कपड़े से हवा करके भूसा उड़ाना।

सिरवार [संज्ञा पु](हिं.) जमींदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबन्ध करता है।

सिरस [संज्ञा पु.](हि.) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जो शीशम के समान होता है।

सिरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिरस'।

सिरसी [संज्ञा स्त्री](देश.) एक प्रकार का तोता

सिरहाना [संज्ञा पु.] (हि) सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग।

सिराँचा [संज्ञा पु.](देश) एक प्रकार का पतला बांस।

सिरा [संज्ञा पु.] (हि) १-लम्बाई का अन्त। छोर। २-ऊपर का भाग। ३-अन्तिम भाग। ४-शुरू का हिस्सा। ५-नोक। अनी। ६ अग्रभाग। सिरे का-प्रथम श्रेणी का। सिरे का रंग-सब से प्रधान रङ्ग। [संज्ञा स्त्री] १-रक्तनाड़ी। २-सिंचाई की नाली। ३-खेत की सिंचाई। ४-पानी की पतली धार। ५-गगरा। कलस।

सिराजी [संज्ञा पु.] (हिं.) शीराज का घोड़ा या कबूतर।

सिराना* [क्रि. अ.](हि.)१-शीतल या ठंढा होना २-मन्द पड़ना। ३-समाप्त होना। ४-मिटना। दूर होना। ५-बीत जाना। ६-काम से छुट्टी मिलना। [क्रि. स.] १-ठंढा करना। २-समाप्त करना। ३-बिताना।

सिरापत्र [संज्ञा पु.] (हि.) १-पीपल का पेड़। २-एक प्रकार की खजूर।

सिरामूल [संज्ञा पु.] (सं.) नाभि।

सिरामोच [संज्ञा पु.] (सं.) दूषित रक्त निकालने के लिये फस्त खुलवाना।

सिराला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक प्रकार का पौधा। २-कमरख नामक फल।

सिराली [संज्ञा स्त्री.](हि.) मोर की कलगी।

सिरावन [संज्ञा पु.] (हि.) वह पाटा जिससे जुता हुआ खेत बराबर करते हैं।

सिरावना* [क्रि. स](हिं.) देखो 'सिराना'।

सिरावृत्त [संज्ञा पु] (सं.) सीसा (धातु)।

सिराहर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुलक। २-आँख के डोरों की लाली।

सिरिन [संज्ञा पु.] (देश) लाल सिरस।

सिरियारी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सुसना नामक साग

सिरिश्तेदार [संज्ञा पु](फ़ा.) अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमें के कागज-पत्र रखता है।

सिरिश्तेदारी [संज्ञा स्त्री](फा.) सिरिश्तेदार का काम या पद।

सिरिस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिरस'।

सिरी* [संज्ञा स्त्री.] (हि) १-देखो 'श्री'। २-खाने के लिये मारे पशु या पक्षी का सिर। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-करघा। २-कलि-हारी।

सिरीज [संज्ञा पु.] (अ.) मंगल तथा बृहस्पति के बीच का एक ग्रह।

सिरी-पंचमी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'श्रीपंचमी'।

सिरीस [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'सिरस'।

सिरोना [संज्ञा पु.] (हि.) घड़ा रखने का का बना मेंडरा। इंडुरी।

सिरोपाव [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पूरी पोशाक जो राज-दरबार से किसी को सम्मान के रूप मे मिलती है। खिलअत।

सिरोमनि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिरोमणि'।

सिरोरुह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिरोरुह'।

सिरोही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-राजस्थान की एक रियासत जिसे अब बम्बई राज्य में मिला दिया है। २-उस स्थान की बनी बढ़िया तलवार।

सिर्का [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिरका'।

सिर्फ [क्रि. वि.] (अ.) केवल। मात्र। [वि.] (हिं.) १-एकमात्र। अकेला। २-शुद्ध। खालिस।

सिरीं+ [वि.] (हिं.) देखो 'सिड़ी'।

सिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पत्थर। चट्टान। शिला। २-पत्थर की चौकोर पटिया। ३-रुई की पूनी बनाने की काठ की पटरी। [संज्ञा पु.] (हिं.) उंछवृत्ति। [वि.] (हिं.) देखो 'शिल शिलोंछ'। [संज्ञा पु.] (देश.) बलूत की जाति का एक पहाड़ी वृक्ष। [संज्ञा पु.] (अ.) राजयक्ष्मा। तपेदिक।

सिलक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लड़ी। हार। २-पंक्ति [संज्ञा पु.] (हिं.) तागा। धागा।

सिलकी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बेल।

सिलखड़ी, सिलखरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार का चिकना, मुलायम और सफेद पत्थर जिसके बरतन बनाये जाते हैं। २-खड़िया।

सिलगना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सुलगना'।

सिलप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिल्प'।

सिलपची [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'चिलमची'।

सिलपट [वि.] (हि.) १-चौरस। बराबर। २-चौपट। ३-घिसा या मिटा हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (अं. स्लिपर) १-चट्टी। २-चप्पल।

सिलपोहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह की एक रस्म या रीति।

सिलफची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'चिलमची'।

सिलफोड़ा [संज्ञा पु.] (हि.) पाषाणभेद।

सिलबरुआ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस।

सिलमाकूर [संज्ञा पु.] (हिं.) पाल बनाने वाला।

सिलवट [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बल। सिकुड़न।

सिलवाना [क्रि. स.] (हि.) देखो 'सिलाना'।

सिलसिला [संज्ञा पु.] (अ.) १-बँधा हुआ क्रम। तार। २-श्रेणी। पंक्ति। ३-व्यवस्था। ४-शृङ्खला। लड़ी। [वि.] (हि.) १-भीगा हुआ गीला। २-रपटन वाला। ३-चिकना।

सिलसिलाबंदी [संज्ञा स्त्री.] (अ + फा.) १-तरतीब। २-कतारबंदी।

सिलसिलेवार [वि.] (अ., फा.) क्रमानुसार। सिलसिले से।

सिलह [संज्ञा पु.] (अ.) शस्त्र। हथियार।

सिलहखाना [संज्ञा पु.] (अ. फा.) अस्त्रागार।

सिलहट [संज्ञा पु.] १-(देश.) एक प्रकार का अगहनी धान। २-एक प्रकार की नारंगी।

सिलहटिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की नाव।

सिलहार, सिलहारा [संज्ञा पु.] (हिं.) उंछशील व्यक्ति।

सिलहिला [वि.] (हिं.) [स्त्री. सिलहिली] रपटन वाला।

सिलही [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी

सिला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिला'। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कटे खेत में से चुना हुआ दाना। २-पछोड़ने या फटकने के लिये रखा हुआ अनाज का ढेर। ३-उंछवृत्ति। [संज्ञा पु.] (अं.) प्रतिकार। बदला। एवज। *सिले में*-बदले में। उपलक्ष में।

सिलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीने का काम। २-सीने का ढंग। ३-सीने की मजदूरी ४-टाँका। सीवन। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) ऊख या ज्वार मे लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा

सिलाजीत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिलाजीत'।

सिलाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी को सीने में प्रवृत्त करना। सिलवाना। ❀ [क्रि. स.] देखो 'सिराना'।

सिलाधाक [संज्ञा पु.] (हिं.) शैलज। छरीला।

सिलाबी [वि.] (हिं.) तर। सीलवाला।

सिलारस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिल्हक नामक वृक्ष। २-उक्त वृक्ष का गोंद।

सिलावट [संज्ञा पु.] (हिं.) संगतराश।

सिलासार [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहा।

सिलाह [संज्ञा पु.] (अ.) १-जिरहबकतर। कवच २-अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

सिलाहखाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) शस्त्रालय। अस्त्रागार।

सिलाहबंद [वि.] (अ., फा.) सशस्त्र। हथियारबंद

सिलाहर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह व्यक्ति जो खेत में से अन्न बीनकर निर्वाह करता हो। २-अकिंचन।

सिलाहसाज [संज्ञा पु.] (अ., फा.) हथियार बनाने वाला।

सिलाही [संज्ञा पु.] (अ.) सैनिक। सिपाही।

सिलिंगिया [संज्ञा स्त्री.] (शिलांग.) एक प्रकार की भेड़ जो शिलांग प्रदेश में पाई जाती है।

सिलिप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिल्प'।

सिलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का पत्थर

सिलियार, सिलियारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिलाहर'।

सिलिसिलिक [संज्ञा पु.] (सं.) गोंद।

सिलीध्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिलीध्र'।

सिलीमुख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिलीमुख'

सिलेक्ट-कमिटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह समिति जिसमें कुछ चुने हुये सदस्य होते हैं तथा जो किसी महत्व के विषय पर विचार कर अपना निर्णय साधारण सभा के सम्मुख उपस्थित करती है।

सिलेट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'स्लेट'।

सिलोंध [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बड़ी मछली।

सिलोच्च [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्राचीन पर्वत का नाम।

सिलौआ [संज्ञा पु.] (देश.) सन के मोटे रेशे

सिलौट, सिलौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिल। २-सिल और बट्टा।

सिलौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी सिल।

सिल्क [संज्ञा पु.] (अं.) १ रेशम। २-रेशमी कपड़ा

सिल्प [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिल्प'।

सिल्लकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीढ़ का पेड़।

सिल्ला [संज्ञा पु.] (हिं.) फसल कट जाने पर खेत में गिरे हुये अन्न के दाने। *सिल्ला बीनना या चुनना*–खेत मे गिरे अनाज के दाने चुनना।

सिल्ली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हथियार की धार तेज करने का पत्थर। सान। २-पत्थर की पटिया। ३-आरे से चीर कर पेड़ों से निकाला हुआ तख्ता। ४-फटकने के लिये लगाया हुआ अनाज का ढेर। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का जलपक्षी।

सिल्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिलारस नामक गंध-द्रव्य। २-सिलारस का एक पेड़।

सिल्हक [संज्ञा पु.] (सं.) सिलारस नामक गन्ध-द्रव्य।

सिल्हकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सिलारस का पेड़ २-कुंदुरु।

सिव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिव'।

सिवई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गुँधे हुए आटे के पतले सेव या सूत-से लच्छे जो पकाकर खाये जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीनेवाला। २-दरजी

सिवर [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

सिवलिंगी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शिवलिंगी'

सिवस [संज्ञा पु.] (सं.) १-वस्त्र। कपड़ा। २-पद्य। श्लोक।

सिवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शिवा'। [अव्यय] (अ.) अतिरिक्त। अलावा। [वि.] (अ.) अधिक। ज्यादा।

सिवाइ [अव्यय] (अ.) सिवाय। सिवा।

सिवाई [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मिट्टी ❀ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिलाई'।

सिवान [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सीमा। हद। २-गाँव

के अन्तर्गत भूमि। २-फसल तैयार होजाने पर किसान और जमींदार का अन्न का बटवारा।

सिवाय [क्रि. वि.] (अं.) अतिरिक्त। अलावा। [वि.] (हिं.) अधिक। ज्यादा। [संज्ञा पु.] (अं.) ऊपरी आमदनी।

सिवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की लम्बी घास जो पानी मे होती है।

सिवाल [संज्ञा पु.] (.) देखो 'सिवार'।

सिवाला [संज्ञा पु.](हिं.) शिवालय। शिव का मन्दिर।

सिवाली [संज्ञा पु.] ([illegible].) एक प्रकार का हलके रंग का पन्ना।

सिवि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिव'।

सिविका [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'शिविका'।

सिविर [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'शिविर'।

सिविल [वि] (अं.) १-नगर-सम्बन्धी। नागरिक २-नगर की शांति के समय देखभाल या चौकसी करने वाला। ३-सभ्य। मिलनसार। ४-मुल्की। माली।

सिविल-सर्जन [संज्ञा पु.] (अं.) सरकारी बड़ा डाक्टर जो नगर के अस्पतालों का मुख्य अधिकारी होता है।

सिविल-सर्विस [संज्ञा स्त्री] (अं.) भारत सरकार की एक विशेष परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण व्यक्ति देश के प्रबन्ध तथा शासन में ऊँचे पद पर नियुक्त होते हैं।

सिविलियन [संज्ञा पु](अं.) १-सिविल-सर्विस पास किया हुआ व्यक्ति। २-देश के शासन तथा प्रबन्ध विभाग का कर्मचारी।

सिवैयाँ [संज्ञा स्त्री] (हिं) गुँधे हुए आटे के सूत के से सूखे लच्छे जो दूध में पकाकर खाये जाते हैं। *सिवैयाँ बटना या तोड़ना*-सिवैयाँ बनाना।

सिष्ट [संज्ञा स्त्री] (हिं) बंसी की डोरी। *[वि] देखो 'शिष्ट'।

सिष्य* [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'शिष्य'।

सिसकना [क्रि अ] (हिं.) १-रोने में रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। २-सिसकी भरकर रोना। खुलकर न रोना। ३-जी धड़कना ४-उलटी साँस लेना। मरणासन्न होना। ५-तरसना।

सिसकारना [क्रि. अ] (हिं) १-मुख से सीटी का शब्द निकालना। सुसकारना। २-अत्यधिक पीड़ा अथवा आनन्द के कारण मुख से साँस खींचना। सीत्कार करना।

सिसकारी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सिसकारने का शब्द। २-देखो 'सीत्कार'।

सिसकी [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-धीरे-धीरे रोने का शब्द। २-सिसकारी। सीत्कार।

सिसिरांद [संज्ञा स्त्री] (हिं.) मछली की सी गन्ध।

सिसिर* [संज्ञा पु] (हि) शिशिर।

सिसु* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शिशु'।

सिसुता* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिशुता'।

सिसुपाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिशुपाल'।

सिसुमार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिशुमार'।

सिसुमारचक्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिशुमारचक्र।

सिसृक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं) सृष्टि करने की इच्छा

सिसृक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) रचना का इच्छुक।

सिसोदिया [संज्ञा पु] (हिं) गुहलौत राजपूतों की एक शाखा।

सिस्न [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शिश्न'।

सिस्य [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शिष्य'।

सिहद्दा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ तीन हद या सीमायें मिलती हों।

सिहपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) अडूसा।

सिहरन [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरी।

सिहरना+ [क्रि. अ.] (हिं.) शीत या भय से कांपना।

सिहरा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सेहरा'।

सिहराना [क्रि. स.] (हिं) १-सरदी से काँपना। २-डराना।

सिहरावन [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सिहरन'।

सिहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिहरन'।

सिहरू [संज्ञा पु.] (देश.) संभालू। सिंदुवार।

सिहलाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ठंडा होना। २-शीत खा जाना। ३-ठंड पड़ना।

सिहलावन+ [संज्ञा पु] (हिं) सरदी। ठंड।

सिहली [संज्ञा स्त्री.] (हिं) शीतली-जटा।

सिहान [संज्ञा पु.] (हिं) मंडूर। लोहकिट्ट।

सिहाना+ [क्रि अ] (हिं) १-ईर्ष्या उत्पन्न करना। २-ललचना। ३-मुग्ध होना। ४-स्पर्द्धा करना। [क्रि स](हिं.) १-ईर्ष्या भरी दृष्टि से देखना। २-अभिलाषा की दृष्टि से देखना।

सिहारना* [क्रि स] (देश.) १-तलाश करना २-जुटाना।

सिहिकना [क्रि अ] (हिं.) सूखना।

सिहुंड, सिहुण्ड [संज्ञा पु.] (सं) थूहर।

सिहोड़, सिहोर+ [संज्ञा पु] (हिं.) थूहर।

सींक [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-घास आदि का पतला बड़ा डंठल। २-सरकंडा। ३-मूंज आदि की पतली तीली। ४-तिनका। ५-नाक की कील (गहना)।

सींकपार [संज्ञा स्त्री] (देश.) एक प्रकार की बत्तख।

सींकर [संज्ञा पु] (हिं) सींक मे लगा फूल या घूआ।

सींका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पेड़ पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी। डाँड़ी। २-देखो 'छींका'।

सींकिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा। [वि.] (हिं.) सींक जैसा पतला। *सींकिया पहलवान*-दुबला पतला आदमी जो अपने को बहुत बलवान् समझता हो।

सींग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-खुर वाले पशुओं के वे नुकीले अवयव जो सिर पर दोनों ओर निकलते है। विषाण। २-सिंगी नामक सींग का बना बाजा। *सिर पर सींग होना*-कोई विशेषता होना। *सींग दिखाना*-अंगूठा दिखाना। *सींग निकलना*-१-चौपाये का जवान होना। २-पागलपन करना। *कहीं सींग समाना*-कहीं गुजारा या निर्वाह होना। *सींग पर मारना*-तुच्छ समझना। यौ०-*सींग जमना*-लड़ने की इच्छा होना। कहा०-*सींग कटा कर बछड़ों में मिलना*-वयस्क होकर भी बच्चों का-सा आचरण करना।

सींगड़ा [संज्ञा पु.] (हिं) १-सींग का बारूद रखने का चोंगा। २-सिंगी नामक बाजा।

सींगना [क्रि. स.] (हिं) सींग देखकर चोरी के पशु पकड़ना।

सींगरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) मोगरे की फली जिसकी तरकारी बनती है।

सींगी* [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'सिंगी'।

सींघन [संज्ञा पु.] (देश) दो या अधिक भौंरी वाला घोड़े के माथे का टीका।

सींच [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-सिंचाई। २-छिड़काव।

सींचना [क्रि. स.] (हिं.) १-खेतों आदि में पानी देना। २-भिगोना। तर करना। ३-छिड़कना।

सींची [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सींचने का समय।

सींवँ+ [संज्ञा पु] (हिं) सीमा। हद। मर्यादा। *सींव चरना या कादना*-अधिकार दिखाना।

सी [वि] (हिं.) समान। सदृश। (स्त्री.)। *अपनी-सी*-अपने मन के अनुसार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीत्कार। सिसकारी। २-बीज की बोआई।

सी०आई०डी० [संज्ञा पु.](अं. क्रिमिनल-इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट) का संक्षिप्त रूप-वह राजकीय विभाग जो अपराधों का गुप्त रूप से अनुसंधान करता है। खुफिया विभाग।

सीउ* [संज्ञा पु.] (हिं) शीत। ठंड।

सीकचा [संज्ञा पु] (फा) लोहे की छड़।

सीकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-जलकण। पानी की बूँद। २-स्वेद। पसीना। [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जंजीर। सिकड़ी।

सीकल [संज्ञा पु.] (देश.) डाल का पका हुआ आम। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) हथियार की

सीकस [संज्ञा पु] (देश) ऊसर।

सीका [संज्ञा पु] (हिं.) १-सोते का

जो सिर पर पहना जाता है। २-छींका। सिकहर।

सीकाकाई [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रीठे की भांति काम आती हैं

सीकी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) छोटा सीका या छींका [संज्ञा पु.] (देश.) १-छेद। सुराख। २-मुँह

सीकुर [संज्ञा पु.] (हि.) जौ, गेहूँ आदि की बालों पर के निकले हुए कड़े सूत।

सीकों+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सीका'।

सीख [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-शिक्षा। तालीम। २-वह बात जो सिखलाई जाय। ३-परामर्श। सलाह।

सीख़ [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-देखो 'सींक'। २-देखो 'सीखचा'।

सीखचा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-लोहे की छड़। २-वह लोहे की छड़ जिसपर मांस भूनते हैं।

सीखन* [संज्ञा स्त्री.] शिक्षा। सीख।

सीखना [क्रि. स.] (हि.) १-ज्ञान प्राप्त करना। २-काम करने का ढंग जानना।

सीग़ा [संज्ञा पु.] (अ.) १-विभाग। महकमा। २-सांचा। ढांचा। ३-पेशा। व्यापार। सीगेवार-ब्यौरेवार।

सीगारा [संज्ञा पु.] (देश.) मोटा कपड़ा। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सिगार'।

सीचन [संज्ञा पु.] (देश.) खारी पानी से मिट्टी निकालने का एक ढंग।

सीचापू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यक्षिणी।

सीज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सीझ'। [संज्ञा पु.] (देश.) थूहर। सेहुँड।

सीजना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'सीझना'।

सीझ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सीझने की क्रिया या भाव।

सीझना [क्रि. अ.] (हि.) १-आँच पर पकना या गलना। २-सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि से भीगकर मुलायम और टिकाऊ होना। ३-कष्ट सहना। ४-तपस्या करना।

सीट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) बैठने का स्थान। आसन। [संज्ञा स्त्री.](हि.) सीटने की क्रिया या भाव।

सीटना [क्रि. स.] (हि.) शेखी हाँकना। डींग-मारना।

सीटपटाँग [संज्ञा स्त्री.पु.](हि.)बढ़-बढ़कर की जाने वाली बातें।

सीटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-वह महीन, पर तेज शब्द जो होठों को सिकोड़ने और वायु बाहर फेंकने से होता है। २-इस प्रकार का शब्द जो किसी बाजे आदि से निकलता है। ३-वह बाजा जिससे ऐसा शब्द निकलता है। सीटी देना-१-सीटी के शब्द द्वारा बुलाना या और कोई संकेत करना। २-सीटी का शब्द निकालना। सीटी से सावधान करना। सीटी मारना-सीटी बजाना।

सीठ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सीठी'।

सीठना [संज्ञा पु.] (हि.) विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाये जाने वाले अश्लील गीत। सीठनी।

सीठनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली गाली।

सीठा [वि.] (हि.) नीरस। फीका।

सीठापन [संज्ञा पु.] (हि.) नीरसता। फीकापन।

सीठी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-चूसे या रस निचोड़े हुए फल आदि का नीरस अंश। खूद। २-सारहीन पदार्थ। ३-फीका या बचीखुची चीज

सीड़ [संज्ञा स्त्री.](हि.) सील। तरी। नमी।

सीढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-ऊँचे स्थान पर चढ़ने का साधन जिस पर एक के बाद एक पर पैर रखने के स्थान बने हों। निसेनी। पैड़ी। जीना। २-ऐसे मार्ग या साधन में बना हुआ पैर रखने का प्रत्येक स्थान। डण्डा। ३-घुड़िया के आकार का लकड़ी का पाया जो खडसाल में चीनी साफ करने के काम में आता है। ४-एक गड़ारीदार लकड़ी जो गिरदान की आड़ के लिये लपेटन के पास गड़ी होती है (जुलाहे)।

सीत* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शीत'।

सीतकर* [संज्ञा पु.] (हि.) चन्द्रमा।

सीतपकड़ [संज्ञा पु.] (हि.) हाथी को शीत से होने वाला एक रोग।

सीतल* [वि.] (हि.) देखो 'शीतल'।

सीतलचीनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शीतलचीनी'।

सीतलपाटी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक प्रकार की बढ़िया चिकनी चटाई। २-एक प्रकार की झाड़ी जिससे उक्त चटाई बनती है। ३-एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीतलबुकनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सत्तू। २-सन्त महात्माओं की वाणी (साधु)।

सीतला [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शीतला'।

सीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह रेखा जो भूमि जोतते समय हलकी फाल धँसने से बनती है। कूँड। २-मिथला के राजा जनक की कन्या और श्रीरामचन्द्र की पत्नी का नाम। ३-राजा की निज की भूमि। सीर। दाक्षायणी देवी का एक नाम। ४-आकाशगङ्गा की चार धाराओं में से एक। ५-मदिरा। ६-ककही का पौधा। ७-पातालगारुड़ी नामक लता। ८-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं।

सीताकुंड, सीताकुण्ड [संज्ञा पु.](सं.)वह कुंड जो सीतादेवी के सम्बन्ध से पवित्र तीर्थ माना जाता हो।

सीताजानि [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

सीतातीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) एक तीर्थ विशेष का नाम।

सीतात्यय [संज्ञा पु.] (सं.) किसानों पर होने वाला दण्ड।

सीताद्रव्य [संज्ञा पु.](सं.)काश्तकारी का सामान

सीताधर [संज्ञा पु.] (सं.) हलधर। बलराम।

सीताध्यक्ष [संज्ञा पु.](सं.) वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी का काम देखता है।

सीतानवमीव्रत [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का व्रत

सीतानाथ, सीतापति [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

सीताफल [संज्ञा पु.](सं.)१-शरीफा। २-कुम्हड़ा।

सीतायज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) हल जोतने के समय होने वाला यज्ञ।

सीतारमण [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

सीतारवन,* सीतारौन [संज्ञा पु.] (हि.) सीतारमण। श्रीराम।

सीतालोष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) जुते हुए खेत का मिट्टी का ढेला।

सीतावट [संज्ञा पु.] (सं.) एक वटवृक्ष जो प्रयाग और चित्रकूट के मध्य में है। कहते हैं कि यहाँ राम और सीता ठहरे थे।

सीतावर, सीतावल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

सीताहार [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

सीतीनक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मटर। २-दाल।

सीतीलक [संज्ञा पु.] (सं.) मटर।

सीतोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार विदेह की एक नदी का नाम।

सीत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) वह शब्द जो अत्यन्त पीड़ा अथवा आनन्द के समय मुख से साँस खींचने से निकलता है। सिसकारी।

सीत्कारबाहुल्य [संज्ञा पु.] (सं.) वंशी के छः दोषों में से एक।

सीत्य [संज्ञा पु.](सं.)१-चावल। धान। २-खेत

सीथ [संज्ञा पु.] (हि.) पके हुए अन्न का दाना।

सीदंतीय, सीदन्तीय [संज्ञा पु.] (सं.) एक सामगान।

सीद [संज्ञा पु.] (सं.) ब्याज पर रुपया देना।

सीदना* [क्रि. अ.] (हि.) दुःख पाना। कष्ट झेलना।

सीदी [संज्ञा पु.] (देश.) शकजाति का पुरुष।

सीध्र [संज्ञा पु.] (सं.) काहिली। सुस्ती। दीर्घसूत्रता।

सीध [संज्ञा स्त्री.] (हि.)१-सीधी रेखा या दिशा २-लक्ष्य। निशाना। सीध बाँधना-१-सड़क आदि बनाने से पहले रेखा डालना।

सीधा [वि.] (हि.) [स्त्री. सीधी] १-जो टेढ़ा न हो। अवक्र। सरल। ऋजु। २-जो ठीक

लक्ष्य की ओर हो। ३-जो कुटिल या कपटी न हो। निष्कपट। भोलाभाला। ४-शिष्ट। भला। ५-शांत प्रकृति का। ६-आसान। सहल। ७-जो जल्दी समझ में आवे। ८-दाहिना।

सीधा करना-लक्ष्य की ओर लगाना। *सीधी राह*-सुमार्ग। *सीधी सुनाना*-१-खरी-खरी या साफ-साफ कहना। २-गालियाँ देना। *सीधा आना*-सामना करना। (*किसी को*) *सीधा करना*-रास्ते पर लाना। *सीधा दिन*-शुभ दिन यौ०-*सीधासादा*-१-भोला-भाला। २-जिसमें कोई बनावट या तड़क-भड़क न हो। [क्रि. वि.] (हि.) ठीक सामने की ओर। सम्मुख। [संज्ञा पु.] (हि.) १-सामने का भाग। २-बिना पका हुआ अन्न।

सीधापन [संज्ञा पु.] (*हि.*) सीधा होने का भाव। सरलता। भोलापन।

सीधु [संज्ञा पु.] (सं.) गुड़ की शराब।

सीधुगंध, सीधुगन्धं [संज्ञा पु.] (सं.) मौलसिरी

सीधुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गम्भारी नामक वृक्ष

सीधुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-कदम्ब। २-मौलसिरी।

सीधुपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धव। धौ।

सीधुरस [संज्ञा पु.] (सं.) आम का वृक्ष।

सीधुराक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बिजौरा नीबू।

सीधुराक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) कसीस।

सीधुवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर।

सीधुसंज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) बकुली या मौलसिरी का पेड़।

सीधे [क्रि. वि.] (हि.) १-सामने की ओर। २-बिना बीच में रुके या मुड़े। ३-शिष्ट व्यवहार से अच्छी तरह से।

सीध्र [संज्ञा पु.] (सं.) गुदा। मलद्वार।

सीन [संज्ञा पु.] (अं.) -१-दृश्य। दृश्यपट। २-थियेटर के रङ्गमंच का कोई परदा जिस पर दृश्य चित्रित होते हैं।

सीनरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) प्राकृतिक दृश्य।

सीना [क्रि. स.] (हि.) कपड़े, चमड़े आदि को टाँके से मिलाना या जोड़ना। टाँका मारना। यौ०-*सीना-पिरोना*-सिलाई और बेलबूटे आदि का काम करना। [संज्ञा पु.](फा.) छाती। वक्षस्थल। *सीने से लगाना*-छाती से लगाना। आलिंगन करना [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ऊनी कपड़ों को काटने वाला कीड़ा। सीवाँ। २-एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

सीनातोड़ [संज्ञा पु.] (फा., हि.) कुश्ती का एक पेंच।

सीनापनाह [संज्ञा पु.] (फा.) जहाज के नीचे वाले खण्ड में लम्बाई के बल दोनों ओर का किनारा।

सीनाबंद [संज्ञा पु.] (फा.) १-अँगिया। चोली। २-गिरेबान का हिस्सा। ३-वह घोड़ा जो अगले पैर से लंगड़ाता हो।

सीनाबाँह [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार की कसरत

सीनियर [वि.] (अं.) एक बड़ा वयस्क। २-पद-मर्यादा आदि में ऊँचा।

सीनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) थाली।

सीप [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शंख आदि के समान कड़े आवरण में रहने वाला एक जलजन्तु। सीपी। २-समुद्री सीप के सफेद चमकीला आवरण जिसके बटन आदि बनते हैं। ३-वह लम्बोतरा पात्र जिसमें देवपूजा या तर्पण आदि के लिये जल रखा जाता है।

सीपति* [संज्ञा पु.] (हि.) श्रीपति। विष्णु।

सीपर* [संज्ञा पु.] (हि.) ढाल।

सीपसुत, सीपज [संज्ञा पु.] (हिं.) मोती।

सीपा [संज्ञा पु.] (देश.) कड़ा जाड़ा।

सीपिया [संज्ञा पु.] (हि.) एक प्रकार का बड़ा और बढ़िया आम। [संज्ञा पु.](अं.) एक प्रकार का गहरा भूरा रंग जो कुछ पीलापन लिये होता है।

सीपी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सीप नामक जल-जन्तु का आवरण या सम्पुट।

सीबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह सीत्कार का शब्द जो स्त्रियाँ सम्भोग के समय अत्यधिक आनन्द के आवेश में करती हैं। सिसकारी।

सीभा [संज्ञा पु.] (देश.) दहेज।

सीमंत, सीमन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्रियों के सिर की मांग। २-हिन्दुओं में एक संस्कार जो गर्भ स्थिति के चौथे या आठवें महीने में किया जाता है। ३-वैद्यक के अनुसार अस्थियों का सन्धि स्थान।

सीमंतक, सीमन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-माँग निकालने की क्रिया। २-सिंदूर। ईंगुर। ३-जैनियों के सात नरकों में से एक नरक का अधिपति। ४-नरकवास। ५-एक प्रकार का मानिक या रत्न।

सीमंतवान्, सीमन्तवान् [वि.] (सं.) [स्त्री सीमंतवती] जिसकी मांग निकली हो।

सीमंतित, सीमन्तित [वि.] (सं.) मांग निकला हुआ।

सीमंतिनी, सीमन्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री नारी।

सीमंतोन्नयन, सीमन्तोन्नयन [संज्ञा पु.] (सं.) द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा।

सीम* [संज्ञा पु.] (हि.) सीमा। पराकाष्ठा। *सीम चरना*-दूसरे के क्षेत्र में पहुँच कर अधिकार जताना।

सीमल* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सेमल'।

सीमलिंग, सीमलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) सीमा का चिह्न। हद का निशान।

सीमशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आने वाली और देश से बाहर जाने वाली वस्तुओं पर लगता है। कस्टम-ड्यूटी।

सीमांकन, सीमाङ्कन [संज्ञा पु.] (सं) किसी देश राज्य या प्रदेश का बटवारा करके सीमा या हद की रेखा अथवा चिह्न आदि बनाना। डिमार्केशन।

सीमांत, सीमान्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहां सीमा का अन्त होता हो। फ्रँन्टियर।

सीमांतपूजन, सीमान्तपूजन [संज्ञा पु.] (सं.) वर का पूजन जब वह बरात के साथ गाँव की सीमा के भीतर पहुँचता है।

सीमांत-बंध, सीमान्त-बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) आचरण का नियम या मर्यादा।

सीमांतिक, सीमान्तिक [वि.] (सं.) सीमा से सम्बन्ध रखने वाला। सीमांत-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सीम-शुल्क।

सीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी प्रदेश या वस्तु के चारों ओर के विस्तार की अन्तिम रेखा या स्थान। हद। सरहद। बाउण्डरी। २-वह अन्तिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो। नियम या मर्यादा की हद। *लिमिट*। माँग। *सीमा से बाहर जाना*-उचित से अधिक बढ़ जाना।

सीमा-कर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी राज्य, प्रदेश आदि की सीमा पर लिया जाने वाला कर। *टर्मिनल-टैक्स*।

सीमाकर्षक [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राम की सीमा पर हल जोतने या खेती करने वाला।

सीमातिक्रमणोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) युद्धयात्रा में सीमा पार करने का उत्सव। विजयोत्सव।

सीमा-निर्धारण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रदेश आदि की सीमा निर्धारित करने की क्रिया। सीमा का स्थिरीकरण। *डेलिमिटेशन*।

सीमापाल [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा की रक्षा करने वाला।

सीमाब [संज्ञा पु.] (सं.) पारा।

सीमाबद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।

सीमावरोध [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा स्थिर होना। हदबन्दी।

सीमा-विनिर्णय [संज्ञा पु.] (सं.) विवादग्रस्त सीमा का निर्णय।

सीमाविवाद [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा-सम्बन्धी झगड़ा।

सीमावृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा या हद बताने वाला वृक्ष।

सीमाशुल्क [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सीमशुल्क'।

सीमासंधि, सीमासन्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दो

सीमाओं का एक स्थान पर मिलान ।

सीमासेतु [संज्ञा पु.] (सं.) सीमा का निर्देश करने वाला पुश्ता या मेंड़ ।

सीमिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का वृक्ष । २-दीमक । ३-दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर ।

सीमेंट [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'सिमेंट' ।

सीमोल्लंघन, सीमोल्लङ्घन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मर्यादा तोड़ना । २-सीमा या सरहद पार करना ।

सीय [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सीता । जानकी ।

सीयक [संज्ञा पु.] (सं) मालवा के परमारवंशी दो प्राचीन राजाओं के नाम ।

सीयन+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सीवन' ।

सीयरा [वि.] (हि.) देखो 'सियरा' ।

सीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हल । २-हल जोतने वाले बैल । ३-आक । मदार । ४-सूय । [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-साझा । २-किसी के साझे में जमीन जोतने-बोने की रीति । ३-एक प्रकार से जोती बोई जाने वाली जमींन । ४-वह जमीन जिसे जमींदार स्वयं या किसी आसामी के साझे में जोतता हो । ५-रक्त की नाड़ी । ६-चौपायों का एक संक्रामक रोग । सीर में-साझे में । एक में । सीरं खुलवाना-नश्तर द्वारा शरीर का दूषित रक्त निकलवाना ॐ[वि.] (हि.) ठंडा । शीतल ।

सीरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हल । २-सूंस नामक जलजन्तु । ३-सूर्य । ॐ[संज्ञा पु.] (हि.) ठंडा करने वाला ।

सीरख* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शीर्ष' ।

सीरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह भूमिधर जो अपनी भूमि किसी आसामी के साझे में जोतता बोता हो । २-वह किसान जो किसी भूमिधर के साझे में उसकी भूमि जोतता बोता हो तथा जिस पर स्थायी वंशानुक्रमिक अधिकार प्राप्त हो ।

सीरधर [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम । [वि.] हल धारण करने वाला ।

सीरध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा जनक । २-बलराम ।

सीरन [संज्ञा पु.] (देश.) बच्चों का पहनावा ।

सीरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शीरनी । मिठाई ।

सीरपाणि [संज्ञा पु.] (सं.) हलधर । बलराम ।

सीरभृत [वि.] (सं.) हल धारण करने वाला । [संज्ञा पु.] हलधर ।

सीरवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-हलवाहा । २-जमींदार की ओर से खेती का प्रबन्ध करने वाला कर्मचारी ।

सीरवाहक [संज्ञा पु] (सं) हलवाहा । किसान ।

सीरष* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शीर्ष' ।

सीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राचीनकाल की एक नदी का नाम । [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिराहना' ॐ[वि.] (हिं.) [स्त्री. सीरी] १-शीतल । ठंडा २-मौन । चुपचाप ।

सीरी [संज्ञा पु.] (हिं.) बलराम । [वि.] [स्त्री. प्र.] देखो 'सीरा' ।

सीरोसा [संज्ञा पु] (देश.) एक प्रकार की मिठाई

सीलंध, सीलन्ध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मछली ।

सील [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) भूमि की आर्द्रता । सीड़ नमी । [संज्ञा पु.] १-देखो 'शील' । २-वह लकड़ी का औजार जिस पर चूड़ियाँ गोल और सुडौल की जाती हैं । [संज्ञा पु.] (अं) १-मुहर । मुद्रा । ठप्पा । २-एक प्रकार की समुद्री मछली ।

सीला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'सिल्ला' । २-खेत में गिरे हुए दानों से निर्वाह करने की प्राचीन ऋषियों की वृत्ति । [वि] [स्त्री. सीली] गीला । आर्द्र । नम ।

सीव* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सीमा' ।

सीवक [संज्ञा पु.] (सं.) सीने वाला ।

सीवड़ो [संज्ञा पु.] (डिं.) गाँव का सीमांत ।

सीवन [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीने का काम । २-सिलाई के टाँके । ३-दरार । सन्धि । ४-वह रेखा जो अंडकोश के बीचोंबीच से लेकर मलद्वार तक जाती है ।

सीवना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सिवाना' । [क्रि. स.] देखो 'सीना' ।

सीवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है ।

सीवी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सीबी' ।

सीस [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिर । माथा । २-कंधा ३-अन्तरीप । ४-देखो 'सीसा' ।

सीसक [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा (धातु) ।

सीसज [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर ।

सीसताज [संज्ञा पु.] (हिं.) शिकारी जानवरों के सिर पर पहनाने की टोपी ।

सीसताण [संज्ञा पु.] (सं.) अफगानिस्तान तथा फारस के मध्य का प्रदेश ।

सीसत्रान [संज्ञा पु.] (हिं.) टोप । शिरस्त्राण ।

सीसपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा नामक धातु ।

सीसफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गहना जिसे स्त्रियां सिर पर पहनती हैं ।

सीसम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शीशम' ।

सीसमहल [संज्ञा पु.] (फा., अ.) वह मकान जिसकी दीवारों पर सब ओर शीशे जड़े हों

सीसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं की कुतिया का पति । २-कुत्ते के रूप का एक बालग्रह ।

[illegible] [संज्ञा पु.] (देश.) केवड़े के आकार का एक वृक्ष ।

सीसा [संज्ञा पु.] (हिं) १-हलके काले रङ्ग की एक मूल धातु । ॐ २-देखो 'शीशा' ।

सीसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीत्कार । सिसकारी २-शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द ३-ॐ देखो 'शीशी' ।

सीसोपधातु [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर ।

सीसौदिया [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सीसोदिया'

सीस्मोग्राफ [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का यन्त्र जिससे भूकंप का पता लगता है ।

सीह [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) महक । गंध । [संज्ञा पु.] (देश.) साही नामक जन्तु । * [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'सिंह' ।

सीहगोस [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का जन्तु जिसके काले कान होते हैं ।

सीहुंड, सीहुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर ।

सुं* [प्रत्य.] (हिं.) देखो 'सों' ।

सुंखड़ [संज्ञा पु.] (देश) साधुओं का एक संप्रदाय ।

सुंगवंश, सुङ्गवंश [संज्ञा पु.] (सं.) मौर्यवंश के अन्तिम सम्राट के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन राजवंश ।

सुँघनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूँघने के लिये बनाई-हुई तम्बाकू के पत्तों की बुकनी । हुलास । नस्य

सुँघाना [क्रि. स.] (हि.) किसी को सूघने में प्रवृत्त करना ।

सुंठि [संज्ञा स्त्री.] (हि) शुंठि । सोंठ ।

सुंड [संज्ञा पु.] (हिं.) शुण्ड । सूँड ।

सुंडदंड [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शुंडादंड' ।

सुंडमुसुड [संज्ञा पु.] (हि.) हाथी ।

सुंडस [संज्ञा पु.] (देश.) लदुए गधे की पीठ पर रखने की गद्दी ।

सुंडा [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सूँड । [संज्ञा पु.] (देश) देखो 'सुंडस' ।

सुंडाल, सुण्डाल [संज्ञा पु] (सं.) हाथी ।

सुंडाली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) एक प्रकार की मछली

सुंडीबेंत [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बेत ।

सुंद, सुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का बानर । २-एक राक्षस । ३-विष्णु । ४-एक असुर जो निसुन्द का पुत्र था ।

सुंदर, सुन्दर [वि] (सं.) [स्त्री. सुन्दरी] १-रूपवान् । खूबसूरत । २-अच्छा । भला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-वृक्ष विशेष । २-कामदेव । ३-एक नाग । ४-एक पर्वत जो लंका में है ।

सुंदरक, सुन्दरक [संज्ञा पु] (सं.) १-एक तीर्थ का नाम । २-एक हृद का नाम ।

सुंदरकांड, सुन्दरकाण्ड [संज्ञा पु.] (सं) रामायण का पाँचवाँ कांड जो सुन्दरपर्वत के नाम पर रखा गया है ।

सुंदरता, सुन्दरता [संज्ञा स्त्री] (सं) सौन्दर्य । खूबसूरती ।

सुंदरताई* [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'सुन्दरता' ।

सुंदरत्व, सुन्दरत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दरता।

सुंदरम्मन्य, सुन्दरम्मन्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो अपने को सुन्दर समझता हो।

सुंदरवती, सुन्दरवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी

सुंदराई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दरता।

सुंदरापा [संज्ञा पु.] (हिं.) सुन्दरता।

सुंदरी, सुन्दरी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] रूपवती। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्त्री। २-हलदी ३-एक प्रकार का जंगली वृक्ष। ४-त्रिपुरसुन्दरी देवी। ५-एक योगिनी का नाम। ६-सवैया छन्द का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। ७-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण दो भगण और एक रगण होता है। द्रुतिलंबित। ८-तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्त। ६-एक प्रकार की मछली। १०-माल्यवान राक्षस की पत्नी का नाम।

सुंदरेश्वर, सुन्दरेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी की एक मूर्त्ति।

सुंदरौदन [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छा भात।

सुँधावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोंधापन। सोंधी-महक।

सुँधिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रकार की ज्वार। २-एक प्रकार की वनस्पति।

सुंपसुंठ, सुम्पसुण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) कपूरकचरी

सुंबा [संज्ञा पु.] (देश.) १-इस्पंज। २-तोप या बन्दूक की गरम नली ठंडी करने के लिये उस पर फेरा जाने वाला गीला कपड़ा। पुचारा। ३-वह गज जिससे तोप की नली साफ की जाती है। ४-लोहे का एक औजार।

सुंबी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे में छेद करने की छेनी।

सुंबुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'संबुल'।

सुंभ [संज्ञा पु.] १-देखो 'शुंभ'। २-देखो 'सुम'

सुंभा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुंबा'।

सुंभी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुंबी'।

सुंसारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) अनाज में लगने वाला लम्बा कीड़ा।

सु [उप.] (सं.) सुन्दर या श्रेष्ठ का वाचक एक उपसर्ग। [वि.] १-सुन्दर। अच्छा। २-श्रेष्ठ। उत्तम। ३-शुभ। भला। [संज्ञा पु.] १-उत्कर्ष। २-सुन्दरता। ३-हर्ष। ४-पूजा। ५-समृद्धि। ६-अनुमति। आज्ञा। ७-कष्ट। *[अव्य.] (हिं.) तृतीया, पंचमी तथा षष्ठी विभक्ति का चिह्न। [सर्व.] (हिं.) सो। वह

सुअटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सुग्गा। तोता।

सुअन* [संज्ञा पु.] (हिं.) पुत्र। बेटा। लड़का।

सुअनजर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोनजर्द'।

सुअना* [क्रि. अ.] (हिं.) उगना। उदय होना। [संज्ञा पु.] देखो 'सुअटा'।

सुअर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूअर'।

सुअरदंता [वि.] (हिं.) सूअर के समान दाँतों वाला। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का हाथी।

सुअर्गपताली+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह बैल जिसका एक सींग आकाश की ओर तथा दूसरा जमीन की ओर रहता है।

सुअवसर [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा अवसर। अच्छा मौका।

सुआ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सूआ'।

सुआउ* [वि.] (हिं.) दीर्घायु।

सुआद [संज्ञा पु.] (हिं.) स्मरण। याद।

सुआन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्वान'।

सुआना+ [क्रि. स.] (हिं.) उत्पन्न कराना।

सुआमी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वामी'।

सुआर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) रसोइया।

सुआरव [वि.] (सं.) मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला।

सुआसन [संज्ञा पु.] (सं.) बैठने का सुन्दर आसन या पीढ़ा।

सुआसिन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुआसिनी'

सुआसिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्त्री, विशेषतः पास रहने वाली स्त्री। सहचरी। २-सधवा। सुहागिन।

सुआहित [संज्ञा पु.] (हिं.) तलवार के ३२ हाथों में से एक।

सुइया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया।

सुई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सूई'।

सुकंकवत्, सुकङ्कवत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम।

सुकंटका, सुकण्टका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घृतकुमारी। २-पिंडखजूर।

सुकंठ, सुकण्ठ [वि.] (सं.) १-जिसका कण्ठ सुन्दर हो। २-जिसका स्वर मीठा हो। सुरीला। [संज्ञा पु.] श्रीराम के सखा, सुग्रीव

सुकंद, सुकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) कसेरू।

सुकंदक, सुकन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाराहीकन्द। २-प्याज। ३-एक प्राचीन देश। ४-उसका निवासी।

सुकंदकरण, सुकन्दकरण [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज

सुकंदन, सुकन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-वैजयंती तुलसी। २-बबईतुलसी।

सुकंदा, सुकन्दा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-लक्ष्मणाकन्द। २-बाँझककोड़ा।

सुकंदी, सुकन्दी [संज्ञा पु.] (सं.) जमींकन्द।

सुक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शुक। तोता। २-व्यास पुत्र। ३-एक राक्षस जो रावण का दूत था। ४-सिरस का पेड़।

सुकच [संज्ञा पु.] (सं.) अंगिरा वंश में उत्पन्न एक ऋषि।

सुकचण [संज्ञा पु.] (हिं.) संकोच। लज्जा।

सुकचाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सकुचाना'।

सुकटि [वि.] (सं.) अच्छी या सुन्दर कमर वाली

सुकटु [संज्ञा पु.] (सं.) शिरीष नामक वृक्ष। [वि.] बहुत कड़ुआ।

सुकड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सिकुड़ना'।

सुकदेव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शुकदेव'।

सुकना+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान

सुकनासा* [वि.] (हिं.) तोते की सी नाक वाला सुन्दर नाक वाला।

सुकन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) च्यवनऋषि की पत्नी का नाम।

सुकपर्दा [वि.] (सं.) बहुत अच्छे ढङ्ग से केश बांधने वाली (स्त्री)।

सुकपिच्छक [संज्ञा पु.] (हिं.) गंधक।

सुकमार+ [वि.] (हिं) देखो 'सुकुमार'।

सुकमारता+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुकुमारता'

सुकर [वि.] (सं.) १-जो सहज में हो सके। २-जो सहज में सुव्यवस्थित किया जा सके।

सुकरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुकर का भाव। सौकर्य। २-सुन्दरता।

सुकरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी और सीधी गाय

सुकराना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शुकराना'।

सुकरित* [वि.] (हिं.) सुकृत।

सुकरीहार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का गले में पहनने का हार।

सुकर्णक [संज्ञा पु.] (सं) हाथीकन्द। [वि.] सुन्दर कानों वाला।

सुकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-महाबला। २-मूसाकानी नामक लता।

सुकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इंद्रवारुणी।

सुकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा काम। २-एक देवताओं की श्रेणी या कोटि।

सुकर्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ज्योतिष के अनुसार विषकंभ आदि सत्ताईस योगों में से एक। २-उत्तम कर्म करने वाला व्यक्ति। ३-विश्वकर्मा। ४-विश्वमित्र।

सुकर्मी [वि.] (सं.) १-सत्कर्म करने वाला। २-सदाचारी।

सुकल [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो अपनी सम्पत्ति का उपयोग दान तथा भोग में करता है। २-मधुर पर अस्फुट शब्द करने वाला। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शुक्ल'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का आम।

सुकल्प [वि.] (सं.) अति निपुण।

सुकल्पित [वि.] (सं.) अच्छी तरह से बनाया हुआ।

सुकवाना [क्रि. अ.] (?) अचम्भे में आना।

सुकवि [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा कवि।

सुकष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी भारी तकलीफ।

सुकांड, सुकाण्ड [वि.](सं.) सुन्दर डाल वाला। [संज्ञा पु.] करेले की बेल।

सुकांडिका, सुकाण्डिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) करेले की बेल।

सुकांडी, सुकाण्डी [संज्ञा पु.] (हिं.) भ्रमर। भौंरा। [वि.] (सं.) १-सुन्दर डाली वाला। २-सुन्दर रीति से जुड़ा हुआ।

सुकाज [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा या उत्तम कार्य।

सुकातिज (डिं.) मोती।

सुकाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुखाना'।

सुकामव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम कामना से किया जाने वाला व्रत।

सुकामा [संज्ञा स्त्री.](सं.) त्रायमाणालता।

सुकार [वि.] (सं.) [स्त्री. सुकारा] १-सहज में होने वाला। २-सरलता से वश में आने वाला (घोड़ा, गौ आदि)। ३-सहज में प्राप्त होने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) १-सरल स्वभाव का घोड़ा। २-कुंकुमशालि।

सुकाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा समय। २-सस्ती का समय। अकाल का उलटा।

सुकालिन [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों का एक गण।

सुकालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं) भटकटैया।

सुकावना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुखाना'।

सुकाशन [वि.] (सं.) बहुत चमकीला।

सुकाष्ठक [संज्ञा पु.] (सं.) देवदारु।

सुकाष्ठा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कुटकी। २-कठकेला।

सुकिज* [संज्ञा पु.] (हिं.) शुभ या उत्तम कार्य।

सुकिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'स्वकीया'। (नायिका)।

सुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तोते की मादा।

सुकीउ* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्वकीया नायिका।

सुकुंतल, सुकुन्तल [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुकुंद, सुकुन्द [संज्ञा पु.] (सं.) राल।

सुकुंदक, सुकुन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) प्याज।

सुकुंदन, सुकुन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) बबुईतुलसी

सुकुआर [वि.](हिं.)[स्त्री. सुकुआरी] देखो 'सुकुमार'।

सुकुट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुकुड़ना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सिकुड़ना'।

सुकुति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शुक्ति। सीप।

सुकुमार [वि.] (सं.) [स्त्री. सुकुमारी] १-कोमल अंगों वाला। २-कोमल। नाजुक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोमलांग बालक। २-कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य। ३-ईख। ४-वनचंपा। ५-अपामार्ग। ६-साँवाँ नामक धान ७-कँगनी। ८-एक नाग का नाम। ९-एक दैत्य १०-तम्बाकू का पत्ता। ११-वैद्यक में एक प्रकार का मोदक।

सुकुमारक [संज्ञा पु.](सं.) १-तम्बाकू का पत्ता। २-तेजपात। ३-साँवाँ धान। ४-सुन्दर बालक

सुकुमारता [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुकुमार होने का भाव। कोमलता। नजाकत। सौकुमार्य।

सुकुमारवन [संज्ञा पु.] (सं.) एक कल्पित वन जिसमें शंकर और पार्वती क्रीड़ा किया करते हैं।

सुकुमारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जूही। २-नवमल्लिका। ३-केला। ४-स्पृक्का नामक गंधद्रव्य ५-मालती-लता।

सुकुमारिका [वि.] (सं.) कोमल अङ्गों वाली (स्त्री)। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केले का पेड़।

सुकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमेली। २-शंखिनी नामक औषध। ३-वनमल्लिका। ४-एक प्रकार की फली। ५-बड़ा करेला। ६-ईख। ७-केले का पेड़। ८-त्रिसंधि नामक पुष्पवृक्ष ९-स्पृक्का। १०-कन्या। ११-लड़की। बेटी। [वि.] (सं.) कोमल अङ्गों वाली। कोमलांगी

सुकुरना* [क्रि. अ] (हिं.) देखो 'सिकुड़ना'।

सुकुर्कुर [संज्ञा पु.] (सं.) बालकों का रोग विशेष जिसकी गणना बालग्रहों में होती है।

सुकुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम कुल। २-कुलीन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शुक्ल'।

सुकुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुकुल का भाव। कुलीनता।

सुकुलवेद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का वृक्ष।

सुकुवाँर, सुकुवार [वि.] (हिं.) देखो 'सुकुमार'।

सुकुसुमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुकृत् [वि.] (सं.) १-उत्तम और शुभ कार्य करने वाला। २-धार्मिक। ३-भाग्यवान्। ४-धर्मशील।

सुकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुण्य। २-सत्कर्म।

सुकृतकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) पुण्यकर्म। सत्कार्य। [वि.] (सं.) पुण्यात्मा। धर्मात्मा।

सुकृतव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) व्रत विशेष जो प्रायः द्वादशी के दिन किया जाता है।

सुकृतात्मा [वि.] (सं.) धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

सुकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छा काम। [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छे काम करने वाला।

सुकृतित्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुकृति का भाव या धर्म।

सुकृती [वि.] (सं.) १-धार्मिक। सत्कर्म करने वाला। २-भाग्यवान्। ३-बुद्धिमान्। [संज्ञा पु.] दसवें मन्वंतर के एक ऋषि का नाम।

सुकृत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम कार्य। धर्मकार्य। २-एक प्राचीन ऋषि।

सुकृष्ट [वि.] (सं.) अच्छी तरह जोता हुआ।

सुकृष्ण [वि.] (सं.) बहुत काला।

सुकेत [संज्ञा पु.] (सं.) आदित्य। सूर्य।

सुकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) सुनीथ राजा के पुत्र का नाम (भागवत)।

सुकेतु [संज्ञा पु.](सं.)१-ताड़का राक्षसी के पिता का नाम। २-चित्रकेतु राजा का एक नाम। ३-सागर के पुत्र का नाम। ४-नंदिवर्द्धन का पुत्र। ५-केतुमत के पुत्र का नाम। ६-मनुष्यों और पक्षियों की बोली समझने वाला।

सुकेश [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुकेशि'। [वि.] [स्त्री. सुकेशा] सुन्दर बालों वाला।

सुकेशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।

सुकेशि [संज्ञा पु.] (सं.) सुमाली और माली नामक राक्षसों के पिता का नाम।

सुकेशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर केशों वाली स्त्री। २-एक अप्सरा का नाम। [संज्ञा पु.] [स्त्री. सुकेशिनी] वह जिसके बाल सुन्दर हों

सुकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह। शेर।

सुकोमल [वि.](सं.) बहुत ही कोमल या मुलायम

सुकोली [संज्ञा स्त्री.](सं.) पयस्विनी। क्षीरकाकोली

सुकोशला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नगरी का नाम।

सुकोशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुरई। तोरई।

सुक्कड़ि [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सूखा चन्दन।

सुक्कान [संज्ञा पु.] (?) पतवार।

सुक्कानी [संज्ञा पु.] (?) मल्लाह। माँझी।

सुक्ख [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुख'।

सुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की काँजी (प्राचीन)।

सुक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

सुक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक पर्वत का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शुक्ति'।

सुक्र [संज्ञा पु.] (हिं.) शुक्र। [संज्ञा पु.] (डिं.) अग्नि।

सुक्रतु [वि.] (सं.) उत्तम कर्म करने वाला।

सुक्रतूया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शुभकर्म करने की इच्छा।

सुक्रित [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुकृत'।

सुक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम

सुक्ल* [वि.](हिं.) देखो 'शुक्ल'।

सुक्षत्र [वि.] (सं.) १-बहुत धनवान्। २-सुराज्य-शाली। ३-शक्तिशाली। दृढ़। [संज्ञा पु.] निरमित्र के पुत्र का नाम।

सुक्षद [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर यज्ञशाला।

सुक्षम* [वि.] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'।

सुक्षिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर निवास-स्थान। २-सुन्दर स्थान में निवास करने वाला। ३-धनधान्य और सन्तान आदि से सुखी।

सुक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-दसवें मनु के पुत्र का

नाम। २-पूर्व की ओर से खुला हुआ मकान जो शुभ समझा जाता है।

सुखंकर, सुखङ्कर [वि.] (सं.) सुखकर। सहज।

सुखंकरी, सुखङ्करी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीवंती

सुखंडरा, सुखण्डरा [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

सुखंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों का शरीर सूखने का रोग। सूखा रोग। [वि.] बहुत दुबला-पतला।

सुखंद [वि.] (हिं.) सुखदायी।

सुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह अनुकूल तथा प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की इच्छा हो दुःख का उलटा। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और दो लघु होते हैं। ३-आरोग्य। ४-स्वर्ग। ५-जल। पानी। ६-वृद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध।

सुखआसन [संज्ञा पु.] (हिं.) पालकी। डोली।

सुखकंद, सुखकन्द [वि.] (सं.) सुख देने वाला

सुखकंदन, सुखकन्दन [वि.] (हिं.) देखो 'सुखकंद'।

सुखकंदर, सुखकन्दर [वि.] (सं.) सुख का घर

सुखक* [वि.] (हिं.) सूखा। शुष्क।

सुखकर [वि.] (सं.) १-सुख देने वाला। २-सहज में होने वाला। सुगम।

सुखकरण [वि.] (सं.) सुख या आनन्द उत्पन्न करने वाला।

सुखकरन [वि.] (हिं.) देखो 'सुखकरण'।

सुखकारक, सुखकारी [वि.] (सं.) सुख देनेवाला

सुखकृत [वि.] (सं.) सहज में किया जाने वाला।

सुखक्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहज काम।

सुखगंध, सुखगन्ध [वि.] (सं.) सुगन्धित।

सुखग [वि.] (सं.) आराम से चलने या जाने-वाला।

सुखगम [वि.] (सं.) सुगम। सहज। सरल।

सुखगम्य [वि.] (सं.) १-सुख से जाने योग्य। २-जिसमें सुगमतापूर्वक गमन किया जा सके

सुखग्राह्य [वि.] (सं.) जो सहज में लिया जा सके।

सुखचर [वि.] (सं.) सुख से चलने वाला।

सुखचार [संज्ञा पु.] (सं.) बढ़िया घोड़ा।

सुखजनक [वि.] (सं.) सुखदायक। सुखद।

सुखजननी [वि.] (सं.) सुख देने वाली।

सुखजात [वि.] (सं.) सुखी। प्रसन्न।

सुखजीवी [वि.] (हिं.) वह जो झगड़े-टंटे और परिश्रम आदि से यथासम्भव दूर रहकर निश्चिंतता और सुखपूर्वक जीवन बिताना चाहता हो।

सुखज्ञ [वि.] (सं.) सुख का जानकार।

सुखड़ैना [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बैलों का रोग।

सुखढरन [वि.] (हिं.) सुख देने वाला।

सुखता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुख का भाव या धर्म

सुखत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुखता।

सुखथर* [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहाँ सुख मिले।

सुखद [वि.] (सं.) [स्त्री. सुखदा] सुख या आनन्द देने वाला। [संज्ञा पु.] १-विष्णु। २-विष्णु का आसन। ३-संगीत में एक ताल।

सुखदगीत [वि.] (हिं.) प्रशंसनीय।

सुखदनियाँ* [वि.] (हिं.) देखो 'सुखदानी'।

सुखदा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] सुख या आनन्द देने वाली। सुखदायिनी। [संज्ञा स्त्री.] १-गङ्गा। २-अप्सरा। ३-शमीवृक्ष। ४-एक छन्द

सुखदाइन* [वि.] (हिं.) देखो 'सुखदायिनी'।

सुखदाई [वि.] (हिं.) देखो 'सुखदाई'।

सुखदात, सुखदाता [वि.] (सं.) सुखद। सुख-देने वाला।

सुखदान [वि.] (हिं.) [स्त्री. सुखदानी] सुखदेने वाला।

सुखदानी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] सुख देने वाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और एक गुरु होता है।

सुखदाय, सुखदायक [वि.] (सं.) सुख देने वाला सुखद।

सुखदायिनी [वि.] (सं.) [स्त्री प्र.] सुख देने वाली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मांसरोहिणी नामक लता।

सुखदायी [वि.] (सं.) [स्त्री. सुखदायिनी] सुखद

सुखदायो, सुखदान* [वि.] (हिं.) सुखदाई। सुखद।

सुखदास [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान

सुखदैन [वि.] (हिं.) देखो 'सुखदाई'।

सुखदैनी [वि.] (हिं.) देखो सुखदायिनी'।

सुखदोह्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जो सहज में दुही जा सके।

सुखधाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुख का घर। २-स्वर्ग। ३-वह जो स्वयं सुखमय हो, अथवा जो बहुत अधिक सुख देता हो।

सुखना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सूखना'।

सुखपर [वि.] (सं.) सुखी। प्रसन्न।

सुखपाल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की पालकी

सुखपूर्वक [क्रि. वि.] (सं.) सुख से। मजे में।

सुखपेय [वि.] (सं.) जिसके पीने से आनन्द मिले। सुपेय।

सुखप्रद [वि.] (सं.) सुख देने वाला। सुखद।

सुखप्रयोजनतावाद [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धांत विशेष जिसका मन्तव्य यह है कि वही कार्य उचित है जो अपने और दूसरे के सुखों की वृद्धि करे। हेडोनोइज्म।

सुखप्रसवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुख से प्रसव करने वाली स्त्री।

सुखमंज, सुखमन्ज [संज्ञा पु.] (सं.) सफेदमिर्च

सुखमद्र [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद सहिजन।

सुखमन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुषुम्ना'।

सुखमा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुषमा। शोभा। छवि। २-एक वर्णवृत्त जिसमें तगण, यगण, भगण और एक गुरु होता है।

सुखमानी [वि.] (हिं.) प्रत्येक अवस्था में सुखी रहने वाला।

सुखमुख [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष।

सुखमोद [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सहिजन।

सुखमोदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलई का पेड़।

सुखरात्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दिवाली की रात।

सुखरास, सुखरासी* [वि.] (हिं.) जो सर्वथा सुखमय हो। सुख की राशि।

सुखलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुखाना'।

सुखवंत [वि.] (हिं.) १-खुश। प्रसन्न। २-सुख दायक।

सुखवत् [वि.] (सं.) सुखी। प्रसन्न।

सुखवत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुख। आनन्द।

सुखवन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूखने के लिये धूप में डाली हुई फसल। २-किसी वस्तु में उसके सूखने पर होने वाली कमी। ३-गीले अक्षरों की स्याही सुखाने को बालु।

सुखवर्च्चक, सुखवर्च्चस [संज्ञा पु.] (सं.) सज्जी

सुखवा+ [संज्ञा पु.] (सं.) सुख। आनन्द।

सुखवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह सिद्धांत जिसकी सीमा व्यक्तिगत सुख नहीं है, पर जो अखिल मानव-जाति को लक्ष्य में रखता है। २-देखो 'सुखप्रयोजनतावाद'।

सुखवादी [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुखवाद सिद्धांत को मानने वाला। २-वह जो इन्द्रिय सुख को सब कुछ समझता हो।

सुखवार* [वि.] (हिं.) [स्त्री. सुखवारी] सुखी। प्रसन्न।

सुखवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-आनन्द का स्थान। सुख की जगह। २-तरबूत।

सुखशायी [वि.] (हिं.) सुख से सोने वाला।

सुखसंचार, सुखसञ्चार [वि.] (सं.) सुख से घूमने वाला।

सुखसंदूह्या, सुखसन्दूह्या; सुखसंदोह्या, सुखसन्दोह्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जो सुख से दुही जाय।

सुखसलिल [संज्ञा पु.] (सं.) उष्ण जल। गरम पानी।

सुखसाध्य [वि.] (सं.) सहज में हो सकने वाला सुगम।

सुखसार [संज्ञा पु.] (हिं.) मोक्ष।

सुखसुप्त [वि.] (सं.) सुख से सोया हुआ

सुखसुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुख की नींद।

सुखसेव्य [वि.] (सं.) सुख से सेवन करने योग्य।

सुखस्पर्श [वि.] (सं.) छूने से सुख देने वाला।

सुखांत, सुखान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह जिस का अन्त सुखमय हो। २–वह नाटक जिसके अन्त में कोई सुखपूर्ण घटना हो।

सुखांबु, सुखाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) गरम जल।

सुँखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वरुण की पुरी का नाम

सुखागत [संज्ञा पु.] (सं.) सुख से आगमन।

सुखादित [वि.] (सं.) सुख से खाया हुआ।

सुखाधार [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग। [वि.] सुख का आधार।

सुखाना [क्रि. स.] (हिं.) १–गीली वस्तु का गीलापन दूर करने के लिये उसे धूप में या आग पर रखना। २–आर्द्रता दूर करना। ३–दुर्बल बनाना। +[क्रि. अ.] देखो 'सूखना'

सुखानी [संज्ञा पु.] (?) माँझी। मल्लाह।

सुखायत [संज्ञा पु.] (सं.) सीखा और सधा हुआ घोड़ा।

सुखारा* [वि.] (हिं.) १–सुखी। प्रसन्न। २–सुख देने वाला। सुखद।

सुखारि [वि.] (सं.) (देवता आदि) जो उत्तम हवि भक्षण करते हैं।

सुखारी, सुखारो [वि.] (हिं.) देखो 'सुखारा'।

सुखारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) सोपान। सीढ़ी।

सुखार्थी [वि.] (हिं.) [स्त्री सुखार्थिनी] सुख चाहने वाला।

सुखाला [वि.] (हिं.) [स्त्री. सुखाली] सुखदायक

सुखालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की जीवन्ती।

सुखावत् [वि.] (हिं.) देखो 'सुखवत्'।

सुखावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक स्वर्ग का नाम (बौद्ध)।

सुखावतीदेव [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

सुखावतीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १–बुद्धदेव। २–बौद्धों के एक देवता।

सुखावल [संज्ञा पु] (सं.) नृचक्षु राजा के एक पुत्र का नाम।

सुखावह [वि.] (सं.) सुख या आराम देने वाला

सुखाश [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह जो खाने में अच्छा लगे। २–तरबूज। ३–वरुण देवता। [वि.] जिसे सुख की आशा हो।

सुखाशक [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

सुखाशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुख की आशा।

सुखाश्रय [वि.] (सं.) जिस पर सुख अवलम्बित हो।

सुखासन [संज्ञा पु.] (सं.) १–पालकी। डोली। २–वह आसन जिस पर सुख से बैठा जाय। १–पालकी। डोली।

सुखासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–स्वास्थ्य। २–सुख। आराम।

सुखासीन [वि.] (सं.) सुख से बैठा हुआ।

सुखिआ [वि.] (हिं.) देखो 'सुखिया'।

सुखित [वि.] (हिं.) १–सुखी। प्रसन्न। २–सूखा हुआ।

सुखिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुखी होने का भाव। सुख।

सुखित्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुखिता। प्रसन्न।

सुखिया [वि.] (हिं.) जिसे सब प्रकार का सुख हो। सुखी।

सुखिर [संज्ञा पु.] (देश.) साँप की बाँबी।

सुखी [वि.] (हिं.) जिसे किसी प्रकार का दुःख न हो, सब प्रकार का सुख हो। खुश। आनंदित

सुखीन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

सुखेतर [संज्ञा पु.] (सं.) सुख से भिन्न अर्थात् दुःख। कष्ट।

सुखेन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुषेण'।

सुखेलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, जगण, भगण जगण और रगण होता है।

सुखेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुखैना* [वि.] (हिं.) सुखद। सुख देने वाला।

सुखोत्सव [संज्ञा पु.] (सं.) पति। स्वामी।

सुखोदक [संज्ञा पु.] (सं.) गरम जल।

सुखोद्य [वि.] (सं.) जिसके उच्चारण में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

सुखोर्शिक [संज्ञा पु.] (सं.) सज्जी मिट्टी।

सुख्ख [संज्ञा पु.] देखो 'सुख'।

सुख्याति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–ख्याति। प्रसिद्धि २–यश। कीर्त्ति।

सुगंध, सुगन्ध [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–अच्छी गन्ध या महक। सौरभ। खुशबू। २–चंदन। ३–गन्धतृण। ४–गंधराज। ५–नील-कमल। ६–राल। ७–काला जीरा। ८–गठिवन। ९–एलुआ। १०–भूतृण। ११–बृहद् गंधतृण। १२–चना। १३–रूसाघास। १४–केवड़ा। १५–शिलारस। १६-तुंबुरू। १७-माधवीलता १८–कसेरू। १९–सफेद ज्वार। २०-बासमती-चावल। २१–मरुआ। २२–एक प्रकार का कीड़ा।
[वि.] (सं.) सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधक, सुगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १–द्रोण-पुष्पी। २–साठीधान्य। ३–कंदालु। ४–गंध-तुलसी। ५–नारङ्गी। ६–ककोड़ा। ७-बृहद्गंध तृण।

सुगंधकेसर, सुगन्धकेसर [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सहिजन।

सुगंधकोकिला, सुगन्धकोकिला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

सुगंधगंधक, सुगन्धगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धक

सुगंधगंधा, सुगन्धगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारु हलदी।

सुगंधगण, सुगन्धगण [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर। कस्तूरी आदि सुगन्धित द्रव्यों का एक गण या वर्ग।

सुगंधचंद्री, सुगन्धचन्द्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूरकचरी।

सुगंधतृण, सुगन्धतृण [संज्ञा पु] (सं.) रूसा नामक सुगन्धित घास।

सुगंधत्रय, सुगन्धत्रय [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन, बला और नागकेसर इन तीनों का समूह।

सुगंधत्रिफला, सुगन्धत्रिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जायफल, लौंग और इलायची इन तीनों का समूह।

सुगंधन, सुगन्धन [संज्ञा पु] (सं.) जीरा।

सुगंधनाकुली, सुगन्धनाकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का रासना।

सुगंधपत्रा, सुगन्धपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–सतावर। २–कठजामुन। ३–बनभण्टा। ४–छोटी घमासा। ५–अपराजिता। ६–लाल अपराजिता। ७–जीरा। ८–बरियारा। ९–विधारा। १०–रुद्रलता।

सुगंधपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–जावित्री। २ रुद्रजटा।

सुगंधप्रियंगु, सुगन्धप्रियङ्गु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूल। फेन।

सुगंधफल, सुगन्धफल [संज्ञा पु.] (सं.) कंकोल

सुगंधबाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) क्षुप जाति की एक प्रकार की वनौषधि।

सुगंधभूतृण, सुगन्धभूतृण [संज्ञा पु.] (सं.) रूसाघास।

सुगंधमय, सुगन्धमय [वि.] (सं.) सुगन्धित। सुवासित।

सुगंधमुख्या, सुगन्धमुख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कस्तूरी

सुगंधमूत्रपतन, सुगन्धमूत्रपतन [संज्ञा पु.] (सं.) गंधबिलाव। मुश्कबिलाव।

सुगंधमूल, सुगन्धमूल [संज्ञा पु.] (सं.) हरफा-रेवड़ी।

सुगंधमूला, सुगन्धमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १–स्थल-कमल। २–रासना। ३–आँवला। ४–कपूरकचरी। ५–हरफारेवड़ी।

सुगंधमूषिका, सुगन्धमूषिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छछूँदर।

सुगंधरा, सुगन्धरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का फूल।

सुगंधरौहिष, सुगन्धरौहिष [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिस घास।

सुगंधवल्कल, सुगन्धवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) रोहिष नामक घास।

सुगंधशालि, सुगन्धशालि [संज्ञा पु.] (सं.) बासमती चावल।

सुगंधषट्क, सगन्धषट्क [संज्ञा पु.] (सं.) जायफल, शीतलचीनी, लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी ये छः सुगन्धद्रव्य।

सुगंधसार, सुगन्धसार [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

सुगंधा, सुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रासना। २-काला जीरा। ३-कपूरकचरी। ४-शंकरजटा। ५-सौंफ। ६-बाँझककोड़ा। ७-नवमल्लिका। ८-पीली जूही। ९-नकुलकंद। १० स्पृका। ११-गङ्गा-पत्री। १२-सलई। १३-माधवीलता। १४-काली अनंतमूल। १५-सफेद अनंतमूल। १६-बिजौरा नीबू। १७-तुलसी। १८-गन्धकोकिला। १९-निर्गुण्डी २०-एलुवा। २१-सेवती। २२-बकुची। २३-बाईस पीठ स्थानों में से एक।

सुगंधाढ्य, सुगन्धाढ्य [वि.] (सं.) सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधाढ्या, सुगन्धाढ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-त्रिपुरमल्लिका। २-बासमती चावल।

सुगंधि, सुगन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी महक। सौरभ। सुगन्ध। २-परमेश्वर। ३-कसेरू। ४-मोथा। ५-गन्धतृण। ६-आम। ७-एलुवा। ८-गोरखककड़ी। फूट। ९-पीपलामूल। १०-अगिया घास। ११-धनिया १२-बनतुलसी। १३-वर्बरचन्दन। १४-अनंतमूल। [वि.] देखो 'सुगंधित'।

सुगंधिक, सुगन्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-खस। उशीर। २-कुमुदिनी। ३-पुष्करमूल। ४-गौरसुवर्णशाक। ५-कालाजीरा। ६-मोथा। ७-एलुवा। ८-माचीपत्र। ९-शिलारस। १०-बासमती चावल। ११-कैथ। १२-गंधपाषाण। १३-पुन्नाग।

सुगंधिका, सुगन्धिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-कस्तूरी। २-केवड़ा। ३-सफेद अनंतमूल। ४-कृष्ण निर्गुंडी। ५-सिंह। केशरी।

सुगंधिकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीला कनेर। २-स्पृक्का। ३-सुगन्धित फूल।

सुगंधिकृत, सुगन्धिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) शिलारस।

सुगंधित, सुगन्धित [वि.] (सं.) [संज्ञा स्त्री.] जिसमें अच्छी गंध हो। सुवासित। खुशबूदार।

सुगंधिता, सुगन्धिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) अच्छी महक। खुशबू।

सुगंधितेजन, सुगन्धितेजन [संज्ञा पु.] (सं.) रूसाघास।

सुगंधित्रिफला, सुगन्धित्रिफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सुगन्धित्रिफला'।

सुगंधिनी, सुगन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आरामशीतला नामक शाक। २-पीली केतकी

सुगंधिपुष्प, सुगन्धिपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-धाराकदंब। २-खुशबूदार फूल।

सुगंधिफल, सुगन्धिफल [संज्ञा पु.](सं.) शीतलचीनी।

सुगंधिमाता, सुगन्धिमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

सुगंधिमूल, सुगन्धिमूल [संज्ञा पु.] (सं.) खश। उशीर।

सुगंधिमूषिका, सुगन्धिमूषिका[संज्ञा स्त्री.] (सं.) छछूँदर।

सुगंधी,सुगन्धी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अच्छी महक खुशबू। [संज्ञा पु.] (हिं.) एलुआ। [वि.] (हिं.) सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

सुगत [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धदेव। २-बौद्ध।

सुगतदेव [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

सुगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.)१-मरने के उपरांत होनेवाली अच्छी गति। मोक्ष। २-शुभगति नामक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राऐं तथा एक गुरु होता है।

सुगन [संज्ञा पु.] (देश.) छकड़े में गाड़ीवान के बैठने का स्थान।

सुगना* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुग्गा। तोता। २-सहिंजन का वृक्ष।

सुगभस्ति [वि.] (सं.) दीप्तिमान्। चमकीला।

सुगम [वि.] (सं.) १-जो सहज में जाने योग्य हो। २-सहज। सरल। आसान।

सुगमता [संज्ञा स्त्री.] (सं) सरलता।

सुगम्य [वि.] (सं.) सरलता से जाने योग्य।

सुगर [संज्ञा पु.] (सं.) शिंगरफ। हिंगुल।

सुगरूप [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की सवारी

सुगर्भक [संज्ञा पु.] (सं.) खीरा।

सुगल [संज्ञा पु.] (हिं.) बाली का भाई, सुग्रीव।

सुगवि [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसुश्रुत के एक पुत्र का नाम जिसका उल्लेख विष्णुपुराण में आता है

सुगनाघृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ में अस्पृश्यों आदि को रोकने के लिये लगाया हुआ घेरा।

सुगाध [वि.] (सं.) १-(नदी) जिसे सहज में पार किया जा सके। २-(नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके।

सुगाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-दुःखी होना। २-बिगड़ना। नाराज होना। ३-(किसी के खोटेपन या मैलेपन आदि से) घृणा करना। ४-सन्देह या शक करना।

सुगीत [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुगीतिका'।

सुगीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर गान।

सुगीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १५ और १० के विराम २५ मात्राएं तथा आदि गुरु और अन्त में गुरु लघु होते हैं।

सुगुंडा, सुगुण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तृणपत्री।

सुगुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कौंछ। किवाँच।

सुगुरु [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।

सुगृह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बत्तख या हंस।

सुगृही [वि.] (हिं.) १-सुन्दर घर वाला। २-सुन्दर स्त्री वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुगृह'।

सुगृहीत [वि.](सं.) अच्छी तरह से ग्रहण किया हुआ।

सुगैया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अँगिया। चोली।

सुगोप [वि.] (सं.) अच्छी तरह रक्षा करने वाला।

सुगौतम [संज्ञा पु.] (सं.) शाक्यमुनि।

सुग्गा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सुग्गी] तोता।

सुग्गापंखी [संज्ञा पु.](हिं.) एक अगहनिया धान

सुग्गासाँप [संज्ञा पु.] (हिं.) सर्प विशेष।

सुग्रंथि, सुग्रन्थि [संज्ञा पु.](सं.) १-चोर नामक गंधद्रव्य। २-पीपलामूल।

सुग्रह [संज्ञा पु.](सं.) फलितज्योतिष के अनुसार शुभ या अच्छे ग्रह।

सुग्रीव [संज्ञा पु.] (सं.) १-वानरराज बालि का छोटा भाई जो श्रीरामचन्द्र का सखा था। २-विष्णु या कृष्ण के चार घोड़ों में से एक। ३-शुम्भ और निशुम्भ का दूत। ४-वर्त्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत के पिता का नाम। ५-इन्द्र। ६-शिव। ७-शंख। ८-राजहंस। ९-नायक। १०-एक पर्वत का नाम। [वि.] सुन्दर गरदन वाला।

सुग्रीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

सुग्रीवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दक्ष की एक पुत्री और कश्यप की पत्नी का नाम।

सुघट [वि.] (सं.) १-सुन्दर। सुडौल। २-जो सहज में हो या बन सकता हो।

सुघटित [वि.] (सं.) अच्छी तरह से बना हुआ।

सुघड़ [वि.] (हिं.) १-सुन्दर। सुडौल। २-निपुण दक्ष।

सुघड़ई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुन्दरता। सुडौलपन। २-चतुरता। निपुणता।

सुघड़ता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुघड़ई'।

सुघड़पन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुघड़ई'।

सुघड़ाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुघड़ई'।

सुघड़ापा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुन्दरता। सुडौलपन। २-दक्षता। निपुणता।

सुघर [वि.] (हिं.) देखो 'सुघड़'।

सुघरता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुघर होने का भाव। सुन्दरता। २-निपुणता। कुशलता।

सुघरपन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुघरता'।

सुघराई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-देखो 'सुघड़ई'। २-सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

सुघराई-कान्हड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) सम्पूर्ण जा का एक राग।

सुघराई-टोड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

सुघरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.)अच्छी घड़ी। शुभ समय [वि] [स्त्री. प्र.] सुन्दर। सुडौल।

सुघोर [वि.] (सं.) अतिशय घोर। बहुत गाढ़ा।

सुघोष [संज्ञा पु.](सं.) १-नकुल के शंख का नाम २-एक बुद्ध। ३-एक प्रकार का यंत्र। [वि.] जिसका स्वर सुन्दर हो।

सुचंग [संज्ञा पु.] (डिं.) घोड़ा।

सुचंचुका, सुचञ्चुका[संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाचंचु दीर्घपत्री।

सुचंदन, सुचन्दन[संज्ञा पु.](सं.) बक्कम नामक लकड़ी जो दवा के काम में आती है।

सुचंद्र,सुचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देव गंधर्व २-सिंहिक के पुत्र का नाम। ३-इक्ष्वाकुवंशीय राजा हेमचन्द्र के पुत्र का नाम।

सुचंद्रा, सुचन्द्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की समाधि (बौद्ध)।

सुच* [वि.] (हिं.) देखो 'शुचि'।

सुचक्षु [संज्ञा पु] (सं.) १-गूलर। २-शिव। ३-ज्ञानी। पंडित। [वि.] (सं.) सुन्दर नेत्रोंवाला जिसकी आँखें सुन्दर हों। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

सुचना [क्रि. स.] (हिं.) संचय करना। इकट्ठा करना।

सुचरित, सुचरित्र [संज्ञा पु.] (सं) उत्तम आचरण वाला। नेकचलन।

सुचरित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पतिपरायण स्त्री। सती।

सुचर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

सुचा* [वि.] (हिं.) देखो 'शुचि'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ज्ञान। चेतना।

सुचान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सोचने की क्रिया या भाव। २-सूझ। विचार। ३-सुझाव। सूचना।

सुचाना [क्रि. स.] (हिं.) १-सोचने में प्रवृत्त करना। २-दिखलाना। ध्यान आकृष्ट करना। सुझाना।

सुचार*[संज्ञा स्त्री.](हिं.) अच्छी चाल। सुचाल [वि.] (हिं.) सुचारु। सुन्दर।

सुचारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अक्रूर की सास का नाम।

सुचारु [वि.] (सं.) अत्यन्त सुन्दर। बहुत खूबसूरत। [संज्ञा पु.] (सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-विश्वकसेन का पुत्र। ३-प्रतीर्थ। ४-बाहु का पुत्र।

सुचाल [संज्ञा स्त्री] (हिं.) अच्छी चाल। उत्तम आचरण।

सुचाली [वि] (हिं) अच्छे आचरण वाला। सदाचारी। [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पृथ्वी।

सुचाव [संज्ञा पु.] (हिं) १-सुझाने की क्रिया या भाव। २-सुझाव। सूचना।

सुचितितार्थ, सुचिन्तितार्थ [संज्ञा पु.](सं.) मार के पुत्र का नाम।

सुचि [वि.] (हिं) देखो 'शुचि'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूई।

सुचिकरमा [वि.] (हिं.) देखो 'शुचिकर्मा'।

सुचित [वि](हि) १-जो (किसी काम से) निवृत हो गया हो। २-निश्चिन्त। बेफिक्र। ३-एकाग्र स्थिर। ४-पवित्र।

सुचितई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-निश्चितता। बेफिक्री। २-एकाग्रता। ३-छुट्टी। फुरसत।

सुचिती+ [वि.] (हिं.) १-स्थिर चित्त। शांति। २-निश्चित। बेफिक्र।

सुचित्त [वि.] (सं.) देखो 'सुचित'।

सुचित्रक [संज्ञा पु.](सं.) १-मुर्गाबी। २-चितला-साँप।

सुचित्रबीजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बायबिडङ्ग।

सुचित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूट नामक फल।

सुचिमंत* [वि.] (हिं.) शुद्ध आचरण वाला। सदाचारी।

सुचिमन* [वि.] (हिं.) पवित्र मन वाला। शुद्ध हृदय।

सुचिर [संज्ञा पु.](सं.) बहुत अधिक समय। दीर्घकाल। [वि.] (सं.) १-बहुत दिनों तक रहने वाला। २-पुराना। प्राचीन।

सुचिरायु [संज्ञा पु.] (हिं.) देवता।

सुची [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शची'।

सुचीरा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुचारा'।

सुचीर्णध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों के अनुसार कुभांडों के राजा का नाम।

सुचुक्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इमली।

सुचुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिमटा। २-सँड़सी

सुचेत [वि] (हिं.) चौकन्ना। सतर्क।

सुचेतन [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। [वि.] (हिं.) देखो 'सुचेत'।

सुचेता [वि.] (हिं.) देखो 'सुचेत'।

सुचेलक [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर और महीन कपड़ा। [वि.] (सं.) जिसका बढ़िया कपड़ा हो।

सुचेष्टरूप [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

सुच्चा[वि.](हिं.) १-पवित्र। शुद्ध। २-जो खाकर झूठा न किया गया हो। ३-जो सब भाँति बिलकुल ठीक और निर्दोष हो। ४-जो असली या सच्चा हो नकली न हो।

सुच्छन्द* [वि] (हिं.) देखो 'स्वच्छन्द'।

सुच्छ* [वि.] (हिं) देखो 'स्वच्छ'।

सुच्छत्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) सतलज नदी का एक नाम।

सुच्छम* [वि] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'। [संज्ञा पु.] (डिं) घोड़ा।

सुजंगो+ [संज्ञा पु.] (हिं) भाँग के वे पौधे जिनमें बीज होते हैं।

सुजड़ [संज्ञा पु.] (डिं.) तलवार।

सुजड़ी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) कटारी।

सुजन[संज्ञा पु.](सं.) सज्जन पुरुष। भला आदमी [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वजन। परिवार के लोग। आत्मीय जन।

सुजनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सौजन्य। भलमनसाहत।

सुजनी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक प्रकार की बड़ी और मोटी चादर।

सुजन्मा [वि.] (सं.) १-अच्छे कुल में उत्पन्न। २-उत्तम रूप से जन्मा हुआ। ३-विवाहित स्त्री का औरस पुत्र।

सुजल [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

सुजल्प [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम भाषण।

सुजस [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'सुयश'।

सुजाक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूजाक'।

सुजागर [वि.] (सं.) १-प्रकाशमान। २-सुन्दर।

सुजात [वि.] (सं.) [स्त्री सुजाता] १-कुलीन। अच्छे कुल का। २-सुन्दर। मनोहर। ३-उत्तम रूप से जन्मा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २-भरत के एक पुत्र का नाम। ३-साँड़।

सुजातक [संज्ञा पु.] (सं.) सौंदर्य। सुन्दरता।

सुजातका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालिधान्य।

सुजातरिपु [संज्ञा पु.] (सं.) युधिष्ठिर।

सुजाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोपीचन्दन। २-उद्दालक ऋषि की कन्या का नाम। ३-एक ग्रामीण कन्या का नाम जिसने भगवान् बुद्ध को भोजन कराया था।

सुजाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तम जाति। श्रेष्ठ कुल। [वि.] (सं.) उत्तम जाति या कुल का। [संज्ञा पु.](सं.) वीरहोत्र के एक पुत्र का नाम

सुजातिया [वि.] (हिं.) १-अच्छे कुल का। कुलीन २-स्वजातीय।

सुजान [वि.] (हिं.) १-चतुर। सयाना। समझदार। २-निपुण। कुशल। प्रवीण। ३-विज्ञ। पंडित। ४-सज्जन। [संज्ञा पु.](हिं) १-पति २-प्रेमी। ३-ईश्वर।

सुजानता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुजानपन।

सुजानपन [संज्ञा पु.] (हिं.) सुजान होने का भाव या धर्म। सुजानता।

सुजानी [वि.] (हिं.) विज्ञ। ज्ञानी। पंडित।

सुजाव [संज्ञा पु.] (डिं.) पुत्र।

सुजावा [संज्ञा पु.] (देश.) बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैंजनी और फड़ में रहती है।

सुजिह्व [वि.] (सं.) १-जिसकी जिह्वा सुन्दर हो। २-मधुरभाषी।

सुजीर्ण [वि.] (सं.) अच्छी तरह पचा हुआ।

सुजीवंती, सुजीवन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हेमपुष्पी।

सुजीवित [संज्ञा पु.] (सं.) सफल जन्म।

सुजोग* [संज्ञा पु.](हिं.) १-सुयोग। २-अच्छा संयोग।

सुजोधन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुयोधन'।

सुजोर [वि.] (हिं.) दृढ़। मजबूत।

सुज्ञ [वि.] (सं.) १-भलीभाँति जानने वाला। सुविज्ञ। २-पंडित।

सुज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी जानकारी। २-एक प्रकार का साम।

सुज्येष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सुंगवंशी राजा अग्निमित्र के पुत्र का नाम।

सुझाना [क्रि. स.](हिं.) दूसरे की सूझ या ध्यान में लाना। दिखाना।

सुझाव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुझाने की क्रिया या भाव। २-वह बात जो सुझाई जाय। सजेशन।

सुटुकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'सुड़कना'। २-देखो 'सिकुड़ना'। ३-चुपके से खिसक जाना। सरकना। [क्रि. स.] सुटका मारना। चाबुक लगाना।

सुट्टा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हुक्के, बीड़ी, सिगरेट आदि का लगाया हुआ कश।

सुठ* [वि.] (हिं.) देखो 'सुठि'।

सुठहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छा स्थान।

सुठार* [वि.] (हिं.) सुडौल। सुन्दर।

सुठि* [वि.](हिं.) १-सुन्दर। बढ़िया। २-अतिशय। बहुत। ३-अच्छा। *[अव्य.] पूरा-पूरा। बिलकुल।

सुठौनां* [वि.] (हिं.) देखो 'सुठि'।

सुठोना* [वि.] (हिं.) देखो 'सुठि'।

सुड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सुरकना'।

सुड़सुड़ाना [क्रि. स.] (हिं.) सुड़सुड़-शब्द उत्पन्न करना।

सुडीनक [संज्ञा पु] (सं.) पक्षियों के उड़ने का एक ढंग।

सुडौल [वि.] (हिं.) सुन्दर डौल या आकार का।

सुड्ढा [संज्ञा पु.] (देश.) धोती की अंटी। आँट

सुड्ढी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'सुड्ढा'।

सुढंग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अच्छा ढङ्ग या रीति। २-अच्छे रंग का। सुन्दर।

सुढंगी [वि.] (हिं.) १-अच्छे ढंग वाला। २-सुन्दर।

सुढर [वि.] (हिं.) १-कृपालु। २-सुडौल।

सुढार* [वि.] (हि.) (स्त्री. सुढारी) १-सुन्दर ढला या बना हुआ। २-सुन्दर। सुडौल।

सुढारु* [वि.] (हिं.) देखो 'सुढार'।

सुणघड़िया [संज्ञा पु.] (डिं.) सुनार।

सुणना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सुनना'।

सुणाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुनाना'।

सुतंतर* [वि.] (हिं.) देखो 'स्वतंत्र'।

सुतंतु, सुतन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-एक दानव का नाम।

सुतंत्र* [वि.] (हिं.) देखो 'स्वतंत्र'।

सुतंत्रि, सुतन्त्रि [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो तार के (वीणा आदि) बाजे बजाने में प्रवीण हो। २-वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो।

सुतंभर, सुतम्भर [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिककालीन ऋषि का नाम।

सुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-दसवें मनु का पुत्र। [वि.] १-पार्थिव। २-उत्पन्न। जात। +[संज्ञा पु.] (?) बीस की संख्या।

सुतकरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) स्त्रियों के पहनने की जूती।

सुतजीवक [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्रजीववृक्ष।

सुतत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुत का भाव या धर्म।

सुतदा [वि.] (सं.) पत्र देने वाली (स्त्री)। [संज्ञा स्त्री.] पुत्रदा नामक लता।

सुतधार* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूत्रधार'।

सुतना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूथना'। [क्रि. अ.] देखो 'सूतना'।

सुतनु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक गंधर्व। २-उग्रसेन का एक पुत्र। ३-एक बन्दर। [वि.] सुन्दर शरीर वाला। [संज्ञा स्त्री.] १-सुन्दर शरीर वाली स्त्री। २-अक्रूर की स्त्री का नाम। ३-उग्रसेन की कन्या का नाम। ४-वसुदेव की एक उपपत्नी का नाम।

सुतनुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुतनु होने का भाव। २-शरीर की सुन्दरता।

सुतप [वि.] (सं.) सोमपान करने वाला।

सुतपस्वी [वि.] (सं.) बहुत तपस्या करने वाला।

सुतपा [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-विष्णु। ३-एक मुनि। ४-रौच्यमनु के पुत्र का नाम।

सुतपादिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंसपदी नामक छोटी जाति की लता।

सुतपेय [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान।

सुतप्त [वि.] (सं.) बहुत गरम।

सुतर*+ [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'शुतुर'। [वि.] (सं) सरलतापूर्वक तैरने या पार करने योग्य

सुतरनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शुतरनाल'

सुतरण [वि.] (सं.) सुख से तैरने या पार करने योग्य।

सुतरां [अव्य.](हिं.) १-अतः। इसलिये। २-और भी। किं-बहुना। ३-अत्यन्त। ४-अवश्य।

सुतरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तुरही। तूर। २-सुतारी। ३-सुतली। ४-जुलाहे की वह [illegible] जो पाई में साँथी अलग करने के लिये साँथी के दोनों ओर लगी रहती है। [संज्ञा पु.] (देश.) ऊँट के-से रंग का बैल।

सुतरेशाही [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुथरेशाही'।

सुतर्कारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवदाली।

सुतर्दन [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल (पक्षी)।

सुतल [संज्ञा पु.] (सं.) सात पाताल लोकों में से एक।

सुतली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूत या सन की बनी हुई डोरी।

सुतवत् [वि.] (सं.) पुत्र वाला।

सुतवस्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसके सात पुत्र हों।

सुतवाँ [वि.] (हिं.) देखो 'सूतवाँ'।

सुतवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'सुलवाना' २-किसी को हाथ आदि की मालिश करने में प्रवृत्त करना।

सुतश्रेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

सुतस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) जन्मकुण्डली में लग्न से पाँचवाँ स्थान।

सुतहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुतार'।

सुतहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूत बेचने वाला। २-देखो 'सुतही'। [वि.] (हिं.) सूत का। सूत-सम्बन्धी।

सुतहार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुतार'।

सुतहिबुक-योग [संज्ञा पु.] (सं.) विवाह का एक योग।

सुतही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुतुही'।

सुतहौनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुथौनिया'।

सुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कन्या। लड़की। पुत्री। [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) सखी। सहेली।

सुतात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सुतात्मजा] १-पोता। २-नाती।

सुताना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुलाना'।

सुतापति [संज्ञा पु.] (सं.) दामाद। जामाता।

सुतार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बढ़ई। २-कारीगर। शिल्पी। +देखो 'सुभीता'। [वि.] (हिं.) अच्छा। उत्तम। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक गंधद्रव्य। २-एक आचार्य। ३-एक प्रकार की सिद्धि। [वि.] (सं.) १-अत्यंत उज्ज्वल। २-जिसकी आँखों की पुतलियां सुन्दर हों। ३-अत्यंत उच्च। [संज्ञा पु.] (देश.) हुदहुद नामक पक्षी।

सुतारका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की एक शासन देवी का नाम।

सुतारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सांख्य के मत से नौ प्रकार की तुष्टियों में से एक। २-सांख्य दर्शन के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

सुतारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जूता सीने का सूआ। २-सुतार या बढ़ई का काम। [संज्ञा पु.] (हिं.)

शिल्पकार। कारीगर।

सुतार्थी [वि.] (सं.) जिसे पुत्र की अभिलाषा हो

सुताली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुतारी'।

सुतासुत [संज्ञा पु.] (सं.) पुत्री का बेटा। नाती।

सुतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) पित्तपापड़ा। [वि] (सं.) जो बहुत तिक्त हो।

सुतिक्तक [संज्ञा पु] (सं.) १-चिरायता। २-पारिभद्र। ३-पित्तपापड़ा।

सुतिक्ता [संज्ञा स्त्री] (सं) १-तरोई। २-सतलई

सुतिन* [संज्ञा स्त्री] (हिं) सुन्दर बाल। रूपवती स्त्री।

सुतिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) पुत्रवती।

सुतिया [संज्ञा स्त्री] (देश.) हँसली नामक गले में पहनने का गहना।

सुतिहार+ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'सुतार'।

सुती [वि] (हि.) १-पुत्र की कामना करने वाला २-पुत्र वाला।

सुतीक्षण [संज्ञा पु] देखो 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीक्ष्ण [संज्ञा पु] (हि.) १-अगस्त्य मुनि के भाई का नाम। २-सहिजन। [वि] (सं) बहुत तीक्ष्ण या तेज।

सुतीक्ष्णक [संज्ञा पु.] (सं) मोखा नामक वृक्ष।

सुतीक्ष्णका [संज्ञा स्त्री] (सं.) सरसों।

सुतीखन, सुतीच्छन* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीर्थराज [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

सुतुंग, सुतुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-नारियल का वृक्ष। २-ग्रहों का उच्चांश। [वि] (सं.) बहुत ऊँचा।

सुतुआ+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सुतुही'।

सुतुही+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-छोटे बच्चों को दूध पिलाने की सीपी। २-वह सीपी जिससे अचार के लिये कच्चा आम छीला जाता है। ३-पोस्त से अफीम खुरचने की सीपी।

सुतून [संज्ञा पु.] (फा.) खंभा।

सुतेकर [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञकारी। ऋत्विक्।

सुतेजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धामिनवृक्ष। २-बहुत नुकीला तीर। [वि] (सं.) १-नुकीला। २-तेज। धारदार।

सुतेजा [संज्ञा पु.] (सं.) १-जैनियों के गत उत्सर्पिणी के दसवें अर्हत का नाम। २-गृत्समद का पुत्र। ३-हुरहुर। [वि] (सं.) बहुत तेज या धारदार।

सुतेमन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक वैदिक आचार्य का नाम।

सुतैला [संज्ञा स्त्री.] (सं) महाज्योतिष्मती लता।

सुतोष [संज्ञा पु] (सं) संतोष। सब्र। [वि] (सं) सतुष्ट। प्रसन्न।

सुत्ता+ [वि.] (हि.) सुप्त। सोया हुआ।

सुत्तुर+ [संज्ञा पु] (हि) जुलाहे के करघे का वह बांस जिसमें कंघी बंधी रहती है।

सुत्थना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूथन'।

सुत्य [संज्ञा पु.] (सं) यज्ञ के निमित्त सोमरस निकालने का दिन।

सुत्रामा [संज्ञा पुं.] (हिं) १-इन्द्र। २-मनु का नाम। ३-वह जो भली प्रकार रक्षा करता हो।

सुथना [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'सूथन'।

सुथनिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुथनी'।

सुथनी [संज्ञा स्त्री] (देश.) १-एक प्रकार का स्त्रियों के पहनने का पायजामा। २-पिंडालू। रतालू

सुथरा [वि.] (हिं) [स्त्री सुथरी] स्वच्छ। निर्मल साफ।

सुथराई [संज्ञा स्त्री] (हि.) सुथरापन। स्वच्छता निर्मलता।

सुथरापन [संज्ञा पु] (हि.) देखो 'सुथराई'।

सुथरेशाही [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया हुआ सम्प्रदाय २-इस सम्प्रदाय के अनुयायी।

सुथाँनिया+ [संज्ञा पु.] (देश) मस्तूल के ऊपर वाले भाग का वह छेद या घर जिसमें पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है

सुदंड, सुदण्ड [संज्ञा पु] (सं) बेंत।

सुदंडिका, सुदण्डिका [संज्ञा स्त्री] (सं) १-गोरखइमली। २-अजदंडी।

सुदंत, सुदन्त [संज्ञा पु] (सं.) १-नट। २-नर्तक। नाचने वाला। [वि] (सं) सुन्दर दाँतों वाला।

सुदंता, सुदन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक अप्सरा का नाम (पुराण)।

सुदंती, सुदन्ती [संज्ञा स्त्री] (सं) १-हथनी। २-दिग्गज की हथनी का नाम।

सुदंष्ट्र, सुदण्ष्ट्र [संज्ञा पु] (सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-सँबर का एक पुत्र। ३-एक राक्षस। [वि.] (सं.) जिसके सुन्दर दांत हों।

सुदंष्ट्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक किन्नरी का नाम।

सुदक्षिण [संज्ञा पु.] (सं.) १-पौंड्रक राजा का पुत्र। २-विदर्भ का एक राजा।

सुदक्षिणा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-राजा दिलीप की स्त्री का नाम। २-श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम।

सुदग्धिका [संज्ञा स्त्री] (सं) कुरुह नामक वृक्ष

सुदच्छिन [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'सुदक्षिण'।

सुदत् [वि] (सं.) [स्त्री सुदती] जिसके दांत सुन्दर हों।

सुदती [वि.] (सं.) सुन्दर दांतों वाली (स्त्री)।

सुदत्त [वि.] (सं.) अच्छी तरह दिया हुआ।

सुदमन [संज्ञा पु.] (सं.) आम (वृक्ष)।

सुदरसन* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सुदर्शन'। [वि] (हिं) देखो 'सुदर्शन'।

सुदरसनपानि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुदर्शनपाणि'।

सुदर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का तृण।

सुदर्शन [संज्ञा पु] (सं.) १-विष्णु भगवान् के एक चक्र का नाम। २-शिव। ३-अग्निपुत्र ४-विद्याधर का नाम। ५-मछली। ६-जामुन का पेड़। ७-जैनियों के वर्त्तमान अवसर्पिणी के अट्ठारहवें अर्हत के पिता का नाम। ८-जैनों के नौ बलदेवों में से एक का नाम। ९-दधीचि का एक पुत्र। १०-अर्थसिद्धि का पुत्र। ११-गिद्ध। १२-सुमेरु। १३-एक द्वीप का नाम। १४-एक प्रकार की सङ्गीत रचना। १५-सन्यासियों का एक दंड जिसमें छः गाँठें होती हैं। १६-मदनमस्त। १७-सोमवल्ली। [वि] (सं) देखने में सुन्दर। मनोरम।

सुदर्शन-चूर्ण [संज्ञा पु] (सं.) वैद्यक के अनुसार ज्वर की एक प्रसिद्ध औषध।

सुदर्शनदंड, सुदर्शन-दण्ड [संज्ञा पु] (सं) ज्वर की एक औषध।

सुदर्शनद्वीप [संज्ञा पु] (सं) जंबूद्वीप का एक नाम

सुदर्शनपाणि [संज्ञा पु] (सं.) विष्णु।

सुदर्शना [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सोमवल्ली नामक वनस्पति जो रोएँदार होती है। २-एक प्रकार की मदिरा। ३-एक गंधर्वी का नाम। ४-पद्मसरोवर। ५-जंबूवृक्ष। ६-अमरावती। इन्द्रपुरी ७-आज्ञा। आदेश। ८-शुक्लपक्ष की एक रात ९-औषध विशेष। [वि] (सं.) (वह स्त्री) जो देखने में सुन्दर हो।

सुदर्शनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) अमरावती। इन्द्र की नगरी।

सुदल [वि.] (सं.) अच्छे दल या पत्तों वाला। [संज्ञा पु] १-क्षीरमोरट नामक लता। २-मुचकुन्द। ३-सेना। दल।

सुदला [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-शालपर्णी। २-सेवती

सुदशन [वि.] (सं.) [स्त्री. सुदशना] सुन्दर दाँतों वाला।

सुदाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के एक गोपसखा। २-एक प्राचीन जनपद। ३-देखो 'सुदामा'।

सुदामन [संज्ञा पु] (सं.) १-जनक के मन्त्री का नाम। २-एक दैवास्त्र।

सुदामा [संज्ञा पु.] (सं) १-श्रीकृष्ण के एक सहपाठी मित्र जो बहुत दरिद्र थे। २-श्रीकृष्ण के एक गोपसखा। ३-कंस के एक माली का नाम ४-एक पर्वत। ५-ऐरावत। ६-समुद्र। ७-बादल। ८-एक गंधर्व। [संज्ञा स्त्री] १-कार्त्तिकेय की एक मातृका। २-उत्तर भारत की एक नदी। [वि] खूब देने वाला।

सुदामिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) शमीक की पत्नी का नाम (भागवत)।

सुदाय [संज्ञा पु.] (सं) १-शुभदान। वह दान विशेष जो किसी पर्व विशेष पर दिया जाय। २-यज्ञोपवीत संस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा। ३-दहेज। ४-वह जो उक्त प्रकार के दान करे।

सुदारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदारु। २-सरलवृक्ष ३-विंध्यपर्वत का एक अंश।

सुदारुण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दैवास्त्र [वि.] अत्यन्त क्रूर या भयानक।

सुदास [संज्ञा पु] (सं.) १-दिवोदास का पुत्र। २-ऋतुपर्ण का पुत्र। ३-सर्वकाम का पुत्र। ४-च्यवन का पुत्र। ५-बृहद्रथ का एक पुत्र। ६-एक प्राचीन जनपद। [वि.] ईश्वर की अच्छी तरह से पूजा या उपासना करने वाला

सुदि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुदी'।

सुदिन [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा या शुभ दिन।

सुदिनता [संज्ञा स्त्री] (सं) सुदिन का भाव।

सुदिनाह [संज्ञा पु] (सं.) शुभदिन। पुण्याह।

सुदिव [वि] (सं) उज्ज्वल। चमकीला।

सुदिवस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुदिन'।

सुदिवातंनि, सुदिवातन्ति [संज्ञा पु] (सं) एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुदिह [वि.] (सं.) १-बहुत तीक्ष्ण (दाँत आदि)। २-बहुत चिकना या उज्ज्वल।

सुदी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) चान्द्रमास का उजाला-पक्ष।

सुदीति [संज्ञा पु] (सं) आंगिरिस गोत्र के एक ऋषि का नाम। [संज्ञा स्त्री.] उज्ज्वल दीप्ति। [वि] बहुत चमकीला।

सुदीपति [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'सुदीप्ति'।

सुदीप्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) अधिक प्रकाश। खूब उजला।

सुदीर्घ [वि.] (सं.) बहुत लम्बा या विस्तृत। [संज्ञा पु.] चिचड़ा। चिचिंडक।

सुदीर्घधर्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं) अपराजिता।

सुदीर्घफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

सुदीर्घफलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार का बैंगन।

सुदीर्घजीवफला [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की ककड़ी।

सुदीर्घा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीनाककड़ी। [वि.] [स्त्री. प्र.] बहुत लम्बी।

सुदुघ [वि.] (सं.) खूब दूध देने वाली (गाय)।

सुदुघा [संज्ञा स्त्री.] (सं) अच्छा और पर्याप्त दूध देने वाली गाय।

सुदूर [वि.] (सं.) बहुत दूर।

सुदूरमूल [संज्ञा पु] (सं.) धमासा। हिंगुआ।

सुदृढ़ [वि.] (सं.) खूब दृढ़ या मजबूत।

सुदृढ़त्वचा [संज्ञा स्त्री] (सं) गंभारी।

सुदृष्टि [संज्ञा पु] (सं.) गिद्ध। [संज्ञा स्त्री] उत्तम दृष्टि। [वि] १-दूरदर्शी। २-दूर-दृष्टि।

सुदेल्ल [संज्ञा पु.] (सं) सुदेष्ण पर्वत का नाम।

सुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम देवता।

सुदेवा [संज्ञा स्त्री] (सं) १-विकुंठन की पत्नी २-अरिह की पत्नी।

सुदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं) ऋषभ की माता का नाम (भागवत)।

सुदेश [संज्ञा पु.] (सं)१-सुन्दर देश। २-उपयुक्त स्थान। [वि.] सुन्दर।

सुदेष्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-एक प्राचीन जनपद। ३-एक पर्वत।

सुदेष्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-बलि की पत्नी। २-राजा विराट की स्त्री का नाम।

सुदेस [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सुदेश'।

सुदेह [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर देह। [वि] सुन्दर कमनीय।

सुदैव [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौभाग्य। २-अच्छा संयोग।

सुदोग्धी [वि] (सं) बहुत दूध देने वाली (गाय आदि)।

सुदोघ [वि.] (सं) [स्त्री. प्र.] अधिक दूध देने वाली (गाय)। [पु. प्र.] उदार। दानशील।

सुदोह [वि.] (सं) जिसे सुख से दूहा जा सके।

सुद्दी [संज्ञा स्त्री] (अ.) पेट का बहुत सूखा हुआ मल।

सुद्ध* [वि.] (हिं) देखो 'शुद्ध'।

सुद्धाँ+ [अव्य] (हिं.) सहित। समेत।

सुद्धांत [संज्ञा स्त्री] (डि) जनाना।

सुद्धा [अव्य] (हिं.) देखो 'सुद्धाँ'।

सुद्धि [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-देखो 'सुध'। २-देखो 'शुद्धि'।

सुद्यु [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुवंशीय चारुपद नामक राजा के पुत्र का नाम।

सुद्युत [वि.] (सं.) सुदीप्त।

सुद्युम्न [संज्ञा पु.] (सं.) वैवस्तमनु का पुत्र जो इस नाम से विख्यात है।

सुद्रष्ट [वि.] (डिं.) कृपालु।

सुधंग [वि.] (हिं) अच्छा ढंग।

सुध [संज्ञा स्त्री] (हि) १-स्मृति। याद। २-चेतना। होश। ३-खबर। पता। ४-देखो 'सुधा'। सुध दिलाना-याद दिलाना। सुध न रहना-विस्मृत हो जाना। सुध बिसर जाना-याद न रहना। सुध बिसरना-अचेत होना। सुध बिसारना या भूलना-किसी को भूल जाना याद न रहना। सुध लेना-हालचाल जानना। सुध रखना-चौकसी रखना। यौ०-सुधबुध-होशहवास।

[वि.] (हि.) देखो 'शुद्ध'।

सुधन [वि.] (सं) बहुत धनी। अमीर।

सुधनु [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा कुरु का एक पुत्र २-गौतमबुद्ध के एक पूर्वज।

सुधन्वा [वि.] (सं.) १-उत्तम धनुष धारण करने वाला। २-अच्छा धनुर्धर। [संज्ञा पु] १-विष्णु। २-विश्वकर्मा। ३-आंगिरस। ४-विदुर। ५-कुरु का एक पुत्र।

सुधन्वाचार्य [संज्ञा पु.] (सं) एक शंकर जाति।

सुधबुध [संज्ञा स्त्री.] (हिं) होशहवास। ज्ञान सुधबुध जाती रहना-होशहवास न रहना। सुधबुध ठिकाने न होना-बुद्धि ठिकाने न होना। सुधबुध मारी जाना-चेतना लोप हो जाना।

सुधमना* [वि] (हि) [स्त्री सुधमनी] १-जो होश मे हो। २-सचेत। सतर्क।

सुधर [संज्ञा पु.] (सं) जैनों के अर्हत् का नाम। [संज्ञा पु] (डि.) बया नामक पक्षी।

सुधरना [क्रि. अ] (हिं) दोष अथवा त्रुटियों का दूर होना। संस्कार होना। बिगड़े हुए का बनना।

सुधराई [संज्ञा स्त्री] (हि) सुधारने का काम या मजदूरी।

सुधराव [संज्ञा पु] (हिं) सुधरने की क्रिया या भाव। संशोधन।। बनाव।

सुधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम धर्म। पुण्य कर्त्तव्य। २-जैन तीर्थङ्कर महावीर के ११ शिष्यों में से एक। ३-किन्नरों के एक राजा का नाम। [वि] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

सुधर्मनिष्ठ, सुधर्मा [वि.] (सं) अपने धर्म पर दृढ़ रहने वाला।

सुधर्मी [वि.] (सं) धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ। [संज्ञा स्त्री.] देवसभा।

सुधवाना [क्रि. स.] (हिं.) ठीक या दुरुस्त कराना।

सुधाँ [अव्य.] (हि.) देखो 'सुद्धाँ'।

सुधांग, सुधाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) चन्द्रमा।

सुधांशु [संज्ञा पु.] (सं) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

सुधांशुतैल [संज्ञा पु] (सं.) कपूर का तेल।

सुधांशुरक्त [संज्ञा पु.] (सं) मोती।

सुधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अमृत। २-जल। ३-दूध ४-पृथ्वी। धरती। ५-मकरन्द। ६-गंगा। ७-अर्क। रस। ८-मरोड़फली। ९-आँवला। १०-थूहर। ११-शालपर्णी। १२-बिजली। १३-विष। १४-चूना। १५-हर्रे। १६-ईंट। १७-गिलोय। १८-रुद्र की पत्नी। १९-एक प्रकार का वृत्त। २०-पुत्री। २१-वधू। २२- मधु। २३-घर।

सुधाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीधापन। सरलता। २-देखो 'शोधाई'।

सुधाकंठ, सुधाकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं) कोकिल।

सुधाकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधाकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेदी करने वाला। २-राज। मिस्तरी।

सुधाक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) चूने का खार।

सुधाक्षालित [वि.] (सं.) सफेदी किया हुआ।

सुधागेह* [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

सुधाघट [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

सुधाजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) सफेदी करके निर्वाह करने वाला मजदूर।

सुधातु [संज्ञा पु.] (सं.) सोना।

सुधातुदक्षिण [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो यज्ञ आदि में सुवर्ण दक्षिणा देता हो।

सुधादीधिति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधाद्रव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की चटनी।

सुधाधर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। [वि.] (सं.) जिसके अधरों में अमृत का सा स्वाद हो।

सुधाधरण [संज्ञा पु.] (डि.) चन्द्रमा।

सुधाधवल, सुधाधवलित [वि.] (सं.) १-चूने के समान सफेद। २-सफेदी किया हुआ।

सुधाधाम [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधाधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-अमृत पात्र।

सुधाधी [वि.] (हिं.) सुधा या अमृत के समान।

सुधाधौत [वि.] (सं.) सफेदी किया हुआ।

सुधानजर [वि.] (डिं.) दयावान्। कृपालु।

सुधाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-याद दिलाना। २-ठीक कराना। ३-(लग्न, कुण्डली आदि) ठीक कराना।

सुधानिधि [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-समुद्र। ३-एक दंडकवृत्त जिसमें बत्तीस वर्ण होते हैं और १६-वार क्रम से गुरु लघु आते हैं

सुधानिधिरस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक प्रकार का रस।

सुधापय [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर का दूध।

सुधापाणि [संज्ञा पु.] (सं.) धन्वन्तरि।

सुधापाषाण [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद खली।

सुधाभवन [संज्ञा पु.] (सं.) पलस्तर किया हुआ मकान।

सुधाभित्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दीवार जिसपर सफेदी की हुई हो।

सुधाभुज [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

सुधाभृति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-यज्ञ।

सुधाभोजी [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत भोजन करने वाले, देवता।

सुधाम [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चन्द्रमा। २-एक प्राचीन ऋषि का नाम। ३-रैवतक मन्वन्तर के देवताओं का एक गण। ४-क्रौंचद्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष के राजा का नाम।

सुधामय [वि.] (सं.) [स्त्री. सुधामया] १-सुधा से भरा हुआ। २-चूने का बना। [संज्ञा पु.] राजभवन।

सुधामयूख [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधामुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

सुधामूली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सालममिस्री।

सुधामोदक [संज्ञा पु.] (सं.) यवासु शर्करा।

सुधामोदकज [संज्ञा पु.] (सं.) तुरञ्जबीन की खाँड।

सुधायोनि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधार [संज्ञा पु.] (हिं.) सुधारने या सुधारने की क्रिया या भाव। संस्कार।

सुधारक [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दोषों या त्रुटियों का सुधार करने वाला। संशोधक। २-धार्मिक अथवा सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करने वाला। रिफार्मर।

सुधारना [क्रि. स.] (हिं.) दोष या बुराई दूर करना।

सुधार-प्रन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) वह समिति जो नगर की विकास योजनाएँ बनाकर उनके अनुसार नगर के सुधार या उन्नति के कार्य करती है। इम्प्रूवमेंट-ट्रस्ट।

सुधारवाद [संज्ञा पु.] (हिं.) समाज सुधारकों का वह सिद्धांत जिसमें वे वर्त्तमान समाज की पद्धति का संशोधन करना चाहते हैं, न कि उसका नाश। रिफॉर्मिज्म।

सुधारवादी [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो सुधारवाद के सिद्धांत को मानता हो। रिफॉर्मिस्ट।

सुधार-शाला [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह कारागार जहाँ अपराधी बालक दंड भोगने, पर साथ ही नैतिक दृष्टि से सुधारे जाने के लिये भेजे जाते हैं। रिफार्मेटरी।

सुधा-रश्मि [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधारा [वि.] (हिं.) सीधा। सरल।

सुधारालय [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुधार-शाला'

सुधारू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सुधारने वाला। संशोधक।

सुधालता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की गिलोय

सुधावर्षी [वि.] (सं.) अमृत बरसाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-एक बुद्ध का नाम।

सुधावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-खीरा

सुधावासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खीरा।

सुधाशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं) खली। खरी।

सुधाश्रवा [संज्ञा पु.] (हिं.) अमृत वर्षा करने वाला

सुधासदन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधासित [वि.] (सं.) सफेदी किया हुआ।

सुधासू [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सुधासूति [संज्ञा पु] (सं.) १-चन्द्रमा। २-यज्ञ। ३-कमल।

सुधास्पर्धी [वि.] (सं.) अमृत के समान मधुर।

सुधास्रवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गले के भीतर की घंटी। कौवा। २-रुद्रवंती।

सुधाहर, सुधाहृत [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

सुधि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुध'।

सुधित [वि.] (सं.) १-सुव्यवस्थित। २-सुधा या अमृत के समान।

सुधिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुठार। कुल्हाड़ी।

सुधियाना [क्रि. अ.] (हिं.) सुध आना। याद पड़ना। [क्रि. स.] (हिं.) सुधि दिलाना। याद करना।

सुधी [संज्ञा पु.] (सं.) पंडित। शिक्षक। [वि.] (सं.) १-बुद्धिमान्। २-धार्मिक।

सुधीर [वि.] (सं.) जिसमें बहुत धैर्य हो।

सुधुम्नानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुष्करद्वीप के सात खण्डों में से एक।

सुधूपक [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीवेष्ठ।

सुधूम्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का गन्धद्रव्य

सुधूम्रवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सुधृति [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम। २-राज्यवर्द्धन का पुत्र।

सुधोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) धन्वन्तरि।

सुधोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हरीतकी। हर्रें।

सुनंदन, सुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक देवपुत्र का नाम। २-श्रीकृष्ण का एक पार्षद्। ३-बलराम का मूसल। ४-बारह प्रकार के राजभवनों में से एक। एक बौद्ध श्रावक। [वि.] (सं.) आनंददायक।

सुनंदन, सुनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-परीषभीरु के एक पुत्र का नाम। ३-भूनंदन का भ्राता।

सुनंदा, सुनन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उमा। गौरी। २-उमा की एक सखी का नाम। ३-श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ४-बाहु और बाली की माता। ५-भरत की पत्नी का नाम। ६-स्वार्थसिद्धिनन्द की बड़ी पत्नी। ७-सफेद गाय। ८-गोरोचन। ९-एक नदी का नाम। १०-इसरौल। ११-एक तिथि। १२-स्त्री। औरत।

सुनंदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आरामशीतला नामक पत्रशाक। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और एक गुरु होता है।

सुन [वि.] (हिं.) देखो 'सुन्न'।

सुनका [संज्ञा पु.] (देश) चौपायों का एक कंठ रोग। गरारा।

सुनकातर [संज्ञा पु.] (हिं) सर्प विशेष।

सुनकिरवा [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार का कीड़ा।

सुनक्षत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-उत्तम नक्षत्र। २-एक राजा का नाम। ३-वीरमित्र का पुत्र। [वि.] (सं.) उत्तम नक्षत्र वाला।

सुनक्षत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कर्ममास का दूसरा नक्षत्र। २-कार्त्तिकेय की एक मातृका।

सुनखर्चा [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का धान

सुनगुन [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-वह भेद या पता जो इधर उधर सुनने से लगता हो। टोह। सुराग। २-कानाफूसी।

सुनजर [वि.] (डिं.) कृपालु। दयावान्।

सुनत, सुनति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुन्नत'

सुनना [क्रि. स] (हि.) १-कानों से शब्द या कही हुई बात का ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना। २-किसी बात या प्रार्थना पर ध्यान देना। ३-अपनी बुराई की बात, डाँट, फटकार श्रवण करना। ४-विचारार्थ दोनों पक्षों की बातें अपने सामने आने देना।

सुनी-अनसुनी कर देना-कोई बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना।

सुनफा [संज्ञा स्त्री.] (?) ज्योतिष का एक योग।

सुनबहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) फीलपा नामक रोग

सुनय [संज्ञा पु.] (सं.) १-उत्तम नीति। २-परिप्लव राजा का पुत्र। ३-ऋत का पुत्र। ४-खनित्र का पुत्र।

सुनयन [संज्ञा पु.] (सं.) मृग। हिरन।
[वि.] (सं.) [स्त्री. सुनयना] सुन्दर नेत्रों वाला।

सुनयना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जनक की स्त्री का नाम। २-स्त्री। नारी। औरत।

सुनर [संज्ञा पु.] (डिं.) अर्जुन।

सुनरिया, सुनरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दर नारी। सुन्दर स्त्री।

सुनवाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुनने की क्रिया या भाव। २-अभियोग आदि का विचार के लिए सुना जाना।

सुनवैया [वि.] (हिं.) १-सुनने वाला। २-सुनने वाला।

सुनस [वि.] (सं.) सुन्दर नाक वाला।

सुनसर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का गहना।

सुनसान [वि.] (हि.) १-निर्जन। जनहीन। जहाँ कोई न हो। २-उजाड़। वीरान।
[संज्ञा पु.] (सं.) सन्नाटा।

सुनह [संज्ञा पु.] (सं.) जह्नु के एक पुत्र का नाम

सुनहरा, सुनहरी [वि.] (हि.) देखो 'सुनहला'।

सुनहला [वि.] (हिं) [स्त्री. सुनहली] सोने के रङ्ग का-सा।

सुनाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुनवाई'।

सुनाकृत [संज्ञा पु.] (सं.) काली हलदी। कचूर।

सुनाद [संज्ञा पु.] (सं.) शंख। [वि.] सुन्दर शब्द वाला।

सुनाना [क्रि. स] (हिं) १-दूसरे को सुनने में करना। श्रवण कराना। २-भलाबुरा कहना।

सुनानी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सुनवानी'।

सुनाभ [संज्ञा पु] (सं) १-सुदर्शनचक्र। २-मैनाक पर्वत। ३-धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४-वरुण का एक मन्त्री। ५-गरुण का एक पुत्र। ६-एक प्रकार का मन्त्र। [वि.] जिसकी नाभि सुन्दर हो।

सुनाभक [संज्ञा पु] (सं) देखो 'सुनाभ'।

सुनाभा [संज्ञा स्त्री] (सं) कटभी। करही।

सुनाभि [वि.] (सं.) जिसकी सुन्दर नाभि हो।

सुनाम [संज्ञा पु.] (सं) ख्याति। यश।

सुनामद्वादशी [संज्ञा स्त्री] (सं.) प्रत्येक शुक्ला द्वादशी को किया जाने वाला एक व्रत।

सुनामा [संज्ञा पु.] (सं.) १-कंस के आठ भाइयों में से एक। २-सुकेतु के एक पुत्र का नाम। ३-स्कंद का एक पार्षद्। वैनतेय का एक पुत्र। [वि] यशस्वी। कीर्त्तिशाली।

सुनामिका [संज्ञा स्त्री] (सं) त्रायमाण-लता।

सुनाम्नी [संज्ञा स्त्री] (सं) वसुदेव की पत्नी का नाम।

सुनायक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २-एक दैत्य का नाम। ३-वैनतेय के एक पुत्र का नाम।

सुनार [संज्ञा पु] (हिं) [स्त्री. सुनारिन, सुनारी] १-सोने चाँदी के गहने बनाने वाला कारीगर २-उक्त कार्य करने वालों की जाति। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुतिया का दूध। २-सांप का अण्डा। ३-चटक पक्षी।

सुनारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सुनार का काम। २-सुनार की स्त्री।

सुनाल [संज्ञा पु.] (सं.) लालकमल।

सुनालक [संज्ञा पु] (सं.) अगरतवृक्ष।

सुनावनी [संज्ञा स्त्री.] (हि) १-विदेश आदि से किसी आत्मीय की मृत्यु का समाचार आना। २-वह स्नान आदि कृत्य जो विदेश से किसी आत्मीय की मृत्यु का समाचार आने पर होता है।

सुनासा [संज्ञा स्त्री.] (सं) कौआठोठी।

सुनासिक [वि.] (सं.) सुन्दर नाक वाला।

सुनासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) काकनासा। कौआठोठी।

सुनासीर [संज्ञा पु] (सं.) १-इन्द्र। २-देवता।

सुनाहक* [क्रि. वि.] (हि.) देखो 'नाहक'।

सुनिद्र [वि.] (सं) जो अच्छी तरह सोया हो। सुनिद्रित।

सुनिनद [वि] (सं) सुन्दर नाद या शब्द करने वाला।

सुनियाना+ [क्रि. अ.] (हिं) रोग आदि से फसल का मारा जाना।

सुनिरुहन [संज्ञा पु] (सं) एक प्रकार का वस्ति-कर्म (वैद्यक)।

सुनिर्यास [संज्ञा पु] (सं) लिंगिनी नामक वृक्ष।

सुनिभृत [वि] (सं.) नितान्त निर्जन।

सुनिर्मल [वि.] (सं.) खूब साफ।

सुनिर्मित [वि.] (सं.) खूब अच्छी तरह से बना हुआ।

सुनिश्चय [संज्ञा पु.] (सं.) दृढ़ या पक्का निश्चय

सुनिश्चल [वि] (सं) बिलकुल अटल। अतिस्थिर।

सुनिश्चित [संज्ञा पु] (सं.) एक बुद्ध का नाम। [वि.] अच्छी तरह निश्चित किया हुआ।

सुनिश्चितपुर [संज्ञा पु.] (सं) काश्मीर का एक प्राचीन नाम।

सुनिषण्ण [संज्ञा पु] (सं.) सुसना नामक साग।

सुनिस्त्रिंश [संज्ञा पु.] (सं.) तेज धार वाली तलवार।

सुनीच [संज्ञा पु.] (सं.) किसी ग्रह का किसी राशि में किसी विशेष अंश का अवस्थान (ज्योतिष)

सुनीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुद्धिमत्ता, समझदारी २-एक राजा का नाम।

सुनीति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्तम नीति। २-ध्रुवभक्त की माता का नाम। [संज्ञा पु] १-शिव। २-विदूरथ का एक पुत्र।

सुनीथ [संज्ञा पु] (सं) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-संतति का पुत्र। ३-सुषेण का एक पुत्र। ४-शिशुपाल। ५-एक दानव। ६-सुव्रत का एक नाम। [वि.] न्यायपरायण।

सुनीथा [संज्ञा स्त्री] (सं.) मृत्यु की पुत्री जो अङ्ग की पत्नी थी।

सुनील [वि.] (सं.) जिसका वर्ण बहुत नीला हो [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनार का पेड़। २-लाल कमल।

सुनीलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-काला भंगरा। २-नीलम।

सुनीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चनिका घास। २-नीलापराजिता। ३-अतीस।

सुनु [संज्ञा पु.] (सं.) जल।

सुनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २-तेरहवें मनु के एक पुत्र का नाम। ३-चक्रवाक। चकवा। [वि.] जिसके नेत्र सुन्दर हों सुलोचन।

सुनेत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांख्य की नौ तुष्टियों में से एक।

सुनैया [वि.] (हिं.) सुनने वाला।

सुनोची+ [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का घोड़ा

सुन्न [वि.] (हिं.) १-स्पंदनहीन। निर्जीव। जड़वत्। २-देखो 'सुनसान'। [संज्ञा पु.] शून्य। सिफर।

सुन्नत [संज्ञा स्त्री.](अ.) कुछ धर्मों में होने वाली एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।

सुन्नसान [वि.] (हिं.) देखो 'सुनसान'।

सुन्ना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुनना'। [संज्ञा पु.] (हिं.) गोल बिंदी। शून्य। सिफर

सुन्नी [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानों का एक संप्रदाय

सुपंख, सुपङ्ख [वि.] (सं.) सुन्दर तीरों से युक्त। २-सुन्दर परों से युक्त।

सुपंथ, सुपन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम मार्ग। सन्मार्ग।

सुपक [वि.] (हिं.) भली प्रकार पका हुआ।

सुपक्व [वि.] (सं.) अच्छी तरह पका हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंधित आम।

सुपक्ष [वि.] (सं.) सुन्दर पंखों वाला।

सुपक्ष्मा [वि.] (सं.) सुन्दर पलकों वाला।

सुपच [संज्ञा पु.] (हिं.) डोम। चांडाल। २-भङ्गी

सुपट [वि.] (सं.) जिसके पास सुन्दर वस्त्र हों। [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर वस्त्र।

सुपटु [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो किसी विषय में पटु या अच्छा ज्ञाता हो। एक्सपर्ट।

सुपड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) लङ्गर का अँकुड़ा जो जमीन में धँस जाता है।

सुपत [वि.] (हिं.) प्रतिष्ठायुक्त। मान वाला।

सुपतिक [संज्ञा पु.](डिं.) वह डाका जो रात को पड़े

सुपन्थ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुपथ'।

सुपत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तेजपत्र। २-आदित्यपत्र। ३-एक प्रकार की घास। ४-इंगुदी। हिंगोट। ५-एक पौराणिक पक्षी। [वि.] १-सुन्दर पत्तों वाला। २-सुन्दर पंखों वाला।

सुपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) सहिंजन।

सुपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रुद्रजटा। २-शतावरी। ३-शालपर्णी। ४-शमी। ५-पालक का साग।

सुपत्रिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) जतुका। पर्पटी।

सुपत्रित [वि.] (सं.) जिसमें पंख या तीर हों।

सुपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पौधा। [वि.] पंखों या तीरों से युक्त।

सुपथ [संज्ञा पु.](सं.) १-अच्छा रास्ता। सन्मार्ग २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण नगण, भगण और दो गुरु होते हैं। [वि.] (हिं.) समतल। हमवार।

सुपथ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा या हितकर पथ्य। २-आम।

सुपथ्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सफेद बथुआ। २-लाल बथुआ।

सुपद् [वि.] (सं.) सुन्दर पैरों वाला।

सुपद [वि.] (सं.) १-सुन्दर पैरों वाला। २-तेज चलने वाला।

सुपद्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वच।

सुपन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वप्न'।

सुपनक [वि.] (हिं.) स्वप्न देखने वाला।

सुपना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वप्न'।

सुपनाना* [क्रि. स.] (हिं.) स्वप्न दिखाना।

सुपरकास [संज्ञा पु.] (डिं.) ताप। गरमी।

सुपरडंट† [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुपरिंटेंडेंट'।

सुपरण, सुपरन [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'सुपर्ण'।

सुपरमतुरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बौद्धों की एक देवी का नाम।

सुपररायल [संज्ञा पु.] (अं.) २२ × २६.इंच के छपाई के कागज का नाप।

सुपरवाइजर [संज्ञा पु.](अं.) वह जो किसी काम की देखभाल या निगरानी करता हो।

सुपरस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्पर्श'।

सुपरिंटेंडेंट [संज्ञा पु.] (अं.) किसी कार्य का निरीक्षण करने वाला।

सुपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-मुरगा। ३-पक्षी। ४-किरण। ५-विष्णु। ६-एक असुर का नाम। ७-देवगन्धर्व। ८-एक पर्वत। ९-घोड़ा। १०-वैदिक मंत्रों की एक शाखा जिसमें १०३ मंत्र होते हैं। ११-अंतरिक्ष का एक पुत्र १२-सेना की एक प्रकार की व्यूह रचना। १३-नागकेसर। १४-अमलतास। १५-सुन्दर पत्र या पत्ता। [वि.] (सं.) १-सुन्दर परों वाला २-सुन्दर पत्तों वाला।

सुपर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़ अथवा कोई दिव्य पक्षी। २-अमलतास। ३-सप्तपर्ण। [वि.] (सं.) १-सुन्दर परों वाला। २-सुन्दर पत्तों वाला।

सुपर्णकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) एक जैन देवता का नाम।

सुपर्णकेतु [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण

सुपर्णयातु [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

सुपर्णराज [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

सुपर्णसद् [वि.] (सं.) पक्षी की सवारी करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सुपर्णाड [संज्ञा पु.] (सं.) सूत पिता तथा शूद्रा माता से उत्पन्न पुत्र।

सुपर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कमलिनी। २-गरुड़ की माता का नाम।

सुपर्णाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) नागकेसर।

सुपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वर्णजीवंजी। २-रेणुका। ३-पलासी। ४-शालपर्णी।

सुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गरुड़ की माता का का नाम। २-मादा। चिड़िया। ३-कमलिनी ४-एक वाग्देवी का नाम। ५-अग्नि की पाँच शिखाओं में से एक। ६-रात्रि। ७-पलासी। ८-रेणुका। [संज्ञा पु.] (सं) गरुड़।

सुपर्णीतनय, सुपर्णेय [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

सुपर्याप्त [वि.] (सं.) १-बहुत लंबा-चौड़ा। २-भलीभाँति सजा हुआ।

सुपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-शुभमुहूर्त्त। ३-बाँस। ४-वाण। ५-धूआँ। [वि.] (सं.) १-जिसके जोड़ या गांठें सुन्दर हों। २-बहुत गाँठ गठीला। ३-सुन्दर पर्व या या अध्याय वाला (ग्रंथ)।

सुपर्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

सुपह [संज्ञा पु.] (डिं.) राजा।

सुपाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँबाहलदी।

सुपाक्य [संज्ञा पु.](सं.) बरिया या साँचर नमक

सुपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) दान, शिक्षा आदि लेने अथवा कोई कार्य करने के लिये कोई योग्य अथवा उपयुक्त व्यक्ति। अच्छा पात्र।

सुपार [वि.] (सं.) सहज या सरलता से पार होने योग्य।

सुपारग [संज्ञा पु.] (सं.) शाक्यमुनि। [वि.] उत्तम रूप से पार करने वाला।

सुपारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांख्य के मतानुसार नौ तुष्टियों में से एक।

सुपारी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसमें छोटे गोल फल जो काट कर पान के साथ खाये जाते हैं। गुवाक। २-लिंग का अग्रभाग।

सुपारी-का-फूल [संज्ञा पु.](हि.) मोचरस या सेमर की गोंद।

सुपारी-पाक [संज्ञा पु.](हिं.) वैद्यक में एक पौष्टिक औषध।

सुपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-पारसपीपल। २-पाकर वृक्ष। ३-जैनियों के २४ जिनों अथवा तीर्थङ्करों में से एक। [वि.] (सं.) सुन्दर पार्श्ववाला।

सुपास [संज्ञा पु.] (देश.) सुख। आराम।

सुपासी [वि.] (हिं.) सुख या आनन्द देने वाला

सुपिंगला, सुपिङ्गला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जीवंती २-मालकंगनी।

सुपीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-गाजर। २-पीली कटसरैया। ३-पीतसार या चन्दन। ४-ज्योतिष में पाँचवें मुहूर्त्त का नाम। [वि.] (सं.) १-अच्छी तरह से पीया हुआ। २-बिलकुल पीला

सुपीन [वि.] (सं.) बहुत मोटा या बड़ा।

सुपुंसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसका पति भला आदमी हो।

सुपुट [संज्ञा पु.](सं.) १-कोलकंद। २-विष्णुकंद

सुपुटा [संज्ञा स्त्री] (सं.) नवमल्लिका। सेवती

सुपुत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-जीवक वृक्ष। २-अच्छा और योग्य पुत्र।

सुपुत्रिक [वि.] (सं.) सुन्दर या उत्तम पुत्र वाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जतुकालता।

सुपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुन्दर पुरुष।

भला आदमी । सज्जन ।

सुपुर्द [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुपुर्द'।

सुपुष्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थल कमलिनी।

सुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-लौंग। २-आहुल्य। ३-पुंडेरिया। ४-पारसपीपल। ५-मुचकुंद-वृक्ष। ६-शहतूत। ७-सफेद आक। ८-देवदार ९-बड़ी सेवती। १०-सिरस। ११-पारिभद्र। १२-ब्रह्मदारु। [वि.] (सं.) सुन्दर फूलों वाला।

सुपुष्पक [संज्ञा पु.](सं.) १-सिरस का पेड़। २-मुचकुंद। ३-सफेद आक। ४-हरिद्र। ५-परासपीपल। ६-राजतरुणी।

सुपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कोशातकी। तुरई। २-द्रोणपुष्पी। ३-सौंफ। ४-शतपत्री।

सुपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जीर्णदारु। २-सौंफ। ३-सोआ। ४-पाटला। ५-पातालगारुड़ी। ६-बनसनई।

सुपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्वेत अपराजिता। २-सौंफ। ३-सोया। ४-केला। ५-महिषवल्ली ६-बनसनई।

सुपूत [वि.] (सं.) अत्यंत पूत या पवित्र। [वि.] (हिं.) अच्छा और सुयोग्य पुत्र।

सुपूती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सपूत होने का भाव २-अच्छे पुत्र वाली स्त्री।

सुपूर [संज्ञा पु.](सं.) बिजौरा नीबू। [वि.](सं.) जो सहज में पूर्ण हो सके।

सुपूरक [संज्ञा पु] (सं.) १-अगस्त नामक वृक्ष। २-बिजौरा नीबू।

सुपेत [वि] (हिं.) देखो 'सफेद'।

सुपेती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सफेदी'।

सुपेद [वि.] (हिं.) देखो 'सफेद'।

सुपेदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'सफेदी'। २-ओढ़ने की रजाई। ३-बिछाने की तोशक। ४-बिस्तर। बिछोना।

सुपेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा सूप।

सुपैदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सफेदा'।

सुप्त [वि.] (सं.) १-सोया हुआ। निद्रित। २-सोने के लिये लेटा हुआ। ३-जिसकी क्रिया या चेष्टा रुकी हुई हो। डारमेंट। ४-सुस्त। मुँदा हुआ (फूल)।

सुप्तक [संज्ञा पु.] (सं.) निद्रा। नींद।

सुप्तघातक [वि.] (सं.) १-निद्रित अवस्था में वध करने वाला। २-खूँखार। हिंस्र।

सुप्तघ्न [वि.] (सं.) देखो 'सुप्तघातक'। [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम।

सुप्तच्युत [वि.] (सं.) जिसकी नींद खुल गई हो

सुप्तजन [संज्ञा पु] (सं.) अर्द्धरात्रि।

सुप्तज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) स्वप्न।

सुप्तता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुप्त होने का भाव २-निद्रा। नींद।

सुप्तप्रबुद्ध [वि.] (सं.) जो अभी सोकर उठा हो।

सुप्तप्रलपित [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रलाप जो निद्रित अवस्था में किया जाय।

सुप्तमाली [संज्ञा पु.] (सं.) तेईसवें कल्प का नाम।

सुप्तवाक्य [संज्ञा पु] (सं.) वह वाक्य या शब्द जो निद्रित अवस्था में कहे जाएँ।

सुप्तविग्रह [वि] (सं.) जो सोया हुआ हो। निद्रित।

सुप्तविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) स्वप्न। सपना।

सुप्तस्थ [वि.] (सं.) सोया हुआ।

सुप्तांग, सुप्ताङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) चेष्टारहित अङ्ग।

सुप्तांगता, सुप्ताङ्गता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अङ्गों के निश्चेष्ट होने का भाव।

सुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नींद। निद्रा। २-ऊँघाई। ३-सुप्तांगता। ४-विश्वास।

सुप्तोत्थित [वि] (सं.) जो अभी सोकर उठा हो

सुप्रकाश [वि.] (सं.) उत्तम प्रकाशयुक्त।

सुप्रकेत [वि.] (सं.) ज्ञानवान्। बुद्धिमान्।

सुप्रगुप्त [वि.] (सं.) अच्छी तरह से छिपा हुआ

सुप्रचेता [वि.] (सं.) बहुत बुद्धिमान्।

सुप्रज [वि.] देखो 'सुप्रजा'।

सुप्रजा [वि.] (हिं.) उत्तम और अधिक सन्तान वाला। [संज्ञा स्त्री.] १-अच्छी सन्तान। २-उत्तम प्रजा।

सुप्रजात [वि.] (सं.) बहुतसी सन्तानों वाला।

सुप्रज्ञ [वि.] (सं.) भारी विद्वान।

सुप्रतर [वि.] (सं.) जो सहज में पार हो सके।

सुप्रतार [वि.] (सं.) देखो 'सुप्रतर'।

सुप्रतिज्ञ [वि.] (सं.) दृढ़प्रतिज्ञ।

सुप्रतिज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दृढ़ प्रतिज्ञा।

सुप्रतिभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मदिरा। शराब।

सुप्रतिम [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

सुप्रतिष्ठ [वि.] (सं.) १-जिसकी लोग खूब प्रतिष्ठा करते हों। २-बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात।

सुप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं जिनमें पहला, दूसरा और चौथा वर्ण लघु होता है। ३-मन्दिर या प्रतिमा आदि की स्थापना। ४-कार्त्तिकेय की एक मातृका। ५-अभिषेक। ६-उत्तम स्थिति।

सुप्रतिष्ठित [वि.] (सं.) जिसकी अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत हो।

सुप्रतिष्ठित-चरित्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

सुप्रतिष्ठिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम।

सुप्रतीक [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शिव। २-कामदेव ३-ईषानकोण का एक दिग्गज। [वि.] १-सुन्दर। २-सज्जन।

सुप्रतीकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुप्रतीक नामक दिग्गज की पत्नी।

सुप्रदादि [वि.] (सं.) बहुत उदार। दानी।

सुप्रदर्शी [वि.] (सं.) जो देखने में सुन्दर हो।

सुप्रदोहा [वि.] (सं.) जिसका दूहना सहज हो।

सुप्रधृष्य [वि.] (सं.) सहज में जीता जाने वाला।

सुप्रबुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शाक्य बुद्ध। [वि.] (सं.) जिसे पर्याप्त बोध या ज्ञान हो।

सुप्रभ [वि.] (सं.) १-बहुत तड़क-भड़क वाला। २-सुन्दर। [संज्ञा पु.] १-जैनियों के नौ जिनों में से एक। २-एक दानव का नाम। ३-पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष।

सुप्रभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २-सोमराजी। ३-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। ४-सुन्दर प्रकाश।

सुप्रभात [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुन्दर प्रभात। २-मङ्गलसूचक प्रभात। ३-वह स्तोत्र जो प्रातःकाल पढ़ा जाय।

सुप्रभाता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक पुराणोक्त नदी २-वह रात्रि जिसका प्रभात सुन्दर हो।

सुप्रभाव [संज्ञा पु.] (सं.) सर्वशक्तिमान्।

सुप्रयुक्त [वि.](सं.)अच्छी तरह प्रयोग में लाया हुआ।

सुप्रयुक्तशर, सुप्रयोगविशिख [संज्ञा पु.] (सं.) सिद्धहस्त बाण चलाने वाला। अच्छा धनुर्धर।

सुप्रयोगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वायुपुराण के अनुसार एक नदी का नाम।

सुप्रलंभ, सुप्रलम्भ [वि.] (सं.) सुलभ। सहज में मिलने योग्य।

सुप्रलाप [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दर भाषण।

सुप्रसन्न [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर। [वि.] १-परम प्रफुल्ल। २-अत्यन्त निर्मल। ३-हर्षित। बहुत प्रसन्न।

सुप्रसन्नक [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली बर्बरी।

सुप्रसरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गन्धप्रसारिणी नामक लता।

सुप्रसाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-अत्यन्त प्रसन्नता। ४-एक असुर। ५-स्कंद का एक पार्षद।

सुप्रसादा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुप्रसिद्ध [वि.] (सं.) बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात।

सुप्रिय [वि.] (सं.) बहुत प्रिय या प्यारा।

सुप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोलह मात्राओं का एक वृत्त जिसमें अन्तिम वर्ण के अतिरिक्त

शेष सब वर्ण लघु होते हैं। २-एक अप्सरा का नाम।

सुप्रीम-कोर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) किसी देश का सर्व प्रधान या सर्वोच्च न्यायालय। उच्चतम न्यायालय।

सुप्रौढ़ [वि.] (सं.) बहुत बूढ़ा।

सुफरा [संज्ञा पु.] (देश.) वह कपड़ा जो टेबुल पर बिछाया जाता है।

सुफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा फल या परिणाम। २-बादाम। ३-अनार। दाड़िम। ४-छोटा अमलतास। ५-बदर। ६-मूंग। ७-कैथ। ८-बिजौरानीबू। [वि.] १-सुन्दर फल वाला (अस्त्र)। २-सफल। कामयाब।

सुफलक [संज्ञा पु.] (सं.) अक्रूर नामक यादव के पिता।

सुफला [वि.] (सं.) १-सुन्दर या बहुत फल देने वाली। २-सुन्दर फलों वाली। [संज्ञा स्त्री.] १-इन्द्रायण। २-कुम्हड़ा। पेठा। ३-केला। ४-गम्भारी। ५-मुनक्का।

सुफेद [वि.] (हिं.) देखो 'सफेद'।

सुफेन [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्रफेन।

सुबंध, सुबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) तिल। [वि.] अच्छी तरह बँधा हुआ।

सुबंधु, सुबन्धु [वि.] (सं.) जिसके अच्छे बन्धु या मित्र हों। [संज्ञा पु.] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सुबहा [संज्ञा पु.] (देश.) ताँबा मिली हुई चाँदी।

सुभ्रु [वि.] (सं.) १-धूसर। २-चिकनी भौंह वाला।

सुबरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छड़ी।

सुबल [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक पक्षी। ३-शकुनि के पिता का नाम। ४-सुमति का पुत्र। ५-भौत्यमनु के पुत्र का नाम। श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम। [वि.] अत्यन्त बलवान्।

सुबलपुर [संज्ञा पु.] (सं.) कीकट नामक राज्य का एक प्राचीन नगर।

सुबह [संज्ञा स्त्री.] (अ.) सवेरा। प्रातःकाल।

सुबहान [संज्ञा पु.] देखो 'सुभान'।

सुबहान-अल्ला [पद] (अ.) एक अरबी पद जिस का अर्थ है-ईश्वर धन्य है।

सुबाल [संज्ञा पु.](सं.) १-एक देवता। २-एक उपनिषद्। ३-उत्तम बालक। [वि.] निर्बोध अज्ञान।

सुबास [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सुगन्ध। अच्छी महक [संज्ञा पु.] १-एक अगहनिया धान। २-सुन्दर निवास-स्थान।

सुबासना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुगन्ध। खुशबू। [क्रि. स.] (हिं.) सुवासित करना। महकाना।

सुबासित [वि.] (हिं.) देखो 'सुवासित'।

सुबाहु [वि.] (सं.) दृढ या सुन्दर बालों वाला। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सेना। फौज। २-एक अप्सरा का नाम। [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक नागासुर। २-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३-एक दानव का नाम। ४-शत्रुघ्न के एक पुत्र का नाम। ५-एक बोधिसत्व का नाम। ६-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुबाहुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

सुबाहुशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीरामचन्द्र।

सुबिस्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुभीता'।

सुबीज़ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-खसखस। पोस्तदाना। [वि.] उत्तम बीज वाला।

सुबीता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुभीता'।

सुबुक [वि.] (फा.) १-हलका। २-सुन्दर। यौ०-सुबुक रंग-सोना रंगने का एक ढंग। [संज्ञा पु.] (फा.) घोड़े की एक जाति।

सुबुकरंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) बढ़इयों का एक लोहे का औजार।

सुबुद्धि [वि.] (सं.) उत्तम बुद्धि वाला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तम बुद्धि।

सुबुध [संज्ञा पु.] (हिं.) अक्ल। बुद्धि। [वि.] (सं.) १-बुद्धिमान। २-सतर्क। सावधान।

सुबू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुबह'।

सुबूत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सबूत'। [संज्ञा पु.] (अ.) वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण।

सुबोधन [वि.] (सं.) अच्छी तरह जाना हुआ। अच्छी तरह जानना।

सुबोधिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी ज्ञान वाली

सुब्रह्मण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-विष्णु। ३-कार्त्तिकेय। ४-एक प्राचीन प्रांत जो दक्षिण भारत में था। ५-उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियों में से एक। [वि.] जिसमें ब्रह्मण्य हो। ब्रह्मण्ययुक्त।

सुब्रह्मण्य-क्षेत्र, सुब्रह्मण्य-तीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) मद्रास के कनाड़ा जिले का एक प्राचीन तीर्थ।

सुब्रह्मवासुदेव [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

सुभंग, सुभङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) नारियल का वृक्ष

सुभ* [वि.] (हिं.) देखो 'शुभ'।

सुभग [वि.] (सं.) १-सुन्दर। मनोहर। २-भाग्यवान्। ३-प्रियतम। ४-सुखद। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सोहागा। ३-चम्पा। ४-अशोक वृक्ष। ५-शैलेय। ६-गन्धपाषाण। ७-सुबल के एक पुत्र का नाम। ८-जैनों के अनुसार वह कर्म जिससे जीव सौभाग्यवान् होता है।

सुभगता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुभग होने का भाव। २-सुन्दरता। ३-प्रेम। ४-स्त्री द्वारा प्राप्त सुख।

सुभगदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) भौमासुर का पुत्र।

सुभगसेन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन राजा का नाम।

सुभगा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-सुन्दरी। २-सुहागिन। [संज्ञा स्त्री.] १-वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। ३-पाँच वर्ष की कुमारी। ४-एक रागिनी। ५-कैवर्टीमोथा। ६-नीली दूब। ७-हलदी। ८-तुलसी। ९-कस्तूरी। १०-स्वर्णकदली। ११-बेला। मोतिया। १२-चमेली।

सुभगानंदनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) तांत्रिकों के अनुसार एक भैरव का नाम।

सुभगाह्वया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कैवर्तिका लता। २-हलदी। ३-सरिवन। ४-तुलसी। ५-नीली दूब। ६-सोना केला।

सुभग्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुभग'।

सुभट [संज्ञा पु.] (सं.) महान् योद्धा।

सुभटवंत [वि.] (हिं.) अच्छा योद्धा।

सुभटवर्मा [संज्ञा पु.] एक हिन्दू राजा का नाम।

सुभट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत बड़ा विद्वान या पण्डित।

सुभड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) सुभट। शूरवीर।

सुभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-सनत्कुमार। ३-वस्तुदेव का एक पुत्र। ४-कृष्ण का एक पुत्र। ५-सौभाग्य। ६-मङ्गल। कल्याण। [वि.] (सं.) १-भाग्यवान्। २-सज्जन। भला।

सुभद्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवरथ। २-बेल।

सुभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी का नाम। २-दुर्गा का एक रूप। ३-सङ्गीत में एक श्रुति का नाम। ४-अनन्तमूल। ५-एक नदी। ६-गंभारी। ७-मकड़ा घास।

सुभद्राणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्रायमाण-लता।

सुभद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रीकृष्ण की छोटी बहन। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, नगण, रगण, लघु और गुरु होते हैं।

सुभद्रेश [संज्ञा पु.] (सं.) अर्जुन।

सुभर* [वि.] (हिं.) देखो 'शुभ्र'।

सुभव [वि.] (सं.) उत्तम रूप से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] १-एक इक्ष्वाकुवंशी राजा का नाम। २-साठ संवत्सरों में से अन्तिम का नाम।

सुभसत्तरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जो अपने पति को बहुत प्यारी हो।

सुभांजन, सुभाञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सहिजन का वृक्ष।

सुभा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सुधा। २-शोभा। ३-हड़। ४-पर नारी।

सुभाइ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वभाव'। [क्रि. वि.] स्वभावतः। सहज भाव से।

सुभाउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वभाव'।

सुभाग [वि.] (सं.) खुश किस्मत। भाग्यवान्। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सौभाग्य'।

सुभागा [संज्ञा स्त्री] (सं.) रौद्राश्व की एक पुत्री का नाम।

सुभागी [वि] (हिं.) भाग्यवान्। भाग्यशाली।

सुभागीन [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सुभागिन] अच्छे भाग्य वाला।

सुभाग्य [वि.](सं.) अत्यन्त भाग्यशाली। [संज्ञा पु.] देखो 'सौभाग्य'।

सुभान [अव्य] (अ.) धन्य। वाह-वाह।

सुभान-अल्ला [पद.](अ.) देखो 'सुबहान-अल्ला'

सुभाना* [क्रि अ.] (हिं.) शोभित होना। भला जान पड़ना।

सुभानु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चतुर्थ हुतास नामक युग के एक वर्ष का नाम। २-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। [वि.] सुन्दर या उत्तम प्रकाश से युक्त।

सुभाय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वभाव'

सुभायक* [वि] (हिं.) स्वाभाविक। स्वभावतः

सुभाव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वभाव'।

सुभावित [वि] (सं.) उत्तम रूप से भावना की हुई (औषध)।

सुभाषण [संज्ञा पु] (सं.) १-सुन्दर भाषण। २-युयुधान के एक पुत्र का नाम।

सुभाषित [वि] (सं.) सुन्दर ढंग से कहा हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) एक बुद्ध का नाम।

सुभाषी [वि.] (हिं.) मधुर बोलने वाला।

सुभास [वि.] (सं.) खूब चमकीला। [संज्ञा पु.] सुधन्वा के एक पुत्र का नाम।

सुभिक्ष [संज्ञा पु.](सं.) ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले तथा अन्न खूब हो। सुकाल।

सुभिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धौ के फूल।

सुभिषज् [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा चिकित्सक।

सुभी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] मंगलकारक। शुभकारक।

सुभीता [संज्ञा पु.] (देश.) १-वह स्थिति जिसमें कोई काम करने में कुछ कठिनता या अड़चन न हो। सुगमता। सहूलियत। कनवीनिएन्स। २-शुभअवसर। सुयोग।

सुभीम [वि.] (सं.) अत्यंत भीषण। बहुत भयानक। [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

सुभीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की पत्नी का नाम।

सुभीरक [संज्ञा पु.] (सं.) ढाक का पेड़।

सुभुज [वि] (सं.) सुंदर भुजाओं वाला। सुबाहु

सुभुजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा का नाम

सुभूता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तर दिशा का नाम

सुभूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कुशल। मंगल। २-उन्नति। तरक्की।

सुभूतिक [संज्ञा पु.] (सं.) बेल का पेड़।

सुभूम [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के आठवें चक्रवर्ती, कार्त्तवीर्य।

सुभूमि [संज्ञा पु.] (सं.) उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।

सुभूमिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

सुभूमिप [संज्ञा पु.] (सं.) उग्रसेन का एक पुत्र।

सुभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) उग्रसेन के एक पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) सुंदर भूषणों से अलंकृत

सुभूषित [वि.] (सं.) उत्तम रूप से भूषित।

सुभृश [वि.] (सं.) बहुत अधिक।

सुभोग्य [वि.] (सं.) सुख से भोगने योग्य।

सुभौंटी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शोभा'।

सुभौम [संज्ञा पु.] (सं.) एक जैन चक्रवर्ती राजा का नाम।

सुभ्र [वि.] (हिं.) देखो 'शुभ्र'। [संज्ञा पु.] (हिं.) भूमि में का छिद्र।

सुभ्राज [संज्ञा पु.] (सं.) देवभ्राज के एक पुत्र का नाम।

सुभ्रु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्त्री। औरत। २-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम। [वि.] सुन्दर भौंहों वाला।

सुमंगल, सुमङ्गल [वि.] (सं.) १-कल्याणकारी। २-सदाचारी। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का विष।

सुमंगला, सुमङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मकड़ा नामक घास। २-स्कन्द की एक मातृका। ३-एक अप्सरा। ४-एक नदी।

सुमंगली, सुमङ्गली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह में सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।

सुमंगा, सुमङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुराणानुसार एक नदी का नाम।

सुमंत, सुमन्त [संज्ञा पु.] (हिं.) राजा दशरथ का मन्त्री और सारथी।

सुमंतु, सुमन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मनु का नाम। २-जह्नु के एक पुत्र का नाम।

सुमंत्र, सुमन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा दशरथ का मन्त्री और सारथी। २-अन्तरिक्ष के एक पुत्र का नाम। ३-कल्कि का बड़ा भाई। ४-आय-व्यय का प्रबन्ध करने वाला मंत्री।

सुमंत्रक, सुमन्त्रक [संज्ञा पु.] (सं.) कल्कि का बड़ा भाई।

सुमंथन [संज्ञा पु.] (हिं.) मंदर पर्वत।

सुमंदर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'समुद्र'।

सुमंदा, सुमन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की शक्ति।

सुमंद्र, सुमन्द्र [संज्ञा पु](सं.) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १६ और ग्यारह के विराम से २७ मात्राएँ और अन्त में गुरु लघु होते हैं।

सुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुष्प। २-चन्द्रमा। ३-आकाश। (फा.) घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। (देश.) वृक्ष विशेष जिस पर 'मूगा' (रेशम) के कीड़े पाले जाते हैं।

सुमखारा [संज्ञा पु.] (फा.) ऐसा घोड़ा जिसके आँखों की पुतली बेकार हो गई हो।

सुमगधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अनाथपिंडिक की पुत्री का नाम।

सुमणि [संज्ञा पु] (सं.) स्कन्द के एक पार्षद का नाम।

सुमत [वि.] (सं.) ज्ञानवान्। बुद्धिमान्। [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सुमति'।

सुमतराश[संज्ञा पु.](फा.) वह उपकरण (औजार) जिससे घोड़े के नाखून काटे जाते हैं।

सुमतिंजय, सुमतिञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सुमति [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक दैत्य। २-सावर्ण मन्वंतर। ३-भरत का एक पुत्र। ४-सूत का पुत्र या शिष्य। ५-वर्त्तमान अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत् या गत उत्सर्पिणी के तेरहवें अर्हत् का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा सगर की पत्नी का नाम। २-क्रतु की पुत्री का नाम। ३-अच्छी मति या बुद्धि। ४-आपस का मेल-जोल। ५-भक्ति। प्रार्थना। ६-मैना। सारिका। [वि.] (सं.) अच्छी बुद्धि वाला।

सुमतिबाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक भक्त स्त्री का नाम।

सुमतिमेरु [संज्ञा पु.] (सं)। हल का एक भाग।

सुमतिरेणु [संज्ञा पु.] (सं) १-एक यक्ष का नाम। २-एक नागासुर का नाम।

सुमद [वि.] (सं.) मतवाला। [संज्ञा पु.] (सं.) एक वानर जो रामचन्द्र जी की सेना का एक सेनापति था।

सुमदुम [वि.] (हिं.) मोटा। तोंदल। स्थूल।

सुमदन [संज्ञा पु.] (सं.) आम का पेड़।

सुमदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

सुमदनात्मजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा।

सुमधुर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का शाक। [वि.] (सं.) बहुत मधुर या मीठा।

सुमध्यमा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] सुन्दर कमर वाली (स्त्री)।

सुमनःपत्र[संज्ञा पु.] (सं.) जावित्री। जातीपत्री।

सुमनःपत्रिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) जावित्री। जातीपत्री।

सुमनःफल [संज्ञा पु.](सं.) १-कैथ। २-जायफल

सुमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-ज्ञानी। विद्वान। ३-पुष्प। फूल। ४-गेहूँ। ५-नीम। ६-धतूरा। [वि.] (सं.) १-सुहृदय। २-सुंदर

सुमनचाप [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

सुमनस [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-पंडित। विद्वान्। ३-महात्मा। ४-पुष्प। फूल। [वि] (सं.) प्रसन्न चित्त।

सुमनसपुंज [संज्ञा पु.] (हिं.) कामदेव

सुमनस्क [वि.] (सं.) प्रसन्न। सुखी।

सुमना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चमेली। २-सेवती।

३-कबरी गाय। ४-कैकेयी का असली नाम। ५-वीरव्रत की माता का नाम।

सुमनामुख [वि.] (सं.) सुन्दर मुख वाला।

सुमनायन [संज्ञा पु.](सं.) एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि का नाम।

सुमनास्य [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

सुमनित [वि.](सं.) सुन्दर मणियों से जड़ा हुआ।

सुमनोज्ञघोष [संज्ञा पु.] (सं.) बुद्धदेव।

सुमनोत्तरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजाओं के अन्तःपुर में रहने वाली स्त्री।

सुमनोमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष का नाम।

सुमनौकस [संज्ञा पु.] (सं.) देवलोक। स्वर्ग।

सुमन्यु [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग। देवलोक। [वि.] अत्यन्त क्रोधी।

सुमफटा [संज्ञा पु.] (हि.) घोड़ों के खुर का एक रोग।

सुमर [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। २-सहज मृत्यु।

सुमरन* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'स्मरण'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सुमरनी'।

सुमरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-स्मरण या ध्यान करना। २-नाम जपना।

सुमरनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जप करने की सत्ताईस दानों की छोटी माला।

सुमरा [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की मछली

सुमरीचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सांख्यमतानुसार पाँच बाह्य तुष्टियों में से एक।

सुमल्लिक [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रांचीक जनपद का नाम।

सुमसायक [संज्ञा पु.] (डि.) कामदेव।

सुमसुखड़ा [वि.] (हिं.) (वह घोड़ा) जिसके खुर सूखकर सिकुड़ गये हों। [संज्ञा पु.] घोड़े के खुर सूखकर सिकुड़ जाने का रोग।

सुमह [संज्ञा पु.] (सं.) जह्नु के एक पुत्र का नाम

सुमहाकपि [संज्ञा पु.] (सं.) एक दानव का नाम।

सुमहाबल [वि.] (सं.) बड़ा बलवांन।

सुमहाबाहु [वि.] (सं.) जिसकी भुजा बहुत लम्बी हो।

सुमहारथ [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा वीर पुरुष।

सुमाता [संज्ञा स्त्री.](सं.) संतान के लालन-पालन की दृष्टि से अच्छी माता।

सुमात्रा [संज्ञा पु.] मलयद्वीप-पुञ्ज का एक बड़ा द्वीप।

सुमाद्रेय [संज्ञा पु.] (हिं.) सहदेव।

सुमानस [वि.] (सं.) अच्छे मन का। सुहृदय।

सुमानिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सात अक्षर वाला एक वर्णवृत्त।

सुमानी [वि.] (सं.) स्वाभिमानी।

सुमान्य [वि.] (सं.) विशिष्ट रूप से मान्य और प्रतिष्ठित। [संज्ञा [illegible]-बम्बई, कलकत्ते आदि बड़े नगरों में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राजपद जिस पर नियुक्त व्यक्तियों को शांति रक्षा तथा न्याय-विभाग के कुछ विशिष्ट कार्य करने पड़ते हैं। २-उक्त पद पर नियुक्त होने वाला व्यक्ति। शेरिफ।

सुमाय [वि.] (सं.) १-अत्यन्त बुद्धिमान। २-मायायुक्त।

सुमार्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सुपथ। सन्मार्ग।

सुमाल [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारतकालीन एक जनपद का नाम।

सुमालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं जिनमें से दूसरा तथा पाँचवाँ वर्ण लघु और दो वर्ण गुरु होते हैं। २-एक गंधर्व स्त्री का नाम

सुमाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुकेश राक्षस के पुत्र का नाम। २-एक वानर का नाम। (फा.) एक अरब जाति।

सुमाल्य [संज्ञा पु.](सं) महापद्म के एक पुत्र का नाम।

सुमाल्यक [संज्ञा पु.] (सं.) एक पुराणोक्त पर्वत का नाम।

सुमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २-अभिमन्यु के सारथी का नाम। ३-मगध का एक राजा। [वि.] उत्तम मित्रों वाला।

सुमित्रभू [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक जैन चक्रवर्त्ती राजा। २-जैनों के वर्त्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत का नाम।

सुमित्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता का नाम। २-मार्कण्डेय की माता का नाम।

सुमित्रानंदन, सुमित्रानन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

सुमित्र्य [वि.] (सं.) जिसके अच्छे मित्र हों।

सुमिरण* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'स्मरण'।

सुमिरना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुमरना'।

सुमिरनी, सुमिरिनिया [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सुमरनी'।

सुमुख [वि.] (सं.) १-सुन्दर मुख वाला। २-सुन्दर। मनोरम। ३-प्रसन्न। ४-अनुकूल। [संज्ञा पु.] १-शिव। २-गणेश। ३-सुन्दर मुख। ४-पंडित। आचार्य। ५-एक प्रकार का जलपक्षी। ६-राई। ७-बन बर्बरी। ८-सफेद तुलसी।

सुमुखा [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-सुन्दर मुख वाली स्त्री

सुमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर मुख वाली स्त्री। २-दर्पण। ३-संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। ४-एक अप्सरा। ५-ग्यारह अक्षर वाला एक वर्णवृत्त जिसमें पहला आठवाँ और ग्यारहवाँ लघु तथा अन्य अक्षर गुरु होते हैं। ६-नील-अपराजिता। ७-शंखपुष्पी

सुमुष्टि [संज्ञा पु.] (सं.) दकायन।

सुमुहूर्त्त [संज्ञा पु.] (सं.) शुभ समय।

सुमूर्त्ति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक गण।

सुमूल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद सहिंजन। २-उत्तममूल। [वि.] उत्तम मूल वाला। अच्छी जड़ वाला।

सुमूलक [संज्ञा पु.] (सं.) गाजर।

सुमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालपर्णी। २-पिठवन।

सुमूषित [वि.] (सं.) वंचित। ठगा हुआ।

सुमृग [संज्ञा पु.] (सं.) वह भूमि जहाँ बहुत से जंगली पशु हों। शिकार खेलने के योग्य अच्छा मैदान।

सुमृत* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'स्मृति'।

सुमेखल [संज्ञा पु.] (सं.) मूँज।

सुमेड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) खाट बुनने का बाध।

सुमेद्य [संज्ञा पु.](सं.) एक पर्वत का नाम।

सुमेध, सुमेधा [वि.] (सं.) उत्तम बुद्धिवाला। सुबुद्धि।

सुमेध्य [वि.] (सं.) अत्यंत पवित्र। बहुत पवित्र

सुमेर [संज्ञा पु.] (हि.)१-सुमेरु पर्वत। २-गङ्गाजल रखने का पात्र।

सुमेरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक कल्पित पर्वत जो पुराणों में सब पर्वतों का राजा तथा सोने का बताया गया है। २-जप करने वाली माला में ऊपर वाला दाना। ३-उत्तरी ध्रुव। ४-शिव। ५-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १२ और ५ के विराम से १७ मात्राऐं होती हैं [वि.] (सं.) १-बहुत ऊँचा। २-बहुत सुन्दर

सुमेरुजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी।

सुमेरुज्योति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'मेरुज्योति'

सुमेरुवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) वह रेखा जो उत्तरी-ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुमेरु-समुद्र [संज्ञा पु.](सं.) उत्तरीय महासागर।

सुम्नी [वि.] (सं.) १-दयालु। कृपालु। २-अनुकूल।

सुम्मा [संज्ञा पु.] (देश.) १-देखो 'सुंबा'। २-बकरा।

सुम्मी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-सुनारों का एक औजार। २-देखो 'सुंबी'।

सुम्मीदार-सबरा[संज्ञा पु.] (हिं.) परात में बुंदकी बनाने का कसेरों का सबरा।

सुम्ह [संज्ञा पु.](हि) १-एक जाति का नाम। २-देखो 'सुम'।

सुम्हार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का धान।

सुयंवर [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'स्वयंवर'।

सुयजु [संज्ञा पु.] (सं.) भूमंजु के एक पुत्र का नाम (महाभारत)।

सुयज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १-रुचि प्रजापति के एक

पुत्र का नाम। २-वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम ३-ध्रुव के एक पुत्र का नाम। ४-उशानीर के के एक राजा का नाम। ५-उत्तम यज्ञ। [वि.] (सं.) जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो।

सुयज्ञा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभौम की पत्नी का नाम।

सुयत [वि.] (सं.) १-सुसंयत। २-जितेंद्रिय।

सुयम [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणानुसार देवताओं का एक गण।

सुयमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगु।

सुयश [संज्ञा पु.] (सं.) सुकीर्ति। सुनाम। [वि.] यशस्वी। कीर्त्तिमान्।

सुयशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-राजा परीक्षित की एक पत्नी का नाम। २-दिवोदास की स्त्री का नाम। ३-एक अप्सरा। ४-एक अर्हत की माता का नाम। ५-अवसर्पिणी।

सुयष्टव्य [संज्ञा पु.] (सं.) रैवत मनु के पुत्र का नाम।

सुयाति [संज्ञा पु.] (सं.) हरिवंश के अनुसार नहुष के एक पुत्र का नाम।

सुयाम [संज्ञा पु.] (सं.) एक देवपुत्र का नाम।

सुयामुन [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-राजभवन। ३-एक प्रकार का मेघ। ४-एक पर्वत का नाम।

सुयुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मयुद्ध।

सुयोग [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा योग। सुअवसर

सुयोग्य [वि.] (सं.) बहुत योग्य या काबिल।

सुयोधन [संज्ञा पु.] (सं.) दुर्योधन।

सुरंग, सुरङ्ग [वि.] (सं.) १-सुन्दर रंग वाला। २-सुन्दर। सुडौल। ३-रसपूर्ण। [संज्ञा पु.] १-शिंगरफ। २-बक्कम। ३-नारंगी। ४-रंगभेद के अनुसार एक प्रकार का घोड़ा। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-जमीन खोदकर अथवा बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। २-बारूद आदि की सहायता से किला अथवा दीवार उड़ाने के लिये उसके नीचे खोदकर बनाया हुआ गहरा और लम्बा गड्ढा। ३-एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिसे समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पेंदे में छेद कर उन्हें डुबाया जाता है। ४-एक यंत्र जिसे शत्रुओं के रास्ते में बिछाकर उनका नाश किया जाता है। माइन। ५-वह सूराख जिसे चोर लोग दीवार में बनाते हैं। सेंध। *सुरंग मारना*-सेंध लगाकर चोरी करना।

सुरंगद, सुरङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) बक्कम। आल

सुरंगधातु, सुरङ्गधातु [संज्ञा पु.](सं.) गेरू मिट्टी

सुरंगयुक, सुरङ्गयुक [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधिया चोर।

सुरंगा, सुरङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेंध। २-कैवर्तिका-लता।

सुरंगिका, सुरङ्गिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मूर्वा। २-पोई का साग। ३-सफेद मकोय।

सुरंगी, सुरङ्गी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कौआठोठी २-पुन्नाग। ३-लाल सहिंजन। ४-आल का पेड़।

सुरंजन, सुरञ्जन [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का पेड़

सुरंधक, सुरन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जनपद का नाम। २-इस जनपद का निवासी।

सुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-सूर्य। ३-पण्डित। विद्वान्। ४-मुनि। ऋषि। ५-एक प्राचीन नगर का नाम। ६-अग्नि का रूप विशेष। [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वर। ध्वनि। आवाज। मुहा०-*सुर में सुर मिलाना*-हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करते हुए किसी का समर्थन करना। *सुर भरना*-किसी के गाने या बजाने में सहारा देना।

सुरकंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र।

सुरक [संज्ञा पु] (सं.) नाक पर भाल की आकृति का तिलक। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुरकने की क्रिया या भाव।

सुरकना [क्रि. स.] (हिं.) नाक या मुख से धीरे-धीरे सुड़-सुड़ शब्द करते हुए ऊपर खींचना।

सुरकरी [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का हाथी। दिग्गज।

सुरकली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी।

सुरकानन [संज्ञा पु.] (सं.) वह वन जिसमें देवता विहार करते हैं।

सुरकामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

सुरकारु [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

सुरकार्मुक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

सुरकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का काम।

सुरकाष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) देवदार।

सुरकुदाय* [संज्ञा पु.] (हिं.) धोखा देने के लिए स्वर बदल कर बोलना।

सुरकुनठ [संज्ञा पु.] (सं.) बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम।

सुरकुल [संज्ञा पु] (सं.) देवताओं का निवास स्थान।

सुरकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

सुरकृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गिलोय।

सुरकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं की ध्वजा। २-इन्द्र।

सुरक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोशम। २-सोनगेरू

सुरक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मुनि। २-एक पर्वत। [वि.] जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गई हो।

सुरक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छी तरह से रक्षा करने का काम।

सुरक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अच्छी तरह की जाने वाली रक्षा। रखवाली। हिफाजत।

सुरक्षित [वि.] (सं.) १-जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गई हो। २-जो ऐसी स्थिति में हो कि उसकी कोई हानि न हो सके। ३-देखो 'व्यासिद्धि'।

सुरक्षी [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा अभिभावक या रक्षक।

सुरखंडनिका, सुरखण्डनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की वीणा।

सुरख [वि.] (हिं.) देखो 'सुर्ख'।

सुरखा [वि.] (हिं.) देखो 'सुर्ख'। [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का लम्बा पौधा।

सुरखाब [संज्ञा पु.] (फ़ा.) चकवा नामक पक्षी। *सुरखाब का पर लगाना*-कुछ विशेषता होना। [संज्ञा स्त्री.] बलख नामक नगर की एक नदी

सुरखिया [संज्ञा पु.] (फ़ा) लाल गरदन वाला एक पक्षी।

सुरखिया-बगला [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बगला।

सुरखी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-इमारत के काम में आने वाला लालचूर्ण जो चूने में मिलाया जाता है। *२-अरुणता। लाली। ३-लेखों आदि का शीर्षक।

सुरख-रू [वि.](फ़ा.) देखो 'सुर्खरू'।

सुरगंड, सुरगण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पेड़।

सुरग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वर्ग'।

सुरगज [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र का हाथी। देवताओं का हाथी।

सुरगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दैवी गति। भावी।

सुरगवेसाँ [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) स्वर्ग वेश्या। अप्सरा।

सुरगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की सन्तान।

सुरगाय [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कामधेनु।

सुरगायक [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धर्व।

सुरगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरुपर्वत।

सुरगी [संज्ञा पु.] (डिं.) देवता।

सुरगी-नदी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) गंगा।

सुरगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति जो देवताओं के गुरु माने जाते हैं।

सुरगुरु-दिवस [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पतिवार।

सुरगृह [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का मन्दिर।

सुरगैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कामधेनु।

सुरग्रामणी [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरचाप [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

सुरच्छन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुरक्षण'।

सुरजःफल [संज्ञा पु.] (सं.) कटहल।

सुरज [वि.] (सं.) (वह फूल) जिसमें उत्तम पराग हो। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूर्य'।

सुरजन [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का

समूह। [वि.] १-सज्जन। २-चतुर। चालाक

सुरजनपन [संज्ञा पु.] (हि.) १-सज्जनता। भलमनसत। २-चालाकी चतुराई।

सुरजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक अप्सरा। २-एक नदी।

सुरजेठो [संज्ञा पु.] (हि.) सुरज्येष्ठ। ब्रह्मा।

सुरज्येष्ठ [संज्ञा पु.] (सं) सब देवताओं में बड़े ब्रह्मा।

सुरझन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुलझन'।

सुरझना [क्रि. अ.] (हि.) देखो 'सुलझना'।

सुरझाना, सुरझावना [क्रि. स] (हिं.) देखो 'सुलझाना'।

सुरटीप [संज्ञा स्त्री] (हिं.) स्वर का आलाप या तान।

सुरत [संज्ञा पु] (सं) १-संभोग। मैथुन। २-एक बौद्धभिक्षु। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सुध। याद। ध्यान। मुहा०-*सुरत बिसारना*-भूल जाना। *सुरत सँभालना*-होश संभालना।

सुरतग्लानि [संज्ञा स्त्री] (सं.) रति या संभोग-जनित ग्लानि अथवा शिथिलता।

सुरतताली [संज्ञा स्त्री] (सं) १-दूती। २-सेहरा शिरोमाल्य।

सुरतबंध, सुरतबन्ध [संज्ञा पु] (सं) मैथुन का एक ढंग।

सुरतरंगिणी, सुरतरङ्गिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

सुरतरु [संज्ञा पु.] (सं) देवदार।

सुरतरुवर [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

सुरतांत, सुरतान्त [संज्ञा पु.] (सं.) रति या संभोग का अन्त।

सुरता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-देवत्व। २-देवजाति ३-मैथुन से मिलने वाला आनन्द। ४-एक अप्सरा। [संज्ञा पु.] (दे श.) एक प्रकार का बाँस। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चिंता। ध्यान। २-चेत। सुध। * [वि.] चतुर। सयाना। समझदार।

सुरतात [संज्ञा पु.] (सं.) १-कश्यप जो देवताओं के पिता थे। २-देवताओं के अधिपति, इन्द्र

सुरतान [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सुरटीप। * [संज्ञा पु.] देखो 'सुलतान'।

सुरति [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-कामकेलि। संभोग। २-चेत। सुधि। स्मरण। ३-देखो 'सूरत'।

सुरतिगोपना [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह नायिका जो कामकेलि करके और अपनी सखियों मे छिपाती हो।

सुरति-रव [संज्ञा पु.] (सं.) कामकेलि के समय होने वाली भूषणों की ध्वनि।

सुरतिवंत [वि.] (हि.) कामातुर।

सुरतिविचित्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मध्य नायिका जिसकी रतिक्रिया विचित्र हो।

सुरती [संज्ञा स्त्री] (हि.) पान के साथ अथवा यों ही चूना मिलाकर खाया जाने वाला या बीड़ी, सिगरेट आदि में भरकर पीया जाने वाला तम्बाकू के पत्तों का चूरा।

सुरतुंग, सुरतुङ्ग [संज्ञा पु.](सं) सुरपुन्नाग नाम का एक वृक्ष।

सुरतोषक [संज्ञा पु.] (सं.) कौस्तुभमणि।

सुरत्न [संज्ञा पु] (सं.) १-स्वर्ण। २-माणिक्य। [वि](सं.) १-सर्वश्रेष्ठ। २-उत्तम रत्नों वाला

सुरत्राण, सुरत्राता [संज्ञा पु.] (हि.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। ३-इन्द्र।

सुरथ [संज्ञा पु] (सं.) १-एक चन्द्रवंशी राजा। २-द्रुपद के पुत्र का एक नाम। ३-जयद्रथ के पुत्र। ४-वसुदेव पुत्र। ५-एक पुराणोक्त पर्वत

सुरथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक अप्सरा। २-पुराणों में वर्णित एक नदी।

सुरथाकार [संज्ञा पु] (सं.) एक वर्ष का नाम।

सुरथान [संज्ञा पु] (डि.) स्वर्ग।

सुरदार [वि] (हि) सुरीले कण्ठ वाला। सुस्वर

सुरदारु [संज्ञा पु] (सं.) देवदार।

सुरदीर्घिका [संज्ञा स्त्री] (सं) आकाश-गङ्गा।

सुरदुंदुभि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देवताओं का नगाड़ा। २-तुलसी।

सुरदेवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ से जन्म लिया था।

सुरदेश [संज्ञा पु.] (हि.) स्वर्ग। देवलोक।

सुरद्रु [संज्ञा पु.](सं) देवदार।

सुरद्रुम [संज्ञा पु.] (सं) १-कल्पवृक्ष। २-बड़ा नरकट।

सुरद्विप [संज्ञा पु.] (सं.) ऐरावत। हाथी।

सुरद्विष [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। असुर। २-राहु।

सुरधनु, सुरधनुष [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्रधनुष।

सुरधाम [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग। *सुरधाम सिधारना*-मर जाना।

सुरधामी* [वि.] (हि.) १-जो स्वर्ग में रहता हो २-स्वर्गीय।

सुरधुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) गंगा।

सुरधूप [संज्ञा पु.] (सं.) धूना। राल।

सुरधेनु [संज्ञा स्त्री] (सं.) कामधेनु।

सुरध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) सुरकेतु। इन्द्रध्वज।

सुरनंदा, सुरनन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

सुरनगर [संज्ञा पु.] (सं) स्वर्ग।

सुरनदी [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-गंगा। २-आकाश-गंगा।

सुरनाथ, सुरनायक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरनारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवबाला। देवांगना

सुरनाल [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा नरसल।

सुरनाह [संज्ञा पु.] (हि.) इन्द्र।

सुरनिम्नगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

सुरनिर्गंध, सुरनिर्गन्ध [संज्ञा पु.](सं.) तेजपत्ता

सुरनिर्झरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगंगा।

सुरनिलय [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरुपर्वत।

सुरप* [संज्ञा पु.] (हि.) इन्द्र।

सुरपति [संज्ञा पु] (सं.) १-इन्द्र। २-विष्णु।

सुरपतिगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सुरपतिचाप [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

सुरपति-तनय [संज्ञा पु.](सं.)१-जयन्त। अर्जुन

सुरपतित्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुरपति का भाव या पद।

सुरपथ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

सुरपन [संज्ञा पु.] (सं.) पुन्नाग।

सुरपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) गन्धपत्रक। देवपर्ण।

सुरपर्णिक [संज्ञा पु.] (सं) पुन्नागवृक्ष।

सुरपर्णिका [संज्ञा स्त्री] (सं) पुन्नाग। सुलताना चंपा।

सुरपर्वत [संज्ञा पु.] (सं) सुमेरु।

सुरपादप [संज्ञा पु.] (सं) कल्पतरु।

सुरपाल [संज्ञा पु.] इन्द्र।

सुरपालक [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्र।

सुरपुन्नाग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पुन्नाग

सुरपुर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सुरपुरी] स्वर्ग। *सुरपुर सिधारना*-मरजाना।

सुरपुरकेतु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरपुरोधा [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सुरप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवमूर्त्ति की स्थापना।

सुरप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-बृहस्पति। ३-एक प्रकार का पक्षी। ४-एक पर्वत। ५-अगस्त्य। [वि.] जो देवताओं को प्रिय हो।

सुरप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा। २-चमेली। ३-सोना केला।

सुरफाँक-ताल [संज्ञा पु.](हि.)मृदंग का एक ताल

सुरबहार [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा जो सितार की तरह का होता है।

सुरबाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवता की स्त्री या कन्या। देवांगना।

सुरबुली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जिसकी ज़ड़ की छाल से एक प्रकार का सुन्दर लाल रंग निकलता है।

सुरबृच्छ* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो सुरवृक्ष'।

सुरबेल [संज्ञा स्त्री.] (हि.) कल्प-लता।

सुरभंग [संज्ञा पु.] (हि.) स्वर का विपर्यास जो प्रेम, आनन्द, भय आदि के कारण उत्पन्न होता है।

सुरभवन [संज्ञा पु] (सं) १-मंदिर। २-अमरावती।

सुरभान [संज्ञा पु.] (हि.) १-इन्द्र। २-सूर्य

सुरभि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-पृथ्वी। २-गौ। गाय ३-सुगंध। खुशबू। ४-तुलसी। ५-सुरा। शराब। ६-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम ७-सलई।[वि.] १-सुगंधित। सुवासित। २-सुन्दर। ३-श्रेष्ठ। उत्तम। ४-सदाचारी। [संज्ञा पु.] १-स्वर्ण। सोना। २-वसंतकाल ३-गंधक। ४-मौलसिरी। ५-सफेद कीकर। ६-गंधतृण। ७-राल। धूना। ८-गंधपल। ९-बबरचंदन। १०-यज्ञयूप की स्थापना में प्रज्वलित की जाने वाली अग्नि।

सुरभिकांता, सुरभिकान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वासंती पुष्पवृक्ष।

सुरभिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णकदली।

सुरभिगंध, सुरभिगंध [वि.] (सं.) सुगंधित। सुवासित। [संज्ञा पु.] (सं.) तेजपत्ता।

सुरभिगंधा, सुरभिगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली।

सुरभिच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ। कपित्थ।

सुरभित [वि.] (सं.) सुगंधित। सुवासित।

सुरभितनय [संज्ञा पु.] (सं.) बैल। साँड़।

सुरभितनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाय।

सुरभिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुरभि का भाव। २-सुगंधि। खुशबू।

सुरभित्रिफला [संज्ञा स्त्री.](सं.) जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समुदाय।

सुरभित्वक् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी इलायची।

सुरभिदारु [संज्ञा पु.] (सं.) धूपसरल।

सुरभिपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजजंबू नामक वृक्ष

सुरभिपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल। २-साँड़।

सुरभिमंजरी, सुरभिमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेत तुलसी।

सुरभिमान [वि.] (सं.) सुगंधित। [संज्ञा पु.] अग्नि।

सुरभिमास [संज्ञा पु.] (सं.) चैत का महीना।

सुरभिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) वसंत का आगमन।

सुरभिवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) दालचीनी।

सुरभिवाण [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

सुरभिशाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुगंधित शाक।

सुरभिषक् [संज्ञा पु.] (सं.) आश्विनीकुमार।

सुरभि-समय [संज्ञा पु.](सं.) वसंत।

सुरभिस्रवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलई।

सुरभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुगंध। खुशबू। २-सलई। ३-कौंच। ४-वनतुलसी। ५-गाय। ६-रुद्रजटा। ७-एलुवा। ८-माचिका शाक। ९-चन्दन। १०-सुगंधित शालिधान्य। ११-मुरामांसी। १२-रास्ना।

सुरभीगोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैल। २-साँड़।

सुरभीपट्टन [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक नगर का नाम।

सुरभीपुर [संज्ञा पु.] (सं.) गो-लोक।

सुरभीमूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) गोमूत्र।

सुरभीरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलई।

सुरभूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-विष्णु।

सुरभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १००८ मोतियों का हार जिसे देवता लोग पहनते हैं।

सुरभूरुह [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदार। २-कल्पतरु।

सुरभोग [संज्ञा पु.] (सं.) अमृत।

सुरभौन* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सुरभवन'।

सुरमंडल, सुरमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवताओं का मण्डल। २-एक प्रकार का बाजा।

सुरमंडलिका, सुरमण्डलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सुरखण्डनिका'।

सुरमंत्री, सुरमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सुरमंदिर, सुरमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) देवालय। मंदिर।

सुरमई [वि.] (फा.) सुरमे के रङ्ग का। हलका-नीला। [संज्ञा पु] १-हलका नीला रंग। २-इस रंग की कोई चीज। ३-इस रंग का कबूतर। ४-इस रंग का घोड़ा। [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की चिड़िया।

सुरमई-कलम, सुरमचू [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमणि [संज्ञा पु.] (सं.) चितामणि।

सुरमण्य [वि.] (सं.) बहुत सुन्दर।

सुरमा [संज्ञा पु](फा.) एक प्रसिद्ध नीला खनिज-पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में अंजन की तरह लगाते हैं। (देश.) पक्षी विशेष।

सुरमादानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक विशेष प्रकार का लम्बोतरा पात्र जिसमें सुरमा रखाजाता है

सुरमानी [वि.] (हिं.) अपने को देवता मानने वाला।

सुरमा-सफेद [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक खनिज-पदार्थ जो फिटकरी के समान होता है। २-एक खनिज-पदार्थ जो जिप्सम के नाम से प्रसिद्ध है।

सुरमृत्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) गोपीचंदन।

सुरमेदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा।

सुरमेदानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) देखो 'सुरमादानी'

सुरमै* [वि.] (हिं.) देखो 'सुरमई'।

सुरम्य [वि.] (सं.) अत्यंत रम्य या मनोहर। परम सुन्दर और रमणीक।

सुरया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की दाँती जो झाड़ियाँ आदि काटने के काम में आती है

सुरयान [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की सवारी का रथ।

सुरयुवती, सुरयोषित [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा

सुरराई* [संज्ञा पु.] (हि.) इन्द्र।

सुरराज्, सुरराज [संज्ञा पु.] इन्द्र।

सुरराजगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सुरराजता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुरराज का भाव या पद।

सुरराजवस्ति [संज्ञा पु.](सं.) इन्द्रवस्ति। पिढ़ी

सुरराजवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पारिजात।

सुरराजा [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र।

सुरराय*, सुरराव* [संज्ञा पु.] (हिं.) सुरराज। इन्द्र।

सुररिपु [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

सुररूख [संज्ञा पु.] (हिं.) कल्पवृक्ष।

सुरर्षभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-इंद्र। २-शिव।

सुरर्षि [संज्ञा पु.] (हिं.) देवर्षि।

सुरलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बड़ी मालकंगनी।

सुरललना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवांगना।

सुरला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

सुरलासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वंशी। २-वंशी का स्वर।

सुरली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुन्दर क्रीड़ा।

सुरलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

सुरवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं) देवांगना।

सुरवर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरवर्त्म [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश।

सुरवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

सुरवल्ली [संज्ञा स्त्री.] तुलसी।

सुरवस [संज्ञा पु.] (देश.) जुलाहों के काम की एक पतली सी छड़ी जिसका उपयोग ताना तैयार करने में होता है।

सुरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'भुवा'। २-देखो 'शोरबा'।

सुरवाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह अहाता जिसमें सूअर रखे जाते हैं।

सुरवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देववाणी। संस्कृत भाषा।

सुरवाल [संज्ञा पु.] (फा.) पायजामा। [संज्ञा पु.] (?) सेहरा।

सुरवास [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

सुरवाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

सुरविटप [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

सुरवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नक्षत्रों का मार्ग।

सुरवीर [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पतरु।

सुरवेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

सुरवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

सुरवैरी, सुरशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) असुर।

सुरशत्रुहन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुरशयनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) विष्णुशयनी एकादशी।

सुरशाखी [संज्ञा पु.] (सं.) कल्पवृक्ष।

सुरशिल्पी [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वकर्मा।

सुरश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-शिव। ३-गणेश। ४-धर्म। ५-इन्द्र। ६-वह जो देवताओं में श्रेष्ठ हो।

सुरश्रेष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मी।

सुरसंभवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुरहुर।

सुरस [वि.] (सं.) १-सरस। रसीला। २-मधुर। ३-सुन्दर।

सुरसख [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरसंत [संज्ञा स्त्री] (हि) सरस्वती।

सुरसतजनक [संज्ञा पु.] (हि.) ब्रह्मा।

सुरसती* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-सरस्वती। २-एक प्रकार की नाव।

सुरसत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सुरसदन, सुरसद्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

सुरसमिध् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवदारु।

सुरसर [संज्ञा पु.] (हि.) मानसरोवर। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सुरसरि'।

सुरसरसुता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सरयूनदी।

सुरसरि, सुरसरी [संज्ञा स्त्री.] (हि) १-गङ्गा। २-गोदावरी। ३-कावेरी नदी। ४-देखो 'सुरसुती'।

सुरसरित्, सुरसरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

सुरसर्षपक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सरसों

सुरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-समुद्र में रहने वाली प्रसिद्ध नागमाता जिसने हनुमान जी को समुद्र पार करने के समय रोका था। २-एक अप्सरा। ३-एक राक्षसी। ४-तुलसी। ५-सतावर। ६-सफेद निशोथ। ७-जूही। ८-सौंफ। ९-ब्राह्मी। १०-सलई। ११-निर्गुंडी। १२-कंटकारी। १३-वनभंटा। १४-एक रागिनी। १५-दुर्गा का एक नाम। १६-अंकुश के नीचे का नोकदार भाग।

सुरसाइँ [संज्ञा पु.](हि.) १-इन्द्र। २-शिव।

सुरसाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) सम्भालू की मंजरी।

सुरसाग्रज, सुरसाग्रणी [संज्ञा पु] (सं) श्वेत तुलसी।

सुरसादिवर्ग [संज्ञा पु.](सं.) वैद्यक में कुछ औषधियों का वर्ग विशेष।

सुरसारी [संज्ञा स्त्री.](हि) देखो 'सुरसरी'।

सुरसालु* [वि](हि) देवताओं को सताने वाला

सुरसाष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) सम्हालू, तुलसी, ब्राह्मी आदि औषधों का समूह।

सुरसाहब [संज्ञा पु.] (हि) देवताओं के स्वामी।

सुरसिंधु [संज्ञा पु.] (सं.) गङ्गा।

सुरसुंदर, सुरसुन्दर [संज्ञा पु](सं.) सुन्दर देवता [वि.] देवताओं के जैसा सुन्दर।

सुरसुंदरी, सुरसुन्दरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अप्सरा। २-दुर्गा। ३-एक योगिनी। ४-देवकन्या। देवाङ्गना।

सुरसुंदरी-गुटिका, सुरसुन्दरीगुटिका [संज्ञा स्त्री.] वैद्यक के मतानुसार वे औषध जो वाजीकरण या बलवीर्य बढ़ाने वाली हों।

सुरसुत [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री सुरसुता] देवपुत्र

सुरसुरभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामधेनु।

सुरसुराना [क्रि. अ.] (हि.) १-कीड़ों आदि का रेंगना। कुलबुलाना। २-हलकी खुजली होना [क्रि. स] हलकी-हलकी खुजली उत्पन्न करना

सुरसुराहट [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-सुरसुर होने का भाव। २-खुजलाहट। गुदगुदी।

सुरसुरी [संज्ञा स्त्री] (हि) १-देखो 'सुरसुराहट' २-चावल गेहूँ आदि में होने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

सुरसेनप [संज्ञा पु.] (हि.) कार्त्तिकेय।

सुरसेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की सेना।

सुरसैंया* [संज्ञा पु] (हि.) इन्द्र।

सुरसैनी [संज्ञा स्त्री.] (हि) देखो 'सुरशयनी'।

सुरस्कंध, सुरस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

सुरस्त्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) अप्सरा।

सुरस्त्रीश [संज्ञा पु.] (सं) इन्द्र।

सुरस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

सुरस्रवंती, सुरस्रवन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

सुरस्वामी [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरहरा [वि.] (हि.) जिसमें सुरसुर का शब्द हो।

सुरही+ [संज्ञा स्त्री.](हि.) १-सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेला जाता है। २-उक्त कौड़ियों से होने वाला जूआ। ३-चमरी गाय। ४-एक प्रकार की घास।

सुरांगना, सुराङ्गना [संज्ञा स्त्री] (सं) १-देवांगना। २-अप्सरा।

सुरांत, सुरान्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस।

सुरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मद्य। मदिरा। २-जल पानी। ३-पीने का बरतन। ४-सर्प।

सुराई* [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शूरता। वीरता।

सुराकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शराब निकलने की भट्टी। २-नारियल का पेड़।

सुराकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सुरा द्वारा किया जाने वाला यज्ञकर्म।

सुराकार [संज्ञा पु.] (सं) शराब बनाने वाला।

सुराकुंभ, सुराकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा रखने का घड़ा।

सुराख [संज्ञा पु.] (फा) छेद। छिद्र। [संज्ञा पु.] देखो 'सुराग'।

सुराग [संज्ञा पु.] (अ.) अपराध, षड्यंत्र आदि का गुप्त रूप से लगाया हुआ पता। टोह। [संज्ञा पु.](हि.) १-प्रगाढ़ प्रेम। उत्तम अनुराग। २-सुन्दर राग।

सुरागाय [संज्ञा स्त्री.](हि.) एक प्रकार की जङ्गली गाय जिसकी पूँछ का चमर बनाया जाता है।

सुरागार [संज्ञा पु] (सं.) १-शराबखाना। २-देवगृह।

सुरागृह [संज्ञा पु.] (सं) शराबखाना।

सुराग्रह [संज्ञा पु.] (सं) मदिरापान करने का पात्र विशेष।

सुराग्र [संज्ञा पु] (सं.) अमृत।

सुराघट [संज्ञा पु.] (सं) सुराकुम्भ।

सुराचार्य [संज्ञा पु.] (सं) बृहस्पति।

सुराज [संज्ञा पु.] (हि) १-देखो 'सुराज्य'। २-देखो 'स्वराज्य'।

सुराजक [संज्ञा पु.] (सं.) भृङ्गराज। भँगरा।

सुराजा* [संज्ञा पु.] (हि) १-अच्छा राजा। २ देखो 'सुराज्य'।

सुराजिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) छिपकली।

सुराजीव [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सुराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा और सुखद राज्य या शासन। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'स्वराज्य'।

सुराद्दत [संज्ञा पु.] (सं.) शराबखाना।

सुराथी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) अनाज भरी बालें पीटने का डंडा।

सुराद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरुपर्वत।

सुराधम [वि] (सं) जो देवताओं में निकृष्ट हो।

सुराधा [वि.] (हि.) १-उदार। २-धनी।

सुराधानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गगरी जिसमें मदिरा रखी जाती है।

सुराधिप, सुराधीश [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुराध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं) १-शिव। २-ब्रह्मा। ३-कृष्ण।

सुराध्वज [संज्ञा पु.](सं.) प्राचीन काल में मदिरापान करने वाले के माथे पर लोहे से दागा जाने वाला एक प्रकार का चिह्न।

सुरानक [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं का नगाड़ा।

सुरानीक [संज्ञा पु.] (सं.) देवताओं की सेना।

सुराप [वि.] (सं.) १-शराबी। २-बुद्धिमान। ज्ञानी।

सुरापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गानदी।

सुरापाण, सुरापान [संज्ञा पु.] (सं.) १-शराब

पीना। २-मदिरापान के समय खाये जाने वाले पदार्थ।

सुरापात्र [संज्ञा पु.] (सं.) मदिरा रखने का बरतन

सुरपाना [संज्ञा पु.] (सं.) पूर्व देश के लोग।

सुरापी [वि.] देखो 'सुराप'।

सुरापीथ [संज्ञा पु.] (सं.) सुरापान।

सुराब्धि [संज्ञा पु.] (सं.) सुरा का समुद्र।

सुराभाग, सुरामंड, सुरामण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) शराब की माँड़।

सुरामत्त [वि.] (सं.) शराब के नशे में चूर।

सुरामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसके मुँह में शराब हो। २-एक नागासुर का नाम।

सुरामेह [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का प्रमेह रोग

सुरामेही [वि.] (हिं.) सुरामेह रोग से पीड़ित।

सुरांय※ [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छा राजा।

सुरायुध [संज्ञा पुं.] (सं.) देवताओं का अस्त्र।

सुराराणि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अदिति।

सुरारि [संज्ञा पु.] (सं.) १-राक्षस। २-एक दैत्य का नाम।

सुरारिघ्न, सुरारिहंता, सुरारिहन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सुरारिहन् [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुरारी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) बरसात में होने वाली एक प्रकार की घास।

सुरार्दन [संज्ञा पु.] (सं.) असुर। राक्षस।

सुरार्ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरिचंदन। २-स्वर्ण सोना। ३-एक प्रकार का चंदन।

सुराल [संज्ञा पु.] (सं.) राल। धूना।

सुरालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग। २-सुमेरु। ३-देवमंदिर। ४-शराबखाना। मदिरालय।

सुरालिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) सातला नामक एक जङ्गली बेल।

सुराव [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का घोड़ा। २-उत्तम ध्वनि।

सुरावट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्वरों का उतार-चढ़ाव। २-सुरीलापन।

सुरावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवताओं की माता, अदिति।

सुरावनि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुरावती। २-पृथ्वी।

सुरावारि [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुराब्धि'।

सुरावास [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरु।

सुरावृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

सुराश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरपर्वत।

सुराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश का नाम। २-राजा दशरथ के मंत्री का नाम। [वि.] जिसका राज्य अच्छा हो।

सुराष्ट्रज [संज्ञा पु.] (सं.) १-गोपीचंदन। २-काली मूँग। ३-लाल कुलत्थ। ४-एक प्रकार का विष। [वि.] सुराष्ट्र देश में उत्पन्न।

सुराष्ट्रजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोपीचंदन।

सुराष्ट्रोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकरी।

सुरासंधान, सुरासन्धान [संज्ञा पु.] (सं.) शराब बनाने की क्रिया।

सुरासमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुराब्धि'।

सुरासव [संज्ञा पु.](सं.) वैद्यक में एक प्रकार का आसव।

सुरासार [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भबके की सहायता से निकाला हुआ मादक तरल पदार्थ जो शराब बनाने और अनेक प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाओं में काम आता है। फूल। शराब। अल्कोहल।

सुरासुर [संज्ञा पु.] (सं.) देवता और दानव।

सुरासुरगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-कश्यप

सुरास्पद [संज्ञा पु.] (सं.) देवगृह। मंदिर।

सुराही [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-जल रखने का मिट्टी धातु आदि का पात्र जिसका मुख नली के आकार का दूर तक निकला होता है। २-पान के आकार की कपड़े की काट। ३-सोने चाँदी आदि का बना हुआ लम्बोतरा टुकड़ा।

सुराहीदार [वि.] (फा.) सुराही की तरह गोल और लम्बोतरा।

सुराह्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदारु। २-मरुआ। ३-हलदुवा।

सुराह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का पौधा। २-देवदार।

सुरि [वि.] (सं.) बहुत धनी।

सुरियं [संज्ञा पु.] (डिं.) इन्द्र।

सुरियाखार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) शोरा।

सुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देवांगना।

सुरीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. सुरीली] बोलने, गाने में जिसका स्वर मीठा हो। मधुर स्वर वाला

सुरुंग, सुरुङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) सहिजन।

सुरुंगा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुरंग'।

सुरुंगाहि, सुरुङ्गाहि [संज्ञा पु.] (सं.) सेंधिया चोर।

सुरुंदला, सुरुन्दला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी का नाम।

सुरुक्म [वि.] (सं.) प्रदीप्त।

सुरुख [वि.] (हिं.) १-प्रसन्न रहकर दया करने वाला। अनुकूल। २-※देखो 'स्वरूप'। ३-देखो 'सुर्ख'।

सुरुखरू [वि.] (फा.) जिसे किसी कार्य में यश प्राप्त हुआ हो।

सुरुच [संज्ञा पु.] (सं.) उज्ज्वल प्रकाश। [वि.] सुन्दर प्रकाश वाला।

सुरुचि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-ध्रुव की विमाता का नाम। २-उत्तम रुचि। ३-बहुत प्रसन्नता। [वि.] १-जिसकी रुचि उत्तम हो। २-स्वाधीन।

सुरुचिर [वि.] (सं.) १-सुन्दर। मनोहर। २-उज्ज्वल।

सुरुज [वि.] (सं.) बहुत बीमार। ※[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूर्य'।

सुरुजमुखी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूर्यमुखी'।

सुरुद्रि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सतलज नदी।

सुरुल [संज्ञा पु.] (देश.) मूँगफली के पौधे लगने का एक रोग।

सुरुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'शोरबा'। २-देखो 'सुरुवा'।

सुरूप [वि.](सं.) [स्त्री. सुरूपा] १-सुन्दर वाला। २-विद्वान्। [संज्ञा पु.] १-शिव। २-एक असुर। ३-कपास। ४-पलास पीपल। ५-कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति। ※(हिं.) देखो 'स्वरूप'।

सुरूपक [वि.] देखो 'स्वरूप'।

सुरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दरता।

सुरूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शालपर्णी। २-भारंगी। ३-सेवती। ४-बेला। ५-पुराणों में वर्णित एक गाय। [वि.] [स्त्री. प्र.] सुन्दरी

सुरूहक [संज्ञा पु.] (सं.) खच्चर।

सुरेंद्र, सुरेन्द्र [संज्ञा पु.](सं.) १-इन्द्र। २-राजा

सुरेंद्रकंद, सुरेन्द्रकन्द, सुरेंद्रक, सुरेन्द्रक [संज्ञा पु.] (सं.) काटने वाला जमीकंद।

सुरेंद्रगोप, सुरेन्द्रगोप [संज्ञा पु.] (सं.) बीरबहूटी

सुरेंद्रचाप, सुरेन्द्रचाप [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

सुरेंद्रजित, सुरेन्द्रजित [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़

सुरेंद्रता, सुरेन्द्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुरेंद्र होने का भाव या धर्म।

सुरेंद्रपूज्य, सुरेन्द्रपूज्य [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सुरेंद्रमाला, सुरेन्द्रमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक किन्नरी का नाम।

सुरेंद्रलोक, सुरेन्द्रलोक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रलोक।

सुरेंद्रवज्रा, सुरेन्द्रवज्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) इन्द्रवज्रा नामक वर्णवृत्त।

सुरेंद्रवती, सुरेन्द्रवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शची। इन्द्राणी।

सुरेंद्रा, सुरेन्द्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक किन्नरी का नाम।

सुरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुंदर रेखा। २-वे सब शुभ रेखायें जो हमारे हाथ पैरों में हैं।

सुरेज्य [संज्ञा पु.] (सं.) बृहस्पति।

सुरेज्ययुग [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति का युग।

सुरेज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्राह्मी। २-तुलसी

सुरेणु [संज्ञा स्त्री] (सं) १-विवस्वान् की पत्नी का नाम। २-एक नदी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्रसरेणु। ३-एक प्राचीन राजा।

सुरेणुपुष्पध्वज [संज्ञा पु.] (सं) एक किन्नरों का का राजा (बौद्ध)।

सुरेतना+ [क्रि. स.] (हिं) खराब अनाज में से अच्छा अनाज अलग कर लेना।

सुरेतर [संज्ञा पु.] (सं) ब्रह्मा।

सुरेता [वि.] (सं.) बहुत सामर्थ्य शाली।

सुरेतोधा [वि.] (सं.) पौरुष सम्पन्न।

सुरेथ [संज्ञा पु.] (?) सूँस नामक जलजन्तु।

सुरेनुका [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'सुरेणु'।

सुरेभ [संज्ञा पु] (सं.) सुरहस्ती। [वि.] (सं.) सुरीला।

सुरेवट [संज्ञा पु.] (सं.) एक सुपारी विशेष का वृक्ष।

सुरेश [संज्ञा पु] (सं) १-इन्द्र। २-शिव। ३-विष्णु। ४-श्रीकृष्ण। ५-लोकपाल।

सुरेशलोक [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सुरेशी [संज्ञा स्त्री] (सं) दुर्गा।

सुरेश्वर [संज्ञा पु] (सं.) १-इन्द्र। २-ब्रह्मा। ३-शिव। ४-रुद्र। [वि] (सं) देवताओं में श्रेष्ठ।

सुरेश्वरी [संज्ञा स्त्री] (सं) १-दुर्गा। २-लक्ष्मी ३-राधा। ४-स्वर्गगङ्गा।

सुरेष्ट [संज्ञा पु] (सं) १-सफेद अगस्त का वृक्ष। २-लाल अगस्त। ३-सुरपुन्नाग। ४-बड़ी मौलसिरी। ५-शालवृक्ष।

सुरेष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

सुरेष्टा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मी।

सुरेस [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सुरेश'।

सुरैं [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की अनिष्टकारी घास। [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) गाय।

सुरैत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) विना विवाह संबन्ध हुए यों ही घर में रखी हुई स्त्री। रखेली।

सुरैतवाल, सुरैतवाला [संज्ञा पु.] (हिं.) सुरैत का लड़का।

सुरैतिन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सुरैत'।

सुरोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञबाहु का पुत्र २-एक वर्ष का नाम।

सुरोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की एक मातृका।

सुरोचि [वि.] (हि.) सुन्दर।

सुरोची [संज्ञा पु.] (हिं.) वशिष्ठ का एक पुत्र।

सुरोत्तम [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-सूर्य।

सुरोत्तमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा।

सुरोत्तर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्दन।

सुरोद् [संज्ञा पु] (सं.) सुरा का सागर।
[संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सरोद'।

सुरोदक [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'सुरोद'।

सुरोधा [संज्ञा पु.] (सं.) एक गोत्रकार ऋषि।

सुरोमा [वि.] (सं.) सुन्दर रोमों वाला।
[संज्ञा पु.] (हिं) एक यज्ञ का नाम।

सुरोषण [संज्ञा पु.] (सं) देवताओं का एक सेनापति।

सुरौका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्वर्ग। २-देवालय।

सुर्ख़ [वि] (फ़ा.) लाल। रक्त वर्ण का।
[संज्ञा पु] (फ़ा.) गहरा लाल रङ्ग।

सुर्ख़रू [वि.] (फ़ा) १-तेजस्वी। २-प्रतिष्ठित। ३-किसी काम में सफलता मिलने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

सुर्ख़रूई [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-सुर्ख़रू होने का भाव। २-यश। कीर्त्ति। ३-प्रतिष्ठा। मान।

सुर्ख़ाब [संज्ञा पु.] (फ़ा.) देखो 'सुरख़ाब'।

सुर्ख़ी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-ललाई। ललिमा। २-लेख आदि का शीर्षक। ३-लहू। खून। ४-देखो 'सुरखी'।

सुर्ख़ीदार-सुरमई [संज्ञा पु] (फ़ा.) एक प्रकार का बैजनी रङ्ग।

सुर्जना [संज्ञा पु.] देखो 'सहिजन'।

सुर्ता [वि.] (हिं) समझदार। होशियार।

सुर्ती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सुरती',

सुर्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुरमा'।

सुर्रा [संज्ञा पु.](देश.) १-एक प्रकार की मछली। २-थैली। बटुआ। + [संज्ञा पु] (हिं) तेज हवा।

सुलंक, सुलंकी [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'सोलंक'

सुलच्छ [वि] देखो 'सुलक्षण'।

सुलक्षण [वि.](सं.) १-अच्छे लक्षणों वाला। २-भाग्यवान। [संज्ञा पु.] १-शुभ लक्षण। अच्छे चिह्न। २-चौदह मात्राओं का एक छंद

सुलक्षणत्व [संज्ञा पु.] (सं) सुलक्षण का भाव।

सुलक्षणा [संज्ञा स्त्री.](सं.) पार्वती की एक सखी
[वि.](सं.) [स्त्री प्र.] शुभ या अच्छे लक्षणों वाली।

सुलक्षणी [वि.] (हिं.) [स्त्री प्र.] शुभ या अच्छे लक्षणों वाली।

सुलग* [अव्य.] (हिं.) समीप। पास। निकट।

सुलगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-दहकना। जलना। २-बहुत अधिक दुःख से दुःखी होना।

सुलगाना [क्रि. स](हिं) १-जलाना। दहकाना। २-संतप्त या दुःखी करना।

सुलग्न [संज्ञा पु.] (सं.) शुभ मुहूर्त्त। अच्छी सायत। [वि.] दृढ़ता से लगा हुआ।

सुलच्छन [वि.] (हिं.) देखो 'सुलक्षण'।

सुलच्छनी [वि.] (हिं) देखो 'सुलक्षणी'

सुलछ [वि.] (हिं.) सुन्दर।

सुलझन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।

सुलझना [क्रि. अ.] (हि.) उलझन या जटिलता दूर होना।

सुलझाना [क्रि. स.] (हिं.) उलझन या जटिलता को दूर करना।

सुलझाव [संज्ञा पु.] (हि.) सुलझने की क्रिया या भाव।

सुलटा [वि.](हि.) [स्त्री. सुलटी] सीधा। 'उलटा' का विपरीत।

सुलतान [संज्ञा पु.] (फ़ा.) बादशाह। महाराज।

सुलतान-चंपा [संज्ञा पु.](फ़ा.,हि.) पुन्नाग नामक वृक्ष।

सुलतानी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा) १-राज्य। बादशाही। २-एक प्रकार का बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा।
[वि.] (फ़ा) लाल रङ्ग का।

सुलप* [वि] (हिं.) १-देखो 'स्वल्प'। २-मन्द।
[संज्ञा पु] (हि.) सुन्दर आलाप।

सुलफ [वि] (हि.) १-लचीला। २-नाज़ुक। कोमल।

सुलफा [संज्ञा पु.] (हिं) १-सूखा तम्बाकू जो गाँजे के समान चिलम पर रख कर पीया जाता है। २-चिलम में विना तवा रखे भर कर पीया जाने वाला तम्बाकू। चरस।

सुलफेबाज [वि] (हिं) गाँजा या चरस पीने वाला।

सुलब [संज्ञा पु] (डिं.) गन्धक।

सुलभ [वि.] (सं.) १-सहज में मिलने वाला। २-सहज। सरल। ३-साधारण। ४-उपयोगी
[संज्ञा पु.] (सं.) अग्निहोत्र की अग्नि।

सुलभता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुलभ का भाव। २-सुगमता।

सुलभत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुलभता। २-सरलता। आसानी।

सुलभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वैदिक-कालीन ब्रह्मवादिनी स्त्री का नाम। २-तुलसी। ३-जङ्गली उड़द। ४-तमाकू। ५-बेला।

सुलभेतर [वि.] (सं.) १-जो सहज में न मिल सके। दुर्लभ। २-कठिन। ३-महँगा।

सुलभ्य [वि.] (सं.) सहज में प्राप्त होने वाला।

सुललित [वि.] (सं.) अति ललित। अत्यन्त सुन्दर।

सुलस [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का लोहा जो स्वीडन में होता है।

सुलह [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) १-मेल। मिलाप। २-लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर होने वाला मेल। सन्धि।

सुलहनामा [संज्ञा पु.] (अ., फ़ा.) वह पत्र जिस पर सुलह या मेल की शर्तें लिखी हों। सन्धि-पत्र।

सुलाक [संज्ञा पु.] (हिं.) सूराख। छेद। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सलाख'।

सुलाखना+ [क्रि. स.] (हिं.) सोने या चाँदी को तपाकर परखना।

सुलागना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सुलगाना'।

सुलाना [क्रि. स.] (सं.) १-किसी को सोने में प्रवृत्त करना। २-लिटाना। डाल देना।

सुलाभ [वि.] देखो 'सुलभ'।

सुलिखित [वि.] (सं.) अच्छी तरह लिखा हुआ।

सुलूक [संज्ञा पु.] देखो 'सलूक'।

सुलेक [संज्ञा पु.] (सं.) एक आदित्य का नाम।

सुलेख [संज्ञा पु] (सं.) सुन्दर लिखावट।

सुलेखक [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा लेखक।

सुलेमाँ, सुलेमान [संज्ञा पु.] (फा.) १-यहूदियों का एक बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २-एक पहाड़।

सुलेमानी [संज्ञा पु.] (फा.) १-सफेद आँखों वाला घोड़ा। २-एक प्रकार का दो रङ्गा पत्थर [वि.] (फा.) सुलेमान का। सुलेमान-सम्बन्धी

सुलोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

सुलोचन [वि.] (सं) [स्त्री. सुलोचना] जिसकी आँखें सुन्दर हों। सुनेत्र। [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिरण। २-चकोर।

सुलोचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रावण-पुत्र मेघनाद की पत्नी का नाम। २-एक अप्सरा। ३-राजा माधव की एक स्त्री का नाम।

सुलोचनी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] सुन्दर आँखों वाली।

सुलोम [वि.](सं.) [स्त्री. सुलोमा] जिसके सुंदर रोम या रोएं हों।

सुलोमनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामासी।

सुलोमश [वि.] (सं.) देखो 'सुलोम'।

सुलोमशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकजङ्घा। २-जटामांसी।

सुलोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ताम्रवल्ली। २-मांसरोहिणी। [वि.] देखो 'सुलोम'।

सुलोह [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का बढ़िया लोह

सुलोहक [संज्ञा पु.] (सं.) पीतल।

सुलोहित [संज्ञा पु.](सं.) सुन्दर रक्तवर्ण। सुंदर लाल रङ्ग। [वि.] (सं.) सुन्दर लालरंग वाला

सुलोहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सुलोही [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्राचीन ऋषि।

सुल्तान [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुलतान'।

सुल्फ [संज्ञा पु.] (देश.) १-बहुत बढ़ी-चढ़ी या तेज लय। २-नाव। किश्ती।

सुवंश [संज्ञा पु.] (सं.) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

सुवंशेक्षु [संज्ञा पु.] (सं.) सफेद ईख।

सुव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुअन'।

सुवक्ता [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा व्याख्यान देने वाला।

सुवक्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-स्कन्द के एक पारिषद का नाम। ३-बनतुलसी। [वि.] सुन्दर मुँह वाला। सुमुख।

सुवक्ष [वि.] (हिं.) सुन्दर या विशाल वक्ष वाला

सुवक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विभीषण की माता का नाम।

सुवच [वि.] (सं.) सहज में किया जाने वाला।

सुवचन [वि.] (सं.) १-सुन्दर बोलने वाला। २-मिष्टभाषी।

सुवचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक देवी का नाम। [वि.] मधुरभाषिणी।

सुवचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक गंधर्वी का नाम।

सुवज्र [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र की एक उपाधि।

सुवटा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुअटा'।

सुवण [संज्ञा पु.] (डिं.) सुवर्ण। सोना।

सुवदन [वि.] (सं.) जिसका मुख सुन्दर हो। [संज्ञा पुं.] बनतुलसी।

सुवदना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुन्दर स्त्री।

सुवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-अग्नि। ३-चंद्रमा। [संज्ञा पु.](हिं.)१-देखो 'सुअन' २-देखो 'सुमन'।

सुवनारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुअन'।

सुवपु [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक अप्सरा। [वि.] सुन्दर शरीर वाला।

सुवया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रौढ़ा स्त्री।

सुवरकोन्ना [संज्ञा पु.] (हिं.) ऐसी हवा जिसमें पाल नहीं उड़ता।

सुवरण [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सुवर्ण'।

सुवर्च्चक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सज्जी। २-एक प्राचीन ऋषि।

सुवर्च्चना [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुवर्च्चला'

सुवर्च्चल [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन देश। २-काला नमक।

सुवर्च्चला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य की पत्नी का नाम। २-ब्राह्मी। ३-तीसी। ४-हुरहुर।

सुवर्च्चसी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुवर्च्चा [संज्ञा पु.] (हि.) १-गरुड़ का एक पुत्र। २-स्कन्द के एक पारिषद का नाम। ३-दसवें मनु के पुत्र का नाम। ४-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [वि.] तेजस्वी।

सुवर्च्चिक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुवर्चक'।

सुवर्च्चिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सज्जी। २-पहाड़ी लता।

सुवर्च्ची [संज्ञा पु.] देखो 'सुवर्च्चक'।

सुवर्जिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पहाड़ी लता।

सुवर्ण [संज्ञा पु.] (सं) १-सोना। स्वर्ण। २-दस माशे की एक पुरानी स्वर्ण मुद्रा। ३-धन। सम्पत्ति। ४-सोलह माशे का एक मान। ५-धतूरा। ६-एक वृक्ष का नाम। [वि.] १-सोने का। २-सुन्दर वर्ण या रङ्ग

सुवर्णक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। स्वर्ण। २-सुवर्ण कर्ष। ३-पीतल। ४-अमलतास। ५-सुवर्णक्षीरी। [वि.] १-सोने का। २-सुन्दर वर्ण या रंग का।

सुवर्णकदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्पा-केला।

सुवर्णकमल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

सुवर्णकरणी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार जड़ी।

सुवर्णकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णकार। सुनार।

सुवर्णकर्प [संज्ञा पु.] (सं.) सोने की एक पुरानी तौल जो सोलह माशे की होती थी।

सुवर्णकार [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्णकार। सुनार।

सुवर्णकेतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाल केतकी।

सुवर्णकेश [संज्ञा पु.] (सं.) एक नागासुर का नाम (बौद्ध)।

सुवर्णक्षीरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटेरी।

सुवर्णगणित [संज्ञा पु.] (सं.) बीजगणित का वह अङ्ग जिसके अनुसार सोने की तौल आदि मानी जाती है तथा उसका हिसाब लगाया जाता है।

सुवर्णगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक बोधिसत्व का नाम।

सुवर्णगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) राजगृह के एक पर्वत का नाम।

सुवर्णगैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) लाल गेरू।

सुवर्णगोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन राज्य (बौद्ध)।

सुवर्णघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) राँगा। बंग।

सुवर्णचूड़ [संज्ञा पु.](सं.) १-गरुड़ का एक पुत्र। २-एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णचूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुवर्णचूड़'।

सुवर्णजीविक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वर्ण संकर जाति।

सुवर्णता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुवर्ण का भाव या धर्म।

सुवर्णतिलका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकांगनी।

सुवर्णदुग्धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भटकटैया।

सुवर्णद्वीप [संज्ञा पु.] (सं.) सुमात्रा टापू का प्राचीन नाम।

सुवर्णधेनु [संज्ञा पु.] (सं.) सोने की गाय जो दान के उद्देश्य से बनाई जाती है।

सुवर्णनकुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाज्योतिष्मती लता।

सुवर्णपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

सुवर्णपत्र
[वि.] (सं.) सोने के पंखों वाला।

सुवर्णपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

सुवर्णपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

सुवर्णपद्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग गङ्गा।

सुवर्णपार्श्व [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद

सुवर्णपालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने का बना पात्र विशेष।

सुवर्णपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी सेवती।

सुवर्णप्रभास [संज्ञा पु.] (सं.) एक यक्ष। (बौद्ध)

सुवर्ण-प्रमाणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कागजी सिक्का जिसके लिए सोना पहले से सुरक्षित रखा जाता है क्योंकि उसका भुगतान सोने के द्वारा ही होता है। गोल्ड-सार्टिफिकेट।

सुवर्णप्रसर, सुवर्णप्रसव [संज्ञा पु.] (सं.) एलुआ एलवालुक।

सुवर्णफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चम्पा केला।

सुवर्णबिंदु, सुवर्णबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु

सुवर्णभू [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश जो ईशानकोण में है।

सुवर्णभूमि [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्णद्वीप।

सुवर्णमाक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामक्खी।

सुवर्ण-मान [संज्ञा पु.] (सं.) सिक्कासाजी का एक तरीका जिसके अनुसार मूल्य नापने की वस्तु सोना होती है। गोल्ड-स्टैन्डर्ड।

सुवर्णमाषक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीनमान जो बारह धान का होता था।

सुवर्णमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुहागा।

सुवर्णमुखरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी

सुवर्णमेखली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा।

सुवर्णयूथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनजुही। पीली जूही।

सुवर्णरंभा, सुवर्णरम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुवर्ण कदली।

सुवर्णरूप्यक [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्णद्वीप।

सुवर्णरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

सुवर्णरेतस [संज्ञा पु.] (सं.) एक मंत्रकार ऋषि।

सुवर्णरेता [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुवर्णरोमा [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़। [वि.] (हिं.) सुनहरे रोएं या बालों वाला।

सुवर्णलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

सुवर्णवणिक् [संज्ञा पु.] (सं.) बंगाल की एक वणिक जाति।

सुवर्णवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु। [वि.] (सं.) सुनहरा।

सुवर्ण-विनिमय [संज्ञा पु.] (सं.) मुद्रा के प्रचलन का एक ढंग जिसके अनुसार देश में सोने के सिक्के का चलन नहीं होता पर सरकार विदेशी ऋण चुकाने के लिये सोना काम में लाती है। गोल्ड-एक्सचेंज।

सुवर्णशिलेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सुवर्णश्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आसाम की एक नदी

सुवर्णष्ठीवी [संज्ञा पु.] (सं.) संजय के पुत्र का नाम (महाभारत)।

सुवर्णसंज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सुवर्णकर्ष'।

सुवर्णसिंदूर [संज्ञा पु.] देखो 'स्वर्णसिंदूर'।

सुवर्णसिद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) जादू के जोर से सोना बनाने या प्राप्त करने वाला।

सुवर्णसूत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने का तार।

सुवर्णस्तेय [संज्ञा पु.] (सं.) सोने की चोरी।

सुवर्णस्तेयी [संज्ञा पु.] (सं.) सोना चुराने वाला

सुवर्णस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन जनपद। २-सुमात्रा द्वीप का एक प्राचीन नाम।

सुवर्णहलि [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष विशेष।

सुवर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सुवर्णाकर [संज्ञा पु.] (सं.) सोने की खान।

सुवर्णाक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुवर्णाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-नागकेसर। २-धतूरा।

सुवर्णाभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-शंखपद के एक पुत्र का नाम। २-राजवर्त्तमणि।

सुवर्णार [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार।

सुवर्णावभासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक गंधर्वी का नाम।

सुवर्णाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली जूही।

सुवर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली जीवंती।

सुवर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मूसाकानी।

सुवर्तुल [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

सुवर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [वि.] (सं.) जिसके पास उत्तम कवच हो।

सुवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २-एक बौद्ध आचार्य।

सुवर्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मोतिया।

सुवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्रदात्री लता।

सुवल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जतुका नामक लता। २-सोमराजी।

सुवल्लिज [संज्ञा पु.] (सं.) मूंगा। प्रवाल।

सुवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोमराजी। २-कुटकी। ३-पुत्रदात्री लता।

सुवसंत, सुवसन्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-चैत्रपूर्णिमा २-चैत्र पूर्णिमा को होने वाला मदनोत्सव। ३-वासंती।

सुवसंता, सुवसन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-माधवीलता। २-चमेली।

सुवस* [वि.] (हिं.) जो अपने वश या अधिकार में हो।

सुवस्त्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम।

सुवह [वि.] (सं.) १-सहज में वहन करने या उठाने योग्य। २-धीर। [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की वायु।

सुवहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वीणा। २-शेफालिका। ३-रासन। ४-सँभालू। ५-रुद्रजटा। ६-हंसपदी। ७-मूसली। ८-सलई। ९-गंधनाकुली। १०-निसोथ।

सुवाँग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वाँग'।

सुवाँगी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वाँगी'

सुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुआ'।

सुवाक्य [वि.] (सं.) मधुरभाषी।

सुवाग्मी [वि.] (हिं.) सुवक्ता। बहुत सुन्दर व्याख्यान देने वाला।

सुवाजी [वि.] (हिं.) सुन्दर पङ्खों से युक्त।

सुवाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुलाना'

सुवामा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आधुनिक रामगङ्गा का पुराना नाम।

सुवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रसोइया। २-अच्छा वार या दिन।

सुवार्त्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम।

सुवाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सवाल'।

सुवालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की लता

सुवास [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगन्ध। खुशबू। २-सुन्दर घर। ३-शिव। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, जगण और एक लघु होता है। [वि.] (हिं.) [स्त्री. सुवासा] सुन्दर वस्त्रों से युक्त। [संज्ञा पु.] (हिं.) श्वास। साँस।

सुवासक [संज्ञा पु.] (सं.) तरबूज।

सुवासन [संज्ञा पु.] (सं.) दसवें मनु के एक पुत्र का नाम।

सुवासरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छालों नामक पौधा चंसुर।

सुवासिका [वि.] (सं.) सुवास या सुगन्ध करने वाली।

सुवासित [वि.] (सं.) सुगन्धयुक्त। खुशबूदार।

सुवासिनी [संज्ञा पु.] (सं.) १-युवा अवस्था में भी पिता के घर रहने वाली स्त्री। २-सधवा स्त्री

सुवासी [वि.] (सं.) बढ़िया मकान में रहने वाला

सुवास्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी
[संज्ञा पु.] (सं.) १-उपरोक्त नदी के पास का देश। २-उस देश का निवासी।

सुवास्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत में वर्णित एक राजा।

सुवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा घोड़ा। २-स्कंद के एक पारिषद् का नाम। [वि.] १-सहज में उठाने योग्य। २-सुन्दर घोड़ों वाला।

सुवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन मुनि का नाम।

सुविक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) वत्सप्री के एक पुत्र का नाम। [वि.] अत्यन्त साहसी।

सुविक्रांत, सुविक्रान्त [वि.] (सं.) अत्यन्त साहसी या वीर। [संज्ञा पु.] १-शूर। वीर। २-वीरता।

सुविक्लव [वि.] (सं.) बहुत बेचैन।

सुविख्यात [वि.] (सं.) सुप्रसिद्ध। बहुत मशहूर

सुविगुण [वि.] (सं.) १-गुणहीन। योग्यतारहित २-नीच। पाजी।

सुविग्रह [वि.] (सं) सुन्दर शरीर या रूप वाला।

सुविचार [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा या उत्तम विचार। २-अच्छा न्याय का फैसला। ३-श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सुविचारित [वि.] (सं.) अच्छी तरह सोचा हुआ

सुविचारी [वि.] (सं.) १-सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार करने वाला। २-सुन्दर निर्णय या फैसला करने वाला। न्यायशील।

सुविज्ञ [वि.] (सं.) बहुत विज्ञ या ज्ञाता।

सुविज्ञान [वि.] (सं.) १-जो सहज में जाना जासके २-बहुत चतुर या बुद्धिमान्।

सुविज्ञेय [वि.] (सं.) जो सहज में जाना जा सके [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुवित [वि.] (सं.) सहज में पाने योग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छा मार्ग। २-कल्याण ३-सौभाग्य।

सुवितत [वि.] (सं.) सुविस्तृत। खूब फैला हुआ

सुवितल [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु की एक मूर्त्ति।

सुवित्त [वि.] (सं.) बहुत धनी।

सुवित्ति [संज्ञा पु.] (सं.) एक देवता।

सुविद् [संज्ञापु.] (सं.) पण्डित। ज्ञानी।

सुविंद [संज्ञा पु.] (सं.) १-अंतःपुर का रक्षक। २-तिलकपुष्प वृक्ष।

सुविदग्ध [वि.] (सं.) बहुत चतुर या चालाक।

सुविदत्त [संज्ञा पु.] (सं.) राजा।

सुविदत्र [वि.] (सं.) १-बहुत सावधान। २-सहृदय। ३-उदार। [संज्ञा पु.] १-कृपा। दया। २-धन। संपत्ति। ३-ज्ञान। ४-कुटुम्ब

सुविदर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल की एक जाति का नाम।

सुविदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विवाहिता स्त्री।

सुविदल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःपुर। जनानखाना।

सुविदित [वि.] (सं.) अच्छी तरह जाना हुआ।

सुविद्य [वि.] (सं.) उत्तम या अच्छा पण्डित।

सुविद्युत् [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर का नाम।

सुविध [वि.] (सं.) सुशील। अच्छे या नेक स्वभाव का।

सुविधा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुभीता'।

सुविधि [संज्ञा पु.] (सं.) वर्त्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत् का नाम।

सुविनीत [वि.] (सं.) १-बहुत नम्र। २-सुशिक्षित

सुविनीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सहज में दूही जासकने वाली गाय।

सुविभक्त [वि.] (सं.) अच्छी तरह बाँटा हुआ।

सुविभु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राजा का नाम।

सुविशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सुविशुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक लोक का नाम (बौद्ध)।

सुविष्टंभी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुवीर [वि.] (सं.) बहुत बड़ा वीर। महान् योद्धा [संज्ञा पु.] १-स्कंद। २-शिव। ३-वीर। योद्धा। ४-एक वीर वृक्ष। ५-छाछ की खड़ी

सुवीरक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेर। २-एक वीर वृक्ष। ३-सुरमा।

सुवीरज [संज्ञा पु.] (सं.) (सं.) सुरमा।

सुवीराम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) काँजी।

सुवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) बदरी फल। बेर। [वि.] बहुत बड़ा वीर।

सुवीर्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बनकपास। २-महाशतावरी। ३-कलपत्ती हींग।

सुवृत्त [संज्ञा पु.] (सं.) जमींकंद। [वि.] १-सच्चरित। २-गुणवान। ३-साधु। ४-सुन्दर छंदोबद्ध (काव्य)।

सुवृत्ता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-एक अप्सरा का नाम। २-किशमिश। ३-सेवती। ४-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ अक्षर होते हैं।

सुवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-उत्तम वृत्ति। २-समाचार। [वि.] १-जिसकी जीविका उत्तम या पवित्र हो। २-सदाचारी। सच्चरित्र।

सुवृद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम। [वि.] १-बहुत वृद्ध। २-बहुत प्राचीन।

सुवेगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मालकंगनी। २-एक गिद्धनी का नाम।

सुवेणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महाभारत और हरिवंश के अनुसार एक नदी का नाम।

सुवेद [वि.] (सं.) अध्यात्मक शास्त्र का अच्छा ज्ञाता।

सुवेदा [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि का नाम

सुवेल [संज्ञा पु.] (सं.) त्रिकूट पर्वत का नाम। [वि.] १-बहुत झुका हुआ। २-शांत। नम्र

सुवेश [वि.] (सं.) १-वस्त्रादि से सुसज्जित। २-सुन्दर। रूपवान्। [संज्ञा पु.](सं) सफेद हंस

सुवेशता [संज्ञा स्त्री.] (सं) सुवेश का भाव या धर्म।

सुवेशी, सुवेष, सुवेषित, सुवेषी, सुवेस [वि.] देखो 'सुवेश'।

सुवेसल [वि.] (हिं.) सुन्दर।

सुवैण [संज्ञा पु.] (डिं.) मित्रता।

सुवैयां [वि.] (हिं.) सोने वाला।

सुवो [संज्ञा पु.] (डिं.) सुग्गा। तोता।

सुव्यक्त [वि.] (सं.) बहुत स्पष्ट।

सुव्यवस्थित [वि.](सं.) उत्तम रूप से व्यवस्थित

सुव्यूहमुखा, सुव्यूहा [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक अप्सरा।

सुव्रत [वि.] (सं.) १-दृढ प्रतिज्ञा पालन करनेवाला २-धर्मनिष्ठ। ३-विनीत। नम्र (गाय आदि)। [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्कंद के एक अनुचर का नाम। २-एक प्रजापति का नाम। ३-ब्रह्मचारी ४-वर्त्तमान अवसर्पिणी के २० वें अर्हत् का नाम। ५-भावी उत्सर्पिणी के ग्यारहवें अर्हत् का नाम।

सुव्रता [संज्ञा स्त्री] (सं) १-कपूरकचरी। २-वह गाय जो सहज में दूही जा सके। ३-गुणवती तथा सती स्त्री। ४-एक अप्सरा। ५-दक्ष की एक कन्या का नाम। वर्त्तमान कल्प के १५ वें अर्हत् की माता का नाम।

सुशक [वि.] (सं.) सहज। आसान।

सुशक्त [वि.] (सं.) शक्तिशाली। ताकतवर।

सुशक्ति [वि.] देखो 'सुशक्ति'।

सुशब्द [वि.] (सं) जिसकी ध्वनि या आवाज अच्छी हो।

सुशरण्य [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुशरीर [वि.] (सं.) सुडौल। सुदेह।

सुशर्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनु का एक पुत्र। २-निंदित ब्राह्मण।

सुशल्य [संज्ञा पु.] (सं.) खैर। खादिर।

सुशवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काला जीरा। २-कालीजीरी। ३-करेला। ४-करंज।

सुशांत, सुशान्त [वि.] (सं.) बिलकुल शांत। स्थिर।

सुशांता, सुशान्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा शंखध्वज की पत्नी का नाम।

सुशाक, सुशाकक [संज्ञा पु.] (सं.) १-अदरक। २-चौलाई का साग। ३-चैंच। ४-भिंडी।

सुशारद [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक आचार्य।

सुशास्य [वि.] (सं.) सहज में शासित या नियंत्रित होने योग्य।

सुशिविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की शिवी

सुशिक्षित [वि.] (सं.) जिसने अच्छी शिक्षा प्रा की हो।

सुशिख [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि का नाम।

सुशिखा [संज्ञा पु.] (सं.) १-मोर की चोटी। २-मुर्गे की कलगी।

सुशिर [वि.] (सं.) सुन्दर सिर वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) फूँककर बजाया जाने वाला बाजा।

सुशीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पीला चन्दन। २-पाकर वृक्ष। ३-जलबेंत। [वि.] अत्यन्त शीतल।

सुशीतल [संज्ञा पु.] (सं.) १-गन्धतृण। २-सफेद चन्दन। ३-नागदमनी। [वि.] बहुत शीतल

सुशीतला [संज्ञा पु.] (सं.) १-खीरा। २-ककड़ी।

सुशीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेवती। २-कमल

सुशीम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प विशेष। २-चंद्रकांतमणि।

सुशील [वि.] (सं.) [स्त्री. सुशीला] १-अच्छे शील या स्वभाव का अच्छे आचरण तथा व्यवहार का। २-साधु। ३-विनीत। नम्र। ४-सीधा। सरल।

सुशीलता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-सुशील का भाव २-सच्चरित्रता। ३-नम्रता।

सुशीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम। २-राधा की एक अनुचरी। ३-यमपत्नी। ४-सुदामा की पत्नी का नाम।

सुशीली [वि.] (हिं.) देखो 'सुशील'।

सुशीविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाराहीकंद।

सुशृंग [वि.] (सं.) सुन्दर सींगों वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) शृङ्गीऋषि।

सुशृत [वि.] (सं.) १-दिव्य। २-बहुत सुन्दर।

सुशोभन [वि.] (सं.) १-बहुत शोभा वाला। दिव्य २-बहुत सुन्दर।

सुशोभित [वि.] (सं.) अच्छी तरह शोभित और सजता हुआ।

सुश्रम [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म के एक पुत्र का नाम।

सुश्रवा [वि.] (सं.) १-उत्तम हवि से युक्त। २-प्रसिद्ध।

सुश्राव्य [वि] (सं.) जो सुनने में अच्छा जान पड़े।

सुश्री [वि.] (सं.) १-बहुत सुन्दर। २-बहुत धनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम से पहले लगाया जाता है।

सुश्रीक [संज्ञा पु.](सं.) सलई। [वि.] (सं.) सुश्री

सुश्रुत [संज्ञा पु.](सं.) १-आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने 'सुश्रुत-संहिता' नामक ग्रंथ रचा था। २-उक्त आचार्य का ग्रंथ। [वि.] (सं.) १-भली-भाँति सुना हुआ। २-प्रसिद्ध।

सुश्रुतसंहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रंथ जिसे सुश्रुताचार्य ने रचा था

सुश्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) धर्म के एक पुत्र का नाम

सुश्रूषा* **सुश्रूष** [संज्ञा स्त्री.] देखो 'शुश्रूषा'।

सुश्रोणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी।

सुश्रोणि [वि.](सं.) सुन्दर नितम्ब वाली (स्त्री)।

सुश्लिष्ट [वि.] (सं.) अतिदृढ़। अतिशय श्लेषयुक्त।

सुश्लोक [वि.] (सं.) १-पुण्यात्मा। २-सुप्रसिद्ध।

सुष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुख'।

सुषम [वि.] (सं.) १-बहुत सुन्दर। २-सम। समान।

सुषमदुःषमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनमतानुसार कालचक्र के दो आरे।

सुषमना, सुषमनि [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो सुषुम्ना।

सुषमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता। २-दस अक्षरों वाला एक वृत्त ३-जैनों के मतानुसार काल का एक नाम।

सुषमाशाली [वि.] (सं.) जिसमें बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता हो।

सुषवी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-करेला। २-करेली। ३-जीरा।

सुषाढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुषाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सुखाना'।

सुषारा* [वि.] (हिं.) देखो 'सुखारा'।

सुषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छेद। सूराख।

सुषिक [संज्ञा पु.] (सं.) शीतलता। ठंडक। [वि.] (सं.) शीतल। ठंडा।

सुषिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँस। २-अग्नि। ३-हवा के दबाव या जोर से बजने वाला। ४-बेंत। ५-छेद। ६-वायुमंडल। ७-लौंग। ८-काठ। लकड़ी। ९-चूहा। १०-वह ध्वनि जो मुँह से फूँककर बजाये जाने वाले बाजों में निकलती है। [वि.] १-जिसमें छेद हों। २-खोखला। पोला।

सुषिरछेद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की वंशी।

सुषिरविवर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल। २-साँप का बिल।

सुषिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विद्रुमलता। २-नदी।

सुषिलीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की चिड़िया।

सुषीम [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प विशेष। २-चंद्रकांत मणि। [वि.] १-शीतल। ठंढा। २-मनोरम। मनोज्ञ।

सुषुपु [वि.] (सं.) निद्रातुर। सोने का इच्छुक।

सुषुप्त [वि.] (सं.) गहरी नींद में सोया हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सुषुप्ति'।

सुषुप्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-घोर निद्रा। २-अज्ञान। ३-योगसाधन में वह अवस्था जिसमें ब्रह्म को प्राप्त कर लेने पर भी जीव को उसका ज्ञान नहीं होता।

सुषुप्स [वि.] (सं.) देखो 'सुषुपु'।

सुषुप्सा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने की इच्छा।

सुषुम्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हठयोग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों में से वह जो नासिका से ब्रह्मरंध्र तक गई हुई मानी जाती है। वैद्यक में इसका स्थान नाभि के मध्य में माना जाता है।

सुषेण [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-एक गंधर्व ३-एक यक्ष। ४-एक नागासुर। ५-दूसरे मनु के एक पुत्र का नाम। ६-परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ७-करौंदा। ८-बेंत।

सुषेणिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली निसोथ।

सुषेणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोध।

सुषोपति+, सुषोप्ति+ [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सुषुप्ति'।

सुषोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी का नाम। (भागवत)

सुष्ट [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छा। भला। 'दुष्ट' का उलटा।

सुष्ठु [अव्य.) (सं.) १-अत्यन्त। अतिशय। २-भलीभांति। ३-यथायोग्य। [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशंसा। २-सत्य।

सुष्ठुता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-मंगल। भलाई। २-सौभाग्य। ३-सुन्दरता।

सुष्मंत [संज्ञा पु.] देखो 'सुष्कंत'।

सुष्म [संज्ञा पु.] (सं.) रस्सी। रज्जु।

सुष्मना* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुषुम्ना'।

सुसंक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुसंग [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छी संगत या सोहबत।

सुसंगत [संज्ञा स्त्री.] (हि.) बहुत उचित।

सुसंगति [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अच्छी संगत।

सुसंस्कृत [वि.] (सं.) उत्तम संस्कारयुक्त।

सुस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुसा'।

सुसकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सिसकना'।

सुसकल्यो [संज्ञा पु.] (डिं.) शशा। खरगोश।

सुसका [संज्ञा पु.] (हिं.) हुक्का।

सुसंज्जित [वि.] (सं.) [स्त्री. सुसज्जिता] शोभायमान। अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ

सुसताना [क्रि. स.] (हिं.) श्रम मिटाने के लिए विश्राम करना।

सुसती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुस्ती'।

सुसत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा जनक की पत्नी का नाम।

सुसबद [संज्ञा पु] (डिं.) यश। कीर्त्ति।

सुसमय [संज्ञा पु.] (सं.) अच्छा समय। सुकाल। सुभिक्ष।

सुसमा [संज्ञा स्त्री] (डिं) अग्नि। * (हिं.) देखो 'सुषमा'।

सुसमुझि* [वि.] (हिं.) समझदार।

सुसर [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'ससुर'।

सुसरण [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुसरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ससुर'।

सुसरार, सुसरारि, सुसराल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) ससुर का घर।

सुसरित [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गंगा।

सुसरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'ससुरी। २-देखो 'सुरसुरी'।

सुसह [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। [वि.] जो सहज में उठाया या सहन किया जा सके।

सुसा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहन। भगिनी। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का पक्षी।

सुसाइटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोसाइटी'।

सुसाध्य [वि.] (सं.) सहज में हो सकने वाला। सुगम।

सुसाना* [क्रि. अ.] (हिं.) सिसकना।

सुसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-नीलम। २-लाल खैर

सुसारवत् [संज्ञा पु.] (सं.) बिल्लौर। स्फटिक।

सुसिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चीनी। शर्करा।

सुसिक्त [वि.] (सं.) अच्छी तरह से सींचा हुआ

सुसिद्ध [वि.] (सं.) उत्तम रूप से सिद्ध।

सुसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साहित्य में एक अलंकार, वह ऐसे स्थान में होता है जहाँ पर एक मनुष्य परिश्रम करता है परन्तु इसका फल दूसरा भोगता है।

सुसिर [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत का एक रोग।

सुसीतलाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुशीतलता'।

सुसीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवती। शतपत्री।

सुसीम [वि.] (डिं.) शीतला। ठण्डा।

सुसीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जैनों के अनुसार छठे अर्हत् की माता का नाम।

सुसुकना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सिसकना'।

सुसुड़ी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जौ में लगने वाला एक कीड़ा।

सुसुनिया [संज्ञा पु.] (देश.) बंगाल के बाँकुड़ा जिले का एक पहाड़।

सुसुपि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुषुप्ति'।

सुसुरप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली।

सुसूक्ष्म [संज्ञा पु.](सं.) परमाणु। [वि.] अत्यंत सूक्ष्म।

सुसूक्ष्मपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जटामांसी।

सुसूक्ष्मेश [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सुसेन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुषेण'।

सुसेवित [वि.] (सं.) उत्तम रूप से पूजित।

सुसैंधवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पाकिस्तान के सिंध प्रदेश की अच्छी घोड़ी।

सुसो [संज्ञा पु.] (डिं.) खरगोश। ससा।

सुसौभग [संज्ञा पु.] (सं.) दांपत्य सुख।

सुस्कंदन, सुस्कन्दन [संज्ञा पु.](सं.) बर्बर वृक्ष

सुस्त [वि.] (फा.) १-दुर्बल। कमजोर। २-चिंता आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। ३-जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो। ४-जिसमें तत्परता न हो। आलसी। ५-धीमी चाल वाला।

सुस्तना, सुस्तनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुन्दर स्तनों से युक्त स्त्री। २-वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।

सुस्तरीछ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पहाड़ी रीछ।

सुस्ताई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुस्ती'।

सुस्ताना [क्रि. अ.] (हिं.) 'सुसताना'।

सुस्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-सुस्त होने का भाव शिथिलता। २-आलस्य।

सुस्तैन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वस्त्ययन'।

सुस्थ [वि.] (सं.) १-भला-चंगा। निरोग। २-प्रसन्न। खुश। ३-सुस्थित। अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ।

सुस्थचित्त [वि.] (सं.) जिसका चित्त सुखी या या प्रसन्न हो।

सुस्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुस्थ होने का भाव २-निरोगता। स्वास्थ्य। ३-कुशलक्षेम। प्रसन्नता।

सुस्थत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुस्थता।

सुस्थमानस [वि.] (सं.) सुस्थचित्त।

सुस्थल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद।

सुस्थावती [संज्ञा स्त्री.](सं.) सङ्गीत में एक रागिनी

सुस्थित [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक जैन आचार्य का नाम। २-वह भवन जिसके चारों ओर वीथिका या मार्ग हों। [वि.] [स्त्री. सुस्थिता] १-दृढ़। अविचल। २-स्वस्थ। ३-भाग्यवान्

सुस्थितत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुस्थित होने का भाव। २-सुख। ३-निवृत्ति।

सुस्थिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अच्छी अवस्था। २-कुशलक्षेम। ३-आनन्द। प्रसन्नता।

सुस्थिर [वि.] (सं.) [स्त्री. सुस्थिरा] अत्यन्त स्थिर या दृढ़। अविचल।

सुस्थिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्तवाहिनी नस।

सुस्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खेसारी।

सुस्नात [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसने यज्ञ के उपरांत स्नान किया हो।

सुस्मित [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सुस्मिता] हँसमुख। हँसोड़।

सुस्मिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हँसमुख स्त्री।

सुस्वध [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों की एक श्रेणी या वर्ग।

सुस्वधा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-कल्याण। मङ्गल। २-सौभाग्य।

सुस्वन [संज्ञा पु.] (सं.) शंख। [वि.] (सं.) १-उत्तम शब्द या ध्वनि वाला। २-बहुत ऊँचा ३-सुन्दर।

सुस्वप्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-शुभ स्वप्न। २-शिवजी।

सुस्वर [वि.] (सं.) [स्त्री. सुस्वरा] सुरीला। सुकंठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुन्दर या उत्तम स्वर। २-शंख। ३-गरुड़ के एक पुत्र का नाम। ४-जैनमतानुसार कर्म विशेष जिससे मनुष्य का स्वर मधुर तथा सुरीला होता है।

सुस्वरता [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-सुस्वर होने का भाव या धर्म। २-वंशी के पाँच गुणों में से एक।

सुस्वादु [वि.] (सं.) बहुत स्वादिष्ट या जायकेदार

सुहंग* [वि.] (हिं.) सस्ता। कम मूल्य का।

सुहंगम* [वि.] (हिं.) सहज। आसान।

सुहँगा [वि.] (हिं.) सुहङ्ग। सस्ता।

सुहटा* [वि.] (हिं) [स्त्री. सुहटी] सुन्दर। सुहावना।

सुहड़ [संज्ञा पु.] (डिं.) योद्धा। शूरवीर।

सुहनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोहनी'।

सुहबत [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सोहबत'।

सुहर [संज्ञा पु.] (सं.) एक असुर।

सुहराना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुहलाना'।

सुहल* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सुहेल'।

सुहव, सुहवी*[संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'सूहा'(राग)

सुहस्त [वि.](सं.)[स्त्री. सुहस्ता] सुन्दर हाथोंवाला

सुहस्ती [संज्ञा पु.](सं.) एक जैन आचार्य का नाम

सुहा [संज्ञा पु.] [स्त्री. सुही] लाल नामक पक्षी।

सुहाग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। सौभाग्य। २-वे गीत जो विवाह के समय कन्या पक्ष की स्त्रियां गाती हैं। ३-वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है मुहा०-सुहाग मनाना-अखंड सौभाग्य बने रहने की कामना करना। सुहाग भरना-माँग भरना

सुहागन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुहागिन'।

सुहागा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का क्षार जो गरम गन्ध की सोतों से निकलता है। सुभग

सुहागिन, सुहागिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।

सुहागिल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुहागिन'।

सुहाता [वि] (हिं.) जो सहा जा सके।

सुहान [संज्ञा पु.](हिं.) १-वैश्यों की एक जाति। २-देखो 'सोहान'।

सुहाना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अच्छा या भला लगना। २-सुशोभित होना। शोभा देना। [वि.] देखो 'सुहावना'।

सुहाय्या* [वि.] (हिं) देखो 'सुहावना'।

सुहारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बिना पीठी की सावी पूरी (पकवान)।

सुहाल [संज्ञा पु.] (हिं.) मैदे का बना एक प्र का नमकीन पकवान।

सुहाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुहारी'।

सुहाव* [वि.] (हिं.) सुहावना। सुन्दर। [संज्ञा पु.] सुन्दर हाव।

सुहावता+ [वि.] (हिं.) [स्त्री सुहावती] अच्छा लगने वाला। भला।

सुहावन* [वि.] (हिं.) देखो 'सुहावना'।

सुहावना [वि.] (हिं.) [स्त्री. सुहावनी] देखने में भला और सुन्दर लगने वाला। प्रियदर्शन *[क्रि. अ.] देखो 'सुहान'।

सुहावनापन [संज्ञा पु.] (हिं.) सुहावना लगने या होने का भाव। सुन्दरता।

सुहावला* [वि.] (हिं.) देखो 'सुहावना'।

सुहास [वि.] (सं.)[स्त्री. सुहासा] सुन्दर या मधुर मुस्कान वाला।

सुहासी [वि.](हिं.) [स्त्री. सुहासिनी] सुन्दर और मधुर मुस्कान वाला। चारुहासी।

सुहित [वि.] (सं.) १-उपयोगी। २-सम्पादित। किया हुआ। ३-उपयुक्त। ठीक।

सुहिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २-रुद्रजटा।

सुहिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुहा'।

सुहु [संज्ञा पु.] (सं.) उग्रसेन के एक पुत्र का नाम

सुहृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'सुहृद्'। २-ज्योतिष के अनुसार लग्न से चौथा स्थान।

सुहृत्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुहृत् का भाव या धर्म। २-मित्रता।

सुहृद् [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छे और शुद्ध हृदय वाला मनुष्य। २-सखा। मित्र।

सुहृद [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सुहृदय [वि.] (सं.) १-अच्छे हृदय वाला। २-सहृदय। स्नेहशील।

सुहेल [संज्ञा पु] (अ.) एक कल्पित तारा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह यमन देश में दिखाई देता है और इसके उदय होने पर कीड़े-मकोड़े मर जाते हैं तथा चमड़े में सुगंध उत्पन्न हो जाती है। हिंदी के कवियों ने इसका निकलना शुभ माना है।

सुहेलरा* [वि.](हिं.) १-सुन्दर। सुहावना। २-सुखदायक। सुखद।

सुहेला [वि.] (हिं.) देखो 'सुहेलरा'। [संज्ञा पु.] १-मंगल गीत। २-स्तुति।

सुहेस+ [वि.] (हिं.) सुन्दर। अच्छा।

सुहोता [संज्ञा पु.](हिं.) अच्छी तरह हवन करने वाला।

सुहोत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सहदेव के पुत्र का नाम। २-एक कौरव का नाम। ३-एक दैत्य। ४-एक वानर।

सुह्म, सुह्मक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन प्रदेश। २-यवनों की एक जाति।

सूँ [अव्य.](हिं.) करण और अपादान का चिह्न। से।

सूँइस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सूँस'।

सूँघना [क्रि. स.] (हिं.) १-नाक से गंध का अनुभव करना। वास लेना। २-बहुत थोड़ा भोजन करना (व्यंग्य)। ३-(साँप का) काटना। डसना। *सिर सूंघना*-एक रीति जिस में बड़े लोग मंगलकामना के लिए छोटों का मस्तक सूँघते हैं। *जमीन सूंघना*-ऊँघना।

सूँघा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो केवल सूँघकर भूमि के नीचे का पानी या खजाना बताता है। २-भेदिया। जासूस। ३-वह कुत्ता जो सूघकर शिकार के पास पहुँच जाय।

सूँठ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोंठ'।

सूँड [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी के अग्रभाग का वह लम्बा अंग जिससे वह नाक का काम लेता है। शुंड।

सूँडडंड, सूँड़हल [संज्ञा पु.] (डिं.) हाथी।

सूँडा [संज्ञा पु.] (डिं.) हाथी की सूँड या नाक।

सूँडाल [संज्ञा पु.] देखो 'शुंडाल'।

सूँडि+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सूँड'।

सूँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अनाज या फसल में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो सफेद रङ्ग का होता है। २-देखो 'जलस्तम्भ'।

सूँधी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सज्जी मिट्टी।

सूँस [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा जल-जन्तु। शिशुमार। सूस।

सूँह* [अव्य.] (हिं.) सम्मुख। सामने।

सूअर [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सूअरी] १-एक प्रसिद्ध स्तनपायी जंतु जो जङ्गली और पालतू दोनों तरह का होता है। शूकर। २-एक प्रकार की गाली।

सूअरबियान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) प्रति वर्ष बच्चा जनने वाली स्त्री।

सूअरमुखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ ज्वार।

सूआ+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सुग्गा। तोता। २-बड़ी सूई। ३-सींख।

सूआन [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष

सूई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लोहे का एक पतला उपकरण जिसके एक सिरे पर छेद होता है जिसमें धागा पिरोकर कपड़ा सीते हैं। २-किसी विशेष परिमाण, अङ्क, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। ३-पौधों का छोटा पतला अंकुर। ४-पिन। *सूई का भाला या फावड़ा बनाना*-बात का बतंगड़ करना।

सूईडोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) एक मालखंभ की कसरत।

सूक [संज्ञा पु.] (सं) १-वाण। २-वायु। हवा। ३-कमल। *[संज्ञा पु.](हिं.) १-देखो 'शुक' २-शुक्र नक्षत्र।

सूकना* [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'सूखना'।

सूकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूअर। शूकर। २-एक प्रकार का मृग। ३-कुम्हार। ४-सफेद धान। ५-एक नरक।

सूकरकंद, सूकरकन्द [संज्ञा पु.](सं.) बाराहीकंद

सूकरक [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का शालिधान्य

सूकरक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मथुरा जिले में है। आजकल यह सोरों के नाम से प्रसिद्ध है।

सूकरखेत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूकरक्षेत्र'।

सूकरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूअर होने का भाव या अवस्था। सूअरपन।

सूकरदंष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का काँच निकलने का रोग।

सूकरनयन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का छेद जो काठ में किया जाता है।

सूकरपादिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-कौंछ। किवाँच २-सेम।

सूकरमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

सूकराक्रांता, सूकराक्रान्ता [संज्ञा पु.](सं.) वाराहक्रांता।

सूकराक्षिता [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) आँखों का एक रोग।

सूकरास्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वाराही नामक एक बौद्धदेवी का नाम।

सूकराह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) गठिवन।

सूकरिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

सूकरिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार की चिड़िया

सूकरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मादा सूअर। सूअरी २-वाराहक्रांता। ३-एक प्रकार की चिड़िया

सूकरेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसेरू। २-एक प्रकार का पक्षी।

सूका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सूकी] चवन्नी (सिक्का)। [वि.] (हिं.) देखो 'सूखा'।

सूकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) घूस। रिश्वत।

सूक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। २-उत्तम भाषण। ३-महद्वाक्य [वि.] (सं.) अच्छी तरह कहा हुआ।

सूक्तचारी [वि.] (सं.) उत्तम वाक्य या परामर्श मानने वाला।

सूक्तदर्शी [संज्ञा पु.] (सं.) मंत्रद्रष्टा।

सूक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मैना।

सूक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तम या सुन्दर युक्ति। पद, वाक्य आदि।

सूक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की करताल या झाँझ।

सूछम* [वि.] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'।

सूक्ष्म [वि.] (सं.) [स्त्री. सूक्ष्मा] बहुत छोटा बारीक या महीन। [संज्ञा पु] (सं) १-परमाणु। अणु। २-लिंगशरीर। ३-परब्रह्म।

४-शिव । ५-वह काव्यालङ्कार जिसमें चित्त वृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है । ६-जैनमतानुसार कर्म विशेष जिसके उदय से मनुष्य सूक्ष्म जीवों की योनि में जन्म लेता है ।

सूक्ष्मकृष्णफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कठजामुन । छोटा जामुन ।

सूक्ष्मकोण [संज्ञा पु.] (सं.) वह कोण जो समकोण से छोटा हो ।

सूक्ष्मघंटिका, सूक्ष्मघण्टिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सनई ।

सूक्ष्मचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) चक्र विशेष ।

सूक्ष्मतंडुल, सूक्ष्मतण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-खसखस । पोस्तदाना । २-धूना ।

सूक्ष्मता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूक्ष्म होने का भाव ।

सूक्ष्मतुंड, सूक्ष्मतुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा ।

सूक्ष्मदर्शकयंत्र, सूक्ष्मदर्शकयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) अणुवीक्षण यंत्र । खुर्दबीन ।

सूक्ष्मदर्शिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूक्ष्म या बारीक बात सोचने या समझने का गुण ।

सूक्ष्मदर्शी [वि.] (सं.) १-बारीक बात को सोचने समझने वाला । कुशाग्र बुद्धि । २-अत्यन्त बुद्धिमान् ।

सूक्ष्मदल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सरसों ।

सूक्ष्मदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुरालभा । धमासा ।

सूक्ष्मदारु [संज्ञा पु.] (सं.) काठ की पतली पटरी ।

सूक्ष्मदृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी-छोटी बातें तक सहज में समझ या देख लेने वाली दृष्टि । [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें भी देख या समझ लेता हो ।

सूक्ष्मदेही [वि.] (सं.) सूक्ष्म शरीर वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) परमाणु, जो बिना अनुवीक्षणयन्त्र के दिखाई नहीं पड़ता ।

सूक्ष्मनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु ।

सूक्ष्मपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-धनिया । २-काली जीरी । ३-देवसर्षप । ४-छोटा बेर । ५-माचीपत्र । ६-बनबर्वरी । ७-उड़द । माष । ८-कीकर । बबूल । ९-लाल ऊख । १०-कुकरौंदा । ११-दुरालभा । १२-अर्कपत्र ।

सूक्ष्मपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-पित्तपापड़ा । २-बनतुलसी ।

सूक्ष्मपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बन जामुन । २-शतमूली । ३-अपराजिता-लता । ४-धमासा । ५-वृहती । ६-जीरे का पौधा । ७-वला ।

सूक्ष्मपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सतावर । २-आकाशमांसी ।

सूक्ष्मपर्णा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विधारा । २-छोटी सनई । ३-वनमंटा ।

सूक्ष्मपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रामतुलसी ।

सूक्ष्मपाद [वि.] (सं.) छोटे पैरों वाला ।

सूक्ष्मपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जङ्गली पीपल ।

सूक्ष्मपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सनई ।

सूक्ष्मपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शंखिनी । २-यवतिक्तलता ।

सूक्ष्मफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-लिसोड़ा । २-छोटा बेर ।

सूक्ष्मफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भुँई आँवला । २-तालीसपत्र । ३-मालकंगनी ।

सूक्ष्मबदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झरबेर ।

सूक्ष्मबीज [संज्ञा पु.] (सं.) खसखस । पोस्तदाना ।

सूक्ष्मभूत [संज्ञा पु.] (सं.) आकाश आदि शुद्ध भूत जिसका पंचीकरण न हुआ हो ।

सूक्ष्ममक्षिक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सूक्ष्ममक्षिका] मच्छर ।

सूक्ष्ममति [वि.] (सं.) तीक्ष्ण बुद्धि ।

सूक्ष्ममूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्रह्मी । २-जियन्ती ।

सूक्ष्मलोभक [संज्ञा पु.] (सं.) जैनमतानुसार मुक्ति की चौदह अवस्थाओं में से दसवीं अवस्था ।

सूक्ष्मवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ताम्रवल्ली । २-जतुका नामक लता । ३-करेली ।

सूक्ष्मशरीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल्पित शरीर जो पांच प्राणों, पांच ज्ञानेंद्रियों, पांच सूक्ष्मभूतों और मन तथा बुद्धि के योग से बना हुआ और मनुष्य की मृत्यु के उपरांत भी बना रहने वाला माना जाता है । लिंगशरीर ।

सूक्ष्मशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बालू । बालुका ।

सूक्ष्मशाक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की बबुरी ।

सूक्ष्मशालि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार के चावल जो महीन और सुगन्धित होते हैं ।

सूक्ष्मषट्चरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सूक्ष्म कीड़ा ।

सूक्ष्मस्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कोढ़ ।

सूक्ष्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-जूही । २-छोटी इलायची । ३-करुणी नामक पौधा । ४-मूसली । ५-बालुका । ६-सूक्ष्म जटामांसी । ७-विष्णु की नौ शक्तियों में से एक ।

सूक्ष्माक्ष [वि.] (सं.) सूक्ष्म दृष्टि वाला ।

सूक्ष्मात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

सूक्ष्माह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महामेदा ।

सूक्ष्मेक्षिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूक्ष्मदृष्टि ।

सूक्ष्मैला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटी इलायची ।

सूख* [वि.] (हिं.) देखो 'सूखा' ।

सूखना [क्रि. अ.] (हिं.) १-नमी, तरी आदि का निकल जाना । रसहीन होना । २-जल का न रहना या कम हो जाना । ३-उदास होना । ४-तेज नष्ट होना । ५-डरना । सन्न होना । सूखकर काँटा होना-बहुत दुबला-पतला होना । सूखे खेत लहलहाना-अच्छे दिन आना ।

सूखर [संज्ञा पु.] (?) एक शैव-सम्प्रदाय ।

सूखा [वि.] (हिं.) [स्त्री. सूखी] १-रस, जल, तरी आदि से रहित । २-हृदयहीन । अ-सरस ३-उदास । तेजहीन । ४-कोरा । ५-केवल । निरा । सूखा टालना या टरकाना-याचक या इच्छुक आदि को बिना उसकी कामना पूरी किये लौटाना । सूखा जवाब देना-साफ इन्कार करना । [संज्ञा पु.] १-पानी न बरसने की अवस्था । अनावृष्टि । २-तम्बाकू का सुखाया हुआ चूरा या पत्ता । ३-एक प्रकार की खाँसी ४-ऐसा स्थान जहाँ जल न हो । स्थल । ५-देखो 'सुखंडी' (रोग) ६-भाँग । ७-नदी के किनारे की जमीन । सूखे पर लगना-नाव आदि का किनारे पर लगना । सूखा लगना-सुखंडी रोग होना ।

सूघर* [वि.] (हिं.) देखो 'सुघड़' ।

सूच [संज्ञा पु.] (सं.) कुश का अंकुर । [वि.] (डिं.) निर्मल । पवित्र ।

सूचक [वि.] (सं.) [स्त्री. सूचिका] सूचना देने वाला । ज्ञापक । बोधक । [संज्ञा पु.] १-सुई २-दरजी । सीने वाला । ३-सूत्रधार । ४-कथक । ५-बुद्ध । ६-सिद्ध । ७-पिशाच । ८-कुत्ता । ९-बिल्ली । १०-कौआ । ११-सियार गीदड़ । १२-कटहरा । जङ्गला । १३-बरामदा १४-ऊँची दीवार । १५-गुप्तचर । १६-सूक्ष्म शालिधान्य । १७-चुगलखोर । १८-आयोगव माता तथा क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र ।

सूचन [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सूचनी] १-बताने या जताने की क्रिया । २-सुगंध फैलाने की क्रिया ।

सूचना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी को विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिए कही हुई बात । वह बात जो किसी को जताने या बताने के लिए कही जाय । इन्फॉर्मेशन । २-वह पत्र आदि जिन पर इस तरह की कोई बात लिखी अथवा छपी हो । विज्ञापन । इश्तहार । नोटिस । ३-कोई कार्रवाई करने से पहले किसी सम्बद्ध व्यक्ति को पहले से सचेत करने के लिए कही हुई बात । इन्फॉर्मेशन । ४-दुर्घटना आदि के सम्बन्ध में अदालती अथवा अन्य किसी प्रकार की कार्रवाई करने से पहले पुलिस अथवा अन्य किसी उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल कहना । रिपोर्ट । ५-वह विवरण सूची आदि जो कहीं से आने वाले माल के सम्बंध में हो । ऐडवाइस । ६-बेधना । छेदना । ७-हिंसा । ८-अभिनय । * [क्रि. स.] (हिं.) बतलाना । जतलाना ।

सूचनापत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पत्र जिस पर किसी प्रकार की सूचना लिखी या छपी हो । विज्ञप्ति । इश्तहार । नोटिस । २-देखो '[illegible]यन' ।

सूचनीय, सूचयितव्य [वि.] (सं.) सूचना देने के योग्य ।

सूचा [संज्ञा स्त्री] (हि) १-देखो 'सूचना'। २-सावधान।

सूचि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सूई। २-नृत्य विशेष। ३-केवड़ा। ४-एक प्रकार का सैनिक व्यूह जिसमें कुछ कुशल सैनिक अग्रभाग में रखे जाते हैं तथा शेष पिछले भाग में होते हैं। ५-दरवाजे की टिकनी। ६-जंगला। कटहरा। ७-एक प्रकार का मैथुन। ८-दृष्टि। नजर। ९-देखो 'सूची'। [वि.] (हि.) शुद्ध। पवित्र

सूचिक [संज्ञा पु.] (सं.) दरजी।

सूचिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूई। २-हाथी की सूँड। ३-एक अप्सरा। ४-केवड़ा।

सूचिकाधर [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी।

सूचिकाभरण [संज्ञा पु](सं.) सन्निपात ज्वर की अन्तिम औषध।

सूचिकामुख [संज्ञा पु.] (सं.) शंख।

सूचित [वि.] (सं) जिसकी सूचना दी गई हो। ज्ञापित।

सूचिपत्र [संज्ञा पु.](सं) १-एक प्रकार का ऊख। २-चौपतिया शाक। ३-देखो 'सूचीपत्र'।

सूचिपत्रक [संज्ञा पु] (सं) देखो 'सूचीपत्र' (१, २)।

सूचिपुष्प [संज्ञा पु] (सं.) केवड़ा।

सूचिभेद्य [वि.] (सं) १-जो सूई से भेदा जा सके। २-बहुत घना।

सूचिरदन [संज्ञा पु.] (सं) नेवला।

सूचिरोमा [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर।

सूचिवत् [संज्ञा पु] (सं.) गरुड़।

सूचिवदन [संज्ञा पु](सं.) १-नेवला। २-मच्छर

सूचिशालि [संज्ञा पु] (सं.) सूक्ष्म शालिधान्य

सूचिशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूई की नोक।

सूचिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) धागा।

सूची [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ कपड़ा सीने की सूई। २-सेना का एक प्रकार का व्यूह। ३-एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं अथवा उनके अंगों, विषयों आदि की नामावली। तालिका। फेहरिस्त। लिस्ट। ४-केवड़ा। ५-सफेद कुश। ६-वह साक्षी जो बिना बुलाये स्वयं आकर किसी विषय में साक्ष्य दे। ७-पिंगल के अनुसार एक रीति जिससे मात्रिक छन्दों की संख्या की शुद्धता तथा उनके भेदों में आदि अंत लघु अथवा आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है। ८-सूई की तरह का यन्त्र विशेष जिससे घाव आदि को टाँके लगाये जाते थे।

सूचीक [संज्ञा पु.](सं.) सूई जैसे डंक रखने वाले जंतु। जैसे-मच्छर।

सूचीकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सिलाई का काम।

सूचीदल [संज्ञा पु.](सं.) सितावर नामक शाक

सूचीपत्र, सूचीपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) वह पुस्तिका जिसमें बहुत-सी वस्तुओं की नामावली, विवरण, मूल्य आदि हों। तालिका। सूची। कैटलाग।

सूचीपत्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाँडर दूब।

सूचीपद्म [संज्ञा पु.] (सं) एक सैनिक व्यूह विशेष।

सूचीपाश [संज्ञा पु.](सं.) सूई का छेद या नाका जिसमें धागा पिरोया जाता है।

सूचीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सूचिपुष्प'।

सूचीभेद [वि.] (सं.) देखो 'सूचिभेद्य'।

सूचीमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'सूचीपाश'। २-एक नरक। ३-हीरा। ४-कुशा।

सूचीरोमा [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सूचिरोमा'।

सूचीवक्त्रा [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह योनि जिसका छेद इतना छोटा हो कि वह पुरुष के संसर्ग के योग्य न हो।

सूच्छम* [वि] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'।

सूच्य [वि.](सं.) सूचना के योग्य। सूचित करने योग्य।

सूच्यग्र [संज्ञा पु.] (सं) सूई की नोक।

सूच्यग्रस्तंभ,सूच्यग्रस्तम्भ [संज्ञा पु.](सं)मीनार

सूच्यग्रस्थूलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तृण। उलप।

सूच्याकार [वि.] (सं.) सूई के आकार का। लंबा और नुकीला।

सूच्यार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) शब्दों की व्यंजना शक्ति से निकलने वाला अर्थ (साहित्य)।

सूच्यास्य [संज्ञा पु.] (सं.) चूहा।

सूच्याह्व [संज्ञा पु.] (सं.) सतिवर नामक शाक।

सूछम*, सूछिम* [वि.] (हिं.) देखो 'सूक्ष्म'।

सूजंध [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सुगंध। खुशबू।

सूजन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सूजने की क्रिया या भाव। शोथ।

सूजना [क्रि. अ.] (हिं.) रोग, चोट अथवा वातप्रकोप आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।

सूजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुजनी'।

सूजा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सूआ। २-एक औजार जिसका सिरा नुकीला होता है। ३-छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसको टिकाने के लिये लगाया हुआ डंडा।

सूजाक [संज्ञा पु.] (फा.) मूत्रेन्द्रिय का एक रोग जो दूषित लिंग और योनि के संसर्ग से उत्पन्न होता है।

सूजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गेहूँ का एक विशेष प्रकार का दरदरा आटा। २-सूई। ३-कंबल की पट्टी सीने का सूआ। [संज्ञा पु.] कपड़े सीने वाला। दरजी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का सरेस।

सूझ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सूझने का भाव। २-दृष्टि। नजर। अनोखी कल्पना। उपज।

सूझना [क्रि. अ.] (हि.) १-दिखाई देना। नजर आना। २-ध्यान में आना। ३-छुट्टी पाना। मुक्त होना।

सूझबूझ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखने और समझने की शक्ति। समझ। अक्ल।

सूझा [संज्ञा पु.] (देश.) फारसी सङ्गीत का एक मुकाम।

सूट [संज्ञा पु.] (अं.) पहनने के सब कपड़े, विशेषकरके कोट पतलून आदि।

सूटकेस [संज्ञा पु.] (अं.) पहनने के कपड़े रखने का हलका बक्स।

सूटा+ [संज्ञा पु.] (हि.) तम्बाकू या गांजे का धूआं जोर से खींचना।

सूटरी+ [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भूसा।

सूड़ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सूँड़'।

सूड़ो [संज्ञा पु.] (डि.) शुक। तोता।

सूत [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रूई, रेशम आदि का वह पतला बटा तागा जिससे कपड़ा बुना जाता है। तन्तु। धागा। डोरा। २-किसी वस्तु में से निकलने वाला इस प्रकार का तार ३-लम्बाई नापने का एक छोटा मान। ४-इमारत के काम में लकड़ी आदि पर निशान डालने की डोरी। ५-करधनी। ६-देखो 'सुत' ७-सूत्र। मुहा०-सूतसूत-जरा जरा। सूत बराबर-बहुत महीन। सूत धेरना या बाँधना-निशान लगाना। [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सूती] १-एक वर्णसंकर जाति। २-रथ हांकने वाला। सारथि। ३-भाट। चारण। ४-पुराणों की कथा कहने वाला। ५-सूत्रधार। [वि.] १-प्रसूत। उत्पन्न। २-प्रेरणा किया हुआ। प्रेरित। [वि.] (हि.) अच्छा। भला।

सूतक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जन्म। २-घर में संतान होने अथवा किसी के मरने पर परिवार वालों को लगने वाला अशौच। ३-सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण। ४-पारा।

सूतकगेह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सूतिकागार'।

सूतका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सद्य:प्रसूता। जच्चा।

सूतकागृह [संज्ञा पु.] (सं.) सूतिकागार।

सूतकादि-लेप [संज्ञा पु.](सं.)वैद्यक में एक प्रकार का लेप जिसे फिरंगवात पर लगाया जाता है

सूतकान्न [संज्ञा पु.](सं.)सूतकी के घर का भोजन

सूतकाशौच [संज्ञा पु.](सं.) वह अशौच जो जन्म के समय होता है।

सूतकी [संज्ञा स्त्री.](सं.)जिसे सूतक या अशौच लगा हो।

सूतग्रामणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाँव का मुखिया

सूतज, सूततनय [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण।

सूतता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूत का भाव, धर्म या काम। २-सारथि का नाम।

सूतदार-पगरना [संज्ञा पु.](हिं.) नक्काशों की एक छेनी।

सूतधार [संज्ञा पु.] (हिं.) बढ़ई।

सूतनंदन, सूतनन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कर्ण। २-उग्रश्रवा।

सूतना+ [क्रि. अ.] (हिं.) सोना (शयन)। +[संज्ञा पु.] पाजामा।

सूतपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सारथि का बेटा। २-सारथि। ३-कर्ण। ४-कीचक।

सूतपुत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) कर्ण।

सूतफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) महीन आटा। मैदा।

सूतराज [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

सूतलड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) रहँट। अरहट।

सूतवशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाय।

सूतबाँ [वि.] (हिं.) (सूत से नापकर ठीक की हुई वस्तु के समान) सुडौल।

सूतसव [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

सूता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तन्तु। सूत। २-एक प्रकार का भूरे रंग का रेशम। ३-वह सीपी जिससे डोडे की अफीम निकालते हैं। [संज्ञा स्त्री.] प्रसूता।

सूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जन्म। २-प्रसव। ३-उद्गम। ४-पैदावार। ५-वह स्थान जहाँ सोमरस निकाला जाता था। ६-सोमरस निकालने की क्रिया। ७-सीना। सीवन। [संज्ञा पु.] १-विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम २-हंस।

सूतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो।

सूतिकागार, सूतिकागृह, सूतिकागेह, सूतिका-भवन [संज्ञा पु.] (सं.) वह कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। प्रसवगृह। सोरी

सूतिका-रोग [संज्ञा पु.] (सं.) प्रसूता को होने वाले रोग।

सूतिकाल [संज्ञा पु.] (सं.) बच्चा जनने का समय

सूतिकावल्लभ-रस [संज्ञा पु.](सं.) सूति के रोग की एक औषधि।

सूतिकावास [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूतिकागार'

सूतिकाषष्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पूजा या कृत्य जो बच्चा जनने के छठवें दिन होता है।

सूतिकाहर-रस [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध जो सूतिका रोग में दी जाती है।

सूतिग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूतक'।

सूतिगृह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सूतिकागार'।

सूतिमारुत [संज्ञा पु.] (सं.) वह पीड़ा जो बच्चा जनने के समय होती है।

सूतिमास [संज्ञा पु.] (सं.) वह महीना जिसमें किसी स्त्री को प्रसव हो।

सूतिवात [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सूतमारुत'।

सूती [वि.] (हिं.) सूत का बना हुआ। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सीपी। २-डोंडे में से अफीम काछने की सीपी। ३-सूत की पत्नी।

सूतीघर [संज्ञा पु.] देखो 'सूतिकागार'।

सूत्कार [संज्ञा पु.] देखो 'सीत्कार'।

सूत्तर [वि.] (सं.) अति उत्तम। बहुत श्रेष्ठ।

सूत्थान [वि.] (सं.) चतुर। होशियार।

सूत्पर [संज्ञा पु.] (सं.) शराब निकालने या चुवाने की क्रिया।

सूत्पलावती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक नदी (मार्कण्डेय पुराण)।

सूत्य [संज्ञा पु.] देखो 'सुत्य'।

सूत्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-यज्ञ के उपरांत होने-वाला स्नान। २-सोमरस निकलना। ३-सोमरस पीना।

सूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत। तागा। डोरा। २-जनेऊ। ३-करधनी। ४ नियम। व्यवस्था। ५-रेखा। लकीर। ६-थोड़े शब्दों में कहा हुआ। कहा हुआ पद या वचन जिसमें बहुत और गूढ़ अर्थ हों। ७-वह बात जिसके सहारे किसी अन्य बड़ी बात, घटना, रहस्य आदि का पता लगे। सुराग। कल्यू। ८-वह सांकेतिक पद अथवा शब्द जिसमें कोई वस्तु बनाने अथवा कार्य के मूल सिद्धांत, प्रतिक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो। फॉर्म्यूला। ९-एक प्रकार का वृत्त।

सूत्रकंठ, सूत्रकण्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-कबूतर। ३-खंजन। खंजरीट।

सूत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत। तन्तु। २-हार। ३-लोहे के तारों का बना कवच। ४-आटे या मैदा की सिवईं।

सूत्रकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्रग्रंथ का रचयिता।

सूत्रकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-बढ़ई का काम। २-राज या मेमार का काम।

सूत्रकर्मकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-बढ़ई। २-राज। मेमार।

सूत्रकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत्र-रचयिता। २-बढ़ई। ३-जुलाहा। ४-मकड़ी।

सूत्रकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत्र-रचयिता। २-बढ़ई। ३-राज। मेमार।

सूत्रकोण, सूत्रकोणक [संज्ञा पु.] (सं.) डमरू।

सूत्रकोश [संज्ञा पु.] (सं.) सूत की अंटी। पेचक लच्छा।

सूत्रक्रीड़ा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का सूत का खेल।

सूत्रगंडिका, सूत्रगण्डिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लकड़ी का एक औजार जिसका व्यवहार प्राचीनकाल में तन्तुवाय लोग कपड़ा बुनने में करते थे।

सूत्रग्रंथ, सूत्रग्रन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वह ग्रंथ जो सूत्रों में गिना जाता हो।

सूत्रग्रह [वि.](सं.) सूतधारण या ग्रहण करनेवाला

सूत्रण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूत बनाने की क्रिया २-सूत बटने की क्रिया।

सूत्रतंतु, सूत्रतन्तु [संज्ञा पु.] (सं.) सूत। तार

सूत्रतर्कुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तकला। टेकुवा।

सूत्रदरिद्र [वि.] (सं.) (वह वस्त्र) जिसमें सूत कम हो।

सूत्रधर, सूत्रधार [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह नट जो नाट्यशाला का प्रधान तथा नाटक की व्यवस्था करता है। २-बढ़ई। ३-पुराणानुसार एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।

सूत्रधारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूत्रधार की पत्नी। [संज्ञा पु.] (हिं.) सूत्र धारण करने वाला।

सूत्रधृक् [संज्ञा पु.](सं.) १-देखो 'सूत्रधार'। २-राज। मेमार।

सूत्रपात [संज्ञा पु.] (सं.) किसी काम का प्रारम्भ होना अथवा आरम्भ होने का पूरा आयोजन होना। नींव पड़ना।

सूत्रपिटक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धसूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।

सूत्रपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) कपास का पौधा।

सूत्रभिद् [संज्ञा पु.] (सं.) दरजी।

सूत्रभृत् [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्रधार।

सूत्रमध्यभू [संज्ञा पु.] (सं.) वत्तधूप। धूना।

सूत्रयंत्र, सूत्रयन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-करघा। २-सूत का बना जाल।

सूत्रयी [वि.] (हिं.) सूत्र जानने या रचने वाला

सूत्रला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तकला। टेकुवा।

सूत्रवान-कर्मांत, सूत्रवान-कर्मान्त [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़ा बुनने का कारखाना।

सूत्रवाप [संज्ञा पु.] (सं.) सूत बुनने की क्रिया। बुनाई।

सूत्रविद् [संज्ञा पु.] (सं.) सूत्रों का ज्ञाता अथवा पण्डित।

सूत्रवीणा [संज्ञा स्त्री.](सं.) एक प्रकार की वीणा जो प्राचीन काल में होती थी, उसमें तार के स्थान पर सूत लगाये जाते थे।

सूत्रवेष्टन [संज्ञा पु.] (सं.) १-करघा। २-बुनाई।

सूत्रशाख [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर।

सूत्रशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूत कातने अथवा एकत्र करने का कारखाना।

सूत्रांग, सूत्राङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तम काँसा।

सूत्रांत, सूत्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धसूत्र।

सूत्रांतक, सूत्रान्तक [वि.] (सं.) बौद्धसूत्रों का ज्ञाता।

सूत्रा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मकड़ी।

सूत्रात्मा [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवात्मा। २-एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु।

सूत्राध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़ों के व्यापार का अध्यक्ष।

सूत्रामा [संज्ञा पु] (सं) इन्द्र।

सूत्राली [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-माला। २-गले में धारण करने की मेखला।

सूत्रित [वि.] (सं.) सूत्र के रूप में लाया या बनाया हुआ। फॉरमूलेटेड।

सूत्री [वि] (सं.) जिसमें सूत्र हो। [संज्ञा पु] १-कौआ। काक। २-सूत्रधार।

सूत्रीय [वि.] (सं.) सूत्र-सम्बन्धी। सूत्र का।

सूथन [संज्ञा स्त्री] (देश.) १-एक तरह का पायजामा। २-एक जङ्गली वृक्ष।

सूथनी [संज्ञा स्त्री] (देश.) १-वह पायजामा जिसे मुसलमान स्त्रियाँ पहनती हैं। २-एक प्रकार का कन्द।

सूथार+ [संज्ञा पु.] (हि) बढ़ई। खाती।

सूद [संज्ञा पु] (फा.) १-लाभ। फायदा। २-ऋण दिये गये धन के बदले में (मूल से अलग) मिलने वाला धन। ब्याज। वृद्धि। सूद-दर-सूद-ब्याज का भी ब्याज। चक्रवृद्धि।
[संज्ञा पु](सं.) १-रसोइया। २-भोज्यपदार्थ व्यंजन। ३-सारथि का काम। ४-पाप। ५-दोष। ६-एक प्राचीन जनपद। ७-लोध।

सूदक [वि.] (सं.) नाश करने वाला।

सूदकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) रसोई बनाने का काम।

सूदकशाला [संज्ञा स्त्री.] (डि.) रसोईघर।

सूदखोर [संज्ञा पु.] (फा) सूद या ब्याज लेने वाला।

सूदखोरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सूद लेने का काम या भाव।

सूदता [संज्ञा स्त्री.](सं.) रसोइए का काम या पद

सूदत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सूदता।

सूदन [संज्ञा पु.](सं.)१-वध करना। मार डालना २-अङ्गीकरण। ३-फेंकने की क्रिया। [वि.] विनाश करने वाला।

सूदना* [क्रि. स.] (हिं) नष्ट करना।

सूद्र [संज्ञा पु.] (डिं) शूद्र।

सूदशाला [संज्ञा स्त्री.](सं.) पाकशाला। रसोईघर

सूदशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाकशास्त्र।

सूदा [संज्ञा पु.] (देश.) ठगों की मंडली में का वह व्यक्ति जो यात्रियों को फुसलाकर अपने दल में लाता है।

सूदाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) पाकशाला का अधिकारी।

सूदित [वि.](सं.)१-आहत। घायल। २-विनष्ट ३-निहत।

सूदितृ [वि] (सं.) वध या विनाश करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) रसोइया। पाचक।

सूदी [वि.] (फा.) (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर दी गई हो। ब्याजू।

सूद्र [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शूद्र'।

सूध+ [वि.] (हिं.) १-देखो 'सीधा'। २-देखो 'शुद्ध'।

सूधना* [क्रि. अ] (हि) १-सिद्ध होना। २-सत्य या ठीक होना।

सूधरा*, सूधा [वि.] (हि.) देखो 'सीधा'।

सूधे [क्रि. वि.] (हिं.) सीधी तरह से। मुहा०-सूधेसूध-कोरा। साफ-साफ़।

सून [संज्ञा पु] (सं.) १-प्रसव। जनना। २-फूल की कली। ३-फूल। ४-पुत्र। बेटा। [वि.] (सं.) १-विकसित (पुष्प)। २-उत्पन्न। जात * [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शून्य'। * [वि.] (हि.) १-निर्जन। सुनसान। २-रहित। हीन [संज्ञा पु.] (देश.) एक सदाबहार वृक्ष।

सूनशर [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

सूनसान+ [वि.] (हिं.) देखो 'सुनसान'।

सूना [वि.] (हि.) [स्त्री. सूनी] जिसमें या जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकांत। मुहा०-सूना *लगना या सूना-सूना लगना*-उदास मालूम होना। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पुत्री। बेटी। २-कसाईखाना। ३-मांस की बिक्री। ४ गृहस्थ के घर में ऐसा स्थान-चूल्हा, चक्की, ओखली घड़ा, झाड़ू में कोई भी वस्तु जिससे जीव-हिंसा रहने की सम्भावना रहती है। ५-हत्या। ६-हाथी के अंकुश का दस्ता।

सूनादोष [संज्ञा पु] (सं) वह दोष या पाप जो चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल आदि से होने वाली हिंसा से होता है।

सूनापन [संज्ञा पु.] (हि) १-सूना होने का भाव। २-सन्नाटा।

सूनिक, सूनी [संज्ञा पु] (सं.) मांस को बेचने वाला।

सूनु [संज्ञा पु] (सं) १-पुत्र। २-छोटा भाई। ३-नाती। ४-एक वैदिक ऋषि का नाम। ५-सूर्य। ६-आक। मदार। ७-सोमरस चुवाने वाला।

सूनू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बेटी। पुत्री।

सूनृत [संज्ञा पु.](सं.) १-सत्य और प्रिय भाषण २-मंगल। आनन्द। [वि.]१-सत्य और प्रिय २-दयालु।

सूनृता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सत्य और प्रिय भाषण। २-सत्य। ३-धर्म की पत्नी का नाम ४-एक अप्सरा। ५-उत्तानपाद की पत्नी का नाम।

सून्मद, सून्माद [वि.] (सं.) जिसे उन्माद रोग हुआ हो। पागल।

सूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-पकाई हुई दाल या उस का पानी। २-रसेदार तरकारी। ३-रसोइया ४-बाण। तीर। [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज फटकने का छाज। सूप भर-बहुत-सा।
[संज्ञा पु.] (देश.)१-कपड़े या सन का झाड़ू २-एक प्रकार का काला कपड़ा।

सूपक [संज्ञा पु.] (हिं.) रसोइया।

सूपकर्त्ता, सूपकार [संज्ञा पु.] (सं) रसोइया। पाचक।

सूपकारी, सूपकृत् [संज्ञा पु.] देखो 'सूपकार'।

सूपच* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्वपच'।

सूपझरना [संज्ञा पु] (हिं.) सूप की तरह का पर बारीक अन्न छानने का बरतन।

सूपड़ा [संज्ञा पु.] (डि.) सूप। छाज।

सूपधूपक, सूपधूपन [संज्ञा पु] (सं.) हींग।

सूपनखा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शूर्पणखा'।

सूपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनमूँग। मुद्गपर्णी।

सूपशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) पाकशास्त्र।

सूपस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) रसोईघर।

सूपांग, सूपाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) हींग।

सूपा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) छाज। सूप।

सूपिक [संज्ञा पु.] (सं.)१-पकी हुई दाल या रसा आदि। २-रसोइया।

सूपिय [वि.] देखो 'सूप्य'।

सूपोदन [संज्ञा पु.] (सं.) दाल और भात।

सूप्य [वि.] (सं) १-दाल या रसे के लायक। २-सूप-सम्बन्धी।
[संज्ञा पु.] (सं.) रसेदार खाद्यपदार्थ।

सूफ [संज्ञा पु](अ.) १-पशम। ऊन। २-काली स्याही वाली दवात में डाला जाने वाला लत्ता या चीथड़ा (देसी)। (हिं.) देखो 'सूप'।

सूफी [संज्ञा पु.] (अ.) १-मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो अपने विचारों की उदारता के लिये प्रसिद्ध है तथा जिसमें साधारण मुसलमानों का कट्टरपन बिलकुल नहीं है। २-इस सम्प्रदाय का अनुयायी।

सूब [संज्ञा पु.] (देश.) ताँबा।

सूबड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) ताँबा और जस्ता मिली चाँदी।

सूबड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दमड़ी।

सूबा [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसी देश का कोई भाग। प्रान्त। प्रदेश। २-देखो 'सूबेदार।

सूबेदार [संज्ञा पु.] (फा.) १-किसी सूबे अथवा प्रांत का प्रधान अधिकारी अथवा शासक। २-सेना विभाग में एक छोटा पद। ३-इस पद पर रहने वाले व्यक्ति।

सूबेदार-मेजर [संज्ञा पु.](फा., अं.) सेना का एक छोटा अधिकारी या अफसर।

सूबेदारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सूबेदार का पद या काम।

सूभर* [वि.] (हिं.) १-सफेद। २-सुन्दर।

सूम [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूध। २-जल। ३-आकाश। ४-स्वर्ग। डिं.) फूल। पुष्प।
[वि.] (हिं.) कृपण। कंजूस।

सूमलू [संज्ञा पु.] (देश.) चित्रक नामक पौधा।

सूमाँ [संज्ञा स्त्री.](देश.) टूटीहुई खाट की रस्सी

सूमी [संज्ञा पु.] (देश.) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।

सूय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोमरस निकालने की

क्रिया। २-यज्ञ।

सूरंजान [संज्ञा पु.] (फा.) केसर की जाति का पौधा जिसका कंद दवा के काम में आता है।

सूर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सूरी] १-सूर्य। २-आक। मदार। ३-पंडित। आचार्य। ४-जैनों के अनुसार वर्त्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवें अर्हत् कुंथु के पिता का नाम। ५-मसूर। ६-देखो 'सूरदास'। ७-अंधा। ८-छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण तथा १५२ मात्राएँ होनी हैं।

※[संज्ञा पु.] (हिं.) १-शूरवीर। २-सूअर। ३-भूरे रङ्ग का घोड़ा। ४-देखो 'शूल'।

यौ०-सूरसावन्त (सामन्त)-१-बहुत बड़ा बहादुर। २-युद्ध का सञ्चालन करने वाला अधिकारी। ३-सरदार। नायक।

[संज्ञा पु.] (देश.) पठानों की एक जाति।

सूरकंद, सूरकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) जमीकन्द।

सूरकांत, सूरकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकान्त।

सूरकुमार [संज्ञा पु.] (हिं.) वसुदेव।

सूरकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वमित्र के एक पुत्र का नाम।

सूरज [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्य। २-एक प्रकार का गोदना (स्त्री)। ३-देखो 'सूरदास'। ४-शनि। ५-सुग्रीव। मुहा०-*सूरज पर थूकना*-भले को बुरा कहना। *सूरज को दीपक दिखाना*-१-बहुत को थोड़ा करके बतलाना। २-जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना। *सूरज पर धूल फेंकना*-निर्दोष को दोष लगाना।

सूरजतनी※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सूर्यतन्या'

सूरजभगत [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की गिलहरी।

सूरजमुखी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक पौधा जिसके पीले फूल दिन में सीधे खिले रहते हैं और रात को झुक जाते हैं। २-एक प्रकार का शीशा जिस पर सूर्य का ताप पड़कर एक केंद्र में एकत्र होता और वहाँ ताप या अग्नि उत्पन्न करता है। ३-बड़े पंखे के आकार का एक प्रकार का राजचिह्न। ४-मनुष्य के शरीर का एक विशेष प्रकार का रोगजन्य-वर्ण जो युरोपियनों आदि के वर्ण से मिलता-जुलता होता है। ५-वह हलकी बदली जो सबेरे शाम सूर्यमण्डल के आसपास दिखाई पड़ती है।

सूरजसुत [संज्ञा पु.] (हिं.) सुग्रीव।

सूरजसुता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सूर्यसुता'।

सूरजा [संज्ञा पु.] (सं.) यमुना।

सूरण [संज्ञा पु.] (सं.) सूरन। जमीकंद।

सूरत [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-रूप। आकृति। शक्ल। २-छवि। सौन्दर्य। ३-उपाय। युक्ति तदबीर। ४-अवस्था। दशा। हालत।

सूरत करना-१-उपाय करना। २-ख्याल करना। *सूरत दिखाना*-सामने आना। *सूरत बिगड़ना*-रूप रंग आदि खराब होना। *सूरत बिगाड़ना*-१-बदसूरत करना। २-अपमानित करना। ३-दण्ड देना। *सूरत बनाना*-१-रूप बनाना। २-भेस बदलना। ३-नाक, भौं सिकोड़ना। ४-चित्र बनाना। *सूरत नजर न आना*-कोई उपाय न सूझना। [संज्ञा पु.] (हिं.) बम्बई राज्य का एक नगर। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जहरीला पौधा। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कुरान का कोई प्रकरण। ※[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुध। ध्यान। स्मरण। [वि.] (हिं.) अनुकूल। मेहरबान।

सूरता※, **सूरताई**※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शूरता'।

सूरति※ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-देखो 'सूरत'। २-सुध। स्मरण।

सूरतीखपरा [संज्ञा पु.] (हिं.) खपरिया।

सूरदास [संज्ञा पु.](सं.) हिंदी के प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि जो अंधे थे।

सूरन [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का कन्द जो सब शाकों में श्रेष्ठ माना गया है। जमींकंद

सूरपनखा※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शूर्पनखा'।

सूरपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सुग्रीव।

सूरबार [संज्ञा पु.] (हिं.) पायजामा।

सूरबीर※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शूरवीर'।

सूरमा [संज्ञा पु.] (हिं.) वीर। बहादुर।

सूरमापन [संज्ञा पु.] (हिं.) शूरता। बहादुरी।

सूरमुखी※ [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यमुखी शीशा।

सूरमुखीमनि※ [संज्ञा पु.] (हिं.) सूर्यकांतमणि।

सूरवाँ※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूरमा'।

सूरस [संज्ञा पु.] (देश.) परिया की लकड़ी (जुलाहा)।

सूरसागर [संज्ञा पु.] (हिं.) हिन्दी के महाकवि सूरदासकृत एक ग्रंथ का नाम। इसमें श्रीकृष्ण की लीला अनेक राग-रागिनियों में वर्णित है

सूर-सावंत [संज्ञा पु.] (हिं.)१-युद्धमन्त्री। २-नायक। सरदार।

सूरसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनिग्रह। २-सुग्रीव

सूरसूत [संज्ञा पु.] (सं.) अरुण जो सूर्य का सारथि है।

सूरसेन※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शूरसेन'।

सूरसेनपुर※ [संज्ञा पु.] (हिं.) मथुरा।

सूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) अनाज के गोले में पाया जाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

[संज्ञा पु.] (अं.) कुरान का कोई एक प्रकरण

सूराख [संज्ञा पु.](फा.) १-छेद। छिद्र। २-शाला

सूरिजान [संज्ञा पु.] देखो 'सूरंजान'।

सूरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-यज्ञ कराने वाला। २-पण्डित। आचार्य। ३-वृहस्पति का नाम। ४-कृष्ण का एक नाम। ५-सूर्य। ६-यादव।

सूरी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विद्वान। पंडित। २-※भाला। ※[संज्ञा स्त्री.] देखो 'सूली'। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-विदुषी। पंडिता। २-सूर्य की पत्नी। ३-कुन्ती। ४-राई। राजसर्षप

सूरुज※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूर्य'।

सूरुवाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूरमा'।

सूरेठ [संज्ञा पु.] (देश.) बहेलियों की लासा लगाने की लकड़ी।

सूर्क्षण [संज्ञा पु.] (सं.) अनादर।

सूर्द्य [संज्ञा पु.] (सं.) उड़द। माष।

सूर्प [संज्ञा पु.] (सं.) सूप। शूर्प।

सूर्पनखा※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शूर्पणखा'।

सूर्मि, सर्मी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लोहे की बनी स्त्री की प्रतिमूर्त्ति। २-पानी का नल।

सूर्य [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सूर्या, सूर्याणी] १-हमारे सौरजगत् का वह सब से बड़ा और ज्वलन्त पिंड जिससे सब ग्रहों को गरमी और प्रकाश मिलता है। प्रभाकर। दिनकर। २-बारह की संख्या। ३-आक। मदार। ४-बालि के एक पुत्र का नाम।

सूर्यकमल [संज्ञा पु.] (सं.) सूरजमुखी फूल।

सूर्यकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की किरण।

सूर्यकांत, सूर्यकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। २-सूरजमुखी शीशी। ३-एक प्रकार का फूल। ४-एक पर्वत का नाम।

सूर्यकांति, सूर्यकान्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सूर्य की दीप्ति या प्रकाश। २-एक प्रकार का पुष्प ३-तिल का फूल।

सूर्यकाल [संज्ञा पु.] (सं.) दिन का समय।

सूर्यकालानलचक्र [संज्ञा पु.](सं.) फलित ज्योतिष में एक चक्र जिससे मनुष्य का शुभाशुभ फल जाना जाता है।

सूर्यक्रांत, सूर्यक्रान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-संगीत में एक ताल। २-एक प्राचीन जनपद।

सूर्यक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यमंडल।

सूर्यगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १- एकबोधिसत्व का नाम। २-एक बौद्धसूत्र का नाम।

सूर्यग्रह [संज्ञा पु.](सं.) १-नवग्रहों में से पहला सूर्य। २-सूर्यग्रहण। ३-राहु और केतु। ४-जलघट की तली।

सूर्यग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) पृथ्वी और सूर्य के मध्य में चन्द्रमा के आजाने और उसकी छाया पड़ने से होने वाला सूर्यग्रहण।

सूर्यज [संज्ञा पु.] (सं.) १-यम। २-शनिग्रह। ३-सुग्रीव। ४-कर्ण। ५-रेवंत। ६-सावर्णिमनु

सूर्यजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना नदी।

सूर्यतनय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सूर्यज'।

सूर्यतनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

सूर्यतापिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक उपनिषद् का नाम।

सूर्यदास [संज्ञा पु] (सं) १-कविवर सूरदास । २-संस्कृत के एक प्राचीन कवि का नाम ।

सूर्यदेव [संज्ञा पु] (सं.) भगवान् सूर्य ।

सूर्यध्वज [संज्ञा पु.] (सं) शिव ।

सूर्यनंदन, सूर्यनन्दन [संज्ञा पु] (सं.) १-शनि । २-कर्ण ।

सूर्यनक्षत्र [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य के साथ नक्षत्र का योग ।

सूर्यनाभ [संज्ञा पु.] (सं) एक दानव का नाम ।

सूर्यनारायण [संज्ञा पु] (सं) सूर्यदेवता ।

सूर्यनेत्र [संज्ञा पु] (सं) एक गरुड़ का नाम ।

सूर्यपति [संज्ञा पु.] (सं) सूर्यदेवता ।

सूर्यपत्नी [संज्ञा स्त्री] (सं.) संज्ञा । छाया ।

सूर्यपत्र [संज्ञा पु](सं.) १-इसरमूल । २-हुरहुर । ३-आक या मदार का पौधा ।

सूर्यपर्णी [संज्ञा स्त्री](सं) १-इसरमूल । २-माषपर्णी

सूर्यपर्व [संज्ञा पु.](सं.) वह जब सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है ।

सूर्यपाद [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य की किरण ।

सूर्यपुत्र [संज्ञा पु] (सं) १-शनि । २-यम । ३-वरुण ४-सुग्रीव । ५-कर्ण । ६-अश्विनीकुमार ।

सूर्यपुत्री [संज्ञा स्त्री (सं.) १-यमुना । २-बिजली ।

सूर्यपुराण [संज्ञा पु](सं.) एक छोटा सा ग्रंथ जिसमें सूर्य के माहात्म्य का वर्णन है ।

सूर्यपूजा [संज्ञा स्त्री] (सं) सूर्य की उपासना ।

सूर्यप्रदीप [संज्ञा पु.](सं) बौद्धोंके अनुसार एक प्रकार की समाधि ।

सूर्यप्रभ [वि] (सं.) सूर्य के समान दीप्ति वाला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की समाधि । २-श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम । ३-एक बोधिसत्व

सूर्यप्रभाव [वि](सं) सूर्य से उत्पन्न या निकला हुआ । [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनि । २-कर्ण ।

सूर्यप्रशिष्य [संज्ञा पु.] (सं) राजा जनक ।

सूर्यप्राणचक्र [संज्ञा पु] (सं.) एक ज्योतिश्चक्र जिससे कोई कार्य आरम्भ करते समय उसका शुभाशुभ फल निकालते हैं ।

सूर्यबिंब, सूर्यबिम्ब [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य का मंडल

सूर्यभक्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्योपासक । २-बंधूक पुष्पवृक्ष ।

सूर्यभक्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य की उपासना करने वाला । २-दुपहरिया । बन्धूक ।

सूर्यभक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं) हुरहुर । आदित्यभक्ता

सूर्यभा [वि] (सं.) सूर्य के समान दीप्तिवाला ।

सूर्यभ्राता [संज्ञा पु.] ऐरावत हाथी ।

सूर्यमंडल, सूर्यमण्डल [संज्ञा पु](सं.) सूर्य का घेरा

सूर्यमणि [संज्ञा पु] (सं) १-सूर्यकांतमणि । २-एक पुष्पवृक्ष ।

सूर्यमाल [संज्ञा पु.] (सं.) शिव ।

सूर्यमास [संज्ञा पु] देखो 'सौरमास' ।

सूर्यमुखी [संज्ञा पु] देखो 'सूरजमुखी' ।

सूर्ययंत्र, सूर्ययन्त्र [संज्ञा पु.] (सं) १-सूर्य के मंत्र और बीज से अङ्कित ताम्रपत्र जिसका सूर्य के उद्देश्य से पूजन किया जाता है । २-दूरबीन जिससे सूर्य की गति आदि का हाल जाना जाता है ।

सूर्यरश्मि [संज्ञा पु.](सं)१ सूर्य की किरण । २-सविता

सूर्यर्क्ष [संज्ञा पु] (सं) वह नक्षत्र जिसमें सूर्य की स्थिति हो ।

सूर्यलता [संज्ञा स्त्री] (सं) आदित्यभक्ता लता ।

सूर्यलोक [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य के रहने का लोक विशेष (कहते हैं कि युद्धक्षेत्र में लड़कर मरनेवाले इसी लोक में जाते हैं ।)

सूर्यवंश [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यवंशी राजाओं का कुल या वंश ।

सूर्यवंशी [वि.](हि) जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो ।

सूर्यवंश्य [वि.] (सं.) सूर्यवंश में उत्पन्न ।

सूर्यवर्चस् [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य के समान चमकीला

सूर्यवल्लभा [संज्ञा स्त्री.](सं)१ कमलिनी । २-हुरहुर

सूर्यवल्ली [संज्ञा स्त्री] (सं) १ अर्कपुष्पी । २-क्षीरकाकोली ।

सूर्यवान् [संज्ञा पु.] (सं) एक पर्वत ।

सूर्यवार [संज्ञा पु.] (सं.) रविवार ।

सूर्यविघ्न [संज्ञा पु] (सं.) विष्णु ।

सूर्यविलोकन [संज्ञा पु.](सं) चार मास का होने पर शिशु को बाहर निकालकर उसको सूर्य का दर्शन कराने की विधि ।

सूर्यवृक्ष [संज्ञा पु.](सं) १-आक का पौधा । २-अर्कपुष्पी ।

सूर्यवेश्म [संज्ञा पु](सं) सूर्य की परिधि । सूर्यमण्डल

सूर्यव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-रविवार को किया जाने वाला एक व्रत । २-ज्योतिष में एक चक्र ।

सूर्यशत्रु [संज्ञा पु.] (सं.) एक राक्षस का नाम ।

सूर्यशिष्य [संज्ञा पु.] (सं) १-याज्ञवल्क्य । २ जनक

सूर्यशोभा [संज्ञा स्त्री](सं) १-सूर्य का प्रकाश । धूप २-एक प्रकार का फूल ।

सूर्यसंक्रम, सूर्यसंक्रमण [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना ।

सूर्यसंक्रांति, सूर्यसंक्रान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं)देखो 'सूर्यसंक्रम' ।

सूर्यसंज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) १ सूर्य । २-आक । ३-केसर ४-ताँबा । ५-एक प्रकार का मानिक ।

सूर्यसारथि [संज्ञा पु.] (सं.) अरुण ।

सूर्यसुत [संज्ञा पु.](सं.) १-शनि । २-कर्ण । ३-सुग्रीव

सूर्यसूत [संज्ञा पु.] (सं.) अरुण ।

सूर्यस्तुत [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का यज्ञ जो एक दिन मे होता है ।

सूर्यांशु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य की किरण ।

सूर्या [संज्ञा स्त्री.](सं) १-सूर्य की पत्नी, संज्ञा । २-नवविवाहिता स्त्री । ३-इन्द्रवारुणी ।

सूर्याक्ष [वि.] (सं.) सूर्य के समान आँखों वाला [संज्ञा पु.] विष्णु ।

सूर्याणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की पत्नी, संज्ञा ।

सूर्यातप [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य की गरमी । धूप ।

सूर्यात्मज [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनि । २-कर्ण । ३-सुग्रीव ।

सूर्यापाय [संज्ञा पु] (सं.) सूर्यास्त का समय ।

सूर्यालोक [संज्ञा पु] (सं.) १-सूर्य का प्रकाश । २-गरमी ।

सूर्यावर्त्त [संज्ञा पु] (सं) १-हुरहुर का पौधा । २-सवर्चला । ३-गजपिप्पली । ४-आधासीसी नामक सिर की पीड़ा । ५-एक प्रकार का ध्यान या समाधि । ६-एक प्रकार का जलपात्र ।

सूर्यावर्त्त-रस [संज्ञा पु](सं) वैद्यक में एक रसौषध ।

सूर्याश्म [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यकांतमणि ।

सूर्याश्व [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का घोड़ा ।

सूर्यास्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-संध्या को सूर्य का छिपना या डूबना । २-संध्या का समय ।

सूर्याह्व [संज्ञा पु](सं) १-ताँबा । २-आक । मदार ३-महेंद्रवारुणी ।

सूर्येदुसंगम, सूर्येन्दुसङ्गम [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य तथा चन्द्रमा का संगम या मिलन अर्थात् दोनों की एक राशि में स्थिति । अमावस्या ।

सूर्योढ़ [वि.] (सं.) (अतिथि) जो संध्या समय आता है । [संज्ञा पु.] (सं) सर्यास्त समय ।

सूर्योत्थान [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य का चढ़ना ।

सूर्योदय [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य का उदय होना या निकलना । २-सूर्य निकलने का समय । प्रातःकाल । सबेरा ।

सूर्योदयगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) उदयाचल ।

सूर्योपस्थान [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य की एक प्रकार की उपासना ।

सूर्योपासक [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य की उपासना करने वाला ।

सूर्योपासना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्य की आराधना या पूजा ।

सूल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शूल' ।

सूलधर, सूलधारी [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शूलधर'

सूलना [क्रि. स.] (हिं.) १-नुकीली वस्तु से बेदना २-२-कष्ट देना । [क्रि. अ.] १-नुकीली वस्तु से छिदना । २-पीड़ित या व्यथित होना ।

सूलपानि [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'शूलपाणि' ।

सूली [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-लोहे आदि का वह नुकीला डण्डा या इसी तरह की और चीज जिसपर बैठा या लटकाकर प्राचीनकाल में अपराधियों को प्राणदण्ड दिया जाता था । २-प्राणदण्ड । ३-देखो 'फाँसी' । ४-एक प्रकार का नरम लोहा जिसको छड़े बनती हैं । ५-शिव । [संज्ञा पु.] (देश) दक्षिण दिशा ।

सूवना [क्रि. अ] (हि.) बहना । प्रवाहित होना [संज्ञा पु.] देखो 'सूआ' ।

सूवर [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सूअर' ।

सूवा [संज्ञा पु.] (हि.) सुग्गा । तोता । [संज्ञा पु.] (?) फारसी सङ्गीत के अनुसार २४ शोभाओं में से एक ।

सूस, सूसमार [संज्ञा पु.] (हि) सूँस नामक जलजन्तु जो मगर की तरह का होता है । शिशुमार ।

सूसला+ [संज्ञा पु] (हि.) खरगोश ।

सूसि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूस' ।

सूसी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धारीदार या चारखाने वाला कपड़ा।

सूहा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का लाल रङ्ग। २-सम्पूर्ण जाति का एक राग। [वि.] [स्त्री. सूही] लाल रङ्ग का।

सूहा-कान्हड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।

सूहा-टोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति की एक सङ्कर रागिनी।

सूहा-बिलावल [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।

सूहा-श्याम [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक सङ्कर राग।

सूही [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'सूहा'।

सृंखला* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शृंखला'।

सृंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शृंग'।

सृंगवेरपुर* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शृंगवेरपुर'।

सृंगी* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शृंगी'।

सृंजय, सृञ्जय [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनु के एक पुत्र का नाम। २-पुराणोक्त एक वंश।

सृंजयी, सृञ्जयीस [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भजमान की दो पत्नियों का नाम।

सृकंडू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खाज। खुजली।

सृक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शूल। भाला। २-बाण तीर ३-वायु। हवा। ४-कमल का फूल। *[संज्ञा पु.] (हिं.) माला।

सृकाल [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल। गीदड़।

सृक्क [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सृक्व'।

सृक्कणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सृक्व'।

सृक्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जोंक।

सृक्व [संज्ञा पु.] (सं.) मुख के दोनों ओर के कोने

सृक्वणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सृक्व'।

सृग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बरछा। भाला। २-बाण। तीर। [संज्ञा पु.] माला। हार। गजरा।

सृगाल [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री सृगाली] १-गीदड़ शृगाल। २-धूर्त्त। धोखेबाज। ३-कायर। डरपोक ४-दुःशील व्यक्ति। बदमिजाज आदमी।

सृगालकंटक, सृगालकण्टक [संज्ञा पु.] (सं) भड़भाँड़ (पौधा)।

सृँगालकोलि [संज्ञा पु.] (सं.) बेर का पेड़ या फल।

सृगालघंटी, सृगालघण्टी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तालमखाना।

सृगालजंबु, सृगालजम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) १-तरबूज २-झड़बेरी।

सृगालरूप [संज्ञा पु] (सं.) शिव।

सृगालवदन [संज्ञा पु.] (सं.) एकअसुर का नाम।

सृगालवास्तुक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बथुआ का साग।

सृगालविन्ना, सृगालवृंता, सृगालवृन्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिठवन।

सृगालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सियारिन। गीदड़ी २-लोमड़ी। ३-पलायन। भगदड़। ४-उपद्रव। हंगामा। ५-तालमखाना। ६-बिदारीकन्द।

सृगालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गीदड़ी।

सृगाली [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'सृगालिका'।

सृग्विन* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) स्रग्विणी।

सृजक* [संज्ञा पु.] (हिं.) सृष्टि करने वाला।

सृजन* [संज्ञा पु.] (हिं) १-सृष्टि रचना करने की क्रिया। २-सृष्टि।

सृजनहार* [संज्ञा प.] (हिं.) सृष्टिकर्त्ता।

सृजना* [क्रि. स.] (हिं.) सृष्टि करना। रचना करना

सृजय [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का पक्षी।

सृजया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नीलमक्षिका।

सृज्य [वि.] (सं.) १-जो उत्पन्न किया जाने वाला हो। २-जो छोड़ा या निकला जाने वाला हो।

सृणि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शत्रु। २-चन्द्रमा। [उभय.] अंकुश।

सृणिक [संज्ञा पु.] (स.) अंकुश। [संज्ञा स्त्री.] थूक लार।

सृणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हँसिया। दाँती।

सृणीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। २-अग्नि। ३-वज्र। ४-मदोन्मत्त व्यक्ति।

सृणीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थूक। लार।

सृत [वि.] (सं.) चला या खिसका हुआ।

सृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पथ। रास्ता। २-गमन चलना। ३-सरकना। खिसकना।

सृत्वन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रजापति। २-सरकना। ३-बुद्धि।

सृत्वरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माता।

सृदर [संज्ञा पु.] (सं.) साँप। सर्प।

सृदाकु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वायु। २-अग्नि। ३-दावानल। ४-वज्र। ५-गोध। गोह। ६-नदी। ७-मृग।

सृप [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक असुर। २-चन्द्रमा।

सृपमन् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सर्प। शिशु। ३-तपस्वी

सृपाट [संज्ञा पु.] (सं.) वह छोटी पत्ती जो फूल के नीचे होती है।

सृपिटवा, सृपाटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चोंच चंचु।

सृप्र [वि.] (सं.) १-चिकना। स्निग्ध। २-जिस पर से हाथ या पैर फिसले। [संज्ञा पु.] १-चन्द्रमा २-मधु। शहद।

सृप्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिप्रानदी।

सृमर [वि.] (सं.) गमन करने वाला। जाने वाला। [संज्ञा पु.] १-एक प्रकार का मृग। २-एक असुर

सृष्ट [वि.] (सं.) १-जिसकी सृष्टि या रचना की गई हो। बनाया हुआ। निर्मित। रचित। २-छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३-युक्त। ४-निश्चित। ५-अलंकृत। भूषित। ६-बहुल। [संज्ञा पु.] तेंदू। तिंदुक

सृष्टमारुत [वि.] (सं.) पेट की हवा को निकालने वाला (सुश्रुत)।

सृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्पत्ति। पैदाइश। २-निर्माण रचना। ३-संसार। दुनिया। ४-संसार की उत्पत्ति। ५-प्रकृति। निसर्ग। ६-उदारता।

सृष्टिकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) संसार की रचना करने वाला (ब्रह्मा या ईश्वर)।

सृष्टिकृत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सृष्टिकर्ता। २-पित्तपापड़ा।

सृष्टिदा [संज्ञा स्त्री.] (सं) ऋद्धि नाम की अष्टवर्गीय औषध।

सृष्टिपत्तन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की मंत्रिराशि

सृष्टिप्रदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) श्वेत कंटकारि।

सृष्टिविज्ञान, सृष्टिशास्त्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, बनावट और विकास का विवेचन होता है। कॉस्मोजेनी।

सेंक [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सेंकने की क्रिया या भाव २-ताप। गरमी।

सेंकना [क्रि. स.](हिं.)१-आग पर या उसके सामने रखकर साधारण गरमी पहुँचाना। २-धूप में गरमी पहुँचाने वाली वस्तु के सामने रहकर उसकी गरमी से लाभ उठाना। आँखें सेंकना-सुंदर रूप देखकर आँखें तृप्त करना। धूप सेंकना-धूप में रह कर शरीर को गरम करना।

सेंकी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तश्तरी। रकाबी।

सेंगर [संज्ञा पु.](हिं.) १-एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २-इस पौधे की फली। ३-बबूल की फली। ४-एक प्रकार का अगहनिया धान ५-क्षत्रियों की एक जाति या शाखा।

सेंगरा [संज्ञा पु.] (देश.) वह मोटा डंडा जिससे लटका कर भारी पत्थर या धरन एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।

सेंटर [संज्ञा पु.](अं.) १-गोलाई या वृत्त के बीच का बिंदु। मध्यबिंदु। केंद्र। २-प्रधान स्थान।

सेंट्रल [वि] (अं.) जो केंद्र या मध्य में हो। केंद्रीय प्रधान।

सेंठा[संज्ञा पु.](देश.)१-मूँज या सरकंडे का निचला मजबूत भाग। २-एक प्रकार की घास। ३-जुलाहों की डाँड़

सेंढ़ [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार का खनिज पदार्थ।

सेंत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पास का कुछ खर्च न होना सेंत का-जिसमें कुछ व्यय न हुआ हो। मुफ्त का। सेंत में-१-बिना कुछ खर्च का। मुफ्त में। २-व्यर्थ। [वि.] (हिं.) बहुत अधिक।

सेंतना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सतना'।

सेंतमेंत [क्रि वि.](हिं.)१-मुफ्त में। २-व्यर्थ फजूल

सेंति, सेंती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेंत'। *[प्रत्य.](हिं.)पुरानी हिन्दी में करण और अपादान की विभक्ति।

सेंथा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेंठा'।

सेंथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरछी। भाला।

सेंद+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेंध'।

सेंदुर* [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंदूर। ईंगुर का चूर्ण या बुकनी। सेंदुर चढ़ना-स्त्री का विवाह होना। सेंदुर देना-विवाह के समय पति का पत्नी की मांग भरना।

सेंदुरदानी+[संज्ञा स्त्री.](हिं.)सिंदूर रखने की डिबिया

सेंदुरा [वि.] (हिं.) [स्त्री सेंदुरी] सिन्दूर के रङ्ग का लाला।

सेंदुरिया [संज्ञा पु.] (हिं.) एक सदाबहार पौधा। यौ०-सेंदुरिया आम-लाल छिलके का आम।

सेंदुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लालगाय।

सेंद्रिय, सेन्द्रिय [वि.] (सं.) १-जिसमें इन्द्रियाँ २-जिसमें मरदानगी हो।

सेंध [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चोरी करने के लिये

खोदकर बनाया हुआ छेद जिसमें से होकर चोर घर में घुसता है। नकब।

सेंधना [क्रि. स.] (हिं.) सेंध या सुरङ्ग लगाना।

सेंधा [संज्ञा पु.](हिं.) खान से निकलने वाला नमक सैंधव।

सेंधिया [वि.] (हिं.) सेंध लगाने वाला। दीवार में छेद करके चोरी करने वाला। [संज्ञा पु.] देखो 'सिंधिया'।

सेंधी [संज्ञा स्त्री.](हिं.)१-खजूर। २-खजूर की शराब ३-खेत की ककड़ी। फूट। ४-कचरी।

सेंधुआर [संज्ञा पु.](देश.)एक प्रकार का मांसाहारी जंतु।

सेंधुर+ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सेंदुर'।

सेंभा [संज्ञा पु.] (देश.) घोड़ों का एक वातरोग।

सेंवई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) गुँधे हुए मैदे से बनाये हुए पतले लच्छे जो दूध या पानी में पका कर खाये जाते हैं।

सेंवर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेमल'

सेंशर [संज्ञा पु.] (अं.) दोष। इलजाम।

सेंसर [संज्ञा पु.](अं.) वह राजकीय अधिकारी जिसे पुस्तकें, समाचार पत्र आदि छपने अथवा प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, चित्रपट दिखाये जाने अथवा तार से कहीं समाचार भेजे जाने के पूर्व देखने या जाँचने और रोकनेका अधिकार होता है

सेंसस [संज्ञा पु.] (अं.) जनगणना। मर्दुमशुमारी।

सेंह+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेंध'।

सेंहा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुआँ खोदने वाला। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सेंधि'।

सेंही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेंध'।

सेंहुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेहुआँ'।

सेंहुड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'थूहर'।

से [प्रत्य.](हिं.)करण और अपादान कारण का चिह्न [वि.] समान। सदृश। * [सर्व.] वे। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेवा। २-कामदेवकी पत्नी।

सेई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अनाज नापने का काठ का एक गहरा बरतन।

सेउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेव'।

सेकंड [संज्ञा पु.] (अं.) एक मिनट का साठवाँ भाग

सेक [संज्ञा पु] (सं.) १-पानी छिड़कना। पेड़ों को सींचना। २-अभिषेक। ३ तेल लगानाया मलना

सेकड़ा [संज्ञा पु.](देश.)हलवाहे की बैल हाँकने की छड़ी।

सेक्तव्य [वि.](सं.) १-सींचने के योग्य। २-जिसे सींचनाया तर करना हो।

सेकपात्र, सेकभाजन[संज्ञा पु.](सं.)सींचने का बरतन

सेकमिश्रान्न [संज्ञा पु.](सं.)वह खाद्य-पदार्थ जिस में दही पड़ा हो।

सेक्रिम [वि.](सं.) १-सींचा हुआ। तर किया हुआ। २-ढाला हुआ। [संज्ञा पु.] मूली।

सेकुआ [संज्ञा पु.] (देश.) काठ के दस्ते का लंबा करछा जिससे हलवाई दूध औटाते हैं।

सेकरी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) धान।

सेक्ता [वि.](सं.)[स्त्री. सेक्त्री] १-सींचने वाला। २-जो गाय, घोड़ी आदि को बरदाता हो। [संज्ञा पु.] (सं.) पति। खाविंद।

सेक्त्र [संज्ञा पु.](सं.) पानी छिड़कने का पात्र डोलची

सेक्रेटरी [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह उच्च कर्मचारी अथवा अधिकारी जिसके आधीन सरकार या शासन का कोई विभाग हो। मन्त्री। सचिव। २-वह पदाधिकारी जिस पर किसी संस्था के कार्य-सम्पादन का भार हो।

सेक्रेटेरियट [संज्ञा पु.](अं.)किसी सरकार के मंत्रियों का कार्यालय।

सेक्शन [संज्ञा पु.] (अं.) विभाग।

सेख* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-समाप्ति। अन्त। २-शेष सर्पराज। ३-देखो 'शेख'।

सेखर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शेखर'।

सेखावत [संज्ञा पु.] (हिं.) राजपूतों की एक जाति या शाखा।

सेखी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शेखी'।

सेगव [संज्ञा पु.] (सं.) केकड़े का बच्चा।

सेगा[संज्ञा पु.](अ.)१-विभाग। महकमा। २-विषय

सेगुन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सागोन'।

सेगोन, सेगौन [संज्ञा पु.] (देश.) मटमैले रङ्ग की लाल मिट्टी।

सेचक [वि.] (सं.) सींचने वाला। [संज्ञा पु.] मेघ। बादल।

सेचन [संज्ञा पु.](सं.)१-सिंचाई। २-छिड़काव। ३-अभिषेक। ४-धातु की ढलाई। ५-(नाव में) जल उलीचने का बरतन।

सेचनक [संज्ञा पु.] (सं.) अभिषेक।

सेचनघट [संज्ञा पु.] (सं.) वह बरतन जिससे जल सींचते हैं।

सेचनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाल्टी। डोलची।

सेचनीय [वि.] (सं.) सींचने या छिड़कने योग्य।

सेचित [वि.] (सं.) १-जो सींचा गया हो। २-जिस पर छींटे दिये गये हों।

सेच्य [वि.](सं.)१-सींचने योग्य। २-जिसे सींचना हो

सेछागुग [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का पक्षी।

सेज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शय्या। बिछौना।

सेजपाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) शयनागार का रक्षक शय्यापाल।

सेजरिया* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेज'।

सेजा [संज्ञा पु.](देश.) वृक्ष विशेष जो आसाम और बंगाल में पाया जात है।

सेजिया+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेज'।

सेज्या* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शय्या'।

सेझदादि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सह्याद्रि'।

सेझना [क्रि. अ.] (हिं.) हटना। दूर होना।

सेट [संज्ञा पु] (सं.) एक प्राचीन तौल या माप। [संज्ञा पु] (देश.) काँख, नाक, उपस्थ आदि के बाल या रोएँ। [संज्ञा पु.] (अं.) एक ही प्रकार या मेल की कई वस्तुओं का समूह।

सेटना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-मानना। २-महत्व स्वीकार करना।

सेटिल [वि.] (अं.) जो तै हो गया हो।

सेटिलमेंट [संज्ञा पु.] (अं.) १-खेती के लिये भूमि को नापकर उसका लगान निर्धारित करने का काम। बन्दोबस्त। २-एक देश के लोगों की दूसरे देश में बसी हुई बस्ती। उपनिवेश।

सेडु [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूट। ककड़ी। २-कचरी

सेठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बड़ा साहूकार। धनी और महाजन। २-धनी और प्रतिष्ठित वणिकों की उपाधि। ३-खत्रियों की एक जाति।

सेठन [संज्ञा पु.] (देश.) झाड़ू। बुहारी।

सेठा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेंठा'।

सेड़ा+ [संज्ञा पु.] (देश.) भादों के महीने में होने वाला एक प्रकार का धान।

सेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहेली। सखी।

सेढ़ [संज्ञा पु.] (अं. सेल) पाल। बादबान। + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चेचक की अधिष्ठात्री देवी। शीतला।

सेढ़खाना [संज्ञा पु.] (हिं.) जहाज में की पाल रखने की कोठरी।

सेढ़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेड़ा'।

सेत* [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'सेतु'। *[वि] देखो 'श्वेत'।

सेतकुली [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद जाति का नाग।

सेतदीप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्वेतद्वीप'।

सेतदुति* [संज्ञा पु.] (हिं.) चन्द्रमा।

सेतना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सैंतना'।

सेतबंध [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेतुबंधु'।

सेतवा [संज्ञा पु.](हिं.)अफीम काछने की पतले लोहे की करछी।

सेतवारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हरापन लिये बालुई चिकनी मिट्टी।

सेतवाल [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

सेतवाह* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अर्जुन। २-चन्द्रमा

सेतिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अयोध्या।

सेती+ [अव्य.] (हिं.) देखो 'से'।

सेतु [संज्ञा पु](सं.) १-नदी आदि पर का पुल। २-पानी की रुकावट के लिये बना हुआ बाँध। डैम ३-खेत की मेंड़। ४-सीमा। हद। ५-बन्धन। बंधाव। ६-मर्यादा। प्रतिबन्ध। ७-प्रणव। ओंकार ८-टीका या व्याख्या। ९-वरुणवृक्ष। १०-वह मकान जिसमें धरनें लोहे की कीलों से जड़ी हों *[वि.] (हिं.) देखो 'श्वेत'।

सेतुक[संज्ञा पु.](सं.)१-पुल। २-बाँध। ३-वरुणवृक्ष

सेतुकर [संज्ञा पु.](सं.)सेतु या पुल बनाने वाला।

सेतुकर्म [संज्ञा पु.](हिं.)सेतु या पुल बनाने का काम

सेतुज [संज्ञा पु.] (सं.) दक्षिण पथ के एक स्थान का नाम।

सेतुपति [संज्ञा पु.](सं)रामनद के राजाओं की वंश परम्परागत उपाधि।

सेतुप्रद [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण।

सेतुबंध, सेतुबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुल या बाँध बनाने का काम । २-कन्याकुमारी के पास का समुद्र का यह पुल जो लंका पर चढ़ाई करने के समय रामचन्द्रजी ने बनवाया था। ३-नहर।

सेतुबंधन, सेतुबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुल बांधना। २-पुल। ३-बांध।

सेतुबंध-रामेश्वर [संज्ञा पु.] देखो 'सेतुबंध'।

सेतुभेद [संज्ञा पु.](सं.) १-पुल का टूटना। २-बांध का टूटना।

सेतुभेदी [संज्ञा पु.] (हिं.) दंती। तिरीफल।

सेतुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सूस'।

सेतुवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं) अरुण वृक्ष।

सेतुशैल [संज्ञा पु] (सं) दो देशों के बीच में पड़ने वाला पहाड़।

सेतुषाम [संज्ञा पु.] (हिं) एक साम का नाम।

सेत्र [संज्ञा पु] (सं) बेड़ी। जंजीर।

सेथिया [संज्ञा पु.](हिं) आँखों का इलाज करने वाला

सेद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वेद'।

सेदज* [वि] (हिं.) देखो 'स्वेदज'।

सेदरा [संज्ञा पु](फा.) वह मकान जो तीन ओर से खुला हो।

सेद्धव्य [वि.] (सं.) १-निवारण योग्य। २-जिसे हटाना या दूर करना हो।

सेध [संज्ञा पु.] (सं) निषेध। मनाही।

सेधक [वि.](सं.) हटाने या रोकने वाला। प्रतिरोधक

सेधा [संज्ञा स्त्री.] (सं) साही नामक जंतु जिसकी पीठ पर काँटे होते हैं।

सेन [संज्ञा पु](सं.) १-शरीर। २-जीवन। ३-बंगाल की वैद्य जाति की उपाधि। ४-एक भक्त नाई का नाम। [वि] १-सनाथ। २-आश्रित। अधीन। [संज्ञा पु] (हिं.) बाज-पक्षी। * [संज्ञा स्त्री] १-देखो 'सेना'। २-देखो 'सेंध'।

सेनजित् [वि] (सं) सेना को जीतने वाला। [संज्ञा पु.] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २ विश्वजित् के पुत्र का नाम। [संज्ञा स्त्री] एक अप्सरा।

सेनप [संज्ञा पु] (सं) सेनापति।

सेनपति* [संज्ञा पु] (हिं.) सेनापति।

सेनांग, सेनाङ्ग [संज्ञा पु] (सं.) १-सेना का कोई एक अंग। २ सैनिकों का दल या टुकड़ी।

सेना [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-अस्त्र-शस्त्र आदि से सजे और युद्ध की शिक्षा पाये हुए सैनिकों या सिपाहियों का बड़ा दल या समूह। फौज। पल्टन। मिलिटरी। २-भाला। बरछी। ३-इन्द्र का वज्र। ४-इन्द्राणी। ५-वर्त्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हन् शंभव की माता का नाम। ६ वेश्या के नाम के साथ लगने वाली उपाधि। जैसे-वसंत सेना [क्रि. स](हिं.) १ सेवा टहल करना। २ आराधना या उपासना करना। ३-नियमित रूप से प्रयोग करना। ४-मादा पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना। ५-पवित्र स्थान पर निरन्तर वास करना। ६-व्यर्थ लेकर बैठे रहना (व्यंग्य)।

सेनाकक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का पार्श्व या बाजू।

सेनाकर्म [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सेना का काम। २ सेना की व्यवस्था या संचालन।

सेनागोप [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सैनिक अधिकारी।

सेनाग्र [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का वह दल जो आगे चलता है।

सेनाचर [संज्ञा पु.] (सं.) सैनिक। सिपाही।

सेनाजीव, सेनाजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) सैनिक। सिपाही।

सेनादार [संज्ञा पु] (हिं) सेनानायक। फौजदार।

सेनाधिकारी [संज्ञा पु] (सं) सेनानायक। फौज का अफसर।

सेनाधिनाथ, सेनाधिप, सेनाधिपति, सेनाधीश, सेनाध्यक्ष [संज्ञा पु] (सं) देखो 'सेनापति'।

सेनानायक [संज्ञा पु] (सं) सेना का अफसर। फौजदार।

सेनानी [संज्ञा पु] (सं) १-फौज का अफसर। सेनापति। २-कार्तिकेय। ३-एक रुद्र का नाम। ४-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५-एक विशेष प्रकार का पासा। ६-शंबर एक पुत्र के का नाम।

सेना-न्यायालय [संज्ञा पु] (सं.) सैनिक विभाग का का वह न्यायालय जो साधारणत: सेना विभाग में होने वाले अपराधों का विचार और न्याय करता है। *कोर्ट मार्शल*।

सेनापति [संज्ञा पु] (सं) १ सेना का प्रधान और सब से बड़ा अधिकारी। *कमान्डर-इन-चीफ*। २-कार्त्तिकेय। ३-हिंदी के एक कवि का नाम।

सेनापत्य [संज्ञा पु] (सं.) सेनापति का कार्य या पद। सेनापति का अधिकार।

सेना-परिच्छद [वि.] (सं.) सेना से घिरा हुआ।

सेनापाल [संज्ञा पु.] (सं.) सेनापति।

सेनापृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का पिछला भाग।

सेनाप्रणेता [संज्ञा पु.] (सं.) सेनानायक।

सेनाबंध [संज्ञा पु.] (डिं.) शूरवीर।

सेनाभंग, सेनाभङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) सेना को तितर-बितर कर भगा देना।

सेनाभक्त [संज्ञा पु.](सं.) सेना के लिये रसद और बेगार।

सेनामुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना का अगला भाग २-सेना का एक दल, विशेषकर वह दल जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ घोड़े, और १५ पैदल सिपाही होते हैं।

सेनायंत्री-करण, सेनायन्त्री-करण [संज्ञा पु.] (सं.) सेना को यांत्रिक साधनों से युक्त करना।

सेनायोग [संज्ञा पु.] (सं.) सेना की सजावट या तैयारी।

सेनावास [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २-डेरा। खेमा।

सेनावाह [संज्ञा पु.] (सं.) सेनानायक।

सेनावाहक [संज्ञा पु.](सं.) वह हवाई या समुद्री जहाज जो सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है।

सेनाव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध के समय भिन्न-भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न-भिन्न अङ्गों की स्थापना या नियुक्ति।

सेनासमुदाय [संज्ञा पु] (सं.) एकत्र हुई सेना।

सेनास्थ [संज्ञा पु.] (सं.) सैनिक। सिपाही।

सेनास्थान [संज्ञा पु.] (सं.) १-छावनी। २-शिविर

सेनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्रेणी'।

सेनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बाज पक्षी की मादा २-एक छन्द।

सेनी* [संज्ञा स्त्री.] (फा.) तश्तरी। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पंक्ति। कतार। २-सीढ़ी। जीना। ३-बाजपक्षी की मादा। [संज्ञा पु.] (हिं) सहदेव का अज्ञातवास का नाम।

सेनेट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-प्रधान व्यवस्थापिका सभा। २ विश्वविद्यालय की प्रबन्धकारिणी सभा।

सेनेटर [संज्ञा पु] (अं.) १ सेनेट या देश की प्रधान व्यवस्थापिका सभा का सदस्य। २-जज या मैजिस्ट्रेट।

सेनेट-हाउस [संज्ञा पु.] (अं.) वह भवन जिसमें सेनेट का अधिवेशन होता है।

सेफ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शेफ'। [संज्ञा पु.] (अं) रुपया पैसा तथा बहुमूल्य पदार्थ रखने का लोहे का मजबूत बक्स।

सेफालिका [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'शेफालिका'।

सेब [संज्ञा पु.] (फा.) नाशपाती की तरह का एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़।

सेभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) शीतलता। ठंढक। [वि.] (सं.) शीतल। ठंढा।

सेमंतिका, सेमन्तिका, सेमंती, सेमन्ती [संज्ञा स्त्री] (सं) सफेद गुलाब का फूल।

सेम [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।

सेमई [संज्ञा पु.] (हिं.) हल्का हरा रङ्ग। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेंवई'।

सेमर [संज्ञा पु.] (देश.) दलदली ज़मीन। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेमल'।

सेमल [संज्ञा पु.] (हिं) एक बहुत बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल आते हैं। इन फूलों या ढोढों में गूदा नहीं होता केवल रूई होती है।

सेमल-मूसला [संज्ञा पु.] (हिं.) सेमल वृक्ष की जड़।

सेमल-सफेद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का सेमल जिसमें सफेद फूल आते हैं।

सेमा [संज्ञा पु.] (हिं.) बड़ी सेम।

सेमिटिक [संज्ञा पु.] देखो 'शामी'।

सेमिनरी [संज्ञा पु.] (अं.) शिक्षालय। स्कूल।

सेमिकोलन [संज्ञा पु.] (अं.) अंग्रेजी का एक विराम चिह्न (;)।

सेर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल। २-देखो 'शेर'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली [संज्ञा पु.] (देश.) एक अगहनिया धान। [वि.] (फा.) तृप्त।

सेरन [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की घास।

सेरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह कपड़ा जिससे अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है। २-सिरहाने की ओर की खाट की पाटी।

सेरसाहि [संज्ञा पु](फा.) दिल्ली का बादशाह शेरशाह

सेरही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार का लगान जो काश्तकार को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पड़ता था।

सेरा [संज्ञा पु.](हिं.) चारपाई में सिरहाने की ओर की पाटी या लकड़ी। [संज्ञा पु.] (फा.) सींची हुई जमीन।

सेराना* [क्रि. अ.](हिं.) १ ठंढा होना। २-मरजाना ३-समाप्त होना। ४-तप्त या तुष्ट होना। [क्रि.

स.] १-ठंडा करना । २-मूर्ति आदि जल में प्रवाहित करना । तृप्त करना ।

सेराब [वि.] (फा.) १-पानी से भरा हुआ । २-सींचा हुआ।

सेराबी [संज्ञा स्त्री.](फा.) १-सिंचाई । २-तरी ।

सेराल [संज्ञा पु.](सं.)हलका पीलापन । [वि.]हलका पीला। पीताभ ।

सेराह [संज्ञा पु.](सं.)दूध जैसा सफेद रङ्ग का घोड़ा

सेरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-तृप्ति । सन्तोष । २-मन का भरना या अघाना ।

सेरीना [संज्ञा स्त्री.](हिं.) अन्न या चारे का वह अंश जो काश्तकार जमींदार को देता है ।

सेरु [वि.] (सं.) बाँधने वाला । जकड़ने वाला ।

सेरुआ [संज्ञा पु.](?) वैश्य । [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'सेरवा'।

सेलाह [संज्ञा पु.](सं.)वह सफेद घोड़ा जिसके माथे पर दाग हो ।

सेल्वा [संज्ञा पु.] (?) वेश्यागामी या मुजरा सुनने वाला ।

सेरू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) लिसोड़े का पेड़ ।

सेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-भाला । बरछा । २-एक प्रकार का सन का रस्सा। ३-हल में लगी हुई वह नली जिसमें से होकर बीज भूमि पर गिरता है । [संज्ञा पु.] (देश.) वह काठ का बरतन जिससे नाव में पानी उलीचते हैं । [संज्ञा स्त्री] (देश.) बद्धी । माला ।

[संज्ञा पु.](अ. शेल) तोप का वह गोला जिसमें गोलियाँ आदि भरी रहती हैं ।

सेलखड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सिलखड़ी ।

सेलग [संज्ञा पु.] (सं) डाकू । लुटेरा ।

सेलना [क्रि अ.] (हिं.) मरजाना । चल बसना ।

सेला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-रेशमी चादर या दुपट्टा २-साफा या शिरोबंध । ३-वह धान जो भूसी छाँटने से पहले कुछ उबाल लिया गया हो ।

सेलिया [संज्ञा पु] (देश.) घोड़े की एक जाति ।

सेलिस [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सफेद हिरन

सेली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-बरछी । २-छोटा दुपट्टा ३-गाँती । ४-वह माला जो योगी आदि गले में या सिर पर लपेटते हैं । ५-एक प्रकार का गहना ६-एक प्रकार की मछली । [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दक्षिण भारत में होने वाला एक छोटा पेड़ ।

सेलु [संज्ञा पु.] (सं.) लिसोड़ा ।

सेलून [संज्ञा पु.] (अं) १-जहाज का प्रधान कमरा । २-सजा हुआ रेल का बड़ा डब्बा । ३-सार्वजनिक आमोद-प्रमोद का स्थान । ४-अंगरेजी ढंग के बाल काटने वाले नाइयों की दूकान । ५-जलपान का स्थान । ६ वह स्थान जहां विदेशी शराब बिकती हो । ७-जहाज के कप्तान के खाने का स्थान ।

सेलो+ [संज्ञा पु] (देश) सायादार जमीन ।

सेल्ला [संज्ञा पु] (हिं) भाला । सेल ।

सेल्ह [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'सेल' ।

सेल्हा [संज्ञा पु](हि)एक प्रकार का अगहनियाँ धान

सेल्ही [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'सेली' ।

सेवँ [संज्ञा पु] (देश) एक प्रकार का [illegible] पेड़ ।

सेवँई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-गुँधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे । २-एक प्रकार की लम्बी घास ।

सेवँढ़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का धान

सेवंत [संज्ञा पु] (हिं.) एक राग का नाम ।

सेवँर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेमल'।

सेव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक बेसन का पकवान जो सूत के रूप में बना होता है । २-देखो 'सेब'। [संज्ञा स्त्री.] * (हिं.) देखो 'सेवा'।

सेवक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सेविका, सेवकनी, सेवकिनी] १-सेवा करने वाला । नौकर । २-सेवन करने वाला । ३-किसी पवित्र स्थान में नियम पूर्वक स्थाई रूप से निवास करने वाला ४-भक्त । उपासक । ५-सीने वाला । दरजी ।

सेवकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं) सेवा । टहल । खिदमत

सेवकालु [संज्ञा पु.] (सं.) दुग्धपेया नामक पौधा ।

सेवग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेवक' ।

सेवड़ा [संज्ञा पु.](?) १-एक प्रकार के जैन-साधु २-एक माम देवता । [संज्ञा पु] (हिं) मैदे के मोटे सेव या पकवान ।

सेवति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'स्वांति'।

सेवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद गुलाब ।

सेवधि [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शेवधि'।

सेवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-परिचर्या । खिदमत । २-उपासना । आराधना । ३-नियमित रूप से किया जाने वाला प्रयोग या व्यवहार । इस्तेमाल । ४-बराबर किसी बड़े के पास अथवा बड़े स्थान पर रहना।५-उपभोग । ६-सावाँ की तरह की एक घास

सेवना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सोना' ।

सेवनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूई । २-सीवन । टाँका ३-शरीर के वे अङ्ग जहाँ सीवन सी दिखाई देती हो । ४-जूही । [संज्ञा स्त्री.] (हिं) दासी ।

सेवनीय [वि.] (सं) १-सेवा योग्य । २-पूजा के योग्य । ३-व्यवहार योग्य । ४-सोने योग्य ।

सेवर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शबर' ।

सेवरा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेवड़ा'।

सेवरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शवरी' ।

सेवल [संज्ञा पु.] (देश.) विवाह की एक रस्म ।

सेवांजलि [संज्ञा स्त्री.] (सं) भक्त या सेवक का दोनों हथेलियों के जुड़े हुये संपुट में स्वामी अथवा उपास्य को कुछ अर्पण ।

सेवा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बड़े, पूज्य अथवा स्वामी को सुख पहुँचाने के निमित्त किया जाने वाला काम । परिचर्या । टहल । २-सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम । नौकरी । ३-व्यक्ति । संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव । नौकरी । ४-किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि में रुचि होने के कारण उसके हित, उन्नति आदि के लिये किया जाने वाला काम । ५-सार्वजनिक या राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो । ६-इस प्रकार की किसी विभाग में कार्य करने वालों का समूह या वर्ग । (सर्विस उक्त सभी अर्थों के लिये) ७-धार्मिक विचार से ईश्वर, देवता आदि का पूजन या उपासना । आराधना । ८-आश्रय । शरण । ९-रक्षा । हिफाजत ।

सेवा में-बड़े के सम्मुख या सामने।

सेवाकाकु [संज्ञा स्त्री.](सं.) सेवा काल में स्वर-परिवर्त्तन या आवाज बदलना ।

सेवाजन [संज्ञा पु.] (सं.) नौकर । सेवक । दास ।

सेवाटहल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) परिचर्या । सेवा-सुश्रूषा

सेवाती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'स्वाति' ।

सेवादार [संज्ञा पु.] (हिं.) सिक्ख गुरद्वारे में रहकर वहाँ की व्यवस्था करने वाला अधिकारी ।

सेवाधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सेवक का धर्म या कर्त्तव्य

सेवाधारी [संज्ञा पु.](हिं.) वह जो किसी मन्दिर में ठाकुर अथवा मूर्त्ति की सेवा या पूजा करता हो। पुजारी ।

सेवानियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी को वेतन आदि देकर अपने यहाँ किसी काम पर लगाना। २-वेतन आदि पर किसी काम पर लगा रहना। एमप्लॉयमेन्ट ।

सेवापंजी, सेवापञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पंजी अथवा पुस्तिका जिसमें सेवकों, विशेषत: राजकीय सेवकों के सेवाकाल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं । सर्विस बुक ।

सेवापन [संज्ञा पु](हिं.) सेवावृत्ति । दासत्व । नौकरी

सेवाबंदगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आराधना । पूजा ।

सेवाभार [संज्ञा पु.] (सं) किसी राजकीय सेवा का भार ।

सेवाय+ [वि.] (हिं.) अधिक । ज्यादा । [अव्य] देखो 'सिवा' ।

सेवार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पानी के भीतर होने वाली एक प्रकार की घास । २-मिट्टी की तह जो किसी नदी के आसपास जमी हो । +[संज्ञा पु.] पान ।

सेवारा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेवड़ा' ।

सेवाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेवार'।

सेवावृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नौकरी ।

सेविंग-बैंक [संज्ञा पु.](अं) वह बैंक जो छोटी-छोटी रकमें ब्याज पर ले ।

सेवि [संज्ञा पु] (सं.) १-बदरफल । बेर । २-सेब । सेवी का वह रूप जो समास में होता है । * [वि.] (हिं.) देखो 'सेवित ।

सेविका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जिसकी सेवा की जाय या की गई हो । २-जिसका सेवन या प्रयोग किया जाय अथवा किया गया हो । ३-उपभोग किया हुआ । ४-जिसकी पूजा की गई हो। पूजित । उपासित । [संज्ञा पु] १-बेर । २-सेब ।

सेवितव्य [वि.] (सं.) १-सेवा के योग्य । उपासना के योग्य । २-आश्रय के योग्य ।

सेविता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-सेवा । नौकरी । २-उपासना । ३-आश्रय । [संज्ञा पु] सेवा करने वाला । सेवक ।

सेवी [वि.](सं) १-सेवा करने वाला । २-पूजा करने वाला ।

सेव्य [वि] (सं) [स्त्री. सेव्या] १-जिसकी सेवा करना उचित हो । २-जिसकी सेवा करनी हो अथवा जिसकी सेवा की जाय । ३ पूजा के योग्य ।

४-व्यवहार योग्य। ५-रक्षण के योग्य। [संज्ञा पु.] १-स्वामी। मालिक। २-खस। उशीर। ३-पीपल का पेड़। ४-हिज्जल वृक्ष। ५-लामज घास। ६-गौरैया-पक्षी। ७-जल। पानी। ८-एक प्रकार का मद्य। ९-सुगंधबाला। १०-समुद्री नमक।

सेव्य-सेवक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी और सेवक। पद०-सेव्य सेवक भाव-भक्ति मार्ग में उपासना का एक भाव जिसमें देवता को स्वामी तथा अपने को सेवक माना जाता है।

सेव्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाँदा नामक पौधा जो दूसरे पेड़ों के ऊपर उगता है। २-आँवला। ३-एक प्रकार का जङ्गली अनाज या धान।

सेशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-न्यायालय, पार्लमेंट, व्यवस्थापिका सभा आदि संस्थाओं का एक बार निरन्तर कुछ दिनों तक होने वाला अधिवेशन। २-स्कूल अथवा कालेज की एक साथ बराबर कुछ दिनों तक होने वाली पढ़ाई।

सेशनकोर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) जिले की वह बड़ी अदालत जहाँ जूरीया असेसरों की सहायता से डाकेजनी, खून आदि फौजदारी के बड़े मामलों का विचार होता हो।

सेशन-जज [संज्ञा पु.] (अं.) वह जज जो खून आदि के बड़े-बड़े मामलों का फैसला करता है।

सेश्वर [वि.] (सं.) १-ईश्वरयुक्त। २-जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।

सेष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शेष' और 'शेख'।

सेस* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शेष'।

सेसनाग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शेषनाग'।

सेसरंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) सफेद रङ्ग।

सेसर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ताश का एक रङ्ग। २-आलसाजी। ३-जाल।

सेसरिया [वि.] (हिं.) छल से दूसरों का धन अपहरण करने वाला।

सेसी [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।

सेह [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेहा'। [वि.] (फा.) तीन

सेहखाना [संज्ञा पु.] (फा.) तिमंजिला मकान।

सेहत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'स्वास्थ्य'।

सेहतखाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) जहाज में पेशाब, पाखाना आदि करने की छोटी कोठरी।

सेहथना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-हाथ से लीपकर साफ करना। २-झाड़ना। बुहारना।

सेहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-विवाह के समय वर को पहनाने के लिए फूलों या सुनहले रुपहले तारों आदि की बड़ी बड़ी मालाओं की पंक्ति या पुंज २-विवाह का मुकुट। मौर। ३-विवाह के अवसर पर वर पक्ष में गाये जाने वाले माँगलिक गीत या पद्य।

किसी के सिर सेहरा बँधना-किसी को किसी बात का श्रेय मिलना। सेहरा बधाई-वह नेग जो वर को सेहरा बाँधने पर दिया जाता है। सेहरे बलवे की-विधिपूर्वक विवाहित (मुसलमान)।

सेहरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटी मछली।

सेहुवन [संज्ञा पु.] (देश.) गेहूँ के पौधों का एक रोग

सेह-हजारी [संज्ञा पु.] (फा.) सरदारों तथा दरबारियों को मुसलमानों के राजत्वकाल में दी जाने वाली एक उपाधि।

सेहा [संज्ञा पु.] (हिं.) कूआँ खोदने वाला।

सेहिथान [संज्ञा पु.] (हिं.) खलियान साफ करने की बुहारी या कूँचा।

सेही [संज्ञा पु.] (हिं.) लोमड़ी के आकार का एक जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं।

सेहुँड़* [संज्ञा पु.] (हिं.) थूहर का पेड़।

सेहुँड़ा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) थूहर। सेहुँड़।

सेहुआँ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का चर्मरोग जिस में शरीर पर भूरे दाग पड़ जाते हैं।

सेहुआन [संज्ञा पु.] (देश) एक प्रकार का करमकल्ला जिसके बीज से तेल निकलता है।

सैंकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सौ का समूह। एक सौ।

सैंकड़े [क्रि. वि.] (हिं.) प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत।

सैंकड़ों [वि.] (हिं.) १-कई सौ। २-गिनती में बहुत अधिक।

सैंगर [संज्ञा पु.] (हिं.) बबूल की फली या छीमी।

सैंडल [संज्ञा पु.] (अं.) पैर में पहनने का एक प्रकार जूता या चप्पल।

सैंणर [संज्ञा पु.] (डिं.) पति।

सैंतना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-संचित करना। इकट्ठा करना। २-समेटना। ३-सहेजना। ४-मारडालना ५-चोट लगाना।

सैंतालिस, सैंतालीस [वि.] (हिं.) चालीस और सात (४७)।

सैंतालीसवाँ [वि.] (हिं.) जिसका स्थान सैंतालीस पर हो

सैंतिस, सैंतीस [वि.] (हिं.) तीस और सात (३७)

सैंतीसवाँ [वि.] (हिं.) जिसका स्थान सैंतीस पर हो

सैंथी+ [संज्ञा स्त्री.] (?) छोटा भाला। बरछी।

सैंदूर, सैन्दूर [वि.] (सं.) सिंदूर के रंग का।

सैंधव, सैन्धव [संज्ञा पु.] (सं.) १-नमक। २-सिंध देश का घोड़ा। ३-सिंध देश का निवासी। [वि.] १-सिंध देश में उत्पन्न। २-सिन्ध देश का। ३-सिंधु या समुद्र-सम्बन्धी।

सैंधवक, सैन्धवक [वि.] (सं.) सैंधवी-सम्बन्धी।

सैंधवपति, सैन्धवपति [संज्ञा पु.] (सं.) जयद्रथ, जो सिंध का राजा था।

सैंधवादिचूर्ण, सैन्धवादिचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक अग्निदीपक चूर्ण।

सैंधवायन, सैन्धवायन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि का नाम। २-उनके वंशज।

सैंधवारण्य, सैन्धवारण्य [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक वन का नाम।

सैंधवी, सैन्धवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

सैंधी, सैन्धी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ताड़ी।

सैंधू [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सैंधवी'

सैंपुल [संज्ञा पु.] (अं.) नमूना।

सैंयाँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सैयाँ'।

सैंवर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साँभर'।

सैंह [वि.] (सं.) १-सिंह-सम्बन्धी। २-सिंह के समान। *[क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सैंहथी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सैंथी'।

सैंहल [वि.] (सं.) [स्त्री. सैंहली] सिंहलद्वीप-संबंधी

सैंहली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सिंहलीपीपल।

सैंहाद्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जाति।

सैंहिक [संज्ञा पु.] (सं.) राहु। [वि.] सिंह के समान

सैंहिकेय [संज्ञा पु.] (सं.) राहु।

सैंहुड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सेहुँड़'।

सैंहू [संज्ञा पु.] (हिं.) गेहूँ के वे दाने जो छोटे, काले और बेकार होते हैं।

सै+ [वि.] (हिं.) सौ। + [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-तत्व। सार। २-वीर्य। ३-बल। शक्ति। ४-बढ़ती। वृद्धि।

सैकंट [संज्ञा पु.] (हिं.) बबूल की जाति का एक सफेद छाल का वृक्ष।

सैकड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) सै का समूह।

सैकड़े [क्रि. वि.] (हिं.) प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत।

सैकड़ों [वि.] (हिं.) १-कई सौ। २-बहुसंख्यक। गिनती में। बहुत।

सैकत [वि.] (सं.) [स्त्री. सैकती] १-रेतीला। बालुकामय। २-बालू का बना। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बालुआ किनारा। २-रेतीली मिट्टी या जमीन।

सैकतिक [वि.] (सं.) १-सैकत-संबन्धी। २-सन्देहजीवी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-साधु। २-मंगलसूत्र

सैकती [वि.] (सं.) रेतीला। सिकतायुक्त।

सैकतेष्ट [संज्ञा पु.] (सं.) अदरक।

सैकयत [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद या जाति का नाम।

सैकल [संज्ञा पु.] (अं.) हथियारों का साफ करने तथा सान पर उन्हें तेज करने का काम।

सैकलगर [संज्ञा पु.] (अं.) सान धरने वाला। सिकलीगर।

सैका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घड़े के आकार का मिट्टी का घड़ा बरतन। २-रेशम का रंग ढालने का मिट्टी का बरतन। ३-रबी की फसल का अटाला जो खेत से कटकर आई हो। ४-दस टोंके। ५-एक-सौ पूले।

सैकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा सैका।

सैक्य [वि.] (सं.) १-एकतायुक्त। २-सिंचन-संबंधी [संज्ञा पु.] (सं.) शोण या सोन पीतल।

सैक्षव [वि.] (सं.) मीठा।

सैजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सहिंजन'।

सैढ़+ [संज्ञा पु.] (देश.) गेहूँ की कटी हुई वह फसल जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो।

सैण [संज्ञा पु.] (डिं.) मित्र।

सैतव [वि.] (सं.) सेतु-सम्बन्धी।

सैतवाहिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाहुदा नामक नदी

सैंथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरछी। छोटा भाला।

सैद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सैयद'।

सैदपुरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की नाव।

सैद्धांतिक, सैद्धान्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिद्धांत का ज्ञाता। पंडित। विद्वान्। २-तांत्रिक। [वि.] सिद्धांत-सम्बन्धी।

सैध्रक [वि.] (सं.) सिध्रक नामक वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ।

सैध्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) वृक्ष विशेष।

सैन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-संकेत। इशारा। २-चिह्न निशान। ३-देखो 'सेना'। ※[संज्ञा पु.] १-देखो 'शयन'। २-देखो 'श्येन'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बगला।

सैनक [संज्ञा पु.] (फा.) थाली। तश्तरी।

सैनपति※ [संज्ञा पु.] (हिं.) सेनापति।

सैनभोग [संज्ञा पु.] (हिं.) वह नैवेद्य जो रात्रि के समय मन्दिरों में चढ़ाया जाता है।

सैना※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेना'।

सैनानीक [वि.] (सं.) सेना के अग्रभाग का।

सैनान्य [संज्ञा पु.] (सं.) सेनानी या सेनापति का काम सेनापतित्व।

सैनापति※ [संज्ञा पु.] (हिं.) सेनापति।

सैनपत्य [संज्ञा पु.] (सं.) सेनापति का काम या पद [वि.] सेनापति-सम्बन्धी।

सैनिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेना या फौज में रहकर लड़ने वाला सिपाही। २-सैन्यरक्षक। प्रहरी। ३-किसी प्राणी को वध करने के निमित्त नियुक्त व्यक्ति। [वि.] सेना-सम्बन्धी। सेना का।

सैनिक-अड्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) वह स्थान जहां सेना और उसका सामान पड़ा हो। मिलिटरी-बेस।

सैनिक-अधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश पर अधिकार या कब्जा करके उसमें स्वत्व-रक्षा तथा शांति के लिये फौजें तैनात करना। मिलिटरी-ऑकोपेशन

सैनिकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सेना या सैनिक का कार्य। सैनिक जीवन। २-युद्ध। लड़ाई।

सैनिक-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सेना-न्यायालय'।

सैनिक-वाद [संज्ञा पु.] (सं.) वह सिद्धांत जिसके अनुसार राष्ट्र-सामरिक कार्यों—सेना बढ़ाने, नित्य नये-नये भयंकर तथा घातक युद्धोपकरण बनवाने आदि की ओर अधिकाधिक ध्यान दे। विराट् सेना रखने का सिद्धांत। मिलिटरी-इज्म।

सैनिक-वादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे सैनिकवाद सिद्धांत बहुत प्रिय हो। मिलिटरीस्ट।

सैनिक-लक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) ऐसी चीजें या स्थान जिनका सैनिक या फौजी महत्व हो और जिन्हें नष्ट करने से शत्रु की शक्ति कम हों। (कुछ सैनिक लक्ष्य ये हैं—सैनिक अड्डे, जहाजी अड्डे, हवाई अड्डे, छावनियाँ, रसद और हथियार के भंडार तथा ढेर, युद्ध का सामान तैयार करने वाले कारखाने, उद्योग धन्धों के कारखाने सड़कें व पुल, पैट्रोल की टङ्कियाँ, बिजली के कारखाने और पानी के नल। मिलिटरी-ऑब्जेक्ट।

सैनिक-विधान [संज्ञा पु.] (सं.) फौज के सिपाहियों पर लागू होने वाला कानून। मिलिटरी-लॉ।

सैनिक-विमान [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध के काम में आने वाले हवाई जहाज। फौजी हवाई जहाज। मिलिटरी-एयर-क्राफ्ट।

सैनिक-शासन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश पर कब्जा करके किसी सैनिक अधिकारी की देख रेख में व्यवस्था। मिलिटरी-गवर्नमेंट।

सैनिक-सम्मान [संज्ञा पु.] (सं.) युद्ध क्षेत्र में मरने पर सैनिक अधिकारियों की सैनिक ढङ्ग पर सादर की जाने वाली अंत्येष्टि। मिलिटरी-ऑनर्ज।

सैनिका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छन्द का नाम।

सैनिकीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) लोगों को सैनिक बनने बनाने और सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम।

सैनिटरी [वि.] (अं.) सार्वजनिक स्वास्थ्य-रक्षा और उन्नति से सम्बन्ध रखने वाला।

सैनिटेरियम, सैनिटोरियम [संज्ञा पु.] (अं.) वह स्थान जहाँ लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए जाकर रहते हैं। स्वास्थ्य-निवास।

सैनी [संज्ञा पु.] (हिं.) नाई। हज्जाम।
+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सेना'।

सैनू [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बूटे वाला कपड़ा।

सैनेय※ [वि.] (हिं.) सेना के योग्य। लड़ने के योग्य

सैनेश, सैनेस [संज्ञा पु.] (हिं.) सेनापति।

सैन्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सैनिक। सिपाही। २-सेना। फौज। ३-पलटन। सेनादल ४-प्रहरी। ५-शिविर। छावनी। [वि.] सेना-सम्बन्धी। सेना का।

सैन्यकक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सेनाकक्ष'।

सैन्यक्षोभ [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का विद्रोह। फौजी बगावत।

सैन्यनायक [संज्ञा पु.] (सं.) सेनानायक।

सैन्यनिवेशभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्थान जहाँ सेना पड़ाव डाले।

सैन्यपति, सैन्यपाल [संज्ञा पु.] (सं.) सेनापति।

सैन्यपृष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का पिछला भाग।

सैन्यवास [संज्ञा पु.] (सं) पड़ाव। छावनी।

सैन्य-वियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गठित सेना को भङ्ग करके सैनिकों को बरखास्त कर देना।

सैन्यशिर [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का अग्रभाग।

सैन्य-सज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं) सेना को आवश्यक अस्त्रों से सज्जित करना।

सैन्याधिपति, सैन्याध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सेनापति

सैन्योपवेशन [संज्ञा पु.] (सं.) सेना का पड़ाव।

सैफ [संज्ञा स्त्री.] (अ.) तलवार।

सैफग [संज्ञा पु.] (हिं.) लाल देवदार।

सैफा [संज्ञा पु.] (अ.) जिल्दसाजों का एक औजार जिससे वे किताबों का हाशिया काटते हैं।

सैफी [वि] (अ.) तिरछा।

सैमंतिक, सैमन्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) सिंदूर।

सैम [संज्ञा पु.] (देश.) धीवरों के एक देवता।

सैयद [संज्ञा पु.] (अ.) [स्त्री. सैयदानी, सैदानी] १-मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का एक आदमी। २-मुसलमानों के चार वर्गों या जातियों में दूसरी जाति।

सैयाँ※ [संज्ञा पु.] (हिं.) स्वामि। पति।

सैया※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शय्या'।

सैरंध्र, सैरन्ध्र [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सैरन्ध्री] १-घर का नौकर। २-एक वर्णसङ्कर जाति।

सैरंध्रिका, सैरन्ध्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) परिचारिका दासी।

सैरंध्री, सैरन्ध्री [संज्ञा स्त्री.] १-अन्तःपुर में काम करने वाली दासी जिसकी उत्पत्ति वर्णसंकर जाति विशेष में हुई हो। २-दूसरे के घर में रहने वाली स्त्री। ३-द्रोपदी का वह नाम जो उस समय अज्ञातवास के समय रखा गया था।

सैर [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-मन बहलाने के लिये कहीं जाना। इधर-उधर घूमना-फिरना। २-मौज आनन्द। ३-बाग, बगीचे आदि में कुछ मित्रों का होने वाला खानपान और आमोद-प्रमोद। ४-मनोरंजक दृश्य।
[वि.] (सं) सीर या हल सम्बन्धी।

सैरगाह [संज्ञा पु.] (फा.) सैर करने की जगह।

सैरा [संज्ञा पु.] (अ.) चित्र में अंकित प्राकृतिक दृश्य

सैरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-कार्त्तिक मास। २-एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हलवाहा। कृषक। २-हल में जुतने वाला बैल। ३-आकाश। [वि.] सीर या हल-सम्बन्धी।

सैरिभ [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. सैरभी] १-भैंसा। २-स्वर्ग।

सैरिभी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भैंस। महिषी।

सैरीय, सैरीयक [संज्ञा पु.] (सं) १-सफेद कटसरैया। २-नीली कटसरैया।

सैरेय, सैरेयक [संज्ञा पु.] (सं) सफेद फूलों वाली कटसरैया।

सैर्य [संज्ञा पु.] (सं.) अश्ववाल नामक तृण।

सैल※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'सैर'। २-देखो 'सेल'। ३-बाढ़। जलप्लावन। ४-स्रोत। बहाव

सैलकुमारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शैलकुमारी'।

सैलग [संज्ञा पु.] (सं.) डाकू। लुटेरा।

सैलजा※ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शैलजा'।

सैलसुता※ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'शैलसुता'.

सैला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लकड़ी का छोटा डंडा। मेख। २-गुल्ली। ३-मुंगरी। ४-वह छोटा डंडा जो जुवे के छेद में डाल रखा होता है।

सैलात्मजा※ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पार्वती। शैलात्मजा

सैलानी [वि] (हिं) सैर-सपाटा करने या मनमाना घूमने वाला।

सैलाब [संज्ञा पु.] (फा.) बाढ़। जलप्लावन।

सैलाबा [संज्ञा पु] (फा) वह फसल जो पानी में डूब गई हो।

सैलाबी [वि.] (फा) जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो [संज्ञा स्त्री.] सील। तरी।

सैली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा सैला। २-ढाक की जड़ के रेशों की बनी रस्सी। (देश) तिन्नी का चावल इकट्ठा करने की टोकरी।

सैलूख※ [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'शैलूष'।

सैव※ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शैव'।

सैवल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शैवाल'।

सैवलिनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शैवालिनी'।

सैवाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शैवाल'।

सैव्य* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शैव्य'।

सैस, सैसक [वि.] (सं.) १-सीसे का बना। २-सीसा-सम्बन्धी।

सैसव* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शैशव'।

सैसवता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'शैशव'।

सैसिकत, सैसिरिध्र [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

सैहथी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरछी। साँग। शक्ति।

सैहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सैही] पान, रस आदि ढालने का मिट्टी का बरतन।

सैही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा सैहा।

सों* [प्रत्य.] (हिं.) द्वारा। से। [वि.] देखो 'सा'। [अव्य.] (हिं.) देखो 'सौंह'। [क्रि. वि.] सङ्ग। साथ। [सर्व.] देखो 'सो'। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सौंह'।

सोंइटा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) चिमटा। दस्तपनाह।

सोंच [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोच'।

सोंचरनमक [संज्ञा पु.] (हिं.) काला नमक।

सोंज+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौंज'।

सोंट+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोंटा'।

सोंटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोटा डंडा। २-भांग घोंटने का मोटा डंडा। ३-लोबिया का पौधा। ४-मस्तूल बनाने लायक लकड़ी। *सोंटा चलाना या जमाना*-सोंटे से प्रहार करना।

सोंटाबरदार [संज्ञा पु.] (हिं.) आसाबरदार। बल्लमदार।

सोंठ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सुखाई हुई अदरक। शुण्ठि।

सोंठमिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की पीले रङ्ग की मिट्टी।

सोंठूराय [संज्ञा पु.] (हिं.) भारी कंजूस (व्यंग्य)।

सोंठौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) सोंठ डालकर बनाया हुआ सूजी का लड्डू। जो प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।

सोंडकहा [संज्ञा पु.] (देश.) घी।

सोंध* [अव्य.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सोंधा [वि.] (हिं.)[स्त्री. सोंधी] १-सुगंधित। खुशबूदार। २-मिट्टी पर वर्षा का पहला पानी पड़ने या भुने हुए चने, बेसन आदि से निकलने वाली सुगन्ध-सी। [संज्ञा पु.] १-सिर के बाल धोने का एक प्रकार का सुगंधित मसाला। २-तेल को सुगंधित करने के लिये उसमें मिलाया जाने वाला एक प्रकार का मसाला। ३-सुगन्ध।

सोंधिया [संज्ञा पु.] (हिं.) सुगंधतृण।

सोंधी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बढ़िया धान

सोंधु* [वि.] (हिं.) देखो 'सोंधा'।

सोंपना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सौंपना'।

सोंवनिया [संज्ञा पु.] (हिं.) नाक में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

सोंह* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सोंहट+ [वि.] (हिं.) सीधासादा। सरल।

सोंही* [अव्य.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सो [सर्व.] (हिं.) वह। [अव्य.] अतः। इसलिये। * [वि.] देखो 'सा'। [संज्ञा स्त्री.](सं.)पार्वती का एक नाम।

सोऽहम् [पद.] (सं.) वह (अर्थात् ब्रह्म) मैं ही हूँ। (वेदांत का सिद्धांत)।

सोऽहमस्मि [पद.](सं.) वही मैं हूँ(अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ)।

सोअना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सोना'।

सोअर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौरी'।

सोआ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का साग।

सोई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह गड्ढा जहाँ बरसात या बाढ़ का पानी रुक जाता है। [सर्व.] देखो 'वही'। [अव्य.] देखो 'सो'।

सोक [संज्ञा पु.](देश.)चारपाई बुनने के समय बुनावट में का वह छेद जिसमें से रस्सी या निवार निकालकर कसते हैं [संज्ञा पु](हिं.)देखो'शोक'

सोकन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोखन'।

सोकना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-शोक या रंज करना। २-सोखना।

सोकनी+ [वि.] (?) कालापन लिये सफेद रङ्ग का (बैल)।

सोकरहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कूए पर खड़ा वह आदमी जो भरे हुए चरसे को नाली में उलटता है। धारा।

सोकार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सिंचाई के लिए पानी गिराने की कूँए पर की नाली। छिउलारा। चौंढा।

सोकित* [वि.] (हिं.) शोकयुक्त।

सोक्कन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोखन'। +[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौत'।

सोखक* [वि.] (हिं.) १-शोषण करने वाला। २-नाश करने वाला।

सोखता [वि.] (हिं.) देखो 'सोख्ता'। [संज्ञा पु.] देखो 'सोख्ता'।

सोखन [संज्ञा पु.] (देश.) १-कालापन लिये सफेद रङ्ग का बैल। २-एक प्रकार का जङ्गली धान।

सोखना [क्रि. अ.] (हिं.) १-शोषण करना। जल या नमी चूस लेना। २-पीना। पान करना (व्यंग्य)।

सोखरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पेड़ का सूखा हुआ महुआ।

सोखा* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चतुर व्यक्ति। २-जादूगर।

सोखाई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सोखने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २-जादू। टोना।

सोख्ता [संज्ञा पु.] (फा.) लिखे हुए लेख पर की स्याही सोखने वाला एक खुरदरा कागज। स्याहीसोख। ब्लटिंग पेपर। [वि.] (फा.) जला हुआ।

सोगंद [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौगन्द'।

सोग* [संज्ञा पु.] (हिं.) शोक। दुःख। रंज। *सोग मनाना*-किसी प्रियजन की मृत्यु पर शोकसूचक चिह्न धारण करना और किसी प्रकार के उत्सव या मनोविनोद आदि में सम्मिलित न होना।

सोगन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सौगन्द। कसम।

सोगिनी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] शोक करने वाली

सोगी [वि.] (हिं.) [स्त्री सोगिनी] शोक मनाने वाला शोकार्त्त।

सोच [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चिंता। फिक्र। २-दुःख। रंज। ३-पछताव। पश्चाताप।

सोचक [संज्ञा पु.] (हिं.) दरजी।

सोचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी विषय पर मन में कुछ विचार करना। २-चिंता या फिक्र करना। ३-खेद या दुःख करना।

सोचविचार [संज्ञा पु.] (हिं.) सोचने और समझने या विचारने की क्रिया या भाव।

सोचान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोचने या विचार करने की क्रिया या भाव।

सोचाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुचाना'।

सोचु* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सोच'।

सोज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सूजन। शोथ। २-देखो 'सौंज'।

सोज़न [संज्ञा पु.] (फा.) १-सूई। २-काँटा।

सोजनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुजनी'।

सोजाक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सूजाक'।

सोजिश [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सूजन। शोथ।

सोझ, सोझा [वि.] (हिं.) [स्त्री. सोझी] सीधा।

सोझोव+ [संज्ञा पु.] (?) जवान बछड़ा।

सोटर+ [वि.] (देश.) मूर्ख। बेवकूफ।

सोटा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'सोंटा'। २-देखो 'सुअटा'।

सोठ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौंठ'।

सोठ-मिट्टी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोंठमिट्टी'।

सोड़+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौंड़'।

सोडा [संज्ञा पु.](अं.) एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से शुद्ध करके बनता है।

सोडावाटर [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का पाचक पानी।

सोढ [वि.] (सं.) १-सहनशील। सहिष्णु। २-जो सहन किया गया हो।

सोढर [वि.] (देश.) मूर्ख। बेवकूफ।

सोढवत् [वि.] (सं.) जिसने सहन किया हो। सहने वाला।

सोढव्य [वि.] (सं.) सहन करने योग्य। सह्य।

सोढी [वि.] (सं.) जिसने सहन किया हो।

सोणक [वि.] (हिं.) लाल रङ्ग का।

सोणत [संज्ञा पु.] (डि.) खून। लोहू।

सोत [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्रोत' या 'सोता'।

सोतली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौत'।

सोता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. सोती] १-कहीं से निकलकर बराबर बहती रहने वाली जल की छोटी धारा। झरना। २-नदी की शाखा। ३-नहर।

सोतिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोता'।

सोतिहा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कूआँ जिसमें सोते

पानी आता है।

सोती [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-सोता। धारा। २-देखो 'स्वाती'। [संज्ञा पु.] देखो 'श्रोत्रिय'।

सोतु [संज्ञा पु.] (सं.) सोम निकालने की क्रिया।

सोत्कंठ, सोत्कण्ठ [वि.] (सं.) उनमना। उत्कण्ठायुक्त।

सोत्क [वि] (सं) उत्कण्ठापूर्ण। जिसे उत्कंठा हो।

सोत्कर्ष [वि.] (सं.) उत्कर्षयुक्त। उत्तम। दिव्य।

सोत्तरपण-व्यवहार [संज्ञा पु.] (सं.) इस प्रकार की शर्त कि वाद विवाद में जो जीते, वह हारने वाले से इतना धन ले।

सोत्प्रास [संज्ञा पु.] (सं) १-प्रिय बात। सशब्द-हास्य। [वि] बढ़ाकर कहाहुआ। अति रंजित। २-जिसमें व्यंग्य हो।

सोत्प्रेक्ष [वि] (सं.) उपेक्षा के योग्य।

सोत्संग, सोत्सङ्ग [वि.] (सं) शोकाकुल। दुःखित

सोत्सर्ग-समिति [संज्ञा स्त्री](सं.) जैनों के अनुसार मल-मूत्र आदि का इस प्रकार यत्नपूर्वक त्याग करना जिसमें किसी व्यक्ति को कष्ट या जीव को आघात न पहुँचे।

सोत्सव [वि] (सं.) १-उत्सव सहित। २-प्रसन्न। खुश।

सोत्सुक [वि.] (सं) अभिमानी। घमंडी।

सोत्सेध [वि.](सं) उच्च। ऊँचा। उन्नत। उठा हुआ

सोथ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोथ'।

सोदकुंभ, सोदकुम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला एक कृत्य।

सोदाधिल [वि.] (सं.) लघु। अल्प। थोड़ा।

सोदन [संज्ञा पु.] (देश.) कागज का वह टुकड़ा जिस पर सूई से छेद करके बेल-बूटे बनाये होते हैं। यह कसीदा काढ़ने के काम में आता है।

सोदय [वि.] (सं.) वृद्धियुक्त। ब्याज या सूद समेत।

सोदर [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. सोदरा, सोदरी] सगा भाई। [वि.] एक गर्भ से उत्पन्न।

सोदरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सगी बहन।

सोदरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सगी बहन।

सोदरीय [वि.] देखो 'सोदर'।

सोदर्य [संज्ञा पु., वि] (सं.) देखो 'सहोदर'।

सोद्योग [वि.] (सं.) उद्योगी। कर्मशील।

सोद्वेग [वि.] (सं.) विचलित। चिंतित।

सोध* [संज्ञा पु.](हिं.) १-खोज। खबर। २-संशोधन। ३-चुकता या बेबाक होना। [संज्ञा पु.] (हिं.) महल। प्रासाद।

सोधक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोधक'।

सोधनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) झाड़ू। बुहारी।

सोधन [संज्ञा पु.] (हिं.) खोज। तलाश।

सोधना* [क्रि. स.] (हिं.) १-शुद्ध या साफ करना। २-गलती या दोष दूर करना। ३-ढूंढ़ना। ४-कुछ संस्कार करके धातुओं को औषध रूप में काम में लाने के योग्य बनाना। ५-ऋण चुकाना। ६-निश्चित करना।

सोधुस [संज्ञा पु.] (हिं.) जल का किनारा।

सोधाना+ [क्रि. स.](हिं.)१-सोधने का काम दूसरे से कराना। २-ठीक कराना। ३-ढूँढवाना।

सोधु* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोध'।

सोन [संज्ञा पु.](हिं.) १-बिहार का एक प्रसिद्ध नद जो गङ्गा में मिलता है। *२-देखो 'सोना'। [वि.] लाल। अरुण। [संज्ञा स्त्री.] एक प्रकार की सदाबहार बेल। [संज्ञा पु.] (हिं.) लहसुन। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का जलपक्षी।

सोनकिरवा+ [संज्ञा पु.](हिं.)१-एक प्रकार का कीड़ा। २-जुगनूं।

सोनकीफर [संज्ञा पु.](हिं.)एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष।

सोनकेला [संज्ञा पु.] (हिं.) चंपाकेला। पीलाकेला।

सोनगढी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का ऊख।

सोनगहरा [संज्ञा पु.] (हिं) गहरा सुनहरा रंग।

सोनगेरू [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोनागेरू'।

सोनचंपा [संज्ञा पु.] (हिं.) सुवर्णचंपक।

सोनचिरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.)नट जाति की स्त्री। नटिन

सोनजरद, सोनजर्द [संज्ञा स्त्री] (हिं.) पीली जूही स्वर्णयूथिका।

सोनजूही [संज्ञा स्त्री.](हिं.)एक प्रकार की पीले फूलों वाली जूही।

सोनपेडुकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुछ सुनहलापन लिये हरे रङ्ग की एक चिड़िया।

सोनभद्र [संज्ञा पु.] (सं.) सोन नदी।

सोनहला [संज्ञा पु.] (हिं.) भटकटैया का काँटा। (कहार)।

सोनहा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुत्ते की जाति का एक जङ्गली जन्तु।

सोनहार [संज्ञा पु.] (देश.) एक समुद्री पक्षी।

सोना [संज्ञा पु.](हिं.)१-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य उज्ज्वल पीले रङ्ग की धातु जिसके गहने आदि बनते हैं। स्वर्ण। कांचन। २-बहुत सुन्दर और बहुमूल्य पदार्थ। ३-एक प्रकार का हंस। राजहंस। ४-मझोले कद का एक पहाड़ी वृक्ष। *सोने का घर मिट्टी होना*-सारा वैभव नष्ट होना। *सोने में घुन लगना*-अनहोनी बात होना। *सोने में सुगन्ध होना*-किसी बहुत अच्छी वस्तु में और भी कोई अच्छा गुण या विशेषता होना। [क्रि. अ] १-लेटकर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देने वाली निद्रा की अवस्था में होना। नींद लेना। शयन। २-शरीर के किसी अङ्ग का सुन्न होना। ३-किसी विषय या बात की ओर उदासीन होकर चुप अथवा निष्क्रिय रहना। *सोते-जागते*-हर समय।

सोनगेरू [संज्ञा पु.] (हिं.) अधिक लाल तथा मुलायम जाति का गेरू।

सोनापाठा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसके फल, बीज और छाल दवा के काम में आते हैं।

सोनापेट [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने की खान।

सोनाफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) एक झाड़ी जिसकी छाल के रेशों से रस्सियाँ बनती हैं।

सोनमक्खी, सोनामाखी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग औषध रूप में होता है। २-एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

सोनार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुनार'।

सोनिजरद* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'सोनजर्द'।

सोनित* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोणित'।

सोनी+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सुनार। स्वर्णकार। [संज्ञा पु.] (देश.) तुन जाति का एक वृक्ष।

सोनेइया [संज्ञा पु] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

सोनैया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देवदाली।

सोप [संज्ञा पु] (देश.) छपी हुई चादर विशेष। [संज्ञा पु](अं) साबुन। [संज्ञा पु.](हिं.) झाड़ू बुहारी।

सोपकार [संज्ञा पु.] (सं.) ब्याज सहित मूलधन।

सोपकारआधि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह धरोहर जो किसी फायदे के काम में लगा दी गई हो।

सोपत [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'सुभीता'।

सोपाक [संज्ञा पु] (सं.) १-श्वपाक। चंडाल। १-वनौषधि बेचने वाला।

सोपाधिक [वि.](सं.)१-जिसमें कोई प्रतिबंध या शर्त लगी हो। कण्डिशनल। २-किसी विशिष्ट सीमा मर्यादा, व्याख्या आदि से बँधा हुआ। क्वालिफायड।

सोपाधिप्रदान [संज्ञा पु.](सं.)ऋण लेने वाले या धरोहर रखने वाले से किसी बहाने से ऋण की रकम बिना दिये गिरवी की वस्तु वापस ले लेना।

सोपान [संज्ञा पु.] (सं.) १-सीढ़ी। जीना। २-मोक्ष प्राप्ति का उपाय (जैन)।

सोपानक [संज्ञा पु.] (सं.) सोने के तार में पिरोई हुई मोतियों की माला।

सोपानित [वि.] (सं.) सोपान या सीढ़ियों वाली।

सोपारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'सुपारी'।

सोपि [वि.] (हिं.) १-वही। २-वह भी।

सोफता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एकांत स्थान। २-रोग आदि में कुछ कमी होना।

सोफा [संज्ञा पु.](अं.) एक प्रकार का लम्बा गद्दीदार आसन। कोच।

सोफियाना [वि.](अं.) १-सूफियों का। सूफी-संबंधी २-जो देखने में सादा पर बहुत भला लगे।

सोफी [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'सूफी'।

सोब [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार की छपी हुई चादर

सोबन+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुवर्ण'।

सोभ* [संज्ञा स्त्री.](हिं.)देखो 'शोभा'। [संज्ञा पु.] (सं.) गंधर्वों के नगर का नाम।

सोभन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोभन'।

सोभना* [क्रि. अ.] (हिं.) शोभा देना।

सोभर [संज्ञा पु.] (?) सूतिकागार। जच्चाखाना।

सोभरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक वैदिक ऋषि।

सोभांजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोभांजन'।

सोभाकारी [वि.] (हिं.) सुन्दर।

सोभायमान [वि] (हिं.) देखो 'शोभित'।

सोभित* [वि] (हिं.) देखो 'शोभित'।

सोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्राचीन भारतीय-लता जिसके रस का सेवन प्राचीन वैदिकऋषि मादक पदार्थ के रूप में करते थे। २-एक प्राचीन वैदिक देवता। ३-चन्द्रमा। ४-सोमवार। ५-अमृत। ६-जल। ७-कुबेर। ८-यम। ९-सोमयज्ञ। १०-स्वर्ग। ११-वायु। १२-एक बानर का नाम। १३-एक पर्वत का नाम। १४-आठ वसुओं में से एक

सोमक [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक ऋषि। २-एक राजा ३-श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ४-स्त्रियों का एक रोग ५-सहदेव का एक पुत्र।

सोमकर [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा की किरण।

सोमकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) सोमरस तैयार करना।

सोमकल्प [संज्ञा पु.](सं.) पुराणानुसार २१वें कल्प का नाम।

सोमकांत, सोमकान्त [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रकांत-मणि। [वि.] १-चन्द्रमा के समान प्रिय। २-जिसे चन्द्रमा प्रिय हो।

सोमकाम [वि.] (सं.) सोमपान करने की अभिलाषा

सोमक्रतु [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयज्ञ।

सोमक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) अमावस्या।

सोमक्षीरा, सोमक्षीरी, सोमखंडा, सोमखण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमवल्ली।

सोमगंधक, सोमगन्धक [संज्ञा पु.](सं.) लालकमल

सोमगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सोमगा [संज्ञा पु.](सं.) सोमवल्ली।

सोमगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक पर्वत। २-मेरु-ज्योति। ३-एक आचार्य का नाम।

सोमगृष्टिका [संज्ञा स्त्री.] कुम्हड़े की लता। पेठा।

सोमगोपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अग्नि।

सोमग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंद्रग्रहण। २-घोड़ों का एक ग्रह। ३-वह पात्र जिसमें सोमरस एकत्र किया जाय।

सोमग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा का ग्रहण।

सोमघृत [संज्ञा पु.] (सं.) एक औषध घृत जो स्त्री रोगों में दिया जाता है।

सोमचमस [संज्ञा पु.](सं.) वह पात्र जिसमें सोमपान किया जाता है।

सोमज [संज्ञा पु.] (सं.) १-बुधग्रह। २-दूध। [वि.] चन्द्रमा से उत्पन्न।

सोमजाजी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोमयाजी'।

सोमतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

सोमदिन [संज्ञा पु.] (हिं.) सोमवार। चन्द्रवार।

सोमदेव [संज्ञा पु.](हिं.) १-सोमदेवता। २-चन्द्रमा

सोमदैवत, सोमदैवत्य [वि.] (सं.) जिसके देवता सोम हों।

सोमदैवत [संज्ञा पु.] (सं.) मृगशिरानक्षत्र।

सोमधान [वि.] (सं.) जिसमें सोम हो।

सोमधारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-आकाश। २-स्वर्ग।

सोमनंदी, सोमनन्दी [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव के एक अनुचर का नाम। २-एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।

सोमनंदीश्वर, सोमनन्दीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिवजी के एक लिंग का नाम।

सोमन* [संज्ञा पु.] देखो 'सौमन'।

सोमनस [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सौमनस्य'।

सोमनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक जिसका मन्दिर काठियावाड़ में है।

सोमनाम-रस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रसौषध।

सोमनेत्र [वि.](सं.) १-जिसका नेता या रक्षक सोम हो। २-सोम के से नेत्रों वाला।

सोमप [वि.] (सं.) १-यज्ञ में सोमरस पीने वाला। २-सोमरस पान करने वाला।

सोमपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

सोमपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) कुशजाति की एक घास। डाभ।

सोमपर्व [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान करने का उत्सव या पुण्यकाल।

सोमपा [वि.] (सं.) देखो 'सोमप'।

सोमपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोम रखने का पात्र। २-सोम पीने का बरतन।

सोमपान [संज्ञा पु.] (सं.) सोम पीने की क्रिया।

सोमपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोम का रक्षक। २-गंधर्व।

सोमपावन [वि.] (सं.) सोमपान करने वाला।

सोमपायी [वि.] (सं.) सोमलता का रस पीने वाला

सोमपिती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रगड़ा हुआ चन्दन रखने का बरतन।

सोमपीति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सोमपान। २-सोमयज्ञ।

सोमपीती [संज्ञा पु.] देखो 'सोमपायी'।

सोमपीथ [संज्ञा पु.] (सं.) सोमलता का रस पीना।

सोमपीथी [वि.] (सं.) सोमपायी।

सोमपुत्र [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

सोमपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोम का रक्षक। २-सोम का अनुचर।

सोमपृष्ठ [वि.](सं.) (वह पर्वत) जिस पर सोम हो

सोमपेय [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयान।

सोमप्रदोष [संज्ञा पु.](सं.) सोमवार को पड़ने वाला प्रदोष व्रत।

सोमप्रभ [वि.] (सं.) सोम या चन्द्रमा के समान प्रभाव वाला।

सोमप्रवाक [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयज्ञ में घोषणा करने वाला।

सोमबंधु, सोमबन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुमुद। २-सूर्य। ३-बुध।

सोमबेल [संज्ञा स्त्री] (हिं) गुल चाँदनी का पौधा।

सोमभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान।

सोमभू [संज्ञा पु.] (सं.) १ बुध। २ जैनों के अनुसार चौथे कृष्ण वसुदेव का नाम। [वि.] १-सोम से उत्पन्न। २-चन्द्रवंशीय।

सोमभृत [वि.] (सं.) सोम लाने वाला।

सोमभोजन [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान।

सोम-मख [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयज्ञ।

सोम-मद [संज्ञा पु.] (सं.) सोमपान से होने वाला नशा।

सोमयज्ञ, सोमयाग [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल का एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान किया जाता था।

सोमयाजी [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयज्ञ करने वाला।

सोमयोनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता। २-ब्राह्मण। ३-पीतचन्दन।

सोमरक्ष, सोमरक्षी [वि.] (सं.) सोम का रक्षक।

सोम-रस [संज्ञा पु.] (सं.) सोमलता का रस।

सोमरा+ [संज्ञा पु.] (देश.) १-जुते हुये खेत का दुबारा जोता जाना। २-सम-चतुर्भुज खेत का चौबाई में जोता जाना।

सोमराग [संज्ञा पु.] (सं.) संगीत में एक राग।

सोमराज [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

सोमराजसुत [संज्ञा पु.] (सं.) बुध।

सोमराजिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बकुची।

सोमराजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १ बकुची। २-एक वर्णवृत्त जिसके चरण में दो यगण होते हैं।

सोमराजी-तैल [संज्ञा स्त्री.](सं.) वैद्यक में एक तैलौषध जो कुष्ठादि चर्म रोगों में लाभप्रद होता है।

सोमराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रलोक।

सोमराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन जनपद का नाम।

सोमरोग [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों का बहुमूत्र रोग।

सोमल [संज्ञा पु.] (हिं.) संखिया विष का एक भेद।

सोमलता, सोमलतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'सोम (१)'। २-गिलोय। ३-ब्राह्मी।

सोमलोक [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रलोक।

सोमवंश [संज्ञा पु.] (सं.) क्षत्रियों का चन्द्रवंश।

सोवंशीय, सोमवंश्य [वि.] (सं.) १-चन्द्रवंश में उत्पन्न। २-चन्द्रवंश का।

सोमवत् [वि.] (सं.) [स्त्री. सोमवती] १-सोमयुक्त। २-चन्द्रमा के समान।

सोमवती, सोमवती-अमावस्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जो पुण्य-तिथि मानी जाती है।

सोमवर्धक [वि.] (सं.) सोम के समान तेज वाला।

सोमवल्क [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद खैर। २-कायफल। ३-करंज। ४-रीठा करंज। ५-बबूर। कर्कर

सोमवल्लरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ब्राह्मी। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। ३-देखो 'सोम' (१)।

सोमवल्लिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बाकुची। २-देखो 'सोम' (१)।

सोमवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'सोम' (१)। २-गिलोय। ३-बकुची। ४-छिरेंटी। ५-ब्राह्मी। ६-सुदर्शन। ७-गजपीपल। ८-बनकपास।

सोमवामी [वि.] (सं.) सोम वमन करने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) वह ऋत्विज् जो खूब सोमपान

करता हो।

सोमवार [संज्ञा पु.] (सं.) सात वारों में से एक जो रविवार और मङ्गलवार के बीच में पड़ता है। चन्द्रवार।

सोमवारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सोमवती अमावस्या [वि.] (हिं.) सोमवार सम्बन्धी। सोमवार का।

सोमवासर [संज्ञा पु.] (सं.) सोमवार।

सोमविक्रयी [संज्ञा पु.] (सं.) सोमरस बेचने वाला।

सोमवीथी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमंडल।

सोमवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-कायफल। २-सफेद खैर।

सोमवृद्ध [वि.] (सं.) जो सोमरस पीते बूढ़ा हो गया हो। खूब सोमपान करने वाला।

सोमव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) १-साम का नाम। २-सोमवार का व्रत।

सोमसंज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर। कर्पूर।

सोमसंभवा, सोमसम्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूर-कचरी।

सोमसंस्था [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमयज्ञ का एक प्रारम्भिक कृत्य।

सोमसार [संज्ञा पु.] (सं.) १-सफेद खैर। २-कीकर बबूल।

सोमसिंधु, सोमसिन्धु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

सोमसिद्धांत, सोमसिद्धान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बुद्ध। २-वह शास्त्र जिससे भविष्य की बातें जानी जाती हैं। ज्योतिष शास्त्र।

सोमसुंदर, सोमसुन्दर [वि.] (सं.) सोम या चंद्रमा के समान सुन्दर। बहुत सुन्दर।

सोमसुत् [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोमरस निकालने वाला। २-यज्ञ में सोमरस चढ़ाने वाला ऋत्यज्।

सोमसुत [संज्ञा पु.] (सं.) (चन्द्रमा का पुत्र) बुध।

सोमसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (चन्द्रमा की पुत्री) नर्मदा नदी।

सोमसुति, सोमसुत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमरस निकालने का काम।

सोमसुत्वा [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ में सोमरस चढ़ाने वाला।

सोमसूत्र [संज्ञा पु.] (सं.) शिवलिंग की जलधरी से जल निकालने का स्थान अथवा नाली।

सोमांग, सोमाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सोमयज्ञ का एक अंग।

सोमांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा की किरण। २-सोमलता का अंकुर। ३-सोमयोग का एक अंग

सोमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोमलता। २-एक अप्सरा जिसका उल्लेख महाभारत में आता है। ३-एक नदी का नाम।

सोमाख्य [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

सोमाद [वि.] (सं.) सोम-भक्षण करने वाला।

सोमाधार [संज्ञा पु.] (सं.) सोम रखने का पात्र।

सोमापूषण [संज्ञा पु.] (सं.) सोम और पूषण नामक देवता।

सोमापौष्ण [वि.] (सं.) सोम और पूषण का। सोम और पूषण सम्बन्धी।

सोमाभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा की किरणें।

सोमायन [संज्ञा पु.] (सं.) एक मास का व्रत विशेष जिसमें २७ दिन दूध पीकर रहने तथा ३ दिन तक उपवास करने का विधान है।

सोमारुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) सोम और रुद्र नामक देवता

सोमारौद्र [वि.] (सं.) सोम और रुद्र-सम्बन्धी।

सोमार्द्धधारी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

सोमाल [वि.] (सं.) कोमल। नरम। मुलायम।

सोमालक [संज्ञा पु.] (सं.) पुखराज। पुष्पराग-मणि

सोमवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चन्द्रमा की माता का नाम।

सोमाष्टमी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अष्टमी तिथि जो सोमवार को पड़े।

सोमाष्टमी-व्रत [संज्ञा पु.] (सं.) सोमवार को पड़ने वाली अष्टमी तिथि के दिन किया जाने वाला व्रत।

सोमास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का अस्त्र।

सोमाह [संज्ञा पु.] (सं.) सोमवार का दिन।

सोमाहुत [वि.] (सं.) जिसकी सोमरस द्वारा तृप्ति की गई हो।

सोमाहुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमरस की आहुति।

सोमाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महा सोमलता।

सोमित्रि [संज्ञा पु.] (डिं.) लक्ष्मण।

सोमी [वि.] (सं.) जिसमें सोम रस हो।
[संज्ञा पु.] (सं.) १-सोम की आहुति देने वाला। २-सोमयज्ञ करने वाला।

सोमीय [वि.] (सं.) सोम और इन्द्र-सम्बन्धी।

सोमेंद्र, सोमेन्द्र [वि.] (सं.) सोमयज्ञ।

सोमेज्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोमयज्ञ।

सोमेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'सोमनाथ'। २-काशी में स्थापित एक शिवलिंग। ३-श्रीकृष्ण। ४-संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम।

सोमेश्वर-रस [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक रसौषध

सोमोत्पत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा का जन्म। २-अमावस्या के उपरांत चंद्रमा का फिर से निकलना।

सोमोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण। [वि.] चंद्रमा से उत्पन्न।

सोमोद्भवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नर्मदा नदी।

सोमैती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोमवती-अमावस्या'।

सोम्य [वि.] (सं.) १-सोमयुक्त। २-सोम-सम्बन्धी सोम का। ३-सोमपान के योग्य। ४-सोम की आहुति देने वाला।

सोय* [सर्व.] (हिं.) १-वही। २-सो। +[संज्ञा स्त्री.] देखो 'सुभीता'।

सोया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोआ'।

सोरंजान [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सूरंजान'।

सोर* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शोर। हल्ला। २-प्रसिद्धि नाम। तट। किनारा। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जड़ मूल। [संज्ञा पु.] (सं.) वक्रगति। टेढ़ी चाल।

सोरठ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोरठ'।

सोरठ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २-इस देश की राजधानी, सूरत। ३-ओड़व जाति का एक राग खुली सोरठ कहना-निःसंकोच भाव से कहना।

सोरठमल्लार [संज्ञा पु.] (हिं.) सम्पूर्ण जाति का एक राग।

सोरठा [संज्ञा पु.] (हिं.) अड़तालीस मात्राओं का एक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह-ग्यारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएं होती हैं। (इसके समचरणों में जगण का निषेध है। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है)।

सोरठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक रागिनी का नाम।

सोरण [वि.] (सं.) कुछ कसैला, मीठा, खट्टा और नमकीन।

सोरन [संज्ञा पु.] (हिं.) जमींकंद। सूरन।

सोरनी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झाड़ू। बुहारी। २-मृतक का एक संस्कार जो तीसरे दिन होता है और जिसमें उसकी चिता की राख बटोरकर नदी या जलाशय आदि में डाल दी जाती है।

सोरवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोरबा'।

सोरभखी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) तोप या बन्दूक।

सोरह* [वि.] (हिं.) देखो 'सोलह'।

सोरही+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-सोलह चित्ती कौड़ियों का समूह जिससे लोग जूआ खेलते हैं। २-वह जूआ जो सोलह कौड़ियों से खेला जाता है। ३-कटी हुई फसल की सोलह अँटियाँ या पूलों का बोझ।

सोरा+* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोरा'।

सोरावास [संज्ञा पु.] (सं.) बिना नमक का सोरबा

सोराष्ट्रिक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सौराष्ट्रिक'।

सोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बरतन में का महीन छेद।

सोर्णभ्रू [वि.] (सं.) जिसके दोनों भवों के मध्य रोएँ की भँवरी सी हो।

सोलंकी [संज्ञा पु.] (देश.) क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश, जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनों तक था।

सोल [वि.] (सं.) १-शीतल। ठंढा। २-कसैला, खट्टा और तीता।

सोलपंगो [संज्ञा पु.] (डिं.) केंकड़ा।

सोलपोल [वि.] (हिं.) व्यर्थ का। बे-फायदा।

सोलह [वि.] (हिं.) दस और छः। सोलहो आने-संपूर्ण। पूरा-पूरा।

सोलहनहों [संज्ञा पु.] (हिं.) सोलह नाखून वाला हाथी।

सोलहवाँ [वि.] (हिं.) [स्त्री. सोलहवीं] जिसका स्थान पंद्रह के बाद हो।

सोलहसिंगार [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों का पूरा सिंगार जिसके अंतर्गत-शरीर में उबटन लगाना, स्नान करना, सुन्दर वस्त्र पहनना, बाल सँवारना, काजल लगाना, सिंदूर से माँग भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल

बनाना, मेंहदी रचाना, सुगंध लगाना, आभूषण पहनना, फूलों की माला धारण करना, मिस्सी लगाना, पान खाना और होंठों को लाल करना।

सोलही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सोरही'।

सोला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का झाड़ जिसके छिलके से अँगरेजी टोप बनते हैं।

सोलाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुलाना'।

सोलाली [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पृथ्वी।

सोल्लास [क्रि. वि.] (हिं.) उल्लासपूर्वक। आनन्द और उत्साहसहित।

सोल्लुंठ, सोल्लुण्ठ [वि.] (सं.) परिहासयुक्त। व्यंग्य हास्ययुक्त। [संज्ञा पु.] व्यंग्य। परिहास।

सोल्लुंठोक्ति, सोल्लुण्ठोक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परिहासयुक्त वचन। व्यंग्योक्ति।

सोवज* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सावज'।

सोवड़ [संज्ञा पु] (हिं.) सूतिकागार।

सोवणी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) झाड़ू। बुहारी।

सोवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने की क्रिया या भाव शयन।

सोवना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सोना'।

सोवरी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौरी'।

सोवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोआ'।

सोवाक [संज्ञा पु.] (सं.) सुहागा।

सोवाना [क्रि. स.] (हिं.) सुलाना।

सोवरी [संज्ञा पु.] (?) पंद्रह मात्राओं का एक ताल। (संगीत)।

सोवाल [वि.] (सं.) काले या धूँए के रङ्ग का।

सोविएट, सोवियत [संज्ञा पु.] (रूसी) १-रूसी सैनिकों या मजदूरों के प्रतिनिधियों की सभा। २-आधुनिक रूसी प्रजातंत्र, जो इन सभाओं के प्रतिनिधि चलाते हैं।

सोवैया* [संज्ञा पु.] (हिं.) सोने वाला।

सोशल [वि.] (अं.) समाज से सम्बन्ध रखने वाला। सामाजिक।

सोशलिज्म [संज्ञा पु.] (अं.) समाजवाद।

सोशलिस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) समाजवादी।

सोष [वि.] (सं.) खारी मिट्टी मिला।

सोषक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोषक'।

सोषण* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोषण'।

सोषना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सोखना'।

सोषु* [वि.] (हिं.) सोखने वाला।

सोष्णीष [संज्ञा पु.](सं.) वह भवन जिसके पूर्व भाग में वीथिका हो।

सोष्यंती, सोष्यन्ती [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह स्त्री जो प्रसव करने वाली हो।

सोष्यंतीकर्म, सोष्यन्तीकर्म [संज्ञा पु.](सं.) वह कृत्य या संस्कार जो आसन्नप्रसवा के लिये कियाजाय

सोष्यंती-होम, सोष्यन्ती-होम [संज्ञा पु.](सं.) आसन्नप्रसवा स्त्री के लिये किया जानेवाला होम विशेष

सोसन [संज्ञा पु.] (फा.) १-एक प्रकार का पौधा। २-इस पौधे का फूल।

सोसनी [वि.](फा.) सोसन के फूल के रंग का। लाली मिला नीला।

सोसाइटी, सोसायटी [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-समाज २-सभा। समिति।

सोस्मि* [पद] (सं.) देखो 'सोऽहम्'।

सोहँ* [क्रि वि.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सोहं, सोहंग, सोहंगम+ [वि.] देखो 'सोऽहम्'।

सोह* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सोहगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-विवाह की एक रीति जिसमें तिलक के बाद वरपक्ष से लड़की के लिए कपड़े, गहने आदि भेजे जाते हैं। २-सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की सूचक वस्तुएँ।

सोहगैला+ [संज्ञा पु.](हिं.)[स्त्री. सोहगैली] सिंदूरा

सोहदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोहदा'।

सोहन [वि.] (हिं.)[स्त्री. सोहनी] सुन्दर। सुहावना [संज्ञा पु.] १-सुन्दर पुरुष। २-नायक। ३-एक प्रकार की रेती या रंदा। *तिकोनिया सोहन*-तीन कोने वाली रेती।

सोहन-चिड़िया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जिसका शिकार करते हैं।

सोहन-पपड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बढ़िया मिठाई।

सोहन-हलुवा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार की बढ़िया मिठाई।

सोहना [क्रि अ.] (हिं.) १-शोभित होना। सुन्दर। लगना। २-रुचिकर होना। अच्छा लगना। + [वि.] (हिं.) [स्त्री. सोहनी] सुन्दर। मनोहर। [क्रि. स.] (हिं.) खेत में उगी घास अलगाना। निराना। [संज्ञा पु.] (फा.) कसेरों का एक नुकीला औजार।

सोहनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-झाड़ू। २-खेत की निराई। [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] सुन्दर। सुहावनी। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सोहनी नामक रागिनी

सोहबत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-संग-साथ। सङ्गति २-सम्भोग। स्त्री-प्रसङ्ग।

सोहमस्मि [पद] देखो 'सोऽहम्'।

सोहर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोहला'। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौरी'। [संज्ञा स्त्री.](देश.) १-नाव के अन्दर की पाटन या फर्श। २-नाव का पाल खींचने की रस्सी।

सोहराना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सहलाना'।

सोहला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घर में बच्चा पैदा होने पर गाये जाने वाले गीत। २-कोई मांगलिक गीत।

सोहाइन* [वि.] (हिं.) देखो 'सुहावना'।

सोहाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खेत की निराई। २-इस काम की मजदूरी।

सोहाग+ [संज्ञा पु.] (हिं) १-देखो 'सुहाग'। २-देखो 'सुहागा'। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का सदाबहारवृक्ष जो मझोले आकार का होता है

सोहागा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह पाटा जिससे जुते हुये खेत की मिट्टी बराबर करते हैं। हेंगा। २-देखो 'सुहागा'।

सोहागिन, सोहागिनी, सोहागिल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुहागिन'।

सोहाता [वि.](हिं.) [स्त्री. सुहाती] सुहावना। सुंदर

सोहाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सुहाना'।

सोहाया [वि.](हिं.)[स्त्री सोहाई] सुन्दर।

सोहायो* [वि.] (हिं.) शोभित। सुन्दर।

सोहारद* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सौहार्द'।

सोहारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पूरी (पकवान)।

सोहाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सुहाल'।

सोहाली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ऊपर के दांतों का मसूड़ा। २-+देखो 'सुहारी'।

सोहावन* [वि.] (हिं.) देखो 'सुहावना'।

सोहावना [वि.] (हिं.) देखो 'सुहावना'। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सोहाना'।

सोहासित* [वि.] (हिं.) १-रुचिकर। अच्छा लगने वाला। २-सुन्दर। [संज्ञा पु.] ठकुरसुहाती। खुशामद।

सोहिं+ [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'सौंह'।

सोहिनी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] सुहावनी। सुन्दर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-करुण रस की एक रागिनी २-झाड़ू। बुहारी।

सोहिल* [संज्ञा पु.] (हिं.) सुहेल नाम का तारा। अगस्त्यतारा।

सोहिला [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोहला'।

सोहीं, सोहैं* [क्रि. वि.] [हिं.) सामने।

सोहौंटी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की लकड़ी जो नाव में लगती है।

सौं* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौंह'। [अव्य.] देखो सों 'या सा'। [प्रत्य.] देखो 'सों' या 'सा'

सौंकारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) प्रातःकाल। सवेरा।

सौंकेरे+ [क्रि. वि.] (हिं.) १-तड़के। सवेरे। २-समय से कुछ पहले। जल्दी।

सौंघा [वि] (हिं.) १-अच्छा। उत्तम। २-ठीक। वाजिब। ३-सस्ता।

सौंघाई [संज्ञा स्त्री.] (?) अधिकता। बहुतायत। २-सस्तापन।

सौंघी [वि.] (?) १-अच्छा। २-उचित। ठीक।

सौंचन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मलत्याग। शौच।

सौंचना* [क्रि. स.] (हिं.) १-मलत्याग करना। २-मलत्याग के उपरांत हाथ, पैर आदि धोना।

सौंचर, सौंचर-नमक [संज्ञा पु.] (हिं.) काला नमक

सौंचाना* [क्रि स.] (हिं.) शौच कराना। हगाना।

सौंज, सौंजाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौज'।

सौंड़, सौंड़ा* [संज्ञा पु.] (हिं.) (रजाई, लिहाफ आदि) ओढ़ने का भारी कपड़ा।

सौंडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिप्पली। शौंडा।

सौंतना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सूतना'।

सौंतुख* [क्रि. वि.] (हिं.) सामने।

सौंदन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कपड़े धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना (धोबी)।

सौंदना [क्रि स.](हिं.) आपस में मिलाना।

सौदर्ज [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सौंदर्य'।

सौंदर्य, सौन्दर्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुन्दरता। खूबसूरती।

सौंदर्यता, सौन्दर्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं) सुन्दरता। रमणीयता।

सौंध* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सौध'। [संज्ञा स्त्री] देखो 'सुगंध'।

सौंधना [क्रि. स.](हि.) १-देखो 'सौंदना'। २-सुगंधित करना।

सौंधा [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सौंधा'। [वि] १-देखो 'सोंधा'। २-अच्छा। रुचिकर।

सौनमक्खी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सोनामक्खी'

सौंपना [क्रि स.] (हि.) १-किसी के सुपुर्द करना। हवाले करना। २-देखो 'सहेजना'।

सौंफ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) १-एक छोटा पौधा जिसके बीज दवा और मसाले के काम में आते हैं। २-उक्त पौधे की तरह का एक जंगली पौधा।

सौंफिया, सौंफी [वि.](हि.) सौंफ से तैयार की हुई (शराब)।

सौभरि [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'साँभरि'।

सौंर [संज्ञा पु.] (हि.) मिट्टी के बरतन-भाँड़े जो बालक-जन्म के दसवें दिन तोड़ दिये जाते हैं। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सौरी'।

सौरई+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) साँवलापन।

सौरना* [क्रि. स.](हि.) स्मरण करना। [क्रि. अ.] देखो 'सँवरना'।

सौंसे+ [वि] (हि.) सब। कुल। समस्त।

सौंह* [संज्ञा स्त्री] (हि.) सौगंद। शपथ। [क्रि. वि] सम्मुख। सामने।

सौंहन [संज्ञा पु.] (हि) देखो 'सोहन'।

सौंही [संज्ञा स्त्री.] (?) एक प्रकार का हथियार।

सौ [वि.](हि.) १-गिनती में पचास का दूना। नब्बे और दस। * २-देखो 'सा'। सौ बात की एक बात-सारांश। निचोड़। सौ की सीधी एक-सब का सार।

सौक [संज्ञा स्त्री.] (हि.) सपत्नी। सौत। [वि.] एक सौ। [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शौक'।

सौकन+ [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'सौत'।

सौकन्य [वि.] (सं.) सुकन्या-सम्बन्धी। सुकन्या का

सौकर [वि.] (सं.) [स्त्री. सौकरी] १-सूकर या सूअर का। सूअर सम्बन्धी। २-सूअर-सा। ३-वाराहअवतार-सम्बन्धी।

सौकरायण [संज्ञा पु.] (सं.) शिकारी। व्याध। अहेरी

सौकरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूअर का शिकार खेलने वाला। २-व्याध। शिकारी। ३-सूअरों का व्यापारी।

सौकराय [वि.] (सं.) सूअर-सम्बन्धी। सूअर का

सौकर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुकरता। सुसाध्यता। २-सुविधा। सुभीता। ३-सूअर का भाव या धर्म। सूअरपन।

सौकीन [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शौकीन'।

सौकीनी [संज्ञा स्त्री.] (हि.) देखो 'शौकीनी।

सौकुमारक [संज्ञा पु.] (सं) सुकुमारता।

सौकुमार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुकुमारता। २-यौवन जवानी। ३-काव्य का एक गुण जिसके लाने के लिए ग्राम्य तथा श्रुति कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।

सौकृत्य [संज्ञा पु.] (सं) १-यज्ञ, याग आदि पुण्य कर्म का सम्यक अनुष्ठान। २-देखो 'सौकर्म'

सौक्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो सिरका आदि बनाता हो।

सौक्ष्म [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सौक्ष्म्य'।

सौक्ष्मक [संज्ञा पु.] (सं.) बहुत छोटा कीड़ा।

सौक्ष्म्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूक्ष्म का भाव। सूक्ष्मता। बारीकी।

सौख [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुख। आराम। २-सुख का अपत्य। +[संज्ञा पु] (हि) देखो 'शौक'।

सौखपानिक, सौखरात्रिक, सौखशय्यिक, सौखशायनिक, सौखशायिक, सौखसुप्तिक [संज्ञा पु.] (सं) १-वह पुरुष जो किसी अन्य पुरुष से सुखपूर्वक सोने का प्रश्न करे। २-बन्दीजन जो राजा या अन्य किसी महान पुरुष को गाना गाकर और बाजे बजाकर जगावें।

सौखा [वि.] (हि.) सहज। सरल।

सौखिक [वि] (सं.) सुख चाहने वाला।

सौखी+ [संज्ञा पु.] (हि.) गुण्डा। बदमाश।

सौखीन+ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शौकीन'।

सौख्य [संज्ञा पु] (सं.) १-सुख का भाव। सुखत्व २-सुख। आराम।

सौख्यद, सौख्यदायी [वि.] (सं.) सुख या आनन्द देने वाला।

सौगंद [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शपथ। कसम। सौंह।

सौगंध, सौगन्ध [संज्ञा पु] (सं.) १-गंधी। २-सुगन्ध। खुशबू। ३-भूतृण। ४-एक वर्णसंकर जाति। [वि.] सुगन्धित। खुशबूदार। [संज्ञा स्त्री.] (हि.) शपथ। कसम।।

सौगंधक, सौगन्धक [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकमल।

सौगंधिक, सौगन्धिक [संज्ञा पु.](सं.) १-नीलकमल २-लालकमल। ३-श्वेतकमल। ४-भूतृण। ५-रूसा घास। ६-गन्धक। ७-पुखराजमणि। ८-गन्धी। ९-एक प्रकार का कीड़ा। १०-नासायोनि [वि.] सुगन्धित। सुवासित।

सौगंधिक वन, सौगन्धिक-वन [संज्ञा पु.] (सं.)१-कमलवन। २-महाभारत के अनुसार एक तीर्थ।

सौगंधिपत्रक [संज्ञा पु.] (सं) सफेद बर्बरी।

सौगंध्य, सौगन्ध्य [संज्ञा पु.](सं.)सुगन्धि का भाव या धर्म।

सौगत [संज्ञा पु.](सं.)बौद्ध। [वि] १-सुगत-संबंधी २-सुगत मत का।

सौगतिक [संज्ञा पु.] (सं) १ बौद्धभिक्षु। २-नास्तिक। ३-अनीश्वरवादी। ४-बौद्धधर्म का अनुयायी।

सौगम्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुगमता। आसानी

सौगरिया [संज्ञा पु.] (हि.) क्षत्रियों की एक जाति का नाम।

सौगात [संज्ञा स्त्री] (तु.) वह अच्छी वस्तु जो इष्ट-मित्रों को देने के लिये कहीं से लाई जाय। भेंट उपहार। तोहफा।

सौगाती [वि.](हि.)१-सौगात या उपहार के योग्य २-उत्तम। बढ़िया।

सौघा+ [वि.] (हि) सस्ता। कम कीमत का।

सौच* [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'शौच'।

सौचि, सौचिक [संज्ञा पु.] (सं) दरजी।

सौचिक्य [संज्ञा पु.](सं.) सीने का काम। दरजी का काम।

सौचुक्य [संज्ञा पु.] (सं) सूचक का भाव या कर्म। सूचकता।

सौज [संज्ञा स्त्री.] (हि.) साज सामान। सामग्री। [वि.] (हि.) शक्तिशाली। ताकतवर।

सौजना* [क्रि. अ.] (हि.) सजना।

सौजन्य [संज्ञा पु.](सं.) सुजनता। भलमनसाहत।

सौजन्यता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सुजनता। भलमनसत

सौजस्क [वि.] देखो 'सौज'।

सौड़ [संज्ञा पु.] (हि.) देखो 'सौंड़'।

सौजा+ [संज्ञा पु.] (हि.) वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।

सौत, सौतन, सौतनि; सौति, सौतिन [संज्ञा स्त्री] (हि.) स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका। सपत्नी। सौतिया डाह-१-दो सौतों में होने वाली ईर्ष्या। २-ईर्ष्या। जलन।

सौतुक,* सौतुख,* सौतुष* [संज्ञा पु] (हि) प्रत्यक्ष। सम्मुख।

सौतेला [वि.] (हि.) [स्त्री. सौतेली] १-सौत से उत्पन्न। सौत का। २-जिसका संबन्ध सौत के रिश्ते से हो।

सौत्य [संज्ञा पु.] (सं.) सूत या सारथि का काम।

सौत्र [वि] (सं.) १-सूत का। २-सूत-संबन्धी। ३-सूत्र में उल्लिखित या कथित। [संज्ञा पु.] (सं.) ब्राह्मण।

सौत्रांतिक, सौत्रान्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धों का एक भेद।

सौत्रामण [वि.](सं.) [स्त्री. सौत्रामणी] इन्द्र-संबंधी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का योग जो एक दिन में होता है।

सौत्रामण-धनु [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

सौत्रामणी [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का यज्ञ।

सौत्रिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुलाहा। २-बनी हुई वस्तु।

सौदर्य [वि.](सं.) १-सहोदर-सम्बन्धी। २-भाई का सा। [संज्ञा पु.] (सं) भ्रातृत्व। भाईपन।

सौदा [संज्ञा पु.] (अ.) १-खरीदने और बेचने की वस्तु। २-खरीदने-बेचने या लेने-देने की बातचीत या व्यवहार। ३-क्रय-विक्रय। सौदा पटना-क्रय-विक्रय की बातचीत ठीक होना। यौ०-सौदा-सुलुफ-खरीदने की वस्तुएँ। सौदा-सूत-व्यवहार [संज्ञा पु] (फा) पागलपन (रोग)।

सौदाई [संज्ञा पु] (अ.) पागल। बावला। किसी का सौदाई होना-किसी पर बहुत अधिक आसक्त

होना। सौदाई बनाना-अपने ऊपर किसी को आसक्त करना।

सौदागर [संज्ञा पु.] (फा.) व्यापारी। व्यवसायी।

सौदागर-बच्चा [संज्ञा पु.](फा) सौदागर या सौदागर का लड़का।

सौदामनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। विद्युत। २-एक अप्सरा। ३-एक रागिनी।

सौदामनीय [वि.] (सं) सौदमनी या विद्युत के समान।

सौदामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सौदामनी'।

सौदामिनीय [वि.] (सं.) देखो 'सौदमनीय'।

सौदायिक [संज्ञा पु.](सं.) स्त्री धन, जो उसे विवाह के समय मिला हो।

सौध [वि.] (सं.) सफेदी या पलस्तर किया हुआ। [संज्ञा पु.] १-महल। भवन। २-चांदी। रजत। ३-दूधिया पत्थर।

सौधकार [संज्ञा पु.] (सं.) प्रासाद या भवन बनाने वाला।

सौधना* [क्रि. स] (हिं.) देखो 'सोधना'।

सौधर्म [संज्ञा पु.] (सं) जैन देवताओं का निवास-स्थान।

सौधार [संज्ञा पु.](सं.) नाटक के चौदह भागों में से एक।

सौधाल [संज्ञा पु.] (सं.) शिवमन्दिर। शिवालय।

सौनंद, सौनन्द [संज्ञा पु.](सं.) बलराम का मूसल

सौन* [क्रि. वि.](हिं.) सामने। प्रत्यक्ष। [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसाई। २-कसाई के घर का मांस। [वि] कसाईखाने से सम्बन्ध रखने वाला।

सौनक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शौनक'।

सौनन+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) कपड़ों को धोने से पहले उनमें रेह आदि लगाना। सौंदना।

सौना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सोना'।

सौनिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-कसाई। २-बहेलिया।

सौपना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सौंपना'।

सौपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-मरकत। पन्ना। सोंठ। ३-गरुड़ के एक अस्त्र का नाम। ३-गरुड़-पुराण

सौपर्णव्रत [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का व्रत। गरुड़ व्रत।

सौपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पातालगारुड़ी-लता।

सौपर्णेय [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़जी।

सौप्तिक [संज्ञा पु.](सं.) १-रात को सोते हुए लोगों पर आक्रमण। २-महाभारत के दसवें पर्व का नाम। [वि.] सुप्त-सम्बन्धी।

सौप्रजास्त्व [संज्ञा पु.](सं.) अच्छी सन्तानों का होना।

सौफ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौंफ'।

सौफिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) रूसा घास का वह रूप जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।

सौफियाना [वि.] (हिं.) देखो 'सोफियाना'।

सौबल, सौबलक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा सुबल के पुत्र, शकुनि।

सौबली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) राजा सुबल की पुत्री, गांधारी

सौबलेय [संज्ञा पु.] (सं.) शकुनि।

सौबलेयी [संज्ञा पु.] (सं.) गांधारी।

सौबिगा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की बुलबुल

सौभ [संज्ञा पु.](सं.) राजा हरिश्चन्द्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो अन्तरिक्ष में मानी गई है।

सौभग [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौभाग्य। २-सुख। आनंद। ३-ऐश्वर्य। सम्पदा। ४-सुन्दरता। सौंदर्य

सौभगत्व [संज्ञा पु.] (सं.) सुख। आनन्द। मङ्गल

सौभद्र, सौभद्रेय [संज्ञा पु] (सं.) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु का नाम।

सौभर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक वैदिक ऋषि। २-एक साम का नाम।

सौभरायण [संज्ञा पु.] (सं.) सौभर का गोत्रज।

सौभरि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मानधाता की पचास कन्याओं से विवाह किया था।

सौभांजन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोभांजन'।

सौभागिनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सुहागिन। सधवा स्त्री

सौभागिनेय [संज्ञा पु.](सं.) किसी सुहागिन का पुत्र

सौभाग्य [संज्ञा पु.](सं.) १-अच्छा। भाग्य। खुशकिस्मती। २-सुख। आनंद। ३-ऐश्वर्य। वैभव ४-स्त्री के सधवा होने की अवस्था। सुहाग। ५-अनुराग। ६-सुन्दरता। ७-मंगलकामना। ८-सफलता। ९-सिंदूर। १०-सुहागा।

सौभाग्यचिंतामणि, सौभाग्य-चिन्तामणि [संज्ञा पु.] (सं.) सन्निपात ज्वर की एक औषध।

सौभाग्यतृतीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की तृतीया जो बहुत पवित्र मानी जाती है।

सौभाग्यव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) फाल्गुनशुक्ला-तृतीया को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत।

सौभाग्यमंडन, सौभाग्यमण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

सौभाग्यवती [वि.] (सं.) १-स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन। २-अच्छे भाग्यवाली

सौभाग्यवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. सौभाग्यवती] १-जिसका भाग्य अच्छा हो। खुशनसीब। २-सुखी और सम्पन्न। खुशहाल।

सौभाग्यशुंठी, सौभाग्यशुण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैद्यक में एक प्रसिद्ध पाक जो सूत का रोग के लिए परम उपकारी होता है।

सौभासिक [वि.] (सं.) चमकीला। समुज्ज्वल।

सौभिक [संज्ञा पु.] (सं.) जादूगर।

सौभिक्ष [वि.] (सं.) अच्छा समय लाने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों को होने वाला एक प्रकार का शूल रोग।

सौभिक्ष्य [संज्ञा पु.] (सं.) अन्न की अधिकता के विचार से अच्छा समय। सुकाल।

सौभेषज [वि.] (सं.) जिसमें उत्तम औषधियाँ हों।

सौभ्रात्र [संज्ञा पु] (सं.) भ्रातृभाव। अच्छा भाईचारा।

सौमंगल्य, सौमङ्गल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुमंगल। कल्याण। २-मंगल-सामग्री।

सौमंत्रिण, सौमन्त्रिण [संज्ञा पु.] (सं) वह जिसके अच्छा मंत्री हो।

सौम [वि.] (सं.) १-सोमलता-सम्बन्धी। २-चन्द्र-सम्बन्धी। *[वि.] (हिं.) देखो। 'सौम्य'।

सौमदत्ति [संज्ञा पु.] (सं.) सोमदत्त का पुत्र, जयद्रथ

सौमन [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार प्राचीन अस्त्र २-फूल। पुष्प।

सौमनस [वि.] (सं.) १-सुमनों या फूलों का। २-मनोहर। सुन्दर। [संज्ञा पु.] १-प्रसन्नता। आनन्द। २-अस्त्रों को व्यर्थ करने वाला एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३-अनुग्रह। कृपा। ४-जायफल।

सौमनसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कायफल का बाहरी छिलका।

सौमनसायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जावित्री।

सौमनस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-भलमनसाहत। २-प्रसन्नता। ३-प्रेम। प्रीति। ४-संतोष।

सौमनस्यायनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालती का फूल

सौमना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फूल। पुष्प। २-कली। ३-एक दिव्यास्त्र।

सौमायन [संज्ञा पु.] (सं.) बुध।

सौमिक [वि.] (सं.) १-सोमरस से किया हुआ (यज्ञ)। २-सोमयज्ञ-सम्बन्धी। ४-सौमायण या चन्द्रायण व्रत करने वाला। [संज्ञा पु.] सोमरस रखने का बरतन।

सौमिकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यज्ञ विशेष। २-सोमलता का रस निचोड़ना।

सौमित्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-लक्ष्मण। २-मित्रता।

सौमित्रा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सुमित्रा'।

सौमित्रि [संज्ञा पु.] (सं.) लक्ष्मण।

सौमिलिक [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्ध-भिक्षुओं का दण्ड विशेष जिसमें रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

सौमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सौम्यी'।

सौमुख्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुमुखता। २-प्रसन्नता

सौमेचक [संज्ञा पु.] (सं.) सोना। स्वर्ण।

सौमेधिक [वि.](सं.) जो अलौकिक बुद्धि सम्पन्न हो। [संज्ञा पु.] ऋषि। मुनि। सिद्ध।

सौमेरव [संज्ञा पु.](सं.) १-स्वर्ण। सोना। २-इलावृत्तखंड का एक नाम। [वि.] सुमेरु-संबंधी।

सौमेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ण। सोना। [वि] सुमेरु-संबंधी। सुमेरु से निकला हुआ।

सौम्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोमयज्ञ। २-बुध, जो चन्द्रमा का पुत्र है। ३-अगहन का महीना। मार्गशीर्ष। ४-रक्त का वह पूर्व रूप जिसमें वह लाल रंग का होने से पहले रहता है। सौरम। ५-ब्राह्मण। ६-भक्त। उपासक। ७-बायाँ हाथ। ८-गूलर। ९-पित्त। १०-साठ संवत्सरों में से एक। ११-यज्ञ के यूप का नीचे से पंद्रह अरत्नि का स्थान। १२ ज्योतिष में सातवें युग का नाम। १३-ब्राह्मणों के पितरों का एक वर्ग। १४-एक कृच्छ्र या कठिन व्रत। १५-वृष, कर्कट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशि। १६-सुशीलता। सज्जनता। भलमनसाहत। १७-पुराणानुसार एक द्वीप। १८-मृगशिरा नक्षत्र। १९-बाईं आँख। २०-हथेली का मध्य भाग। २१-एक दिव्या

सौम्यकृच्छ्र [वि] (सं) [स्त्री. सौम्या] १-सोम या उसके रस से सम्बन्ध रखने वाला। २-सोम या चंद्रमा से सम्बन्ध रखने वाला। चान्द्र। ३-ठण्डा और शांत। ४-अच्छे स्वभाव वाला। नम्र और सुशील। ५-सुन्दर। मनोहर। ६-उत्तर की ओर का। ७-मांगलिक। शुभ। ८-प्रसन्न। प्रफुल्ल। ९-उज्जवल। चमकीला।

सौम्यकृच्छ्र [संज्ञा पु.](सं.) व्रत विशेष जिसमें पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक), भात, मट्ठे, जल और सत्तू से रहकर छठे दिन उपवास करना पड़ता है।

सौम्यगंधा, सौम्यगन्धा, सौम्यगंधी, सौम्यगन्धी [संज्ञा पु] (सं.) शतपत्री। सेवती।

सौम्यगोल [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तरी गोलार्ध।

सौम्यग्रह [संज्ञा पु.] (सं) फलित ज्योतिष में चार शुभग्रह। यथा-चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र

सौम्यज्वर [संज्ञा पु] (सं.) ज्वर विशेष जिसमें कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठण्डा।

सौम्यता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-सौम्य होने का भाव या धर्म। २-शीतलता। ठंडक। ३-सुशीलता। साधुता। ४-सुन्दरता। सौंदर्य। ५-उदारता। परोपकारिता। दयालुता।

सौम्यत्व [संज्ञा पु] (सं.) सौम्यता।

सौम्य-दर्शन [वि.] (सं) देखने में सुन्दर।

सौम्यधातु [संज्ञा पु] (सं) कफ। श्लेष्मा।

सौम्यवार, सौम्यवासर [संज्ञा पु.] (सं) बुधवार।

सौम्य-विज्ञान [संज्ञा पु.](सं.) वह विज्ञान जिसमें औषध के काम के लिये जीवों के रक्त से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।

सौम्यशिखा [संज्ञा स्त्री] (सं) पिंगल-शास्त्र में मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदों में से एक जिसके पूर्व दल में १६ गुरुवर्ण और उत्तर दल में ३२ लघुवर्ण होते हैं।

सौम्या [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-दुर्गा। २-बड़ी इंद्रायन ३-रुद्रजटा। ४-बड़ी मालकंगनी। ५-पाताल-गारुड़ी। ६-घुँघची। ७-शालपर्णी। ८-ब्राह्मी। ९-कचूर। १०-मल्लिका। मोतिया। ११-मोती। मुक्ता। १२-मृगशिरानक्षत्र। १३-आर्य्याछन्द का एक भेद।

सौम्यी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदनी। चंद्रिका।

सौयवस [संज्ञा पु.] (सं) १-घास की प्रचुरता। २-कई सामों के नाम।

सौर [वि.] (सं.) १-सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का। २-सूर्य से उत्पन्न। ३-सूर्य के प्रभाव से होने वाला। सोलर। [संज्ञा पु.] १-सूर्य का उपासक। २-सूर्यवंशी। ३-शनिग्रह। ४-तुंबुरु। ५-धनिया। ६-एक साम का नाम। ७-दाहिनी आँख। [संज्ञा स्त्री](हिं.) १-सौड़। चादर। ओढ़ना। २-सौरी नामक मछली।

सौर-ऋण [संज्ञा पु.](सं) वह ऋण जो मदिरा पीने के लिये लिया जाय।

सौरज [संज्ञा पु] (सं) १-तुंबुरु। २-धनिया। [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'शौर्य'।

सौर-जगत [संज्ञा पु] (सं.) सूर्य तथा उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों (पृथ्वी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरेनस आदि) का समूह या वर्ग जो आकाशचारी पिंडों में स्वतंत्र इकाई के रूप में माना जाता है। सोलर सिस्टम।

सौरठवाल [संज्ञा पु.] (हिं) वैश्यों की एक जाति।

सौरण [वि.] (सं.) सूरन-सम्बन्धी।

सौरत [संज्ञा पु.] (सं.) रतिक्रीड़ा। केलि। संभोग। [वि.] सुरत या रतिक्रीड़ा-सम्बन्धी।

सौरत्य [संज्ञा पु.] (सं) रतिसुख। संभोग।

सौरदिवस [संज्ञा पु.] (सं.) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

सौरद्रोणि [संज्ञा स्त्री.](सं.) छोटी तलैया।

सौरध्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की सितार।

सौरनक्त [संज्ञा पु.](सं)एक प्रकार का व्रत जो रविवार को हस्तनक्षत्र होने पर सूर्य के प्रीत्यर्थ किया जाता है।

सौरपत [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्योपासक।

सौरपरिकर [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने वाले ग्रहों का मंडल। सौरजगत्।

सौरभ [संज्ञा पु] (सं.) १-सुगन्ध। खुशबू। २-आम्र। आम। ३-केसर। कुंकुम। ४-तुम्बरु। ५-धनिया। ६-बीजा बोल। ७-एक साम का नाम।

सौरभक [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके पहले चरण में सगण, जगण, सगण और लघु, दूसरे में नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे में रगण, नगण भगण और गुरु एवं चौथे में सगण जगण, सगण, जगण तथा गुरु होता है।

सौरभमय [वि] (सं.) सुगन्धित। सौरभ या सुगंध-युक्त।

सौरभित [वि] (सं) सुगन्धित। महकाने वाला।

सौरभेय [संज्ञा पु.] (सं.) साँड़। वृषभ। [वि.] (सं.) सुरभि-सम्बन्धी। सुरभि का।

सौरभेयक [संज्ञा पु.] (सं) साँड़। वृष।

सौरभेयी [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-गाय। गो। २-एक अप्सरा।

सौरभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगन्ध। खुशबू। २-सुन्दरता कीर्ति। प्रसिद्धि। नेकनामी। ३-कुबेर।

सौरमास [संज्ञा पु] (सं.) एक सौर-संक्रांति से दूसरी सौर-संक्रांति तक का महीना।

सौरवर्ष, सौरसंवत्सर [संज्ञा पु.] (सं) एक मेष-संक्रांति से दूसरी मेष-संक्रांति का वर्ष।

सौरस [संज्ञा पु.] (सं) १-जूँ। २-नमकीन रस या शोरवा।

सौरसिद्धांत [संज्ञा पु] (सं) ज्योतिष का एक सिद्धांत ग्रंथ।

सौरसूक्त [संज्ञा पु] (सं.) सूर्यसूक्त।

सौरसेन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शौरसेन'।

सौरसेय [संज्ञा पु] (सं) स्कंद। कार्त्तिकेय।

सौरस्य [संज्ञा पु.] (सं) सुरसता।

सौराज्य [संज्ञा पु.] (सं) अच्छा राज्य। सुराज्य।

सौराटी [संज्ञा पु] (सं) संगीत में एक रागिनी।

सौराव [संज्ञा पु.] (सं.) नमकीन रस या शोरवा।

सौराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। २-इस देश का निवासी। [वि.] (सं.) सोरठ देश का।

सौराष्ट्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौराष्ट्र का रहने वाला २-पंचलौह। ३-एक प्रकार का विष। [वि.] (सं.) सौराष्ट्र या सोरठप्रदेश-सम्बन्धी।

सौराष्ट्रमृत्तिका, सौराष्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) गोपी-चन्दन।

सौराष्ट्रिक [वि.] (सं.) सौराष्ट्रदेश-सम्बन्धी। गुजरात काठियावाड़-संबन्धी। [संज्ञा पु.] (सं.) १-सौराष्ट्र का निवासी। २-काँसा नामक धातु। ३-एक प्रकार का विषैला कंद।

सौराष्ट्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गोपीचन्दन।

सौराष्ट्रेय [वि.] (सं.) सौराष्ट्र या गुजरात काठियावाड़ का।

सौरास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

सौरि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनि। २-असनवृक्ष। ३-हुलहुल का पौधा। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शौरि'।

सौरिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनिग्रह। २-स्वर्ग। ३-शराब बेचने वाला। कलवार।

सौरिरत्न [संज्ञा पु.] (सं.) नीलम नामक मणि।

सौरी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-वह कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। जच्चाखाना। २-एक प्रकार की मछली। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सूर्य की पत्नी २-गाय। ३-हुलहुल पौधा।

सौरीय [वि.](सं) सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का। [संज्ञा पु.] १-एक वृक्ष। २-इस वृक्ष का विषैला गोंद।

सौरेय, सौरेयक [संज्ञा पु] (सं.) सफेद कटसरैया।

सौर्य [वि.] (सं) सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शनि। २-एक संवत्सर। ३-हिमालय के दो शृङ्गों का नाम।

सौर्ययाम [संज्ञा पु.](सं.) सूर्य तथा यम-सम्बन्धी।

सौर्यी [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

सौर्योदयिक [वि.] (सं.) सूर्योदय-सम्बन्धी।

सौलंकी [संज्ञा पु.] देखो 'सोलङ्की'।

सौलक्षण्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुलक्षणता।

सौलभ्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुलभता।

सौल, सौला [संज्ञा पु.](हिं.)१-राजगीरों का साहुल २-हल के जूए के ऊपर की गाँठ।

सौल्विक [संज्ञा पु.] (सं.) ठठेरा।

सौव [संज्ञा पु.] (सं) अनुशासन। आदेश। [वि] १-अपना निज का। २-स्वर्गीय।

सौवर [वि.] (सं.) स्वर-सम्बन्धी।

सौवर्चल [संज्ञा पु](सं) १-सोंचर नमक। २-सज्जी [वि.] सुवर्चल-सम्बन्धी।

सौवर्ण [वि.] (सं) [स्त्री. सौवर्णा, सौवर्णी] सोने का। सोने से बना। [संज्ञा पु] स्वर्ण। सोना।

सौवर्णभेदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फूलफेन।

सौवर्णिक [संज्ञा पु.] (सं) सुनार। स्वर्णकार

[वि.] एक कर्ष या १६ माशे भर।

सौवर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

सौवश्य [संज्ञा पु.] (सं.) घुड़दौड़।

सौवस्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) पुरोहित। [वि.] मंगल चाहने वाला।

सौवाध्यायिक [वि.] (सं.) जो स्वाध्याय करता हो।

सौवास [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की सुगन्धित तुलसी।

सौवासिनी [संज्ञा स्त्री.] देखो 'सुवासिनी'।

सौवास्तव [वि.](सं.)१-अच्छी कारीगरी का (मकान) २-अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।

सौविद [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःपुर का रक्षक।

सौविदल्ल, सौविदल्लक [संज्ञा पु.] (सं.) राजा का वह प्रधान कर्मचारी जिसके पास राजा की मुद्रा आदि रहती हो।

सौवीर [संज्ञा पु.](सं.)१-सिंधुनदी के आसपास का प्राचीन प्रदेश। २-उक्त प्रदेश का निवासी। ३-बेर का पेड़ या फल। ४-एक प्रकार की काँजी जो जौ को सड़ाकर बनाई जाती है। बीयर।

सौवीरक [संज्ञा पु.](सं.) १-देखो 'सौवीर'। २-जयद्रथ।

सौवीरसार; सौवीरांजन; सौवीराञ्जन [संज्ञा पु.] (सं) सुरमा।

सौवीरा [संज्ञा स्त्री.] (सं) देखो 'सौवीरी'।

सौवीराम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) जौ या गेहूँ की काँजी।

सौवीरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-बेर का पेड़। २-बेर का फल।

सौवीरी [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। २-सौवीर की राजकुमारी।

सौवीर्य [संज्ञा पु.](सं.)१-सौवीर का राजा। २-बहुत अधिक पराक्रम या वीरता।

सौव्रत्य [संज्ञा पु.] (सं) १-एकनिष्ठा। भक्ति। २-आज्ञापालन।

सौशम्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुशमता। सुशांति।

सौशील्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुशीलता। साधुता।

सौश्रवस [वि.] (सं.) यशस्वी।

सौश्रय [संज्ञा पु.] (सं.) ऐश्वर्य। वैभव।

सौषिर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मसूड़ों का एक रोग। २-फूँककर या हवा भरकर बजाया जाने वाला बाजा

सौषिर्य [संज्ञा पु.] (सं.) पोलापन।

सौष्ठव [संज्ञा पु.](सं.) १-सुष्ठता। सुडौलपन। २-सौंदर्य। सुन्दरता। ३-तेजी। क्षिप्रता। ४-नृत्य में शरीर की एक मुद्रा। ५-नाटक का एक अंग।

सौसन [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'सोसन'।

सौसनी [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'सोसनी'।

सौसुराद [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कीड़ा जो विष्ठा में होता है।

सौस्थित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अच्छी स्थिति। २-ग्रहों का शुभ स्थान में होना।

सौस्नातिक [वि.](सं.) वह जो किसी अन्य से पूछे कि उसका स्नान भलीभाँति हुआ है या नहीं।

सौस्वर्य [संज्ञा पु.] (सं.) सुस्वरता। सुरीलापन।

सौहँ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सौगन्द। कसम। [क्रि. वि.] सामने। आगे।

सौहन [संज्ञा पु.](हिं.)पैसे का चौथाई भाग। छदाम

सौहर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शौहर'।

सौहरा [संज्ञा पु.] (हिं.) ससुर।

सौहाँग [संज्ञा पु.](देश.)दो-भर का बाट या बटखरा।

सौहार्द [संज्ञा पु.](सं.)१-'सुहृद्' होने का भाव। २-सज्जनता। ३-मित्रता।

सौहार्दनिधि [संज्ञा पु.] (सं.) राम की एक उपाधि।

सौहार्द्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'सौहार्द'।

सौहित्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सन्तोष। २-परिपूर्णता ३-सुन्दरता।

सौहीं [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-एक प्रकार की रेती। २-एक प्रकार का हथियार। [क्रि. वि.] (हिं.) सामने आगे।

सौहृद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मित्रता। दोस्ती। २-मित्र दोस्त। [वि.] मित्र सम्बन्धी।

सौहृदय, सौहृदय्य [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता। दोस्ती

सौहृद्य [संज्ञा पु.] (सं.) सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।

स्कंक [संज्ञा पु.] (अं.) एक काले रङ्ग का जन्तु जो अमेरिका में पाया जाता है।

स्कंतृ, स्कन्तृ [वि.] (सं.) उछलने या छलाँग मारने वाला।

स्कंद, स्कन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-निकलना या बाहर आना। २-विनाश। ध्वंस। ३-कार्त्तिकेय जो देवताओं के सेनापति तथा युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४-शरीर। देह। ५-पारद। पारा। ६-शिव। ७-पंडित। विद्वान्। ८-बालक के नौ प्राण-घातक रोगों या ग्रहों में से एक।

स्कंदक, स्कन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो उछले २-सैनिक। सिपाही। ३-एक प्रकार का छन्द।

स्कंदगुप्त, स्कन्दगुप्त [संज्ञा पु.] (सं.) गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध सम्राट् जिनका समय ई० ४५० से ४६७ तक माना जाता है।

स्कंदगुरु, स्कन्दगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

स्कंदग्रह, स्कन्दग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्कंद' (८)

स्कंदजननी, स्कन्दजननी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती

स्कंदजित्, स्कन्दजित् [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

स्कंदन, स्कन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-कोठा साफ होना। रेचन। २-सोखना। शोषण। ३-जाना। ४-बहना। स्खलन। खून का जमना।

स्कंदपुराण, स्कन्दपुराण [संज्ञा पु.] (सं.) अठारह पुराणों में से एक।

स्कंदफला, स्कदफला [संज्ञा स्त्री] (सं) खजूर (वृक्ष)।

स्कंदमाता, स्कन्दमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

स्कंदविशाख, स्कन्दविशाख [संज्ञा पु.] (सं.) शिव

स्कंदषष्ठी, स्कन्दषष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं) चैत सुदी छठ।

स्कंदशक, स्कन्दाशक [संज्ञा पु.] (सं.) पारा। पारद

स्कंदापस्मार, स्कन्दापस्मार [संज्ञा पु.] (सं.) एक बाल रोग जिसमें बालक अचेत हो जाता है और उसके मुख से फेन निकलता है।

स्कंदापस्मारी, स्कन्दापस्मारी [वि.](सं.) जिस पर स्कन्दापस्मार का आक्रमण हुआ हो।

स्कंदित, स्कन्दित [वि.](सं.) निकला या गिरा हुआ।

स्कंदी, स्कन्दी [वि.] (सं.) १-बहाने या गिराने वाला। २-उछलने वाला।

स्कंदोल, स्कन्दोल [वि.](सं.) ठंडा। शीतल। सर्द [संज्ञा पु.] ठंडक। शीतलता।

स्कंध, स्कन्ध [संज्ञा पु.](सं.) १-कंधा। मोढ़ा। २-वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमें से डालियाँ निकलती हैं। कांड। ३-शाखा। डाल। ४-समूह। झुण्ड। ५-वह स्थान जहां विक्रय, उपयोग आदि के लिये बहुत सी वस्तुएँ जमा रहती हों। भंडार। स्टॉक। ६-ग्रंथ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो। ७-देह। शरीर। ८-युद्ध। लड़ाई। ९-दर्शनशास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध। १०-राजा। ११-वह वस्तु जिसका राज्याभिषेक में उपयोग हो। १२-सफेद चील। १३-आर्याछन्द का एक भेद। १४-बौद्धों के मत से रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा तथा संस्कार ये पांचों पदार्थ।

स्कंधक, स्कन्धक [संज्ञा पु.](सं.) १-आर्यागीत या खंधा छन्द। २-वह जो विक्रय आदि के लिए बहुत-सी वस्तुएँ अपने पास रखता हो। स्टॉकिस्ट

स्कंधचाप, स्कन्धचाप [संज्ञा पु.](सं) बहँगी, जिसे कंधे पर रखकर बोझा ढोते हैं।

स्कंधज, स्कन्धज [संज्ञा पु.] (सं) १-सलई। २-वटवृक्ष।

स्कंधतरु, स्कन्धतरु [संज्ञा पु.] (सं) नारियल का पेड़।

स्कंधदेश, स्कन्धदेश [संज्ञा पु.] (सं) १-कंधा। मोटा। २-पेड़ का तना या धड़। ३-हाथी की गरदन।

स्कंध-धारी, स्कन्धधारी [संज्ञा पु.](सं) अपने पास किसी प्रकार की बहुत-सी वस्तुएँ अथवा उनका स्कंध रखने वाला। स्टाक-होल्डर।

स्कंध-पंजी, स्कन्ध-पञ्जी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पंजी या बही जिसमें स्कन्ध अथवा भंडार में रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो। स्टॉक-बुक।

स्कंधपथ, स्कन्धपथ [संज्ञा पु.] (सं) पगडंडी।

स्कंधपरिनिर्वाण, स्कन्धपरिनिर्वाण [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर के पाँचो स्कंधों का नाश। मृत्यु (बौद्ध)।

स्कंधपाल, स्कन्धपाल [संज्ञा पु.](सं.) किसी स्कंध या भंडार की देख-रेख करने वाला अधिकारी। स्टॉक-कीपर।

स्कंधपीठ, स्कन्धपीठ [संज्ञा पु.] (सं.) कंधे की हड्डी

स्कंधप्रदेश, स्कन्धप्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) स्कंधदेश

स्कंधफल, स्कन्धफल [संज्ञा पु.] (सं) १-नारियल का पेड़। २-गूलर।

स्कंधबंधन, स्कन्धबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) सौंफ।

स्कंधबीज, स्कन्धबीज [संज्ञा पु.] (सं.) वह वृक्ष या वनस्पति जिसके स्कंध से ही शाखें निकलकर भूमि तक पहुँचती हैं और वृक्षों का रूप धार करती हैं।

स्कंधमणि, स्कन्धमणि [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जंतर या तावीज।

स्कंधमल्लक, स्कन्धमल्लक [संज्ञा पु.](सं.) सफेद चील।

स्कंधमार, स्कन्धमार [संज्ञा पु.](सं.) बौद्धों के चार मारों में से एक।

स्कंधरुह, स्कन्धरुह [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष।

स्कंधवह, स्कन्धवह, स्कंधवाह, स्कन्धवाह [संज्ञा पु.](सं.) वह पशु जो कंधों के बल बोझ खींचता हो।

स्कंधवाहक, स्कन्धवाहक [वि.] (सं.) जो कंधों पर बोझ उठाता हो। [संज्ञा पु.] देखो 'स्कंधवाह'।

स्कंध-विनिमय, स्कन्ध-विनिमय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह मकान, स्थान या बाड़ा जहाँ स्टाक (स्कंध) या शेयर खरीदे और बेचे जाते हैं। २-स्टाक के काम करने वालों या दलालों की संघटित सभा। स्टॉक-एक्सचेंज (उक्त दोनों अर्थों में)।

स्कंधशाखा, स्कन्धशाखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वृक्ष की मुख्य शाखा।

स्कंधशिर, स्कन्धशिर [संज्ञा पु.](सं.) कंधे की हड्डी

स्कंधशृंग, स्कन्धशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) भैंस।

स्कंधा, स्कन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-डाल। शाखा। २-लता। बेल।

स्कंधाग्नि, स्कन्धाग्नि [संज्ञा स्त्री.](सं.) मोटे लकड़ों की आग।

स्कंधावर, स्कन्धावर [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा का डेरा या शिविर। २-सेना का पड़ाव। छावनी। ३-सेना।

स्कंधिक, स्कन्धिक [संज्ञा पु.] (सं.) बैल।

स्कंधी, स्कन्धी [संज्ञा पु.](सं.) वृक्ष। पेड़। [वि] कांड या तने से युक्त।

स्कंधोग्रीव, स्कन्धोग्रीव [संज्ञा स्त्री] (सं) बृहती नामक वर्णवृत्त का एक भेद।

स्कंधोपनेय, स्कन्धोपनेय [संज्ञा पु.] (सं) राजाओं में होने वाली एक प्रकार की संधि।

स्कंधोपनेय-संधि, स्कन्धोपनेय-सन्धि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह संधि जिसके अनुसार नियत या निश्चित फल थोड़ा-थोड़ा करके प्राप्त किया जाय

स्कंध्य, स्कन्ध्य [वि.] (सं.) १-स्कंध या कन्धे से सम्बन्ध रखने वाला। २-स्कंध के समान।

स्कंभ, स्कम्भ [संज्ञा पु] (सं.) १-खम्भा। २-परमेश्वर।

स्कंभन, स्कम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) खम्भा। स्तम्भ।

स्कंभसर्जन, स्कम्भसर्जन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्कंभसर्जनी'।

स्कंभसर्जनी, स्कम्भसर्जनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बैल-गाड़ी के जूए की कील या खूँटी जिसके बैल इधर-उधर नहीं हो सकते।

स्कन्न [वि.] (सं.) १-गिरा हुआ। स्खलित। २-गया हुआ। ३-सूखा। शुष्क।

स्कभन [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। आवाज।

स्काउट [संज्ञा पु.] (अं.) देखो 'बालचर'।

स्कालर [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह जो स्कूल में पढ़ता हो। छात्र। २-वह जिसने बहुत विद्याध्ययन किया हो। पंडित।

स्कालरशिप [संज्ञा पु.] (अं.) १-छात्रवृत्ति। वजीफा। २-पांडित्य।

स्कीम [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी बड़े काम को करने का विचार या आयोजन। योजना।

स्कूल [संज्ञा पु.] (अं.) १-विद्यालय। २-संप्रदाय या शाखा।

स्कूलमास्टर [संज्ञा पु.] (अं.) अंगरेजी पढ़ाने वाले विद्यालय का शिक्षक।

स्कूली [वि.] (हिं.) १-स्कूल-सम्बन्धी। स्कूल का। २-स्कूल में पढ़ने वाला।

स्कोटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का पक्षी।

स्क्रू [संज्ञा पु.](अं.) वह कील या कांटा जिसके आधे भाग पर चक्करदार गड़ारियां बनी होती हैं तथा जो ठोककर नहीं, बल्कि घुमाकर जड़ा जाता है। पेंच।

स्क्वाड्रन [संज्ञा पु.] (अं.) १-रिसाले का मुख्य भाग जिसमें १०० से २०० तक जवान होते हैं। २-लड़ाकू जहाजों के बेड़े का एक भाग।

स्क्वेयर [संज्ञा पु.] (अं) चौकोर स्थान जिसके चारों ओर मकान हों।

स्खदन [संज्ञा पु.](सं.)१-चीरना। फाड़ना। २-हिंसा हत्या। ३-सताना। उत्पीड़न। ४-स्थिरता।

स्खलन [संज्ञा पु.] (सं) १-गिरना। पतन। २-सत्पथ से भ्रष्ट होना। ३-चूना या टपकना। ४-लड़खड़ाना। ५-फिसलना।

स्खलित [वि.](सं)१ गिरा हुआ। च्युत। २-फिसला या सरका हुआ। ३-लड़खड़ाया हुआ। विचलित ४-चूका हुआ।

स्टांप [संज्ञा पु.] (अं) १-एक प्रकार का सरकारी कागज जिस पर अर्जीदावा लिखकर अदालत में दाखिल किया जाता है अथवा जिस पर किसी प्रकार की पक्की लिखा-पढ़ी की जाती है। २-डाक का टिकट। ३-मोहर। छाप।

स्टाइल [संज्ञा स्त्री.](अं) १-ढंग। २-शैली। पद्धति ३-लेखन-शैली।

स्टाक [संज्ञा पु.] (अं.) १-बिक्री या बेचने का माल २-वह धन या पूँजी जो व्यापारी लोग या उन का कोई समूह किसी काम में लगाता हो। किसी काम के साझे में लगाई हुई पूंजी। ३-सरकारी कागज में व्याज पर लगा हुआ धन। सरकारी कर्ज की हुण्डी। ४-रसद। सामान। ५-वह स्थान जहाँ बिक्री का सामान जमा हो। भंडार।

स्टाकएक्सचेंज [संज्ञा पु.](अं) देखो 'स्कंधविनिमय'

स्टाकब्रोकर [संज्ञा पु.] (अं) वह दलाल जो दूसरों के लिये स्टाक या शेयर खरीदने या बेचने का काम करता हो।

स्टाफ [संज्ञा पु] (अं.) १-उन लोगों का समूह जो किसी संस्था अथवा विभाग में कार्य करते हों और एक ही वर्ग के समझे जाते हों। २-फौजी अफसरों का समूह।

स्टाफऑफिसर [संज्ञा पु.] (अं) वह अधिकारी जिसके आधीन किसी सेना अथवा सैन्यदल का अधिकारी वर्ग हो।

स्टाल [संज्ञा पु.] (अं.) १-प्रदर्शिनी आदि में वह छोटी दूकान जिस पर बेचने के लिये वस्तुएं सजी रहती हैं। २-अस्तबल।

स्टिचिंग-मशीन [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की कल जिसमें लोहे के तारों से पुस्तकों की सिलाई होती है।

स्टीम [संज्ञा पु.] (अं.) भाप। स्टीम भरना-जोश दिलाना।

स्टीम-इंजिन [संज्ञा पु.] (अं.) भाप के जोर से चलने वाला इञ्जिन।

स्टीमर [संज्ञा पु.](अं.) भाप के जोर से चलने वाला छोटा जल-जहाज।

स्टुडेंट [संज्ञा पु.] (अं.) विद्यार्थी।

स्टूल [संज्ञा पु.] (अं.) तीन या चार पायों की छोटी ऊंची चौकी जिसपर एक ही व्यक्ति बैठ सकता है

स्टेज [संज्ञा पु.] (अं.) १-रङ्गमंच। २-मंच।

स्टेज-मैनेजर [संज्ञा पु.] (अं.) रंगमंच का प्रबन्धक

स्टेट [संज्ञा पु.] (अं) १-किसी देश की वह समस्त प्रजा या जनता जो अपना शासन स्वयं करती हो २-वह शक्ति जिसके द्वारा कोई सरकार किसी देश का शासन करता हो। ३-ऐसे राष्ट्र में से कोई एक जिनका कोई सम्मिलित संघ हो और जो व्यक्तिशः स्वतन्त्र होने पर भी किसी केंद्रीय शक्ति अथवा सरकार से संबद्ध हों। ४-कोई स्वतंत्र देशी राज्य। [संज्ञा पु.] (अं. एस्टेट) १-बड़ी जमींदारी। २-स्थावर और जङ्गम सम्पत्ति।

स्टेशन [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह स्थान जहाँ निर्दिष्ट समय पर नियमित रूप से रेलगाड़ियाँ ठहरा करती हैं और यात्री उतरते चढ़ते हैं। २-वह स्थान जहां कुछ लोगों की, रहने के लिये नियुक्ति हो।

स्टैंडर्ड, स्टैण्डर्ड [संज्ञा पु.](अं.) १-शुद्धता अथवा श्रेष्ठता के विचार से निश्चित गुण की उच्च मात्रा अथवा स्वरूप जो प्रायः आदर्श माना जाता है एवं जिससे उस वर्ग के अन्याय पदार्थों की तुलना की जाती है। २-दर्जा। श्रेणी।

स्टैंडिंग-कमेटी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) स्थायी समिति।

स्टैंडिंग-कौंसल [संज्ञा पु.] (अं.) वह बैरिस्टर अथवा एडवोकेट जो सरकार की ओर से मामला चलाने में एडवोकेट जनरल की सहायता करता है।

स्टैच्यू [संज्ञा पु.] (अं.) किसी विख्यात अथवा विशिष्ट व्यक्ति की पत्थर, काँसे आदि की पूरे कद की मूर्त्ति या पुतला जो प्रायः स्मारकस्वरूप किसी सार्वजनिक स्थान पर स्थापित किया जाता है।

स्ट्राइक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हड़ताल।

स्ट्रीट [संज्ञा पु.] (अं.) रास्ता। सड़क।

स्ट्रेट [संज्ञा पु.] (अं.) जलडमरूमध्य।

स्तंकु, स्तङ्कु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा बाजा जो प्राचीनकाल में होता था।

स्तंब, स्तम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुल्म। २-घास की आँटी। ३-रोहतकवृक्ष। ४-एक पर्वत।

स्तंबक, स्तम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गुच्छा। २-नकछिकनी (वृक्ष)।

स्तंबकरि, स्तम्बकरि [संज्ञा पु.] (सं.) धान।

स्तंबकार, स्तम्बकार [वि.] (सं.) गुच्छे बनाने वाला।

स्तंबघन, स्तम्बघन; स्तंबघात, स्तम्बघात; स्तंबघ्न, स्तम्बघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) घास आदि काटने की दांती। हँसिया।

स्तंबहनन, स्तम्बहनन; स्तंबी, स्तम्बी [संज्ञा पु.] (सं.) खुरपी, जिससे घास खोदी जाती है।

स्तंबेरम, स्तम्बेरम [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी। हस्ति।

स्तंभ, स्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-खम्भा। २-पेड़ का तना। ३-साहित्य में किसी कारण अथवा घटना से अङ्गों की गति रुक जाना, जो सात्विक भावों में माना जाता है। ४-जड़ता। अचलता। ५-प्रतिबन्ध। रुकावट। ६-तंत्र में किसी शक्ति को रोकने वाला प्रयोग। ७-अभिमान। दंभ। ८-रोग आदि के कारण होने वाली बेहोशी।

स्तंभक, स्तम्भक [वि.] (सं.) १-रोकने वाला। रोधक। २-संभोग के समय वीर्य को शीघ्र स्खलित होने से रोकने वाला (औषध)। ३-कब्ज करने वाला। [संज्ञा पु.] १-खम्भा। २-शिव।

स्तंभकर, स्तम्भकर [वि.] (सं.) १-रोकने वाला। रोधक। २-जड़ता करने वाला। [संज्ञा पु.] वेष्टन।

स्तंभता, स्तम्भता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तंभ का भाव। २-जड़ता।

स्तंभतीर्थ, स्तम्भतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) आधुनिक खभात का प्राचीन नाम।

स्तंभन, स्तम्भन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २-वीर्य आदि को स्खलित होने अथवा मल को पेट से बाहर निकलने से रोकना। ३-वह औषध जिससे वीर्यपात रुके। ४ जड़करण। ५-किसी की चेष्टा क्रिया अथवा शक्ति रोकने वाला तांत्रिक प्रयोग। ६-कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

स्तंभनी, स्तम्भनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का इन्द्रजाल।

स्तंभनीय, स्तम्भनीय [वि.] (सं.) स्तम्भन करने के योग्य।

स्तंभवृत्ति, स्तम्भवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राणायाम से साँस रोकने का कार्य।

स्तंभि, स्तम्भि [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

स्तंभिका, स्तम्भिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चौकी या आसन का पाया। २-छोटा खम्भा।

स्तंभित, स्तम्भित [वि.] (सं.) १-जो जड़ या निश्चेष्ट हो गया हो। निस्तब्ध। सुन्न। २-रुका अथवा रोका हुआ। अवरुद्ध। ३-चकित।

स्तंभिनी, स्तम्भिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) योग के अनुसार पाँच धारणाओं में से एक।

स्तंभी, स्तम्भी [वि.] (सं.) १-जिसमें स्तम्भ या खम्भे हों। २-रोकने वाला। [संज्ञा पु.] (सं) समुद्र। सागर।

स्तनंधय, स्तनन्धय [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. स्तनंधया स्तनंधयी] १-दूध-पीता बच्चा। २-बछड़ा। वत्स। [वि] (सं.) दूध पीता।

स्तन [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्रियों या मादा पशुओं का वह अङ्ग जिसमें दूध रहता है। छाती।

स्तनकील [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का फोड़ा जो स्त्रियों की छाती में होता है।

स्तनचूचुक [संज्ञा पु.] (सं) स्तन का अगला भाग।

स्तनथ [संज्ञा पु.] (सं.) १-(सिंह की) दहाड़। गर्जन २-गड़गड़ाहट। भीषण नाद।

स्तनथु [संज्ञा पु.] (सं.) (सिंह की) दहाड़। गर्जन।

स्तनदात्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छाती का दूध पिलाने वाली।

स्तनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-ध्वनि। शब्द। २-मेघ गर्जन। ३-कराह। आर्त्त-ध्वनि।

स्तनप [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. स्तनपा, स्तनपायिका] दूध पीता बच्चा। [वि.] स्तनपान करने वाला।

स्तनपान [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन में से दूध पीना।

स्तनपायिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूध-पीती बच्ची।

स्तनपायी [वि.] (सं.) माता के स्तन से दूध पीने वाला। [संज्ञा पु.] वे जंतु या जीव जो जन्म लेने पर अपनी माता का दूध पीकर पलते हैं।

स्तनभर [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थूल या पुष्ट स्तन। बड़े और भारी स्तन। २-स्त्री के से स्तन या छाती वाला आदमी।

स्तनभव [संज्ञा पु] (सं) एक प्रकार का रतिबंध। [वि.] स्तन से उत्पन्न।

स्तनमध्य [संज्ञा पु.] (सं.) दोनों स्तनों के बीच की जगह।

स्तनमुख [संज्ञा पु.] (सं) स्तन का अग्रभाग। चूचुक

स्तनयित्नु [संज्ञा पु] (सं.) १-बादलों की गड़गड़ाहट। २-मेघ। बादल। ३-बिजली। ४-मोथा। ५-मृत्यु। ६-रोग।

स्तनरोग [संज्ञा पु.] (सं.) रोग विशेष जो गर्भवती तथा प्रसूता स्त्रियों के स्तनों में होता है।

स्तनरोहित [संज्ञा पु.] (सं) स्तन या कुच के अग्रभाग के ऊपर दोनों ओर का अंग जो परिमाण में दो अंगुल होता है (सुश्रुत)।

स्तनविद्रधि [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन पर का फोड़ा।

स्तनवृंत, स्तनवृन्त [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन या चूची की घुंडी।

स्तनशिखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्तनवृंत।

स्तनशोष [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन सूख जाने का रोग।

स्तनहार [संज्ञा पु.] (सं.) गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

स्तनांतर, स्तनान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हृदय। दिल। २-छाती पर का चिह्न विशेष जो वैधव्य-सूचक माना जाता है।

स्तनाभुज [संज्ञा पु.] (सं.) वे प्राणी जो अपने बच्चों को स्तन से दूध पिलाते हैं।

स्तनाभोग [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन की पूर्णता या पुष्टता

स्तनित [संज्ञा पु.] (सं.) १-बदल की गरज। २-बिजली की कड़क। ३-करतलध्वनि। ४-ध्वनि। शब्द।

स्तनितकुमार (सं.) जैन-देवताओं का एक वर्ग।

स्तनिफल [संज्ञा पु.] (सं.) विकंकतवृक्ष।

स्तनी [वि.] (सं.) जिसके स्तन हो।

स्तन्य [संज्ञा पु.] (सं.) दूध। [वि.] १-जो स्तन में हो २-स्तन सम्बन्धी।

स्तन्यजनन [वि.] (सं.) दूध बढ़ाने वाला।

स्तन्यदा [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] दूध देने वाली।

स्तन्यदान [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन से दूध पिलाना।

स्तन्यप [वि.] (सं.) [स्त्री. स्तन्यपा] दूध पीने वाला स्तनपान करने वाला। [संज्ञा पु.] दूध पीता बच्चा

स्तन्यपान [संज्ञा पु.] (सं.) स्तन से मुँह लगाकर उस में का दूध पीना।

स्तन्यपायी [वि.] (सं.) स्तनपान करने वाला।

स्तन्यरोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह रोग जो अस्वस्थ माता का दूध पीने से होता है।

स्तन्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कलमी शाक।

स्तब्ध [वि.] (सं.) १-जो जड़ या निश्चेष्ट हो गया हो। स्तम्भित। २-दृढ़। पक्का। ३-मंद। धीमा। ४-हठी। दुराग्रही। ५-अभिमानी। [संज्ञा पु.] वंशी का स्वर धीमा होना जो उसके छः दोषों में से एक है।

स्तब्धकर्ण [वि.] (सं.) बहरा।

स्तब्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्तब्ध होने का भाव जड़ता। हीनता। २-स्थिरता। ३-बधिरता

स्तब्धपाद [वि.] (सं.) लंगड़ा। पंगु।

स्तब्धपादता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लंगड़ापन। पंगुता

स्तब्धमति [वि.] (सं.) मंदबुद्धि।

स्तब्धमेढ़्र [वि.] (सं.) नपुंसक।

स्तब्धरोमा [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। [वि.] जिसके रोंगटे खड़े हों।

स्तभ [संज्ञा पु.] (सं.) बकरा।

स्तर [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक दूसरी के ऊपर पड़ी या लगी हुई तह। परता। २-भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न-भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है। स्ट्रैटा।

स्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-फैलाने या बिखेरने का काम। २-पलस्तर। ३-बिछौना। बिस्तर।

स्तरणीय [वि.] (सं.) १-फैलाने या बिखेरने योग्य। २-बिछाने योग्य।

स्तरिमा [संज्ञा पु] (सं.) सेज। शय्या।

स्तरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धूआँ। धूम्र।

स्तरीभूत [वि.] (सं.) जो जमकर स्तर के रूप में हो गया हो। स्ट्रैटिफायड।

स्तरीमा [संज्ञा पु.] (सं.) सेज। शय्या।

स्तरु [संज्ञा पु.] (सं.) शत्रु। दुश्मन।

स्तर्य [वि.] (सं.) १-फैलाने या बिखेरने योग्य। २-बिछाने योग्य।

स्तव [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप कथन या गुणगान। स्तोत्र। २-स्तुति। प्रशंसा।

स्तवक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तव या प्रशंसा करने वाला। २-फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ३-[illegible] झुंड। ४-राशि। ढेर। ५-पुस्तक का [illegible]

स्तवथ [संज्ञा पु.] (सं.) स्तुति। स्तोत्र।

स्तवन [संज्ञा पु.] (सं.) स्तुति करना। गुणकीर्तन।

स्तवनीय [वि.] (सं.) स्तव या स्तुति करने योग्य।

स्तवरक [संज्ञा पु.] (सं.) घेरा। वेष्ठन।

स्तवितव्य [वि] (सं) स्तव या प्रशंसा के योग्य।

स्तविता [संज्ञा पु] (सं) स्तुति या गुणगान करने वाला।

स्तवेय [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

स्तव्य [वि] (सं.) स्तवनीय।

स्तायु [संज्ञा पु] (सं) चोर।

स्तारा [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का पौधा।

स्ताव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तुति। गुणगान। २-गुणगान करने वाला।

स्तावक [वि.] (सं.) १-प्रशंसक। २-बन्दीजन।

स्तावर [संज्ञा स्त्री] (?) एक प्रकार की लता।

स्तावा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक अप्सरा।

स्ताव्य [वि.] (सं) देखो 'स्तवनीय'।

स्तिगीमूरा [संज्ञा पु] (?) जहाज का पाल और उसकी रस्सी।

स्तिपा [संज्ञा पु.](सं) वह जो आश्रितों की रक्षा करे

स्तिभि [संज्ञा पु.] (सं.) १-फूलों का गुच्छा। २-समुद्र। ३-अवरोध। प्रतिबन्ध।

स्तिभिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) गुच्छा। स्तवक।

स्तिमित [वि.] (सं.) १-ठहरा हुआ। निश्चल। २-भीगा हुआ। गीला। तर। ३-प्रसन्न। संतुष्ट। [संज्ञा पु.] (सं.) १-नमी। २-स्थिरता।

स्तिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थिर जल।

स्तीम [वि] (सं) सुस्त। आलसी। धीमा।

स्तीमित [वि.] (सं.) देखो 'स्तिमित'।

स्तीर्ण [वि] (सं.) फैलाया या बिखेरा हुआ। विस्तृत

स्तीर्वि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अध्वर्यु। २-जल। ३-आकाश। ४-लहू। ५-शरीर। ६-भय। ७-घास पात। ८-इन्द्र।

स्तुक [संज्ञा पु] (सं.) सन्तान।

स्तुटि [संज्ञा पु.] (सं) भरद्वाजपक्षी।

स्तुत [वि.] (सं.) जिसकी स्तुति की गई हो।

स्तुतस्तोम [वि.] (सं.) जिसका गुणगान किया गया हो। प्रशंसित।

स्तुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-किसी के गुणों का वर्णन प्रशंसा। बड़ाई। २-स्तव। ३-दुर्गा। [संज्ञा पु.] विष्णु का एक नाम।

स्तुतिगीतक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रशंसा का गीत।

स्तुतिपाठक [संज्ञा पु.] (सं.) स्तुति पाठ करने वाला। चारण। भाट।

स्तुतिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) गुणगान। यशोगान।

स्तुतिवादक [संज्ञा पु.] (सं.) १-प्रशंसक। २-खुशामदी।

स्तुतिव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो स्तुति करे।

स्तुत्य [वि.] (सं.) स्तुति या प्रशंसा के योग्य।

स्तुत्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नलिका नामक गन्धद्रव्य। २-गोपीचन्दन।

स्तुनक [संज्ञा पु.] (सं.) बकरा।

स्तुभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार की अग्नि। २-बकरा।

स्तुभवन [वि.] (सं.) स्तुति या प्रशंसा करने वाला।

स्तुव [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े के सिर का एक अङ्ग।

स्तुवत् [वि] (सं) स्तुति करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं) १-स्तावक। २-उपासक। पूजक

स्तुवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तावक। २-उपासक। पूजक। ३-यज्ञ।

स्तुवेय्य [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

स्तुषेय्य [वि.] (सं.) १-स्तुत्य। २-श्रेष्ठ। उत्तम।

स्तूप [संज्ञा पु.](सं.) १-मिट्टी, पत्थर आदि का ऊंचा ढूह। टीला। २-वह ढूह अथवा टीला जो भगवान बुद्ध अथवा किसी बौद्ध आत्मा की अस्थि, दांत, केश आदि स्मृति चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिये उनके ऊपर बनाया गया हो। ३-ऊंचा

स्तृत [वि.] (सं.) १-ढका हुआ। आच्छादित। २-फैला हुआ। विस्तृत।

स्तृति [संज्ञा स्त्री] (सं) ढांकने की क्रिया। आच्छादन।

स्तेन [संज्ञा पु.] (सं) १-चोर। २-चोरी। ३-चोर नामक गंधद्रव्य।

स्तेम [संज्ञा पु.] (सं) आर्द्रता। गीलापन।

स्तेय [संज्ञा पु.] (सं) चोरी।

स्तेयकृत [वि.] (सं) चोर।

स्तेयफल [संज्ञा पु.] (सं) तेजबल का पेड़।

स्तेयी [संज्ञा पु](सं) १-चोर। २-चूहा। ३-सुनार

स्तैन, स्तैन [संज्ञा पु] (सं) १-चोरी। २-चोर।

स्तोक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बूंद। २-चातक। ३-जैनियों के काल-विभाग में उतना समय जितने में मनुष्य सात बार श्वास लेता है।

स्तोतक [संज्ञा पु.](सं) १-पपीहा। २-बछनाग विष

स्तोतव्य [वि.] (सं.) स्तुति के योग्य। स्तुत्य।

स्तोता [वि.] (सं.) स्तुति करने वाला। [संज्ञा पु.] विष्णु।

स्तोत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-देवता आदि का छन्दोबद्ध गुणगान। २-स्तव। स्तुति।

स्तोत्रिय, स्तोत्रीय [वि.] (सं) स्तोत्र-सम्बन्धी। स्तोत्र का।

स्तोभ [संज्ञा पु.](सं.) १-सामवेद का एक अङ्ग। २-स्तम्भन। ३-अवज्ञा या उपेक्षा करना।

स्तोभित [वि.] (सं.) १-जिसकी स्तुति की गई हो। २-जिसका जय-जयकार हुआ हो।

स्तोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्तुति। प्रार्थना। २-यज्ञ। ३-समूह। झुण्ड। ४-राशि। ढेर। ५-यज्ञ करने वाला। ६-चालीस हाथ की एक माप। ७-सिर। मस्तक। ८-धन। ९-अनाज। १०-लोहे की नोक वाला डंडा।

स्तोमयन [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की बलि का पशु।

स्तोमीय [वि.] (सं.) स्तोम-सम्बन्धी। स्तोम का।

स्तोम्य [वि.] (सं.) स्तुत्य।

स्तौपिक [संज्ञा पु.](सं.) १-अस्थि, केश, नख आदि स्मृति चिह्न जो स्तूप के नीचे सुरक्षित हों। बुद्ध-द्रव्य। २-वह मार्जनी जो जैन-यति अपने साथ रखते हैं।

स्त्यान [वि.] (सं.) १-घना। कड़ा। कठोर। २-चिकना। ३-शब्द करने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) १-घनत्व। २ प्रतिध्वनि। ३-आलस्य। ४-सत्कर्म में चित्त न लगना। ५-अमृत।

स्त्यानर्द्धि [संज्ञा स्त्री] (सं.) जैनमतानुसार वह निद्रा जिसमें वसुदेव का आधा बल होता है। जिसे यह निद्रा आती है, वह उठ कर कुछ काम करके फिर लेट जाता है और इस प्रकार वास्तव में वह सोता हुआ काम करता है पर काम का उसे ज्ञान नहीं रहता।

स्त्यायन [संज्ञा पु.] (सं) जनसमूह। भीड़।

स्त्येन [संज्ञा पु] (सं.) १-चोर। २-अमृत।

स्त्यैन [संज्ञा पु.] (सं) चोर। [वि] (सं.) अल्प। कम। थोड़ा।

स्त्रियम्मन्य [वि] (सं) जो अपने को स्त्री माने।

स्त्री [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-नारी। औरत। २-पत्नी जोरू। ३-किसी जीवजंतु की मादा। ४-सफेद च्यूँटी। ५-प्रियंगु नामक लता। ६-एक वृत्त जिसमें दो गुरु होते हैं। [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'इस्तिरी'।

स्त्रीकरण [संज्ञा पु.] (सं) संभोग। मैथुन।

स्त्रीकाम [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री-मैथुन का अभिलाषी। २-भार्या-प्राप्ति की कामना।

स्त्रीकार्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्रियों का काम। २-स्त्रियों का अनुचर।

स्त्रीकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री का रजोधर्म।

स्त्रीकोश [संज्ञा पु.] (सं.) खड्ग। तलवार।

स्त्रीक्षीर [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री के स्तन का दूध।

स्त्रीगमन [संज्ञा पु] (सं.) स्त्री-प्रसङ्ग। मैथुन।

स्त्रीगवी [संज्ञा स्त्री] (सं.) दुधार गाय।

स्त्रीगुरु [संज्ञा स्त्री] (सं) दीक्षा देने वाली स्त्री। पुरोहितानी।

स्त्रीग्रह [संज्ञा पु] (सं.) ज्योतिष के मत से बुध, चन्द्र और शुक्रग्रह।

स्त्रीघातक [वि.] (सं.) स्त्री की हत्या करने वाला।

स्त्रीघोष [संज्ञा पु.] (सं.) प्रभात। सवेरा।

स्त्रीघ्न [वि.] (सं.) स्त्री-घातक।

स्त्रीचंचल, स्त्रीचञ्चल [वि.] (सं.) कामी। लंपट

स्त्रीचित्तहारी [वि.] (सं.) स्त्री का चित्त हरने वाला [संज्ञा पु.] सहिंजन।

स्त्रीचिह्न [संज्ञा पु.] (सं.) स्त्री-जाति का कोई भी लक्षण। जैसे-भग, स्तन आदि।

स्त्रीचौर [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री को चुराने या बहकाने वाला। २-कामी। लंपट।

स्त्रीजननी [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह स्त्री जो लड़की ही जने।

स्त्रीजित [वि.] (सं.) जोरू का गुलाम।

स्त्रीता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्त्रीत्व'।

स्त्रीत्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री का भाव या धर्म। जनानपन। २-व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्रीलिंग का सूचक होता है।

स्त्रीदेहार्द्ध [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

स्त्रीधन [संज्ञा पु.](सं.) स्त्री को उसके मायके अथवा सुसराल से मिला वह धन जिस पर उसका एकांत,

रूप से पूर्ण अधिकार रहता है और जो परिवार के लोगों में बट नहीं सकता। स्त्री की निजी-सम्पत्ति।

स्त्रीधर्म [संज्ञा पु.](सं.) १-स्त्री का रजस्वला होना। मासिक-धर्म। २-स्त्री का भार्या का कर्त्तव्य।

स्त्रीधर्मिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रजस्वला-स्त्री।

स्त्रीधव [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुष।

स्त्रीधूर्त्त [संज्ञा पु] (सं.) स्त्रियों को छलने वाला पुरुष।

स्त्रीध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी। [वि.] जिसमें स्त्रियों के चिह्न हों।

स्त्रीनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसकी रक्षा कोई स्त्री करती हो।

स्त्रीनामा [वि.] (सं.) जिसका स्त्रीवाचक नाम हो।

स्त्रीनिबंधन, स्त्रीनिबन्धन [संज्ञा पु.] (सं.) घर का कामकाज जो स्त्री करती है।

स्त्रीनिर्जित [वि.] (सं.) जोरू का गुलाम।

स्त्रीपण्योपजीवी [संज्ञा पु.](सं.) स्त्री की कमाई खाने वाला।

स्त्रीपर [संज्ञा पु.](सं.) स्त्री-प्रेमी। कामुक। लंपट।

स्त्रीपुर [संज्ञा पु.] (सं.) अन्तःपुर।

स्त्रीपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) रज।

स्त्रीपूर्व [वि.] (सं.) स्त्रीजित।

स्त्री-प्रसंग, स्त्री-प्रसङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) मैथुन। संभोग

स्त्री-प्रसू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्री-जननी।

स्त्री-प्रिय [संज्ञा पु.](सं.) १-आम का वृक्ष। २-अशोक।

स्त्रीप्रेक्षा [संज्ञा स्त्री](सं.) वह खेल तमाशा जिसमें स्त्रियाँ ही भाग ले सकती हों।

स्त्रीबंध, स्त्रीबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग। मैथुन

स्त्रीभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) केवड़ा। केतकी।

स्त्रीभोग [संज्ञा पु.] (सं.) मैथुन। प्रसङ्ग।

स्त्री-मंत्र, स्त्री-मन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह मन्त्र जिसके अन्त में 'स्वाहा' शब्द हो।

स्त्रीमय [वि.] (सं.) स्त्रीरूप। जनाना।

स्त्रीमुखप [संज्ञा पु.] (सं.) मौलसिरी।

स्त्रीमन्य [वि.] (सं.) देखो 'स्त्रियमन्य'।

स्त्रीरंजन, स्त्रीरञ्जन [संज्ञा पु.](सं.) पान। तांबूल

स्त्रीरत्न [संज्ञा पु] (सं.) अत्युत्तम स्त्री।

स्त्रीराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह देश जहाँ स्त्रियों का राज्य हो।

स्त्रीरोग [संज्ञा पु.] (सं) स्त्रियों की योनि-संबंधी रोग।

स्त्री-लंपट, स्त्री-लम्पट [वि.](सं) कामी। विषयी

स्त्रीलिंग, स्त्रीलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-भग। योनि। २-हिन्दी व्याकरण के दो लिंगों में से एक जो स्त्री-जाति का या किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है।

स्त्रीलोल [वि.] (सं.) देखो 'स्त्री-लंपट'।

स्त्रीवश, स्त्रीवश्य [वि.] (सं.) स्त्री के कथनानुसार चलने वाला।

स्त्रीवार [संज्ञा पु.] (सं.) सोम, बुध और शुक्रवार।

स्त्रीवास [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्त्र जो संभोग के समय के लिए ठीक हों।

स्त्रीविजित [वि.] (सं) स्त्रीजित।

स्त्रीविषय [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग। मैथुन।

स्त्रीव्यंजन, स्त्रीव्यञ्जन [संज्ञा पु] (सं) वे चिह्न जिनसे स्त्री होने का बोध होता है।

स्त्रीव्रण [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

स्त्रीव्रत [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य स्त्री की कामना न करना। पत्नीव्रत।

स्त्रीशौंड, स्त्रीशौण्ड [वि.] (सं.) स्त्री के लिए पागल बना फिरने वाला। कामुक।

स्त्रीसंग, स्त्रीसङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग। मैथुन।

स्त्रीसंग्रह, स्त्रीसङ्ग्रहण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्त्री के साथ बलात् आलिंगन या संभोग करना।

स्त्रीसंभोग, स्त्रीसम्भोग; स्त्रीसंसर्ग; स्त्री-समागम स्त्रीसुख; स्त्रीसेवन [संज्ञा पु.] (सं.) संभोग। मैथुन। प्रसङ्ग।

स्त्रीस्वभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्त्री की-सी प्रकृति। २-अंतःपुर-रक्षक। खोजा।

स्त्रैण [वि.] (सं.) १-स्त्री-सम्बन्धी। स्त्रियों का। २-स्त्रियों के कथनानुसार चलने वाला। स्त्रीरत। ३-स्त्री के योग्य।

स्त्रैराजक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो स्त्री-राज्य का निवासी हो।

स्त्र्यगार [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर।

स्त्र्यध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अंतःपुर का प्रधान अधिकारी।

स्त्र्यनुज [वि.] (सं.) बहन के बाद जन्म लेने वाला।

स्त्र्याख्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियंगुलता।

स्त्र्याजीव [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्त्रियों की कमाई खाने-वाला।

स्थंडिल, स्थण्डिल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि। जमीन। २-वह भूमि जो यज्ञ के लिए साफ की गई हो। ३-सीमा। हद। ४-मिट्टी का ढेर। ५-एक प्राचीन ऋषि।

स्थंडिलशय्या, स्थण्डिलशय्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) जमीन पर सोना। भूमि-शयन।

स्थंडिलशायी, स्थण्डिलशायी [संज्ञा पु.] (सं.) किसी व्रत के कारण भूमि पर या यज्ञस्थल पर सोने वाला।

स्थंडिलसितक, स्थण्डिलसितक [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की वेदी।

स्थंडिलेशय, स्थण्डिलेशय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्थंडिलशायी'।

स्थ [प्रत्य.] (सं.) एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लग कर ये अर्थ देता है-(अ) स्थित। कायम। यथा-गङ्गा तटस्थ उद्यान। (आ) उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। यथा-गीत कण्ठस्थ है। (इ) निवासी। रहने वाला। यथा-ग्रामीरथ। (ई) लीन। रत। मग्न। यथा-ध्यानस्थ।

स्थकर [संज्ञा पु.] देखो 'स्थगर'।

स्थकित [वि.] (हिं.) थका हुआ। शिथिल। ढीला।

स्थग [वि.] (सं.) धूर्त्त। ठग। वंचक।

स्थगणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पृथ्वी।

स्थगन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छिपाना। २-सभा की बैठक, वाद की सुनवाई अथवा अन्य कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक देना। एडजोर्नमेन्ट।

स्थगनक [संज्ञा पु.] (सं.) वह प्रस्ताव जो विधायिकों आदि में यह कहकर उपस्थित किया जाता है कि अन्य कार्य रोककर सर्व प्रथम इस पर विचार किया जाना चाहिए। एडजर्नमेन्ट-मोशन

स्थगर [संज्ञा पु] (सं.) तगर नामक गंधद्रव्य।

स्थगिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पानदान। २-एक प्रकार की पट्टी जो अंगूठे, अंगुलियों आदि के अग्रभाग पर बाँधी जाती है (वैद्यक)।

स्थगित [वि.](सं.) १-ढका हुआ। आच्छादित। २-ठहराया या रोका हुआ। स्टेंड। ३-जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी। एडजोर्न्ड। स्थगित करना-देखो 'स्थगन'।

स्थगी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पनडिब्बा। पानदान।

स्थगु, स्थङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ पर की कूबड़।

स्थपति [संज्ञा पु.] (सं.) १-राजा। सामंत। २-शासक। ३-अंतपुर-रक्षक। ४-वास्तुविद्या विशारद। ५-बढ़ई। ६-कुबेर। ७-बृहस्पति। ८-सारथि। [वि.] १-मुख्य। प्रधान। २-श्रेष्ठ। उत्तम।

स्थपनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दोनों भौंहों के मध्य का स्थान।

स्थपुट [वि.] (सं.) १-कुबड़ा। २-जिस पर संकट पड़ा हो। विपन्न। ३-पीड़ा के कारण झुका हुआ [संज्ञा पु.] कूबड़।

स्थल [संज्ञा पु.] (सं.) १-भूमि। जमीन। २-जल से-रहित भूमि। खुश्की। ३-स्थान। जगह। ४-अवसर। मौका।

स्थलकंद, स्थलकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) जंगली सूरन

स्थलकमल [संज्ञा पु.] (सं.) कमल की तरह का एक फूल जो भूमि पर उगता है।

स्थल-कमलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थल-कमल का पौधा।

स्थल-काली [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुर्गा की एक सहचरी का नाम।

स्थलकुमुद [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर।

स्थलग; स्थलगामी; स्थलचर; स्थलचारी [वि.] (सं.) भूमि पर रहने या चलने वाला।

स्थलज [वि.] (सं.) १-भूमि पर उत्पन्न। २-स्थल मार्ग से जाने वाले पर लगने वाला कर, चुंगी आदि।

स्थलजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मुलेठी।

स्थलदुर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मैदान का किला।

स्थलनलिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थल-कमलिनी।

स्थलनीरज [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलकमल।

स्थल-पथभोग [संज्ञा पु.] (सं.) वह उपनिवेश वा राष्ट्र जिसमें अच्छी-अच्छी सड़कें मौजूद हों।

स्थलपद्म [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थलकमल। २-

कच्चू । ३-शतपत्र ।

स्थलपद्मिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थलकमलिनी ।

स्थलपिंडा, स्थलपिण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंड-खजूर ।

स्थलपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) झंडूक नाम का क्षुप ।

स्थलभंडा, स्थलभण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनभंटा

स्थलमंजरी, स्थलमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपामार्ग । लटजीरा ।

स्थलमर्कट [संज्ञा पु.] (सं.) करौंदा ।

स्थल-युद्ध [संज्ञा पु.](सं.) स्थल या भूभाग पर होने वाली लड़ाई । खुश्की की लड़ाई ।

स्थलयोधी [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलयुद्ध करने वाला योद्धा ।

स्थलरुहा [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलकमल ।

स्थलविग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलयुद्ध ।

स्थलविहंग, स्थलविहङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) मोर आदि पक्षी स्थल पर विचरण करते हैं ।

स्थलशृंगाट,स्थलशृङ्गाटक [संज्ञा पु.](सं.) गोखरू

स्थलसीमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी देश की वह सीमा जो स्थल या भूभाग पर हो ।

स्थल-सेना [संज्ञा पु.] (सं.) पैदल सिपाही और घुड़सवार आदि सेना जो स्थल या भूभाग पर लड़ती हैं ।

स्थला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलरहित भू-भाग । खुश्क जमीन ।

स्थलालेख्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्थल का रेखा-चित्र ।

स्थली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जलरहित भू-भाग । २-ऊंची पर समतल भूमि । ३-स्थान । जगह ।

स्थली-देवता [संज्ञा पु.] (सं.) ग्राम्यदेवता ।

स्थलीय [वि.] (सं.) १-स्थल या भूमि से सम्बन्ध रखने वाला । स्थल का । २-किसी स्थान का ।

स्थलेरुहा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-घृतकुमारी । २-दग्धा-वृक्ष ।

स्थलेशय [वि.](सं.) जमीन पर सोने वाला । [संज्ञा पु.] स्थलचर जीव ।

स्थलौक [संज्ञा पु.] (सं.) स्थलचर प्राणी ।

स्थवि [संज्ञा पु.] (सं.) १-जुलाहा । २-स्वर्ग । ३-थैला । थैली । ४-अग्नि । ५-कोढ़ी या उसका शरीर । ६-फल । ७-जंगम ।

स्थविका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मक्खी ।

स्थविर [संज्ञा पु.] (सं.) १-बूढ़ा आदमी । २-वृद्ध तथा पूज्य बौद्धभिक्षु । ३-ब्रह्मा । ४-छरीला । ५-विधारा । ६-कदंब । ७-बौद्धों का सम्प्रदाय विशेष । [वि.] वृद्ध और पूज्य ।

स्थविरदारु [संज्ञा पु.] (सं.) विधारा । वृद्धदारक ।

स्थविरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-गोरखमुंडी । २-बूढ़ी औरत ।

स्थविष्ठ [वि.] (सं.) बहुत स्थूल या मोटा ।

स्थंडिल, स्थण्डिल [संज्ञा पु.] (सं.) स्थंडिल-शायी । [वि.](सं.) व्रत के कारण भूमि पर जाने वाला ।

स्थाई [वि.] (हिं.) देखो 'स्थायी' ।

स्थाग [संज्ञा पु.] (सं.) १-शव । मृतक शरीर । २-शिव का एक अनुचर ।

स्थाणु [संज्ञा पु.](सं.) १-खम्भा । २-वृक्ष का ठूंठ । ३-शिव । ४-एक प्रकार का भाला या बरछी । ५-हल का एक भाग । ६-धूपघड़ी का काँटा । ७-जीवक नामक अष्टवर्गीय औषध । ८-स्थावर या स्थिर वस्तु । ९-सफेद च्यूँटियों का बिल । [वि.] स्थिर । अचल ।

स्थाणुकर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) महेन्द्रवारुणी नामक लता ।

स्थाणुतीर्थ [संज्ञा पु.] (सं.) वर्तमान थानेश्वर (जो कुरुक्षेत्र के पास है) का प्राचीन नाम जो किसी समय बहुत प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता था ।

स्थाणुदिश् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्तर-पूर्व की दिशा ।

स्थाणुमती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्राचीन नदी ।

स्थाणुरोग [संज्ञा पु.](सं.) घोड़ों का होने वाला रोग विशेष जिसमें उनकी जाँघ में फोड़ा निकलता है

स्थाण्वीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) स्थाणु-तीर्थ में स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंग ।

स्थान [संज्ञा पु](सं.) १-ठहराव । स्थिति । २-भूमि । जमीन । ३-खुला हुआ भू-भाग । मैदान । ४-निश्चत तथा परिमित स्थिति वाला वह भू-भाग जिससे कोई बस्ती, प्राकृतिक रचना अथवा कोई विशेष बात हो । जगह । स्थल । ५-रहने की जगह । ६-सेवा तथा लोकोपकार आदि कार्य करने की जगह । पद । ओहदा । पोस्ट । ७-बैठने की वह विशिष्ट जगह जो निर्वाचित या प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों के लिए व्यासिद्ध होता है । ८-देवालय, आश्रम अथवा अन्य इसी प्रकार की पवित्र जगह । ९-अवसर । मौका । १०-मुख के भीतर का वह अंग अथवा स्थल जहां से किसी शब्द का उच्चारण हो । ११-राज्य । देश । १२-किसी राज्य का मुख्य आधार या बल जो चार होते हैं । जैसे—सेना, कोष, नगर और देश । १३-गढ़ । दुर्ग । १४-सेना का अपने बचाव के लिए डटे रहना । १५-(माल का) भंडार । गुदाम । १६-अवस्था । दशा । १७-कारण । उद्देश्य । १८-अध्याय । परिच्छेद । १९-नीतिविदों के त्रिवर्ग में से एक । २०-किसी अभिनेता का अभिनय अथवा अभिनयगत-चरित्र । २१-वेदी ।

स्थानक [संज्ञा पु.](सं.) १-जगह । स्थान । २-नगर । शहर । ३-पद । दर्जा । ४-नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा । ५-वृक्ष का थाला । ६-फेन ।

स्थानचंचला, स्थानचञ्चला [संज्ञा स्त्री.](सं.) वन-तुलसी ।

स्थानचिंतक, स्थानचिन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) सेना के लिए छावनी की व्यवस्था करने वाला अधिकारी ।

स्थानच्युत [वि.] (सं.) १-जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो । २-जो अपने पद या ओहदे से हटा दिया गया हो ।

स्थानतव्य [वि.] (सं.) रहने या ठहरने के योग्य ।

स्थानत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) जगह को छोड़ देना ।

स्थानपाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थान अथवा देश का रक्षक । २-प्रधान निरीक्षक । ३-चौकीदार ।

स्थानभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रहने की जगह । मकान ।

स्थानभ्रष्ट [वि.] (सं.) देखो 'स्थानच्युत' ।

स्थानमृग [संज्ञा पु.] (सं.) १-केंकड़ा । २-मछली । ३-कछुआ । ४-मगर । मकर ।

स्थानविद [वि.] (सं.) स्थानीय विषयों का ज्ञाता ।

स्थानविरासन [संज्ञा पु.] (सं.) ध्यान में लीन होने की एक प्रकार की मुद्रा या आसन ।

स्थानांग, स्थानाङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) जैनधर्म-शास्त्रों का तीसरा अंग ।

स्थानांतर, स्थानान्तर [संज्ञा पु.] (सं.) प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान । दूसरा स्थान ।

स्थानांतरण, स्थानान्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, रखना, या भेजना । रिमूवल

स्थानांतरित, स्थानान्तरित [वि.] (सं.) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा या पहुँचाया गया हो ।

स्थानाध्यक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिस पर किसी स्थान की रक्षा का भार हो ।

स्थानापन्न [वि.] (सं.) १-किसी के न रहने पर उसके स्थान पर बैठने वाला । २-किसी कर्मचारी के कुछ दिनों के लिये कहीं चले जाने पर उसकी जगह काम करने वाला । एवजी । आफिशिएटिंग

स्थानिक [वि.] (सं.) १-उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख या चर्चा हो । २-उस स्थान का जहाँ से कोई बात कही जाय । लोकल । [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिस पर किसी स्थान की रक्षा का भार हो । २-मन्दिर का प्रबंधक । ३-राजकर वसूल करने वाला कर्मचारी ।

स्थानिक-कर [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्थान विशेष पर लगने वाला कर । लोकल-टैक्स ।

स्थानिक-परिषद [संज्ञा स्त्री.](सं.) देखो 'स्थानीय-गण' ।

स्थानिक-स्वराज्य, स्थानिक-स्वशासन [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्थानीय-स्वशासन' ।

स्थानी [वि.](सं.) १-स्थानयुक्त । पदयुक्त । २-स्थायी । ठहरने वाला । ३-उचित । उपयुक्त ।

स्थानीय [वि.] (सं.) १-उस स्थान या नगर का जिसके सम्बन्ध में कोई उल्लेख हो । २-उस स्थान का जहाँ से कोई बात कही जाय । लोकल । [संज्ञा पु.] (सं.) १-नगर । शहर । २-आठ-सौ गाँवों के बीच में बना हुआ किला ।

स्थानीय-कर [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्थानिक-कर'

स्थानीयकरण [संज्ञा पु.] (सं.) चारों ओर फैली हुई बहुत सी शक्तियों, वस्तुओं, उपद्रवों आदि को घेरकर या लाकर किसी एक स्थान पर एकत्र करना । लोकलाइजेशन ।

स्थानीय-क्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्थान या नगर अथवा उसके आसपास का क्षेत्र । लोकल-एरिया

स्थानीय-गण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी बस्ती के निवासियों के प्रतिनिधियों की वह परिषद अथवा सभा जिसपर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोक-

हित सम्बन्धी सार्वजनिक कार्यों का भार हो। *लोकलबोर्ड*।

स्थानीय-निकाय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्थान या नगर की या उससे सम्बन्ध रखनेवाली संस्थायें

स्थानीय-निधि [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह कोष जो स्थानीय नगरपालिका संस्थाओं के अधीन होता है। *लोकल-फंड*।

स्थानीय-न्यायालय [संज्ञा पु.] (सं.) किसी स्थान विशेष के मामलों पर विचार करने वाली छोटी अदालत। *लोकल-कोर्ट*।

स्थानीय-परिपालन [संज्ञा पु.] (सं.) स्थानीय शासन प्रबन्ध। *लोकल-एडमिनिस्टेशन*।

स्थानीय-पर्षद् [संज्ञा पु.] (सं.) स्थानीय गण।

स्थानीय-प्राधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) स्थानीय अधिकारी-मंडल। *लोकल-ऑथरटी*।

स्थानीयमंडली, स्थानीयमण्डली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्थानीय-गण'।

स्थानीय-विधान [संज्ञा पु.] वह कानून जो देश के किसी स्थान विशेष पर ही लागू होता हो। *लोकल लॉ*।

स्थानीय-विमर्श [संज्ञा पु.] (सं) घटनास्थल की जाँच

स्थानीय-शासन [संज्ञा पु.] (सं.) वह अधिकारी-वर्ग जिन्हें कानून द्वारा किसी निर्धारित भाग में शासनकार्य चलाने का अधिकार प्राप्त हो। स्थानीय सरकार। *लोकल गवर्नमेन्ट*।

स्थानीय-स्वशासन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देश या प्रांत के भिन्न-भिन्न नगरों आदि को अपना शासन और व्यवस्था करने के लिए मिला हुआ अधिकार अथवा ऐसे अधिकार के अनुसार अपना शासन आप करने की स्वतंत्रता और प्रणाली। *लोकल-सेल्फ-गवर्नमेंट*।

स्थानेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुरुक्षेत्र का एक स्थान जो पहले एक प्रसिद्ध तीर्थ था। २-देखो 'स्थानाध्यक्ष'।

स्थापक [वि.] (सं.) स्थापन करने वाला। स्थापनकर्त्ता। [संज्ञा पु.] १-मूर्त्ति बनाने वाला। २-नाटक में सूत्रधार का सहकारी। ३-संस्थापक। प्रतिष्ठाता। ४-अमानत रखने वाला।

स्थापत्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह विद्या जिसमें मकान, पुल आदि बनाने के सिद्धांतों और प्रणालियों का विवेचन होता है। वास्तुशास्त्र। २-अन्तःपुर-रक्षक। ३-स्थानरक्षक का पद।

स्थापत्यवेद [संज्ञा पु.] (सं.) चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तुशिल्प अथवा भवन-निर्माण कला का विषय वर्णित है।

स्थापन [संज्ञा पु] (सं.) १-दृढ़तापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना। २-दृढ़ता या पुष्ट आधार पर स्थित करना। स्थायीरूप देना। ३-कोई नई संस्था या व्यापारिक कारबार खड़ा करना। ४-प्रमाण आदि के द्वारा ठीक सिद्ध करते हुए कोई विषय सामने रखना। निरूपण। प्रतिपादन। *इस्टैब्लिशमेन्ट* (उक्त सभी अर्थों के लिए)। ५-किसी को किसी पद पर कार्य करने के लिए लगाना। नियत करना। *पोस्टिंग*। ६-(शरीर की) रक्षा या आयु वृद्धि का उपाय। ७-(रक्त का स्राव) रोकने का उपाय। ८-समाधि। ९-पुंसवन। १०-घर। मकान। ११-अन्न की राशि। १२-निरूपण।

स्थापननिक्षेप [संज्ञा पु.] (सं.) जैनियों के अर्हन् की मूर्त्ति का पूजन।

स्थापना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दृढ़तापूर्वक प्रतिष्ठित या स्थिर करना। २-जमाकर रखना। ३-किसी विषय को प्रमाणपूर्वक सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ४-व्यवस्थापन।

स्थापना-सत्य [संज्ञा पु.] (सं.) किसी प्रतिमा या चित्र आदि में स्वयं उस वस्तु अथवा व्यक्ति का आरोप करना जिसकी वह प्रतिमा या चित्र हो।

स्थापनिक [वि.] (सं.) जमा किया हुआ।

स्थापनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) पाठा। पाढ़।

स्थापनीय [वि.] (सं.) स्थापित करने के योग्य।

स्थापयिता [वि.] (सं.) स्थापन करने वाला। संस्थापक

स्थापित [वि.] (सं.) १-जिसकी स्थापना की गई हो। २-जो जमा किया गया हो। ३-जो जमा कर रखा गया हो। रक्षित। ४-व्यवस्थित। निर्दिष्ट ५-निश्चित। ६-ठहरा या जमा हुआ। दृढ़। मजबूत। ७-विवाहित।

स्थापी [संज्ञा पु.] (सं.) मूर्त्ति बनाने वाला।

स्थाप्य [वि.] (सं.) जिसकी स्थापना की जासके या जो स्थापित करने के योग्य हो। [संज्ञा पु.] १-देव-प्रतिमा। २-धरोहर। अमानत।

स्थाम [संज्ञा पु] (सं) १-सामर्थ्य। २-घोड़े की हिनहिनाहट। ३-स्थान। जगह।

स्थाय [संज्ञा पु] (सं) १-आधार। पात्र। २-देखो 'स्थाम'।

स्थाया [संज्ञा स्त्री.] (सं) पृथ्वी।

स्थायिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्थायित्व'।

स्थायित्व [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थायी होने का भाव ठहराव। टिकाव। २-स्थिरता। दृढ़ता। मजबूती

स्थायी [वि] (सं.) १-बराबर रहने या काम करने वाला। सदा स्थिर रहने वाला। *परमानेन्ट*। २-बहुत दिन चलने वाला। ३-विश्वस्त।

स्थायी-आदेश [संज्ञा पु.] (सं) वह आदेश या आज्ञा जो हमेशा के लिए हो। स्थिरादेश। *स्टैन्डिङ्ग-ऑर्डर*।

स्थायी-कोष [संज्ञा पु.] (सं.) किसी संस्था आदि का वह कोष या धनराशि जो उसे स्थायीरूप से बनाये रखने के संचित होती है और जिसका केवल सूद खर्च किया जा सकता है। *परमानेन्ट-फंड*।

स्थायी-भाव [संज्ञा पु.] (सं) साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जो रस में सदा स्थायीरूप से स्थित रहता और विभावों आदि के द्वारा अभिव्यक्त होता है। यह नौ प्रकार का होता है-रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निन्दा, विस्मय और निर्वेद।

स्थायी-समिति [संज्ञा स्त्री] (सं) १-वह समिति जो स्थायीरूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो। २-किसी सम्मेलन अथवा महासभा आदि की वह समिति जो उस सम्मेलन अथवा महासभा के अगले अधिवेशन तक सब कार्यों की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है। *स्टैंडिंग कमेटी*।

स्थायी-सेना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सेना जो शांति-काल में भी कायम रखी जाय। *स्टैंडिंग आर्मी*।

स्थायुक [वि.] (सं.) ठहरने वाला। टिकने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) गाँव का अध्यक्ष या निरीक्षक।

स्थाल [संज्ञा पु.] (सं.) १-आधार। पात्र। २-थाल। परात। ३-देग। देगची। पतीला। ४-दाँतों के नीचे का और मसूढ़ों का भीतरी भाग।

स्थालक [संज्ञा पु.] (सं.) पीठ की एक हड्डी।

स्थालिक [संज्ञा पु.] (सं.) मल की दुर्गंध।

स्थालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की मक्खी।

स्थाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हँडिया। २-मिट्टी की रकाबी। ३-पाटलावृक्ष। ४-सोमरस तैयार करने का पात्र विशेष।

स्थालीद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) नंदीवृक्ष।

स्थालीपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शालिपर्णी।

स्थालीपाक [संज्ञा पु.] (सं.) जिस प्रकार हाँड़ी के एक चावल को देखकर शेष सब चावलों के कच्चे होने या पक जाने का अनुमान होता है, उसी प्रकार किसी एक बात को देखकर उसके सम्बन्ध की और सब बातों का अनुमान होना।

स्थालीबिल [संज्ञा पु.] (सं) बटलोई आदि पाक पात्र का भीतरी भाग।

स्थालीवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वत्थ। पीपल।

स्थावर [वि] (सं.) १-अचल। स्थिर। २-जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर हट न सके। इम्मूवेबल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पहाड़। पर्वत। २-अचल-सम्पत्ति। ३-वह सम्पत्ति जो वंश-परम्परा से परिवार में रक्षित हो और जो बेची न जा सके। ४-धनुष की डोरी।

स्थावरता [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्थावर का भाव। स्थिरता

स्थावर-नाम [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के अनुसार वह पाप कर्म जिसके उदय से जीव स्थावर काय में जन्म लेते हैं।

स्थावरराज [संज्ञा पु.] (सं) हिमालय।

स्थावर-विष [संज्ञा पु.] (सं) स्थावर पदार्थों में होने वाला विष।

स्थावर-संपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सम्पत्ति जो अपने स्थान पर लगी या जमी हो और वहां से हटाई न जा सकती हो। अचल संपत्ति। *रीयल एस्टेट*।

स्थावरादि [संज्ञा पु.] (सं.) वच्छनाग-विष।

स्थाविर [संज्ञा पु.] (सं.) वृद्धावस्था। बुढ़ौती।

स्थासक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुगंधित उबटन लगा कर शरीर को सुवासित करने वाला। २-जल या किसी प्रकार के पदार्थ का बुलबुला। ३-घोड़ेके साज पर बुलबुल के आकार का एक गहना।

स्थासु [संज्ञा पु.] (सं) शारीरिकबल।

स्थास्नु [वि.] (सं.) १-दृढ़ अचल। १-स्थायी टिकाऊ।

स्थिक [संज्ञा पु] (सं) नितम्ब चूतड़

स्थित [वि.](सं.) १-एक स्थान पर ठहरा या टिका हुआ। २-बैठा हुआ। आसीन। ३-उपस्थित। मौजूद। ४-अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। ५-रहने वाला निवासी। ६-बसा हुआ। अवस्थित ७-खड़ा हुआ। ऊर्ध्व। ८-अचल। स्थिर। ९-लगा हुआ। संलग्न। [संज्ञा पु.](सं.)१-निवास। अवस्थान। २-कुल-मर्यादा।

स्थितता [संज्ञा स्त्री] (सं) स्थित होने का भाव। स्थिति। ठहराव। अवस्थान।

स्थितधी [वि] (सं) १-स्थिरबुद्धि। २-ब्रह्मबुद्धिसम्पन्न।

स्थित-पाठ्य [संज्ञा पु] (सं) नाट्यशास्त्रानुसार लास्य के दस अङ्गों में से एक। काम से संतप्त नायिका का बैठकर स्वाभाविक पाठ करना।

स्थित-प्रज्ञ [वि](सं) १-जिसकी विवेक बुद्धि स्थिर हो। २-जो सब प्रकार के मनोविकारों से रहित हो।

स्थितबुद्धिदत्त [संज्ञा पु.] (सं) बुद्धदेव की एक उपाधि।

स्थिति [संज्ञा स्त्री] (सं) १-स्थित होने की क्रिया या भाव। रहना या होना। २-एक ही स्थान पर या एक ही रूप में बने रहना। ३-अवस्था। दशा। हालत। ४-किसी व्यक्ति, संस्था आदि की वह विधिक स्थिति जो उसे अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होती है तथा जो उसकी मर्यादा, पद, सम्मान आदि की सूचक होती है। स्टेटस। ५-वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के सम्बन्ध में कहता या उपस्थित करता है। केस। ६-पालन। ७-नियम। ८-सीमा। हद। ९-निवृत्ति। १०-आकार। आकृति। ११-संयोग। मौका।

स्थितिक [वि.](सं) एक ही स्थान तथा रूप में ठहरा या बना रहने वाला। स्थिर। स्टैटिक।

स्थितिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्थिति का भाव या धर्म। २-स्थिरता।

स्थिति-स्थापक [वि.] (सं.) दाब हट जाने पर फिर ज्यों का त्यों हो जाने वाला। लचीला। [संज्ञा पु.] वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु साधारण स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय।

स्थिति-स्थापकता [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्थिति-स्थापक होने की अवस्था या गुण। लचीलापन।

स्थिर [वि.] (सं.) १-एक ही स्थिति में रहने वाला। निश्चल। २-निश्चित। ३-शांत। ४-दृढ़। अटल। ५-सदा ज्यों का त्यों बना रहने वाला। स्थायी। ६-नियत। मुकर्रर। ७-विश्वस्त। [संज्ञा पु.] १-शिव। २-साँड। ३-वृष। ४-मोक्ष। मुक्ति। ५-वृक्ष। ६-धौ का पेड़। ७-पर्वत। पहाड़। ८-शनिग्रह। ९-एक प्रकार का छन्द। १०-मन्त्र विशेष जिससे शास्त्र अभिमन्त्रित किये जाते थे। ११-जैनों के अनुसार वह कर्म जिससे जीव को स्थिर अवयव प्राप्त होते हैं। १२-ज्योतिष में एक योग। १३-ज्योतिष में वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ ये चारों राशियां मानी गई हैं। १४-स्कन्द का एक अनुचर।

स्थिरकर्मा [वि] (सं.) स्थिरता या दृढ़ता से काम करने वाला।

स्थिरकुसुम [संज्ञा पु.] (सं.) बकुल वृक्ष।

स्थिरगंध, स्थिरगन्ध [संज्ञा पु.] (सं) चंपा। [illegible] [वि](सं) जिसकी सुगन्ध स्थिर रहती हो।

स्थिरगंधा, स्थिरगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-केवड़ा। केतकी। २-पाढ़र। पाडला।

स्थिरचित्त, स्थिरचेता [वि] (सं) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। दृढ़चित्त।

स्थिरच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) भोजपत्र।

स्थिरछाया [संज्ञा पु] (सं) छायादार पेड़।

स्थिरजिह्व [संज्ञा पु.] (सं) मछली।

स्थिरजीविता [संज्ञा स्त्री] (सं.) सेमल का पेड़।

स्थिरजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) काक। कौआ।

स्थिरतर [वि] (सं) अति स्थिर।

स्थिरता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-स्थिर का भाव। ठहराव। निश्चलता। २-दृढ़ता। मजबूती। ३-स्थायित्व। ४-धीरता।

स्थिरत्व [संज्ञा पु] (सं) देखो 'स्थिरता'।

स्थिरदंष्ट्र [संज्ञा पु] (सं) साँप। सर्प।

स्थिरधन्वा [संज्ञा पु] (सं) दृढ़चित्त मनुष्य।

स्थिरधी [वि] (सं) दृढ़चित्त।

स्थिरपत्र [संज्ञा पु] (सं) १-श्रीताल। २-हिंताल।

स्थिरपुष्प [संज्ञा पु] (सं) १-चम्पे का पेड़। २-मौलसिरी का पेड़। ३-तिलकपुष्प वृक्ष।

स्थिरपुष्पी [संज्ञा पु.] (सं) तिलकपुष्प वृक्ष।

स्थिरफला [संज्ञा स्त्री] (सं) कुष्मांड-लता।

स्थिरबुद्धि, स्थिरमति [वि.] (सं) जिसकी बुद्धि स्थिर हो। दृढ़चित्त।

स्थिरमद [संज्ञा पु] (सं) मोर। मयूर।

स्थिरमना [वि.] (सं.) स्थिरचित्त।

स्थिरमुद्गा [संज्ञा स्त्री] (सं) लाल कुलथी।

स्थिरयोनि [संज्ञा पु.](सं) वह वृक्ष जो सदा छाया देता हो।

स्थिरयौवन [वि.] (सं.) जो सदा जवान रहे। [संज्ञा पु.] (सं.) विद्याधर।

स्थिर-रंगा, स्थिर-रङ्गा [संज्ञा स्त्री.](हिं.) नील का पौधा।

स्थिर-रंधिप, स्थिर-रन्ध्रिप [संज्ञा पु.] (सं.) हिंताल-वृक्ष।

स्थिरराग [वि.] (सं.) निश्चल प्रेम।

स्थिर-रागा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

स्थिरसाधनक [संज्ञा पु.](सं.) सिंदुवार वृक्ष।

स्थिरसार [संज्ञा पु.] (सं.) शालवृक्ष।

स्थिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दृढ़चित्त वाली स्त्री। २-पृथ्वी। ३-शालपर्णी। ४-काकोली। ५-सेमल ६-माषपर्णी। ७-मूसाकानी।

स्थिरायु [वि.] (सं.) १-जिसकी आयु बहुत लम्बी हो। २-जो कभी मरे नहीं। [संज्ञा पु.] (सं.) शाल्मलि वृक्ष।

स्थिरीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थिर करने की क्रिया २-घटती-बढ़ती रहने वाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना। स्टैबिलाइजेशन। ३-पुष्टि। समर्थन।

स्थुल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का लम्बा खीमा।

स्थूणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खंभा। थूनी। २-लोहे की प्रतिमा या पुतला। ३-लुहार की निहाई। ४-पेड़ का तना या ठूँठ। ५-रोग विशेष।

स्थूणाकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का व्यूह २-एक प्रकार का बाण। ३-एक रोगग्रह का नाम

स्थूम [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीप्ति। प्रकाश। २-चन्द्रमा

स्थूर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मनुष्य। आदमी। २-वृष साँड़।

स्थूरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँझ गाय का नथना। घूरिका।

स्थूरी [संज्ञा पु.] (सं.) बोझ लादने वाला पशु। लद्दू जानवर।

स्थूल [वि] (सं.) १-मोटा। २-जो तुरन्त या बिना परिश्रम के समझ में आ जाय। ३-मोटे हिसाब से अनुमान किया या ध्यान में आया हुआ। ४-जिसका तल सम हो। [संज्ञा पु] (सं.) १-वह पदार्थ जिसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। गोचरपिंड। २-विष्णु। ३-समूह। राशि। ४-कटहल। ५-प्रियंगु। ६ वैद्यक के अनुसार शरीर की सातवीं त्वचा। ७-तूद या तूत का वृक्ष। ८-ईख। ऊख।

स्थूल-आय [संज्ञा स्त्री] (सं.) वह सारी आय जिससे लागत या परिव्यय निकाला न गया हो ग्रासइन्कम।

स्थूलकंगु, स्थूलकङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) वरकधान्य। चेना।

स्थूलकंटक, स्थलकण्टक [संज्ञा पु.] (सं) बबूल की जाति का वृक्ष विशेष।

स्थूलकंटिका, स्थूलकण्टिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) सेमल का वृक्ष।

स्थूलकंटफल, स्थूलकण्टफल [संज्ञा पु.](सं.) कटहल।

स्थूलकंटा, स्थूलकण्टा [संज्ञा स्त्री](सं.) वनभंटा। बृहती।

स्थूलकंद, स्थूलकन्द [संज्ञा पु](सं.) १-लाल लहसुन। २-जमींकन्द। ३-जङ्गली सूरन। ४-हाथीकंद। ५-मानकंद। ६-मंडपरोह। मुखालु।

स्थूलक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का तृण।

स्थूलकणा [संज्ञा स्त्री. (सं.) मँगरैला।

स्थूलका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आँबाहल्दी।

स्थूलकुमुद [संज्ञा पुं.] (सं.) सफेद कनेर।

स्थूलखेड़ [संज्ञा पु] (सं.) बाण। तीर।

स्थूलचंचु, स्थूलचञ्चु [संज्ञा पु.] (सं.) महाचंचु नामक साग।

स्थूलचंपक, स्थूलचम्पक [संज्ञा पु.](सं.) सफेद चंपा।

स्थूलचाप [संज्ञा पु.] (सं.) रुई धुनने की धुनकी।

स्थूल[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) किरात।

स्थूलजीरक [संज्ञा पु.] (सं.) मँगरैला।

स्थूलतंडुल, स्थूलतण्डुल [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का मोटा धान।

स्थूलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्थूल का भाव। २-मोटापा। मोटाई। ३-भारीपन।

स्थूलताल [संज्ञा पु.] (सं.) हिंताल। श्रीताल।

स्थूलतिंदुक, स्थूलतिन्दुक [संज्ञा पु.] (सं.) आबनूस। मकरतेंदुआ।

स्थूलतिक्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दारुहल्दी।

स्थूलत्व [संज्ञा पु.] (सं.) स्थूलता।

स्थूलत्वचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काश्मरीवृक्ष।

स्थूलदंड, स्थूलदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) महानल। बड़ा नरकट।

स्थूलदर्भ [संज्ञा पु.](सं.) भूँज नामक तृण।

स्थूलदर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थूलदर्भ।

स्थूलदर्शक [संज्ञा पु.] (सं.) सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

स्थूलदला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ग्वारपाठा। घीकुआर।

स्थूलनाल [संज्ञा पु.] (सं.) देवनल। बड़ा नरकट।

स्थूलनास, स्थूलनासिक [संज्ञा पु.] (सं.) सूअर। शूकर। [वि.] (सं.) जिसकी नाक बड़ी और मोटी हो।

स्थूलनिंबु [संज्ञा पु.] (सं.) महानिंबु। बड़ानीबू।

स्थूलनील [संज्ञा पु.] (सं.) बाज नामक पक्षी।

स्थूलपट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) कपास।

स्थूलपत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-दमनक। २-सतिवन।

स्थूलपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सत्यपर्ण। छतिवन।

स्थूलपाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी। २-वह जिसे फीलपा रोग हो।

स्थूलपिंडा, स्थूलपिण्डा [संज्ञा स्त्री] (सं.) पिंडखजूर।

स्थूलपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-अगस्त नामक वृक्ष। २-गुलमखमली। झण्टुक।

स्थूलपुष्पा [संज्ञा स्त्री.] (सं) आस्फोता। हापरमाली

स्थूलपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं) शंखिनी। यवतिक्ता।

स्थूलप्रियंगु, स्थूलप्रियङ्गु [संज्ञा स्त्री.] (सं) चरकधान्य। चेना।

स्थूलफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सेमल। २-बड़ा नीबू

स्थूलफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-शणपुष्पी। २-सेमल। शाल्मली।

स्थूलबर्बुरिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बबूल का पेड़।

स्थूलभंटा, स्थूलभण्टा [संज्ञा पु.] (सं) देखो 'बनभंटा'।

स्थूलमंजरी, स्थूलमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपामार्ग। चिचड़ा।

स्थूलमरिच [संज्ञा पु.] (सं) शीतलचीनी।

स्थूलमूल, स्थूलमूलक [संज्ञा पु] (सं.) बड़ी मूली।

स्थूलरुहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्थलपद्म।

स्थूलरोग [संज्ञा पु.] (सं.) मोटापा बढ़नें का रोग।

स्थूल-लक्ष [संज्ञा पु] (सं.) १-बहुत बड़ा दानी। २-बड़ा पण्डित। ३-कृतज्ञ।

स्थूल-लक्षिता [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-दानशीलता। २-पांडित्य। ३-कृतज्ञता।

स्थूल-लक्ष्य[संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जो बहुत अधिक दान करता हो। २-किसी विषय की ऊपरी या मोटी बातें बताना।

स्थूलवर्त्मकृत् [संज्ञा पु.] (सं) भारंगी। बभनेटी।

स्थूलवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोध। २-पठानीलोध।

स्थूलवृक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) बकुलवृक्ष।

स्थूलवृक्षफल [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल।

स्थूलवैदेही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जलपीपल।

स्थूलशर [संज्ञा पु.] (सं.) रामशर।

स्थूलशालि [संज्ञा पु.] (सं.) स्थूलतंडुल।

स्थूलशिंबी, स्थूलशिम्बी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद सेम।

स्थूलशीर्षिका [संज्ञा पु.] (सं.) छोटी च्यूँटी।

स्थूलशूरण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का जमींकद

स्थूलसायक [संज्ञा पु.] (सं.) रामशर।

स्थूलस्कंध, स्थूलस्कन्ध [संज्ञा पु.] (सं) बढ़हर। लकुच।

स्थूलहस्त [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी की सूँड़।

स्थूलांग, स्थूलाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का चावल।

स्थूलांत्र, स्थूलान्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी अँतड़ी।

स्थूलांशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंधपत्र।

स्थूला [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बड़ी इलायची। २ गजपीपल। ३-सोआ नामक साग। ४-सौंफ। ५-कपिलद्राक्षा। मुनक्का। ६-कपास। ७-ककड़ी।

स्थूलाजाजी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मँगरौला।

स्थूलाम्र [संज्ञा पु.] (सं.) कलमी आम।

स्थूलास्य [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। साँप।

स्थूली [संज्ञा पु.] (सं.) ऊँट।

स्थूलैरंड, स्थूलैरण्ड [संज्ञा पु] (सं) बड़ा एरंड।

स्थूलैला [संज्ञा स्त्री.] (सं) बड़ी इलायची।

स्थूलोच्चय [संज्ञा पु.] (सं.) १-गंडोपल। २-हाथी की वह चाल जो न बहुत तेज हो न बहुत सुस्त

स्थूय [संज्ञा पु.] (सं.) १-पंच। निर्णायक। २-पुरोहित।

स्थूष्ठ [वि.] (सं.) बहुत दृढ़। अत्यंत मजबूत।

स्थैर्य्य, स्थैर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थिर होने का भाव। स्थिरता। २-दृढ़ता। मजबूती।

स्थोरी [संज्ञा पु.] (सं) बोझा ढोने वाला घोड़ा।

स्थौणेय, स्थौणेयक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

स्थौर [संज्ञा पु.] (सं.) १-दृढ़ता। शक्ति। बल। २-गधे या घोड़े के ढोने योग्य बोझ।

स्थौरी [संज्ञा पु.] (सं) लद्दू पशु या जानवर।

स्थौल्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्थूलता। भारीपन। २-३-मोटापन।

स्नपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार्जन। प्रक्षालन। २-स्नान।

स्नपित [वि.] (सं.) स्नान किया हुआ।

स्नाव [संज्ञा पु.] (सं.) रिसाव। टपकाव। चुआव।

स्नसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्नायु।

स्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह चमड़ा जो गाय, बैल आदि के गले के नीचे लटकता है। लौ।

स्नात [वि.] (सं.) स्नान किया हुआ। नहाया हुआ

स्नातक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य-व्रत समाप्त कर लिया हो २-वह जिसने किसी विश्वविद्यालय की परीक्षा पास की हो। ग्रैजुएट।

स्नान [संज्ञा पु.](सं.)१-स्वच्छ अथवा शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जल राशि में प्रवेश करना। नहाना। २-धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े। ३-इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी अन्य वस्तु का पड़ने वाला प्रभाव या प्रसार।

स्नानकलश, स्नानकुंभ, स्नानकुम्भ [संज्ञा पु.](सं.) वह घड़ा जिसमें स्नान करने का पानी रखा हो।

स्नानगृह [संज्ञा पु.](सं.) स्नान करने का कमरा या कोठरी।

स्नानतृण [संज्ञा पु.] (सं.) कुश जिसे हाथ में लेकर स्नान करने का शास्त्रों में विधान है।

स्नानद्रोणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नहाने का टब।

स्नानयात्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जेठ के महीने की पूर्णमासी को होने वाला एक उत्सव जिसमें विष्णु की मूर्त्ति को महास्नान कराया जाता है।

स्नानवस्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह वस्त्र जिसे धारण करके स्नान किया जाता है।

स्नानविधि [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान करने का विधान या नियम।

स्नानवेश्म [संज्ञा पु.] (सं.) स्नानगृह।

स्नानशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्नानगृह।

स्नानसाटी[संज्ञा स्त्री.](सं.)शरीर पोंछने का तौलिया

स्नानांबु, स्नानाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान करने का जल।

स्नानागार [संज्ञा पु.] (सं.) स्नानगृह।

स्नानीय [वि.](सं.) १-जो नहाने के योग्य हो। २-(वह वस्त्र) जो नहाते समय धारण करने के योग्य हो। [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान में काम आने वाली कोई भी वस्तु। यथा—जल, उबटन, तैल आदि।

स्नानोदक [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान करने का जल।

स्नापक [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान कराने वाला नौकर या वह नौकर जो अपने मालिक के नहाने के लिए जल लावे।

स्नापन [संज्ञा पु.] (सं.) स्नान करवाने की क्रिया या किसी के स्नान करते समय उपस्थित रहने की क्रिया।

स्नायन [संज्ञा पु] (सं.) स्नान। नहाना।

स्नायविक [वि.] (सं.) स्नायु-सम्बन्धी।

स्नायवीय [संज्ञा पु.] (सं.) कर्मेंद्रिय।

स्नायी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो नहाता हो।

स्नायु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सारे शरीर में फैला हुआ बहुत सूक्ष्म नसों का वह जाल जिससे स्पर्श, शीत, ताप, वेदना आदि की अनुभूति होती है। नर्व्स।

स्नायुक, स्नायुरोग [संज्ञा पु.] (सं.) नहरुआ नामक रोग।

स्नायुशूल [संज्ञा पु.] (सं.) रोग विशेष जिसमें

में शूल के समान तीव्र वेदना होती है।

स्निग्ध [वि.] (सं.) १-जिसमें स्नेह या प्रेम हो। २-जिसमें स्नेह अथवा तेल लगाया हो। चिकना। [संज्ञा पु.] (सं.) १-लाल रेंड। २-धूपसरल। ३-मोम। ४-गन्धाबिरोजा। ५-दूध पर की मलाई।

स्निग्धकरंज, स्निग्धकरञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) गुच्छकरंज।

स्निग्धच्छद [संज्ञा पु.] (सं.) वटवृक्ष। बड़।

स्निग्धजीरक [संज्ञा पु.] (सं.) यशबगोल। ईसपगोल

स्निग्धतंडुल, स्निग्धतण्डुल [संज्ञा पु.] (सं.) साठी धान।

स्निग्धता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-चिकनाहट। चिकनापन। २-प्रिय होने का भाव। प्रियता।

स्निग्धत्व [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्निग्धता'।

स्निग्धदल [संज्ञा पु.] (सं.) गुच्छकरंज।

स्निग्धदारु [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवदार। २-धूपसरल। ३-शालवृक्ष।

स्निग्धनिर्मल [संज्ञा पु] (सं) काँसा नामक धातु।

स्निग्धपत्र [संज्ञा पु] (सं.) १-पूतकरंज। २-गुच्छकरंज। ३-भगवतवल्ली। ४-माजुर नामक घास

स्निग्धपत्रा, स्निग्धपत्री [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-बेर। २-पालक का साग। ३-लोनी का साग। ४-गंभारी। सुमेर।

स्निग्धपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पिठवन। २-मरोड़फली।

स्निग्धपिंडीतक, स्निग्धपिण्डीतक [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल का वृक्ष।

स्निग्धफल [संज्ञा पु.] (सं.) गुच्छकरंज।

स्निग्धफला [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-फूट (फल)। २-नकुलकंद।

स्निग्धबीज [संज्ञा पु.] (सं.) यशबगोल। ईसपगोल।

स्निग्धमज्जक [संज्ञा पु.] (सं.) बादाम।

स्निग्धराजि [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का साँप।

स्निग्धा [त्रि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] जिसमें स्नेह हो। [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-मज्जा। अस्थिसार। २-विकंकत। ३-मेदा नामक अष्टवर्गीय औषध।

स्नुक् [संज्ञा पु.] (सं.) स्नुही। थूहड़।

स्नुकच्छदोपम [संज्ञा पु.] (सं.) वाराहीकन्द। गेंठी

स्नुग्दल [संज्ञा पु.] (सं.) थूहर।

स्नुषा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-पुत्रवधू। २-थूहर।

स्नुहा, स्नुही [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थूहर।

स्नुहीक्षीर [संज्ञा पु] (सं) थूहर का दूध।

स्नुहीबीज [संज्ञा पु] (सं.) थूहर का बीज।

स्नुघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) कमल।

स्नेय [वि.] (सं) १-स्नान के योग्य। २-जो नहाने को हो।

स्नेह [संज्ञा पु.] १-प्रेम। प्रणय। प्यार। मुहब्बत। २-चिकना पदार्थ। ३-कोमलता। ४-एक राग। ५-सरसों। ६-सिर के भीतर का गूदा या भेजा। ७-दूध के ऊपर की मलाई।

स्नेहकर [संज्ञा पु.] (सं) शालवृक्ष

स्नेहकुंभ, स्नेहकुम्भ [संज्ञा पु] (सं) तेल का कुप्पा या घड़ा।

स्नेहगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) तिल।

स्नेहन [संज्ञा पु.] १-चिकनाहट उत्पन्न करना। २-शरीर पर तेल मलना। ३-कफ। श्लेष्मा। ४-नवनीत। मक्खन।

स्नेहपात्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिससे स्नेह किया जाय। मित्र। पियारा।

स्नेहपान [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीने की विधि।

स्नेहपिंडीतक, स्नेहपिण्डीतक [संज्ञा पु.] (सं.) मैनफल।

स्नेहपूर, स्नेहफल [संज्ञा पु.] (सं.) तिल।

स्नेहबीज [संज्ञा पु.] (सं.) चिरौंजी।

स्नेहभू [संज्ञा पु] (सं) कफ। श्लेष्मा।

स्नेहमुख्य [संज्ञा पु] (सं.) तेल। रोगन।

स्नेहरंग, स्नेहरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं) तिल।

स्नेहवती [संज्ञा स्त्री.] (सं) मेदा नामक अष्टवर्गीय औषध।

स्नेहवस्ति [संज्ञा पु.] (सं) रोगी के शरीर में गुदामार्ग से पिचकारी की नली द्वारा तेल चढ़ाना।

स्नेहविद्ध, स्नेहवृक्ष [संज्ञा पु] (सं.) देवदार।

स्नेहसार [संज्ञा पु.] (सं) मज्जा। अस्थिसार।

स्नेहाश [संज्ञा पु] (सं) दीपक।

स्नेहित [वि] (सं.) १-प्यार किया हुआ। २-चिकनाया हुआ।

स्नेही [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी।

स्नेहु [संज्ञा पु] (सं.) १-रोग। बीमारी। २-चंद्रमा

स्नेहोत्तम [संज्ञा पु] (सं) तिल का तेल।

स्नेह्य [वि] (सं.) स्नेह या प्रेम करने के योग्य।

स्पंज [संज्ञा पु] (अं) झावे की तरह का एक प्रकार का बहुत मुलायम और रेशेदार पदार्थ जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद होते हैं।

स्पंद, स्पन्द, स्पंदन, स्पन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-धीरे-धीरे हिलना। काँपना। २-अङ्गों आदि का फड़कना।

स्पंदित, स्पन्दित [वि.] (सं.) हिलता, काँपता या फड़कता हुआ।

स्पंदिनी, स्पन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-रजस्वला २-कामधेनु।

स्पंदी, स्पन्दी [वि] (सं.) जिसमें स्पन्दन हो।

स्पर्द्धनीय [वि.] (सं.) १-संघर्षण के योग्य। २-जिसके साथ स्पर्द्धा की जा सके।

स्पर्द्धा [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-प्रतियोगिता आदि में किसी से होड़। २-सामर्थ्य या योग्यता से अधिक करने या पाने की इच्छा। ३-साहस। हौसला। ४-ईर्ष्या। द्वेष।

स्पर्द्धी [वि.] (सं.) स्पर्द्धा करने वाला। [संज्ञा पु.] ज्यामित में किसी कोण में की उतनी कमी जितनी के वृद्धि से वह कोण १८० अंश का या अर्धवृत्त का होता है।

स्पर्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्पर्द्धा'।

स्पर्श [संज्ञा पु.] (सं.) १-त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है। २-एक वस्तु के तल का अन्य वस्तु के तल से सटना अथवा छूना। ३-व्याकरण में उच्चारण के आभ्यन्तर प्रयत्न के चार भेदों में से 'स्पष्ट' नामक भेद के अनुसार 'क' से लेकर 'म' तक के २५ व्यंजन जिनके उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार बन्द सा हो जाता है। ४-ग्रहण के समय सूर्य या चन्द्रमा पर छाया पड़ने लगना।

स्पर्शकोण [संज्ञा पु.] (सं.) रेखागणित में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है।

स्पर्शजन्य [वि.] (सं.) १-जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो। २-देखो 'संक्रामक'।

स्पर्शतन्मात्र [संज्ञा पु.] (सं.) स्पर्श भूत का आदि. अमिश्र और सूक्ष्म रूप।

स्पर्शता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्पर्श का भाव या धर्म।

स्पर्शदिशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण लगा हो।

स्पर्शन [संज्ञा पु.] (सं.) १-छूना या स्पर्श करना। २-दान। देना। ३-सम्बन्ध। लगाव। ४-वायु पवन।

स्पर्शना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छूने की शक्ति या भाव

स्पर्शनीय [वि] (सं.) छूने या स्पर्श करने योग्य।

स्पर्शनेंद्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री] (सं.) छूने की इन्द्रिय। चमड़ा। त्वचा।

स्पर्शमणि [संज्ञा पु.] (सं) पारस पत्थर।

स्पर्शरसिक [संज्ञा पु.] (सं) कामुक। लंपट।

स्पर्शरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रेखागणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक बिंदु को स्पर्श करती हुई खींची जाय।

स्पर्शलज्जा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाजवंती या लजालू लता।

स्पर्शशुद्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शतावर।

स्पर्शसंकोच, स्पर्शसङ्कोच [संज्ञा पु.] (सं.) लजालू लता।

स्पर्शसंचारी, स्पर्शसञ्चारी [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का शूक रोग।

स्पर्शस्पंद, स्पर्शस्पन्द [संज्ञा पु.] (सं) मेंढक।

स्पर्शहानि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शूक रोग में रक्त के दूषित होने पर लिंग के चमड़े में स्पर्शज्ञान का अभाव होना।

स्पर्शा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुलटा। छिनाल।

स्पर्शाक्रामक [वि.] (सं.) संक्रामक। छुतहा।

स्पर्शाज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) वह जिसे स्पर्शज्ञान हो।

स्पर्शास्पर्श [संज्ञा पु.] (सं.) छूने या न छूने का विचार। छूतछात।

स्पर्शिक [वि.] (सं.) स्पर्श करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) हवा। पवन।

स्पर्शी [वि] (सं.) [स्त्री स्पर्शिनी] स्पर्श करने वाला छूने वाला।

स्पर्शेंद्रिय, स्पर्शेन्द्रिय [संज्ञा स्त्री.] (सं.) त्वचा। चमड़ा।

स्पर्शोपल [संज्ञा पु.] (सं.) पारस पत्थर।

स्पश [संज्ञा पु.] (सं.) १-दूत। २-युद्ध।

स्पष्ट [वि.] (सं.) १-साफ दिखाई देने या समझ में आने वाला। २-जिसके सम्बन्ध में कोई धोखा या सन्देह न हो। क्लियर।

स्पष्ट कहना या सुनाना–बिलकुल साफ-साफ कहना [संज्ञा पु.] (सं.) १-ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का स्फुट साधन जिससे यह जाना जाता है कि जन्मकाल या किसी अन्य विशिष्टकाल में कौन सा ग्रह किस राशि के कितने अंश, कितनी कला तथा कितनी विकला में था। २-व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं।

स्पष्ट-कथन [संज्ञा पु.](सं.) व्याकरण में दो प्रकार के कथनों में से एक। वह कथन जिसमें किसी दूसरे की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है जिस रूप में वह उसके मुख से निकली हो।

स्पष्टतया [क्रि. वि.] (सं.) स्पष्टरूप से। साफ-साफ

स्पष्टता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्पष्ट होने का भाव। सफाई।

स्पष्ट-प्रयत्न [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्पष्ट' (२)।

स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो बिना किसी संकोच या भय के स्पष्ट या साफ बातें कहने का अभ्यस्त हो।

स्पष्टस्थिति [संज्ञा स्त्री.](सं.) ज्योतिष में राशियों के अंश, कला, विकला आदि में (बालक के जन्म की) दिखाई हुई ग्रहों की ठीक-ठीक स्थिति।

स्पष्टीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) कोई बात इस तरह साफ करना कि उसके संबंध में कोई भ्रम न रहे। एल्यूसिडेशन।

स्पष्टीकृत [वि](सं.) जिसका स्पष्टीकरण किया गया हो।

स्पष्टीक्रिया [संज्ञा स्त्री.](सं.) ज्योतिष में वह क्रिया जिससे ग्रहों का किसी विशिष्ट समय में किसी राशि के अंश, कला, विकला आदि में अवस्थान जाना जाता है।

स्पाई [संज्ञा पु.] (अं.) १-वह जो छिपकर किसी का भेद ले। गुप्तचर। २-वह दूत जो शत्रु की छावनी अथवा राज्य में भेद लेने के लिये भेजा जाय। भेदिया।

स्पात [संज्ञा पु.] देखो 'इस्पात'।

स्पिरिट [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-शरीरस्थ आत्मा। रूह। २-वह कल्पित सूक्ष्म शरीर जिसका मृत्यु के समय शरीर से निकलकर आकाश में विचरण करता है। सूक्ष्म-शरीर। ३-जीवनशक्ति। ४-एक प्रकार का बहुत तेज मादक द्रव्य पदार्थ जिसका प्रयोग, शराबों, दवाओं तथा सुगंधियों आदि में मिलाने या लम्पों आदि के जलाने में होता है। फूल शराब। ५-किसी पदार्थ का सत या मूलतत्व। ६-उत्साह। जोश। ७-स्वभाव। मिजाज

स्पिलेचा [संज्ञा पु] (?) हिमालय पर [illegible]ने वाली एक झाड़ी।

स्पीकर [संज्ञा पु.] (अं.) १-किसी सभा, समिति या सर्वसाधारण में किसी विषय पर धड़ल्ले से भाषण करने वाला व्यक्ति। व्याख्यानदाता। २-व्यवस्थापिका सभाओं का अध्यक्ष।

स्पीच [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-वह जो कुछ मुँह से बोला जाय। २-बोलने की शक्ति। ३ किसी विषय पर दिया हुआ विस्तृत व्याख्यान।

स्पीन-किशमिशी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बढ़िया अंगूर।

स्पृक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-असवरग। २-लजवंती। ३-ब्राह्मी-बूटी। ४-मालती। ५-सेवती। ६-पाची लता।

स्पृश [वि.] (सं.) छूने या स्पर्श करने वाला।

स्पृशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सर्पिणी। २-कंटकारि

स्पृशी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कंटकारी।

स्पृश्य [वि.](सं.) जो स्पर्श करने के योग्य हो। छूने लायक।

स्पृष्ट [वि.] (सं.) जिसका या जिससे स्पर्श हुआ हो। छूआ हुआ। [संज्ञा पु.] व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का वह प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे को छू लेते हैं। जैसे-'प' या 'म' में।

स्पृष्टरोदनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) लाजवंती लता।

स्पृष्टास्पृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आपस में एक दूसरे को छूने की क्रिया। छूआछूत।

स्पृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छूना। स्पर्श।

स्पृहण [संज्ञा पु.] (सं.) इच्छा। अभिलाषा।

स्पृहणीय [वि.] (सं.) १-जिसके लिए कामना की जा सके। २-गौरवशाली।

स्पृहयालु [वि.] (सं.) १-जो अभिलाषा या कामना करे। २-लोभी। लालची।

स्पृहा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-इच्छा। अभिलाषा। २-न्यायदर्शनानुसार किसी ऐसे पदार्थ की प्राप्ति की कामना जो धर्म के अनुकूल हो।

स्पृही [वि.] (सं.) १-कामना करने वाला। २-स्पर्द्धा करने वाला।

स्पृह्य [वि.] (सं.) जिसके लिए कामना की जा सके। वांछनीय।

स्पेशल [वि.](अं.) १-जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता हो। २-जो विशेष रूप से किसी एक काम के लिए हो। [संज्ञा स्त्री.] (अं.) वह रेलगाड़ी या अन्य वाहन जो किसी विशिष्ट कार्य, उद्देश्य अथवा व्यक्ति के लिए चले।

स्पेशलिस्ट [संज्ञा पु.] (अं.) वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। विशेषज्ञ।

स्प्रिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) कमानी।

स्प्रिंगदार [संज्ञा पु.] (अं, फा) कमानीदार।

स्प्रिचुअलिज्म [संज्ञा पु.](अं.) वह विद्या या क्रिया जिसके द्वारा किसी मृत व्यक्ति की आत्मा बुलाई जाती है। भूतविद्या। आत्मविद्या।

स्फट [संज्ञा पु.](सं) १-फटफट का शब्द। २-साँप का फन।

स्फटा [संज्ञा स्त्री. (सं.) साँप का फन।

स्फटिक [संज्ञा पु.](सं.)१-एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर। बिल्लौर। २-सूर्यकांतमणि। ३-शीशा। काँच। ४-कपूर। ५-फिटकरी।

स्फटिकविष [संज्ञा पु.] (सं.) दारुमोच नामक विष

स्फटिका, स्फटिकाख्या [संज्ञा स्त्री.](सं) फिटकरी

स्फटिकाचल [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक के समान दीखने वाला कैलास पर्वत।

स्फटिकात्मा [संज्ञा पु.](सं.) स्फटिकमणि। बिल्लौर

स्फटिकाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

स्फटिकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) फिटकरी।

स्फटिकोपम [संज्ञा पु.] (सं.) १-कपूर। २-जस्ता नामक धातु। ३-चन्द्रकांतमणि।

स्फटिकोपल [संज्ञा पु.] (सं.) स्फटिक। बिल्लौर।

स्फटी [संज्ञा स्त्री.](सं.) फिटकरी।

स्फाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्फटिक। बिल्लौर। २-पानी की बूंद।

स्फाटिक [वि.](सं.) स्फटिक या बिल्लौर सम्बन्धी

स्फाटिकोपल, स्फाटीक [संज्ञा पु] (सं) स्फटिक। बिल्लौर।

स्फार [वि] (सं) १-प्रचुर। विपुल। २-विकट

स्फारण [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'स्फुरण'।

स्फाल [संज्ञा पु.] (सं.) स्फूर्ति। तेजी।

स्फिक्, स्फिच [संज्ञा पु.] (सं.) नितंब। चूतड़।

स्फीत [वि.] (सं.) १-बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २-फूला या उभरा हुआ। ३-समृद्ध।

स्फीतता [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-स्फीत होने का भाव या धर्म। २-वृद्धि। ३-मोटाई। ४-समृद्धि।

स्फीति [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-बढ़ना। २-उभरना या फूलना। ३-देखो 'मुद्रास्फीति'।

स्फुट [वि.](सं.) १-दिखाई देने वाला। व्यक्त। २-खिला हुआ। विकसित। ३-स्पष्ट किया हुआ। साफ। ४-शुक्ल। सफेद। ५-फुटकर। अलग-अलग।

[संज्ञा पु.](सं.)ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली में यह दिखाना कि कौनसा ग्रह किस राशि में कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला में है।

स्फुटक [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष्मती-लता।

स्फुटता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्फुट का भाव या धर्म

स्फुटत्व [संज्ञा पु.] (सं.) स्फुटता।

स्फुटत्वचा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

स्फुटध्वनि [संज्ञा पु.](सं) सफेद पंडुक नामक पक्षी

स्फुटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-फटना या फूटना। २-विकसित होना। खिलना। ३-सामने आना।

स्फुटफल [संज्ञा पु.] (सं.) तुंबुरु।

स्फुटबंधना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

स्फुटरंगिणी, स्फुटराङ्गिणी [संज्ञा स्त्री.](सं.) लता-विशेष जो दवा के काम में आती है।

स्फुटवल्कली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मालकंगनी।

स्फुटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) साँप का फन।

स्फुटि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पैर की बिवाई फटना। २-फूट नाम का फल।

स्फुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-फूट नामक फल। २-फिटकरी।

स्फुटित [वि.] (सं.) १-खिला हुआ। विकसित। २-जो स्पष्ट किया गया हो। ३-हँसता हुआ।

स्फुटितकांडभग्न, स्फुटितकाण्डभग्न [संज्ञा पु.] (सं.) हड्डी का टुकड़े-टुकड़े होकर खिल जाना।

स्फुटी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पैर की बिवाई फटना। २-फूट नामक फल।

स्फुटीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) स्पष्ट करना। प्रकट या व्यक्त करना।

स्फुत्कर [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

स्फुत्कार [संज्ञा पु.] (सं.) फुत्कार। फुफकार।

स्फुर [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवा। पवन। २-देखो 'स्फुरण'।

स्फुरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुछ कुछ हिलना। २-(अङ्ग का) फड़कना। ३-देखो 'स्फुर्त्ति'।

स्फुरणा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अङ्गों का फड़कना।

स्फुरति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'स्फूर्त्ति'।

स्फुरित [वि.] (सं.) जिसमें स्फुरण हो। हिलने या या फड़कने वाला।

स्फुल [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्फूर्त्ति। २-खेमा। तम्बू।

स्फुलमंजरी, स्फुलमञ्जरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हुलहुल (पौधा)।

स्फुलिंग, स्फुलिङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) आग की चिनगारी।

स्फुर्जक [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेंदू नामक वृक्ष। २ सोनापाठा।

स्फुर्जथु [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिजली की कड़क। २-चौलाई का साग।

स्फुर्जल [संज्ञा पु.] (सं.) १-तेंदू नामक वृक्ष। २-नंदीतरु।

स्फुर्ति, स्फुर्त्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-धीरेधीरे हिलना २-फड़कना। ३-उत्साह। ४-फुरती। तेजी।

स्फोट [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी वस्तु का अपने आवरण को फाड़कर वेगसहित बाहर निकलना। फूटना। २-फोड़ा, फुन्सी आदि। ३-मोती। मुक्ता ४ सार्वदर्शनसंग्रह के अनुसार नित्य शब्द जिसके वर्णात्मक शब्दों के अर्थ का ज्ञान होता है।

स्फोटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-फोड़ा। फुनसी। २-भिलावाँ

स्फोटन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्दर से फोड़ना। २-फाड़ना। विदारण। ३-प्रगट या प्रकाशित करना ४-शब्द। ध्वनि। ५-वायु प्रकोप से होने वाली व्रण की पीड़ा जिसमें व्रण फटता हुआ-सा जान पड़ता है।

स्फोटलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कर्णस्फोटा-लता।

स्फोटवादी [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो स्फोट या अभिनय शब्द को ही जगत् का मूलकारण मानता है

स्फोटबीजक [संज्ञा पु.] (सं.) भिलावाँ।

स्फोटा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-साँप का फन। २-सफेद अनन्तमूल।

स्फोटिक [संज्ञा पु.] (सं.) जमीन या पत्थर आदि को तोड़ने-फोड़ने का कार्य।

स्फोटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-फुन्सी। फुड़िया। २-हारीतिका नामक एक पक्षी।

स्फोटिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

स्फोता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अनन्तमूल। २-सफेद आक।

स्मय [संज्ञा पु.] (सं.) गर्व। अभिमान। [वि.] (सं.) अद्भुत। बिलक्षण।

स्मर [संज्ञा पु.] (सं.) १-कामदेव। २-सङ्गीत में शुद्धराग का भेद। ३-स्मरण। याद।

स्मरकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऐसी बातें जिनसे काम उत्तेजित हो।

स्मरकूप [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

स्मरगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण। २-कामकला का शिक्षक।

स्मरगृह [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

स्मरचंद्र, स्मरचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रतिबन्ध या आसन।

स्मरचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रतिबन्ध या आसन।

स्मरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-किसी देखी, सुनी अथवा बीती हुई बात का मन में ध्यान रहना या फिर से याद आना। २-नौ प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें कोई बात या चीज देखकर किसी दूसरी बात या चीज के बाद हो जाने का उल्लेख होता है।

स्मरणपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह पत्र जो किसी को किसी विषय की याद दिलाने के लिए लिखा या भेजा जाय। *रिमाइंडर*।

स्मरणपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्मरण-पत्र। २-वह पत्र जिसमें कोई बात याद रखने के लिये लिखी जाय। याददाश्त।

स्मरणशक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह मानसिक-शक्ति जिससे बातें स्मरण या याद रहती हैं। *मेमरी*।

स्मरणा-पदवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मृत्यु।

स्मरणासक्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवान के स्मरण में होने वाली आसक्ति।

स्मरणीय [वि.] (सं.) याद रखने योग्य।

स्मरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्मर या कामदेव का भाव। २-स्मरण का भाव या धर्म।

स्मरदशा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह दशा जो प्रेमी या प्रेमिका के न मिलने पर उसके विरह में होती है विरह की अवस्था।

स्मरदहन [संज्ञा पु] (सं.) शिव।

स्मरदीपन [वि.] (सं.) कामोत्तेजक।

स्मरध्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुरुषेंद्रिय। २-भग। योनि। ३-वाद्ययंत्र विशेष। ४-एक प्रकार की मछली।

स्मरध्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चाँदनी रात।

स्मरना* [क्रि. स.] (हिं.) स्मरण या याद करना।

स्मरप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामदेव की स्त्री।

स्मरमंदिर, स्मरमन्दिर [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि

स्मरलेखनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) मैना (पक्षी)।

स्मरवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामदेव की स्त्री, रति।

स्मरवीथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वेश्या। रंडी।

स्मरशत्रु [संज्ञा पु] (सं.) शिव।

स्मरशास्त्र [संज्ञा पु] (सं) कामशास्त्र।

स्मरसख [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा। [वि.] (सं.) जिससे काम की उत्तेजना हो।

स्मरस्तंभ, स्मरस्तम्भ [संज्ञा पु.] (सं.) पुरुषेंद्रिय लिंग।

स्मरस्मरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सेवती।

स्मरस्मय [संज्ञा पु.] (सं.) गधा।

स्मरहर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

स्मरांकुश, स्मराङ्कुश [संज्ञा पु.] (सं.) लिंग। पुरुषेंद्रिय।

स्मरागार [संज्ञा पु.] (सं.) भग। योनि।

स्माराधिवास [संज्ञा पु.] (सं.) अशोकवृक्ष।

स्मराम्र [संज्ञा पु.] (सं.) कलमी आम।

स्मरारि [संज्ञा पु] (सं.) शिव।

स्मरासव [संज्ञा पु.] (सं.) १-ताड़ी नामक मादकद्रव्य २-थूक।

स्मर्ण* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्मरण'।

स्मर्तव्य [वि.] (सं.) स्मरणीय।

स्मर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) याद या स्मरण रखने वाला

स्मर्य [वि.] (सं.) स्मरणीय।

स्मशान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'श्मशान' (स्मशान के यौगिकों के लिए देखो 'श्मशान' के यौगिक)

स्मारक [वि.] (सं.) स्मरण करने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह काम, पदार्थ अथवा रचना जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिए हो। यादगार। मेमोरियल। २-वह वस्तु जो किसी को अपना स्मरण बनाये रखने के लिए दी जाय। ३-वह पात्र जो किसी बड़े आदमी को कुछ बातों का स्मरण कराने अथवा कुछ बातें स्मरण रखने के लिए दिया जाय। मेमोरियल। ४-देखो 'स्मारिका'।

स्मारण [संज्ञा पु.] (सं.) स्मरण कराना। याद दिलाना

स्मारणी [संज्ञा स्त्री] (सं.) ब्राह्मीबूटी।

स्मारिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह पत्र जो किसी को किसी विषय का स्मरण दिलाने के लिए लिखा या भेजा जाय। *रिमाइंडर*।

स्मारित [संज्ञा पु] (सं) वह साक्षी जिसका नाम पत्र पर न लिखा हो परन्तु अर्थी अपने पक्ष के समर्थन के लिए याद करके बुलावे।

स्मार्त्त [संज्ञा पु] (सं.) वह जो स्मृतियों का अनुयायी हो। [वि.] (सं.) स्मृति-सम्बन्धी। स्मृति का।

स्मार्त्तिक [वि.] (सं.) स्मृति-संबंधी। स्मृति का।

स्माल-काज़-कोर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) वह दीवानी अदालत जहाँ छोटे-छोटे मामले होते हैं। अदालत-खफीफा।

स्मित [संज्ञा पु.] (सं.) मंदहास्य। धीमी हँसी। [वि.] (सं.) १-खिला हुआ। २-मुस्कराता हुआ।

स्मिति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्मित'।

स्मृत [वि.] (सं.) याद किया हुआ।

स्मृति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-वह ज्ञान जो स्मरण शक्ति के द्वारा प्राप्त होता है। याद। २-धर्म, दर्शन, आचार-व्यवहार आदि से सम्बन्ध रखने वाले हिन्दू धर्मग्रन्थ। ३-एक प्रकार का छन्द ४-इच्छा। कामना।

स्मृतिकार [संज्ञा पु.] (सं.) स्मृति अथवा धर्मशास्त्र बनाने वाला।

स्मृतिकारक [संज्ञा पु.] (सं.) वह औषध जिसके सेवन से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

स्मृति-पत्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह पत्र अथवा पुस्तिका आदि जिसमें किसी विषय की कुछ मुख्य-मुख्य बातें स्मरण रखने या कराने के विचार से एकत्र की गई हों। २-किसी संस्था आदि के मुख्य-मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। मेमोरैन्डम।

स्मृति-वर्द्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मीबूटी।

स्मृतिशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) धर्मशास्त्र।

स्मृति-हिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शङ्खपुष्पी नामक लता

स्यंद, स्यन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १-टपकना। चूना। रसना। २-गलना। ३-पसीना निकलना। ४-चन्द्रमा। ५-एक नेत्र रोग।

स्यंदक, स्यन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) तेंदू (वृक्ष)।

स्यंदन, स्यन्दन [संज्ञा पु.] (सं.) १-रथ, विशेषतः युद्ध का। २-टपकना। चूना। ३-गलना। पानी होना। ४-जाना। गमन। ५-हवा। पवन। ६-जैनियों के मत के गत उत्सर्पिणी के तेईसवें अर्हत। ७-तिनिशवृक्ष। ८-जल। ९-चित्र। १० घोड़ा। ११-मंत्र विशेष जिससे अस्त्र मंत्रित किये जाते थे। १२-तिंदुकवृक्ष।

स्यंदन-तैल, स्यन्दन-तैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में तेल विशेष जो भगन्दर रोग में उपकारी होता है

स्यंदनद्रुम, स्यन्दनद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिनिश वृक्ष। २-तेंदु। तिंदुक (वृक्ष)।

स्यंदनारोह, स्यन्दनारोह [संज्ञा पु.] (सं.) रथ पर चढ़कर युद्ध करने वाला योद्धा। रथी।

स्यंदनाह्वय, स्यन्दनाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्यंदनद्रुम'।

स्यंदनि [संज्ञा पु.] (सं.) तिनिश वृक्ष।

स्यंदनिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नहर। छोटी नदी २-लार की बूंद।

स्यदनी, स्यन्दनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-थूक। लार २-मूत्रनाड़ी।

स्यंदिनी, स्यन्दिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-दो बछड़ों को एक साथ जन्म देने वाली गाय। २-थूक। लार।

स्यमंतक, स्यमन्तक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की बहुमूल्य मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा था।

स्यमिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाँबी। वल्मीक। २-वृक्ष विशेष।

स्यमीक [संज्ञा पु.] (सं.) १-दीमक की मिट्टी का टीला वाल्मीक। २-बादल। मेघ। ३-जल। ४-समय काल।

स्यमीका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नील का पौधा। २-कोढ़ विशेष।

स्यात् [अव्य.] (सं.) कदाचित। शायद।

स्याद्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) अनेकांतवाद (जैन)।

स्यान* [वि.] (हिं.) स्याना।

स्यानप [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'स्यानपन'।

स्यानपत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-चतुरता। २-चालाकी धूर्त्तता।

स्यानपन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-चतुरता। होशियारी २-चालाकी।

स्याना [वि.] (हिं.) १-चतुर। होशियार। बुद्धिमान २-चालाक। काइयाँ। धूर्त्त। ३ वयस्क। बालिग [संज्ञा पु.] १-बड़ा-बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २-झाड़-फूँक करने वाला ओझा। ३-चिकित्सक। ४-गाँव का मुखिया।

स्यानाचारी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गाँव के मुखिया को दी जाने वाली रसूम।

स्यानापन [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्यानपन'।

स्यापा [संज्ञा पु.] (फा.) मरे हुए व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों का प्रतिदिन एकत्र होकर शोक करना। *स्यापा पड़ना*– १-रोना-चिल्लाना मचना। २-बिलकुल सुनसान या उजाड़ होना।

स्याबास* [अव्य.] (हिं.) देखो 'शाबास'।

स्याम* [संज्ञा पु] (हिं.) १-देखो 'श्याम'। २-एक देश का नाम। [वि.] देखो 'श्याम'।

स्यामक [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्यामक'।

स्यामकरन*, स्यामकर्न* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्यामकर्ण'।

स्यामता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'श्यामता'।

स्यामल [वि.] (हिं.) देखो 'श्यामल'।

स्यामलता [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्यामलता'।

स्यामलिया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'साँवला'।

स्यामा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्यामा'।

स्यार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री स्यारनी]। गीदड़। सियार।

स्यारकाँटा [संज्ञा पु.] (हिं.) सत्यानासी।

स्यारपन [संज्ञा पु.] (हिं.) गीदड़ का-सा स्वभाव या प्रकृति।

स्यारलाठी [संज्ञा पु.] (हिं.) अमलतास।

स्यारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सियारिन। गीदड़।

स्याल [संज्ञा पु.] (सं.) साला। पत्नी का भाई। (हिं.) देखो 'सियार'।

स्यालकंटा [संज्ञा पु.] (हिं) अमलतास।

स्यालक [संज्ञा पु.] (सं.) पत्नी का भाई। साला।

स्याला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-शीतकाल। २-बहुतायत। ज्यादती।

स्यालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पत्नी की छोटी बहन। साली।

स्यालू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) स्त्रियों के ओढ़ने की चादर

स्यालो [संज्ञा पु.] (डि.) पत्नी का भाई। साला।

स्याह [वि.] (फा.) कृष्ण वर्ण का। काला। [संज्ञा पु.] घोड़े की एक जाति।

स्याह-काँटा [संज्ञा पु.] (फा., हिं.) किगरई नामक काला पौधा।

स्याहगोसर [संज्ञा पु.] देखो 'सियाहगोश'।

स्याहजबान [संज्ञा पु.] (फा.) काली जीभ का हाथी या घोड़ा।

स्याहजीरा [संज्ञा पु.] (फा., हिं.) काला जीरा।

स्याहतालू [संज्ञा पु.] (फा., हिं.) काले रंग के तालू वाला हाथी या घोड़ा।

स्याहदिल [वि.] (फा.) जो दिल का काला हो। खोटा।

स्याहभूरा [वि.] (फा., हिं.) काला (रंग)।

स्याहा [संज्ञा पु.] (फा.) देखो 'सियाहा'।

स्याही [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-वह रंगीन-तरल या कुछ गाढ़ा पदार्थ जो प्रायः काला होता है और लिखने या कपड़े-कागज आदि छापने के काम आता है। रोशनाई। २-कालापन। कालिमा। ३-कालिख। कलौंछ। ४-एक प्रकार का काजल। *स्याही जाना*–बालों का कालापन जाना। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साही। सेह : शल्यकी।

स्यू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूत। सूत्र।

स्यूत [वि.] (सं) बुना या सीया हुआ। [संज्ञा पु.] मोटे कपड़े का थैला।

स्यूति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सीना। सीवन। २-बुनना। ३-थैला। ४-संतति। औलाद। संतान।

स्यून [संज्ञा पु.] (सं) १-किरण। रश्मि। २-सूर्य। ३-थैला।

स्यूम [संज्ञा पु.] (सं.) १-किरण। रश्मि। २-जल।

स्यों, स्यो* [अव्य.] (हिं) १-सह। सहित। २-पास। समीप।

स्योत [संज्ञा पु] (सं) मोटे कपड़े का थैला।

स्योती [संज्ञा स्त्री] देखो 'सेवती'

स्योन [संज्ञा पु] (सं) १-किरण रश्मि। २-सूर्य। ३-थैला। ४-सुख। आनन्द।

स्योनाक [संज्ञा पु] (सं) सोनापाढ़ा नामक वृक्ष।

स्योनाग [संज्ञा पु] (सं) सोनापाठा (वृक्ष)।

स्योहार [संज्ञा पु.] (देश.) वैश्यों की एक जाति।

स्रंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शृङ्ग'।

स्रंसन [वि.] (सं.) दस्तावर। विरेचक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-दस्त लाने वाली दवा। २-अधःपतन। भ्रंश। ३-गर्भपात।

स्रंसिनी [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक प्रकार का योनि रोग। प्रस्रंसिनी।

स्रंसिनीफल [संज्ञा पु.] (सं.) सिरस वृक्ष।

स्रंसी [वि.] (सं) १-गिरने वाला। २-असमय में गिरने वाला (गर्भ)। [संज्ञा पु] १-पीलू नामक वृक्ष। २-सुपारी का पेड़।

स्रक् [संज्ञा उभय.] (सं.) १-फूलों की माला। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण एवं एक सगण होता है तथा ६ और ९ पर यति होती है। ३-ज्योतिष में एक योग। ४-वृक्ष विशेष।

स्रक [संज्ञा उभय.] देखो 'स्रक्'।

स्रगा* [संज्ञा उभय.] (हिं.) फूलों की माला।

स्रगाल [संज्ञा पु] (डि.) गीदड़। सियार।

स्रग्जीह्व [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

स्रग्धर [वि.] (सं.) माला पहनने वाला।

स्रग्धरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण तथा तीन यगण होते हैं और ७, ७, ७ पर यति होती है। २-एक बौद्ध देवी का नाम।

स्रग्वान [वि.] (सं.) जो माला पहने हो।

स्रग्विणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं। २-एक देवी का नाम।

स्रग्वी [वि.] (सं.) माला धारण करने वाला। मालाधारी।

स्रज् [संज्ञा उभय] (सं.) देखो 'स्रक्'।

स्रज [संज्ञा स्त्री] (सं.) पुष्पमाला। फूलों का गजरा।

स्रजना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सृजना'।

स्रज्वा [संज्ञा पु.] (सं.) १ माला बनाने वाला। माली २-रस्सी। डोरी। ३-प्रजापति।

स्रणिका [वि.] (डिं.) लाल।

स्रद्धा* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'श्रद्धा'

स्रपाटी [संज्ञा स्त्री.] (डिं.) पक्षी की चोंच।

स्रम* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रम'।

स्रमना* [क्रि. अ.] (हिं.) श्रमित होना। थकना।

स्रमित* [वि] (हिं) देखो 'श्रमित'।

स्रवंती, स्रवन्ती [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-नदी। २-एक प्रकार की वनस्पति।

स्रव [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहना। प्रवाह। २-झरना।

स्रवण [संज्ञा पु.] (सं.) १-बहना। बहाव। २-गर्भपात। ३-मूत्र। पेशाब। ४-प्रस्वेद। पसीना।

स्रवत्तोया [संज्ञा स्त्री] (सं.) रुद्रवंती।

स्रवद्गर्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह स्त्री या गाय जिसका गर्भपात हुआ हो।

स्रवद्रंग, स्रवद्रङ्ग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मेला। २-प्रदर्शनी। नुमायश। ३-बाजार। हाट।

स्रवन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रवण'।

स्रवना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-बहना। २-टपकना। चूना। ३-गिरना। [क्रि. स.] १-बहाना। २-टपकाना। ३-गिराना।

स्रवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मूर्वा। मरोड़फली। २-जीवंती।

स्रष्टव्य [वि.] (सं.) जिसकी सृष्टि की जा सके।

स्रष्टा [संज्ञा पु.] (सं.) १-सृष्टि को बनाने वाले, ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव। [वि.] (कोई वस्तु) बनाने वाला।

स्रष्टृता [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्रष्टृत्व।

स्रष्टृत्व [संज्ञा पु] (सं.) सृष्टि रचने का काम। स्रष्टा का कार्य।

स्रसतर [संज्ञा पु.] (सं.) घासपात का बिछौना।

स्रस्त [वि.] (सं.) १-गिरा हुआ। च्युत। २-शिथिल ३-हिलता हुआ। ४-धँसा हुआ। ५ अलग किया हुआ।

स्रस्तर [संज्ञा पु.] (सं.) बैठने का आसन।

स्राकिशमिशी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) हलके बैंगनी रङ्ग के अङ्गारों की किशमिश।

स्राध* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्राद्ध'।

स्राप* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शाप'।

स्रापित* [वि.] (हिं.) देखो 'शापित'।

स्राव [संज्ञा पु.] (सं.) १-रसकर या बहकर निकलना। क्षरण। डिस्चार्ज। २-गर्भपात। गर्भस्राव। ३-निर्यास। रस।

स्रावक [वि.] (सं.) चुआने या टपकाने वाला।

[illegible] [संज्ञा पु.] (सं.) काली मिर्च।

स्रावकत्व [संज्ञा पु.] (सं.) पदार्थों का वह गुण या धर्म जिसके कारण कोई दूसरा पदार्थ उनमें से होकर निकल या रस जाता है।

स्रावण [वि.] देखो 'स्रावक'।

स्रावणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऋषि नामक अष्टवर्गीय औषध। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्रावणी'।

स्रावित [वि.] (सं) चू-कर या बहकर निकला हुआ।

स्रावी [वि] (सं) स्राव कराने वाला।

स्राव्य [वि] (सं.) बहने योग्य।

स्रिंग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शृंग'।

स्रिजन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सृजन'।

स्रिय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्रिय',

स्रुक् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्रुवा'।

स्रुग्दारु [संज्ञा पु.] (सं.) विकंकत वृक्ष।

स्रुघ्नी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जी मिट्टी।

स्रुच् [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्रुवा' (?)।

स्रुत [वि.] (सं.) बहा या चुआ हुआ। *[वि.] (हिं.) देखो 'श्रुत'।

स्रुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिंगुपत्री।

स्रुति [संज्ञा स्त्री.] (सं) बहाव। क्षरण। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्रुति'।

स्रुतिकीर्त्ति* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्रुतिकीर्त्ति।

स्रुतिमाथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) विष्णु।

स्रुव [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्रुवा'।

स्रुवतरु [संज्ञा पु.] (सं) विकंकत वृक्ष।

स्रुवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काठ की छोटी करछी जिससे हवन आदि में घी की आहुति देते हैं। सुरवा। २-सलईवृक्ष। ३-मूर्वा। मरोड़फली।

स्रू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-यज्ञीय-पात्र विशेष। स्रुवा। २-झरना। निर्झर।

स्रेनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'श्रेणी'।

स्रोत [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी का बहाव। जलप्रवाह २-नदी। ३-पानी का सोता। झरना। ४-वह आधार या साधन जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती अथवा आतीहुई किसी को मिलती है। सोर्स

स्रोत-आपत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निर्वाण-साधन की पहली अवस्था जिसमें सांसारिक-बन्धन शिथिल होने लगते हैं (बौद्ध)।

स्रोत-आपन्न [वि.] (सं.) निर्वाणसाधना की पहली अवस्था को पहुँचा हुआ।

स्रोतईश [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र। सागर।

स्रोतपत [संज्ञा पु.] (डिं.) समुद्र।

स्रोतस्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

स्रोता* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रोता'।

स्रोतोऽजन, स्रोतोञ्जन, स्रोतोज, स्रोतोद्भव [संज्ञा पु.] (सं.) सुरमा।

स्रोतोवह, स्रोतोवहा [संज्ञा स्त्री] (सं.) नदी।

स्रोन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्रवण'।

स्रोन-कन* [संज्ञा पु.] (हिं) पसीने की बूँद। श्रमकण।

स्रोनित* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'शोणित'।

स्रौघ्निका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सज्जी।

स्रौतिक [संज्ञा पु.] (सं.) सीप। शुक्ति।

स्लिप [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-परचा। चिट। २-कागज का लम्बा टुकड़ा जिस पर कंपोज करने के लिए कुछ लिखा जाय।

स्लीपर [संज्ञा पु.] (अं.) १-चौपहला लकड़ी का लंबा टुकड़ा जो प्रायः रेल की पटरियों के नीचे बिछाया जाता है। २-बिना एड़ी की जूती। चटी। यौ०-फुल-स्लीपर-एक प्रकार का जूता।

स्लेज [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की बिना पहिये की गाड़ी जो बर्फ पर घसिटती हुई चलती है।

स्लेट [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की चिकने पत्थर की पटिया जिस पर विद्यार्थी अङ्क लिखते हैं।

स्लेसमअंग [संज्ञा पु.] (डिं.) लसूड़े का वृक्ष।

स्लो [वि.] (अं.) धीमा चलने वाला। सुस्त। [संज्ञा पु.] (अं.) घड़ी की धीमी चाल।

स्लोथ [वि.] (अं.) अमेरिका के जंगलों में पाया जाने वाला एक जंतु।

स्वः [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

स्वःपथ [संज्ञा पु.] (सं.) मृत्यु।

स्वःपाल [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग का रक्षक।

स्वःसरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गंगा।

स्वःसुंदरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

स्व [वि.] (सं.) अपना। निज का। [प्रत्य.] एक प्रत्यय जो शब्द के अंत में लगकर ता, त्व आदि की भाँति भाववाचक होता है। यथा-निजस्व, परस्व आदि। प्राप्य धन। यथा-राजस्व, स्वामित्व आदि का अर्थ देता है।

स्वकंपन, स्वकम्पन [संज्ञा पु.] (सं.) वायु हवा।

स्वकरण [संज्ञा पु.] (सं.) अपना स्वत्व या दावा जताना।

स्वकरण-भाव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु पर बिना अपना स्वत्व सिद्ध किये अधिकार या कब्जा करना।

स्वकरण-विशुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) वह पदार्थ जिस पर किसी व्यक्ति का स्वत्व न हो।

स्वकर्मी [वि.] (सं.) स्वार्थी। खुदगरज।

स्वकीय [वि.] (सं.) अपना। निज का।

स्वकीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने ही पति से प्रेम करने वाली नायिका (साहित्य)।

स्वकुल [संज्ञा पु.] (सं.) अपना वंश।

स्वकुल-क्षय [संज्ञा पु.] (सं.) मछली। [वि.] (सं.) अपने कुल का नाश करने वाला।

स्वकुल्य [वि.] (सं.) अपने कुल का।

स्वकृत् [वि.] (सं.) अपना काम करने वाला।

स्वछ* [वि.] (हिं.) देखो 'स्वच्छ'।

स्वख्यापन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वयं ही अपनी प्रशंसा करके अपने आपको प्रसिद्ध करना।

स्वगत [क्रि. वि.] (सं.) आप ही आप। स्वतः (कुछ कहना)। [वि.] (सं.) १-अपने में आया अथवा लाया हुआ। आत्मगत। २-मन में आया हुआ। मनोगत। [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वगतकथन'

स्वगत-कथन [संज्ञा पु.] (सं.) नाटक में किसी पात्र

का कोई बात इस प्रकार कहना मानों उसकी बात सुनने वाला वहाँ कोई हो ही नहीं। अश्राव्य।

स्वगुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-केवाँछ। कौछ। २-लजालू।

स्वगृह [संज्ञा पु.](सं.) १-निज का घर। २-कलिकार नामक पक्षी।

स्वग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) रोग विशेष जो बालकों को होना है।

स्वचालक-यंत्र, स्वचालक-यन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह कल जो अपने आप चले। ऐसी कल जो एक बार चला देने पर फिर ध्यान देने की आवश्यकता न रहे। ऑटोमेटिक मशीन।

स्वचित्त-कारु [संज्ञा पु.] (सं.) वह शिल्पी जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत होते हुए भी स्वतंत्र रूप से काम करता हो।

स्वच्छंद, स्वच्छन्द [वि.] (सं.) १-अपनी इच्छा के अनुसार सब काम कर सकने वाला। स्वाधीन। स्वतंत्र। २-मनमाना आचरण करने वाला। निरंकुश। [क्रि. वि.] (सं.) बिना किसी संकोच या विचार के। बेधड़क।

स्वच्छंदचारिणी, स्वच्छन्दचारिणी [संज्ञा स्त्री] वेश्या। रंडी।

स्वच्छंदचारी, स्वच्छन्दचारी [वि.] (सं.) [स्त्री. स्वच्छंदचारिणी] स्वेच्छाचारी। मनमौजी।

स्वच्छंदता स्वच्छन्दता [संज्ञा स्त्री.](सं) स्वतंत्रता। आज़ादी।

स्वच्छ [वि.] (सं.) १-निर्मल। साफ। २-उज्ज्वल। शुभ्र। ३-शुद्ध। पवित्र। ४-निष्कपट। [संज्ञा पु.] (सं.) १-बिल्लौर। २-बेर का पेड़। ३-मोती ४-अभ्रक। ५-सोनामाखी। ६-रूपामाखी। ७-सोने और चाँदी का मिश्रण। ८-एक उपधातु। विमल।

स्वच्छता [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्वच्छ होने का भाव। निर्मलता। सफाई।

स्वच्छना* [क्रि.स.](हिं.) स्वच्छ शुद्ध या साफ करना

स्वच्छपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) अभ्रक।

स्वच्छमणि [संज्ञा-पु.] (सं.) बिल्लौर। स्फटिक।

स्वच्छवालुका [संज्ञा स्त्री.](सं.) विमल नामक उपधातु।

स्वच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद दूब।

स्वच्छी [वि.] (हिं.) देखो 'स्वच्छ'।

स्वज [संज्ञा पु.] (सं.) १-पुत्र। बेटा। २-रक्त। लहू ३-पसीना। स्वेद। [वि.] अपने से उत्पन्न।

स्वजन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपने परिवार के लोग। आत्मीय-जन। २-नातेदार। रिश्तेदार।

स्वजनता [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-आत्मीयता। २-नातेदारी। रिश्तेदारी।

स्वजनि, स्वजनी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अपने कुटुम्ब या आपसदारों की स्त्री। २-सखी। सहेली सहचरी।

स्वजन्मा [वि] (सं.) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो

स्वजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पुत्री। बेटी।

स्वजात [वि.] (सं.) अपने से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] पुत्र। बेटा।

स्वजाति [संज्ञा स्त्री] (सं.) अपनी जाति। [वि.] अपनी ही जाति का।

स्वजातिद्विष [संज्ञा पु.] (सं.) कुत्ता। [वि.] अपनी ही जाति से द्वेष करने वाला।

स्वजातीय [वि.] (सं.) १-अपनी जाति या वर्ग का २-एक ही वर्ग या जाति का।

स्वतंत्र, स्वतन्त्र [वि.](सं.)१-जो किसी के आधीन न हो। आजाद। स्वाधीन। इन्डिपेन्डेन्ट। २-अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। ३-अलग। पृथक। भिन्न। ४-नियम आदि के बन्धन से रहित। फ्री।

स्वतंत्रता, स्वतन्त्रता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बिना बाहरी दबाव के स्वयं सब कुछ कर सकने की शक्ति या अधिकार। आजादी। फ्रीडम।

स्वतंत्रद्वैधी-भाव, स्वतन्त्रद्वैधी-भाव [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो स्वतंत्र रूप से अपना हित समझकर दो शत्रुओं से मेलजोल रखता हो।

स्वतंत्री, स्वतन्त्री [वि.] (सं) स्वाधीन। आजाद।

स्वतः [अव्य.] (सं.) आप से आप। स्वयं। खुद।

स्वतःसिद्ध [वि.] (सं.) देखो 'स्वयंसिद्ध'।

स्वतोविरोध [संज्ञा पु.] (सं.) स्वयं ही अपना विरोध या खण्डन करना।

स्वतोविरोधी [संज्ञा पु.] (हिं.) अपना ही विरोध या खण्डन करने वाला।

स्वत्व [संज्ञा पु.] (सं) १-स्व का भाव। अपनापन २-वह अधिकार जिसके आधार पर कोई वस्तु अपने पास रखी अथवा किसी से ली या माँगी जा सकती हो। अधिकार। हक। राइट।

स्वत्वाधिकारी [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह जिसे किसी बात को पूर्ण स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो। २-स्वामी। मालिक।

स्वदन [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वाद लेना। खाना। २-लोहा।

स्वदेश [संज्ञा पु.] (सं.) अपना देश। मातृभूमि। वतन।

स्वदेशाभिष्यंदव, स्वदेशाभिष्यन्दव [संज्ञा पु.] (सं.) अपने देश में जहाँ आबादी बहुत अधिक हो गई हो, वहाँ से कुछ जनता को दूसरे प्रदेश में बसाना।

स्वदेशी [वि.] (सं.) १-अपने देश का। २-अपने देश में बना हुआ।

स्वदोषज [वि.] (सं) जो अपने दोष से उत्पन्न हो।

स्वधर्म [संज्ञा पु.] (सं.) अपना धर्म या कर्त्तव्य।

स्वधा [अव्य.] (सं.) एक शब्द अथवा मंत्र जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है। [संज्ञा स्त्री.] १-पितृ अन्न। २-दक्ष की एक कन्या।

स्वधाकर, स्वधाकार [वि] (सं.) श्राद्ध करने वाला

स्वधाधिप [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

स्वधाप्रिय [संज्ञा पु.](सं.) १-अग्नि। २ काला तिलक

स्वधाभुक् [संज्ञा पु.] (सं.) १-पितर। देवता।

स्वधाभोजी [संज्ञा पु.] (सं.) पितर। पितृगण।

स्वधिति [संज्ञा उभय.](सं) १-कुल्हाड़ी। २-वज्र।

स्वधिष्ठान [वि](सं) अच्छी स्थिति या स्थान से युक्त

स्वधीत [वि.] (सं.) अच्छी तरह पढ़ा हुआ।

स्वनंदा, स्वनन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

स्वन [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। आवाज।

स्वनचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रतिबन्ध।

स्वनाम [संज्ञा पु.] (सं.) अपना नाम।

स्वनाम-धन्य [वि.] (सं.) जो अपने नाम से धन्य या प्रसिद्ध हो। बहुत बड़ा पराक्रमी या महापुरुष

स्वनामा [वि] (सं.) अपने नाम से विख्यात होने वाला।

स्वनि [संज्ञा पु.] (सं.) १-शब्द। आवाज। २-अग्नि।

स्वनित [वि.] (सं.) ध्वनित। शब्दित। [संज्ञा पु.] १-शब्द। आवाज। २-गर्जन। गरज। ३-बादलों की गड़गड़ाहट।

स्वनिताह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का शाक।

स्वनोत्साह [संज्ञा पु.] (सं.) गैंडा।

स्वपच* [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'श्वपच'।

स्वपन [संज्ञा पु.] (सं.) १-नींद। निद्रा। २-स्वप्न। सपना।

स्वपना* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वप्न'।

स्वपनीय [वि.] (सं.) निद्रा के योग्य। सोने लायक

स्वपिंडा, स्वपिण्डा [संज्ञा स्त्री] (सं) पिंडखजूर।

स्वप्तव्य [वि.] (सं.) निद्रा के योग्य।

स्वप्न [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २-सोने के समय पूरी नींद न आने के कारण कुछ घटनाएं आदि दिखाई देना। ३-नींद में इस तरह दिखाई देने वाली घटना। ४-मन में उठने वाली वह बहुत ऊँची कल्पना या विचार जो सहज में पूरा न हो सके

स्वप्नक् [वि.] (सं.) सोने वाला।

स्वप्नकृत [वि.](सं.) नींद लाने वाला। निद्राजनक। [संज्ञा पु.] शिरियारी। सुनिषण्णकशाक।

स्वप्नगृह [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का कमरा।

स्वप्नज [वि.] (सं.) नींद लाने वाला।

स्वप्नज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) स्वप्न का ज्ञान।

स्वप्नदर्शी [वि.] (सं.) १-स्वप्न देखने वाला। २-बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करने वाला।

स्वप्नदोष [संज्ञा पु.] (सं) सोते में इच्छा न रहते भी वीर्यपात होना।

स्वप्ननंशन [संज्ञा पु.] (सं) सूर्य।

स्वप्ननिकेतन, स्वप्नस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) शयनागार। स्वप्नगृह।

स्वप्नाना* [क्रि. अ.] (हिं.) स्वप्न देखना। [क्रि. स.] (हिं.) स्वप्न दिखाना।

स्वप्नालु [वि.] (सं.) सोने वाला। निद्रालु।

स्वप्निल [वि.](सं.) १-सोया हुआ। २-स्वप्न देखता हुआ। ३-स्वप्न-सम्बन्धी। स्वप्न का।

स्वप्रकाश [वि.] (सं.) जो अपने ही तेज से प्रकाशमान हो।

स्वप्राकृतिक [वि.] (सं.) प्रकृति रूप से होने वाला।

स्वप्रामातिक [वि.] (सं.) जो बिना किसी सहायता के अपना सारा काम स्वयं करता हो।

स्वफरन* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वर्ण'।

स्वबीज [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा।

स्वभद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गम्भारी वृक्ष।

स्वभाउ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वभाव'।

स्वभाव [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यक्ति अथवा वस्तु में सदा प्रायः एकसा बना रहने वाला मूल या मुख्य गुण।। प्रकृति। नेचर। २-आदत। बान। हैबिट

स्वभावकृपण [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

स्वभावज [वि.] (सं.) स्वाभाविक। सहज। प्राकृतिक

स्वभावतः [क्रि. वि.] (सं.) स्वभाव से ही। प्राकृतिक रूप से।

स्वभावसिद्ध [वि.] (सं.) स्वभाव से होने वाला। सहज।

स्वभाविक [वि.] (सं.) देखो 'स्वाभाविक'।

स्वभावोक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह अलंकार जिसमें किसी जाति या अवस्था आदि के अनुसारयथावत् और प्राकृतिक रूप से वर्णन कियाजाता है।

स्वभू [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-विष्णु। ३-शिव [वि.] जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वभूति [संज्ञा पु.] (सं.) हवा। पवन।

स्वभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपनी भूमि।

स्वमेक [संज्ञा पु.] (सं.) संवत्सर। वर्ष।

स्वयं [अव्य.](सं.)१-आप। खुद। २-आप से आप

स्वयंक्रिय, स्वयंचालित [वि] (सं.) अपने आप चलने या काम करने वाला। ऑटोमेटिक।

स्वयंगुप्ता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) केवाँच। कौंछ।

स्वयंग्राहदान [संज्ञा पु.] (सं.) सेना आदि के द्वारा आप से आप सहायता पहुँचाना।

स्वयंज्योति [संज्ञा पु.] (सं) परमेश्वर।

स्वयंदत्त [संज्ञा पु.](सं.) वह बालक जो स्वयं किसी का पुत्र बन जाय।

स्वयंदान [संज्ञा पु.](सं.) अपने हाथ से कन्यादान करना।

स्वयंदूत [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री. स्वयंदूती] वह नायक जो अपनी कामवासना और प्रेम स्वयं प्रकट करता हो।

स्वयंदूती [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह नायिका जो अपनी कामवासना और प्रेम नायक पर स्वयं प्रकट करती हो।

स्वयंदृश [वि.] (सं.) देखने वाला।

स्वयंपतित [वि.] (सं.) आप से आप गिरा हुआ।

स्वयंपाक [संज्ञा पु.](सं.)अपना भोजन आप पकाना

स्वयंप्रकाश [संज्ञा पु.] (सं.) १-जो स्वयं प्रकाशित हो। २-परमेश्वर।

स्वयंप्रभ [संज्ञा पु.] (सं.) १-देखो 'स्वयंप्रकाश'। २-जैनों के अनुसार भावी २४ अर्हतों में से चौथे अर्हत का नाम।

स्वयंप्रभा [संज्ञा स्त्री.](सं.) इन्द्र की एक अप्सरा का नाम।

स्वयं-प्रमाण [वि.](सं.) जो आप ही प्रमाण हो तथा जिसके लिए अन्य प्रमाण की आवश्यकता न हो

स्वयंफल [वि.] (सं.) जो आप ही अपना फल हो और किसी अन्य कारण से न उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंभु [संज्ञा पु.](सं.) १-ब्रह्मा। २-वेद। ३-शिव ४-अज। ५-बमपूँग। ६-जैनियों के नौ वसुदेवों में से एक। [वि.](सं.) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंभुव [वि.] (सं.) देखो 'स्वयंभु'।

स्वयंभुवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तम्बाकू का पत्ता। २-माषपर्णी।

स्वयंभू [संज्ञा पु.](सं.) १-देखो 'स्वयंभु'। २-विष्णु ३-कामदेव। ४-काल। ५-देखो 'स्वायंभुव'। [वि.] (सं.) देखो 'स्वयंभु'।

स्वयंभूत [वि.](सं.) आप से आप पैदा होने वाला।

स्वयंभूरमण [संज्ञा पु.](सं.)जैनों के अनुसार अंतिम महाद्वीप एवं समुद्र का नाम।

स्वयंवर [संज्ञा पु] (सं.) १-प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध प्रथा जिसमें कन्या अपने लिए आपही वर चुन लेती थी। २-वह स्थान जहाँ एकत्र लोगों में कन्या अपना वर चुने।

स्वयंवरण [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी इच्छा से अपने लिए पति चुन लेना।

स्वयंवरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह युवती जो अपने पति को अपने आप चुने। पतिंवरा। वर्य्या।

स्वयंवह [संज्ञा पु.] (सं.) वह बाजा जो चाबी देने से अपने आप बजे। [वि.] जो आपही अपने-आपको वहन करे।

स्वयंवादिदोष [संज्ञा पु.] (सं.) न्यायालय में झूठ बात को बार-बार दोहराने का अपराध।

स्वयंवादी [संज्ञा पु.] (सं.) मुकदमे में जिरह के समय किसी झूठ बात को बार-बार दोहराने वाला।

स्वयंविक्रीत [वि.] (सं.) जिसने स्वयं ही अपने आप को बेचा हो।

स्वयंश्रेष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

स्वयंसिद्ध [वि.] (सं.) जो किसी तर्क या प्रमाण के बिना आपही ठीक और सिद्ध हो। सर्व-मान्य।

स्वयंसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सर्वमान्य सिद्धांत या तत्व जिसे सिद्ध या प्रमाणित करने की कोई आवश्यकता न हो। *एग्जियम।*

स्वयंसुपगत [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी इच्छा से किसी का दास होने वाला व्यक्ति।

स्वयंसेवक [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. स्वयंसेविका] वह जो अपनी इच्छा से और केवल सेवाभाव से आप ही किसी काम में, विशेष कर सैनिक ढंग के काम में सम्मिलित होने वाला। *वॉलेन्टियर।*

स्वयमर्जित [संज्ञा पु.](सं.) वह सम्पत्ति जो स्वयं उपार्जित की गई हो। खास अपनी कमाई हुई दौलत।

स्वयमीश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) परमेश्वर।

स्वयमुक्ति [संज्ञा पु.] (सं.) वह साक्षी जो बिना वादी या प्रतिवादी के बुलाये स्वयं ही आकर किसी घटना अथवा व्यवहार आदि के सम्बन्ध में कुछ कहे।

स्वयमेव [क्रि. वि.] (सं) आपही। खुद ही।

स्वयोनि [वि.] (सं.) जो अपना कारण या अपनी उत्पत्ति का स्थान आप ही हो।

स्वर [संज्ञा पु.](सं.) १-स्वर्ग। २-आकाश ३-परलोक।

स्वर [संज्ञा पु] (सं.) १-कोमलता, तीव्रता, उतार चढ़ाव आदि से युक्त, वह शब्द जो प्राणियों के गले या एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आघात पड़ने से निकलता है। २-सङ्गीत में इस प्रकार की वे सात निश्चित् ध्वनियाँ जिनका स्वरूप, तीव्रता,तन्यता आदि स्थिर हैं। सुर। जैसे-षड्ज ऋषभ, गांधार,मध्यम, पंचम, धैवत एवं निषाद ३-व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आपसे-आप स्वतन्त्रतापूर्वक होता है तथा जो किसी व्यंजन के उच्चारण मे सहायक होता है। हिन्दी वर्णमाला में ११ स्वर हैं-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ। ४-वेदपाठ में होने वाले शब्दों का उतार-चढ़ाव। ५-नाक से निकलने वाली वायु का श्वास [संज्ञा पु.](हिं.) आकाश। **स्वर उतरना**-स्वर का धीमा होना। **स्वर का चढ़ना**-स्वर ऊँचा या तेज करना **स्वर भरना**-अभ्यास करने के लिये एक ही स्वर का कुछ समय तक उच्चारण करना। **स्वर मिलाना**-किसी सुनाई पड़ते हुए स्वर के अनुसार स्वर उत्पन्न करना। **स्वर निकालना**-स्वर उत्पन्न करना।

स्वरकर [संज्ञा पु.](सं.) वह पदार्थ या औषध जिस के सेवन से गला सुरीला होता है।

स्वरक्षय [संज्ञा पु.] (सं.) गला बैठने का रोग।

स्वरग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वर्ग'।

स्वरग्राम [संज्ञा पु.] (सं) सङ्गीत में सा से नी तक के सातों स्वरों का समूह। सप्तक।

स्वरघ्न [संज्ञा प.] (सं.) वायु के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक रोग जिसमें गला सूखता है, आवाज बैठ जाती है खाये हुए पदार्थ जल्दी गले के नीचे नहीं उतरते एवं श्वासवाहिनी नाड़ी दूषित हो जाती है।

स्वरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर का भाव या धर्म।

स्वरनादी [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में वह बाजा जो मुँह से फूंककर बजाया जाय।

स्वरनाभि [संज्ञा पु.](सं.) प्राचीन काल का एक प्रकार का मुँह से फूँककर बजाया जाने वाला बाजा।

स्वरपत्तन [संज्ञा पु.](सं.) सामवेद।

स्वरपात [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना। २-उचित वेग, रुकाव आदि का ध्यान रखते हुए होने वाले शब्दों का उच्चारण। एक्सेन्ट

स्वरप्रधान [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का राग जिस में स्वर की प्रधानता हो ताल की प्रधानता न हो

स्वरभंग, स्वरभङ्ग [संज्ञा पु.](सं.) गला बैठने और स्पष्ट स्वर न निकलने का रोग।

स्वरभंगी, स्वरभङ्गी [संज्ञा पु.] (सं) १-वह जिसे स्वर-भंग रोग हुआ हो। २-एक प्रकार का पक्षी

स्वरभानु [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

स्वरभाव [संज्ञा पु.](सं.) स्वर से ही भावों को प्रकट करना (संगीत)।

स्वरभेद [संज्ञा पु.] (सं.) आवाज बैठ जाना।

स्वरमंडल, स्वरमण्डल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते है।

स्वरमंडलिका, स्वरमण्डलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक प्रकार की वीणा जो प्राचीन काल में होती थी

स्वरलासिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बाँसुरी। मुरली।

स्वरलिपि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में किसी गीत या तान आदि में आनेवाले सभी स्वरों का क्रमबद्ध लेख। नोटेशन।

स्वरवाही [संज्ञा पु.] (सं.) वह बाजा जिससे केवल स्वर निकलता हो और जो ताल आदि का सूचक न हो।

स्वरविज्ञान [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वरशास्त्र'।

स्वरवेधी [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'शब्दवेधी'।

स्वरशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शास्त्र जिसमें स्वर-सम्बन्धी सब बातों का विवेचन हो।

स्वरसंक्रम [संज्ञा पु.](सं.) संगीत में स्वरों का उतार-चढ़ाव।

स्वरस [संज्ञा पु.] (सं.) पत्तियों आदि को कूटकर निकाला हुआ रस (वैद्यक)।

स्वरसमुद्र [संज्ञा पु.] (सं.) एक तार वाला बाजा (प्राचीन)।

स्वरारा [संज्ञा पु.](सं.) १-कपित्थपत्रक नामक औषध २-लाख। लाह।

स्वरसाद [संज्ञा पु.] (सं.) गला बैठ जाना।

स्वरसादि [संज्ञा पु.] (सं.) औषधियों का काढ़ा। कषाय।

स्वरांत, स्वरान्त [वि.] (सं.) (शब्द) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।

स्वरांश [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में स्वर का आधा पाद।

स्वराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी देश का निवासी अपने देश का सब शासन और प्रबन्ध स्वयं और बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के करते हों। अपना राज्य।

स्वराट् [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-ईश्वर। ३-एक वैदिक-छंद। ४-स्वराज्य-शासन-प्रणाली वाले देश का राजा। [वि.] जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगङ्गा।

स्वरामक [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट का पेड़।

स्वरालु [संज्ञा पु.] (सं.) वच नामक औषध।

स्वराष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में एक संकर राग

स्वराष्ट्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपना देश या राज्य। २-प्राचीन सुराष्ट्र नामक देश।

स्वराष्ट्रमंत्री, स्वराष्ट्रमन्त्री [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वराष्ट्र-सचिव'।

स्वराष्ट्र-विभाग [संज्ञा पु](सं.) वह राजकीय-विभाग जो स्वराष्ट्र-सचिव के अधीन रहता है।

स्वराष्ट्र-सचिव [संज्ञा पु] (सं) किसी देश या राज्य के मन्त्रिमंडल का वह सदस्य जिसके अधीन पुलिस, जेलखाने, फौजदारी शासन-प्रबंध आदि हों। होम-मेंबर, होम-मिनिस्टर।

स्वरित [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर का वह उच्चारण जो न बहुत तेज़ हो और न बहुत धीमा। [वि.](सं.) १-जिसमें स्वर हो। २-गूँजता हुआ।

स्वरु [संज्ञा पु.] (सं.) १-वज्र। २-यज्ञ। ३-बाण। तीर। ४-सूर्य की किरण। ५-एक प्रकार का बिच्छू

स्वरुचि [वि.] (सं.) अपनी इच्छा या रुचि।

स्वरूप [संज्ञा पु.] (सं.) १-व्यक्ति पदार्थ, कार्य आदि की आकृति। शकल। २-मूर्ति, चित्र आदि। ३-वह जिसने किसी देवता का रूप धारण किया हो। ४-स्वभाव। आत्मा।
[वि.] (सं.) [स्त्री. स्वरूपा] १-सुन्दर। २-तुल्य समान। [अव्य.] रूप में। तौर पर।

स्वरूपज्ञ [संज्ञा पु.] (सं.) परमात्मा का स्वरूप पहचानने वाला। तत्वज्ञ।

स्वरूपता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वरूप का भाव या धर्म

स्वरूपदय [संज्ञा पु.] (सं.) जैन-मतानुसार वह दया या जीवरक्षा जो इहलोक तथा परलोक में सुख पाने के लिए लोगों की देखा-देख की जाय।

स्वरूपप्रतिष्ठा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों तथा गुणों से युक्त होना।

स्वरूपमान* [संज्ञा पु.] (हिं.) सुन्दर। स्वरूपवान्।

स्वरूपवान [वि.] (सं.) [स्त्री. स्वरूपवती] सुन्दर। खूबसूरत।

स्वरूपसंबंध, स्वरूपसम्बन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) अभिन्न-सम्बन्ध।

स्वरूपभास [संज्ञा पु.] (सं.) वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास देख पड़ना।

स्वरूपासिद्ध [वि.] (सं.) जो स्वयं अपने स्वरूप से ही असिद्ध जान पड़ता हो।

स्वरूपी [वि.] (हिं.) १-स्वरूप वाला। २-किसी के स्वरूप के अनुसार होने या दिखाई देने वाला। *[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सारूप्य'।

स्वरूपोत्प्रेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्प्रेक्षा-अलंकार का एक भेद।

स्वरेणु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सूर्यपत्नी का एक नाम।

स्वरोचिस् [संज्ञा पु.] (सं.) पुराणवर्णित स्वारोचिस मनु के पिता का नाम।

स्वरोद [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे रहते हैं।

स्वरोदय [संज्ञा पु.] (सं.) स्वरों या श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जानने की विद्या।

स्वर्गंगा, स्वर्गङ्गा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगङ्गा मन्दाकिनी।

स्वर्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिन्दुओं के मतानुसार सात लोकों में से वह जिसमें पुण्य एवं सत्कर्म करने वाली आत्माएँ जाकर निवास करती हैं। देवलोक। २-अन्य धर्मानुसार इसी तरह का एक विशिष्ट स्थान जो आकाश में माना जाता है। ३-वह स्थान जहाँ बहुत अधिक सुख मिले। ४-आकाश।
स्वर्ग के पथ पर पैर देना-१-मरना। २-जान जोखिम में डालना। *स्वर्ग जाना या सिधारना*-मरना। *स्वर्ग सुख*-स्वर्ग जैसा सुख। *स्वर्ग की धार*-आकाशगङ्गा।

स्वर्गकाम [वि.] (सं.) स्वर्ग की कामना करने वाला

स्वर्गगत [वि.] (सं.) मराहुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्ग जाना। मरजाना

स्वर्गगमन [संज्ञा पु.] (सं.) मरना। स्वर्ग सिधारना

स्वर्गगामी [वि.] (सं.) १-स्वर्ग में जाने वाला। २-मराहुआ। मृत। स्वर्गीय।

स्वर्गतरु [संज्ञा पु.] (सं.) पारिजात।

स्वर्गद, स्वर्गदायक [वि.](सं.) स्वर्ग पहुँचाने वाला

स्वर्गधेनु [संज्ञा पु.] (सं.) कामधेनु।

स्वर्गनदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आकाशगङ्गा।

स्वर्गपति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

स्वर्गपुरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरावती।

स्वर्गपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) लौंग।

स्वर्गभूमि [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग-सदृश भूमि। वह भूमि जहाँ स्वर्गसुख प्राप्त हो।

स्वर्गमंदाकिनी, स्वर्गमन्दाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्गगङ्गा। मंदाकिनी।

स्वर्गमन [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग जाना। मरना।

स्वर्गयोनि [संज्ञा पु.](सं.) वे शुभ कर्म जिनके कारण मनुष्य स्वर्ग जाता है।

स्वर्गलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग पहुंचना। मरना।

स्वर्गलोक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वर्ग (१)'।

स्वर्गलोकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-इन्द्र। २-शरीर। मन।

स्वर्गवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

स्वर्गवाणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशवाणी।

स्वर्गवास [संज्ञा पु.](सं.) १-स्वर्ग में निवास करना २-मरना।

स्वर्गवासी [वि.] (सं.) [स्त्री. स्वर्गवासिनी] १-स्वर्ग में रहने वाला। २-जो मर गया हो। मृत।

स्वर्गसार [संज्ञा पु.] (सं.) सङ्गीत में ताल के चौदह भेदों में से एक।

स्वर्गस्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

स्वर्गस्थ [वि.] (सं.) १-जो स्वर्ग में हो या स्थित हो २-स्वर्गवासी। मृत।

स्वर्गापगा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्गगङ्गा। मंदाकिनी

स्वर्गामी [वि.] (सं.) देखो 'स्वर्गगामी'।

स्वर्गारूढ़ [वि.] (सं.) स्वर्ग सिधारा हुआ। मृत। स्वर्गवासी।

स्वर्गारोहण [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग की ओर चढ़ना या जाना। २-जो मरकर स्वर्ग गया हो। मृत।

स्वर्गवास [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग में निवास करना। स्वर्गवास।

स्वर्गिक [वि.] (सं.) देखो 'स्वर्गीय'।

स्वर्गिरि [वि.] (सं.) सुमेरुपर्वत।

स्वर्गिवधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

स्वर्गी [वि.] (सं.) १-स्वर्गवासी। २-स्वर्गगामी। [संज्ञा पु.] देवता।

स्वर्गीय [वि.] (सं.) [स्त्री. स्वर्गीया] १-स्वर्ग-संबंधी स्वर्ग का। २-जो मरकर स्वर्ग गया हो। मृत।

स्वर्चन [संज्ञा पु.] (सं.) वह अग्नि जिसमें से सुन्दर ज्वाला निकलती हो।

स्वर्जक्षार [संज्ञा पु.] (सं.) सज्जी।

स्वर्जारिघृत [संज्ञा पु.](सं.) वैद्यक में एक घृत जिसे घाव पर लगाने से [illegible] के कीड़े मर जाते हैं।

स्वर्जि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सज्जी। २-शोरा।

स्वर्जिक, स्वर्जिकाक्षार [संज्ञा पु.](सं.) सज्जी मिट्टी

स्वर्जिकाद्यतैल [संज्ञा पु.] (सं.) वैद्यक में एक तेल जो कान के दर्द और बहरेपन के लिये उपयोगी होता है।

स्वर्जिकापाक्य [संज्ञा पु.] (सं.) सज्जीक्षार।

स्वर्जित् [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वर्ग पर विजय प्राप्त-कर्त्ता। २-यज्ञ विशेष।

स्वर्जी [संज्ञा पु.] (सं.) सज्जी मिट्टी।

स्वर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना नामक प्रसिद्ध धातु सुवर्ण। २-धतूरा। ३-गौर सुवर्ण नामक साग ४-नागकेसर। ५-एक पुराणोक्त नदी। ६-कामरूप देश की एक नदी।

स्वर्णकंडु, स्वर्णकण्डु [संज्ञा पु.](सं.) राल। धूना

स्वर्णकण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने का कण। २-कर्ण गुग्गुल।

स्वर्णकदली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनकेला।

स्वर्णकमल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल कमल।

स्वर्णकाय [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़। [वि.] सुनहले शरीर वाला।

स्वर्णकार [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार।

स्वर्णकीट [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का चमकीला कीड़ा। सोनकिरवा। २-जुगनूँ।

स्वर्णकूट [संज्ञा पु.](सं.) हिमालय की एक चोटी का नाम।

स्वर्णकृत [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार।

स्वर्णकेतकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली केतकी जो इत्र और तेल बनाने के उपयोग में आती है।

स्वर्णक्षीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हेमपुष्पा।

स्वर्णगर्भाचल [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय की एक चोटी का नाम।

स्वर्णगिरि [संज्ञा पु] (सं.) सुमेरु-पर्वत।

स्वर्णगैरिक [संज्ञा पु.] (सं.) सोना-गेरू।

स्वर्णचूड़, स्वर्णचूल [संज्ञा पु.](सं.) नीलकंठ नामक पक्षी।

स्वर्णज [वि.] (सं.) १-सोने से उत्पन्न। २-सोने का बना हुआ [संज्ञा पु.] १-वंग (धातु)। राँगा। २-सोनामक्खी।

स्वर्णजयंती, स्वर्णजयन्ती [संज्ञा स्त्री.](सं.) किसी व्यक्ति या संस्था आदि के जन्म अथवा आरंभ होने से पचासवें वर्ष होने वाली जयंती। गोल्डन जुबली।

स्वर्णजातिका, स्वर्णजाती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली चमेली।

स्वर्णजीवंती, स्वर्णजीवन्ती, स्वर्णजीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली जीवंती।

स्वर्णजीवी [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार।

स्वर्णजूही [संज्ञा स्त्री. (हिं.) पीली जूही।

स्वर्णद [वि.] (सं.) १-सोना दान करने वाला। २-सोना देने वाला। [संज्ञा पु.] वृश्चिकाली। बारहंटी।

स्वर्णदी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-आकाशगंगा। २-वृश्चिकाली।

स्वर्णदीधिति [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

स्वर्णदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भरभाँड़। स्वर्णक्षीरी।

स्वर्णद्रु [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

स्वर्णधातु [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुवर्ण। सोना। २-सोना-गेरू।

स्वर्णनाभ [संज्ञा पु.] (सं.) शालग्राम विशेष।

स्वर्णनिभ [संज्ञा पु.] (सं.) सोना गेरू।

स्वर्णपक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) गरुड़।

स्वर्णपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का पत्तर।

स्वर्णपद्मा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आकाशगङ्गा।

स्वर्णपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पीली जीवंती।

स्वर्णपर्पटी [संज्ञा पु] (सं.) एक वैद्यक औषध जो संग्रहणी रोग में परम गुणकारी होती है।

स्वर्णपाटक [संज्ञा पु.] (सं.) सोहागा।

स्वर्णपारवेत [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा पारवेत।

स्वर्णपुष्प [संज्ञा पु.](सं.) १-अमलतास। २-चंपक चम्पा। ३-बबूल। ४-कैथ। ५-सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

स्वर्णपुष्पा [संज्ञा स्त्री.](सं) १-कलिहारी। लांगली २-मेढ़ासिंगी।

स्वर्णपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वर्णकेतकी। २-अमलतास। ३-सातला नामक थूहर।

स्वर्णफल [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरा।

स्वर्णफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णकदली।

स्वर्णबीज [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरे का बीज।

स्वर्णभानु [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्य।

स्वर्णभूमि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वह स्थान जहाँ सब प्रकार के सुख हों। २-दालचीनी।

स्वर्णभूषण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने के बने गहने। २-अमलतास। ३-सोनागेरू।

स्वर्णभृंगार, स्वर्णभृङ्गार [संज्ञा पु] (सं.) पीला भँगरा।

स्वर्णमंडन, स्वर्णमण्डन [संज्ञा पु.](सं.) सोनागेरू

स्वर्णमय [वि.] (सं.) जो बिलकुल सोने का हो।

स्वर्णमाक्षिक [संज्ञा प.] (सं.) सोनामक्खी।

स्वर्णमाता [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-जामुन। २-हिमालय की एक छोटी नदी।

स्वर्णमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णपत्री। सनाय।

स्वर्णमुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने का सिक्का।

स्वर्णयुग [संज्ञा पु.] (सं.) सब से अच्छा और श्रेष्ठ युग या समय।

स्वर्णयूथिका, स्वर्णयूथी [संज्ञा स्त्री.](सं.) पीली जूही

स्वर्णरंभा, स्वर्णरम्भा [संज्ञा स्त्री.](सं.) स्वर्णकदली चंपाकेला।

स्वर्णरीति [संज्ञा स्त्री.](सं.) सोनापीतल। राजपीतल

स्वर्णरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'स्वर्णरेखा'।

स्वर्णलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ज्योतिष्मती-लता। २-पीली जीवंती।

स्वर्णली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णपुष्पी।

स्वर्णवज्र [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का लोहा।

स्वर्णवर्ण [संज्ञा पु] (सं.) १-सुनहला रंग। २-कर्ण गुग्गुल। ३-हरताल। ४-सोनागेरू। ५-दारुहल्दी

स्वर्णवर्णाक, स्वर्णवर्णाङ्क [संज्ञा पु.](सं.) मुरदासङ्ग

स्वर्णवर्णा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हलदी। २-दारुहल्दी

स्वर्णवर्णाभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुनहले रंग की सी आभा। २-जीवंती।

स्वर्णवल्कल [संज्ञा पु.] (सं.) सोनापाठा।

स्वर्णवल्ली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोनावल्ली। २-स्वर्णुली नामक क्षुप। ३-पीली जीवंती।

स्वर्णविंदु, स्वर्णबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

स्वर्णशिख [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकंठ नामक पक्षी।

स्वर्णशेफालिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-अमलतास। २-सम्भालू।

स्वर्णसिंदूर, स्वर्णसिन्दूर [संज्ञा पु.](सं) रससिंदूर

स्वर्णहालि [संज्ञा पु.] (सं.) अमलतास।

स्वर्णाकर [संज्ञा पु.] (सं.) सोने की खान।

स्वर्णाभ [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

स्वर्णाभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सुनहली आभा। २-पीली जूही।

स्वर्णारि [संज्ञा पु] (सं) १-गंधक २-सीसा नामक धातु।

स्वर्णालु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वर्णुली'।

स्वर्णाह्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं) भरभाँड़। स्वर्णक्षीरी

स्वर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) धनिया।

स्वर्णिम, स्वर्णिल [वि.](सं.) सोने के रंग का सुनहला।

स्वर्णुली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनुली नामक क्षुप।

स्वर्णोपधातु [संज्ञा पु.] (सं.) सोनामक्खी।

स्वर्धुनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

स्वर्नगरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अमरावती।

स्वर्नदी [संज्ञा स्त्री.] (सं) स्वर्गगङ्गा। आकाशगङ्गा

स्वर्पति [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्र।

स्वर्भानव [संज्ञा पु.] (सं.) गोमेदमणि।

स्वर्लोक [संज्ञा पु.] (सं.) स्वर्ग।

स्वर्वधू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

स्वर्वापी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गङ्गा।

स्वर्विद [संज्ञा पु.](सं.) यज्ञ आदि के फल से स्वर्ग जाने वाला।

स्वर्वेश्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अप्सरा।

स्वर्वैद्य [संज्ञा पु.] अश्विनीकुमार।

स्वल्प [वि.] (सं.) बहुत थोड़ा। बहुत कम।

स्वल्पकंद, स्वल्पकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) कसेरू।

स्वल्पकेशर [संज्ञा पु.] (सं.) कचनार।

स्वल्पकेशी [संज्ञा पु.] (सं.) भूतकेश नामक पौधा।

स्वल्पघंटा, स्वल्पघण्टा [संज्ञा स्त्री.](सं.) बनसनई

स्वल्पचटक [संज्ञा पु.] गौरैया पक्षी।

स्वल्पजंबुक, स्वल्पजम्बुक [संज्ञा पु.](सं.) लोमड़ी

स्वल्पतरु [संज्ञा पु.] (सं.) फेमुक।

स्वल्पनख [संज्ञा पु.] (सं.) नखी नामक गंधद्रव्य।

स्वल्पफल [संज्ञा पु.] (सं.) पहाड़ी महुआ।

स्वल्पपर्णी [संज्ञा स्त्री] (सं.) मेद नामक अष्टवर्गीय औषध।

स्वल्पफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाऊ बेर।

स्वल्पयव [संज्ञा पु] (सं.) जौ नामक अन्न।

स्वल्परूपा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनसनई।

स्वल्पवर्त्तुल [संज्ञा पु.] (सं.) मटर।

स्वल्पवल्कला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तेजबल।

स्वल्पविटप [संज्ञा पु.] (सं.) केमुक। केमुआ।

स्वल्पविरामज्वर [संज्ञा पु.](सं.) वह ज्वर जो ठहर-ठहरकर थोड़ी देर उतरकर फिर आये।

स्वल्प-व्यक्तितंत्र, स्वल्प-व्यक्तितन्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन जिसमें राजसत्ता इनेगिने लोगों के हाथ में हो।

स्वल्पशब्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बनसनई।

स्वल्पशृगाल [संज्ञा पु.] (सं.) रोहित मृग।

स्ववग्रह [संज्ञा पु.](सं.) अनावृष्टि। वर्षा का न होना।

स्ववरन* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'सुवर्ण'।

स्ववश [वि.] (सं.) १-जो अपने वश में हो। २-जितेंद्रिय।

स्ववशता [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्ववश का भाव या धर्म।

स्ववशिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैदिक छन्द विशेष

स्ववश्य [वि.] (सं.) जो अपने ही वश में हो।

स्ववहा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) निसोथ।

स्ववासिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने पिता के घर रहने वाली स्त्री।

स्वविक्षिप्त-सैन्य [संज्ञा पु.] (सं.) अपने ही देश में विद्यमान सेना।

स्व-विवेक [संज्ञा पु.] (सं.) कुछ विशिष्ट नियमों तथा बन्धनों के अधीन रहकर उचित अनुचित एवं युक्त-अयुक्त बातों का विचार करने की शक्ति *डिस्क्रीशन*।

स्ववीज [वि] (सं.) जो अपना बीज अथवा कारण आप ही हो। [संज्ञा पु.] (सं.) आत्मा।

स्वशुर [संज्ञा पु.] देखो 'स्वसुर'।

स्वसंभव, स्वसम्भव [वि.](सं.) जो आत्मा से उत्पन्न हो।

स्वसंविद् [वि.] (सं.) जिसका ज्ञान इन्द्रियों से परे हो। अगोचर।

स्वसंवेदन [संज्ञा पु.](सं) अपना या निज का अनुभव।

स्वसंवेद्य [वि.] (सं.) केवल अपने ही अनुभव के

स्वसमुत्थ [वि.] (सं.) स्वाभाविक।

स्वसर [संज्ञा पु.] (सं.) १-मकान। घर। २-दिन।

स्वसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगिनी। बहन।

स्वसिद्ध [वि.] (सं.) स्वयंसिद्ध।

स्वसुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'ससुर'।

स्वसुराल [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'ससुराल'।

स्वस्ति [अव्य.](सं.) कल्याण हो। मङ्गल हो। भला हो (आशीवाद)। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मंगल। कल्याण। सुख।

स्वस्तिक [संज्ञा पु] (सं.) १-एक प्रकार का बहुत प्राचीन मङ्गलसूचक चिह्न जो शुभ अवसरों पर दीवारों आदि पर अङ्कित किया जाता है। आजकल यह + इस तरह का बनाया जाता है। २-हठयोग में एक प्रकार का आसन। ३-घर जिसमें पश्चिम की ओर एक दालान तथा पूर्व की ओर दो दालान हों। ४-सुसना नामक साग। ५-लहसुन। ६-रतालु। ७-मूली। ८-प्राचीनकाल का एक प्रकार का यन्त्र जो शरीर में गड़े हुए शल्य आदि को बाहर निकालने के काम में आता है। ९-वैद्यक में फोड़े आदि पर बाँधा जाने वाला बन्धन या पट्टी। १०-चौराहा। चौमुहानी। ११-साँप के फन पर की नीली रेखा। १२-शारीरिक चिह्न विशेष जो सामुद्रिकशास्त्र के अनुसार शुभफलदायी माना जाता है। १३-एक प्रकार की नाव जो प्राचीनकाल में होती थी।

स्वस्तिकयंत्र, स्वस्तिकयन्त्र [संज्ञा पु] (सं.) देखो 'स्वस्तिक' (८)।

स्वस्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) चमेली।

स्वस्तिकाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) चौलाई का साग।

स्वस्तिकृत् [संज्ञा पु.] (सं.) शिवा। [वि.] (सं.) मंगलदायक। कल्याणकारी।

स्वस्तिग [वि.] (सं.) सुख से गमन करने वाला।

स्वस्तिद [संज्ञा पु.](सं.) शिव। [वि.] (सं.) मङ्गलदायक। कल्याणकारी।

स्वस्तिमत् [वि.] (सं.) अविनाशी।

स्वस्तिमती[संज्ञा स्त्री.](सं.)कार्त्तिकेयकी एक मातृका

स्वस्तिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्राह्मण। २-स्तुतिपाठक। बन्दी।

स्वस्तिवाचक [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंगलसूचक-बात कहने वाला। २-आशीर्वाद देने वाला।

स्वस्तिवाचन [संज्ञा पु.] (सं.) मांगलिक कार्यों के आरम्भ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य।

स्वस्तिवाद [संज्ञा पु.] (सं.) आशीर्वाद।

स्वस्तेन, स्वस्त्ययन [संज्ञा पु.] (सं.) धार्मिक कृत्य विशेष जो किसी विशिष्ट-कार्य की अशुभ बातों का नाश करके शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है।

स्वस्थ [वि] (सं.) १-जिसे किसी प्रकार का रोग न हो। नीरोग। २-तन्दुरुस्त। चंगा। ३-जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान। ४-जिसमें कोई दोष, अश्लील आदि न हो। *हैल्थी*।

स्वस्थचित्त [वि.] (सं.) जिसका चित्त ठिकाने हो। शांतचित्त।

स्वस्थता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-निरोगता। तन्दुरुस्ती २-सावधानता।

स्वस्थ-प्रज्ञ [वि.] (सं.) जिसकी बुद्धि सब बातें समझने और सब काम ठीक प्रकार करने में समर्थ हो। *ऑफ-साउण्ड माइंड*।

स्वस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) अपना स्थान।

स्वस्रीय [संज्ञा पु.] (सं.) बहन का बेटा भांजा।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी [संज्ञा स्त्री.](सं.) बहन की बेटी भांजी।

स्वहाना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'सोहाना'।

स्वांकिक, स्वाङ्किक [संज्ञा पु.] (सं.) ढोल बजाने वाला।

स्वाँग [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी के अनुरूप धारण किया जाने वाला बनावटी रूप या नकली वेष। २-परिहासपूर्ण खेल या तमाशा। नकल। ३-लोगों को धोखा देने के लिए बनाया हुआ रूप अथवा किया जाने वाला आडम्बर। स्वाँग लाना-धोखा देने के लिए कोई रूप धारण करना।

स्वाँगना* [क्रि. स.] (हिं.) स्वाँग बनाना। बनावटी वेष या रूप धारण करना।

स्वाँगी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जो स्वाँग भर कर जीविका चलाता हो। नक्काल। २-बहुरुपिया। [वि.] (हिं.) बनावटी रूप धारण करने वाला।

स्वांत, स्वान्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-अन्तःकरण। मन। २-अपना अन्त। मृत्यु। ३-अपना राज्य या प्रदेश। ४-गुफा। गुहा।

स्वांगीकरण, स्वाङ्गीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) किसी वस्तु को अपने शरीर अथवा अङ्ग में पूर्णतया मिलाकर लीन अथवा एक कर लेना। आत्मसात करना। *एसिमिलेशन*।

स्वांतज, स्वान्तज [संज्ञा पु.] (सं) १-प्रेम। २-कामदेव।

स्वाँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'साँस'।

स्वाँसा [संज्ञा पु.] (दे श.) तांबे का खोट मिला सोना [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सांस'।

स्वाक्षर [संज्ञा पु.] (सं.) हस्ताक्षर। दस्तखत।

स्वाक्षरित [वि.] (सं.) अपना हस्ताक्षर या दस्तखत किया हुआ।

स्वागत [संज्ञा पु.] (सं.) किसी मान्य अथवा प्रिय के आने पर आगे बढ़कर सादर उसका अभिवादन करना। अभ्यर्थना। अगवानी।

स्वागतकारिणी-सभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह सभा जो किसी बड़े सम्मेलन आदि में आने वालों के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है। *रिसेप्शन-कमेटी*।

स्वागतकारी [वि.] (सं.) स्वागत या अभ्यर्थना करने वाला।

स्वागतपतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने पर प्रसन्न हो।

स्वागतप्रिया [संज्ञा पु.] (सं.) वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने पर प्रसन्न हो।

स्वागतम[संज्ञा पु.](सं.) सुखागमन। भला आगमन

स्वागता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, भगण और दो गुरु होते हैं।

स्वागतिक [वि.] (सं.) स्वागत या अभ्यर्थना करने वाला।

स्वागम [संज्ञा पुं.] (सं.) स्वागत। अभिनन्दन।

स्वाच्छंद* [क्रि. वि.] (हिं.) १-स्वच्छन्दतापूर्वक। २-सुख से। सहज में। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'स्वच्छन्दता'।

स्वाच्छंद्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वछंदता।

स्वाजन्य [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वजनता'।

स्वाजीव, स्वाजीव्य [वि.] (सं.) जहां कृषि, वाणिज्य आदि जीविका का साधन सुलभ हो।

स्वातंत्र [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वतंत्रता'।

स्वातंत्र्य, स्वातन्त्र्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वतंत्रता। स्वाधीनता।

स्वात* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'स्वाति'।

स्वाति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पंद्रहवां नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी जाती है।

स्वातिकारी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कृषि की देवी।

स्वातिपंथ, स्वातिपन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) आकाशगङ्गा।

स्वातियोग [संज्ञा पु.] (सं.) अषाढ़ के शुक्ल-पक्ष में स्वातिनक्षत्र का चन्द्रमा के साथ योग।

स्वातिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ता। मोती।

स्वातिसुवन [संज्ञा पु.] (हिं.) मोती। मुक्ता।

स्वाती* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखा 'स्वाति'।

स्वात्म [वि.] (सं.) अपना।

स्वात्मवध [संज्ञा पु.] (सं.) आत्महत्या।

स्वाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-कुछ खाने या पीने से जीभ या मुँह को होने वाला अनुभव। जायका। २-किसी बात में होने वाली रुचि अथवा मिलने वाला आनन्द। ३-चाह। इच्छा। कामना। स्वाद चखाना-किसी को उसके अनुचित काम का दण्ड देना।

स्वादक [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो भोज्य पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है।

स्वादन [संज्ञा पु.] (सं.) १-स्वाद लेना। चखना। २-आनन्द या मजा लेना।

स्वादनीय [वि.] (सं.) १-स्वाद लेने के योग्य। २-रस या आनन्द लेने के योग्य। ३-स्वादिष्ट।

स्वादित [वि.] (सं.) १-स्वाद लिया हुआ। चखा-हुआ। २-स्वादयुक्त। जायकेदार। ३-प्रतीत। प्रसन्न।

स्वादित्व [संज्ञा पु.] (सं.) स्वाद का भाव। स्वादु।

स्वादिष्ट, स्वादिष्ट [वि.] (सं.) जिसका स्वाद अच्छा हो। सुस्वाद। जायकेदार।

स्वादी [वि.] (हिं.) १-स्वाद लेने वाला। चखने-वाला। २-मजा लेने वाला। रसिक।

स्वादीला+ [वि.] (हिं.) देखो 'स्वादिष्ट'।

स्वादु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मधुर या मीठा रस। मधुरता। २-गुड़। ३-महुआ (वृक्ष)। ४-चिरौंजी। ५-ममला नीबू। ६-काशतृण। ७-बेर। ८-सेंधा नमक। ९-दूध। १०-जीवक नामक अष्टवर्गीय औषध। ११-अगर। [संज्ञा स्त्री.] द्राक्षा। दाख [वि.] १-मीठा। मधुर। २-जायकेदार। स्वादिष्ट। ३-मनोज्ञ। सुन्दर।

स्वादुकंटक, स्वादुकण्टक [संज्ञा पु.] (सं.) १-विकंकत वृक्ष। २-गोखरू।

स्वादुकंद, स्वादुकन्द [संज्ञा पु.] (सं.) १ भुइंकुम्हड़ा। २-सफेद पिंडालू। ३-कोवी। केमुक।

स्वादुकंदा, स्वादुकन्दा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विदारीकंद।

स्वादुकर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।

स्वादुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नागदंती।

स्वादुकापातकी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तोरई।

स्वादुखंड, स्वादुखण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) गुड़।

स्वादुगंध, स्वादुगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सहिंजन

स्वादुगंधिच्छदा, स्वादुगन्धच्छदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काली तुलसी।

स्वादुगंधा, स्वादुगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भुइं कुम्हड़ा। २-लाल सहिंजन।

स्वादुगंधि, स्वादुगन्धि [संज्ञा पु.] (सं.) लाल सहिंजन।

स्वादुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वादु का भाव या धर्म। २-मधुरता।

स्वादुतिक्त [संज्ञा पु.] (सं.) पीलू नामक फल।

स्वादुतिक्तफल [संज्ञा पु.] (सं.) नीबू का पेड़।

स्वादुधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

स्वादुपटोलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) परवल की बेल।

स्वादुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) परवल की बेल।

स्वादुपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूधी। दुग्धिका।

स्वादुपाकफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मकोय।

स्वादुपिंडा, स्वादुपिण्डा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पिंडखजूर।

स्वादुपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) काली कटभी।

स्वादुपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दूधी। दुग्धिका।

स्वादुपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कटभी का पेड़।

स्वादुफल [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेर। बदरीफल। २-धन्ववृक्ष।

स्वादुफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बेर। बदरीवृक्ष। २-खजूर का पेड़। ३-केले का पेड़। ४-मुनक्का।

स्वादुबीज [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल का पेड़।

स्वादुमज्ज [संज्ञा पु.] (सं.) अखरोट।

स्वादुमस्तका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खजूर का पेड़।

स्वादुमांसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काकोली नामक अष्टवर्गीय औषध।

स्वादुमांषी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माषपर्णी।

स्वामूल [संज्ञा पु.] (सं.) गाजर।

स्वादुरसा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-काकोली। २-मद्य। मदिरा। ३-दाख। द्राक्षा। ४-सतावर। ५-अमड़ा। ६-मरोड़फली।

स्वादुल [संज्ञा पु.] (सं.) क्षीरमूर्वा।

स्वादुलता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) विदारीकन्द।

स्वादुलुंगि, स्वादुलुङ्गि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-संतरा। २-मीठा नीबू।

स्वादुशुंठी, स्वादुशुण्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सफेद कटभी।

स्वादुशुद्ध [संज्ञा पु.] (सं.) समुद्र का नमक।

स्वाद्य [वि.] (सं.) स्वाद लेने या चखने योग्य।

स्वाद्वगुरु [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की अगर की लकड़ी।

स्वाद्वम्ल [संज्ञा पु.] (सं.) १-अनार का पेड़। २-नारंगी का पेड़। ३-कदम्बवृक्ष।

स्वाद्वी [संज्ञा स्त्री. (सं.) १-दाख। द्राक्षा। २ मुनक्का ३-फूट। चिर्भटिका। ४-खजूर का पेड़।

स्वाधिकार [संज्ञा पु.] (सं.) १-अपना अधिकार। २-स्वाधीनता। स्वतन्त्रता।

स्वाधिकार-पत्र [संज्ञा पु] (सं.) वह पत्र जिसमें किसी आविष्कारक को उसके आविष्कार के सम्बन्ध में राज्य की ओर से दिया जाता है। राज्य से प्राप्त अधिकार, जिससे किसी आविष्कार का सर्वाधिकार सुरक्षित रहे। पेटेन्ट-लेटर्स।

स्वाधिष्ठान [संज्ञा पु.] (सं) हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के एक चक्र का नाम जिसका स्थान शिश्न के मूल में है।

स्वाधीन [वि.] (सं.) जो किसी के आधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद।

स्वाधीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वतन्त्रता। आजादी।

स्वाधीनपतिका, स्वाधीनभर्तृका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पति को वशीभूत करने वाली नायिका।

स्वाधीनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) स्वाधीनता। स्वतंत्रता।

स्वाध्याय [संज्ञा पु.] (सं.) १-वेदों का नियमपूर्वक पूरा और ठीक अध्ययन। २-किसी विषय का अनुशीलन। अध्ययन।

स्वाध्यायी [वि.] (सं.) स्वाध्याय करने वाला।

स्वान [संज्ञा पु.] (सं.) शब्द। आवाज। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'श्वान'।

स्वाना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'सुलाना'।

स्वाप [संज्ञा पु.] (सं.) १-निद्रा। नींद। २-स्वप्न। ३-अज्ञान। ४-निस्पंदता।

स्वापक [वि.] (सं.) नींद लाने वाला।

स्वापतेय [संज्ञा पु.] (सं.) निज की वस्तु या संपत्ति

स्वापन [संज्ञा पु.] (सं.) १-अस्त्र विशेष जिससे प्राचीन काल में शत्रु निद्रित किये जाते थे। २-नींद लाने वाली औषध। [वि.] (सं.) नींद लाने वाला।

स्वाप्न [वि.] (सं.) स्वप्न-संबंधी।

स्वाब [संज्ञा पु.] (अं.) जहाज का डेक साफ करने की झाड़ू जो कपड़े या सन की होती है।

स्वाभाविक [वि.] (सं.) १-स्वभाव से या आप से आप होने वाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती २-स्वभाव से सम्बन्ध रखने या होने वाला।

स्वाभाविकता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्राकृतिकता। नैसर्गिकता।

स्वाभाविकी [वि.] (सं.) स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक।

स्वाभाव्य [वि.] (सं.) आप ही आप होने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) स्वभाव का भाव। स्वभावता।

स्वाभिमान [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वाभिमानी [वि.] (सं.) जिसे अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान हो।

स्वामि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वामी'।

स्वामिक [वि.] (सं.) १-स्वामी-सम्बन्धी। स्वामी का २-जिसका कोई स्वामी या मालिक हो।

स्वामि-कार्त्तिक [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव के पुत्र कार्त्तिकेय। २-सङ्गीत में एक ताल।

स्वामिकुमार [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के पुत्र कार्त्तिकेय का एक नाम।

स्वामिजंघी, स्वामिजङ्घी [संज्ञा पु.] (सं.) परशुराम

स्वामिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वामित्व।

स्वामित्व संज्ञा पु.] (सं.) स्वामी होने का भाव मालिकपन। ओनरशिप।

स्वामिन, स्वामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-स्वत्वाधिकारिणी। मालकिन। २-घर की मालकिन। गृहिणी। ३-श्रीराधिका। ४-अपने स्वामी या या पति की पत्नी।

स्वामिस्व, स्वामिलभ्य [संज्ञा पु] (सं) वह धन

जो भूस्वामी, किसी वस्तु का आविष्कर्त्ता, ग्रंथ के लेखक आदि को उसके स्वामित्व, आविष्कार या रचना से होने वाले लाभ के अंश के रूप में कुछ नियत मात्रा में तथा नियत समय पर नियम पूर्वक मिलता रहता है। *रॉयलटी*।

स्वामिहीनत्व [संज्ञा पु.](सं.) देखो 'अस्वामिकता'

स्वामी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. स्वामिनी] १–वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। मालिक। ओनेर। २–घर का प्रधान व्यक्ति। ३–पति। खसम। ४–साधु, सन्यासी आदि का सम्बोधन। ५–ईश्वर। भगवान। ६–राजा। ७–सेना का नायक। ८–शिव। ९–विष्णु। १०–गरुड़। ११–कार्त्तिकेय। १२–गत उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत् का नाम।

स्वाम्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वामित्व।

स्वाम्युपकारक [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ा। अश्व। [वि.] (सं.) अपने मालिक का हित करने वाला।

स्वायंभुव, स्वायम्भुव [संज्ञा पु.](सं.) पुराणोक्त चौदह मनुओं में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।

स्वायंभुवी, स्वयम्भुवी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ब्राह्मी।

स्वायंभू [संज्ञा पु.] देखो 'स्वायंभुव।

स्वायत्त [वि.](सं.) १–जिस पर अपना ही अधिकार हो। २–जो किसी दूसरे के शासन या नियंत्रण में न हो, बल्कि अपने कार्यों का संचालन स्वयं करता हो। ऑटोनोमस।

स्वायत्त-प्रदेश [संज्ञा पु.] (सं.) खुदमुख्तार प्रदेश।

स्वायत्त-शासन [संज्ञा पु.] (सं.) वह शासन जो अपने अधिकार में हो। स्थानिक स्वराज्य।

स्वार [संज्ञा पु.] (सं.) १–घोड़े के घर्राटे का शब्द। २–बादलों की गड़गड़ाहट। मेघ-ध्वनि। [वि.] (सं.) स्वर-सम्बन्धी।

स्वारथ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'स्वार्थ'। [वि.] (हिं.) सफल। सार्थक।

स्वारथी [वि.] (हिं.) देखो 'स्वार्थी'।

स्वारस्य [वि.] (सं.) १–सरसता। रसीलापन। २–स्वाभाविकता।

स्वाराज्य [संज्ञा पु.] (सं.) १–वह शासन-प्रबन्ध जिसका संचालन अपने ही लोगों के हाथ में हो। २–स्वर्ग का राज्य। स्वर्गलोक।

स्वाराट् [संज्ञा पु.] (हिं.) इन्द्र।

स्वारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'सवारी'।

स्वारोचिष [संज्ञा पु.] (सं.) दूसरे मनु का नाम।

स्वार्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १–अपना उद्देश्य या मतलब अपना प्रयोजन। २–ऐसी बात जिसमें स्वयं अपना लाभ या हित हो। (किसी बात में) *स्वार्थ लेना*–किसी होने वाले काम में अनुराग रखना (भद्दा प्रयोग)। [वि.] (हिं.) सफल। सार्थक।

स्वार्थत्याग [संज्ञा पु.] (सं.) किसी अच्छे काम के लिए अपने हितों का ध्यान छोड़ देना।

स्वार्थत्यागी [वि.](हिं.) दूसरे के भले के लिए अपने हित का विचार न रखने वाला।

स्वार्थपंडित, स्वार्थपण्डित [वि.] (सं.) जो अपना मतलब साधने में बहुत चतुर हो।

स्वार्थपर [वि.] (सं.) स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थपरता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वार्थ पर होने का भाव। खुदगरजी।

स्वार्थपरायण [वि.] (सं.) स्वार्थी। खुदगरज।

स्वार्थपरायणता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वार्थपरता। खुदगरजी।

स्वार्थसाधक [वि.](सं.) अपना मतलब साधनेवाला।

स्वार्थसाधन [संज्ञा पु.] (सं.) अपना मतलब या काम निकालना। स्वार्थसिद्ध करना।

स्वार्थांध, स्वार्थान्ध [वि.] (सं.) अपने स्वार्थ या हित के सामने किसी और बात का विचार न करने वाला।

स्वार्थाभिप्रयात [संज्ञा पु.](सं.) वह जिसे अपना अर्थ साधने के लिये कोई दूसरा लाया हो।

स्वार्थी [वि.] (सं.) [स्त्री. स्वार्थिनी] अपना मतलब निकालने वाला। खुदगरज। मतलबी।

स्वाल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'सवाल'।

स्वालक्षण्य [संज्ञा पु.](सं.) स्वाभाविक पहिचान के चिह्न या लक्षण।

स्वावलंबन, स्वावलम्बन [संज्ञा पु.](सं.) अपने ही भरोसे पर रहकर और अपने बल पर काम करना

स्वावलंबी, स्वावलम्बी [वि.] (सं.) जो अपने ही भरोसे या सहारे पर रहता हो।

स्वावलंबी-वायुयान, स्वावलम्बी-वायुयान [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का वायुयान जो बिना दौड़ लगाये सीधे ऊपर चढ़कर उड़ने लगता है और इसी प्रकार सीधा नीचे उतर आता है। *ऑटोजायरो*।

स्वास* [संज्ञा पु.] (सं.) साँस। श्वास।

स्वासा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) साँस। श्वास।

स्वास्थ्य [संज्ञा पु.] (सं.) स्वस्थ या निरोग होने की दशा। आरोग्य। तन्दुरुस्ती। हेल्थ'

स्वास्थ्य-कर [वि.] (सं.) तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाला। आरोग्यवर्धक।

स्वास्थ्य-निवास [संज्ञा पु.] (सं.) वह स्थान जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य सुधार के लिये रहते हैं। सैनिटोरियम।

स्वास्थ्य-विज्ञान [संज्ञा पु.](सं.) वह विज्ञान अथवा शास्त्र जिसमें शरीर को निरोग और स्वस्थ बनाये रखने के नियमों और सिद्धांतों का विवेचन हो। हाईजीन।

स्वाहा [अव्यय](सं.) एक शब्द जिसका प्रयोग हवन की हवि देते समय होता है। [वि.] १–जो पूर्णतया जलकर राख हो गया हो। २–पूरी तरह से नष्ट। बरबाद। *स्वाहा करना*–नष्ट करना या फूंक डालना। *स्वाहा होना*–नष्ट होना। [संज्ञा स्त्री.] अग्नि की पत्नी का नाम।

स्वाहाकृत [वि.] (सं.) यज्ञ करने वाला।

स्वाहाग्रसण [संज्ञा पु.] (हिं.) देवता।

स्वाहापति, स्वाहाप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

स्वाहाभुक् [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

स्वाहार्ह [वि.] (सं.) स्वाहा के योग्य। हवि पाने के योग्य।

स्वाहावल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

स्वाहाशन [संज्ञा पु.] (सं.) देवता।

स्वाहेय [संज्ञा पु.] (सं.) कार्तिकेय।

स्विन्न [वि.] (सं.) १–पसीने से युक्त। २–सीझा य उबला हुआ।

स्वीकरण [संज्ञा पु.] (सं.) १–स्वीकार या अङ्गीका करना। २–मानना। राजी होना। ३–विवाह करना।

स्वीकरणीय [वि.] (सं.) स्वीकार करने के योग्य।

स्वीकर्तव्य [वि.] (सं.) स्वीकार करने के योग्य।

स्वीकर्त्ता [वि.] (सं.) स्वीकार करने वाला।

स्वीकार [संज्ञा पु.] (सं.) अपनाने या ग्रहण करने की क्रिया। अङ्गीकार। मंजूरी।

स्वीकारोक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) वह कथन या बया जिसमें अपना अपराध स्वीकृत किया जाय। अपराध की स्वीकृति। कन्फेशन।

स्वीकार्य [वि.] (सं.) स्वीकृति या ग्रहण करने य मानने के योग्य।

स्वीकृच्छ्र [संज्ञा पु.] (सं.) प्राचीनकाल में किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत।

स्वीकृत [वि.] (सं.) स्वीकार किया हुआ। अङ्गीकृत मंजूर।

स्वीकृति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वीकार करने की क्रिया या भाव। मंजूरी।

स्वीय [वि.](सं.) अपना। निज का। [संज्ञा पु.](सं.) आत्मीय। स्वजन। नाते-रिश्तेदार।

स्वीय-विधि [संज्ञा पु.] (सं.) वैयक्तिक विधान य कानून। पर्सनल लॉ।

स्वीया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अपने ही पति में अनुराग रखने वाली स्त्री। स्वकीया।

स्वे* [वि.] (हिं.) देखो 'स्व'।

स्वेच्छया [क्रि. वि.](सं.) अपनी इच्छा से और बिन किसी दबाव के। वालन्टरिली।

स्वेच्छा [संज्ञा स्त्री](सं.) अपनी इच्छा। अपनी मर्जी

स्वेच्छाचार [संज्ञा पु.] (सं.) भला, बुरा जो मन में आवे वही करना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वेच्छाचार क भाव। निरंकुशता। उच्छृंखलता।

स्वेच्छाचारी [वि.](सं.) मनमाना काम करने वाला निरंकुश। अबाध्य।

स्वेच्छाचारी-राज्यतंत्र, स्वेच्छाचारी-राज्यतन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) वह शासनप्रणाली जिसमें किसी राजा या अधिकारी को मनमानी करने की स्व तन्त्रता हो। ऑटोक्रेसी।

स्वेच्छाचारी-शासक [संज्ञा पु.](सं.) वह शास जिसके अधिकारों पर किसी प्रकार का नियन्त्र हो और जो मनमानी करने में स्वतन्त्र हो। ऑ क्रेट।

स्वेच्छामृत्यु [संज्ञा पु.] (सं.) भीष्मपितामह। [वि.] अपनी इच्छानुसार मरने वाला।

स्वेच्छासेवक [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वयंसेवक'।

स्वेच्छासैनिक [संज्ञा पु.] (सं.) अपनी इच्छा विशेषतः देशप्रेम की भावना से सेना में होकर सिपाही या अधिकार का काम करने व्यक्ति।

स्वेटर [संज्ञा पु.] (अं.) बनियान की तरह प्रकार का मोटा पहनावा जो सरदी से

लिए फाट, कमीज आदि के नीचे पहना जाता है।

स्वेत* [वि.] (हिं.) देखो 'श्वेत'।

स्वेतरंगी [संज्ञा पु.] (डिं.) यश। कीर्त्ति।

स्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) १-पसीना। २-भाप। ३-पसीना लेने वाली औषध। ४-ताप। गरमी। [वि.] पसीना लाने वाली।

स्वेदक [वि.] (सं.) पसीना लाने वाला। [संज्ञा पु.] कांतिलोह।

स्वेदकण [संज्ञा पु.] (सं.) पसीने की बूंद।

स्वेदचूषक [संज्ञा पु.] (सं.) ठंडी हवा।

स्वेदज [संज्ञा पु.] (सं.) पसीने से उत्पन्न होने वाले जीव। जैसे-खटमल, जूँ आदि।

स्वेदजल [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। प्रस्वेद।

स्वेदजशाक [संज्ञा पु.] (सं.) भुइं फोड़ नामक शाक।

स्वेदन [संज्ञा पु.](सं.) १-स्वेद या पसीना निकलना। २-एक वैद्यक यंत्र जिसकी सहायता से औषधियाँ शोधी जाती हैं।

स्वेदनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) स्वेदन का भाव।

स्वेदनाश [संज्ञा पु.] (सं.) हवा। पवन।

स्वेदनिका [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-तवा। २-रसोईघर। ३-शराब चुआने का भभका।

स्वेदनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तवा।

स्वेदमाता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शरीर में का रस।

स्वेदस्राव [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना निकलना।

स्वेदांबु, स्वेदाम्बु [संज्ञा पु.] (सं.) पसीना। स्वेद जल।

स्वेदायन [संज्ञा पु.] (सं.) रोमकूल।

स्वेदित [वि.] (सं.) १-स्वेद या पसीने से युक्त। २-सेंका या भफारा दिया हुआ।

स्वेदी [वि.] (सं.) पसीना लाने वाला।

स्वेद्य [वि.] (सं.) पसीने के योग्य।

स्वै* [वि.] (हिं.) अपना। निजका। [सर्व.] (हिं.) देखो 'सो'।

स्वैच्छिक [वि.] (सं.) १-अपनी इच्छा से सम्बन्ध रखने वाला। २-अपनी इच्छा से किया, या अपने ऊपर लिया जाने वाला। वॉलेन्टरी।

स्वैर [वि.] (सं.) १-स्वेच्छाचारी। २-स्वतंत्र। ३-धीमा। मन्द। ४-मनमाना।

स्वैरगति [वि.] (सं.) स्वाधीन गति।

स्वैरचारिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मनमाना कार्य करने वाली स्त्री। २-व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरचारी [वि.] (सं.) [स्त्री. स्वैर चारिणी] १-मनमाना काम करने वाला। २-कामुक। लम्पट। व्यभिचारी।

स्वैरता [संज्ञा स्त्री.](सं.) स्वेच्छाचारिता। स्वच्छंदता।

स्वैरवर्त्ती, स्वैरवृत्त [वि.] (सं.) स्वेच्छाचारी।

स्वैराचार[संज्ञा पु.](सं.) स्वेच्छाचार। यथेच्छाचार।

स्वैरिंध्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'सैरिंध्री'।

स्वैरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) व्यभिचारिणी स्त्री।

स्वैरिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वच्छंदता। स्वाधीनता।

स्वैरी [वि.] (सं.) स्वेच्छाचारी। निरंकुश।

स्वोत्थ [वि.] (सं.) आपसे आप निकला हुआ।

स्वोपार्जित [वि.] (सं.) अपना उपार्जित किया या कमाया हुआ।

स्वोरस [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'स्वरस'।

स्वोवशीय [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द। सुख। समृद्धि (विशेष कर भविष्य जीवन-सम्बन्धी।

स्वौजस् [संज्ञा पु.] (सं.) अपना ओज या तेज।

ह

ह संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण के विचार से ऊष्मवर्ण कहलाता है

हँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हाँक'।

हँकड़ना*, **हँकरना** [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'ललकारना'।

हँकराया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-बुलाहट। पुकार। २-न्योता। निमंत्रण। बुलावा।

हँकवा [संज्ञा पु.](हिं.) बहुत से लोगों का शेर-चीते आदि को चारों ओर से घेर कर शिकारी के सामने लाना।

हँकवाना [क्रि. स.] (हिं.) १-हाँक लगवाना। बुलवाना। २-पशुओं या चौपायों को आवाज देकर हटवाना अथवा किसी ओर भगवाना।

हँकवैया [संज्ञा पु.] (हिं.) हाँकने वाला।

हंका [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) ललकार। डपट।

हँकाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाँकने की किया, भाव या मजदूरी।

हँकाना [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'हाँकना'। २-पुकारना। ३-हँकवाना।

हँकार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जोर से बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। *हँकार पड़ना*-पुकार मचना।

हंकार* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-अहंकार। २-ललकार। डपट।

हँकारना [क्रि. स.](हिं.) १-ऊँचे स्वर से बुलाना। टेरना। २-बुलाना। पुकारना। ३-ललकारना।

हंकारना [क्रि. अ.] (हिं.) हुंकार करना। दपटना।

हँकारी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लोगों को बुलाकर लाने वाला व्यक्ति। २-दूत। [संज्ञा स्त्री.] बुलाने की क्रिया या भाव। बुलाहट।

हंगामा [संज्ञा पु.] (फा.) १-उपद्रव। उत्पात। २-शोरगुल। हल्ला। ३-भीड़भाड़।

हंगोरी [संज्ञा पु.](हिं.) एक बहुत बड़ा पहाड़ी वृक्ष।

हंजि, हञ्जि [संज्ञा पु.] (सं.) छींक।

हंटर [संज्ञा पु.] (अं.) लम्बा चाबुक। कोड़ा।

हँड़कुलिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बच्चों के छोटे-छोटे बरतनों का समूह जिनसे वे रसोई का खेल खेलते हैं।

हंडना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घूमना। फिरना। चलना २-इधर-उधर ढूँढना। ३-वस्त्र या व्यवहार में आने पर कुछ समय तक चलना या ठहरना।

हंडर, हंडरवेट [संज्ञा पु.] (अं.) एक अँगरेजी तौल जो ११२ पौंड या प्राय: १ मन १४॥ सेर की होती है।

हंडल [संज्ञा पु.] (अं. हैंडल) १-बेंट। २-दस्ता। मुठिया। ३-किसी कल का वह भाग जो हाथ से पकड़कर घुमाया जाता है।

हंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) पानी रखने या भरने का पीतल अथवा ताँबे का बड़ा बरतन।

हंडाना [क्रि. स.] (हिं.) १-घुमाना। फिराना। २-व्यवहार में लाना। काम में लाना।

हंडिक [संज्ञा पु.] (देश.) तोलने का बड़ा बाट। (सुनार)।

हंडिया, हंडी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हाँडी'।

हंत, हन्त [अव्यय] एक दुःखसूचक शब्द।

हंता, हन्ता [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. हंत्री] मारने या वध करने वाला।

हंथोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हथौरी'।

हंथौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हथौड़ा'।

हंदा [संज्ञा पु.] (हिं.) पुरोहित या ब्राह्मण के लिए अलग निकाला हुआ भोजन।

हंफनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाँफने की क्रिया या भाव। *हँफनि मिटाना*-दम लेना। सुस्ताना।

हंवा [अव्यय] (हिं.) हाँ (राजस्थान)।

हंवाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'रंभाना'।

हंभा, हम्भा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाय आदि के रँभाने का शब्द।

हंस [संज्ञा पु.](सं.) १-बत्तख की तरह का एक जल पक्षी जो बड़ी-बड़ी झीलों में रहता है। २-सूर्य ३-ब्रह्मा। ४-जीवात्मा। ५-विष्णु। ६-उदार और संयमी राजा। ७-सन्यासियों का एक भेद ८-शुद्ध आत्मा। ९-विष्णु का एक अवतार। १०-एक मन्त्र। ११-प्राणवायु। १२-शिव। १३-घोड़ा। १४-दीक्षागुरु। १५-ईर्ष्या। द्वेष। १६-पर्वत। १७-कामदेव। १८-भैंसा। १९-एक प्रकार का नृत्य। २०-एक प्रकार का प्रासाद जो हंस के आकार का बनाया जाता था। २१-पिंगल में दोहे का एक भेद जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। २२-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। [संज्ञा पु.] १-हंस पक्षी। २-पैरों की अँगुलियों में पहनने का बिछुआ।

हंसकूट [संज्ञा पु.](सं.) बैल के कंधों के बीच में उठा हुआ कूबड़। डिल्ला।

हंसगति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हंस के जैसी धीमी चाल। २-ब्रह्मत्व की प्राप्ति। २-एक छन्द जिसमें बीस मात्राएँ होती हैं और ग्यारहवीं मात्रा पर विराम होता है।

हंसग [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

हंसगदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) प्रियभाषिणी-स्त्री।

हंसगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रत्न।

हंसगामिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंस जैसी सुन्दर चाल चलने वाली स्त्री।

हंसचौपड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का प्राचीन चौपड़ का खेल।

हंसजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यमुना।

हँसता-मुखी [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हँसमुख'।

हंसदफरा [संज्ञा पु.] (?) छोटी नाव में मजबूती के लिए बाँधे हुए रस्से।

हंसदाहन [संज्ञा पु.] (सं.) धूप। गूगल।

हँसन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हँसने की क्रिया या

भाव। २-हँसने का ढंग।

हँसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रसन्नता प्रकट करने के लिए मनुष्य का मुंह खोलकर हा-हा करना। हास करना। २-रमणीय लगना। मनोहर जान पड़ना। ३-दिल्लगी या परिहास करना। ४-आनंद या खुशी मनाना। *हँसना-बोलना*-आनंद की बातचीत करना। *किसी व्यक्ति पर हँसना*-उपहास करना। *किसी वस्तु पर हँसना*-व्यंग्यपूर्ण निंदा करना। *हँसते हँसते*-१-प्रसन्नता से। २-सहज में। *हँसते हुए*-बिना किसी प्रकार का कष्ट या बाधा अनुभव किये। *हँसता मुँह या चेहरा*-प्रसन्न-मुख। *ठठाकर हँसना*-अट्टहास करना। *हँसकर बात उड़ाना*-तुच्छ या साधारण समझकर कोई बात हँसते हुए टाल देना। [क्रि स.] (हिं.) किसी की हँसी या उपासना करना।

हंसनादिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] मधुरभाषिणी।

हंसनि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हँसना'।

हंसनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हंसी'।

हंसपद [संज्ञा पु.] (सं.) एक तौल या मान। कर्ष।

हंसपदी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक तरह की बेल का नाम

हंसपाद [संज्ञा पु.] (सं.) ईंगुर।

हंसपादी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) देखो 'हंसपदी'।

हंसमंगला, हंसमङ्गला [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक संकर-रागिनी।

हंसमाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हंसों की पंक्ति। २-एक वर्णवृत्त का नाम।

हँसमुख [वि.] (हिं.) १-सदा हँसता रहने वाला। २-विनोदशील। हास्यप्रिय। ठठोल। मसखरा

हंसयान [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

हसयाना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती।

हंसरथ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

हंसराज [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक बूटी जो पहाड़ों की चट्टानों में लगी रहती है। २-एक प्रकार का अगहनी धान।

हंसरुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-हंस का शब्द। २-एक छन्द का नाम।

हँसली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले के पास छाती के ऊपर की दोनों धन्वाकार हड्डियाँ। गले में पहनने का एक गहना।

हंसलोमश [संज्ञा पु.] (सं.) कसीस।

हंसवंश [संज्ञा पु.] (सं.) सूर्यवंस।

हंसवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक लता का नाम।

हंसवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

हंसवाहनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सरस्वती

हंससुता [संज्ञा स्त्री] (सं.) यमुनानदी।

हंसांघ्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगुल। ईंगुर।

हँसाई [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-देखो 'हँसी'। २-लोक में होने वाली बदनामी या निंदा।

हँसाना [क्रि.स.] (हिं.) किसी को हंसने में प्रवृत्त करना

हंसाभिरव्य [संज्ञा पु.] (सं.) चाँदी।

हँसाय* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हँसाई'।

हंसारूढ़ [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

हंसारूढ़ा [संज्ञा स्त्री] (सं) ब्रह्मा।

हंसासि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक मात्रिक छन्द जिसमें २७ मात्राएँ होती हैं और बीसवीं मात्रा पर यति तथा अन्त में यगण होता है।

हंसिका, हंसिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हंस की मादा। हंसी।

हंसिया [संज्ञा पु.] (देश.) खेत की फसल, घास, तरकारी आदि काटने का एक अर्धचन्द्रकार औजार। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गरदन के नीचे की धन्वाकार हड्डी।

हंसी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मादा हंस। २-दुधारू गाय की अच्छी नस्ल। ३-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण, एक तगण, एक सगण और एक गुरु होता है।

हंसी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हँसने की क्रिया या भाव हास। २-परिहास। दिल्लगी। ३-लोक में होने वाली उपहासपूर्ण निंदा या बदनामी।
हँसी छूटना-हंसी आना। *हँसी उड़ाना*-व्यंग्य पूर्ण निंदा या उपहास करना। *हँसी या हसी खेल समझना*-किसी काम या बात को साधारण समझना। *हँसी में उड़ाना*-साधारण समझते हुए हंसकर टाल देना। *हँसी में ले जाना*-गंभीर बात को हसी की बात समझना।

हंसीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. हँसीली] हँसी-मजाक करने वाला। हँसोड़।

हँसुआ, हँसुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हँसिया'।

हँसुली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हँसली'।

हँसेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह रस्सी जिससे नाव को किनारे पर खींचते हैं।

हँसोड़ [वि.] (हिं.) हंसी ठट्ठा करने वाला विनोद प्रिय।

हँसोर* [वि.] (हिं.) देखो 'हँसोड़'।

हँसोहाँ, हँसौहाँ* [वि.] (हिं.) [स्त्री. हँसौही] १-कुछ हंसी लिए। २-जल्दी हंस पड़ने वाला।

ह [संज्ञा पु.] (सं.) १-जल। २-आकाश। ३-रक्त। खून। ४-हास। हंसी। ५-शिव। ६-शून्य। सिफर। ७-ध्यान। ८-योग का एक आसन। ९-शुभ। मङ्गल। १०-भय। ११-ज्ञान। १२-चंद्रमा १३-विष्णु। १४-युद्ध। १५-घोड़ा। १६-गर्व। घमण्ड। १७-वैद्य। १८-कारण। हेतु।

हई* [संज्ञा पु.] (हिं.) घुड़सवार। [संज्ञा स्त्री.] आश्चर्य। अचरज।

हउँ* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हौं'। [सर्व.] (हिं.) देखो 'हौं'।

हक+ [संज्ञा पु.] (हिं.) सहसा चकपका उठने या घबराया उठने से हृदय में लगने वाला धक्का।

हक़ [वि.] (अं.) १-सत्य। सच। २-उचित। वाजिब ठीक। [संज्ञा पु.] (अं.) १-अधिकार। इख्तियार २-कर्तव्य। फर्ज। ३-वह वस्तु जिस पर न्याया-नुसार अधिकार प्राप्त हो। ४-किसी लेनदेन में बंधेज आदि के अनुसार मिलने वाला धन। ५-उचित या ठीक बात अथवा पक्ष। ६-ईश्वर। (मुसलमान)। *हक़ में*-पक्ष में। *हक़ अदा करना*-कर्तव्य पालन करना। फर्ज पूरा करना। *हक दबाना या मरना*-किसी को उसके उचित अधि-कार से वंचित करना। *हक़ पर लड़ना*-अपने न्यायसंगत अधिकार के लिए प्रयत्न करना। *हक हक़ साबित करना*-स्वत्व प्रमाणित करना। *हक दबना या मारा जाना*-स्वत्व की हानि होना

हक़तलफ़ी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी का हक़ मारना। अन्याय।

हकदक [वि.] (हिं.) हक्काबक्का। चकित।

हक़दार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-हक़ या अधिकार रखने वाला। २-अधिकारी।

हक-नाहक [अव्य.] (अ., फा.) १-जबरदस्ती। २-व्यर्थ। फजूल।

हकबक* [वि.] (हिं.) देखो 'हक्काबक्का'।

हकबकाना [क्रि. अ.] (हिं.) हक्काबक्का हो जाना। घबरा जाना।

हक़मालिकाना [संज्ञा पु.] (अ., फा.) किसी वस्तु या जायदाद के मालिक का हक़।

हक़-मौरूसी [संज्ञा पु.] (अं.) वह अधिकार जो बाप दादों से चला आता हो।

हकला [वि.] (हिं.) हकला कर या रुक-रुक कर बोलने वाला।

हकलाना [क्रि. अ.] (हिं.) शब्दों का ठीक ढंग से उच्चारण न कर सकने के कारण बीच-बीच में कोई शब्द बहुत रुक-रुककर बोलना।

हकलापन [संज्ञा पु.] (हिं.) हकला होने की क्रिया या भाव। हकलाने का भाव।

हकलाहा+ [वि.] (हिं.) देखो 'हकला'।

हक़सफ़ा [संज्ञा पु.] (अं.) जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ौसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है।

हकार [संज्ञा पु.] (सं.) 'ह' अक्षर का वर्ण।

हकारना [क्रि. स.] (देश.) १-पाल तानना या खड़ा करना। २-झण्डा या निशान उठाना।

हक़ीक़त [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-वास्तविक तत्व या बात। तथ्य। असलियत। २-सच्चा और वास्तविक वृत्तांत। *हकीकत में*-वास्तव में। सचमुच *हकीक़त खुलना*-असल बात का पता लग जाना।

हक़ीक़ी [वि.] (अं.) १-सच्चा। ठीक। सत्य। २-खास। ३-भगवत्सम्बन्धी।

हकीम [संज्ञा पु.] (अं.) १-विद्वान्। पंडित। २-यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला। चिकित्सक

हकीमी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-हकीम का पेशा या काम। २-यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। हिकमत। [वि.] (अं.) हकीम-सम्बन्धी।

हकीयत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-स्वत्व। अधिकार। २-वह वस्तु या जायदाद जिसपर अधिकार हो ३-अधिकार होने का भाव।

हक़ीर [वि.] (अं.) १-तुच्छ। नाचीज। २-उपेक्षा के योग्य।

हक़ूक़ [संज्ञा पु.] (अं.) कई प्रकार के स्वत्व या अधि-कार।

हकूमत+ [संज्ञा स्त्री.] (अं.) देखो 'हुकूमत'।

हक्क [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथी को बुलाने का शब्द + २-देखो 'हक'।

हक्का [संज्ञा पु] (अं.) वह पुरजा जो कोई असामी या व्यापारी किसी आसामी के लगान की जमानत के रूप में जमींदार को देता है। [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का लकड़ी का घाव या आघात।

हक्काक [संज्ञा पु.] (?) नगीनों को काटने, सान पर चढ़ाने तथा जड़ने का काम करनेवाला।

हक्काबक्का [वि.](हिं.) बहुत घबराया हुआ। भौचक्का

हकार [संज्ञा पु.] (सं.) चिल्लाकर बुलाने का शब्द पुकार।

हगनहटी+[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-गुदा। २-मलत्याग करने का स्थान।

हगना [क्रि. अ.] (हिं.) मलत्याग करना। पाखाना फिरना। [क्रि. स.] दबाव के कारण कोई वस्तु दे देना। *हग मारना या हग भरना*–१-हग देना २-बहुत डर जाना।

हगनेटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हगनहटी'।

हगना [क्रि. स.](हिं.)१-किसी को हगने पर विवश करना। २-मलत्याग करना।

हगास [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हगने की इच्छा।

हगोड़ा [वि.](हिं.)[स्त्री. हगोड़ी] बहुत हगने वाला

हचका [संज्ञा पु.] (हिं.) धक्का। झोंका।

हचकाना [क्रि. स] (हिं.) धक्के से हिलाना।

हचकोला [संज्ञा पु.] (हिं.) गाड़ी आदि चलने वाली चीजों के हिलने-डोलने से लगने वाला धक्का। धचका।

हचना* [क्रि अ.] (हिं.) हिचकना।

हज [संज्ञा पु.](अ.) मुसलमानों की मक्के की तीर्थ यात्रा।

हज़्म [संज्ञा पु.] (अ.) पचने की क्रिया या भाव। पाचन। [वि.] १-पेट में पचा हुआ। २-अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ। *हजम होना*-अनुचित रूप से किसी का कुछ दबा लेना।

हज़रत [संज्ञा पु] (अ.) १-महात्मा। महापुरुष। २-आदरसूचक सम्बोधन। महाशय। ३-नटखट या खोटा आदमी।

हज़रतसलामत [संज्ञा पु.] (अ.) १-बादशाहों तथा नवाबों के लिये एक सम्बोधन शब्द। २-बादशाह।

हजाम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हज्जाम'।

हजामत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-बाल काटने या बनाने का काम। २-सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जो कटवाने को हों।
हजामत बढ़ना–सिर या दाढ़ी के बाल बढ़ना। *हज़ामत बनाना*–१-बाल मूंड़ना। २-लूटना। ३-दंड देना। *हज़ामत बनवाना*–बालों को कटवाना या मुँड़वाना। *हज़ामत होना*–१-किसी के धन का धोका देकर हरण होना। २-दंड होना।

हज़ार [वि.] (फ़ा.) १-दस-सौ। सहस्र। २-बहुत। अनेक। [संज्ञा पु.]दस-सौ की संख्या का अंक। १०००। [क्रि वि] (हिं) चाहे जितना अधिक बहुतेरा।

हज़ारहा [वि](फ़ा)१-हज़ारों। सहस्रों। २-बहुत से।

हज़ारा [वि] (फ़ा.) (फूल) जिसमें हज़ार या बहुत अधिक पंखड़ियाँ हो। [संज्ञा पु.] १-फुहारा। २-एक प्रकार की आतिशबाजी।

हज़ारी [संज्ञा पु](फ़ा) १-एक हज़ार सिपाहियों का नायक या सरदार। २-व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र। दोगला। यौ०-*हजारी-बजारी*-सरदारों से लेकर जन-साधारण तक।

हज़ारों [वि](फ़ा) १-सहस्रों। २-बहुत से अनेक।

हज़ूर [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'हज़ूर'।

हज़ूरा+[संज्ञा पु.](हिं)[स्त्री. हज़ूरी] देखो 'हज़ूरी'

हज़ूरी [संज्ञा पु.] (अ.) बड़े आदमी, बादशाह आदि की सेवा में सदा उपस्थित रहने वाला व्यक्ति।

हजो [संज्ञा स्त्री.] (अ.) अपकीर्त्ति। निंदा।

हज्ज [संज्ञा पु.] (अ.) देखो 'हज'।

हज्जाम [संज्ञा पु.] (अ.) हजामत बनाने वाला। नाई। नापित।

हट [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हठ'।

हटक* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-वारण। वर्जन। २-गायों या चौपायों को हाँकने की क्रिया या भाव *हटक मानना*–मना करने पर किसी काम से रुकना।

हटकन+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-मना करने की क्रिया वारण। वर्जन। २-पशुओं को हाँकने की लाठी

हटकना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-रोकना। मना करना २-पशुओं को किसी ओर हाँकना। *हटकि-१-बलपूर्वक। २-बिना कारण या आधार के।

हटका+ [संज्ञा पु.] (हिं.) किवाड़ों को रोकने की अर्गल या ब्योंड़ा।

हटतार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरताल'। [संज्ञा स्त्री.] माला का सूत।

हटताल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरताल'।

हटना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अपनी जगह छोड़कर इधर-उधर होना। खिसकना। सरकना। २-सामने से इधर-उधर या दूर होना। टलना। ३-अपने स्थान से पीछे की ओर चलना, जाना या पहुँचना। ४-न रह जाना। ५-व्रत, प्रतिज्ञा आदि से विचलित होना। *(किसी बात से) पीछे हटना*–विमुख होना। *[क्रि. स.]हटकना। मना करना

हटनीउड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मालखंभकी एक कसरत

हटवया, हटवा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हटवाई] दूकानदार।

हटवाई* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना। २-हटाने की मजदूरी।

हटवाना [क्रि. स.] (हिं.) किसी से हटाने का काम कराना। दूसरे से स्थानांतरित करवाना।

हटवार* [संज्ञा पु.] (हिं.) दूकानदार।

हटाना [क्रि. स.](हिं.) १-स्थानांतरित करना। सरकाना। खिसकाना। २-दूर करना। ३-स्थान छोड़ने पर विवश करना। ४-जाने देना। छोड़ देना। ५-किसी व्रत प्रतिज्ञा आदि से विचलित करना।

हटुवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दूकानदार। २-अनाज तोलने का काम करने वाला। बया।

हटौती [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) शरीर की गठन।

हट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) १-बाजार। २-दूकान। यौ०-चौहट्ट–बाजार का चौक।

हट्टचौरक [संज्ञा पु.](सं.)१-पैंठ या बाजार में चोरी करने वाला। २-गिरहकट।

हट्टविलासिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) वेश्या। रंडी।

हट्टाकट्टा [वि.](हिं) [स्त्री. हट्टीकट्टी] हृष्टपुष्ट। बलवान।

हट्टी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) दूकान।

हठ [संज्ञा पु.](सं.) १-किसी बात के लिए होने वाली अड़। जिद। टेक। २-दृढ़ प्रतिज्ञा। अटल संकल्प। ३-जबरदस्ती। ४-अवश्य होने की क्रिया या भाव। *हठ पकड़ना*–आग्रह या जिद करना। *हठ रखना*–किसी बात के लिए की जाने वाली हठ या जिद को मान लेना या पूरी करना। *हठ मांड़ना**–हठ करना। *हठ करना*–हठ ठानना या पकड़ना।

हठधर्म [संज्ञा पु.](सं.) अपने मत पर, हठपूर्वक जमा रहना। दुराग्रह। कट्टरपन।

हठधर्मी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अपनी अनुचित बात पर भी अड़े रहना। दुराग्रह। कट्टरपन। २-अपने मत या सम्प्रदाय की बात लेकर अड़ने की क्रिया या प्रवृत्ति। [वि.] देखो 'हठी'।

हठना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-हठ करना। २-दृढ़ संकल्प करना। *हठकर*–बलात्। जबरदस्ती।

हठयोग [संज्ञा पु.] (सं.) योग का वह अङ्ग जिसमें शरीर को वश में करने के लिए कठिन मुद्राओं तथा आसनों का विधान है।

हठविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हठयोग।

हठशील [वि.] (सं.) हठी। जिद्दी।

हठात् [प्रत्य](सं.) १-हठपूर्वक। २-जबरदस्ती। ३-अचानक।

हठात्कार [संज्ञा पु.] (सं.) बलात्कार। जबरदस्ती।

हठाहठ, हठाहठी [क्रि. वि.] (हिं) देखो 'हठात्'।

हंठिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कोलाहल। शोर। हल्ला गुल्ला।

हठी [वि.] (हिं.) हठ या जिद करने वाला। अपनी बात पर अड़ने वाला। जिद्दी। टेकी।

हठीला [वि.] (हिं.) [स्त्री. हठीली] १-हठ करने वाला हठी। जिद्दी। २-दृढ़ प्रतिज्ञा। बात का पक्का। ३-लड़ाई में धीरतापूर्वक जमा रहने वाला

हड़ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-एक बड़ा वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है। २-उक्त फल के आकार का एक गहना। लटकन।

हड़कंप [संज्ञा पु.] (हिं.) लोगों में घबराहट फैलाने या उनकी हड्डियाँ तक कँपाने वाली भारी हलचल। तहलका।

हड़क [क्रि. अ.] (हिं.) १-पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होने वाली व्याकुलता। २-कुछ पाने की उत्कट लालसा।

हड़कत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हड़जोड़'।

हड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) कोई वस्तु न मिलने पर बहुत व्याकुल होना।

हड़काना [क्रि. स.] (हिं.) १-तंग करने के लिए किसी को किसी के पीछे लगाना। २-बहुत तरसाना। ३-दूर हटाना।

हड़काया [वि.] (हिं.) [स्त्री. हड़काई] १-पागल (कुत्ता)। २-किसी वस्तु के लिए उतावला।

हड़गिल्ल, हड़गीला [संज्ञा पु.] (हिं.) बगले की जाति की एक चिड़िया जिसकी चोंच और टाँगें लम्बी होती हैं।

हड़जोड़ [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार की लता जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि इससे टूटी हुई हड्डियाँ जुड़ जाती हैं।

हड़ताल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दुःख, विरोध, असंतोष आदि प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, बाजारों अथवा दूकानों आदि का बंद होना। २-देखो 'हरताल'।

हड़ना [क्रि अ.] (हिं.) तौल में जाँचा जाना।

हड़प [वि.] (हिं.) १-खाया या निगला हुआ। २-अनुचित रीति से लिया हुआ। उड़ाया हुआ। *हड़प करना*-बेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार करना।

हड़पना [क्रि. स.] (हिं.) १-मुँह में डालकर निगल जाना। २-अनुचित रीति से ले लेना। उड़ा लेना

हड़फूटन+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह दर्द जो हड्डियों तक जान पड़े। हड्डियों की पीड़ा।

हड़फूटनी+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हड्डियों में पीड़ा होने की क्रिया या भाव। २-चमगादड़।

हड़फोड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया।

हड़बड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं) देखो 'हड़बड़ी'।

हड़बड़ाना [क्रि. अ.] (हिं.) जल्दी मचाना। [क्रि. स.](हिं.) किसी को जल्दी करने के लिए कहना।

हड़बड़िया [वि.] (हिं.) हड़बड़ी करने वाला। उतावला। जल्दबाज।

हड़बड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जल्दी। उतावली। २-जल्दी या उतावली के कारण होने वाली घबराहट। *हड़बड़ी करना या मचाना*-जल्दीबाजी करना *हड़बड़ी में पड़ना*-ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें काम बहुत जल्दी करना पड़े।

हड़हड़ाना [क्रि. स.](हिं.) जल्दी करने के लिये उकसाना।

हड़हा [संज्ञा पु.] (देश.) जंगली बैल। [संज्ञा प] (हिं.) वह जिसने किसी के पुरखे की हत्या की हो। [वि.] (हिं.) [स्त्री. हड़ाही] बहुत दुबला-पतला।

हड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) १-पक्षियों को उड़ाने का शब्द जो खेत के रखवाले करते हैं। २-पत्थरकला बन्दूक। *हड़हड़ा करना*-बोलकर चिड़िया उड़ाना

हड़ावर [संज्ञा पु.] (हिं.) गरमी के दिनों में पहनने के कपड़े।

हड़ावरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हड़ावल'।

हड़ावल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हड्डियों का ढाँचा। ठठरी। २-हड्डियों की माला।

हड़ि [संज्ञा पु.] (सं.) काठ की बेड़ी जो देशी रियासतों में कैदी या अपराधी के पैर में डाल दी जाती है।

हड़ीला [वि.] (हिं.) १-जिसमें हड्डी मात्र शेष रह गई हों। २-बहुत दुबला-पतला।

हड़ुवा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की हल्दी।

हड्डा [संज्ञा पु.] (हिं.) भिड़। बर्रे। ततैया।

हड्डी [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मनुष्यों पशुओं आदि के शरीर में की वह प्रसिद्ध कड़ी वस्तु जो भीतरी ढाँचे के अङ्ग के रूप में होती है। अस्थि। २-वंश। खानदान। *हड्डी उखड़ना*-हड्डी का जोड़ खुल जाना। *हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना*-खूब मारना पीटना। *हड्डियाँ निकल आना*-शरीर बहुत दुबला होना। यौ०-*पुरानी हड्डी*-पुराने समय का मजबूत आदमी।

हत [वि.] (सं.) १-मारा हुआ। वध किया हुआ। २-पीटा हुआ। ताड़ित। ३-खोया या गवाया हुआ। रहित। विहीन। ४-जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो। ५-बिगड़ा हुआ। नष्ट। ६-तङ्ग किया हुआ। हैरान। ७-पीड़ित। ग्रस्त। ८-स्पर्श किया हुआ। ९-निकृष्ट। निकम्मा। १०-गुणा किया हुआ।

हतक [संज्ञा स्त्री.] (अ.) हेटी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा

हतकइज्जती [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मानहानि।

हतचेत [वि.] (हिं.) देखो 'हतज्ञान'।

हतज्ञान [वि.] (सं.) ज्ञानशून्य। अचेत। बेहोश।

हतदैव [वि.] (सं.) दई का मारा। अभागा।

हतना [क्रि. स.] (हिं.) १-मार डालना। २-मारना। पीटना। ३-पालन न करना। ४-न मानना।

हतपुत्र [वि.] (सं.) जिसका पुत्र मर गया हो।

हतप्रभ [वि.] (सं.) जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो। श्रीहीन।

हतप्रभाव [वि] (सं.) जिसका प्रभाव या असर न रह गया हो।

हतबुद्धि [वि] (सं.) १-बुद्धिहीन। मूर्ख। २-जिसकी समझ में यह न आवे कि अब क्या करना चाहिए किंकर्त्तव्यमूढ़।

हतबोध [वि.] (हिं.) देखो 'हतबुद्धि'।

हतभागा, हतभागी* [वि.] (हिं.) [स्त्री. हतभागिन, हतभागिनी] अभागा। भाग्यहीन।

हतभाग्य [वि.] (सं.) भाग्यहीन। बदकिस्मत।

हतवाना [क्रि. स.] (हिं.) वध करना। मरवाना।

हतवीर्य [वि.] (सं.) बलरहित। शक्तिहीन।

हतश्री [वि.] (सं.) १-जिसके चहरे पर कांति न रह गई हो। हतप्रभ। २-मुरझाया हुआ। उदास

हतस्वर [वि.] (सं) जिसकी आवाज बैठ गई हो।

हता* [क्रि. स.] (हिं) (होना का भूतकाल) था। [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] व्यभिचारिणी।

हतादर [वि.] (सं.) जिसका आदर घट गया हो।

हताध्वर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

हताना [क्रि स.] (हिं.) देखो 'हतवाना'।

हताश [वि] (सं.) जिसकी आशा नष्ट हो गई हो।

हताहत [वि.] (सं.) हत और आहत। मारे हुए और घायल।

हते* [क्रि. अ.] (हिं.) 'होना' का भूत कालिक रूप थे

हतोत्साह [वि.] (सं.) जिसमें उत्साह न रह गया हो

हत्थ* [संज्ञा पु] (हिं.) हाथ।

हत्था [संज्ञा पु.] (हिं.) १-दस्ता। मूठ। २-केले के फलों का गुच्छा। घौद। ३-लकड़ी का बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है। हथेरा। ४-पत्थर या ईंट जो दंड निकालते समय हाथ के नीचे रख लेते हैं। ५-हाथ का छापा। ६-निवार बुनने में कंघी की तरह का एक औजार जिससे सूत बैठाया जाता है

हत्थाजड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं) एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ सुगन्धित होती हैं।

हत्थी [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-औजार की मूठ। दस्ता २-देखो 'हत्था'।

हत्थे [क्रि वि.] (हिं) १-हाथ में। २-हाथ से। २-द्वारा। हस्ते। *हत्थे चढ़ाना*-१-हाथ में आना। २-वश में होना।

हत्थेदंड [संज्ञा पु.] (हिं.) ऊंची ईंट पर हाथ रखकर किया जाने वाला दंड। कसरत।

हत्या [संज्ञा स्त्री] (सं) १-मार डालने की क्रिया। खून। २-झंझट। बखेड़ा। ३-अनजान में या योंही संयोगवश किसी के प्राण लेलेना। होमीसाइड। *हत्या लगना*-किसी को मार डालने का पाप लगना। *हत्या टलना*-झंझट दूर होना। *हत्या सिर लगाना*-झंझट लादना।

हत्यार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'हत्यारा'। २-हथियार।

हत्यारा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) [स्त्री. हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करने या मार डालने वाला।

हथ [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ शब्द का संक्षिप्त रूप, इसका व्यवहार समस्त पदों में होता है। जैसे-हथकड़ी।

हथउधार [संज्ञा पु.] (हिं.) अल्पकाल के लिए लिया हुआ कर्ज। हथफेर। दस्तगरदाँ।

हथकंडा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ की चालाकी। २-छिपी हुई चालबाजी।

हथकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) लोहे के वे कड़े जो कैदी के हाथ बाँधने के लिए उसे पहनाये जाते हैं।

हथकरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कपड़े या रस्सी का टुकड़ा जो धुनकी में बंधा रहता है। २-कँटेले झाड़ काटने वालों का चमड़े का दस्ताना।

हथकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) दूकान के किवाड़ों में बन्द करने का एक प्रकार का बड़ा ताला।

हथकल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पेंच ढीली करने या कसने का एक औजार। २-तार ऐंठने का एक औजार। ३-करघे की दो डोरियां जिनका एक छोर तो हत्थे के ऊपर रहता है और दूसरा लपेटे में। ४-देखो 'हथकरा'।

हथकोड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) कुश्ती का एक पेच।

हथखंडा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हथकंडा'।

हथछुट [वि.] (हिं.) जिसका हाथ मारने के लिए जल्दी उठता हो।

हथधर्रा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सहारा लेने की लकड़ी

हथनाल [संज्ञा पु.] (हिं.) वह तोप जो हाथियों की पीठ पर लाद कर चलाई जाती थी। गजनाल।

हथनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथी की मादा। २-घाटों आदि में बड़ी और ऊंची सीढ़ियों के आकार की बनावट, जो साधारण सीढ़ियों के दोनों ओर होती हैं।

हथफूल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रकार का गहना जो हथेली की पीठ पर पहना जाता है। २-एक प्रकार की आतशबाजी।

हथ-फेर [संज्ञा पु.] (हिं) १-प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। २-चालाकी से किसी का माल उड़ा लेना ३-कुछ समय के लिए लिया या दिया हुआ ऋण हाथ उधार।

हथफेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बहुत चालाकी से किसी का माल ले उड़ना।

हथफेंटा [संज्ञा पु.] (हिं) एक प्रकार की कुदाली।

हथरकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) चमड़े की थैली जिसे कोल्हू में गन्ना पेलने वाला पहनता है।

हथरस [संज्ञा पु.] (हिं.) हस्तमैथुन।

हथली [संज्ञा स्त्री.] (हिं) चरखा चलाने की मुठिया।

हथलेवा [संज्ञा पु.] (हिं) विवाह के समय वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणिग्रहण।

हथवाँस [संज्ञा पु] (हिं) नाव चलाने की

हथवाँसना+ [क्रि. स.] (हिं.) काम में लाना। व्यवहार करना।

हथसंकर, हथसाँकला [संज्ञा पु.] (हिं.) हथफूल नामक गहना।

हथसार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गजशाला। फीलखाना।

हथा [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथ के पंजे का छापा।

हथाहथी* [अव्य.](हिं.) १-हाथों हाथ। २-चटपट तुरन्त।

हथिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथी की मादा।

हथिया [संज्ञा पु.] (हिं.) हस्तनक्षत्र।

हथियाना [क्रि. स.] (हिं.) १-हाथ में करना। अधिकार में लेना। २-धोखा देकर ले लेना। ३-हाथ में पकड़ना।

हथियार [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथ में पकड़ कर चलाया जाने वाला अस्त्र। २-औजार। उपकरण ३-लिंगेन्द्रिय (गुंडों की बोली)। *हथियार बाँधना या लगाना*-अस्त्र-शस्त्र धारण करना। *हथियार उठाना*-१-मारने के लिए अस्त्र हाथ में लेना। २-लड़ाई के लिए तैयार होना। *हथियार करना*-हथियार चलाना।

हथियार-बंद [वि.] (हिं., फा.) जो हथियार धारण किये हो। स-शस्त्र।

हथुईमिट्टी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कच्ची दीवार का खुरदरापन दूर करने के लिए गीली मिट्टी का चढ़ाया हुआ लेप।

हथुईरोटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ से गढ़कर बढ़ाई हुई रोटी।

हथेरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हत्था' (३)।

हथेरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हथेली'।

हथेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बुना हुआ कपड़ा तानकर रखने की लकड़ी।

हथेली [संज्ञा स्त्री.](हिं.)१-हाथ की कलाई का वह चौड़ा भाग जिसमें उंगलियाँ होती हैं। करतल। २-चरखे की मुठिया। *हथेली में आना*-१-अधिकार में आना। मिलना। २-वश में होना। *हथेली में करना*-अधिकार में ले लेना। *हथेली खुजलाना*-कुछ मिलने का शकुन होना। *हथेली का फफोला*-अत्यधिक सुकुमार वस्तु। *हथेली देना या लगाना*-हाथ का सहारा देना। *हथेली बजाना*-करतलध्वनि करना। *किस की हथेली में बाल जमे हैं?*-संसार में ऐसा कौन है? *हथेली-सा*-बिलकुल चौरस या सपाट। *हथेली पर जान लेकर कोई काम करना*-जान जोखिम में डालकर कोई काम करना।

हथेव+ [संज्ञा पु.] (हिं.) घन। हथौड़ा।

हथोरी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) देखो 'हथेली'।

हथौटी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ से कोई काम करने का ठीक ढंग।

हथौड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हथौड़ी] एक प्रकार का औजार जिससे कारीगर लोग कोई चीज तोड़ते, पीटते, ठोंकते या गढ़ते हैं।

हथौड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा हथौड़ा।

हथौना [संज्ञा पु.] (हिं.) वर और कन्या के हाथ में मिठाई रखने की रीति।

हथ्याना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'हथियाना'।

हथ्यार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हथियार'।

हद [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-सीमा। २-वह स्थान या परिमाण जहाँ तक कोई बात ठीक हो सकती हो मर्यादा। मु०-*हद बंधना*-सीमा निर्धारित होना *हद तोड़ना*-सीमा का अतिक्रमण करना। *हद कायम करना*-हद बंधना। *हद से ज्यादा*-१-बहुत अधिक। २-अत्यन्त। *हद व हिसाब नहीं*-अपार। अपरिमेय। *हद से गुजरना*-मर्यादा का अतिक्रमण करना।

हदस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मन में उत्पन्न होने वाला ऐसा भय जिसमें मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ़ होजाय

हदसना [क्रि. अ] (हिं.) मन में भय उत्पन्न होना डरना।

हदसमाअत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) दावा करने के लिये समय की नियत अवधि।

हदसाना [क्रि. स.](हिं.) मन में भय उत्पन्न करना डराना।

हदसियासत [संज्ञा स्त्री.](अं.) किसी न्यायालय के अधिकारी की सीमा।

हदिया [संज्ञा स्त्री.] (अं.) उच्चकुल की वीर रमणी

हदीस [संज्ञा स्त्री.] (अं.) मुहम्मदसाहब का उपदेश-संग्रह जो कुरान का परिशिष्ट माना जाता है।

हनन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मार डालना। वध करना २-आघात करना। मारना। ३-गुणा करना (गुणित)।

हनना* [क्रि. स.](हिं.)१-मार डालना। वध करना २-आघात करना। चोट मारना। ३-ठोंकना। पीटना। ४-लकड़ी से पीट या ठोककर बजाना

हननीय[वि.](सं.)१-मारनेयोग्य। २-जिसे मारना हो

हनफ़ी [संज्ञा पु.] (अं.) मुसलमानों में सुन्नियों का एक संप्रदाय।

हनवाना [क्रि. स.](हिं.) मरवाना। [क्रि. अ.] देखो 'नहवाना'।

हनाना+ [क्रि. अ] (हिं.) देखो 'नहाना'।

हनिवंत* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हनुमान'।

हनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-जबड़ा। दाढ़ की हड्डी। २-ठोढ़ी। चिबुक।

हनुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दाढ़ की हड्डी। जबड़ा

हनुग्रह [संज्ञा पु.](सं.) जबड़ा बन्द हो जाने का रोग

हनुभेद [संज्ञा पु.] (सं.) जबड़े का खुलना।

हनुमंत [संज्ञा पु.] (हिं.) हनुमान्।

हनुमंत-उड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मालखंभ की एक कसरत।

हनुमंती [संज्ञा स्त्री.](हिं.) मालखम्भ की एक कसरत

हनुमत्कवच [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक मंत्र विशेष जिससे हनुमान प्रसन्न होते हैं। २-वह स्तुति जिससे हनुमान जी प्रसन्न होते हैं।

हनुमान् [वि.] (सं.) १-भारी दाढ़ या जबड़े वाला २-बहुत बड़ा वीर। [संज्ञा पु.] (सं.) एक वीर बन्दर जो श्रीराम का परमभक्त था। महावीर।

हनुमान-बैठक [संज्ञा पु](हिं.) कसरत में एक प्रकार की बैठक।

हनुमोष [संज्ञा पु.] (सं.) दाढ़ का एक रोग।

हनुल [वि.] (सं.) पुष्ट या दृढ़ दाढ़ वाला।

हनुवँ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हनुमान'।

हनूफाल [संज्ञा पु.] (हिं.) बारह मात्राओं का एक छंद जिसके अन्त में गुरु लघु होते हैं।

हनूमान् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'हनुमान'।

हनूप [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

हनोज [अव्य.] (फा.) अभी। अभीतक।

हनोद [संज्ञा पु.](देश) हिंडोल राग के एक पुत्र का नाम।

हप [संज्ञा पु.] (हिं.) झट से मुंह में लेकर होंठ बन्द करने का शब्द। मुहा०-*हप कर जाना*-झट से मुंह में डालकर खाजाना।

हपटाना+ [क्रि. अ.] (हिं.) हाँफना।

हफ्तगाना [संज्ञा पु.](फा.) गाँव के पटवारी के सात कागज।

हफ्ता [संज्ञा पु] (फा.) १-सप्ताह। २-सात दिन।

हफ्ती [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक तरह की जूती।

हबकना [क्रि. अ.] (हिं.) खाने या काटने के लि० झपटना। [क्रि. स.] दाँत काटना।

हबड़ा [वि.] (देश.) १-बड़े-बड़े दाँतों वाला। २-भद्दा। कुरूप।

हबरदबर, हबरहबर [क्रि. वि.] (हिं.) १-जल्दी-जल्दी। उतावली से। २-जल्दी के कारण ठीक तौर से नहीं।

हबराना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हड़बड़ाना'।

हबश [संज्ञा पु.] (फा.) अफ्रीका का एक प्रदेश।

हबशी [संज्ञा पु.] (फा.) १-अफ्रीका के हबशी देश का निवासी, जो घोर काले रंग का होता है। २-जामुन की तरह का काला अंगूर।

हबशीसनर [संज्ञा पु.] (फा.) अफ्रीका का गेंडा।

हबीब [संज्ञा पु.] (अं.) १-मित्र। दोस्त। २-प्रिय। यौ-*खुदा का हबीब*-मुहम्मदसाहब।

हबूड़ा [संज्ञा पु.] (?) एक यायावर जाति।

हबूब [संज्ञा पु.] (अ.) १-पानी का बुलबुला। २-सारहीन बात।

हबेली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हवेली'

हब्बाडब्बा [संज्ञा पु.](हिं.) बच्चों की पसली चलने की बीमारी।

हब्बुल्आस [संज्ञा पु.](अं) एक प्रकार की मेहँदी।

हब्स [संज्ञा पु.] (अ.) कैद। कारावास।

हब्सबेजा [संज्ञा पु](अ., फा.) अनुचित रीति से बंदी करना।

हम [सर्व.] (हिं.) उत्तमपुरुष बहुवचन का सूचक सर्वनाम। 'मैं' का बहुवचन। [संज्ञा पु] अहं-भाव। अहङ्कार। [अव्य.] (फा.) १-साथ। संग। २-समान। तुल्य। (यौगिक के आरम्भ में। जैसे-हमवतन, हमराह)।

हम-अफसर [संज्ञा पु.] (फा., अ.) १-वे जिन पर एक ही तरह का प्रभाव पड़ा हो। २-एक ही समय में होने वाले। साथी।

हम-उम्र [वि.] (फा., अ.) बराबर उम्र का। अवस्था में समान।

हमकाना+ [क्रि. स.] (हिं.) हं-हं शब्द करके घोड़े आदि को चलाना।

हम-कौम [वि.] (फा., अ.) सजातीय।

हम-जिंस [संज्ञा पु] (फा.) एक ही वर्ग अथवा जाति के प्राणी।

हमजोली [संज्ञा पु] (फ़ा., हिं) सङ्गी। साथी। सहयोगी।

हमता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अहंभाव। अहंकार।

हमदर्द [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सहानुभूति रखने वाला।

हमदर्दी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) सहानुभूति।

हमनिवाला [संज्ञा पु.] (फ़ा.) एक साथ भोजन करने वाले घनिष्ट मित्र।

हमपंच+ [सर्व.] (हिं.) हम लोग।

हमपेशा [वि.](फ़ा.) एक ही जैसा पेशा करने वाले। सह-व्यवसायी।

हम-बिस्तर [वि.] (फ़ा.) एक ही बिछौने पर साथ में सोया हुआ।

हमबिस्तरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) एक ही बिछौने पर साथ सोना। संभोग।

हम-मज़हब [वि.] (फ़ा., अ.) एक ही मज़हब या धर्म को मानने वाले। सहधर्मी।

हमरा+ [सर्व] (हिं.) देखो 'हमारा'।

हमराह [अव्य] (फ़ा) सङ्ग। साथ। *हमराह होना*-साथ। जाना।

हमल [संज्ञा पु.] (अ.) गर्भ। *हमल गिरना*-गर्भपात होना। *हमल गिराना*-गर्भपात करना। *हमल रहना*-गर्भ रहना।

हमला [संज्ञा पु.] (अ.) १-आक्रमण। चढ़ाई। २-मारने के लिए झपटना। ३-प्रहार। वार। ४-शब्द द्वारा आक्षेप।

हमवज़न [वि.] (फ़ा, अ.) १-जो वजन अथवा तोल में किसी मुकाबले की वस्तु के समान हो। २-जिसके सब अङ्गों में समानता हो।

हमवतन [संज्ञा पु.] (फ़ा., अ.) स्वदेशवासी।

हमवार [वि.] (फ़ा.) समतल। सपाट।

हमसबक़ [संज्ञा पु.] (फ़ा.) सहपाठी।

हमसर [संज्ञा पु.] (फ़ा.) जोड़ का आदमी।

हमसरी [संज्ञा स्त्री.] (फ़ा.) समानता। बराबरी।

हमसाया [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पड़ोसी।

हमहमी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हमाहमी'।

हमाम [संज्ञा पु.] (सं.) स्नानगृह।

हमारा [सर्व.] (हिं.)[स्त्री हमारी] 'हम' का सम्बन्धकारक रूप।

हमाल [संज्ञा पु.] (अ.) १-बोझ ढोने वाला मजदूर कुली। २-रक्षक। रखवाला।

हमालय [संज्ञा पु.](हिं.) सीलोन का सब से ऊँचा पहाड़।

हमाहमी [संज्ञा स्त्री](हिं.) १-सब लोगों का अपने-अपने लाभ के लिये होने वाला आतुर प्रयत्न। २-अहंकार।

हमीर [संज्ञा पु.](सं) देखो 'हम्मीर'।

हमें [सर्व.] (हिं.) 'हम' का कर्म तथा सम्प्रदानकारक रूप। हमको।

हमेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) गले में पहनने की वह माला जिसमें सिक्के या सिक्कों जैसे गोल टुकड़े लगे हों।

हमेव* [संज्ञा पु.] (हिं.) अहंकार। अभिमान। मुहा०-*हमेव टूटना*-गर्व चूर्ण होना।

हमेशा [अव्य.] (फ़ा.) सदा। सदैव।

हमेस* [अव्य] (हिं.) सदा। सदैव। हमेशा।

हमैं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'हमें'।

हम्माम [संज्ञा पु.](अ.) १-चारों ओर से बन्द वह कोठरी जिसमें गरम जल से स्नान करते हैं। २-स्नानागार।

हम्मीर [संज्ञा पु.] (सं.) १-सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग। २-रणथम्भोरगढ़ का एक अत्यन्त वीर चौहान राजा।

हम्मीर-नट [संज्ञा पु.](सं.)नट और हम्मीर के योग से बना सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग।

हयंद*[संज्ञा पु.](हिं.)बड़ा या उत्तम कोटि का घोड़ा

हय [संज्ञा पु.] (सं.) १-घोड़ा। २-इन्द्र। ३-चार मात्राओं का एक छन्द। ४-धनुराशि। ५-कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द

हयकातरा [संज्ञा स्त्री](सं.) घोड़काथरा नामक वृक्ष

हयकोविद[वि](सं.)घोड़ों को पालने, उनको सिखलाने आदि की विद्या में निपुण।

हयगंध, हयगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) काला नमक।

हयगृह [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वशाला। घुड़साल।

हयग्रीव [संज्ञा पु.](सं.) १-विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक। २-एक असुर जो कल्पांत में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था। ३-तांत्रिक बौद्धों का एक देवता।

हयग्रीवा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

हयघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) करवीरवृक्ष।

हयद्विष [संज्ञा पु] (सं.) खेलने की गाड़ी।

हयन [संज्ञा पु.] (सं.) वर्ष। साल।

हयना* [क्रि स.] (हिं.) देखो 'हनना'।

हयनाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं) घोड़े से चलाई जाने वाली तोप।

हयप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) जौ। यव।

हयप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खजूर का पेड़।

हयमारक [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर। करवीर।

हयमारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-कनेर। २-पीपल। अश्वत्थ।

हयमुख [संज्ञा पु.] (सं.) एक देश जहाँ घोड़े के से मुख वाले आदमी रहते हैं।

हयमेध [संज्ञा पु] (सं.) अश्वमेध यज्ञ।

हयवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) कुबेर।

हयविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं) घोड़ों से सम्बन्ध रखने वाली विद्या।

हयवैरी [संज्ञा पु] (सं.) भैंसा।

हयशाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अश्वशाला। अस्तबल

हयशिक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़ों की शिक्षा।

हयशिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वैश्वानर की कन्या।

हयशीर्ष [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु का हयग्रीव रूप।

हयांग, हयाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) धनुराशि।

हया [संज्ञा स्त्री.] (अ.) लाज। शर्म।

हयात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) जीवन। जिन्दगी। मु०-*हीन-हयात*-किसी के जीवन काल तक। *हीन-हयात में*-जीवनकाल में।

हयादार (अ., फ़ा.) लज्जाशील। शर्मदार।

हयादारी [संज्ञा स्त्री.] (अ. फ़ा) लज्जाशीलता।

हयानन [संज्ञा पु.] (सं) १-हयग्रीव। २-हयग्रीव का स्थान।

हयायुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़ों की चिकित्सा का शास्त्र।

हयारि [संज्ञा पु.] (सं.) कनेर।

हयारोह [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े पर सवार होना।

हयालय [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वशाला। अस्तबल।

हयाशन [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का धूप का पौधा।

हयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़ी। [संज्ञा पु] (हिं) घुड़सवार।

हयोत्तम [संज्ञा पु.] (सं) उत्तम घोड़ा।

हर [वि.](सं.) [स्त्री. हरी] १-छीनने लूटने या हरण करने वाला। २-दूर करने या मिटाने वाला। ३-वध या नाश करने वाला। ४-ले जाने वाला। वाहक। [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-गणित में वह संख्या जिससे भाग देते हैं। भाजक। ३-भिन्न में नीचे की संख्या (गणित)। ४-अग्नि। ५-छप्पयछन्द का दसवाँ भेद। ६-टगण के पहले भेद का नाम। + [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हल'। [वि.] (फ़ा.) प्रत्येक। एक-एक। पद०-*हरएक*-प्रत्येक। *हर रोज*-प्रति दिन। नित्य। *हरदम*-सदा।

हरउद+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'लोरी'।

हरएँ* [अव्यय] (हिं.) १-धीरे-धीरे मन्द गति से २-तीव्रता या जोर से नहीं। चुपके से। क्रम-क्रम से।

हरकत [संज्ञा स्त्री.](अ) १-हिलना। डोलना। गति २-चेष्टा। क्रिया।

हरकना* [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'हटकना'।

हरकारा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) पत्र आदि पहुँचाने या ले जाने वाला दूत। पत्रवाह।

हरकेस [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार का धान।

हरक्कत [संज्ञा स्त्री] देखो 'हरज'।

हरख* [संज्ञा पु.] (हिं.) 'हर्ष'।

हरखना [क्रि. अ.] (हिं.) प्रसन्न होना।

हरखाना[क्रि. अ.] (हिं.) प्रसन्न होना। [क्रि स] प्रसन्न करना।

हरगिज [अव्यय] (फ़ा.) कदापि। कभी

हरगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) कैलासपर्वत।

हरगिला+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हड़गिला'।

हरगौरीरस [संज्ञा पु.] (सं.) रससिंदूर।

हरचंद [अव्यय] (फ़ा.) १-बहुत या बहुत बार। २-यद्यपि। अगरचे।

हरज [संज्ञा पु.] (अ.) १-काम में पड़ने वाली अड़चन या बाधा। रुकावट। २-क्षति। हानि। नुकसान।

हरज़ा [संज्ञा पु.] (फ़ा.) संगतराशों की चौरस करने की छेनी। चौरसी। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'हरज'। २-देखो 'हरजाना'।

हरजाई [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-हर जगह घूमने वाला। २-हर किसी से अनुचित प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने वाला। आवारा। [संज्ञा स्त्री.] १-व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा। २-वेश्या। रंडी।

हरजाना [संज्ञा पु.] (फ़ा.) १-क्षतिपूर्ति। २-हानि के बदले में दिया जाने वाला धन। वह धन

जिससे क्षतिपूर्त्ति हो।

हरजेवड़ी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की छोटी झाड़ी जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं

हरट्ठ* [वि.] (हिं.) हृष्टपुष्ट।

हरठिया+ [संज्ञा पु.](हिं.) रहँट के बैल हाँकने वाला

हरड़ा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हड़'।

हरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-जिसकी वस्तु हो उसकी इच्छा के विरुद्ध लेना। २-दूर करना। हटाना। ३-विनाश। संहार। ४-ले जाना। वहन। ५-भाग देना। (गणित) ६-दहेज। ७-यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा।

हरणीय [वि.](सं.) हरण करने योग्य। छीनने लायक

हरता [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हर्त्ता'।

हरताधरता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-वह जिसके हाथ में बनाना बिगाड़ना दोनों हों। २-सब कुछ करने का अधिकार रखने वाला।

हरतार* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरताल'।

हरताल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) पीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो दवा के काम में आता है। गोदंत। (किसी बात पर) *हरताल लगाना*-किया न किया बराबर करना।

हरताली [वि.](हिं.) हरताल के रङ्ग का। [संज्ञा पु.] एक प्रकार का गंधकी पीला रङ्ग।

हरतालेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल के योग से बनने वाली एक रसौषध।

हरतेज [संज्ञा पु.](हिं.) पारद। पारा।

हरद* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हल्दी'।

हरदा [संज्ञा पु.] (हिं.) कीटाणुओं का समूह जो फसल की पत्तियों पर जम जाता है और उसको हानि पहुँचाता है।

हरदिया+ [वि.](हिं.) [पु. प्र.] हल्दी के रंग का। पीला। [संज्ञा पु.] (हिं.) पीले रंग का घोड़ा।

हरदी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हल्दी'।

हरदू [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

हरद्वार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरिद्वार'।

हरना [क्रि. स.](हिं.) १-हरण करना। छीनना या ले लेना। २-हटाना। न रहने देना। ३-मिटाना। नाश करना। ४-लेजाना। वहन करना। *मन हरना*-मोहित करना। लुभाना। *प्राण हरना*-१-मार डालना। २-बहुत कष्ट देना। * [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हारना'। * [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'हिरन'।

हरनाकस* [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'हिरण्यकशिपु'।

हरनाच्छ* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिरण्याक्ष'।

हरनी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हिरन की मादा। मृगी। २-कपड़ों में हड़ का रंग देने की क्रिया।

हरनेत्र [संज्ञा पु.](सं.) १-शिव के नेत्र। २-तीन की संख्या।

हरनौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरन का बच्चा।

हर-परेवरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी न बरसने की अवस्था में किसान स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक टोटका।

हरपा* [संज्ञा पु.] (देश.) १-सिंदूर रखने का डिब्बा। सिंधोरा। २-डिब्बा।

हरपुजी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) कार्त्तिक में किसानों द्वारा किया जाने वाला हल-पूजन।

हरप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) करवीर। कनेर।

हरफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) अक्षर। वर्ण। (किसी पर) *हरफ आना*-दोष लगना। *हरफ उठाना*-अक्षर पहचान कर पढ़ लेना। *हरफ बैठाना*-छापे के अक्षर क्रम से रखना। *हरफ बनाना*-१-सुन्दर अक्षर लिखना। २-अक्षर लिखने का अभ्यास करना। ३-किसी दस्तावेज में जाल के लिये फेर-फार करना। (किसी पर) *हरफ लाना*-दोष या कलंक लगाना।

हरफगीर [वि.](फा.) बारीकी से दोष निकालने वाला

हरफगीरी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) सूक्ष्म परीक्षा।

हरफा [संज्ञा पु.] (देश.) कटा हुआ चारा रखने का घर।

हरफारेवड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कमरख की जाति का एक पेड़। २-उक्त पेड़ का फल।

हरबर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हड़बड़ी'।

हरबराना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हड़बड़ाना'

हरबा [संज्ञा पु.] (अ.) अस्त्र। हथियार।

हरबीज [संज्ञा पु.] (सं.) पारद। पारा।

हरबोंग [संज्ञा पु.] (?) १-अन्धेर। २-उपद्रव। [वि.] (हिं.) गँवार। मूर्ख

हरभूली [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार का धतूरा।

हरम [संज्ञा पु.] (अ.) अन्तःपुर। जनानखाना। [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-स्त्री। पत्नी। २-रखेली स्त्री।

हरमज़दगी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) बदमाशी। शरारत।

हरमल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियाँ दवा के काम आती है और बीजों से लाल रङ्ग निकलता है। *[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुलटा स्त्री (राजस्थान)।

हरयाल* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरियाली'।

हरये* [अव्य.] (हिं.) देखो 'हरएँ'।

हररूप [संज्ञा पु.] (सं.) शिव। महादेव।

हरवल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलवाहों को बिना ब्याज के दिया हुआ धन। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरावल'।

हरवली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हरावल के अधिकारी का कार्य या पद। २-सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

हरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हार। माला। [वि.] (हिं.) देखो 'हरुवा'।

हरवाना [क्रि. अ.] (हिं.) जल्दी करना। उतावली करना।

हरवाल [संज्ञा पु.] (देश.) सुरारी नामक घास।

हरवाह, हरवाहा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलवाहा'

हरवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) शिव की सवारी, बैल।

हरवाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलवाहे का काम या मजदूरी।

हरशंकरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पीपल तथा पक्कड़ के एक साथ लगे हुए वृक्ष जो परम पवित्र माने जाते हैं।

हरशेखरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) (शिव के सिर पर रहने वाली) गङ्गा।

हरष* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हर्ष'।

हरषना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रसन्न या खुश होना। २-पुलकित होना।

हरषाना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-प्रसन्न या खुश होना। २-पुलकित होना। [क्रि. स.] (हिं.) हर्षित करना प्रसन्न करना।

हरषित* [वि.] (हिं.) देखो 'हर्षित'।

हरसना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हरषना'।

हरसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरिस'।

हरसाना [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'हरषाना'।

हरसिंगार [संज्ञा पु.] (हिं.) मझोले कद का एक वृक्ष जिसमें छोटे सुगन्धित फूल लगते हैं। परजाता

हरसूनु [संज्ञा पु.] (सं.) कार्त्तिकेय।

हरसौंधा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) कोल्हू में वह स्थान जिस पर बैठकर बैल हाँके जाते हैं।

हरहट+ [वि.] (हिं.) नटखट (बैल)।

हरहा [वि.] (हिं.) देखो 'हरहट'। [संज्ञा पु.] (देश.) भेड़िया। वृक।

हरहाई [वि.] (हिं.) नटखट (गाय)।

हरहाया [वि.] (हिं.) [स्त्री. हरहाई] नटखट (बैल आदि)।

हरहार [संज्ञा पु.] (सं.) १-(शिव के गले का हार) सर्प। साँप। २-शेषनाग।

हरहोरवा [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

हराँस+ [संज्ञा पु.] (हिं.)१-भय। डर। २-दुख। चिन्ता। ३-थकावट। ४-हलका ज्वर या ताप। हरारत।

हरा [वि.](हिं.) [स्त्री. हरी] १-घास, पत्तियों आदि के रङ्ग का। हरित। सब्ज। २-प्रसन्न। प्रफुल्ल ३-जो मुरझाया न हो। ताजा। ४-हरे रङ्ग का घोड़ा। सब्जा। यौ०-*हराभरा*-१-जो सूखा या मुरझाया न हो। २-जो हरे पेड़ पौधों से भरा हो। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घास या पत्तियों का सा रङ्ग। हरितवर्ण। *२-हार। माला। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

हराई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हारने की क्रिया या भाव हार। २-खेत का उतना भाग जितना एक हल के चक्कर में जुत जाता है। *हराई फाँदना*-जुताई की कूंड़ शुरू करना।

हराद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) कैलास पर्वत।

हरानत [संज्ञा पु.] (सं.) रावण का एक नाम।

हराना [क्रि. स.](हिं.) १-परास्त या पराजित करना शिकस्त देना। २-शत्रु को विफल मनोरथ करना ३-थकाना।

हरापन [संज्ञा पु.] (हिं.) हरे होने का भाव। हरितता। सब्जी।

हराम [वि.](अ.) १-जो इस्लाम धर्मशास्त्र में वर्जित या त्याज्य हो। निषिद्ध। २-बुरा। दूषित। मु० (कोई बात) *हराम करना*-किसी बात का करना मुश्किल कर देना। [संज्ञा पु.] (अ.) १-अधर्म। पाप। २-स्त्री पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। व्यभिचार। मु०-*हराम का*-१-जो अधर्म से उत्पन्न हुआ हो। २-मुफ्त का। *हराम का पिल्ला*-१-वर्ण संकर। दोगला। २-दुष्ट। बदमाश (गाली)। *हराम का पेट*-अनुचित सम्बन्ध से रहा हुआ गर्भ

हरामकार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-बुरा काम करने

वाला । २-व्यभिचारी ।

हरामकारी [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) १-पाप । बुराई । २-व्यभिचार । पर स्त्रीगमन ।

हरामखोर [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-मुफ्त का माल खानेवाला । २-धन लेकर भी काम न करने वाला ।

हरामखोरी [संज्ञा स्त्री.] (अ , फा.) हरामखोर बने रहने की क्रिया या भाव ।

हरामजादा [संज्ञा पु.](अ., फा.) [स्त्री. हरामजादी] १-दोगला । वर्णसंकर । २-बहुत बड़ा पाजी या दुष्ट ।

हरामी [वि] (अ.) १-व्यभिचार से उत्पन्न । २-दुष्ट पांजी ।

हरामीपन [संज्ञा पु.] (अ. हिं.) अधिक दुष्टता या नीचता ।

हरारत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-गरमी । ताप । २-हल्का ज्वर । ज्वरांश ।

हरावरि* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'हड़ावर' । २-देखो 'हरावल' ।

हरावल [संज्ञा पु.] (तु.) सेना में सबसे आगे चलने वाला सिपाहियों का दल ।

हरावास [संज्ञा पु.](सं.) शिव का आवास, कैलास

हरास [संज्ञा पु.] (फा.) १-भय । डर । २-आशंका खटका । ३-दुःख । ४-निराशा । [संज्ञा स्त्री.] (हिं) हारने की क्रिया या भाव ।

हराहर* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलाहल' ।

हरि [वि.] (सं.) १-भूरा बादामी (रङ्ग) । २-पीला । ३-हरे रङ्ग का ।
[संज्ञा पु.] (सं) १-विष्णु । २-शिव । ३-बंदर ४-अग्नि । ५-विष्णु के अवतार, श्रीकृष्ण । ६-श्रीराम । ७-इन्द्र । ८-घोड़ा । ९-सिंह । १०-सिंह राशि । ११-सूर्य । १२-किरण । १३-चंद्रमा । १४-गीदड़ । १५-शुक । तोता । १६-कोयल । १७-हंस । १८-मेढक । १९-सर्प । २०-वायु । २१-यम । २२-शुक्र । २३-अठारह वर्णों का एक छन्द । २४-एक सम्वत्सर का नाम ।*[अव्य.] (हिं.) धीरे । आहिस्ते ।

हरिअर* [वि.] (हिं) हरा । सब्ज (रंग) ।

हरिअराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हरिआना' ।

हरिअरी* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हरे रंग का विस्तार २-हरियाली ।

हरिआना+ [क्रि. अ.] (हिं) १-हरा होना । २-मुरझाया न रहना ।

हरिआली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरियाली' ।

हरिक [संज्ञा पु.] (सं) लाल या भूरे रंग का घोड़ा ।

हरिकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भगवान या उनके अवतारों के चरित्र का वर्णन ।

हरिकम [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ ।

हरिकारा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरकारा' ।

हरिकीर्त्तन [संज्ञा पु.](सं)भगवान् या उसके अवतारों का नाम या गुणों का कीर्तन ।

हरिकेश [वि.] (सं.) जिसके भूरे बाल हों । [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य की एक कला । २-शिव । ३-दंडपाणि नामक यक्ष ।

हरिकांत, हरिकान्त [संज्ञा पु.] (सं) [illegible]

हरिक्रांता, हरिक्रान्ता [संज्ञा स्त्री.](सं) काली अपराजिता ।

हरिक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय का एक प्राचीन पुण्य स्थान ।

हरिगंध, हरिगन्ध [संज्ञा पु] (सं.) पीला चन्दन ।

हरिगीता, हरिगीतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द जिसमें सोलह और बारह पर विराम होता है तथा पाँचवी, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु एवं अन्त में लघु गुरु होता है ।

हरिचंद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरिश्चंद्र' ।

हरिचंदन, हरिचन्दन [संज्ञा पु.](सं) १-एक प्रकार का चंदन । २-स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक । ३-कमल का पराग । ४ केसर । ५-चंद्रिका । चांदनी

हरिचर्म [संज्ञा पु.] (सं.) बाघंबर । व्याघ्रचर्म ।

हरिचाप [संज्ञा पु] (सं) इन्द्रधनुष ।

हरिजटा [संज्ञा स्त्री] (सं.) एक राक्षसी जिसे सीता को समझाने के लिए नियत की गई थी ।

हरिजन [संज्ञा पु] (सं.) १-ईश्वर का भक्त । २-पद-दलित या अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम ।

हरिजान [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'हरियान' ।

हरिण [संज्ञा पु] (सं.) [स्त्री. हरिणी] १-मृग । हिरन । २-हिरन की एक जाति । ३-सूर्य । हंस । ५-एक लोक का नाम । ६-विष्णु । ७-शिव । ८-एक नाग । [वि.] भूरे या बादामी रङ्ग का ।

हरिणकलंक, हरिणकलङ्क [संज्ञा पु.] (सं) चंद्रमा ।

हरिणनयना, हरिणनयनी [वि.] (सं.) [स्त्री प्र.] हिरन की आँखों के समान सुन्दर आँखों वाली

हरिणप्लुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णार्द्धसमवृत्त जिसके विषम चरणों में ३ सगण, एक लघु तथा एक गुरु होता है और समचरणों में एक नगण, दो भगण एवं एक रगण होता है ।

हरिणलक्षण, हरिणलांछन, हरिणलाञ्छन [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा ।

हरिणहृदय [वि] (सं) (हिरन की तरह) डरपोक ।

हरिणाक्ष [वि.] (सं.) हिरन की आँखों के समान सुन्दर आँखों वाला ।

हरिणाक्षी [वि.] (सं.) हिरन की आँखों के समान सुन्दर आंखों वाली । स्त्री ।

हरिणी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिरन की मादा । २-मजीठ । ३-जर्द चमेली । ४-देखो 'चित्रणी' । ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु गुरु होते हैं । ६-एक वर्णों का एक वृत्त ।

हरित् [वि.] (सं.) १-हरे या सब्ज रङ्ग का । २-भूरे या बादामी रङ्ग का । [संज्ञा पु.] (सं.) १-सिंह । २-सूर्य । ३-विष्णु । ४-एक प्रकार का तृण । ५-सूर्य का एक घोड़ा । ६-हल्दी ।

हरित [वि.] (सं.) १-देखो 'हरित्' । २-पीला । [संज्ञा पु.] (सं.) १-कश्यप के एक पुत्र का नाम २-सेना । ३-हरियाली । ४-शाक । भाजी ।

हरित-कपिश [वि.] (सं.) पीलापन या हरापन लिये भूरा ।

हरितगोमय [संज्ञा पु] (सं) ताजा गोबर ।

हरितनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) उल्लू ।

हरितमणि [संज्ञा पु.] (सं.) मरकत । पन्ना ।

हरिता [संज्ञा स्त्री.](सं) १-दूब । दूर्वा । २-हल्दी । ३-हरे या भूरे रङ्ग का अंगूर । ४-भूरे रंग की गाय । ५-स्वर भक्ति का एक भेद । ६-हरि या विष्णु का भाव । विष्णुपन ।

हरिताभ [वि.] (सं) जिसमें हरे रङ्ग की आभा हो ।

हरिताल [संज्ञा पु.] (सं) १-देखो 'हरताल' । २-एक प्रकार का कबूतर ।

हरितालक [संज्ञा पु](सं.) १-देखो 'हरताल' । २-नाटक में शरीर पर रंग आदि पोतने का कर्म ।

हरितालिका [संज्ञा स्त्री.] (सं) भादों के शुक्लपक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए व्रत की तिथि है । तीज ।

हरिताली [संज्ञा स्त्री] (सं) १-मालकंगनी । २-तलवार का धार वाला भाग । ३-देखो 'हरितालिका' । ४-आसमान में बादल आदि की पतली धज्जी या रेखा । ५-वायु ।

हरिताश्म [संज्ञा पु] (सं) तूतिया । तुत्थ ।

हरितोपल [संज्ञा पु.] (सं) मरकतमणि । पन्ना ।

हरिदर्भ [संज्ञा पु] (सं) १-सब्जा घोड़ा । २-सूर्य ।

हरिदश्व [संज्ञा पु.] (सं) १-सूर्य । २-आक । मदार

हरिदास [संज्ञा पु.] (सं) भगवान का भक्त ।

हरिदिन, हरिदिवस [संज्ञा पु] (सं) एकादशी ।

हरिदिशा [संज्ञा स्त्री] (सं) पूर्वदिशा ।

हरिदेव [संज्ञा पु] (सं.) १-विष्णु । २-श्रवणनक्षत्र

हरिद्गर्भ [संज्ञा पु] (सं) देखो 'हरिदर्भ' ।

हरिद्र [संज्ञा पु] (सं) पीलाचन्दन ।

हरिद्रक [संज्ञा पु.] (सं) १-पीला चंदन । २-एक नाग का नाम ।

हरिद्रखंड, हरिद्रखण्ड [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार की औषध जिससे दाद, खुजली, फोड़े, फुंसी और कुष्ट रोग दूर होता है ।

हरिद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-हलदी । २-वन । जंगल ३-मंगल । ४-सीसा नामक धातु । ५-एक नदी ।

हरिद्रागणपति [संज्ञा पु.] (सं.) गणेशजी की मूर्ति जिन पर मंत्र पढ़कर हलदी चढ़ाई जाती है ।

हरिद्राद्वय [संज्ञा पु.] (सं) हलदी और दारुहलदी ।

हरिद्राप्रमेह, हरिद्रामेह [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमें हल्दी जैसा पीला पेशाब आता है ।

हरिद्राराग [संज्ञा पु] (सं) साहित्य में पूर्वराग का एक भेद वह प्रेम जो हल्दी के समान कच्चा हो

हरिद्वार [संज्ञा पु.] (सं.) उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो गंगातट पर है ।

हरि-धनुष [संज्ञा पु] (सं) इन्द्रधनुष ।

हरि-धाम [संज्ञा पु.] (सं.) वैकुण्ठ ।

हरिन [संज्ञा पु.](सं.) [स्त्री हरिनी] हिरन । मृग ।

हरिनक्षत्र [संज्ञा पु.] (सं.) श्रवणनक्षत्र ।

हरिनख [संज्ञा पु.] (सं.) सिंह या बाघ का नाखून

हरिनग* [संज्ञा पु.] (सं) साँप की मणि ।

हरिनहर्रा [संज्ञा पु] (देश.) एक बड़ा सदाबहार वृक्ष । सोहाग ।

हरिनाकुस* [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'हिरण्यकशिपु'

हरिनाक्ष [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिरण्याक्ष'।

हरिनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) हनुमान।

हरिनाम [संज्ञा पु.] (सं.) (जपने की दृष्टि से) ईश्वर या भगवान का नाम।

हरिनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हिरन की मादा। २-जूही का फूल। ३-बाजपक्षी की मादा।

हरिपद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बैकुण्ठ। २-एक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरण १६ तथा दूसरे और चौथे चरण में ११ मात्राएँ होती हैं।

हरिपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) कृष्णचंदन।

हरिपुर [संज्ञा पु.] (सं.) वैकुंठ।

हरिपैड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हरिद्वार तीर्थ में गंगा का एक विशेष घाट।

हरिप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रप्रस्थ।

हरिप्रिय [संज्ञा पु.] (सं.) १-कदम्ब। २-गुलदुपहरिया। ३-शंख। ४-मूर्ख आदमी। ५-पागल। ६-बकतर। सनाट।

हरिप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-तुलसी। ३-पृथ्वी। ४-मधु। ५-मद्य। ६-द्वादशी। ७-लाल चन्दन। ८-एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १२, १२, १२ और १० के विराम से ४६ मात्राएँ होती हैं।

हरिप्रीता [संज्ञा पु.] (सं.) ज्योतिष में एक मुहूर्त्त का नाम।

हरिबीज [संज्ञा पु.] (सं.) हरताल।

हरिबोधिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.) कार्त्तिक-शुक्ल-एकादशी

हरिभक्त [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु या भगवान का भक्त।

हरिभक्ति [संज्ञा स्त्री.](सं.) ईश्वर की भक्ति या प्रेम

हरिभुज [संज्ञा पु.] (सं.) सर्प। साँप।

हरिमंथ, हरिमन्थ [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्निमंथ। २-मटर। ३-चना। ४-एक प्रदेश का नाम।

हरिमेध [संज्ञा पु.](सं.) १-अश्वमेधयज्ञ। २-विष्णु का नाम।

हरियर+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरीरा'। [वि.]) देखो 'हरा'।

हरियराना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हरिअराना'।

हरिया+ [संज्ञा पु.] (हिं.) हल जोतने वाला। हलवाहा।

हरियाई* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरियाली'।

हरिया-थोथा [संज्ञा पु.] (हिं.) नीलाथोथा। तूतिया

हरि-यान [संज्ञा पु.](सं.) विष्णु के वाहन, गरुड़।

हरियाना [क्रि. अ.](हिं.) देखो 'हरिआना'। [संज्ञा पु.] रोहतक, हिसार और करनाल का प्रदेश।

हरियानी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) हरियाना प्रदेश की बोली

हरियारी, हरियाली [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-हरे-भरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार। २-हरा चारा। ३-दूब। दूर्वा। हरियाली सूझना–कठिन अवसर पर भी उमंग, प्रसन्नता अथवा दूर की असंभव बातें सूझना।

हरियाली-तीज [संज्ञा स्त्री.](हिं.) सावन बदी तीज

हरियाँव [संज्ञा पु.](देश.) फसल की वह बटाई जिस में सात भाग जमींदार और नौ भाग काश्तकार के होते हैं।

हरियोजन [संज्ञा पु.] (सं.) रथ में घोड़ा जोड़ना।

हरियोनि [संज्ञा पु.] (सं.) ब्रह्मा।

हरिल [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'हारिल'।

हरिलीला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।

हरिलोक [संज्ञा पु.] (सं.) वैकुण्ठ।

हरिलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) १-केकड़ा। २-उल्लू।

हरिवंश [संज्ञा पु.] (सं.) १-श्रीकृष्ण का कुल। २ एक ग्रंथ जो महाभारत का परिशिष्ट माना जाता है।

हरिवर्ष [संज्ञा पु.] (सं.) जंबूद्वीप के नौ खंडों में से एक

हरिवल्लभ [संज्ञा पु] (सं.) मुचकुन का वृक्ष।

हरिवल्लभा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-लक्ष्मी। २-तुलसी ३-मलमास की कृष्ण-एकादशी।

हरिवास [संज्ञा पु.] (सं.) पीपल। अश्वत्थ।

हरिवासर [संज्ञा पु.] (सं.) १-रविवार। २-विष्णु का दिन। एकादशी।

हरिवाहन [संज्ञा पु.] (सं.) १-गरुड़। २-सूर्य। ३ इन्द्र

हरिशंकर, हरिशङ्कर [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु और शिव। २-एक रसौषध।

हरिशयनी [संज्ञा पु.] (सं.) आषाढ़शुक्ला-एकादशी

हरिशर [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

हरिश्चंद्र, हरिश्चन्द्र [वि.] (सं.) सोने की चमक वाला। [संज्ञा पु.] सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध सत्यवादी राजा का नाम।

हरिश्मश्रु [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्याक्ष दैत्य के एक पुत्र का नाम।

हरिसंकीर्त्तन, हरिसङ्कीर्त्तन [संज्ञा पु.] (सं.) श्रीहरि का नामोच्चारण।

हरिस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हल का वह लट्ठा जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी और दूसरे सिरे पर जूआ रहता है।

हरिसिंगार [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरसिंगार'।

हरिसुत [संज्ञा पु.] (सं.) १-कृष्णपुत्र प्रद्युम्न। २-इन्द्रपुत्र अर्जुन।

हरिहरक्षेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) बिहार राज्य का एक तीर्थस्थान।

हरिहाई* [वि.] (हिं.) हरहाया की स्त्री।

हरिहित [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रवधू। बीरबहूटी।

हरी [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] हरित। सब्ज। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण और अन्त में गुरु लघु होते हैं।

*[संज्ञा स्त्री.](हिं.) जमींदार के खेत की जुताई में आसामियों का हलबैल देकर या काम करके सहायता करना। [संज्ञा पु.] देखो 'हरि'।

हरीकसीस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हीराकसीस'

हरीकेन [संज्ञा पु.](अं.) एक प्रकार की दस्ती लालटेन

हरीचाह [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार की घास जिस की जड़ में नीबू की सी सुगन्ध आती है।

हरीचुग+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो केवल अच्छे समय में साथ दे।

हरीत [संज्ञा पु.] देखो 'हारीत'।

हरीतकी [संज्ञा स्त्री] (सं.) हड़। हर्रे

हरीतक्यादिक्वाथ [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का काढ़ा जो मूत्रकृच्छ्र और बन्धकुष्ठ रोग में दिया जाता था।

हरीतिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हरेभरे पेड़ों का विस्तार। हरियाली। २-हरापन।

हरीफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-दुश्मन। शत्रु। २-प्रतिद्वंद्वी। विरोधी।

हरीरा [संज्ञा पु.] (अ.) दूध में मेवे-मसाले डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ। *[वि.] (हिं.) [स्त्री. हरीरी] १-हरा। सब्ज। २-प्रसन्न। हर्षित

हरीरी [संज्ञा स्त्री.](अ.) हरीरा। [वि.] (हिं.)[स्त्री. प्र.] देखो 'हरीरा'।

हरील+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हारिल'।

हरीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-बन्दरों के राजा। २-हनुमान्। ३-सुग्रीव।

हरीस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरिस'।

हरुअ*, हरुआ* [वि.](हिं.) हलका। जो भारी न हो

हरुआई+ [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हलकापन। २-फुरती

हरुआना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-हलका होना। २-फुरती करना। ३-जल्दी मचाना।

हरुई+ [वि.] (हिं.) [स्त्री. प्र.] देखो 'हरुआ'।

हरुए* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'हरुएँ'।

हरुवा+ [वि.] (हिं.) देखो 'हरुआ'।

हरू [वि.] (हिं.) देखो 'हलका'।

हरूफ़ [संज्ञा पु.] (अ.) अक्षर। हरफ।

हरे [संज्ञा पु.] (सं.) 'हरि' का सम्बोधनसूचक रूप।

हरेक [वि.] (हिं.) हरएक (अशुद्ध रूप)।

हरेणु [संज्ञा पु.] (सं.) १-मटर। २-हदबन्दी के लिये लगाई हुई बाढ़।

हरेना+ [संज्ञा पु.] (हिं.) एक विशेष प्रकार का चारा यह ब्याने वाली गाय को देते हैं।

हरेरा+ [वि.] (हिं.) देखो 'हरा'।

हरेरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरियाली'।

हरेव [संज्ञा पु.] (देश.) १-मंगोलों का देश। २-मंगोलजाति।

हरेवा [संज्ञा पु.] (हिं.) हरे रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच काली और पैर पीले होते हैं।

हरैं* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'हरे'।

हरैना [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हरैनी] हल में लगी हुई वह मोटी गावदुम लकड़ी जिसमें लोहे की फाल ठुकी होती है।

हरैनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हरैना'।

हरैया* [संज्ञा पु.](हिं.) १-हरण करने वाला। २-दूर करने या मिटाने वाला।

हरौना [संज्ञा पु] (हिं.) एक प्रकार की अरहर।

हरौल, हरोल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरावल'।

हर्गोहर* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) बलपूर्वक छीनना।

हर्ज [संज्ञा पु.](अ.) १-बाधा। अड़चन। २-हानि। नुकसान। यौ०-हर्जमर्ज-अड़चन। विघ्न।

हर्त्ता [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हर्त्री] १-हरण करने वाला। २-नाश करने वाला।

हर्त्तार [संज्ञा पु.] (सं.) हरण करने वाला। हर्त्ता'

हर्द+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हल्दी'।

हर्दी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हल्दी'।

हर्फ़ [संज्ञा पु] (अ.) देखो 'हरफ'।

हर्बा [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'हरबा'।

हर्मुट [संज्ञा पु] (सं) १-सूर्य। २-कछुआ।

हर्म्य [संज्ञा पु.](सं.) १-महल। प्रासाद। २-हवेली। ३-नरक।

हर्म्यपृष्ठ [संज्ञा पु] (सं) मकान की छत।

हर्यश्वचाप [संज्ञा पु.] (सं.) इन्द्रधनुष।

हर्र [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'हड'।

हर्रा [संज्ञा पु] (हिं.) बड़ी जाति की हड़

हर्रे [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'हड़'।

हर्रैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हाथ में पहनने का एक प्रकार का गहना। २-माला या कंठे के दोनों छोरों पर का चिपटा दाना जिसके आगे सुराही होती है।

हर्ष [संज्ञा पु] (सं) १-प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खड़े होना। रोमांच। २-प्रसन्नता। खुशी। हर्ष-विषाद-खुशी और रंज।

हर्षक [संज्ञा पु](सं)आनन्ददायक। हर्ष करने वाला

हर्षकर [संज्ञा पु] (सं) खुश करने वाला। आनन्द देने वाला।

हर्षकीलक [संज्ञा पु.] (सं) कामशास्त्र के अनुसार एक आसन का नाम।

हर्षण [संज्ञा पु.](सं.)१-प्रसन्नता या भय के कारण रोएं खड़े होना। २-प्रफुल्लित करना या होना। ३-आंख का एक रोग। ४-फलित ज्योतिष में में एक योग। ५-काम के वेग से इन्द्रिय का तनाव। ६-अस्त्र का एक संहार।

हर्षधारिका [संज्ञा स्त्री] (सं) संगीत में ताल के चौदह भेदों में से एक।

हर्षना* [क्रि अ] (हिं) प्रसन्न होना।

हर्षनाद [संज्ञा पु.] (सं) आनन्द ध्वनि। आनन्द-सूचक शब्द।

हर्षनिस्वनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) एक रागिनी (संगीत)

हर्षाना* [क्रि अ] (हिं) प्रसन्न होना। [क्रि स] प्रसन्न करना।

हर्षित [वि] (सं.) प्रसन्न। प्रफुल्ल। आनंदित।

हर्षुल [वि] (सं) हर्षित रहने वाला। (सं) १-प्रेमी। प्रियतम। २-हिरन। मृग।

हर्षुला [संज्ञा स्त्री.] (सं) वह कन्या जिसकी ठुड्डी में बल या दाढ़ी हो।

हर्षोत्फुल्ल [वि] (सं.) खुशी से फूला हुआ।

हर्सा+ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'हरिस'।

हल् [संज्ञा पु] (सं) शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो। जैसे--सम्राट् में का 'ट्'।

हलंत, हलन्त [संज्ञा पु] (सं) देखो 'हल्'।

हल [संज्ञा पु.] (सं) १-जमीन जोतने का एक प्रसिद्ध यंत्र या उपकरण। २-जमीन नापने का लट्ठा। ३-उत्तर के एक देश का नाम। ४-पैर की एक रेखा या चिह्न।
[संज्ञा पु.] (अ.) १-हिसाब लगाना। २-किसी समस्या का समाधान या निराकरण।

हलकंप [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हड़कंप'।

हलक़ [संज्ञा पु] (अ.) गले की नली। कंठ। मु०-हलक के नीचे उतरना-१-पेट में आना। २-(किसी बात का) असर होना।

हलकई+ [संज्ञा स्त्री.](हिं) १-हलकापन। २-ओछापन। तुच्छता। ३-हेटी। अप्रतिष्ठा।

हलककुई [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'हरैना'।

हलकना [क्रि. अ] (हिं) १-बरतन में भरे हुए जल का हिलने पर शब्द करना। २-हिलोरें लेना। लहराना। ३-हिलना। ४-बत्ती की लौ का झिलमिलाना।

हलकम [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हड़कंप'।

हलका [वि.] (हिं.) १-जो भारी न हो। कम वजन का। २-जो तेज या चटकीला न हो। ३-जो गाढ़ा न हो। पतला। ४-जो गहरा न हो। उथला। ५ जो उपजाऊ न हो। ६-कम। थोड़ा। ७-जो जोर का न हो। मंद। ८-ओछा। तुच्छ। टुच्चा। ९-सहज। सुख साध्य। १०-निश्चिन्त। ११-प्रसन्न। प्रफुल्ल। १२-पतला। महीन। १३-ताजा हरा। १४-कम अच्छा। घटिया। १५-खाली। छूँछ। मु०-हलका करना-अपमानित करना। हलकी बात-१-ओछी या टुच्ची बात। २-बुरी। बात। हलके भारी होना-१-ऊबना। २-लोगों की नजर से ओछा बनना। (लोगों की दृष्टि में) हलका होना-बुरा समझा जाना। हलके हलके-धीरे-धीरे। मंद गति से। हलका होना-हलका सुनहरी रङ्ग।

हलक़ा [संज्ञा पु] (अं) १-वृत्त। गोलाई। २-घेरा परिधि। ३ मंडली। झुण्ड। ४-हाथियों का झुंड ५-किसी विशेष कार्य के लिये निर्धारित कुछ गाँवों और कसबों का समूह।

हलकाई+ [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'हलकापन'।

हलकान [वि] (हिं) देखो 'हैरान'।

हलकाना+ [क्रि अ.](हिं) हलका होना। बोझ कम होना। [क्रि स] १ हिलोरा देना। २ देखो 'हिलगाना'।

हलकापन [संज्ञा पु](हिं) १-हलका होने का भाव। लघुता। २-ओछापन। नीचता। ३-अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलकारा+ [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'हरकारा'।

हलकारी [संज्ञा स्त्री] (हिं) १-कपड़े का रङ्ग पक्का करने के लिये पहले उसमें फिटकरी, हड़ आदि का पुट देना। २-हल्दी मिले रङ्ग से कपड़ों के किनारे की छपाई।

हलकोरा+ [संज्ञा पु] (हिं.) हिलोरा। तरंग। लहर

हलगोलक [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का कीड़ा।

हलग्राही [वि] (सं) हल पकड़कर खेत जोतने वाला [संज्ञा पु] किसान।

हलचल [संज्ञा स्त्री](हिं.) १-हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। २-जन साधारण में घबराहट फैलने के कारण होने वाली दौड़धूप, भगदड़, शोरगुल, विकलता आदि। खलबली। [वि.] डगमगाता या हिलता हुआ।

हलजीवी [वि.] (सं.) हल चलाकर खेती करने वाला [संज्ञा पु.] किसान।

हलजुता [संज्ञा पु.] (हिं.) १-तुच्छ या मामूली किसान। २-गँवार।

हलड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलरा'।

हलदंड, हलदण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'हरिस'।

हलद+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो हलदी'।

हलदहात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विवाह के समय वर और कन्या के शरीर पर हलदी और तेल लगाने की रस्म जो तीन या पाँच दिन पहले होती है।

हलदी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) एक प्रसिद्ध पौधे की जड़ जो गाँठ के रूप में होती है। यह मसाले या रँगाई के काम में आती है। हलदी उठना या चढ़ना-विवाह के पहले वर और कन्या के शरीर में हलदी और तेल लगना। हलदी लगा के बैठना-१-एक जगह बैठे रहना, किसी कामधाम को हाथ न लगाना। २-कहा०-हलदी लगे न फिटकरी-बिना कुछ खर्च या परिश्रम किये हुए। मुफ्त में

हलदू [संज्ञा पु.](हिं.) एक बहुत ऊंचा वृक्ष जिसकी पीली लकड़ी बहुत पुष्ट होती है।

हलधर [संज्ञा पु.] (सं.) बलरामजी।

हलना* [क्रि. अ] (हिं.) १-हिलना। २-घुसना। पैठना।

हलपत+ [संज्ञा पु.](हिं.) हल की आड़ी लकड़ी जो बीच में चौड़ी होती है।

हलपाणि [संज्ञा पु.] (हिं.) बलराम जी।

हलफ़ [संज्ञा पु.] (अं.) ईश्वर को साक्षी मानकर कही जाने वाली बात। कसम। सौगंध। हलफ *उठाना या लेना*-ईश्वर को साक्षी करके कहना।

हलफ़नामा [संज्ञा पु.] (अ., फ़ा.) शपथ-पत्र।

हलफा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिलोर। लहर। तरंग। *हलफा मारना*-लहरें लेना।

हलब [संज्ञा पु.](देश.) फारस की ओर का एक देश जहाँ का काँच प्रसिद्ध था।

हलबल [संज्ञा पु.] (हिं.) हलचल। खलबली।

हलबलाना [क्रि. अ.] (हिं.) भय या शीघ्रता आदि के कारण घबराना। [क्रि. स] दूसरे को घबराने में प्रवृत्त करना।

हलबलाहट [संज्ञा स्त्री](हिं.) हलबलाने की क्रिया या भाव। खलबली। घबराहट।

हलबी, हलब्बी [वि.] (हिं.) हलब देश का (शीशा)। बढ़िया (शीशा)।

हलभल+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलबल'।

हलभली+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-खलबली। घबराहट। २-जल्दी। हड़बड़ी।

हलभृत [संज्ञा पु.] (सं.) बलराम।

हलमरिया [संज्ञा स्त्री] (हिं.) जहाज का पेंदा।

हलमिललैला [संज्ञा पु.] (सिंहली) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

हलमुख [संज्ञा पु.] (सं.) हल का फल।

हलमुखी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण और सगण होते हैं

हलयंत्र, हलयन्त्र [संज्ञा पु.](सं.) इञ्जन की सहायता से चलने वाला बड़ा हल जो बहुत अधिक भूमि को जल्दी जोत सकता है। ट्रैक्टर।

हलराना [क्रि. स.] (हिं.) बच्चों को हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना। [क्रि. अ.](हिं.) इधर-उधर हिलना-डोलना।

हलवत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वर्ष में पहले-पहल खेत में हल लेजाने की रीति।

हलवा [संज्ञा पु] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य पदार्थ। मोहनभोग। २-गीली और मुलायम वस्तु। मु०-हलवे के भाँड़ से काम-लाभ से ही मतलब। हलवा निकलना-बहुत मारना या पीटना

हलवाइन [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-हलवाई की स्त्री। २-मिठाई बनाने का काम करने वाली स्त्री।

हलवाई [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचने वाला।

हलवाह, हलवाहा [संज्ञा पु.](हिं.)हल चलाने वाला

हलहल [संज्ञा पु.] (सं) हल चलना। [संज्ञा पु.] (हिं.)वह शब्द जो किसी वस्तु में भरे जल से हो

हलहला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आनन्दसूचक ध्वनि किलकार।

हलहलाना+ [क्रि. स.](हिं.) जोर से हिलाना। झकझोरना। [क्रि. अ.] (हिं.) काँपना। थरथराना।

हलाक [वि.] (अ.) मारा या बध किया हुआ। हत मु०-हलाल करना-मार डालना।

हलाकत [संज्ञा स्त्री.] (अ) १-वध। हत्या। २-मृत्यु। विनाश।

हलाकान+ [वि] (हिं.) परेशान। हैरान। तंग।

हलाकानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) परेशानी। हैरानी।

हलाकी, हलाकू [वि] (हिं.) हलाक करने वाला। मार डालने वाला।

हलाचली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हलचल'।

हलाना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'हिलाना'।

हलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या गहरे रङ्ग के रोएँ हों।

हलाभला [संज्ञा पु.](हिं.) १-निर्णय। २-निपटारा।

हलाभियोग [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'हलवत'।

हलायुध [संज्ञा पु.] (सं.) बलरामजी।

हलाल [वि.] (अ) जो शरअ या इस्लामी धर्म शास्त्रानुकूल ठीक हो। जायज। [संज्ञा पु.] वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक मे आज्ञा हो। *हलाल करना*-१-मुसलमानी धर्मानुसार पशु की हत्या करना। जिबह करना। २-मार डालना। *हलाल का*-ईमानदारी से कमाया या लिया हुआ।

हलालखोर [संज्ञा पु.] (अ., फा) [स्त्री. हलालखोरी, हलालखोरिन] १-हलाल की कमाई खाने वाला। भंगी। मेहतर।

हलालखोरी [संज्ञास्त्री] (अ., फा.) १-हलालखोर स्त्री। मेहतर या भंगी की स्त्री। ३-हलालखोर का काम या भाव।

हलाहल [संज्ञा पु.](सं.) १-प्रचंड विष जो समुद्र मंथन के समय निकला था। २-उग्रविष। भारी जहर। ३-एक जहरीले पौधे का नाम।

हलिचण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का सिंह।

हलिप्रिया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मद्य। मदिरा। २-ताड़ी।

हलिमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कुमार कार्त्तिकेय की एक मातृका नाम।

हली [संज्ञा पु.] (सं.) १-बलराम। २-किसान।

हलीम [संज्ञा पु.] (सं.) केतकी। [संज्ञा पु.] (देश.) मटर का डंठल। [वि.] (अ.) सुशील और शांत [संज्ञा पु.](अ.)एक प्रकार का खाना जो मुहर्रम में बनाया जाता है।

हलीमक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पांडुरोग।

हलीसा [संज्ञा पु.] (हिं.) नाव खेने का छोटा डाँड़। चप्पू।

हलुआ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलवा'।

हलुक* [वि] (हिं.) देखो 'हलका'।

हलुकई+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हलकाई। हलकापन।

हलुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलवा'।

हलुवाई+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हलवाई'।

हलुहार [संज्ञा पु.] (सं.) काले अंडकोश और माथे पर दागवाला घोड़ा।

हलूक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) १-वमन। कै। २-वमन से एक बार में निकलने वाला पदार्थ।

हलूफा [संज्ञा पु.] (अ.) वे मिठाइयां, पकवान आदि जो कुछ विशिष्ट जातियों में विवाह से एक दो दिन पहले लड़की वालों के यहां से लड़के वालों के यहां भेजते हैं

हलेग* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिलोर'।

हलेसा [संज्ञा पु] (हिं.) देखो 'हलीस'।

हलोर* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) हिलोरा। तरंग। लहर।

हलोरना [क्रि. स] (हिं) १-पानी में हिलोरा उत्पन्न करना। २-अनाज फटकना। ३-दोनों हाथों से (धन आदि) समेटना।

हलोरा* [संज्ञा पु] (हिं.) लहर। तरंग। हिलोरा।

हल्का [वि.] (हिं.) देखो 'हलका'।

हल्द [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'हलद'।

हल्दहात [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हलदहात'।

हल्दी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हलदी'।

हल्य [वि.] (सं.) हल चलाने योग्य।

हल्या [संज्ञा स्त्री] (सं.) हलों का समुदाय।

हल्लक [संज्ञा पु.] (सं) लाल कमल।

हल्लन [संज्ञा पु.] (सं) १-करवट बदलना। २-इधर से उधर हिलना-डोलना।

हल्ला [संज्ञा पु] (हिं.) १-शोरगुल। कोलाहल। २-लड़ाई के समय की ललकार या शोर। ३-आक्रमण। पढ़ाई।

हल्लीश [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रकार का नृत्य प्रधान और एक अंक वाला उपरूपक। २-मंडल बांधकर होने वाला एक प्रकार का नाच।

हव [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि में दी हुई आहुति। वलि। २-अग्नि। आग।

हवन [संज्ञा पु.] (सं.) १-मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य। होम। २-अग्नि। आग। ३-अग्निकुण्ड। ४-हवन करने का चमचा। श्रुवा।

हवनीय [वि.] (सं.) जो हवन के योग्य हो या जिसे आहुति के रूप में अग्नि में डालना हो। [संज्ञा पु.] हवन करते समय अग्नि में डाला जाने वाला पदार्थ।

हवलदार [संज्ञा पु] (फा.) पुलिस या फौज का छोटा अफसर।

हवस [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लालसा। चाह। इच्छा २-तृष्णा। *हवस पूरी करना*-इच्छापूर्ण करना।

हवा [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-वह तत्व जो प्रायः सर्वत्र चलता रहता है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं पवन। वायु। २-भूत। प्रेत। ३-यश। कीर्त्ति ४-महत्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख। ५-किसी बात की सनक या धुन। *हवा उड़ना*-खबर फैलना। *हवा उड़ाना*-१-पादना। २-अफवाह फैलाना। *हवा करना*-पंखा झलना। *हवा के घोड़े पर सवार होना*-१-बहुत जल्दी में होना। २-किसी तरह के नशे या गहरी उमंग में होना। *हवा गिरना*-हवा थमना। *हवा खाना*-१-शुद्ध वायु का सेवन करना। २-विफल या वंचित होना। *हवा गाँठ में बाँधना*-अनहोनी बात के पीछे हैरान होना। *हवा फाँककर या पीकर रहना*-बिना कुछ खाये-पीये रहना (व्यंग्य) *हवा बताना*-इधर-उधर की बात कहकर टाल देना। *हवा बाँधकर जाना*-हवा की चाल से विपरीत जाना। *हवा बाँधना*-गप्प या शेखी हाँकना। *हवा पलटना, फिरना या बदलना*-कोई नई स्थिति उत्पन्न होना। हालत बदलना। *हवा भर जाना*-खुशी या घमंड से फूल जाना। *हवा बिगड़ना*-सारी परिस्थिति खराब होना। *दिमाग में हवा भर जाना*-सिर फिरना। *हवा देना*-१-फूकना। २-बाहर हवा में रखना। ३-झगड़ा उकसाना। *हवा-सा*-बिलकुल पतला या हलका *हवा से लड़ना*-किसी से अकारण लड़ना। *हवा से बातें करना*-बहुत तेज दौड़ना या चलना। *(किसी की)हवा लगना*-संगत का प्रभाव पड़ना *हवा लगना*-१-हवा या वायु का स्पर्श होना। २-वातरोग से पीड़ित होना। ३-उन्माद होना। *हवा हो जाना*-१-बहुत जल्दी चले जाना। २-न रह जाना। गायब हो जाना। *हवा उखड़ना*-१-प्रसिद्धि न रहना। २-बाजार में साख होना। *हवा बिगड़ना*-पहले की सी मर्यादा या धाक न रहना।

हवाई [वि.] (अ.) १-हवा का। वायु-सम्बन्धी। २-हवा में चलने वाला। ३-कल्पित या झूठ। निर्मूल। *(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना*-चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

हवाई-अड्डा [संज्ञा पु](हिं.)वह स्थान जहाँ हवाई जहाज यात्रियों को उतारने-चढ़ाने के लिए आकर ठहरते हैं। एयरोड्रम।

हवाई-अलाम [संज्ञा पु] (अ., अं.) हवाई हमले के समय लोगों को सचेत करने के लिये बजने वाला भोंपू। एयररेड अलार्म।

हवाई-जहाज [संज्ञा पु.] (अ.) हवा में पड़ने वाला जहाज। वायुयान। एयरोप्लेन।

हवाई-रक्षागार [संज्ञा पु.] (अ., सं)वह स्थान जहाँ हवाई हमले के समय लोग रक्षा के लिए छुपते हैं। एयररेड शैल्टर।

हवाई-शक्ति [संज्ञा स्त्री.] (अ., सं.) किसी देश की सेना का वह बल जो बममार हवाई जहाजों और हवाई जहाज से कुशलतापूर्वक युद्ध करने वाले सैनिकों के रूप में हो। एयरफोर्स।

हवाई-हमला [संज्ञा पु.](अ.)शत्रु के वायुयानों द्वारा किसी नागरिक जनता और सार्वजनिक उपयोग की वस्तुओं या स्थानों पर की जाने वाली बमबारी। एयररेड। पद०-*हवाई हमले की चेतावनी*-हवाई हमले के समय लोगों को सचेत करने के लिए बजने वाला भोंपू। एयररेडवार्निंग। *हवाई हमले से बचाव*-हवाई हमले के समय किया जाने वाला बचाव जो रक्षागारों में छुपकर और शत्रु के हवाई जहाजों को गोला मारकर किया जाता है। *हवाई हमले से हिफाजत*-नागरिकों का वह अर्ध सैनिक दल जो जनता को हवाई हमले के समय

सब प्रकार की सुविधा करता है। जैसे—आग बुझाना, आहतों की मरहम-पट्टी आदि। इ. इ. हि.। ए आर. पी.।

हवागाड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) यंत्र की सहायता से सड़कों पर दौड़ने वाली गाड़ी। मोटर।

हवागीर [संज्ञा पु.] (फा.) आतिशबाजी के बान बनाने वाला।

हवाचक्की [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हवा के जोर से चलने वाली आटे की चक्की। २-इस प्रकार का कोई यंत्र।

हवादार [वि.] (फा.) जिसमें हवा का आने-जाने के लिए खिड़कियाँ आदि हों। [संज्ञा पु.] (फा.) सवारी के काम का एक प्रकार का हलका तख्त।

हवान [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार की छोटी तोप जो जहाजों पर रहती है।

हवाना [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का तम्बाकू।

हवाबाज [संज्ञा पु.] (अ, फा.) वह जो हवाई जहाज चलाता हो। उड़ाका।

हवाल [संज्ञा पु] (अं.) १-हाल। दशा। २-परिणाम ३-वृत्तांत।

हवालदार [संज्ञा पु] (फा.) देखो 'हवलदार'।

हवाला [संज्ञा पु.] (अं) १-प्रमाण का उल्लेख। २-दृष्टांत। मिसाल। ३-सपुर्दगी। जिम्मेदारी। मुहा०-(किसी के) हवाले करना-किसी के हाथ सौंपना। किसी को दे देना। (किसी के) हवाले पड़ना-वश में आ जाना। चुंगल में आना।

हवालात [संज्ञा पु, स्त्री.] (अं) १-पहरे में रखा जाना। २-वह स्थान जहाँ विचार होने तक अभियुक्त पहरे में रखा जाता है।
मु०-हवालात करना-पहरे के भीतर बन्द करना।

हवालाती [वि] (अं.) १-हवालात-सम्बन्धी। २-हवालात में रखा हुआ (अभियुक्त)।

हवाली [संज्ञा स्त्री] (अं) आस-पास के स्थान विशेषत: किसी के आस-पास के गाँव आदि।

हवास [संज्ञा पु] (अं) १-इन्द्रियां। २-संवेदन। ३-चेतना। सुध। होश। मु०-हवास गुम होना-होश ठिकाने न रहना। कर्त्तव्य न सूझना।

हवि [संज्ञा पु.] (सं) आहुति देने की वस्तु।

हवित्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हवनकुण्ड।

हविर्गृह [संज्ञा पु.] (सं.) वह घर या मकान जहाँ हवन किया जाता हो।

हविर्धानी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कामधेनु।

हविर्भुज् [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

हविर्भू [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हवन की भूमि।

हविर्यज्ञ [संज्ञा पु] (सं) हवि द्वारा किया हुआ यज्ञ

हविर्हुति [संज्ञा स्त्री] (सं) घृत की आहुति।

हविष्कृत [वि] (सं.) यज्ञ।

हविष्पति [संज्ञा पु] (सं) यजमान।

हविष्मती [संज्ञा स्त्री.] कामधेनु।

हविष्मान् [वि.] [स्त्री हविष्मती] हवन करने वाला

हविष्य [वि.] (सं) १ हवन करने योग्य। २-जिसकी आहुति दी जाने वाली हो। [संज्ञा पु.] (सं.) १-देवता के उद्देश्य से अग्नि में डाली जाने वाली बलि। हवि। २-देखो 'हविष्यान्न'।

हविष्यान्न [संज्ञा पु.] (सं.) व्रत, यज्ञ आदि के दिन या उससे पहले दिन किया जाने वाला कुछ विशिष्ट भोजन।

हविस [संज्ञा स्त्री.] देखो 'हवस'।

हवीत [संज्ञा पु.] (?) वह गड़ारी जिसमें लंगर की रस्सी लपेटी जाती है।

हवेली [संज्ञा स्त्री] (अं.) १-पक्का बड़ा मकान। २-पत्नी। जोरू। स्त्री।

हव्य [संज्ञा पु.] (सं.) हवन की वस्तु।

हव्यभुज [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

हव्ययोनि [संज्ञा पु.] (सं) देवता।

हव्यवाट [संज्ञा पु] (सं) अग्निदेवता।

हव्यवाह [संज्ञा पु.] (सं) १-अग्नि। २-पीपल का पेड़

हव्याश, हव्याशन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

हसंतिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अँगीठी। गोरसी।

हसद [संज्ञा पु.] (अं.) ईर्ष्या। डाह।

हसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-हँसना। २-परिहास। दिल्लगी। [संज्ञा पु.] (अं) अली के दो बेटों में से एक जिनके शोक में शिया मुसलमान मुहर्रम मनाते हैं।

हसब [अव्य] (अं) अनुसार। मुताबिक।

हसर [संज्ञा पु] (अं) रिसाले के सवारों के तीन भेदों में से एक।

हसरत [संज्ञा स्त्री] (अं.) १-दुःख। अफसोस। २-हार्दिक कामना।

हसावर [संज्ञा पु] (हिं) खाकी रंग की एक बड़ी चिड़िया।

हसिक [वि] (सं) हँसी-दिल्लगी करने वाला।

हसिका [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २-उपहास। ठट्ठा।

हसित [वि] (सं) १-जिस पर लोग हँसते हों। २-हँसने वाला। ३-खिला हुआ। [संज्ञा पु.] १-हास। हँसना। २-उपहास। ३-कामदेव का धनुष।

हसिर [संज्ञा पु] (सं.) एक प्रकार का चूहा।

हसीन [वि.] (अं.) बहुत सुन्दर।

हसील+ [वि] (हिं) सीधा-साधा।

हस्त [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ। २-हाथी की सूँड़। ३-चौबीस अंगुल की एक नाप। ४-एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं। ५-हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ६-सङ्गीत या नृत्य में हाथ हिलाकर भाव बताना। ७-छन्द का एक चरण। ८-गुच्छा। समूह। ९-वासुदेव के एक पुत्र का नाम।

हस्तक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ। २-सङ्गीत का ताल ३-हाथ से बजाई हुई ताली। ४-करताल। ५-नृत्य में हाथों की मुद्रा।

हस्तकार्य [संज्ञा पु] (सं.) १-हाथ का काम। २-दस्तकारी।

हस्तकोहली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वर और कन्या की कलाई में मंगलसूत्र बाँधने की क्रिया।

हस्तकौशल [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ की कारीगरी।

हस्तक्रिया [संज्ञा स्त्री] (सं) १-हस्तकारी। २-हस्तमैथुन :

हस्तक्षेप [संज्ञा पु.] (सं) किसी होते या चलते हुये काम में कुछ फेर बदल करने के लिये हाथ डालना या कुछ कहना। दखल देना। इन्टरफिअरेंस।

हस्तगत [वि.] (सं.) हाथ में आया या मिला हुआ। प्राप्त। हासिल।

हस्तग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ पकड़ना। २-पाणिग्रहण। विवाह।

हस्तग्राह [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो हाथ पकड़े।

हस्तग्राहक [वि.] (सं) हाथ पकड़ने वाला।

हस्तचापल्य [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ की सफाई।

हस्ततल [संज्ञा पु] (सं.) हथेली।

हस्तत्राण [संज्ञा पु.] (सं.) अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जाने वाला दस्ताना।

हस्तदोष [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ से डाँड़ी मारने या नापने में फरक डालने का अपराध।

हस्तधारण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथ पकड़ना। २-पाणिग्रहण करना। ३-हाथ का सहारा देना। ४-वार को हाथ पर रोकना।

हस्तपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का ताड़।

हस्तपृष्ठ [संज्ञा पु] (सं.) हथेली का पिछला या उल्टा भाग।

हस्तबिंब, हस्तबिम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) शरीर पर सुगन्धित द्रव्यों का लेपन करना।

हस्तमणि [संज्ञा पु.] (सं) कलाई में पहनने का रत्न

हस्तमुद्रा [संज्ञा स्त्री] (सं.) नृत्य आदि में भाव बताने के लिये हाथ को किसी विशेष स्थिति में रखने का ढंग। हस्तक।

हस्तमैथुन [संज्ञा पु] (सं) हाथ के द्वारा इन्द्रिय संचालन।

हस्तयोग [संज्ञा पु.] (सं) हाथ का जोड़ना।

हस्तरेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हथेली पर की रेखाएँ जिन्हें देखकर सामुद्रिक के अनुसार किसी के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाएँ बताई जाती है।

हस्तरोधी [संज्ञा पु.] (सं.) शिव का एक नाम।

हस्तलक्षण [संज्ञा पु.] (सं.) १-हथेली के रेखाओं द्वारा शुभाशुभ बताना। २-अथर्ववेद का एक प्रकरण

हस्तलघाव [संज्ञा पु] (सं.) हाथ की चालाकी, सफाई या फुरती।

हस्तलिखित [वि.] (सं.) हाथ का लिखा हुआ। (ग्रंथ लेख आदि)।

हस्तलिपि, हस्तलेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं) किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। हैंडराइटिंग।

हस्त-वातरक्त [संज्ञा पु.] (सं.) हथेलियों में फुंसियाँ निकलने का रोग विशेष।

हस्तवारण [संज्ञा पु.] (सं.) वार या आघात को हाथ पर रोकना।

हस्त-विन्यास [संज्ञा पु.] (सं.) कर स्थापन।

हस्तविषमकारी [संज्ञा पु.] (सं) हाथ की सफाई से बाजी जीतने वाला।

हस्तशिल्प [संज्ञा पु.] (सं) हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। हैन्डिक्राफ्ट।

हस्तसिद्धि [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-शारीरिक श्रम। २-मजदूरी। वेतन।

हस्तसूत्र [संज्ञा पु.] (सं) कलाई पर बाँधा जाने वाला डोरा (मंगलसूत्र)।

हस्तांतरण, हस्तान्तरण [संज्ञा पु.] (सं.) (संपत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। *ट्रान्सफरेन्स*।

हस्ताक्षर [संज्ञा पु.](सं) लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम जो उस लेख अथवा उसके उत्तरदायित्व की स्वीकृति का सूचक होता है। *सिगनेचर*।

हस्ताक्षरित [वि.] (सं) जिस पर हस्ताक्षर हुए हों।

हस्तामलक [संज्ञा पु.] (सं.) १-वह वस्तु या बात जिसके सभी अंग सामने आते ही स्पष्ट प्रकट हो जाते हों। २-हाथ में लिया हुआ आँवला।

हस्तायुर्वेद [संज्ञा पु.] (सं) हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

हस्तालिगन, हस्तालिङ्गन [संज्ञा पु.] (सं.) हाथ मिलाना।

हस्ताहस्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) हाथापाई। चपत या घूँसे की लड़ाई।

हस्ति [संज्ञा पु.] (सं) गज। हाथी।

हस्तिकंद, हस्तिकन्द [संज्ञा पु] (सं.) एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिकरणक [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का पटल या ढाल जिससे हथियारों का वार रोका जाता है। हाथीकन्द।

हस्तिक [संज्ञा पु] (सं) हाथियों का समूह।

हस्तिकक्ष [संज्ञा पु] (सं) सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार जहरीला कीड़ा।

हस्तिकक्ष्य[संज्ञा पु.](सं)१-सिंह। २-व्याघ्र।बाघ

हस्तिकरंज, हस्तिकरञ्ज [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ी जाति का करंज।

हस्तिकर्ण [संज्ञा पु.] (सं) १-अंडी का पेड़। एरंड। २-पलास का वृक्ष। ३-कच्चू। ४-शिव का एक गण। ५-गण देवताओं में से एक नाम।

हस्तिकर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हठयोग का एक आसन।

हस्तिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमें तार लगे होते थे।

हस्तिकोल [संज्ञा पु.] (सं.) बड़ा बेर।

हस्तिघ्न [वि.] (सं.) हाथी को मारने वाला।

हस्तिदंत, हस्तिदन्त [संज्ञा पु] (सं.) १-हाथी दांत २-कपड़े टांगने की खूँटी जो दीवार में गड़ी होती है। ३-मूली।

हस्तिदंती, हस्तिदन्ती [संज्ञा पु.] (सं) मूली।

हस्तिनख [संज्ञा पु.] (सं.) १-हाथी के नाखून। २-नगर द्वार के पास की या दुर्ग की छोटी बुर्जी।

हस्तिनापुर [संज्ञा पु.] (सं.) दिल्ली से लगभग ५० मील उत्तर पूर्व के कोने में अवस्थित नगर जो चन्द्रवंशियों या कौरवों की राजधानी था।

हस्तिनासा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हाथी की सूँड़।

हस्तिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हाथी की मादा। २-एक सुगन्धद्रव्य। ३-कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से सब से निकृष्ट प्रकार की स्त्री।

हस्तिप, हस्तिपक [संज्ञा पु] (सं) महावत।

हस्तिपद [संज्ञा पु] (सं) हाथी के पांव का चिह्न।

हस्तिपर्णिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तुरई। तरोई।

हस्तिपर्णी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ककड़ी।

हस्तिपिप्पली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गजपिप्पली।

हस्तिप्रमेह [संज्ञा पु.] (सं.) प्रमेह रोग विशेष जिसमें मूत्र के साथ हाथी के मद का सा पदार्थ बिना वेग के तार सा निकलता है तथा रुक-रुक कर पेशाब होता है।

हस्तिमद [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का मद।

हस्तिमल्ल [संज्ञा पु.](सं.) १-ऐरावत। २-गणेश। ३-राख का ढेर। ४-धूल की वर्षा। ५-पाला। ६-पाताल के एक नाग का नाम।

हस्तिमुख [संज्ञा पु.] (सं.) गजानन। गणेश।

हस्तिवाह [संज्ञा पु.] (सं) १-महावत। २-अंकुश।

हस्तिविषाण [संज्ञा पु.] (सं.) केले का वृक्ष।

हस्तिव्यूह [संज्ञा पु.] (सं.) हाथियों का बना हुआ वह व्यूह जिसमें आक्रमण करने वाले हाथी उरस्य में, तेज भागने वाले मध्य में और व्याल पक्ष में हों।

हस्तिशाला [संज्ञा स्त्री] (सं.) फीलखाना।

हस्तिश्यामक [संज्ञा पु] (सं) १-काला। साँवा। २-बाजरा।

हस्तिसूत्र [संज्ञा पु.] (सं) हाथी चलाने की विद्या।

हस्ती [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. हस्तिनी] १-हाथी। २-अजमोदा। ३-चन्द्रवंशी राजा सुहोत्र के एक पुत्र जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया था। ४-धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-अस्तित्व। २-व्यक्तित्व। *(किसी की) क्या हस्ती है*-कोई महत्व नहीं।

हस्ते [अव्य.] (सं) हाथ से। मारफत।

हस्तोदक [संज्ञा पु.] (सं.) हस्तगत जल।

हस्त्यशन [संज्ञा पु.] (सं) लोबान का पौधा।

हहर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कँपकँपी। थर्राहट। २-भय। डर।

हहरना [क्रि. अ] (हिं.) १-काँपना। २-दहलना। थर्राना। ३-दंग रह जाना। चकित होना। ४-ईर्ष्या या डाह करना।

हहराना [क्रि. अ.] (हि.) १-काँपना। २-दहलना। थर्राना। ३-डरना। ४-देखो 'हरहराना'। [क्रि. स.] दहलाना। भयभीत करना।

हहलना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हहरना'।

हहलाना [क्रि. अ.](हिं.) देखो 'हहराना'। [क्रि. स.] देखो 'हहराना'।

हहा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हँसने का शब्द। ठट्ठा। २-हाहाकार। ३-दीनता प्रकट करने या गिड़गिड़ाने का शब्द। ४-हाहाकार। *हहा खाना*-*हाहा खाना*। बहुत गिड़गिड़ाना।

हाँ [अव्य] (हिं.) १-स्वीकृति, समर्थन आदि का सूचक शब्द। २-देखो 'यहाँ'। *हाँ करना*-१-मानना या राजी होना। २-ठीक मान लेना। *हाँ-हाँ करना*-१-मान लेना। २-बात न काटना। ३-खुशामद करना। *हाँजी-हाँजी करना या हाँ में-हाँ मिलाना*-किसी की अनुचित बात भी ठीक मान लेना या बतलाना।

हाँक [संज्ञा स्त्री.] (हिं) १-किसी को पुकारने के लिये कहा हुआ जोर का शब्द। पुकार। २-ललकार। हुंकार। ३-उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४-दुहाई। *हाँक देना, लगाना या मारना*-जोर से पुकारना। *हाँक पुकार कर कहना*-सबके सामने चिल्लाकर या खुलेआम कहना।

हाँकना [क्रि. स.](हिं.) १ जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २-ललकारना। हुंकार करना। ३-बढ़बढ़कर बोलना। ४-जानवरों को चलाने या हटाने के लिये आगे बढ़ाना या इधर-उधर करना। ५-गाड़ी रथ आदि चलाना। ६-पंखे से हवा करना।

हाँका [संज्ञा पु.](हिं.) १-पुकार। टेर। २-ललकार। ३-गरज। ४-देखो 'हँकवा'।

हाँगर [संज्ञा पु.](देश) एक प्रकार की बड़ी मछली

हाँगा [संज्ञा पु] (हिं.) १-शरीर का बल। २-जबरदस्ती। अत्याचार। *हाँगा छूटना*-साहस या हिम्मत न रहना।

हाँगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हामी। स्वीकृति। *हाँगी भरना*-स्वीकार करना या मानना।

हाँड़ना+ [क्रि. अ.] (हिं.) व्यर्थ इधर-उधर फिरना। आंवारा घूमना। [वि.] [स्त्री. हाँड़नी] हाँड़ने वाला। आवारा फिरने वाला।

हाँड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बटलोई या देगची के आकार का मिट्टी का मझोला बरतन। हँड़िया २-इसी आकार का शीशे का वह पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाते हैं। *हाँड़ी उबलना*-१-हाँड़ी में पड़ी वस्तु का गरम होकर ऊपर आना। २-खुशी से फूलना। इतराना। *हाँड़ी पकना*-षड्यन्त्र रचा जाना। *हाँड़ी चढ़ना*-कुछ चीज पकाने के लिये हाँड़ी का आग पर रखा जाना। *बावली हाँड़ी*-वह भोजन जिसमें बहुत सी वस्तुयें एक में मिल गई हों। कहा०-काठ की हाँड़ी-ऐसा छल जो एक से अधिक बार न चल सके।

हाँतअ+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध।

हाँतना* [क्रि. स.] (हिं.) १-अलग करना। २-दूर करना। हटाना।

हाँता* [वि.](हिं.) १-छोड़ा हुआ। अलग किया हुआ २-हटाया हुआ। दूर किया हुआ।

हाँपना, हाँफना[क्रि. अ.](हिं.) परिश्रम करने, दौड़ने आदि के कारण जोर जोर से और जल्दी-जल्दी साँस लेना।

हाँफा [संज्ञा पु.] (हिं.) हाँफने की क्रिया या भाव। जल्दी-जल्दी चलती हुई साँस।

हाँफी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हाँफा'।

हाँबीर, हाँम्बीरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

हाँमैला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चिड़िया।

हाँस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हंसी'।

हांस [वि.] (सं.) हंस सम्बन्धी।

हाँसना* [क्रि. अ.] (सं) (हिं.) देखो 'हंसना'।

हाँसल [संज्ञा पु.] (देश.) लाल रङ्ग का वह घोड़ा जिसके पैर कुछ काले हों।

हाँसवर+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हँसली'।

हाँसिल [संज्ञा स्त्री.](हि)१-रस्सा लपेटने की गड़ारी २-लंगर की रस्सी।

हाँसी [संज्ञा स्त्री] (हिं) देखो 'हँसी'।

हाँसुल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हाँसल'।

हाँहाँ [अव्य.](हिं)१-स्वीकृति या सहमति का शब्द

२-मना करने या रोकने का शब्द।

हा [अव्य.] (सं.) १-दुःख, शोक, भय आदि का सूचक शब्द। २-आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द। [प्रत्य.] (सं.) हनन करना। मारने वाला (यौगिक के अन्त में, जैसे-वृत्रहा)।

हाइ※ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दशा। हालत। अवस्था २-घात। गौ। ३-तौर। ढब। ढंग। [अव्य.] देखो 'हाय'।

हाइफन [संज्ञा पु.] (अं.) विराम चिह्न जो दो शब्दों के बीच में लगाया जाता है (-)।

हाईं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-दशा। हालत। अवस्था। २-ढंग। ढब। तौर। [वि.] (अं.) ऊंचा। बड़ा

हाईकोर्ट [संज्ञा पु.] (अं.) किसी प्रांत या राज्य की दीवानी और फौजदारी की सब से बड़ी अदालत या न्यायालय।

हाईस्कूल [संज्ञा पु.] (अं.) अंग्रेजी पढ़ाने की बड़ी शाला।

हाउस [संज्ञा पु] (अं.) १-घर। मकान। २-कोठी। बड़ी दूकान। ३-सभा। मंडली।

हाऊ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हौआ'।

हाकल [संज्ञा पु.] (सं.) पन्द्रह मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और दूसरे चरण में ११ तथा तीसरे और चौथे चरण में १० अक्षर होते हैं।

हाकलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह वर्ण होते हैं।

हाकली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और एक गुरु होता है।

हाकिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोरदेवी विशेष (तंत्र)

हाकिम [संज्ञा पु.] (अ.) १-शासक। २-बड़ा अधिकारी।

हाकिमी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) हाकिम का काम। शासन [वि.] हाकिम का। हाकिम-सम्बन्धी।

हॉकी [संज्ञा पु.] (अं.) १-एक अंगरेजी खेल जो टेढ़ी लकड़ी या गेंद से खेला जाता है। २-वह टेढ़ा डण्डा जिससे उक्त खेल खेला जाता है।

हाजत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-आवश्यकता। जरूरत २-चाह। ३-पहरे में रखा जाना। हिरासत। हवालात। मुहा०-हाजत में देना या रखना-हवालात में डालना।

हाजमा [संज्ञा पु.] (अ.) पाचन क्रिया या शक्ति।

हाजरी [संज्ञा स्त्री] देखो 'हाजिरी'।

हाजिम [वि.] (अ.) भोजन पचाने वाला। पाचक।

हाजिर [वि.] (अ.) १-उपस्थित। मौजूद। २-प्रस्तुत। तैयार। मुहा०-हाजिर आना-हाजिर होना।

हाजिरजवाब [वि.] (अ.) हर बात का तुरन्त और उपयुक्त उत्तर देने वाला।

हाजिरजवाबी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) चटपट और उपयुक्त उत्तर देने की निपुणता।

हाजिरबाश [वि.] (अ., फा.) १-सर्वदा सेवा में रहने वाला। २-लोगों से बराबर मिलने जुलने वाला।

हाजिरबाशी [संज्ञा स्त्री] (अ., फा.) १-सेवा में निरंतर उपस्थित। २-खुशामद।

हाजिराई [संज्ञा पु.] (अ.) १-ओझा। सयाना। २-जादूगर।

हाजिरात [संज्ञा स्त्री.] (अ.) एक प्रक्रिया जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति पर कोई आत्मा बुलाकर उससे कुछ बातें पूछी जाती हैं।

हाजिरी [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-हाजिर होने की क्रिया या भाव। २-उपस्थिति। मौजूदगी। ३-भोजन, विशेषत. दोपहर का।

हाजी [संज्ञा पु.] (अ.) वह जो हज कर आया हो।

हाट [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-दूकान। २-बाजार। ३-बाजार लगने का दिन। मुहा०-हाट करना-१-दूकान लगाकर बैठना। २-बाजार जाकर चीजे लाना। हाट लगना-बाजार में दूकानें लगना। हाट बाजार करना-सौदा खरीदने बाजार जाना। हाट खोलना-१-दूकान रखना। २-दूकान पर आकर बिकी वस्तुएँ निकालकर रखना। हाट चढ़ना-बाजार में बिकने के लिए आना।

हाटक [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुवर्ण। सोना। २-महाभारत में वर्णित एक देश का नाम।

हाटकपुर [संज्ञा पु] (सं.) लङ्का।

हाटकलोचन [संज्ञा पु.] (सं.) हिरण्याक्ष दैत्य।

हाटकीय [वि.] (सं.) १-सोना या सुवर्ण-सम्बन्धी। २-सोने का बना हुआ।

हाटकेश [संज्ञा पु] (सं.) शिव की एक मूर्त्ति या रूप का नाम।

हाड़※ [संज्ञा पु] (हिं.) १-हड्डी। अस्थि। २-वंश की मर्यादा। कुलीनता।

हाड़ना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-अहँड़ा करना। धड़ा करना। २-देखो 'हाँड़ना'।

हाड़ा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-लाल रङ्ग का बड़ ततैया। लाल भिड़। २-क्षत्रियों की एक शाखा।

हाड़ी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-जमीन में गड़ा या बना हुआ ऊखल जिसमें साफ करने के लिए अनाज मूसल से कूटते हैं। २-वह पत्थर का ऊखल जिस पर रखकर पीटने से पीतल की चद्दर कटोरे-नुमा बन जाती है। [संज्ञा पु] १-एक प्रकार का बगला। २-कौआ। ३-एक पहाड़ी राग।

हात [वि.] (सं.) छोड़ा या त्यागा हुआ।

हातव्य [वि] (सं.) छोड़ने योग्य। त्याज्य।

हाता [संज्ञा पु] (अ.) देखो 'अहाता'। ※[वि.] (हिं.) [स्त्री. हाती] १-अलग या दूर किया हुआ २-नष्ट। [संज्ञा पु.] वध करने वाला। समास में

हातिम [संज्ञा पु.] (अ.) १-निपुण। चतुर। कुशल। २-उस्ताद। ३-एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार था। २-बहुत बड़ा दानी। हातिम की कबर पर लात मारना-बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना। (व्यंग्य)

हातु [संज्ञा पु] (सं.) १-मृत्यु। मौत। २-सड़क।

हाथ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कंधे से पंजे तक का वह अङ्ग जिससे चीजें पकड़ते और काम करते हैं। कर। हस्त। २-कोहनी से पंजे के सिरे तक की लम्बाई की नाप। ३-हाथ से खेले जाने वाले खिलाड़ियों में हर खिलाड़ी की बारी। दाँव। ४-किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाय। दस्ता। मुठिया। हाथ आना, हाथ पड़ना, हाथ चढ़ना-हाथ में आना या पड़ना। (किसी को) हाथ उठाना-नमस्कार करना। हाथ में आना या पड़ना-प्राप्त होना। मिलना। (किसी पर) हाथ उठाना या चलाना-मारना। हाथ उठाकर देना-१-अपनी खुशी से देना। २-भीख-सी देना। हाथ उठाकर कोसना-शाप देना। खूब कोसना। हाथ उतरना-हाथ की हड्डी उखड़ जाना। हाथ ऊँचा रहना-दानी होना। भाग्यवान होना। हाथ ऊँचा होना-१-देने लायक। सम्पन्न। २-दान देने में प्रवृत्त होना। हाथ ओट लेना-दोनों हाथ पसार कर लेना। हाथ कट जाना-प्रतिज्ञा लेख आदि से बद्ध होने अथवा और किसी कारण से कुछ करने योग्य रहना। हाथ कटा देना-१-साधन या सहायक खो देना। २-अपने को प्रतिज्ञा आदि से बद्ध कर देना। हाथ कमर पर रखना-बहुत होना। हाथ करना-प्रहार करना। हाथ झूठा-अविश्वसनीय। बेईमान। हाथ का दिया-प्रदत्त। हाथ का सच्चा-१-ईमानदार। २-अचूक वार करने वाला। हाथ का मैल-तुच्छ। मामूली। हाथ की लकीर-भाग्य। किस्मत। हाथ के ऊपर हाथ धरे बैठना-व्यर्थ समय गंवाना। हाथ के तोते उड़ जाना-अक्ल गुम हो जाना। हाथ के नीचे आना या हाथ तले आना-काबू में आना। वश में होना।

हाथ को हाथ न सूझना-घोर अंधकार होना। *हाथ खाली जाना*-१-सफलता न मिलना। २-वार ठीक न बैठना। *हाथ खाली होना*-१-पास में धन न होना। २-काम न होना। ३-हथियार न होना। *हाथ खींचना*-कोई काम करते करते रुक जाना। *हाथ खुजलाना*-१-पीटने को जी चाहना। हाथ। २-प्राप्ति के लक्षण दिखाई पड़ना। *हाथ खुलना*-१-दान में प्रवृत्ति होना। २-खर्च करना। *हाथ खोलना*-१-खूब दान देना। २-खर्च करना। *हाथ गरम होना*-मुट्ठी गरम होना। हाथ घिसना-व्यर्थ कष्ट उठाना। *हाथ चलना*-मारने के लिए हाथ उठना। *हाथ चलाना*-मारना। हाथ चूमना-किसी की कारीगरी पर मुग्ध होकर उसके हाथों को प्यार करना। हाथ चलाक या हाथ चलाक-फुरती से चीजें उड़ाने वाला। *हाथ चलाकी*-हस्तलाघव। *हाथ चाटना*-सब खा-पीकर भी तृप्त न होना। *हाथ छूटना*-मारने के लिए हाथ उठना। *हाथ छोड़ना*-मारना। *हाथ जड़ना*-थप्पड़ मारना। हाथ जोड़ना-१-अभिवादन करना। २-कृपा के लिए अनुनय विनय करना। (दूर से) हाथ जोड़ना-बिलकुल दूर या अलग रहना। *हाथ झाड़ कर खड़े होना*-कह देना मेरे पास कुछ नहीं है। हाथ झाड़ना-१-खूब हथियार चलाना। २-प्रहार हाथ झुलाते या हिलाते आना-खाली हाथ आना, *हाथ झाड़ देना*-खाली हाथ हो जाना। *हाथ टेकना*-सहारा देना। *हाथ डालना*-१-हस्तक्षेप करना। २-योग देना। *हाथ तंग होना*-पास में धन न रहना। *हाथ तकना*-दूसरे के आश्रित होना। *हाथ तोड़ तोड़ कर खाना*-स्वादिष्ट पदार्थ खाकर उँगली चाटना। *हाथ थिरकाना या नचाना*-नाचने या बोलने में हाथ मटकाना या हिलाना। हाथ दिखाना-१-नाड़ी दिखाना। २-वीरता दिखाना। ३-भविष्य का शुभाशुभ जानने के लिये सामुद्रिक ज्ञाता से हाथ की रेखाओं का विचार कराना। हाथ देखना-१-हाथ की नाड़ी देखना। २-सामुद्रिक का विचार करना। हाथ देना-१-सहारा देना। २-बाजी लगाना। ३-शुभ रूप से सौदा तै करना। ४-दीया बुझाना। ५-भूत-प्रेत की बाधा का विचार करना। ६-रोकना। (किसी का) हाथ

धरना-१-कोई काम करने से रोकना। २-किसी को सहारा देना। ३-पाणिग्रहण करना। (किसी पर) हाथ धरना-किसी को अशीर्वाद देना। (किसी चीज से) हाथ धोना-१-गंवा या खो देना २-प्राप्ति की आशा छोड़ देना। हाथ धो के पीछे पड़ना-जी जान से लग जाना। हाथ न धरने देना-तनिक भी बातों में न आना। हाथ पकड़ना १-कोई काम करने से रोकना। २-आश्रय देना। विवाह करना। हाथ पड़ना-१-हाथ लगना। २-डाका पड़ना। ३-वार पड़ना। हाथ पत्थर तले दबना-१-संकट में पड़ना। २-विवश होना। हाथपर गंगाजली रखना-गंगा की सौगन्द दिलाना हाथ पर ना खेलना प्राण संकट में डालना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना-खाली बैठे रहना। कुछ न करना।

हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाना-निराश हो जाना। हाथ पर हाथ मारना। १-प्रतिज्ञा करना। २-बाजी लगाना। हाथ पसारना या फैलाना-मांगने के लिए हाथ आगे करना। हाथ पसारे जाना। मर जाना। हाथ-पाँव चलना-काम की सामर्थ्य होना। हाथ-पाँव चलाना-काम-धंधा करना। हाथ-पांव फूलना-डर या शोक से घबरा जाना। हाथ-पांव बचाना-अपने शरीर की रक्षा करना। हाथ पांव पटकना-छटपटाना। हाथ-पांव मारना या हिलाना-प्रयत्न या परिश्रम करना। हाथ पांव से छूटना-सरलतापूर्वक बच्चा पैदा होना। हाथ-पांव हारना-१-साहस छोड़ना। २-निराश होना हाथ पीले पड़ना-१-जैसे-तैसे विवाह कर देना। १-विवाह करना। हाथ पैर जोड़ना-अनुनय-विनय करना। हाथ फेंकना-हाथ चलाना। वार करना। (किसी पर) हाथ फेरना-प्यार से शरीर सहलाना। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना-किस वस्तु को उड़ा लेना। हाथ बंद होना-हाथ तंगी होना। हाथ बढ़ाना-१-कोई वस्तु लेने के लिए हाथ फैलाना। २-सीमा या हद से बाहर से जाना। (किसी काम में) हाथ बँटाना-योग देना। हाथ बाँधकर खड़ा होना-हाथ जोड़कर खड़ा होना। हाथ बाँधे खड़ा रहना-सेवा में सदा उपस्थित रहना। (किसी के) हाथ बिकना-किसी का क्रीत दास होना। (किसी काम में) हाथ जमना या बैठना-अभ्यास होना।

(किसी पर) हाथ बैठाना या जमाना-किसी पर ठीक और भरपूर थप्पड़ अथवा वार पड़ना। हाथ भर आना-काम करते-करते हाथों का थक जाना। हाथ भरना हाथ में मेंहदी या रङ्ग लगाना हाथ मँजना-अभ्यास होना। हाथ मांजना-अभ्यास करना। हाथ मलना-१-बहुत पछताना २-निराश और दुःखी होना। हाथ मारना-१-बात पक्की करना। २-बाजी लगाना। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना-उड़ा लेना। (भोजन पर) हाथ मारना-१-खूब खाना। २-बड़े-बड़े और मुँह में डालना-१-एक दूसरे का हाथ पकड़ कर प्रेम-पूर्वक भेंट करना। २-पंजा लड़ाना। ३-सौदा पटाकर लेना। हाथ मींजना-हाथ मलना। हाथ में करना-१-वश या काबू में करना। २-अधिकार में करना। (मन) हाथ में करना-प्रेम में फंसना। हाथ में ठीकरा लेना-भीख मांगना। हाथ में पड़ना-अधिकार या वश में होना। हाथ में लाना हाथ में करना। हाथ में लेना-१-जिम्मे लेना। १-अधिकार में करना। हाथ में हाथ देना-पाणिग्रहण कराना। हाथ में होना-१-अधिकार में होना। २-अधीन होना। हाथ में गुन या हुनर होना-किसी कला में कुशलता होना। हाथ रङ्गना लाभ या प्राप्ति करना। (किसी का) हाथ रोकना-कुछ काम करने से रोक देना। (अपना) हाथ रोकना-१-किसी काम से अलग या विरत हो जाना। २-संभालकर खर्च करना।

हाथ रोपना या ओड़ना-हाथ फैलाना। (कोई वस्तु) हाथ लगना-मिलना। प्राप्त होना। (किसी काम में) हाथ लगना-१-आरंभ होना। २-किसी के द्वारा किया जाना। किसी वस्तु में हाथ लगना-छू जाना। (किसी काम में) हाथ लगाना-१-आरंभ करना। २-करने में प्रवृत्त होना। हाथ लगे मैला होना-इतना स्वच्छ या मैला होना कि स्पर्श मात्र से मैला हो जाय। हाथ साधना-अभ्यास करना। (किसी पर) हाथ साफ करना-किसी को मारना। (किसी वस्तु पर) हाथ साफ करना-उड़ा लेना। (भोजन पर) हाथ साफ करना-खूब खाना। हाथ से-द्वारा। मारफत। हाथ से जाना या निकल जाना-१-अधिकार या कब्जे में न रहना। २-वश या काबू में न रह जाना। हाथ से हाथ मिलना-दान देना। हाथ हिलाते आना-१-खाली हाथ लौटना। २-बिना कार्य सिद्ध किये लौट आना। रँगे हाथ या हाथों-अपराध करते हुए या उसके प्रमाण के साथ। लगे हाथ या हाथों-कोई काम करते समय उसे पूरा करके निश्चित होने से पहले। हाथों-हाथ-एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। हाथों हाथ लेना-बहुत आदर या सम्मानसहित आदर करना। पद०-हाथ या हाथ पैर का मैल-तुच्छ वस्तु या पदार्थ। (किसी के) हाथों-किसी के द्वारा

हाथकंडा [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'हथकंडा'।

हाथड़ [संज्ञा पु.] (हि.) चक्की की मुठिया।

हाथतोड़ [संज्ञा पु.] (हिं) कुश्ती का एक पेंच।

हाथधुलाई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) मृतक पशु को फेंकने के लिए दी जाने वाली बंधी रकम।

हाथपान, हाथफूल [संज्ञा पु] (हिं.) हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथबाँह [संज्ञा पु] (हिं) (कसरत में) बाँह करने का एक ढंग।

हाथा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मूठ। दस्ता। २-मंगल-अवसरों पर हल्दी आदि से दीवारों आदि पर लगाई जाने वाली पंजे की छाप।

हाथाछाँटी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) १-व्यवहार में कपट या बेईमानी। २-माल हजम करना।

हाथजोड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक पौधा। २-दो मिले हुए पंजों के आकार की सरकंडे की जड़।

हाथापाई, हाथाबाँही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ-पैर से परस्पर खींचने और ढकेलने की लड़ाई। भिड़ंत

हाथाहाथी+ [अव्य] (हिं) १-हाथों हाथ। २-तुरन्त जल्दी।

हाथी [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हथिनी] एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो अपने सूंड़ के कारण सब जानवरों से विलक्षण होता है। मु०-हाथी सा-बहुत मोटा। हाथी पर चढ़ना या हाथी बाँधना-बहुत अमीर होना। निशान का हाथी-फौज या जलूस में वह हाथी जिस पर झण्डा और डङ्का रहता है। हाथी के सङ्ग गाँड़े खाना-बलवान का सामना करना।*[संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हाथ का सहारा।

हाथीखाना [संज्ञा पु.] (हिं., फा.) वह स्थान जहाँ पालतू हाथी रखा जाय। फीलखाना।

हाथीचक [संज्ञा पु.] (हिं.) औषध के काम में आने वाला एक पौधा।

हाथीदाँत [संज्ञा पु.] (हिं.) हाथी के मुंह के दोनों ओर बाहर निकले हुए दाँत के आकार के वे अवयव जिनसे कई प्रकार की वस्तुयें बनती हैं।

हाथीनाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'गजनाल'।

हाथीपाँव [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'फीलिपा'। २-एक प्रकार का बढ़िया सफेद कत्था।

हाथीपीच [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का पौधा जो औषध रूप में प्रयुक्त होता है।

हाथीबच [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पौधा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

हाथीवान [संज्ञा पु.] (हिं.) महावत। फीलवान।

हादसा [संज्ञा पु.] (अ.) दुर्घटना।

हान* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हानि'।

हानि [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-टूटने-फूटने आदि के कारण होने वाला नाश। लॉस। २-आर्थिक क्षति नुकसान। डैमेज। ३-घाटा। टोटा। ४-स्वास्थ्य को पहुँचने वाली खराबी। ५-अपकार। बुराई।

हानिकर; हानिकारक; हानिकारी [वि.] (सं.) १-हानि करने वाला। जिससे नुकसान हो। २-स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला।

हानिमूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) वह धन जो किसी की हानि होने पर उसके बदले में उसे दिया जाय। प्रति-कर। डैमेजेस।

हानिलाभ [संज्ञा पु.] (सं.) व्यापार आदि में होने वाला या और किसी प्रकार का नुकसान और नफा। प्रॉफिट एन्ड लॉस।

हानुक [वि.] (सं.) घातक। हत्याकारी।

हाफिका [संज्ञा स्त्री.] (अ) जमुहाई।

हाफ़िज़ [संज्ञा पु.] (सं.) वह धर्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो। [वि.] (अ.) हिफाजत करने वाला। रक्षक।

हाफू [संज्ञा पु.] (सं.) अहिफेन। अफीम।

हाबिस [संज्ञा पु.] (देश.) जहाज का लंगर उठाने की क्रिया।

हाबुस [संज्ञा पु.] (हिं.) जौ की कच्ची बाल।

हाबू+ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आक या मदार के डोडे की रूई का अंश जो हवा में उड़ता है। २-एक कल्पित भय जिससे बच्चे डराये जाते हैं।

हाबूड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) जाति विशेष जिसका काम लूटपाट चोरी आदि करना है।

हामी [संज्ञा स्त्री] (हिं.) 'हाँ' करने की क्रिया या भाव स्वीकृति। *हामी भरना*-स्वीकार या मंजूर करना। [संज्ञा पु] (अ.) १-हिमायत करने वाला २-सहायता करने वाला।

हाय [अव्य.] (हिं) शोक, दुःख, पीड़ा आदि का सूचक शब्द। *हाय मारना*-१-कराहना। २-दहल जाना। *(किसी की) हाय पड़ना*-किसी के हाय करने का बुरा फल मिलना।

हायन [संज्ञा पु.] (सं) वर्ष। साल।

हायनक [संज्ञा पु.] (सं) एक प्रकार का मोटा चावल जो लाल होता है।

हायल* [वि.] (हिं.) १-घायल। २-मूर्च्छित। ३-शिथिल। थका हुआ। [वि.] (अं.) बीच में आड़ करने वाला।

हायहाय [अव्य](हिं.) शोक, दुख आदि का सूचक शब्द। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-कष्ट। दुःख। २-व्याकुलता।

हाया* [प्रत्य.](हिं.) (किसी वस्तु के लिए) आतुर। व्याकुल।

हार [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-युद्ध, प्रतियोगिता, खेल आदि में प्रतिद्वंद्वी से न जीत सकने की दशा या भाव। पराजय। २-शिथिलता। थकावट। ३-हानि। [संज्ञा पु.] (सं.) १-राज्य द्वारा हरण। २-विरह। वियोग। ३-गले में पहनने की सोने चाँदी, मोतियों, फूलों आदि की माला। ४-अंकगणित में भाजक। [वि.] (सं.) १-वह न करने या ले जाने वाला। २-हरण करने वाला। ३-नाशक। *[प्रत्य.](हिं.) देखो 'हारा' या 'वाला' [संज्ञा पु.] (देश.) १-वन। जंगल। २-नाव के बाहरी तख्ते। ३-चरागाह। गोचरभूमि।

हारक [वि.](सं.)[स्त्री. हारिणी]१-हरण करने वाला २-मनोहर। सुन्दर। [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर २-लुटेरा। ३-गणित में भाजक। ४-हार। माला

हारगटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) माला के दाने।

हारद* [वि.] (हिं.) देखो 'हार्दिक'। [संज्ञा पु.] (हिं.) मन की बात, अभिप्राय, उद्देश्य, वासना आदि।

हारना [क्रि. अ.] (हिं.) १-युद्ध, खेत, प्रतिद्वंद्विता आदि में प्रतिपक्षी से पराजित होना। २-थक जाना। ३-प्रयत्न में निफल होना। हारे दर्जे-लाचार होकर। हारकर-असमर्थ या विवश होकर। [क्रि. स.] (हिं.) १-प्रतियोगिता, युद्ध, खेल आदि में सफल न होने के कारण हाथ से उसे या उससे सम्बन्ध रखने वाली वस्तु जाने देना। २-खोना। गंवाना। ३-न रख सकने के कारण जाने देना।

हारफलक [संज्ञा पु.] (सं.) पांच लड़ियों वाला हार।

हारबंध, हारबन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) एक चित्रकाव्य जिसमें पद्य हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारभूरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) द्राक्षा। अंगूर।

हारमोनियम [संज्ञा पु.] (अं.) सन्दूक के आक़ार का एक बाजा जिस पर अंगुली रखने से अनेक प्रकार के स्वर निकलते हैं।

हारयष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हार या माला की लड़ी

हारल [संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'हारिल'।

हारवार* [संज्ञा स्त्री.] देखो 'हड़बड़ी'।

हारसिंगार [संज्ञा पु.] (हिं.) हरसिंगार का पेड़ या फूल। परजाता।

हारहारा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का अंगूर।

हारहूर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का मद्य।

हारहूरा, हारहूरिका[संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का अंगूर।

हारा+ [प्रत्य] (हिं.) [स्त्री. हारी] देखो 'वाला'। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) दक्षिण-पश्चिम के कोने की हवा।

हारि [संज्ञा पु.](सं.) १-पराजय। २-हार। पथिकों का दल। कारवाँ। ३-हरण करने वाला। ४-मन को हरने वाला।

हारिकंठ, हारिकण्ठ [वि.] (सं.) जिसके गले में हार हो। [संज्ञा पु.] (सं.) कोयल।

हारित [वि.] (सं.) १-हरण कराया हुआ। २-लाया हुआ। ३-छीना हुआ। ४-खोया हुआ। ५-वंचित ६-हारा हुआ। ७-मोहित। मुग्ध। [संज्ञा पु.] (सं.) १-तोता। सूआ। २-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो तगण और दो गुरु होते हैं।

हारिद्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक विष विशेष जिसका पौधा हल्दी के समान होता है। २-एक प्रकार प्रकार का प्रमेह। ३-पीला रङ्ग। [वि.] (सं.) हल्दी में रंगा हुआ।

हारिनाश्वा [संज्ञा स्त्री.](सं.)सङ्गीत में एक मूर्च्छना।

हारिल [संज्ञा पु.] (देश.) एक हरे रंग की चिड़िया जो प्राय: अपने चंगुल में तिनका लिये रहती है।

हारी [वि.](सं) [स्त्री. हारिणी] १ हरण करने वाला। २-ले जाने वाला। ३-चुराने वाला। ४-दूर करने वाला। ५-नाश करने वाला। ६-उगाहने वाला। ७-जीतने वाला। ८-मन हरने वाला। ९-हार पहनने वाला। [संज्ञा पु.] (सं.) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं।

हारीत [संज्ञा पु.] (सं.) १-चोर। २-डाकू। ३-क़बूतर।

हारुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हरण करने वाला। २-ले जाने वाला।

हारौल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरावल'।

हार्द [संज्ञा पु.] (सं.) स्नेह। [वि.] हृदय-सम्बन्धी। हृदय का।

हार्दिक [वि.] (सं) १-हृदय-संबंधी। हृदय का। २-हृदय से निकला हुआ या हृदय में होने वाला। ठीक और सच।

हार्दिक्य [संज्ञा पु.] (सं.) मित्रता। मित्रभाव।

हार्य [वि.] (सं.) १-हरण करने योग्य। २-जो हरण किया जाने वाला हो। ३-हिल जाने योग्य। ४-वश कर लेने योग्य। ५-लूट लेने योग्य। ६-जिसका अभिनय किया जाने वाला हो (नाटक)। ७-जो भाग दिया जाने वाला हो। भाज्य (गणित)

हार्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का चन्दन।

हाल [संज्ञा पु.] (अं.) १-दशा। अवस्था। २-परिस्थिति। ३-समाचार। वृत्तांत। ४-विवरण। ब्योरा। ५-ईश्वर-प्रेम में लीन होने की अवस्था। तन्मयता। लीनता (मुसल०)। [वि.] वर्त्तमान। मौजूद। हाल में-कुछ ही दिन पहले हाल का-ताजा। [अव्य.] (अं.) १-अभी। २-तुरंत। [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हिलने की क्रिया या भाव। कंप। २-पहिये पर चढ़ाया जाने वाला लोहे का गोलबंद। ३-झटका। झोंका। धक्का। [संज्ञा पु.] (अं.) बहुत बड़ा कमरा।

हालक [संज्ञा पु.] (सं.) पीलापन लिये भूरे रंग का घोड़ा।

हालगोल [संज्ञा पु.] (हिं.) गेंद।

हालडोल [संज्ञा पु.](हिं.)१-हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। २-हलचल। ३-कंप।

हालत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-दशा। अवस्था। २-आर्थिक स्थिति। ३-परिस्थिति।

हालना* [क्रि अ.] (हिं.) देखो 'हिलना'।

हालरा+ [संज्ञा पु.](हिं.)१-बच्चों को गोद में लेकर हिलाना-डुलाना। २-झोंका। ३-लहर। हिलोर

हालहूल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-कोलाहल। २-हलचल

हालाँकि [अव्य.] (फ़ा.) यद्यपि।

हाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) मद्य। शराब।

हालाहल [संज्ञा पु] देखो 'हलाहल'।

हालाहली [संज्ञा स्त्री.] (सं) मदिरा। शराब।

हालिक [वि] (सं.) हल-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] १-कृषक। किसान। २-छन्द विशेष। ३-कसाई।

हालिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छिपकली विशेष।

हालिम [संज्ञा पु.](देश) एक प्रकार का पौधा जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

हाली [अव्य.](हिं.)जल्दी। शीघ्र। यौ० *हालीहाली* जल्दी-जल्दी।

हालु [संज्ञा पु.] (सं.) दाँत।

हालूक [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की तिब्बती भेड़।

हालों [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हालिम'।

हाल्ट [संज्ञा पु.](अं.)सेना का चलते हुए ठहर जाना ठहराव।

हाव [संज्ञा पु.](सं.) १-संयोग के समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। साहित्य में ग्यारह हाव गिनाये गये हैं। लीला, विलास, विच्छिति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, विव्वोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला। २-पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट।

हावक [संज्ञा पु.] (सं.) हवन कराने वाला।

हावदस्ता [संज्ञा पु.] (फ़ा.) खरल और बट्टा।

हावनीय [वि.] (सं.) हवन कराने योग्य।

हावभाव [संज्ञा पु.](सं.) पुरुषों को मोहित करने के लिये स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ। नाज-नखरा।

हावर [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी बड़ी पुष्ट होती है।

हावला-बावला [वि.] (हिं.) [स्त्री हावली-बावली] पागल। सनकी।

हाव-हाव [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हाय-हाय'।

हाशिया [संज्ञा पु.] (अं.) १-किनारा। पाड़। २-गोट। मगजी। ३-लिखने के समय कागज के किनारे खाली छोड़ी हुई जगह। उपांत। ४-किसी बात पर की हुई टीका-टिप्पणी। हाशिया चढ़ाना-किसी विवरण में अपनी ओर से कुछ और जोड़ना। हाशिये का गवाह-वह गवाह जिसने किसी लेख्य के किनारे पर गवाही की हो। उपांतस्थ साक्षी।

हास [संज्ञा पु] (सं.) १-हँसी। २-दिल्लगी। ठठोली। ३-उपहास। [वि.] श्वेत वर्ण। उज्ज्वल।

हासक [संज्ञा पु.] (सं.) हँसाने वाला।

हासकर [वि.] (सं.) जिसमें हँसी आवे।

हासन [संज्ञा पु.](सं.) १-हँसाना। २-हँसाने वाला

हासनिक [संज्ञा पु.] (सं.) विनोद या खेल का साथी

हासवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तांत्रिक बौद्धों की एक देवी।

हासशील [वि] (सं.) हँसाने वाला।

हासिद [वि.] (श्र.) डाह करने वाला। ईर्ष्यालु।

हासिल [वि.] (श्र.) प्राप्त। लब्ध। मिला हुआ। [संज्ञा पु.] (श्र.) १-जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अन्तिम अङ्क के नीचे लिखे जाने पर बच रहे। २-गणित की क्रिया का फल। ३-पैदावार। उपज। ४-लाभ। नफा। ५-जमीन का लगान।

हासी [वि.] (हिं.) [स्त्री. हासिनी] हंसने वाला।

हास्य [वि] (सं.) १-हँसने के योग्य। जिस पर लोग हंसें। २-उपहास के योग्य। [संज्ञा पु] १-हंसने की क्रिया या भाव। हँसी। २-नौ स्थायी भावों या रसों में से एक, जिसमे हँसी की बातें होती है। ३-दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक।

हास्यक [संज्ञा पु.] (सं.) हँसी की बात या किस्सा। चुटकुला।

हास्यकथा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हँसी की बात।

हास्यकर [वि.] (सं) १-हँसाने वाला। २-जिसमें हंसी आवे।

हास्यास्पद [वि] (सं) जिसके बेढगेपने की लोग हंसी उड़ावें। हँसी उत्पन्न करने वाला।

हास्योत्पादक [वि] (सं.) जिससे लोगों को हंसी आवे।

हाहंत, हाहन्त [अव्य.] (सं) हे ईश्वर, यह क्या हो गया।

हाहा [संज्ञा पु.](सं.) १-हँसने का शब्द। २-गिड़गिड़ाने का शब्द। *हाहा-हीही करना*-१-हँसना। २-हँसी-ठट्ठा करना। *हाहा-हीही होना या मचना*-हंसी होना। *हाहा करना या खाना*-गिड़गिड़ाना। *हाहा हीही, हाहा ठीठी*-हँसी-ठट्ठा। विनोद। [संज्ञा पु.] (सं.) एक गंधर्व।

हाहाकार [संज्ञा पु.] (सं.) घबराहट के समय बहुत आदमियों के मुंह से निकलने वाली 'हायहाय' की पुकार या चिल्लाहट। कुहराम।

हाहाठीठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हंसी-ठट्ठा।

हाहाहूत* [संज्ञा पु.] (हिं.) हाहाकार।

हाहाहूहू [संज्ञा पु.] (हिं) हाहा करके हँसने की क्रिया। हँसी-ठट्ठा।

हाही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कुछ पाने के लिए बहुत हायहाय करते रहना। चरमसीमा का लोभ।

हाहू* [संज्ञा पु.](हिं.) १-कोलाहल। शोरगुल। २-हलचल।

हाऊबेर [संज्ञा पु.] (हिं) जंगली बेर। झड़बेरी।

हिंकरना [क्रि. अ.] (हिं.) १-घोड़ों का हिनहिनाना। २-देखो 'रंभाना'।

हिंकार, हिङ्कार [क्रि. स.](सं.) १-गाय के रँभाने का शब्द। २-बाघ के बोलने का शब्द। ३-सामगान का एक अङ्ग। ४-व्याघ्र। बाघ।

हिंग [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हींग'।

हिंगन बेर [संज्ञा पु.] (हिं.) हिंगोट। इंगुदी वृक्ष।

हिंगलाज [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हिंगुलाजा'।

हिंगली [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का तम्बाकू।

हिंगाष्टक-चूर्ण, हिङ्गाष्टक-चूर्ण [संज्ञा पु] (हिं) वैद्यक में एक पाचक चूर्ण।

हिंगु [संज्ञा पु] (सं.) हींग।

हिंगुपत्र [संज्ञा पु.] (सं.) हिंगोट। इंगुदी वृक्ष।

हिंगुल [संज्ञा पु.] (सं.) ईंगुर। सिंगरफ।

हिंगुला, हिङ्गुला; हिंगुलाजा, हिङ्गुलाजा [संज्ञा स्त्री.](सं.) दुर्गा या देवी की एक मूर्त्ति जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच की पहाड़ियों में है।

हिंगुलेश्वररस [संज्ञा पु.] (सं.) ईंगुर से बनी हुई एक रसौषध।

हिंगूल [संज्ञा पु] (सं.) हिज्जल नामक पौधा।

हिंगोट [संज्ञा पु.](हिं) एक कंटीला जंगली पेड़ जिसके फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।

हिंग्वादिगुटिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की गोली जिसमें हींग मिला होता है।

हिंग्वादिचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) हींग के योग से बना एक चूर्ण।

हिंच [संज्ञा पु.] (अं.) आघात। चोट।

हिंछना+ [क्रि. अ.] (हिं.) इच्छा करना। चाहना।

हिंछा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इच्छा'।

हिंजीर, हिञ्जीर [संज्ञा पु.] (सं.) वह रस्सी या जंजीर जिससे हाथी का पैर बाँधा जाता है।

हिंडन, हिण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) घूमना। फिरना।

हिंडिक, हिण्डिक [संज्ञा पु.] (सं.) फलित ज्योतिषी

हिंडी, हिण्डी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

हिंडीबादाम [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके बीजों में बहुत सा तेल होता है।

हिंडीर, हिण्डीर [संज्ञा पु.](सं.) १-समुद्र में मिलने वाली एक प्रकार की मछली। २-मर्द। नर। पुरुष। ३-अनार का पेड़।

हिंडुक, हिण्डुक [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

हिंडोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिंडोला'।

हिंडोरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा हिंडोला।

हिंडोल [संज्ञा पु.] (हिं) १-हिंडोला। २-संगीत में एक राग।

हिंडोलना, हिंडोला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-काठ का बना हुआ वह बड़ा चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिये ऊपर-नीचे घूमने वाले छोटे-छोटे चौखटे होते हैं। २-पालना। ३-झूला।

हिंडोली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक रागिनी।

हिंताल [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार की जंगली खजूर

हिंद [संज्ञा पु.] (फा.) हिन्दोस्तान। भारतवर्ष।

हिंदवाना+ [संज्ञा पु] (हिं.) तरबूज। कलींदा।

हिंदवी [संज्ञा स्त्री] (फा.) हिन्दी या हिन्दुस्तान की भाषा।

हिंदी [वि.](फा.) हिंद या हिंदुस्तान का। भारतीय। [संज्ञा पु.](फा.) हिंद का निवासी। भारतवासी [संज्ञा स्त्री.] १-हिन्दुस्तान की भाषा। २-उत्तरी और मध्यभारत की वह भाषा जिसके अन्तर्गत कई उपभाषाएँ अथवा बोलियाँ हैं और जो भारत देश की राष्ट्रभाषा है।

हिंदीरेंचद [संज्ञा पु.] (फा.) एक प्रकार का पौधा।

हिंदुत्व [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिंदूपन'।

हिंदुस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) १-भारतवर्ष। २-दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरी और मध्यभाग

हिंदुस्तानी [वि.] (फा.) हिन्दुस्तान का। [संज्ञा पु] भारतवासी। [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-हिन्दुस्तान की भाषा। २-बोलचाल या व्यवहार की वह हिन्दी जिसमें न तो बहुत अरबी-फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के।

हिंदुस्थान [संज्ञा पु.](हिं.) भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।

हिंदू [संज्ञा पु.] (फा.) भारतीय आर्यों के वर्तमान भारतीय वंशज जो वेदों, स्मृति, पुराण आदि को अपने धर्मग्रंथ मानते हैं।

हिंदूकुश [संज्ञा पु.] (फा.) वह पर्वत श्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर में है और हिमालय से मिली हुई है।

हिंदूपन [संज्ञा पु.](हि.) हिन्दू होने का भाव या गुण

हिंदोरना [क्रि. स.] (हिं.) घंघोलना। फेंटना।

हिंदोल, हिन्दोल [संज्ञा पु.](सं.) १-हिंडोला। झूला २-हिंडोल नामक राग (संगीत)।

हिंदोस्तान [संज्ञा पु.] (फा.) हिन्दुस्तान। भारतवर्ष

हिंदोस्तानी [वि., संज्ञा पु., स्त्री.](फा.) देखो 'हिंदुस्तानी'।

हिंयाँ* [अव्य.] (हिं.) देखो 'यहाँ'।

हिंव [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'हिम'।

हिंवार [संज्ञा पु.](हि.) हिम। बर्फ। *हिवार पड़ना*-१-बर्फ गिरना। २-बहुत सर्दी पड़ना।

हिंस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिनहिनाहट। हींस।

हिंसक [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिंसा करने या मार डालने वाला। घातक। २-दूसरों की बुराई या हानि चाहने और करने वाला।
[वि.] (सं.) (वह पशु) जो पशुओं या जीवों को मार कर खाता हो।

हिंसन [संज्ञा पु.] (सं.) १-जीवों का वध करना। २-जीवों को पीड़ा पहुँचाना। ३-बुराई या अनिष्ट करना अथवा चाहना।

हिंसना* [क्रि. स.] (हिं.) १-हिंसा या हत्या करना २-किसी की निंदा अथवा बुराई करना। बुरा-भला कहना।

हिंसनीय [वि.] (सं.) १-हिंसा करने योग्य। २-जिसकी हिंसा की जाने वाली हो।

हिंसा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-प्राणियों को मारने-काटने और शारीरिक कष्ट देने की वृत्ति। २-किसी को हानि पहुंचाना।

हिंसाकर्म [संज्ञा पु.] (सं.) मारने या सताने का काम

हिंसात्मक [वि.] (सं) जिसमें हिंसा हो। हिंसा से युक्त।

हिंसारु [संज्ञा पु.] (सं) १-कोई भी हिंसक पशु। २-बाघ। शेर।

हिंसालु [वि.] (सं.) १-हिंसा करने वाला। २-हिंसा की प्रवृत्ति वाला।

हिंसितव्य [वि.] (सं.) जिसकी हिंसा करनी हो। हिंसा करने योग्य।

हिंसीर [वि.] (सं.) हिंसा करने वाला।

हिंस्य [वि.](सं.) घायल या वध किये जाने की संभावना से युक्त।

हिंस्र, हिंस्रक [वि.](सं.) हिंसा करने वाला। खूंखार

हिंस्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) शत्रुओं या डाकुओं की नाव।

हि एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सब कारकों में होता था, पर बाद में 'को' के अर्थ में रह गई थी। * [अव्यय] (हिं.) देखो 'ही'।

हिअ*, हिआ [संज्ञा पु.](हिं.) १-हृदय। २-छाती।

हिआउ+, हिआव [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हियाव'

हिकड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) तीन कोड़ी कपड़ों का समूह (धोबी)।

हिकमत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-विद्या। तत्वज्ञान। २-कलाकौशल। ३-उपाय। तदबीर। युक्ति। ४-चतुराई का ढंग। चाल। पॉलसी। ५-किफायत। ६-यूनानी चिकित्सा का शास्त्र या पेशा। हकीमी

हिकमती [वि.] (अ.) १-कार्य साधन की युक्ति या उपाय निकालने वाला। कार्यपटु। २-चतुर। चालाक। ३-किफायती।

हिकलाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हकलाना'।

हिकायत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) कथा। कहानी।

हिक्कल [संज्ञा पु.] (?) बौद्ध सन्यासियों या भिक्षुओं का दंड।

हिक्का [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हिचकी। २-एक रोग जिसमें हिचकियाँ आती हैं। ३-रोने या सिसस करने का शब्द जो रुक-रुककर आवे।

हिक्किका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिक्का। हिचकी।

हिक्की [वि.] (सं) जिसे हिक्का या हिचकी का रोग हो।

हिचक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कोई काम करने से पहले मन में होने वाली हलकी रुकावट। आगापीछा

हिचकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-कोई काम करने से पहले, आशंका, अनौचित्य, असमर्थता आदि का ध्यान करके कुछ रुकना। आगापीछा करना। २-हिचकी लेना।

हिचकिचाना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हिचकना'।

हिचकिचाहट, हिचकिची [संज्ञा स्त्री] (हिं.) देखो 'हिचक'।

हिचकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध शारीरिक व्यापार जिसमें पेट या कलेजे की वायु कुछ रुक-कर गले के रास्ते निकलने का प्रयत्न करती है। २-इसी प्रकार का वह शारीरिक व्यापार जो बहुत अधिक रोने पर होता है। *हिचकी लगना*-मरने के समय निरन्तर हिचकियाँ आना।

हिचरमिचर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-आगापीछा। सोच-विचार। २-टालमटूल।

हिजड़ा, हिजरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हीजड़ा'।

हिजरी [संज्ञा पु.] (अ.) मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मदसाहब के मक्के से मदीने भागने या हिजरत करने की तिथि से (१५ जुलाई ६२२ ई०) से चला है।

हिजाज़ [संज्ञा पु.] (अ.) १-अरब देश का वह भू भाग जिसमें मक्का और मदीना नामक नगर हैं। २-फारसी सङ्गीत के १२ मुकामों में से एक

हिजाब [संज्ञा पु] (अ.) १-परदा। २-शर्म। लाज। हया।

हिज्ज [संज्ञा पु.]१-देखो 'हिज्जल'। २-देखो 'हिजड़ा'

हिज्जल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का वृक्ष।

हिज्जे [संज्ञा पु.] (अ.) किसी शब्द में आये हुए अक्षरों, मात्राओं आदि का क्रम। अक्षरी।

हिज्र [संज्ञा पु.] (अ.) वियोग। जुदाई। बिछोह।

हिटकना+ [क्रि. स.] (हिं) देखो 'हटकना'।

हिडंब, हिडम्ब [संज्ञा पु.] (डिं.) भैंसा।

हिडिंब, हिडिम्ब [संज्ञा पु.] (सं) एक राक्षस का नाम जिसे भीम ने वनवास के समय मारा था।

हिडिंबा, हिडिम्बा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हिडिंब नामक राक्षस की बहिन जो भीम की पत्नी थी।

हिडोर, हिडोल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिंडोला'।

हित [वि.] (सं.) १-कल्याण। मङ्गल। २-भलाई। उपकार। ३-लाभ। फायदा। ४-स्नेह। मुहब्बत ५-वह जो किसी की भलाई चाहता या करता हो। सम्बन्धी। रिश्तेदार। [अव्य.] (किसी की भलाई, प्रसन्नता आदि के) लिये। वास्ते।

हितक [संज्ञा पु] (सं.) जानवर का बच्चा।

हितकर [वि.](सं.)१-भलाई या उपकार करने वाला २-उपयोगी फायदेमन्द। ३-स्वास्थ्यकर।

हितकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं) भलाई करने वाला।

हितकाम संज्ञा पु](सं)भलाई की कामना या इच्छा। [वि.] भलाई चाहने वाला।

हितकारक, हितकारी [वि] (सं.) देखो 'हितकर'।

हितचिंतक, हितचिन्तक [संज्ञा पु.] (सं) भला चाहने वाला। शुभचिंतक। हितैषी।

हितचिंतन, हितचिन्तन [संज्ञा पु.] (सं.) किसी की भलाई की कामना या इच्छा। उपकार की बातें सोचना।

हितता* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-भलाई। उपकार। २-मंगल। ३-लाभ। ४-स्नेह।

हितवचन [संज्ञा पु.] (सं.) कल्याण का उपदेश।

हितवना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हिताना'।

हितवादी [वि.] (सं.) [स्त्री. हितवादिनी] हित की बात कहने वाला।

हिता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-नाली। २-एक विशेष प्रकार की रक्तवाहिनी नस।

हिताई [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-सम्बन्ध। रिश्तेदारी। २-हितचिंतन।

हिताना* [क्रि. अ.](हिं.)१-हितकारी या लाभदायक होना। २-प्रेम या स्नेह करना। ३-उपकार या भलाई करना।

हितावह [वि.] (सं.) हितकारी। कल्याणकारी।

हिताहित [संज्ञा पु.] (सं.) १-हित और अहित। भलाई और बुराई। २-लाभ और हानि। नफा और नुकसान।

हिती, हितु, हितुआ, हितुवा+, हितू [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हितैषी। २-सम्बन्धी। रिश्तेदार। ३-सुहृद। स्नेही।

हितेच्छा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) भलाई की चाह। उपकार का ध्यान।

हितेच्छु [वि.] (सं.) भला चाहने वाला।

हितैती+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हिताई'।

हितैषिता [संज्ञा स्त्री.](सं.) भलाई चाहने की वृत्ति। खैरख्वाही।

हितैषी [वि.](सं.)[स्त्री. हितैषिणी]भला चाहने वाला [संज्ञा पु.] (सं.) सुहृद। मित्र।

हितोक्ति [संज्ञा स्त्री] (सं) हित के वचन। नेक सलाह।

हितोपदेश [संज्ञा पु.] (सं.) भलाई का उपदेश। नेक सलाह।

हितौना* [क्रि. अ.] (हिं) देखो 'हिताना'।

हिदायत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-बड़े का छोटे को यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए २-आदेश। निर्देश।

हिनकाना [क्रि. अ.] (हिं.) (घोड़े का) हिनहिनाना।

हिनती* [संज्ञा स्त्री] (हिं.) हीनता। तुच्छता।

हिनवाना [संज्ञा पु] (हिं) देखो 'हिंदवाना'।

हिनहिनाना [क्रि. अ.] (हिं.) घोड़े का बोलना।

हिनहिनाहट [संज्ञा स्त्री] (हिं) घोड़े की बोली।

हिना [संज्ञा स्त्री] (अ) मेंहदी।

हिफाजत [संज्ञा स्त्री] (अ.) रक्षा। रखवाली।

हिब्बा [संज्ञा पु.] (अ.) १-कौड़ी। २-दान। *हिब्बा भर*-थोड़ा-सा। जरा-सा।

हिब्बानामा [संज्ञा पु] (अ., फा) दानपत्र।

हिमंचल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिमाचल'।

हिमंत* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'हेमंत'।

हिम [संज्ञा पु] (सं.) १-पाला। तुषार। २-जाड़ा। ठंड। ३-जाड़े का मौसम। ४-चन्द्रमा। ५-चंदन ६-कपूर। ७-मोती। ८-राँगा। ९-ताजा मक्खन १०-कमल। ११-पृथ्वी के विभागों में से एक। १२-ठंढा क्वाथ या काढ़ा। खेशाँदा। [वि](सं) ठंडा। सर्द।

हिमउपल [संज्ञा पु.] (सं) ओला। पत्थर।

हिमऋतु [संज्ञा स्त्री.] (सं) जाड़े की मौसम।

हिमक [संज्ञा पु.] (सं) तालीशपत्र।

हिमकण [संज्ञा पु.] (सं) तुषार या पाले के बहुत छोटे-छोटे कण या टुकड़े।

हिमकर [संज्ञा पु] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

हिमकरतनय [संज्ञा पु] (सं) बुध।

हिमकिरण [संज्ञा पु.] (सं) चन्द्रमा।

हिमकूट [संज्ञा पु] (सं) १-शीतकाल। २-हिमालय पर्वत।

हिमखंड, हिमखण्ड, हिमगिरि [संज्ञा पु] (सं) हिमालय-पर्वत।

हिमगु [संज्ञा पु.] (सं) चन्द्रमा।

हिमगृह [संज्ञा पु.](सं) घर में सबसे ठण्ढी कोठरी या कमरा।

हिमज [वि.] (सं) १-बर्फ में होने वाला। २-हिमालय में होने वाला। हिमालय से उत्पन्न। [संज्ञा पु.] (सं.) मैनाक-पर्वत।

हिमजन [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रासायनिक तत्त्व जो एक पारदर्शक वाष्प के रूप में होता

और जिसका पता इन्हीं दिनों में लगा है। *हीलियम।*

हिमजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-खिरनी का पेड़। २-यवनाल से निकली हुई चीनी। ३-पार्वती।

हिमज्योति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

हिमतैल [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर देकर बनाया हुआ तेल

हिमदीधिति [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

हिमदुग्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) खिरनी।

हिमद्रुम [संज्ञा पु.] (सं.) बकायन का पेड़।

हिमधर [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

हिमपात [संज्ञा पु.] (सं.) पाला पड़ना। बर्फ गिरना

हिमप्रस्थ [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

हिमभानु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

हिमभृत [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय पर्वत।

हिममयूख [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

हिमयानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) कमर में बाँधने की, रुपया रखने की लंबी थैली।

हिमयुक्त [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का कपूर।

हिमरश्मि, हिमरुचि [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

हिमर्तु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) जाड़े का मौसम।

हिमवत् [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'हिमवान्'।

हिमवत्सुत [संज्ञा पु.] (सं.) मैनाक-पर्वत।

हिमवत्सुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

हिमवल [संज्ञा पु.] (सं.) मोती।

हिमवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. हिमवती] जिसमें बरफ या पाला हो। [संज्ञा पु.] १-हिमालय। २-चन्द्रमा।

हिमवारि [संज्ञा पु.] (सं) ठंडा पानी।

हिमवालुका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) कपूर।

हिमवृष्टि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) बरफ का गिरना।

हिमशर्करा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यवनाल से बनी हुई चीनी।

हिमशैल [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

हिमशैलजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

हिमस्रुत [संज्ञा पु] (सं.) चन्द्रमा।

हिमहासक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार की खजूर।

हिमांक, हिमाङ्क [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर.

हिमांशु [संज्ञा पु.] (सं.) १-चन्द्रमा। २-कपूर।

हिमाकत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) मूर्खता। बेवकूफी।

हिमाचल [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय-पर्वत।

हिमाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

हिमाद्रिजा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

हिमाद्रितनया [संज्ञा स्त्री.] (सं.) दुर्गा।

हिमानी [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-तुषार। पाला। २-बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर रहती हैं। ग्लेशियर।

हिमाब्ज [संज्ञा पु.] (सं.) नीलकमल

हिमाभ्र [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

हिमामदस्ता [संज्ञा पु.] (फा.) लोहे का खरल और लोढ़ा।

हिमायत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-पक्षपात। २-किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण।

हिमायती [वि.] (फा.) १-पक्ष लेने या समर्थन करने वाला। २-सहायता करने वाला। तरफदार।

हिमाराति [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य। ३-चित्रकवृक्ष। आक मदार।

हिमाल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो हिमालय'।

हिमालय [संज्ञा पु.] (सं.) १-भारत के उत्तर का प्रसिद्ध और संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा प्रसिद्ध पर्वत। २-सफेद खैर का पेड़।

हिमालयसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती।

हिमाह्व [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

हिमाह्वय [संज्ञा पु.] (सं.) कपूर।

हिमि* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिम'।

हिमिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घास पर गिरी हुई बरफ

हिमेश [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय।

हिमोत्तरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार की दाख।

हिमोदक [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवाल। मूंगा।

हिमोपम [संज्ञा पु.] (सं.) प्रवाल मूँगा।

हिम्मत [संज्ञा स्त्री.] (अ.) साहस।
हिम्मत हारना–हताश होकर साहस छोड़ना। *हिम्मत पड़ना*–साहस होना।

हिम्मती [वि.] (फा.) साहसी।

हिय, हियरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हृदय। मन। २-छाती। वक्षस्थल। *हिय हारना*–साहस छोड़ना।

हियाँ+ [अव्य.] (हिं) देखो 'यहाँ'।

हिया [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हृदय। २-छाती। वक्षस्थल। ३-साहस। हिम्मत। *हिये का अंधा*–परम मूर्ख। *हिये की फूटना*–बुद्धि नष्ट होना। *हिया जलना*–बहुत क्रोध या ईर्ष्या होना। *हिय में लोन सा लगना*–बहुत बुरा या अप्रिय लगना। *हिये लगाना*–छाती लगना।
हिया शीतल या ठंडा होना–मन में सुख शांति होना। *हिये पर पत्थर धरना*–कलेजे पर पत्थर रखना। *हिया फटना*–छाती फटना। बहुत शोक या दुःख होना। *हिया भर आना*–शोक या दुःख का हृदय में अत्यन्त वेग होना। *हिया भर लेना*·दुःख से लम्बी सांस लेना।

हियाव [संज्ञा पु.] (हिं.) साहस। *हियाव खुलना*–१-हिम्मत बँधना। २-धड़क खुलना। *हियाव पड़ना*–साहस होना।

हिरंगु, हिरङ्गु [संज्ञा पु.] (सं.) राहुग्रह।

हिर [संज्ञा पु.] (सं.) कपड़े आदि की पट्टी।

हिरकना* [क्रि अ.] (हिं.) १-पास आना। २-सटना। ३-परचना।

हिरकाना* [क्रि. स.] (हिं.) १-पास करना। २-नजदीक आना। ३-सटाना। भिड़ाना।

हिरगुनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की बढ़िया कपास।

हिरण [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। सुवर्ण। २-वीर्य ३-कौड़ी। *[संज्ञा पु] (हिं) देखो 'हिरन'।

हिरण्मय [वि.] (सं.) सुनहरा। सोने का। [संज्ञा पु.] १-ब्रह्मा। २-एक ऋषि।

हिरण्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोना। स्वर्ण। २-वीर्य शुक्र। ३-कौड़ी। ४-धतूरा। ५-एक मान या तौल। ६-नित्य। तत्व। ७-ज्ञान। ८-ज्योति। प्रकाश। ९-अमृत।

हिरण्यकर्ण [वि.] (सं.) कान में सोने का कुण्डल पहने हुए।

हिरण्यकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं) सुनार।

हिरण्यकशिपु, हिरण्यकश्यप [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य जो प्रसिद्ध भक्त प्रह्लाद का पिता था, जिसे नृसिंह-अवतार में विष्णु ने मारा था।

हिरण्यकामधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने की कामधेनु गाय जो दान के उद्देश्य से बनी हो।

हिरण्यकार [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार।

हिरण्यकेश [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

हिरण्यगर्भ [संज्ञा पु.] (सं.) १-ब्रह्मा। २-वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा तथा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई हो। ३-सूक्ष्म शरीर संयुक्त आत्मा ४-एक मन्त्रकार ऋषि। ५-विष्णु।

हिरण्यचक्र [संज्ञा पु.] (सं.) सोने के पहियों वाला रथ।

हिरण्यज [वि.] (सं.) सोने का बना हुआ।

हिरण्यदा [वि.] (सं.) पृथ्वी।

हिरण्यनाभ [संज्ञा पु.] (सं) १-विष्णु। २-मैनाक पर्वत।

हिरण्यपति [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

हिरण्यपुर [संज्ञा पु.] (सं.) असुरों का एक नगर का नाम।

हिरण्यपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं) करियारी नामक विषैला पौधा।

हिरण्यबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-एक नाग का नाम। ३-सोनपद।

हिरण्यबिंदु, हिरण्यबिन्दु [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-एक पर्वत का नाम। ३-एक तीर्थ का नाम।

हिरण्यरेता [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य। ३-शिव। ४-चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ५-बारह आदित्यों में से एक।

हिरण्यरोम [संज्ञा पु.] (सं.) १-लोकपाल जो मरीचि के पुत्र हैं। २-भीष्मक का नाम।

हिरण्यव [संज्ञा पु.] (सं.) किसी देवता पर चढ़ा हुआ धन। देवोत्तर सम्पति।

हिरण्यवान [वि.] (सं.) [स्त्री. हिरण्यवती] जिसमें या जिसके पास सोना हो। [संज्ञा पु] अग्नि।

हिरण्यवाह [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सोननदी

हिरण्यवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-सूर्य।

हिरण्यशृंग, हिरण्यशृङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) सोने के शिखर या सींग वाला।

हिरण्याक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिरण्यकशिपु के भाई का नाम। २-वसुदेव के छोटे भाई का नाम।

हिरण्यांश्व [संज्ञा पु.] (सं.) दान के निमित्त बनाया हुआ सोने का घोड़ा।

हिरदय* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हृदय'।

हिरदावल [संज्ञा पु.] (हिं.) घोड़े की छाती पर की एक भौंरी जो शुभ मानी जाती है।

हिरन [संज्ञा पु.] (हिं.) [स्त्री. हिरनी] मृग। हरिन। *हरिन हो जाना*-१-भाग जाना। २-नष्ट हो जाना

हिरनखुरी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) बरसात में उगने वाली एक लता जिसके पत्ते हिरन के खुर के समान होते हैं।

हिरना [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरन। मृग।
*[क्रि. स.] (हिं.) देखो 'हेरना'।

हिरनाकुस [संज्ञा पु.](हिं.) देखो 'हिरण्यकशिपु'।

हिरनौटा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिरन का बच्चा।

हिरफ़त [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-व्यवसाय। पेशा। २-दस्तकारी। ३-कलाकौशल। हुनर। ४-चतुराई। चालाकी। धूर्त्तता। चालबाजी।

हिरफ़तबाज [वि.] अ, फा.) धूर्त्त। चालबाज।

हिरमजी, हिरमिजी [संज्ञा स्त्री.](अं.) एक प्रकार की मिट्टी जो लाल रंग की होती है।

हिरवा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हीरा'।

हिरवाचाय [संज्ञा स्त्री.](हिं.) एक प्रकार की नीबू की-सी गंध वाली घास।

हिरस+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हिर्स'।

हिरा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) रक्तवाहिनी नाड़ी। शिरा।

हिराती [संज्ञा पु.](सं.) अफगानिस्तान के उत्तर हिरात नामक देश का घोड़ा।

हिराना+ [क्रि. अ.](हिं.) १-खो जाना। गायब या गुम होना। २-अभाव होना। ३-मिटना। दूर होना। ४-दंग रह जाना। अत्यंत चकित होना। ५-अपने को भूल जाना। ६-खेत में खाद करने के लिए चौपायों आदि की लेंडी, गोबर आदि के निमित्त रख जाना। [क्रि. स.] भूल जाना।

हिरावल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरावल'।

हिरास [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-भय। २-नैराश्य। ३-खेद। खिन्नता। [वि.] १-खिन्न। २-हताश।

हिरासत [संज्ञा स्त्री.](अ.) १-किसी व्यक्ति पर रखा जाने वाला पहरा या चौकी। २-हवालात।
हिरासत में करना-सिपाहियों के पहरे में देना।

हिरासाँ [वि.] (फा.) १-निराश। २-हिम्मत हारा हुआ। पस्त। ३-खिन्न। उदासीन।

हिरिस [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का छोटा वृक्ष

हिरौंजी+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हिरमजी'।

हिरौल* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हरावल'।

हिर्स [संज्ञा स्त्री.] (अ.) १-लोभ। लालच। २-स्पर्द्धा ३-वासना। मु०-*हिर्स छूटना*-मन में लालच न होना। *हिर्स दिलाना*-१-प्रबल इच्छा उत्पन्न करना। २-लालच दिलाना। *हिर्स मिटना*-इच्छा या कामवेग शांत होना।

हिलंदा [संज्ञा पु.](देश.)[स्त्री. हिलन्दी] मोटा ताजा आदमी।

हिलकना [क्रि. अ.](हिं.) १-हिचकियां लेना। हिचकना। २-सिसकना। ३-देखो 'हिरकना'। [क्रि. स.](देश.) (मुँह) सुकोड़ना।

हिलकी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हिचकी। २-सिसकने का शब्द।

हिलकोर, हिलकोरा [संज्ञा पु.](हिं.) हिलोर। तरङ्ग लहर। मु०-*हिलकोरे लेना*-तरङ्गित होना।

हिलकोरना [क्रि. स.] (हिं.) पानी को हिलाकर तरंगें उठाना।

हिलग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लगाव। सम्बन्ध। २-प्रेम। लगन। ३-परिचय। हेलमेल।

हिलगत [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-परचने का भाव। २-आदत। टेव।

हिलगना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अटकना। टँगना। २-फँसना। बझना। ३-हिलमिल जाना। ४-परचना ५-पास या समीप होना।

हिलगाना [क्रि. स.] (हिं.) १-अटकाना। टाँगना। २-फँसाना। ३-घनिष्टता स्थापित करना। ४-परचाना। ५-सटाना। भिड़ाना।

हिलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-अपने स्थान से कुछ इधर उधर होना। हरकत करना। २-सरकना। चलना ३-काँपना। थरथराना। ४-ढीला होना। ५-झूमना। लहराना। ६-घुसना। पैठना। ७-(मन का) चंचल होना। डिगना। हेलमेल में आना। परचना। मु०-*हिलमिल कर*-१-घनिष्टता और मैत्री के साथ। २-सम्मिलित या एकत्र होकर। हिलामिला या हिलाजुला-१-घनिष्ट-सम्बन्ध रखता हुआ। २-परचा हुआ।
हिलना डोलना-१-इधर उधर होना। २-घूमना-फिरना। ३-किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना। *हिलाना-मिलाना*-१-मेलजोल के साथ होना। २-मेल-जोल से होना। ३-परस्पर गहरे मित्र होना

हिलसा [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की मछली।

हिलाना [क्रि. स.] (हिं.) १-चलायमान करना। हरकत देना। २-स्थान से उठाना। हटाना। ३-कँपाना। ४-घनिष्टता स्थापित करना। परचाना। [क्रि. स.] (देश.) (पानी में) घुसाना।

हिलोर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पानी की लहर। तरङ्ग। *हिलोरें लेना*-लहराना। तरङ्गित होना।

हिलोरना [क्रि. स.] (हिं.) १-जल को तरंगित करना २-लहराना। ३-देखो 'हलोरना'।

हिलोरा [संज्ञा पु.] (हिं.) हिलोर। तरंग।

हिलोल [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिलोर' 'हिल्लोल'।

हिल्लोल [संज्ञा पु.] (सं.) १-पानी की लहर। तरङ्ग। २-आनन्द की तरङ्ग। मौज। उमंग। ३-एक रति-बंध। ४-हिंडोल नामक राग।

हिल्लोलन [संज्ञा पु.](सं.) १-तरङ्ग उठना। लहराना २-दोलन। झूलना।

हिवँ, हिवाँर [संज्ञा पु.] (हिं.) बरफ। पाला। तुषार *हिवाँर होना*-सर्द या ठंढा होना।

हिवंचल [संज्ञा पु.] (हिं.) हिम। पाला। बरफ।

हिस [संज्ञा पु.] (अ.) १-ज्ञान। अनुभव। २-संज्ञा चेतना।

हिसका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-ईर्ष्या। डाह। २-स्पर्द्धा ३-किसी की बराबरी करने की हवस।
हिसका-हिसकी-परस्पर स्पर्द्धा।

हिसाब [संज्ञा पु.] (अ.) १-गिनकर लेखा तैयार करने का काम या विद्या। २-लेनदेन, आय व्यय आदि का लिखा हुआ विवरण। लेखा। ३-गणित सम्बन्धी प्रश्न। ४-भाव। दर। ५-तरीका। ढंग ६-धारणा। समझ। ७-अवस्था। दशा। ८-किफायत। मितव्यय।
हिसाब चलना-१-लेनदेन का लेखा रहना। २-उधार लिखा जाना। *हिसाब चुकाना या चुकता करना*-जो कुछ बाकी निकलता हो वह दे देना। *हिसाब जाँचना*-यह देखना कि हिसाब या लेखा ठीक है या नहीं। *हिसाब करना*-जितना जिम्मे निकलता हो उसे दे देना। *हिसाब देना*-आय-व्यय का विवरण बताना। *हिसाब पर चढ़ना*-बही में लिखा जाना। *हिसाब बराबर करना*-१-लेनदेन का हिसाब साफ करना। २-अपना काम पूरा करना। *हिसाब बेबाक करना*-हिसाब चुकाना *हिसाब बन्द करना*-लेखा आगे न चलाना। लेन-देन बन्द करना। *हिसाब में जमा होना*-१-प्राप्त रकम लिखी जाना। २-आय व्यय के लेखे में पावने से ऊपर आई हुई रकम का अलग लिखा जाना। *हिसाब में लगाना*-उधार या लेन-देन में सम्मिलित करना। *हिसाब लेना या समझना*-यह पूछना कि कहाँ से कितना (धन) आया और कहाँ कितना खर्च हुआ। *हिसाब बैठना*-१-युक्ति या व्यवस्था ठीक होना। २-सुभीता होना। *हिसाब रखना*-आय-व्यय आदि का लिखित विवरण रखना। *हिसाब लड़ना या लगना*-मेल मिलना। तबियत मिलना। यौ०-*बेड़ा या टेढ़ा हिसाब*-१-कठिन कार्य। २-अव्यवस्था। *बे-हिसाब*-बहुत अधिक। *पक्का हिसाब*-ठीक-ठीक और पूरा हिसाब *कच्चा हिसाब*-स्थूल विवरण। मोटा ब्योरा। *चलना हिसाब*-लेन-देन का लेखा जो जारी हो। *हिसाब से*-अनुसार। मुताबिक।

हिसाब-किताब [संज्ञा पु.](अ.) १-आय-व्यय आदि का ब्योरा या लेखा। २-व्यापारिक लेन-देन का व्यवहार। ३ ढंग। रीति। *हिसाब-किताब जाँचना*-लेखा जाँचना।

हिसाबचोर [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो हिसाब-किताब में बेईमानी करता हो।

हिसाब-बही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) आय-व्यय के विवरण वाली पुस्तक या बही।

हिसाबी [संज्ञा पु.](अ.) हिसाब या गणित का जानकार। [वि.] हिसाब का। हिसाब-सम्बन्धी।

हिसार [संज्ञा पु.] (फा.) फारसी संगीत की २४ शोभाओं में से एक।

हिसिषा* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-स्पर्द्धा। होड़। २-समता। बराबरी। ३-ईर्ष्या। डाह।

हिस्टीरिया [संज्ञा पु.](अं.) मूर्छा रोग जो प्रधानतः स्त्रियों को होता है।

हिस्सा [संज्ञा पु.] (अ.) १-समष्टि अथवा समूह का कोई अंश। अवयव। अंग। २-टुकड़ा। खण्ड। ३-विभक्त होने या बँटने पर मिलने वाला अंश भाग। बखरा। ४-व्यापार आदि में होने वाला साझा।

हिस्सेदार [संज्ञा पु.] (अ., फा.) १-वह जिसे कुछ हिस्सा मिला हो या मिलने को हो। २-अंश या हिस्से का मालिक। साझेदार।

हिहिनाना [क्रि. अ.] (हिं.) हिनहिनाना (घोड़े का)।

हींग [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक छोटे पौधे का जमाया हुआ गोंद या दूध जो मसालों में व्यवहृत होता है

हींगड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) एक प्रकार की घटिया हींग।

हींचना+ [क्रि. स.] (हिं.) देखो 'खींचना'।

हींछा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इच्छा'।

हींठी [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की जोंक।

हींस [संज्ञा स्त्री.](सं.) गधे की रेंक या घोड़े की हिनहिनाहट।

हींसना [क्रि. अ.](हिं.) १-देखो 'हिनहिनाना'। २-देखो 'रेंकना'।

हींसा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिस्सा'।

हींहीं [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हँसने का शब्द।

ही [अव्य.](हिं.) एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय परिमित, स्वीकृति आदि सूचित करने या किसी बात पर जोर देने के लिये होता है। * [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिय' या 'हृदय'। [क्रि. अ.] (हिं.) ब्रजभाषा के 'हो' (था) का स्त्रीलिंग रूप था।

हीअ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिअ'।

हीक [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हिचकी। २-हलकी अरुचिकर गन्ध। *हीक मारना*-रह-रहकर दुर्गन्ध करना

हीचना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हिचकना'

हीछना+ [क्रि. अ.] (हिं.) इच्छा करना। चाहना।

हीछा+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'इच्छा'।

हीज [वि.] (देश.) आलसी। काहिल।

हीजड़ा [संज्ञा पु.] (?) वह व्यक्ति जिसमें पुरुष और स्त्री दोनों में से किसी के भी चिह्न न हों। नपुंसक।

हीठना [क्रि. अ.] (हिं.) १-पास जाना। फटकना। २-जाना। पहुँचना।

हीन [वि.] (सं.) १-परित्यक्त। छोड़ा हुआ। २-रहित। खाली। बगैर। शून्य। ३-ओछा। नीच। ४-तुच्छ। नाचीज। ५-सुख-समृद्धि रहित। दीन ६-पथभ्रष्ट। भटका हुआ। ७-अल्प। कम। ८-दीन। नम्र।

हीनकर्मा [वि.] (सं.) १-बुरा काम करने वाला। २-अपना निर्दिष्ट कर्म करने वाला।

हीनकुल [वि.](सं.) नीच या बुरे कुल का। अकुलीन

हीनक्रम [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य का वह दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ पर जिस क्रम से गुण गिनाये गये हों उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हों।

हीनकुष्ठ [संज्ञा पु.] (सं.) खराब कोढ़।

हीनचरित [वि.] (सं.) बुरे आचरण वाला।

हीनच्छिदक, हीनच्छिन्दक [संज्ञा पु.] (सं.) वह संघ या श्रेणी जो कुल, मान-मर्यादा, शक्ति आदि में बहुत घटकर हो।

हीनज [वि.] (सं.) नीच जाति से उत्पन्न।

हीनजाति [वि.](सं.) नीच जाति या वर्ण का।

हीनता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-अभाव। कमी। २-क्षुद्रता। तुच्छता। ३-ओछापन। ४-बुराई। निकृष्टता।

हीनत्व [संज्ञा पु.] (सं.) हीनता।

हीनदग्ध [वि.] (सं.) थोड़ा जला हुआ।

हीनपक्ष [संज्ञा पु.](सं.) १-गिरा हुआ पक्ष। २-कमजोर मुकदमा।

हीनबल [वि.] (सं.) शक्तिरहित। कमजोर।

हीनबाहु [संज्ञा पु.] (सं.) शिव के एक गण का नाम

हीनबुद्धि, हीनमति [वि.] (सं.) मूर्ख।

हीनमूल्य [संज्ञा पु.] (सं.) कम दाम।

हीनयान [संज्ञा पु.] (सं.) बौद्धधर्म की मूल और प्राचीन शाखा जिसका विकास बरमा, श्याम आदि देशों में हुआ था।

हीनयोग [वि.] (सं.) योगभ्रष्ट। [संज्ञा पु.] (सं.) उचित परिमाण से कम औषधि मिलना।

हीनयोनि [वि.](सं.) नीच कुल या नीच जाति का।

हीनरस [संज्ञा पु.] (सं.) काव्य का वह दोष जिसमें किसी रस का वर्णन करते हुए उस रस के विरुद्ध दूसरा रस प्रयोग किया जाता है।

हीनरात्र [संज्ञा स्त्री.] (सं.) थोड़ी रात।

हीनरोम [वि.] (सं.) जिसके कम रोएँ हों।

हीनवर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) नीच जाति या वर्ण।

हीनवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-मिथ्या तर्क। व्यर्थ की बहस। लचर दलील। २-झूठी गवाही जिसमें पूर्वापर विरोध हो।

हीनवादी [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. हीनवादिनी] १-वह जिसका लाया हुआ अभियोग गिर गया हो २-खिलाफ बयान करने वाला गवाह।

हीनवीर्य [संज्ञा पु.] (सं.) हीनबल। कमजोर।

हीनहयात [संज्ञा पु.] (अ.) जीवनकाल। [अव्य.] (अ.) जब तक जीवन रहे तबतक।

हीनांग, हीनाङ्ग [वि.](सं.) १-खंडित अङ्ग वाला। २-अधूरा।

हीनापहीन [संज्ञा पु.] (सं.) जुरमाने के साथ हरजाना। अर्थदंडसहित हानि की पूर्ति।

हीनार्थ [वि.] (सं.) १-विफल। २-जिसे लाभ न हुआ हो।

हीनोपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लाया जाय।

हीय, हीयरा, हीया* [संज्ञा पु.] (हिं.) हृदय।

हीर [संज्ञा पु.](हिं.) १-किसी वस्तु के अन्दर का मूल-तत्त्व या सार भाग। २-इमारती लकड़ी के अन्दर का भाग। ३-धातु या वीर्य, जो शरीर का सार भाग है। ४-शक्ति। बल। ताकत। (सं.) १-हीरा-रत्न। २-वज्र। बिजली। ३-शिव। ४-छप्पयछंद का एक भेद। ५-एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः भगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते हैं। ६-एक मात्रिक छन्द जिसमें ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं।

हीरक [संज्ञा पु.](सं.) १-हीरा नामक रत्न। २-हीर-छन्द।

हीरक-जयंती, हीरक-जयन्ती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) किसी व्यक्ति, संस्था, महत्त्वपूर्ण कार्य आदि की वह जयन्ती जो उसके जन्म अथवा आरंभ होने के ६० वें वर्ष होती है। *डायमण्ड-जुबिली*।

हीरा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो अपनी चमक तथा बहुत अधिक कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। २-नररत्न। बहुत ही अच्छा आदमी। ३-बहुत उत्तम वस्तु। ४-दुम्बे भेड़े की एक जाति। *हीरे की कनी चाटना*-हीरे का कण खाकर आत्महत्या करना। यौ०-*हीरा कट*-कई पहलों का कटाव। *डायमंड कट*।

हीराकसीस [संज्ञा पु.] (हिं.) लोहे का वह विकार जो गंधक के रासायनिक योग से होता है। यह देखने में कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है

हीरातराश [संज्ञा पु.] (हिं.) वह जो हीरे घिसने या तराशने का काम करता हो।

हीरातराशी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) हीरा तराशने का काम या भाव।

हीरादोषी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) विजय साल का गोंद

हीरामखी [संज्ञा पु.](हिं.)एक प्रकार का बढ़िया धान

हीराना [क्रि. स.] (हिं.) खाद के लिए खेत में भेड़ बकरी आदि रखना।

हीरामन [संज्ञा पु.](हिं.)एक प्रकार का तोता जिसका रंग सोने का-सा माना गया है।

हील [संज्ञा पु.] (देश.) एक सदाबहार वृक्ष। *[संज्ञा स्त्री.](हिं.) पनाले आदि का गंदा कीचड़

हीलना* [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हिलना'।

हीला [संज्ञा पु.](अ.)१-बहाना। मिस। २-निमित्त साधन। यौ०-*हीला हवाला*-बहाना। +[संज्ञा पु.] (हिं.) कीचड़।

हीस [संज्ञा पु.](देश.) एक प्रकार की कँटीली लता।

हीसका, हीसा* [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-ईर्ष्या। डाह २-होड़। प्रतियोगिता।

हीही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हँसने का शब्द।

हुँ [अव्य] (हिं.) १-देखो 'हूं'। २-देखो 'हाँ'।

हुंकना, हुकरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हुंकारना'।

हुंकार [संज्ञा पु.](सं.) १-ललकार। २-भयभीत करने के लिए जोर से किया जाने वाला शब्द। गर्जन। गरज। ३-चीत्कार।

हुंकारना [क्रि. अ.] (हिं.) १-ललकारना। २-डराने के लिए जोर का शब्द करना। ३-चिल्लाना।

हुँकारी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-'हुँ' करने की क्रिया। २-स्वीकृतिसूचक शब्द। ३-घुमाव के साथ झुकी हुई लकीर जो अङ्क के आगे रकम सूचित करने के लिए लगायी जाती है। जैसे-२॥)

हुंड, हुण्ड [संज्ञा पु.](सं.) १-मेढ़ा। मेष। २-बाघ ३-ग्रामशूकर। ४-मूर्ख। ५-राक्षस। ६-अनाज की बाल।

हुंडन, हुण्डन [संज्ञा पु.] (सं.) १-(अङ्ग का) सुन्न या स्तब्ध हो जाना। मारा जाना। २-शिव का एक गण।

हुंडा, हुण्डा [संज्ञा पु.] (सं.) आग के दहकने का शब्द। [संज्ञा पु.](हिं.) वरपक्ष की ओर से बेटी पर कन्या के पिता को दिया जाने वाला धन।

हुंडाभाड़ा [संज्ञा पु.](हिं.) महसूल आदि देकर कहीं पर माल पहुँचाने का ठेका।

हुँडार [संज्ञा पु.] (हिं.) भेड़िया

हुंडावन [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हुंडी से रुपया भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी।

हुँडियाना [क्रि. अ.] (हिं.) किसी के नाम हुण्डी लिखना।

हुंडी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-भारतीय महाजनी क्षेत्र में वह पत्र जो कोई महाजन किसी से कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाणस्वरूप ऋण देने वाले को लिखकर देता है और ज़िसपर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिन में ब्याज सहित चुका दिया जायेगा। २-अपना प्राप्यधन अथवा उसका कोई अंश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिस पर यह लिखा होता है कि इतने रुपये अमुक व्यक्ति, महाजन या बैंक को दे दिये जायँ। ड्राफ्ट। ३-ऊधार रुपया देने की एक रीति जिसके अनुसार कुछ निश्चित समय में ब्याजसहित सारा रुपया लिया जाता है *हुंडी सकारना*-हुण्डी के रुपये का देना स्वीकार करना।

हुंडीवही [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) वह वही जिसमें सब प्रकार की हुंडियों की नकल रहती है।

हुंडीवेंत [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का वेंत।

हुँत* [अत्य.] (हिं.) १-से। (पुरानी हिंदी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति। २-लिए। वास्ते। निमित्त।

हुंवा [संज्ञा पु.] (देश.) सागर की चढ़ती लहर। ज्वार।

हुंमी, हुम्भी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) गाय के रँभाने का शब्द।

हु* [क्रि. अ.] (हिं.) 'भी' का वाचक एक अतिरेक-सूचक अव्यय। कथित के अतिरिक्त और भी।

हुआँ [अव्य.] (हिं.) देखो 'वहाँ'। [संज्ञा पु.] गीदड़ों के बोलने का शब्द।

हुआ [क्रि. अ.] (हिं.) 'होना' क्रिया का भूत।

हुआना [क्रि. अ.] (हिं.) हुआँ, हुआँ करना। (गीदड़ों का) बोलना।

हुक [संज्ञा पु.] (अं.) १-टेढ़ी कील। २-अँकुसी। [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार का नस का दरद जो प्रायः पीठ में सहसा बल पड़ने पर होता है।

हुकना [संज्ञा पु.] (देश.) सोहन-चिड़िया। [क्रि. अ.] भूलजाना। [क्रि. अ.] लक्ष्यभ्रष्ट होना। खाली जाना।

हुकरना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हुँकरना'।

हुकर-पुकर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) कलेजे की धड़कन। घबराहट। अधीरता। *कलेजा हुकर-पुकर करना*-भय या घबराहट से दिल धड़कना।

हुकारना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हुँकारना'।

हुकुम+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हुक्म'।

हुकुर, हुकूर [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जल्दी-जल्दी साँस चलने की धड़कन।

हुकूमत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) १-शासन। २-आधिपत्य अधिकार। ३-राजनैतिक शासन या आधिपत्य। *हुकूमत करना*-प्रभुत्व या अधिकार जताना या उससे काम लेना। *हुकूमत जताना*-अधिकार या बड़प्पन दिखाना।

हुक्का [संज्ञा पु.] (अं.) तंबाकू का धूआँ खींचने के लिए विशेषरूप से बना एक नल यंत्र। *हुक्का गुड़-गुड़ाना*-हुक्के से धूम्रपान करना। *हुक्का ताज़ा करना*-हुक्के का पानी बदलना।

हुक्कापानी [संज्ञा पु.] (हिं.) एक बिरादरी के लोगों का आपस में जल, हुक्का आदि पिलाने का व्यवहार। बिरादरी का बरताव। *हुक्का पानी करना*-बिरादरी से निकाल या अलग कर देना।

हुक्काम [संज्ञा पु.] (अं.) हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग।

हुक्कू [संज्ञा पु.] (देश.) बन्दर की एक जाति।

हुक्म [संज्ञा पु.] (अं.) १-आज्ञा। आदेश। २-शासन। प्रभुत्व। ३-जन साधारण के लिए राज्य या शासन द्वारा निकाली हुई आज्ञा। ४-धर्मशास्त्र आदि में बतलाई हुई विधि। ५-ताश का एक रङ्ग।

हुक्म चलाना-आज्ञा देना। *हुक्म तोड़ना*-आज्ञा भंग करना। *हुक्म देना*-आज्ञा करना। *हुक्म बजाना या बजा लाना*-१-आज्ञा पालन करना। २-सेवा करना। *हुक्म में होना*-अधिकार में होना

हुक्मचील [संज्ञा स्त्री.] (?) खजूर का गोंद।

हुक्मनामा [संज्ञा पु.] (अ, फा.) आज्ञापत्र।

हुक्मबरदार [संज्ञा पु.](अ., फा.) आज्ञाकारी। सेवक

हुक्मबरदारी [संज्ञा स्त्री.](अ., फा.) १-आज्ञापालन। २-सेवा।

हुक्मी [वि] (अं.) १-हुक्म या आज्ञा के अनुसार काम करने वाला। पराधीन। २-अचूक। अव्यर्थ। ३-न खाली जाने वाला। ४-लाजमी। जरूरी।

हुचकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) हिचकी। (देश.) एक प्रकार की सुन्दर बेल।

हुजूम [संज्ञा पु.] (अ.) भीड़। जमावड़ा।

हुजूर [संज्ञा पु.] (अं.) किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २-कचहरी। ३-बहुत बड़ों के संबोधन का शब्द।

हुजूरी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) किसी बड़े का सामीप्य या समक्षता। [संज्ञा पु.] १-नौकर। २-मुसाहब। दरबारी। [वि.] हुजूर का। सरकारी।

हुज्जत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) व्यर्थ का विवाद। तकरार।

हुज्जती [वि.] (अं.) बहुत या प्रायः हुज्जत करनेवाला। झगड़ालू।

हुड़ [संज्ञा पु.](सं.) १-मेढ़ा। २-एक तरह का अस्त्र

हुड़क, हुड़कन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) हुड़कने की क्रिया या भाव।

हुड़कना [क्रि. अ.] (हिं.) १-वियोग के कारण बहुत दुःखी होना (विशेषतः छोटे बच्चे का)। २-भयभीत और चिंतित होना।

हुड़का [संज्ञा पु.](हिं.) वियोग के कारण होने वाली मानसिक व्यथा (बच्चों की)।

हुड़काना [क्रि. स.] (हिं.) हुड़कना का स० रूप।

हुड़दंग, हुड़दंगा [संज्ञा पु.](हिं.) उपद्रवयुक्त उछल-कूद।

हुडुक [संज्ञा पु.] (हिं.) एक प्रकार का छोटा ढोल या बाजा।

हुडुक्क [संज्ञा पु.](सं.) १-एक प्रकार का छोटा ढोल। २-मतवाला आदमी। ३-लोहे का साम जड़ा डंडा। ४-अर्गल। बेवड़ा।

हुडक* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हुडुक्क'।

हुत [वि.] (सं.) १-हवन किया हुआ। २-आहुति के रूप में दिया हुआ। [संज्ञा पु.] (सं.) १-हवन की सामग्री। २-शिव। * [क्रि. अ.] (हिं.) था (पुराना रूप)।

हुतभक्ष [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि।

हुतभुक्, हुतभुज [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-चित्रकवृक्ष।

हुतवह [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

हुतशेष [संज्ञा पु.](सं.) हवन करने के उपरांत बची हुई सामग्री।

हुता* [क्रि. अ](हिं.) 'होना' क्रिया का प्राचीन रूप था।

हुताग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि-होत्री। २-हवन की अग्नि।

हुताश [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। आग। २-तीन की संख्या। ३-चित्रकवृक्ष।

हुताशन [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

हुति* [अव्य.] (हिं.) १-करण और अपादानकारक का चिह्न। से। द्वारा। २-ओर से। तरफ से। [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हवन। यज्ञ।

हुतियन [संज्ञा पु.] (देश.) सेमल का पेड़।

हुते* [अव्य.](हिं.)१-से। द्वारा। २-ओर। तरफ से [क्रि. अ.] (हिं.) 'होना'। का ब्रज० भूतकालिक बहु० रूप। थे।

हुतो* [क्रि. स.] (हिं.) था।

हुत्कच [संज्ञा पु.] (सं.) एक दैत्य का नाम।

हुदकाना* [क्रि. स.] (देश.) उसकाना। उभारना।

हुदना* [क्रि. अ.](हिं.) १-स्तब्ध होना। २-चकपकाना। ३-ठिठकना।

हुदहुद [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार का पक्षी।

हुदारना [क्रि. स.] (देश.) रस्सी पर लटकना।

हुद्दा [संज्ञा स्त्री.] (देश.) एक प्रकार की मछली। + [संज्ञा पु.] (हिं.) ओहदा। पद।

हुन [संज्ञा पु.] (हिं.) १-मोहर। अशरफी। २-सोन सुवर्ण। *हुन बरसना*-धन अधिक्य होना।

हुनना* [क्रि. स.] (हिं.) १-आहुति देना। २-हवन करना।

हुनर [संज्ञा पु.] (फा.) १-कला। कारीगरी। २-कोई काम करने का कौशल। ३-गुण। करतब।

हुनरमंद [वि.] (फा.) १-हुनर जानने वाला। कलाविद्। २-निपुण। कुशल।

हुनरमंदी [संज्ञा स्त्री.](फा.) हुनरमंद होने की क्रिया या भाव। कला-कुशलता। निपुणता।

हुनरा [वि.] (फा.) वह बन्दर या भालू जो खेल करना और नाचना सीखा हुआ हो।

हुनिया [संज्ञा स्त्री.] (देश.) भेड़ों की एक जाति।

हुन्न [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हुन'।

हुब, हुब्ब [संज्ञा पु.] (अं.) १-प्रेम। २-श्रद्धा। ३-हौसला। उमंग।

हुमकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'हुमचना'। २

ठमकना (बच्चों का)।

हुमगना [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हुमचना'।

हुमचना [क्रि. अ.] (हिं.) १-किसी वस्तु पर चढ़कर उसे बार-बार जोर से नीचे दबाना। २-उछलना। कूदना। ३-देखो 'हुमकना'।

हुमसना+ [क्रि. अ.](हिं.) १-देखो 'हुमचना'। २-देखो 'उमसना'।

हुमसाना [क्रि. स.] (हिं.) १-ऊपर की ओर जोर से उठना। उछालना। २-बढ़ाना।

हुमा [संज्ञा स्त्री.] (फा.) एक कल्पित पक्षी जिसके विषय में कहा जाता है कि जिस पर इसकी छाया पड़ जाय, वह राजा हो जाता है।

हुमेल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-रुपयों या अशर्फियों आदि को गूँथ कर बनाई हुई माला। २-घोड़ों के गले का एक गहना।

हुम्मा [संज्ञा पु.] (हिं.) लहरों का उठना।

हुर [संज्ञा पु.](देश.) सिंध में रहने वाले एक प्रकार के अर्धसभ्य-मुसलमान।

हुरदंग, हुरदंगा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हुड़दंग'।

हुरमत [संज्ञा स्त्री.](अ.) आबरू। इज्जत। मर्यादा। मान।

हुरहुर [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हुलहुल'।

हुरहुरिया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक प्रकार की चिड़िया

हुरिंजक, हुरिञ्जक [संज्ञा पु.] (सं.) एक संकरजाति का नाम।

हुरुट्टक [संज्ञा पु.] (सं.) हाथी का अंकुश।

हुरुमयी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का नाच।

हुर्रा [संज्ञा पु.] (अं.) एक प्रकार की हर्षध्वनि।

हुल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का दो-धारा छुरा।

हुलकना [क्रि. अ.] (हिं.) कै करना। उल्टी करना।

हुलकी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उल्टी। कै। २-हैजे की बीमारी।

हुलना [क्रि. अ.] (हिं.) लाठी आदि को ठेलना।

हुलसना [क्रि. अ.] (हिं.) १-बहुत प्रसन्न होना। २-उभरना। ३-उमड़ना। [क्रि. स.] आनंदित या प्रसन्न करना।

हुलसाना [क्रि. स.](हिं.) उल्लसित करना। आनंदित करना। [क्रि. अ.] देखो 'हुलसना'।

हुलसित* [वि.] (हिं.) आनंद की उमंग से भरा हुआ। परम प्रसन्न।

हुलसी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-हुलास। उल्लास। २-कुछ लोगों के मतानुसार गोस्वामी तुलसीदासजी की माता का नाम।

हुलहुल [संज्ञा पु.](?) एक प्रकार का बरसाती पौधा

हुलहुला [संज्ञा पु.](देश.) १-विलक्षण या अद्भुत बात। २-उपद्रव। उत्पात। ३-शोक। ४-मिथ्या अभियोग।

हुला [संज्ञा पु.] (हिं.) लाठी की नोक या छोर।

हुलाना+ [क्रि. स.] (हिं.) लाठी से ठेलना।

हुलाल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तरंग। लहर।

हुलास [संज्ञा पु.](हिं.) १-विशेष आनन्द। उल्लास। आह्लाद। २-उत्साह। हौसला। ३-उमगना। बढ़ना। [संज्ञा स्त्री.] सुँघनी। नस्य।

हुलासदानी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) सुँघनीदानी।

हुलासी [वि.] (हिं.) १-आनन्दी। २-उत्साही।

हुलिया [संज्ञा पु.] (अ.) १-रूप। शकल। आकृति। २-किसी मनुष्य के रूप-रंग आदि का ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान की जा सके। *हुलिया करना*-किसी व्यक्ति का पता लगाने के लिए उस की शकल, सूरत आदि पुलिस को बताना।

हुलु [संज्ञा पु.] (सं.) मेढ़ा।

हुलूक [संज्ञा पु.] (देश.) एक जाति का बन्दर।

हुलैया [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) नाव का डूबने के पहले डगमगाना।

हुल्ल [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का नृत्य।

हुल्लड़ [संज्ञा पु.] (हिं.) १-कोलाहल। हो-हल्ला। २-उपद्रव। उत्पात।

हुल्लड़बाजी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) होहल्ला या शोर-गुल मचने या मचाने की क्रिया।

हुल्लास [संज्ञा पु.] (हिं.) चौपाई तथा त्रिभंगी के योग से बना हुआ एक छन्द।

हुशियार [वि.] (हिं.) देखो 'होशियार'।

हुश् [अव्य.] (हिं.) एक निषेधवाचक शब्द।

हुश्कारना [क्रि. स.] (हिं.) कुत्ते को हुश्-हुश् करके उकसाना।

हुसियार* [वि.] (हिं.) देखो 'होशियार'।

हुसैन [संज्ञा पु.] (अ.) मुहम्मदसाहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गये थे

हुसैनी [संज्ञा पु.] (अ.) १-अंगूर की एक जाति। २-फारसी सङ्गीत के बारह मुकामों में से एक।

हुसैनी-कान्हड़ा [संज्ञा पु.] (अ., हि.) संपूर्णजाति का राग।

हुस्न [संज्ञा पु.] (अ.) १-सौंदर्य। उत्तम रूप। २-उत्कर्ष। खूबी। ३-अनूठापन। विचित्रता।

हुस्नदान [संज्ञा पु.] (अ., हिं.) पानदान।

हुस्नपरस्त [संज्ञा पु.] (अ., फा.) सौंदर्योपासक। रूप का लोभी।

हुस्नपरस्ती [संज्ञा स्त्री.] (अ., फा.) सौंदर्योपासना। रूप का लोभ।

हुस्यार* [वि.] (हिं.) देखो 'होशियार'।

हुहुव [संज्ञा पु.] (सं.) एक नरक का नाम।

हुहु [संज्ञा पु.] (सं.) देखो 'हू-हू'।

हूँ [अव्य.] (हि.) १-स्वीकृतिसूचक शब्द। २-देखो 'हू'। [सर्व.] वर्त्तमानकालिक क्रिया 'है' का उत्तमपुरुष एक वचन का रूप।

हूँकना [क्रि. अ.] (हि.) १-बछड़े की याद में या और कोई दुःख सूचित करने के लिए गाय का धीरे-धीरे बोलना। २-चोरों का ललकारना या दपटना। ३-सिसककर रोना।

हूँठ [वि.] (हिं.) साढ़े तीन।

हूँठा [संज्ञा पु.] (हिं.) साढ़े तीन का पहाड़ा।

हूँड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) खेतों की सिंचाई में किसानों का परस्पर सहयोग देना।

हूँस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-ईर्ष्या। जलन। २-दूसरे की कोई वस्तु देखकर उसे पाने के लिए लालायित रहना। आंख गड़ाना। ३-बुरी नजर। टोक

हूँसना [क्रि. स.](हिं.)१-नज़र लगाना। २-बराबर डाँट सुनाते रहना। ३-ललचाना। ४-कोसना।

हू* [अव्य.] (हिं.) भी। [संज्ञा पु.] गीदड़ के बोलने का शब्द।

हूक [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हृदय की पीड़ा। साल। २-दर्द। वेदना। ३-आशंका। खटका।

हूकना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सालना। कसकना। २-पीड़ा से चौंक उठना।

हूचक [संज्ञा पु.] (डिं.) युद्ध।

हूटना* [क्रि. अ.] (हिं.) १-हटना। टलना। २-मुड़ना। पीठ फेरना।

हूठा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'ठेंगा'। २-भद्दी या गँवारू चेष्टा। *हूठा देना*-ठेंगा दिखाना।

हूड़+ [वि.](हिं.) १-हुड। उजड्ड। २-असावधान बेखबर। ३-अनाड़ी। ४-हठी। जिद्दी।

हूड़ा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का बाँस।

हूण [संज्ञा प.] (?) एक प्राचीन मंगोल जाति जो कुछ दिनों तक एशिया तथा यूरोप के देशों पर आक्रमण करती फिरती थी।

हूत [वि.] (सं.) बुलाया हुआ।

हूदा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हूल' 'हूला'।

हून [संज्ञा पु.](सं.)मद्रास प्रांत में प्रचलित एक सोने की मुद्रा जो तौल में पचास ग्रेन होती है।

हूनना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-आग में डालना। २-विपत्ति में फँसाना।

हूनिया [संज्ञा स्त्री.](हिं.)एक प्रकार की तिब्बती भेड़

हूब [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हुब्ब'।

हू-बहू [वि.] (अ.) ज्यों का त्यों। बिलकुल अनुरूप या समान।

हूय [संज्ञा पु.] (सं.) आह्वान। आवाहन।

हूर [संज्ञा स्त्री.](अ.) मुसलमानों के मत से स्वर्ग की अप्सरा।

[संज्ञा पु.] (देश.) देखो 'हुर'।

हूरव [संज्ञा पु.] (सं.) शृगाल। सियार।

हूरहूण [संज्ञा पु.] (सं.) हूणों की एक शाखा। श्वेत हूण।

हूरा [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हूला'।

हूराहूरी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक त्यौहार जो दिवाली के तीसरे दिन होता है।

हूल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हूलने की क्रिया या भाव भोंकना। हूक। २-टीस। ३-कोलाहल। ४-हर्षध्वनि। ५-ललकार।

हूलना [क्रि. स.] (हिं.) १-लाठी, भाले आदि का सिरा जोर से धँसना या घुसना। २-शूल उत्पन्न करना।

हूला [संज्ञा पु.] (हिं.) शस्त्र, लाठी आदि हूलने की क्रिया या भाव।

हूश, हूसड़ [वि.] (हिं.) १-असभ्य। उजड्ड। २-अशिष्ट बेहूदा।

हूह [संज्ञा स्त्री.] (हि) हुँकार।

हूहू [संज्ञा पु.](सं.) एक गन्धर्व का नाम। [संज्ञा पु.] (हिं.) अग्नि के जलने का शब्द।

हृत [वि.] (सं.) १-हरण किया हुआ। लिया हुआ। २-पहुँचाया हुआ।

हृति [संज्ञा स्त्री] (सं.) १-लेजाना। हरण। २-नाश ३-लूट।

हृत्कंप, हृतकम्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-दिल की धड़कन। २-जी दहलाना।

हृत्तंत्री, हृत्तन्त्री [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हृदयरूपी तंत्री या वीणा।

हृत्तल [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय। दिल।

हृत्पिंड, हृत्पिण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) कलेजा।

हृद् [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय। दिल।

हृदयंगम, हृदयङ्गम [वि.] (सं.) मन में आया हुआ

हृदय [संज्ञा पु.] (सं.) १-छाती के भीतर बाईं ओर का एक अवयव जिसके द्वारा शुद्ध रक्त शरीर की नाड़ियों में पहुँचता है। दिल। कलेजा। २-इसी के पास छाती के मध्य में माना जाने वाला वह अवयव जिसमें प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न होते रहते हैं। ३-अंतःपुर। विवेक बुद्धि। ४-तत्व। सरांश। ५-किसी वस्तु का सारभाग। ६-अत्यन्त प्रिय व्यक्ति *हृदय से लगाना*-आलिंगन करना। *हृदय विदीर्ण होना*-शोक, कष्ट आदि के कारण मन को बहुत दुःख पहुँचना। *हृदय उमड़ना या भर आना*-मन में प्रेम, शोक या करुणा का वेग उत्पन्न होना। *हृदय की गाँठ*-१-मन का दुर्भाव। २-कपट।

हृदयग्रह [संज्ञा पु] (सं.) कलेजा पकड़ने का रोग। दिल का दर्द।

हृदयग्राही [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. हृदयग्राहिणी] मनको आकृष्ट करने वाला।

हृदयचोर [संज्ञा पु.] (सं.) मन को मोहने वाला।

हृदयज [वि.] (सं.) अन्तःकरण से उत्पन्न।

हृदयज्ञ [वि.] (सं.) मन के भावों को जानने वाला।

हृदयदाही [वि.] (सं.) हृदयपीड़क।

हृदयनिकेतन [संज्ञा पु.] (सं.) कामदेव।

हृदयपुरुष [संज्ञा पु.] (सं.) दिल की धड़कन।

हृदयप्रमाथी [वि.] (सं.) [स्त्री. हृदयप्रमाथिनी] १-मन को क्षुब्ध या चंचल करने वाला। २-मन को मोहने वाला।

हृदयवल्लभ [संज्ञा पु.] (सं.) प्रेमपात्र। प्रियतम।

हृदयवान् [वि.] (सं.) [स्त्री. हृदयवती] १-सहृदय २-भावुक। रसिक।

हृदयविदारक [वि.] (सं.) १-मन को बहुत अधिक कष्ट पहुँचाने वाला (शोक, करुणा आदि की घटना)। २-करुणा या दया उत्पन्न करने वाला।

हृदयवृत्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अतःकरण की वृत्ति।

हृदयवेधी [वि.] (सं.) [स्त्री. हृदयवेधिनी] १-मनको अत्यधिक मोहित करने वाला। २-अत्यधिक शोक उत्पन्न करने वाला। ३-अत्यन्त कटु

हृदयव्याधि [संज्ञा पु.] (सं.) दिल का हृदय का रोग

हृदयशोक [संज्ञा पु.] (सं) हृदय का कष्ट या शोक

हृदयसंघट्ट, हृदयसङ्घट्ट [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय की गति का रुक जाना।

हृदयस्थ [वि.] (सं.) दिल में रहने वाला।

हृदयस्थान [संज्ञा पु.] (सं.) वक्षःस्थल।

हृदयस्पर्शी [वि.] (सं.) [स्त्री. हृदयस्पर्शिणी] १-दिल पर असर करने वाला। २-चित्त को द्रवीभूत करने वाला।

हृदयहारी [वि.] (सं.)[हृदयहारिणी] मन को हरण करने या लुभाने वाला। मनोहर।

हृदयाला* [वि.] (हिं.) देखो 'हृदयालु'।

हृदयालु [वि.](सं.) १-दृढ़ हृदय वाला। २-साहसी। ३-उदार। ४-सहृदय।

हृदयेश, हृदयेश्वर [संज्ञा पु.] (सं.) [स्त्री. हृदयेश्वरी] १-प्रियतम। प्रेमपात्र। २-प्यारा।

हृदयोन्मादिनी [वि.] (सं.) [स्त्री. प्र.] १-हृदय को उन्मत्त बनाने वाली। २-मन को मोहने वाली। [संज्ञा स्त्री.] संगीत में एक श्रुति।

हृदि [संज्ञा पु.] (हिं.) हृदय में।

हृदिस्पृश [वि.] (सं.) सुन्दर। मनोहर।

हृद्ग [वि.] (सं.) हृदय में जाने वाला।

हृद्गत [वि.](सं.) १-आंतरिक। मन का। २-मन में बैठा या जमा हुआ। ३-मनचाहा। रुचिकर।

हृद्दाह [संज्ञा पु.] (सं.) दिल की जलन।

हृद्य [वि.](सं.) १-हृदय का। भीतरी। २-हृदय को रुचने वाली। ३-सुन्दर। ४-हृदय को हितकारी। ५-स्वादिष्ट। जायकेदार। [संज्ञा पु.] १-कैथ। कपित्थ। २-शत्रु को वशीभूत करने का एक मंत्र। ३-सफेद जीरा। ४-दही। ५-महुए की शराब।

हृद्यगंध, हृद्यगन्ध [संज्ञा पु.] (सं.) १-बेल का वृक्ष या फल। २-सोंचर नमक।

हृद्यगंधा, हृद्यगन्धा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) अजमोदा।

हृद्यांशु [संज्ञा पु.] (सं.) चन्द्रमा।

हृद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-ऋद्धि नाम अष्टवर्गीय औषध। २-बकरी।

हृद्रुज [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हृदय की पीड़ा।

हृद्रोग [संज्ञा पु.] (सं.) हृदय में होने वाला रोग।

हृद्रोध [संज्ञा पु.](सं.) हृदय की गति का रुक जाना। हार्ट फेल्योर।

हृन्मोह [संज्ञा पुं.] (सं.) हृदय का मोह।

हृल्लास [संज्ञा पु.] (सं.) हिक्का रोग। हिचकी।

हृल्लेख [संज्ञा पु.] (सं) ज्ञान। तर्क।

हृल्लेखा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) उत्सुकता। व्याकुलता।

हृषि [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-हर्ष। आनन्द। २-कांति चमक। ३-झूठा आदमी।

हृषित [वि.](सं.) १-विस्मृत। २-पुलकित। ३-प्रणत

हृषीक [संज्ञा पु.] (सं.) विषयग्राहक इन्द्रियाँ।

हृषीकनाथ [संज्ञा पु] (सं.) विष्णु।

हृषीकेश [संज्ञा पु.] (सं.) १-विष्णु। २-श्रीकृष्ण। ३-पूस का महीना। ४-एक तीर्थ स्थान जो हरिद्वार से आगे है।

हृषीवत् [वि.] (सं.) प्रसन्न।

हृषु [वि.] (सं.) १-प्रसन्न। २-झूठ बोलने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) १-अग्नि। २-सूर्य। ३-चन्द्रमा।

हृष्ट [वि.] (सं.) १-हर्षित। प्रसन्न। २-उठा हुआ। (रोयाँ)। ३-उकठा हुआ।

हृष्टपुष्ट [वि.] (सं.) मोटाताजा।

हृष्टमानस [वि.](सं.) प्रसन्न चित्त।

हृष्टि [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-हर्ष। प्रसन्नता। २-इतराना

हृष्टियोनि [संज्ञा पु.](सं.) एक प्रकार का नपुंसक।

हृष्यका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) संगीत में एक मूर्च्छना।

हेंहें [संज्ञा पु.] (हिं.) १-धीरे धीरे हँसने का शब्द। २-गिड़गिड़ाने का शब्द।

हेंगा+ [संज्ञा पु.] (हिं.) वह पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करते हैं। मैंड़ा।

हेंगी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) छोटा हेंगा।

हे [अव्य.] (सं.) सम्बोधनसूचक अव्यय। *[क्रि. अ.] (हिं.) थे।

हेउँती [संज्ञा स्त्री.] (देश.) देसावरी रुई।

हेकड़ [वि.] १-हृष्टपुष्ट। मोटाताजा। २-प्रबल। प्रचंड। ३-अक्खड़पन। उद्धत।

हेकड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-अक्खड़पन। उग्रता। २-जबरदस्ती।

हेच [वि.] (फा.) तुच्छ। हीन।

हेठ+ [क्रि. वि.](हिं.) नीचे। [वि.] १-नीचा। २-कम। [संज्ञा पु.](सं.) १-विघ्न। बाधा। २-हानि। ३-चोट।

हेठा [वि.] (हिं.) १-नीचा। २-घटकर। हलका। ३-तुच्छ।

हेठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) अप्रतिष्ठा।

हेड [वि.] (अं.) प्रधान। [संज्ञा पु.] (अं.) ऊँचा अफसर। उच्च अधिकारी।

हेडक्वाटर [क्रि. स.] (अं.) १-वह स्थान जहाँ सेना का प्रधान रहता हो। २-किसी सरकार या अधिकारी का प्रधान स्थान। ३-वह प्रधान स्थान जहां कोई मुख्यतः रहता या कारोबार करता हो।

हेडस [संज्ञा पु.] (सं.) क्रोध। गुस्सा।

हेडा [संज्ञा पु.] (देश.) मांस। गोस्त।

हेडिंग [संज्ञा स्त्री.] (अं.) शीर्षक।

हेड़ी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) जानवरों का समूह जिसे बनजारे बेचने के लिये लेकर चलते हैं। [संज्ञा पु.] (हिं.) शिकारी। व्याध।

हेत* [संज्ञा पु.](हिं.) १-देखो 'हेतु'। २-देखो 'हित'

हेति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-वज्र। २-अस्त्र। ३-घाव ४-आग की लपट। लौ। ५-सूर्य की किरण। ६-भाला। ७-धनुष की टङ्कार। ८-यंत्र। औजार। ९-अंकुर। अँखुआ।

हेतिमत् [वि.] (सं.) अस्त्र-युक्त।

हेतु [संज्ञा पु.](सं.) १-वह बात जिसे ध्यान में रखकर कोई बात की जाय। अभिप्राय। उद्देश्य। २-कारण। वजह। सबब। ३-वह बात जिसके होने से कोई बात घटित हो। ४-तर्क। दलील। ५-प्रमाणित करने वाली बात। ६-मूलकारण। ७-एक अर्थालङ्कार जिसमें कारण ही कार्य के रूप में दिखलाया जाता है। [संज्ञा पु.](सं.) १-लगाव प्रेम-सम्बन्ध। २-प्रेम। प्रीति।

हेतुक [संज्ञा पु.] (सं.) कारण-सम्बन्धी।

हेतुमान् [वि.] (सं.) [स्त्री. हेतुमती] जिसका कुछ हेतु या कारण हो। [संज्ञा पु.](सं) वह जिसका कुछ कारण हो। कार्य।

हेतुवाद [संज्ञा पु.] (सं.) १-तर्कशास्त्र। २-कुतर्क। ओछा दलील। ३-नास्तिकता।

हेतुवादी [वि.] (सं.) [स्त्री. हेतुवादिनी] १-तार्किक २-दलील करने वाला।

हेतुविद्या [संज्ञा स्त्री.] (सं.) तर्कशास्त्र।

हेतुशास्त्र [संज्ञा पु.] (सं.) तर्कशास्त्र।

हेतुहेतुमद्भाव [संज्ञा पु.] (सं.) कारण और कार्य का सम्बन्ध।

हेतुहेतुमद्भूतकाल [संज्ञा पु.] (सं.) व्याकरण में क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिसमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है। जैसे-यदि तुम जल्दी गये होते तो तुम्हें गाड़ी मिल गई होती।

हेतूत्प्रेक्षा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उत्प्रेक्षा अलंकार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।

हेतूपमा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह उपमा-अलंकार जिसमें हेतु द्वारा उपमा दी जाती है।

हेत्वंतर, हेत्वन्तर [संज्ञा पु.] (सं.) हेतुकथन।

हेत्वापह्नुति [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह अपह्नुति-अलंकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय।

हेत्वाभास [संज्ञा पु.] (सं.) कोई बात सिद्ध करने के लिए बतलाया जाने वाला ऐसा कारण जो देखने में ठीक जान पड़े पर वास्तव में ठीक न हो। मिथ्या हेतु।

हेमंत, हेमन्त [संज्ञा पु.] (सं.) जाड़े का मौसम जो अगहन और पूस में होता है। शीतकाल।

हेमंतनाथ, हेमन्तनाथ [संज्ञा पु.] (सं.) कैथ। कपित्थ

हेम [संज्ञा पु.] (सं.) १-हिम। पाला। २-सोना। स्वर्ण। ३-कपित्थ। कैथ। ४-एक माशे की तौल ५-नागकेसर। ६-बादामी रङ्ग का घोड़ा।

हेमकंदल, हेमकन्दल [संज्ञा पु.] (सं.) मूँगा।

हेमक [संज्ञा पु] (सं.) स्वर्णयुक्त।

हेमकर [संज्ञा पु.] (सं.) १-शिव। २-सूर्य।

हेमकर्त्ता [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार।

हेमकांति, हेमकान्ति [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-बन हल्दी। २-आँबाहल्दी।

हेमकार [संज्ञा पु.] (सं.) सुनार।

हेमकूट [संज्ञा पु.] (सं.) हिमालय के उत्तर का एक पर्वत।

हेमकेली [संज्ञा पु.] (सं.) अग्नि। आग।

हेमकेश [संज्ञा पु.] (सं.) शिव।

हेमगंधिनी, हेमगन्धिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं) रेणुका नामक गंधद्रव्य।

हेमगर्भ [वि.] (सं.) जिसमें सुवर्ण या सोना हो। [संज्ञा पु.] उत्तर दिशा में एक पर्वत।

हेमगिरि [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरु-पर्वत।

हेमगौर [संज्ञा पु.] (सं.) किंकरातवृक्ष।

हेमघ्न [संज्ञा पु.] (सं.) सीसा धातु।

हेमघ्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हल्दी। हलदी।

हेमचंद्र, हेमचन्द्र [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक प्रसिद्ध जैन आचार्य का नाम। २-इक्ष्वाकुवंशी एक राजा का नाम।

हेमचूर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) सोने का बुरादा या बुकनी

हेमज [संज्ञा पु.] (सं.) राँगा।

हेमतरु [संज्ञा पु.] (सं.) धतूरा।

हेमतार [संज्ञा पु.] (सं.) नीलाथोथा।

हेमतुला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने का तुलादान।

हेम-दीनार [संज्ञा पु.] (सं.) सुवर्णमुद्रा। अशरफी

हेमदुग्ध [संज्ञा पु.] (सं.) गूलर।

हेमधन्वा [संज्ञा पु.] (सं.) ग्यारहवें मनु के एक पुत्र का नाम

हेमधान्यक [संज्ञा पु.] (सं.) तिल का पौधा।

हेमनाभि [संज्ञा पु.] (सं.) वह रथ जिसका धुरा सोने का हो।

हेमनेत्र [संज्ञा पु.] (सं.) यक्ष।

हेमपर्वत [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुमेरु पर्वत। २-दान के निमित्त सोने की राशि।

हेमपुष्प [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंपा। २-अशोक। ३-नागकेसर। ४-अमलतास।

हेमपुष्पिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-सोनजुही। २-गुड़हर।

हेमपुष्पी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-मजीठ। २-मूसली-कंद। ३-कंटकारी।

हेमप्रभ [वि.] (सं.) सोने की-सी दमक वाला।

हेमफला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का केला।

हेममय [वि.] (सं.) सुनहरा।

हेममाला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यम की पत्नी का नाम।

हेममाली [संज्ञा पु.] (सं.) १-सूर्य। २-एक राक्षस जो खर का सेनापति था।

हेममित्र [संज्ञा पु.] (सं.) फिटकरी।

हेममुद्रा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोने का सिक्का। अशरफी

हेमयूथिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सोनजुही।

हेमरागिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) हलदी।

हेमरेणु [संज्ञा पु.] (सं.) त्रसरेणु।

हेमलंब, हेमलम्ब, हेमलंबक, हेमलम्बक [संज्ञा पु.] (सं.) वृहस्पति के साठ सवत्सरों में से एक।

हेमल [संज्ञा पु.] (सं.) १-सुनार। २-कसौटी। ३-गिरगिट। ४-छिपकली।

हेमवल [संज्ञा पु.] (सं.) मुक्ता। मोती।

हेमशंख, हेमशङ्ख [संज्ञा पु.] (सं.) विष्णु।

हेमशिखा [संज्ञा स्त्री] (सं.) स्वर्णक्षीरी का पौधा।

हेमसागर [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का पौधा।

हेमसार [संज्ञा पु.] (सं.) नीलाथोथा।

हेमसुता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) पार्वती। दुर्गा।

हेमांग, हेमाङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) १-चंपा। २-सिंह। ३-मेरु-पर्वत। ४-ब्रह्मा। ५-विष्णु। ६-गरुड़।

हेमांगद, हेमाङ्गद [संज्ञा पु.] (सं.) १-सोने का बिजायठ। २-वह जो सोने का बिजायठ पहने। ३-वासुदेव के एक पुत्र का नाम।

हेमा [संज्ञा स्त्री.] (सं) १-माधवी-लता। २-सुन्दर स्त्री। ३-पृथ्वी। ४-एक अप्सरा।

हेमाचल, हेमाद्रि [संज्ञा पु.] (सं.) सुमेरु-पर्वत।

हेमाद्रिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) स्वर्णक्षीरी नामक पौधा

हेमाभ [वि.] (सं.) सोने की-सी दमक या आभा वाला। सुनहला।

हेमाल [संज्ञा पु.] (सं.) एक राग का नाम।

हेमियानी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) रुपया-पैसा रखने की जालीदार थैली जो कमर में बाँधी जाती है।

हेम्न [संज्ञा पु.] (सं.) मंगलग्रह।

हेम्ना [संज्ञा स्त्री.] (सं.) एक प्रकार का संकीर्ण राग

हेय [वि.] (सं.) १-छोड़ने योग्य। त्याज्य। २-बुरा। खराब। ३-तुच्छ।

हेरंब, हेरम्ब [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। २-भैंसा। ३-धीरोद्धत नायक। ४-एक बुद्ध का नाम।

हेर [संज्ञा पु.] (सं.) १-किरीट। २-हलदी। आसुरी माया।

* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) तलाश। खोज। [संज्ञा पु.] देखो 'अहेर'।

हेरना* [क्रि. स.] (हिं.) १-खोजना। ढूँढ़ना। २-ताकना। देखना। ३-जाँचना। परखना।

हेरना-फेरना [क्रि. स.] (हिं.) १-इधर-उधर करना। २ अदल-बदल करना। हेर-फेर कर-घूम-फिरकर।

हेर-फेर [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घुमाव-फिराव। चक्कर। २-दाँव-पेंच। चालबाजी। ३-अदल-बदल। उलट-पलट। ४-कुछ बेचना और कुछ खरीदना

हेरवा+ [[संज्ञा पु.] (हिं.) खोज। ढूँढ़। तलाश।

हेरवाना+ [क्रि. स.] (हिं.) १-खोना। गँवाना। २-तलाश कराना।

हेराना+ [क्रि. अ.] (हिं.) १-खोजाना। २-न रह जाना। लुप्त हो जाना। ३-किसी के सामने फीका या मंद पड़ना। ४-सुधबुध भूलना। [क्रि. स.] कोई वस्तु खोना। गँवाना।

हेरा-फेरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हेरफेर। अदल-बदल। २-इधर का उधर होना या करना। ३-बराबर आना-जाना।

हेरिक [संज्ञा पु] (सं.) भेदिया। गुप्तचर।

हेरियाना [क्रि. अ.] (हिं.) जहाज के अगले पाल की रस्सियाँ तानकर बाँधना।

हेरी* [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) पुकार। टेर। हेरी देना-पुकारना।

हेरुक [संज्ञा पु.] (सं.) १-गणेश। २-शिव का एक गण।

हेल [संज्ञा पु.] (हिं.) १-घनिष्ठता। मेल-जोल। २-कीचड़ गोबर आदि। ३-गोबर का खेप। ४-मैला। गलीज। ५-घृणा। घिन।

हेलन [संज्ञा पु.] (सं.) १-तिरस्कार या अवज्ञा करना। तुच्छ समझना। २-अपराध। कसूर। ३-क्रीड़ा करना। केलि करना।

हेलना [क्रि. अ.] (हिं.) १-क्रीड़ा या मनोविनोद करना। २-मन बहलाना। ३-पैठना। ४-तैरना। [क्रि. स.] हेय या तुच्छ समझना।

हेल-मेल [संज्ञा पु.] (हिं.) मेल-जोल।

हेलया [क्रि. वि.] (सं.) १-खेलवाड़ में। हँसी या मजाक में।

हेला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-तुच्छ या उपेक्ष्य समझना तिरस्कार। २-खेलवाड़। क्रीड़ा। ३-प्रेम की क्रीड़ा। केलि। ४ बहुत आसान काम। ५-साहित्य में नायिका की वह विनोदपूर्ण चेष्टा जिससे वह नायक पर अपने मिलने की इच्छा प्रकट करती है। [संज्ञा पु.] (हिं.) १-पुकार। हाँक। २-धावा। चढ़ाई। ३-धक्का। रेला। ४-[स्त्री. हेलिन, हेलिनी] भंगी। महतर। ५-बारी। पारी ६-खेप।

हेलान [संज्ञा पु.] (देश.) डाँड़े को नाव पर रखना

हेलाल [संज्ञा पु.] (अं.) १-दूज का चाँद। २-बँधी हुई पगड़ी की वह उठी हुई ऐंठन जो सामने माथे के ऊपर पड़ती है।

हेलिन [संज्ञा स्त्री.](हिं.) हलालखोरिन। मेहतरानी

हेली* [अव्य.] (हिं.) हे सखी! [संज्ञा स्त्री.] सखी सहेली।

हेलीमेली [वि] (हिं.) जिससे हेलमेल हो।

हेलुवा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-जल में खड़े होकर एक दूसरे पर पानी की हिलोरा या छींटा मारने का खेल। २-देखो 'हलवा'।

हेवंत* [संज्ञा पु.] (हिं) देखो 'हेमंत'।

हेवाँय+ [संज्ञा पु.] (हिं.) पाला। हिम। बर्फ।

हेष [संज्ञा पु.] (सं.) घोड़े का हिनहिनाना।

हैं [अव्य.] (हिं) एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है। [क्रि. अ.] 'होना' क्रिया के वर्त्तमान रूप 'है' का बहुवचन।

हैंगिंगलैंप [संज्ञा पु.] (अं.) छत से लटकने वाला लंप

हैंगुल [वि.] (सं.) हिंगुल या ईंगुर-सम्बन्धी।

हैंडबिल [संज्ञा पु.] (अं.) वह छपाहुआ कागज का टुकड़ा जिसमें किसी वस्तु का विज्ञापन या नाच तमाशे, सभा, समिति आदि की सूचना दी होती है

हैंडबैग [संज्ञा पु.](अं.)चमड़े का छोटा संदूक जिसे यात्रा में हाथ में रखते हैं।

हैंडिल [संज्ञा पु.] (अं.) दस्ता। मुठिया।

हैंस [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार का छोटा पौधा।

है [क्रि. अ.] (हिं.) 'होना' का वर्त्तमानकालिक एकवचन रूप। *[संज्ञा पु.] देखो 'हय'।

हैकड़ [वि.] (हिं.) देखो 'हेकड़'।

हैकल [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-घोड़ों के गले में पहनाने का एक गहना। २-गले में पहनने का एक गहना हुमेल।

हैजम [संज्ञा स्त्री.] (अं) १-सेना की पंक्ति। २-तलवार।

हैजा [संज्ञा पु.](अं.) एक घातक तथा संक्रामक रोग जिसमें दस्त और कै आती हैं। विशूचिका।

हैट [संज्ञा पु.] (अं.) छज्जेदार अंग्रेजी टोपी जिससे धूप का बचाव होता है।

हैठा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का अंगूर।

हैतुक [वि](सं.)१-जिसका कोई हेतु हो। २-निर्भर अवलम्बित। [संज्ञा पु.] (सं.) १-तार्किक। तर्क करने वाला। २-कुतर्की। ३-नास्तिक। ४-मीमांसा का मत मानने वाला।

हैन [संज्ञा स्त्री.](देश.) एक प्रकार की घास। तकड़ी

हैना* [क्रि. स.] (हिं.) मार डालना।

हैफ़ [अव्य.](अं.)खेद या शोकसूचक शब्द। अफसोस। हा। हाय।

हैबत [संज्ञा स्त्री.] (अं.) भय। त्रास।

हैबतनाक [वि.] (अं.) भयानक। डरावना।

हैबर* [संज्ञा पु.] (हिं.) अच्छा घोड़ा।

हैम [वि.] (सं.) [स्त्री. हैमी] १-स्वर्णमय। सोने का २-सुनहरे रंग का। ३-हिम या पाले-सम्बन्धी। बर्फ का। ४-जाड़े में होने वाला। ५-बर्फ में होने वाला। [संज्ञा पु.](सं.) १-पाला। २-ओस ३-शिव। ४-चिरायता।

हैमना [वि.] (सं.) जाड़े का। शीतकाल का। [संज्ञा पु.] (सं.) १-पूस का महीना। २-साठी धान।

हैमवत [वि.] (सं.) [स्त्री. हैमावती] १-हिमालय-संबंधी। हिमालय का। २-हिमालय पर होने वाला। [संज्ञा पु.] १-हिमालय का निवासी। २-एक तरह का विष। ३-एक संप्रदाय का नाम। ४-मोती। ५-एक राक्षस का नाम।

हैमवती [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-पार्वती। २-गंगा। ३-सफेद फूल वाली बच। ४-हड़। हरीतकी। ५-अलसी। ६-रेणुका नामक गंधद्रव्य।

हैमा [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-सोनजुही। २-जर्द चमेली।

हैमी [वि.](सं.) [स्त्री. प्र.] सोने या सुवर्ण की बनी। [संज्ञा स्त्री] १-केतकी। २-सोनजुही।

हैयंगवीन, हैयङ्गवीन [संज्ञा पु.](सं.) ताजे मक्खन का घी।

हैया [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हौआ'।

हैरंब, हैरम्ब [वि.] (सं.) गणेश-सम्बन्धी। [संज्ञा पु] गणेश का उपासक संप्रदाय।

हैरण्य [वि.] (सं.) १-हिरण्य या सोने-सम्बन्धी। सोने का बना हुआ। २-सोना उत्पन्न करने वाला

हैरण्यक [संज्ञा पु.] (सं.) सोनार।

हैरण्यवत [संज्ञा पु.] (सं.) जैनों के अनुसार जंबूद्वीप के छठे खंड का नाम।

हैरत [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-आश्चर्य। अचंभा। २-एक मुकाम या फारसी राग का पुत्र।

हैरान [वि.] (अं.) १-आश्चर्य से। स्तब्ध। चकित। २-परेशान। व्यग्र। तंग।

हैवान [संज्ञा पु.] (अं.) पशु। जानवर।

हैवानी [वि.] (अं.) १-पशु का। २-पशु के करने योग्य।

हैसियत [संज्ञा स्त्री.](अं.) १-सामर्थ्य। शक्ति। २-आर्थिक योग्यता। ३-वित्त। बिसात। ३-धन-संपत्ति।

हैहय [संज्ञा पु.] (सं.) १-एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। २-सहस्रार्जुन। ३-पश्चिम दिशा का एक पर्वत (बृहत्संहिता)।

हैहयराज, हैहयाधिराज [संज्ञा पु.] (सं.) सहस्रार्जुन।

है-है [अव्य.] (हिं.) अफसोस। हाय।

हों [क्रि. अ.] (हिं) 'होना' क्रिया का संभाव्यकाल का बहुवचन रूप।

होंठ [संज्ञा पु.] (हिं.) ओंठ। ओष्ठ। होंठ काटना या चबाना–आन्तरिक क्रोध या क्षोभ प्रकट करना। होंठ चाटना–किसी बहुत स्वादिष्ठ वस्तु को खाकर अतृप्ति प्रकट करना। होंठ चिपकना–मीठी वस्तु का नाम सुनकर लालच होना। होंठ चूसना–होंठों का चुम्बन करना। होंठ हिलाना–बोलना।

होंठल [वि.] (हिं.) मोटे होंठों वाला।

होंठी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-बारी। किनारा। ओंठ २-छोटा टुकड़ा।

हो [संज्ञा पु.] (सं.) पुकारने का शब्द या सम्बोधन। [क्रि. अ.] (हिं.) 'होना' क्रिया के अन्यपुरुष, संभाव्यकाल और मध्यमपुरुष, बहुवचन के काल का रूप। * ब्रजभाषा में 'है' का सामान्य-भूत का रूप था।

होई [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) एक पूजा जो स्त्रियां संतान की प्राप्ति तथा रक्षा के लिए करती हैं। यह दीवाली से आठ दिन पहले होती है।

होगला [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार का नरकट या नरसल।

होजन [संज्ञा पु.] (?) एक प्रकार का किनारा जो कपड़ों में बनाया जाता है।

होटल [संज्ञा पु.] (अं.) वह स्थान जहां मूल्य लेकर लोगों के भोजन और ठहरने का प्रबन्ध होता है।

होड़ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-शर्त। बाजी। २-प्रतियोगिता चढ़ा-ऊपरी। ३-हठ। जिद। [संज्ञा पु.] (सं.) नाव।

होड़ाबादी, होड़ाहोड़ी [संज्ञा स्त्री.](हिं.) १-प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। शर्त। बाजी।

होढ [वि.] (सं.) चुराया हुआ। चोरी का।

होत+ [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-पास में धन होने का भाव। संपन्नता। २-वित्त। सामर्थ्य। [क्रि. स.] पुकारने का शब्द। हो।

होतब, होतव्य [संज्ञा पु.] (हिं.) होनहार।

होतव्यता [संज्ञा स्त्री.](हिं.) होनेवाली बात। होनहार।

होता [संज्ञा पु.](हिं.) [स्त्री. होत्री] यज्ञ में आहुति देने वाला।

होनहार [वि.] (हिं.) १-जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २-आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो। अच्छे लक्षणों वाला। [संज्ञा स्त्री.](हिं.) वह बात जो अवश्य होने को हो। होनी। भवितव्यता।

होना [क्रि. अ.] (हिं.) १-सत्ता, अस्तित्व उपस्थिति आदि सूचित करने वाली मुख्य तथा सब से अधिक प्रचलित क्रिया। उपस्थित या मौजूद रहना। २-पहला रूप छोड़कर दूसरे या नये रूप में आना। ३-कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना। व्यवहार या परिणाम के रूप में सामने आना। ४-बनना। निर्माण किया जाना। ५-कार्य का सम्पन्न किया जाना। सरना। भुगतना। ६-रोग, व्याधि, अस्वस्थता। प्रेतबाधा आदि का आना। ७-गुजरना। बीतना। ८-परिणाम निकालना। फल देखने में आना। ९-प्रभाव या गुण दीख पड़ना। १०-जन्म लेना। ११-प्रयोजन या कार्य सधना। किसी का होना-१-किसी के अधीन या वंश में होना। २-किसी का

प्रेमी या प्रेमपात्र होना। ३-किसी का आत्मीय कुटुम्बी या सम्बन्धी होना। कहीं का हो रहना-कहीं जाकर वहीं रह जाना। हो आना-भेट करने के लिए जाना और मिलकर लौट आना। होते पर-पास में धन होने की अवस्था में। होता-सोता-आत्मीय। कुटुम्बी। हो बैठना-नये रूप में स्थिति होना। बनजाना। हो जाना या चुकना-पूरा होना। होकर रहना-अवश्य घटित होना। जरूर होना। हो न हो-अवश्य। निस्संदेह। जो हुआ सो हुआ-१-बीती बात जाने दो। २-जो हुआ वह अब और न होगा।

होनिहार+ [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'होनहार'।

होनी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-उत्पत्ति। पैदाइश। २-अवश्य होकर रहने वाली बात या घटना। भावी भवितव्यता।

होवार [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की सोहन-चिड़िया। [संज्ञा पु.] (डिं.) घोड़ा।

होम [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ। हवन। होम करना-१-जलाना। २-नष्ट या बरबाद करना। ३-अर्पण या उत्सर्ग करना।

होमकाष्ठी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) यज्ञ की अग्नि को दहकाने की फुँकनी।

होमकुंड, होमकुण्ड [संज्ञा पु.] (सं.) वह कुण्ड या गड्ढा जिसमें हवन किया जाता है।

होमतुरंग, होमतुरङ्ग [संज्ञा पु.] (सं.) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

होमदुह [संज्ञा पु.] (सं.) वह जो हवन या यज्ञ के लिए दूध दुहे।

होमधेनु [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वह गाय जिसके घी से हवन होता है।

होमना [क्रि. स.] (सं.) १-होम या हवन करना। २-नष्ट करना। ३-अर्पण या उत्सर्ग करना।

होमाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) यज्ञ की अग्नि।

होमि [संज्ञा पु.] (सं.) १-अग्नि। २-घृत। जल।

होमियोपैथिक [वि.] (अं.) १-होमियोपैथी नामक चिकित्सापद्धति के अनुसार। २-होमियोपैथी के अनुसार चिकित्सा करने वाला।

होमियोपैथी [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धांत जिसमें विषों की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग दूर किये जाते हैं।

होमीय [वि.] (सं.) होम-सम्बन्धी।

होम्य [वि.] (सं.) होम-सम्बन्धी। [संज्ञा पु.] घृत। घी।

होर [वि.] (सं.) ठहरा या रुका हुआ।

होरमा [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की घास। साँवक।

होरसा [संज्ञा पु.] (हिं.) पत्थर का वह चकला जिस पर चन्दन घिसते हैं।

होरहा* [संज्ञा पु.] (हिं.) चने का हरा पौधा। बूट।

होरा [संज्ञा स्त्री.] (यू.) १-दिन का चौबीसवाँ भाग। घंटा। २-जन्म-कुण्डली। [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'होला'।

होरिल [संज्ञा पु.] (देश.) बहुत छोटा बालक या बच्चा। शिशु।

होरिहार* [संज्ञा पु.] (हिं.) होली खेलने वाला।

होरी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-देखो 'होली'। २-एक प्रकार की बड़ी नाव जो जहाज पर के माल को उतारने-चढ़ाने के काम में आती है।

होल [संज्ञा पु.] (देश.) एक प्रकार की चरी जो चौपायों और घोड़ों को खिलाई जाती है।

होलक [संज्ञा पु.] (सं.) आग पर भूनी हुई हरे चने, मटर आदि की फलियाँ।

होला [संज्ञा पु.] (हिं.) १-सिक्खों की होली जो होली जलने के दूसरे दिन होती है। २-आग में भुने हुए हरे चने या मटर की फलियाँ। ३-चने का हरा पौधा या दाना। हरहा। बूट। [संज्ञा स्त्री.] होली का त्यौहार।

होलाक [संज्ञा पु.] (सं.) आग की गरमी से पसीना लाने की एक आयुर्वेदिक क्रिया।

होलाका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) होली का त्योहार।

होलाष्टक [संज्ञा पु.] (सं.) होली के त्योहार से पहले के आठ दिन जिनमें विवाह आदि कृत्य वर्जित हैं।

होलिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-होली का त्यौहार। २-लकड़ी, घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३-एक राक्षसी का नाम

होली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है और जिसमें आग जलाते और एक-दूसरे पर रंग अबीर आदि छिड़कते हैं। २-लकड़ियों आदि का वह ढेर जो उस दिन जलाया जाता है। ३-माघ, फागुन में गाया जाने वाला गीत। होली खेलना-एक-दूसरे पर रंग अबीर आदि डालना। होली का भड़वा-बेढगा पुतला जो विनोद के लिए खड़ा किया जाता है।

होलू* [वि.] (हिं.) जिसके मन में जल्दी हौल होता हो। शीघ्र भयभीत होने या घबराने वाला।

होल्डर [संज्ञा पु.] (अं.) अंग्रेजी कलम का वह भाग जिसमें लिखने की निब या जीभी खोंसी जाती है

होल्दना [क्रि. स.] (हिं.) धान के खेत में घासपात दूर करने के लिए हल चलाना।

होश [संज्ञा पु] (फा.) १-ज्ञान कराने वाली। मानसिक शक्ति या वृत्ति। चेतना। २-बुद्धि। समझ होश उड़ना या जाता रहना-कष्ट, भय आदि के कारण सुधबुध भूल जाना। होश करना-सचेत होना। होश दंग होना-आश्चर्य चकित होना। होश पकड़ना-चेतना प्राप्त करना। होश सँभालना-सयाना होना। अनजान बालक न रहना। होश में आना-बेहोशी दूर होने पर फिर चेतना प्राप्त करना। होश की दवा खाना-बुद्धि ठिकाने लाना होश ठिकाने होना-१-भ्रम दूर होना। २-हानि सहकर अथवा दंड भोगकर पछतावा होना। ३-चित्त स्वस्थ होना। होश-हवास-चेतना और बुद्धि

होशमंद [वि.] (फा.) समझदार। बुद्धिमान।

होशियार [वि.] (फा.) १-समझदार। बुद्धिमान्। २-दक्ष। कुशल। ३-सावधान। सचेत। ४-जो वय के विचार से समझने-बूझने के योग्य हो गया हो। सयाना। ५-धूर्त। चालाक।

होशियारी [संज्ञा स्त्री.] (फा.) १-समझदारी। चतुराई। २-दक्षता। निपुणता। ३-कौशल। युक्ति। सावधानी।

होस* [संज्ञा पु.] (हिं.) १-देखो 'होश'। २-देखो 'हौस'

होस्टल [संज्ञा पु.] (अं.) छात्रावास।

हौं* [अव्य.] (हिं.) मैं। [क्रि. अ.] (हिं.) देखो 'हूँ'।

हौंकना [क्रि. अ] (हिं.) १-गरजना। २-हाँपना। [क्रि. स.] (हिं.) १-देखो 'हाँकना'। २-देखो 'धौंकना'।

हौंस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हौस'।

हौ* [क्रि. अ.] (हिं.) १-देखो 'था'। २-देखो 'हो' * [अव्यय] (हिं.) स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ

हौआ [संज्ञा पु.] (हिं.) बच्चों को डराने के लिए कल्पित भयानक जीव। [संज्ञा स्त्री.] देखो 'हौवा'।

हौका [संज्ञा पु.] (हिं.) १-किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा। २-दीर्घ निश्वास।

हौज़ [संज्ञा पु.] (अं.) १-पानी का छोटा कुण्ड। २-नाँद।

हौद [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हौज़'।

हौदा [संज्ञा पु.] (हिं.) १-हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला चौखटा जिस पर आदमी बैठते हैं। अम्बारी। २-चौपायों को चारा आदि खिलाने का पत्थर-मिट्टी आदि का बना हुआ बड़ा बरतन नांद।

हौदी [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-छोटा हौदा। २-छोटा हौज़। ३-मकानों के आगे बना वह छोटा गड्ढ जिसमें मकान का खराब पानी, कीचड़ और गन्दगी आकर जमा होती है।

हौन* [अव्य.] (हिं.) अपनापन। निजत्व।

हौरा [संज्ञा पु.] (हिं.) कोलाहल। शोरगुल। हल्ला

हौरे* [क्रि. वि.] (हिं.) देखो 'हौले'।

हौल [संज्ञा पु.] (अं.) भय। डर।

हौलजौल [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देखो 'हौला-जौली'।

हौलदिल [संज्ञा पु.] (फा.) १-दिल या कलेजा धड़कने का रोग। २-दिल की धड़कन।

हौलदिला [वि.] (फा.) डरपोक।

हौलदिली [संज्ञा स्त्री.] (फा) संगयशव नाम का पत्थर का वह टुकड़ा जो गले में हृदय-सम्बन्धी रोग दूर करने के लिए पहना जाता है। नादली।

हौलनाक [वि.] (अ., फा.) भयानक। डरावना।

हौला-जौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-जल्दी। शीघ्रता २-जल्दीबाजी के कारण होने वाली घबराहट।

हौली [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) देशी शराब बनाने या बिकने की जगह। कलवारिया।

हौले [क्रि. वि.] (हिं.) १-धीरे। आहिस्ते। २-हलके हाथ से।

हौवा [संज्ञा स्त्री.] (अं.) पैगम्बर मतानुसार संसार की वह पहली स्त्री जो आदम की पत्नी थी और जिससे समस्त मनुष्य जाति की उत्पत्ति मानी जाती है।
[संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हौआ'।

हौस [संज्ञा स्त्री.] (हिं.) १-लालसा। चाह। कामना। २-उत्साह। हौसला। ३-उमंग। हर्षोत्कण्ठा।

हौसला [संज्ञा पु.](अ.) १-कोई काम करने की उमंग। प्रबल उत्कंठा। २-उत्साह। मन का हौसला निकालना-१-इच्छा पूरी होना। २-प्रयत्न कर देखना। हौसला पस्त होना-जोश या उत्साह ठंडा पड़ना।

ह्यौं* [अव्य.] (हिं.) देखो 'यहाँ'।

ह्यो* [संज्ञा पु.] (हिं.) देखो 'हिया'।

ह्रद [संज्ञा पु.] (सं.) १-बड़ा ताल। झील। २-सरोवर। तालाब। ३-ध्वनि। आवाज। ४-किरण। ५-मेढ़ा।

ह्रदग्रह [संज्ञा पु.] (सं.) कुम्भीर नामक जल-जंतु।

ह्रदिनी [संज्ञा स्त्री.] (सं.) नदी।

ह्रसित [वि.] (सं.) छोटा किया हुआ। घटाहुआ।

ह्रस्व [वि.](सं.) १-छोटा। २-नाटा। ३-थोड़ा। ४-नीचा। ५-तुच्छ। नाचीज। [संज्ञा पु.] दीर्घ की अपेक्षा कुछ कम खींचकर बोला जाने वाला स्वर। जैसे-अ, इ, उ।

ह्रस्वक [संज्ञा पु.] (सं.) सुपारी का वृक्ष।

ह्रस्वकर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) राक्षस।

ह्रस्वकाल [संज्ञा पु.] (सं.) आक्रमण करते ही प्राप्त होने वाला लाभ।

ह्रस्वजात-रोग [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का रोग जिसमें दिन के समय वस्तुएँ बहुत छोटी दिखाई देती हैं।

ह्रस्वता [संज्ञा स्त्री.] (सं.) छोटाई। अल्पता। लघुता

ह्रस्वदा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) सलई का पेड़।

ह्रस्वपत्रक [संज्ञा पु.] (सं.) एक प्रकार का महुआ।

ह्रस्वपर्ण [संज्ञा पु.] (सं.) पाकर का वृक्ष।

ह्रस्व-प्रवासी [संज्ञा पु.] (सं.) थोड़े समय के लिए बाहर गया हुआ व्यक्ति।

ह्रस्वफल [संज्ञा पु.] (सं.) खजूर या छुहारा।

ह्रस्वफला [संज्ञा स्त्री.](सं.) छोटी जाति की जामुन। भूमि-जंबू।

ह्रस्वमूल [संज्ञा पु.] (सं.) लाल गन्ना।

ह्रस्वमूला [संज्ञा स्त्री.] (सं.) ऊटकटारा।

ह्रस्वांग, ह्रस्वाङ्ग [वि.] (सं.) नाटा। बौना। [संज्ञा पु.] (सं.) जीवक नाम का पौधा।

ह्रस्वा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) वनमूँग।

ह्रस्वाग्नि [संज्ञा पु.] (सं.) आक का पौधा। मदार।

ह्राद [संज्ञा पु.] (सं.) १-ध्वनि। शब्द। २-बादल की गरज। ३-शब्द-स्फोट।

ह्रादिनी [संज्ञा स्त्री.](सं.)१-नदी। २-बिजली। वज्र

ह्रादी [वि.] (सं.) [स्त्री. ह्रादिनी] शब्द करने वाला गर्जन करने वाला।

ह्रास [संज्ञा पु.] (सं.) १-कमी। घटती। २-उतारा। घटाव। ३-ध्वनि। आवाज।

ह्रासन [संज्ञा पु.] (सं.) कम करना। घटाना।

ह्री [संज्ञा स्त्री.](सं.) १-लज्जा। हया। शर्म। व्रीड़ा २-दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम। ३-जैनियों के मतानुसार महापद्म नामक सरोवर की देवी का नाम।

ह्रीक [संज्ञा पु.] (सं.) नेवला।

ह्रीका [संज्ञा स्त्री.](सं.) लज्जाशीलता। हया।

ह्रीकु [वि.] (सं.) लजीला। शर्मीला। [संज्ञा पु.](सं) १-बिल्ली। २-लाख। ३-राँगा।

ह्रीण, ह्रीत [वि.] (सं.) लज्जित। शरमिंदा।

ह्रीति [संज्ञा स्त्री.](सं.)लज्जा। शर्म। हया। संकोच

ह्रीमान [वि.](सं.) [स्त्री. ह्रीमती] लज्जाशील। शर्मदार। [संज्ञा पु.] (सं.) विश्वेदेवा में से एक

ह्रीमूढ़ [वि.] (सं.) लाज से घबराया हुआ।

ह्रीवेर [संज्ञा पु.] (सं.) सुगंधबाला

ह्रुत [वि.] (सं.) हिंसा करने वाला।

ह्लाद [संज्ञा पु.] (सं.) आनन्द। खुशी। प्रफुल्लता।

ह्लादन [संज्ञा पु.](सं.)आनन्दित करना। खुश करना

ह्लादनीय [वि.] (सं.) आनन्द या खुशी देने योग्य।

ह्लादिका [संज्ञा स्त्री.] (सं.) आनन्द देने वाला।

ह्लादित [वि.] (सं.) आनन्दित।

ह्लादिनी [वि.](सं.)[स्त्री. प्र.] आनन्दित करने वाली [संज्ञा स्त्री.] (सं.) १-बिजली। वज्र। २-थूहर का पौधा। ३-एक शक्ति का नाम। ४-एक नदी।

ह्लादुक [वि.] (सं.) प्रसन्न। खुश।

ह्लेषा [संज्ञा स्त्री.] (सं.) घोड़े की हिनहिनाहट।

ह्वलन [संज्ञा पु.] (सं.) इधर-उधर झुकना या गिरना पड़ना। लड़खड़ाना।

ह्वाँ [अव्य.] (हिं.) वहाँ।

ह्वान [संज्ञा पु.] (सं.) आह्वान। बुलावा।

ह्विप [संज्ञा पु.](अं.)१-संसद या व्यवस्थापिका-सभा का वह सदस्य जो अपने दल के सदस्यों को किसी महत्व के प्रश्न पर वोट या मत लिये जाने के समय, सभा में अधिकाधिक संख्या में उपस्थित कराता है। २-चाबुक। ३-कोचवान।

ह्विस्की [संज्ञा स्त्री.] (अं.) एक प्रकार की अंग्रेजी शराब।

ह्वेल [संज्ञा पु.] (अं.) एक बहुत बड़ा समुद्री जन्तु जो लगभग ८० या ९० फुट लम्बा होता है।

पुस्तकालय
129802
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

● इति शुभम् ●

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R. 1.1 नवनीत-ना
आगत संख्या 129802

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा ।

1.1,NAV-N
129802

GURU	KANGRI	ARY
	nature	Date
Acces		17/10/13
Class		18/11/13
Cat		
Tag etc.		19/11/13
E.A.R.		
Recomm. by.	Donation	
Data Ent. by		17/10/13
Checked		